प्रायः दो लाख हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, ग्रामीण, बृजभाषा, तथा भिन्न विषयों के नवीन शब्द, साहित्य, अलंकार, आयुर्वेद, इतिहास, भूगोल, पुराण, दर्शन, विज्ञान, ज्योतिष तथा शास्त्रीय शब्दों और वाक् व्यवहारों आदि का वृहत् संग्रह।

संशोधित तथा अनुक्रमणिका सहित

द्वितीय संस्करण

शब्द संख्या ९६,०००

सम्पादक

पण्डित रामचन्द्र पाठक बी. ए., एल्. टी.

भूतपूर्व प्रोफ़ेसर गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज, बनारस।

संकलनकर्ता—भार्गव सचित्र स्टेन्डर्ड अंग्रेज़ी हिन्दी डिक्शनरी, कानसाइस् अंग्रेज़ी हिन्दी डिक्शनरी, सचित्र हिन्दी अंग्रेज़ी डिक्शनरी इत्यादि।

प्रकाशक व मुद्रक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव

भार्गव बुक् डीपो, चौक, बनारस

भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बनारस

प्रधान वितरक

श्रीगंगा पुस्तकालय, गायघाट, बनारस

मूल्य १२)

भूमिका

हिन्दी भाषा का प्रचार भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में दिन दिन बढ़ता जाता है तथा भिन्न भिन्न विषयों की पुस्तकों के निर्माण होने के कारण इस जीवित भाषा की शब्दसंख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का भी पूरा प्रयत्न किया गया और अन्त में सफल भी हो गया, हिन्दी भाषा आज प्रान्तीय राष्ट्र भाषा हो गई है। हिन्दी में अनेक कोश छप गये हैं, उनमें से बहुतेरे तो इतने छोटे हैं कि इनमें हिन्दी के आधुनिक प्रचलित शब्दों का समावेश नहीं है, तथा दो एक इतने बड़े और अधिक मूल्य के हैं कि सामान्य विद्यार्थी इनको खरीद नहीं सकते।

इस अभाव को पूर्ण करने की इच्छा से मेरा विचार बहुत दिनों से एक मध्यम श्रेणी का हिन्दी का कोश निर्माण करने का था परन्तु अवकाश न मिलने के कारण कृतकार्य न हो सका था। लब्धावकाश होने पर मैंने इस कोश को लिखना आरम्भ किया और ईश्वर के अनुग्रह से बड़े परिश्रम के बाद इसके लिखने का कार्य समाप्त हुआ।

आजकल वर्तमान हिन्दी साहित्य में संस्कृत शब्दों की बहुलता देख पड़ती है, अत: इस कोश में संस्कृत के पर्याप्त शब्द दिये गये हैं (जिनका लिङ्ग मैंने संस्कृत का ही दिया है) ; वैदिक शब्दों का समावेश इस कोश में नहीं किया गया है, परन्तु प्राकृत, वृजभाषा, ग्रामीण, भाषाओं के शब्द जो आजकल हिन्दी भाषामें प्रयोग किये जाते हैं वे सभी दिये गये हैं। विज्ञान, ज्योतिष, इतिहास, भूगोल, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद, साहित्य, छन्दशास्त्र, अलङ्कार आदि विषयक अति प्रचलित सभी शब्द लिखे गये हैं, तथा शास्त्रीय शब्दों की व्याख्या भी सरल भाषा में की गई है, स्थान स्थान पर हिन्दी भाषा के वाक्व्यवहार भी अर्थ सहित लिखे गये हैं।

प्रधान शब्द से बने हुए विशेषण, क्रियापद, क्रियाविशेषण तथा भाववाचक शब्द तथा समस्तपद अलग न देकर इसके साथ ही अकारादि क्रम से छापे गये हैं।

हिन्दी में सभी अनुनासिक वर्णों के लिये शब्दों के ऊपर अनुस्वार देने की प्रथा है यथा—संस्कृत के सङ्ग्राम, सञ्चय, कण्टक, सन्तान, भूकम्प आदि शब्द हिन्दी में—संग्राम, संचय, कंटक, संतान, भूकंप—लिखे जाते हैं। इस कोश में ऐसे शब्दों के शुद्ध संस्कृत रूप तथा हिन्दी के प्रचलित रूप दोनों ही दिये गये हैं।

आशा है कि इस कोश से सामान्य विद्यार्थी तथा पाठक गण पूरा लाभ उठावेंगे। द्वितीय संस्करण में प्रायः दो हजार शब्द अनुक्रमणिका में अधिक बढ़ाये गये हैं। अब शब्दों की पूर्ण संख्या प्रायः ९६००० हो गई है।

सम्पादक

सांकेतिक अक्षरों का विवरण

अव्य०—अव्यय।
उप०—उपसर्ग।
क्रि०—क्रिया।
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण।
ग्रा०—ग्रामीण।
दे०—देशी।

नपुं०—नपुंसक लिङ्ग।
पा०—पाली भाषा।
पुं०—पुल्लिङ्ग।
प्रत्य०—प्रत्यय
बहु०—बहुवचन।
यौ०—यौगिक।

वि०—विशेषण।
व्या०—व्याकरण।
सं०—संस्कृत।
सर्व०—सर्वनाम।
स्त्री०—स्त्री लिङ्ग।
हिं०—हिन्दी।

भार्गव

आदर्श हिन्दी शब्दकोश

अ

अ-हिन्दी तथा संस्कृत के स्वर वर्ण का पहिला अक्षर, इसका उच्चारण कण्ठ से होता है। व्यञ्जन अक्षर के अन्त में 'अ' लगा कर इस अक्षर का उच्चारण होता है, यथा क्+अ=क ; ख्+अ=ख इत्यादि। तन्त्रशास्त्र में अकार से ईश्वरत्व का बोध होता है। निषेध, अभाव तथा अल्प अर्थ में अव्यय की तरह प्रयोग होता है यथा अकाल, अपापी, अब्राह्मण आदि। प्रणव का प्रथम अक्षर 'अ' है। (सं० पु०) ब्रह्मा, सृष्टि, अमृत, मेघ, ब्राह्मण, कीर्ति, कण्ठ, ललाट।

अइया-(हिं०स्त्री०) वृद्धा स्त्री, दादी, नानी इत्यादि के लिये प्रयोग होता है।

अइली-(हिं०ग्रा०) आ गई हूँ।

अइसन-(हिं०ग्रा०) ऐसा, इस प्रकार का।

अइसा-(हिं०वि०) इस प्रकार का, ऐसा।

अइहैं-(हिं०ग्रा०) आवेंगे।

अउ-(हिं०) और, तथा।

अउठा-(हिं०पुं०) लोहे की कपड़ा नापने की दो हाथ लंबी लकड़ी।

अउर-(हिं०वि०) और, तथा।

अऊत-(हिं०वि०) निःसन्तान, अपुत्र, बिना पुत्र का।

अऊलना-(हिं०क्रि०) गरमी पड़ना, उष्ण होना, छिदना, जलना।

अऋण-(हिं०वि०) ऋण से मुक्त, बिना ऋण का। **अऋणी**-(हिं०वि०) जिसने ऋण न लिया हो, जिसने ऋण चुका दिया हो।

अएरना-(हिं०क्रि०) स्वीकार करना, अंगीकार करना, अँगेरना।

अउघड़-(औघड़) (हिं०पु०) जिसको किनारामी पन्थ कहते हैं। ये लोग विष्ठा तक खा जाते हैं। इस पंथ के अनुयायी सन्यासी शिव की उपासना करते हैं।

अंक-(सं०अङ्क०) देखो अङ्कक। **अंकक**-(सं०अ०) देखो अङ्कक। **अंककार**-(सं०अङ्ककार) देखो अङ्ककार। **अंकगणित**-(सं०अङ्कगणित) देखो अङ्कगणित।

अंकटा-(हिं०पु०) कंकड़ का चिकना छोटा टुकड़ा। **अंकटी**-(हिं०स्त्री०) महीन छोटी कंकड़ी।

अंकड़ा-(हिं०पुं०) पत्थर का टुकड़ा, कंकड़। **अँकड़ी**-(हिं०स्त्री०) काँटी, तीर का मुड़ा हुआ फल, लता, वृक्ष का फल तोड़ने की लग्गी।

अंक-(सं०) देखो अङ्कन।

अंकना-(हिं०क्रि०) आँकना, कूतना।

अंकपलई-(हिं०स्त्री०) देखो अङ्कपल्लव।

अंकपालिका-(सं०) देखो अङ्कपालिका।

अंकमाल-(सं०) देखो अङ्कमाल।

अंकमालिका-(सं०) देखो अङ्कमालिका।

अँकरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास जो गेहूँ या जव के खेत मे स्वतः उगती है। **अँकरी**-(हिं०स्त्री०) अँकरा।

अँकरोरी, अँकरौरी-(हिं०स्त्री०) अँकटी, छोटी कंकड़ी, खपड़े का छोटा टुकड़ा।

अँकवार-(हिं०स्त्री०) अङ्कपाली, गोद, छाती।

अँकवारना-(हिं०क्रि०) आलिंगन करना

अँकवारी-(हिं०स्त्री०) गोद। अङ्क

अंकविद्या-(सं०अङ्कविद्या) अङ्कगणित जिसमे अंकों द्वारा हिसाब किया जाता है।

अँकाई-(हिं०स्त्री०) कूत, अटकल, जमीदार तथा किसान का फस्ल के बँटवारे का ठहराव।

अँकवाना-(हिं०क्रि०) जँचवाना, कूत करवाना, परीक्षा कराना, मूल्य निर्धारित कराना।

अँकाई-(हिं०स्त्री०) देखो अँकाव

अँकाना-(हिं०क्रि०) अँकवाना, चिह्नित कराना

अँकाव-(हिं०पु०) कूत कराने का कार्य अँकाई, कुताई, जँचवाई।

अंकावतार-(सं०अङ्कावतार) नाटक में एक अंक के अन्त में आगामी अंक की घटना सूचित करने का संकेत।

अंकित-(सं०वि०) देखो अङ्कित।

अंकिल-(हिं०वि०) अंकित, चिह्नित, चिह्न किया हुआ। (हिं०पुं०) दाग कर छोड़ा हुआ सांड़।

अँकुड़ा-(हिं०पु०) लोहे का एक ओर मोड़ कर गोल किया हुआ काँटा।

अँकुड़ी-(हिं०स्त्री०) मुड़ी हुई काँटी, हल की लकड़ी का वह भाग जिसमें फार जड़ा होता है। **अँकुड़ीदार**-(हिं०वि०) अँकुड़ी लगा हुआ।

अंकुर-(सं०) देखो अङ्कुर।

अंकुरक-(सं०पुं०) देखो अङ्कुरक।

अँकुरना, अँकुराना-(हिं०क्रि०) अँखुवा फूटना, बीज जमना, उत्पन्न होना।

अंकुरित-(सं०अङ्कुरित) देखो अङ्कुरित।

अँकुरी-(हिं०स्त्री०) भिगाये हुए चने की घुघनी।

अंकुश-(सं०) देखो अङ्कुशग्रह। **अँकुशग्राही**-महावत।

अंकुशा-(हिं०स्त्री०) छोटा अंकुश।

अँकुसी-(हिं०स्त्री०) लोहे की झुकी हुई कील जो किसी पदार्थ के लटकाने या फँसाने के काम में आती है।

अंकूर-(हिं०पु०) देखो अंकुर।

अंकोट-(सं०) देखो अङ्कोल।

अंकोड़ा-(हिं०पु०) एक प्रकार की मुड़ी हुई कड़ी जिसमें रस्से को फँसाकर पानी में नाव खींची जाती है, एक प्रकार का छोटा लंगड़।

अँकोर-(हिं०पु०) गोद, अङ्क, भेंट, घूसा मजूर का कलेवा, दोपहर।

अँकोरना-(हिं०क्रि०) गरम करना, भूँजना, घूस देना

अँकोड़ा-(हिं०पु०) बड़ा काँटा,

अँकोरी-(हिं०स्त्री०) गोद, आलिंगन।

अंकोल-(सं०) देखो अङ्कोल।

अंक्य-(सं०) देखो अङ्क्य।

अँखड़ी-(हिं०स्त्री०) चक्षु, नेत्र, आँख।

अँखमिचौनी-(हिं-स्त्री०) देखो आँखमिचौनी।

अँखाना-(हिं०क्रि०) क्रोध दिखलाना।

अँखिया-(हिं०पु०) आँख, बीजका महीन अंकुर, नकाशी बनानेका कसेरे का ठप्पा।

अँखुआ-(हिं०पुं०) बीज में से निकला हुआ महीन अंकुर। **अँखुआना**-(हिं०क्रि०) अंकुर फूटना, बीज जमना।

अंग-(सं०) देखो अङ्ग। **अंगज**-(सं०) देखो अङ्गज। **अंगजा**-(सं०) देखो अङ्गजा। **अंगजाई**-(हिं०स्त्री०) बेटा, कन्या, पुत्री।

अंगड़, खंगड़-(हिं०पुं०) टूटा फूटा, गिरा पड़ा हुआ अंश,

अंगड़ाई-(हिं०स्त्री०) आलस्य में जंभाई लेते हुए देह टूटना।

अंगड़ाना-(हिं०क्रि०) अंगड़ाई लेना,

अंगण-(सं०) देखो अङ्गण।

अंगत्राण-(सं०) देखो अङ्गत्राण।

अंगद-(सं०) देखो अङ्गद।

अंगदान-(सं०) देखो अङ्गदान।

अँगना-(हिं०पु०) अंगण, घर के मध्य का खुला भाग। **अँगनाई**-(हिं०स्त्री०) अङ्गण, अंगना। **अँगनैया**-(हिं०पु०) अंगण, अंगना।

अंगन्यास-(सं०) देखो अङ्गन्यास।

अंगभंग-(सं०) देखो अङ्गभङ्ग। **अंगभंगी**-(सं०) देखो अङ्गभङ्गी। **अंगभाव**-(सं०) देखो अङ्गभाव। **अंगभूत**-(सं०) देखो अङ्गभूत। **अंगमर्द, अंगमर्दन**-(सं०) देखो अङ्गमर्द, अङ्गमर्दन।

अंगरक्षा-(सं०) देखो अङ्गरक्षा।

अंगरखा-(हिं०पु०) घुटने तक का लंबा अंगा या चपकन जिसमें बटन के स्थान पर बंद लगे होते हैं।

अँगरा-(हिं०पु०) अङ्गार, अंगारा।

अंगराई-(हिं०स्त्री०) देखो अंगड़ाई,

अंगराना-(हिं०क्रि०) अंगड़ाई लेना

अंगराग-(हिं०पु०) देखो अङ्गराग।

अंगरी-(हिं०स्त्री०) कवच,

अँगरेज़-(हिं०पु०) इङ्गलैण्ड् देश का निवासी। **अँगरेज़ी**-(हिं०स्त्री०) अंगरेज़ी भाषा, (वि०) विलायती।

अंगलेट-(हिं०पु०) अँगेठ, शरीर की गठन, काठी।

अंगवना-(हिं०क्रि०) स्वीकार करना, उठाना, ओढ़ना।

अंगवारा-(हिं०पु०) खेत की जोताई में अन्य पुरुष की सहायता, गाँव के किसी अंश का मालिक।

अंगविकृति-(सं०) देखो अङ्गविकृति।

अंगविक्षेप-(सं०) देखो अङ्गविक्षेप,

अंगविद्या-(सं०) देखो अङ्गविद्या।

अंगशैथिल्य-(सं०) देखो अङ्गशैथिल्य,

अंगशोष-(सं०) देखो अङ्गशोष।

अंगसिहारी-(हिं०स्त्री०) कँपकँपी, जूड़ी।

अंगहार-(सं०) देखो अङ्गहार।

अंगहीन-(सं०) देखो अङ्गहीन।

अंगागिभाव-(सं०) देखो अङ्गाङ्गिभाव

अंगा-(हिं०पु०) अंगरखा, चपकन।

अंगाकड़ी-(हिं०स्त्री०) अंगारे पर सेकी हुई मोटी रोटी, लिट्टी, बाटी।

अंगार-(हिं०पु०) अंगारा, जलता हुआ कोयला।

अंगार-(सं०) देखो अङ्गारपाचित.

अंगारा-(हिं०पुं०) देखो अङ्गारा,

अंगारिणी-(सं०) देखो अङ्गारिणी।

अंगारी-(सं०) देखो अङ्गारि।

अँगारी-(हिं०स्त्री०) ऊख का ऊपर का भाग जो काटकर पशुओं को खिलाया जाता है।

अंगिका-(सं०) देखो अङ्गिका।

अँगिया-(हिं० स्त्री०) स्त्रियों की केवल स्तनों को ढाँपने की कुरती जो बन्दों से पीठ की ओर बाँधी जाती है।

अंगिरस-(सं०) देखो अङ्गिरस ।
अंगिरा-(सं०)देखो अङ्गिरा ।
अंगिराना-(हिं०क्रि०) अंगड़ाना ; आलस्य से जंभाई लेना और शरीर तोड़ना
अंगी-(स०) देखो अङ्गी ।
अंगीकार-(सं०) देखो अङ्गीकार ।
अंगीकृत-(स०) देखो अङ्गीकृत ।
अँगीठा-(हिं० पुं०) बड़ी अंगीठी या बोरसी । **अँगीठी** -(हिं०स्त्री०) अग्नि रखने का छोटा पात्र, बोरसी, आग रखने का दमकला ।
अँगुठी-(हिं०स्त्री०) काँसे का ढला हुआ एक आभूषण जिसको नीच जाति की स्त्रियाँ पैरों में पहिरती हैं ।
अंगुर-(हिं०पुं०) अंगुल ।
अँगुरिया-(हिं०वि०) अंगूर की लता के समान, अंगूर के रंग की ।
अँगुरी-(हिं०स्त्री०) अंगुली, उँगली ।
अंगुल-(स०) देखो अङ्गुल ।
अंगुलित्राण, अंगुलितोरण-(स०) देखो अंगुलित्राण, अङ्गुलितोरण ।
अंगुलो-(स०अङ्गुला) अंगुली, उँगली ।
अंगुष्ठ-(स०) देखो अङ्गुष्ठ ।
अंगुसा-(हिं०पुं०) अंखुआ, अङ्कुर ।
अगुसाना-(हिं०क्रि०) बीज फूटना, अखुआ निकलना ।
अंगुसी-(हिं०स्त्री०) सोनार की बकनाल या फुकनी जिससे दिये की टेम को फूंक कर वे टाँका लगाते है ।
अंगूठा-(हिं०पु०) हाथ या पैर की सबसे मोटी अंगुली ।
अंगुली-(अंगूठा) चूमना = खुशामद करना; अंगूठा दिखाना = तिरस्कार करना, धोखा देना ।
अँगूठी-(हिं०स्त्री०) मुद्रिका, मुँदरी ।
अंगूर-(फा०पुं०) द्राक्षा, दाख ।
अंगूरी-(हिं०वि०) देखो अगूरी ।
अंगेजना-(हिं०क्रि०) अपने ऊपर ले लेना, मानना ।
अँगेठ-(हिं०पुं०) आकृति, डीलडौल ।
अँगेठा-(हिं०क्रि०) बड़ी अंगीठी, **अँगेठी**-(हिं०स्त्री०) देखो अंगीठी ।
अंगेरना-(हिं० क्रि०) देखो अंगेजना ।
अंगोछना-(हिं०क्रि०) गीली शरीर को वस्त्र से पोंछना ।
अंगोछा-(हिं०पु०) अंग पोछने का वस्त्र।
अंगोछी-(हिं०स्त्री०) छोटा अंगोछा, पहिरने की छोटी धोती ।
अंगोजना-(हिं०क्रि०) देखो अंगेजना ।
अंगोरा-(हिं०पुं०) मच्छड़, भुनगा ।
अंगोरी-(हिं०स्त्री०) देखो अंगारी ।
अंगौणा-(हिं०पुं०) देवता को अर्पण करने केलिये निकाला हुआ पदार्थ ।
अंगौरिया-(हिं०पुं०) मजदूरी के बदले हरवाहे को हल बैल मंगनी देना ।
अंघड़ा-(हिं०पु०) पैर में पहिरने का काँसे का छल्ला जिसको नीच जाति की स्त्रियाँ पहिरती हैं ।
अंघराई-(हिं०स्त्री०) पशुओं पर लगने का कर ।
अंघस-(हिं०पुं०) पाप, पातक ।
अंघिया-(हिं०स्त्री०) महीन आँटा चालने की चलनी, अंगिया ।
अँचरा-(हिं०पुं०) स्त्रियों की धोती का अंचल या पल्ला । **अँचला**-(हिं०पु०) अँचल, पल्ला ।
अँचवन-(हिं०पु०)आचमन । **अंचवना**-(हिं०क्रि०) आचमन करना, भोजन के बाद कुल्ला करना । **अंचवाना**-(हिं०क्रि०) आचमन कराना, मुंह धोलाना, कुल्ला कराना ।
अंछर-(हिं०पुं०) अक्षर, मन्त्र, मुख का एक प्रकार का रोग ।
अंछया-(हिं०पुं०) इच्छा, अभिलाषा ।
अंज-(हिं०पुं०) पद्म, कमल ।
अंजनसार-(हिं०वि०) आँखों मे अंजन लगाया हुआ ।
अंजनहारी-(हिं०स्त्री०) आँख की पलक के किनारे पर होने वाली फुन्सी, बिलनी, एक प्रकार का कीड़ा ।
अंजरपंजर-(हिं०पुं०) शरीर की ठठरी,
अंजवार-(फा० पु०) औषधि के प्रयोग में आने वाला एक पौधा ।
अंजरि-(हिं०स्त्री०) देखो अंजलि ।
अंजल, अंजला-(हिं०पुं०) अञ्जलि ।
अंजवाना-(हिं०क्रि०) आँख में काजल या सुर्मा लगवाना ।
अंजहा-(हिं०वि०) अन्न से बना हुआ, **अंजही**-(हिं०स्त्री०) अन्न बिकने की बाजार, अन्न से बना हुआ, अनाजी ।
अँजाना-(हिं०क्रि०) आँख में काजल लगवाना ।
अँजुरी, अंजुली-(हिं०स्त्री०) अञ्जलि ।
अंजारना-(हिं०क्रि०) बटोरना, समेटना, प्रकाशित करना ।
अँजोर-(हिं०पु०) प्रकाश, उँजेला, रोशनी,
अंजोरना-(हिं०क्रि०) प्रकाश करना ।
अँजोरा-(हिं०पु०) उँजेला, प्रकाश ।
अँजोरी-(हिं०स्त्री०) प्रकाश, चाँदनी (वि०) प्रकाशमय ।
अंझा-(हिं०क्रि०) अनाध्याय, नागा ।
अँटकना-(हिं०क्रि०) अटकना, रुकना ।
अँटना-(हिं०क्रि०) पूरा होना, भर जाना, समा जाना ।
अंटा-(हिं०पु०) बड़ी गोली, सूत लपेटने की गँडारी, ऊँची अटारी, **अंटागुड़गुड़**-(हिं०वि०) नशे में अचेत, बेसुध, **अंटाघर**-(हिं०पु०) अंगरेज़ों के बिलियड्र्ड खेलने का कमरा, **अंटाचित**-(हिं०वि०) पीठ के बल पड़ा हुआ, सीधा, **अंटा बंधू**-(हिं०पु०) कौड़ी जो जुए में फेंकी जाती है ।
अँटिया-(हिं०स्त्री०) छोटा पुलिन्दा, गँठिया, **अँटियाना**-(हिं०क्रि०) लुप्त करना, छिपा लेना, गठिया बनाना, धागे की लच्छी गड़ारी पर लपेटना ।
अंटी-(हिं०स्त्री०) लच्छी, गाँठ, अंगुली के बीच का स्थान, कान में पहिरने की छोटी बाली । **अंटीतल**-(हिं०पु०) बैल की आँख पर बाँधा हुआ ढपना या पट्टी ।
अँठई-(हिं०स्त्री०) छोटा कीड़ा, किलनी ।
अंठी-(हिं०स्त्री०) गाँठ, गिलटी, गुठली, चियां ।
अंठली-(हिं०स्त्री०) नवयौवना का उभड़ा हुआ स्तन ।
अंड-(हिं०पुं०) देखो अण्ड ।
अंडबंड-(हिं०पु०) व्यर्थ की वार्ता, बकझक, गाली गलौज ।
अँडरना-(हिं०क्रि०) अन्नकी बाल फूटना ।
अंडस-(हिं०स्त्री०) असुविधा, अड़चन, कठिनाई ।
अंडा-(हिं०पु०) देखो अण्ड ।
अँड़िया-(हिं०स्त्री०) बाजरे की पकाई हुई बाल, काते हुए सूत की लच्छी ।
अंडी-(हिं०स्त्री०) रेड़ी, रेशमी वस्त्र ।
अँडुआ-(हिं०पु०) बिना बधिया किया हुआ पशु । **अँडुआना**-(हिं०क्रि०) पशु को बधिया करना, **अंडुआ बैल**-बिना बधिया किया हुआ बैल, साँड़ ।
अँडुवारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी मछली ।
अंडैल-(हिं०वि०) अंडेवाली, जिसके पेट में अंडा हो ।
अंतघाई-(हिं०वि०) विश्वासघाती ।
अँतड़ी-(हिं०स्त्री०) अन्त्र, आँत ।
अंतर छाल-(हिं०स्त्री०) छाल के भीतर की कोमल झिल्ली । **अंतरजाल**-(हिं०पुं०) व्यायाम करने की एक प्रकार की लकड़ी ।
अंतरा-(हिं०) देखो अन्तर ।
अँतराना-(हिं०क्रि०) पृथक् करना, अलगाना ।
अँतरौटा-(हिं०पु०) स्त्रियों का महीन साड़ी के नीचे पहिरने का वस्त्र ।
अंतावरी-(हिं०स्त्री०) अँतड़ी, आँत ।
अंत्री-(हिं०) आँतवाला; देखो अन्त्र ।
अंदरसा-(हिं०पु०) पीसे हुए चावल की मिठाई ।
अंदरी-(फा०वि०) भीतरी ।
अंदाजपट्टी-(हिं०स्त्री०) खेत के फ़स्ल के दाम की कूत ।
अंदाजपीटी-(हिं०स्त्री०) दिनरात शृंगार करने वाली स्त्री ।
अँदाना-(हिं०क्रि०) बचाना ।
अँदुआ-(हिं०पु०) हाथी के पिछले पैर में फँसाने की एक काँटेदार अँकुसी ।
अँदोह-(फा०पु०) सन्देह, आशंका, शोक,
अंदोर-(हिं०पु०) कोलाहल ।
अंधकार-(स०) अन्धकार, अँधियारा ।
अंधखोपड़ा-(ड़ी)-(हिं०पु०) अज्ञान, मूर्ख, लंठ ।
अंधड़-(हिं०पुं०) धूलिपूर्ण तीव्र वायु, आँधी ।
अंधधुंध-(हिं०पु०) अन्धकार, अत्याचार
अंधबाई-(हिं०पु०) आँधी, तूफ़ान ।
अंधरा-(हिं०वि०)नेत्रहीन, चक्षुहीन, अन्धा
अँधरी-(हिं०स्त्री०) चक्षुहीन स्त्री ।
अंधा-(हिं०वि०) नेत्रहीन, अँधरा ।
अंधाधुंध-(हिं०वि०)बड़ा अँधेरा, विचारहीनता, (क्रि०वि०) अतिशय, बहुत ।
अंधार-(हिं०पु०) अँधकार, जाल जिसमें भूसा इत्यादि भरा जाता है ।
अंधारी-(हिं०स्त्री०) अंधड़ ।
अंधियार-(हिं०पु०) अन्धकार, प्रकाश का अभाव । **अंधियारा**-(हिं०पु०) अंधेरा, अन्धकार ।
अंधियारी कोठरी-(हिं०स्त्री०) अन्धकार पूर्ण छोटी कोठरी, उदर, पेट ।
अंधेर-(हिं०पु०) अत्याचार, अन्याय, बुरा प्रबंध, **अंधेरखाता**-(हिं०पु०) गड़बड़ी कुप्रबंध; **-अंधेरना**-(हिं०क्रि०) गड़बड़ी करना, अंधेरा करना ।
अंधेरा-(हिं०पु०) अन्धकार, अँधियारा।
अंधेरिया-(हिं०स्त्री०) अन्धकार, अन्धेरी-रात, घोड़े या बैल की आँख ढापने का पट्टा । **अंधेरी**-(हिं०स्त्री०) अंधेरिया, अन्धकार ।
अंधोटी-(हिं०स्त्री०) घोडे या बैल की आँखों को ढापने का पट्टा ।
अंध्यार-(हिं०पुं०) अन्धकार, अंधियारा।
अंध्यारी-(हिं०स्त्री०) अंधेरिया, प्रकाशहीनता ।
अंबरबारी-(हिं०स्त्री०) एक वृक्ष विशेष, इसकी लकड़ी को दारु हल्दी और इसके जड़ से निकाले हुए रस को 'रसवत' कहते है। **अंबरबेल**-(हिं० स्त्री०) अमरबेल, यह धागे के समान पतली और लंबी होती है और वृक्षों पर एक टुकड़ा फेंक देने से बढ़ती जाती है ।
अंबरसारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कर
अंबराई-(हिं०स्त्री०) आम की बारी, जिस स्थान मे आम के अनेक वृक्ष लगे हों।
अंबराव-(हिं०पु०) आम का बगीचा ।
अंबरीसक-(हिं०पु०) भरसाईं, भाड़ ।
अंबली-(हिं०पु०) गुजराती कपास ।
अंबाड़ा-(हिं०पुं०) जामुन के आकार का एक फल विशेष, आमड़ा ।
अंबापोली-(हिं०स्त्री०) आम का सुखाया और परतों में जमाया हुआ रस, अमावट ।
अंबारी-(फा०पुं०) हाथी की पीठ पर रखने का मंडपदार हौदा, छज्जा ।
अंबिया-(हिं०स्त्री०)बिना जाली पड़ा हुआ आम का कच्चा फल, टिकोरा ।
अंबरिथा-(हिं०वि०)व्यर्थ का, निष्फल।
अंश-(सं०पुं०) भाग, खण्ड, अवयव, कन्धा, किसी राशि का तीसवाँ भाग, अक्षांश, भाज्य अङ्क (यथा ३।४ अपूर्णाङ्क में ३ अंश और ४ हर कहलाता है) कला, राजा पुरुहोत्र के पुत्र का नाम, **अंशक**-(सं०पुं०) हिस्सेदार, सझिया, पट्टीदार, ज्ञाति, पुत्र, बाँटनेवाला, किसी राशि का तीसवाँ भाग, **अंशपत्र**-(सं०पुं०) जिस प्रतिज्ञापत्र मे पट्टेदार का अंश निर्धारित किया गया हो । **अंशभाजू**-(स०-स्त्री० अंशभाजा) अंश या हिस्से को ग्रहण करने वाला, **अंशल**-(सं०

पुं०) अंश ग्रहण करने वाला, पराक्रमी, बलवान् ।

अंशसुता-(सं०स्त्री०) सूर्य की कन्या, यमुना नदी ।

अंशहर-(सं०पुं०) अंश या भाग को ग्रहण करने वाला ।

अंशावतरण-(सं०पुं०) हिस्सेदारों का जन्म, महाभारत के कुछ अध्याय जो अंशावतरण पर्व कहलाते हैं, **अंशावतार**-(सं० पुं०) ईश्वर का वह अवतार जिसमें उनको थोड़ी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है ।

अंशी-(सं०पुं०-स्त्री० अंशिनी) हिस्सेदार, अंश धारण करने वाला अवतारी ।

अंशु-(सं०पुं०)सूर्य, किरण,ज्योति, वेग, धागा, अल्पमात्रा, थोड़ा, अंश, एक ऋषि का नाम ।

अंशुक-(सं०पुं०) रेशमी वस्त्र, ओढ़ने का वस्त्र, ओढ़नी, डुपट्टा, तेजपात नाम का सुगंधित द्रव्य ।

अंशुपति-(सं०पुं०) सूर्य, आदित्य,भानु ।

अंशुपर्णी-(सं०स्त्री०) शालपर्णी नामक ओषधि विशेष सरिवन ।

अंशुमत्-(सं०वि०) किरणयुक्त; (पुं०) सूर्य । **अंशुमत्फला**-(सं०स्त्री०) केले का वृक्ष ।

अंशुमता-(स्त्री०) शालपर्णी का वृक्ष ।

अंशुमन्त-(हिं०पुं०)सूर्य,राजा अंशुमान् ।

अंशुमान्-(सं० पुं०) सूर्य,एक सूर्यवंशी राजा जो असमंजस के पुत्र थे ।

अंशुमाला-(सं०स्त्री०)किरणोंका समूह ।

अंशुमाली-(सं०पुं०) सूर्य, १२ की संख्या ।

अंशुल-(सं०पुं०) चतुर मनुष्य, पण्डित ।

अंशुहस्त-(सं०पुं०) सूर्य, मरीचिमाली ।

अंस-(सं०पुं०) स्कन्ध, कन्धा ।

अंसकट-(सं०पुं०) साड़ के पीठ पर का ककुद (कूबड़ या उभड़ा हुआ भाग) ।

अंसत्र-(सं०नपुं०) कन्धे की रक्षा करने वाला कवच ।

अंसफलक-(सं०नपुं०) स्कन्धास्थि, कन्धे पर की हड्डी ।

अंसभार-(सं०पुं०) कन्धे पर का बोझा।

अंसभारिक-(सं०पुं०) कन्धे पर बोझा ढोने वाला पुरुष ।

अंसल-(सं०नपुं०) बलवान्, गँठीला ।

अंसुआ, अंसुवा-(हिं०पुं०) अश्रु, आँसू ।

अंसुवाना-(हिं०क्रि०) आँसू से आँखें भर जाना ।

अंस्य-(सं०वि०) कन्धे पर होने वाला ।

अंह-(सं०पुं०) पाप, विघ्न, दुःख, घबड़ाहट, कुकर्म ।

अंहति, अंहती-(सं०स्त्री०) त्याग,व्याधि, रोग, दान ।

अंहु-(सं०स्त्री०) पापी, कुकर्मी ।

अंहुड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की फली वाली लता, बाकला ।

अंहुर-(सं०स्त्री०) गतिमान् ।

अंह्रि-(हिं०पुं०) पैर, वृक्षमूल, ४ कीसंख्या

अंह्रिप-(हिं०पुं०) पादप, वृक्ष ।

अंह्रिस्कन्ध-(हिं०पुं०) पैर की एँड़ी ।

अक-(सं०नपुं०) पाप, दुःख, क्लेश ।

अकच-(सं०पुं०)खलवाट, जिसके मस्तक में बाल न हों, केतु ग्रह ।

अकच्छ-(सं०वि०) बिना लंगोटी लगाये, नङ्गा, व्यभिचारी ।

अकड़-(हिं०स्त्री०) ऐंठन, मरोड़ । **अकड़ तकड़**-(हिं०पुं०)गर्व,ऐंठन; **अकड़ना**-(हिं०क्रि०) सूख कर कड़ा हो जाना, ठिठुरना, ऐंठना, तनना, हठ करना, गर्व करना, अड़ना, ढिठाई दिखलाना, लड़ने को तैयार हो जाना । **अकड़वाई**-(हिं०स्त्री०) शरीर की ऐंठन ।

अकड़बाज़-(हिं०पुं०) घमण्डी ।

अकड़म-(सं०पुं०)तन्त्र शास्त्र में प्रयुक्त करने का एक चक्र जिसका योग गुरु शिष्य की सिद्धि जानने के लिये किया जाता है ।

अकड़ाव-(हिं०पुं०) तनाव, खिंचाव, ऐंठन ।

अकड़ैत-(हिं०पुं०) घमंडी, शेखीबाज़ ।

अकत-(हिं०वि०) समग्र, संपूर्ण(क्रि०वि०) पूरी तरह से, बिलकुल ।

अकथ-(हिं०वि०) न कहने योग्य, अवर्णनीय । **अकथनीय**-(सं०वि०) अवर्णनीय न कहने योग्य ।

अकथह-(सं०पुं०) अकड़म की तरह प्रयोग करने योग्य एक चक्र ।

अकथ्य-(सं०वि०) न कहने योग्य, व्यर्थ,

अकधक-(हिं०पुं०) सोच विचार, आगा-पीछा, शंका ।

अकनना-(हिं०क्रि०) आहट लेना, कान लगा कर चुपके से सुनना ।

अकबक-(हिं०पुं०) असंबद्ध वार्ता, बड़-बड़, अंडबंड, बकझक, (वि०) अवाक्, भौचक्का । **अकबकाना**- (हिं०क्रि०) घबड़ाना, भौचक्का होना ।

अकबर-बादशाह जो हुमायूं के पुत्र थे । **अकबरनामा**-शेख अबुल फज़ल का लिखा हुआ अकबर के समय का इतिहास । अकबराबाद-आगरा नगर का प्राचीन नाम । **अकबरी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रक प्रकारकी फलहारी मिठाई (वि०) अकबर संबंधी, अकबर की बनवाई हुई । **अकबरी अशर्फ़ी**-अकबर के समय का सोने की मुद्रा ।

अकर-(सं०वि०) न किये जाने योग्य, दुष्कर, विकट, बिना हाथ का, बिना कर का ।

अकरकरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ औषधियों में प्रयोग होती है ।

अकरखना-(हिं०क्रि०) खींचना, 'तानना, चढ़ाना ।

अकरखन-(हिं०क्रि०) रूठना, कोपभवन में जाना ।

अकरण-(सं० पुं०) कर्म का अभाव, कर्म का फल रहित होना, इन्द्रिय रहित ईश्वर । **अकरणीय**-(सं०वि०) करने योग्य ।

अकरा-(हिं०वि०) बहुमूल्य, मोल न लेने योग्य, मँहगा ।

अकराय-(हिं०वि०) निष्फल, व्यर्थ ।

अकराल-(सं०वि०) जो भयंकर न हो, सौम्य, रम्य, सुन्दर ।

अकरास-(हिं०पुं०) आलस्य, शरीर का टूटना ।

अकरी-(हिं०स्त्री०) हलमे बँधा हुआ वह पोला बाँस जिसमे से बोते समय बीज गिराया जाता है ।

अकरुण-(सं०वि०) करुणाहीन, कठोर, निर्दयी ।

अकर्तव्य-(सं०वि०) न करने योग्य, अनुचित ।

अकर्ता-(सं०वि०) कार्य न करने वाला ।

अकर्तृक-(सं० पुं०)बिना कर्ता का ।

अकर्म-(सं०पुं०) बुरा काम, कुकर्म, न करने योग्य कार्य, पाप, अपराध, अधर्म । **अकर्मक**-(सं०पुं०) कर्म रहित क्रिया, व्याकरण में जिस क्रिया का कर्म न हो । **अकर्मण्य**-(सं०वि०) आलसी, सुस्त बेकाम ।

अकर्मा-(हिं०वि०) काम न करनेवाला, **अकर्मान्वित**-(सं०वि०) अयोग्य, पापी, कुकर्मी । **अकर्मिणी**-(हिं०स्त्री०)पापिन, पाप करने वाली । **अकर्मी**-(हिं०पुं०) बुरा कार्य करने वाला, पापी ।

अकर्मी-(सं०स्त्री०) अकर्मिणी ।

अकर्षण-(हिं०पुं०) आकर्षण, खिंचाव ।

अकलङ्क-(सं०वि०) दोष रहित, निष्कलङ्क,पापरहित।**अकलङ्कता**-(सं०स्त्री०) निष्कलंकता, स्वच्छता । **अकलङ्कित**-(सं०वि०) कलंकरहित, निर्दोष ।

अकल-(सं० वि०) अवयव रहित, अंशशून्य, व्यर्थ, निष्फल (हिं०वि०) अखण्ड, निर्गुण, (हिं० पुं०) सिक्ख सम्प्रदाय के अनुसार ईश्वर का एक नाम ।

अकल्क-(सं०वि०) बिना दाँत का,दुष्टता हीन । (स्त्री०) **अकल्का** = मलशून्य ।

अकलखुरा-(हिं० वि०) अकेला भोजन करनेवाला, लालची, स्वार्थी, डाह करने वाला ।

अकलबर, अकलबीर (हिं०पुं०) भाँग की तरह का एक पौधा ।

अकल्पित-(सं० वि० स्त्री०) अकल्पित । न बनाया हुआ, अकृत्रिम, सहज ।

अकल्मष-(सं०वि०) पापरहित, निर्दोष।

अकल्य-(सं०वि०) आरोग्यहीन, रोगी ।

अकल्याण-(हिं०पुं०) अशुभ, अमङ्गल, मन्द, अकुशल, अहित ।

अकष्टबद्ध-(सं०वि०)जो अत्यन्त कष्ट से युक्त न हो।

अकस-(हिं०पुं०) शत्रुता, वैर, द्वेष, डाह, विरोध । **अकसना**-(हिं०क्रि०) शत्रुता करना, द्वेष करना ।

अकसीर-(अ०स्त्री०) अत्यन्त लाभ करने वाली औषधि, सर्व रोगहर औषधि ।

अकस्मात्-(सं०क्रि०वि०) सहसा, अचानक, अनायास, अकारण ।

अकह-(हिं०वि०) न कहने योग्य, बुरा, अनुचित, वर्णन न करने योग्य ।

अकहुवा-(हिं०वि०)अकथ्य,अनिर्वचीय ।

अका-(वि०) मूर्ख,पागल,जड़, निर्बुद्धि ।

अकांड-(सं०-अ+काण्ड) बिना शाखा या डाली का,(क्रि०वि०) अकस्मात्, हठात्

अकाज-(हिं०वि०) दुष्कर्म,कार्य की हानि बिगाड़, हर्ज, विघ्न । **अकाजनी**-(हिं०क्रि०) हानि करना या होना ।

अकाजी-(हिं०वि०) विघ्न करनेवाला, बाधक ।

अकाट्य-(हिं०वि०) जो काटा न जा सके, अटल, दृढ़ ।

अकाण्ड-(सं०वि०) अवयव रहित, बिना डाल और शाखा का, अनवसर, बिना कन्धे का, बिना तीर का, (क्रि०वि०) सहसा हटात्।**अकाण्डजात**-(सं०वि०) जन्म लेते ही मर जाने वाला। **अकाण्डताण्डव**-(सं० नपुं०) वृथा की उछल कूद, व्यर्थ की बकवाद । **अकाण्डपात**-(हिं०वि०)जन्म लेते ही मर जाने वाला ।

अकाथ-(हिं०क्रि०वि०)व्यर्थ, अकारथ ।

अकादर-(हिं०वि०) जो कायर न हो, साहसी, शूरवीर, पराक्रमी ।

अकापट्य-(सं०नपुं०) निश्छलता,

अकाम (हिं०वि०) इच्छा रहित, कामना रहित, निस्पृह (क्रि०वि०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन। **अकामतः**-(अव्य०) बिना प्रयोजन के, व्यर्थ । **अकाम निर्जरा**-(सं०स्त्री०)जैन मत के अनुसार तपस्या करने से जो कर्म का नाश (निर्जरा) होता है ।

अकामा-(सं०स्त्री०)वह नवयौवना जिसमें काम का प्रादुर्भाव न हुआ हो ।

अकामी-(सं०वि०)कामनारहित,निस्पृह जितेन्द्रिय, जिसको किसी बात की चाह न हो ।

अकाय-(सं०पुं०) जिसको शरीर न हो, देहशून्य, निराकार, राहु ग्रह ।

अकार-(सं०पुं०)आकृति,स्वरूप,रचना, बनावट, संगठन, चिह्न, 'अ'-अक्षर ।

अकारज-(हिं०पुं०) कार्य की हानि, हर्ज, हानि ।

अकारण-(सं०वि०) कारणहीन, व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।

अकारथ-(हिं०वि०) बिना लाभ का, वृथा निष्प्रयोजन ।

अकारन-(हिं०वि०) बिना कारण के, अकारण ।

अकारी-(सं०वि०) बिना कर्ता का, कार्य हीन ।

अकार्पण्य-(सं०वि०) कृपणता शून्य, जिसमें कंजूसी न हो ।

अकार्य-(सं०नपुं०) कार्य का न होना, बुरा काम, हानि, दुष्कर्म, हर्ज ।

अकाल-(सं०पुं०) बुरा समय, कुसमय, दुर्भिक्ष,मँहगी,अप्राप्तकाल, अनवसर, शुभ कर्म के अयोग्य समय । **अकाल-कुष्माण्ड** -(सं०पुं०) अपने परि-

वार या कुल को हानि पहुंचाने वाला मनुष्य । **अकालकुसुम**-(सं०नपुं०) असमय का फूल, बिना अवसर की बातचीत । **अकाल जलद**-(सं०पुं०) असमय का मेघ । **अकाल जलोदय**-(स०पुं०) बिना वर्षा के बादलों का देख पड़ना । **अकाल पुरुष**-(स०पु०) सिक्खों के धर्मग्रन्थों में ईश्वर का नाम । **अकालभृत्य**-(स०पु०) दास बनाने के लिये दुर्भिक्ष में बचाया हुआ मनुष्य ।**अकाल मूर्ति**-(सं०स्त्री०) अविनाशी पुरुष । **अकाल मृत्यु**-(स०स्त्री०) असामयिक मृत्यु, अपमृत्यु, समय से पहिले की मृत्यु, **अकालमेघोदय**-(सं०पुं०) विना समय मेघों का देख पड़ना । **अकाल वृष्टि**-(स०पुं०) कुसमय की वर्षा । **अकालिक**-(सं०-स्त्री०) असामयिक, बिना अवसर का ।

अकाली-(सं०पुं०) सिक्खों का एक सम्प्रदाय, इस पंथ वाले अकाल पुरुष का जप करते हैं, सिरपर लोहे का चक्र धारण करते हैं और सिरपर काले रंग की पगड़ी बाँधते हैं ।

अकाव-(हिं०पुं०) अर्क वृक्ष, मदार ।

अकास-(हिं०पु०) आकाश, गगन, आसमान । **अकासकृत**-(हिं०वि०) आकाशकृत, (पुं०) विजली, विद्युत्।

अकासदिया-(हिं०पुं०) वह दीपक जो कार्तिक महिने में बाँस के सहारे बड़ी ऊँचाई पर लटका दी जाती है।

अकासनीम-(हिं०स्त्री०) आकाश निम्ब, सुन्दर पत्तियों वाला एक वृक्ष। **अकासबानी**-(हिं०स्त्री०) आकाश वाणी, देव वाणी । **अकासबेल**-(हिं०स्त्री०) अमर बेल, आकाश बौर ।

अकिञ्चन-(स० वि०) जिसके पास कुछ भी न हो, अति दरिद्र, कंगाल, परिग्रहत्यागी, संग्रहत्यागी, जैनमतानुसार ममता की निवृत्ति ।**अकिञ्चनता**-(संस्त्री०)निर्धनता, दरिद्रता,

अकिञ्चनत्व-(सं० पु०) दरिद्रता, निर्धनता । **अकिञ्चितज्ञ**-(सं०वि०) कुछ न जानने वाला, ज्ञानशून्य ।

अकिञ्चित्कर-(सं०वि०) जो कुछ न करने योग्य हो, असमर्थ, अशक्त ।

अकिल-(हिं० स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि ।

अकिलबहार-(हिं० पुं०) बैजयन्ती का पौधा, इसके फूलों से उत्पन्न काला दाना ।

अकिल्विप-(सं०.वि०) पापरहित ।

अकीरति, अकीर्ति (सं०स्त्री०) अपयश, दुर्नाम । **अकीर्तिकर**-(सं० वि०) अपयश (दुर्नाम) करने वाला ।

अकुण्ठ-(सं०वि०) जो कुण्ठित न हो, तीव्र, प्रतिभायुक्त, कार्यदक्ष ।

अकुटिल-(सं० वि०) जो टेढ़ा न हो, सीधा, निष्कपट । **अकुटिलता**-(स०स्त्री०) सीधापन, निष्कपटता, सिधाई ।

अकुताना-(हिं०क्रि०) घबड़ाना, ऊबना उतावला होना ।

अकुतोभय-(सं० वि०) जिसको किसी का भय न हो, निर्भीक, निःशंक, साहसी ।

अकुप्य-(स०स्त्री०) सोना चाँदी ।

अकुमार-(सं०वि०) जिसकी कुमारावस्था बीत गई हो, युवा ।

अकुल-(स०वि०) परिवार हीन, कुलरहित, जो अच्छे वंश का न हो (पुं०) महादेव, शिव ।

अकुलन-(हिं० पुं०) अभाव, हानि ।

अकुलाना-(हिं० क्रि०) घबड़ाना, व्याकुल होना, ऊबना, शीघ्रता करना, बेचन होना, आवेश में होना ।

अकुलिनी-(हिं०वि०) जो कुलवती न हो, कुलटा, व्यभिचारिणी ।

अकुलीन-(सं०वि०) नीच वंश का, बुरे कुलका, क्षुद्र, कुलहीन, संकर जाति का।

अकुशल-(सं० पुं०) अमंगल, अशुभ, अहित, बुराई (वि०) जो निपुण या दक्ष न हो, अनिपुण, अनाड़ी ।

अकुशलधर्म-(सं० पुं०) धर्म न जानने वाला, पापी स्वभाव का ।

अकूत-(हिं० वि०) जो कूता न जा सके, जिसकी गिनती, तौल या नाप न बतलाई जा सके, अपरिमित, अगणित।

अकूपार-(स० पुं०) जिसका पार थोड़ा न हो, समुद्र, पर्वत, सूर्य, पत्थर, चट्टान, वह कच्छप जिसकी पीठ पर शेषनाग हैं जिसके फन पर पृथ्वी धरी हुई मानी जाती है ।

अकूर्च-(स० वि०) बिना मूँछ का, (पुं०) बुद्धदेव ।

अकूलपाथार-(हिं०पुं०) महासागर, समुद्र

अकूहल-(हिं० वि०) असंख्य, अत्यधिक, बहुत ।

अकृच्छ्र-(स०पु०) जिसको किसी प्रकार का क्लेश या संकट न हो, संकोच रहित, सुगम ।

अकृत-(सं० वि०) बिना किया हुआ, असम्पन्न, असंपादित, बिगाड़ा हुआ, जो अपराध न किया गया हो, जो किसी से बनाया न गया हो, नित्य, प्राकृतिक, मन्द (पुं०) प्रकृति, स्वभाव ।

अकृतकाल-(सं० वि०) जिसके लिये कोई समय स्थिर न किया गया हो ।

अकृतघ्न-(सं०वि०) उपकार न मानने वाला ।

अकृतज्ञ-(स०वि०) किये हुए उपकार को न मानने वाला, कृतघ्न ।

अकृताभ्यागम-(सं० पुं०) बिना किये हुए कर्म की फलप्राप्ति, तर्क शास्त्र का एक दोष ।

अकृतार्थ-(सं०वि०) जिसका कार्य पूरा न हुआ हो, फलों से वञ्चित, असफल।

अकृति, अकृती-(सं० स्त्री०) काम न करने योग्य, जो किसी काम के योग्य न हो, निकम्मा, पापी, अयोग्य । **अकृतित्व**-(सं० नपुं०) अयोग्यता ।

अकृत्य-(स० नपु०) दुष्कर्म, अकार्य, अनुपयुक्त काल में कोई कार्य करना।

अकृत्रिम-(स० वि०) जो काल्पनिक न हो, नैसर्गिक, स्वाभाविक, वास्तविक, सच्चा, आन्तरिक, स्वयं उत्पन्न, हार्दिक, यथार्थ ।

अकृप-(सं०वि०) कृपा रहित, निर्दय।

अकृपण-(सं० वि०) जो कजूस न हो, मुक्तहस्त, उदार ।

अकृपा-(स०स्त्री०) क्रोध, अप्रसन्न, रोष।

अकृष्टपच्य-(स० वि०) जो स्वयं ही अर्थात् बिना जोते बोये उत्पन्न होकर पक जावे ।

अकृष्टकर्म-(स०वि०)निर्दोषता, सदाचार

अकेतन-(स० वि०) जिसके पास घर दुआर न हो, बिना ठिकाने का ।

अकेतु-(सं० पुं०) अज्ञान, ज्ञानरहित,

अकेल, अकेला-(हिं० वि०) जिसका कोई साथी न हो, एकाकी, अद्वितीय, अनुपम, निराला । **अकेले**-(हिं० क्रि० वि०) बिना साथी के, अकेला ही।

अकेहरा-(हिं० वि०) जो दोहरा न हो, एकपरत का, एकहरा ।

अकैतव-(सं०वि०) कपटहीन, निश्छल सदाचारी ।

अकैया-(हिं० पुं०) खुरजी, गोन, कवाजा, पशुओं की पीठपर लदने का थैला या टोकरी ।

अकोट-(स०पु०)सुपारी, असंख्य, करोड़ों।

अकोढ़ई-(हिं० स्त्री०) अक्रूर, नम्र, वह भूमि जो कम पानी सोखती है और जल्दी से सींची जा सकती है ।

अकोतरसौ-(हिं०वि०) एकसौ- एक की संख्या ।

अकोप-(हिं० पुं०) कोप का अभाव, प्रसन्नता ।

अकोर-(हिं०पु०) छाती, अंक, गोद, घूस ।

अकोरना-(हिं०क्रि०) भूनना, तलना।

अकोरी-(हिं० स्त्री०) अंकोल का वृक्ष।

अकोविद-(स०वि०) जो पंडित न हो, मूर्ख, अज्ञानी, (पुं०) ऊख के सिर पर की पत्ती ।

अकोसना-(हि० क्रि०) गाली देना, कोसना, भला बुरा कहना ।

अकौवा-(हिं० पु०) मदार, आक, गले की घंटी ।

अकौटा-(हिं० पु०) पहिये का धुरा ।

अकौटिल्य-(हिं०पुं०) सरलता, निष्कपट

अकौशल-(सं० नपुं०) कुशलता का अभाव, विरोध ।

अक्का-(सं०स्त्री०) माता, अम्मा, पुकारने का शब्द ।

अक्के,दुक्के-(हिं० क्रि० वि०)अकेलेदुकेले

अक्खड़-(हिं०वि०) हठी, उद्धत, उग्रता, लड़ाका, अशिष्ट, निडर, मूर्ख, स्पष्ट वक्ता, खरा, स्थिरप्रतिज्ञ, उच्छृङ्खल न डिगने वाला । **अक्खड़ता**-(हिं० स्त्री०) हठ, अशिष्टता कठोरता, खरापन, मूर्खता ।

अक्खर-(हिं०पुं०) अक्षर, वर्ण, ।

अक्खा-(हिं० पु०) पशुओं की पीठपर लादने का बोरा, खुरजी, पाखड़ी ।

अक्खोमक्खो-(हिं०पु०) एक टोटका जिसको स्त्रियाँ दीपक जलाकर बच्चे के मुख के चारो और फेरती है ।

अक्त-(पु० वि०) व्याप्त, संयुक्त, सफल, परिपूर्ण रंगा हुआ, गीला, भरा हुआ। यह शब्द प्रत्यय की तरह शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है यथा-रक्ताक्त, विषाक्त, इत्यादि ।

अक्ता-(सं०स्त्री०) रात ।

अक्र-(स०वि०) स्थिर, दृढ़ ।

अक्रतु-(स०वि०) संकल्प रहित ।

अक्रम-(स०वि०) जिसमें क्रम न हो, विपरीत, उलटा-पुलटा, क्रम रहित, । **अक्रम सन्यास**-(स०पु०) वह सन्यास जो ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ आश्रमों के पालन न करने पर ही ले लिया जाता है। **अक्रमातिशयोक्ति**-(स०स्त्री०) अर्थालङ्कार का एक भेद जिसमें कारण के साथ ही कार्य सूचित रहता है, यह अतिशयोक्ति का एक भेद है ।

अक्रव्याद-(स०स्त्री०)मांस न खानेवाला।

अक्रान्ता-(सं०स्त्री०) एक वृक्ष विशेष कटैया ।

अक्रिय-(सं०स्त्री०) क्रियारहित, निश्चेष्ट स्तब्ध ।

अक्रिया-(सं०स्त्री०) अप्रशस्त कार्य ।

अक्रीड़-(स०वि०)क्रीड़ाहीन ।

अक्रूर-(सं०वि०) जो क्रूर न हो, कोमल सरल, सुशील, दयालु, अक्रोधी, दयालु (पु०) श्री कृष्ण के चाचा का नाम था ।

अक्रोध-(सं०पुं०) क्रोध का अभाव दया, क्षमा, सहिष्णुता ।

अक्लम-(स०पु०) श्रम का अभाव, थकावट का न होना ।

अक्लान्त-(सं०वि०) ग्लानि रहित ।

अक्लिका-(स०स्त्री०) एक वृक्ष विशेष, नीली ।

अक्लिष्ट-(सं० वि०) बिना क्लेश का दुःख रहित, सहज, सीधा सरल, सुगम।

अक्लिष्टकर्मा-जो बिना कष्ट के कार्य कर सके।

अक्लेष-(स०पु०) क्लेष का अभाव, सुगमता ।

अक्ष-(स० पुं०) जुआ खेलने का पासा, पासे का खेल, चौपड़, छकड़ा, गाड़ी का धुरा, पृथ्वी की धुरी., गाड़ी का जुआ, पृथ्वी के भीतर की वह कल्पित रेखा जिस पर पृथ्वी घूमती है जो पृथ्वी के केन्द्र से होती हुई दोनों ध्रुवों में मिलती है, तराजू के डंडी, व्यापार इन्द्रिय, तूतिया, सोहागा, आँवला, बहेड़ा, रुद्राक्ष, आत्मा, गढ़ड़, सर्प, सोलह माशे की तौल, व्याप्ति, रसाञ्जन, जन्मान्ध, रावण के एक पुत्र का नाम जिसको हनुमान ने मारा था, ग्रहों के भ्रमण

करने का मार्ग। **अक्षक**-(सं०पुं०) पासे से जुआ खेलने वाला, जुआरी।
अक्षकुमार-(सं०पुं०) रावण के एक पुत्र का नाम।
अक्षकूट, अक्षकूटक-(सं०पुं०) आँख की पुतली।
अक्षक्रीड़ा-(सं०स्त्री) चौपड़, पासे का खेल, चौसर।
अक्षक्षत्र-(सं०स्त्री०) अखाड़ा, मल्ल युद्ध का स्थान, दङ्गल।
अक्षज-(सं०नपुं०) वज्र, आँखों से या इन्द्रियों से उत्पन्न, विवाद से उत्पन्न।
अक्षणिक-(सं० वि०) स्थिर, निश्चल।
अक्षत-(सं०वि०) अखण्डित, बिना टूटा हुआ, जिसमें घाव न लगे हों (पुं०) गणित में पूर्णाङ्क (जो भिन्न न हो,) बिना टूटे हुए चावल जो पूजन में व्यवहार होते है, धान का लावा, जव। **अक्षत योनि**-(सं०स्त्री०) वह योनि जिसमे वीर्यपात न हुआ हो, वह कन्या जिसने पुरुष के साथ संसर्ग न किया हो। **अक्षतवीर्य**-(सं०पुं०) जिस पुरुष का ब्रह्मचर्य अखण्ड हो, जिसने स्त्री प्रसङ्ग न किया हो।
अक्षता-(सं०स्त्री०) अक्षत योनि, काकड़ासिंघी नामक औषधि विशेष।
अक्षदर्शक-(सं०वि०) जुआरी, व्यवहार में दक्ष, न्यायाधीश।
अक्षद्यूत-(सं०पुं०) न पासे का जुआ,
अक्षधर-(सं० पुं०) साखू का वृक्ष। विष्णु का चक्र।
अक्षधूत-(सं०पुं०) पास के खेल में चतुर, ठग।
अक्षधूतिल-(सं० पुं०) वृषभ, बैल।
अक्षन्, अक्ष-(सं०नपुं०) नेत्र, आँख।
अक्षपटल-(सं० नपुं०) आँख की पलक, आँख का एक रोग।
अक्षपरि-(सं०पुं०) पासे की वह स्थिति जिससे जुआ में हार होती है।
अक्षपाठक-(सं०पुं०) अर्थशास्त्र, व्यवहार कुशल।
अक्षपाद-(सं०पुं०) न्याय शास्त्र के प्रवर्तक गौतम ऋषि, नैयायिक, तार्किक; महर्षि वेदव्यास ने इनके सिद्धान्त का खण्डनकिया था इसलिये इन्होंने उनका मुख न देखने की प्रतिज्ञा की थी, बाद में जब वेदव्यासजी ने इनको प्रसन्न किया तब इन्होंने पैर में नेत्र उत्पन्न करके इनको देखा और अपनी प्रतिज्ञा दृढ़ रक्खा, इसी कारण से इनका नाम अक्षपाद पड़ा।
अक्षपीड़ा-(सं०स्त्री०) नेत्रों में पीड़ा, आँख का रोग।
अक्षबन्ध-(सं०पुं०) इन्द्रजाल का खेल
अक्षम-(सं० वि०) क्षमारहित, अशक्त असहिष्णु विवश, असमर्थ। **अक्षमता**-(सं० स्त्री०) असामर्थ्य, असहिष्णुता ईर्ष्या
अक्षमा-(सं०स्त्री०) क्षमा का अभाव, ईर्ष्या
अक्षमाला-(सं०स्त्री०) रुद्राक्ष की माला गुरुवशिष्ठ की पत्नी का नाम जो शूद्रा थी।
अक्षय-(सं०पुं०) जिसका क्षय न हो, अनश्वर, कभी नष्ट न होने वाला, शाश्वत, अमर। **अक्षयकुमार**-(सं०पु०) रावण के एक पुत्र का नाम। **अक्षय तृतीया**-(सं०स्त्री०) वैशाख शुक्ल तृतीया; इसी तिथि से सययुग का आरंभ माना जाता है। इस तिथि को हिन्दू लोग पुनीत मानते हैं और गंगा स्नान तथा पुण्य करते हैं। **अक्षय नवमी**-(सं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ल नवमी, इस तिथि से त्रेतायुग का आरंभ मानाजाता है। इस तिथि को हिन्दू लोग पुनीत मानते हैं। **अक्षयवट** (सं०पुं०) बरगद का पूज्य वृक्ष; ऐसा एक प्राचीन वट प्रयाग के किले के भीतर है तथा दूसरा गयाक्षेत्र में है, पुराण के अनुसार इसका नाश प्रलय काल में भी नहीं हुआ था पुराणानुसार इस वृक्षका पूजन करने से अक्षय फल मिलता है। **अक्षय ललिता**-(सं०स्त्री०) भाद्रपद मास की सप्तमी, इस दिन स्त्रियाँ शिव दुर्गा का पूजन करती है।
अक्षया-(सं०स्त्री०) सोमवार की अमावास्या, रविवार की सप्तमी, मंगलवार की चतुर्थी तथा अक्षय तृतीया अक्षया तिथि कहलाती है।
अक्षय्य-(सं०नपुं०) श्राद्ध में पिण्डदान के बाद घृत तथा मधु मिलाकर जो जल पितरों को अर्पण किया जाता है। **अक्षय्योदक**-(सं० नपुं०) पिण्डदान के बाद मधु, तिल मिलाकर जल देना।
अक्षर-(सं०पुं०,नपुं०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु, मोक्ष, जल, गगन, धर्म, तपस्या अपामार्ग (चिड़चिड़ा) आकारादि वर्ण; (वि०) अविनाशी, स्थिर, नित्य, **अक्षर चञ्चु**-(सं०पुं०) सुन्दर अक्षर लिखने वाला, सुलेखक, पण्डित। **अक्षरछन्द**-(सं०नपुं०) वर्णवृत्त, अक्षरों की गणना से रचा हुआ छन्द। **अक्षरजननी**-(सं०स्त्री०) लेखनी, **अक्षरजीवक**-(सं०पुं०) लेखक, सुनीम। **अक्षरजीवी**-(सं०पुं०) लेखक। **अक्षर-अक्षरतूलिका**-(सं०स्त्री०) लेखनी, चित्रकार की कूंची। **अक्षरन्यास**-(सं० पुं०) लेखन, लिपि, तन्त्र के अनुसार अकारादि अक्षरों को क्रम से एक एक करके उच्चारण करना और उसके अनुसार शरीर के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करना। **अक्षरपंक्ति**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का वैदिक छन्द। **अक्षरमाला**-(सं०स्त्री०) वर्णमाला। **अक्षरमुख**-(सं०पुं०) शिष्य, छात्र, चेला। **अक्षरलिपि**-(सं०स्त्री०) अक्षरों के लिखने को रीति। **अक्षरविन्यास**-(सं०पुं०) लिपि, लेख।
अक्षरशः-(सं०क्रि०वि०) अक्षर अक्षर करके; **अक्षरौटी**-(हिं० स्त्री०) वर्णमाला, अक्षरों के लिखने की रीति, सितार पर गत निकालने की क्रिया।
अक्षवार-(हिं०पुं०) अखाड़ा, द्यूतगृह, द्यूतस्थान।
अक्षांश-(सं०पुं०) देखो अक्ष; पृथ्वी की धुरी, जिस अक्षपर पृथ्वी घूमती है।
अक्षि-(सं०स्त्री०) नयन, नेत्र, आँख।
अक्षिगत-(सं०वि०) आँख पर चढ़ा हुआ (वैरी)। **अक्षिविक्षेप**-(सं०पु०) कटाक्ष. सैन। **अक्षिविभ्रम**-(सं०पु०) आँख घुमाना।
अक्षुण्ण-(सं०वि०) बिना टूटा हुआ, सम्पूर्ण, अविकृत।
अक्षौहिणी-(सं०स्त्री०) चतुरंगिणी सेना जिसमें १०९५० पदाति, ६५६१० घोड़े, २१८७० हाथी और २१८७० रथ रहते थे।
अखण्ड-(सं०वि०) विना खण्ड या टुकड़े का, पूर्ण, पूरा, सब। **अखण्डनीय**-(सं०वि०) जिसका टुकड़ा न हो सके, दृढ़, पुष्ट, रिक्त।
अखगरिया-(हिं०पुं०) जिस घोड़े की शरीर को मलते समय चिनगारियाँ निकलें।
अखड़-(हिं०वि) अशिष्ट, गँवार, असभ्य जंगली, अनारी।
अखड़ा-(हिं०पुं०) चँदवा मछलियों के पकड़ने का एक साधन।
अखड़ैत-(हिं०पुं०) बलवान मनुष्य, पहलवान।
अखतीज-(हिं०स्त्री०) अक्षय तृतीया।
अखय-(हिं०वि०) क्षय न होने वाला, स्थिर, अविनाशी, नित्य।
अखरना-(हिं०क्रि०) बुरा लगना, अनुचित जान पड़ना, कष्ट होना।
अखरोट-(हिं०पुं०) कड़े छिलके का एक पहाड़ी फल।
अखा-(हिं०पुं०) महीन आँटा चालने की चलनी, अँगिया (वि०) सम्पूर्ण, पूरा।
अखाड़ा-(हिं०पुं०) मल्लयुद्ध करने का, स्थान, साधुओं का जमघट, दल, मण्डली।
अखाद्य-(सं०वि०) जो खाने योग्य न हो, अभक्ष्य।
अखानी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की टेढ़ी लकड़ी जो पौधेको दाँवते समय डंठल अलगाने के काममें आती है. पचखा।
अखिल-(सं०वि०) सम्पूर्ण, अखण्ड, पूरा, सब।
अखूट-(हिं०वि०) अखण्ड, अक्षय, अति, अधिक, बहुत।
अखेट-(हिं०पुं०) आखेट, मृगया, **अखेटक** (हिं०पुं०) आखेट करनेवाला,
अखोह-(हिं०पुं०) ऊँची नीची भूमि,
अख्याति-(सं०स्त्री०) अप्रसिद्धि, अपकीर्ति, अयश,
अख्यायिका-(हिं०स्त्री०) आख्यायिका, कथा कहानी, किस्सा।
अग-(सं०वि०) न चलनेवाला, स्थावर, टेढ़ा चलने वाला (वि०) सर्प, वृक्ष, पर्वत, सूर्य।
अगड़धत, अगड़धत्ता-(हिं०वि०) लंबा चौड़ा, ऊँचा, तगड़ा, विशालकाय।
अगड़-बगड़-(हिं० वि०) व्यर्थ, अंडबंड, (पुं०) निरर्थक वार्ता या कार्य।
अगणित-(सं०वि०) जिनकी गणना न हो सके, असंख्य, अनगिनती, अनेक,
अगण्य-(सं०वि०) न गिनने योग्य, असंख्य, असार।
अगत-(हिं०क्रि०) हाथी को आगे बढ़ाने के लिये महावत इस शब्द का प्रयोग करते हैं।
अगति-(सं०स्त्री०) बुरी गति, अव्यवस्था, दुर्दशा, नरक, अकालमृत्यु।
अगतिक गति-(हिं०स्त्री०) विवश होकर स्वीकार करना।
अगत्या-(सं०क्रि०वि०) अन्त में, अकस्मात्।
अगद-(सं०पुं०) औषधि, (वि०) आरोग्य, रोगरहित, चंगा।
अगन-(हिं०स्त्री०) अग्नि, आग।
अगनित-(हिं०वि०) अगणित, अनगिनती।
अगनू-(हिं०स्त्री०) अग्निकोण।
अगनेत-(हिं०पुं०) अग्निकोण।
अगम-(हिं० पु०) आगम्य, न जानने योग्य, दुर्गम, दुर्घट, अपार, बहुत गहरा, असंख्य।
अगमानी-(हिं०स्त्री०) अतिथि आदिका आगे जाकर स्वागत करना (पुं०) नेता, सरदार
अगम्य-(सं०वि०) न जानने योग्य, विकट, दुर्बोध, अपार, अज्ञेय, असंख्य।
अगम्या-(सं०स्त्री०) गमन न करने योग्य।
अगम्यागमन-(सं०पुं०) सम्भोग न करने योग्य स्त्री के साथ सहवास।
अगर-(हिं०पुं०) एक सुगन्धित वृक्ष विशेष, अगरु,
अगरई-(हिं०वि०) अगरु के रंग का, कालापन लिये सुनहले रंग का।
अगरना-(हिं०क्रि०) आगे बढ़ना, भागना।
अगरपार-(हिं०पुं०) क्षत्रिय जाति का एक भेद।
अगरबत्ती-(हिं०स्त्री०) धूपबत्ती जिसमें अगरु तथा अन्य सुगन्धित द्रव्य पड़े होते हैं।
अगरवाल, अगरवाला-(हिं०पुं०) वैश्य वर्ण की एक शाखा, ये लोग पंजाब प्रान्त में अगरोहा नामक प्राचीन नगर के आदि निवासी थे, इसीसे इनका नाम अगरवाला पड़ा। इनमें से अधिकांश वैष्णव तथा जैन होते हैं।
अगरसार-(हिं०पुं०) अगरु का सत्व।
अगरी-(हिं०स्त्री०) देवदार, चूहे का विष उतारने की जड़ी, अर्गला, सिटकिनी।
अगरु-(सं०नपुं०) अगरकी लकड़ी, ऊद।
अगरू-(हिं०पुं०) अगर, ऊद।
अगरो-(हिं०वि०) पहिला, अगला,

अधिक, श्रेष्ठ।

अगर्व-(स-त्रिं०) गर्वरहित, बिना अभिमान का, भोलाभाला।

अगर्हित-(सं०त्रि०) निन्दा न किया हुआ, प्रशंसित।

अगलहिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका पक्षी।

अगला-(हिं०वि०) आगे का, पहिला, सामने का, प्राचीन, आगामी, पुराना, दूसरा, (पुं०) अग्रसर, नेता, प्रधान पुरुष, पूर्व पुरुष, चचल आदमी, धूर्त मनुष्य।

अगवाई-(हिं०स्त्री०) स्वागत करने के लिये आगे जाना, अगवानी, अभ्यर्थना।

अगवाड़ा-(हिं०पु०) घर के सामने का स्थान।

अगवान-(हिं०पुं०) स्वागत करने के लिये आगे जाने वाला, अगवानी करनेवाला। **अगवानी**-(हिं०स्त्री०) आगे जाकर स्वागत, विवाह के समय कन्यापक्ष वालों का वर पक्षवालों की अभ्यर्थना। (पुं०) अग्रसर, अगुआ, नेता।

अगवार-(हिं०पुं०) घर के सामने का स्थान, गाँव का चमार, अन्न की ढेर का वह अंश जो खरिहान में से हरवाहे को देने के लिये अलग दिया जाता है, ओसाती समय जो हलका अन्न भूसे के साथ उड़कर आगे को चला जाता है।

अगवासी-(हिं०स्त्री०) हल की वह लकड़ी जिसमें फार जड़ा जाता है, अगवार।

अगसारी-(हिं०वि०) अग्रसर, आगेका।

अगस्ति-(सं०पुं०) अगवार, बक वृक्ष, मौलसिरी, दक्षिण दिशा।

अगस्तिया-(हिं०पु०) एक वृक्ष विशेष।

अगस्त्य-(सं०पुं०) वक वृक्ष, एक तारे का नाम जो भाद्रपद मास में उदय होता है, एक महर्षि जो मित्रावरुण के पुत्र थे। **अगस्त्यकूट**-(सं०पुं०) भारतवर्ष के दक्षिण में इस नाम का पर्वत है, इसमें से ताम्रपर्णी नदी निकली है।

अगस्त्यगीता-(सं०स्त्री०) महाभारत के शान्ति पर्व में लिखी हुई अगस्त्य मुनि से कही हुई विद्या। **अगस्त्यचार**-(सं०स्त्री०) अगस्त्य नक्षत्र का उदय। **अगस्त्य संहिता**-(सं०स्त्री०) अगस्त्यमुनि रचित शास्त्र। **अगस्त्योदय**-(सं०पुं०) दक्षिण दिशा में अगस्त्य नक्षत्र का उदय

अगह-(हिं०वि०) जो ग्रहण न किया जा सके, न वर्णन करने योग्य, कठिन।

अगहन-(हिं०पुं०) अग्रहायण, मार्गशीर्ष, वेद की प्राचीन शैली के अनुसार वर्ष का पहिला महीना, उत्तरी भारत में चैत्र में वर्ष आरंभ होता है तदनुसार नवाँ महीना। **अगहनियाँ**-(हिं०वि०) अगहन संबन्धी, वह धान जो अगहन के महीने में काटा जाता है। **अगहनी**-(हिं०वि०) अगहन या मार्गशीर्ष में उत्पन्न होने वाली।

अगहर-(हिं०वि०, क्रि०वि०) पहिला, आगे का, पहिले।

अगहाट-(हिं०पुं०) वह भूमि जो बहुत दिनों से किसी के अधिकार में रही हो और उससे निकाली न जा सके।

अगहुँड-(हिं०वि०) अग्रगामी, आगे चलने वाला, मुख्य, अगुआ।

अगाउनी-(हिं०क्रि०वि०) सामने, पहिले, आगे।

अगाऊ-(हिं०वि०) अग्रिम, (क्रि०वि०) पहिले से।

अगाड़-(हिं०पुं०) आगे का भाग, हुक्के की निगाली, ढेकुल की लकड़ी।

अगाड़ा-(हिं०पुं०) यात्री की पहिले से भेजी हुई सामग्री, कछार।

अगाड़ी, अगाड़ू-(हिं०क्रि०वि०) भविष्य में, सामने, आगे, पहिले (स्त्री०) पदार्थ का अग्रभाग, घोड़े की गर्दन में बाँधने की रस्सी, सेना का प्रथम आक्रमण।

अगात्र-(सं०वि०) बिना शरीर का।

अगाध-(सं०वि०) बहुत गहरा, अथाह, असीम, गम्भीर, लोभहीन, अपार।

अगामें-(हिं०क्रिं०वि०) आगे, पहिले।

अगार-(सं०नपु०) आगार, घर।

अगारी-(हिं०क्रि०वि०) अगाड़ी।

अगाव-(हिं०पु०) अगौरा, ऊख के पौधे के ऊपर का भाग।

अगास-(हिं०पु०) आकाश, द्वार पर का चबूतरा।

अगासी-(हिं०स्त्री०) पगड़ी, चील का चीत्कार।

अगिआना-(हिं०क्रि०) गरम होना, जलन जान पड़ना।

अगिन-(हिं०स्त्री०) अग्नि, आग।

अगिनबोट-(हिं०पु०) धुवांकस जहाज, स्टीमर।

अगिनित-(हिं०वि०) अगणित, अनगिनती।

अगिया-(हिं०स्त्री०) अग्नि, आग, एक प्रकार की घास जो कोदो और ज्वार के छोटे पौधों को जला देती है, नीबू के समान गन्ध की एक घास, पशुओं का एक रोग, राजा विक्रमादित्य के एक वैताल का नाम।

अगिया-कोइलिया-(हिं०पुं०) राजा विक्रमादित्य के इन दोनों नामों के सिद्ध वैताल। **अगियावैताल**-(हिं० पुं०) मुँह से आग फेंकने वाला भूत, राजा विक्रमादित्य का एक सिद्ध वैताल।

अगिर-(सं०पुं०) अग्नि, स्वर्ग, सूर्य, राक्षस।

अगिरों-(हिं०स्त्री०) घर के सामने का सहन या मैदान।

अगिला-(हिं०वि०)पहिला, सामने का।

अगिहाना-(हिं०पु०) अग्नि रखने का स्थान, चूल्हा, अँगीठी, भट्ठी।

अगींठा-(हिं०पु०) बड़ी अँगीठी, भट्ठा।

अगीत-पछीत-(हिं०क्रि०वि०) आगे पीछे इधर उधर, (पुं०) सामने और पीछे का भाग।

अगु-(सं०पु०) किरणरहित, राहु ग्रह।

अगुआ-(हिं०पु०) आगे जाने वाला, मार्गदर्शक, सरदार, नेता, मुखिया।

अगुआई-(हिं०स्त्री०) पथप्रदर्शन का कार्य, मुखियापन। **अगुआना**-(हिं० क्रि०) मार्ग दिखलाना, मुखिया या नेता बनना।

अगुण-(स०पुं०,वि०) गुणरहित, निर्गण, दोष।

अगुणज्ञ-(सं०वि०) गुणों को न जानने वाला, परख न करनेवाला।

अगुणी-(हिं०वि०) गुणहीन, गँवार।

अगुन-(हिं०पुं०) अगुण, निर्गुण, दोष।

अगुरु-(सं०नपुं०) अगुरुचन्दन, शीशम का वृक्ष (वि०) जो गुरु न हो, गौरवहीन।

अगुवा-(हिं०पुं०) आगे चलने वाला, पथप्रदर्शक, मुखिया, नेता।

अगूढ़-(सं०वि०) अगुप्त, जो गुप्त न हो स्पष्ट, प्रगट, सरल। **अगूढगन्ध [न्धा]** (सं०नपुं०) जिसकी गन्ध छिप न सके, हिङ्गु, हींग।

अगृह्य-(सं०वि०) न ग्रहण करने योग्य।

अगेन्द्र-(स०पुं०) पर्वतों का राजा हिमालय, सुमेरु।

अगेला-(हिं०पुं०) हाथ में पहिरने का सबसे आगे का आभूषण, भूसे के साथ उड़ने वाला हलका अन्न।

अगेह-(स०त्रि०) जिसके पास घरबार न हो।

अगैरा-(हिं०पुं०)कृषि का पहिला अन्न।

अगोई-(हिं०वि०) जो गुप्त न हो, प्रगट।

अगोचर-(स०त्रि०) जो इन्द्रियों से न जाना जा सके, अज्ञात, अप्रगट, अबोध्य।

अगोट-(हिं०स्त्री०) रोक, भीत, नीव।

अगोटना-(हिं०क्रि०) रोकना, अटकाना, पकड़ रखना।

अगोता-(हिं०क्रि०वि०) सन्मुख, आगेकी ओर; (पुं०) स्वागत।

अगोरदार-(हिं०पुं०) पहरुआ, रक्षक, चौकीदार। **अगोरना**-(हिं०क्रि०) पहरा देना, रखवाली करना, रक्षा करना, रोकना, प्रतीक्षा करना, छेंकना। **अगोरा**-(हिं०पुं०) पहरुआ, रखवाला। **अगोरिया**-(हिं०पुं०) खेत की या वृक्ष के फलों की रखवाली करने वाला मनुष्य।

अगोही-(हिं०पुं०) नोकीली सींघवाला बैल।

अगोड़ी-(हिं०स्त्री०) ऊख का ऊपरी भाग

अगौढ़-(हिं०पुं०) अग्रिम, पहिले दिया जाने वाला रुपया।

अगौनी-(हिं०स्त्री०) अगवानी, अभ्यर्थना, (क्रि०वि०) आगे, पहिले।

अगौरा-(हिं०पुं०) ऊख का ऊपरी भाग।

अगौली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की नाटी ऊख, नाटा कद का गन्ना।

अगौहैं-(हिं०क्रि०वि०) अगाड़ी, सामने, आगे, आगे की ओर।

अग्नायी-(सं०स्त्री०) अग्नि देवता की स्त्री, स्वाहा, त्रेतायुग।

अग्नि-(सं०पु०) पावक, वह्नि, अनल, आग, वैद्यक मत के अनुसार अग्नि के तीन भेद है:—(१) **भौमाग्नि**-जो लकड़ी इत्यादि के जलने से उत्पन्न होती है (२) **दिव्याग्नि**-जो आकाश में विद्युत रूप में देख पड़ती है (३) **जठराग्नि**-जो नाभि के ऊपर और हृदय के नीचे रहकर अन्न को पचाती है। कर्मकाण्ड के अनुसार अग्नि ६ है (१) गार्हपत्य (२) आहवनीय (३) दक्षिणाग्नि (४) सभ्याग्नि (५) आवसथ्य (६) औपासनाग्नि। ऋगवेद की उत्पत्ति अग्नि से मानी जाती है, वेद में अग्नि के मन्त्र भी बहुत है। अग्नि के सात जिह्वा निम्न लिखित है-काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता। यह दक्षिण पूर्व कोण के अधिष्ठाता देवता हैं।

अग्निक-(सं०पुं०) इन्द्रगोप, बीरबहूटी नाम का एक कीड़ा। **अग्निकण**-(स०पु०) स्फलिङ्ग, चिनगारी।

अग्नि कर्म-(सं०नपुं०) होम, चिता में आग लगाने का कार्य। **अग्नि कारिका**-(सं०स्त्री०) भूख बढ़ाने वाली औषधि। **अग्निकार्य**-(सं०नपु०) आग जलाने का कार्य, हवन। **अग्निकाष्ठ**-(सं०नपुं०) अगर की लकड़ी। **अग्निकुक्कुट**-(सं०पुं०) लाल पक्षी। **अग्निकुण्ड**-(सं०नपुं०)होम करने का कुण्ड।

अग्निकुमार-(सं०पुं०) कुमार कार्तिकेय। **अग्निकुल**-एक राजवंश विशेष। **अग्नि केतु**-(स०पुं०) ऊर्ध्वगामी अग्नि की ज्वाला। **अग्निकोण**-(सं०पुं०) पूर्व और दक्षिण का कोण। **अग्नि क्रिया**-(सं०स्त्री०) अन्तेष्टि क्रिया, शव जलानेकी क्रिया। **अग्नि क्रीड़ा**-(सं०स्त्री०) आग का खेल। **अग्नि गर्भ**-(सं०पुं०) सूर्यकान्त मणि; (स्त्री०) शमी का बृक्ष, बबूल, अग्नि गर्भ पर्वत, ज्वालामुखी पहाड़। **अग्निगर्भा**-(सं०स्त्री०) शमी लता। **अग्नि गृह**-(सं०पुं०) जिस घर में हवन किया जावे। **अग्नि घृत**-(सं०नपुं०) क्षुधावर्धक औषधि युक्त घृत। **अग्निचक्र**-(स०नपुं०) तन्त्रानुसार दोनों भौंहों के बीच का स्थान जिसमें बिजली के समान प्रकाश रहता है (नेत्रत्रय)।

अग्निचित्-(सं०त्रि०) अग्नि होत्री।

अग्निज-(सं०पुं०) कार्तिकेय, सुवर्ण, सोना। **अग्निजन्मा**-(सं०पुं०) कार्तिकेय, सुवर्ण, सोना। **अग्निजार**-(अग्निजाल)-(सं०पुं०) एक वृक्ष

विशेष। **अग्नि जिह्वा**-(सं०स्त्री०) अग्नि की सात शिखा। **अग्निज्वाला**-(सं०स्त्री०) अग्नि शिखा, आग की लपट। **अग्निझाल**-(हि०स्त्री०) जलपिप्पली नाम की औषधि। **अग्नि तापस**-(सं०पुं०) अपने चारो ओर अग्नि जलाकर तपस्या करनेवाला। **अग्नि-तुण्डी**-(सं०स्त्री०) अग्निमान्द्य दूर करने की विशेष औषधि। **अग्निद**-(सं०पुं०) आग लगानेवाला, शत्रु। **अग्निदग्ध**-(सं०वि०) आगसे जलाया हुआ। **अग्नि दमनी**-(सं०स्त्री०) मकोय। **अग्निदाता**-(सं०पुं०; स्त्री० अग्निदात्री) अन्त्येष्टि क्रियामे मुखाग्नि देने वाला स्वजन। **अग्नि दाह**-(सं०पुं०) आग जलाना, शव फूकना। **अग्नि दीपक**-(सं०वि०) भूख को बढाने वाली (औषधि)। **अग्नि देवता**-(सं०स्त्री०) अग्नि जो देवता माने जाते हैं। **अग्निदेवा**-(सं०स्त्री०) कृत्तिका नक्षत्र। **अग्निधान**-(सं०नपुं०) अग्नि होत्र का घर। **अग्निनक्षत्र**-(सं०नपुं०) कृत्तिका नक्षत्र। **अग्निनयन**-(सं०पुं०) देवता, अग्नि के नेत्र। **अग्निनिर्वापण**-(सं०नपुं०) अग्नि को बुझा देना। **अग्निनेत्र**-(सं०नपुं०) देवता, लाल आँख। **अग्नि परिक्रिया**-(सं०स्त्री०) हवन इत्यादि से अग्नि की पूजा। **अग्नि परीक्षा**-(सं०स्त्री०) सोना चाँदी को आग में डाल कर और तपाकर इनकी विशुद्धता की परीक्षा करना, जलती हुई अग्नि पर स्त्रियों को चलाकर इनके दोषादोष की जाँच करने की विधि। **अग्निपुराण**-(सं०नपुं०) अठारह पुराणों मे से आठवाँ पुराण जिसको अग्नि ने वसिष्ठ को सुनाया था। इसमें मन्त्र, यन्त्र, तथा औषधियों का वर्णन हैं, नाना प्रकार के विविध देवताओं की पूजनविधि तथा साहित्य विद्या, छन्द शास्त्रयोग शास्त्र और ब्रह्मज्ञान विषयों का भी वर्णन है। **अग्निप्रतिष्ठा**-(सं०स्त्री०)शुभ कार्य में अग्निस्थापन। **अग्निप्रस्तर**-(सं०पुं०) चकमक, पथरी, आग उत्पन्न करनेवाला पत्थर। **अग्निबाण**-(सं०पुं०) एक प्रकार का बाण जिसके चलाने से आग निकलती थी। **अग्निबाहु**-(सं०पुं०) एक राजपुत्र का नाम, धूम्र, धुवाँ। **अग्निभ**-(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना, लाल पदार्थ, कृत्तिका नक्षत्र। **अग्निभू**-(सं०पुं०) कार्तिकेय, सुवर्ण, जल। **अग्निमणि**-(सं०नपुं०) सूर्यकान्त मणि, चकमक पत्थर। **अग्निमन्थन**-(सं० नपुं०) अरणि द्वारा संघर्ष से अग्नि उत्पन्न करना। **अग्नि मान्द्य**-(सं०नपुं०) अजीर्ण, भूख का न लगना, मन्दाग्नि, पाचन शक्ति में न्यूनता। **अग्निमारुति**-(सं०पुं०) अगस्त्यमुनि। **अग्निमित्र**-(सं०पुं०) शुङ्गवंश के द्वितीय राजा जो मगध देश में राज्य करते थे। **अग्निमुख**-(सं०पुं०) देवता, ब्राह्मण, चिता, भिलावाँ नामक औषधि। **अग्निमुखी**-(सं०स्त्री०) भिलावे का वृक्ष, गायत्री मन्त्र। **अग्नियुग**-(सं०नपुं०) ज्योतिष के अनुसार पाँच वर्ष का काल। **अग्निरक्षण**-(सं०नपुं०) अग्निहोत्र, अग्नि से रक्षा करने का मन्त्र। **अग्नि-रूप**-(सं० वि०) अग्नि के समान वर्ण का, परितप्त। **अग्निरेतस्**-(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना। **अग्निलोक**-(सं०पुं०) सुमेरु पर्वत के नीचे का प्रदेश। **अग्निवक्र**-(सं०पुं०) भिलावे का वृक्ष। **अग्निवत्**-(सं०वि०) अग्नि तुल्य। **अग्निवधू**-(सं०स्त्री०) दक्ष की कन्या। **अग्निवर्धक**-(सं०वि०) भूख बढाने वाली औषधि। **अग्निवल्लभ**-(सं पुं०) साल का वृक्ष, साखू का पेड़। **अग्नि-वाह**-(सं०पुं०) आग जलानेवाला पदार्थ, बकरा, धुवाँ। **अग्निवाहन**-(सं०पुं०) अग्नि का रथ, बकरा। **अग्निविकार**-(सं०पुं०) भूख न लगने का रोग, क्षुधा न लगना। **अग्नि-विद्या**-(सं०स्त्री०) अग्निहोत्र। **अग्नि-विन्दु**-(सं०वि०) स्फुलिङ्ग, चिनगारी। **अग्निवीज, अग्निवीर्य**-(सं०नपुं०)सुवर्ण, सोना। **अग्निवृद्धि**-(सं०स्त्री०) क्षुधा में वृद्धि, भूख अधिक लगना। **अग्निवेश**-(सं०पुं०) महर्षि आत्रेय के शिष्य जो प्राचीन समय में पाञ्चाल देश में राज्य करते थे। **अग्निव्रत**-(सं०नपुं०) अग्नि संस्कार। **अग्नि-शर्मा**-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम जो बड़े क्रोधी थे। **अग्निशाला**-(सं०नपुं०) अग्नि रखने का स्थान। **अग्निशिखा**-(सं०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला, कुसुम वृक्ष, कुङ्कुम, सुवर्ण, सोना। **अग्निशुद्धि**-(सं०स्त्री०) अग्नि द्वारा शुद्ध करने की विधि, अग्नि परीक्षा। **अग्निशेखर**-(सं०पुं०)कुङ्कुम का वृक्ष, केसर का पौधा, केशर। **अग्निश्री**-(सं०स्त्री०) अग्नि की प्रभा। **अग्निष्टोम**-(सं०पुं०) स्वर्ग प्राप्ति के लिये किया जानेवाला एक यज्ञ जिसमें सोम रस की आहुति देकर सोम रस पिया जाता है। इस यज्ञ में सोलह ऋत्विक् रहते है तथा इस यज्ञ को करने का अधिकार केवल ब्राह्मण अग्निहोत्रीं को होता है। **अग्निष्टोम याजी**-जिस ब्राह्मण ने इस यज्ञको किया हो। **अग्नि-संस्कार**-(सं०पुं०) दाह क्रिया, शव दाह, **अग्निसखा**-(सं० पुं०) अग्नि देवा का मित्र, वायु। **अग्निसन्दी-पन**-(सं०वि०) जठरानल को तीव्र करने की औषधि। **अग्निसम्भव**-(सं०पुं०) अग्नि से उत्पन्न होनेवाला पदार्थ, जंगली केशर, सुवर्ण, **अग्निसहाय**-(सं०पुं०) वायु, धुवाँ। **अग्निसाक्षिक**-(सं०त्रि०) अग्नि को साक्षी देने वाला। **अग्निसात्**-(सं० त्रि०) अग्नि द्वारा भस्म किया हुआ। **अग्निसाध्य**-(सं०त्रि०) जो अग्नि से जलाया जा सके, अग्नि-दाह्य। **अग्निसार**-(सं०नपुं०) रसा-ञ्जन। **अग्निसारा**-(सं०स्त्री०) फल-शून्य शाखा, मंजरी। **अग्निस्तोक**-(सं०पुं०) स्फुलिङ्ग, चिनगारी। **अग्निस्तोम**-(सं०) देखो अग्निष्टोम। **अग्निहानि**-(सं०पुं०) अग्निमान्द्य। **अग्निहोत्र**-(सं०नपुं०) प्रतिदिन प्रातः-काल तथा सन्ध्या को मन्त्र द्वारा स्थापित अग्नि में हवन करने का यज्ञ। इसमे अग्नि अहोरात्र जलती हुई रक्खी जाती हैं। **अग्निहोत्री**-(सं०पुं०) अग्निहोत्र करने वाला ब्राह्मण।

अग्नीय-(सं०वि०) अग्नि के समीप का।

अग्नीष्टक-(सं०नपुं०) मसालों से बनाई हुई ईंट जो अहोरात्र आग मे रहने पर भी नष्ट नहीं होती।

अग्न्यस्त्र-(सं०नपुं०) अग्निबाण, तोप, बन्दूक, बमगोला, तमञ्चा इत्यादि जो बारूद से चलाये जाते है।

अग्न्यागार-(सं०नपुं०) अग्निहोत्र का घर।

अग्न्यात्मक-(सं०त्रि०) अति कठोर हृदय वाला, अतिक्रूर।

अग्न्याधान-(सं०नपुं०) अग्निहोत्र याग।

अग्न्याधेय-(सं०पुं०) अग्निहोत्री।

अग्न्यालय-(सं०पुं०) अग्निहोत्र का घर

अग्न्याशय-(सं०पुं०) पेट की जठराग्नि का स्थान।

अग्न्युत्पात-(सं०पुं०) आग लगना, आकाश से अग्नि की वर्षा, उल्का-पात, धूम्रकेतु।

अग्न्युद्धार-(सं०पुं०) अरणि द्वारा यज्ञ करने के लिये आग निकालना।

अग्य-(सं०अव्य०) मूर्ख।

अग्यारी-(हि०स्त्री०) धूप देने का पात्र, धूपदानी।

अग्र-(सं०नपुं०) ऊपरी भाग, शिखर, चोटी, नोक, आगे का भाग, अव-लम्बन, समूह, (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, बड़ा, प्रधान, प्रथम, अगला। **अग्र-कर**-(सं०पुं०) दहिना हाथ। **अग्र-काय**-(सं०पुं०) शरीर का अगला भाग। **अग्रगण्य**-(सं०त्रि०) जिसकी गणना पहिले की जावे, प्रथम, अगुआ, नेता, श्रेष्ठ। **अग्रगामी**-(सं०त्रि०) आगे जानेवाला, पुरो-गामी, प्रधान, नेता। **अग्रज**-(सं० पुं०) बड़ा (जेठा) भाई, जिसका जन्म पहिले हुआ हो, नेता, विष्णु, ब्राह्मण। **अग्रजङ्घा**-(सं०स्त्री०) जाँघ का अगला भाग। **अग्रजन्मा**-(सं० पु०) ज्येष्ठ भ्राता, बड़ा भाई, ब्रह्मा, ब्राह्मण। **अग्रजात**-(सं०पुं०) जिसका जन्म पहिले हुआ हो. जेठा भाई, बड़ा भाई, ब्राह्मण। **अग्र-जाति**-(सं०पुं०) मुख्य जाति, ब्राह्मण। **अग्रजिह्वा**-(सं०स्त्री०) जीभ का अगला भाग। **अग्रणी**-(सं०स्त्री०) अगुआ, नेता, श्रेष्ठ, स्वामी, मालिक। **अग्रतः**-(सं०अव्य०) आगे, पहिले। **अग्रदानी**-(सं०पुं०) निकृष्ट दान देने वाला ब्राह्मण, महाब्राह्मण, महा-पात्र। **अग्रदानीय**-(सं०पुं०) प्रेत कर्म का दान लेने वाला महाब्राह्मण। **अग्रद्वीप**-(सं०नपुं०) जो टापू सबसे पहिले जल के बाहर निकल आया हो। **अग्रधान्य**-(सं०नपुं०) वह अन्न जो पहिले उत्पन्न हो, बाजरा। **अग्रपश्चात्**-(सं०पुं०) आगा पीछा। **अग्रनख**-(सं०पुं०) नख का अगला भाग। **अग्रनासिका**-(सं०स्त्री०) नाक का अगला भाग। **अग्रनिरूपण**-(सं०नपुं०) पूर्वज्ञान, भविष्य वाणी। **अग्रपर्णी**-(सं०स्त्री०) सतावर (औ-षधि)। **अग्रपाणि**-(सं०पुं०) हाथ का अगला भाग. दाहिना हाथ। **अग्रपुष्प**-(सं०पुं०) जो फूल पहिले फूला हो, बेंत का वृक्ष। **अग्रपूजा**-(सं०स्त्री०) पहिली पूजा। **अग्रपेय**-(सं०नपुं०) जो पहिले पिया जावे। **अग्रभाग**-(सं०पुं०) शिखाग्र, चोटी, आगे का भाग, किनारा, छोर। **अग्रभुक्**-(सं०पुं०) बिना देवता या पितर को अर्पण किये स्वयं भोजन कर लेना; (वि०) भुक्खड़, पेटू। **अग्रभू**-(सं०पुं०) जेठा भाई, ब्राह्मण। **अग्रभूमि**-(सं०स्त्री०) आगे की भूमि। **अग्रमहिषी**-(सं०स्त्री०) अभिषेक की हुई प्रधान रानी। **अग्रमांस**-(सं० नपुं०) फुफ्फुस, फेफड़ा। **अग्रमुख**-(सं०नपुं०) मुख का अगला भाग **अग्रयण**-(सं०नपुं०) अग्रहन महीना। **अग्रयाण, अग्रायण**-(सं०नपुं०) आगे जाने वाली सेना। **अग्रयायी**-(सं० त्रि०) आगे जानेवाला, अगगामी।

अग्रयोधा-(सं०पुं०) सेना के आगे लड़ने वाला योद्धा। **अग्रलोहिता**-(सं०स्त्री०) लाल शिखावाला पौधा, चिलारी का साग। **अग्रवर्ती**-(सं०त्रि०) आगे रहने वाला, नेता, अगुआ।

अग्रवाल-(हि०पुं०) अगवाला, वैश्य वंश की एक शाखा।

अग्रवीज-(सं०नपुं०) जो वृक्ष डाल लगाने से उत्पन्न हों।

अग्रवीर-(सं०पुं०)सेना का प्रधानयोद्धा।

अग्रव्रीहि-(सं०स्त्री०) कृषिफल का अन्न।

अग्रशोची-(सं०पुं०) आगे से विचार कर लेनेवाला, दूरदर्शी।

अग्रसन्धाती-(सं०स्त्री०) यमराज की बही जिसमें प्राणियों के पाप पुण्य का लेखा रहता है।

अग्रसन्धान-(सं०पुं०) यमराज का लेखक, चित्रगुप्त।

अग्रसन्ध्या-(सं०स्त्री०) सन्ध्या का अग्र-भाग, तड़का।

अग्रसर-(सं०वि०) आगे चलने वाला, अग्रगामी, नेता, अगुआ ।
अग्रसारा-(सं०स्त्री०) विना फूल का डंठल, पौधे की मंजरी ।
अग्रसेन-(सं०पुं०) राजा जनमेजय का एक पुत्र ।
अग्रह-(सं०पुं०) जिसने विवाह न किया हो, वानप्रस्थ सन्यासी ।
अग्रहायण-(सं०पुं०) हाथ का अगला भाग, हाथी के सूंड़ का अग्रभाग, अगहन महीना ।
अग्रहार-(सं०पुं०) खेत की उपज का वह अन्न जो देवता या ब्राह्मण को अर्पण करने के लिये अलग कर दिया जावे, राजा की दी हुई ब्राह्मण को जागीर ।
अग्रांश-(सं०पुं०) अग्रभाग ।
अग्रांशु-(सं०पुं०) प्रकाश की किरण का अन्त ।
अग्राक्षि-(सं०नपुं०)आँख का अगला भाग
अग्राङ्गुलि-(सं०स्त्री०) अंगुली का छोर ।
अग्राणीक-(सं०नपुं०) आगे जानेवाली सेना ।
अग्राम्य-(सं०पुं०) नगरवासी जंगली ।
अग्राशन-(सं०नपुं०) देवता को अर्पण करने के लिये भोजन करने से पहिले रक्खा हुआ रींधा हुआ अन्न ।
अग्रासन-(सं०नपुं०) जो आसन ब्राह्मण के पहिले बैठने के लिये दिया जाय ।
अग्राह्य-(सं०वि०) न ग्रहण करने योग्य, स्वीकार न करने योग्य, त्याज्य ।
अग्रिम-(सं०पु०) आगे का, श्रेष्ठ, प्रधान, पहिले का, उत्तम, ज्येष्ठ ।
अग्रिमा-(सं०स्त्री०) शरीफा ।
अग्रिय, अग्रीय-(सं०पु०) बड़ा भाई, पहिला फल ।
अग्रु-(सं०स्त्री०) अंगुली, नदी ।
अग्रे-(सं०अव्य०) आदि में सामने, पहिले
अग्रेग, अग्रेगा, अग्रेगू-(सं०त्रि०) अग्रगामी, नेता ।
अग्रेया-(सं०वि०) आगे पीने वाला ।
अग्र्य-(सं०वि०) श्रेष्ठ, नेता, अग्रसर ।
अघ-(सं०नपु०) अधर्म, पाप, दुःख, दुर्घटना, अपराध, व्यसन, निन्दा, कंस का सेनापति जो एक असुर था ।
अघकृत्-पाप करने वाला । **अघखानि**-पाप का भंडार ।
अघट-(हिं०वि०) अयोग्य, अनुपयुक्त, जो ठीक न हो, बेठीक । **अघटित**-(हिं०वि०) न होनेवाला, असंभव ।
अघन-(सं०वि०) जो गाढ़ा न हो, पतला ।
अघनाशक-(सं०त्रि०) पाप को दूर करने वाला ।
अघभोजी-(सं०पुं०) अयोग्य भोजन करने वाला ।
अघमय-(सं०वि०) पाप पूर्ण ।
अघमर्षण-(सं०नपुं०) पाप नाश करने वाला मन्त्र ।
अघ्रम-(सं०पुं०) शीतकाल, जिसमें शरीर में पसीना न हो ।
अघवाना-(हिं०क्रि०) भोजन से संतुष्ट करना, पेटभर खिलाना ।
अघविष-(सं०पु०) सर्प, साँप ।
अघहरण-(सं०नपुं०) पाप की निवृत्ति ।
अघहार-(सं०पुं०) पवित्र पुरुष ।
अघाई-(हिं०स्त्री०) तृप्ति,सन्तोष,पेटभर खाने की अवस्था ।
अघाट-(हिं०पुं०) जहाँ पर घाट न हो ।
अघात-(हिं०पुं०) आघात,चोट ।
अघाती-(हिं०वि०) चोट पहुंचानेवाला ।
अघाना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना, इच्छा पूर्ण होना, छकना, मनभर जाना, पेट भरना,भोजन से तृप्त होना,उगताना ।
अघायु-(सं०त्रि०) पाप करने वाला, पापी, हत्यारा ।
अघारि-(सं०पुं०)पाप नाशक, श्रीकृष्ण ।
अघाश्व-(सं०पुं०) सर्प, बुरा घोड़ा ।
अघासुर-(सं०पुं०) एक असुर जो पूतना का भाई था श्रीकृष्णने इसका वध किया था ।
अघी-(हिं०वि०) कुकर्मी, पापी ।
अघृण-(सं०वि०) दयारहित, क्रूर ।
अघृणी-(सं०वि०) घृणा न करने योग्य, जो घृणित न हो, अच्छा ।
अघेरन-(हिं०पुं०) जव का मोटा आँटा ।
अघोर-(वि०) जो भयानक न हो, प्रिय, सोहावना, सौम्य, (पु०) महादेव, शिव, एक संप्रदाय जिसके अनुयायी मल, मूत्र, माँस इ० भी खाने से घृणा नहीं करते । **अघोरनाथ**-शिव, महादेव, शङ्कर । **अघोरपन्थ**-(हिं० पुं०) अघोरियों का सम्प्रदाय, अवघड़ों का मत । ; **अघोर-पन्थी** (हिं० पुं०) अघोरमत को मानने वाले, अघोरी । **अघोरी**-(सं०पु०) अघोर मतावलम्बी । **अघोष**-(सं०पु०) संस्कृत व्याकरण के अनुसार उच्चारण करने के लिये एक विशेष प्रयत्न ।
अघौघ-(सं०पुं०) पाप समुदाय ।
अघन्य-(सं०पुं०) वध न करने योग्य, गाय, वृषभ, ब्रह्मा,बादल, प्रजापति ।
अघनानना-(हिं०क्रि०) सूंघना ।
अघ्रेय-(सं०त्रि०) न सूंघने योग्य, दुर्गन्धी, (नपु०) मदिरा ।
अङ्क-(सं०पुं०) चिह्न, नाटक का एक परिच्छेद, अक्षर, लिखावट, स्थान, गोद, पाप, शरीर, अपराध पर्वत, दुःख, एक से नव तक की संख्या,सार, रेखा, वार । **अङ्कक**-(सं०पु०) गिनती (गणित) करने वाला, चिह्न लगाने वाला । **अङ्ककार**-(सं०पु०) परीक्षक, न्यायाधीश । **अङ्कगणित**-(सं०पु०) गणित जिसमें संख्याओं का प्रयोग होता है । **अङ्कतन्त्र**-(सं०नपु०) अङ्कशास्त्र, पाटीगणित, अंकपात ।
अङ्कति-(सं०पुं०) अग्नि, वायु, ब्रह्मा, अग्निहोत्री ।
अङ्कधारण-(सं०नपुं०) चिह्नित कराना ।
अङ्कधारिणी-(सं०स्त्री०) शरीर पर गोदना गोदवाने वाली स्त्री ।
अङ्कन-अङ्कना-(हिं०क्रि०) अंगों में चिह्न करना, गोदना, गिनती करना लिखना, छापना, संकेत करना ।
अङ्कनीय-(सं०वि०) आँकने योग्य, मुद्रालय में छापने योग्य । **अङ्कपरिवर्तन**-(सं०नपु०) शरीर को एक ओर से दूसरी ओर पलटना, करवट लेना । **अङ्कपल्लव**-(सं०नपु०) अक्षर के स्थान में अङ्क लिखना । **अङ्कपात**-(सं०पुं०) अङ्क लिखना, पाटीगणित ।
अङ्कपाली-(सं०स्त्री०) धाय,आलिङ्गन
अङ्कपालिका-(सं०स्त्री०)आलिङ्गन ।
अङ्कपाश-(सं०पुं०) अङ्कोंका विशेष प्रकार से स्थापन । **अङ्कपाल**-(सं० पुं०) आलिङ्गन, गले लगाना ।
अङ्कमालिका-(सं०स्त्री०) छोटी माला आलिङ्गन ।
अङ्कमुहाँ-(हिं०क्रि०) आलिगन करना ।
अङ्करा-(हिं०पुं०) देखो अँकरा ।
अङ्कवार-(हिं०स्त्री०) देखो अँकवार ।
अङ्कविद्या-(सं०स्त्री०) देखो अंकविद्या ।
अङ्काई-(हिं०स्त्री०) देखो अँकाई ।
अङ्काङ्क -(सं०नपुं०) जल, पानी ।
अङ्काना-(हिं०क्रि०) जँचवाना, परखवाना, मूल्य निर्धारित कराना ।
अङ्काव-(हिं०पुं०) देखो अँकाव ।
अङ्किका-(सं०स्त्री०) चिह्न लगाने वाली, गिनने वाली ।
अङ्कित-(सं०त्रि०) चिह्न लगाया हुआ, जाँचा हुआ, परीक्षा किया हुआ, लिखा हुआ ।
अङ्किल-(हिं०पुं०) देखो अंकिल ।
अङ्कुर-(सं०पुं०) अँखुआ, कनखा, गाँस, रोम, रक्त, गाभ, फुनगी, किल्ला ।
अङ्कुरक-(सं०पुं०)घोंसला,खोता माँद ।
अङ्कुरित-(सं०वि०) अँखुआ निकला हुआ, कनखियाता हुआ ।
अङ्कुरितयौवना-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो युवावस्था को प्राप्त हो रही हो, ऊभड़ती जवानी वाली स्त्री ।
अङ्कुश-(सं०पुं) एक प्रकार का लोहे का डंडा जिससे महावत हाथी को चलाता है, आँकुश; **अङ्कुश**-हाथी हाँकने वाला; **अङ्कुशदुर्धर**-मतवाला हाथी; **अङ्कुशधारी**-(पुं०)हस्तिपालक, महावत । **अङ्कुशमुद्रा**-(स्त्री०) हाथों की अंगुलियों से निर्मित, अङ्कुश के आकार की मुद्रा ।
अङ्कोट, अङ्कोठ-(सं०पुं) पीतसार नामक वृक्ष विशेष ।
अङ्कोर-(हिं०पुं०) देखो अँकोर । **अङ्कोरना**-(हिं०क्रि०) देखो अँकोरना
अङ्कोलिका-(सं०स्त्री०) आलिङ्गन ।
अङ्क्य-(सं०वि०) चिह्न लगाने योग्य, (पुं०) मृदङ्ग इत्यादि बाजा जो गोद में रख कर बजाया जाता है ।
अङ्ग-(सं०नपुं०) शरीर, अवयव, भण्ड, भाग, प्रकार,उपाय,अप्रधान,जन्मादि का लग्न, प्रिय मित्र, सहायक अंश, मन, बलिराज के एक पुत्र का नाम, वर्तमान विहार देश के समीप का अङ्ग देश जिसकी राजधानी का नाम चम्पा था । **अङ्गकर्म**-(सं०नपुं०) अङ्ग की सेवा, हाथ पैर दबाना, शरीर में तेल की मालिश करना । **अङ्गग्रह**-(सं०पुं०) शरीर के जोड़ जोड़ में पीड़ा ।
अङ्गचालन-(सं० नपुं०) हाथ पैर हिलाना,अङ्गों को हिलाना डोलाना ।
अङ्गज-(सं०पुं०) पुत्र रोग, काम, मद, रोम, रुधिर, पसीना । **अङ्गज**-(सं० वि०) अङ्ग से उत्पन्न । **अङ्गजन्मा**-देखो अङ्गज । **अङ्गजा**-(सं०स्त्री०) पुत्री, बेटी । **अङ्गजात, अङ्गजात**-देखो अङ्गज. अङ्गजा ।
अङ्गड़ खङ्गड़-(हिं०वि०) देखो अंगड़ खंगड़ ।
अङ्गड़ाई-(हिं०स्त्री०) देखो अंगड़ाई ।
अङ्गण-(सं०नपुं०) आँगन, चबूतरा, सवारी ।
अङ्गति-(सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, सवारी, अग्निहोत्र ।
अङ्गत्राण-(सं०नपुं०) शरीर को ढाँपने का वस्त्र, कवच ।
अङ्गद-(सं०पुं०) बाहु पर पहिरने का आभूषण, बिजायठ, केयूर, बाजूबन्द, कपिराज बलि के पुत्र । **अङ्गदान**-(सं०पुं०) संग्राम से भागना, पीठ दिखलाना, रति । **अङ्गद्वार**-(सं०नपु०) शरीर में के मुख, नासिका इत्यादि छिद्र । **अङ्गधारी**-(सं०वि०) शरीर धारण करने वाला प्राणी ।
अङ्गन-(सं०नपुं०) आंगन, चबूतरा, यान ।
अङ्गना-(सं०स्त्री०) रूपवती सुन्दर स्त्री, (हिं०) आँगन, चबूतरा । **अङ्गनाप्रिय**-(सं०पुं०) अशोकवृक्ष (वि०) रूपवती स्त्री को प्रिय ।
अङ्गन्यास - (सं०पुं०) वैदिक तथा तन्त्रोक्त मन्त्रोच्चारण पूर्वक हाथ से हृदयादि अङ्गों को स्पर्श करना ।
अङ्गपाक-(सं०पुं०)शरीर में व्रण होना, शरीर के किसी भाग का सड़ना ।
अङ्गपालि-(सं०पुं०) आलिङ्गन । **अङ्गपालिका**-(सं०स्त्री०)धातृ,धाय । **अङ्गप्रोक्षण**-(सं०नपुं०) शरीर पोंछना ।
अङ्गभङ्ग -(सं०नपुं०) शरीर के किसी अवयव का टूटना या नष्ट होना, स्त्री का कटाक्ष । **अङ्गभङ्गी**-(सं०नपुं०) स्त्रियों का हाव भाव, स्त्रियों को मोहित करने की क्रिया ।
अङ्गभाव-(सं० पुं०) गाने में चित्त के भाव को प्रगट करने के लिये अङ्गों को मटकाना ।
अङ्गभू-(सं०पुं०) पुत्र, कामोद्वेग, काम देव **अङ्गभूत**-(सं०वि०)अङ्ग से उत्पन्न; भीतरी, अन्तर्गत । **अङ्गमन्त्र**-(सं०पुं०) अङ्गन्यास का तन्त्रोक्त मन्त्र । **अङ्गमर्द**-(सं०पुं०) हड्डियों में पीड़ा, शरीर मलने वाला भृत्य । **अङ्गमर्दक**-(सं०

पुं०) शरीर को दबाने वाला नौकर। **अङ्गमर्दन**-(स०नपुं०)हाथ पैर दबाना, शरीर का मर्दन। **अङ्गयज्ञ**-(स०पुं०) अप्रधान यज्ञ। **अङ्गरक्षणी**-(स०स्त्री०) शरीर की रक्षा का कवच। **अङ्ग-रक्षा**-(सं०स्त्री०) शरीर की रक्षा।
अङ्गरखा-देखो अङ्गरखा।
अङ्गरस-(स० पुं०) किसी वृक्ष की पत्तियों तथा छाल को कुचलकर निकाला हुआ रस। **अङ्गराग**-(सं०पुं०) शरीर में लेप करने का सुगन्धित द्रव्य, उबटन, बुकवा।
अङ्गराज-(स०पुं०) अङ्गदेश के राजा कर्ण, राजा दशरथ के मित्र लोमपाद।
अङ्गरी-(हिं०स्त्री०) अङ्गत्राण, कवच।
अङ्गरुह-(सं०नपुं०) लोम, रोवाँ।
अङ्गलेप-(सं० पुं०) अङ्गराग, उबटन, बुकवा। **अङ्गविकल**-(सं० वि०) जिसकी शरीर में अधिक पीड़ा हो, विकृत शरीर वाला। **अङ्गविकृति**-(सं०स्त्री) अङ्ग का विकार, अपस्मार रोग, मिरगी। **अङ्गविक्षेप**-(सं०पुं०) अङ्गों को हिलाना, चमकना, मटकना अंङ्ग हिलाकर नाचना, **अङ्गविद्या**-(सं०स्त्री०) शरीर विज्ञान, व्याकरणादि विद्या, सामुद्रिक विद्या, हाथ पैर मुख आदि के भावों को देखकर शुभाशुभ बतलाने की विद्या। **अङ्गविधि**-(सं० पुं०) अप्रधान विधि।
अङ्गविभ्रम-(सं० पु०) मस्तिष्क का वह रोग जिसमें रोगी अपने अङ्ग को नहीं पहिचानता। **अङ्गवैकृत**-(स० नपु०) इङ्गित, भाव, चेष्टा,
अङ्गशुद्धि-(सं० स्त्री०) शरीर को शोधनेकी विधि। **अङ्गशैथिल्य**-(स० नपु०) शरीर की शिथिलता, थकावट। **अङ्गशोष**-(सं०पु०) शरीर सूखने का रोग, सुखण्डी, क्षयरोग।
अङ्गसख्य-(स०नपु०) गाढ़ मैत्री। **अङ्गसङ्गम**-(सं०पुं०) रतिसंयोग, मैथुन।
अङ्गसंस्कार-(स० पु०) शरीर की सजावट, देह का शृंगार। **अङ्गसिहरी**-(हिं०स्त्री०) देह की कँपकँपी, जूड़ी। **अङ्गहानि**-(स०स्त्री०) कार्यकी त्रुटि। **अङ्गहार**-(सं०पु०) अङ्गविक्षेप, चमकना, मटकना। **अङ्गहारी**-(स० पु०) नाचने योग्य स्थान, नाचघर।
अङ्गहीन-(स०वि०) बिना शरीर का, जिसका कोई अङ्ग न हो या टूट गया हो, लूल्हा, लँगड़ा कौना, इ०।
अङ्गाङ्गिभाव-(सं० पुं०) गौण और मुख्य भाव का परस्पर सम्बन्ध, एक विशेष अलङ्कार।
अङ्गा-(हिं०पुं०) देखो अंगा।
अङ्गाकड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो अंगाकड़ी, लिट्टी।
अङ्गाधिप, अङ्गाधीश-(सं०पु०) अङ्ग देश का राजा, ज्योतिष में लग्न के स्वामी।
अङ्गार-(सं०पु०) जलता हुआ कोयला, चिनगारी, जली हुई लकड़ी, निर्धूम अग्नि, मङ्गल ग्रह लालरंग। **अङ्गारक**-(स० पु०) मङ्गल ग्रह, अँगारा, भटकटैया। **अङ्गारकमणि**-(सं०पुं०) प्रवाल, मूंगा। **अङ्गारधानिक**-(स० पु०) आग जलाने का पात्र, अँगीठी, बोरसी। **अङ्गारधानी**-(सं० पु०) अँगीठी, बोरसी। **अङ्गारपुष्प**-(स० पु०) इङ्गुदी वृक्ष, हिंगोट का पेड़, जियापुजा। **अङ्गारमञ्जी**-(सं०स्त्री०) करौंदा। **अङ्गारमञ्जरी**-(सं०स्त्री०) करौंदा। **अङ्गारमती**-(सं०स्त्री०) राजा कर्ण की पत्नी। **अङ्गारवल्लरी**-(सं०स्त्री०) गुञ्जा, घुमची। **अङ्गारशकटी**-(स०स्त्री)छोटी गाड़ी, अँगीठी।
अङ्गारा-(हिं०पु०) जलता हुआ कोयला, चिनगारी, निर्धूम अग्नि।
अङ्गारि, अङ्गारिणी-(स०स्त्री०) अग्नि रखने का पात्र, अँगीठी, बोरसी, ऊख की गँडेरी।
अङ्गारित-(सं०स्त्री०) परास की कली, (वि०) जली हुई लकड़ी।
अङ्गिका-(सं०स्त्री०) चोली, अँगिया, स्त्रियों की पहिरने की कुरती।
अङ्गिया-(हिं०स्त्री०) देखो अँगिया।
अङ्गिरस-(स०पु०) ब्रह्मा के द्वितीय पुत्र, यह दस प्रजापतियों में से एक थे, अंगिरा के पुत्र बृहस्पति।
अङ्गी-(सं०वि०) शरीर धारण करने वाला, शरीरधारी, नेता, मुखिया, अग्रसर, प्रमुख, प्रधान।
अङ्गीकार-(सं०पुं०) स्वीकार, प्रतिज्ञा, सम्मति।
अङ्गीकृत-(स०वि०) स्वीकार किया हुआ, माना हुआ, स्वीकृत। **अङ्गीकृति**-(स०स्त्री०) स्वीकृति।
अङ्गीठी-(हिं०स्त्री०) देखो अंगीठी।
अङ्गुरी-(स०स्त्री) अंगुली, अंगूठी, मुंदरी।
अङ्गुरीय-(स०नपु) अँगुली का आभूषण, मुंदरी।
अङ्गुल-(स०पु०) आठ जव के बराबर की नाप, एक हाथ का चौबीसवाँ अंश।
अङ्गुलित्र, अङ्गुलित्राण-(स०नपु०) अँगुली की रक्षा करने के लिये इस पर पहिरा हुआ आवरण।
अङ्गुलिपर्व-(स०पु०) अँगुली की पोर।
अङ्गुलिमुद्रा-(स०स्त्री०) नाम खोदी हुई अँगूठी। **अङ्गुलिमुख**-(स० नपु०) अँगुली का अग्र भाग। **अङ्गुलिसंज्ञा**-(स०स्त्री०) अँगुली द्वारा संकेत करना।
अङ्गुलिसन्देश-(स० पु०) चुटकी बजाकर सूचना देना। **अङ्गुलिस्फोटन**-(स०नपु०) अंगुली फोड़ना या चटकाना।
अङ्गुली-(सं० स्त्री०) उङ्गली, हाथी के सूँड़ का अग्र भाग।
अङ्गुल्यादेश-(सं०पु) अँगुलियों द्वारा संकेत। **अङ्गुल्यानिर्देश**-(सं० पु०) अँगुली उठाना, लाञ्छन, दुर्नाम अपकीर्ति।
अङ्गुष्ठ-(सं०पु०) अँगूठा हाथ या पैर का। **अङ्गुष्ठमात्र**-केवल अँगूठे के बराबर।
अङ्गुष्ठ-(स०पुं०) नेवला, बाण।
अङ्गुरी-(हिं०वि०) देखो अंगरी।
अङ्गेजना-(हिं०क्रि०) देखो अंगेजना।
अङ्गेठ-(हिं०स्त्री०) देखो अँगेठी।
अङ्गेठी-(हिं०स्त्री०) देखो अंगीठी।
अङ्गोछना-(हिं०क्रि०) देखो अंगोछना।
अङ्गोछा-(हिं०पु०) देखो अंगोछा।
अङ्गोछी-(हिं०स्त्री०) देखो अंगोछी।
अङ्गोरा-(हिं०पु०) देखो अंगोरा।
अङ्घ्रि-(सं०पुं०) वृक्ष की जड़, छन्द का चतुर्थ भाग, पैर।
अङ्घ्रिप-(सं०पुं०) वृक्ष, लता, पेड़।
अच्-समस्त स्वर वर्ण के लिये पाणिनीय व्याकरण मे प्रयुक्त शब्द।
अचक-(हिं०वि०) पूर्ण, पूरा, अधिक (पु०) आश्चर्य, विस्मय, (अव्य०) एकाएक, अचानक, अकस्मात्।
अचकरखा-(हिं०पु०) देखो अँगरखा।
अचकरी-(हिं०स्त्री०) अत्याचार, अक्खड़पन, अशिष्टता।
अचका-(हिं०क्रि०वि०) अकस्मात्, बिना समझे बूझे, एकाएक।
अचाकत-(सं०वि०) भयहीन, अतृप्त, स्थिर, इधर उधर न देखने वाला।
अचक्का-(हिं०पु०) अपरिचित व्यक्ति, अज्ञानता।
अचक्षु-(स० वि०) बिना आँख का, अन्धा।
अचगरी-(हिं०स्त्री०) उपद्रव, छिछोरापन।
अचञ्चल-(सं०वि०) जो चंचल न हो, स्थिर, गंभीर, बिना घबड़ाया हुआ, धैर्ययुक्त, ढाढसी।
अचञ्चलता-(सं० स्त्री०) स्थिरता, गम्भीरता।
अचण्ड-(सं०वि०) शान्त, सीधा, सरल स्वभाव का, सुशील, सौम्य।
अचण्डी-(स०स्त्री०) सुशीला स्त्री, सीधी गाय, शूकरी।
अचतुर-(स०वि०) जो चतुर न हो।
अचना-(हिं०क्रि०) आचमन करना, मुँह धोना, कुल्ला करना।
अचपल-(सं०वि०) जो चंचल न हो, अचंचल, स्थिर। **अचपलता**-(स०स्त्री०) धैर्य, स्थिरता।
अचपली-(हिं०स्त्री०) क्रीड़ा, खेल कूद।
अचमन-(हिं० पु०) आचमन, मुँह धोना।
अचम्भव-(हिं०पु०) आश्चर्य, अचंभा।
अचम्भा-(हिं०पु०) अचरज, विस्मय, आश्चर्य। **अचम्भित**-(हिं०वि०) आश्चर्य से युक्त, विस्मित, चकित।
अचम्भो-(हिं०पु०) आश्चर्य, विस्मय।
अचर-(हिं०वि०) न चलने वाला, ठहरा हुआ, स्थिर, अटल, स्थावर।
अचरज-(सं०पु०) अचम्भा, आश्चर्य, विस्मय।
अचरम-(स० वि०) जो अन्त का न हो, बीच का।
अचरा-(हिं० स्त्री०) साड़ी का छोर, अचल।
अचरित-(स०वि०) नवीन, अप्रचलित।
अचल-(सं०वि०) जो चलायमान न हो, निश्चल, स्थिर, दृढ, अटल, (पु०) वृक्ष, पर्वत। **अचलकन्या**-पार्वती; **अचलकीला**-पृथ्वी; **अचलजा**-पार्वती, पर्वत पर उत्पन्न होनेवाली लता; **अचलधृष्**-इन्द्र; **अचलाधृति**-एक प्रकार का छन्द; **अचलनारी**-हिमालय की पत्नी; **अचलपति**-हिमालय पर्वत; **अचलराज**-हिमालय।
अचला-(सं०स्त्री०) न चलने वाली, स्थिर, हिमालय की पत्नी, पृथ्वी।
अचलासप्तमी-(सं०स्त्री०) माघसुदी सप्तमी, इस तिथि का किया हुआ दान पुण्य अचल समझा जाता हैं।
अचवन-(हिं०पु०) आचमन, भोजन के बाद हाथ मुँह धोना तथा कुल्ली करना, पीने का कार्य। **अचवना**-(हिं०क्रि०) आचमन करना, कुल्ला करना। **अचवाई**-(हिं०वि०) आचमन की हुई। **अचवाना**-(हिं०क्रि०) भोजन के बाद हाथ मुँह धुलवाना, कुल्ला कराना।
अचांचक-(हिं०क्रि०वि०) अकस्मात्, एकाएक।
अचानक-(हिं०क्रि०वि०)अकस्मात्, एकाएक, दैव योग से।
अचार-(हिं०पुं०) फल या तरकारियों में मसाला मिला कर बना हुआ खाने का खट्टा पदार्थ, आचरण, व्यवहार।
अचारज-(हिं०पुं०) कर्मकाण्ड कराने वाला ब्राह्मण, आचार्य।
अचारी-(हिं०वि०) आचार करने वाला (स्त्री०) एक प्रकार का आम का अचार।
अचालू-(हिं०पुं०) न चलने वाला, कम चलने वाला।
अचाह-(हिं०स्त्री०) इच्छा या प्रेम का अभाव, (वि०) किसी पदार्थ की इच्छा न रखने वाला। **अचाहा**-(हिं०वि०) चाह या इच्छा न करने वाला। **अचाही**-(हिं०वि०) इच्छारहित, किसी पदार्थ की आकांक्षा न करने वाला, निष्काम।
अचिक्कण-(स०वि०) रूखा, जो चिकना न हो, मैला।
अचिकित्स्य-(सं०वि०)जिसकी चिकित्सा न हो सके, असाध्य (रोगी)।
अचित्-(स०नपुं०) निर्जीव पदार्थ।
अचित्त-(सं०वि०) चेतनाहीन, बेसुध, ज्ञानशून्य,
अचिन्त-(हिं०वि०) बिना किसी प्रकार की चिन्ता का, निश्चिन्त।
अचिन्तनीय-(सं०वि०) जिसका चिन्तन न हो सके, चिन्ता से अगम्य, अज्ञेय।
अचिन्तित-(सं०वि०) बिना चिन्ता

किया हुआ। **अचिन्त्य**-(सं० विं०) विचार के बाहर, कल्पनातीत, आकस्मिक, अज्ञेय, (पु०) एक अलङ्कार विशेष। **अचिन्त्यात्मा**-(सं०पुं०) परमेश्वर।

अचिर-(सं०त्रि०) थोड़े काल तक ठहरने वाला (क्रि०वि०) शीघ्र, तुरत, जल्दी से, **अचिरद्युति प्रभा**-बिजली, विद्युत्। **अचिरांशु**-(सं०स्त्री०) थोड़ी देर रहने वाली चमक, विद्युत्, बिजली।

अचिरात्-(सं०अव्य०) विना विलंब के, झटपट, तुरन्त।

अचिराभा-(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली।

अचिष्णु-(सं०वि०)गमनशील, जानेवाला।

अचीता-(हिं०वि०) बिना समझा बूझा, आकस्मिक।

अचूक-(हिं० वि०) न चूकने वाला, निश्चित, अवश्य, (क्रि० वि०) बना भूल किये हुए।

अचेत-(सं०त्रि०) चेतनाशून्य, मूर्छित, निर्बुद्धि, मूर्ख, विकल, जड़, (नपु०) निर्जीव पदार्थ। **अचेतन**-(सं०वि०) ज्ञानशून्य, चेतनारहित, **अचेष्ट**-(सं०त्रि०) ज्ञानशून्य, निश्चेष्ट, **अचेष्टता**-सं०स्त्री०) ज्ञानशून्यता।

अचैतन्य-(सं०त्रि०) चेतनाहीन, जड़,

अचैन-(हिं०पुं०) व्याकुलता, बेचैनी, दुःख।

अचौना-(हिं०पुं०) भूमि में गड़ा हुआ चारा काटने का ठीहा, नेसुआ।

अचोट-(हिं०वि०) बिना चोट लगा हुआ, सुरक्षित।

अचौना-(हिं०पुं०) आचमनी, पानी पीने का छोटा पात्र।

अच्छ-(सं०) स्वच्छ, निर्मल, (पु०)भालू

अच्छत-(हिं०पु०) देखो अक्षत।

अच्छभल्ल-(सं०पुं०) भालू, रीछ।

अच्छर-(हिं०पु०) वर्ण, अक्षर।

अच्छरा-(हिं०स्त्री०) अप्सरा, देवाङ्गना।

अच्छा-(हिं०वि०) बढ़िया, उत्तम, भला रोगरहित, स्वस्थ (पुं०) श्रेष्ठ मनुष्य, बड़ा बूढ़ा मनुष्य (क्रि०वि०) भली भाँति (अव्यय) स्वीकारसूचक शब्द, अस्तु।

अच्छाई अच्छापन-(हिं०) भलाई, उत्तमता, सुघड़पन।

अच्छिद्र-(सं०वि) बिना छिद्र का, दोषहीन, बिना भ्रान्ति का।

अच्छिन्न-(सं०त्रि०) जो टूटा फूटा न हो, अखण्डित, समुचा, पूरा, समग्र।

अच्छीत-(हिं०वि०) अधिक, बहुत, पूरा

अच्छोद-(सं०नपुं०) कैलास पर्वत पर के एक सरोवर का नाम।

अच्छोहिनी-(हिं० स्त्री०) देखो अक्षौहिणी।

अच्यत-(सं०पुं०) जिसका कभी क्षय न हो, सनातन, स्थायी, अभ्रष्ट, अमर, विष्णु, ब्रह्म, ईश्वर, जैनियों के एक देवता। **अच्युताग्रज**-(सं०पुं०) कृष्ण के बड़े भाई बलराम। **अच्युतात्मज**-(सं०पु०) कृष्ण के पुत्र कामदेव।

अच्युतानन्द-(सं०पुं०) नित्यानन्द, परमेश्वर।

अछक-(हिं०वि०) न छका हुआ, भूखा।

अछकना-(हिं०क्रि०) भूखे रहना, पेट भर न खाना।

अछत-(हिं०क्रि०वि०) आगे, अतिरिक्त, सामने, बाद में, पीछे।

अछत्र-(हिं०पु०) राज्यहीन, बिना छत्र का, असहाय।

अछताना पछताना-(हिं०क्रि०) पश्चात्ताप करना, खेद करना।

अछन-(हिं०पु०) अधिक समय, (क्रि०वि०) धीरे धीरे, शीघ्रता से नहीं।

अछना-(हिं०क्रि०) रहना, होना।

अछय-(हिं०वि०) न छिपनेवाला, प्रत्यक्ष

अछय-(हिं०पुं०) अक्षय।

अछरा-(हिं०स्त्री०) अप्सरा, देवाङ्गना।

अछरौटी-(हिं०स्त्री०) वर्णमाला।

अछल-(हिं०वि०) बिना कपट का, निष्कपट, निश्छल।

अछवाना-(हिं०क्रि०) सजाना, सुशोभित करना, सँवारना।

अछवानी-(सं०स्त्री०) प्रसूता स्त्रियों को दिया जानेवाला एक पाक विशेष।

अछाम-(हिं०वि०) हृष्ट पुष्ट, बलवान्,

अछूत-(हिं०वि०) स्पर्श न किया हुआ, कोरा, नया, अस्पृश्य, (पु०) अन्त्यज जाति डोम, चमार इ०। **अछूता**-(हिं०वि०) बिना छुआ हुआ, नया, पवित्र।

अछेव-(हिं०वि०) बिना छिद्र का।

अछेह-(हिं०वि०) अखण्डित, बहुत।

अछोप-(हिं०वि०) बिना ढपा हुआ, नंगा, तुच्छ, नीच जाति का।

अछोभ-(हिं०वि०) अचंचल, क्षोभरहित, शान्त, स्थिर, गम्भीर।

अछोह, अछोही-देखो अक्षोभ।

अज-(सं०पुं०) जिसका जन्म न हो, ईश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चन्द्रमा, कामदेव, सूर्यवंशीय राजा रघु के पुत्र, बकरा, मेढा, अजन्मा, नेता, सुवर्णमाक्षिक नाम का धातुविशेष, प्रकृति, शक्ति, काकड़ासिंघी नामक औषधि।

अजकर्ण, अजकर्णक-(सं०पुं०) बकरे का कान, साल का वृक्ष।

अजकव-(सं०पुं०) शिव जी के धनुष का नाम, बबूल का वृक्ष, विषधर बड़ा बिच्छू।

अजका-(सं०स्त्री०) बकरे के गले का स्तन

अजकरव-(सं०पुं०) यज्ञ पात्र, शिव का धनुष।

अजग-(सं०पु०) अग्नि, विष्णु।

अजगन्धा-(सं०स्त्री०)अजवाइन, अजमोदा।

अजगर-(सं०पुं०)बकरे को निगल जानेवाला स्थूलकाय सर्प, (वि०) आलसी, उद्यमहीन। **अजगरी**-(हिं०वि०) अजगर सम्बन्धी, अजगर का।

अजगल्लिका-(सं०स्त्री०) बबूल का वृक्ष, एक प्रकार का व्रण जो बालकों को प्रायः होता है।

अजगव-(सं०नपुं०) महादेव का धनुष, पिनाक, देखो अजकरव।

अजगुत-(हिं०पुं०) आश्चर्य की बात, अद्भुत घटना।

अजगैव-(हिं०पुं०) अलक्षितस्थान, बिना देखा सुना स्थान। **अजगवी** (वि०) विलक्षण, अद्भुत।

अजघन्य-(सं०वि०) श्रेष्ठ, भला।

अजघोष-(सं०पुं०) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

अजजीविक-(सं० पु०) भेंड़ बकरी का व्यापारी, गड़ेरिया।

अजटा-(सं०स्त्री०) बिना जटा का, (पु०) एक प्रकार का वृक्ष।

अजड़-(सं० त्रि०) सजीव वस्तु, चेतन व्यक्ति।

अजए-(सं०पुं०) सहस्रार्जुन का नाम।

अजदण्डी-(सं०स्त्री०) ब्रह्मदण्डी का वृक्ष

अजदहा-(फा०पुं०) बड़े बड़े पशुओं को निगल जानेवाला अजगर।

अजदेवता-(सं०पुं०) बकरे का अधिष्ठाता देवता।

अजन-(सं०त्रि०) जिसका जन्म न होता हो, निर्जन स्थान, एकान्त।

अजन्ता-खानदेश की प्रसिद्ध गुहावली जहाँपर बौद्धों के चैत्य और विहार हैं।

अजन्म, अजन्मा-(सं०पुं०) जिसका जन्म न हो, मोक्ष।

अजप-(सं०पुं०) बकरी पालने वाला मनुष्य। **अजपति** (सं०पुं०) श्रेष्ठ बकरा, मेषराशि का स्वामी, मंगल ग्रह। **अजपथ** (सं०पुं०) ईश्वर का बनाया हुआ मार्ग छायापथ।

अजपा-(सं०स्त्री०) बिना यत्न के जो जपा जा सके अथवा उच्चारण किया जा सके, बकरी पालने वाला; स्वाभाविक श्वासोच्छ्वास को अजपाजप अथवा हंस मन्त्र कहते हैं [हं=श्वास खींचना स=श्वास छोड़ना]

अजपाद-(सं०पुं०) एक रुद्र विशेष, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र।

अजपाल-(सं०त्रि०) बकरी पालने वाला, गड़ेरिया।

अजबन्धु-(सं०पुं०) मूर्ख बुद्धिहीन पुरुष।

अजबला-(सं०स्त्री०) श्यामा तुलसी।

अजभक्ष-(सं०पुं०) बबूल का वृक्ष।

अजमल-(सं०पुं०) गेहूँ, बकरी की लेंड़ी।

अजमार, अजमारक-(सं०पुं०) बकरे का मांस बेंचनेवाला।

अजमुख-(सं०पुं०) दक्ष प्रजापति।

अजमोद, अजमोदा-(सं०स्त्री०) अजवाइन।

अजम्भ-(सं०पुं०) मेढक, सूर्य,(वि०)बिना दाँत का, दन्तरहित।

अजय-(सं०पुं०) जय का अभाव, पराजय, हार।

अजित-(वि०) जो जीता न जा सके, अपराजित।

अजयपाल-(सं०पुं०) एक राग विशेष, जमालगोटा।

अजया-(सं०स्त्री०) भाँग, विजया।

अजर-(सं०वि०) जो कभी वृद्ध न हो, वार्धक्यशून्य, अमर, युवा।

अजरा-(सं०स्त्री०) घृतकुमारी, घिकुआर

अजरायल-(हिं०वि०) कभी जीर्ण न होने वाला।

अजराल-(हिं०वि०) जो बुड्ढा न हो, शक्तिशाली।

अजलम्बन-(सं०नपुं०) स्रोतोञ्जन, आँख में लगाने का सुरमा।

अजलोमा-(सं०पु०) केंवाँच, वानरी, (वि०) बकरे के समान रोवें वाला।

अजवल्ली-(सं०स्त्री०) एक औषधि विशेष, मेढासिंघी।

अजव-(सं०वि०) वेगरहित।

अजवाइन, अजवायन-(हिं०स्त्री०) यवानी, एक विशेष मसाला।

अजवीथी-(सं०स्त्री०) हाथी का मार्ग।

अजशृंगी-(सं०स्त्री०) अजवल्ली, मेढासींघी नामक औषधि।

अजश्री-(सं०स्त्री०) फिटकिरी।

अजस-(हिं०पु०) अयश, अपयश, अपकीर्ति।

अजसी-(हिं०वि०) अख्यात, यशहीन।

अजस्त्र-(सं०नपुं०) चिरस्थायी, सतत (क्रि०वि०) नित्य, निरन्तर, सर्वदा।

अजहत्स्वार्था-(सं०स्त्री०) उपादानलक्षणा अलङ्कार जिसमें कोई शब्द अपने अर्थ को दूसरे शब्द के अर्थ में प्रगट करता है।

अजहूँ-(हिं०अव्य०)अबभी, आजतकभी।

अजा-(सं०स्त्री०) बकरी, प्रकृति, माया।

अजाक्षीर-(सं०)बकरी का दूध।

अजागर-(सं०पुं०) भृङ्गराज, भँगरैया, (वि०) न जागने वाला।

अजागल-(सं०पुं०) बकरे की गर्दन। **अजागल-स्तन**-बकरे के गले में का लटकता हुआ मांस पिण्ड।

अजाचक-(हिं०पुं०) अयाचक, सम्पन्न मनुष्य (वि०) न माँगने वाला, जिसको कुछ माँगने की आवश्यकता न हो।

अजाची-(हिं०पुं०) जो मनुष्य किसीसे कुछ न माँगे, सम्पन्न व्यक्ति, भाग्यवान पुरुष।

अजाजि-(सं०स्त्री०) गूलरका वृक्ष, जीरक, जीरा।

अजाजिक-(सं०पुं०) सफ़ेद जीरा।

अजाजीव-(सं०पुं०) भेंड़ बकरी का व्यापारी।

अजात-(सं०वि०) जिसका जन्म न हुआ हो। **अजातककुद**-(सं०पुं०) बछवा, जिसको ककुद न निकला हो।

अजातदन्त-(सं०वि०) जिसको दाँत न निकले हों,(पुं०)बिनादाँत का बालक।

अजातपक्ष-(सं०वि०) पक्षी का छोटा बच्चा जिसके पर न निकलें हों, और जो उड़ न सके। **अजातव्यवहार**-(सं०पुं०) अप्राप्तवयस्क, **अजातशत्रु**-(सं०पुं०) काशी के एक अति प्राचीन राजा का नाम, राजा

युधिष्ठिर, मगध देश के राजा बिम्बिसार के पुत्र का नाम ।
अजातारि-(सं०पुं०) जिसका कोई शत्रु न हो, युधिष्ठिर ।
अजाति, अजाती-(सं०स्त्री०) जाति शून्य, विजाति, बिना जात का, जाति से निकाला हुआ, पतित, त्याज्य ।
अजादनी-(सं०स्त्री०) बेर का वृक्ष ।
अजादुग्ध-(सं०नपुं०) बकरी का दूध ।
अजान-(हिं०वि०) जो जाना हुआ न हो, अज्ञात, अपरिचित (पुं०) अज्ञानता, अविवेकता । **अजानपन**-(हिं०पुं०) मूर्खता ।
अजानि-(सं०पुं०) बिना पत्नी का पुरुष ।
अजापालक-(सं०वि०) भेंड़ बकरी को पालने वाला ।
अजाप्रिया-(सं०स्त्री०) बेर का वृक्ष ।
अजामिल-(सं०पुं०) एक पापी ब्राह्मण का नाम जो मरती समय अपने पुत्र नारायण का नाम लेने से मुक्त हुआ था ।
अजाय-(हिं०वि०) अनुचित, अयोग्य ।
अजार-(हिं०पुं०) रोग, व्याधि ।
अजारा-(हिं०पुं०) इजारा, अधिकार ।
अजिऔरा-(हिं०पुं०) आजी या दादी के पिता का घर ।
अजिका-(सं०स्त्री०) जवान बकरी ।
अजिण्टा-देखो अजन्ता ।
अजित-(सं०वि०) जो हारा न हो, अपराजित, (पुं०) शिव, विष्णु, बुद्ध, जैनियों के दूसरे तीर्थङ्कर का नाम ।
अजिता-(सं०स्त्री०) भादों बदी एकादशी । **अजितात्मा**-(सं०वि०) जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में न किया हो, अजितेन्द्रिय ।
अजितेन्द्रिय-देखो अजितात्मा ।
अजिन-(सं०नपुं०) मृग चर्म, मृगछाला ।
अजिनपत्रा-(सं०स्त्री०) चमड़े के समान पर वाली चमगीदड़ । **अजिनवासी**-(सं०वि०) चमड़े का वस्त्र पहिरने वाला ।
अजिर-(सं०नपुं०) टीला, आँगन, चबूतरा, वायु, शरीर, मेढक, विषय, (वि०) शीघ्र चलने वाला ।
अजिह्म-(सं०वि०) जो टेढा न हो, सरल सीधा । **अजिह्मग**-(सं०पुं०) सीधा जाने वाला, बाण, पक्षी ।
अजिह्माग्र-(सं०वि०) सीधे नोक वाला ।
अजिह्व-(सं०पुं०) मेढक (वि०) बिना जीभ का ।
अजी-(हिं०अव्य०) सम्बोधनार्थक शब्द, अरे!
अजीवक-(सं०पुं०) शिवजी का धनुष ।
अजीगर्त-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम जो शुनःशेफ के पिता थे, सर्प, साँप ।
अजीत-देखो अजित ।
अजीरन-(हिं०पुं०) अपच, बहुतायत ।
अजीर्ण-(सं०नपुं०) अपाक, अपच, अन्न का अच्छी तरह से न पचना, बहुतायत । **अजीर्णी**-(सं०वि०) जिसको अनपच हुआ हो ।
अजीव-(सं०वि०) चेतनाशून्य, मृतक, बिना जीव का, अचेतन, निर्जीव ।
अजीवन-(सं०नपुं०) मृत्यु, मौत ।
अजुगुप्सित-(सं०वि०) निन्दा न किया हुआ, आनिन्दित ।
अजूजा-(हिं०पुं०) मृतक शरीर को खाने वाला ।
अजूरा-(हिं०वि०) संग्रह न किया हुआ, अप्राप्त, अनुपस्थित ।
अजूह-(हिं०पुं०) युद्ध, लड़ाई ।
अजेय-(सं०वि०) न जीतने योग्य ।
अजै-देखो अजय ।
अजो-(हिं०क्रि०वि०) आजतक, अभीतक ।
अजोग-(हिं०वि०) अयोग्य ।
अजोता-(हिं०पुं०) चैत्र की पूर्णमासी जिस दिन बैल नहीं जोते जाते ।
अजौं-(हिं०क्रि०वि०) अभीतक, आजभी ।
अज्झल-(हिं०नपुं०) ढाल ।
अज्ञ-(सं०वि०) ज्ञानशून्य, मूर्ख, अज्ञानी, (पुं०) मूर्ख मनुष्य । **अज्ञका**-(सं०स्त्री०) भोली भाली स्त्री । **अज्ञता, अज्ञत्व**-(सं०) मूर्खता ।
अज्ञात-(सं०वि०) न जाना हुआ, अपरिचित, अविदित, **अज्ञातक**-(सं०वि०) अनजाना, अपरिचित; **अज्ञातनामा**-(सं०वि०) जिसका नाम ज्ञात न हो, अपरिख्यात । **अज्ञातभुक्त**-(सं०वि०) अनजानी वस्तु को खाने वाला । **अज्ञातयौवना**-(सं०स्त्री०) मुग्धा स्त्री, जिस स्त्री को अपनी चढती जवानी का ज्ञान न हो ।
अज्ञातवास-(सं०वि०) जिसके रहने का स्थान ज्ञात न हो, गुप्त रूप से रहने वाला ।
अज्ञातशील-(सं०वि०) जिसकी चाल-ढाल ज्ञात न हो ।
अज्ञाति-(सं०पुं०) असम्बन्धी पुरुष ।
अज्ञान-(सं०वि०) बिना ज्ञान का, (पुं०) अविद्या, विरुद्ध ज्ञान, मोह, जड़ता, मूर्खता, **अज्ञानकृत**-(सं०वि०) अनजान में किया हुआ । **अज्ञानता**-(सं०स्त्री०) अविद्या, मूर्खता, **अज्ञानपन**-(हिं०पुं०) अज्ञानता, मूर्खता ।
अज्ञानी-(सं०वि०) अबोध, मूर्ख, ज्ञान-शून्य, जड़ ।
अज्ञेय-(सं०वि०) ज्ञान के अयोग्य, बुद्धि में न आने योग्य ।
अज्येष्ठ-(सं०वि०) जो बड़ा या जेठा न हो ।
अज्यों-देखो अजौं ।
अझर-(हिं०वि०) न झरने या बरसने वाला ।
अझोरी-(हिं०स्त्री०) थैली ।
अञ्चक-(सं०नपुं०) नेत्र, आँख ।
अञ्चल-(सं०पुं०) साड़ी का वह भाग जिस ओर किनारे पर बेलबूटे बने हों, आँचर, अँचरा ।
अञ्चित-(सं०वि०) पूजित पूजा किया हुआ, सिकुड़ा हुआ । **अञ्चितभ्रू**-टेढी भौहों वाली स्त्री ।
अञ्जन-(सं०नपुं०) आँखों में लगाने का सुरमा, काजल, मैलापन, मिलावट, भ्रमण, अर्जुनवृक्ष, अलङ्कार शास्त्र में शब्द की व्यञ्जनार्थबोधक शक्ति ।
अञ्जनकर्म-(सं०नपुं०) आँखों में सुरमा लगाने का कार्य । **अञ्जनकेश**-(सं०पु०) दीपक, **अञ्जनकेशिका-केशी**-(सं०स्त्री०) नख नाम की एक सुगन्धित औषधि । **अञ्जनपर्वा**-(सं०पुं०) घटोत्कच के पुत्र का नाम । **अञ्जनविधि**-(सं०स्त्री०) आँखों में सुरमा या काजल लगाना । **अञ्जनशलाका**-(सं०स्त्री०) आँखों में सुर्मा लगाने की सलाई ।
अञ्जना-(सं०स्त्री०) केशरी वानर की स्त्री तथा हनुमान की माता, आँख की फुन्सी, एक धान्य विशेष, दो रंग वाली छिपकिली ।
अञ्जनाद्रि-(सं०पुं०) नील पर्वत जिसका वर्णन संस्कृत काव्यों में पाया जाता है ।
अञ्जनानन्दन-(सं०पुं०) अञ्जना के पुत्र हनुमान ।
अञ्जनिक-(सं०पुं०) छिपकिली, चूहा ।
अञ्जनी-(सं०स्त्री०) चन्दन, कुंकुम आदि से युक्त स्त्री, हनुमान की माता, आँख की बिलनी, माया, कुटकी (औषधि) ।
अञ्जर, पञ्जर-(हिं०पुं०) देखो अंजर पंजर ।
अञ्जलि-(सं०पुं०) हथेलियों को मिला कर बना हुआ सम्पुट, अँगुरी, अँजुली ।
अञ्जलिका-(सं०स्त्री०) छोटी मुसरी, लज्जावन्ती का पौधा, जटामासी ।
अञ्जलिगत-(सं०वि०) अँजुली में रक्खा हुआ ।
अञ्जलिनी-(सं०स्त्री०) लाजवन्ती की लता ।
अञ्जलिपुट-(सं०पु०) अँजुली का गड्ढा ।
अञ्जलिबद्ध-(सं०वि०) हाथ बाँधे या जोड़े हुए ।
अञ्जस-(सं०वि०) सीधा, जो टेढ़ा न हो, सरल ।
अञ्जसा-(सं०अव्य०) शीघ्र, जल्दी से, वस्तुतः, यथार्थ में ।
अञ्जही-(हिं०स्त्री०) देखो अंजही ।
अञ्जित-(सं०वि०) अञ्जन लगा हुआ ।
अञ्जिष्ठ-(सं०पुं०) सूर्य ।
अञ्जी-(सं०स्त्री०) आँटा पीसने की चक्की ।
अञ्जोर-(हिं०पुं०) गूलर के फल के सदृश एक फल, इसका वृक्ष ।
अञ्जुरी-(हिं०स्त्री०) अञ्जलि, अँजुली ।
अञ्जोर-(हिं०पुं०) देखो अँजोर ।
अञ्जोरा-(हिं०पुं०) देखो अँजोरा ।
अञ्झा-(हिं०पुं०) देखो अंझा ।
अटक-अटकन-(हिं०स्त्री०) प्रतिबन्ध, रुकावट, अवरोध, आवश्यकता, बाधा, विघ्न, एक नगर का नाम जो पंजाब में रावलपिंडी की सीमा के पूर्व में है ।
अटकन-बटकन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लड़कों का खेल ।
अटकना-(हिं०क्रि०) चलते चलते रुक जाना, ठहरना, फँसना, उलझना, विवाद करना, झगड़ा करना, लगे रहना, प्रेम करना, बकझक करना ।
अटकर-(हिं०स्त्री०) अनुमान, **अटकरना**-(हिं०क्रि०) अनुमान करना, कूतना ।
अटकल-(हिं०स्त्री०) कूत, अनुमान ।
अटका-(हिं०पुं०) जगन्नाथपुरी में नैवेद्य लगाया हुआ भाग जो सुखाकर अन्य देशों में प्रसाद रूप में भेजा जाता है ।
अटकाना-(हिं०क्रि०) ठहराना, लगाना, गति रोकना, फँसाना, बाधा डालना, उठा रखना, उलझाना, **अटकाव**-(हिं०पुं०) अवरोध, प्रतिबंध, रुकावट ।
अटखट-(हिं०वि०) टूटा फूटा, छिन्न भिन्न, गड़बड़ ।
अटखेली-(हिं०स्त्री०) खेलकूद, चंचलता, कल्लोल, क्रीड़ा, कौतुक, झूमती हुई चाल ।
अटट-दृ-(हिं०वि०) पुष्ट, पोढ़ा, दृढ़ ।
अटन-(सं०नपुं०) भ्रमण, घूमना फिरना, गमन, यात्रा, चखना फिरना ।
अटना-(हिं०क्रि०) चलना फिरना, घूमना, यात्रा करना, रोकना, भरजाना, पूर्ण होना, समाना, पढ़ना ।
अटनि, अटनी-(सं०स्त्री०) धनुष का वह भाग जहाँ रोदा चढ़ाया जाता है ।
अटपट-(हिं०वि०) टेढ़ामेढ़ा, विकट, भयंकर, अद्भुत, गहरा, दुस्तर, गूढ़, उलटा सीधा ।
अटपटाना-(हिं०क्रि०) इधर उधर होना, सकुचाना ।
अटपटी-(हिं०स्त्री०) तिरछी, बेढंगी, सकोच भरी ।
अटब्बर-(हिं०पुं०) आडंबर, अभिमान, वंश, कुटुम्ब, परिवार, घराना ।
अटम-(हिं०पुं०) ढेर, राशि, समुदाय ।
अटरूष-(सं०पुं०) अडूसे का पेड़ ।
अटल-(हिं०वि०) न टलने वाला, निश्चल, स्थिर, अवश्य होनेवाला पोढ़ा, दृढ़ ।
अटवि, अटवी-(सं०स्त्री०) वन, जगल ।
अटविक-(सं०पुं०) लकड़हारा जो जंगल से लकड़ी काटकर लाता और बेचता है ।
अटवीलता-(सं०स्त्री०) कुम्हड़े का पौधा ।
अटहर-(हिं०पु०) राशि, ढेर ।
अटा-(सं०स्त्री०) पर्यटन, भ्रमण, मौवल, छत, ढेर ।
अटारी-(हिं०स्त्री०) छत, घर के सबसे ऊपर के खण्ड की कोठरी ।
अटाउ, अटाव-(हिं०पुं०) लगाव, विद्वेष
अटाटुट, अटाटूट-(हिं०वि०) न टूटने वाला, दृढ़, पुष्ट, बहुत, भारी, समग्र ।
अटाटयमान-(सं०वि०) इधर उधर भ्रमण करनेवाला, पर्यटनशील ।
अटाल-(हिं०पुं०) बहुत, ऊंचा घर,

धौरहरा, बुर्ज।
अटाला-(हिं०पुं०) सामग्री, ढेर, राशि, सामान।
अटिया-हिं०स्त्री०) छोटा घर, कुटिया, झोपड़ी, घास इत्यादि का बँधा हुआ मुट्ठा, आँटी।
अटूट-(हिं०वि०) न टूटनेवाला, जिसका खण्ड न हो सके, दृढ,अजेय, अधिक, बराबर, लगातार।
अटेक-(हिं०वि०) बिना टेक का, उद्देश्य रहित, बिना सहारे का।
अटेरन-(हिं०पुं०) सूत की आँटी बनाने का एक यन्त्र, ओयना, कुश्ती की एक दाँव, घोड़े को चक्कर देने की एक विधि। **अटेरना**-(हिं०क्रि०) सूत की आँटी बनाना, मोड़ना, नशे मे चूर होना।
अटोक-(हिं०वि०) बिना रोकटोक का, अप्रतिर्वधित।
अटम्बर-(हिं०पुं०) ढेर,राशि, समुदाय।
अट्ट-(सं०पु०) महल, अट्टालिका, हाट, बाजार, (वि०) अधिक, बहुत ऊंचा।
अट्टक-(सं०पुं०) छत परकी कोठरी।
अट्टन-(सं०नपु०) ढाल, अप्रतिष्ठा।
अट्टहसित-(सं०वि०) ठहाके की हँसी। **अट्टहास**-(सं०पुं०) ठट्ठा मार कर हँसना, ठहाके की हँसी, बड़े जोर की हँसी। **अट्टहासक**-(सं०पुं०) ठहाका मारकर हंसनेवाला, कुन्दवृक्ष। **अट्टहासी**-(सं०पुं०) महादेव, शिव।
अट्टा-(हिं०पुं०) अट्टालिका, अटारी, मचान।
अट्टाट्टहास-देखो अट्टहास।
अट्टाल-(सं०पुं०) महल में सब से ऊपर की छत पर का कमरा।
अट्टालिका-(सं०स्त्री०) अटारी, बड़ा मकान, राजगृह, प्रासाद, **अट्टालिकाबन्ध**-(सं०पुं०) डाट, कमानीदार नीव।
अट्टी-(हिं०स्त्री०) लच्छी, अटेरन में लिपटा हुवा ऊागा।
अट्ठा-(हिं०पुं०) ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की आठ बूटियाँहों
अट्ठाइस, अट्ठाईस-(हिं०वि०) बीस और आठ से बनी हुई संख्या २८। **अट्ठाइसवाँ**-(हिं०वि०) अट्ठाइस संख्या वाला।
अट्ठानवे-(हिं०वि०) नव्वे और आठ से बनी हुई संख्या ९८।
अट्ठावन-(हिं०वि०) पचास और आठ से बनी हुई संख्या ५८। **अट्ठावनवाँ**-(हिं०वि०) अट्ठावन संख्या का।
अट्ठासिवां-हिं०वि०) अट्ठासी संख्या का
अट्ठासी-(हिं०वि०) अस्सी और आठ से बनी हुई संख्या ८८।
अठ-(हिं०वि०) आठ की संख्या ८।
अठइसी-(हिं०स्त्री०) एक सौ चालीस (अट्ठाइस पंजा २८...५...१४०) इसका व्यवहार फलों की बिक्री में होता है, यह संख्या १०० समझी जाती है।
अठकोंसल-(हिं०स्त्री०) सभा, पंचायत, सलाह, मन्त्रणा।
अठखेलपन-(हिं०पुं०) खेलकूद, उपद्रव, नटखटी।
अठखेली-(हिं०स्त्री०) क्रीडा, कौतुक, खेलकूद, उछलकूद।
अठत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और आठ से बनी हुई संख्या ७८।
अठन्नी-(हिं० स्त्री०) आठ आने (आधे रुपये) का चाँदी की मुद्रा।
अठपतिया-(हि-वि०) आठ पत्तों की, एक प्रकार का बेलबूटा जिसमें आठ पत्तियां काढी जाती हैं।
अठपहला,अठपहलू-(हिं०क्रि०)आठ पहलका
अठपाव-(हिं०पुं०) उपद्रव, हलचल, गड़बड़ी।
अठबन्ना-(हिं०पुं०) ताने के सूत को लपेटने का बाँस।
अठमासा-(हि०वि०) आठ महीने का, आठ माशे की तौल का, ऊख बोने के लिये जो खेत माघ महीने से असाढ तक जोता जावे। **अठमासी**-हिं०वि०) आठ माशे की तौल वाली, गिन्नी।
अठलाना-(हिं०क्रि०) इतराना, क्रीडा कौतुक करना, ऐंठन दिखलाना, अभिमान प्रगट करना, चोचला दिखाना, मदोन्मत्त होना।
अठवना-(हिं०क्रि०) एकत्रित होना, इकट्ठा होना।
अठवाँस-(हिं०पुं०) अठपहलू पदार्थ, आठ कोने का टुकड़ा (वि०) अठपहल, आठ कोने का। **अठवाँसा**-(हि०वि०) आठ महीने में जन्म लेने वाला, (पु०) सीमन्तोन्नयन संस्कार जो गर्भ धारण करने के बाद आठवें महीने में होता है।
अठवारा-(हिं०पुं०) आठ दिनका काल, आठवाँ दिन, सप्ताह। **अठवारी**-(हि० स्त्री०) जमीदार को प्रत्येक आठवें दिन किसान से हलबैल देने की प्रथा
अठवाली-(हिं०वि०) पालकी जिसको आठ कहार उठा कर ले चलते हैं।
अठहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और आठ से बनी संख्या ७८। **अठहत्तरवां**-(हिं०वि०) अठत्तर संख्या वाला।
अठान-(हिं०पुं०) न ठानने या स्थिर करने योग्य, अनुचित कार्य, द्रोह, वैमनस्य, शत्रुता। **अठाना**-(हिं०क्रि०) ठानना, संताप देना, पीड़ा पहुंचाना
अठारह, अट्ठारह-(हिं०वि०) दस और आठ से बनी हुई संख्या १८। **अठारहवां, अट्ठारहवां,**-(हिं०वि०) अठारह संख्या वाला।
अठासिवां-(हिं०वि०) अठासी संख्याका
अठासी-(हिं०स्त्री०) अस्सी और आठ से बनी हुई संख्या।
अठिलाना-(हिं०क्रि०) देखो अठलाना।
अठे-(हिं०क्रि०वि०) यहां, इस स्थानपर
अठेल-हिं०वि०) न ठेलने योग्य, दृढ़, बलवान्, पुष्ट, स्थिर।
अठोठ-(हिं०पुं०) ठाट बाट, आडम्बर।
अठोतरसो-(हिं०वि०) एक सौ आठ की संख्या १०८।
अठोतरी-(हिं०स्त्री०) एक सौ आठ दाने की जप करने की माला, एक सौ आठ वर्ष की स्थिति।
अठोरा-(हिं०वि०) आठ का (पुं०) आठ पत्तों से बना हुआ दोना।
अठंग-(हिं०पुं०) अष्टांग, योग साधनेवाला।
अड़-(हिं०स्त्री०) हठ, टेक।
अड़काना-(हिं०क्रि०) रोकना, जाने न देना।
अड़ग-(हिं०वि०) दृढ़, पुष्ट, अचल।
अड़गोड़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी का टुकड़ा जो नटखट पशु के गले मे बाँध दिया जाता है जिससे वह जल्दी जल्दी दौड़ नहीं सकता, प्रतिबंध, ठोंकर।
अड़ङ्ग-हिं०पुं०) बजार, मण्डी, हाट।
अड़ङ्गा-(हिं०पुं०) अवरोध, रुकावट, बाधा।
अड़च-(हि०स्त्री०) शत्रुता।
अड़चन-(हि०स्त्री०) विघ्न, रुकावट, बाधा, आपत्ति।
अड़डन्डा-(हिं०पुं०) मस्तूल में बँधा हुआ बेंड़े बल का डन्डा जिसमें पाल बाँधी जाती है।
अड़ड़ पो पो-(हिं० पुं०) हाथ देखकर शुभाशुभ बतलाने वाला, वंचक, छली, पाखण्डी, बड़बड़िया, वृथा की बकवाद करने वाला, गप्पी।
अडण्ड-(हि०वि०) जिसको दण्ड न दिया गया हो, निर्भय, भयरहित।
अड़तल-(हिं०स्त्री०) आड़, ओट,अवरोध छाया, बहाना, आश्रय, शरण।
अड़तला-(हिं०पुं०) आश्रय, सहारा।
अड़तालिस, अड़तालीस- (हिं० वि०) चालीस और आठ से बन हुई संख्या ४८। **अड़तालिसवां**-(हिं०वि०) अड़तालिस संख्या का।
अड़तिस, अड़तीस-(हि०वि०) तीस और आठ से बनी हुई संख्या।
अड़तिसवाँ, अड़तीसवाँ-(हिं०वि०) अड़तीस संख्या वाला।
अड़दार-(हिं०वि०) अड़ने वाला, चलने में रुकने वाला, अड़ियल, मस्त।
अड़ना-(हिं० क्रि०) चलते चलते रुक जाना, हठ करना, टेक ठानना, रुकना, अटकना।
अड़बंग-(हिं०वि०) ठेढा, ऊँचा नीचा, दुर्गम, अड़बड़, अपूर्व, विकट,बेडौल।
अड़बंगा-हि० विं०) देखो अड़बंग।
अडम्बर-देखो आडम्बर।
अड़बड़-(हिं०पुं०) व्यर्थ की वार्ता,गाली गलौज, **अड़बड़बका** - गाली गलौज देना, प्रलाप करना।
अड़बन्ध-(विं०वि०) भयरहित, निर्भीक
अड़व (हिं०पुं०) एक प्रकार का राग।
अड़बल (हिं०वि०) अड़नेवाला, रुकने वाला, अड़ियल।
अड़सठ, अरसठ-(हिं०वि०) साठ और आठ से बनी हुई संख्या ६८। **अड़सठवाँ, अरसठवाँ**-(हिं०वि०) अड़सठ संख्या का।
अड़हु-(सं०पुं०) बकुल, मौलसिरी का वृक्ष।
अड़हुल-(हिं०पुं०) गहरे लाल रंग का एक पुष्प विशेष, देवी पुष्प, जपा पुष्प।
अड़ाड़-(हिं०पुं०) पशुओं को बाँधने का बाड़ा, ढेर, राशि।
अड़ाड़ा-(हिं०पुं०) आडंबर, ढोंग, ढकोसला।
अड़ान-(हिं०स्त्री०) विश्राम स्थान, पड़ाव, पथिकों के ठहरने का स्थान।
अड़ाना-(हिं०क्रि०) रोकना, ठहरना, टिकाना, आड़ देना, टेक लगाना, फँसाना, ठूँसना, भरना, ढरकाना (पुं०) टेक, रोक, ठहराव, एक राग विशेष।
अड़ानी-(हिं०पुं०) रोकने का साधन, ओट, बड़ी पंखी, मल्लयुद्ध का एक दाँव।
अड़ार-(हिं०पुं०) ढेर, राशि, लकड़ी का ढेर, लकड़ी की दूकान।
अड़ाल-(हि०पुं०) एक विशेष प्रकार का नाच।
अड़िग-(हिं०पुं०) न डोलने वाला, निश्चल, स्थिर।
अड़ियल-(हिं०वि०) अड़कर जानेवाला, शीघ्र कार्य न करने वाला, हठी।
अड़िया-(हिं०पुं०) साधुओं की टेककर बैठने की कुबड़ी।
अड़ी-(हिं०स्त्री०) रोक, हठ, अवसर, अड़ान, (वि०) ठहरी हुई, रुकी हुई। **अड़ीखंभ**-(हिं०वि०) शक्तिवान्, पुष्ट।
अड़ीठ-(हिं०वि०) अदृष्ट, गुप्त, (हिं०पु०) पीठ पर का फोड़ा।
अड़लना-(हिं०क्रि०) उड़ेलना, गिराना।
अड़ूसा-(हिं०पुं०) एक औषधि विशेष।
अड़ेयाना-(हिं०क्रि०) आश्रय देना।
अडोल-(हिं०वि०) न डोलने वाला, स्थिर।
अड़ोसपड़ोस-(हिं०पुं०) इधर, उधर, आस पास, समीप। **अड़ोसीपड़ोसी**-(हिं०पुं) समीप का रहने वाला, पास रहने वाला।
अड्डन-(सं०नपुं०) ढाल।
अड्डा-(हिं०पुं०) रहने का स्थान, निवास, डेरा, एकत्र होने का स्थान, दुष्टों के इकट्ठा होने का स्थान, सेना के रहने का स्थान, पक्षियों के बैठने का स्थान, खरादने की लकड़ी, वेश्यालय, करगह।
अड्डी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी छेदने की बरमी।
अढ़तिया-(हिं०पुं) आढ़त करने वाला, कमीशन पर माल बेंचने वाला, दलाल।

अढ़न-(हिं०स्त्री०) शिक्षा, उपदेश, वार्ता।
अढ़वना-(हिं०क्रि०) कार्य में नियुक्त करना, आज्ञा देना।
अढ़ारटङ्की-(हिं०स्त्री०) धनुष, कमान।
अढ़ाई-(हिं०वि०) दो तथा आधा मिल कर बनी हुई संख्या, पाँच का आधा।
अढ़िया-(हिं०स्त्री०) काठ या पत्थर का बना हुआ छोटा पात्र, गारा ढोने का तसला या कढैया।
अढ़ुक-(हिं०पु०) चोट, ठोंकर।
अढ़ूकना-(हिं०क्रि०) ठोंकर लगाना, ठेस लगना, चोट खाना, सहारा लेना, टेकना।
अढ़ुकि-(हिं०क्रि० वि०) आश्रय लेता हुआ।
अढ़ैया-(हिं०पुं०) अढाई सेर की तौल, पाँच सेर (पसेरी) का आधा, अढाई गुणे का पहाड़ा (वि०) कार्य मे नियुक्त करने वाला, निडर।
अण, अणक-(सं०त्रि०) अधम, नीन, बकवादी।
अणद-(हिं०पुं०) प्रसन्नता, आनन्द।
अणसङ्क-(हिं०वि०) निर्भीक, न डरने वाला।
अणास-(हिं०स्त्री०) अंडस, कठिनता।
अणि-(सं०पु०,स्त्री०) पहिये की धुरी की कील, नोक, आरा, अग्रभाग, धार, सीमा, किनारा, मेड़।
अणिमा-(सं०पुं०) अति सूक्ष्म परिमाण, आठ प्रकार की सिद्धियों मे से वह सिद्धि जिसके द्वारा योगी अतिसूक्ष्म रूप धारण कर सकता है।
अणियाली-(हिं०स्त्री०) बरछी, कटार।
अणिष्ठ-(सं०त्रि०) अति सूक्ष्म, बहुत महीन।
अणी-(हिं०अव्य०) एजी, अरी, ओजी।
अणीय-(सं०वि०) अति सूक्ष्म,बहुत महीन
अणु-(सं०त्रि०) सूक्ष्म, छोटा, थोड़ा, अदृश्य, (पु०) परमाणु, अतिसूक्ष्म कण, धान, संगीत शास्त्र का एक मात्रा। **अणुक**-(सं०त्रि०) निपुण, चतुर, अल्प परिमाण का। **अणुज्योति**-(सं०स्त्री०) सूक्ष्म दृष्टि। **अणुतर**-(सं०त्रि०) अधिक सूक्ष्म। **अणुता**-(सं०स्त्री०) सूक्ष्मता, अल्पता। **अणुत्व**-(सं०नपु०) अणुभाव, सूक्ष्मता, अल्पता। **अणुधर्म**-(सं०पुं०) वह धर्म जिसके सिद्धान्त बड़े सूक्ष्म हों। **अणुभा**-(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली। **अणुमात्र**-(सं०स्त्री०) अल्प परिमाण अल्प मात्रा का, थोड़ासा। **अणुरेणु**-(सं०पुं०) धूलि का कण। **अणुरेवती**-(सं०स्त्री०) जमालगोटा। **अणुवाद**-(सं०नपुं०) वैशेषिक दर्शन अथवा न्याय शास्त्र जो परमाणु को नित्य मानते हैं, वल्लभाचार्य का मत जो जीव तथा ईश्वर को अणु मानता है। **अणुवादी**-(सं०पुं०) वैशेषिक, नैयायिक, वल्लभाचार्य के मत का अनुयायी। **अणुवीक्षण**-(सं०नपुं०) सूक्ष्म दर्शक यन्त्र जिसके द्वारा निकट की सूक्ष्म वस्तु बड़ी देख पड़ती है, छिद्रान्वेषण, सूक्ष्म दर्शन। **अणुह**-(सं०पु०) भीमराज के एक पुत्र का नाम; **अण्टा**-(हिं०पु०) देखो अंटा।
अण्टागुड़गुड़-(हिं०वि०) देखो अंटा गुड़गुड़।
अण्टाघर-(हिं०पु०) देखो अंटाघर।
अण्टाचित-(हिं०वि०) देखो अंटाचित।
अण्टाबन्धू-(हिं०पु०) देखो अंटावंधू।
अण्टिया-(हिं०स्त्री०) देखो अंटिया।
अण्टियाना-(हिं०क्रि०) देखो अँटियाना।
अण्टी-(हिं०स्त्री०) देखो अंटी। **अण्टीतल**-(हिं०पु०) देखो अंटीतल।
अण्ठई-(हिं०स्त्री०) देखो अंठई।
अण्ठी-(हिं०स्त्री०) देखो अंठी।
अण्ड-(सं०नपु०) अण्डा, अण्डकोष वीर्य, मुष्क, मृगनाभि, संसार, कामदेव। **अण्डक**-(सं०पु०) अण्डकोष। **अण्डकटाह**-(सं०नपु०) ब्रह्माण्ड, संसार, विश्व, भूमण्डल। **अण्डकोश-(ष)**(सं०पु०) वृषण, मुष्क, फ़ोता, सीमा, फल।
अण्डग-(सं०पु०) गोधूम, गेहूँ।
अण्डज-(सं०पु०) अण्डे से उत्पन्न होने वाला प्राणी, ब्रह्मा, पक्षी, सर्प, मछली इत्यादि। **अण्डजा**-(सं०स्त्री०) मृगनाभि, कस्तूरी। **अण्डजेश्वर**-(सं०पुं०) पक्षियों का राजा गरुड़। **अण्डधर**-(सं०पु०) शिव, महादेव, शंकर।
अण्डबण्ड-(हिं०स्त्री०) देखो अंडबण्ड।
अण्डभू-(सं०पु०) अण्ड से उत्पन्न होने वाला, ब्रह्मा, पक्षी, मछली, सर्प इत्यादि।
अण्डवर्धन, अण्डवृद्धि-(सं०स्त्री०) अण्डकोष के बढ़ने का रोग।
अण्डस-(हिं०स्त्री०) देखो अंडस।
अण्डा-(हिं०पु०) अण्ड, गोलाकार पदार्थ। **अण्डाकर्षक** - (सं०नपु०) वधिया करने का कार्य। **अण्डाकार, अण्डाकृति**-(सं०त्रि०) अण्डे के आकार का। **अण्डाधार**-(सं०पु०) गर्भाश्रय के दोनों ओर की छोटी छोटी गोलियाँ। **अण्डालु**-(सं०पु०) अण्डेवाली मछली।
अण्डिका-(सं०स्त्री०) चार जव के बराबर का परिमाण।
अण्डी-(सं०स्त्री०) क्षुद्र रेशे आदि का बना हुआ मोटा वस्त्र, एरण्ड, रेंड़ी।
अण्डीर-(सं०पुं०) वीर्यवान्, पुष्ट, समर्थ
अण्डुवा-(हिं०पुं०) देखो अंडुआ।
अण्डुवा बैल-(हिं०पुं०) देखो अंडुआ बैल।
अण्डैल-(हिं०वि०) देखो अण्डालु।
अण्वस्थि-(सं० नपुं०) महीन छोटी हड्डी।
अतंक-(सं०पुं०) आतंक, कष्ट।
अतंत-देखो अत्यन्त।
अतंद्रिक-देखो अतन्द्रिक।
अतंद्रित-देखो अतन्द्रित।
अतः-(सं०अव्य०) इस वास्ते, इस कारण से, इसलिये, इससे।
अतएव-(सं०अव्य०) इसलिये, इस कारण से।
अतट-(सं० पु०) टीला, ऊँचा स्थान, शिखर, भूमि का नीचे का भाग।
अतत्वविद-(सं०पु०) तत्व को न जानने वाला।
अतथोचित-(सं०त्रि०) अनिश्चित, अयोग्य
अतथ्य-(सं०त्रि०) जो सत्य न हो, झूठा, मिथ्या, अन्यथा, असमान, ऊँचा नीचा।
अतद्गुण-(सं०पु०) एक विशेष प्रकार का अर्थालंकार जिसमें अत्यन्त समीप होने पर भी किसी वस्तु का गुण अन्य वस्तु में संघटित नहीं होता।
अतद्वान्-(सं०वि०) असदृश, असमान।
अतनु-(सं०पु०) बिना देह का, अशरीर, कामदेव।
अतन्त्र-(सं०वि०) बिना कारण का।
अतन्द्र-(सं०वि०) निद्रा रहित, सचेत, क्षिप्र। **अतन्द्रा**-(सं०स्त्री०) ऐसी औषधि जिसके प्रयोग से तन्द्रा और आलस्य हट जाता है। **अतन्द्रिक**-(सं०वि०) आलस्य रहित, व्यग्र। **अतन्द्रित**-(सं०वि०) बिना आलस्य का, निद्रा रहित, चंचल।
अतप-(सं०वि०) शान्त, ठंढा, जो गरम न हो।
अतप्त-(सं०वि०) बिना तपाया हुआ, ठंढा, कच्चा। **अतप्ततनु**-(सं०वि०) बिना छापा लगा हुआ, जिसका शरीर तप इत्यादि से दुर्बल न हुआ हो।
अतप्यमान-(सं०वि०) जिसको दुःख न मिला हो।
अतबान-(हिं०वि०) अत्यधिक, अत्यन्त।
अतर-(हिं०पु०) पुष्पनियास, फूलों का सुगन्धित सत्व।
अतरग-(हिं०पुं०) लंगर को भूमि से उखाड़ने की क्रिया।
अतरदान-(हिं०पु०) वह फूलदान जिसमें अतर का फाहा रखकर सत्कार के निमित्त सभा में सबको सूंघने के लिये रक्खा जाता है।
अतरल-(सं०वि०) जो तरल न हो, गाढ़ा।
अतरवन-(हिं०पुं०) दर्वाजे के चौखट के ऊपर रखने की पत्थर की पटिया
अतरसो-(हिं०क्रि०वि०) परसों के आगे का या बाद का दिन, आज से दो दिन बाद का या पहिले का दिन।
अतरिख-(हिं०पुं०) अन्तरिक्ष वायुमण्डल।
अतरुदारुण-(सं०पुं०) विधारा बूटी।
अतर्क-(सं०वि०) अहेतुक, बिना तर्क का।
अतर्किक-(सं०वि०) बिना विचार का, विवेचना न किया हुआ, बिना सोचा समझा, आकस्मिक। **अतर्क्य**-(सं०वि०) तर्क रहित, अनिर्वचनीय।
अतर्पी-(सं०वि०) तपस्या न करने वाली, अधर्मी।
अतल-(सं०वि०) बिना तल का, बहुत गहरा, अप्रतिष्ठित, पृथ्वी के नीचे के सात पातालों में पहिला (इसके नीचे के छ पातालों के नाम क्रम से वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल हैं।) **अतलस्पर्श, अतलस्पर्शी**-(सं०वि०) बहुत गहरा, अगाध, अथाह।
अतस्-(अतः)-(सं०अव्य०) इसलिये, इस कारण से।
अतस-(सं०पु०) आत्मा, वायु, अस्त्र, वल्कल का बना हुआ वस्त्र।
अतसी-(सं०स्त्री०) अलसी, तीसी।
अतापी-(सं०स्त्री०) ठण्ढा, शान्त, उद्वेगहीन।
अति-(सं०अव्य०) अतिशय, अधिक, प्रकर्षता, असम्भावना अर्थ में यह शब्द प्रयोग होता है। **अति उक्ति**-(हिं०स्त्री०) देखो अत्युक्ति। **अतिकटु**-(सं०वि०) बहुत कड़ुआ। **अति कठोर**-(सं०वि०) बहुत कड़ा, अति क्लिष्ट। **अतिकण्टक**-(सं०पु०) छोटा गोखरू।
अतिकथ-(सं०वि०) न कहने योग्य, नष्ट
अतिकथा-(सं०स्त्री०) व्यर्थ का प्रलाप, बकबक।
अतिकर्षण-(सं०वि०) बहुत खींचनेवाला
अतिकश-(सं०वि०) उद्दण्ड, दुष्ट, स्वेच्छाचारी, किसी से न दबने वाला।
अतिकान्त-(सं०वि०) अति प्रिय।
अतिकाय-(सं०वि०) दीर्घकाय, स्थूल, प्रचण्ड, भयानक। (पुं०) रावण का एक पुत्र जो धन्यमालिनी निशाचरी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। यह बड़ा बलवान् तथा नीतिकुशल था। तपस्या द्वारा ब्रह्मा को सन्तुष्ट करके इसने अनेक दिव्यास्त्र पाये थे दशानन के आदेश से यह राम से युद्ध करने लिये गया परन्तु लक्ष्मण ने इसका वध किया।
अतिकारक-(सं०वि०) अति करनेवाला, निर्दयी।
अतिकाल-(सं०पु०) कुसमय, विलम्ब, देर।
अतिकुत्सित-(सं०वि०) अति निन्दनीय, बहुत बुरा।
अतिकुल्व-(सं०वि०) बहुत रोवेंवाला
अतिकृच्छ्र-(सं०नपु०) एक कठिन प्रायश्चित, जो बारह रात्रि तक किया जाता है, महासंकट। **अतिकृत**-(सं०वि०)मर्यादा को उल्लंघन करके किया हुआ। **अतिकृति**-(सं०स्त्री०) मर्यादा का अतिक्रमण करके किया हुआ कार्य, पचीस अक्षरों का एक छन्द विशेष।
अतिकृष-(सं०वि०) बहुत दुर्बल, बड़ा दुबला पतला। **अतिकृष्ण**-(सं०त्रि०) बहुत काले रंग का। **अतिकेशर**-(सं०पु०) कुंजवृक्ष, टेढ़ा-मेढ़ा वृक्ष।

अतिक्रम-(सं०पुं०) उलटा व्यवहार, अपराध, व्युत्क्रम, उल्लंघन।
अतिक्रमण-(सं०नपुं०) उल्लंघन, बढ़ती।
अतिक्रमणीय-(सं०वि०) पार न करके योग्य।
अतिक्रान्त-(सं०वि०) लाँघा हुआ, पार पहूँचा हुआ।
अतिक्रुद्ध-(सं०वि०) अतिक्रोध से युक्त।
अतिगत-(सं०वि०) बहुत चला हुआ।
अतिगति-(सं०स्त्री०) उत्तम गति, मुक्ति, मोक्ष।
अतिगन्ध-(सं०वि०) बहुत सुगन्ध वाला, (पुं०) चम्पे का वृक्ष, गन्धक।
अतिगर्वित-(सं०वि०) बड़ा घमंडी।
अतिगहन-(सं०वि०) बहुत गहरा, अतिगूढ़।
अतिगह्वर-(सं०वि०) अप्रवेश्य, अति घना, जिसके भीतर प्रवेश न हो सके
अतिगुण-(सं०पुं०) गुणों की अधिकता, चातुर्य, गुणहीनता।
अतिगुप्त-(सं०वि०) बहुत छिपाया हुआ
अतिगुरु-(सं०पुं०) अत्यन्त पूजनीय व्यक्ति (वि०) बहुत भारी, भार से अधिक।
अतिगो-(सं०पुं०) सुन्दर गाय।
अतिग्रह-(सं०त्रि०) अच्छा ज्ञान, शुद्ध ज्ञान।
अतिग्राह-(सं०पुं०) मगर, घड़ियाल, गात्र विशेष।
अतिग्राह्य-(सं०वि०) अधिक ग्रहण करने योग्य।
अतिघ-(सं०पुं०) शस्त्र, हथियार, क्रोध
अतिघूर्णता-(सं०स्त्री०) गहरी नींद।
अतिचण्ड-(सं०वि०) बहुत भयंकर।
अतिचमू-(सं०वि०) सेनाको जीतनेवाला
अतिचर-(सं०वि०) उलट पलट होनेवाला
अतिचरा-(सं०स्त्री०) चमेली का पौधा।
अतिचापल्य-(सं०नपुं०) बड़ी चपलता।
अतिचार-(सं०पुं०) व्यतिक्रम, लाँघ कर जाना।
अतिचारी-(सं०वि०) बहुत भ्रमण करने वाला।
अतिच्छत्र-(सं०नपुं०) एक प्रकार का जल में उगनेवाला पौधा, तालमखाना, कुकुरमुत्ता।
अतिच्छत्रा-(सं०स्त्री०) सौंफ़।
अतिजगती-(सं०वि०) संसार को लाँघने वाली (स्त्री०) एक छन्द विशेष।
अतिजन-(सं०वि०) निर्जन (स्थान), जनशून्य।
अतिजर-(सं०वि०) बहुत बुड्ढा।
अतिजल-(सं०वि०) पानी से खूब सींचा हुआ।
अतिजव-(सं०वि०) बहुत तीव्र चलने वाला, (नपुं०) वेगयुक्त गति।
अतिजागर-(सं०पुं०) बहुत जागनेवाला बहुत जागना।
अतिजीर्ण-(सं०वि०) बहुत पुराना।
अतिजीर्णता-(सं०स्त्री०) बहुत बुढ़ापा।
अतितत-(सं०वि०) बहुत फैला हुआ।
अति तपस्विनी-(सं०स्त्री०) गोरखमुण्डी बड़ी तपस्या करनेवाली।
अतितपस्वी-(सं०पुं०) बड़ी तपस्या करनेवाला।
अतितार-(सं०पुं०) उच्च स्वर, तीव्र ध्वनि।
अतितीक्ष्ण-(सं०वि०) बहुत तीव्र, बहुत तीता। **अतितीव्र**-(सं०वि०) बहुत तीव्र। **अतितृप्ति**-(सं०स्त्री०) अतितृप्ति या सन्तोष। **अतितृष्णा**-(सं०स्त्री०) बड़ी प्यास।
अतिथि-(सं०पुं०) आगन्तुक, अभ्यागत, पाहुन, अतिथिक्रिया, पाहुन का सत्कार; **अतिथि विद्वेष**, पाहुन से झगड़ा करना, **अतिथिपत**-पाहुन का सत्कार करनेवाला, **अतिथिपरिचर्या**-अतिथि सत्कार; **अतिथिपूजा**-अतिथि सत्कार, **अतिथियज्ञ**-पाहुन का सत्कार, अतिथि का आदर; **अतिथिसेवा**-अतिथि पूजा।
अतिदग्ध-(सं०वि०) बहुत जला हुआ।
अतिदर्शी-(सं०वि०) दूर तक देखनेवाला। **अतिदाता**-(सं०पुं०) बहुत उदार मनुष्य। **अतिदान**-(सं०नपुं०) अपरिमित दान। **अतिदानी**-(हिं०पुं०) बड़ा दान करने वाला। **अतिदारुण**-(सं०वि०) बड़ा भयंकर। **अतिदाह**-(सं०पुं०) बड़ी ज्वाला, बड़ी जलन।
अतिदीप्ति-(सं०स्त्री०) बड़ा प्रकाश, श्वेत तुलसी। **अतिदीर्घ**-(सं०वि०) बहुत लम्बा। **अतिदुःखित**-(सं०वि०) अत्यंत दुखी। **अतिदुर्गत**-(सं०वि०) बुरी अवस्था में। **अतिदुर्धर्ष**-(सं०वि०) बड़े क्लेश से प्राप्त, अति क्रोधी स्वभाव वाला। **अतिदुर्लभ**-(सं०वि०) कठिनता से प्राप्त करने योग्य। **अतिदुष्कर**-(सं०वि०) बहुत कठिन। **अतिदुष्ट**-(सं०पुं०) बड़ा दुष्ट, (पुं०) गोखरू। **अतिदुःसह**-(सं०वि०) कठिनता से सहने योग्य।
अतिदूर-(सं०वि०) बहुत दूर का।
अतिदेव-(सं०पुं०) सब देवताओं में श्रेष्ठ, शिव, महादेव। **अतिदेश**-(सं०पुं०) अपने विषय को त्यागकर दूसरे स्थान में आरोपण। **अतिदोष**-(सं०पुं०) बहुत बड़ा दोष या अपराध
अतिधन्वा-(सं०पुं०) बहुत बड़ा धनुर्धारी योद्धा, **अतिधवल**-(सं०वि०) बहुत शुभ्र, बहुत श्वेत। **अतिधृति**-(सं०स्त्री०) एक छन्द विशेष। **अतिनाभ**-(सं०पुं०) हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम।
अतिनिद्रता-(सं०स्त्री०) बहुत नींद आने का रोग। **अतिनिद्र** (सं०वि०) जिसको निद्रा न आती हो, बहुत सोने वाला, **अतिनिपुण**-(सं०वि०) प्रवीण, बड़ा चतुर। **अतिनिर्हारी**-(हिं०वि०) बड़ी सुगन्ध का, मनोहर गन्ध वाला। **अतिनीच**-(सं०वि०) बड़ा नीच, बहुत अधम। **अतिपन्थ**-(सं०पुं०) अच्छामार्ग, सुमार्ग; **अतिपक्व**-(सं०वि०) अच्छी तरह पका हुआ।
अतिपतन-(सं०नपुं०) अतिक्रमण।
अतिपथ-(सं०पुं०) सुन्दर पथ, सुपंथ।
अतिपन्न-(सं०वि०) अतिक्रान्त। **अतिपर**-(सं०पुं०) प्रबल शत्रु। **अतिपरोक्ष**-(सं०वि०) जो परोक्ष न हो, आँखों से देखी हुई। **अतिपात**-(सं०वि०) अतिक्रमण, गड़बड़ी, विघ्न, हानि, बाधा। **अतिपातक**-(सं०पुं०) नव पातकों में से तीन सबसे बड़े पाप। **अतिपातित**-(सं०नपुं०) हड्डियों का टूटना। **अतिपात्य**-(सं०वि०) ध्यान में न लाने योग्य। **अतिपिच्छला**-(सं०स्त्री०) घिकुआर। **अतिपिञ्जर**-(सं०पुं०) बुरा घाव। **अतिपुरुष**-(सं०पुं०) उच्च श्रेणी का मनुष्य
अतिपूत-(सं०वि०) बहुत पवित्र। **अतिपेशल**-(सं०वि०) बड़ा निपुण। **अतिप्रणय**-(सं०पुं०) बड़ी कृपा। **अतिप्रबन्ध**-(सं०पुं०) पूरा प्रबन्ध। **अतिप्रवृद्ध**-(सं०वि०) बहुत बढ़ा हुआ, अत्यन्त बूढ़ा। **अतिप्रमाण**-(सं०वि०) अधिक प्रमाण, युद्ध, जिसके लिये कोई प्रमाण न हो। **अतिप्रवृत्ति**-(सं०स्त्री०) अधिक प्रवृत्ति या झुकाव।
अतिप्रश्न-(सं०पुं०) ऐसा प्रश्न जो समझ में न आवे। **अतिप्रसक्ति**-(सं०स्त्री०) बड़ी आसक्ति या चाह। **अतिप्रसङ्ग**-(सं०पुं०) प्रबल इच्छा उत्कट अभिलाषा, अतिमैथुन। **अतिप्रसिद्ध**-(सं०वि०) बहुत प्रसिद्ध। **अतिप्राण**-(सं०पुं०) स्वर्गीय जीवन। **अति प्राणप्रिय**-(सं०वि०) प्राण से भी अधिक प्यारा। **अतिप्रौढ़**-(सं०वि०) अति बलवान्; **अतिप्रौढ यौवन**-पूरी युवावस्था। **अतिप्रौढा**-(सं०स्त्री०) अच्छी तरह बढ़ी हुई कन्या।
अतिबरवै-(हिं०पुं०) हिन्दी का एक छन्द जिसके पहिले और तीसरे चरण में बारह तथा दूसरे और चौथे चरण में नव मात्रायें होती हैं।
अतिबरसन-(हिं०पुं०) अतिवर्षा, घटा।
अतिबल-(सं०वि०) अतिप्रबल, बड़ा बलवान्।
अतिबला-(सं०स्त्री०) एक पीली लता, ककही का पौधा, बरियारी।
अतिबालक-(सं०पुं०) छोटा सा बच्चा।
अतिबाला-(सं०स्त्री०) दो वर्ष के वय का बच्चा।
अतिबाहु-(सं०पुं०) अद्वितीय बाहुबल का मनुष्य।
अतिबृहत्फल-(सं०पुं०) कटहल का फल।
अतिब्रह्मचर्य-(सं०पुं०) ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद जिसने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो।
अतिभार-(सं०पुं०) बड़ा भार, अत्यन्त वेग, पर्वत, वज्र, (वि०) अतिशय।
अतिभारग-(सं०पुं०) बहुत भार ले जाने वाला, खच्चर। **अतिभारारोपण**-(सं०पुं०) पशु की पीठ पर बहुत बोझा लादना। **अतिभाव**-(सं०पुं०) अधिकता, आधिक्य।
अतिभी-(सं०स्त्री०) बिजली, विद्युत्।
अतिभीषण-(सं०वि०) बड़ा भयंकर।
अतिभूमि-(सं०स्त्री०) आधिक्य, अधिकता।
अतिभोजन-(सं०नपुं०) अत्यन्त भोजन, परिणाम से अधिक भोजन।
अतिभ्रू-(सं०वि०) बड़ी बड़ी भौहवाला।
अतिमंगल्य-(सं०वि०) अतिमंगल जनक (पुं०) बेल का वृक्ष।
अतिमञ्जुला-(सं०वि०) अति सुन्दर (स्त्री०) सेवती का पौधा।
अतिमति-(सं०स्त्री०) आग्रह, हठ,
अतिमर्याद-(सं०अव्य०) मर्यादा से बाहर (वि०) अतिशय, बिना मर्यादा का।
अतिमर्श-(सं०पुं०) निकट का सम्बन्ध।
अतिमात्र-(सं०वि०) प्रमाण से अधिक, बहुत अधिक।
अतिमान-(सं०पुं०) वृथा का अभिमान, बड़ा घमण्ड, (वि०) आवश्यकता से अधिक।
अतिमानिता-(सं०वि०) बड़ा हठ। **अतिमानी**-(सं०वि०) बड़ा अभिमानी, बड़ा हठी।
अतिमानुष-(सं०वि०) मनुष्य धर्म से परे, दिव्य, दैवी।
अतिमारुत-(सं०वि०) बहुत हवादार, (पुं०) आँधी।
अतिमित-(सं०वि०) प्रमाण से अधिक।
अतिमित्र-(सं०नपुं०) परम मित्र, परम सुहृद।
अतिमुक्त-(सं०वि०) मुक्ति प्राप्त किया हुआ, निरर्थक (पुं०) माधवी लता, **अतिमुक्तमाला**-मोगरे के फूल का हार।
अतिमुक्ता-(सं०स्त्री०) पुण्यमय देह।
अतिमुक्ति-(सं०स्त्री०) निर्वाण, परम मुक्ति।
अतिमूत्र-(सं०नपुं०) वह रोग जिसमें मूत्र बहुत अधिक निकलता है।
अतिमूर्ति-(सं०स्त्री०) दिव्य स्वरूप, सुन्दर रूप।
अतिमृत्यु-(सं०पुं०) मोक्ष, अधिक मृत्यु, महामारी।
अतिमैथुन-(सं०नपुं०) अत्यन्त स्त्री प्रसंग।
अतिमोदा-(सं०वि०) अत्यन्त सुगन्धित; (स्त्री०) नवमाल्लिका का पुष्प।
अतियश-(सं०वि०) अत्यन्त प्रसिद्धि, अति ख्याति।
अतियुक्त-(सं०वि०) बराबर कहा हुआ **अतियुवा**-(सं०वि०) बहुत जवान।
अतियोग-(सं०पुं०) अधिक संबंध, किसी औषधि का मात्रा से अधिक योग।
अतिरह-(सं०वि०) बड़ा वेगवान्, बड़ा धूर्त।
अतिरक्त-(सं०वि०) बहुत प्रेम करने वाला, बहुत अनुरक्त, तीव्र लाल रंग का। **अतिरक्ता**-(सं०स्त्री०) जवापुष्प, अड़हुल का फूल।

अतिज्जना-(सं०स्त्री०) बड़ा आडम्बर, बड़ा देखाव।
अतिरथ-(सं०पु०) बड़ा योद्धा, असंख्य, शत्रुओंका पराजय करने वाला।
अतिरभस-(सं०पुं०) अति तीव्र गति।
अतिरस-(सं०पु०) मोटी ऊख, पहुड़ा।
अतिरसा-(सं०स्त्री०) मूर्वा लता।
अतिराज, राजा-(सं०पुं०) राजाओं का राजा, राजाधिराज।
अतिराजकुमारी-(सं०वि०) सबसे श्रेष्ठ राजकुमारी।
अतिरात्र-सं०पु०) वह यज्ञ जो एकही रात्रि से आरंभ होकर समाप्त हो जावे
अतिरिक्त-(सं०वि०) अधिक, श्रेष्ठ, भिन्न, शून्य; (नपु०) अधिकता।
अतिरुच-(सं०वि०) बड़ी चमक वाला, दैदीप्यमान।
अतिरुचिर-(सं०वि०) बहुत सुन्दर।
अतिरुष्ट-(हिं०वि०) बड़ा क्रुद्ध।
अतिरूक्ष-(सं०वि०) बहुत सूखा, निर्मोही, प्रेमरहित।
अतिरूप-(सं०वि०) रूपहीन, ईश्वर, मनोहर आकृति।
अतिरेक-(सं०पु०) विशेषता, अधिकता, भेद।
अतिरोग-(सं०पु०)क्षयरोग, राजयक्ष्मा।
अतिरोधान-(सं०नपु०) अन्धकार का अभाव, प्रकाश, (वि०) प्रकाशित, खुला हुआ।
अतिरो (लो) मश-(सं०पु०) जंगली घने बालों वाला बकरा, एक प्रकार का बन्दर; (वि०)अत्यन्त रोवों से युक्त।
अतिरोहण-(सं०पु०) बहुत चढ़ना, अवस्था, वय।
अतिलक्ष्मी-(सं०स्त्री०) बहुत धन। **अतिलंघन**-(सं०नपु०) बड़ा उपवास।
अतिलम्ब-(सं०वि०) बहुत लम्बा।
अतिलम्बी-(सं०स्त्री०) सतावर का पौधा। **अतिलुब्ध**-(सं०वि०) बड़ा लालची। **अतिलुलित**-(सं०वि०) निकट संबध वाला। **अतिलोभ**-(सं०पु०) बड़ी लालच। **अतिलोभता**-(सं०स्त्री०)अत्यन्त लालच। **अतिलोम**-(सं०वि०) बहुत रोवें वाला। **अतिलोहित**-(सं०वि०) बहुत लाल, तीव्र लाल रंग का। **अतिलौल्य**-(सं०नपु०) बड़ी चंचलता। **अतिवक्ता**-(सं०पुं०) बहुत बोलनेवाला, बोलक्कड़, बकवादी। **अतिवक्र**-(सं०वि०) बहुत टेढ़ा मेढ़ा। **अतिवय**-(सं०वि०) बहुत बुड्ढा।
अतिवर्णाश्रमी-(सं०पु०) जो वर्णाश्रम से बिलकुल अलग हो अर्थात् किसी वर्णाश्रम का न हो।
अतिवर्तन-(सं०पु०) व्यायाम।
अतिवर्ती-(सं०वि०) अग्रगामी, आगे जाने वाला।
अतिवर्तुल-(सं०पु०)बहुत ही गोलाकार
अतिवात-(सं०पु) आँधी, तीव्र वायु।
अतिवाद-(सं०पु०) कठोर वचन, कड़ी बात, अत्युक्ति। **अतिवादी**-(सं०वि०) सच्चा, खरा, अपना पक्ष समर्थन करने वाला, गर्वी।
अतिवास-(सं०पुं०) श्राद्ध करने के पूर्व दिन का उपवास।
अतिवाह-(सं०पु०) लिङ्ग शरीर का दूसरे शरीर में प्रवेश।
अतिवाहन-(सं०वि०) जो भारी बोझ न ले जा सके।
अतिवाहिक-(सं०नपु०) सूक्ष्म शरीर, (वि०) पातालवासी।
अतिवाहित-(सं०वि०) अतिक्रमण किया हुआ, लाँघा हुआ।
अति विकट-(सं०पु०)बड़ा विकट, दुष्ट (वि०) बहुत भयंकर।
अतिविदाही-(सं०स्त्री०) बड़ी जलन उत्पन्न करने वाला।
अतिविद्ध-(सं०वि०) बहुत घायल।
अतिविपिन-(सं०वि०) बहुत जंगली।
अतिविलम्बी-(सं०वि०) बहुत देर करने वाला, बड़ा आलसी।
अतिविश्व-(सं०पु०) संसारभरमें श्रेष्ठ।
अतिविष, अतिविषा-(सं०) बड़ा विष, वचनाग, अतीस।
अतिवृंहित-(सं०वि०) पुष्ट, दृढ़, बलवान्, पोढा।
अतिवृत्त-(सं०वि०)अतिशयी,बहुत गोल।
अतिवृत्ति-(सं०स्त्री०) आगे बढ़ जाना।
अतिवृद्धि-(सं०स्त्री०) अधिक उन्नति।
अतिवृष्टि-(सं०स्त्री०) बहुत वर्षा होना,
अतिवृष्टिहत-मुसलाधार वृष्टि से चोट खाया हुआ।
अतिवेगित-(सं०वि०)बड़ा वेग का, बड़ी तीव्रता का।
अतिवेपथु-(सं०वि०)बहुत काँपता हुआ।
अतिवेला-(सं०स्त्री०)विलम्ब, असमय।
अतिवैचक्षण्य-(सं०वि०)बड़ी बुद्धिमानी।
अतिव्यथन, अतिव्यथा-(सं०)बड़ी पीड़ा
अतिव्यय-(सं०पु०) अपरिमित व्यय, आवश्यकता से अधिक व्यय।
अतिव्याप्त-(सं०वि०) सब स्थान में व्याप्त। **अतिव्याप्ति**-(सं०स्त्री०) अधिक व्याप्ति, किसी लक्षण या कथन के अन्तर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तुके निर्देश को न्याय में अतिव्याप्ति का दोष कहते हैं।
अतिव्यायाम-(सं०पु०) अति परिश्रम, बहुत अधिक व्यायाम।
अतिशक्त-(सं०वि०)अत्यन्त शक्तिमान्।
अतिशक्ति-(सं०स्त्री०)अत्यधिक शक्ति
अतिशक्तिता-(सं०स्त्री०) महाबल, अति विक्रम।
अतिशक्र-(सं०वि०) इन्द्र से भी बड़ा।
अतिशंका-(सं०स्त्री०) अत्यन्त भय, बहुत डर।
अतिशय-(सं०पुं०)अधिकता, बहुतायत।
अतिशयन-(सं०नपु०)अधिक निद्रा लेना।
अतिशयोक्ति-(सं०स्त्री०) बहुत बढ़ाकर कही हुई बात। काव्य में एक अलंकार विशेष जिसमें किसीविषय की अप्रधानता दिखलाकर प्राकृत विषय को बढ़ाकर वर्णन किया जाता है।
अतिशयोपमा-(सं०स्त्री०) ऐसी उपमा जिसमें किसी वस्तु की उपमा दूसरी वस्तु के साथ न दो जा सके।
अतिशर्वरी-(सं०स्त्री०) आधी रात।
अतिशुष्कली-(सं०स्त्री०)तिल की रोटी।
अतिशस्त-(सं०वि०) अत्युत्तम।
अतिशस्त्र-(सं०त्रि०) सब शस्त्रों में उत्तम शस्त्र।
अतिशायी-(सं०वि०) अधिक, प्रचुर।
अतिशीतल-(सं०पु०) बहुत जाड़ा।
अतिशीलन-(सं०नपु०) अभ्यास।
अतिशुक, अतिशुक्ल-(सं०वि०) बहुत शुभ या श्वेत।
अतिशूद्र-(सं०पु०)अन्त्यज, जिस शूद्र के हाथ का पानी द्विजाति नहीं पीते।
अतिशेष-(सं०वि०) बहुत थोड़ा सा, बचा हुआ।
अतिशोभन-(सं०वि०) बहुत सुन्दर, अति ललित।
अतिशोष-(सं०पु०) क्षयरोग।
अतिश्री-(सं०वि०) बड़ा श्रीमान्, बहुत धनी।
अतिश्रेष्ठ-(सं०वि०) सबसे श्रेष्ठ, बहुत बड़ा।
अतिसंस्कृत-(सं०वि०) अच्छी तरहसे संस्कार किया हुआ।
अतिसक्ति-(सं०वि०) बड़ा प्रेम।
अतिसन्तप्त-(सं०वि०) बड़ा दुखी, अतिपीड़ित।
अतिसन्ध-(सं०पु०) शास्त्र की आज्ञा का उल्लंघन, किसी आदेश या प्रतिज्ञा का भग।
अतिसन्धान-(सं०नपु०) विश्वासघात, वंचना, धोखा।
अतिसन्धित-(सं०वि०) ठगा हुआ।
अतिसन्धेय-(सं०वि०)प्रसन्न करने योग्य
अतिसमर्थ-(सं०वि०) बहुत योग्य।
अतिसमीप-(सं०वि०) बहुत ही निकट।
अतिसम्पर्क-(सं०पु०) अति समीपता।
अतिसर्ग-(सं०पु०) उत्सर्ग दान। **अतिसर्जन**-(सं०नपु०)विसर्जन,अधिक दान।
अतिसाध्वी-(सं०स्त्री०) बड़ी पतिव्रता।
अतिसांवत्सर-(सं०वि०)एकवर्षसे अधिक।
अतिसामान्य-(सं०पु०) वह उक्ति जो इतने अधिक सामान्यरूप से कही जाय कि उसका आशय पूर्णरूप से न घटे (वि०) बहुत ही सामान्य।
अतिसार-(सं०पु०) उदर का एक रोग जिसमें आँव तथा रुधिर मिला हुआ शौच होता है। **अतिसारी**-(सं०त्रि०) अतिसार रोग के ग्रस्त।
अतिसुजन-(सं०त्रि०) बहुत सज्जन, अति माननीय।
अतिसुन्दर-(सं०वि०) बड़ा मनोहर।
अतिसुलभ-(सं०वि०)सरलता से मिलने वाला।
अतिसूक्ष्म-(सं०वि०) बहुत महीन।
अतिसृष्टि-(सं०वि०) अपूर्व संसार।
अतिसेवा-(सं०स्त्री०) अधिक शुश्रूषा।
अतिसौरभ-(सं०नपु०)अत्यन्त सुगन्धित
अतिस्तुति-(सं०स्त्री०) बड़ी स्तुति या प्रशसा।
अतिस्थिर-(सं०वि०) बहुत ही अचल।
अतिस्थूल-(सं०वि०) बहुत मोटा।
अतिस्निग्ध-(सं०वि०) बहुत चिकना, अत्यन्त प्रिय।
अतिस्रवा-(सं०स्त्री०) महुवा का वृक्ष।
अतिस्वप्न-(सं०पु०)अधिक नींद आना।
अतिस्वस्थ-(सं०वि०) बहुत निरोग, आरोग्य। **अतिहसित**-(सं०नपुं०)अतिशय हँसी, शब्द सहित हँसी। **अतिहास**-(सं०पु०) अत्यन्त हँसी।
अतिह्रस्व-(सं०वि०) अत्यन्त छोटा, बहुत नन्हा।
अतीक्ष्ण-(सं०वि०) तीखा नही, मन्द, जो तीव्र न हो।
अतीत-(सं०वि०) अतिक्रान्त, बीता हुआ; **अतीतकाल**-बीता हुआ समय।
अतीतना-(हिं०क्रि०) बीतना, छोड़ देना।
अतीथ-(हिं०पुं०) पाहुन, अतिथि।
अतीन्द्र-(सं० पुं०) इन्द्र का उल्लंघन करने वाला।
अतीन्द्रिय-(सं०वि०) अगोचर, जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा न हो सके।
अतीव-(सं०अव्य०) अतिशय, अत्यन्त, बहुत।
अतीव्र-(सं०वि०) जो तीव्र न हो।
अतीस-(हिं० पु०) एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ औषधि के काम में आती है, अतिविष।
अतीसार-देखो अतिसार।
अतुंग-(सं० वि०) जो ऊँचा न हो, छोटा, बौना।
अतुन्द-(सं०वि०) दुर्बल, जो बलिष्ट न हो।
अतुराई-(हिं०स्त्री०) चंचलता, आतुरता, जल्दी। **अतुराना**-(हिं०क्रि०) आतुर होना, गबड़ाना, जल्दी करना।
अतुल-(सं०पु०) कफ, तिल, (वि०) अनुपम, बहुत अधिक, तुलना रहित, असीम। **अतुलनीय**-(सं०वि०) अद्वितीय, अपार, अपरिमित, बेजोड़, बहुत अधिक। **अतुलित**-(सं०वि०) बिना तौला हुआ, अधिक, अपार, अपरिमित, तुलना रहित, असंख्य।
अतुल्य-(सं०वि०) अनुपम, असदृश, बेजोड़, **अतुल्ययोगिता**-एक अलंकार जिसमें अनक पदार्थो का धर्म होते भी किसी विशिष्टपदार्थ का विरुद्ध आचरण दिखलाया जावे।
अतुष - (सं० वि०) बिना भूसे या छिलकेका।
अतुष्टि-(सं०स्त्री०) असन्तोष, लालच।
अतुष्टिकर-(सं०वि०) सन्तोष न देने वाला, अरुचिकर।
अतूथ-(हिं०वि०) बहुत ऊंचा, अपूर्व, विलक्षण।
अतूल-(हिं०वि०) अतुल्य, अनुपम।

अतृप्त-(स०वि०) असन्तुष्ट, जिसका पेट न भरा हो।

अतृप्ति-(स०स्त्री०) असन्तोष, चित्त की अशान्ति।

अतृष्ण-(सं० वि०) बिना तृष्णा का, जिसको लालच न हो। **अतृष्णा**-(सं०स्त्री०) लालसा न होना।

अतेज-(सं०वि०) बिना चमक का, धुंधला, प्रतापहीन।

अतोर-(हिं०वि०) न टूटने वाला, दृढ़, पुष्ट।

अतोल-(हिं० वि०) बिना तौल का, अनोखा, बहुत, अधिक।

अतोषणीय-(स० वि०) सन्तुष्ट न होने योग्य।

अतौल-(हिं०वि०)बेतौल, बिना तौलका।

अत्त-(स०अति०) बहुत, ज्यादा, अधिक।

अत्ता-(स० स्त्री०) माता, सास।

अत्तार-(स०पु०) इत्र बेचने वाला, गंधी, यूनानी औषधियों का विक्रेता

अत्तिका-(स०स्त्री०) बड़ी बहिन।

अत्यग्नि-(स०पु०) क्षुधा का अधिक लगाना।

अत्यद्भुत-(सं०वि०) बड़ा आश्चर्यजनक, बड़ा अनोखा।

अत्यन्त-(सं०नपु०) अतिशय, बहुतायत, (वि०) अधिक, बहुत; **अत्यन्तकोपन**-बड़ा क्रोध; **अत्यन्तगति**-तीव्र गमन:; **अत्यन्तगामी**-तीव्र चलने वाला; **अत्यन्तगुणी** - अनोखे गुणों वाला; **अत्यन्तपद्मा**-कमलिनी; **अत्यन्तपीडन**-बहुत कष्ट या पीडा देने का कार्य, **अत्यन्तभाव** - चिरकाल तक बने रहने की अवस्था, बड़ी न्यूनता; **अत्यन्तवासी**-गुरु के पास रहने वाला छात्र, **अत्यन्तशोणित** -बहुत लाल रंग का, **अत्यन्तसंयोग** -अस्तित्व, व्याप्ति, **अत्यन्तसम्पर्क**-बहुत अधिक एक साथ रहना, **अत्यन्त सुकुमार**-अति कोमल। **अत्यन्तभाव**-(स०पु०) किसी पदार्थ का बिलकुल न होना, पूर्ण रूप से न होना, सब प्रकार की न्यूनता।

अत्यन्तिक-(सं०वि०) बहुत घूमने वाला, बहुत कम दूरी का, समीप का, निकटवर्ती।

अत्यम्ल-(स०पु०) इमली का वृक्ष, (वि०) बहुत खट्टा।

अत्यम्ला-(सं०स्त्री०) बिजौरी नीबू।

अत्यय-(सं०पुं०) अभाव, नाश, दोष, दण्ड, दुःख, कष्ट, सीमा से बाहर जाना।

अत्यर्क-(स०पु०) मदार का वृक्ष।

अत्यर्थ-(स०नपुं०) अतिशय, बहुतायत (अव्य०) बहुतायत से।

अत्यल्प-(सं०पुं०)बहुत थोड़ा, बहुत कम

अत्यष्टि-(सं०स्त्री०) सत्रह अक्षरों का एक छन्द विशेष।

अत्यसम-(स०वि०) बहुत ऊंचा नीचा।

अत्याकार-(सं०पुं०)अपयश, तिरस्कार।

अत्याग-(स०पुं०) त्यागका अभाव, जो न छोड़ा जा सके। **अत्यागी**-(स०वि०) त्याग न करनेवाला।

अत्याचार-(स०पुं०) सदाचार का उल्लंघन, अन्याय, बुरा आचरण, पाप, पाखण्ड, आडम्बर। **अत्याचारी**-(सं०त्रि०) अत्याचार करनेवाला, अन्यायी, पाखण्डी।

अत्याज्य-(स०वि०) त्याग न करने योग्य, जो छोड़ा न जा सके।

अत्यादर(स०पु०)अधिक मान या प्रतिष्ठा।

अत्यायु-(सं०नपुं०)अधिक वय का मनुष्य।

अत्याशा-(स० स्त्री०) तीव्र आशा, अत्यन्त स्पृहा।

अत्याहार-(सं०पुं०) अति भोजन।

अत्याहारी-(स० वि०) बहुत भोजन करनेवाला।

अत्युक्त-(स०वि०) बहुत बढ़कर कहा हुआ। **अत्युक्ति**-(सं०स्त्री०) असंभव उक्ति, बहुत बढकर वर्णन करने की रीति, एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का वर्णन अनोखी रीति से किया जाता है।

अत्युत्कट-(स०वि०)बड़ा उग्र या भयङ्कर।

अत्युत्साह-(स०पु०) बड़ा उत्साह या पराक्रम।

अत्युदार-(स०वि०) बड़ा उदार, बड़ा व्यय करने वाला।

अत्युष्ण-(स०वि०) बहुत गरम।

अत्र-(स०अव्य०) इस विषय में, इस स्थान में, यहां पर, यहां (हिं०पुं०) अस्त्र, हथियार।

अत्रप-(सं०वि०) निर्लज्ज।

अत्रभवान्-(स०त्रि०) पूज्यपाद, माननीय, श्रेष्ठ।

अत्रस्त-(स०वि०) भय रहित,न डरा हुआ

अत्रास-(सं०पुं०) भय का अभाव, निडर होना।

अत्रि-(सं०पुं०) सप्तर्षियों में से एक ऋषि जो ब्रह्मा के नेत्र से उत्पन्न हुए थे।

अत्रैगुण्य-(सं०नपुं०) सत्व, रज, तम इन तीनों गुणों का अभाव जिसको सांख्यवादी मोक्ष कहते हैं।

अत्रैव-(स०अव्य०) इसी स्थान में।

अत्वरा-(सं०स्त्री०) शीघ्रता का न होना, धैर्य।

अथ-(सं०अव्य०) अब, इस समय, अनन्तर, आरम्भ में।

अथऊ-(हिं०पु०) वह भोजन जो सन्ध्या होने से पहिले किया जाय।

अथक-(हिं०वि०)न थकनेवाला, परिश्रमी।

अथकिं-(सं०अव्य०)और क्या, फिर कैसे।

अथच-(सं०अव्य०) फिर, और भी।

अथमना(हिं०क्रि०) न रुकना, नठहरना।

अथरा-(हिं०पु०) मिट्टी की चौड़ी नाँद।

अथरी-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का खुले मुँह का छोटा पात्र, दही जमाने की मिट्टी की कूँड़ी।

अथर्व-(सं०पुं०) ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जिनको उन्होंने ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया था। **अथर्वनी**-(हिं०पु०) अथर्ववेदी पुरोहित जो कर्मकाण्ड या यज्ञ कराता है।

अथर्ववेद-(सं०पुं०) चतुर्थ वेद जो ब्रह्मा के उत्तर मुख से निकला था।

अथल-(हिं०पु०) भूमि जो किसान को खेती करनेके लिये लगान पर दी गईहो।

अथवना-(हिं०क्रि०) अस्त होना, डूबना, छिपना।

अथवा-(स०अव्य०)किंवा, या, पक्षान्तरमें

अथाई-(हिं०स्त्री०) घर के सामने का मैदान, चबूतरा बैठक, पंचायत करने का स्थान।

अथान, अथाना-(हिं०पुं०) अचार।

अथाना-(हिं०क्रि०) अस्त होना, डूबना, गहराई नापना, पानी का थाह लगाना।

अथापि-(सं०अव्य०) अब भी, इस तरह।

अथावत्-(हिं०वि०) अस्त हुआ, डूबाहुआ

अथाह-(हिं०वि०) जो बहुत गहरा, हो, बेथाह, अपार, अनन्त, गम्भीर, बहुत अधिक, अतिगूढ, अगाध।

अथिर-(हिं०वि०)अस्थिर, चलायमान।

अथोर-(हिं०वि०) थोड़ा नहीं, बहुत, अधिक।

अदंक-(हिं०पुं०) आतङ्क, भय, डर।

अदंड-(हिं०वि०) जो दण्ड के योग्य न हो, जिस पर कर न लगे, उद्दंड, स्वेच्छाचारी, निर्भय। **अदंडनीय**-(स०वि०) देखो अदण्डनीय **अदंडयमान**-(सं०वि०) देखो अदण्डयमान।

अदंड्य-(स०वि०) देखो अदण्ड्य।

अदंत-(हिं०वि०) देखो अदन्त।

अदंभ-(हिं०वि०) देखो अदम्भ।

अदक्ष-(स०वि०) जो निपुण न हो, अचतुर।

अदक्षिण-(स०वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, बायां, अचतुर, गँवार।

अदग-(हिं०वि०) बिना चित्त का, निरपराध, स्वच्छ, अछूता, बिना अपयशका।

अदग्ध-(स०वि०) बिना जलाया हुआ, जिसकी विधिपूर्वक दाहक्रिया न हुईहो।

अदण्ड्य-(स०वि०) जो दण्डके योग्य न हो, बिना कर का, स्वतन्त्र, मनमौजी

अदण्डनीय-(स०वि०) जो दण्ड देने के योग्य न हो।

अदत्त-(स०पुं०) विधिवत् न दिया हुआ, जो दान शास्त्रानुसार न दिया गया हो। **अदत्तदान**-बिना दिया हुआ दान, बल पूर्वक या चोरी से प्राप्त पदार्थ। **अदत्तदायी**-अदत्त सम्पत्ति को लेने वाला, ठग, चोर।

अदत्ता-(स०स्त्री०) अविवाहित कन्या (वि०) जो न दी गई हो।

अदन-(स०नपु०) भोजन, भक्षण, भक्षणीय पदार्थ।

अदनीय-(सं०वि०) भोजन करने योग्य।

अदन्त-(स०वि०) बिना दाँत का (पुं०) जोंक, एक आदित्य विशेष का नाम।

अदबदाकर-(हिं०क्रि०वि०) हठ से, जान बूझ कर, अवश्य, टेक करके।

अदभ्र-(सं०वि०) अधिक, प्रचुर, अपार, बहुत ज्यादा।

अदम्भ-(स०पुं०) दम्भ का अभाव (वि०) बिना आडम्बर का, सीधा, सादा, कपट रहित।

अदम्य-(स०वि०) जो दमन न किया जा सके, प्रबल, अजेय।

अदय-(स०वि०) दया रहित, निष्ठुर, निर्दय।

अदयालु-(स०वि०) करुणा रहित, क्रूर।

अदरक-(हिं०पु०) आर्द्रक, अदरख।

अदरकी-(हिं०स्त्री०) सोंठ में गुड़ मिलाकर बनी हुई टिकिया, सोठौरा।

अदरा-(हिं०पुं०) आर्द्रा नक्षत्र।

अदराना-(हिं०क्रि०) आदर पाने की इच्छा करना, इतराना, अभिमानी बनना।

अदर्श-(हिं०पुं०) दर्पण।

अदर्शन-(सं०नपुं०) दर्शन का अभाव, लोप, असावधानी, (वि०) न देख पड़ने वाला, अगोचर। **अदर्शनपथ**-मार्ग जो दृष्टिपथ से बाहर हो; **अदर्शनीय**-(सं०वि०) जो देखने योग्य न हो, कुरूप, भद्दा।

अदलबदल-(हिं०पुं०) परिवर्तन, उलटफेर, हेरफेर। **अदलाबदली**-(हिं० स्त्री०) लेनदेन।

अदली-(हिं०वि०) न्यायी, पत्रहीन।

अदवाइन, अदवान-(हिं०स्त्री०) ओनचन, रस्सी जो चारपाई के पैताने की ओर इसकी बिनावट को कसने के लिये लगाई जाती है।

अदहन-(हिं०पुं०) पानी जो बरतन में भरकर चावल या दाल उबालने के लिये आँच पर रक्खा जाता है।

अदाँत-(हिं०वि०) दन्तहीन, बिना दाँत का

अदाई-(हिं०वि०) चतुर, ढङ्गी, प्रवीण।

अदा करना-(हिं०क्रि०) देना, चुकाना।

अदाक्षिण्य-(स०नपुं०) अकृपा, दयाहीनता

अदाता-(सं०पुं०) न देनेवाला, कृपण, कंजूस

अदान-(स०पुं०) कंजूस, कृपण, (वि०) अज्ञान, निर्बुद्धि, नासमझ। **अदानी**-(हिं०वि०) कृपण, कंजूस।

अदान्त-(स०त्रि०) जिसकी इन्द्रियां वश में न हों, लम्पट।

अदान्य-(सं०वि०) कृपण, कंजूस।

अदाय-(सं०त्रि०) पैतृक सम्पत्ति का अंश न पाने योग्य।

अदायाँ-(हिं०वि०) बायाँ प्रतिकूल, बुरा।

अदायाद-(सं०त्रि०) जो सपिण्ड न हो, पतित।

अदार-(स०पु०) पत्नी रहित।

अदावँ-(हिं०पुं०) कठिनता, दाँवपेंच, धोखा।

अदास-(सं०पु०) जो दास न हो, स्वतन्त्र।

अदाह-(हिं०स्त्री०) हावभाव।

अदाहक-(सं०वि०) जिसमें जलाने की शक्ति न हो।

अदाह्य-(स०त्रि०) जिस मृतक की दाहक्रिया शास्त्र के अनुसार न की जा सके, जो फूँका न जा सके।

अदित-(हिं०पु०) देखो आदित्य ।

अदिति-(स०स्त्री०) दक्ष प्रजापति की कन्या तथा देवताओं की माता, पृथ्वी, वाणी, प्रकृति, देवलोक, असमान, रक्षा, पूर्णता, माता, पिता ।

अदितिज, अदितिनन्दन, अदितिसुत-(सं०पुं०) अदिति के पुत्र, देवता लोग ।

अदिन-(हिं०पुं०) कुसमय, बुरा दिन, अभाग्य, दुःख का समय ।

अदिव्य-(स०वि०) जो चमत्कारी न हो, सामान्य, संसारी, लौकिक ।

अदिष्ट-(हिं०पु०) देखो अदृष्ट ।

अदिष्टी-(हिं०वि०) जो दूरदर्शी न हो, मूर्ख, दुष्ट, अभागा, हतभाग्य ।

अदीक्षित-(स०वि०) जिसको दीक्षा न मिली हो, जो गुरुमुख न हुआ हो ।

अदीठ-(हिं०वि०) बिना देखा हुआ, अदृष्ट, गुप्त ।

अदीन-(स०वि०) धनी, उदार, अनम्र, अदुःखित, दीनता रहित, निडर ।

अदीनात्मा-(स०वि०) बड़ा उदार ।

अदीपित-(स०वि०) न जलाया हुआ ।

अदीयमान-(स०वि०) जो न दिया जा सके ।

अदीर्घ-(स०वि०) जो लंबा नहो, नाटा ।

अदीह-(हिं०पु०) देखो अदीर्घ ।

अदुंद-(हिं०वि०) जिसमें कोई झगड़ा न हो, बिना बाधा का,शान्त,अद्वितीय ।

अदुःख-(स०वि०) दुःख से रहित,प्रसन्न ।

अदुर्ग-(स०वि०) जहाँ पहुँचना कठिन न हो, सहज में पहुँचने योग्य ।

अदुर्वृत्त-(सं०वि०) जिसका आचरण अच्छा हो सच्चरित्र ।

अदुष्ट-(स०वि०) जो दुष्ट न हो, निर्दोष, भला ।

अदूर-(स०वि०) निकट का, समीप का, (स०नपु०) सामीप्य । **अदूरदर्शी**-(स० वि०) दूर तक न विचारन वाला, जो किसी बात का अन्त न देखे, विचारहित, स्थूलबुद्धि । **अदूरभव**-(सं० वि०) पास में रहने वाला । **अदूषण**-(सं०वि०) निर्दोष, स्वच्छ, शुद्ध, **अदूषित**-(सं०वि०) जिसमें दोष न हो, निर्दोष, विमल ।

अदृढ-(स०वि०) अस्थिर, ढीला, डावाँडोल ।

अदृश्य-(स०वि०) जो आँखों से देख न पड़े, अगोचर, लुप्त ।

अदृष्ट-(स०वि०) न देखा हुआ, अवीक्षित, लुप्त, (पुं०) भाग्य, भावी आपत्ति । **अदृष्टकर्मा**-अनुभवहीन; **अदृष्टकाम**-बिना देखी हुई वस्तु के लिये लालसा; **अदृष्टपूर्व**-जो पहिले न देखा गया हो, निराला, अनोखा; **अदृष्टफल**-फल जो देख न पड़े,भावी परिणाम या फल, **अदृष्टरूप**-ऐसा रूप जो पहिले न देखा गया हो; **अदृष्टवाद**-केवल भाग्य पर भरोसा करने का सिद्धान्त ।

अदृष्टाक्षर-(स०पुं०) अक्षर जो लिखे हुए देख न पड़ें ।

अदृष्टार्थ-(स०त्रि०) ऐसे विषयों पर विश्वास जिनका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा नहीं हो सकता ।

अदृष्टि-(स०स्त्री०) कोपदृष्टि, क्रूरदृष्टि (वि०) अन्धा ।

अदेख-(हिं०वि०) न देखा हुआ, लुप्त, छिपा हुआ । **अदेखी**-(हिं०वि०) न देखने वाली, ईर्षालु, डाह रखने वाली ।

अदेय-(स०त्रि०) दान न देने योग्य, न समर्पण करने योग्य । **अदेयदान**-अनुचित दान ।

अदेव-(स०वि०) देवता से संबंध न रखने वाला,(पुं०) निशाचर, राक्षस । **अदेवता**-(स०स्त्री०) निशाचरी,राक्षसी।

अदेश-(स०पु०) अयोग्य स्थान, म्लेच्छ देश । **अदेशज**-अयोग्य स्थान में उत्पन्न, **अदेशस्थ**-अयोग्य देश में रहने वाला ।

अदेस-(हिं०पु०) आज्ञा, आदेश ।

अदेह-(स०वि०) शरीर रहित (पुं०) कामदेव ।

अदैव-(स०वि०) दुर्भाग्य युक्त ।

अदोख-(हिं०पुं०) अदोष, पाप रहित, निरपराध ।

अदोखिल-(हिं०वि०) निष्कलङ्क,निर्दोष।

अदोष-(स०पुं०) दोष का अभाव (वि०) निर्दोष, निरपराध, पापरहित ।

अदोस-(हिं०पुं०) देखो अदोष ।

अदोह-(सं०पुं०) दूध न दूहने का समय ।

अदौरी-(हिं०स्त्री०) उड़द की सूखी हुई बरी ।

अद्ध-(हिं०वि०) आधा-देखो अर्ध ।

अद्धरज-(हिं०पु०) देखो अध्वर्यु ।

अद्धा-(हिं०वि०)आधा टुकड़ा, आधा परिमाण, पूरी बोतल से आधी बोतल, प्रत्येक घंटे के बीच में तीस तीस मिनट पर बजने वाला घंटा । **अद्धी**-(हिं०स्त्री०) आधी दमड़ी, एक पैसे का सोलहवाँ भाग, महीन तन्ज़ेब ।

अद्भुत-(स०वि०) विचित्र, विलक्षण, अलौकिक, अनूठा, (पु०) अलङ्कार में नव रसों के अन्तर्गत एक रस । इस रसात्मक कविता को पढ़ने से पढ़ने वाला विस्मय मे पड़ जाता है; **अद्भुतकर्मा**-अनोखा काम दिखलाने वाला, **अद्भुतगन्ध**-अलौकिक गन्ध का, **अद्भुततम**-बड़ा ही विलक्षण । **अद्भुतता, अद्भुतत्व**-(स० स्त्री०) विलेक्षणता, निरालापन ।

अद्भुतालय-(स०पु०) अपूर्व वस्तुओं के रखने का स्थान, **अद्भुतोपमा**-(स०स्त्री०) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय के विलक्षण गुण उपमान में कभी संभव न हों ।

अद्य-(स०अव्य०) आज, अभी, अब । **अद्यतन**-आज के दिन का, आज का, नया, **अनद्यतनभूत**-आज दिन से पहिले का काल, **अद्यतनीय**-आज का । **अद्यापि**-(स०अव्य०) अब भी, आज तक, अभी तक । **अद्यावधि**-(स०नपुं०) आज से आरंभ होने का काल ।

अद्रव-(स०वि०) जो पतला न हो, घना, गाढा ।

अद्रव्य-(स०नपु०) सत्ताहीन वस्तु, अयोग्य पात्र ।

अद्रा-(हिं०स्त्री०) एक नक्षत्र का नाम, आर्द्रा ।

अद्रि-(सं०पु०) पर्वत, पहाड़, सूर्य, पत्थर । **अद्रिका**-(स०स्त्री०) धान्यक, धनियाँ । **अद्रिकीला**-(स०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि । **अद्रिज**-(स०नपु०) शिलाजीत, गेरू । **अद्रिजा**-(सं०स्त्री०) गिरिराजकन्या, पार्वती, गगा । **अद्रितनया**-(स०स्त्री०) पार्वती, गंगाजी, तेईस वर्ण का एक छन्द । **अद्रिनन्दिनी**-(स० स्त्री०) पर्वत की कन्या, पार्वती । **अद्रिपति, अद्रिराज**-(स०पु०) हिमालय पर्वत । **अद्रोह**-(सं०पुं०) द्रोह न न होना, डाह का अभाव । **अद्रोहवृत्ति**-जिसके स्वभाव में ईर्षा न हो । **अद्रोही**-(स०त्रि०) कभी द्रोह न करनेवाला ।

अद्वार-(सं०नपु०)गुप्त द्वार (वि०) बिना किवाड़ का ।

अद्विज-(स०वि०) जो ब्राह्मण न हो ।

अद्वितीय-(सं०वि०) अकेला, जिसकी तरह का दूसरा कोई न हो, अतुल्य मुख्य, बेजोड़, अनुपम, प्रधान, विलक्षण, केवल ।

अद्वेष-(स०पु०) ईर्षाका अभाव, द्वेष रहित । **अद्वेषी**-(हिं०वि०) द्वेष न करने वाला ।

अद्वैत-(स०नपु०) अतुल्य, भेदरहित, अद्वितीय, अनुपम, ब्रह्म तथा जीव की अभिन्नता । **अद्वैतवाद**-(स०पु०) वह सिद्धान्त जिसके अनुसार संसार असार है और ब्रह्म से ही संपूर्ण जगत् की उत्पत्ति है, वेदान्त मत । **अद्वैतवादी**-(सं०वि०) ब्रह्मवादी,अद्वैत मत को मानने वाला, वेदान्ती ।

अधंतरी-(हिं०स्त्री०) मलखम पर करने का एक प्रकार का व्यायाम ।

अधः-(स०अव्य०) नीचे का, **अधःकर**-हाथ का नीचे का भाग, **अधःकाय**-शरीर का कमर से नीचे का भाग; **अधःक्षिप्त**-नीचे गिराया हुआ; **अधःखनन**-भूमि में खोदना, सुरंग बनाना; **अधःपतन**-नीचे को गिरना, विनाश, अवनति, दुर्गति, दुर्दशा; **अधःपात**-अधोगति, दुर्दशा; **अधःपातन**-नीचे को गिराने का कार्य; **अधःपुष्पी**-सौंफ; **अधःशयन**-भूमि पर सोना; **अधःशय्या**-भूमिशय्या; **अधःस्थित**-नीचे खड़ा हुआ ।

अध-(हिं०अव्य०) अर्ध, आधा, अनेक शब्दों में उपसर्ग की तरह प्रयोग होता है, यथा-अधखिला, अधमरा, अधन्ना इत्यादि । **अधकचरा**-(हिं०वि०) आधा कच्चा, अपूर्ण, अधूरा, अपरिपक्व, अदक्ष, अकुशल । **अधकच्छा**-(हिं०पु०) नदी के तट का ढालुआ स्थान । **अधकछार**-(हिं०पुं०) पहाड़ की ढालुवाँ उपजाऊ भूमि ।

अधकपारी-(हिं०स्त्री०) आधे सिर की वेदना, अधासीसी, सूर्यावर्त । **अधकरिया, अधकरी**-(हिं०स्त्री०) आधी किस्त, आधा महसूल, आधा शुल्क ।

अधकहा-(हिं०वि०) आधा कहा हुआ, अस्पष्ट । **अधखिला**-(हिं०वि०) आधा खिला हुआ, जो फूल पूरी तरह से न खिला हो । **अधखुला**-(हिं०वि०) आधा खुला हुआ, पूरी तरह से न खुला हुआ ।

अधगति-(हिं०स्त्री०) देखो अधोगति ।

अधगोरा-(हिं०पु०) युरेशियन, जो विशुद्ध युरोपियन न हो ।

अधगोहूवां, अधगेहूवां-(हिं० पु०) जिस गेहूँ में जव मिला हो, गोजई ।

अधघट-(हिं०वि०) जिसका अर्थ पूर्ण रूप से प्रगट न हो ।

अधचरा-(हिं०वि०) आधा चरा हुआ, जिस खेत का आधा भाग पशु चर गये हों ।

अधजर-(हिं०वि०) आधा जला हुआ ।

अधड़ा-(हिं०वि०) बिना आधार का, असंबद्ध । **अधड़ी**-(हिं०स्त्री०) आधार हीन, बिना सिर पैर का ।

अधन-(सं०वि०)धनहीन,निर्धन,कंगाल ।

अधनिया-(हिं०वि०) आध आने या दो पैसे का ।

अधन्ना-(हिं०पु०) आध आने मूल्य की एक मुद्रा ।

अधन्य-(सं०पु०) हतभाग्य, अभागा ।

अधपई-(हिं०स्त्री०) तौलने की बाँट (बटखरा) जो दो छटांक या आधे पाव की होती है ।

अधकर-(हिं०पु०) पृथ्वी और आकाश के बीच का स्थान ।

अधबर-(हिं०पु०) आधा मार्ग, बीच का भाग, मध्य भाग ।

अधबुध-(हिं०पु०) पूर्ण ज्ञान न रखने वाला मनुष्य ।

अधबैसा (सू)-(हिं०वि०) आधे वय (मध्य अवस्था) का मनुष्य, अधेड़; **अधबैसी**-(स्त्री०) अधेड़ स्त्री ।

अधम-(सं०वि०) खोटा, नीच, पापी, दुष्ट, निकृष्ट । **अधमई**-(हिं० स्त्री०) बुराई, न्यूनता, नीचता । **अधमता**-(स०स्त्री०) नीचता, खोटाई, बुराई ।

अधमरति-(स०स्त्री०) प्रयोजन का प्रेम, (जो सच्चा न हो) । **अधमरा**-(हिं०वि०) आधा मरा हुआ, मृतप्राय, मरे के समान ।

अधमर्ण-(सं०त्रि०) ऋणि ।

अधमा-(सं०स्त्री०) वह नायिका जो हित करने वाले पति पर रोष करती है ।

अधमाई-(हिं०स्त्री०) अधमता, देखो अधमई।

अधमाङ्ग-(स०नपुं०) शरीर के नीचे का अङ्ग, चरण।

अधमाचार-(स०पुं०) बुरा व्यवहार।

अधमादूती-(स०स्त्री०) वह कुटनी जो नायक नायिका को इनका झूठा समाचार देती है।

अधमाधम-(स०त्रि०) बुरे से बुरा।

अधमा नायिका-(स०स्त्री०) देखो अधमा।

अधमुआ-(हिं०वि०) अधमरा।

अधमुख-(हिं०वि०) अधोमुख, औंधा।

अधर-(हिं०पु०) नीचे का ओष्ठ, (वि०) नीचे को झुका हुआ, नीच, बुरा, चंचल, नीचे का; **अधर में झूलना**-कार्य पूरा न होना, दुविधा में पड़े रहना।

अधरज - (हिं० स्त्री०) ओठों की लाली, ओठों पर चढ़ी हुई पान की लाली।

अधरपान-(स०नपुं०) नीचे के ओंठ का चुम्बन।

अधरम-(हिं०पु०) देखो अधर्म।

अधरमधु-(सं०नपुं०) नीचे के ओंठ का रस।

अधराधर-(स०पु०) नीचे का ओंठ।

अधरामृत-(स०नपुं०) देखो अधरमधु।

अधरीकृत-(सं०त्रि०) हारा हुआ।

अधरीभूत-(सं० वि०) हराया हुआ, विजित।

अधरोत्तर - (सं०वि०) ऊँचा नीचा, समीप, दूर।

अधरोंधा-(हिं०वि०) आधा खाया हुआ, थोड़ा चबाया हुआ।

अधरोष्ठ-(सं०पु०) नीचे का होंठ।

अधर्म-(स०पु०) श्रुति स्मृति विरुद्ध आचरण, अन्याय पातक, दुराचार, कुकर्म; **अधर्मचारी**-धर्म न करने वाला, पापाचारी; **अधर्ममय**-अधर्म पूर्ण, पापमय। **अधर्मात्मा**-(स० वि०) पापी, अधमी, दुराचारी, कुमार्गी।

अधर्मिष्ठ-(सं०वि०) महापापी, अधर्मशील। **अधर्मी**-(हिं० पुं०) अधर्मात्मा, पापाचारी।

अधर्म्य-(स०वि०) धर्म के विरुद्ध, पापमय।

अधवा-(सं०स्त्री०) विधवा स्त्री, राँड़।

अधवारी-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी घर बनाने के काम आती है।

अधश्चर, अधश्चौर-(सं० पुं०) सेन लगाने वाला चोर।

अधसेरा, असेरा-(हिं० पु०) आध सेर (दो पाव) तौलने का बटखरा।

अधस्तल-(स०नपुं०) किसी वस्तु के नीचे का स्थान, घर के नीचे का कमरा।

अधाँगा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का भूरे रंग का पक्षी।

अधाधुन्ध-(हिं०क्रि०वि०) भयंकर रूप से, देखो अन्धाधुन्ध।

अधाना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का राग विशेष।

अधामार्ग-(स०पु०) अपामार्ग, चिड़चिड़े का पौधा।

अधार-(हिं०पु०) देखो आधार।

अधारिया-(हिं०पु०) बैलगाड़ी का वह स्थान जहाँ पर हाँकने वाला बैठता है।

अधारी-(हिं०स्त्री०) सहारे की वस्तु, आधार, आश्रय, साधुओं को टेकने का पतला पीढ़ा जो काठ के छोटे डंडे के ऊपर जड़ा होता है, यात्रा की सामग्री रखने का झोला (वि०) आश्रय देनेवाली।

अधार्मिक-(स०वि०) धर्मच्युत, पापी।

अधार्य-(स०त्रि०) जो धारण न किया जा सके।

अधावट, अधवट-(हिं०वि०) जो (दूध) खौलाकर आधा तथा खूब गाढा हो जावे।

अधि-संस्कृत का शब्द जो 'ऊपर, उस और, अधिक तथा प्रधान अर्थ में उपसर्ग की तरह प्रयोग होता है।

अधिक-(सं०वि०) अतिरिक्त, प्रधान, विशेष, बहुत, अनेक, अवशिष्ट, असाधारण; एक अलंकार जिसमें आधार और आधेय को पहिले बड़ा कहकर बाद में छोटे आधार या आधेय को उससे भी बड़ा बतलाते हैं। **अधिकतम**-(स० वि०) सबसे अधिक, सबसे ज्यादा। **अधिकतर**-(सं०वि०) दो पदार्थों में से एक से अधिक। **अधिकता**-(हि०वि०) बहुतायत, वृद्धि, बढ़ती। **अधिक तिथि**-(स०स्त्री०) जो तिथि सौर वर्ष पूर्ण करने के लिये जोड़ी जाती है। **अधिकदन्त**-(स०पु०) एक के ऊपर दूसरा चढ़ा हुआ दाँत। **अधिक दिन**-(स०नपुं०) देखो अधिक तिथि। **अधिक मास**-(स०पुं०) मलमास, लवन का महीना जो सौर वर्ष पूरा करने के लिये जोड़ा जाता है।

अधिकरण-(स०नपुं०) आधार, सहारा, व्याकरण में कर्म और क्रिया का आधार जो अधिकरण कारक कहलाता है, विषय, प्रकरण, **अधिकरण-मण्डप**-न्यायालय।

अधिकर्म-(सं०अव्य०) बड़ा काम, देखभाल।

अधिकवाक्योक्ति-(स० स्त्री०) अधिक प्रशंसा।

अधिकांग-(हिं०वि०) अधिकाङ्ग, किसी अङ्ग का अधिक होना।

अधिकांश-(सं०पुं०) अधिक भाग या हिस्सा (क्रि०वि०) प्रायः, बहुधा, विशेष करके।

अधिकाई-(हिं०स्त्री०) आधिक्य, अधिकता, बहुतायत, महिमा, बड़ाई।

अधिकाङ्ग-(सं०नपुं०) अधिक अङ्ग से युक्त।

अधिकाधिक-(सं०वि०) अधिक से अधिक।

अधिकाना-(हिं०क्रि०) अधिक होना, ऊपर चढ़ना, बढ़ना।

अधिकाम-(स०पु०) अत्यन्त अभिलाषा।

अधिकार-(स०पु०) आधिपत्य, कार्य का भार, आरम्भ, प्रकरण, स्वत्व, पद, सम्पत्ति, सम्बन्ध, विषय, प्रमाण, चेष्टा, प्राप्ति, योग्यता। **अधिकारस्थ**-(स०त्रि०) अधिकार में नियुक्त।

अधिकारिणी-(सं०स्त्री०) अधिकारी की पत्नी, अधिकार प्राप्त स्त्री।

अधिकारिता-(सं० स्त्री०) स्वामित्व, आधिपत्य। **अधिकारित्व**-(स० स्त्री०) स्वामित्व। **अधिकारी**-(स०पु०) प्रभु, स्वामी, स्वत्ववान्, उपयुक्त पात्र, क्षमाशील पुरुष।

अधिकार्थ-(स० त्रि०) एक से अधिक अर्थ वाला।

अधिकृच्छ्र-(स०पु०) अधिक कष्ट।

अधिकृत-(स०पु०) अध्यक्ष, धिकारो; (वि०) नियुक्त, अधिकार दिया हुआ।

अधिकृति-(स०स्त्री०) स्वत्व, अधिकार।

अधिक्रम, अधिक्रमण-(स० पुं०) आक्रमण।

अधिक्षिप्त-(स०वि०) नीचे फेंका हुआ, अपमानित, निन्दित, तिरस्कृत।

अधिक्षेप-(स० पु०) निन्दा, तिरस्कार।

अधिगणन-(स०नपुं०) अधिक गणना, अधिक मूल्य लगाना।

अधिगत-(सं०वि०) विदित, स्वीकृत।

अधिगम-(स०पु०) ज्ञान, प्राप्ति, लाभ, स्वीकृति, उपार्जन, कमाई, पहुँच। **अधिगमन**-(स०नपुं०) प्राप्ति, अध्ययन, आविष्कार।

अधिगुप्त-(स०वि०) अच्छी तरह से छिपाया हुआ, सुरक्षित।

अधिज-(स०त्रि०) उच्च कुल में उत्पन्न।

अधिजनन-(स०नपुं०) उत्पत्ति।

अधित्यका-(सं०स्त्री०) पर्वत के ऊपर की समतल भूमि, पर्वत के ऊपर का मैदान।

अधिदेव-(स०पु०) सम्पूर्ण देवताओं का अधिप, परमेश्वर। **अधिदेवता**-(स० स्त्री०) अधिष्ठात्री, देवता, कुल देवी।

अधिदैव-(स०नपुं०) अधिष्ठाता देवता, इष्टदेव, परमेश्वर। **अधिदैवत** (सं०स्त्री०) अधिष्ठात्री देवता, परमेश्वर। **अधिदैविक**-(स०वि०) परमेश्वर या आत्मा सम्बन्धी।

अधिनाथ-(स०पु०) बड़ा मालिक, सरदार। **अधिनायक**-(सं० पु०) प्रभु, मालिक, मुखिया।

अधिप-(सं०पु०) राजा, स्वामी, ईश्वर, सरदार। **अधिपति**-(स०पुं०) प्रभु, स्वामी, पति, मुखिया, नायक। **अधिपत्नी**-(स०स्त्री०) महारानी, साम्राज्ञी। **अधिपुरुष**-(सं० पु०) श्रेष्ठ पुरुष, परमेश्वर। **अधिभू**-(स०पु०) स्वामी, राजा, पति। **अधिभोजन**-(सं० नपुं०) अत्यन्त भोजन। **अधिभौतिक, आधिभौतिक**-(सं०वि०) प्राकृतिक। **अधिमांस**-(स०नपुं०) वह रोग जिसमें शरीर में कहीं पर का मांस बढ जाता है। **अधिमात्र**-(स०वि०) अधिक प्रमाण का। **अधिमास**-(स० पु०) अधिक मास, मलमास, लवन का महीना। **अधिमुक्तिका**-(स० स्त्री०) शुक्ति, सीप। **अधियज्ञ**-(स० पु०) प्रधान यज्ञ, क्षेत्रज्ञ।

अधिया-(हि०स्त्री०) अर्धांश, आधा भाग, गाँव के अर्धांश का मालिक, गाँव की वह रीति जिसके अनुसार उपज का आधा भाग ज़मींदार लेता है और आधा भाग खेत बोनेवाले किसान को देता है।

अधियान-(हिं० पु०) जप करने की गोमुखी।

अधियाना-(हिं०क्रि०) आधा करना, दो बराबर के टुकड़े करना।

अधियार-(हिं०पु०) किसी सम्पत्ति का आधा हिस्सा, आधे का मालिक, गाँव में बराबर हिस्से वाला ज़मींदार या कृषक। **अधियारी**-(हिं० स्त्री०), सम्पत्ति के आधे भाग का अधिकार।

अधियोध-(स०पु०) बड़ा योद्धा।

अधिरथ-(स०पु०) रथ पर चढ़ा हुआ योद्धा, सारथी, बड़ा रथ, सत्यकर्मा के पुत्र का नाम।

अधिरथी-(स०पु०) सूर्य, समुद्र।

अधिराज-(स०पु०) अधीश्वर, सम्राट्, महाराज। **अधिराज्य**-(स०नपुं०) साम्राज्य। **अधिराष्ट्र**-(सं०नपुं०) राज्य

अधिरूढ-(स०वि०) चढ़ा हुआ, वृद्धियुक्त

अधिरोपण-(स०नपुं०) ऊपर को चढ़ाना या उठाना।

अधिरोपित-(स०वि०) ऊपर रक्खा हुआ

अधिरोह-(स०पु०) ऊपर का चढ़ाव। **अधिरोहण**-(स०नपुं०) ऊपर का चढ़ाव, सीढ़ी। **अधिरोहिणी**-(सं०स्त्री०) सोपान, निसेनी, सीढ़ी।

अधिलोक-(सं०पुं०) संसार।

अधिलोकनाथ-संसार के स्वामी।

अधिवाचन-(सं०पुं०) निर्वाचन, चुनाव।

अधिवास-(सं०पु०) ठहरने का स्थान, निवास, पड़ोसी, सुगन्ध, दूसरे के घर में रहना, देर तक रहना, विवाह के पहिले वर तथा कन्या को उबटन लगाने को प्रथा। **अधिवासन**-(सं०नपुं०) स्थापन, अधिवास। **अधिवासित**-(सं०वि०) सुगन्धित। **अधिवासी**-(सं०त्रि०) रहने वाला, टिकने वाला, निवासी।

अधिवेत्ता-(सं०पुं०) एक पत्नी रहते हुए दूसरी से विवाह करने वाला मनुष्य।

अधिवेशन-(सं०नपुं०) जमाव, बैठक, संघटन।

अधिशयन-(सं०नपुं०) लेटना, सोना।

अधिशायित-(स०वि०) लेटा हुआ।

अधिश्रय-(सं०पुं०) जिस पात्र में कोई

वस्तु रक्खी हो । **अधिश्रयण**-(सं०नपुं०) चूल्हे पर किसी पात्र को रखना । **अधिश्रयणी**-(सं०स्त्री०) चूल्हा, भट्ठी, अँगीठी ।
अधिश्रित-(सं०वि०)आग पर चढ़ाया हुआ
अधिश्री-(सं०त्रि०) अत्यन्त शोभा ।
अधिष्ठाता-(सं०त्रि०) अध्यक्ष, सरदार, मुखिया, रक्षक, राजा ईश्वर, किसी कार्य का निरीक्षण करने वाला ।
अधिष्ठान-(सं०नपुं०) रहने का स्थान, नगर, सहारा, आश्रय, आधार, सहारा, स्थिति, अधिकार, सत्ता, भ्रम का आरोपण, करने की वस्तु, सांख्य दर्शन में भोक्ता और भोग्य का संयोग । **अधिष्ठानशरीर**-(सं०नपुं०) वह सूक्ष्म शरीर जिसमें मृत्यु के उपरान्त आत्मा पितृलोक में रहता है
अधिष्ठापक-(सं०पुं०) निरीक्षण या रक्षा करने वाला ।
अधिष्ठित-(सं०वि०) नियुक्त, स्थापित, बसा हुआ, निर्वाचित, देखा भाला ।
अधीत-(सं०वि०) अध्ययन किया हुआ, पढ़ा हुआ ।
अधीन-(सं०वि०) वशीभूत, आश्रित, विवश, दबैल । **अधीनता**-(सं०स्त्री०) परवशता, लाचारी, दीनता । **अधीनत्व**-(सं०नपुं०) अधीनता ।
अधीयान-(सं०पुं०)पढ़नेवाला, विद्यार्थी ।
अधीर-(सं०वि०) अस्थिर, चंचल, असन्तुष्ट, कातर, धैर्यहीन, बेचैन, व्याकुल, मूर्ख, आतुर, घबड़ाया हुआ । **अधीरता**-(सं०स्त्री०)अस्थिरता,असन्तोष
अधीरा-(सं०स्त्री०) बिजली, वह नायिका जो अपने प्रेमी में विलास के चिह्न देखकर अधीर हो जाती परन्तु क्रोध दिखलाती है ।
अधीश, अधीश्वर-(सं०पुं०) अधिपति, राजा, मालिक, प्रभु, अध्यक्ष, राजाधिराज ।
अधुत, अधूत-(सं०वि०) बिना हिलाया हुआ, कंपरहित ।
अधुना-(सं०अव्य०) अभी, आजकल, इन दिनों । **अधुनातन**-(सं०अव्य०) वर्तमान कालका, एतत्कालीन, हालका
अधुर-(सं०वि०) बिना बोझका, भारशून्य
अधूत-(देखो अधुत) निडर, धृष्ट, ढीठ ।
अधूरा-(हिं०वि०) अपूर्ण, खण्डित, असमाप्त, आधा, अशिक्षित ।
अधृत-(सं०वि०) धारण न किया हुआ ।
अधृति-(सं०स्त्री०) दोष का अभाव, शीघ्रता, आतुरता ।
अधृष्ट-(सं०वि०) जो प्रगल्भ न हो, लज्जावान् ।
अधेंगा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का भूरे रंग का पक्षी ।
अधेड़-(हिं०वि०) उतरती युवावस्था का, जिसका वय कम हो रहा हो ।
अधेला-(हिं०पुं०) आधे पैसे की मुद्रा ।
अधेलिका-(हिं०स्त्री०) अँधेरिया, अन्धकार
अधेली-(हिं०स्त्री०) आठ आने मूल्य की चाँदी की मुद्रा, अठन्नी ।
अधैर्य-(सं०त्रि०) धैर्य शून्यता, चचलता, उतावलापन, व्याकुलता । **अधैर्यवान्**-(हिं०वि०) चंचल, व्याकुल, उतावला,
अधो-देखो अधः ।
अधोगत-(सं०वि०) नीचे की ओर पहुंचा हुआ । **अधोगति**-(सं०स्त्री०) निम्नगति, नरकगमन, दुर्दशा, पतन, अवनति । **अधोगमन**-(सं०नपुं०) नीचे की ओर जाना, अवनति, पतन, दुर्दशा । **अधोगामी**-(सं०वि०) नीचे को जानेवाला, नरक गामी । **अधोजानु**-(सं०नपुं०) जाँघ के नीचे का भाग । **अधोतर**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा, गज्जी । **अधोदिशा**-(स्त्री०स्त्री०) नीचे का प्रदेश, दक्षिण दिशा । **अधोदृष्टि**-(सं०स्त्री०) नीचे की ओर दृष्टि । **अधोदेश**-(सं०पुं०) निचल भाग । **अधोबन्धन**-(सं०नपुं०) कमरपेटी । **अधोभाग**-(सं०पुं०) नीचे का भाग, योनि । **अधोभुवन**-(सं०नपुं०) पाताल, भूमि के नीचे का लोक ।
अधोभूमि-(सं०स्त्री०) पहाड़ के नीचे की भूमि । **अधोमार्ग**-(सं०पुं०) नीचे का मार्ग, सुरंग, गुदा । **अधोमुख**-(सं०त्रि०) मुख नीचा किये हुए, उलटा, औंधा, नरक के एक भाग का नाम ।
अधोमुखी-(सं०स्त्री०) अनन्तमूल का पौधा । **अधोयन्त्र**-(सं०नपुं०) वकयन्त्र, अर्क खींचने का भभका ।
अधोरध-(हिं०क्रि०वि०) ऊपर नीचे, देखो अधोर्ध ।
अधोर्ध-(सं०अव्य०) देखो अधोरध ।
अधोलम्ब-(सं०पुं०) वह सीधी रेखा जो दूसरी रेखा पर खड़ी होकर दोनों ओर के कोण को बराबर बनाती है, लम्ब, साहुल, पानी की गहराई नापने का यन्त्र ।
अधोलोक-(सं०पुं०) नीचे की दुनिया, पाताल । **अधोवायु**-(सं०पुं०) अपानवायु, गुदा से निकलने वाली वायु ।
अधोविन्दु-(सं०पुं०) आकाश में का वह स्थान जो हमारे पैर के ठीक नीचे है
अधौड़ी-(हिं०स्त्री०) मोटी खाल, किसी पशु के चमड़े का आधा भाग ।
अध्यक्ष-(सं०त्रि०) प्रधान कार्यकर्ता, मुखिया, स्वामी, नायक, अधिष्ठाता, अधिकारी, सम्पादक ।
अध्यक्षर-(सं०अव्य०) प्रत्येक अक्षर पर
अध्यच्छ-(हिं०पुं०) देखो अध्यक्ष ।
अध्यधिक्षेप-(सं०पुं०) अत्यन्त तिरस्कार ।
अध्यधीन-(सं०वि०) अत्यन्त पराधीन ।
अध्ययन-(सं०नपुं०) पाठन पठन, पढाई लिखाई । **अध्ययनीय**-(सं०वि०) पढ़ने योग्य ।
अध्यर्ध-(सं०वि०) एक और आधा, डेढ ।
अध्यवसान-(सं०नपुं०) अभिप्राय, चेष्टा, उत्साह ।
अध्यवसाय-(सं०पुं०) उत्साह, निरन्तर उद्योग, दृढ़ता पूर्वक किसी व्यापार में लगे रहना, निश्चय । **अध्यवसायित**-(सं०वि०) दृढ निश्चय किया हुआ ।
अध्यवसायी-(सं०त्रि०) निरंतर उद्योग करने वाला, उद्यमशील, उत्साही, निश्चयकारी । **अध्यवसित**-(सं०वि०) दृढ निश्चय किया हुआ, अनुमोदित ।
अध्यशन-(सं०नपुं०) अधिक भोजन ।
अध्यस्त-(सं०वि०) ऊपर रक्खा हुआ, छिपा हुआ, गुप्त, जो प्रत्यक्ष न हो ।
अध्यात्म-(सं०नपुं०) परब्रह्म, परमेश्वर (वि०) आत्मा या ब्रह्म सम्बन्धी ।
अध्यात्मज्ञान-(सं०नपुं०) ईश्वर अथवा आत्मा का ज्ञान । **अध्यात्मिक**-(सं०वि०) परमात्मा अथवा जीवात्मा के सम्बन्ध का ।
अध्यापक-(सं०पुं०) शिक्षक, गुरु, आचार्य, पढाने वाला । **अध्यापकी**-(हिं०स्त्री०) अध्यापक का कार्य, पढाने लिखाने का काम । **अध्यापन**-(सं०नपुं०) पढाने लिखाने का कार्य ।
अध्यापिका-(सं०स्त्री०) पढ़ाने लिखाने वाली स्त्री, गुरुआइन । **अध्यापित**-(सं०वि०) पढाया लिखाया हुआ ।
अध्याय-(सं०पुं०) ग्रन्थ विभाग, पाठ, सर्ग, अङ्क, परिच्छेद, प्रकरण, काण्ड, पर्व ।
अध्यायी-(हिं०वि०) पढने वाला, पढने लिखने में लगा हुआ ।
अध्यारूढ़-(सं०वि०) समारूढ, चढा हुआ, ऊँचा, अधिक ।
अध्यारोप-(सं०पुं०) चढना, ऊपर पहुँचना, मिथ्या कल्पना, दोष, आरोप ।
अध्यारोपण-(सं०नपुं०) अन्न की बोवाई
अध्यारोपित-(सं०वि०) मिथ्यारोपित, धोखे का, अशुद्ध समझा हुआ ।
अध्यास-(सं०पुं०) आरोप, मिथ्या ज्ञान ।
अध्यासन-(सं०नपुं०) निवास, अधिष्ठान, चढाव ।
अध्यासित-(सं०त्रि०) बसा हुआ, सभापति के आसन पर बैठा हुआ ।
अध्यासीन-(सं०वि०) उपविष्ट, बैठा हुआ ।
अध्याहार-(सं०पुं०) तर्क वितर्क, असम्पूर्ण वाक्य को पूर्ण करने के लिये कुछ शब्द जोड़ना, अस्पष्ट विषय को दूसरे शब्दों के प्रयोग से स्पष्ट करना ।
अध्याहार्य-(सं०वि०) अनुसन्धान करने योग्य ।
अध्याहृत-(सं०वि०) तर्क किया हुआ ।
अध्यूढ-(सं०वि०) अधिक, अतिशय, भरपूर ।
अध्यूढा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके रहते उसका पति दूसरा विवाह कर ले ।
अध्येतव्य-(सं०वि०) पाठ्य, पढने योग्य ।
अध्येय-(सं०त्रि०) पढने योग्य ।
अध्रियमाण-(सं०वि०) न पकड़ा हुआ, मरा हुआ ।
अध्रुव-(सं०त्रि०) अनिश्चित, चंचल, अलग करने योग्य, बिना ठौरका, अस्थिर ।
अध्वग-(सं०पुं०) यात्री, पथिक, ऊंट, सूर्य । **अध्वगामी**-(सं०त्रि०) यात्रा करने वाला ।
अध्वन्, अध्व-(सं०स्त्री०) पथ, भूमि, आकाश दूरी, स्थान ।
अध्वपति-(सं०पुं०) मार्गरक्षक, सूर्य ।
अध्वर-(सं०पुं०) यज्ञ ।
अध्वरथ-(सं०पुं०) वह दूत जो मार्ग को भली भाँति जानता हो ।
अध्वर्यु-(सं०पुं०) यज्ञ कराने वाला यजुर्वेदी पुरोहित; **अध्वर्यु वेद**-यजुर्वेद ।
अन्-(सं०अव्य०) निषेधार्थक अव्यय-न, नहीं ।
अनंश-(सं०वि०) बिना टुकड़े का, जिसको पैत्रिक सम्पत्ति न मिली हो ।
अनहिवात-(हिं०पुं०) वैधव्य, रड़ापा ।
अनइस-(हिं०त्रि०) निकृष्ट, बुरा, अधम । **अनइसी**-(हिं०क्रि०) बुरा समझना, रूठना ।
अनऋतु-(हिं०स्त्री०) बुरा ऋतु, कुसमय ।
अनकनना-(हिं०क्रि०) सुनना, छिपकर सुनना ।
अनकहा-(हिं०वि०) जो कहा न गया हो ।
अनक्षर-(सं०) निन्दा, गाली (वि०) मूर्ख ।
अनख-(हिं०पुं०) क्रोध, ईर्ष्या, अन्याय, काजल की बिन्दी जो बच्चों के मस्तक पर नजर न लगने के लिये लगा दी जाती है । **अनखना**-(हिं०क्रि०) क्रोध करना, रूठना, रिसियाना ।
अनखाना-(हिं०क्रि०) क्रोध दिखलाना, अप्रसन्न करना । **अनखाहट**-(हिं०स्त्री०) अप्रसन्नता, क्रोध ।
अनखी-(हिं०वि०) कोपान्वित, क्रोधी, शीघ्र कुपित होने वाला ।
अनखौंहा-(हिं०वि०) क्रोधपूर्ण, चिड़चिड़ा, अनुचित, बुरा, थोड़ी सी बात पर रुष्ट होनेवाला ।
अनगढ-(हिं०वि०) बिना गढा हुआ, भद्दा, बेडौल, जो किसी का बनाया न हो, बिना ओर छोर का, स्वयम्भू
अनगन-(हिं०वि०) अगणित, बहुत ।
अनगना-(हिं०वि०) बिना गिना हुआ, अगणित ।
अनगवना-(हिं०क्रि०) जान बूझकर देर करना ।
अनगाना-(हिं०क्रि०) गिनवाना, सुधरवाना ।
अनगिन, अनगिनत-(हिं०वि०) अगणित अनगिनतिन, असंख्य ।
अनगिना-(हिं०वि०) बिना गिना हुआ, असंख्य, अगणित ।
अनगैरी-(हिं०वि०) अपरिचित, बिना जान पहिचान का, पराया ।
अनग्न-(सं०वि०) जो नंगा न हो, वस्त्र पहिने हुए । **अनग्नता**-(सं०स्त्री०) नंगा न रहने की अवस्था ।
अनघ-(सं०त्रि०) पापशून्य, निर्मल, शुद्ध, सुन्दर, दुःखहीन, स्वच्छ ।
अनघरी-(हिं०स्त्री०) कुसमय, बुरा समय

अनघेरो-(हिं०वि०) बिना निमन्त्रण दिया हुआ, बिना बुलाया हुआ।
अनघोर-(हिं०पुं०) अत्याचार, अन्धेर।
अनङ्कुश-(सं०वि०) बिना लगाम का, उद्दण्ड।
अनङ्ग-(सं०वि०पुं०) बिना शरीर का, आकाश, कामदेव, चित, मन; **अनङ्ग-क्रीडा**-रति, संभोग, सोलह अक्षर का एक छन्द विशेष। **अनङ्गना**-(हिं०क्रि०) देह का सुध बुध छोड़ देना, प्रेम में मतवाला होना। **अनङ्ग-लेख**-(सं०पुं०) प्रेम की बातों से पूर्ण चिट्ठी। **अनङ्गवती**-(सं०स्त्री०)सुन्दरी, कामिनी। **अनङ्गशेखर**-(सं०पुं०) एक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाइस अक्षर होते है। **अनङ्गारि**-(सं०पुं०) कामदेव के शत्रु शिव।
अनङ्गी-(हिं०वि०) बिना शरीर का, देहहीन।
अनचहा-(हिं०वि०) जिसकी चाह न हो, अनिच्छित। **अनचाहत**-(हिं०वि०) न चाहने वाला, प्रेम न करनेवाला।
अनचीन्हा-(हिं०वि०) अपरिचित, जिससे जान पहिचान न हो।
अनचैन-(हिं०वि०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
अनच्छ-(सं०वि०) जो स्वच्छ न हो, मैला।
अनजान-(हिं०वि०) अनभिज्ञ, अपरिचित, अज्ञात।
अनजोखा-(हिं०वि०) बिना तौला हुआ।
अनट-(हिं०पुं०) उपद्रव, अत्याचार, बलवा।
अनडीठ-(हिं०वि०) अदृष्ट, बिना देखा हुआ।
अनत-(सं०वि०) जो झुका न हो, सीधा, खड़ा, अभिमानी।
अनत-(हिं०क्रि०वि०) अन्यत्र, दूसरी किसी स्थान में।
अनति-(सं०त्रि०) अधिक नहीं, न्यून, (स्त्री) अहकार।
अनतिक्रम-(सं०पुं०) सीमा से बाहर न जाना। **अनतिक्रमणीय**-(सं०वि०) उल्लंघन न करने योग्य।
अनदेखा-(हिं०वि०) जो देखा हुआ न हो
अनद्यतन-(सं०वि०) जो आज का न हो। **अनद्यतनभविष्य**-आगामी आधीरात के बाद का समय। **अनद्यतनभूत**-अर्धरात्रि से पहिले का समय।
अनधिक-(सं०वि०) असीम।
अनधिकार-(सं०पुं०) अधिकार का न होना, अयोग्यता, (वि०) अयोग्य, अधिकार रहित। **अनधिकारचर्चा**-जिस विषय में अधिकार न हो उसमें हस्तक्षेप करना। **अनधिकारप्रवेश**-(सं०पुं०) बिना अधिकार के किसी के घर में घुसना, **अनधिकारिता**-(सं०स्त्री०) अधिकार का न होना। **अनधिकारी**-(हिं०वि०) बिना अधिकार का, कुपात्र, अयोग्य।
अनधिकृत-(सं०वि०) अधिकार न दिया हुआ।
अनधिगत-(सं०वि०) अज्ञात, बिना समझा बूझा, **अनधिगतमनोरथ**-हताश; **अनधिगतशास्त्र**-जिसने शास्त्र का अध्ययन नहीं किया है।
अनधिगम्य-(सं०वि०) प्राप्त न होने योग्य।
अनध्ययन-(सं०नपुं०) पाठ का अनध्याय।
अनध्यवसाय-(सं०पुं०) अध्यवसाय का न होना, ढीलापन, शिथिलता, एक अलंकार जिसमे किसी एक वस्तु के विषय मे असाधारण अनिश्चय दिखलाया जाता है।
अनध्याय-(सं०पुं०) छुट्टी का दिन, जिस दिन शास्त्र के अनुसार लिखना पढ़ना निषिद्ध हो।
अनज्ञात-(सं०वि०) असम्मत, बिना आज्ञा का।
अननुभावक-(सं०वि०) अज्ञात, मूर्ख।
अननुभूत-(सं०वि०) अनुभवहीन, अज्ञात
अनन्त-(सं०पुं०) नारायण, मेघ, बलराम, अभ्रक, शिव, अनन्त चतुर्दशी के दिन बाहु मे बाँधने का डोरा, (वि०) असीम।
अनन्तक-(सं०पुं०) मूली, नरकट।
अनन्तकर-(सं०वि०) अत्यन्त बढ़ाता हुआ।
अनन्तचतुर्दशी-(सं०स्त्री०) भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी, जिस दिन विष्णु की पूजा की जाती है और बाँह पर अनन्त बाँधा जाता है।
अनन्तता-(सं०स्त्री०) असीमता। **अनन्तत्व** (सं०पुं०) अनन्तता, असीमता।
अनन्तदृष्टि-(सं०पुं०) सहस्र नेत्रोंवाला इन्द्र, शिव, परमेश्वर। **अनन्तदेव** (सं०पुं०) शेषनाग, शेषशायी विष्णु
अनन्तपार-(सं०वि०)बहुत लम्बा चौड़ा
अनन्तमूल-(सं०पुं०) जंगली चमेली।
अनन्तर-(सं०त्रि०) बिना व्यवधान का, बिना अवकाश का, पिछला, जल्दी, बाद में, पीछे, उपरान्त, (क्रि०वि०) लगातार, सतत।
अनन्तराशि-(सं०पुं०) वह संख्या जिसका अन्त न हो। **अनन्तरूप** (सं०पुं०) असंख्य रूपवाला, परमेश्र।
अनन्तर्हित-(सं०वि०) जो छिपा न हो, प्रगट।
अनन्तविजय-(सं०पुं०) युधिष्ठिर के शंख का नाम।
अनन्तवीर्य-(सं०पुं०) अनुपम शक्तिवाला, विष्णु।
अनन्तव्रत-(सं०नपुं०) भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी को किया जानेवाला व्रत।
अनन्तशक्ति-(सं०स्त्री०) अपरिमित बल।
अनन्तशीर्षा-(सं०स्त्री०) असंख्य फन वाली वासुकि की भार्या।
अनन्ता-(सं०वि०) जिसकी सीमा या अन्त न हो, (स्त्री०) पार्वती, पृथ्वी, अनन्तमूल, दूब, हरें, पीपर, आँवला।
अनन्तात्मा-(हिं०पुं०) परमेश्वर जिसका अन्त नहीं है।
अनन्त्य-(सं०वि०) असीम, निःसीम।
अनन्द-(सं०क्रि०) आनन्द देनेवाला, (हिं०पुं०) आनन्द। **अनन्दना**-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना, आनन्दित होना।
अनन्दी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान (वि०) आनन्दी।
अनन्नास-(हिं०पुं०) एक फल जो खाने में खटमीठा होता है।
अनन्य-(सं०वि०)दूसरेसे संबन्ध न रखने वाला, एक से अधिक नहीं, समूचा, सबसे अलग, स्वतंत्र। **अनन्यगोभी**-दूसरे की ओर न जानेवाला। **अनन्यचित्त**-अपना चित्त एक ही विषय मे लगाने वाला; **अनन्यज**-कामदेव। **अनन्यता** (सं०स्त्री०) **अनन्यत्व**-(सं०नपुं०) एकनिष्ठा, निरालापन, अनोखापन। **अनन्यदृष्टि** (सं०वि०) टकटकी बाँधकर देखने वाला। **अनन्यपूर्वा** (सं०स्त्री०) जिस स्त्री का किसी पुरुष से संसर्ग न हुआ हो, बालिका, अविवाहिता। **अनन्यभव**-(सं०वि०) आप से आप उत्पन्न होने वाला। **अनन्यभाव** (सं०त्रि०) केवल ईश्वर में ध्यान लगाने वाला। **अनन्यमनस्क** (सं०त्रि०) अपना ध्यान किसी एक विषय में स्थिर करने वाला। **अनन्ययोग्य** (सं०वि०) जो किसी दूसरे के उपयोग का न हो। **अनन्यवृत्ति** (सं०वि०) जिसके जीवन का उपाय एक ही हो दूसरा न हो। **अनन्यसाधारण** (सं०वि०) सबसे निराला। **अनन्यहृत** (सं०वि०)जिसको दूसरा न ले जा सके, सुरक्षित।
अनन्यार्थ-(सं०वि०) किसी दूसरे पदार्थ से सम्बन्ध न रखने वाला, प्रधान।
अनन्याश्रित-(सं०वि०) जो दूसरे के आश्रित न हो, स्वतंत्र।
अनन्वय-(सं०पुं०) एक अलंकार जिसमें किसी वाक्य में एक ही वस्तु उपमान तथा उपमेय के रूप में दरसाई जाती है।
अनन्वित-(सं०वि०) असम्बद्ध, पृथक्, शून्य, अंडबंड।
अनप-(सं०वि०) जल से शून्य।
अनपकरण-(सं०नपुं०) चोट का न लगना।
अनपकार-(सं०पुं०) अपकार न करना, सीधापन, भोलापन। **अनपकारी**-(हिं०वि) अपकार न करने वाला, किसी का कुछ न बिगाड़नेवाला।
अनपकृत-(सं०वि०) अपकार रहित।
अनपच-(हिं०पुं०) अपच, अजीर्ण, भोजन का न पचना।
अनपढ (हिं०वि०) अशिक्षित, बेपढ़ा, निरक्षर, मूर्ख।
अनपत्य-(सं०वि०) सन्तान हीन, जिसके लड़के बाले न हों।
अनपराध-(सं०त्रि०) अपराध हीनता, निर्दोष। **अनपराधी** (हिं०पुं०) निरपराध।
अनपहृत (सं०वि०) अपहरण या चोरी न किया हुआ।
अनपायी (सं०वि०) स्थिर, निश्चय।
अनपाश्रय (सं०वि०) निर्द्वन्द्व, स्वाधीन
अनपेक्ष (सं०त्रि०) अपेक्षा न करने वाला, पक्षपात रहित। **अनपेक्षत्व** (सं०नपुं०) पक्षपातशून्यता।
अनपेक्षा-(सं०स्त्री०) देखो अनपेक्षत्व।
अनपेक्षित-(सं०वि०) अपेक्षा न किया हुआ, ध्यान न दिया हुआ।
अनपेक्ष्य-(सं०त्रि०) किसी की अपेक्षा न करने वाला।
अनफाँस-(हिं०स्त्री०) मोक्ष, मुक्ति।
अनबन-(हिं०स्त्री०) विरोध, झगड़ा, द्रोह, झंझट, बिगाड़ (वि०) विविध, भिन्न, पृथक्, अलग।
अनबिधा, अनबेध-(हिं०वि०) बिना बेधा या छेद किया हुआ।
अनबोल-(हिं०वि०) न बोलनेवाला, मौन, चुप्पा, गूँगा, अपना सुख दुःख किसी से न कहने वाला। **अनबोलत, अनबोला**-(हिं०वि०) न बोलने वाला, गूगा, अनबोल।
अनब्याहा - (हिं०वि०) अविवाहित, कुवाँरा।
अनभल-(हिं०पुं०) बुराई, अहित, हानि। **अनभला**-(हिं०वि०) जो भला न हो, बुरा।
अनभाया, अनभावता - (हिं०वि०) अप्रिय, अच्छा न लगा हुआ।
अनभिज्ञ-(सं०त्रि०) अपरिचित, ज्ञानशून्य, मूर्ख, अज्ञ, **अनभिज्ञता**-(सं०स्त्री०) अज्ञता, मूर्खता।
अनभिधेय-(सं०वि०) जो कहा न जा सके।
अनभिभव-(सं०पुं०) जीत का न होना-पराजय, हार। **अनभिभूत**-(सं०वि०) न हराया हुआ।
अनभिरूप-(सं०वि०) कुरूप, बेडौल, भद्दा।
अनभिलाष-(सं०पुं०) अभिलाषा का न होना, आनन्द रहित, अरुचि। **अनभिलाषी**-(हिं०वि०) वाञ्छा न रखने वाला, इच्छा न रखने वाला।
अनभिव्यक्त-(सं०वि०) जो स्पष्ट न हो, गुप्त, छिपा हुआ।
अनभिसन्धान-(सं०नपुं०) प्रयोजन रहित
अनभिसम्बन्ध-(सं०वि०) बिना सम्बन्धका
अनभिहित-(सं०त्रि०) न कहा हुआ, अकथित, बिना बन्धन का।
अनभीष्ट-(सं०वि०) अनिष्टकर, बुराई करनेवाला, नहीं चाहा हुआ।
अनभो-(हिं०पुं०) आश्चर्य, अचम्भा, अनहोनी घटना, अनुभव, (वि०) अद्भुत, विचित्र, विलक्षण।
अनभोगा-(हिं०वि०) जिसका उपभोग न किया गया हो।
अनभोरी-(हिं०स्त्री०) कपट, छल, भुलावा
अनभ्यसित, अनभ्यस्त-(सं०वि०) अभ्यास

न किया हुआ, अभ्यास न करनेवाला, अप्रौढ़।
अनभ्यास-(सं०पुं०) अभ्यास का अभाव, टेव न पड़ना। **अनभ्यासी**-(हिं०वि०) जिसको अभ्यास न पड़ा न हो।
अनभ्र-(सं०वि०) मेघ रहित, बिना बादल का।
अनमन, अनमना-(हिं०वि०) अन्यमनस्क, जिसका चित्त न लगता हो, खिन्न, उदास, अस्वस्थ, रोगी। **अनमनापन**-(हिं०पु०) उदासीनता, अस्वस्थता।
अनमापा-(हिं०वि०) बिना नपा हुआ।
अनमारग-(हिं०पुं०) कुमार्ग; दुराचार।
अनमिख-(हिं०पु०) अनिमेष, बिना पलक गिराये, टकटकी बाँधे हुए।
अनमिल, अनमिलत-(हिं०वि०) संबन्ध-रहित, असम्बन्ध, पृथक्, अलग। **अनमिलता**-(हिं०वि०) न मिलने वाला, अलभ्य।
अनमीलना-(हिं०क्रि०) आँख उघारना, देखना।
अनमेल-(हिं०वि०) बिना मिलावट का, विशुद्ध, असम्बन्ध, बेजोड़।
अनमोल-(हिं०वि०) अमूल्य, मूल्यवान्, बड़े दाम का, अत्युत्तम, सुन्दर।
अनम्र-(सं०वि०) जिसमें नम्रता न हो, उद्दण्ड।
अनय-(सं०पुं०) अन्याय, अनीति, अत्याचार, अशुभ दुर्घटना, व्यसन।
अनयन-(सं०वि०) बिना नेत्र का, चक्षुहीन, अन्धा।
अनयस-(हिं०वि०) अनुत्तम, बुरा।
अनयास-(हिं०क्रि०वि०) देखो अनायास।
अनरथ-(हिं०पु०) देखो अनर्थ।
अनरना-(हिं०क्रि०) अनादर करना, अपमान दिखलाना।
अनरस-(हिं०पु०) रसहीनता, रुखाई, वैर, दुःख, कष्ट, मनमोटाव, कोप, शुष्कता, काव्य जिसमें कोई प्रधान रस न दरसाया गया हो।
अनसा-(हिं०वि०) बेचैनी, रुग्णता, (पु०) एक प्रकार की मिठाई (अन्दरसा)
अनराता-(हिं०वि०) बिना किसी रंग से रंगा हुआ, अरक्त, सादा, जिस पर प्रेम का प्रभाव न पड़ा हो।
अनरीति-(हिं०स्त्री०) बुरी चाल, कुरीति, विपरीत व्यवहार।
अनरुचि-(हिं०स्त्री०) अरुचि, अग्निमान्द्य का रोग।
अनरूप-(हिं०वि०) रूपरहित, असदृश, कुरूप-भद्दा।
अनर्क चतुर्दशी-(सं०स्त्री०) कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी जो हनुमान जी का जन्म दिवस माना जाता है-इस दिन हनुमानजी का पूजन होता है।
अनर्गल-(सं०वि०) प्रतिबन्ध रहित, बिना रोक टोक का, निरन्तर; व्यर्थ, अस्तव्यस्त।
अनर्घ-(सं०वि०) बहुमूल्य, (पुं०) कम मूल्य का।
अनर्घ्य-(सं०वि०) अपूज्य, अमूल्य, बहुमूल्य। **अनर्घ्यत्व**-(सं०नपु०) अमूल्यता, बहुमूल्यता।
अनर्थ-(सं०नपु०) उलटा अर्थ, अनिष्ट, प्रतिकूलता, कायहानि, आपत्ति, मूल्य का अभाव, बेकाम वस्तु, **अनर्थक**-(सं०पु०) अर्थशून्य, निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, हानिकारक, अनिष्ट करनेवाला। **अनर्थकारी**-(हिं०वि०) उलटा अर्थ निकालने वाला, हानिकारक, अनिष्टकारी, उपद्रव करनेवाला। **अनर्थत्व**-(सं०नपु०) बुराई, ईर्ष्या द्वेष, **अनर्थदर्शी**-(हिं०वि०) निरर्थक विषय पर विचार करने वाला। **अनर्थनाशी**-(सं० पु०) अनर्थ का नाश करनेवाले शिव। **अनर्थबुद्धि**-(सं०वि०) उलटी बुद्धि वाला। **अनर्थभाव**-(सं०त्रि०) ईर्ष्या, द्वेष।
अनर्ह-(सं०वि०) अनुपयुक्त, भद्दा, अयोग्य।
अनल-(सं०पुं०) अग्नि, वायु, रकार अक्षर, तीन की संख्या; **अनलचूर्ण**-बारूद; **अनलदीपन**-पाचन शक्ति बढ़ानेवाली (औषधि); **अनलपक्ष**-एक चिड़िया जो कहा जाता है कि सर्वदा आकाश में उड़ा करती है, वहीं अंडा भी देती है जो गिरने से फूट जाता है और बच्चा निकल आता है। **अनलप्रभा**-(सं०स्त्री०) रतनजोत नाम की लाल रंग की लकड़ी। **अनलमुख**-(सं०पु०) देवता, ब्राह्मण। **अनलशिला**-(सं०स्त्री०) अग्निमय पत्थर जो आकाश से गिरते है, ये उल्कापात से भिन्न होते हैं।
अनलस-(सं०वि०) आलस्य रहित, चंचल।
अनला-(सं०स्त्री०) दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप ऋषि को ब्याही थी।
अनलेख-(हिं०वि०) जिसका वर्णन लिखा न जा सके।
अनल्प-(सं०वि०) प्रचुर, अधिक; **अनल्पमन्यु**-बड़ा क्रोधी।
अनवकाश-(सं०पु०) अवकाश न होना,
अनवगाह-(सं०वि०) बहुत गहरा, अथाह। **अनवगाहिता**-(सं०स्त्री०) बड़ी गहराई। **अनवगाही**-(हिं०वि०) पार न जानेवाला।
अनवगीत-(सं०वि०) अनिन्दित।
अनवच्छिन्न-(सं०वि०) जो अलग न हो, संयुक्त, जुटा हुआ, अखण्डित, अनियमित, व्याख्यारहित। **अनवच्छिन्न संख्या**-अखण्ड राशि।
अनवट-(हिं०पुं०) चाँदी का छल्ला जिसको स्त्रियाँ पैर के अंगूठों में पहिरती हैं, कोल्हू के बैल की आँखों पर बाँधने का ढपना।
अनवद्य-(सं०वि०) निन्दा रहित, दोष-शून्यता, **अनवद्यता**-(सं०स्त्री०) निर्दोषता। **अनवद्यत्व**-(सं०नपु०) देखो अनवद्यता।
अनवधान-(सं०नपु०) असावधानी, चित्तविक्षेप, प्रमाद, बावलापन।
अनवधानता-(सं०स्त्री०) प्रमाद, पागलपन। **अनवधि**-(सं०वि०) असीम, (क्रि०वि०) सर्वदा।
अनवय-(हिं०) देखो अन्वय।
अनवर-(सं०वि०) श्रेष्ठ, सभ्य, शिष्ट।
अनवरत-(सं०वि०) निरन्तर, सतत; (अव्य०) सर्वदा।
अनवलम्ब-(सं०वि०) निराश्रय, बिना सहारे का। **अनवलम्बन**-(सं०नपुं०) आश्रय न रहना। **अनवलम्बित**-(सं० वि०) सहारा न रखता हुआ।
अनवसर-(सं०त्रि०) अवकाश रहित, कुसमय।
अनवसान-(सं०त्रि०) अस्त न होता हुआ, अनन्त।
अनवसित-(सं०हिं०) असमाप्त, अधूरा।
अनवस्था-(सं०स्त्री०) स्थिति का अभाव, तर्क में अव्यवस्था, अधीरता, चंचलता, चपलता, आतुरता। **अनवस्थित**-(सं०वि०) अस्थिर, चंचल, अशान्त, निरवलम्ब, आधार रहित। **अनवस्थितत्व**-(सं०नपु०) चंचलता। **अनवस्थिता**-(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री। **अनवस्थिति**-(सं०स्त्री०) अधैर्य, चंचलता, चुलबुलापन, चित्त का स्थिर न रहना। **अनवाँसना**-(हिं०क्रि०) किसी नये पात्र को पहिले पहिल काम में लाना।
अनवाँसा-(हिं०वि०) पहिले पहिल काम काम में लाया हुआ, (पु०) कटी हुई उपज का बँधा हुआ मुट्ठा।
अनवाँसी-(हिं०स्त्री०) बिस्वांसी का बीसवां भाग; एक बिस्वे में चार सौ अनवांसी होती हैं।
अनवाद-(हिं०पु०) बुरा शब्द, कटुवचन।
अनवानता-(सं०स्त्री०) प्रचलित होने की अवस्था।
अनवाप्त-(सं०वि०) अप्राप्त, जो मिला न हो। **अनवाप्ति**-(सं०स्त्री०) अप्राप्ति।
अनवाय, अनवय-(सं०हिं०) निराकार, निरवयव।
अनशन-(सं०नपु०) उपवास, लंघन, अन्नत्याग, निराहार रहने का व्रत। **अनशनता**-(सं०स्त्री०) उपवास, निराहार, व्रत।
अनश्रु-(सं०वि०) जिसके आँसू न आते हों।
अनश्व-(सं० वि०) अश्वहीन, घोड़ा न रखने वाला।
अनश्वर-(सं०वि०) नष्ट न होने वाला, स्थायी, स्थिर, अटल, सर्वदा बना रहने वाला।
अनष्ट-(सं०वि०) नष्ट न किया हुआ, अभङ्ग, अखण्डित, टूटा हुआ।
अनसखरी-(हिं०वि०) पवित्र, केवल दूध तथा घी के संयोग से बना हुआ पक्वान्न (जिसके निर्माण में जल का उपयोग न हुआ हो)
अनसढ-(हिं०वि०) नीच, अधम, छिछोरा।
अनसत्त-(हिं०वि०) असत्य, झूठा।
अनसन-(हिं०पुं०) उपवास, अनशन।
अनसमझा-(हिं०वि०) न समझा हुआ, जो समझ में न आया हो, अज्ञान, नासमझ।
अनसहत-(हिं०वि०) असह्य, न सहने योग्य।
अनसाना-(हिं०क्रि०) बुरा मानना, चिढ़ाना।
अनसुना-(हिं०वि०) बिना सुना हुआ, अश्रुत।
अनसुनी-(हिं०वि०) जो सुनी न गई हो, **अनसुनी करना**-बहटियाना, आनाकानी करना।
अनसूयक-(सं०वि०) दूसरे के गुणों पर ईर्ष्या न करनेवाला।
अनसूया-(सं०स्त्री०) ईर्ष्या न करना, डाह न करना, शकुन्तला की सखी तथा अत्रि ऋषिकी पत्नी का नाम।
अनस्तमित-(सं०वि०) जो अस्त न हुआ हो जो डूब न गया हो।
अनहक-(हिं०क्रि०वि०) अनधिकार, व्यर्थ,
अनहङ्कार-(सं०वि०) अहंकार शून्य, बिना घमंड का। **अनहङ्कारी**-(सं०वि०) गर्वशून्य, जो घमंड न करता हो।
अनहदनाद-(हिं०पु०) हाथ के अंगूठों से दोनों कान को बन्द करने पर ध्यान लगाने से जो ध्वनि सुन पड़ती है, अनाहत नाद।
अनहित-(हिं०पु०) बुराई, बिगाड़, अपकार, अहित करनेवाला।
अनहितू-(हिं०वि०) हित न चाहने वाला
अनहोता-(हिं०वि०) न होनेवाला, न रखनेवाला, अलौकिक, रिक्त, निर्धन, दरिद्र।
अनहोनी-(हिं०स्त्री०) न होनेवाली बात, (पु०) अद्भुत घटना।
अनाकानी-(हिं०स्त्री०) जानबूझ कर टालना, बहलाना,
अनाकार-(सं०वि०) बिना आकार का, अवयवहीन, कुरूप, भद्दा।
अनाकाल-(सं०पु०) दुर्भिक्ष काल,
अनाकाश-(सं०वि०) मेघरहित, स्वच्छ।
अनाकुल-(हिं०वि०) न घबड़ाया हुआ, अव्यग्र, एकाग्र।
अनाक्रान्त-(सं०वि०) आक्रमण न किया हुआ।
अनाखर-(हिं०वि०) अक्षर न पहिचानने वाला, मूर्ख, असभ्य।
अनागत-(सं०वि०) न आया हुआ, होने वाला, भावी, अविदित, अप्राप्त, अज्ञात, अपरिचित, अपूर्व, अनादि, (क्रि०वि०) अचानक।
अनागति-(सं०स्त्री०) अप्राप्ति।
अनागम-(सं०पुं०) आगम का अभाव, न पहुँचना।
अनागम्य-(सं०वि०) न पहुँचने योग्य।
अनाचरण, अनाचार-(सं०पुं०) अशुद्ध आचरण, कुरीति, धर्मशास्त्र के बतलाये कर्म से विरुद्ध आचरण, बुरी प्रथा।

अनाचारिता-(हिं०स्त्री०) कुचाल, कुरीति **अनाचारी**-(हिं०वि०) कुकर्मी ।
अनाज-(हिं०पु०) अन्न, धान्य, ।
अनाजी-(हिं०वि०) अन्नका,अन्न निर्मित
अनाज्ञ-(सं०वि०) आज्ञा न हुआ पाया **अनाज्ञाकारी**-आज्ञा न माननेवाला ।
अनाड़ी-(हिं०वि०) अज्ञानी,असभ्य, मूर्ख
अनाढ्य-(सं०वि०) धनहीन, दरिद्र ।
अनातप-(सं०पु०) गर्मी न होना, शीतलता ।
अनातुर-(सं०वि०) जो आतुर न हो, स्वस्थ, आरोग्य ।
अनात्म-(सं०त्रि०) आत्मा से भिन्न वस्तु, जड़ पदार्थ,अचेतन । **अनात्मज्ञ** आत्मा को न जानने वाला ।
अनाथ-(सं०वि०) प्रभुहीन,जिसकी रक्षा करने वाला कोई न हो, अशरण, असहाय, बिना माँ बाप का, दीन, दुखी, **अनाथालय,अनाथाश्रम**-(सं०पु०) दीन दुखियों को रखने का स्थान, पितृहीन बच्चों की रक्षा का स्थान।
अनादर-(सं०पु०) अपमान, अवज्ञा, तिरस्कार, अप्रतिष्ठा; एक अलंकार जिसमें किसी प्राप्त वस्तु का अनादर वैसी ही किसी दूसरी वस्तु से किया जाता है। **अनादरणीय**-(सं०वि०) अनादर करने योग्य, निन्द्य ।
अनादरित-(सं०वि०) अपमान किया हुआ ।
अनादि-(सं०पुं०) जिसका आदि न हो, ब्रह्म, परमेश्वर; **अनादित्व**-नित्यता
अनादिष्ट (सं०वि०) आज्ञा न दिया हुआ, विशेष रूप से न कहा हुआ ।
अनादृत-(सं०वि०) आदर न किया हुआ, तिरस्कृत, अपमानित ।
अनादेय-(सं०त्रि०) ग्रहण न करनेयोग्य
अनाधार-(सं०वि०) बिना आधारका ।
अनाना-(हिं०क्रि०) लाना, माँगना ।
अनापद-(सं०स्त्री०) आपत्तिका अभाव।
अनापन्न-(सं०वि०)न पाया हुआ,अप्राप्त
अनापशनाप-(हिं०पुं०) निरर्थक वार्ता, बकझक, (वि०) असम्बद्ध, गड़बड़ सड़बड़, ऊटपटाङ्ग ।
अनापा-(हिं०वि०) बिना नापा या तौला हुआ, असीम ।
अनाप्त-(सं०वि०) अप्राप्त, न मिला हुआ, अयोग्य, आत्मीय से भिन्न, बिना ठोर ठिकाने का, असत्य, (पु०) अपरिचित व्यक्ति, अनजाना मनुष्य
अनाप्ति-(सं०स्त्री०) प्राप्ति का अभाव।
अनाप्य-(सं०वि०) प्राप्त न करने योग्य।
अनाप्लुत-(सं०वि०) गोता न लगाया हुआ, न स्नान किया हुआ, न धोया हुआ ।
अनाम-(सं०वि०) बिना नामका, अविख्यात (पुं०) लवन का महीना। **अनामक**-(सं०वि०) अप्रसिद्ध, बेनाम, अधिक मास । **अनामत्व**-(सं०नपुं०) अप्रसिद्धि।
अनामय-(सं०वि०) स्वस्थ, नीरोग, रोगरहित, आरोग्य, (पुं०) शिव, महादेव ।
अनामा, अनामिका-(सं०स्त्री०) मध्यमा और कनिष्ठिका के बीच की अंगुलि, बिचली और कानी अंगुलि के बीच वाली अंगुलि ।
अनामिष-(सं०वि०) मांसरहित,निरर्थक
अनायक-(सं०वि०) बिना नायक या सरदार का ।
अनायत-(सं०वि०) न फैला हुआ,अदूर, समीप का, प्रचलित ।
अनायत्त-(सं०वि०) जो वश में न हो, अनधीन ।
अनायास-(सं०वि०) बिना क्लेश का, बिना परिश्रम का,(अव्य०) सरलता से, सहज में ।
अनायुध-(सं०वि०) बिना अस्त्रशस्त्रका
अनारी-(हिं०वि०) अनार के रंग का, लाल रंग का, अनाड़ी, मूर्ख, एक प्रकार की मिठाई ।
अनारोग्य-(सं०नपुं०)आरोग्यका अभाव
अनार्जव-(सं०वि०) कुटिल, टेढामेढ़ा ।
अनार्तव-(सं०वि०) जिस स्त्री को मासिक धर्म न होता हो,बिना ऋतुका
अनार्य-(सं०वि०) जो आर्य न हो, अप्रधान, म्लेच्छ, असच्चरित्र, दुष्ट, असाधु; **अनार्यज**-वह जो अनार्य देश में उत्पन्न हो । **अनार्यता, अनार्यत्व**-(सं०स्त्री०) दुष्टता, नीचता ।
अनालम्बी-(सं०स्त्री०) शिव की वीणा का नाम ।
अनालाप-(सं०वि०) मौन रहने वाला।
अनालोचित-(सं०वि०) बिना देखाहुआ, बिना समझा बूझा ।
अनावर्षण-(सं०नपुं०) वृष्टिका न होना
अनावश्यक-(सं०वि०) जिसकी आवश्यकता न हो, बिना प्रयोजन का । **अनावश्यकता**-(सं०स्त्री०) आवश्यकता या प्रयोजन का अभाव ।
अनाविद्ध-(सं०वि०) चोट न खाया हुआ बिना छेदा हुआ ।
अनावृत-(सं०वि०) न ढपा हुआ, खुला हुआ ।
अनावृत्त-(सं०वि०) पीछे न फिरनेवाला
अनावृत्ति-(सं०स्त्री०) मुक्ति, निर्वाण ।
अनावृष्टि-(सं०स्त्री०) वृष्टि का अभाव, सूखा पड़ना ।
अनावेदित-(सं०वि०) प्रगट न कियाहुआ
अनाश-(सं०वि०) नाश शून्य, आशा रहित ।
अनाशी-(हिं०वि०) न मिटनेवाला ।
अनाशु-(सं०वि०) विलम्बी, मन्द ।
अनाश्रमी-(सं०वि०) गृहस्थाश्रम आदि चारों आश्रमों में से किसी से न सम्बन्ध रखनेवाला, आश्रमहीन ।
अनाश्रय-(सं०वि०) आश्रय रहित,निरवलम्ब, अनाथ, बिना सहारे का असहाय, दीन । **अनाश्रित**-(सं०हि०) आश्रयहीन,निरवलम्ब, बिनासहारेका
अनासती-(हिं०स्त्री०) अशुभ वेला,कुसमय
अनासाद-(सं०वि०) अप्राप्त, न मिला हुआ, प्राप्त न किया हुआ ।
अनासिक-(सं०वि०) बिना नाक का, नककटा ।
अनास्था-(सं०स्त्री०) अपमान, अनादर, भक्तिहीनता, अश्रद्धा, निश्चेष्टता ।
अनास्वाद-(सं०पु०,वि०) स्वाद का अभाव स्वादहीनता ।
अनास्वादित-(सं०वि०) स्वाद न लिया हुआ, बिना चखा हुआ ।
अनाह-(सं०पु०) मलमूत्र रुकने से पेट का फूल जाना, (हिं०क्रि०) व्यर्थ,झूठमूठ
अनाहत-(सं०त्रि०) चोट न लगा हुआ, नवीन, वस्त्र, हठयोग के अनुसार सुषुम्ना नाडी के मध्यमें स्थित हृदय का पद्म । **अनाहतनाद**-वह शब्द जो दोनों कान को अँगूठे से बन्द करने पर सुनाई देता है ।
अनाहार-(सं०पु०) अनशन, उपवास, भोजन का अभाव (वि०) भोजन न किया हुआ, निराहार । **अनाहारी**-(हिं०वि०) उपवास किया हुआ ।
अनाहार्य-(सं०वि०) भोजन के अयोग्य ।
अनाहूत-(सं०वि०) बिना बुलाया हुआ, निमन्त्रण न दिया हुआ ।
अनाह्लाद-(सं०वि०) अप्रसन्न,उदास ।
अनिकेत-(सं०वि०) गृहहीन, बिनाघर का, (पु०) सन्यासी ।
अनिग्रह-(सं०वि०) बिना रुकावट का, अखण्डित ।
अनिच्छ-(सं०वि०) इच्छारहित, तृप्त ।
अनिच्छा-(सं०स्त्री०) अनभिलाष, अरुचि
अनिच्छित-(सं०वि०) इच्छा न किया हुआ, अनचाहा ।
अनिच्छु, अनिच्छुक-(सं०वि०)आकांक्षा न रखने वाला,जिसको चाह न हो ।
अनित-(हिं०वि०) अनित्य, शून्य ।
अनित्य-(सं०वि०) सदा न रहनेवाला, अदृढ, अनिश्चित,नश्वर, अनियमित, क्षणभंगुर । **अनित्यता**-(सं०स्त्री०) अनित्यत्व, चचलता, अस्थिरता, नश्वरता ।
अनिद्र-(सं०वि०) निद्रारहित, जिस को नींद न आती हो । **अनिद्रा**-(सं०स्त्री०) निद्रा का अभाव,जागरण । **अनिद्रित**-(सं०वि०) न सोता हुआ, जागरित ।
अनिन्दनीय-(सं०वि०) अनिन्द्य, निर्दोष।
अनिन्दित-(सं०वि०) निन्दा न किया हुआ, पवित्र, सज्जन, धार्मिक ।
अनिन्द्य-(सं०वि०) अनिन्दनीय, निर्दोष ।
अनिप-(हिं०पु०) सेनापति, सेनानायक।
अनिपुण-(सं०वि०) अविज्ञ, अपटु,मूर्ख।
अनिबद्ध-(सं०वि०) न बँधा हुआ ।
अनिमन्त्रित-(सं०वि०) निमन्त्रण न दिया हुआ, न्योता न दिया हुआ ।
अनिमा-(हिं०) देखो अणिमा ।
अनिमिख-(हिं०वि०) टकटकी लगाया हुआ, (क्रि०वि०) बिना पलक गिराये, निरन्तर, लगातार ।
अनिमित्त-(सं०त्रि०) अकारण; (हिं०क्रि०वि०) बिना कारण, झूठमूठ ।
अनिमिष-(सं०पु०) देवता, मछली, विष्णु, (वि०) आँख न झपकानेवाला।
अनिमेष-(सं०पु०) देखो अनिमिष ।
अनियत-(सं०वि०) अनित्य, अस्थायी, असीम, अनिश्चित ।
अनियन्त्रित-(सं०वि०) अनियत, प्रतिबन्धहीन, अनिवारित, उच्छृंखल, मनमाना ।
अनियम-(सं०पु०) नियम का अभाव, अव्यवस्था, शंका,अनिश्चय,दुराचार। **अनियमित**-(सं०वि०) नियमहीन, अव्यवस्थित, अनिश्चित ।
अनियाउ-(हिं०पु०) देखो अन्याय ।
अनियारा-(हिं०वि०) धारदार, तीक्ष्ण, तीखी धार वाला ।
अनियारी-(हिं०वि०स्त्री०) तीखी ।
अनियुक्त-(सं०वि०) किसी काम में न लगाया हुआ ।
अनियोगी-(हिं०वि०) सम्बन्ध न रखने वाला ।
अनिरवा-(हिं०पुं०) इधर उधर भटकने वाला पशु ।
अनिरुक्त-(सं०वि०) अच्छी तरह न समझाया हुआ ।
अनिरुद्ध-(सं०वि०) न रोका हुआ,अबद्ध, बाधा रहित; (पु०) श्रीकृष्ण के पौत्र का नाम, इनका विवाह बाणासुर की पुत्री ऊषा से हुआ था ।
अनिरूपित-(सं०वि०) वर्णन न किया हुवा ।
अनिर्जित-(सं०वि०) न जीता हुआ ।
अनिर्णय-(सं०पु०) निर्णय का अभाव, अनिश्चय ।
अनिर्णीत-(सं०वि०) अनिश्चित ।
अनिर्दिष्ट-(सं०वि०) अवर्णित,अनिश्चित, वर्णन न किया हुआ ।
अनिर्देश्य-(सं०वि०) निर्विशेष, अनिर्वचनीय, निर्गुण ।
अनिर्धारित-(सं०वि०) स्थिर न किया हुआ, अनिश्चित ।
अनिर्बन्ध-(सं०वि०) बन्धन रहित स्वतन्त्र ।
अनिर्भर-(सं०वि०) थोड़ा छोटा,हल्का ।
अनिर्मल-(सं०वि०) मलिन, मैला ।
अनिर्वचनीय-(सं०वि०) जिसका वर्णन न किया जा सके, अगम्य (सं०पुं०) परमात्मा, ब्रह्म ।
अनिर्वाच्य-(सं०वि०) जिसका वर्णन न हो सके, निर्वाचन न किये जाने योग्य, जो चुना न जा सके ।
अनिर्वाह-(सं०पु०) निर्वाह का अभाव, आय की न्यूनता, नहीं चल सकना ।
अनिर्वाह्य-(सं०वि०) निर्वाह न करने योग्य ।
अनिल-(सं०पुं०) वायु, हवा ।
अनिल कुमार-(सं०पु०) पवनतनय, हनूमान; **अनिलसखा**-अग्नि ।
अनिवारित-(सं०वि०) बिना रोका या

हटाया हुआ।
अनिवार्य-(सं०वि०) न हटाने योग्य।
अनिवृत्त. **अनिवृत्त**-(सं०वि०) अबाधित
अनिवेदित-(सं०वि०) अवर्णित,अकथित
अनिश-(सं०वि०) निरन्तर, अविरत।
अनिश्चित-(सं०वि०) निश्चय न किया हुआ, अनिर्दिष्ट, अनवधारित।
अनिषिद्ध-(सं०वि०) निषेध रहित, बिना रोक टोक का।
अनिष्ट-(सं०नपुं०) अहित, अपकार, बुराई, हानि, विषाद, पाप, दुःख, अमङ्गल (वि०) अशुद्ध, अशुभ,अधम। **अनिष्टकर**-(वि०) बुराई करनेवाला; **अनिष्टसूचक**-अपकार की सूचना देनेवाला।
अनिष्ठुर-(सं०वि०) जो कठोर हृदय न हो।
अनिष्पत्ति-(सं०स्त्री०) अपूर्णता, असफलता।
अनी-(सं०स्त्री०) नोक, अग्र भाग, कोर, सिरा, नाव का अगला भाग, सेना, खेद, ग्लानि।
अनीक-(सं०पुं०,नपुं०) सेना, दल, युद्ध, कलह, चेष्टा, क्षेत्र, श्रेणी, (हिं०वि०) अनुत्तम, बुरा।
अनीच-(सं०वि०) प्रतिष्ठित, माननीय।
अनीठ-(हिं०वि०) अनिष्ट, अधम, बुरा।
अनीत-(हिं०स्त्री०) अनीति, अन्याय। **अनीति**-(सं०स्त्री०) दुर्नीति, अन्याय, अत्याचार, अन्धेर, असभ्यता।
अनीतिज्ञ-(सं०वि०) नीति में अनिपुण।
अनीतिमान्-(सं०वि०) अत्याचार करने वाला।
अनीप्सित-(सं०वि०) अनिच्छित।
अनीश-(सं०पुं०) विष्णु, (वि०) प्रभुशून्य, असमर्थ, अनाथ, अधिकार रहित, अस्वतन्त्र। **अनीशत्व**-(सं०नपुं०) शक्तिन्यूनता।
अनीश्वर-(सं०वि०) प्रभुहीन, बिना स्वामी का, ईश्वर से भिन्न। **अनीश्वरता,(अनीश्वरत्व)**-(सं०स्त्री०) ईश्वर की अनुपस्थिति। **अनीश्वरवाद**-(सं०पुं०) ईश्वर को न मानने का मत, नास्तिकता,मीमांसा। **अनीश्वरवादी**-(सं०वि०) ईश्वर को न माननेवाला, नास्तिक, मीमांसक।
अनीस-(हिं०पुं०) अनीश, अनाथ, जिसका कोई रक्षक न हो।
अनीसून-(हिं०पुं०) सौंफ़।
अनीह-(सं०वि०) चेष्टाशून्य।
अनीहा-(सं०स्त्री०) चेष्टाशून्यता।
अनु-संस्कृत का एक उपसर्ग जो, पीछे, साथसाथ, इधरउधर, सदृश, पास, साथ तथा प्रत्येक, अर्थ में शब्दों के पहिले लगाया जाता है। **अनुकथन**-(सं०नपुं०) वार्तालाप, बातचीत, कहावत। **अनुकम्पक**-(सं०वि०) दया करने वाला, दयालु। **अनुकम्पन**-(सं०वि०) दया, कृपा।
अनुकम्पा-(सं०स्त्री०) दया, कृपा, अनुग्रह, सहानुभूति। **अनुकम्पित**-(सं०वि०) जिसपर अनुग्रह किया गया हो।
अनुकरण-(सं०नपुं०) सदृश या बराबर करना। **अनुकरणीय**-(सं०वि०) अनुकरण करने योग्य। **अनुकर्ता**-(सं०पुं०) अनुकरण करने वाला, आज्ञा मानने वाला। **अनुकल्पित**-(सं०वि०) पीछा किया हुआ, ध्यान में लाया हुआ।
अनुकार-(सं०पुं०) अनुकरण। **अनुकारी**-(सं०वि०) अनुकरण करने वाला, आज्ञाकारी। **अनुकीर्तन**-(सं०नपुं०) सुयश का वर्णन, गुणगान।
अनुकूल-(सं०वि०) सहायक, दयालु, पक्षपाती, आश्रय देनेवाला, वह नायक जो एक ही स्त्री पर अनुरक्त रहे, एक अलङ्कार जिसमें अनिष्ट आचरण से लाभ की सिद्धि (प्राप्ति) दिखाई जावे। **अनुकूलता**-(सं०स्त्री०) अविरुद्धता, सहायता।
अनुकूलना-(हिं०क्रि०) सहायक होना, प्रसन्न करना, आत्मीयता दिखलाना
अनुकृत-(सं०वि०) अनुकरण किया हुआ।
अनुकृति-(सं०स्त्री०) अनुकरण।
अनुक्त-(सं०वि०) अकथित, न कहा हुआ।
अनुक्ति-(सं०वि०) बिना कही हुई बात।
अनुक्रम-(सं०पुं०) पिछला क्रम अनुगत क्रम। **अनुक्रमण**-(सं०नपुं०) पीछे को चलना। **अनुक्रमणिका**-(सं०स्त्री०) सूचीपत्र, किसी ग्रन्थ का अनुपूर्व पाठादि सूचक प्रातिशाख्य।
अनुक्रिया-(सं०स्त्री०) अनुकरण।
अनुक्षण-(सं०अव्य०) प्रतिक्षण, निरन्तर, लगातार।
अनुग-(सं०त्रि०) पीछे पीछे जानेवाला, सेवक, अनुयायी, अनुगामी।
अनुगणित-(सं०वि०) गिनती किया हुआ।
अनुगत-(सं०वि०) आश्रित, आधीन। **अनुगति**-(सं०स्त्री०) अनुसरण, अनुगमन, पीछे रहने की चाल, मृत्यु।
अनुगम, अनुगमन-(सं०पुं०) निचोड़, पीछे जाना, अनुसरण, विधवा स्त्री का सती होना। **अनुगामी**-(सं०वि०) पीछे चलनेवाला, अनुसरण करने वाला, सहचर, समान आचरण करनेवाला, आज्ञाकारी।
अनुगीति-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
अनुगुण-(सं०वि०) समान गुण वाला, सुयोग्य, (पुं०) स्वाभाविक गुण; एक अलंकार जिसमें किसी द्रव्य का पहिला गुण अन्य द्रव्य के संसर्ग से बढ़ा हुआ दरसाया जाता है।
अनुगुप्त-(सं०वि०) छिपा हुआ, ढका हुआ, अप्रगट।
अनुगृहीत-(सं०वि०) अनुग्रह किया हुआ, कृतज्ञ, जिसपर कृपा दिखलाई गई हो
अनुग्रह-(सं०पुं०) अनिष्ट निवारण, दया, कृपा।
अनुग्राहक-(सं०वि०) दयालु, कृपालु।
अनुग्राही-(हिं०वि०) अनुग्रह करनेवाला
अनुचर-(सं०पुं०) साथ चलनेवाला, सहचर, भृत्य, दास।
अनुचारक-(सं०पुं०) अनुगामी, सेवक।
अनुचारी-(सं०वि०) पीछे जानेवाला, सेवक।
अनुचित-(सं०वि०) अयुक्त, अकर्तव्य, बुरा।
अनुचिन्ता-(सं०स्त्री०) निरन्तर चिन्ता।
अनुच्च-(सं०वि०) जो ऊँचा न हो, नीच।
अनुच्छिन्न-(सं०वि०) न कटा हुआ।
अनुच्छिष्ट-(सं०वि०) जो जूठा न किया हो।
अनुज-(सं०पुं०) जो बाद में उत्पन्न हो, छोटा, छोटा भाई। **अनुजन्मा**-(सं०स्त्री०) छोटी बहिन। **अनुजा**-(सं०स्त्री०) छोटी बहिन। **अनुजाता**-(सं०स्त्री०) छोटी बहिन।
अनुजीवी-(सं०त्रि०) आश्रित, सेवक।
अनुज्ञा-(सं०स्त्री०) आज्ञा, अनुमति, सम्मति, एक अलंकार जिसमें किसी बुरी वस्तु में गुण देखकर उसके प्राप्त करने की इच्छा देखलाई जाती है।
अनुज्ञात-(सं०वि०) अनुमति प्राप्त, स्वीकृत। **अनुज्ञापक**-(सं०पुं०) अनुमति देनेवाला **अनुज्ञापन**-(सं०नपुं०) आज्ञा, आदेश।
अनुतप्त-(सं०वि०) तपाया हुआ, दुःख पूर्ण।
अनुताप-(सं०पुं०) पश्चात्ताप,पछतावा, गर्मी।
अनुतापी-(सं०वि०) पछतावे में पड़ा हुआ।
अनुत्तम-(सं०वि०) सर्वोत्तम, सबसे अच्छा।
अनुत्तर-(सं०वि०) अत्यन्त श्रेष्ठ, उत्तर रहित, चुप, मौन।
अनुत्तान-(सं०वि०) अधोमुख, मुँह नीचे किये हुए, औंधे मुँह।
अनुत्पत्ति-(सं०स्त्री०) उत्पत्ति का अभाव, पैदा न होना।
अनुत्पन्न-(सं०वि०) जो उत्पन्न न हुआ हो, असमाप्त।
अनुत्साह-(सं०पुं०) उत्साहहीनता, उत्साह का न होना।
अनुत्सुक-(सं०वि०) उत्कण्ठा रहित, **अनुत्सुकता**-(सं०स्त्री०) उत्कण्ठा का अभाव।
अनुदक-(सं०वि०) जल शून्य, बिना पानी का।
अनुदय-(सं०पुं०) उदय न होना, न देख पड़ना।
अनुदात्त-(सं०पुं०) जो ऊँचा न हो, स्वल्प, नीचा स्वर।
अनुदार-(सं०वि०) जो उदार न हो, अदाता।
अनुदित-(सं०वि०) अरुणोदय वेला, पौ फटने का समय।
अनुदिन, अनुदिवस-(सं०अव्य०) प्रतिदिन, नित्यप्रति।
अनुदृष्टि-(सं०स्त्री०) अनुकूल दृष्टि, दयादृष्टि।
अनुदेश-(सं०पुं०) बाद का उच्चारण, शिक्षा, उपदेश।
अनुद्धत-(सं०वि०) अप्रगल्भ, शान्त, सौम्य।
अनुद्धार-(सं०पुं०) उद्धार का अभाव, छुटकारा न पाना।
अनुद्धृत-(सं०वि०) उद्धार न किया हुआ, अप्रमाणित।
अनुद्यत-(सं०वि०) उद्यम हीन,आलसी।
अनुद्यम-(हिं०पुं०) उद्यम हीनता,
अनुद्यमी-(हिं०वि०) उद्योग न करने वाला।
अनुद्योग-(सं०पुं०) उद्योग का अभाव।
अनुद्योगी-(सं०वि०) उद्योग न करने वाला।
अनुद्वाह-(सं०पुं०) विवाह का न होना।
अनुद्विग्न-(सं०वि०) बिना उद्वेग या व्याकुलता का।
अनुद्वेग-सं०पुं०) व्यग्रता या घबड़ाहट न होना।
अनुधावन-(सं०नपुं०) पीछे चलना, अनुसंधान, खोज, शुद्धि। **अनुधावित**-(सं०वि०) पीछे जानेवाला।
अनुध्यान-(सं०नपुं०) पिछली चिन्ता।
अनुनय-(सं०पुं०) प्रार्थना, विनय, विनती; **अनुनयमान**-प्रसन्न करने वाला, सम्मान देने वाला।
अनुनयी-(सं०त्रि०) सभ्य, विनीत, शान्त।
अनुनाद-(सं०पुं०) प्रतिध्वनि, शब्द की गूंज।
अनुनासिक-(सं०वि०) नाक से बोला जाने वाला वर्ण-यथा,ञ,म,ङ,ण,न।
अनुनीत-(सं०वि०) विनय प्राप्त, पीछे लिया हुआ।
अनुनीति-(सं०स्त्री०) नम्रता, सभ्यता।
अनुन्नत-(सं०वि०) जो ऊँचा न हो, नीचा।
अनुन्मत्त-(सं०वि०) जो उन्मत्त या पागल न हो, समझदार।
अनुपकार-(सं०पुं०) उपकार का अभाव, भलाई न रहना।
अनुपकारी-(सं०त्रि०) उपकार न करने वाला, व्यर्थ।
अनुपगत-(सं०वि०) पास में न पहुँचा हुआ।
अनुपज-(हिं०पुं०) उपज का न्यून होना या न होना।
अनुपतन-(सं०त्रि०) गिराव, भाग, अंश, टुकड़ा।
अनुपतित-(सं०वि०) गिरा हुआ।
अनुपथ-(सं०वि०) सीधी सड़क से जाने वाला।
अनुपदिष्ट-(सं०वि०) शिक्षा न दिया

हुआ, अशिक्षित।
अनुपनीत-(सं०पुं०) जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो।
अनुपपत्ति-(सं०स्त्री०) असङ्गति, असिद्धि, अयुक्ति।
अनुपपन्न-(सं०त्रि०) अप्रमाणित, असम्भव।
अनुपभुक्त-(सं०वि०) उपभोग में न लाया हुआ।
अनुपम-(सं०वि०) उपमाविहीन, अतिउत्कृष्ट, बहुत अच्छा। **अनुपमा**-(सं०स्त्री०) अपूर्वता, अनोखापन **अनुपमित**-(सं०वि०) उपमा न दिया हुआ, अनोखा। **अनुपमेय**-(सं०वि०) उपमा न देने योग्य।
अनुपयुक्त-(सं०वि०) अयोग्य, बेठीक, उपयोग मे न लाया हुआ। **अनुपयुक्तता**-(सं०स्त्री०) अयोग्यता।
अनुपयोग-(सं०पुं०) जिसका उपयोग न हो, जो किसी काम का न हो।
अनुपयोगिता-(सं०स्त्री०) अयोग्यता, निरर्थकता। **अनुपयोगी**-(सं०त्रि०) उपयोग रहित, व्यर्थ का, निष्फल।
अनुपलक्षित-(सं०वि०) विशेष रूप से न बतलाया हुआ।
अनुपलब्ध-(सं०वि०) अप्राप्त, अविदित **अनुपलब्धि**-(सं०स्त्री०) लाभ का अभाव, अप्राप्ति।
अनुपवीत-(सं०पुं०) जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो।
अनुपशान्त-(सं०वि०) अशान्त, अस्थिर
अनुपस्थित-(सं०वि०) अविद्यमान, जो समीप में न हो, दूरस्थ। **अनुपस्थिति**-(सं०स्त्री०) उपस्थिति का अभाव।
अनुपहत-(सं०वि०) चोट न खाया हुआ
अनुपात-(सं०पुं०) गणित की दो राशियों में सम्बन्ध दिखलाने की क्रिया, त्रैराशिक की वह क्रिया जिससे यह ज्ञात होता है कि एक राशि दूसरे से कितनी गुनी या कितने अंश की है।
अनुपातकी-(सं०वि०) बहुत बड़ा पाप करने वाला।
अनुपान-(सं०पुं०) औषधि के साथ मिलाकर अथवा पीछे से जो वस्तु खाई या पी जावे।
अनुपासन-(सं०नपुं०) उपासना का अभाव
अनुपुरुष-(सं०पुं०) शिष्य, चेला।
अनुपूर्व-(सं०त्रि०) ठीक क्रम से, क्रमिक
अनुप्रपन्न-(सं०वि०) पीछे पड़ा हुआ।
अनुप्रवेश-(सं०पुं०) प्रतिबिम्ब का पड़ना
अनुप्रास-(सं०पुं०) एक अलंकार जिसमें किसी वाक्य में एक ही पद अथवा एकही अक्षर का बारंबार प्रयोग किया जाता है।
अनुबन्ध-(सं०पुं०) बन्धन, सम्बन्ध, उपक्रम; लगाव, भेद, आरोप, क्रम।
अनुबन्धन-(सं०नपुं०) सम्बन्ध, लगाव।
अनुबन्धी-(सं०त्रि०) सहचर, अनुरोधी व्यापक।
अनुबल-(सं०नपुं०) वह सेना जो रक्षाके लिये पीछे की ओर रक्खी जाती है।
अनुबोधन-(सं०नपुं०) स्मरण।
अनुभव-(सं०पुं०) प्रयोगों से प्राप्त किया हुआ ज्ञान। **अनुभवना**-(हिं० क्रि०) अनुभव करना, समझ लेना।
अनुभवसिद्ध-(सं०वि०) प्रयोग या परीक्षा से प्राप्त। **अनुभवी**-(सं० पुं०, वि०) अनुभव प्राप्त, जानकार।
अनुभाव-(सं०पुं०) सामर्थ्य, प्रभाव, महिमा, सकेत, बड़ाई, ख्याति, निश्चय, अलंकार मे स्थायी चार रसों में से एक। **अनुभावक**-(सं० वि०) बता देने वाला। **अनुभावन**-(सं०नपुं०) सङ्केत अथवा अनुमान से किसी विषय का बतलाना। **अनुभावी**-(सं०त्रि०) किसी बात का अनुभव रखने वाला, प्रत्यक्ष ज्ञान रखने वाला।
अनुभूत-(सं०वि०) अनुभव द्वारा ज्ञात, उपलब्ध, परीक्षा किया हुआ।
अनुभूति-(सं०स्त्री०) उपलब्धि, अनुभव
अनुभोग-(सं०पुं०) बिना कर की भूमि।
अनुभ्राता-(सं०पुं०) छोटा भाई। **अनुमत**-(सं०वि०) प्रशंसा किया हुआ, प्रिय। **अनुमति**-(सं०स्त्री०) सम्मति, आज्ञा, सलाह।
अनुमंत्रित-(सं०वि०) संस्कार कियाहुआ।
अनुमान-(सं०नपुं०) न्याय में प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा अप्रत्यक्ष विषय का निश्चय, विचार, प्रमाण, अटकल, समझ। **अनुमानना**-(हिं०क्रि०) अनुमान करना अटकल करना।
अनुमित-(सं०वि०) हेतु द्वारा निश्चय किया हुआ।
अनुमिति-(सं०स्त्री०) अनुमान, अटकल
अनुमेय-(सं०वि०) अनुमान करने योग्य, अटकल लगाने योग्य।
अनुमोदक-(सं०वि०) स्वीकार करने वाला, हामी भरनेवाला। **अनुमोदन**-(सं०नपुं०) प्रसन्नता दिखलाना, स्वीकृति, समर्थन। **अनुमोदित**-(सं०वि०) सम्मति दिया हुआ, प्रसन्न, स्वीकार करने योग्य।
अनुयात-(सं०वि०) आगे जाने वाला, अग्रगामी।
अनुयायी-(सं०वि०) पीछे चलनेवाला, अनुचर, अनुकरण करनेवाला, अनुगामी, सेवक।
अनुयोग-(सं०पुं०) जिज्ञासा, पूछपाछ, साधन।
अनुयोगी-(सं०वि०) संयुक्त करने वाला, जोड़नेवाला।
अनुयोजित-(सं०वि०) प्रश्न पूछा हुआ।
अनुरक्त-(सं०वि०) प्रेमयुक्त आसक्त। **अनुरक्ति**-(सं०स्त्री०) आसक्ति, प्रेम। **अनुरंजक**-(सं०वि०) प्रेम उत्पन्न करने वाला। **अनुरंजन**-(सं०नपुं०) अनुराग, प्रेम, प्यार। **अनुरंजित**-(सं०वि०) प्रीति से आनन्दित किया हुआ।
अनुरति-(सं०स्त्री०) अनुराग, प्रेम।
अनुराग-(सं०पुं०) आसक्ति, प्रेम, प्रीति **अनुरागना**-(हिं०क्रि०) प्रेम दिखलाना।
अनुरागिणी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की गीत **अनुरागी**-(सं०त्रि०) प्रेम दिखलाने वाला, अनुराग युक्त।
अनुराध-(हिं०स्त्री०) विनती, प्रार्थना। **अनुराधना**-(हिं०क्रि०) प्रार्थना करना विनती करना।
अनुराधा-(सं०स्त्री०) राशिचक्र के सत्ताईस नक्षत्रों में से सत्रहवाँ नक्षत्र।
अनुरुद्ध-(सं०वि०) अनुरोध किया हुआ, प्रसन्न।
अनुरूप-(सं०वि०) समान रूपका, सदृश, योग्य, मिलता जुलता हुआ, (सं०नपुं०) योग्यता, सादृश्य। **अनुरूपता**-(सं०स्त्री०) सादृश्य, समानता, बराबरी, अनुकूलता।
अनुरोध-(सं०पुं०) बाधा, रुकावट, अभीष्ट साधन की इच्छा, प्रेरणा, आग्रह। **अनुरोधक, अनुरोधी**-(सं० पुं०) आग्रह करनेवाला, रोकनेवाला।
अनुलाप-(सं०पुं०) बारंबार कथन, पुनरुक्ति।
अनुलिप्त-(सं०वि०) अनुरंजित, शरीर में गन्ध चन्दन इत्यादि पोते हुए।
अनुलेपन-(सं०नपुं०) शरीर में सुगन्धित द्रव्य पोतना।
अनुलोम-(सं०पुं०) अनुक्रम, ऊँचे से नीचे का क्रम, (अव्य०) क्रमानुसार, संगीत में सुरों को क्रमसे उतारना, श्रेष्ठ वर्ण का तदपेक्षा नीचे के वर्ण से विवाह करने को **अनुलोम विवाह**-कहते है।
अनुवंश-(सं०अव्य०) वंश के अनुसार।
अनुवक्र-(सं०वि०) थोड़ा सा टेढा।
अनुवचन-(सं०नपुं०) जैसा का तैसा दोहराना।
अनुवर्तन-(सं०नपुं०) अनुसरण, अनुक्रमण, सम्बन्ध, किसी नियम का अनेक स्थानों से घटना। **अनुवर्ती**-(सं०वि०) अनुयायी, पीछे चलनेवाला।
अनुवसित-(सं०वि०) संलग्न, वस्त्र पहिरे हुए।
अनुवा-(हिं०पुं०) जिस स्थान पर खड़े होकर कुवें से जल निकाला जाता है, पैढी।
अनुवाक्-(सं०पुं०) वेद के अध्याय का एक भाग, ऋग्वेद अथवा यजुर्वेद का संग्रह, ग्रन्थ का भाग, पीछे की बोल जो दोहराई जाती हैं, टेक।
अनुवाचित-(सं०वि०) पूर्वोक्त, पहिले कहा हुआ।
अनुवाद-(सं०पुं०) पुनरुल्लेख, दोहराव, अनुकरण, निन्दा, भाषान्तर, उल्था, न्याय में किसी निर्दिष्ट वार्ता का दोहराना। **अनुवादक**-(सं०वि०) अनुवाद या उल्था करनेवाला।
अनुवादित-(सं०वि०) अनुवाद किया हुआ।
अनुवासन-(सं०पुं०) धूप आदि द्वारा सुगन्धित करना। **अनुवासित**-(सं०वि०) सुगन्धित किया हुआ।
अनुविद्ध-(सं०वि०) संलग्न, जड़ा हुआ।
अनुवृत-(सं०वि०) अनुगत पीछे रहनेवाला।
अनुवृत्त-(सं०वि०) सुशील, सच्चरित्र।
अनुवृत्ति-(सं०स्त्री०) पीछे की गति, व्याकरण मे किसी पूर्व सूत्र के पद का आगे के सूत्र मे नियोग।
अनुवेश-(सं०पुं०) ज्येष्ठ पुत्र का विवाह न करके छोटे का विवाह होना।
अनुव्रजन-(सं०नपुं०) पीछे की चाल, पथिक।
अनुशयान-(सं०वि०) पश्चात्ताप करने वाला।
अनुशयाना-(सं०स्त्री०) वह परकीया नायिका जो अपने प्रियतम के संकेत स्थान पर न पहुँचने से अत्यन्त दुःखी होती है।
अनुशायी-(सं०पुं०) पछतावेमें पड़ा हुआ।
अनुशासक-(सं०पुं०) प्रबन्ध करनेवाला, नियोजक, आज्ञा देनेवाला, शिक्षक, राज्यका प्रबन्धकर्ता। **अनुशासन**-(सं०नपुं०) आदेश, शिक्षा, आज्ञा, व्याख्या, कर्तव्यविधान। **अनुशासनीय**-(सं०वि०) शिक्षा देने योग्य। **अनुशासित**-(सं०वि०) उपदेश दिया हुआ, प्रबन्ध किया हुआ।
अनुशीलन-(सं०नपुं०) सतत अभ्यास, मनन, विचार, चिन्तन, सेवा जो बारंबार की जावे। **अनुशीलित** (सं०वि०) बारंबार चिन्तित। **अनुशोक**-(सं०पुं०) पश्चात्ताप, पछतावा।
अनुशोचत-(सं०पुं०) पछतावा करनेवाला
अनुषक्त-(सं०वि०) सटा हुआ, मिला हुआ।
अनुषंग-(सं०पुं०) संबन्ध, लगाव, दया, पहिले वाक्य से आगे के वाक्य में कुछ शब्द जोड़ा जाना। **अनुषंगिक**-(सं०वि०) संयुक्त, संलग्न, सम्बद्ध।
अनुष्टुप्-(सं०पुं०) आठ आठ अक्षर के चार पाद का छन्द।
अनुष्ठाता-(सं०पुं०) अनुक्रम से काम करने वाला,
अनुष्ठान-(सं०नपुं०) कार्यारम्भ, नियम पूर्वक किसी कार्य को करना, शास्त्र विहित कर्मका आचरण, वांछित फल की आकांक्षा से देवताकी आराधना
अनुष्ठापक-(सं०पुं०) अनुष्ठान करनेवाला
अनुष्ण-(सं०वि०) जो गरम न हो, शीतल, ठंढा।
अनुसंरक्त-(सं०वि०) संलग्न, लीन।
अनुसन्धान-(सं०नपुं०) पीछे की जाना, चिन्ता, अन्वेषण, प्रयत्न, खोज। **अनुसन्धानना**-(हिं०क्रि०) ढूंढना, खोजना, सोचना समझना, विचार करना। **अनुसन्धानी**-(हिं०वि०) अनुसन्धान करनेवाला, जाँचपड़ताल करनेवाला,

अनुसन्धेय-(स०वि०) खोज करने वाला

अनुसम्बद्ध-(सं०वि०)संलग्न, मिलाहुआ

अनुसरण-(स०नपु०)पीछे जाना, अनुकरण, रीति, स्वभाव।

अनुसरना-(हि०क्रि०) पीछे चलना, अनुकरण करना।

अनुसार-(हिं०क्रि०वि०) समान, सदृश, अनुकूल। **अनुसारना**-(हिं०क्रि०) समान आचरण करना। **अनुसारी**-(स०वि०) पीछे जानेवाला, अनुसरण करनेवाला।

अनुसाल-(हिं०पुं०) व्यथा,पीड़ा,वेदना।

अनुसूया-(स०स्त्री०) शकुन्तला की सहेली का नाम।

अनुसेवी-(स०वि०) अभ्यास करनेवाला, सेवा करनेवाला।

अनुस्मरण-(स०नपुं०) पुनःस्मरण, बाद में याद आना।

अनुस्वार-(स०पु०) अनुनासिक वर्ण जो दूसरे वर्ण के साथ मिलकर उच्चारण होता है, यह अक्षर के माथे पर बिन्दु लगाकर लिखा जाताहै।

अनुहरण-(स०नपु०) सादश्य का प्रकाशन अनुसार चलना।

अनुहरत्-(हिं०वि०) अनुरूप, अनुसार, योग्य।

अनुहरना-(हिं०क्रि०) अनुकरण करना, बराबरी करना।

अनुहरिया-(हिं०क्रि०) सदृश, तुल्य, बराबर (स्त्री०) मुखड़ा, आकृति।

अनुहार-(स०पु०) अनुकरण, सादृश्य, समानता; (वि०) सदृश, तुल्य, बराबर, समान। **अनुहारक**-(स०वि०) अनुकरण करनेवाला। **अनुहारना**-(हिं०क्रि०)बराबर करता,समान करना, तुल्य करना। **अनुहारि**-(हि०वि०) सदृश, समान, तुल्य, बराबर, योग्य, अनुकूल। **अनुहारी**-(सं०वि०) अनुकरण करनेवाला।

अनूक्त-(स०वि०) पीछे से कहा हुआ, पढा हुआ।

अनूक्ति-(स०स्त्री०)पुनःकथन,वेदाध्ययन।

अनूजरा-(हि०वि०) जो स्वच्छ या सफ़ेद न हो।

अनूठा-(हिं०वि०) अपूर्व,विलक्षण,अपूर्व, निराला, अच्छा, (स्त्री०)-**अनूठी**

अनूठापन-(हिं०पु०)विलक्षणता अपूर्वता, अच्छापन, सुन्दरता, निरालापन।

अनूठी-(हिं०स्त्री०) देखो अनूठा।

अनूढ-(स०वि०)बिना ब्याहाहुआ,क्वारा **अनूढा**-(स०स्त्री०) अविवाहिता स्त्री। **अनूढागमन**-व्यभिचार, छिनारापन।

अनूतर-(हिं०वि०) अनुत्तर।

अनूदित-(स०वि०) कहाहुआ, भाषान्तर या उल्था किया हुआ।

अनूप-(स०वि०) जल से परिपूर्ण, (पुं०) वह स्थानज हां जल प्रचुर हो; समुद्र, नदी (वि०) अनुपम, सुन्दर, उत्तम, अच्छा।

अनूरु-(सं०पुं०) सूर्यका सारथि अरुण।

अनूर्ध्व-(स०वि०) जो ऊंचा नहो,नीचा।

अनृण-(स०वि०) ऋणशून्य, **अनृणता**-(स०स्त्री०) ऋण का न होना। **अनृणी**-(सं०वि०) जो ऋणी न हो।

अनृत-(स०नपु०) असत्य, मिथ्या, झूठ (वि०) जूठ, अन्यथा। **अनृतभाषण**-झूठ बोलना। **अनृतवादी**-झूठ बोलने वाला।

अनृशंस-(सं०वि०) जो क्रूर न हो, दयावान्। **अनृशंसता**-(सं०स्त्री०) कोमलता, दयालुता।

अनेक-(स०वि०) एक से अधिक, बहुसंख्य। **अनेककृत**-शिव, शङ्कर, **अनेकज**-जो कई बार उत्पन्न हुआ हो। **अनेकता**-(स०स्त्री०) अधिकता, बहुतायत। **अनेकत्व**-(सं०नपुं०) अनेकता, अधिकता।

अनेकधा-(स०अव्य०) प्रायः, बहुधा।

अनेकबार-(सं०अव्य०) कईबार,वारंवार **अनेकविध**-(स०वि०) कई प्रकार का **अनेकशः**-(स०अव्य०)अनेकबार,कईबार

अनेकाक्षर-(सं०वि०) जिसमें कई एक अक्षर मिले हों।

अनेकार्थ-(स०वि०) एक से अधिक अर्थ वाला।

अनेग-(हिं०वि०) अनेक, कई एक।

अनेरा-(हिं०वि०) असत्य, झूठ, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, दुष्ट, अन्यायी, क्रूर।

अनेह-(हिं०पुं०) स्नेह का अभाव, प्रेम का न होना।

अनै-(हि०) देखो अनय।

अनैक्य-(स०नपु०) एकता न रहना, मतभेद, फूट, मेल न मिलना।

अनैठ-(हिं०पु०) हाट बन्द रहने का दिन।

अनैपुण-(सं०नपु०)निपुणताका अभाव।

अनैश्वर्य-(स०नपु०)अनीश्वरत्व,अधीनता।

अनैस-(हिं०वि०) नष्ट, बुरा, **अनैसना**-(हिं०क्रि०) बुरा मानना, रूठना। **अनैसा**-(हिं०वि०) अप्रिय, बुरा; **अनैसे**-(हिं०क्रि०वि०) बुरी तरह से।

अनैहा-(हिं०पु०)उपद्रव,उत्पात,बखेड़ा।

अनोकह-(स०पु०) वृक्ष, पादप, पेड़।

अनोखा-(हिं०वि०) अपूर्व, विलक्षण, निराला, नया, विचित्र, सुन्दर, योग्य (स्त्री०)अनोखी; **अनोखापन**-(हिं०पुं०) अपूर्वता, निरालापन, नवीनता, विचित्रता,योग्यता,नयापन,सुन्दरता।

अनौचित्य-(स०नपुं०) उचित न होना, अनुपयुक्तता।

अनौट-(हिं०पु०) देखो अनवट।

अनौद्धत्य-(स०नपुं०) गर्व का न रहना

अन्त-(सं०पु०,नपुं०) नाश, मृत्यु,निकट, अवयव, सीमा, समाप्ति, प्रलय।

अन्तःकरण-(स०नपु०) मन, विचार, वुद्धि, विवेक, आत्मा, समझ।

अन्तःकुटिल-(सं०वि०)कठोरहृदयवाला

अन्तःकोण-(स०पुं०) भीतरी कोना।

अन्तकोप-(सं०वि०) मानसिक क्रोध।

अन्तःकोष-(स०नपुं०) भण्डारगर का भीतरी कमरा। **अन्तःपट**-(सं०पुं०) वस्त्र विशेष जो विवाह के समय वर तथा कन्या के बीच में संयोग के समय तक रक्खा जाताहै, **अन्तःपात्र**-(सं०नपु०) पात्र का भीतरी भाग।

अन्तःपुर-(स०नपु०) प्रासाद में स्त्रियों के रहने का स्थान, अन्तर्भवन। **अन्तःपूजा**-(सं०स्त्री०) तन्त्रके अनुसार मनकी कल्पित वस्तु द्वारा देवता की पूजा।

अन्तःप्रज्ञ-(स०वि०) आत्मज्ञान रखने वाला। **अन्तःप्रविष्ट**-(स०वि०) हृदयंगम, हृदय में प्रवेश किया हुआ।

अन्तःशरीर-(स०नपु०) स्थूल शरीर, लिंगदेह। **अन्तःसलिला**-(स०स्त्री०) वह नदी जिसका जल बालू के भीतर भरा रहता है, यथा- सरस्वती नदी, वैतरणी नदी इत्यादि। **अन्तःसुख**-(स०वि०) आत्मा का सुख।

अन्तस्थ-(स०वि०) अन्त का, संस्कृत व्याकरण मे य, र, ल, व, ये चार वर्ण अन्त्यस्थ कहलाते हैं।

अन्तक-(हिं०पु०) मृत्यु, अन्त, यम, शिव, ईश्वर, सन्निपात ज्वर (वि०) अन्त या नाश करने वाला।

अन्तकर-(सं०त्रि०) नाशकारी, अन्त करनेवाला। **अन्तकरण**-(स०नपु०) नाश (वि०) नाशकारी।

अन्तकर्म-(स०नपु०)नाश,अन्त्येष्टिक्रिया।

अन्तकारक-(स०वि०) अन्त करनेवाला, नाशकारी, संहारक, मार डालने वाला, विनाशक।

अन्तकाल-(स०पु०)मृत्यु,मरण,विनाश।

अन्तक्रिया-(स०स्त्री०)देखो अन्तकर्म।

अन्तग-(स०वि०) अन्तगामी, पारगामी, निपुण, पारङ्गत।

अन्तगति-(स०स्त्री०) अन्तिम स्थिति, मरण मृत्यु। **अन्तगमन**-(स०नपुं०) समाप्ति, मृत्यु। **अन्तगामी**-(स०वि०) अन्त प्राप्त करनेवाला। **अन्तचर**-(स०वि०) अन्त तक पहुँचनेवाला।

अन्तज-(स०वि०) अन्त में उत्पन्न होनेवाला।

अन्तजाति-(स०स्त्री०) अन्त्यज।

अन्ततः-(सं०अव्य०) अन्त मे।

अन्तपाल-(स०पु०) द्वारपाल।

अन्तर-(स०नपुं०) विभिन्नता, भेद, अवधि, अवकाश, बीच, मध्य, दूरी, व्यवधान, परदा, ओट, (वि०) अन्य, दूसरा (क्रि०वि०) भीतर; (पुं०) अन्तः करण।

अन्तरग्नि-(स०पुं०) जठरानल, उदर के भीतर की पचाने वाली अग्नि।

अन्तरङ्ग-(स०वि०) आत्मीय, अति समीप का, घनिष्ठ, मानसिक,रहस्य जानने वाला। **अन्तरङ्गतर**-(सं०वि०) बहुत समीपी। **अन्तरङ्गता**-(स०स्त्री०) आत्मीयता, अपनापन। **अन्तरङ्गत्व**-(सं०नपुं०) देखो अन्तरङ्गता।

अन्तरचक्र-(सं०नपुं०) दिशाओं और विदिशाओं के बीच का स्थान, आत्मीय वर्ग, भाई बन्धु, तन्त्र के अनुसार शरीर के भीतर के छ चक्र यथा-मूलाधार,स्वाधिष्ठान,मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा चक्र।

अन्तरजामी-(हिं०स्त्री०) देखो अन्तर्यामी

अन्तरज्ञ-(स०वि०) मर्मज्ञ, विशेषज्ञ, भीतरी स्थिति जानने वाला।

अन्तरतम-(सं०वि०) बहुत ही समीप का, हार्दिक।

अन्तरदिशा-(स०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच की दिशा, विदिशा। **अन्तरदेश**-(स०पुं०) बीच का देश, मध्य देश।

अन्तरपट-(स०पु०) परदा,ओट,छिपाव, विवाह के समय यमको आहुति देते समय वर कन्या के बीच में डाला हुआ परदा, कपड़ मिट्टी।

अन्तरपूजा-(स०स्त्री०) तन्त्रोक्त मानसिक पूजा।

अन्तरप्रश्न-(स०पुं०) पहिले कही हुई बात से निकला हुआ प्रश्न।

अन्तरवयव-(स०पु०) भीतरी अङ्ग।

अन्तरशायी-(स०वि०) चित्तमें रहने वाली (आत्मा)।

अन्तरस्थ-(सं०पु०) बीच में रहनेवाला भीतरी,शरीर में रहने वाली आत्मा।

अन्तरा-(स०पु०) अन्तर, नागा, कोना, एक दिन का अन्तर देकर आने वाला ज्वर, गीत का दूसरा पद; (वि०) एक छोड़कर दूसरा। (अव्य०) मध्य मे, बिना (क्रि०वि०) अतिरिक्त, सिवाय, सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच का समय।

अन्तराकाश-(सं०पुं०) निर्गुण ब्रह्म।

अन्तरागार-(स०पुं०) घर के भीतर का भाग।

अन्तरात्मा-(स०पु०)अन्तःकरण,आत्मा, जीवात्मा।

अन्तराय-(स०पुं०) प्रतिबन्ध, विघ्न, बाधा, जिससे किसी कार्य में बाधा हो।

अन्तराराम-(स०पुं०) मन ही मन प्रसन्न रहने वाला मनुष्य।

अन्तराल-(स०नपु०) मध्य भाग, बीच का हिस्सा, मण्डल, घेरा, अवकाश, रिक्त स्थान।

अन्तरिक्ष, अन्तरीक्ष-(सं०नपु) आकाश, आसमान, शून्यस्थान, स्वर्गलोक, (वि०) अप्रगट, गुप्त।

अन्तरिख, अन्तरिछ-(हि०पुं०) देखो अन्तरिक्ष।

अन्तरित-(स०वि०) भीतर धरा हुआ अन्तर्गत, गुप्त, छिपा हुआ, आच्छादित, अन्तर्हित, अलग किया हुआ, ढका हुआ।

अन्तरिन्द्रिय-(सं०नपु०) अन्तःकरण, मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त।

अन्तरीप-(स०पु०) भूमिका वह नोकीला भाग जो समुद्र के जल में घुसा हो, द्वीप, टापू।

अन्तरीय-(सं०नपु०) अधोवस्त्र, पहिरने का वस्त्र, धोती।

अन्तरे-(सं०अव्य०) मध्य में, बीच में;

(हिं०) अंतरे में।
अन्तरौटा-(हिं०पु०) साड़ी के नीचे पहिरने का महीन कपड़ा।
अन्तर्गत-(सं०वि०) मध्यगत, भीतर आया हुआ, बीचवाला, गुप्त, छिपा हुआ, सम्मिलित, मृत। **अन्तर्गतोपमा**-अप्रगट उपमा।
अन्तर्गर्भा-(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री।
अन्तर्गृह-(सं०नपुं०) घरके मध्य का स्थान; **अन्तर्गेह**-(सं०) देखो अन्तर्गृह।
अन्तर्गृही-(सं०स्त्री०) तीर्थ स्थान के भीतर के प्रधान स्थानों की यात्रा।
अन्तर्जन्म-(सं०नपुं०) भीतरी उत्पत्ति।
अन्तर्जात-(सं०वि०) शरीर के भीतर उत्पन्न, मनोविकार।
अन्तर्जानु-(हिं०वि०) दोनों जाँघ के बीचमें हाथों को रक्खे हुए।
अन्तर्ज्ञान-(सं०पुं०) भीतरी बुद्धि।
अन्तर्दग्ध-(सं०वि०) भीतरी ओर जला हुआ।
अन्तर्दशा-(सं०स्त्री०) फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का अन्तर्गत भोगकाल।
अन्तर्दशाह-(सं०पु०) मरने के बाद दस दिन के भीतर का संस्कार विशेष।
अन्तर्दहन-(सं०नपुं०) अन्तर्दाह, भीतरी जलन।
अन्तर्दाह-(सं०पुं०) शरीर के भीतर का ताप।
अन्तर्दृष्टि-(सं०स्त्री०) अपनी आत्मा को देखता हुआ।
अन्तर्द्वार-(सं०नपुं०) घरका गुप्त द्वार, खिड़की।
अन्तर्धान-(सं०नपुं०) तिरोधान, छिपाव, (वि०) छिपा हुआ, अदृश्य, गुप्त।
अन्तर्निविष्ट-(सं०वि०) भीतर बैठा हुआ, हृदय में स्थित, अन्तर्स्थित, अन्तर्गत।
अन्तर्भवन-(सं०नपुं०) भवनका भीतरी भाग।
अन्तर्भाव-(सं०पुं०) चित्त की भावना, अभिप्राय, भीतर रख लेना। **अन्तर्भावना**-(सं०स्त्री०) आकृति से न प्रकाशित होनेवाली चिन्ता।
अन्तर्भूत-(सं०वि०) मध्यस्थित, बीच में ठहरा हुआ।
अन्तर्भूमि-(सं०स्त्री०) पथ्वीके भीतरका भाग।
अन्तर्मुख-(सं०वि०) जिसका मुख भीतर की ओर हो, परमात्मा में ध्यान लगाये बैठा हुआ (पु०) कछुआ।
अन्तर्मातृका-(सं०स्त्री०) तन्त्रके अनुसार षट्चक्रमें अकारादि पचास वर्ण।
अन्तर्मृत-(सं०पु०;स्त्री०) गर्भ के भीतर ही मृत बालक।
अन्तर्यामी-(सं०पुं०) सबके अन्तःकरण में व्याप्त परमेश्वर, परब्रह्म, वायु (वि०) भीतर प्रवेश करने वाला, मन के भावों को जानने वाला।
अन्तर्योग-(सं०पु०) गम्भीर विचार।
अन्तर्लम्ब-(सं०पुं०) त्रिकोण के भीतर गिरने वाला लम्ब।
अन्तर्लापिका-(सं०स्त्री०) वह पहेली जिसका उत्तर उसीमें वर्तमान हो।
अन्तर्लीन-(सं०वि०) निमग्न, विलीन, डूबा हुआ, भीतर छिपा हुआ।
अन्तर्वर्ण-(सं०पु०) अन्तिम वर्णका, शूद्र।
अन्तर्वाणी-(सं०पु०) विद्वान्, पण्डित, शास्त्रवेत्ता।
अन्तर्विकार-(सं०पुं०) शरीर का विकार यथा-क्षुधा, पिपासा, इत्यादि।
अन्तर्लोम-(सं०वि०) ढपे हुए रोवेंवाला।
अन्तर्वर्ती(सं०वि०) मध्यस्थित, बीचवाला
अन्तर्वस्त्र-(सं०नपुं०) नीचे पहिरनेका वस्त्र।
अन्तर्वाष्प-(सं०पु०) नेत्र जल जो आँखों से बाहर न गिरे।
अन्तर्वृद्धि-(सं०पु०) आँत बढ़ने का रोग।
अन्तर्वेग-(सं०पु०) भीतरी व्याकुलता या चिन्ता।
अन्तर्वेद-(सं०पुं०) गंगा और यमुना के बीच का देश, ब्रह्मावर्त। **अन्तर्वेदी**-(सं०वि०) ब्रह्मावर्त निवासी।
अन्तर्वेध-(सं०पु०) शरीर की गाँठोंमें पीड़ा।
अन्तर्वेश्म-(सं०नपु०) अन्तःपुर; **अन्तर्वेश्मिक**-(सं०पुं०) अन्तःपुर का रक्षक।
अन्तर्हास-(सं०पुं०) गुप्तहास, मुसकुराहट
अन्तर्हित-सं०वि०) गुप्त, तिरोहित, छिपा हुआ।
अन्तवासी०(सं०पु०) शिष्य, चेला,
अन्तवेला-(सं०स्त्री०) नाश का समय, मरण काल,
अन्तशय्या-(सं०स्त्री०) मरण के निमित्त भूमिशय्या, श्मशान, मरघट, मृत्यु,
अन्तस्-(सं०पु०) अन्तःकरण, हृदय, मन।
अन्तसद-सं०पु०) शिष्य, चेला, अन्तेवासी।
अन्तसमय-(सं०पुं०) अन्तवेला, मरणकाल
अन्तस्ताप-(सं०पु०) भीतरी उष्णता,
अन्तस्थ-(सं०वि०) मध्यका, बीचका, अन्तका, (पु०) य, र, ल, व, ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं।
अन्तानल-(सं०पुं०) प्रलय काल की अग्नि।
अन्तस्नान-(सं०पुं०, वह स्नान जो यज्ञ की समाप्ति पर किया जावे।
अन्तस्सलिल-(सं०वि०) जिसके जलका प्रवाह गुप्त हो। **अन्तःसलिला**-(सं०स्त्री०) सरस्वती नदी, फल्गु नदी।
अन्तावरी-(सं०स्त्री०) अन्त्रों का समुदाय, आँत।
अन्तावशायी-(सं०पु०) ग्राम की सीमा के बाहर रहनेवाला, अस्पृश्य, चांडाल।
अन्तिक-(सं०त्रि०) समीप, पास, निकट, पड़ोस। **अन्तिकतम**-(सं०वि०) बहुत ही पासका। **अन्तिकता**-(सं०स्त्री०) सामीप्य, पड़ोस।
अन्तिम-(सं०वि०) अन्तका, पीछेका, चरम, सबसे बढ़कर।
अन्तेवासी-(सं०पु०) शिक्षा के निमित्त गुरू के पास रहनेवाला शिष्य, छात्र, चेला, गाँव के बाहर रहनेवाला चांडाल अस्पृश्य।
अन्त्य-(सं०वि०) अन्तिम, छोटा। **अन्त्यकर्म**-अन्त्येष्टि क्रिया। **अन्त्यज**-(सं०पु०) अन्तिम वर्ण से उत्पन्न, शूद्र, चाण्डाल, **अन्त्यजगमन**-उच्च जाति की स्त्री का शूद्र से सहवास।
अन्त्यजागमन-(सं०नपु०) उच्च जाति के पुरुष का नीचजाति की स्त्री से सहवास। **अन्त्ययुग**-(सं०पु०) अन्तिम युग, कलियुग। **अन्त्ययोनि**-(सं०पु०) शूद्र, चांडाल। **अन्त्यवर्ण**-(सं०पु०) पद का अन्तिम अक्षर, शूद्र। **अन्त्यविपुला**-(सं०स्त्री०) एक प्रकारका छंद। **अन्त्या**-(सं०स्त्री०) चांडाल की स्त्री।
अन्त्याक्षर-(सं०पु०) किसी पद या शब्द का अन्तिम अक्षर। **अन्त्याक्षरी**-(सं०स्त्री०) किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होनेवाला दूसरा श्लोक।
अन्त्यानुप्रास-(सं०पु०) एक शब्दालंकार जिसमें आदि स्वर के साथ-स्वर, अनुस्वार अथवा विसर्ग संयुक्त व्यञ्जन वर्ण कईबार दोहराया जावे।
अन्त्येष्टि-(सं०स्त्री०) मृत्यु के बाद दाह कर्म हो जाने पर के संस्कारों की क्रिया।
अन्त्र-(सं०पु०) आँत, अँतड़ी। **अन्त्रकूज, अन्त्रकूजन**-(सं०पु०) आँतों में गड़गड़ाहट का शब्द होना। **अन्त्रप्रदाह**-(सं०पु०) आँतों में जलन होने का रोग। **अन्त्रवृद्धि**-(सं०स्त्री०) अण्डकोष की वृद्धि, आँत उतारने का रोग।
अन्त्री-(सं०स्त्री०) आँत, अँतड़ी।
अन्दरसा-(हिं०पु०) एक प्रकार की मिठाई।
अन्दरी-(हिं०वि०) भीतरी, अन्दरूनी।
अन्दरूनी-(हिं०वि०) भीतरी। **अन्दाज**-(हिं०पु०) अनुमान, नाप जोख, अटकल, चेष्टा, ढंग, **अन्दाजन्**-(हिं०क्रि०वि०) लगभग, अन्दाज से।
अन्दाजनपट्टी-(हिं०स्त्री०) खेत के उपजकी कूत। **अन्दाजा**-(हिं०पुं०) देखो अन्दाज।
अन्दु, अन्दू-(सं०स्त्री०) बन्धन, हाथी का पैर बाँधने का लोहे का सिक्कड़, बाँह पर पहिरनेका आभूषण, बाजूबन्द, पाइजेब।
अन्दुआ-(हिं०पु०) देखो अंदुआ।
अन्देशा-(हिं०पुं०) सन्देह, चिन्ता, संशय, हानि, भय, आगा पीछा, खटका।
अन्दोर-(हिं०पु०) आन्दोलन, हल्ला।
अन्दोलन-(सं०स्त्री०) लहर का उठना और उतार।
अन्दोह-(हिं०पुं०) दुःख, शोक, व्यग्रता,
अन्ध-(सं०वि०) बिना आँख का, नेत्रहीन, जिसकी आंखों में ज्योति न हो, देखने की शक्ति जिसमें न हो, बुद्धिहीन, ज्ञान रहित, मूर्ख, असावधान, उन्मत्त, **अन्धक**-(सं०पु०) नेत्रहीन, अन्धा।
अन्धकार-(सं०पु०) तिमिर, अन्धेरा।
अन्धकारमय-(सं०वि०) अन्धकारसे पूर्ण। **अन्धकूप**-(सं०पु०) अन्धकार युक्त कुवाँ, जिस कुवें का पानी सूख गया हो और जिसमें घास फूस भरी हो, एक नरक का नाम। **अन्धखोपड़ी**-(हिं०स्त्री०) बुद्धिहीन मनुष्य, मूर्ख, निर्बुद्धि, नासमझ।
अन्धड़-(हिं०पु०) आँधी, धूर से भरी हुई प्रचण्ड वायु।
अन्धतामस-(सं०नपु०) बड़ा अन्धकार, बड़ा अँधेरा।
अन्धता-(सं०स्त्री०) चक्षुहीनता, अन्धापन
अन्धतामिस्र-(सं०नपु०) घोर अन्धकार, बड़ा अँधेरा, एक नरक का नाम, अज्ञान विशेष, नास्तिक बुद्धि।
अन्धधुन्ध-(हिं०स्त्री०) देखो अन्धाधुन्ध।
अन्धपरंपरा-(हिं०स्त्री०) बिना विचारे पुरानी प्रथा का अनुसरण करने वाला, भेड़िया धसान।
अन्धपूतना-(सं०स्त्री०) बालकों का एक प्रकार का रोग।
अन्धबाई-(हिं०स्त्री०) अन्धवायु, आँधी
अन्धरा-(हिं०वि०) देखो अँधरा; नेत्रहीन अन्धा।
अन्धरात्रि-(सं०त्रि०) अन्धेरी रात।
अन्धरी-(हिं०स्त्री०) आँधी, तूफान, अन्धी स्त्री, पहिये की पट्टियों के भीतर की चूल। देखो अँधरी
अन्धविश्वास-(सं०पुं०) बिना विचारे किसी विषय पर विश्वास, विवेक रहित विश्वास।
अन्धीकृत-(सं०वि०) अन्धा किया हुआ
अन्धीभूत-(सं०वि०) जो अन्धा हो गया हो।
अन्न-(सं०पु०) अनाज, धान्य, खाद्य पदार्थ, पकाया हुआ अन्न, भात, जल, सूर्य, प्राण, पृथ्वी; **अन्नकाल**-भोजन का समय।
अन्नकूट-(सं०पु०) अन्न की राशि, वैष्णवों का एक उत्सव जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपद को मनाया जाता है, उसदिन नाना प्रकार के सुन्दर भोजन का नैवेद्य भगवान् को अर्पण किया जाता है। **अन्नकोष्ठ**-(सं०पुं०) अन्न रखने का भाण्ड, खत्ती। **अन्नछत्र**-(सं०पुं०) भूखे कंगालों को भोजन बाँटने का स्थान। **अन्नज, अन्नजात**-(सं०वि०) अन्न से उत्पन्न। **अन्नजल**-(सं०पुं०) दानापानी जीविका खानपान। **अन्नजल छोड़ देना**-उपवास करना। **अन्नद**-(सं०पुं०) अन्न देने

वाला। **अन्नदा**-(सं०स्त्री०) अन्नपूर्णा देवी। **अन्नदाता**-(सं०वि०) अन्न देने वाला, प्रतिपालक, स्वामी, परिपोषक, मालिक। **अन्नदान**-(हिं०पुं०) भोजन देना।

अन्नपति-(सं०पुं) शिव, महादेव।

अन्नपाक-(सं०पु०) उदर में अन्न का पाचन।

अन्नपानी-(हिं०) देखो अन्नजल।

अन्नपूर्णा-(सं०स्त्री०) अन्न की अधिष्ठात्री देवी।

अन्नप्राशन-(सं०नपु०) दश संस्कार के अन्तर्गत वह संस्कार जिसमें छठें या आठवें महीने के बालक को प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है।

अन्नभाग-(सं०पु०) भोजन का अंश।

अन्नमय-(सं०वि०) खाद्य सामग्री से परिपूर्ण, **अन्नमयकोष**-स्थूल शरीर जिसका पालन पोषण अन्न द्वारा होता है।

अन्नमल-(सं०नपुं०) अन्नसे निकाला हुआ रस।

अन्नरस-(सं०पुं०) जठरानल में अन्न का परिपाक होने पर इसका दूध के समान होना।

अन्नलिप्सा-(सं०स्त्री०) भोजन की इच्छा

अन्नवस्त्र-(सं०नपु०) खाना कपड़ा।

अन्नविकार-(सं०पु०) अन्न का बदला हुआ रूप।

अन्नसत्र-(सं०नपु०) वह स्थान जहाँ भूखों और कंगालों को भोजन बाँटा जाता है, अन्नक्षेत्र।

अन्नसंस्कार-(सं०पुं०) भोजन के पदार्थ को पवित्र करना।

अन्ना-(हिं०स्त्री०) दूध पिलाने वाली धाय, दाई।

अन्नादान-(सं०नपुं०) भोजन करना, खाना।

अन्नार्थी-(सं०वि०) भोजन माँगने वाला, भिक्षुक।

अन्नाशन-(सं०नपुं०) देखो अन्नप्राशन।

अन्य-(सं०वि०) भिन्न, इतर, दूसरा, असदृश। **अन्यकृत**-दूसरे का किया हुआ। **अन्यग, अन्यगामी**-(सं०वि०) व्यभिचारी। **अन्यगोत्र** - (सं०वि०) दूसरे के कुल का।

अन्यच्च-(सं०त्रि०वि०) और भी।

अन्यचित्त - (सं०नपुं०) अन्यमनस्क, जिसका चित्त दूसरी ओर लगा हो।

अन्यजात-(सं०वि०) दूसरे कुल में उत्पन्न

अन्यतम-(सं०वि०) बहुत से पदार्थो में से एक।

अन्यतः-(सं०त्रि०,वि०) किसी दूसरे से, किसी दूसरे स्थान में।

अन्यत्र-(सं०अव्य०) अन्य स्थान में, कहीं और, दूसरी जगह।

अन्यथा-(सं०अव्य) अन्य प्रकार, मिथ्या, असत्य, विपरीत, उलटा, और का और, विरोध। **अन्यथा-ख्याति**-भ्रमात्मक ज्ञान, **अन्यथाभत**-और का और ही हो गया हुआ, **अन्यथासिद्ध**-जो पदार्थ अन्य प्रकार से सिद्ध हो; **अन्यथासिद्धि**-अन्य प्रकार से सिद्धि, यथार्थ बात न दिखला कर किसी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न।

अन्यदीय-(सं०वि०) दूसरे के सम्बन्ध का।

अन्यदेशीय-(सं०वि०) दूसरे देश का, परदेशी।

अन्यधर्म-(सं०पुं०) भिन्नगुण भिन्नधर्म।

अन्यपर-(सं०वि०) जिसका चित्त दूसरी ओर लगा हो।

अन्यपुरुष-(सं०पुं०) दूसरा मनुष्य।

अन्यपूर्वा-(सं०स्त्री०) पति के मरने पर दूसरे से विवाह करने वाली स्त्री।

अन्यभृत्-(सं०स्त्री०) जिसका पालन पोषण दूसरा कोई करे, कोकिल।

अन्यमनस्क-(सं०वि०) अनमना, चंचलचित्त, उदास, चिन्तित।

अन्यराष्ट्रीय-(सं०वि०) दूसरे राष्ट्र का।

अन्यरूप-(सं०पु०) भेष बदला हुआ।

अन्यवर्ण-(सं०वि०) दूसरे रंग का।

अन्यवादी-(सं०त्रि०) प्रतिवादी, असत्य बोलने वाला, झूठा।

अन्यव्रत-(सं०पुं०) यथेच्छाचारी मनुष्य।

अन्यसम्भोग दुःखिता-(सं०स्त्री०) पर स्त्री में अपने प्रियतम के संभोग चिह्न को देखकर दुखी होने वाली नायिका।

अन्यसुरतिदुःखिता - (सं०स्त्री०) देखो अन्यसंभोगदुःखिता।

अन्याधीन-(सं०वि०) दूसरे के आधीन, दूसरे पर भरोसा करने वाला।

अन्यापदेश-(सं०पु०) अन्योक्ति।

अन्याय-(सं० पुं०) अनीति, अविचार, न्याय विरुद्ध आचरण, अत्याचार, अन्धेर। **अन्यायी**-(सं०वि०) अन्याय करनेवाला, दुराचारी,

अन्यारा-(हिं०वि०) जो अलग न हो, निराला, अनोखा।

अन्यासक्त-(सं०वि०) दूसरे पर आसक्त, दूसरे के आधार पर ठहरा हुआ।

अन्यून-(सं०वि०) जो कम न हो, पर्याप्त, पूर्ण, **अन्यूनाधिक**-(सं०वि०) जो न्यूनाधिक न हो, ठीक ठीक।

अन्येद्यु-(सं०अव्य०) दूसरे दिन।

अन्योक्ति-(सं०स्त्री०) अन्योपदेश, वह बात जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से दूसरे पर घटाया जावे। **अन्योढा**-(सं०स्त्री०) दूसरे की विवाहिता स्त्री

अन्योत्सुक-(सं०वि०) दूसरे के लिये उत्सुक।

अन्योदर्य-(सं०पुं०) दूसरी माता से उत्पन्न, सौतैला भाई।

अन्योन्य-(सं०वि०) आपस में, परस्पर; एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों की किसी गुण या क्रिया का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना कहा जावे।

अन्योन्यकलह-(सं०पु०) आपस का झगड़ा **अन्योन्याघात**-(सं०पुं०) परस्पर की लड़ाई। **अन्योन्यभेद** - (सं०पुं) आपस की शत्रुता **अन्योन्यवृत्ति**-(सं०स्त्री०) एक का दूसरे पर प्रभाव।

अन्योन्याभाव-(सं०पु०) परस्पर, की अनुपस्थिति, सम्बन्धीय भेद। **अन्योन्याश्रय**-(सं०त्रि०) आपस का आश्रम संबंध या सहारा, परस्पर की अपेक्षा; न्याय में जब किसी वस्तु के ज्ञान के लिये दूसरे किसी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा होती है। **अन्योन्याश्रित**-(सं०वि०) एक दूसरे के सहारे पर।

अन्वक्ष-(सं०वि०) अनुगत, पीछे जानेवाला

अन्वय-(सं०पु०) वंश, मेल, सम्बन्ध, सन्तान, जाति, संयोग, तारतम्य, अवकाश, पद्य के शब्दों को वाक्य रचना के नियमानुसार अर्थात् कर्ता, कर्म और क्रिया के क्रम में रखना, अनुकलता **अन्वयी**-(सं०स्त्री०) एक ही वंश का, संबंधी; **अन्वयव्यतिरेक**-(सं० त्रि०) न्याय में वह साधक हेतु जिसके द्वारा साध्य निश्चित होता है।

अन्ववेक्षा-(सं०स्त्री०) अनुरोध, अपेक्षा।

अन्वादेश-(सं०पु०) एक कार्य कर लेने पर दूसरा कार्य करने की आज्ञा।

अन्वारूढ-(सं०वि०) पीछे चढनेवाला।

अन्वासीन-(सं०वि०) पीछे बैठा हुआ।

अन्विच्छा-(सं०स्त्री०) बाद की अभिलाषा।

अन्वित-(सं०वि०) अनुगत, सहित, युक्त, मिला हुआ।

अन्वीक्षण-(सं०नपु०) खोज, पर्यालोचना, विचार, ध्यान देकर देखना।

अन्वीक्षा-(सं०स्त्री०) ध्यान से देखना, पर्यालोचना, खोज।

अन्वेक्षक-(सं०पु०) अनुसन्धान करने वाला, खोजनेवाला **अन्वेषण**-(सं०नपु०) अनुसन्धान, खोज, गवेषण, तलाश। **अन्वेषणा**-(सं०स्त्री०) देखो अन्वेषण।

अन्वेषित-(सं०वि०) अनुसन्धान किया हुआ, खोजा हुआ।

अन्वेषी, अन्वेष्टा-(सं०पु०) खोजनेवाला, अनुसन्धान करनेवाला।

अन्हवाना-(हिं०क्रि०) स्नान कराना, नहलाना।

अन्हाना-(हिं०क्रि०) स्नान कराना, नहाना।

अप्-(सं०स्त्री०) जल, पानी, अन्तरिक्ष।

अप-(सं०अव्य०) उपसर्ग की तरह यह शब्द "निषेध, अनादर, त्याग, वियोग, बुरा, अधिक, तथा विरोध" अर्थ में व्यवहार होता है (हिं० सर्व०) 'आप' शब्द का संक्षेप रूप यथा अपस्वारथी इ० **अपकरण**-(सं०नपु०) दुराचार, दुर्व्यवहार। **अपकर्म**-(सं०नपु०) कुकर्म, बरा काम, पाप। **अपकर्ता**-(हिं०पु०) बुरा काम करनेवाला, दुःशील, अनिष्टकारी।

अपकर्ष-(सं०पु०) हीनता, घटाव, अपमान, निरादर, नीचे को खींचना, उतार, **अपकर्षक**-(सं०वि०) निरादर करनेवाला, **अपकर्कर्ष**-(सं०नपु०) देखो अमकर्ष।

पकलंक-(सं०पु०) बड़ा कलंक जो मिटाये न मिटे।

अपकाजी-(हिं०वि०) अपस्वार्थी,।

अपकार-(सं०पु०) अनिष्ट, अहित, हानि, अनुपकार, निन्दा, अनादर, द्वेष। **अपकारक**- (सं०वि०) हानि पहुँचाने वाला, द्वेषी, विरोधी, **अपकारी**-(सं०स्त्री०) अनिष्ट करनेवाला, विरोधी। **अपकारीचार** - (हिं०वि०) हानिकारक, विघ्नकर्ता।

अपकीरति-(हिं०स्त्री०) **अपकीर्ति**-(सं०स्त्री०) अपयश, निन्दा, अयश।

अपकृत-(सं०वि०) अनिष्ट या विरोध किया हुआ, अपमानित। **अपकृति**-(सं०स्त्री०) अनिष्ट, अपकार, द्वेष

अपकृष्ट-(सं०वि०) निकृष्ट, बुरा, हीन, अधम, भ्रष्ट, पतित; **अपकृष्टजाति**-नीच जाति। **अपकृष्टता**-(सं०स्त्री०) अधमता।

अपक्रम-(सं०पु०) अनियम, व्यतिक्रम, उलट पलट, अपमान, गड़बड़। **अपक्रमण**-(सं०नपु०) पलायन, भाग-जाना।

अपक्रमी-(सं०त्रि०) भागनेवाला।

अपक्रिया-(सं०स्त्री०) अपकार, बुरा काम, कुकर्म।

अपक्रोश-(सं०पु०) भर्त्सना, धमकी।

अपक्व-(सं०वि०) बिना पका हुआ, कच्चा, असिद्ध, अनभ्यस्त। **अपक्वता**-(सं०स्त्री०) असिद्धता, कवचापन; **अपक्ष**-(सं०वि०) पक्षहीन, बिना सहायकका

अपक्षपात-(सं०पु०) पक्षपात का अभाव निरपेक्षता समदृष्टि। **अपक्षपाती**-पक्षपात न करनेवाला, समदर्शी।

अपक्षिप्त-(सं०वि०) फेंका हुआ, गिराया हुआ।

अपक्षेपण-(सं०नपुं०) अधः पतन, गिराव

अपगत-(सं०वि०) भागा हुआ, नष्ट, मृत।

अपगमन-(सं०नपु०) अपसरण, भागजाना

अपग्रह-(सं०पु०) प्रतिकूल ग्रह (फलित ज्यौतिष)।

अपघात-(सं०पु०) विश्वासघात, धोखा, अपमृत्यु, हिंसा, हत्या, आत्महत्या।

अपघातक, अपघाती-(सं० पु०, वि०) विश्वासघाती, वञ्चक, आत्महत्या करने वाला।

अपच-(सं०पु०) अजीर्ण।

अपचय-(सं०पुं०) अपहरण, हानि, नाश, कमी।

अपचरित-(सं०नपुं०) बुरा आचरण, दुराचार।

अपचार-(सं०पु०) अपकार, दोष, अनादर, बुराई, निन्दा, विनाश, कुपथ्य, भ्रम, अनिष्ट। **अपचारी**-(हिं०त्रि०) दुराचारी, दुर्व्यवहार करनेवाला।

अपचाल-(हिं० पुं०) कुचाल, खोटाई,

अपचित-(सं०वि०) पूजित, सम्मानित।
अपचिति-(सं०स्त्री०) पूजा, व्यय, हानि।
अपची-(सं०स्त्री०) गण्डमाला के ऊपर का व्रण या फोड़ा।
अपच्छी-(हिं०पुं०) विरोधी, वैरी, शत्रु।
अपच्छेद-(सं०पुं०) हानि, बाधा।
अपछरा-(हिं०स्त्री०) अप्सरा।
अपजय-(सं०पुं०) पराजय, हार।
अपजस-(हिं०पुं०) अपयश, दुर्नाम।
अपटन-(हिं०पुं०) उपटन।
अपटु-(सं०वि०) जो कार्यकुशल न हो, आलसी, **अपटुता**-(सं०स्त्री०) अकुशलता।
अपठ-(हिं०वि०) निरक्षर, अपढ, जो पढा लिखा न हो।
अपठमान-(हिं०वि०) जो पढा न जा सके, जो पढने योग्य न हो।
अपडर-(हिं०पुं०) भय शङ्का। **अपडरना**-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, भय खाना, डरना।
अपड़ाना-(हिं० क्रि०) राढ करना, झगड़ना।
अपड़ाव-(हिं०पुं०) लड़ाई झगड़ा, कलह।
अपढ-(हिं०वि०) अपठ, बिना पढालिखा, अशिक्षित।
अपण्डित-(सं०वि०) जो पण्डित न हो, मूर्ख।
अपण्य-सं०त्रि०) जो द्रव्य बेंचने योग्य न हो।
अपत-(हिं०वि०) बिना पत्तों का, पत्रहीन, अधम, नीच, नग्न, निर्लज्ज।
अपतई-(हिं०स्त्री०) निर्लज्ज।
अपताव-(हिं०पुं०) बखेड़ा, प्रपंच, जंजाल।
अपति-(हिं०वि०) पतिविहीन, विधवा, दुराचारी, दुष्ट, पातकी, (सं०स्त्री०) अपमान, दुर्दशा।
अपतीर्थ-(सं०पुं०) बुरा तीर्थ।
अपत्र-(सं०वि०) पत्रहीन, बिना पत्तेका।
अपत्य-(सं०नपुं०) बालबच्चे; सन्तान।
अपत्यशत्रु-(सं०पुं०) केंकड़ा, सर्प।
अपत्र-सं०पुं०) बिना पंखका, बिना पत्तेका।
अपत्रप-(सं०वि०) निर्लज्ज, लज्जाहीन।
अपत्रस्त-(सं०वि०) भयभीत, डराहुआ।
अपथ-(सं०नपुं०) जो मार्ग चलने योग्य न हो, विकट राह, कुमार्ग, कुपथ।
अपथगामी-(वि०) कुमार्गी, कुपथ पर चलनेवाला।
अपथ्य-(सं०नपुं०) अहितकर, स्वास्थ्य का नाश करनेवाला।
अपद-(सं०त्रि०) बिना पैर का रेंगनेवाला जीव, पादशून्य।
अपदार्थ-(सं०वि०) तुच्छ, निकृष्ट।
अपदिष्ट-(सं०वि०) प्रयुक्त, कहा हुआ।
अपदेखा-(हिं०वि०) आत्म प्रशंसक, स्वार्थी, घमण्डी।
अपदेवता-(सं०स्त्री०) दानव, राक्षस, बुरा देवता।
अपदेश-(सं०पुं०) निमित्त, लक्ष्य, बहाना
अपदोष-(सं०त्रि०) निष्कलङ्क।
अपद्रव्य-(सं०नपुं०) कुत्सित पदार्थ, बुरी वस्तु, मिश्रण।
अपद्वार-(सं०नपुं०) चोर कपाट, खिड़की
अपध्वंस-(सं०पुं०) निन्दा, अपमान, धिक्कार। **अपध्वंसी**-(सं०त्रि०) नाश करनेवाला, नष्ट होनेवाला, निन्दक, अपमान करने वाला।
अपन-(हिं०सर्व०) अपना, हम।
अपनयौ-(हिं०पुं०) आत्मीयता, आत्मभाव, अपकार, सम्बन्ध, ज्ञान, अहंकार, सुध, दूसरे स्थान मे लेजाना, मर्यादा, गर्व।
अपनय-(सं०पुं०) बुरी नीति, खण्डन।
अपनयन-(सं०नपुं०) खण्डन, नयनहीन, दूरीकरण, एक स्थान से दूसरे स्थान में लेजाना, अन्धा।
अपनस-(सं०वि०)बिना नाकका, नककटा
अपना-(हिं०सर्व०) आत्मीय, स्वकीय, निजका, निजी। **अपनाना**-(हिं०क्रि०) अपना बनाना, अपने पक्षमे लाना, अपने अधिकार मे करना, अपने अनुकूल करना, अपनी ओर करना।
अपनापन-(हिं०पुं०)आत्मीयता, अपनायत।
अपनाम-(हिं०पुं०) दुर्नाम, अपयश।
अपनायत-(सं०स्त्री०) आत्मीयता, स्वकीयता, अपनापन।
अपनिद्र-(सं०वि०) निद्रा रहित।
अपनीत-(सं०वि०) अपमानित,
अपभय-(सं०त्रि०) भयशून्य, निर्भय, निडर, (सं०पुं०) निर्भयता। **अपभीति**-(सं०त्रि०) भयरहित, निर्भय।
अपभ्रंश-(सं०पुं०)बिगाड़, पतन, गिराव विकृति, बिगड़ा हुआ शब्द, (वि०) बिगड़ा हुआ।
अपभ्रंशित-(सं०वि०) बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट किया हुआ, गिरा हुआ।
अपमर्श-(सं०पुं०) अपहरण, निन्दा।
अपमान-(सं०पुं०) अनादर, तिरस्कार, अवज्ञा। **अपमानना**-(हिं०क्रि०)अपमान करना, तिरस्कार करना। **अपमानित**-(सं०वि०) तिरस्कृत, तिरस्कार किया हुआ। **अपमानी**-(हिं०वि०) अपमान करनेवाला, निरादर करनेवाला।
अपमार्ग-(सं०पुं०) कुपथ, कुमार्ग, बुरा रास्ता। **अपमार्गी**-(हिं०वि०) कुमार्गी, कुपन्थी, पापी।
अपमृत्यु-(सं०पुं०) अस्वाभाविक मृत्यु, कुसमय, मृत्यु।
अपयश-(सं०नपुं०) अपकीर्ति, लाञ्छन, बुराई।
अपयान-(सं०नपुं०) बुरी सवारी।
अपरंच-(सं०अव्य०) फिरभी, तौभी।
अपरम्पार-(हिं०वि०) अपार, असीम।
अपर-(सं०वि०) पहिला, अभी, अन्य, दूसरा, पिछला, निकृष्ट; **अपरकाल**-पिछला समय; **अपरछन**-(हिं०वि०) जो ढपा या छिपा न हो, गुप्त।
अपरतन्त्र-(हिं०वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र
अपरता-(सं०स्त्री०) परायापन, अपनापन। **अपरती**-(सं०स्त्री०) स्वार्थी।
अपरत्व-(सं०पुं०)पिछलपन, परायापन
अपरदक्षिण-(सं०त्रि०) नैऋत्य कोण।
अपरदिशा-(सं०नपुं०) पश्चिम।
अपरपर-(सं०वि०) एकऔर, दूसराकोई
अपरबल-(सं०वि०) बलवान्।
अपररात्र-(सं०पुं०) रातका पिछला भाग
अपरलोक-(सं०पुं०) दूसरालोक, परलोक स्वर्ग।
अपरवश-(हिं०वि०) दूसरे के वश, पराधीन।
अपरस-(हिं०वि०) अस्पृश्य, जो छूने योग्य न हो।
अपरस्पर-(सं०वि०) एक के बाद दूसरा।
अपरान्त-(सं०पुं०) पश्चिमी सीमा, मृत्यु
अपरा-(सं०स्त्री०) पश्चिम दिशा, पदार्थ विद्या, जरायु।
अपराग-(सं०पुं०) विराग (वि०) क्लेश रहित।
अपराङ्मुख-(सं०वि०) जो कर्तव्य से विमुख न हो।
अपराजित-(सं०वि०) जो पराजित न हो (सं०पुं०) शिव, विष्णु।
अपराजिता-(सं०स्त्री०) दुर्गा, कोयल, कौवाठोंठी का फूल, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रति चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
अपराध-(सं०पुं०) पाप, भूल, दोष, दण्डपाने योग्य काम करना।
अपराधी-(हिं०वि०) दोषी, पापी,
अपराधभंजन-(सं०पुं०) अपराधों का नाश करनेवाला, शिव।
अपरावर्ती-(हिं०वि०)पीछे न हटनेवाला
अपराह्ण-(सं०पुं०) दिन का शेष भाग, तीसरा पहर।
अपरिकल्पित-(सं०वि०) अज्ञान, बिना देखा सुना।
अपरिगण्य-(सं०वि०) अगणित, अनगिनती।
अपरिगत-(सं०वि०) अपरिचित, अनजान
अपरिगृहीत-(सं०वि०) अप्राप्त, त्यागा हुआ।
अपरिग्रह-(सं०पुं०) दान न लेना, अस्वीकार, विराग, स्त्री रहित, योग्य के अनुसार पाँचवा यम (संयम);
अपरिचय-(सं०त्रि०) जान पहिचान का, न होना। **अपरिचित**-(सं०वि०) अज्ञात, बिना जान पहिचान का अज्ञात।
अपरिच्छन्न-(सं०वि०)आवरणरहित, नंगा
अपरिच्छिन्न-(सं०वि०) सीमारहित, असीम, अभेद्य, जिसका टुकड़ा नहो सके, सम्मिलित।
अपरिज्ञान-(सं०नपुं०)तत्वज्ञान, शून्यता
अपरिणत-(सं०वि०) अपरिपक्व, कच्चा
अपरिणमी-(सं०पुं०) विवाह न होना, कुवाँरापन।
अपरिणीत-(हिं०वि०) परिणामशून्य, व्यर्थ, निष्फल, जिसकी अवस्था में परिवर्तन न हो।
अपरितोष-(सं०वि०) बिना ब्याहा हुआ, अविवाहित, क्वारा।
अपरितोष-(सं०पुं०) असन्तोष।
अपरिपक्व-(सं०वि०) जो पका न हो, कच्चा, अधूरा, अप्रौढ।
अपरिमाण-(सं०वि०) अपरिमित, बहुत अधिक।
अपरिमित-(सं०वि०) अगणित, असीम, अनन्त, असंख्य। **अपरिमेय**-(सं०वि०) अगणित, असंख्य, अनगिनतिन।
अपरिविष्ट-(सं०वि०) अव्याप्त, न ढका हुआ।
अपरिवर्तनीय-(सं०वि०) न बदलने योग्य
अपरिष्कार-(सं०पुं०) मैलापन।
अपरिष्कृत-(सं०वि०) स्वच्छ न किया हुआ, मैला कुचैला।
अपरिहरणीय-(सं०वि०) अत्याज्य, न छोड़ने योग्य, अनिवारित।
अपरिहार-(सं०पुं०) अनिवारण, दूर करने का उपाय न होना। **अपरिहारित**-(सं०वि०)अनिवारित अवर्जित,
अपरिहार्य-(सं०वि०) अत्याज्य, अवर्जनीय, न छोड़ने योग्य, आदरणीय।
अपरीक्षित-(सं०वि०) परीक्षा या जाँच न किया हुआ।
अपरुष-(सं०वि०) क्रोध रहित, गर्व रहित, स्निग्ध।
अपरूप-(सं०नपुं०) अद्भुत, रूपयुक्त, सुन्दर, कुरूप, बेडौल, भद्दा।
अपरोक्ष-(सं०अव्य०) प्रत्यक्ष।
अपर्णा-(सं०स्त्री०) पार्वती, दुर्गा।
अपर्याप्त-(सं०वि०) अपूर्ण, असमर्थ, जो पर्याप्त न हो। **अपर्याप्ति**-(सं०स्त्री०) अपूर्णता, त्रुटि, कमी।
अपलक्षण-(सं०नपुं०) कुलक्षण, बुरा लक्षण, दोष।
अपलाप-(सं०पुं०) मिथ्यावाद, बकवाद
अपवरण-(सं०वि०) आवरण, हटाना।
अपवर्ग-(सं०पुं०) मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण, कर्मफल, सफलता, दान, त्याग, पूर्णता
अपवर्जित-(सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
अपवर्तक-(सं०त्रि०) गणितमें वह संख्या जिससे अन्य दो या अधिक संख्या को भाग देने पर शेष कुछ न रहे-यथा४ अंक ८ तथा १२ का अपर्तक है।
अपवर्तन-(सं०पुं०) संक्षेप, उलटफेर, लाघव। **अपवर्तित**-(सं०वि०) पलटा हुआ, बदला हुआ।
अपवर्त्य-(सं०त्रि०) जिस संख्या को दूसरी किसी संख्यासे भाग देने पर कुछ शेष न बचे-वह उस संख्या का अपवर्त्य कहलाता है यथा १४ संख्या २ का अपवर्त्य है।
अपवश-(हिं०वि०) अपने आधीन, अपने वश का।
अपवाचा-(हिं०स्त्री०) अपकीर्ति, निन्दा।
अपवाद-(सं०पुं०) निन्दा, विरोध, अपकीर्ति, आज्ञा, मिथ्यावार्ता, विश्वास, आदेश; व्यापक नियमसे विरुद्ध

नियम। **अपवादक**-(सं०पु०) निन्दक, प्रतिरोधक। **अपवादित**-(सं० वि०) निन्दा या विरोध किया हुआ।
अपवादी-(सं०पु०) अपवाद या निन्दा करनेवाला, विरोधी, बुराई करनेवाला
अपवारण-(सं०नपु०) व्यवधान, रुकावट, अन्तर्धान, हटाने का कार्य।
अपवारित-(सं०वि०) छिपाया हुआ, दूर किया हुआ।
अपवाहक-(सं०वि०) एक स्थान से दूसरे स्थान को लेजाने वाला। **अपवाहन**-(सं०नपुं०) एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचाना। **अपवाहित**-(सं०वि०) एक स्थान से दूसरे स्थान में लाया हुआ।
अपविघ्न-(सं०वि०) विघ्न शून्य, निर्विघ्न
अपवित्र-(सं०वि०) अशुद्ध, दूषित, मलिन
अपवित्रता-(सं०स्त्री०) अशुद्धि, मलिनता
अपविद्ध-(सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, वेधा हुआ, माता पिता से त्यागा हुआ बालक जिसको दूसरा कोई पुत्रवत् पालन पोषन करे।
अपविद्या-(सं०स्त्री०) अविद्या, बुरी विद्या
अपविष-(सं०वि०) विष रहित।
अपव्यय-(सं०पुं०) अपरिमित व्यय, दुष्कर्म में व्यय। **अपव्ययमान**-दुर्व्यय करने वाला। **अपव्ययी**-(हिं०वि०) अनियमित खर्च करने वाला।
अपशकुन-(सं०पु०) बुरा सगुन, कुसगुन
अपशङ्क-(सं०वि०) निःशङ्क, निर्भय, निडर
अपशब्द-(सं०पु०) अपभ्रंश शब्द, गाली, अर्थ हीन शब्द, कुवाच्य, अपान वायु का निकलना, पाद।
अपशु-(सं०पु०) पशुहीन, गाय, घोड़े से अतिरिक्त।
अपश्चात्तापी-(सं०वि०) पश्चात्ताप या पछतावा न करने वाला।
अपश्चिम-(सं०वि०) जो पिछला न हो, अगला।
अपसगुन-(हिं०पु०) अपशकुन, असगुन।
अपसद-(सं०वि०) नीच, अधम, वर्णसंकर
अपसना-(हिं०क्रि०) भाग जाना, घिसक जाना, चल देना।
अपसर-(सं०पु०) अपयान, भाग जाना (वि०) आप ही आप, अपने मन का।
अपसरण-(सं०नपुं०) भागना, चलदेना
अपसर्ग-(सं०पु०) त्याग, मनाही, रोक।
अपसर्जन-(सं०नपुं०) वर्जन, त्याग, मोक्ष
अपसर्पण-(सं०नपुं०) पलायन, खिसक जाना **अपसर्पित**-(सं०वि०) पीछे को घिसका या हटा हुआ।
अपसव्य-(सं०नपुं०) देह का दाहिना भाग, दक्षिण, विपरीत, उलटा, दक्षिण की ओर स्थित।
अपसर-(सं०पुं०) बहाना।
अपसारित-(सं०वि०) दूर किया हुआ, हटाया हुआ।
अपसोस-(हिं०वि०) दुःख, चिन्ता।
अपसोसना-(हिं०क्रि०) चिन्ता करना, सोच करना, पछताना।
अपसौन-(हिं०पुं०) अपशकुन, बुरा सगुन
अपसौना-(हिं०क्रि०) पहुँचना, आजाना
अपस्नात-(सं०वि०) मृतक के उद्देश्य में स्नान किया हुआ। **अपस्नान**-(सं०नपुं०) मृतकस्नान, मृतक के उद्देश्य में स्नान।
अपस्मार-(सं०पुं०) मिरगी रोग, वह रोग जिसमें मनुष्य मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ता है।
अपस्मृति-(सं०स्त्री०) शीघ्र भूल जाना, भुलक्कड़पन।
अपस्वार्थी-(हिं०वि०) अपना स्वार्थ साधने वाला।
अपह-(सं०वि०) विनाशक, नाशकरने वाला।
अपहत-(सं०वि०) बिनाश किया हुआ, हटाया हुआ, दूर किया हुआ।
अपहति-(सं०स्त्री०) विनाश, नाश।
अपहर-(सं०वि०) चोरी करने वाला छीनने वाला।
अपहरण-(सं०नपुं०) छीन लेना, छिपा देना, चोरी। **अपहरणीय**-(सं०वि०) ले लेने योग्य, छिपाने योग्य।
अपहरना-(हिं०क्रि०) चोराना, लूटना।
अपहर्ता-(सं०पु०) छीनने वाला, ले लेने वाला, चोर, लुटेरा, छिपाने वाला।
अपहार-(सं०पु०) अपहरण, चोरी, छिपाना। **अपहारक**-(सं०वि०) अपहरण करने वाला, चोर, डाकू, लुटेरा।
अपहारित-(हिं०वि०) छीना हुआ, चुराया हुआ।
अपहारी-(सं०वि०) अपहर्ता, चुरानेवाला
अपहार्य-(सं०वि०) चुराने योग्य, छीनने योग्य।
अपहास-(सं०पु०) अकारण हास्य, उपहास।
अपहृत-(सं०वि०) चुराया हुआ, छीना हुआ।
अपह्नव-(सं०पु०) जानते हुए किसी बात को छिपाना, बहाना, टालमटोल।
अपह्नुत-(सं०वि०) चोरी की हुई वस्तु।
अपह्नुति-(सं०स्त्री०) छिपाव, बहाना, व्याज, वह अर्थालङ्कार जिसमें प्रकृत पदार्थ का निषेध करके उस स्थान में वैसा ही दूसरा कोई पदार्थ स्थापित किया जाता है।
अपह्रास-(सं०पु०) कमी, टोटा, घाटा।
अपा-(हिं०पुं०) अभिमान, अहङ्कार, घमण्ड।
अपांग-(सं०पुं०) आँख का कोना, कटाक्ष (वि०) अङ्गहीन।
अपांनाथ, अपांनिधि-(सं०पुं०) जलपति,
अपांपति-(सं०पु०) समुद्र, वरुण।
अपांशुका-(सं०स्त्री०) पतिव्रता स्त्री।
अपांसुला-(सं०स्त्री०) देखो अपांशुका।
अपाक-(सं०पु०) अजीर्णता, अपच, (वि०) कच्चा।
अपाकृत-(सं०वि०) दूरीकृत, हटाया हुआ
अपांग-(सं०पु०) नेत्र का कोना, तिलक, कामदेव। **अपांग-दर्शन**-कटाक्ष, तिरछी दृष्टि।
अपाटव-(सं०नपुं०) पटुता का अभाव, रोग।
अपाठ्य-(सं०वि०) जो पढ़ने योग्य न हो
अपात्र-(सं०वि०) असमर्थ, अयोग्य, कुपात्र, मूर्ख, श्राद्धादि मे भोजन न कराने योग्य।
अपाद-(सं०वि०) पादशून्य, बिना पैर का, पङ्गु।
अपादान-(सं०नपु०) विभाग, अलगाव, व्याकरण में वह कारक जिसमें विभागादि सूचित होता है, इस कारक में पंचमी विभक्ति लगती है
अपान-(सं०पुं०) शरीर के पाँच वायु में से एक, गुदस्थवायु, अधोवायु (हिं०पु०) आत्माभिमान, आत्मगौरव, घमंड।
अपाप-(सं०वि०) पापहीन, पापजनक, (अव्य०) पाप का अभाव (पु०) पुण्य मार्ग।
अपामार्ग-(सं०पु०) चिचिड़ा, लटजीरा।
अपाय-(सं०पु०) विश्लेष, अपगमन, नाश, अलगाव, अनरीति (वि०) असमर्थ, निरुपाय, लंगड़ा।
अपायी-(सं०वि०) अनित्य, अस्थिर, विनाशी।
अपार-(सं०वि०) असीम, सीमारहित, असंख्य, अतिशय।
अपारग-(सं०वि०) अक्षम, अयोग्य, नालायक।
अपारा-(सं०स्त्री०) दुर्गा, पृथ्वी।
अपार्जित-(सं०वि०) निकाला हुआ, फेंका हुआ।
अपार्थ-(सं०वि०) निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।
अपाल-(सं०वि०) रक्षकशून्य, बिना रक्षक का।
अपाव-(हिं०पुं०) अन्याय, अत्याचार, उपद्रव।
अपावन-(सं०वि०) मलिन, अपवित्र, अशुद्ध।
अपावर्तन-(सं०नपुं०) निवारण, निषेध।
अपाश्रय-(सं०वि०) आश्रयहीन। **अपाश्रित**-(सं०वि०) विरक्त, त्यागी।
अपास्त-(सं०वि०) त्यागा हुआ, हटाया
अपाहरण-(सं०नपु०) आकर्षण, खिचाव
अपाहिज-(हिं०वि०) अङ्गहीन, खंज, आलसी, लूला लंगड़ा, काम करने के अयोग्य।
अपि-(सं०अव्य०) भी, ही, अवश्य, निश्चय। **अपिच**-(सं०वि०) और भी, तौभी, परंच।
अपिण्ड-(सं०वि०) पिण्डरहित।
अपितु-(सं०वि०) किन्तु, और भी।
अपितृ-(सं०पुं०) पितृहीन, विना बापका
अपिधान-(सं०पु०) आच्छादन, ढाँक, आवरण।
अपिनद्ध-(सं०वि०) बँधा हुआ, ढका हुआ
अपिबद्ध-(सं०वि०) देखो अपिनद्ध।
अपिहित-(सं०वि०) आवृत, ढपा हुआ।
अपीच-(हिं० वि०) अपीच्य, सुन्दर, सुहावना।
अपीड़न, अपीड़ा-(सं०नपु०) नम्रता, कृपा
अपीत-(सं०वि०) जो रंग में पीला न हो
अपुंस्त्व-(सं०नपुं०) क्लीवत्व, नामर्दी।
अपुच्छ-(सं०वि०) बिना पोंछ का।
अपुण्य-(सं०नपु०) पाप (वि०) पुण्यहीन, मैला, बुरा।
अपुत्र, अपुत्रक-(सं०पु०) पुत्रहीन, बिना बेटे का, निःसन्तान। **अपुत्रता**-(सं० स्त्री०) पुत्रहीनता, पुत्र न रहने की स्थिति। **अपुत्रा, अपुत्रिका**-(सं०स्त्री०) पुत्रहीन स्त्री।
अपुनपो-(हिं०पु०) आत्मीयता, मेल जोल
अपुनर्भव-(सं०पुं०) पुनर्जन्म रहित, मुक्त
अपुनीत-(सं०वि०) अपवित्र, दोषयुक्त, अशुद्ध, दूषित।
अपुरातन, अपुराण-(सं० वि०) जो पुराना न हो, नवीन।
अपुरुष-(सं०वि०) बड़ा नपुंसक।
अपुरोदन्त-(सं०वि०) बिना दाँत का, पोपला।
अपुष्ट-(सं०वि०) दुर्बल, दुबला पतला, अपक्व। **अपुष्टता**-(सं०स्त्री०) पुष्ट न रहने की स्थिति, दुबलापन।
अपुष्प-(सं०वि०) बिना फूल का (पुं०) जिस वृक्ष में फूल न होकर फल लगें
अपूजक-(सं०वि०) पूजा न करने वाला, अनादर कर्ता।
अपूजा-(सं०स्त्री०) अनादर, असन्मान।
अपूजित-(सं०वि०) पूजा न किया हुआ
अपूज्य-(सं०वि०) जो पूजन के अयोग्य हो।
अपूठना-(हिं०क्रि०) नाश करना, तोड़ना, मिटाना।
अपूठा-(हिं०वि०) अपुष्ट, कच्चा, अपरिपक्व, अनभिज्ञ, जो जानकार न हो, अस्फुट, जो खिला न हो।
अपूत-(सं०वि०) अपवित्र, अशुद्ध (हिं० वि०) पुत्र हीन, बिना सन्तति का (हिं०पु०) अयोग्य पुत्र, कूपूत।
अपूप-(सं०पुं०) गेंहू या चावल के आँटे की लिट्टी।
अपूर-(हिं०वि०) आपूर्ण, भरा हुआ, भरपूर।
अपूरणी-(सं०स्त्री०) कपास का वृक्ष।
अपूरना-(हिं०क्रि०) भरता, हवा भरना, शङ्ख आदि बाजा बजाना।
अपूरब-(हिं०वि०) अपूर्व, विलक्षण।
अपूरा-(हिं०वि०) आपूर्ण, भरा हुआ, फैला हुआ।
अपूरी-(हिं०स्त्री०) देखो अपूरा।
अपूर्ण-(सं०वि०) जो पूर्ण न हो, असमाप्त, अधूरा, न्यून, कम, जो अङ्क अधूरा हो; **अपूर्ण काल**-जो उचित समय में समाप्त न हो, अधूरा। **अपूर्णता**-(सं०स्त्री०) न्यूनता, अधूरापन, कमी। **अपूर्णभूत**-(सं०पुं०) व्याकरण में क्रिया का वह भूतकाल जिसमें क्रिया की समाप्ति नहीं

दिखलाई जाती; यथा वह पढ़ता था। **अपूर्ण**-(सं०वि०) अनुपम, अनोखा, विचित्र, निराला, नूतन, नया, उत्तम, श्रेष्ठ, अज्ञात, बिना हेतु का। **अपूर्वता**-(सं०स्त्री०) विलक्षणता, अनोखापन, निरालापन। **अपूर्वत्व**-(सं० स्त्री०) देखो अपूर्वता। **अपूर्वरूप**-(सं० पु०) अनोखा रूप, वह अलंकार जिसमें पूर्व गुण का मिलना असम्भव हो। **अपूर्व विधि**-(सं०स्त्री०) निराला ढग। **अपृथक्**-(सं०अव्य०) जो अलग न रहे, मिला हुआ। **अपृष्ठ**-(सं०वि०) बिना पूछा हुआ। **अपेक्षणीय**-(सं०वि०) अनुरोध करने योग्य, जिसकी राह देखना पड़े। **अपेक्षा**-(सं०स्त्री०) आकांक्षा, इच्छा, मिलान, किसी पद का दूसरे पद से अन्वय, चाह, लालच, आशा, अनुरोध, भरोसा, तुलना, **अपेक्षा बुद्धि**-यह एक यह एक ये दो हुए ये दो यह एक ये तीन हुए इसे अपेक्षा बुद्धि कहते है, बुद्धि की स्वच्छता। **अपेक्षित**-(सं०वि०) आकांक्षा युक्त, इच्छित, चाहा हुआ, आवश्यक। **अपेक्षिता**-(सं०स्त्री०) आकांक्षा, चाह। **अपेक्षी**-(सं०पु०) अपेक्षा करने वाला, राह देखने वाला। **अपेच्छा**-(हिं०स्त्री०) अपेक्षा, अकांक्षा। **अपेय**-(सं०वि०) पीने के अयोग्य, जिसका पीना शास्त्र के अनुसार निषिद्ध हो। **अपेल**-(हिं०वि०) अभेद्य, अटल, अटूट, ढेर का ढेर। **अपेशल**-(सं०त्रि०) अनिपुण, जो सुन्दर नहो **अपैठ**-(हिं०वि०) पहुँच के बाहर, जहाँ पहुँच न सके। **अपैतृक**-(सं०वि०) जो पिता से न मिला हो **अपैशुन**-(सं०नपु०) पिशुनता का अभाव, भलमन्सी, सचाई (वि०) भला, सच्चा। **अपोगण्ड**-(सं०वि०) विकलाङ्ग, सोलह वर्ष से कम वय का, बच्चा, कोमल, डरपोक। **अपोमय**-(सं०वि०) जलपूर्ण, जल से भरा हुआ। **अपोह**-(सं०पुं०) त्याग, छुटकारा। **अपोहनीय**-(सं०वि०) जो हटाया जासके। **अपोहित**-(सं०वि०) हटाया हुआ। **अपौरुष**-(सं०वि०) विक्रम शून्य, नामर्द। **अप्रकट, अप्रकटित**-(सं०वि०) अप्रकाशित, गुप्त। **अप्रकरण**-(सं०नपुं०) अप्रधान विषय। **अप्रकर्ष**-(सं०पुं०) प्रकर्ष का अभाव, श्रेष्ठता न होना। **अप्रकाण्ड**-(सं०वि०) शाखाशून्य, बिना डाल का। **अप्रकाश**-(सं०पुं०) प्रकाश का अभाव, छिपाव। **अप्रकाशक**-(सं०वि०) प्रकाशित न करने वाला, धुँधला करने-वाला। **अप्रकाशमान, अप्रकाशित**-(सं०वि०) जो प्रकट न हुआ हो, गुप्त, छिपा हुआ, जो छापकर प्रचलित न हुआ हो। **अप्रकाश्य**-(सं० वि०) प्रकाश करने योग्य, गोपनीय। **अप्रकृत**-(सं०वि०) अस्वाभाविक, अयथार्थ, कृत्रिम, झूठा, बनावटी। **अप्रकृति**-(सं०वि०) स्वभावहीन। **अप्रखर**-(सं०वि०) अतीक्ष्ण, मृदु, कोमल **अप्रगल्भ**-(सं०वि०) जो ढीठा न हो, सहनशील, सभ्य। **अप्रगाध**-(सं०वि०) अति गम्भीर, बहुत गहरा। **अप्रचलित**-(सं०वि०)जो प्रचलित न हो, जो व्यवहार में न आवे, अप्रयुक्त। **अप्रचुर**-(सं०वि०) थोड़ा, न्यून, कम। **अप्रच्छन्न**-(सं०वि०) न छिपा हुआ, स्पष्ट **अप्रजा**-(सं०स्त्री०)वन्ध्या, बाँझ स्त्री। **अप्रणीत**-(सं०वि०) असम्पन्न, बेकाम। **अप्रताप**-(सं०पु०) प्रकाश का अभाव, धुंधलापन। **अप्रतिकार**-(सं०पुं०) प्रतिकारका अभाव, बदला न मिलना, रोक न होना। **अप्रतिकारी**-(सं०वि०) बदला न लेनेवाला। **अप्रतिक्रिया**-(सं० स्त्री०) उपशमन न होना, न दबाया जाना। **अप्रतिपत्ति**-(सं० स्त्री०) गौरव का न रहना, बोध का अभाव, अस्वीकार। **अप्रतिपन्न**-(सं०वि०) अस्वीकृत, अज्ञात, अप्राप्त। **अप्रतिबन्धन**-(सं०पुं०) रोकका न रहना, **अप्रतिभ**-(सं०वि०) स्फूर्ति रहित, अधृष्ट, निर्लज्ज। **अप्रतिभा**-(सं०स्त्री०) स्फूर्ति का अभाव। **अप्रतिम**-(सं०वि०) अनुपम, अद्वितीय, सदृश, अनोखा। **अप्रतिमान**-(सं०वि०) अनुपम, बेजोड़। **अप्रतियोगी**-(सं०वि०) अनुपम, अनोखा, जिसका कोई शत्रु न हो। **अप्रतिरूप**-(सं०वि०) जिसकी आकृति का कोई और न मिले। **अप्रतिवीर्य**-(सं०वि०) अत्यन्त पराक्रमी **अप्रतिषिद्ध**-(सं०वि०) जिसका निषेध न हो। **अप्रतिषेध**-(सं०पु०) प्रतिषेध या निषेध का अभाव। **अप्रतिष्ठ**-(सं०वि०) निष्फल, गौरवहीन, **अप्रतिष्ठा**-(सं०स्त्री०) अपकीर्ति, अनादर, अपमान, अपयश। **अप्रतिष्ठित**-(सं०वि०) अपमानित, अपयशी। **अप्रतिहत**-(सं०वि०) न रोका हुआ, आशा रखने वाला। **अप्रतीक**-(सं०वि०) पूरा, समूचा, संपूर्ण **अप्रतीकार**-(सं०वि०) दमन न करने योग्य (सं०पुं०) विरोध का अभाव। **अप्रतीघात**-देखो अप्रतिघात। **अप्रतीति**-(सं०स्त्री०) अविश्वास, ज्ञान न होना। **अप्रतीप**-(सं०वि०) अनुकूल। **अप्रत्यक्ष**-(सं०अव्य०) इन्द्रिय ज्ञान से परे, अदृश्य, छिपा हुआ, अज्ञात, परोक्ष, गुप्त। **अप्रत्यक्षता**-(सं०स्त्री०)अज्ञानता, अदृश्यता **अप्रत्यय**-(सं०पु०) अविश्वास, अश्रद्धा। **अप्रथित**-(सं०वि०) अप्रकाशित, अज्ञात **अप्रधान**-(सं०वि०) गौण, सामान्य, **अप्रधानता**-(सं०स्त्री०) अधीनता, नीचता **अप्रपन्न**-(सं०वि०) अज्ञात, न जानाहुआ **अप्रबल**-(सं०वि०) शक्तिहीन, बिना पराक्रम का। **अप्रभ**-(सं०वि०) प्रभाशून्य, मन्द। **अप्रभु**-(सं०वि०) असमर्थ, अयोग्य। **अप्रभुत्व**-(सं०नपुं०) असामर्थ्य। **अप्रमत्त**-(सं०वि०) सावधान, जो न हो उन्मत्त। **अप्रमा**-(सं०स्त्री०) भ्रम मूलक ज्ञान। **अप्रमाण**-(सं०नपु०) बिना प्रमाण का तथा असम्भव कथन (वि०) अपार असीम **अप्रमाणिक**-(सं०वि०)अधिकार रहित। **अप्रमाद**-(सं०पु०) प्रमाद का अभाव (वि०) भ्रम रहित, जो मतवाला न हो। **अप्रमादी**-(सं०वि०) सचेत, **अप्रमित**-(सं०वि०) अपरिमित, जिसकी नाप न हो सके, अप्रमाणित, अज्ञात **अप्रमेय**-(सं०वि०) जो न जाना जा सके, जो नापा न जा सके, अपार, अनन्त, प्रमाण द्वारा सिद्ध न होने योग्य। **अप्रयत्न**-(सं०त्रि०) यत्न का न होना, (वि०) यत्न रहित। **अप्रयास**-(सं०पु०) कष्ट का अभाव, आराम। **अप्रयुक्त**-(सं०वि०)व्यवहार में न लाया हुआ, अनियुक्त। **अप्रयुक्तता** (सं० स्त्री०) अलंकार में शब्दादि का जैसा प्रयोग प्रसिद्ध है उसके विपरीत व्यवहार करने से यह दोष कहा जाता है। **अप्रयोग**-(सं०पुं०) प्रयोग का अभाव, अलगाव। **अप्रयोजक**-(सं०वि०) प्रयोग करने में अयोग्य। **अप्रलम्ब**-(सं०नपुं०) शीघ्रता, जल्दी। **अप्रवर्तक**-(सं०वि०) काम में उत्साह न दिखलाने वाला, काम में न लगाने वाला। **अप्रवीण**-(सं०वि०)अज्ञान, मूर्ख, अनाड़ी **अप्रवृद्ध**-(सं०वि०) अधिक न बढ़ा हुआ **अप्रवृत्त**-(सं०वि०)काम में न लगा हुआ **अप्रवृत्ति**-(सं०स्त्री०) प्रवृत्ति का अभाव, अनुत्साह। **अप्रशंसनीय**-(सं० वि०) प्रशंसा न पाने योग्य। **अप्रशस्त**-(सं०वि०) अश्रेष्ठ, । **अप्रसंग**-(सं०पुं०) अलगाव (वि०) संबंध शून्य। **अप्रसन्न**-(सं०वि०) असन्तुष्ट, खिन्न, दुखी, उदास। **अप्रसन्नता**-(सं०स्त्री०) असन्तोष, उदासी, खिन्नता, क्रोध **अप्रसव**-(सं०वि०) बच्चा न देने वाला, (पु०)प्रसव का अभाव। **अप्रसह्य**-(सं०वि०) सहन न करने योग्य **अप्रसाद**-(सं०पु०) कृपा का अभाव, अविश्वास। **अप्रसिद्ध**-(सं०वि०) अविख्यात, जो प्रसिद्ध न हो, अज्ञात, गुप्त, छिपा हुआ, अद्भुत। **अप्रसूत**-(सं०वि०) नि:सन्तान, बाँझ, अनुत्पन्न। **अप्रस्तुत**-(सं०वि०) अनिष्पन्न, अनुपस्थित, प्रकरणसे अप्राप्त, अप्रशंसित **अप्रस्तुतप्रशंसा**-वह अलंकार जिसमें प्रस्तुत विषय के अतिरिक्त अन्य विषय के वर्णन से प्रस्तुत विषय का बोध कराया जाता है। **अप्रहत**-(सं०वि०) जिस पर मार न पड़ी हो, जो मारा न गया हो। **अप्राकृत**-(सं०वि०) असामान्य, अस्वाभाविक, असाधारण, विशेष। **अप्राचीन**-(सं०वि०) जो पुराना न हो, नया, नवीन। **अप्राज्ञ**-(सं०वि०) अशिक्षित, जो पढ़ा लिखा न हो। **अप्राज्ञता**-(सं०स्त्री०) शिक्षा का अभाव। **अप्राण**-(सं०वि०) प्राणहीन, मृत, **अप्राणी**-(सं०वि०) जिसमे प्राण न हो, निर्जीव। **अप्राधान्य**-(सं०नपु०)अधीनता, नीचता **अप्राप्त**-(सं०वि०) जो न पाया गया हो, अनुपस्थित, अलब्ध, परोक्ष, अप्रत्यक्ष, अप्रस्तुत, अनागत। **अप्राप्तकाल** ऋतुहीन, कुसमय का, **अप्राप्तयौवन**-अतरुण, **अप्राप्तव्यवहार** - अप्राप्त काल, सोलह वर्ष से कम वय का। **अप्राप्ता**-(सं०स्त्री०) अविवाहिता लड़की, कुमारी। **अप्राप्ति**-(सं०स्त्री०) अनुपपत्ति, अलाभ। **अप्राप्य**-(सं०वि०) न प्राप्त होने योग्य, दुष्प्राप्य, अलभ्य। **अप्रामाणिक**-(सं० वि०) प्रमाण रहित, जो प्रमाण से सिद्ध न हो, मिथ्या विश्वास न करने योग्य। **अप्रामाण्य**-(सं०नपु०) प्रमाण शून्यता, **अप्रासंगिक**-(सं०वि०) प्रसंगरहित, बिना क्रम का। **अप्रिय**-(सं०वि०) अनभीष्ट, अप्रीतिकर अरुचिकर, अच्छा न लगने वाला मैत्री न रखने वाला. (पु०) शत्रु; **अप्रियकर**-कृपा न दिखलाने वाला, अमित्र, **अप्रियकारी**-अनभीष्ट करने वाला; **अप्रियभागी**-हतभाग्य; **अप्रियवादी**-असभ्यता से बोलनेवाला। **अप्रीति**-(सं०स्त्री०) प्रीति का अभाव। **अप्रीतिकर**-असन्तुष्ट, विरुद्ध, असन्तोष दिखलाने वाला। **अप्रौढ**-(सं० वि०) गर्वरहित, बिना अभिमान का, कातर, डरपोक। **अप्रौढा**-(सं०स्त्री०) थोड़े वय की लड़की जिसका विवाह हो गया हो। **अप्सरा**-(सं०स्त्री०)स्वर्गकी वेश्या, देवाङ्गना परी, विद्याधरी, अलौकिक सुन्दरता

की स्त्री, बाष्पकण, जलविन्दु ।

अप्सुचर–(स०वि०) जलचर, पानी में चलने वाला ।

अफरना–(हि०क्रि०) खूब पेट भर कर खाना, खा पीकर तृप्त होना, पेट फूलना, ऊब जाना ।

अफरा–(हिं०पु०) पेट फूलने का रोग, फुलाव । **अफ़राना**–(हिं० क्रि०) पेट भर कर खाना या खिलाना, भोजन से तृप्त करना ।

अफल–(सं० वि०) फलशून्य, निष्फल, व्यर्थ, शक्तिहीन, बाँझ । **अफलता**–(स०स्त्री०) निष्फलता, फल न प्राप्त करने की अवस्था ।

अफला–(सं०स्त्री०) घृतकुमारी, घिकुआर

अफलित–(सं० वि०) न फला हुआ, प्रयोजन रहित ।

अफ़ीम–(हिं०स्त्री०) पोस्ते की बोड़ी से निकली हुई गोंद, अहिफेन; **अफ़ीमची**–(हिं०वि०)अफ़ीम खानेवाला । **अफ़ीमी** (हिं०वि०) देखो अफ़ीमची ।

अफुल्ल–(सं०वि०) मुकुलित, जो फूला हुआ न हो ।

अफ़ू–(हिं०पु०) देखो अफीम ।

अफेन–सं०वि०) बिना फेन या झाग का (नपु०) अहिफेन, अफ़ीम ।

अफेल–(सं०नपु०) अहिफेन, अफ़ीम ।

अब–(हिं०क्रि०वि०) इस समय, अभी, इस घड़ी, **अबकी**, इसबार, **अबजाकर**–इतनी देर बाद, **अब तब होना**–मरणासन्न होना ।

अबटन–(हिं०पु०) देखो उबटन ।

अबद्ध–(स०वि०) न बँधा हुआ, स्वाधीन, मुक्त, स्वच्छन्द, जो किसी के आधीन न हो । **अबद्धमुख**–स्वच्छंद बोलने वाला, मुहजोर ।

अबध–(सं०पु०) दण्ड का अभाव (वि०) जो रोका न जा सके, अचूक ।

अबधार्ह–(सं०वि०) न मारे जाने योग्य ।

अबधू–(हिं०वि०) अज्ञान, अबोध, (पुं०) सन्त, सन्यासी, वैरागी ।

अबध्य–(स०वि०) प्राण दण्ड न देने योग्य, अनर्थक, बिना अर्थ का ।

अबन्धक–(सं०वि०) बन्धक रहित, जिस ऋण लेने में कोई वस्तु गिरवी न रखना पड़े । **अबन्धन**–(स०वि०) बन्धन हीन, न बँधा हुआ ।

अबन्धु–(स०वि०) बन्धुहीन, मित्ररहित ।

अबन्धुर–(सं०वि०) कड़ा, असम, कुरूप ।

अबर, अब्बर–(हिं०वि०) निर्बल ।

अबरक–(हिं०पु०) एक धातु जिसमें तहें होती हैं, इसके चार भेद हैं-पिनाक, दुर्दर, नाग, वज्र; एक प्रकार का चिकना पत्थर । **अबरकी**–(हिं०वि०) अबरक का बना हुआ । **अबरख**–(हिं०पु०) देखो अबरक ।

अबरन–(हिं०वि०) अवर्ण्य, न वर्णन करने योग्य ।

अबरनीय–(हिं०वि०) बिना रंग का, भिन्न रंग का ।

अबल–(सं०वि०) दुर्बल, कमजोर ।

अबलक, अबलख–(हिं०वि०) सफेद, काला, या सफेद लाल रंग का, दुरंगा, कबरा, ईस रंग का घोड़ा या बैल ।

अबलखा–(हिं०पु०) एक चिड़िया जिसका पेट सफ़ेद और शरीर काला होता है ।

अबलग–(हिं०क्रि०वि०) इस समय तक ।

अबला–(सं०स्त्री०) स्त्री, । **अबलाबल**–(सं०पु०) महादेव, शंकर ।

अबल्य–(सं०नपु०) दुर्बलता ।

अबहु–(स०वि०) जो अधिक न हो, थोड़ा ।

अबाती–(हिं०वि०) वायु रहित, जिसको हवा न हिलाती हो ।

अबाद–(हिं०वि०) निर्विवाद, आबाद, बसा हुआ ।

अबादान–(हिं०वि०) आबाद, बसा हुआ । **आबदानी**–(हिं०स्त्री०) आबादानी, बस्ती, भलाई, शुभचिन्तन, आनन्द, चहल पहल ।

अबाध–(स०वि०) अनिवारित, निर्विघ्न, बाधा रहित, अपार, अनियन्त्रित, असीम, निरंकुश । **अबाधक**–(सं०वि०) बाधा रहित ।

अबाधा–(स०स्त्री०) रेखागणित में त्रिकोण के आधार का अंश (हिं०वि०) बाधारहित ।

अबाध्य–(स०वि०) अनिवार्य, आधीन न हो, जो रोका न जा सके ।

अबान–(हिं०वि०) शस्त्ररहित ।

अबान्धव–देखो अबंधु ।

अबार–(हिं०स्त्री०) विलम्ब, देर ।

अबाल–(सं०वि०) जो बालक न हो, तरुण ।

अबाली–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पक्षी

अबालेन्दु–(सं०पु०) पूर्ण चंद्र, पूरा चन्द्रमा ।

अबाह्य–(सं०वि०) जो बाहर का न हो, अन्तरंग ।

अबास–(हिं०पुं०) निवास स्थान, रहने का स्थान ।

अबिद्ध–(हिं०वि०) अविद्ध, न छेदा हुआ ।

अबिरल–(हिं०वि०) देखो अविरल ।

अबुझ–(हिं०वि०) देखो अबूझ ।

अबुद्धि–(सं०स्त्री०) ज्ञान का अभाव, (वि०) बुद्धिहीन, नासमझ, **अबुद्धिपूर्वक**–मूर्खता से ।

अबुध–(सं०पुं०) मूर्ख, गँवार ।

अबूझ–(हिं०वि०) अबोध ।

अबे–(हिं०अव्य०) ओ, अरे, क्योंरे—यह अव्यय अपने से छोटे का सम्बोधन करने में प्रयोग होता है, **अबे तबे बोलना**–तिरस्कार सूचक वाक्य बोलना ।

अबेध–(हिं०वि०) अविद्ध, न छेदा हुआ ।

अबेर–(स०स्त्री०) विलम्ब, देर ।

अबेश–(हिं०वि०) अधिक, बहुत ।

अबोध–(सं०वि०) अज्ञान, मूर्ख (पुं०) मूर्खता, **अबोधनीय**–न समझाने योग्य

अबोर–(प्रा०) आसाम की एक जाति का नाम ।

अबोल–(हि०वि०) न बोलने वाला, मौन अवाक्, चुप, जिसके विषय में कुछ कहा न जाय, (पुं०) बुरी बात, कुबोल, खराब बोली । **अबोला**–(हिं०पुं०) दुःख के कारण मौन रहना ।

अब्ज–(स०नपु०) जल मे उत्पन्न वस्तु, पद्म, कमल, (पुं०) शंख, कपूर, चन्द्रमा, धन्वतरि, सौ करोड़ की संख्या, **अब्जबांधव**–सूर्य; **अब्जयोनि** – ब्रह्मा, **अब्जवाहन**–शिव **अब्जहस्त**–सूर्य ।

अब्जा–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी ।

अब्द–(सं०पुं०) मेघ, बादल, आकाश, साल, वर्ष, **अब्दवाहन**–शिव इंद्र, **अब्दशत**–सौ वर्ष का काल, **अब्दसहस्र**–हजार वर्ष का समय, **अब्दसार**–कपूर ।

अब्धि–(सं०पुं०) सरोवर, तालाब, समुद्र, सागर, चार या सात की संख्या ।

अब्धिज–(सं०वि०) समुद्र में उत्पन्न (पुं०) चंद्रमा शंख अश्विनीकुमार ।

अब्धिजा–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी सुरा **अब्धिसार**–(सं०पु०) रत्न । **अब्धाग्नि**–(सं०पुं०) बड़वानल ।

अब्रह्मण्य–(सं०नपुं०) ब्राह्मण विरुद्ध, जो कार्य ब्राह्मण के करने योग्य न हो ।

अब्रह्मविद–(सं०वि०) ब्रह्म को न पहिचानने वाला ।

अब्राह्मण–(सं०पुं०) जो ब्राह्मण शुद्ध आचरण का न हो, ब्राह्मण के कर्म को न करने वाला मनुष्य ।

अभक्त–(सं०वि०)भक्ति न रखने वाला, श्रद्धाहीन, विभाग रहित, न बाँटा हुआ, पूरा, समूचा । **अभक्ति**–(सं०स्त्री०) भक्ति का अभाव, अविश्वास । **अभक्तिमान्**–भक्तिहीन, अविश्वासी ।

अभक्ष–(हिं०वि०) अभक्ष्य, न खाने योग्य । **अभक्षण**–भोजन न करने की स्थिति, उपवास ।

अभक्ष्य–(सं०वि०) अखाद्य, न भोजन करने योग्य, जिसका खाना धर्मशास्त्र के विरुद्ध हो । **अभक्ष्य भक्षण**–निषिद्ध पदार्थ का भोजन ।

अभगत–(हिं०वि०) अभक्त, श्रद्धाहीन ।

अभग्न–(सं०वि०) बिना टूटा हुआ, समूचा, अखण्ड ।

अभंगुर–(सं०वि०) स्थिर, न टूटने वाला ।

अभद्र–(सं०वि०) अमंगल, अशुभ, अशिष्ट, बुरा (सं०नपु०) कष्ट, दुःख । **अभद्रता**–(सं०स्त्री०) अमंगलता, अशिष्टता, दुष्टता ।

अभय–(सं०नपुं०)भय का अभाव, शांति, रक्षा, (पुं०) शिव, महादेव (वि०) भयशून्य, निडर, निर्भय । **अभय देना**–शरण देना । **अभयदक्षिणा**–(सं०स्त्री०) आपत्ति से बचने के निमित्त ब्राह्मण को दान देना । **अभयदान**–(सं०नपुं०) त्रास से मुक्त होने के लिये वचन देना, शरण देना । **अभयपद**–(सं०नपुं०) मुक्ति, मोक्ष । **अभयप्रदान**–देखो अभयदान । **अभयवचन**–(सं०नपुं०) भय न रहने के लिये आश्वासन देना, डर से छुड़ाने की प्रतिज्ञा ।

अभया–(सं०स्त्री०) हरीतकी, हर्रे, विजया, भांग ।

अभर–(हिं०वि०). न उठाने योग्य, न ले चलने योग्य ।

अभरन–(हि०पु०) आभरण, (वि०) तिरस्कृत, अपमानित ।

अभरम–(हिं०वि०) भ्रमरहित, शंकाशून्य, अभ्रान्त, भ्रम न करने वाला, निडर, (क्रि०वि०) असन्दिग्ध भाव में, निश्चय से, शंका छोड़ कर ।

अभल–(हिं०वि०) अश्रेष्ठ, जो भला न हो, बुरा ।

अभव–(सं०पु०) विनाश, मोक्ष, छुटकारा ।

अभव्य–(स०नपु०) अमंगल, दुर्भाग्य; (वि०) अद्भुत, अशुभ, अपूर्व अनोखा, विलक्षण, असभ्य, नीच ।

अभाऊ–(हिं०वि०) न भाने वाला, जो सुहावना न हो, अशोभित, बुरा लगने वाला ।

अभाग–(स०पु०) अंश का अभाव, भागरहित, समूचा (हिं०पुं०) अभाग्य,

अभागा–(हिं०वि०) भाग्यहीन, प्रारब्धहीन, जिसका भाग्य बुरा हो ।

अभागी–(हि०वि०स्त्री०) भाग्यहीन (स्त्री०), देखो अभागा ।

अभाग्य–(सं०नपुं०) मन्दभाग्य, भाग्यहीनता, दुर्दैव ।

अभाजन–(स०नपु०) मन्दपात्र, मूढ़, मूर्ख ।

अभार्य–(सं०पुं०) बिना पत्नी का, जिसकी स्त्री न हो ।

अभाव–(सं०पुं०) सत्ता की शून्यता, अनस्तित्व, असत्व, अनवस्था, घाटा, कमी, विरोध, दुर्भाव, (वि०) अलंकार में स्थायी भावों से रहित, अनुराग रहित । **अभावना**–(स०स्त्री०) विचार का अभाव, ध्यान का न होना । **अभावनीय**–(सं०वि०) अचिन्तनीय, जिसका सोच न किया जावे । **अभावित**–(सं०वि०) भावना न किया हुआ ।

अभाषण–(सं०नपुं०) मौनभाव ।

अभास–(हिं०) देखो अभास ।

अभि–(सं० अव्य०) यह शब्द उपसर्ग की तरह नीचे लिखे अर्थों में प्रयोग होता है, ओर भीतर, वास्ते, लिये, से, पर, पास, सामने, समीप, अच्छी तरह । **अभिकांक्षा**–(सं०स्त्री०) अभिलाषा, बांछा, इच्छा । **अभिकांक्षित**–(सं०वि०) वांछित, चाहा हुआ । **अभिकांक्षी**–(सं०वि०) अभिलाषा युक्त, आकांक्षा रखनेवाला । **अभिकाम**–(सं०पु०) अभिलाषा, बांछा, इच्छा ।

अभिक्लत–(सं०वि०)प्रकाशित, तैयार, भरा हुआ । **अभिक्रम, अभिक्रमण**–(सं०) आरोहण, आक्रमण, चढ़ाई ।

अभिक्रान्त–(सं०वि०) प्राप्त, आया

हुआ, आक्रमण किया हुआ, आरम्भ किया हुआ। **अभिक्रान्ती**-(सं०वि०) उद्योगी, कामकाजी। **अभिक्रोश**-(सं०पु०) निन्दा, घृणा। **अभिक्रोशक** निन्दक। **अभिख्यात**-(सं०वि०) प्रसिद्ध **अभिख्यान**-(सं०नपुं०) यश, कीर्ति, प्रसिद्ध **अभिगत**-(सं०वि०) पास पहुँचा हुआ, सामने आया हुआ। **अभिगम, अभिगमन**-(सं०) पास जाना, पहुँच, स्त्री संग, सहवास। **अभिगामी**-(सं०वि०) समीप जानेवाला, स्त्री से संभोग करनेवाला। **अभिगुप्त**-(सं०वि०) अभिरक्षित, छिपा हुआ। **अभिगुप्ति**-(सं०स्त्री) निरीक्षण, **अभिगृहीत**-(सं०वि०) पकड़ा हुआ। **अभिगोप्ता**-(सं०वि०) अच्छी तरह रक्षा करने वाला। **अभिग्रह**-(सं०पु०) आक्रमण, अभियोग, लड़ाई। **अभिघात**-(सं०पु०) ताड़न, प्रहार, चोट, दो वस्तुओं की परस्पर रगड़। **अभिघातक, अभिघाती** - (सं०पुं०) मारने वाला शत्रु। **अभिचर**-(सं०पु०) मन्त्र तन्त्र द्वारा मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा वशीकरण के प्रयोग करना, **अभिचारक, अभिचारी**-उपर्युक्त प्रयोगों का करने वाला। **अभिजन**-(सं०पुं०) वंश, कुल, परिवार, जन्मभूमि, कुलश्रेष्ठ, प्रसिद्धि, ख्याति। **अभिजय**-(सं०पुं०) विजय, जीत। **अभिजात**-(सं०वि०) उच्च कुल में उत्पन्न, कुलीन, पण्डित, श्रेष्ठ, बड़ा, मनोहर, मधुर, योग्य, पूज्य।

अभिजित्-(सं०वि०) सामने होकर शत्रु को जीतने वाला, एक नक्षत्र जिसकी आकृति सिंघाड़े के समान होती है, जो दो तारों से बना हुआ देख पड़ता है।

अभिज्ञ-(सं०वि०) निपुण,कुशल,बुद्धिमान्

अभिज्ञा-(सं०स्त्री०) वह संस्कार जो पहले देखी हुई बात से चित्त में उत्पन्न होता है। **अभिज्ञात**-(सं०वि०) पूर्व परिचित, पहिले से जाना हुआ। **अभिज्ञान**-(सं०नपुं०) स्मृति, ज्ञान, चिह्न, जिसको देखकर पूर्व विषय का स्मरण हो जावे। **अभिज्ञापक**-(सं०वि०) सूचित करनेवाला, समाचार पहुँचाने वाला।

अभितप्त-(सं०वि०) जलाया हुआ, दुःखी, उदास।

अभिताप-(सं०पुं०) संक्षोभ, उद्वेग, अभितृप्त(सं०वि०) अच्छी तरह सन्तुष्ट किया हुआ।

अभितोमुख-(सं०वि०) जिसका मुख चारो ओर रहे।

अभिदक्षिण-(सं०अव्य०) दक्षिण की ओर

अभिदर्शन-(सं०नपुं०) सन्मुख दर्शन।

अभिदिष्ट-(सं०वि०) संकेत किया हुआ।

अभिद्रुत-(सं०वि०) भागता हुआ, आक्रांत

अभिद्रोह-(सं०पुं०) अपकार, निर्दयता, अत्याचार।

अभिधा-(सं०स्त्री०) कथन, नाम, अलंकार मे शब्द की सांकेतिक अर्थ बतलाने वाली शक्ति।

अभिधान-(सं०नपुं०) कथन, बातचीत, नाम, शब्दार्थ प्रकाशक ग्रन्थ। **अभिधानक**-(सं०नपुं०) कोलाहल।

अभिधानी-(सं०स्त्री०) रस्सी, डोरी।

अभिधानीय-(सं०वि०) नाम लिया जानेवाला।

अभिधायक, अभिधायी-(सं०वि०) बोलने वाला, बतलाने वाला कहने वाला, नाम लेने वाला।

अभिधावक-(सं०वि०) आक्रमण करने वाला, टूट पड़नेवाला।

अभिधावन-(सं०नपुं०) आक्रमण,आखेट

अभिधेय-(सं०वि०) वाच्य, जिसके विषय में संकेत किया गया हो, वर्णन करने योग्य।

अभिनत-(सं०वि०) झुका हुआ।

अभिनन्दन-(सं०नपुं०) आनन्द, सन्तोष, सन्तुष्ट करने के लिये प्रशंशा, इच्छा, प्रोत्साहन, **अभिनन्दनपत्र** किसी महान् व्यक्ति के आगमन पर संतोष तथा आनन्द प्रगट करने के निमित्त अर्पण किया हुआ मानपत्र। **अभिनन्दनीय**-(सं०वि०) प्रशंसानीय, बन्दनीय, **अभिनन्दित**-(सं०वि०) प्रशंसित, वन्दनीय।

अभिनम्र-(सं०वि०) आगे को ओर झुका हुआ।

अभिनय-(सं०पुं०) मन के भावों को प्रकाशित करनेवाली अंगों की चेष्टा, बनावटी हावभाव से किसी विषय का बनावटी यथार्थ अनुकरण करके दिखाना, सवाँग, नाटक का खेल।

अभिनव-(सं०वि०) नवीन, नया, हाल का, अनुभव हीन। **अभिनवयौवन**-नई जवानी।

अभिनिधन-(सं०वि०) मरणासन्न, जो मर रहा हो।

अभिनिधान-(सं०नपुं०) सन्मुख स्थापन।

अभिनियुक्त-(सं०वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

अभिनिविष्ट-(सं०वि०) गड़ा हुआ, आग्रहयुक्त, चित्त लगाये हुए, चिन्ता से व्याकुल, घबड़ाया हुआ। **अभिनिविष्टता**-(सं०स्त्री०) मनोयोगिता, व्यग्रता।

अभिनिवेश-(सं०पुं०) प्रवेश, आसक्ति, लीनता,मनोयोग,प्रणिधान,दृढसंकल्प, तत्परता, योगशास्त्र के अनुसार मृत्यु के विषय में भयजनक अज्ञान।

अभिनिवेशित-(सं०वि०) निक्षिप्त, फेका हुआ।

अभिनिवेशी-(सं०वि०) आग्रह युक्त,हठी

अभिनीत-(सं०वि०) समीप लाया हुआ, युक्त, भूषित, अलंकृत, उचित कृपालु, अभिनय किया हुआ, अनुकरण किया हुआ।

अभिनीति-(सं०स्त्री०) मीठे वाक्य, मित्रता, सभ्यता, कृपा, अभिनय।

अभिनीयमान-(सं०वि०) समीप लाया जाने वाला।

अभिनेता-(सं०पु०) अभिनय करने वाला पुरुष, सवाँग दिखलानेवाला नाटक का पात्र। **अभिनेत्री**-(सं०स्त्री०) अभिनय दिखलाने वाली स्त्री।

अभिनेय-(सं०वि०) देहादि चेष्टा द्वारा अनुकरण करने योग्य, खेला जाने योग्य नाटक, करने योग्य।

अभिन्न-(सं०वि०) अपृथक् जो भिन्न न हो, दृढ़, पुष्ट, सम्बद्ध, मिला हुआ, गणित में पूर्णाङ्क। **अभिन्नता**-(सं०स्त्री०) अखण्डता, पूर्णता।

अभिन्नपद-(सं०पुं०) अलंकार में श्लेष का एक भेद। **अभिन्नपुट**-(सं०पु०) महुवे का फूल, कमल।

अभिन्नात्मा-(सं०वि०) एक हृदय।

अभिपतन-(सं०नपु०) नीचे को गिरना, आक्रमण।

अभिपन्न-(सं०वि०) आपद्ग्रत, अभिभूत,

अभिपीडित-(सं०वि०) पीड़ा दिया हुआ व्यथित।

अभिपूजित-(सं०वि०) सम्मानि, प्रशस्त

अभिपूर्ण-(सं०वि०) अच्छी तरह भरा हुआ।

अभिप्रयण-(सं०पुं०) अनुरंजन,प्रेम,कृपा।

अभिप्रणीत-(सं०वि०) अच्छी तरह बना हुआ।

अभिप्रतप्त-(सं०वि०) बहुत उष्ण, अतिशुष्क।

अभिप्राप्त-(सं०वि) मिला हुआ, हस्तगत

अभिप्राय-(सं०पु०)आशय, तात्पर्य, अर्थ

अभिप्रीति-(सं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा

अभिप्रेत-(सं०वि०) अभिलषित, इच्छा करने योग्य।

अभिबुद्धि-(सं०स्त्री०) बुद्धी की इन्द्रिय। **अभिभंग**-(सं०वि०) तोड़ने वाला, टूटा हुआ।

अभिभव-(सं०) पराजय, अनादर तिरस्कार। **अभिभवनीय** (सं०वि०) हरने वाला। **अभिभावक** (सं०वि०) पराजयकारी, हराने वाला, अपमान करने वाला, रक्षक, आत्मीय, स्वजन। **अभिभावन**-(सं०नपु०) विजय, जीत। **अभिभावी**-(सं०वि०) जीतने वाला, अपमान करने वाला। **अभिभावुक**-(सं०वि०) देखो अभिभावी।

अभिभाषण-(सं०नपु०) सन्मुख बोलना।

अभिभाषित-(सं०वि०) निवेदित, कहा हुआ। **अभिभावी**-(सं०वि०) सामने बोलने वाला।

अभिभूत-(सं०वि०) विचलित, घबड़ाया हुआ, पीड़ित, पराभूत, हराया हुआ, व्याकुल,वश में लाया हुआ। **अभिभूति**-(सं०स्त्री०) पराजय, हार, अपमान।

अभिमण्डन-(सं०नपु०) शृङ्गार, सजधज। **अभिमण्डित**-(सं०वि०) अलंकृत, शृङ्गार किया हुआ।

अभिमत-(सं०वि०) सम्मत, अभीष्ट, वांछित, स्वीकार किया हुआ, (पु०) अभिलाषा,सम्मति,विचार,**अभिमतता**-(सं०स्त्री०) अनुरूपता, इच्छा, प्रेम।

अभिमति-(सं०स्त्री०) अभिमान,अहंकार, अभिलाषा,आदर,सम्मान,मिथ्या-ज्ञान

अभिमन्तव्य-(सं०वि०) स्पृहणीय, अधिक सम्मान किया जाने वाला।

अभिमन्त्रण-(सं०नपु०)आमन्त्रण,बुलाहट, मीमांसोक्त मन्त्र द्वारा संस्कार। **अभिमन्त्रित**-(सं०वि०) संस्कार किया हुआ, जादू किया हुआ।

अभिमन्यु-(सं०पु०)अर्जुन के पुत्र का नाम।

अभिमर्दन-(सं०नपु०) युद्ध, लड़ाई, शत्रु द्वारा देश का नाश।

अभिमर्दी-(सं०पु०) कष्ट पहुँचानेवाला, पीड़ा देने वाला।

अभिमर्श,अभिमर्ष-(सं०पु०) घर्षण,स्पर्श; **अभिमर्षक**-स्पर्श करनेवाला, छूने वाला। **अभिमर्षण**-स्पर्श,पराभाव।

अभिमाद-(सं०पु०) मद।

अभिमान-(सं०पु०) अहंकार, मिथ्या ज्ञान, गर्व, शृङ्गार रस की एक विशेष अवस्था, **अभिमानता**-(सं०स्त्री०) धृष्टता, दर्प। **अभिमानशून्य**-(सं०वि०) गर्व रहित, बिना घमंड का। **अभिमानित**-(सं०वि०) अभिमान युक्त, घमंडी। **अभिमानी**-(सं०वि०) गर्व युक्त, अहंकारी, घमंडी

अभिमुख-(सं०क्रि०वि०) समक्ष, सन्मुख, सामने। **अभिमुखता**-समीपता। **अभिमुखीभाव**-अनुकूलता, सन्मुख आजाना; **अभिमुखीभूत**-सामने मुँह किये हुए।

अभिमूर्छित-(सं०वि०) विह्वल, विक्षिप्त

अभिम्लान-(सं०वि०) मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।

अभियाता-(सं०पु०) सामने से धावा करने वाला।

अभियान-सं(०नपु०) आक्रमण चढ़ाई।

अभियुक्त-(सं०वि०) आक्रमण किया हुआ, निन्दित, जिस पर अभियोग चलाया गया हो, प्रतिवादी, **अभियोक्ता**-(सं०पु०)अभियोगकर्ता, वादी,

अभियोग-(सं०पु०) किसी के किये हुए अपकार के निवारण के लिए न्यायालय मे प्रार्थना, युद्ध के लिये आक्रमण, उद्योग, दोषारोपण। **अभियोगी**-(सं०पु०) अभियोगकर्ता, आक्रमण करने वाला, आग्रही।

अभिरक्षण-(सं०स्त्री०) मन्त्र पढ़कर राक्षसादि से सुरक्षित रहने के लिये चारो दिशाओं में सरसों, जल इत्यादि फेंकना; **अभिरक्षा**-इस प्रकार की रक्षा; **अभिरक्षित**-चारो ओर से सुरक्षित।

अभिरंजित-(सं०वि०)रंगाहुआ,प्रेमासक्त

अभिरत-(सं०वि०) प्रीतियुक्त, प्रसन्न, आरक्त। **अभिरति**-(सं०स्त्री०)अत्यन्त आसक्ति, प्रसन्नता।

अभिरना-(हिं०क्रि०) सामना करना, भिड़ना, लपटना, मिलाना।
अभिरमण-(सं०नपुं०) अनुराग, हर्ष।
अभिरमणीया, अभिरम्य-(सं०वि०) रमणीय, मनोरम, क्रीड़ा करने योग्य।
अभिराम-(सं०वि०)सुन्दर, प्रिय, प्रसन्न करने वाला। **अभिरामता**-(सं०स्त्री०) सौन्दर्य, मनोहरता। **अभिरामी**-(सं०वि०) आनन्द करने वाला।
अभिरुचि, अभिरुची-(सं०स्त्री०) अत्यन्त रुचि, इच्छा, स्वाद। **अभिरुचित**-(सं०वि०) प्रसन्न, हर्षित।
अभिरूप-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर, अप्रिय, उचित।
अभिलक्ष्य-(सं०वि०) लक्ष्य करने योग्य
अभिलंघन-(सं०नपुं०) उल्लंघन।
अभिलषण-(सं०नपुं०)उत्कंठा, लालच।
अभिलषित-(सं०वि०) इच्छित, वांछित, चाहा हुआ।
अभिलाख-(हिं०स्त्री०)अभिलाषा, वांछा। **अभिलाखना**-(हिं०क्रि०) उत्कण्ठित होना, इच्छा करना। **अभिलाखा**-(हिं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा। **अभिलाखी**-(हिं०वि०)अभिलाषा करने वाला
अभिलाप-(सं०पुं०)वार्तालाप,बातचीत।
अभिलाष-(सं०पुं०) इच्छा,मनोकामना, अनुराग, लोभ, लालच। **अभिलाषक**-इच्छा करने वाला, आकांक्षी।
अभिलाषा-(सं०स्त्री०) देखो अभिलाष। **अभिलाषी**-(सं०वि०)देखो अभिलाखी **अभिलासि, अभिलासा**-(हिं०) देखो अभिलाष।
अभिलिखित-(सं०वि०)अक्षरों में लिखा हुआ।
अभिलीन-(सं०वि०) चपटा हुआ, हृदय से लगाया हुआ।
अभिलुप्त-(सं०वि०)उद्विग्न,घबड़ाया हुआ
अभिलेखन-(सं०नपुं०) पत्थर पर अक्षरों की खोदाई, शिला लेख।
अभिवचन-(सं०नपुं०)सत्य वचन,प्रतिज्ञा।
अभिवदन-(सं०नपुं०) अनुकूल वाक्य, (वि०) अनुकूल वार्ता करने वाला, प्रसन्नमुख।
अभिवन्दन-(सं०नपुं०)प्रणाम,नमस्कार।
अभिवन्दना-(सं०स्त्री०) अभिनन्दन, प्रणाम।
अभिवर्ता-(सं०वि०) सन्मुख,जाने वाला।
अभिवर्षण-(सं०नपुं०) सब दिशाओं में वर्षा, गहरी वर्षा।
अभिवांछित-(सं०वि०)अभिलाषा किया हुआ।
अभिवाद-(सं०पुं०) प्रणाम, नमस्कार;
अभिवादक-प्रणाम करने वाला।
अभिवादन-(सं०पुं०)नमस्कार, प्रणाम, स्तुति, वन्दना। **अभिवादित**-(सं०वि०) नमस्कार किया हुआ।
अभिवाद्य-(सं०वि०)नमस्कार करने योग्य
अभिवास, अभिवासन-(सं०) आवरण, ओढ़ना।
अभिविख्यात-(सं०वि०) अच्छी तरह प्रसिद्ध।
अभिविज्ञप्त-(सं०वि०) सब लोगों को अच्छी तरह सूचित किया हुआ।
अभिविनीत-(सं०वि०)सुशील, सज्जन।
अभिवृद्धि-(सं०स्त्री०) समृद्धि, बढ़ती।
अभिव्यक्त-(सं०वि०) प्रकाशित, बतलाया हुआ। **अभिव्यक्ति**-(सं०स्त्री०) प्रकाशन घोषणा, ढिंढोरा, साक्षात्कार, साङ्ख्यमत से अप्रत्यक्ष सूक्ष्म रूप से कार्य का आविर्भाव, किसी पदार्थ का एक रूप से दूसरे में परिवर्तन।
अभिव्यंजक-(सं०वि०) प्रकाशक, निर्देशक। **अभिव्यंजन**-(सं०नपुं०) प्रकाशन।
अभिव्यापक-(सं०वि०) सब दिशाओं में अथवा शरीर के सब अवयवों मे व्यापक।
अभिव्याप्त-(सं०वि०)सम्मिलित, मिला हुआ। **अभिव्याप्ति**-(सं०स्त्री०) सब दिशाओं में व्याप्ति।
अभिव्याहृत-(सं०वि०) उच्चारित, बोला हुआ।
अभिशङ्क-(सं०वि०) सब तरह से शंका युक्त। **अभिशङ्का**-(सं०स्त्री०) भ्रम, संशय। **अभिशङ्कित**-(सं०वि०)शङ्कायुक्त, भयत्रस्त।
अभिशप्त-(सं०वि०) शाप दिया हुआ। निन्दित, अभियोग लगाया हुआ।
अभिशब्दित-(सं०वि०) सामने (मुंह पर) कहा हुआ।
अभिशस्त-(सं०वि०) झूठा अपवाद लगा हुआ।
अभिशाप-(सं०पुं०) मिथ्यापवाद, झूठा दोष, कोस। **अभिशापित**-(सं०वि०) अभिशाप दिया हुआ, कोसा हुआ।
अभिशक्त-(सं०वि०) पराजित, निन्दित
अभिषङ्ग-(सं०पुं०) शपथ, अभिशाप, पराजय, हार, आसक्ति, व्यसन, संगति, पूर्ण संयोग, आलिङ्गन,मिथ्या दोषारोपण, शोक, प्रेतबाधा।
अभिषिक्त-(सं०वि०) विधि पूर्वक नहलाया हुआ, अभिषेक किया हुआ, मन्त्र पढ़कर जलसे मार्जन किया हुआ।
अभिषुक-(सं०पुं०)पिस्ता-नामका मेवा।
अभिषेक-(सं०पुं०) शान्ति के निमित्त विधिपूर्वक सिंचन, अधिकारी बनने के लिये स्नान, मन्त्र से मार्जन, पुरश्चरण के अन्त में मन्त्र द्वारा सिर पर जल डालना, दोलायन्त्र में जल भर कर मन्त्र पढ़ते हुए शिवलिङ्ग पर धीरे धीरे पानी टपकाना।
अभिषेक शाला-(सं०स्त्री०) वह भवन जिसमे राज्याभिषेक का संस्कार किया जाता है।
अभिषेचन-(सं०नपुं०) देखो अभिषेक।
अभिष्टुत-(सं०वि०) प्रशंसित, स्तुति किया हुआ।
अभिष्यन्दी, अभिस्यन्द-(सं०पुं०) अति वृद्धि, बहाव, जल का गिरना, आँख का एक रोग, आँख आना या उठना।
अभिस्यन्दी, अभिस्यन्धि-(सं०वि०) टपकने वाला, चूने वाला।
अभिष्वङ्ग-(सं०पुं०)अत्यन्त प्रेम बड़ा मेल
अभिसंधि-(सं०स्त्री०) धोखा, वंचना, षड्यन्त्र।
अभिसंवृत-(सं०वि०) आच्छादित, ढपा हुआ।
अभिसंस्तुत-(सं०वि०) अति प्रशंसित।
अभिसङ्क्षेप-(सं०पुं०) बोध, बुद्धि, मेधा, ज्ञान।
अभिसन्तप्त-(सं०वि०) अतिव्यथित, दु:खित, पीड़ित।
अभिसन्धक-(सं०वि०)आक्षेप करनेवाला
अभिसन्धान-(सं०नपुं०)अन्तिम आशय।
अभिसन्धि-(सं०पुं०)देखो अभिसन्धान।
अभिसन्नद्ध-(सं०वि०)अलंकृत, सजा हुआ।
अभिसम्पन्न-(सं०वि०) पूर्ण रूप से सफल
अभिसम्बन्ध-(सं०पुं०) अधिक सम्पर्क, परामर्श।
अभिसन्मुख-(सं०वि०) मुख आगे किए हुए।
अभिसर-(हिं०पुं०) अनुचर, भृत्य।
अभिसरण-(हिं०नपुं०) सन्मुख गमन, अभिगमन।
अभिसरना-(हिं०क्रि०) गमन करना, जाना, निर्दिष्ट स्थान में पहुँचना।
अभिसार-(हिं०पुं०) युद्ध, चढ़ाई,आक्रमण, सम्मिलन, बल, सहारा, सहाय, नायक का नायिका से मिलने के लिये संकेत स्थान को जाना। **अभिसारना**-(हिं०क्रि०) चले जाना, किसी संकेत स्थान में प्रियसे मिलने के लिये प्रस्थान करना।
अभिसारिका-(सं०स्त्री०) वह नायिका जो काम पीड़ित होकर अपने प्रियतम को संकेत स्थल में भेजे अथवा स्वयं जावे।
अभिसारी-(हिं०वि०) सन्मुख जानेवाला, आक्रमण करनेवाला, साधक, सहायक।
अभिसारिणी-(हिं०स्त्री०) अनुचरी, नौकरनी, अभिसारिका।
अभिसेख-(हिं०पुं०) अभिषेक देखो।
अभिसेवन-(हिं०नपुं०) बड़ी सेवा।
अभिस्नेह-(हिं०पुं०) अत्यन्त अनुराग।
अभिहत-(हिं०वि०) मारा पीटा हुआ, सन्तप्त; गणित में गुणन किया हुआ।
अभिहर-(हिं०वि०)उठा ले जानेवाला।
अभिहरणीय-हिं०वि०) पास में लाने योग्य।
अभिहर्ता-(हिं०पुं०) हरण करने वाला, उठा ले जाने वाला।
अभिहार-(हिं०पुं०) आलिङ्गन, बन्धन, अभियोग।
अभिहित-(हिं०वि०) भाषित, कथित, कहा हुआ।
अभिहितत्व-(हिं०नपुं०)निदर्शन,घोषणा।
अभी-(हिं०वि०) भय रहित, निर्भय।
अभी-(हिं०क्रि०वि०)इसी समय, तुरत।
अभीक-(हिं०वि०)निर्भीक, निडर, क्रूर, निष्ठुर, चिन्ता युक्त, उत्सुक।
अभीक्ष्ण-(हिं०वि०) निरन्तर, सतत; (अव्य०)बारंबार, सर्वदा,बहुत शीघ्र।
अभीत-(हिं०वि०) निर्भय, भय रहित, निडर। **अभीति**-(हिं०स्त्री०) भय का अभाव,
अभीप्सित-(हिं०वि०) वांछित, इच्छा किया हुआ।
अभीम-(हिं०वि०) जो भयंकर न हो, जिसको डर न लगता हो।
अभीर-(हिं०पुं०) ग्वाला, अहीर, एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में ग्यारह मात्रा होती हैं।
अभीरी-(हिं०स्त्री०) अहिरों की भाषा।
अभीरु-(हिं०वि०) निर्भय, निडर; (पुं०) शिव।
अभीष्ट-(हिं०वि०) वांछित, ईप्सित, चाहा, हुआ, प्रिय, (पुं०) मनोरथ, चाही हुई बात। **अभीष्टता**-(हिं०स्त्री०) प्रियता, चाह।
अभुवाना-(हिं०क्रि०) अधीर होना, अधिक चेष्टा करना, हाथ पैर पटकना और सिर को घूमना।
अभुक्त-(हिं०वि०) अभक्षित, न खाया हुआ, व्यवहार में न लाया हुआ;
अभुक्तमूल-ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त के तथा मूल नक्षत्रके आदि के दो दण्ड जिसमे उत्पन्न बालक पितृधन का भोग नहीं करता।
अभुग्न-(हिं०वि०) आरोग्य, रोग रहित स्वस्थ।
अभुज-(हिं०वि०) बाहु हीन, लूला।
अभू-(हिं०पुं०) विष्णु, नारायण (हिं०-क्रि०वि०) अभी इसी समय।
अभूखन-(हिं०पुं०) आभूषण।
अभूत-(सं०वि०) अविद्यमान, विलक्षण, अपूर्व, वर्तमान, प्राणहीन।
अभूतपूर्व-(हिं० वि०) पहिले न होने वाला, जो पहिले न हुआ हो।
अभूत शत्रु-(हिं०वि०)जिसके वैरी न हो।
अभूति-(हिं०स्त्री०) सम्पत्तिका अभाव, शक्ति का अभाव (वि०) सम्पति हीन, निर्धन।
अभूमि-(सं०पुं०) अनाश्रय, अपात्र, (सं०वि०) भूमि शून्य।
अभूयिष्ट-(सं०वि०) न्यून, कम।
अभूरि-(सं०वि०) कुछ, थोड़ा।
अभेद-(सं०पुं०) भेद का अभाव, ऐक्य, एकरूपता बराबरी, मेल, संघटन (वि०) अभिन्न, समान, न बाँटा हुआ।
अभेदक-(सं०वि०) न बाँटने वाला।
अभेदनीय-(सं०वि०) जो भेद न किया जा सके, विभक्त न होने वाला, अछेद्य। **अभेदवादी**-(सं०पुं०) जो मनुष्य परमात्मा और जीवात्मामें भेद नहीं देखता।
अभेद्य-(सं०वि०) जो तोड़ा या छेद न किया जा सके, जिसका विभाग न हो सके। **अभेद्यता**-(सं०स्त्री०) अविच्छेद्यता, टुकड़े न होने की स्थिति

भेय-(हिं०वि०) देखो अभेद ।
भेरना-(हिं०क्रि०) भिड़ाना, सटाना, मिलाना ।
भेरा-(हिं०पु०) युद्ध, झगड़ा, लड़ाई, ठक्कर, सामना, मुठभेड़ ।
भेव-(हिं०पु०) अभेद ।
भेषज-(सं०नपु०) विपरीत औषधि ।
भै-(हिं०) देखो 'अभय', 'अभी' ।
भैर-(हिं०पु०) वह रस्सी जिसमें करगह की कंघी लटकाई जाती है ।
भोक्ता-(सं०पु०) आनन्द न लेनेवाला
भोग-(सं०पु०) आनन्द का अभाव ।
अभोगी-(सं०वि०) देखो अभोक्ता ।
अभोग्य-(सं०वि०) न भोगने योग्य, काम में न लाने योग्य ।
अभोजन-(सं०नपु०) भोजन का अभाव, उपवास ।
अभोजित-(सं०वि०) भोजन न कराया हुआ ।
अभोज्य-(सं०वि०) अभक्ष्य, भोजन करने के लिये निषिद्ध ।
अभौतिक-(सं०वि०) पञ्चभूत से सम्बन्ध न रखने वाला ।
अभौम-(सं०वि०) भूमि से न उत्पन्न होने वाला ।
अभ्यङ्ग-(सं०पु०) शरीर में तेल का मर्दन, लीपना पोतना ।
अभ्यंजन-(सं०नपुं०) तेल का मर्दन, आँखों में सुरमा या काजल लगाना, सजावट, आभूषण । अभ्यंजनीय-(सं०वि०) मर्दन करने योग्य । अभ्यधिक-(सं०वि०) अधिक परिमाण का।
अभ्यनुज्ञा-(सं०स्त्री०) अनुमति, आज्ञा ।
अभ्यन्तर-(सं०नपु०) अन्तराल, बीच का स्थान, अन्तःकरण, हृदय, (वि०) भीतरी, मध्य का; अभ्यन्तर कला-विलास संबंधी गुप्त विद्या ।
अभ्यर्चन-(सं०नपु०) पूजन, पूजा ।
अभ्यर्चित-(सं०वि०) पूजित, प्रशंसित।
अभ्यर्थना-(सं०स्त्री०) सन्मुख प्रार्थना, अगवानी, आदर सहित प्रार्थना,
अभ्यर्थनीय-(सं०वि०) प्रार्थना करने योग्य, अगवानी करने योग्य ।
अभ्यर्थित-(सं०वि०) प्रार्थना किया हुआ, अगवानी किया हुआ।
अभ्यर्थी-(सं०वि०) प्रार्थना करने वाला
अभ्यर्हित-(सं०वि०) पूजित, प्रतिष्ठित ।
अभ्यवकाश-(सं०पुं०) खुला स्थान ।
अभ्यसन-(सं०नपु०) अभ्यास,व्यायाम ।
अभ्यसनीय-(सं०वि०) अभ्यास करने योग्य ।
अभ्यसित-(सं०वि०) अभ्यास किया हुआ
अभ्यस्त-(सं०वि०) अभ्यास किया हुआ, बारंबार किया हुआ, निपुण, शिक्षित ।
अभ्याख्यात-(सं०वि०) झूठा अभियोग लगाया हुआ ।
अभ्यागत-(सं०वि०) सन्मुख आया हुआ, (पु०) अतिथि, पाहुन, युद्ध, लड़ाई, रणक्षेत्र, पड़ोस ।
अभ्यघात-(सं०पु०)ताड़न,मार । अभ्यघाती-(सं०पु०) आक्रमण करने वाला
अभ्यारम्भ-(सं०पु०) प्रथम आरम्भ ।
अभ्यारूढ-(सं०वि०) बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ ।
अभ्यारोह-(सं०पु०) ऊपर का चढ़ाव, उन्नति ।
अभ्याश-(सं०पु०) निकट पड़ोस ।
अभ्यास-(सं०पु०) पुनरावृत्ति, साधन, अनुशीलन, शिक्षा, बान, स्वभाव, आवृत्ति, दोहराव । अभ्यासी-(सं०वि०) अभ्यास करनेवाला ।
अभ्याहत-(सं०वि०) आहत, चोट खाया हुआ ।
अभ्युक्त-(सं०वि०) सामने कहा हुआ, प्रकाशित ।
अभ्युत्थान-(सं०नपु०) किसीका आदर करने के लिये उठकर खड़े हो जाना, उठना, उद्भव, उन्नति, अधिकार प्राप्ति, उदय, उच्चपद की प्राप्ति ।
अभ्युत्थायी-(सं०वि०) उठने वाला ।
अभ्युत्थित-(सं०वि०) उठकर खड़ा हो गया हुआ ।
अभ्युदय-(सं०पुं०) मनोरथ की सिद्धि, वृद्धि, उन्नति, बढ़ती, आनन्द, शुभ-फल, आरम्भ, ग्रहों का उदय, दैवगति, शुभ अवसर । अभ्युदित-(सं०वि०) अच्छी तरह से निकला हुआ, बढ़ा हुआ, प्रसिद्ध किया हुआ।
अभ्युन्नत-(सं०वि०) उठा हुआ, बढ़ा चढ़ा
अभ्युन्नति-(सं०स्त्री०) अच्छी उन्नति ।
अभ्युपगमन-(सं०नपु०)प्रतिज्ञा,स्वीकार, नियम, विश्वास, न्याय में बिना देखी सुनी किसी बात के खण्डन होने पर उसकी विशेष परीक्षा करना ।
अभ्युपयुक्त-(सं०वि०) नियुक्त, काम में लगा हुआ ।
अभ्युषित-(सं०वि०)सन्मुख रहनेवाला।
अभ्र-(सं०नपु०) अभ्रक धातु, सुवर्ण, बादल, आकाश ।
अभ्रक-(सं०नपु०) अबरख धातु ।
अभ्रंलिह-(सं०वि०) गगनस्पर्शी, बहुत ऊँचा, (पुं०) वायु हवा ।
अभ्रम-(सं०पु०) सन्देह या भ्रम का न होना, अभ्रपुष्प-(सं०नपु०) वेंत का फूल, अभ्रमातङ्ग-(सं०पु०) इन्द्र का हाथी ऐरावत । (वि०) अभ्रान्त, न भूलने वाला । अभ्रमाला-(सं०स्त्री०) घटा, बादलों का समूह । अभ्रलिप्त (सं०वि०) बादलों से भरा हुआ ।
अभ्रसार-(सं०पु०) भीमसेनी कपूर ।
अभ्रातृ, अभ्रातृक-(सं०वि०) भ्रातृहीन, बिना भाई का ।
अभ्रान्त-(सं०वि०) प्रमादरहित, न घबड़ाया हुआ, अशुद्धि रहित, ।
अभ्रान्तबुद्धि-जिसकी बुद्धि बिगड़ी न हो । अभ्रान्ति-(सं०स्त्री०) भ्रान्ति का अभाव, घबड़ाहट का न होना ।
अमङ्गल-(सं०पुं०) रेंड का वृक्ष, (वि०) अशुभ, अकुशल,अमङ्गल शून्य, (पुं०) अकल्याण ।
अमन्द-(सं०वि०) जो मन्द न हो, तीव्र, उद्योगी, श्रेष्ठ, उत्तम ।
अमका-(हिं०पु०) अमुक, ऐसा ।
अमचूर-(हिं०पु०) सूखे आमकी बुकनी
अमण्ड-(सं०वि०) बिना माड़ का, आभूषण रहित ।
अमण्डित-(सं०वि०) आभूषित न किया हुआ, न सजाया हुआ ।
अमड़ा-(हिं०पु०) एक वृक्ष जिसमें बेर के बराबर फल लगते हैं जो खट्टे होते है और अचार बनाने के काम में आते हैं, अमरा, अमारी ।
अमत-(सं०पु०) रोग, मृत्यु, बीमारी, (वि०) अज्ञात, असम्मत ।
अमति-(सं०स्त्री०) ज्ञान का अभाव, मूर्खता, (वि०) ज्ञानहीन ।
अमत्त-(सं०वि०) निर्मद, मद रहित, जिसको गर्व न हो ।
अमत्सर-(सं०पु०) ईर्ष्या का अभाव ।
अमधुर-(सं०वि०)जो मीठा न हो,कड़ुवा
अमध्यम-(सं०वि०) जो बीच का न हो।
अमन-(फा०पु०) शान्ति, आनन्द, चैन, बचाव, रक्षा ।
अमनस्क-(सं०वि०) ज्ञान हीन, अचेतन।
अमनिया-(हिं०वि०) शुद्ध, स्वच्छ, पवित्र, जो छुवा न गया हो, अछूता।
अमनुष्य-(सं०पु०) मनुष्य से भिन्न प्राणी, देवता, यक्ष इ०। अमनुष्यता-(सं०स्त्री०) पुरुषहीनता, नपुंसकता ।
अमनैक-(हिं०पु०) सरदार, अवध के एक विशेष प्रकार के कृषक ।
अमनोगत-(सं०वि०) ध्यान में न लाया हुआ ।
अमनोज्ञ-(सं०वि०) चित्त को न प्रसन्न करने वाला ।
अमनोनीत-(सं०वि०) अनीप्सित, नापसन्द ।
अमनोहर-(सं०वि०) जो सुन्दर न हो, भद्दा, कुरूप ।
अमन्तव्य-(सं०वि०) ध्यान न दिया जाने वाला ।
अमन्त्र-(सं०वि०) जिसको वेद पढ़ने का अधिकार न हो ।
अमन्द-(सं०वि०) तीव्र, उत्तम, अधिक।
अमन्यमान-(सं०वि०) न माननेवाला ।
अममता, अममत्व-(सं०) ममता का अभाव, उदासीनता ।
अमर-(सं०वि०) न मरनेवाला, चिरस्थायी, (पु०) देवता, पारा, सेहुड़ का पौधा, सोना, रुद्राक्ष, हाथी, अमरकोश के रचयिता का नाम; अमरकाष्ट-देवदारु; अमरकुसुम-लवङ्ग, लौंग ।
अमरख-(हिं०पु०) क्रोध, रोष, अमर्ष, दुःख, क्षोभ ।
अमरखी-(हिं०वि०) क्रोधी, गुस्सावर ।
अमरण-(सं०नपुं०) अमरत्व,अनश्वरता, नित्यता । अमरणीय-(सं०वि०)अमर, कभी न मरने वाला । अमरता-(सं०स्त्री०) अनश्वरता, कभी न मरने की स्थिति, देवत्व, चिरजीवन ।
अमरत्व-(सं०पुं०) देखो अमरता ।
अमरपख-(हिं०पु०) अमरपक्ष, पितृपक्ष ।
अमरपति-(सं०पु०) देवताओं का स्वामी, इन्द्र ।
अमरपद-(सं०पु०) स्वर्ग,मोक्ष, मुक्ति ।
अमरपुर-(सं०पु०) देवताओं का नगर, अमरावती ।
अमरपुष्प-(सं०नपु०) कल्पवृक्ष,केतकी ।
अमरप्रभु-(सं०पुं०) इन्द्र, विष्णु ।
अमरबेल-(हिं०पुं०) अमरवल्ली, बिना जड़ और पत्ती की एक लता जो वृक्षपर फैलती है ।
अमरभर्ता-(सं०पुं०) देवताओं के स्वामी, इन्द्र ।
अमररत्न-(सं०नपुं०) स्फटिक,बिल्लौर।
अमरलोक-(सं०पु०) देवलोक, स्वर्ग ।
अमरवल्ली-(सं०स्त्री०) अमरबेल, आकाश बँवर ।
अमरस-(हिं०पु०) अमावट ।
अमरसरित-(सं०स्त्री०) जाह्नवी, गङ्गा
अमरसी-(हिं०वि०) आमके रसके सदृश
अमरस्त्री-(सं०स्त्री०) देवाङ्गना, अप्सरा
अमरा-(सं०स्त्री०) दूर्वा, दूब, घृतकुमारी, इन्द्रपुरी, गर्भनाड़ी, अभड़ा ।
अमराई-(हिं०स्त्री०) आम की बारी, आम का बगीचा ।
अमरांगना-(सं०स्त्री०)इन्द्रपुरी की अप्सरा
अमराधिप-(सं०पुं०) देवताओं के स्वामी इन्द्र ।
अमरापगा-(सं०स्त्री०) जाहनवी,गङ्गा ।
अमरालय-(सं०पु०) देवताओं का भवन, स्वर्ग ।
अमराव-(हिं०पुं०) आम की बारी ।
अमरावती-(सं०स्त्री०) देवताओं की नगरी, इन्द्रपुरी ।
अमरी-(हिं०स्त्री०)देवपत्नी,देवता की स्त्री
अमरुत-(सं०वि०) वायु रहित, बिना हवा का ।
अमरूत, अमरूद-(हिं०पु०) एक वृक्ष जिसका गोल गोल फल मीठा होता है
अमरेश-(सं०पुं०) इन्द्र, शिव ।
अमरेश्वर-(सं०पुं०), अमरैया-(हिं०) देखो अमराई ।
अमरोत्तम-(सं०वि०) देवताओं में सब से उत्तम ।
अमर्त्य-(सं०वि०) जो कभी न मरता हो ।
अमर्दित-(सं०वि०)पैरों से न कुचला हुआ
अमर्याद-(सं०वि०) सीमा रहित, अप्रतिष्ठित,अमर्यादा-(सं०स्त्री०)प्रगलभता, निर्लज्जता, अप्रतिष्ठा ।
अमर्ष-(सं०पु०) क्रोध,रोष, सहनशीलता का अभाव, असहिष्णुता, सीहस, अमर्षण-(सं०नपु०) क्रोध, अक्षमा, रोष ।
अमर्षहास-(सं०पु०) क्रोध की हँसी ।
अमर्षित-(सं०वि०) क्षमा रहित, क्रुद्ध ।
अमर्षी-(सं०वि०) क्रोधी, असहनशील ।
अमल-(सं०वि०) निर्मल, स्वच्छ, दोष सहित (नपु०) अभ्रक, कपूर, परमात्मा

(अ०पु०) व्यवहार, शासन, व्यसन, टेव, प्रभाव, समय, **अमलता**-(सं०स्त्री०) निर्मलता, निर्दोषता, स्वच्छता।
अमलतास-(हिं०पु०) एक चमकीले पीले फूल का वृक्ष जिसमें फुट डेढ़ फुट लम्बी गोल फलियां लगती हैं जिसके भीतर का गूदा औषधियों में प्रयोग किया जाता है। **अमलतासिया**-(हिं० वि०) अमलतास के फूल के समान, गन्ध की रंग का।
अमलपट्टा-(हिं०पु०) वह अधिकार पत्र जो किसी कार्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाता है।
अमलपतत्री-(स०पु०) वनकुक्कुट, जंगली हंस।
अमलबेत-(हिं०पु०) चूक, पालक, अम्बरी, एक लता जिसकी सूखी टहनी खट्टी होती है और पाचक चूर्ण में मिलाई जाती है।
अमलमणि, अमलरत्न-(सं०) स्फटिक, बिल्लौर।
अमला-(स० स्त्री०) लक्ष्मी, आमलकी, आँवला।
अमलानक-(स०नपु०) एक सदा बहार पुष्प विशेष।
अमलिन-(स०वि०) निष्कलङ्क, निर्मल, स्वच्छ।
अमली-(हिं०स्त्री०) इमली (अ०वि०) कार्य करने वाला, व्यवहार में आने वाला।
अमलूक-(हिं०पुं०) एक पहाड़ी वृक्ष जिसका फल खाया जाता है।
अमलोनी-(हिं०स्त्री०) नोनियाँ घास जिसकी पत्ती खट्टी होती है।
अमल्लक-(हिं०वि०) समूचा, पूरा।
अमसृण-(स०वि०) जो कोमल न हो, कठोर।
अमस्तक-(सं०वि०) बिना मस्तक का, बेसिर का।
अमहर-(हिं०पु०) छीले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।
अमहल-(हिं०वि०) भवनहीन, जिसके पास रहने के लिये घर न हो, व्यापक
अमा-(स०स्त्री०) अमावस्या, अमावस, (पु०) आत्मा, घर, यह संसार।
अमांस-(स०वि०) मांस हीन, दुर्बल।
अमाधौत-(हिं०पुं०) एक प्रकारका चावल
अमातना-(हिं०क्रि०) निमन्त्रण देना, बुला भेजना।
अमातृक-(स०वि०) मातृहीन, बिना माता का।
अमात्य-(स०पु०) मन्त्री, सचिव।
अमात्र-(स०वि०) असम्पूर्ण, असीम।
अमान-(सं०वि०) बिना नाप का, अभिमान रहित, अप्रतिष्ठित, गर्व रहित बचाव, पनाह।
अमानव-(स०वि०) अमानुष्य, जो मनुष्य न हो।
अमाननीय-(स०वि०) जो माननीय न हो, अमान्य।
अमाना-(हिं०क्रि०) पूरी तरह से भरा जाना, समाना, अटना, अभिमान दिखलाना, बह चलना, प्रसन्न होना।
अमानिता-(स०स्त्री०) लज्जा शीलता, नम्रता।
अमानी-(हिं०वि०) अभिमान रहित, बिना गर्व का, (स्त्री०) वह भूमि जिसका स्वामी सरकार हो और उसकी ओर से कलक्टर प्रबंध करता हो, भूमि का कोई कार्य जो अपने ही प्रबन्ध में हो, ठीकेदार आदि को न दी गई हो, भूमि कर जो कृषिफल के अनुसार कम की गई हो, मनमानी कार्यवाही, अन्धेर।
अमानुष-(सं०वि०) मनुष्य की शक्ति के बाहर, मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध, पैशाचिक (पु०) मनुष्यसे भिन्न प्राणी, देवता, राक्षस इ०। **अमानुषी**-(स० वि०) मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध, पैशाची, पाशविक।
अमाय-(स०वि०) माया शून्य, कपटरहित
अमाया-(स०स्त्री०) भ्रम का अभाव, शुचि, सचाई (हिं०वि०) निश्छल, कपटहीन, माया रहित।
अमारग (हिं०पु०) देखो अमार्ग।
अमार्ग-(स०पु०) मार्ग का अभाव, कुमार्ग, बुरी चाल, (वि०) मार्ग रहित, बेराह।
अमार्जित-(स०वि०) अशुद्ध मलिन, स्वच्छ न किया हुआ।
अमावट-(हिं०स्त्री०) आम का सूखा हुआ रस जो अनेक तहों में जमाया रहता है, अमरस।
अमावना-(हिं०) देखो अमाना।
अमावस-(हिं०स्त्री०) अमावस्या।
अमावसी-देखो अमावस्या।
अमावस्या, अमावास्या-(स०स्त्री०) किसी महीने के कृष्ण पक्ष की पंद्रहवीं तिथि।
अमाह-(हिं०पु०) आँख का एक रोग जिसमें लाल मांस निकल आती है, नाखूना।
अमाही-(हिं०वि०) नाखूना रोग संबंधी।
अमिट-(हि०वि०) न मिटने वाला, अवश्य होने वाला, स्यायी, अटल।
अमित-(स०वि०) असीम, अपरिमित, बहुत अधिक।
अमितवीर्य-(स०पु०) असीम शक्तियुक्त।
अमिलाभ-(सं०पु०) बुद्ध विशेष (वि०) असीम प्रभायुक्त।
अमित्र-(स०नपुं०) वैरी, शत्रु, (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो। **अमित्रता**-(स०स्त्री०) शत्रुता, वैर।
अमित्र सेना-(स०स्त्री०) शत्रु की सेना।
अमिथ्या-(स०अव्य०) सचमुच।
अमिय (हि०पुं०) अमृत। **अमिय मूरि** (हिं०स्त्री०) अमृत मूल, संजीवनी बूटी।
अमिरती (हिं०स्त्री०) देखो इमरती।
अमिल (हि०वि०) न मिलने वाला पृथक्
अमिलतास (हिं०) देखो अमलतास।
अमिलपट्टी (हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चौड़ी सिलाई।
अमिलित-(स०त्रि०) न मिला हुआ, पृथक्
अमिली (हिं०स्त्री०) देखो इमली विरोधी, अनुकूलता का अभाव।
अमिश्र-(स०वि०) संयोग हीन, न मिलाहुआ
अमिश्रण(स०नपु०) मिलावटका न होना
अमिश्र रशि-(स०पु०) गणित में एक से नव तक की संख्या।
अमिश्रणीय-(स०त्रि०) न मिलाने योग्य।
अमिश्रित-(सं०वि०) न मिलाया हुआ, बिना मिलावट का।
अमिष-(स०नपुं०) संसारी सुख, अकपट सत्य, (वि०) बिना छल का, निश्छल।
अमी-(हिं०पु०) अमृत। **अमीकर** (हिं० पु०) अमृत बरसाने वाला चन्द्रमा।
अमीत-(हिं०पु०) जो मित्र न हो, शत्रु।
अमुक-(स०वि०) जब किसी व्यक्ति या पदार्थ का नाम नहीं लिया जाता तब उसके स्थान में 'अमुक' शब्द का प्रयोग होता है, कोई।
अमुक्त-(स०वि०) सम्बद्ध, बँधा हुआ।
अमुक्ति-(स०स्त्री०) मोक्ष का अभाव, स्वतन्त्रता न होना।
अमुख-(स०वि०) मुखरहित, बिनामुखका
अमुख्य(स०वि०) अप्रधान, आधीन।
अमुग्ध-(स०वि०) अव्यग्र, जो व्याकुल न हो।
अमूक-(स०वि०) जो गूंगा न हो, वाचाल, बोलने वाला, प्रवीण।
अमूढ़-(स०वि०) बुद्धिमान्, जो व्यग्र न हो।
अमूर्त-(स०वि०) जिसका कोई आकार न हो, आकार रहित (पु०) परमेश्वर, आत्मा, शिव, आकाश, काल वायु दिशा। **अमूर्ति** (स०वि०) मूर्तिरहित, आकृतिहीन, निराकार (पु०) विष्णु।
अमूर्तिमान-(स्त्री०) अमूर्तिमती, मूर्तिरहित, निराकार, अप्रत्यक्ष।
अमूल-(स०वि०) मूल रहित, जिसका आदिकारण न हो, बिना जड़ का।
अमूलक-(स०वि०) निर्मूल, मिथ्या, असत्य।
अमूल्य-(स०वि०) मूल्यरहित, जिसका दाम स्थिर न हो, बहुमूल्य, अनमोल।
अमृत-(स०वि०) मरणशून्य, जो मरता न हो, प्रिय, सुन्दर (पुं०) देवता, इन्द्र सूर्य, आत्मा, शिव, जल, सुवर्ण, घी, दूध, अन्न, अति स्वादिष्ट पदार्थ, रोगनाशक औषधि, धन, वचनाग, वैकुण्ठ, मुक्ति, चमत्कार। **अमृतकर**,-(स०पुं०) चन्द्रमा। **अमृतकुण्डली**-(स०स्त्री०) एक प्रकार का बाजा, एक प्रकारकाछन्द। **अमृतगात**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द **अमृतगर्भ**-(हि०) पु०) जीव, ब्रह्मा (वि०) अमृत से भरा हुआ। **अमृतत्व**-(स०नपु०) मुक्ति, मरण का अभाव, मोक्ष। **अमृतदान**-(हि०पु०) खाने की वस्तु रखने का ढपनेदार वर्तन। **अमृतधारा**-(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके पहिले पाद मे आठ तथा द्वितीय पाद में दस अक्षर होते हैं। **अमृतधुनि**-(हि०) देखो अमृतध्वनि। **अमृतध्वनि**-(सं० स्त्री०) चौबीस मात्राओं का एक छन्द विशेष। **अमृतफल**-(स०नपुं०) परवर, आँवला। **अमृतवान**-(हिं०पु०) लाह का रंग किया हुआ मिट्टी का पात्र जो घी, तेल इ० रखनेके काम मे आता है। **अमृतमय**-(स०वि०) अमृत से परिपूर्ण, अमर। **अमृतमालिनी**-(स०स्त्री०) दुर्गादेवी। **अमृतरश्मि**-(स०पु०) चन्द्रमा। **अमृतरसा**-(स० स्त्री०) काला अंगूर। **अमृतयोग**-(सं० पु०) फलित ज्योतिष का एक शुभ फल देनेवाला योग। **अमृतलोक**-(स० पुं०) स्वर्ग।
अमृतवल्लरी-(स०स्त्री०) गुरुच। **अमृतसंजीवनी**-(सं०स्त्री०) गोरखमुण्डी।
अमृतसार-(स०पु०) मक्खन, घी।
अमृता-(स०स्त्री०) आँवला, तुलसी, पीपल, पान, फिटकिरी।
अमृतांशु-(स०पु०) चन्द्रमा।
अमृताशन-(सं०पु०) देवता।
अमृतेश-(स०पु०) शिव, महादेव।
अमृषा-(स०अव्य०) सचमुच, वस्तुतः।
अमृष्य-स०वि०) न सहन करने योग्य।
अमेघ-(स०वि० मेघ रहित, बिना बादल का।
अमेजना-(हि०क्रि०) मिलावट होना, मिला देना।
अमेठना-(हिं०क्रि०) देखो उमेठना।
अमेध्य-(स०वि०) अपवित्र, अशुद्ध, यज्ञादिक के काम में न आने वाला (स०नपु०) मल, विष्टा, मूत्र इ०।
अमेध्यता-(स० स्त्री०) अपवित्रता, अशुद्धता। **अमेध्यत्व**-(सं०नपु०) देखो अमेध्यता।
अमेय-(स०वि०) असीम, समझ में न आनेवाला।
अमेली-(हिं०स्त्री०) मिश्रण का अभाव, स्वच्छता।
अमेव-(हिं०) देखो अमेय।
अमोक्ष-(हिं०पु०) बन्धन, स्वतन्त्रता का अभाव।
अमोघ-(स०वि०) उत्पन्न करनेवाला, अव्यर्थ, सफल, **अमोघदण्ड**-शिव; **अमोघबल**-महान् शक्ति।
अमोचन-(स०नपु०) बन्धन, **अमोचनीय**-(स०वि०) छुटकारा न पाने योग्य।
अमोचित-(स०वि०) आबद्ध, बँधा हुआ
अमोद-(हिं०) देखो आमोद।
अमोरी-(हिं०स्त्री०) आम का कच्चा फल।
अमोल-(हिं०वि०) देखो अमूल्य।
अमोलक-(हिं०वि०) अमूल्य, बहुमूल।
अमोला-(हिं०पु०) आम का भूमि से निकला हुआ नया पौधा।
अमोही-(हि०वि०) निर्मोही, कठोर-हृदय, दयाहीन, **अमौआ** (वा०)-(हिं०पु०) आम के रस के सदृश रंग, (वि०) इस रंग का।
अमौलिक-(स०वि०) निर्मूल, मिथ्या, झूठा
अमौवा-(हिं०) देखो अमौआ।
अम्बक-(स०नपु०) तांबा, मौलसिरी

का वृक्ष ।
अम्बर-(सं०नपु०)आकाश,वस्त्र, अभ्रक, एक गन्धद्रव्य विशेष,केशर । **अम्बर-शैल**-बड़ा ऊँचा पर्वत ।
अम्बरा-(सं०स्त्री०) कपास का वृक्ष ।
अम्बरान्त-(सं०पु०) वस्त्र का किनारा, अञ्चल ।
अम्बरीष-(सं०पुं०) सूर्य, विष्णु, शिव, एक सूर्यवंशी राजा का नाम ।
अम्बा-अम्बालिका-(सं०स्त्री०)माता,मा।
अम्बिका-(सं०स्त्री०) देवी, लक्ष्मी,पद्मा।
अम्बु-(सं०नपु०) जल,पानी ।**अम्बुरोही**-(सं०नपु०) पद्म, सारस पक्षी ।
अम्बुवासी-(सं०वि०)जलमेंरहनेवाला।
अम्बुवाह-(सं०पु०) पानी भरनेवाला, सात की संख्या। **अम्बुद**-(सं०पु०) मेघ, बादल, (वि०) जल देने वाला ।
अम्बुधर-(सं०पु०) बादल, मेघ ।
अम्बुधि-(सं०पु०) समुद्र, सागर ।
अम्बुनिधि-(सं०पु०) जलका भण्डार, समुद्र । **अम्बुभृत**-(सं०पु०) मेघ, बादल । **अम्बुराज**-(सं०पु०) सागर, समुद्र । **अम्बुराशि**-(सं०पुं०) पानी, समूह,समुद्र। **अम्बुरुह**-(सं०नपु०)पद्म, कमल, चन्द्रमा । **अम्बुकन्द**-(सं०पुं०) शृङ्गाटक, सिघाड़ा । **अम्बुज**-(सं० नपु०) पद्म, कमल,चन्द्रमा । **अम्बुजा-सन**-सं०पु०) ब्रह्मा, सूर्य । **अम्बु-विहार**-(सं०पुं०) जलक्रीडा ।
अम्भ-(सं०नपु०) जल, पानी, आकाश।
अम्भोज-(सं०नपुं०) पद्म,कमल चन्द्रमा।
अम्भोद-(सं०पु०) बादल मेघ । **अम्भो-धर**-(सं०पुं०) मेघ, बादल समुद्र ।
अम्भोधि-(सं०पु०) समुद्र, सागर ।
अम्भोरुह-(सं०पु०) बेल (नपु०) पद्म ।
अम्मा-(हिं०स्त्री०) माँ, माता, महतारी।
अम्मारी-(हिं०) देखो अम्बारी ।
अम्र-(सं०पु०) आम का फल । **अम्रवे-तस**-अमल बेत ।
अम्ल-(सं०वि०) खट्टा (पुं०) खटाई ।
अम्लका-(सं०स्त्री०) खट्टे पालक का शाक । **अम्लकेशर**-(सं०पु०) अनार का वृक्ष । **अम्लता**-(सं०स्त्री०) खट्टा-पन, खटाई । **अम्लपादप**-(सं०पुं०) इमली का वृक्ष । **अम्लपित्त**-(सं०नपु०) एक रोग जिसमें पित्त के दोष से खाया हुआ पदार्थ खट्टा हो जाता है।
अम्लवृक्ष-(सं०पुं०) इमली का पेड़ ।
अम्लवेतस-(सं०पुं०) देखो अमिलवेत।
अम्लसार-(सं०पु०) नीबू, चुक, काँजी, अमलवेत ।
अम्लाक्त-(सं०वि०) खट्टा किया हुआ ।
अम्लान-(सं०वि०) जो कुम्हलाया न हो प्रफुल्ल,निर्मल,स्वच्छ, मेघ रहित।
अम्लोद्गार-(सं०पु०) खट्टी डेकार ।
अम्हौरी-(हिं०स्त्री०) छोटी छोटी फुन्सी जो ग्रीष्म ऋतु में पसीना रुकने से शरीर में सर्वत्र होती है, अम्लोरी, घमौरी ।
अय-(सं०पु०) पासा, लोहा, अग्नि, शस्त्र, हथियार (सबोधन)-अरे,ओ।
अयं-(सं०सर्व०) यह, इसका ।
अयजनीय-(सं०वि०) निन्दित, दुर्नाम ।
अयत-(सं०वि०) यत्न न करने वाला ।
अयतेन्द्रिय-(सं०वि०) इन्द्रियों को वशमें न रखने वाला ।
अयत्न-सं०पु०) यत्न का अभाव (वि०) यत्न शून्य, प्रयत्न न करने वाला ।
अयत्नकारी-शिथिल ।
अयथा-(सं०वि०) अयोग्य, बिना यत्न का, मिथ्या, झूठ (पु०) अयोग्य कार्य।
अयथापूर्व-(सं०वि०) अभूतपूर्व सीधा-रण। **अयथार्थ**-(सं०वि०) असत्य, मिथ्याभूत, अयोग्य ।
अयथेष्ट-(सं०अव्य०) इच्छा के विरुद्ध ।
अयथोचित-(सं०वि०) जो उचित न हो अनुपयुक्त ।
अयन-(सं०नपु०) गमन, गति, चाल,सूर्य तथा चन्द्रमा का दक्षिण से उत्तर से दक्षिण की ओर गमन, पथ, अंश, सूर्य का उत्तर तथा दक्षिण दिशा में जाना जो उत्तरायण तथा दक्षिणा-यन कहलाता है। **अनयकाल**-(सं०पु०) वह समय जो एक अयन में लगे; छ महीने का समय । **अनयमण्डल**-(सं०पु०) राशिचक्र तथा राशिचक्र मे स्थित सूर्य के गमन का मार्ग।
अयनवृत्त-(सं०पुं०) देखो अयन मण्डल।
अयन संक्रम-(सं०पु०) अयनसंक्रान्ति, मकर और कर्क की संक्रान्ति । **अयन संक्रान्ति**-(सं०स्त्री०) कर्क संक्रान्ति तथा मकर संक्रान्ति । **अयन संपात**-(सं०पुं०) अयनांश का पतन या योग
अयनांश-(सं०पु०) सूर्य की गति का विशेष भाग ।
अयन्त्रित-(सं०वि०) अबाध्य, स्वतन्त्र ।
अयश-(सं०नपुं)अपयश,अपवाद,अकीर्ति।
अयशस्कर-(सं०वि०) अपवाद जनक ।
अयशस्वी, अयशी-(सं०वि०)अपवादित, दुर्नाम ।
अयस्काण्ड-(सं०पुं०) लोहे की तीर ।
अयस्कान्त-(सं०पुं०) चुंबक लोहा ।
अयस्कार-(सं०पुं०) लोहार ।
अयाचक-(सं०वि०) न माँगने वाला, सन्तुष्ट ।
अयाचित-(सं०वि०) अप्रार्थित, न माँगा हुआ ।
अयाची-(सं०वि०) अयाचक, न माँगने वाला, सन्तुष्ट, सम्पन्न, धनिक ।
अयाच्य-(सं०वि०) न माँगने योग्य, संतृप्त, सन्तुष्ट ।
अयान-(सं०नपुं०) प्रकृति, स्वभाव, (वि०) गतिहीन, न चलने वाला, बिना सवारी का ज्ञान रहित ।
अयानप-(हिं०पुं०) अज्ञानता, भोलापन।
अयानपन-(हिं०पुं०) देखो अयानप ।
अयानी-(हिं०स्त्री०) अज्ञानी, अनजान ।
अयि-(सं०अव्य०) क्यों ! अरे ! यह शब्द सम्बोधन में प्रयोग होता है ।
अयुक्त-(सं०वि०) अनुचित, अयोग्य, असंयुक्त, न लगा हुआ, बहिर्मुख, युक्तिशून्य, आपद्ग्रस्त, गंवार,
अयुक्तता,अयुक्तत्व-(सं०) अभियुक्ति, अप्रयोग, काम से अलग रहना ।
अयुक्ति-(सं०स्त्री०) युक्ति का अभाव, अयोग्यता, अप्रवृत्ति, अन्याय ।
अयुग-(सं०वि०) युग्म भिन्न जो जूस न हो, ताक, अकेला ।
अयूगू-(सं०स्त्री०) जिस स्त्री को एक ही सन्तान उत्पन्न हो ।
अयुग्म-(सं०नपु०) विषम, ताक, (वि०) जो पूरा न हो । **अयुग्म बाण**-(सं०पु०) कामदेव ।
अयुत-(सं०वि०) असम्बद्ध, मिला हुआ; (नपु०) दस हजार की संख्या ।
अयुद्ध-(सं०नपु०) युद्धका अभाव,शान्ति मेल (वि०) युद्ध न करता हुआ ।
अयोग-(सं०पु०) योग का अभाव,जुदाई, रोग के निदान के विरुद्ध चिकित्सा, ज्योतिष के अनुसार तिथि, वार इत्यादि का बुरा योग; कुसमय,अकाल, विक्षेप, अयोग्यता, संकट, कष्ट, (वि०) असंयुक्त, अप्रशस्त, बुरा, जिस वाक्य का अर्थ स्पष्ट विदित न हो । (हिं०वि०) अयोग्य ।
अयोगी-(सं०पु०) योग न जानने वाला मनुष्य ।
अयोगू-(सं०पु०) लोहे का काम करने वाला लोहार ।
अयोग्य-(सं०वि०) जो योग्य न हो, अक्षम, अनुचित, अनुपयुक्त, निष्प्र-योजन, निरवयव, अमूर्त, नित्य ।
अयोग्यता-(सं०स्त्री०) अक्षमता ।
अयोघन-(सं०पु०)लोहार बड़ाका हथौड़ा
अयोजन-(सं०नपु०) वियोग ।
अयोध्य-(सं०वि०) जिससे कोई युद्ध न कर सके ।
अयोनि-(सं०वि०) योनि से उत्पन्न न होने वाला । **अजन्य, नित्य**-(पु०) ब्रह्मा, शिव ।
अयौक्तिक-(सं०वि०) अयोग्य,असमान।
अरंग-(हिं०पु०) सुगन्ध ।
अरंड-(हिं०पु०) एरंड, रेंड, रेंडी ।
अरम्भ-(सं०पुं०) आरम्भ, कोलाहल।
अरम्भना-(हिं०क्रि०)शब्द करना,बोलना आरंभ करना या होना ।
अर-(हिं०पु०) हठ, जिद ।
अरइल-(हिं०वि०) ठिठकने वाला, रुकनेवाला ।
अरई-(हिं०स्त्री०) गाड़ी हाँकनेवाले की लोहे की नोकवाली छोटी छडी ।
अरकटी-(हिं०पु०) पतवार घुमानेवाला, माँझी ।
अरकना-(हिं०क्रि०) टक्कर खाना, फट जाना, लुड़क जाना ।
अरकना बरकना-(हिं०क्रि०) टालम टोल करना, खींचातानी करना, ध्यान न देना ।
अरकला-(हिं०पु०)अर्गला,रोक,सिकडी।
अरकाटी-(हिं०पु०)टापुओंमें भेजे जाने वाले कूली ।
अरकासार-(हिं०पु०) तालाब, सरोवर।
अरक्त-(सं०पुं०) लाक्षा, लाह ।
अरक्षित-(सं०वि०) रक्षा न किया हुआ, अपोषित, अनाश्रय ।
अरग, अरगजा-(हिं०पु०) पीले रंग का एक सुगन्धित द्रव्य जो केशर, चन्दन, कपूर इत्यादि को मिलाने से बनता है, इसको लोग मस्तक और शरीर में लगाते है ।
अरगजी-(हिं०वि०) अरगजा के समान रंग वाला ।
अरगट-(हिं०वि०) पृथक्, भिन्न, अलग, जुदा ।
अरघट्ट-(सं०पुं०) पानी घीचने का यन्त्र, रहट ।
अरगनी-(हिं०स्त्री०) वस्त्र इत्यादि टाँगने की रस्सी या लकड़ी ।
अरगल-(हिं०) देखो अर्गल ।
अरगाना-(हिं०क्रि०) पृथक् करना, जुदा होना; देखो अलगाना ।
अरघ-(हिं०पु०) देखो अर्घ ।
अरघट्ट-(सं०पु०) कुवें से जल निकालने का यन्त्र, रहट ।
अरवा-(हिं०पु०) अर्घ देने का पात्र, शिव लिङ्ग की जलधरी, कुवें की जगत पर से पानी निकलने की नाली
अरघान-(हिं०पु०) आघ्राण,गन्ध,महक।
अरचन-(हिं०पु०)देखो अर्चन। **अचरना**-(हिं०क्रि०) पूजा करना ।
अरचल-(हिं०स्त्री०) अड़चन, झमेला ।
अरचा-(हिं०स्त्री०) पूजा ।
अरचि-(हिं०स्त्री०) देखो अर्चि ।
अरजुन-(हिं०) देखो अर्जुन ।
अरझना-(हिं०क्रि०) लिपटना, फँसना ।
अरडींग-(हिं०वि०) शक्तिमान ।
अरणि, अरणी-(सं०पु०स्त्री०) बढ़ई के बरमे के समान एक यन्त्र जो मथानी की तरह घुमाया जाता है और छेद के नीचे रक्खा हुआ कुशा जल उठता है, सूर्य ।
अरण्य-(सं०नपुं०) बन, जंगल; **अरण्य-कदली**-जंगली केला ;**अरण्यगत**-बनमें पहुंचा हुआ ;**अरण्यमार्जार**-बनबिलाव ;
अरण्यराशि-जंगली जानवरों का झुंड
अरण्यरोदन-(सं०पुन०)निरर्थक रुलाई, निष्फल बात, ऐसी बात जिस पर कोई ध्यान न दे । **अरण्यवासी**-(सं०वि०) बनवासी, जंगल का रहने वाला । **अरण्याध्यक्ष**-(सं०पु०) बन-रक्षक । **अरण्यचन्द्रिका**- (सं०स्त्री०) व्यर्थ की सजावट । **अरण्यचर**-(सं०वि०) वनचर, जंगल में रहनेवाला
अरत-(सं०वि०) मन्द, धीमा ।
अरति-(सं०स्त्री०) चिन्ता, अनिच्छा, वियोग,
अरतिस, अरतीस-(हिं०वि०) अड़तीस, ३८ की संख्या ।
अरथ-(सं०वि०) रथरहित, बिना रथ का (हिं०) अर्थ, अभिप्राय,

अरथाना-(हिं०क्रि०) अर्थ लगाना, व्याख्या करना ।
अरथी-(हिं०स्त्री०) शव ले जाने का सीढी के आकार का लकड़ी का ढांचा, टिकठी ।
अरद-(सं०वि०) दन्तहीन, पोपला, बिना दांत का । **अरदना**-(हिं०क्रि०) पैर से कुचलना, रौदना, लात मारना, वध करना ।
अरदली-हिं०पु०) किसी हाकिम का चपरासी । **अरदास**-(हिं०स्त्री०) प्रार्थना पत्र, निवेदन, युक्त उपहार, ।
अरध-(हि०) देखो अर्ध ।
अरधंग-(हिं०पुं०) देखो अर्धाङ्ग । **अरधंगी**-(हिं०वि०) देखो अर्धाङ्गी ।
अरन-(हिं०पुं०) नोकदार निहाई; देखो अरण्य ।
अरना-(हिं०पु०) जंगली भैंसा, (हिं० क्रि०) अड़ना, रुकना ।
अरनी-(हिं०स्त्री०)अरणी, एक पहाड़ी वृक्ष।
अरन्ध्र-(सं०वि०) छिद्रशून्य, घना ।
अरपन-(हिं०पुं०) देखो अर्पण । **अरपना**-(हिं०क्रि०) अर्पण करना, भेंट देना ।
अरब-(हिं०वि०) अर्बुद, सौ करोड़ की संख्या, (पुं०) घोड़ा, इन्द्र, एक देश का नाम ।
अरबर-(हिं०वि०)क्रमरहित, असाधारण, अड़बड़ । **अरबराना**-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना, घबडाना, भयभीत होना, डावाँडोल होना, लड़खड़ाना ।
अरबरी-(हिं०स्त्री०) भय, घबड़ाहट ।
अरबीला-(हिं०वि०) साधारण, बेसमझ ।
अरभक-(हिं०) देखो अर्भक ।
अरमण-(सं०वि०) आनन्द न लेनेवाला।
अरमणीयता-(सं०स्त्री०) अप्रियता ।
अरर-(हिं०अव्य०) आश्चर्य सूचक शब्द।
अरराना-(हिं०क्रि०) शब्द के साथ गिर पड़ना, फिसलाना, टूट पड़ना, एकाएक गिर जाना, भहराना ।
अरवन-(हिं०पुं०) कच्ची कटने वाली फ़सल ।
अरवल-(हिं०पुं०) घोड़े की वह अशुभ भौंरी जो उसके कान की जड़ में गर्दन के पास होती है ।
अरवा-(हिं०पुं०) बिना उबाले धान से निकाला हुआ चावल ।
अरवाती-(हिं०स्त्री०) ओरी ।
अरवाह-(हिं०स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा ।
अरविन्द-(सं०स्त्री०) पद्म, कमल, सारस, पक्षी । **अरविन्दनाभि**-विष्णु; **अरविन्दबन्धु**-सूर्य, **अरविन्दयोनि**-ब्रह्मा।
अरवी-(हिं०स्त्री०) एक कन्द विशेष जिसकी तरकारी बनाकर खाई जाती है।
अरस-(सं०वि०) बिना स्वाद का, नीरस, रसशून्य, असार, अनाड़ी, (पुं०) आलस्य, सुस्ती ।
अरसठ-(हिं०) देखो अड़सठ ।
अरसना-(हिं०क्रि०) शिथिल होना, मन्द होना । **अरसना परसना**-(हिं०क्रि०) भेट करना, आलिंगन करना । **अरस परस**-(हिं०स०) देखा भाली, आँख मुदौवल का खेल ।
अरसात-(हिं०पुं०) चौबीस अक्षर का एक छन्द विशेष । **अरसाना**-(हिं०क्रि०) अलसाना, निद्रास्त होना, नीद लगना।
अरसिक-(सं०वि०) अरसज्ञ, जो कविता के रस को न समझता हो ।
अरसी-(हिं०स्त्री०) अलसी, तीसी ।
अरसीला-(हिं०वि०) अलस, आलस्य से भरा हुआ ।
अरहट-(हिं०पुं०) देखो रहट ।
अरहन-(हिं०पुं०) बेसन या आँटा जो तरकारी इत्यादि मे डाला जाता है।
अरहना-(हिं०स्त्री०) पूजा ।
अरहर-(हिं०स्त्री०) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल खाई जाती है, तुवरी ।
अरहित-(सं०वि०) पूरा, भरा हुआ, सम्पन्न ।
अरहेड़-(हिं०स्त्री०) पशुओं का झुण्ड ।
अरा-(हिं०पुं०) देखो आरा ।
अराअरी-(हिं०स्त्री०) त्वरा, शीघ्रता ।
अराग-(सं०वि०)उदासीन, विरक्त, धीमा।
अराज-(हिं०वि०) बिना राजा का (पुं) अराजकता ।
अराजक-(सं०वि०) बिना राजा का, राजशून्य । **अराजकता**-(सं०स्त्री०) राजा न रहने की स्थिति, शासन का अभाव, विप्लव, अशान्ति ।
अराड़जाना-(हिं०क्रि०) पशु का गर्भपात होना ।
अरात, अराति-(सं०पु०) शत्रु, रिपु, काम, क्रोधादि ६ रिपु, ६ की संख्या
अरातिभंग-शत्रु का पराभाव ।
अराधन-(हिं०) देखो आराधन । **अराधना**-(हिं०क्रि०) उपासना करना, पूजा करना, जप करना ।
अराधी-(हिं०वि०) देखो आराधी ।
अराना-(हिं०क्रि०) देखो अड़ाना ।
अराम-(हिं०पु०) आनन्द ।
अरारोट-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष, तीखुर ।
अराल-(सं०पुं०) मतवाला हाथी (वि०) वक्र, टेढ़ा ।
अराला-(सं०स्त्री०) अपवित्र स्त्री।
अरावल-(हिं०पु०) देखो हरावल ।
अरि-(सं०पुं०) शत्रु, वैरी चक्र, ६ की संख्या, जन्मकुण्डली में छठां स्थान, ईश्वर, दुर्गन्धी खैर । **अरिकुल**-शत्रु का वंश; **अरिकेशी**-श्रीकृष्ण; **अरिघ्न**-शत्रु को नाश करनेवाला ।
अरिता-(सं०स्त्री०) शत्रुता,
अरिन्द-(हिं०पु०) शत्रु ।
अरित्व-(सं०स्त्री०) देखो अरिता ।
अरिमर्दन-(सं०वि०) शत्रु को दमन करनेवाला । **अरिमित्र**-(सं०नपुं०) शत्रु का सहायक ।
अरियाना-(हिं०क्रि०) तिरस्कार युक्त शब्द का प्रयोग करना, अरे, तू, तू, कहकर बोलना ।
अरिलोक-(सं०पुं०) शत्रु का देश ।
अरिल्ल-(हिं०पुं०) सोलह मात्रा का एक छन्द ।
अरिवन-(हिं०पु०) रस्सी का फन्दा जिसको लोटे आदि में लगाकर कुवे से पानी खींचा जाता है ।
अरिष्ट-(सं०नपु०) अशुभ चिह्न, दुर्भाग्य, विपत्ति, पीड़ा, दुःख, मारण कारक योग, रीठेका वृक्ष, लहसुन, औषधियों से बना हुआ क्वाथ, मठा, सूतिकागृह, (वि०) अशुभ, अविनाशी, बुरा ।
अरिष्टक-रीठेका पेड़, नीमका वृक्ष, मद्य
अरिष्टनेमी-(सं०पु०) वनितासे उत्पन्न कश्यप ऋषि का पुत्र । **अरिष्टलक्षण**-मृत्यु के लक्षण ।
अरिष्टा-(सं०स्त्री०) कुटकी, मद्य ।
अरिष्टिका-(सं०स्त्री०) रीठी, कुटकी ।
अरिहन-(हि०पु०) शत्रुघ्न ।
अरिहा-(सं०वि०) शत्रु का नाश करने वाला । (पु०) शत्रुघ्न ।
अरी-(हिं०अव्य०)स्त्रियों के लिये सम्बोधन का शब्द, (वि०) अटकी हुई ।
अरीठा-(हि०पु०) अरिष्ट, रीठी ।
अरीत-(हिं०स्त्री०) कुरीति, बुरी चाल ।
अरु-(हिं०अव्य०) और ।
अरुई-(हिं०स्त्री०) देखो अरवी ।
अरुचि-(सं०स्त्री०) भोजन की अनिच्छा, घृणा (वि०) इच्छा हीन, निस्पृह, अभिलाषा न रखने वाला । **अरुचिकर**-(सं०वि०) जो अच्छा न लगे, जिसके खाने की इच्छा न हो ।
अरुचिर-(सं०वि०) घृणित, घिनौना ।
अरुज-(सं०वि०) रोगशून्य, स्वस्थ ।
अरुझना-(हिं०क्रि०) एक में एक मिल जाना, उलझना, झगड़ना, चलते चलते रुक जाना । **अरुझाना**-(हिं०क्रि०) उलझाना, फन्दा लगा देना
अरुण-(सं०पुं०) सूर्यका सारथी, गरुड़, एक दानव का नाम, लालरंग, प्रातःकाल, तड़का, पुच्छल तारा, सिन्दूर, केसर, लाल कमल, अफ़ीम, मजीठ, गुड़, एक प्रकार का विषैला कीड़ा, सेंहुड़ का वृक्ष । **अरुणचूड़**-(सं०पु०) कुक्कुट, मुर्गा ।
अरुणता-(सं०स्त्री०) सुर्खी, लाली ।
अरुणनाग-(सं०पु०) मुर्दाशंख ।
अरुणनेत्र-(सं०पु०) कोयल, कबूतर ।
अरुणप्रिया-(सं०स्त्री०) सूर्य की भार्या, अप्सरा । **अरुणलोचन**-(सं०पु०) कबूतर, कोयल; (वि०) लाल आँखवाला ।
अरुणशिखा-(सं०पु०) कुक्कुट, मुर्गा ।
अरुणा-(सं०स्त्री०) कदंब का फूल, घुमची, गोरखमुण्डी, लाल रंग की गाय । **अरुणाई**-(हिं०स्त्री०) अरुणता, ललाई ।
अरुणाग्रज-(सं०पु०) गरुड़ ।
अरुणित-(सं०वि०) रक्तवण का, लाल रंगा हुआ ।
अरुणिमा-(सं०स्त्री०) लाली, रक्तता ।
अरुणीकृत-(सं०वि०) लाल रंगा हुआ ।
अरुणोदधि-(सं०पु०) लाल सागर ।
अरुणोदय-(सं०पु०) सूर्योदय से चार दण्ड पहिले का समय, तड़का, पौ फटने का समय, ब्राह्ममुहूर्त । **अरुणोपल**-(सं०पु०) पद्मराग मणि, लाल । **अरुद्ध**-(सं०वि०) अनिवारित, न रोका हुआ ।
अरुन-(हिं०) देखो अरुण । **अरुनचूड़**-(हि०पु०) कुक्कुट ।
अरुनाना-(हिं०क्रि०) लाल होना, लाली चढ़ाना ।
अरुनाई-(हिं०स्त्री०) अरुणाई, लालिमा ।
अरुनारा-(हिं०वि०) अरुण, लाल ।
अरुनोदय-(हि०पु०) देखो अरुणोदय ।
अरुरना-(हिं०क्रि०) लचकना, मुड़ना ।
अरुन्तुद-(सं०वि०) दुःखकर, मर्मवेधी, तीक्ष्ण ।
अरुन्तुदस्व-(सं०स्त्री०) कष्ट, तीव्रता ।
अरुन्धती-(सं०स्त्री०) जीभ का अग्रभाग, वसिष्ठ मुनी की पत्नी, एक नक्षत्र का नाम ।
अरुवा-(हि०पु०) एक लता जिसकी जड़ में कन्द बैठता है, और खाया जाता है, उल्लू पक्षी ।
अरूढ-(हि०वि०) देखो आरूढ ।
अरुष-(सं०पु०) सूर्य, ज्वाला, दिन, मेघ ।
अरुषी-(सं०स्त्री०) उषाकाल, तड़का ।
अरुस-(हिं०पु०) देखो अड़ूसा ।
अरूक्ष-(सं०वि०) जो रूखा न हो, चिकना । **अरूक्षता** (सं०स्त्री०) स्निग्धता, चिकनाहट ।
अरूप-(सं०वि०) कुरूप, भद्दा ।
अरूझना (हिं०क्रि०) झगड़ना ।
अरूपक-(सं०वि०) अलङ्कार रहित ।
अरूपता-(सं०स्त्री०) असमानता ।
अरूरना-(हिं०क्रि०) क्लेश उठाना, पीड़ा देना ।
अरूलना-(हिं०क्रि०) छेदना, विदारित होना, पीड़ित होना ।
अरूस-(हिं०पु०) देखौ अड़ूसा ।
अरे-(सं०अव्य०) ए! ओ! देख! आश्चर्य सूचक अव्यय, नीच व्यक्ति के लिये संबोधन होता है ।
अरेरना-(हिं०क्रि०) रगड़ना, घिसना, मलना ।
अरेरे-(सं०अव्य०) अबे! ओबे! आश्चर्य सूचक अव्यय ।
अरोक-(हिं०वि०) बिना रोक का, जो रुकता न हो ।
अरोख-(हिं०पु०) देखो अरोष ।
अरोग-(सं०वि०) रोग शून्य, आरोग्य ।
अरोगिता-(सं०स्त्री०) स्वास्थ्य, **अरोगी** (सं०वि०)आरोग्य, **अरोग्य, अरोग्यता** देखो आरोग्य, आरोग्यता ।
अरोच-(हिं०पु०) अरुचि ।
अरोचक-(सं०पु०) वह रोग जिसमें इच्छा और क्षुधा रहने पर भी खाया न जाय (वि०) अरुचिकर ।
अरोड़-(हिं०वि०) वीर, कट्टर ।
अरोड़ा-(हिं०पु०) पंजाब की एक

क्षत्री की जाति।

अरोदन-(स०नपु०) रोने का अभाव, न रोना।

अरोपण-(स०नपु०)न रोपने की स्थिति

अरोपन-देखो अरोपण।

अरोष-(स०वि०) क्रोध रहित, रोष न दिखलाने वाला।

अरोहन-(हिं०) देखो आरोहण।

अरोहना-(हिं०क्रि०) आरोहण करना, चढ़ना। **अरोही** (हिं०पु०) सवार।

अरौद्र-(सं०वि०) जो भयंकर न हो, सुन्दर, ललित।

अर्क-(स०पु०) सूर्य,इन्द्र, विष्णु, क्वाथ, काढा, अन्न, वज्र, रविवार, पंडित, वृक्ष, मत्र, बारह की संख्या, अग्नि, किरण, मदार का वृक्ष, स्फटिक, तावा, लालफूल, (हिं०) अरक, रस। **अर्ककान्ता**-हुड़हुल का फूल, पद्म। **अर्कक्षीर**-मदार का दूध, **अर्कचन्दन**-लाल चन्दन।

अर्कज-(स०पु०) यम, शनि, दोनों अश्विनी कुमार, कर्ण। **अर्कजा**-(स०स्त्री०) यमुना नदी, तापती नदी। **अर्कतनय**-(स०पु०) कर्ण, वैवस्वत मनु। **अर्कतनया**-(स०स्त्री०) देखो अर्कजा। **अर्कत्व**-(सं०नपु०) चमक, लाली। **अर्कदिन**-(स०नपु०) सूर्य का दिन, रविवार। **अर्कपाद**-(स०पुं०) सूर्यकान्तमणि, **अर्कबन्धु**-(सं० पु०) पद्म, कमल। **अर्कवेध**-(स०पु०) सूर्यवेधी गृह, जिस घर का सहन पूरब पच्छिम लम्बा होता है। **अर्कसुता**-(सं०स्त्री०) यमुना नदी। **अर्कव्रत**-(सं०नपु०) माघशुक्ल सप्तमी को किया जाने वाला व्रत, प्रजा की वृद्धि के लिये राजा का कर लेना।

अर्कीय-(सं०वि०) सूर्यसम्बन्धी।

अर्कोपल-(सं०पु०) सूर्यकान्तमणि, पद्मरागमणि।

अर्गजा-(हिं०) देखो अरगजा।

अर्गल-(सं०नपुं०) किवाड़ के पीछे लगाने का डंडा, अगरी, ब्योंड़ा, रोक, प्रतिबन्ध, चटखनी, कपाट, किवाड़, रंगदार बादल जो प्रातः काल तथा सन्ध्या को पूर्व में देख पड़ता है, मांस।

अर्गला-(सं०स्त्री०) किवाड़ बन्द करके इसके पीछे अड़ाने की लकड़ी, ब्योंड़ा, अगरी, हाथी बाँधने की लोहे की सिकड़ी, रुकावट, अवरोध, देवीमाहात्म्य के पाठ में पहिला स्तोत्र।

अर्गलिका-(सं०स्त्री०) चटखनी, बिल्ली, कपाट बन्द करने का खटका।

अर्गलित-(सं०वि०) सिकड़ी से बंद किया हुआ।

अर्गलीय-(सं०वि०) अर्गला संबन्धी।

अर्घ-(सं०पु०) मूल्य, दाम, पूजा का उपचार, जलदान, सन्मुख पानी गिराना, उपहार, भेंट, हाथ धोने के लिये जल देना, एक प्रकार का मोती

अर्घदान-(स०नपु०) अर्घ समर्पण,भेट।

अर्घपात्र-(स०नपुं०) अर्घ देने का पात्र, अघा।

अर्घा-(हिं०पु०) अर्घ देने का पात्र, जलधरी।

अर्घ्य-(सं०वि०) पूजनीय, मूल्यवान्, उपहार देने योग्य, (पुं०) पूजा करने के लिये जल, दूर्वा इत्यादि उपकरण।

अर्चक-(सं०वि०)पूजक,पूजा करने वाला

अर्चन-(सं०नपु०) पूजन, पूजा,सत्कार।

अर्चना-(सं०स्त्री०) पूजा, आदर, सत्कार। **अर्चनीय**-(सं०वि०) पूजा करने योग्य, पूजनीय, सत्कार करने योग्य। **अर्चमान**-देखो अर्चनीय।

अर्चा-(सं०स्त्री०) प्रतिमा, मूर्ति, पूजा।

अर्चि-(सं०स्त्री०) अग्नि की लपट,चमक

अर्चित-(सं०वि०) पूजित, आदर किया हुआ।

अर्चिमान-(सं०वि०) प्रकाशमान(पु०)सूर्य

अर्च्य-(सं०वि०) पूजनीय, आदरणीय।

अर्जन-(सं०नपु०) उपार्जन, सग्रह, धरोहर, संग्रह करना, कमाना। **अर्जनीय**-(स०वि०) सग्रह करने योग्य, संग्रहणीय।

अर्जित-(स०वि०) संगृहीत, उपार्जन किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ, कमाया हुआ।

अर्जुन-(सं०पु०) एक बड़ा वृक्ष, करवीर, काहू, मोर, श्वेतवर्ण, नेत्र का एक रोग, श्वेत कनेर, पाण्डु के तृतीय पुत्रका नाम,पार्थ,सहस्त्रार्जुन।

अर्जुनक-(स०वि०) अर्जुन सम्बन्धी।

अर्जुनी-(सं०स्त्री०) दूती, कूटनी, श्वेत गाय, उषा।

अर्ण-(सं०पु०)साखू का पेड़,तरंग,लहर, अक्षर, जल, एक प्रकार का छन्द।

अर्णभव-(सं०पु०) शङ्ख।

अर्णव-(स०पु०) सूर्य, इन्द्र, समुद्र, तरङ्ग, वायु मण्डल, चार की संख्या (वि०) व्याकुल, आनन्द रहित, फेनयुक्त। **अर्णव**-पोत। **अर्णवोद्भव**-चन्द्रमा, अमृत, **अर्णवोद्भव**-लक्ष्मी।

अर्णा-(सं०स्त्री०) नदी।

अर्ति-(सं०स्त्री०) पीड़ा,।

अर्थ-(सं० पुं०) शब्द की शक्ति द्वारा बोधित पदार्थ, अभिप्राय, प्रयोजन, धन, निमित्त, प्रकार, फल, अभिलाषा, इन्द्रियों का विषय, वस्तु

अर्थकर-(सं० वि०) धन का साधन, लाभकारी, उपयोगी, रुपया देनेवाला। **अर्थकृच्छ्**-(स०नपुं०) धन का कष्ट। **अर्थचिन्तक**-(सं०पु०) राज्य के आय व्यय की चिन्ता करनेवाला मन्त्री। **अर्थजात**-(स०वि०) धनाढ्य, **अर्थज्ञ**-(सं० वि०) प्रयोजन जानने वाला। **अर्थदण्ड**(सं०पुं) वह धन जो अपराधी से दण्ड के रूप में लिया जावे।

अर्थना-(स०स्त्री०) भिक्षा, भीख।

अर्थनीय-(सं०वि०) याचना के योग्य।

अर्थपति-(स०पुं०) अधीश्वर, कुबेर, धनिक, **अर्थपिशाच**-(सं०वि०) बहुत बड़ा कृपण। **अर्थप्राप्ति**-(सं०स्त्री०) धन का आगम, अभिप्राय की सिद्धि। **अर्थबुद्धि**-(सं०वि०) स्वार्थी, अपना अभिप्राय साधनेवाला। **अर्थभावना**-(स०स्त्री०) धन की चिन्ता। **अर्थमन्त्री**-(सं०पुं०) देखो अर्थसचिव। **अर्थलाभ**-(सं०पु०) धन की प्राप्ति। **अर्थलोभ**-(स०पुं०) धन की अभिलाषा। **अर्थवाद**-(स०पु०) प्रशंसनीय, वाक्य, निन्दार्थ, कथन, चित्त को अन्य विषय की ओर आकर्षित करने के लिये कहा हुआ वाक्य।

अर्थविज्ञ-(सं०पुं) अर्थ शास्त्रज्ञ;

अर्थवृद्धि-(सं०स्त्री०) धन सञ्चय। **अर्थवेद**-(सं०पुं०) शिल्पशास्त्र, कारीगरी **अर्थशास्त्र**-(स०नपु०) अर्थनीति विषयक वह शास्त्र जिसमें धन के उपार्जन, रक्षण और वृद्धि के सिद्धान्त बतलाये गये हों। **अर्थसञ्चय**-(सं०पु०) धन एकत्रित करना। **अर्थसचिव**-(सं०पुं०) राज्य के आर्थिक विषयों का देखभाल करनेवाला मन्त्री। **अर्थसमाहार**-(सं०पु०) शब्द या वाक्य के अर्थ का संक्षेप। **अर्थसिद्धि**-(स०स्त्री०) तात्पर्य की सिद्धि, धन की सिद्धि। **अर्थहर**-(सं०पु०) तस्कर, चोर। **अर्थहीन**-(सं०वि०) धनहीन, दरिद्र, अभिप्राय रहित।

अर्थागम-(सं०पु०) धनोपार्जन, आय।

अर्थात्-(सं०अव्य०) यह आशय है, अन्य विषयों में, वस्तुतः

अर्थाधिकार-(सं०पु०) कोषाध्यक्ष का काम। **अर्थाधिकारी**-(सं०पुं०) कोषाध्यक्ष।

अर्थाना-(हिं०क्रि०)अर्थ लगाना,समझाना,

अर्थानुवाद-(सं०पुं०) अर्थ का अनुवाद, उल्था।

अर्थान्तर-(सं०नपु०) दूसरा अर्थ या आशय। **अर्थान्तरन्यास**-(स०पुं०) वह अलंकार जिसमें एक प्रकार के अर्थ द्वारा अन्य प्रकार का अर्थ समर्थन करने का प्रयत्न होता है।

अर्थापत्ति-(सं०स्त्री०) मीमांसा मत के अनुसार वह प्रमाण जिसमें प्रगट रूप से किसी विषय को प्रकाशित न करके केवल शब्द द्वारा ही विषय की सिद्धि होती है, वह अलंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात सिद्ध की जाती है।

अर्थालङ्कार-(सं०पु०)वह अलंकार जिसमें अर्थ का गौरव दिखलाया जाता है।

अर्थित-(सं०वि०) याचित, माँगा हुआ।

अर्थिता-(सं०स्त्री०)याचना, भिक्षुक वृत्ति

अर्थी-(स०वि०) याचक, माँगनेवाला, इच्छा करनेवाला, प्रयोजन की आकांक्षा करनेवाला, (वि०) वादी, सेवक, अनुजीवी, धनी।

अर्थोपार्जन-(सं०नपुं०) धन या सम्पत्ति की प्राप्ति।

अर्दन-(सं०नपु०) याचन, पीड़न, हत्या, गमन, जाना।

अर्दना-(हिं०क्रि०) पीड़ा देना,कष्ट देना,

अर्दित-(सं०वि०) पीड़ित।

अर्दली-देखो अरदली।

अर्ध-(स०वि०) दो समान टकड़ों में से एक, आधा।

अर्धक-(स०पु०) कल, सर्प, डेड़हा।

अर्धकृत-(स०वि०) आधा किया हुआ।

अर्धकोटी-(सं०स्त्री०) आधा करोड़। **अर्धकोश**-(स०पु०) आधा कोस, एक मील। **अर्धगोल** (स०पु०) वृत्त का आधा भाग। **अर्धचन्द्र** (सं०पु०) आधा चन्द्रमा, नख का चिह्न, गलहस्त, गरदनियाँ, एक प्रकार का बाण, मोर के पंख की आँख, चन्द्रविन्दु अष्टमी का चन्द्रमा; **अर्धचन्द्राकार**-आधे चन्द्रमा के आकार का।

अर्धजल-(हिं०पु०) शव को नहलाना।

अर्धतनु-(सं०स्त्री०) आधा शरीर। **अर्धदग्ध**-(स०वि०) आधा जला हुआ, झुलसा हुआ। **अर्धदिन, अर्धदिवस** (स०) आधा दिन, दोपहर। **अर्धनयन** (सं०नपु०) दिव्य चक्षु, ज्ञानचक्षु, तीसरी आँख जो देवताओं के भ्रूमध्य में होती है। **अर्धनारीश्वर**-(स०पु०) आधे पुरुष और आधी स्त्री की आकृति वाले शिव। **अर्धनिशा**-(सं०स्त्री०) अर्धरात्र, आधी रात। **अर्धपल**-(सं०नपु०) चार तोले का परिमाण। **अर्धपारावत**-(सं०पुं०) वनकुक्कुट, तीतर। **अर्धपूर्ण**-(सं० वि०) आधा भरा हुआ। **अर्धप्रहर**-(सं०पु०) आधा पहर, डेढ घंटे का समय। **अर्धप्रादेश**-(सं०पु०) आधे बित्ते की नाप। **अर्धभाग** (सं०वि०) खण्ड, टुकड़ा,आधा अंश। **अर्धभाज**-(सं०स्त्री०) आधे का अंश। **अर्धमागधी**-(सं०स्त्री०) प्राकृत भाषा जो प्राचीन समय में मथुरा और पटना के बीच में बोली जाती थी। **अर्धमात्रा**-(सं०स्त्री०) आधा परिमाण। **अर्धमास**-(सं०पुं०) आधा महीना, एकपक्ष। **अर्धमुष्टि**-(सं०पु०) आधी मुट्ठी। **अर्धयाम**-(सं०पु०) दिन रात का आठवां भाग, डेढ घंटा। **अर्धरात्र**-(सं०पुं०) आधी रात। **अर्धव्यास**-(सं०पुं०) वृत्त की त्रिज्या। **अर्धशत**-(स०नपुं०) पचास की संख्या **अर्धशब्द**-(सं०वि०) धीमे शब्दवाला। **अर्धशेष**-(सं०वि०) बाकी बचा हुआ, आधा।

अर्धसमवृत्त-(सं०वि०) एक वृत्त विशेष जिसके पहिले, तीसरे तथा दूसरे और चौथे पाद समान होते हैं, सोरठा।

अर्धांश-(सं०पुं०) अर्धभाग, आधा अंश

अर्धाकार-(सं०पुं०) 'अ' अक्षर का आधा भाग (ऽ)

अर्धाङ्ग-(सं०पुं०) शरीर का आधा

भाग, पक्षाघात, लकवा रोग जिसमें आधा अंग चेतना शून्य हो जाता है।

अर्धाङ्गिनी-(सं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी।

अर्धाङ्गी-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

अर्धार्ध-(सं०पुं०) आधे की आधा, चौथाई भाग।

अर्धाली-(सं०पुं०) चौपाई का आधा भाग

अर्धेन्दु-(सं०पुं०) आधा चन्द्रमा, गरदनियाँ।

अर्धोक्त-(सं०वि०) आधा कहा हुआ, स्पष्ट न बतलाया हुआ।

अर्धोक्ति-(सं०स्त्री०) आधा कथन।

अर्धोदक-(सं०नपुं०) कमर तक पहुंचने वाला जल।

अर्धोदय-(सं०पुं०) एक पर्व जो माघ मास की अमावस्या को रविवार, व्यतीपात और श्रवण नक्षत्र पड़ने पर होता है।

अर्धोदित-(सं०वि०) आधा निकला हुआ, आधा कहा हुआ।

अर्धङ्ग, अर्धङ्गी-देखो अर्धाङ्ग,अर्धाङ्गी

अर्पण-(सं०नपुं०) दान, भेंट, स्थापन, त्याग। **अर्पणीय**-(सं०वि०) अर्पण करने योग्य।

अर्पित-(सं०वि०) दिया हुआ, स्थापित।

अर्बदर्ब-(हिं०पुं०) सम्पत्ति, विभव।

अर्बुद-(सं०पुं०) दस करोड़ की संख्या, मेघ, एक असुर का नाम, एक पर्वत का नाम, दो मास का गर्भ, शरीर के किसी भाग में गुल्म या गाँठ पड़ जाना

अर्भक-(सं०पुं०) बालक, बच्चा, (वि०) सूक्ष्म, कृश, मूर्ख, दुबला, पतला।

अर्रबर्र-(हिं०पुं०) व्यर्थ की वार्ता।

अर्वती-(सं०स्त्री०) घोड़ी, कुटनी।

अर्यमा-(सं०पुं०) सूर्य, मदार का पेड़, यम, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, बारह आदित्यों में से एक।

अर्वाक्-(सं० अव्य०) इधर, इस ओर, बगल में, समीप, नीचे, पहिले।

अर्वाक्काल-पिछला समय।

अर्वाचीन-(सं०वि०)बाहर का,आधुनिक, नूतन, नया। **अर्वाचीनता**-(सं०स्त्री०) नवीनता, नयापन।

अर्श-(सं०वि०) अश्लील, फूहड़, (नपुं०) हानि, बवासीर रोग (अ० पु०) स्वर्ग, आकाश, **अर्शसूदन**-सूरन।

अर्शोज-(सं०पु०) भगन्दर रोग।

अर्ह-(सं०पुं०) इन्द्र, विष्णु, पूजा, मूल्य, सुवर्ण, (वि०) योग्य, पूजनीय, मल्यवान्। **अर्हण**-(सं० नपुं०) पूजा, सम्मान। **अर्हणा** (सं० स्त्री०) पूजा। **अर्हणीय**-(सं०वि०) पूजनीय, पूजा करने योग्य।

अर्हत्- (सं० वि०) पूजनीय, प्रसिद्ध, जिनदेव, जैनियों के देवता।

अर्हा-(सं० वि०) पूजा। **अर्हित** (सं० वि०) पूजित, पूजा किया हुआ।

अर्ह्य-(सं०वि०) पूज्य, मान्य, योग्य।

अलं-देखो अलम्।

अलंकार-देखो अलङ्कार।

अलंकृत-देखो अलङ्कृत।

अलंग-(हिं०पुं०) पार्श्व, ओर, बगल में।

अलंघनीय-देखो अलङ्घनीय।

अलंघ्य-देखो अलङ्घनीय।

अलब-देखो आलम्ब।

अलंबुषा-(हिं०स्त्री०) छुईमुई नामक वृक्ष

अल-(हिं०पु०) विच्छु का डङ्क।

अलक-(सं०पु०) मस्तक के लटकते हुए बाल, लट, केश, पागल कुत्ता।

अलकप्रभा-(सं० स्त्री०) कुबेर पुरी।

अलक लड़ती-(हिं० वि०) दुलारा, प्यारा, लाड़ला। **अलक लड़ैता**-लाड़ला।

अलकसलोरा-(हिं०वि०) लाड़ला,प्यारा,

अलका-(सं०स्त्री०) कुवेरपुरी, वसा, आठ दस वर्ष की कन्या। **अलकाधिप, अलकाधिपति, अलकापति** - (सं०पु०) कुवेर।

अलक्त-(सं०नपुं०) लाक्षा, लाख।

अलक्षण-(सं०नपुं०) अशुभ चिह्न (वि०) अशुभ सूचक, खराब।

अलक्षता-(हिं०स्त्री०) उद्देश्यहीनता।

अलक्षित-(सं०वि०) अज्ञात, न देखा हुआ, अप्रगट, अदृश्य। **अलक्ष्य**-(सं०वि०) अज्ञेय, अदृश्य, जो देख न पड़े, अचिह्नित, लक्षण रहित।

अलख-(हिं०वि०) अलक्ष्य, अदृश्य, जो देख न पड़ता हो; अगोचर; **अलख जगाना**-चिल्लाकर ईश्वर का नाम लेना, ईश्वर के नाम पर भीख माँगना। **अलखधारी, अलखनामी**-(हिं०पु०) एक प्रकार के साधु जो अलख अलख पुकारते और भीख माँगते फिरते हैं।

अलखित-(हिं०वि०) देखो अलक्षित।

अलग-(हिं०वि०) अलग्न, पृथक्, भिन्न, **अलग करना**-दूर करना, हटाना।

अलगनी-(हिं०स्त्री०)कपड़ा टाँगने की डोरी

अलगाना-(हिं० क्रि०) पृथक् करना, अलग करना, हटा देना।

अलगाव, अलगावा-(हिं०पु०) वियोग। पार्थक्य।

अलग्न-(सं०वि०) न मिला हुआ, पृथक् (नपुं०) ज्योतिष में पापग्रह युक्त लग्न

अलघु-(सं०वि०) भारी, लंबा।

अलङ्कार-(सं० पुं०) आभरण, भूषण, गहिना, वाक्य का वह विशेष गुण जो सुनने में अच्छा लगे और हृदय को पुलकित करे, नायिका के हाव भाव। **अलङ्कारहीन**-(सं० वि०) शृङ्गार रहित। **अलङ्कृत**-(सं०वि०) विभूषित, सजाया हुआ।

अलङ्घनीय, अलङ्घ्य-(सं०वि०) अतिक्रम न करने योग्य, न लाँघने योग्य

अलच्छ-(हिं०वि०) देखो अलक्ष्य।

अलज्ज-(हिं०वि०) निर्लज, लज्जाहीन।

अलता-(हिं०पु०) अलक्तक, लाल रंग जिसको स्त्रियां पैर में लगाती हैं।

अलप-(हिं०वि०) अल्प, थोड़ा।

अलबही-(हिं०स्त्री०) कमर. टेंट।

अलबेला-(हिं०वि०) अनुपम, अनोखा, अनूठा, बेजोड़, बाँका, छैला, सुन्दर।

अलबेलापन-(हिं०पुं०) सजधज, ठाटबाट, छैलापन, सुन्दरता।

अलब्ध-(सं०वि०) अप्राप्त, हाथ में न आया हुआ।

अलभ्य-(सं०वि०) अप्राप्य जो प्राप्त न हो सके, दुर्लभ, अमूल्य, कठिनता से मिलने वाला।

अलम्-(सं० अव्य०) पर्याप्त रूप में, अतिशय, प्रचुर, पूरा।

अलम्पट-(सं० वि०) परस्त्रीगमन न करनेवाला, जितेंद्रिय।

अलरबलर-(हिं०वि०) भ्रष्ट।

अललर्क-(सं०पुं०)पागलकुत्ता,श्वेतमदार

अललटप्पू-(हिं०वि०) मनमाना,अटकलपच्चू, बेहिसाब, वाहियात।

अलल बछेड़ा-(हिं०पुं०) घोड़े का छोटा बच्चा, अनभिज्ञ बालक।

अललाना-(हिं०क्रि०) चिल्लाना।

अलबल-(हिं०पु०) ढकोसला।

अलवाँती-(हिं०स्त्री०) प्रसूता; जिस स्त्री ने बच्चा जना हो।

अलवाई-(हिं०वि०) दो एक महीने की ब्याई हुई गाय या भैंस।

अलवायी-(हिं०स्त्री०) देखो अलवाँती।

अलस-(सं० वि०) दीर्घसूत्री, आलसी, सुस्त। **अलसता, अलसत्व**-(सं०) आलस्य, सुस्ती।

अलसान-(हिं०स्त्री०)आलस्य,शिथिलता, सुस्ती। **अलसाना**-(हिं०क्रि०) सुस्त पड़ना, शिथिलता मालूम करना, झपकी लेना।

अलसित-(हिं० वि०) आलस्ययुक्त।

अलसी-(हिं०स्त्री०) अतसी, तीसी।

अलसेट-(हिं०स्त्री०) विलम्ब,देर, ढिलाई विघ्न, धोखाधड़ी, हेरफेर, अड़चन,

अलसेटिया-(हिं०वि०) रोकने या अड़चन डालने वाला, बाधक, झगडालू, व्यर्थमें देर करनेवाला।

अलसौंहां-हिं०वि०) आलस्य युक्त,सुस्त

अलहन-(हिं०पु०) बुरा समय।

अलहिया-(हिं०स्त्री०) रागिनी विशेष।

अलाई-(हिं०वि०) आलसी, सुस्त।

अलात-(सं०नपुं०) अङ्गारा, कोयला।

अलान-(हिं०पु०) हाथी बांधने का खूंटा या सिवकड़, बेड़ी, बंधन,

अलाप-(हिं०पुं०) देखो आलाप।

अलापना-(हिं०क्रि०) बोलना, बातचीत करना, ऊंचे स्वर में गाना। **अलापी**-(हिं०वि०)बोलने वाला,अलापने वाला।

अलाबू-(हिं०स्त्री०) कद्दू, लौकी, तुम्बी।

अलाभ-(सं०पु०)लाभ का अभाव,हानि

अलाम-(हिं० वि०) बातूनी, झूठबोलनेवाला।

अलायक-(हिं०वि०) अयोग्य,

अलायी-(हिं०वि०) आलसी,।

अलार-(सं०पु०)कपाट,किवाड़ (हिं०पुं०) भट्ठी, आवाँ।

अलाल-(हिं०वि०) आलसी,निकम्मा

अलाव-(हिं०पु०) अलात, कौड़ा, जाड़े में तापने के लिये जलाई हुई आग।

अलाबज-(हिं०पु०)एक प्रकार का ढोलक

अलावनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का तार से बजने वाला बाजा।

अलि-(सं०पु०) भ्रमर, भौंरा, कौवा, कोयल, शराब, विच्छू (हिं०स्त्री०)सखी सहेली।

अलिक-(सं०नपुं०) ललाट, माया।

अलिंग-(सं०वि०) लिङ्ग रहित, बिना चिह्न का, बिना पहिचान का, (पु०) परमात्मा।

अलिंगी-(सं०वि०) सच्चा।

अलिजिह्वा, अलिजिह्विका-(सं०स्त्री०) गले के भीतर घंटी, कौवा।

अलिंजर-(सं०पुं०) पानी रखने का मिट्टी का छोटा पात्र, झज्झर, घड़ा,

अलिन-(सं०वि०) पर्याप्त, प्रिय, इष्ट।

अलती-(हिं०स्त्री०) भौंरी।

अलिन्द-(सं०पु०) घर के बाहरी द्वार का चबूतरा, एक देश का नाम।

अलिप्रिय-(सं०नपु०) आम का पेड़, लाल कमल।

अलिया-(हिं०स्त्री०) आलय, ताखा, अरवा।

अली-(हिं०स्त्री०)सखी,सहेली,पंक्ति,भौरा

अलीक-(सं०नपु०) मिथ्या, झूठ (वि०) अप्रिय, झूठा, (हिं०स्त्री०) कुरीति, अप्रतिष्ठा; **अलीकता**-झूठ।

अलीजा-(हिं०पु०) द्वार के दोनों ओर के चौखट की खड़ी लकड़ी, साह, खंभा जो दीवार में सटा होता है, (वि०) जो लीन न हो, अनुचित।

अलीह-(हिं०वि०) मिथ्या, झूठ, अनुपयुक्त।

अलुक् समास-(सं०पु०) व्याकरण में वह समास जिसमें विभक्ति बनी रहती है।

अलुक-(सं०नपु०) जमीकन्द, आलूबोखारा।

अलुझना-(हिं०क्रि०) देखो उलझना।

अलटना-(हिं०क्रि०) लड़खड़ाना, डगमगाना।

अलुप्त-(सं०वि०) जो लुप्त न हो।

अलुब्ध-(सं०वि०) लोभ रहित, जो लालची न हो।

अलून-(सं०वि०) जो कटा हुआ न हो।

अलूना-(हिं०वि०)बिना नमक मिला हुआ

अलूप-(हिं०वि०) लुप्त,न देख पड़नेवाला

अलूला-(हिं०पु०) तरंग, लहर, बुलबुला

अले-(हिं०) देखो अरे।

अलेख-(हिं०वि०) अलक्ष्य, दुर्बोध, जिसका हिसाब न हो सके, अनगिनतिन। **अलेखा**-(हिं०वि०) निरर्थक

अलेखी-(हिं०वि०) न्याय विहीन,अन्यायी अन्धेर मचाने वाला।

अलेख-(सं० वि०) अधिक बहुत।

अलोक-(सं०पु०) जगत् का अन्त अदृश्य वस्तु, (हिं०पु०) मिथ्या कलंक, (वि०) निर्जन, न देखनेवाला, न करने

वाला ।

अलोकना-(हिं०क्रि०) देखना, दृष्टि डालना, ताकना । **अलोकनीय**-(सं०वि०) न देख पड़ने वाला **अलोकित**-(सं०वि०) अदृष्ट, न देखा हुआ

अलोना-(हिं०वि०) अलवण,विना नमक का, स्वाद रहित ।

अलोप-(हिं०वि०) देखो लोप ।

अलोभ-(सं०पु०) लोभ का अभाव(वि०) लोभ रहित । **अलोभी** - (सं०वि०) लोभशून्य, जिसको लालच न हो ।

अलोल-(सं०वि०) अचंचल, स्थिर ।

अलोलिक-(हिं०पु०)अचंचलता,स्थिरता ठहराव ।

अलोलुप-(सं०वि०) लोभमून्य, लालच न करनेवाला ।

अलोहित-(सं०वि०) अरक्त, जो लाल न हो ।

अलौकिक-(सं०वि०) लोक में अविदित, लोकोत्तर, अमानुषी, अद्भुत, विलक्षण । **अलौकिकत्व**-(सं०नपु०) विलक्षणता ।

अल्प-(सं०वि०) छोटा कम, थोड़ा, **अल्पक्रीत**-सस्ता; **अल्पचेष्टित**-मन्द, **अल्पजीवी**-अल्पायु कम वय वाला । **अल्पज्ञ**-(सं०वि०) थोड़े ज्ञान वाला, **अल्पज्ञता**-(सं०स्त्री०) थोड़ी बुद्धि या समझ । **अल्पतनु**-(सं०वि०) वामन, बौना, दुर्बल**अल्पता**-(सं०स्त्री०)न्यूनता सूक्ष्मता, कमी, छोटाई । **अल्पत्व**-(सं०नपु०)देखो अल्पता । **अल्पदृष्टि**-(सं०वि०) परिमित ज्ञान वाला ।

अल्पधी-(सं०वि०) अज्ञान,कम बुद्धिका **अल्पप्राण**-(सं०पु०) व्याकरण में व्यजन वर्ण के प्रत्येक वर्ग का पहिला तीसरा तथा पाँचवाँ अक्षर और य, र, ल, व तथा स्वर । **अल्पबल**-(सं०वि०) निर्बल, **अल्पबुद्धि**-(सं०वि०) मूर्ख । **अल्पभाषी**-(सं०वि०) कम बोलने वाला **अल्पमूर्ति**-(सं०वि०) छोटे शरीर वाला । **अल्पमूल्य**-(सं०वि०) सस्ता, कम मूल्य का **अल्पवयस्क**-(सं०वि०) छोटी अवस्था का; **अल्पवादी**-(सं०वि०) कम बोलने वाला ।

अल्पशः-(सं०क्रि०वि०) अलग अलग, दूरसे, थोड़ा, धीरे धीरे, कुछ, कम ।

अल्पायु-(हिं०वि०) थोड़ी आयुष्य वाला

अल्पाहार-(सं०पु०) लघु भोजन, हल्का खाना । **अल्पाहारी**-(सं०वि०) कम भोजन करने वाला ।

अल्पिष्ठ-(सं०वि०) बहुत थोड़ा,बहुत कम

अल्ल-(हिं०पु०) वंश का नाम, उपगोत्र।

अल्लम- गल्लम-(हिं०पु०) कूड़ा कर्कट, अलर बलर, व्यर्थ की बात, प्रलाप ।

अल्लाना- (हिं०क्रि०) गला फाड़कर चिल्लाना शोर करना ।

अल्लायी-(हिं०स्त्री०)पशुके गलेका एकरोग

अल्हजी-(हिं०पु०) व्यर्थ की बात गपशप

अल्हड़-(हिं०वि०) अकुशल, अनुभवहीन, उज्जड, उद्धत; गँवार अनाड़ी । (पु०) छोटा बछड़ा **अल्हड़पन**-(हिं०पु०) अनुभवहीनता. अनाडीपन, उजड्डपन ।

अव-(हिं०अव्य०) और (सं०अव्य०) यह शब्द अवश्य, तिरस्कार, बराबर तथा मेल अर्थ में प्रयोग होता है ।

अवकम्पित-(सं०वि०) विचलित, घबड़ाया हुआ । **अवकलन**-(सं०नपु०) ज्ञान, समझ, दृष्टि **अवकलन**-(हिं०वि०) ज्ञान होना,समझ मे आना।

अवकाश-(सं०पु०) विश्राम लेने का समय, अवसर, समय, स्थान अन्तर, दूरी, दृष्टिपात ।

अवकिरण-(सं०नपु०) विस्तार, फैलाव, छितराव ।

अवकीर्ण-(सं०वि०) व्याप्त, चूर्ण किया हुआ, नाश किया हुआ, छितराया हुआ **अवकुंचन**-(सं०पु०) समेटना, बटोरना ।

अवक्खन (हिं०पु०) देखना, अवेक्षण ।

अवक्तव्य-(सं०वि०) न बोलने योग्य, अश्लील ।

अवक्र-(सं०वि०) सरल, सीधा, जो टेढ़ा न हो ।

अवक्रम-(सं०पु०) निम्नगति, नीचे जाना **अवक्रोश**-(सं०पु०) निन्दा, गाली ।

अवखात-(सं०नपुं०) गहरा गड्ढा ।

अवगणन-(सं०नपु०) अपमान, निन्दा, तिरस्कार ।

अवगणित-(सं०वि०) अपमानित,निन्दित

अवगत-(सं०वि०) प्रतिपन्न, ज्ञात, विदित, नीचे गया हुआ, जाना हुआ, गिरा हुआ । **अवगतना**-(हिं०क्रि०) विचारना, सोचना, समझना । **अवगति**-(सं०स्त्री०) बुद्धि, धारणा, नीचगति, कुगति ।

अवगम-(सं०पु०) निश्चय पूर्वक ज्ञान ।

अवगर्हित-(सं०वि०) निन्दित ।

अवगारना-(हिं०क्रि०) जताना, समझाना बुझाना ।

अवगाह-(सं०पु०) स्नान, अन्तः प्रवेश, अवगति, ज्ञान से जाना हुआ, (वि०) गहन, गहरा, अथाह, क्लिष्ट, कठिन। **अवगाहन**-(सं०पुं०) निमज्जन, पानी मे घुस कर स्नान, प्रवेश, चाह, छानबीन,खोज । **अवगाहना**-(हिं०क्रि०) घुसकर स्नान करना, डूबना, धँसना, मथना, नहाना, छान बीन करना, हिलाना डोलाना, विचारना, समझना, लीन होना ।

अवगासित-(वि०) नहाया हुआ ।

अवगुण-(सं०पु०)दोष, अपराध,बुराई,ऐब **अवगुण्ठन**-(सं०नपु०) ढांपना,छिपाना, घूंघट डालना, घूंघट । **अवगुण्ठित**-(सं०वि०) आच्छादित, छिपाया हुआ । **अवगुम्फित**-(सं०वि०) गुथा हुआ ।

अवग्रह-(सं०पुं०) प्रतिबन्ध, रुकावट, बाधा, अनावृष्टि, वर्षा का अभाव, प्रकृति, स्वभाव, शाप, कोसना ।

अवघट-(सं०पु०) पीसने का यन्त्र, जाँता (वि०) कठिन, दुर्गम, विकट, गड़बड़ । **अवघटित**-(सं०वि०) चालित, चलाया हुआ । **अवघाती**-(सं०पु०) चोट पहुंचाने वाला, मारनेवाला ।

अवचट-(हिं०पु०) अनजान, अचक्का, अंडस, कठिनाई, (क्रि०वि०) अकस्मात् । **अवचन**-(सं०वि०) मूक, गूगा । **अवचनीय**-(सं०वि०) अश्लील, फूहड़ ।

अवच्छिन्न-(सं०पु०) पृथक् किया हुआ, अलगाया हुआ, विशिष्ट अर्थ का ।

अवच्छेद-(सं०पु०) छेदन, भेद,अलगाव, सीमा, व्याप्ति, निश्चय, अन्वेषण, छानबीन, परिच्छेद, विभाग । **अवच्छेदक**-(सं०पु०) अलग करनेवाला, सीमा बांधनेवाला, निश्चय करनेवाला

अवछंग-देखो उछंग ।

अवजनित-(सं०वि०) जनित, उत्पन्न ।

अवज्ञा-(सं०स्त्री०) अनादर, अपमान, आज्ञा न मानना, पराजय, हार, वह अलंकार जिसमे एक वस्तु दूसरी वस्तु के गुण दोष को नहीं लेती । **अवज्ञान**-(सं०नपु०) अपमान तिरस्कार

अवज्ञेय-(सं०वि०) अनादरणीय, तिरस्कार के योग्य ।

अवटना-(हिं०क्रि०) मथना, किसी द्रव पदार्थ को जलाकर गाढ़ा करना ।

अवडेर-(हिं०पु०) झंझट, बखेड़ा । **अवडेरना**-(हिं०क्रि०) झंझट मे डालना, कष्ट देना। **अवडेर**-(हिं०वि०) फेरवट का, झंझटी, बेढंगा ।

अवतंस-(सं०पु०) शिर का आभूषण,कान का भूषण, कर्णपूर, किरीट, मुकुट, टीका, हार, माला, बाली; श्रेष्ठ, भातृपुत्र, भतीजा, दुलहा ।

अवतरण-(सं० नपु०) ऊपर से नीचे आना, पार करना, जन्म लेना, प्रादुर्भाव, प्रतिकृति, सोपान,सीढ़ी, घाट ।

अवतरणिका,अवतरणी-(सं०स्त्री०)ग्रन्थ क प्रस्तावना, भूमिका, उपोद्घात, रीति, परिपाटी ।

अवतरना-(हिं०क्रि०) उपजाना, प्रगट होना, जन्म लेना ।

अवतार-(सं०स०) नीचे आना,उतरना, शरीर धारण करना, जन्म,देवताओं का मनुष्यादि का शरीर धारण करना, तीर्थ, सोपान, सीढी ; **अवतारण**-(सं०नपु०) उतारना, जन्म लेना ग्रन्थ की प्रस्तावना; **अवतारना**-(हिं० क्रि०) उत्पन्न करना रचना, उतारना, जन्म देना । **अवतारित**-(सं० वि०) आरोपित, रक्षित । **अवतारी**-(हिं० वि०) उतरने वाला, अवतार ग्रहण करनेवाला,देवांशधारी, अलौकिक। **अवतीर्ण**-(सं० वि०) ऊपर से नोचे को आया हुआ ।

अवज्ञात-(सं०वि०) अपमानित तिरस्कृत

अवदत्त-(सं० वि०) फेरकर लिया हुआ

अवदलित-(सं०वि०) फूटा टूटा, चिटका हुआ ।

अवदाघ-(सं० पुं०) धूप, ग्रीष्मकाल ।

अवदात-(सं० पु०) शुभ्र,श्वेतवर्ण (वि०) स्वच्छ, निर्मल, सुन्दर पीला, बसन्ती रंग का ।

अवदान-(सं० नपु०) प्रशस्त आचरण अच्छा काम, खण्डन, पराक्रम शक्ति, अतिक्रम, निर्मल करना ।

अवदान्य-(सं० वि०) कृपण, पराक्रमी, उल्लंघन करने वाला ।

अवदारक-(सं० वि०) विदारक, तोड़ने वाला, (पु०) कुदाली, फौडा ।

अवदारण-(सं०नपु०) विदारण, टुकड़े टुकड़े करना, खनित्र, फौड़ा ।

अवदाह-(सं०पुं०) शरीर की जलन, अग्नि से जल जाना ।

अवदीर्ण-(सं०वि०) विदीर्ण-(सं०वि०) विदीर्ण, पिघला हुआ ।

अवद्य-(सं०वि०) अधम, पापी, निन्द्य ।

अवध-(सं०पु०) कोशल देश, अयोध्या ।

अवधान-(सं०नपु०) मनोयोग, चित्त लगाना, चित्त वृत्ति का निरोध करके एक ओर लगाना, ध्यान, समाधि, सावधानी ।

अवधारण-(सं०नपु०) निरूपण,निश्चय, विचार सहितनिर्धारण । **अवधारणीय**-(सं०वि०) निरूपण करने योग्य ।

अवधारना-(हिं०क्रि०) धारण करना, ग्रहण करना ।

अवधारित-(सं०वि०) निर्धारित,निश्चित

अवधार्य-(सं०वि०) निर्णय करने योग्य।

अवधि-(सं०पुं०) सीमा काल, निर्धारित काल, अन्त समय (आप) पर्यन्त, तक ।

अवधिमान-(हिं०पु०) समुद्र ।

अवधी-(सं०वि०) अवध सम्बन्धी, (स्त्री०) अवध की भाषा ।

अवधूत-(सं०वि०) कम्पित, हिलाया हुआ (पु०) एक प्रकार के सन्यासी ।

अवधृत-(सं०वि०) नियमित, निश्चित ।

अवधेय-(सं०वि०) श्रद्धा के योग्य, जानने योग्य ।

अवध्वंस-(सं०पु०) नाश,निन्दा, कलङ्क ।

अवध्वस्त-(सं०वि०) त्यागाहुआ, निन्दित

अवन-(हिं०पु०)रक्षा,प्रसन्न करनेकाकार्य

अवनत-(सं० वि०) नीचा, झुका हुआ, पतित, कम, नमस्कार किया हुआ ।

अवनति-(सं०स्त्री०) विनय, नम्रता, न्यूनता, घाटा, अधोगति, हीन दशा ।

अवनम्र-(सं०वि०) अतिनम्र ।

अवना-(हिं०क्रि०) आना ।

अवनि, अवनी-(सं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी, **अवनिनाथ, अवनीपाल,अवनीश**-(सं० पु०) राजा ।

अवन्ति-(सं०स्त्री०) मालवदेश की प्रधान नगरी का नाम । **अवन्तिका**-(सं० स्त्री०) उज्जयिनी नगरी, उज्जैन ।

अवपतन-(सं०नपुं०) उतार, गिराव । फैलाव, हाथी पकड़ने का गड्ढा ।

अवप्लुत-(सं०वि०) आर्द्र, भीगा हुआ ।

अवबोध-(सं०पुं०) ज्ञान, शिक्षा, बोध **अवबोधक**-(सं०पुं०) सूर्य, रात का पहरुआ; अवबोधन-चितावनी ।

अवभासित-(सं०वि०)प्रकाशित, लक्षित
अवभृय-(सं०पु०) प्रधान यज्ञ समाप्त होने पर दूसरे यज्ञ का आरम्भ, यज्ञ के अन्त का स्नान।
अवम-(सं०पु०) अधम, निकृष्ट,दिनक्षय, पितृगण विशेष; मलमास।
अवमत-(सं०वि०) तिरस्कृत, अपमानित।
अवम तिथि-(सं०स्त्री०) क्षय तिथि जो सब शुभकार्योंमें नहीं ग्रहण की जाती
अवम दिन-(सं०नपु०)एक साथ संलग्न तीन तिथियां।
अवमर्दन-(सं०नपु०) दलन, मर्दन। **अवमर्दित**-(सं०वि०)मला हुआ,कुचला हुआ
अवमर्श-(सं०पु०) स्पर्श संयोग। **अवमर्षण**-(सं०नपु०)असहनशीलता अधैर्य
अवमान-(सं०पु०) अनादर, तिरस्कार।
अवमानना-(हिं०क्रि०) तिरस्कार करना
अवमानित-(सं०वि०) अपमानित।
अवमोचन-(सं०नपुं०) उन्मोचन, स्वतन्त्रता प्रदान।
अवयव-(सं०पु०) अंश, भाग, टुकड़ा, अङ्ग, शरीर का कोई भाग, वाक्य विशेष; **अवयव स्थान**-शरीर। **अवयवी**-(सं०वि०) अवयव रखनेवाला अङ्गी (पुं०) शरीर, देह।
अवर-(सं०वि०) अधम, नया, पीछे रहनेवाला, अति श्रेष्ठ, दूसरा।
अवरज-(सं०पु०) छोटा भाई, शूद्र।
अवरत-(सं०वि०) विरत, विश्रान्त, पृथक्, स्थिर।
अवरति-(सं०स्त्री०) विश्राम, ठहराव, छुटकारा।
अवराधक-(हिं०वि०) आराधना करने वाला, दास, सेवक। **अवराधन**-(हिं० पुं०) आराधना, उपासना, पूजा सेवा।
अवराधना-(हिं०क्रि०)उपासना करना, सेवा करना। **अवराधी**-(सं०पु०) आराधक, उपासक, पूजक।
अवरावर-(सं०वि०) बहुत छोटा।
अवरुग्न-(सं०वि०) रुग्ण, रोगी।
अवरुद्ध(सं०वि०)प्रतिरुद्ध,गुप्त,छिपा हुआ
अवरुद्धा-(सं० स्त्री०) रखनी, उढरी।
अवरूढ-(सं०वि०) उतार, हुआ, उखाड़ा हुआ।
अवरूप-(सं०वि०) कुरूप, भद्दा।
अवरेखना-(हिं०क्रि०) चित्रित करना, देखना भालना, अनुमान करना, सोचना, मानना, समझना बूझना, स्वीकार करना।
अवरेब-(हिं०पु०) वक्रचलन,तिरछीचाल, फन्दा, कपड़े की तिरछी काट, तानारेरी, कठिनायी, विवाद, झगड़ा; **अवरेबदार**-तिरछी काटका, पेचीला।
अवरेबी-(हिं०वि०) देखो अवरेबदार।
अवरोध-(सं०पु०)रोक, रुकावट, विरोध निषेध, झगड़ा, घेरा, राजा का अन्तःपुर। **अवरोधक**-(सं०वि०)रोकनेवाला, रक्षक।
अवरोधन-(सं०नपु०) विरोध, रोकटोक, उतार, राजा का अन्तःपुर। **अवरोधना**-(हिं०क्रि०) रोकना, बाँधना, निषेध करना। **अवरोधित**-(सं०वि०) घेरा हुआ, रोका हुआ। **अवरोधी**-(सं०वि०) रोकनेवाला, ढाँकनेवाला; अन्तःपुर का रक्षक।
अवरोपण-(सं०नपुं०) उतार, गिराव।
अवरोपणीय-(सं०वि०) उखाड़नेयोग्य।
अवरोपित-(सं०वि०) उतारा हुआ, उखाड़ा हुआ।
अवरोह-(सं०पु०) अवतरण, उतार,गिराव, शाखा का अग्र भाग, वृक्ष के ऊपर चढ़ने वाली बेल। **अवरोहण**-(सं०नपु०) अवतरण, चढाव, उतार।
अवरोहना-(हिं०क्रि०)उतरना, उतारना, चढना, खींचना, रोकना,आड़ लगाना।
अवरोही-(सं०पु०) बरगद का वृक्ष, संगीत में उतरता हुआ स्वर।
अवर्ग-(सं०वि०) वर्गशून्य,बिना समूहका
अवर्ण-सं०वि०) वर्ण रहित, बिना रंग का कुरूप,गुण भिन्न,वर्णधर्म से रहित, अङ्गरागभिन्न, प्रशंसा भिन्न, नीच।
अवर्ण्य-(सं०वि०) वर्णन न करने योग्य (पु०) प्रधान विषय, उपमान।
अवर्त-(सं०पु०) पानी का भँवर, चक्कर
अवर्तमान-(सं०वि०)अनुपस्थित,अप्रस्तुत
अवर्धमान-(सं०वि०) वृद्धिशून्य, नाश होने वाला।
अवर्षण-(सं०नपु०) अनावृष्टि, वर्षा का न होना।
अवलग्न-(सं०वि०) संलग्न, लगा हुआ।
अवलंघना-(हिं०क्रि०) लाँघना,पारहोना।
अवलम्ब,अवलम्बन-(सं०नपु०) आश्रय, सहारा।
अवलम्बना-(हिं०क्रि०) सहारा लेना, आश्रय लेना,ठहरना, टिकना।
अवलम्बत-(सं०वि०) आश्रित, सहारा लिया हुआ, निर्भर। **अवलम्बी**-(सं० वि०) सहारा लेने वाला, अवलंबन करने वाला।
अवलिप्त-(सं०वि०) गर्वित, घमंडी, लेप किया हुआ। **अवलिप्तता, अवलिप्तत्व**-(सं०) गर्व, घमंड।
अवली-हिं०स्त्री०) पंक्ति, समूह, झुण्ड, वह अन्न जो पहिले पहिल खेत से काटा जाता है।
अवलीक-(हिं०वि०) पापशून्य, अपराध रहित, निष्कलङ्क, शुद्ध।
अवलीढ-(सं०वि०) चाटा हुआ, व्याप्त।
अवलीला-(सं०स्त्री०) अनादर,अपमान।
अवलुण्ठित-(सं०वि०) लेटा हुआ।
अवलेख-(सं०पु०) पृथक् किया हुआ पदार्थ। **अवलेखन**-(सं०नपु०) पृथक्करण,अलगाव। **अवलेखना**-(हिं०क्रि०) खोदना, खुरुचना चिह्न करना।
अवलेप-(सं०पु०) उपटन, भूषण, लेप, गर्व, घमण्ड। **अवलेपन**-(सं०नपु०) विलेपन, लीपना पोतना, उबटन, सम्बन्ध, गर्व, अभिमान।
अवलेह-(सं०पु०) चाटकर खाने वाली औषधि, चटनी। **अवलेहन**-(सं०पु०) चटनी इत्यादि। **अवलेह्य**-सं०वि०) चाटने योग्य।
अवलोक-(सं०पु०) दर्शन, देखना। **अवलोकक**-(सं०वि०) देखनेवाला। **अवलोकन**-(सं०नपु०) दर्शन, देखना, अनुसन्धान करना, देख भाल करना।
अवलोकना-(हिं०क्रि०)अनुसन्धान करना, जाँच पड़ताल करना। **अवलोकनि**-(हिं०स्त्री०) नेत्र, दृष्टि, चितवन।
अवलोकनीय-(सं०वि०) देखने योग्य।
अवलोकित-(सं०वि०) देखा हुआ,दृष्ट।
अवलोकी-(सं०वि०) दर्शक, अनुसन्धान करने वाला।
अवलोचना-(हिं०क्रि०) दूर करना।
अवश-(सं०पु०) पराधीन, विवश, लाचार। **अवशता**-पराधीनता।
अवशिष्ट-(सं०वि०)अतिरिक्त, परिशिष्ट, बचा हुआ, अल्प।
अवशेष-(सं०वि०) बचा हुआ,शेष,(पु०) बची हुई वस्तु, अन्त।
अवश्य-(सं०वि०) अनधीन,स्वतन्त्र रहने वाला; (अव्य०) निश्चय, निःसन्देह।
अवश्यक-(सं०वि०) निश्चयात्मक,
अवश्यकता-(सं०स्त्री०) निश्चय।
अवश्यम्-(सं०अव्य०) देखो अवश्य; **अवश्यम्भावी** (वि०) अवश्य होने वाला।
अवश्यमेव-(सं०अव्य०) निःसन्देह,
अवश्या-(सं०स्त्री०)अवशी भूत स्त्री।
अवष्टम्भ-(सं०पु०)प्रारम्भ, आलम्बन, सहारा, रोक, ठहराव, अनम्रता।
अवस-(हिं०क्रि०वि०) अवश्य
अवसक्त-(सं०वि०) संलग्न लगा हुआ
अवसक्थिका-(सं०स्त्री०) योग करने का एक आसन, लँगोटी।
अवसंजन-(सं०नपु०) आलिंगन।
अवसथ-(सं०पु०)गाँव,पाठशाला,मकान
अवसन-(हिं०वि०) वस्त्रहीन।
अवसन्न-(सं०वि०) अनुपयुक्त, समाप्त, आलसी, नष्ट होनेवाला, दुःखी।
अवसन्नता, अवसन्नत्व-(सं०) अनुत्साह, समाप्ति।
अवसर-(सं०पुं०) प्रस्ताव, समय, काल, समय का अवकाश, उतार, वर्षा का होना, वह अलंकार जिसमें सामयिक घटना का वर्णन रहता है
अवसर्ग-(सं०पु०) अप्रतिबन्ध, स्वतन्त्रता
अवसर्प-(सं०पुं०)चर,दास,भृत्य।
अवसर्पण-(सं०नपु०) अधोगमन, नीचे को उतार।
अवसर्पिणी-(सं०स्त्री०) जैनियों का युग विशेष।
अवसर्पी-(सं०वि०) अधोगामी, नीचे जानेवाला।
अवसव्य-(सं० वि०) देखो अपसव्य।
अवसाद-(सं०पु०) विषाद, क्षय, नाश, दीनता, समाप्ति,अवसन्नता, थकावट
अवसादक-(सं०वि०) काम बिगाड़ने वाला, थकानेवाला,समाप्त होनेवाला
अवसादन-(सं० नपुं०) नाश।
अवसादित-(सं०वि०) थकाया हुआ,
अवसान-(सं०नपु०) विराम, समाप्ति, सीमा, परिणाम, शेष, मृत्यु, सन्ध्या, दहनस्थान, मरघट।
अवसायक-(सं०वि०) पूरा करने वाला, निश्चय करनेवाला।
अवसायिता-(हिं० स्त्री०) ऋद्धि।
अवसायी-(सं०वि०) निवासी।
अवसि-(हिं०क्रि०वि०) अवश्य, निश्चय,
अवसिक्त-(सं०वि०) सींचा हुआ।
अवसी-(हिं०पु०) कच्चा काटा हुआ अन्न, गदर।
अवसुप्त-(सं०वि०) सोया हुआ।
अवसृष्ट-(सं०वि०) दिया हुआ, छोड़ा हुआ। **अवसेक**-(सं०पु०) चारो ओर छिड़काव या सिचाई। **अवसेख**-(हिं०वि०) अवशेष, बचा हुआ।
अवसेचन-(सं०नपु०) सब दिशाओ में सिचाई, पसीजना, पसीना निकालना, रोगी के शरीर मे से रक्त निकालने की क्रिया।
अवसेर-(हिं०स्त्री०) विलम्ब, चिन्ता, दुःख, व्यग्रता। **अवसेरना**-(हिं०क्रि०) कष्ट देना, दुःख देना।
अवस्कन्द-(सं०पु०) सेना के लड़ने का स्थान, शिविर, आक्रमण, धावा।
अवस्कन्दन-(सं०नपु०) सम्पूर्ण शरीर को डुबाकर स्नान, आक्रमण। **अवस्कन्दित**-(सं०वि०) आक्रमण किया हुआ, नहाया हुआ।
अवस्कर-(सं०पु०) पुरीष, विष्ठा, गोबर, मल।
अवस्तार-(सं०पु०) परदा, ढकना।
अवस्तु-(सं०नपुं०) तुच्छ वस्तु।
अवस्त्र-(सं०वि०) वस्त्रहीन, नंगा।
अवस्था-(सं०स्त्री०) दशा, स्थिति, आयु, आकार।
अवस्थान-(सं०नपु०) स्थान, स्थिति, स्थिति काल, ठहराव, ठिकना।
अवस्थित-(सं०वि०) स्थित, ठहरा हुआ, वर्तमान, दृढ़, जमा, हुआ।
अवस्थिति-(सं०स्त्री०) अवस्थान; ठहराव।
अवस्यन्दन-(सं०नपु०) चुआव,आलिंगन
अवहरण-(सं०नपु०) लूट, चोरी।
अवहार्य-(सं०वि०) दूसरे स्थान में ले जाने योग्य।
अवहास-(सं०पु०) उपहास, ठट्ठा।
अवहित-(सं०वि०) प्रसिद्ध, सावधान।
अवहित्था-(सं०स्त्री०) बाहरी आकार का छिपाना।
अवही-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बबूल का वृक्ष।
अवहेलना, अवहेला-(सं०स्त्री०) अनादर, अपमान, तिरस्कार। (हिं०क्रि०) बात न मानना, तिरस्कार करना।
अवहेलित-(सं०वि०)अनादर किया हुआ, तिरस्कृत।
अवाँ-(हिं०पु०) देखो आवाँ।
अवाँसी-हिं०स्त्री०) कृषिफल में सबस पहिले काटे हुए अन्नका बोझ,अवली।

अवाई-(हिं०स्त्री०) आगमन; देखो अवायी।
अवाक्-(सं०वि०) निस्तब्ध, मौन, चुप, चकित, घबड़ाया हुआ।
अवाकी-(सं०पु०) सम्भाषण न करता हुआ। **अवागी**-(हिं०पुं०) मौन, चुप।
अवाग्र-(सं०वि०) अवनत, झुका हुआ, नम्र
अवाङ्मुख-(सं०वि०) अधोमुख, मुख लटकाये हुए, लज्जित।
अवाची-(सं०स्त्री०) दक्षिण दिशा।
अवाचीन-(सं०वि०) दक्षिणीय, दक्षिणात्य।
अवाच्य-(सं०नपुं०) जो वचन कहने योग्य न हो, गालीगलौज, निन्दा, (वि०) अनिन्दित, नीच। **अवाच्यता**-(सं०स्त्री०) अश्लीलता, फूहड़पन।
अवाजी-(हिं०वि०) शब्द करने वाला,
अवादी-(सं०वि०) विवाद न करने वाला, न झगड़ने वाला।
अवाध-(सं०वि०) बिना बाधा या रुकावट का।
अवाध्य-(सं०वि०) रोकने से न मानने-वाला।
अवान्तर-(सं०वि०) प्रधान के मध्य का, प्रसङ्ग के बीच का। **अवान्तर-देश**-प्रान्त के बीच का प्रदेश।
अवापित-(सं०वि०) न बोया हुआ।
अवाप्त-(सं०वि०) अप्राप्त, जो प्राप्त न हुआ हो।
अवाम-(सं०वि०) दक्षिण, दाहिना।
अवार-(सं०पु०) नदी के इस पार का किनारा।
अवारण-(सं०वि०) बिना निषेध का **अवारणीय**-(सं०वि०) निषेध न किया जाने वाला। **अवारना**-(हिं०क्रि०) रोकना, मना करना (सं०) किनारा, छेद, मोड़। **अवारित**-(सं०वि०) निवारण न किया हुआ, अनिवारित
अवारी-(हिं०सं०) बागडोर, तट, किनारा।
अवार्य-(सं०वि०) अनिवार्य, अवारणीय
अवास-(हिं०पु०) देखो आवास।
अवास्तव-(सं०नपुं०) अयथार्थ, मिथ्या, झूठ।
अवाह्य-(सं० वि०) न ले जाने योग्य।
अवि-(सं०पुं०) सूर्य, भेंड़, पर्वत, वायु, कम्बल, मदार का वृक्ष।
अविकट-(सं०वि०) जो भयंकर न हो, अविस्तृत, न फैला हुआ।
अविकच-(हिं०वि०) बिना खिला हुआ।
अविकल-(सं०वि०) चिन्ताशून्य, निश्चल, शान्त, पूर्ण व्याकुल न रहने वाला।
अविकल्प-(सं०पुं०) असन्दिग्ध, निश्चल, सन्देह रहित।
अविकार-(सं०पु०) विकार रहित, निर्दोष, **अविकारी**-(सं०पुं०) निर्विकार, विकार जनक न हो।
अविकृत-(सं०पु०) प्रकृतिगुणयुक्त, जो बिगड़ा न हो।

अविक्रीत-(सं०वि०) जो बेचा न गया हो
अविक्रेय-(सं०वि०) न बेचने योग्य।
अविगत-(सं०वि०) अज्ञात, अनिर्वचनीय, न वर्णन करने योग्य, नित्य, जिसका नाश न हो।
अविगर्हित-(सं०वि०) प्रशंसनीय, अनिन्दनीय।
अविग्रह-(सं०वि०) निरवयव, निराकार
अविघ्न-(सं०वि०) बिना विघ्न का, विघ्न शून्य।
अविचक्षण-(सं०वि०) निर्बुद्धि, मन्द, मूर्ख
अविचल-(सं०वि०) अचल, स्थिर, अटल
अविचर(हिं०वि०) स्थिर, अटल।
अविचार-(सं०पु०) अज्ञान, अन्याय, अत्याचार। **अविचारित**-(सं०वि०) बिना विचारा हुआ। **अविचारी**-(सं०पु०) अविवेकी, अत्याचारी, अन्यायी।
अविचेतन-(सं०वि०) संज्ञा रहित।
अविच्छिन्न(सं०वि०) सतत, निरन्तर।
अविछीन-(हिं०वि०) निरन्तर, सतत।
अविजित-(सं०वि०) अजेय।
अविच्छेद-(सं०पु०) विच्छेद का अभाव (वि०) निरन्तर।
अविज्ञ-(सं०वि०) अनिपुण।
अविज्ञात-(सं०वि०) अज्ञात, अनजाना, बिना समझा बूझा।
अविज्ञय(सं०वि०) दुर्ज्ञेय, न जानने योग्य।
अवितत्-(सं०वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा
अवितथ्य-(सं०वि०) असत्य, मिथ्या, झूठ।
अवितथ-(सं०वि०) सप्य, सच्चा।
अवितर्कित-(सं०वि०) तर्कशून्य, बिना तर्क किया हुआ।
अवित्त-(सं०वि०) धनरहित, निर्धन।
अविद-(सं०वि०) मूर्ख, अज्ञानी।
अविदग्ध-(सं०वि०) न जलाया हुआ, कच्चा।
अविदित-(सं०वि०) अज्ञात, अप्रकट, गुप्त, न जाना हुआ।
अविदूर-सं०वि०) निकट समीप।
अविद्ध-(सं०वि०) न बेधा हुआ, न छेदा हुआ।
अविद्य-(सं०पुं०) मूर्ख, लंठ।
अविद्यमान-(सं०पुं०) अनुपस्थित, जो उपस्थित न हो, असत्, मिथ्या।
अविद्या-(सं०पु०) अज्ञान, ज्ञान का अभाव, मिथ्या ज्ञान, मोह।
अविद्वता-(सं०पुं०) अज्ञान, मूर्खता।
अविद्वान्-(हिं०पु०) मूर्ख, अपण्डित।
अविद्वेष-(सं०पु०) अविरोध का अभाव, अनुराग।
अविधवा-(सं०पु०) सधवा, सोहागिन।
अविधान-(हिं०पु०) विधान शून्य, बिना तरीके का।
अविधि-(सं०वि०) नियम का विरोध. (वि०) नियम के प्रतिकूल।
अविनय-(हिं०स्त्री०) विनय का अभाव, धृष्टता, उद्दण्डता।
अविनश्वर-(हिं०स्त्री०) अविनाशी, नाश न होने वाला, चिरस्थायी (पुं०)

परमेश्वर।
अविनाभाव-(हिं०स्त्री०) व्याप्त और व्यापक का सम्बन्ध।
अविनाश-(हिं०पु०) विनाश का अभाव, रक्षा **अविनाशी**-(सं०वि०) नाश न होने वाला, अविनश्वर, अक्षय। **अविनासी**-(हिं०वि०) देखो अविनाशी।
अविनिर्मोक-(सं०वि०) बिना छूट का, जिसमें छूट न हो।
अविनीत-(सं०वि०) विनय शून्य, अशिक्षित, दुष्ट, उद्धत, धृष्ट, ढीठ।
अविनीता-(सं०वि०) कुलटा, व्यभिचारिणी
अविपन्न-(सं०वि०) विशुद्ध, स्वच्छ।
अविपर्यय-(सं०वि०) विपर्यय का अभाव बिना क्रम का।
अविपश्चित्-(सं०वि०) अविवेकी, मूर्ख,
अविपुल-(सं०वि०) क्षुद्र, छोटा।
अविभक्त-(सं०वि०) विभाग रहित, मिला हुआ, अभिन्न, अलग न किया हुआ।
अविमुक्त-(सं०वि०) जो मुक्त न हो, जिसने मुक्ति न प्राप्त किया हो, बद्ध (पुं०) काशी क्षेत्र, कनपटी।
अवियोग-(सं०वि०) सयोग, मिलाप।
अविरत-(सं०वि०) अनवरत, निरन्तर, नित्य, (क्रि०वि०) कार्य में लीन (क्रि०वि०) लगातार, सर्वदा।
अविरति-(सं०स्त्री०) लीनता, विषयासक्ति, (वि०) विराम शून्य।
अविरल-(सं०वि०) सघन, निविड़, मिला हुआ।
अविराम-(सं०पु०) विराम का अभाव, (वि०) निरन्तर।
अविरुद्ध-(सं०वि०) बन्धन रहित, अनुकूल।
अविरोध-(सं०पु०) विरोध का अभाव, समानता, अनुकूलता, मैत्री, मेल, (वि०) अनुकूल। **अविरोधी**-(सं०वि०) विरोध न करने वाला, मित्र।
अविलम्बित-(सं०वि०) देर न किया हुआ (अव्य०) शीघ्र।
अविलास-(सं०पु०) विलासका अभाव, हाव भाव न दिखलाना।
अविवक्षित-(सं०वि०) असंबद्ध विषयका
अविवर-(सं०वि०) घना, बिना छिद्र का।
अविवाद-(सं०वि०) निर्विवाद, विवाद रहित।
अविवाहित-(सं०वि०) जिसका व्याह न हुआ हो, कुवाँरा। **अविवाही**-(सं०वि०) विवाह न करनेवाला।
अविवेक-(सं०पु०। विशेष ज्ञान का अभाव, अविचार, अज्ञान, मूर्खता, अन्याय। **अविवेकता, अविवेकत्व**-(सं०) विवेक का अभाव, अज्ञानता, मूर्खता। **अविवेकी**-(सं०वि०) अज्ञानी, मूर्ख, अविचारी, अन्यायी।
अविवेचक-(सं०वि०) जिसको अपने कर्तव्य का ज्ञान न हो। **अविवेचना**-(सं०स्त्री०) अविवेकता, मूर्खता।
अविशङ्का-(सं०स्त्री०) विश्वास, भरोसा।
अविशुद्ध-(सं०वि०) अपवित्र, अस्वच्छ।
अविशेष-(सं०पुं०) भेद का अभाव,

अभेद, ऐक्य, (वि०) तुल्य, समान, बराबर
अविश्रान्त-(सं०वि०) विराम रहित, न थका हुआ।
अविश्वसनीय-(सं०वि०) विश्वास न करने योग्य। **अविश्वस्त**-(सं०वि०) अविश्वसनीय, सन्दिग्ध। **अविश्वास**-(सं०पु०) विश्वास का अभाव, सन्देह
अविश्वासी-(सं०वि०) विश्वास न करने वाला, जिसपर कोई विश्वास न करे।
अविषम-(सं०वि०) सुगम, सीधा।
अविषय-(सं०पु०) अगोचर, अदृश्य, इन्द्रियातीत।
अविषाद-(सं०पु०) प्रसन्नता, आनन्द।
अविस्तर-(सं०वि०) संकुचित, न फैला हुआ।
अविस्तार-(सं०पुं०) विस्तार का अभाव
अविस्तीर्ण-(सं०वि०) न फैला हुआ, संकुचित।
अविस्तृत-(सं०वि०) संलग्न, मिला हुआ
अविहड़-(र) (हिं०वि०) जो बीहड़ न हो, जो टूटा न हो, अनश्वर, अखण्ड
अविहित-(सं०वि०) निषिद्ध, न किया हुआ
अविह्वल-(सं०वि०) जो व्याकुल न हो, स्वस्थ।
अवीक्षित-(सं०वि०) अदृष्ट, न देखा हुआ।
अवीज-(सं०वि०) बीजशून्य, बिना बीज का, शुक्रहीन, नामर्द।
अवीर-(सं०वि०) जो वीर या पराक्रमी न हो।
अवीरा-(सं०स्त्री०) पुत्र तथा पति से रहित स्त्री, स्वतन्त्र महिला।
अवीह-(हिं०वि०) अभय, निडर।
अवृत्ति-(सं०वि०) जीविका शून्य, बिना रोजगार का।
अवृहत्-(सं०वि०) जो बड़ा न हो छोटा
अवेक्षक-(सं०नपुं०) दर्शक, निरीक्षक।
अवेक्षण-(सं०नपुं०) अवलोकन, दर्शन, **अवेक्षणीय**-(सं०वि०) दर्शनीय, देखने योग्य। **अवेक्षित**-(सं०वि०) पर्यालोचित, निरीक्षण किया हुआ।
अवेज-(हिं०पु०) प्रतीकार, बदला।
अवेद्य-(सं०वि०) अलभ्य, न जानने योग्य
अवेला-(सं०स्त्री०) अनुचित काल कुसमय
अवेश-(हिं०पु०) देखो आवेश।
अवेस-(हिं०पु०) देखो आवेश।
अवेष्ट-(सं०वि०) वेष्टन रहित, बिना ढपने का।
अवैतनिक-(सं०वि०) बिना वेतन का, बिना कुछ लिये काम करने वाला।
अवैकि-(सं०वि०) वेद से सम्बन्ध न रखने वाला, वेद विरुद्ध।
अवैध-(सं०वि०) विधि विहीन, निषिद्ध
अवैधव्य-(सं०नपुं०) सधवापन, सोहाग
अवैर-(सं०नपुं०) वैर का अभाव, शत्रुता न होना।
अवैराग्य-(सं०नपुं०) वैराग्यका अभाव, विषयासक्ति।
अव्यक्त-(सं०नपुं०) कामदेव, शिव,

अज्ञान, आत्मा, प्रकृति, सूक्ष्म शरीर, ब्रह्म, (वि०) अज्ञात,अगोचर,अप्रत्यक्ष, अस्पष्ट । **अव्यक्तगणित**-बीजगणित; **अव्यक्तगति**-गुप्त रूप से जानेवाला; **अव्यक्तमूर्ति**-जिसका रूप देख न पड़े; **अव्यक्तराशि**-बीजगणित मे, अज्ञात परिमाण; **अव्यक्तलिङ्ग**-जो पहिचाना न जा सके, सन्यासी ।

अव्यग्र-(सं०वि०) न घबड़ाया हुआ, शान्त, सन्तुष्ट ।

अव्यथ-(सं०वि०) व्यथा या पीड़ा रहित **अव्यथा**-(सं०वि०) व्यथा का अभाव, आरोग्य । **अव्यभिचार**-(सं०पु०) व्यभिचार का अभाव, नित्यता ।

अव्यय-(सं०नपुं०) व्याकरण में वह शब्द जिसका रूप विभक्ति और वचनों में समान ही रहता है, शिव, विष्णु, परब्रह्म (वि०) विकार शून्य, सर्वदा समान रहने वाला, नाश न होनेवाला, नित्य, बिना आदि अन्त का, व्ययहीन, बिना खर्च का, अक्षय

अव्ययीभाव-(सं० पुं०) व्याकरण में समास का एक भेद ।

अव्यर्थ-(सं०पु०) सार्थक, सफल, जो व्यर्थ न हो, (वि०) अवश्य प्रभाव डालने वाला ।

अव्यलीक-(सं०वि०) प्रिय, सत्य, सच्चा,

अव्यवधान-(सं०नपु०)निकटता. समीपता

अव्यवसाय-(सं०पु०) उद्यम का अभाव, व्यवसाय का न होना । **अव्यवसायी**-(सं०वि०) उद्यम रहित, निरुद्यमी ।

अव्यवस्था-(सं०स्त्री०) नियमका अभाव, शास्त्रादि के विरुद्ध व्यवस्था,मर्यादा न होना, (वि०)स्थिरता रहित,चञ्चल **अव्यवस्थित**-(सं०वि०) बिना मर्यादा का, बेठिकाने का, अस्थिर,चञ्चल ।

अव्यवहार्य-(सं०वि०) व्यवहार में न आनेवाला, पतित ।

अव्यवहित-(सं०वि०) व्यवधान रहित, सटा हुआ ।

अव्यसन-(सं० नपुं०) बुरी टेव का न होना ।

अव्यस्त-(सं०वि०) पूरा, समूचा ।

अव्याकुल-(सं०वि०) जो घबड़ाया न हो, स्वस्थ ।

अव्याकृत-(सं०वि०) अप्रकाशित, गुप्त, विकार रहित, वेदान्त मत के अनुसार संसार का बोजरूपकारण ।

अव्याख्येय-(सं०वि०) व्याख्या न करने योग्य ।

अव्याज-(सं० पुं०) छल या कपट का अभाव ।

अव्यापक-(सं०वि०) व्यापक न होने वाला, घिरा हुआ, परिच्छिन्न ।

अव्यापार-(सं०पुं०) निरर्थक व्यापार, जो अपना कार्य न हो ।

अव्यापी-(सं०वि०) देखो अव्यापक ।

अव्याप्त-(सं०वि०) जो व्याप्त न हो, परिच्छिन्न । **अव्याप्ति**-(सं०स्त्री०) व्याप्ति का अभाव । **अव्याप्य**-(सं० वि०) व्याप्त न होने वाला, अद्भुत ।

अव्याकृत-(सं०वि०) संयुक्त, लगा हुआ, जो उलटा पुलटा न हो ।

अव्याहत-(सं० वि०) बेरोक, सच्चा, हताश न होने वाला ।

अव्युत्पन्न-(सं० वि०) अनुभव शून्य, अनभिज्ञ, व्याकरण न जाननेवाला ।

अव्रण-(सं०वि)-क्षत रहित ।

अशकुन-(सं०नपुं०) बुरा सगुन,दुर्निमित्त

अशक्त-(सं० वि०) अयोग्य, असमर्थ, निर्बलता । **अशक्तता, अशक्तत्व**-(सं०)असमर्थता, निर्बलता । **अशक्ति**-(सं०स्त्री०) अयोग्यता, निर्बलता, नपुंसकता । **अशक्य**-(सं०वि०) असाध्य, असम्भव, (पु०) एक अलङ्कार जिसमें बाधावश किसी कार्य के न होने का भाव दिखलाया जाता है ।

अशङ्क-(सं० वि०) निर्भय, निडर । **अशङ्का**-(सं०स्त्री०) भय का अभाव । **अशङ्कित**-(सं० वि०) सन्देह रहित, निडर ।

अशठ-(सं०वि०) जो दुष्ट न हो, भला, सज्जन ।

अशत्रु-(सं०पुं०) मित्र, चन्द्रमा (वि०) शत्रु रहित ।

अशन-(सं०नपुं०) भोजन, आहार, अन्न, व्याप्ति ।

अशना-(सं०स्त्री) भोजन की इच्छा ।

अशनि-(सं०पुं०) इन्द्र,विद्युत्,अग्नि,हीरा

अशनीय-(सं०वि०) भोजन कराने योग्य

अशब्द-(सं० वि०) शब्द हीन, बिना शब्द का ।

अशरण-(सं०वि०) बिना शरणका,अनाथ

अशरीर-(सं० वि०) देहशून्य, बिना शरीर का (पुं०) परमात्मा, कामदेव । **अशरीरत्व**-(सं०नपुं०) मोक्ष, निर्वाण। **अशरीरी**-(सं०वि०) देहशून्य, बिना शरीर का ।

अशर्म-(सं०वि०) सुख रहित, दु:खी ।

अशस्त्र-(सं० वि०) शस्त्र रहित, बिना शस्त्र का ।

अशाखा-(सं०वि०) बिना शाखा का ।

अशान्त-(सं० वि०) जो शान्त न हो, असन्तुष्ट, भयङ्कर । **अशान्तता, अशान्ति**-(सं०स्त्री०) शान्ति का अभाव, चञ्चलता, असन्तोष, अस्थिरता ।

अशाश्वत-(सं०वि०) अनित्य, अस्थिर ।

अशासन-(सं०नपुं०) शासन का अभाव ।

अशिक्षित-(सं० वि०) शिक्षा शून्य,बिना पढ़ा लिखा, अनाड़ी, गँवार, मूर्ख ।

अशित-(सं०वि०) भक्षित, खाया हुआ ।

अशिथिल-(सं०वि०)जो शिथिल न हो,दृढ़

अशिव-(सं०वि०) अमङ्गल, अशुभ ।

अशिशु-(सं०वि०) शिशु रहित, बिना सन्तान का ।

अशिष्ट-(सं०वि०) अविनीत, उजड्ड ।

अशिष्टता-(सं०स्त्री०) दु:शीलता,ढिठाई

अशीत-(सं०नपुं०) उष्णता, गर्मी ।

अशीतल-(सं०वि०)जो ठंढा न हो,गरम

अशील-(सं०नपुं०)दुष्ट,शील,बुरा स्वभाव

अशुचि-(सं०नपुं०)अपवित्र,मैला, कुचैला **अशुचिता**-(सं०स्त्री०) अपवित्रता । **अशुचित्व**-(सं०नपुं०) देखो अशुचिता ।

अशुद्ध-(सं०वि०) दोषयुक्त, अपवित्र । **अशुद्धता**-(सं०स्त्री०)अपवित्रता, गलती ।

अशुद्धि-(सं०स्त्री०) दोष ।

अशुव-(हिं०पुं०) अश्विनी नक्षत्र ।

अशुभ-(सं०पुं०) अमङ्गल, पाप,अपराध (वि०) बुरा ।

अशुभ्र-(सं०पुं०)कृष्ण, काला ।

अशुष्क-(सं०वि०) जो सूखा न हो, हरा, तर ।

अशून्य-(सं०वि०) पूर्ण अहीन, भरा हुआ

अशृङ्ग-(सं०वि०) बिना सींग का ।

अशेष-(सं०वि०) समूचा, दोषरहित, पूरा, समाप्त, बिना छोर या अन्त का । **अशेषता**-(सं०वि०) पूर्णता ।

अशोक-(सं०पुं०) एक वृक्ष जिसकी पत्तियां आमकी पत्तियों की तरह लंबी तथा लहरियादार होती हैं, (वि०) शोक रहित । **अशोक पुष्प मंजरी**-(सं०स्त्री०) दण्डक छन्द का एक भेद । **अशोक बाटिका**-(सं०स्त्री०) अशोक की वाटिका, रम्य उद्यान, रावण का इस नाम का बगीचा जिसमें उसने सीता को ले जाकर रक्खा था ।

अशोच-सं०पु०) शोक का न होना ।

अशोधन-(सं०नपुं०) अशुद्धता, मैलापन

अशोधित-(सं०वि०) न शोधा हुआ, शुद्ध न किया हुआ ।

अशोभत-(सं०वि०) कुरूप, कुत्सित ।

अशोष्य-(सं०वि०) न सुखाने योग्य ।

अशौच-(सं०नपुं०) अशुद्धता,अपवित्रता, वह अशुद्धि जो परिवार में जनन या मृत्यु होने पर हिन्दुओं में मानी जाती है । **अशौचत्व**-(सं०नपुं०) अशुद्धता, अपवित्रता ।

अशौर्य-(सं०नपुं०) वीरता का अभाव (वि०) पराक्रम शून्य ।

अश्म-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, पत्थर ।

अश्मक-(सं०पु०) भारतवर्ष के दक्षिण के एक देश का नाम ।

अश्मकर-(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना ।

अश्मगर्भ-(सं०पुं०) मरकतमणि, पन्ना ।

अश्मन्ताक-(सं०नपुं०)चूल्हा,भट्ठी,दीवट

अश्मरी-(सं०स्त्री०) मूत्र, कृच्छ्र, पथरी नामक रोग ।

अश्रद्धा-(सं०स्त्री०) श्रद्धा का अभाव, अभक्ति ।

अश्रद्धेय-(सं०वि०)आदर न करने योग्य

अश्रम-(हिं०पुं०) श्रम का अभाव, सुस्ती

अश्रान्त-(सं०वि०) न थका हुआ (अव्य०) निरन्तर, लगातार, सर्वदा ।

अश्रु-(सं०नपुं०) नेत्र जल, आँसू ।

अश्रुत-(सं०वि०) जो सुना न गया हो जो सुन न पड़ता हो, श्रुति विरुद्ध । **अश्रुतपूर्व**-(सं०वि०) जो पहिले न सुना गया हो, विलक्षण, अद्भुत ।

अश्रुपात-(सं०पुं०) रुलाई, आँसू गिराना, रोना । **अश्रुपूर्ण**-(सं०वि०) आँसू से भरा हुआ ।

अश्रेयस-(सं०वि०)अकल्याण, हीन, बुरा

अश्रेष्ठ-(सं०वि०) अनुत्तम, कुत्सित,बुरा

अश्रौत-(सं०वि०) श्रुतिविरुद्ध ।

अश्लाघनीय-(सं०वि०) अप्रशसनीय, निन्द्य ।

अश्लिष्ट-(सं०वि०) असंगत, असंबद्ध,

अश्लील-(सं०वि०) कुत्सित,भद्दा, फूहड़, लज्जाजनक (स्त्री०) गँवारू बोली ।

अश्लीलता-(सं०स्त्री०) गाली गलौज, फूहड़पन ।

अश्लेषा-(सं०स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में से नवाँ नक्षत्र ।

अश्व-(सं०पुं०) घोटक, घोड़ा, तुरङ्ग । **अश्वकर्ण**-(सं०पुं०) एक प्रकार का शाल का वृक्ष । **अश्वकुटी**-(सं०स्त्री०) अस्तबल, घोड़साल । **अश्वगन्धा**-(सं०स्त्री०) असगन्ध नामक वृक्ष विशेष **अश्वगोष्ठ**-(सं०नपुं०) अश्वशाला, अस्तबल । **अश्वचिकित्सक**-(सं०पु०) अश्ववैद्य, सलोतरी । **अश्वजीवन**-(सं०पु०) चणक, चना । **अश्वतर**-(सं०पुं०) खच्चर, एक सर्प विशेष ।

अश्वत्थ-(सं०पुं०) पीपल का वृक्ष ।

अश्वत्थामा-(सं०पुं०) द्रोणाचार्य के पुत्र का नाम ।

अश्वदूत-(सं०पु०) घोड़ सवार दूत ।

अश्वपति-(सं०पु०) घोड़े का मालिक घोड़सवार, सईस, केकयदेश के राजाओं की उपाधि । **अश्वपाल**-(सं०पुं०) घोड़े का रक्षक, साईस **अश्वबन्धन**-(सं०पुं०) घोड़ा बाँधने की अगाड़ी पिछाड़ी । **अश्वमेध**-(सं०पु०) प्राचीन काल का एक प्रधान यज्ञ विशेष, इसमें घोड़े के कपाल में जयपत्र बाँधा जाता था और इसको भूमण्डल में अपनी इच्छानुसार घूमने के लिये छोड़ देते थे, बाद में घोड़े की बलि चढ़ाई जाती थी । **अश्वयान**-(सं०नपु०) घोड़े की सवारी ।

अश्वयुज-(सं०पु०) आश्विन (कुँआर) का महीना ।

अश्वरक्षक-(सं०पुं०) घोड़े का रक्षक, साईस । **अश्वरथ**-(सं०पु०) जिस गाड़ी में घोड़ा जुता हो । **अश्ववाह**-(सं०पुं०)घोड़सवार **अश्ववैद्य**-(सं०पु०) अश्व चिकित्सक । **अश्वशाला**-(सं०स्त्री०) घुड़साल, अस्तबल ।

अश्वारूढ़-(सं०पु०) घोड़े पर चढा हुआ, घोड़सवार । **अश्वारोहण**-(सं०पुं०) घोड़े की सवारी **अश्वारोही**-(सं०पुं०) घोड़े का सवार ।

अश्विनी-(सं०स्त्री०) सत्ताइस नक्षत्र के अन्तर्गत पहिला नक्षत्र, घोड़ी ।

अश्विनीकुमार-(सं०नपुं०) सूर्य के दो पुत्रों का नाम जो प्रभा नाम की पत्नी से उत्पन्न हुए थे, ये देवताओं के वैद्य कहे जाते हैं ।

अषाढ-(सं०पुं०) असाढ का महीना,

देखो आषाढ।

अष्ट-(सं०वि०) आठ की संख्या।

अष्टक-(सं०पुं०) आठ पदार्थों का संग्रह, आठ श्लोक का स्तोत्र या काव्य। **अष्टकर्ण**-(सं०पुं०) चतुर्मुख ब्रह्मा। **अष्टकमल**-(सं०पु०) हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक भिन्न-भिन्न स्थानों में आठ कमल माने गये है, इनके नाम-मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूर, स्वाधिष्ठान, अनाहत, आज्ञाचक्र, सहस्रार चक्र और ब्रह्मरन्ध्र है।

अष्टका-(सं०स्त्री०) अष्टमी, इस तिथि के दिन का कृत्य, योग, श्राद्ध इ०।

अष्टकुल-(सं०नपुं०) पुराण के अनुसार सर्पके आठकुल-शेष, वासुकि, कम्बल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शङ्ख, तथा कुलित

अष्टकृष्ण-(सं०पुं०) वल्लभ कुल के अनुसार कृष्णकी आठ मूर्तियाँ-श्रीनाथ नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचन्द्रमा और मदनमोहन।

अष्टकोण-(सं०नपुं०) आठ कोने का यन्त्र। **अष्टगन्ध**-(स०पु०) आठ सुगन्धित द्रव्य। **अष्टगुण**-(स०वि०) अठगुना। **अष्टतारिणी**-(सं०स्त्री०) भगवती की आठ मूर्ति, तारा, उग्रा, महोग्रा, वज्रा, काली, सरस्वती, कामेश्वरी और चामुण्डा।

अष्टद्रव्य-(सं०नपुं०) हवन में प्रयोग होने वाले आठ द्रव्य यथा-अश्वत्थ (पीपल) गूलर, पाकर, बट, तिल, सरसों, खीर और घृत।

अष्टधाती-(हिं०वि०) आठ धातुओं से निर्मित, पुष्ट, दृढ उपद्रवी।

अष्टधातु-(स०पु०) आठ धातु यथा-सोना, चांदी, तांबा, रांगा, जस्ता, सीसा, लोहा, पारा।

अष्टपदी-(स०स्त्री०) आठ पदवाली गीत

अष्टपाद-(स०पु०) शरभ, टिड्डी, मकड़ी

अष्टभाव-(स०पुं०) वैद्यक के अनुसार-स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभङ्ग, ऐश्वर्य, कम्प, वैवर्ण्य तथा अश्रुपात भाव शरीर के होते है।

अष्टभुजा-(स०स्त्री०) दुर्गा देवी।

अष्टम-(स०वि०) आठवाँ।

अष्टमङ्गल-(स०पुं०) आठ प्रकार के मङ्गल द्रव्य यथा-सिंह, वृष, नाग, कलश, चामर, वैजयन्ती, भेरी और दीपक।

अष्टमी-(सं०स्त्री०) किसी महीने के कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष की आठवीं तिथि।

अष्टमूर्ति-(सं०पुं०) शिव की आठ मूर्तियां यथा-सर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव।

अष्टवर्ग-(स०पुं०) आठ प्रकार की औषधियों का वर्ग, इनके नाम ये हैं-मेद, महामेद, ऋद्धि, वृद्धि, जीवक, ऋषभक, काकोली और क्षीरकाकोली

अष्टवंश-काशी मे सारस्वतो का एक समूह।

अष्टसिद्धि-(सं०स्त्री०) आठ प्रकार की सिद्धि जिनके नाम-अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व और कामावासायिता है।

अष्टाङ्ग-(स०पु०) योग की क्रिया के आठ भेद-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि है; प्रणाम करने में-घुटना, पैर, हाथ, छाती, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि-का विधान रहता है, दोनों पाँव दोनो हाथ, दोनों घुटने, छाती और मस्तक को भूमि मे टिका कर प्रणाम करने को साष्टाङ्ग प्रणाम कहते हैं; आयुर्वेद मे-शल्य, शालाक्य, काय चिकित्सा, भूतविद्या, कौमार भृत्य, अङ्गद तन्त्र, रसायन तन्त्र और वाजीकरण. अष्टाङ्ग कहलाते हे; (वि०) आठ भाग का, अठपहल।

अष्टांगी-(स०वि०) आठ अङ्ग वाला।

अष्टाक्षर-(स०पु०) आठ अक्षरों का मन्त्र (वि०) आठ अक्षरों का।

अष्टादश-(स०वि०) अठारह।

अष्टाध्यायी-(स०स्त्री०) पाणिनीय व्याकरण का ग्रन्थ जिसमें आठ अध्याय है

अष्टापद-(स०पु०) सुवर्ण, धतूरा, मकड़ी, कैलास, सिंह।

अष्टावक्र-(स०पुं०) एक ऋषि का नाम, टढे शरीर का मनुष्य।

अष्टाह-(स०वि०) आठ दिन ठहरनेवाला

अष्ठीला-(सं०स्त्री०) एक गुल्म रोग, गुठली, अटिली।

अस-(हिं०सर्व०) ऐसा यह (वि०) इस प्रकार का।

असंज्ञा-(सं०स्त्री०) सज्ञा का अभाव, अचेत अवस्था।

असंक-(हिं०वि०) अशंक, निडर।

असंयत-(सं०वि० अबद्ध, बन्धन शून्य।

असंयुक्त-(स०वि०) वियुक्त, जो मिला न हो।

असंयोग-(स०पु०) संयोग का अभाव, मेल न होना।

असंरुद्ध-(स०वि०) बिना रोक का, बिना घिरा हुआ।

असंलग्न-(स०वि०) असम्बद्ध, पृथक्, अलग

असंवृत-(स० वि०) जो ढपा न हो, खुला हुआ।

असंशय-(सं०पु०, नपु०) सन्देह का अभाव, (अव्य०) निःसन्देह।

असंश्लिष्ट-(स० वि०) असंगत, जुदा, विभक्त।

असंसक्त-(सं०वि०) पृथक्, विभक्त।

असंसर्ग-(सं०पु०) संसर्ग का अभाव, साथ न होना।

असंसारी-(स०वि०) अलौकिक, अद्भुत, निराला, जो संसार से दूर रहता हो।

असंसिद्ध-(सं०वि०) अपूर्ण, जो पूरा न हो।

असंसृष्ट-(सं०वि०) संसर्ग रहित, जुदा, अलग।

असंस्कृत-(स०वि०) गर्भाधान इत्यादि संस्कार न किया हुआ, परिष्कार न किया हुआ।

असंस्तुत-(सं० वि०) स्तुति न किया हुआ, अपरिचित।

असंस्थित-(सं०वि०) चंचल, चुलबुला।

असंहत-(स० वि०) असंलग्न, इकट्ठा न होने वाला।

असकताना-(हि०क्रि०) आलस्य मे पड़े रहना, ऊँघना, जंभाई लेना।

असकन्ना-(हिं०पु०) मियान के भीतर की मलीनता हटानेका एक हथियार।

असकल-(स०वि०) असम्पूर्ण, अधूरा।

असकृत-(स०अव्य०) अनेकबार, बारबार।

असक्त-(स०वि०) शक्ति रहित, निर्बल।

असगंध-(हिं० पु०) अश्वगन्धा, एक सीधी झाड़ी जिसकी मोटी जड़ औषधियों में प्रयोग होती है।

असगोत्र-(स०वि०) भिन्न गोत्र का, जो एक ही गोत्र का न हो।

असगुन-(हिं०पुं०) देखो अशकुन।

असकीर्ण-(स०वि०) विशुद्ध, बेमेल।

असंकुल-(स०वि०) विस्तीर्ण, खुला हुआ।

असंकेतित-(स०वि०) संकेत न किया हुआ, न बुलाया हुआ।

असंक्रान्तमास-(स०पु०) अधिकमास, मलमास।

असङ्क्षेप-(स०पु०) संक्षेप न होनेवाला

असङ्ख्य-(स०वि०) अगणनीय, अनगिनतिन। **असङ्ख्यता**-(स०स्त्री०) अमितता, अगणनीयता।

असङ्ख्यात-(सं०वि०) अनेक, बहुसंख्य, बहुत।

असंग-(स०पु०) संबन्धशून्यता, (वि०) न्यारा **असंगत**-(स०वि०) असम्बद्ध, अनुचित, बेठीक। **असंगति**-(सं०स्त्री०) अनुपयुक्तता एक अलंकार का नाम **असंगम**-(सं०पु०) सङ्गम का अभाव, (वि०) बिना मेल का।

असज्जन-(सं०वि०) दुर्जन, दुष्ट, खल।

असढ़िया-(हिं०पु०) एक प्रकार का चित्तीदार सर्प।

असण-(हिं०पु०) गड्ढा, गड़हा।

असत-(सं०वि०) जो सच्चा न हो, निन्दित, अनित्य, जड़। **असत्कर्म**-निन्दित कार्य।

असती-(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी, कुलटा, पुंश्चली। **असतीसुत**-जारज, दोगला।

असत्कार-(स०पु०) अपमान।

असत्ता-(स०पु०) अविद्यमानता, अनस्तित्व, असाधुता।

असत्व-(स०नपु०) जो द्रव्य न हो।

असत्य-(स०वि०) मिथ्या, झूठ (नपुं०) झूठी बात। **असत्यता**-(स०वि०) मिथ्यात्व, झुठाई। **असत्यवाद**-(स०पु०) मिथ्यावाद, झूठी बात। **असत्यवादी**-(सं०वि०) झूठ बोलने वाला।

असत्संग-(सं०वि०) कुसंग में पड़ा हुआ।

असथन-(हि०पु०) जायफल।

असदाचार-(स०पुं०) सदाचार का अभाव।

असदृश-(स०वि०) असमान।

असद्भाव-(सं०पु०) दुष्ट अभिप्राय,

असद्व्यवहार-(स०पुं०) दुष्ट व्यवहार

असन-(हि०पु०) देखो अशन।

असना-(हि०पु०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी मकान के किवाड़ इ० में लगाई जाती है।

असनान-(हिं०पु०) स्नान, नहाना।

असनायी-(हि०स्त्री०) प्रेम,

असना-(स०वि०) खल, दुष्ट

असन्तान-(स०वि०) वंश रहित।

असन्ताप-(स०पु०) सन्ताप या कष्ट का न होना।

असन्तुष्ट, असन्तुष्टि-(स०वि०) सन्तोष रहित, अतृप्त।

असन्तोष-(स०पु०) तृप्ति का अभाव, अधैर्य। **असन्तोषी**-(स०वि०) सन्तोष न करनेवाला।

असन्दिग्ध-(सं०वि०) सन्देह से रहित, प्रकट, स्पष्ट।

असन्धि-(स०पु०) सन्धि का अभाव, सटे रहना।

असन्नद्ध-(स०वि०) अतत्पर, अहंकारी, घमण्डी।

असन्निहित-(सं०वि०) दूर का, जो पास न हो।

असनान-(हि०पु०) देखो स्नान।

असन्मान-(स०पु०) अपमान, ढिठाई।

असपिण्ड-(स०पु०) जो सपिण्ड न हो।

असफलता (सं०वि०) निष्फलता।

असभई-(हि०वि०) असभ्मता, अशिष्टता

असभ्य-(स०वि०) अशिष्ट, गँवार, दुष्ट, उजड्ड। **असभ्यता**-(स०वि०) अशिष्टता, गँवारपन।

असम-(सं०वि०) अतुल्य, असदृश, ऊँचा नीचा, एक काव्यालङ्कार जिससे उपमान की अव्याप्ति दिखलाई जाती है।

असमक्ष-(सं०नपु०) अप्रत्यक्ष (वि०) देख न पड़ने वाला।

असमग्र-(स०वि०) असम्पूर्ण, जो पूरा न हो।

असमंजस्-(स०पु०) इक्ष्वाकु वंश के राजा सगर के ज्येष्ठ पुत्र का नाम।

असमंजस-(स०पु०) अनुपयुक्त विषय (वि०) असदृश, अतुल्य, अड़चन, कठिनाई।

असमय-(सं०पु०) दुष्टकाल, बुरा काल

असमर्थ-(सं०वि०) अशक्त, दुर्बल, अयोग्य, कार्य में अक्षम, सामर्थ्यहीन

असमबाण-(स०पुं०) पंचशर, कामदेव।

असमवायिकारण-(सं०नपु०) आकस्मिक हेतु, न्याय के अनुसार द्रव्यस्थित गुण।

असमशर-(सं०पुं०) देखो असमबाण।

असमसायक-(सं०पुं०) देखो असमबाण

असमस्त-(सं०वि०) असम्पूर्ण, अधूरा ।
असमान-(सं०वि०) अतुल्य, जो बराबर न हो ।
असमान-(हिं०पु०) देखो आसमान ।
असमानता-(सं०वि०) विरोध, विषमता
असमापित, असमाप्त-(सं०वि०) असम्पूर्ण, अधूरा ।
असमाप्ति-(सं०स्त्री०) अधूरापन ।
असमीक्ष्य-(सं०अव्य०) बिना सोचे विचारे ।
असमीचीन-(सं०वि०) अनुचित, अयुक्त
असमूचा-(हिं०वि०) असम्पूर्ण, अधूरा ।
असमृद्ध-(सं०वि०) जो धनवान न हो, दरिद्र ।
असम्पत्ति-(सं०स्त्री०) धन का अभाव ।
असम्पन्न-(सं०वि०) सम्पति रहित ।
असम्पर्क-(सं०पु०) सम्बन्ध का अभाव,
असम्पूर्ण-(सं०वि०) जो पूर्ण न हो, अधूरा ।
असम्प्राप्य-(सं०वि०) बिना पहुँच का ।
असम्बद्ध-(सं०वि०) सम्बन्ध शून्य, अयथार्थ ।
असम-(सं०वि०) अतुल्य ।
असमत-(हिं०पु०) पवित्रता, सतीत्व ।
असम्भव-(सं०वि०) असङ्गत, विरुद्ध, (पुं०) एक काव्यालंकार जिसमें असम्भव विषय का होना दरसाया जाता है ।
असम्भार-(हिं०वि०) विशाल, विस्तृत ।
असम्भावना-(सं०स्त्री०) सम्भावना का अभाव । **असम्भावनीय**-(सं०वि०) असङ्गत, उटपटांग ।
असम्भ्रम-(सं०पु०) भ्रम का अभाव, सन्देह न होना ।
असम्मत-(सं०वि०) अस्वीकृत, पृथक्, विरुद्ध । **असम्मति**-(सं०स्त्री०) अस्वीकृति ।
असम्मर-(हिं०पु०) खड्ग, छूरा ।
असम्मान-(सं०पु०) अपमान, निरादर ।
असम्मोह-(सं०पु०) यथार्थ ज्ञान ।
असयाना, असयानी-(हिं०वि०) मूर्ख, अनाड़ी ।
असरन-(हिं०पु०) देखो अशरण ।
असरा-(हिं०पु०) एक प्रकार का महीन धान ।
असरार-(हिं०क्रि०वि०) लगातार ।
असली-(हिं०वि०) असल, मुख्य, सच्चा, विरुद्ध ।
असलील-(हिं०वि०) देखो अश्लील ।
असलेउ-(हिं०वि०) असह्य ।
असलोक-(हिं०पु०) देखो श्लोक ।
असवर्ण-(सं०वि०) असजातीय, विभिन्न वर्ण का ।
असवार-(हिं०पु०) देखो सवार ।
असवारी-(हिं०स्त्री०) देखो सवारी ।
असह-(सं०वि०) अक्षम, न सहनेयोग्य । **असहनशील**-(सं०वि०) असहिष्णु, न सहने वाला । **असहनशीलता**-(सं०स्त्री०) चिड़चिड़ापन ।
असहनीय-(सं०वि०) दुःसह, असह, न सहने योग्य ।
असहयोग-(सं०पु०) मिलकर काम न करना, महात्मा गांधी का प्रचार किया हुआ आन्दोलन जो राज्य से असन्तोष प्रगट करने के लिये किया जाता था ।
असहाय-(सं०वि०) निरवलम्ब, निःसहाय, अनाथ, जिसको किसी का सहारा न हो । **असहायत्व, असहायता**-(सं०) निराश्रयता ।
असहित-(सं०वि०) निःसंग बिना सहाय का ।
असहिष्णु-(सं०वि०) असहनशील, कलहप्रिय, झगड़ालू, चिड़चिड़ा । **असहिष्णुता**-(सं०स्त्री०) असहशीलता
असही--(हिं०वि०) ईर्षालु, दूसरे की बढती देख कर जलने वाला ।
असह्य-(सं०वि०) असहनीय, न सहन करने योग्य ।
असाँच-(हिं०वि०) असत्य, झूठा, जो सच्चा न हो ।
असा-(सं०पु०) डंग, सोंटा, चाँदी या सोने के पत्र से मढा हुआ डंडा जो बारात इ० में सेवक लोग लेकर चलते हैं ।
असाई-(हिं०वि०) अशिष्ट, असभ्य ।
असाक्षात्-(सं०अव्य०) परीक्षा में ।
असाढ-(हिं०पुं०) आषाढ़ मास, वर्ष का चौथा महीना ।
असाढा-(हिं०पु०) बटे हुए रेशम का तागा ।
असाढी-(हिं०वि०) आषाढ महीने में होनेवाली (स्त्री) अषाढ में बोया जानेवाला अन्न, गुरुपूर्णिमा ।
असाढू-(हिं०पुं०)मोटी चट्टान,मोटा पत्थर
असाध-(हिं०वि०) असाध्य ।
असाधारण-(सं०वि०) असामान्य, विशेष
असाधु-(सं०वि०) दुर्जन, अशिष्ट, दुष्ट, अविनीति । **असाधुता, असाधुत्व**-(सं०) दुष्टता ।
असाध्य-(सं०वि०) कठिन, दुष्कर, न होने योग्य ।
असान्निध्य-(सं०नपुं०) अन्तर, दूरी ।
असामर्थ्य-(सं०नपुं०) अक्षमता ।
असामयिक-(सं०वि०) असमयोचित, अकालिक, बिना समय का ।
असामान्य-(सं०वि०) असाधारण, विशेष ।
असामी-(हिं०पु०) व्यक्ति, प्राणि, पुरुष, कृषक, ऋणी, कर देकर खेत जोतने वाला, अपराधी, देनदार, कोई काम देनेवाला मनुष्य ।
असाम्प्रतम्-(सं० अव्य०) अयोग्य, अनुचित ।
असार-(सं०वि०) सार शून्य, निःसार, शक्ति रहित, व्यर्थ, तुच्छ, निर्बल, **असारता**-(सं० स्त्री०) निःसारता, अयोग्यता ।
असावधान-(सं०वि०) जो सचेत न हो, **असावधानता, असावधानी**-(सं०) प्रमाद, उपेक्षा ।
असावरी-(हिं०स्त्री०) एक रागिणी विशेष ।
असाहस-(सं०नपु०) साहस का अभाव
असाहसिक-(सं०वि०)जोसाहसीनहो,शान्त
असाहाय्य-(सं०वि०) बिना सहायता का
असि-(सं०पु०) खड्ग, तलवार ।
असिजीवी-खड्ग से जीविका करने वाला मनुष्य ।
असित-(सं०वि०) काले रंग का, कुटिल, दुष्ट, टेढा । **असितग्रीव**-अग्नि, मोर ।
असिता-(पु०स्त्री०) यमुना नदी, **असितानन**-लंगूर ।
असिद्ध-(सं०वि०) अनिष्फल, अपक्व, अपूर्ण, कच्चा, निष्फल, अप्रमाणित, व्यर्थ, अधूरा । **असिद्धि**-(सं०स्त्री०) अप्राप्ति, अनिष्पत्ति, कच्चापन, अपूर्णता ।
असिधारा-(सं०स्त्री०) तलवार की धार
असिपत्र-(सं०पु०) ईख का वृक्ष, तलवार का कोष्ट या वेष्टन, एक नरक विशेष ।
असिपत्रवन-(सं०नपुं०) एक नरक का नाम ।
असी-(सं०स्त्री०) एक नदी जो काशी में गंगा से मिली है ।
असीम-(सं०वि०) सीमा रहित, अनन्त, अगाध, अपार ।
असीव-(हिं०वि०) अशुभ, भयकर ।
असीस-(हिं०स्त्री०) देखो आशिस् । **असीसना**-(हिं०क्रि०) आशीर्वाद देना ।
असु-(सं०पु०) प्राण वायु ।
असुकर-(सं०वि०) दुष्कर, कठिन ।
असुग-(हिं०वि०) शीघ्रगामी, (पुं०) वायु तीर ।
असुख-(सं०नपुं०) दुःख, कष्ट ।
असुखी-(सं०वि०) सुखरहित, दुःखी ।
असुगम-(सं०वि०) दुर्गम, दुर्बोध, क्लिष्ट
असुचि-(हिं०) देखो अशुचि ।
असुन्दर-(सं०वि०) कुरूप, अनुचित ।
असुप्त-(सं०वि०) न सोता हुआ, अनिद्र
असुविधा-(सं०स्त्री०) कठिनाई, अड़चन,
असुभ-(हिं०वि०) देखो अशुभ ।
असुर-(सं०पु०) राक्षस, दैत्य, प्रेत, सूर्य, राहु, बादल, पृथ्वी, एक प्रकार का उन्माद रोग ।
असुरक्ष्य-(सं०वि०) कठिनता से बचाने योग्य ।
असुरगुरु-(सं०पु०) असुरों के गुरु, शुक्राचार्य । **असुरमाया**-(सं० स्त्री०) भूतों का जादू । **असुररिपु**-(सं०पु०) विष्णु । **असुरसेन**-(सं०पु०) एक दैत्य जिसके देह पर गया नामक नगर बसा है ।
असुरधिप-(सं०पु०) असुरों का अध्यक्ष
असुराई-(हिं० स्त्री०) नीचता, दुष्टता
असुरारि-(सं०पु०) देवता, विष्णु ।
असुलभ-(सं०वि०) असाध्य, दुष्प्राप्य ।
असुविधा-(हिं० स्त्री०) अड़चन, कष्ट ।
असुहाती-(हिं०वि०) अशोभन, बुरी
असुहृद-(सं०वि०) शत्रु, रिपु,
असूक्ष्म-(सं०पु०) स्थूल, मोटा ।
असूझ-(हिं०वि०) अपार, विस्तृत, जो देख पड़े, अन्धकार पूर्ण, कठिन, विकट
असूत-(हिं०वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध ।
असूया-(सं०स्त्री) दूसरे के गुण में दोष लगाना, ईर्ष्या, शत्रुता, डाह ।
असूर्यपश्या-(सं० स्त्री०) अन्तःपुर में रहने वाली स्त्री, साध्वी स्त्री ।
असृक्-(सं०नपुं०) रक्त, लोहू । **असृग्धारा**-(सं०स्त्री०) रक्त का प्रवाह ।
असेग०(हिं०वि०) असह्य, न सहने योग्य
असेचन-(सं०वि०) सींचा न जाना ।
असेवित-(सं०वि०) अनपेक्षित, भूला हुआ ।
असेव्य-(सं०वि०) सेवा के अयोग्य, काम मे न आने योग्य ।
असैना-(हिं०पुं०) देखो असना ।
असैला-(हिं०वि०) शैली (रीति)के विरुद्ध काम करने वाला, कुमार्गी, अनुचित व्यवहार करने वाला ।
असो,असों-(हिं०क्रि०वि०) इस साल, वर्तमान वर्ष में ।
असोक-(हिं०वि०) देखो अशोक ।
असोकी-(हिं०वि०) शोक न करने वाला
असोच-(हिं०वि०) शोच न करने वाला, चिन्ता रहित ।
असोज-(हिं०पुं०) आश्विन मास, क्वार का महीना ।
असोस-(हिं०वि०) शुष्क न होने वाला, जो सूखता न हो ।
असौंध-(हिं०स्त्री०) दुर्गन्ध ।
असौच-(हिं०पुं०) देखो अशौच ।
असौन्दर्य-(सं०नपु०) सौन्दर्य का अभाव,
असौम्य-(सं०वि०) अप्रिय, डरवना ।
अस्क-(हिं०पुं०) नाक में पहिरने का बुलाक ।
अस्खलित-(सं०वि०) जो फिसलता न हो, स्थायी, टिकाऊ ।
अस्त-(सं०वि०) फेका हुआ, निकाला हुआ, हटाया हुआ, नष्ट, अदृश्य, डूबा हुआ, छिपा हुआ, (पुं०) लोप, अदर्शन । **अस्तकोप**-जो क्रोध करके ठंढा पड़ गया हो ।
अस्तंगत-(सं०वि०) अदृश्य, डूबा हुआ,
अस्तन-(हिं०) देखो स्तन ।
अस्तमन-(सं० नपुं०) सूर्यादि ग्रहों के अस्त होने का काल ।
अस्तमित-(सं०वि०) छिपा हुआ,
अस्तव्यस्त-(सं० वि०) अव्यवस्थित, उलटा पुलटा ।
अस्ताचल-(सं०पु०) पश्चिमाचल पर्वत
अस्ति-(सं०स्त्री०) स्थिति, विद्यमानता ।
अस्तित्व-(सं० नपु०) विद्यमानता,
अस्तीन-(हिं०स्त्री०) देखो आस्तीन ।
अस्तु-(सं० अव्य०) ऐसा ही हो, अच्छा, भला ।
अस्तुति-(सं० पु०) अप्रकीर्ति, निन्दा, बुराई (हिं०) स्तुति, प्रसंसा ।
अस्तेय-(सं० नपुं०) चोरी का न करना

साहूकारी।

अस्त्र-(सं०नपुं०) शत्रु के ऊपर फेंक कर चलाने का हथियार, आयुध, तलवार, चिकित्सक का शस्त्र, **अस्त्रकार**-(सं० वि०) अस्त्रों को चलाने वाला। **अस्त्रचिकित्सक**-(सं०पु०) चीर फाड़ करने वाला **अस्त्रचिकित्सा**-(सं०स्त्री०) शरीर की चीरफाड़। **अस्त्रजीवी**-(सं०पु०) अस्त्रादि से युद्ध करके जीविका चलाने वाला। **अस्त्रधारी**-(सं० पु०) अस्त्र धारण करने वाला मनुष्य। **अस्त्रविद्**-(सं०पु०) अस्त्र चलाने में निपुण। **अस्त्र वेद्या**-(सं०स्त्री०) वह शास्त्र जिसमें युद्ध इत्यादि करने के नियम बतलाये जाते हैं। **अस्त्रवेद**-(सं०पु०) धनुर्वेद। **अस्त्रवैद्य**-(सं० पु०) अस्त्रचिकित्सक, **अस्त्रशस्त्र**-(सं०नपुं०) युद्ध करने के सब प्रकार के हथियार। **अस्त्रशाला**-(सं० स्त्री०) अस्त्रागार हथियार रखने का स्थान। **अस्त्रशिक्षा**-(सं०स्त्री०)अस्त्रों के चलाने की शिक्षा। **अस्त्रागार**-(सं०नपुं०) हथियारघर। **अस्त्राहत**-(सं० वि०) हथियार से मारा हुआ।

अस्त्रि-(सं०पु०) **अस्त्री**-(हिं०वि०) अस्त्र धारी मनुष्य, हथियारबन्द।

अस्थल-(हिं०पु०) देखो स्थल।

अस्थान-(सं०नपुं०) बुरा स्थान, (हिं० पुं०) स्थान,।

अस्थायी-(सं०वि०) अस्थिर, चंचल।

अस्थावर-(सं०वि०)जो चल फिर सकता हो, जंगम।

अस्थि-(सं०नपुं०) हाड़, हड्डी।

अस्थिति-(सं०स्त्री०) स्थिति का अभाव, अस्थिरता।

अस्थिपंजर-(सं०पुं०)हड्डी की ठठरी। **अस्थिमय**-(सं० वि०) अस्थिनिर्मित, जिसमें केवल हड्डी ही बच गई हो। **अस्थिमाला**-(सं०स्त्री०) हड्डी की बनी हुई माला। **अस्थिमाली**-(सं०पु०)शिव।

अस्थिसार-(हिं०पु०) मज्जा

अस्थिर-(सं०वि) कम्पायमान, चंचल, अनिश्चित,(हिं०वि०) स्थिर, टिका हुआ **अस्थिरता**-(सं० स्त्री०) अनिश्चितता, चंचलता।

अस्थिसेष-(सं०वि०) जिसकी शरीर में केवल हड्डी ही देख पड़े। **अस्थिसंचय** (सं०पुं०) शवदाह के बाद बची हुई हड्डियों का इकट्ठा करना। **अस्थिसन्धि**-(सं०स्त्री०) हड्डी का जोड़

अस्थूल-(सं०वि०) सूक्ष्म, पतला (हिं०) स्थूल।

अस्थैर्य (सं०नपुं०) चपलता, चंचलता।

अस्नान-(हिं०) देखो स्नान।

अस्निग्ध-(सं०वि०) कर्कश, जो चिकना न हो, निर्दय।

अस्नेह-(सं०पुं०) स्नेह का अभाव।

अस्पताल-(हिं० पु०) चिकित्सालय,

अस्पर्श-सं०पु०) स्पर्श का अभाव (हिं०) स्पर्श। **अस्पर्शनीय**-(सं०वि०) स्पर्श न करने योग्य। **अस्पर्शित**-(सं०वि०) न छूआ हुआ। **अस्पृश्य**-(सं०वि०) न छूने योग्य। **अस्पृष्ट** (सं०वि०) स्पर्श न किया हुआ।

अस्पृह-(सं०वि०)इच्छा न रखने वाला विरक्त। **अस्पृहा**-(सं०स्त्री) इच्छा का अभाव।

अस्फुट-(सं०वि०) अव्यक्त, जो स्पष्ट न हो, गुप्त, गूढ। **अस्फुटता** (सं० स्त्री०) अस्पष्टता।

अस्मदीय-(सं०वि०)हमारा, हम लोगोंका

अस्मरणीय-(सं०वि०) याद न आने वाला।

अस्मित-(सं०वि०)विकसित, खिला हुआ।

अस्मिता-(सं०स्त्री०) आत्मश्लाघा, अहंकार, मोह।

अस्र-(सं०पुं०) कोना, केश, रक्त, आँसू

अस्रज-(सं०नपु०) मांस।

अस्रप-(सं०पुं०) राक्षस, जोंक, खटमल, मूलनक्षत्र-(वि०) लोहू पीनेवाला।

अस्रु-(सं०नपु०) चक्षुजल, आँसू।

अस्ल, अस्ली-देखो असल, असली।

अस्लील-(हिं०) देखो अश्लील।

अस्लोक-(हिं०) देखो श्लोक।

अस्वच्छ-(सं०वि) कलुष, धुँधला।

अस्वतन्त्र-(सं०वि०) पराधीन।

अस्वप्न-(सं०पुं०) निद्रा का अभाव, देवता।

अस्वस्थ-(सं०वि०) रुग्ण, रोगी. **अस्वस्थता**-(सं०वि) व्यथा, पीड़ा।

अस्वतन्त्र्य-(सं०नपुं०) पराधीनता,

अस्वादु-(सं०वि०)नीरस, बिना स्वाद का

अस्वाभाविक-(सं०स्त्री०) प्रकृति विरुद्ध, कृत्रिम, बनावटी।

अस्वार्थ-(सं०वि०) स्वार्थ का अभाव, निस्पृहता।

अस्वास्थ्य-(सं०नपुं०) रुग्णता।

अस्वीकार-(सं०पुं०) स्वीकार का अभाव,

अस्वीकृत-(सं०पुं०) स्वीकार न किया हुआ,

अस्सी-(हिं०पुं०) सत्तर और दश की संख्या।

अहं-(सं०पु०) मैं (पुं०)अभिमान अहंकार।

अहंता-(हिं० स्त्री०) अभिमान, गर्व।

अहंवाद-(सं०पुं०) धृष्टता।

अह-(सं०अहन०) दिन, सूर्य,(अव्य०) दुःख, आश्चर्य इत्यादि सूचक शब्द।

अहक-(हिं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा।

अहकना-(हिं०क्रि०) लालसा करना, उत्कृष्ट इच्छा होना।

अहङ्कार-(सं०पु०) आत्माभिमान, गर्व घमंड **अहङ्कारी**-(सं०पुं०) अभिमानी घमंडी।

अहटाना-(हिं०क्रि०) आहट लेना, पता लगाना, ढूंढना, खोजना। **अहथिर**-(हिं०वि०) स्थिर।

अहदी-(अ०पु०) योद्धा, सिपाही, (वि०) सुस्त, आसकती।

अहन्-(सं०पुं०) दिन।

अहना-(हिं०क्रि०) होना।

अहनिसि-(हिं०अव्य०) देखो अहर्निश।

अहमेव-(सं०)अहङ्कार, गर्व, आत्मश्लाघा

अहम्मति-(सं०स्त्री०) अहंकार, गर्व।

अहर-(सं०पुं०) गणित में वह राशि जो बँट न सकती हो।

अहरणीय-(सं०वि०) हरण न किया जाने वाला।

अहरन-(हिं०स्त्री०) स्थूला, निहाई।

अहरना-(हिं०क्रि०) लकड़ी को गढ़ना, डौलना।

अहरनि-(हिं०) देखो अहरन।

अहरहः-(सं०क्रिवि०) प्रतिदिन।

अहरा-(हिं०पुं०) सुलगाये जाने वाले कण्डो का ढेर, ठहरने का स्थान, पानी पीने का अड्डा।

अहरागम-(सं०पु०) प्रातःकाल की उपस्थिति।

अहरी-(हिं०स्त्री०) पशुओं के पानी पीने की जलागार।

अहर्निश-(सं०अव्य०) दिनरात, सर्वदा।

अहर्मुख-(सं०नपु०) प्रातःकाल, सबेरा।

अहर्ष-(सं०वि०) मन्द, भाग्य।

अहर्षित-(सं०हि०) जो प्रसन्न हो।

अहलना-(हिं०क्रि०) हिलना।

अहलाद-(हिं०) देखो आह्लाद।

अहल्य-(सं०वि०) जो हल से न जोता जाता है।

अहल्या-(सं०वि०) गौतम ऋषि की पत्नी का नाम।

अहवनीय-(सं०वि०) हवन के अयोग्य।

अहवात-(हिं०पुं०) सौभाग्य, सोहाग।

अहवान-(हिं०) देखो अह्वान।

अहस्पति-(सं०पुं०) सूर्य।

अहह-(सं०अव्य०) क्लेश, शोक, आश्चर्य इत्यादि सूचक अव्यय। हाय! अरे!

अहा-(हिं०अव्य०)प्रसन्नता सूचक अव्यय-

अहान-(हिं०पुं०) आह्वान, पुकार।

अहार-(हिं०) देखो आहार।

अहारना-(हिं०क्रि०) भोजन करना, चिपकाना, माड़ी लगाना, लकड़ी छिलना।

अहारी-(हिं०) देखो आहारी।

अहार्य-(सं०वि०)अचभे, नचोरी होने योग्य

अहाहा-(हिं०अव्य०) हर्ष सूचक अव्यय।

अहि-(सं०पुं०) सर्प, सूर्य, राहु, पथिक जल, बादल, अश्लेषा नक्षत्र, पृथ्वी, गौ, (वि०) प्रसिद्ध, व्याप्त।

अहिंसक-(सं०वि०)हिंसा न करने वाला। **अहिंसा**-(सं०स्त्री०) अद्रोह, किसी प्राणि को किसी प्रकार का कष्ट न देना।

अहिंस्र-(सं०वि०) हिंसा न करनेवाला।

अहिक-(सं०पुं०)अन्धा सर्प, सेम्हरकावृक्ष।

अहिगण-(सं०पुं०) एक वृत्त जिसके आदि मे एक गुरु और अन्त मे तीन लघु मात्रा रहती है।

अहिच्छत्र-(सं०पु०) भारतवर्ष के दक्षिण का एक प्राचीन देश मथुरा।

अहिजिह्वा-(सं०स्त्री०)नागनी का पौधा।

अहित-(सं०पु०) शत्रु वैरी (वि०) हानिकारक, अयोग्य, प्रतिकूल। **अहितकारी**-भलाई करनेवाला।

अहिनाह-(थ)(हिं०पुं०) सर्पों का राजा, शेषनाग।

अहिपति-(सं०पुं०) शेषनाग।

अहिफेन-(सं०पु०) साँप की लार, अफीम। **अहिफेनबीज**-पोस्तेकादाना।

अहिबेल-(हिं०) नागवेल, पान-देखो अहिवल्ली।

अहिम-(सं०वि०) जो ठंढा न हो, गरम।

अहिमान-(हिं०पु०) चाक के बीच का गड्ढा जो चूल पर रक्खा जाता है।

अहिर-(हिं०) देखो अहीर।

अहिरिपु-(सं०पु०) गरुड़, नकुल, मयूर।

अहिलव-(हिं०पुं०) अधिकता, बढ़ती।

अहिवट-(हिं०पु०) दोहे का एक भेद।

अहिवल्ली-(सं०स्त्री०) नागवल्ली, पान।

अहिवात-(हिं०पुं०) स्त्री का सौभाग्य, सोहाग।

अहिवाँतिन, अहिवाती-(हिं०स्त्री०) सौभाग्यवती स्त्री, सधवा, सोहागिन।

अहिसाव-(हिं०पु०) साँप का बच्चा, छोटा सर्प।

अहीन-(सं०वि०)समग्र, पूरा, भरा हुआ।

अहीर-(सं०पु०) आभीर, ग्वाला, यादव

अहीश-(सं०पुं०) सर्पराज, शेषनाग।

अहुटना-(हिं०क्रि०) निवृत्त होना, हट जाना, भागना।

अहुटाना-(हिं०क्रि०) भागना, निकाल देना, दूर करना।

अहुठ-(हिं०वि०) साढे तीन, साढे तीन फेरा खाया हुआ।

अहुत-(सं०वि०) होम न किया हुआ।

अहूठन-(हिं०पु०) ठीहा जिस पर चारा काटा जाता है।

अहेड़-(सं०वि०) माननीय, प्रतिष्ठित।

अहे-(हिं०अव्य०) अरे! अहो!।

अहेतु-(सं०वि०)बिना कारण का, व्यर्थ, हेतुशून्य।

अहेतुक-(सं०वि०) देखो अहेतु।

अहेर-(हिं०पुं०) आखेट, मृगया।

अहेरी-(हिं०पु०)आखेट करने वाला, व्याध

अहो-(सं०अव्य०) हाय, धिक्कार, अरे, वाहवाह, क्यों।

अहोरात्र-(सं०पु०) दिनरात (अव्य०) सर्वदा, निरन्तर।

अहोर, बहोर-(हिं०क्रि०वि०) फिरफिर, बारंबार।

अहोरा बहोरा-(हिं०पु०) विवाह की वह रीति जिसमें नववधू ससुराल पहुँच कर उसी दिन अपने घर वापस आ जाती है।

आ

आ--हिन्दी वर्णमाला का दूसरा अक्षर। यह 'अ'-का दीर्घ रूप है (पुं०) महेश्वर (स्त्री०) लक्ष्मी।

आं-(हिं०) आश्चर्य सूचक अव्यय (पु०) बालक के रोने का शब्द।

आंक-(हिं०) अङ्क, चिह्न, वर्ण, अक्षर, भाग, हिस्सा, अंश, कुल, , पहिये के धुरे का ढपना, क्रोड़, गोद।

आंकड़ा-(हिं०पुं०) अङ्क, संख्या, पेंच, फन्दा।

आंकन-(हिं०पु०) ज्वार का दाना, भुट्टा।

आंकना-(हिं०क्रि०) अङ्कित करना, कूतना, ठहराना, दाम लगाना, अनुमान करना, लिखना।

आंकनी-(हिं०स्त्री०) लेखनी, कलम।

आंकर-(हिं०वि०) गहरा, बहुत, अधिक मँहगा।

आंकल-(हिं०पुं०) दागा हुआ सांड़।

आंकुड़ा-(हिं०पुं०) देखो अंकुड़ा।

आंकु-(हिं०पु०) देखो अङ्कुश।

आंकुस-(हिं०पुं०) देखो अङ्कुश।

आंकू-(हिं०पुं०) कूतनेवाला, दाम लगाने वाला।

आंख-(हिं०स्त्री०) देखने की इन्द्रिय जिससे रूप रंग विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है, चक्षु, नेत्र, दृष्टि ध्यान, विवेक, कृपा, सन्तति, सूई का छिद्र, ईख, आलू इत्यादि में वह स्थान जहां से अंखुआ निकलता है; **आंख आना-(उठना)**-आंख लाल होना तथा सूजन होना; **आंख उठाना**-देखना, कष्ट देने का प्रयत्न करना; **आंख का तारा**-अति प्रिय व्यक्ति; **आंख की पुतली**-कनीनिका अति प्रिय पदार्थ या व्यक्ति; **आंख के डोरे**-आंख में की महीन नसें; **आंख खुलना**-जागना, नींद टूटना, ज्ञान होना, भ्रम हट जाना; **आंख खोलना**-देखना, ताकना, सावधान होना; **आंख गड़ना**-किरकिरी पड़ने पर आँख दुखना, प्राप्ति की तीव्र लालसा होना; **आंख चढ़ना**-उन्माद या नींद न आने से पलकों का तन जाना; **आंख चार करना**-आंख मिला कर देखना; **आंख चोराना**-लज्जा से सामने न ताकना; **आँख छिपना**-आंख बन्द हो जाना; **आंख डबडबाना**-आंखमें आंसू भर जाना; **आंख तरेरना**-क्रोध से देखना; **आंख दिखाना**-क्रोध दिखलाना; **आंख न ठहरना**-चमक से आंख झिप जाना; **आंख नीची होना**-लज्जावश मुँह नीचा कर लेना; **आंख पथराना**-आंख का प्रकाश चला जाना, **आंख पर पर्दा पड़ना**-भ्रम में पड़ना, ज्ञान रहित होना; **आंख फड़कना**-आंख में स्फुरण होना; **आंख फाड़ कर देखना**-भलीभांति आँख खोल कर देखना; **आंख फिर जाना**-चित्त हटा लेना, कृपा दृष्टि फेर लेन; **आंख फूटना**-अन्धा होना, कुढना, बुरा लगना; **आंख फेरना**-प्रतिकूल आचरण करना, कृपादृष्टि हटालेना; **आंख फोड़ना**-अन्धा बना देना; **आंख बन्द होना**-मरण को प्राप्त होना; **आंख बन्द किए हुए**-बिना सोचे बिचारे; **आंख बचाना**-सामना न करना; **आंख भर आना**-नेत्र सजल होना; **आंख भर देखना**-पूर्ण रूप से आंख खोल कर देखना। **आंख मारना**-आंखों से संकेत करना, **आंख मिलाना**-आंख सामने करके देखना; **आंख में खून उतरना**-क्रोध से आंखें लाल हो जाना; **आंख में गड़ना-(चुभना)**-बुरा लगना; **आंख में चर्बी चढ़ना**-अहंकार के कारण किसीपर ध्यान न देना; **आंख में धूल डालना**-प्रत्यक्ष रूपसे छलना या धोखा देना; **आंखों में समा-जाना**-हृदय में बस जाना, **आंख रखना**-चौकसी रखना, **आंख लगना**-नींद आ जाना, प्रीति होना, **आंख लाल करना**-क्रोध दिखलाना, **आंख सेंकना**-प्रिय को देख कर आंखों का सुख लेना, **आंख होना**-परख होना, विवेक या पहिचानहोना।

आंखड़ी-(हिं०स्त्री०) आंख, नेत्र।

आंखफोड़ टिड्डा-(हिं०पुं०) हरे रंग का एक फतिंगा, कृतघ्न व्यक्ति।

आंख मिचौली, आंख मीचली-आंख मुचाई (मुंदाई)। (हिं०स्त्री०) लड़कों का एक खेल जिससे एक लड़का दूसरे की आंख मुंद देता है, जब दूसरे लड़के छिप जाते हैं तब इस लड़के की आंख खोल दी जाती है और वह लड़का दूसरे लड़कों को छूने के लिये ढूंढता फिरता है।

आंखी-(हिं०स्त्री०) देखो आंख।

आंग-(हिं०पुं०) अङ्क, कुच, स्तन।

आँगन-(हिं०पुं०) आङ्गन, घरके भीतर का चौक।

आंगिक-(सं०पुं०) देखो आङ्गिक।

आंगी-(हिं०स्त्री०) अङ्गिका, अंगिया, महीन आँटा चलाने की चलनी।

आंगुर-(हिं०) देखो अङ्गुल।

आंगरी-(हिं०) देखो अङ्गुली।

आंगुल-(हिं०) देखो अङ्गुल।

आंधो-(हिं०स्त्री०) मैदा चालनेकी चलनी

आंच-(हिं०स्त्री०) आग की लपट, अग्नि, ताप, तेज, चोट, हानि, सङ्कट विपत्ति, प्रेम, काम का ताप; **आंच-खाना**-गरमी पाना, आंच दिखाना, गरम करना।

आंचका-(हिं०पुं०) नाव का लटकता हुआ रस्सा।

आंचना-(हिं०क्रि०)आंच देना, सुलगाना।

आंचर-(हिं०पुं०) अञ्चल।

आंचल-(हिं०पुं०) धोती या डुपट्टे का छोर, पल्ला, स्त्रियोंकी साड़ी का छाती पर रहने वाला किनारा। **आंचल देना**-बच्चे को दूध पिलाना; **आंचल में बांधना**-सर्वदा साथ रखना, किसी बात को याद रखना। **आंचल लेना**-आंचल छूकर अभिवादन करना।

आंजन-(हिं०पुं०) देखो अञ्जन।

आंजना-(हिं०क्रि०) आंखों में अञ्जन लगाना।

आंट-(हिं०स्त्री०) हथेली में तर्जनी और अंगूठे के मध्य का स्थान, दाँव, बैर, गांठ, गट्ठा पूला।

आंटना-(हिं०क्रि०) समाना, अंटना, आना, पहुँचना।

आंटी-(हिं०स्त्री०) लंबी घास इत्यादिका छोटा गट्ठा, लड़कों के खेलने की गुल्ली, लड़ने की एक पेच, सूत का लच्छा, धोती की ऐंठन, टेट।

आट सांट-(हिं०स्त्री०) गुप्त अभिसन्धि,

आंठी-(हिं०स्त्री०) गांठ, बीज, गुठली, दही, मलाई आदि का लच्छा।

आंड़-(हिं०पुं०) अण्डकोश।

आंड़ी-(हिं०स्त्री०) गाठ, सूत की प्योनी, कोल्हू के जाठ का गोला।

आंडू-(हिं०पुं०) अण्डकोशयुक्त, जो पशु बधिया न किया गया हो।

आंत-(हिं०स्त्री०) अन्त्र, अंतड़ी, प्राणियों के पेटमें गुदा तक जानेवाली लंबी नली जिसमें से होकर मल बाहर निकलता है, लाद।

आंतर-(हिं०पुं०) अन्तर, दो पदार्थों के बीच का स्थान, पाशा।

आंदू-(हिं०पुं०) लोहे का कड़ा, बेड़ी, सिकड़ी।

आंदोलन-(हिं०) देखो आन्दोलन।

आंध-(हिं०स्त्री०) अन्धकार, अन्धेरा, रतौंधी, आपत्ति, कष्ट।

आंधना-(हिं०क्रि०) वेग से धावा करना, टूट पड़ना।

आंधर, आंधरा-(हिं०वि०) अन्धा, नेत्र-हीन।

आंधारम्भ-(हिं०पुं०) अन्धेर खाता, मनमानी बात।

आंधी-(हिं०स्त्री०) धूलिपूर्ण प्रचण्डवायु, अन्धड़। (वि०) आंधी के समान तीव्र

आंबाहल्दी-(हिं०) देखो आमाहल्दी।

आंयबांय-(हिं०पुं०) असम्बन्ध प्रलाप, व्यर्थ की बात, अंडबंड, अनापशनाप

आंव-(हिं०पुं०) अन्न न पचने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का चिकना लसदार मल।

आंवठ-(हिं०पुं०) किनारा कपड़े का छोर, बरतन की बार।

आंवड़ना-(हिं०क्रि०) उमड़ना, ऊपर को उठना।

आंवड़ा-(हिं०वि०) गहन, गहरा।

आंवन-(हिं०पुं०) पहिये के मध्य भाग में जड़ी हुई लोहे की सामी जिसमें धुरे का डंडा घूमता है।

आंवरा-(हिं०पुं०) देखो आमलकी।

आंवल-(हिं०स्त्री०) खेंड़ी जिससे गर्भ में बच्चा लपेटा रहता है।

आंवला-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसके गोल फल कसैलापन लिये कुछ खट्टे होते हैं।

आंवलासारगन्धक-(हिं० पुं०) स्वच्छ की हुई पारदर्शक गन्धक।

आँवाँ-(हिं०पुं०) गड्ढा जिसमें कुम्हार लोग मिट्टी के पात्र पकाते हैं।

आंशिक-(हिं०वि०)अंश संबंधी, हिस्से का

आंशुकजल-(हिं०नपुं०) धूप की किरण दिखलाया हुआ जल, तांबे के पात्र में रक्खा हुआ जल जो दिन भर धूप में तथा रात में चांदनी में रख दिया जाता है और औषधि में प्रयोग होता है।

आंस-(हिं०स्त्री०) पीड़ा, सुतली, डोरी, रेशा।

आंसी-(हिं०स्त्री०) मिठाई इ० जो इष्ट मित्रों के घर भेजी जाती है, भाजी, बैना।

आंसू-(हिं०पु०) अश्रु, नेत्र से निकलने वाला जल; **आंसू गिराना** - रोना, **आंसू पोंछना**-आश्वासन देना, ढाढस देना, **आंसूढाल**-एक प्रकार का पशुओं का रोग जिसमें इनकी आंखों से आंसू गिरा करता है।

आंहड़-(हिं०पुं०) भाण्ड, पात्र।

आँहाँ-(हिं०अव्य०) नहीं।

आ-(हिं०अव्य०) जो-ईषद् (=थोड़ा), मर्यादा, अभिव्याप्ति तथा अतिक्रमण अर्थ में प्रयोग होता है—यथा, आरक्त=थोड़ा लाल, आमरण=जीवन पर्यन्त, आकालिक=बिना समय का।

आइ-(हिं०) देखो आयु।

आइना-(हिं०) देखो आईना।

आइस-आईसु-(हिं०) देखो आयसु।

आई-(हिं०स्त्री०) मृत्यु, मौत, आयुष्य।

आउ-(हिं०पु०) आयुष्य जीवन।

आउबाउ-(हिं०पुं०) निरर्थक बकवाद।

आउज-(हिं०पुं०) डफ़ला, ताशा।

आउस-(हिं०पुं०) आशुधान्य, जलदी पकने वाला एक प्रकार का धान, ओसहन, भदैनी धान।

आक-(हिं०पुं०) अर्क, मदार, अकवन।

आकड़ा-(हिं०) देखो आंक।

आकन-(हिं०पुं०) जोते हुए खेत से निकाला हुआ घास फूस।

आकबाक-(हिं०पुं०) वृथा की बकवाद, बकझक।

आकम्प, आकम्पन-(सं०) थोड़ा कम्प, कँपकँपी।

आकम्पित-(सं०वि०)थोड़ा कँपाया हुआ

आकर-(सं०पुं०) समूह, ढेर, भण्डार, उत्पत्ति स्थान, खान, किसी द्रव्य के रहने का स्थान, तलवार चलाने की एक रीति।

आकरकढा, आकरकरहा-(सं०पुं०) अकरकरा, एक जड़ी।

आकरखना-(हिं०क्रि०) देखो आकर्षना।

आकरिक-(सं०वि०) खान खोदनेवाला।

आकरी-(सं०वि०) देखो आकरिक।

आकरोट-आखोट-देखो अखरोट।

आकर्णन-(सं०नपुं०) श्रवण,सुनाई देना।

आकर्णित-(सं०वि०) सुना हुआ।

आकर्ष-(सं०पुं०) वितान, खिंचाव,तनाव, चौपड़ का खेल, कसौटी, फल तोड़ने की लग्गी, अँकुची, इन्द्रिय, तीर चलाने का अभ्यास, चुंबक।

आकर्षक-(सं०पुं०) खींचने वाला,चुम्बक।

आकर्षण-(सं०नपुं०)किसीस्थानसे किसी वस्तु का बलपूर्वक दूसरे स्थान पर खिंचा जाना,खिंचाव। **आकर्षणशक्ति**-(सं०स्त्री०) भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिसके द्वारा वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींच लेते हैं।

आकर्षन-(हिं०पुं०) देखो आकर्षण! **आकर्षना**-(हिं०क्रि०) अपनी ओर खींचना। **आकर्षित**-(सं०वि०)आकृष्ट, खिंचा हुआ।

आकलन-(सं०नपुं०) आशङ्का, सन्देह, ग्रहण, लेना, संग्रह, संचय, गणना, अनुसन्धान, खोज, बन्धन।

आकलित-(सं०वि०) सम्पादित, गिना हुआ, जांचा हुआ।

आकलीय-(सं०वि०) एकत्र करने योग्य, गणना करने योग्य।

आकाली-(हिं०स्त्री०)व्याकुलता,घबराहट।

आकसमात-(हिं०) देखो अकस्मात।

आकस्मिक-(सं०वि०)बिना किसी कारण के होनेवाला, अचानक होनेवाला।

आका-(हिं०पुं०)आकाय, भट्ठी,पैजावा, आंवां।

आकांक्षक-(सं०वि०) अभिलाषा करने वाला।

आकांक्षा-(सं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, चाह, वांछा, अभिप्राय, अपेक्षा, अनुसन्धान, योग्यता, व्याकरण में अर्थ की पूर्ति के लिये शब्द की अपेक्षा। **आकांक्षित**-(सं०वि०) ईप्सित, इच्छित, अपेक्षित, पूछा हुआ, ध्यान किया हुआ। **आकांक्षी**-(सं०वि०) इच्छुक, चाहने वाला।

आकार-(सं०पुं०) स्वरूप, आकृति, चेष्ठा, सूरत, डीलडौल, चिह्न, चेष्टा, अक्षर 'आ'।

आकारित-(सं०वि०) आहूत,बुलाया हुआ।

आकारी-(हिं०वि०) बुलाने वाला।

आकारीठ-(हिं०पुं०) युद्ध, संग्राम।

आकालिक-(सं०वि०) असामयिक।

आकाश-(सं०पुं०) नभ, गगन, अभ्रक, बहुत ऊँचा स्थान. **आकाश पाताल एक करना**-हलचल मचाना, बड़ा उद्योग करना। **आकाशकक्षा**-(सं०स्त्री०) आकाश से लगा हुआ भूमि का किनारा, क्षितिज। **आकाशकुसुम**-(सं०नपुं०) आकाश में फूला हुआ पुष्प, असम्भव वार्ता, अनहोनी बात। **आकाशगंगा**-(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी, अनेक छोटे छोटे तारों का मण्डल जो आकाश में उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है। **आकाशगामी,आकाशचारी**-(सं०वि०) आकाश मे फिरनेवाला (पुं०) वायु, देवता, पक्षी,राक्षस। **आकाशचोटी**-(हिं०स्त्री०) शीर्ष विन्दु, सिर के ठीक ऊपर पड़नेवाला कल्पित विन्दु। **आकाशजल**-(सं०नपुं०) वृष्टि का जल, मेघ का पानी, तुषार, ओस। **आकाशदीप**-(सं०) देखो आकाश प्रदीप। **आकाशदीया**-(हिं०पुं०) देखो आकाश प्रदीप। **आकाशधुरी**-(हिं०स्त्री०) खगोल का ध्रुव। **आकाशनदी**-(सं०) देखो आकाशगङ्गा। **आकाशनीम**-(हिं०स्त्री०) नीम पर फैलने वाली वेल। **आकाशपुष्प**-(सं०) देखो आकाश कुसुम। **आकाशप्रदीप**-(सं०पुं०) कार्तिक मास में प्रतिदिन ऊँचे स्थान पर जलाने का दीपक, आकासदीया। **आकाशबेल**-देखो अमरवेल। **आकाशभाषित**-(सं०नपुं०) देववाणी, जो बात देवता आकाश में अदृश्यरूप में रहकर कहते हों। **आकाशमण्डल**-(सं०नपुं०) गगनमण्डल, खगोल। **आकाशमुखी**-शैव सम्प्रदाय के सन्यासी जो सर्वदा आकाश की ओर मुख करके तप करते हैं। **आकाशयान**-(सं०नपुं०) वायुयान, हवाई जहाज। **आकाशलोचन**-(सं०नपुं०) जिस स्थान से ग्रहों की स्थिति, गति इत्यादि देखी जाती हैं, मानमन्दिर। **आकाशवचन**-(सं०) देखो आकाश-भाषित। **आकाशवल्ली**-(सं०स्त्री०) आकाश वेल, अमर वेल। **आकाशवाणी**-(सं०स्त्री०) देववाणी, वह वाक्य जो देवता आकाश में अदृश्यरूप में रहकर कहते हो। **आकाशवायु**-(सं०) वायुमण्डल जो पृथ्वी को चारो ओर से घेरे हुए है। **आकाशवृत्ति**-(सं०स्त्री०) सन्दिग्ध जीविका, मनुष्य की अस्थिर आय **आकाशसलिल**-(सं०नपुं०) वर्षा का पानी।

आकाशी-(हिं०स्त्री०) वह चांदनी जो आतप इत्यादि से बचने के लिये तानी जाती है।

आकाशीय-(सं०हिं०) आकाश सम्बन्धी, आकाश में होने वाला।

आकीर्ण-(सं०वि०) व्याप्त, फैला हुआ।

आकुंचन-(सं०नपुं०) सङ्कोचन, सञ्चय, मरोड़, टेढ़ापन, सिमटन। **आकुञ्चित** (वि०) सिकुड़ा हुवा। **आकुंचनीय**-(सं०वि०) सिकोड़ने योग्य, सिमटने वाला। **आकुंचित**-(सं०वि०) सिकोड़ा हुआ, वक्र, टेढ़ा।

आकुण्ठन-(सं०नपुं०) गुठला होने की स्थिति, लज्जा।

आकुण्ठित-(सं०वि०) कुन्द, लज्जित।

आकुल-(सं०वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ, विह्वल, प्रतिकूल, उद्विग्न, व्याप्त, **आकुलता, आकुलत्व**-(सं०) व्यग्रता, घबड़ाहट। **आकुलित**-(सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, क्षुब्ध, दुःखित। **आकुलीकृत**-(सं०वि०) व्याकुल किया हुआ **आकुलीभूत**-(सं०वि०) जो स्वयं व्याकुल हो गया हो।

आकूत-(सं०नपुं०) आशय, अभिप्राय, **आकूति**-(हिं०स्त्री०) अभिप्राय, आशय।

आकृति-(सं०स्त्री०) आकार, लक्षण, मूर्ति, रूप, बनावट, चेष्टा, व्यवहार, चाल चलन।

आकृतिगण-(सं०पुं०) नमूने की सूची

आकृष्ट-(सं०वि०) खींचा हुआ

आकृष्टमानस-(सं०वि०) भ्रान्त चित्त।

आकृष्यमाण-(सं०वि०) खिंचा हुआ।

आक्रन्द, आक्रन्दन-(सं०) चिल्लाहट सहित रुलाई, पुकार, ललकार, प्रबलता। **आक्रन्दित**-(सं०वि०) चिल्लाता हुआ।

आक्रम-(सं०पुं०) शक्ति, बल,पराक्रम।

आक्रमण-(सं०नपुं०) अग्रगमन, चढ़ाई, धावा, प्रसारण, फैलाव। **आक्रमणीय**-(सं०वि०) आक्रमण करने योग्य,धावा करने योग्य। **आक्रमित**-(सं०वि०) जिसपर आक्रमण किया गया हो

आक्रमिता-(सं०स्त्री०) वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने नायक को सब प्रकार से वश में कर लेती है।

आक्रान्त-(सं०वि०) पराभूत, हारा हुआ, घिरा हुआ, आधीन किया हुआ, विह्वल, घबड़ाया हुआ,व्याप्त, पीडित।

आक्रान्ति-विवशता।

आक्रीड़-(सं०पुं०) क्रीड़ा स्थान।

आक्रीडन-(सं०नपुं०) विहार, खेल।

आक्रोश-(सं०पुं०) शाप, निन्दा, अपवाद, गाली। **आक्रोशनीय**-(सं०वि०) कोसने योग्य। **आक्रोशित**-(सं०वि०) शापित, कोसा हुआ।

आक्लान्त-(सं०वि०) लगा हुआ, लिपटा हुआ।

आक्षिक-(सं०वि०) द्यूत सम्बन्धी।

आक्षिप्त-(सं०वि०) फेंका या उछाला हुआ, उभाड़ा हुआ, निन्दा किया हुआ, अपमानित।

आक्षेप-(सं०पुं०) फेकना, गिराना, अपमान, अपवाद, भर्त्सना, गाली, झिड़की, ताना। **आक्षेपक**-(सं०वि०) आकर्षक, खींचने वाली, निन्दा करने वाला। **आक्षेपी**-(सं०वि०) आकर्षण करने वाला,खींचने वाला।

आक्षोट-(सं०पुं०) अखरोट का वृक्ष।

आखण्डल-(सं०पुं०) इन्द्र।

आखत-(हिं०पुं०) अक्षत जो देवताओं पर चढ़ाने के उपयोग में आता है, विवाहादि शुभ कार्य के समय परिजनों को दिया जाने का अन्न।

आखन-(हिं०क्रि०वि०) क्षणक्षण,बारबार

आखना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना, कहना, चाहना, देखना, ताकना।

आखर-(हिं०पुं०) अक्षर।

आखा-(हिं०पुं०) आक्षरण का पात्र, महीन कपड़े से मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी, (वि०) समग्र, समूचा।

आखातीज-(हिं०स्त्री०) देखो अक्षय तृतीया। **आखानवमी**-(हिं०स्त्री०) देखो अक्षय नवमी।

आखु-(सं०पुं०) मूषक, चूहा, सुअर, चोर,देवदार का वृक्ष; **आखुपाषाण**-चुंबक पत्थर, संखिया। **आखुरथ**-गणेश।

आखेट-(सं०पुं०) अहेर, मृगया, **आखेटक**-(सं०नपुं०) मृगया, (वि०) अहेर खेलने वाला **आखेटिक**-(सं०पुं०) आखेटिक कुत्ता।

आखेटी-(सं०वि०) अहेर, शिकारी।

आखोट-(सं०पुं०) अखरोट का वृक्ष।

आख्या-(सं०स्त्री०) नाम, संज्ञा, रूढ वाचक शब्द।

आख्यात-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ, पढ़ा हुआ, प्रसिद्ध, प्रकाशित।

आख्याता-(सं०पुं०) बोलने वाला, उपदेशक।

आख्याति-(सं०स्त्री०) कीर्ति, यश,कथन, नामवरी।

आख्यान-(सं०नपुं०) कथन,वर्णन,बोली, कथा, किस्सा, कहानी, उपन्यास विशेष जिसमें आख्याता स्वयं अपने मुख से सब बात कहता है। **आख्यानक**-(सं०नपुं०) कथा, छोटा किस्सा

आख्यानकी-(सं०स्त्री०) दण्डक वृत्त का एक भेद।

आख्यायक-(सं०वि०) कहनेवाला (पुं०) दूत। **आख्यायिका**-(सं०स्त्री०) गल्प, सच्ची कहानी।

आख्येय-(सं०वि०) वर्णन करने योग्य।

आग-(हिं०स्त्री०) अग्नि, दाह, जलन, गरमी, कामाग्नि, वात्सल्यप्रेम,ईर्ष्या, ईखका अग्रभाग, हलका झंडा, **आग बबूला होना**-क्रोध से मुख लाल हो जाना; **आग बरसना**-बहुत गरमी पड़ना; **आग लगना**-किसी पदार्थ का जलना, अतिक्रुद्ध होना, मँहगी पड़ना; **आग लगाना**-उद्वेग बढ़ाना, क्रोध उत्पन्न करना, भड़काना. **आग होना**-परितप्त होना, अतिक्रुद्ध होना; **पानी में आग लगाना**-असंभव बात करना।

आगड़ा-(हिं०स्त्री०) मुरझाई हुई बाल जिसके दाने सूख गये हों।

आगण-(हिं०पुं०) अगहन का महीना।

आगत-(सं०वि०) उपस्थित,आया हुआ, रहने वाला,हुआ,प्राप्त,(पुं०) आगमन

आगत पतिका-(सं०स्त्री०) वह नायिका जिसका पति परदेश से वापस आया हो

आगतस्वागत-(सं०नपुं०)आदर सत्कार,

आगन्तु, आगन्तुक-(सं०पुं०) अतिथि, पाहुन,आनेवाला, दैवयोग से प्राप्त।

आगम-(सं०पुं०) आगमन,आय प्राप्ति, उत्पत्ति, शास्त्र में परिश्रम, उप-

स्थिति, पहुँच, योग, जोड़, मार्ग, समागम, व्याकरण के शब्द साधन में जो वर्ण बाहर से लाया जाय, वेद, शास्त्र, नीतिशास्त्र, नदी का मुहाना, निकट जानेवाला; **आगमजानी**-भविष्य जानने वाला, **आगमज्ञान**-होनहार को जानने वाला ।

आगमन-(सं०नपुं०) अवाइ, प्राप्ति ।

आगमवक्ता-(सं०पु०) भविष्य बतलाने वाला ज्योतिषी । **आगमवाणी**-(सं०स्त्री०) भविष्य वाणी । **आगमविद्या**-(सं०स्त्री०) वेद विद्या । **आगमसोची**-(हिं०वि०) दूरदर्शी, होने वाली बातपर ध्यान रखने वाला ।

आगमिक-(सं०वि०) आया हुआ, आपहुँचनेवाला, तन्त्र जानने वाला ।

आगमित-(सं०वि०) पढ़ा हुआ, समझा हुआ ।

आगमी-(सं०वि०)भविष्यवक्ता,ज्योतिषी

आगर-(हिं०पुं०) आकर, खान, ढेर, समूह, कोष, निधि, अर्गला, व्योंड़ा, नमक बनाने का गड्ढा, घर, छप्पर, (वि०) श्रेष्ठ, कुशल, बढ़िया, उत्तम, चतुर, दक्ष ।

आगरवध-(हिं०पुं०) कण्ठमाला रोग ।

आगरी-(हिं०पुं०) नमक बनाने वाला, लोनियां ।

आगल-(हिं० पुं०) अर्गल, व्योंड़ा, आगे की ओर,सामने (वि०) अगला ।

आगला-(हिं०वि०) देखो अगला ।

आगलित-(सं०वि०) मुरझाया हुआ ।

आगवन-(हिं०पुं०) आगमन, आना ।

आगवाह-(हिं०पुं०) आगे को उड़ा ले जाने वाला धुंवा ।

आगा-(हिं० पुं०) अग्रभाग, अगला हिस्सा. वक्षस्थल, छाती, ललाट, मुख, लिंग, वस्त्र (कुरते इ० का) अगला भाग, नाव का अगला भाग, घर के सामने की भूमि, वस्त्र का पल्ला जो आगे की ओर रहता है, परिणाम, सेनाका अगला भाग, आगे आनेवाला मनुष्य (पुं०) सरदार, मालिक ।

आगान-(हिं०पुं०) वर्णन, वृत्तान्त ।

आगापीछा-(हिं०पुं०) सोच, विचार, द्विविधा, परिणाम, हिचक, शरीर का अगला और पिछला भाग ।

आगामि, आगामी-(सं०वि०)आगे आने वाला, भावी ।

आगार-(सं०नपुं०) घर, मकान, स्थान, कोष, खजाना ।

आगि-(हिं०क्रि०) अग्नि, आग ।

आगिल-(हिं०वि०) अगला, आगे होने वाला, होनहार । **आगिल**-(हिं०वि०) देखो अगला ।

आगी-(हिं०स्त्री०) अग्नि, आग ।

आगू-(हिं०क्रि०वि०) आगे,आगेकी ओर

आगे-(हिं०क्रि०वि०) अग्र भाग में और दूर पर, बढ़कर,सन्मुख, भविष्य में, बाद, पीछे, जीवित अवस्था में, अनन्तर पूर्व, पहिले, अधिक, क्रोड़ मे, गोदमें, **आगेआना**-सन्मुख होना, घटित होना; **आगे करना**-उपस्थित करना, नेता बनाना; **आगेको, आगेजाकर**-भविष्य मे; **आगे निकलना**-बढ़जाना, **आगे पीछे**-एक के बाद दूसरे; **आगे से**-सामने से, भविष्य में; **आगे होना**-अग्रसर होना, मुखिया बनना ।

आगौन-(हिं०पुं०) देखो आगमन ।

आग्निक-(सं०वि०) अग्नि सम्बन्धी ।

आग्नीध्र-(सं०नपुं०) यज्ञ में अग्नि प्रज्वलित करने वाला पुरोहित ।

आग्नेय-(सं०वि०) अग्नि देवता संबंधी, अग्नि विषयक, अग्नि से निकाला हुआ, आग लगने से शीघ्र जलने वाला, भूख बढ़ाने वाला, अग्नि के समान, (पुं०) सोना, लोहू, कृत्तिका नक्षत्र, दीपन औषधि, ज्वालामुखी पर्वत, आग लगने से चलने वाले शस्त्र, तोप, बन्दूक इ०, अग्नि के पुत्र कार्तिकेय, दीपन औषधि, प्रतिपदा तिथि, भारतवर्ष के दक्षिण के एक प्राचीन देश का नाम ।

आग्नेयास्त्र-(सं०नपुं०) प्राचीन काल का एक अस्त्रविशेष जिसके प्रयोग से अग्नि की वृष्टि होती थी ।

आग्नेयी-(सं०स्त्री०) पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा ।

आग्रस्त-(सं०वि०) बेधा हुआ,छेदा हुआ

आग्रह-(सं०पुं०) आवेश, अनुरोध, आसक्ति, अनुग्रह, कृपा, तत्परता, आवेश, साहस, हठ ।

आग्रहायण-(सं०पुं०) मार्गशीर्ष मास, अगहन का महीना, मृगशिरा नक्षत्र

आग्रही-(सं०वि०) आग्रह करने वाला, हठी ।

आघ-(हिं०पुं०) मूल्य, दाम ।

आघर्ष-(सं०पुं०) मर्दन, मन्थन ।

आघर्षणी-(सं०स्त्री०) बालों की कूँची ।

आघर्षित-(सं०वि०)मार्जित,रगड़ा हुआ

आघात-(सं०पुं०) वध, ठोंकर, धक्का, क्षत, प्रहार,चोट,मार-पीट,आक्रमण, अभाग्य, वधस्थान ।

आघी-(हिं०स्त्री०) व्याज के बदले में दिया जाने वाला अन्न ।

आघूर्ण-(सं०वि०) **आघूर्णित**-चलित, घूमता हुआ, भ्रान्त, चक्कर खाता हुआ ।

आघ्राण-(सं०वि०) सूंघा हुआ, (पुं०) सुंधनी, तृप्ति ।

आघ्रात-(सं०वि०) सूंघा हुआ ।

आघ्रेय-(सं०वि०) घ्राण करने (सूंघने) योग्य ।

आङ्ग्री-(सं०स्त्री०) मृदङ्ग, तम्बूरा ।

आङ्गिक-(सं०पुं०)स्त्रियों का हाव भाव

आचमन-(सं०नपुं०) भोजन के बाद मुंह धोना, पूजा के पूर्व दहिने हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़ कर पीना । **आचमनी**-(हिं०स्त्री०) छोटे चम्मच के आकार का पात्र जिससे आचमन किया जाता है । **आचमनीय**-(सं०वि०) आचमन करने योग्य ।

आचय-(सं०पुं०) समूह, ढेर, संचय ।

आचरज-(हिं०पुं०) आश्चर्य, अचरज ।

आचरण-(सं०नपुं०) आचार चालचलन, व्यवहार, चिन्ह, लक्षण, आचार के नियम । **आचरणीय**-(सं०वि०) अनुष्ठेय, व्यवहार करने योग्य ।

आचरन-(हिं०) देखो अचारण ।

आचारना-(हिं०क्रि०) व्यवहार करना आचरण करना ।

आचनक-(हिं०क्रि०वि०) अचानक ।

आचार-(सं०पुं०) आचरण, अनुष्ठान, नियम,आचारण पद्धति, चरित्र, सदाचार शुद्धि ।

आचारज-(हिं०) देखो आचार्य । **आचारजी**-(हिं०स्त्री०) आचार्य का कार्य, पुरोहिताई ।

आचारभ्रष्ट-(सं०वि०) स्वधर्म त्यागी बदचलन ।

आचारवान्-(सं०वि०) शुद्ध आचरण का, पवित्रता से रहने वाला ।

आचारविचार-(सं०नपुं०) शुद्ध आचरण, पवित्रता । **आचारविरुद्ध**-(सं०वि०) पद्धति के प्रतिकूल । **अचारहीन**-(सं०वि०) देखो आचार भ्रष्ट ।

आचरित-(सं०वि०) अनुष्ठित, व्यवहार किया हुआ ।

आचारी-(सं०वि०) आचारवान् (पुं०) रामानुज सम्प्रदाय का वैष्णव ।

आचार्य-(सं०पुं०) गायत्री मन्त्र का उपदेश देने वाला, वेद पढ़ाने वाला, यज्ञादि के क्रम का उपदेशक, अध्यापक, गुरु, पुरोहित, वेद का भाष्यकार **आचार्यता**-(सं०स्त्री०) गुरु का पद या कर्म । **आचार्यत्व**-(सं०नपुं०) देखो आचार्यता ।

आचिन्त्य-(हिं०वि०) अचिन्त्य, सोचने योग्य ।

आच्छद-(सं०पुं०) ढांपने का वस्त्र ।

आच्छन्न-(सं०वि०)ढपा हुआ,छिपाहुआ

आच्छादक-(सं०वि०) ढांपने वाला, छिपानेवाला । **आच्छादन**-(सं०नपुं०) आवरण, ढपना, परदा, छिपाव वस्त्र, कपड़ा, ओहार, लबादा, झूल ।

आच्छादित-(सं०वि०) आवृत, ढपा हुआ, गुप्त ।

आच्छिन्न-(सं०वि०)छीना हुआ,कटा हुआ

आच्छेद, आच्छेदन-(सं०) काट छाँट, कटाई ।

आच्छोटन-(सं०नपुं०) चुटकी बजाना

आछत-(हिं०क्रि०वि०) रहते, होते हुए, सामने अतिरिक्त, सिवाय ।

आछना-(हिं०क्रि०) रहना, ठहरना, होना, विद्यमान होना ।

आछा-(हिं०वि०) देखो अच्छा ।

आछी-हिं०वि०) अच्छी, खाने वाला ।

आछे-(हिं०क्रि०वि०) अच्छी तरह से ।

आछेप-(हिं०) देखो आक्षेप ।

आछो-(हिं०वि०) देखो अच्छा ।

आज-(हिं०क्रि०वि०) अद्य, वर्तमान दिन में, इन दिनों, इस समय । **आजकल**-(हिं०क्रि०वि०) इन दिनों, सम्प्रति, इस समय, वर्तमान काल में; **आजकल करना**-टाल मटोल करना, हीला हवाली करना । **आंजकाल**-(हिं०) देखो आजकल ।

आजगव-(सं०नपुं०) शिव का धनुष ।

आजन्म-(सं०अव्य०) जन्मभर,

आजा-(हिं०पुं०) पितामह, पिता का पिता, दादा ।

आजागुरु(सं०पुं०) गुरु का गुरु ।

आजानु-(सं०अव्य०) जाँघ या घुठनेतक **आजानुबाहु**-घुठने तक लम्बे हाथवाला

आजि-(हिं०पुं०)युद्ध, लड़ाई ।

आजीव-(सं०पुं०) जीवन का उपाय, व्यवसाय । **आजीवन**-(सं०नपुं०) वृत्ति का उपाय (अव्य०) जीवन पर्यन्त । **आजीविका**-(सं०स्त्री०)जीवनका उपाय,

आजु-(हिं०) देखो आज ।

आज्ञप्त(सं०वि०) आदिष्ट, आज्ञा दिया हुआ । **आज्ञप्ति**-(सं०स्त्री०) आज्ञा ।

आज्ञा-(सं० स्त्री०) आदेश, अनुमति, **आज्ञाकारी**-(सं० वि०) आज्ञा मानने वाला, सेवक । **आज्ञाचक्र**-(सं०नपुं०) तन्त्रानुसार सुषुम्ना नाडी के मध्यगत भ्रूमध्यस्थित पद्माकार चक्र । **आज्ञानुगामी**-(सं०वि०) आज्ञानुसारी । **आज्ञानुसारी**-(सं० वि०) आज्ञा के अनुसार चलने वाला । **आज्ञापक**-(सं०वि०) आज्ञा देने वाला, हुक्म देने वाला, स्वामी, प्रभु । **आज्ञापत्र**-(सं०नपुं०) आदेशपत्र, **आज्ञापन**-आदेश, इत्तला। **आज्ञापालक**-(सं०वि०) आज्ञापालन करने वाला, आज्ञाकारी, दास **आज्ञापित**-(सं०वि०) आदेश दिया हुआ **आज्ञाभङ्ग**-(सं०पुं०) आज्ञा न मानना, **आज्ञावह**-(सं०वि) आज्ञानुसार काम करने वाला ।

आज्य-(सं०नपुं०) घृत, घी, हवि । **आज्यपात्र**-घी रखने का पात्र ।

आटना-(हिं०क्रि०) मूंदना, छिपाना, तोपना ।

आटविक-(सं०वि०) जंगल में रहने वाला, लकड़हारा ।

आटा-(हिं०पु०) अन्न का चूर्ण, पिसान, बुकनी; **आटे दाल की चिन्ता**-जीविका के विषय में चिन्ता ।

आटी-(हिं०स्त्री०)रोक, अटक, पच्चड़, टेक

आटोप-(सं०पुं०) दर्प, घमंड, आडंबर, तड़कभड़क; विस्तार, फैलाव, सूजन

आठ-(हिं०वि०) अष्ट, चार की दूनी संख्या आठ । **आठ आठ आंसू रोना**-अति विलाप करना; **आठो गाँठ कुम्मैद**-सब गुणों से युक्त, **आठो पहर**-दिन रात ।

आठक-(हिं०वि०) आठ के बराबर ।

आठवाँ-(हिं०वि०) अष्टम

आठें, आठों(हिं०) अष्टमी तिथि ।
आड़-(हिं०स्त्री०) परदा, रोग, रक्षा, अड़ान, थूनी, करछुल, ईंट या पत्थर का टुकड़ा, बिच्छू का डंक, स्त्रियों के मस्तक पर लगाने की लंबी टिकुली, स्त्रियों का एक आभूषण ।
आड़गीर-(हिं०पुं०) खेत के किनारे पर उगने वाली घास ।
आड़न-(हिं०स्त्री०) ढाल ।
आड़ना-(हिं०क्रि०) रोकना, छेकना, बांधना, अटकाना,
आड़बन्द-(हिं०पुं०) जंघिये पर बांधने की पट्टी ।
आडम्बर-(सं०पुं०) हर्ष, दर्प, गंभीर शब्द, तुरुही का शब्द, युद्ध की घोषणा, ललकार, आरम्भ, युद्ध, मेघ का शब्द, हाथी की गर्जना, चिग्घाड़, आच्छादन, तम्बू, बरौनी । **आडम्बरी**-(सं० वि०) अभिमानी, घमंडा, ठाटबाट रखनेवाला ।
आड़ा-(हिं०पुं०) धारीदार वस्त्र, मोटी लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा, लट्ठा, (वि०) तिरछा, **आड़े आना**-प्रतिबन्ध करना, रुकावट डालना; **आड़े हाथ लेना**-व्यङ्ग बोलकर लज्जित करना,
आड़ालोट(हिं०पु०) चंचलता, कँपकँपी ।
आड़ी-(हिं०स्त्री०) एक ताल विशेष, चर्मारों की छुट्टी, ओर, सहायक, तिरछी ।
आड़ू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का फल, सतालू ।
आढ़-(हिं० पुं०) आढक, चार सेर की तौल, आड़, परदा, आश्रय, अन्तर, बीच (वि०) भरा हुआ ।
आढक-(पुं०पु०) चार सेर की तौल, अरहर ।
आढकी-(सं०स्त्री०)अरहर, सुगन्धित मिट्टी
आढत-(हिं०स्त्री०) किसी व्यापारी का माल बिक्री कराने का व्यापार, जो धन किसी के माल की बिक्री करा देने पर मिलता है । **आढतदार, अढतिया**-(हिं० पुं०) आढ़त का व्यवसाय करने वाला । **आढती**-(हिं०पु०) आढत सम्बन्धी ।
आढ्य-(सं०वि०) युक्त, विशिष्ट, धनी, सम्पन्न । **आढ्यता**-(सं०स्त्री०) विभव, ऐश्वर्य ।
आणक-(सं०पुं०) एक रुपये का सोलहवाँ अंश, आना ।
आण्ड-(सं०पुं०) पुरुष का वृषण, अण्डकोष । **आण्डज**-(सं०वि) अण्ड से उत्पन्न होनेवाला ।
आत-(हिं० पुं०) शरीफ का फल ।
आतङ्क-(सं०पुं०) रोग, सन्ताप, कष्ट, सन्देह, भय, ज्वर, वेग, निक्षेप, उपद्रव ।
आततायिता-(सं०स्त्री०) वध, चोरी ।
आततायी-(सं०वि०) जान मारने को उद्यत, घर में आग लगाने वाला, विष देने वाला, चोरी करनेवाला, स्त्रीहरण करने वाला ।

आतप-(सं०पुं०)धूप, घाम, उष्णता, गरमी
आतपत्र-(सं०नपुं०) धूप से बचने का छाता ।
आतपशुष्क-(सं०वि०)धूपमें सुखाया हुआ
आतपी-(सं०वि०) सूर्य या घाम संबंधी
आतम-(हिं०) देखो आत्म ।
आतमा-(हिं०) देखो आत्मा ।
आतापि-(सं०पुं०)एक असुर का नाम ।
आतापी-(सं०) देखो आतापि ।
आतिथेय-(सं०नपुं०) अतिथि की सेवा जिसके यहां अतिथि आवे ।
आतिथ्य-(सं०नपु०) अतिथि की परिचया- पहुनाई,
आतिशय्य-(सं०नपु०)आधिक्य, प्राधान्य, बहुतायत ।
आतीपाती-(हिं०स्त्री०) बड़कों का छुवाछुवैवल का एक खेल ।
आतुर-(सं०वि०) आहत, पीड़ित, व्यग्र, व्याकुल, रोगी, अधीर, दुःखी, उत्सुक **आतुरता**(सं०स्त्री०) पीड़ा, रोग, व्यग्रता, व्याकुलता, शीघ्रता, जल्दी,
आतुरताय-(हिं०) देखो आतुरता । **आतुर सन्यास**-(सं०नपु०) वह सन्यास जो मरने के कुछ दिन पहिले लिया जाता है । **आतुराना**-(हिं०वि०) उत्सुक होना । **आतुरी**-(हिं०स्त्री०) आतुरता, व्यग्रता, घबड़ाहट, उतावलापन ।
आतुर्य-(सं०नपु०) आतुरता, व्यग्रता, घबड़ाहट ।
आत्त-(सं०वि०) गृहीत, स्वीकृत । **आत्तलक्ष्मी**-जिसने धन गँवा दिया हो
आत्म-(सं०वि०) अपना, निजी, स्वकीय **आत्मक**-(सं०वि०) प्रकृति से सम्बन्ध रखने वाला, यथा विषयात्मक, पंचात्मक इ० । **आत्मकल्याण**-(सं०नपु०) अपना ही भला । **आत्मकार्य**-(सं० नपुं०) निजी काम । **आत्मकृत**-(सं० वि०) स्वयं अपने हाथसे किया हुआ । **आत्मगत**-(सं०नपुं०) स्वगत, आप ही आप । **आत्मगुप्त**-(सं०वि०)अपनी शक्ति द्वारा रक्षित । **आत्मगौरव**-(सं०नपुं०) स्वकीय प्रभाव, अपने मान का विशेष ध्यान । **आत्मग्राही**-(सं०वि०) स्वार्थी, लालची । **आत्मघात**-(सं०पु०) आत्महत्या, स्वयं विष खाकर या फाँसी लगाकर प्राण त्याग करना । **आत्मघातक, आत्मघाती**-(सं०वि०) अपने हाथों से अपने को मार डालने वाला, आत्महत्या करने वाला ।
आत्मज-(सं०पु०) पुत्र, बेटा, कामदेव । **आत्मजा**-(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी, पुत्री । **आत्मजात**-(सं०वि०) देखो आत्मज ।
आत्मज्ञ-(सं०पुं०) ब्रह्मज्ञ, सिद्ध, अपने स्वरूप को भली भाँति जानने वाला **आत्मज्ञान**-(सं०नपुं०) आत्मा का यथार्थ रूप में ज्ञान, सच्चा ज्ञान ।
आत्मज्ञानी-(सं० पुं०) देखो आत्मज्ञ ।
आत्मतत्व-(सं० नपुं०) आत्मा का यथार्थ स्वरूप । **आत्मतत्वज्ञ**-(सं० पु०) वेदान्ती ।
आत्मतुष्टि-(सं०वि०) आत्मज्ञान द्वारा तुष्टि पाने वाला, (स्त्री०) आत्मा का सन्तोष ।
आत्मत्याग-(सं०पुं०) स्वार्थत्याग, दूसरे की भलाई के लिये अपना स्वार्थ छोड़ देना । **आत्मत्यागी**-(सं०वि०) स्वार्थत्यागी, दूसरे के लिये अपना स्वार्थ त्यागनेवाला । **आत्मदान**-(सं०नपु०) आत्मा का दान, आत्मत्याग । **आत्मद्रोही**-(सं०वि०) वक्र प्रकृति का चिड़चिड़ा, अपनी बुराई करने वाला । **आत्मनिन्दा**-(सं०स्त्री०) स्वकीय तिरस्कार । **आत्मनिवेदन**-(सं०नपुं०) आत्मसमर्पण, अपना सर्वस्व देवता को अर्पण कर देना । **आत्मनिष्ठ**-(सं०वि०) ब्रह्मनिष्ठ, मोक्ष चाहनेवाला । **आत्मपरित्याग**-(सं०वि०) देखो आत्मनिवेदन ।
आत्मनीन-(सं०वि०) अपनी भलाई करने वाला । (पु०) पुत्र, बेटा, नाटक में का विदूषक ।
आत्मप्रबोध-(सं०पुं०) आत्मा का ज्ञान **आत्मप्रभव**-(सं०पुं०) तनुज, पुत्र, बेटा, कामदेव । **आत्मप्रशंसा**-(सं० स्त्री०) अपनी प्रशंसा स्वयं करना । **आत्मबन्धु**-(सं०पुं०) ममेरा, मौसेरा तथा फुफेरा भाई । **आत्मबुद्धि**-(सं० स्त्री०) स्वीय ज्ञान, आत्मा के विषय में ज्ञान । **आत्मबोध**-(सं०पुं०) स्वीय ज्ञान, आत्मबोध । **आत्मभव**-(सं० वि०) स्वयं उत्पन्न, अपने आप निकला हुआ ।
आत्मभू-(सं०पुं०) अपनी शरीर या आत्मा से उत्पन्न, आप से आप उत्पन्न, (पु०) पुत्र, बेटा, कामदेव, ब्रह्मा, शिव, विष्णु ।
आत्मयोनि-(सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव । **आत्मरक्षक**-(सं० वि०) अपनी रक्षा करने वाला । **आत्मरक्षण**-(सं०नपुं०) अपनी रक्षा । **आत्मरक्षा**-(सं०स्त्री०) अपनी रक्षा या बचाव ।
आत्मरत-(सं०वि०) आत्मा से प्रेम रखने वाला । **आत्मरति**-(सं०स्त्री०) आत्मा का आनन्द, ब्रह्मज्ञान ।
आत्मवञ्चक-(सं० वि०) अपने ही को धोखा देनेवाला, कृपण । **आत्मवंचना**-(सं०स्त्री०) अपने को धोखा देना ।
आत्मवत्-(सं०अव्य०) अपनी तरह ।
आत्मवध-(सं०) देखो आत्मघात ।
आत्मवश-(सं०वि०) स्वाधीन, जितेन्द्रिय
आत्मवाद-(सं०पुं०) अध्यात्मिकता ।
आत्मविक्रय-(सं०पुं०) स्वदेह विक्रय, किसी के हाथ अपनी शरीर को बेंच देना । **आत्मविक्रयी, आत्मविक्रेता**-(सं०) अपने आपको बेंच कर दास बननेवाला । **आत्मविज्ञान**-(सं०नपु०) योगाभ्यास द्वारा परमात्माके स्वरूप का ज्ञान । **आत्मविद्या**-(सं०स्त्री०) ब्रह्मविद्या, योगशास्त्र, वह विद्या जिसके द्वारा आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो ।
आत्मविस्मृति-(सं०स्त्री०) अपने आपको भूल जाना, अपना ध्यान न रखना । **आत्मवृत्तान्त**-(सं०पुं०) निजी उपाख्यान, स्वीय (अपनी) कथा । **आत्मवृत्ति**-(सं०स्त्री०) अपने जीवन का उपाय । **आत्मशुद्धि**-(सं०स्त्री०) देहशुद्धि, चित्तशुद्धि । **आत्मश्लाघा**-(सं०स्त्री०) अपने गुण का प्रकाशन, स्वकीय प्रशंसा, अपने मुँह से अपना गुण वर्णन करना । **आत्मश्लाघी**-(सं०वि०) अपने मुख से अपनी प्रशंसा करने वाला । **आत्मसंयम**-(सं०पु०) अपनी चित्तवृत्ति को वश में करना । **आत्मसमुद्भव**-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा, कामदेव, विष्णु, ब्रह्मा । **आत्मसमुद्भवा**-(सं०स्त्री०) कन्या, पुत्री, बुद्धि । **आत्मसंभव**-(सं०पुं०) हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, परमात्मा **आत्मसंभवा**-(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी, बुद्धि ।
आत्मसात्-(सं०अव्य०) सब प्रकार से अपने आधीन ।
आत्मसिद्ध-(सं०वि०) अपने आप बना हुआ । **आत्मसिद्धि**-(सं०स्त्री०) मोक्ष निर्वाण । **आत्मस्तुति**-(सं०स्त्री०) स्वकीया प्रशंसा, आत्मश्लाघा । **आत्महत्या**-(सं०स्त्री०) आत्मघात, स्ववध,
आत्महिंसा-(सं०स्त्री०) देखो आत्महत्या **आत्महित**-(सं०वि०) अपने को लाभ देने वाला ।
आत्मा-(सं०पु०) जीवात्मा, चित्त, चैतन्य, मन, स्वभाव, बुद्धि, ब्रह्म, हृदय, दिल, धृति, सूर्य, अग्नि, वायु, जीव, धर्म, पुत्र, बेटा । **आत्मादिष्ट**-(सं०वि०) अपने आप उपदेश पाया हुआ । **आत्माधीन**-(सं०वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र । **आत्मानन्द**-(सं०वि०) आत्मा का आनन्द । आत्मा में लीन होने का आनन्द । **आत्मानुरूप**-(सं०वि०) अपने तुल्य । **आत्माभिमान**-(सं०पुं०) स्वकीय अहंकार, अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान । **आत्माभिमानी**-(सं०वि०) अपने अभिमान का ध्यान रखनेवाला **आत्माराम**-(सं०पुं०) वह योगी जो सम्पूर्ण विश्व को आत्मरूप समझता है, ब्रह्म, तोते के लिये प्रयुक्त प्रेम का नाम । **आत्मावलम्बी**-(सं०वि०)अपने सहारे सब काम करने वाला ।
आत्मिक-(सं०वि०) आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला, स्वकीय, अपनी, मानसिक ।
आत्मीय-(सं०वि०) आत्मा संबंधी, निजी, अपना, स्वर्गीय, दैवी (पुं०) सम्बन्धी, रिश्तेदार । **आत्मीयता**-(सं०स्त्री०) आत्म संबंध, मित्रता, अपना खास रिश्ता ।

आत्मेश्वर-(सं०वि०) अपने मन पर अधिकार रखने वाला।
आत्मोत्कर्ष-(सं० पुं०) आत्मोन्नति।
आत्मोत्सर्ग-(सं०पु०) स्वार्थ का परित्याग,दूसरे के हित लिये अपना स्वार्थ त्याग देना।
आत्मोद्धार-(सं०पु०) आत्माका उद्धार, मुक्ति, सांसारिक विषयों का त्याग तथा परमार्थिक पदार्थों का ग्रहण।
आत्मोद्भव-(सं०पु०) पुत्र, बेटा, कामदेव। **आत्मोद्भवा**-(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी, बुद्धि।
आत्मोन्नति-(सं०स्त्री०) स्वकीय उन्नति
आत्मोपम-(सं०वि०) अपने सदृश।
आत्म्य-(सं०वि०) आत्मा सम्बन्धी।
आत्यन्तिक-(सं०वि०) अतिशय, बहुत ज्यादा, प्रधान।
आत्रेय-(सं०पु०) अत्रि के पुत्र, आत्रेयी नदी के तट पर बसा हुआ देश, शिव शरीर के रस धातु (वि०) अत्रि सम्बन्धी। **आत्रेयी**-(सं०स्त्री०) अत्रि वंश की स्त्री।
आथना-(हिं०क्रि०) होना, रहना।
आथर्वण-(सं०पुं०) अथर्व वेद जानने वाला ब्राह्मण, पुरोहित, अथर्ववेदी धर्म।
आथि-(हिं०स्त्री०) पूंजी।
आदंश-(सं०पुं०)दाँत, डंक,दंशन,बुरका
आदत्त-(सं०वि०) गृहीत, पकड़ा हुआ, स्वीकृत।
आदर-(सं०पु०) सम्मान, प्रतिष्ठा, मर्यादा, अनुराग, प्रेम, आसक्ति **आदरणीय**-(सं०वि०) सम्मान करने योग्य, ध्यान देने योग्य। **आदरना**-(हिं०क्रि०) सम्मान करना, मानना, इज्जत करना। **आदरभाव**-(सं०पुं०) आदर सत्कार, सम्मान।
आदरस-(हिं०) देखो आदर्श।
आदर्य-(सं०वि०) देखो आदरणीय।
आदर्श-(सं०पुं०) दर्पण, शीशा, प्रतिलिपि, टीका, स्थान का चित्र, अनुकरण करने योग्य पदार्थ। **आदर्श मन्दिर**-(सं०नपुं०) शीश महल। **आदर्शित**-(सं०वि०) दिखलाया हुआ।
आदहन-(सं०नपुं०)दाह,हिंसा, मारकाट
आदान-(सं०नपु०) ग्रहण, पकड़। **आदान प्रदान**-(सं०नपुं०) लेनदेन।
आदापन-सं०नपुं०) निमन्त्रण, न्योता।
आदि-(सं०नपुं०)आरम्भ,प्रथम,महिला। प्रकार, अवयव, मूल कारण (वि०) पहिले का, आरंभ का, (अव्य) आदिक।
आदिक-(सं०अव्य०) आदि।
आदिकर्ता-(सं०पुं०) आदिकारक, परमेश्वर। **आदिकारण**-(सं०नपु०) मूल कारण, सब कारणोंका मूल परमेश्वर, प्रकृति।
आदिकाल-(सं०पुं०)प्राचीन समय।
आदिकेशव-(सं०पुं०) विष्णु भगवान।
आदित-(हिं०पुं०) देखो आदित्य।
आदिता-(सं० स्त्री०) पूर्वता, प्रथमता।
आदितेय-(सं०पु०) अदिति के सन्तान, देवता, सूर्य।
आदित्य-(सं०पु०) अदिति के सन्तान, देवता, सूर्य, इन्द्र, वामन, वसु, विश्वदेवा, मदार का पौधा, बारह मात्रा का छन्द। **द्वादशआदित्य**-विवस्वान, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, वरुण, मित्र, शक्र और उरुक्रम हैं। **आदित्यमण्डल**-(सं०नपु०) सूर्यका वृत्त। **आदित्यवार**-(सं०नपु०) रविवार, एतवार।
आदिदेव-(सं०पुं०) नारायण, शिव, सूर्य। **आदिपुरुष**-(सं०पुं०) हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा, नारायण। **आदिभव**-(सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु परमेश्वर। **आदिभूत**-(सं०वि०) देखो आदिभव।
आदिम-(सं०वि०) आदि में उत्पन्न, पहिला, अगला।
आदिमा-(सं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
आदिरस-(सं०पुं०) श्रृङ्गार रस।
आदिवंश-(सं०पुं०) प्रथम कुल।
आदिविपुला-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का आर्या छन्द।
आदिशक्ति-(सं०स्त्री०) परमेश्वर की माया रूप शक्ति, देवी मूर्ति।
आदिष्ट-(सं०वि०) आज्ञा दिया हुआ, उपदेश किया हुआ।
आदी-(हिं०स्त्री०) अदरख।
आदीपक-(सं०वि०) उद्दीपक, प्रकाशक।
आदीपित-(सं०वि०) उद्दीपित, प्रकाशित। **आदीप्त**-(सं०वि०)जलाया हुआ।
आदृत-(सं०वि०) सम्मानित, पूजित, आदर किया हुआ।
आदेय-(सं०वि०) ग्राह्य, लेने योग्य।
आदेश-(सं०पुं०) उपदेश,आज्ञा,प्रणाम, लोप, समाचार, भविष्यवाणी।
आदेशक-(सं०वि०) आदेश देने वाला।
आदेस-(हिं०पु०) देखो आदेश।
आद्य-(सं०वि०) आदि में उत्पन्न,प्रधान, बड़ा, पूर्वगामी, (पुं०) आरंभ।
आद्यन्त-आदि से अन्त तक, **आद्यबीज** मूल कारण, ईश्वर।
आद्या-(सं०स्त्री०) तन्त्रोक्त दुर्गा देवी-यह सत्ययुग में सुन्दरी, त्रेता में भुवनेश्वरी, द्वापर में तारिणी और कलियुग में काली कहलाती है।
आद्योत-(सं०पुं०)प्रकाश,उजाला,रोशनी
आद्योपान्त-(सं०पुं०) प्रथम से शेष तक
आद्रा-(हिं०स्त्री०) देखो आर्द्रा।
आध-(हिं०वि०) दो बराबर भागों में से एक, आधा, यौगिक शब्दों के आदि में प्रयोग होता है यथा-आध सेर, आध मन; **एकाध**-थोड़ी संख्या में।
आधमन-(सं० नपुं०) रेहन, अमानत, धरोहर।
आधर्षित-(सं०वि०)अपमानित,तिरस्कृत
आधा-(हिं०वि०) अर्ध, दो बराबर भागों में से एक। **आधे आध**-दो बराबर भाग किया हुआ, **आधा तीतर आधा बटेर**-बेजोड़, बेमेल; **आधा होना**-क्षीण होना, दुर्बल होना; **आधी बात कहना**-किसी के अनादर की थोड़ी सी बात कहना।
आधान-(सं०नपुं०) ग्रहण,पकड़, प्राप्ति, समाई, बंधक, प्रतिभू, आधारपात्र, वृत्त, घेरा।
आधार-(सं०पुं०) सहारा, आश्रय, अवलम्ब, थाला, पात्र, नहर, सम्बन्ध, व्याकरण में अधिकरण कारक, पानी का बाँध, नीव, मूल, (वि०) आश्रय देने वाला।
आधारशक्ति-शक्ति का रूप, माया, प्रकृति।
आधारी-(सं०वि०) सहारा लेने वाला, (हिं०स्त्री०) सहारा लेने की लकड़ी जिसको साधु लोग टेकने के काम में लाते हैं।
आधासीसी-(हिं०स्त्री०) अर्ध कपाली, आधे मस्तक में पीड़ा।
आधि-(सं०स्त्री०) मानसिक व्यथा, चिन्ता, दुर्भाग्य, आशा, बन्धक, लक्षण, निर्देश, अधिष्ठान।
आधिक-(हिं०वि०) प्रायः आधा।
आधिकारक-(सं०वि०) प्रधान, श्रेष्ठ, पद सम्बन्धी।
आधिक्य-(सं०नपुं०)अधिकता,बहुतायत
आधिदैविक-(सं०वि०) देवताधिकृत, देवता द्वारा होने वाला।
आधिपत्य-(सं०नपुं०) स्वामित्व, प्रभुत्व, सरदारी।
आधिभोग-(सं०पुं०) बंधक की वस्तु को काम में लाना।
आधिभौतिक-(सं०वि०) व्याघ्र सर्पादि द्वारा प्राप्त,भूमि से उत्पन्न,जीवन संबंधी
आधिराज्य-(सं०नपु०) आधिपत्य, स्वामित्व।
आधी-(हिं०स्त्री०) देखो आधा।
आधीकृत-(सं०वि०) बन्धक रक्खा हुआ
आधीन-(हिं०वि०) देखो आधीन।
आधीनता-(हिं०स्त्री०) देखो आधीन।
आधीरात-(हिं०स्त्री०) अर्धरात्रि, रात के बारह बजने का समय।
आधुनिक-(सं०वि०) अर्वाचीन, नया, वर्तमान समय का, हाल का।
आधृष्ट-(सं०वि०)निवारित, रोका हुआ
आधक-(हिं०वि०) आधे के बराबर, आधे से अधिक नहीं।
आधेय-(सं०वि०) दिया जाने वाला रक्खा हुआ, बताया हुआ, बन्धक रक्खा जाने वाला।
आध्मात-(सं०वि०) बजाया हुआ, जलाया हुआ।
आध्या-(सं०स्त्री०) चिन्ता।
आध्यात्मिक-(सं०वि०)आत्मा सम्बन्धी, परमात्मा सम्बन्धी।
आध्वरिक-(सं०वि०) सोमयज्ञ सम्बन्धी।
आन-(सं०पु०) प्राण वायु का नाक द्वारा बाहर निकलना, सुख, श्वास (हिं०स्त्री०) सीमा, हद, शपथ, क्षण, बनावट,भय, लज्जा, प्रतिज्ञा, विचार, हठ, ढङ्ग (वि०) अन्य, दूसरा।
आनक-(सं०पु०) नगाड़ा, भेरी, मृदङ्ग, गरजनेवाला बादल। **आनक दुन्दुभि**-बड़ा नगाड़ा, वासुदेव का नाम
आनत-(सं०वि०) अधोमुख, विनय से मुख नीचा किये हुए।
आनतान-(हिं०स्त्री०)ऊटपटांग,अंडबंड,हठ
आनद्ध-(सं०वि०) बद्ध, बँधा हुआ, गुथा हुआ (पु०)चमड़ा मढा हुआबाजा।
आनन-(सं०नपु०) मुह, मुख, मस्तक, चेहरा मुखड़ा।
आनना-(हिं०क्रि०) लाना, लिवा लाना
आनन्द-(सं०नपुं०) हर्ष, सुख, प्रसन्नता, विष्णु, शिव, बलराम, मद्य।
आनन्दक-(सं०वि०) आनन्द देनेवाला।
आनन्दकर-(सं०वि०) देखो आनन्दक।
आनन्दज-(सं०वि०) आनन्द देने वाला
आनन्दता-(सं०स्त्री०) प्रसन्नता, खुशी
आनन्दना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना।
आनन्दपट-(सं०पु०) दुलहिन का पहिरने का वस्त्र। **आनन्द बधायी**-(हिं०स्त्री०) मंगल उत्सव, आनन्द का बाजा। **आनन्दमिता**-(सं०पुं०)आनन्द देने वाला मनुष्य। **आनन्दवन**-(सं०) काशी क्षेत्र, बनारस। **आनन्दव्रत**-(सं०पु०) चैत्रादि चार महीने का एक व्रत। **आनन्द सम्मोहिता**-(सं०स्त्री०) आनन्द में भली भाँति मोहित होने वाली नायिका।
आनन्दा-(सं०स्त्री०) विजया, भाँग।
आनन्दित-(सं०वि०) हर्षयुक्त, प्रसन्न, सुखी। **आनन्दी**-(सं०वि०) प्रसन्न, प्रसन्न रहने वाला।
आनबान-(हिं०स्त्री०) चमक दमक, सजधज, ठाट बाट।
आनमन-(सं०नपु०) विनय झुकाव।
आनमित-(सं०वि०) झुका हुआ, व्याकुल किया हुआ।
आनयन-(सं०नपुं०) जाना, उपनयन संस्कार।
आनर्त-(सं०पुं०) नृत्यशाला, नाचघर, युद्ध, काठियावाड का प्राचीन नाम, इस देश का निवासी। **आनर्तक**-(सं०वि०) नचैया, नाचने वाला।
आना-(हिं०पु०) एक रुपये का सोलहवाँ भाग, किसी वस्तु का सोलहवाँ भाग, (हिं०क्रि०) आगमन करना, होना, बीतना, लौटना, आरंभ होना, लगना, उत्पन्न होना, निकलना, पकना, ढीला होना, समाना, चढ़ना, देख पड़ना, पहुंचना, बिकना, मिलना, तैयार होना, हाथ लगना, फलफूल लगना, फूलना; **आताजाता**-आने जानेवाला, बटोही; **आपड़ना**-एक बारगी गिरना, आक्रमण करना; **आया गया**-अतिथि, पाहुन, **कुछ न आना**-ज्ञान रहित होना
आनाकानी-(हिं०स्त्री०) अनाकर्णन, सुनी अनसुनी करना, गुप्तवार्ता, कानाफुसकी।

अनानास-(हिं॰पुं॰) देखो अनन्नास ।
अनाय-(सं॰पुं॰)मछली पकड़ने की जाल
अनायी-(स॰पु॰) धीवर, मछुवा ।
अनाह-(स॰पुं॰) दैर्घ्य, लम्बाई, मलमूत्र रुकने का रोग ।
आनि-(हिं॰) देखो आन ।
आनीजानी-(हिं॰वि॰) आने जाने वाली
अनीत-(सं॰वि॰) गृहीत, लाया हुआ ।
आनुगत्य-(हिं॰पु॰) अनुसरण ।
आनुपूर्वी-(सं॰वि॰) क्रमानुसार, यथास्थित ।
आनुमानिक-(सं॰वि॰) अनुमान संबंधी
आनुरूप्य-(स॰नपुं॰) सादृश्य, बराबरी
आनुलोमन-(सं॰वि॰) अपने से छोटी जाति से विवाह करने वाला ।
आनुशासनिक-(स॰वि॰) शासन संबंधी
आनुश्रविक-(स॰वि॰) वेदविहित, बड़ों के मुख से सुना जाने वाला ।
आनुषङ्गिक-(स॰वि॰) अनुरूप, बराबर का अप्रधान, संगटित, लागू, प्रासङ्गिक
आनूप-(स॰वि॰) अनूप देश में उत्पन्न, अनूपदेश वासी; **आनूपभूमि**-सजल भूमि ।
आने-(हिं॰) आना का बहुवचन ।
आने गाँव-दूसरे गाँव में ।
आनेटा-(स॰पुं॰) लाने वाला ।
आन्तरिक-(सं॰वि॰) अन्तर्गत, भीतरी, मानसिक ।
आन्तिका-(सं॰स्त्री॰) ज्येष्ठा भगिनी, बड़ी बहिन ।
आन्त्रिक-(सं॰वि॰) अन्त्र सम्बन्धी, आँतों का ।
आन्दोलक-(सं॰पुं॰) झुलाने वाला । **आन्दोलन**-(सं॰नपुं॰) झोंका, कम्प, अनुसन्धान, विवेचना, परख, विप्लव, उपद्रव । **आन्दोलित**-(सं॰ वि॰) दोलायमान, झोंका खाता हुआ ।
आन्ध्र-(सं॰पुं॰) तामिल और तिलगू देश तद्वासी भी ।
आन्वाहिक-(सं॰वि॰)दैनिक,प्रतिदिनका
आन्वीक्षिकी-(सं॰स्त्री॰) आत्मविद्या, तर्क विद्या ।
आप-(सं॰पुं॰)आठोंवसुओं में से चौथा जल का समूह, आकाश, समास के अन्त में इस शब्द का अर्थ, 'पाने वाला होता है,'यथा-दुराप; (हिं॰सर्व॰) स्वयं, (तीनों पुरुषों में प्रयोग होता है); **आप काज**-अपना कार्य, आप, **आप करना**-आदर दिखलाना, **आप काजी**-स्वार्थी; **आप आपकी**-पड़ना-अपने ही स्वार्थ में लगे रहना; **आप आपको**-अलग अलग, पृथक् पृथक; **आपसे आप**-स्वयं, बिना प्रेरणा के ।
आपक्व-(स॰वि॰) कुछ पका हुआ ।
आपगा-(सं॰स्त्री॰) नदी ।
आपटव-(सं॰नपुं॰) भद्दापन ।
आपण-(सं॰पुं॰) हाट, वस्तु बेचने का स्थान । **आपणिक**-(सं॰वि॰) वाणिज्य संबंधी ।

आपत्-देखा आपद् ।
आपतन-(सं॰नपुं॰) अवतरण, उतार, प्राप्ति ।
आपत्कल्प-(स॰पुं॰) आपत्ति काल में किया जाने वाला कार्य । **आपत्काल**-(सं॰पुं॰) विपत्ति का समय, क्लेश, दुष्काल । **आपत्कालिक**-(स॰वि॰) विपत्ति के समय होने वाला ।
आपत्ति-(सं॰स्त्री॰) क्लेश, विपत्ति, संकट, कष्ट का काल, प्राप्ति, जीविका का कष्ट, रोगग्रस्त अवस्था,
आपत्य-(सं॰वि॰) सन्तान संबंधी ।
आपद-(सं॰स्त्री॰) विपत्ति, दुःख, कष्ट, दुर्घटना ।
आपदा-(हिं॰स्त्री॰) दुःख, विपत्ति, क्लेश, कष्ट का सयय । **आपदग्रस्त**-(सं॰वि॰) विपत्ति से पीडित,हतभाग्य
आपद्धर्म-(सं॰पुं॰) विपत्ति के समय विधान करने का धर्म ।
आपन,आपना-(हिं॰सर्व॰)अपना,निजी।
आपना-(हिं॰सर्व॰) देखो अपना ।
आपनिधि-(हि॰पुं॰) समुद्र, जलनिधि ।
आपनेय-(हिं॰वि॰)प्राप्त किये जाने योग्य।
आपनो-(हिं॰सर्व॰)देखो आपना । (पुं॰) अहंकार, आत्मभाव ।
आपन्न-(सं॰वि॰) दुःखी, संकट में पड़ा हुआ, प्राप्त, पाया हुआ ।
आपराह्णिक-(सं॰वि॰) तीसरे पहर होने वाला ।
आपरूप-(हिं॰वि॰) अपने रूप रंग का (सर्व॰) स्वयं आप, (वि॰) मूर्तिमान्, साक्षात् ।
आपवर्ग्य-(सं॰वि॰) मोक्ष देने वाला ।
आपस-(हिं॰स्त्री॰) आत्मीयता, मेल जोल, **आपस का**-एक दूसरे का, परस्पर का; **आपस में**-एक दूसरे के साथ । **आपसदारी**-(हिं॰स्त्री॰) भाई चारा, **आपसी**-(हिं॰वि॰) आत्मीय, सम्बन्धी, मेली ।
आपस्तम्ब-(स॰पुं॰) कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि ।
आपा-(हिं॰पुं॰) स्वीयभाव,अपनी सत्ता अपना अस्तित्व, दर्प,घमंड,महाराष्ट्र देश के लोग बड़े भाई को आपा पुकारते हैं । **आपखोना**-विनीत भाव ग्रहण करना, **आपे में आना**-सचेत **आपे में न रहना**-अधिकार के बाहर होना, अति क्रोध दिखलाना ।
आपात-(स॰पुं॰) पड़ाव, धावा, पहुंच, वर्तमान काल, उपक्रम, समीप आगमन, घटना, धक्का ।
आपाततः-(सं॰अव्य॰) पहिली बार, तुरत, हठात ।
आपातलतिका-(सं॰स्त्री॰) एक वृत्त विशेष ।
आपाती-(सं॰वि॰) अधोगामी, उतारू ।
आपादमस्तक-(सं॰वि॰)सिर से पैर तक
आपाधापी-(हिं॰स्त्री॰) अपने अपने कार्य की चिन्ता, खींचातानी, लड़ाई झगड़ा ।

आपान-(क)-(स॰नपुं॰) मद्य पीने का स्थान या दूकान ।
आपापन्थी-(हिं॰वि॰) अपनी ही राह चलने वाला, मनमानी करने वाला।
आपायत-(हिं॰वि॰) आप्यायित, सन्तुष्ट
आपालि-(सं॰पुं॰) केशकीट, जुवाँ ।
आपी-(सं॰ स्त्री॰) पूर्वाषाढा नक्षत्र (हिं॰सर्व॰) आपही, आप स्वयं ।
आपीड़-(सं॰वि॰) पीड़ा देने वाला ; (पुं॰) शिर का आभूषण, हार ।
आपीड़न-(सं॰नपु॰) संकोचन, दबाव
आपीड़ित-(सं॰वि॰) कष्ट दिया हुआ दबाया हुआ ।
आपु-(हिं॰सर्व॰) देखो आप । **आपुन**-(हिं॰सर्व॰) अपना, निजी । **आपुस**-(हिं॰) देखो आपस ।
आपूप-(स॰पुं॰) टिकिया, रोटी, माल पूआ, पूआ ।
आपूर-(सं॰वि॰) व्याप्त, भरा, पूरा ।
आपूरना-(हिं॰क्रि॰) आपूरण करना, भरना । **आपूरित**-(सं॰वि॰)भरा हुआ
आपेक्षिक-(सं॰वि॰) तुलना द्वारा प्राप्त, तुलना से निर्धारित होने वाला, निर्भर होने वाला ।
आपोक्लिम-(सं॰नपु॰) जन्म कुण्डली का तीसरा, छठां, नवां और दसवां स्थान ।
आप्त-(सं॰वि॰) प्राप्त, पाया हुआ, विश्वस्त, ठीक, कुशल, सम्बन्धी, सम्पूर्ण, सत्य,बराबर, प्राकृतिक, अभियुक्त, प्रामाणिक, सामान्यरूप से प्रयोग में आने वाला (पु॰) योग्य पुरुष, मित्र । **आप्तकाम**-(सं॰वि॰) तृप्त, सन्तुष्ट, जिसकी सब कामना पूरी हुई हो । **आप्तकारी**-(सं॰पुं॰) उचित रीति से काम करने वाला ।
आप्तगर्भा-(सं॰स्त्री॰) गर्भिणी स्त्री ।
आप्ति-(सं॰स्त्री॰) प्राप्ति ।
आप्य-(सं॰वि॰) जल संबंधी, जलमय।
आप्यान-(सं॰नपुं॰) वृद्धि, बढती ।
आप्यायन-(सं॰नपुं॰) वृद्धि, तृप्ति, प्रीति, बढती, अगवानी, उत्तम अवस्था उत्पन्न करने का द्रव्य, दीक्षा देने के मन्त्र का संस्कार विशेष ।
आप्यायित-(सं॰वि॰) वर्धित, आनन्दित
आप्रच्छन्न-(सं॰वि॰) अत्यन्त गुप्त ।
आप्रीत-(सं॰वि॰) प्रसन्न, खुश ।
आप्लव, आप्लवन-(स॰) जल में गोता लगाना, स्नान ।
आप्लावित-(सं॰वि॰)भीगा हुआ, स्नान किया हुआ ।
आप्लुत-(सं॰वि॰) डूबा हुआ ।
आफुक-(स॰नपुं॰) अफ़ीम ।
आफूक-(सं॰नपु॰) अहिफेन, अफ़ीम ।
आबद्ध-(सं॰वि॰) प्रतिबद्ध,बँधा हुआ ।
आबन्ध-(सं॰पुं॰) ग्रन्थि, गाँठ ।
आबर्ह-(सं॰पुं॰) मार काट, हिंसा ।
आबोधन-(सं॰नपुं॰)विद्या,बुद्धि,शिक्षा।
आब्द-(सं॰वि॰) मेघजात,मेघसे उत्पन्न।
आब्दिक-(सं॰वि॰) वार्षिक ।

आभ-(हिं॰पु॰)अभ्र,आसमान,आपजल
आभरण-(सं॰नपुं॰)अलंकार,आभूषण, पालन पोषण ।
आभरन-(हिं॰पुं॰) आभरण ।
आभरित-(स॰वि॰) अलंकृत,सजाहुआ।
आभा-(सं॰स्त्री॰)दीप्ति, चमक, शोभा, कान्ति, प्रतिबिम्ब, छाया ।
आभार-(सं॰पु॰) भार, गृहस्थी का भार, उपकार, एक वर्णवृत्त ।
आभारी-(सं॰वि॰)उपकार मानने वाला।
आभाषण-(सं॰नपुं॰)वार्तालाप,बातचीत
आभास-(सं॰पु॰) प्रतिबिंब, परछाही, झलक, संकेत, झूठा दिखावा, तुल्य प्रकाश, मिथ्या ज्ञान ।
आभास्वर-(सं॰वि॰) चमकनेवाला ।
आभिधानिक-(सं॰वि॰)कोषबनानेवाला
आभिरूप्य-(सं॰नपुं॰) सौन्दर्य,पाण्डित्य
आभीर-(सं॰पुं॰)गोप, अहीर, ग्वाल; **आभीर-पल्ली**-अहीरों के रहने की बस्ती, अहिराना ।
आभीरी-(स॰स्त्री॰) अहिरिन, अहीरों की भाषा ।
आभुग्न-(सं॰त्रि॰)टूटा हुआ,मुड़ाहुआ, कुछ टेढा ।
आभूखन-(हिं॰पुं॰) देखो आभरण ।
आभूषण-(सं॰नपुं॰) अलङ्कार ।
आभूषित-(सं॰वि॰) अलंकृत, आभरित
आभोग-(सं॰पुं॰) परिपूर्णता, यत्न, गानेके अन्तमें कवि का नाम कथन।
आभोगी-(सं॰वि॰) परिपूर्ण, सुख भोगने वाला ।
आभ्यन्तर-(सं॰वि॰) मध्यवर्ती, भीतरी **आभ्यन्तरिक**-(सं॰वि॰) भीतरी ।
आभ्याशिक-(सं॰वि॰)समीपस्थ,पड़ोस का
आभ्यासिक-(सं॰वि॰)देखो आभ्याशिक
आभ्युदयिक-(सं॰नपु॰) मांगलिक, सुख सौभाग्य बढाने वाला । (पु॰) नान्दीमुख श्राद्ध ।
आम-(स॰अव्य॰) हाँ, ठीक आवश्य ।
आम-(सं॰वि॰) अपक्व, जो पका न हो, कच्चा, जो (भोजन) पचा न हो, बिना पचा हुआ मल, आँव; (हिं॰पु॰) आम्र, रसाल, वृक्ष तथा फल दोनों के लिये व्यवहार होता है; (अ॰वि॰) साधारण, सामान्य, **दरबार आम**-राजसभा जिसमें सर्व सामान्य जा सकते हैं । **आम अख्तियार**-सामान्य अधिकार ।
आमक-(सं॰पुं॰) कूमाण्ड, कुम्हड़ा ।
आमन-(हिं॰स्त्री॰) अगहनियां धान ।
आमड़ा-(हिं॰पुं॰) आम्र तक, एक बड़ा आम के बराबर का वृक्ष जिसके बेर के बराबर खट्टे फल होते हैं और अचार बनाने के काम में आते हैं ।
आमना-(हिं॰क्रि॰) आमना, सामना ।
आम्नाय-(हिं॰) देखो आम्नाय ।
आमना सामना-(हिं॰पुं॰) सम्मुख होने का भाव, भेंट ।
आमनी-(हिं॰) देखो आमन ।
आमने सामने-(हिं॰अव्य) प्रत्यक्ष, सम्मुख

आमन्त्रण-(स०नपु०) निमन्त्रण,नेवता, विवेचन, गौर ।
आमन्त्रित-(स०वि०) न्योता पाया हुआ
आमय-(स०पु०) आघात, चोट, रोग, बीमारी ।
आमरक्तातिसार-(स०पुं०) वह रोग जिसमे आँव लोहू गिरता है ।
आमरख-(हिं०) देखो आमर्ष ।
आमरखना-(हिं०क्रि०) क्रोध चढ़ना ।
आमरण, आमरणान्त-(स०वि०) मृत्यु-पर्यन्त, **आमरणान्तिक**-मरने तक रहने वाला ।
आमरस-(स०पुं०) अपक्व रस, (हिं०) अमरस ।
आमर्द-(सं०पुं०) सकोचन, दबाव, रौदन, टक्कर ।
आमर्दन-(स०नपुं०) देखो आमर्द ।
आमर्श-(सं०नपुं०) अनुमति ।
आमर्ष-(स०पुं०) अक्षमा, असहन, बेचैनी, क्रोध ।
आमलक-(स०नपुं०) आँवले का फल, आँवला ।
आमलकी-(स०स्त्री०) छोटी जात का आँवला, आँवली ।
आमला-(हिं०पुं०) आँवला ।
आमवात-(स०पुं०) एक वात रोग जिसमे अंग मे पीड़ा, आलस्य तथा शूल होता है और अन्न का भली भाँति परिपाक नहीं होता, गठिया ।
आमशूल-(सं०नपुं०) आँव के कारण पेट मे ऐंठन और पीड़ा होना ।
आमां-(हिं०) देखो आँवा ।
आमाजीर्ण-(सं०नपु०) आँव के कारण भोजन न पचना ।
आमातिसार-(स०पुं०) आँव लोहू का शौच । **आमात्य**-(सं० पु०) मन्त्री, नायक, सरदार ।
आमालक-(स०पु०) पर्वत के निकट की भूमि ।
आमाशय-(स०पुं०) जठर, कोष्ठ, पेट के भीतर की वह थैली जिसमें खाया हुआ अन्न जाता और पचता है ।
आमाहल्दी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कन्द जो हलदी के तरह का होता है और औषधि में प्रयोग होता है ।
आमिख-(हिं०) देखो आमिष ।
आमित्र-(स०वि०) शत्रु सम्बन्धी ।
आमिन-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटी जात का आम ।
आमिष-(स०नपु०) मांस, भोग्य वस्तु, भोजन, लाभ, तृष्णा, लालच । **आमिषप्रिय**-(सं०पुं०) मांस भक्षक, कौवा । **आमिषाशी**-(स०पु०) मांस खाने वाला ।
आमी-(हिं०स्त्री०) छोटा कच्चा आम, गेहूँ जव की भूनी हुई बाल ।
आमीं-(अ०अव्य०) एवमस्तु,ऐसाही हो।
आमीलन-(स०नपु०) नेत्रों का बन्द करना ।
आमुक्त-(स०वि०) आबद्ध, विमुक्त, खोला हुआ ।
आमुख-(स०नपु०) आरम्भ, प्रस्तावना
आमूल-(स०अव्य०) मूल पर्यन्त ।
आमोचन-(स०नपुं०) संयोग, लगाव ।
आमोद-(स०पु०) प्रसन्नता, हर्ष, तीव्र गन्ध । **आमोदन**-(स०नपु०) प्रसन्न करने का कार्य । **आमोदप्रमोद**-(सं० पु०) भोगविलास, रागरंग ।
आमोदा-(स०स्त्री०) शतावरी, सतावर
आमोदित-(स०वि०) प्रसन्न, सौरभित, सोधा । **आमोदी**-(स०वि०) हर्षयुक्त, प्रसन्न रहनेवाला, गन्ध युक्त, सोंधा
आम्नाय-(स०पु०) वेद, श्रुति, तर्क-शास्त्र,अभ्यास,सम्प्रदाय,उपदेश, कुल
आम्भस-(स०वि०) जलीय ।
आम्म-(हिं०पुं०) नेवले के प्रकार का एक जन्तु ।
आम्र-(स०पुं०)आम का वृक्ष या फल ।
आम्रकूट-(सं०पुं०) अमरकण्टक पर्वत का प्राचीन नाम ।
आम्रेडित-(सं०वि०) दोहराया हुआ, बारबार कहा हुआ ।
आम्ल-(सं०पुं०) इमली का वृक्ष, अम्लवेत, खटाई । **आम्लफल**-(सं० नपु०) कपित्थ, कैथ ।
आय-(स०पु०) लाभ, धनागम ।
आयजाना-(हिं०क्रि०)आजाना, पहुँचना
आयत-(स०वि०) विस्तृत,दीर्घ,विशाल, लम्बा, चौड़ा, दृढ़, (पु०) ज्यामिति का दीर्घ चतुरस्र आकार ।
आयतन-(सं०नपु०) आश्रय, हेतु, विश्राम स्थान, मठ, मन्दिर, घर, प्रतिमा, यज्ञ स्थान ।
आयताक्ष-(सं०वि०)बड़ी बड़ी आँखवाला
आयति-(स०स्त्री०) उत्तरकाल, प्रभाव, सगम ।
आयत्त-(स०वि०) वशीभूत, आधीन ।
आयत्ति-(सं०स्त्री०) सामर्थ्य, स्नेह, प्रभाव, सीमा ।
आयन्ती पायन्ती-(हिं०स्त्री०) सिरहाना, पैताना, (क्रि०वि०) ऊपर नीचे ।
आयस-(सं०वि०) लोहमय, (पु०) लोहा, लोहे का हथियार । **आयसी**-(सं०वि०) लोहे का बना हुआ (पु०) कवच ।
आयसु-(हि०पुं०) आज्ञा ।
आयस्कार-(सं०पु०) लोहकार, लोहार
आयस्थान-(स०नपुं०) लाभ स्थान, आमदनी की जगह ।
आया-(हिं०क्रि०)उपस्थित हुआ,आ पहुँचा
आयाचित-(सं०वि०) माँगा हुआ ।
आयात-(स०वि०) आगत, आया हुआ ।
आयान-(स०नपु०) आगमन, स्वभाव ।
आयाम-(स०पु०)विस्तार,लंबाई,नियम
आयास--(स०पुं०) अति यत्न, परिश्रम, कोशिश ।
आयी, आई--(हि०क्रि०) उपस्थित हुई, आ पहुँची ।
आयु-(स०नपु०) आयुष्य ।
आयुक्त-(सं०वि०) नियुक्त ।
आयुत-(स०वि०)आर्द्रीभूत,पिघला हुआ।
आयुध-(स०नपु०) शस्त्र, हथियार ।
आयुधजीवी-(स०पु०) भट, योद्धा ।
आयुधागार-(स०नपु०) शस्त्रालय ।
आयुधी-(स०पु०) योद्धा, सिपाही ।
आयुर्दा-(हिं०स्त्री०) आयुष्य ।
आयुर्बल-(स०नपु०) आयु का बल, आयुष्य ।
आयुर्वेद-(स०पु०) धन्वन्तरि प्रणीत चिकित्सा शास्त्र । **आयुर्वेदिक**-(स०वि०) आयुर्वेद (चिकित्सा) संबंधी
आयुर्वेदी-(स०पुं०) चिकित्सक, वैद्य ।
आयुष्कर-(स०वि०)आयुष्य बढाने वाला
आयुष्मान्-(स०वि०) दीर्घजीवी, वृद्ध, चिरंजीवी ।
आयुष्य-(स०नपु०) आयु, उम्र ।
आयोग-(स०पुं०) व्यापार, नियुक्ति, अवरोध ।
आयोगव-(सं०पुं०) वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक संकरजाति, बढई।
आयोजन-(स०नपु०) संग्रह का कार्य, प्रबंध, नियुक्ति, उद्योग, सामग्री, आहरण, धर पकड़ ।
आयोजित-(स०वि०)सम्पादित,रचाहुआ।
आयोधन-(स०पु०) रणक्षेत्र, लड़ाई का मैदान ।
आर-(सं०पु०) मंगल ग्रह, प्रान्त भाग, गमन, दूरी, एक प्रकार का लोहा, पीतल, कोना, पहिये का आरा, हरताल (हिं०पु०) ईख का रस निकालने का करछुल, मिट्टी का लोंदा, आग्रह (स्त्री०) लोहे की कील, डंक, चमड़ा छेदने का सुवा, टेकुवा, (अ०स्त्री०) शर्म,लज्जा, तिरस्कार, वैर
आरक्त-(स०वि०) कुछ लाल रंग का (नपु०) अनुराग । **आरक्ति**-(हिं०स्त्री०) लालिमा ।
आरक्षक-(सं०वि०) रक्षा करने वाला ।
आरग्वध-(सं०पुं०) अमलतास का वृक्ष ।
आरज-(हिं०पुं०) देखो आर्य ।
आरणि-(स०पु०)जल का आवर्त, भँवर
आरण्य-(स०वि०) वनजात, जंगली ।
आरण्यक-(स०वि०) अरण्य संबंधी, जंगली, योगाभिलाषी पुरुष का योगशास्त्र ।
आरत-(स०वि०) शान्त, सीधा (हिं०) देखो आर्त ।
आरति-(स०स्त्री०) निवृत्ति, ठहराव, नीराजन,आरत्रिक, देवता की प्रतिमा के चारो ओर दीपक घुमाना, आरती उतारने का पात्र, आरती के समय पढने का स्तोत्र ।
आरती-(हिं०स्त्री०) देखो आरति ।
आरद्ध-(स०वि०) संसिद्ध ।
आरन-(हिं०) देखो आरण्य ।
आर पार-(हिं०क्रि०वि०)तीरान्तर, एक किनारे से दूसरे किनारे तक, (पु०) यह किनारा और वह किनारा, **आर पार करना**-बेधना, सलाना ।
आरबल-(हिं०पुं०) देखो आयुर्बल ।
आरब्ध-(सं०वि०) आरंभ किया हुआ,
आरभट-(स०पु०) शूरवीर, बहादुर ।
आरभटी-(स०स्त्री०) अर्थ विशेष युक्त नाटक की रचना, माया, इन्द्रजाल, युद्ध, क्रोध, वध, वंचना आदि युक्त वृत्ति, धृष्टता ।
आरभमाण-(स०वि०)आरम्भ होनेवाला, आरम्भ करनेवाला ।
आरम्भ-(स०पु०) उद्योग, त्वरा,मकान बनाने का कार्य, उपक्रम, प्रस्तावना, पहिला कार्य ।
आरम्भक-(स०वि०) आरम्भ करने वाला । **आरम्भता**-(स०स्त्री०) उपक्रम । **आरम्भना**-(हिं०क्रि०) आरम्भ होना, उठना ।
आरव-(स०पु०) शब्द, पुकार, आहट।
आरष, आरषी-(हिं०) देखो आर्ष ।
आरस-(हिं०) देखो आलस्य;आरसी ।
आरसा-(हिं०पु०) रज्जु, रस्सा ।
आरसी-(हिं०स्त्री०) दर्पण, शीशा जड़ी हुई अंगूठी जिसको स्त्रियाँ अंगूठे में पहिरती हैं ।
आरा-(स०स्त्री०) चमड़ा छेदने का टेकुआ, कोड़ा;-(हिं०पुं०) लकड़ी काटने की दातेदार लोहे की चौड़ी पट्टी, पहिये में बेलन से पुट्ठी तक जड़ी हुई लकड़ी की पटरी ।
आराइश-(अ०स्त्री०) सजावट; **आराकश**-(हिं०पु०) आरे से लकड़ी चीरने वाला ।
आराति-(सं०पु०) शत्रु, वैरी ।
आराधक-(स०वि०) उपासना करने वाला, पूजा पाठ करने वाला ।
आराधन-(सं०नपुं०) उपासना, सेवा, पूजा, अर्चन, प्राप्ति, पूजा पाठ ।
आराधना-(सं०स्त्री०) सेवा, पूजा, उपासना (हिं०क्रि०)आराधन करना, पूजा करना । **आराधनीय**-(सं०वि०) आराधन किये जाने योग्य । **आराधित**-(स०वि०) अर्चित, सेवित, पूजा किया हुआ ।
आराध्यमान-(सं०वि०) पूजा जानेवाला
आराम-(स० पु०) उपवन, फुलवाड़ी, बगीचा, एक प्रकार का दण्डक वृत्त
आरामिक-(सं०पु०) बागवान, माली ।
आरि-(सं०पुं०) खैर का वृक्ष, हठ ।
आरिया-(हिं०स्त्री०) पतली लकड़ी ।
आरी-(हिं०स्त्री०) बढ़ई का लकड़ी चीरने का अस्त्र, छोटा आरा, चमड़ा छेदने का टेकुआ, छोर, किनारा, गाड़ी हाँकने वाले पैने में लगी हुई लोहे की कील,**आरीआना**-थक जाना ।
आरु-(सं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष, कर्कट, केंकड़ा ।
आरुत-(स०नपु०) कोलाहल, हो हुल्लड़
आरुद्ध-(सं०वि०) प्रतिरुद्ध, बँधा हुआ
आरूढ-(स०वि०) चढ़ने वाला, चढा हुआ, दृढ, स्थिर, तत्पर, सन्नद्ध ।
आरूढयौवना-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मध्या नायिका जो स्वामि के

सहवास से प्रसन्न रहती है।
आरे-(हिं०क्रि०वि०) समीप, पास।
आरेस-(हिं०पुं०) ईर्षा।
आरो-(हिं०) देखो आरव; आरा।
आरोग-(हिं०) देखो आरोग्य।
आरोगना-(हिं०क्रि०)भोजनकरना,खाना
आरोग्य-(सं०नपुं०) रोगशून्यता (वि०) स्वस्थ, **आरोग्यता**-(हिं०स्त्री०) स्वास्थ्य, **आरोग्यशाला**-(हिं०क्रि०) चिकित्सालय।
आरोधक-(सं० स्त्री०) प्रतिबन्धक, रोकने वाला।
आरोधना-(हिं०क्रि०) अवरोध करना, रोकना।
आरोधनीय-(सं०वि०) रोकेजाने योग्य
आरोप-(सं०पुं०) निवेशन, स्थापन, लगाव, जोड़, मिथ्याज्ञान, झूठी कल्पना, रोपना, बैठाना, एक स्थान से किसी पौधे को उखाड़ कर दूसरे स्थान में बैठाना। **आरोपक**-(सं० वि०) आरोपण करनेवाला। **आरोपण**-(सं०नपुं०) पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में बैठाना, स्थापित करना, ऊपर को उठाना, झूठा ज्ञान, मढ़ना, लगाना, विश्वास। **आरोपणीय**-(सं०वि०) स्थापनीय, रक्खा जाने वाला।
आरोपना-(हिं०क्रि०) स्थापित करना, लगाना, बैठाना, ऊपरको चढाना।
आरोपित-(सं०वि०) स्थापन किया हुआ, आकस्मिक।
आरोह-(सं०पुं०) आक्रमण, नीचे से ऊपर को उठान, अँखुवा निकलना, हाथी या घोड़े की सवारी, लंबान, ऊँचाई, अवतरण,उतार, दर्प, घमंड, विकास, नितंब, चूतड़। **आरोहक**-(सं०वि०) उठाने वाला, चढाने वाला (पुं०) सवार। **आरोहण**-(सं०नपुं०) आक्रमण, नीचे ऊपर को जाना, अँखुवा फूटना, सोपान, सीढी। **आरोहणीय**-(सं०वि०) चढने योग्य।
आरोही-(सं०वि०) ऊपर जाने वाला, चढने वाला,(पुं०) वह पौधा जिसकी टहनियां लिपट जाती है।
आर्क्ष-(सं०वि०) नक्षत्र संबंधी, भालू संबंधी।
आर्गल-(सं०नपुं०) अर्गला, चटखनी।
आर्जव-(सं०नपुं०) सरलता, सीधापन, सदाचार, सचाई।
आर्त-(सं०वि०) पीड़ित,दु:खित,अस्वस्थ, आहत, चोट खायी हुआ। **आर्तता**-(सं०स्त्री०) पीड़ा, कष्ट, दु:ख। **आर्तनाद**-(सं०पुं०) पीड़ा से निकला हुआ शब्द, **आर्तबन्धु**-(सं०पुं०) दुखियों का सहायक।
आर्तव-(सं०स्त्री०) ऋतु में होने वाला पुष्प, ऋतुमती स्त्री का रक्त (वि०) ऋतु संबंधी।
आर्तस्वर-(सं०) देखो आर्तनाद।
आर्ति-(सं०स्त्री०) पीड़ा, मनोव्यथा,

आर्तिहर-(सं०वि०) पीड़ा हटानेवाला
आर्थिक-(सं०वि०) धनसंबंधी, द्रव्य संबंधी।
आर्थी-(सं०स्त्री०) अर्थ सम्भव व्यंजना, एक प्रकार का उपमालंकार।
आर्द्र-(सं०वि०) भीगा हुआ, ओदा।
आर्द्रक-(सं०नपुं०) अदरख, आदी।
आर्द्रता-(सं०स्त्री०) गीलापन, तरी, कोमलता।
आर्द्रनयन-(सं०वि०) आँखों में आँसू भरे हुए।
आर्द्रा-(सं०स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में छठां नक्षत्र इस नक्षत्रमें सूर्य के आने से वर्षा का आरंभ होता है।
आर्द्रावीर-(सं०पुं०) शक्ति का उपासक, वाममार्गी।
आर्धमासिक-(सं०वि०) आधे महीने रहने वाला।
आर्य-(सं०पुं०) कुलीन, सभ्य, सज्जन, पूज्य, श्रेष्ठ, उच्च कुल में उत्पन्न, स्वामी, मित्र, वेदोक्त प्राचीन सभ्य जाति। **आर्यता**-(सं०स्त्री०) माननीय आचरण, भलमन्सी। **आर्यत्व**-(सं०नपुं०) देखो आर्यता। **आर्य धर्म**-(सं०पुं०) सदाचार,अच्छी चाल चलन। **आर्यपथ**-(सं०पुं०) सदाचार। **आर्यपुत्र**-(सं०पुं०) उपाध्याय का पुत्र, नाटच भाषा में पति को पुकारने का शब्द। **आर्य रूप**-(सं०वि०) कपटी, दम्भी। **आर्यलिङ्गी**-(सं०वि०) देखो आर्यरूप। **आर्यवृत्त**-(सं०नपुं०) सदाचार, सज्जनता **आर्यवेश**-(सं०वि०) सुन्दर वस्त्र पहिरे हुए **आर्यसमाज**-(सं०पुं०)स्वामी दयानन्द का प्रचार किया हुआ आर्यों का एक धार्मिक समाज।
आर्या-(सं०स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, सास, श्रेष्ठ स्त्री, पितामही, दादी, एक अर्ध मात्रिक छन्द का नाम।
आर्यावर्त-(सं०पुं०) भारतवर्ष का उत्तरी भाग।
आर्ष-(सं०वि०) ऋषिसम्बन्धी,ऋषिकृत, प्राचीन, वैदिक; **आर्ष प्रयोग**-शब्दों का व्यवहार जो व्याकरण के नियमों को उल्लंघन करके ऋषियों ने प्रयोग किया है। **आर्षधर्म**-(सं०पुं०) मनु आदि स्मृतिकारों का कहा हुआ धर्म। **आर्षविवाह**-(सं०पुं०) स्मृतियों में कहे हुए आठ प्रकार के विवाहों में से एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या का पिता वर से दो बैल लेकर कन्या देता था।
आर्हत-(सं०वि०) जैन सम्बन्धी; (पुं०)जैन
आल-(सं०नपुं०) हरताल, मछली या मेढक का अंडा, (वि०) अधिक,भीगा, गीला, ज्यादा, श्रेष्ठ (हिं०स्त्री०) एक प्रकार पौधा जिससे रंग बनता है, लौकी, (पुं०) उपद्रव, झगड़ा, अश्रु, आँसू, गाँव के बाहर का भाग।
आलकस-(हिं०पुं०) देखो आलस्य।

आलंग-(हिं०पुं०) कामवेग, मस्ती;
आलंग पर आना-घोड़ी का मस्तहोना
आलक-(सं०नपुं०)हरताल,पीली सखिया
आलकसी-(हिं०वि०) आलसी, सुस्त।
आलथी पालथी-(हिं०स्त्री०) दहिने पैर की एँड़ी बाये पैर पर तथा बायें पैर की एँड़ी दहिने जाँघ पर रख कर बैठने का आसन।
आलन-(हिं०पुं०) पलाल, बिचाली।
आलना-(हिं०पुं०)पक्षि का स्थान,घोंसला
आलपाका-(हिं०) देखो अलपाका।
आलपीन--(हिं०स्त्री०) पत्र आदि में लगाने की घुंडीदार सूई (पोर्चुगल आल् फ़िनेट का अपभ्रंश है)
आलब्ध-(सं०वि०) संयुक्त, मिला हुआ
आलबाल-(हिं०पुं०) वृक्ष के चारो ओर का थाला।
आलम्ब-(सं०पुं०) आश्रय, सहारा, आधार, टेक, थूनी, लम्ब। **आलम्बन**-(सं०नपुं०) आश्रय, सहारा, कारण **आलम्बित**-(सं०वि०) गृहीत, पकड़ा हुआ, रक्षित, आश्रित। **आलम्बी**-(सं०वि०) आश्रयी, सहारा लेने वाला, आधीन।
आलम्भ, आलम्भन-(सं०पुं०) स्पर्श।
आलय-(सं०पुं०) घर, मकान, हवेली, आधार, स्थान।
आलवाल-(सं०पुं०) वृक्ष के चारो ओर का थाला।
आलस-(हिं०पुं०) आलस्य।
आलसी-(हिं०वि०)आलस्य युक्त।
आलस्य-(सं०नपुं०) काम करने में अनुत्साह, सुस्ती, काहिली।
आला(हिं०वि०) तर, गीला, (वि०) पीव देनेवाला, (पुं०)ताखा, मोखा, अरवा, कुम्हार का आँवाँ, (अ०वि०) ऊँचा, श्रेष्ठ, औवल (पुं०) हथियार।
आलात-(सं०नपुं०) अंगारा, कोयला, आँवा, पाजावा।
आलान-(सं०नपुं०) हाथी को बाँधने का, खूँटा, बाँधने का रस्सा, गाँठ, बन्धन, शिव के एक मन्त्री का नाम।
आलाप-(सं०पुं०)संभाषण, कथन,बोलचाल, परस्पर कथन, गणित के प्रश्न का निर्देश, संगीत में सातों स्वरों का राग सहित उच्चारण। **आलापक**-(सं०पुं०) बोलचाल करनेवाला, गानेवाला। **आलापचारी**-(सं०पुं०) स्वर साधन, तान लगाने का काम। **आलापन**-(सं०नपुं०) परस्पर वार्तालाप। **आलापना**-(हिं०क्रि०) सुर खींचना, तान लगाना। **आलापनीय**-(सं०वि०) आलाप करने योग्य।
आलापित-(सं०वि०) बोला हुआ, गाया हुआ **आलापिनी**-(हिं०स्त्री०) बाँसुरी
आलापी-(सं०वि०) बोलनेवाला, तान लगाने वाला, गानेवाला।
आलाबाला-(हिं०पुं०) छल, कपट, धोखा, आलस्य।
आलारेसी-(हिं०स्त्री०) असावधानी,

प्रमत्तता।
आलि-(सं०स्त्री०) सखी, सहेली, पंक्ति, सतर, सन्तति, नाला (पुं०) बिच्छू, भौरा
आलिङ्ग, आलिङ्गन-(सं०नपुं०) गले से गला लगाना, अँकवारी। **आलिङ्गना**-(हिं०क्रि०) आलिङ्गन करना, लपटाना, गले लगाना। **आलिङ्गित**-(सं०वि०) आलिंगन किया हुआ, गले से गले लगाया हुआ **आलिङ्गी**-(सं०वि०) आलिंगन करनेवाला। **आलिञ्जर**-(सं०पुं०) मिट्टी का जल रखने का बड़ा घड़ा। **आलिन्द**-(सं०पुं०) घर के सामने का मञ्च।
आलिप्त-(सं०वि०) लीपा पोता हुआ।
आली-(सं०स्त्री०) सखी, सहेली, पंक्ति, (हिं० वि०) भीगी हुई, गीली।
आलीन-(सं०वि०)गलाहुआ,पिघलाहुआ
आलु-(सं०पुं०) उल्लू, जमीकन्द,सूरन।
आलुकी-(सं०स्त्री०) रक्तालु, घुइयां।
आलुञ्चन-(सं०नपुं०) नोच खसोट, चीरफाड़।
आलुञ्चित-(सं०वि०)नोचा खसोटा हुआ
आलुण्ठन-(सं०नपुं०) लूटपाट, छीना छोरी।
आलू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कन्द जो तरकारी बनाकर खाया जाता है।
आलून-(सं०वि०) कुछ कटा, छँटा हुआ
आलूबालू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का आलूचा।
आलेख-(सं०पुं०) लिखावट, लेख, पत्र लिखने का कागज़। **आलेखन**-(सं०) देखो आलेख। **आलेख्य**-(सं०नपुं०) चित्र, तसवीर, **आलेख्यलेखा**-चित्रविद्या
आलेप-(सं०पुं०) उपलेप, तिला।
आलोक-(सं०पुं०) प्रकाश, उजाला, चमक, दर्शन, दीपक, उल्लास
आलोकनीय-(सं०पुं०) दर्शनीय, ध्यान दिया जानेवाला।
आलोकित-(सं०वि०)दृष्ट, देखा हुआ।
आलोच-(हिं०पुं०) काटने के समय खेत में गिरी हुई बाल।
आलोचक-(सं०वि०) देखनेवाला, विवेचक, आलोचना करनेवाला।
आलोचन-(सं०नपुं०) दर्शन, विवेक, अन्त:करण की एक वृत्ति। **आलोचनीय**-(सं०वि०) आलोचना करने योग्य, देखभाल करने लायक।
आलोचित-(सं०वि०) देखा हुआ, समझा हुआ। **आलोच्य**-(सं०वि०) देखो आलोचनीय।
आलोड़न-(सं०पुं०) मिश्रण, मिलावट मन्थन, मथना।
आलोड़ना-(हिं०क्रि०) मंथन करना, मथना। **आलोड़ित**-(सं०वि०) मर्दित, मथा हुआ।
आलोल-(सं०वि०) विचलित, कंपित, हिलता हुआ।
आलोलित-(सं० वि०) हिलाया हुआ, घबड़ाया हुआ।
आल्हा-(हिं०पुं०) एक विख्यात वीर

जो पथ्वीराज के समय महोबे में थे, इकतीस मात्रा का एक छन्द ।
आव-(हिं०पु०) आयुष्य ।
आवआदर-(हिं०पु०) आदर, सत्कार ।
आवज-(हिं०पु०) एक प्रकार का ताशे के समान पुराना बाजा ।
आवटना-(हिं० पु०) आवर्तन, अस्थिरता, धूम-धाम, हलचल (क्रि०) रिंधना, औटाना ।
आवन-(हिं०पु०) आगमन, अवाई, आना
आवभगत-(हिं०स्त्री०) देखो आव आदर।
आवनि-(हिं०स्त्री०) देखो आवन ।
आवभाव-(हिं०क्रि०) आदर सत्कार ।
आवरक-(सं० नपु०) आच्छादन, ढाँपने का वस्त्र ।
आवरण-(सं०नपुं०) आच्छादन, ढपना, वेष्टन, लपेट, परदा, ढाल, चहारदीवारी, आवृत्ति ; **आवरणपत्र**-पुस्तक इत्यादि की रक्षा के लिये इसपर लपेटा हुआ पत्र; **आवरण शक्ति**-अज्ञात शक्ति ।
आवरित-(सं०वि०) ढपा हुआ ।
आवर्ज्जना-(हिं०वि०) झुकी हुई ।
आवर्जित-(सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ।
आवर्त-(सं०पु०) जल का भँवर, लांजवर्दमणि, मेघ का अधिप, सोनामक्खी, धातु, चक्कर, चिन्ता, संशय, (वि०) घूमा हुआ, मुड़ा हुआ । **आवर्तन**-(सं०नपु०) चक्कर, घुमाव, घेरा, वेष्टन, दोहराव, अभ्यास, गुणन ।
आवर्तनीय-(सं०स्त्री०) करछुल, धातु गलाने की घरिया । **आवर्तनीय**-(सं०वि०) गुणन करने योग्य, दोहराने योग्य । **आवर्तित**-(सं०वि०) अभ्यस्त, दोहराया हुआ, गुणन किया हुआ ।
आवर्ती-(सं०वि०) वापस आनेवाला ।
आवलित-(सं०वि०) कुछ चंचल, हिला हुआ ।
आवली-(सं०स्त्री०) परम्परा, पंक्ति, श्रेणी, वह विधि जिससे खेत की उपज का अनुमान किया जाता है ।
आवश्यक-(सं०वि०) नियत । **आवश्यकता**-(सं०स्त्री०) प्रयोजन, अपेक्षा ।
आवश्यकीय-(सं०वि०) आवश्यक ।
आवसथ-(सं०पु०) घर, हवेली, मकान, विश्राम स्थान ।
आवसित-(सं०वि०) समाप्त, निर्णीत, पका हुआ ।
आवाँ-(हिं०पु०) वह गड्ढा जिसमें कोंहार बर्तन पकाते है, पजावा ।
आवागमन-(सं०नपुं०) आना जाना, बारबार जन्म लेना और मरना ।
आवागमनी-(हिं०वि०) आने जाने वाला, मरने और उत्पन्न होने वाला।
आवागवन-(हिं०वि०) देखो आवागमन।
आवागोन-(हि०) देखो आवागमन ।
आवाजानी-(हिं०स्त्री०) जन्म मरण ।
आवाजाही-(हिं०स्त्री०) आवागमन, आना जाना ।
आवाल-(सं०नपुं०) देखो आलवाल ।

आवास-(सं० पु०) वास स्थान, रहने का स्थान ।
आवासी-(हिं०स्त्री०) खानेके लिये तोड़ी जाने वाली अन्न की कच्ची बाल ।
आवाहन-(सं०नपुं०) मन्त्र द्वारा देवता को बुलाना, निमन्त्रण, पुकार, बुलावा ।
आविक-(सं०वि०) भेंड़ संबन्धी, ऊनी।
आविद्ध-(सं०वि०) विद्ध, भेदा हुआ, छेदा हुआ, फेंका हुआ (पुं०) तलवार घुमाकर शत्रुको मारने की कला ।
आविर्भाव-(सं०पुं०) प्रकाश, संचार, उत्पत्ति । **आविर्भूत**-(सं०वि०) प्रकाशित, उत्पन्न, प्रगट किया हुआ ।
आविल-(हिं० वि०) भ्रष्टा, मलिन ।
आविलता-(हिं०स्त्री०) मलिन ।
आविष्करण-(सं०नपुं०) प्रकाश, दिखावा
आविष्कर्ता-(सं०वि०) प्रकाशक, **आविष्कार**-(सं०पुं०) प्रकाश, नई विधि से किसी वस्तु का निर्माण । **आविष्कारक**-(सं०वि०) प्रकाशक **आविष्कृत**-(सं०वि०) प्रकाशित, **आवीत**-(सं०वि०) गुथा हुआ, लटकाया हुआ।
आवृत-(सं०वि०) गुप्त, छिपा हुआ, घिरा हुआ, फैला हुआ, व्याप्त, लपेटा हुआ ।
आवृत्त-(सं०वि०) वापस आया हुआ, भागा हुआ ।
आवृत्ति-(सं०स्त्री०) बारंबार अभ्यास करना, दोहराना, बारंबार एकही काम करना ।
आवृष्टि-(सं०स्त्री०) अच्छी वर्षा ।
आवेग-(सं०पुं०) उत्कण्ठा सहित मन का वेग, वेग, हड़बड़ी, घबड़ाहट ।
आवेदक-(सं०वि०) विज्ञापक, निवेदक, प्रार्थी । **आवेदन**-(सं०नपुं०) विज्ञापन, निवेदन, नालिश । **आवेदन पत्र** प्रार्थना पत्र । **आवेदनीय**-(सं० वि०) सूचना योग्य, कहने योग्य । **आवेदित**-(सं०वि०) निवेदन किया हुआ ।
आवेदी-(सं०वि०) सूचना करने वाला आज्ञाकारी ।
आवेश-(सं०पुं०) मनकी प्रेरणा, अहंकार, क्रोध, आन्तरिक यत्न, गर्व, पहुँच, मृगी का रोग, भूतसंचार, प्रेतबाधा, संचार ।
आवेष्ट-(सं०पुं०) घेरा ।
आवेष्टन-(सं०नपुं०) आवरण, लपेट, लपेटने या ढांपने की वस्तु, बस्ता ।
आवेष्टित-(सं०वि०) घिरा हुआ, लपेटा हुआ ।
आश-(सं०पुं०) भोजन, खाना, खाने वाला; (हिं०) आशा ।
आशंसा-(सं०स्त्री०) अप्राप्त वस्तुको पाने की इच्छा । **आशंसित**-(सं०वि०) इच्छा किया हुआ ।
आशङ्कनीय-(सं०वि०) शंका किये जाने योग्य, समझने योग्य । **आशङ्कमान**-(सं०वि०) शङ्कित, डरा हुआ ।
आशङ्का-(सं०स्त्री०) भय, सन्देह, त्रास, अविश्वास । **आशङ्कित**-(सं०वि०) भयभीत, सन्देश युक्त, डरा हुआ ।

आशय-(सं०पु०) अभिप्राय, आधार, जगह, इच्छा, तात्पर्य, उद्देश्य, विभव स्थान, जगह, आश्रय, गड्ढा ।
आशर-(हिं०पु०) राक्षस, अग्नि ।
आशव-(सं०नपु०) गुड़ का मद्य ।
आशा-(सं०स्त्री०) दिशा, किसी पदार्थ के मिलने की इच्छा, अभिलाषा, तृष्णा, लालच, दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम ।
आशाढ-(सं०पु०) आषाढ महीना ।
आशान्वित-(सं०वि०) आशायुक्त,
आशाप्राप्त-(सं०वि०) कृतकार्य, सफल
आशाबंध-(सं०पु०) मकड़ी का जाला, आश्वासन ।
आशावरी-(सं०स्त्री०) संगीत की एक रागिणी ।
आशावह-(सं०वि०) आशाधारी, **आशाहीन**-(सं०वि०) आशाशून्य, **आशिर्वाद**-(हिं०पु०) देखो आशीर्वाद ।
आशिष-(सं०स्त्री०) आशीर्वाद, आसीस, एक अलंकार जिसमें न मिले हुए पदार्थ को प्राप्त करने के लिये प्रार्थना की जाती है । **आशिषाक्षेप**-(सं०पु०) एक अलंकार जिसमें दूसरे के उपकार पर ऐसा कार्य करने का उपदेश दिया जाता है जिसमें वस्तुतः अपना क्लेश निवृत्त हो जावे ।
आशी-(सं०स्त्री०) सर्प का विषैला दाँत, सर्प का विष, आशीर्वाद (वि०) भक्षक, खानेवाला । (हिं०वि०) इच्छुक ।
आशीर्वचन-(सं०नपुं०) देखो आशीर्वाद
आशीर्वाद-(सं०पुं०) मंगल कामना सूचक वाक्य, आशिष, दुआ ।
आशीविष-(हिं०पुं०) सर्प, साँप ।
आशु-(सं०वि०) शीघ्र । **आशुकवि**-(सं०पुं०) वह कवि जो तत्क्षण कविता बनाता हो । **आशुकारी**-(सं०वि०) शीघ्र काम करनेवाला । **आशुकोपी**-(सं०वि०) जल्दी से क्रुद्ध होनेवाला ।
आशुक्रिया-(सं०स्त्री०) जल्दी का काम।
आशुग-(सं०पु०) वायु, सूर्य, बाण ।
आशुगामी-(सं०वि०) शीघ्र चलने वाला, सूर्य, वायु । **आशुतोष**-(सं०पु०) शिव (वि०) शीघ्र प्रसन्न होनेवाला ।
आशुत्व-(सं०नपुं०) शीघ्रता, जल्दी ।
आशौच-(सं०नपु०) अमेध्यता, अपवित्रता ।
आश्चर्य-(सं०नपु०) विस्मय, अचंभा, अनोखापन, विस्मय रस । **आश्चर्यता**, **आश्चर्यत्व**-(सं०) विस्मय, **आश्चर्यभूत**-(सं०वि०) अद्भुत, अनोखा ।
आश्चर्यमय-(सं०वि०) आश्चर्यपूर्ण ।
आश्चर्यित-(सं०वि०) विस्मयाकुल, चकित ।
आश्मरिक-(सं० पुं०) अश्मरी रोग, गुर्दे में पथरी पड़ने का रोग ।
आश्र-(सं०नपु०) देखो अश्रु ।

आश्रम-(सं०पुं०) ऋषि मुनि का वास स्थान, तपोवन, मठ, विश्राम-स्थान, पाठशाला, ठहरने की जगह, शास्त्रोक्त चार प्रकार का धर्म विशेष यथा-ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास । **आश्रम भ्रष्ट**-(सं०वि०) जो अपने आश्रम को छोड़ बैठा हो **आश्रमवास**-(सं०पु०) मुनिजनों का तपोवन में निवास । **आश्रमवासी**-(सं०वि०) आश्रम में रहनेवाला **आश्रम स्थान**-(सं०नपुं०) मुनिजन का निवास स्थान । **आश्रमी**-(सं०वि०) तपोवन सम्बन्धी, आश्रम में रहनेवाला
आश्रय-(सं०पु०) अवलम्बन, सहारा, आधार, सहारा देने का पदार्थ, विषय, शरण, गृह, अविकार, संपर्क, बहाना, संबंध, सयोग, मूल, जड़, भरोसा, जीवनोपाय का हेतु ।
आश्रयणीय-(सं०वि०) आसरा लेने योग्य । **आश्रयत्व**-(सं०नपु०) आभारत्व, सहारा लेने का कार्य । **आश्रयभूत**-(सं०वि०) सहारा देने वाला ।
आश्रयी-(सं०वि०) आश्रय या सहारा लेनेवाला ।
आश्रित-(सं०वि०) आश्रय प्राप्त, टिका हुआ, वशीभूत, शरणागत, सेवक, आधीन, अवलंबित । **आश्रितत्व**-(सं०नपु०) वश्यता, आधीनता ।
आश्रुत-(सं०वि०) अच्छी तरह सुना हुआ ।
आश्रय-(सं०वि०) सहारा देने वाला ।
आश्लिष्ट-(सं०वि०) सम्बद्ध, मिला हुआ ।
आश्लेष-(सं० पु०) हार्दिक सम्बन्ध, आलिगन, अश्लेषा नक्षत्र । **आश्लेषण**-(सं०पुं०) अश्लेषा नक्षत्र ।
आश्वत्थ-(सं० वि०) अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) सम्बन्धी ।
आश्वमेधिक-(सं०वि०) अश्वमेध यज्ञ सम्बन्धी ।
आश्वसित-(सं०वि०) आश्वासन (भरोसा) दिया हुआ ।
आश्वास-(सं०पुं०) निवृत्ति, सान्त्वना,
आश्वासक-(सं०वि०) सान्त्वना देने वाला । **आश्वासन**-(सं०नपुं०) देखो आश्वास । **आश्वासनीय**-(सं०वि०) सान्त्वना देने योग्य ।
आश्वस्त-(सं०वि०) आश्वासन युक्त ।
आश्वासित-(सं०वि०) सान्त्वन दिया हुआ ।
आश्वासी-(सं०वि०) सान्त्वन करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।
आश्विन-(सं०पुं०) क्वार का महीना, जिस महीने की पूर्णिमा को अश्विनी नक्षत्र पड़ता है । **आश्विनी**-(सं०स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णिमा ।
आषाढ़-(सं०पुं०) आषाढ़ नक्षत्र युक्त पूर्णमासी वाला महीना, आषाढ महीना । **आषाढक**-(सं०पुं०) आषाढ़ मास, पराश का बीज ।

आषाढा-(सं०स्त्री०) पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढा नक्षत्र।
आषाढी-(सं०स्त्री०) आषाढ मास की पूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा।
आषाढीय-(सं०वि०) आषाढ सम्बन्धी।
आष्टम-(सं०पु०) आठवां भाग या हिस्सा।
आसंग-(हिं०क्रि०वि०) निरन्तर, सतत (पु०) अनुरक्ति, संबंध।
आस-(सं०पु०) आसन, स्थित, बैठक, धनुष, धूलि-(हिं०स्त्री०) आशा, भरोसा, कामना, लालसा, आधार, टेक।
आसकत-(हिं०पु०) आलस्य। **आसकती**-(हिं०पुं०) आलसी।
आसक्त-(सं०वि०) लिप्त, लीन, चाहने वाला, मुग्ध, मोहित।
आसक्ति-(सं०स्त्री०) अन्य विषयों को त्याग कर एक ही विषय में अवलम्बन, लगन, अनुराग, प्रेम।
आसञ्जन-(सं०नपुं०) सम्बन्ध, लगाव।
आसञ्जित-(सं०वि०) संलग्न, संयोजित।
आसक्ति-(हिं०स्त्री०) आसक्ति, मुक्ति, सत्य।
आसते-(हिं०क्रि०वि०) धीरे धीरे।
आसतोष-(हिं०पु०) देखो आशुतोष।
आसत्ति-(सं०स्त्री०) संगम, मेल, लाभ, निकटता, न्यायमत के अनुसार दो शब्द और उनके अर्थ का सम्बन्ध।
आसथा-(हिं०पु०) देखो आस्था।
आसथान-(हिं० पुं०) देखो आस्थान।
आसन-(सं०नपु०) स्थिति, बैठने का ढंग, बैठक, बैठने की वस्तु (यथा कम्बल, चटाई इ०) योग का अङ्ग विशेष, निवास, डेरा, नितम्ब, चूतड़, महावत के बैठने का हाथी का स्कन्ध, शत्रु के सन्मुख सेना का स्थिर रहना।
आसना-(हिं०क्रि०) उपस्थित रहना, होना।
आसनी-(सं०स्त्री०) छोटा आसन।
आसन्दिका-(सं०स्त्री०) खटोला, छोटी पलंग, कुर्सी।
आसन्न-(सं०स्त्री०) निकटस्थ, समीप लगा हुवा। **आसन्नकाल**-प्राप्त समय, मृत्युकाल। **आसन्नता**-(सं०स्त्री०) समीपता, **आसन्नप्रसवा**-बच्चा जननेवाली स्त्री। **आसन्नभूत**-(सं०पु०) वर्तमान भूतकाल की क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता तथा वर्तमान काल से उसकी समीपता विदित हो-यथा मैंने पुस्तक उठाई है।
आसपास-(हिं०क्रि०वि०) समीप, इधर उधर, (पु०) पड़ोसी।
आस्फालन-(सं०नपुं०) झटका, रगड़।
आसमुद्र-(सं०अव्य०) समुद्र पर्यन्त, समुद्र के तट तक।
आसय-(हिं०पुं०) देखो आशय।
आसर-(हिं०पुं०) आशर, राक्षस।
आसरना-(हिं० क्रिं०) आश्रय लेना, सहारा लेना।
आसरा-(हिं०पु०) आशा, भरोसा, अवलम्ब, सहारा, रक्षा, शरण, साहाय्य, सहायक, भरण पोषण की आशा; **आसरा ताकना (देखना-)** प्रतीक्षा करना।
आसव-(सं०पु०) फलों के खमीर को निचोड़ कर बनाया हुआ मद्य, गुड़ चीनी की ताज़ी शराब, अरिष्ट।
आसा-(हिं०स्त्री०) आशा, उम्मैद, सोना चाँदी मढ़ा हुआ डंडा जिसको चोबदार उत्सव में लेकर आगे आगे चलते हैं।
आषाढ-(हिं०पुं०) देखो आषाढ़।
आसादन-(सं०नपु०) प्राप्ति, स्थापन।
आसादित-(सं०वि०) प्राप्त, सम्पादित, लगाया हुआ।
आसावरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कबूतरी, एक रागिणी विशेष, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
आसिक-(हिं०विं०) देखो आशिक।
आसिक्त-(सं० वि०) भिगाया हुआ, सींचा हुआ।
आसिख-(हिं०स्त्री०) देखो आशिष।
आसिन-(हिं०पु०) आश्विन मास, क्वार का महीना।
आसीन-(सं०वि०) उपविष्ट, बैठा हुआ, विराजमान।
आसीस-(हिं०पु०) आशीर्वाद।
आसीसा-(हिं०पु०) तकिया।
आसु-(हिं०सर्व०) इसका (क्रिं०वि०) शीघ्र, जल्दी।
आसुग-(हि०) देखो आशुग।
आसुतोख-(हिं०पु०) देखो आशुतोष।
आसुन-(हिं०पु०) देखो आश्विन।
आसुर-(सं०वि०) असुर संबंधी, पैशाची।
आसुर विवाह-वह विवाह जो कन्या के माता पिता को शुल्क देकर किया जावे।
आसुरी-(सं०वि०) असुर संबंधी, राक्षसी; **आसुरी चिकित्सा**-शस्त्र चिकित्सा; **आसुरी माया**-राक्षसों की चालढाल; (स्त्री०) राक्षस की स्त्री।
आसुरीय-(सं०वि०) राक्षस संबंधी।
आसेक-(सं०पु०) वृक्षोंको जल से थोड़ा सींचना।
आसेध-(सं०पु०) रोक रखना।
आसेर-(हिं०पु०) आश्रय, पनाह।
आसेवित-(सं० वि०) बारंबार सेवा किया हुआ।
आसोज-(हिं०पु०) आश्विन मास, क्वार का महीना।
आसौं-(हिं०क्रि०वि०) इस वर्ष, इस साल।
आस्कन्द-(सं०पु०) आक्रमण, झिड़की।
आसकन्दन-(सं०नपु०) देखो आस्कन्द
आस्कन्दी-(सं० वि०) आक्रमण करने वाला, झपटने वाला।
आस्तर-(सं०पु०) हाथी की झूल, बिछौना, चटाई, एक अस्त्र विशेष।
आस्तरण-(सं०नपुं०) विस्तार, बिछौना, पलँग, हाथी की पीठ पर का झूल।
आस्तार-(सं०पु०) विस्तार, फैलाव।
आस्तिक-(सं०वि०) ईश्वर और परलोक का अस्तित्व माननेवाला धार्मिक।
आस्तिकता आस्तिकत्व-(सं०) वेद, ईश्वर तथा परलोक में विश्वास।
आस्तिकपन-(हिं०पुं०) देखो आस्तिकता,
आस्तिक्य-(सं०नपुं०) देखो आस्तिकता।
आस्तीक-(सं०पुं०) जरत्कारु मुनिकेपुत्र जिन्होंने जनमेजयके सर्प सत्रमें तक्षक का प्राण बचाया था।
आस्तीर्ण-(सं०वि०) विस्तीर्ण, फैला हुआ।
आस्तेय-(सं०नपु०) अचौर्य, साहूकारी।
आस्था-(सं०स्त्री०) आलम्बन, सहारा, श्रद्धा, स्थिति, यत्न, आदर, सभा।
आस्थान-(सं०नपुं०) विश्राम स्थान, बैठने की जगह, सभा। **आस्थानगृह**-सभाभवन।
आस्थापन-(सं०नपुं०) अच्छी तरह से स्थापन।
आस्थायिका-(सं०स्त्री०) सभा।
आस्थायी-(हिं०स्त्री०) गीत का टेक जो दोहराया जाता है।
आस्थित-(सं० वि०) प्राप्त, आश्रित, विस्तृत।
आस्थिति(सं० स्त्री०) स्थिति, ठहरने का स्थान।
आस्पद-(सं० नपुं०) स्थान, पद, काम, प्रतिष्ठा, प्रभुत्व, अवलंबन, सहारा, ठहरने का स्थान।
आस्पन्दन-(सं०नपुं०) कम्पन, कँपकपी।
आस्फालन-(सं०नपुं०) फटकार, फड़फड़ाहट, दम्भ, गर्व।
आस्फालित-(सं०वि०) फड़फड़ाया हुआ, रगड़ा हुआ।
आस्फोट-(सं०पुं०) मदार का वृक्ष।
आस्फोटन-(सं०नपुं०) कुस्ती में ताल ठोंकने का शब्द, कम्पन, फड़फड़ाहट
आस्य-(सं०नपु०) मुख, मुँह, आकृति।
आस्र-(सं०पुं०) रुधिर, लोहू।
आस्राव-(सं०पुं०) क्षत, बहाव।
आस्वनित-(सं० वि०) शब्द किया हुआ।
आस्वाद-(सं०पुं०) रस, स्वाद, रसका अनुभव। **आस्वादक**-(सं०वि०) स्वाद लेनेवाला। **आस्वादन**-(सं०पु०) आस्वाद लेना। **आस्वादनीय**-(सं०वि०) चखने योग्य। **आस्वादित**-(सं०वि०) स्वाद लिया हुआ, चखा हुआ।
आह-(हिं०अव्य०) हाय, (स्त्री०) शोक, पीड़ा, दुःख, खेद, दीर्घश्वास, ठंढी साँस, शोक सूचक शब्द. **आहपड़ना**-किसी को क्लेश पहुँचाने का फल मिलना; **आह लेना**-कष्ट देना, सताना।
आहक-(सं०पु०) नाक सूजने का रोग।
आहट-(हिं०स्त्री०) चलने में पैर या दूसरे अंग से उत्पन्न शब्द, पैरकी खटक, खटका, वह शब्द जिससे किसी स्थान में किसी के रहने का अनुमान हो, टोह, पता। **आहट लेना**-सचेतहोना
आहत-(सं० विं०) चोट खाया हुआ, ज्ञात, जाना हुआ, मिथ्या कहा हुआ (पुं०) ढोल (नपुं०) नवीन वस्त्र।
आहति-(सं०स्त्री०) आघात, चोट, मार पीट, आगमन, गुणन, मर्दन।
आहन-(हिं०पु०) भीत उठाने के लिये मिट्टी और तृण का मिश्रण।
आहनन-(सं० नपु०) ताड़न, मारपीट, पशुवध।
आहर-(सं०पु०) उच्छ्वास, आह, ठंढी सांस, (हिं०पुं०) समय, युद्ध, लड़ाई, जल स्थान;
आहरण-(सं०नपु०) हरलेना, छीनना, अपहरण, ग्रहण छीना छीनी, आयोजन, किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।
आहरणीय-(सं०वि०) आयोजन करने योग्य, छीने जाने योग्य।
आहरन-(हिं०स्त्री०) स्थूणी लोहार या सोनार की निहायी।
आहरी-(हिं०स्त्री०) छोटा तालाब, थाला, जलागार जिसमें बैल इत्यादि पानी पीते हैं।
आहर्ता-(सं०वि०) हरण करने वाला।
आहला-(हिं०पु०) पानी की बाढ़।
आहव-(सं०पु०) युद्ध, लड़ाई, ललकार।
आहवन-(सं०नपु०) यज्ञ, हवन, होम, अच्छी तरह से हवन करना।
आहवनीय-(सं०पु०) यज्ञ में जलनेवाली अग्नि; (वि०) हवन करने योग्य।
आहा-(हि०अव्य) हर्ष तथा आश्चर्य सूचक शब्द।
आहार-(सं०पु०) भोजन द्रव्य, खाने की वस्तु, भोजन, अन्न।
आहारक-(सं०वि०) लाने वाला।
आहारपाक-(सं०पुं०) भोजनका पचना
आहारविरह-(सं०पुं०) भोजन का कष्ट रोटी का लाला। **आहारविहार**-(सं०पुं०) खाना पीना आदि शारीरक व्यवहार, रहन सहन। **आहारशुद्धि**-(सं०स्त्री०) भक्ष्य अन्नादि का शोधन।
आहारार्थी-(सं०वि०) आहार के लिये भिक्षा माँगने वाला।
आहारी-(सं०वि०) आहार करनेवाला, भोजन करने वाला।
आहार्य-(सं०वि०) ग्रहण करने योग्य, व्याप्य, कृत्रिम, बनावटी, खाने योग्य, समझने योग्य, लाने योग्य, औपासनिक अग्नि, नाटक का सुन्दर अभिनय।
आहार्यशोभा-बनावटी सुन्दरता।
आहार्याभिनय-(सं० पु०) नाटक का ऐसा अभिनय जिसमें कोई पात्र न कुछ कहता सुनता है और न अंग संचालन करता है, केवल उसके वेष-भूषा से ही काम चल जाता है।
आहाव-(सं०पुं०) जल का कुंड, पात्र, अग्नि।
आहि-(हिं०क्रि०) "आसान" का वर्तमान काल का रूप।
आह्निक-(सं०पु०) केतु ग्रह।

आहित-(स०वि०) रक्खा हुआ, डाला हुआ, स्थापित, रक्षित, उत्पन्न किया हुआ, अर्पण किया हुआ, धरोहर रक्खा हुआ, (पु०) अपने स्वामी से एक साथ अधिक धन लेकर उसकी सेवा करने वाला दास।

आहुड़-(हिं० पु०) आहव, युद्ध, लड़ाई।

आहुत-(स०नपु०) आतिथ्य सत्कार, बलि, वैश्वदेव, मनुष्य यज्ञ।

आहुति-(स०स्त्री०) मन्त्र द्वारा अग्नि में घृतादि फेंकना।

आहुती (हिं०) देखो आहुति।

आहूत-(स०वि०) बुलाया हुआ, पुकारा हुआ, निमन्त्रित।

आहूति-(स० स्त्री०) पुकार, बुलाहट, घृत, तिल इत्यादि से हवन।

आहे (हिं०क्रि०) है, आसना किया का वर्तमान काल का रूप।

आहृता-(स० वि०) लाया हुआ।

आह्निक-(स०वि०) दैनिक,प्रतिदिनका

आह्लाद-(सं०पु०) आनन्द, प्रसन्नता।

आह्लादक-(सं०पु०) प्रसन्न करनेवाला।

आह्लादित-(स०वि०)आनन्दयुक्त,खुश।

आह्लादी-(सं० वि०) आनन्दकारी,

आह्व-(स०पु०) नाम, संज्ञा, पुकारने का नाम, प्रण लगाकर मेढ़े, तीतर, बटेर इत्यादि की लड़ाई कराना।

आह्वर(सं०वि०)-कुटिल टेढ़ा।

आह्वान-(स०नपु०) निमन्त्रण, पुकार, बुलावा, देवताका निमन्त्रण, ललकार

आह्वायक-(सं०पु०) दूत, हरकारा।

—ooooOoooo—

इ

इ-हिन्दी वर्णमाला का तीसरा स्वर वर्ण इसका स्थान तालु है तथा विवृत प्रयत्न है, इसका दीर्घ रूप "ई" होता है। इन्द्र।

इंगा, इंगन-देखो इङ्ग, इङ्गन।

इंगुरौटी-(हिं०स्त्री०) ईंगुर रखने की डिबिया।

इंगुवा-(हिं०) देखो इंगुद।

इंचना-(हिं०क्रि०) आकर्षित होना, खिंचना।

इंट कटोरा-(हिं०पु०) ईंट का चूर।

इंडहर-(हिं०पु०) उड़द और चने की दाल का बना हुआ एक प्रकार का सालन।

इंडुरी-(हिं०स्त्री०) गेंडुरी, कुण्डली।

इंडुवा-(हिं०पु०) कपड़ा लपेटकर बनाई हुई गेंडरी जिसको माथे पर रखकर इसपर बोझ ले जाते हैं।

इंदारा-(**इनारा**) (हिं० पुं०) कूप, कूवाँ।

इंदुवा (हिं०पुं०)देखो इंडुवा।

इंधरोड़ा-(हिं०पुं०)इन्धन रखनेका स्थान

इक-(हिं०पुं०) एक संख्या, एक।

इकंग-(हिं०वि०) एक ओर का (पुं०)

इकंगा-(हिं०वि०) अकेला, निर्जन।

इकआँक-(हिं०क्रि०वि०)अवश्य,निःसन्देह

इकइस-(हिं० वि०) देखो इक्कीस।

इकटक-(हिं०वि०) स्थिर, अचल,टकटकी लगाया हुआ।

इकट्ठा-(हिं०वि०) एकत्र, मिला हुआ, (क्रि०वि०) साथ मिल कर।

इकतर-(हिं०) देखो एकत्र।

इकतरफ़ा-(हिं०वि०) एक ओर का; (क्रि०वि०) एक तरफ़ से।

इकतरा-हिं०पु०) एक दिन के बाद आने वाला।

इकता-(हिं०स्त्री०) देखो एकता। **इकताई**-(हिं०स्त्री०) एकता, अकेलापन।

इकतान-(हिं०वि०) सदृश, अभिन्न।

इकतार-(हिं०वि०) समान, बराबर।

इकतारा-(हिं०पु०) सितार के समान एक ही तार का बाजा, हाथ से बुना हुआ एक प्रकार का वस्त्र।

इकताला-(हिं०वि०) देखो एक ताला।

इकतालीस-(हिं०वि०) चालीस और एक (की संख्या)।

इकतीस-(**इकत्तीस**) (हिं०वि०) तीस और एक (की संख्या)

इकपेचा-(हिं०पु०)एक प्रकार की पगड़ी

इकबारगी-देखो एकबारगी।

इकलड़ा-(हिं०वि०) एकही डोरी में बँधा हुआ (पु०) एक लर का हार।

इकला-(हिं०वि०) देखो अकेला।

इकलाई-(हिं०स्त्री०)एक पाट की बनी हुई महीन वस्त्र की चादर, अकेलापन।

इकलोई-(हिं०वि०) एकही टुकड़े की बनी हुई।

इकलौता-(हिं०वि०) अपने माँ बाप का एक ही (पुत्र) अकेला, बिना भाई बहिन का।

इकल्ला-(हिं०वि०) अकेला, एकहरा।

इकवाई-(हिं०स्त्री०)एक प्रकारकी निहाई।

इकसठ-(हिं०वि०) साठ और एक।

इकसर-(हिं०वि०) अकेला (क्रि०वि०) अकसर।

इकसार-(हिं०वि०) समान, सदृश, बराबर। **इकसार करना**-समतल करना, बराबर करना।

इकसूत-(हिं०वि०) एकत्र, एकट्ठा।

इकहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और एक।

इकहरा-(हिं०वि०) अकेला, एकही टुकड़े का।

इकहाई-(हिं०क्रि०वि०) साथ साथ, सब मिल कर।

इकाई-(हिं०स्त्री०) एकाङ्क।

इकादशी-(हिं०) देखो एकादशी।

इकान्त-(हिं०) देखो एकान्त।

इकेला-(हिं०वि०) देखो अकेला।

इकैठ-(हिं०वि०) इकट्ठा।

इकोतर-(हिं०वि०) एक अधिक।

इकौज-(हिं०स्त्री०) केवल एक बार सन्तान उत्पन्न करने वाली स्त्री।

इकौता-(हिं०पु०) अंगुलियों में होने वाला फोड़ा।

इकौना-(हिं०पुं०) मिश्रित अन्न, **इकौनी** (वि०) अभिन्न।

इकौसी-(हिं०वि०) पृथक्, अलग।

इक्कस-(हिं०नपु०) ईर्ष्या, डाह;

इक्का-(हिं०वि०) अकेला, अनोखा, निराला; (पु०) कान की बाली जिसमें एक मोती रहता है, अकेला लड़ने वाला योद्धा, दुपहिया गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जुतता है, ताश का पत्ता जिसमें एक ही बूटी होती है। **इक्कादुक्का**-(हिं०वि०) दो, एक, अकेला दुकेला।

इक्कावन-(हिं०वि०) देखो इक्यावन।

इक्कासी-(हिं०वि०) देखो इक्यासी।

इक्की-(हिं०स्त्री०) एक बूटी का ताश, इक्की।

इक्कीस-(हिं०वि०) बीस और एक (पुं०) बीस और एक की संख्या। **इक्कीस होना**-बढ़कर हो जाना।

इक्यानबे-(हिं०वि०) नब्बे और एक।

इक्यावन-(हिं०वि०) पचास और एक।

इक्यासी-(हिं०वि०) अस्सी और एक (पु०) अस्सी और एक की संख्या।

इक्षु-(स०पु०) ईख,गन्ना। **इक्षुकण्डिका**-काकोली, काँस, मूंज।

इक्षुकीय-(स०वि०) ईख से भरा हुआ।

इक्षुपाक-(सं०पुं०) गुड़। **इक्षुभक्षिका**-(स०स्त्री०) ईख पेरने का कोल्हू, एक प्रकार का कीड़ी।

इक्ष्वाकु-(स०पु०) वैवस्वत मनु के पुत्र एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

इखट्ठा-(हिं०क्रि०वि०)एकत्र होकर, मिल कर; **इखट्ठा करना**-बटोरना,मिलाना, **इकट्ठा होना**-जमना, भीड़ लगाना।

इखद-(हिं०वि०) देखो ईषत्।

इखु-(हिं०पुं०) देखो इक्षु।

इगारह-(हिं०वि०) देखो ग्यारह।

इग्यारह-(हिं०वि०) दस और एक।

इंग-(स०पु०) ज्ञान, इङ्गित, इशारा।

इंगन-(स०नपुं०) हृदय का भाव,मतलब।

इंगनी-(हिं०स्त्री०) जिसको अंग्रेजी में मीङ्गानीज कहते हैं, यह एक प्रकार का धातु का मोरचा होता है जो काँच के हरेपन को हटाने के काम में लाया जाता है।

इङ्गला-(हिं०) इड़ा नामकी शरीरमें की नाड़ी (हठयोग)।

इङ्गाल कर्म-(हिं०पु०) अग्नि से बनने वाला काम।

इङ्गित-(सं०वि०) अभिप्राय का प्रकाशन, संकेत, अन्वेषण, खोज (वि०) संकेत किया हुआ, **इंगितज्ञ**-संकेत समझने वाला।

इंगुदी-(स०स्त्री०) हिंगोट का वृक्ष, मालकंगनी।

इंगुर-(हिं०पु०) देखो ईंगुर। **इंगुरौटी**-(हिं०स्त्री०) ईंगुर रखने की डिबिया, सिन्धोरा।

इंग्रेज-(हिं०पु०) देखो अङ्गरेज।

इचकना-(हिं०क्रि०) क्रोध से दाँत दिखलाना।

इच्छक-(स०पु०) इच्छायुक्त पुरुष (वि०) अभिलाषी।

इच्छता-(हिं०स्त्री०) अभिलाषा, चाह।

इच्छत्व-(सं०नपु०) देखो इच्छता।

इच्छना-(हिं०क्रि०)इच्छा करना, चाहना

इच्छा-(सं०स्त्री०) वांछा,चाह, लालसा, उत्साह, अभिलाषा, **इच्छाचारी**-अपनी इच्छानुसार चलने वाला, **इच्छादान**-मुंहमाँगी वस्तु का दान; **इच्छानुगत**-स्वतन्त्र, मनमाना; **इच्छान्वित**-इच्छायुक्त; **इच्छाफल**-गणित में फल की उपपत्ति; **इच्छाभोजन**-इच्छा के अनुसार भोजन के पदार्थ।

इच्छित-(स०वि०) वांछित,चाहा हुआ।

इच्छु-(हिं०पु०) इक्षु, ईख।

इच्छुक-(सं०वि०) इच्छा करनेवाला, चाहनेवाला।

इच्छुरस-(हिं०पु०)इक्षुरस, ईख का रस

इज्य-(सं०पु०) पूजनीय व्यक्ति, विष्णु, परमेश्वर।

इज्या-(सं०स्त्री०) यज्ञ दान, पूजा।

इठलाना-(हिं०क्रि०) इतराना, गर्व के साथ चलना, स्पष्ट न बोलना, ठसक दिखलाना, टेढ़ी बात बोलना, मटकना, झगड़ा लगाना।

इठलाई, इठलाहट-(हिं०स्त्री०) इठलाने का भाव, ठसक।

इठाई-(हिं०स्त्री०) अभिलाषा, चाह, प्रीति, मित्रता।

इड़-(स०स्त्री०) भूमि, अन्न, वर्षाकाल।

इड़ा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, गाय, सरस्वती, शीघ्रता, स्तुति, सन्तोष, भोजन, अन्न, हवि, आकाश, देवता, पार्वती, स्वर्ग, दक्ष प्रजापति की पुत्री, हठयोग के अनुसार बाईं ओर की रक्तवाही नाड़ी।

इत-(हिं०क्रि०वि०) इस ओर, इधर, यहां

इत उत-(हिं०क्रि०वि०) इधर उधर, जहां तहां (पुं०) छल, कपट।

इनकाद-(अ०पु०) विश्वास।

इतना-(हिं०वि०) एतावत्, **इतनी**-(हिं० वि०) देखो इतना।

इतर-(सं०वि०) अन्य, दूसरा, अवशेष, बाकी; नीच, साधारण (हिं०पु०) अतर। **इतरजन**-सामान्य लोग, साधारण जन।

इतराजी-(हिं०वि०) विरोध करनेवाला

इतराना-(हिं०क्रि०) अभिमान दिखलाना, ठसक करनी इठलाना।

इतराहट-(हिं०स्त्री०) अभिमान, घमंड, दर्प, ठसक।

इतरीफल-(हिं०पु०) एक रेचक औषधि।

इतरेतर-(स०वि०) अन्योन्य, परस्पर।

इतरेतर योग-परस्पर संबन्ध; **इतरेतर भाव**-अन्योन्याभाव, एक का गुण दूसरे में न होना; **इतरेतराश्रय**-तर्क में वह दोष जिसमें एक पदार्थ की सिद्धि दूसरे पदार्थ की सिद्धि

पर निर्भर रहती है तथा उस पदार्थ की सिद्धि भी पहिले पदार्थ की सिद्धि पर निर्भर होती है ।

इतरौंहा-(हिं०वि०) इठलानेवाला, इतराने वाला ।

इतवार-(हिं०पु०) आदित्यवार, रविवार, एतवार ।

इतस्ततः-(सं०अव्य०) इधर उधर ।

इताति-(हिं०) देखो इतायत ।

इति-(सं०अव्य०) समाप्ति सूचक अव्यय, (स्त्री०)पूर्णता, समाप्ति; इतिकर्तव्य-नियमानुसार करने योग्य धर्म; इतिकर्तव्यता-धर्म ।

इतिमात्र-(सं०वि०) केवल इतनाही ।

इतिवृत्त-(सं०नपु०) कथा, कहानी ।

इतिहास-(सं०पु०) प्राचीन प्रसिद्ध घटनाओं का कालक्रम के अनुसार वर्णन, प्राचीन आख्यान ।

इतेक-(हिं०वि०) इतना ।

इतो-(हिं०वि०) इतना, इस मात्रा मे ।

इत्ता-(हिं०वि०) देखो इतना ।

इत्ता, इत्तो-(हिं०) देखो इतना ।

इत्थं-(सं०अव्य०) इस प्रकार, इस तरह से । **इत्थमेव**-(सं०वि०) ऐसा ही (क्रि०वि०)इस प्रकार से । **इत्थंभाव**-(सं०पु०) ऐसी अवस्था । **इत्थंभूत**-(सं०वि०) ऐसा बना हुआ, ऐसा ।

इत्यर्थ-(सं०अव्यय) इस निमित्त ।

इत्यादि(सं०अव्यय०) इसी प्रकार, यही, सब, अन्य, । **इत्यादिक**-(सं०) इसी प्रकार से दूसरा ।

इत्युक्त-(सं०वि०) ऐसा कहा हुआ ।

इत्रीफल-(हिं०) देखो इतरीफल ।

इदं-(सं०सर्व०) यह ।

इदानीं-(सं०अव्य०) अधुना, अभी, अब ।

इद्ध-(सं०वि०) प्रदीप्त, दग्ध, जला हुआ, निर्मल ।

इधर-(हिं०क्रि०वि०) यहां, इस ओर, इस धुनियां में; **इधर उधर**-यहां वहां, चारो तरफ, नीचे ऊचे,

इधर उधर करना-उलट पलट करना; अन्यस्थान में रख देना, तितर बितिर करना, हटाना, टालना **इधर उधर होना**-खो जाना, लुड़कना; **इधर उधर की बात**-असंबद्ध वार्तालाप; **इधर की दुनियां उधर होना**-अनहोनी बात होना; **इधर उधर में रहना**-व्यर्थ समय नष्ट करना; **इधर उधर होना**-उलट पुलट होना, खो जाना, भाग जाना ।

इन-(हिं०सर्व०)इस का बहुवचन ।

इनारा-(हिं०पुं०) कूप, कुंवा ।

इनारून-(हिं०पुं०) इन्द्रायण का फल ।

इनेगिने-(हिं०क्रि०वि०) अल्प, थोड़े, चुने हुए ।

इंदर-(हिं०पुं०) देखो इन्द्र ।

इंदिया-(सं०पु०) मत, अभिप्राय ।

इन्दिरा-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी ।

इन्दीवर-(सं०नपुं०) नील कमल ।

इंदु-(सं०पु०) चन्द्र, चन्द्रमा, कर्पूर ।

इंदुभ-(सं०नपुं०) मृगशिरा नक्षत्र ।

इन्दुमती-(सं०स्त्री०) पूर्णिमा, राजा अज की पत्नी । **इन्दुमुखी**-(सं०स्त्री०) पद्मिनी ।

इन्दुरू-(सं०पु०) मूषक, चूहा ।

इन्दुवदना-(सं०स्त्री०) चौदह अक्षर का एक छन्द ।

इन्दुशेखर-(सं०पु०) शिव, महादेव ।

इन्द्र-(सं०पु०) देवराज, देवताओं के राजा, चौदहो इन्द्रों के नाम ये हैं-इन्द्र, विश्वभुक्, विपश्चित्, विभु, प्रभु, शिखि, मनोजव, तेजस्वी, बलिर्भाव्य, त्रिदिव, सुशान्ति, सुकीर्ति ऋतधाता और दिवस्पति; -इन्द्र का घोड़ा-उच्चैश्रवा, इन्द्र का सारथी मातली, इन्द्र का महल वैजयन्त, इन्द्र का बगीचा, नन्दन बन, इन्द्र का भण्डारी-कुवेर । **इन्द्रगुप्त**-(सं०पु०) उशीर, खस । **इन्द्रगोप**-(सं०पु०) बीरबहूटी नाम का कीड़ा ।

इन्द्रचाप-(सं०पुं०) इन्द्र धनुष । **इन्द्रजव**-(हिं०)देखो इन्द्रयव । **इन्द्रजाल**-(सं०नपुं०)छल, धोखा, माया, बाजीगरी । **इन्द्रजालिक**-(सं०पुं०) बाजीगर, मायावी । **इन्द्रजित्**-(सं०पुं०) मेघनाद का बड़ा बेटा । **इन्द्रजीत**-(हिं०पुं०) देखो इन्द्रजित् । **इन्द्रतरु**-(सं०पु०) अर्जुन वृक्ष । **इंद्रत्व**-(सं०नपुं०) इन्द्र की शक्ति । **इंद्रदमन**-(सं०नपुं०) नदी में बाढ़ आने पर इसका किसी निर्धारित स्थान पर पहुँचना, जो एक पर्व समझा जाता है । **इंद्रधनुष**-(सं०नपुं०) वर्षा कालमे सूर्योदय के समय आकाश में देख पड़ता हुआ सात रंग बना हुआ एक अर्धवृत्त । **इंद्रनील**-(सं०पु०) मरकतमणि, नीलम । **इंद्रपुरी**-(सं०स्त्री०) अमरावती । **इंद्रप्रस्थ**-(सं०पुं०) पाण्डवों का बसाया हुआ खाण्डवारण्य के मध्य में बसाया हुआ एक नगर । **इंद्रयव**-(सं०पुं०) कुटज बीज, इन्द्रजौ । **इंद्रलोक**-(सं०पुं०) अमरावती, स्वर्ग, इन्द्र का स्थान । **इंद्रवंशा**-(सं०स्त्री०) एक वृत्त विशेष जिसके चार पाद होते हैं और प्रत्येक पाद में बारह वर्ण रहते हैं । **इंद्रवज्रा**-(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसमें चार पाद होते हैं और प्रत्येकपाद मे ग्यारह अक्षर होते । **इंद्रवधू**-(सं० स्त्री०) बीरबहूटीनामककीड़ा ।

इंद्रवारुणी-(सं०स्त्री०) इन्द्रायन लता । **इंद्रशत्रु**-(सं०पुं०) वृत्रासर । **इंद्रसुत**-(सं०पुं०) अर्जुन, बाली । **इंद्रसेना**-नल की कन्या का नाम ।

इंद्राणी-(सं० स्त्री०) इन्द्र की स्त्री शची, दुर्गाशक्ति, छोटी इलायची, इन्द्रायन

इंद्रायन-(हिं०पुं०) एक लाल फल की लता, इनारु ।

इंद्रायुध-(सं०नपुं०)इन्द्र का वज्र, इन्द्र धनुष ।

इंद्राशन-(सं०पुं०) गुंजा, घुमची ।

इंद्रासन-(सं०नपुं०) इन्द्र का सिंहासन, राजा का सिंहासन ।

इंद्रिय-(सं०पुं०) शारीरिक शक्ति, बल, शुक्र, शरीर के अवयव जिनके द्वारा रूप, रस, गन्ध, शब्द तथा स्पर्श का ज्ञान होता है, ज्ञानेन्द्रिय, भिन्न भिन्न कर्म करने के अङ्ग, पांच की संख्या, कर्मेन्द्रिय, गुह्य भाग । **इंद्रियज**-(सं०वि०) इन्द्रियों से उत्पन्न होने वाला । **इंद्रियजित्**-(सं०वि०) इन्द्रियों को वश में करने वाला । **इंद्रियज्ञान**-(सं०नपुं०) इन्द्रियजनित अथवा प्रत्यक्ष ज्ञान । **इंद्रियदमन**-(सं०पुं०) इन्द्रियों को वश में करने का कार्य । **इंद्रियनिग्रह**-(सं० पुं०) देखो इन्द्रिय दमन ।

इंद्री-(हिं०पुं०) देखो इन्द्रिय । **इंद्री जुलाब**-(हिं०पुं०) मूत्र लानेवाली औषधि ।

इंद्रोपल-(सं०नपु०) नीले रंग का हीरा

इन्धन-(सं०नपुं०) आग जलाने की लकड़ी, तृण इत्यादि ।

इन्नर-(हिं०पुं०) तुरत की ब्याई हुई गाय का मसाला मिलाया हुआ दूध

इभ-(सं०पुं०) हाथी, आठ की संख्या; **इभराज**-ऐरावत हाथी ।

इमकोस-(हिं०पुं०) तलवार की मियान

इमचार-(हिं०पुं०) छिपा हुआ जासूस ।

इमरती-(हिं०स्त्री०) उड़द की पीठी की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई ।

इमली-(हिं०स्त्री०) एक बड़ा वृक्ष जिसका फल और पत्तियां खट्टी होती हैं, इसके फल के बीज को चियां कहते हैं ।

इमामदस्ता-(हिं०पुं०) लोहे या पीतल का खरल ।

इमामबाड़ा-(हिं०पुं०) ताजिया रखने और गाड़ने का स्थान ।

इमामा-(हिं०पुं०) पगड़ी ।

इमि-(हिं०क्रि०वि०) इस तरह से, ऐसे ।

इयत्ता-(सं०स्त्री०) इतना परिमाण, अन्दाज ।

इरषा-(हिं०स्त्री०) देखो ईर्षा । **इरषित**-(हिं०वि०) ईर्षा युक्त ।

इरसी-(हिं०स्त्री०) चक्र का धुरा ।

इरा-(सं०स्त्री०) भूमि, रात्रि, जल, अन्न, शराब, सरस्वती, कश्यप ऋषि की पत्नी ।

इरावती-(हिं०स्त्री०) ब्रह्म देश की प्रधान नदी ।

इर्षना-(हिं०स्त्री०) एषण, प्रबल इच्छा ।

इला-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, वाक्य, गाय, पार्वती, सरस्वती, वाणी

इलाची-(हिं०पु०) एक प्रकार का रेशम और सूत मिला हुआ वस्त्र ।

इलाची-(हिं०स्त्री०) देखो इलायची ।

इलाम-(हिं०पु०) सूचनापत्र, आज्ञा, हुक्मनामा ।

इलायची-(हिं०स्त्री०) एला, इलाची, एक सदा बहार पौधा जिसके फल के बीज में सुगन्ध होती है, यह मसालों में पड़ती है । **इलायची दाना**-(हिं०पुं०) इलाची का बीज, चीनी में पागा हुआ इलायची का दाना ।

इलावृत्त-(सं०नपुं०) जम्बूद्वीप के नव खण्डों में से चौथा ।

इल्ला-(हिं०पु०) त्वचा के ऊपर निकली हुई मसे के तरह की फुन्सी ।

इव-(सं०अव्य०) सदृश, तरह, नाई, इस प्रकार, समान ।

इषण-(हिं०स्त्री०) प्रबल इच्छा ।

इषिका-(सं०स्त्री०) रंगसाज की बाल की बनी हुई कूंची ।

इषु-(सं०पु०) बाण, तीर, **इषुकार**-तीर बनाने वाला । **इषुमान**- तीर चलाने वाला ।

इषुधि-(सं०स्त्री०) तूण, तरकस ।

इष्ट-(सं०वि०) अभिलषित, वांछित, चाहा हुआ, (पु०) इष्ट देवता, कुल देवता, कृपा, अधिकार, पति, विष्णु, शुभ कर्म, मित्र ।

इष्टक-(सं०पुं०) ईंट । **इष्टका**-(सं०स्त्री०) ईंट ।

इष्टकारी-(सं०वि०) हितकारी, भलाई चाहने वाला ।

इष्ट काल-(सं०पु०) ज्योतिष के अनुसार सन्तान के उत्पन्न होने का समय ।

इष्ट जन-(सं०पु०) प्रिय व्यक्ति, प्रियतम । **इष्टतम**-(सं०वि०) अतिशय प्रिय, बहुत प्यारा । **इष्टतर**-(सं०वि०) अधिक प्यारा । **इष्टता, इष्टत्व**-(सं०) स्पृहणीयता, पसन्दगी । **इष्टदेव, इष्टदेवता**-(सं०) आराध्य देवता, जो देवता बराबर पूजा जाता हो । **इष्टसाधन**-(सं०नपुं०) अभीष्ट की सिद्धि ।

इष्टा-(सं० स्त्री०) हवन में लगाने की लकड़ी । **इष्टापत्ति**-(सं०स्त्री०) इष्ट सिद्धि, लाभ, फायदा ।

इष्टि-(सं०स्त्री०) यज्ञ, अभिलाषा, इच्छा, संग्रह, निमन्त्रण, बुलावा । **इष्टिका**-(सं०स्त्री०) ईंट ।

इस-(हिं०वि०) 'यह' शब्द का रूप विशेष जो विभक्ति जुटने पर 'इस' हो जाता है ।

इसपार-(हिं०क्रि०वि०) इस ओर, इस तरफ ।

इसायी-(हिं०वि०) देखो ईसाई ।

इसीका-(हिं०सं०वि०) "यह" का सम्बन्ध कारक ।

इसे-(हिं०वि०) इसको, इसके लिये ।

इस्तिङ्गी-(हिं०स्त्री०) जहाज की रस्सी जो घिरनी में लपेटी रहती है ।

इस्तिरी-(हिं०स्त्री०) कपड़े की तह जमाने का धोबी या दरजी का एक हथियार । (हिं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी ।

इह-(हिं०अव्य०) इस स्थान पर, यहां, इस लोक में, इस स्थान में, इस अवस्था में।
इहकाल-(सं०पुं०) वर्तमान समय, यह जिन्दगी।
इह लोक-(सं०पुं०) यह संसार।
इहवां-(हिं०क्रि०वि०) इस स्थान पर, यहां।
इहसान-(हिं०पुं०) देखो एहसान।
इहां-(हिं०क्रि०वि०) यहां,इस स्थान में।
इहागत-(सं०पुं०) यहा पर आया हुआ।

—oooo()oooo—

ई

ई-हिन्दी वर्णमाला का चौथा स्वर वर्ण, यह इकार का दीर्घ रूप है; हिन्दी में यह अक्षर विशेषण तथा विशेष्य बनाने में काम आता है; लक्ष्मी, माया, त्रिमूर्ति।
ईंगुर-(हिं०पुं०) सिन्दूर, सिङ्गरिफ़, सौभाग्यवती स्त्रियां इसको अपनी मांग में भरती हैं।
ईंघे-(हिं०क्रि०वि०) इस ओर।
ईंचना-(हिं०क्रि०) खींचना, ऐंठ लेना, बांधना।
ईंट-(हिं०स्त्री०) सांचे में गिली मिट्टी को दबाकर बनाया हुआ टुकड़ा जो दीवार इ० बनाने के काम में आता है, ताश का एक रंग; ईंट से ईंट बजना-मकान ढह जाना; ईंट का घर मिट्टी होना-घर बिगड़ जाना।
ईंटकारी-(हिं०स्त्री०) ईंट की जोड़ाई।
ईंटा-(हिं०पु०)-देखो ईंट।
ईंडवा-(हिं०पु०) गेड़री जिसको सर पर रखकर बोझ उठाते हैं।
ईंडवी-(हिं०स्त्री०) पगड़ी।
ईंडरी, ईंडुरी-(हिं०स्त्री०) गेड़ुरी।
ईंढ-(हिं०वि०) सदृश, बराबर।
ईंत-(हिं०पुं०) ईंट का टुकड़ा।
ईंदर-(हिं०पुं०) हाल का ब्याई हुई गाय या भैंस के दूध से बनी हुई मिठाई।
ईंदूर-(हिं०पुं०) चूहा, मूसा।
ईंधन-(हिं०पु०) इंधन, जलाने की लकड़ी, तृण, घास फूस।
ईकार-(सं०पु०) चतुर्थ वर्ण "ई"।
ईक्षक-(सं०पु०) देखने वाला मनुष्य।
ईक्षण-(सं०नपु०) दर्शन, देखना, आँख, चौकसी, जांच, विचार।
ईक्षित-(सं०वि०) देखा हुआ, समझा हुआ।
ईख-(हिं०स्त्री०) इक्षु, गन्ना, ऊख।
ईखना(हिं०क्रि०) देखना।
ईछन-(हिं०) ईक्षण, आँख।
ईछना-(हिं०क्रि०) इच्छा करना. चाहना।
ईछा-(हिं०स्त्री०) देखो इच्छा।
ईजति-(हिं०स्त्री०) मर्यादा, मान।
ईठ-(हिं०पुं०) इष्ट, मित्र। ईठना-इच्छा करना।
ईठि-(हिं०स्त्री०) देखो इष्टि, प्रीति, चेष्टा, यत्न।
ईठी-(हिं०स्त्री०) बरछी, भाला।
ईड़ा-(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।
ईड़ित-(सं०वि०) प्रशंसा किया हुआ।
ईढ़, ईढ़ा-(हिं०पु०) हठ।
ईढी-(हिं०वि०) हठी।
ईत-(हिं०स्त्री०) डाँस, वनमक्खी।
ईतर-(हिं०पु०) इतराने वाला, आत्मश्लाघा करने वाला।
ईति-(सं०स्त्री०) झगड़ा, छूत का रोग, खेती को हानि पहुँचाने वाली आपत्ति यथा-अधिक वर्षा, वर्षा न होना, टिड्डी लगाना, चूहे लगना, पक्षी बढ़ना तथा दूसरे राजा का आक्रमण होना, पीड़ा, कष्ठ, दुःख।
ईदृक्-(सं०वि०) ऐसा, इस प्रकार का।
ईदृश-(सं०अव्य०) इस प्रकार, इस तरह
ईप्सा-(सं०स्त्री०)अभिलाषा,वांछा,इच्छा
ईप्सित-(सं०वि०) वांछित, चाहा हुआ।
ईबीसीबी-(हिं०स्त्री०) सीसी का शब्द, सिसकार।
ईमन-(हिं०पुं०) एक रागिणी जो रात्रि के पहिले प्रहर में गाई जाती है।
ईरखा-(हिं०स्त्री०) देखो ईर्षा।
ईरित-(सं०वि०) प्रेरित, कहा हुआ, हटाया हुआ।
ईर्षणा-(हिं०स्त्री०) देखो ईर्षा।
ईर्षा-(सं०स्त्री०) क्रोध, डाह। ईर्षालु-(सं०वि०) ईर्षा करनेवाला, दूसरे की वृद्धि देखकर जलनेवाला, डाह करने वाला।
ईर्षी-(सं०वि०) डाह रखने वाला।
ईर्ष्यमाण-(सं०वि०) देखो ईर्षालु।
ईर्ष्या-(सं०स्त्री०) देखो ईर्षा।
ईर्ष्यालु-(सं०वि०) देखो ईर्षालु।
ईश-(सं०वि०) अधिकारयुक्त, योग्य, प्रधान, बड़ा; (पुं०) स्वामी, मालिक, शिव, नेता, राजा, आर्द्रा नक्षत्र, पारा, ग्यारह की संख्या। ईशता, ईशत्व-(सं०) प्रधानता, बड़ाई।
ईशान-(सं०पुं०) महादेव, शिव, प्रभु, मालिक, आर्द्रा नक्षत्र, ग्यारह की संख्या, पूरब और उत्तर के बीच की दिशा।
ईशानी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, शमी वृक्ष।
ईशिता-(सं०स्त्री०) सब पर प्रभाव डालने वाली शक्ति।
ईशित्व-(सं०नपुं०) ऐश्वर्य, बड़प्पन, ईशिता।
ईश्वर-(सं०पुं०) शिव, ब्रह्मा, स्वामी, मालिक, राजा, पारा, परमेश्वर, योग सूत्र के अनुसार जो आत्मा से स्वतन्त्र रहता है, जो कालत्रय से न्यारा है और जिसको क्लेश, कर्म, विपाक तथा आशय स्पर्श नहीं कर सकता। ईश्वरनिष्ठ-(सं०वि०) ईश्वर को माननेवाला। ईश्वरपरायण-(सं०वि०) केवल ईश्वर का सहारा लेने वाला। ईश्वर प्राणिधान-(सं०नपुं०) प्रगाढ़ समाधियोग, यह योगाभ्यास के पाँच नियमों में से अन्तिम है।
ईश्वरी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सब प्रकार की शक्ति।
ईश्वरीय-(सं०वि०) ईश्वर सम्बन्धी, दिव्य, दैवी।
ईषणा-(सं०स्त्री०) त्वरा, शीघ्रता।
ईषत्-(सं०अव्य०) अल्प, किंचित, थोड़ा, कम।
ईषत्स्पृष्ट-(सं०वि०) थोड़ा छुआ हुआ, अर्धस्वर 'य, र, ल तथा व' के लिये प्रयोग होता है।
ईषद्-(सं०अव्य०) देखो ईषत्।
ईषदुष्ण-(सं०वि०)थोड़ा गरम,मन्दोष्ण
ईषद्दर्शन-(सं०नपुं०) कटाक्ष, चितवन।
ईषद्धास-(सं०पु०)मुसकुराहट,छोटीहँसी
ईषना-(हिं०स्त्री०) प्रबल इच्छा, एषणा
ईस-(हिं०पु०) ईश, ईश्वर।
ईसन-(हिं०) ईशान कोण।
ईसर-(सं०पु०) ऐश्वर्य, महत्व।
ईसरगोल-(हिं०पु०) देखो ईसबगोल।
ईसार-(हिं०पुं०) नम्रता।
ईहग-(सं०वि०)इच्छानुसार चलनेवाला
ईहा-(सं०स्त्री०)उद्यम, व्यवसाय, वांछा, चेष्टा, लोभ, इच्छा; ईहा मृग-रूपक नाटक का एक भेद जिसमें चार अंक होते हैं।
ईहित-(सं०वि०)अपेक्षित, चाहा हुआ।

—oooo()oooo—

उ

उ-हिन्दी वर्णमाला का पांचवां स्वर वर्ण, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है; (अव्य०) हां, ठीक, भी; (पु०) शिव, ब्रह्मा, मनुष्य।
उँ-(हिं०अव्य०) एक अव्यक्त उच्चारण जो मुख बन्द रहते ही किया जाता है, क्या, नहीं, अरे,।
उँकोत-(हिं०पुं०) वर्षाकाल में पैर के सड़ने का रोग।
उँखारी-(हिं०स्त्री०) ईख (गन्ने) का खेत
उँगनी-(हिं०स्त्री०) गाड़ी के पहिये में तेल देने का काम।
उँगली-(हिं०स्त्री०)अंगुलि; उँगली उठना-निन्दा होना; उँगली उठाना-अपमानित करना,लांछन लगाना; उँगली पकड़ना-सहारा लेना; उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना-थोड़ा सा सहारा पा जाने पर अधिक प्राप्ति होनेके लिये आकांक्षित होना; उंगलियों पर नचाना-जिस तरह का काम चाहे करा लेना; कानो उंगली-हाथ या पैर की सबसे छोटी उँगली; पांचो उंगलियां घी में होना-सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना।
उँघाई-(हिं०स्त्री०) निद्रा, झपकी।
उँचन-(हिं०पुं०)उदञ्चन,खाटकी बिनावट कसने की डोरी, अदवाइन।
उँचना-(हिं०क्रि०) उंचन कसना, अदवाइन कसना।
उँचाई-(हिं०स्त्री०) उच्चता,विशिष्टता।
उँचान-(हिं०पुं०) देखो उँचाई।
उँचाना-(हिं०क्रि०) उंचा करना।
उँचाव-(हिं०पु०) उँचाई। उँचास-(हिं०) उंचाई, ऊंचापन।
उँचौनी-(हिं०स्त्री०) भावी, होनहार।
उँछ-(हिं०स्त्री०) कृषि फल काट लेने पर गिरे हुए दानों को बीनकर इकट्ठा करना; उँछवृत्ति-गिरते हुए अन्न के दानों को बटोरने का कार्य; उँछशील-इस वृत्ति का।
उजरिया-(हिं०स्त्री०) उँजेली, उँजियार (हिं०पु०) प्रकाश,उँजेरा,प्रकाश।
उँदर-(हिं०पु०) चूहा।
उँदरी-हिं०स्त्री०) गंज, बालखोरा।
उँदरू-(हिं०पु०) देखो कुन्दरू।
उँह-(हिं०अव्य०) हाय, नहीं।
उअना-(हिं०क्रि०)उदय होना,निकलना।
उआना-(हिं०क्रि०) उठाना, जगाना, मारने को उद्यत होना।
उऋण-(हिं०वि०) ऋण-निर्मुक्त, जो ऋण दे चुका हो।
उचकन-(हिं०पुं०) मुचकुन्द का पुष्प।
उचकना-(हिं० क्रि०) निकल जाना, अलग होना, उखड़ना, भागना, दूर होना, परत अलग होना।
उकटना-(हिं०क्रि०) उखाड़ना, तोड़ना, ढूढ़ना, याद करना, लूटना, अपमानित करना, भेद लेना, गाली देना।
उकटा-(हिं०वि०) बारम्बार उपकार को याद दिलानेवाला, तुच्छ, हलका; उकटा पुरान-बीती हुई बात को बारम्बार सविस्तार कहना।
उकठना-(हिं०क्रि०)शुष्क होना, सूखना, उकठा-(हिं०वि०) शुष्क, सूखा हुआ। उकठापन-(हिं०पुं०) सूख जाने की स्थिति।
उकड़ूँ-(हिं०पु०) बैठने की एक मुद्रा जिसमें घुटने मोड़कर दोनों पैर के तलवे भूमि पर जमाते हैं और चूतड़ एँड़ियों से लग जाते हैं; उकड़ूँ बैठना-घुठने ऊपर उठाकर एँड़ियों के बल बैठना।
उकत-(हिं०) देखो उक्ति।
उकताना-(हिं०क्रि०) उगताना, घबड़ाना, जल्दी करना। उकताव-(हिं०पुं०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
उकति-(हिं०स्त्री०) देखो उक्ति।
उकलना-(हिं०क्रि०) तह अलग होना, उचड़ना, अलग होना, उधड़ना।
उकलवाना-(हिं० क्रि०) तह अलग करवाना। उकलाई-(हिं०स्त्री०) वमन, उलटी, मचली। उकलाना-(हिं०क्रि०) उकताना, घबड़ाना, वमन करना, ओंकाना।
उकवथ-(हिं०पुं०) उंकोत, एक प्रकार का चर्मरोग।
उकवाँ-(हिं०क्रि०वि०) अनमान से।

उकसना-(हिं०क्रि०) उछलना, फूलना, फूटना, उभड़ना, निकलना, बाहर निकलने की चेष्टा करना, टूटने लगना।
उकसनि-(हिं०स्त्री०) उत्तेजना, उभाड़, घबड़ाहट।
उकसवाना-(हिं०क्रि०) निकलवा देना।
उकसाई-(हिं०स्त्री०) निकसवाई, हटवाई, उभड़ाई।
उकसाना-(हिं०क्रि०) उभाड़ना, चढ़ाना, उत्तेजित करना, हटाना, आगे बढाना, सुलगाना, भड़काना, प्रलोभन दिखलाना, छेड़ना।
उकसौंहा-(हिं०वि०) उठता हुआ।
उकरान्त-(स०वि०) जिस शब्द के अन्त में उकार हो।
उकालना-(हिं०क्रि०) देखो उकेलना।
उकासना-(हिं०क्रि०) उभाड़ना, खोलना, ऊपर को फेंकना।
उकासी-(हिं०स्त्री०) खुल जाने की स्थिति।
उकिड़ना, उकिलना-देखो उकालना।
उकीरना-(हिं०क्रि०) खोंदना, उखाड़ना, नोचना।
उकुति-(हिं०स्त्री०) देखो उक्ति।
उकुसना-(हिं०क्रि०) उजाड़ना, उधेड़ना
उकेलना-(हिं०क्रि०) परत अलगाना, उधेड़ना, छिलका निकालना।
उकेला-(हिं०पुं०) रस्से की ऐंठन, परत, कम्बल का बाना।
उकौथ-(हिं०) देखो उंकौत।
उकौना-(हिं०पुं०) दोहद, गर्भिणी की लालसा।
उक्त-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।
उक्ति-(स०स्त्री०) कथन, बचन, निर्देश, बयान।
उक्ष-(स०वि०) बृहत्, बड़ा शुद्ध।
उक्षित-(स०वि०) सींचा हुआ, लगा हुआ।
उखटना-(हिं०क्रि०) लड़खड़ाना, ठोंकर खाना, धीरे धीरे चलना, तोड़ लेना।
उखड़ना-(हिं०क्रि०) निर्मूल होना, जड़ से टूट जाना, निकल पड़ना, अलग होना, छूटना, गिरना, बिगड़ना, बंद होना, रुकना, लड़खड़ाना, हाँफना, हारना, लुप्त होना, भागना, हटना, बाहर होना, मुड़ना, कलंकित होना, अप्रसन्न होना, हताश होना, बेसुरा हो जाना, जोड़ से हटना, तितर बितर होना। **उखड़ी बातें करना**-उदासीनता दिखलाना; **पाँव उखड़ना**-पैर न जमना, ठहर न सकना।
उखड़वाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से उखाड़ने का काम कराना। **उखड़ाई**-(हिं० स्त्री०) उखाड़ने का कार्य।
उखम-(हिं०पुं०) उष्म, गरमी, ताप।
उखमज-(हिं०वि०) उष्मज, गरमी से उत्पन्न, (पुं०) उपद्रव।
उखर-(हिं०पुं०) हल की पूजा जिसको किसान गन्ना बोनेके बाद करते हैं।

उखरना-(हिं०क्रि०) देखो उखड़ना।
उखलना-(हिं०क्रि०) खौलना, गरम होना।
उखली-(हिं०स्त्री०) उलूखल, पत्थर या लकड़ी का वह पात्र जिसमें अन्न डाल कर मूसल से कूट कर इसकी भूसी अलगाई जाती है, काड़ी।
उखहाई-(हिं०स्त्री०) ऊख की चुसाई।
उखा-(हिं०) देखो उषा।
उखाड़-(हिं०पुं०) उच्छेदन, उखाड़ने का काम, लड़ाई का एक दाँव, किसी युक्ति को नष्ट करने का कार्य।
उखाड़ना-(हिं०क्रि०) निर्मूल करना, छिन्न भिन्न करना, तोड़ना, निकालना, अलग करना, उलटाना, भगाना, हटाना, टालना, नष्ट करना, भड़काना, असन्तुष्ट करना; **गड़े मुर्दे उखाड़ना**-बीती हुई बात को फिर से कहना; **उखाड़ू**-(हिं०वि०) उछाड़ने वाला, निर्मूल करने वाला
उखारना-(हिं०क्रि०) देखो उखाड़ना।
उखारी-(हिं०स्त्री०) ऊख का खेत।
उखालिया-(हिं०पुं०) प्रातराश, सवेरे का भोजन, कलेवा।
उखेड़-(हिं०पुं०) देखो उखाड। **उखेड़ना**-(हिं०क्रि०) देखो उखाड़ना।
उखेरना-(हिं०क्रि०) देखो उखाड़ना।
उखेलना-(हिं०क्रि०) लिखना, चित्र बनाना।
उगटना-(हिं०क्रि०) उद्घाटन करना, उधेड़ना, उपहास करना, हँसी उड़ाना
उगदना-(हिं०क्रि०) बोलना, बतलाना, कहना।
उगना-(हिं०क्रि०) निकलना, प्रगट होना, देख पड़ना, अंकुरित होना, जमना, उत्पन्न होना, उपजना।
उगलना-(हिं०क्रि०) पेट में गई हुई वस्तु को मुँह से बाहर निकालना, गुप्त बात को प्रगट करना, फेरना, वान्ति करना; **उगल पड़ना**-सहसा बाहर निकल पड़ना; **जहर उगलना**-दूसरे को मर्मभेदी बात सुनाना।
उगलवाना-(हिं०क्रि०) देखो उगलाना
उगलाना-(हिं०क्रि०) मुँह से बाहर निकलवाना, परिवर्तन करना, दोष स्वीकार करवाना।
उगवाना-(हिं०क्रि०) उत्पन्न कराना।
उगसाना-(हिं०क्रि०) देखो उकसाना।
उगसारना-(हिं०क्रि०) प्रगट करना, वर्णन करना, कहना।
उगाना-(हिं०क्रि०) उपजाना, उत्पन्न करना, उठाना, निकालना, प्रगट करना, उदय करना।
उगार-(हिं०पुं०) थूक, खखार, निचुड़ कर इकट्ठा हुआ जल।
उगाल-(हिं०पुं०) देखो उगार। **उगालदान**-(हिं०पुं०) थूकने का पात्र।
उगाला-(हिं०पुं०) पौधे को खा जाने वाला एक कीड़ा।
उगाहना-(हिं०क्रि०) आयत्त करना किसानों से अन्न इत्यादि अलग अलग लेकर इकट्ठा करना।
उगाही-(हिं०स्त्री०) आयत्त किया हुआ अन्न धन इत्यादि।
उगिलना, उगिलवाना-देखो उगलना, उगलवाना।
उग्गाहा-(हिं०स्त्री०) उदगाहा, एक प्रकार का आर्या छन्द।
उग्र-(सं०वि०) उत्कट, प्रचण्ड, तीव्र, निर्दय कार्य करने वाला, गरम (पुं०) शिव, महादेव, विष्ण, सूर्य, सहजन का वृक्ष, केरल देश, मलावार।
उग्रगन्धा-(सं०स्त्री०) वच, कुलजन।
उग्रगन्धी-(सं०वि०) तीखी गन्ध वाला
उग्रता-(सं०स्त्री०) उग्रभाव, प्रचण्डता, कड़ुवापन।
उग्रह-(सं०पुं०) उद्धार।
उग्रा-(सं०स्त्री०) दुर्गा, कर्कशास्त्री, धनिया, अजवाइन।
उघटना-(हिं०क्रि०) उद्घाटन करना, खोलना, ताल देना, उभाड़ना, हँसी उड़ाना, निन्दा करना, भली बुरी सुनाना।
उघटवाना-(हिं०क्रि०) देखो उघटाना।
उघटा-(हिं०वि०) उद्घाटन करनेवाला, खोलने वाला, उपकार को बार बार कहने वाला। **उघटाई**-(हिं०स्त्री०) खोलने का कार्य। **उघटाना**-(हिं० क्रि०) खोलवाना, कहलवाना।
उघड़ना-(हिं०क्रि०) खुलना, नंगा हो जाना, प्रकाशित होना, प्रगट होना, आच्छादन हटाना। **उघड़ाना**-(हिं० क्रि०) देखो उघटाना।
उघन्नी-(हिं०स्त्री०) चाभी, कुंजी।
उघरना-(हिं०स्त्री०) देखो उघड़ना।
उघरारा-(हिं०वि०) उद्घाटित, खुला हुआ।
उघाड़ना-(हिं०क्रि०) खोलना, कपड़ा उतार देना।
उघाड़ो-(हिं०वि०) प्रगट, प्रकाशित, नंगा
उघाना-(हिं०क्रि०) संग्रह करना, इकट्ठा करना, कर, संग्रह, मांगना।
उघाई-(हिं०स्त्री०) कर का संग्रह, संग्रह किया जानेवाला धन।
उघारना-(हिं०क्रि०) देखो उघाड़ना।
उघारा-(हिं०वि०) खुला हुआ, नंगी।
उघेलना-(हिं०क्रि०) उघाड़ना, खोलना
उङ्गल-(हिं०पुं०) देखो अङ्गल।
उचकन-(हिं०पुं०) आड़, ओटँकन, टेक, उठगन, ईंट इत्यादि का टुकड़ा जिसको पात्र के न उलटने के लिये नीचे रखते हैं।
उचकना-(हिं०क्रि०) छीनना, दबाना, ले भागना, कूदना, उछलना, पंजोंके बल खड़ा होना, चकराना, ललचाना, अधिक मूल्य देना। **उचकवाना**-हिं० क्रि०) उचकने का काम दूसरे से लेना
उचका-(हिं०क्रि०वि०) एकायक।
उचकाना-(हिं०क्रिं०) पंजों के बल खड़ा करना, भगाना, ऊपर की ओर करना

उचकौना-(हिं०वि०) छीनने वाला, पंजों के बल खड़ा होने वाला।
उचक्का-(हिं०पुं०) धूर्त, वंचक, ठग, वस्तु लेकर भाग जानेवाला मनुष्य।
उचक्कापन-(हिं०पुं०) धूर्तता, ठगी, हस्तलाघव :
उचटना-(हिं०क्रि०) अलग होना, गिरना, पलटना, कूदना, सरकना, भड़कना, विरक्त होना, अप्रसन्न होना, चिपका न रहना। **उचटवाना**-(हिं०क्रि०) उचाटने का काम दूसरे से लेना।
उचटाई-(हिं०स्त्री०) उचाटने का कार्य।
उचटाना-(हिं०क्रि०) बाँटना, अलग करना, नोचना, छोड़ना, घुमाना, फेरना, हताश करना, भड़काना।
उचड़ना-(हिं०क्रि०) सटी हुई वस्तु का अलग होना, उचटना। **उचड़वना**-(हिं०क्रि०) उचाड़ने का काम दूसरे से करवाना। **उचड़ाई**-(हिं०स्त्री०) उचाड़ने का काम।
उचना-(हिं०क्रिं०) ऊंचा जाना, ऊपर उठना, उचकना, ऊपर को उठाना।
उचनि-(हिं०स्त्री०) उठान, उभाड़, टचकाई
उचरंग-(हिं०पुं०) उड़ने वाला कीड़ा, फतिङ्गा।
उचरना-(हिं०क्रिं०) उच्चारण करना, बोलना, उचड़ना, छूटना।
उचरवाना-(हिं०क्रि०) देखो उचाना।
उचराई-(हिं०स्त्री०) उच्चारण करने की दशा, उचड़ाई।
उचराना-(हिं०क्रि०) कहलाना, उचड़वाना
उचाट-(हिं०वि०) अलग किया हुआ, विरक्त, श्रान्त, खिन्न, हताश, चित्त न लगना।
उचाटन-(हिं०पुं०) देखो उच्चाटन।
उचाटना-(हिं०क्रिं०) उच्चाटन करना, चित्त हटाना, भगा देना।
उचाटी-(हिं०स्त्री०) उच्चाटन, उदासीनता उचाट, हटाव।
उचाटू-(हिं०वि०) उच्चाटन करनेवाला।
उचाड़ना-(हिं०क्रि०) चिपकी हुई वस्तु को अलग करना, उखाड़ना, नोचना
उचाना-(हिं०क्रि०) ऊंचा करना, ऊपर को उठाना।
उचापत-(हिं०स्त्री०) विश्वास, धोखा,
उँचार-(हिं०) देखो उच्चारण।
उचारक-(हिं०वि०) उच्चारण करने वाला, बोलने वाला।
उचारन-(हिं०पुं०) देखो उच्चारण।
उचारना-(हिं०क्रि०) उच्चारण करना, कहना, उखाड़ना, उचाड़ना।
उचाल-(हिं०) देखो उच्चाट।
उचावा-(हिं०पुं०) स्वप्न में बकझक।
उचित-(सं०वि०) योग्य, कर्तव्य व्यवस्थित, दुरुस्त।
उचेड़ना, उचेलना-देखो उचाटना।
उचौंहा-(हिं०वि०) ऊंचा हुआ, उभड़ा हुआ।
उच्च-(सं०हिं०) उन्नत, ऊंचा, श्रेष्ठ।
उच्चटा-(सं०स्त्री०) गुंजा, लालघुमची

उच्चण्ड-(सं०वि०) तीव्र।
उच्चतम-(सं०वि०)सबसे ऊंचा। **उच्चतर**-(सं०वि०) दो पदार्थों में ऊंचा। **उच्चतरु**-(सं०पु०) नारियल या बर का वृक्ष।
उच्चता-(सं०स्त्री०) उन्नत अवस्था, ऊंचाई।
उच्चनीय-(सं०वि०)भलाबुरा,ऊंचा नीचा
उच्चपद-(सं०नपु०) सम्मान का पद।
उच्चभाषी-(सं०वि०)जोरसेबोलनेवाला
उच्चय(सं०पु०) इकट्ठा करने का काम, समूह, ढेर, त्रिकोण का पार्श्व भाग।
उच्चयापचय-(सं०पुं०) वढ़तीघटती।
उच्चरण-(सं०नपुं०) वाहर आने का कार्य, कथन, कण्ठ, तालु, मूर्धा,दन्त, ओष्ठ तथा नासिका से निकलने वाला शब्द।
उच्चरना-(हिं०क्रि०) उच्चारण करना, बोलना।
उच्चरित-(सं०वि०)कहा हुआ, निकला।
उच्चलित-(सं०वि०) ऊपर या बाहर पहुंचा हुआ।
उच्चाट-(विं०पु०) देखो उच्चाटन।
उच्चाटन-(सं०नपु०) मिली या संयुक्त वस्तु का पृथक् होना, उखाड़, नोच-खसोट, डवाँडोल बनाने का काम, उत्कण्ठा, विवाद, तन्त्र के प्रयोगों में से एक जिसके करने से किसी का मन कहीं से हट जाता है। **उच्चाटनीय**-(सं०वि०) उखाड़ डालने योग्य **उच्चाटित**-(सं०वि०) उखाड़ा हुआ, हटाया हुआ।
उच्चार-(सं०पु०) उच्चारण, कथन, विष्ठा, मल। **उच्चारक**-(सं०वि०) उच्चारण करने वाला।
उच्चारण-(सं०पु०) कथन,शब्द प्रयोग, बोलने का काम, **उच्चारण स्थान**-कण्ठ,तालु, मूर्द्धा, दाँत; ओठ, नाक तथा जिह्वा मूल और उपध्मा आठ हैं। **उच्चारणीय**-(सं०वि०) उच्चारण किया जाने वाला।
उच्चारना-(हिं०क्रि०)उच्चारण करना, बोलना।
उच्चारित-(सं०वि०) उच्चारण किया हुआ, बोलाया या कहा हुआ।
उच्चार्य-(सं०वि०) उच्चारण करने योग्य। **उच्चार्यमाण**-(सं०वि०) उच्चारण किया जाने वाला।
उच्चावच-(सं०वि०) ऊंच नीच, भला, बुरा।
उच्चैःश्रवा-(सं०पुं०) खड़े कान, सफेद रंग तथा सात मुंह वाला इन्द्र का घोड़ा जो समुद्र मंथन में निकला था (वि०) बहिरा, कम सुनने वाला।
उच्छन्न-(सं०वि०) नष्ट, उजड़ा हुआ।
उच्छरना, उच्छलना-देखो उछलना।
उच्छलन-(सं०नपुं०) उछाल।
उच्छलित-(सं०वि०) उछाला हुआ।
उच्छव-(हिं०पुं०) देखो उत्सव, उत्साह
उच्छास-(हिं०पुं०) देखो उच्छ्वास।
उच्छाह-(हिं०पु०) देखो उत्साह।
उच्छिन्न-(सं०वि०) जड़ सहित उखाड़ा हुआ, नष्ट, नीच।
उच्छिष्ट-(सं०वि०). किसी के खाने से बचा हुआ, जूठा, दूसरे के व्यवहार में लाया हुआ, अपवित्र, (पु०) जूठा पदार्थ, मधु, शहद। **उच्छिष्टता**-(सं०स्त्री०) जूठन,अपवित्रता **उच्छिष्टभोजी**-(सं० वि०) दूसरे का जूठा खानेवाला।
उच्छु-(हिं०स्त्री०) उच्छ्वास विकार, एक प्रकार की खांसी जो खाते पीते समय गलेमें कुछ रुक जाने से आने लगती है, सुनसुनी, उथनन।
उच्छृङ्खल-(सं०वि०) क्रमहीन,निरंकुश, उदण्ड, नियम रहित, मनमाना काम करने वाला, स्वेच्छाचारी।
उच्छेद, उच्छेदन-(सं०) उत्पाटन,उखाड़ खंडन, ध्वंस, विनाश, नोच-खसोट। **उच्छेदनीय**-(सं०वि०) उखाड़ने योग्य।
उच्छ्रित-(सं०वि०) उन्नत, उठा हुआ।
उच्छ्वसित-(सं०वि०) विकसित, खिला हुआ,फूला हुआ,कम्पित,हाँफता हुआ
उच्छ्वास(सं०पु०) ऊपर को खींची हुई श्वास, विकाश, स्फूर्ति, प्रकरण, अध्याय, ग्रन्थ का विभाग। **उच्छ्वासित**-(सं० वि०) प्राणहीन, विभक्त, असंयुक्त।
उछंग-(हिं०पुं०) उत्सङ्ग,गोद,क्रोध,हृदय
उछकना-(हिं०क्रि०)चौंकना,विस्मितहोना
उछटना-(हि०) देखो उचटना।
उछड़ना, उछरना-(हि०) देखो उछलना
उछल कूद-(हिं०स्त्री०)दौड़धूप,खेलकूद, क्रीड़ा कौतुक।
उछलना-(हिं०क्रि०) फलांग मारना, कूदना, फाँदना, ऊपर को कूदकर नीचे को आना,वेग से बाहर आना, आनन्द करना, आनन्द से फूलना, उभड़ना, उतरना, क्रोध से उत्तेजित होना, तड़पना। **उछलवाना**-(हिं० क्रि०) उछालने का काम किसी से करवाना। **उछलाना**-(हिं० क्रि०) उछालने के लिये प्रवृत्त करना।
उछाँटना-(हिं०क्रि०) उच्चाटन करना, हटाना, भगाना।
उछार, उछाल-(हिं० स्त्री०) कूद फाँद, उत्तेजना,क्रोध,फेंक फाँक,युद्ध,लड़ाई, उलटी, वमन, जल का छींटा।
उछालना-(हिंक्रि०) ऊपर की ओर फेंकना, वमन करना, उचकाना, अपमानित करना।
उछाव-(हिं०पु०) देखो उत्साह।
उछास-(हिं०पुं०) देखो उच्छ्वास।
उछाह-(हिं०पु०)देखो उत्साह। **उछाही**-(हिं०वि०) देखो उत्साही। **उछिन्न**-**उछिष्ट**-(हिं०वि०) देखो उच्छिष्ट।
उछीड़-(हिं०स्त्री०)कमी,न्यूनता, ओछापन
उछीनना-(हिं०क्रि०) उच्छिन्न करना, नोचना, उखाड़ना।
उछीर-(हिं०पु०) अवकाश, स्थान।
उछीर-(हिं०क्रि०) उस ओर,उस तरफ।
उजका-(हिं०पु०) विभिषिका, खेत में गड़ा हुआ चिड़ियोंको डरानेका पुतला
उजट-(हिं०पु०) घास फूस की बनी हुई झोपड़ी।
उजड़-(हिं०) देखो उजड्ड।
उजड़ना-(हिं०क्रि०) जड़ से उखाड़ना, सूख जाना, गिरना, नष्ट होना, लुटना,जनशून्य होना,अपव्यय होना, खो जाना, उदास पड़ना, किसी काम का न होना, तुच्छ देख पड़ना, तितिर बितिर होना, अपमानित होना, पति या पत्नी का मर जाना।
उजड़वाना-(हिं०क्रि०) विनष्ट कराना, किसी को उजाड़ने में नियुक्त करना। **उजड़वाई**-(हिं०स्त्री०) उजाड़ने का काम।
उजड़ा-(हि०वि०) नष्ट, अधम; **उजड़ा पुजड़ा**-टूटा फूटा, फटा टूटा।
उजड़ाई-(हिं०स्त्री०) उजाडने का कार्य।
उजड्ड-(हिं०वि०) नितान्त मूर्ख, असभ्य, अशिष्ट, तुच्छ, उद्दण्ड, निरंकुश, गँवार, **उजड्डता, उजड्डपन**-(हिं०पु०) उद्दण्ता, अशिष्टता, मूर्खता,तुच्छता।
उजरना-(हिं०क्रि०) देखो उजड़ना।
उजरा-(हिं०वि०) देखो उजड़ा, उजला।
उजराई-(हिं०स्त्री०) शुक्लता, निर्मलता, गोराई। **उजराना**-(हिं०क्रि०) उज्वल करना,।
उज्जलवाना-(हिं०क्रि०) चमकवाना।
उजला-(हिं०वि०) उज्वल, निर्मल, चमकीला, स्वच्छ,पवित्र,दीप्तिमान्।
उजवाना-(हिं०क्रि०) ढालना, खाली करवाना।
उजागर-(हिं०वि०) दीप्तिमान, प्रकाशित, चमकीला, विख्यात, प्रसिद्ध।
उजाड़-(हिं०वि०) नष्ट, उच्छिन्न, निर्जन, शून्यस्थान, जंगल, जनशून्य, (पु०)उजड़ा हुआ स्थान,निर्जन स्थान।
ऊजाड़मूह-हतभाग्य, अभागा।
उजाड़ना-(हिं०क्रि०) उखाड़ना, नाश करना, निकालना, लूटना, निर्जन करना, दरिद्र बनाना, उधेड़ना, तोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना।
उजाड़ू-(हिं०वि०) नाश करने वाला, बिगाड़ने वाला।
उजार-(वि०) देखो उजाड़। **उजारा**-(हिं०वि०) देखो उजाला। **उजारी**(हिं०स्त्री०) प्रकाश चांदनी।
उजावना-(हिं०क्रि०) प्रकाशित करना उलटना, चमकाना, स्वच्छ करना, रगड़ना, माँजना।
उजाला-(हिं०पु०) प्रकाश, दिन, चमक, महिमा, एकलौता बेटा (वि०) प्रकाशवान्। **उजाली**-(हिं०स्त्री०) चन्द्रिका, चाँदनी। **उजास**-(हिं०पुं०) उजाला, प्रकाश, चमक। **उजारना**-प्रकाशित होना, **उजियर**-(हिं०पुं०) देखो उजाला। **उजियरिया**-(हिं०पुं०) देखो उजाला। **उजियान** (हिं०क्रि०) प्रगट करना; **उजियार**-(हिं०पुं०) देखो उजाला। **उजियारना**-(हिं०क्रि०) प्रकाशित करना,जलाना। **उजियारा**-(हिं०पु०) उजाला, प्रकाश।
उजियारी-(हिं०स्त्री०) देखो उजाली।
उजियाला-(हिं०वि०) देखो उजाला।
उजीर-(हिं०पु०) वजीर, मन्त्री।
उजुर-(हिं०पु०) विरोध।
उजूबा-(हिं०वि०) देखो अजूबा।
उजेर-(हिं०वि०) देखो उजाला।
उजेरा, उजेला-(हिं०पुं०) प्रकाश, उजला, स्वच्छ।
उज्जर-(हिं०वि०) देखो उज्वल।
उज्जल-(हिं०वि०) उज्वल, श्वेत, (क्रि० वि०) नदी के चढ़ाव की ओर।
उज्जयिनी-(सं०स्त्री०) मालवा देश की प्राचीन राजधानी।
उज्जीवित-(सं०वि०) पूर्णरूपसे जीवित।
उज्जृम्भण-(सं०नपु०) जमहाई, उबासी
उज्जैन-(हिं०पु०) उज्जयिनी।
उज्वल-(सं०वि०) दीप्तिमान्, चमकीला, विमल, खिला हुआ, सुन्दर।
उज्वलता-(सं०स्त्री०) दीप्ति, चमक, सुन्दरता।
उज्वला-(सं०स्त्री०) दीप्ति, जगती छन्द का एक भेद।
उज्वलित(सं०वि०) दीप्तिमान्,चमकीला
उज्झड़-(हि०वि०) नितान्त मूढ़, बड़ा मूर्ख।
उज्झित-(सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ
उज्यारा-(हिं०वि०) देखो उजाला।
उझकना-(हिं०क्रि०) उचककर झांकना, उभड़ना, ऊंचा होना, चौंकना, कूदना, फांदना।
उझकुन-(हिं०)देखो उझकन। **उझपना**-(हिं०क्रि०) खुलना।
उझरना-(हिं०क्रि०) ऊपर की ओर उठना।
उझलना-(हिं०क्रि०) एक पात्र से दूसरे पात्र में ऊपर से गिरना, उंडेलना, ढालना, बढ़ना, उमड़ उठना।
उझाँकना-(हिं०क्रि०) देखो झांकना।
उझालना, उझिलना-देखो उझलना।
उझिला-(हिं०स्त्री०) खेत की मिट्टी जो ऊँची जगह से निकाली गई हो।
उंचास-(हिं०वि०) देखो उनचास।
उटकना-(हिं०क्रि०) उछलना, फुदकना, अनुमान करना।
उटकनाटक-(हिं०वि०) अद्भुत,अनोखा
उटङ्ग-(हिं०वि०) ऊंचा ही रहने वाला, जो नीचा न हो, बुरी तरह से काटा छांटा हुआ।
उटङ्गन-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास जिसका साग खाया जाता है, गुठुवा।
उटज-(सं०पुं०) पर्णशाला, झोपड़ी।
उटड़पा-(हिं०पुं०) बैलगाड़ी के आगे

बांधा हुआ डंडा जो इसको खड़ा रखने के लिये काम में आता है।

उटारी-(हिं॰स्त्री॰) लकड़ी जिस पर चारा,काटा जाता है।

उटेव-(हिं॰पुं॰) लकड़ी के टुकड़े जो छाजन रखने के काम में आते हैं।

उठंगन-(हिं॰पुं॰) आड़, टेक, टेकनी, थूनी।

उठंगना-(हिं॰क्रि॰) आश्रय लेना, टेकना, तकिया लगाना।

उठंगल-(हिं॰वि॰) मन्द, मूर्ख।

उठंगवाना-(हिं॰क्रि॰) उठवाने का काम दूसरे से लेना।

उठंगाना-(हिं॰क्रि॰) टेक पहुंचाना, कपाट बन्द करना।

उठक-(हिं॰स्त्री॰) उत्थान, उठान।

उठगन-(हिं॰पुं॰) देखो उठंगन।

उठती(हिं॰वि॰) चढ़ती, बढ़ती, जोतने बोने योग्य; **उठती जवानी**-नवयौवन, **उठतीपेंठ**-गिरती बाजार, **उठते बैठते**-सोते जागते, अबेर सबेर, बातकी बात में, सर्वदा।

उठना-(हिं॰क्रि॰) आरंभ होना, निकलना उगना, बढ़ना, फट पड़ना, उभड़ आना, चढ़ना, उपस्थित होना, ऊँचा पड़ना, जाना, जागना, खड़ा होना, बनना, गरम होना, यौवन प्राप्त होना, उबलना, देख पड़ना, फैलना, उतरना, खिचना, कटना, रगड़ खाना, सूखना, किराये पर दिया जाना, प्राप्त होना, सिखलाया जाना, आरोग्य होना, पकना, हिलना, स्थापित होना, पूर्ण होना, नष्ट होना, त्यागना, छोड़ना, भड़कना, कूदना, उछलना, तैयार होना, किसी प्रथा का दूर होना, व्यय होना, बिकना, पशुओं में कामोद्दीपन होना।

उठल्लू-(हिं॰वि॰) एक स्थान पर न रहने वाला, बिना प्रयोजन इधर से उधर घूमने वाला, अवारा; **उठल्लू का चूल्हा**-व्यर्थ इधर उधर घूमने वाला।

उठवाई-(हिं॰स्त्री॰) उठने या उठाने का काम। **उठवाना**-(हिं॰क्रि॰) उठाने का काम दूसरे से लेना। **उठवैया**-(हिं॰वि॰) भार उठाने में सहायता देने वाला।

उठाईगीरा-(हिं॰पुं॰) आँख बचाकर वस्तु चोराने वाला, उचक्का, चोर, मोषक, चाई, दुष्ट व्यक्ति, उठाऊ (हिं॰) देखो उठल्लू।

उठान-(हिं॰पुं॰) उभाड़, चढ़ाव, वृद्धि, ऊंचाई, आकार, वृद्धि क्रम, यौवन को अवस्था, बनावट, अभिमान, आरंभ, व्यय, आकस्मिक उन्नति।

उठाना-(हिं॰क्रि॰) ऊँचा करना, जमाना, स्थापित करना, खड़ा करना चुनना, खोंचना, खोलना, प्रबन्ध करना, व्यय प्राप्त करना, सहना, लगाना, चन्दा देना, रगड़ना, मिटाना, बन्द करना, फेंकना, दूर करना, उजाड़ना, जगाना, भड़काना, छेड़ना, पकड़ना, हाथ में लेना, अविष्कार करना; धारण करना, भीत आदि बनाना, अनुभव करना, मानना; **उठारखना**-कसर न छोड़ना।

उठाव-(हिं॰पुं॰) देखो उठान। **उठावनी**-(हिं॰स्त्री॰) उठाने का काम, परिश्रमिक, अग्रिम दक्षिणा, विवाह के पहिले दिया जाने वाला धन।

उठौवा-(हिं॰वि॰) देखो उठल्लू।

उड़क्कू-(हिं॰वि॰) खूब उड़ने वाला, शीघ्र कार्य करने वाला, दौड़ धूप करने वाला।

उड़-(हिं॰पुं॰) तारा;

उड़चक-(हिं॰पुं॰) चोर, उचक्का, ठग।

उड़ चलना-(हिं॰क्रि॰) इतराना, अभिमान दिखलाना, घमंड करना।

उड़द-(हिं॰पुं॰) माष, एक अन्न जिसकी दाल खाई जाती है।

उड़न-(हिं॰स्त्री॰) उड़ान, उड़ने का कार्य। **उड़नखटोला**-(हिं॰पुं॰) उड़ाने वाला खटोला, वायुयान। **उड़नगोला**-(हिं॰पुं॰) उड़ने वाला गोला, **उड़नछू**-(हिं॰वि॰) लुप्त, देख न पड़ने वाला।

उड़नखाई-(हिं॰स्त्री॰) छल, धोखा, **उड़नफल**-(हिं॰पुं॰) वह फल जिसके खाने से उड़ने की शक्ति आ जावे।

उड़न फ़ाख्ता-(हिं॰स्त्री॰) उड़ने वाली मैना, मूर्ख व्यक्ति। **उड़नबीमारी**-(हिं॰स्त्री॰) संक्रामक रोग, छूत की बीमारी।

उड़ना-(हिं॰क्रि॰) आकाश में पर की सहायता से चलना, हवा में ऊपर की ओर उठना, शीघ्र दौड़ना, भागना, आगे आगे चलना, नष्ट होना, समाप्त होना, उठ जाना, लूटना, मरना, भाफ बनना, फटना, भड़कना, फैलना, छलना, बहाना करना, फूलना, खिलना, प्राप्त होना, कुम्हलाना, हवा में फैलना, झटके से अलग होना, व्यय होना, धीमा पड़ना, फलांग मारना, किसी भोग्य पदार्थ का आनन्द लेना।

उड़प-(हिं॰पुं॰) नाचने की एक विधि।

उड़पति-(हिं॰पुं॰) उडुपति, चन्द्रमा।

उड़री-(हिं॰स्त्री॰) देखो उड़द।

उड़व-(हिं॰पुं॰) एक राग जिसमें केवल पांच स्वरों का प्रयोग होता है। **उड़वाना**-(हिं॰क्रि॰) उड़ाने का काम दूसरे से कराना।

उड़सना-(हिं॰क्रि॰) खांसना, घुमाना, ठूंसना, भरना, तह करना, नष्ट होना।

उड़ांक-(हिं॰) देखो उड़ाकू।

उड़ाऊ-(हिं॰वि॰) उड़ने वाला, अधिक व्यय करने वाला।

उड़ाकू, उड़ाका-(हिं॰वि॰) उड़ाका, उड़ने वाला (पुं॰) वायुयान चलाने वाला।

उड़ान-(हिं॰पुं॰) उड़ने का कार्य, कुदान, छलांग, चड़ाव, कूदफाँद, मालखंभ का एक व्यायाम, मणिबन्ध, कलाई।

उड़ाना-(हिं॰क्रि॰) उड़ने में प्रवृत्त करना, हवा में फैलाना, भोजन करना, क्रीड़ा करना, काटना, गिराना भगा ले जाना, छिपाना, व्यय कर देना, हटाना, दूर करना, चोराना, मारना, बहलाना, काटना, नष्ट करना, भुलावा देना, गुप्त रूप से किसी विद्या को प्राप्त कर लेना।

उड़ायक-(हिं॰वि॰) उड़वैया, उड़ानेवाला

उड़ाल-(हिं॰स्त्री॰) कचनार के वृक्ष का छिलका।

उड़ास-(हिं॰स्त्री॰) वासस्थान, रहने का स्थान।

उड़ासना-(हिं॰क्रि॰) बिछावन लपेटना, समेटना, उठाना, उजाड़ना, नष्ट करना

उड़िया-(हिं॰वि॰) उत्कलदेश (उड़ीसा) का निवासी।

उड़ियाना-(हिं॰पुं॰) बाइस मात्रा का एक छन्द।

उड़िल-(हिं॰पुं॰) बालदार भेंड़।

उड़ीं-(हिं॰पुं॰) मलखम्भ का एक व्यायाम।

उडीसा-उत्कल देश।

उडु-(सं॰स्त्री॰) नक्षत्र, तारा, पक्षी, पानी। **उडुचक्र**-(सं॰ नपुं॰) नक्षत्र मण्डल। **उडुप**-(सं॰पुं॰) चन्द्रमा, चमड़े का बना हुआ पात्र, एक प्रकार का नाच, डोंगी **उडुपति**-(सं॰पुं॰) चन्द्रमा, समुद्र, वरुण। **उडुप्रिया**-(सं॰स्त्री॰) कमलिनी। **उडुराज**-(सं॰पुं॰) चन्द्रमा। **उडुस**-(हिं॰पुं॰) उदंश, मत्कुण, खटमल।

उड़ेरना उड़ेलना-(हिं॰क्रि॰) एक पात्र से दूसरे पात्र में ढालना, त्यागना, छोड़ना।

उड़ैनी-(हिं॰स्त्री॰) खद्योत, जुगनू।

उड़ौंहां-(हिं॰वि॰) उड़नेवाला।

उड्डयन-(सं॰नपुं॰) उड़ान।

उड्डी-(हिं॰स्त्री॰) घुमक्कड़ (अवारा) औरत

उड्डीन-(वि॰) उड़ता हुआ।

उड्डीयन-(सं॰नपुं॰) उड्डयन, उड़ान।

उड्डीयमान-(सं॰वि॰) उड़ता हुआ, उड़नेवाला।

उढ़-(हिं॰पुं॰) विशूखा, घासपात का बना हुआ पुतला।

उढकन-(हिं॰स्त्री॰) आश्रय, सहारा, तकिया। **उढकना**-(हिं॰क्रि॰) रुकना, टकराना, आगे न बढ सकना, ठहरना सहारा लेना, टेक लगाना। **उढकाना**-(हिं॰क्रि॰) किसी के सहारे रखना, ठेक से ठहराना, भिड़ाना।

उढरना-(हिं॰क्रि॰) अपने विवाहित पति को छोड़ कर दूसरे पुरुष के साथ निकल भागना। **उढरी**-(हिं॰स्त्री॰) उपपत्नी, रखनी, सुरैतिन

उढाना-(हिं॰क्रि॰) ओढाना, ढाँपता।

उढारना-(हिं॰क्रि॰) किसी की स्त्री को भगा ले जाना।

उढावनी-(हिं॰स्त्री॰) ओढनी, चादर।

उत-(हिं॰क्रि॰वि॰) उधर, उस ओर, वहां।

उतंग-(हिं॰वि॰) ऊंचा, बड़ा, ऊंचे दरजे का।

उतङ्क-(सं॰पुं॰) एक ऋषि का नाम।

उतन-(हिं॰क्रि॰वि॰) उस ओर, उधर।

उतना-(हिं॰त्रि॰) उस परिमाण का, उसकी बराबर।

उतन्ना-(हिं॰पुं॰) कानमेंपहिरनेकीबाली।

उतपन्न-(हिं॰वि॰) देखो उत्पन्न, पैदा।

उतपाप-(हिं॰पुं॰) उत्पात, झगड़ा।

उतपातना-(हिं॰क्रि॰) उपजाना, उत्पन्न करना, उत्पन्न होना।

उतमङ्ग-(हिं॰पुं॰) उतमाङ्ग, मस्तक, माथा

उतरंग-(हिं॰पुं॰) दरवाजे के ऊपरी ढाँचे पर रक्खी जानेवाली लकड़ी।

उतर- (हिं॰पुं॰) उत्तर, जबाब।

उतरन-(हिं॰स्त्री॰) उत्तरङ्ग, वस्त्र जो पहिरते पहिरते जीर्ण हो गया हो, **उतरन पुतरन**-फटा पुराना वस्त्र ; **उतरन होना**-उपकार या ऋण से मुक्त होना।

उतरना-(हिं॰क्रि॰) ऊंचे स्थान से नीचे को आना, नदी नाला पार करना, निगल जाना, उपजना, प्रवेश करना, लाँघना, आना, निकलना, कम होना, घटना, घिस जाना, कुम्हलाना, वृद्ध होना, समाप्त होना, स्थान छोड़ना, ठहरना, टिकना, खिचना, संचारित होना, उधड़ना, तैयार होना, कसाव हट जाना, ढालकर या साँचे में बनाया जाना, उद्वेग या कान्ति हट जाना, शरीर के जोड़ का हटना, अवतार लेना, आदाय होना, किसी पदार्थ को शरीर के चारो ओर घुमाना; **उतर कर**-जाति में हीन ; **चित्त से उतरना**-अप्रिय लगना, भूल जाना, **चेहरा उतरना**-मुख मलिन होना, उदास होना। **उतरवाना**-(हिं॰क्रि॰) उतारने का काम किसी दूसरे से कराना।

उतरहा-(हिं॰वि॰) उत्तर सबंधी, उत्तरी।

उतरा-(हिं॰वि॰) अधोगत, घटा हुआ।

उतराई-(हिं॰स्त्री॰) नीचे जाने का काम, नदी पार करने का कर। **उतराना**-(हिं॰क्रि॰) नीचे से ऊपर को आना, उतारने का काम दूसरे से कराना।

उतरायल-(हिं॰वि॰) उतरा (पहिरा) हुआ।

उतरारी उतराव-(हिं॰स्त्री॰) उत्तरीवायु

उतराहा॰(हिं॰क्रि॰वि॰) उत्तर की ओर।

उतरास-(हिं॰स्त्री॰) उतरने की इच्छा।

उतरिन-(हिं॰वि॰) उऋण, ऋणमुक्त।

उतलाना-(हिं॰क्रि॰) आतुर होना, जल्दी मचाना, हड़बड़ी करना।

उतल्ला-(हिं॰वि॰) देखो उतावला।

उतवंग-(हिं॰वि॰) देखो उत्तमाङ्ग।

उतनव-(हिं॰पुं॰) देखो उत्सव।

उतसाह-(हिं॰पुं॰) देखो उत्साह।

उतान-(हिं॰वि॰) अपनी पीठ जमीन में लगाये हुए, उलटा, औंधा, चित्त।
उतायल-(हिं॰पुं॰) त्वरा, शीघ्रता।
उतायली-(हिं॰वि॰) देखो उतावली।
उतार-(हिं॰पु॰) ऊपर से नीचे आने का काय, घटाव, कमी, मूल्य का कम होना, व्यय की कमी, नाश, विष उतारने की औषधि उतरने योग्य स्थान, किसी पदार्थकी मोटाई का क्रम से कम होना, समुद्र की भाटा, पानीमें हलकर पार करने का स्थान, एक टोटका, न्योछावर, अनुसरण, उतारन, प्रतिलेख, **उतार चढाव**-(हिं॰पुं॰) घटती बढ़ती, भलाई बुराई। **उतारन**-(हिं॰पुं॰) पहिरा हुआ वस्त्र जो पुराना हो गया हो, न्योछावर, उतारा, तुच्छ पदार्थ।
उतारना-(हि॰क्रि) ऊपर से नीचे को लाना, लिखना, प्रतिरूप बनाना, चित्र खींचना, अलगाना, छोड़ना, ठहराना, घुमाना, उधेड़ना, उपजाना, घटाना, अलग करना, टिकाना, तौलना, नदी, पार ले जाना, घुसाना, निकालना, न्योछावर करना, निगल जाना, स्थान से हटाना, बिगाड़ना, रगड़ना, घसना, लूटना, ढीला करना, इकट्ठा करना, भरना, भेजना, अर्क खींचना, नदी पार ले जाना, (हिं॰पुं॰) उतारा, प्रेत बाधा या ग्रह शान्ति के लिये कुछ पदार्थ किसी के शरीर के चारो ओर घुमाकर चौरहे या नदी किनारे लेजाकर रखना, संस्थान, पड़ाव, नदी पार करने का स्थान, प्रतिलेख, निष्कर भूमि (वि॰) उतार हुआ।
उतारू-(हि॰वि॰) उतरनेवाला, उद्यत।
उताल-(हि॰क्रि॰वि॰) जल्दीसे चटपट (स्त्री॰) वेग, शीघ्रता।
उतलता-(हिं॰स्त्री॰) शीघ्रता।
उताली-(हिं॰वि॰) देखो उताल।
उतावल-(हि॰स्त्री॰) व्यग्रता, बेचैनी, साहस, शीघ्रता, (क्रि॰वि॰) शीघ्रता से, **उतावला**-(हिं॰वि॰) जल्दी करने वाला, व्यग्र, घबड़ाया हुआ। **उतावली**-(हि॰स्त्री॰) शीघ्रता, जल्दी, व्यग्रता, चपलता, **उताहल**-(ह॰क्रि॰ वि॰) जल्दी से।
उतृण-(हि॰वि॰) उऋण, ऋण मुक्त, उपकार का बदला चुकाने वाला।
उत-(हि॰क्रि॰वि॰) उधर, वहाँ पर।
उत्कट-(स॰वि॰) तीव्र, व्यग्र, मतवाला, अधिक, श्रेष्ठ, विषम, कठिन, क्षुद्र, विकट।
उत्कटा-(स॰स्त्री॰) सफेद घुमची।
उत्कण्ठ-(स॰वि॰) ऊपर उठी हुई गरदन वाला।
उत्कण्ठा-(स॰स्त्री॰) उत्सुकता, तीव्र अभिलाषा, शीघ्रता से किसी कार्य को करने की तीव्र इच्छा। **उत्कण्ठित**-(सं॰वि॰) उत्सुक, उद्विग्न, चिन्ता में पड़ा हुआ। **उत्कण्ठिता**-(सं॰स्त्री॰) वह नायिका जो अपने प्रिय के संकेत स्थान पर न आने पर दुःखी होती है।
उत्कम्प-(सं॰पुं॰) कम्प, थरथराहट। **उत्कम्पी**-(स॰वि॰) कपने वाला, झकोरा खाने वाला।
उत्कर्ष-(सं॰पुं॰) श्रेष्ठता, बड़ाई, वृद्धि, प्रशंसा, अधिकता, अभिमान, समृद्धि, **उत्कर्षक**-(सं॰वि॰) उखाड़ने वाला, उन्नति करने वाला। **उत्कर्षण**-(स॰नपुं॰) ऊपर को खिंचाव। **उत्कर्षता**-(सं॰स्त्री॰) उन्नति, बढ़ती, श्रेष्ठता, अधिकता, अभिमान, सौभाग्य। **उत्कर्षित**-(सं॰वि॰) खिंचा हुआ।
उत्कल-उड़ीसा प्रदेश। **उत्कलित**-(सं॰वि॰) खिला हुआ, प्रसन्न, उत्सुक।
उत्का-(हिं॰स्त्री॰) उत्कण्ठिता।
उत्कीर्ण-(स॰वि॰) लगाये हुआ, लिखा हुआ, खोदा हुआ।
उत्कीर्तन-(सं॰नपुं॰) घोषणा, प्रचार, प्रशंसा।
उत्कुण-(सं॰पुं॰) मत्कुण, खटमल, जुवाँ
उत्कृत-(सं॰स्त्री॰) छब्बीस अक्षर का एक छन्द।
उत्कृत-(स॰वि॰) काटा हुआ, खोदा हुआ।
उत्कृष्ट-(सं॰वि॰) श्रेष्ठ, उत्तम, ऊंचे पद का, खींचा हुआ। **उत्कृष्टता**-(सं॰स्त्री॰) श्रेष्ठता, बड़प्पन।
उत्कोच-(सं॰पुं॰) उपायन, घूंस। **उत्कोचक**-(सं॰वि॰) घूस देने वाला।
उत्क्रम-(स॰पु॰) व्यतिक्रम, विपरीत भाव
उत्क्रान्त-(सं॰वि॰) उभड़ा हुआ, लाँघा हुआ। चला गया, गत।
उत्क्रान्ति-(सं॰स्त्री॰) उल्लंघन, उभाड़, आगे बढ़ने की स्थिति।
उत्क्राम-(सं॰पु॰) उद्गमन, उलटपुलट।
उत्क्रोश-(सं॰पुं॰) चिल्लाहट, कोलाहल।
उत्क्षिप्त-(सं॰वि॰) उछाला हुआ, हटाया हुआ।
उत्खनन-(सं॰नपु॰) खोदने का काम। **उत्खाता** खोदने वाला।
उत्तंग-(हिं॰वि॰) ऊंचा।
उत्तंस-(सं॰पु॰) कानका एक आभूषण
उत्त-(सं॰पुं॰) आश्चर्य, सन्देह।
उत्तप्त-(सं॰वि॰) तपा हुआ, गरम, सन्तप्त, चिन्तित, दुःखी।
उत्तम-(सं॰वि॰) उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, बढ़िया, **उत्तमता**-(सं॰स्त्री॰) श्रेष्ठता, बड़ाई, भलाई, **उत्तमताई**-(हिं॰स्त्री॰) उत्तमता। **उत्तमतया**-(स॰क्रि॰वि॰) भली भाँति, अच्छी तरह से। **उत्तमपद**-(स॰पुं॰) ऊंचा स्थान या पद। **उत्तमपुरुष**-(सं॰पुं॰) श्रेष्ठ मनुष्य, व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलने वाले पुरुष के लिये प्रयोग होता है।
उत्तमर्ण-सं॰पु॰) ऋणदाता, ऋण देने वाला महाजन।
उत्तमा-(सं॰स्त्री॰) वह नायिका जो प्रियतम के सर्वदा हितकारिणी रहती है।
उत्तमाङ्ग-(सं॰पुन॰) मस्तक, सिर, मुख
उत्तमाधम-(स॰वि॰) उच्च नीच, भला बुरा।
उत्तमोत्तम-(स॰वि॰) अच्छा से अच्छा
उत्तम्भ-(सं॰पु॰) निवृत्ति, अवलम्ब, सहारा। **उत्तम्भित**-(स॰वि॰) रोका हुआ, पकड़ा हुआ।
उत्तर-(स॰नपु॰) प्रतिवाक्य, ऊपरी तल, मिली हुई वस्तुका अन्तिम भाग, बड़ाई, फल, एक प्रकार की गीत, (वि॰) ऊंचा, बड़ा, प्रधात, उत्तरी, बायां, पिछला, ऊपर का, बादका; (क्रि॰वि॰) पीछे, बाद में। (सं॰ स्त्री॰) दक्षिण के सामने की दिशा, उत्तरा। **उत्तर काण्ड**-(सं॰न॰) पुस्तक का शेषांश। **उत्तरकाय**-(सं॰पुं॰) शरीर का ऊपरी भाग। **उत्तरकाल**-(स॰पु॰) भविष्य काल। **उत्तर कोशल**-(सं॰) अयोध्या प्रदेश। **उत्तर क्रिया**-(स॰स्त्री॰) उत्तर काल का कार्य, अन्त्येष्टि क्रिया।
उत्तरङ्ग-(सं॰नपुं॰) देखो उतरंग।
उत्तरण-(स॰ नपुं॰) नदी के पार जाना, उतराई।
उत्तरदाता-(सं॰पुं॰) जिसको किसी कार्य बिगड़ने बनने पर भले बुरे का उत्तर देना पड़े। **उत्तरदायक**-(सं॰वि॰) प्रत्युत्तरदाता, प्रश्न का उत्तर देनेवाला। **उत्तरदायित्व**-(स॰नपु॰) भारवाहिता, **उत्तरदायी**-(स॰वि॰) भारवाहक। **उत्तरपक्ष**-(सं॰पुं॰) शास्त्रार्थ में विचार पक्ष जो पूर्वपक्ष के सिद्धान्त को काट डालता है, कृष्णपक्ष। **उत्तरपट**-(सं॰पुं॰) उपरना, ओढ़ना। **उत्तरपथ**-(सं॰पुं॰) उत्तरीयमार्ग, देवयान। **उत्तरपद**-(सं॰नपुं॰) किसी समास का अन्तिम पद। **उत्तर प्रत्युत्तर**-(सं॰नपुं॰), वादाविवाद, झगड़ा। **उत्तर फाल्गुनी**-(सं॰स्त्री॰) बारहवां नक्षत्र। **उत्तरभाद्रपद**-(सं॰पुं॰) छब्बीसवां नक्षत्र। **उत्तरमीमांसा**-(सं॰स्त्री॰) वेदान्त दर्शन, ब्रह्मसूत्र। **उत्तरवादी**-(स॰वि॰) प्रतिवादी **उत्तरसाधक**-(सं॰वि॰) बचे हुए काम को पूरा करनेवाला, सहायक।
उत्तरा-(सं॰स्त्री॰) विराटराज की कन्या जिसका विवाह अभिमन्यु से हुआ था। **उत्तराखण्ड**-(स॰नपुं॰) हिमालय पर्वत के पास का उत्तरीय भाग। **उत्तराधिकार**-(स॰पुं॰) सम्पत्ति का क्रमिक सत्व, बपौती। **उत्तराधिकारी**-(सं॰पुं॰) सम्पत्ति के पूर्व स्वामी के मरने पर जो इसका अधिकारी हो, **उत्तराफल्गुनी**-(सं॰ स्त्री॰) बारहवां नक्षत्र। **उत्तराभाद्रपद**-(सं॰पु॰) छब्बीसवां नक्षत्र। **उत्तराभास**-(सं॰पुं॰) दुष्ट उत्तर, झूठा या अंडबंड उत्तर। **उत्तरायण**-(सं॰नपुं॰) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन, मकर संक्रान्ति से छ महीने तक का समय। **उत्तरायणी**-(सं॰स्त्री॰) संगीत में मूर्छना का एक भेद। **उत्तरार्ध**-(स॰नपुं॰) पीछे का आधा भाग, शेषार्ध। **उत्तराषाढा**-(सं॰स्त्री॰) इक्कीसवां नक्षत्र। **उत्तरीय**-(सं॰ नपु॰) उपरना, ओढ़नी, चद्दर, (वि॰) उत्तर दिशा सम्बन्धी।
उत्तरोत्तर-(स॰वि॰) एक के बाद दूसरा, अधिक से अधिक; (अव्य॰) क्रमक्रम से, धीरेधीरे (नपुं॰) प्रतिवचन, वार्तालाप, अनुक्रम।
उत्ता-(हिं॰वि॰) देखो उतना।
उत्तान-(सं॰वि॰) मुंह ऊपर किया हुआ, चित, सीधा फैला हुआ, खुला हुआ। **उत्तानपाद**-(सं॰पुं॰) स्वयंभू मनु के पुत्र और ध्रुव के पिता।
उत्ताप-(स॰पु॰) उष्णता, गरमी, तपन, दुःख, चिन्ता, उत्तेजना, शोक, चेष्टा, प्रयत्न। **उत्तापन**-(सं॰नपुं॰) गरम करने का काम। **उत्तापित**-(स॰वि॰) तपाया हुआ, गरम किया हुआ। दुःख पाया हुआ।
उत्तारक-(सं॰वि॰) पार लगाने वाला
उत्ताल-(स॰वि॰) श्रेष्ठ, उत्कट, भारी, तीव्र, कठिन।
उत्तीर्ण-(सं॰वि॰) उतरा हुआ, पार गया हुआ, निकला हुआ, लांघा हुआ, निकला हुआ, लांघा हुआ, उपस्थित, कृतकार्य, परीक्षा में सफल, मुक्त, छूटा हुआ।
उत्तुङ्ग-(सं॰वि॰) बहुत ऊंचा। **उत्तुङ्गता**-(स॰स्त्री॰) ऊंचाई।
उत्तू-(हिं॰पुं॰) चुन्नन, कपड़े में चुन्नन तथा बेल बूटा काढ़ने का काम। **उत्तूगर**-कपड़े में चुनन डालने वाला।
उत्तेजक-(सं॰वि॰) प्रोत्साहक, उसकाने वाला। **उत्तेजन, उत्तेजना**-(सं॰) प्रोत्साहन, प्रेरणा, भड़काव, बढ़ावा, धमकी, तीव्र करने का काम। **उत्तेजित**-(स॰वि॰) प्रेरित, उभाड़ा हुआ, भड़काया हुआ।
उत्तोलन-(स॰नपुं॰) उठाव, चढाव, तौलना। **उत्तोलित**-(सं॰वि॰) उठाया हुआ, चढाया हुआ।
उत्थवना-(हिं॰क्रि॰) आरंभ करना, उठाना, लगाना।
उत्थान-(सं॰नपुं॰) ऊंचा होने की स्थिति, उद्यम, उन्नति, उठाव, निकास, युद्ध, त्याग, सीमा।
उत्थापक-(सं॰वि॰) उत्तेजक, उभाड़ने वाला।
उत्थानि-(हिं॰स्त्री॰) आरम्भ।
उत्थापन-(सं॰नपुं॰) उठान, भड़काव, प्रबोधन, हिलाना, जगाना, गणित के प्रश्न का उत्तर निकालना।
उत्थापित-(स॰वि॰) प्रेरित, प्रबोधित, उठाया हुआ, उभाड़ा हुआ।

उत्थित-(सं०वि०) उपजा हुआ, निकला हुआ, फैला हुआ ।
उत्पतन-(सं०नपु०) उत्थान, उदय, उत्पत्ति ।
उत्पत्ति-(सं०स्त्री०) उद्भव, जन्म, उपज, आरम्भ, सृष्टि, लाभ ।
उत्पन्न-(सं०वि०) जात, जन्मा हुआ, प्राप्त, पाया हुआ ।
उत्पल-(सं० नपु०) पद्म, सरसिज, कमल ।
उत्पाट-(सं०पु०) उत्पात, उखाड़ ।
उत्पाटन-(सं०नपुं०) उन्मूलन, उखाड़ ।
उत्पाटित-(सं०वि०) उखाड़ा हुआ ।
उत्पात-(सं०पु०) अशुभ सूचक दैवी-दुर्घटना, उपद्रव, उड़ान, उछाल, हलचल, **उत्पात केतु**-(सं०पु०) उल्कापात । **उत्पाती**-(सं०वि०) उपद्रव करनेवाला, उधम मचाने वाला,
उत्पादक-(सं० वि०) उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला ।
उत्पादन-(सं०नपुं०) उत्पन्न करना, पैदा करना ।
उत्पादित-(सं०वि०) उत्पन्न किया हुआ,
उत्पीड़-(सं०पुं०) मदिरा की झाग, फेन, बाधा, कष्ट, **उत्पीड़न**-(सं० नपु०) उत्तेजना, भड़काव, प्रवर्तन, अधिकता, बढती, उपद्रव ।
उत्प्रेक्षण-(सं०नपु०) ऊर्ध्व दृष्टि, संभावना ।
उत्प्रेक्षा-(सं०स्त्री०) उपेक्षा, आरोप उलटा विचार, एक काव्यालङ्कार जिसमे प्रस्तुत वस्तु में अन्य प्रकार की संभावना की जाती है । **उत्प्रेक्षित**-(सं०वि०) सदृश किया हुआ, मिलाया हुआ । **उत्प्रेक्षोपमा**-(सं० स्त्री०) वह अलंकार जिसमें किसी एक वस्तु के गुण का अनेक वस्तुओं में पाया जाना वर्णन किया जाता है ।
उत्प्लवन-(सं०नपुं०) उछल कूद ।
उत्फुल्ल-(सं० वि०) प्रफुल्ल, खिला हुआ, उताना, चित ।
उत्स-(हिं०पुं०) स्रोत, सोता ।
उत्सङ्ग-(सं०पुं०) क्रोड, अङ्क, गोद, पहाड़ की चोटी, ऊपरी भाग, बीच का भाग, अटारी, संगम, मिलाप, आलिंगन, विवाह, गर्भ ।
उत्सन्न-(सं०वि०) उखड़ा हुआ, नष्ट, बढा हुआ ।
उत्सर्ग-(सं०पुं०) त्याग, दान, न्याय, समाप्ति, **उत्सर्गी**-(सं०वि०) त्यागी, तर्क करने वाला ।
उत्सर्जन-(सं०नपुं०) दान,
उत्सर्पण-(सं०नपु०) ऊर्ध्व गमन, चढाव, उल्लघन, त्याग, दान ।
उत्सर्पिणी-(सं०स्त्री०) जैनमत के अनुसार काल का वह विभाग जिसमें जीवों की आयु, शरीर, सम्पत्ति, सुख आदि की क्रम क्रम से वृद्धि होती है ।
उत्सर्पी-(सं०वि०) ऊर्ध्वगामी, ऊपर को चढ़ा हुआ ।
उत्सव-(सं०पुं०) आनन्द जनक व्यापार, आनन्द, अभ्युदय, उन्नति, पर्व त्योहार ।
उत्सवशाली-(सं०वि०) उत्सव का स्थान
उत्सादक-(सं०वि०) नाश करने वाला ।
उत्सार-(हिं०वि०) नाश करने वाला ।
उत्साह-(सं०पु०) उद्यम, हर्ष, कल्याण, उमंग, वीर रस का स्थायी भाव ।
उत्साही-(सं०वि०) उत्साह रखनेवाला
उत्सुक-(सं०वि०) उत्कण्ठित, इच्छुक, चाहने वाला, व्याकुल, **उत्सुकता**-(सं०स्त्री०) व्याकुलता, प्यार, पछतावा
उत्सृष्ट-(सं०वि०) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ।
उत्सेक-(सं०पु) अहंकार, वृद्धि, घमण्ड ।
उत्सेकी-(सं०वि०) अहंकारी, घमण्डी ।
उत्सेध-(हिं०पु०) उन्नति ।
उथपना-(हिं०क्रि०) उठाना, निकालना, हटाना ।
उथल-(हिं०वि०) तुच्छ, छिछोरा, भेदको गुप्त न रखने वाला । **उथलना**-(हिं०क्रि०) चलायमान होना, स्थिर न रहना, डाँवाडोल होना । **उथल-पुथल**-(हिं०स्त्री०) उलटपुलट, क्रम का भंग, (वि०) विपर्यस्त, अन्डबन्ड ।
उथला-(हिं०वि०) कम गहरा, छिछला
उथलाना-(हिं० क्रि०) इधर उधर लगाना, गड़बड़ करना ।
उद्-(सं०अव्य०) यह शब्द ऊपर, अभाव दोष, उत्कर्ष, आश्चर्य, प्रकाश, शक्ति प्राधान्यादि अर्थ में उपसर्ग की तरह संज्ञा तथा क्रिया के पहिले लगता है ।
उदंड-(हिं०वि०) देखो उदण्ड ।
उदंत-(हिं०पु०) वृत्तान्त ।
उदउ-(हिं०पुं०) देखो उदय ।
उदक-(सं०नपुं०) जल, पानी, हाथी बांधने की सिकड़ी ।
उदक अद्रि-(हिं०पुं०) हिमालय । **उदककार्य**-(सं०नपुं०) देहशुद्धि, मृतक के निमित्त जल देने कार्य । **उदकक्रिया**-(सं०स्त्री०) शास्त्र विहित द्वारा तर्पण ।
उदकना-(हिं०क्रि०) ऊपर उठना, निकलना, कूदना । **उदकपरीक्षा**-(सं०स्त्री०) जल में डूबा कर शपथ का करना ।
उदगरना-(हिं०क्रि०) भीतर से बाहर निकलना, खुल जाना, प्रकाशित होना, उत्तेजित होना ।
उदगर्गल-(सं०पु०) ज्योतिष संबंधी वह विद्या जिससे यह ज्ञान प्राप्त हो कि किस स्थान पर कितना खोदने पर पानी निकलेगा ।
उदगार-(हिं०पुं०) देखो उद्गार ।
उदगारना-(हिं०क्रि०) बाहर निकालना, उभाड़ना, भड़काना ।
उदगारी-(हिं०वि०) वमन करने वाला ।
उदग्ग-(हिं०वि०) उदग्र, उन्नत, ऊंचा अचण्ड ।
उदग्र-(सं०वि०) विशाल, ऊंचा, दीर्घ, उद्धत ।
उदघटना-(हिं०क्रि०) निकलना, प्रगट होना, खुलना । **उदघाटना**-(हिं०क्रि०) उदघाटन करना, खोलना, प्रकाशित करना ।
उदङ्क-(सं०पुं०) घी तेल इत्यादि रखने का चमड़े का बड़ा पात्र ।
उदजन-अंग्रेजी हाइड्रोजनके लिये पर्याय
उदञ्च-(सं०वि०) ऊपरको घूमा हुआ, पिछला ।
उदण्ड-(हिं०वि०) देखो उद्दण्ड ।
उदथ-(हिं०पु०) सूर्य, सूरज ।
उदधि-(सं०पु०) समुद्र, मेघ, बादल, तट, किनारा, झील, घड़ा; **उदधिराज**-समुद्र; **उदधिसुत**-चन्द्रमा, शङ्ख, अमृत, कमल; उदधिसुता-लक्ष्मी ।
उदन्त-(सं०पुं०) वार्ता समाचार, खबर, (हिं०वि०) दन्तहीन, बिना दाँत का ।
उदपान-(हिं०पु०) कूप के पास का गढ़ा,
उदबर्तन-(हिं०पु०) उबटन, व्यवहार ।
उदपात्र-(सं० नपुं०) जलपात्र, लोटा ।
उदबस-(हिं०वि०) शून्य, सूना, खाली, उजाड़, किसी स्थान से हटाया हुआ । **उदबसना**-(हिं०वि०) किसी स्थान से हटा देना, सूना करना, उजाड़ देना, भगा देना ।
उदबेग-(हिं०पुं०) देखो उद्वेग ।
उदभर-(हिं०वि०) देखो उद्भर ।
उदभट-(हिं०वि०) प्रबल, श्रेष्ठ ।
उदभव-(हिं०पुं०) देखो उद्भव ।
उदभार-(सं०पुं०) मेघ, बादल ।
उदभौन-(हिं०पु०) आश्चर्य, अनोखी बात ।
उदमदना-(हिं०क्रि०) उन्मत्त होना, पागल होना ।
उदमाद-(हिं०पुं०) देखो उन्माद ।
उदमादी-(हिं०वि०) उन्मत्त, मतवाला ।
उदमान-(हिं०वि०) उत्मत्त ।
उदमानना-(हिं०क्रि०) उन्मत्त होना, पागल बनना ।
उदय-(सं० पुं०) मंगल, दीप्ति, लाभ, उन्नति, वृद्धि, उदयाचल पर्वत ; **उदयगिरि**-(सं०पु०) उदयाचल पर्वत
उदयन-(सं०पुं०) अगस्त्य, उत्थान, निकास, उठान, अन्त, वत्सराज उदकाचार्य ।
उदयना-(हिं०क्रि०) उदय होना ।
उदयाचल-(सं०पुं०) देखो उदय पर्वत ।
उदयातिथि-(सं०स्त्री०) जिस तिथि में सूर्य उदय होते हैं ।
उदयाद्रि-(सं०पु०) देखो उदयाचल ।
उदर-(सं०नपुं०) जठर, पेट, किसी पदार्थ का मध्य, या भीतरी भाग । **उदर ज्वाला**-अठराग्नि, भूख ।
उदरना-(हिं०क्रि०) ओदरना, टुकड़े टुकड़े होना । **उदर परायण**-(सं० वि०) पेटू, भुक्खड़ । **उदर पिशाच**-(सं०वि०) सर्वान्न भक्षण, सब प्रकार की चीज़ खाने वाला ।
उदरिणी-(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।
उदर्क-(सं०पु०) उत्तर काल, भविष्य फल
उदवना-(हिं०क्रि०) उदय होना, देख पड़ना ।
उदवासना-(हिं०क्रि०) उजाड़ना, भगादेना
उदवेग-(हिं०पु०) देखो उद्वेग ।
उदसना-(हिं०क्रि०) उखड़ना, नष्ट होना
उदस्त-(सं०वि०) फेका हुआ, निकाला हुआ
उदात्त-(सं०वि०) ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ, समर्थ, दाता, देने वाला, सुन्दर प्रिय, बड़ा; (पुं०) मुख के अर्ध भाग से उच्चारण किया हुआ स्वर, एक प्रकार का बाजा, एक अलङ्कार जिसमें किसी के संभावित का बढ़ाकर वर्णन किया जाता है ।
उदान-(सं०पुं०) कण्ठवायु जो गले से निकल कर सिर पर जाती है ।
उदाम-(हिं०पुं०) देखो उद्दाम ।
उदायन-(हिं०पु०) उद्यान, बगीचा ।
उदार-(सं०वि०) दाता, देने वाला, ऊचा, बड़ा, श्रेष्ठ, गम्भीर, सरल, सीधा, महात्मा, शिष्ट, अनोखा, एक काव्यालङ्कार जिसमें निर्जीव पदार्थ में शिष्टता दिखलाई जाती है । **उदार चरित**-शीलवान्, उदार चित्त का । **उदारता**-(सं०स्त्री०) दानशीलता, उच्च विचार ।
उदारना-(हिं०क्रि०) ओदरना, गिराना, तोड़ना ।
उदाराशय-(हिं०वि०) उच्च विचार का
उदावर्त-(सं०पु०) पेट का एक रोग जिसमें मलमूत्र निकलने में बहुत कष्ट होता है ।
उदारा-संगीत शास्त्र के अनुसार नाभि से उठने वाला सप्तक ।
उदास-(सं०पु०) विराग, उपेक्षा, (वि०) उदासीन, विरक्त, दुःखी, निरपेक्ष, तटस्थ । **उदासना**-(हिं०क्रि०) उठाना समेटना, लपेटना ।
उदासिल-(हिं०वि०) उदासीन ।
उदासी-(सं०पुं०) विरक्त पुरुष, संन्यासी, त्यागी, नानकपंथी साधु (हिं०स्त्री०) खिन्नता, दुःख, **उदासीन**-(सं०वि०) वैरागी, तटस्थ, झगड़े में न पड़ने वाला, अपरिचित, निराला, निष्पक्ष, सम्पर्क रहित, अपरिचित व्यक्ति । **उदासीनता**-(सं०स्त्री०) त्याग, खिन्नता, उदासी ।
उदाहट-(हिं०स्त्री०) नीले रंग में लाली की आभा ।
उदाहरण-(सं०नपु०) दृष्टान्त, न्याय के अनुसार साध्य साधर्म्य से धर्मादि का प्रकाशन, कथा असग, नाटक का गर्भाङ्क ।
उदाहृत-(सं०वि०) वर्णन किया हुआ, कहा हुआ ।
उदित-(सं०वि०) उन्नत, उठा हुआ, चढा हुआ, उत्पन्न, निकला हुआ, प्रादुर्भूत, कहा हुआ, स्वच्छ, प्रसन्न, ज्योतिष के अनुसार राशि का

उदय । **उदित यौवना**-(सं०स्त्री०) मुग्धा नायिका का एक भेद ।
उदियाना-(हिं०क्रि०)व्यग्र होना,घबड़ाना।
उदीची-(सं०स्त्री०) उत्तर दिशा ।
उदीच्य-(सं०स्त्री०) उत्तर दिशा संबंधी, उत्तर दिशा में रहने वाला।
उदीपन-(हिं०पुं०) देखो उद्दीपन ।
उदीरित-(सं०वि०) कहा हुआ, समझाया हुआ, भेजा हुआ ।
उदीर्ण-(सं०वि०) उदित,चढा हुआ,प्रबल
उदुआ-(हिं०पुं०)एक प्रकार का चावल
उदुम्बर-(सं०पु०) गूलर,देहली,चौखट, नपुंसक, एक प्रकार का कुष्ट रोग, दो तोले की तौल ।
उदूखल-(सं०नपुं०) देखो उलूखल ।
उदेग-(हिं०पुं०) देखो उद्वेग ।
उदै, उदो-(हिं०पु०) देखो उदय ।
उदोत-(हिं०पुं०) उद्योत, प्रभा, प्रकाश, (वि०) प्रकाशित. चमकीला, स्वच्छ, शुभ्र; **उदोतकर**-प्रकाश देनेवाला ।
उदोती-(हिं०वि०) प्रकाश देनेवाला ।
उदौ-(हिं०पुं०) देखो उदय ।
उद्गत-(सं०वि०) उत्पन्न, उदित, निकला हुआ, फेंका हुआ ।
उद्गता-(सं०स्त्री०) विषमवृत्ति छन्द का एक भेद ।
उद्गति-(सं०स्त्री०) उदय,उत्पत्ति,उपज। **उद्गम**-(सं०पु०) उत्थान, उत्पत्ति, उत्पत्ति का स्थान, ऊर्ध्वगति, नदी के निकलने का स्थान ।
उद्गाता-(सं०पु०)सामवेद का ऋत्विक्
उद्गाथा-(सं०स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद ।
उद्गार-(सं०पुं०) वमन, उलटी, डेकार, टपकाव, चुनाव, थूक,उच्चारण, बढ़ती, बाढ़, अधिकता ।
उद्गीत-(सं०वि०) ऊंचे स्वर में गाया हुआ। **उद्गीति**-(सं०स्त्री०) ऊंचे स्वर में गाना, आर्या छन्द का एक भेद ।
उद्गीथ-(सं०पुं०) सामवेद के गायन का एक अवयव ।
उद्गीर्ण-(हिं० पु०) वमन व्यक्त करने की क्रिया ।
उद्ग्रीव-(सं०वि०) गरदन उठाये हुए ।
उद्गीर्ण-(सं०वि०) कहा हुआ, निकला हुआ ।
उद्घटन-(सं०नपुं०) आघात, रगड़ ।
उद्घटित-(सं०वि०) उन्मुक्त, खुला हुआ। **उद्घाट**-(सं०पु०) पहरा, चौकी, चुंगीघर । **उद्घाटक**-(सं०पुं०) खोलने वाला, कुंजी । **उद्घाटन**-(सं०नपुं०) प्रकाशन, प्रगट करना, उन्मोचन, खोलाई । **उद्घाटित**-(सं०वि०) प्रकाशित, खोला हुआ, उठाया हुआ ।
उद्घात-(सं०पु०) निदर्शन, दिखाव, सूचना, आरम्भ, बाधा, ठोंकर, आघात । **उद्घातक**-(सं०वि०) ठोंकर मारने वाला, (पुं०) नाटक की प्रस्तावना जिसमें कोई पात्र सूत्रधार या नटी को बात सुनकर दूसरा अर्थ जोड़ता है ।
उद्दण्ड-(सं०वि०) प्रचण्ड, अक्खड़, बखेड़िया, उद्धत ।
उद्दान्त-(सं०वि०) अति शान्त, बहुत दबा हुआ ।
उद्दाम-(सं०वि०) उच्छृंखल, निरंकुश, उद्दण्ड, स्वतन्त्र, दीर्घ, बड़ा, असीम, उत्कट (पु०) वरुण, यम ।
उद्दालक-(सं० पु०) एक ऋषि का नाम ।
उद्दिम-(हिं०पु०) देखो उद्यम ।
उद्दिष्ट-(सं०वि०) समझाया हुआ, दिखलाया हुआ, लक्ष्य किया हुआ, ढूंढा हुआ (पु०) छन्द में मात्रा प्रस्तार के भेद का वर्णन ।
उद्दीपक-(सं०वि०) प्रकाश देनेवाला, उत्तेजक, उभाड़ने वाला ।
उद्दीपन-(सं०नपु०) प्रकाश, उत्तेजन, बढ़ावा, काम क्रोधादि को बढ़ाने का काम, अलंकार में शृङ्गार रस को बढाने वाली वस्तु ।
उद्दीप्त-(सं०वि०) प्रज्वलित, बढा हुआ
उद्देश-(सं०पु०) अभिलाषा, लक्ष्य, इशारा, अनुसन्धान, उपदेश, वार्ता, नाम कथन, हेतु, संक्षेप, उदाहरण ।
उद्देश्य-(सं०वि०) लक्ष्य, मतलब का, कहने योग्य, वांच्छित अर्थ,इष्ट (नपुं०) विशेष्य, तात्पर्य, मन्सा, मतलब ।
उद्दोत-(हिं०वि०) देखो उद्योत ।
उद्दोतिताई-(हिं० स्त्री०) प्रकाश ।
उद्ध-(हिं०क्रि०वि०) ऊर्ध्व, ऊपर ।
उद्धत-(सं०वि०) उत्कट, उग्र, प्रचण्ड, भड़काया हुआ, अविनीत, अक्खड़ ।
उद्धतपन-(सं०पु०) उग्रता, प्रचण्डता, अक्खड़पन
उद्धना-(हिं०क्रि०) उड़ना, फैलाना ।
उद्धम-(हिं०वि०) देखो उत्तम ।
उद्धरण-(सं०नपुं०) उद्धार, छुटकारा, ऋण का चुकाना, उखाड़ उठाव, अलगाव, पढ़े हुये पाठ का दोहराव, किसी लेख के अंश का वैसा ही भाग दूसरे लेख में भरना, व्यसनों से मुक्त होना ।
उद्धरणी-(हिं०स्त्री०) पढ़े हुए पाठ को दोहराने का कार्य । **उद्धरणीय**-(सं०वि०) ऊपर चढने योग्य ।
उद्धरना-(हिं०क्रि०) उद्धार करना, बचाना, उबारना ।
उद्धर्षिणी-(सं०स्त्री०) वसन्ततिलका नामक वर्णवृत्त का भेद ।
उद्धव-(सं०पु०) यज्ञ की अग्नि, उत्सव।
उद्धार-(सं०पु०) मुक्ति, छुटकारा, समाज से निकाले हुए पुरुष का पुनर्ग्रहण, सुधार,उन्नति,ऋणमुक्ति ।
उद्धारक-(सं०वि०)उद्धार करने वाला।
उद्धारना-(हिं०क्रि०) उद्धार करना, छोड़ाना । **उद्धारित**-(सं०वि०) उद्धार किया हुआ, छोड़ाया हुआ ।
उद्ध्वंस-(सं०पु०) भङ्ग,फटन । **उद्धृत**(सं०वि०) ज्यों का त्यों लिया हुआ ।
उद्ध्वस्त (सं०वि०) नष्ट,टूटा फूटा ।
उद्बद्ध(सं०वि०) ऊपर बँधा हुआ, टँगा हुआ । **उद्बन्धन**-(सं०नपु०) गले में फाँसी लगाकर टंग जाना ।
उद्बाहु-(सं०वि०) ऊर्ध्वबाहु, हाथ ऊपर उठाये हुए ।
उद्बुद्ध-(सं०वि०) खिला हुआ, फूला हुआ, प्रबुद्ध, उदित, उठा हुआ, जागा हुआ, चैतन्य, उद्दीपित, ज्ञान प्राप्त किया हुआ ।
उद्बुद्धा-(सं०स्त्री०) परकीया नायिका जो अपनी इच्छा से परपुरुष से स्नेह बढ़ाती है ।
उद्बोध-(सं०पुं०) अल्प ज्ञान, थोड़ा समझ, भूली हुई बात की याद ।
उद्बोधक-(सं०वि०)जागृत करनेवाला, चेताने वाला, प्रकाशक, सूचित करने वाला, उद्दीपक । **उद्बोधन**-(सं० नपु०) ज्ञान कराना, चेताना, याद दिलाना, जागना । **उद्बोधिता**-(सं०स्त्री०) वह परकीया नायिका जो परपुरुष के प्रेम दिखलाने पर उसपर मुग्ध होती है ।
उद्भट-(सं०वि०) श्रेष्ठ, बड़ा प्रबल, उदार,उच्च आशय का (पु०)कछुआ, सूप, सूर्य ।
उद्भव-(सं०पुं०) उत्पत्ति, वृद्धि, जन्म,
उद्भाव-(सं०पु०) उत्पत्ति, चित्त की उदारता । **उद्भावना**-(सं०स्त्री०) कल्पना, उत्पत्ति ।
उद्भास-(सं०वि०) प्रकाश,चमक, शोभा।
उद्भासमान-(हिं०वि०) प्रकाशवान् ।
उद्भासित-(सं०वि०) शोभित, सजाया हुआ, विदित, प्रगट किया हुआ ।
उद्भिज-उद्भिज्ज-(सं०वि०) भूमि को भेदकर जन्म लेने वाला, वनस्पति, वृक्ष,लता इत्यादि । **उद्भिद् विद्या**-(सं०स्त्री०) वनस्पति शास्त्र ।
उद्भिन्न-(सं०वि०) उत्पन्न,तोड़ा हुआ, निकला हुआ ।
उद्भूत-(सं०वि०) ऊंचा,देख पड़नेवाला।
उद्भेद-(सं०पु०) फोड़कर निकलना, उदय, आविष्कार, प्रकाशन, उद्घाटन, रोमांच, मिलाप, अंकुर, अलंकार का वह भेद जिसमे चतुराई के साथ गुप्त किये हुए विषय को कारणवश प्रकाशित करते हैं ।
उद्भेदन-(सं०नपु०) फोड़ कर निकल आना, प्रकाशन,छेद करके पार जाना ।
उद्भ्रम-(सं०पु०) उद्वेग, व्याकुलता ।
उद्भ्रान्त-(सं०वि०) व्याकुल, भ्रान्तियुक्त, भौचक्का, हतबुद्धि, व्यस्त, चक्कर खाता हुआ, भटका हुआ, उच्छृंखल (पु०) तलवार की फटकार
उद्यत-(सं०वि०) प्रवृत्त, तत्पर, लगा हुआ, प्रस्तुत, उछला हुआ, ताना हुआ, काम करने वाला ।
उद्यम-(सं०पु०) प्रयोग, उद्योग, प्रयत्न, उत्साह, मेहनत, व्यवसाय । **उद्यमित**-(सं०वि०) यत्न से किया हुआ ।
उद्यमी-(सं०वि०) उद्योगी, तत्पर, प्रयत्न करने वाला ।
उद्यान-(सं०नपुं०) बगीचा, उपवन
उद्यापन-(सं०नपु०) आरंभ, किसी व्रत के समाप्त होने पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य ।
उद्यापित-(सं०वि०) पूर्ण किया हुआ ।
उद्याम-(सं०पुं०) रज्जू, रस्सी ।
उद्योग-(सं०पु०) प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, उद्यम, । **उद्योगी**-(सं०वि०) उद्योग करने वाला, उत्साही,
उद्योजक-(सं०वि०) प्रवर्तक, काम में लगाने वाला ।
उद्योत-(सं०पुं०) प्रकाश, चमक, उजाला ।
उद्रिक्त-(सं०वि०) फूटा हुआ, चिह्नित
उद्रेक-(सं०पुं०) बढ़ती, वृद्धि, अधिकता, उपक्रम, आरंभ, वह काव्यालकार जिसमें एक वस्तु दूसरे से बहुत तुच्छ दिखाई जाती है ।
उद्वमन-(सं०नपुं०) वान्ति, ।
उद्वर्तक-(सं०वि०) बढ़ाने वाला ।
उद्वर्तन-((सं०नपु०) विलेपन, उबटन ।
उद्वर्तित-(सं०वि०) आकर्षित, सुगन्धित किया हुआ ।
उद्वह-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा, सात वायु में से एक जो प्रवह वायु पर रहता है
उद्वहन-(सं०नपु०) कन्धे पर बोझा ढोना, आकर्षण, खिंचाव, विवाह, लवाई का काम ।
उद्वहा-(सं०स्त्री०) पुत्री, बेटी ।
उद्वास-(सं०पुं०) अपने स्थान को छोड़ कर अस्त होना । **उद्वासन**-(सं०नपु०) संस्कार का एक भेद, विसर्जन, खदेड़ना, भगाना, रहने के स्थान से हटाना, मारण, वध ।
उद्वाह-(सं०पुं०) विवाह, ।
उद्वाहन-(सं०नपुं०) उठाव, छोड़ने का काम, चिन्ता, हटाना, ऊपर ले जाना, विवाह ।
उद्वाहनी-(सं०स्त्री०) कोड़ा, रस्सी ।
उद्वाहिक-(सं०वि०) विवाह सम्बन्धी ।
उद्वाहित-(सं०वि०) विवाह किया हुआ ।
उद्वाहिनी-(सं०स्त्री०) देखो उद्वाहनी ।
उद्विग्न-(सं०वि०) व्याकुल, चिन्तित, व्यग्र, घबड़ाया हुआ । **उद्विग्नता**-(सं०स्त्री०) घबड़ाहट, व्याकुलता ।
उद्वीक्षण-(सं०नपुं०) ऊर्ध्व दृष्टि,ऊपर की ओर दृष्टि ।
उद्वृत्त-(सं०वि०) उत्तोलित, दुर्वृत्त, व्यग्र, घबड़ाया हुआ ।
उद्वेग-(सं०पु०) चित्त की व्याकुलता, घबड़ाहट, चिन्ता, भय, आश्चर्य, चमत्कार । **उद्वेगी**-(सं०वि०) चिन्ताकारक, चिन्तित ।
उद्वेजक-(सं०वि०) दुःखदायी, कष्ट देने वाला ।
उद्वेजित-(सं०वि०)व्यग्र, घबड़ाया हुआ।

उघड़ना-(हिं०क्रि०) उचड़ना, खुलना, उजड़ना, छूट जाना, नष्ट होना, बेंत पड़ना ।

उघम-(हिं०पुं०) देखो ऊधम ।

उघर-(हिं०क्रि०वि०) वहाँ, उस ओर ।

उघरना-(हिं०क्रि०) उद्धार होना, छूटना, अलग होना, उद्धार करना, छोड़ाना । **उघराना**-(हिं०क्रि०) हवा से उड़कर बिखर जाना, मदोन्मत होना ।

उघलना-(हिं०क्रि०) मस्त होना, कामातुर होना, नष्ट होना, बिगड़ना, पर पुरुष के साथ भाग जाना ।

उघली-(हिं०स्त्री०) व्यभिचारिणी, छिनाल ।

उधाड़-(हिं०पुं०) उखाड़, कुश्ती की एक पेंच ।

उधार-(हिं०पु०) ऋण, सूक्ष्म दर्शक, दूर वित्र, टेलिस्कोप, देन, मंगनी, उद्धार, छुटकारा ।

उधारक-(हिं०वि०) देखो उद्धारक ।

उधारना-(हिं०क्रि०)उद्धारकरना,छोड़ना

उधारी-(हिं०वि०) उधार करनेवाला ।

उधेड़ना-(हिं०क्रि०) अलग अलग करना, खोलना, परत अलगाना, उलझना, तोड़ना, सिलाई खोलना, फेंकना, बिखरना,अपमानित करना,काटना ।

उधेड़बुन-(हिं०स्त्री०) चिन्ता, उपाय, युक्ति ।

उधेरना-(हिं०क्रि०) देखो उधेड़ना ।

उन-(हिं०सर्व०) 'उस' का बहुवचन ।

उनंत-(हिं०क्रि०) अवनत, झुका हुआ ।

उनइस-(हिं०वि०) देखो उन्नीस ।

उनका-उनकी षष्ठी का रूप ।

उनचास-(हिं०वि०) चालीस और नव (पुं०) चालीस औरनव की संख्या ४९

उनतीस-(हिं०वि०) एक कम तीस(पुं०) बीस और नव की संख्या २९ ।

उनदा उनदौहाँ-(हिं०वि०) उन्निद्र, निंदाता हुआ ।

उनमद-(हिं०वि०) देखो उन्मत्त ।

उनमाद (हिं०पुं०) देखो उन्माद ।

उनमना-(हिं०पुं०) देखो अनमना ।

उनमाथना-(हिं०क्रि०) उन्मथन करना, मथ डालना । **उनमाथी** (वि०) मथने वाला ।

उनमान-(हिं०वि०) अनुमान, अटकल, सदृश, बराबर (पुं०) नाप, तौल, बल, सामर्थ्य, थाह । **उनमानना**-(हिं०क्रि०) अनुमान करना, **उनमुना**-(हिं०वि०) मूक, मौन, चुपचाप ।

उनमुनी (हिं०स्त्री०) हठयोग का एक आसन ।

उनमूलना-(हिं०क्रि०) जड़ से उखाड़ना

उनमेख-(हिं०पुं०) उन्मेष,आंख खुलना, फूल का खिलना । **उनमेखना**-(हिं० क्रि०) उन्मीलन होना, आँख का खुलना, फूल का खिलना । **उन्मेद**-(हिं०पुं०) प्रथम वर्षाका फेन । **उनरना**-(हिं०क्रि०) उठना, चढ़ना, उभड़ना, कूद फाँद करना ।

उनवना-(हिं०क्रि०) झुकना, लटकना, आच्छादित होना, एकाएक आपड़ना।

उनवर-(हिं०वि०) अल्प, थोड़ा ।

उनवान-(हिं०) देखो अनुमान ।

उनसठ-(हिं०वि०) पचास और नव (पु०) पचास और नव की संख्या ५९

उनहत्तर-(हिं०वि०) साठ और नव (पु०) साठ और नव की संख्या ६९।

उनहार-(हिं०वि०) सदृश,समान, बराबर

उनहारि-(हिं०स्त्री०) समानता, सादृश्य, बराबरी ।

उनाना-(हिं०क्रि०) झुकाना, मोड़ना, लगाना, **उनारना** (हिं०क्रि०) उठाना, उसकाना ।

उनाला-(हिं०पुं०) ग्रीष्मऋतु, गरमी का ऋतु ।

उनासी-(हिं०वि०) देखो उन्नासी ।

उनींद (हिं०स्त्री०) उघाई ।

उनींदा-(हिं०वि०) उन्निद्र, ऊंघता हुआ

उन्इस-(हिं०वि०) देखो उन्नीस ।

उन्नत-(सं०वि०) ऊंचा, उठा हुआ, श्रेष्ठ, बड़ा, समृद्ध, बढ़ा हुआ, उठाया हुआ, प्रतिष्ठित, पूर्ण, भरा हुआ । **उन्नति**-(सं०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, उदय, समृद्धि, ऊंचाई,उभाड़, चढ़ाव, गौरव, प्रतिष्ठा, सौभाग्य ।

उन्नतोदर-(सं०पु०) चाप या वृत्तखण्ड का ऊपरी तल, वह वस्तु जिसका ऊपरी भाग उभड़ा हो ।

उन्नमन-(सं०पु०) उन्नति, उठाव ।

उन्नमित-(सं०वि०) उठाया हुआ, ऊंचा किया हुआ ।

उन्नयन-(सं०नपुं०) उन्नति, अनुमान परामर्श ।

उन्नाद-(सं०पुं०) ऊँचा स्वर,

उन्नायक-(सं०वि०) उठाने वाला, प्रमाण देने वाला । **उन्नायकत्व**-(सं०नपुं०) समझाने या बतलाने का काम ।

उन्नासी-(हिं०वि०) सत्तर और नव (पुं०) एक कम अस्सी की संख्या ७९

उन्निद्र-(सं०वि०) विकसित, फूला हुआ, खिला हुआ, निद्रारहित,जागता हुआ, चमकीला ।

उन्निद्रता-(सं०स्त्री०) निद्रा न आने की स्थिति ।

उन्नीस-(हिं०वि०) दस और नव (पुं०) एक कम बीस की संख्या १९ ।

उन्नीसवां-उन्नीस संख्या रखनेवाला

उन्नीस बिस्वा-अधिकांश, ज्यादातर; **उन्नीस होना**-कुछ कम होना, थोड़ा घटना; **उन्नीस बीस होना**-दो वस्तुओं के तारतम्य में कुछ न्यूनाधिक होना

उन्नेत्र-(सं०वि०)आँख ऊपरकिये हुए ।

उन्मत्त-(सं०वि०) मदान्ध, मतवाला, पागल, बेसुध, बावला । **उन्मत्तता**-(सं०स्त्री०) उन्मत्त होने की स्थिति, पागलपन ।

उन्मथन-(सं०नपुं०) मारकाट, धक्का मुक्की । **उन्मथित**-(सं०वि०) रगड़ा हुआ, मथा हुआ ।

उन्मद-(सं०वि०) उन्मत्त ।

उन्मन-(हिं०वि०) उदाम ।

उन्मनी-(सं०स्त्री०)हठयोग की एकमुद्रा।

उन्माद-(सं०पुं०) उन्मत्तता, पागलपन का रोग ।

उन्मादक-(सं०वि०) उन्माद लाने या पागल करने वाला ।

उन्मादन-(सं०पुं०) उन्मत्त करने का कार्य,कामदेवके पाँच बाणोंमें से एक

उन्मादिनी-(हिं०वि०)उन्माद लाने वाली

उन्मादी-(सं०वि०) उन्मत्त, मतवाला, पागल ।

उन्मादिनी-(सं०स्त्री०) विजया, भांग ।

उन्मान-(सं०नपुं०) परिमाण, मूल्य ।

उन्मार्ग-(सं०पु०) कुपथ, बुरा मार्ग **उन्मार्गगामी**-(सं०वि०) सदाचार, भ्रष्ट, बदचलन । **उन्मार्गी**-(सं०वि०) कुपथ पर चलने वाला ।

उन्मीलन-(सं०नपुं०) विकाश, उन्मेष, आँख का खुलना, विकसित होना, खिलना । **उन्मीलना**-(हिं०क्रि०) आँख खोलना । **उन्मीलित**-(सं०वि०) प्रकाशित, उद्घाटित, खुला हुआ, एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु का प्रकाश रूप वर्णन किया जाता है ।

उन्मुक्त-(सं०वि०) बंधन रहित, खुला हुआ ।

उन्मुख-(सं०वि०) ऊर्ध्वमुख, मुख ऊपर किये हुए, उद्यत, उत्सुक, उत्कण्ठित

उन्मुखता-(सं०स्त्री०) मुख ऊपर रखने का भाव ।

उन्मूल-(सं०वि०) जड़ से उखाड़ा हुआ । **उन्मूलक**-(सं०वि०) निर्मूल करनेवाला,जड़ समेत उखड़ानेवाला, नष्ट करनेवाला । **उन्मूलन**-(सं०नपुं०) जड़ से उखाड़ना, जड़ समेत नष्ट करना । **उन्मूलित**-(सं०वि०) जड़ से उखाड़ा हुआ ।

उन्मेष-(सं०पुं०) प्रकाश, चमक, आँख का खुलना ।

उन्मोचन-(सं०नपुं०) मोचन, खोलाई ।

उन्हानि-(हिं०स्त्री०) सादृश्य, समता, बराबरी ।

उप-(सं०अव्य०) संज्ञा तथा क्रिया में लगाने से अधिकता, समीपता, सादृश्य, सामर्थ्य, व्याप्ति, शक्ति, पूजा, मारण, तथा उद्योग के अर्थ को प्रकाशित करता है ।

उपकण्ठ-(सं०वि०) निकट, पास (नपुं०) समीपता, गाँव की सीमा । **उपकथा**-(सं०स्त्री०) आख्यायिका, कहानी ।

उपकन्या-(सं०स्त्री०) कन्या की सहेली

उपकरण-(सं०नपुं०)सामग्री, सामान, राजा के छत्र, चामर आदि चिन्ह ।

उपकरना-(हिं०क्रि०) उपकार करना, भलाई करना ।

उपकर्णिका-(सं०स्त्री०) काना फुसकी ।

उपकर्ता-(सं०वि०) उपकार करनेवाला

उपकल्पित-(सं०वि०) तैयार किया हुआ, बनाया हुआ ।

उपकार-(सं० पुं०) साहाय्य, मदद, भलाई, अनुग्रह, लाभ । **उपकारक**-(सं०वि०) उपकार करने वाला, भलाई करने वाला । **उपकारकत्व**-(सं०नपुं०) साहाय्य, भलाई **उपकारपर**-(सं०वि०) अनुग्रह करने में लगा हुआ । **उपकारिता**-(सं०स्त्री०) देखो उपकारक । **उपकारी**-(सं०वि०) उपकार करने वाला, लाभ पहुँचाने वाला ।

उपकल-(सं०नपुं०) नदी समुद्र आदि की भूमि का प्रान्त भाग ।

उपकृत-(सं०वि०)उपकार प्राप्त,कृतज्ञ ।

उपकृति-(सं०स्त्री०) उपकार ।

उपकेश-(सं०स्त्री०) बनावटी बाल ।

उपक्रम-(सं०पुं०) कार्यका आरंभ, वृद्धि, उपाय, चिकित्सा, भूमिका, उद्यम, उपस्थिति । **उपक्रमण**-(सं०नपुं०) आरम्भ, चिकित्सा । **उपक्रमणिका**-(सं०स्त्री०) किसी पुस्तक की भूमिका। **उपक्रमणीय**-(सं०वि०) चिकित्सा के योग्य ।

उपक्रोश-(सं०पुं०) निन्दा, अपमान ।

उपक्षेप-(सं०वि०) आक्षेप, एक काव्यालङ्कार ।

उपखान-(हिं०पुं०) देखो उपाख्यान ।

उपगत-(सं०वि०) स्वीकृत, प्राप्त, उपस्थित, ज्ञात, समझा हुआ, जाना हुआ । **उपगति**-(सं०स्त्री०) प्राप्ति, ज्ञान, स्वीकृति ।

उपगम-(सं०पुं०) अंगीकार, स्वीकृति ।

उपगामी-(सं०पुं०) समीप उपस्थित होने वाला ।

उपगीति-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का आर्या छन्द ।

उपगीयमान-(सं० विं०) गान किया जाने वाला ।

उपगूढ़-(सं०वि०) नियन्त्रित, गुप्त, छिपाया, हुआ ।

उपग्रह-(सं०पुं०) बन्धन, उपयोग, अनुग्रह, अप्रधानग्रह-यथा राहु, केतु, किसी बड़े ग्रह के चारो ओर घूमने वाला छोटा ग्रह। **उपग्रहण**-(सं०नपुं०) स्वीकृति ।

उपघात-(सं०पुं०) रोग, विनाश, अपकार, अक्षमता, इन्द्रियों का काम न करना, व्याधि, बुराई । **उपघातक**-(सं०वि०) अनिष्ट करने वाला, पीड़ा देने वाला। **उपघाती**-(हिं०वि०)देखो उपघातक ।

उपंग-(हिं०पुं०) देखो उपाङ्ग ।

उपचक्षु-(सं०नपुं०) उपनेत्र ।

उपचय-(सं०पुं०) वृद्धि, उन्नति, अधिकता, पुष्टि, संग्रह, समूह ।

उपचर्या-(सं०स्त्री०) चिकित्सा,परिचर्या, सेवा ।

उपचार-(सं० पुं०) चिकित्सा, सेवा,

व्यवहार, प्रयोग, उत्कोच, धर्मानुष्ठान, पूजा के उपयोगी द्रव्य का भेद, लक्षण द्वारा अर्थ बोध, छल, धोखा, व्याकरण के अनुसार विसर्ग के स्थान में 'स' या 'र' का आदेश। **उपचारज**-(सं०वि०) सेवा करने वाला, विधान या चिकित्सा करने वाला। **उपचारछल**-(सं०नपुं०) न्यायमत से अशुद्ध प्रयोग से अर्थ का निराकरण।

उपचारना-(हिं०क्रि०) उपचार करना, बरतना।

उपचारपर-(सं०पुं०) दृढ़ सेवक। **उपचारी**-(सं०वि०) उपचार करने वाला (पुं०) सेवक।

उपचित-(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ, जोड़ा हुआ, रचा हुआ, बनाया हुआ।

उपचिति-(सं०स्त्री०) वृद्धि, उन्नति, संग्रह

उपचित्र-(सं०नपुं०) समवृत्त वर्ग के छन्द का भेद। **उपचित्रा**-(पु०स्त्री०) सोलह मात्रा के छन्द का एक भेद।

उपचीयमान-(सं०वि०) संग्रह किया जाने वाला।

उपज-(हिं०स्त्री०) उत्पत्ति, मनगढंत, नई उक्ति, मनमानी तान। **उपजना**-(हिं०क्रि०) उत्पन्न होना, उगना, निकलना, पैदा होना।

उपजाऊ-(हिं०वि०) जिसमें अधिक उपज हो, उर्वरा।

उपजाति-(सं०स्त्री० एक छन्द विशेष जो इन्द्र वज्रा और उपेन्द्रवजा तथा वंशस्थ और इन्द्रवंश के योग से बनता है।

उपजाना-(हिं०क्रि०) उत्पन्न कराना, पैदा करना।

उपज्ञापक-(सं०वि०) प्रोत्साहक, उभाड़ने वाला।

उपजिह्वा-(सं०स्त्री०) जीभ की जड़।

उपजीवक-(सं०वि०) जीविका चलाने वाला, आश्रय देने वाला। **उपजीवन**-(सं०नपुं०) जीविका निर्वाह के लिये किसी का आश्रय। **उपजीविका**-(सं०स्त्री०) उपजीवन। **उपजीवी**-(सं०वि०) आश्रित, वेतन भोगी, दूसरे के आश्रय पर निर्वाह करने वाला।

उपज्ञा-(सं०स्त्री०) जो ज्ञान बिना उपदेश के आता हो, प्राथमिक ज्ञान।

उपटन-(हिं०पु०) चिन्ह, साट, देखो उबटन। **उपटना**-(हिं०क्रि०) उभड़ आना, बनना, हटना, नष्ट होना।

उपटा-(हिं०वि०) नष्टभ्रष्ट (पु०) ठोंकर, धक्का। **उपटाना**-(हिं०क्रि०) उबटन लगवाना, हटवाना, उखड़वाना।

उपटारना-(हिं०क्रि०) जगह से हटा देना, उठाना।

उपटौकन-(हिं०पु०) उपहार।

उपड़ना-(हिं०क्रि०) देखो उपटना।

उपतप्त-(सं०वि०) जला भुना, कष्ट में पड़ा हुआ।

उपताप-(सं०पु०) उत्ताप, रोग, पीड़ा, दुःख। **उपतापक**-(सं०वि०) कष्टदायक

उपत्यका-(सं०स्त्री०) पहाड़ के नीचे की भूमि, घाटी।

उपदंश(सं०पु०) शिश्न (लिंग) में घाव हो जाने का रोग, गरमी।

उपदग्ध-(सं०वि०) थोड़ा जला हुआ।

उपदर्शक-(सं०पुं०) द्वारपाल, पहरेदार

उपदिशा-(सं०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच की दशा।

उपदिष्ट-(सं०वि०) उपदेश प्राप्त किया हुआ, कहा हुआ, प्रदर्शित, आज्ञा दिया हुआ, बतलाया हुआ।

उपदेश-(सं०पु०) परामर्श, आदेश, दीक्षा, शिक्षा, हित की बात, सीख, मन्त्र कथन। **उपदेशक**-(सं०वि०) उपदेश देने वाला, शिक्षक, सिखलाने वाला। **उपदेशनीय**-(सं०वि०) उपदेश देने योग्य। **उपदेश्य**-(सं०वि०) शिक्षा देने योग्य। **उपदेष्टा**-(सं०वि०) उपदेश देने वाला। **उपदेसना**-(हिं०क्रि०) उपदेश देना, शिक्षा देना।

उपद्रव-(सं०पुं०) उत्पात, हलचल, अत्याचार, उधम, आपत्ति, जो व्याधि शरीर के किसी पूर्व स्थित रोग को बढ़ा कर नया कष्ट उत्पन्न करती है। **उपद्रवी**-(सं०वि०) उत्पाती, अत्याचारी, उधम मचाने वाला।

उपद्वीप-(सं०पुं०) छोटा टापू, प्रायद्वीप

उपधरना-(हिं०क्रि०) स्वीकार करना, अपनाना।

उपधर्म-(सं०पुं०) अप्रधान धर्म।

उपधा-(सं०स्त्री०) छल, धोखा, उपाय, उपाधि, व्याकरण के अनुसार अन्त्य वर्ण के पूर्व का वर्ण।

उपधातु-(सं०पुं०) आठ प्रधान धातुओं के समान अन्य धातु यथा सोनामक्खी, कांसा, शिलाजीत इत्यादि; ये उपधातु प्रधान धातुओं के मेल से भी बनते हैं।

उपधान-(सं०नपुं०) शिरोधान, तकिया, विशेषत्व, समीप रखना, बड़ाई, प्रणय, व्रत, प्रेम।

उपधारण-(सं०नपुं०) चिन्तन, सोच, विचार।

उपधि-(सं०पुं०) छल, कपट, भय, डर

उपध्मा-(सं०स्त्री०) साँस लेने की क्रिया

उपध्मानीय-उप उफ को कहते हैं।

उपध्वत-(सं० वि०) नष्ट, मिश्रित, गिरा हुआ।

उप नक्षत्र-(सं०नपुं) सत्ताइस नक्षत्रों के छोटे छोटे तारे।

उपनत-(सं०वि०) नम्र, झुका हुआ।

उपनीति-(सं०स्त्री०) झुकाव, उपस्थिति

उपनना-(हिं०क्रि०) उपजना, पैदा होना

उपनय-(सं० पुं०) समीप पहुँचाने का कार्य, बालक को गुरु के पास ले जाने का कार्य, उपनयन संस्कार, जनेऊ, न्याय मत से सिद्ध और ज्ञान का लक्षण। **उपनयन**-(सं० नपुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार, जनेऊ

उपनागरिका-(सं०स्त्री०) वृत्ति अनुप्रास का एक भेद।

उपनाम-(सं० नपुं०) उपाधि, पदवी, नाम, प्यार का नाम

उपनायक-(सं०पु०) नाटक में प्रधान नायक का मित्र।

उपनाह-(सं०पु०) बन्धन गाँठ।

उपनिधाता-(सं० वि०) धरोहर रखने वाला।

उपनिधि-(सं०पु०) धरोहर, बंधक, थाती

उपनिबन्ध-(सं०पुं०) रचना, बनावट, गूथन।

उपनिविष्ट-(सं०वि०) नई आबादी में आकर बसा हुआ।

उपनिवेश-(सं०पु०) दूरदेश से आकर नये स्थान में बसना, नगर के पास की छोटी बस्ती।

उपनिषत्-(सं०स्त्री०) समीप बैठना, रहस्य, निर्जन स्थान, वेद का शिरोभाग, वेदान्त, ब्रह्म विद्या, वह विद्या जिससे अज्ञान का नाश होता है तथा जिसके द्वारा परमात्मा प्राप्त होते हैं।

उपनिहित-(सं०वि०) स्थापित, रक्खा हुआ

उपनीत-(सं०वि०) पास लाया हुआ, प्राप्त, उपस्थित, पहुँचा हुआ, जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो।

उपनीता-(सं०स्त्री०) व्याह कर लाई हुई स्त्री।

उपनीयमान-(सं० वि०) पास में लाया हुआ।

उपनेता-(सं०पु०) ले जानेवाला, भेंट चढानेवाला, उपनयन करानेवाला, गुरु या आचार्य।

उपनेत्र-(सं०नपुं०) आँखमें लगानेका चश्मा

उपन्ना-(हिं०पु०) देखो उपरना।

उपन्यास-(सं०पुं०) वाक्य का प्रयोग, वाक्यको आरंभ करना, प्रस्ताव, विचार, धरोहर, उपकथा, रोचक कहानी, किस्सा

उपपति-(सं०पुं०) दूसरे की स्त्री से प्रेम किया जाने वाला पुरुष, जार, यार।

उपपत्ति-(सं०स्त्री०) युक्ति, संगति, निवृत्त हेतु, उपाय, सिद्धि (प्राप्ति, न्यायमत से ज्ञान, गणित शास्त्र के अनुसार प्रमाण कारण।

उपपत्नी-(सं० स्त्री०) किसी पुरुष से फँसी हुई दूसरे की स्त्री।

उपपद-(सं० नपुं०) लेश, समीप में उच्चारण किया हुआ पद, उपाधि।

उपपन्न-(सं०वि०) संस्कार युक्त, जाँचा हुआ, लगा हुआ, आया हुआ, उचित, सम्पन्न, उत्पन्न, प्राप्त, उपयुक्त।

उपपात-(सं०पु०) एकाएक आगमन, नाश,

उपपातक-(सं०नपुं०) छोटा पाप, यथा परस्त्रीगमन, आत्मविक्रय, निन्दित खाद्य का भोजन इत्यादि।

उपपाद-(सं०पु०) उपपत्ति, ठहराव।

उपपादक-(सं०वि०) संपादक, ठहरानेवाला

उपपादन-(सं०नपुं०) सिद्ध करना, ठहराना, सम्पादन। **उपपादित**-(सं०वि०) सम्पादित, ठहराया हुआ, युक्ति द्वारा समर्थन किया हुआ।

उपपाद्य-(सं०वि०) युक्ति द्वारा संपादन करने योग्य।

उपपाप-(सं०नपुं०) देखो उपपातक।

उपपालित-(सं०वि०) रक्षित, पाला हुआ

उपपीडित-(सं०वि०) पीडित सताया हुआ।

उपपुराण-(सं०नपु०) व्यास के अतिरिक्त अन्य ऋषियों द्वारा लिखा हुआ पुराण इनकी संख्या भी अठारह हैं।

उपदर्शन-(सं० नपुं०) निर्देश, सूचना, देखाव।

उपप्लव-(सं० पु०) आकाश से तारा टूटना, विप्लव, विपत्ति।

उपप्लुत-(सं०वि०) उपद्रवयुक्त, राहुग्रस्त, विपद्ग्रस्त।

उपबद्ध-(सं०वि०) संलग्न, लगाहुआ।

उपबरहन-(हिं०पुं०) तकिया

उपबाहु-(सं० पुं०) हाथ का पंजे से केहुनी तक का भाग।

उपभाषा-(सं०स्त्री०) गौण भाषा।

उपभुक्त-(सं०वि०) व्यवहार में लाया हुआ, जूठा, खाया हुआ, उच्छिष्ट।

उपभुक्ति-(सं०वि०) उपभोग। **उपभोक्ता**-(सं०वि०) उपभोग करनेवाला।

उपभोग-(सं०पुं०) व्यवहार, सुख की सामग्री, किसी पदार्थ के व्यवहार का सुख। **उपभोगी**-(सं० वि०) उपभोग करने वाला। **उपभोग्य**-(सं० वि०) उपभोग करने योग्य। **उपभोजी**-(सं०वि०) उपभोग करने वाला।

उपमन्त्रण-(सं०नपुं०) निमन्त्रण, नेवता।

उपमा-(सं० स्त्री०) तुलना, अर्थालंकार का एक भेद जिसमें साधारण धर्मविशिष्ट भिन्न जाति की तुलना दो वस्तुओं में देखाई जाती है।

उपमाता-(सं० स्त्री०) धाय, माता तुल्य स्त्री, बच्चे को दूध पिलाने वाली स्त्री, (वि०) उपमा देने वाला।

उपमान-(सं० नपुं०) सादृश्य, बराबरी वह वस्तु जिससे उपमा दी जाती है, सादृश्य के ज्ञान का साधन। **उपमाना**-उपमा देना।

उपमा रूपक-(सं०नपुं०) उपमा अलंकार का उपचार।

उपमालिनी-(सं० स्त्री०) छन्द का एक भेद।

उपमित-(सं० वि०) जिसकी उपमा दी गई हो, सदृश, बराबर। **उपमिति**-(सं० स्त्री०) उपमालङ्कार, न्याय के अनुसार अनुभव सिद्धजाति विशेष।

उपमेय-(सं०वि०) उपमा का विषय, वर्णन करने योग्य, जिसकी उपमा दी जावे। **उपमेयोपमा**-(सं०स्त्री०) अर्थालङ्कार जिसमें उपमान की उपमेय और उपमेय की उपमान से उपमा दी जाती है।

उपयम-(सं०पुं०) विवाह, शादी।

उपयमन-(सं०नपुं०) देखो उपयम।

उपयचक-(सं० वि०) पास में जाकर

माँगने वाला।

उपयाचित-(सं० वि०)समर्पित, प्रार्थना किया हुआ।

उपयान-(सं०पुं०) निकट में गमन।

उपयुक्त-(सं०वि०) योग्य, उचित,भुक्त, रचित, बना हुआ। **उपयुक्तता**-(सं०स्त्री०) यथार्थता, योग्यता।

उपयोग-(सं० पुं०) व्यवहार, काम, योग्यता, आवश्यकता, भोग, प्रयोजन, औषधि क्रिया। **उपयोगिता**-(सं०स्त्री०) आवश्यकता,सहाय्य,मदद,उपयुक्तता

उपयोगी-(सं० वि०) योग्य, अनुकूल, उपयुक्त, उपकारी, लाभकारी, काम में आने वाला।

उपयोज्य-(सं०वि०)उपयोगमें लाने योग्य

उपरक्षक-(सं०वि०) सेना के पास पहरा देने वाला।

उपरत-(सं०वि०) हटा हुआ, निकला हुआ, उदासीन, मरा हुआ।

उपरति-(सं०स्त्री०)विरति,त्याग,संन्यास, उदासी, वैराग्य, वासना का त्याग, निवारण, मृत्यु।

उपरत्न-(सं०नपुं०) कम मूल्य के रत्न।

उपरना-(हिं०पुं०)ऊपरी वस्त्र, डुपटटा, चादर (क्रि०) उखड़ना।

उपरफट्, उपरफट्टू-(हिं०वि०) अनावश्यक,ऊपरी,बिना ठिकानेका,व्यर्थ।

उपरमण-(सं०नपुं०) निवृत्ति,वैराग्य।

उपरवार-(हिं०स्त्री०)उच्च भूमि।

उपरस-(सं०पुं०) गौण रस, उपधातु, वैद्यकके अनुसार पारद, अंजन,कंगुष्ठ सिन्दूर, गैरिक, क्षितिज और शैलेय उपरस कहलाते है।

उपरहित-(हिं०पुं०) देखो पुरोहित।

उपरहिती-(हिं०स्त्री०) देखो पौरोहित्य।

उपरांठा-(हिं०पुं०) परांठा, घी लगाकर तवे पर सेंकी हुई रोटी।

उपरा-(हिं०पुं०) गोल उत्पल, उपला।

उपराग-(सं०पुं०) राहु ग्रस्त चन्द्रमा, व्यसन, संबंध, रंग, वासना, संबंध, प्रवृत्ति, निन्दा, गौण रूप।

उपराचढ़ी-(हिं०स्त्री०)चढाबढी, प्रतिस्पर्धा

उरराज-(सं०पुं०) राजा का प्रतिनिधि, वाइसराय, (वि०) राजा के तुल्य।

उपराजना-(हिं०क्रि०) उत्पन्न करना, जन्माना, निर्माण करना, बनाना, उपार्जन करना, कमाना।

उपराना-(हिं०क्रि०) ऊपर चढ़ना, प्रगट होना, देख पड़ना, उपराना,उठान।

उपरान्त-(सं०अव्य०)अनन्तर,बाद,पीछे।

उपराम-(सं०पुं०)निवृत्ति,मृत्यु,संन्यास

उपराला-(हिं००पुं०) सहायता, रक्षा।

उपरावटा-(हिं०वि०) अभिमानी, घमंड से सिर उठाया हुआ।

उपराहना-(हिं०क्रि०) प्रशंसा करना।

उपराही-(हिं०वि०) ऊपर का (क्रि०वि०) ऊपर।

उपरि-(सं०अव्य०) ऊपर,अनन्तर, बाद

उपरिचित-(सं०वि०) ऊपर जमा किया हुआ।

उपरी-(हिं०स्त्री०) छोटी, गोल गोहरी, उपली, (वि०) उपरी।

उपरी उपरा-(हिं०) देखो उपरा चढी।

उपरूपक-(सं०नपुं०) एक छोटा नाटक, जिसके निम्न लिखित १८ भेद होते है-नाटिका, त्रोटक, गोष्ठी, सट्टक, नाट्य रासक, प्रस्थान, लाप्य,काव्य, प्रेङ्क्षण, रासक, संलापक, श्रीगदित, शिल्पक, विलासिका, दुर्मविका, प्रकरिणी, हल्लीश और भाण।

उपरैना-(हिं०पुं०) उपरना, चादर।

उपरैनी-(हिं०स्त्री०) ओढनी।

उपरुक्त-(हिं० वि०) उपर्युक्त, पहिले कहा हुआ।

उपरोध-(सं० पुं०) आवरण, ढपना, प्रतिबन्ध, रोक,अनुरोध। **उपरोधक**-(सं० वि०) प्रतिबन्धक, रोकनेवाला, बाधा डालनेवाला, (नपुं०) घर का भीतरी कमरा। **उपरोधन**-(सं०नपुं०) प्रतिबन्धन, रोक। **उपरोधी**-(सं०वि०) देखो प्रतिरोधक।

उपरोहित-(हिं०पुं०) देखो पुरोहित।

उपरोहिती-(हिं०स्त्री०)देखो पौरोहित्य

उपरौंछां-(हिं०क्रि०वि०) ऊपर की ओर।

उपरौटा-(हिं०पुं०) ऊपरी भाग, ऊपरी पल्ला।

उपरौठा-(हिं०वि०) ऊपर का, ऊपरी।

उपरौना-(हिं०पुं०) देखो उपरना।

उपर्युक्त-(हिं०वि०) ऊपर कहा हुआ।

उपल-(सं०नपुं०)पत्थर, पाषाण, रत्न, जवाहिर, मेघ, बादल।

उपलक्षक-(सं० वि०) अनुमान करने वाला, दर्शक, उपादान के लक्षण से भिन्न बोधक (शब्द)। **उपलक्षण**-(सं० नपुं०) अपनी तरह दूसरी वस्तु को बता देनेवाला शब्द, लक्षण, विशेषण, ध्यान, देखभाल। **उपलक्षित**-(सं०वि०) चिह्न से प्रकाशित, **उपलक्ष्य**-(सं० पुं०) अवलंबन, टेक, प्रयोजन,उद्देश्य, प्रमाण (वि०) प्रमाण देने योग्य।

उपलब्ध-(सं०वि०) प्राप्त, मिला हुआ, विचारा हुआ, समझा हुआ।

उपलब्धि-(सं० स्त्री०) ज्ञान, प्राप्ति, समझ, अनुमान।

उपलभ्य-(सं०वि०)प्राप्य,मिलनेवाला।

उपलभ्यमान-(सं०स्त्री०)समझा जानेवाला

उपलम्भ-(सं०पुं०) अनुभव, ज्ञान।

उपला-(सं०स्त्री०) शक्कर, चीनी,बालू (हिं०पुं०) गोहरा, कण्डा।

उपलिप्त-(सं० वि०) लपेटा हुआ,चुपड़ा हुआ।

उपली-(हिं०स्त्री०) छोटी गोल गोहरी।

उपलेप-(सं०पुं०)गोबर इत्यादि से लेप, प्रतिबन्ध। **उपलेपन**-(सं० नपुं०) लीपने पोतने का काम। **उपलेप**-(सं०वि०) लीपने पोतने वाला।

उपलेपी-(हिं०पुं०) उपरी भाग या तह।

उपल्ला-(हिं०पुं०) ऊपरी भाग या तह

उपवन-(सं०पुं०) छोटा जंगल, उद्यान बगीचा।

उपवना-(हिं०क्रि०) अदृश्य होना।

उपवसथ-(सं०पुं०) ग्राम, गाँव, सोम योग का पहिला दिन, इसमें लोग उपवास करते है।

उपवास-(सं०पुं०) भोजन का अभाव, अनशन, वह व्रत जिसमें भोजन नहीं किया जाता,**उपवासक**-(सं०वि०) अनाहारी, उपवास करने वाला।

उपवासी-(सं०वि०)अनाहारी, उपवास करने वाला।

उपविद्या- (सं०स्त्री०) गौण विद्या।

उपविष-(सं०नपुं०) हलका विष, बनावटी विष. आयुर्वेद के अनुसार-थूहर, मदार, करियारी, घुमची, कनेर, कुचला, जमालगोटा, धतूरा और अफ़ीम उपविष कहलाते है।

उपविष्ट-(सं०वि०) बैठा हुआ।

उपवीत-(सं०नपुं०) वाये कन्धे पर रक्खा हुआ यज्ञ सूत्र, जनेऊ।

उपवृंहित-(सं०वि०) उछला हुआ, बढ़ा हुआ, बढाया हुआ।

उपवेद-(सं०पुं०) वेद से निकली हुई विद्या यथा आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद आदि।

उपवेश-(सं० पुं०) स्थिति, बैठक। **उपवेशन**-(सं०नपुं०) आसन, स्थापन, बैठना। **उपवेशित**-(सं०वि०) स्थापित, बैठा हुआ। **उपवेशी**-(सं०वि०) बैठने वाला।

उपशम-(सं०पुं०) इन्द्रियों का निग्रह, तृष्णा का नाश, निवृत्ति छुटकारा, रोगोंके उपद्रव की शान्ति। **उपशमक** (सं०वि०) शान्ति देने वाला। **उपशमनीय**-(सं०वि०) शान्त किये जाने योग्य। **उपशाखा**-(सं०स्त्री०) छोटी शाखा, डाल।

उपशान्त-(सं०वि०) शान्त किया हुआ, घटा हुआ। **उपशान्ति**- (सं०स्त्री०) निवृत्ति, आरोग्य, निवारण।

उपशायी-(सं०वि०) निद्रा लाने वाला

उपशास्त्र-(सं०नपुं०) सामान्य विद्या।

उपशिक्षित-(सं०वि०) शिक्षा प्राप्त।

उपशिष्य-(सं०पुं०) शिष्य का शिष्य, चेले का चेला। **उपशोभित**-(सं०वि०) शोभा युक्त, अलंकृत। **उपश्रुत**-(सं०वि०) सुना हुआ, माना हुआ।

उपसंयोग- (सं०पुं०) निकट संबंध,

उपसंवाद-(सं०पुं०)प्रतिज्ञा।**उपसंहार**-(सं०पुं०) समाप्ति, संग्रह, हरण, नाश, आक्रमण, संकोच, निवर्तन, निकास, सारांश, किसी पुस्तक के अन्त का अध्याय जिसमें संक्षेप रूप से इसका उद्देश्य दिखलाया जाता है।

उपस-(हिं०स्त्री०) दुर्गन्ध, **उपसना**-(हिं०क्रि०) दुर्गन्धि होना, सड़ जाना।

उपसन्न-(सं०वि०) उपस्थित, पहुँचा हुआ

उपसन्नता-(सं०स्त्री०) निकटता, पड़ोस।

उपसरण-(सं०नपुं) निर्गमन, बहाव।

उपसर्ग-(सं०पुं०)भूकम्प इत्यादि उत्पात, अनिष्ट, रोग का विकार, दुःख, क्लेश, अपशकुन, व्याकरणोक्त वह अव्यय जो शब्द के पहिले जोड़ा जाता है और इसके अर्थ में विशेषता लाता है।

उपसागर-(सं०पुं०) छोटा समुद्र, खाड़ी

उपसाना-(हिं० क्रि०) बासी बनाना, सड़ाना।

उपसुन्द-(सं०पुं०) निकुम्भ नामक दैत्य का पुत्र।

उपसृष्ट-(सं०वि०) व्याप्त, युक्त, लगा हुआ।

उपसेचन-(सं०नपुं०) पानी से सिचाई, पानी छिड़कना, तर करना।

उपसेवक-(सं०वि०) परस्त्री गमन करने वाला।

उपसेवन-(सं०स्त्री०) समीप रहकर सेवा करना। **उपसेवा**-(सं०स्त्री०) पूजा, प्रतिष्ठा। **उपसेवी**-(सं०वि०) सेवा करने वाला।

उपस्कर-(सं०पुं०) उपकरण, सहारा।

उपस्कृत-(सं०वि०) विभूषित, सजाया हुआ।

उपस्तम्भ-(सं०पुं०) अवलम्ब, सहारा।

उपस्थ-(सं०पुं०) नीचे का भाग, मेढ़, पुलिंग, योनि, मलद्वार, अङ्क, गोद, पेडू, स्थिति (वि०) समीपस्थित, पास बैठा हुआ। **उपस्थल**-(सं०नपुं०) नितंब, चूतड़, ककुद, कुल्हा।

उपस्थाता-(सं०वि०) उपासक, झुका हुआ।

उपस्थान-(सं०नपुं०) उपस्थिति, आगमन, उपासना, पूजा के निमित्त निकट आना, उपसर्पण खड़े होकर स्तुति करना, प्राप्ति, तीर्थ स्थान।

उपस्थायी-(सं०वि०) उपस्थित होने वाला।

उपस्थित-(सं०वि०) समीप का, पास आया हुआ, प्राप्त, वर्तमान, याद किया हुआ, सेवा किया हुआ।

उपस्थिता-(सं०स्त्री०) दस दस अक्षर के चार पाद का एक छन्द।

उपस्थिति-(सं०स्त्री०) उपस्थान, पहुंच, वर्तमानता, उपासना, स्मृति, याददाश्त

उपस्नेह-(सं०पुं०) उपलेप, लीपपोत।

उपस्पर्श-(सं०पुं०) स्पर्श,स्नान,आचमन

उपस्मृति-(सं०स्त्री०) व्यवस्था संबंधी गौण पुस्तक।

उपस्वत्व-(सं०नपुं०) सम्पत्तिसे प्राप्त होने वाले आय का अधिकार।

उपहत-(सं०वि०) चोट खाया हुआ, आपत्ति में पड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ, बिगड़ा हुआ, तिरस्कार किया हुआ, दूषित, अशुद्ध, रुका हुआ।

उपहतात्मा-(सं०वि०) विचलित हृदय, घबड़ाया हुआ।

उपहरण-(सं०नपुं०) पास में लाने का काम।

उपहसित-(सं०वि०) उपहास किया हुआ (नपुं०) उपहास, हंसी ठटठा।

उपहार-(सं०पुं०)भेंट,आहुति, सम्मान,

अतिथि को दिया जाने वाला भोजन, शैवकी उपासना में अट्टहास, नृत्य, गीत, वृषभवत् गर्जन, नमस्कार और भजन उपहार के अङ्ग हैं।

उपहारी-(स०वि०) आहुति देनेवाला, यज्ञ करने वाला।

उपहास-(स०पुं०) निन्दा सूचक हास, हंसी ठट्ठा। उपहासक-(सं०वि०) दूसरों की हँसी उड़ाने वाला। उपहासास्पद-(सं०नपु०) हंसी उड़ाने योग्य, निन्दनीय। उपहासी-(हिं०स्त्री०) हंसी, ठट्ठा।

उपहित-(स०वि०) अर्पित, दिया हुआ, रक्खा हुआ।

उपही-(हिं०पुं०) अन्य देशका पुरुष, अपरिचित मनुष्य।

उपहृत-(सं०वि०) लाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ।

उपाइ, उपाय-(हिं०पुं०) देखो उपाय।

उपाकरण-(सं०नपु०) आरंभ, समीप लाने का कार्य।

उपाकर्म-(सं०नपुं०) संस्कार पूर्वक वेद ग्रहण।

उपाक्ष-(सं०नपु०) उपनेत्र,

उपाख्य-(स०वि०) आँख से देखा जाने वाला।

उपाख्यान-(स० नपु०) पुरानी कथा, पूर्व वृत्तान्त वर्णन, उपन्यास, झूठी कथा।

उपागत-(सं०वि०) उपस्थित, स्वीकृत, अनुभूत।

उपाङ्ग--(सं०नपुं०) तिलक, टीका, प्रत्यङ्ग, अङ्ग का अङ्ग, विद्या का गौण भाग (पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र), छोटा भाग।

उपाटना, उपाड़ना-देखो उखाड़ना।

उपाति-(हिं०स्त्री०) देखो उत्पत्ति।

उपादान-(स०नपुं०) प्राप्ति, वर्णन, इन्द्रियों का निग्रह, अभिप्राय, बोध, दूना अर्थ, बौद्धमत के अनुसार शरीर या वाणी की चेष्टा, न्यायमत से समवायि कारण (समीप का कारण) वह सामग्री जिससे कोई पदार्थ तैयार हो, सांख्य मत से कार्य से अभिन्न कारण।

उपादेय-(स०वि०) ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य, श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।

उपाधान-(स०नपु०) उपधान, तकिया

उपाधि-(सं०पुं०) विशेषण, जाति, वंश इत्यादि को बतलाने वाला शब्द, धर्म, चिन्ता, छल, आधार, कारण समृद्धि, बढती, न्याय के मत से जाति से भिन्न धर्म, सम्मान सूचक शब्द, उपद्रव, उत्पात।

उपाधी-(स०वि०) उत्पाती, ऊधम मचाने वाला।

उपाध्या-(हिं०पु०) देखो उपाध्याय।

उपाध्याय-(सं०पुं०) वेदवेदाङ्ग पढाने वाला, अध्यापक, ब्राह्मण की एक उपाधि उपाध्याया-(सं०स्त्री०) अध्यापिका, पढ़ाने वाली स्त्री। उपाध्यायानी-(स०स्त्री०) उपाध्यायकी स्त्री। उपाध्यायी देखो उपाध्यानी।

उपान-(हिं०स्त्री०) गृह का आधार, खंभे की चौकी।

उपाना-(हिं०वि०) उत्पन्न करना, बनाना।

उपान्त-(सं०वि०) निकट, समीप (नपुं०) प्रान्त भाग, तीर, किनारा, कोना, अन्तिम अक्षर के पहिले का अक्षर। उपान्तिक-(स०वि०)समीपका, पड़ोसी

उपाय-(सं०पु०) समीप पहुंचना, निकट आना, साधन, युक्ति, द्रव्य का उपार्जन, शत्रु पर विजय प्राप्त करने की विधि (ये चार हैं-साम, दाम, दण्ड और भेद) रोकने की विधि, उपक्रम, सिलसिला।

उपायन-(स०नपु०) उपगमन, भेंट देने की वस्तु, उपहार।

उपारना-(हिं०क्रि०) देखो उपाड़ना।

उपारम्भ-(स०पु०) आरम्भ।

उपारूढ-(सं०वि०) बढा हुआ।

उपार्जक-(सं०वि०) कमाने वाला। उपार्जन-(सं०नपु०) कमाई, लाभ, वाणिज्यादि से लाभ। उपार्जनीय-(स०वि०) कमाने योग्य। उपार्जित-(सं०वि०) प्राप्त, कमाया हुआ।

उपालभ्य-(स०वि०) निन्दनीय।

उपालम्भ-(सं०नपु०) निन्दापूर्वक तिरस्कार, गाली गलौज, विलंब, ओरहना। उपालम्भन-(स० नपुं०) देखो उपालम्भ।

उपाव--(हिं०पु०) देखो उपाय।

उपाश्रय-(स०पु०) आश्रय का स्थान, सहायता। उपाश्रित-(सं० वि०) आश्रित, सहारा लिया हुआ।

उपास-(हिं०पु०) देखो उपवास।

उपासक-(सं०वि०) सेवक, पूजा या आराधना करने वाला, भक्त।

उपासना-(सं०स्त्री०) समीप बैठने का कार्य, पूजा, परिचर्या, आराधना, ध्यानादि द्वारा इष्ट देवता का चिन्तन उपासनीय-(सं०वि०) उपासना किये जाने योग्य, आराध्य, पूजनीय।

उपासा-(हिं०पुं०) अन्न जल न ग्रहण करने वाला।

उपासित-(सं०वि०) पूजित आराधित।

उपासी-(हिं०वि०) देखो उपासित।

उपासीन-(सं०वि०) पास में बैठा हुआ।

उपास्थि-(सं०स्त्री०)कोमलास्थि, कोमल हड्डी।

उपास्य-(स०वि०) चिन्तनीय, सेवा करने योग्य।

उपेक्षक-(स०वि०) उपेक्षा करने वाला,

उपेक्षण-(स०नपुं०) अनादर, उदासीनता, घृणा, तिरस्कार। उपेक्षणीय-(स०वि०) प्रतीकार न करने की चेष्टावाला।

उपेक्षा-(सं०स्त्री०) त्याग, विरक्ति, उदासीनता, घृणा, तिरस्कार, अङ्गीकार, अनादर। उपेक्षित-(सं०वि०) अनादर किया हुआ, अस्वीकृत, त्यक्त, छोड़ा हुआ।

उपेखना-(हिं०क्रि) उपेक्षा करना।

उपेक्ष्य-(स०वि०) उपेक्षा के योग्य।

उपेत-(स०वि०) समीप आया हुआ, पहुंचा हुआ, यज्ञोपवीत किया हुआ।

उपेन्द्र-(स०पुं०) इन्द्र के छोटे भाई, वामन, विष्णु।

उपेन्द्रवज्रा-(स०स्त्री०) ग्यारह अक्षरों के चारपद का एक छन्द।

उपेय-(सं०वि०) उपायसाध्य, मिलने योग्य।

उपैना-(हिं०वि०) नङ्गा, उघाड़ा, खुला हुआ।

उपोत्थित-(स०वि०) ऊपर को उठा हुआ

उपोद्ग्रह-(स०पुं०) ज्ञान, समझ।

उपोद्घात-(स०पु०) उपक्रम, भूमिका, आरम्भ, उदाहरण, पुस्तक के आरम्भ का कथन।

उपोष, उपोषण-(स०) उपवास, दिनरात कुछ न खाने की स्थिति, निराहार व्रत।

उपोषित-(स०वि०) उपवास किया हुआ

उपोसथ-(हिं०पु०) देखो उपवसथ।

उप्ति-(स०स्त्री०) वपन, बोवाई।

उफड़ना-(हिं०क्रि०) देखो उफनना।

उफनना-(हिं०क्रि०) फेन देना, झगड़ने के लिये उद्यत होना।

उफनाना-(हिं०क्रि०) उबलना, उमड़ना, जल्दी करना।

उफान-(हिं०पुं०) फेन, उबाल, झाग।

उफाल-(हिं०पुं०) लंबी डग।

उबकना-(हिं०क्रि०) वमन करना, उगलना।

उबका-(हिं०पुं०) सरकने वाली गाँठ या फन्दा।

उबकाई-(हिं०स्त्री०) वमन का उद्गार, ओकाई, मचली।

उबछना-(हिं०क्रि०) जल को ऊपर की ओर फेकना।

उबट-(हिं०पु०) कुमार्ग, ऊँची नीची भूमि।

उबटन-(हिं०पुं०) अभ्यंग, अंगराग, शरीर पर मलने का लेप, बुकवा। उबटना-(हिं०क्रि०) उबटन मलना, अंगराग लगाना।

उबडुब करना-(हिं०क्रि०) पानी में डूबना या गोते खाना।

उबना-(हिं०क्रि०) अंकुरित होना, जमना।

उबरना-(हिं०क्रि०) मुक्ति पाना, उद्धार होना, छूटना, बच जाना, निस्तार पाना

उबराऊ-(हिं०पुं०) तल।

उबरा सुबरा-(हिं०क्रि०) बचा हुआ, उच्छिष्ट, जूठा।

उबलना-(हिं०क्रि०) ऊपर को उठना, उफनना, उमड़ना।

उबसन-(हिं०पु०) उद्वसन, बर्तन मांजने का खर कतवार, जुयना।

उबसना-(हिं०क्रि०) चिपचिपा होना, मैला होना, शिथिल पड़ना, बर्तन मलना।

उबहन-(हिं०स्त्री०)पानी खींचनेका रस्सा

उबहना-(हिं०क्रि०) हथियार उठाना मियान से तलवार खींचना, उलचना, उभड़ना, जोतना, ऊपर की ओर उठना (वि०) बिना जूता पहिरे हुआ।

उबहनी-(हिं०स्त्री०) रस्सी।

उबांत-(हिं०स्त्री०) वमन, कय, उलटी।

उबाई-(हिं०स्त्री०) ऊबजाने की स्थिति, व्यग्रता।

उबाना-(हिं०क्रि०) बोना, उगाना, बढाना, (वि०) नंगा।

उबार-(हिं०पु०) मोक्ष, उद्धार, निस्तार, छुटकारा, झूल, ओहार। उबारना-(हिं०क्रि०) मुक्ति देना, छुटकारा देना, छोड़ाना।

उबारा-(हिं०पु०) पशु के पानी पीने का कुण्ड।

उबाल-(हिं०पुं०) आँच लगने पर फेनके साथ ऊपर को उठना, उद्वेग। उबालना-(हिं०क्रि०) गरम करना, खौलाना।

उबासी-(हिं०स्त्री०) जृम्भा, जंभाई।

उबाहना-(हिं०क्रि०) देखो उबहना।

उबिठना-(हिं०क्रि०) जी भर जाने पर अच्छा न लगना, फीका मालूम होना, विरक्त होना, घबड़ा जाना।

उबीठना-(हिं०क्रि०) देखो उबिठना।

उबीधना-(हिं०क्रि०) फँस जाना, उझलना, धँसना, लगना, छिदना।

उबीधा-(हिं०वि०) फँसा हुआ, गड़ा हुआ, धँसा हुआ, कँटीला, काँटो से भरा हुआ।

उबेना-(हिं०वि०) जूता न पहिरे हुए, नंगे पैर का।

उबेरना-(हिं०क्रि०) देखो उबारना।

उबौना-(हिं०क्रि०) उबाने वाला।

उबौबा-(हिं०वि०) ऊब जाने वाला।

उभई-(हिं०वि०) देखो उभय।

उभड़ना-(हिं०क्रि०) देखो उभरना।

उभय-(सं०वि०) हर दो, दोनों। उभयङ्कर-(स०वि०) दो काम करने वाला। उभयचर-(सं०वि०) जल तथा थल दोनों में रहने वाला।

उभयतः-(स०अव्य०) दोनों ओर, दोनों तरफ। उभयतोमुख-(सं०वि०) दो मुख वाला। उभयतोमुखी गौ-वह गाय जिसके गर्भ से बच्चे का मुख बाहर आगया हो। उभयविद्या-(सं०स्त्री०) धार्मिक और आर्थिक विज्ञान। उभयविध-(सं०वि०) दो आकृति का। उभयविपुला-(सं०स्त्री०) आर्या छंद का एक भेद। उभयव्यंजन-(सं०वि०) दोनों लिङ्ग के चिह्न रखने वाला।

उभरना-(हिं०क्रि०) उठना, बढना; जवानी पर आना, उछलना, उत्तेजित होना, फिर से निकलना, फूलना, उद्धार पाना, चले जाना, प्रकाशित

होना, उतरना;खुलना,उत्पन्न होना।
उभाड़-(हिं०पु०) उठान, उंचाई, वृद्धि, **उभाड़ना**-(हिं०क्रि०) उत्तेजित करना, उसकाना, बहकाना, **उभाड़दार**-(हिं०वि०) उभड़ा हुआ, भड़कीला।
उभाना-(हिं०क्रि०) सिर हिलाते हुए हाथ पैर पटकना।
उभार-(हिं०पु०) उठान, ऊँचाई, वृद्धि, सूजन। **उभारना**-(हिं०क्रि०) उभाड़ना, उठाना, खोलना, निकालना, उड़ाना, चोराना, निकाल ले जाना, आग्रह करना, मिला लेना, पीछे पड़ना।
उभरदार-(हिं०वि०) उन्नत, ऊंचा, निकला हुआ।
उभिटना-(हिं०वि०) ठहरना, रुकना, हिचकना।
उभै-(हिं०वि०) देखो उभय।
उमंग-(हिं०स्त्री०) आह्लाद, इच्छा, लहर, मौज, पूर्णता, अधिकता, उभाड़, मज़ा। **उमंगना**-(हिं०क्रि०) बढना, प्रसन्न होना, फूले न समाना **उमंगा**-(हिं०क्रि०) आह्लादित,इच्छुक।
उमड़-(हिं० स्त्री०) चढाव, उठान। **उमड़ना**-(हिं०क्रि०) चढना,बहचलना, आच्छादित होना, इकठ्ठा होना, भरना, छू जाना।
उमकना-(हिं०क्रि०) उखड़ना, ऊपर को आना, उमड़ना, जड़ छोड़ देना।
उमग, **उमगन**-(हिं०पुं०) देखो उमंग। **उमगना**-(हिं०क्रि०) उमड़ना, भर कर ऊपर को उठना, हुलसना।
उमगा-(हिं०वि०) देखो उमंगा।
उमचना-(हिं०क्रि०) पैर से कुचलना, दबाना, हुमचना, चौकन्ना होना, चकित होना।
उमड़-(हिं०स्त्री०) बाढ़, उभाड़, भराव, धावा, बढाव, घिराव। **उमड़ना**-(हिं०क्रि०) उठकर फैल जाना, चक्कर देना, फैलना, घेरना, आवेश में आ जाना। **उमड़ाना**-(हिं०क्रि०) फैलवाना, घिरवाना।
उमदना-(हिं०क्रि०) उन्माद में आना, मस्त होना, उत्तेजित होना, उठ खड़ा होना, उमड़ना।
उमदाई-(हिं०स्त्री०) उत्तम अवस्था, उत्तमता, अच्छाई।
उमदाना-(हिं०क्रि०) मस्त होना, उमंग में आना।
उमर-(हिं०वि०) उम्र, अवस्था, वय, आयुष्य।
उमस-(हिं०स्त्री०) आन्तरिक उत्ताप,जो गरमी पानी न बरसने से पड़ती है। **उमसना**-(हिं०क्रि०) उमस की गरमी पड़ना।
उमहना-(हिं०क्रि०) बह चलना, उत्तेजित होना, छा जाना।
उमह्ना-(हिं०क्रि०) देखो उमड़ना **उमहाना** (हिं०क्रि०) देखो उमड़ाना।
उमा-(सं०स्त्री०) शिव की पत्नी,पार्वती, दुर्गा, अलसी, हलदी, कान्ति, कीर्ति, शान्ति, ब्रह्मविद्या।
उमाकना-(हिं०क्रि०) जड़ से उखाड़ना, नष्ट करना, फेकना।
उमाकिनी-हिं०वि०) उखाड़ने वाली।
उमाचना-(हिं०क्रि०) उखाड़ना, निकालना, उभाड़ना, ऊपर को उठाना।
उमाद-(हिं०पु०) देखो उन्माद।
उमाधव-(सं०पुं०) उमापति, शङ्कर। **उमापति**-स०पु०) पार्वती के पति महादेव।
उमाह-(हिं०पुं०) उत्सुकता, उत्साह, उमंग, **उमाहना**-(हिं०क्रि०) बह चलना, उत्सुक होना, छटपटाना। **उमाहल**-(हिं०वि०) उत्साह युक्त, उमंग से भरा हुआ।
उमेठन-(हिं०स्त्री०) ऐंठन, बल, मरोड़। **उमेठना**-(हिं०क्रि०) मरोड़ना, ऐंठना। **उमेठवां**-(हिं०वि०) ऐंठा हुआ, मदोड़दार।
उमेड़ना-(हिं०क्रि०) देखो उमेठना।
उमेलना-(हिं०क्रि०) उन्मीलन करना, प्रकट करना, खोलना।
उमेश-(सं०पु०) उमापति, शिव।
उम्मर-(हिं०पु०) देखो उम्र।
उम्मस-(हिं०स्त्री०) पीड़ा।
उरंग, **उरंगम**-(हिं०पुं०) सर्प।
उर-(सं०नपुं०) वक्षःस्थल, हृदय,छाती, मन, चित्त।
उरई-(हिं०स्त्री०) उशीर।
उरक्षत-(सं०नपु०) छाती का घाव, क्षयरोग। **उरस्थल**-(स०नपु०) हृदय, छाती। **उरकना**-(हिं०क्रि०) ठिठकना, ठहरना, रुकना।
उरग-(सं०पु०) सर्प, सांप।
उरगड्डी-(हिं०स्त्री०) जोलाहे की भूमि में छेद करने की खूंटी।
उरगना-(हिं०क्रि०)सहन करना,स्वीकार करना।
उरगाद उरगारि-(सं०पु०) सर्पों का शत्रु, गरुड़।
उरगाय-(हिं०पुं०) विष्णु।
उरगिनी-(स०स्त्री०) सर्पिणी।
उरज-(हिं०पुं०) देखो उरोज। **उरजात**-(हिं०वि०) देखो उरोग।
उरझना-(हिं०क्रि०) उलझना, फँसना, गांठ डालना। **उरझाना**-फँसाना।
उरण-(सं०पु०)भेड़ा, मेढा,मेघ, बादल **उरणक**-(सं०पुं०) देखो उरण। **उरणा**-(सं०स्त्री०) भेड़ी।
उरद-हिं०पु०) एक पौधा जिसकी फलियां दाल बनाने के काम में आती हैं। **उरदी**-(हिं०स्त्री०) माष, छोटी उड़द, सिपाहियों की पोशाक (वर्दी)।
उरध-(हिं०वि०) देखो ऊर्ध्व।
उरधारना-(हिं०क्रि०) छिटकाना,
उरतरप-(हिं०पुं०) देखो उड़प।
उरबसी-(हिं०स्त्री०) उर्बशी।
उरबी-(हिं०) देखो उर्वी।
उरमना-(हिं०क्रि०) झूमना, लटकना। **उरमाना**-(हिं०क्रि०) लटकाना, डालना
उरमाल-(हिं०पुं०) रुमाल, अंगौछा।
उररी-(सं०अव्य०) अंगीकार, स्वीकार।
उररीकृत-स्वीकार किया हुआ।
उरला-हिं०वि०) पिछला, जो आगे का न हो।
उरविज-(हिं०पु०) भौम, मङ्गल।
उरच्छद-(स०पु०) कवच,
उरस-(हिं०वि०) नीरस, वक्षःस्थल (पु०) हृदय, छाती।
उरसना-(हिं०क्रि०)चंचल होना,हिलना डोलना, उपर नीचे करना।
उरसाना-(हिं०क्रि०) उद्वेग बढ़ाना।
उरसिज-(सं०पुं०) स्तन, औरतों की छाती। **उरसिल**-(स०वि०) चौड़ी छाती वाला। **उरस्त्राण**-(स०नपु०) देखो उपच्छद।
उरहना-(हिं०पु०) ओलहना।
उरा-(हिं०स्त्री०) उर्वी, पृथ्वी।
उराउ, **उराऊ**-(हिं०पु०) उमंगाचाह, उत्साह।
उराट-(हिं०पु०) देखो उर।
उराना-(हिं०क्रि०) चूक जाना।
उराय-(हिं०पुं०) देखो उराव।
उरारा-(हिं०पु०) हृदय का उद्गार, अभिलाषा, उमंग, उत्साह।
उराश-(हिं०वि०) दीर्घ, बड़ा।
उराहना-(हिं०पुं०) देखो उरहना।
उरिण-(हिं०वि०) देखो उऋण।
उरिन-(हिं०वि०) देखो उऋण।
उरिष्ठ-(हिं०पु०) देखो अरिष्ट।
उरीकृत-(सं०वि०) देखो उररीकृत।
उरु-(सं०वि०) विस्तीर्ण, फैला हुआ, बड़ा, अधिक मूल्यवान् (हिं०पुं०) जंघा, जांघ।
उरूज-(सं०पुं०) वृद्धि, बढ़ती।
उरुजना-(हिं०क्रि०) देखो, उलझना।
उरुताप-(सं०पुं०) अधिक उष्णता।
उरुवा-(हिं०पु०) उलूक, उल्लू।
उरूक-(सं०पुं०) देखो उरुवा।
उरूज-(अ०पु०) उन्नति,उठान,बढ़ती।
उरे-(हिं०क्रि०वि०) उसओर,आगे दूर।
उरेखना-(हिं०क्रि०) देखो अवरेखना।
उरेह-(हिं०पु०) चित्रकारी, नक्काशी। **उरेहना**-(हिं०क्रि०) चित्र खींचना, रंग भरना।
उरोज-(सं०पुं०) स्तन, पयोधर, कुच।
उर्णा-(स०स्त्री०) भेड़ का बाल, ऊन।
उर्द-(हिं०पुं०) देखो उरद।
उर्दू-(हिं०स्त्री०) सेना, सेना की हाट। फ़ारसी अरबी मिली हुई भाषा जो फ़ारसी लिपि में लिखी जाती है।
उर्दूबाजार-(हिं०पुं०) फ़ौजीहाट, बड़ी-बाजार।
उर्ध-(हिं०वि०) देखो ऊर्ध्व।
उर्मि-(हिं०स्त्री०) देखो ऊर्मि।
उर्मिला-(सं०स्त्री०) लक्ष्मणजी की पत्नी का नाम।
उर्वर-(हिं०वि०) उपजाऊ।
उर्वरा-(सं०स्त्री०) उपजाऊ भूमि, एक अप्सरा का नाम, घुंघराले बाल(वि०) अधिक।
उर्वशी-(सं०स्त्री०) स्वर्ग की एक वेश्या, एक परी का नाम।
उर्वा-(स०स्त्री०) शीषक, सीसा।
उर्विजा-देखो उर्वीजा।
उर्वी-(सं०स्त्री०)पृथ्वी, भूमि। **उर्वीजा**-(सं०स्त्री०) सीताजी जो पृथ्वी से उत्पन्न हुई थीं। **उर्वीधर**-(सं०पु०) पर्वत, शेष नाग।
उलंग-(हिं०वि०) बिना ढका हुआ, नंगा
उलंघन-(हिं०पुं०) देखो उल्लंघन। **उलंघना**-(हिं०क्रि०) उल्लघन करना, लांघना, डांकना, स्वीकार न करना, टालना।
उलका-(हिं०पुं०) देखो उल्का।
उलगट-(हिं०स्त्री०) उल्लंघन, डँकाई, फदाई।
उलगना-(हिं०क्रि०) उछलना, कूदना। **उलगाना**-(हिं०क्रि०) कुदाना, पार कराना।
उलचना-(हिं०क्रि०) देखो उलीचना।
उलछना-(हिं०क्रि०) छितराना, इधर उधर फेंकना, बिखराना।
उलछा-(हिं०पुं०) खेत में बीज बोने का काम।
उलझन-(हिं०स्त्री०) अटकाव, फँसाव, गड़बड़ी, फेरवट, पेंच, व्यग्रता,चिन्ता कलह,कठिनता। **उलझना**-(हिं०क्रि०) फँसना, कठिनाई में पड़ना, **फँसाना**, गाँठी, बाँधना, लिपटना, विलंब करना, काम में लगना, दोष निकालना, मोहित होना, प्रेमासक्त होना, अड़चन में पड़ना, लड़ना, झगड़ना, टेढ़ा होना, काम में लीन होना।
उलझा-(हिं०पुं०) देखो उलझन। **उलझाना**-(हिं०क्रि०) फँसाना, गांठ डालना, गड़बड़ मचाना, भ्रान्ति में डालना, झगड़ना, बांधना, फन्दे में फँसाना, लोभ देखाना, मोहित करना, रखना, चित्त हटाना, बुरे मार्ग पर लगाना टेढ़ा करना, लिप्त करना; विवाह करना। **उलझाव**-(हिं०पुं०) फेरफार, फँसाव, चिन्ता, उत्पात, गड़बड़, कठिनता, कलह, चक्कर, फेरवट। **उलझौंहा**-(हिं० वि०) उलझाने वाले या फँसाने वाला।
उलट-(हिं०पुं०) परिवर्तन। **उलटना**-(हिं०क्रि०) ऊपर का नीचे होना, पलटना, फेर देना, चित करना, जीतना, वमन करना, उडेलना, विचारना, सोचना, अनुवाद करना, अस्वीकार करना, झूठा समझना, लौटाना, पीना, मतवाला करना, निर्बल करना, नाश करना, निर्धन होना, दोहराना, पढ़ने का बहाना करना, उमड़ना, बिगड़ना, उन्मत्त होना; बदल जाना, दुर्दिन आना, लौट आना, बात काटना, आज्ञा

भंग करना, घमंड करना, अडवंड करना, विपरीत करना, वमन करना, टूट पड़ना ।
उलट पुलट-(हिं०पुं०) फेरफार, अव्यवस्था, गड़बड़ी । **उलटफेर**-(हिं०पु०)अदल बदल,हेरफेर,परिवर्तन
उलटा-(हिं०वि०) विपरीत, नीचे का ऊपर किया हुआ ।
उलटाना-(हिं०क्रि०) नीचे ऊपर करना। **उलटा फिरना**-जाकर तुरत लौट आना, **उलटा हाथ**-बाँयाँ हाथ. **उलटी गंगा बहाना**-अनहोनी बात करना, **उलटी माला फेरना**-बुरा चाहना, **उलटे छूरे से मूड़ना**-मूर्ख बनाकर छलना; **उलटा जमाना**-विपरीत स्थिति; **उलटा सीधा**-बिना क्रम का; **उलटी खोपड़ी का**-अति-मूर्ख; **उलटी सीधी सुनाना**-खरी खोटी कहना ।
उलटाव-देखो उलटा ।
उलटी-(हिं०स्त्री०) वमन, कलैया।
उलटी रुमाली-(हि०स्त्री०) मुगदर का एक व्यायाम ।
उलटे-(हिं०क्रि०वि०) विरुद्ध क्रम से, विरुद्ध न्याय से ।
उलथना-(हिं०क्रि०) ऊपर नीचे करना, उलट पलट होना, उलटना ।
उलथा-(हिं०पु०) अनुवाद, एक प्रकार का नाच जिसमें तालपर उछला जाता है, कलैया खाते हुए पानी में कूदना, करवट बदलना । **उलथाना**-(हिं०क्रि०) देखो उलटना ।
उलद-(हिं०स्त्री०) वर्षा की झड़ी, उंडेल, गिराव । **उलदना**-(हि०क्रि०) डालना, उड़ेलना, गिराना, ढालना, अच्छा पानी बरसना ।
उलमना-(हिं०क्रि०) सहारा लेना, झुक पड़ना, लटक जाना ।
उलरना-(हिं०क्रि०) फाँदना, कूदना, नीचे ऊपर होना, झपटना ।
उलरुवा-(हिं०पु०) बैलगाड़ी के पीछे उलटा होने के लिये पीछे बँधी हुई लकड़ी ।
उललना-(हिं०क्रि०) गिरना पड़ना, ढलना, इधर उधर होना, पलटा खाना ।
उलवी-(अ०वि०) स्वर्गीय ।
उलसना-(हिं०क्रि०) उल्लसित होना, चमकना ।
उलहना-(हिं क्रि०) अंकुरित होना, निकलना, फूटना, प्रफुल्लित होना, फूलना, उभड़ना, (पुं०) निन्दा ।
उला-(हिं०स्त्री०) भेड़ी का बच्चा ।
उलाटना-(हिं०क्रि०) देखो उलटना ।
उलार-(हिं०वि०) पीछे की ओर भार से दबी हुई (गाड़ी एक्का इत्यादि)।
उलारना-(हिं०क्रि०) ऊपर को फेंकना, उछालना ।
उलाहन-(हिं०पुं०) उपालम्भ, निन्दा ।
उलिचना, उलीचना-(हिं०क्रि०) हाथ या किसी दूसरी वस्तु से जल फेंकना
उलूक-(सं०पुं०) उल्लू चिड़िया, इन्द्र, ओखली, विश्वामित्र का एक पुत्र, दुर्योधन का एक दूत ।
उलूखल-(स०नपुं०) ओखली, गुग्गुल ।
उलेटना-(हिं०क्रि०) देखो उलटना ।
उलेटा-(हिं०वि०) देखो उलटा ।
उलेड़ना-(हिं०क्रि०) उडेलना, ढरकाना, ढारना ।
उलेल-(सं० स्त्री०) आह्लाद, उन्नति, उछल, कूद, वेग, (वि०) मूर्ख ।
उल्का-(स०स्त्री०) प्रकाश, ज्वाला, तेज, मसाल, तेजपुंज, आकाश से गिरी हुई अग्नि, टूटता तारा। **उल्काचक्र**-उपद्रव, हलचल, गड़बड़, विघ्न; **उल्कापात**-आकाश से तारे टूटना, विघ्न, बुराई; **उल्कापाती**-उपद्रव मचानेवाला । **उल्कामुख**-मुँह से आग फेंकनेवाला प्रेत; **उल्कामुखी**-शृगाली, लोमड़ी ।
उल्टा-(हिं०वि०) देखो उलटा ।
उल्था-(हिं०पुं०) भाषान्तर, अनुवाद ।
उल्वण-(स०वि०)प्रबल,उद्भट,अक्खड़ ।
उल्लकसन-(स०नपुं०) रोमाञ्च, रोवां खड़ा होना ।
उल्लङ्घन-(सं० नपुं०) अतिक्रमण, लांघना, डाकना, पार जाना, आज्ञा का पालन करना । **उल्लङ्घना**-(हिं० क्रि०)अतिक्रमण करना । **उल्लङ्घनीय**-(स०वि०) लांघने योग्य । **उल्लङ्घित**-(स०वि०) लांघा हुआ ।
उल्लम्बित-(सं०वि०) सीधा खड़ा हुआ
उल्लसता-(सं०स्त्री०) प्रसन्नता ।
उल्लसन-(स०नपुं०) हर्षजनक व्यापार, रोमाञ्च, रोवे खड़े होना ।
उल्लसित-(स०वि०) फड़कने वाला,उठा हुआ, आनन्दित ।
उल्लाप-(सं०पुं०) शोक ।
उल्लापन-(सं० नपुं०) समझा कर शास्त्र की व्याख्या करना, ठकुर-सोहाती। **उल्लापी**-(सं०वि०)चिल्लाने वाला ।
उल्लाप्य-(स०नपु०)प्रेम अथवा हास्य विषयक नाटक जो स्वर्गीय घटना के आधार बनाया जाता है ।
उल्लाल-(सं० पुं०) एक छन्द जिसके पहिले और तृतीय चरण में पन्द्रह तथा दूसरे और चौथे चरण में तेरह मात्रा होती है । **उल्लाला**-(हिं०पुं०) एक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में तेरह मात्रा होती हैं ।
उल्लास-(सं०पुं०) आनन्द, हर्ष, प्रकाश, चमक, रोशनी, उठान,सफेदी, वृद्धि, एक काव्यालंकार,जिसमे एकके गुण दोषसे दूसरे का गुण दोष दरसाया जाता है। **उल्लासक**-(स०वि०)आनन्द करनेवाला, आनन्दी । **उल्लासन**-(सं०नपुं०) प्रकट करना, आनन्दित होना, दीप्ति, चमक, नाच कूद ।
उल्लासना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न करना ।
उल्लासित-(सं०वि०) प्रसन्न। **उल्लासी**-चमकदार, आनन्दी ।
उल्लिखित-(सं०व०)खोदा हुआ, छीला हुआ, चित्र बनाया हुआ, रंगा हुआ, उठाया हुआ ।
उल्लुण्ठन-(सं०नपुं०) अपने अभिप्राय को छिपाकर दूसरे रूपसे प्रगटकरना
उल्लू-(हिं०पु०) उलूक, यह पक्षी दिन में अन्धा रहता है (वि०) मूर्ख ।
उल्लेख-(स०पु०) लिखना,कथन, लेख, वर्णन, खनन, खोदाई, एक काव्यालंकार जिसमें अनुभावक और विषय के भेद के अनुसार एक वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन होता ।
उल्लेखन-(सं०नपुं०) खोदाई,उच्चारण, गवाई, निर्देश, चित्रकारी ।
उल्लेखनीय, उल्लेख्य-(स०वि०) लिखने योग्य ।
उल्व-(स०पुं०)गर्भाशय, जिस झिल्लीमें लिपटा हुआ रहता है, खेंड़ी ।
उवना-(हिं०क्रि०) उदित होना, निकल आना ।
उवनि-(हिं०स्त्री०) उदय, निकास,उठाव
उशीनर-(सं०पुं०) गन्धार देश ।
उशीर-(स०पुं०) शीत मूलक, खस ।
उषा-(स०स्त्री०) वेद की एक देवी, प्रत्यूष, सबेरा, बाण राजाकी कन्या जो अनिरुद्ध को व्याही थी, अरुणोदय की लाली; **उषाकल**-कुक्कुट, मुर्गा, **उषापति**-अनिरुद्ध ।
उषीर-(स०पुं०) देखो उशीर ।
उष्ट्र-(स०पुं०) ऊँट। **उष्ट्रपक्षी**-भूमिपर तीव्र गति से चलनेवाला एक पक्षी ।
उष्ण-(सं०वि०) तप्त, गरम, तीव्र, (पुं०) आतप, धूप, गरमी का ऋतु, अग्नि, जलन, सूर्य, ज्वर । **उष्ण कटिबन्ध**-(सं०पुं०) पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीचमें पड़ता हैं। **उष्णकर**-(सं०वि०) गरम करनेवाला, उष्णकारी (पुं०) सूर्य। **उष्णकाल**-(सं०पु०) गरमी की ऋतु। **उष्णता**-(सं०स्त्री०) आतप, गरमी । **उष्णत्व**-(सं०नपुं०) देखो उष्णता । **उष्णबाष्प**-(सं०पुं०) गरम भाँफ, आँसू ।
उष्णा-(सं०स्त्री०) क्षयरोग, सन्ताप, गरमी । **उष्णांशु**-(सं०पुं०) सूर्य ।
उष्णिमा-(सं०स्त्री०) उत्ताप, गरमी ।
उष्णीश-(सं०पुं०) पगड़ी, साफ़ा, उष्णीष, मुकुट ।
उष्म-(स०पुं०)ग्रीष्म काल,उत्ताप,धूप, तीव्रता,क्रोध,श,ष,स,ह—ये चारवर्ण
उष्मज-(सं०वि०) गरमी में उत्पन्न होने वाला, (पुं०) छोटे छोटे कीड़े(मच्छड़, खटमल इ०) जो गरमी से उत्पन्न होते हैं। **उष्मता**-(सं०स्त्री०) उष्णता, गरमी ।
उष्मा-(सं०स्त्री०) ग्रीष्मकाल, गरमी की ऋतु । **उष्मान्वित**-(सं०वि०) उत्तेजित, भड़का हुआ ।
उस-(हिं०सर्व०)'वह'का रूप जो विभक्ति लगने पर यह रूप धारण करता है।
उसकन-(हिं०पुं०) उबसन, पात्र माँजने का घास पात का मुट्ठा, उभाड़, उठाव । **उसकना**-(हिं०क्रि०) देखो उकसना । **उसकाना**-(हिं०क्रि०) देखो उकसाना ।
उसगन-(हिं०पुं०) देखो अपशकुन ।
उसनना-(हिं०क्रि०) उबालना, पकाना, पानी डाल कर गूथना ।
उसबा-(हिं०पुं०) देखो उशबा ।
उसनीश-(हिं०पुं०) देखो उष्णीश ।
उसमा-(हिं०पुं०) वसमा, उबटन ।
उसरना-(हि०क्रि०) सरकना, अलग होना, दूर होना, बीतना, पूरा होना, भूल जाना, बनकर खड़ा होना ।
उसलना-(हिं०क्रि०) देखो उसरना ।
उससना-(हिं०क्रि०) उसरना, सरकना, टलना, साँस निकालना ।
उसाँस-(हिं०पुं०) देखो उसास ।
उसाना-(हिं०क्रि०) पछोरना, फटकार कर भूसी अलगाना ।
उसारना-(हि०क्रि०) नाश करना, मिटाना, हटाना, टालना ।
उसारा-(हिं०पुं०) छत्ता, ओसारा ।
उसालना-(हिं०क्रि०) उखाड़ना,मिटाना, हटाना ।
उसांस-(हिं०स्त्री०) उच्छ्वास, साँस, ऊपर को खींची हुई श्वास ।
उसासना-(हिं०क्रि०) श्वास लेना, आह भरना ।
उसारि-(हिं०स्त्री०) ओसारु ।
उसासां-(हिं०स्त्री०) श्वास लेनेका समय
उसिनना-(हि०क्रि०) देखो उसनना ।
उसीजना-(हि०क्रि०) धीरे धीरे पकना ।
उसीर-(हिं०पुं०) देखो उशीरा ।
उसीला-(हिं०पुं०) देखो वसीला ।
उसीसा-(हिं०पुं०) सिरहाना, तकिया ।
उसुवाना-(हिं०क्रि०) सूजना, फूलना ।
उसूल-(अ०पुं०) सिद्धान्त, मत ।
उसैना-(हिं०क्रि०) पकाना, उबालना ।
उहदा-(हिं०पुं०) देखो ओहदा ।
उहदेदार-(हिं०पुं०) पदाधिकारी ।
उहवाँ, उहाँ-(हिं०क्रि०वि०) देखो वहाँ ।
उहार-(हिं०पुं०) देखो ओहार ।
उहि-(हि०सर्व०) देखो वह ।
उही-(हि०सर्व०) देखो वही ।
उहै-(हि०सर्व०) देखो वही ।

ऊ

ऊ-संस्कृत तथा हिन्दी स्वर वर्ण का छठा अक्षर । यह 'उ' का दीर्घ रूप है, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है (पुं०) महादेव, इन्द्र रक्षक (अव्य०) ए; अरे, भी (सर्व०) वह ।
ऊअना-(हिं०क्रि०) उदय होना, निकलना उगना ।
ऊआबाई-(हिं०वि०) निरर्थक, अंडबंड, व्यर्थ

ऊंख-(हिं०स्त्री०) इक्षु, ईख, गन्ना ।
ऊंग-(हिं०स्त्री०) देखो ऊंघ ।
ऊंगना-(हिं०पुं०) चौपायों का एक रोग
ऊंगा-(हिं०पुं०) अपामार्ग, चिचिड़ा ।
ऊंगी-(हिं०पु०) देखो ऊंगा ।
ऊंघ-(हिं०स्त्री०) ऊंघाई, झपकी, धुरे में लपेटी हुई सूत की गेंडुरी । **ऊंघन**-(हिं०स्त्री०) निद्रागम, झपकी । **ऊंघना**-(हिं०क्रि०) झपकी लेना, निद्रागम होना, आँखें झिपना ।
ऊंच, ऊंचा-(हिं०वि०) उच्च, ऊंचा; **ऊंचनीच**-छोटा बड़ा, हानि लाभ, छोटी अथवा बड़ी जाति का ।
ऊंचाई-(हिं०स्त्री०) देखो उच्चता ।
ऊंचा-(हिं०वि०) उच्च, श्रेष्ठ, उन्नत, उठा हुआ; **ऊंचानीचा**-भला बुरा, हानिलाभ; **ऊंचा सुनना**-कुछ बहिरा होना; **ऊंचा सुनाना**-खरी खोटी सुनाना; **ऊंचाई**-(हिं०स्त्री०) उच्चता, गौरव, बड़ाई, श्रेष्ठता, उठान ।
ऊंचे-(हिं०क्रि०वि०) ऊपर को, ऊंची ओर; **ऊंचे नीचे पैर पड़ना**-बुरे काम में प्रवृत्त होना ।
ऊंछ-(हिं०पुं०) एक राग विशेष ।
ऊंछना-(हिं०क्रि०) बाल झाड़ना, कंघी करना ।
ऊंट-(हिं०पु०) उष्ट्र, ऊंची गर्दन का वह चौपाया जो बोझ लादने और सवारी के काम में आता है ।
ऊंटकटारा, ऊंटकटोरा-(हिं०पु०) एक कांटेदार पौधा जो झाड़ियों में उगता है ।
ऊंटगाड़ी-(हिं०क्रि०) ऊंट से खीचे जाने वाली गाड़ी । **ऊंटवान**-(हिं०पुं०) ऊंट हाँकनेवाला ।
ऊंड़ा-(हिं०पुं०) वह पात्र जिसमें भरकर रुपया पैसा, गहना इ० भूमि में गाड़ा जाता है, (वि०) गहरा ।
ऊंदर-(हिं०पुं०) इन्दुर, चूहा ।
ऊंधा-(हिं०वि०) औंधा, उलटा ।
ऊंहूं-(हिं०अव्य०) नहीं, कभी नहीं, यह नहीं हो सकता ।
ऊअना-(हिं०क्रि०) उदम होना ।
ऊआबाई-(हिं०स्त्री०) निरर्थक वार्ता ।
ऊक-(हिं०पु०) उल्का, टूटता तारा, लूक, आग, लुआठी, जलन, ताप, चूक । **ऊकना**-(हिं०क्रि०) चूकना, भूलना, भ्रम में पड़ना, ताप देना, जलाना ।
ऊख-(हिं०स्त्री०) इक्षु, ईख, गन्ना, (पुं०) गरमी, गुमस, (वि०) गरमीसे व्याकुल
ऊखम-(हिं०वि०) देखो ऊष्म ।
ऊखल-(हिं०पुं०) उदूखल, ओखली जिसमें अन्न की भूसी मूसल से कूट कर अलगाई जाती है ।
ऊगना-(हिं०क्रि०) जमना, जड़ पकड़ना, अंखुआ निकलना ।
ऊगरा-(हिं०पुं०)उबाला हुआ खाद्य पदार्थ
ऊचर-(हिं०वि०) नीरस ।
ऊज-(हिं०पुं०) उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा
ऊजड़-(हिं०वि०) जनशून्य, न बसा हुआ, उजाड़ ।
ऊजर-(हिं०वि०) उजला, उजाड़ ।
ऊजरा-(हिं०वि०) उजला, स्वच्छ ।
ऊटकनाटक-(हिं०पु०) वृथा का कार्य, निरर्थक इधर उधर करना, बेकाम का काम ।
ऊटना-(हिं०क्रि०) सोचना, विचारना, मन बढाना, उत्साहित होना, अभिमान करना, उमंग में आना ।
ऊटपटांग-(हिं०वि०) बेढंगा, व्यर्थ, निरर्थक, अंडबंड, टेढा मेढ़ा ।
ऊड़ना-(हिं०क्रि०) देखो ऊढना ।
ऊड़ा-(हिं०पुं०) न्यूनता, कमी, घाटा, अकाल, विनाश ।
ऊड़ी-(हिं०स्त्री०) जुलाहे की फिरकी, डुबकी, गोता ।
ऊढ-(सं०वि०) व्याहा हुआ,उठाया हुआ, पकड़ा हुआ, स्वीकार किया हुआ ।
ऊढ़ना-(हिं०क्रि०) चिन्तन करना, अनुमान करना, सोचना ।
ऊढ़ा-(सं०स्त्री०) भार्या, विवाहिता स्त्री, वह ब्याही हुई स्त्री जो निज पति को छोड़कर अन्य पुरुष से प्रेम करती है
ऊत-(सं०वि०) बुना हुआ, गुथा हुआ, सिला हुआ (हिं०वि०) पुत्रहीन, निःसन्तान, मूर्ख, गँवार, (पु०) वह जो मरने पर पिंड आदि न पाकर प्रेत होता है ।
ऊतर-(हिं०पुं०) देखो उत्तर ।
ऊतला-(हिं०वि०) उतावला, चंचल ।
ऊताताई-(हिं०वि०)उजड्ड, अव्यवस्थित
ऊतिम-(हिं०वि०) देखो उत्तम ।
ऊद-(अ०पुं०) अगर का वृक्ष,ऊदबिलाव
ऊदबत्ती-(हिं०स्त्री०) धूपबत्ती जो पूजा-पाठ के समय धूप देने के लिये सुलगाई जाती है ।
ऊदबिलाव-(हिं०पुं०) जल स्थल दोनों में रहनेवाला नेवले के आकारका एक जन्तु
ऊदल-(हिं०पुं०) आल्हा के छोटे भाई जो महोबे के राजा परमाल के मुख्य सरदार थे ।
ऊदा-(हिं०वि०) लाली मिला हुआ काले रंग का, बैंगनी (पुं०) बैगनी रंग का घोड़ा ।
ऊदीसेम-(हिं०स्त्री०) केंवाच ।
ऊधम-(हिं०पुं०) उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा । **ऊधमी**-(हिं०वि०) उपद्रवी, उत्पाती ।
ऊधव-(हिं०पुं०) देखो उद्धव ।
ऊधो-(हिं०पुं०) देखो उद्धव ।
ऊन-(सं०वि०) छोटा, न्यून, कम, असंपूर्ण, (हिं०पुं०) मेंड़ बकरी का कोमल रोवां जिसके कम्बल और पहिरने के गरम कपड़े बीने जाते हैं ।
ऊनक-(सं०वि०) छोटा, न्यून, हीन ।
ऊनता-(हिं०स्त्री०) न्यूनता, कमी ।
ऊना-(हिं०वि०) छोटा, कम, न्यून, तुच्छ, हीन ।
ऊनित-(सं०वि०) घटाया या कम किया हुआ ।
ऊनी-(हिं०वि०) ऊन का बना हुआ (स्त्री०) घटी, कम, उदासी, दुःख, खेद ।
ऊप-(हिं०पु०) अनाज का सूद, जो किसान महाजन से बोने के लिये अन्न लेने पर उसका सवाई देता है ।
ऊपना-(हिं०क्रि०) सूद पर (सवाई) अन्न का ऋण देना ।
ऊपर-(हिं०वि०) ऊपरि (क्रि०वि०) ऊंचे स्थान में, ऊंचाई पर, आगे अधिक, पीछे, प्रतिकूल, अतिरिक्त, किनारे पर, उच्च कोटि में, सहारे पर, पहिले (पूर्वगत); **ऊपर ऊपर**-गुप्त रूप से, चुपके से; **ऊपर की आमदनी**-वेतन के अतिरिक्त इधर उधर से मिला हुआ धन; **ऊपर लेना**-अपने अधिकार में लेना, **ऊपर से**-ऊंचे से, अतिरिक्त, घूंस के रूप में ।
ऊपरी-(हिं०वि०) बहिरंग, बाहरी, बनावटी, अपरिचित, शिथिल, ढीला, दिखौवा, अयोग्य, ऊपर का, बाहर का, पराया ।
ऊब-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट, उद्वेग, अरुचि, उमंग ।
ऊबट-(हिं०पुं०) कठिन मार्ग, (वि०) ऊंचा नीचा ।
ऊबड़खाबड़-(हिं०वि०) ऊंचा नीचा, असमतल, अटपट
ऊबना-(हिं०क्रि०) उद्विग्न होना, उगताना, घबड़ाना, अकुलाना, घृणा करना ।
ऊबर-(हिं०वि०) अधिक ।
ऊबरना-(हिं०क्रि०) देखो उबरना ।
ऊभ-(हिं०वि०) ऊंचा नीचा, उठा हुआ, उभड़ा हुआ, (स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट, उमंग उष्मा, गरमी, उमस, श्वासरोग ।
ऊभर-(हिं०वि०) देखो ऊबट ।
ऊभना-(हिं०क्रि०) उद्विग्न होना, घबड़ाना, उठना, जल्दी जल्दी सांसलेना
ऊभा-(हिं०पुं०) पोखरी, गड्ढा । **ऊभासांसी**-(हिं०स्त्री०) उद्वेग, घबड़ाहट ।
ऊभक-(हिं०स्त्री०)उठान, उभाड़, बाढ़, वेग, झपट ।
ऊमना-(हिं०क्रि०)उठना,बढना, उभारना
ऊमस-(हिं०स्त्री०) देखो उमस ।
ऊमी-(हिं०स्त्री०) जव या गेहूं की हरी बाल ।
ऊरज-(हिं०वि०) देखो ऊर्ज ।
ऊरध-(हिं०) देखो उर्ध्व ।
ऊरी-(हिं०स्त्री०) जुलाहे की सलाका ।
ऊरु-(सं०पुं०) जानु, जांघ **ऊरुग्राह**-उरुस्तम्भ । **ऊरु सम्भव**-(सं०पुं०) वैश्य, बनिया । **ऊरुस्तम्भ**-(सं०पुं०) वात का एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं ।
ऊर्ज-(सं०वि०) बलिष्ठ, शक्तिमान्, बलवान् (पुं०)बल,शक्ति, कार्तिक का महीना, उत्साह, निश्वास, जीवन, वीर्य, जल, एक काव्यालंकार जिसमें किसी के सहायकों कमी की हो जाने पर भी गर्व का त्याग न करना वर्णन किया जाता है ।
ऊर्जवाह-(सं०पुं०) शची के एक पुत्र का नाम । **ऊर्जस्वीनी**-(सं०स्त्री०) प्रियव्रत की कन्या का नाम ।
ऊर्जस्वी-(सं०नपु०) एक अलंकार जिसमें अतिशय अहंकार दरसाया जाता है । (वि०) अति बलवान्, तेजस्वी, पराक्रमी,
ऊर्जा-(सं०स्त्री०) बल, उत्साह, वृद्धि ।
ऊर्णपट-(सं०पु०) लूता, मकड़ा ।
ऊर्णं-(सं०स्त्री०) भेड या बकरी का बाल, ऊन ।
ऊर्णा-(सं०स्त्री०) चित्ररथ गन्धर्व की पत्नी ।
ऊर्दर-(सं०पुं०) वीर, बहादुर ।
ऊर्ध्व-(सं०वि०) उच्च, ऊंचा, ऊपरी छोड़ा हुआ, (नपुं) ऊंचाई, उच्चता । **ऊर्ध्वकण्ठ**-गर्दन उठाये हुए; **ऊर्ध्व कर्ण**-कान खड़ा किये हुए; **ऊर्ध्वकर्म** मृत व्यक्ति के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध इत्यादि; **ऊर्ध्वकार्य**-(सं०वि०) उन्नत शरीरवाला । **ऊर्ध्वकेतु**-(सं०वि०) उड़ती हुई ध्वजा वाला **ऊर्ध्वकेश**-(सं०वि०) जिसके बाल खड़े हों । **ऊर्ध्वक्रिया**-(सं०स्त्री०) देखो ऊर्ध्वकर्म ।
ऊर्ध्वग-(सं०वि०) स्वर्गगामी, ऊंचा-जानेवाला । **ऊर्ध्वगत**-(सं०वि०) ऊपर गया हुआ । **ऊर्ध्वगति**-(सं०स्त्री०) चढाई, स्वर्गारोहण, मुक्ति । **ऊर्ध्वगमन**-(सं०नपुं०) देखो उर्ध्वगति ।
ऊर्ध्वगामी-(सं०वि०) ऊपर जानेवाला, मुक्त **ऊर्ध्वचरण**-(सं०पुं०) भूमि में सिर रखकर तथा पैर ऊपर उठाकर तपस्या करनेवाला साधु । **ऊर्ध्वता**-(सं०स्त्री०) उच्चता, ऊंचाई । **ऊर्ध्वतिक्त**-(सं०पुं०) चिरायता ।
ऊर्ध्व दृष्टि-(सं०वि०) उर्ध्व नेत्र, ऊंचे प्रदेश पर दृष्टि डालनेवाला; (स्त्री०) ऊंची दृष्टि **ऊर्ध्व देश**-(सं०पुं०) ऊपरी भाग । **ऊर्ध्व देह** (सं०पुं०) मरण के बाद प्राप्त होनेवाला शरीर ।
ऊर्ध्वद्वार-(सं०नपुं०) ऊंचा कपाट, ब्रह्मरन्ध्र । **ऊर्ध्वपथ**-(सं०पुं०) ऊपरी मार्ग, आकाश । **ऊर्ध्व पुण्ड्र**-(सं०पु०) चन्दन आदि से मस्तक पर लगाया हुआ लम्बा तिलक । **ऊर्ध्वबाहु**-(सं०पुं०) वह साधु जो सर्वदा अपना एक या दोनों हाथ ऊपर को उठाये रहता है **ऊर्ध्वभाक्**-(सं०पुं०) बड़वानल । **ऊर्ध्वमुख**-(सं०पुं०) अग्नि (वि०) उन्नत मुख ऊपर किया हुआ । **ऊर्ध्व रेखा**-(सं०स्त्री०) चरण की वह रेखा जो अंगूठे या उसके पास की अंगुली से आरंभ होकर एडी तक पहुंचती है, जिसमें यह रेखा होती है वह अंशावतारी समझा जाता है । हाथ में भी पूर्ण या अपूर्ण मणि बन्ध से

निकल कर ऊपर जाती है **ऊर्ध्वरेता**-(सं०पु०) महादेव, भीष्म, हनुमान् सनकादि मुनि, संन्यासी, (वि०) जो वीर्य को कभी न गिराता हो, पूर्ण ब्रह्मचारी। **ऊर्ध्वरोमा**-(सं० वि०) जिसके रोंगटे खड़े हों। **ऊर्ध्वलिङ्ग**-(सं० पु०) महादेव। **ऊर्ध्वलोक**-(सं०पु०) स्वर्ग, वैकुण्ठ, आकाश। **ऊर्ध्वशायी**-(सं०वि०) उतान सोने-वाला (पु०) महादेव। **ऊर्ध्वश्वास**-(सं०पु०) लंबी सास, मरते समय की श्वास।

ऊर्ध्वस्थित-(सं०वि०) ऊपर रहने वाला

ऊर्ध्वाङ्ग-(सं०स्त्री०) मस्तक, सिर।

ऊर्मि--(सं०पुं०) तरंग, लहर, उभाड़, प्रकाश, वेग, भंग, भ्रान्ति, भूल, समूह, शीघ्रता, पीड़ा कष्ट, वेदना, उत्कण्ठा, छ की संख्या, घोड़े की लहरिया, चाल, शोक, मोह, जरा, मृत्यु, क्षुधा और प्यास को ऊर्मि कहते हैं। **ऊर्मिका**-(सं०स्त्री०) अंगूठी, भौंरे की गूंजन। **ऊर्मिमाली**-(सं०पु०) समुद्र।

ऊर्मिला-(सं०स्त्री०) सीताजी की बहिन और लक्ष्मण की पत्नी।

ऊर्वरा-देखो उर्वरा।

ऊर्वशी-देखो उर्वशी।

ऊर्वस्थि-(सं०नपु०) जांघ की हड्डी।

ऊलंग-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चाय।

ऊलना-(हिं०क्रि०) उछलना।

ऊलजलूल-(हिं० वि०) ऊटपटांग, असम्बद्ध, बेसिर पैर का, असभ्य, मूर्ख, गँवार, अशिष्ट।

ऊलर-(हिं०स्त्री०) काश्मीर की एक झील का नाम।

ऊलूक-(सं०पु०) देखो उलूक।

ऊष-(सं०पु०) खारी मिट्टी, कान का, छेद, तड़का। **ऊषक**-(सं० नपुं०) प्रत्यूष समय, सबेरा।

ऊषर-(सं०पु०) नोनी भूमि, रेह की भूमि, ऊसर।

ऊषा-(सं०स्त्री०) अरुणोदय, सबेरा, पौ फटने का समय, अनिरुद्ध की पत्नी जो बाणासुर की कन्या थी।

ऊषःकाल-(सं०पु०) अरुणोदय,सवेरा।

ऊष्म-(सं०वि०) गरमी, ग्रीष्म काल, धूप, भाफ (वि०) नरम **ऊष्मवर्ण**-(सं०पुं०) श, ष, स और ह-ये चार अक्षर व्याकरणमे ऊष्म कहलाते हैं।

ऊष्मा-(सं०स्त्री०) गरमी, ग्रीष्म काल, तपन।

ऊष्मान्तःस्थ-(सं०पुं०) अर्धस्वर, जो पूरा न हो।

ऊसर-(हिं०पु०) वह भूमि जो नोनी हो जिसमें रेह हो और जिसमें अन्न न उत्पन होता हो।

ऊंह-(हिं०पुं०) उत्पन्न, तर्क, परीक्षा, आरोप, (हिं०पु०) विस्मयादि सूचक शब्द, क्लेश सूचक शब्द।

ऊहन-(सं०नपुं०) तर्क वितर्क, वाद।

ऊहित-(सं०वि०) वाद किया हुआ, छिपा हुआ, अनुमान किया हुआ।

ऊहापोह-(सं०वि०) तर्क द्वारा संशय मिटाया हुआ, बेधड़क दान देनेवाला

ऋ

ऋ-स्वर वर्ण का सातवां अक्षर, मूर्धा स्थान से इसका उच्चारण होता है (सं०स्त्री०) देवमाता, अदिति, निन्दा, प्राप्ति, (अव्य०) हंसी ठिठोली।

ऋक्-(सं० स्त्री०) ऋग्वेद, ऋग्वेदोक्त मन्त्र, स्तुति, पूजा।

ऋक्थ०(सं०नपुं०) धन, सुवर्ण, उत्तराधिकारी, मिली हुई सम्पत्ति।

ऋक्ष-(सं०पुं०) नक्षत्र, तारा, राशि, भालू। **ऋक्षजिह्व**-(सं०पु०) एक प्रकार का कुष्ट रोग। **ऋक्षनाथ**-(सं०पु०) चन्द्र, चन्द्रमा। **ऋक्षनेमि**-(सं०पु०) विष्णु। **ऋक्षपति**-(सं०पु०) देखो ऋक्षनाथ। **ऋक्षराज**-(सं०पु०) चन्द्रमा। **ऋक्षवान**-(सं०पुं०) ऋक्ष-पर्वत जो नर्मदा नदी के किनारे से गुजरात तक फैला है।

ऋक्षेश-(सं०पुं०) चन्द्रमा।

ऋग्वेद(सं०पुं०) चारों वेदों में से पहिला वेद। **ऋग्वेदी**-(सं०वि०) ऋग्वेद का पढने वाला या जानने वाला।

ऋचा-(सं०स्त्री०) वेद मन्त्र,स्तुति,पूजा।

ऋच्छ(हिं०पुं०) देखो ऋक्ष।

ऋच्छका-(सं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा

ऋजीक-(सं०वि०) मिला हुआ, रंगा हुआ, बिगड़ा हुआ (पु०) इन्द्र, धुवां।

ऋजु-(सं०वि०) सीधा (जो टेढा न हो), सरल, अनुकूल, प्रसन्न, सुन्दर, सुगम (पुं०) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

ऋजुता-(सं०स्त्री०) सरलता, सीधापन, सुगमता, सचाई।

ऋजुनीति-(सं०स्त्री०) सीधी चाल।

ऋजुहस्त-(सं०वि०) हाथ फैलाया हुआ।

ऋण-(सं०वि०) उधार, गणित में क्षय राशि **ऋण उतारना**-ऋण मुक्त होना; **ऋण पटाना**-लिया हुआ ऋण चुका देना। **ऋणकर्ता**-(सं०वि०) ऋण लेने वाला, **ऋणग्रस्त**-(सं०वि०) बहु ऋणयुक्त,ऋणसे लदा हुआ। **ऋणग्रह**-(सं०पु०) ऋण लेने वाला। **ऋणग्राहक**-(सं०वि०) ऋण लेने वाला। **ऋणद**-(सं०वि०) ऋण चुकानेवाला। **ऋणदाता,ऋणदायक**-(सं०वि०) ऋण देनेवाला।

ऋणमुक्त-(सं० वि०) कर्ज अदा किया हुआ। **ऋणमुक्ति**-(सं० स्त्री०) ऋण परिशोधन, **ऋणमोक्ष**-(सं०पु०) ऋण से छुटकारा **ऋणशुद्धि**, **ऋणशोधन**-(सं०)ऋण की चुकती।

ऋत-(सं०नपु०) सत्य, सचाई,व्यवस्था, धर्मनीति, सूर्य, (वि०) सत्य, पूजित। **ऋतधामा**-(सं०पु०) विष्णु, परमेश्वर, (वि०) शुद्ध प्रकृति वाला। **ऋतम्भर**-(सं०वि०) सचाई रखने वाला (पुं०)परमेश्वर। **ऋतम्भरा**-(सं०स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान। **ऋतस्पति**-(सं०पु०)यज्ञपति,वायु

ऋति-(सं०स्त्री०) कल्याण, भलाई, आक्रमण, रीती।

ऋतु-(सं० पु०) कालविशेष, गरमी बरसात या जाड़े का दिन हिम,शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा और शरत्-ये छ ऋतु हैं, स्त्रीरज, चमक। **ऋतुकर**-(सं०पुं०) महादेव, शङ्कर। **ऋतुकाल**-(सं०पुं०) ऋतु का समय, स्त्री के रजोदर्शन की पहिली रात्रि से सोलहवीं रात्रि तक का काल। **ऋतुगमन**-(सं०नपु०) ऋतु काल में स्त्री से सम्भोग। **ऋतुगामी**-(सं०वि०) ऋतुकाल में स्त्री सम्भोग करने वाला। **ऋतुचर्या**-(सं०स्त्री०) ऋतुओं के अनुसार आहार विहार का आचरण। **ऋतुमती**-(सं०स्त्री०) रजस्वला स्त्री। **ऋतुमुख**-(सं०नपु०) पूर्ण चान्द्रामास का पहिला दिन

ऋतुराज-(सं०पु०) वसन्तकाल। **ऋतुवती**-देखो ऋतुमती। **ऋतुविपर्यय**-(सं०पुं०) ऋतु का उलट पलट। **ऋतुसन्धि**-(सं०पु०) दो ऋतुओं के मिलान का काल। **ऋतुसमय**-देखो ऋतुकाल। **ऋतुस्नाता**-(सं०स्त्री०) ऋतुकाल के चौथे दिन स्नान करनेवाली स्त्री। **ऋतुस्नान**-(सं०पु०) रजोदर्शन के चौथे दिन का स्नान।

ऋत्विक्-(सं०पु०)पुरोहित, वेद के मंत्रों से यज्ञ में कर्मकाण्ड करनेवाला।

ऋत्विज-(सं०पुं०) देखो ऋत्विक्।

ऋद्ध-(सं०वि०) सम्पन्न, समृद्ध धनी।

ऋद्धि-(सं०पुं०) वृद्धि, बढ़ती, समृद्धि सिद्धि, वैद्यक में कही हुई अष्टवर्ग के अन्तर्गत एक औषधि। **ऋद्धिसिद्धि**-(सं०स्त्री०) सुखसम्पत्ति, समृद्धि और सफलता-ये गणेश जी की दासियाँ कही गई हैं।

ऋनियां,ऋनी-(हिं०वि०) देखो **ऋणी**।

ऋभु-(सं०पुं०) यज्ञदेवता, देवगण विशेष

ऋषभ-(सं०पु०) वृषभ, बैल, यह शब्द के पिछे लगने से श्रेष्ठता सूचित करता है गायन में सात स्वरों में से दूसरा, एक औषधि विशेष।

ऋषि-(सं०पुं०) शास्त्रप्रणेता, वेद मंत्रों का प्रकाशक, ज्ञान द्वारा संसार पार करने वाला; **ऋषितर्पण**-ऋषियों के दी जाने वाली जलाञ्जलि; **ऋषिपञ्चमी**-भाद्रपद शुक्ला पंचमी का व्रत।

ऋष्यमूक-(सं०पुं०) भारतवर्ष के दक्षिण का एक पर्वत जिसका वर्णन रामायण में किया गया है।

ऋष्यश्रृंग-एक ऋषि का नाम, ये विभाण्डक के पुत्र थे।

ॠ

ॠ-हिन्दी तथा संस्कृत स्वर का आठवाँ अक्षर जो मूर्धा से उच्चारण होता है (नपुं०) वक्षःस्थल, छाती (स्त्री०) देवमाता, स्मृति (पु०) भैरव, महादेव।

ऌ

ऌ-हिन्दी तथा संस्कृत स्वर का नवाँ अक्षर इसका उच्चारण स्थान दन्त है (स्त्री०) देवमाता, भूमि।

ॡ

ॡ-स्वर वर्ण का दसवाँ अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्त है। पाणिनि के अनुसार लकार का दीर्घ नहीं होता (स्त्री०) देवनारी, माता, दैत्य स्त्री, कामधेनु (पुं०) शङ्कर, महादेव।

ए

ए-स्वर वर्ण का ग्यारहवां अक्षर, इनका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है (पुं०) विष्णु (हिं०स०) यह; (अव्य०) संबोधन या बुलाने में प्रयोग होता है।

एँच-(हिं०स्त्री०) न्यूनता, कमी, विलम्ब। **एँचना**-(हिं० क्रि०) लिखना, लकीर खींचना, निकालना, लेना, रखना, सुखाना, लगाना **एँचपेंच**-(हिं०पुं०) हेर फेर, उलझन,घुमाव, टेढी चाल।

एँचाताना-(हिं०वि०) तिरछा देखने-वाला **एँचातानी**-(हिं०स्त्री०)कठिनता, खींच खांच, कलह, युद्ध।

एँड़ाबेंड़ा-(हिं०वि०) उलट पुलट, अड-बंड, ऊँचा नीचा।

एँडी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जो रेंड के पत्ते खाता है, इस कीड़े से निकला हुआ रेशम, अंडी।

एँडुवा-(हिं०पुं०) सिर पर बोझ के नीचे रखने की कपड़े की गद्दी, बिड़ुआ, गेंडुरी।

एक-(सं०वि०) प्रधान, अद्वितीय, सच्चा समान, केवल, अकेला, अन्य, थोड़ा, बराबर, पहिला, कोई, अनुपम, कोई (पुं०) परमेश्वर, अग्नि, सूर्य, यम; **एक अंक**-निश्चित बात; **एकाध**-थोड़ा सा; **एक आंख से देखना**-पक्षपात रखना; **एक एक**-प्रत्येक, हरएक; **एक एक करके**-क्रम से, एक के बाद दूसरा; **एकटक**-टकटकी बांध कर; **एकतार**-सदृश समान, तुल्य, **एकतो**-पहिली बात तो यह है कि; **एकदम**-तुरत, बिलकुल, **एकदिल होना**-अच्छी तरह से

मिल जाना; **एक दूसरे को**-परस्पर, आपस में; **एक न चलना**-सफलता प्राप्त न करना; **एक पेट के**-सहोदर; **एक बात**-यथार्थ बात, पक्की बात, **एक से एक**-एक से एक बढ़कर; **एक होना**-मिल जाना।

एकंग-(हिं०वि०) एकाकी, अकेला।

एकंगा-(हिं०वि०) एकही दिशा में रहनेवाला।

एकंगी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का गदका।

एकंड़िया-(हिं०वि०) एक गाँठ का, जिसको एक ही अण्डकोष हो।

एकंत-(हिं०वि०) देखो एकान्त।

एकक-(सं०वि०) असहाय, अकेला।

एककालीन-(सं०वि०) समकालीन, एक ही समय उत्पन्न होनेवाला। **एक ग्रामीण**-(सं०वि०) एक ही गाँव में रहनेवाला। **एक चक्र**-(सं०पु०) सूर्य का रथ, एक असुर का नाम (वि०) चक्रवर्ती। **एकचर**-(सं०पु०) गैंड़ा, (वि०) अकेला घूमनेवाला, एकही अनुचर वाला। **एकचरण**-(सं०पु०) एक पैर वाला मनुष्य, (वि०) एक पैरवाला। **एकचर्या**-(सं०स्त्री०) अकेले चलने की स्थिति

एकचारी-(सं०वि०) अकेला चलनेवाला **एकचारिणी**-(सं०स्त्री०) पतिव्रता स्त्री।

एकचित-(हिं०वि०) देखो एकचित्त।

एकचित्त-(सं०वि०) अनन्यचेता, एक ही और ध्यान लगानेवाला। **एक चित्तता**-(सं०स्त्री०) ध्यान की स्थिरता

एकचिन्तन-(सं०वि०) एक ही विषय पर ध्यान रखने वाला।

एकचोवा-(हिं०पु०) एक ही खंभे के सहारे खड़ा होनेवाला तम्बू।

एकछत्र-(सं०वि०) बिना दूसरे किसी मालिक का, अभिन्न शासन का, (पुं०) अनन्य शासन, जहाँ पूरी आज्ञा एक ही राजा की होती है; (अव्य०) अकेली आज्ञा पर।

एकज-(सं०वि०) अकेला उत्पन्न होने वाला, निराला, एक ही (पु०) शूद्र, राजा।

एकजन्मा-(सं०पुं०) राजा, शूद्र।

एकजात-(सं०वि०) सहोदर, एक ही मां बाप से उत्पन्न, एकही वस्तु से उत्पन्न।

एकजाति-(सं०वि०)समान जाति वाला, एकबार उत्पन्न होने वाला। **एकजातीय**-(सं०वि०) एक ही जाति से सम्बन्ध रखने वाला।

एकज्या-(सं०स्त्री०) किसी वृत्त के व्यासार्ध का चिह्न।

एकटंगा-(हिं०वि०) एक पैर का, लंगड़ा।

एकटकी-(हिं०स्त्री०) निश्चल दृष्टि, टकटकी।

एकट्ठा-(हिं०वि०) एकत्र, जमा किया हुआ।

एकडाल-(हिं०वि०) अभिन्न (पुं०) वह छुरा जिसका फल और बेंट एकही लोहे के टुकड़े में बनी होती है।

एकत-(हिं०क्रि०वि०) देखो एकत्र।

एकतः-(सं०अव्य०) एक पक्ष में, एक ओर से, अकेले।

एकतरा-(हिं०पुं०) एक दिन के अन्तर पर चढ़ने वाला ज्वर।

एकता-(सं०स्त्री०) ऐक्य, मेलजोल, बराबरी, समानता, अभिन्नता। **एकता**-(फा०वि०) अद्वितीय, अनोखा, अनुपम।

एकतान-(सं०वि०) एक ही काम मे चित्त लगाये हुए, एकाग्रचित्त, तन्मय, लीन, (पुं०) स्वर और ताल की एकता, गाने बजाने का मेल।

एकतारा-(हिं०पु०) एक तार वाला सितार के समान बाजा।

एकताल-(सं० पुं०) गीत वाद्य का सुरीला गाना। **एकताला**-(हिं०पुं०) एक ही ताल का गाना बजाना, जिसमें दूसरे ताल की आवश्यकता न हो।

एकतालीस-(हिं०वि०) चालीस और एक (पु०) चालीस और एक की संख्या ४१।

एकतीस-(हि०वि०) तीस और एक (पु०) तीस और एक की संख्या ३१।

एकत्र-(सं०अव्य०) एक ही स्थान में, एक साथ, मिलजुलकर।

एकत्रित-(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ।

एकत्व-(सं०नपु०)एकता, मेल, बराबरी, एकाई।

एकदंडा-(हि०पु०)लड़ाई की एक युक्ति

एकदंष्ट्र-(सं०पु०) देखो एकदन्त।

एकदन्त-(सं०पु०) गणेशजी।

एकदरा-(हि०पुं०) वह दालान जिसमें एक ही द्वार हो।

एकदस्ती-(फा०स्त्री०)लड़ाई की एक युक्ति

एकदा-(सं०अव्य०) एक ही समय, एकबार, किसी दिन।

एकदृष्टि-(सं०स्त्री०) एकही पदार्थ पर स्थिर दृष्टि (वि०) काना (पुं०) कौवा

एकदेव-(स०पु०) परमेश्वर।

एकदेश-(सं०पु०)एक स्थान। **एकदेशी, एकदेशीय**-(सं०वि०) एक देशवासी, जो सर्वत्र व्यापक न हो, एक ही अवसर के लिये होने वाला।

एकधर्मी-(सं०वि०) समान धर्म वाला।

एकधा-(सं०अव्य०) साधारण रूप से, एक बार, अकेले।

एकनयन-(सं०वि०) एकाक्ष, काना, (पु०) कुबेर, कौवा।

एकनिष्ठ-(सं०वि०) एकासक्त, एक ही में लीन।

एकनेत्र-(सं०) देखो एकनयन।

एकपक्ष-(सं०वि०) एक ही पक्षवाला, पक्षपाती। **एकपक्षीय**-(सं०वि०) एकतरफा।

एकपटा-(हिं०वि०) एक ही पाट वाला, बिना जोड़ का।

एकपतिका-(सं०स्त्री०)एकही पतिकी स्त्री

एकपत्नी-(सं०स्त्री०)पतिव्रता स्त्री,सपत्नी।

एकपद्-(स०वि०) एक पैर वाला।

एकपद-(सं०नपु०)साधारण शब्द, वैकुण्ठ

एकपदा-(सं०स्त्री०) एक पदात्मक छन्द

एकपदी-(सं०स्त्री०) पगडंडी।

एकपिण्ड-(सं०वि०) सपिण्ड, नातेदार।

एकपुत्र-(स०वि०)जिसको एक ही बेटा हो।

एकपुरुष-(सं०पु०)प्रधान पुरुष,परमेश्वर।

एकप्रभुत्व-(सं०नपुं०) साम्राज्य।

एकबद्धी-(हिं०स्त्री०)एक परत की रस्सी।

एकभार्या-(सं०स्त्री०)साध्वी,पतिव्रता स्त्री

एकभाव-(सं०पु०) समभाव, एकरूप, एकस्वभाव, अभेद, बराबरी, (वि०) एक प्रकृति वाला।

एकभुक्त-(सं०वि०) दिन रात में एक ही बार भोजन करने वाला।

एकभूत-(सं०वि०) अविभक्त, मिलाहुआ

एकमुहाँ-(हि०वि०)केवल एक मुख वाला।

एकमुख-(सं०वि०) एक ओर मुख झुकाया हुआ।

एकमत-(स०वि०) एक राय वाला, समान मत का।

एकमात्र-(सं०वि०) एक मात्रा का।

एकरंग-(हिं०वि०) तुल्य, बराबर, स्वच्छ हृदय का, चारो ओर समान।

एकरदन-(सं०पु०) एकदन्त, गणेश।

एकरस-(सं०वि०) एक ढग का, समान।

एकरात्रिक-(स०वि०)एकरातमें होनेवाला

एकरूप-(स०वि०) समान आकृति का, एक ही ढंग का। **एकरूपता**-(स०स्त्री०) तुल्यता, बराबरी, सायुज्य मुक्ति।

एकरूपी-(सं०वि०) समान रूप का।

एकलंगा-(हिं०पुं०) कुश्ती की एक दाँव

एकलव्य-(सं०पुं०) निषादराज हिरण्यधेनु के पुत्र।

एकला-(हिं०वि०) अकेला, एकाकी।

एकलिङ्ग-(सं०पु०)महादेव, कुबेर, एक लिंगका मन्दिर जो उदयपुर राज्यमें है।

एकलौता-(हिं०वि०) अपने माता पिता का एक (पुत्र)।

एकवचन-(सं०नपुं०) एक व्यक्ति का बोध करने वाला व्याकरण का वचन।

एकवर्ण-(स०पु०)श्रेष्ठ जाति, एक अक्षर

एकवर्णी-(सं०स्त्री०) करताल।

एकवांज-(हि०स्त्री०) जिस स्त्री को एक ही सन्तान हुई हो।

एकवाक्य-(सं०नपुं०) एक अर्थ बोधक वाक्य, राय की बात। **एकवाक्यता**-(सं०स्त्री०) वाक्य का ऐक्य, मेल की बातचीत।

एकवाद्या-(सं०स्त्री०) डाइन, चुड़ैल।

एकविध-(सं०वि०) एक ही प्रकार का, साधारण।

एकवेणी-(सं०स्त्री०)वियोगिनी की लट, वह स्त्री जिसका पति दूर देश में गया हो, विधवा।

एकशृङ्ग-(सं०पु०) एक सींघ वाला पशु, विष्ण।

एकसठ-(हिं०वि०) साठ और एक (पुं०) साठ और एक की संख्या ६१।

एकसर-(हिं०वि०) अकेला, एकहरा।

एकस्थ-(सं०वि०) एक स्थान में रक्खा हुआ।

एकहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और एक (वि०) सतर और एक की संख्या।

एकहत्था-(हिं०वि०) एक ही हाथ से काम करने वाला।

एकहरा-(हि०वि०) एक परत का, जो दोहरा न हो, एक लड़ी का; **एकहरी शरीर का**-दुबला पतला।

एका-(स०स्त्री०) दुर्गा (वि०) अद्वितीय, अकेली (हिं०पु०) ऐक्य, मेलजोल।

एकाई-(हिं०स्त्री०) एकत्व, एक का मान, नियमित मान, गणना में प्रथम स्थान या अङ्क

एकाएक, एकाएकी-(हिं०क्रि०वि०) अकस्मात्, अचानक।

एकांश-(सं०पु०) एक भाग या हिस्सा।

एकाकार-(सं०वि०) एक ही आकृति का।

एकाकी-(सं०वि०) असहाय, अकेला।

एकाक्ष-(सं०वि०)एक नेत्रवाला, काना, (पु०) कौवा, शुक्राचार्य।

एकाक्षर-(सं०नपुं०) एक स्वर वर्ण, ओंकार। **एकाक्षरी**-(स०वि०) एक अक्षर वाला; **एकाक्षरी कोश**-वह कोश जिसमें प्रत्येक अक्षर के अलग अलग अर्थ लिखे हों।

एकाग्र-(सं०वि०) अनन्य चित्त, एक ही ओर मन लगाया हुआ, जो व्यग्र या चंचल न हो, एक ही कोने का। **एकाग्रचित्त**-(स०वि०) स्थिरचित्त, एक ही ओर मन लगाये हुए। **एकाग्रता**-(सं०स्त्री०) एक ही विषय में आसक्ति, मन का स्थिर होना। **एकाग्रत्व**-(स०) देखो एकाग्रता। **एकाग्र दृष्टि**-(सं०वि०) एक ही विषय पर दृष्टि डालने वाला।

एकाङ्ग-(स०पुं०) बुध ग्रह।

एकात्मता-(सं०स्त्री०) अभेद, एकता, एक ही आत्मा का भाव।

एकात्मवादी-(स०वि०) वेदान्त मत का अवलम्बन करने वाला।

एकात्मा-(सं०पुं०) अद्वितीय आत्मा (वि०) एक रूप।

एकादश-(सं०वि०) ग्यारह, ग्यारहवाँ। **एकादशाह**-(सं०पुं०) ग्यारह दिन में कर्तव्य श्राद्ध, मरने के दिन से ग्यारहवें दिन पर किया जाने वाला कृत्य। **एकादशी**-(सं०स्त्री०) प्रत्येक चान्द्र मास के शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जो व्रत का दिन होता है।

एकादेश-(सं०पुं०) एक आज्ञा, व्याकरण में दो शब्दों या स्थान में एक ही आदेश।

एकाधिपति-(सं०पुं०) सम्राट्, बड़ा राजा। **एकाधिपत्य**-(सं०नपुं०) एकमात्र अधिकार, प्रधान आधिपत्य।

एकान्त-(सं०नपुं०) छिपा हुआ स्थान, अकेलापन, (वि०) अकेला, अत्यन्त

निराला, निर्जन, सूना, एकान्त कैवल्य-जीवन मुक्ति; एकान्तचारी-निर्जन स्थान में घूमने वाला। एकान्तता-(सं०स्त्री०) निर्जनता, अकेलापन।

एकान्तर-(सं०वि०) एकदिन के अँतरेका

एकान्तवास-(सं०पुं०) निर्जन स्थान में बिना किसी साथी के रहना। एकान्तवासी-(सं०वि०) एकान्त में निवास करने वाला। एकान्तविहारी-(सं०वि०) अकेला घूमनेवाला।

एकान्तिक-(सं०वि०)फलस्वरूप,अन्तिम।

एकान्ती-(सं०पुं०) वह भक्त जो एकान्त में बैठकर विष्णु को भजता है, एक ही को मानने वाला।

एकार-(सं०पुं०) स्वर वर्ण का ग्यारहवां अक्षर 'ए'।

एकार्थ, एकार्थक-(सं०वि०) समानार्थक, एक ही अर्थ का। एकार्थता-(सं०स्त्री०) अर्थ की अभिन्नता।

एकावली-(सं०स्त्री०) एक लर की माला, एक अलंकार जिसमें पूर्व पद के प्रति पर (बाद के) पद का विशेषण रूप से स्थापित होना या निषेध दिखलाया जाता है।

एकाश्रम-(सं०पुं०) निर्जन स्थान।

एकाह-(सं०वि०) एक दिन में समाप्त होने वाला।

एकाहार-(सं०पुं०) दिन में केवल एक बार भोजन। एकाहारी-(सं०वि०) दिन में एक बार भोजन करनेवाला।

एकीकरण-(सं०नपुं०) इकट्ठा करने का काम, इकट्ठा करना।

एकीकृत-(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ। एकीभूत-(सं०वि०)मिश्रित, मिला हुआ

एकेक्षण-(सं०वि०) एक आँखका,काना।

एकेन्द्रिय-(सं०पुं०) इन्द्रियों को भली बुरी बातों से अलग रखते हुए मनकी ओर लीन करना, वह प्राणि (यथा जोंक इ०) जिसको एक ही इन्द्रिय अर्थात् त्वचा होती है।

एकैक-(सं०वि०) एकाकी, अकेला।

एकोत्तरसौ-(हिं०वि०) एकसौएक-१०१

एकोदर-(सं०पुं०) सहोदर, एकही पेट से उत्पन्न।

एकोद्दिष्ट-(सं०नपुं०) किसी एक मृत व्यक्ति के उद्देश्य से किया जाने वाला श्राद्ध।

एकौझा-(हिं०वि०) अकेला।

एक्का-(हिं०वि०) अकेला, एक से संबंध रखने वाला (पुं०) दुपहिया गाड़ी जिसको एक बैल या घोड़ा खींचता है, तास का पत्ता जिसमें एक बूटी रहती है, झुंड को छोड़कर अकेला रहने वाला पशु, अद्वितीय योद्धा। एक्कावान-(हिं०पुं०) एक्का हाँकने वाला पुरुष। एक्कावानी-(हिं०स्त्री०) एक्का हाँकने का काम।

एक्की-(हिं०स्त्री०) एक बैल से खींची जाने वाली गाड़ी, ताश का वह पत्ता जिसमें एकही बूटी हो।

एक्यानबे-(हिं०वि०) नब्बे और एक (पुं०) नब्बे और एक की संख्या ९१।

एक्यावन-(हिं०वि०) पचास और एक (पुं०) पचास और एक की संख्या५१

एक्यासी-(हिं०वि०) अस्सी और एक (पुं०) अस्सी और एककी संख्या८१।

एड़ी-(हिं०स्त्री०) पार्ष्णि, पैर के पंजे के पीछे का उभड़ा हुआ भाग।

एढ़ा-(हिं०वि०) आढय, बलवान।

एतद-(सं०सर्व०) यह।

एतदनन्तर-(सं०अव्य०) इसके बाद।

एतदर्थ-(सं०अव्य०) इस निमित्त।

एतदवधि-(सं०अव्य०) यहां तक।

एतदेव-(सं०अव्य०) यही, दूसरा नहीं।

एतद्देशीय-(सं०वि०) इस देश से संबंध रखने वाला, इस देश का।

एतना-(हिं०क्रि०वि०) देखो इतना।

एतवार-देखो इतवार।

एतवारी-(हिं०वि०)इतवारको होनेवाला

एता-(हिं०वि०) इस परिमाणका,इतना

एतादृश-(सं०वि०) ऐसा, इसके सदृश।

एतावत-(सं०वि०) इस परिमाण का।

एतीक-(हिं०वि०) इस परिमाण की,इतनी

एमन-(हिं०पुं०) एक राग विशेष; एमन-कल्याण-एमन और कल्याण के योग से बना हुआ राग।

एरंड-(हिं०पुं०) रेंड़, रेंड़ी।

एरण्ड-(सं०पुं०) देखो एरंड; एरण्ड तैल-रेंड़ी के बीज का तेल।

एला-(सं०स्त्री०) इलायची।

एलुवा-(अं०पुं०) बोल, मुसब्बर।

एव-(सं०अव्य०) इसी प्रकार से, ऐसे, ही, भी।

एवं-(सं०क्रि०वि०) इसी प्रकार से,ऐसे ही

एवमस्तु-ऐसा ही हो (अव्य०) ऐसे ही और

एशियाई-(हिं०वि०) एशिया महाद्वीप से सम्बन्ध रखने वाला।

एषणा-(हिं०स्त्री०) इच्छा।

एषिता-(सं०वि०) अभिलाषा युक्त, चाहने वाला।

एहि-(हिं०सर्व०) एष, यह।

एहो-(हिं०अव्य०) संबोधन का शब्द, अरे, हे, ओ।

ऐ

ऐ-संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला का बारहवाँ अक्षर इसका उच्चारण कण्ठ और तालू है (अव्य०) आहवान, पुष्कर, (पुं०) महेश्वर, महादेव।

ऐं-(हिं०अव्य०) भली भाँति न सुनी या समझी हुई बात के लिये प्रयोग होता है, एक आश्चर्य सूचक अव्यय।

ऐंचना-(हिं०क्रि०)खींचना,तानना,ओढ़ना

ऐंचाताना-(हिं०वि०) फिरी हुई आँख वाला,भेंगा देखने वाला। ऐंचातानी-(हिं०स्त्री०) खींचा खाँची, नोच खसोट, खिंचाव, आग्रह।

ऐंचीला-(हिं०वि०) लचीला।

ऐंछना-(हिं०क्रि०) झाड़ना, बालों में कंघी करना, साफ़ करना।

ऐंठ-(हिं०स्त्री०) लपेट, मरोड़, अभिमान, अकड़, विरोध, द्वेष, घमंड, बुरा भाव, ठसक।

ऐंठन-(हिं०स्त्री०) पेंच, घुमाव, लपेट, खिंचाव, तनाव। ऐंठना-(हिं०क्रि०) घुमाना, फेरना, मरोड़ना, बल देना, बल खाना, तानना, खिंचना, छल से लेना, ठगना, घूमना, अकड़ना, टर्राना,घमंड दिखलाना। ऐंठवाना-(हिं०क्रि०) ऐंठने का काम दूसरे से करवाना।

ऐंठा-(हिं०पुं०) रस्सी ऐंठने का एक यन्त्र, घोंघा।

ऐंठाबैंठा-(हिं०वि०) अंडबंड, तिरछा मिरछा।

ऐंठाना-(हिं०क्रि०) देखो ऐंठवाना।

ऐंठी-(हिं०स्त्री०) फिरी हुई, मुड़ी हुई।

ऐंठू-(हिं०पुं०) अभिमानी पुरुष।

ऐंड़-(हिं०स्त्री०) अभिमान,तनाव,अकड़, पानी का भँवर (वि०) घूमा हुआ, निकम्मा।

ऐंड़दार-(हिं०वि०) अभिमानी, गर्वीला, घमंडी, कुटिल, बांका, नोक झोंक वाला, ठसक वाला।

ऐंड़ना-(हिं०क्रि०) घूमजाना, बलखाना, ऐंठना, अंगड़ाई आना, अभिमान करना, इतराना, घुमाना, देह टूटना

ऐंड़बेंड़-(हिं०वि०) तिरछा बाँका, बल खाया हुआ।

ऐंड़ा-(हिं०वि०) ऐंठा हुआ, घुमौवा, (पुं०) परिमाण, सेंध।

ऐंड़ाना-(हिं०क्रि०) अंगड़ाई लेना, अकड़ दिखलाना, नाक भौंह चढ़ाना, शरीर तोड़ना, इठलाना।

ऐंडा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का गड़ासा

ऐकपत्य-(सं०नपुं०) देखो एकाधिपत्य।

ऐकमत्य-(सं०नपुं०) सम्मान, सम्मति, एक राय।

ऐकवाक्य-(सं०नपुं०) देखो एकवाक्यता

ऐकाहिक-(सं०वि०) एक दिन में होने वाला।

ऐक्य-(सं०नपुं०)एकता,सादृश्य,बराबरी

ऐगुन-(हिं०पुं०) देखो अवगुण।

ऐच्छिक-(सं०वि०) इच्छा के अनुसार।

ऐतरेय-(सं०पुं०) ऋग्वेद की एक शाखा ऐतरेयी-(सं०पुं०) ऐतरेय ब्राह्मण पढ़ने वाला।

ऐतिहासिक-(सं०वि०) इतिहास संबंधी, जो इतिहास से मालूम हो, इतिहास पढ़ने वाला।

ऐतिह्य-(सं०नपुं०)परम्परागत, जो बात बहुत दिनों से सुनने में आती है।

ऐन-(अ०वि०) उपयुक्त, पूरा, ठीक।

ऐनक-(अ०स्त्री०) उपनेत्र, आँख में लगाने का चश्मा।

ऐना-(हिं०पुं०) आइना, दर्पण।

ऐन्द्रजालिक-(सं०पुं०) जादूगर, (वि०) इन्द्रजाल करने वाला, मायावी।

ऐन्द्रिय-(सं०वि०) इन्द्रिय संबधी, इन्द्रिय द्वारा ज्ञान।

ऐन्द्री-(सं०स्त्री०) इन्द्र की पत्नी, दुर्गा।

ऐपन-(हिं०पुं०) हल्दी के साथ चावल को पीस कर बनाया हुआ लेप जो कलश आदि पर थापा लगाया जाता है।

ऐब-(अ०पुं०) दोष, अवगुण, बुराई, कलंक, बुरा अभ्यास।

ऐबारा-(हिं०पुं०) भेड़ बकरी, बांधने का बाड़ा।

ऐराक, ऐराकी-देखो एराक, एराकी।

ऐरागैरा-(हिं०वि०) अपरिचित, तुच्छ, छोटे पद का।

ऐरापति-(हिं०पुं०) देखो ऐरावत।

ऐरावत-(सं०पुं०) इन्द्र का हाथी, इन्द्र-धनुष, बिजली, पूर्व दिशा की हाथी, नारंगी, बढ़हर।

ऐरावती-(सं०स्त्री०) ऐरावत की स्त्री, बिजली, रावी नदी।

ऐल-(सं०पुं०) इला का पुत्र पुरूरवा (हिं०पुं०) बाढ़।

ऐश्वर-(सं०वि०) शक्तिशाली, शिव-सम्बन्धी।

ऐश्वर्य-(सं०नपुं०) प्रभुत्व,धन,सम्पत्ति, आधिपत्य,अणिमादि आठ सिद्धियां। ऐश्वर्यकर्मा-बड़े बड़े काम करने वाला, ऐश्वर्यवान-सम्पन्न, वैभवयुक्त।

ऐसा-(हिं०क्रि०वि०) इस प्रकार से, इस तरह से (वि०) इस ढंग का, इस प्रकार का; ऐसा तैसा-तुच्छ, निकृष्ट।

ऐसे-(हिं०क्रि०वि०) इस रीति या प्रकार से।

ऐहिक-(सं० वि०) इस लोक से संबंध रखने वाला, संसारी।

ओ

ओ-संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ तथा ओष्ठ है (सं०पुं०) ब्रह्मा, (अव्य०) विस्मय तथा आश्चर्य सूचक शब्द।

ओं-(सं०अव्य०) ॐकार, परब्रह्म वाचक शब्द, प्रणव, तथास्तु, बहुत अच्छा।

ओइंछना-(हिं०क्रि०) वारना, न्योछावर करना।

ओंकार-(सं०अव्य०) देखो ओं।

ओंगना-(हिं० क्रि०) गाड़ी की पहिये के धुरेमें चिकना लगाना जिसमें पहिया सहज में घूम सके।

ओंगा-(हिं०पुं०) अपामार्ग, चिचिड़ा

ओंठ-(हिं०पुं०) देखो ओष्ठ,होंठ ओंठ चबाना-क्रोध दिखलाना; ओंठचाटना लालच से होंठों पर जीभ फेरना. ओंठ फरकना-क्रोधसे ओंठ कँपना

ओंड़ा-(हिं०वि०) गहरा (पुं०)गड्ढा,सेंध

ओंध-(हिं०पुं०) छप्पर बाँधनेकी रस्सी

ओश्रा-(हिं०पु०) हाथी फँसानेका गड्ढा।

ओक-(सं०स्त्री०) ओकाई, मचली, आश्रय, रहने का ठिकाना, घर, (पुं०) पक्षी, शूद्र, अंगुली।

ओकना-(हिं०क्रि०) वमन करना, क़य करना, भैंस की तरह चिल्लाना।

ओकपति-(सं०पुं०) सूर्य या चन्द्रमा।

ओकाई-(हिं०स्त्री०) वमन की इच्छा।

ओकार-(सं०पुं०) 'ओ' अक्षर।

ओकारान्त-(सं०वि०) जिस शब्द के अन्त में 'ओ' रहे।

ओकी-(हिं०स्त्री०) देखो ओकाई।

ओखक-(हिं०स्त्री०) औषधि, दवा।

ओखरी-(हिं०स्त्री०) देखो ओखली।

ओखल-(हिं०पुं०) उदूखल, ओखली।

ओखली-(हिं०स्त्री०) उदूखल; **ओखली में सिर डालना**-कष्ट सहने के लिये तैयार होना।

ओखा-(हिं०पुं०) बहाना, मिस (वि०) सूखा, टेढ़ा, दूषित, खोटा, विरल, जो घना न हो।

ओग-(हिं०पुं०) कर, चंदा, लगान।

ओगरना-(हिं०क्रि०) चूना, पसीजना।

ओगल-(हिं०पुं०) ऊसर भूमि, परती भूमि

ओघ-(सं०पुं०) समूह, ढेर, घनत्व, पानी का बहाव, बाढ़, परम्परा, पुरानी चाल, उपदेश।

ओङ्कार-(सं०पुं०) प्रणव, ओं।

ओंछना-(हिं०क्रि०) देखो ऊंछना।

ओछा-(हिं०वि०) क्षुद्र, तुच्छ, छोटा, हलका, छिछला, शक्तिहीन, कम पड़नेवाला।

ओछाई-(हिं०स्त्री०) देखो ओछापन।

ओछापन-(हिं०पुं०) क्षुद्रता, नीचता, हलकापन।

ओज-(सं०नपुं०) बल, प्रताप, तेज, चमक, सहारा, प्रकाश, शस्त्रादि में कुशलता, वैद्यक के अनुसार रसादि का सार भाग, पदाडम्बर का काव्य में गुण।

ओजना-(हिं० क्रि०) अवरोध करना, रोकना, मार लेना।

ओजस्विता-(सं० स्त्री०) तेजस्विता, प्रकाश, चमक।

ओजस्वी-(सं०वि०) प्रतापी, प्रभावशाली शक्तिमान्।

ओझ-(हिं०पुं०) उदर, पेट, आँत।

ओझइत-(हिं०पु०) देखो ओझा।

ओझर-(हिं०पुं०) उदर, पेट, पेटकी थैली।

ओझरी-(हिं०स्त्री०) देखो ओझर।

ओझल-(हिं० स्त्री०) छाया, परछाईं, ओट, परदा, आड़-(वि०) गुप्त, छिपा हुआ।

ओझला-(हिं०पुं०) बच्चे का दूध पी कर उगलना।

ओझा-(हिं०पुं०) भूत प्रेत उतारनेवाला पुरुष, मैथिल ब्राह्मणोंकी एक उपाधि, बाजीगर, चालाक।

ओझाई-(हिं० स्त्री०) ओझा की वृत्ति, झाड़फूंक।

ओझाइन-(हिं०स्त्री०) ओझा की स्त्री।

ओझैती-(हिं०स्त्री०) देखो ओझाई।

ओट-(हिं०स्त्री०) अवरोध, रोक, आड़ छाया, परछाई, गुप्त स्थान, घूंघट, बचाव, सहारा; **ओटमे**-बहाने से।

ओटन-(हिं० स्त्री०) कपास के बिनौले अलग करने की चर्खी।

ओटना-(हिं०क्रि०) कपास के बिनौले अलगाना, बीच बीच में रोकना, अपनी ही बात कहते रहना।

ओटनी ओटी-(हिं० स्त्री०) कपास के बिनौले निकालने की चर्खी।

ओठंगना-हिं०पुं०) आधार।

ओठंगना-(हिं क्रि०) किसी वस्तु के सहारे बैठना या लेटना, सहारा लेना, थोड़ी देर के लिये आराम करना।

ओठगाना-(हिं०क्रि०) सहारेसे टिकाना, किवाड़ बन्द करना।

ओड़-(हिं०स्त्री०) ओट, आड़।

ओड़चा-(हिं०पुं०) खेत सींचने का काठ का टोकरी के आकार का पात्र।

ओड़न-(हिं० स्त्री०) अवरोध, रुकाव, बचाव का पदार्थ, ढाल।

ओड़ना-(हिं०क्रि०) अवरोध लगाना, रोकना, पसारना, फैलाना।

ओड़व-(सं०पु०) एक राग विशेष जिसमें केवल पांच ही स्वर लगते हैं।

ओड़ा-(हिं०पु०) टोकरा, खांचा, गड्ढा, सेंध, (वि०) गहरा, न्यूनता।

ओड्र-(सं०पु०) उडीसादेश; **ओड्रदेश**-उत्कल देश।

ओढ़न-(हिं०स्त्री०) वस्त्र से शरीर को ढांपने का काम, ओढने का वस्त्र।

ओढ़ना-(हिं०क्रि०) लपेटना, वस्त्र से शरीरको ढापना, रोकना, अपने ऊपर किसी कार्य का भार ले लेना (पु०) शरीर ढांपने का वस्त्र, चादर।

ओढ़नी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के ओढनेका वस्त्र, छोटी चादर।

ओढ़र-(हिं०पुं०) छल, धोखा, बहाना।

ओढ़वाना-(हिं०क्रि०) ढपवाना, ओढाने का काम किसी दूसरे से करवाना।

ओढ़ाना-(हिं०क्रि०) दूसरे के शरीर को वस्त्र से ढांपना।

ओढ़ौनी-(हिं०स्त्री०) देखो ओढनी।

ओत-(सं०वि०) भरा हुआ, बुना हुआ, (हिं०स्त्री०) कपड़े के ताने का सूत, सुख, विश्राम आराम, आलस्य, सुस्ती, लाभ, बचत।

ओतप्रोत-(सं०वि०) संघटित, एक दूसरे मिला हुआ, (पुं०) तानाबाना।

ओता-(हिं० वि०) उस परिमाण का, उतना।

ओती-(हिं०वि०) उतना।

ओत्ता-(हिं०वि०) उतना।

ओद-(हिं०पुं०) तरी, गीलापन, (वि०) गीला, तर।

ओदन-(सं० नपुं०) पका हुआ चावल, भात।

ओदनीय-(सं०वि०) भोजन करने योग्य पदार्थ।

ओदर-(हिं०) देखो उदर।

ओदरना-(हिं०क्रि०) छिन्न भिन्न होना, फटना।

ओदा-(हिं०वि०) तर, गीला।

ओदारना-(हिं०क्रि०) तोड़ना फोडना, छिन्न भिन्न करना, फाड़ डालना, नष्ट करना।

ओधना-(हिं० क्रि०) बधन में पड़ना, अटकना।

ओधे-(हिं०पु०) स्वामी, मालिक।

ओनंत-(हिं०वि०) अवनत, झुका हुआ।

ओनचन-(हिं०स्त्री०) खटिये के पायताने में कसने की रस्सी, अदवायन।

ओनचना-(हिं०क्रि०) अदवायन कसना।

ओनवना-(हिं०क्रि०) देखो उनवना।

ओना-(हिं०पु०) गड्ढे तालाब आदि का पानी निकालने का मार्ग।

ओनाड़-(हिं०वि०) शक्तिमान, पुष्ट।

ओनाना-(हिं०क्रि०) सुनना, कानलगाना।

ओनामासी-(हिं०स्त्री०) ओंनमः सिद्धम् विद्यारम्भ के समय का मांगलिक वाक्य आरंभ।

ओप-(हिं० स्त्री०) चमक, शोभा, रंग, कलई।

ओपची-(हिं०पु०) कवचधारी योद्धा।

ओपना-(हिं०क्रि०) चमकाना।

ओपनिवारी-(हिं०वि०) चमकनेवाली।

ओपनी-(हिं०स्त्री०) तलवार आदि को चमकाने का साधन।

ओम्-(सं०अव्य०) ईश्वर वाचक शब्द, प्रणव।

ओबरी-(हिं०स्त्री०) छोटी कोठरी।

ओर-(हिं० स्त्री०) दिशा, पक्ष, अलंग, (पु०) छोर, किनारा, अन्त, आरम्भ।

ओरती-(हिं०स्त्री०) देखो ओलती।

ओरना-(हिं०पु०) बाँह।

ओरमना-(हिं० क्रि०) सहारा लेना, लटकना।

ओरमा-(हिं०स्त्री०) कपड़े के किनारे पर की एक प्रकार की सिलाई।

ओरवना-(हिं०क्रि०) गाय भैंसके थनमें दूध उतरना।

ओरहना-(हिं०पु०) देखो ओलहना।

ओरा-(हिं०पु०) देखो ओला।

ओराना-(हिं०क्रि०) चुक जाना, अन्त होना।

ओराहना-(हिं०पुं०) देखो उलाहना।

ओरिया-(हिं० स्त्री०) खूटे के पासकी लकड़ी।

ओरी-(हिं०स्त्री०) ओलती (अव्य०) संबोधन का शब्द जो स्त्रियों के लिये प्रयोग होता है।

ओरौता-(हिं०वि०) अन्त का, चुकौता।

ओरौती-(हिं०स्त्री०) ओलती, छप्पर से बरसाती पानी गिरने का स्थान।

ओल-(सं०पुं०) सूरन, (हिं०स्त्री०) गोद, आड़, रक्षा, बहाना, शरण।

ओलती-(हिं०स्त्री०) छप्पर से बरसाती पानी गिरने का स्थान, ओरी।

ओलंबा, ओलंभा-(हिं०पुं०) ओलहना।

ओलना-(हिं० क्रि०) छिपाना, आड़ लगाना, परदा करना, सहन करना, रोकना, ऊपर लेना, भोंकना।

ओलमना-(हिं०क्रि०) लटकना, झुकना, सहारा लेना।

ओलरना-(हिं०क्रि०) लेटजाना ओलारना लेटा देना।

ओलहना-(हिं०पुं०) देखो उरहना।

ओला-(हिं० पुं०) वर्षा के साथ गिरा हुआ हिमका टुकड़ा, बिनौला, मिश्री का बना हुआ लड्डू (वि०) बहुत ठढा, सफ़ेद, (पुं०) परदा, आड़, छिपी हुई बात।

ओलाना-(हिं०क्रि०) भूनना, सेकना।

ओली-(हिं०स्त्री०) क्रोड, गोदी, अचल, पल्ला, झोली।

ओलौना-(हिं०पुं०) उदाहरण, दृष्टान्त।

ओल्यो-(हिं०पुं०) बहाना।

ओषध-(सं०नपुं०) औषधि, वनस्पति, जड़ी-बूटी।

ओषधि-(सं०स्त्री०) देखो ओषध।

ओषधिपति-चन्द्रमा, वैद्य, कपूर।

ओषधीश-(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर।

ओष्ठ--(सं० पुं०) दन्तच्छद, होंठ;

ओष्ठगतप्राण-मरणासन्न, मृतप्राय।

ओष्ठ्य-(सं०वि०) ओष्ठ संबंधी, होंठ से उच्चारण किया जाने वाला।

ओष्ण-(सं०वि०) थोड़ा गरम।

ओस-(हिं०स्त्री०) रात्रि में आकाश से भूमि पर गिरने वाली तरी, यह एक प्रकार का बाष्पीय जल है, गहरी ओस पाला कहलाती है।

ओसनना-(हिं०क्रि०) आटा सानना, गूंधना

ओसर-(हिं० स्त्री०) गर्भ धारण करने योग्य गाय या भैंस।

ओसरा-(हिं०पुं०) अवसर, समय।

ओसरी-(हिं०पुं०) देखो ओसर, पारी।

ओसवाल-(हिं०पुं०) जैनियों की एक शाखा।

ओसाई-(हिं०स्त्री०) ओसाने का काम, गल्ला उड़ाने या ओसाने की भृति

ओसाना-(हिं०क्रि०) दायें हुए गल्ले को हवा में उड़ाकर भूसा और अन्न अलग करना, हवामें फेंकना।

ओसार-(हिं०पुं०) विस्तार, चौड़ाई, फैलाव।

ओसारा-(हिं०पुं०) दालान, छप्पर।

ओसीला-(हिं०पुं०) देखो वसीला।

ओसीसा-(हिं०पुं०) बिछावन का ऊपरी भाग, सिराहना, उपधान, तकिया।

ओसूल-(हिं०पुं०) देखो वसूल।

ओसेका-(हिं०पुं०) देखो वसीका।

ओह-(हिं०अव्य०) दुःख अथवा आश्चर्यसूचक अव्यय; अरे! हाय!

ओहका-हिं०अव्य०) उसका (हिं०सर्व०)

ओहट-(हिं०स्त्री०) व्यवधान, ओट, आड़।

ओहमा-(हिं०अव्य०) उसमें (हिं०सर्व)

ओहर-(हिं०अव्य०) उस ओर।
ओहरना-(हिं०क्रि०) ऊपर से नीचे की ओर आना, घट जाना।
ओहरी-(हिं०स्त्री०) म्लानता, थकावट
ओहरूवा-(हिं०पुं०) झालर,परदा,ओहा
ओहा-(हिं०पु०) ऊहस, गाय का थन।
ओहार-(हिं०पु०) गाड़ी,पालकी इत्यादि के ऊपर ढापने का वस्त्र, परदा।
ओहेला-(हि०स्त्री०) देखो अवहेला।
ओहो-(हिं०अव्य०)विस्मय तथा आनन्द प्रकट करने के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है, अरे!अहो!आहा!

औ

औ-संस्कृत स्वर वर्ण का चौदहवां अक्षर, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ और कण्ठ है, शूद्रों का प्रणव, अनन्त, पृथ्वी। (हि०अव्य०) और।
औंगना-(हिं०क्रि०) पहिये के धुवे में तेल देना।
औंगा-(हिं०वि०) मौन, गूंगा, चुपचाप,
औंगी-(हि०स्त्री०) गूंगापन, चुपकी,
औंघ-(हि०स्त्री०) औघाई, झपकी, हलकी नींद।
औंघना-(हि०क्रि०) झपकी लेना, ऊंघना
औंघाना-(हिं०क्रि०) देखो ऊंघना।
औंघाई-(हिं०स्त्री०) ऊंघ, झपकी।
औंजना-(हिं०क्रि०) घबड़ाना,अकुलाना, उकताना।
औंटन-(हि०पु०)चारा काटने की लकड़ी, पकाकर गाढा होना। **औंटना**-(हि०क्रि०) उबलना, खोलना, जलना।
औंटाना-(हिं०क्रि०) उबालना, पकाना, खोलाना।
औंठ-(हिं०स्त्री०) उठा हुआ या उभड़ा हुआ किनारा।
औंड़-(हिं०पु०) बेलदार, मिट्टी खोदने वाला श्रमिक।
औंड़ा-(हिं० वि०) गहरा, खोदा हुआ, उभड़ा हुआ।
औंदना-(हिं०क्रि०) उन्मत्त होना, घबड़ाना, बेसुध होना, खाना, उड़ाना।
औंदाना-(हिं०क्रि०) घबड़ाना,उगताना
औंधना-(हिं०क्रि०) उलट जाना, मुँहके बल पड़ना, उलटा कर देना।
औंधा-(हिं०वि०) उलटा, मुंह के बल पड़ा हुआ, टेढ़ा, (क्रि०वि०) उलटकर (पु०) मूर्ख। **औंधे मुंह गिरना**-बड़ा धोखा खाना। **औंधाना**-(हिं०क्रि०) उलटाना, पात्र का मुंह नीचे को करना, उंडेलना।
औंनापौना-(हिं०वि०) चौथा हिस्सा कम
औंरा-(हिं०पुं०) देखो आमला।
औंहर-(हिं०स्त्री०) अड़चन, उलझन।
औकान-(हिं०पु०)कटे हुए अन्न की ढेर
औकास-(हिं०पु०) देखो अवकाश।
औखद-(हिं०पुं०) देखो औषध।
औंखल-(हिं०पुं०) नये सिरे से जोती हुई भूमि।
औखा-(हिं०पु०) गाय बैलका चमड़ा।
औखी-(हिं०स्त्री०) गँवारू भाषा, टेढ़ी बात।
औगढ-(हिं०वि०) देखो अवगढ, बेढंगी रीति से बनाया हुआ।
औगत-(हिं०स्त्री०) दुर्गति, दुर्दशा, (वि०) अवगत, जानबूझकर।
औगल-(हिं०स्त्री०) भूमिके नीचेकी तरी
औगाह-(हिं०वि०) गहरा। **औंगाहना**-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना।
औगी-(हिं०स्त्री०)हाथी फंसाने का गड्ढा, बैल गाड़ी हाँकने की छड़ी, पैना, बटी हुई रस्सी का बना हुआ कोड़ा।
औगुन-(हिं०पु०)देखो अवगुण। **औगुनी**-(हिं०वि०) गुणरहित।
औघ-(स०पुं०) जल समूह, बाढ़।
औघट-(हिं०वि०) दुस्तर,कठिन, ढालुवाँ
औघड़-(हिं०वि०) फूहड़,अनाड़ी, उलटा पुलटा (पु०) अघोरी, अघोरपंथी
औघर-(हिं०वि०) विपरीत, अद्भुत, विलक्षण।
औचक-(हिं०क्रि०वि०) अचानक, धोखेसे
औचट-(हि०क्रि०वि०) अचानक, धोखेसे, तुरत,झटपट,भूल से(स०स्त्री०)कठिनता, संकट,संकुचित स्थान, फँसाव।
औचित-(हिं०वि०) चिन्ता रहित।
औचित्य-(सं०नपुं०) उपयुक्तता, सत्य, सचाई।
औजड़-(हिं०वि०) फूहड़, असभ्य,गँवार
औझक-(हिं०क्रि०वि०) एकाएक,झट से।
औझड़-(हि०स्त्री०)प्रहार,धक्का,(क्रि०वि०) झटके के साथ, उछल कर,निरन्तर।
औटन०(हिं० स्त्री०) गर्म करने की स्थिति, उबाल। **औटना**-(हिं०क्रि०) उबालना, गरम करके गाढ़ा करना, भ्रमण करना, घूमना फिरना, क्रोध से लाल होना।
औटनी-(हि०स्त्री०) हलवाई का चाशनी घोटने का डंडा।
औटा-(हिं०वि०) खौलाया हुआ,उबाला हुआ। **औटाई**-(हिं०स्त्री०) औंटाने का काम। **औटाना**-(हिं०क्रि०) पका कर गाढ़ा करना।
औटी-(हिं०स्त्री०) औटाकर या उबाल कर गाढ़ी की हुई औषधि।
औढव-(हिं०वि०) बेढंगा, ऊटपटांग।
औढर-(हिं०वि०) इधर उधर घूमने वाला, मनमौजी।
औतेस-(हिं०पुं०) देखो अवतंस।
औतरना-(हिं०क्रि०) अवतार लेना।
औतार-(हिं०पुं०) देखो अवतारी।
औत्सुक्य-(स०नपु०)उत्कण्ठा,उत्सुकता, चिन्ता, अलंकार में अप्राप्ति से उत्पन्न होने वाला भाव।
औथरा-(हिं०वि०) देखो उथला।
औदकना-(हिं० क्रि०) चौंक पड़ना।
औदमिक-(स०पुं०) रोटी बनाने वाला, रसोइयादार।
औदरिक-(स०वि०)उदर संबंधी, भूखा, बहुभोजी, पेटू।
औदस-(हिं०पुं०) अपयश; दुर्नाम
औदसा०(हिं०स्त्री०) अवदशा, दुर्भाग्य,
औदात-(हिं० पु०) देखो वदात।
औदान-(हिं०पु०) देखो अवान।
औदार्य-(सं०नपुं०) उदारता, वाक्य के अर्थ का गौरव, वेदान्त के अवनुसार मनोवृति।
औदासीन्य-(स०नपु०) उदासीनता।
औदुम्बर-(सं०वि०) गूलर का बना हुआ, तांबे का बना हुआ (पुं०) गूलर को लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र, ओखली, तांबा।
औद्धत्य-(स०नपुं०)अवनीतभाव, धृष्टता, अक्खड़पन।
औद्योगिक-(स०वि०) उद्योग से संबंध रखने वाला।
औध-(हिं०पु०) देखो अवध (स्त्री०) अवधि
औधमोहरा-(हिं०पु०) सिर ऊपर उठा कर चलनेवाला हाथी।
औधारना-(हिं०क्रि०) देखो अवधारना।
औधि-(हिं०स्त्री०) देखो अवधि।
औधिया०(हिं०पु०) तस्कर, चोर, ठग अवध का रहनेवाला।
औनत-(हिं०वि०) देखो अवनत।
औनापौना-(हिं०वि०) प्राय: तीन अंश का, आधा तिहा, थोड़ा बहुत (क्रि० वि०) कुछ कम पर, कमती बढ़ती पर
औनि-(हिं० स्त्री०) देखो अवनि।
औनप-(हिं०पु०) राजा।
औपकाय-(सं०नपुं०) मकान, डेरा, रावटी।
औपचारिक-(सं०वि०) उपचार संबंधी, अलंकारयुक्त, रंगीन।
औपटी-(हिं०वि०) विकट।
औपदेशिक-(स०वि०) उपदेशसे मिला हुआ।
औपद्रविक-(स०वि०) उपद्रव सम्बन्धी।
औपन्यासिक-(सं०वि०) उपन्याससंबंधी, विलक्षण, अनोखा।
औपनिवेशिक-(स०वि०) उपनिवेश संबंधी।
औपनिषद-(सं०वि०) उपनिषद के उपदेश के अनुसार आचरण करने वाला।
औपनिषदिक-(सं०) देखो औपनिषद।
औपपत्तिक-(सं०वि०) उपपत्ति संबंधी, स्वार्थसाधक (पुं०) लिंग शरीर
औपमिक-(सं०वि०) उपमा द्वारा कहा हुआ।
औपम्य-(सं०नपुं०) सादृश्य,बराबरी।
औपयौगिक-(स०वि०) उपयोग संबंधी
औपवासिक-(सं०वि०) उपवास के उपयोग का।
औपशमिक-(स०वि०) ठंढा करनेवाला
औपसर्गिक-(स०वि०) उपसर्ग सम्बंधी
औपश्लेषिक-(सं०वि०) उपश्लेष संबंधी, मेली। **औपश्लेषिक आधार**-अधिकरण कारक में वह आधार जिसका लगाव किसी अंश में ही हो।
औपस्थिका-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
औपहारिक-(स०वि०) उपहार के उपयोग का।
औपाधिक-(सं०वि०) उपाधि सम्बन्धी
औभ-(हिं०स्त्री०) अवम तिथि।
और-(हिं०वि०) अन्य, दूसरा, केवल, अधिक, (पु०) अन्य, पुरुष (अव्य०) किन्तु, **और का और** सर्वथा भिन्न; **और क्या**-ऐसाही है;।
औरना-(हिं०क्रि०) अग्रसर होना।
औरस-(स०पुं०) समान जाति की विवाहित भार्या से उत्पन्न पुत्र।
औरसक-(स०वि०) उत्तम, अच्छा।
औरसना-हिं०क्रि०) रुष्ट होना,बिगड़ना
औरासा-(हिं०वि०) विलक्षण।
औरेब-(हिं०नपुं०) वक्रगति, उलटी चाल, कपड़े की तिरछी तराश, फँसाव, जटिल विषय,।
और्ध्वदेहिक-(सं०वि०) अन्त्येष्टिक्रिया संबंधी।
औल-(हिं०पुं०) जंगली ज्वर। **औलना**-(हिं०क्रि०) जलना, गरम पड़ना
औलमौला-(हिं०वि०) मनमौजी।
औली-(हिं०स्त्री०) ताजी तोड़ी हुई अन्न की बाल।
औलू-(हिं०वि०) नया, अनोखा, असाधारण, कठिन।
औशि-(हिं०अव्य) देखो अवश्य।
औषध-(सं०नपुं०) रोगनाशक द्रव्य, दवा; **औषधि**-(सं०स्त्री०) औषधि, दवा **औषधी**-देखो औषधि।
औसत-(अ०पुं०) मध्यावस्था, सबसे बड़े और सबसे छोटे की बीच की संख्या (वि०) बीचवाला, सामान्य।
औसन-(हिं०स्त्री०) उष्णता, गरमी, व्याकुलता घबड़ाहट। **औसना**-(हिं० क्रि०) गर्मी बढ़ना, ऊमस होना, व्याकुल होना, घबड़ाना, सड़ना।
औसर-(हिं०पुं०) अवसर।
औसान-(हिं०पुं०)देखो अवसान, एहसान
औसाना-(हिं०क्रि०) पकाना।
औसेर-(हिं०स्त्री०)विलंब,देर,चिंता,दुःख
औहत-(हिं०स्त्री०) दुर्दशा, बुरा हाल।
औहास-(हिं०पुं०) देखो अवहास।

क

क- हिन्दी वर्णमाला का प्रथम व्यंजन, वर्ण, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है (सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, कामदेव, किरण, रुद्र, मन, शरीर, काल, धन, प्रकाश, शब्द, अग्नि, वायु, प्रजापति, मोर।
क-(सं०नपुं०) जल, सुख, केश,मस्तक।
कइत-(हिं०स्त्री०) किनारा, पार्श्व, कपित्थ
कइयाँ-(हिं०स्त्री०) देखो कइत।
कई-(हिं०वि०)कतिपय,अनेक,कितनेही।
कउवा-(हिं०पुं०) देखो कौवा।
कउर-(हिं०पुं०) देखो कवर।
कं-(हिं०अव्य०) देखो कम्।
कंउधा-(हिं०पुं०) दूर की बिजली चमकने का प्रकाश।
कंक-(हिं०पुं०) सफेद चील।
कंकड़-(हिं०पुं०) मिट्टी और चूने के योग से बने हुए रोड़े जिनको फूंक कर चूना बनता है, ये सड़कों पर भी पीट, कर जमाये जाते हैं, किसी वस्तु का पिसने योग्य छोटा टुकड़ा, पीनेकी सूखी तमाखू, रत्न। **कंकड़ी-**(हिं०स्त्री०) छोटा कंकड़, छोटा टुकड़ा
कंकड़ीला-(हिं०वि०) कंकड़ मिला हुआ
कंकन-(हिं०पुं०) देखो कंकण।
कंकर-(हिं०पुं०) देखो कंकड़।
कंकरीला-(हिं०वि०) देखो कंकड़ीला।
कंकरेत-(हिं०पुं०) देखो कंकरीट।
कंकाल-(हिं०पुं०) अस्थिपंजर।
कंकाली-(हिं०पुं०)एक प्रकार की नटजाति
कंकोल-(सं०पुं०) एक प्रकार की शीतलचीनी।
कखवारी, कंखौरी-(हिं०स्त्री०) कांख, कांख की फोड़िया।
कंग-(हिं०पुं०) कवच।
कंगण-(हिं०पुं०) लोहे का चक्र जिसको अकाली सिर पर बाँधते हैं,कङ्कण।
कंगन-(हिं०पुं०) कङ्कण,वह गीत जिसको स्त्रियाँ कङ्कण बाँधते या खोलते समय गाती हैं। **कंगन-**(हिं० स्त्री० छोटा कंगन, छत के नीचे का उभड़ा हुआ भाग, खंभे का छल्ले के आकार का उभड़ा हुआ भाग, एक प्रकारका चावलके समान अन्न, ककुनी।
कंगला-(हिं०वि०) देखो कंगाल। **कंगलापन-**दैन्य भाव, निर्धनता।
कंगसी-(हिं०स्त्री०) गाँठ, कन्दा, मलखंभ की एक व्यायाम।
कंगही-(हिं०स्त्री०) देखो कंघी।
कंगाल-(हिं०वि०)निर्धन, दरिद्र,भुक्खड़
कंगाली-(हिं०स्त्री०) दरिद्रता,निर्धनता।
कंगुरिया-(हिं०स्त्री०) सबसे छोटी अंगुली
कंगूरा-(हिं०पुं०) प्रासाद की चोटी, शिखर, मुकुटमणि, आभूषण का कंगूरे के आकार का दाना। **कंगूरेदार-**(हिं०वि०) शिखायुक्त, चोटीदार
कंघा-(हिं०पुं०) बाल झारने की बड़ी कंघी, जुलाहे का एक यंत्र जिससे वे करगह मे भरनीके तागों को कसतेहैं।
कंघी-(हिं०स्त्री०) छोटा कंघा, जुलाहे का एक यंत्र, अतिबला नामक वृक्ष।
कंघेरा-(हिं०पुं०) कंघा बनाने वाला कारीगर। **कंच-**(हिं०पुं०) कांच।
कंचना-(हिं०पुं०) सुवर्ण, सोना।
कंचनी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
कंचुक-(हिं०पुं०) कवच,चोली। **कंचुकी-**(हिं०स्त्री०) चोली, केंचुली।
कंचेरा-(हिं०पुं०) कांच का काम करने वाला कारीगर।
कंचेली-(हिं०पुं०) वृक्षकी कोमल शाखा
कंज-(हिं०पुं०) ब्रह्मा, कमल, केश; कंजन-ब्रह्मा।
कंजई-(हिं०वि०) धुवें के रंग का, (पुं०) वह घोड़ा जिसकी आँखें कंजई रग की होती हैं।
कंजड़, कंजड़ा-(हिं०पुं०) एक घूमनेवाली जाति, इस जाति के लोग रस्सा इत्यादि बना कर बेंचते हैं; मैला डरपोक मनुष्य, भडुवा, इनकी स्त्री को कंजड़िन कहते हैं।
कंजा-(हिं०वि०) कंजई,(पुं०) कंजी आँख वाला मनुष्य, एक कंटीली झाड़ी
कंजास-(हिं०पुं०) मल, कूड़ा करकट।
कंजियाना-(हिं०क्रि०) धीमा पड़ना, मन्द होना।
कंजुवा-(हिं०पुं०) एक औषधि विशेष।
कंजूस-(हिं०वि०) कृपण, कम व्यय करने वाला,सूम। **कंजूसी-**(हिं०स्त्री०) कृपणता, सूमपन।
कंट, कंटक-देखो कण्ट, कण्टक।
कंटकित-देखोकण्टकित;
कंटर-(हिं०पुं०) कनस्टर, काँच का बर्तन, कराबा, मद्य, शर्बत इत्यादि रखने का सुन्दर बोतल।
कंटाइन-(हिं०स्त्री०) चुडैल, डाइन, दुष्ट स्त्री, (क्रि०वि०) पूर्ण रूपसे,भलीभांति
कंटाप-(हिं०पुं०) भारी अग्रभाग।
कंटिया-(हिं०स्त्री०) काँटी, छोटी कील, मछली फंसाने की लोहे की पतली टेढ़ी अंकुसी, लोहे की अंकुसियों का गुच्छा जिससे कुवें में गिरे हुए गगरे लोटे इत्यादि निकाले जाते हैं, सिर पर पहिरने का एक आभूषण।
कंटीला-(हिं०वि०) कांटेदार, जिसमें कांटे हों।
कंटोप-(हिं०पुं०) सिर तथा कानों को ढांपने की एक प्रकार की टोपी।
कंठ-(हिं०पुं०) देखो कण्ठ।
कंठला-(हिं०पुं०) बच्चों के गले में पहिराने का एक आभूषण।
कंठसिरी-(हिं०स्त्री०) गले का आभूषण।
कंठा-(हिं०पुं०) गले का चिन्ह जो तोते के कंठके चारो ओर पड़ जाता है, गले का एक आभूषण, फूलों का हार, हँसुली,कुरते का गले पर का चन्द्राकार कटाव। **कंठी-**(हिं०स्त्री०) छोटे दाने का कंठा, तुलसी आदि की माला; **कंठी देना-**गुरुमुख बनना, चेला होना; **कंठी लेना-**वैष्णव धर्मावलंबी बनना।
कंडरा-(हिं०पुं०) मूली सरसो आदि का मोटा डंठल जो तरकारी बनाकर खाया जाता है।
कंडा-(हिं०पुं०) गोबर का थापा हुआ लंबा टुकड़ा; **कंडा होना-**सूखजाना, मरजाना।
कंडारी-(हिं०पुं०)नाव चलाने वाला,मांझी
कंडाल-(हिं०पुं०) सिंघा, तुरुही, पानी रखने का बड़ा पात्र जिसका मुँह खुला होता है।
कंडिहरिया-(हिं०पुं०)कर्णधार।
कंडी-(हिं०स्त्री०) छोटा कंडा, गोहरी, गोंटा,टोकरी, एक प्रकार की टोकरी जिसमें पहाड़ी लोग बोझ ले जाते हैं
कंडील-(हिं०स्त्री०) कन्दील, लालटेन, यह कागज या अबरख की बनी होतीहै। **कंडीलिया-**(हिं०स्त्री०)प्रकाश गृह या ऊंचा धरहरा।
कंडु-(हिं०पुं०) देखो कण्डु।
कंडेरा-(हिं०पुं०) धुनियां।
कंडौर, कंडौरा-(हिं०पुं०) कंडा पाथने का स्थान, कंडों का ढेर, गोहरौर।
कंत-(हिं०पुं०) कान्त,प्रभु,मालिक,पति।
कंथ-(हिं०पुं०) देखो कंत।
कंद-(हिं०पुं०) गूदेदार जड़।
कंदन-(हिं०पुं०) नाश,विध्वंस, **कंदना-**नष्ट करना।
कंदर, कंदरा, कंदर्प-(हिं०)देखो कन्दर कन्दरा, कन्दर्प।
कंदा-(हिं०पुं०) शकरकन्द, घुइयां,अरुई
कंदील-(अं०स्त्री०) देखो कंडील।
कंदला, कंदैला-(हिं०वि०) मैलाकुचैला।
कंदुक-देखो कन्दुक।
कंध-(हिं०पुं०)स्कन्ध, कन्धा, डाल।
कंधनी-(हिं०स्त्री०) किंकिणी, कमर में पहिरने का आभूषण।
कंधर,कंधा-(हिं०पुं०) स्कंध, मोढा।
कंधार-(हिं०पुं०) अफगानिस्तान का एक प्रदेश, कर्णधार,मल्लाह, केवट।
कंधारी-(हिं०वि०) कंधार देश का (पुं०) कन्धार देश का घोड़ा।
कंधावर-(हिं०स्त्री०) बैल के कन्धे पर रखने का डुपट्टा या चद्दर, वह रस्सी जिसमें ताशा बाँध कर छाती पर लटकाया जाता है।
कंधियाना-(हिं०क्रि०) कन्धा देना, कंधे पर रखना।
कंधेला-(हिं०पुं०) स्त्रियों के कन्धे पर रहनेवाला।
कंधेली-(हिं०स्त्री०) अंडाकार मेखला जो गाड़ी में जुते हुए घोड़े के गर्दन पर रक्खी जाती है।
कंधैया-(हिं०पुं०) देखो कन्धैया।
कंपकंपी-(हिं०स्त्री०) कम्प, थरथराहट
कंपना-(हिं०क्रि०)थरथराना,कंपितहोना
कंपनी-(अं०स्त्री०) व्यापारियों का दल, व्यवसायिक मण्डली।
कंपा-(हिं०पुं०) लासा लगी हुई बांसकी लग्गी जिससे चिड़ीमार पक्षियों को फंसा कर पकड़ते हैं।
कँपाना-(हिं०क्रि०) इधर उधर चलना हिलना, डराना, भय दिखाना।
कंपास-(अं०स्त्री०) कुतुबनुमा, परकाल, नापने का यन्त्र।
कंपू-(हिं०पुं०) सेना के रहने का स्थान, शिविर, डेरा।
कंबर-(हिं०पुं०) देखो कम्बल।
कँवल-(हिं०पुं०) देखो कमल।
कँवलगट्टा-(हिं०पुं०) कमल का बीज।
कवांसा-(हिं०पुं०)लड़की के पुत्रका लड़का
कंस-(सं०पुं०) बरतन, कांसा, प्याला करोरा, आठ सेर की तौल, श्रीकृष्ण के मामा का नाम।
कंसक-(सं०नपुं०) लोहे का मल,कसीस
कंसकार-(सं०पुं०) कसेरा।
कंसताल-(सं०पुं०) झांझ, मजीरा।
कंसुला-(हिं०पुं०) काँसेका गड्ढा किया हुआ पासा जिसमें ठोंक कर सोनार घुंघरू आदि बनाते हैं। **कंसुली-**(हिं०स्त्री०) छोटा कंसुला।
कँसुवा-(हिं०पुं०) एक कीड़ा जो ईख के फ़स्ल को नष्ट करता है।
ककई--(हिं०स्त्री०) दोनों ओर दाँते का छोटा कंघा, पुरानी छोटे आकार की ईंट
ककड़ी-(हिं०स्त्री०) भूमि पर फैलने वाली एक लता जिसका लंबा फल खाया जाता है।
ककना-(हिं०पुं०) कङ्कण,इमलीका फल
ककनी-(हिं०स्त्री०) छोटा कँगन, इमली का छोटा फल,एक प्रकार की मिठाई
ककनू-(हिं०पुं०) एक पक्षी जिसके विषय मे कहा जाता है कि इसके गाने से घोंसला जल जाता है।
ककराली-(हिं०स्त्री०) कांखका कड़ा फोड़ा
ककरी-(हिं०स्त्री०) देखो ककड़ी।
ककवा-(हिं०पुं०)एक,यन्त्र जिससे जुलाहे करगह में भरनी के तागे भरते हैं।
ककहरा-(हिं०पुं०) वर्ण समूह, 'क' से 'ह' तक अक्षर।
ककही-(हिं०स्त्री०) कंघी, एक प्रकार का कपास।
ककुद्-(सं०पुं०) बैल के कंधे पर का कूबड़, डिल्ला, ध्वज, राजचिह्न, चोटी, शिखर।
ककुभ-(सं०पुं०) अर्जुनवृक्ष,ककुभ् (स्त्री०) दिशा, एक रागिणी का नाम।
ककुभा-(सं०स्त्री०) दिशा, मालकोस की पांचवीं रागिणी।
ककुह-(सं०पुं०) गाड़ी का वह भाग जिस पर गाड़ीवान बैठता है,
ककेड़ा-(हिं०पुं०) चिचिड़ा, खेखसा।
ककैया-(हिं०स्त्री०) लखौरिया ईंट।
कक्कड़-(हिं०पुं०) तमाखू की सेकी या

मूर्खा पत्ती जो छोटे चिलम में रख कर पी जाती है।
कक्का-(हिं०पुं०)केक्य देश जो काश्मीर के अन्तर्गत है, दुन्दुभी,नगाड़ा, काका।
कक्ष-(सं०पु०) बाहुमूल, बगल, कांख, लता, कच्छ,लाग,सूखा जंगल, पाप, जंगल, कमरा, कांख का फोड़ा, अचल, ग्रहों के घूमने का मार्ग, विरोध, कमरपेटी, अन्तः पुर, भैंसा सेना के दोनों ओर का भाग,समता, बराबरी, ग्रह,नक्षत्र,तुला का पलरा।
कक्षप-(सं०पु०) कच्छप, कछुआ।
कक्षा-(सं०स्त्री०) हाथी के बाँधने का रस्सा, कोठरी, बराबरी, काछ,लांग, विरोध, राजा का अन्तःपुर, अंचल, तुलना, श्रेणी, दरजा। **कक्षा पट**-(सं०पुं०) कौपीन, कांछ। **कख-वाली, कखौरी**-(हिं०स्त्री०) काँख की फोड़िया
कगवदी-(हिं०स्त्री०) कागज इत्यादि बाँधने का बस्ता।
कगर-(हिं०पु०) ऊँचा किनारा, ओंठ, सीमा, मेड़, बारी, कंगनी, भीत में उभड़ी हुई पट्टी, (क्रि०वि०) किनारे पर, अलग से।
कगार-(हि०पुं०) **कगरी**-(स्त्री०) ऊँचा किनारा, नदी का करारा, भूमि का ऊंचा भाग, टीला।
कङ्क-(सं०पु०) क्रौंचपक्षी, सफ़ेद चील, बकुला, यमराज, पाखंडी, ब्राह्मण, चन्दन, क्षत्रिय, एक प्रकार का बड़ा आम, अज्ञातवास में युधिष्ठिर ने अपना नाम कङ्क रक्खा था।
कङ्कण-(सं०नपुं०) हाथ में पहिरने की चड़ी, कंगन,विवाह के समय वर तथा कन्या के बाँधने का सूत्र, शिखर,चोटी
कङ्कणी-(सं०स्त्री०) धुनधन करने वाली घंटी, घुंघरू।
कङ्कत-(सं०नपुं०) केशमार्जन, कंघा।
कङ्कतिका-(सं०स्त्री०) कघी,छोटाकंघा
कङ्कपत्र-(सं०नपुं०) वाण, तीर।
कङ्कमुख-(सं०नपुं०) संड़सी।
कङ्कर-(सं०नपु०) मट्ठा, दसकरोड़ की संख्या (हिं०पुं०) कंकड़।
कङ्काल-(सं०पुं०) शरीर की ठठरी, अस्थिर पञ्जर। **कङ्कालमालिनी**-(सं०स्त्री०) काली देवी। **कङ्कालिनी कङ्काली**-(सं०स्त्री०) महाकाली की मूर्ति, कर्कशा।
कङ्कोल-(सं०पु०) शीतलचीनी।
कच-(सं०पु०) केश, बाल, सूखा हुआ व्रण, मेघ, बन्धन, झुंड, शोभा, बालक बृहस्पति के पुत्र का नाम, कपड़े का किनार (हिं०वि०) कच्चा, (पु०) धंसने या चुभने का शब्द।
कचक-(हिं०स्त्री०) दबने या कुचल जाने से उत्पन्न चोट।
कचकच-(हिं०पुं०) बकझक, बातों का झगड़ा। **कचकचाना**-(हिं०क्रि०) कच-कच करना, क्रुद्ध होना, बातों का झगड़ा लगाना, दाँत पीसना।

कचकड़-(-ड़ा)(हिं०पु०)कछुवे की खोपड़ी
कचकना-(हिं०क्रि०) दबना, कुचलना, ठोंकर खाना। **कचकाना**-(हिं०क्रि०) चुभाना, धँसाना, तोड़ना।
कचकोल-(हिं०पुं०) कपाल, खोपड़ी, खप्पर, नारियल का बना हुआभिक्षापात्र
कचट-(हिं०पु०) टक्कर, ठेस, एक प्रकार का शाक।
कचड़पचड़-(हि०पुं०) कचपच,बकझक।
कचड़ा-(हि०पुं०) कूड़ा करकट,झाड़न, भूसी युक्त अन्न, कपास, बिनौला।
कचदिला-(हिं०वि०) दुर्बल हृदय का, डरपोक, भीरू।
कचनार-(हिं०पुं०) सुगन्धित फलों का एक वृक्ष, इसकी कलियों की तरकारी भी बनती हैं।
कचपच-(हिं०पुं०) भीड़भाड़, कचकच, गुत्थमगुत्था।
कचपचिया,कचपची-(हिं०स्त्री०) कृत्तिका नक्षत्र जिसमें अनेक छोटे-छोटे नक्षत्र रहते हैं, स्त्रियों के माथे में लगाने की चमकीले बूंदों की टिकुली
कचपेंदिया-(हिं०वि०) कच्ची पेंदी का, हीन मांस, अस्थिर विचार का, ऊट-पटांग बकनेवाला।
कचबची-(हिं०स्त्री०) देखो कचपीच।
कचर पचर-(हिं०पुं०) कच्चा फल खाने पर मुख से निकलने वाला शब्द, कचपच, बकझक। **कचरकूट**-(हिं० स्त्री०) मारपीट, लात जूता, पेट भर कर भोजन। **कचरघान**-(हिं०पुं०) भीड़भाड़, गुत्थम गुत्था, मारपीट।
कचरना-(हिं०क्रि०) पैर से कुचलना, रौंदना, खूब पेट भर भोजन करना
कचरपचर-(हिं०पुं०) कचपच,गिचपिच
कचरा-(हिं०पुं०) कूड़ा करकट,ककड़ी, फूट का कच्चा फल, उड़द या चने की पीठी, ककड़ी, समुद्री सेवार, छिलका लगी हुई दाल। **कचराई**-(हिं०स्त्री०) रौंदाई, दबवाई।
कचरी-(हिं०स्त्री०) ककड़ी की जात की एक लता, पेहटा, छिलकेदार दाल, रूई का बिनौला।
कचलंम्पट-(हिं०वि०) व्यभिचारी,
कचला-(हिं०स्त्री०)काली चिकनी मिट्टी
कचलौंदा-(हिं०पुं०)कच्चे आँटे का बना हुआ पेड़ा, साने हुए आँटे की लोई।
कचलोन-(हिं०पुं०) कांच की भट्ठियों में जमा हुए क्षार से बना हुआ नमक
कचलोहा-(हिंपुं०) कच्चा लोहा,
कचलोहू-(हिं०पु०) व्रण में से निकलने वाला पंछा।
कचवांसी-(हिं०स्त्री०) एक विस्वे का बीसवाँ भाग।
कचनाट (हिं०स्त्री०) चिराग, घृणा,चिढ़
कचहरी-(हिं०स्त्री०)न्यायालय,कार्यालय राजसभा, दरबार, गोष्ठी, जमघट।
कचाई-(हिं०स्त्री०) कच्चापन, अनुभव हीनता।
कचाकची-(हिं०स्त्री०) विवाद, झगड़ा।

कचाना-(हिं०क्रि०) कच्चे पड़ना, साहस हारना।
कचायंध-(हिं०स्त्री०) कच्चेपन की गन्ध।
कचायन-(हिं०स्त्री०) वकझक, कहासुनी
कचार-(हिं०पुं०) नदी के किनारे का छिछला पानी।
कचारना-(हिं०क्रि०) कपड़ा धोना।
कचालू-(हिं०पुं०) घुइयाँ, अरुई, बंडा, एक प्रकार की चाट।
कचावट-(सं०स्त्री०) आम की खटाई।
कचास-(हिं०स्त्री०) देखो कचाई।
कचिया-(हिं०स्त्री०) हंसुवा, हँसिया।
कचियाना-(क्रि०क्रि०) हताश होना,भय भीत होना, सकुचाना, लज्जा मानना
कचीची-(हिं०स्त्री०) कृत्तिकानक्षत्र,दाढ़, जबड़ा; **कचीचीबाँधना**-दाँत बैठ जाना
कचुल्ला-(हिं०पुं०)चौड़ी पेंदी का कटोरा
कचूमर-(हिं०पु०) कुचल कर बनाया हुआ अचार, कुचला, कुचली हुई वस्तु; **कचूमर निकालना**-कुचलना, कूटना, खूब पीटना।
कचूर-(हिं०पुं०) हलदी के समान एक पौधा जिसकी जड़ में कपूर के समान तीव्र गन्ध होती है, कठोर।
कचेरा-(हिं०पुं०) काँच का काम करने वाला।
कचेहरी-(हिं०स्त्री०) देखो कचहरी।
कचोटना-(हिं०क्रि०) गड़ना, चुभना।
कचोना-(हिं०क्रि०) घुमाना, धंसाना।
कचोरा-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का धान्य (हिं०पुं०) कटोरा, प्याला।
कचोरी-(हिं०स्त्री०) कटोरी, प्याली।
कचोड़ी कचौड़ी, कचौरी-(हिं०स्त्री०) उड़द की पीठी आदि में मसाला मिलाकर आंटे की लोई के भीतर भरकर घी या तेल में पकाई पूरी।
कच्कर-(सं०वि०) मलिन, मैला, दुष्ट,
कच्चा-(हिं०वि०) अपक्व, बिना पका हुआ, हरा, बिना रस का, अप्रस्तुत, अस्थायी, अयुक्त, न्यून, अपूर्ण,नियम रहित, अनभ्यस्त, अपरिपुष्ट,प्रमाणों से दृढ न किया हुआ, अदृढ (पुं०) धागा, दूर दूर की सियन, ढाँचा, जबड़े का जोड़, दाढ, तांबेका छोटा सिक्का, सच्चा वृत्तान्त जिसको कच्चा चिट्ठा कहते हैं; **कच्चा करना**-झूठा साबित करना,डराना; **कच्चा चूना**-पानी में न बुझने वाला चूना; **कच्चा टांका**-रांगे का जोड़; **कच्चा तागा**-बिना बटा हुआ धागा; **कच्चा पड़ना**-झूठा ठहरना; **कच्चा बाना या माल**-झूठे गोटे पट्ठे का माल; **कच्ची पक्की**-दुर्वचन, गाली; **कच्ची बात**-अश्लील वार्ता; **कच्चा पैसा**-न चलने वाला पैसा; **कच्चा सेर**-जो प्रामाणिक तौल से कम हो। **कच्चा चिट्ठा**-(हिं०पुं०) ज्यों का त्यों कहा हुआ, वृत्तान्त, रहस्य, गुप्त भेद, सच्ची वार्ता। **कच्चा माल**-

(हिं०पुं०) व्यवहार की वस्तु के बनाने की सामग्री यथा तेलहन,रूई, धातु इत्यादि। **कच्चा हाथ**-(हिं०पुं०) अभ्यास न होने के कारण किसी काम करने के लिये हाथ का न बैठना
कच्ची-(हिं०स्त्री०) न पकी हुई, घी या दूध में न पकी हुई रसोई, सखरी, आँच में न पकी हुई। **कच्ची घड़ी**-(हिं०स्त्री०) चौबीस मिनट का काल। **कच्ची चीनी**-(हिं०स्त्री०) गलाकर स्वच्छ न की हुई चीनी। **कच्ची जाकड़**-(हिं०स्त्री०) ठीक तरह पर न बिके हुए माल के लेने देने की बही। **कच्ची बही**-(हिं०स्त्री०) पूर्ण रूपसे निश्चित न किये हुए हिसाब लिखने की व्यापारी की बही। **कच्ची मिती**-(हिं०स्त्री०) पक्की मिती से पहिले की या रुपया मिलने या चुकाने का दिन। **कच्चीरसोई**-(हिं०स्त्री०) केवल जल में पका हुआ भोजन, दाल, भात, रोटी इत्यादि। **कच्ची रोकड़**-(हिं०स्त्री०) प्रतिदिन के आय व्यय लिखने की बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा जाता है जो पूर्ण रूप से स्थिर न हो। **कच्ची शक्कर**-(हिं० स्त्री०) राब से जूसी अलगाकर बनाई हुई चीन। **कच्ची सड़क**-(हिं०स्त्री०) कंकड़ पत्थर से न पिटी हुई सड़क। **कच्ची सिलाई**-(हिं०स्त्री०) दूर दूर पर टाँका लगाई हुई सिलाई।
कच्चू-(हिं०स्त्री०) अरुई, बंडा, घुइयाँ।
कच्चे बच्चे-(हिं० पु०) छोटे बच्चे, बहुत से बच्चे।
कच्छ-(सं०पुं०) जल के पास की भूमि, कछार, अनूपदेश, नदी या तालाब के सामने का मैदान, वस्त्र का अञ्चल, पानी से भरा हुआ स्थान, एक प्राचीन नगर का नाम (हिं०पुं०) छप्पय छन्द जिसमें १५२ मात्रा होती हैं, कछुआ, धोती की लाँग।
कच्छप-(सं०पु०) कूर्म, कछुआ, विष्णु का एक अवतार,कुबेरकी एक निधि मल्ल युद्ध की एक युक्ति, भभका, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम दोहे का एक भेद; **कच्छपयंत्र**-औषधि बनाने का एक यन्त्र।
कच्छपिका-(सं० स्त्री०) छोटी छोटी फुन्सियों का एक रोग।
कच्छपी-(सं०स्त्री०) कच्छप की स्त्री, सरस्वती की वीणा।
कच्छा-(हिं०स्त्री०) बड़ी नाव जिसके सिरे चिपटे और चौड़े होते हैं, कई नावों को मिला कर बना हुआ बेड़ा
कच्छान्त-(सं० पुं०) नदी या झील का किनारा।
कच्छी-(हिं० वि०)कच्छदेशीय,कच्छ देश में उत्पन्न, कच्छ देश का घोड़ा, जिसकी पीठ गहरी होती है।
कच्छू-(हिं०पुं०)कच्छप, कछुवा, खुजली

कछना-(हिं० पुं०) घुटने तक चढ़ा कर पहिरी हुई धोती। **कछनी**-(हिं०स्त्री०) छोटी धोती, घुटने तक चढा कर पहिरने की धोती।

कछरा-(हिं०पु०) चौड़े मुँह का घड़ा।

कछरी-(हिं०स्त्री०) छोटा कछरा, गगरी।

कछवारा-(हिं० पु०) साग, तरकारी बोने का खेत।

कछवाहा-(हिं०पु०)राजपूतोंकीएकजाति

कछान, कछाना-(हिं० पुं०) घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहिरना।

कछार-(हिं० पुं०) नदी या समुद्र के किनारे की नीची भूमि।

कछियाना-(हिं०पुं०) किसानोंकी बस्ती

कछु-(हिं०वि०) देखो कुछ।

कछुआ-(हिं०पु०) देखो कच्छप।

कछुई-(हिं०स्त्री०) कच्छपी।

कछुक-(हिं०वि०) कुछ, थोड़ा सा।

कछुवा-(हिं०पु०) देखो कच्छप।

कछू-(हिं०वि०) देखो कुछ।

कछोटा, कछौटा-(हिं० पु०) काछ, कछनी, लांग।

कछकोल-(हिं०पुं०) भीख माँगने का खप्पर।

कजनी-(हिं०स्त्री०) पात्र, खुरुचने का एक साधन।

कजरा-(हिं०पुं०) काजल, काली आँख का बैल, (वि०) जिसकी आँखें काजल लगी हुई देख पड़ें। **कजराई**-(हिं० स्त्री०) श्यामता,कालापन। **कजरारा**-(हिं०वि०) कज्जलयुक्त, काजल लगा हुआ, श्यामवर्ण का, काला।

कजरी-(हिं०स्त्री०) बरसात में गाने की एक रागिनी, एक त्योहार जिसमें स्त्रियाँ कजरी गाती हैं; देखो कजली (पुं०) काले रंग का धान।

कजरौटा-(हिं० पुं०) काजल रखने की डंडी लगी हुई डिबिया। **कजरौटी**-(हिं०स्त्री०) छोटा कजरौटा।

कजल-(हिं०पुं०) कज्जल, काजल (वि०) काली आँख वाला।

कजलाना-(हिं०क्रि०) काला पढ़ना,कम पड़ना,बुझना,काजल लगाना,आँजना।

कजली-(हिं०क्रि०) श्यामता, कालिख, पारा और गन्धक पीस कर बनाई हुई बुकनी, काली आँख की गाय, भादों बदी तीज का त्योहार,जव के नये अंकुर, एक प्रकार की ईख, बरसात में गाने की एक गीत।

कजली तीज-(हिं०स्त्री०)भादो बदी तीज

कजलौटा-(हिं०पु०) देखो कजरौटा।

कजलौटी-(हिं०स्त्री०) देखो कजरौटी।

कजाक-(हिं०पुं०) देखो कज्जाक।

कजाकी-(हिं०स्त्री०) देखो कज्जाकी।

कजावा-(फा०पुं०) ऊँट की पीठ पर रखने की काठी।

कजी-(फा०स्त्री०)टेढ़ाई,ऐब,दोष, कसर।

कज्जल-(सं०नपु०) अञ्जन, काजल, सुरमा, कालिख, मेघ, बादल, चौदह मात्रा का एक छन्द।

कज्जलित-(सं०वि०) काजल लगा हुआ।

कज्जली-(सं०स्त्री०) पारा गन्धक घोंटी हुई बुकनी,एकप्रकारकीमछली,स्याही

कञ्चन-(सं०पु०) कचनार का वृक्ष।

कञ्चिका-(सं० स्त्री०) बाँस की डाल। छोटी फुड़िया।

कञ्चुक-(सं० पुं०) साँप की केंचुली, चोली, अंगिया, कवच, एक प्रकार की औषधि। **कञ्चुकित**-(सं०वि०) कवच पहिरे हुए।

कञ्चुकी-(सं० पुं०) राजा के अन्त:पुर का रक्षक, जव या चने का पौधा, सर्प. (स्त्री०) चोली, अंगिया।

कञ्जूल-(सं० स्त्री०) स्त्रियों का एक आभूषण।

कञ्ज-(सं०पुं०) केश, बाल, ब्रह्मा, कमल, अमृत।

कञ्जन-(सं० पु०) कन्दर्प, कामदेव, मैना पक्षी।

कञ्जमूल-(सं० नपु०) कमलकी जड़।

कञ्जर-(सं०पुं०) सूर्य, ब्रह्मा, उदर, हाथी, मोर, धाय, बरसाती धान।

कट-(सं०पु०) हाथी की कनपटी,कमर, घास का परदा, शव, समय, नरकट की चटाई, घासफूस,टट्टी, अधिकता, खस, एक प्रकार की घास, अरथी, श्मशान, घोड़दौड़ का मैदान, (हिं० पु०) काला रंग, काट, कटन।

कटक-(सं० पुं०) पहाड़ के बीच का स्थान, चक्र, चूड़ी, सेना, हाथी के दाँत का गहना, सेंधा नमक, राजधानी, शिविर, डेरा, रस्सी, पहाड़ की समतल भूमि, समूह, वलय, पुआर की बनी हुई चटाई, गोंदरी, उड़ीसा प्रान्तके एक जिलेका नाम।

कटकई-(हिं०स्त्री०) सेना।

कटकट-(हिं०स्त्री०) दाँतों के कड़कड़ाने का शब्द, लड़ाई, झगड़ा। **कटकटाना**-(हिं० क्रि०) दाँतों का शब्द होना, दाँत पीसना।

कटकटिका-(हिं० स्त्री०) बुलबुल पक्षी।

कटकाई-(हिं०स्त्री०) देखो कटकई।

कटकार-(सं०पुं०) शिल्पकार, चटाई वगैरह बनानेवाला।

कटकी-(सं०पुं०) गज,हाथी,सेना (वि०) कटकवासी।

कटकुटी-(सं०स्त्री०) पर्णशाला, झोपड़ी।

कटखना-(हिं०वि०) दाँत काटनेवाला, (पुं०) काटछाँट।

कटघरा-(हिं०पुं०)जंगले का लगा हुआ काठ का घर, बड़ा पींजड़ा।

कटजीरा-(हिं०पुं०) काला जीरा।

कटड़ा-(हिं०पुं०)भैंसका नर बच्चा,पंड़वा

कटताल-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का बाजा, करताल।

कटती-(हिं०स्त्री०) बिक्री, माँग।

कटना-(हिं० क्रि०) दो टुकड़े होना, प्रवेश करना, घुसना, महीन चूर्ण होना, अलग होना, छूटना, गुजरना, बीतना,समाप्त होना,छीजना, कतरा जाना,धोखा देकर चल देना,लज्जित होना, डाह करना, मोहित होना, प्राप्ति होना, खपना, मिटना, व्यर्थ पड़ना, नष्ट होना, मिट जाना, धंसना, पूरा पूरा भाग होना,जिसमें शेष न बचे; **कटती कहना**-मर्मभेदी बात कहना।

कटनास-(हिं०पुं०) नीलकठ पक्षी।

कटनि-(हिं०स्त्री०) काट छाँट।

कटनी-(हिं० स्त्री०) कतरनी, कटाई, तिरछी दौड़।

कटर-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की घास

कटरकटर-(हिं०क्रि०वि०) बल पूर्वक, ऊंचे स्वर से, अंड बंड।

कटरा-(हिं० पुं०) छोटा चौकोर हाट, भैंस का पंड़वा।

कटरिया-(हिं०पुं०) एक प्रकारका धान

कटरी-(हिं० स्त्री०) नदी के किनारे की नीची भूमि।

कटरेती-(हिं०स्त्री०) लकड़ी रेतने का एक अस्त्र।

कटल्लू-(हिं०पुं०) व्याध,मांस बेचनेवाला।

कटवां-(हिं०वि०) कटा हुआ, काट कर बना हुआ।

कटसरैया-(हिं० स्त्री०) एक कांटेदार पौधा जो अडूसे की तरहका होता है।

कटहर-(हिं०पुं०) देखो कटहल।

कटहरा-(हिं०पुं०) कटघरा, काठ का जंगलेदार घर।

कटहल-(हिं० पुं०) एक वृक्ष जिसमें हाथ भर लंबे छिलके पर कांटेदार मोटे फल लगते हैं, पनस।

कटहा-(हिं०वि०) दाँत काटनेवाला।

कटा-(हिं०स्त्री०) वध, मारकाट, हत्या, (वि०) टूटा फूटा, कटा हुआ।

कटाइक-(हिं० पुं०) काटने वाला।

कटाई-(हिं०स्त्री०) प्रहार, काटने का काम, अन्न का काटा जाना, काटने की शुल्क।

कटाऊ-(हिं०वि०) काट छांट किया हुआ

कटाकट-(हिं० पुं०) कटकट का शब्द, लड़ाई झगड़ा। **कटाकटी**-(हिं०स्त्री०) वध, मारकाट।

कटाक्ष-(सं०पु०)तिरछी चितवन,आक्षेप।

कटाग्नि-(सं० पुं०) घासफूस डाल कर जलाई हुई आग।

कटाछनी-(हिं०स्त्री०) वध, युद्ध, मारकाट, तर्क।

कटान-(हिं०स्त्री०) काटने का कार्य।

कटाना-(हिं०क्रि०) छेद कराना, काटने का काम दूसरेसे कराना, घुमाना, बचाना।

कटार-(हिं०पुं०) दोनों ओर धार का छोटा अस्त्र।

कटारा-(हिं० पुं०) बड़ी कटार, इमली का फल।

कटारिया-(हिं०पुं०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

कटारी-(हिं०स्त्री०) कटार, एक प्रकार का छोटा अस्त्र।

कटाली-(हिं०स्त्री०) भटकटैया।

कटाव-(हिं०पुं०) काटछांट, बनावटी बेलबूटे जो कपड़ा काटकर बनाये जाते है। **कटावदार**-(हिं०वि०) जिस पत्थर या लकड़ी पर बेलबूटे खोद कर या काट कर बनाये गये हों।

कटावन-(हिं०पु०) कटाव का काम, कतरन, कटा हुआ भाग।

कटास-(हिं० पु०) कटार, खीकर, एक प्रकार की जंगली बिल्ली, बनबिलाव

कटासी-(हिं०स्त्री०) शव गाडने का स्थान

कटाह-(सं०पुं०) कछुवे की खोपड़ी, तेल या घी रखने का पात्र, नरक-विशेष, भैंस की सींघ, निकलता हुआ बच्चा, सूर्य, कुवां, ऊँचा टीला, बड़ी कड़ाही।

कटि-(सं०स्त्री०) शरीर का मध्य भाग, कमर, हाथी की कनपटी, मन्दिर का द्वार, घुमची।

कटिका-(सं०स्त्री०) पतली कमर वाली स्त्री। **कटिकूप**-(सं०पु०) चूतड़ का गड्ढा। **कटिजेब**-(हिं०स्त्री०) कमर का आभूषण, करधनी। **कटितट**-(सं०पु०) कमर, नितम्ब, चूतर।

कटित्र-(सं०नपु०) कमरबन्द, करधनी।

कटिदेश-(सं०नपुं०) श्रोणी, कमर।

कटिबद्ध-(सं०वि०) कमर बाँधे हुए, उद्यत, तत्पर, तैयार।

कटिबन्ध-(सं०पु०) कमरबन्द, पृथ्वी का वह भाग जो शीतलता और उष्णता के अनुसार निर्धारित होता है।

कटिया-(हिं०स्त्री०) नगीने बनाने वाला, पशुओं का चारा जो ज्वार, मकई इत्यादि के डंठलों को काटकर बनाया जाता है, मस्तक का एक अलंकार, मछली फँसाने का कांटा।

कटियाना-(हिं०क्रि०) रोमांचित होना, रोंवें खड़े होना।

कटियाली-(हिं०स्त्री०) भटकटैया।

कटिबन्ध-(सं०पु०) कमरबन्द।

कटिशूल-(सं०नपु०) कमर की पीड़ा।

कटिसूत्र-(सं०नपुं०) कमर में पहिरने का आभूषण, करधनी।

कटीरा-(हिं०पु०) देखो कतीरा।

कटील-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कपास

कटीला-(हिं०वि०) काटने वाला, तीक्ष्ण, पैना, प्रभावशाली, हृदयग्राही, नोकदार, मोहित करने वाला, काँटेदार (पु०) एक नोकदार लकड़ी जो गाय भैंस के बच्चों के नाक पर बांध दी जाती है जिसमें वे मां का दूध न पी सकें।

कटु-(सं०वि०) कड़ुवा, तीता, कसैला, अप्रिय, तीक्ष्ण, उष्ण, कुत्सित, विरस, **कटुक**-(सं० वि०) अप्रिय, नागवार। **कटुकत्व**-(सं०नपुं०) चरपराहट, कड़ुवापन, **कटुकन्द**(सं०नपु०) लशुन, लहसुन। **कटुग्रन्थि**-(सं०नपु०) पिपलामूल, सोंठ, लहसुन। **कटुता**-

(सं०स्त्री०) उग्रता, तीक्ष्णता, कड़ापन, अप्रियता, तेज़ी। **कटुतुम्बी**-(सं०स्त्री०) कड़वी लौकी। **कटुतैल**-(सं०नपु०) कड़ुवा तेल, सरसों का तेल। **कटुत्व**-(सं०नपु०) कड़ुवापन, चरपराहट। **कटुफल**-(सं०पुं०) कायफल, कड़ुई ककड़ी, करेला। **कटुभाषी**-(सं०वि०) कर्कश शब्द बोलने वाला।

कटुरा-(सं०स्त्री०) कच्ची हलदी।

कटुवा-(हिं०पुं०) व्यापारी के पास प्रतिदिन आने वाली वस्तु जिसका मूल्य बाद में इकट्ठा होता है।

कटूक्ति-(सं०स्त्री०) अप्रिय वार्ता, विघ्न कारक।

कटूमर-(हिं०पुं०) जंगली गूलर।

कटेरी-(हिं०स्त्री०) भटकटैया।

कटेली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की कपास।

कटैया-(हिं०वि०) काटने वाला।

कटैला-(हिं०पु०) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

कटोरदान-(हिं०पुं०) पका हुआ भोजन रखने का ढपनेदार कटोरा।

कटोरा-(हिं०पु०) चौड़ी पेंदी तथा खुले मुँह बड़ा प्याला।

कटोरिया-(हिं०स्त्री०) छोटा कटोरा।

कटोरी-(हिं०स्त्री०) छोटा कटोरा, तलवार की मुठिया का उभड़ा हुआ गोल भाग, फूल के ऊपर का गोल भाग, चोली का वह भाग जिसके भीतर स्तन रहते हैं।

कटौवा-(हिं०स्त्री०) कटनेवाला।

कटौती-(हिं०स्त्री०) काटकर निकाली जाने वाली वस्तु, अन्न बेंचते समय अथवा खेत से घर ले जाते समय उसमें का वह अंश जो धर्मार्थ देने के लिये निकाल दिया जाता है।

कटौनी-(हिं०स्त्री०) अन्न काटने का काम

कट्टर-(हिं०वि०) काट खानेवाला, कटहा, हठी, अन्ध विश्वासी, दूसरे की बात को न मानने वाला।

कट्टहा-(हिं०पु०) महाब्राह्मण, महापात्र।

कट्टा-(हिं०वि०) स्थूल, मोटा, पुष्ट, बलवान, कड़ा, (पुं०) जबड़ा; **कट्टे लगाना**-अपनी वस्तु का दूसरे के कब्जे में चले जाना।

कट्ठा-(हिं०पु०) भूमि की एक नाप जो पांच हाथ चार अंगुल होती है, धातु गलाने की भट्ठी, अन्न नापने का पात्र।

कटयाना-(हिं०क्रि०) रोमांचित होना।

कट्वार-(सं०पु०) कटार, कटारी।

कठ-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम, यजुर्वेद का एक उपनिषद्, एक वैदिक मन्त्र, ब्राह्मण, देवता, कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा (हिं०पु०) एक प्रकार का प्राचीन बाजा, समासादि में आने से इस शब्द का अर्थ 'काठ का बना हुआ' होता है जैसे कठपुतली।

कठंगर-(हिं०वि०) स्थूल, मोटा, कठोर, कड़ा।

कठकीली-(हिं०स्त्री०) काठ की फन्नी या पच्चड़। **कठकेला**-(हिं०पु०) जंगली केला जिसका फल रूखा और फीका होता है। **कठकोला**-(हिं०पु०) कठफोड़वा पक्षी। **कठगुलाब**-(हिं०पु०) जंगली गुलाब जिसमें छोटे फूल होते हैं।

कठड़ा-(हिं०पुं०) कठघरा, लकड़ी का बड़ा सन्दूक, लकड़ी का बड़ा पात्र, कठौत।

कठताल-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का करताल

कठपुतली-(हिं०स्त्री०) लकड़ी की गुड़िया जिसनें तार बांध कर नचाते हैं, दूसरे के कहने पर चलने वाले पुरुष को उसके हाथ की कठपुतली कहते हैं।

कठफुला-(हिं०पु०) कुकुरमुत्ता, छत्रक।

कठफोड़वा-(हिं०पु०) भूरे रंग की एक चिड़िया जिसकी चोंच लंबी होती है यह पेड़ों की छाल को छेदती और इसमें के कीड़े मकोड़े खाती है।

कठबन्धन-(हिं०पु०) लकड़ी की बेड़ी, हाथी के पैर में डालने का अंदुवा।

कठबाप-(हिं०पु०) सौतेला पिता।

कठबेल-(हिं०पु०) कपित्थ, कैथ।

कठमलिया-(हिं०पु०) काठ की माला पहिरनेवाला वैष्णव, बनावटी साधु।

कठमस्त-(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट, हट्टाकट्टा, व्यभिचारी। **कठमस्ती**-(हिं०स्त्री०) गुण्डई, मस्ती, तगड़ापन।

कठमाटी-(हिं०स्त्री०) कीचड़ की मिट्टी जो सूखने पर बहुत कड़ी हो जाती है।

कठरा-(हिं०पुं०) काठ का बड़ा सन्दूक, काठ का पात्र, कठौता, कठघरा।

कठरी-(हिं०स्त्री०) छोटा कठरा।

कठला-(हिं०पुं०) बच्चों के पहिराने का गले का एक आभूषण जो आधि व्याधि से रक्षा करने के लिये इनको पहिराया जाता है।

कठवत-(हिं०पु०) देखो कठौता।

कठवल्ली-(सं०स्त्री०) कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा का एक उपनिषद्।

कठारा-(हिं०पु०) नदी या तालाब का किनारा, कछार।

कठारी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का पात्र, कमण्डलु।

कठिका-(सं०स्त्री०) खटिका, खड़िया।

कठिन-(सं०वि०) दृढ़, कड़ा, कठोर, निष्ठुर, तीक्ष्ण, दुःसह, **कठिनचित्त**-निर्दयी।

कठिनता कठिनताई-(सं० स्त्री०) दृढ़ता, कठोरता, तीक्ष्णता, कड़ापन, असाध्यता, निर्दयता, पुष्टता।

कठिनत्व-(सं० नपु०) देखो कठिनता

कठिनपृष्ठ-(सं०पु०) कच्छप, कछुआ।

कठिनहृदय-(सं० वि०) कठोरहृदय, निर्दय।

कठिना-(सं०स्त्री०) शक्कर, चीनी, कठगूलर।

कठिनाई-(हिं०स्त्री०) कठोरता, दृढ़ता, कड़ापन, क्लिष्टता, असुविधा।

कठिनी-(सं०स्त्री०) खटिका, खड़िया।

कठिनीभूत-(सं०वि०) कड़ा पड़नेवाला।

कठिया-(हिं०वि०) कड़े छिलके वाला (पु०) एक प्रकार का गेहूँ। **कठियाना**-(हिं०क्रि०) कड़ा होना, सूखना, काठ बन जाना, सूखकर कड़ा होना।

कठुला-(सं०स्त्री०) बच्चों के गले में पहिरने की माला।

कठुवाना-(हिं०क्रि०) सूखकर कड़ा हो जाना, तरी निकल जाना, ठंढक से हाथ पैर ठिठुरना।

कठेठ-(हिं०वि०) कड़ा, पुष्ट, **कठेठा**-(हिं०पु०) देखो कठेठ। **कठेठी**-(हिं०स्त्री०) कड़ी।

कठेल-(हिं०पु०) धुनिये की कमान जिससे रूई धुनी जाती है।

कठैला-(हिं०पु०) देखो कठौता। **कठैली**-(हिं०स्त्री०) छोटा कठौता। **कठोदर**-(हिं०पु०) वह रोग जिसमें पेट काठ की तरह कड़ा होता है।

कठोर-(सं०वि०) कठिन, कड़ा, निष्ठुर, निर्दय, क्रूर कर्म करने वाला, दारुण, तीक्ष्ण, अवरोधी। **कठोरता**-(सं०स्त्री०) कठिनता, कड़ापन, निर्दयता, कड़ाई।

कठोरताई-(हिं० स्त्री०) **कठोरपन**-(हिं०स्त्री०)

कठौता-(हिं०पु०) लकड़ी का बड़ा पात्र, कठरा।

कठौती-(हिं०स्त्री०) छोटा कठौता।

कड़-(हिं०पुं०) कमर, कुसुम का बीज।

कड़क-(सं०नपु०) समुद्र लवण (हिं०स्त्री०) कठोर शब्द, बिजली, तड़प, घोड़े की एक चाल, इन्द्रियों में दाह होने का एक रोग, कठोरता, कड़ापन, रुक रुक कर होने वाली पीड़ा, रुक रुक कर जलन के साथ मूत्र निकलना

कड़कड़-(हि०पु०) दो वस्तुओं के परस्पर टकराने का शब्द, कठोर शब्द, कड़े पदार्थ के टूटने का शब्द। **कड़कड़ाता**-(हिं०वि०) कड़कड़ शब्द करता हुआ, चटखता हुआ, तीव्र, घोर कड़ा।

कड़कड़ाना-(हिं०क्रि०) कड़कड़ शब्द होना, ऐसे शब्द के साथ तोड़ना, घी तेल इत्यादि को तपाना, तोड़ना, भंग करना, चिल्लाना। **कड़कड़ाहट**-(हिं०स्त्री०) कर्कश शब्द, कठोर शब्द, गरज।

कड़कना-(हिं०क्रि०) तड़पना, कड़कड़ाना, चटखना, कड़ा शब्द बोलना, टूटना फूटना, डाटना, डपेटना, फटना, चिल्लाना

कड़कनाल-(हिं०स्त्री०) चौड़े मुंह की तोप। **कड़कबांका**-(हिं०पुं०) बलवान युवा पुरुष **कड़कबिजली**-(हिं०स्त्री०) कान में पहिरने का स्त्रीयों का एक आभूषण, चांदबाला।

कड़का-(हिं०पुं०) कठोर, शब्द,

कड़खा-(हिं०पुं०) युद्ध संगीत, लड़ाई समय गाई जाने वाली गीत। **कड़खैत**-(हिं०पु०) कड़खा गाने वाला, भाट।

कड़कड़ा-(हिं०वि०) कुछ सफ़ेद, काले रंग का।

कडरा-(हिं०पु०) कबरी दाढी वाला मनुष्य।

कड़वा-(हिं०पु०) हल के फार पर बांधी जाने वाली कोई गोल वस्तु।

कड़वी-(हिं०स्त्री०) मकई और ज्वार पौधे जो काट कर पशुओं को खिलाये जाते हैं।

कड़वा-(हिं०वि०) देखो कटु। **कड़वा**-(हिं०वि) देखा कटु।

कड़हन-(हिं०पु०) जंगली धान।

कड़ा-(हिं०पु०) हाथ या पैर में पहिनने का कंगन या चूड़ा, चुल्ला, लोहे का कुण्डा, एक प्रकार का कबूतर (वि०) न दबने वाला, कठोर, कठिन, ठोस, रूखा, उग्र, जो ढीला न हो, गीला न हो, दृढ, तीक्ष्ण, सबल, सहनशील, दुष्कर, दुःसाध्य, प्रचण्ड, तीव्र, असह्य, कर्कश, बुरा लगने वाला **कड़ाई**-(हिं०स्त्री०) कठोरता, कड़ापन।

कड़ाका-(हिं०पु०) किसी कड़े पदार्थ के टूटने का शब्द, उपवास, लंघन

कड़ाकेका-तीव्र, प्रचण्ड, अति।

कड़ाबीन-(हिं०स्त्री०) चौड़े मुंह की बन्दूक, छोटी बन्दूक, छोटी बन्दूक, तमंचा।

कड़ाहा-(हिं०पु०) लोहे की बड़ी कड़ाही, कटाह, इसमें उठाने के लिये दो और कड़े लगे होते हैं। **कड़ाही**-(हिं०स्त्री०) छोटा कड़ाहा।

कड़ियल-(हिं०पु०) मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ टुकड़ा।

कड़िया-(हिं०स्त्री०) अरहर का सूखा डंठल जो दाना निकाल लेने पर बच जाता है।

कड़ियाली-(सं०स्त्री०) घोड़े की लगाम

कड़ी-(हिं० स्त्री०) जंजीर की लड़ी का एक छल्ला, छोटा छल्ला, छोटी धरन, कठिनता, अड़चन, संकट, दुःख, गीतका एक भाग, घोड़े की लगाम, पशु के छाती पर की हड्डी (वि०) कठोर, **कड़ीदार** (हिं०वि०) छल्लेदार, जिसमें कड़ियाँ लगी हों।

कड़ुआ-(हिं०वि०) कटु, स्वाद में तीखा, तीक्ष्ण प्रकृति का, क्रोधी, भला न मालूम होने वाला, अप्रिय, कठिन, टेढा। **कड़ुवा घूंट**-कठिन कार्य।

कड़ुवा तेल-(हिं०पु०) सरसों का तेल।

कड़ुआना-(हिं०क्रि०) कड़ुवा लगना, क्रोध करना, नाक भौंह चढ़ाना, बिगड़ना, पीड़ा करना, किरकिराना, **कड़ुआहट**-(हिं०पुं०) कटुता, कड़ुआपन।

ढ़ई-(हिं० स्त्री०) कटु, चरपरी;
ढ़ईरोटी-मृतक के संबंधियों को उपलक्ष्य में भोजन कराया जाता है।
-(हिं०वि०) देखो कटु-
ा-(हिं०पुं०) खराद कर पदार्थ ाने वाला।
लोट-(हिं० पुं०) मलखम का व्यायाम।
ड़ा-(हिं०पुं०) उच्च पदाधिकारी।
ा-(हिं०वि०) ऋण लेकर अपना म चलाने वाला।
ा-(हिं०क्रि०)बाहरआना,निकलना, य होना, चढना, देख पड़ना, चना, बढ़, जाना, अग्रसर होना, ीभूत होना, गाढा होना, अपने र के साथ स्त्री का घर छोड़ कर ाग जाना।
ी-(हिं०स्त्री०) मथानी की रस्सी।
ाना-(हिं०क्रि०) हाथ या पैर कड़ कर घसीटना, लथेड़ना।
ाई-(हिं०स्त्री०) निकालने का काम, ई का काम, कसीदा, कसीदा ाढ़ने का परिश्रमिक, कड़ाही।
ना, कढवाना-(हिं०क्रि०) बाहर राना, बाहर निकालना। कढाव-ं०पुं०) कसीदे का काम, सूई से ल बूटे बनाने का काम, कड़ाह।
-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सालन ो बेसन को पानी में पतला ोलकर कड़ाही में उबाल कर तथा ाढ़ा करने से बनता है।
ावा-(हिं०पु०) निकाला हुआ, रात ा रक्खा हुआ भोजन, ऋण, मिट्टी ा पुरवा।
ारना-(हिं०पुं०) विच्छत्ति करने का क यन्त्र।
ैया-(हिं०वि०) निकालने वाला, लग करने वाला, उद्धारकर्ता (स्त्री०) कड़ाही।
ोरना-(हिं०क्रि०) घसीटना, खींचना
ण-(सं०पुं०) किनका, लेश, रवा, धूलका अत्यन्त छोटा टुकड़ा, जलविन्दु, चिनगारी, चावल का महीन टुकड़ा, अन्न की बाल, परमाणु, रत्नमुख, भिक्षा।
णकच-(हिं०पुं०)केवांच,करंज,करौदा
णकण-(हिं०पुं०) देखो कङ्कण।
णप-(सं०पुं०) बरछा, भाला।
णाद-(स०पु०) वैशेषिक दर्शन के प्रणेता का नाम।
णान्न-(सं०वि०) अन्न के कण से जीविका चलाने वाला।
णिका-(सं०स्त्री०) अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु, कर्ण, टुकड़ा, किनका।
णित-(सं०नपुं०) पीड़ा युक्त शब्द।
णिष्ठ-(सं०वि०) अन्य को अपेक्षा कम वैय का।
णी-(सं०स्त्री०) कणिका,टुकड़ा,कनी।
णेरा-(सं०स्त्री०) हाथी, वेश्या, रंडी।

कण्ट-(सं०नपुं०) कण्टक, काँटी।
कण्टक-(सं०नपुं०) सूईकी नोक,कांटा, नख, तीव्र वेदना, रोमाञ्चित होना, दुःख का कारण, विघ्न, अड़चन, दोष, वृत्त का केन्द्र, बबूल का वृक्ष, कमलगट्टा। कण्टकित-(सं० वि०) रोमाञ्चित, कंटक युक्त,कांटेदार।
कण्टाल-(स०पुं०) कटहल का वृक्ष।
कण्ठ-(स०पु०) गरदन के सामने का भाग, नरेटी, टेटुआ,ध्वनि आवाज़।
कण्ठक-(स० पु०) गरदन, टेटुआ।
कण्ठगत-(स०वि०) गले तक पहुँचा हुआ। कण्ठबन्ध-(स० पुं०) हाथी के गले में बांधने की रस्सी, गलबन्धन, गले की डोरी। कण्ठमाला-(सं०स्त्री०) गले में पहिरने का आभूषण। कण्ठ में का बाहरी फोड़ा। कण्टलग्न-(सं०वि०) कण्ठ से लगा हुआ; गलेमें बंधा हुआ। कण्ठलता-(स०स्त्री०) गले का एक आभूषण।
कण्ठसूत्र-(स० नपु०) माला, गले का हार। कण्ठस्थ-(स० वि०) मुखस्थ, याद किया हुआ, गले में लगा हुआ, गले से निकलने वाला (शब्द), कण्ठस्थानीय।
कण्ठा-(हिं०पुं०) देखो कंठा। कण्ठाभरण-(स०नपु०) गले का आभूषण, हार। कण्ठाला-(सं० स्त्री०) फाँस की रस्सी।
कण्ठिका-(स०स्त्री०) गले में पहिरने की छोटी माला।
कण्ठ्य-(स० वि०) कण्ठ से उच्चारण किया हुआ।
कण्डन-(स० नपुं०) अन्न का उतारा हुआ छिलका, भूसी। कण्डनी-(सं० स्त्री०) उदूखल, ओखली।
कण्डरा-(सं०स्त्री०) शरीर में की मोटी रग, महानाड़ी।
कण्डिका-(सं०स्त्री०) वेद का एक अंश, काण्ड।
कण्डु-(सं०स्त्री०)खजुली,कानका एकरोग
कण्डुर-(स०पुं०) कुंदरू की लता।
कण्डूयमान-(सं०वि०) खुजलानेवाला।
कण्व-(स०पुं०) एक ऋषि का नाम, (वि०) बहिरा, स्तुति करने वाला, बुद्धिमान्; कण्वसुता-शकुन्तला।
कतई-(अ०वि०) बिलकुल नहीं।
कत-(हिं०अव्य०)किस कारणसे, किसलिये
कतकवृक्ष-(सं०पुं०) निर्मली का वृक्ष।
कतना-(हिं०क्रि०) काता जाना, तैयार होना, (क्रि०वि०) कितना।
कतनी-(हिं०स्त्री०) सूत कातनेकी टेकुरी
कतन्ना-(हिं०पुं०) कतरनेकी बड़ी कैंची
कतन्नी(हिं०स्त्री०) कतरनी, कैंची।
कतरछांट-(हिं०स्त्री०) काट छांट।
कतरन-(हिं०स्त्री०)कपड़े कागज इत्यादि का कटा हुआ रद्दी टुकड़ा।
कतरना-(हिं०क्रि०) कैंची से काटना, छाँटना, टुकड़े करना। कतरनी-(हिं०स्त्री०) बाल, कपड़े आदि काटने की कैंची, धातु की चद्दर काटने की संडसी के आकार की कैंची।
कतरब्योंत-(हिं०पु०)काटछाँट, कतराई, हेरफेर, उलट पलट, फेरफार, सोच विचार, युक्ति, निकास, चोरी,जोड़ तोड़, ढंग, दूसरे के लिये कुछ मोल लेने में अपने लिये कुछ निकाल लेना
कतरवाई-(हिं०स्त्री०) कतरानेका काम, कटाई का शुल्क।
कतरा-(हिं० पु०) खण्ड, अंश, टुकड़ा, कटा हुआ भाग, पत्थर का छोटा टुकड़ा, बड़ी नाव।
कतराई-(हिं० स्त्री०) कतरने का काम, कटाई का पारिश्रमिक। कतराना-(हिं०क्रि०) कटाना, कतरवाना,बचकर निकल जाना।
कतरी-(हिं०स्त्री०) कोल्हू का पाट जिस पर बैठकर मनुष्य बैल को हाँकता हैं, कातर, हाथ में पहिरने का पीतल का एक गहना, राजगीर की लकड़ी की पट्टी, कतरनी, कैंची।
कतला-(हिं०पु०) किसी वस्तु का पतला टुकड़ा।
कतवाना-(हिं० क्रि०) कातने का काम दूसरे से कराना।
कतली-(हिं०स्त्री०)चौकोरकटी हुई मिठाई
कतवार-(हिं०पु०) बेकामका घासफूस, कूड़ा करकट।
कतहुं, कतहूं-(हिं०अव्य०) किस ओर, किस स्थान पर।
कताई-(हिं०स्त्री०)कातने का काम,कतौनी
कतान-(हिं०पु०) एक प्रकार का रेशम जिस पर कलाबत्तू बनता है, इससे बीना हुआ वस्त्र। कताना-(हिं०क्रि०) किसी दूसरेसे कातनेका काम कराना।
कतारा-(हिं०पु०) एक प्रकारकी लाल छिलके की मोटी ईख जिसका गुदा बहुत मीठा होता है।
कतारी-(हिं० स्त्री०) पंक्ति, कतारे के जात की छोटी ईख।
कति- (स०वि०) कौन सी संख्या का, कितना, बहुत से अनगिनतिन।
कतिक-(हिं० वि०) किस परिमाण का, कितना, बहुत सा, अनेक। कतिपय-(सं० वि०) कुछ, कितना ही, कुछ थोड़ा सा, कई एक।
कतरा-(हिं०पुं०) गुलू नामक वृक्ष का गोंद जो औषधि में प्रयोग होता है।
कतेक-(हिं०वि०) कितने, कतिक।
कतौनी-(हिं०स्त्री०)कातनेकीक्रिया,प्रतीक्षा
कत्तर-(हिं० वि०) स्त्रियों की चोटी बाँधने का डोरा।
कत्तल-(हिं०पु०) पत्थरका टुकड़ा,कतरा
कत्ता-(हिं०पुं०) बांस चीरने का एक अस्त्र,एक प्रकारकी तलवार,पासा।
कत्ती-(हिं०स्त्री०) छुरी, छोटी तलवार, कटारी, एक प्रकारकी कैंची जिसको सोनार व्यवहार करते हैं; एक प्रकार की पगड़ी।
कत्थ-(हिं० पुं०) देखो कत्था।

कत्थई-(हिं०वि०) खैर के रंग का।
कत्थक-(हिं०पु०) एक जाति विशेष, ये लोग नाचते गाते हैं।
कत्था-(हिं०पुं०) खैर की लकड़ियों को उबाल कर निकाला हुआ सत्व जो पान में खाया जाता है।
कथं-(स०अव्य०) किस रीति से, किस प्रकार से, क्यों, कहां से।
कथ-(हिं०पु०) देखो कत्था।
कथक-(स०पु०) पौराणिक कथा बांच कर जीविका निर्वाह करनेवाला, पौराणिक, कथावाचक।
कथकता-(सं० स्त्री०) धर्म विषयक आलोचना।
कथक्कड़-(हिं०पुं०) किस्से कहानी कहने वाला।
कथञ्चन-(सं०अव्य०) किसी प्रकारसे
कथञ्चित्-(स०अव्य०) कुछ, किसी प्रकार से।
कथन-(स०नपुं०) कथा, वाक्य, बयान, बात। कथना-(हिं० क्रि०) बोलना, कहना, काव्य रचना करना, निन्दा करना। कथनी-(हिं०स्त्री०) कथन, बात चीत, बकवाद, बडबड़ाहट, कथनीय-(सं०वि०)वर्णन करने योग्य, कहने योग्य, निन्दनीय, खराब।
कथन-(सं०अव्य०) देखो कथ।
कथमपि-(सं०अव्य०) किसी प्रकार से, दृढ़ रूप से।
कथरी-(सं०स्त्री०) नागफनी (हिं०स्त्री०) पुराने चिथड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना गुदड़ी।
कथा-(स०स्त्री०) किस्सा कहानी, तर्क, वार्ता, विवरण, वाक्य, धर्म विषयक व्याख्यान, प्रसंग, चर्चा, उपन्यास, झगड़ा, वाद विवाद, कथानक-(सं०नपुं०) गल्प,कहानी, कथा, छोटा किस्सा। कथानुराग-(सं०पुं०) बात चीत में मन लगना। कथान्त-(सं०पु०) बातचीत की समाप्ति। कथान्तर-(सं०नपुं०)दूसरी वार्ता, कलह, झगड़ा। कथामय-(सं०वि०) किस्सों से भरा हुआ। कथामुख-(स०नपुं०) कथा ग्रन्थ की प्रस्तावना। कथायोग-(सं०पुं०) कथाप्रसङ्ग। कथारम्भ-(सं०पुं०) कथा का आरंभ। कथावस्तु-(सं०स्त्री०) उपन्यास या कथा का ढांचा। कथालाप-(सं०स्त्री०) वार्तालाप, बातचीत। कथावार्ता-(स०स्त्री०) तरह तरह की बातचीत, कहानी। कथाशेष-(सं०पुं०) कथा की समाप्ति।
कथिक-(हिं०पुं०) देखो कत्थक।
कथित-(सं०वि०) उच्चारित,कहा हुआ,
कथीर-(हिं०पुं०) कस्तीर, रांगा।
कथोदय-(सं०पुं०) कथा का उत्थापन।
कथोद्घात-(सं०पुं०) नाटककी प्रस्तावना,कथा का आरम्भ। कथोपकथन-(सं०पुं०) कथा पर कथा, विविध वार्ता, बात चीत।
कथ्यमान-(सं०वि०) कहा जाने वाला।

कद-(हिं० स्त्री०) ईर्ष्या, द्वेष, शत्रुता, हठ, अनबन, (अव्य०) कब, किस समय।
कदंब-(हिं०पुं०) देखो कदम्ब।
कदश-(स०पुं०) सारहीन भाग।
कदक्षर-(स०नपुं०) बुरी लिखावट।
कदंधव-हिं०पुं०) निन्दित पथ, बुरा (खोटा) मार्ग।
कदन-(स०नपु०) पाप, कुचलन, मलाई, युद्ध, लड़ाई, मरण, दुःख, हिंसा।
कदन्न-(सं०नपु०) कुत्सित अन्न, बुरा अन्न, मोटा अनाज।
कदभ्यास-(सं०पुं०) बुरा अभ्यास या आदत।
कदम-(हिं०पुं०) कदम्ब वृक्ष।
कदमा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मिठाई।
कदम्ब-(सं०पु०) एक सदा बहार वृक्ष, इसका फल कुछ खटमीठा होता है, सरसों का पौधा, शहद, दुनियां, समूह, झुण्ड। **कदम्बक**-(स०नपु०) समूह, झुण्ड (पुं०) हल्दी का पौधा। **कदम्बका**-(सं०स्त्री०) कलहसी।
कदरई-(हिं०स्त्री०) भीरुता, कायरता।
कदरज-(हिं०पुं०) कदर्य, कंजूस व्यक्ति, एक पापी का नाम।
कदरमस-(हिं०स्त्री०) मारपीट, लड़ाई झगड़ा।
कदराई-(हिं०स्त्री०) देखो कदरई। **कदराना**-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना
कदरी-(हिं०स्त्री०) मैना के प्रकार का एक पक्षी।
कदर्थ-(स०पुं०) कुत्सित पदार्थ, कूड़ा-करकट, (वि०) निरर्थक,
कदर्थन-(सं०नपुं०) पीड़ा, कष्ट, **कदर्थना**-(स०स्त्री०) दुर्गति, बिडंबना, दुर्दशा, बुराई। **कदर्थित**-(सं० वि०) दूषित, दुर्दशा किया हुआ, घृणित, विडम्बित।
कदर्य-(सं०वि०) क्षुद्र, कृपण, कंजूस। **कदर्यता**-(स०स्त्री०) क्षुद्रता, बुराई, लोभ, कंजूसी। **कदर्यभाव**-(सं०पु०) अश्लील वार्ता।
कदली-(स०स्त्री०) केला, रंभाफल, एक प्रकार का हिरन।
कदश्व(सं०पुं०) निकृष्ट घोड़ा।
कदा-(स०अव्य०) किस समय, किस वक्तपर।
कदाकार-(स०वि०)कुरूप, बुरे आकारका।
कदाचन-(हिं०अव्य०) कदाचित्, कभी।
कदाचन-(सं०अव्य०) किसी दिन, एक दिन, एक बार।
कदाचार-(सं०पुं०) कुत्सित व्यवहार, बुरी चाल चलन। **कदाचारी**-(स०वि०) बुरी चाल चलने वाला।
कदाचित्-(स०अव्य०) एक बार, कभी,
कदापि-(स०अव्य) कभी कभी, जब तुक, समय समय पर।
कदी-(हिं०वि०) हठ करनेवाला।
कदुष्ण-(सं०वि०) थोड़ा गरम।
कदे-(हिं०क्रि०वि०) कभी।
कद्रु कद्रू-(स० स्त्री०) नाग की माता का नाम।
कधी-(हिं०क्रि०वि०) कभी, किसी समय।
कधी कधार-(हिं० क्रि० वि०) कभी कभी, जब तब।
कनंक-(हिं०पु०) सुवर्ण, सोना।
कन-(हिं०पु०) कण, बहुत छोटा टुकड़ा, अन्न का दाना, अन्न के दाने का टुकड़ा, भिक्षा, भीख मांगा हुआ अन्न, जूठन, विन्दु, बूंद, प्रसाद; चावल की धूल, कन्ना, शक्ति, यौगिक शब्दों में 'कन' से 'कर्ण' शब्द का वोध होता है यथा, कनटोप, कनफटा इत्यादि।
कनई-(हिं०स्त्री०) नई शाखा, कनखा, कोपल, कीचड़, गीली मिट्टी।
कनउंगली-(हिं० स्त्री०) कनिष्ठिका, कानी अंगुली।
कनऊड़ी-(हिं०स्त्री०) दासी।
कनऊड़-(हिं०वि०) कनौड़ा, काना, कृतज्ञ
कनक-(स०नपुं०) सुवर्ण, सोना, टेसू का वृक्ष, धतूरा, नागकेशर, चम्पा का वृक्ष, कचनार का पेड़, काला धतूरा, गेहूं का आटा, खजूर, छप्पय छन्द का एक भेद। **कनक कली**-(हिं०स्त्री०) कान में पहिरने का एक आभूषण। **कनककशिपु**-(सं०पु०) हिरण्यकश्यपु. एक दैत्य। **कनकक्षार**-(सं०पु०) सोहागा। **कनकचम्पा**-(स०पुं०) एक प्रकार का चंपाका वृक्ष। **कनकचूर**-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान। **कनकजीरा**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान। **कनकटा**-(हिं०वि०) जिसका कान कटा हो, बूचा, कान काटने वाला। **कनकध्वज**-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
कनकन-(हिं०पुं०) शब्द विशेष,।
कनकना-(हिं०वि०) भंगुर, धीरे से चोट लगने पर टूटनेवाला। कनकनाहट करने वाला, चुनचुनाहट लानेवाला, असह्य, खाने में बुरा लगनेवाला, असहनशील, चिड़चिड़ा। **कनकनाना**-(हिं०क्रि०) चुनचुनाना, मुख का स्वाद बिगाड़ना, बुरा लगाना, भड़कना, चकित होना, रोमाञ्चित होना, **कनकनाहट**-(हिं०स्त्री०) कनकनाने की अवस्था, कनकनी।
कनकपल-(सं०पुं०) सोना तौलने की सोलह माशे की तौल। **कनकपुरी**-(सं०स्त्री०) स्वर्णपुरी, लंका। **कनकप्रभा**-(सं० स्त्री०) बड़ी रतनजोत, तेरह अक्षरों के चार पाद का एक छन्द। **कनकफल**-(सं०नपुं०) धतूरे का फल, जमालगोटा, जायफल।
कनकमय-(सं०वि०) सुवर्ण निर्मित, सुनहला। **कनकमृग**-(सं०पुं०) सोने के मृग। **कनकरस**-(सं०पुं०) हरताल, गला हुआ सोना। **कनकबीज**-(सं०नपुं०) धतूरे का बीज। **कनकशक्ति**-(सं०पुं०) कार्तिकेय। **कनकस्थली**-(सं० स्त्री०) सोने की खान।
कनकाचल-(स०पुं०) सुमेरु पर्वत, सोने का पर्वत।
कनका-(हिं०पुं०) कण, कनकी।
कनकानी-(हिं०पु०) एक जाति का घोड़ा
कनकायु-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
कनकी-(हिं०स्त्री०) छोटा टुकड़ा, चावल का महीन टुकड़ा।
कनकूत-(हिं० पुं०) कृषि फल के दानों का अनुमान।
कनकैया-(हिं०स्त्री०) छोटा कनकौवा, गुड्डी, पटंग। **कनकौवा**-(हिं०पुं०) कागज की बड़ी पतंग, बड़ी गुड्डी।
कनखजूरा-(हिं०पुं०) शतपदी, गोजर।
कनखना-(हिं०क्रि०) अप्रसन्न होना।
कनखिया-(हिं०स्त्री०) कनखी, कटाक्ष। **कनखियाना**-(हिं०क्रि०)कनखी मारना, कटाक्ष करना।
कनखी-(हिं०स्त्री०) कटाक्ष, आंख का संकेत, नजर; **कनखीमारना**-आंख से संकेत करना।
कनखैया-(हिं०स्त्री०) कनखी, कटाक्ष, (वि०) कटाक्ष करनेवाला।
कनगुज-हिं०पुं०) कान का एक रोग।
कनगुरिया-(हिं०स्त्री०) हाथ की सबसे छोटी अँगुली।
कनछेदन-(हिं०पुं०) देखो कर्णवेध।
कनटोप-(हिं०पुं०) दोनों कान को ढांपने की बड़ी टोपी। **कनधार**-(हिं०पुं०) देखो कर्णधार। **कनपट**-(हिं०पु०) कान और आंख के बीच का स्थान, कनपटी, थप्पड़। **कनपटी**-(हिं०स्त्री०) कान और आंख के बीच का स्थान।
कनपेड़ा-(हिं०पुं०) कान का एक रोग। **कनफटा**-(हिं० पुं०) शैव सम्प्रदाय के योगी जो दोनों कानों को फड़वाकर इनमें स्फटिक की मुद्रा पहिरते हैं गोरुखपंथी। **कनफुंकवा**-(हिं०वि०) कानफूंकनेवाला मन्त्रोपदेशक। **कनफुंका**-(हिं०वि०) मन्त्रोपदेश करने वाला, दीक्षा देने वाला (पुं०)गुरु।
कनफुसका-(हिं० पुं०) धीरे धीरे बोलने वाला, निन्दक, **कनफुसकी**-(हिं०स्त्री०) कान में धीरे धीरे बोलना, निन्दाकी बात। **कनफूल**-(हिं०पुं०) करनफूल, कान का एक गहना। **कनफेड़**-(हिं० पुं०) कान के पास होने वाली गिलटी। **कनबिधा**-(हिं० वि०) कान छेदाये हुआ।
कनमनाना-(हिं०क्रि०) सोये हुए प्राणि का धीरे धीरे सचेत होना और हिलना डोलना, किसी के विरुद्ध कोई बात करना।
कनमैलिया-(हिं०पुं०) कान की मैल निकालनेवाला।
कनय-(हिं०पु०) देखो कनक।
कनरश्याम्-(हिं०पुं०) एक राग विशेष
कनरस-(हिं०पुं०) संगीत का आनन्द, गाने बजाने का स्वाद, संगीत सुनने का व्यसन।
कनरसिया-(हिं०पुं०) संगीत प्रेमी, गाने बजाने का रसिक।
कनवई, कनवा-(हिं०स्त्री०) एक छटांक का परिमाण।
कनवांसा-(हिं०पु०) दौहित्र का पुत्र, नाती का पुत्र।
कनवास-(अ०पुं०) सन् या पटुवे का बना मोटा कपड़ा, टाट।
कनवी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कपास।
कनसलाई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कनखजूरे की आकृति का छोटा कीड़ा। **कनसाल**-(हिं०पुं०) चारपाई का टेढ़ा छेद जिसके कारण चारपाई कुछ टेढ़ी हो जाती है। **कनसुई**-(हिं०स्त्री०) खटका, टोह, आहट **कनसार**-(सं०पुं०) तांबे के पत्र पर खोद कर लेख बनाने वाला।
कनसुर-(हिं०वि०) मन्द स्वर युक्त, अप्रसन्न।
कनहा-(हिं०पुं०) अन्न की उपज का अनुमान करने वाला।
कनहार-(हिं०पुं०) कर्णधार, केवट, मल्लाह।
कना-(हिं०पुं०) देखो कन, कण, दाना।
कनाई-(हिं०स्त्री०) कोमल, शाखा, पतली डाल, टहनी।
कनउड़ा-(हिं०पुं०) देखो कनौड़ा।
कनागत-(हिं०पु०) पितृपक्ष, कुंवार महीने का कृष्णपक्ष, श्राद्ध।
कनार-(हिं०पुं०) घोड़े का एक रोग।
कनारी-(हिं०स्त्री०) किनारी, गोंट, मद्रास प्रान्त के कनाडा जिले की भाषा, इस देशवाली।
कनावडा-(हिं०पुं०) कनौड़ा, कृतज्ञ।
कनासी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की आरा चोखा करने की बड़ी रेती।
कनिआरी-(हिं०स्त्री०) कनकचंपा का वृक्ष
कनिक-(हिं०स्त्री०) गेहूँ का मोटा आंटा
कनिका-(हिं०स्त्री०) देखो कणिका।
कनिगर-(हिं०पुं०) अपनी कीर्ति स्थायी रखने वाला।
कनियाँ-(हिं०स्त्री०) क्रोड़, गोद, उत्सङ्ग।
कनियाना-(हिं०क्रि०) साथ छोड़ना, आंख बचाकर भागजाना, पतंग का एक ओर झुकना, कन्नीखाना, गोद लेना।
कनियार-(हिं०पुं०) देखो कर्णिकार, कनकचम्पा।
कनिष्क-(स०पुं०) भारत के एक प्राचीन राजा का नाम।
कनिष्ठ-(स०वि०) बहुत छोटा, अत्यन्त लघुवय का, पीछे से उत्पन्न, वय में कम, निकृष्ट, (पुं०) छोटा भाई। **कनिष्ठता**-(सं०स्त्री०) अतियुवा अवस्था, अल्पता, छोटाई, कमी। **कनिष्ठपद**-(सं०नपु०) बीजगणित में बड़े की अपेक्षा छोटी संख्यायुक्त पद

का वर्गमूल ।

कनिष्ठा-(सं०स्त्री०) कानी अंगुली, वह नायिका जो अपने स्वामी का अल्प प्रेम पाती है (वि०) निकृष्ट, सबसे छोटी ।

कनिष्ठिका-(सं०स्त्री०) सब से छोटी अंगुली, कानी अंगुली । **कनिहार** (हिं०पु०) कर्णधार ।

कनी-(हिं०स्त्री०) छोटा टुकड़ा, किनकी, हीरे का छोटा कण, चावल का मध्य भाग जो प्रायः कम गलता है, विन्दु, बून्द; **कनी खा लेना**-हीरे का कण खाकर मर जाना ।

कनीनक-(सं०पु०) आँख की पुतली । **कनीनिका**-(सं०स्त्री०) आँख की पुतली, कन्या, गुड़िया, कठपुतली, कानी, अंगुली । **कनीर** (हिं०पु०) देखो कनेर

कनु-(हिं०पुं०) कण, दाना, टुकड़ा, शक्ति, बल ।

कनुका-(हिं०पुं०) अन्नका दान्त ।

कने-(हिं०क्रि०वि०) निकट, पास, ओर, समीप, अधिकार में । **कनेखी**-(हिं० स्त्री०) कटाक्ष, कनखी, आँख का इशारा ।

कनेठा-(हिं०पु०) कोल्हू में लगी हुई वह लकड़ी जो इसके चारो ओर घूमती है, (वि०) काना, भेंगा, घूमी हुई आँखवाला ।

कनेठी-(हिं०स्त्री०) कान उमेठने का दण्ड,

कनेर-(हिं०पुं०) सफ़ेद, लाल या पीले फूल का एक छोटे आकार का वृक्ष।

कनेरिया-(हिं०वि०) कुछ कालापन लिये हुए लाल रंग का । **कनोई**-(हिं०पु०) कान का मैल, खूंट । **कनोखा**-(हिं० वि०) कटाक्ष युक्त ।

कनौज-(हिं०पुं०) देखो कन्नौज । **कनौजिया**-(हिं०वि०)कन्नौज निवासी, कन्नौज में रहने वाला । (पु०) कान्यकुब्ज ब्राह्मण ।

कनौठा-(हिं०पुं०) कोण, कोना, (वि०) कनिष्ठ, छोटा ।

कनौड़ा-(हिं०वि०) काना, कलंकित, अपंग, निन्दित, लज्जित,मोल लिया हुआ दास, कृतज्ञ मनुष्य ।

कनौती-(हिं०स्त्री०) पशुओं के दोनों कानों का छोर,इनका चलना फिरना, कान में पहिरने की छोटी बाली ।

कन्त-(हिं०पुं०) पति,स्वामी, मालिक ।

कन्था-(हिं०स्त्री०) कथरी, गुदड़ी, मिट्टी की छोटी भीत, चीर, ओढ़नी ।

कन्द-(सं०पु०) जमीकन्द, लाल मूली, शलजम, गाजर, गुड़, गोल आलू, अनाज की जड़, फल न देनें वाले पौधे की जड़, तेरह अक्षर के चार पद का छन्द, जमी हुई मिश्री ।

कन्दक-(सं०पु०) शकरकन्द, वनसूरन ।

कन्दग्रन्थि-(सं०पुं०) लहसुन ।

कन्दर-(सं०पुं०) हाथी का अंकुश,गुहा, घाटी, सफेद खैर ।

कन्दरा-(सं०स्त्री०) गुहा, गुफा, खोह ।

कन्दरी-(सं०स्त्री०) देखो कन्दरा ।

कन्दर्प-(सं०पुं०) कामदेव, मन्मथ, संगीत का ध्रुव विशेष । **कन्दर्पकेलि**-मैथुन, प्रहसन इत्यादि क्रीड़ा

कन्दल-(सं०पु०) धीमा सुरीला शब्द, छोटा राग, कनपटी, नवीन अंकुर, सुवर्ण, समूह, ढेर, पृथ्वी, कमल-बीज । **कन्दमित**-(सं०वि०) खिला हुआ, निकला हुआ । **कन्दली**-(सं० स्त्री०) कन्दली, केला, झंडा, कमल-गट्टा । **कन्दसार**-(सं०पु०) इन्द्र के बगीचे का नाम ।

कन्दु-(सं०पुं०) भरसाईं, मद्यबनाने का पात्र ।

कन्दुक-(सं०पु०) गेंद (नपु०) सुपाड़ी, तेरह अक्षर का एक छन्द । **कन्दूक**-(सं०पु०) कन्दुक, गेंद ।

कन्ना-(हिं०पु०) पतंग की डोरी का वह भाग जो इसके बीचमें बंधा होता है, किनारा, चावल की कनी, पौधों का एक रोग **कन्नी**-(हिं०स्त्री०) पतंग को सीधी रखने के लिये इसके एक ओर बांधी हुई वस्तु, राजगीरों की करनी ।

कन्यका-(सं०स्त्री०) कुमारी कन्या, लड़की, बिना व्याही हुई पुत्री, तन्त्रानुसार-कुमारी, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, कालिका, शाम्भवी, दुर्गा,चंडिका और सुभद्रा-नव कन्यका है ।

कन्या-(सं०स्त्री०) दश वर्ष की लड़की, अविवाहिता स्त्री, पुत्री, बेटी, घृत-कुमारी, बड़ी इलायची, मेषादि के अन्तर्गत छठीं राशि, चार अक्षर का छन्द; पुराणों के अनुसार, अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और द्रौपदी पंच कन्या कहलाती हैं **कन्याकुमारी**-(सं० स्त्री०) रासकुमारी, यह भारतवर्ष के दक्षिण रामेश्वर तीर्थ के समीप है, दुर्गादेवी । **कन्याग्रहण**-(सं०नपु०) विवाह, शादी । **कन्यादाता**-(सं०पुं०) कन्यादान करनेवाला । **कन्यादान**-(सं०नपु०) हिन्दुओं में वर को विवाह के समय कन्या को दान देने की रीति **कन्याधन**-(सं०नपुं०) अविवाहिता स्त्री का स्त्रीधन । **कन्या-पति**-(सं०पु०) जामाता, दामाद । **कन्यारत्न**-(सं०नपु०) असाधारण रूप और गुण की कन्या । **कन्याराशी**-(हिं०वि०) जिसके जन्म के समय कन्या राशि का चन्द्रमा हो, निर्बल, क्षुद्र, नपुंसक ।

कन्यिका-(सं०स्त्री०) देखो कन्या ।

कन्हाई-(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण, कन्हैया, बड़ासुन्दर लड़का । **कन्हावर**-(हिं० पुं०) दुपट्टेका वह भाग जो कन्धेपर डाला जाता है ।

कन्हैया-(हिं०पुं०)श्रीकृष्ण, प्रिय व्यक्ति, सुन्दर बालक ।

कपट-(सं०पुं०) मिथ्याव्यवहार, धोखा, छल । **कपटचारी**-(सं०वि०) वंचक, धोखेबाज । **कपटता**-(सं०स्त्री०) कपट व्यवहार, । **कपटधारी**-(सं०वि०) कपटयुक्त. **कपटना**-(हिं०क्रि०) तोड़ना, नोचना, काटकर अलग करना, छाँटना ।

कपटप्रबन्ध-(सं०पु०) छल या धोखे की बात । **कपटलेख**-(सं०नपुं०) झूठा लिखित पत्र । **कपटवेश**-(सं० पुं०) छद्मवेश; **कपटवेशी**-शकल बनाये हुए, रूप बदले हुए ।

कपटा-(हिं०पुं०) धान को नष्ट करने वाला एक प्रकार का कीडा ।

कपटी-(सं०वि०) वञ्चक, धूर्त, छली ।

कपड़कोट-(हिं०पुं०) शिविर, । **कपड़-छान**-(हिं०पु०) किसी चूर्णको कपड़े में छानने का काम । **कपड़द्वार**-(हिं०पुं०) कपड़ा रखने का भण्डार ।

कपड़धूलि-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का महीन रेशमी वस्त्र । **कपड़मिट्टी**-(हिं०स्त्री०) कपड़ौटी, किसी धातु या अन्य औषधि को फूकने के लिये संपुट के चारो ओर मिट्टी चिपका कर कपड़ा लपेटने की विधि ।

कपड़विदार-हि०पुं०) फटे कपड़े की की मरम्मत करनेवाला । **कपड़ा**-(हिं०पुं० रूई, ऊन, रेशम या सन का बना हुआ वस्त्र, पोशाक, पहिरने का वस्त्र; **कपड़ोंसे होना**-स्त्री का रजस्वला होना; **कपड़ा-लता**-पहिरने के वस्त्र ।

कपड़ौटी, कपरौटी-(हिं०स्त्री०) देखो कपड़ मिट्टी ।

कपर्द, कपर्दक-(सं०पु०) शिव का जटाजूट, कौड़ी ।

कपर्दा, कपर्दि, कपर्दिका-(सं०) कौड़ी

कपर्दिनी-(सं०स्त्री०)जटा धारिणी दुर्गा

कपर्दी-(सं०पु०) ग्यारह रुद्रों में से एक, शिव ।

कपसा-(हिं०स्त्री०) चिकनी गीली मिट्टी

कपाट-(सं०नपुं०) किवाड़, द्वार; **कपाटघ्न**-किवाड़ तोड़ने वाला, चोर । **कपाटबद्ध**-(सं०पुं०) चित्र काव्य के अन्तर्गत छन्द विशेष जिसके अक्षरों के लिखने पर कपाट के समान चित्र बन जाता है ।

कपार-(हिं०पु०) देखो कपाल ।

कपाल-(सं०पुं०) खोपड़ी की हड्डी, मस्तक, माथा, अदृष्ट, खप्पर, घड़े का टुकड़ा, भिक्षापात्र, मिट्टी का पात्र, वह पात्र जिसमें यज्ञ का पुरोडाश पकाया जाता है, समूह, ढेर, आवरण, ढपना । **कपालक**-(हिं०पु०) देखो कपालिक । **कपाल-क्रिया**-(सं०स्त्री०) जलाती समय शव की खोपड़ी फोड़ने का कार्य । **कपालमालिका**-(सं०स्त्री०) खोपड़ी, काली । **कपालमालिनी**-(सं०स्त्री०) दुर्गा । **कपालमाली**-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।

कपालि-(सं०पु०) शिव, महादेव । **कपालिका**-(सं०स्त्री०) कर्पर, खपड़ा । **कपालिनी**-(सं०स्त्री०) दुर्गा । **कपाली**-(सं०पु०) भैरव, शिव, महादेव, हठयोग की एक क्रिया जो माथे के बल पैर ऊपर करके की जाती है, एक वर्णसंकर जाति ।

कपास-(हिं०पुं०)देखो कर्पास । **कपासी**-(हिं०वि०) कपास के फूल के रंग का, हलके पीले रंग का ।

कपि-(सं०पु०) बन्दर, हाथी, सूर्य, वाराह,करंज,आमड़ा,शिला (सं०पु०) भूरे रंग का । **कपिका**-(सं०पुं०) मदार का पौधा । **कपिकेतन, कपिकेतु**-(सं०पु०) अर्जुन का नाम ।

कपिञ्जल-(सं०पु०) चातक, पपीहा, तीतर, एक मुनि का नाम (वि०) भूरे रंग का लोहबान ।

कपित्व-(सं०नपुं०) हिरिस, क्रोध ।

कपित्थ-(सं०पु०) कैथ का वृक्ष या फल

कपिध्वज-(सं०पु०) अर्जुन । **कपिप्रभा**-(सं०स्त्री०) केंवाच, अपामार्ग, चिचिड़ा

कपिप्रभु-(सं०पु०) रामचन्द्र, बालि, सुग्रीव । **कपिप्रिय** (सं०वि०) आमड़ा, कैथ । **कपिरोमा**-(सं०स्त्री०) केंवाच, रेणुका ।

कपिल-(सं०वि०) भूरा,तामड़ा,मटमैला (पुं०) अग्नि, भूरा रंग, कुत्ता, विष्णु, महादेव, सूर्य, शिलाजीत, चूहा, सांख्य दर्शन के प्रवर्त्तक ऋषि ।

कपिलच्छाया-(सं०स्त्री०) मृगनाभि, कस्तूरी । **कपिलता**-(सं०स्त्री०)केंवांच । **कपिलता**-(सं०स्त्री०) भूरापन, पीलापन, **कपिलवस्तु**-(सं०नपुं०) शाक्य राजाओं की राजधानी, गौतमबुद्ध का जन्मस्थान ।

कपिला-(सं०स्त्री०) शुभ्रवर्ण की गाय, दक्षकन्या, पुण्डरीक नामक दिग्गज की पत्नी, कामधेनु, मध्य प्रदेश की एक नदी का नाम, श्यामलता, (वि०) भूरे रंग का, मटमैला । **कपिलाक्षी**-(सं०स्त्री०) सफ़ेद हरिन । **कपिलिका**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की चोंटी । **कपिवल्ली**-(सं०स्त्री०) गजपिप्पली, कैथ का वृक्ष ।

कपिश-(सं०पु०)मटमैला रंग, लोहबान, शिव, (वि०) मटमैला, भूरे रंग का ।

कपिस-(हिं०पु०) रेशमी वस्त्र ।

कपीशा-(सं०स्त्री०) सुरा, चमेली, एक नदी का नाम, कसाई, पिशाचों की माता जो कश्यपकी पत्नी थी ।

कपी-(हिं०स्त्री०) घिरनी, चरखी, रस्सी लपेटने की गड़ारी ।

कपीन्द्र, कपीश-(सं०पु०) हनुमान्, बालि, सुग्रीव, विष्णु ।

कपूत-(हिं०पुं०) कुपुत्र, बुरे आचरण का पुत्र । **कपूती**-(हिं०स्त्री०) पुत्र का बुरा आचरण ।

कपूर-(सं०पुं०)एक सफ़ेद रंगका सुगंधित द्रव्य जो हवा लगने से उड़ जाता है ।

कपूरकचरी-(हिं०स्त्री०) एक सुगंधित जड़ की लता जो औषधि में प्रयोग होती है। **कपूरकाट**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सुगंधित धान।
कपूरा-(हिं०पु०) भेड़ बकरी आदि का अण्डकोष।
कपूरी-(हिं०वि०) कपूर के रंग का,हलके पीले रंग का, कपूर का बना हुआ (पुं०) हलका पीला रंग, एक प्रकार का कड़ुवा पान।
कपोत-(स०पु०)पक्षी, चिड़िया, कबूतर, घुग्घू, एक प्रकार का चूहा, पारा, सज्जीखार, भूरा रंग। **कपोतक**-(स०नपुं०) भूरा सुरमा, छोटा जात का कबूतर, हाथ जोड़ने की एक रीति। **कपोतपालिका**-(स०स्त्री०) कबूतर का दर्बा। **कपोतवृत्ति**-(सं०स्त्री०) सञ्चयशून्य जीविका। **कपोतव्रत**-(स०वि०) दूसरे के अत्याचारों को चुपचाप सहन करने वाला (पु०)मौन व्रत। **कपोतसार**-(सं०नपुं०) स्रोतोञ्जन, सुरमा।
कपोती-(सं०स्त्री०) कबुतरी, पेडुकी, (वि०) कबूतर के समान, भूरे रंग का
कपोतेश्वरी-(सं०स्त्री०) पार्वती, दुर्गा।
कपोल-(सं०पुं०) गण्डस्थल, गाल। **कपोलकल्पना**-(सं०स्त्री०) अमूलक कल्पना, मनगढ़ंत, झूठी बात। **कपोलकल्पित**-(सं०वि०) असत्य, झूठ, बनावटी। **कपोलगेंदुवा**-(हिं०पु०) गल तकिया, गाल के नीचे रखने की तकिया।
कप्तानी-(हिं०स्त्री०)अध्यक्षता,सरदारी।
कप्पर-(हिं०पुं०) कर्पट, कपड़ा।
कप्फा-(हिं०पु०) अफ़ीम का अर्क,साफ़ा
कप्यास-(स०पु०) बन्दर के गुदा का स्थान, सूर्य से उगाया हुआ।
कफ-(सं०पुं०) श्लेष्मा, शरीर के भीतर की एक धातु।
कफ़नखसोट-(हिं०वि०) शव पर डाले हुए वस्त्र में से टुकड़ा फाड़ने वाला, कृपण, कंजूस, दरिद्र का धन हरनेवाला। **कफ़नखसोटी**-(हिं०स्त्री०) डोम का कर जो वे श्मशान पर शव डाले हुए वस्त्र में से थोड़ा अंश फाड़ लेते हैं, अयोग्य रीति से दरिद्र का धनहरण करना, कृपणता,कंजूसी
कफ़नचोर-(हिं०पु०) क्षुद्र द्रव्य चोराने वाला।
कफ़नाना-(हिं०क्रि०) गाड़ने या जलाने के लिये शव को कपड़ा ओढ़ाना।
कफ़नी-(हिं०स्त्री०)शव के गले में डालने का वस्त्र, साधु के पहिरने का बिना सिला हुआ वस्त्र जिसमें गला डालने के लिये एक छिद्र होता है।
कफिन्ना-(हिं०पु०) जहाज़ की शहतीर में जोड़ने का लोहा।
कब-(हिं०क्रि०वि०) किस समय, किस वक्त; कब का-देर या बिलंब से; **कब नहीं**-सर्वदा, हमेशा।

कबडडी-(हिं०स्त्री०) बालकों का एक खेल जिसमें वे दो दल बना कर खेलते है, काँपा, कम्पा।
कबन्ध-(म० नपु०) जल, पानी (पु०) उदर पेट, राहु, मेघ, बादल बिना मस्तक का धड़, एक राक्षस का नाम, एक गन्धर्व का नाम, लकड़ी का बड़ा पीपा।
कबर-(हिं०पु०) देखो कब्र।
कबरा-(हिं०वि०) कबु र, श्वेत वर्ण पर काले, लाल, पीले या दूसरे रंग के धब्बे।
कबरिस्तान-(हिं०पु०) देखो कब्रिस्तान
कबरी-(हिं०स्त्री०) वेणी, चोटी।
कबाड़-(हिं०पु०) निरर्थक पदार्थ,कूड़ा करकट,निरर्थक कार्य,तुच्छ व्यवसाय।
कबाड़ा-(हिं० पु०) निरर्थक व्यापार, झगड़ा झंझट। **कबाड़िया, कबाड़ी**-(हिं०पुं०) टूटी फूटी वस्तु, बेंचने वाला, तुच्छ व्यवसाय करनेवाला, झगड़ालू मनुष्य, (वि०) नीच।
कबाबचीनी-(हिं०स्त्री०) शीतलचीनी, मिर्च की जाति की एक लता है।
कबार-(हिं०पु०) छोटा व्यवसाय,काम काज, देखो कबाड़।
कबारना-(हिं०क्रि०)उखाड़ना,नोचना।
कबाल-(हिं० स्त्री०) खजूर का रेशा जिसकी रस्सी बनती है।
कबाहट-(हिं० स्त्री०) तरद्दुद, अड़चन, बुराई, कठिनता।
कबीठ-(हिं०पुं०) कैथ का फल।
कबीर-(अ०वि०) प्रतिष्ठित,एक प्रसिद्ध भक्त का नाम जो पहिले जुलाहे थे, अश्लील गीत जो होली के अवसर पर गाई जाती है। **कबीरपन्थी**-कबीर के सम्प्रदाय का।
कबीला-(अ०स्त्री०) पत्नी, जोड़ू।
कबीला-(हिं०पु०) एक छोटा वृक्ष, यह दवा के उपयोग में आता है।
कबुलवाना,कबुलाना-(हिं०क्रि०)स्वीकार करवाना, क़बूल करवाना।
कभी-(हिं०क्रि०वि०) किसी समय। **कभी न कभी**-किसी न किसी अवसर पर, जब तब।
कभू-(हिं०क्रि०वि०) देखो कभी।
कम-(फा०वि०) अल्प थोड़ा,न्यून,बुरा, (क्रि०वि०) बहुत नहीं; **कम से कम**-थोड़ा बहुत।
कम-कम-(हिं०क्रि०वि०) थोड़ा-थोड़ा।
कमकस-(हिं०वि०) सुस्ती से काम करने वाला।
कमङ्गर-(हिं०पुं०) कमान बनाने वाला, हड्डी बैठानेवाला, चित्रकार (वि०) चतुर।
कमचा-(हिं०पु०) छोटी कमान, सारंगी, लोहे की कमानी, चन्दाकार छत, लचीली डाल। **कमची**-(हिं०स्त्री०) बांस की पतली डाल जिसकी टोकरियां बनती हैं, पतली छड़ी, लकड़ी की पतली पट्टी, तीली।

कमच्छा-(हिं०स्त्री०) देखो कामाख्या।
कमंचा-(हिं०पु०) लोहे की कमानी, बढई का बरमा चलाने का डंडा।
कमठ-(स०पु०) कच्छप, कछुवा, बांस, तुम्बी या नारियल का पात्र, एक प्रकार का बाजा।
कमठा-(हिं०पु०) चाप, कमान। **कमठी**-(स०स्त्री०) कच्छपी, कछुई, (हिं०स्त्री०) बाँस या लकड़ी की लम्बी पतली पट्टी, फट्टी।
कमण्डल-(हिं०पुं०) देखो कमण्डलु।
कमण्डली-(हिं०वि०) पाखंड, बहुरूपिया
कमण्डलु-(स०नपु०) मिट्टी, तुम्बी, काठ या नारियल का बना हुआ सन्यासियों का पात्र, तुम्बा; **कमण्डलुधर**-शिव, महादेव।
कमती-(हिं०स्त्री०) कम, अल्प, घटी (वि०) अल्प, थोड़ा।
कमनचा-(हिं० पुं०) बढ़ई का बरमा घुमाने का एक अस्त्र।
कमना-(हिं० क्रि०) न्यून होना, कम होना, घटना।
कमनी-(हिं०वि०) सुन्दर, कमनीय।
कमनीय-(स०वि०) कामना या इच्छा करने वाला, मनोहर, रुचिर, सुन्दर, प्रिय। **कमनीयता**-(सं०स्त्री०) सौन्दर्य
कमनैत-(हिं०पु०) धनुर्धारी,
कमनैती-(हिं०स्त्री०) धनुर्विद्या, तीर कमान की विद्या।
कमरंग-(हिं०पुं०) देखो कमरख।
कमरकस-(हिं०पु०) ढाक की गोंद।
कमरकोट, कमरकोठा-(हिं०पुं०) गढ के चारों ओर बनी हुई कंगूरेदार भीत दीवार जिसमें लक्ष्य लगाने के लिये छेद होते हैं, प्राकार, रक्षा के लिये बनी हुई भीत।
कमरख-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसके फांक वाले लम्बे लंबे फल होते हैं जो खाने में खट्टे होते हैं, यह फल। **कमरखी**-(हिं०वि०) कमरख के समान फ़ाँकदार (स्त्री०)फाँकदार कटाव।
कमरचण्डी-(हिं०स्त्री०) खड्ग, तलवार
कमरटूटा-(हिं०वि०) ढीली कमर वाला कुबड़ा, नपुंसक।
कमरतेगा-(हिं० पुं०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति।
कमरपट्टी-(हिं०स्त्री०) कटिबन्ध, कमर पर बाँधने की पट्टी।
कमरपेटा-(हिं०पुं०) मालखंभ की एक व्यायाम।
कमरबल्ला-(हिं०पुं०) खपड़े की छाजन की वह लकड़ी जो लंबे बड़ेर के नीचे रक्खी जाती है।
कमरा-(हिं०पुं०) कोष्ठ, कोठा, कोठरी,
कमरिया-(हिं०स्त्री०) छोटा कम्बल, कटि, कमर, बौना हाथी; (पुं०) घोड़े का एक रोग। **कमरी**-(हिं०स्त्री०) छोटा कम्बल।
कमल-(सं०नपुं०) पद्म, पानी में होने वाला एक सुन्दर फूलों का पौधा,

इस पौधे का फूल, जल, ताँबा, क्लोम, पेट में का कमल के आकार का मांस पिंड, एक प्रकार का हिरन, सारस पक्षी, आकाश, ब्रह्मा, मूत्राशय, रोरी कुंकुम, एक प्रकार का मात्रिक छन्द, आँख का ढेला, गर्भाशय का अग्रभाग, मोमबत्ती जलाने का गिलास, कामुक चाहने वाला। **कमलअण्डा**-(हिं०पुं०) कमलगट्टा। **कमलकन्द**-(सं० पु०) कमल की जड़। **कमलगट्टा**-(हिं०पुं०) पद्मबीज, कमल का बीज। **कमलज**-(स०पुं०) ब्रह्मा। **कमलनयन**-(स०वि०) कमल के सदृश सुन्दर नेत्र वाला (पु०) विष्णु, रामचन्द्र, कृष्ण। **कमलनाभ**-(स० पु०) विष्णु। **कमलनाल**-(सं०अव्य०) मृणाल, कमल की डंडी। **कमलबन्धु** (स०पुं०) सूर्य।
कमलबन्ध-(स०पु०) एक प्रकार का चित्र काव्य जिसके अक्षरों को नियम पूर्वक लिखने से कमल का चित्र बन जाता है।
कमलबाई-(हिं०स्त्री०) एक रोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है।
कमलभव-(सं०पुं०) कमलज, ब्रह्मा।
कमलभू-(सं०पुं०) ब्रह्मा। **कमलयोनि** (सं०पुं०) ब्रह्मा। **कमलबीज**-(स०नपुं०) कमलबीज, कमलगट्टा।
कमला-(स०स्त्री०) लक्ष्मी, सुन्दर स्त्री, नारंगी गंगा, नाचने वाली रंडी, एक प्रकार का छन्द, उत्तर बिहार की एक नदी, (हिं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा जिसके काटने से खुजली होती है, ढ़ोला, झाँझी। **कमलाकर**-(सं०पुं०) पद्म समूह। **कमलाकान्त**-(सं०पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु **कमलाकार** (स०वि०) कमल के आकार का (पु०) छप्पय का एक भेद। **कमलाक्ष**-(सं०वि०) पद्म के समान सुन्दर नेत्र वाला (पुं०) कमलगट्टा, पद्मबीज। **कमलाप्रजा**-(हिं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी। **कमलापति** (सं०पुं०) लक्ष्मी के पति, विष्णु
कमलालया-(स०स्त्री०) कमल में रहने वाली लक्ष्मी। **कमलासन**-(सं० पु०) ब्रह्मा, हठ योग का पद्मासन। **कमलावती**-(सं०स्त्री०) पद्मावती छन्द
कमलिनी-(सं०स्त्री०) छोटा कमल, कोई
कमली-(स०पुं०) ब्रह्मा।
कमली-(हिं०स्त्री०) छोटा कम्बल, कमरी
कमलेश-(स०पु०) विष्णु।
कमवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से कमाने का काम कराना, लाभ करवाना, बाल बनवाना, सुधरवाना।
कमसमझी-(हिं०स्त्री०) मूर्खता,
कमहा-(हिं०वि०) काम करने वाला श्रमी।
कमाइच-(हिं०स्त्री०) सारंगी बजाने की कमानी।
कमाई-(हिं०स्त्री०) कमाया हुआ धन, कमाने का काम, उद्यम, व्यवसाय, काम धंधा।

कमाऊ-(सं०वि०) कमाने वाला, धनोपार्जन करने वाला।
कमाच-(हिं०पुं०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
कमाची-(हिं०स्त्री०) कमान की तरह झुकी हुई तीली।
कमाना-(हिं०क्रि०) उपार्जन करना, परिश्रम करना, अभ्यास बढ़ाना, सुधारना, मसाले से भरना, मल मूत्र उठाना, बोने के लिये भूमि तैयार करना, छिनारा करके पेट भरना, परिश्रम करना, बाल मूड़ना, अभ्यास बढ़ाना, कम करना, घटाना।
कमानियाँ-(हिं०पुं०) धनुष चलाने वाला (वि०) तिरछा।
कमानी-(फा०स्त्री०) कोई लचीली वस्तु लोहे की लचकने वाली तीली, मेखला, जो आँत उतरने वाले कमर में कसते हैं, धनुषाकार लकड़ी, बाँस की फट्टी; **बाल कमानी**-जेबी घड़ी की बाल के समान महीन कमानी; **कमानीदार**-कमानी लगा हुआ।
कमायज-(हिं०स्त्री०) सारंगी बजाने की कमानी।
कमायी-(हिं०स्त्री०) देखो कमाई।
कमासुत-(हिं०वि०) धन कमाने वाला, उद्यमी।
कमीला-(हिं०) देखो कबीला।
कमुकन्दर-(हिं०पुं०) धनुष भंजी श्रीरामचन्द्र।
कमुवा-(हिं०पुं०) नाव चलाने के डाँड का कन्न।
कमेरा-(हिं०पुं०) कर्मकार, खेत में काम करने वाला।
कमेला-(हिं०पुं०) पशुओं का बध करने का स्थान,
कमेहरा-(हिं०पुं०) कसकुट की चूड़ियां ढालने का सांचा।
कमोदन-(हिं०स्त्री०) कुमुदिनी।
कमोदिक-(हिं०पुं०) कमोद राग गाने वाला गवैया।
कमोदिन-(हिं०स्त्री०) कुमुदिनी।
कमोरा-(हिं०पुं०) चौड़े मुंह का मिट्टी का घड़ा, कछरा। **कमोरी**-(हिं०स्त्री०) छोटा कमोरा, कछरी।
कम्प-(सं०पुं०)स्फुरण, थरथरी, कँपकपी, भीत का उभड़ा हुआ किनारा, बोलने में कम्पन, गिटकिरी।
कम्पन-(सं०नपुं०) कंपकपी, जाड़े का ऋतु, सन्निपात ज्वर, हिलना। **कम्पनीय**-(सं०वि०)चलनशील, काँपने वाला। **कम्पमान**-(सं०वि०) काँपता हुआ।
कम्पा-(सं०स्त्री०) कम्पन, कँपकपी; **कम्पा मारना**-छल द्वारा फँसाना।
कम्पित, कम्पी-(सं०वि०) काँपने वाला, हिलाया डोलाया हुआ।
कम्बल-(सं०पुं०) भेड़ के ऊन का बना हुआ वस्त्र, पशु के गले का बाल, ऊनी चादर, एक प्रकार का हरिन, नोनियाँ शाक। **कम्बलिका**-(सं०स्त्री०) छोटा कम्बल, कमली।
कम्बु-(सं०पुं०) शंख, घोंघा, कौड़ी, हाथी, चितकबरा रंग, गर्दन।
कम्बुक-(सं०पुं०) नीच पुरुष।
कम्बुग्रीवा-(सं०वि०) जिसकी गरदन में तीन रेखा पड़ती हों।
कम्बू-(सं०पुं०) तस्कर, चोर, (स्त्री०)शंख
कम्बोज-(सं०पुं०) एक देश जो अफ़गानिस्तान का एक भाग है, एक प्रकार का हाथी।
कम्मल-(हिं०पु०) देखो कम्बल।
कम्मा-(हिं०पुं०) ताड़पत्र पर लिखा हुआ लेख।
कम्र-(हिं०वि०) इच्छुक।
कयपूती-(हिं०स्त्री०) एक वृक्ष, इसके पत्तों में से सुगन्धित तेल निकलता है
कया-(हिं०स्त्री०) देखो काया।
कयारी-(हिं०स्त्री०) सूखी घास।
करंक-(हिं०पु०) अस्थिपंजर, ठठरी।
करंना-(हिं०पुं०) एक वृक्ष।
कर-(सं०पुं०) हाथ, हाथी का सूंड, ओला, प्रत्यय, विषय, काम, महसूल, मालगुजारी, छल, युक्ति, चौबीस अंगुल की नाप, संबंध कारक का चिन्ह, प्रत्यय की तरह शब्द में प्रयोग होने से इसका अर्थ "करने-वाला" होता है यथा कष्टकर, सुखकर इत्यादि।
करइत-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, एक प्रकार का सर्प।
करई-(हिं०स्त्री०) जल रखने का टोंटीदार पात्र।
करंगा-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान।
करंजा-(हिं०पुं०) कंजा (वि०) भूरी आँख वाला।
करंजुवा-(हिं०पुं०) करंज का वृक्ष,कंजा, जव के पौधे को नष्ट करने वाला एक रोग, (वि०) भूरी आंख वाला।
करंड-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत कड़ा पत्थर (कुरुन) जिसकी सान बनती है, पिटारा, कोष।
करंडी-(हिं०स्त्री०) कच्चे रेशम की चादर अंडा।
करंही-(हिं०स्त्री०) मोची का जूता सीने का एक यंत्र।
करक-(सं०पुं०)कमण्डल, करवा, करंज का वृक्ष,मौलसिरी, कचनार, नारियल की खोपड़ी, गोबर पर उगने वाला छाता,अनार, ओला, करंक, ठठरी।
करक-(हिं०स्त्री०) देखो कड़क।
करकच-(सं०पुं०) समुद्र से निकाला हुआ नमक, (हिं०पुं०) उपद्रव।
करकट-(हिं०पुं०) असार वस्तु, कूड़ा, कतवार, झाड़न।
करकटिया-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की लंबी पोंछ की चिड़िया।
करकण्टक-(सं०पुं०) नख।
करकना-(हिं०क्रि०) चटचटाना, फूटना, पीड़ा होना, कसकना।
करकमल-(सं०नपुं०) कमल की भाँति सुन्दर हाथ।
करकर-(हिं०पुं०) समुद्र से निकाला हुआ नमक, (वि०) गड़ने वाला।
करकरा-(हिं०वि०) खुरखुरा, गड़ने वाला, कठोर। **करकराहट**-(हिं०स्त्री०) कड़ापन, कठोरता, खुरखुराहट, पीड़ा
करकस-(हिं०वि०) कर्कश, कड़ा।
करका चतुर्थी-(सं०स्त्री०) कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, करवा चौथ, इस दिन स्त्रियां व्रत करती हैं।
करकायु-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
करखना-(हिं०क्रि०) उत्तेजित होना।
करखा-(हिं०पु०) युद्ध संगीत, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक पाद में सैंतीस मात्रा होती है, उत्तेजना, कलंक, काजल।
करगता-(हिं०पु०) सोने या चांदी की करधनी।
करगस-(हिं०पुं०) तीर।
करगह-(हिं०पु०) एक नीचा स्थान जहाँ पैर लटका कर जुलाहे कपड़ा बीनते हैं, जुलाहों का कार्यालय, कपड़ा, बीनने का यन्त्र।
करगहना-(हिं०पुं०) पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा जिसको द्वार या खिड़की के चौखट पर रखकर जोड़ाई करते हैं, भरेठा।
करगही-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का अगहनिया मोटा धान।
करगा-देखो करगह।
करगी-(हिं०स्त्री०) चीनी बटोरने की खुरचुनी, बाढ।
करग्रह-(सं०पु०) विवाह, कर या टिकट लेने का काम।
करग्राह-(सं०पु०) कर लेने वाला राजा
करघा-(हिं०पुं०) देखो करगह।
करङ्क-(सं०पुं०)माथा, कपार, नारियल की खोपड़ी कमण्डल, भिक्षा मांगने का पात्र।
करङ्कण-(सं०नपुं०) हाट।
करचंग-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा डफ।
करछा-(हिं०पुं०) बड़ी करछी।
करछाल-(हिं०स्त्री०) उछाल, छलांग, कूद फांद।
करछी, करछुल-(हिं०स्त्री०) देखो कलछी **करछुली**-(हिं०स्त्री०) छोटी कलछुल। **करछुला**-(हिं०स्त्री०) बड़ी करछुल।
करछैयाँ-(हिं० स्त्री०) कुछ काली गौ, **करछौंह**-थोड़ा काला रंग।
करज-(सं०पुं०) नख, अंगुली, व्याघ्रनख नामक सुगन्धित द्रव्य (वि०) हाथ से उत्पन्न।
करजोड़ि-(सं०पुं०) हात जोड़ी नामक औषधि।
करञ्ज-(सं०पुं०) इस नाम की औषधि करौंदा।
करट-(सं०पुं०) कौवा, हाथी की कनपटी दुष्ट मनुष्य, एकादशाह श्राद्ध, कट्टर नास्तिक (हिं०पु०) कौवा।
करटक-(सं०पु०) कौवा, चौर शास्त्र प्रवर्तक कर्णी के पुत्र।
करटा-(सं०स्त्री०) दूध दुहाने में छटकने वाली गाय, हाथी की कनपटी।
करटिनी-(सं०स्त्री०) हस्तिनी, हथिनी।
करटी-(सं०पुं०) हस्ती, हाथी।
करड़करड़-(हिं०पु०) चटकने का शब्द, दाँतों से कड़ी वस्तु तोड़ने का शब्द।
करण-(सं०नपुं०) व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है, तृतीया विभक्ति, इन्द्रिय, शरीर, साधन, कार्य, क्रिया, एक प्रकार का नाच, स्थान, बैठना, ज्योतिष के गणित की एक क्रिया, योगियों का आसन, गणित में वह संख्या जिसका वर्गमूल पूरा पूरा न निकल सके। **करणत्व**-(सं०नपुं०) साधनत्व।
करणी-(सं०स्त्री०) गणित में जिस संख्या का अति सूक्ष्मरूप से वर्गमूल नहीं निकाला जा सकता।
करणीय-(सं०वि०) करने योग्य।
करण्ड-(सं०पु०) मधुमक्खी का छत्ता, तलवार (हिं०पुं०) शस्त्र चोखा करने का कुरुन पत्थर।
करण्डा-(सं०स्त्री०) फूल रखने की पेटारी
करण्डी-(हिं०स्त्री०) देखो अण्डी।
करतब-(हिं०पु०) कर्तव्य, काम, कला, जादू, चालाकी। **करतबिया, करतबी**-(हिं०वि०) करतब करनेवाला, निपुण, गुणी।
करतरी-(हिं०स्त्री०) देखो कर्तरी।
करतल-(हि०पुं०) हथेली, एक प्रकार का छप्पय; **करतलगत**-हाथ में आया हुआ।
करतली-(हिं०स्त्री०) हथेली, ताली, गाड़ीवान के बैठने का स्थान।
करतव्य-(हिं०पु०) देखो कर्तव्य।
करता-(हिं०पुं०) कर्ता, करनेवाला, एक वृत्त विशेष। **करतार**-(हिं०पुं०) कर्तार, विधाता, करताल। **करतारी**-(हिं०स्त्री०) हथेलियों से ताली बजाने का शब्द, एक प्रकार का बाजा।
करताल-(सं०नपुं०) दोनों हाथों से ताली बजाने का शब्द, झांझ, मजीरा, मल्लक, हाथ से बजाने का लकड़ी या कांसे का एक यन्त्र।
करती-(हिं०स्त्री०) मरे बछवे का चमड़ा जिसमें भूसा भरकर गाय को देखाकर दूध दूहा जाता है।
करतूत, करतूति-(हिं०स्त्री०) कर्तव्य, काम, करनी, करतब, कला, गुण, काम, कुकर्म।
करद-(सं०वि०) राजकर देनेवाला, आश्रय देनेवाला।
करदक्ष-(सं०वि०) शिल्पी; हाथ का कारीगर।
करदम-(हिं०पुं०) देखो कर्दम

करदा-(हिं०पुं०) गर्दा, कूड़ा करकट, अन्न में मिली हुई मिट्टी इत्यादि, बट्टा, कटौती, मूल्य में वह कमी जो किसी वस्तु में कूड़ा करकट निकालने पर हो ।
करदौना-(हिं०पुं०) देखो दौना ।
करधनी-(हिं०स्त्री०) कमर में पहिरने का आभूषण, कमर में पहिरने का लड़ीदार सूत, एक प्रकार का धान ।
करधर-(हिं०पुं०) मेघ, बादल, महुवे की रोटी ।
करधृत-(सं०वि०) हाथ से पकड़ा हुआ
करन-(हिं०पुं०) देखो कर्ण ; एक रेचक औषधि । **करनधार**-(हिं०पुं०) देखो कर्णधार । **करनफूल**-(हिं०पुं०) पुष्पाकार, कान का एक गहना । **करनवेध**-(हिं०पुं०) कर्णवेध, बच्चों के कान छेदने का एक संस्कार ।
करना-(हिं०पुं०) सफ़ेद फूलों का एक पौधा, सुदर्शन, एक प्रकार का बड़ा नीबू, कार्य, काम, (क्रि०) समाप्ति पर लाना, निबटाना, बनाना, पकाना, भेजना, पहुँचाना, लगाना, व्यवसाय, चलाना, भाड़ा ठहराना, रूप बदलना, उठाना, दीपक बुझाना, मारना, रंगना, रींधना, लेजाना, पति या पत्नी बनाना, भाड़े पर सवारी लेना, कोई पद देना ; इस शब्द को किसी संज्ञा के अन्त में लगा देने से उस संज्ञा के अर्थ की क्रिया बन जाती है ।
करनाई-(हिं०स्त्री०) तुरुही ।
करनाटक-(हिं०पुं०) मद्रास प्रान्त का एक देश । **करनाटकी**-(हिं०वि०) करनाटक देश वासी, नट, इन्द्रजाल देखलाने वाला ।
करनाल-(हिं०पुं०) नरसिंघा, भोंपा, बड़ी ढाल, एक प्रकार की तोप ।
करनी-(हिं०स्त्री०) कर्म, करतूत, कार्य, करतब, अन्त्येष्टि क्रिया, मृतक संस्कार, राजगीर का वह अस्त्र जिससे वे मसाला उठाते और भीत पर लगाकर इसको चिकनाते हैं ।
करन्यास-(सं० पुं०) तन्त्रोक्त मन्त्र उच्चारण करते हुए अंगुली तथा हाथ के भिन्न भागों को स्पर्श करना
करपंकज-(सं०पुं०) कमल के समान हाथ ।
करपर-(हिं०पुं०) खोपड़ी (वि०) कृपण, कंजूस ।
करपरी-(हिं०स्त्री०) बरी, मुंगौरी ।
करपलई-(हिं०स्त्री०) देखो करपल्लवी ।
करपल्लव-(सं०पुं०) अंगुली, हाथ ।
करपल्लवी-(सं० स्त्री०) अंगुलियों के संकेत से शब्दों को प्रगट करने की विद्या, हाथके संकेत की बात चीत ।
करपा-(हिं०पुं०) अन्नकी बालदार डांठ, लेहना ।
करपात्र-(सं० नपुं०) हस्तरूप पात्र, जलक्रीड़ा ।
करपान-(हिं० पुं०) एक प्रकार का चर्मरोग ।
करपाल-(सं०पुं०) खड्ग, तलवार ।
करपालिका करपाली-(सं०स्त्री०) हाथ की छोटी छड़ी, छुरा, मुद्गर ।
करपीड़न-(सं० नपुं०) विवाह, पाणि ग्रहण ।
करपुट-(सं०पुं०) श्रद्धांजलि, अंजुलि ।
करपृष्ठ-(सं०नपुं०) हाथका पिछला भाग ।
करप्रद-(सं०पुं०) कर देनेवाला ।
करप्राप्त-(सं०वि०) हाथमें आया हुआ
करबच-(हिं०स्त्री०) बैल पर लादने की खुरजी ।
करबरना-(हिं०क्रि०) कुलबुलाना, हल्ला करना ।
करबस-(हिं०पुं०) एक प्रकारकी चाबुक
करबाल-(सं०पुं०) नख, तलवार ।
करबी-(हिं०स्त्री०) चौपायों का खाना, चरी, ज्वार या मकई का हरा पौधा जो काट कर चौपायों को खिलाया जाता है ।
करबीला-(हिं०वि०) चरी से भरा हुआ
करबुर-(हिं०वि०) देखो कर्बुर ।
करबूस-(हिं० पुं०) रस्सी (या तस्मा) जो घोड़ेकी ज़ीनमें शस्त्र लटकाने के लिये लगा होता है ।
करभ करभक-(सं० पुं०) करपृष्ठ, हथेली के पीछे का भाग, हाथी का सूंड़, हाथी का बच्चा, ऊँट या ऊँट का बच्चा, नखी नामक सुगन्धित औषधि, कटि, कमर, एक प्रकार का दोहा जिसमें सोलह गुरु और सोलह लघु वर्ण होते हैं ।
करभी-(सं०स्त्री०) हथनी, उटनी ।
करभीर-(सं०पुं०) सिंह, शेर ।
करभूषण-(सं०नपुं०) हाथका आभूषण
करभोरु-(सं०स्त्री०)गोल जांघवाली स्त्री
करम-(हिं० पुं०) कर्म, काम, भाग्य, प्रारब्ध । **करम फूटना**-भाग्य हीन होना ; **करम रेख**-भाग में लिखा हुआ।
करमई-(हिं०स्त्री०) कचनार के समान एक वृक्ष ।
करमकल्ला-(हिं० पुं०) बन्दगोभी, एक प्रकारकी गोभी जिसमें पत्तेही पुष्पाकार होते हैं , पातगोभी ।
करमचन्द-(हिं० पुं०) कर्म, भाग्य, प्रारब्ध ।
करमट्ठा-(हिं०वि०) कृपण, कंजूस ।
करमठ-(हिं०वि०) कर्मनिष्ठ, कर्मकाण्ड कराने वाला ।
करमनासा-(स्त्री०) देखो कर्मनाशा ।
करमरिया-(हिं०स्त्री०) शान्ति ।
करमर्द, करमर्दक-(सं० पुं०) करंज, करौंदा ।
करमसेंक-(हिं० पुं०) पचायती हुक्का, थोड़े घी में सेंका हुआ परोंठा ।
करमाल-(हिं०पुं०) कर्म, भाग्य, (सं०पुं०) धुवां, मेघ, बादल ।
करमाला-(सं०स्त्री०) अंगुलियों के पोर की जपनी ।
करमाली-(सं०पुं०) सूर्य ।
करमी-(हिं०वि०) कर्मकार, काम करने वाला, कर्मठ ।
करमुंहा-(हिं०वि०) काले मुखवाला, कलंक युक्त ।
करमुक्त-(सं०वि०) हाथ से छूटा हुआ, बिना कर का (पुं०) बरछा ।
करमूल-(सं०नपुं०) मणिबन्ध, कलाई ।
करमेस-(हिं०पुं०) करगहके ऊपर बँधा हुआ काठ ।
करमोद-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान
करम्बित-(सं० वि०) मिला हुआ, जड़ा हुआ ।
करम्भ-(सं०पुं०) चबैना, दरा हुआ जव ।
करर-(हिं० पुं०) एक विषैला कीड़ा जिसका शरीर ग्रन्थिमय होता है, जंगली कुसुम का वृक्ष, एक विशेष रंग का घोड़ा ।
कररना, कराना-(हिं० क्रि०) कर्कश शब्द करना, मरमराना, चरचराना, कठोर शब्द कहना ।
कररान-(हिं०स्त्री०) धनुष के चढ़ाने का शब्द ।
कररी-(हिं०स्त्री०) बनतुलसी ।
कररुद्ध-(सं०वि०) हाथसे रोका हुआ ।
कररुह-(सं०पुं०) नख, अंगुली, तलवार, नखी नामक सुगन्धित औषधि ।
कररेखा-(सं०स्त्री०) हाथ में की लकीर ।
करल-(सं०पुं०) कैथ का वृक्ष (हिं०पुं०) कड़ाहा ।
करला-(हिं०पुं०) करली (स्त्री०) अंकुर, किल्ला ।
करवट-(हिं०स्त्री०) दहिने या बांये बल लेटने की स्थिति, करवत, आरा ; **करवट बदलना**-पलटा खाना, भिन्न स्थितिमें होना ; **करवट लेना**-कर्तव्य का ध्यान छोड़ना ।
करवत-(हिं०पुं०) करपत्र, आरा ।
करवर-(हिं०स्त्री०) विपद,आपत्ति,संकट,
करवरना-(हिं०क्रि०) कोलाहल करना, चहकना ।
करवल-(हिं०स्त्री०) कांसा मिली हुई चांदी ।
करवा-(हिं०पुं०) धातु या मिट्टीका टोंटीदार लोटा, गड़ुवा, बधना, कोनिया, घोड़वा ।
करवागौर, करवाचौथ-(हिं० स्त्री०) कातिक बदी चौथका दिन, सौभाग्यवती स्त्रियां इस चतुर्थी को गौरीका व्रत करती हैं ।
करवाना-(हिं०क्रि०) किसी काम करने के लिये दूसरे को प्रवृत्त करना ।
करवार करवाल-(सं० पुं०) कृपाण, तलवार नख, तलवार । **करवालिका**-(सं०स्त्री०) छोटी गदा ।
करवाली-(हिं० स्त्री०) छोटी तलवार, करौली ।
करवीर-(सं० पुं०) कृपाण, तलवार, श्मशान, मरघट, कनेर का वृक्ष ।
करवील-(हिं०पुं०) करीलका पेड़ ।
करवैया-(हिं०वि०) कर्ता, करनेवाला ।
करशाखा-(हिं०स्त्री०) अंगुली ।
करष-(हिं०पुं०) कर्ष, खिंचाव, तनाव, द्रोह, ताव, लड़ने का उत्साह ।
करषक-(हिं०पुं०) देखो कर्षक ।
करषना-(हिं०क्रि०) घसीटना, तानना, खींचना, समेटना, सुखाना, सोखलेना, निमन्त्रित करना, न्योता देना ।
करस-(हिं०पुं०) कंडे का चूर, करसी ।
करसना-(हिं०क्रि०) खींचना, घसीटना, सुखना, एकत्र करना, समेटना ।
करसमा-(हिं०पुं०) देखो करश्मा ।
करसा-(हिं०पुं०) देखो करस ।
करसान-(हिं०पुं०) कृषाण, किसान ।
करसायर, करसायल-(सं०पुं०) कृष्णसार, काला हिरन ।
करसी-(हिं०स्त्री०) कंडे का चूरचार, उपला, उपरी, गोहरी ।
करसूत्र-(सं०नपुं०) मङ्गलार्थ हाथमें बाँधा हुआ सूत्र, रक्षाबंधन, कंगन ।
करस्वन-(सं०पुं०) हस्तध्वनि, ताल ।
करह-(हिं०पुं०) करभ, ऊंट ।
करहंस-(सं० पुं०) एक प्रकारका वर्णवृत्त
करहनी-(हिं०पुं०) एक अगहनी धान ।
करहा-(हिं०पुं०) श्वेत सिरिस का वृक्ष
करहाट, करहाटक-(सं०पुं०) मैनफल ।
करही-(हिं०स्त्री०) अन्नकी बालका दाना जो कूटने पीटने पर भी बच जाता है
करा-(हिं०स्त्री०) देखो कला ।
कराइत-(हिं० पुं०) एक काले जाति का सर्प ।
कराई-(हिं०स्त्री०) मूंग,उर्द,रहर इत्यादि के दाल परकी भूसी, दालका छिलका, श्यामता, कालापन, किसी कार्य के कराने या करने का भाव ।
करांकुल-(हिं०) देखो कलंकुर, क्रौंच ।
करांत-(हिं०पुं०) करपत्र, आरा ।
करांती-(हिं० पुं०) आराकश आरा चलाने वाला ।
कराग्र-(सं०पुं०) हाथका अग्रभाग, हाथी के सूंड़ का सिरा ।
कराघात-(सं०पुं०) हाथकी मार, घूंसा, थप्पड़ ।
कराङ्गुलि-(सं०स्त्री०) हाथकी अंगुली ।
कराची-(हिं०पुं०) सिन्ध देश का एक जिला और नगर ।
कराट-(सं०नपुं०) थप्पड़, तमाचा ।
कराड़-(हिं०पुं०) माल मोल लेने वाला महाजन ।
करात-(हिं०पुं०) चार जव की तौल जो सोना चांदी तथा दवा तौलने में प्रयोग होती है (अं०) कॅरिट् ।
कराना-(हिं० क्रि०) कार्य में लगना, करवाना ।
करायल-(हिं०पुं०) मूंग या उड़द की झोल, कलौंजी ।
करार-(हिं० पुं०) नदी का ऊंचा तट, ठौर, स्थान प्रतिज्ञा ।
करारना-(हिं०क्रि०) कर्कश शब्द करना ।
करारा-(हिं०पुं०) नदीका ऊंचा तट जो

जल से काटे जाने पर बनता है, टीला, ढूह, कौवा, एक प्रकार की मिठाई; (वि०) कठोर, कड़ा, तीक्ष्ण, स्थिर चित्त, कड़ा सेंका हुआ, मुरमुरा, उत्तम, चोखा, खरा, बड़ा, भारी, बलवान्, अधिक गहरा जल।

करारापन-(हिं०पु०) अधिक गदराई, कड़ापन।

करारी-(हिं०वि०) प्रतिज्ञा करने वाला, वचनबद्ध।

करार्पित-(सं०वि०) हाथमें दिया हुआ।

कराल-(सं०वि०) बड़े दाँत वाला, ऊंचा, भयंकर, डरावना, प्रशस्त, खुला हुआ (पुं०) कस्तूरी मृग, गन्धर्व विशेष, काला बबूल।

करालवदना-(सं०स्त्री०) काली भयंकर मुख वाली स्त्री।

करालित-(सं०वि०) भयंकर किया हुआ

कराली-(सं० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक, (वि०) भयंकरी, डरावनी।

कराव, करावा-(हिं०पु०) विवाहादि कर्म, सगाई।

कराह-(सं० पु०) वेदना सूचक शब्द, पीड़ा का शब्द, कड़ाह, लोहे की बड़ी कड़ाही। **कराहना**-(हिं०क्रि०) पीड़ित शब्द से बोलना, काँखना, हाय हाय करना।

कराहा-(हिं०पुं०) बड़ी कड़ाही।

कराही-(हिं०स्त्री०) छोटा कड़ाहा, कड़ाही

करिंगा-(हिं०पुं०) ठिठोलिया।

करि-(हिं०पु०) करी, हाथी; **करिकर**-हाथीका सूंड; **करिकुम्भ**-गजकुम्भ, हाथी के मस्तक का भाग।

करिखई-(हिं०स्त्री०) कालिख, कलङ्क,

करिखा-(हिं० पु०) कालिख, कलङ्क,

करिगह-(हिं०पुं०) देखो करगह।

करिणी-(सं०स्त्री०) हस्तिनी, हथिनी।

करिन्द-(हिं०पु०) देखो करीन्द्र।

करिपोत(सं०पुं०) हाथीका बच्चा, हाथी बांधने का खूंटा।

करिल-(हिं०पु०) कोंपल, कोमल पत्ता (वि०) काला।

करिवर-(सं०पु०)श्रेष्ठ हस्ती, उत्तम हाथी

करिबू-(हिं०पुं०)एक प्रकारका बारहसिंघा

करिभ-(सं०नपुं०) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष

करिया-(हिं०पुं०) पतवार, कर्णधार, मल्लाह (वि०) काला।

करिवारी-(हिं०वि०) कृष्णवर्ण, काला,

करियाई-(हिं०स्त्री०) नीलता, कालापन,

करियाद-(सं०नपुं०) दरयायी घोड़ा।

करियारी-(हिं०स्त्री०) कलिकारी, एक विष, लगाम।

करिवदन-(सं०पुं०) गणेशजी।

करिष्णु-(सं०पुं०) करनेवाला, करणशील

करिष्यमाण-(सं०वि०) करने के लिये उद्यत। भाविकार्य

करिहाँव-(हिं०पुं०) कटि, कमर, कोल्हू का मध्य भाग।

करी-(सं०पुं०) हाथी, आठ की संख्या, (हिं०स्त्री०), कड़ी, धरन, कली, पंद्रह मात्रा का एक छन्द।

करीना-(हिं०पुं०) छेनी, टांकी पत्थर गढने की, मसाला, केराना।

करीन्द्र-(सं०पु०) इन्द्र का हाथी ऐरावत

करीर-(सं०पु०) बांसका अंखुवा या कल्ला, घड़ा, करील का वृक्ष।

करील-(हिं०पुं०) एक कंटीली झाड़ी।

करीश-(सं०पु०)गजराज, हाथियोंकाराजा

करीष-(सं०पुं०) सूखा गोबर, जंगल में सूखा हुआ गोबर, कण्डा, अरना।

करुआ-(हिं०वि०) देखो कड़वा। **करुआई**-(हिं०स्त्री०) कड़ुआपन।

करुआना, करुवाना-(हिं०क्रि०) दुखना, बूरा लगना।

करुखी-(हिं०स्त्री०) कनखी,

करुण-(सं०पुं०) एक प्रकार के नीबू का वृक्ष, शृङ्गारादि आठ रसके अन्तर्गत तीसरा रस, बन्धु बान्धवों के वियोग से उत्पन्न रस, दया, दूसरे के दुःख को दूर करने की इच्छा, परमेश्वर, एक बुद्ध का नाम, चमेली, एक असुर का नाम। **करुणा**-(सं०स्त्री०) दूसरे के दुःख हटाने की इच्छा, दया, तरस, कृपा, शोक, गंगाजी का एक नाम। **करुणाकर**-(सं०वि०) अत्यन्त दयालु, **करुणादृष्टि**-(सं०स्त्री०) दया की दृष्टि, **करुणानिधान, करुणानिधि**-(सं०वि०) बड़ा दयालु। **करुणामय**-(सं०वि०) अत्यन्त दयालु। **करुणायुक्त**-(सं०वि०) देखो करुणामय।

करुना-(हिं०स्त्री०) देखो करुणा।

करुर करुवा-(हिं०वि०) कटु, कड़ुवा।

करुवाई-(हिं०स्त्री०) कटुता, कड़ुवापन, तीखापन।

करुवार--(हिं०पु०) नाव का डांड़ा,

करू-(हिं०वि०) कटु, कड़ुवा,

करूला-(हिं०पुं०) हाथ का एक प्रकार का कङ्कण।

करूष-(सं०पुं०) एक प्राचीन देश जो रामायण के अनुसार गंगा तटपर एक राक्षस ने बसाया था, ताड़का राक्षसी यहीं रहती थी। बक्सर प्रांत।

करूषक-(सं०पुं०) वैवस्वत मुनि के पुत्र का नाम, फालसा।

करूला-(हिं०पु०)हाथमें पहिरने का कड़ा

करेजा-(हिं०पुं०) यकृत्, कलेजा,

करेजी-(हिं०स्त्री०)पशुके कलेजे का मांस

करेट-(सं०पु०) नख,

करेणू-(सं०पुं०) गज, हाथी, कनेर का वृक्ष, **करेणुका**-(सं०स्त्री०) हस्तिनी, हथिनी।

करेब-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पतला रेशमी वस्त्र जिसको अंग्रेजी में 'क्रेप्' कहते हैं।

करेमू-(हिं०पुं०) जलमें उत्पन्न होने वाली एक घास जो शाक बना कर खाई जाती है करमी का शाक।

करेर-(हिं०वि०) कठोर, कड़ा।

करेरुवा-(हिं०पु०) एक प्रकार की काँटेदार लता।

करेल-(हिं०पु०) एक प्रकार का बड़ा मुद्गर।

करेलनी-(हिं०स्त्री०) घास बटोरने की फरुही।

करेला-(हिं०पु०) कारवेल्ल, एक प्रकार की लता जिसमें हरे कड़वे फल लगते हैं जो तरकारी बनाने के काम में आते हैं, हमेल की लंबी गुरिया, एक प्रकार की अग्नि क्रीड़ा।

करेली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा करेला।

करैत-(हिं०पु०) एक काले जात का बहुत विषैला सर्प।

करैल-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की काली मिट्टी जो गरमी के दिनों में तालाब का पानी सूखने पर निकलती है, यह बड़ी कड़ी तथा लसदार होती है

करैला-(हिं०पु०) देखो करेला।

करैली-(मिट्टी) देखो करैल।

करोट-(सं०पुं०) मस्तक की हड्डी,

करोंट-(हिं०पुं०) करवट।

करोटी-(हिं०पु०) देखो करवट।

करोड़-(हिं०वि०) एक कोटि, सौ लाख की संख्या। **करोड़पती**-(हिं०वि०) जिसके पास करोड़ रुपया हो, बहुत धनी।

करोड़ी-(हिं०पु०) कोषाध्यक्ष, रोकड़िया,

करोत-(हिं०पु०) आरा, करपत्र।

करोदक-(सं०नपु०) हाथ में रक्खा हुआ जल।

करोदना-(हिं०क्रि०) खुरुचना, करोना।

करोध-(हिं०पुं०) देखो क्रोध।

करोना-(हिं०क्रि०)किसी चोखी चीज़ से रगड़ना, खुरुचना।

करोनी-(हिं०स्त्री०) खुरचन, करोचन, खुरचने का यन्त्र।

करोर-(हिं०पुं०) देखो करोड़।

करोला-(हिं०पुं०) करवा, गड़ुवा, रीछ, भालू।

करौंछा-(हिं०वि०) कुछ श्यामवर्ण का, साँवला।

करौंजी-(हिं०स्त्री०) कलौंजी, स्याहजीरा

करौंट-(हिं०पु०) देखो करवट।

करौंदा-(हिं०पु०) करमर्दवृक्ष, एक कंकटीला पौधा जिसके छोटे खट्टे फल आचार, चटनी इ० में उपयोग होते हैं, कान के नीचे निकलने वाली गिलटी। **करौंदिया**-(हिं०वि०) करौंदे के रंग का,

करौंत-(हिं०पुं०) करपत्र, आँरा, (स्त्री०) उढरी स्त्री।

करौता-(हिं०पु०) कराबा, बड़ी शीशी, (स्त्री०) उढरी स्त्री।

करौती-(हिं०स्त्री०) करपत्र, आरी, छोटी शीशी, काँच गलाने की भट्टी।

करौना-(हिं०पुं०) कसेरे की छोटी छेनी

करौला-(हिं०पुं०) आखेट हांकने वाला

करौली-(हिं०स्त्री०) नोकदार भोंकने की छुरी।

कर्क-(सं०पु०) श्वेत घोड़ा, केकड़ा, अग्नि, दर्पण, तिल, काँटा, काकड़ासिंगी, छड़ा, बेल का वृक्ष, गन्धक, मर्कट राशि (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।

कर्कट-(सं०पुं०) करकटिया का वृक्ष, केकड़ा, कमल की जड़, तुम्बी, लौकी, बारह राशियों में से चौथी राशि, कलश, घड़ा, काँटा, सेम्हर का वृक्ष, बड़ी सँड़सी, एक प्रकार का नाच।

कर्कटक-(सं०पु०) केंकड़ा, कर्कट राशि, हड्डी टूटने का रोग, एक प्रकार का विष, जंगली आँवला। **कर्कटकी**-(सं०स्त्री०) काकड़ासिंघी, मादा केकड़ा। **कर्कट क्रान्ति**-(सं०स्त्री०) भूमध्य रेखा से साढ़े तेरह अंश पर स्थित अक्षरेखा। **कर्कटा**-(सं०स्त्री०) काकड़ासिंघी, खेखसा की लता।

कर्कटी-(सं०स्त्री०) ककड़ी, सेम्हर का वृक्ष, फूट, गगरी, तरोई, एक प्रकार का वृक्ष।

कर्कन्धु-(सं०पु०) झरबेर का वृक्ष, इसका फल, बेर।

कर्कर-(सं०पुं०) कंकड़, हथौड़ा, एक प्रकार सांप, दर्पण, हड्डी, कुरुन्द पत्थर जिसकी सान बनती है, (वि०) दृढ़, कड़ा, पुष्ट।

कर्कश-(सं०पुं०) कमीले का वृक्ष, परवर, एक प्रकार की ईख, खड्ग, तलवार, दालचीनी (वि०) निर्दय, कठोर, कर्कश कड़ा, काँटेदार, क्रूर, दुर्बोध, कृपण।

कर्कशता-(सं०स्त्री०) देखो कर्कशत्व।

कर्कशत्व-(सं०नपुं०) कठोरता, कड़ापन, **कर्कशा**-(सं०स्त्री०) झगड़ालू स्त्री, (वि०) लड़ाकी।

कर्कारुक-(सं०पुं०) कूष्माण्ड, कुम्हड़ा।

कर्की-(सं०स्त्री०) ककड़ी।

कर्कोट-(सं०पु०) नागराज, सर्पोंका राजा

कर्कोटक-(सं०पुं०) बेल का वृक्ष, नागराज, ईख, ककोड़ा, खेखसा।

कर्चूरिका-(सं०स्त्री०) कचौड़ी।

कर्चूर-(सं०पु०) सोना, कचूर, आमाहल्दी, जंगली अदरक।

कर्जा-(हिं०पुं०) ऋण, उधार।

कर्जी-(हिं०वि०) जिसने ऋण लिया हो

कर्ण-(सं०पु०) श्रवणेन्द्रिय, कान, नाव का डांड, कुन्ती के सबसे बड़े पुत्र का नाम जो बड़ा दानी था, समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा, **कर्ण का पहरा**-प्रातःकाल जो दान पुण्य करने का समय है।

कर्णक-(सं०पु०) वृक्ष को फोड़ कर निकलने वाला पत्ता, सन्निपात रोग का एक भेद, कर्णधार, मांझी।

कर्णकटु-(सं०वि०) अप्रिय, कान मे कर्कश लगने वाला।

कर्णकिट्ट-(सं०नपुं०) कान का खूंट।

कर्ण कुहर-(सं०नपुं०) कान का छेद

कर्णगोचर-(सं०वि०) कान से सुन पड़ने वाला। **कर्णग्राह**-(सं०पुं०)

कर्णधार, मल्लाह, मांझी। **कर्णजाप**-(स०पु०) गुप्तवार्ता, कानाफुसकी।
कर्णजीरक-(सं०नपुं०) छोटा जीरा।
कर्णधार-(स०पु०) नाविक, मल्लाह, दुःखादि निवारक, पतवार। **कर्णधारता**-(सं०स्त्री०) नाविक का काम, **कर्णनाद**-(स०पु०) कान में सुनाई देने वाला शब्द। **कर्णपरम्परा**-(स०स्त्री०) एक कान से दूसरे कान तक सुनी हुई (पुरानीचाल) **कर्णपाक**-(स०पु०) कान का एक रोग **कर्णपाली**-(सं०स्त्री०) कान की लर, एक प्रकार की गीत। **कर्णपिशाची**-(सं०स्त्री०) एक देवी जिसके सिद्ध करने पर साधक जो चाहे सो सुन सकता है।
कर्णपुट-(स०नपु०) कान का छेद।
कर्णपुरी-(स०स्त्री०) चम्पा नगरी, आधुनिक भागलपूर। **कर्णपूर**-(स०पु०) कान का आभूषण, करनफूल। **कर्णमूल**-(स०नपु०) कान का एक रोग जिसमें इसकी जड़ मे सूजन आ जाती है **कर्णलता, कर्णलतिका**-(सं०स्त्री०) कान की लर।
कर्णवेध-(सं०पुं०) बालकों के कान छेदने का संस्कार, कनछेदन विधि।
कर्णवेधनी-(स०स्त्री०) कान छेदने की सूई **कर्णशष्कुली**-(स०स्त्री०) कान का परदा। **कर्णाट**-(स०पु०) भारतवर्ष के दक्षिण का एक देश, एक राग विशेष जो रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया जाता है। **कर्णाटक**-(स०पु०) कर्णाटक देश की भाषा **कर्णाटी**-(स०स्त्री०) कर्णाटक देश की स्त्री, एक प्रकार की रागिणी।
कर्णि-(स०पुं०) एक प्रकार की तीर।
कर्णिका-(सं०स्त्री०)कान का एक आभूषण, हाथ की बीच की अंगुली, हाथी के सूंड की नोक, कमल का छत्ता, लेखनी, सेवती, श्वेत गुलाब, डठल, तीव्र वेदना, एक अप्सरा का नाम।
कर्णिकार-(स०पु०)कनकचम्पा का वृक्ष
कर्णी-(स०पुं०) एक प्रकार की तीर, कनपटी (वि०) ग्रन्थियुक्त।
कर्तन-(स०नपु०) छेदन, काट छांट, सूत कातने का काम। **कर्तनी**-(सं०स्त्री०) कतरनी, कैंची।
कर्तरी-(स०स्त्री०) कतरनी,कैंची, कटारी, छोटा कृपाण।
कर्तब-(हिं०) देखो करतब, कर्तव्य।
कर्तरी-(स०स्त्री०) कैंची, कटारी, एक प्रकार का बाजा।
कर्तव्य-(सं०वि०) करने योग्य, किये जाने योग्य; (नपुं०) करने योग्य कार्य, धर्म, उचित काम। **कर्तव्यता**-(सं०स्त्री०)विधेयता,औचित्य, उपयुक्त उपाय। **कर्तव्य विमूढ़**-(सं०वि०)जिसको अपना कर्तव्य न सूझे। **कर्तव्याकर्तव्य**-(स०नपुं०) भला बुरा काम।
कर्ता-(स०पु०) ब्रह्मा, काम करने वाला, बनाने वाला, ईश्वर, व्याकरण में वह कारक जो क्रिया को करता है।
कर्तार-(हिं०पु०) कर्ता, करने वाला, विधाता, परमेश्वर, संसार को बनानेवाला।
कर्तित-(स०वि०) काटा छांटा हुआ, कतरा हुआ।
कर्तृक-(स०वि०) करनेवाला,प्रतिनिधि
कर्तृका-(सं०स्त्री०)छोटी तलवार,कटारी
कर्तृत्व-(सं०नपु०) कर्ता का धर्म।
कर्तृवाचक-(स०वि०) व्याकरण में कर्ता का बोध करने वाला। **कर्तृवाच्य**-(स०पु०) क्रिया पद द्वारा कर्ता का सूचित करने वाला वाक्य; **कर्तृवाच्य क्रिया**-वह क्रिया जिससे कर्ता का बोध स्पष्ट रूप से विदित हो।
कर्त्री-(सं०स्त्री०) कतरनी, कैंची (वि०) काम करने वाली।
कर्द-(स०पु०) कर्दम, कीचड़, चहला।
कर्दन-(सं०नपु०) पेट की गुड़गुड़ाहट का शब्द।
कर्दक-(स०पुं०) पंक, कीचड़, चहला, कींच, पाप, छाया, परछाहीं,स्वयम्भुव मन्वन्तर के विशेष प्रजापति, मिट्टी, मल, कूड़ा, मांस, नेत्र का एक रोग।
कर्दमित-(स०वि०) कीचड़ किया हुआ।
कर्नेता-(हिं०पुं०) एक विशेष रंग का घोड़ा।
कर्पट-(सं०पु०) पुराना कपड़ा, गूदड़
कर्पटी-(स०वि०) फटा पुराना वस्त्र पहिरने वाला भिक्षुक।
कर्पर-(स०पु०) कपाल, खोपडी, कटाह, कड़ाह। कछुवे की खोपड़ी, खप्पड़, खपड़ा, गूलर का वृक्ष, कपोल, गाल, चीनी, शर्करा।
कर्पराशी-(सं०पु०) बटुक भैरव।
कर्परी-(सं०स्त्री०) दारुहल्दी के काढ़े की तूतिया, खपड़िया।
कर्पास-(स०पु०) कपास का पौधा; **कर्पासफल**-बिनौला।
कर्पूर-(स० पु०) कपूर।
कर्पूरक-(सं०पुं०) कच्ची हल्दी, कचूर
कर्बर-(सं०पुं०) पहुडा, सोना, धतूरे वृक्ष, व्याघ्र।
कर्बुर-(स०पु०) स्वर्ग, धतूरे का पौधा, कचूर, आमाहल्दी, जल, राक्षस, पाप, सुवर्ण, हरताल, जड़हन धान, (वि०) अनेक वर्ण का, चितकबरा।
कर्बुरित-(स०वि०)चित्रित,चितकबरा
कर्म-(स०पु०) कार्य, क्रिया, जो किया जावे, काम, प्रारब्ध, भाग्य, मृतक संस्कार, व्याकरण मे वह शब्द जिस पर कर्ताकी क्रिया का फल ठहरता है, वैशेषिक के छ पदार्थो में से एक, मीमांसा के अनुसार यज्ञ आदि कार्य कर्तव्य जैसे ब्राह्मणों के छ कर्म शास्त्रों मे कहे हैं-यथा, अध्ययन, यजन, दान देना, अध्यापन याजन और दान लेना। **कर्मकर**-(स०वि०) वेतन पर काम करने वाला (पुं०) यम। **कर्मकरी** (सं०स्त्री०) दासी बांदी, एक लता का नाम। **कर्मकर्ता** (सं०पु०) कार्य कारक, काम करने वाला, व्याकरण में वह वाच्य जिस में कर्तृत्व की विवक्षा से दूसरे कारक कर्ता होते हैं। **कर्मकाण्ड**-(स०नपु०) धर्म सबधी कर्म यथा यज्ञ। **कर्मकाण्डी**-(स०वि०) विधिवत यज्ञादि कर्म कराने वाला ब्राह्मण। **कर्मकार**-(स०वि०) बिना वेतन के काम करने वाला,काम करने वाला (पु०) लोहार **कर्मकुशल**-(स०वि०) काम करने में चतुर। **कर्मक्षेत्र**-(स०नपु०) कर्म करने की भूमि, भारतवर्ष। **कर्मचारी**-(स०वि०) कार्य करनेवाला, वेतन पर काम करनेवाला।
कर्मठ-(स०वि०) काम करने में निपुण।
कर्मण्य-(स०वि०) देखो कर्मठ; उपयोगी, प्रयत्न करने वाला।
कर्मण्यता-(स०स्त्री०) तत्परता।
कर्मदक्ष-(स०वि०)काम करने में निपुण
कर्मधारय-(सं०पुं०)संस्कृत व्याकरणमें वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण होता है
कर्मनाशा-(स०स्त्री०) विहार प्रान्त की एक प्रसिद्ध नदी।
कर्मनिरत, कर्मनिष्ठ-(स०वि०)योगादि कर्म में आसक्त।
कर्मपंचम-(सं०पुं०)एक रागिणी का नाम।
कर्मपाक-कर्मफल-(सं०पु०) धर्म या अधर्म करने से सुख दुःख मिलने का परिणाम।
कर्मबन्धन-(सं०नपु०)कर्म से जन्मग्रहण
कर्मभू-(सं०स्त्री०) आर्यावर्त।
कर्मभोग-(स०पुं०) कर्म के फल के अनुसार सुख दुःख का भोग करने का फल।
कर्ममास-(सं०पु०) श्रावण का महीना।
कर्ममीमांसा-(सं०स्त्री०) कर्म सम्बन्ध में निश्चय करनेवाला शास्त्र विशेष
कर्मयुग-((सं०पु०) कलियुग।
कर्मयोग-(सं०पुं०) चित्त शुद्ध करने का वैदिक कर्म जिसके बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। **कर्मयोगी**-(सं०पु०) ईश्वर प्राप्ति की अभिलाषा से यज्ञ, ध्यान आदि वैदिक कर्म करनेवाला
कर्मर, कर्मरक-(स०पु०) कमरख का फल
कर्मरंग-(सं०पु०) कमरख का वृक्ष।
कर्मरेखा-(सं०स्त्री०) कर्म की रेखा, भाग्य का लिखन।
कर्मवश-(हिं०क्रि०वि०) कर्म के आधीन **कर्मवशिता**-(सं०स्त्री०) काम में लगे रहने की अवस्था।
कर्मवाच्य क्रिया-(सं०स्त्री०) जिस क्रिया में कर्म प्रधान होकर मुख्य रूप से कर्ताकी तरह प्रयोग किया गया हो। **कर्मवाद**-(स०पुं०) मीमांसा शास्त्र।
कर्मवादी-(सं०पुं०) मीमांसक, कर्म को सर्व प्रधान माननेवाला।
कर्मवान-(स०वि०) काम करने वाला, कर्मनिष्ठ।
कर्म विपर्यय-(सं०पु०) कर्म का व्यतिक्रम, काम का उलटफेर।
कर्मविपाक-(स०पुं०) पूर्व जन्म में किये हुए शुभाशुभ कर्म का भला बुरा फल
कर्मशाल।-(स०स्त्री०) शिल्पादि कार्य का गृह।
कर्मशील-(सं०वि०)परिणाम की ओर न विचार करके स्वभाव ही से काम करने वाला, उद्योगी, यत्न करनेवाला, परिश्रमी।
कर्मशूर-(सं०वि०) कार्यदक्ष, चतुर, तत्परता से काम करनेवाला।
कर्मष-(सं०नपु०) कल्मष, पाप।
कर्मसन्यास-(सं०पु०) कर्म त्याग काम छोड़कर बैठना, कर्मफल का त्याग।
कर्मसमाधि-(स०पु०)कर्म का शेष,मुक्ति
कर्मसम्भव-(स०वि०) कर्म से उत्पन्न (पुं०) कर्म की उत्पत्ति।
कर्मसाक्षी-(सं०पुं०) कर्म को प्रत्यक्ष करनेवाला, सूर्य, यम, काल, पृथ्वी, जल अग्नि वायु, आकाश (वि०) जिसके सामने कोई कार्य हुआ हो।
कर्मसाधक-(सं०वि०) काम बनानेवाला **कर्मसाधन**-(सं०नपुं०)कार्य की सिद्धि।
कर्मसिद्धि-(सं०स्त्री०) देखो कर्मसाधन।
कर्मस्थान-(सं०नपुं०) कर्मक्षेत्र, ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली में अष्टम स्थान।
कर्महीन-(स०वि०) शुभ कर्म न करने वाला, मन्दभाग्य, अभागा।
कर्मार-(सं०पुं०) कर्मकार, लोहार।
कर्मारम्भ-(सं०पुं०)कार्य का आरम्भ।
कर्माशय-(स०पु०) कर्म के धर्माधर्म का गुण।
कार्मिक-(स०वि०)कर्मनिष्ठ,कामकाजी।
कर्मिष्ठ-(सं०वि०) काम में लगा रहने वाला, काम करने में चतुर।
कर्मनिष्ठता-(स०स्त्री०) काम में लगे रहने की अवस्था।
कर्मी-(स०पु०) कर्मनिष्ठ, कामकाजी, फल की आकांक्षा से यज्ञादि कार्य करने वाला।
कर्मीर-(सं०वि०) चित्रित, चितकबरा।
कर्मेन्द्रिय-(सं०नपु०) वाक्यादि कर्म करने वाली पांच इन्द्रियां यथा हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ।
कर्मोद्योग-(स०पु०) उद्योग का कार्य, प्रयत्न।
कर्रा-(हिं०पु०) जुलाहे का सूत फैलाने का काम, (वि०) कठोर, कड़ा, **कर्राना**-(हिं०क्रि०) कड़ापड़ना, कठोर होना।
कर्वर-(सं०नपुं०) व्याघ्र, राक्षस,
कर्शित-(सं०वि०) दुर्बल किया हुआ, कृशीकृत।
कलँगी-(हिं०स्त्री०) मुकुट में लगाने का पर।
कर्ष-(स०पु०) सोलह माशे का परिमाण, अस्सी रत्ती की तौल, सुवर्ण, सोना, आकर्षण, जोताई, हलसे

बनी हुई रेखा, खसोटना, खेती का काम । **कर्षक**-(सं०वि०) खींचने वाला, हल जोतने वाला, (पु०) अयस्कान्तमणि ।

कर्षन-(सं०) खिंचाव, आकर्षण ।

कर्षना-(हिं०क्रि०) खींचना **कर्षणीय**-(स०वि०) खींचे जाने योग्य ।

कर्षमर्ष-(हिं०पु०) संघर्ष ।

कर्षिणी-(सं०स्त्री०) खिरनी का पेड़,

कर्षित-(सं०वि०) आकर्षित, खींचा हुआ, जोता हुआ ।

कर्षी-(सं०वि०)मन को प्रलोभन करने वाला, मनोहर, सुन्दर ।

कर्हिचित्-(सं०अव्य०)किसी अवसर में, कभी न कभी ।

कल-(सं०पुं०) मीठा परन्तु समझमें न आने वाला शब्द, शुक्र, वीर्य, शाल वृक्ष, चार मात्रा का अवकाश, (वि०) कच्चा, दुर्बल मधुर ।

कल-(हिं०स्त्री०) कल्याण, सुख चैन, सन्तोष, आने वाला या बीता हुआ दिन, पार्श्व, ओर, बल, अंग, कला, ढंग, युक्ति, यन्त्र, बन्दूक का घोड़ा, विशेष्य की तरह इसका प्रयोग "काला" अर्थ मे होता है यथा-कलमुहा; (क्रि०वि०) भविष्यमें, आजसे पहिले के दिन, बीता हुआ दिन; **कल ऐंठना**-किसी के मन को अपनी ओर खींच लेना; **कलका**-आधुनिक, थोड़े दिन का, **कलदार रुपया**-टकसालमें बना हुआ सिक्का; **कल से**-आनन्द से, सुखसे ।

कलइया-(हिं०स्त्री०) कलाबाजी, कलैया

कलकण्ठ-(स०पु०) कोकिल, कोयल, हंस, कबूतर, तोता, मीठा शब्द (वि०) मीठा शब्द निकालने वाला ।

कलकना-(हिं०क्रि०) चीत्कार करना, चिल्लाना, दुःख करना ।

कलकफल-(स०नपु०)दाड़िम वृक्ष, अनार का पेड़ ।

कलकल-(सं० पुं०) कोलाहल, पानी के झरने का शब्द, कोलाहल, चकचक, झगड़ा, हल्ला ।

कलकली-(हिं०स्त्री०) क्रोध, रोष ।

कलकान, कलकानि-(हिं०स्त्री०)कोलाहल कष्ट, दुःख ।

कलकि, कलकी-(हिं०) देखो कल्कि ।

कलकुञ्जिका, कलकूजिका-(स० वि०) मधुर स्वर निकालने वाली, विलासिनी ।

कलक्टरी-(हिं०स्त्री०) कलक्टर का पद, कलक्टर सम्बन्धी ।

कलगट-(हिं०पु०)बड़ी कुल्हाडी,कुल्हाड़ा

कलगा-(हिं०पु०) जटाधारी का पौधा ।

कलघोष-(स० पु०) कोकिल, कोयल ।

कलङ्क-(सं०पुं०) चिह्न, धब्बा, दोष, अपवाद, दुर्नाम, लांछन, लोहे की कीट, गोद ; **कलङ्ककर**-चिह्न लगाने वाला, अपमानित करने वाला ।

कलङ्कधर-(स०पु०) चन्द्रमा । **कलङ्कमय**-(स०वि०) चिह्नित, धब्बेदार ।

कलङ्कित-(सं०वि०) चिह्नयुक्त, अपमानित, दोषयुक्त, लांछित । **कलङ्की**-(सं० वि०) चिह्नयुक्त, अपमानित, कलंकित, अपराधी, दोषी,(पुं०) कल्कि अवतार ।

कलङ्गड़ा-(हिं०पु०) तरबूज, एक प्रकार का गाना ।

कलंङ्गा-(हिं०पु०) लोहे की ठठेरों की नकाशी करने की छेनी ।

कलंङ्गी-(हि०स्त्री०) देखो कलँगी ।

कलचिड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मधुर ध्वनि से बोलनेवाली चिड़िया ।

कलचुरि-(सं०) भारतवर्ष का एक प्राचीन राजवंश, कार्तवीर्य राजा ।

कलछा-(हिं०पुं०) बड़ा चम्मच, बडी डंडी की करछुल ।

कलछी-(हिं०स्त्री०) बडी डंडी का चम्मच

कलछुल-(हिं०स्त्री०) खजाका-इसमें बडी डंडी के किनारे पर एक कटोरी होती है ।

कलछुला-(हिं० पु०) बड़ी करछुल ।

कलछुली-(हिं०स्त्री०) छोटी करछुल ।

कलजिभा-(हिं० वि०) काली जीभ वाला, अनिष्ट विषय का बोलने वाला, जिसकी कही हुई अशुभ बात सत्य हो । **कलजीहा**-(हि०वि०) कल-जिह्वा; (पुं०) काली जीभ का हाथी ।

कलझँवाँ-(हिं०वि०) श्याम वर्ण का, सांवला ।

कलट-(स०नपुं०) कुटल, छप्पर; (हिं०पुं०) दुख, संताप ।

कलटोरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कबूतर ।

कलट्टर-(हिं०पु०) देखो कलक्टर ।

कलत्र-(स०नपु०) भार्या, पत्नी, स्त्री; **कलत्रवान्**-सस्त्रीक ।

कलदार-(हिं० वि०) पेंचदार (पुं०) अंग्रेजी टेकसाल का बना हुआ रुपया

कलदुमा-(हिं०वि०) काली पोंछ वाला (पुं०) काली दुम का कबूतर ।

कलधूत-(स०नपु०) चांदी; (वि०) मधुर स्वर से भरा हुआ शब्द ।

कलधौत-(सं० नपुं०) सोना, चांदी, अव्यक्त मधुर ध्वनि, मीठी बोली ।

कलध्वनि-(स०पु०) कपोत, कबूतर, कोयल मोर ।

कलन-(सं०नपु०) चिह्न, दोष, गर्भ वेष्टन, ग्रहण, ग्रास, कवर, ज्ञान, आचरण, संबंध, ग्रहण, गणित की एक क्रिया, गर्भ में शुक्र और रज का मिलकर एक रूप होना, एक महीने का गर्भ ।

कलना-(हिं०स्त्री०) पकड ।

कलनाद-(स०पुं०) कलहंस, मधुर ध्वनि, मीठी बोली ।

कलन्दर-(सं०पुं०) एक वर्णसंकर जाति

कलन्दरी-(हिं० स्त्री०) छोटा खेमा, खूँटीदार छोलदारी ।

कलप-(हिं०पुं०) देखो कल्प ।

कलपना-(हिं० क्रि०) विलाप करना, दुःख करना, कल्पना करना, अटकल लगाना, काट छांट करना ।

कलपना-(हिं०पु०) देखो कल्पना ।

कलपाना-(हिं०क्रि०) तरसाना, दुःखी करना, रुलाना ।

कलफ-(हिं०पु०) चावल या अरारूट का पतला लेप जो वस्त्र को कड़ा करने के लिये इस पर पोता जाता है, माडी, चेहरे का कालापन,झाँई ।

कलफा-(हि०स्त्री०) दारचीनी की छाल ।

कलब-(हिं० पुं०) टेसू के फूल से निकाला हुआ रंग ।

कलबल-(हिं० पु०) उद्योग, उपाय, दावपेंच (स्त्री०) कोलाहल, (वि०) अस्पष्ट शब्द ।

कलबीर-(हिं०पुं०) भांग की तरह का एक पौधा इसकी जड़ रेशम रंगने के काम में आती है ।

कलबूत-(हिं० पु०) कालबुद, सांचा, ढांचा, जूता सीने का फ्रेम, गोलंबर, टोपी बनाने या पगड़ी बांधने का गावदुम गोल ढाचा, कालिब ।

कलभ-(सं० पुं०) हाथी, ऊंट, धतूरे का वृक्ष ।

कलभाषण-(सं० नपुं०) मीठी बोली, बच्चों की बोली ।

कलभी-(स० स्त्री०) चचु, एक प्रकार का पौधा ।

कलमकीली-(हिं० स्त्री०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।

कलमख-(हिं०पुं०) देखो कल्मष ।

कलमना-(हिं० क्रि०) कलम काटना, टुकड़े करना ।

कलमस-(हिं०पुं०) देखो कल्मष ।

कलमलना-(हिं०क्रि०) संकुचित स्थान में अंगको इधर उधर घुमाना, कुलबुलाना ।

कलमलाना-(हिं०क्रि०) कुलबुलाना ।

कलमास-(हिं०पुं०) देखो कल्मष ।

कलमुहां-(हिं०वि०) काले मुंह वाला, कलंकित ।

कलंबुट-(सं०नपुं०) ताजे दूध का घी, नवनीत, मक्खन ।

कलरव-(सं० पुं०) कबूतर, कोयल, मीठी वाणी ।

कलरव-(हिं०पुं०) कूजना, मधुर ध्वनि ।

कलरिन-(हिं०स्त्री०) जोंक लगाने वाली स्त्री ।

कलल-(सं०पुं०नपुं०) गर्भ में लिपटी हुई झिल्ली, जरायु ।

कलवरिया-(हिं० स्त्री०) कलवार की दूकान, मद्यशाला । **कलवार**-(हिं०पु०) वह जाति जो मद्य बनाती और बेंचती है ।

कलविङ्क-(सं०पुं०)चटक पक्षी, गौरैया, चँवर, कलंक, धब्बा, पारावत, कबूतर ।

कलश-(सं०पुं०) घड़ा, गगरा, घरों के शिखर पर का कंगूरा, सिरा, चोटी, आठ सेर की तौल ।

कलशी-(सं०स्त्री०) छोटा घड़ा, गगरी ।

कलस-(स०पुं०) देखो कलश । **कलसा**-(हिं०पुं०) पानी रखने का घड़ा, गगरा, शिवालय इत्यादि का कंगूरा ।

कलसी-(हिं० स्त्री०) छोटी गगरी, छोटा कंगूरा ।

कलसरी-(हिं०स्त्री०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।

कलसिरी-(हिं०स्त्री०) झगड़ालू स्त्री ।

कलह-(सं०पुं०) विवाद, झगड़ा, पथ, तलवार की खाल, धोखा, झिड़की, छल, लड़ाई ।

कलहंस-(सं०पुं०) राजहंस, जलकुक्कुट, श्रेष्ठराजा, परमात्मा, ब्रह्म, ब्राह्मण, एक प्रकार का राग, एक वर्णवृत्त ।

कलहकार, कलहकारक, कलहकारी-(सं०वि०) झगड़ालू, विवाद प्रिय ।

कलहकारी-(सं०स्त्री०) झगड़ालू, स्त्री ।

कलहप्रिय-(स०पुं०) जिसको कलह बहुत अच्छा लगता हो (वि०) झगड़े से प्रसन्न रहने वाला । **कलहप्रिया**-(स०स्त्री०) सारिका, मैना, झगड़ालू ।

कलहान्तरिता-(सं०स्त्री०) वह नायिका जो नायक को क्रुद्ध करनेके बाद में स्वयं पछताती है ।

कलहारी-(सं०वि०) कलह करनेवाली, झगड़ालू, कर्कशा ।

कलहास-(स०पु०) मधुर तथा अस्फुट ध्वनि युक्त हँसी ।

कलहिनी-(सं०स्त्री०) विवाद करनेवाली स्त्री, झगड़ालू स्त्री ।

कलही-(स०वि०) कलहयुक्त, झगड़ालू ।

कला-(स०स्त्री०) सूद, व्याज, शिल्प, कारीगरी, अंश, तीन काष्ठा का समय, नाव, कपट, राशि के तीसवे अंश का साठवां भाग, चन्द्रमा का सोलहवां भाग- इन सोलहों का नाम अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्रीप्रीति, अंगदा, पूर्णा और पूर्णामृता हैं; अग्निमण्डल के दस भागों में से एक-इनके नाम धूम्रा, अर्चि, उष्मा, ज्वलिनी, विस्फ, लिंगिनी, सुश्री, सुरूपा, कपिला और हव्यकव्यवहा हैं, वृत्त का १८०० वां भाग, शिव, लेश, अल्प समय, ऐश्वर्य सामर्थ्य, संख्या, सूर्य का बारहवां भाग इनके नाम-तपिनी, तापिनी, धूम्रा, मरीचि, ज्वालिनी, रुचि, सुषुम्ना, भोगदा, विश्वा, बोधिनी, धारिणी और क्षमा हैं; जिह्वा, छन्द की की मात्रा, स्त्री का रज, छटा, शोभा, प्रभा, शौर्यादि गुण, विभूति, कौतुक, खेल, मात्रायुक्त एक लघु वर्ण, कपट, छल, करतब, युक्ति, ढंग, आयुर्वेद के अनुसार शरीर के सोलह भागों में से एक, इनके नाम-प्राण, श्रद्धा, व्योम, वायु, जल, पृथ्वी, मन, इन्द्रिय,

अन्न, वीर्य, तप, कर्म, लोक और मान है। नटों का व्यायाम, कसरत, यन्त्र, एक वर्णवृत्त का नाम, तन्त्र के अनुसार चौसठ कलाओं के नाम ये हैं-गायन, वाद्य, नृत्य, चित्रकारी, तिलक लगाना, तंडुल कुसुमावली, पुष्पास्तरण, अंगराग, मणि, भूमि कर्म, शयन रचना, उदकवाद्य, पिचकारी छोड़ना (उदकापात), चित्रयोग, माल्यग्रथन, बाल संवारना, चोटी गूथना, नेपथ्य प्रयोग, कर्णपत्रभंग, गंधयुक्ति, अलंकारयोग, ऐन्द्रजाल, स्वरूप बनाना, हस्तलाघव, रसोई बनाना, पान आदि भोजन, सूई का काम, कसीदा, वीणा वाद्य, प्रहेलिका, अन्त्याक्षरी, कूटक योग, पुस्तक वाचन, नाट्यकला, समस्यापूर्ति, बिनाई का काम, तक्षकर्म (मरम्मत करना), बढ़ईगीरी, राजगीर का काम, धातुपरीक्षा, धातुनाद, मणिराग ज्ञान, वृक्षायुर्वेद, सजीवद्यूत, चिड़ीबाजी, अभ्यंग, संक्षेप में वान्त, सांकेतिक अर्थ समझना, देशभाषा विज्ञान, पुष्पशकटिका, शुभाशुभ ज्ञान, यंत्रमंत्रिका, धारण मत्रिका, मानसी संपाद्य, काव्य क्रिया, अभिधानकोश, छन्दज्ञान, क्रियाकल्प, ठगी, वस्त्रगोपन, द्यूतक्रीड़ा, चौपड़ पासे का क्रीडन, नम्रता मल्लयुद्ध और व्यायाम हैं।

कलाई-(हिं०स्त्री०) हथेली का ऊपरी जोड़, मणिबन्ध, गट्टा, एक प्रकार का व्यायाम, पूला, सूत की लच्छी, हाथी के कण्ठ में बांधने का कलाबा, करछा, अलान, उड़द।

कलाकार-(हिं०पुं०) चन्द्रमा।

कलाकुल-(स०नपुं०) विष।

कलाकेलि-(स०पु०) कन्दर्प, कामदेव।

कलाकौशल-(सं० नपु०) कला की चातुरी, शिल्प,

कलात्मक-(हिं०वि०) कलापूर्ण।

कलाजंग-(हिं०पु०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

कलादक-(स०पुं०) स्वर्णकार, सोनार।

कलादा-(हिं०पुं०) हाथी के मस्तक पर महावत के बैठने का स्थान।

कलाधर-(स०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा, शिव, दण्डक वृत्त का एक भेद; (वि०) कलाओं का ज्ञाता।

कलानाथ, कलानिधि-(सं०पुं०) चन्द्रमा, एक गन्धर्व का नाम।

कलाप-(सं०पुं०) समूह, ढेर, मोर की पोंछ, मेखला, चन्द्रहार अलंकार, तरकस, चन्द्रमा, शिव, मुट्ठा, कमरबंद, करधनी, व्यापार का तन्त्र, व्याकरण, गौ, व्यापार, बाण।

कलापक-(स०पुं०) हाथी का गेलावा, या रस्सा समूह, झुण्ड, चार श्लोकों का समूह।

कलापट्टी-(हिं०स्त्री०) नाव की पेंदी के छेद में सन् वगैरह भरना।

कलापिनी-(सं०स्त्री०) रात्रि, मयूरी, मोरनी, नागरमोथा।

कलापी-(स०पुं०) पीपल का वृक्ष, मोर, कोयल, मोर के पर फैलाकर नाचने का समय, तरकस बाँधने वाला, समूह में रहनेवाला।

कलापूर-(स०पुं०) एक प्रकार का बाजा।

कलाबत्तू-(हिं०पु०) रेशम पर लपेटा हुआ सोने चांदी का तार जो धागे के समान पतला होता है, इसके बेल बूटे साड़ियों पर बनाये जाते हैं।

कलाबाज-(हिं०वि०) नट क्रिया करनेवाला। **कलाबाजी**-(हि०स्त्री०) उछलने कूदने की विद्या।

कलामृत-(स०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा।

कलामत-(हिं०पुं०) गवैया; **कलामुख**-(हिं०पु०) चन्द्रमा।

कलामोचा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कबंगाल का धान।

कलार-(हिं०पुं०) कलवार।

कलाल-(हिं०पु०) मद्य बनाने वाला,

कलालाप-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा।

कलावती-(सं०स्त्री०) एक परी का नाम, गंगा, (वि०) शोभा युक्त।

कलावन्त-(हि०) देखो कलावान्।

कलावा-(हिं०पुं०) टेकुवे मे लपेटा हुआ सूत का लच्छा, विवाहादि शुभ अवसर पर पीला रंगा हुआ सूत का डोरा, हाथी की गरदन।

कलावान्-(सं०पुं०) नट, चन्द्रमा (वि०) कला जाननेवाला।

कलासी-(हि०स्त्री०) पत्थर या लकड़ी के जोड़ मे की रेखा।

कलि-(स०पु०) बहेडे का वृक्ष, शूरवीर, विवाद, लडाई झगडा, चौथा युग जिसमें अनीति, पाप इत्यादि की अधिकता रहती है, क्लेश, दुःख, युद्ध, लडाई, छन्द मे रगण का एक भेद।

कलिकान-(हिं०वि०) व्यग्र।

कलिका-(सं०स्त्री०) बिना खिला हुआ फूल, कली, गुंचा, घुमची, बीन या सितार की जड़ का भाग, एक प्रकार का प्राचीन काल का बाजा, छन्द विशेष।

कलिकाल-(सं०पुं०) कलियुग।

कलिंग-(स०पु०) इण्द्र जव, भूरे रंग का एक पक्षी, कुटज वृक्ष, सिरिस का पेड़, कुरैया, अश्वत्थ वृक्ष, पीपल का पेड़ भारत वर्ष का एक जनपद उडीसा।

कलिंगक-(सं०पुं०) इन्द्रजव, कुटकी का पेड़, तरबूज, पाकर का वृक्ष, पपीहा, बहेडे का वृक्ष।

कलिंगड़ा-(हिं० पु०) एक राग जो रात के चौथे पहर में गाया जाता है।

कलित-(सं०वि०) विदित, प्राप्त, गिना हुआ, अलग किया हुआ, अर्जित, आश्रित, समझा हुआ, कहा, हुआ बधा हुआ गृहीत, पकड़ा हुआ, सुन्दर, सजाया हुआ।

कलिन्द-(स०पु०) सूर्य, बहेडे का पेड़, एक पर्वत जिसमें से यमुना नदी निकली है। **कलिन्दक**-(स०पु०) कुम्हड़ा, तरबूज। **कलिन्द कन्या, कलिन्दजा, कलिन्द नन्दिनी**-(स०स्त्री०) यमुना। **कलिन्दा**-(स०पु०) तरबूज।

कलिमल-(स०नपु०) पाप,।

कलियाना-(हि०क्रि०) कली निकलना, अंकुरित होना, पक्षियों के नये पर निकलना।

कलियारी-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसकी जड़ विषैली होती है।

कलियुग-(स०पु०) चौथायुग, वर्तमानयुग। **कलियुगाद्या**-(स०स्त्री०) कलियुग की पहिली तिथि, माघी पूर्णिमा जिस दिन कलियुग का आरम्भ हुआ था। **कलियुगी**-(स०वि०) कलियुग मे उत्पन्न होने वाला, पापी, दुराचारी।

कलिल-(स०वि०) मिश्रित, मिला हुआ, घना, भरा हुआ।

कलिवर्ज्य-(स०वि०) कलियुग में न करने योग्य।

कलिहारी-(हिं०स्त्री०) देखो कलियारी

कलीं-(हि०स्त्री०) बिना खिला हुआ फूल, कलिका, मुँह बँधा हुआ फूल, पक्षी का नया पर, हुक्के के नीचे का भाग, अंगरखे कुरते इत्यादि में लगाने का तिकोना कटा हुआ कपड़ा, वैष्णवों का एक तिलक, अक्षतयोनि कन्या, पत्थर या सीप का फूंका हुआ छोटा टुकड़ा; **दिलकी कली फूटना (खिलना)** अति प्रसन्न होना।

कलींदा-(हिं०पु०) तरबूज।

कलीसिया-(हिं०स्त्री०) इसाइयों या यहूदियों की धार्मिक मण्डली।

कलुख-(हि०) देखो कलुष।

कलुखाई-(हिं०स्त्री०) देखो कलुषता।

कलुखी-(हिं०) देखो कलुषी।

कलुवाबीर-(हिं० पुं०) जादू टोने के एक प्रधान देवता।

कलुष-(स० नपु०) मलिनता, मैलापन, पाप, क्रोध, (वि०) मलिन, निन्दित, कुत्सित, दुःखिता, पापी, क्षुब्ध, घबड़ाया हुआ, असमर्थ।

कलुषता, कलुषाई-(सं०स्त्री०) मलिनता, अँधेरा, घबड़ाहट। **कलुषित**-(स०वि०) मलिन, मैला, दूषित, पापयुक्त, असमर्थ, दुखित, क्षुब्ध, घबड़ाया हुआ, कषायित, कसैला। **कलुषी**-(स० वि०) मलिन, पापी, (स्त्री०) पापिनी, मैली।

कलूटा-(हिं०वि०) बहुत काले रंगका।

कलूना-(हिं०पुं०) एक प्रकारका मोटा धान

कलूली-(हिं०पुं०) कुलनी।

कलेउ-(हिं०पुं०) कलेवा, विवाह के समय वर का भोजन।

कलेजई-(हिं० पुं०) एक प्रकार का बैंगनी रंग।

कलेजा-(हिं०पु०) छाती के भीतर का भाग, वक्षःस्थल, छाती; **कलेजा उचटना**-वमन करते करते चित्त घबड़ना; **कलेजा काँपना**-भयभीत होना; **कलेजा जलना**-अत्यन्त कष्ट देना; **कलेजा टूक टूक होना**-हृदयविदीर्ण होना। **कलेजा ठंढा करना**-सन्तुष्ट करना; **कलेजा निकालकर रखना**-अपनी अत्यन्त प्रिय वस्तु को देना; **कलेजा पकना**-अति व्यग्र होना; **पत्थर का कलेजा**-कठोर हृदय; **कलेजा फटना**-किसी का दुःख देखकर घबडा जाना; **कलेजे पर साँप लोटना**-पूर्व घटना को स्मरण करके शोकाकुल होना; **कलेजे से लगना**-आलिंगन करना।

कलेजी-(हिं०स्त्री०) भेड़ बकरे के कलेजे का मांस।

कलेवर-(स०नपुं०) शरीर, देह, चोला; **कलेवर बदलना**-एक शरीर या रूप छोड़ कर दूसरा ग्रहण करना।

कलेवा-(हिं०पुं०) प्रातराश, प्रातःकाल का लघु भोजन जलपान, विवाह के समय वर को ससुराल में भोजन कराना; **कलेवा करना**-निगल जाना।

कलेश (स)-(हिं०पु०) देखो क्लेश।

कलैया-(हिं०स्त्री०) नीचे सिर और ऊपर पैर करके उलट जाने की क्रिया।

कलोर-(हिं० वि०) जवान बछिया जो ब्याई या गाभिन न हुई हो।

कलोल-(हिं०पु०) केलि, क्रीड़ा, आमोद प्रमोद। **कलोलना**-(हिं०क्रि०) कल्लोल करना, क्रीड़ा करना।

कलौंजी-(हिं०स्त्री०) काला जीरा, मंगरैला, एक प्रकार की तरकारी जो परवल, करैला इत्यादि के फल को फाड़ कर इसमें मसाला भरकरें तैयार की जाती है।

कलौंस-(हिं० वि०) कालापन लिये हुए कालापन, कलंक

कल्क-(सं०पुं०) पत्थर पर पीसी हुई वस्तु, चूर्ण, बुकनी, पीठी, गीली या भिगाई हुई औषधियों को पीस कर बनाई हुई चटनी घृत या तैल का बचा हुआ भाग, अवलेह, दम्भ, घमंड, बहेड़े का वृक्ष, किट्ट, मैल, कान का मैल, लोहबान, हाथीदाँत, पापी।

कल्कि-(सं०पु०) विष्णु का दसवां अवतार

कल्किपुराण-(सं०पुं०) अठारह पुराणों से अतिरिक्त इस नाम का पुराण।

कल्प-(सं०पुं०) विधान, विधि, रीति, चौदह मन्वन्तर का काल अर्थात् ४३२००००००० वर्ष, न्याय, कल्पवृक्ष, विकल्प, वेदके षडंगके अन्तर्गत वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि करने का विधान है, वाञ्छा, पक्ष, अभिप्राय, प्रलय, विभाग, प्रकरण, आयुर्वेद के अनुसार रोग निवृत्ति का एक प्रधान

उपाय।
कल्पक-(सं०पु०) नापित, कचूर, ग्रन्थ-कर्ता (वि०)बनानेवाला,लगानेवाला।
कल्पकतरु-(सं०) देखो कल्पतरु।
कल्पकार-(सं०पुं०) नापित, (वि०) वेश बनाने वाला, आरोपक, लगानेवाला।
कल्पक्षय-(सं०पु०)प्रलय,संसार का नाश
कल्पगा-(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
कल्पतरु, कल्पद्रुम-(सं०पु०) स्वर्ग का वह वृक्ष जो माँगने से सकल पदार्थ देता है, मुँहमाँगी वस्तु देनेवाला, सुपारी का वृक्ष, वैद्यक का एक रस विशेष।
कल्पनं-(सं०नपुं०)रचना,बनावट, विधान
कल्पना-(सं० स्त्री०) अनुमान, अटकल, रचना, बनावट, सजावट, अर्थापत्ति प्रमाण, अध्यारोप, नये विषय का उद्‌भावन, काव्य, उपन्यास चित्र आदि की मन से रचना।
कल्पनी-(सं०स्त्री०) कर्तनी, कैंची।
कल्पनीय-(सं० वि०) कल्पना करने योग्य, अटकल के योग्य।
कल्पलता-(सं० स्त्री०) कल्पवृक्ष।
कल्पवास-(सं०पु०) माघ मास में गंगा तटपर सगम के समीप झोपड़ी में रहना।
कल्पवृक्ष-(सं० पु०) चौदह रत्नों में से एक रत्न जो समुद्र मन्थनमें निकला था-देखो कल्पतरु।
कल्पसूत्र-(सं०नपुं०) वैदिक कर्मों के अनुष्ठान बतलानेवाला ग्रन्थ।
कल्पातीत-(सं० पुं०) कल्प काल की अपेक्षा अधिक दिन तक रहनेवाला देवता।
कल्पान्त-(सं० पुं०) प्रलय, ब्रह्मा के दिन का अन्त। **कल्पान्तर**-(सं०नपु०) संसार की दूसरी उत्पत्ति।
कल्पित-(सं०पुं०) रचित,कल्पना किया, हुआ,माना हुआ,सज्जित, सजा हुआ, लगायी हुआ,ठीक किया हुआ,दिया हुआ, बनावटी, कृत्रिम। **कल्पितोपमा**-ऐसी उपमा जिसमें प्रकृत उपमा न मिलने से कल्पनाकी आवश्यकता होती है।
कल्मलीक-(सं०वि०)चमकदार, चमकीला
कल्मस-(सं०नपुं०) मलिनता, मैलापन, पाप, (पुं०) एक नरक विशेष, पीब, मवाद।
कल्माषी-(सं०स्त्री०)कालिन्दी, यमुना नदी
कल्माष-(सं०वि०) काला, चितकबरा।
कल्य-(सं० नपुं०) प्रात:काल, सबेरा, मधु सुरा,शुभ समाचार, बधाई (वि०) चतुर, दक्ष, नीरोग, प्रस्तुत।
कल्यपाल- (सं० पुं०) कलवार, मद्य बनाने वाला।
कल्या-(सं०स्त्री०) मद्य, कल्याण वाक्य।
कल्याण-(सं०पु०) शुभ, मंगल, भलाई, सोना, एक रोग विशेष, (वि०) भला।
कल्याणकर-(सं०वि०) भलाई करने वाला। **कल्याणकारक**-(सं० वि०) कल्याणप्रद।

कल्याणी-(सं०वि०)कल्याण करनेवाली, सुन्दरी (स्त्री०) गाय, प्रयाग की एक प्रसिद्ध देवी।
कल्यान-(हिं०स्त्री०) देखो कल्याण।
कल्लर-(हिं० पु०) काली मिट्टी, रेह, नोना, ऊसर भूमि।
कल्ला-(हिं०पु०) अंकुर, किल्ला,कपोल के भीतर का अंश, गड्ढा, कुवा, जबड़े के नीचे गले तक का भाग, विवाद, झगड़ा; **कल्ला बजाना**-झगड़ना।
कल्लांच-(हिं०वि०) दुष्ट, दरिद्र,कंगाल।
कल्लातोड़-(हिं० वि०) प्रबल, बराबरी करनेवाला।
कल्लाना-(हिं०क्रि०) चमड़े के ऊपरी भाग में जलन होना।
कल्लू-(हिं०वि०) काले रंग वाला।
कल्लोल-(सं० पुं०) बड़ी लहर, तरंग, हर्ष, आनन्द। **कल्लोलित**-(सं० वि०) तरंग युक्त। **कल्लोलिनी**-(सं०स्त्री०) नदी; **कल्लोलिनीवल्लभ**-समुद्र।
कल्ह-(हिं०) देखो कल।
कल्हर-(हिं०पु०)वेग **कल्हरना**-(हिं०क्रि०) थोड़े घी या तेल में भनना, दु:खसे कराहना, चिल्लाना, पीड़ा का शब्द करना।
कल्हार-(हिं०पुं०)एक प्रकार का फूल।
कल्हारना-(हिं०क्रि०)कड़ाही में थोड़ा तेल या घी डालकर भूनना।
कवच-(सं० पु०) उरच्छद, आवरण, छिलका, सन्नाह, भूर्जपत्र, नगाड़ा, पटह, दारचीनी, मंत्र द्वारा शरीरके भिन्न भिन्न अंगों की रक्षा, जंत्र; **कवचपत्र**-भूर्जपत्र, भोजपत्र।
कवटी-(सं०स्त्री०) कपाट, केवाड़ी।
कवन-(हिं० सर्व०) देखो कौन।
कवर-(हिं०पु०) ग्रास, कौर, (सं०पुं०) केशपाश।
कवर-(अं०पु०) आच्छादन,ढपना,पुटक
कवरना-(हिं०क्रि०) देखो कौरना।
कवरा, कवरी-(हिं०स्त्री०) चोटी,जूड़ा।
कवर्ग-(सं०पुं०) ककारादि पाँच वर्णों का समूह, क,ख,ग,घ,ङ अक्षरों का नाम। **कवर्गीय**- इन अक्षरों में निकला हुआ।
कवल-(हिं०पुं०) ग्रास, कौर, वह मात्रा जो मुख में सहज में चली जाती है, कुल्ली, कोण, किनारा, प्रतिज्ञा, एक कुजातिका घोड़ा। **कवलित,कवलीकृत**-(सं०वि०)खाया हुआ,निगला हुआ
कवाट-(सं०नपुं०) कपाट, किवाड़ा।
कवाम-(अ०पुं०) पकाकर मधुके समान बनाया हुआ रस, किमाम, चाशनी।
कवि-(सं०पु०) कविता गान इत्यादि का रचयिता, छन्द बनानेवाला पण्डित, शुक्र, सूर्य, ब्रह्मा, ऋषि, वैद्य।
कविक-(सं०पुं०) कवि, लगाम।
कविका-(सं०स्त्री०) लगाम, केवड़ेका फूल
कविता-(सं०स्त्री०)पद्यमय वर्णन, काव्य।
कविताई-(हिं०स्त्री०)कविता, कवित्व।

कवित्त-(हिं०पु०) दण्डक के अन्तर्गत चार पद का काव्य जिसके प्रत्येक चरण में इकतीस, इकतीस अक्षर होते हैं इसको घनाक्षरी भी कहते हैं।
कवित्व-(सं० नपु०) कविता रचना की शक्ति, ज्ञान, काव्य का गुण।
कविनासा-(हिं०स्त्री०) देखो कर्मनाशा।
कविपुत्र-(सं०पु०)शुक्राचार्य,भार्गव ऋषि
कविराज-(सं०पु०)श्रेष्ठ कवि,वंगदेशीय वैद्यकी उपाधि। **कविराजी**-(हिं०स्त्री०) वङ्गदेशीय वैद्य चिकित्सा। **कविराय**-(हिं०) देखो कविराज, भाट, श्रेष्ठ कवि।
कविलास-(हिं०पुं०) कैलास, स्वर्ग।
कविवर-(सं०पु) श्रेष्ठ कवि।
कवेरा-(हिं० पु०) ग्रामीण, देहाती।
कवेला-हिं०पु०) चक्कर की कील, कौवे का बच्चा।
कवोष्ण-(सं०वि०)थोड़ा गरम,गुनगुना
कव्य-(सं०पुं०)जो अन्न पितरों निमित्त दिया जावे। **कव्यवाड़**-(सं० पुं०) अग्नि, आग।
कशा-(सं०स्त्री०) चाबुक, कोड़ा,रस्सी।
कशाघात-चाबुक की मार।
कशिक-(सं०पु०) नकुल, नेवला।
कशिका-(सं०स्त्री०) चमडे की चाबुक।
कशेरु-(सं०पु०) पीठ की रीढ की हड्डी, एक प्रकार की घासकी जड़ जिसका ठोस भाग खाया जाता है।
कश्चित्-(सं०अव्य०) कोई, एक न एक
कश्मल-(सं०नपु०) मूर्छा रोग, (वि०) मलिन, पापी।
कश्मीरी-(सं०पुं०) काश्मीर देश जो पंजाब के उत्तर में पहाड़ों से घिरा हुआ है। **कश्मीरज**-(सं०नपुं०)केसर।
कश्मीरी-(हिं०वि०)कश्मीर देश संबंधी, कश्मीर में उत्पन्न।
कश्यप-(सं० पुं०) एक ऋषि का नाम, ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे,एक प्रजा पति, कच्छप, कछुवा, एक प्रकार का हरिन,सप्तर्षि मण्डलांतर्गत एकतारा
कष-(सं० पुं०) कसौटी, सान, घिसाव, जाँच, परीक्षा।
कषण-(सं०पुं०) कसौटी,घर्षण, रगड़।
कषा-(सं०स्त्री०) कशा, चाबुक।
कषाय-(सं० पुं०) कसैलापन, कल्क, काढ़ा, निर्यास, उपटन, आसक्ति, लाल रंग,कलियुग,निर्विकल्प समाधि का एक विघ्न, (वि०) रंगा हुआ, कसैला, खुशबूदार, अनुभव हीन, रंगदार,(पु०)जैनशास्त्रमें क्रोध,मान, माया, तथा लोभ कषय कहलाते हैं।
कषायता-(सं० स्त्री०) कसैलापन।
कषायफल-(सं०नपुं०)पूगीफल,सुपारी।
कषायित-(सं०वि०) लाल रंगा हुआ।
कषित-(सं० वि०) परीक्षित, चोट खाया हुआ।
कष्ट-(सं० नपुं०) पीडा, व्यथा, क्लेश, दु:ख,संकट, आपत्ति, (अव्य०)हाय!;
कष्टकर-दु:ख जनक,पीड़ा देनेवाला;

कष्टकल्पना-कठोर अनुमान जिसके स्थिर करने में बड़ा कष्ट होता है।
कष्टकारक-(सं०वि०)दु:खका कारण, क्लेश देनेवाला। **कष्टजीव**-(सं०वि०) कष्टसे जीविका निर्वाह करनेवाला।
कष्टतर-(सं० वि०) अधिक कष्ट देनेवाला। **कष्टलभ्य**-(सं० वि०) कठिनता से प्राप्त होनेवाला।
कष्टसह-(सं० वि०) कष्ट या दु:ख सहन करने वाला। **कष्टसाध्य**-(सं०वि०) कष्टसे आरोग्य होनेवाला, कठिनाई से हारनेवाला।
कष्टी-(सं०स्त्री०) प्रसवका दु:ख उठाने वाली स्त्री।
कस-(सं०पुं०) कसौटी, जाँच, परीक्षा, शक्ति, वश, रोक, अवरोध, सार, निचोड़, तलवार की लचक बाँधने की रस्सी, मल्ल युद्ध की युक्ति, कसाव, तत्व (क्रि० वि०) किस प्रकार से, कैसे; **कसमें लाना**-वश में करना।
कसक-(हिं० स्त्री०) पीड़ा जो आघात पड़ने पर हलकीसी उठाती है,पुराना बैर, सहानुभूति, अभिलाषा, **कसक निकालना**-पुरानी शत्रुता का बदला लेना। **कसकना**-(हिं० क्रि०) पीड़ा करना, दुखना, रह रह के पीड़ा उठना, बुरा लगना।
कसकुट-(हिं० पुं०) एक मिश्र धातु जो तांबा और जस्ता बराबर भाग में मिलाकर बनती है, काँसा।
कसगर-(हिं० पुं०) कसाग जाति जो प्राय: मुसलमान होते है।
कसन-(सं०पुं०) कास, खांसी, वेदना, पीड़ा (हिं०स्त्री०) बन्धन, कसाई,कसने की रस्सी, कसने की विधि।
कसना-(हिं० क्रि०) बाँधते समय रस्सी इत्यादि को कसकर खींचना,तानना, जकड़ना,दबाना,बंधन बैठाना,ठिकाने पहुँचाना, घोडे हाथी को सज्जित करना, दबाना, तैयार होना,घिसना, रगड़ना, लचकना, परीक्षा करना, कष्ट देना, भर जाना, सोने की परीक्षा करने के लिये कसौटी पर घिसना; **कसकर**-अधिक रूपसे, दृढ़ता पूवक, **कसादाम**-अधिक मूल्य. **कसा कसाया**-प्रस्थान करनेके लिये उद्यत।
कसनि-(हिं०स्त्री०)बँधन, बँधाई।
कसनी-(हिं०स्त्री०) रस्सी, चोली, बेठन, खोल, कसौटी, परीक्षा, जाँच, परख, हथौड़ा, कसैला काढ़ा।
कसबल-(हिं० पुं०) पराक्रम, साहस, हिम्मत।
कसबीती-(हिं० वि०) कसबे का रहने वाला।
कसबिन, कसबी-(हिं०स्त्री०)वेश्या, रंडी, व्यभिचारिणी स्त्री, पतुरिया।
कसमसाना-(हिं०क्रि०) हिलना डोलना, उसकना, ऊबना, घबड़ा जाना, हिचकना, बेचैन होना, उकताना, आगा पीछा करना।

कसमसाहट,कसमसी-(हिं०स्त्री०)व्यग्रता घबड़ाहट।
कसरती-(हिं०वि०) परिश्रमी, व्यायाम करनेवाला।
कसवानी,कसरवानी-बिहार के बनियों की एक शाखा।
कसरहट्टा-(हिं०पुं०) वह हाट जहां कसेरे बरतन बना कर बेचते हैं।
कसली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा फोड़ा।
कसवाना-(हिं०क्रि०) कसने का काम दूसरे से कराना।
कसवार-(हिं० पु०) एक प्रकार की मोटी जाति की ईख।
कसदंड-(हिं०पु०) कांसे के टूटे फूटे पात्रों का अंश।
कसाई-(हिं०पु०) वधिक, घातक, (वि०) निष्ठुर, निर्दय, क्रूरहृदय।
कसाना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ में कसैलापन आ जाना, कसैला जान पड़ना, कसवाना, सजवाना।
कसार-(हिं०पुं०) धीमे भूना हुआ तथा चीनी मिला हुआ आँटा।
कसाला-(हिं०पुं०) क्लेश,कष्ट,परिश्रम।
कसाव-(हिं०पु०) कसैलापन, आकर्षण, खिचाव। **कसावट**-(हिं०स्त्री०) आकर्षण, खिचाव।
कसियाना-(हिं०क्रि०) कषायित होना, कसाव आ जाना।
कसी-(हिं० स्त्री०) भूमि नापने की उनचास इंच की रस्सी।
कसीटना-(हिं०क्रि०) कसना।
कसीदा-(हिं०पु०) देखो कशीदा।
कसीस-(हिं०पु०) लोहे का एक प्रकार का मुरचा।
कसेरहट्टा-(हिं०पु०) कसेरों का हाट।
कसेरा-(हिं०पुं०)कांसे, फूल इत्यादि के पात्र बनाने तथा बेंचने वाला बनिया।
कसेरू-एक प्रकार के मोथेके गठीली जड़ जो खाने में मीठी होती है।
कसैया-(हिं०वि०) कसकर बाँधनेवाला, परीक्षक, जाँचने या परखने वाला, गोघातक।
कसैला-(हिं०वि०) कषाय स्वाद का, कसाने वाला, जीभ को ऐंठनेवाला; **कसैलापन**-कषाय रस। **कसैली**-(हिं० स्त्री०) पूगीफल, सुपारी।
कसौंदा-(हिं०पुं०)हरफा रेवड़ी का फल
कसोरा-(हिं०पु०)कटोरा, मिट्टीकाकटोरा
कसौटी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकारका काला पत्थर जिसपर सोना रगड़कर इसके रंग से सोने की परीक्षा की जाती है परीक्षा, जाँच, परख।
कस्तरी-(हिं०स्त्री०) दूध पका कर रखने का मिट्टी का पात्र।
कस्तूरा-(हिं०पु०) कस्तूरी मृग, लोमड़ी के समान एक पशु, जिस सीप में से मोती निकलता है,एक पुष्टिदायक दवा
कस्तूरिका-(स०स्त्री०) कस्तूरी।
कस्तूरिया-(हिं०पुं०)कस्तूरी,मृगकस्तूरी (वि०) कस्तूरी मिश्रित,कस्तूरीके रंग का। **कस्तूरी**-(स० स्त्री०) मृग नाभि से निकलने वाला एक सुगन्धित द्रव्य। **कस्तूरीमृग**-(सं०पुं०) एक प्रकार का हरिन जिसकी नाभि में से कस्तूरी निकलती है।
कस्मात्-(स०अव्य०) किस कारणसे,क्यों
कस्सा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की शराब
कस्सी-(हिं०स्त्री०) मालीका छोटाफोड़ा
कहँ-(हिं०पु०) को; (क्रि०वि०) कहां।
कहगिल-(हिं०स्त्री०) दीवार में लगाने की मिट्टी या गारा।
कहता-(हिं०वि०) कहनेवाला।
कहतूत-(हिं०स्त्री०) प्रसिद्ध वार्ता।
कहन-(हिं०पुं०)कथन,बोलचाल,भाषण, कविता, लोकोक्ति।
कहना-(हिं०क्रि०) बोलना, बताना,समझाना, वर्णन करना,उच्चारण करना, संवाद, सुनाना, सिखाना, पढ़ाना, अयोग्य बोलना, कह बैठना, धोखा देना, कविता बनाना, सूचना देना, नाम रखना, (पुं०) अनुरोध, आज्ञा, कथन; **कहबदकर**-दृढता पूर्वक; **कहना-सुनना**-वार्तालाप करना; **कहने को**-केवल नाम मात्र से; **कहने की बात**-झूठी बात।
कहनावत-(हिं०स्त्री०) कहावत, कथन, किंवदन्ती, कहासुनी।
कहनि-(हिं०स्त्री०) देखो कहन।
कहनूत-(हिं०स्त्री०) मसला, कहावत, दृष्टान्त।
कहरना-(हिं०क्रि०) देखो कराहना।
कहरवा-(हिं०पुं०) पांच मात्राओं का एक ताल, एक गीत विशेष, दादरा, एक प्रकार का नाच, पानी भरने वाला कहार।
कहरी-(अ०वि०) आपत्ति लाने वाली।
कहल-(हिं०पुं०) गरमी, उमस, ताप, ज्वर, कष्ट।
कहलना-(हिं०क्रि०) गरमी से व्याकुल होना, घबड़ाना।
कहलवाना-(हिं०क्रि०) कहने का काम दूसरे से करवाना, कहलाना।
कहलाना-(हिं०क्रि०) कहने का काम दूसरे से कराना, पुकारा जाना,कहा जाना, संदेश भेजना।
कहवाँ-(हिं०क्रि०वि०) कहां,किसस्थानपर।
कहवाना-(हिं०क्रि०) कहलाना, कहाना।
कहवैया-(हिं०वि०) कहने वाला।
कहा-(हिं०पु०) कथन, बातचीत (क्रि० वि०) कैसे, किस प्रकार से (सर्व) क्या (वि०) कौन।
कहाँ-(हिं०क्रि०वि०) किस जगह, किस स्थान पर, (पु०) तुरत के उत्पन्न शिशु की चिल्लाहट।
कहाना-(हिं०क्रि०)कहलाना,कहाजाना।
कहानी-(हिं०स्त्री०) कथा, मिथ्या बचन, झूठी बात।
कहार-(हिं०पुं०) एक जाति जो पानी भरने और डोली लेकर चलने का काम करते हैं।
कहारा-(हिं०पुं०) टोकरा, दौरा,खौवा।
कहावत-(हिं०स्त्री०) लोकोक्ति, कथित विषय, कही हुई बात।
कहासुना-(हिं०पु०) अनुचित वचन, बुरा व्यवहार, भूलचूक। **कहासुनी**-(हिं०स्त्री०)वादविवाद, लड़ाई झगड़ा।
कहिया-(हिं०क्रि०वि०) किस समय,कब, (पुं०) रांगेसे जोड़नेका एक अस्त्र।
कहीं-(हिं०क्रि०वि०) किसी अनिश्चित स्थान में, प्रश्न रूप में 'नहीं' अर्थ में भी प्रयोग होता है, यदि, कदाचित्, बहुत, बहुत अधिक; कहीं और किसी दूसरे स्थान पर; **कहीं का न रहना**-किसी काम का न होना; **कहीं न कहीं**-किसीन किसी स्थान पर।
कहुं-(हिं०क्रि०वि०) कहीं।
काँइयाँ-(हि० वि०) धूर्त, वंचक।
कहूं-(हिं०क्रि०वि०) कहीं।
का-(हिं०प्रत्यय०)षष्ठी का चिन्ह; स्त्री लिंग का रूप 'की' होता है(सर्व०)क्या
काई-(हिं०स्त्री०) जल तथा तरी में होने वाली एक घास, मल, धातु पर लगने वाला मुर्चा, फेन, माड़, मैल।
काऊ-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी छोटी खूंटी (सर्व०) कोई, कुछ (क्रि०वि०) कभी, (पु०) काक, कौवा।
काइयां-(हिं०वि०)धूर्त,अर्थ स्वार्थसाधक
काई-(हिं०अव्य०) क्यों, किस लिये (सर्व०) किसका।
काक-(हिं०पुं०) एक अन्न, कंगनी।
कांकड़ा-(हिं०पु०) कपास का बीज, बिनौला,
कांकर-(हिं०पुं०) कर्कर, कंकड़।
कांकरी-(हिं०स्त्री०) छोटा कंकड़; **कांकरी चुनना**-शोक या दुःखसे चित्त किसी काम में न लगना।
कांक्षनीय-(स०वि०)अभिलाषा करने योग्य
कांक्षा-(सं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा।
कांक्षी-(सं०वि०) आकांक्षा करने वाला, चाहने वाला।
कांख-(हिं०स्त्री०) बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, बगल।
कांखना-(हिं०क्रि०)पीड़ा की अवस्था में दुःख सूचक शब्द उच्चारण करना, कराहना, मल या मूत्र निकालने के लिये उदर की वायु को दबाना।
कांभा सोती-(हिं०स्त्री०) डुपट्टे को बांये कन्धे पर रख कर पीठ पर से होता हुआ दहिने बगल के नीचे पहुँचा कर रखना, उत्तरीय।
कांगड़ा-(हिं०पुं०) पंजाब प्रान्त के एक जिले का नाम।
कांगड़ी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकारकी छोटी अंगीठी जिसको जाड़े के दिनों में काश्मीर वासी अपनी गरदन में से लटकाये रहते है।
कांगही-(हिं०स्त्री०) कंघी।
काँगुरा-(हिं०पुं०) कंगूरा।
कांच-(हिं०स्त्री०) धोती का छोर जो कमर के पीछे खोंसा जाता है, गुदा का भीतरी भाग जो कभी, कभी जोर से कांखने पर बाहर निकल आता है।
कांच निकला-बुरी अवस्था को प्राप्त (वि०) पुंछटा कच्चा होना; (पु०) एक मिश्र धातु जो बालू और क्षार को अग्नि में पकाने से तैयार होता है, शीशा।
काँचरी-(हिं०स्त्री०) सांप की केंचुली।
काँचा-(हिं०वि०) देखो कच्चा।
काँची-(हिं०स्त्री०) करधनी, घुमची।
काँचुली-(हिं०स्त्री०) केंचुली।
काचू-(हिं०पु०) सांप की केंचुली। (वि०)जिसरोगीकीकांचनिकलतीहो।
कांछना-(हिं०क्रि०) लांग बांधना, धोती खोंसना।
कांछा-(हिं०पुं०) कमर के पीछे खोंसने का धोतीका भाग,धोतीका किनारा, लंगोट (स्त्री०) आकांक्षा।
कांजी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का खट्टा किया हुआ जल, मट्ठा, दही या फटे हुए दूध का पानी, छाछ।
कांजीवरम्-(हिं०) देखो कांचीपुर।
काँट-(हिं०पु०) देखो कांटा।
कांटा-(हिं०पुं०) कण्टक, किसी पौधे या वृक्षका कड़ा तथा नुकीला अंकुर, पैर में का खोट, गले का एक रोग, लोहे की कील, मछली मारने की कँटिया, लोहे की झुकी हुई कीलों का गुच्छा,कोई नुकीली वस्तु गुथने का यन्त्र, सोना चांदी तौलने की छोटी तुला नाक या कान का एक आभूषण, त्रिशूल के आकार का यन्त्र जिसको भोंक कर अग्रेज लोग रोटी खाते हैं, सूजा, घड़ी की सूई, गणित में गुणनफल जाँचने की एक विधि, दुःखदायी मनुष्य; **कांटा निकल जाना**-बाधक का हट जाना; **कांटा बाना**-अड़चन डालना; **कांटा हो जाना**-अति दुर्बल होना; **कांटे पर घसीटा जाना**-योग्यता से कहीं अधिक प्रशंसा किया जाना; **कांटों पर लोटना**-अति कष्ट उठाना; **कांटे की तौल**-ठीक ठीक तौल का।
कांटी-(हिं०स्त्री०) छोटा महीन कांटा।
काँटेदार-(हिं०वि०)कांटा लगा हुआ।
काँठा-(हिं०पुं०) कण्ठ, गला, गले की रेखा, तट, किनारा, जुलहे की बाना चढ़ाने की लकड़ी।
कांड़ना-(हिं०क्रि०) रौंदना, कूटना, लतियाना।
काँड़ा-(हिं०पु०) वृक्षों का एक रोग, दाँत में लगने वाला कीड़ा।
काँड़ी-(हिं०स्त्री०) ओखली का गड्ढा लकड़ी का भारी बोझ उठाने बैठाने का डंडा, बांस या लकड़ी या लट्ठा,

अरहर की सूखी लकडी. रहठा, दियासलाई ।
कांत, कांता, कांति-(हिं०) देखो कान्त कान्ता, कान्ति ।
कांती-(हिं०स्त्री०) बड़ी पीड़ा बिच्छू का डंक ।
काँथरि-(हिं०स्त्री०) कथरी, देखो कन्था
काँदना (हिं०स्त्री०)चीख मार कर रोना, विलाप करना ।
काँदा-(हिं०पु०) कन्दली, एक पौधा जिसका गुल्म प्याज के सदृश होता हैं, इससे माडी बनती है ।
काँदू-(हिं०पुं०) बनियों की एक जाति जो हलवाई का काम करते हैं, भडभूजा ।
काँदो-(हिं०पुं०) कर्दम, कीचड़ ।
काँध (हिं०पु०) स्कन्ध, कन्धा, कोल्हू का एक भाग । **काँधना**-(हिं०क्रि०) कन्धे पर रखना, उठाना, नाधना, स्वीकार करना, मानना, बोझ उठाना
काँधर-(हिं०पु०) कृष्ण, कान्हा ।
काँधा-(हिं०पु०) स्कन्ध, कन्धा, कृष्ण, कान्हा ।
काँप-(हिं०स्त्री०) तीली, पतली छड़, कनकौवे की पतली तीली, सुअर का पैर का कांटा, खांग, हाथी का दांत, कान का एक आभूषण, कंप, कँपकपी
काँपना-(हिं०क्रि०) कम्पित होना, थरथराना, थर्राना, डरसे काँपना ।
काँयकाँय, काँवकाँव-(हिं० कौवे का शब्द
काँवर-(हिं०स्त्री०) बंहगी, बांस का डंडा जिसके दोनों किनारों पर छिक्के लटकाकर पदार्थों को ले जाते हैं ।
काँवरा-(हिं०वि०) व्याकुल, उद्विग्न, घबड़ाया हुआ । **काँवरिया**-(हिं०पुं०) कांवर ले जाने वाला यात्री ।
काँवरू-(हिं०पुं०) कामरूप कामला रोग
कावांरथी-(हिं०पुं०) तीर्थयात्री, कावर लेकर यात्रा करने वाला ।
काँस-(हिं०) एक प्रकार की लंबी घास
काँसा-(हिं०पु०) कांस्य, तांबे और जस्ते को मिलाकर बना हुआ धातु, भीख मांगने का खप्पर ।
कांसागर-(हिं०पुं०) कांस्यकार, कांसे के पात्र बनाने वाला ठठेरा ।
कांसिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का अन्न, मोठ ।
कांसी-(हिं०स्त्री०) धान के पौधे का एक रोग, कास, रोग, खांसी ।
कांसुला-(हिं०पुं०) कांसे का बना हुआ एक चौकोर टुकड़ा जिसमें चारो ओर छोटे बड़े गड्ढे होते हैं सोनार लोग इसमें पीटकर गोल कटोरियां बनाते हैं
कांस्य-(सं०नपुं०) कांसा, कसकुट, एक प्रकार का बाजा, घड़ियाल, एक प्रकार की तौल । **कांस्यताल**-(सं०पु०) करताल, मजीरा ।
काक-(सं०पु०) वायस, कौवा; **काकगोलक**-कौवे की आंख की पुतली ।
काकचरित्र-(सं०नपु०) शकुन शास्त्र का अंश विशेष । **काकचिञ्चा**-(सं०स्त्री०) गुञ्जा, घुमची । **काकजंघा**-(सं०स्त्री०) एक औषधि, चकसेना, घुमची, मुद्गपर्णी लता ।
काकड़ासिंगी-(हिं०स्त्री०) स्वनाम ख्यात जो प्रसिद्ध जड़ी है ।
काकजात-(सं०पु०) कौवे से पालन पोषण की हुई कोयल ।
काकण-(सं०नपु०) काले तथा लाल धब्बे का कुष्ट रोग ।
काकतन्द्रा-(सं०स्त्री०) सतर्क भाव की झपकी । **काकता**-(सं०स्त्री०) कौवे का स्वभाव । **काकतालीय**-(सं०नपु०) संयोग वश होनेवाला कार्य (वि०) आकस्मिक । **काकतुण्डी**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का नीला फूल, कौवाठोंठी
काकदन्त-(सं०पु०) कोई असम्भव बात, निरर्थक वार्ता ।
काकध्वज-(सं०पुं०) समुद्र के भीतर की अग्नि, बड़वानल । **काकनिद्रा**-(सं०स्त्री०) अति सतर्क निन्द्रा ।
काकपक्ष-(सं०पु०) मस्तक के दोनों ओर के बालों की रचना, पट्टा ।
काकपद-(सं०नपु०) चिन्ह विशेष जो छूटे हुए शब्द का स्थान सूचित करने के लिये पंक्ति के नीचे लगाया जाता है । **काकपच्छ**-(हिं०पु०) देखो काकपक्ष । **कामपाली**-(हिं०स्त्री०) कोयल । **काकबन्ध्या**-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसको एक ही सन्तान उत्पन्न हुआ हो । **काकबलि**-(सं०पुं०) श्राद्ध में कौवे को दिया जाने वाला भोजन का अंश । **काकभीरु**-(सं०पु०) कौवे से डरने वाला पक्षी, उल्लू ।
काकभुशुण्डि-(सं०पु०) एक ब्राह्मण जो राम के सच्चे भक्त थे, लोमश ऋषि के शाप से इनको काक होना पड़ा था । **काकमाची**-(सं०स्त्री०) मकोय का पौधा । **काकरव**-(सं०पु०) कोलाहल करने वाला, डरपोक मनुष्य ।
काकरासिंगी-(हिं०स्त्री०) देखो काकड़ा सिंघी ।
काकरी-(हिं०स्त्री०) ककर्टी, कजड़ी ।
काकरुत-(सं०नपु०) कौवे की बोली ।
काकरेजा-(हिं०पुं०) लाल काला मिले रंग का वस्त्र ।
काकल-(सं०नपु०) कण्ठमणि, गले का हार, (पुं०) जंगली काला कौवा (स्त्री०) सेंध लगाने की सबरी ।
काकली-(सं०स्त्री०) धीमी मधुर ध्वनि, एक प्रकार का बाजा, सेंध लगाने की सबरी ।
काकसेन-(हिं०पु०)जलपोत के कर्मकारों का निरीक्षण करनेवाला जमादार (अं० काँक्सवेन् का अपभ्रंश) ।
काका-(हिं०स्त्री०) मोर की बोली, कौवा ठोंठी, घुमची, (हिं०पु०) पिता का भाई, चाचा ।
काकाकौवा-(हिं०पुं०) बड़ा तोता, काकातुआ । **काकाक्षिगोलकन्याय**-(सं०पुं०) किसी शब्द या वाक्य को उलट फेर कर उसका अर्थ अलग अलग लगाना । **काकातुवा**-(हिं०पुं०) चोटीदार एक प्रकार का बड़ा सुग्गा
काकाल-(सं०पुं०) पहाड़ी कौवा, बछनाग का वृक्ष ।
काकिणी-(सं० स्त्री०) गुंजा, घुमची, पण का चौथा भाग, जो पाँचगण्डा कौड़ी के बराबर होता है, एक माशे का चौथा भाग, एक कौड़ी ।
काकी-(सं०स्त्री०) वायसी, मादा कौवा, चाची ।
काकीय-(सं०वि०) काक सम्बन्धी ।
काकु-(सं०स्त्री०) शोक भय इत्यादि से स्वरूप बदल जाना, विरुद्ध अर्थ बोधक स्वर, व्यंग, ताना, उल्लाप, दीनता का वाक्य, अलंकार में व्यंगोक्ति का एक भेद जिसमें शब्द की ध्वनि से भिन्न-भिन्न अर्थ का ग्रहण किया जाता है ।
काकुवाद-(सं०पु०) गिड़गिड़ा कर कही हुई बात, शोक या भय से विकृत ध्वनि ।
काकूक्ति-(सं०स्त्री०) देखो काकुवाद ।
काकोल-(सं०पु०)पहाड़ी कौवा, जंगली सुअर, कोंहार ।
काकोली-(सं०स्त्री०) एक कन्द, विशेष जो औषधि में प्रयोग होता है ।
काग-(हिं०) देखो काक (कार्क), बोतल में लगाने का डट्टा ।
कागद-(हिं०पुं०) पत्र, कागज़ ।
कागभुसुंड-(हिं०) देखो काकभुशुण्डि
कागर-(हिं०पु०) पत्र, कागद, पक्षियों के कोमल झड़जाने वाले पर ।
कागरी-(हिं०वि०) तुच्छ, ओछा ।
कागावासी-(हिं०स्त्री०)प्रातःकाल पीजाने वाली भाग ।
कागारोल-(हिं०पुं०)काकरव, कोलाहल
कागौर-(हिं०पुं०) श्रद्धादि में कौवे को दिया जानेवाला ग्रास ।
कांक्षिता-(सं०स्त्री०) अभिलाषा, चाह ।
काच-(सं०नपु०) लाख, चपड़ा, कचिया मोन, कालानमक, शीशा; **काचकूपी**-शीशे की बोतल ।
काचरी-(हिं०स्त्री०) केचुली ।
काचा-(हिं०वि०) कच्चा, भीरु, मृदु ।
काची-(हिं०स्त्री०) दूध रखने का मिट्टी का पात्र. तीखुर आदि का हलुआ ।
काछ-(हिं०पुं०) जांघ का ऊपरी भाग, धोती की लांग ।
काछना-(हिं०क्रि०) धोती को कमर में खोंसना, शृङ्गार करना, बनाना, तरल पदार्थ को हाथ से किसी पात्र के किनारे पर धरना ।
काछनी-(हिं०स्त्री०) वह धोती जो ऊपर चढ़ा कर पहिरी जाती है, जांघिये के ऊपर पहिरने का वस्त्र ।
काछी-(हिं०पुं०) लांग, उठी हुई धोती. एक कृषक जाति ।
काछे-(हिं०क्रि०वि०) निकट, पास में ।
काज-(हिं०पु०) कार्य, काम, व्यवसाय, प्रयोजन, उद्देश्य, निमित्त, बटन लगाने का छेद ।
काजर-(हिं०पु०) कज्जल, आँख में लगाने की धुवें की कारिख ।
काजरी-(हिं०स्त्री०) वह गाय जिसकी आँखों के किनारे पर काला घेरा होता है ।
काजल-(हिं०पुं०) कज्जल, आँखों में लगाने की धुवें की कारिख; **काजल पारना**-दीपक के धुवें को किसी पात्र में जमाना; **काजल की कोठरी**-ऐसा स्थान जहाँ जाने से मनुष्य को कलंक लगता है ।
काजू-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसकी फली खाई जाती है, इस वृक्षके फल की गरी । **काजू भोजू**-(हिं०वि०) देखौवा, काम में न आने वाला ।
काञ्चन-(सं०नपु०) काला नमक, साँचर नमक, सुवर्ण, सोना, पद्म केशर, चम्पा, धन, चमक, गूलर, धतूरा, कचनार का वृक्ष, हरताल ।
काञ्चनगिरि-(सं०पु०) सुमेरु पर्वत ।
काञ्चन जंघा-(हिं०) पूर्व हिमालय की सबसे ऊंची चोटी ।
काञ्चनी-(सं०स्त्री०) हल्दी, खिरनी ।
काञ्चनीय-(सं०वि०)सोने का बना हुआ
काञ्ची-(सं०स्त्री०) मेखला, करधनी ।
काञ्चीपुर-(सं०) मद्रास प्रान्त का एक प्रसिद्ध नगर ।
काट-(हिं०स्त्री०) छेदन, कटाई, कटा हुआ, पीड़ा, छल, मल्लयुद्ध का कौशल, ताश के खेलमें तुरुप का रंग, कीट, मल, कपट, घाव, धूर्तता ।
काटकी-(हिं० स्त्री०) बन्दर या भालू नचाने वाले नट की छड़ी ।
काटन-(हिं० स्त्री०) खण्ड, टुकड़ा, एक प्रकार का सूती धागा; (अं० कॉट्न् का अपभ्रंश ।)
काटना-(हिं०क्रि०) तीखे शस्त्र से टुकड़े करना, पीसना, रगड़ना, बनाना, निकालना, तैयार करना, भाग लगाना, डँस लेना, फाड़ना, देख पड़ना, मारना, असिद्ध या अप्रमाणित करना. छांटना, मिटाना, समय बिताना. चलना, नष्ट करना, छेंकना, तोड़ना, अलग करना, स्वच्छ करना, सहन न होना, धँसाना, घाव करना, कतरना, बुरे ढंग से धन कमाना, लकीर खींच कर लिखावट काटना, गणित म एक संख्या से दूसरी संख्या को ऐसा भाग देना जिसमें शेष न बचे, कारावास में समय बिताना, शरीर में किसी के काटने से छरछराना; **काटो तो खून नहीं**-बिलकुल स्तब्ध हो जाना; **काटने दौड़ना**-चिड़चिड़ाना ।
काटर-(हिं०वि०) देखो कट्टर ।
काटू-(हिं०पुं०) काटनेवाला, भयानक,

डरावना ।

काठ-(हिं० पु०) काष्ठ, लकड़ी, इन्धन, लकड़ी की बनी हुई बेड़ी, कलन्दरा ; **काठकबाड़**-निरर्थक टूटी फुटी सामग्री ; **काठ का उल्लू**-बड़ा मूर्ख मनुष्य; **काठ होना**-स्तब्ध होना; **काठकी हांडी**-एसा पदार्थ जो केवल एकबार ही धोखा दे सके ।

काठड़ा-(हिं०पु०) काठ की बनी हुई बड़ी परात, कठौता ।

काठमाण्डू-नेपाल राज्य की राजधानी का नाम ।

काठिन्य-(सं०नपुं०) कठिनता, कड़ापन, निष्ठुरता ।

काठी-(हिं० स्त्री०) घोड़े या ऊंट के पीठ पर रखने की खोगोर (गद्दी) जिसके नीचे काठ लगा होता है, डील डौल, शरीर की गठन, ढाँचा, तलवार की खोल (वि०) काठियावाड़ संबंधी ।

काठों-(हिं०पु०) एक प्रकार का पंजाबी धान ।

काढ़ना-(हिं०क्रि०) खींचना, निकालना, देखाना, प्रत्यक्ष करना, अलग करना, चित्रकारी करना, सूई से बेल बूटे बनाना, ऋण लेना, पकाना, छानना

काढ़ा-(हिं०पु०) क्वाथ, उबाली हुई ओषधि ।

काण-(सं०पु०) कौवा (वि०) एक आंख वाला, काना ।

काणत्व-(सं०नपुं०) कानापन ।

काण्ड-(सं० पु०) टुकड़ा, बाण, तीर, परिच्छेद, अवसर, प्रस्ताव, सूनी जगह, व्यापार, काम, पर्व, बोड़ी, लंबी हड्डी, विभाग ।

काण्डनी-(सं० स्त्री०) नागवल्ली, पान की लता ।

कात-(हिं० पुं०) भेंड के बाल काटने की कैंची ।

कातना-(हिं० क्रि०) रूई को बट कर तागा बनाना, चरखा चलाना ।

कातर-(सं०वि०) व्याकुल, भयभीत, डरा हुआ, विवश, चचल, अधीर, डँवाडाल, दुःखित (हिं०स्त्री०) कोल्हू का पटरा जिसपर बैठकर हाँकने वाला बैलों को चलाता है ।

कातरता-(सं०स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट अधीरता, भीरुत्ता, चंचलता ।

कातर्य-(सं०नपुं०) देखो कातरता ।

काता-(हिं० पु०) सूत, डोरा, तागा ; **बुढ़िये का काता**-एक प्रकार की मिठाई जो महीन तागे के समान होती है ।

कातिक-(हिं०पुं०) कार्तिक का महीना ।

कातिकी-(हिं०स्त्री०) कार्तिक महीने की पूर्णमासी ।

काती-(हिं०स्त्री०) कैंची, कतरनी, चाकू, छुरी, छोटी तलवार ।

कात्यायन-(सं०पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम, एक बौद्ध आचार्य ।

कात्यायनी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, गेरुवा वस्त्र पहिरे हुए अधेड़ विधवा, कात्यायन ऋषि की पत्नी ।

काथ-(हिं० पु०) कत्था ; **काथरी**-(हिं० स्त्री०) कन्था, कथरी ।

काथिक-(सं० वि०) अच्छी अच्छी कथा बनाने वाला, कथा संबंधी ।

कादम्ब-(सं० पु०) कलहंस, कदम का फूल, बाण ।

कादम्बरी-(सं०स्त्री०) मद्य कोयल, सरस्वती, वांणी, मैना, बाणभट्ट विरचित कथा की नायिका ।

कादम्बिक-(सं०वि०)भोजन बनानेवाला

कादम्बिनी-(सं०स्त्री०) मेघमाला, घटा ।

कादर-(हिं०वि०) देखो कातर ।

कादा-(हिं०पुं०) जलपोत की पटरी ।

कादिरी-(अ०स्त्री०) चोली ।

कान-(हिं०पुं०) सुनने की इन्द्रिय,कर्ण, श्रवण, सुनने की शक्ति, हलके आगे कूड़ चौड़ा करने के लिये लगाया हुआ लकड़ी का टुकड़ा, कान के आकार का किसी पदार्थ का भाग, कन्ना, सोने का कान में पहिरने का एक आभूषण, टेढा या भद्दा कोना, चारपाई का टेढापन, तराजू का पसंघा, नावकी पतवार, तोप या बंदूक की रंजकदानी, प्याली; **कान उठाना**-आहट लेना, चौकन्ना होना; **कान उमेठना**-प्रतिज्ञा करना; **कान करना**-सुनना; **कान काटना**-बड़कर होना; **कान खड़े करना**-सावधान होना; **कान खाना**-कोलाहल करना; **कान पूंछ दबाकर चल देना**-चुपके से भाग जाना; **कान देना**-ध्यान लगाना; **कान पकड़ना**-अपनी अशुद्धि को मान लेना; **कान फुँकवाना**-गुरुमुख होना, मंत्र की दीक्षा लेना; **कान फूंकना**-गुरु मुख करना, चेला बनाना; **कान का पतला**-बिना सोचे विचारे किसीके कहे को सच्चा मान लेने वाला; **कान भरना**-किसी का मन किसी के विरुद्ध बातें करके जमा देना; **कान में तेल डाले बैठना**-सुनकर भी ध्यान न देना, उपेक्षा करना; **कान में डालना**-सुनाना; **कानों कान खबर न देना**-किसी विषयको अत्यन्त गुप्त रखना; **कान पर हाथ धरना**-सर्वथा अस्वीकार करना ।

कानक-(सं०नपुं०) जायफल, धतूरे का बीज ।

कानड़ा-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम (हिं०वि०) काना ।

कानन-(सं०नपुं०) वन जंगल, गृह, घर ।

काना-(हिं०वि०) काण,एक आंख वाला, एकाक्ष, कीड़ेसे खाया हुआ (अन्न) कन्ना,वक्र,टेढा,तिरछा (पुं०) आकार की मात्रा जो अक्षरोंमें लगाई जाती है, पासे पर की बिन्दी ।

कानाकानी-(हिं० स्त्री०) गुप्त वार्ता, कानाफसी ।

काना (फुसकी) फूसी-(हिं०स्त्री०) गुप्त बात, कानमें धीरेसे कही हुई बात ।

कानाबाती-(हिं०स्त्री०) देखो कानाफूसी

कानावेज़-(हिं० पु०) एक प्रकार का महीन वस्त्र ।

कानि-(हिं०स्त्री०) लोकलज्जा, मर्यादा, शिक्षा, सीख ।

कानिद-(हिं०पु०) हक्काक जिस बांस की खमाची से खरादते समय नगीने को दबाते है ।

कानी-(हिं०स्त्री०) एक आँखवाली स्त्री, सबसे छोटी हाथ की अगुली; **कानी कौड़ी**-फूटी हुई कौड़ी, अति तुच्छ पदार्थ ।

कानी-(सं०पु०) अविवाहित कन्या का पुत्र ।

कानूनियां-(हिं०) नियम व्यवस्था जानने वाला ।

कान्त-(सं०पुं०) कुंकुम,रोगी,कान्तलोह, चन्द्रमा,श्रीकृष्ण, स्वामी, पति,विष्णु, शिव, कार्तिकेय, वसन्त ऋतु, कामदेव, प्रियतम, चकवा, वर्षाकाल (वि०) मनोहर,सुन्दर, अभिलाषा कियाहुआ

कान्तता-(सं०स्त्री०) सौन्दर्य,स्वामित्व ।

कान्तव-(सं०) देखो कान्तता ।

कान्तलोह-(सं० नपुं०) अयस्कान्त, इस्पात लोहा ।

कान्ता-(सं० स्त्री०) पत्नी, सुन्दर स्त्री, बड़ी इलायची, सफ़ेद दूब, नागरमोथा, रेणुका, बालू ।

कान्तायस-(सं०नपुं०) कान्तलोह,चुंबक लोहा ।

कान्तार-(सं०नपुं०) वन, जंगल, बांस, दुर्गम पथ, गड्ढा, छेद, दुर्भिक्ष, छोटा सा रोग ।

कान्ति-(सं०स्त्री०) दीप्ति,चमक, शोभा, इच्छा, दुर्गा, गंगा, चन्द्रमा की एक कला ।

कान्तिकर-(सं०वि०)सौन्दर्य बढाने वाला

कान्तिदायक-(सं०वि०) शोभा देनेवाला

कान्तिमान्-(सं०पु०) कान्तियुक्त (पुं०) चन्द्रमा, कामदेव ।

कान्तिहर-(सं०वि०) सौन्दर्य नाश करने वाला ।

कान्दू-एक जाति, भूजा ।

कान्यकब्ज-(सं०स्त्री०) आधुनिक कन्नौज का प्राचीन नाम,इस देशका निवासी, इस देशका ब्राह्मण ।

कान्ह-(हिं० पु०) श्रीकृष्ण ।

कान्हड़ा-(हिं०पु०) एक राग का नाम

कान्हर कान्हरा-(हिं० पुं०) श्रीकृष्ण, कोल्हूकी वह लकड़ी जो इसके कमर में बंधी होती है ।

कापटक-(सं०पु०) दूसरेका मर्म जानने वाला, वंचक ।

कापट्य-(सं०नपुं०) कपटता, धूर्तता ।

कापड़-(हिं०पुं०) देखो कपड़ा ।

कापड़ी-(हिं०पुं०) कपड़ा बेंचने वाला ।

कापथ-(सं०पुं०) विपथ,कुपथ, बुरामार्ग

कापर-(हिं०पु०) कपड़ा, वस्त्र (अ०पु०) ताबा, 'ताम्र' ।

कापाटिक-(सं० नपुं०) छोटा कपाट या किवाड़ा ।

कापालिक-(सं०पुं०) वाममार्गी तान्त्रिक साधु जो मद्य मांस खाते हैं तथा हाथमें मनुष्य का कपाल रखते हैं ।

कापाली-(सं०स्त्री०) कौवाठोंठी (पु०) शिव ।

कापिल-(सं० पु०) सांख्य दर्शन जानने वाला, कपिल मुनिका बनाया हुआ ग्रन्थ, भूरा रंग (वि०) कापिल मुनि संबंधी, भूरे रंग का ।

कापिश-(सं०नपुं०) माधवी के फूलोंकी बनी हुई मदिरा ।

कापुरुष-(सं० पुं०) निन्दित पुरुष, डरपोक आदमी ।

कापुरुषता-(सं०स्त्री०) भीरुता, निकम्मापन ।

कापुरुषत्व-(सं०नपुं०)देखो कापुरुषता ।

काबर-(हिं०वि०) चित्रित, चिकबरा, अनेक रंग का ।

काबला-(हिं०पुं०) जलपोत का रस्सा या जंजीर (अं०केबल् का अपभ्रंश) बड़ी ढिबरी ।

काबिस-(हिं०पुं०) एक रंग जिससे रंग कर मिट्टी के बरतन पकाये जाते हैं।

काबी-(हिं०स्त्री०) मल्लयुद्ध की एक पेंच युक्ति ।

काबुल-अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी, अफ़ग़ानिस्तान की एक नदी जिस पर यह नगर बसा है ।

काबुली-(हिं०वि०) काबुल संबंधी, काबुल का निवासी ।

काम-(सं०नपुं०) शुक्र, वीर्य, यथेष्ट वार्ता, वाञ्छा, स्वीकार वाक्य, अनुमति, इच्छा, महादेव, विष्णु, कामदेव, तृष्णा, सहवास की इच्छा, चार वर्गो में से एक ।

काम-(हिं०पु०) कार्य, कर्म, कठिन कार्य, उद्देश्य, व्यवहार, सम्बन्ध, व्यवसाय, रचना, प्रयोजन, नकाशी; **काम चलना**-निरन्तर काम का होना; **काम होना**-मृत्यु प्राप्त होना; **काम निकलना**-कार्य सिद्ध होना; **काम पड़ना**-पाला पड़ना; **काम आना**-उपयोगी होना; **काम का**-उपयोगी, **काम मे लाना**-व्यवहार करना ।

कामकला-(सं०स्त्री०) कामदेव की पत्नी रति, मैथुन, चन्द्रमा की सोलह कला, तन्त्रोक्त विद्या विशेष ।

काम काज-(हिं०पुं०) व्यवसाय, **कामकाजी**-(हिं०वि०) व्यवसायी, कारबारी

काम केलि (सं०स्त्री०)कामक्रीड़ा, रति

कामकूट-(सं०पुं०) वेश्या प्रिय, रंडीबाज । **कामग** (सं०वि०) इच्छानुसार चलने वाला । कामचर (सं०वि०) स्वेच्छाचारी, **कामगार**-(हिं०पुं०) राज्य कार्य का प्रबन्ध करने वाला, कामदार ।

काम चलाऊ-(हिं०वि०) किसी न किसी

प्रकार से काम चला देने वाला।
कामचार-(सं०वि०) स्वच्छन्द विचरने वाला। **कामचारी**-(सं०वि०)कामुक, स्वेच्छाचारी।
कामचोर-(हिं०वि०) काम करने से चित्त चोराने वाला, आलसी, सुस्त।
कामज-(स०वि०) वासना या अभिलाषा से उत्पन्न।
कामजित्-(सं०पुं०) काम को जीतने वाले, महादेव, कार्तिकेय, जिनदेव।
कामजज्वर, कामज्वर-(सं०पु०) एक प्रकार का ज्वर जो अखण्ड ब्रह्मचर्य पालन करने से स्त्री पुरुष को होता है।
कामठ-(सं०वि०) कमण्डलु सम्बन्धी। कछुआ सम्बन्धी।
कामड़िया-(हिं०पु०) रामदेव मत के चमार साधु।
कामतरु-(सं०पुं०) कल्प वृक्ष।
कामता-(हिं०पु०) चित्रकूट।
कामतिथि-(स०स्त्री०) त्रयोदशी, तेरस।
कामद-(सं०वि०) मनोरथ पूर्ण करने वाला, कामदाता,। **कामदगिरि**-(सं०पु०)चित्रकूट पर्वत। **कामदमणि**-(स०पुं०) चिन्तामणि।
कामदहन-(सं०पुं०) कामदेवको भस्म करने वाले शिव।
कामदा-(स०स्त्री०) कामधेनु, नागवल्ली,पान, दश अक्षर का एक छन्द
कामदानी-(हिं०स्त्री०) बादले के तार या सलमे सितारे का कपड़े पर काम
कामदार-(हिं०पु०) राज्य का प्रबंध करने वाला, कारिन्दा, (वि०) कामदानी या कलाबतू के बैल बूटे बना हुआ।
कामदुधा, कामदुहा-(सं०स्त्री०) कामधेनु।
कामदूती-(सं०स्त्री०) परबल की लता, कोयल।
कामदेव-(सं०पु०)कन्दर्प,मदन,अनङ्ग।
कामधाम-(हिं०पुं०) कामकाज, धन्धा, व्यवसाय।
कामधेनु-(सं०स्त्री०) सब मनोरथ को पूर्ण करने वाली गाय,स्वर्ग की गाय
कामध्वज-(सं०पुं०) मत्स्य, मछली।
कामना-(सं०स्त्री०) मनोरथ, इच्छा।
कामनाशक-(सं०पुं०) काम का नाश करने वाले शिव।
कामबाण-(सं०पुं०) काम देवके पांच बाण यथा-मोहन, उन्मादन, सन्तापन, शोषण और निश्चेष्टन।
कामभूरह (हिं०पुं०) कल्पवृक्ष
काममर्दन-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
काममाली-(सं०पु०) गणेश।
कामरिपु-(स०पुं०) कामदेव के शत्रु महादेव, शिव।
कामरि कामरी-(हिं०स्त्री०) कम्बल, कमरी कांवर। **कामरुचि**-(सं०स्त्री०) एक अस्त्र जिसको विश्वामित्र ने अन्य शस्त्रों को विफल करने के लिये रामचन्द्र को दिया था।
कामरू-(हिं०) देखो कामरूप।
कामरूप-(स०पुं०) आसाम प्रदेश का विस्तृत प्रदेश, जो पुण्य तीर्थ माना जाता है यहां कामाख्या देवी का प्राचीन मन्दिर है। **कामरूपत्व**-(सं०नपुं०) एक सिद्धि विशेष जिसके प्रभाव से साधक मनमाना रूप साधारण कर सकता है।
कामरेखा-(सं०स्त्री०) वेश्या, रण्डी।
कामल-(स०पु०) कमल रोग जिसमें सम्पूर्ण शरीर पीली पड़ जाती हैं।
कामला-(स०स्त्री०) पाण्डु रोग, कामल
कामली-(स०वि०) कामला रोगसे पीड़ित। **कामलि**-(हिं०स्त्री०) छोटा कम्बल, कमरी।
कामवती-(स०स्त्री०) मैथुन की अभिलाषा करने वाली स्त्री)
कामवल्लभ-(स०पुं०) आम का वृक्ष, वसन्त ऋतु।
कामवान्-(स०पुं०) सम्भोग की इच्छा करने वाला।
कामविद्ध-(सं०वि०) मैथुन की इच्छा से व्याकुल।
कामशर-(स०पु०) कामदेव के बाण।
कामशास्त्र-(स०नपुं०) वह शास्त्र जिसमे स्त्री पुरुषों के परस्पर समागम आदि व्यवहारों का वर्णन हो, अभीष्ट संपादक शास्त्र रतिशास्त्र।
कामसखा-(स०पु०) वसन्त ऋतु, आम का वृक्ष।
कामहा-(सं०पु०) महादेव, विष्णु।
कामा-(हिं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
कामाक्षी-(सं०स्त्री०) एक तन्त्रोक्त देवी का नाम।
कामाख्या-(स०स्त्री०) एक देवी का नाम
कामाङ्कुश-(स०पुं०) शिश्न, उपस्थ।
कामातुर-(सं०वि०) काम के वेग से व्याकुल।
कामानुज-(सं०पुं०) क्रोध, रोष।
कामान्ध-(सं०वि०) काम के वेग से हिताहित का ज्ञान न रखने वाला।
कामायुध-(सं०पुं०) आम का वृक्ष शिश्न, उपस्थ।
कामारथी-(हिं०) देखो कामार्थी।
कामारि-(सं०पुं०) कामदेवके शत्रु शिव
कामार्त-(स०वि०) कामपीड़ित।
कामावतार-(सं०पुं०)एक छ छ मात्राओं का चार पाद का छन्द।
कामवशायिता-(सं०स्त्री०)सत्यसकल्पता, अणिमादि आठ सिद्धियों में से एक।
कामाशन-(स०नपुं०)इच्छानुसार भोजन
कामासक्त-(सं०वि०)काम के वशीभूत।
कामिनी-(सं०स्त्री०) कामयुक्ता स्त्री, सुन्दरी, भीरु स्त्री,मद्य, एक रागिणी **कामिनीकान्त**-(सं०पुं०) एक छन्द जिसमें छ छ मात्रा के चार पाद होते हैं। **कामिनीमोहन**-(सं०पु०) स्रग्विणी छंद।
कामी-(सं०पु०) चकवा,कपोत,चन्द्रमा, विष्णु, सारस पक्षी (वि०) इच्छुक, कामुक, प्यार करनेवाला, अभिलाषी, प्रेमी (हिं०स्त्री०) कांसे या अन्य धातु की ढली हुई छड़।
कामुक-(स०वि०) कामी, अभिलाषी, इच्छुक, चाहनेवाला, विषयी। **कामुकता**-(सं०स्त्री०) विषय वासना।
कामेश्वरी-(स०स्त्री०) तन्त्र के अनुसार एक भैरवी का नाम, कामाख्या की पांच मूर्ति में से एक।
कामोद-(स०पु०)एक प्रकार की रागिणी
कामोद्दीपक-(स०वि०) मैथुन की इच्छा प्रबल करनेवाला। **कामोद्दीपन**-(स०नपु०)मैथुन की इच्छा तीव्र होना
कामोपहत-(सं०वि०) कन्दर्प के बाणों से व्याकुल।
काम्बोज-(सं०पुं०) काम्बोज देश का घोडा, कायफल।
काम्य-(सं०वि०) कमनीय, सुन्दर, कामना युक्त. कर्तव्य करने योग्य, अभीष्ट कर्म; **काम्यकर्म**-अभीष्ट सिद्धि के लिये किया हुआ कर्म।
काम्यता-(सं०स्त्री०) कमनीयता।
काम्येष्टि-(स०स्त्री०)कामना की सिद्धि के लिये किया जानेवाला यज्ञ।
काय-(सं०नपुं०)शरीर, देह, मूर्ति समूह, स्वभाव, प्रजापति तीर्थ, गृह, ब्रह्मा, लक्ष्य, प्राजापत्य विवाह, मूलधन, वृक्ष का तना। **कायल**-(स०वि०) शारीरिक, देह सबंधी। **कायचिकित्सा**-(सं०स्त्री०) शरीर के प्रत्येक अङ्ग पर प्रभाव डालनेवाले रोगों की चिकित्सा।
कायफल-(स०नपुं०) एक वृक्ष जिसकी छाल औषधि में प्रयोग होती है।
कायबन्धन-(स०नपुं०) परिकर,कमरबद
कायर-(हिं०वि०)भीरु, कातर, डरपोक **कायरता**-(हिं०स्त्री०) भीरुता।
कायली-(हिं०स्त्री०) ग्लानि, शर्म।
कायव्यूह-(स०पुं०)शरीर के बात,पित्त, श्लेष्मा, त्वक् इत्यादि सात धातुओं का विन्यास,अर्थात् इनके स्थान और विभाग का क्रम, कर्मभोग के लिये योगियों द्वारा कल्पित कायसमूह।
कायसौख्य-(सं०नपुं०) शरीर का सुख।
कायस्थ-(सं०पु०)शरीर में रहनेवाला, अन्तर्यामी परमेश्वर, एक जाति विशेष जो चित्रगुप्तदेव को अपना आदि पुरुष मानते हैं।
कायस्था-(सं०स्त्री०) बड़ी इलायची, तुलसी, आमला, हर्रै।
काया-(सं०स्त्री०) तनु, शरीर; **कायापलटना**-नया रूप धारण करना।
कायाकल्प-(हिं०पु०) औषधियों के प्रभाव से वृद्ध शरीर को युवा बनाने की विधि। **कायापलट**-(हिं०स्त्री०) काया तरिवर्तन, बहुत बड़ा परिवर्तन, बड़ा हेर फेर, एक शरीर के रूप को दूसरे शरीर में पलटना।
कायिक-(स० वि०) शरीर संबंधी, शरीर से किया हुआ, शरीर से उत्पन्न।
कार-(स०पु०) वध, निश्चय, कार्य, क्रिया, करने या बनाने वाला, कोई कर्मपद पूर्व मे रहने से 'कार' शब्द कर्ता अर्थ में आता है यथा-कर्मकार, सुवर्णकार इत्यादि; वर्णमाला के अक्षर के बाद जोड़ने से उस अक्षर का स्वतन्त्र बोध करता है; यथा अकार, ककार इत्यादि।
कारक-(स०वि०) करने वाला, (यथा आनन्दकारक, हितकारक इत्यादि) व्याकरण में क्रिया के साथ संबंध प्रगट करने वाले को कारक कहते हैं। **कारकदीपक**-(स०नपु०) दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें कई क्रियाओं का एक ही कर्ता रहता है।
कारकर-(स०वि०) काम करने वाला।
कारक हेतु-(सं०पु०) प्रधान कारक।
कारज-(हिं०पु०) कार्य, काम।
कारटा-(हिं०पुं०) करट, कौवा।
कारण-(स०पु० नपु०) हेतु, निमित्त, साधन, उद्देश्य, इन्द्रिय, प्रमाण,मूल, जड़, आदि, शरीर, कर्म, काम, कार्यवाही। **कारण जल**-(सं०नपु०) ब्रह्माण्ड की सृष्टिका कारण, जल।
कारणता-(स०स्त्री०) हेतुता, कारण का कर्म। **कारणत्व**-(स०नपुं०) देखो कारणता। **कारणभूत**-(स०वि०) कारण स्वरूप। **कारणमाला**-(स०स्त्री०) हेतुओंकी श्रेणी, एक अर्थालकार जिसमे किसी कारण से उत्पन्न कोई कार्य बाद में कहे हुए किसी वाक्य का हेतु वर्णन करता है **कारणवादी**-(सं०पु०) सम्पूर्ण विषय के कारण को स्वीकार करने वाला। **कारणविहीन**-(स०वि०) कारण रहित, **कारणशरीर**-(सं० नपुं०) आनन्दमय कोष, सुषुप्ति की अवस्थामें वह कल्पित शरीर जिसमें शरीर की इन्द्रियां तो काम नहीं करतीं परन्तु इसमें अहंकार आदिका संस्कार बना रहता है।
कारणा-(सं०स्त्री०) यातना,बड़ी वेदना, नरकयन्त्रणा।
कारणिक-(सं०वि०) परीक्षक, जांच करने वाला।
कारण्डव-(स०पु०)एक प्रकार का हंस, बत्तक।
कारतूस-(हिं०पु०अं०काट्रिज का अपभ्रंश) मोटे कागज की एक नली जिसमें गोली,छर्रा तथा बारूद भरी रहती है
कारन-(हिं०पु०) कारण, करुणा, **कारन कराना**-जादू टोना कराना।
कारनी-(हिं०पुं०) प्रेरक,भेदक,भेदिया, ईश्वर।
कारवारी-(हिं०वि०) कार्यकर्ता।
कारयिता-(सं०वि०) दूसरे को काम

में लगाने वाला ।
कारा-(सं०स्त्री०) कारागार, बन्धन, पीड़ा, कष्ट, शब्द, दुःख, (हिं०वि०) काला
कारागार, कारागृह-(सं०नपुं०) बंधन-गृह, **कारापाल**-(सं०पुं०) बंदीगृह का रक्षक । **कारावास**-(सं०पुं०) कारावास में बंद रहने की स्थिति, **कारावेश्म**-(सं०पुं०)देखो कारागार।
कारिक-(हिं०स्त्री०) करगह की ताना ठीक करने को चिकनी लकड़ी ।
कारिका-(सं०स्त्री०) अभिनेत्री, काम, विवरण, श्लोक, विशिष्ट कविता, बहु अर्थ बोधक अल्प अक्षर, नटी, मर्यादा, सीमा किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या, एक रागिणी ।
कारिख-(हिं०स्त्री०) कालिमा, कालापन, काजल, कलंक, धब्बा ।
कारिणी-(सं०स्त्री०) अपना काम करने वाली स्त्री ।
कारित-(सं०वि०) दूसरे के द्वारा कराया हुआ ।
कारिता-(सं०स्त्री०) अधिक वृद्धि, अधिक ब्याज ।
कारी-(हिं०वि०)करने वाला,बनाने वाला
कारु-(सं०पुं०) शिल्पी, शिल्पकार ।
कारुणिक-(हिं०वि०) दयावान् ।
कारुण्य-(सं०पुं०) करुणा, दया,
कारून्ती-(हिं०पुं०) एक विशेष जाति का घोड़ा ।
कारो-(हिं०वि०) देखो काला ।
कारोंछ-(हिं०स्त्री०) कालिमा, धुवें की कारिख ।
कार्णिक-(सं०वि०) कान सबधी ।
कार्तवीर्य-(सं०पुं०) चन्द्रवंशी राजा कृतवीर्य का पुत्र, हैहय,सहस्त्रार्जुन ।
कार्तिक-(सं०पुं०) जिस महीने में पूर्णमासी कृत्तिका नक्षत्र युक्त रहती है, आश्विन और अगहन के बीच का महीना; **कार्तिकशालि**-कार्तिक के महीने में पकने वाला धान ।
कार्तिकेय-(सं०वि०) कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला (पु०) षडानन
कार्त्स्न्य-(सं०नपुं०) सम्पूर्णता, अन्त ।
कार्दम-(सं०वि०) पंकिल, कीचड़ से भरा हुआ ।
कार्पट-(सं०पुं०) पुराने वस्त्र का टुकड़ा, चिथड़ा ।
कार्पण्य-(सं०नपुं०) कृपणता, कंजूसी,
कार्पास-(सं०पुं०) कपास का वृक्ष, रूई का पौधा। **कार्पासिक**-(सं०वि०) रूई का बना हुआ ।
कार्मण-(सं०नपुं०) जादू, टोना, मन्त्र तन्त्रादि प्रयोग, (वि०) कर्मदक्ष, काम मे चतुर। **कार्मणत्व**-(सं०नपुं०) जादू टोना ।
कार्मना-(हिं०पुं०) मन्त्र तन्त्र का प्रयोग, कृत्या ।
कार्मार-(सं०पु०) कर्मकार, लोहार ।
कार्मिक-(सं०वि०) कर्म में नियुक्त, काम में लगा हुआ,निर्मित,बनाया हुआ
कार्मुक-(सं०नपु०) धनुष, धनुष के आकार का एक शस्त्र, चाप, बांस, इन्द्रधनुष, नवीं राशि, रूई चुनने का यन्त्र, बकाइन, स्वच्छ खैर,(वि०) कार्यक्षम, कामकाजी ।
कार्य-(सं०नपुं०) कर्म, काम, कर्तव्य, व्यापार, धन्धा, हेतु, फल, प्रयोजन, परिणाम उद्देश्य, (वि०) करने योग्य, लगाया जाने वाला; **कार्यकर**-काम चलाने वाला । **कार्यकर्ता**-(सं०पु०) कार्यकारक, काम करने वाला, कर्मचारी । **कार्य कारण**-(सं०नपु०) मिला हुआ कार्य और कारण । **कार्यकारणभाव**-(सं०पु०) कार्य और कारण का संबंध, कारण और परिणाम की मिली हुई स्थिति । **कार्यकारी**-(सं०पु०) काम करने वाला। **कार्यकुशल**-(सं०वि०) काम करने मे निपुण ।
कार्यक्षम-(सं०वि०) देखो कार्यकुशल
कार्यभ्रष्ट-(सं०वि०) काम मे छूटा हुआ । **कार्यवश**-(सं०क्रि०वि०) काम के कारण से । **कार्यशेष**-(सं०पु०) काम का अवशेष। **कार्यसम**-(सं०पु०) न्याय के मत के अनुसार चौबीस जाति के अन्तर्गत एक जाति ।
कार्यसागर-(सं०पु०)गुरुकार्य,बड़ा काम।
कार्यसाधक-(सं० वि०) काम पूरा करने वाला। **कार्यसाधक**-(सं०नपु०) आर्यसिद्धि, अभीष्ट सिद्धि । **कार्य-हन्ता**-(सं०वि०) काम बिगाड़ने वाला
कार्याधिकारी-(सं०पुं०) पदाधिकारी,
कार्याध्यक्ष-(सं पु) देखो कार्याधिकारी। **कार्यान्तर**-(सं०नपु०) अन्य कार्य, दूसरा काम । **कार्यार्थ**-(सं० अव्य०) कार्य के लिये, काम के लिये
कार्यार्थी-(सं०वि०) कार्य की सिद्धि चाहने वाला, **कार्यालय**-(सं०पु०) कार्य का स्थान,
कार्यवाई-देखो कारवाई ।
कार्षापण-(सं०पुं०) प्राचीन समय की एक मुद्रा, कहान शब्द इसीका अपभ्रंश है ।
काल-(सं०नपु०) लोहा, मृत्यु, महाकाल, समय, शनिग्रह, शिव, विष्णु, यम, अवसर, दुर्भिक्ष,अकाल, मंहगी, अन्तिम काल, कृष्णवर्ण, काला रंग, लाल चीते का वृक्ष, (हिं०क्रि०वि०) कल; **कालका मारा**-(टूटा) अति दरिद्र । **कालकण्ठ**-(सं०पु०) शिव, महादेव, मयूर,मोर, खंजन पक्षी,जलकुक्कुट,अंधा कौवा ।
कालकर्णिका-(सं०स्त्री०) अलक्ष्मी, दरिद्रता । **कालधर्म**-(सं०नपुं०)मृत्यु,
कालकवि-(सं०पुं०) अग्नि, आग ।
कालका-(सं०स्त्री०) कश्यप की पत्नी का नाम ।
कालकुण्ठ-(सं०पुं०) यम ।
कालकट-(सं०पु०) एक भयंकर विष, काल वत्सना, बचनाग, एक पर्वत का नाम। **कालकूटक**-(सं०पु०)कुचले का वृक्ष, शिव ।
कालकेशी-(सं०स्त्री०)काले बाल वालीस्त्री
कालकेतु-(सं०पु०) एक राक्षसका नाम ।
कालकोठरी-(हिं०स्त्री०)बन्दीगृह की एक संकुचित और अन्धेरी कोठरी जिसमें अलग रहनेवाले बंदी बन्द किये जाते हैं ।
कालक्रम-(सं०पु०) समय का प्रवाह ।
कालक्रिया-(सं०स्त्री०) समय पर किया हुआ काम । **कालक्षेप**-(सं०पु०) समय को बिताना, समय नष्ट करना । **काल-खञ्ज**-(सं०पुं०) एक राक्षस का नाम।
कालखण्ड-(सं०नपु०) यकृत, कलेजा, कलेजे का एक रोग । **कालगङ्गा**-(सं०स्त्री०) यमुना नदी । **कालगण्डैत**-(हिं०पु०) काली चित्तियो वाला सर्प । **कालगन्ध**-(सं०पु०) काला चन्दन, एक प्रकार का सर्प ।
कालग्रन्थि-(सं०पु०) वत्सर, साल ।
कालग्रास-(सं०पु०) मृत्यु । **कालचक्र**-(सं०नपु०) समय का उलट फेर, एक अस्त्र विशेष ।
कालज्ञ-(सं०पु०) कुक्कुर, मुर्गा (वि०) उचित समय को जानने वाला, ज्योतिषी । **कालज्ञान**-(सं०नपु०) ज्योतिष शास्त्र, उपयुक्त समय का ज्ञान, ठीक समय की पहिचान, मृत्यु बोधक चिह्न, मरने का समय जान लेना ।
कालञ्जर-(सं०वि०) मृत्यु निवारक, मृत्यु को हटाने वाला, एक पर्वत
कालतुल्य-(सं०वि०) मृत्यु के समान,
कालतुष्टि-(सं० स्त्री०) समयापेक्षी सन्तोष, सांख्य मत से समय आने पर स्वतः कार्यसिद्धि हो जाने का सिद्धान्त ।
कालत्रय-(सं०नपु०) भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल ।
कालदण्ड-(सं०पु०) मृत्युदण्ड, मृत्यु का चपेटा ।
कालदमनी-(सं०स्त्री०) मृत्यु निवारिणी दुर्गा ।
कालधर्म-(सं०पु०) समयानुसार व्यवहार, समय का स्वभाव, मृत्यु, विनाश, समय का काम ।
कालनाग-(सं०पु०) काला सर्प जिसके काटने से अवश्य मृत्यु होती है ।
कालनाथ-(सं०पु०) महादेव, कालभैरव।
कालनाभ-(सं०पु०)हिरण्यकशिपु कापुत्र।
कालनिधि-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
कालनिरूपण-(सं०पु०) समय का स्थिर करना ।
कालनिर्णय-(सं०पु०) समय का निर्धारण
कालनिशा-(सं०स्त्री०) दीवाली की रात, भयंकर रात, अंधेरी रात ।
कालनेमि-(सं०पु०) रावण के मामा का नाम, एक राक्षस जिसने देवताओं को जीत कर स्वर्ग में अधिकार जमाया था; **कालनेमिरिपु**-**विष्णु**, हनुमान ।
कालपक्व-(सं० वि०) अपने आप समय पर पकने वाला ।
कालपर्णी-(सं०स्त्री०) काली तुलसी ।
कालपाश-(सं०पु०) समय का बन्धन, फांसी, समय का वह नियम जिसके द्वारा भूत प्रेत बंधे रहते हैं और किसी प्रकार का उपद्रव नहीं कर सकते ।
कालपुरुष-(सं०पुं०)परमेश्वर का विराट रूप, यम।
कालप्रभात-(सं०नपु०) शरदऋतु, बुरा दिन ।
कालदंजर-(हिं०पु०) पुरानी परती, जो भूमि बहुत दिनों तक जोती बोयी न गई हो ।
कालबूत-(हिं०पुं०)कच्चा भराव जिसके ऊपर मेहराब बनाई जाती है, काठ का साँचा, जूता सीने का मोची का फर्मा, रस्सी बटने का फन्दा ।
कालभक्ष-(सं०पुं०) महादेव, शिव ।
कालभैरव-(सं०पु०) शिवके मुख्य गणों मे से एक।
कालमल्लिका-(सं०स्त्री०) काली तुलसी
कालमहिमा-(सं०स्त्री०) समय का माहात्म्य, समय की शक्ति ।
कालमूर्ति-(सं०स्त्री०) यम मूर्ति, कालमय।
कालमेघ-(सं०पु०) एक पौधा जो औषधि में प्रयोग होता है, कलपनाथ
कालयवन-(सं०पु०) यवनों का एक राजा जिसने मथुरा में जरासन्ध से युद्ध किया था ।
कालयापन-(सं०नपुं०) समय बिताना, कालक्षेप, निर्वाह ।
कालयोग-(सं०पुं०) समय का क्रम ।
कालरात्रि--(सं०स्त्री०) प्रलयरात्रि, जिसमे सारी सृष्टि प्रलय हो जाती है, अंधेरी और भयावनी रात, मृत्यु सूचक रात्रि दीवाली की रात, दुर्गा की एक मूर्ति, यम की बहिन, मनुष्य की आयु मे ७७ वर्ष ७ वे महीने ७ वे दिन की रात, इसके बाद मनुष्य नित्त नैमिति कर्म से छुटकारा पाताहै
कालरूप-(सं०वि०) काल के सदृश, मृत्यु के समान ।
कालवाचक, कालवाची-(सं०वि०)समय का ज्ञान करानेवाला, समय बतलाने वाला ।
कालवृन्त(सं०पु०) कुलत्थ, कुलथी ।
कालशुद्धि-(सं०स्त्री०) शुद्ध काल, शुभ कर्म सम्पादन करने का समय ।
कालसार-(सं०नपु०) काला हरिन, काली तुलसी, हरताल, राम नाम की पोथी ।
कालसिर-(हिं०पुं०) नाव के मस्तूल का सिरा ।
कालसूक्त-(सं०पुं०) वेद का एक सूक्त जिसमें काल का वर्णन किया गयाहै
कालसूत्र-(सं०नपुं०) फांसी की रस्सी ।
कालहर-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।

कालहानि-(सं०स्त्री०) समय क्षति, समय व्यर्थ बिताना।

काला-(हिं०वि०) कृष्ण, कोयले के रंग का, कलुषित, बुरा, प्रचण्ड, भारी, कालसर्प, काला सांप; **मुंह काला करना**-पाप करना, व्यभिचार करना; **मुंह काला होना**-कलंकित होना; **काले कोस**-बहुत दूरी पर।

कालाकन्द-(हिं०पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।

काला कलूटा-(हिं०वि०) अत्यन्त कृष्ण वर्ण, बहुत काले रंग का।

कालाकृष्ट-(सं०वि०) मृत्युपाश में पकड़ा हुआ, मृत्यु के पंजे में फँसा हुआ।

कालाक्षरिक, कालाक्षरी-(सं०पु०) ठीक समय पर पढ़नेवाला, विद्यार्थी

कालागांड़-(हिं०पु०) काला और मोटा गन्ना।

कालाग्नि-(सं०पु०) प्रलय काल की अग्नि, इस अग्नि के अधिष्ठाता रुद्र, पंचमुखी रुद्राक्ष।

कालाचोर-(हिं०पुं०) चतुर चोर, कापुरुष,बुरा आदमी। **कालाजीरा**-(हिं०पु०) स्याहजीरा, एक प्रकार का धान।

कालातिक्रम-(सं०पुं०) समय का लंघन, अवसर निकाल देने का कार्य।

कालातिरेक-(सं०पु०) निर्दिष्ट समय का बिताना।

कालातीत-(सं०नपु०) कालातिक्रम, समय का टल जाना, जो अपना समय बिता चुका हो, न्याय मत के अनुसार पांच प्रकार के हेत्वाभास में से एक मिथ्या तर्क भुलावा, साधन काल के अभाव समय में जो लगाया जाता है वह कालातीत कहलाता है, ऐसे हेत्वाभास से बाधित भी कहते हैं।

कालात्यक-(सं०पु०) काल स्वरूप परमेश्वर। **कालात्यय**-(सं०पु०) समय को नष्ट करना।

कालादाना-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लता जिसमें नीला फूल होता है, इसके फूल के बीज रेचक होते हैं।

कालाध्यक्ष-(सं०पुं०) सूर्य।

कालानमक-(हिं०पु०) सोंचर लवण।

कालानाग-(हिं०पुं०) काला सर्प,कुटिल मनुष्य।

कालान्तक-(सं०पुं०) यम।

कालान्तर-(सं०नपु०) दूसरा समय, समयान्तर, उत्पत्ति के बाद का समय; **कालान्तरविष**-ऐसा विष जिसका प्रभाव तत्काल नहीं देख पड़ता परन्तु बाद में होता है।

कालाप-(सं०पु०) सर्प का फन, राक्षस

काला पहाड़-(हिं०पु०) अत्यन्त भयानक वस्तु,।

काला पान-(हिं०पुं०) ताश में हुकुम का रंग।

काला पानी-(हिं०पु०) देश से निकाले जाने का दण्ड, आन्डेमन् और निकोबार टापू जहां पर देश निकाले बंदी भेजे जाते हैं, मद्य।

कालापोश-(हिं०वि०) काला वस्त्र पहिरे हुए।

कालाभुजङ्ग-(हिं०वि०) अत्यन्त काले रंग का।

कालाभ्र-(सं०नपु०) बरसने वाला काला बादल।

काला मोहरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का विषैला पौधा।

कालायस-(सं०नपु०) कान्त लोह।

कालवधि-(सं०पु०) नियत समय।

कालास्त्र-(सं०नपुं०) एक सघातक बाण का नाम।

कालि-(हिं०क्रि०वि०)गये दिन,आगामी दिन, कल।

कालिक-(सं०वि०) काम सम्बन्धी, समयोचित, दीर्घ काल तक रहने वाला।

कालिका-(सं०स्त्री०) काली, चण्डिका, कृष्णता, किन्नरी, रोमावली, नया मेघ, मादा कौवा, जटामासी, बादलों की पंक्ति, शृगाली, दूध का कीड़ा, मसी, मद्य, कौहिरा, सुवर्ण का दोष, काकड़ासिघी, बिछुवा पौधा, ककड़ी की लता, नील का पेड़, बिच्छू। **कालिका पुराण**-(सं० नपु०) एक उपपुराण जिसमें कालिका देवी का माहात्म्य का वर्णन है।

कालि काला-(हिं०क्रि०वि०) कदाचित् किसी समय।

कालिख-(हिं०स्त्री०) कालिमा, कलौंछ, धुवें से जमी हुई बुकनी; **मुंह में कालिख लगाना**-ऐसा अपमानित होना कि किसीको मुंह दिखलाने योग्य न रह जाय।

कालिङ्ग-(सं०नपु०) एक प्रकार का तरबूज, कुम्हड़ा, हाथी, सर्प, एक प्रकार का लौहा, इन्द्रजव, कलिङ्ग देश में उत्पन्न, कलिङ्ग देश का राजा।

कालङ्गी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी।

कालिञ्जर-(हिं०) संयुक्तप्रान्त के बांदा जिले का एक नगर, पुराने समय से यह महातीर्थ माना जाता है, पर्वत विशेष

कालिदास-(सं०पुं०) भारत के अति प्रसिद्ध महाकवि का नाम।

कालिनी-(सं०स्त्री०) आर्द्रा नक्षत्र।

कालिन्द-(सं०नपुं०) कालिङ्ग, तरबूज

कालिन्दी-(सं०स्त्री०) यमुना नदी, कृष्ण की एक पत्नी का नाम,एक रागिणी, उड़ीसा के एक वैष्णव सम्प्रदाय का नाम, बंगाल में खुलना जिले में बहने वाली यमना नदी।

कालिमा-(सं० स्त्री०) कालापन, मलिनता, मैल, कलंक, दोष, लांछन।

कालिय-(सं०नपु०) एक सर्प जिसको श्रीकृष्ण ने अपने वश में किया था, कलियुग (वि०) काल संबंधी; **कालिय दमन**-श्रीकृष्ण।

काली-(सं०स्त्री०) दुर्गा, पार्वती,कालिका, दश महाविद्याओं में से एक, अग्नि, रात्रि, घटा, काली औरत, निन्दा, काली बेत, काला जीरा।

कालीक-(सं०पु०) क्रौंच पक्षी, एक प्रकार का बकुला।

काली घटा-(सं०स्त्री०) उमड़ता हुआ काला बादल।

काली जबान-(हिं०स्त्री०) अशुभ भाषा, जिस जिह्वा से उच्चारण किया हुआ अशुभ वाक्य सच्चा निकलजावे

कालीजीरी-(सं०स्त्री०) छोटी जीरी, एक औषधि।

कालीदह-(हिं०पुं०) वृन्दावन में यमुना स्थान के जिस में कालिया नाग रहता था।

कालीन-(सं०वि०) काल सबंधी, यह शब्द प्रत्यय की तरह इस अर्थ मे प्रयोग होता है, यथा-पूर्वकालीन उत्तरकालीन, बहुकालीन इत्यादि।

कालीपुराण-(सं०नपु०) एक उपपुराण जिसमें काली विषय वर्णन किया हुआ है।

कालीमिर्च-(हिं०स्त्री०) मिरिच, गोलमिर्च

कालीयक-(सं०नपुं०) एक सुगंधित पीले रंग का काष्ठ, पीला मुसब्बर, अगर

कालीशीतला-(हिं०स्त्री०) शीतला या चेचक रोग जिसमें शरीर पर काले दाने निकालते हैं।

कालुष्य-(सं०नपु०) कलुषता, मैल।

कालू-(हिं०स्त्री०) सीप की मछली।

कालेश-(सं०नपु०) काला चदन, दारुहल्दी, कुकुरमुत्ता, अगर।

कालेय-(सं०पुं०) सूर्य, शिव, महादेव।

कालोत्पादित-(सं० वि०) यथासमय उत्पन्न।

कालोपयुक्त-(सं० वि०) यथासमय आवश्यक।

कालौंछ-(हिं०स्त्री०) कृष्णवर्ण, कालापन धुवें की कारिख, काला जाला।

काल्पनिक-(सं०वि०) कल्पना से उत्पन्न कल्पित, माना हुआ।

काल्य-(सं०वि०) प्रातःकाल किया जाने वाला।

काल्ह, काल्हि-(हिं०) देखो कल।

कावर-(हिं०पु०) एक अस्त्र विशेष, छोटा बरछा।

कावरी-(हिं०स्त्री०) रस्से का फन्दा,मुद्धी।

कावेर-(सं०नपु०) कुंकुम, रोरी।

काव्य-(सं०नपुं०) कविता ग्रन्थ, रसयुक्त वाक्य, मीठी बोली, कुशलक्षेम, बुद्धिमानी, चित्तमें विशेष आनन्द लानेवाले वाक्य, मनोहर तथा चमत्कारी वाक्य रचना, (वि०) कवि के गुण रखनेवाला, कविता संबंधी, **काव्यचौर**-(सं०पु०) दूसरे के रचे हुए काव्य को अपना बतलाने वाला

काव्यलिङ्ग-(सं०नपु०) वह अर्थालङ्कार जिसमें कोई कही हुई बात का कारण वक्य अथवा पद के द्वारा दिखलाया जाता है। **काव्यसुधा**-(सं० स्त्री०) काव्यरूप अमृत, वह परम आनन्द जो काव्य सुनने पर होता है।

काव्यहास्य-(सं०नपुं०) प्रहसन,

काव्यार्थापत्ति-(सं० स्त्री०) अर्थापत्ति नामक अलंकार देखो, 'अर्थापत्ति'

काश-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की घास, कास. क्षत, खांसी का रोग।

काशिका-(सं०स्त्री०) काशी, चित्त को परम शान्ति देनेवाली, जयादित्य और वामन की बनाई हुई पाणिनि की एक वृत्तिका नाम, (वि०) प्रकाश करने वाली, प्रदीप्त,

काशिखण्ड-(सं०नपु०) स्कन्द पुराण का एक भाग।

काशिप-(सं०पु०) शिव, महादेव, काशी के राजा।

काशी-(सं०स्त्री०) वाराणसी, बनारस।

काशीकरवट-(हिं०पु०) इस नाम का एक तीर्थ जो काशी में है जहां पुराने समय में लोग आरे के नीचे जाकर अपना प्राण देना मुक्तिकारक समझते थे। **काशीस**-(सं० नपुं०) देखो कसीस।

काशेय-(सं०वि०) काशी में उत्पन्न।

काश्मरी-(सं०स्त्री०) गभीरी नामक वृक्ष इसकी जड़ औषधिमे प्रयोग होती है।

काश्मीर-(सं०नपुं०) एक देशका नाम; देखो 'कश्मीर' (वि०) कश्मीर में उत्पन्न, कश्मीर मे उपजने वाला।

काश्मीरा-(हिं०पुं०) मोटे ऊन से तैयार किया हुआ वस्त्र। **काश्मीरी** (हिं०वि०) कश्मीर देशवासी, इस देश की भाषा, काश्मीर देश संबंधी।

कश्यप-(सं०पुं०) कणाद ऋषि, एक गोत्र विशेष (वि०) कश्यप संबंधी।

काश्यपि-(सं०पुं०) सूर्य के सारथि अरुण, गरुड।

काषाय-(सं०वि०) काषाय द्वारा रंगा हुआ, गेरुआ।

काष्ठ-(सं०नपु०) लकड़ी काठ, इंधन, जलाने की लकड़ी। **काष्ठपुष्पा**-(सं०स्त्री०) केतकी का वृक्ष।

काष्टफलक-(सं० नपु०) लकड़ी का पटरा। **काष्ठभूत**-(सं०वि०) लकड़ी की तरह कड़ा और निर्जीव। **काष्ठलेखक**-(सं०पु०) घुण, घुन।

काष्ठा-(सं०स्त्री०) स्थिति, अवधि, सीमा, उत्कर्ष, बड़ाई, काश्यप की स्त्री, हलदी, १५ निमिष काल, दिशा, चन्द्रमा की एक कला, ओर।

काष्ठागार-(सं०नपु०) लकड़ी का घर

काष्ठासन-(सं० नपु०) लकड़ी की चौकी पीढा इत्यादि।

कास-(सं० सं०) खांसी, कफ, एक, घास, कांस।

कासनी-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जो औषधियों में प्रयोग होता है, नीला रंग।

कासर-(हिं०स्त्री०) काली भेड़ जिसके पेट के रोवें लाल होते हैं, भैंसा।

कासा-(हिं०पुं०) दरियाई नारियल का पात्र जो भिक्षुक रखते हैं, कटोरा, प्याला।

कासार-(सं०पुं०) बड़ा तालाब, उड़द, सिघाडा, एक प्रकार का दण्डक वृत्त

कासीस-(सं०नपुं०) उपधातु कसीस, तुत्थ, तूतिया।

काँह-(हिं०) देखो 'कहं'।

काह-(हिं०क्रि०वि०) क्या, कौनसी वस्तु

काहि-(हिं०सर्व०) किसको, किसे।

काही-(हिं०वि०) घास के रंग का, काले हरे रंग का। **काहीं**-(हिं० अव्य०) पास, द्वारा।

काहु,काहु-(हिं०सर्व०) किसी।

काहे-(हिं०क्रि०वि०) क्यों किसी लिये; काहेको किस निमित्त, किस लिये।

कि-(हिं०क्रि०वि०) कैसे, किस प्रकार, क्या; एक संयोजक शब्द जो कियाओं के बाद प्रयोग होता है, अथवा, या, तत्क्षण।

किं-(सं०अव्य०) क्या।

किंगिरी-(हिं०स्त्री०) छोटी सरंगी के आकार का एक बाजा।

किंगोरा-(हिं०पु०) एक प्रकारकी झाड़ी

किंपुरुष-(सं०पु०) किन्नर, नीच मनुष्य

किंवदन्ती-(हिं०स्त्री०) जनप्रवाद।

किंवा-सं०अव्य०) यानो।

किंशुक-(सं०पु०) पलास का वृक्ष, ढाक, टेसू।

किकियाना-(हिं०क्रि०)कोलाहल करना रोना।

किङ्कणी-(सं०स्त्री०) छोटा घुंघरू।

किङ्कर-(सं०पुं०) दास, नौकर, भृत्य **किङ्करी**-(सं०स्त्री०) दासी, नौकरनी।

किङ्कर्तव्यता-(सं०स्त्री) यह चिन्ता कि क्या करना होगा। **किङ्कर्तव्यविमूढ**-(सं०वि०) कर्तव्य निश्चय करने में असमर्थ, भौचक्का, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।

किङ्किणी-(सं०स्त्री०) कमर का आभूषण, करधनी, लड़ाई का एक अस्त्र

किङ्किर-(सं०नपुं०) हाथी का मस्तक, भौंरा, कोयल, घोड़ा, कामदेव।

किकियाना-(हिं०क्रि०) रोना, चिल्लाना

किचकिच-(हिं०स्त्री०) झूठा झगड़ा, व्यर्थ की बकवाद। **किचकिचाना**-(हिं०क्रि०) क्रोध से दांत पीसना, पूरा बल लगाना, क्रुद्ध होना।

किचकिचाहट-(हिं०स्त्री) क्रोध, गुस्सा, क्रोध में दाँत पिसाई। **किचमिची**-(हिं०स्त्री०) किचकिचाहट, क्रोध। **किचपिच**-(हिं०वि०)क्रम रहित,अस्पष्ट

किचड़ाना--(हिं०क्रि०) आँखों मे कीचड़ आना।

किचरपिचर-(हिं०) देखो किचपिच।

किछु-(हिं०वि०) कुछ।

किञ्चन-(सं०अव्य०) अल्प, थोडा।

किञ्चित्-(सं०अव्य०) अल्प, कम, थोड़ा सा। **किञ्चित्मात्र**-(सं०वि०) अल्प, परिमित, थोड़ासा।

किञ्जल्क-(सं०पु०) नागकेशर, पद्मकेशर, कमल, कमल का केशर। **किञ्जल्ली**-(सं०वि०) केशर युक्त, रेशेदार।

किटकिट-(हिं०पुं०) वादा विवाद,झञ्झट, झगड़ा। **किटकिटाना**-(हिं०क्रि०) दाँत पीसना, किचकिचाना, दाँतों के नीचे ककड़ पड़ना।

किटकिना-(हिं०पु०) वह लिखित मंत्र जिसके द्वारा ठीकेदार अपना ठेका दूसरे के नाम कर देता है, सोनार का ठप्पा, चतुराई। **कटकिनादार**-(हिं०पुं०) वह व्यक्ति जो ठेकेदार से ठेकेपर कुछ लेता हो।

किटकिरा-(हिं०पुं०) देखो किटकिना।

किटिम--(सं०पु०) बालों में की जुवां।

किट्ट-(सं०नपुं०) धातु की मैल, मोरचा, तेल की काइट, कान का खूंट।

किड़कना-(हिं०क्रि०) चल देना, घिसक-जाना।

किड़किड़ाना-(हिं०क्रि०) किटकिटाना, दांतों में लगना।

किण-(सं०पु०) मांसग्रन्थि, घुन।

कित-(हिं०क्रि०वि०) कहाँ, किस ओर, किधर।

कितक-(हिं०वि०क्रि०) कितना, किसका

कितना-(हिं०वि०) किस मात्रा का परिमाण या सख्या का, (क्रि०वि०) किस मात्रा या परिमाण में, कहाँ तक, बहुत अधिक; (प्रश्न०)अधिक, बहुत।

कितव-(सं०पुं०) जुआरी, दुष्ट, वचक, धूर्त, दुष्ट।

कितिक, कितेक-(हिं० वि०) कितना बहुत, असंख्य।

कितेव-(हिं०पुं०) पुस्तक, धर्मगन्थ।

कितै-(हिं० क्रि० वि०) कहा।

कितो-(हिं० वि०) देखो कितना।

कित्ता-(हिं०वि०) कितना।

कितो-(हिं० वि) कितना।

कित्ति-(हिं०स्त्री०) कीर्ति, बड़ाई,यश।

किधर-(हिं०क्रि०वि०) कहां,किस ओर।

किधौं-(हिं०अव्य०)अथवा, या, न जाने।

किन-(हिं०सर्व०) 'किस' शब्द का बहुवचन, (क्रि०वि०) क्या नहीं; अवश्य, क्यों न, (पुं०) रगड़ का चिन्ह।

किनका-(हिं० पु०) कण, अनाज का टुकड़ा।

किनहा-(हिं० वि०) कृमियुक्त, कीड़े, पड़ा हुआ।

किनार-(हिं०पुं०) देखो किनारा।

किनारदार-(हिं०वि०) जिस वस्त्र में किनारा लगा हो।

किनारपेंच-(हिं०पु०) दरी के ताने की मोटी डोरी।

किनारी-(हिं०स्त्री०) सुनहला या रुपहला गोटा, गोट।

किनारे-(हिं०क्रि०वि०) कोर सीमा या तट पर, पृथक् अवस्था में।

किन्तु-(सं०अव्य०) परन्तु, वरन्।

किन्नर-(सं०पुं०)देवयोनि विशेष,इनका शरीर मनुष्य के समान पर सिर घोड़े के ऐसा होता है, गाने बजाने वाली एक जाति (हिं० पुं०) वाद-विवाद, झगड़ा।

किन्नरी-(सं०स्त्री०) किन्नर जाति की स्त्री, एक प्रकार का तम्बूरा।

किन्निमित्त-(सं० वि०) किस कारण, किसलिये।

किम्-(सं० अव्य०) क्या, कौन सा,

किमपि-कोई भ।

किमरिक-(हिं०पुं०) एक प्रकार का महीन चिकना वस्त्र अं० 'केम्ब्रिक्' का अपभ्रंश।

किमर्थम्-(सं० अव्य०) किस कारण, क्यों, किसलिये।

किमाछ-(हिं०पुं०) केंवाच।

किमि-(हिं०क्रि०वि०) किस ढंगसे, कैसे, किस प्रकार से।

किमु-(सं०अव्य०) क्यों, किसलिये।

किमुत-(सं० अव्य०) क्यों, अथवा, या, बहुत।

किम्मत-(हिं०स्त्री०) चातुरी।

किम्पुरुष-(सं०पुं०) किन्नर,बुरा आदमी

किम्वदनी-(हिं०) देखो किंवदन्ती।

कियत्-(सं०क्रि०वि०) किस परिणाम में, कितना।

कियारी-(हिं०स्त्री०) खेतों या बगीचों में थोड़ी थोड़ी दूरी पर दो छोटी छोटी मेड़ों के बीचकी भूमि जिसमें बीज या पौधे बोये जाते हैं, बड़ा कड़ाहा जिसमें समुद्र का खारा पानी जमनेके लिये रक्खा जाताहै,खटिया, चारपाई, चौका।

कियाह-(सं० पु०) लाल रंगका घोड़ा; सियार।

किरंटा-(हिं० पु०) छोटे दरजे का क्रिस्तान, केरानी।

किरक-(सं०पु०) लेखक, लिखने वाला, कातिब।

किरका-(हिं०पुं०) कंकड़, किरकिरी, छोटा टुकड़ा।

किरकिटी-(हिं०स्त्री०) देखो किरकिरी

किरकिन-(हिं०पु०) गदहे या घोड़े का चमड़ा।

किरकिरा-(हिं०वि०) कंकरीला कंकड़दार, जिसमें छोटे छोटे कड़े रवे हों, बुरा; **किरकिरा होना**-आनन्द मे विघ्न पड़ जाना।

किरकिराना-(हिं० क्रि०) पीडा देना, दुखाना, बुरा लगना, अच्छा न लगना किटकिटाना।

किरकिराहट-(हिं०स्त्री०) आंख में धूल इत्यादि पड़ने की पीड़ा, दाँतों के तले कंकड़ पड़ जानेका शब्द, कंकड़ीलापन।

किरकिरी-(हिं० स्त्री०) धूल या तिनके का छोटा टुकड़ा, अपमान हेठी।

किरकिल-(हिं० पु०) कृकलास, गिरगिट, शरीर में की एक वायु जो छींक लाती है।

किरकी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का आभूषण।

किरच-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की पतली तलवार जिसकी नोक भोंक दी जाती है, नोकदार टुकड़ा।

किरचिया-(हिं० पुं०) बगले के समान एक पक्षी।

किरची-(हिं०स्त्री०) रेशम का लच्छा।

किरण-(सं० पुं०) सूर्य, सूर्यकी रश्मि, मयख, प्रकाश।

किरणमाली-(सं०पुं०) सूर्य।

किरन-(हिं०स्त्री०) किरण, प्रकाश की रेखा, झालर, ज्योति, कलाबत्तू की झालर जो कपड़ों में लगाई जाती है

किरपा-(हिं०स्त्री०) देखो कृपा।

किरपान-(हिं०पु०) देखो कृपाण।

किरम-हिं०पुं०) कृमि, कीड़ा।

किरमई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लाह।

किरमाल-(हिं० पुं०) खड्ग, तलवार, अमलतास का वृक्ष।

किरमिच-(हिं० पु०) एक प्रकार का महीन टाट या मोटा ठस बिना हुआ कपड़ा जो जूते, परदे थैले इत्यादि बनाने के काम मे आता है।

किरमिज-(हिं० पुं०) एक प्रकार का रंग, मटमैले रंग का घोड़ा।

किरमिजी-(हिं०वि०) मटमैलेकरौदिया रंग का।

किरयात-(हिं०पु०) किरात, चिरायता

किरराना-(हिं० क्रि०) दांत पीसना, क्रोध करना, किरकिर शब्द करना

किरवान, किरवार-(हिं०पु०) करवाल, तलवार।

किरवारा-(हिं०पु०) अमलतास।

किरांची-(हिं० स्त्री०) अनाज भूसा इत्यादि लादने की चौपहिया गाड़ी, रेलगाड़ी का माल लादने का पूरा डब्बा।

किरात-(सं०पु०) एक प्राचीन जंगली जाति, व्याध बहेलिया।

किरात-(हिं०स्त्री०) रत्न इत्यादि तौलने का एक परिमाण जो चार जव के बराबर होता है, अंग्रेजी आउन्स का चौबीसवां भाग।

किरातार्जुनीय-(सं०नपु०) भारवि कृत एक महाकाव्य।

किरातिनी-(सं०स्त्री०) किरातकी स्त्री, जटामासी।

किराना-(हिं०पु०) प्रतिदिन के उपयोग में आनेवाले मसाले जो पसारियों की दूकान पर बिकते हैं, (क्रि०) पछोरना सूप से बनाना या स्वच्छ करना।

किरानी-(हिं० पु०) करंटा, दोगला

युरोपियन् ।
किराव-(हिं०पुं०) मटर ।
किरावल-(हिं०पुं०) लड़ाई का मैदान आगे जानेवाली फ़ौज, बन्दूक से आखेट करनेवाला मनुष्य ।
किरासन-(हिं०पुं०) अं० 'केरोसीन्' का अपभ्रंश, मिट्टी का तेल ।
किरिच-(हिं०स्त्री०) नोकदार टुकड़ा, देखो किरच ।
किरिन-(हिं०स्त्री०) देखो किरण ।
किरिम-(हिं०स्त्री०) देखो कृमि ।
किरिमदाना-(हिं०पुं०) किरमिजा कीड़ा जो थूहर के पेड़ पर फैल जाता है, सुखाकर इसका रंग बनाया जाता है
किरिया-(हिं०स्त्री०) शपथ, कसम, सौगन्ध, कर्तव्य, काम, मृतकर्म ।
किरीट-(सं०पुं०) एक प्रकार का शिर का भूषण, मुकुट, कुसुम का वृक्ष, एक छन्द जिसमें केवल भगण रहते हैं, सवैया ।
किरीटमाली, किरीटी-(सं०पुं०) अर्जुन, किरटधारी ।
किरोरा-(हिं०स्त्री०) क्रीड़न ।
किरोड़-(हिं०पुं०) देखो करोड़ ।
किरोलना-(हिं०क्रि०) कतरना, खुरचना
किरोना-(हिं०पुं०) कृमि, कीड़ा ।
किर्च-(हिं०पुं०) देखो किरच ।
किर्मिज-(हिं०पुं०) एक प्रकार का रंग, किरमिजी, किरमिजी रंग का घोड़ा
किर्रा-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की धातु पर खोदने की छेनी ।
किल-(सं०अव्य०) वास्तव में, सचमुच, संभवतः, अर्थात् ।
किलक-(हिं० स्त्री०) हर्षध्वनि, प्रसन्नता का शब्द, आनन्द, (फ़ा०) एक प्रकार की नरकट जिसकी लेखनी बनाई जाती हैं ।
किलकना-(हिं०क्रि०) हर्ष ध्वनि करना, किलकार मारना ।
किलकार-(हिं०स्त्री०) हर्षध्वनि ।
किलकारना-(हिं०क्रि०) देखो किलकना
किलकारी-देखो किलकार ।
किलकिञ्चित-(सं०नपुं०) शृङ्गार भाव, भाव जन्य क्रिया, नायक के समागम से अति प्रसन्न होकर नायिका जो अल्पहास, रोदन, भय, क्रोध इत्यादि भाव मिश्रित रूप से दिखलाती है उसको किलकिञ्चित् कहते हैं ।
किलकिल-(हिं०स्त्री०) विवाद, झगड़ा ।
किलकिला-(सं०स्त्री०) हर्षध्वनि, किलकार, वीरोंकी ललकार (पुं०) मछली खानेवाला एक पक्षी, समुद्र का वह भाग जहाँ लहरें भयंकर शब्द करती हैं ।
किलकिलाना-(हिं० क्रि०) हर्ष ध्वनि करना, चिल्लाना, कोलाहल करना, वादाविवाद करना, झगड़ना, क्रोध करना, खुजलाना ।
किलकिलाहट-(हिं०स्त्री०) हर्ष ध्वनि, खुजली, क्रोध, विवाद, झगड़ा ।
किलकी-(हिं० स्त्री०) बढ़ई का चिन्ह लगाने का एक अस्त्र ।
किलकैया-(हिं०पुं०) पशुओं के खुरमें कीड़े पड़ने का रोग, हर्ष ध्वनि करनेवाला ।
किलटा-(हिं०पुं०) एक प्रकारका टोकरा
किलना-(हिं०क्रि०) अभिमन्त्रित होना, वश मे लाया जाना, गतिमें रुकावट होना ।
किलनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा जो मवेशियों के शिरों पर चिपका रहता है और इनका लोहू चूसता है ।
किलबिलाना-(हिं०क्रि०) कुलबुलाना, धीरे धीरे रेंगना, इधर उधर डोलना
किलभी-(हिं०पुं०) नाव का पिछला भाग ।
किलवांक-(हिं०पुं०) एक प्रकार का काबुली घोड़ा ।
किलवा-(हिं० पुं०) भूमि खोदने का बड़ा फौड़ा ।
किलवाई-(हिं०स्त्री०) सूखी घास बटोरने की फरुही ।
किलवाना-(हिं० क्रि०) कील लगवाना,
किरतम-(हिं०पुं०) लौकिक प्रपंच । मन्त्र तन्त्र द्वारा अभिमंत्रित करना, जादू से बाँधना ।
किलवारी-(हिं०स्त्री०)पतवार,छोटा डाड़ा
किलबिष-(हिं०पुं०) किल्विष, पाप ।
किलहँटा-(हिं०पुं०) सिरोही पक्षी ।
किलहा-(हिं०पुं०) तेल में बनाया हुआ आम का अचार ।
किलात-(सं०वि०) वामन, बौना, छोटा
किलाना-(हिं०क्रि०) देखो किलवाना ।
किलावा-(हिं०पुं०) सोनार का एक अस्त्र, उपकरण ।
किलिञ्ज-(सं०पुं०) पतली पट्टी, चटाई, परदा ।
किलिन-(हिं०पुं०) नाव का पिछला भाग जहाँ पर मुड़े हुए पटरे जुटे होते हैं ।
किलिनी-देखो किलनी ।
किलोल-(हिं०पुं०) देखो कल्लोल ।
किलौनी-(हिं०स्त्री०) देखो किलनी ।
किल्ला-(हिं०पुं०) मेख, खूँटा, जाते की मेख, अंकुर ।
किल्लाना-(हिं०क्रि०)देखो किलकिलाना
किल्ली-(हिं०स्त्री०) कील, मेख, खूंटी, सिटकिनी, बिल्ली, मुठिया जिसके घुमाने से कल या पेंच चलता है; **किल्ली हाथ में होना**-वश में होना; **किल्ली ऐंठना**-युक्ति लगाना ।
किल्विष-(सं०नपुं०) पाप, अपराध, रोग **किल्विषी**-(सं०स्त्री०)पापी, अपराधी ।
किवांच-(हिं०पुं०) बानरी, केवांच ।
किवाड़-(हिं०पुं०)कपाट, द्वार का पल्ला
किशटा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का शफ़तालू ।
किशल, किशलय-(सं०पुं०) कोमल पत्ता, कोमल नया पत्ता ।
किशोर-(सं०पुं०)घोड़े का बच्चा, सूर्य, तरुण अवस्था, ग्यारह से पंद्रह वर्ष के वय का बालक, शिशु, लड़का, (वि०) छोटे वय का । **किशोरी**-(सं०स्त्री०) ग्यारह से पंद्रह वर्ष के वय की स्त्री ।
किष्किन्ध-(सं०पुं०) महिसूर देश के एक पर्वत का नाम ।
किष्कन्धा-(सं०स्त्री०) देखो किष्किन्ध ।
किस-(हिं०सर्व०) "कौन" का रूपान्तर जो विभक्ति लगने से यह रूप धारण करता है ।
किसनई-(हिं०स्त्री०) कृषि, खेती का काम ।
किसल, किसलय-(हिं०पुं०)देखो किशल
किसान-(हिं०पुं०) कृषक, खेतिहर ।
किसानी-(हिं०स्त्री०)कृषिकर्म, खेती का काम (वि०) कृषि सम्बन्धी ।
किसी-(हिं०सर्व०वि०) "कोई" का वह रूपान्तर जो विभक्ति लगाने से इसको प्राप्त होता है ।
किसू-(हिं०पुं०) देखो किसी ।
की-(हिं०प्रत्य०) 'का' का स्त्रीलिंग का रूप (क्रि०) 'किया' का स्त्रीलिंग का रूप; (अव्य०) क्या, अथवा ।
कीक-(हिं०स्त्री०) चीत्कार, चीख ।
कीकट-(सं०पुं०) घोड़ा, मगध देश का प्राचीन नाम, एक अनार्य जाति का नाम ।
कीकना-(हिं०क्रि०) शब्द करना, किकियाना ।
कीकर-(हिं०पुं०) बबूल का वृक्ष ।
कीकश-(सं०पुं०) चांडाल, हत्यारा ।
कीका-(हिं०पुं०) कीकट, घोड़ा ।
कीच-(हिं०स्त्री०) कर्दम, कीचड़ ।
कीचक-(सं०पुं०) बांस जिसके छिद्र में से होकर वायु निकलने पर एक प्रकार का सीटी के समान शब्द होता है, विराट् राजा का साला और सेनापति ।
कीचड़-(हिं०पुं०) कर्दम, पंक, आँख की मैल ।
कीट-(सं०पुं०) कीड़ा मकोड़ा, रेंगने या उड़नेवाला छोटा प्राणि, लोहे की मैल, विष्टा, (वि०) निष्टुर (हिं०पुं०) तेल घी इत्यादि के नीचे बैठा हुआ तलछट । **कीटजा**-(सं०स्त्री०) लाक्षा, लाह, लाख । **कीटभृंग**-(सं०पुं०) एक न्याय विशेष जो उस समय कहलाता है जब अनेक वस्तु मिलकर एक रूप हो जाती हैं । **कीटमणि**-(सं०पुं०) खद्योत, जुगनू, तितली । **कीटाणु**-(सं०पुं०) अति सूक्ष्म कीड़ा जो आंख से देख नहीं पड़ता ।
कीड़ा-(हिं०पुं०) उड़ने या रेंगनेवाला कीट, कृमि, मकोड़ा, सर्प, जुवाँ, खटमल, छोटा बच्चा; **कीड़े काटना**-व्यग्र होना, घबड़ाना, **कीड़े पड़ना**-दोषयुक्त होना । **कीड़ी**-(हिं०स्त्री०) अति सूक्ष्म कीड़ा, छोटा कीड़ा, चींटी
कीदृश-(सं०वि०) किस प्रकार का, कैसा
कीनखाब-(हिं०स्त्री०) देखो कमखाब ।
कीनना-(हिं०क्रि०) मोल लेना, क्रय करना ।
कीप-(हिं०स्त्री०) छोटे मुंह के पात्र में तरल पदार्थ भरने की छुच्छी, टीप ।
कीर-(सं०नपुं०) मांस, (पुं०) शुक, तोता, सुवा, कश्मीर देश, इस देश का वासी ।
कीरट-(सं०पुं०) वङ्ग धातु, राँगा ।
कीरति-(सं०स्त्री०) देखो कीर्ति ।
कीरी-(हिं०स्त्री०) देखो कीर्ति ।
कीर्ण-(सं०वि०) ढका हुआ, फैला हुआ, छिपा हुआ, भरा हुआ ।
कीर्तक-(सं०वि०) वर्णन करनेवाला ।
कीर्तन-(सं०नपुं०) वर्णन, यश का प्रकाशन, गुण कथन, कृष्ण लीला विषयक संगीत और भजन ।
कीर्तनिया-(हिं०पुं०)कृष्णलीला विषयक सङ्गीत करने और भजन गानेवाला, कीर्तन करनेवाला । **कीर्तनीय**-(सं०वि०) वर्णन करने योग्य ।
कीर्ति-(सं०स्त्री०) पुण्य, ख्याति, यश, दीप्ति, चमक, शब्द, प्रसाद, विस्तार, फैलाव, सीता की एक सखी, राधा की माता, आर्या छन्द का एक भेद जिसमें १४ गुरु और १९ लघु वर्ण लगते हैं, एकादशाक्षरी वृत्त विशेष ।
कीर्तिकर-(सं० वि०) यशकारक ।
कीर्तित-(सं०वि०) कहा हुआ, प्रसिद्ध
कीर्तिधर-(सं०वि०)कीर्तिमान्, प्रसिद्ध
कीर्तिमान्-(सं०वि०) कीर्ति युक्त, विख्यात, प्रसिद्ध । **कीर्तिस्तम्भ**-(सं०पुं०) किसी की कीर्ति स्मरण कराने के लिये बनाया हुआ स्तम्भ, यश स्थापित करने का कार्य ।
कील-(सं०पुं०) मेख, खूंटी, परेग, स्तम्भ, खंभा, लेश, बहुत छोटा टुकड़ा, केहुनी के नीचे का भाग, गर्भ जो योनि में अटक जाता है, (हिं०स्त्री०) कुम्हार के चाक की खूंटी, नाक में पहिरने का एक आभूषण, फोड़े के ऊपर का ठीक भाग, एक प्रकार का कपास, जाँते के बीच की खूंटी ।
कीलक-(सं०पुं०) पशुओं को बांधने का खूंटा, परेग, तन्त्रोक्त देवता विशेष, दूसरे मन्त्र की शक्ति को नाश करनेवाला मन्त्र ।
कीलन-(सं०नपुं०) बन्धन, रोग, रुकावट, मन्त्र को कीलने का कार्य । **कीलना**-(हिं०क्रि०) कील लगाना, मेख ठोकना, कील देना, अभिमन्त्रित करना, मुंह बन्द करना, डट्टा लगाना, सर्प को वशमें करना, वशीभूत करना, आधीन करना ।
कीलशायी-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता ।
कीला-(सं०स्त्री०) कील, मेख, बड़ी कील । **कीलाक्षर**-(सं०पुं०) एक प्रकार की प्राचीन फ़ारसी लिपि जिसके अक्षर कील के समान होते थे

कीलाल-(सं०नपु०) रक्त, अमृत, मधु, बांधा जाने वाला पशु।
कीलित-(सं०वि०) मन्त्र से बँधा हुआ, कीला हुआ।
कीलिया-(हिं०पु०) पुरवट हांकनेवाला
कीली-(हिं०स्त्री०) किसी चक्रके बीचमें लगी हुई खूंटी जिसपर चक्र घूमता है; देखो कील, किल्ली।
कीश-(हिं०पुं०) बानर, बन्दर, पक्षी, सूर्य (वि०) नंगा। **कीशफल**-(सं०नपु०) कल्लोल, अंकोल, शीतलचीनी।
कीस-(हिं०पु०) गर्भ की थैली, कीसा, कीश, बन्दर।
कु-(सं०अव्य०) एक अव्यय जो संज्ञा के पूर्व जोड़ने से निन्दनीय, कुत्सित, नीच आदि का बोध करता है; (सं०स्त्री०) पृथ्वी। **कुआशा**-(हिं०स्त्री०) दुराशा।
कुंअर-(हिं०पु०) राजकुमार, राजपुत्र, बालक, लड़का; देखो कुमार।
कुंअरबिलास-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान या चावल।
कुंअरेटा-(हिं०पु०) छोटा कुंवर, कुमार
कुंआरा-(हि०वि०) अविवाहित, जिसका विवाह न हुआ हो। **कुंआरी**-(हिं०स्त्री०) अविवाहिता कन्या, बिना व्याही हुई लड़की।
कुंइयां-(हिं०स्त्री०) छोटा कुवां।
कुईं-(हिं०स्त्री०) कुमुदिनी, कोईं।
कुंकुम-(हि०पुं०) देखो कुङ्कुम।
कुंकुम-(हि०पुं०) लाख का बना हुआ पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होलीपर लोग एक दूसरे पर फेंकते हैं।
कुंज-(हिं०पुं०) पौधों या लताओं से ढपा हुआ स्थान, दुशाले के कोने का बेलबूटा, कोनियां, छप्पर छाजने की एक लकड़ी।
कुंजगली-(हिं०स्त्री०) पौधों या लताओं से ढपा हुआ मार्ग, पतली सकरी गली।
कुंजड़-(हि०पुं०) पोस्तेका गोंद, कुंदुर।
कुंजड़ा-(हिं० पुं०) एक जाति जो फल और तरकारी बेचती है।
कुंजा-(हिं०पुं०) देखो कुब्जा।
कुंड़-(हिं० पु०) हल चलाने से पड़ने वाली खेत की गहरी लकीर। **कुंड़-पुजी**-(हिं०स्त्री०) कुंडका पूजन।
कुंडरा-(हिं०पुं०) मण्डलाकाररेखा, गेंडुरी
कुंडरा-(हिं०पुं०) कुंडा, बड़ा मटका।
कुंडलिया-(हिं०स्त्री०) एक छन्द विशेष जो दोहा और रौला छन्द के योगसे बनता है।
कुंडा-(हिं० पुं०) चौड़े मुँह का जल इत्यादि रखने का मिट्टी का बड़ा तथा गहरा पात्र, द्वारमें लगाने का कोहड़ा, मल्लयद्ध की एक युक्ति।
कुंडिला-(हिं० पुं०) मिट्टी की कुंडी या पथरी। **कंडिया**-(स्त्री०) कठौती।
कुंडो-(हिं०स्त्री०) पत्थर या लकड़ी का छोटा पात्र, जंजीर की कड़ी, लंगर का बड़ा छल्ला।
कुंढवा-(हिं०पु०) मिट्टी का सकोरा या पुरवा।
कुंतली-(हिं० स्त्री०) छोटे जात की मधुमक्खी।
कुंदन-(हिं०पु०) परिष्कृत किये हुए सोने का महीन पत्र जो नगीना जड़ने के उपयोगमें आता है, शुद्ध सोना। **कुंदनसाज**-नगीना जड़नेवाला।
कुंदरू-(हिं०स्त्री०) रक्तफला, एक प्रकार की लता जिसमे परवल के समान फल लगते हैं।
कुंदला-(हिं०पु०) एक प्रकारका तंबू।
कुंदा-(हि०पुं०) लकड़ीका मोटा टुकड़ा, बन्दूक का पिछला भाग, मूठ, लकड़ी की बड़ी मुंगरी, जिससे कपड़े पर कुंदी की जाती है (पुं०) डैना, रद्दा, घस्सा, मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
कुंदी-(हि० क्रि०) कपडे की कुटाई जो इसके फूलन सिकुड़न तथा रुखाई दूर करने के लिये की जाती है, कड़ी मार। **कुंदीगर**-(हिं०पुं०) कपड़े पर कुंदी करने वाला।
कुंदेरना-(हिं०क्रि०) खुरचना, छीलना, खरादना।
कुंदेरा-(हि०पुं०) खरादने वाला।
कुंभिलाना-(हिं०क्रि०) मुरझाना, म्लान होना।
कुंवर-(हिं०पुं०) देखो कुमार। **कुंवरि**-(हिं०स्त्री०) राजकुमारी, राजाकी पुत्री।
कुंहकुंह-(हिं०पुं०) कुंकुम, केशर।
कुंआ-(हि० पुं०) देखो कूप, इन्दारा; **कुंवा खोदना**-जीविकाके लिये उद्योग करना; **किसीके लिये कुवां खोदना**-किसीको हानि पहुँचाने की चेष्टा करना; **कुवें में गिरना**-आपत्ति में पड़ जाना, **कुवें में भांग पड़ना**-सबकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाना।
कुआड़ी-(हिं०स्त्री०) संगीतकी एक लय।
कुआर-(हिं०पु०) आश्विन मास।
कुइंदर-(हिं० पुं०) कुवे के बैठ जाने से बना हुआ गड्ढा।
कुइयां-(हिं०पु०) कूप, कुवां।
कुकटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी कपास जिसकी रूई कुछ लाली लिये हुए सफ़ेद होती है।
कुकड़ना-(हिं०क्रि०) संकुचित होना, सिकुड़ना।
कुकड़ बेल-(हिं०स्त्री०) बंडाल।
कुकड़ी-(हिं०स्त्री०) चर्खी में कात कर उतारा हुआ कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा, अंटी, मुट्ठा, खुखड़ी।
कुकरी-(हिं०स्त्री०) जंगली मुर्गी, झिल्ली, पीड़ा, कतिया।
कुकरौंधा-(हिं०पु०) एक छोटा पौधा, इसके पत्ते बड़े होते हैं जिनमेंसे उग्र गन्ध निकलती है।
कुकर्म-(सं० नपुं०) बुरा काम, लोक निन्दित कर्म। **कुकर्मकारी**-(सं०वि०) बुरा काम करने वाला। **कुकर्मा**, **कुकर्मी**-(सं०वि०) कुत्सित काम करने वाला।
कुकीर्ति-(सं०स्त्री०) अपमान, निन्दा।
कुक्कुम-(सं० पु०) जंगली मुरगा, एक छन्द विशेष।
कुक्कुर-(सं० पुं०) कुत्ता, यदुवंशीय अधक राज के पुत्र, एक प्रकारका सर्प, एक प्राचीन देश का नाम।
कुक्कर आलू-(हिं०पु०) एक प्रकारकी लता जिसका कन्द खाया जाता है।
कुक्कुर खांसी-(हिं०वि०) सूखी खांसी जिसमें कफ नहीं निकलता। **कुक्कुर दन्त**-(हिं०पुं०) वह दाँत जो साधारण दाँतों के अतिरिक्त नीचे को आड़ा निकलता है; **कुक्कुरदन्तुा**-ऐसे दाँत वाला। **कुक्कुरमाछी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की किलनी जो पशुओं के शरीरमें चिपट जाती है और उसका लोहू पीती है, कुत्ते के शरीर पर रहनेवाली लालमांछी। **कुकुरमुत्ता**-(हिं० पु०) छत्रक एक प्रकार का तीव्र गन्ध का पौधा।
कुक्कुरी-(सं०स्त्री०) कुतिया।
कुक्कुट-(सं०पु०) मुर्गा, स्फुलिङ्ग, चिनगारी; **कुक्कुट नाड़ी**-(सं० स्त्री०) एक टेढ़ी नली जिसके द्वारा भरे हुए पात्र में से खाली पात्र में जल इत्यादि लाया जाता है। **कुक्कुटव्रत**-(सं० नपुं०) सन्तान की कामना से भाद्रपद मास की शुक्ला सप्तमी को स्त्री द्वारा किया जाने का व्रत।
कुक्कुटी-(सं०स्त्री०) छिपली, मुरगी।
कुक्कुरी-(सं० स्त्री०) श्वानी, कुतिया।
कुक्रिय-(सं०वि०) कुकर्म करने वाला।
कुक्रिया-(सं०स्त्री०) दुष्कार्य, बुरा काम।
कुक्ष-(सं०पु०) जठर, पेट, कोख।
कुक्षि-(सं० स्त्री०) जठर, पेट, कोख, सन्तति, किसी पदार्थ का मध्य भाग, गुहा, खोह, एक प्राचीन देशका नाम, एक दानव, इक्ष्वाकुके पुत्र का नाम।
कुखेत-(हिं०पुं०) बुरी जगह, कुठांव, कुत्सित स्थान।
कुख्यात-(सं०वि०) निन्दित, बदनाम।
कुख्याति-(सं०स्त्री०) निन्दा, अपमान, बदनामी।
कुगठन-(हिं०स्त्री०) बुरी बनावट।
कुगुणी-(सं० वि०) कुत्सित लोगों में गिना जाने वाला।
कुगति-(सं०स्त्री०) दुर्दशा, बुरी अवस्था
कुगहनि-(हिं० स्त्री०) अनुचित आग्रह, बुरी अड़।
कुग्रह-(सं०पुं०) अशुभ फल देनेवाला ग्रह
कुघा-(हिं०स्त्री०) दिशा, ओर।
कुघात-(हिं०स्त्री०) अशुभअवसर, छल, कपट
कुङ्कुम-(सं०नपुं०) केशर, रक्तचन्दन, रोली।
कुच-(सं०पुं०) स्तन, स्त्री की छाती (वि०) सिकुड़ा हुआ।
कुचकुचवा-(हिं०पु०) कुच कुच शब्द करने वाली चिड़िया, पेचा।
कुचकुचाना-(हिं०क्रि०) बारंबार कोंचना या पैनी वस्तु धंसाना, थोड़ासा कुचलना।
कुचकुम्भ-(सं० पु०) कलश की भांति ऊँचे स्तन।
कुचक्र-(सं०नपु०) कुमन्त्रणा, बुरी फेरवट, षड्यन्त्र। **कुचक्री**-(सं० वि०) दूसरों को बुरी सम्मति देनेवाला।
कुचना-(हिं० क्रि०) सिकुड़ना, संकुचित होना, छिदना।
कुचर-(सं०वि०) नीच कर्म करनेवाला, दूसरे की निन्दा करने वाला, बुरे स्थान में फिरने वाला, अवारा।
कुचरा-(हिं०पु०) झाड़ू, बढ़नी।
कुचर्या-(सं०स्त्री०) निन्दनीय आचरण, बुरी चाल।
कुचलना-(हि०क्रि०) पैरसे रौंदना, दबाना
कुचला-(हि०पु०) एक वृक्ष जिसके विषैले बीज औषधियों में प्रयोग होते हैं।
कुचली-(हिं०स्त्री०) वह दाँत जो राजदन्त और दाढ के बीच होते हैं, कचलने वाले दाँत, कीला।
कुचाग्र-(सं०नपु०) स्तनका अग्रभाग चूचुक।
कुचाल-(हिं०स्त्री०) बुरी अभ्यास, बुरी टेव, दुष्टता, कुत्सित आचरण।
कुचाली-(हिं०वि०) बुरी चाल चलने वाला, बदचलन, कुमार्गी, दुष्ट।
कुचाह-(हिं०स्त्री०) अशुभ विषय, बुरी इच्छा।
कुचिकित्सक-(सं०पु०) बुरा वैद्य।
कुचिन्ता-(सं०स्त्री०) बुरी चिन्ता।
कुचिया-(हिं०स्त्री०) छोटी टिकिया।
कुचिलना-(हिं०क्रि०) देखो कुचलना।
कुचिला-(हिं०पुं०) देखो कुचला।
कुचील-(हि०वि०) मैला वस्त्र पहिरनेवाला
कुचीला-(हिं०पुं०) देखो कुचैला।
कुचेल-(सं०वि०) मैला वस्त्र पहिरे हुए (नपुं०) जीर्ण वस्त्र।
कुचेष्ट-(सं०वि०) निन्दितकार्यकरने वाला
कुचेष्टा-(सं०स्त्री०) दुष्ट कार्य, बुरी चाल, मुख का बुरा भाव।
कुचैन-(हिं०स्त्री०) कष्ट, व्याकुलता, दुःख
कुचैला-(हिं०वि०) मलिन वस्त्र वाला, मलिन, गन्दा।
कुच्ची-(हिं०स्त्री०) तेलीकी तेल नापने की कुप्पी।
कुच्छित-(हिं०वि०) देखो कुत्सित।
कुछ-(हिं०वि०) किंचित्, थोड़ा, (सर्व०) किंचित्, कोई (क्रि०) थोड़े परिमाण में, थोड़ा सा, **कुछ एक**-थोड़ी संख्या में; **कुछ ऐसा**-विचित्र, विलक्षण **कुछ न कुछ**-थोड़ा बहुत; **कुछ काकुछ**-उलटा पुलटा; **कुछ कहना**-कठोर वचन का प्रयोग करना; **कुछ कर देना**-जादू टोने का उपयोग करना; **कुछ होना**-भत प्रेत लगना, **कुछ ही**-सभी अवस्था में; **कुछ समझना**-श्रेष्ठ मानना; **कुछ हो जाना**-प्रतिष्ठित होना।

कुज-(स० पुं०) मंगल ग्रह, वृक्ष, पेड़, नरकासुर ।
कुजंत्र-(हिं० पुं०) बुरा यन्त्र, जादू टोना, टोटका ।
कुजप-(सं०वि०)उलटीमाला फेरनेवाला
कुजा-(सं०स्त्री०) सीता देवी, जानकी ।
कुजाति-(सं० स्त्री०) नीच जाति, नीच जाति का पुरुष, अधम आदमी ।
कुजिया-(हिं०स्त्री०)छोटा पात्र, घरिया
कुजून-(हिं०स्त्री०) बुरा काल, अतिकाल
कुज्जन-(सं०नपुं०)एक प्रकार का नेत्र-रोग, सिकुड़न ।
कुञ्जिका-(सं० स्त्री०) बाँस की डाल, चाभी, घुमची ।
कुञ्चित-(सं० वि०) संकुचित, सिकुड़ा हुआ, टेढा, घुंघुराला, अनाहत, अपमानित ।
कुञ्ज-(सं०पुं०) पेड़ पौधोंसे ढपा हुआ पहाड़ी स्थान, हाथीका दाँत । **कुञ्ज कुटीर**-(स० पु०) कुञ्ज में बनी हुई झोपड़ी । **कुञ्जराशन**-(स० पुं०) अश्वत्थ, पीपल का पेड़ ।
कुञ्जा-(हिं०पु०) मिट्टीका पुरवा, जमी हुई मिश्री की गोल डली, कुञ्जा ।
कुट-(सं०पुं०) कलश, गगरा, कोट, पत्थर तोडने का घन, वृक्ष, पर्वत, कार्य, (हिं०स्त्री०) एक मोटी झाडी जिसका सुन्दर गन्ध, होता है (पु०) खण्ड, टुकड़ा ।
कुटका-(हिं०स्त्री०)छोटा टुकड़ा,कसीदे का तिकोना बूटा ।
कुटकी-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसकी ग्रन्थिमय जड़ दवा में उपयोग होती हैं,एक छोटा कीडा जो बिल्ली कुत्ते आदि के रौवें में घुस कर इनको कटता है ।
कुटङ्क-(सं०पुं०) छानी, छप्पर ।
कुटज-(सं०पुं०) कुरैया, कुर्चाका पौधा, कमल, इन्द्रयव, द्रोणाचार्य का नाम
कुटजगति-(सं०स्त्री०) तेरह अक्षर का एक छन्द ।
कुटनई-(हिं०स्त्री०) कुटनपन, नायक और नायिकाके बीच सन्देश पहुंचाने की क्रिया । **कुटनपन**-(हिं०पुं०) दूती कर्म, पिशुनता, झगड़ा, लगाने का काम । **कुटनपेशा**-(हिं०पुं०) कुटनपन द्वारा जीविका निर्वाह ।
कुटनहारी-(हिं०स्त्री०) धान कूटने-वाली स्त्री ।
कुटना-(हिं०पुं०) स्त्री को परपुरुष से मिलाने वाला, स्त्रियों को बहकाने-वाला, वंचक, (पुं०) कूटने पीटने का यन्त्र (क्रि०) कूटा जाना,मारा जाना, मार खाना ।
कुटनाना-(हिं०क्रि०) व्यभिचारी बनाना, बहकाना, भड़काना । **कुटनापन, कुटनापा**-(हिं०पुं०) देखो कुटनपन ।
कुटनी-(हिं०स्त्री०)स्त्रियों को बहका कर परपुरुष से मिलानेवाली स्त्री, चुगली खानेवाली, झगड़ा लगानेवाली ।

कुटनीपन-(हिं०पुं०) देखो कुटनपन ।
कुटप-(सं०पु०) घरके पासका बगीचा पद्म, कमल ।
कुटुरकुटुर-(हिं०पु०) कोई कड़ी वस्तु को दांतों से तोड़नें का शब्द ।
कुटल-(सं०नपुं०) छानी छप्पर ।
कुटवाना-(हिं०क्रि०) कूटने की क्रिया दूसरे से कराना ।
कुटाई-(हिं०स्त्री०) कूटने का काम, कूटने का वेतन ।
कुटास-(हिं०स्त्री०) ताड़ना, मारपीट ।
कुटिचर-(सं०पु०) दर्याई सुअर ।
कुटिया-(हिं०स्त्री०)छोटा घर या झोपड़ी
कुटिल-(सं०वि०) वक्र, टेढा, घूमा हुआ, घुंघराला, दुष्ट, पाजी, छली,कपटी, (पु०) दुष्ट, शठ, शंख, घोंघा, चौदह अक्षरका एक वर्णवृत्त । **कुटिलकीट**-(हिं०पु०) सर्प, सांप, **कुटिलगति**-सर्प, सांप । **कुटिलता**-(सं०स्त्री०) तिरछापन, टेढापन, छल । **कुटिलपन**-(हिं० पु०) कुटिलता ।
कुटिला-(सं०स्त्री०) सरस्वती नदी, राधिका की ननद । **कुटिलाई**-(हिं० स्त्री०) टेढ़ापन, छल, कपट ।
कुटिहा-(हिं०वि०) कटूक्ति बोलनेवाला
कुटी-(हिं०स्त्री०) घास फूस की बनी हुई झोपड़ी, पर्णशाला, मुरा नामक गन्ध द्रव्य, कुटनी । **कुटीचक्र**-(सं०पुं०) चार प्रकार के संन्यासियों में से एक जो संन्यास लेकर अपने भाई बन्ध के घर में रहते हैं और भिक्षा मांग कर भोजन करते हैं ।
कुटीचर-(सं०पु०) एक प्रकार का संन्यासी (हिं०वि०) छली, कपटी,दुष्ट
कुटीर-(सं०पु०) देखो कुटी ।
कुटुम्ब-(सं०पुं०) कुल, परिवार, भाई-बन्ध । **कुटुम्बिक**-(सं०वि०) परिवार सहित घर में रहनेवाला । **कुटुम्बिता**-(सं०स्त्री०) परिवारिक सम्बन्ध
कुटुम्बिनी-(सं०स्त्री०)बाल बच्चेवाली स्त्री । **कुटुम्बी**-(सं०वि०) गृही, परिवारि वाला, (पु०) परिवार के लोग, सम्बन्धी, नातेदार कृषक, किसान।
कुटुम-(हिं०पु०) देखो कुटुम्ब ।
कुटुवा-(हिं०पु०) कुटैया, कूटने वाला।
कुटेक-(हिं०स्त्री०) बुरा हठ ।
कुटेव-(हिं०स्त्री०) कुत्सित स्वभाव, बुरा स्वभाव ।
कुटौनी-(हिं०स्त्री०) कूटने का काम, कूटने का वेतन ।
कुट्टनी-(सं०स्त्री०) देखो कुटनी ।
कुट्टमित-(सं०वि०) संयोग काल मे स्त्रियों का आनन्द लेते हुए भी कष्ट दिखलाना ।
कुट्टा-(हिं०स्त्री०) परकटा कबूतर ।
कुट्टित-(सं०वि०) कटा हुआ,चूर्ण किया हुआ, टुकड़े किया हुआ ।
कुट्टिनी-सं०स्त्री०) देखो कुटनी ।
कुट्टी-(हिं०स्त्री०) कटाई,गडासे से काटा हुआ चारा;कूटा और सड़ाया हुआ कागद जिसके अनेक पदार्थ बनते हैं, मैत्रीभङ्ग (बालक इस अर्थमें प्रयोग करते हैं) परकटा कबूतर ।

कुठ-(सं०पुं०) चीते की झाड़ी ।
कुठर-(सं०पु०)मथानी बाँधनेका खम्भा
कुठला-(हिं०पु०) अन्न रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र ।
कुठाऊ-(हिं०पु०) देखो कुठाँव ।
कुठांव-(हिं०पु०) कुत्सित स्थान ; **कुठांव मारना**-मर्म स्थान में चोट लगाना।
कुठाट-(हिं०पुं०) बुरा ठाट,बुरा सामान बुरा प्रबंध, कुप्रबन्ध, काम नष्ट करने का उद्योग ।
कुठार-(सं०पुं०) कुल्हाड़ी, फरसा,नाश करने वाली वस्तु । **कुठराघात**-कुल्हाड़ी का आघात, गहरी चोट ।
कुठारपाणि-(सं०पुं०) कुठार हाथ में लिये हुए,परशुराम। **कुठाराघात**-(सं०पु०) देखो कुठार ।
कुठारी-(सं०स्त्री०) कुल्हाड़ी,टांगी,(वि०) नाश करने वाली ।
कुठारु-(सं०पु०) शस्त्रकार, शस्त्र बनाने वाला ।
कुठाली-(हिं०स्त्री०) सोनार की सोना चांदी गलाने की घरिया ।
कुठाहर-(हिं०पु०)कुत्सित स्थान,कुठौर, बुरा अवसर ।
कुठिया-(हिं०स्त्री०) अन्न रखने का मिट्टी का पात्र ।
कुठौर-(हिं०पुं०) बुरा स्थान, अनुचित अवसर ।
कुड़-(हिं०पुं०) कुट नाम की औषधि, अन्नराशि, कूड़ा, (स्त्री०) जंघा ।
कुड़कुड़-(हिं०पु०) अव्यक्त शब्द ।
कुड़कुड़ाना-(हिं०क्रि०) बुरा लगना, कुढना, कुड़बुड़ाना ।
कुटकुड़ी-(हिं०स्त्री०) उदर में होने वाला शब्द जो भूख लगने पर या अजीर्ण के समय होती है, गुड़गुड़ाहट ।
कुड़प-(सं०पु०)बत्तीसतोलेकाएकपरिमाण
कुड़पना-(हिं०क्रि०) खेत का जोतना ।
कुड़बुड़ाना-(हिं० नि०) मन ही मन कुढना, कुड़कुड़ाना ।
कुड़री-(हिं०स्त्री०)गेंडुरी,नदी के घुमाव से तीन ओर पानी से घिरी हुई भूमि
कुड़ल-(हिं०स्त्री०) रक्त कम पड़ने या ठंढा पड़ने से उत्पन्न हुई शरीर का ऐंठन ।
कुड़व-(सं०पु०) एक पुरानी तोल जो प्रस्थ का चतुर्थांश होता है, बत्तीस या सोलह तोले की बटखरा ।
कुड़ा-(हिं०पु०) कुटज वृक्ष, कुरैया ।
कुड़ाली-(हिं०स्त्री०) कुठारी, कुल्हाड़ी ।
कुडुक-(हिं०पुं०/ एक प्रकार का बाजा (स्त्री०) अण्डा न देने वाली मुरगी, (वि०) निरर्थक, व्यर्थ ।
कुडेर-(हिं०स्त्री०) कुरया में राब निकालने की नाली । **कुडेरना**-(हिं०क्रि०) राब में की जसी बहाना ।
कुडौल-(हिं०वि०) कुढंगा, बेडौल, भद्दा

कुड्मल-(सं०पुं०)मुकुल,खिलतीहुईकली
कुढंग-(हिं०पुं०) बुरा आचरण, कुचाल (वि०) बेढंगा, भद्दा, अनभिज्ञ, असभ्य
कुढंगी-(हिं०वि०) बुरे आचरण का, कुमार्गी ।
कुढ़न-(हिं०स्त्री०) मनहीमन रहनेवाला क्रोध या दुःख, चिढ । **कुढ़ना**-(हिं० क्रि०) मनहीमन क्रोध करना, चिढना या दुखी होना, मनहीमन मसोसना, जलना ।
कुढब-(हिं०वि०) बेढब, कठिन ।
कुढाना-(हिं०क्रि०)क्रोध दिलाना, चिढाना दुःखी करना, खिजलाना ।
कुणक-(सं०पु०) तुरतका उत्पन्न बालक।
कुणप-(सं०पु०) शव, शुक्रदोष, भाला, बरछी, रांगा, चेतनाशून्य देह ।
कुणपाशी-(सं०वि०) शव भक्षक, शव खाने वाला ।
कुण्ठ-(सं०पुं०) अकर्मण्य, मूर्ख, बंधा हुआ, सिकुड़ा हुआ । **कुण्ठता**-(सं० स्त्री०) मूर्खता, सङ्कोच ।
कुण्ठित-(सं०वि०) लज्जित, सकुचाया हुआ, अयोग्य ।
कुण्ड-(सं०नपुं०) जलाशय, जलपात्र, हांड़ी, होम करने के लिये बनाया हुआ गड्ढा, (सं०पु०) दोगली सन्तान, एक प्रकार का सर्प, बटलोही,अग्निहोत्र का पात्र, गट्ठा,लोहे का टोप, अन्न नापने को प्राचीन काल की एक नाप।
कुण्डकील-(सं०पु०) पतित ब्राह्मणी का पुत्र **कुण्डज**-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
कुण्डल-(सं०पुं०) कान का एक अलंकार पाश, वलय, कान का बाला, समूह, गोल फन्दा, मेखला, बदली में सूर्य या चन्द्रमा के चारो ओर देख पड़ने वाला प्रकाश का घेरा, एक प्रकार का सांप । **कुण्डलिका**-(सं०स्त्री०)मात्रा छन्द विशेष, हिन्दी की कुण्डलिया, मण्डलाकार रेखा ।
कुण्डलाकार-(सं०वि०)वर्तुल,मण्डलाकार
कुण्डलिनी-(सं०स्त्री०) तन्त्र तथा हठ-योग के अनुसार वह शक्ति जो बड़ी सूक्ष्म है और मूलाधार में रहती है, जलेबी या इमरती नाम की मिठाई
कुण्डली-(सं०पुं०) सर्प, वरुण, मोर, चित्रमृग, विष्णु, अमलतास का वृक्ष जलेबी, कुण्डलिनीशक्ति,जन्मपत्रिका सर्पिणी, वृक्ष केवांच, गुरुच,कचनार सर्पवत् बैठने की मुद्रा । **कुण्डलीकृत**-(सं०वि०) कुण्डलके आकारका,गेंडुरी बनाया हुआ ।
कुण्डिका-(सं०स्त्री०) कमण्डलु, तांबे का कुण्ड, स्थाली, हांडी ; **कुण्डु**-बंगाली कायस्थ की एक उपाधि
कुतः-(सं०अव्य) किस स्थान से, कहांसे
कुतक-(सं०नपुं०) रसांजन ।
कुतका-(हिं०पुं०) मोटा सोंटा, डंडा, गदका, भांग घोंटने का डंडा ।

कुतना-(हिं०क्रि०) कुता जाना, आँका जाना।
कुतनु-(सं०वि०) बुरे शरीर वाला।
कुतन्त्री-(सं०स्त्री०) कुत्सित वीणा, बुरी बीन।
कुतप-(सं०पु०) सूर्य, अतिथि, ब्राह्मण, कुशा, दिनमान का आठवां भाग, मध्याह्न, एक प्रकार का बाजा, लड़की का बेटा, नाती, छोटा घड़ा (वि०) थोड़ा गरम, गुनगुना।
कुतपस्वी-(सं०पुं०) निन्दित तपस्वी, अच्छी तपस्या न करने वाला।
कुतरन-(हिं०पुं०) देखो कतरन। **कुतारना**-(हिं०क्रि०) दांत से छोटा टुकड़ा काटना, कोई भाग बीच में से कड़ा कर निकाल लेना।
कुतर्क-(सं०पु०) निन्दनीय तर्क, **कुतर्की**-(सं०वि०) वृथा की तर्क करने वाला, बकवादी।
कुतला-(हिं०पु०) हँसिया, चारा काटने का एक हथियार।
कुतवार-(हिं०पुं०) क्षेत्र कीं उपज काटने वाला 'कोतवाल'।
कुतवारी-(हिं०स्त्री०) देखो कोतवाली।
कुतार-(हिं०पुं०) असुविधा, अड़चन, कुप्रबंध।
कुतिया-(हिं०स्त्री०) कुक्कुरी, कुत्ते की मादा, कुत्सित स्त्री, बुरी स्त्री।
कुतुक-(सं०नपुं०) कौतुक, कौतूहल।
कुतूहल-(सं०स्त्री०) किसी वस्तु को देखने या सुनने की बड़ी लालसा, कौतुक, क्रीड़ा, खेल, आश्चर्य, अचंभा, खेलवाड़, नायिका का अलंकार विशेष जिसमें वह मनोहर पदार्थ को देखने की अधिक आकांक्षा करती है। **कुतूहलित**-(सं०वि०) आश्चर्य में पड़ा हुआ। **कुतूहली**-(सं०वि०) कौतुकी, किसी वस्तु को देखने की बड़ी लालसा करनेवाला।
कुत्ता-(हिं०पुं०) कुक्कुर, श्वान, यंत्र में किसी घूमनेवाले भाग को रोकने का साधन, कपाट को न खुलने के लिये लगाया हुआ अवरोध, बंदूक का घोड़ा, तुच्छ नीच मनुष्य; **कुत्ते की तरह मरना** बुरी तरह से मृत्यु होना। **कुत्ती**-(हिं०स्त्री०) कुक्कुरी, कुतिया।
कुत्र-(सं०अव्य०) कहां, किस अवस्था में। **कुत्रचित्**-(सं०अव्य०) किसी स्थान में। **कुत्सन**-(सं०नपुं०) निन्दा, दुर्नाम। **कुत्सा**-(सं०स्त्री०) निन्दा, जुगुप्सा, अपवाद। **कुत्सित**-(सं०वि०) निन्दित, गर्हित, अधम, नीच।
कुथ-(सं०पुं०) कन्था, कथरी, हाथी की झूल।
कुथित-(सं०वि०) सड़ा गला।
कुदई-(हिं०स्त्री०) धान्य विशेष, कोदो
कुदकना-(हिं०क्रि०) आनन्द में उछलना, कूदना।
कुदक्का-(हिं०पुं०) उछलकूद, कूदफाँद।
कुदण्ड-(सं०पु०) अनुचित दण्ड।
कुदरा-(हिं०पु०) कुदाल, फौड़ा।
कुदर्शन-(सं०वि०) कुरूप, भद्दा।
कुदलाना-(हिं०क्रि०) उछलना कूदना, कूदते चलना।
कुदांव-(हिं०पुं०) धोखा, विश्वासघात, संकट की अवस्था, बुरी अवस्था, भयंकर स्थान, मर्म स्थान।
कुदाई-(हिं०वि०) विश्वासघाती, छली, कपटी, बुरा दाँव लगानेवाला।
कुदान-(सं०नपु०) अयोग्य पुरुष को दिया जानेवाला दान, कुत्सित दान लेना यथा शय्यादान, गजदान, इ० (हिं०स्त्री०) उछलकूद, कुदाई, छलांग, कूदने का स्थान, कूदने की दूरी।
कुदाना-(हिं०क्रि०) कूदने में लगाना, दौड़ाना।
कुदाम-(हिं०पुं०) खोटा पैसा रुपया।
कुदाय-(हिं०पुं०) देखो कुदाव।
कुदार-(सं०पुं०) भूमि खोदने का एक साधन, कुदाली। **कुदारी**-(हिं०स्त्री०) देखो कुदाली। **कुदाल**-(सं०पुं०) भूमि खोदने का अस्त्र, कुदाली।
कुकुदाली-(हिं०स्त्री०) देखो कुदाल।
कुदाव-(हिं०पु०) कुदाई, कुदान।
कुदास-(हिं०पुं०) नाव की पतवार का डन्डा।
कुदिन-(सं०नपुं०) सावन दिन, सूर्य के उदय होने से फिर से सूर्योदय होने तक का समय, बुरा दिन, आपत्ति का समय, ऋतु विरुद्ध कष्ट कारक दिन, पानी बरसने या दिन भर बादल रहने का दिन।
कुदिष्ट-(हिं०स्त्री०) कुदृष्टि, बुरी दृष्टि, पापदृष्टि।
कुदृश्य-(सं०वि०) देखने के अयोग्य।
कुदृष्टि-(सं०स्त्री०) मन्द दृष्टि,
कुदेव-(सं०पुं०) भूदेव, ब्राह्मण, दैत्य, दानव
कुदेश-(सं०पुं०) कुत्सित, देश, बुरा देश
कुदेह-(सं०पुं०) कुत्सित देह, बुरी शरीर
कुद्दार कुद्दाल-(सं०पुं०) देखो कुदार, कुदाली।
कुद्मल-(सं० नपुं० पु०) फूल की कली
कुदंग-(सं०पु०) मचान के ऊपर की मड़ई।
कुद्रव-(सं०पु०) कोद्रव अन्न, कोदो।
कुधातु-(सं०पुं०) कुत्सित धातु, लोहा।
कुधान्य-(सं०पुं०) क्षुद्र धान्य, घास इ० मे का धान्य, शास्त्रवर्जित धान्य
कुधी-(सं०वि०) निर्बोध, निर्लज्ज,
कुनकुना-(हिं०वि०) मन्दोष्ण, थोड़ा गरम, गुनगुना।
कुनख-(सं०पु०) नख गिरने का एक रोग। **कुनखी**-(सं०वि०) नख गिरने के रोगवाला।
कुनट-(सं०पु०) बुरा खेलाड़ी, सनई का पौधा।
कुनप-(हिं०पु०) देखो कुणप।
कुनबा-(हिं०पु०) कुटुम्ब, घराना,
कुनबी-(हिं०पु०) खेती करने वाली एक हिन्दू जाति, कुरमी, घिरस्त,
कुनवा-(हिं०पु०) धातु के पात्र खरादने वाला, खरादिया।
कुनह-(सं०वि०) बुरा फन्दा डालने वाला (हिं०स्त्री०) द्वेष, मनमोटाव, पुरानी शत्रुता, **कुनही**-(हिं०वि०) द्वेष करने वाला, कुढ़ने वाला।
कुनाई-(हिं०स्त्री०) बुरादा, बुकनी, किसी वस्तु को चीरने, खरारने या खुरचने से निकला हुआ चूर्ण, खरादने का काम या वेतन।
कुनाथ-(सं०पुं०) बुरा स्वामी या पति
कुनाम-(सं०नपु०) अपनाम, दुर्नाम।
कुनायक-(सं०पु०) देखो कुनाथ।
कुनास-(सं०पु०) उष्ट्र, ऊंट।
कुनित-(हिं०वि०) देखो क्वणित।
कुनिया-(हिं०पुं०) खरादने वाला, अनुमान से गणना करने वाला।
कुन्त-(सं०पुं०) छोटा पशु, भाला, बरछी
कुन्तल-(सं०पुं०) केश, बाल, पीने का पात्र, एक देश, हल, एक प्रकार का ध्रुवपद।
कुन्ती-(सं०स्त्री०) यदुवंशीय शूरराज की कन्या, वासुदेव की बहिन।
कुन्द-(सं०पु०) विष्णु, मकरन्द पुष्प।
कुन्दम-(सं०पु०) मार्जार, बिलैया।
कुन्दा-(हिं०) देखो कुंदा।
कुन्दिनी-(सं०स्त्री०) पद्म समूह, पद्मिनी
कुपट-(सं०पुं०) फटा पुराना वस्त्र।
कुपढ-(हिं०वि०) अशिक्षित, अनपढा।
कुपथी-(हिं०वि०) कुपथ्य करने वाला।
कुपथ-(सं०पु०) बुरा मार्ग, बुरी चाल, बुरा आचरण। (हिं०) कुपथ्य, स्वास्थ के लिये हानिकर कार्य या भोजन; **कुपथगामी**, बुरा आचरण करनेवाला
कुपथ्य-(सं०नपुं०) स्वास्थ्य विगाड़ने वाला आहार विहार,
कुपना-(हिं०क्रि०) क्रोध करना।
कुपरीक्षक-(सं०पुं०) परीक्षा के समय भले बुरे का विचार न करने वाला।
कुपाठ-(सं०पुं०) बुरी सम्मति।
कुपाठी-(सं०वि०) निन्दित रूप से पाठ करने वाला।
कुपाणि-(सं०वि०) वक्रहस्त, टेढेमेढे हाथ वाला।
कुपात्र-(सं०वि०) अयोग्य, अनाधिकारी, दान देने के लिये शास्त्र से निषिद्ध।
कुपार-(हिं०पुं०) समुद्र।
कुपित-(सं०वि०) क्रुद्ध, अप्रसन्न,
कुपिनी-(सं०स्त्री०) मछली रखने का पात्र
कुपुत्र-(सं०पु०) माता पिता की आज्ञा न मानने वाला बेटा, कुपथगामी पुत्र, मंगलग्रह।
कुपुरुष-(सं०पुं०) वह मनुष्य जो संसार में कोई भला काम न करे।
कुप्पा-(हिं०पुं०) चमड़े का घी, तेल इत्यादि रखने का बड़ा पात्र; **कुप्पा-होना**-फूल जाना, मोटा होना, कुढ़ना, रूठना। **कुप्पासाज**-कुप्पा बनाने वाला चमार।
कुप्पी-(हिं०स्त्री०) तेल फुलेल रखने का चमड़े का छोटा पात्र।
कुप्य-(सं०नपु०) जस्ता, सीसा, रांगा मिलाकर बना हुआ धातु विशेष, सोना चांदी से भिन्न धन।
कुप्रिय-(सं०वि०) अप्रिय,
कुफुर-(हिं०पुं०) अधर्म।
कुबजा-(हिं०वि०) देखो कुब्जा।
कुबड़ा-(हिं०पु०) कुब्ज, वह मनुष्य जिसकी पीठ टेढी हो गई हो, (वि०) टेढा, मुड़ी हुई पीठ वाला। **कुबड़ी**-(हिं०वि०) कुब्जा, टेढ़ी पीठवाली स्त्री, (स्त्री०) झुकी हुई मूठ की छड़ी, टेढिया।
कुबण्ड-(हिं०पुं०) कोदण्ड, कमान, (वि०) विकृताङ्ग, खोड़ा।
कुबत-(हिं०स्त्री०) कुवाक्य, बुरी बात, कुचाल, शक्ति।
कुबरी-(हिं०स्त्री०) कुब्जा, कंसकी एक दासी, झुकी मूठ की छड़ी।
कुबटऊ-(हिं०पु०) देखो कुवाक्य।
कुबानि-(हिं०स्त्री०) बुरा अभ्यास, दुःख भाव, बुरी लत।
कुबानी-(हिं०पुं०) बुरा व्यवहार।
कुबाहुल-(सं०पुं०) उष्ट्र, ऊंठ।
कुबुद्धि-(सं०वि०) मन्द बुद्धि, मूर्ख (स्त्री०) मूर्खता,
कुबेला-(हिं०स्त्री०) बुरा अवसर, बुरा समय
कुबोलनी-(हिं०वि०, बुरी बात कहनेवाली
कुब्ज-(सं०वि०) टेढ़ी पीठ वाला, कुबड़ा; (पु०) एक वायुरोग जिसमें पीठ बीच में से उभड़ आती है। **कुब्जत्व**-(सं०नपु०) कुबड़ापन।
कुब्जा-(सं०स्त्री०) कैकेयी की कुबड़ी दासी जिसका नाम मन्थरा था, कंस की एक कुबड़ी दासी जिसका नाम चिवक्रा था, कुबड़ी स्त्री।
कुब्जित-(सं०वि०) बक्र, टेढ़ा किया हुआ
कुब्जा-(हिं०पु०) कुब्ज, कुबड़ा, डिल्ला।
कुभा-(वै०स्त्री०) काबुल नदी का प्राचीन नाम, पृथ्वी की छाया (वि०) चमकने वाला।
कुभार्या-(सं०स्त्री०) निन्द्य स्त्री,
कुभुक्त-(सं०नपु०) कुखाद्य, बुरा भोजन
कुभृत्-(सं०पु०) पर्वत, पहाड़।
कुभृत्य-(सं०पुं०) बुरा भृत्य या नौकर
कुमंठी-(हिं०स्त्री०) पतली लचने वाली टहनी।
कुमकी-(हिं०वि०) सहायता संबंधी, (स्त्री) हाथियों के पकड़ने में सहायता देने वाली सिखलाई हुई हथिनी।
कुमकुम-(हिं०पुं०) देखो कुङ्कुम। **कुमकुमा**-(सं०पुं०) लाह का पोला गोला जिसमें गुलाल भर कर होली के त्यौहार पर लोग एक दूसरे के ऊपर फेंकते हैं, काँच का बना हुआ पोला गोला, सोनार की दाना बैठाने टांकी, लोटा।
कुमकुमी-(हिं०पुं०) छोटे मुंह का लोटा

कुमति-(सं०स्त्री०) बुरा आशय,मूर्खता, (वि०) बुद्धिहीन।
कुमन्त्र-(सं०पुं०) कुमंत्रणा, बुरी सम्मति; **कुमन्त्रणा**-(सं०स्त्री०) देखो कुमंत्र। **कुमन्त्री**-(सं०पु०) निन्द्य मन्त्री, बुरा मंत्री।
कुमारिया-(हिं०पु०) एक प्रकार का बड़ा हाथी।
कुमाच-(हिं०पु०)एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, गंजीफे का एक रङ्ग,केंवाच।
कुमार-(सं०नपुं०) निर्मल, सुवर्ण,खरा-सोना, (पुं०) पांच वर्ष का बालक, पुत्र, युवराज, कार्तिकेय, तोता, सिन्धुनद, सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार ऋषि कुमार कहलाते हैं, मंगल ग्रह, पुरुष के युवावस्था का काल जो १७ वर्ष से ३० वर्ष पर्यन्त रहता है, एक ग्रह विशेष जिसका प्रभाव बालकों पर ही होता है, अग्नि। **कुमारक**-(सं०पु०) राजकुमार, बालक, लड़का,आंख का ढेला।
कुमारग-(हिं०पु०) देखो कुमार्ग।
कुमार तन्त्र-(सं०नपुं०) बालकों की चिकित्सा का शास्त्र।
कुमारबाज-(सं०स्त्री०) जुवा खेलने वाला जुआरी।
कुमार भृत्या-(सं०स्त्री०) प्रसव कराने वाली तथा गर्भिणी की परिचर्या करने वाली स्त्री, बच्चों को पालने वाली धाय।
कुमार लतिका-(सं०स्त्री०) सात मात्रा का एक छन्द।
कुमारसम्भव-(सं० नपुं०) महाकवि कालिदास कृत एक काव्य का नाम।
कुमारिका-(सं०स्त्री०) अविवाहिता कन्या, कुमारी लड़की, घीकुआर।
कुमारिल भट्ट-(सं०वि०)एकप्रसिद्ध मीमांसक,जिन्होंने मीमांसा वार्तिक लिखा है।
कुमारी-(सं०स्त्री०)बारह वर्ष की कन्या घीकुआर, मेदिनी पुष्प, बड़ी इलायची, अविवाहित कन्या, सीता, दुर्गा, पार्वती, नवमल्लिका, चमेली, श्यामा पक्षी, भारतके दक्षिण कुमारिका अन्तरीप, सोलह अक्षर का एक छन्द। **कुमारी पूजन, कुमारी पूजा**-तन्त्र मत के अनुसार अविवाहित कन्या का पूजन।
कुमार्ग-(सं०पु०) नीतिविरुद्ध कार्य, कुपथ, अधर्म, बुरी चाल। **कुमार्गगामी, कुमार्गी**-(सं०वि०) कुपथ में जाने वाला, अधर्मी, धर्मभ्रष्ट।
कुमित्र-(सं०नपुं०) अपकारी बन्धु।
कुमुख-(सं०पुं०) सुअर, रावण का एक योद्धा (वि०) बुरे मुख वाला।
कुमुद-(सं०पुं०) कोक, कोईं, चांदी, कपूर, पद्म, कमल, विष्णु, एक प्रकार का बन्दर, एक प्रकार का गुग्गुल, एक केतुविशेष जिसके उदय होने से दुर्भिक्ष होता है, कृष्ण के छोटे भाई गद के पुत्र का नाम।
कुमुदनाथ, कुमुदप्रिय, कुमुदबन्धु-(सं०पु०) चन्द्रमा।
कुमुदिनी-(सं०स्त्री०) कोक का पुष्प, चांदनी। **कुमुदिनीनायक**-(सं०पु०) चन्द्रमा।
कुमेध-(सं०वि०) बुद्धिहीन, मूर्ख।
कुमेरु-(सं०पु०) ध्रुवतारा से ठीक नीचे का स्थान।
कुमैड़-(हिं०पु०)छल, प्रतारण, धोखा।
कुमैड़िया-(हिं०वि०) वञ्चक, छली।
कुमोद-(हिं०पु०) देखो कुमुद।
कुम्ब-(सं०पु०)मस्तक ढाँपने का वस्त्र।
कुम्भ-(सं०पु०) मिट्टी का घड़ा, ग्यारहवीं राशि, सोलह सेर की तौल, हाथी के माथे का बिचला भाग, योग की एक क्रिया, एक प्रकार की रागिणी, जायफल का वृक्ष, कुम्भकर्ण के पुत्रका नाम। **कुम्भक**-(सं०पु०) प्राणायाम मे नाक के छिद्र को दबाकर वायु को रोकने की क्रिया। **कुम्भकर्ण**-(सं०पु०) रावण मझले भाई का नाम। **कुम्भकार**-(सं०पु०) कोहार जाति जो मिट्टी के बरतन बनाते और बेंचते हैं। **कुम्भजन्मा**-(सं०पु०) अगस्त्य मुनि का एक नाम। **कुम्भपर्णी**-(सं०स्त्री०) कोंहड़े की लता। **कुम्भपाद**-(सं०वि०) मोटे पैरवाला। **कुम्भ मेला**-(सं०पु०) मकर राशि में वृहस्पति और सूर्य का योग होने पर प्रयाग हरद्वार और पुष्कर तीर्थ में जो मेला तीन-तीन वर्ष पर लगता है।
कुम्भरेता-(सं०पुं०) अगस्त्य, अग्नि।
कुम्भ संभव-(सं०पु०)अगस्त्य, वसिष्ठ, द्रोणाचार्य।
कुम्भा-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी, तुम्बी, द्रोणपुष्पी।
कुम्भिका-(सं०स्त्री०) श्वेतपर्णी, आँख की पलक का एक रोग, गुग्गुल।
कुम्भिल-(सं०पुं०)अपूर्ण गर्भका सन्तान।
कुम्भी-(सं०पु०) हाथी, घड़ियाल, एक प्रकार का विषैला कीड़ा।
कुम्भीर-(सं०पु०) घड़ियाल, नक्र।
कुम्मैत कुम्मेद-(हिं०पुं०) कालापन लिये लाल रंगका घोड़ा। **आठोगांठ कुमैद**-अति चतुर, बड़ा धूर्त।
कुम्हड़ा-(हिं०पु०) एक फैलने वाली लता जिसका फल बड़ा होता है और तरकारी के काम में आता है; कुम्हड़े की **बतिया**-अति दुर्बल मनुष्य। **कुम्हड़ौरी**-(हिं०स्त्री०) बरी जिसमे कोंहड़े के महीन टुकड़े मिला दिये जाते हैं।
कुम्हलाना-(हिं०क्रि०) मुरझाना, पीला पड़ना, सूखना, तेजहीन होना, वनस्पति का सूखने लगना।
कुम्हार-(हिं०स्त्री०) कुम्भकार, मिट्टी के पात्र बनाने वाला।
कुम्ही-(हिं०स्त्री०) जलकुम्भी, पानी पर फैलने वाला एक पौधा।
कुयाजी-(सं०वि०) निन्द्य यज्ञ कराने या करने वाला।
कुयोग-(सं०पु०) ग्रह नक्षत्र आदि का अनिष्ट कारक सयोग, कुलग्न।
कुरकनी-(हिं०स्त्री०) घोड़े या गदहे के चमड़े का अग्र भाग।
कुरकी-(हिं०) देखो कुर्की।
कुरकुट-(हिं०पु०) छोटा टुकड़ा।
कुरकुटा-(हिं०पुं०) कटा हुआ रवा, रोटी का टुकड़ा।
कुरकुर-(हिं० पु०) किसी खरी वस्तु के दबकर टूटने से उत्पन्न शब्द। **कुरकुरा**-(हिं०वि०) कुरकुर शब्द करने वाला, खरा और करारा। **कुरकुराहट**-(हिं०स्त्री०) कुरकुर करने का शब्द, कुरकुर होने की स्थिति। **कुरकुरी**-(हिं०स्त्री०) कोमल पतली हड्डी, घोड़े की एक बीमारी।
कुरगरा-(हिं०पु०) कारनिस इत्यादि महीन काम बनानेकी छोटी थापी।
कुरङ्ग-(सं०पुं०)ताम्र वर्ण अथवा काले रङ्ग का हरिन, हिरन, मृग, एक प्रकार का छन्द, बरवै छन्द (हिं० पुं०) अशुभ लक्षण, लखौरी रंग का घोड़ा (वि०) बुरे रंग का; **कुरंगनाभि**-कस्तूरी;
कुरंग लाञ्छन-चन्द्रमा।
कुरङ्गिन-(हिं०स्त्री०) कुरङ्गी, हरनी।
कुरङ्गी-(सं०स्त्री०) हिरनी।
कुरट-(सं०पु०) चर्मकार, चमार।
कुरड़ा-(हिं०पु०) एक जाति का अरबी घोड़ा।
कुरण्ट-(सं०पु०) कटसरैया, मकोय।
कुरण्ड-(सं०पु०) अखरोट का वृक्ष, मुष्कवृद्धि रोग, अण्डकोष बढ़ने का रोग।
कुरण्ड-(हिं०पु०) एक प्रकार का कड़ा पत्थर, मानिकरेत।
कुरती-(हिं०स्त्री०)-**कुरता** पहिरने की एक वस्त्र।
कुरथी-(हिं०स्त्री०) कुलत्थ, कुलथी।
कुरन-(हिं०पुं०) देखो कुरण्ड।
कुरना-हिं०क्रि०) एकट्ठा होना, ढेर लगाना, मीठी बोली बोलना।
कुरवनही-(हिं०स्त्री०) बढ़ई का कोना सुधारने का एक अस्त्र।
कुरमा-(हिं० पु०) कुनवा, कुटुम्ब, घराना।
कुरमी-(हिं०पुं०) देखो कुनबी।
कुरर-(सं०पु०)कौञ्चपक्षी, गिद्ध जाति की एक चिड़िया, एक जलचर पक्षी।
कुररा-(हिं०पुं०) देखो कुरर, टिटिहरी।
कुररी-(सं०स्त्री०) भेंड़ी, मादा टिटिहरी, आर्याछन्द का एक भेद जिसमें ४ गुरु और ४९ लघु वर्ण होते हैं।
कुरल-(सं०पुं०) कुन्तल, काकुल।
कुरलना-(हिं०क्रि०) मधुर स्वर से बोलना, चहकना।
कुरला-(हिं०पु०) देखो कुल्ला, कुन्तल, काकुल।
कुरव-(सं०पु०) कटसरैये का शाक, बुरी बोली (वि०) बुरी बोली बोलने वाला।
कुरवना-(हिं०क्रि०) राशि लगाना, ढेर लगाना।
कुरवारना-(हिं०क्रि०)काटना, खरोचना।
कुरस-(सं०पु०) बुरा रस, आसव, मदिरा।
कुरसा-(हिं०पु०)एक वृक्ष जिसका काठ कड़ा तथा लाल रंग का होता है।
कुरा-(हिं०पु०) पुराने घाव में पड़ी हुई गाँठ।
कुराई-(हिं०पु०) पैर में डालने का काठ, कुराव।
कुराज्य-(सं०नपुं०) निन्द्य राज्य,
कुराय-(सं०स्त्री०) पानी से भूमि पोली पड़ जाने से बना हुआ गड्ढा।
कुराह-(हिं०स्त्री०) कुमार्ग, बुरा मार्ग बुरा आचरण।
कुराहर-(हिं०पु०) देखो कोलहल।
कुराही-(हिं०वि०) कुमार्गी, बुरे मार्ग, पर चलने वाला; बदचलन-(स्त्री०) दुराचार।
कुरिया-(हिं०स्त्री०) मड़ई, झोपड़ी,छोटा गांव, ढेर, बोरों मे भर कर राब की जूसी निकालने का काम।
कुरियाल-(हिं०स्त्री०)पक्षियों का आनन्द से बैठकर पर खुजलाना; **कुरियाल-में आना-आनन्द** में मस्त होना।
कुरिल-(हिं०पु०) चर्मकार, चमार।
कुरी-(हिं०स्त्री०) वंश, घराना, कोल्हू।
कुरीति-(सं०स्त्री) कुप्रथा; कुचाल,
कुरु-(सं०पु०) अग्नीध्र राजा के पुत्र का नाम, धृतराष्ट्र और पाण्डवों के पूर्व पुरुष का नाम, एक प्राचीन जनपद का नाम, भात, पुरोहित, कुरु जनपद निवासी।
कुरुई-(हिं०स्त्री०) बांस या मूंज की बनी हुई छोटी डलिया, मौनी।
कुरुक्षेत्र-(सं०नपुं०) एक अति प्राचीन पुण्य स्थान, यह स्थान अंबाले और दिल्ली के बीच में है, महाभारत का युद्ध इसी स्थान में हुआ था।
कुरुखेत-(हिं०पु०) देखो कुरुक्षेत्र।
कुरुख-(हिं०वि०) क्रुद्ध, कुपित, मुंह बनाये हुए।
कुरुजाङ्गल-(सं०पु०) पाञ्चाल देश के पच्छिम का एक देश।
कुरुम-(हिं०पु०) देखो कूर्म।
कुरुरी-(सं०पु०) श्येन पक्षी।
कुरुविन्द-(सं०पु०) कुरथी, नागरमोथा, उड़द, मानिक, काला नमक, दर्पण,
कुरूप-(सं०वि०) निन्द्यरूप, भद्दा।
कुरूपता-(सं०स्त्री०) बेढंगापन,
कुरेदना-(हिं०क्रि०) खुरुचना, खोदना, कुरेदना, किसी वस्तु के ढेर को इधर से उधर हटाना।
कुरेदनी-(सं०स्त्री०) भट्ठी की आग हठाने का सीकचा।
कुरेभा-(हिं०पु०) वर्ष में दो बार ब्याने वाली गाय।

कुरेर-(हिं०स्त्री०) हँसी, खेलकूद।
कुरेलना-(हिं०क्रि०) कुरेदना, खोदना।
कुरेत-(हिं०पु०) साझी, हिस्सेदार।
कुरैया-(हिं०पु०) राशि, ढेर। कुरैया-(हिं०स्त्री०) एक जंगली वृक्ष जिसका फल इन्द्रजव कहलाता है।
कुरौना-(हिं०क्रि०) राशि, ढेरी।
कुर्पर-(स०पु०) केहुनी, घुठना।
कुर्मी-(हिं०पु०) देखो कुनबी।
कुर्री-(हिं०स्त्री०) हेंगी, सोहागा, कुरकुरी, हड्डी, गोल टिकिया।
कुर्स-(हिं०पुं०) एक घास जिसके जड़की रस्सी, चटाई इत्यादि बनती है।
कुल-(फ़ा०वि०) संपूर्ण, पूरा।
कुल-(सं०नपुं०) वंश, घराना, जाति, घर, देह, समूह, झुण्ड, शक्ति, समुदाय, वाममार्ग, कौलधर्म, वंश की मर्यादा, व्यापारियों का समूह (वि०) सम्पूर्ण, श्रेष्ठ, बड़ा। कुल जमा-सब मिलाकर। कुलक-(स०पुं०) कुचला, परवर की लता, हरा साँप, दीमक की निकाली हुई मिट्टी, समूह, भोग्य वस्तु, परस्पर सम्बन्ध
कुलकण्टक-(सं०पुं०) वंश का कण्टक स्वरूप, जो मनुष्य कुल का कांटा हो
कुलकना-(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना, आनन्द से हँसना बोलना।
कुलकर्ता-(सं०पु०) वंश स्थापक, वंश चलाने वाला।
कुलकलङ्क-(सं०पुं०) वंश में धब्बा लगाने वाला, वश को अपमानित करनेवाला। कुलकलङ्किनी-(स०स्त्री०) बाप या ससुर के घराने को अपमानित करने वाली स्त्री।
कुलकानि-(हिं०स्त्री०) वंश की मर्यादा, कुल की लज्जा।
कुलकुलानि-(हिं०क्रि०) कुल कुल करना, धीरे धीरे बोलना, प्रसन्न होना।
कुलक्रिया-(सं०स्त्री०) कुल कार्य, घराने का काम।
कुलक्षण-(स०नपुं०) बुरा लक्षण, कुरीति, बुरी चाल, (वि०) दुराचारी।
कुलक्षय-(सं०पुं०) वंश का अधःपतन और ध्वस।
कुलगरिमा-(सं०स्त्री०) वंशगौरव, वंश का बड़प्पन।
कुलघ्न-(सं०वि०) वंश नाशक, परिवार को बिगाड़ने वाला।
कुलचा-(हिं०पु०) खमीर की रोटी, तम्बू के डंडे के ऊपर लगाने का डंडा।
कुलच्युत-(सं० वि०) जाति बहिष्कृत किया हुआ।
कुलच्छन-(हिं०स्त्री०) देखो कुलक्षणी।
कुलच्छनी-(हिं०स्त्री०) देखो कुलक्षणी।
कुलटा-(सं०पु०) अपने घराने को त्यागकर दूसरे के कुल में रहने वाला, व्यभिचारी, सुपुत्र के अतिरिक्त क्षेत्रज तथा पणक्रीत पुत्र। कुलटा-(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली, अनेक पुरुषों से प्रेम करने वाली परकीया नायिका।
कुलतारन-(हिं०वि०) वंश को पवित्र करनेवाला, कुल को तारनेवाला।
कुलतिथि-(सं०स्त्री०) तन्त्रमत से चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी तथा चतुर्दशी तिथि
कुलतिलक-(सं० पुं०) वंश में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति।
कुलत्था-(सं०स्त्री०) काला सुरमा, जंगली
कुलथी-(हिं० स्त्री०) उड़द के प्रकार का एक मोटा अन्न।
कुलदीप-(सं०वि०) कुल श्रेष्ठ।
कुलदूषण-(स०वि०) वंश में दोष लगाने वाला।
कुलाङ्गार-(सं०नपुं०) वंश के दोष।
कुलदेवता-(स०स्त्री०) वंश के आराध्य देवता, जिस देवता के वश में परंपरा से पूजा होती हो। कुलदेवी-(सं०स्त्री०) वंश परंपरा से पूजित देवी
कुलधर्म-(स०पुं०) परंपरा से चला आता हुआ वंश का कर्तव्य, वंशधर्म।
कुलन-(हिं०स्त्री०) पीड़ा, कष्ट।
कुलनक्षत्र-(सं०नपुं०) ज्योतिष के अनुसार, भरणी, रोहिणी, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा, श्रवण और उत्तरा भाद्रपद।
कुलनन्दन-(स०पु०) अपने अच्छे आचरण से वंश को प्रसन्न करनेवाला पुरुष।
कुलना-(हिं०क्रि०) पीड़ित होना, टीसना
कुलपति-(सं०पु०) वंश का स्वामी, विद्यार्थियों का भरण पोषण करने वाला तथा उनको शिक्षा देने वाला गुरु, दस हज़ार मुनियों को अन्नदानादि देकर पढ़ानेवाला ऋषि।
कुलपूज्य-(स०वि०) जो परपरा से वंश में पूजा चला आया हो।
कुलफ़-देखो कुलुफ ताला।
कुलफ़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का शाक
कुलफ़ी-(हिं०स्त्री०) धातु का बना हुआ चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बरफ जमाया जाता है, पेंच, छोटा कुलफ़, पीतल या तांबे की टेढ़ी नली।
कुलवधू-(स०स्त्री०) भले घराने की स्त्री
कुलबांसा-(हिं०पु०) करगह का बांस जिसमें जुलाहे कंघी बांधते है।
कुलबुल-(हिं०पुं०) छोटे छोटे कीड़ों की गति का शब्द। कुलबुलाना-(हिं०क्रि०) धीरे धीरे हिलना डोलाना, छोटे छोटे जीवों का सरकना, चंचल होना, रेंगना। कुलबुलाहट-(हिं०स्त्री०) हिलाव डोलाव, चंचलता
कुलबोरन-(हिं०वि०) वंश को डुबाने वाला, वश की मर्यादा का नाश करने वाला, कुलकलङ्क।
कुलभूषण-(स०पुं०) देखो कुलतिलक।
कुलवन्त-(सं०पुं०) देखो कुलवान, कुलीन
कुलवर्धन-(सं०वि०) वश की उन्नति करने वाला।
कुलवान्-(सं०वि०) कुलीन, अच्छे कुल का
कुलवधू-(स०स्त्री०) अच्छे घराने की स्त्री
कुलह-(हिं०स्त्री०) कुलाह, टोपी, आखेट करने वाले पक्षियों की आँखें ढापने की टोपी, अँधियारी, ढक्कन।
कलहण्डक-(सं०पुं०) पानी का भँवर।
क़ुलहा-(हिं०पुं०) देखो कुलह।
कुलही-(हिं०स्त्री०) बच्चों का कनटोप।
कुलांच-(हिं०स्त्री०) कुलाछ, दोनों हाथों के बीच का अन्तर, उछाल, छलांग, चौकड़ी।
कुटांट-(हिं०पु०) देखो कुलांच।
कुलाङ्गार-(सं०पुं०) कुल का गौरव नाश करने वाला।
कुलाचाल-(स०पु०) पर्वत विशेष, कुल पर्वत।
कुलाचार-(सं०पुं०) वंश का उचित धर्म
कुलाचार्य-(सं०पुं०) कुलगुरु, कुल पुरोहित।
कुलाधि-(हिं०स्त्री०) पाप, दोष, ऐब।
कुलाभिमान-(स०पुं०) वश का अभिमान
कुलाल-(स०पुं०) कुम्भकार, कोंहार, जंगली मुर्गा, कुम्भीर, घड़ियाल।
कुलाली-(स०स्त्री०) कुम्हारिन, जंगली कुलथी, दूरदर्शक यन्त्र।
कुलाह-(सं०पु०) कुछ पीले रंग का घोड़ा जिसके पैर काले हों, लाल तालमखाना।
कुलाहल-(हिं०पु०) देखो कोलाहल।
कुलि-(हिं०क्रि०वि०) सम्पूर्ण, सब।
कुलिक-(सं०वि०) शिल्पकार, कारीगर
कुलिंग-(स०पु०) चटक पक्षी, गौरैया, कोई चिड़िया या पक्षी।
कुलिज-(सं०पु०) नख, नहँ।
कुलिन्द-(स०पुं०) एक जनपद विशेष।
कुलिश-(स०पु०) वज्र, बिजली, कुठार, फरसा, हीरा, सकरकन्द का वृक्ष।
कुलिशपाणि-(स०पुं०) वज्रधर, इन्द्र
कुली-(सं० पु०) बोझ उठाने वाला मनुष्य, मुटिया। कुली कबारी-नीच जाति का मनुष्य।
कुलीन-(सं०वि०) अच्छे वंश का, अच्छे घराने का, पवित्र, शुद्ध, विद्वान्।
कुलीना-(स०स्त्री०) कई प्रकार के आर्याछन्द का नाम।
कुलीरक-(सं०पुं०) छोटा केंकड़ा।
कुलुक-(सं०नपुं०) जिह्वामल, जीभ की मैल।
कुलुफ़-(हिं०पुं०) ताला, देखो कुलफ़।
कुलू-(हिं०पुं०) कांगड़े के पास एक देश।
कुलूत-(सं०पुं०) एक जनपद विशेष।
कुलूल-(सं०नपुं०) भूसे की आग।
कुलूल-(हिं०स्त्री०) कल्लोल, खेल कूद, क्रीड़ा।
कुलेलना-(हिं०क्रि०) कल्लोल करना, खेलना, कूदना।
कुलेश्वर-(सं०पुं०) कुलपति, शिव, महादेव। कुलेश्वरी-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।
कुल्थी-(हिं०स्त्री०) देखो कुलथी।
कुल्फ़-(हिं०पु०) कुलुफ़ ताला।
कुल्फ़ी-(हिं०स्त्री०) देखो कुलफ़ी।
कुल्माष-(सं०पु०) कुलथी, उड़द, बांस, जटामासी, एक प्रकार का धान, दो दाल वाला अन्न, खिचड़ी, कांजी।
कुल्य-(स०वि०) अच्छे कुल का, माननीय
कुल्या-(स०स्त्री०) कृत्रिम, नदी, नहर, परनाला, कुलस्त्री।
कुल्ला-(हिं०पु०) मुख में पानी भर कर तथा चारो ओर घुमा कर बाहर फेकने का कार्य, मुंह में भरा हुआ जल, गरारा, ऊख के खेत की सिचाई, कुन्तल, काकुल, पीठ की रीढ़ पर काले रंग की धारी वाला घोड़ा।
कुल्ली-(हिं०स्त्री०) देखो कुल्ला।
कुल्लुक-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बांस।
कुल्लूक-(सं०पुं०) मनुसंहिता के प्रसिद्ध टीकाकार।
कुल्लक-(स०पुं०) देखो कुलुक।
कुल्हड़-(हिं०पुं०) पुरवा, चुक्कड़।
कुल्हाड़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी चीरने फाड़ने का एक अस्त्र, कुठार।
कुल्हाडी-(हिं०स्त्री०) छोटा कुल्हाड़ा, टागी
कुल्हिया-(हिं०स्त्री०) छोटा पुरवा, या कुल्हड़।
कुवद-(सं०नपुं०) निन्दा, बुरी बात, बुराई।
कुवल-(स०पुं०) बेर का फल, जल, सर्प का पेट।
कुबलया-(सं० नपु०) नीलपद्म, कोई, कोका, भूमण्डल, एक प्रकार के असुर
कुबलयानन्द-(सं०पुं०) अलंकार का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।
कुबलयापीड-(सं०पुं०) एक दैत्य जिसने हाथी का रूप धारण करके कृष्ण पर आक्रमण किया था और उनसे मारा गया था।
कुबलयाश्व-(स०पु०) धुन्धुमार राजा का नाम, शूत्रजित राजा का पुत्र, मुनियों के यज्ञ को नाश करनेवाले पातालकेतु को मारने के लिये आकाश से सूर्य का भेजा हुआ घोड़ा।
कुबलेशय-(सं०पुं०) कुवलय पर सोने वाले विष्णु।
कुवां-(हिं०पु०) कूप, कुआं।
कुटांव-(हिं० पुं०) जंगली गुलाब, खेत से काट कर इकटठा किया अन्न।
कुवाक्य-(सं० नपुं०) कुत्सित वाक्य, दुर्वचन, बुरी बात, गाली।
कुवाच्य-(सं०वि०) जो कहने योग्य न हो, दुर्वचन।
कुवाट-(सं०पु०) कपाट, द्वार, किवाड़।
कुवाण-(हिं०पुं०) धनुष, कमान।
कुवाद-(सं०पु०) परिवाद, बुरी बात।
कुवार-(हिं०पु०) आश्विन का महीना।
कुवारी-(हिं०वि०) आश्विन संबंधी।
कुवासना-(सं०स्त्री०) बुरा अभिप्राय।
कुविचार-(स० पुं०) बुरा विचार।
कुविचारी-(सं०वि०) बुरे विचारवाला
कुविन्द-(स० पुं०) जुलाहा, कोरी।
कुविन्दक-(सं०पुं०) कांस्यकार, कसेरा।
कुविवाह-(सं०पुं०) शास्त्र के विरुद्ध

विवाह ।
कुवृत्ति-(सं०स्त्री०) निन्दित आचरण ।
कुवेर-(सं०पुं०)यक्षों के राजा तथा इन्द्र की नव निधियों के भण्डारी तथा महादेव के मित्र ।
कुवेरक-(सं०पुं०) शहतूत का वृक्ष ।
कुवेराचल-(सं०पुं०) कैलास पर्वत ।
कुवैद्य-(सं०पुं०) कुत्सित वैद्य ।
कुश-(सं०पुं०) कांस की जाति की एक घास जिसका उपयोग यज्ञादि में होता है, रामचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र का नाम, जल, सर्प का पेट (वि०) पापिष्ठ, पापी
कुशकण्डिका-(सं० स्त्री०) एक वैदिक संस्कार वेदी । **कुशद्वीप**-(सं० पुं०) पुराणों के अनुसार एक टापू जो चारों ओर से घृत समुद्र से घिरा है । **कुशध्वज**-(सं०पुं०) राजा जनक के छोटे भाई जिनकी दो पुत्री भरत और शत्रुघ्न को ब्याही थी ।
कुशरीर-(सं०वि०) बुरे शरीर वाला ।
कुशल-(सं०नपुं०) कल्याण, मंगल, शिव, (वि०) पुण्यश्लील, चतुर, शिक्षित, दक्ष, प्रवीण, **कुशलक्षेम**-(सं०नपुं०) राजी खुशी, **कुशलता**-(सं०स्त्री०) कौशल, चालाकी, निपुणता, दक्षता योग्यता । **कुशलप्रश्न**-(सं०पुं०) राजी खुशी की पूछ पाछ ।
कुशलबुद्धि-(सं०वि०) शिक्षित, चतुर, निपुण । **कुशलाई**-(हिं०स्त्री०) कुशल, कुशलता, निपुणता ।
कुशलात-(हिं०पुं०) देखो कुशलाई ।
कुशा-(हिं०पुं०) देखो कुश । **कुशाक्ष**-(सं०पुं०) बन्दर, वानर । **कुशाग्र**-(सं०नपुं०) कुश का आगे का भाग, कुश की नोक के समान पतला और तीखा । **कुशासन**-(सं०पुं०) यज्ञ उपासना इत्यादि के लिये कुश का बना हुआ आसन, बुरा राज्य प्रबन्ध ।
कुशिक-(सं०पुं०) विश्वामित्र के दादा का नाम, फाल, तेल की कीट, भेलावें का तेल, बेर।
कुशिका-(सं०स्त्री०) हल का फार ।
कुशीनगर-(सं० नपुं०) बुद्धदेव का निर्वाण स्थान ।
कुशा-(सं०स्त्री०) देखो कुशिका ।
कुशीद-(सं०नपुं०) लालचन्दन,हल का फल
कुशीनार-देखो कुशीनगर ।
कुशील-(सं०वि०) मन्द स्वभावका, असभ्य ।
कुशीलव-(सं०पुं०) नट, भाट, गायक, गानेवाला, कथक, वाल्मीकि मुनि ।
कुशीवश-(सं०पुं०) वाल्मीकि ऋषि ।
कुशूलधान्य-(सं०नपुं०) तीन वर्ष के लिये आहार के लिये संचित धान्य । **कुशूलधान्यक**-(सं०नपुं०) कुशूल धान्य संचित करने वाला गृहस्थ ।
कुश्रुत-(सं०वि०) स्पष्ट न सुना हुआ ।
कुष्ठ-(सं०पुं०) कोढ रोग, कुटनामक औषधि । **कुष्ठित**-(सं०वि०) कुष्ठरोग युक्त । **कुष्ठी**-(सं०वि०) कुष्ठरोग युक्त कोढी । **कुष्माण्ड**-(सं०पुं०) कुम्हड़ा, सीताफल, **कुष्माण्डक**-(सं०पुं०) कुम्हड़ा, शिव के अनुचर ।
कुष्माण्डी-(सं० स्त्री०) कुष्माण्डी की लता, योग की एक क्रिया, दुर्गा देवी का एक नाम ।
कुसंस्कार-(सं०पुं०) बुरा संस्कार, मन में बुरी बातों का जमना ।
कुसगुन-(हिं०पुं०) अपशकुन बुरा लक्षण, असगुन ।
कुसङ्ग-(सं०पुं०) कुत्सित संग, **कुसङ्गति**-(सं०स्त्री०) देखो कुसङ्ग ।
कुसमय-(सं०पुं०) कुत्सित समय, संकट का समय, बुरा समय, दुःख के दिन,
कुसर-(हिं०पुं०) पानी में उगने वाली एक लता की जड जो औषधि में व्यवहार होती है ।
कुसल-(हिं०पुं०) देखो कुशल ।
कुसलई-(हिं०स्त्री०) क्षेम, निपुणता,
कुसलछेम-(हिं०स्त्री०) देखो कुशलक्षेम ।
कुसलाई-(हिं०स्त्री०) निपुणता, कुशलता, कुशलक्षेम ।
कुसलात-(हिं०पुं०) देखो कुशलात ।
कुसली-(हिं०स्त्री०) आमकी गुठली, एक पकवान, गोझा, पिराक (वि०) देखो कुशली ।
कुसवा-(हिं०पुं०) धान में लगने वाला एक रोग ।
कुसवारी-(हिं०पुं०) रेशम का जंगली कीड़ा रेशम ।
कुसहाय-(सं०पुं०) बुरा साथी, कुत्सित संगी ।
कुसाईत-(हिं०स्त्री०) कुसमय, कुमुहूर्त,
कुसाखी-(हिं०पुं०) कुत्सित साक्षी ।
कुसिया-(हिं०स्त्री०) बेल बूटा बनाने की सूई ।
कुसियार-(हिं०पुं०) एक प्रकार की कोमल ऊख ।
कुसी-(हिं०स्त्री०) हल की फार ।
कुसीद-(सं०नपुं०) व्याज के लिये रुपया उधार देने का काम, (पुं०) व्याज के लिये ऋण देने वाला,
कुसुम-(सं०पुं०) पुष्प, फूल, मेवा, स्त्री का मासिक धर्म, आंख का एक रोग, छोटे छोटे वाक्य वाला गद्य, एक प्रकार का छन्द, पीले फूल का एक पौधा, बर्रे; देखो कुसुम्भ । **कुसुमचाप कुसुमधन्वा**-(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव । **कुसुमपुर**-(सं० नपुं०) पाटलिपुत्र, पटना नगर । **कुसुमफल**-(सं०नपुं०) जातीफल,जायफल । **कुसुममय**-(सं०पुं०) फूलों से भरा हुआ ।
कुसुमरेणु-(सं०पुं०) फूल का पराग ।
कुसुमवती-(सं०स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।
कुसुमवाण-(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव
कुसुमविचित्रा-(सं०स्त्री०) एकवर्ण वृत्त
कुसुमशयन-(सं०पुं०) फूलों का बिछौना
कुसुमशर-(सं०पुं०) कामदेवका पुष्पबाण
कुसुमस्तवक-(सं०पुं०) फूलों का गुच्छा, दण्डक जातिका एक छन्द ।
कुसुमा-(सं०स्त्री०) जायफल का वृक्ष, शङ्खपुष्पी ।
कुसुमाकर-(सं०पुं०) बगीचा, कुंज, वसन्त काल ।
कुसुमागम-(सं०पुं०) वसन्त काल ।
कुसुमांजलि(सं०पुं०) हाथ की अंजुलि में फूल भरकर देवतापर चढ़ाना, पुष्पाजलि ।
कुसुमाधिप-(सं०पुं०) चम्पा का वृक्ष ।
कुसुमायुध-(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव ।
कुसुमासव-(सं०पुं०) मधु.
कुसुमास्त्र-(सं०पुं०) कामदेव का बाण।
कुसुमावली-(सं०स्त्री०) फूलों का गुच्छा
कुसुमित-(सं०वि०) पुष्पित, फूला हुआ
कुसुमितलता वोल्लिता-एक प्रकार का छन्द ।
कुसुमोद्यान-(सं०नपुं०) पुष्प वाटिका, फुलवाड़ी ।
कुसुम्ब-देखो कुसुम्भ ।
कुसुम्भ-(सं०पुं०) कुसुम नामक पुष्प विशेष ।
कुसुम्भा-(हिं०पुं०) कुसुम का रंग, धुली हुई अफ़ीम ।
कुसुम्भी-(हिं०वि०) लाल रंग का ।
कुसूत-(हिं०पुं०) बुरा धागा बुरा प्रबन्ध
कुस्तुभ-(सं०पुं०) विष्णु, समुद्र ।
कुस्त्री-(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी ।
कुस्वप्न-(सं०पुं०) बुरा सपना ।
कुस्वामी-(सं०पुं०) बुरा मालिक या पति ।
कुस्सा-(सं०पुं०) कुदाल, कुदाली ।
कुहक-(सं०वि०) प्रतारक, धोखा देनेवाला ऐन्द्रजालिक, (नपुं०) बन्दी. धोखा, धर्तता; (पुं०) मेढ़क । **कुहकना**-(हिं०क्रि०) मीठा बोलना, पिहिकना, मोर या कोयल की बोली के लिये प्रयोग होता है । **कुहकी**-(सं०वि०) मायावी, धनी ।
कुहना-(हिं०क्रि०) मार मार कर कचूमर निकालना ।
कुहनी-(हिं०स्त्री०) हाथ और बांह के जोड़ की हड्डी, टेढी बनी हुई नली । **कुहनी उड़ान**-मल्ल युद्ध की एकयुक्ति
कुहप-(हिं०पुं०) रात्रिंचर, राक्षस ।
कुहर-(सं०पुं०) छिद्र, गडढा, भूना हुआ अन्न, कान का छिद्र, कण्ठ, गला हिं०स्त्री०) बहरी नामक पक्षी जो चिड़ियों को पकड़ लेता है ।
कुहरा-(हिं०पुं०) जल का अत्यन्त सूक्ष्म कण जो ठंढक पाकर वायु की भाफ में जम जाता है और धीरे धीरे भूमि पर उतरता है ।
कुहराम-(हिं०पुं०) कोलाहल, विलाप का शब्द, उपद्रव, हायहाय ।
कुहाना-(हिं०क्रि०) मनही मन क्रुद्ध होना, रूठना,
कुहारा-(हिं०पुं०) कुठार, कुल्हाड़ी ।
कुहासा-(हिं०पुं०) देखो कुहरा ।
कुही-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की शिकारी चिड़िया, कुहर ।
कुहु-(सं०स्त्री०) अमावस्या, कोयलकी बोली ।
कुहुक-(हिं०नपुं०) पक्षियों का मधुर कूजन, कूक । **कुहुकना**-(हिं०क्रि०) पक्षियों का मीठे स्वर मे बोलना ।
कुहुकवान-(हिं०पुं०) कुहुकने वाली तीर, बाण जिसके छोड़ने से मधुर शब्द होता है ।
कुहू-(सं०स्त्री०) कोयल की ध्वनि, जिस अमावस्या को चन्द्रमा बिलकुल नही देख पड़ता ।
कुहूक, कुहू कण्ठ-(सं० पुं०) कोकिल, कोयल ।
कुहूमुख कुहूरव-(सं०पुं०) देखो कुहूकण्ठ
कुहेड़ी, कुहेलिका-(सं०स्त्री०) कुहरा-
कूख-(हिं०स्त्री०) कुक्षि, काख ।
कूंखना-(हिं०क्रि०) पीड़ित अवस्था मे करुणाजनक शब्द निकालना,कांखना।
कूंगा-(हिं०पुं०) कसेरे का खरादने का यन्त्र, बबूल की छाल का काढा जिसमें चमड़ा पकाया जाता है ।
कूंच-(हिं०स्त्री०) जुलाहे की कूंची, लोहार की बड़ी सड़सी, एड़ी के ऊपर की बड़ी नस ।
कूंचना-(हिं०क्रि०) टुकड़े टुकड़े करना तोड़ना, कुचलना, मारना, पीटना ।
कूंचा-(हिं०पुं०) झाड़ू बोहारी । **कूंची**-(हिं०स्त्री०) छोटा कूंचा, छोटी झाड़ू, चित्रकार का रंग पोतने की कलम, बालों की कलम ।
कूंज-(हिं०पुं०) क्रौंच पक्षी, कराकुल पक्षी
कूंजड़ा-(हिं०पुं०) साग भाजी तथा फल बेचने वाली एक जाति।
कूंजड़ी-(हिं०स्त्री०) कूंजड़े की स्त्री ।
कूंड़-(हिं०पुं०) युद्ध में पहिरने की लोहे की टोपी, पानी भरने का लोहे या मिट्टी का गहरा पात्र, खेत मे हल से बनी हुई लकीर, कठौता, मोमबत्ती जलाने का घड़े के आकार की काच की बड़ी हांड़ी ।
कूंड़ा-(हिं०पुं०) गहरा तथा चौड़े मुंह का मिट्टी का पात्र जिसमें जल रक्खा जाता है, पौधे लगाने का गमला, दीपक जलाने की बड़ी हाँड़ी, कठौता, डोल ।
कूंडी-(हिं०स्त्री०) पत्थर की कटोरी, पथरी, छोटी नांद, कोल्हू के बीच गड्ढा, एडुरी ।
कूंथना-(हिं०क्रि०) कराहना, कांखना, मारना, पीटना, कबूतर का शब्द करना ।
कूंई-(हिं०स्त्री०) कुमुदिनी, कोका ।
कूक-(हिं०स्त्री०) कूजन, मोर या कोयल की मीठी बोली, रोदन, घड़ी या बाजे में कुंजी लगाने का काम। **कूकना**-(हिं०क्रि०) मधुर ध्वनि करना, कूजना, घड़ी या बाजे में चाभी भरना ।
कूकर-(हिं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता । **कूकरकौर**-(हिं०पुं०) कुत्ते को दिया जाने

वाला उच्छिष्ट भोजन का अश, तुच्छ वस्तु। **कुकरनिंदिया**-(हिं०स्त्री०) कुत्ते के समान हलकी नींद।

कूका-(हिं०) एक नानक पन्थी सम्प्रदाय

कूकी-(हिं०स्त्री०) क्षेत्र की उपज को बिगाड़ने वाला एक कीड़ा।

कूकुर-(सं०पु०) कुक्कुर, कुत्ता।

कूच-(सं०पु०) प्रस्थान, रवानगी, **कूच कर जाना**-दुनियां से चले जाना मर जाना; **कूच बोलना**-प्रस्थान करना।

कूचिका-(सं०स्त्री०) छोटी चाभी, चित्रकार की कूंची।

कूची-(सं०स्त्री०)चित्र बनाने की लेखनी (हिं०स्त्री०) छोटी झाड़ू।

कूज-(हिं०स्त्री०) ध्वनि, बोली। **कूजक**-(सं०वि०) अव्यक्त शब्द बोलनेवाला। **कूजन**-(सं०नपु०) चिड़ियों की बोली, पेट की गुड़गड़ाहट, गाड़ी की पहियों का शब्द। **कूजना**-(हिं०क्रि०) कूकना, चहकना, मधुर ध्वनि करना।

कूजा-(हिं०पु०) बेले या मोतिये का फूल

कूजित-(सं०वि०) ध्वनित, शब्द किया हुआ, कूका हुआ।

कूट-(सं०पुं०) पहाड़ का शिखर, कंगूरा, मुकुट, अग्र भाग, समूह, लोहे की मुंगरी, हल का फार, हरिन के पकड़ने की जाल, गुप्ती छड़ी, मिथ्या, झूठ, टूटी हुई सींघ, नगर का द्वार, घर, छोटा पेड़, लोहसार, टूटी सींग का बैल, पीतल, छल, ढेरी, गुप्त, रहस्य, गूढार्थ, व्यंग, (वि०) निश्चल, ठहरा हुआ, (वि०) कृत्रिम, बनावटी, भ्रष्ट किया हुआ, विशिष्ट, प्रधान,(हिं०पुं०) कूट नामक औषधि, कुटी झोपडा, वृद्धि। **कूटकर्म**-(सं०नपुं०) छल,धोखा, छिपा कर किया हुआ काम। **कूटकर्मा**-(सं०पुं०) छली, कपटी। **कूटकार**-(सं०वि०) वंचक, झूठी साक्षी देनेवाला **कूटता**-(सं०स्त्री०) काठिन्य, कड़ाई, असत्य, छल, कपट, झूठापन। **कूटत्व**-(सं०नपुं०) देखो कूटता। **कूटधर्मा**-(सं०वि०) मिथ्या व्यवहार को धर्मकार्य बतलानेवाला।

कूटना-(हिं०क्रि०)किसी पदार्थ को ऊपर से धड़ाधड़ पीटना, ठोंकना, मारना, पीटना, पत्थर की सिल, जांते इत्यादि में टांकी से छोटे छोटे गड्ढे बनाना, बधिया करना; **कूट कर भरना**-अच्छी तरह कस कर भरना

कूटनीति-(सं०स्त्री०) कपटनीति, धोखे की चाल। **कूटपाश**-(सं०पु०) पक्षियों के पकड़ने का यन्त्र। **कूटमान**-(सं०नपुं०) पसंगे की तराजू। **कूटयुद्ध**-(सं०पुं०) शत्रु को धोखा देने वाली लड़ाई। **कूट योधी**-(सं०वि०) छिपकर लड़नेवाला। **कूट लेख**-(सं०पुं०) समझ में न आने वाली लिखावट। **कूटशासन**-(सं०नपु०) मिथ्या शासन, धोखे का राज्य। **कूट साक्षी**-(सं०पु०) झूठ बोलने वाला साक्षी। **कूटस्थ**-(सं०वि०) श्रेष्ठ, सबसे ऊपर रहने वाला, निश्चल, सर्वदा, सब काल में समान, समूह, स्थिति, गुप्त, अविनाशी।

कूटागार-(सं०नपु०) घर के ऊपरी खण्ड का मण्डप, क्रीड़ा गृह।

कूटू-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसके फलके बीजों का आटा पीसकर फलहार में व्रत के दिन व्यवहार होता है।

कूड़ा-(हिं०पुं०) झाड़न, मैल, कतवार, व्यर्थ वस्तु। **कूड़ाखाना**-(हिं०पु०) कूड़ा फेंकने का स्थान, घूर।

कूढ-(हिं०पुं०) परिहत, हल का वह भाग जिसमें एक ओर मुठिया और दूसरी ओर खोंपी रहती है, हल की गडारी में से बीज बोने की रीति, (वि०) अज्ञान, मूर्ख। **कूढमग्ज**-(हिं० पु०) मन्द बुद्धि, बात न समझनेवाला।

कूणि-(सं०वि०)वक्रहस्त, टेढे हाथवाला

कूत-(हिं०स्त्री०) अनुमान, किसी वस्तु की संख्या, मूल्य अथवा परिमाण का बिना गिने या नापे ठहराव। **कूतना**-(हिं०क्रि०) अटकल से किसी वस्तु का मूल संख्या, परिमाण इत्यादि बतलाना।

कूद-(हिं०स्त्री०) कूदने की क्रिया, कुदाई **कूदना**-(हिं०क्रि०) उछलना, फांदना, छलांग मारना, हस्तक्षेप करना, क्रम भङ्ग करना, अत्यन्त प्रसन्नता, दिखलाना, उल्लंघन करना, लांघना, विघ्न डालना।

कूनी-(हिं०स्त्री०) कोल्हू का गड्ढा जिसमें पेरने के लिये ऊख डाली जाती है।

कूप-(सं०पुं०) कुवां, इनारा, गर्त, छेद, खात, गड्ढा। **कूपकार**-(सं०पुं०) कुवां खोदने वाला। **कूपज**-(सं०पु०) लोम, केश, बाल। **कूपदर्दुर**-(सं०पु०) कुवें का मेढक, अनुभव हीन मनुष्य। **कूपमण्डूक**-(सं०पु०) देखो कूपदर्दुर।

कूपी-(सं०स्त्री०) छोटा कुवां, नाभि, छोटा पात्र।

कूबड़-(हिं०पु०) पीठ का टेढ़ापन, वक्रभाव, टेढ़ापन।

कूबर-(हिं०पुं०) कूबड़।

कूबरी-(सं०पुं०) रथ, गाड़ी, सग्गड़, (हिं०वि०) कुब्जा, कुबड़ी।

कूबा-(हिं०पुं०) कूबड़, बड़ेरा रखने की टेढ़ी लकड़ी।

कूर-(हिं०पु०) कर की कमी, चूर, चूरा, (विं०) क्रूर, निर्दय, दुष्ट, दयारहित, भयावना, डरावना, मूर्ख, जड़ बुद्धि।

कूरता-(हिं०स्त्री०)देखो क्रूरता। **कूरपन**-(हिं०पुं०) देखो क्रूरता।

कूरम-(हिं०पुं०) देखो कूर्म।

कूरा-(हिं०पुं०) राशि, ढेर, भाग, अंश।

कूरो-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास, छोटी ढेर।

कूर्च-(सं०पु०) दोनों भौंह के बीच का स्थान, मोरपंख, दाढीमूछ, धोखा, छल, घमड, झूठी बात, कड़ापन, मस्तक, भण्डार। **कूर्चशेखर**-(सं०पु०) नारियल का वृक्ष।

कूर्चिका-(सं०स्त्री०) चाभी, सूई, फूल की कली, फटा हुआ दूध, चित्रकार की कलम।

कूर्दन-(सं०नपुं०)बालकों का खेलकूद।

कूर्प-(सं०पु०) देखो कूर्च। **कूर्पर**-(सं०पु०) केहुनी, घुटना।

कूर्म-(सं०पु०) कच्छप, कछुवा, पृथ्वी, प्रजापति का एक अवतार, विष्णु का दूसरा अवतार, तन्त्र शास्त्र के अनुसार एक मुद्रा, एक आसन विशेष, शरीर में की वह वायु जो पलकों को खोलती बन्द करती है। **कूर्मपुराण**-(सं०नपु०) अठारह प्रसिद्ध पुराणों में से एक का नाम। **कूर्म पृष्ठ**-(सं०नपु०) कछुवे की पीठ।

कूर्मी-(सं०नपु०) एक प्रकार की बीन।

कूल-(सं०नपु०) नदी का किनारा, खंभा तालाब, सेना का पिछला भाग, समीप, पास, नहर। **कूलचर**-(सं०वि०) नदी तीर पर घूमने वाला पशु।

कूला-(हिं०पु०)कृत्रिम जलप्रवाह,नाली

कूलिनी-(सं०स्त्री०) नदी।

कूली-(हिं०पु०) देखो कुली।

कूल्हना-(हिं०क्रि०) कांखना, कराहना, आह भरना।

कूल्हा-(हिं०पु०) पेडू के दोनों ओर उभड़ी हुई हड्डी, मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

कूष्माण्ड-(सं०पु०) कुम्हड़े की लता।

कूष्माण्डिनी, कूष्माण्डी-(सं०स्त्री०) एक देवी का नाम।

कूह-(हिं०स्त्री०) हाथी की चिग्घाड़, चिल्लाहट, चीख।

कूहा-(सं०स्त्री०) कुहरा।

कृक-(सं०पु०) कण्ठ, गला।

कृकर-(सं०पुं०) शिव, शरीर की वायु जो छींक लाती है, कनेर का वृक्ष।

कृकलास-(सं०पु०) गिरगिट।

कृकाट, कृकाटक-(सं०पुं०) गल देश, हलक, खंभे का भाग।

कृच्छ्-(सं०पुं०) दुःख, कष्ट, पाप, सन्तापन आदि व्रत जिसमें पहिले निराहार रह कर दूसरे दिन पञ्चगव्य पीकर उपवास किया जाता है, मूत्रकृच्छ्र रोग, (वि०) कष्ट देनेवाला, क्लेश युक्त। **कृच्छ्र कर्म**-(सं०नपु०) कष्ट साध्य कर्म, कठिनता से होने वाला कार्य। **कृच्छ्रसाध्य**-(सं०वि०) कष्टसाध्य, कठिनता से होने वाला।

कृत-(सं०वि०) सम्पादित, किया हुआ प्रस्तुत, तैयार, प्राप्त, यथेष्ट, अभ्यस्त, समीपका, पर्याप्त, बनाया, हुआ चार युगों में से पहिला युग।' **कृतवर्मा**-(सं०वि०) दक्ष, चतुर, जो अपना काम कर चुका हो, परमेश्वर **कृतकार्य**-(सं०वि०) कार्य साधन करने वाला। **कृतकाल**-(सं०पुं०) निर्धारित समय। **कृतकीर्ति**-(सं०वि०) यश का लाभ करनेवाला। **कृतकृत्य**-(सं०वि०) सम्पूर्णरूप से अपने कार्य को साधन करनेवाला, चतुर, संतुष्ट, मुक्त। **कृतकृत्यता**-(सं०स्त्री०) सफलता, **कृतकौतुक**-(सं०वि०) खेलाड़ी, खेलने वाला।

कृतघ्न-(सं०वि०) पहिले किए हुए उपकार को भूल जानेवाला। **कृतघ्नता**-(सं०स्त्री०) उपकार भूलने की अवस्था। **कृतघ्नी**-(हिं०वि०) देखो कृतघ्न।

कृतज्ञ-(सं०वि०) किये हुए उपकार को माननेवाला। **कृतज्ञता**-(सं०स्त्री०) उपकार मानना।

कृतदण्ड-(सं०पु०)यमराज। **कृतनिश्चय**-(सं०वि०) दृढ़ संकल्प किया हुआ। **कृतपर्व**-(सं०नपुं०) कृतयुग, सत्ययुग। **कृतपुण्य**-(सं०वि०) पुण्य कार्य कर चुकनेवाला। **कृतपूर्व**-(सं०वि०) पहिले से किया हुआ। **कृतबुद्धि**-(सं०वि०) बुद्धि स्थिर किया हुआ। **कृतयुग**-(सं०नपुं०) सत्य युग। **कृतविद्य**-(सं०वि०) पण्डित, ज्ञानी, जिसने विद्या पढ़ी हो। **कृतवेश**-(सं०वि०) अलंकृत, सजा हुआ।

कृतांक-(सं०वि०) चिन्हित, चिन्ह किया हुआ।

कृतांजलि-(सं०वि०) श्रद्धाञ्जलि, हाथ जोड़े हुआ।

कृतात्यय-(सं०पु०) सांख्य दर्शन के अनुसार भोग द्वारा कर्म का नाश।

कृतान्त-(सं०वि०)समाप्तिकारक,स्वतंत्र करने वाला धर्मराज, यम, सिद्धान्त, मृत्यु, पाप, शनि, भरणी नक्षत्र, दो की संख्या, देवता।

कृतान्न-(सं०नपुं०)पक्वान्न, मिठाई आदि

कृतापकार-(सं०वि०) अपकार करने वाला।

कृतापराध-(सं०वि०) दोषी, अपराधी।

कृतार्थ-(सं०वि०) कृत कार्य, जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो, सन्तुष्ट, दक्ष, कुशल, मुक्त। **कृतार्थता**-(सं०स्त्री०) सफलता।

कृतावधान-(सं०वि०) सावधान, चतुर।

कृतावधि-(सं०वि०) सीमाबद्ध, नियत।

कृति-(सं०स्त्री०) क्रिया, कार्य, करनी, करतूत, काम, पुरुष यत्न, क्षति, हिंसा, मारकाट, माया, अनुष्टुप् के समान एक छन्द, बीस की संख्या, गणित में वर्ण संख्या, विष्णु।

कृतिकर-(सं०पुं०) बीस हाथवाला, रावण।

कृती-(सं०वि०) शिक्षित, पुण्यवान्, भला काम करने वाला, कुशल, प्रवीण, दक्ष।

कृत्ति-(सं०स्त्री०) मृगचर्म, भूर्जपत्र, भोजपत्र।

कृत्तिका-(सं० स्त्री०) तीसरा नक्षत्र, चन्द्रमा की पत्नी, गाड़ी, मृगचर्म खाल, भोजपत्र ।

कृत्तिवास-(सं०पु०) शिव, महादेव ।

कृत्य-(सं० वि०) किया जाने वाला, कर्त्तव्य, वेदविहित आवश्यक कर्म, घूस (उत्कोच) देकर वश में किया जाने वाला, जादू टोना के देवता, कार्य

कृत्यक-(सं० पुं०) हानि पहुँचाने वाला।

कृत्यका-(सं०स्त्री०) डाइन, चुड़ैल ।

कृत्या-(सं०स्त्री०) अभिचारादि कार्य जादू टोना, अभिचार के निमित्त आराधित देवता ।

कृत्रिम-(सं०वि०) बनावटी, मिथ्याभूत, कार्यजात, काम से निकाला हुआ ।

कृत्स्न-(सं०वि०) सम्पूर्ण, सब ।

कृदन्त-(सं०पु०) धातु में 'कृत्' प्रत्यय लगाकर बना हुआ शब्द ।

कृन्तन-(सं०नपुं०) छेदन, काटछांट ।

कृप-(सं०पु०) भरद्वाज ऋषि के पुत्र का नाम ।

कृपण-(सं०वि०) कजूस, सूम, अदाता, न देनेवाला, क्षुद्र ।

कृपणता-(सं०स्त्री०) कंजूसी, क्षुद्रता ।

कृपनाई-(हिं०स्त्री०) कृपणता ।

कृपया-(सं०अव्य०) कृपापूर्वक ।

कृपा-(सं०स्त्री०) दया, अनुग्रह, क्षमा ।

कृपाकर-(सं०वि०) दयालु ।

कृपाण-(सं०पु०) खड्ग, तलवार, दण्डक वृत्त का एक भेद ।

कृपाणिका-(सं०स्त्री०) छुरी, कैंची, चाकू कटारी ।

कृपानिधि-(सं०पुं०) दयावान् ।

कृपापात्र-(सं०नपुं०) दयाभाजन, जिस व्यक्ति पर दया की जावे, दया किये जाने योग्य ।

कृपायतन-(सं०नपुं०) कृपानिधि ।

कृपाल-(हिं०वि०) देखो कृपालु ।

कृपालु-(सं० वि०) दयालु कृपा करने वाला ।

कृपालुता-(सं०स्त्री०) दयालुता ।

कृपावान्-(सं०वि०) दया करनेवाला ।

कृपासिन्धु-(सं० पुं०) दयासागर; कृपानिधि ।

कृमि-(सं० पुं०) कीट, कीड़ा, उड़ने वाला कोई कीड़ा, चींटी, लाह, मकड़ा, गदहा, कीड़ोंका रोग ।

कृमिका-(सं०स्त्री०) ग्रन्थपर्णी, राई ।

कृमिघ्न-(सं०पुं०) बायबिडंग, प्याज, भिलावाँ नीम ।

कृमिज-(सं०वि०) कीड़ों से उत्पन्न होने वाला, लाह, (पुं०) अगुरु काष्ठ ।

कृमिजा-(सं०स्त्री०) लाह, रेशम, हिरमिजी, अगर ।

कृमिफल-(सं०पुं०) गूलर का फल ।

कृमि भोजन-(सं० पु०) एक नरक का नाम ।

कृमिरोग-(सं०पु०) पेट में कीड़ा पड़ने का रोग ।

कृमीलक-(सं०पुं०). जंगली मूंग ।

कृश-(सं० वि०) दुर्बल, क्षीण, दुबला पतला, धीमा, दरिद्र, अधूरा ।

कृशता-(सं०स्त्री०) क्षीणता, दुर्बलता, दुबलापन, अल्पता, कमी ।

कृशन-(सं० नपुं०) सुवर्ण, सोना, (वि०) सुवर्ण निर्मित ।

कृशर-(सं० पुं०) तिल चावल की खिचड़ी, केसारी ।

कृशरा-(सं०स्त्री०) खिचड़ी ।

कृशाक्ष-(सं०पु०) जीर्णनाभ, मकड़ा ।

कृशाङ्गी-(सं० स्त्री०) दुबली पतली औरत ।

कृशानु-(सं०पुं०) अग्नि, आग ।

कृशित-(सं०वि०) दुर्बल, दुबला, पतला ।

कृशोदरी-(सं० स्त्री०) पतली कमरवाली स्त्री ।

कृषक-(सं०पुं०) किसान, खेतिहर हल का फार ।

कृषि-(सं०स्त्री०) खेती, किसानी, कृषिकर्म-खेतीबारी का काम ।

कृषीवल-(सं०पुं०) किसान ।

कृष्ट-(सं०वि०) कर्षित, जोता हुआ ।

कृष्टिमा-(सं०पुं०) पाण्डित्य, पण्डिताई, मनुष्यत्व ।

कृष्ण-(सं० वि०) काला, नीले रंगका (पुं०) भगवान् का एक अवतार, वासुदेवके पुत्र, परब्रह्म, अर्जुन, कोयल, करौंदा, कौवा, (नपुं०) काली मिर्च, नील का वृक्ष, काला जीरा, राई, महीने का काला पाख, अशुभ काल, एक वेदोक्त असुर जिसको इन्द्रने मारा था, एक ऋषिका नाम, अथर्व वेद का एक उपनिषद्, वेदव्यास, कलियुग, चन्द्रमा मे का कलङ्क, छप्पय छन्द का एकभेद ।

कृष्णक-(सं० पु०) काले हरिन का चमड़ा, काली सरसों ।

कृष्णकाय-(सं०पुं०) भैंसा (वि०) काले शरीर का ।

कृष्णमति-(सं०पुं०) अग्नि ।

कृष्णग्रीव-(सं०पुं०) नीलकण्ठ, महादेव

कृष्णचन्द्र-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण ।

कृष्णजिह्व-(सं० पुं०) काली जीभ का अशुभ घोड़ा ।

कृष्णद्वैपायन-(सं०पुं०) पाराशरके पुत्र वेदव्यास ।

कृष्णपक्ष-(सं०पुं०) चन्द्रक्षय का पक्ष, अंधियारा पाख, प्रतिपद से अमावास्या तक का काल ।

कृष्णपिंगला-(सं०स्त्री०) दुर्गा ।

कृष्णभोगी-(सं०पुं०) काला सांप ।

कृष्णमणि-(सं०पुं०) नीलम ।

कृष्णसार-(सं०पुं०) थूहर, सेंहुड़, काला हरिन ।

कृष्णस्कन्ध-(सं० पुं०) तमाल वृक्ष, तमाखू का पेड़ ।

कृष्णा-(सं०स्त्री०) द्रौपदी, किशमिश, काला जीरा, कुटकी, राई, पीपल, दक्षिण देशकी एक नदी, पैरवर, दूब, कस्तूरी, अग्नि की सात जीभ में से एक, काली तुलसी ।

कृष्णाभिसारिका-(सं०स्त्री०) एकनायिका जो अंधेरी रात मे अपने प्रियतम के पास जाती है ।

कृष्णाभ्र-(सं०नपुं०) काला अबरख, काला बादल ।

कृष्णायस-(सं०नपुं०) इसपात लोहा ।

कृष्णावास-(सं० पुं०) द्वारका पुरी ।

कृष्णिमा-(सं०पु०) कृष्णत्व, कालापन

कृष्णाष्टमी-(सं० स्त्री०) भादो बदी अष्टमी जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था ।

कृष्य-(सं०वि०) जोतने योग्य भूमि ।

क्लृप्त-(सं०वि०) रचित, बना हुआ ।

केंकें-(हिं०स्त्री०) चिड़ियों का दुःख सूचक शब्द, झगड़े की बोली ।

केंचुक-(हिं०स्त्री०) सांप की अपने आप गिरजाने वाली खाल ।

केंचुली-(हिं०स्त्री०) देखो केंचुल ।

केंचुवा-(हिं०पु०) वर्षा ऋतु का एक कीड़ा, पेटमें पड़ जाने वाला कीड़ा, जो केंचुवे के आकार का होता है ।

केत-(हिं०पु) मोटी बेत ।

केउआ-(हिं०पु०) घुइया, चोकन्दर ।

केउटा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का विषैला सर्प ।

केउ-(हिं०सर्व०) कोई ।

केकड़ा-(हिं० पु०) कर्कट, पानीमे रहने वाला आठ टांग और दो पंजे वाला एक कीड़ा ।

केकय-(सं०पु०) एक प्राचीन जनपद का नाम जो काश्मीर देश के अन्तर्गत है, इस देशमें रहने वाला, दशरथ के ससुर का नाम ।

केकयी-(सं०स्त्री०) दशरथ की मझली पत्नी भरत की माता ।

केकल-(सं०पु०) नर्तक, नाचने वाला ।

केका-(सं०स्त्री०) मोर की बोली ।

केकी-(सं०पु०) मयूर, मोर ।

केङ्करू-देखो कङ्गारू ।

केचित्-(सं०अव्य०) कोई कोई ।

केड़वारी-(हिं०स्त्री०) शाक, फल आदि बोने का बगीचा, नये बोये हुए वृक्षों का बगीचा ।

केड़ा-(हिं० पुं०) कोंपल, कल्ला, नया पौधा, गट्टा, नवयुवक ।

केत-(सं०पु०) घर, स्थान, बस्ती, ध्वज, पताका, संकल्प, प्रतिज्ञा ।

केतक-(सं०नपु०) केवड़ा (हिं०वि०) कितने, बहुत, बहुत कुछ ।

केतकर-देखो केतकी ।

केतकी-(सं० स्त्री०) एक छोटा वृक्ष जिसमें तलवार के आकार के पत्तों का एक सुगंधित फूल होता है, केवड़ा ।

केतन-(सं०नपु०) निमन्त्रण, बुलावा, चिन्ह, ध्वजा, घर, स्थान, कृत्य ।

केता-(हिं०वि०) कितना ।

केतिक-(हिं०वि०) कितना ।

केतु-(सं० पु०) चलने फिरने का कार्य, प्रज्ञा, चमक, पताका, चिन्ह पीड़ा, उत्पात, पुच्छल तारा, नवग्रहों में से एक ।

केतुमती-(सं०स्त्री०) सुमाली राक्षस की स्त्री जो रावण की नानी थी, एक अर्धसम वृत्त ।

केतुमान्-(सं०वि०) चिन्हयुक्त, प्रज्ञायुक्त, बुद्धिमान्, तेजस्वी, ध्वजायुक्त (पु०) धन्वन्तरि का पुत्र ।

केतुरत्न-(सं०नपुं०) वैदूर्यमणि, लहसुनिया ।

केतुवृक्ष-(सं०पु०) मेरुपर्वत के चारो ओर के पर्वतों पर कदम्ब, जामुन, पीपल और बरगद के वृक्ष ।

केती-(हिं०वि०) कितना ।

केदली-देखो कदली ।

केदार-(सं०पुं०) हिमालय के अन्तर्गत एक पर्वत, पानी रोकने के लिये चारो ओर मेड़ बना हुआ खेत, उपजाऊ भूमि, आलवाल, थाला, एक राग विशेष ।

केदारनाथ-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत के अन्तर्गत एक पर्वतकी चोटी जिसपर इस नाम का शिवलिंग है ।

केदारी-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम

केन-(सं०पु०) सामवेद का एक उपनिषद् जिसका पहिला मन्त्र 'केन' शब्द से आरम्भ होता है ।

केना-(हिं०पु०) शाक भाजी मोल लेने के लिये दिया हुआ थोड़ा सा अन्न, एक प्रकार की घास जिसकी पकौड़ी बनती है ।

केन्द्र-(सं०नपुं०) वृत्त का मध्य स्थान ज्योतिष में लग्न से पहिले, चौथे, सातवें और दसवें स्थान को केन्द्र, कहते हैं । **केन्द्राभिकर्षिणी शक्ति**-वह शक्ति जिसके प्रभाव से द्रव्य केन्द्र की ओर आकर्षित होता है ।

केयूर-(सं०नपु०) बांह में पहिरने का आभूषण, भुजबन्ध, अंगद ।

केयूरी-(सं०वि०) केयूर या विजायठ पहिरे हुई ।

केर-(हिं०प्रत्य०) संबंध सूचक विभक्ति का प्रत्यय, का ।

केरल-(सं०पु०) दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश, कनार, इस देश का निवासी एक ज्योतिःशास्त्र जिसको दिव्यचूड़ामणि ने लिखा था ।

केरा-(हिं०पु०) देखो केला ।

केराना-(हिं०क्रि०) अन्नका छोटा बड़ा दाना सूप से अलगाना (पु०) हलदी, मिर्चा, धनिया आदि मसाला ।

केरानी-(हिं०पु०) किरण्टा, युरेशियन, दोगला युरोपियन, लेखक ।

केराव-(हिं०पु०) मटर ।

केरि-(हिं०) देखो केरी, केलि ।

केरी-(हिं० प्रत्य०) 'के' विभक्ति का स्त्रीलिंग का रूप, आम का छोटा कच्चा फल ।

केलक-(सं०पुं०) नर्तक, नाचनेवाला ।

केला-(हिं०पुं०) कदली वृक्ष ।

केलास-(हिं०पु०) देखो कैलास।
केलि-(सं०स्त्री०) परिहास,हँसी ठट्ठा,क्रीड़ा, मैथुन, स्त्री प्रसंग, पृथ्वी।
केलिकला-(स० स्त्री०) रतिक्रीड़ा, सरस्वती की वीणा।
केली-(हिं०स्त्री०) छोटा केला।
केल्का-(हिं०पु०) प्रसूता को दिया जाने वाला मसाला।
केलकी-(हिं०स्त्री०) एकप्रकार का छोटा कीड़ा।
केवट-(हिं०पुं०) नाव चलाने वालों की एक जाति, मल्लाह।
केवटीदाल-(हिं०स्त्री०) दो या अधिक प्रकार की एकमें मिली हुई दाल। **केवटी मोथा**-(हिं०पु०) एक प्रकार का सुगन्धित मोथा।
केवड़ई-(हिं०वि०) केवड़े के रंगका, हलके पीले हरे रंगका।
केवड़ा-(हिं०पु०) श्वेत केतकी का पौधा, इस पौधे का फूल,केवड़ा जल
केवल-(सं०वि०) एकमात्र,अकेला,शुद्ध, श्रेष्ठ, उत्तम, उत्कृष्ट (नपुं०) भ्रान्ति-शून्य ज्ञान, (क्रि० वि०) सिर्फ, मात्र; **केवलज्ञान**-इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल आत्मा से उत्पन्न हुआ ज्ञान; **केवलज्ञानी**-तत्वज्ञानी।
केवलव्यतिरेकी-(सं०पुं०) केवल व्यतिरेक द्वारा ज्ञान अर्थात् प्रत्यक्ष कारण देखकर अनुमान, जहां उष्णत्वाभाव है वहां वह्निका अभाव का अनुमान
केवलात्मा-(सं०पु०) पुण्य पापसे रहित ईश्वर, (वि०) शुद्ध स्वभाव वाला।
केवलान्वयी-(स०नपुं०) जिसका विपक्ष नहीं होता तथा जो केवल अन्वय व्याप्ति द्वारा ही जाना जाता है, वह अनुमान केवलान्वयी कहलाता है
केवली-(स०स्त्री०) ज्ञान, समझ (पु०) केवल ज्ञान युक्त पुरुष।
केवा-(सं०स्त्री०) कमल की तरह का एक पुष्प, केतकी, केवड़ा; (पु०) बहाना।
केवांच-(हिं०स्त्री०) देखो क्रौञ्च।
केवाड़-(हिं०पु०) देखो किवाड़।
केश-(स०पु०) विष्णु, सूर्य तथा अग्नि की किरण, परब्रह्मकी शक्ति,कुन्तल, सिर का बाल,बन्धन, बान्धव,किरण, रश्मि। **केशकर्म**-(सं०नपुं०) बालों को संवारने की कला, केशान्त कर्म, संस्कार। **केशकलाप**-(सं०पु०) बालों का गुच्छा। **केशकार**-(स०पु०) बालों को संवारने वाला। **केशग्रह**-(सं०पु०) बलपूर्वक झोंटा खींचना। **केशपक्ष**-(स०पु०) केश समूह। **केशपाश**-(स०पुं०) बालों की लट। **केशबन्ध**-(स०पु०) नाच में हाथों की एक चाल **केशमार्जन**-(सं०नपु०) बालों को धोना। **केशमार्जनी**-(सं०स्त्री०) कंघी
केशर-(स०पु०)फूलों के बीच के महीन रेशे, शेर या घोड़े का गरदन पर का बाल, कदम्ब, कङ्कुम, केसर।
केशरञ्जन-(सं०पुं०) भृङ्गराज, भँगरैया
केशराज-(स०पु०) भृङ्गराज, भंगरैया, भुजंगा पक्षी।
केशरी-(स०पु०) सिंह, घोड़ा, नागकेशर, एक जलचर पक्षी, बिजौरा नीबू, एक प्रकार का बन्दर।
केशव-(स०पुं०) परमात्मा, विष्णु, नागकेसर, कौवा, पानी में पड़ा हुआ मुर्दा। **केशवप्रिया**-(स०स्त्री०) राधिका, गोरोचन।
केशविन्यास-(सं०पुं०)बालों को संवारना
केशहन्त्री-(सं०स्त्री०) शमी वृक्ष।
केशान्त-(सं०पु०) केशका अग्र भाग, दाढ़ी मूड़ने का एक संस्कार, मुण्डन
केशि-(सं०पुं०) एक दानव जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
केशिका-(स०स्त्री०) सतावर।
केशिनी-(सं०स्त्री०) बड़े बड़े बालों वाली स्त्री, दमयन्ती की दूती, रावण की माता, एक अप्सरा, पार्वती की एक सहेली का नाम, बन्ध्या, बांझ।
केशी-(स०पुं०) एक गृहपति का नाम, एक दैत्य जिसको कृष्ण ने मारा था, घोड़ा, सिंह, (वि०) घने बाल वाला, बालदार, किरण युक्त।
केस-(हिं०पु०) देखो केश।
केसर-(सं०पुं०) फूलों के बीच के महीन तन्तु, कुङ्कुम, घोड़े या शेर के गरदन पर के बाल, नागकेसर, बकुल वृक्ष, मौलसिरी, सोना, कौसीस, हींग। **केसरिया**-(हिं०वि०) केसर के रंग का, पीला, जिसमें केसर मिली हो।
केसरिसुत-(सं०पुं०) हनुमान्।
केसरी-(स०पु०) सिंह, घोड़ा, नागकेसर, एक प्रकार का बन्दर, हनुमान के पिता, (वि०) केसरिया।
केसारी-(हिं०स्त्री०) मटर की जाति का एक अन्न, लेतरी खेसारी
केसू-(हिं०पु०) देखो टेसू।
केहरी-(हिं०पुं०) केसरी, शेर, घोड़ा।
केहा-(हिं०पुं०) मयूर, मोर, एक छोटा जंगली पक्षी।
केहि-(हिं०वि०) किस, किसको।
केहूं-(हिं०क्रि०वि०) किस प्रकार,कैसे।
केहू-(हिं०सर्व०) कोई।
कैंचा-(हिं०वि०) टेढ़ी आंख वाला, भेंगा, ऐंचा (पुं०) बड़ी कैंची।
कैंडल-(हिं०पुं०) जंगली तीतर।
कैंड़ा-(हिं०पुं०) किसी चित्र आदि को ठीक करने का यन्त्र, ढंग, बनावट, चाल, चतुराई।
कैंता-(हिं०पु०) पत्थरकी पटिया
कैं-(हिं०वि०) कितने, कितना, (अव्य०) अथवा,वा,-(अ०स्त्री०)वमन,उलटी।
कैकय-(सं०पु०) केकय देश। **कैकयी**-(सं०स्त्री०) देखो कैकेयी।
कैकस-(सं०पुं०) राक्षस, दानव।
कैकसी-(सं०स्त्री०) रावण की माता का नाम।
कैकेयी-(स०स्त्री०)केकयराज की कन्या, दशरथ की मझली पत्नी,भरतकी माता
कैटभ-(स०पु०) एक दैत्य जो विष्णु से मारा गया था। **कैटभारि**-(सं०पु०) विष्णु।
कैटभी-(स०स्त्री०)महाकाली,योगनिद्रा।
कैतव-(स०पु०) शठता, छल, धोखा, जुवा, वैदूर्यमणि, लहसुनियां, कुमुद, कोक, (वि०) जुआरी, शठ, दुष्ट।
कैतदापह्नुति-(सं०स्त्री०) एक शब्दालङ्कार जिसमें असली बात खुले शब्दों में नहीं परन्तु व्याज (बहान) से छिपाई जाती है।
कैथ, कैथा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसमें गोल खट्टे फल लगते हैं, कपित्थ।
कैथिन-(स०स्त्री०) कायस्थ जाति की स्त्री
कैथी-(हिं०स्त्री०) एक प्राचीन लिपि जो नागरी से बहुत मिलती जुलती है, इसमे अक्षरों पर माथा नहीं बांधा जाता, विहार प्रान्त में इसका व्यवहार होता है।
कैधौं-(हिं०अव्य०) वा, अथवा।
कैवर-(हिं०पु०) तीरका फल।
कैमा-(हिं०पु०) एक प्रकार का कदम का वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और कड़ी होती है।
कैमुतिकन्याय-(स०पुं०) एक उक्ति जिसका प्रयोग यह दिखलाने के लिये होता है कि जब बहुत बड़ा काम हो गया तब छोटे का क्या कहना।
कैय्यट-(सं०पुं०) महाभाष्य का एक टीकाकार।
कैया-(हिं०पुं०) रांगे से झलने का हथौड़ी के आकार का एक अस्त्र, आध पाव की नाप।
कैरव-(स०पुं०) शत्रु, जुआरी, श्वेतकमल।
कैरा-(हिं०पुं०) भूरा रंग, बैल जिसका चमड़ा लाल और बाल सफेद होता है, सोकना, (वि०) भूरी आंखवाला,कंजा।
कैरी-(हिं०स्त्री०) भूरे रंग की।
कैलास-(सं०पुं०) हिमालय की एक चोटी का नाम, महादेव और यक्षाधिप कुबेर का वास स्थान, शिवलोक **कैलासनाथ**-शिव, कुबेर; **कैलासपति**-महादेव; **कैलासवास**-मृत्यु। **कैलासी**-(हिं०वि०) कैलास का रहनेवाला।
कैवर्त-(सं०पुं०) केवट जाति, मल्लाह।
कैवर्तमुस्तक-(स०नपुं०) पानी में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का मोथा।
कैवल्य-(सं०नपुं०) मुक्ति विशेष, निर्वाण, छुटकारा, कृष्ण यजुर्वेद के अन्तर्गत एक उपनिषद्, अद्वितीय स्वरूप, एकता, शुद्धता।
कैशिकी-(स०स्त्री०) छेदने योग्य तलवार की धारा, नाटक की एक वृत्ति जिससे नाचने, गाने, बजाने और भोग विलास की बातें होती हैं।
कैसे-(हिं०क्रि०वि०) किस प्रकार से, किस कारण से, क्यों, किस लिये।
कैसो-(हिं०) देखो **कैसा**।
कोईं-(हि०) देखो **कुईं**।
कोंकण-(स०पुं०) दक्षिण भारत का एक प्रदेश, यहां का निवासी।
कोंचना-(हिं०क्रि०) छेदना, गड़ाना, चुभाना।
कोंचा-(हिं०पुं०) क्रौञ्चपक्षी, बहेलियों की लंबी लग्गी जिसके सिरे पर लासा लगा कर वे चिड़ियों को पकड़ते हैं।
कोंछ-(हिं०पुं०) स्त्रियों की ओढ़नी का कोना। **कोंछना**-(हिं०क्रि०) साड़ी के अगले भाग को चुनना। **कोंछियाना**-(हिं०क्रि०) कोंछ में कोई वस्तु रखकर कमर में खोंसना, साड़ी के उस भाग को चुनना जो पेट पर खोंसा जाता है
कोंड़रा-(हिं०पु०) मोट के सिरे पर का गोल मेड़रा।
कोंढा-(हिं०पु०) कुण्डल,धातु का किसी वस्तु को अटकाने का छल्ला या कड़ा, (वि०) कोंढा लगा हुआ।
कोंथ-(हिं०पु०) पुरानी भीत के छेदों में मिट्टी इत्यादि का भराव **कोंथना**-(हिं०क्रि०) भीत की छेदों में सनी हुई मिट्टी भरना,कराहनां, कूंथना।
कोंपना-(हिं०क्रि०) कोंपल देना।
कोंपर-(हिं०स्त्री०) डाल का पका हुआ आम, बांस का कोमल अंकुर।
कोंपल-(सं०स्त्री०) अंकुर, वृक्ष की नई कोमल पत्ती।
कोंवर-(हिं०वि०) नरम, मोलायम, मृदु
कोंहड़ा-(हिं०पु०) देखो कुम्हड़ा।
कोंहड़ौरी-(हिं०स्त्री०) पेठे को मिलाकर उड़द की बनी हुई बरी।
को-(हिं०सर्व०) कौन, कर्म तथा सम्प्रदान कारक का चिन्ह।
कोआ-(हिं०पुं०) कोष, रेशम के कीड़े का घर, टसर का कीड़ा,महुवे का पका हुआ फल, धुने हुए ऊन की प्यूनी, कटहल के पके हुए फल का बीजकोष, आंख का ढेला।
कोइना-(हिं०पु०)महुवेके फल की गुठली
कोइरी-(हिं०पु०) कृषिजीवी एक जाति, काछी, कुर्मी।
कोइली-(हिं०स्त्री०) कच्चा आम, आम की गुठली, कोयल।
कोई-(हिं०सर्व०) अज्ञात वस्तु विशेष, अनजानी वस्तु, अविशेष, एक भी; कोई न कोई-एक न एक। **कोई भी**-(क्रि०वि०) लगभग, प्रायः, करीब करीब
कोउ, कोऊ, कोउक-(हिं०सर्व०) कोई एक, कुछ।
कोक-(सं०पुं०) चक्रवाक, चकवा, भेंड़ा, विष्णु, भेड़िया, छिपकली, कमल।
कोकई-(हिं०वि०) गुलाबी, नीला रंग, कौड़ियाला।
कोककला-(सं०स्त्री०) रतिविद्या, संभोग शास्त्र।

कोकदेव-(सं०पुं०) कपोत, कबूतर, रति शास्त्र के प्रणेता एक पण्डित।
कोकनद-(सं०नपुं०) लाल पद्म, लाल कोई।
कोकना-(हिं०क्रि०) कच्चा करना, बखिया करने के लिये सूई से दूर-दूर पर तागा डालना, लगर डालना।
कोकनी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का तीतर, एक प्रकार का रंग (वि०) छोटा, कम मूल्य का, घटिया।
कोकबन्धु-(सं०पुं०) सूर्य।
कोकवा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बांस
कोकशास्त्र-(सं०नपुं०) कोक नामक पंडित का बनाया हुआ रतिशास्त्र।
कोका-(हिं०पुं०) कबूतर (स्त्री०) कुमुदिनी।
कोकाबेली-(हिं०स्त्री०) नीली कुमुदिनी, इसके बीज का आटा व्रत में खाया जाता है।
कोकाह-(सं०पुं०) श्वेत घोड़ा।
कोकिल-(सं०पुं०) पिक, कोयल, परभृत, जलता हुआ अंगारा, एक विषैला कीड़ा, बेर का फल, छप्पय छन्द का एक भेद। **कोकिला**-(सं०स्त्री०) मादा कोयल।
कोकिलाक्षी-(सं०स्त्री०) ताल मखाना।
कोकिलासन-(सं०नपुं०) हठयोग का एक आसन।
कोको-(हिं०स्त्री०) मादा कौवा, (पुं०) कौवे का शब्द।
कोख-(हिं०स्त्री०) पेट, उदर, पेट के दोनों ओर का स्थान, गर्भाशय; **कोख उजड़ना**-गर्भपात होना या बच्चा जनम कर मरजाना; **कोख बन्द होना**-सन्तान का न होना, बांझ होना।
कोगी-(हिं०पुं०) लोमड़ी की तरह का एक पशु।
कोङ्कण-(सं०पुं०) एक जनपद का नाम देखो कोंकड़। **कोङ्कणसुत**-(सं०पुं०) परशुराम।
कोङ्कणी-(सं०स्त्री०) कोंकण देश की भाषा।
कोचकी-(हिं०पुं०) लाली लिये भरा रंग, मकोइया रंग।
कोचना-(हिं०क्रि०) देखो कोचना, चुभाना, गड़ाना। **कोचनी**-हिं०स्त्री०) नोकीला चुभाने का कोई साधन, हांकने की छड़ी।
कोचवान-(हिं०पुं०) बग्घी हाँकने वाला
कोचा-(हिं०पुं०) तलवार इत्यादि का गड़ाव, चुभाव।
कोचिड़ा-(हिं०पुं०) जंगली प्याज।
कोचिला-(हिं०) देखो कुचिला।
कोची-(हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली बबूल।
कोजागर-(सं०पुं०) आश्विन मास की पूर्णिमा, शरदपूर्णिमा, सरदपूनो।
कोट-(सं०पुं०) दुर्ग, गढ, प्राचीर, राजमहल (हिं०पुं०) कोटि, अनेक यूथ। **कोटपाल**-(हिं०पुं०)दुर्ग की रक्षा करने वाला।
कोटर-(सं०पुं०) वृक्षगहवर, पेड़ का खोखला भाग, दुर्ग की रक्षा के लिये इसके चारो ओर लगाया हुआ जंगल।
कोटरी-(सं०स्त्री०) वस्त्र रहित नगी स्त्री, चण्डी, दुर्गा।
कोटि-(सं०स्त्री०) तलवार की धार, धनुष का अगला भाग, सौ लाख की संख्या, करोड़, संशय का आलम्बन, वादाविवाद का पूर्वपक्ष, श्रेणी, उत्तमता, ढेर, समूह, जत्था, राशि चक्र का तीसरा भाग, छाया निरूपण के लिये कल्पित क्षेत्र की कोई अवयव रेखा।
कोटिक-(सं०पुं०) बीर बहूटी नामक कीड़ा (हिं०वि०) करोड़ों, अनगिनतिन, संख्या में बहुत अधिक।
कोटिज्या-(सं०स्त्री०) धनुष के आकार का क्षेत्र।
कोटिमान्-(सं०वि०) नोकीला, नोकदार
कोटिश-(सं०अव्य०) करोड़ों, अनेक प्रकार से।
कोटू-(हिं०पुं०) देखो कूटू।
कोठरी-(हिं०स्त्री०) भीत से चारो ओर घेरा हुआ छोटा कमरा।
कोठा-(हिं०पुं०) लंबी चौड़ी कोठरी, बड़ा कमरा, भण्डार घर, अटारी उदर, पेट, गर्भाशय, पक्वाशय, घर; **कोठा बिगड़ना**-अपच होना, **कोठादार**-कोठेवाला। **कोठार**-(हिं०पुं०) अन्न धन आदि रखने का स्थान, भण्डारघर।
कोठारी-(हिं०पुं०) भण्डारघर का प्रबंध कर्ता, भण्डारी।
कोठिला-(हिं०पुं०) देखो कुठला।
कोठी-(हिं० पुं०) हवेली, पक्का बड़ा घर, बंगला, कारबार का स्थान, थोक बिक्री की दूकान, कुठिला, कुवें की दीवार या पुल के खंभे पर की ईंट या पत्थर की जोड़ाई जो पानी के भीतर चली जाती है, बांस का मण्डलाकार समूह। **कोठीवाल**-(हिं०पुं०) महाजन, साहूकार, बड़ा व्यापारी। **कोठीवाली**-(हिं०स्त्री०) महाजनी, साहूकारी, मुड़िया लिपि।
कोड़ना-(हिं०क्रि०) खेत की मिट्टी को गहरी खोदकर उलटना, गोड़ना।
कोड़ा-(हिं०पुं०) साटा, चाबुक, पशुओं को मारने का डंडा जिसमें चमड़ा या बटा हुआ सूत बंधा होता है, उत्तेजना, चपेट, चेतावनी, मल्लयुद्ध एक युक्ति।
कोड़ार-(हिं०पुं०) कोल्हू की लकड़ी में जड़ा हुआ लोहे का छल्ला।
कोड़ी-(हिं०स्त्री) बीस वस्तुओं का समूह।
कोढ-(हिं०पुं०) कुष्ट, एक प्रकार का रक्त तथा त्वचा संबंधी संक्रामक रोग; **कोढ, चूना**-शरीर के अङ्ग का गलगल कर गिरना।
कोढा-(हिं०पुं०) गोबर इकट्ठा करने के लिये बाड़ा जहाँ पशु बांध दिये जातेहैं।
कोढिया-(हिं० पु०) तमाखू के पत्तों का एक रोग।
कोढी-(हिं०वि०) कुष्ट रोग ग्रस्त।
कोण-(सं०पुं०) नोक, कोना, दिशाओं के मध्य की दिशा यथा-अग्नि नैर्ऋत्य, ईशान और वायव्य, घर का एक भाग, लकड़ी, सोंटा, दो सीधी रेखाओं के परस्पर मिलने का स्थान।
कोणकुण-(सं०पुं०) मत्कुण, खटमल।
कोत-(हिं०पु०) देखो कुबत।
कोतवाल-(हिं०पुं०) नगरपाल, नगर का बड़ा थानेदार, प्रबन्ध कारक, पंचायत सभा इत्यादि का निमन्त्रण देने वाला। **कोतवाली**-(हिं०स्त्री०) कोतवाल के रहने का स्थान, शहर का बड़ा थाना, कोतवाल का पद।
कोता-(हिं०वि०) कम, छोटा।
कोति-(हिं०) देखो कोद।
कोथला-(हिं०पु०) थैला, उदर, पेट।
कोथली-(हिं०स्त्री०) लंबी थैली जिसमें रुपये पैसे भरकर कमर में बांध लेते हैं
कोथ-(हिं०स्त्री०) मियान के ऊपर की सीमा।
कोद-(हिं०स्त्री०) दिशा, ओर, कोना।
कोदई-(हिं०पुं०) देखो कोद्रव।
कोदण्ड-(सं०पुं०) धनुष, कमान, भ्रू, भौंह, धनु राशि।
कोदरा-(हिं०पुं०) देखो कोद्रव।
कोदरैता-(हिं०पुं०)कोदो दरने की चक्की
कोदवा-(हिं०पु०) देखो कोद्रव।
कोदो-(कोदो) (हिं०पु०) कोद्रव, कदन्न
कोदो देकर पढ़ना-अधूरी या अशुद्ध विद्या पढ़ना; **छातीपर कोदो दरना**-प्रत्यक्ष रूप से ऐसा काम करना जो दूसरे को बुरा लगे।
कोन-(हिं०पु०) कोण, कोना।
कोनसिला-(हिं०पुं०) छाजन में तिरछी लगी हुई लकड़ी।
कोना-(हिं०पुं०) कोण, नोक, नोकीला किनारा, खूंट, पल्ला, निराला स्थान, लंबाई चौड़ाई मिलने का स्थान। **कोना झांकना**-भय या लज्जा से मुंह सामने न करना।
कोनिया-(हिं०स्त्री०) लकड़ी या पत्थर की पटिया जो वस्तु रखने क लिये भीत के कोने पर बैठाई होती है, पटनी।
कोनदण्ड-(हिं०पुं०) एक प्रकार का व्यायाम।
कोप-(सं०पुं०) क्रोध, रोष, गुस्सा, शृंगार रस में नायिका का नायक के प्रति बनावटी कोप। **कोपना**-(हिं०क्रि०) क्रोध करना, रोष करना।
कोपनीय-(सं०वि०) जिसपर क्रोध किया जावे, जिसे क्रुद्ध किया जा सके।
कोपभवन-(सं०नपुं०)वह कोठरी जिसमें क्रोध में आकर कोई मनुष्य बैठता है।
कोपर-(हिं०पुं०) टपका, डाल का पका आम। **कोपल**-(हिं०स्त्री०) पल्लव, नई पत्ती जो किसी पौधे में से निकलती है।
कोपली-(हिं०वि०) बैंगनी या लाल रंग का।
कोपवती-(सं०स्त्री०) क्रोध करनेवालीस्त्री
कोपवान्-(सं०वि०) कोपयुक्त।
कोपि-(सं०सर्व०) कोई भी।
कोपित-(सं०वि०) कुपित, क्रुद्ध।
कोपी-(हिं०वि०) कोप करने वाला, क्रोधी
कोपीन-(हिं०स्त्री०) देखो कौपीन।
कोबी-(हिं०स्त्री०) गोभी का फूल।
कोमल-(सं०वि०) मृदुल, कच्चा, सुकुमार, सुन्दर, मनोहर, संगीत में बारीक मीठी ध्वनि **कोमलता**-(सं०स्त्री०) मधुरता, मृदुलता।
कोमला-(सं०स्त्री०) खिरनीं, खजूर, अलंकार में वह अक्षर योजना जिसमे कोमल पद हों।
कोय-(हिं०सर्व०) कोई।
कोयर-(हिं०पु०) शाक भाजी, तरकारी, पशुओं को खिलाने का हरा चारा।
कोयल-(हिं०स्त्री०) कोकिल, काले रंग की सुन्दर बोलने वाली चिड़िया, एक सफेद और नीले फूल वाली लता, अपराजिता।
कोयला-(हिं०पुं०) जली हुई लकड़ी का वह भाग जो पूरी तरह से राख न हुआ है और काला पड़ गया हो, कोयले के रूप का एक खनिज पदार्थ जो पत्थर का कोयला कहलाता है।
कोया-(हिं०पुं०) आंख का ढेला, आंख का कोना, कटहल का गूदे से भरा हुआ बीज कोष जो खाया जाता है।
कोर-(हिं०स्त्री०) प्रान्त भाग, किनारा, कोना, वस्त्रादि का छोर, द्वेष, बुराई, अनी नोक, धार, श्रेणी, वैमनस्य, पंक्ति, चबेना, कोण।
कोरंगा-(हिं०पु०) एक प्रकार की दौरी या टोकरी।
कोरंजा-(हिं०पुं०) वेतन में दिया जाने वाला अन्न।
कोरक-(सं०पुं०) फूल की कली, मुकुल, कमल की डंठी, मृणाल, काकोली, शीतल चीनी(हिं०)एकप्रकार की बेंत
कोरकसर-(हिं०स्त्री०) न्यूनता, कमी बेशी, काट छांट।
कोरङ्गी-(सं०स्त्री०)छोटीइलायची, पीपल
कोरनी-(हिं०स्त्री०) पत्थर की खोदाई,
कोरवा-(हिं०पुं०) पान की खेती का दूसरा वर्ष।
कोरहन-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान
कोरहा-(हिं०वि०) किनारदार, नोकिला
कोरा-(हिं०वि०) व्यवहार में न लाया हुआ, चिन्ह रहित, मूर्ख, अपढ़, निरक्षर, धनहीन, नया, अछूत, बिना धुला हुआ, जिसपर कुछ लिखा न हो, सादा, रहित, के वल, **कोरा जबाब**-स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार। **कोरापन**-(हिं०पुं०) नयापन,

अछूती की अवस्था,
कोरि (हिं०) देखो कोटि।
कोल-(सं०पु०) शूकर, सुअर, बेड़ा, क्रोड़, गोद, शनिग्रह, आलिंगन, बेर का फल, दो टक (एक तोले) की तौल, काली मिर्च, कुलथी, पुरुवंशीय एक राजा, कोलराज्य, (हिं०पु०) चबेना, बहुरी, भारत की एक अशिष्ट जंगली जाति।
कोलक-(सं०पु०) अखरोट का वृक्ष, लिसोड़ा, (हिं०पु०) आरी चोखी करने की रेती।
कोलङ्क-(सं०पु०) आंवले का पेड़।
कोलना-(हिं०क्रि०) छेदना, बीच में खोदकर पोला करना।
कोलमूला-(हिं०स्त्री०) पिपलामूल।
कोलसा-(हिं०पु०) इंगनी धातु (अं० मेङ्गनीज़)।
कोला-(सं०स्त्री०) पिप्पली, पीपल, गोरखमुंडी, (हिं०पु०) शृगाल, गीदड़,
कोलाहट-(सं०पु०) तलवार की धार पर नाचने वाला नर्तक।
कोलाहल-(सं०पुं०) कलकल ध्वनि, हल्ला, चिल्लाहट।
कोलिकट्ट-मलाबार का एक ताल्लुका, कालीकट।
कोलियाना-(हिं०क्रि०) सकरे मार्ग से जाना, छाती से लगाना।
कोली-(हिं०स्त्री०) एक आलिंगन,, हिन्दू जुलाहा।
कोल्हू-(हिं०पुं०) तेल या ऊख पेरने का यन्त्र, **कोल्हूका बैल**-धीरज धर कर कठिन परिश्रम करने वाला; **कोल्हू में डालकर पेरना**-अति कष्ट देना।
कोविद-(सं०पु०) पण्डित, विद्वान्, वेद को जानने वाला (पुं०) तिल का पौधा
कोविदार-(सं०पुं०) कचनार का वृक्ष
कोश-(सं०पु०) अण्ड, अंडा, खान से निकला हुआ विशुद्ध सोना या चांदी, फूल की बंधी हुई कली, तलवार की मियान, समूह, ढेर, आवरण, खोल, थैली, संचित धन, चमड़े की खोल, अण्डकोश, रेशम का कोया, जातिकोष, जावित्री, पेशी पुट्ठा, आकारादि क्रम से लिखी हुई पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ दिये हों। **कोशकार**-(सं०पुं०) तलवार की मियान बनाने वाला, शब्दकोश बनाने वाला, रेशम का कीड़ा। **कोशपाल**-(सं०पु०) संचित धन का संरक्षक, कोषाध्यक्ष।
कोशफल(सं०नपुं०) खीरा, बेर।
कोशफला-(सं०स्त्री०) खीरा, फूट।
कोशल-(सं०पु०) काशीके उत्तर अयोध्या सहित सरयू नदी के दोनों किनारों का सम्पूर्ण भूमि भाग, इस प्रान्त का निवासी, अयोध्या नगर, एक क्षत्रिय जाति, एक राग विशेष।
कोशला-(सं०स्त्री) अयोध्या नगरी, राम की राजधानी।
कोशवान्-(सं०वि०) कोशयुक्त।
कोशवृद्धि(सं०स्त्री०) अण्डकोष की वृद्धि, धनसंचय।
कोशवेश्म-(सं०नपु०) कोशागार,।
कोशागार-(सं०नपुं०) धानागार।
कोशाध्यक्ष-(सं०पु०) कुबेर।
कोशम्बी-देखो कौशाम्बी।
कोशिका-(सं०स्त्री०) कोशी, छोटा बरतन
कोशी-(सं० स्त्री०) अन्न की बाल, व्याघ्रनख, एक सुगंधित द्रव्य, कौशि की नदी।
कोष-(सं०पुं०) कुड्मल, कली, तलवार की म्यान, अण्डा, खान का सोना, पात्र भाण्डार, उदर का मध्यभाग, घर का भीतरी भाग, प्याला, फलों के बीच का गूदा, धन त्वचा इत्यादि की खाल, वृषण।
कोष्ठक-(सं०पुं०) घिरा हुआ स्थान, कोठी, अण्डा, अण्डकोष, अनेक खानों का चक्र, एक चिन्ह जो लिखने में प्रयोग होता है [ ], { }, ( ) जिसके भीतर अंक या वाक्य लिखे जाते हैं। **कोष्ठबद्ध**-(सं०नपु०) मल की रुकावट।
कोष्ठाग्नि-(सं०पुं०) जठर की पाचनाग्नि
कोष्ठी-(सं०स्त्री०) जन्म पत्रिका।
कोष्ण-(सं०नपुं०) थोड़ा गरम, गुनगुना
कोस-(हिं०पु०) क्रोश, दो मील की दूरी, पहिले चार हजार या आठ हज़ार हाथ माना जाता था।
कोसना-(हिं०क्रि०) अभिशाप देना, गाली देना।
कोसल-देखो कोशल।
कोसली-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी।
कोसा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा रेशम, मिट्टी का बड़ा दिया, सकोरा
कोसा-काटी-(हिं०स्त्री०) गाली दे देकर कोसना।
कोसिया-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का छोटा पात्र
कोसिला-(हिं०स्त्री०) देखो कौशल्या।
कोसिली-(हिं० स्त्री०) छोटा पिराक या गुझिया।
कोसू-(हिं०पुं०) कोसने वाला।
कोसों-(हिं०क्रि०वि०) कई कोसकी दूरी पर
कोहड़ौरी-(हिं०स्त्री०) कोहड़े और उड़द की बरी।
कोह-(हिं०पुं०) अर्जुन का वृक्ष, क्रोध,
कोहना-(हिं०क्रि०) क्रुद्ध ही, रिसियाना
कोहनी-(हिं०स्त्री०) देखो कुहनी।
कोहबर-(हिं०पुं०) वह स्थान जहां विवाह के समय कुल देवता का स्थापन होता है।
कोहरा-(हिं०पुं०) धुवें के रूप में प्रातः काल गिरने वाली ओस।
कोहरी-(हिं०स्त्री०) घुंघनी, उबाला हुआ अन्न गेंहू, चना इत्यादि।
कोहल-(सं०पु०) नाट्य शास्त्र प्रणेता एक गन्धर्व।
कोहली-(सं०स्त्री०) कोहड़े की मदिरा
कोहा-(हिं०पुं०) चौड़े मुंह का मिट्टी का बड़ा पात्र जो खप्पर के आकार का होता है।
कोहाना-(हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना, गुस्सा होना, रूठना, रिसाना।
कोही-(हिं०वि०) क्रोधी,
कौंच-(हिं०स्त्री) एक प्रकार की लता जिसमें रोवेंदार सेम की तरह की फलियां होती हैं जिसकी तरकारी खाई जाती है, कपिकच्छु, केवांच।
कौंची-(हिं०) देखो कमची।
कौंध-(हिं०स्त्री०) बिजली की दूर की चमक। **कौंधना**-(हिं०क्रि०) दूरसे बिजली चमकना।
कौंछ-(हिं०स्त्री०) देखो कौच।
कौंरा-(हिं०) देखो काबर।
कौला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मीठा नीबू।
कौआ-देखो कौवा।
कौआना-(हिं० क्रि०) अंडबंड बकना, बर्राना, भौचक्का होना, निश्चेष्ट होना।
कौट-(सं०पुं०) कपट साक्षी, बनावटी साक्षी।
कौटल्य-(सं०पु०) वात्सायन ऋषि।
कौटिक-(सं०वि०) बांस विक्रेता, व्याध
कौटिल्य-(सं०पु०) कुटिलता, क्रूरता, टेढापन, चाणक्य का एक नाम।
कौटुम्बिक-(सं०पुं०) कुटुम्ब के पालन पोषण में लगा हुआ।
कौड़ा-(हिं०पुं०) बड़ी कौड़ी, जाड़े के दिनों में गढ़े में जलाई हुई आग, अलावा।
कौड़िया-(हिं०वि०) कौड़ी के रंग का, कुछ कालापन लिये हुए श्वेत।
कौड़ियाला-हिं०वि०) कोकई, हलका नीला जिसमें गुलाबी की कुछ आभा हो (वि०) कृपण, कंजूस, छोटे छोटे फूल का एक पौधा।
कौड़ियाही-(हिं०स्त्री०) कौड़ियों में चुकाई जाने वाली (वि०) शुल्क कौड़ियों पर काम करने वाली।
कौड़ी-(हिं०स्त्री०) कपर्दिका, घोंघे की तरह का एक समुद्री कीड़ा जिसका अस्थिकोष सिक्के की तरह काम में आता है, द्रव्य, रुपया पैसा, कर, आंखका ढेला, गिलटी जो कांख या जांघ में होती है, छोटी हड्डी जो छाती के नीचे बीच में होती है, कटार की नोक; **कौड़ी काम का नहीं**-निष्फल, बेकार; **कौड़ीका दो**-व्यर्थ का; **कौड़ी के तीन तीन होना**-बहुत सस्ता होना, तुच्छ होना; **कौड़ी कौड़ी बेबाक करना**-पूरा ऋण चुकाना; **कौड़ी कौड़ी जोड़ना**-थोड़ा थोड़ा करके संचय करना, **कानी कौड़ी**-बहुत ही कम मूल्य; **चित्ती कौड़ी**, वह कौड़ी जिसकी पीठ उभड़ी हो।
कौड़ेना-(हिं०पुं०) कसेरे का नकाशी करने का एक अस्त्र, (स्त्री०) कौड़ियाली
कौणप-(सं०पु०) राक्षस, (वि०) दुर्गन्धी
कौण्डिन्य-(सं०पुं०) कुण्डिन मुनि के पुत्र जो एक धर्मशास्त्रकार थे।
कौतिग-(हिं०) देखो कौतुक।
कौतुक-(सं०नपुं०) आश्चर्य, अचंभा, परिहास, आनन्द, हंसी ठिठोली, विनोद, अभिलाषा, नाच, गाना, प्रसन्नता; **कौतुककर्ता** - तमाशा दिखलाने वाला. **कौतुकिया**-(हिं०पु०) तमाशा करने वाला, विवाह संबंध स्थिर करने वाला, नाऊ, पुरोहित इत्यादि। **कौतुकी**-(सं०वि०) तमाशा दिखलाने वाला, **कौतूहल**-(सं०नपु०) किसी नये या अपरिज्ञात विषय के जानने सुनने या देखने का आग्रह।
कौतूहल्य-(सं०नपुं०) कुतूहल।
कौथ-(हिं०स्त्री०) कौनसी तिथि, यह शब्द प्रश्न वाचक सर्वनाम की तरह प्रयोग होता है।
कौथा-(हिं०वि०) किस संख्याका, किस स्थान का।
कौन-(हिं०सर्व०) प्रश्न वाचक सर्वनाम जिसके द्वारा अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु पूछी जाती है, विभक्ति लगने से "कौन" का रूप "किस" हो जाता है; कैसा किस प्रकारका; **कौन होना**-कौन सा सम्बन्ध रखना।
कौन्तेय-(सं०पुं०) कुन्तीके पुत्र, अर्जुन।
कौनप-(सं०पुं०) देखो कौणप।
कौपीन-(सं०नपु०) सन्यासी इत्यादि पहिरने की लंगोटी, काछा, कफनी।
कौमार-(सं०पुं०) बचपन, जन्मसे पांच वर्ष तककी अवस्था, तन्त्रके अनुसार सोलह वर्ष तकका वय, कुमारी पति, दामाद, अविवाहित पुत्र।
कौमारभृत्य-(सं०नपुं०) आयुर्वेद का एक ग्रन्थ जिसमें बालकों के लालन पालन तथा चिकित्सा का वर्णन है।
कौमारी-(सं० स्त्री०) पहिली स्त्री, कार्तिकेयकी शक्ति, एक मातृका का नाम, वाराही, कन्द, धिकुआर।
कौमुदी-(सं०स्त्री०) ज्योत्सना, चांदनी, कार्तिक या अश्विनकी पूर्णिमा, दीपोत्सव की तिथि, उत्सव, धूमधाम, कुमुदिनी; **कौमुदीजीवन**-चकोरपक्षी **कौमुदीपति**-चन्द्रमा।
कौमोदकी-(सं०स्त्री०) विष्णु की गदा का नाम।
कौमोदी-(सं०स्त्री०) देखो कौमोदकी।
कौम्भघृत-(सं०नपुं०) सौवर्षका पुराना घी
कौर-(हिं०पुं०) कवल, निवाला, एकबार मुंहमें डाली जानेवाली खानेकी वस्तु, ग्रास, कोना, चक्कीमें एकबार पीसने के लिये डाला जाने वाला अन्न।
कौरना-(हिं०क्रि०) थोड़ा भूनना, आंचपर किसी वस्तु को सेंकना।
कौरव-(सं०पुं०) कुरु राजाकी सन्तति, कुरुदेशका राजा (वि०) कुरु सम्बन्धी।
कौरवपति-दुर्योधन।
कौरा-(हिं०पुं०) द्वार का दोनों ओर का

पाख, कौड़ा, अलाव, कुत्ते आदिको दिया जानेवाला रोटी का टुकड़ा।
कौरियाना-(हिं०क्रि०) दोनों हाथों से पकड़ कर छाती में लगाना।
कौरी-(हिं०स्त्री०) क्रोड़, गोंद, अँकवार, अनाश, के कटे हुए पौधे जो भृत्यों को दिये जाते हैं।
कौलंज-(हि०पु०) पसुलियों के नीचेको पीडा, वायुशूल।
कौल-(सं०वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, तान्त्रिक कुलाचार समझने वाला, वामामार्गी (हिं०पुं०) एक प्रकार का गाना, ग्रास, कवल।
कौलई-(हिं०वि०) नारंगी रंगका, लाल पीले रंग का।
कौलद्रुमा-(हिं०वि०) लंबी कमल की पत्ती के समान पोंछ वाला।
कौला-(हिं०पुं०) कमला, नारंगी, क्रोड़, गोद, कोना।
कौलिक-(स० पु०) जुलाहा (वि०) पाखंडी, ढोंगी।
कौलिया-(हिं०पु०) छोटे बबूल का वृक्ष।
कौल्य-(सं०वि०) अच्छे कुल में उत्पन्न, कुलीन।
कौवा-(हिं० पुं०) वायस, काक, एक प्रसिद्ध काला पक्षी, धूर्त, बंडेरे की आड़ के लिये लगाने की लकड़ी, एक प्रकार का खिलौना, कण्ठ के भीतर का लटकता हुआ मांस का खण्ड, घांटी; **कौवारोर**-बहुत कोलाहल।
कौवाठोंठी-(हिं०स्त्री०) काकतुण्डी, एक लता जिसमें कौवे की ठोरके समान नीले फूल होते हैं, काकनासा।
कौवापरी-(हिं०स्त्री०) काली भद्दी स्त्री।
कौवारी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया, कौवाठोंटी।
कौवेर-(सं०पुं०) कुबेर का उपासक।
कौवेरी-(सं०स्त्री०) कुबेर की शक्ति।
कौशल-(सं० नपुं०) कुशलता, चातुरी, कारीगरी, भलाई, कोशल देश का निवासी।
कौशलेय-(सं० पुं०) दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्रीरामचन्द्र।
कौशल्या-(स०स्त्री०) कोशल देश के राजा की कन्या दशरथ की प्रधान रानी, राम की माता।
कौशाम्बी-(सं०स्त्री०) एक प्राचीन नगर, कुश के पुत्र, कौशाम्ब ने इसको बसाया था।
कौशिक-(सं० पुं०) इन्द्र, विश्वामित्र, कुशिक राजा के पुत्र गाधि, कोषाध्यक्ष, रेशम का कीड़ा, घड़ियाल, मगर, सर्प, नेवला, गुग्गुल, उल्लू पक्षी, एक प्रकार का राग, रेशमी वस्त्र, शृंगार रस, एक उपपुराण का नाम, अथर्व वेद का एक सूत्र।
कौशिका-(स०स्त्री०) पानी पीनेका पात्र, एक प्रकार की मदिरा।
कौशिकी-(सं०स्त्री०) चण्डिका, कुशिक राजा की पौत्री जो ऋचिकमुनि को व्याही थी, रामायण में कही हुई एक नदी, एक नाटकीय रचना, एक रागिणी का नाम।
कौशिल्य-(स०पुं०) इस गोत्र का एक ऋषि विशेष।
कौशीलव-(सं० नपुं०) खेल तमाशे का व्यवसाय।
कौशेय-(सं०नपु०) रेशमी वस्त्र।
कौषिक-(सं०पुं०) देखो कौशिक।
कौषिकी-(सं०स्त्री०) देखो कौशिकी।
कौषीतकी-(सं०स्त्री०)ऋग्वेदके अन्तर्गत ब्राह्मण आरण्य और उपनिषद्का भेद
कौसल-(हि०पु०) देखो कौशल।
कौसलेय-(सं०पुं०) कौशल्या के पुत्र रामचन्द्र।
कौसल्या-(सं०स्त्री०) दशरथ की प्रधान रानी, श्रीरामचन्द्र की माता।
कौसिला-(हिं०स्त्री०) देखो कौसल्या।
कौसीव-(स०वि०) व्याज लेनेवाला।
कौसुम्भ-(सं०पुं०)जंगली कुसुम, कुसुम्भी
कौस्त-(सं०नपुं०)दश वर्षका पुरानाघृत।
कौस्तुभ-(स०पुं०)विष्णुका हृदय भूषण मणि जो समुद्रमन्थन में समुद्र से निकला था, हठयोग की एक मुद्रा।
कौहा-(हिं०पुं०) बडेरकी आड़में लगाई जाने वाली लकड़ी।
क्या-(हिं० सर्व०) प्रश्न वाचक शब्द, कौन वस्तु है, इस शब्द द्वारा किसी विषयमें प्रश्न किया जाता है, इसमें कोई विभक्ति नहीं लगती, कितना, ऐसा, कैसा, इतना, अनोखा, निराला, अच्छा, (क्रि०वि०) क्यों, नहीं, काहेको, **क्या खूब**-धन्यहै; **क्या चीज है**-तुच्छ है; **क्या जाता है**-क्या हानि होतीहै, **क्या जाने**-मालूम नहींहै; **और क्या**-हां ऐसा ही है।
क्यारी-(हिं०स्त्री०) कियारी।
क्यों-(हिं०क्रि०)किस कारण, किस लिये, इस शब्दसे किसी व्यापार या घटना का कारण वक्तव्य होताहै, कैसे, किस प्रकार; **क्योंकि**-(हिं०अव्य०) इसलिये कि; **क्योंकर**-किस प्रकार से; **क्यों नहीं**-ऐसा ही ठीक है।
क्रकच-(स०पु०) ग्रन्थिल वृक्ष, आरा, केतकी, केवड़ा, वातादि जनित सन्निपात ज्वर, ज्योतिष शास्त्र का एक अशुभ योग।
क्रकराट-(सं०पुं०) भरद्वाज पक्षी।
क्रतु-(सं०पु०) सप्त ऋषियों में से एक, सोमरस, विष्णु, संकल्प, आषाढमास, निश्चय, अश्वमेध यज्ञ, इच्छा, अभिलाषा। **क्रतुकर्म**-योग, यज्ञ। **क्रतुपति**-यज्ञेश्वर, विष्णु। **क्रतुध्वंसी**-(सं०वि०) दक्षका यज्ञ विध्वंस करनेवाले शिव **क्रतुपशु**-(सं०पुं०)घोड़ा। **क्रतुफल**-(सं० नपुं०) यज्ञ का फल स्वर्गादि। **क्रतुभुक्**-(सं०पुं०) देवता।
क्रन्द-(सं० पु०) घोड़े की हिनहिनाहट, चीख। **क्रन्दन**-(सं०नपु०)रुलाई, लड़ाई में ललकार।
क्रन्दित-(स०नपु०) देखो क्रन्दन।
क्रम-(सं०पुं०) वैदिक विधान, अनुक्रम, शक्ति, चरण शैली, प्रणाली, आक्रमण, पैर रखने का काम, आगे पीछे रहने की स्थिति, चाल, परिपाटी, वह अलंकार जिसमें किसी बात का वर्णन क्रमसे किया जाता है। **क्रमक**-(स०पु०)क्रम का अध्ययन करने वाला। **क्रमज्या**-(स०स्त्री०) गणित ज्योतिष में क्रान्तिज्या। **क्रमणीय**-(स० वि०) आक्रमण करने योग्य। **क्रमप्राप्त**-(स०वि०) क्रमसे मिला हुआ। **क्रमभंग**-(सं० पुं०) नियम का टूटना।
क्रमशः-(सं० अव्य०) क्रम क्रम से, धीरे-धीरे, थोड़ा थोड़ा करके।
क्रमसंन्यास-(सं०पु०) वह संन्यास जो क्रमसे अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ आश्रमके बाद लिया जावे।
क्रमागत-(सं०वि०) क्रम से प्राप्त, वंशपरंपरा क्रमसे प्राप्त। **क्रमानुसार**-(सं०क्रि०वि०) क्रमानुकूल, क्रमसे।
क्रमिक-(स०वि०) क्रमवर्ती, क्रमयुक्त, परंपरा प्राप्त, कुल क्रमसे प्राप्त।
क्रमुक-(सं०पुं०)पूगीफल, सुपारी, नागरमोथा, कपास का बिनौला, देवदारु, शहतूत, एक प्राचीन जनपदका नाम।
क्रमेतर-(स०वि०)वेदपाठके क्रमसे भिन्न
क्रमेल-(स०पुं०) उष्ट्र, ऊँट।
क्रमेलक-(सं०) देखो क्रमेल।
क्रय-(स० पु०) मोल लेने या खरीदने का काम। **क्रयकर्ता**-(सं०पु०) क्रेता, माल लेनेवाला। **क्रयविक्रय**-(सं०पु०) मोल लेने और बेचने का काम, वाणिज्य।
क्रयी-(स०वि०) क्रेता।
क्रय्य-(स०वि०) बेंचने के लिये रक्खा हुआ सामान बिकनेवाला।
क्रव्य-(सं०नपुं०) मांस, गोश्त; **क्रव्यभुक्त**-राक्षस, मांसभोगी।
क्रव्याद-(सं०पुं०)मांस खानेवाला जीव, राक्षस, सिंह, श्येन पक्षी, अग्नि।
क्रान्त-(सं० वि०) आक्रान्त, दबा हुआ, अतीत, बीता हुआ, ग्रस्त, बढा हुआ।
क्रान्ति-(सं०स्त्री०)पाद विक्षेप, पैर रखने की स्थिति, नक्षत्र की गति, राशिचक्र की मध्यरेखा, विषुवत रेखा से उत्तर कर्कट क्रान्ति तक अथवा दक्षिण में मकर क्रांति तक सूर्यकी दूरी, परिवर्तन, हेरफेर, उलट फेर। **क्रान्तिक्षेत्र**-(स० नपु०) नक्षत्र की गति जानने के लिये खींचा हुआ क्षेत्र। **क्रान्तिज्या**-(स०स्त्री०) क्रान्तिवृत्त क्षेत्र स्थित अक्षक्षेत्र का एक अवयव। **क्रान्तिपात**-(सं०पु०) विषुवतरेखा तथा अयन मण्डल के मिलाप का स्थान जहां पर पृथ्वी के आने से दिन रात बराबर होते हैं। **क्रान्तिभाग**-(स० पुं०) क्रान्तिज्या का चिन्ह। **क्रान्तिमण्डल**(सं०नपुं०) वह कल्पित वृत्त जिस पर पृथ्वी के चारो ओर घमता हुआ सूर्य देख पड़ता है। **क्रान्तिवलय**-(स० स्त्री०) देखो क्रन्ति मण्डल।
क्रान्तिवृत्त-(सं०नपु०) सूर्यका मार्ग। **क्रान्तिसाम्य**(सं० नपु०) ग्रहों की तुल्य क्रान्ति। **क्रान्तिसूत्र**-(स०नपुं०) ध्रुव नक्षत्र को स्पर्श करने वाला क्रान्ति समूह का एक योग।
क्रिमि-(सं० पु०) घुन, कीड़ा, लाह।
क्रिमिज-(सं०नपु०) अगर, चन्दन।
क्रिमिजा-(सं०स्त्री०) लाख, लाक्षा।
क्रियमाण-(स० वि०) प्रस्तुत किया जानेवाला।
क्रिया-(सं०स्त्री०) आरम्भ, निपटारा, ठहराव, शिक्षा, पूजा, उपाय, चेष्टा, अनुष्ठान, चिकित्सा, प्रयोग, श्राद्ध, शौच, प्रयत्न, गति, चेष्टा, हिलना, डोलना, व्याकरण में किसी व्यापार के होने या करने का अर्थ सूचक शब्द; **क्रिया कर्म**-अन्त्येष्टि क्रिया। **क्रियाकल्प**-(सं० पुं०) चिकित्सा का नियम। **क्रियाकार**-(सं० पु०) कर्म करनेवाला, नया छात्र। **क्रियाचतुर**-(सं०वि०) अपना काम पूरा करने में निपुण। **क्रियातन्त्र**-(सं०नपुं०) कर्माधिकारी, काम में लगा हुआ। **क्रियातिपत्ति**-(स०स्त्री०) काव्यालकार में अतिशयोक्ति का एक भेद, एक क्रिया के नहीं होने से दूसरी क्रिया का नहीं होना।
क्रियातियोग-(स० पु०) वमन आदि अति योग।
क्रियाद्वेषी-(स०पुं०) विवाद को न माननेवाला, कर्मकाण्डसे द्वेष करने वाला। **क्रियान्वित**-(स०वि०) सत्कर्म करनेवाला। **क्रियानिष्ठ**-(स०वि०) सन्ध्या, तर्पण आदि नित्य कर्म करने वाला। **क्रियापथ**-(सं०पु०)चिकित्सा का नियम। **क्रियापद**-(सं०नपुं०) किया का सिद्ध रूप यथा पढ़ता है, खेलता है, लिखता है इत्यादि। **क्रियाफल**-(स०नपुं०) यज्ञादिका पुण्य और पाप। **क्रियावाचक**-(सं०वि०) जिसका अर्थ क्रिया है। **क्रियावान्**-(सं०वि०) क्रिया युक्त, कामकाजी, कर्मनिष्ठ, सत्क्रियान्वित।
क्रियाविदग्धा-(स०स्त्री०) वह नायिका जो नायक को अपना भाव किसी क्रिया द्वारा देखलाती है।
क्रियाविशेषण-(स० नपु०) क्रिया का विशेषण, क्रिया का भाव प्रकाशित करनेवाला शब्द।
क्रियाशक्ति-(सं०स्त्री०) परमेश्वर की वह शक्ति जिसके द्वारा वह ब्रह्मांड की सृष्टि करता है।
क्रिस्तान-ईसाई।
क्रिस्तानी-(हि० वि०) ईसाइयों का, ईसाई मत का।
क्रीट-(हिं०पुं०) किरीट, मुकुट।
क्रीडक-(सं०वि०) क्रीड़ा करनेवाला, खेलाड़ी।

क्रीड़ाचक्र-(स०नपु०) एक छन्द जिसके चारो चरण समान होते हैं।
क्रीड़न-(स०पु०) देखो क्रीड़ा । क्रीड़नीय-(सं०वि०) खेलने में सहायता देनेवाला ।
क्रीड़ा-(स०स्त्री०) आमोद प्रमोद, खेल-कूद; क्रीड़ाकानन-उपवन, बगीचा; क्रीड़ाकौतुक-खेल तमाशा । क्रीड़ागृह-खेल का घर; क्रीड़ानारी-वेश्या, रंडी; क्रीड़ारत्न-रतिक्रिया,मैथुन ।
क्रीत-(स०वि०) मोल लिया हुआ,(पुं०) मोल लिया हुआ दास, क्रीत पुत्र ।
क्रीतक-(स०पु०) क्रीत पुत्र, मोल लिया हुआ पुत्र; माता पिता को धन देकर मोल लिया हुआ पुत्र ।
क्रुद्ध-(स०वि०) कोपयुक्त, कुपित ।
क्रुष्ट-(सं०वि०) बुलाया हुआ, शाप दिया हुआ ।
क्रूर-(स०वि०) दूसरे से द्रोह करने वाला, निर्दय, नृशस, कठिन, कड़ा, उष्ण, गरम, पापग्रह । क्रूरकर्मा-(सं० वि०) निर्दयता का काम करनेवाला
क्रूरता-(सं०स्त्री०) परद्रोह,दूसरे की, बुराई, निर्दयता, कठिनता,निष्ठुरता दुष्टता, घोरता, उष्णता, तीक्ष्णता ।
क्रूरदन्ती-(सं० स्त्री०) दुर्गा देवी का एक नाम । क्रूरदृक्-(स०पुं०) शनि या मगल ग्रह, दुष्ट । क्रूरस्वर-(स० पुं०) कर्कश शब्द ।
क्रूरात्मा-(स०पु०) निर्दय प्रकृति वाला मनुष्य ।
क्रूराशय-(सं०पुं०) बुरा आशय ।
क्रूर्च-(सं०पुं०) श्मश्रू , दाढ़ी ।
क्रेता-(सं०वि०) खरीदनेवाला।
क्रेय-(स०वि०) मोल लेने योग्य ।
क्रोड़-(सं०पुं०) शूकर, दोनों बाहु के बीच का भाग, अँकवार,गोद, भुजान्तर, उत्सङ्ग, वृक्ष का कोटर, शनि ग्रह । क्रोड़कन्द-बाराही कन्द ।
क्रोड़पत्र-(सं० नपु०)अतिरिक्त पत्र, पुस्तक या समाचार पत्रका वह अंश जो छूटे हुए भाग की पूर्ति के लिये जोड़ दिया जाता है, परिशिष्ट ।
क्रोड़पर्णी-(सं० स्त्री०) भटकटैया ।
क्रोड़पाद-(सं०पुं०) कच्छप, कछुवा ।
क्रोड़मल्लक-(सं०पुं०) भिक्षुक,भिखारी
क्रोड़ा-(सं०स्त्री०) भुजान्तर, अँकवार ।
क्रोड़ांक-(सं०पुं०) कच्छप, कछुवा ।
क्रोड़ीमुख-(सं०पुं०) गंडक पशु, गैंड़ा ।
क्रोध-(सं०पुं०) चित्तवृत्ति का वह तीक्ष्ण भाव जो प्रतिकूल घटना के उपस्थित होने पर उत्पन्न होता है, कोप, रोष, अमर्ष, ज्योतिःशास्त्र के अनुसार एक सवत्सर का नाम । क्रोधज-क्रोध से उत्पन्न । क्रोधन-(सं०पुं०) कौशिक के एक पुत्र का नाम, एक तन्त्रोक्त भैरव । क्रोधनीय-(सं०वि०) क्रोध दिलाने योग्य ।
क्रोधवश-(हि० क्रि० वि०) क्रोध के कारण से ।
क्रोधहा-(सं०वि०) कोप मिटानेवाला ।
क्रोधान्वित-(सं०वि०) क्रोधयुक्त ।
क्रोधालु-(सं०वि०) क्रोधी ।
क्रोधित-(सं०वि०) क्रुद्ध । क्रोधी-(सं० वि०) थोड़े में क्रुद्ध होनेवाला ।
क्रोश-(स०पुं०)रुलाई,आह्वान बुलावा, कोस, क्रोशताल, क्रोशध्वनि (सं०) ढक्का, ढोल ।
क्रोष्टु-(सं०पुं०) शृगाल, सियार, यदुवंशी एक राजा का नाम ।
क्रौंच-(स०पुं०)करांकुलनामक चिड़िया, पद्मबीज, कमलगट्टा, एक पर्वत का नाम, एक द्वीप का नाम । क्रौंचपदा-एक वर्णवृत्त जिसके चारो चरण समान होते हैं ।
क्रौर-(सं०नपुं०) क्रूरता, दुष्टता ।
क्लन्द-(सं०पुं०) रोदन, रुलाई ।
क्लम-(सं०पुं०) खेद, सुस्ती ।
क्लान्त-(सं०वि०) थका हुआ, मुरझाया हुआ । क्लान्ति-(सं०स्त्री०) परिश्रम, थकावट ।
क्लिन्न-(स०वि०)आर्द्र,तर,भीगा हुआ ।
क्लिन्नाक्ष-(सं० वि०) आंखसेपानी बहनेवाला ।
क्लिशित-(सं०वि०) क्लेशयुक्त, कष्टमें पड़ा हुआ ।
क्लिष्ट-(स०वि०) क्लेश युक्त, दुखी, पीड़ित,रोगी, विरुद्ध, बेमेल, कठिन, कड़ा, कठिनाईसे समझमें आनेवाला
क्लिष्टता-(सं० स्त्री०) क्लिष्टत्व, कठिनाई ।
क्लिष्टत्व-(सं०नपुं०) कठिनता, कठिनाई, काव्य का वह दोष जिसमें वाक्य का अर्थ समझने में कठिनाई होती है ।
क्लीब-(सं०पुं०) पुरुष तथा स्त्री से भिन्न, नपुंसक, षण्ड, (वि०) अधीर, विक्रमहीन, कायर । क्लीबता, क्लीबत्व-(सं० स्त्री०) नपुंसकता । (सं० नपु०) क्लीवता, नपुसकता ।
क्लृप्त-(सं० वि०) कल्पित, निर्मित, बनाया हुआ ।
क्लेद-(सं०पुं०)शरीरकीआर्द्रता, पसीना, तरी, गीलापन, कफ, मैल, सड़ाव ।
क्लेदक-(सं०वि०) पसीना लानेवाला (नपुं०) शरीर की दस प्रकार की अग्नियों में से एक ।
क्लेश-(सं०पुं०) दुःख, कष्ट, पीड़ा, वेदना, कलह । क्लेशकारी-(सं०वि०) कष्ट देने वाला । क्लेशित-(सं०वि०) क्लेश युक्त, पीड़ित ।
क्लैब्य-(सं०नपुं०) क्लीबता, नपुंसकता
क्लोम-(सं०पु०)फुस्फुस,दाहिना फेफड़ा
क्वण-(सं०पुं०)वीणाकाशब्द,कलकलशब्द
क्वणन-(स०नपुं०) झनझन शब्द निकलता हुआ ।
क्वचित्-(सं०अव्य०) कोई भी, शायद ही कोई ।
क्वथन-(सं०नपुं०)काढाबनानेकीक्रिया।
क्वथित-(स०वि०)पकाया हुआ, उबाला हुआ ।
क्वथिता-(सं०स्त्री०) कढी ।
क्वाचर-(हिं०पु०) गरियार बैल (वि०) दुर्बल ।
क्वाथ-(सं०पु०) कषाय, काढा, औषधियों को पानी में उबाल कर गाढा किया हुआ रस ।
क्वारपन-(हिं०पुं०) अविवाहितअवस्था, कुवाँरापन ।
क्वारा-(हिं०वि०) जिसका विवाह न हुआ, अविवाहित । क्वारापन-(हिं० पु०) देखो क्वारपन ।
क्वासि-(सं०वाक्य) तू किस स्थानमें है? (स०पुं०) प्रलय, राक्षस, बिजली, क्षेत्र, नाश ।
क्षण-(स०पु०) काल, पलका चतुर्थांश भाग, बहुत छोटा समय, अवसर, प्रशस्त मुहूर्त, उत्सव, पर्व का दिन, व्यापार, शून्यकाल, पराधीनता । क्षणक्षण-(स०अव्य) बारबार,छिनछिन
क्षणन-(स०नपुं०) हिंसा, बध, चूर्ण करना, पिसाई ।
क्षणप्रकाशा-(सं०वि०) विद्युत्,बिजली।
क्षणभंगुर-(स०वि०) अनित्य, क्षणभर में नष्ट हो जानेवाला । क्षणविध्वंसी-(सं०वि०) क्षणिक, क्षणभंगुर ।
क्षणिक-(सं०वि०) क्षणमात्र ठहरने वाला, अनित्य, क्षणभगुर । क्षणिकवाद-बौद्धदार्शनिकोंका यह सिद्धान्त है कि प्रत्येक वस्तु एक क्षण में नष्ट हो जाती है । क्षणिका-(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली ।
क्षणी-(स०वि०) विश्रान्त, थका हुआ।
क्षत-(स०वि०) पीड़ित,घाव लगा हुआ, क्षति युक्त, घिसाहुआ (नपुं०) दुःख, पीड़ा, घाव, व्रण, फोड़ा, कोई रोग, कटाव, मारपीट । क्षतज-(संपुं०)रक्त, लोहू, पीब, (वि०) क्षत या चोट से उत्पन्न, लाल । क्षतव्रण-(सं०पुं०) चोट से उत्पन्न घाव । क्षतव्रत-(सं० वि०) जिसका नियम भङ्ग हो गया हो । क्षतशौच-(सं०नपुं०) घायल की छूत । क्षतयोनि-(सं०वि०) वह योनि जिसका पुरुष से सम्बन्ध हो चुका हो ।
क्षति-(सं०स्त्री०) हानि, घाटा, नाश, कमी ।
क्षतोदर-(सं०नपुं०) पेट का एक रोग ।
क्षतोद्भूर-(सं०नपुं०) रक्त, लोहू ।
क्षता-(स०पु०) द्वारपाल, सारथी ।
क्षत्र-(सं०पुं०) क्षत्रिय, राष्ट्र, राज्य, बल, धन, शरीर, जल । क्षत्रकर्म-(स०नपुं०) क्षत्रियों का काम, शूरता पराक्रम इत्यादि । क्षत्रधर्म-(स०पुं०) क्षत्रियों का अवश्य पालनीय धर्म ।
क्षत्रप-(सं०पुं०) सौराष्ट्र का एक प्राचीन राजवंश । क्षत्रपति-(सं०पुं०) क्षत्रियों का पालक राजा । क्षत्रयोग-(सं०पुं०) अथर्व वेदोक्त राजयोग विशेष । क्षत्रवर्धन-(सं०वि०) धन तथा बल बढानेवाला । क्षत्रविद्या-(सं०स्त्री०) धनुर्वेद । क्षत्रवेद-(स०पुं०) देखो क्षत्रविद्या ।
क्षत्रिय-(सं०पुं०) द्विजातियों के अन्तर्गत दूसरा वर्ण, राजा ।
क्षत्रिया, क्षत्रियाणी-(सं०स्त्री०) क्षत्री की स्त्री ।
क्षत्री-(हिं०पुं०) देखो क्षत्रिय ।
क्षन्तव्य-(सं०वि०) क्षमा करने योग्य ।
क्षन्ता-(सं०वि०) क्षमा करनेवाला ।
क्षपणक-(स०पुं०) नास्तिक मत प्रचारक बौद्ध सन्यासी; (वि०) निर्लज्ज,
क्षपा-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात । क्षपाकर-(सं०पु०) चन्द्रमा, कर्पूर, कपूर ।
क्षपाचर-(स०पुं०)निशाचर, राक्षस।
क्षपाचरी-(सं०स्त्री०)राक्षसी, डाइन ।
क्षपानाथ-(सं०पुं०) देखो क्षपाकर ।
क्षपापति-(स०पु०)निशापति, चन्द्रमा
क्षम-(स०वि०)योग्य, उपयुक्त, समर्थ । सकनेवाला, हित, भला, क्षमायुक्त, क्षमा करनेवाला, (पु०) बल सामर्थ्य, शक्ति क्षमणीय-(सं०वि०) क्षमा करने योग्य । क्षमता-(स०स्त्री०) सामर्थ्य, योग्यता ।
क्षमना-(हिं०क्रि०) क्षमा करना ।
क्षमवाना-(हिं० क्रि०) क्षमा कराना ।
क्षमा-(सं०स्त्री०) दूसरे से कष्ट पाकर चुपचाप सहन करने की चित्तवृत्ति, क्षान्ति, सहिष्णुता, पृथ्वी, दुर्गा, राधिका की एकसखी, खैर का वृक्ष।
क्षमाई-(हिं०स्त्री०) क्षमा करनेकी क्रिया ।
क्षमाना-(हिं०क्रि०) क्षमा करना ।
क्षमापन-(हिं०पुं०) क्षमा करने का अभ्यास ।
क्षमावान्-(सं०वि०)क्षमायुक्त, सहिष्णु, गमखोर ।
क्षमितव्य-(सं०वि०)क्षमा करने योग्य ।
क्षमाशील-(स०वि०) देखो क्षमावान् ।
क्षमी-(सं०वि०) क्षमाशील, सहिष्णु,
क्षम्य-(सं०वि०) क्षन्तव्य, क्षमा किया जाने वाला ।
क्षय-(सं०पु०) प्रलय, अपचय, ह्रास, कल्पान्त, नाश, घर, निवास स्थान, राजक्ष्मा रोग, सूखे की बीमारी, समाप्ति, अन्त, ज्योतिष शास्त्र के अनुसार वह महीना जिसमें दो रवि सक्रांतियां पड़ती हैं, क्षयमास केवल कार्तिक, अगहन और पूस में ही पड़ता है, जिस वर्षमें क्षयमास आता है उनके तीन महीने पहिले और तीन महीने बाद एक अधिक मास होता है । क्षयकर-(सं०वि०) नाश करने वाला । क्षयवायु-(सं०पुं०) प्रलय काल की वायु ।
क्षयित-(स०वि०) बिगाड़ा या नाश किया हुआ।
क्षयित्व-(सं०नपुं०) नाश ।
क्षयिष्णु-(सं०वि०) क्षयशील, नष्ट होने वाला ।
क्षयी-(सं०वि०)नष्टहोने वाला, यक्ष्मा

का रोगी, (पुं०) चन्द्रमा, (हिं०स्त्री०) क्षयरोग।
क्षय्य-(सं०वि०)नष्ट किये जाने योग्य।
क्षर-(सं०वि०) नाश होने वाला (पुं०) जल, मेघ, जीवात्मा, देह, अज्ञान।
क्षरण-(सं०नपुं०) स्रवण, टपकाव, चुआव, नाश, छुटकारा।
क्षरित-(सं०वि०) चुवाया हुआ, टपकाया हुआ।
क्षात्र-(सं०नपुं०) क्षत्रियों का कर्म, क्षत्रियत्व, क्षत्रियों का समूह (वि०) क्षत्रिय सम्बन्धी।
क्षान्त-(सं०वि०) क्षमाशील, सहिष्णु, **क्षान्ति**-(सं०स्त्री०) तितिक्षा, सहनशीलता, क्षमा। **क्षान्तिमान्**-(सं०पुं०) सहनशील पुरुष।
क्षाम-(सं०वि०) कृश, क्षीण, गला हुआ, दुर्बल (पुं०) विष्णु।
क्षाम्य-(सं०वि) क्षमा करने योग्य।
क्षार-(सं०पुं०) लवणरस, एक प्रकार का खनिज अथवा जान्तव पदार्थ से उत्पन्न द्रव्य, खार, सज्जीखार, शोरा, सोहागा, राख, भस्म (वि०) खारा।
क्षारक-(सं०पुं०) चिड़ियों को फँसाने की जाल।
क्षारण-(सं०नपुं०) भस्म करने की क्रिया।
क्षारलवण-(सं०नपुं०) खारी नमक।
क्षारिका-(सं०स्त्री०) क्षुधा, भूख।
क्षारित-(सं०वि०) दूषित, दुर्नाम।
क्षालन-(सं०नपुं०) शुद्ध करने या धोने का कार्य, प्रक्षालन, शुद्धता।
क्षिति-(सं०स्त्री०)पृथ्वी, रहने का ठौर, क्षय, नाश, महाप्रलय, गोरोचन। **क्षितिकण**-(सं०पुं०) धूलि, **क्षितिकम्प**-(सं०पुं०) भूकम्प, भुईंडोल।
क्षितिज-(सं०पुं०) मंगलग्रह, केंचुवा, वृक्ष, नरकासुर, खगोल में आकाश के मध्य में नब्बे अंश की दूरी पर स्थित तिरछा वृत्त, वह स्थान जहाँ पर पृथ्वी और आकाश मिले हुए देख पड़ते हैं।
क्षितिदेव-(सं०पुं०) भूदेव, ब्राह्मण। **क्षितिदेवता**-(सं०) देखो क्षितिदेव। **क्षितिधर**-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, कछुवा, हाथी, सर्प। **क्षितिरुह**-(सं०पुं०) वृक्ष, **क्षितिवृत्ति**-(सं०स्त्री०) सहिष्णुता। **क्षितिसुत**-(सं०पुं०)मंगल ग्रह, नरकासुर।
क्षितीश-(सं० पुं०) भूमिपति, विष्णु। **क्षितीश्वर**-(सं०पुं०) देखो क्षितीश।
क्षिपक-(सं०वि०)फेंकने वाला, क्षेपक।
क्षिपण-(सं०नपुं०) फेंकने की क्रिया।
क्षिपणि-(सं०स्त्री०) नाव की पतवार।
क्षिपणु-(सं०पुं०) व्याघ्र, बहेलिया, चिड़ीमार।
क्षिपा-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
क्षिप्त-(सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, विकीर्ण, फैलाया हुआ, अपमानित किया हुआ, उगला हुआ, पतित, मारा हुआ, ढीला किया हुआ, रक्खा हुआ, वायुरोग से ग्रस्त, (पुं०) चित्त की पांच अवस्थाओं में से एक; **क्षिप्तचित्त**-चंचल चित्त।
क्षिप्र-(सं०वि०) द्रुत, फेंकनेवाला, (अव्य०) जल्दी से; **क्षिप्रकारी**-शीघ्र काम करनेवाला; **क्षिप्रहस्त**-शीघ्र हाथ चलाने वाला।
क्षीण-(सं०वि०) सूक्ष्म, निर्बल, क्षयप्राप्त, घटा हुआ, दुबला पतला;
क्षीणकर-दुर्बल करनेवाला। **क्षीणचन्द्र**-(सं०नपुं०)कृष्ण पक्षकी अष्टमी के बाद शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चन्द्रमा। **क्षीणता**-(सं०स्त्री०) दुर्बलता, निर्बलता, सूक्ष्मता, **क्षीणबल**-(सं०वि०) दुर्बल, निर्बल। **क्षीणशक्ति**-(सं०स्त्री०) देखो क्षीणबल।
क्षीर-(सं०पुं०) दुग्ध, दूध, जल, पानी, पेड़ का रस या दूध, खीर। **क्षीरकण्ठ**-दूध पीनेवाला बच्चा। **क्षीरकाण्डक**-(सं०पुं०) मदार, थूहर।
क्षीरकीट-(सं०पुं०) दूध का कीड़ा।
क्षीरज-(सं०नपुं०)दूध से उत्पन्न,दही।
क्षीरजा-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी। **क्षीरतोयधि**-(सं०पुं०) क्षीरसमुद्र। **क्षीरधात्री**-(सं० स्त्री०) शिशु को दूध पिलानेवाली धाय।
क्षीरधि-(सं०पुं०) क्षीर सागर। **क्षीरनिधि**-(सं०पुं०) क्षीरसागर। **क्षीरपुष्पी**-(सं०स्त्री०)क्षीरकाकोली नामक नामक जड़ी। **क्षीररस**-(सं०पुं०)
क्षीरवारिधि-(सं०पुं०) क्षीर सागर।
क्षीरवृक्ष-(सं०पुं०)गूलर, पीपल, बर, महुवा **क्षीरव्रत**-(सं०पुं०) केवल दूध पीकर रहने का व्रत। **क्षीरसमुद्र**, **क्षीरसागर**-(सं०पुं०) दुग्धसागर, दूध का समुद्र।
क्षीरिका-(सं०स्त्री०)वंशलोचन, खिरनी का वृक्ष।
क्षीरिणी-(सं०स्त्री०)क्षीरकाकोली,खिरनी
क्षीरोद-(सं०पुं०) दुग्धसमुद्र; **क्षीरोदतनय**-चन्द्रमा; **क्षीरोदतनया**-लक्ष्मी।
क्षीरोदधि-(सं०पुं०) क्षीरसमुद्र।
क्षीव-(सं०वि०) उन्मत्त, मतवाला। **क्षीवता**-(सं०स्त्री०) उन्मत्तता, पागलपन।
क्षुणि-(सं०स्त्री०) पृथ्वी।
क्षुणी-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
क्षुण्ण-(सं०वि०) अभ्यस्त, दलित, चूरचूर किया हुआ, चोट खाया हुआ। टुकड़ा किया हुआ। अभ्यस्त
क्षुत्-(सं०स्त्री०) क्षुधा, भूख। **क्षुत्**-(सं०पुं०) छिक्का, छींक।
क्षुत्क्षाम-(सं० वि०) क्षुधा से पीड़ित।
क्षुद्र-(सं०वि०) कृपण, कंजूस, अधम, तुच्छ, नीच, अल्प, क्रूर, दरिद्र, खोटा, छोटा। **क्षुद्रकन्द**-(सं०पुं०) सिंघाड़ा। **क्षुद्रघण्टिका**-(सं०स्त्री०) छोटे छोटे घुंघरू लगी करधनी, छोटे छोटे घुंघरू **क्षुद्रजन्तु**-(सं०पुं०) कीड़ा, मकोड़ा। **क्षुद्रता**-(सं०स्त्री०) नीचता,ओछापन। **क्षुद्रत्व**-(सं०नपुं०) देखो क्षुद्रता। **क्षुद्रदृष्टि**-(सं०स्त्री०) अल्प दर्शन, **क्षुद्रप्रकृति**-(सं०वि०) नीच स्वभाव या प्रकृतिवाला। **क्षुद्रप्राण**-(सं०वि०) अल्प प्राण, शीघ्र मरनेवाला। **क्षुद्रबुद्धि** (सं०वि०)नीच प्रकृतिका मूर्ख, **क्षुद्रमुस्ता**-(सं०स्त्री०) कशेरुका, कसेरू। **क्षुद्रशुक्ति, क्षुद्रशुक्तिका**-(सं०स्त्री०) छोटी सीप।
क्षुद्रा-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी, मधु, मक्खी मेढकी, पाकर, लोनी, कटैया।
क्षुद्रान्त-(सं०नपुं०) कलेजे की छोटी रग छोटी आँत।
क्षुद्रावली-(सं०स्त्री०)घुंघरूदार करधनी।
क्षुद्राशय-(सं०वि०) नीच प्रकृतिका, **क्षुद्राशयता**-(सं०स्त्री०) नीचपन, ओछापन।
क्षुद्रता-(सं०स्त्री०) छोटी इलायची।
क्षुधा-(सं०स्त्री०) बुभुक्षा भूख, भोजन करनेकी इच्छा। **क्षुधातुर**-(सं०वि०) क्षुधार्त, भूखा। **क्षुधार्त**-(सं०वि०) देखो क्षुधातुर। **क्षुधालु**-(सं०वि०) क्षुधायुक्त, भुक्खड़। **क्षुधावन्त**-(हिं०वि०) देखो ,क्षुधावान्। **क्षुधावान्**-(सं०वि०) क्षुधायुक्त, भूखा।
क्षुधित-(सं०वि०) बुभुक्षित, भूखा।
क्षुप-(सं०पुं०) छोटा वृक्ष, पौधा, झाड़ी, सत्यभामा से उत्पन्न कृष्ण के पुत्र का नाम।
क्षुपा-(सं०स्त्री०) छोटी झाड़ी।
क्षुब्ध-(सं०वि०) घबड़ाया हुआ अधीर, (पुं०) मथानी, व्याकुल, भयभीत, डरा हुआ।
क्षुभित-(सं०वि०) देखो क्षुब्ध।
क्षुर-(सं०पुं०) नापित का छूरा, पशु का खुर, एक प्रकार की तीर। **क्षुरक**-(सं०पुं०)तालमखाना, गोखरू। **क्षुरकर्म**-(सं०नपुं०) क्षौर, हजामत। **क्षुरक्रिया**-(सं०)देखो क्षुरकर्म। **क्षुरधार**-(सं०पुं०) एक नरक का नाम, (वि०)छूरे के समान तीक्ष्ण धारवाला।
क्षुरप्र-(सं०पुं०) खुरपी, एक प्रकार का बाण।
क्षुरिका-(सं०स्त्री०) पालकी, छुरी,यजुर्वेदान्तर्गत एक उपनिषत् का नाम।
क्षुरी-(सं०पुं०) नापित, नाऊ, (स्त्री०) छुरी, चाकू।
क्षुल्लक-(सं०वि०) छोटा, थोड़ा, दरिद्र, दुःखी।
क्षेत्र-(सं०नपुं०) अन्न बोने का स्थान, खेत, शरीर, अन्तः करण, समतल भूमि, कलत्र, पत्नी, सिद्ध स्थान, तीर्थ, रेखाओं से घिरा हुआ स्थान, मेषादि द्वादश राशि। **क्षेत्रकर**-(सं०वि०) खेत तैयार करने वाला। **क्षेत्रकर्म**-(सं०नपुं०) खेत का काम। **क्षेत्रगणित**-(सं०नपुं०) वह गणित जिसके द्वारा क्षेत्रों की नाप इत्यादि की जाती है, क्षेत्रमिति। **क्षेत्रज**-(सं०पुं०) मृत, नपुंसक या राजयक्ष्मा आदि रोग ग्रस्त पुरुष की स्त्री धर्मानुसार पर पुरुष से जिस पुत्र को उत्पन्न करती है वह उस पुत्र के स्वामी का क्षेत्रज पुत्र कहलाता है (वि०) खेत में उत्पन्न होने वाला। **क्षेत्रजात**-(सं०वि०) खेत में उत्पन्न होने वाला, **क्षेत्रज्ञ**-(सं०पुं०) शरीर का अधिष्ठाता, जीवात्मा, सर्वज्ञ, परमेश्वर, विष्णु, साक्षी; (वि०) रसिक, खेतिहर, खेत के विषय का जानकार।**क्षेत्रद**-(सं०वि०) खेत का दान करने वाला, **क्षेत्रप**-(सं०पुं०) बटुकभैरव, ईश्वर, क्षेत्र रक्षक खेत की रखवाली करने वाला, **क्षेत्रपति**-(सं० पु०) खेतका रखवाला, किसान, परमात्मा, **क्षेत्रपाल**-(सं०वि०) खेत का रक्षक,देवता विशेष, द्वारपाल. भैरव विशेष, प्रधान प्रबन्धकर्ता। **क्षेत्रफल**-(सं०नपुं०) क्षेत्रान्तर्गत स्थान का परिमाण, **क्षेत्रभक्ति**-(सं०स्त्री०) खेत का बँटवारा **क्षेत्रभूमि**-(सं०स्त्री०) खेत की भूमि **क्षेत्रवित्**-(सं०वि०) मर्म को जानने वाला (पुं०) क्षेत्रज्ञ, जीवात्मा। **क्षेत्रव्यवहार**-(सं०पुं०) कर्ण तथा लम्ब के फलों की सहायता से क्षेत्र परिमाण का निर्णय, यह ज्यामिति तथा परिमिति के तत्वों से ज्ञात होता है। **क्षेत्रसम्भूत**-(सं०वि०) खेत से उत्पन्न।
क्षेत्राधिप-(सं०पुं०) खेत का मालिक, बारहो राशि के अधिपति ग्रह।
क्षेत्री-(सं०पुं०) स्वामी, पति, कृषक, किसान।
क्षेप-(सं०पुं०) निन्दा, बुराई, ठोकर, पहुँचावा, गर्व, घमंड, विलम्ब, देर, लंघन, दूरी, बिताना, गुच्छा,अक्षांश (वि०) फेंका जानेवाला। **क्षेपक**-(सं०वि०) फेकने वाला, मिश्रित, निन्दनीय (पु०) किसी ग्रन्थ में ऊपर से मिलाया हुआ अंश, गुच्छा,
क्षेपण-(सं०नपुं०) लंघन, अपवाद, विक्षेप, फेकान, मारण, रस्सी का बना हुआ सिकहर, परित्याग, फन्दा
क्षेपणिक-(सं० पुं०) बल्ली से नाव खेने वाला।
क्षेपणी-(सं०स्त्री०) बन्दूक की गोली।
क्षेपणीय-(सं०वि०) फेकने योग्य।
क्षेपपात-(सं०पुं०) ज्योतिष में ग्रहकक्षा और क्रान्ति मण्डल का योग।
क्षेप्ता-(सं०वि०) फेंकने वाला।
क्षेम-(सं०पुं०) चण्डा (चोवा) नामक औषधि, चन्द्रवंशीय शुचि राजा के पुत्र का नाम, लब्ध वस्तु का रक्षण, सुरक्षा, मुक्ति, छुटकारा, कुशल मंगल, आनन्द, ज्योतिःशास्त्र में जन्म नक्षत्र से गणना का चौथा नक्षत्र। **क्षेमक**-(सं०पुं०) एक नाग

का नाम, एक राक्षस का नाम, शिव
क्षेमकर-(स०वि०) मंगलकारक, भलाई करने वाला। **क्षेमकर्ण**-(स०पु०) अर्जुन के पौत्र का नाम। **क्षेमकर्मा**-(सं०वि०) पालने वाला। **क्षेमकार**-(सं०वि०) भलाई करने वाला।
क्षेमकृत्-(स०वि०) मंगलकारक।
क्षेमदर्शी-(स०वि०) भलाई देखने वाला। **क्षेमवान्**-(सं०वि०) मंगलयुक्त, भला, अच्छा।
क्षेमा-(स०स्त्री०) कात्यायनी देवी।
क्षेमासत-(स०नपुं०) हठ योग का एक आसन।
क्षेमिका-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।
क्षेम्य-(स०वि०) मंगलकर, हितकर, भला
क्षैण्य-(सं०नपुं०) क्षीणता,
क्षैरेय-(सं०वि०) दूध से बना हुआ।
क्षोड-(स०पु०) हाथी बांधने की सिकड़ी
क्षोणि-(स०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि एक की संख्या।
क्षोणिप-(सं०पु०) पृथ्वीपति, राजा।
क्षोणी-(सं०) देखो क्षोणि।
क्षोदित-(सं०वि०) खोदा हुआ, चूर्णित
क्षोभ-(सं०पुं०) संचलन, विचलता, हलचल, चित्त की चंचलता, घबड़ाहट, भय, डर, क्रोध। **क्षोभण**-(स०वि०) घबड़ाने वाला, (नपु०) संचालन, (पुं०) कामदेव के पांच बाणों में से एक।
क्षोभ-(सं०नपुं०) अटारी, सन का बना हुआ वस्त्र। **क्षोभित**-(स०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, भयभीत, डरा हुआ, क्रुद्ध।
क्षोभी-(स०वि०) चंचल, उद्विग्न, व्याकुल
क्षौणि-(स०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
क्षौणी-(स०स्त्री०) पृथ्वी, एक की संख्या
क्षौद्र-(सं०नपु०) जल, पानी, धूलि, चम्पावृक्ष, ओछापन, छोटी मधुमक्खी का शहद।
क्षौद्रेय-(सं०नपुं०) मोम।
क्षौम-(स० नपुं०) रेशमी कपड़ा, सन् के तन्तु से बना हुआ वस्त्र, अटारी।
क्षौमिका-(स०स्त्री०) सन की करधनी।
क्षौमी-(सं०स्त्री०) कन्था, कथरी।
क्षौर-(स०नपु०) मुण्डन कर्म। **क्षौरिक**-(सं०पुं०) नापित, नाऊ।
क्ष्मा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, धरती, एक की संख्या; **क्ष्मातल**-भूतल; **क्ष्मापाल**, **क्ष्मापति**-राजा; **क्ष्माभृत**-पर्वत, राजा; **क्ष्माज**-(स०पुं०) मंगल ग्रह।
क्ष्मातल-(सं०नपु०) भूतल, पृथ्वी की सतह **क्ष्मापति**, **क्ष्मापाल**-(सं०पु०) राजा। **क्ष्माभृत्**-(सं०पु०) पर्वत, राजा
क्ष्मायित-(सं०वि०) कांपने वाला।
क्ष्वेड़-(सं०पुं०) अव्यक्त ध्वनि, कान का एक रोग, विष, स्निग्धता, चिकनाई, मोचन, त्याग, (वि०) कुटिल, दुष्ट,
क्ष्वेला-(स०स्त्री०) क्रीड़ा, खेल।

—:o:—

ख

ख-व्यञ्जन वर्ण का दूसरा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है; इन्द्रिय, सूर्य, आकाश, नगर, क्षेत्र, शून्य, बिन्दु, गर्त, गड्ढा, निर्गमन मार्ग, निकास, सुख, कर्म, देवलोक, गले की प्राण वायु जाने की नाली, जन्म लग्न से दशम राशि, कुवां, गड्ढा, स्वर्ग, तीर का घाव, चिदानन्दमय ब्रह्माकाश, मोक्ष
खंक-(हिं०वि०) खाली, पोला,
खंख-(हिं०वि०) रिक्त, छूछा, उजाड़, निर्जन।
खंखरा-(हिं०पुं०) चावल पकाने का बड़ा पात्र (वि०) सूखा, कड़ा सेका हुआ, छिद्रमय बहुत से छेद वाला।
खंखार-(हिं०पु०) देखो खखार।
खंग-(हिं०पुं०) तलवार, खड्ग, गैंडा पशु
खंगड़-(हिं०वि०) झगड़ालू, गंवार(पुं०) कूड़ाकरकट।
खंगना-(हिं०क्रि०) अड़ना, पीछे को न हटना, कम होना, घटना।
खंगर-(हिं०पुं०) एक साथ पकी हुई बहुत सी ईंट, (वि०) शुष्क, सूखा।
खंगह-(हिं०वि०) जिसके दांत आगे को उभड़े हों, खांगने वाला (पु०) गैंड़ा।
खंगालना-(हिं०क्रि०) केवल जल डाल कर किसी पात्र को धोना, खाली करना, सबकुछ उठा ले जाना या चोराना
खंगी-(हिं०स्त्री०) त्रुटि, कमी, घटी।
खंगैल-(हिं०वि०) खांगनेवाला, दंतैल।
खंघारना-(हिं०क्रि०) देखो खंगालना।
खंचना-(हिं०क्रि०) चिह्न पड़ना, खिंच जाना, बनना। **खंचाना**-(हिं०क्रि०) चिह्न बनाना, शीघ्रता से लिखना।
खंचिता-(हिं०स्त्री०) रहठठे की बनी हुई डलिया।
खंजड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो खंजरी।
खंजरी-(हिं०स्त्री०) डफली की तरह का एक छोटा बाजा, धारीदार कपड़ा।
खंजरी-(हिं०पुं०) खंजन पक्षी।
खंडना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, काटना, टुकड़े टुकड़े करना।
खंडपूरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मेवा और शक्कर भरी हुई पूरी।
खंडर-(हिं०पुं०) खंडहर, टूटा फूटा घर
खंडरा-(हिं०पु०) किसी वस्तु का बड़ा टुकड़ा।
खंडरेच-(हिं०पुं०) खंजन पक्षी।
खंडला-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का बड़ा टुकड़ा।
खंडसार-(हिं०स्त्री०) शक्कर बनाने का स्थान।
खंडहर-(हिं०पुं०) टूटा फूटा मकान।
खंडा-(हिं०पुं०) चावल का कन्ना, छोटी तलवार।
खंडिया-(हिं०वि०) गड़ेरी काटने वाला (स्त्री०) टुकड़ा।
खंडी-(हिं०स्त्री०) गाँव के चारो ओर के वृक्ष, कर का अंश।
खंडौरा-(हिं०पुं०) शक्कर का बना हुआ लड्डू।
खंडौरी-(हिं०स्त्री०) चावल का टुकड़ा।
खंतरा-(हिं०पुं०) छेद, दरार, कोना (पुं०) भूमि से खोदने का फरसा, गड्ढा, जिसमें से कुम्हार मिट्टी लेते हैं
खंदा-(हिं०पु०) देखो खंदक।
खंधा-(हिं०पु०) आर्या छन्द का एक भेद
खंभ-(हिं०पु०) स्तम्भ, खंभा, सहारा।
खंभा-(हिं०पु०) स्तम्भ, खड़े बल आधार के लिये लगाया हुआ पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा।
खंभार-(हिं०पु०) चिन्ता, व्याकुलता, घबड़ाहट, भय, डर, शोक,
खंभारी-(हिं०स्त्री०) देखो गंभीरी।
खंभावती-(हिं०स्त्री०) आधीरात को गाने की एक रागिणी।
खंभिया-(हिं०स्त्री०) लोटा पतला खंभा
खंब-(हिं०स्त्री०) अन्न रखने का गड्ढा।
खई-(हिं०स्त्री०) क्षय, नाश, लड़ाई, झगड़ा
खकक्षा-(सं०स्त्री०) आकाश मण्डल की परिधि।
खकामिनी-(स०स्त्री०) दुर्गाकी एकमूर्ति
खकुण्डल-(स०पुं०) शिव, महादेव।
खक्खट-(स०पु०) खड़िया मिट्टी।
खक्खा-(हि०पुं०) अट्टहास, ज़ोर की हँसी, अनुभवी पुरुष, बड़ा हाथी।
खक्खा साह-(हिं०पु०) चतुर व्यापारी
खखरा-(हिं०पुं०) बड़ा डेग बांस का टोकरा, (वि०) छिद्रमय, सूखा, कुंएके लिये गड्ढा।
खखरिया-(हि०स्त्री०) बेसन या मैदे की पतली पूरी।
खखसा-(हिं०पु०) खेसका, वनकरेला।
खखार-(हिं०पुं०) गाढा कफ या थूक जो खखारने से मुंह से बाहर निकलता है
खखारना-(हिं०क्रि०) वेग से थूकना, या खांसना, वेग से कफ बाहर निकालना।
खखेटना-(हिं०क्रि०) भगाना, मारना, दबाना।
खखोरना-(हिं०क्रि०) खुरचना, भली भांति ढूंढना।
खग-(स०पुं०) सूर्य, ग्रह, चन्द्रमा देवता, बाण, पक्षी, वायु, टिड्डी, लवा पक्षी, पारा, (वि०) आकाश में चलने वाला, खगकेतु (सं०पुं०) गरुड़।
खगखान-(स०पुं०) वृक्ष का कोटर।
खगपति-(सं०स्त्री०) पक्षी की गति, ग्रहों की गति।
खगङ्गा-(स० स्त्री०) आकाशगङ्गा, मन्दाकिनी।
खगना-(हिं०क्रि०) धँसना, चुभना, मनमें धँसना, अच्छा लगना, लिप्त होना, लगना, चिपकना, उतर आना, बन जाना, खड़े रहना, अटकना, चिन्हित होना।
खगपति-(सं०पुं०) सूर्य, गरुड़।
खगवती-(सं०स्त्री०) पृथ्वी।
खगहा-(हिं०पु०) गैंड़ा।
खगाधिप-(सं०नपुं०) गरुड़।
खगासन-(सं०पु०) विष्णु।
खगुण-(स०वि०) जिसका गुणक शून्य हो
खगेश, खगेश्वर, खगेन्द्र-(सं०पुं०) गिद्ध, गरुड़
खगोल-(सं०पुं०) आकाशमण्डल, खगोल विद्या।
खग्ग-(हिं०पु०) खड्ग, तलवार।
खगोलविद्या-(स०स्त्री०) नक्षत्र, ग्रह आदि, के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की विद्या, गणित ज्योतिष।
खग्रास-(सं०पुं०) सपूर्ण ग्रहण, सूर्य या चन्द्र का वह ग्रहण जिसमें उसका सम्पूर्ण अंश काला पड़ जावे और अंधकार हो जाय।
खचन-(हिं०पुं०) अंकित करने, जोड़ने या बाँधने की क्रिया। **खचना**-(हिं०क्रि०) जड़ना, अंकित होना, बनना, उतरना, टिकना, रहना, फंसना, अटकना।
खचर-(सं०पु०) मेघ, बादल, वायु, हवा, सूर्य, राक्षस, ग्रह, नक्षत्र, बाण, पक्षी, (वि०) आकाश में चलनेवाला।
खचरा-(हिं०वि०) दुष्ट, वर्णसंकर, दोगला। **खचाखच**-(हिं०क्रि०वि०) ठसाठस, बिलकुल भरा हुआ, वेग के साथ। **खचाना**-(हिं०क्रि०) खींचना, बनाना, लिखना।
खचारी-(सं० वि०) आकाशगामी, आकाश में चलनेवाला। (पु०) कार्तिकेय।
खचावट-(हिं०स्त्री०) खींचने की क्रिया।
खचित-(सं०वि०) खींचा हुआ, चित्रित, लिखित।
खचिया-(हिं०स्त्री०) छोटी टोकरी, दौरी
खच्चर-(हिं०पुं०) गदहे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न पशु।
खज-(सं०पु०) मथानी, युद्ध (हिं०वि०) खाद्य, खाने योग्य। **खजक**-(सं०पु०) मथानी।
खजल-(सं०नपुं०) तुषार, पाला, मेघ का जल।
खजला-(हि०पु०) खाजा नाम की मिठाई
खजलिया-(हि०पु०) अंगूर के पौधों का एक रोग।
खजहजा-(हिं०वि०) खाने योग्य मेवा या फल।
खजाक-(सं०पु०) पक्षी, चिड़िया।
खजुआ-(हिं०पु०) देखो खाजा।
खजुरा-(हिं०पुं०) स्त्रियों की चोटी में बांधने की डोरी
खजुला-(हिं०पु०) खाजा नाम की मिठाई
खजुराही-(हि०स्त्री०) खजूर का जंगल।
खजुरिया-(हि०स्त्री०) छोटा खजूर, एक प्रकार की मिठाई, एक जाति की ऊख
खजुलाना-(हिं०क्रि०) देखो खुजलाना।
खजुली-(हिं०स्त्री०) खाज, खुजली, एक प्रकार की काई जिसके शरीर में स्पर्श होने से खुजली होने लगती है, खाजे के तरह की एक मिठाई।

खजूर-(हिं०पु०स्त्री०) ताड़ की जाति का एक वृक्ष जिसके फल छोहारे के आकार के होते हैं, एक प्रकार की मिठाई। **खजूरा**-(हिं०पु०) खजूर का बंडेर, कनखजूरा। **खजूरी**-(हिं०वि०) खजूर सबंधी, खजूर के आकार का तीन लड़ों को गूथकर बनाया हुआ।
खज्योति-(स०पु०) खद्योत, जुगनू।
खञ्ज-(स०पु०) वायु का एक रोग, लंगड़ा, (वि०) खण्डित, टूटा हुआ।
खञ्जता-(सं०स्त्री०)खञ्जत्व, लंगड़ापन
खञ्जन-(सं०पु०) खंजन पक्षी, खेड़रिच पक्षी, जो विशेष कर जलके समीप शरद और शीत काल तक देख पड़ती है।
खञ्जा-(सं०स्त्री०) एक मात्रा वृत्त।
खट-(सं०पुं०) कफ, हल, तृण, घास (हिं०पु०) दो पदार्थों के टकराने का शब्द, किसी पदार्थ के टूटने से उत्पन्न शब्द, (हिं०वि०) अम्ल, खट्टा, **खटसे**-तुरत। **खटक**-(हिं०स्त्री०) खटके का शब्द, खटक। **खटकना**-(हिं०क्रि०) खटखट शब्द होना, रह रहकर दुखना, टपकना, बुरा जान पड़ना, अलग होना, भय करना, डरना, झगड़ा लगाना, दिल धड़कना, उचटना, झगड़ा लगाना, दिल धड़कना, उचटना, विरक्त होना, ठीक न ज्ञात होना, अनिष्ट की आशंका होना। **खटका**-(हिं०पुं०) खटखट शब्द, आशंका, चिन्ता, सिटकनी, कोई पेंच जिसके दबाने से 'खड़' शब्द होता है, पक्षियों को उड़ाने के लिये पेड़में लटकाया हुआ बांस का टुकड़ा। **खटकाना**-(हिं०क्रि०) खट खट करना, बजाना, छेड़ना, डराना, ठोंकना, फेंकना, खटका करना।
खटकीड़ा-(सं०स्त्री०) खटमल।
खटखट-(हिं०स्त्री०) ठोंकने पीटने से उत्पन्न शब्द, फँसाव, झंझट, उलझन, विवाद, बखेड़ा, झगड़ा। **खटखटा**-(हिं०पु०) चिड़ियों को भगाने के लिये पेड़में रस्सी से लटकाया हुआ बांस का टुकड़ा। **खटखटाना**-(हिं०स्त्री०) खटखट करना, बारंबार चोट लगाना, खड़खड़ाना, चेताना।
खटना-(हिं०क्रि०) धन व्यय करना, काम में लगे रहना।
खटपट-(हिं०स्त्री०) लड़ाई झगड़ा, वादा-विवाद, अनबन, खटपट शब्द।
खटपटिया-(हिं०वि०)झगड़ालू, लड़ाका।
खटपद-(हिं०पु०) देखो षट्पद।
खटपाटी-(हिं०स्त्री०) खटिये की पाटी।
खटपूरा-(हिं०पुं०)मिट्टी तोड़ने कीमुंगरी।
खटबुना-(हिं०वि०)चारपाई बीननेवाला
खटमल-(हिं०पुं०) एक चिपटा कीड़ा जो खाट इत्यादि में उत्पन्न हो जाता है, यह मनुष्यों का लोहू चूसता है।
खटमिट्ठा-(हिं०वि०) मधुराम्ल, खटाई और मिठाई दोनों का स्वाद रखने वाला
खटमुख-(हिं०पु०) देखो षट्मुख।
खटराग-(हिं०पु०) व्यर्थ की वस्तु, झगड़ा, झंझट, सामग्री, सामग्री।
खटला-(हिं०पु०) स्त्रियों के कान में बाली पहिरने का छिद्र, आश्रम।
खटाई-(हिं०स्त्री०) अम्लता, खट्टापन, खट्टी वस्तु, वैरभाव, अनबन।
खटाका-(हिं०पु०) वेग का शब्द, (क्रि०वि०) खटके से।
खटाखट-(हिं०स्त्री०) ठोंकने पीटने का निरन्तर शब्द, (हिं०क्रि०) खटखट करके, झटपट, जल्दी से, बिना रुकावट के।
खटाना-(हिं०क्रि०) खट्टा पड़ना, खटाई आना, निभना, टिकना, लगा रहना, काम लेना, बिगड़ना (क्रि०) ठहरना, निर्वाह होना, जाँच करने पर पूरा उतरना।
खटापट, खटापटी-(हिं०स्त्री०) खटपट।
खटाल-(हिं०पुं०) समुद्र की ऊंची लहर
खटाव-(हिं०पुं०) निर्वाह, नाव बाँधने का खूंटा।
खटास-(हिं०स्त्री०) खटाई, खट्टापन, गन्धविलाव, अनबन, वैरभाव, बिगाड़
खटिक-(हिं०पु०) एक छोटी हिन्दू जाति जो प्रायः फल और तरकारी बेंचते हैं; (स्त्री०) खटकिन।
खटिका-(सं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खटिया-(हिं०स्त्री०) चारपाई, छोटा खाट, खटोला।
खटी-(सं०स्त्री०) खड़िया।
खटीक-(हिं०पुं०) देखो खटिक।
खटेटी-(हिं०वि०) बिछौने से खाली, जिस पर बिछौना न हो।
खटोलना, खटोला-(हिं०पुं०) छोटी चारपाई या खटिया।
खट्टन-(सं०वि०) छोटा, नाटा, बौना।
खट्टा-(हिं०वि०) अम्ल, जिसमें खटाई हो, (पुं०) नीबू की जाति का एक खट्टा फल, गुलगुल, **जी खट्टा हो जाना**-चित्त अप्रसन्न होना, **खट्टा चूक**-स्वाद मे बहुत खट्टा, **खट्टा मीठा**, कुछ खट्टा कुछ मीठा।
खट्टिका-(सं०स्त्री०) छोटा खटोला।
खट्टी-(हिं०स्त्री०) खट्टा नीबू।
खट्टू-(हिं०वि०) व्यवसाय में लगा रहने वाला।
खट्वा-(सं०स्त्री०) पलंग, चारपाई, खटोला। **खट्वांग**-(सं०नपुं०) खटिये का पावा पाटी, शिवका एक अस्त्र, प्रायश्चित्त करनेवाले का भिक्षा मांगने का पात्र।
खड़-(सं०नपुं०) तृण, खर कतवार, एक ऋषि का नाम।
खड़ंजा-(हिं०पुं०) खड़े ईंटों की जोड़ाई जो भूमि पर की जाती है।
खड़क-(हिं०स्त्री०) खटक, धीमा शब्द।
खड़कना-(हिं०क्रि०) खड़खड़ होना, खटकना।
खड़का-(हिं०पु०) देखो खटका।
खड़काना-(हिं०क्रि०)खटकाना, लड़ाना, बजाना।
खड़किका-(सं०स्त्री०) खिड़की।
खड़खड़ा-(हिं०पु०) पक्षियों को उड़ाने का बांस, ढांचा, (वि०) खड़खड़ करनेवाला। **खड़खड़ाना**-(हिं०क्रि०) खड़खड़ होना या करना, दो वस्तुओं का परस्पर टकराना। **खड़खड़ाहट**-(हिं०स्त्री०) खड़खड़ाहट का शब्द खटपट।
खड़खड़िया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पालकी, पीनस।
खड़ग-(हिं०पु०) देखो खड्ग। **खड़गी**-(हिं०वि०)तलवार लिये हुए, (पुं०) गैंडा
खड़जी-(हिं०स्त्री०) देखो खड़गी।
खड़बड़-(हिं०स्त्री०) खटपट, उत्तेजना, चहल पहल, उलट पलट, उलट फेर।
खड़बड़ाना-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना, घबड़ाना, बिगड़ना, उलट पलट होना, क्रम तोड़ना, खटकाना, खड़-खड़ाना, क्रम बिगाड़ना, घबड़ाहट में डालना। **खड़बड़ाहट**-(हिं०पु०) देखो खड़खड़ाहट। **खड़बड़ी**-(हिं०स्त्री०) व्यतिक्रम, खड़बड़, घबड़ाहट, हलचल
खड़बिड़ा-(हिं०वि०) ऊंचा नीचा, जो समतल न हो।
खड़बीहड़-(हिं०वि०) देखो खड़बिड़ा।
खड़मंडल-(हिं०पुं०) व्यतिक्रम, गड़बड़, गोलमाल।
खड़ा-(हिं०वि०) सीधा उठा हुआ, स्थिर, टिका हुआ, प्रस्तुत, प्रचलित, तैयार, स्थापित, रक्खा हुआ, उपस्थित, कच्चा, पूरा, समूचा, अचल, जो टूटा न हो, दण्डायमान, उद्यत, निर्मित, बनाया हुआ; **खड़ेखड़**-झटपट, तुरंत; **खड़ा जवाब**-तुरत किया हुआ अस्वीकार; **खड़े होना**-सहायता देना।
खड़ाऊं-(हिं०वि०) पादुका, काठ के तल्ले की बिना एंडी और पंजे की जूती।
खड़ाका-(हिं०पुं०) खटका, खड़खड़ाहट (क्रि०वि०) जल्दी से।
खड़ा कठान-(हिं०पुं०) नाव या जहाज़ का पिछला मस्तूल।
खड़िका-(सं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खड़िया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की स्वेत मिट्टी, खरिया।
खड़ी-(हिं०स्त्री०) खड़िया, खरी मट्टी।
खड़ीबोली-(हिं० स्त्री०) पश्चिमी हिन्दी जो दिल्ली के आसपास बोली जाती है, जिस भाषा में आधुनिक गद्य लिखा जाता है।
खडुआ-(हिं०पु०) हाथ या पैर में पहिरने का चूड़ा।
खड्ग-(सं० पुं०) गैंडा, गैंड़ का सींग, एक प्रकार की तलवार, पशुओं को बलिदान देने का खाँड़ा; **खड्गपत्र**-(सं०पु०) तलवार के सदृश पत्तियों की एक लता, ढाल, तलवार की धार; **खड्गपाणि**-(स०वि०) हाथ में तलवार लिये हुए; **खड्गपुत्रिका**-(सं०स्त्री०) कटार, छुरी; **खड्गमुद्रा**-(सं०स्त्री०) एक तन्त्रोक्त मुद्राका नाम
खड्गी-(स० पुं०) गैंड़ा, महादेव (वि०) खड्गधारी, जिसके पास खड्ग हो।
खड्ड-(हिं०पु०) खात, गड्ढा।
खड्डा-(हिं० पुं०) खात, गड्ढा, शरीर में अधिक रगड़ से बना हुआ चिन्ह।
खणक-(हिं०पु०) मूषक, चूहा।
खण्ड-(स०पुं०नपु०) खांड़, अंश, हिस्सा, टुकड़ा, काला नमक, मणि का दोष, शर्करा, चीनी, एक प्रकार की ऊख, (वि०) टुकड़ा किया हुआ; **खण्डक**-(स०पु०) शक्कर का बना हुआ बताशा इलायची दाना इत्यादि (वि०) काटने वाला; **खण्डकथा**-(स० स्त्री०) छोटी सी बात; **खण्डकर्ण**-(सं०पुं०) सकरकन्द; **खण्डकाव्य**-(स० नपु०) वह काव्य जिसमें सम्पूर्ण काव्य के पूरे लक्षण न हों; **खण्डधारा**-(सं० स्त्री०) कतरनी, कैंची; **खण्डन**-(सं०नपुं०) भेदन, काटछांट, किसी सिद्धान्त को अप्रमाणित करने का काम, छेदन; चीरफाड़। **खण्डना**-(सं०क्रि०)तोड़ना, चीर फाड़ करना; **खण्डनीय**-(स०वि०) खण्डन करने योग्य; **खण्डपरशु**-(सं०पु०) शिव, विष्णु, जामदग्न्य; **खण्डमय**-(स०वि०) टुकड़े टुकड़े किया किया हुआ; **खण्डमोदक**-(सं०पु०) बताशा, गदा आदि; **खण्डशीला**-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
खण्डित-(सं०वि०) छिन्न, कटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ।
खण्डिता-वह नायिका जो संकेत स्थान पर आपत्तिके कारण नहीं आती।
खतंग-(हिं०पु०) एक प्रकारका कबूतर जो मटमैले रंगका होता है।
खतखोट-(हिं०स्त्री०) घाव के ऊपर की पपड़ी।
खतरानी-(हिं०स्त्री०)खत्री जाति की स्त्री
खतरेटा-(हिं०पुं०) खत्री जाति का युवा पुरुष।
खति-(हिं०स्त्री०) देखो क्षति।
खतियाना-(हिं०क्रि०) प्रतिदिन के आय-व्यय या क्रय विक्रय के खातेको अलग अलग लिखना। **खतियौनी**-(हिं०स्त्री०) खाता, वह बही जिसमें धन संख्या खतियाकर लिखी गईहो, पटवारीका वह कागद जिसमें हर एक असामी की भूमि का क्षेत्रफल तथा कर लिखा रहता है।
खत्ता-(हिं०पुं०) गर्त, गड्ढा, अन्न रखने का गड्ढा।
खत्ती-(हिं० स्त्री०) देखो खत्ता।
खत्री-(हिं०पुं०) भारत की एक जाति, ये लोग अपने को क्षत्रिय वर्ण बतलाते हैं।
खद-(स०पु०) स्थिरता, ठहराव (हिं०पु०) मुसलमान।
खदन-(सं०नपुं०) भोजन, खाना।

खदबदाना-(हिं०क्रि०) उबलना, चूरना

खदरा-(हिं०पुं०) गड्ढा, बछड़ा (वि०) व्यर्थ का।

खदान-(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु को खोदकर निकालने के लिये बना हुआ गड्ढा, खान।

खदिर-(सं०पुं०) खैर का वृक्ष, कत्था, चन्द्रमा, इन्द्र, एक ऋषि का नाम।

खदिरपत्ती-(सं०स्त्री०) लजाधुर का पौधा

खदिरसार-(सं०पुं०) खैर, कत्था।

खदुका-(हिं०पुं०) ऋण लेकर व्यापार करने वाला। ऋणग्रस्त।

खदुहा-(हिं०पुं०) खोटा मनुष्य।

खदेरना-(हिं०क्रि०) भगाना, हटाना, पीछे पड़ना।

खद्‌ड, खद्दर-(हिं०पु०) हाथ के कते हुए सूत का बिना हुआ कपड़ा, खादी, गज्जी, गाढा।

खद्योत-(सं०पुं०)जुगनू नामक कीड़ा, सूर्य

खद्योतक, खद्योतन-(सं०पु०) सूर्य।

खन-(हिं०पुं०) क्षण, खण्ड (घरका) तल्ला, रुपये का शब्द।

खनक-(सं० पुं०) मूसा, चूहा, सेंध लगाने वाला चोर,खान,भूमि खोदने वाला, भूतत्ववेत्ता (हिं० पुं०) रुपये का शब्द।

खनकना-(हिं० क्रि०) खनखन करना, धातु के टुकड़े का बजना।

खनकाना-(हिं० क्रि०) खनखन करना, बजाना।

खनखना-(हिं० वि०) खनखन शब्द करने वाला।

खनखनाना-(हिं० क्रि०) खनखन होना, बजना।

खनना-(हिं० क्रि०) खोदना, गोड़ना, कोड़ना।

खननीय-(सं०वि०) खोदे जाने योग्य।

खनि-(सं०स्त्री०) खान, सोने इत्यादि की खान। **खनिज**-(सं०वि०) खान से उत्पन्न, खान से निकाला हुआ।

खनित्र-(सं०नपुं०) खोदने का शस्त्र खन्ता, गैता।

खनिहाना-(हिं० क्रि०) खाली करना, समेटना।

खन्न-(हिं० पुं०) खनखन का शब्द; **खन्न खन्न करना**-खनखनाना।

खन्ना-(हिं०पुं) कटिया काटने का स्थान

खपची-(हिं०स्त्री०) बांसकी पतली तीली, बांस की पतली पटरी।

खपटा-(हिं०वि०) वृद्ध, बुड्ढा, कुरूप, दुबला पतला।

खपटी-(हिं०स्त्री०) छोटा खपड़ा।

खपड़ा-(हिं०पुं०) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो मकान छाने के काम में आता है, भिखमंगों के भीख मांगने का पात्र, खप्पर, ठिकड़ा, टूटे हुए मिट्टी के पात्र का भाग,कछुवे के पीठ का भाग, इसका बना हुआ ढपना।

खपड़ी-(हिं० स्त्री०) भड़भूजे की नांद, खोपड़ी।

खपड़ैल-(हिं०पुं०) खपड़े की छत या छाजन।

खपत, खपती-(हिं०स्त्री०) समाई, विक्रय, माल की बिक्री।

खपना-(हिं० क्रि०) लगना, व्यय होना, चलना, निकलना, बिगड़ना, कटना, काममें आना, निभना, मरना, मिटना।

खपरा-(हिं०पुं०) देखो खपड़ा।

खपरिया-(हिं०स्त्री०) खर्पर, भूरे रंगका एक खनिज पदार्थ, छोटा खपड़ा, चने की उपज को नष्ट करनेवाला एक कीड़ा।

खपरैल-(हिं०पुं०)खपड़े से छाई हुई छत

खपाची-(हिं०स्त्री०) देखो खपची।

खपाट- (हिं०स्त्री०) धौकनी के भीतर के छोटे डंडे।

खपाना-(हिं०क्रि०) व्यय करना, किसी काममें लाना, निर्वाह करना; **माथा खपाना**-सोचते सोचते व्यग्र होना।

खपुआ-(हिं०वि०)भीरु,भयभीत,डरपोक

खपुर-(सं० पुं०) गन्धर्व नगर, सुपारी, बघनखा, लहसुन, आकाशगामी दैत्य-पुर, राजा हरिश्चन्द्र की आकाश स्थित नगरी।

खपुष्प-(सं० नपुं०) आकाश कुसुम, असम्भव बात।

खप्पर-(हिं०पुं०) तसले के आकार का मिट्टी का पात्र, भीख लेने का पात्र, खोपड़ा।

खब्बा-(हिं०वि०) बँयहत्था, जिसका बांया हाथ काम करने में अधिक चले

खब्भड़-(हिं० वि०) रूखा, जीर्ण, दुबला पतला।

खभरना-(हिं० क्रि०) मिश्रित करना, मिलाना, उलट पुलट करना, क्रम बिगाड़ना।

खभरुआ-(हिं०वि०) व्यभिचारिणी स्त्री से उत्पन्न।

खमणि-(सं०पुं०) सूर्य, सूरज।

खमसना-(हिं०क्रि०) मिलाना, डालना।

खमा-(हिं०स्त्री०) देखो क्षमा।

खमूर्ति-(सं०पुं०) भीमरूप,शिव,ब्रह्म-स्वरूप।

खमोश-(हिं०वि०) मौन, चुप।

खम्माच-(हिं०पुं०) मालकोस राग की दूसरी रागिणी।

खय-(हिं०पुं०) देखो क्षय।

खरंजा-(हिं०स्त्री०) देखो खड़ंजा।

खयाल-(हिं०पुं०) चिन्ता।

खर-(सं०पुं०) गर्दभ, गदहा, खच्चर, रावणके भाईका नाम,कौवा, पच्छिम मुंह के द्वार का घर, संवत्सरों में से एक, छप्पय, छंद का एक भेद (वि०) गरक, कठिन, कड़ा, तीक्ष्ण, हानि-कारक, निष्ठुर, निर्दय, अमांगलिक।

खरक-(हिं०स्त्री०) पशुओं को बन्द करने का बाड़ा, टट्टर, डांड़ा, घेरा, बांस की पट्टियों से बना हुआ किवाड़।

खरकना-(हिं०क्रि०) खुरखुराना, दुखना, पीड़ा होना, सरकना, चले जाना, फांस चुभ जाने पर पीड़ा होना।

खरका-(हिं०पुं०) सींक या लकड़ी का पतला छोटा टुकड़ा, तिनका; **खरका करना**-भोजन करने के बाद दांतों के जोड़ मे से अन्न आदि के कण निकालना।

खरकोण-(सं०पुं०) तीतर पक्षी।

खरकोमल-(सं०पुं०) जेठ का महीना।

खरखरा-(हिं०वि०) खुरखुरा, जो सम-तल न हो।

खरग-(हिं०पुं०) देखो खड्ग।

खरचं-(हिं०पुं०) व्यय। **खरचना**-(हिं० क्रि०) व्यय करना व्यवहार या उपयोग में लाना। **खरचा**-(हिं०पु०) व्यय।

खरज-(हिं०पुं०) गाने का प्रधान स्वर षडज।

खररी-(हिं०स्त्री०) रांगा।

खरतर-(सं०वि०)अति तीक्ष्ण,बहुत पैना

खरता-(हिं०वि०) देखो खरतर।

खरतल-(हिं०वि०) स्पष्ट बोलने वाला, स्पष्ट, शुद्ध हृदय का, उग्र, प्रचण्ड।

खरदला-(सं०स्त्री०)श्यामलता,कठगूलर।

खरदा-(हिं०पुं०) अंगूर की पत्तियों को खा जाने वाला एक कीड़ा।

खरदूषण-(सं०पुं०)खर और दूषण नाम के दो राक्षस जो रावण के भाई थे।

खरधार-(सं०पुं०)तीखी धार वाला अस्त्र

खरना-(हिं०क्रि०) जल में उबाल कर परिष्कार करना।

खरब-(हिं०पुं०)सौ अरब की संख्या,खर्व

खरबूजा-(हिं०पुं०) ककड़ी की जात की एक लता जिसमें गोल मीठे फल गरमी के दिनों में फलते हैं, इसके फल का नाम।

खरभर-(हिं०पुं०) खड़खड़ाहट, कोला-हल, हलचल! **खरभराना**-(हिं०क्रि०) हलचल मचाना, घबड़ाना, व्याकुल होना, सामग्री को उलट पुलट करके शब्द उत्पन्न करना। **खरभराहट**-(हिं०पुं०) देखो खरभर।

खरमास-(हिं०पुं०) पौष तथा चैत्र मास जो शुभ कार्य के लिये अच्छा नहीं माना जाता, खरवांस।

खरमिटाव-(हिं०पुं०) प्रातराश, कलेवा, जलपान।

खरल-(हिं०पुं०)औषधि इत्यादि घोंटने की पत्थर या लोहे की कूंड़ी।

खरवट-(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु को रेतने का एक यन्त्र।

खरवांस-(हिं० पुं०) खरमास, जो सूर्य के धनु और मीन राशि पर आने से होता है।

खरशब्द-(सं० पुं०) गदहे का रेकना, कर्कश शब्द।

खरस-हिं०पुं०) भल्लूक, भालू।

खरसा-(हिं० पु०) गरमी का ऋतु, दुर्भिक्ष,खुजली,एक प्रकार का पक्वान्न

खरसाइंध-(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु के जलने की ग्रन्ध।

खरसान-(हिं०स्त्री०)तलवार इत्यादि पैनी करने की एक प्रकार की सान।

खरसुमा-(हिं०वि०) ऊपर उठे हुए सूमों का घोड़ा।

खरसैला-(हिं०वि०) पशु जिसके शरीर में खुजली हुई हो।

खरहर-(हिं० पुं०) कूड़ा करकट फेंकने का स्थान।

खरहरा-(हिं०पुं०) मेहतरों का झाड़ू, एक दाँतिदार कंघी जिससे घोड़ के रोवे स्वच्छ किये जाते हैं।

खरहा-(हिं०पुं०) शशक।

खरा-(हिं०वि०)तीक्ष्ण, तीखा, विशुद्ध, कुरकुरा, अच्छी तरह पका हुआ, कड़ा, कठिन, बढ़िया, करारा, बिना मिलावट का, चिमड़ा, निश्छल, स्पष्ट कहने वाला, सच्चा, अधिक।

खरांशु-(सं०पुं०) सूर्य, सूरज।

खराई-(हिं०स्त्री०) खरापन, करारापन, प्रातःकाल देर तक कुछ भोजन न करने से अस्वस्थ होना(पित्तबिगड़ना)

खराद-(हिं०पुं०) एक गोलाई में घूमने वाला यन्त्र जिसपर चढ़ाकर काठ या धातु की वस्तु सुडौल और चिकनी बनाई जाती है; **खरादने** का काम गढन, बनावट। **खरादना**-(हिं० क्रि०) खराद पर चढ़ाकर चिकनाना और सुडौल बनाना।

खरादी-(हिं० वि०) खरादने वाला।

खरापन-(हिं० पुं०) सचाई, सत्यता।

खरायंध-(हिं० स्त्री०) मूत्रया क्षार के समान दुर्गन्ध।

खरारि-(सं०पुं०)श्रीरामचन्द्र, विष्णु।

खरिक-(हिं०पुं०)एक प्रकार की ऊख।

खरिया-(हिं० स्त्री०) पतली रस्सी की बनी हुई जाल, पाँसी, झोली, कण्डे की राख, खड़िया मिट्टी।

खरियाना(हिं०क्रि०) झोली या थैली में भरना, अपने अधिकार में ले लेना, थैली या झोली में से गिराना।

खरिहट-(हिं०स्त्री०)पतली लकडी जिसमें एक डोरा बँधा रहता है जिससे कुम्हार चाक पर से कच्चे बरतन उतारता है।

खरिहान-(हिं० पुं०) कटे हुए अनाज की ढेर।

खरी-(हिं०स्त्री०) खली, खड़िया मिट्टी, (वि०)खूब सिकी हुई, विशुद्ध,स्पष्ट।

खरील-(हिं०पुं०) वन्दी की तरह का एक गहना।

खरेठ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का अग-हनियां धान।

खरोंच-(हिं०स्त्री०) छिल जाने या रगड़ का चिह्न, एक प्रकार की पकौड़ी।

खरोंचना-(हिं०क्रि०)छीलना, खुरुचना, वेग से खुजलाना।

खरोंचा(हिं०पुं०)खरोंच, गहरी रगड़।

खरोष्ट्री, खरोष्ठी-(हिं०स्त्री०) फ़ारसी की तरह लिखी जानेवाली एक लिपि जो अशोक के समय में भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में चलती थी।

खरौंट-(हिं०पुं०) देखो खरोंच ।
खरौंहा-(हिं०वि०) खरा,थोड़ा नमकीन ।
खर्च-(हिं०पुं०) व्यय, खपत, किसी काम में होनेवाला व्यय । **खर्चना**-(हिं०क्रि०) व्यय करना । **खर्चा**-(हिं०पुं०) देखो खर्च । **खर्ची**-(हिं० स्त्री०) शुल्क, पारिश्रमिक । **खर्चीला**-(हिं० वि०) अधिक व्यय करनेवाला ।
खर्जूर-(सं०पुं०) खजूर का वृक्ष या फल, बिच्छू ।
खर्पर-(सं०पुं०)भिक्षा मांगने का खप्पड़ मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ भाग, कपाल, खोपड़ा, छत, छाता, तूतिशा. खपड़िया नामक उपधातु ।
खर्व-(सं०पुं)कुबेर की निधि, सौ अरब की संख्या, (वि०), छोटा, न्यून अंग का, वामन, बौना ।
खर्बित-(सं०वि०) ह्रस्व, कटा हुआ ।
खर्राच-(हिं०पुं०) अमितव्ययी ।
खर्रा-(हिं० पुं०) लम्बा चिट्ठा, वह लम्बा कागद जिसमें बहुत सा हिसाब लिखा हो, पीठ पर छोटी छोटी फुंसियों के निकलने का रोग ।
खर्राटा-(हिं०पुं०) निन्द्रा की अवस्था मे नाक से निकलनेवाला शब्द; **खर्राटा लेना**-घोर निद्रा में सो जाना ।
खर्रा-(हिं०पुं०) पहाड़ के नीचे बहने वाली छोटी नदी ।
खल-(सं०पुं०) खलिहान, धूर का ढेर भूमि स्थान, सूर्य, तमाल, वृक्ष,औषधि घोटने का पात्र, धतूरे का पौधा, (वि०) नीच, दुष्ट, अधम, दुर्जन, अधम, क्रूर ।
खलखलाना-(हिं०क्रि०)उबलना,खोलना खुदबुदाना, खंगारना ।
खलड़ी-(हिं०स्त्री०) त्वचा, छाल, चमड़ा
खलता-(सं०स्त्री०) दुष्टता, दुर्जनता ।
खलधान्य-(सं०नपुं०) देखो खलिहान ।
खलना-(हिं० क्रि०) चुभना, मोड़ना, झुकना,बुरा लगना,अप्रिय जान पड़ना।
खलनी-(हिं० स्त्री०) सोनार का पोला करने का अस्त्र ।
खलबल-(हिं० पुं०) हलचल, गड़बड़ी, कोलाहल, कुलबुलाहट, हल्ला,उबाल
खलबलाना-(हिं०क्रि०)उबलना, खौलना खदबदाना, घबड़ाना,विचलित होना, चलना फिरना ।
खलबली-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, हलचल, व्याकुलता, घबड़ाहट, उबाल।
खलाई-(हिं०स्त्री०) दुष्टता ।
खलाना-(हिं०क्रि०)खाली करना,खोदना, गड्ढा करना, फूले हुए भाग को नीचे की ओर दबाना ।
खलार-(हिं०वि०) गहरा,नीचा,खाली ।
खलासी-(हिं० पुं०) जहाज पर काम करनेवाला मनुष्य ।
खलित-(सं०वि०) चंचल, चलायमान ।
खलियान-(हिं० पुं०) अन्न काटकर रखने का स्थान, राशि, ढेर ।
खलियाना-(हिं०क्रि०) खाल खीचना, चमड़ा, उतारना, खाली करना ।
खली-(हिं०स्त्री०)तेल निकाल कर बची हुई सीठी ।
खलीता-(हिं०पुं०) खरीता, जेब ।
खलु-खलु-(सं०अव्य०)नही,शब्दालंकार, मे निश्चय, अब इस समय, यह शब्द पाद पूरण करने के लिये भी व्यवहार होता है ।
खलेल-(हिं०पुं०) तेलमें मिली हुई खली
खल्ल-(सं०पुं०) गड्ढा, चमड़ा, मसक ।
खल्लकी-(सं०स्त्री०) शक्कर, खांड़ ।
खल्लड़-(हिं० पुं०) वह पुरुष जिसकी खाल लटक गई हो ।
खल्ला-(हिं० पुं०) खलिहान, जूता, नाचने की एक चाल ।
खल्व-(सं०पुं०) सिरके बाल झड़ने का रोग, गंजापन ।
खल्वाट-(हिं०पुं०) गंजा (वि०) जिसके सिरके बाल झर गये हों ।
खवा-(हिं०पुं०) स्कन्ध, कन्धा ।
खवाई-(हिं०स्त्री०) खाने पीने का काम, नाव में मस्तूल गाड़ने का गड्ढा ।
खवाना-(हिं०क्रि०) खिलाना, भोजन करना ।
खवैया-(हिं०पुं०) भोजन करने वाला, खानेवाला ।
खशा-(सं०स्त्री०) दक्षकी कन्या, कश्यप की पत्नी ।
खश्वास-(सं०पुं०) वायु, हवा ।
खसकंत-(हिं०स्त्री०) खिसकने या भाग जाने का कार्य, हट जानेवाला । **खसकना**-(हिं०क्रि०) सरकना, हटना, जगह छोड़ देना, चुपके से भाग जाना । **खसकाना**-(हिं०क्रि०) सरकाना, हटाना, चुपके से निकाल देना. खसकाने का काम कराना ।
खसखसा-(हिं०वि०) भुरभुरा, सहज में चूर होने वाला, बहुत ही छोटा ।
खसखास-(हिं०पुं०) देखो खसखस ।
खसखासी-(हिं०वि०)खसखस (पोस्ते) के फूलके समान रंगका नीलापन लिये हुए श्वेत ।
खसना-(हिं०क्रि०) सरकना, अपने आप नीचेको हट जाना ।
खसरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की गीली खुजली ।
खसाना-(हिं०क्रि०) खिसकाना, गिराना, नीचे की ओर धक्का देना ।
खसिया-(हिं०वि०) बधिया, खस्सी, नेपाल प्रान्तवासी, नपुंसक, (पुं०) छाग, बकरा । **खसियाना**-(हिं०क्रि०) बधिया करना, नपुसक बनाना ।
खसी-(हिं०पुं०) बकरा ।
खसोट, खसोटी-(हिं०स्त्री०) बुरी तरह से नोचना, झटके से तोड़ना, झपट । **खसोटना**-(हिं०क्रि०)नोचना,उखाड़ना बल पूर्वक खींच लेना, छीन लेना ।
खस्वस्तिक-(सं०नपुं०) देखो, शीर्ष बिन्दु वह कल्पित बिन्दु जो आकाश में सिर के ठीक ऊपर पड़ता है ।
खस्सी-(हिं०पुं०) बकरा, (वि०) बधिया, नपुंसक ।
खह-(सं०पुं०) गणित में वह संख्या जिसका हर शून्य हो यथा ३/० ।
खाई-(हिं०स्त्री०) किसी स्थान के चारो ओर खोदा हुआ गड्ढा ।
खांख-(हिं०स्त्री०) छिद्र, छेद, पोलापन ।
खांखर-(हिं०वि०) छिद्रयुक्त, दूर दूर बिना हुआ, पोला, रिक्त, खोखला, कूप बनाने के लिये गड्ढा ।
खांग-(हिं०स्त्री०) कांटा, तीतर आदि के पैर का कांटे के समान नाखून, गैड़े की सींग, जंगली सुअर का बड़ा दांत, त्रुटि, अभाव, कमी ।
खांगड़, खांगड़ा-(हिं०वि०) खांग रखने वाला,सशस्त्र,उद्दण्ड,बलवान्,अक्खड़।
खांगना-(हिं०क्रि०) लंगड़ाना, घटना, वेग से बोलना ।
खांगी-(हिं०स्त्री०)त्रुटि,न्यूनता,कमी,घटी ।
खांच-(हिं०स्त्री०) सन्धि, जोड़, गठन, बनावट, कीचड़ ।
खांचा-(हिं०पुं०) झाबा, बड़ा टोकरा, बड़ा पींजड़ा ।
खांचना-(हिं०क्रि०) चिह्न बनाना,अंकित करना, खींचना, शीघ्रता से लिखना ।
खांड़-(हिं०स्त्री०) कच्ची शक्कर ।
खांड़ा-(हिं०पुं०) खड्ग, तलवार, छुरा, खण्ड, टुकड़ा ।
खांड़ना-(हिं०क्रि०) कूंचना,तोड़ना,चबाना
खाँपना-(हिं०क्रि०) खोंसना, अटकाना, जमाना, लगाना, चारपाई की बिनावट कसना ।
खांभ-(हिं०पुं०) स्तम्भ, खंभा ।
खांभना-(हिं० क्रि०) लिफ़ाफ़े में बन्द करना ।
खांवां-(हिं०पुं०) गहरी लंबी खाई, खेत की चौड़ी मेड़ ।
खांसना-(हिं०क्रि०) गले में अटके हुए कफ या दूसरी वस्तु को निकालने के लिये हवा को शब्द के साथ बाहर फेंकना, खखारना, खोंखना ।
खांसी-(हिं०स्त्री०) खांसने का रोग या शब्द, कास रोग ।
खाई-(हिं०स्त्री०) किसी स्थान की रक्षा के लिये इसके चारों ओर खोदा हुआ गड्ढा, ख़न्दक ।
खाऊ-(हिं० वि०) अधिक खाने वाला, मरभुख, पेटू ।
खागना-(हिं०क्रि०) खांगना,चुभना,गड़ना
खाज-(हिं०स्त्री०) शरीर के भिन्न भागों में खुजली होना, खुजली ।
खाजा-(हिं०पुं०) खाद्य, एक प्रकार की मिठाई ।
खाजिक-(सं०पुं०) लाजा, लावा, लाई।
खाजी-(हिं०स्त्री०) भोजन का पदार्थ;
खाजी खाना-बुरी तरह से हारना ।
खाट-(सं०पुं०) चारपाई, खटिया, खटोला, पलंग ।
खाटि, खाटिक-(सं०स्त्री०) अरथी ।
खाड़-(हिं०पुं०) गर्त, गड्ढा ।
खाड़व-(हिं०पुं०) देखोषाड़व ।
खाड़ी-(हिं०स्त्री०) आघात, तीन ओर से भूमि से घिरा हुआ समुद्र का भाग।
खाड़ू-(हिं०पुं०) खपड़ा छाने का ठाट ।
खाण्डव-(सं०वि०)चीनी का बना हुआ, इस नाम का वन जिसको अर्जुन ने जलाया था ।
खाण्डिक-(सं०पुं०) मिठाई बनानेवाला, हलवाई ।
खात-(सं०पुं०) खोदना, खोदाई, पुष्करिणी तालाब, कुंवा, गर्त, गड्ढा, (वि०) खोदा हुआ (हिं०स्त्री०) महुवे का ढेर खाद (वि०) मैला।
खाता-(हिं०पुं०) बड़ी खत्ती, हिसाब किताब की बही, अन्न रखने का गड्ढा, मद, विभाग; **खाता खोलना**-नया व्यवहार किसीसे आरम्भ करना ।
खाति-(सं०स्त्री०) खोदाई, खोदने का काम ।
खातिरी-(हिं०स्त्री०) सन्तोष ।
खाती-(हिं०स्त्री०) खत्ती, गड्ढा, खोदी हुई भूमि, भूमि खोदने वाली एक जाति, बढ़ई ।
खाद-(हिं०स्त्री०) खेतों में उसकी उपज बढ़ाने के लिये डाली हुई वस्तु,पांस, पौधोंके उपज बढानेवाली वस्तु । **खादक**-(सं०वि०) भक्षक, खाने वाला, ऋण लेने वाला । **खादन**-(सं०पुं०) दांत, आहार, भोजन । **खादनीय**-(सं०वि०) भोजनीय, खाया जानेवाला ।
खादर-(हिं०पुं०) नीची भूमि जिस पर पानी बहुत दिनों तक ठहरता है, कछार, चरागाह, तराई।
खादि-(हिं०स्त्री०) दोष, बुराई ।
खादित-(सं०वि०)भक्षित,खाया हुआ।
खादी-(सं० वि०) भक्षक, खाने वाला, शत्रुओं की हिंसा करनेवाला, (हिं० स्त्री०) एक प्रकार का देशी मोटा कपड़ा,गज्जी,खद्दर(हिं०वि०)दूषित ।
खादुक-(सं० वि०) हिंसालु, जिसकी प्रवृत्ति सदा मारकाट करने में हो।
खाद्य-(सं०वि०) भक्षणीय, खाया जाने वाला (नपुं०) आहार,खानेकी वस्तु ।
खाधु-(हिं०पुं०) भोजन का पदार्थ ।
खान-(सं० नपुं०) भोजन, खाना, खाने की क्रिया, भोजनकी सामग्री, खनन, खोदाई, मार काट ।
खान-(हिं०स्त्री०) आकर, जिस स्थान को खोद कर पत्थर, धातु इत्यादि निकाले जाते हैं, खदान, कोल्हू का वह भाग जिसमें तेलहन डालकर तेल निकाला जाता है ।
खानक-(सं०वि०)खनक,खोदनेवाला,राज
खानपान-(सं०नपुं०) खाना पीना,खाने पीने की रीति ।
खाना-(हिं०क्रि०) भोजन करना, पेट भरना, मुँह में डालना,मार डालना, काटना, कुतरना,चबाना, बिगाड़ना, उड़ाना, व्यय करना, घूस लेना, अंटना,छोड़ना,भूलना,झेलना,डँसना,

कष्ट देना, अधर्म से रुपया कमाना, दूर करना, सहन न करना; **खाता कमाता**-केवल पेट भरने के लिये धनोपार्जन करनेवाला; **खानाकमाना**-अपने व्यवसाय में लगे रहना; **खा-पका डालना**-सबकुछ व्यय कर देना; **खाना न पचना**-तृप्ति या सन्तोष न होना; **कच्चा खा जाना**-प्राण ले लेना; **खाने दौड़ना**-अत्यन्त क्रोध दिखलाना; **मुंहकी खाना**-हार जाना।
खाना पीना-(हिं०पुं०) देखो खानपान;
खानापुरी-(हिं०स्त्री०) किसी चक्र या सारणी के रिक्त स्थानोंका भराव, मान चित्र इत्यादिमें यथास्थान नाम भरना।
खानि-(हिं०स्त्री०) खान, ओर, प्रकार।
खानिक-(सं०नपुं०)भीतका गड्ढा, रत्न।
खापट-(हिं०स्त्री०)वह भूमि जिसमें रेह का भाग अधिक रहता है।
खाब-(हिं०पुं०) स्वाप, स्वप्न, सपना।
खाबड़खूबड़-(हिं० वि०) ऊंचा नीचा। असमतल।
खाभा-(हिं० पुं०) चौड़े मुंह का मिट्टी का पात्र।
खाम-(हिं०पुं०) टांका, जोड़, खंभा मस्तूल।
खामना-(हिं०क्रि०)लिफाफ़े में डालकर बन्द करना, गीली मिट्टी या आँटे से किसी पात्र का मुँह बन्द करना।
खाम्बाज-(सं०पुं०)एक राग का नाम।
खाम्बावती-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम
खार-(हिं०पुं०) क्षार नमक, सज्जी, रेह, धूलि, एक प्रकार का झाड़ी।
खारक-(हिं०पुं०) छोहारा।
खारा-(हिं०पुं०)नमकीन, कड़ुवा, स्वाद में बुरा लगने वाला (पुं०) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा, घास भूसा बाँधने का जाल, आम तोड़ने का जालीदार थैला, झाँवा, खाचा, बड़ा पिंजड़ा।
खारिक-(सं०पुं०)छोहारे का वृक्ष या फल
खारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का नोन (वि०) खारा, नमकीन।
खारुवां-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लाल रंग, जो मोटे कपड़ों के रंगने में प्रयोग होता है, इस रंग से रंगा हुआ मोटा कपड़ा।
खार्जूर-(सं०नपुं०) एक प्रकार की मदिरा
खाल-(हिं०स्त्री०) त्वचा, चमड़ा, आधा चरसा, भाथी की धौंकनी, शव, नीची भूमि, खाड़ी, गहराई, नाला; **खाल खींचना**-बहुत मारना; **खाल फूंका**-भाथी चलाने वाला मनुष्य।
खालसा-(हिं०वि०) जो एक ही के अधिकार में हो, सरकारी. राज्य का; (पुं०) गुरु नानक का चलाया हुआ एक सिक्ख सम्प्रदाय; **खालसा करना**-अपने अधिकार में करना,
खाला-(हिं०वि०) निम्न, नीचा।

खाव-(हिं०स्त्री०) शून्य स्थान, पोत मे माल रखने की कोठरी।
खावी-(हिं०स्त्री०) वर्ष के आरंभ में नौकरों को दिया जाने वाला धन या अन्न।
खासा-(हिं०वि०)उत्तम, अच्छा, निरोग, स्वस्थ, सुन्दर, सुडौल, मध्यम श्रेणी का, सम्पूर्ण, पूरा, भरपूर, उपयोगी।
खिजरी-(हिं०स्त्री०) मोयनदार छोटी पतली नमकीन पूरी, मठरी।
खिंचना-(हिं०क्रि०) आकर्षित होना, घसीटना, निकलना, बाहर होना, तनना, चढ़ना, महँगा होना, बिगड़ना, पहुँचना, बन्द होना, रुकना, जाना, खपना, अर्क निकलना, प्रवृत्त होना, चुसना, चित्रित होना, प्रेम कम होना, माल की चलान होना, अच्छा न लगना; **हाथ खींचना**-सहायता देना बन्द करना। **खिंचा-वना**-(हिं० क्रि०) खींचने का काम दूसरे से कराना। (**खिचाई**-हिं०स्त्री०) खींचने की क्रिया, खीचने की वेतन
खिचना-(हिं०क्रि०) देखो खिचवाना।
खिचाव, खिचावट-(सं० पुं०) देखो खिंचाई।
खिंडाना-(हिं०क्रि०) बिखेरना, इधर उधर फैलाना।
खिखिद-(हिं०पुं०) ऊँचीनीची, (बीहड़) भूमि।
खिचड़वार-(हिं० पुं०) खिचड़ी दान करने का दिन, मकर संक्रांति।
खिचड़ी-(हिं० स्त्री०) दाल और चावल का मेल, दाल और चावल मिलाकर पकाया हुआ भोजन, विवाह की एक प्रथा जिसमें कच्ची रसोई बरातियोंको खिलाई जाती है, दो मिली हुई वस्तु, मकर संक्रान्ति; **खिचड़ी पकना**-गुप्त रूप से कोई सलाह करना (वि०) मिश्रित, मिला हुआ।
खिच्चड़-(हिं०पुं०) देखो खिचड़ी।
खिजलाना-(हिं०क्रि०)खीजना, चिढ़ाना, छेड़ना।
खिझना-(हिं० क्रि०) खीझना, चिढ़ना, (वि०) चिढ़ने वाला।
खिझाना-(हिं०क्रि०)चिढ़ाना, तंग करना
खिड़कना-(हिं०क्रि०)खिसकना, संरकना, चले जाना।
खिड़काना-(हिं०क्रि०) हटाना, टालना।
खिड़की-(हिं०स्त्री०) छोटा गुप्तद्वार, झरोखा,
खिन-(हिं० स्त्री०) देखो क्षण।
खिन्न-(सं०वि०) उदासीन, खेदयुक्त, अप्रसन्न, चिन्तित, असहाय,
खिपना-(हिं०क्रि०) लीन होना, खपना
खियाना-(हिं०क्रि०) घिस जाना, रगड़-खाना, मिटना, खिलाना, भोजनकराना
खिर-(सं० स्त्री०) जुलाहे की ढरकी।
खिरनी-(हिं०स्त्री०) क्षीरिणी वृक्ष; एक ऊंचा वृक्ष जिसके निमकौड़ी के समान फल खाये जाते हैं।

खिरैटी-(हिं०स्त्री०)वरियार, बीजबन्ध।
खिलकौरी-(हिं०स्त्री०)खेलकूद, खिलवाड़
खिलखिलाना-(हिं० क्रि०)अट्टहास करना, सशब्द हँसना
खिलना-(हिं० क्रि०) फूलना, कली की पंखड़ियां खुलना, विकसित होना, अच्छा लगना, शोभित होना, उचित जान पड़ना, अलग अलग होना, बीच से फटना।
खिड़वाड़-(हिं०पुं०) हंसी खेल, ठट्ठा।
खिलवाना-(हिं० क्रि०) भोजन करना, खाना दिलवाना, प्रसन्न करना, अच्छी तरह भुंजवाना।
खिलाई-(हिं०स्त्री०) भोजन क्रिया, खाना पीना, खिलाने की क्रिया, बच्चों को खेलानेवाली दाई।
खिलाड़ी-(हिं०पुं०) खेल करनेवाला, खेलनेवाला, जादूगर।
खिलाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना, फुलाना, विकसित करना, खेल में लगाना।
खिलाह-(सं० पुं०) एक प्रकार का श्वेत घोड़ा।
खिलौना-(हिं० पुं०) क्रीड़ा द्रव्य, लड़कों के खेलने का पदार्थ।
खिलौरी-(हिं० स्त्री०) भूने हुए अनेक प्रकार के बीज जो नमक मिर्च मिला कर खाये जाते है।
खिल्ली-(हिं० स्त्री०) हँसी, ठिठोली, पान का बीड़ा, गिलौरी, कील, कांटा।
खिल्लो-(हिं० स्त्री०) खिलखिलाकर हँसने वाली।
खिवाही-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की ऊख
खिसकना-(हिं०क्रि०)खसकना, हटजाना
खिसलाव-(हिं० पुं०) खिसकने या फिसलने की स्थिति।
खिसाना-(हिं०क्रि०) देखो खिसियाना।
खिसियाना-(हिं० क्रि०) लजाना, क्रोध करना, (वि०) लज्जित,
खिसी-(हिं०स्त्री०)लज्जा, शर्म, ढिठाई।
खिसौहा-(हिं०वि०)लज्जित के सदृश।
खींच-(हिं० स्त्री०) आकर्षण, खिंचाव;
खींचतान-(हिं० स्त्री०) उलट पलट, धींगा धींगी, दो मनुष्यों की परस्पर, लपट झपट। **खींचना**-(हिं० क्री०) आकर्षण करना, घसीटना, निकालना, खोलना, भरना, हिलाना, वशीभूत करना, चलाना, लगाना, पीना, चुवाना, टपकाना, निःसार करना, रोकना, चित्र बनाना, मांगना, लिखना, तानना, एँचना, भभके से अर्क निकालना; **दर्द खींचना**-पीड़ा हटाना; **हाथ खींचना**-कोई कार्य करना रोक देना; **खींचा-तानी**-(हिं० स्त्री०) देखो खींचतान।
खीखर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बन-बिलाव, लोमड़ी।
खीज-(हिं०स्त्री०) चिढ़, झुल्लाहट, चिढ़ाने की बात। **खीजना**-(हिं०क्रि०) चिढ़ना, झुंझलाना, खिजलाना।

खीझ-(हिं०स्त्री०)देखो खीज। **खीझना**-(हिं०क्रि०) चिढ़ना, खिजलाना।
खीन-(हिं०वि०) देखो क्षीण।
खीर-(हिं०स्त्री०) एक खाद्य पदार्थ जो दूध में चावल पका कर तथा चीनी डालकर बनता है; **खीर-चटाना**-बालक का अन्नप्राशन संस्कार जिसमें इसको खीर चटाई जाती है; **खीरमोहन**-(हिं० पुं०) छेने की बनी हुई एक प्रकारकी मिठाई।
खीरा-(हिं० पुं०) ककड़ी की जात का एक फल।
खीरी-(हिं० स्त्री०) वाख, चौपायों के थन के ऊपर का मांस।
खील-(सं०पुं०) कील, कांटा (हिं०स्त्री०) लाई, भूना हुआ धान, लावा, एक प्रकारका गहना जो कान या नाकमें पहिरा जाता है, बहुत दिनोंपर जोती जानेवाली भूमि।
खीलना-(हिं०क्रि०) खील लगाना, गांठना
खीला-(हिं०पुं०) बड़ा कांटा या कीला।
खीली-(हिं०स्त्री०) पानका बीड़ा, खिल्ली, गिलौरी।
खीवन-(हिं०स्त्री०)उन्मत्तता, पागलपन।
खीवर-(हिं०पुं०) वीर पुरुष।
खीस-(हिं०वि०) नष्ट, उजाड़, (स्त्री०) अप्रसन्नता, चिढ़, क्रोध, बिगाड़, लज्जा, ओंठ, ओंठके बाहर निकले हुए दांत, खिसियाहट।
खीसा-(हिं०पुं०) थैला, जेब, थैली, खीस।
खुंटकढवा-(हिं० पुं०) कान का खूंट निकालने वाला।
खुंटफारी-(हिं०वि०) अति दुष्ट।
खुंडला-(हिं०पुं०) गिरा पड़ा झोपड़ा।
खुंदाना-(हिं०क्रि०) कुदाना, नचाना।
खुक्ख-(हिं०वि०) खाली, छूछा, जो धन हार गया हो।
खुखंड-(हिं०पुं०) एक प्रकारकी राई।
खुखडी-(हिं०स्त्री०)कुकड़ी, नैपाली कटार।
खुचुर-(हिं०स्त्री०)व्यर्थका दोष लगाना।
खुजलाना-(हिं० क्रि०) रगड़ना, नख से घिसना, खजुली उठना, सुरसुरीहोना
खुजलाहट-(हिं०स्त्री०)खुजली, सुरसुरी।
खुजाना-(हिं०क्रि०) देखो खुजलाना।
खुभर-(हिं०पुं०) पेड़ की जड़ जो भूमि के ऊपर फैल जाती है।
खुटक-(हिं०स्त्री०)खटका, चिन्ता, आशंका।
खुटकना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ लेना, सिरा कपटना, खटका होना।
खुटका-(हिं०पुं०) देखो खटका।
खुरचाल-(हिं०स्त्री०)बुरी चाल, दुष्टता,
खुरचाली-(हिं० वि०) दुष्ट, उपद्रवी, दुराचारी, **खुटना**-(हिं०क्रि०) खुलना, अलग रहना, साथ छोड़ना, पुरना, समाप्त होना।
खुटपन, खुटपना-(हिं० पुं०) खोटापन, बुराई।
खुटाई-(हिं०स्त्री०) खोटापन, बुराई।
खुटाना-(हिं०क्रि०) समाप्त होना।

खुटिला-(हिं०पुं०)कानका एक आभूषण, करनफूल।
खुटेरा-(हिं०पुं०) खैर का वृक्ष।
खुट्ट-(हिं०वि०) पृथक्, अलग।
खुट्टी-(हिं०स्त्री०) रेवड़ी नामक मिठाई
खुट्टी-(हिं०स्त्री०)घावपर जमी हुई पपड़ी
खुठमेरा-(हिं०पुं०) एक प्रकारका मोटा धान।
खुड़क(हिं०स्त्री०) खटक, खटका।
खुड़ला-(हिं०पुं०) चिड़ियाखाना, मुर्गी का दर्बा।
खुड़वा-(हिं०पुं०)सिरपररखनेकी घोघी
खुड्डी,खुड्डी-(हिं०स्त्री०) पायखानेमेंकागड्ढा
खुत्था-(हिं पुं०) ठूंठ, बोटा, पेड़ को काट डालनेपर इसका भूमिके ऊपर का भाग। खुत्थी-(हिं स्त्री०) ज्वार अरहर इत्यादि के पौधे का वह अंश जो पौधा कट जाने पर दर में रह जाता है, खूंटी, धरोहर, थाती रुपया रखनेकी थैली, सम्पत्ति,धन।
खुदना(हिं०क्रि०) खोदा जाना।
खुदरा-(हिं०पुं०)क्षुद्र वस्तु,फुटकर पदार्थ
खुदवाना-(हिं० क्रि०) खोदने का काम दूसरे से कराना। खुदवाई-(हिं०स्त्री०) खोदवाने का काम,खोदवाने का वेतन
खुदाई-(हिं०स्त्री०)खोदने का काम या वेतन
खुद्दी-(हिं०स्त्री०) कण, किनकी, अन्नके छोटे टुकड़े।
खुनखुना-(हिं०पुं०) बालकों का बजने वाला खिलौना, झुनझुना,घुनघुना।
खुनस-(हिं०स्त्री०)क्रोध,बिगाड़,अनबन।
खुनसाना-(हिं० क्रि०) क्रुद्ध होना,
खुनसी-(हिं०वि०) क्रोधी।
खुभना-(हिं०क्रि०)चुभना,धसना,घुसना
खुभराना-(हिं०क्रि०) उपद्रव करने के लिये इधर उधर घूमना।
खुभी-(हिं०स्त्री०)कानमें पहिरनेकी लौंग
खुभान-(सं०वि०)दीर्घायु,बड़ी आयु वाला
खुमारी-(हिं०स्त्री०) रातभर जागने या नशा उतरने पर आनेवाला आलस्य।
खुमी-(हिं०स्त्री०) क्षुद्र उद्भिज्जोंकी एक जाति जिनमें पत्ते या फूल नहीं लगते यथा-भूफोड़, कुकुरमुत्ता इत्यादि।
खुरंड-(हिं०स्त्री०)घावपर की सूखी पपड़ी
खुर-(सं०पुं०) सींघवाले चौपायों के पैरकी कड़ी टाप,नखी नामक औषधि
खुरक-(हिं०स्त्री०) खटका,सोच विचार।
खुरखुर-(हिं०पुं०) कण्ठका घरघर शब्द
खुरखुरा-(हिं०वि०) ऊंचानीचा, खरदरा, गड़नेवाला; खुरखुराना-(हिं० क्रि०) खुरखुर करना, घरघराना, गड़ना, ऊंचानीचा होना; खुरखुराहट-(हिं०स्त्री०) कण्ठ से होनेवाला शब्द जो गले में कफ रुकने से होता है, भरदरापन।
खुरचन-(हिं०पुं०) खुरच कर निकाली हुई वस्तु, दूध की कड़ी मलाई जो औटाते समय कड़ाही में चिपक जाती। खुरचना-(हिं०क्रि०) किसी सूखी वस्तु को छुरी इत्यादि से अलगाना, खरोचना, करोना। खुरचनी-(हिं० स्त्री०) खुरचने का अस्त्र।
खुरचाल-(हिं०स्त्री०) बुरा आचरण,
खुरचाली-(हिं०वि०)उपद्रवी,बखेड़िया
खुरजी-(हिं०स्त्री०) अधारी, बड़ा थैला, घोड़े, बैल, आदिकी पीठपर सामग्री लादने का थैला।
खुरट-(हिं० पुं०) चौपायों के सूम का एक रोग।
खुरतार-(हिं०स्त्री०) खुरका आघात, टाप की चोट।
खुरथी-(हिं०स्त्री०) देखो कुलथी।
खुरपका-(हिं०पुं०) चौपायों का एक रोग जिसमें इनके मुख तथा खुरमें दाने निकल आते हैं।
खुरपा-(हिं० पुं०) घास छीलने की बड़ी खुरपी।
खुरसाना-(सं०स्त्री०)खुरासानी अजवाइन
खुरहर-(हिं०स्त्री०) मार्गमें खुरका चिह्न पगडन्डी।
खुराई-(हिं० स्त्री०) चौपायों के पैर बांधने की रस्सी।
खुरायल-(हिं०पुं०) बोनेके लिये तैयार किया हुआ खेत।
खुराही-(हिं०स्त्री०) ऊंचा नीचा रास्ता।
खुरिया-(हिं०स्त्री०)कटोरी,छोटा प्याला।
खुरी-(हिं०स्त्री०) खुर का चिह्न।
खुरूक-(हिं०स्त्री०) देखो खुरक।
खुरुचनी-(हिं०स्त्री०) खुरची जानेवाली वस्तु।
खुर्राट-(हिं० वि०) वृद्ध, बूढ़ा, पुराना, अनुभवी, चतुर।
खुलना-(हिं०क्रि०) उद्घाटित होना, हटना,उधड़ना,बन्द न रहना,विदीर्ण होना, फटना, चिरना, कटना, निकलना,जारी होना,छूट पड़ना, सरकना, ठहरना, जान अड़ना, देखनेमें अच्छा लगना, भला जान पड़ना,भेद कहना, सजना,कार्य आरम्भ होना; खुलेआम सबके सन्मुख, प्रकट में।
खुलवा-(हिं० पुं०) गले हुए धातु को ढालने के लिये सांचे में भरनेवाला।
खुलवाना-(हिं०क्रि०) खोलने का काम दूसरे से कराना।
खुला-(हिं०वि०) अबद्ध,जो बंधा न हो, अवरोध हीन, बिना रुकावट का, स्पष्ट, प्रगट, जो छिपा न हो।
खुल्लक-(सं०वि०)कनिष्ठ,छोटा, दरिद्र, निष्ठुर।
खुल्लमखुल्ला-(हिं०क्रि०वि०) प्रकाश रूप से, सबके सामने।
खुसखुस-(हिं०पुं०) कानाफूंसी, गुपचुप बातचीत, (क्रि०वि०) धीमे शब्द में।
खुसाल-(हिं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न।
खूंट-(हिं० पुं०) प्रान्त भाग, चोर, चौकोर भारी पत्थर जो मकान के कोनों पर लगाया जाता है, भाग, हिस्सा,कान की मैल (स्त्री०) रोकटोक
खूंटना-(हिं०क्रि०) टोकना, पूछपाछ करना, छेड़ना, घटना, कम होना।
खूंटा-(हिं०पुं०) मेख, पशु बांधने के लिये भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी या बांस का टुकड़ा। खूंटी-(हिं०स्त्री०) छोटा खूंटा या मेख, डंठल, गुल्ली अन्टी, निकलने वाले बालों का सिरा, सीमा, छोर, मेख के आकार की लकड़ी।
खूड़ी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का छोटा टुकड़ा।
खूथी-(हिं०स्त्री०)कटे पौधे की छोटीखूंटी।
खूंद-(हिं०पुं०) छोटे स्थान में घोड़े का इधर उधर चलाना, या पैर पटकना।
खूंदना-(हिं०क्रि०) पैर उठा उठा कर उसी जगह पटकना, नाचना,रौंदना, कुचलना।
खूखी-(हिं०स्त्री०) पौधोंको नाश करने वाला एक कीड़ा, गेरुई।
खूच-(हिं०स्त्री०) जल डमरू मध्य।
खूंभा-(हिं०पुं०) फल के भीतर का रेशेदार भाग।
खूटना-(हिं०क्रि०)खण्डित होना,रुकना, चूकना, कम पड़ना, चिढाना, हँसी उड़ाना, दिक् करना, बन्द होना।
खूद, खूदड़, खूदर-(हिं०पुं०)मैल,तलछट
खूबड़खाबड़-(हिं०वि०) असमतल,ऊंचा नीचा।
खूसट-(हिं०पुं०) उल्लू, घुग्घू (वि०) गवार, अरसिक।
खृष्टान-(हिं०वि०) क्रिस्तान, ईसाई।
खृष्टीय-(हिं०वि०) ईसा संबधी, ईसाई संबंधी।
खेकसा-(हिं०पुं०) परवर के आकार का फल जिसकी तरकारी खाई जाती है।
खेचर-(सं०पुं०) शिव, विद्याधर, पारा, सूर्य आदिग्रह, मेष आदि राशि, कसीस, पक्षी, चिड़िया, घोड़ा, वायु, देवता, बादल, राक्षस (वि०) आकाशगामी। खेचरी-(सं०स्त्री०)एक तन्त्रोक्त मुद्रा जिसमें जीभ उलट कर तालुमें लगाई जाती है तथा दृष्टि दोनों भौहों के बीच में स्थिर की जाती है।
खेचरी गुटिका-(सं०स्त्री०) एक मन्त्रसिद्ध गोली जिसको मुंह में रखने पर मनुष्य पक्षी की तरह उड़ सकता है।
खेट-(सं०पुं०) सूर्य आदि ग्रह, चमड़ा, आखेट, कफ, घोड़ा।
खेटक-(सं०पुं०) गांव, ढाल, आखेट।
खेटकी-(सं०पुं०) ज्योतिषी, बहेलिया।
खेड़ा-(हिं०पुं०) छोटा गांव।
खेड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का देशी लोहा, मांस का टुकड़ा जो जरायुज शिशुओं की नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है।
खेत-(हिं०स्त्री०) क्षेत्र, जोतने बोने की भूमि, स्थान, जगह, समरभूमि, कृषि फल, तलवार का फल; खेत करना-भूमि समतल बनाना।
खेतिहर-(हिं०पुं०) कृषक, किसान, खेती, करनेवाला। खेती-(हिं०स्त्री०) खेतमें अन्न बोने का कार्य, कृषि, किसानी,खेतमें लगा हुआ कृषिफल।
खेतीबारी-(हिं०स्त्री०) कृषिकार्य,किसानी
खेद-(सं०पुं०) अप्रसन्नता, शोक, थकावट, रोग, शिथिलता।
खेदना-(हिं०क्रि०) खदेरना, भगाना, मारकर हटाना, पीछा करना।
खेदा-(हिं०पुं०) शिकार में किसी जंगली पशु को पकड़ने या वध करने के लिये खदेर कर किसी निर्धारित स्थान पर लेजाना, शिकार,आखेट।
खेदाई-(हिं०स्त्री०) खदेरने का कार्य या वेतन।
खेदित-(सं०वि०) दुःखित, शिथिल,
खेना-(हिं०क्रि०) नाव चलाने के लिये डाडे को पानी में चलाना, निर्वाह करना, पार लगाना, समय बिताना।
खेप-(हिं०स्त्री०) भरती, लदान, चलान, उतनी वस्तु जो एक बार लेजाई जाती है, दौड़, पहुंच।
खेपड़ी-(हिं०स्त्री०) नाव की बल्ली, डांड़ा
खेपना-(हिं०क्रि०) काटना, बिताना,
खेमटा-(हिं०पुं०) छः या चार मात्रा का एक ताल, इस ताल पर होने वाला नाच या गाना।
खेल-(हिं०पुं०) केलि, क्रीडा,उछल कूद, दौड़ धूप, काम, हलका काम, खिलवाड़, सवाँग, अभिनय, अद्वितीय लीला, निरालापन; खेल खेलना-बेकार का काम करना, कष्ट देना।
खेलक-(हिं०पुं०) खेलने वाला,खेलाड़ी
खेलन-(सं०नपुं०) क्रीड़ा, खेल, खेलने की वस्तु। खेलना-(हिं०क्रि०) खेल करना, भूत, चढ़ना, विहार करना, घूमना फिरना, अभिनय दिखलाना, सवाँग बनाना, जान पर खेलना-ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो।
खेलवाड़-(हिं० पुं०) हँसी, खेलकूद, क्रीड़ा, खेल। खेलवाड़ी-(हिं०वि०) बहुत खेलकूद करने वाला। खेलाई-(हिं०स्त्री०) क्रीड़ा,खेलकूद। खेलाड़ी-(हिं०वि०) खेलने वाला, खेलैया, जुआरी, खेल मे सम्मिलित होने वाला, संसार को बनाने बिगाड़ने वाला परमेश्वर। खेलाना-(हिं०क्रि०) क्रीड़ा में किसी को प्रवृत्त करना, खेल में लगाना, बहलाना, बहँकाना।
खेलार-(हिं०स्त्री०) देखो खेलाड़ी।
खेलुआ-(हिं०पुं०) चमड़े को कोमल करने का,एक अस्त्र।
खेवक-(हिं०पुं०) नाव खेने वाला, केवट, मल्लाह।
खेवट-(हिं०पुं०) पटवारी का एक कागद जिसमें हर एक पट्टीदार की भूमि का हिसाब लिखा रहता है।
खेवा-(हिं० पुं०) नाव का किराया, बार, भरी हुई नाव।
खेवाई-(हिं०स्त्री०) नाव चलाने का काम, नाव पर चढ़ने का किराया, नाव खेने की शुल्क।
खस-(हिं०पुं०) मोटे सूत का लबा

चादरा।
खेसारी-(हिं०स्त्री०) दुविया मटर, लतरी
खेह-(हिं०स्त्री०) धूल, मिट्टी; **खेहखाना**-वृथा समय नष्ट करना।
खैंचना-(हिं०क्रि०) खींचना।
खैर-(हिं०पुं०) खदिर वृक्ष, बबूल की जाति का एक वृक्ष, इसकी लकड़ी से निकला हुआ रस, कत्था, बित्ता भर लंबा एक भूरे रंग का पक्षी।
खैरा-(हिं०वि०) खैर के रंग का, कत्थई रंग का (पुं०) धान का एक रोग।
खैलर-(हिं०पुं०) मन्थन दण्ड, मथानी।
खैला-(हिं०पुं०) बछड़ा, छोटा बैल।
खोंसना-(हिं०क्रि०)खांसना,खोंखों करना
खोंगा-(हिं०पुं०) अवरोध, रुकावट, बछड़ा, अनुभवहीन मनुष्य।
खोंगाह-(हिं०पुं०) पीलापन लिये हुए सफेद रंग का घोड़ा।
खोंचा-(हिं०स्त्री०) किसी नोकीली वस्तु से शरीर पर आघात, खरोंच, कांटे आदि में फँसकर वस्त्र का फट जाना
खोंची-(हिं०पुं०) खुरचन, फटन,मुट्ठी, मुट्ठीभर द्रव्य, बहेलिये की लासा लगी हुई लंबी लग्गी, आघात।
खोंची-(हिं०स्त्री०) भिक्षुक को दिया जाने वाला थोड़ा सा अन्न।
खोंट-(हिं०स्त्री०) नोचने या खोंटने की क्रिया, नोचने का चिह्न, खरोंच। **खोंटना**-(हिं०क्रि०) कपटना, फुनगी तोड़ लेना।
खोड़र-(हिं०पुं०) वृक्ष के भीतर का पोला भाग, कोटर।
खोड़ा-(हिं०वि०)भंग अंग वाला; जिसके आगे के दो चार दांत टूट गये हों।
खोंता-(हिं०पुं०) नीड़,चिड़िये का घोसला
खोंप-(हिं०स्त्री०) पसूजन, सिलाई का लंबा टाका, फटन। **खोंपना**-(हिं० क्रि०) गड़ाना, चुभना, धँसाना।
खोंपा-(हिं०पुं०) हलकी लकड़ी, छप्पर का कोना,नारियलका आधा टुकड़ा।
खोंसना-(हिं०क्रि०) अटकाना, लगाना, घुसाना।
खोआ-(हिं०पुं०) देखो खोया।
खोई-(हिं०स्त्री०) रस निकाले हुए ऊख के छोटे छोटे टुकड़े, कम्बल की घोघी, धान का लावा।
खोइहा-(हिं०पुं०)खोई उठाने वालाभृत्य
खोखर-(हिं०वि०) खोखला, पोला।
खोखला-(हिं०वि०) पोला, जिसके भीतर कुछ न हो (पुं०) वृक्ष का कोटर
खोखा-(हिं०पुं०) हुण्डी लिखा हुआ कागद, बालक।
खोगीर-हिं०स्त्री०) देखो खुगीर।
खोज-(हिं० स्त्री०) अनुसन्धान, चिह्न, पता, पैर का चिह्न। **खोजना**-(हिं०क्रि०) अनुसन्धान करना, ढूंढना, पता लगाना। **खोजवाना**-(हिं०क्रि०) ढूंढने का काम दूसरे से कराना।
खोजा-(हिं०पुं०) मुसलमानों के रनवास का नपुंसक नौकर, सेवक, सरदार, मुखिया।
खोजी-(हिं०वि०)अनुसन्धान करनेवाला
खोट-(हिं०स्त्री०) दूषण, बुराई, अच्छी वस्तु में बुरी वस्तु की मिलावट (वि०) खोटा, बुरा।
खोटन-(सं०नपुं०) लंगड़ाने की चाल।
खोटा-(हिं०वि०) दूषित।
खरीखोटी सुनाना-डाटडपट दिखलाना
खोटाई-(हिं०स्त्री०) दुष्टता, बुराई, छलकपट।
खोटापन-(हिं० पुं०) दोष, क्षुद्रता, ओछापन।
खोड़-(हिं०स्त्री०)दैवकोप, भूतप्रेत लगना
खोड़रा-(हिं०पुं०) पुराने वृक्ष का खोखला भाग।
खोदना-(हिं०क्रि०) गड्ढा करना, खन कर किसी स्थान की मिट्टी निकालना, खनना, कोंचना, उसकाना, नकाशी करना, छेड़ना, उत्तेजित करना, उभाड़ना। **खोदनी**-(हिं०स्त्री०) खोदने का छोटा अस्त्र।
खोदविनोद-(हिं०स्त्री०) जांच पड़ताल, छानबीन।
खोदवाना-(हिं०क्रि०) खोदने का काम दूसरे से कराना।
खोदाई-(हिं०स्त्री०) खोदने का काम या वेतन, खोदने का व्यापार।
खोनचा-(हिं० पुं०) थाल या परात जिसमें फेरीवाले मिठाई आदि रखकर बेंचते हैं।
खोना-(हिं०क्रि०)पास की वस्तु गँवाना, बिगाड़ना, नष्ट करना, भूल से कोई वस्तु कहीं पर छोड़ देना।
खोपड़ा-(हिं०पुं०) कपाल, सिर, नारियल, नारियल की गरी, नारियल का गोला, भीख मांगने का पात्र।
खोपड़ी-(हिं० स्त्री०) कपाल, सिर, मस्तक की हड्डी, **औंधी खोपड़ी**-मूर्ख; **खोपड़ीखाना**-अधिक बकवाद करके व्यग्र करना; **खोपड़ी गंजी होना**-सिरके बाल झर जाना।
खोपा-(हिं०पुं०) छप्पर या घर का कोना, गुथी हुई स्त्रियों की चोटी जो तिकोनी होती है वेणी, जूड़ा नारियल की गरी का गोला।
खोबा-(हिं०पुं०) थापी, पलस्तर करने का एक अस्त्र।
खोभ-(हिं०पुं०) देखो क्षोभ।
खोभार-(हिं०पुं०) कूड़ा करकट फेंकने का गड्ढा।
खोय-(हिं०स्त्री०) स्वभाव, टेव।
खोया-(हिं०पुं०)खूब औटाया हुआ दूध जो पिण्ड सा हो जाता है, मावा, खोवा।
खोर-(सं०वि०) खंज, लंगड़ा।
खोर-(हिं०स्त्री०) सकरी गली, कूचा, पशुओं को चारा खिलाने की नांद।
खोरना-(हिं०क्रि०)स्नान करना,नहाना।
खोरा-(हिं०पुं०) कटोरा, पानी पीने का पात्र, (वि०) लगड़ा, लूला।
खोरि-(हिं०स्त्री०) सकरा मार्ग, पतली गली, दोष।
खोरिया-(हिं०स्त्री०) कटोरिया, प्याली।
खोल-(हिं०स्त्री०) आवरण, झूल, ऊपर का आवरण, कीड़े का ऊपरी चमड़ा, मोटे कपड़े की चादर।
खोलना-(हिं०क्रि०) उद्घाटन करना, अवरोध हटाना, उघाड़ना, बिगाड़ना, छेदना, स्थापन करना, आरंभ करना, चलाना, मुक्त करना, तोड़ना, काटना, प्रकाशित करना, बतलाना, प्रश्न पूछना, दरार करना, दैनिक कार्य आरंभ करना, गूढ बात को प्रगट करना।
खोलिया-(हिं०स्त्री०) बढ़ई की पनारीदार रुखानी।
खोली-(हिं०स्त्री०) आवरण।
खोवा-(हिं०पुं०) देखो खोया।
खोह-(हिं०स्त्री०) गुफा, कन्दरा, दो पहाड़ों के बीच का संकुचित मार्ग।
खोंही-(हिं०स्त्री०) पत्तों का बना हुआ छाता, घोघी।
खौं-(हिं०स्त्री०) गड्ढा, अन्न रखने की खत्ती।
खौंचा-(हिं०पुं०) साढ़े छः का पहाड़ा, मिठाई आदि रखने की सन्दूक।
खौर-(हिं०स्त्री०) त्रिपुण्ड, चन्दन का टीका, स्त्रियों का मस्तक पर पहिरने का एक आभूषण।
खौरना-(हिं०क्रि०) खौर लगाना, चंदन का तिलक लगाना, नष्ट करना।
खौरहा-(हिं०वि०) गंजा, जिसके सिर के बाल उड़ गये हों, जिस पशुके शरीर में खुजली हुई हो।
खौरा-(हिं०वि०)एक प्रकार की खुजली जिसमें चमड़ा रूखा पड़ जाता है।
खौरी-(हिं० स्त्री०) कपाल, खोपड़ी, भस्म, राख।
खौलना-(हिं०क्रि०)गरम होकर चुरना, उबलना। **खौलाना**-(हिं०क्रि०) उबालना, गरम करना।
खौंहा-(हिं०वि०) पेटू, भुक्खड़ मरभुख।
ख्यात-(सं० वि०) कथित, प्रसिद्ध।
ख्याति-(सं०स्त्री०) प्रशसा, प्रसिद्धि, प्रकाश, ज्ञान।
ख्यापक-(सं०वि०)प्रकाशक,बतलानेवाला
ख्रिष्टान-(हिं०पुं०) ईसाई क्रिस्तान।
ख्रिष्टीय-(हिं०वि०) ईसाई धर्म संबंधी
ख्रीष्ट-(हिं०पुं०)ईसुमसीह, हजरत ईसा

ग
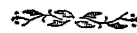
ग-कवर्ग का तीसरा व्यंजन, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।
ग-(सं०नपुं०) गीत, गणेश, गन्धर्व, एक गुरु वर्ण (वि०) गानेवाला, जानेवाला
गंगई-(हिं०स्त्री०) मैना के जाति की एक चिड़िया।
गंगबरार-(हिं०पुं०) गंगा या अन्य नदी की धारा या बाढ़ के हटने से निकली हुई भूमि जिसपर मिट्टी जम जाती है। **गंगशिकस्त**-(हिं०पुं०) वह जमीन जिसको नदी की बाढ़ बहा ले गई हो
गंगेरन-(हिं० स्त्री०) गुलशकरी नामकी बनस्पति जिसके पत्तों में दो नोक होती है, इसका फल पकने पर पाँच टुकड़े हो जाता है।
गंगोटी-(हिं०स्त्री०) गगा नदी की मिट्टी
गंगौलिया-(हिं०पुं०) एक प्रकारका नीबू
गंजिया-(हिं०स्त्री०) घसियारे की घास भरने की जालीदार थैली।
गंजेड़ी-(हिं०वि०) गांजा पीने वाला।
गंठकटा-(हिं०पुं०) कपड़े काट कर रुपये पैसे निकाल लेनेवाला चोर, गिरहकट।
गठबन्धन-(हिं० पुं०) ग्रन्थिबन्धन, विवाह की एक रीति, विवाह, मैत्री, दोस्ती।
गंठवा-(हिं०पुं०) धागे का जोड़।
गड़घिसीनी-(हिं० स्त्री०) खुशामद, चापलूसी, अति परिश्रम, बैठाई।
गंडरा-(हिं०पुं०) मूंजके तरह की एक घास।
गंडासा-(हिं०पुं०)चारा काटने का अस्त्र
गंडेरी-(हिं०स्त्री०) ऊख के छोटे २ टुकड़े
गंडौरा-(हिं०पुं०)हरी तथा कच्ची खजूर
गंदना-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास
गंदला-(हिं०वि०) मलिन, मैला अपवित्र
गंदीला-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास
गंधाना-(हिं०क्रि०) दुर्गन्ध निकलना,
गंधिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।
गंधैला-(हिं०वि०) दुर्गन्धयुक्त।
गंव-(हिं०स्त्री०) अवसर, प्रयोजन, दाँव, घत।
गंवई-(हिं०पुं०) छोटा गांव।
गंवरदल-(हिं०पुं०) गंवारों की भीड़, (वि०) गंवारू, भद्दा।
गंवाना-(हिं०क्रि०) खोना, बिसारना, भूलना, बिताना, काटना, व्यतीत करना।
गंवार-(हिं०वि०) ग्रामीण, देहाती, मूर्ख,अज्ञान। **गंवारी**-(हिं०स्त्री) गंवारपन,अज्ञानता, मूर्खता,गँवारकी स्त्री, (वि०) भद्दी, बेढ़ंगी।
गंवारू-(हिं० वि०) ग्रामीण, देहाती, बेढंगा।
गंस-(हिं०स्त्री०) द्वेष, तीर की नोक।
गंसना-(हिं०क्रि०) कसकर बांधना, गठना, कसना, भरना, चुभना, छिदना घुसना।
गंसीला-(हिं०वि०) नोकदार,चुभनेवाला धंस जाने वाला, ठोस,बिना छेद का।
गइया-(हिं०स्त्री०) गौ, गाय।
गईकरना-(हिं०क्रि०) टालना, सुनी अनसुनी करना, तरह देना।
गईबहोर-(हिं०वि०) खोई हुई वस्तु को दे देनेवाला, बिगड़ी को बनानेवाला
गऊँथ-(हिं०स्त्री०) चौपायों को खिलाने कीएक प्रकार की घास।

गऊ-(हिं०स्त्री०) गाय, गौ, गइया।
गकार-(सं०पुं०) 'ग' वर्ण; 'ग' अक्षर
गगन-(सं०नपुं०) आकाश, आसमान, शून्य स्थान, ज्योतिष में कुंडली का दसवां घर, अभ्रक धातु, मेघ, छप्पय छन्द का एक भेद; **गगनगति**-हवा में उड़नेवाला, देवता; **गगनचर**-आकाशगामी, विद्याधर, पक्षी; **गगनधूल**-एक प्रकारका कुकुरमुत्ता, केवड़े के फूल में की धूलि; **गगनध्वज** मेघ, बादल, सूर्य; **गगनभेंड़**, करांकुल पक्षी; **गगनमंडल**-आकाश मण्डल, **गगनबिहारी**-आकाश में घूमनेवाला, खेचर, पक्षी।
गगन सिन्धु-मन्दाकिनी, गङ्गा नदी।
गगनाङ्गना-(सं०स्त्री०)दिवाङ्गना,अप्सरा
गगनाङ्ग-(सं०नपुं०)मात्रावृत्तका एक भेद
गगनाम्बु-(सं०नपुं०)गगनोदक,बरसाती पानी।
गगनेचर-(सं०पुं०) देवता, सूर्यादिग्रह, राशिचक्र।
गगरा-(हिं०पुं०) कलश, कलसा, घड़ा, धातु का अथवा मिट्टी का घड़ा।
गगरी-(हिं०स्त्री०) कलसी, छोटा घड़ा
गगोरा-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा
गङ्ग-(हिं०पुं०) एक मात्रावृत्त जिसके प्रति पाद में नव मात्रायें रहती हैं तथा अन्त में दो गुरु रहता है।
गङ्गा-(सं०स्त्री०) भारतवर्ष की प्रसिद्ध नदी, भागीरथी, जाह्नवी, सुरनदी; **गङ्गाजमुनी**-(हिं०वि०) दोरंगा, मिला हुआ, सोने चांदी, पीतल तांबे इ० दो धातुओं का बना हुआ, काला तथा सफेद, काला उजला। **गङ्गाजल**-(सं०नपुं०) गंगा नदी का जल, महीन सूत का एक प्रकार का कपड़ा; **गङ्गाजली**-(स्त्री०) जल भरने की शीशी, वह धातु की सुराही या पात्र जिसमें यात्री लोग गंगाजल भर कर ले जाते हैं; **गङ्गादत्त**-(पुं०) भीष्म का एक नाम; **गङ्गाद्वार**-(नपुं०) मायापुरी,हरिद्वार; **गङ्गाधर**-(पुं०) शिव,महादेव; **गङ्गापुत्र**-(पुं०) भीष्म, कार्तिकेय, एक वर्णसंकर जाति,घाटों पर दान लेनेवाले ब्राह्मण; **गङ्गापूजा**-(स्त्री०) विवाह के बाद वरवधू को तीर्थ स्थान में ले जाकर पूजन कराना; **गङ्गाप्राप्ति**-(स्त्री०) गङ्गा लाभ, मृत्यु; **गङ्गावासी**-(पुं०) गंगा जीके किनारे पर रहने वाला; **गङ्गा-यात्रा**-(स्त्री०) मरणासन्न मनुष्य का गंगाजी पर मरने के लिये जाना।
गङ्गाल-(हिं०पुं०) पानी रखने का खुले मुंह का पड़ा बरतन, कण्डाल।
गङ्गालाभ-(सं०पुं०) गंगाकी प्राप्ति, मृत्यु, गंगाजी के गर्भ में मृत्यु।
गङ्गालहरी-(सं०स्त्री०) गंगा की तरंग या लहर। **गङ्गासागर**-(सं०पुं०) वह स्थान जहां गंगा समुद्र से मिलती हैं, यह तीर्थ माना जाता है और पौष संक्रान्ति में यहां स्नान का माहात्म्य है। **गङ्गासुत**-(सं०पुं०) भीष्म, कार्तिकेय।
गंगेठी-(हिं०स्त्री०) औषधि के उपयोग की एक बूटी।
गंगेच्छ-(हिं०पुं०) गंगाजल।
गङ्गोत्तरी-युक्त प्रान्त के अन्तर्गत टेहरी राज्य में एक पुण्य तीर्थ, गङ्गाजी का उद्गम स्थान।
गङ्गोदक-(सं०नपुं०) गङ्गा जल, गङ्गा जी का पानी।
गङ्गोल-(सं०पुं०)गोमेदक नाम का मणि
गच-(हिं०पुं०) किसी कोमल वस्तु में किसी कड़ी वस्तु के धँसने का शब्द, चूने सुरखी या सिमेन्ट से बनी हुई पक्की भूमि; **गचकारी**-गच बनाने का काम।
गचना-(हिं०वि०) किसी पात्र में कोई वस्तु कस कर भरना।
गचाका-(हिं०पुं०) गिरने का शब्द।
गच्छना-(हिं०क्रि०) चलना, चलाना, अपने ऊपर लेना, निबाहना।
गज-(सं०पुं०)हस्ति, हाथी, एक राक्षस का नाम, रामचन्द्र की सेना का एक बन्दर, आठ की संख्या।
गजंद, गजंदा-(हिं०पुं०) हाथी।
गजकणा-(सं०स्त्री०) गज पीपल। **गज-कर्ण**-(सं०पुं०) एक असुर का नाम, एक प्रकार का पलाश। **गजकुम्भ**-(हिं०पुं०) हाथी के मस्तक पर का दोनों ओर का उभड़ा हुआ भाग। **गजकुसुम**-(सं०पुं०) नागकेशर। **गज-कृष्णा**-(सं०स्त्री०) बड़ी पीपल। **गज-क्रीडित**-(सं०नपुं०) एक प्रकार का नाच। **गजगति**-(सं०स्त्री०) हाथी की मन्द चाल, एक वर्णवृत्त का नाम। **गजगमन**-(सं०नपुं०)हाथी की तरह मन्द गति। **गजगामिनी**-(सं० स्त्री०) हाथी के समान मन्द गति से चलने वाली स्त्री। **गजगाह**-(हिं०पुं०) हाथी की झूल, पाखर। **गजगौन**-(हिं०पुं०) देखो गजगमन। **गजचर्म**-(सं०नपुं०) एक रोग जिसमें शरीर का चमड़ा मोटा और रूखा हो जाता है। **गजचर्मिट**-(सं०पुं०) एक प्रकारका तरबूज। **गजच्छाया**-(सं०स्त्री०) सूर्यग्रहण का काल। **गज-दन्त**-(सं०पुं०) गणेश, नागदन्त,भीत में लगाई हुई खूंटी, हाथी के दांत के ऊपर जमने वाला दांत,वह घोड़ा जिसके दांत निकले हों। **गजदान**-(सं०नपुं०) हाथी का मद। **गजना**-(हिं०क्रि०) गरजना। **गजपाल**-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी तोप जो प्राचीन काल में हाथी से खींची जाती थी। **गजदासा**-(सं०स्त्री०) हाथी का सूंड़। **गजपति**-(सं०पुं०) श्रेष्ठहाथी। **गजपाल**-(सं०पुं०)हाथी-वान, महावत। **गजपिप्पली**-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी पीपल।
गजपीपर,गजपीपल-देखो गज पिप्पली
गजपुट-(सं०पुं०) एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा तथा एक हाथ गहरा गड्ढा जिसमें कंडा जला कर वैद्य लोग धातु का भस्म बनाते हैं। **गज-प्रिया**-(सं०स्त्री०) शल्ल की वृक्ष, सला का पेड़। **गजबदन**-(सं०पुं०) गजानन, गणेश। **गजबन्ध**-(सं०पुं०) एक प्रकार का चित्रकाव्य। **गज-बला**-(सं०स्त्री०) एक प्रकारकी झाड़ी
गजबाग-(हिं०पुं०) हाथी का अंकुश।
गजमणि-(सं०स्त्री०) गजमुक्ता, गज-मोती। **गजमण्डन**-(सं०नपुं०) हाथी का अलङ्कार। **गजमुक्ता**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का मोती जो हाथी के मस्तक में पाया जाता है। **गजमुख**-(सं०पुं०) गणेश। **गजमोती**-(हिं०पुं०) देखो गजमुक्ता।
गजर-(हिं०पुं०) पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द, पारी, प्रातःकाल का घंटा; **गजरदम**-बड़े सबेरे, तड़के
गजरप्रबन्ध-(सं०पुं०) स्वर और बाजे का मिलान।
गजरबजर-(हिं०पुं०) अंड बंड,गोलमाल।
गजरा-(हिं०पुं०) फूलोंकीमाला, कलाई में पहिरने का एक आभूषण, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, गाजर।
गजराज-(सं०पुं०) बड़ा हाथी।
गजलोल-(हिं०पुं०) एक ताल भेद।
गजवदन-(सं०पुं०) हाथीका मुख,गणेश
गजवान-(हिं०पुं०) महावत, हाथीवान।
गजशाला-(सं०स्त्री०) हाथी बांधने का बाड़ा।
गजही-(हिं०स्त्री०) दूध में से मक्खन निकालने की लकड़ी।
गजा-(हिं०पुं०) नगाड़ा बजाने का डंडा
गजाधर-(हिं०पुं०)देखो गदाधर। **गजा-नन**-(सं०पुं०) पार्वती के पुत्र,गणेश।
गजारोह-(सं०पुं०) महावत।
गजाहव,गजाह्वय-(सं०नपुं०)हस्तिनापुर
गजिया-(हिं०स्त्री०)बिटाई करनेकाएक यंत्र
गजेन्द्र-(सं०पुं०) बड़ा हाथी, ऐरावत; **गजेन्द्रगुरु**-संगीत में रुद्रताल का एक भेद।
गज्जल-(हिं०पुं०) अंजीर।
गज्जूह-(हिं०पुं०) हाथी का झुण्ड।
गज्झा-(हिं०पुं०) बुलबुलों का समूह, गाज, ढेर, कोष, सम्पत्ति, धन।
गञ्ज-(सं०पुं०नपुं०) अपमान, अनादर, भाण्डार घर, कोष, खान, पशुओं के रखने का स्थान।
गञ्जन-(सं०नपुं०) निन्दा, तिरस्कार।
गञ्जा-(सं०स्त्री०) हाट लगनेका स्थान, मद्य रखने का पात्र, गांजा, चाँडुल।
गञ्झिन-(हिं०वि०) सघन, घना, मोटा, ठस बिना हुआ।
गटई-(हिं०पुं०) ग्रीवा, गला।
गटकना-(हिं०क्रि०) खाना, निगलना, दबालेना। **गटकीला**-(वि०)गटकनेवाला
गटगट-(हिं०पुं०) कई बार निगलने या पानी पीनेकेसमय गलेसे उत्पन्नशब्द
गटना-(हिं०क्रि०) अकड़जाना।
गटपट-(हिं०स्त्री०) मेल,मिलावट,संयोग, प्रसंग, सहवास, घनिष्टता।
गटरमाला-(हिं०स्त्री०) बड़े बड़े दानों की माला। **गटा**-(हिं०पुं०)देखोगट्टा
गटी-(सं०स्त्री०) ग्रन्थि, गाँठ।
गट्टा-(हिं०पुं०) हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़, कलाई, गांठ, ग्रन्थि, एक प्रकार की मिठाई।
गटठर, गटठा-(हिं०पुं०) बड़ी गठरी, बोझा।
गठकटा-(हिं०पुं०) गांठ काटकर रुपया चोरानें वाला।
गठन-(हिं०स्त्री०) बनावट।
गठना-(हिं०क्रि०) मिल कर एक होना, जुड़ना, सटना, बिनावट का पुष्ट होना, अनुकूल होना, गुप्त बात में सहमत होना, अधिक मेल होना, संभोग करने के लिये जुटना।
गठबन्धन-(हिं०पुं०) विवाह में दुलहा दुलहिन के वस्त्र के सिरे को मिला कर बांध देना।
गठरी-(हिं०स्त्री०) बड़ी पोटरी, बुगची; **गठरी मारना**-किसी का धन छल कर के हर लेना।
गठवांसी-(हिं०स्त्री०) बिस्वे का बीसवां अंश, बिस्वांसी।
गठवाना-(हिं०क्रि०) जुड़वाना, जोड़ मिलवाना, सिलवाना।
गठाव-(हिं०पुं०) देखो गठन, बनावट।
गठित-(हिं०वि०) गठा हुआ।
गठिबन्ध-(सं०पुं०) गठबन्धन,विवाह।
गठिया-(हिं०स्त्री०) बोरा जिसमें अन्न भरकर व्यापारी लोग बैल या घोड़े पर लादते हैं, पोटली, छोटी गठरी, कोरे कपड़े की गाँठ, एक प्रकार का वायुरोग जिसमें घुठने में सूजन और पीड़ा होती है।
गठियाना-(हिं०क्रि०) गांठ लगाना, गांठ बांधना।
गठिवन-(हिं०पुं०) नीले रंग के फूल का वृक्ष, एक सुगन्धित पौधा।
गठीला-(हिं०वि०) गाँठदार,दृढ़, प्रसिद्ध, सुडौल, गठा हुआ।
गठुरा-(हिं०पुं०)भूसेकीगांठ,गेठुरा,खूंटी
गठौंद-(हिं०स्त्री०) गांठ की बँधाई,धरोहर
गठौत,गठौती-(हिं०स्त्री०) मित्रता,घनिष्ठता,मेलजोल,निश्चित की हुई बात
गडंक-(हिं० पुं०) गोला, बारूद तथा शस्त्र रखने का स्थान।
गडंगिया-(हिं०वि०) घमंडी।
गडंत-(हिं०स्त्री०) गाड़ने का काम।
गड़-(सं०पुं०) रुकावट, अवरोध, ओट, आड़, घेरा, खोह, गढ़, विघ्न, गड्ढा
गड़गड़-(हिं०स्त्री०) बादल गरजने या गाड़ी के चलने का शब्द, पेट में वायु का शब्द।
गड़गड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का हुक्का। **गड़गड़ान**-(हिं०क्रि०) गर-

जना, कड़कना, गड़गड़ शब्द करना।

गड़गड़ाहट-(हिं०स्त्री०) गड़गड़ाने का शब्द, हुक्का पीने का शब्द।

गड़गड़ी-(हिं०स्त्री०) नगाड़ा, डुग्गी।

गड़गूदड़-(हिं०पुं०) लत्ता, चिथड़ा, फटा पुराना, कपड़ा।

गड़दार-(हिं०पुं०) मतवाले हाथी के साथसाथभाला लेकर चलनेवालानौकर

गड़ना-(हि०क्रि०)चुभना,धंसना, घुसना, शरीर मे किसी वस्तु के धंसने की पीड़ा, दुखना, पीड़ा करना, दवना, स्थिर होना; **गड़ जाना**-लज्जित होना।

गड़पना-(हिं०क्रि०) निगलना, खाजाना, दूसरे की वस्तु पर अधिकार करना

गड़प्पा-(हिं०पुं०) गड्ढा, छले जाने का स्थान।

गड़बड़-(हिं०स्त्री०) ऊंचा नीचा, अनियमित, अंडबंड, ठीक समय पर न किया जानेवाला, आपत्ति, उपद्रव, दंगा, (पुं०) अव्यवस्था, बुरा प्रबंध; **गड़बड़झाला-गड़बड़ाध्याय**-अव्यवस्था, उपद्रव।

गड़बड़ा-(हिं०पुं०) गर्त, गड्ढा।

गड़बड़ाना-(हिं०क्रि०) भूल या भ्रम में पड़ना, चक्कर में आ जाना, अव्यवस्थित होना, बिगड़ना, भुलवाना, बिगाड़ना, भ्रम में डालना, क्रम भ्रष्ट होना, गड़बड़ी में पड़ना।

गड़बड़िया-(हिं०वि०)उपद्रव करनेवाला, दंगा छली, **गड़बड़ी**-(हिं०स्त्री०) अव्यवस्था, गोलमाल। **गड़रिया**-(हिं०पुं०) एक जाति जो भेड़ पालती और उनके बाल के कम्बल आदि बनाती है

गड़हा-(हिं०पुं०)गर्त,गहरी भूमि, गड्ढा

गड़ही-(हिं०स्त्री०) छोटा गड़हा।

गड़ा-(हिं०पुं०) ढेर, राशि, समुदाय।

गड़ाना-(हिं०क्रि०) धँसाना, चुभाना, भोंकना, धँसाने का काम दूसरे से कराना।

गड़ाया-(हिं०पुं०) गहरा स्थान।

गड़ायत-(हिं०वि०)गड़ाने या धँसानेवाला

गड़ारी-(हिं०स्त्री०) मण्डलाकार रेखा, वृत्त,घेरा,पास पास बनी हुई धारियां, घिरनी, कुवें में से पानी खींचने की चरखी। **गड़ारीदार**-(हिं०वि०) जिस पर पास पास अनेक धारियां पड़ी हों, घेरदार।

गड़ावन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का नमक

गड़ई-(हिं०क्रि०) टोंटी लगा हुआ पानी पीने का छोटा पात्र, झारी।

गड़वा-(हिं०पुं०)टोंटी लगा हुआ लोटा।

गड़ेरिया-(हिं०पुं०) देखो गड़रिया।

गडर-(हिं०पुं०) कुबड़ा मनुष्य।

गड़ोना-(हिं०क्रि०) देखो गड़ाना।

गड़ौना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मीठा पान, काँटा।

गड्ड-(हिं०पुं०) वस्तुओं का ढेर जो एक के ऊपर दूसरी रक्खा हो, गंज, **गड्डबड्ड**-बेमेल की मिलावट, घोलमेल।

गड्डर-(सं०पुं०) मेष, भेड़ा।

गड्डरिक-(सं०पुं०) भेड़ पालनेवाला, गड़ेरिया।

गड्डी-(हिं०स्त्री०) ढेर, पुज, राशि।

गड्ढा-(हिं०पुं०) गर्त, गड़हा, भूमि में गहरा स्थान; **किसी के लिये गड्ढा खोदना**-किसी की बुराई करने का प्रयत्न करना।

गढ़ंत-(हिं०स्त्री०) कल्पित वार्ता, बनावटी बात।

गढ़-(हिं०पुं०) खाई, कोट।

गढ़कप्तान-(पुं०) गढ का सैनिक अधिकारी।

गढ़न-(हि०स्त्री०) आकृति,गठन,बनावट।

गढ़ना-(हिं०क्रि०) काट छांट, कर बनाना, सुडौल करना, बातें बनाना ठोंकना, मारना पीटना, मनकी कल्पना करना।

गढपति, गढवइ, गढवै-(हिं०पुं०) कोटाध्यक्ष, सरदार, राजा।

गढवाल-(हिं०पुं०) वह जिसके आधीन में गढ हो, युक्त प्रान्त के कमाऊं विभाग का पश्चिमी जिला।

गढा-(हिं०पुं०) गड्ढा, गड़हा।

गढाई-(हिं०स्त्री०) गढ़ने का काम गढ़ने, का वेतन।

गढाना-(हिं०क्रि०)गढने का काम दूसरे से कराना,गढवाना,कठिन जान पड़ना

गढिया-(हिं०पुं०) किसी वस्तु को गढ कर बनानेवाला।

गढी-(हिं०स्त्री०) छोटा गढ।

गढैया-(हिं०वि०)गढ़नेवाला,बनानेवाला।

गढोई-(हिं०पुं०) गढपति।

गण-(सं०पुं०) समूह, ढेर, प्रमथ, शिव सेवक, जत्था, श्रेणी, कोटि, पूत, सेवक, बनियों का समूह, तीन गुल्म का सेना का विभाग, एक असुर का नाम, छन्द शास्त्र में तीन वर्णो का समूह जो लघु गुरु के भेद से आठ प्रकार का होता है।

गणक-(सं० पुं०) दैवज्ञ, मुहूर्तज्ञ, ज्योतिषी। **गणकार**-(सं०वि०)गणना करनेवाला (पुं०) भीमसेन।

गणता-(सं०स्त्री०) समूह, ढेर।

गणदेवता-(सं०स्त्री०)समूहचारी देवता।

गणद्रव्य-(सं०नपुं०) सर्व साधारण की सम्पत्ति।

गणन-(सं०नपुं०)गणना,गिनती,निश्चय

गणना-(स०स्त्री०) गिनती, हिसाब, संख्या, **गणनाथ**-(सं०पुं०)शिव,महादेव, गणेश। **गणनायक**-(सं०पुं०) देखो गणनाथ। **गणनायिका**-(सं० स्त्री०) दुर्गा, भगवती।

गणनीय-(सं०वि०) गिनने योग्य,प्रसिद्ध।

गणपति-(सं०पुं०) गणेश, शिव।

गणमुख-(सं०पुं०) गांव के मुखिया।

गणराज्य-(सं०पुं०) चुने हुए मुखियों के द्वारा चलाया जानेवाला राज्य।

गणाचार्य-(सं०पुं०) लोक गुरु, शिक्षक

गणाधिप,गणाध्यक्ष-(सं०पुं०) गणों के स्वामी, शिव, गणेश।

गणिका-(सं०स्त्री०) वेश्या, रण्डी।

गणिकारी-(सं०स्त्री०)गनियार का वृक्ष जो वसन्त में फूलता है, दशमूल का एक मूल।

गणित-(सं०नपुं०) गणन, गणना, गिनती, अङ्कशास्त्र, हिसाब जिसके अन्तर्गत व्यक्त गणित और बीजगणित है; **गणितज्ञ**-गणित शास्त्र जानने वाला, ज्योतिषी।

गणेरुका-(सं०स्त्री०) कुटनी, दूती।

गणेश-(सं०पुं०) पार्वतिनन्दन जिनका सिर हाथी का है, सब कार्य के आरंभ करने में पहिला इनका ध्यान और पूजन किया जाता है; **गणेशक्रिया**-(सं०स्त्री०) योग की क्रिया जिसमें गुदा में अंगुली आदि की सहायता से मल निकाल दिया जाता है; **गणेशचतुर्थी**-(सं०स्त्री०) भाद्रपद तथा माघ की शुक्ला चतुर्थी जिस दिन गणेश का व्रत और पूजन किया जाता है।

गण्ड-(सं०पुं०) कपोल, गाल, हाथी की कनपटी, गैड़ा, चिह्न, बुलबुला, फोड़ा, ग्रन्थि,गांठ। **गण्डक**-(सं०पुं०) गैड़ा, भेद, आभूषण, ग्रन्थि, स्फोटक रोग, गण्ड कुसुम, हाथी का मद, गण्डकूप, पहाड़ की चोटी,गण्डमाला, गले का एक रोग, कण्ठमाला, गण्डस्थल, गंड देश, पूरा गाल।

गण्डिका-(सं०स्त्री०) पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े।

गण्डूष-(सं०पुं०) मुख पूरण, कुल्ली।

गण्य-(सं०वि०) गिनने योग्य,प्रतिष्ठित, माननीय।

गत-(सं०वि०) गया हुआ, बीता हुआ, प्राप्त, समाप्त, पूरा किया हुआ, पतित, ज्ञात, पाया हुआ, रहित, मरा हुआ, (स्त्री०) अवस्था, दशा, वेश, दुर्गति, नाश, दुर्दशा, रंगरूप, नाचने गाने का ढंग।

गतंड-(हिं०पुं०) नपुंसक, हिंजड़ा।

गतका-(हिं०पुं०) लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है।

गतकार्य-(सं०वि०) जिसका कार्य नष्ट हो गया हो। **गतकाल**-(सं०पुं०) बीता हुआ समय। **गतकीर्ति**-(सं० वि०) जिसका यश समाप्त हो गया हो। **गतनासिका**-(सं०वि०) बिना नाक का, नकटा। **गतपुण्य**-(सं०वि०) जिसका पुण्य नष्ट हो गया हो।

गतप्रभ-(सं०वि०) निष्प्रभ, तेज रहित

गतप्राण-(सं०वि०) मृत, मरा हुआ।

गतबुद्धि-(सं०वि०) निर्बोध, अज्ञान।

गतरात्रि-(सं०स्त्री०) बीती हुई रात।

गतलज्ज-(सं०वि०) निर्लज्ज, **गतश्री**-(सं०वि०) जिसकी शोभा नष्ट हो गई हो।

गताक्ष-(सं०वि०) नेत्रहीन, अन्धा।

गतायुः-(सं०वि०) जिसकी आयु शेष न हो, मरने वाला।

गतार्थ-(सं०वि०) जिसका अर्थ ज्ञात हो, चरितार्थ।

गति-(सं०स्त्री०) गमन, चाल,परिणाम, ज्ञान, प्रमाण, मुक्ति, मोक्ष,कर्मफल, दशा, यात्रा, स्वरूप, स्थान, ग्रहों की चाल, सितार आदि बजाने में कुछ बोलों का क्रमबद्ध मिलान,पहुंच, रूप रंग, वेष, उपाय, सहारा, ढंग, चेष्टा, रीति, मृत्यु के बाद जीवात्मा का अन्य शरीर धारण करना।

गतिक-(सं०नपुं०) गति,अवस्था,आश्रय

गतिया-(हिं०पुं०) तबला बजाने वाला, (स्त्री०) बच्चों के गले में बाँधने का रूमाल।

गत्ता-(हिं०पुं०) कागद के कई परतों को साटकर बनी हुई दफ्ती, कुट।

गत्तालखाता-(हिं०पुं०) अप्राप्य ऋण, बट्टाखाता।

गत्वर-(सं०वि०) चलने वाला, क्षणिक

गत्थ,गथ-(हिं०पुं०) पूंजी, जमा, मास, झुंड, समुदाय। **गथना**-(हिं०क्रि०) एक को दूसरे से मिलाना, आपसमें गुथना, बात बनाना।

गद-(सं०पुं०) रोग, मेघ का शब्द, कुष्ठ, कोढ, श्रीकृष्ण के छोटे भाई का नाम, राम की सेना का एक बन्दर, एक असुर का नाम।

गदका-(हिं०पुं०) देखो गत का।

गदकारा-(हिं०वि०) कोमल, गुलगुला।

गदगद-(सं०नपुं०) गद्गद भाषण, पुलकित वचन।

गदना-(हिं०क्रि०) बोलना, कहना।

गदराना-(हिं०क्रि०) पकने के समीप पहुंचना, जवानी में अंगोंका भरना, आंख में कीचड़ आना।

गदला-(फ़ा०वि०) मटमैला, गन्दा।

गदहपचीसी-(हिं०पुं०) सोलह वर्ष से पचीस वर्षतक की अवस्था जब मनुष्य की बुद्धि कम अनुभव होने के कारण अपरिपक्व रहती है।

गदहपन-(हिं०स्त्री०) मूर्खता,

गदहपूरना-(हिं०स्त्री०) पुनर्नवा नाम का पौधा जो औषधि में प्रयोग होता है

गदहलोट-(हिं०स्त्री०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति।

गदहा-(हिं०पुं०) गर्दभ, घोड़े के आकार का पर इससे छोटा एक चौपाया, (सं०पुं०) वैद्य, चिकित्सक (वि०) मूर्ख; **गदहेका हल चलाना**-नाश को प्राप्त होना।

गदाहिला-(हिं०पुं०) ईंट, सुर्खी इत्यादि लदे हुए गदहे।

गदाँबर-(हिं०पुं०) मेघ, बादल।

गदा-(सं०स्त्री०) एक प्राचीन अस्त्र जिसमें लोहे के डंडे के छोर पर एक लट्टू लगा होता था, बड़प्पन, **गदाग्रज**-(सं०पुं०)बलराम, श्रीकृष्ण।

गदाधर-(सं० पुं०) विष्णु, भगवान्

(वि०) गदा धारण करने वाला। **गदापाणि**-(सं०पुं०) विष्णु। **गदाम्बर**-(सं०पुं०) मेघ, बादल।

गदाला-(हिं०पुं०) हाथी की पीठपर रखने का गद्दा, मोटा ओढना या बिछौना।

गदित-(सं०वि०) कहा हुआ, कथित।

गदेला-(हिं०पुं०) रूई आदि से भरा हुआ बहुत मोटा बिछौना।

गदोरी-(हिं०स्त्री०) हाथ की हथेली।

गद्गद-(सं०पुं०) अव्यक्त,शब्द, अस्पष्ट शब्द, अति अधिक हर्ष प्रेम इत्यादि के कारण गला भर आना, प्रसन्न, आनन्दित, पुलकित।

गद्द-(हिं०पुं०) कोमल वस्तु पर किसी पदार्थ के गिरने का शब्द, अजीर्ण के कारण पेट का भारीपन।

गद्दर-(हिं०वि०) अपक्व, अधपका, मोटा गद्दा।

गद्दा-(हिं०पुं०) रूई आदि भरा हुआ मोटा बिछौना, गदेला, हाथी की पीठ पर रखने का टाट का मोटा बिछावन जिसके ऊपर हौदा रक्खा जाता है घास,पयाल, रूई आदि का बोझ, किसी कोमल पदार्थ पर मार।

गद्दी-(हिं०स्त्री०) छोटा गद्दा,वह वस्त्र जो घोड़े, ऊँट आदि के पीठ पर रक्खी जाती है. हाथ या पैर की हथेली, व्यवसायी आदि की बैठने का स्थान, किसी बड़े अधिकारी का पद, किसी राजवंश की पीढी या आचार्य की शिष्यपरम्परा; **गद्दी पर बैठना**-उत्तराधिकारी बनना।

गद्य-(सं०वि०) कथनीय, कहने योग्य, (नपुं०) छन्द रहित वाक्य, पाद लक्षण रहित पद समूह, संगीत में शुद्ध राग का एक भेद। **गद्यात्मक**-(सं०वि०) गद्य में रचा हुआ।

गधा-(हिं०पुं०) गर्दभ, गदहा।

गन-(हिं०पुं०) देखो गण।

गनक-(हिं०पुं०) देखो गणक।

गनगन-(हिं०स्त्री०) काँपने की अवस्था

गनगनाना-(हिं०क्रि०) शीत से शरीर का कांपना या थरथराना।

गनगौर-(हिं० स्त्री०) चैत्र शुक्ल तृतीया जिस दिन गणेश और गौरी की पूजा होती है।

गनन्ती-(हिं०स्त्री०) देखो गिनती।

गनना-(हिं०क्रि०) गणना करना, गिनना

गनाना-(हिं०क्रि०) गिनने का काम दूसरे से कराना।

गननायक-(हिं०पुं०) देखो गणनायक।

गनपति-(हिं०पुं०) देखो गणपति।

गनाल-(हिं०पुं०) एक प्रकार की तोप।

गनिका-(हिं०स्त्री०) गणिका, वेश्या।

गनियारी-(हिं०स्त्री०) शमी की तरह का एक कांटेदार पौधा जिसकी पत्तियां बबूल के तरह होती हैं। देखो गणिका,

गनेल-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास जिसकी छप्पर बनती है।

गन्तव्य-(सं०वि०) जाने योग्य।

गन्ता-(सं०वि०) गमनकर्ता, जाने वाला

गन्त्री-(सं० स्त्री०) बैलगाड़ी, जानेवाली स्त्री।

गन्ध-(सं०पुं०) घ्राणेन्द्रियगुण, बास, महक, सुगन्ध, लेश, कण, सम्बन्ध, गर्व, अहंकार, गन्ध युक्त पदार्थ, काला अगर।

गन्धक-(सं०पुं०) पीले रंग का एक उपधातु। **गन्धकी**-(हिं०वि) गन्धक के रँग का, हलके पीले रंग का।

गन्धगर्भ-(सं०पुं०) विल्व वृक्ष, बेल का पेड़। **गन्धग्राही**-(सं० स्त्री०) नासिका, नाक। **गन्धजात**-(सं०नपुं०) तेजपत्र, तेजपात। **गन्धधूलि**-(सं०स्त्री०) कस्तूरिका, कस्तूरी।

गन्धन-(सं०नपुं०) उत्साह, प्रकाश, ज्योति, हिंसा। **गन्धनकुल**-(सं०पुं०) छछूंदर, खरवांस। **गन्धपत्री**-(सं० स्त्री०) असगन्ध, अजमोदा।

गन्धपुष्पा-(हिं०स्त्री०) नील का वृक्ष, केतकी। **गन्धभेदन**-(सं०पुं०) लोहा, काला नमक।

गन्धमाद-(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र की सेना के एक बन्दर का नाम, भ्रमर, भौरा। **गन्धमादन**-(सं०पुं०) एक पर्वत का नाम। **गन्धमादिनी**-(सं० स्त्री०) मदिरा, लाह। **गन्धमुखा**-(सं०स्त्री०) छछून्दर।

गन्धमूल-(सं०पुं०) अदरख की तरह का एक पौधा। **गन्धमृग**-(सं०पुं०) कस्तूरी मृग। **गन्धमोदिनी**-(सं०स्त्री०) चम्पा के फूल की कली। **गन्धराज**-(सं०पुं०) मोगरा,बेला,चन्दन,धना।

गन्धर्व-(सं०पुं०) देवयोनि विशेष, जो देवताओं की सभा में गाते बजाते और नाचते हैं (वि०) गायक, मृग, घोड़ा, विधवा का दूसरा पति। **गन्धर्व विद्या**-(सं०स्त्री०) गानविद्या, संगीत; **गन्धर्व विवाह**-(सं०पुं०) आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर और कन्या अपनी इच्छानुसार विवाह कर लेते हैं; **गन्धर्व वेद**-(सं०पुं०) संगीत के मूल ग्रन्थ सामवेद के उपवेदों में से एक।

गन्धर्वा-(सं०स्त्री०) कोकिल, कोयल। **गन्धर्वी**-(सं०स्त्री०) गन्धर्व की पत्नी।

गन्धवती-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, वसुन्धरा।

गन्धवल्कल-(सं० नपुं०) दालचीनी।

गन्धवह-(सं०पुं०) वायु, हवा। **गन्धवारि**-(सं०नपुं०) सुगन्धित जल, गुलाबजल। **गन्धहस्ती**-(सं०पुं०) मतवाला हाथी।

गन्धा-(सं०स्त्री०) चंपाकली, कपूर, वंशलोचन।

गन्धार-(सं०पुं०) एक देश का नाम।

गन्धारी-(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री।

गन्धी-(हिं०पुं०) इत्र और सुगन्धित तेल,बेंचनेवाला, अत्तार, एक प्रकार की घास।

गन्ना-(हिं०पुं०) ईख, ऊख।

गप-(हिं०स्त्री०) झूठी सच्ची इधर उधर की बात, मन को प्रसन्न करनेवाली बात, बकवाद, झूठा समाचार, (पुं०) जल्दी से निगलने का शब्द। **गपशप**-इधर उधर की वार्ता। **गपगप**- जल्दी जल्दी।

गपकना-(हिं०क्रि०) चटपट निगलना, जल्दी से खाना।

गपड़चौथ-(हिं०पुं०) व्यर्थ की बातचीत जो चार आदमी मिलकर करते हैं।

गपना-(हिं०क्रि०) गप मारना, बकबक करना।

गपिया-(हिं०वि०) गप मारने वाला, झूठ बोलने वाला।

गपोड़, गपोड़ा-(हिं०पुं०) झूठी बात। **गपोड़ेबाजी**-(हिं०स्त्री०) झूठी बकवाद।

गप्प-(हिं०पुं०) देखो गप।

गप्पी-(हिं० वि०) बकवादी, डींग मारने वाला, झूठ बोलने वाला।

गप्फा-(हिं०पुं०) बहुत बड़ा ग्रास, बड़ा कौर, लाभ।

गफ़-(हिं०वि०) घना, ठस, घनी बिनावट का।

गबड़ी-(हिं०स्त्री०) कबड्डी का खेल।

गबदी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा पौधा (वि०) सुस्त, मूर्ख, बुद्धिहीन।

गबद्द-(हिं०वि०) मूर्ख जड़, बुद्धिहीन।

गबर-(हिं० पुं०) जहाज़ में का सबसे ऊपर का पाल।

गबरगंड-(हिं०पुं०) अज्ञानी, मूर्ख।

गबरहा-(हिं०वि०) गोबर लगा हुआ।

गबरा-(हिं०वि०) अहंकारी, घमंडी।

गभ-(सं०नपुं०) भग, योनि।

गभस्ति-(सं० पुं०) किरण, प्रकाश, सूर्य, शिव, अग्नि की स्त्री स्वाहा, अंगुली, हाथ, बाँह। **गभस्तिपाणि**-(सं०पु०) सूर्य। **गभस्तिमान्**-(सं०पुं०) एक पाताल, एक द्वीप, (वि०) किरण युक्त।

गभीर-(सं०वि०) गहरा, गहन, घना, दुर्बोध, कठिन, प्रचण्ड।

गभीरिका-(सं०स्त्री०)बहुत धीमे से बोलने वाली स्त्री।

गभुआर-(हिं०वि०) बच्चों को गर्भ का बाल, जिस बाल का मुण्डन न हुआ हो, नादान, छोटा, अनजान।

गम-(सं०पुं०) गमन, यात्रा, पहुँच, उपभोग, मैथुन।

गमक-(सं०वि०) गमयिता, जाने वाला, बोधक, बतलाने वाला, संगीत में स्वर भेद, तबेले का गंभीर शब्द। (हिं०स्त्री०) सुगन्ध। **गमकना**-(हिं०क्रि०) सुगंध निकलना, महकना। **गमकीला**-(हिं०वि०) सुगन्धित, महकने वाला।

गमत-(सं०पुं०) मार्ग, व्यवसाय।

गमथ-(सं०पुं०) पथिक, बटोही।

गमन-(सं०नपुं०) प्रस्थान, प्रयाण, यात्रा, उपभोग, मैथुन, रथ, गाडी इ०।

गमनपत्र-वह पत्र जिसके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने का अधिकार मिलता हो। **गमना**-(हिं० क्रि०) चले जाना, दुखी होना, ध्यान देना। **गमनीय**-(सं०वि०) गम्य, जाने योग्य।

गमाना-(हिं०क्रि०) गँवाना, खोना।

गमार-(हिं० पुं०) गँवार, देहाती, गाँव में रहने वाला।

गमिना-(हिं०क्रि०) ध्यान देना, विनय करना।

गम्भीर-(सं०वि०) गंभीर, गहरा, मन्द शब्द,मेघ का शब्द,घना,गूढ़, जटिल, कठिन, भारी, सौम्य प्रकृति का।

गम्य-(सं०वि०) गमनीय, जाने योग्य; **गम्यमान**-जाने योग्य। **गम्या**-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके साथ संभोग करना शास्त्र के विरुद्ध नहीं है।

गयंद-(हि०पुं०) बड़ा हाथी,दोहेका एक भेद जिसमे तेरह गुरु और बाइस लघु वर्ण होते हैं।

गय-(सं०पुं०) रामचन्द्रकी सेनाका एक बन्दर, धन, सन्तान, घर, आकाश, प्राण,एक असुरका नाम,गया तीर्थ।

गयनाल-(हिं०) देखो गजनाल।

गयशिर-(सं०नपुं०) अन्तरिक्ष, आकाश गया के समीप का एक पर्वत।

गया-(सं०स्त्री०) बिहार का एक तीर्थ जहां हिन्दू पिण्डदान करते हैं,'जाना' क्रिया का भूत काल का रूप; **गया बीता**-हीन दशा में पहुँचा हुआ।

गयारी-(हिं०स्त्री०) कृषक की वह जोत जिसको वह उत्तराधिकारी रहित छोड़कर मर गया हो।

गयाल-(हिं० पुं०) वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

गयवाल-(हिं०पुं०)गया तीर्थका पण्डा।

गयेर-(सं०नपुं०) थूक, लार।

गरंड-(हिं०पुं०) आटा पीसनेकी चक्की के चारों ओर बनाई हुई मेड़।

गर-(सं० नपुं०) विष, वत्सनाभ, बचनाग, रोग, (हिं०पुं०) गरदन, गला; (प्रत्य०) बनानेवाला यथा-बाजीगर, हवाईगर इत्यादि।

गरगज-(हिं० पुं०) गढ़ की भीत, तोप रखने का शिखर जो गढ़की भीत पर बना रहता है, युद्ध की सामग्री रखने की टीला,नाव की पटरों से बनी हुई छत, फांसी की टिकठी (वि०) अति विशाल, बहुत बड़ा।

गरगरा-(हिं० पुं०) घिरनी, चरखा।

गरगवा-(हिं० पुं०) धानके खेत में होने वाली एक प्रकार की घास।

गरज-(हिं० स्त्री०) बहुत गंभीर शब्द, बादल अथवा सिंह का शब्द।

गरजना-(हिं० क्रि०) बड़ा गंभीर शब्द करना, तड़कना,फूटना (वि०) गंभीर शब्द करनेवाला।

गरट्ट-(हिं०पुं०) समूह, झुण्ड।

गरद-(सं० नपुं०) विष, विष देनेवाला

(हिं०) गरदा, धूल ।
गरदना-(हिं०पुं०) मोटी गरदन, झटका या धौल जो गरदन पर पडे ।
गरदनियां-(हिं०स्त्री०) गरदन पकड़ कर किसी मनुष्य को बाहर निकालने की क्रिया ।
गरदनी-(हिं०स्त्री०) कुरते आदिका गला, गले का एक आभूषण, हसुली, गरदनियां, घोड़े की गरदन पर बांधने का कपड़ा, मल्ल युद्धकी एक युक्ति ।
गरदुआ-(हिं०पुं०) पशुओं का एक रोग जिसमें उनका शरीर जकड़ जाता है।
गरना-(हिं० क्रि०) गलना, गड़ना, निचुड़ना ।
गरनाल-(हिं० स्त्री०) बहुत चौड़े मुंह की तोप ।
गरब-(हिं० पु०) देखो गर्व ; हाथी का मद ।
गरबई-(हिं० स्त्री०) अभिमान, घमण्ड ।
गरबाना-(हिं०क्रि०) अभिमान करना ।
गरबगहेला-(हिं०वि०) गर्वी,अभिमानी।
गरबित-(हिं० वि०) देखो गर्वित ; **गरबीला**-(हिं०वि०) घमण्डी,अभिमानी ।
गरभ-(हिं०पुं०) गर्भ ।
गरभाना-(हिं० क्रि०) गर्भिणी होना, गाभिन होना, धान, गेहूं आदि में बाल लगना ।
गरमी-(हिं०वि०) गर्वी, घमण्डी ।
गरमागरमी-(हिं०स्त्री०)उत्साह,मुस्तैदी, लड़ाई झगड़ा, कहा सुनी ।
गरमाना-(हिं०क्रि०) गरम होना, उमंग, में आना, आवेश में आना, क्रोध करना, तपाना, औटाना ।
गरमाहट-(हिं०स्त्री०) उष्णता, गरमी ।
गररा-(हिं०पु०) एक प्रकार का भूरे रंग का घोड़ा ।
गरराना-(हिं० क्रि०) भयंकर ध्वनि करना, गरजना ।
गररी-(हिं०स्त्री०) सिरोही पक्षी ।
गरल-(सं०नपुं०) विष, ज़हर, सर्प का विष; **गरल धर**-शिव, महादेव ।
गरवा-(हिं०वि०) भारी, विशाल ।
गरसना-(हिं०क्रि०) देखो ग्रसना;
गरह-(हिं०पु०) देखो ग्रह ।
गरहन-(हिं०पुं०) ग्रहण ।
गरहर-(हिं०पुं०) नटखट, चौपायों के गले में लटकाने का काठ का टुकड़ा, कुन्दा ।
गरांव-(हिं० पुं०) चौपायों के गले में बाँधने का रस्सी का फन्दा ।
गरा-(हिं० पुं०) देखो गला, ग्रीवा, गरदन ।
गराड़ी-(हिं०स्त्री०) घिरनी,चरखी,साँट ।
गराना-(हिं०क्रि०) गारनेका काम दूसरे से कराना ।
गरारा-(हिं०वि०) गर्वयुक्त,प्रबल,प्रचंड, बलवान्, (पुं०) कुल्ली, कुल्ली करने को ओषधि,बड़ा थैला,चौड़ी मोहरी का पायजामा ।
गराव-(हिं०पु०) तीन मस्तूल का बड़ा जहाज़ ।
गरावा-(हिं०पु०) कम उपजाऊ भूमि ।
गरास-(हिं०पु०) देखो ग्रास, कवर ।
गरासना-(हिं०क्रि०) कष्ट देना, दिक करना ।
गरिमा-(सं०स्त्री०) गुरुता, गौरव, भारीपन, महिमा, भार, अहंकार, घमण्ड, आठ सिद्धियों में से एक ।
गरियाना-(हिं० क्रि०) दुर्वचन कहना, गाली देना ।
गरियार-(हिं०वि०) वह मनुष्य या पशु जो जल्दी से अपने स्थान से न हटे, मट्ठर, सुस्त, आलसी ।
गरियालू-(हिं०पु०) ऊन रंगने का एक प्रकार का रंग ।
गरिष्ठ-(सं०वि०) अत्यन्त गुरु, बहुत भारी, बहुत बड़ा, प्रतिष्ठित, सहज में न पचने योग्य ।
गरी-(हिं०स्त्री०) नारियल के फल के भीतर का गूदा, बीज के भीतर का कोमल भाग, मींगी ।
गरीयस-(सं०वि०) अत्यन्त भारी, प्रतिष्ठित, प्रबल, मर्यादित । **गरीयसी**-महत्व शालिनी ।
गरू, गरुआ-(हिं०वि०) भारी, बड़े भार का, प्रतिष्ठित ।
गरुआई-(हिं०स्त्री०) गरुता, भारीपन ।
गरुआना-(हिं०क्रि०) भारी होना ।
गरुड़-(सं० पुं०) विष्णु के वाहन जो पक्षिराज कहलाते हैं, एक प्रकार की सेना की व्यूह रचना, छप्पय छन्द का एक भेद ; **गरुड़गामी**-(पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण; **गरुड़ध्वज**-(पुं०) विष्णु, एक प्रकारका स्तम्भ जिसके माथे पर गरुड़ बना हो; **गरुड़पाश**-(पुं०) एक प्रकारका फन्दा या फांसी; **गरुड़पुराण**-(नपुं०) अठारह पुराणों के अन्तर्गत सत्रहवां महापुराण ; **गरुड़रुत**-(नपुं०) गरुड़ का शब्द, एक वर्ण वृत्त जिसमें सोलह अक्षर होते हैं ।
गरुड़व्यूह-(सं० पुं०) गरुड़ की आकृति की एक सैन्य रचना ; **गरुड़ाग्रज**-(सं०पुं०) बनिता के ज्येष्ठ पुत्र अरुण जो सूर्य के सारथी हैं ।
गरुत्मान-(सं०पुं०) गरुड़ ।
गरुवाई-(हिं०स्त्री०) देखो गरुआई ; भारीपन ।
गरू-(हिं०वि०) गुरू, भारी ।
गरेरना-(हिं०क्रि०) घेरना, रोकना, छेंकना ।
गरेरा-(हिं०पु०) घेरा ।
गरेरी-(हिं० स्त्री०) गराड़ी, घिरनी ।
गरैया-(हिं०स्त्री०) पशु के गले में बाँधने का फ़न्दा ।
गर्ग-(सं० पुं०) बृहस्पति के वंश में उत्पन्न एक ऋषि, संगीतमें एक ताल, बैल, सांड़, एक पर्वत का नाम ।
गर्गर-(सं० पुं०) एक प्रकारका प्राचीन बाजा ।
गर्गरी-(सं०स्त्री०) दहेड़ी,मन्थनी,कलसी, गगरी ।
गर्ज-(सं०पुं०)हाथी का चिग्घाड़,गर्जन, मेघ का शब्द ।
गर्जन-(सं०नपु०) शब्द, भीषण ध्वनि, गरज, क्रोध, रोष ।
गर्जमान-(सं०वि०) गर्जनेवाला; **गर्जना**-(हिं० क्रि०) गरजना, भीषण ध्वनि करना ।
गर्जित-(सं०वि०) भयंकर शब्द किया हुआ; **गर्त**-(सं० पुं०) भूमि का छिद्र, दरार, गड्ढा, घर, रथ, एक नरक का नाम ।
गर्दन-(हिं०पु०) गरदन, ग्रीवा ।
गर्दभ-(सं०पु०) रासभ, खर, गदहा ।
गर्दभि-(सं०पु०) विश्वामित्रके एक पुत्र का नाम ।
गर्दभी-(सं०स्त्री०) गदही, सफ़ेद भटकटैया ।
गर्नाल-(हिं०पुं०) देखो गरनाल ।
गर्भ-(सं०पु०) पेटके भीतर का बच्चा, भ्रूण, गर्भाशय, कुक्षि, कोख, पनस, नाटक का सन्धिभेद, उदर, पेट, भीतरी, भाग, अन्न, अग्नि, पुत्र ; **गर्भकेसर**-(पु०) फूलों में के बाल सरीखे पतले सूत जो गर्भनाल के भीतर होते हैं; **गर्भकोष**-(पु०)गर्भाशय, बच्चेदानी; **गर्भक्षय**-(पुं०) गर्भ का नाश; **गर्भगृह**-(नपुं०) घर के बीच की कोठरी, घर का मध्यभाग, आँगन, मन्दिर के बीच की वह प्रधान कोठरी जिसमें प्रधान प्रतिमा रक्खी जाती है; **गर्भनाल**-(स्त्री०) फूलों के भीतरी की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भकेसर होताहै; **गर्भपत्र**-(पुं०)कोमल पत्ता, कोंपल; **गर्भपात**-(पुं०) गर्भ का अपरिपक्व अवस्था में गिरजाना ; **गर्भभवन**-(नपुं०) प्रसूतिका गृह, सौरी ; **गर्भमास**-(पुं०) वह महीना जिसमें गर्भाधान हो ; **गर्भवती**-(स्त्री०) वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भिणी ; **गर्भव्यूह**-(पुं०) युद्ध में सेना की एक प्रकार की रचना; **गर्भसंधि**-(स्त्री०) नाटक के पांच प्रकार की सन्धियों में से एक; **गर्भस्थ**-(वि०) जो गर्भ में स्थित हो; **गर्भस्थान**-(नपुं०) गर्भाशय; **गर्भस्राव**-(पुं०) चार महीने तक का गर्भ गिरना; **गर्भहत्या**-(स्त्री०) भ्रूणहत्या, गर्भपात ।
गर्भाङ्क-(सं०पु०) अभिनय के अङ्क का एक भाग,जिसमें केवल एक ही दृश्य होता है ।
गर्भाधान-(सं०नपुं०) दशविध संस्कारों में से पहिला संस्कार जो गर्भ आने पर होता है, गर्भ धारण ।
गर्भाशय-(सं०पुं०) स्त्रियों के पेट में गर्भ धारण करने का स्थान, अर्थात् जिस स्थान में बच्चा रहता है ।
गर्भित-(सं०वि०)पूर्ण,पूरित, भरा हुआ ।
गर्भिणी-(सं०वि०) गर्भवती, गाभिन ।
गर्रा-(हिं०वि०) लाह के रंग का, (पुं०) इस रंग का घोड़ा, लाही रंग का कबूतर, चरखी, गड़ारी, सतलज नदी का नाम ।
गर्री-(हिं०स्त्री०) तार लपेटनेकी चर्खी ।
गर्व-(सं० पु०) अहंकार, अभिमान, घमंड ।
गर्ववंत-(हिं०वि०) अभिमानी, घमण्डी ; **गर्वाना**-(हिं०क्रि०) गर्व करना, घमण्ड करना ; **गर्वित**-(सं०वि०) गर्वयुक्त, अभिमानी ।
गर्विता-(सं०स्त्री०) वह नायिका जिसको अपने रूप गुण तथा पति के प्रेम का घमण्ड हो ।
गर्विष्ट-(सं०वि०) गर्वयुक्त, अहंकारी, घमंडी ।
गर्वी-(हिं०वि०) अहंकारी, घमण्डी ; **गर्वीला**-(हिं० वि०) अभिमान से भरा हुआ, घमंडी ।
गर्हण-(सं० नपु०) निन्दा ; **गर्हणा**-(सं०स्त्री०) देखो गर्हण ।
गर्हणीय-(सं०वि०) निन्दनीय, निन्दा करने योग्य ।
गर्हा-(सं०स्त्री०) निन्दा ।
गर्ही-(सं०वि०) निन्दा करने वाला ।
गर्ह्य-(सं०वि०) अधम, निन्दनीय, नीच
गल-(सं०पुं०) गला, कण्ठ । **गलकंबल**-(सं०पु०)गाय के गले की लटकती हुई झालर ।
गलंश-(हिं०स्त्री०) वह सम्पत्ति जिसका स्वामी मर गया हो और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो ।
गलका-(हिं०पु०) एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग में होता है ।
गलकोड़ा-(हिं०पु०) एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक, मल्लयुद्ध की एक युक्ति । **गलगण्ड**-(सं०पु०) गले का एक रोग,गण्डमाला,घेघे का रोग ।
गलगंजना-(हिं०क्रि०) कोलाहल करना ।
गलगल-(हिं०पु०) मैना की जाति की एक चिड़िया, एक प्रकार का बड़ा नीबू जो बड़ा खट्टा होता है ।
गलगला-(हिं०वि०) आर्द्र, भींगा हुआ । **गलगलाना**-(हिं०क्रि०) भिगाना, आर्द्र करना ।
गलगलिया-(हिं०स्त्री०)सिरोही के प्रकार का एक पक्षी ।
गलगाजना-(हिं०क्रि०) आनन्द से गरजना, गाल बजाना ।
गलगुच्छा-(हिं०पुं०) देखो गलमुच्छा ।
गलगुथना-(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट, जिसका शरीर भरा तथा गाल फूले हों ।
गलग्रह-(सं०पुं०) मछली का कांटा जो गले में धँस जावे, सहज में न हटने वाली आपत्ति ।
गलग्राह-(सं०पुं०) मगर ।
गलचुमनी-(हिं०स्त्री०) कान का गाल तक लटकने वाला आभूषण ।

गलछट-(हिं०स्त्री०) गलफड़ा।
गलजंदड़ा-(हिं०वि०) सर्वदा साथ करने वाला, गले का हार, रुमाल या कपड़े की पट्टी जो हाथ की चोट या घाव पर सहारा देने के लिये बाँधी जाती है
गलजोड़, गलजोत-(हिं०स्त्री०) एक बैल को दूसरे बैल के गले में लगाकर बाँधने की रस्सी, गले का हार।
गलझंप-(हिं०पुं०) हाथी के गले में पहिराने की झूल या सिकड़ी।
गलतंग-(हिं०वि०) अचेत, बेसुध।
गलतंस-(हिं०पुं०) ऐसा मनुष्य जो बिना सन्तति छोड़े मर गया हो।
गलतकिया-(हिं०पुं०) गालों के नीचे रखने की कोमल गोल तकिया।
गलताड़-(हिं०पुं०) जुए की खूंटी जो मुड़ी होती है।
गलतान-(हिं०वि०) लुड़कता हुआ, जर्जर, फटा पुराना।
गलथना-(हिं०पुं०) बकरियों के गरदन की दोनों ओर लटकती हुई थैलियाँ।
गलथैली-(हिं०स्त्री०) बन्दरों के गाल के नीचे की थैली जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं।
गलदेश-(सं०पुं०) ग्रीवा, गला, गरदन।
गलन-(सं०नपुं०) गलकर गिरना, पतन
गलनहाँ-(हिं०पुं०) हाथी के नख का एक रोग जिसमें ये गिर जाते हैं।
गलना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ का घनत्व नष्ट होना, जीर्ण होना, शरीर का दुर्बल होना, किसी काम का न रहना, ठंढक से हाथ पैर ठिठुरना, निष्फल होना, शरीर में सूजन होना,
गलनीय-(सं०वि०) गलने या सड़ने योग्य
गलफड़ा-(हिं०पुं०) जल जन्तुओं में पानी के भीतर सांस लेने का अवयव जो मस्तक के दोनों ओर रहता है, गालों के दोनों जबड़े के बीच का मांस
गलफांस-(हिं०स्त्री०) मालखंभ का एक व्यायाम।
गलफांसी-(हिं०स्त्री०) गले की फाँसी, कष्टदायक, कार्य, जंजाल।
गलफूट-(हिं०स्त्री०) बड़बड़ानेका अभ्यास
गलफूला-(हिं०वि०) जिसका गाल फूला हो, गला फूलने का एक रोग।
गलफ़ड़े-(हिं०पुं०) गले में की गिलटी।
गलबंदनी-(हिं०स्त्री०) गले का एक गहना
गलबल-(हिं०पुं०) कोलाहल, गड़बड़ी, खलबली।
गलबाँही, गलबहियाँ-(हिं०स्त्री०) गले में प्रेम से बाँह डालना।
गलभङ्ग-(सं०पुं०) गले का एक रोग, स्वरभंग।
गलमंदरी-(हिं०स्त्री०) गलमुद्रा जो शिवजी के पूजन में उपयोग होती है, गाल बजाना, व्यर्थ की गप लगाना।
गलमुच्छा-(हिं०पुं०) दोनों गालों पर बढ़ाये हुए बाल।
गलमुद्रा-(सं०स्त्री०) देखो गलमंदरी।
गलमेखला-(सं०स्त्री०) गले का हार, माला
गलवाना-(हिं०क्रि०) गलाने का काम दूसरे से कराना।
गललग्न-(सं०वि०) गले में लिपटा हुआ
गलव्रत-(सं०पुं०) मयूर, मोर।
गलशुण्डी-(सं०स्त्री०) जीभ के जड़ के पास गले के भीतर होने वाला एक रोग जिसमें मांस का टुकड़ा निकल आता है।
गलसिरी-(हिं०स्त्री०) गले में पहिरने का एक आभूषण।
गलसुआ-(हिं०पुं०) गाल के नीचे का भाग सूजने का एक रोग।
गलसुई-(हिं०स्त्री०) गलत किया।
गलस्तन-(सं०पुं०) बकरे के गले के दोनों ओर लटकती हुई स्तन के आकार की थैली, गलथन।
गलहंड-(हिं०पुं०) गला फूलने का रोग, घेघा।
गलही-(हिं०स्त्री०) नाव का अगला ऊपरी भाग।
गला-(हिं०स्त्री०) शरीर का वह भाग जो सिर को धड़ से जोड़ता है, गलदेश, गरदन, कंठ, गले के भीतर की नाली जिसमें से शब्द निकलता है और आहार पेट के भीतर जाता है, कंठस्वर, गले का शब्द, कुरते, अंगरखे इत्यादि का गले पर का भाग, पात्र का ऊपरी पतला भाग; **गला काटना**-बहुत हानि पहुँचाना, गले में खुजली उत्पन्न करना; **गला घुटना**-सांस लेने में कष्ट होना; **गला घोंटना**-गला दबा कर मार डालना; **गला छूटना**-छुटकारा मिल जाना; **गला दबाना**-दबाव डाल कर कोई काम कराना; **गला फ़ाड़ना**-वेग से चिल्लाना; **गले का हार**-अत्यन्त प्रिय व्यक्ति या वस्तु; **गले के नीचे उतरना**-चित्त पर बैठ जाना; **गले पड़ना**-इच्छा न होते हुए मिल जाना; **गले मढ़ना**-हठ करके देना।
गलाऊ-(हिं०वि०) जो गलता हो, गलाने वाला।
गलाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु के संयोजक अणुओं को अलग अलग करके उसको द्रवित करना, कोमल करना, धन व्यय करना, धीरे धीरे लुप्त करना।
गलानि-(हिं०स्त्री०) दुःख या पश्चात्ताप के कारण खिन्नता, खेद, दुःख।
गलावट-(हिं०स्त्री०) गलने का भाव या क्रिया, गलने वाली वस्तु।
गलित-(सं०वि०) भ्रष्ट, ध्वस्त, पतित, द्रवित, गला हुआ, नीति भ्रष्ट, महापातकी, जीर्ण, खंडित, परिपक्व, पुराना हो गया हुआ। **गलित कुष्ठ**-(सं०नपुं०) वह कोढ़ का रोग जिसमें अंग गल गल कर गिरने लगते हैं। **गलित यौवना**-(सं०स्त्री०) ढलती जवानी की स्त्री।
गलिया-(हिं०स्त्री०) चक्की का छेद जिसमें पीसने के लिये अन्न डाला जाता है (वि०) मट्ठर, आलसी।
गलियारा-(हिं०पुं०) छोटी गली, घर का संकीर्ण मार्ग। **गलियारी**-(हिं०स्त्री०) मार्ग, गली।
गली-(हिं०स्त्री०) पतला मार्ग जो दो घरों की पंक्तियों के बीच में रहता है, मोहल्ला, खोरी; **गली गली मारे फिरना**-जीविका प्राप्त करने के लिये इधर उधर घूमना।
गलेबाज-(हिं०वि०) सुरीले शब्द का, अच्छा गाने वाला।
गलेफ़-(हिं०पुं०) देखो गिलाफ़।
गलेस्तनी-(हिं०स्त्री०) बकरी, अजा।
गलैचा-(हिं०पुं०) देखो गलीचा।
गलौना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सुरमा
गलौआ-(हिं०पुं०) बन्दरों के गले के भीतर की थैली जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं।
गल्प-(हिं०स्त्री०) छोटी कहानी, मिथ्या प्रवाद, डींग।
गल्लई-(हिं०वि०) गल्ले के रूपमें दी हुई खेत की लगान, बंटाई।
गल्ल-(हिं०पु०) गाल।
गल्ला-(हिं०पुं०) कोलाहल।
गव-(हिं०पुं०) श्रीरामचन्द्र की सेना के एक बन्दर का नाम।
गवँ-(हिं०स्त्री०) आशय, घात, अवसर।
गवन-(सं०पुं०) प्रस्थान, चलना, जाना, वधू का पहिले पहिल पति के घर जाना, गौना; **गवनचार**-गौने की विधि। **गवनना**-(हिं०क्रि०) प्रस्थान करना, जाना। **गवना**-(हिं०पुं०) वधू का पहिले पहिल पति के घर जाना।
गवय-(सं०पुं०) गाय की जात का एक पशु नीलगाय, रामजी की सेना के एक बन्दर का नाम, एक प्रकार का छन्द।
गवल-(सं०पुं०) जंगली भैंसा, अरना।
गवहियाँ-(हिं०पुं०) अतिथि, पाहुन।
गवाक्ष-(सं०पुं०) झरोखा, छोटी खिड़की, रामजीके सेनाका एक वानर सेनापति **गवाख**-(हिं०पुं०) देखो गवाक्ष।
गवामयन-(सं०नपुं०) दस या बारह महीने में समाप्त होनेवाला एक यज्ञ
गवाँना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, खोना।
गवामृत-(सं०नपुं०) गाय का दूध, गोदुग्ध
गवाशन-(सं०पुं०) गोमांस खाने वाला, गोभक्षक।
गवास-(हिं०पुं०) कसाई, हत्यारा।
गविष्ठ-(सं०वि०) स्वर्गस्थित, भूमिस्थित
गवीश-(हिं०पुं०) सांड, विष्णु।
गवेजा-(हिं०पुं०) गपशप, वार्तालाप।
गवेधु-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का धान्य।
गवेरिक-(सं०नपुं०) एक प्रकार की लाल मिट्टी।
गवेरुक-(सं०नपुं०) लाल मिट्टी, गेरु।
गवेल-(हिं०वि०) गँवार, देहाती।
गवेषणा-(सं०स्त्री०) अन्वेषण, खोज।
गवेषी-(सं०वि०) खोज करने वाला।
गवैया-(हिं०वि०) गायक, गानेवाला।
गवैहाँ-(हिं०वि०) ग्रामीण, गाँव में रहने वाला, देहाती।
गव्य-(सं०वि०) गौ से उत्पन्न, गौ से प्राप्त यथा-दूध, दही, घी, गोबर, गो मूत्र आदि (पुं०) गाय का झुंड, पञ्चगव्य, धनुष की डोरी।
गव्यूत, गव्यूति-(सं०नपुं०) दो सहस्त्र धनुष की दूरी दो कोष।
गसना-(हिं०क्रि०) जकड़ना, गाँठना।
गसीला-(हिं०वि०) जकड़ा हुआ, गुथा हुआ।
गस्सा-(हिं०पुं०) ग्रास, कौर।
गहँडिल-(हिं०वि०) गन्दला, मटमैला।
गह-(हिं०स्त्री०) पकड़, पकड़ने या थांभने की क्रिया, किसी शस्त्र की मूठ; **गहबैठना**-मूठ पर पूरी तरह से हाथ बैठना।
गहकना-(हिं०क्रि०) लालसा से पूर्ण होना, ललकना उमंगसे पूर्ण होना।
गहकोड़ा-(हिं०पुं०) ग्राहक।
गहगड्ड-(हिं०वि०) गहरा, भारी, घोर।
गहगगह-(हिं०वि०) प्रफुल्लित, आनन्द से भरा हुआ। **गहगहा**-(हिं०वि०) आनन्द से भरा हुआ। **गहगहाना**-(हिं०क्रि०) आनन्दमें मग्न होना, अति प्रसन्न होना, लहलहाना। **गहगहे**-(हिं०क्रि०वि०) धूम धाम से, बड़ी प्रसन्नता से।
गहडोरना-(हिं०क्रि०) पानी को हिला कर मलिन करना।
गहन-(सं०नपुं०) वन, जंगल, दुख, कष्ट, गहराई, दुर्गम स्थान, (पुं०) जल, पानी, गहराई (वि०) दुर्गम, गहरा, घना, अथाह, (हिं०पुं०) ग्रहण, दोष, कलंक, कष्ट, विपत्ति।
गहना-(हिं०पुं०) आभूषण, बंधक, (क्रि०) पकड़ना, धरना।
गहनि-(हिं०स्त्री०) टेक, हठ, पकड़।
गहनी-(हिं०स्त्री०) पशुओं के दाँत हिलने का रोग।
गहबर-(हिं०वि०) विषम, आवेग पूर्ण, उद्विग्न, व्याकुल। **गहबरना**-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना, घबड़ाना।
गहरना-(हिं०क्रि०) विलंब करना, देर करना।
गहरवार-(हिं०वि०) एक क्षत्रिय वंश का नाम।
गहरा-(हिं०वि०) जिसमें भूमितल बहुत नीचे जाकर पाई जावे, गंभीर, जो पृथ्वी तल के भीतर बहुत दूर तक चला गया हो, प्रचण्ड, अधिक, भारी निम्न, दृढ़, गाढा, कठिन; **गहरे पेटका**-रहस्य को गुप्त रखने वाला **गहरा असामी**-धनी मनुष्य; **गहरे लोग**-धूर्त लोग; **गहरा हाथ**-शस्त्र की भरपूर मार; **गहरी छनना**-खूब भांग घुटना। **गहराई**-(हिं०स्त्री०) गंभीरपन, गहरापन। **गहराना**-

(हिं०क्रि०) गहरा होना या करना।
गहराव-(हिं०पुं०) गहराई, गहरापन।
गहरु-(हिं०स्त्री०) बिलंब, देर।
गहरे-(हिं०क्रि०वि०) अच्छी तरह से, यथेच्छ, खूब। **गहरेबाजी**-(हिं०स्त्री०) इक्के के घोड़े की तीव्र गति।
गहलोत-(हिं०पुं०) राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा।
गहवा-(हिं०पुं०) संडसी। **गहवाना**-(हिं०क्रि०) पकड़ने का काम दूसरे से कराना। **गहवारा**-(हिं०पु०) झूला, हिंडोला।
गहाई-(हिं०स्त्री०) पकड़ने का काम, पकड़।
गहागड्ड-(हिं०वि०) देखो गहगड्ड।
गहाना-(हिं०क्रि०) पकड़ाना, धराना।
गहिराव-(हिं०पुं०) देखो गहराव।
गहिरो-(हिं०वि०) गहरा, गंभीर।
गहिला-(हिं०वि०) उन्मत्त, पागल।
गहीर-(हिं०वि०) गहरा।
गहीला-(हिं०वि०) अभिमानी, मदोन्मत्त, पागल।
गहु-(हिं०स्त्री०) छोटा रास्ता, गली। (क्रि०) पकड़ो,
गहुआ-(हिं०पुं०)छोटे मुखकी संडसी।
गहुरो-(हिं०स्त्री०) धरोहर रखने का शुल्क।
गहेजुआ-(हिं० पुं०) छछूंदर।
गहेलरा-(हिं०वि०)पागल, मूर्ख, गँवार।
गहेला-(हिं०वि०) हठी, अहंकारी, घमण्डी, पागल, मूर्ख, अज्ञानी।
गहैया-(हिं०वि०) पकड़ने वाला, ग्रहण करने वाला, अंगीकार करने वाला।
गह्वर-(स०नपुं०) गर्त, बिल, कन्दरा, पाखण्ड, वन, रुलाई, विषम स्थान, गुफा, निकुंज, लतागृह, गुप्त स्थान, झाड़ी (वि०) दुर्गम, गुप्त, विषम। **गह्वरित**-(सं०वि०) गुप्त, निस्तब्ध, घबड़ाया।
गाँकर-(हिं०स्त्री०) अरहर की लिट्टी।
गांछना-(हिं०क्रि०) गाँथना, गूंथना।
गाँजना-(हिं०क्रि०) ढेर लगाना, एक के ऊपर एक लादना, राशि लगाना।
गाँजा-(हिं०पु०) एक पौधा जिसकी कली तमाखू की तरह चिलम पर पी जाती है, यह बहुत उन्मादक होती है।
गाँठ-(हिं०स्त्री०)ग्रन्थि, गिरह जो डोरी, धागे ई० में पड़जाती है, बोरा, गठरी, शरीर के अंग का जोड़, पर्व, ऊख की पोर, गट्ठा, घास फूस का बँधा हुआ बोझ; **मनकीगांठ खोलना**-बिना कुछ छिपाये बातें करना, **गाँठका पूरा**-धनवान्, धनी, **गाँठ जोड़ना**-विवाह की रीति पूरी करना; **गाँठमें बाँधना**-अच्छी तरह स्मरण रखना; **गाँठखोलना**-रहस्य उद्घाटित करना; **गांठकट**-(पुं०) गिरह कट, ठग, चोर। **गांठ गोभी**-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की गोभी जिसमें गूदेदार गोभी होती है; **गांठदार**-(हिं०वि०) जिसमें बहुत-सी गांठ हो।
गाँठना-(हिं०क्रि०) गांठ देना, बाँधकर मिला देना, मिलाना, साटना, जोड़ना, अनुकूल करना, वश में लाना, आक्रमण रोकना, पैवन या चकती लगाना; **मतलब गाँठना**-अपना काम निकाल लेना।
गांठी-(हिं०स्त्री०) देखो गांठ।
गाड़-(हिं०स्त्री०) गुदा, किसी पदार्थ का नीचे का भाग, मलद्वार।
गाँडर-(हिं०स्त्री०) मूज की तरह की एक लंबी घास।
गाँड़ा-(हिं०पुं०) किसी वृक्ष या पौधे का कटा हुआ भाग, ऊख की कटी हुई गड़ेरीं जो कोल्हू में पेरने के लिये डाली जाती है, गंड़ेरी, केतारी।
गाँडू-(हिं०वि०) गुदा मैथुन कराने वाला, कायर, नीच डरपोक।
गांती-(हिं०स्त्री०) देखो गाती।
गांथना-(हिं०क्रि०) गूंथना, मिलाना, जोड़ना, मोटी सिलाई करना।
गाँव-(हिं०पुं०) किसानों के रहने का स्थान, छोटी वस्ती, ग्राम।
गाँस-(हिं०स्त्री०) ग्रन्थन, बन्धन, प्रतिरोध, बैर, ईर्षा, हृदय की गुप्त बात, तीर या बरछी का फल, अस्त्र का नुकीला भाग, अधिकार, शासन, फन्दा, गठन, देखरेख, कठिनता।
गाँसना-(हिं०क्रि०) गूथना, गठना, कसना, ठस करना, ठूसना, भरना, पकड़ में लाना, चुभाना,
गाँसी-(हिं०स्त्री०) तीर या बरछी का फल, किसी अस्त्र का अगला भाग, गाँठ, छल, कपट।
गांहक-(हिं०पुं०) देखो ग्राहक।
गाह, गाई-(हिं०स्त्री०) गाय।
गाउघप्प-(हिं०वि०) दूसरे की वस्तु को अपनाने वाला।
गागर-(हिं०स्त्री०) गगरी, छोटा घड़ा। **गागरी**-(हिं०स्त्री०) घड़ा, गगरी।
गाङ्ग-(सं०पुं०) गंगापुत्र, भीष्म, कार्तिकेय, सोना, धतूरा, केसर (वि०) गंगा से निकाला हुआ, वर्षा का पानी। **गाङ्गेय**-(सं०पुं०) भीष्म, कार्तिकेय, धतूरा, कसेरु।
गाच-(हिं०पुं०) फुलवर, सूती वस्त्र, महीन जालीदार कपड़ा जिसपर रेशम के बेल बूटे कढे होते हैं।
गाछ-(हिं०पु०) छोटा वृक्ष पौधा, वृक्ष
गाछी-(हिं०स्त्री०) खजूर की कोमल पत्ती, छोटे वृक्षों की वारी।
गाज-(हिं०स्त्री०) गर्जन, गरज, बिजली गिरने का शब्द, बिजली, वज्र; **गाजपड़ना**-आपत्ति आना, वज्रपात होना, नाश होना। **गाजना**-(हिं०क्रि०) गरजना, चिल्लाना, प्रसन्न होना, प्रफुल्ल होना।
गाजर-(हिं०पुं०) एक मीठे कन्द का पौधा; **गाजर मूली समझना**-तुच्छ जानना।
गाड़-(हिं०स्त्री०) गर्त, गड्ढा, अन्न भरने का गड्ढा, कुवें की ढाल, खत्ती, खेत की मेड़, बाढ। **गाड़ना**-(हिं०क्रि०) पृथ्वीमें गड्ढा खोदकर उसमे कोई वस्तु रखकर मिट्टी से ढांपना, तोपना, जमाना, धँसाना, छिपाना, गुप्त रखना।
गाडर-(हिं०स्त्री०) भेड़ (अं०स्त्री०) लोहे की धरन।
गाड़ा-(हिं०पुं०) छकड़ा, बैलगाड़ी, गड्ढा जिसमें प्राचीन काल में लोग छिप कर शत्रु, ठग आदि का अन्वेषण करते थे।
गाडी-(हिं०स्त्री०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर मनुष्य आदि पहुँचाने का पहिये दार यन्त्र, यान, शकट; **गाडीखाना**-गाड़ी रखने का स्थान; **गाडीवान**-गाड़ी हांकने वाला, कोचवान।
गाढ-(सं०नपुं०) अतिशय, दृढ़रूप (वि०) घना, गाढा, गहरा, अथाह, विकट, कठिन, दुर्गम, अधिक, बहुत, दृढ़, (पुं०) संकट, आपत्ति, कठिनाई; **गाढमुष्टि**-कंजूस।
गाढा-(हिं०वि०) जो बिलकुल पतला न हो, जिसके तन्तु परस्पर सटे हों, मोटा (वस्त्र) गञ्जी, गूढ़, घनिष्ठ, गहरा, विकट, कठिन खद्दर; **गाढी-कमाई**-बड़े परिश्रम से कमाया हुआ धन; **गाढे का साथी**-संकट काल में साथ देने वाला; **गाढेदिन**-सकट काल
गाढे-(हिं०क्रि०वि०) भली भांति, अच्छी तरह से।
गाणपत गाणपत्य-(सं०वि०) गणपति संबंधी, (पुं०) गणेश का उपासक।
गाणिक्य-(सं०नपुं०) वैश्या का झुंड।
गाण्डिव-(सं०पु०) अर्जुन के धनुष का नाम।
गात-(हिं०पुं०) गात्र, शरीर का अंग, स्तन, कुच, गर्भ।
गाता-(हिं०पुं०) गाने वाला, गवैया।
गाती-(हिं०स्त्री) गले में लटने का वस्त्र, बच्चों के गले में लपेटने का रूमाल।
गात्र-(सं०नपुं०) शरीर, देह, अंग, इन्द्रिय; **गात्रमार्जनी**-गमछा, तौलिया; **गात्ररुह**-लोम, बाल; **गात्रवती**-श्रीकृष्ण की कन्या का नाम।
गाथ-(सं०पुं०) गान, स्तोत्र, यश, प्रशंसा
गाथक-(सं० पुं०) गायक गाने वाला।
गाथा-(सं०स्त्री) स्तुति, एक प्रकार का छन्द जिसमें स्वर का नियम नहीं रहता और सुनने में गद्य के सदृश जान पड़ता है, गीत, एक प्रकार का मात्रावृत्त, आर्या छन्द, प्राकृत भाषा, संस्कृत तथा प्राकृत मिला हुआ श्लोक
गाथान्तर-(सं०पुं०)एक कल्प का नाम।
गाथिका-(सं०स्त्री०)स्तुतिके निमित्तश्लोक
गाथी-(सं०वि०) सामवेद गाने वाला।
गाद-(हिं०स्त्री०) तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई वस्तु, तलछट, कोई गाढ़ी वस्तु
गादड़-(हिं०वि०) डरपोक, कायर, सुस्त; (पुं०) गीदड़, सियार, मेढा।
गादर-(हिं०वि०)आलसी, भीरु, डरपोक।
गादा-(हिं०पुं०) खेत का कच्चा या अधपका अन्न महुवे का पेड़ से टपका हुआ फल।
गादी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पक्वान्न, देखो गद्दी।
गादुर-(हिं०पुं०) चमगादड़।
गाध-(सं०पुं०) स्थान, लोभ, प्राप्त करने की लालसा, तलस्पर्श, थाह, जल के नीचे का स्थान, नदी का बहाव, (वि०) अल्प, थोड़ा, हल कर पार करने योग्य, छिछला।
गाधि-(सं०पुं०) विश्वामित्र के पिता का नाम।
गान-(सं०स्त्री०)गाने की क्रिया, गीत, संगीत **गानविद्या**-(सं०स्त्री०) संगीत विद्या।
गाना-(हिं०क्रि०) ताल सुर में मुख से मधुर ध्वनि निकालना, विस्तार सहित वर्णन करना, स्तुति करना, (पुं०) गाने की क्रिया, गान; **अपनी ही गाना**-अपने ही संबंध की वार्ता करते रहना।
गान्धर्व-(सं०नपुं०) आठ प्रकार के विवाहों में से एक, भारतवर्ष का एक उपद्वीप (वि०) गन्धर्व देश में उत्पन्न।
गान्धार-(सं०पुं०)एक प्राचीन जनपद का नाम, एक राग का नाम, कंधार देश।
गान्धारी-(सं०स्त्री०) धृतराष्ट्र की राजपत्नी का नाम।
गान्धिक-(सं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, सुगन्धित पदार्थ बेचनेवाला।
गान्धी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा, एक प्रजार की घास।
गाभ-(हिं०पु०) पशुओं का गर्भ।
गाभा-(हिं०पुं०) हलके रंग का नया निकला हुआ पत्ता, कोंपल, केले आदि पौधे के भीतर का भाग, तोशक के भीतर से निकाली हुई पुरानी रूई, कच्चा अन्न।
गाभिन, गाभिनी-(हिं०वि०) गर्भिणी, जिसके पेट में बच्चा हो।
गाम-(हिं०पुं०) गाँव, ग्राम।
गामी-(सं०वि०) चलनेवाला जानेवाला, यात्रा करनेवाला, संभोग करनेवाला।
गाम्भीर्य-(सं०नपुं०) गम्भीरता, दृढ़ता, धैर्य
गाय-(हिं०स्त्री०) गौ, बहुत सीधा सादा मनुष्य।
गायक-(सं०वि०) गवैया, गानेवाला।
गायकवाड़-बड़ोदा नरेश की उपाधि।
गायगोठ-(हिं०स्त्री०) गोशाला।
गायताल-(हिं०पुं०) निकृष्ट पदार्थ।
गायत्री-(सं०स्त्री०) एक वैदिक मन्त्र जिसमें सूर्य की उपासना की जाती है, यह द्विजों का सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है, चौबीस अक्षर का एक वैदिक छन्द,

दुर्गा, गंगा, खदिर, खैर।
गायन-(सं॰वि॰) गाने का व्यवसाय करनेवाला, गीत गाकर जीविका का निर्वाह करनेवाला।(पुं॰) कार्तिकेय।
गायिनी-(सं॰स्त्री॰) गानेवाली स्त्री, एक मात्रिक छन्द।
गार-(हिं॰स्त्री॰) गाली।
गारड़ू-(हिं॰पुं॰) गरुडी।
गारना-(हिं॰क्रि॰) दबा कर पानी निकालना, निचोड़ना, निकालना, कष्ट देना।
गारा-(हिं॰पुं॰) मिट्टी या चूना सुर्खी आदि में जल मिलाकर बनाया हुआ लेप जो ईंटों की जोड़ाई के काम आता है।
गारी-(हिं॰स्त्री॰) दुर्वचन, गाली, कलंक का आरोपण।
गारुड़-(सं॰नपुं॰) सर्प का विष उतारने का मन्त्र, गरुड़ के आकार की व्यूह-रचना, सुवर्ण, एक अस्त्र विशेष।
गारुड़िक, गारुड़ी-(सं॰पुं॰) सर्प का विष उतारनेवाला, विष वैद्य।
गारो-(हिं॰पुं॰) गर्व, अहंकार, घमंड, अभिमान, प्रतिष्ठा, सम्मान।
गार्गी-(सं॰स्त्री॰) गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री, दुर्गा, याज्ञवल्क्य की स्त्री।
गार्भिक-(सं॰वि॰) गर्भ सम्बन्धी।
गार्हपत्याग्नि-(सं॰स्त्री॰) छ प्रकार की अग्नियों में से प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिये
गार्हस्थ्य-(सं॰नपुं॰) गृहस्थाश्रम, गृहस्थ के पाँच प्रधान कर्तव्य।
गाल-(हिं॰पुं॰) कपोल, गण्ड, मध्य भाग, जितना खाद्य पदार्थ एक बार मुंह में डाला जाय, **गाल फुलाना**-रूठना; **गाल बजाना**-गर्व दिखलाना; **काल के गाल में जाना**-मृत्यु को प्राप्त होना; **गाल करना**-बढ़बढ़ कर बातें करना। **गालगूल**-(हिं॰पुं॰) वृथा की बकवाद, गपशप।
गालन-(सं॰नपुं॰) कपड़े में छानने का काम।
गालमसूरी-(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार का पक्वान्न।
गालव-(सं॰पुं॰) लोध का वृक्ष, एक ऋषि का नाम, एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्र-कार का नाम।
गाला-(हिं॰पुं॰) धुनी हुई रूई का गीला, जो सूत कातने के लिये बनाया जाता है, लाह, बड़बड़ करने का अभ्यास।
गालित-(सं॰वि॰) द्रवीकृत, गलायाहुआ
गाली-(हिं॰स्त्री॰) दुर्वचन, निन्दा, कलंक सूचक वाक्य; **गाली खाना**-दुर्वचन सुनना; **गाली देना**-दुर्वचन का प्रयोग करना। **गाली गलौज**-(हिं॰स्त्री॰) दुर्वचन, परस्पर गाली प्रदान।
गालना-(हिं॰क्रि॰) बोलना, बात करना
गालू-(हिं॰वि॰) व्यर्थ का अभिमान करने वाला, गप्पी।
गावदी-(हिं॰वि॰) अबोध, नासमझ, बेवकूफ।
गावन-(हिं॰स्त्री॰) गाने की क्रिया।
गावपछाड़-(हिं॰स्त्री॰) मल्ल युद्ध की एक युक्ति।
गावली-(हिं॰स्त्री॰) दलाली।
गावसुम्मा-(हिं॰पुं॰) फटे हुए सूम का घोड़ा।
गास-(हिं॰पुं॰) दुःख, संकट, आपत्ति।
गासिया-(हिं॰पुं॰) पशु के पीठ पर रखने का गद्दा।
गाह-(सं॰पुं॰) गहन, दुर्गम, घात, पकड़, मगर, ग्राह, ग्राहक।
गाहक-(हिं॰पुं॰) खरीदार, मोल लेने वाला, आदर करने वाला, चाहने वाला; **जान का गाहक**-अति कष्ट देनेवाला, प्राण मारनेवाला।
गाहकताई-(स्त्री॰) प्रतिष्ठा।
गाहकी-(हिं॰स्त्री॰) बिक्री, गाहक।
गाहन-(सं॰नपुं॰) स्नान, गोता लगाने की क्रिया।
गाहना-(हिं॰क्रि॰) डुबकी लगाकर थाह लेना, मथना, हलचल मचाना, झटकार कर पौधे में से अन्न अलग करना।
गाहा-(हिं॰स्त्री॰) कथा, वर्णन चरित्र, वृत्तान्त, आर्या छन्द का एक नाम।
गाहित-(सं॰वि॰) भीतर गया हुआ, कांपता हुआ।
गाही-(हिं॰स्त्री॰) पांच वस्तुओं का समूह
गाहू-(हिं॰स्त्री॰) उपगीति छन्द का नाम
गिंजना-(हिं॰क्रि॰) हाथ लगने या उलट जाने के कारण किसी वस्तु (कपड़े इ॰) का नष्ट हो जाना या करना
गिंजाई-(हिं॰स्त्री॰) गिंज जाने की क्रिया, एक प्रकार का बरसाती कीड़ा
गिंदर-(हिं॰पुं॰) कृषिफल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीड़ा
गिंदौड़ा, गिदौरा-(हिं॰पुं॰) चीनी को ढालकर जमाई हुई मोटी रोटी, यह विवाहादि मे व्यवहार की जाती है।
गियान-(हिं॰पुं॰) ज्ञान।
गिउ-(हिं॰पुं॰) गला, ग्रीवा, गरदन।
गिचपिच-(हिं॰वि॰) अस्पस्ट, एक में एक मिला हुआ। **गिचमिचिया**-(हिं॰वि॰) देखो गचपचिया। **गिचर-पिचर**-(हिं॰वि॰) देखो गिचपिच।
गिजगिजा-(हिं॰वि॰) गाली, छूने में कोमल।
गिटकिरी-(हिं॰स्त्री॰) तान लगाने में स्वर का कांपना।
गिटकोरी-(हिं॰स्त्री॰) ककड़ी।
गिटपिट-(हिं॰स्त्री॰) निरर्थक शब्द; **गिटपिटकरना**-अव्यक्त भाषण करना
गिट्टक-(हिं॰स्त्री) कंकड़ जो चिलम में छिद्र के ऊपर रक्खा जाता है।
गिट्टा-(हिं॰पुं॰) कंकड़, रोड़ा।
गिट्टी-(हिं॰स्त्री॰) पत्थर या ईंट के छोटे टुकड़े जो छत पर फैलाकर पीटे जाते हैं, मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा, चिलम की गिट्टक, तागे की गंड़ारी।
गिड़गिड़ाना-(हिं॰क्रि॰) अधिक नम्रता से प्रार्थना करना, विनती करना।
गिड़गिड़ाहट-(हिं॰स्त्री॰) प्रार्थना, विनती, गिड़गिड़ाने का भाव।
गिड्डा-(हिं॰वि॰) नाटा, ठेगना।
गिद्ध-(हिं॰पुं॰) गृद्ध, मांसभक्षी एक पक्षी, छप्पय छन्द का एक भेद।
गिद्धराज-(हिं॰पुं॰) जटायु।
गिनगिनाना-(हिं॰क्रि॰) रोमांच होना, रोंगटे खड़े होना।
गिनती-(हिं॰स्त्री॰) गणना, किसी पदार्थ की संख्या निश्चित करना, संख्या, अंकमाला; **गिनती में आना**-विशिष्ट होना; **गिनती गिनाने के लिये**-नाम मात्र के लिये, **गिनती के**-थोड़ी संख्या में।
गिनना-(हिं॰क्रि॰) गणना करना, हिसाब लगाना, प्रतिष्ठा करना, सम्मान करना, संख्या निश्चित करना; **दिन गिनना**-किसी प्रकार से समय बिताना। **गिनवाना**-(हिं॰क्रि॰) गिनने का काम दूसरे से करना।
गिनना-(हिं॰क्रि॰) देखो गिनवाना।
गिन्नी-(हिं॰) देखो गिनी; घिरनी, चक्कर
गिमटी-(हिं॰स्त्री॰) बेल बूटा बना हुआ एक प्रकार मजबूत कपड़ा।
गिय-(हिं॰) देखो गिउ।
गियाद-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का घोड़ा
गिर-(हिं॰पुं॰) गिरि, पर्वत, पहाड़, संन्यासियों का एक भेद।
गिरई-(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार की मछली
गिरगिट-(हिं॰पुं॰) छिपकली के आकार का एक बित्ता लम्बा एक जन्तु जो अपना रङ्ग अनेक बार बदलता है, कृकलास। **गिरगिटान**-(हिं॰पुं॰) देखो गिरगिट; **गिरगिटान की तरह रंग बदलना**-अपने सिद्धान्त को बारंबार बदलना।
गिरगिरी-(हिं॰स्त्री॰) सारंगी के आकार का एक प्रकार का लड़कों का खिलौना।
गिरजा-(घर) ईसाइयों का प्रार्थना गृह
गिरदान-(हिं॰पुं॰) गिरगिट, गिरगिटान
गिरधर-(सं॰पुं॰) कृष्ण, वासुदेव।
गिरधारी-(सं॰पुं॰) कृष्ण, वासुदेव।
गिरना-(हिं॰क्रि॰) एकाएक ऊपर से नीचे को आना, नीचे उतरना, पतित होना, स्थिरता न रखनी, अवनति पर होना, प्रतिष्ठा या शक्ति कम होना, किसी नदी का जलाशय में मिलना, किसी पदार्थ को लेने के लिये टूट पड़ना, शीघ्रता से आगे को बढ़ना, जीर्ण या दुर्बल होना, अपने स्थान से हटना, मूल्य कम होना, लड़ाई में मारा जाना, एकाएक उपस्थित होना।
गिरनार-(हिं॰पुं॰) काठियावाड़ प्रान्त का एक पर्वत, रैवतक पर्वत। **गिरनारी**-(हिं॰वि॰) गिरनार पर्वत का रहनेवाला।
गिरवर-(हिं॰पुं॰) श्रेष्ठ पर्वत, बड़ा पहाड़।
गिरवान-(हिं॰पुं॰) देवता, गीर्वाण, देव, सुर।
गिरवाना-(हिं॰क्रि॰) दूसरे के द्वारा गिराने का काम कराना।
गिरहर, गिरहरा-(हिं॰वि॰) गिरनेवाला
गिरही-(हिं॰पुं॰) गृहस्थ, घर, मकान।
गिरा-(सं॰स्त्री॰) वाणी, जिह्वा, वचन, सरस्वती देवी, बोलने की शक्ति।
गिराना-(हिं॰क्रि॰) पतन करना, पृथ्वी पर डाल देना, घटाना, कम करना, जल का ढाल की ओर बहना, प्रतिष्ठा कम करना, किसी वस्तु को नियमित स्थान से हटाना, एकाएक उपस्थित होना, युद्ध में मार डालना, शक्ति कम करना।
गिरापति-(सं॰पुं॰) ब्रह्मा।
गिरापितु-(सं॰पुं॰) सरस्वती के पिता ब्रह्मा।
गिराव-(हिं॰पुं॰) गिरने का कार्य।
गिरास-(हिं॰पुं॰) देखो ग्रास, कौर।
गिरासना-(हिं॰क्रि॰) ग्रसना, कष्ट देना
गिरि-(सं॰पुं॰) पर्वत, पहाड़, तान्त्रिक संन्यासियों का एक भेद, परिव्राजकों की एक उपाधि, मेघ, लड़कों के खेलने का छोटा गेंद; **गिरिकानन**-(पुं॰) पहाड़ी जंगल; **गिरिकूट**-(पुं॰) पहाड़ का शिखर, चोटी; **गिरिजा**-(स्त्री॰) पार्वती, दुर्गा, गङ्गा, मल्लिका; **गिरिजापति**-(पुं॰) शिव, महादेव; **गिरिधर**-(पुं॰) श्रीकृष्ण; **गिरिधातु**-(पुं॰) गैरिक, गेरुक मिट्टी; **गिरिधारण**-(पुं॰) श्रीकृष्ण; **गिरिधारी**-(पुं॰) श्रीकृष्ण; **गिरिध्वज**-(पुं॰) इन्द्र; **गिरिनन्दिनी**-(स्त्री॰) पार्वती, दुर्गा, गङ्गा, नदी; **गिरिनाथ**-(पुं॰) शिव, महादेव; **गिरिपुष्पक**-(नपुं॰) पथरफोड़ नामक पौधा; **गिरिप्रिया** (स्त्री॰) चामरी गाय, सुरा गाय; **गिरिबान्धव**-(पुं॰) शिव, महादेव; **गिरिभू**-(स्त्री॰) पहाड़ी भूमि, पार्वती, गङ्गा; **गिरिराज**-(पुं॰) ऊँचा पर्वत, हिमालय, मेरुपर्वत, गोवर्धन पर्वत; **गिरिवासी**-(वि॰) पर्वत पर रहने वाला। **गिरिव्रज**-(नपुं॰) मगध देश के एक प्राचीन नगर का नाम, केकय देश की राजधानी; **गिरिसुत**-(पुं॰) मैनाक पर्वत; **गिरिसुता**-(स्त्री॰) पार्वती; **गिरिस्वेद**-(पुं॰) शिलाजतु, शिलाजीत।
गिरी-(हिं॰स्त्री॰) किसी बीज के भीतर का गूदा।
गिरीन्द्र-(सं॰पुं॰) हिमालय पर्वत, शिव
गिरीश-(सं॰पुं॰) कैलासपति, शिव, हिमालय पर्वत, बृहस्पति।

गिरेवान-(हिं०पुं०) गले मे लपेटने का वस्त्र।
गिरेवा-(हिं०पुं०) छोटी पहाड़ी, चढ़ाई का रास्ता।
गिरेश-(सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु।
गिरैयाँ(हिं०स्त्री०)-गला बांधने की रस्सी (वि०) गिरने वाला।
गिर्गिट-(हिं०पुं०) देखो गिरगिट।
गिलगिल-(सं०पुं०) नक्र, घड़ियाल।
गिलगिलिया-(हिं०स्त्री०) सिरोही नामक पक्षी।
गिलगिली-(हिं०पुं०) घोड़े की एक जाति।
गिलट-(हिं० स्त्री०) किसी धातु पर सोना चढ़ाने का काम, एक सफ़ेद चमकीला हलका कम मूल्य का धातु
गिलटी-((हिं०स्त्री०) शरीर मे की सन्धि-स्थान की ग्रन्थि, एक रोग जिसमें गाँठ फूल आती हैं।
गिलन-(सं०नपुं०) निगरण, निगलना।
गिलना-(हिं०क्रि०) निगलना, मनमें रखना, प्रगट न करना।
गिलबिलाना-(हिं०क्रि०) अस्पष्ट वचन बोलना।
गिलमिल-(हिं०पुं०)एक प्रकार का वस्त्र
गिलहरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धारीदार मोटा वस्त्र।
गिलहरी-(हिं०स्त्री०) चूहे के आकार का एक चंचल जन्तु जो वृक्ष पर रहता है, चेखुरा, गिलाई।
गिलान-(हिं०स्त्री०) ग्लानि, घृणा।
गिलास-(हिं०पुं०) पानी पीने का गोल लंबा पात्र, ओलची नामक वृक्ष विशेष।
गिलौरी(हिं०स्त्री०) पान का बीड़ा; **गिलौरीदान**-पान रखने का डिब्बा, पानदान।
गिल्ली-(हिं०स्त्री०) देखो गुल्ली।
गीजना-(हिं०क्रि०) किसी कोमल पदार्थ को हाथों से इस प्रकार मलना कि वह भ्रष्ट हो जावे।
गी-(सं०स्त्री०) वाणी, बोलने की शक्ति, सरस्वती देवी।
गीउ-(हिं०स्त्री०) देखो गीव। **गीढम** (हिं०पुं०) कम दाम का सादा गलीचा
गीड-(हिं०पुं० आँख में का कीचड़।
गीत-(सं०नपुं०) गान, गाना, बड़ाई, प्रशंसा; **गीत गाना**-प्रशंसा करना; **अपनी ही गीत गाना**-दूसरे की बात पर ध्यान न देना; **गीत गोविन्द**-जयदेव कवि की रचित एक गीत काव्य।
गीतिज्ञ-(सं०वि०) गीत जानने वाला, संगीत शास्त्र में निपुण।
गीता-(सं०स्त्री०) गुरु तथा शिष्य की कल्पना करके कहा हुआ उपदेशात्मक ज्ञान, भगवद्गीता, वृत्तान्त, कथा, राग का एक भेद, छब्बीस मात्रा का एक छन्द।
गीति-(सं०स्त्री०) गान, गीत, आर्या छन्द का एक भेद।
गीतिका-(सं०स्त्री०) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में छब्बीस मात्रा होती हैं, गीत, गाना। **गीति-रूपक**-(सं०पुं०) एक तरह का रूपक जिसमें गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक रहता है।
गीथा-(सं०स्त्री०) वाक्य, गीत, गान।
गीदड़-(हिं०पुं०) शृगाल, सियार, (वि०) भीरु, डरपोक; **गीदड़ भभकी**-मन में डरते हुए रोष या साहस दिखलाने का कार्य।
गीदर(हिं०पुं०) देखो गीदड़, सियार।
गीध-(हिं०पुं०) गृध्र, गिद्ध।
गीधना(हिं०क्रि०) लुब्ध होना, परचना।
गीर-(सं०स्त्री०) गिरा, वाणी।
गीरथ-(सं०पुं०) बृहस्पति, जीवात्मा।
गीरवाण-(हिं०पुं०) देवता।
गीर्ण-(सं० वि०) वर्णन या स्तुति किया हुआ।
गीर्देवी-(सं०स्त्री०) सरस्वती, शारदा।
गीर्पति-(सं०पुं०)बृहस्पति, पंडित, विद्वान्
गीर्वाण-(सं०पुं०) देवता, सुर; **गीर्वाण-कुसुम**-लवंग, लौंग।
गीला-(हिं०वि०) भींगा हुआ, तर, नम।
गीलापन-(हिं०पुं०) तरी, भींगापन।
गीव-(हिं०स्त्री०) ग्रीवा, गरदन।
गीस्पति-(सं०पुं०) बृहस्पति, पण्डित, विद्वान्।
गुंगी-(हिं०स्त्री०)दो मुहाँ, साँप, चुकरैड़।
गुंगआना-(हिं०क्रि०) अस्पष्ट बोलना, गूंगूं करना, धुंवा देना, अच्छी तरह न जलना।
गुंज-(हिं०स्त्री०) भौंरों की भनभनाहट, गूंज, आनन्दध्वनि।
गुंजन-(सं०स्त्री०)भौंरों की भनभनाहट, मधुर ध्वनि।
गुंजना-(हिं०क्रि०)भनभनाना, गुनगुनाना, भौंरो की तरह का शब्द करना।
गुंजरना-(हिं०क्रि०) गुंजार करना, भौंरो का गूंजना, शब्द करना, भनभनाना।
गुंजा-(हिं०पु०) देखो गुञ्जा।
गुंजायमान-(हिं०वि०) गूंजता हुआ।
गुंजार-(हिं०वि०)गूंजता हुआ। **गुंजा-रना**-गूंजना।
गुंजिया-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के कान में पहिरने का आभूषण।
गुंटा-(हिं०पुं०) छोटा पोखरी ताल।
गुंठा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का नाटा घोड़ा, टट्टू; (वि०) नाटा बौना।
गुंड-(हिं०वि०) पीसा हुआ।
गुंडई-(हिं०स्त्री०) गुंडापन।
गुंडली-(हिं०स्त्री०) कुण्डली, गेंडुरी।
गुंडा-(हिं०वि०) कुमार्गी, पापी, छैल-चिकनिया, दुष्ट मनुष्य। **गुंडापन**-(हिं०वि०) दुष्टता, नीचता।
गुंधना-(हिं०स्त्री०) जल मिलाकर आटा सानना।
गुंथना-(हिं०क्रि०) बाल आदि को गुथ कर लच्छेदार बनाना, नत्थी करना, लड़ी बनाकर बांधना।
गुंधवाना-(हिं०क्रि०) गूंधने का काम दूसरे से कराना।
गुंदला-(हिं०पुं०) मोथा नाम की घास।
गुंधाई-(हिं०स्त्री०) गूधने का काम या गूंधने का शुल्क। **गुंधावट**-(हिं०स्त्री०) गूंधने की क्रिया, गूंधने की रीति।
गुंफ, गुंफन गुंफित-देखो गुम्फ, गुम्फन, गुम्फित।
गुवा-(हिं० पुं०) मस्तक पर चोट लगने पर सूजन आना, गलमा।
गुंभी-(हिं०स्त्री०) अंकुर, गाभ, पाल, खींचने की रस्सी।
गुआ-(हिं०पुं०) सुपारी, पूगीफल।
गुआरि, गुआलिन-(हिं०स्त्री०) देखो ग्वालिन।
गुइयाँ-(हिं०पुं०) साथी, सहचर (स्त्री०) सखी।
गुगुलिया-(हिं०पुं०) बन्दर नचानेवाला मदारी।
गुग्गुल-(सं०पु०) एक काँटेदार वृक्ष जिसकी गोंद सुगन्ध के लिये जलाई जाती है और औषधियों में प्रयोग होती है, सलाई का पेड़।
गुचो-(हिं०स्त्री०) सौ पान का गुच्छा, आधी ढोली।
गुच्ची-(हिं०स्त्री०) लड़कों के गुल्ली डंडा खेलती समय भूमि में खोदा हुआ छोटा गड्ढा, (वि०) बहुत छोटी, नन्ही।
गुच्चीपारा-(हिं०पुं०)लड़कों के कोड़ी फेंकने का गड्ढा।
गुच्छ गुच्छक-(सं०पुं०) एक में बंधे हुए फूल या पत्तों का समुदाय, गुच्छा, घास या मुट्ठा, वह पौधा जिसमें केवल पत्ते और लचीली टहनियां निकलें, बत्तीस लड़ी का हार, मोती का हार, मोर की पूंछ।
गुच्छा-(हिं०पुं०) एक डाल में लगे हुए पत्ते, फल या फूलों का समूह, फल का झब्बा, एक साथ बंधी हुई वस्तुओं का समूह, फुंदना।
गुच्छी-(हिं०स्त्री०) करंज, रीठा, एक तरह का पौधा जिसके फूलों की तरकारी बनती है।
गुजरात-(हिं०पुं०) भारतवर्ष के दक्षिण पश्चिम का एक प्रान्त। **गुजराती**-(हिं०वि०) गुजरात देश का (स्त्री०) इस देश की भाषा, इलायची।
गुजराना-(हिं०क्रि०) निर्वाह करना।
गुजरिया-(हिं०स्त्री०) गूजर जाति की स्त्री, ग्वालिन।
गुजरी-(हिं०स्त्री०) कलाई में पहिरने की एक प्रकार की पहुची, दीपक राग की एक रागिणी।
गुजरेटी-(हिं०स्त्री०) गूजर जाति की कन्या, ग्वालिन।
गुजुवा-(हिं०पुं०) गोबर का कीड़ा गोबरैला।
गुञ्जरी-(सं०स्त्री०)एक रागिणी का नाम
गुञ्ज-(सं०पुं०) ध्वनि, शब्द।
गुञ्जन-(सं०नपुं०) भौरो का शब्द।
गुञ्जा-(सं०स्त्री०) घुंमची, एक रत्ती का परिमाण।
गुञ्जित-(सं०वि०) कलकल शब्द युक्त
गुञ्झा-(हिं० पुं०) बांस की कील, रेशेदार गूदा।
गुझरौट-(हिं०पुं०) वस्त्र की सिकुड़न, स्त्रियों के नाभि के पास का भाग।
गुझिया-(हिं०स्त्री०)एकप्रकार का पक्वान्न।
गुटकना-(हिं०क्रि०) कबूतर की तरह शब्द करना, निगल जाना, खा जाना
गुटका-(हिं०पुं०) छोटे आकार की पुस्तक, गुपचुप नाम की मिठाई।
गुटकाना-(हिं०क्रि०) बजाना।
गुटरंगु-(हिं०स्त्री०) कबूतर की बोली।
गुटिका-(सं०स्त्री०) वटिका, गोली, गोल, (वर्तुलाकार) पदार्थ।
गुट्ट-(हिं०पुं०) समूह, झुंड, दल, जत्था
गुट्टा-(हिं०पुं०) लाहकी बनीहुई गोंटी।
गुट्ठल-(हिं०वि०) जिसमें बड़ी गुठली के आकार का, जड़, मूर्ख, (पुं०) गांठ, गिल्टी। **गुठली**-(हिं०स्त्री०)किसी फल का कड़ा बड़ा बीज।
गुडंबा-(हिं०पुं०) चीनीमें पकाया हुआ आम का गूदा, फरुही का गुड़ में बना लड्डू।
गुड़-(हिं०पुं०) कड़ाहे में उबाल कर गाढा किया हुआ तथा जमाया हुआ ऊख का रस; **कुल्हिया में गुड़ फोड़ना**-गुप्त रीतिसे कोईकार्यकरना
गुडकरी-(सं०स्त्री०)एकप्रकारकीरागिणी
गुड़गुड-(हिं०पुं०) जल में नली आदि द्वारा वायु प्रवेश होने का शब्द।
गुड़गड़ाना-(हिं०क्रि०) गुड़गुड़ शब्द होना, हुक्का पीना। **गुड़गुड़ाहट**-(हिं०स्त्री०) गुड़गुड़ शब्द का होना।
गुड़गुड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का हुक्का। **गुड़धनियाँ, गुड़धानी**-(हिं०स्त्री०) गेंहू और गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू।
गुड़ना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लड़कों का डंडे का खेल
गुड़फला-(सं०स्त्री०) छोटी मकोय।
गुड़हर, गुड़हल-(हिं०पुं०) अड़हुल का पौधा या फूल, जपावृक्ष।
गुड़ाकू-(हिं०पुं०) गुड़ मिली हुई पीने की तमाखू।
गुड़ाकेश-(सं०पुं०) अर्जुन, शिव, महादेव
गुड़िका-(सं०स्त्री०) गुलिका, गोली।
गुड़िया-(हिं०स्त्री०) कपड़े की बनी हुई लड़कियों के खेलने की पुतली।
गुड़िये का खेल-अति सहज कार्य।
गुडी-(हिं०स्त्री०) पतंग, कनकैया, गुड्डी।
गुडुरू-(हिं०स्त्री०) केवाड़ की चूल, छोटा छिद्र।
गुड़ुवा-(हिं०पुं०) कपड़ का बना हुआ पुतला।
गुडूची-(सं०स्त्री०) गुरुच, गिलोय।
गुड्डा-(हिं०पुं०) बड़ा पतंग।
गुड्डी-(हिं०स्त्री०) पतंग, कनकैया, घुटने की हड्डी, एक प्रकार का छोटा

हुक्का।
गुड्ड-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धूल में रहने वाला कीड़ा।
गुण-(सं०पुं०) धनुष की प्रत्यंचा, रस्सी, डोरा, शौर्यादिगुण, धर्म, प्रकृति के सत्व, रज, तम ये तीन भाव, प्रवीणता, सद्वृत्ति, अच्छा स्वभाव, शील, ज्ञान विद्या आदि उत्कर्ष, बड़ाई, विशेषण, कला, प्रभाव, विशेषता, सूद, व्याज, इन्द्रिय, त्याग, भलाई, प्रकृति, तीन की संख्या, गणित, तन्तु, डोरा, व्याकरण में 'अ', 'ए' और 'ओ' वर्ण; 'गुना' अर्थ का प्रत्यय यथा त्रिगुण इत्यादि; **गुणगाना**-प्रशंसा करना; **गुण मानना**-उपकार मानना; **गुणक**-(पुं०) वह अंक जिससे कोई अंक गुणा किया जावे, इन्द्रिय, गुण; **गुणकथन**-(नपुं०) गुण वर्णन; **गुणकर**-(वि०) लाभदायक, गुण करने वाला; **गुणकार**-(वि०) रसोई बनाने वाला (पुं०) भीमसेन, संगीत विद्या का जानकार; **गुणकारक, गुणकारी**-(वि०) लाभदायक, **गुणकिरी, गुणकेली**-(स्त्री०) एक रागिणी का नाम; **गुणकेशी**-(स्त्री०) इन्द्र के सारथी की कन्या; **गुणगान**-(नपुं०) गुण कीर्तन; **गुणगौरी**-(स्त्री०) पतिव्रता स्त्री, सोहागिनि, पतिके सदृश गुणवाली स्त्री, स्त्रियों का एक व्रत; **गुणग्राम**-(पुं०) गुणों का समूह; **गुणग्राहक, गुणग्राही**-(वि०) गुणग्राही, गुणों को ग्रहण करने वाला; **गुणज्ञ**-(वि०) गुणों को समझने वाला, गुणों को परखने वाला, गुणी; **गुणज्ञता**-(स्त्री०) गुण की परख या जांच; **गुणता**-(स्त्री०) गुणत्व, अधीनता; **गुणत्व**-(नपुं०) गुणता, अधीनता। **गुणत्रय**-(नपुं०) सत्व, रज, तम ये तीन गुण; **गुणन**-(नपुं०) मन्त्रणा, अभ्यास, एक अंक को दूसरे से गुणा करना, गुणा, आवृत्ति, वर्णन, सोचना, मनन करना; **गुणनफल**-(पुं०) वह संख्या जो दो अंकों के गुणा करने से प्राप्त हो; **गुणना**-(हिं०क्रि०) गुणन (गुणा) करना; **गुणनिधि**-(पुं०) गुण का आश्रय; **गुणनीय**-(वि०) गुणा करने योग्य, गुणितव्य; **गुणप्रिय**-(वि०) गुणानुरागी; **गुणमय**-(वि०) गुणस्वरूप, गुणाढ्य; **गुणवाचक**-(वि०) गुण को प्रगट करनेवाला; **गुणवाचक संज्ञा**-विशेषण; **गुणवाद**-(पुं०) मीमांसा के अनुसार अर्थवाद विशेष; **गुणवान**-(वि०) गुणी, गुण वाला; **गुणशब्द**-(पुं०) गुणबोधक शब्द; **गुणशील**-(वि०) सच्चरित्र, अच्छे गुणका; **गुणसंकीर्तन**-(नपुं०) गुणानुवाद, गुणकथन; **गुणसागर**-(पुं०) एक प्रकार का राग; **गुणहीन**-(वि०) गुणशून्य, जिसमें कोई गुण न हो; **गुणस्तम्भ**-(पुं०) पोत स्तम्भ **गुणा**-(हिं०पुं०) गणितकी एक क्रिया, **गुणाकार**-(पुं०) गुणाधार, महादेव; **गुणाख्यान**-(नपुं०) गुण कीर्तन; **गुणाङ्क**-(पुं०) वह अंक जिसको गुणा करना हो; **गुणाढ्य**-(वि०) गुणयुक्त, गुणवान; **गुणातीत**-(पुं०) सुख दुःख से रहित, जीवन्मुक्त; **गुणानुवाद**-(पुं०) प्रशंसा, बड़ाई, **गुणान्वित**-(वि०) गुणयुक्त, गुणवान्; **गुणापवाद**-(पुं०) गुण की निन्दा; **गुणावली**-(स्त्री०) गुणा करने की प्रणाली।
गुणित-(सं०वि०) गुणन किया हुआ।
गुणी-(सं०पुं० धनुष, (वि०) गुणवान्, निपुण, झाड़ फूंक करनेवाला ओझा; **गुणीभूतव्यङ्ग**-(सं०नपुं०) वह काव्य जिसमें व्यङ्गार्थ वाच्यार्थ से कम या समान हो, अधिक न हो।
गुणेश्वर-(सं०पुं०) गुण के अधिपति, परमेश्वर।
गुण्ठन-(सं०पुं०) आवरण, परदा, घेरा
गुण्ठित-(सं०पुं०) ढपाहुआ, घेराहुआ।
गुण्य-(सं०वि०) गुणनीय, प्रशस्त, गुणयुक्त जिसमे अच्छे गुण हों, वह अंक जिसको गुणा करना हो।
गुण्याङ्क-(सं०पुं०) वह अङ्क जो गुणा किया जावे।
गुत्ता-(हिं० पुं०) कर पर खेत देने की रीति।
गुत्थ-(हिं० पुं०) कटाई के समान बिनावट का नैंचा। **गुत्थमगुत्था**-(हिं०पु०) उलझाव, फँसाव, भिडन्त, लड़ाइ, हाथाबाहीं।
गुत्थी-(हिं०स्त्री०) कई वस्तुओं के एक में गुथने की गाँठ, गिरह, उलझन।
गुथना-(हिं०क्रि०) गुथा जाना, टांका लगाना,, भद्दी तरह से सिला जाना, लड़ने के लिए दो मनुष्यों का परस्पर लिपट जाना। **गुथवाना**-(हिं० क्रि०) गुथने का काम दूसरे से कराना
गुथवाँ-(हिं०वि०) गुथकर बनाया हुआ
गुद-(सं०नपुं०) अपान, मलत्याग का द्वार, गुदा।
गुदकार-(हिं०वि०) गुद्देदारा, गदगुदा, गदारा, मांसल।
गुदकील-(सं०पुं०) अर्श रोग, बवासीर
गुदगुदा-(हिं०वि०) गुद्देदार, मांससंयुक्त कोमल, जिसका तल दबाने से दब जावे। **गुदगुदाना**-(हिं० क्रि०) बच्चों को प्रसन्न करने के लिये उनके काँख या पैर के तलवे पेट आदि को सोहराना, मन बहलाना, चित्त को चलायमान करना। **गुदगुदाहट, गुदगुदी**-(हिं०) काँख, पेट आदि मांसल स्थानों पर अँगुली द्वारा सुरसुराहट या मीठी खुजली, आह्लाद, उत्कण्ठा, उमंग, हुलास।
गुदग्रह-(सं०पुं०) कोष्ठबद्ध का रोग।
गुदड़िया-(हिं० पुं०) गुदड़ी पहिरने ओढ़ने वाला।
गुदड़ी-(हिं०पुं०) फटे पुराने वस्त्र का बना हुआ ओढ़ना या बिछौना; **गुदड़ी बाज़ार**-(पुं०) वह हाट जिसमें टूटे फूटे पदार्थ तथा फटे पुराने वस्त्र आदि बिकते हैं।
गुदना-(हिं०) देखो गोदना।
गुदभ्रंश-(सं० पुं०) गुदा से काँच निकलने का रोग।
गुदमा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का नरम मोटा कम्बल।
गुदर-(हिं०पुं०) राज सभा में उपस्थिति। **गुदरना**-(हिं०क्रि०) निवेदन करना। **गुदराना**-(हिं०क्रि०) सूचित करना।
गुदरी-(हिं०स्त्रि०) देखो गुदड़ी।
गुदरैन-(हिं० स्त्री०) पढ़ा हुआ पाठ भली भांति सुनाना, परीक्षा।
गुदस्तम्भ-(सं०पुं०) मल कठिनता से निकलने का रोग।
गुदा-(सं०स्त्री०) मलद्वार, गांड़। **गुदांकुर**-(सं०पुं०) अर्शरोग।
गुदाना-(हिं०क्रि०) गोदनेकीक्रिया कराना
गुदाम-(हिं०पुं०) अनेक पदार्थों के रखने का स्थान, गोला, अ०।
गुदार-(हिं०वि०) गुद्देदार, जिसमें गूदा अधिक हो।
गुदारना-(हिं०क्रि०) पढकर सुनाना,
गुदारा-(हिं०वि०) गुद्देदार।
गुदुरी-(हिं०स्त्री०) मटर की फली, मटर की उपज को नष्ट करने वाला कीड़ा
गुद्दा-(हिं०पुं०) फल आदि के भीतर का गूदा, **गुद्दी**-(हिं०स्त्री०) किसी फल के बीच का गूदा, गिरी, मींगी, मस्तक का पिछला भाग, हथेली का मांस।
गुद-(हिं०पुं०) देखो गुण।
गुनकारी-(हिं०वि०) गुणकारक।
गुनगुना-(हिं०वि०) कुनकुना, थोड़ा गरम
गुनगुनाना-(हिं०क्रि०) गुनगुन शब्द बोलना, नाक से बोलना, अस्पष्ट स्वर से गाना।
गुनना-(हिं०क्रि०) गुणा करना, मनन करना, सोचना, विचारना, गिनना, रटना
गुनवन्त-(हिं०वि०) गुणी, जिसमें कोई गुण हो।
गना-(हिं०पुं०) संख्या सूचित करने के लिये शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है जिसका अर्थ "उतनी वार" होता है यथा दसगुना, बीस गुना इत्यादि, गणित में गुणा करने की क्रिया।
गुनावन-(हिं०पुं०) विचार।
गुनिया-(हिं०वि०) गुणी, गुणवान (स्त्री०) कारीगर का समकोण नापने का यन्त्र (पुं०) नाव की रस्सी खींचने वाला मल्लाह।
गुनियाला-(हिं०वि०) गुणी।
गुनी-(हिं०वि०) देखो गुणी।
गुन्दल-(सं०पुं०) मृदङ्ग का शब्द।
गुन्द्राल-(सं०पुं०) तीतर पक्षी।
गुन्नी-(हिं०स्त्री०) कपड़ा ऐंठकर बना हुआ कोड़ा।
गुपचुप-(हिं०स्त्री०) एक तरहकी मिठाई जो मुख में रखते ही गल जाती है; (क्रि०वि०) चुपचाप, गुप्त रीति से।
गुपाल-(हिं०पुं०) देखो गोपाल।
गुपुत-(हिं०वि०) देखो गुप्त।
गुप्त-(सं०वि०) गूढ़, रक्षित, छिपाहुआ कठिनता से जानने योग्य, (पुं०) वैश्यों की एक उपाधि; **गुप्तचर**-(पुं०) जो दूत किसी बात का चुपचाप भेद लेता है, जासूस, भेदिया; **गुप्तदान**-(पुं०) वह दान जिसको देनेवाले के सिवाय दूसरा कोई नहीं जाननेपाता **गुप्त मार**-(स्त्री०) भीतरी मार, छिप कर किया हुआ अनिष्ट; **गुप्तवेश**-(पुं०) ऐसा पहरावा जिससे मनुष्य पहिचाना न जा सके।
गुप्ता-(सं०स्त्री०) वह परकीया नायिका जो सुरति छिपाने का उद्योग करती है, रक्षिता स्त्री, रखनी।
गुप्ति-(सं०स्त्री०) छिपाने की क्रिया, रक्षण आच्छादन, कारागार, कन्दरा, गड्ढा तन्त्र के अनुसार मन्त्र का संस्कार, अहिंसा आदि योग के अंग, नाव का छिद्र।
गुप्ती-(हिं०स्त्री०) एक तरह की किरिच या तलवार जो छड़ी के भीतर बैठाई रहती है।
गुप्फा-(हिं०पुं०) फुन्दना, झब्बा, फूलों का गुच्छा।
गुफा-(हिं०स्त्री०) गुहा, कन्दरा।
गुबरैला-(हिं०पुं०) गोबर में से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का काले रंग का कीड़ा।
गुबारा-(हिं०पुं०) देखो गुब्बारा।
गुविंद-(हिं०पुं०) देखो गोविन्द।
गुब्बाड़ा, गुब्बारा-(हिं०पुं०) वह गोल या लम्बी थैली जिसमें गरम वायु या किसी प्रकार की भाफ भरकर आकाश में उड़ाई जाती हैं।
गुभ-(हिं०पुं०) समुद्र की खाड़ी।
गुभीला-(हिं०पुं०) कड़ा मल जो बद्ध कोष्ट के कारण पेट में पड़ जाता है।
गुमका-(हिं०पुं०) भूसी से दाना अलगाने का काम।
गुमकना-(हिं०क्रि०) भीतरही भीतर गंजना
गुमजी-(हिं०स्त्री०) छोटा गुम्मज।
गुमटा-(हिं०पुं०) गोल सूजन जो मस्तक में चोट लगनेसे उत्पन्न होती है, गुलमा।
गुमना-(हिं०क्रि०) लुप्त हो जाना।
गुमाना-(हिं०क्रि०) देखो गंवाना।
गुमानी-(हिं०वि०) अहंकारी, घमण्डी।
गुमिटना-(हिं०क्रि०) लिपटना, लपेटाजाना
गुमटा-(हिं०पुं०) सूजन जो सिर पर चोट लगने से उभड़ आती है, गुलमा।
गमटी-(हिं०स्त्री०) घर की सबसे ऊपर की छत या सीढी।
गुम्फ-(सं०पुं०) ग्रन्थि, गांठ, बाहु का एक आभूषण, मूछ।
गुम्फित-(सं०वि०) ग्रन्थित, गुथा हुआ।

गुम्मा-(हिं०वि०)कमबोलनेवाला,चुप्पा, (पुं०) अंग्रेजी किस्म की बड़ी ईंट ।

गुर-(हिं०पुं०) किसी कार्य की सिद्धि के लिये मूलमन्त्र, युक्ति, भेद, तीन की संख्या ।

गुरअई-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का बन्धक ।

गुरगा-(हिं०पुं०) गुरु का शिष्य, चेला अनुचर, अनुगामी, टहलुआ, नौकर, भेदिया, जासूस ।

गुरज-(हिं०पुं०) गदा ।

गुरुच-(हिं०स्त्री०) देखो गुर्च ।

गुरची-(हिं०स्त्री०) सिकुड़ना, बल,बटन

गुरचों-(हिं०स्त्री०) आपस में धीरे धीरे बात करना, कानाफूसी ।

गुरदो-(हिं०वि०) अभिमानी ।

गुरसी-(हिं०स्त्री०) अँगीठी ।

गुरमुख-(हिं०वि०) गुरू से मन्त्र की दीक्षा लिया हुआ ।

गुरवार-(हिं०पुं०)गुरुवार,वृहस्पतिवार

गुरवी-(हिं०वि०) अहंकारी, घमण्डी ।

गुरसल-(हिं०पुं०) सिरोही नामक पक्षी।

गुरसुन-(हिं०पुं०)सोनारोंकी एक प्रकार की छेनी ।

गुराई-(हिं०स्त्री०) देखो गौराई ।

गुराब-(हिं०पुं०) तोप लादने की एक प्रकार की गाड़ी, एक मस्तूल की नाव, चारा काटने का एक अस्त्र ।

गुरिया-(हिं०स्त्री०) किसी माला या लड़ी का एक दाना, मनका, कटा हुआ गोल छोटा टुकड़ा, हेंगी में बंधी हुई रस्सी जिसका एक छोर जुए के बीच में बंधा रहता है ।

गुरु-(सं०पुं०) देवताओं के गुरु वृहस्पति, शिव, परमेश्वर, ब्रह्मा, विष्णु (वि०) अधिक, कठिनता से पकने या पचने वाला, भारी, पूजनीय, गंभीर, बलवान् (पुं०)तान्त्रिक अथवा अन्य मंत्र का उपदेश देने वाला, पुष्य नक्षत्र, आचार्य, विद्या या कला सिखलाने वाला अध्यापक, दो मात्रा का वर्ण।

गुरुआइन गुरुआनी-(हिं०स्त्री०) गुरु की स्त्री, शिक्षा देने वाली स्त्री । **गुरुआई**-(हिं०स्त्री०) गुरु का धर्म या कार्य, धूर्तता; **गुरुकुल**-(नपुं०) गुरु का कुल, गुरु का वह स्थान जहां पर वे विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देते हैं; **गुरुकोप**-(पुं०) अत्यन्त क्रोध; **गुरुक्रम**-(पुं०) एक दूसरे को उपदेश देना; **गुरु गन्धर्व**-(पुं०) इन्द्रताल के छ भेदों में से एक; **गुरुघ्न**-(पुं०) गुरु की हत्या करनेवाला मनुष्य; **गुरुजन**-(पुं०) आदरणीय मनुष्य;यथा, माता,पिता आचार्य इत्यादि; **गुरुतम**-(वि०) अधिक भारी ; **गुरुतल्प**-(पुं०) गुरु की भार्या, गुरु की स्त्री ; **गुरुता**-(स्त्री०) गुरुत्व, भारीपन, महत्व, गुरुपन, गुरुआई ; **गुरुताई**-(स्त्री०) देखो गुरुता । **गुरुतोमर**-(सं० पुं०) एक प्रकारका छन्द; **गुरुत्व**-(सं०नपुं०) महत्व, गौरव, बड़प्पन, कठिनता, **गुरुत्व केन्द्र**-(सं०पुं०) किसी पदार्थ के बीच का वह बिन्दु जिस पर यदि उस पदार्थ का सम्पूर्ण भार सिमट कर आजाय तो आकर्षण में कुछ भेद न हो, **गुरुत्वलम्ब**-(सं०पुं०) किसी पदार्थ के गुरुत्व केन्द्र से सीधे नीचे की ओर खींची हुई रेखा; **गुरुत्वकर्षण**-(सं०पुं०) भारी पदार्थों को पृथ्वी पर गिरने का आकर्षण, पृथ्वीकी आकर्षण शक्ति । **गुरुदक्षिणा**-(सं०स्त्री०) वह भेंट जो अध्ययन समाप्त होने पर गुरु को सन्तुष्ट करनेके लिये चेला देता है । **गुरुदेव**-(सं०पुं०)वह गुरु जिसके पास दीक्षा लेने के लिये कोई जाता है । **गुरुद्वारा**-(हिं० पुं०) गुरु के रहने का स्थान, सिक्खों का मन्दिर । **गुरुपूजा**-(सं० स्त्री०) गुरु अथवा मन्त्र देनेवाले का पूजन । **गुरुभाई**-(हिं० पुं०) एक ही गुरु के चेले ।**गुरुभाव**-(सं० पुं०) गम्भीर अभिप्राय । **गुरुमुख**-(हिं०पुं०) दीक्षित, जिसने गुरु से मन्त्र लिया हो । **गुरुमुखी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लिपि जिसको पंजाब में गुरु नानक ने चलाया था। **गुरुरत्न**-(सं० नपुं०) पुखराज नामक रत्न । **गुरुवला**-(सं०स्त्री०) संकीर्ण राग का एक भेद । **गुरुवार**-(सं० पुं०) वृहस्पतिवार, बीफै ।

गुरू-(हिं०पुं०) अध्यापक, शिक्षक ।

गुरूघंटाल-(हिं०वि०)अत्यन्त चतुर,धूर्त ।

गुरेट-(हिं० पुं०) ऊख का पकता हुआ रस चलाने का बेलन ।

गुरेरना-(हिं०क्रि०) आँखें फाड़ फाड़ कर देखना, घूरना ।

गुरेरा-(हिं०पुं०) देखो गुलेला ।

गुर्गा-(हिं०वि०) देखो गुरगा ।

गुर्चनी-(हिं० स्त्री०) गेहूं चना मिला हुआ अन्न ।

गुर्जर-(सं०पुं०) गुजरात देश, गुजरात देश का रहने वाला । **गुर्जरी**-(सं० स्त्री०) गुजराती स्त्री, एक प्रकार की रागिणी ।

गुर्दा-(हिं०पुं०) देखो गुरदा ।

गुर्राना-(हिं०क्रि०) डरानेके लिये कुत्ते बिल्ली का गम्भीर शब्द करना,क्रोध दिखलाना, कर्कश शब्द बोलना ।

गुर्री-(हिं० स्त्री०) छिलका हटाया हुआ जव का दाना ।

गुर्वङ्गना-(हिं०स्त्री०)गुरुपत्नी,गुरुकीस्त्री

गुर्वर्थ-(सं०वि०) कठिन व्याख्या युक्त

गुर्विणी-(सं०स्त्री०) सगर्भा, गर्भिणी, गर्भवती ।

गुर्वी-(सं०स्त्री०) बड़ी या श्रेष्ठ स्त्री, गुरुपत्नी ।

गुल-(सं० पुं०) जलाया हुआ तमाखू, कोयले की गोंटी, शीतला रोग, एक प्रकार का वृक्ष ।

गुलगुला-(हिं०पुं०) घी या तेलमें पका हुआ एक प्रकार का मीठापकवान,कनपटी

गुलगुलाना-(हिं० क्रि०) किसी गूदेदार वस्तुको हाथोंसे मलकर कोमलकरना।

गुलगुली-(हिं०स्त्री०) गुदगुदी ।

गुलगोथना-(हिं० पुं०) गाल फूला हुआ मनुष्य ।

गुलछर्रा-(हिं० पुं०) स्वच्छन्दता तथा अनुचित रीति से किया जाने वाला भोग विलास ।

गुलझटी-(हिं० स्त्री०) तागे आदि का लपेट, जो सिकुड़कर गोलीके आकार का हो जाता है, सिकुड़न ।

गुलता-(हिं०पुं०) गुलेल में छोड़े जाने वाली मिट्टी की गोली ।

गुलथी-(हिं०स्त्री०)जमे हुए पानीकीगोली

गुलदावदी-देखो गुलदाउदी ।

गुलाबजामुन-(हिं०पुं०) एक प्रकारकी मिठाई, एक प्रकार का स्वादिष्ट छोटे फल का वृक्ष ।

गुलाब बाड़ी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का उत्सव जिसमें शोभा के लिये गुलाब के फूल सजाये जाते हैं ।

गुलाबी-(हिं० वि०) गुलाब के रंग का, गुलाब सम्बन्धी, थोड़ा हलका, एक प्रकार का लाल रंग ।

गुलिका-(सं०स्त्री०) गुटिका, गोली ।

गुलिया-(हिं०वि०) महुवे के बीज से निकला हुआ ।

गुलैंदा-(हिं०पुं०)महुवे का फल,कोइंदा ।

गुलेटन-(हिं०पुं०)कुरुन पत्थरकी बट्टी ।

गुल्फ-(सं०पुं०) एँड़ीके उपर की गांठ ।

गुल्म-(सं० पुं०) सेना का एक अंश जिसमें एक रथ,एक हाथी, पांच पैदल और तीन घोड़े रहते हैं, रक्षासमूह, प्लीहा रोग,वृक्ष जिसमें तना न हो, पेट का एक रोग; **गुल्म मूल**-आर्द्रक, अदरख ।

गुल्लक-(हिं०पुं०)देखो गोलक,प्रतिदिन की आय रखने की थैली ।

गुल्लर-(हिं० पुं०) देखो गूलर ।

गुल्ला-(हिं०पुं०) गुलेल में फेंकने की मिट्टी की गोली, एक तरह की मिठाई, रसगुल्ला, ईखकी गड़ेरी, रस्सीका फंदा।

गुल्ली-(हिं०स्त्री०) बीज,फल की गुठली, महुवेका फल,गोलाकार लंबोतर छोटा टुकड़ा, लड़को के डंडे से खेलने का काठका छोटा टुकड़ा,केवड़ेका फूल, छोटा गोल पासा, ईख का गांड़ा ।

गुवाक-(सं०पुं०) सुपारी का वृक्ष ।

गुवाल-(हिं०पुं०) देखो ग्वाल, अहीर ।

गुविन्द-(हिं०पुं०) देखो गोविन्द ।

गुसल-(हिं०पुं०) देखो गुस्ल, स्नान । गुसलखाना-स्नानगृह ।

गुसाईं-(हिं०पुं०) गोसाईं, गोस्वामी ।

गुस्सा-(हिं०पुं०) गुस्सा, क्रोध, रोष ।

गुसैयां-(हिं०पुं०) ईश्वर, स्वामी ।

गुस्सैल-(हिं०वि०) चिड़चिड़ा ।

गुह-(सं०पुं०)कार्तिकेय,घोड़ा,परमेश्वर, विष्णु, शृङ्गबेरपुरका एक मल्लाह राजा जो राम का मित्र था, गुफा, कन्दरा हृदय, माया । (हिं० पुं०) विष्ठा, गूह ।

गुहड़ा-(हिं०पुं०) चौपायों का एक रोग ।

गुहना-(हिं०क्रि०) गुथना ।

गुहराना-(हिं०क्रि०) पुकारना, चिल्लाकर बुलाना ।

गुहवाना-(हिं० क्रि०) गुथने का काम दूसरे से कराना, गुंथवाना ।

गुहाँजनी-(हिं०स्त्री०) आँख की पलक पर होने वाली फोड़िया, बिलनी ।

गुहा-(सं०स्त्री०) गड्ढा, गुफा, कन्दरा, हृदय ।

गुहाई-(हिं० स्त्री०) गुथने की क्रिया, या वेतन ।

गुहाचर-(सं०नपुं०) ब्रह्म, परमात्मा ।

गुहामुख-(सं०नपुं०) कन्दरा का द्वार ।

गुहार-(हिं०स्त्री०) रक्षाके लिये पुकार, दोहाई ।

गुहाल-(हिं०पुं०) गोशाला, गाय रखने का घर ।

गुहाशय-(सं०पुं०) परमात्मा, प्राण ।

गुहिन-(सं०नपुं०) वन, जंगल ।

गुह्य-(सं०वि०) गोपनीय, छिपा हुआ, गूढ़, छिपाने योग्य, गुप्त, जिसका अर्थ सहज में स्पष्ट न हो (पु०) कछुवा,शिव,महादेव, विष्णु; **गुह्यक**-(पुं०) कुबेर के धन की रक्षा करने वाला यक्ष; **गुह्यदीपक**-(पुं०) खद्योत, जुगनू; **गुह्यदेश**-(पु०) गुदा, मलद्वार।

गुह्यपति-(पुं०) वज्रधर, कुबेर ।

गुह्येश्वरी-(सं०स्त्री०) काली,आद्या,विद्या

गूंगा-(फा०वि०) जो बोल न सके, मूक, जिसके मुखसे शब्द स्पष्ट न निकले; **गूंगे का गुड़**-ऐसी वस्तु जिसका अनुभव हो पर जिह्वा से कही न जा सके ।

गूंज-(हिं०स्त्री०) भौंरोंके गूंजने का शब्द कल ध्वनि, प्रतिध्वनि, व्याप्त ध्वनि, लट्टू की कील जिस पर वह घूमता है, बाली का पतला भाग जो इसमें लपेटा रहता है ; **गूंजना**-(हिं०क्रि०) भौरों का भनभनाना, प्रतिध्वनित होना; **गूंठ**-(हिं०पुं०) पहाड़ी टट्टू ।

गूंथना-(हिं०क्रि०) देखो गूथना ।

गूंधना-(हिं०क्रि०) आटे को पानी से सानकर हाथों से मलना, मसलना, माड़ना, पिरोना ।

गू-(हिं०स्त्री०) विष्ठा, मल ।

गूगल-(हिं०पुं०) देखो गुग्गुल ।

गूजर-(हिं०पुं०) अहिरों या ग्वालों की एक जाति, देखो गुर्जर ; **गूजरी**-(हिं०स्त्री०) गुजरात की स्त्री, गूजर जाति की स्त्री, ग्वालिन, पैर में पहिरने का आभूषण, एक रागिणी का नाम ।

गूजी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का काला कीड़ा ।

गूझा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्वान्न, गदा, फल के भीतर का तन्तु ।

गूड़ी-(हिं० स्त्री०) बाजरे के बाल की

गूप्याली।

गूढ-(सं०वि०) गुप्त, छिपा हुआ, जिसमें बहुत सा अभिप्राय गुप्त हो, जटिल, कठिन; एक अलंकार; गूढगेह-यज्ञगृह, गूढकामी-(सं०पुं०) काक, कौवा। गूढचारी-(सं०वि०) गुप्तचारी, भेदिया; गूढज-(वि०) गुप्त जार से अपने ही घर में उत्पन्न पुत्र; गूढता-(स्त्री०) गुप्तता, छिपाव, गम्भीरता, कठिनता; गूढत्व-(नपुं०) गंभीरता, कठिनता; गूढपथ-(पुं०) अन्तःकरण, अन्तरात्मा; गूढपुरुष-(पुं०) गुप्तचर, भेदिया; गूढमार्ग-(पुं०) गुप्तपथ, सुरंग।

गूढाङ्ग-(सं०पुं०) और (नपुं०) उपस्थ, भग, लिंग, गोपनीय अंग।

गूढोक्ति-(सं०स्त्री०) एक अलंकार जिसमें कोई गुप्त वार्ता किसी तीसरे मनुष्य के प्रति दूसरे के ऊपर छोड़कर कही जाती है।

गूढोत्तर-(सं०नपुं०) किसी गूढ अभिप्राय का उत्तर।

गूढोत्पन्न-(सं०वि०) देखो गूढज।

गूथ-(सं०पुं०) विष्ठा, मैला।

गूथना-(हिं०क्रि०) कई वस्तुओं को एक डोरे में पिरोना, तागे में अटकाना, गाँथना, भद्दी सिलाई करना।

गूदड़-(हिं० पुं०) फटा पुराना वस्त्र या चिथड़ा।

गूदा-(हिं० पुं०) किसी फल के छिलके के नीचे का सार भाग, गरी, मींगी, खोपड़ी का सार भाग।

गून-(हिं०स्त्री०) नाव खींचनेकी रस्सी।

गूना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्वान्न; (फा०पुं०) एक प्रकार का सुनहला रंग।

गोनी-(हिं०स्त्री०) सरका थैला।

गूमा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पौधा जो औषधि में प्रयोग होता है।

गूरा-(हिं०पुं०) गुल्ला, ढेला।

गूरण-(सं०नपुं०) उद्यम, उद्योग।

गूर्त-(सं०वि०) प्रशंसनीय, उद्यमविशिष्ट

गूलर-(हिं०पु०) वटवृक्ष, पीपल और बरगद की जाति का एक बड़ा वृक्ष, गूलर का फूल-कोई अलभ्य पदार्थ।

गूलू-(हिं० स्त्री०) एक वृक्ष जिसमें से सफ़ेद गोंद निकलता है।

गूह-(हिं०पुं०) विष्टा, मल।

गूहा छी छी-(हिं०पुं०) झगड़ा, कलंक।

गृञ्जिन-(सं० पुं०) वासुदेव के भाई का नाम।

गृध्नु-(सं०वि०) लुब्ध, लोभयुक्त।

गृध्र-(सं०पुं०) गिद्ध, जटायु पक्षी (वि०) लोभी।

गृध्रसी-(सं०स्त्री०) एक वात रोग जिसमें कमर पीठ तथा जांघमें पीड़ा रहती है

गृष्टि-(सं०स्त्री०) एक बार तुरत व्याई हुई गाय।

गृह-(सं०नपुं०) मिट्टी या ईट का बना हुआ वासस्थान, घर, कुटुम्ब, वंश, कलत्र, भार्या; गृहकलह-(पुं०) घर का विरोध या झगड़ा; गृहजात-(पुं०) दासीपुत्र, घर की दासी से उत्पन्न पुत्र; गृहप, गृहपति-(पुं०) घरका स्वामी, मन्त्री, धर्म, यजमान, अग्निविशेष; गृहपत्नी-(स्त्री०) गृह पालिका पत्नी; गृहपशु-(पुं०) कुक्कुर, गृहप्रवेश-(पुं०) शुभदिन और शुभ नक्षत्र में होमादि करके घरके भीतर जाना; गृहयुद्ध-(पुं०) घरके भीतर ही झगड़ा, देश के भीतर आपस में युद्ध होना; गृहलक्ष्मी-(स्त्री०) सच्चिरित्रता स्त्री।

गृहस्थ-(सं०पुं०) गृही, द्वितीय आश्रम वाला मनुष्य जो ब्रह्मचर्य के बाद विवाह करके घरमें बसे, घरबारवाला खेतिहर, किसान; गृहस्थाश्रम-(सं०पुं०) चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके रहते हैं।

गृहस्थी-(हिं०स्त्री०) गृहस्थ का कर्तव्य, घरबार, कुटुम्ब, लड़केवाले, परिवार, घर का मोल, खेती बारी, किसानी का काम।

गृहस्वामी-(सं०पुं०) घरका मालिक।

गृहाक्ष-(सं०पुं०) गवाक्ष, झरोखा, छोटी खिड़की।

गृहागत-(सं० पुं०) दूसरे के घर आया हुआ मनुष्य।

गृहाधिप-(सं०पुं०) गृह स्वामी, घर का रक्षक।

गृहिणी-(सं० स्त्री०) घर की मालकिन, भार्या, पत्नी।

गृही-(सं०पुं०) गृहस्थाश्रमी, गृहस्थ।

गृहीत-(सं० वि०) स्वीकृत, प्राप्त किया हुआ।

गृहोत्पात-(सं०पुं०) घर का विघ्न या उपद्रव।

गृह्य-(सं०वि०) विनीत, वश्य, घरमें उत्पन्न।

गृह्यसूत्र-(सं०नपुं०) वैदिक पद्धति जिस के अनुसार द्विजों के संस्कार होते हैं।

गेङ्गटा-(हिं०पुं०) कर्कट, केंकड़ा।

गेण्ठी-(हिं०स्त्री०) वाराही कन्द।

गेंड़-(हिं०पुं०) ऊख के ऊपर का पत्ता, अगौरा।

गेंड़ना-(हिं०क्रि०) खावें से खेत घेरना, अन्न रखने के लिये टट्टर बनाना, घेरना, कुल्हाड़ी से काटना।

गेंडली-(हिं०स्त्री०) कुण्डली, फेंटा, गेंड़री

गेंड़ा-(हिं०पुं०) ईख के ऊपर का पत्ता, केतारी, खेत में बोने के लिये ऊख के छोटे टुकड़े।

गेंड़ुआ-(हिं०पुं०) तकिया, सिरहाना, बड़ा गेंद।

गेंडुरी-(हिं०स्त्री०) घड़ा रखनेका मेंड़रा, बिड़वा, फेंटा, कुण्डली, सर्पोका वर्तुलाकार बैठना।

गेंद-(हिं०पुं०) कपड़े, रबर आदि का बना हुआ खेलनेका गोला, कन्दुक।

गेंदई-(हिं०वि०) गेंदेके फूलके रङ्गका।

गेंदतड़ी-(हिं०स्त्री०) एक दूसरे को गेंद से मारने का खेल।

गेंदवा-(हिं०पुं०) तकिया, सिरहाना।

गेंदा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पीले रङ्गके फूल का पौधा, इसका फूल।

गेंदुक-(सं०पुं०) देखो गेंद।

गेंदुर-(हिं०पुं०) चमगादड़।

गेंदुवा-(हिं०पुं०) गेड़ुवा, तकिया।

गेंड़ना-(हिं०क्रि०) लकीरसे घेरना, परिक्रमा करना, चारो ओर घूमना।

गेगलापन-(हिं०पुं०) मूर्खता, जड़ता।

गेदा-(हिं० पुं०) चिड़िया का छोटा बच्चा जिसको पर न निकले हों।

गेनुर-(हिं०पुं०) चारे के साथ पशुओं को खिलानेकी एक प्रकारकी घास।

गेय-(सं०नपुं०) गीत, गान।

गेरना-(क्रि०) गिराना, डालना।

गेराई, गेरांव-(हिं०पुं०) देखो गेरवां।

गेरुआ-(हिं०वि०) गेरूके रङ्ग का, मटमैलापन लिये लाल रंगका, जोगिया रंग का।

गेरुई-(हिं०स्त्री०) कृषिफल एक रोग।

गेरू-(हिं०स्त्री०) खान से निकलने वाली एक प्रकार की लाल मिट्टी, गैरिक।

गेह-(सं०नपुं०) गृह, घर।

गेहनी-(हिं०स्त्री०) गृहणी, घरनी, भार्या, पत्नी।

गेहिनी-(सं०स्त्री०) गृहिणी, भार्या।

गेही-(हिं०पुं०) गृहस्थ।

गेहुंअन-(हिं० पुं०) एक बड़ा विषैला भूरे रंग का सर्प, कृष्ण सर्प।

गेहुंआ-(हिं०वि०) गेहूंके रगका, बदामी

गेहूं-(हिं०पुं०) गोधूम, एक प्रसिद्ध अन्न जिसका आंटा खाया जाता है।

गैंड़ा-(हिं०पुं०) भैंसे से आकार का एक पशु जिसकी नाक पर सींघ होती है, यह विशेष कर कीचड़ में रहता है।

गैंता-(हिं० स्त्री०) भूमि खोदने का एक अस्त्र, कुदाल।

गैन-(हिं०पुं०) गैल, मार्ग।

गैना-(हिं०पुं०) छोटा नाटा बैल।

गैया-(हिं०स्त्री०) गो, गाय, गऊ।

गैरसी-(हिं०स्त्री०)गलेमेंपहिरनेकीहँसुली।

गैरिक-(सं०नपुं०) गेरू मिट्टी, सुवर्ण सोना।

गैरेय-(सं०नपुं०) शलाजतु, शिलाजीत

गैल-(हिं०स्त्री०) मार्ग, रास्ता, गली।

गैलड़-(हिं०पुं०)स्त्री के पहिले पति का पुत्र जिसको लेकर वह पति के पास जाय।

गैला-(हिं०पुं०)गाड़ी के पहिये की लकीर

गोइंठा-(हिं०पुं०) जलाने का गोबर का सुखाया हुआ गोल चिपटा टुकड़ा, उपला, गोहरा।

गोइंड़-(हिं०पुं०) गाँव की बस्ती के आसपास की भूमि, गाँव की सीमा।

गोइ-(हिं०) देखो गोय।

गोइयां-(हिं०पुं०) साथ रहने वाला, साथी, सहचर।

गोई-(हिं०स्त्री०) बैलों की जोड़ी।

गोऊ-(हिं०वि०)चोराने या छिपाने वाला

गोंछ-(हिं०स्त्री०) गलमोच्छा, मोंछ।

गोंठ-(हिं०स्त्री०) गोष्ठ, कमर पर की धोती की लपेट। गोंठना-(क्रि०) मोड़ना।

गोंड़-(हिं०पुं०) एक शूद्र जाति, कहार जाति।

गोंड़रा-(हिं०पु०) गोल लकड़ी जो मोट के मुख पर बाँधी जाती है, परिधि, घेरा।

गोंड़री-(हिं०स्त्री०) कोई गोल पदार्थ।

गोंड़ा-(हिं०पुं०)घेरा हुआ स्थान, बाड़ा, गाँव, बड़ी चौड़ी सड़क, एक जिला

गोंद-(हिं०पुं०) वृक्षों से निकलने वाला लसदार पसेव।

गोंदरा-(हिं०पुं०) ओमल घास या पुआल की बनाई मोटी चटाई।

गोंदरी-(हिं०स्त्री०) घास पात की बनी हुई चटाई।

गोंदा-(हिं०पुं०) गारा मिट्टी का खपसा

गोंदीला-(हिं०वि०) जिस वृक्ष में से गोंद निकलना हो।

गो-(सं०पुं०) गाय, गऊ, पृथ्वी, जल, माता, स्वर्ग, चन्द्रमा, सूर्य, चक्षु, आँख, बाण, दिशा, वाक्य, किरण, प्रकाश, हीरा, नव की संख्या, इन्द्रिय, रोवां, वृषराशि, घोड़ा, गवैया, आकाश, बिजली, जीभ, सरस्वती, प्रशंसा करने वाला, बैल, नान्दी नामक शिवगण, वज्र। गोकण्ट-(सं०पुं०) गोखरू का पौधा। गोकर्ण-(सं०पुं०) सर्प, खच्चर, मृगविशेष, (सं०स्त्री०) मुर्वालता। गोकिल-(सं०पुं०) मूसल, लाङ्गल, हल। गोकुल-(सं०नपुं०) गोसमूह, गोशाला, एक प्राचीन गाँव जो मथुरा से पूर्व दक्षिण की ओर स्थित है। गोकोस-(हिं० पुं०) उतनी दूरी जहांतक गाय के बोलने का शब्द सुन पड़े।

गोक्षर-(सं०पुं०) गोखरू नामक पौधा, उसका फल।

गोखग-(हिं०पुं०) थलचर, पशु, जानवर

गोखरू-(हिं०पुं०) एक पौधा, गोंटे तथा बादले गूथकर बनाया हुआ साज, कलाई में पहिरने का एक आभूषण, पैर या हाथ के तलवे में निकलने वाला एक रोग जिसमें रूखे कड़े दाने पड़ जाते हैं।

गोखा-(हिं०पुं०) मोखा, झरोखा।

गोगा-(हिं०पुं०) छोटा कांटा या मेख।

गोगृष्टि-(सं०स्त्री०) केवल एक वार व्याई हुई गाय। गोग्रास-(सं०पुं०) श्राद्धादिक में गौ ओ देने के लिये निकाला हुआ भोजन का अंश।

गोघातक-(सं०पुं०) गाय की हत्या करने वाला।

गोचना-(हिं०क्रि०) रोकना, छेंकना। गेहूं मिला चना।

गोचनी-(हिं०स्त्री०) महीन छेद करने का यंत्र।

गोचर-(सं०पुं०) इन्द्रियों द्वारा ज्ञात विषय, ज्ञान विषय, गौ के चरने का स्थान, चरागाह, देश।

गोचरी-(हिं०स्त्री०) भिक्षावृत्ति, भीख माँगने का व्यवसाय ।
गोजई-(हिं०स्त्री०) गेहूं जव मिश्रित अन्न
गोजर-(हिं०पुं०) कनखजूरा ।
गोजल-(सं०नपुं०) गाय का मूत्र, गोमूत्र
गोजा-(सं०पुं०) तण्डुल. चावल, धान (हिं०पुं०) चरवाहे का चौपायों के हाँकने का डंडा ।
गोजित्-(सं०पुं०) पृथ्वी को जय करने वाला ।
गोजी-(हिं०स्त्री०) गाय हाकने की छड़ी, बड़ी लाठी, लट्ठ ।
गोझनवट-(हिं०पुं०) अंचल, स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो सिर और पीठ पर रहता है ।
गोझा-(हिं०पुं०)एक प्रकार का पक्वान्न, एक प्रकार की कँटीली घास,खलीता
गोट-(हिं०स्त्री०) कपड़े के किनारे पर शोभा के लिये लगाई जानेवाली पट्टी, किनारी, (पुं०) गाँव, समुदाय, टोली, मण्डली, चौपड़ का मोहरा, बाग बगीचे की सैर ।
गोटा-(हिं०पुं०) बादले का बिनी हुई सोनहली या रुपैली पट्टी जो कपड़ों के किनारे पर सिली जाती है, सूखा हुआ मल, सुद्दा ।
गोटी-(हिं०स्त्री०) लड़कों के खेलने का गोल टुकड़ा या कंकड़, चौपड़ का मोहरा, उपाय, लाभ, युक्ति; **गोटी बैठना**-उपाय या युक्ति सफल होना ।
गोठ-(हिं०स्त्री०)गोष्ठ,गोशाला,श्राद्ध, सैर
गोठिल-(हिं०वि०) कुण्ठित, कुन्द, जिसकी धार पैनी न हो ।
गोड़-(हिं०पुं०) पैर, पाँव ।
गोड़इत-(हिं०पुं०) गाँव में चौकसी देने वाला पहरेदार ।
गोड़गाव-(हिं०पुं०) घोड़े के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी ।
गोड़न-(हिं०पुं०) मिट्टी से नमक बनाने की क्रिया । **गोड़ना**-(हिं०क्रि०) मिट्टी खोदकर उलट पलट करके पोली करना, कोड़ना ।
गोड़ली-(हिं०पुं०) नाचने में प्रवीण पुरुष ।
गोड़वांस-(हिं०पुं०) रस्सा जिससे पशु का पैर खूंटे से बांधा जाता है ।
गोड़संकरा-(हिं०पुं०) स्त्रियों के पैर का एक आभूषण ।
गोड़ा-(हिं०पुं०) पलंग आदि का पाया, घोड़िया ।
गोड़ाई-(हिं०स्त्री०) गोड़ने की क्रिया या शुल्क ।
गोड़ाना-(हिं०क्रि०) गोड़ने का काम दूसरे से कराना ।
गोड़ापाई-(हिं०स्त्री०)बारंबार आना जाना
गोड़ारी-(हिं०स्त्री०) पलंग का वह सिरा जिधर पैर रहता है, पैताना, जूता ।
गोडिम्ब-(सं०पुं०)शृगाल,सियार,गीदड़
गोड़िया-(हिं०स्त्री०) उपाय करने वाला (पुं०) मल्लाह ।
गोडी-(हिं०स्त्री०) लाभ,
गोण-(सं०पुं०) वृषभ, बैल ।
गोणी-(सं०स्त्री०) बोरा, महीन वस्त्र, एक प्राचीन परिमाण ।
गोत-(हिं०पुं०) गोत्र, कुल, समूह,कुण्ड
गोतम-(सं०पुं०) न्याय दर्शन के रचयिता एक ऋषि । **गोतमी**-(सं०स्त्री०) अहल्या, गौतम ऋषि की पत्नी । गोदावरी नदी ।
गोता-(हिं०पुं०) जल आदि में डूबने की क्रिया, डुब्बी; **गोता खाना**-धोखे में पड़ना; **गोता मारना**-डुबकी लगाना, लुप्त होना; **गोताखोर**-डुबकी लगाने वाला ।
गोतिया, गोती-(हिं०वि०) अपने गोत्र का, भाई, बन्धु जिसके साथ शौचाशौच का सम्बन्ध हो ।
गोतीत-(सं०वि०) अगोचर, जो इन्द्रियों से न जाना जा सके ।
गोत्र-(सं०नपुं०) नाम, जंगल, क्षेत्र, मार्ग, समूह, वृद्धि, बढ़ती, धन, राजा का छत्र, बन्धु, भाई, वंश, सन्तति, कुल, एक प्रकार का जाति विभाग; **गोत्रज**-(सं०वि०) एक ही गोत्र में उत्पन्न, एक ही पूर्वज की सन्तान; **गोत्रसुता**-(सं०स्त्री०) पर्वतनन्दिनी, पार्वती ।
गोत्रा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, गोसमूह ।
गोत्री-(सं०वि०) समान गोत्र वाला, गोतिया ।
गोद-(हिं०स्त्री०) उत्संग,कोरा,वक्षस्थल के पास का स्त्रियों के साड़ी का भाग, अंचल; **गोद बैठना**-दत्तक बनाया जाना; **गोद लेना**-दत्तक बनाना; **गोद भरना**-सोहागिन स्त्री के अंचल मे नारियल आदि डालना
गोदनहार-(हिं०पुं०) शीतला का टीका लगाने वाला । **गोदनहारी**-(हिं०स्त्री०) गोदना गोदने वाली स्त्री ।
गोदना-(हिं०क्रि०) गड़ाना, चुभाना, किसी काम के लिये बारंबार प्रयत्न करना, हाथी को अंकुश लगाना, ताना मारना, मर्मवेधी बात कहना, (पुं०) तिल के आकार का काला चिह्न जो शरीर के किसी भाग पर बनाया जाता है ।
गोदनी-(हिं०स्त्री०)गोदना गोदने की सूई
गोदन्ती-(सं०स्त्री०) सफ़ेद हरताल, एक रत्न ।
गोदा-(हिं०पुं०) बड़, पीपल या पाकरी का पका फल; (सं०स्त्री०) गोदावरी नदी
गोदान-(सं०नपुं०) द्विजाति का केशान्त संस्कार, गाय या बैल का विधिवत् दान
गोदाम-(हिं०पुं०) सामग्री, सुरक्षित रखने का स्थान ।
गोदावरी-(सं० स्त्री०) भारतवर्ष के दक्षिण भाग की एक बड़ी नदी ।
गोदी-(हिं०स्त्री०) देखो गोद ।
गोध-(हिं०स्त्री०) गोह नामक जंगली पशु, सरीसृप ।
गोधन-(सं०नपुं०) गौओं का समूह, गौरूपी सम्पत्ति, चौड़े फल की तीर
गोधर-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़ ।
गोधा-(हिं०स्त्री०) गोह नामक जन्तु ।
गोधूम-(सं०पुं०) गेहूँ ।
गोधूलि-(सं०स्त्री०) सन्ध्या का समय, गाय के खुर से निकली हुई धूलि जो सूर्यास्त के समय इनके जंगल से चरकर लौटते समय उठती है ।
गोन-(हिं०स्त्री०) बैलों के पीठ पर लादने के लिये अन्न भरने का चमड़े, टाट इत्यादि का बोरा, सामान्य बोरा, टाट का थैला, नाव खींचने की रस्सी ।
गोनन्द-(सं०पुं०) कार्तिकेय के एक गण का नाम ।
गोनरखा-(हिं०पुं०) नाव का मस्तूल ।
गोनरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लम्बी घास ।
गोनर्द-(सं०पुं०) सारस पक्षी, नागरमोथा नाम की घास, महादेव,शिव, पतञ्जलि की जन्म भूमि ।
गोनस-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प, वैक्रान्त मणि ।
गोना-(हिं०क्रि०) गुप्त रखना,छिपाना।
गोनिया-(हिं०स्त्री०) भीत की सिधाई अथवा कोना नापने का एक अस्त्र । (पुं०) बोरा ढोने वाला, रस्सी बांधकर नाव खींचने वाला ।
गोनी-(हिं०स्त्री०) टाट का थैला, बोरा, पटुआ, सन ।
गोप-(सं०पुं०) गौ की रक्षा करने वाला, ग्वाला, अहीर, गांव का मालिक, राजा, गोशाला का प्रबंध करने वाला, उपकारक, वीर, एक गन्धर्व का नाम, गले में पहिरने का एक आभूषण; **गोपक**-गोप, ग्वाला, रक्षक । **गोपन्ति**-(सं०पुं०) शिव, महादेव, बल, विष्णु, राजा, इन्द्र, गोपाल, ग्वाला ।
गोपद-(सं०पुं०)गाय के खुर का चिह्न
गोपन-(सं०नपुं०) छिपाव,दुराव, रक्षा, घृणा, व्याकुलता, दीप्ति । **गोपना**-(हिं०क्रि०) छिपाना । **गोपनीय**-(सं०वि०) छिपाने योग्य, रक्षणीय ।
गोपा-(सं०स्त्री०) श्यामलता, गाय पालने वाली ग्वालिन । **गोपाङ्गना**-(सं०स्त्री०) गोपस्त्री, ग्वाला की स्त्री ।
गोपाल-(सं०पुं०) गोरक्षक, श्रीकृष्ण, अहीर,ग्वाला,पन्द्रह मात्राओं का एक छन्द । **गोपाली**-(सं०स्त्री०)गोप पत्नी, ग्वालिन ।
गोपाष्टमी-(सं०स्त्री०) कातिक सुदी अष्टमी । **गोपिका**-(सं०स्त्री०) गोप की स्त्री, अहिरिन ।
गोपित-(सं०वि०) गुप्त, छिपाया हुआ ।
गोपित्त-(सं०नपुं०) गोरोचन नामक द्रव्य ।
गोपिया-(हिं०स्त्री०) ढेलवांस ।
गोपी-(सं०स्त्री०) गोपपत्नी, अहिरिन, रक्षा करनेवाली । **गोपीचन्दन**-(हिं०पुं०) एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसको वैष्णव लोग शरीर और मस्तक में लगाते हैं ।
गोपील-(हिं०पुं०) एक प्रकार का खंजनपक्षी ।
गोपीनाथ-(सं०पुं०)गोपियों के स्वामी, श्रीकृष्ण ।
गोपुच्छ-(सं०पुं०) गाय की पूंछ, एक प्रकार का हार, प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा ।
गोपुर-(सं०नपुं०) गढ या नगर का फाटक, स्वर्ग, गोलोक ।
गोपुरीष-(सं०नपुं०) गोमय, गोबर ।
गोपेन्द्र-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण ।
गोप्य-(सं०वि०)गोपनीय, छिपानें योग्य
गोफ-(सं०पुं०)दास,सेवक, दासी पुत्र ।
गोफन-(हिं०पुं०) ढेलवांस ।
गोफा-(हिं०पुं०) नया निकला हुआ पत्ता, गाभा ।
गोबर-(हिं०पुं०) गौ की विष्टा, गौ का मल । **गोबरगणेश**-(हिं०वि०) भद्दा, मूर्ख । **गोबरहारा**-(हिं०पुं०) गोबर उठाने या पाथनेवाला नौकर ।
गोबरी-(हिं०स्त्री०) कंडा, उपला, गोहरा, गोबर का लेप । **गोबरैला**-(हिं०पुं०) गोबर में रहनेवाला एक प्रकार का कीड़ा ।
गोभ-(हिं०पुं०) पौधे का एक रोग ।
गोभा-(हिं०स्त्री०) लहर ।
गोय-(हिं०पुं०) गेंद ।
गोभिल-(सं०पुं०) सामवेदी गृह्यसूत्र के रचयिता एक ऋषि का नाम ।
गोभी-(हिं०स्त्री०) गाय की जीभ, एक प्रकार की तरकारी, एक प्रकार की घास ।
गोमण्डल-(सं०नपुं०) भूमण्डल, किरण समूह ।
गोम-(हिं०पुं०) घोड़ों की एक भौंरी ।
गोमती-(सं०स्त्री०) भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश की एक नदी, वासिष्ठी, ग्यारह मात्राओं का एक छन्द ।
गोमय-(सं०नपुं०) गोविष्ठा, गोबर ।
गोमर्द-(सं०पुं०) सारस पक्षी ।
गोमर-(हिं०पुं०) कसाई ।
गोमायु-(सं०पुं०) शृगाल, सियार ।
गोमुख-(सं०नपुं०) गौ का मुख, नरसिंघा नाम का बाजा, टेढ़ामेढ़ा घर, गौ के मुख के आकार का एक प्रकार का शंख, ऐपन । **गोमुखी**-(सं०स्त्री०) हिमालय पर्वत पर गंगा के पतनस्थान पर की गुहा या कन्दरा माला रखकर जप करने की थैली ।
गोमूत्र-(सं०नपुं०) गौ का मूत्र ।
गोमूत्रिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का चित्र काव्य ।
गोमृग-(सं०पुं०) गवय, नीलगाय ।
गोमेद, गोमेदक-(सं०पुं०) एक प्रकार का मणि जो कुछ ललाई लिये पीला

होता है, पीतमणि ।
गोमेध-(सं०पुं०) गोयज्ञ, एक यज्ञ जिसमें गो मांस का हवन होता था ।
गोरक-(सं०पुं०) एक प्रकार का विषैला सांप ।
गोरक्षक-(सं०वि०) गोपालक, ग्वाला ।
गोरखइमली-(हिं०स्त्री०) दक्षिण भारत का एक बहुत बड़ा वृक्ष ।
गोरखधंधा-(हिं०पुं०) अनेक तारों कड़ियों या काठ के टुकड़ों का समूह, झगड़े या उलझन का कार्य, पेंच, झगड़ा, उलझन ।
गोरखनाथ-एक प्रसिद्ध हठयोगी का नाम । **गोरखपंथी**-(हिं०वि०) गोरखनाथ के सम्प्रदाय का ।
गोरखमुंडी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास जिसमे गुलाबी रंग के छोटे गोल फूल निकलते है ।
गोरखा-(हिं०पुं०) नेपाल के अन्तर्गत एक प्रदेश, इस प्रान्त का निवासी ।
गोरज-(सं०नपुं०) गौ के खुरों से उड़ी हुई धूलि ।
गोरट-(सं०पुं०) खदिर, खैर ।
गोरटा-(हिं०वि०) गोरे रंग का, गोरा ।
गोरथक-(सं०नपुं०) बैल की गाड़ी ।
गोरन-(हिं०पुं०)एक वृक्ष जिसकी लकड़ी नाव बनाने के काम में आती है ।
गोरस-(सं०पुं०) गाय का दूध, दही, मठा, छाछ, इन्द्रियों का सुख ।
गोरसा-(हिं०पुं०) गाय के दूध से पाला हुआ बच्चा ।
गोरसी-(हिं०स्त्री०) दूध गरम करने की अंगीठी ।
गोरा-(हिं०वि०) गौर वर्ण, श्वेत और स्वच्छ रंग का (मनुष्य), युरोप अमेरिका आदि का निवासी ।
गोराई-(हिं०स्त्री०) गोरापन, सुन्दरता ।
गोराटी-(सं०स्त्री०) सारिका पक्षी, मैना
गोरी-(हिं०स्त्री०)सुन्दर गौर वर्णकी स्त्री
गोरू-(हिं०पुं०) सींघ वाले पशु,चौपाया
गोरूप-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
गोरोचन-(सं०पुं०) एक प्रकारका पीला द्रव्य जो गौके पित्तमें से निकलता है
गोर्खा-(हिं०पुं०) देखो गोरखा ।
गोलंबर-(हिं०पुं०) गुंबद, गोलाई,बगीचे में बना हुआ गोल चबूतरा ।
गोल-(सं० नपुं०) वर्तुलाकार पदार्थ, विधवा का जारज पुत्र, गोलाध्याय नामक ग्रन्थ, वृत्त, (नपुं०) गोलाकार पिण्ड, सब ओर वर्तुल, गेंदके आकार का; **गोलमोल**-अस्पष्ट रूपसे; **गोल बात**-अस्पष्ट वार्ता, मण्डली,समुदाय
गोलक-(सं०पुं०) माणिक, गुड़, मटर, गोल पिण्ड, बोल नामक औषधि, आँख का ढेला, आँख की पुतली, गोलोक, धाम, मिट्टी का बड़ा कुण्डा, गुम्बद, प्रतिदिन के आय का धन, रखने की थैली,गुल्लक,गल्ला,विधवा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र, किसी विशेष कार्य के लिये संग्रह करनेका कोष्ठ;

गोलगप्पा-(हिं०पुं०) एक तरह का खाने का पदार्थ जो खटाई के रस में डुबा कर खाया जाता है; **गोलदार**-क्रय विक्रय करने वाला ।
गोलमाल-(हिं०पुं०)अव्यवस्था,गड़बड़ी।
गोलमिर्च-(हिं०स्त्री०) काली मिर्च ।
गोलयन्त्र-(सं०नपुं०) ग्रह नक्षत्र आदि की गति जानने का यन्त्र विशेष ।
गोलयोग(सं०पुं०) ज्योतिष का एक बुरा योग, गोलमाल, गड़बड़ी ।
गोल विद्या-(सं०स्त्री०) पृथ्वीकी गोलाई, ज्योतिष शास्त्र का एक अङ्ग ।
गोला-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का वर्तुलाकार पिण्ड, तोप का गोला, वायु-गोला, नारियल या बेल का खोखला किया हुआ फल, नारियल की गरी, गोला, अन्न आदि रखने का गोदाम, घास का गट्ठर, किराने की मण्डी, छाजन करने का लंबा लट्ठा, सूत आदि की लपेटी हुई पिण्डी; **गोलाई**-(हिं०स्त्री०) घोलपन; **गोलाकार**-(सं० वि०)गोल आकृति वाला; **गोलाधार**-(हिं०वि०) मूसलाधार; **गोलार्ध**-(सं० पुं०) पृथ्वी का आधा भाग जो उसको एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक बीचो बीच काटने से बनता है ।
गोलियाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को गोल बनाना ।
गोली-(हिं०स्त्री०) वर्तुलाकार पिण्ड, वटिका, बटिया,दवाकी बटी, लड़कों के खेलने का कांच या मिट्टी का छोटा गोलाकार पिण्ड, गोली का खेल, छोटा घड़ा, बंदूक के भरकर छोड़ने का सीसे का ढला हुआ छोटा गोल पिण्ड ।
गोलोक-(सं०पुं०) एक सुन्दर पवित्र स्थान जहाँ देवता लोक रहते हैपरमधाम
गोलोकेश-(सं०पुं०) श्रीकृष्णचन्द्र ।
गोलोचन-(हिं०पुं०) देखो गोरोचन ।
गोवत्स-(सं०पुं०) गाय का बछवा ।
गोवना-(हिं०क्रि०) गान करना, गाना ।
गोवर्धन-(सं०नपुं०) गाय की वृद्धि, (पुं०) वृन्दावन का एक पर्वत जिसको श्रीकृष्ण ने गोपों को बचाने के लिये अपनी कानी अंगुली पर उठाया था।
गोविद्-(सं०स्त्री०) गोमय, गोबर ।
गोविन्द-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण, गौवों का अध्यक्ष, परब्रह्म, वेदान्तवेत्ता, तत्वज्ञ, गोमेदमणि ।
गोविमर्ग-(सं०पुं०) प्रातःकाल, तड़का।
गोशफ-(सं०पुं०) गाय का खुर ।
गोशाला-(सं०स्त्री०) गौ के रहने का स्थान, गोष्ठ ।
गोष्ठ-(सं०पुं०) गोशाला, गौ के रहने का स्थान, गोष्ठी, परामर्श, सलाह, दल, मण्डली ।
गोष्ठी-(सं०स्त्री०) बहुत से लोगों का समूह, सभा, वार्तालाप, बातचीत, परामर्श, मण्डली, एक ही अङ्क का नाटक या रूपक ।

गोष्पद-(सं०पुं०) गौ के खुर के इतना बड़ा गड्ढा ।
गोसगृह-(सं०नपुं०)शयनगृह,सोनेका घर
गोसा-(हिं०पुं०) गोइंठा, उपला ।
गोसाईं-(हिं०पुं०) गौवों का स्वामी, गोस्वामी, जिसने इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हो,ईश्वर,विरक्त, साधु, मालिक, प्रभु, सन्यासियों का एक सम्प्रदाय ।
गोसैयां-(हिं०पुं०) मालिक, प्रभु,ईश्वर।
गोस्तन-(सं०पुं०) फूलोंका गुच्छा, चार लड़ी का हार ।
गोस्तानी-(सं०स्त्री०)द्राक्षा,दाख,मुनक्का
गोस्थान-(सं०नपुं०) गौ के रहने का स्थान, गोशाला ।
गोस्वामी-(सं०पुं०) गौवों का मालिक, एक उपाधि जो उन यति लोगों को पूर्वकाल में दी जाती थी जो इन्द्रियों को अपने वशमें कर लेते थे, वैष्णव संप्रदाय के आचार्य ।
गोह-(हिं०स्त्री०) छिपकली के जाति का एक जंगली जन्तु ।
गोहन-(हिं०पुं०)साथी,संग रहने वाला, सङ्ग साथ ।
गोहनियां-(हिं०पुं०) सगी, साथी ।
गोहर-(हिं०पुं०) बिसखोपड़ा नामक जन्तु जो सर्प और गोहसे पैदा होताहै
गोहरा-(हिं०पुं०) सुखाया हुआ गोबर जो जलाने के काम में आता है ।
गोहराना-(हिं०क्रि०) पुकारना,बुलाना, शब्द करना ।
गोहरौर-(हिं०पुं०) पथे हुए कंडों का ढेर
गोहार-(हिं०स्त्री०) पुकार,दोहाई, शोर-गुल चिल्लाहट, हल्लागुल्ला
गोहारी-(हिं०स्त्री०) गोहार, हानि पूर्ति करने के लिये दिया हुआ धन ।
गोही-(हिं०स्त्री०) गुप्त वार्ता, छिपी बात, छिपाव, महुवे के फल का बीज
गोहुवन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का विषधर सर्प, कृष्णसर्प ।
गोह्य-(सं०वि०) अप्रकाश्य,छिपाने योग्य
गौं-(हिं०स्त्री०) सुयोग, अवसर, दाँव, घात, प्रयोजन, ढंग, पक्ष; **गौंघात**-अच्छा अवसर; **गौं का यार**-अपना अर्थ साधने वाला; **गौं पड़ना**-अर्थ होना ।
गौंटा-(हिं०पुं०) छोटा गांव या बस्ती ।
गौ-(सं० स्त्री०) गाय, गैय्या ।
गौख-(हिं० स्त्री०) खिड़की, झरोखा, दालान । **गौखा**-(हिं०पुं०)झरोखा, अरवा, आला, गाय का चमड़ा ।
गौखी-(हिं० स्त्री०) जूता ।
गौचही-(हिं०स्त्री०) गाय चराने का कर।
गौड़-(सं० पुं०) एक प्राचीन देश का नाम जो वंग देश से भुवनेश्वरी सीमा तक था, ब्राह्मणों की एक जाति, कायस्थोंका एक भेद,सारस्वत,कान्यकुब्ज, उत्कल, और मैथिल पंचगौड़ ब्राह्मण कहलाते हैं, देवगिरी और गान्धार के योग से उत्पन्न एक राग ।

गौड़ी-(सं० स्त्री०) गुड़ से बनी हुई मदिरा ।
गौड़ीय, गौड़ीया-(सं०वि०)गौड़ देशका
गौण-(सं० वि०) अप्रधान, अमुख्य, साधारण, गुण संबंधी ।
गौणी-(सं०स्त्री०) अस्सी प्रकार की लक्षणाओं में से एक, जिसमें केवल एक वस्तु का गुण लेकर दूसरेमें आरोपित किया जाता है, (वि०) अप्रधान, असाधारण, जो मुख्य न हो ।
गौतम-(सं०पुं०) गौतम ऋषि के वंशज, भारद्वाज मुनि,सप्तर्षि तारामण्डल मे से एक, बुद्धदेव, कृपाचार्य, न्यायशास्त्र के प्रवर्तक ऋषि; **गौतमी**-(सं०स्त्री०) गौतम ऋषि की पत्नी, अहल्या, गोदावरी नदी, दुर्गा, गोरोचन ।
गौदुमा-(हिं० वि०) गाय की पोंछ के आकार का ।
गौधूम-(सं० वि०) गेंहू की बनाई हुई रोटी इत्यादि ।
गौन-(हिं०पुं०) देखो गमन । **गौनई**-(हिं०स्त्री०)गायन,गीत। **गौनहाई**-(हिं०वि०)जिसका गौना हाल मे हुआ हो ।
गौनहार-(हिं०स्त्री०) दुलहिन के साथ उसके ससुराल जाने वाली स्त्री ।
गौनहारिन, गौनहारी-(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका गाने का व्यवसायहो
गौना-(हिं० पुं०) द्विरागमन, विवाह के बाद की एक प्रथा जिसमे वर ससुराल जाता है और वहाँ कुछ रीति पूरी करके वधू को अपने साथ घर लाता है ।
गौपायन-(सं० पुं०) गोप की सन्तान ।
गौमुख-(हिं० पुं०) देखो गोमुख ।
गौमुखी-(हिं० स्त्री०) देखो गोमुखी ।
गौर-(सं० वि०) सफेद रंग का, गोरा, उज्वल, (वि०) स्वच्छ, निर्मल,(पुं०) चन्द्रमा, सफ़ेद सरसों, पीला रंग, धव का पौधा, सोना, केसर (हिं० पुं०) गोबर का बना हुआ शिवलिंग ।
गौरता-(सं० स्त्री०) गोराई, गोरापन,
गौरव-(सं० नपुं०) महत्व, बड़प्पन, भारीपन, सम्मान, आदर, उत्कर्ष, अभ्युत्थान, (वि०) गुरु संबंधी ।
गौरवित-(सं०वि०) पूज्य, आदरणीय ।
गौरा-(सं०स्त्री०)गोरे रंगकी स्त्री,पार्वती, हरिद्रा,हलदी,एक,रागिणी का नाम ।
गौराङ्ग-(सं० पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण, शची के पुत्र चैतन्य महाप्रभु (वि०) गोरे शरीर वाला ।
गौराङ्गी-(सं०स्त्री०) छोटी इलायची ।
गौरिया-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का जलपक्षी, मिट्टी का बना हुआ छोटा हुक्का, एक प्रकार का मोटा वस्त्र ।
गौरी-(सं०स्त्री०) गोरी स्त्री, पार्वती, आठ वर्ष की कन्या, हल्दी, पृथ्वी, एक नदी का नाम, गोरोचन, दारुहल्दी, तुलसी, सफ़ेद रंग की गाय, गङ्गा नदी, सफ़ेद दूब, बुद्ध की एक शक्ति का नाम,चमेली, एक रागिणी,

का नाम; **गौरीकान्त**-(सं०पुं०) महादेव, शिव; **गौरीचन्दन**-(सं० पुं०) लाल चन्दन; **गौरीशंकर**-(सं०पुं०) शिव, महादेव, हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी।

गौरैया-(हिं०स्त्री०) देखो गौरिया, चटक।

गौल्मिक-(सं०पुं०) चौकसी देनेवाला सिपाही।

गौल्य-(सं०नपुं०); मीठापन, एक तरह की मदिरा।

ग्यान-(हिं०पुं०); देखो ज्ञान।

ग्यारस-(हिं० स्त्री०) एकादशी तिथि।

ग्यारह-(हिं०वि०) दश और एक (पुं०) दस और एक की सख्या, ११।

ग्रंथन-(सं०नपुं०) ग्रंथन, गूंथना, जोड़ना।

ग्रथित-(सं०वि०) गुथा हुआ, ढापा हुआ।

ग्रन्थ-(सं०पुं०) गाँठ देना, शास्त्र, पुस्तक, अनुष्टुप् छन्द, श्लोक, धन, सम्पत्ति, सिक्खों का धर्मशास्त्र, **ग्रन्थकरण**-ग्रन्थ रचना; **ग्रन्थकर्ता**-ग्रन्थ बनानेवाला; **ग्रन्थकार**-पुस्तक लिखनेवाला; **ग्रन्थचुम्बक**-जिसने बहुत सी पुस्तकें पढी हों परन्तु पूर्ण विद्वान् न हों; **ग्रन्थचुम्बन**-पुस्तक का सामान्य रूप पर पाठ मात्र।

ग्रन्थन-(सं०नपुं०) गुम्फन, जोड़, गुंथन।

ग्रन्थना-(हिं०क्रि०) जोड़ना, गूथना।

ग्रन्थसन्धि-(सं०स्त्री०) ग्रन्थ का विभाग, सर्ग, परिच्छेद, अध्याय, अङ्क, काण्ड, पर्व प्रकारण। **ग्रन्थसाहब**-(हिं० पुं०) सिक्खों का धर्मग्रन्थ जिसमें समस्त गुरुओं के उपदेश लिखे हैं।

ग्रन्थालय-(सं०पुं०)। पुस्तकालय।

ग्रन्थि-(सं०स्त्री०) गांठ, बन्धन, कुटिलता, छल, मायाजाल, एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर पर सूजन हो जाती है और गांठ के तरह के फोड़े निकल आते हैं, **ग्रन्थिछेदक**-गांठ काटनेवाला, गिरहकट; **ग्रन्थित**-(वि०) गूथा हुआ; जोड़ा हूआ; गांठदियाहुआ, **ग्रन्थित्व**-(सं०नपुं) गथने की क्रिया,

गंस-(हिं० पुं०) छल, छिद्र

ग्रन्थिपर्ण-(सं०नपुं०) गठिवन नामक पौधा, **ग्रन्थिफल**-(सं०पुं०) कपित्थ, कैथ का पेड, **ग्रन्थिबन्धन**-(नपुं०) विवाह के समय वर और कन्या के वस्त्र के किनारे को परस्पर बांधने की क्रिया, गँठबन्धन, **ग्रन्थिमत्**-(वि०) ग्रन्थियुक्त, गांठदार, **ग्रन्थिल**-(वि०) गांठदार, गंठीला, **ग्रन्थिला**-(स्त्री०) गाडर दूब।

ग्रसन-(सं०नपुं०) भक्षण, निगलना, पकड़ ग्रास, कौर, राहु द्वारा सूर्य या चन्द्रमा का ग्रास। **ग्रसना**-(हिं०क्रि०) कष्ट-देना, पकड़ना। **ग्रसमान**-(सं०वि०) ग्रास करनेवाला। **ग्रस्त**-(सं०वि०) भक्षित, पीड़ित, पकड़ा हुआ, खाया हुआ। **ग्रस्तास्त**-(सं० पुं०) ग्रहण लगने पर सूर्य या चन्द्रमा का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।

ग्रस्तोदय-(सं०पुं०) चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगा हुआ उदय होना।

ग्रह-(सं०पुं०) सूर्यादि ज्योतिष्क पदार्थ, सूर्य की परिक्रमा करनेवाला तारा, बालकों के अनिष्ट कारक स्कन्द आदि रोग, ग्रहण, राहु सूर्य या चन्द्र-ग्रहण, निर्बन्ध, नव की संख्या, (वि०) अधिक कष्ट देने वाला, **अच्छे ग्रह होना**-शुभ ग्रह होना, **बुरे ग्रह होना**-कष्ट देने वाले प्रतिकूल ग्रहों का होना; **ग्रहकक्षा**-(स्त्री०) वह वृत्ताकार पथ जिस पर ग्रह भ्रमण करता है, **ग्रहचिन्तक**-(सं०पुं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।

ग्रहण-(सं०नपुं०) स्वीकार, मंजूरी, ज्ञान, समझ, आदर, राहु द्वारा सूर्य या चन्द्र का आच्छादन।

ग्रहणी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का रोग जिसमें खाया हुआ अन्न नहीं पचता ज्यों का त्यों निकल जाता है

ग्रहणीय-(सं०वि०) ग्रहण करने योग्य।

ग्रहदशा-(सं० पुं०) ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था, अभाग्य। **ग्रहनायक**-(सं० पुं०) सूर्य, शनैश्चर, मन्दार का वृक्ष।

ग्रहपति-(सं०पुं०) सूर्य, शनि, गृह का स्वामी, चन्द्र। **ग्रहवेध**-(सं० पुं०) ग्रह की स्थिति आदि जानना।

ग्रहीतव्य-(सं० वि०) ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य।

ग्राम-(सं० पुं०) गांव, छोटी बस्ती, ढेर, समूह, संगीत मे सातो स्वरों का समूह, सप्तक, **ग्रामवासी**, शिव (वि०) गांव संबंधी, **ग्रामज**-(सं०वि०) गांव मे उत्पन्न, **ग्रामणी**-(सं०पुं०) प्रधान, अगुआ, गांव का मालिक, **ग्रामदेवता**-(सं०स्त्री०) गांव में किसी की स्थापित की हुई देवमूर्ति, गांव की रक्षा करने वाला देवता **ग्रामस्थ**-(सं०वि०) ग्रामवासी, देहाती।

ग्रामिक-(सं०वि०) ग्राम संबंधी, गांवका

ग्रामीण-(सं०वि०) देहाती, गँवार।

ग्राम्य-(सं०वि०) ग्राम संबधी, प्राकृत, मूढ, (पुं०) मैथुन, स्वीकार, अश्लील शब्द या वाक्य, काव्य का दोष जिसमे गंवारू विषयों का वर्णन हो; **ग्राम्यता**-(स्त्री०) असभ्यता, गंवारपन; **ग्राम्यधर्म**-(पुं०) मैथुन, स्त्रीप्रसङ्ग।

ग्राव-(सं०पुं०) पत्थर, ओला, बिनौरी, मेघ, बादल।

ग्रास-(सं०पुं०) कौर, निवाला, पकड़, सूर्य या चन्द्र का ग्रहण लगना, तृण, घास।

ग्रासक-(सं०वि०) पकड़ने वाला, निगलने या छिपाने वाला।

ग्रासना-(हिं०क्रि०) पकड़ना, घरना, निगलना, कष्ट देना, सताना।

ग्राह-(सं०पुं०) ग्रहण, पकड़, मगर, घड़ियाल, ज्ञान, आग्रह, हठ, स्वीकार

ग्राहक-(सं०वि०) ग्रहण करने वाला, मोल लेने वाला, ज्ञापक, चाहने वाला, (पुं०) मूल बांधने की औषधि

ग्राही-(सं०पुं०) कैथ (वि०) ग्राहक, मल रोकने वाला, स्वीकार करने वाला

ग्राह्य-(सं०वि०) स्वीकार करने योग्य, जानने योग्य।

ग्रीखम-(हिं०पुं०) देखो ग्रीष्म।

ग्रीवा-(सं०स्त्री०) कन्धा, गरदन, गला।

ग्रीषम-(हिं०पुं०) देखो ग्रीष्म।

ग्रीष्म-(सं०पुं०) गरमी का ऋतु, गरम, उष्ण।

ग्रैव-(सं०वि०) ग्रीवा (गरदन) सबंधी (पुं०) गले में पहिरने का एक आभूषण

ग्रैवेयक-(सं०नपुं०) गले का अलंकार, हार, माला, हँसुली।

ग्रेही-(हिं०वि०) संसारी।

ग्रैष्म-(सं०वि०) ग्रीष्म संबंधी, गरमी के ऋतु का।

ग्लपन-(सं० नपुं०) ग्लानिकरण, निन्दा, शिथिलता।

ग्लपित-(सं०वि०) लज्जित, दग्ध, जला हुआ।

ग्लहन-(सं०नपुं०) द्यूतक्रीड़ा, जुआ खेल

ग्लान-(सं०वि०) रोगी, थका हुआ।

ग्लानि-(सं०स्त्री०) दुर्बलता, अनुत्साह, खिन्नता, अरुचि, शिथिलता, अपने कार्य में अयोग्यता या बुराई देखकर अनुत्साह होना।

ग्वांड़-(हिं०पुं०) घरके चारो ओरका घेरा

ग्वार-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसके फल की तरकारी और बीज की दाल होती है। खरथी। देखो ग्वाल

ग्वारपाठा-(हिं०पुं०) घृतकुमारी, घिकुआर

ग्वारिन-(हिं०स्त्री०) गोप की स्त्री, ग्वालिन।

ग्वाल-(हिं०पुं०) गोप, ग्वाल, अहीर।

ग्वालककड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का जंगली चिचिड़ा।

ग्वालिन-(हिं०स्त्री०) ग्वाले की स्त्री, अहिरिन, एक प्रकार का बरसाती कीड़ा, गिजाई।

ग्वैठना-(हिं०क्रि०) ऐठना, मरोड़ना।

ग्वैंड़ा, ग्वैंड़-(हिं०पुं०) गाँव के समीप की भूमि।

ग्वैंड़े-(हिं०क्रि०वि०) निकट, पास, समीप।

घ

घ-हिन्दी वर्णमाला के व्यजनों में से कवर्ग का चतुर्थ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।

घ-(सं०पुं०) घण्टा, घड़ी, घर्घर शब्द, वर्ष, साल।

घंघराघोर-(हिं०पुं०) भ्रष्टाचार जिसमें छुवाछूत का विचार न हो।

घँघरी-(हिं०स्त्री०) देखो घघरी।

घंटा-(हिं०पुं०) अढ़ाई घड़ी का समय, बड़ी घंटी।

घँघोरना, घँघोलना-(हिं०क्रि०) हिलाकर घोलना, जलको हिलाकर-उसमें कुछ मिला देना, जलको हिलाकर गन्दा करना।

घंट-(हिं०पुं०) घड़ा, घंटा, मृतक क्रिया के संबध में जो घड़ा पीपल के वृक्ष बाँधा जाता है।

घंघरा-देखो घघरा।

घंटाकरन-(हिं०पुं०) एक तरहकी घास।

घंटाघर-(हिं०पुं०) वह ऊंचा घर जिस पर चारों ओर से देख पडने वाली घरम घड़ी लगी हो जिसका घंटा दूर तक सुनाई पड़ता हो। **घंटी**-(हिं०स्त्री०) छोटा घंटा, धातु की छोटी लोटिया, घुंघरू, घंटी बजने का शब्द, जीभकी जड़ के पास लटकती हुई मांस की छोटी ग्रन्थि, कौवा।

घई-(हिं०स्त्री०) पानी में का भँवर या चक्कर, (वि०) बहुत गहरा, अथाह, देखो गंभीर।

घकार-(सं०पुं०) "घ" अक्षर।

घघरबेल-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पहरावा, वंदाल।

घघरा-(हिं०पुं०) स्त्रियों का लँहगा।

घघरी-(स्त्री०) छोटा घघरा या लंहगा।

घचाघच-(हिं०पुं०) नरम पदार्थ में नुकीली वस्तु के चुभने का शब्द।

घट-(सं०पुं०) मिट्टी का पात्र, घड़ा, जलपात्र, कलसा, कुम्भराशि, पिण्ड, शरीर, मन, हृदय (वि०) न्यून, कम, घटा हुआ।

घटक-(सं०पुं०) मध्यस्थ, बिचवई, विवाह संबंध निश्चित कराने वाला, चतुर मनुष्य, दलाल, संयोजक, घड़ा, वंश परंपरा को बतलाने वाला।

घटकर्ण-(सं०पुं०) कुम्भकर्ण।

घटकना-(हिं०क्रि०) देखो गटकना।

घटका-(हिं०पुं०) मृत्युकाल की वह स्थिति जब सांस लेने में घर घर शब्द होता है, गले में कफ रुकने की अवस्था।

घटकार-(सं०पुं०) कुम्भकार, कोंहार।

घटज-(सं०पुं०) अगस्त्यमुनि।

घटती-(हिं०स्त्री०) न्यूनता, कमी, कसर।

घटदासी-(सं०स्त्री०) कुटनी, रंडीकी दासी

घटन-(सं०नपुं०) योजना, सम्मेलन, गढ़ा जाना, उपस्थित होना। **घटना**-(हिं०क्रि०) उपस्थित होना, ठीक से बैठना, मेल में होना, मेल में मिल जाना, ठीक उतरना, कम होना, क्षीण होना, पर्याप्त न होना, (स्त्री०) अकस्मात् किसी बात का होना, दैवगति।

घटनीय-(सं०वि०) घटना होने योग्य।

घटबढ़-(हिं०स्त्री०) न्यूनाधिकता,

घटभव, घटयोनि-(सं०पुं०) अगस्त्यमुनि

घटवाना-(हिं०क्रि०) कम कराना, घटाने का काम कराना।

घटवाई-(हिं०पुं०) घाट का कर लेने वाला रोकनेवाला; (स्त्री०) कम करवाई।
घटवार-(हिं०पुं०) घाट का कर लेने वाला, मल्लाह, मांझी, घाट पर बैठकर दान लेने वाला ब्राह्मण।
घटसम्भव-(सं० पुं०) कुम्भसंभव, अगस्त्यमुनि।
घटस्थापन-(सं०नपुं०) मन्त्रपूर्वक घट की स्थापना, मन्त्र पढ़कर जल से घड़ा भर कर रखना।
घटहा-(हिं०पुं०)घाट का ठेकेदार, एक पार से दूसरे पार जानेवाली नाव।
घटा-(सं०स्त्री०)समूह झुण्ड, ढेर, घटना, गोष्ठी, धूमधाम, समारोह, उमड़ते हुए मेघों का समूह।
घटाई-(हिं०स्त्री०) दीनता, अप्रतिष्ठा।
घटाकाश-(सं०पुं०) घड़े के भीतर का खाली स्थान।
घटाटोप-(सं०पुं०) आडंबर, पाखण्ड, तड़क भड़क, गाड़ी या पालकी की ओहार, चारों ओर से घिरी हुई बादलों की घटा।
घटाना-(हिं०क्रि०) न्यून करना, कम करना, काटना, बाकी निकालना, अप्रतिष्ठा करना। **घटाव**-(हिं०पुं०) न्यूनता; कमी, अवनति। **घटावना**-(हिं०क्रि०) देखो घटाना।
घटिका-(सं०स्त्री०)एक दण्ड या चौबीस मिनटका समय, छोटा घड़ा, गगरी, घटीयंत्र, घड़ी।
घटिका यन्त्र-(सं०नपुं०)समय बतलाने का यन्त्र।
घटिघट-(हिं० पुं०) शिव, महादेव।
घटित-(सं० वि०) रचित, निर्मित, बनाया हुआ। **घटितव्य**-(सं०वि०) जिसके होने की संभावना हो।
घटिया-(हिं० वि०) कम मूल्य का, सस्ता, तुच्छ, नीच, अधम। **घटिहा**-(हिं०वि०) दांव पाकर अपना स्वार्थ साधने वाला, व्यभिचारी, लम्पट, दुष्ट, नीच, छली।
घटी-(सं०स्त्री०) घड़ी, चौबीस मिनट का काल, मुहूर्त, समय सूचक यन्त्र, छोटा, घड़ा, गगरी, (हिं० स्त्री०) न्यूनता, कमी, घाटा, हानि।
घटोत्कच-(सं०पुं०) हिडिम्बा के गर्भ से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।
घटोद्भव-(सं०पुं०) अगस्त्य मुनि।
घटोर-(हिं०पुं०) मेढा, भेड़ा।
घट्ट-(सं०पुं०) घाट, घाट का कर लेने का स्थान।
घट्टित-(सं०वि०)निर्मित, बनाया हुआ।
घट्ठा-(हिं० पुं०) शरीर पर का उभड़ा हुआ चिह्न जो रगड़ लगने से पड़ जाता है।
घड़घड़-(हिं० पुं०) बादल गरजने या गाड़ी के चलने का शब्द, घड़घड़ाहट, बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द।
घड़घड़ाना-(हिं०क्रि०) घड़घड़ शब्द होना।
घड़ना-(हिं०क्रि०) गढ़ना।
घड़नैल-(हिं०पुं०) बाँस में घड़े बाँध कर बनाया हुआ ढांचा जिसपर चढ़कर छोटी नदी पार हो सकती है।
घड़ा-(हिं०पुं०)मिट्टी का गगरा, गगरी, कलसा, जलपात्र; **घड़ों पानी पड़ जाना**-लज्जा के मारे सिर झुकजाना
घड़ाई-(हिं०स्त्री०) देखो गढाई।
घड़िया-(हिं०स्त्री०) सोना चाँदी गलाने का सोनार का पात्र, मिट्टी का छोटा पात्र, मधु का छत्ता, बच्चेदानी, गर्भाशय।
घड़ियाल-(हिं० पुं०) पूजा के समय बजाया जानेवाला घण्टा, एक हिंस्रक जलजन्तु, ग्राह।
घड़ियाली-(हिं०पुं०)घण्टा बजानेवाला मनुष्य।
घड़ी-(हिं०स्त्री०) समय बतलाने वाला यन्त्र, समय, काल, अवसर, चौबीस मिनट का समय; **घड़ी घड़ी**-बारम्बार, थोड़ी थोड़ी देर पर; **घड़ी गिनना**-घबराहट के कारण किसी घटना का आसरा देखना; **घड़ी दिया**-वह घड़ा जो किसी मनुष्य के मरने पर घर में रक्खा जाता है; **घड़ीसाज**-घड़ियोंकी मरम्मत करनेवाला
घड़ोला-(हिं०पुं०)छोटा घड़ा, झंझर।
घड़ौंची-(हिं०स्त्री०)भरा हुआ जल का घड़ा रखने की तिपाई।
घण्ट-(सं०वि०)कान्तियुक्त, दीप्तिमान्
घण्टाकर्ण-(सं०पुं०)शिव का एक अतिप्रिय अनुचर। **घण्टानाद**-(सं०पुं०) कुबेर के एक मंत्री का नाम।
घण्टिका-(सं०स्त्री०) छोटा घण्टा, तालु में की छोटी जिह्वा, घुंघरू।
घतिया-(हिं०वि०) धोखा देनेवाला।
घतियाना-(हिं० क्रि०) अपनी दांव या घात में लाना, चुराना, छिपाना।
घन-(सं०पुं०) मेघ, समूह, विस्तार, शरीर, झुण्ड, अभ्रक, लोहार का गरम लोहा पीटने का बड़ा हथौड़ा, सम्पुट, कांसे का बाजा, घड़ियाल, घंटा, लोहा, पिण्ड, शरीर, ताल देने का बाजा, तीन अंकों का गुणनफल, लम्बाई, चौड़ाई, और मोटाई का विस्तार (वि०) ठोस, घना, गझिन, दृढ़, गंठा हुआ, अधिक, **घनकाल**-वर्षाऋतु; **घनकोदण्ड**-इन्द्रधनुष;
घनक-(हिं०स्त्री०) गड़गड़ाहट। **घनकना**-(वि०) गरजनीय।
घनकारा-(वि०) गरजने वाला। **घनक्षेत्र**-वह क्षेत्र जिसकी लम्बाई चौड़ाई तथा ऊँचाई बराबर हो; **घनगरज**-बादल के गरजने का शब्द, एक प्रकार की तोप।
घनघनाना-(हिं०क्रि०) घंटे के समान शब्द करना या होना।
घनघनाहट-(हिं०स्त्री०)घनघनका शब्द।
घनघोर-(हिं०पुं०) घनघनाहट, भीषण ध्वनि, बादल की गरज (वि०) बहुत घना; भयंकर; **घनघोरघटा**-काली काली घटा।
घनचक्कर-(हिं०पुं०) चंचल बुद्धि का मनुष्य, मूढ़, मूर्ख, व्यर्थ घूमनेवाला मनुष्य, सूर्यमुखी का फूल, एक प्रकारकी अग्निक्रीडा, चक्कर, जंजाल।
घनज्वाला-(सं०स्त्री०)बिजली की चमक।
घनतार-(हिं०पुं०) झांझ।
घनत्व-(सं०नपुं०) घनापन, ठोसपन, सघनता, लंबाई चौड़ाई और ऊँचाई तीनों का भाव।
घनतिमिर-(सं०नपुं०)गहरा अन्धकार।
घननाद-(सं०पुं०) गरज, रावण का पुत्र मेघनाद।
घनपति-(सं०पुं०) मेघो के अधिपति इन्द्र
घनप्रिय-(सं०पुं०) मयूर, मोर।
घनफल-(सं०नपुं०)लंबाई चौड़ाई और मोटाई गहराई या ऊचाई तीनों का गुणन फल, वह गुणनफल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो।
घनवान-(हिं०पुं०)एक प्रकार का बाण जिसके चलानेसे बादल छा जाते थे।
घनबेल-(हिं० वि०) जिसपर बेटबूटे बने हों।
घनमल-(सं०पुं०)गणित में जिसी घन राशि का मूल अङ्क यथा ६४ का घनमूल ४ है।
घनरस-(सं०पुं०) जल, पानी, कपूर।
घनवाही-(हिं०स्त्री०) घन से तपे हुए लोहे को पीटनेका काम, घन चलाने वाले के खड़े होने का गड्ढा।
घनश्याम-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण, काला बादल (वि०) मेघ के समान काला।
घनसार-(हिं०पुं०) देखो घनरस।
घना-(हिं०वि०) सघन, गझिन, गुंजान निकट का, घनिष्ठ, अधिक।
घनाक्षरी-(सं०स्त्री०) दण्डक या मनहर छन्द, कवित्त।
घनाघन-(हिं० पुं०) बरसने वाला बादल, इन्द्र।
घनात्मक-(सं० वि०) जिसकी लबाई, चौड़ाई तथा मोटाई, ऊंचाई या गहराई समान हो।
घनानन्द-(सं०पुं०) गद्य काव्य का एक भेद।
घनाली-(हिं०स्त्री०) मेघमाली।
घनिष्ठ-(सं०वि०) घना, गाढा, निकट या समीप का, बहुत अधिक।
घने-(हिं०वि०) अनेक, बहुत; **घनेरा**, अत्यधिक, अतिशय, बहुत; **घनेरे**, अगणित, अत्यन्त, बहुत।
घनो-(हिं०वि०) देखो घना।
घनोपल-(सं०पुं०) ओला, बिनौला।
घपचिआना-(हिं०क्रि०) व्यग्र होना, घबड़ाना।
घपची-(हिं०स्त्री०)दोनों हाथों की कसकर पकड़।
घपला-(हिं०पुं०) गड़बड़, गोलमाल।
घपुआ-(हिं०वि०) मूर्ख, लंठ।
घबड़ाना, घबराना-(हिं०क्रि०) व्यग्र होना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, चंचल होना, भय से आतुर होना भौचक्का होना, जी उचटना, आतुर होना, जल्दी मचाना, जी न लगना, अधीर होना, व्यग्र करना, शान्ति भंग करना।
घबराहट-(हिं०स्त्री०) व्याकुलता, उतावलापन, अशान्ति, उद्विग्नता।
घमंका-(हिं०पुं०) घूंसा, मुक्का।
घमंड-(हिं०पुं०) गर्व, अहंकार, अभिमान, भरोसा, सहारा, वीरता।
घमंडी-(हिं०वि०-स्त्री० घमंडिन) अहंकारी, अभिमानी।
घम-(हिं०पुं०) कोमल वस्तु पर कड़ा आघात पड़ने का शब्द; **घमकना**-(हिं०क्रि०) गभीर शब्द होना, घूसा मारना, गरजना, धमकना, गंभीर शब्द करना।
घमका-(हिं०पुं०) गदा या घूसे का शब्द, आघात का शब्द, उमस।
घमघमाना-(हिं०क्रि०) घमघम शब्द करना, घूसा मारना, प्रहार करना।
घमर-(हिं०पुं०) नगाड़े ढोल इत्यादि की गंभीर ध्वनि।
घमरौल-(हिं०स्त्री०)उधम, गड़बड़, उपद्रव।
घमस, घमसा-(हिं०पुं०) उमस, धूप की गरमी।
घमाघम-(हिं०क्रि०वि०) शब्द सहित, वेग से।
घमायल-(हिं०वि०) धूप में पका हुआ (फल)।
घमासान-(हिं०पुं०) गहरी लड़ाई, भयंकर युद्ध, (वि०) प्रचण्ड, भयंकर।
घमाका-(हिं०पुं०) देखो घमका।
घमाह-(हिं०पुं०) धूप न सहने वाला बैल।
घमोहा-(हिं०वि०) घाम खाया हुआ।
घमोई-(हिं०स्त्री०) बांस का एक रोग जिसके लगाने से इसमें नये अंकुर नहीं निकलते।
घमोय-(हिं०स्त्री०) एक कटीले पत्तोंका पौधा, भड़भाड़, सत्यानाशी।
घर-(हिं०पुं०) गृह मनुष्यों के रहने का स्थान, स्वदेश, जन्मभूमि, वंश, घराना, कार्यालय, छिद्र, छेद, गृहस्थी, उत्पादक, उत्पन्न करने वाला; **अपना घर समझना**-संकोच मन में न लाना; **घर उठना**-मकान बनाना; **घर उजड़ना**-परिवार का नाश होना; **घर करना**-बसना, स्थान बना लेना, गड्ढा करना; **घर का**-निजी, अपना, आपस का; **घर का अच्छा**-अच्छे कुल का; **घर का आदमी**-कुटुम्बी; **घर का उजाला**-कुल का यश बढ़ाने वाला; **अंधेरे घर का उजाला**-अति प्रतापी; **घर का न घाट का**-जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो; **घर की**

खेती-अपनी ही वस्तु; **घर के घर**-गुप्त रूप से; **घर का घर**-सम्पूर्ण परिवार; **घर घलना**-परिवार की दुर्दशा होना; **घर घालना**-कुल की मर्यादा नष्ट करना; **घर जमाना**-गृहस्थी की सामग्री इकट्ठा करना; **घर पीछे**-प्रत्येक घरमें; **घर फूंक तमाशा**-स्वय घर की सम्पत्ति नाश करने की विधि; **घर फोड़ना**-परिवार मे कलह उत्पन्न करना; **घर बनाना**-घर को समृद्ध करना; **घर बसाना**-विवाह करना; **घर बैठे**-बिना कुछ काम किये; **घरभर**-सारा परिवार; **घरमें**-पत्नी, स्त्री; **घरसे**-अपने पास से; **घर सेना**-सदा घरमें पड़े रहना।

घरऊ-(हिं०वि०) निजका, अपना।

घरघराना-(हिं० क्रि०) घरघरशब्द करना (पुं०) परिवार, कुटुम्ब, वंश; **घरघराहट**-घरघर शब्द।

घरघाल, घरघालन-(हिं०वि०) परिवार का नाश करने वाला।

घरजाया-(हिं०स्त्री०) घर का दास।

घरदासी-(हिं०स्त्री०) गृहिणी, भार्या, पत्नी।

घरद्वार-(हिं०पुं०) रहने का स्थान, ठौर, ठिकाना, गृहस्थी, सम्पत्ति।

घरनाल-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की प्राचीन समय की तोप।

घरनी-(हिं०स्त्री०) घरवाली, गृहिणी, पत्नी, भार्या।

घरपत्ती-(हिं०स्त्री०) प्रत्येक घरसे लेने का चन्दा, बेहरी, अंशदान।

घरफोड़ना, घरफोरी-(हिं०वि०) परिवार में कलह उत्पन्न करने वाला।

घरबसा-(हिं० पुं०) उपपति, जार, यार, पति। **घरबार**-(हिं० पुं०) रहने का स्थान, ठौर, ठिकाना, गृहस्थी, किसी की निजी सम्पत्ति।

घरबारी-(हिं०पुं०) गृहस्थ, कुटुम्बी, बाल बच्चों वाला।

घरमकर-(हिं०) घर्मकर, सूर्य।

घरना-(हिं०क्रि०) घिसना, रगड़ना।

घरवा-(हिं०पुं०) छोटा घर, कुटी।

घरबार-(हिं०पुं०) घड़ियाल।

घरवात-(हिं०स्त्री०) गृहस्थी, घर की सम्पत्ति, घर की सामग्री।

घरवाला-(हिं०पुं०स्त्री०) घरवाली घर का मालिक, स्वामी, पति।

घरसा-(हिं०पुं०) रगड़, घस्सा।

घरहाई-(हिं०स्त्री०) परिवार में कलह उत्पन्न करने वाली स्त्री, निन्दक, अपमान फैलाने वाली।

घराऊ-(हिं०वि०) घर का, गृह संबंधी, आपस का, निजी।

घराती-(हिं०पुं०) विवाह में कन्या के पक्ष के मनुष्य।

घराना-(हिं०पुं०) वंश, कुल।

घरिया-(हिं०स्त्री०) देखो घड़िया।

घरियाना-(हिं०क्रि०) कपड़े को तह करके लपेटना।

घरियार-(हिं०पुं०) देखो घड़ियाल।

घरियारी-(हिं०पुं०) घंटा बजाने वाला

घरी-(हिं०स्त्री०) घड़ी, तह, परत,

घरीक-(हिं०क्रि०वि०) घड़ी भर, थोड़ी देर तक।

घरुआ-(हिं०पुं०) गृहस्थी का उचित प्रबंध।

घरू-(हिं०वि०) गृहस्थी सबंधी, घरका

घरेलू-(हिं०वि०) घरमें रहनें वाला, पलुआ, पालतू, घरका, निजका, घरका बना हुआ, घरू।

घरैया-(हिं०वि०) परिवार संबंधी, अति घनिष्ठ।

घरो-(हिं०पुं०) घड़ा, कलश।

घरोक-(हिं०पुं०) प्रेम व्यवहार।

घरौंदा, घरौंधा-(हिं०पुं०) छोटे बच्चों के खेलने का कागज मिट्टी, लकड़ी आदि का बना हुआ छोटा घर, नन्हा सा घर।

घरौना-(हिं०पुं०) आलवाल घर।

घर्घर-(सं०पुं०) घड़घड़ाहट का शब्द।

घर्म-(सं०पुं०) आतप, धूप, घाम, **घर्मविन्दु**-पसीना, **घर्मांशु**-सूर्य।

घर्रा-(हिं०पुं०) आंखमें लगाने का एक प्रकार का अंजन, कफके कारण गले की घरघराहट का शब्द।

घर्राटा-(हिं०पुं०) गहरी नींद में सांस लेने का शब्द; **घर्राटा मारना**-गहरी नींद सोना।

घर्षण-(सं०पुं०) रगड़, घिस्सा।

घर्षणी-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।

घलना-(हिं०क्रि०) फेंका जाना, गिर पड़ना, तीर गोली आदि का छट पड़ना, मारपीट होना।

घलाघल, घलाघली-(हिं०स्त्री०) मारपीट

घलुआ-(हिं०पुं०) परिमाण के अधिक वस्तु जो ग्राहक को (तौल से अधिक) दी जाय, घेलौना।

घवद-(हिं०स्त्री०) देखो घौद।

घवरि-(हिं०स्त्री०) फूल या पत्तियोंकागुच्छा

घसकना-(हिं०क्रि०) देखो खिसकना।

घसखदा-(हिं०पुं०) घासखोदनेवाला, मूर्ख

घसना-(हिं०क्रि०) रगडना, घिसना।

घसिटना-(हिं०क्रि०) रगड़ते हुए खींचना

घसियारा-(हिं०पुं०-स्त्री०) घसियारिन। घास छीलनेवाला, घास बेंचनेवाला।

घसीट-(हिं०स्त्री०) जल्दी लिखने का काम, जल्दी में लिखा हुआ लेख।

घसीटना-(हिं०क्रि०) रगड़ खाते हुए खींचना, जल्दी से लिखकर काम चालू करना।

घस्सा-(हिं०पुं०) घिस्सा, रगड़।

घहनाना-(हिं०क्रि०) घण्टे आदि का टनटन करना, घहराना!

घहरना-(हिं०क्रि०) गम्भीर शब्द करना

घहरानी-(हिं०क्रि०) गरजना, चिग्घाड़ना

घहरानि-(हिं०स्त्री०) गम्भीर शब्द, गरज

घहरारा-(हिं०पुं०) गम्भीर शब्द,

घहरारी-(हिं०स्त्री०) देखो घहरारा।

घां-(हिं०स्त्री०) दिशा, ओर।

घांघरा-(हिं०पुं०) घाघरा, लहगा।

घांघरी, घांघरो-(हिं०) देखो घाघरा।

घांटी-(हिं०स्त्री०) गले के भीतर की घंटी, (कौआ)

घांटो-(हिं०पुं०) एक गाना जो चैत्र मास में गाया जाता है।

घांह-(हिं०पुं०) ओर।

घा-(हिं० स्त्री०) ओर, **चहुघा**-(क्रि०वि०) चारो ओर।

घाइ-(हिं०पुं०) देखो घाव।

घाइल-(हिं०वि०) देखो घायल।

घांई-(हिं०स्त्री०) ओर, सन्धि, बार, पानी में का भँवर।

घाइ-(हिं०स्त्री०) दो अगुलियों के बीच का कोना, प्रहार, चोट, छल, धोखा, आघात; **घाइयां बतलाना**-टालटूल करना। **घाउ**-(हिं०पुं०) घाव।

घाऊघप-(हिं०वि०) गुप्त रूप से किसी का धन हरण करनेवाला, चुपके से अपना अर्थ साधनेवाला।

घाएँ-(हिं०अव्य०) ओर।

घाघ-(हिं०पुं०) अतिचतुरमनुष्य, सयाना

घाघरा-(हिं०पुं०) स्त्रियों का लहंगा, सरजू नदी; **घाघरा पलटन**-गोरों की सेना जिनका कमर के नीचे का पहिरावा घाघरेके आकारका होताहै

घाघी-(हिं०स्त्री०) मछली पकड़ने की बड़ी जाल।

घाट-(हिं०पुं०) नदी; आदि का वह स्थान जहां लोग नहाते धोते या नाव पर चढ़ते है, पहाड़, नीचा ऊंचा पहाड़ी स्थान, दिशा, डीलडौल, रीति, तलवारकी धार, बुराई, छल, कपट, (वि०) कम, थोड़ा; **घाट घाट का पानी पीना**-घूम कर अनुभव प्राप्त करना; **घाट घरना**-मार्ग रोकना; **घाट लगना**-ठिकाना पाना; **घाट कप्तान**-बन्दरगाह का अध्यक्ष; **घाटबन्दी**-किसी निर्धारित स्थान से नाव या जहाज ले जाने की मनाही; **घाटवाल** घाट पर बैठकर दान लेनेवाला घाटिया, गंगापुत्र।

घाटा-(हिं०पुं०) हानि, घटी।

घटारोह-(हिं०पुं०) घाट से किसी को उतरने देना।

घाटि-(हिं०वि०) न्यून, कम, घटकर (स्त्री०) नीच कार्य, पाप।

घाटिया-(हिं०पुं०) घाटों पर बैठ कर दान लेनेवाला ब्राह्मण, गंगापुत्र।

घाटी-(हिं०स्त्री०) पर्वतों के बीच की भूमि, पहाड़ का ढालुआ स्थान, दर्रा।

घाटी-(हिं०स्त्री०) देखो घाटा।

घात-(हिं०पुं०) धक्का, प्रहार, चोट, वध, हत्या, बुराई, गणित में गुणन फल, दाँव, ताक, घात, अनुकूल अवस्था, रंगढंग, छल कपट; **घात मे आना**-अभिप्राय सिद्ध होने के अनुकूल होना; **घात लगना**-सुअवसर प्राप्त होना; **घात करना**-छलना, घात **में बैठना**, छिपकर आक्रमण करने के लिये तैयार रहना।

घातक-(सं०वि०) मार डालने वाला, हत्यारा, शत्रु।

घातिक-(हिं०पुं०) घातक, हत्यारा।

घातिनी-(हिं०स्त्री०) वध करने वाली, हत्यारी। **घाती**-(सं०पुं०) मारने वाला, घातक, हत्यारा, संहारक, नाश करने वाला। **घातुक**-(सं०वि०) हिंसक, क्रूर, हत्यारा।

घान-(हिं०पुं०) जितनी वस्तु एक बार कोल्हू या चक्की में डाली जाती है, अथवा पकाई जाती है आघात, चोट, प्रहार, बड़ा हथौड़ा।

घाना-(हिं०क्रि०) मारना, नाश करना, पकड़ना।

घानी-(हिं०स्त्री०) देखो घान, समूह, ढेर; **घाम**-(हिं०पुं०) आतप, धूप; **घाम खाना**-आतप सेवन करना, धूप में बैठना।

घामड़-(हिं०वि०) घाम से व्याकुल, मूर्ख, आलसी।

घाय-(हिं०पुं०) देखो घाव।

घायक-(हिं०वि०) नाश करने वाला, मारने वाला।

घार-(हिं०स्त्री०) पानी से कटकर बना हुआ मार्ग।

घाल, घाला-(हिं०पुं०) देखो घलुआ।

घालक-(हिं०पुं०) नाश करने वाला, मारने वाला।

घालकता-(हिं०स्त्री०) नाश करने का कार्य।

घालना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु के भीतर या ऊपर रखना, गिराना, डालना, रखना, फेंकना, छोड़ना, नाश करना, बिगाड़ना, मार डालना

घालमेल-(हिं०पुं०) अनेक प्रकार की वस्तुओं की एक साथ मिलावट, मेल जोल।

घालिका-(हिं०स्त्री०) नाश करने वाली स्त्री।

घालिनी-(हिं०क्रि०) मार डालने वाली स्त्री।

घाव-(हिं०पुं०) शरीर का वह स्थान जहां पर चोट लगी हो या कटगया हो, क्षत; **घाव खाना**-चोट लगना; **घाव पर नमक छिड़कना**-दुःख के समय और कष्ठ देना; **घाव पूजना या भरना**-घाव का सूख जाना।

घावपत्ता-(हिं०पुं०) एक लता जिसके पत्ते घाव पर बांधे जाते हैं।

घावरिया-(हिं०पुं०) गावों का चिकित्सक।

घास-(सं०स्त्री०) भूमि पर उगने वाला छोटा तृण, पशुओं का चारा; **घासपात, घासफूस-खर** कतवार, कूड़ा करकट; **घास काटना**-तुच्छ कार्य या सहज कार्य करना; **घास खाना**-पशु के समान हो जाना।

घासी-(हिं०स्त्री०) घास, तृण।

घाह-(हिं०पुं०) अंगुलियों की सन्धि, देखो घाई।

घिश्रांड़ा-(हिं०पुं०) घी रखने का पात्र।
घिग्घी-(हिं०स्त्री०) रोते रोते सांस लेने में रुकावट होना, हिचकी, भय के कारण बोलने में रुकावट। **घिग्घी बंधना**-भय के कारण मुँह से बोली न निकलना। **घिघियाना**-(हिं०क्रि०) रो रोकर प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना, चिल्लाना।
घिचपिच-(हिं०स्त्री०) स्थान की सकीर्णता, सकरापन, थोड़े स्थान में अनेक पदार्थों की ढेर, (वि०) अस्पष्ट, गिचपिच।
घिन-(हिं०स्त्री०) घृणा, अरुचि, किसी घृणित वस्तु को देखकर चित्त बिगड़ना, जी मचलाना। **घिनाना**-(हिं०क्रि०) घृणा करना।
घिनावना-(हिं०वि०) घृणित, घिनौना।
घिनौना-(हिं०वि०) घृणा उत्पन्न करने वाला।
घिनौरी-(हिं०स्त्री०) ग्वालिन नाम का बरसाती कीड़ा।
घिन्नी-(हिं०स्त्री०) देखो गिरनी, गिन्नी।
घिया-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है, लौकी।
घियाकश-(हिं०पुं०) देखो कद्दूकश।
घियातरोई, घिया तोरई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है।
घिरत-(हिं०पुं०) देखो घृत, घी।
घिरना-(हिं०क्रि०) चारो ओर से घेरा जाना, या व्याप्त होना, चारो ओर से एकत्रित होना।
घिरनी-(हिं० स्त्री०) गराड़ी, चक्कर, फेरा, रस्सी बटने की चरखी।
घिराई-(हिं०स्त्री०) घेरने की क्रिया, पशुओं को चराने का काम।
घिराव-(हिं०पुं०) घेरने का काम, घेरा
घिरौंची-(हिं०स्त्री०) देखो घिड़ौंची।
घिराना-(हिं०क्रि०) घिसना, रगड़ना।
घिर्राना-(हिं०क्रि०) घसीटना, गिड़गड़ाना।
घिर्री-(हिं०स्त्री०) देखो खिरनी।
घिसकना-(हिं०क्रि०) सरकना, खसकना
घिसघिस-(हिं० स्त्री०) शिथिलता के कारण विलम्ब, अनिश्चय, गड़बड़ी।
घिसटना-(हिं०क्रि०) घसीटा जाना।
घिसन-(हिं०स्त्री०) रगड़, घिसने का कार्य। **घिसना**-(हिं०क्रि०) रगड़ना, रगड़ खाकर कम होना।
घिसपिस-(हिं०स्त्री०) मेलजोल, सट्टाबट्टा।
घिसवाना-(हिं०क्रि०) घिसने का काम दूसरे से कराना, रगड़वाना।
घिसाई-(हिं०स्त्री०) घिसने की क्रिया।
घिसाना-(हिं० क्रि०) रगड़वाना।
घिसाव, घिसावट-(हिं०पुं०) रगड़।
घिसरपिसर-(हिं०स्त्री०) घिसपिस।
घिस्सा-(हिं०पुं०) रगड़, धक्का, ठोकर, कुन्दा, रद्दा, लड़कों का एक खेल।

घींच-(हिं०स्त्री०) घींचने का कार्य।
घींचना-(हिं०क्रि०) खींचना, ऐंचना।
घी-(हिं०पुं०) घृत, तपाया हुआ मक्खन; **घी का कुप्पा लुड़कना**-बड़ी हानि होना; **घी का दिया जलना**-मनोरथ पूर्ण होना; **पांचों अंगुलियां घी में होना**-अत्यन्त सुख या लाभ होना।
घीकुवांर-(हिं० पुं०) घृतकुमारी, ग्वारपाठा।
घीसा-(हिं०पुं०) देखो घिस्सा।
घुइयाँ-(हिं०स्त्री०) अरुई नामक तरकारी
घुंघची-(हिं०स्त्री०) गुञ्जा, गुँजिका, कांची।
घुंघनी-(हिं०स्त्री०) तेल या घी मे तला हुआ भिगाया हुआ अन्न, घुघरी।
घुंघरारे, घुँघराले-(हिं०वि०) घुंघुरुवा, घुघराले घूमे हुए बाल, छल्लेदार (बल खाये हुए) बाल।
घुंघरू-(हिं०पुं०) धातु की बनी हुई पोली गुरिया जिसके परस्पर टकराने से घुनघुन शब्द होता है, ऐसी गुरियों का बना हुआ आभूषण, मंजीर, चौरासी, गले से निकलने वाला घरघर शब्द, घरका। **घुंघरूदार**-जिसमें घूंघरू लगे हों। **घुंघरूवारे**-घुंघुराले।
घुंडी-(हिं०स्त्री०) कपड़े का बना हुआ मटर के समान गोल बटन, गोपक, बाजू, जोशन, गोल गांठ। **घुंडीदार**-जिसमे घुंडी लगी हो।
घुररना-(हिं०क्रि०) देखो घूरना।
घुग्घी-(हिं०स्त्री०) तिकोना लपेटा हुआ कम्बल जिसको किसान लोग जाड़े से बचने के लिये सिर से ओढ़ते है, घोघी, पेडुकी नामक पक्षी।
घुग्घू-(हिं०पुं०) उलूक, उल्लू नामक पक्षी।
घुघुआ-(हिं०पु०) उल्लू, घुग्घू। **घुघुआना**-उल्लू की तरह बोलना, बिल्ली की तरह गुर्राना।
घुघुरी-(हिं०स्त्री०) देखो घुघुनी।
घुघुवाना-(हिं०क्रि०) देखो घुघुआना।
घुटकना-(हिं०क्रि०) घंट घूंट करके पी जाना, निगल जाना।
घुटकी-(हिं०स्त्री०) गले की वह नली जिसके द्वारा पेट में खाना पानी जाता है।
घुटना-(हिं०पुं०) पांव के बीच का जोड़, ढांग और जांघ के बीच की गांठ, सांस का भीतर रुक जाना, फँसना, रुकना, कड़ा पड़ना, रगड़ कर चिकना करना, घनिष्ठता या मित्रता होना, मिल जुल कर बात करना। **घुटना टेकना**-घुटने के बल बैठना; **घुटा हुआ**-चतुर, प्रवीण।
घुटन्ना-हिं०पुं०) घुटने तक का पायजामा।
घुटरू-(हिं०पुं०) घटना।
घुटवाना-(हिं०क्रि०) घोटने का काम दूसरे से कराना, बाल मुड़वाना।

घुटाई-(हिं०स्त्री०) घोटने या रगड़ने का काम, रगड़ कर चिकना करने का पारश्रमिक। **घुटाना**-(हिं०क्रि०) घोटने का काम कराना। **घुटुरुन**-(हिं०क्रि०वि०) घुटने के बल; **घुटुरू**-(हिं०पुं०) घुटना।
घुट्टी-(हिं०स्त्री०) छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाने वाली औषधि।
घुड़कना-(हिं०क्रि०) क्रोध में डराने के लिये कोई बात कहना, कड़क कर बोलना, डांटना, डपटना।
घुड़की-(हिं० स्त्री०) क्रोध में आकर डराने के लिये कड़क कर कही हुई बात, डांट डपट, घुड़कने की क्रिया; **बंदर घुड़की**-झूठमूठ भय दिखलाने का कार्य।
घुड़चढ़ा-(हिं०पुं०) अश्वारोही, घोड़े-पर चढ़ा हुआ मनुष्य। **घुड़चढ़ी**-(हिं०स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा घोड़ेपर चढ़कर कन्या के घर जाता है, एक प्रकार की छोटी तोप जो घोड़ेपर रखकर चलाई जाती है। **घुड़दौड़**-(हिं०स्त्री०) घोड़ों की दौड़, घोड़ा दौड़ने का स्थान, एक प्रकार की नाव जिसका अगला भाग घोड़े के मुख के आकार का बना होता है, एक प्रकार का जुवे का खेल जिसमें अनेक मनुष्य घोड़ा दौड़ाते है। **घुड़नाल**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी तोप जो घोड़े पर चलती है। **घुड़बहल**-(हिं०स्त्री०) वह रथ जिसमें घोड़े जुते रहते हैं। **घुड़मक्खी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मक्खी जो घोड़ों को कष्ट देती है। **घुड़मुंहा**-(हिं०पुं०) लम्बे भद्दे मुख वाला मनुष्य। **घुड़साल**-(हिं०स्त्री०) घोड़ों को बांधने का स्थान, अस्तबल।
घुड़िया-(हिं०स्त्री०) देखो घोड़िया।
घुड़कना-(हिं०क्रि०) देखो घुड़कना।
घुण-(स०पुं०) घुन।
घुणाक्षरन्याय (स०नपुं०) ऐसी रचना जो अनजान मे वैसे ही हो जाय जैसे घुन के खाते खाते लकड़ी में अक्षर की तरह की लकीरें बन जाती हैं।
घुन-(हिं०पुं०) घुण, छोटा कीड़ा जो अन्न, लकड़ी आदि में लगता है; **घुन लगना**-घुन से अन्न का खाया जाना, भीतरी भीतर क्षय होना।
घुनघुना-(हिं०पुं०) देखो झुनझुना।
घुनना-(हिं०क्रि०) घुन से लकड़ी आदि का खाया जाना, भीतर ही भीतर क्षय होना।
घुन्ना-(हिं०वि०) अपने चित्त के भावों को मन मे ही रखने वाला, मन में बुरा मानने वाला।
घुन्नी-(हिं०वि०) मन का आवेग, मन में रखने वाली, नन्हीं, छोटी।

घुप-(हिं०वि०) गहरा (अन्धकार)।
घुमंडना-(हिं०क्रि०) बादलों का मेड़राना।
घुमक्कड़-(हिं०वि०) बहुत घूमनेवाला।
घुमची-(हिं०स्त्री०) गुञ्जा, घुंघची।
घुमटा-(हिं०पुं०) सिर में चक्कर आना, जी घूमना।
घुमड़-(हिं०स्त्री०) बरसने वाले बादलों का घेरना।
घुमड़ना-(हिं०क्रि०) बादलोंका इकट्ठा होना, मेघों का छा जाना।
घुमड़ा-(हिं०स्त्री०) चक्कर की तरह घूमना, सिर मे चक्कर आना।
घुमना-(हिं०वि०) अधिक घूमने वाला, घुमक्कड़।
घुमनी-(हिं०स्त्री०) पशुओं का एक रोग
घुमरना-(हिं०क्रि०) तीव्र शब्द करना, वेग से बजाना, घूमना।
घुमराना-(हिं०क्रि०) देखो घुमरना।
घुमरी-(हिं०स्त्री०) भँवर, चक्कर, घुमड़ी
घुमाना-(हिं०क्रि०) चारो ओर फिराना, चक्कर देना, सैर कराना, टहलना, मरोड़ना, ऐंठना, किसी अन्य विषयमें प्रवृत्त करना।
घुमाव-(हिं०पुं०)घूमनेका कार्य,चक्कर हेर फेर, मार्गका मोड़। **घुमावदार**-जिसमें घुमाव हो, चक्करदार।
घुम्मरना-(हिं०क्रि०) देखो घुमरना।
घुरकना-(हिं०क्रि०) देखो घुड़कना।
घुरका-(हिं०पुं०) चौपायों का एक रोग।
घुरघुरा-(हिं०पुं०) झींगुर।
घुरघुराना-(हिं०क्रि०) कण्ठ से घुरघुर शब्द निकालना। **घुरघुराहट**-(हिं०स्त्री०) घुरघुर शब्द।
घूरना-(हिं०क्रि०) घुलना, शब्द करना, बजना।
घुरबिनिया-(हिं०स्त्री०) घूर पर से अन्न आदि बटोरने का कार्य, सड़क या गली मेंसे टूटी फूटी वस्तु बटोर कर इकट्ठा करने का काम।
घुरहुरी-(हिं०स्त्री०) पगडण्डी।
घुराना-(हिं०क्रि०) भर जाना।
घुर्मित-(हिं० वि०) घूमता या चक्कर खाता हुआ।
घुर्राना-(हिं०क्रि०) देखो गुर्राना।
घुलना-(हिं०क्रि०) तरल पदार्थों का परस्पर मिल जाना, तरल पदार्थका किसी वस्तु से मिल जाना, गलना, द्रवित होना, पक्का होकर पिलपिला होना, मृदु होना, रोग से शरीर का क्षीण होना, दुर्बल होना, समय बीतना; **घुलघुलकर बातकरना**-बड़ी घनिष्ठता से हृदय खोलकर बात करना; **घुलमिलकर**-मेल जोलके साथ; **घुलघुल कर मरना**-अधिक समय तक कष्ट भोग कर मरना। **घुलवाना**-(हिं०क्रि०) गलवाना, द्रवित कराना, आंखों में सुरमा लगवाना, हल कराना।
घुलाना-(हिं० क्रि०) गलाना, शरीर दुर्बल करना, मुख में रखकर रस

चूसना, चुंभलाना, कोमल करना, सुरमा लगाना, समय विताना।
घुलावट-(हिं०स्त्री०) घुलानेकी क्रिया।
घुवा-(हिं०पुं०) देखो घूआ।
घुसड़ना-(हिं०क्रि०) देखो घुसना।
घुसना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, भीतर जाना, चुभना, धँसना, गड़ना, बिना अधिकार के कोई कार्य करना, किसी विषयमें पूरा ध्यान लगाना; **घुसकर बैठना**-छिपे रहना, मुंह न दिखलाना।
घुसपैठ-(हिं०स्त्री०) प्रवेश, गति, पहुँच, रसोई। **घुसवाना**-(हिं०क्रि०) घुसाने का काम दूसरे से कराना। **घुसाना**-(हिं०क्रि०)भीतर प्रवेश करना, चुभाना, धँसाना, पैंठाना। **घुसेड़ना**-(हिं०क्रि०) घुसाना, धँसाना, पैठाना।
घूंघट-(हिं० पुं०) वस्त्र का वह भाग जिससे स्त्रियां अपना मुख ढांप लेती है, बाहरी किवाड़ के सामने की भीत जो आंगनको बाहरसे छिपाए रहती हैं, ओट।
घूंघर-(हिं०पुं०)बालोंमें पड़े हुए मरोड़ या छल्ले; **घूंघरवाले**-(वि०) घुघुरुवा, कुंचित, लच्छेदार, झबरीले।
घूंघुरी-(हिं०स्त्री०) घुंघरू, क्षुद्रघण्टिका।
घूंघरू-(हिं०) देखो घुंघरू।
घूंट-(हिं० पुं०) पानी दूध इत्यादि द्रव पदार्थ का उतना अंश जो एक बार गले से नीचे उतारा जाय।
घूंटना-(हिं०क्रि०) किसी द्रव पदार्थ को गले से नीचे उतारना, पीना।
घूंटी-(हिं०स्त्री०)बच्चोंकी पाचन सुधारने की औषधि जो उनको पकाकर पिलाई जाती है। **जनमघूंटी**-वह औषधि जो बच्चोंका पेट साफ करनेके लिये जन्म से ही पिलाई जाती है।
घूंस-(हिं०स्त्री०) उत्कोच, घूस।
घूंसा-(हिं० पुं०) बंधी हुई मुट्ठी, ढुक, धमाका; **घूंसा चलना**-घूंसा मारना; **घूंसेबाजी**-घूंसे की लड़ाई।
घूआ-(हिं०पुं०) मूंज सरकडे आदि का रूई की तरहका फूल, एक प्रकार का कीड़ा, रोवां।
घूक-(हिं०पुं०) उल्लू पक्षी, रुरुआ।
घूका-(हिं० पुं०) सकरे मुंहकी डलिया।
घूगस-(हिं० पुं०) ऊंची बुरजी, गरगज।
घूघ-(हिं०पुं०) लोहे या पीतलकी टोपी जो लड़ाईमें सिरपर चोट बचाने के लिये पहिरी जाती है।
घूघी-(हिं०स्त्री०) जेब, खरीता, पेंडुकी।
घूघू-(हिं०पुं०) देखो घुग्घू।
घूटना-(हिं०क्रि०) सांस रोकना।
घूम-(हिं०स्त्री०) घुमाव, मोड़, चक्कर।
घूमघुमारा-(हिं०वि०)उन्मत्त, मतवाला।
घूमना-(हिं०क्रि०) उधर उधर फिरना, चक्कर लगाना, यात्रा करना, मंडराना, कावा काटना, मुड़ना, लौटना, उन्मत्त होना, **घूम पड़ना**-एकायक क्रुद्ध होना। **घूमनी**-(हिं०स्त्री०) सिर का चक्कर।
घूर-(हिं०पुं०) कूड़ा करकट फेंकने का स्थान, कूड़ेका ढेर।
घूरना-(हिं०क्रि०)आंख गड़ाकर बारंबार बुरी दृष्टिसे देखना, क्रोधसे टकटकी बांधकर एकटक देखना, घूमना, टहलना।
घूरा-(हिं०पुं०) कूड़ा करकट का ढेर, कतवार रखने का स्थान।
घूस-(हिं०पुं०) उत्कोच, एक प्रकारका चूहा; **घूसखोर**-उत्कोच लेनेवाला।
घृणा-(सं०स्त्री०) घिन।
घृणित-(सं० वि०) घृणा उत्पन्न करने योग्य।
घृत-(सं०पुं०) घी, घीव।
घृतकुमारी-(सं०स्त्री०) घीकुआर, गौड़पट्ठ।
घृतपूर-(सं०पुं०)घेवर नामक पक्वान।
घृताची-(सं०स्त्री०)स्वर्गकी एक अप्सरा का नाम।
घेंघ, घेंघा-(हिं० पुं०) भिगोये हुए चने और चावलका बना हुआ खाद्य पदार्थ गले का एक रोग जिसमें कण्ठ फूल आता है।
घेंट-(हिं०पुं०) ग्रीवा, गरदन।
घेंटा-(हिं०पुं०) सुअर का छोटा बच्चा।
घेंटी-(हिं०स्त्री०) चने की फली।
घेंटला-(हिं०पुं०) देखो घेंटा।
घेघी-(हिं०स्त्री०) गले की नली जिसमें से भोजन तथा पानी पेट में जाता है।
घेतल, घेतला-(हिं०पुं०) महाराष्ट्री जूता।
घेर-(हिं०पुं०) परिधि, चारो ओर का फैलाव।
घेरघार-(हिं०पुं०) चारों ओर से घेरने की क्रिया, चारो ओर बादल का छा लेना, विस्तार, अनुरोध।
घेरना-(हिं०क्रि०) चारो ओर हो जाना, चारो ओर से छेंकना, बांधना, रोकना, ग्रसना, पशुओं को चराना, फँसाये रखना, अनुरोध करना, विनय करना।
घेरा-(हिं०पुं०) चारो ओर की सीमा परिधि का मान, फैलाव, चारो ओर घेरने वाली वस्तु, मण्डल, घिरा हुआ स्थान, चारो ओर से सेना का छेंकने का काम।
घेराई-(हिं०स्त्री०)देखो घिराई। **घेराव**-(हिं०पुं०) देखो घिराव।
घेलौना-(हिं०पुं०) घलुआ, घाल।
घेंवर-(हिं० पुं०) एक प्रकार की मिठाई।
घैया-(हिं०पुं०) बिना मथे हुए दूध के ऊपर का मक्खन इकट्ठा करने का कार्य; वृक्ष में से रस निकालने के लिये छुरे आदि से पहुँचाई हुई चोट (स्त्री०) ओर।
घैर, घैरू, घैरो-(हिं०पुं०) अपमान, अपयश, चुगली, गुप्त रूप से दुर्नाम करना।
घैला-(हिं०पुं०) कलश, घड़ा, गगरा।
घैहल-(हिं०वि०) घाव लगा हुआ।
घैया-(हिं०वि०) देखो घैहल।
घोंघ-(हिं० पुं०) एक प्रकार की चिड़िया।
घोंघा-(हिं०पुं०) शंख के आकार का एक कीड़ा जो जलाशयों में पाया जाता है, शम्बुक (वि०) मूर्ख, जिसमे कुछ तत्व न हो। **घोंघा बसंत**-(पुं०) बड़ा मूर्ख।
घोंचवा घोंचा-(हिं०पुं०)स्तबक, गुच्छा, घौद।
घोंची-(हिं०स्त्री०) वह गाय जिसकी सींघ मुड़कर कानमें जाकर मिल जाती है।
घोंचुवा-(हिं०पुं०) नीड़, घोसुला।
घोंट-(हिं०पुं०) घोंटने का काम, एक प्रकार का वृक्ष। **घोंटना**-(हिं०क्रि०) पानी दूध इत्यादि को थोड़ा थोड़ा कर के गले के नीचे उतारना, पचा जाना, गला मरोड़ना या ऐंठना।
घोंपना-(हिं०क्रि०) गड़ाना, धसाना, चुभाना, गांठना, बुरी तरह से सिलाई करना।
घोंसला-(हिं०पुं०) पक्षी के रहने का घासफूस से बनाया हुआ घर, नीड़, खोंता।
घोंसुआ-(हिं०पुं०) नीड़, घोंसला।
घोंकना(हिं०क्रि०) पाठ को याद करने के लिये उसको बारंबार दोहराना, रटना, घोटना। **घोंकवाना**-(हिं०क्रि०) रटवाना।
घोघा-(हिं०पुं०) चने के कृषि फल को नष्ट करने वाला एक प्रकार का कड़ा।
घोघी-(हिं०पुं०) देखो घुग्घी।
घोट, घोटक-(सं०पुं०) अश्व, घोड़ा।
घोटना-(हिं०क्रि०) चिकना और महीन करने के लिये रगड़ना, सिलपर बट्टे से रगड़ देना, रगड़कर चमकाना, अभ्यास, करना, रटना, डांट फटकार देना, मूड़ना, गला मरोड़ना, (पुं०) घोंटने का औज़ार। **घोटनी**-(हिं०स्त्री०) घोटने की कोई छोटी वस्तु। **घोटवाना**-(हिं०क्रि०) घोटने का काम दूसरे से कराना, रगड़वाना, चमकवाना, सिर या दाढ़ी के बाल मुड़वाना।
घोटा-(हिं०पुं०) घोटने का साधन, घुटा हुआ वस्त्र, रगड़, घोंटाई, रगड़ा। **घोटाई**-(हिं०स्त्री०) घोंटने की क्रिया या शुल्क।
घोटाला-(हिं०पुं०) गड़बड़, उपद्रव।
घोटू-(हिं०वि०) घोटने वाला।
घोड़चढ़ा, घोड़दौड़-देखो घुड़चढा, घुड़दौड़।
घोड़राई-(हिं०स्त्री०) बड़े बड़े दाने की राई।
घोड़साल-(हिं०स्त्री०) घोड़ा बांधने का स्थान।
घोड़ा-(हिं०पुं०) घोटक, अश्व, बंदूकमें गोली चलाने का खटका, शतरंज का एक मोहरा; **घोड़ा उठाना**-घोड़ा दौड़ाना; **घोड़ा कसना**-घोड़े की पीठ पर सवारी के लिये गद्दी धरना; **घोड़ा निकालना** सिखलाकर घोड़े को सवारी के योग्य बनाना; **घोड़ा फेंकना**-घोड़ा दौड़ाना; **घोड़ा बेचकर सोना**-निश्चिन्त होकर सोना; **घोड़ा गाड़ी**-घोड़े से चलने वाली गाड़ी; **घोड़ानस**-(हिं०स्त्री०) एँडी के ऊपर की मोटी नस;
घोड़ावच-(हिं०पुं०) खुरासानी बच।
घोड़िया-(हिं०पुं०) भीत में लगाई हुई खूँटी, बिराकट।
घोड़ी-(हिं०स्त्री०) मादा घोड़ा, चारपाई की लम्बी पटरी, विवाह की एक गीत
घोर-(सं०वि०) भयंकर, विकराल, डरावना, घना, कठिन, दुर्गम, गाढा, गहरा, बुरा, अत्यन्त, (स्त्री०) गरज, ध्वनि।
घोरा-(हिं०स्त्री०) घोड़ा।
घोरना-(हिं०क्रि०) भयकर शब्द करना, गरजना।
घोरिला-(हिं०पुं०) लड़कों के खेलने का मिट्टी का घोड़ा।
घोरी-(हिं०स्त्री०) छोड़ी।
घोल-(हिं०पुं०) घोलकर बनाया हुआ पदार्थ, मट्ठा। **घोलना**-(हिं०क्रि०) किसी द्रव पदार्थ में कोई वस्तु हिलाकर मिलाना, हल करना।
घोष-(सं०पुं०) अहिरों की बस्ती, अहीर, गोशाला, शब्द, किनारा, तट, गरज, व्याकरण में शब्दों के उच्चारण का एक बाह्य प्रयत्न; **घोषणा**-(स्त्री०) ऊंचे स्वर से सूचना, मुनादी, डुग्गी, ध्वनि, आवाज़।
घोसना-(हिं०क्रि०) घोषित करना, उच्चारण करना।
घोसी-(हिं०पुं०) अहीर, ग्वाला।
घौर, घौरा-(हिं०पुं०) फलोंका गच्छा घौंद।
घौद-(हिं०पुं०) फलों का गुच्छा।
घ्राण-(सं०स्त्री०) सूंघने की शक्ति, सुगन्ध नाक।

ङ

ङ-व्यञ्जन वर्ण का पांचवां तथा कवर्ग का अन्तिम वर्ण, इसका उच्चारण कण्ठ और नासिका से होता है।
ङ-(सं०पुं०)घ्राण शक्ति, सुगन्ध, गौरव, महत्व, गन्ध।

च

च-हिन्दी वर्णमाला का बाइसवां अक्षर तथा छटवां व्यंजन, इसका उच्चारण स्थान तालु है।

च-(सं०पुं०) कच्छप, कछुवा, चन्द्रमा, तस्कर, चोर, दुर्जन, दुष्ट मनुष्य।

चंक-(हिं०वि०)पूर्ण, पूरा, समस्त,समूचा

चंक्रमण-(सं०पुं०) बारम्बार घूमना, टहलना।

चंग-(फा०स्त्री०) एक छोटा बाजा जो डफ के आकार का होता है, गंजीफे का एक रंग, गुड्डी, कनकैया, पतंग; **चंग चढ़ना**-जोरों की बातें होना; **चंग पर चढ़ना**-इधर उधर की बातें समझाकर अपने अनुकूल करना।

चंगना-(हिं० क्रि०) कष्ट देना, तंग करना, खींचना, कसना।

चंगबाई-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का वात रोग जिसमें हाथ पांव जकड़ जाते है।

चंगा-(हिं०वि०) आरोग्य, स्वस्थ,निरोग भला, सुन्दर, शुद्ध, निर्मल।

चंगु, चंगुल-(हिं०पुं०) पंजा, चंगुल, पकड़, पशुओं या पक्षियों का पंजा, अंगुलियों की पकड़। **चंगुल में फँसना**-वश में आना, पंजे में फँस जाना।

चंगेर, चंगेरी-(हिं०स्त्री०) बाँस की बनी हुई छिछली चौड़ी टोकरी,फूल रखने की डिबिया छोटे बच्चे का झूला, मसक।

चंगेल-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास,

चंगेली-(हिं०स्त्री०) देखो चंगेर, चंगेरी।

चंच-(हिं०पुं०) देखो चंचु।

चंचनाना-(हिं०क्रि०) देखो चुनचुनाना।

चंचरी-(हिं० स्त्री०) पानी का भँवर, होली में गाने की एक गीत, हरिप्रिया छन्द, एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक पद में छब्बीस मात्रा होती हैं

चंचलताई, चंचलाई-(हिं० स्त्री०) चपलता, चंचलता। **चंचलाहट**-(हिं०स्त्री०) चपलता, चंचलता।

चंचला-(हिं०स्त्री०) देखो चंचला।

चंचा-(हिं०स्त्री०) पक्षियों के डराने के लिये खेतों में रक्खा हुआ घास फूस का पुतला, विभीषिका।

चंचोरना-(हिं०क्रि०) दाँतों में दबाकर चूसना।

चंट-(हिं०वि०) धूर्त, सयाना, चतुर।

चंडाई-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता, उतावलापन, प्रबलता, अत्याचार।

चंड-(हिं०वि०) देखो चण्ड।

चंडाई-(हिं०स्त्री०) उतावलापन।

चंडाल-(हिं०पुं० स्त्री० चंडालिन) श्वपच, डोम। **चंडालता**-(हिं०स्त्री०) अधमता, नीचता। **चंडालत्व**-देखो चंडालता।

चंडावल-(हिं०पुं०) सेना के पीछे का भाग, वीर योधा, पहरेदार, चौकीदार

चंडाह-(हिं०पुं०)एक प्रकार का मोटा वस्त्र

चंडिका-(हिं०पुं०) एक प्रकार का देसी लोहा। **चंडू**-(हिं०पुं०) एक मादक पदार्थ तमाखू की तरह पिया जाता है; **चंडखाना**-(पुं०) वह स्थान जहाँ इकट्ठा होकर चंडू पीते हैं; **चंडखाने की गप**-बिलकुल झूठ बात;

चंडूबाज-(पुं०) चडू पीने वाला मनुष्य

चंडूल-(हिं०पुं०) एक भूरे रंग चिड़िया जो बड़ा मधुर बोलती है; **पुराना चंडूल**-भद्दा मनुष्य।

चडोल-(हिं०पुं०) हौदे के आकार की पालकी।

चंदक-(हिं०पुं०) चन्द्रमा, चाँदनी, चाँद मछली, एक अर्ध चन्द्रकार गहना जो माथे पर पहिरा जाता है, नथिया में जड़ा हुआ नगदार छोटा टिकड़ा।

चंदनी-(हिं०स्त्री०) देखो चाँदनी।

चंदनीया-(हिं०स्त्री०) गोरोचन।

चदनौता-(हिं०पुं०)एक प्रकार का लंहगा

चदवान-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाण जिसके सिरे पर अर्धचन्द्राकार फल लगा रहता है।

चंदराना-(हिं० क्रि०) बहकाना, बहलाना, जान बूझकर अनजान बनना।

चंदला-(हिं०वि०) जिसके चंदले पर के बाल झड गये हों, खल्वाट, गंजा।

चंदवा-(हिं०पुं०) सिंहासन या गद्दी के ऊपर लगाया हुआ छोटा मण्डप, वितान, गोलाकार चकती, मोर की पोंछपर का अर्धचन्दाकार चिह्न।

चंदा-(हिं०पुं०) चन्द्रमा।

चंद्र, चंद्रमा-आदिशों को चन्द्र, चंद्रमा में देखो।

चंदावल-(हिं०पुं०)क्षत्रियों की एक जाति

चंदावती-(हिं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।

चंदिका-(हिं०स्त्री०) देखो चन्द्रिका।

चंदिनि, चंदिनी-(हिं०स्त्री०) चन्द्रिका, चांदनी, उंजेली रात।

चंदिया-(हिं० स्त्री०) कपाल का मध्य भाग, खोपड़ी।

चंदिर-(हिं०पुं०) चन्द्रमा, गज, हाथी।

चंदेरी-(हिं०स्त्री०) ग्वालियर राज्य के नरवार ज़िले का एक प्राचीन नगर।

चंदेरीपति-(हिं०पुं०) चंदेरीका राजा, शिशुपाल।

चंदेल-(हिं०पुं०)क्षत्रियों की एकशाखा, परमाल राजा इसी वंश के थे।

चंदोया, चदोवा-देखो चंदवा।

चंद्रौल-(हिं०पुं०)राजपूतों की एक जाति

चम्प-(हिं०पुं०) चंपा, कचनार का वृक्ष

चंपई-(वि०) चंपा के रंग का, पीला।

चंपत-(हिं०वि०) अन्तर्धान।

चंपना-(हिं०क्रि०)भार से दबना, लज्जित होना, उपकार से दब जाना।

चंपाकली-(हिं०स्त्री०) गले का एक आभूषण जिसमें सोने के चंपा की कली के समान दाने रेशम में पिरोकर गुथे होते हैं।

चंपारण्य-(हिं०पुं०) चम्पारन जिला।

चंबल-(हिं०स्त्री०) एक नदी जो इटावे के पास बहती है, सिंचाई के लिये नहर का पानी ऊपर चढ़ाने की लकड़ी, पानी की बाढ़।

चंवल-(फा०पुं०) भिक्षा माँगने का खप्पर, चिलम का सरपोश।

चंबली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा प्याला।

चंबी-(हिं०स्त्री०)चिप्पड़, पट्टी, कतरन।

चंबू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान, टोंटीदार छोटा गडुआ, झारी।

चँवर-(हिं०पुं०) चामर, सुरा गाय के पूंछ के बालों का गुच्छा जो मक्खी मच्छड़ हटाने के लिये राजाओं या देव मूर्तियों के सिर पर डोलाया जाता है, घोड़े हाथी के सिर पर लगाने की कलंगी, फुन्दना, झालर;

चबरढार-(पुं०) चंवर डोलाने वाला नौकर।

चंबरी-(हिं०स्त्री०) डंडी में बंधा हुआ घोड़े के पूंछ का बाल।

चंसुर-(हिं०पुं०) हालिम नामक पौधा।

चइत-(हिं०पुं०) चैत, चैत का महीना।

चइन-(हिं०वि०) देखो चैन।

चउ-(हिं०) उपसर्ग जो "चौ" के बदले अनेक शब्दों में प्रयोग होता है यथा **चउक**-चौक, **चउथा**-चौथा; **चउपाई**-चौपाई इत्यादि।

चउर-(हिं०पुं०) चमर, मोरछल।

चउहट-(हिं०पुं०)चौहट्टा,चौरहा,चौमुहानी

चउतरा-(हिं०पुं०) देखो चबूतरा।

चक-(हिं०पुं०) चकई नाम का लड़कों का खिलौना, चकवा पक्षी, चक्र नामक अस्त्र, चक्का, पहिया, भूमि का बड़ा टुकड़ा, पट्टी, छोटा गाँव, पुरवा, किसी बात की अधिकता, अधिकार (वि०) अधिक व्यग्र, भौचक्का, घबड़ाया हुआ; (पुं०) चोटी बाँधने का सोने का चक्र।

चकई-(हिं०स्त्री०) घिरनी के आकार का एक खिलौना, मादा चकवा।

चकचकाना-(हिं०क्रि०)किसी द्रव पदार्थ का रस कर बाहर निकलना,भीग जाना

चकचकी-(हिं०स्त्री०)करताल नामक बाजा

चकचाना-(हिं०क्रि०) चकाचोंध लगना, चौंधियाना।

चकचाल-(हिं०पुं०) चक्कर, भ्रमण।

चकचाव-(हिं०पुं०)चकाचौंध, चकचौंध

चकचून-(हिं०वि०) चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ।

चकचूरना-(हिं०क्रि०) चूर चूर करना।

चकचोही-(हिं०वि०) चिकनी चुपड़ी।

चकचौंध-(हिं०पुं०) देखो चकाचौंध।

चकचौंधना-(हिं०क्रि०) अधिक प्रकाश के कारण आँखों का स्थिर न रहना, आँख तिलमिलाना, आँखों मे तिलमिलाहट उत्पन्न करना।

चकचौंह-(हिं०पुं०) देखो चकाचौंध।

चकचौहना-(हिं०क्रि०) टकटकी बांधे हुए देखना।

चकड़वा-(हिं०पुं०) उपद्रव, बखेड़ा।

चकडोर-(हिं० स्त्री०) चकई में लपेटा हुआ डोर, जुलाहे के करघे की नचनी में लगी हुई डोरी।

चकताई-(हिं०पुं०) देखो चकत्ता।

चकती-(हिं० स्त्री०) चमड़े, धातु या कपड़े का गोल या चौकोर टुकड़ा, पट्टी, धज्जी, फटे टूटे स्थान में लगाया हुआ छोटा टुकड़ा, थिगली; **बादल में चकती लगाना**-असंभव कार्य करने की चेष्टा करना।

चकत्ता-(हिं०पुं०) शरीर के किसी भाग पर पड़ा हुवा धब्बा, चमड़े के ऊपर पड़ी हुई चिपटी सूजन, दाँत काटने का चिन्ह, चगताई वंश का पुरुष।

चकदार-(हिं०पुं०) दूसरे की भूमि पर कुवाँ बनवाने की लगान देने वाला।

चकना-(हिं० क्रि०) भौचक्का होना, चकित होना, चौंकना, चकपकाना।

चकनाचूर-(हिं० वि०) टूट फूट कर जिसके छोटे टुकड़े हो गये हों, टुकड़े टुकड़े किया हुआ, अति श्रान्त, बहुत थका हुआ।

चकचक-(हिं०वि०)भौचक्का,हक्काबक्का

चकपक, चकबक-(हिं०वि०) चकित।

चकपकाना-(हिं०क्रि०) चकित होकर इधर उधर ताकना, भौंचक्का होना, चौंकना।

चकफेरी-(हिं०स्त्री०) परिक्रमा, भँवरी।

चकमूंदर-(हिं०पुं०) छुँछूदर।

चकर-(हिं०पुं०)चक्रवाक पक्षी, चकवा, चक्कर।

चकरघा-(हिं० पुं०) कठिन अवस्था, चक्कर, असमंजस, बखेड़, झगड़ा।

चकरा-(हिं०पुं०) पानी का भँवर (वि०) फैला हुआ।

चकराना-(हिं०क्रि०) सिर का चक्कर खाना, घूमना, चकित होना, भूलना, चकपकाना, व्यग्र होना, घबड़ाना, हैरान होना, आश्चर्य में डालना।

चकरानी-(हिं०स्त्री०) दासी।

चकरिया-(हिं०पुं० सेवक, नौकर।

चकरी-(हिं०स्त्री०) दाल दरने या आँटा पीसने की चक्की, चकई नामक लड़कों का खिलौना, (वि०) अस्थिर, चंचल,इधर उधर घूमने वाला, चौड़ी

चकलई-(हिं०स्त्री०) चौड़ाई।

चकला-(हिं० पुं०) पत्थर या काठ का गोल चिकना पटरा जिसपर रोटी बेली जाती है, चौका,ज़िला, रंडियों के रहने का मोहल्ला (वि०) चौड़ा।

चकलाना-(हिं०क्रि०) चौड़ा करना।

चकली-(हिं० स्त्री०) गड़ारी, घिरनी, छोटा चकला।

चकलेदार-(हिं०पुं०) किसी प्रान्त का अधिकारी कर वसूल करनेवाला।

चकवंड-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बरसाती पौधा, कुम्हार का चाक के पास रखने का जल का पात्र।

चकवा-(हिं०पुं०) चक्रवाक पक्षी, हंस की जाति की एक चिड़िया जिसके

विषय में यह कहा जाता है कि वह रातमें अपने जोड़ेसे बिछुड़ जातीहै।
चकवाना-(हिं० क्रि०) चकित होना, चकपकाना।
चकवारि-(हिं०पुं०) कच्छप, कछुवा।
चकवी-(हिं० स्त्री०) कछुई। **चकवाह**-(हिं०पुं०) देखो चकवा।
चकसेनी-(हिं०पुं०) काकजंघा नामक पौधा।
चकहा-(हिं०पुं०) चक्का, पहिया।
चका-(हिं० पुं०) चाक, पहिया, चक्का, चकवा पक्षी।
चकाचक-(हिं०स्त्री०) निरन्तर प्रहार का शब्द, (वि०) तरबतर, लथपथ (क्रि०वि०) भरपूर, पेट भर कर।
चकाचौंध-(हिं०स्त्री०) तीव्र प्रकाश के कारण आँखों का झिपना, तिलमिलाहट।
चकाना-(हिं०क्रि०) चकराना, चकपकाना
चकाबू-(हिं०पुं०) चक्रव्यूह, सेना की मण्डलाकार पंक्तियों में स्थिति; **चकाबूमें पड़ना**-चक्करमें आ जाना।
चकार-(सं०पुं०) वर्णमाला का 'च' अक्षर।
चकावल-(हिं०स्त्री०) घोड़े के अगले पैर की हड्डी का उभड़ आना।
चकासना-(हिं०क्रि०) चमकाना।
चकित-(सं०वि०) विस्मित, आश्चर्य में पड़ा हुआ, भौंचक्का, चपकाया हुआ, व्यग्र, घबड़ाया हुआ, भीरु, कायर, डरा हुआ, डरपोक, (पुं०) विस्मय, कायरता, व्यर्थ की डर; **चकिताई**-(हिं०स्त्री०) आश्चर्य; **चकितवंत**-(वि०) आश्चर्य युक्त।
चकुंदा-(हिं०पुं०) देखो चकवँड़।
चकुला-(हिं०पुं०) पक्षी का छोटा बच्चा।
चकृत-(हिं०वि०) देखो चकित।
चकेठ-(हिं० पुं०) कुम्हार का चाक घुमाने का डंडा।
चकैया-(हिं०स्त्री०) चकवी।
चकोटना-(हिं० क्रि०) चुटकी से मांस नोचना, चुटकी काटना।
चकोतरा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का खटमीठा जंभीरी नीबू।
चकोता-(हिं०पुं०) देखो चकत्ता।
चकोर-(हिं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह चन्द्रमाको टकटकी लगाकर देखता है और अंगारा खा जाता है, एक प्रकार की सवैया।
चकोरी-(हिं०स्त्री०) मादा चकोर।
चकोह-(हिं०पुं०) पानी में का भँवर।
चकौंध-(हिं०स्त्री०) देखो चकाचौंध।
चकोटा-(हिं० पुं०) ऋण के बदले में दिया जाने वाला पशु।
चक्क-(हिं० पुं०) चक्रवाक, चकवा, चाक, दिशा।
चक्कर-(हिं०पुं०) घूमने वाली चक्राकार कोई वस्तु, मण्डलाकार कोई पदार्थ, चाक, गोल घेरा, मण्डलाकार मार्ग, पहिये का भ्रमण, घेरा, घुमाव, पहिये का केन्द्र पर घूमना; जटिलता, फेरफार, सिर घूमना, मूर्छा, पानी का भँवर, व्यग्रता; **चक्कर काटना**-इधर उधर घूमना; **चक्कर खाना**-भटकना; **चक्कर देना**-परिक्रमा करना; **चक्कर मारना**-इधर उधर घूमना; **चक्कर में आना**-विह्वल होना, **चक्कर में पड़ना**-व्यग्र होना; **चक्कर लगाना**-परिक्रमा करना।
चक्कवइ-(हिं०पुं०) चक्रवर्ती राजा।
चक्कवा-(हिं०पुं०) देखो चकवा।
चक्कवै-(हिं०वि०) चक्रवर्ती (राजा)।
चक्कस-(हिं० पुं०) बुलबुल या श्येन पक्षी के बैठने का अड्डा।
चक्का-(हिं० पुं०) पहिया, पहिये के आकार की कोई वस्तु, ईंटे या पत्थर का बड़ा चिपटा टुकड़ा, जमा हुआ टुकड़ा, थक्का, बड़ा कतरा; **चक्काव्यूह**, **चक्रव्यूह**, **चक्की**-(हिं०स्त्री०) दाल दरने या आंटा पीसने का यन्त्र, जाँता, पैरके घुटने की गोल हड्डी, बिजली।
चक्कू-(हिं०पुं०) देखो चाकू।
चक्खी-(हिं०स्त्री०) खाने की चटपटी वस्तु, चाट।
चक्र-(सं० पुं०) पहिया, जाँता, कुम्हार का चाक, तेल पेरने का कोल्हू, वर्तुलाकार कोइ वस्तु, पहिये के आकार का लोहेका एक अस्त्र, जलका भँवर, वायुका भँवर, बवंडर, मण्डली, समूह, दल, सेना, ग्राम या नगर का समूह, चक्रव्यूह, प्रदेश, राज्य, एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश, चकवा पक्षी, योग के अनुसार शरीर के भीतर का एक पद्म, वृत्त, घेरा, घुमाव, दिशा, चक्कर, भुलावा, एक वर्णवृत्त का नाम, तन्त्र मन्त्र का कोई यन्त्र जिसमें अनेक कोष्ठ बने होते हैं; **चक्र गुच्छ**-(हिं०पुं०) अशोक का वृक्ष; **चक्रगोसा**-(हिं०पुं०) राज्यरक्षक, सेनापति; **चक्रचर**-(सं०पुं०) तेली, कुम्हार; **चक्रतीर्थ**-(सं०पुं०) भारत के दक्षिण का एक प्रसिद्ध तीर्थ, नैमिषारण्य के एक कुण्ड का नाम, मणिकर्णिका कुण्डका नाम
चक्रदण्ड-(सं० पुं०) एक प्रकार का व्यायाम; **चक्रदन्ती**-(सं०स्त्री०) जमालगोटा; **चक्रदंष्ट्र**-(सं० पुं०) शूकर, सुअर; **चक्रधर-चक्रधारी**-(सं०वि०) चक्र को धारण करने वाला (पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण, बाजीगर, अनेक नगरों या गावों का स्वामी, गाँव का परोहित, सर्प, एक प्रकार का राग; **चक्रपर्णी**-(सं० स्त्री०) पिठवन नामक औषधि; **चक्रपाणि**-(सं०पुं०) हाथमें चक्र धारण करने वाले विष्णु; **चक्र पाद**-(सं०पुं०) गाड़ी, रथ; **चक्रपानि**-(हिं०पुं०) देखो, चक्रपाणि; **चक्रपाल**-(सं० पुं०) सूबेदार, चकलेदार; **चक्र पूजा**-(सं०स्त्री०) तान्त्रिकों का एक विशिष्ट प्रकारका पूजन; **चक्रफल**-(सं०पुं०) गोल फल लगा हुआ एक अस्त्र; **चक्रबंध**-(सं०पुं०) एक प्रकार का चित्रकाव्य; **चक्रबंधु-चक्रबान्धव**-(सं०पुं०) सूर्य; **चक्रभृत्**-(सं०पुं०) चक्र धारण करने वाले विष्णु; **चक्र मण्डल**-(सं०पुं०) एक प्रकारका नाच; **चक्रमर्द**-(हिं० पुं०) देखो चकवँड़; **चक्रमुख**-(सं० पुं०) शूकर, सूअर; **चक्रमुद्रा**-(सं०स्त्री०) विष्णु के चक्र या आयुध के चिह्न जिनको वैष्णव लोग अपने अंग पर छापते हैं; तान्त्रिकों की एक अङ्गमुद्रा।
चक्रयन्त्र-(सं०पुं०) ज्योतिष का एक यन्त्र;
चक्रवर्तिनी-(सं० स्त्री०) किसी चक्र की अधिष्ठात्री; **चक्रवर्ती**-(सं०वि०) एक समुद्रसे दूसरे समुद्र तक राज्य करने वाला भूपति, सार्वभौम राजा; **चक्रवाक**-(सं०पुं) चकवा पक्षी;
चक्रवाकबन्धु-(सं०पुं०) सूर्य; **चक्रवात**-(सं० पुं०) चक्कर खाने वाली वेगकी हवा, बवंडर; **चक्रवाल**-(सं० पुं०) मण्डल, घेरा; **चक्रवृत्त**-(सं०स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम।
चक्रवृद्धि-(सं० स्त्री०) व्याज को मूल में जोड़कर उसपर सूद लगाना, **चक्रव्यूह**-(सं०पुं०) युद्ध के समय किसी व्यक्ति या वस्तु को सुरक्षित रखने के लिये उसके चारो ओर मण्डलाकार सेना स्थापित करना जिसमें उसके पास सहजमें कोई पहुँच न सके
चक्राङ्क-(सं०पुं०) चक्रादि का वह चिह्न जो वैष्णव लोग अपने शरीर पर छापते हैं; **चक्राङ्कित**-(सं०वि०) चक्र का चिह्न छापा हुआ; **चक्रान्त**-(सं०पुं०) गुप्त मन्त्रणा, षड्यन्त्र।
चक्रांश-(सं०पुं०) राशि चक्र का ३६० वां अंश।
चक्राकार-(सं०वि०) मण्डलाकार, गोल।
चक्राट-(सं०पुं०) बाजीगर, मदारी, सर्प का विष झाड़ कर उतारने वाला।
चक्रायुध-(सं० पुं०) चक्र धारण करने वाले विष्णु।
चक्रावल-(हिं०पुं०) घोड़ों के पैर का एक रोग।
चक्रिक-(सं०पुं०) चक्र धारण करने वाला।
चक्रिका-(सं०स्त्री०) घुटनेकी गोल हड्डी
चक्रित-(हिं०वि०) देखो चकित।
चक्राह्व-(सं०पुं०) चक्रवाक, चकवा पक्षी
चक्री(सं० पुं०) चक्र धारण करने वाले विष्णु, गांव का पुरोहित, चकवा पक्षी, आर्याछन्द का एक भेद, रथ पर चढ़ने वाला, कौवा, गदहा, कुम्हार, सर्प, बकरा, दूत, गुप्तचर, व्याघ्रनख नामक औषधि, तेली, चक्रवर्ती।
चक्रेश्वर-(सं०पुं०) चक्रवर्ती।
चक्षण-(सं०पुं०) कृपादृष्टि, अनुग्रह।
चक्षुःश्रवा-(सं०पुं०) सर्प, सांप।
चक्षु-(सं०पुं०) देखने की इन्द्रिय, आँख।
चक्षुरिन्द्रिय-(सं०स्त्री०) चक्षु, आँख;
चक्षुष्पति-(सं०पुं०) सूर्य; **चक्षुष्य**-(सं० वि०) नेत्रों के लिये हितकर (औषधि); नेत्र संबंधी, देखने में सुन्दर, नेत्रोंसे उत्पन्न, (पुं०) केवड़ा, अंजन, सुरमा, तूतिया।
चख-(हिं० पुं०) चक्षु, आंख, झगड़ा,
चखचख-झगड़ा, बकझक, कहासुनी।
चखचौंध-(हिं०स्त्री०) देखो चकचौंध।
चखना-(हिं०क्रि०) स्वाद लेने के लिये मुंह में डालना, स्वाद लेना, स्वाद लेते हुए खाना।
चखाचखी-(हिं०स्त्री०) झगड़ा, विरोध, वैर
चखाना-(हिं० क्रि०) स्वाद दिलाना, खिलाना।
चखिया-(हिं०वि०) झगड़ा करने वाला, झगड़ालू।
चखु-(हिं०पुं०) चक्षु, आंख, नेत्र।
चखोड़ा-(हिं०पुं०) बच्चोंके मस्तक पर का काला टीका जो दृष्टि न लगने के लिये लगाया जाता है।
चखौती-(हिं० स्त्री०) चटपटा स्वादिष्ट भोजन।
चगड़-(हिं०वि०) धूर्त, चतुर।
चङ्कर-(सं०पुं०) रथ, यान, वृक्ष, पेड़।
चचर-(हिं०स्त्री०) बहुत दिनों तक परती पड़ी हुई भूमि जो एक बार बोई जाती है।
चचा-(हिं०पुं०) पिता का भाई, पितृव्य, **चचा बनाना**-अच्छी तरह बदला लेना।
चचिया-(हिं०वि०) चचा से संबध रखने वाला; **चचिया ससुर**-पत्नी का चाचा
चचींड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी बनाई जाती है, अपामार्ग, चिचिड़ा।
चाची-(हिं०स्त्री०) चाचा की स्त्री।
चचेरा-(हिं० वि०) चचा से उत्पन्न, चचा संबंधी।
चचोड़ना-(हिं०क्रि०) दातों से दबाकर चूसना।
चचोड़वाना-(हिं०क्रि०) दबाकार चूसने देना; **चञ्चु**-(हिं०पुं०) देखो चक्षु।
चञ्चरीक-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा।
चञ्चरीकावली-(सं०स्त्री०) भौंरों की पंक्ति, तेरह अक्षरोंका एक वर्णवृत्त।
चञ्चल-(सं०वि०) अस्थिर, चलायमान, अधीर, चंचल बुद्धिका, घबड़ाया हुआ, उद्विग्न, नटखट, चुलबुला, (पुं०) वायु, हवा, रसिक, कामी; **चञ्चलता**-(स्त्री०) चपलता, चुलबुलापन।
चञ्चला-(सं० स्त्री०) लक्ष्मी विद्युत्, बिजली, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।
चञ्चु-(सं०पुं०) रेंड़ का वृक्ष, मृग, हरिन, पक्षी की चोंच; **चञ्चुका**-(सं०स्त्री०) पक्षीकीचोंच; **चञ्चुपुट**-(स्त्री०) चोंच, ठोर; **चञ्चुभृत**-(पुं०) पक्षी, चिड़िया;
चञ्चुमान्-(पुं०) पक्षी, चिड़िया;
चञ्चुर-(वि०) निपुण, चतुर, दक्ष।
चट-(हिं०क्रि०वि०) शीघ्र, जल्दी से, झटपट, तुरत, (पुं०) धब्बा, कल-

दोष घाव का चकोता, चटचट का शब्द (वि०) चाट पोछ कर कुल खाया हुआ; **चट करजाना**-सब खा जाना, कुछ न छोड़ना, दूसरे की वस्तु अपहरण करना।
चटक-(सं०पुं०) गौरैया पक्षी, चिड़ा; चमक, चटकीलापन, (वि०) चमकीला, गहरे रंग का (स्त्री०) शीघ्रता, (क्रि०वि०) झटपट, शीघ्रता से, तुरत, (वि०) तीक्ष्ण स्वाद का, चटपटा, चरपरा।
चटकई-चटकीलापन-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता, तीव्रता।
चटकदार-(हिं०वि०) चटकीला, भड़कीला
चटकन-(हिं०पुं०) टूटने फूटने का शब्द
चटकना-(हिं०क्रि०) चट् शब्द करके टूटना, हलकी चोट से टूट जाना, तड़कना, चिड़चिड़ाना, झुँझलाना, झल्लाना, गरमी से लकड़ी आदि में दरार पड़ना, अंगुलियों को मोड़कर चट् चट् शब्द करना, कलियों का फूटना, अनबन होना, खटकना (पुं०) थप्पड़।
चटकनी-(हिं०स्त्री०) किवाड़ बन्द करने की सिटकिनी।
चटकमटक-(हिं०स्त्री०) वेषभूषा, आडम्बर, सिंगार, ठसक, चमक दमक।
चटकवाही-(हिं०स्त्री०) जल्दी
चटका-(हिं०पुं०) शीघ्रता, जल्दी, धब्बा, चटपटा स्वाद।
चटकाना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, उंगुलियां फोड़ना, अलग करना, दूर करना, कुपित करना, चिढ़ाना; **जूतियां चटकाना**-जूता घसीटते फिरना, मारे मारे फिरना, दरिद्र हो जाने पर पैदल चलना।
चटकारा-(हिं०वि०) चमकीला, चटकीला, चंचल, तीक्ष्ण, (वि०) स्वादिष्ट वस्तु को खाते समय तालु से जीभ लगने का शब्द।
चटकारी-(हिं०स्त्री०) चुटकी।
चटकाली-(हिं०स्त्री०) गौरैया पक्षियों का झुण्ड, पक्षियों की पंक्ति।
चटकाहट-(सं०स्त्री०) चटकने या टूटने का शब्द, कलियों के फूटने का शब्द
चटकी-(हिं०स्त्री०) बुलबुल के तरह की एक चिड़िया, चौड़े मुँह की गगरी।
चटकीला-(हिं०वि०) भड़कीला, चमकीला, गहरे रंग का, चमकदार, चरपरा, चटपटा; **चटकीलापन** (पुं०) चमक दमक, आभा।
चटकौरा-(हिं०पुं०) खटखट करने वाला खिलौना।
चटखना-(हिं०क्रि०) देखो चटकना।
चटखनी-(हिं०स्त्री०) चटकनी, सिटकिनी
चटचट-(हिं०पुं०) चटकने या टूटनेका शब्द, अंगुली मोड़कर फोड़ने का शब्द (क्रि०वि०) जल्दी से।
चटचटाना-(हिं०क्रि०) चट् चट् शब्द करते हुए टूटना, गंठीली लकड़ी या कोयले का चट् चट् शब्द करते हुए जलना।
चटचेटक-(हिं०पुं०) इन्द्रजाल जादू।
चटनी-(हिं०स्त्री०) चाटने की वस्तु, अवलेह, भोजन का स्वाद बढानेवाली खाद्य वस्तु। **चटनीकरना**-पीसकर महीन (बारीक) करना, (पुं०) बच्चों के चूसने का लकड़ी का खिलौना।
चटपट-(हिं०क्रि०वि०) शीघ्र, जल्दी, झटपट, तुरंत। **चटपटा**-(हिं०वि०) तीक्ष्ण स्वाद का, चरपरा; **चटपटाना** (हिं०क्रि०) शीघ्रता करना हड़बड़ीना **चटपटी**-(हिं०स्त्री०) आतुरता, उतावलापन, शीघ्रता, व्यग्रता, घबराहट, बेचैनी।
चटरी-(हिं०स्त्री०) एक चिपटा अन्न, लतरीं।
चटवाना-(हिं०क्रि०) चाटने में प्रवृत्त करना, चटाना।
चटशाला चटसार-(हिं० स्त्री०) बच्चों को पढाने की पाठशाला।
चटाई-(हिं०स्त्री०) तृण, बांस की फट्टी, ताड़ के पत्ते आदि का बना हुआ बिछावन, साथरी; चाटने की क्रिया।
चटाक-(हिं०पुं०) टूटने फूटने का शब्द, दाग, धब्बा; **चटाकपटाक**-तुरन्त,
चटाका-(हिं०पुं०) लकड़ी या किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द।
चटाचट-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु के टूटने का शब्द।
चटाना-(हिं०क्रि०) चाटने का काम कराना, थोड़ा थोड़ा करके किसी के मुँह मे डालना, घूस देना, तलवार छुरी आदि पर सान देना।
चटापटी-(हिं०स्त्री०) जल्दी, शीघ्रता।
चटावन-(हिं०पुं०) बच्चों को प्रथम बार अन्न चटाने का सस्कार, अन्नप्राशन
चटिक-(हिं०क्रि०वि०) चटपट, उसी क्षण
चटियल-(हिं०वि०) बिलकुल खुला हुआ वृक्ष, शून्य (मैदान); निचाट।
चटी-(हिं०स्त्री०) चटसार, बच्चों की पाठशाला।
चटु-(हिं०पुं०) प्रिय वाक्य,
चटुक-(हिं०वि०) चपल, चंचल, सुन्दर, मनोहर, प्रिय दर्शन।
चटुल-(हिं०वि०) चंचल।
चटुला-(सं०स्त्री०) बिजली।
चटोरा-(हिं०वि०) अच्छी अच्छी वस्तु के खाने का लालची, लोभी, लोलुप; **चटोरापन**-(पुं०) अच्छे पदार्थ खाने की लोलुपता।
चट्ट-(हिं०वि०) चाट पोंछ कर खाया हुआ, समाप्ति, लुप्त, गायब।
चट्टा-(हिं०पुं०) शिष्य, चेला, बांस की चटाई, खुला मैदान जिसमें वृक्ष न हों, शरीर पर का चिकोता, ढेर, राशि, समूह।
चट्टान-(हिं०स्त्री०) पत्थर का लंबा चौड़ा टुकड़ा, शिला खण्ड; कोई दीर्घकाय पदार्थ।
चट्टा बट्टा-(हिं०पुं०) लड़कों के खेलने का खिलौने आदि का समूह, बाजीगर के थैले में की विविध सामग्री; **एक ही थैली के चट्टे बट्टे**-एक ही प्रकृति के मनुष्य; **चट्टे बट्टे लड़ाना**-आपस में लड़ाने की बात करना, चुटकुला छोड़ना।
चट्टी-(हिं०स्त्री०) टिकान, पड़ाव, बिना एड़ी का स्लिपर, घाटा, टोटा, हानि
चट्टू-(हिं०वि०) चटोरा, पत्थर का बड़ा खरल।
चड़चड़-(हिं०पुं०) सूखी लकड़ी के टूटने का शब्द।
चड़बड़-(हिं०स्त्री) निरर्थक बकवाद।
चड़सी-(सं०पुं०) चरस पीने वाला।
चड्डा-(हिं०वि०) मूर्ख, (पुं०) जांघ का ऊपरी भाग।
चड्ढी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका लड़कों का खेल।
चढत-(हिं०स्त्री०) किसी देवता की भेंट
चढता-(हिं०वि०) ऊपर को उभड़ा हुआ, आगे को बढ़ता हुआ।
चढन-(हिं०स्त्री०) चढ़ने की क्रिया।
चढना-(हिं०क्रि०) नीचे से उपर को जाना, ऊपर उठना, उपर की ओर जाना, उड़ना, बढना, उन्नति करना, एक वस्तु के ऊपर दूसरे का सटना, नदी में बाढ आना, चढ़ाई करना, दल बाँध कर जाना, गाने में स्वर का ऊंचा होना, बहाव से विरुद्ध चलना, देवता या महात्मा को भेंट देना. ऊंट, हाथी, घोड़ा आदि पर सवार होना, वर्ष, मास आदि का आरम्भ होना, ऋणी होना, बही खाते में लिखना, बुरा प्रभाव होना, पकाने के लिये आंच पर रखना; लेप होना; **दिन चढ़ना**-दिन का प्रकाश फैलाना, गर्भ धारण करना; **बढ चढ कर होना**-श्रेष्ठ होना; **चढा बढा**-अधिका श्रेष्ठ; **नस चढना**-शरीर के किसी नस का स्थान से हट जाना; **पाप चढ़ना**-पाप से बुद्धि नष्ट होना।
चढवाना-(हिं०क्रि०) चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।
चढाई-(हिं०स्त्री०) चढ़ने की क्रिया, ऊपर का चढ़ाव, आक्रमण, देवता को भेंट चढाने की क्रिया।
चढा उतरी-(हिं०स्त्री०) बारंबार चढ़ने उतरने की क्रिया।
चढा उपरी-(हिं०स्त्री०) एक दूसरे से बढ़ने का उद्योग, लाग-डांठ।
चढाचढी-(हिं०स्त्री०) चढ़ा उपरी, लागडांट।
चढाना-(हिं०क्रि०) नीचे से ऊपर को ले जाना, ऊंचाई पर पहुँचाना, चढ़ाने का काम करना, ऊपर की ओर समेटना, चढाई करना, मूल्य बढ़ाना, सुर ऊँचा करना, देवता को अर्पण करना, सवार होना, पी जाना, पुस्तक में लिखना, ऋणी ठहराना, पकने के लिये आंच पर रखना, मढना।
चढानी-(हिं०स्त्री०) ऊपर की ओर ले जानेवाला तल।
चढाव-(हिं०पुं०) चढ़ने की क्रिया या भाव, वृद्धि, दुलहिन को विवाह के दिन पहिराया हुआ ससुराल का गहना, वह दिशा जिससे नदी की धारा आई हो; **चढाव उतार**-ऊंचा नीचा स्थान, गावदुम आकृति।
चढ़ावा-(हिं०पुं०) वर की ओर से कन्या को विवाह के दिन पहिराया हुआ गहना; देवता को अर्पण करने की सामग्री, पुजापा, बढ़ावा, उत्साह; **चढावा बढावा देना**-प्रोत्साहित करना, उसकाना।
चढैत-(हिं०पुं०) चढ़नेवाला, सवार होने वाला।
चढौवा-(हिं०वि०) उठी हुई एंडी का जूता
चणक-(सं०पुं०) चना।
चणकात्मज-(सं०पुं०) चाणक्य।
चण्ड-(सं०पुं०) एक प्रकार का छोटा बन्दर, चूहा।
चण्ड--(सं०वि०) तीक्ष्ण, उग्र, प्रबल, घोर, कठोर, विकट, बलवान्, उद्धत, उग्र स्वभाव का, क्रोधी, (पुं०) ताप, गरमी, एक यमदूत का नाम, एक दैत्य जिसको दुर्गा ने मारा था, एक भैरव का नाम, कुवेर के आठ पुत्रों में से एक; **चण्डकर**-(वि०) तीक्ष्ण किरण वाला, (पुं०) सूर्य। **चण्डकौशिक**-(पुं०) एक ऋषि का नाम; **चण्डता**-(स्त्री०) उग्रता, प्रबलता, प्रताप, घोरता, बल; **चण्डतुण्डक**-(पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम; **चण्डत्व**-(पुं०) प्रबलता, उग्रता; **चण्डदीधिति**-(पुं०) सूर्य; **चण्डनायिका**-(स्त्री०) दुर्गा की एक सखी; **चण्डमुंड**-(पुं०) दो राक्षसों के नाम जिनको दुर्गाने मारा था; **चण्डरसा**-(स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम; **चण्डरुद्रिका**-(स्त्री०) एक प्रकार की तान्त्रिक सिद्धि; **चण्डवती**-(स्त्री०) दुर्गा, आठ नायिकाओं में से एक; **चण्डवृष्टिप्रपात**-(पुं०) दण्डक वृत्ति का एक भेद।
चण्डांशु-(सं०वि०) तीक्ष्ण किरण वाला, (पुं०) सूर्य।
चण्डा-(सं०वि०) उग्र स्वभाव की, कर्कशा, (पुं०) केंवाच, सफेद दूब, सोवा
चण्डातक-(सं०पुं०) स्त्रियों की चोली।
चण्डाल-(सं०पुं०) चाण्डाल, श्वपच; डोम, **चण्डालता**-(स्त्री०) अधमता, नीचता; **चण्डालत्व**-देखो चण्डालता; **चण्डाल वीणा**-(स्त्री०) एक प्रकारका चिकारा; **चण्डालिनी**-(सं०स्त्री०) चाण्डाल की स्त्री, दुष्टा, स्त्री, पापिनी स्त्री।
चण्डिका-(सं०स्त्री०) दुर्गा, कर्कशा स्त्री, गायत्री देवी।
चण्डी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, कर्कशा स्त्री,

तेरह अक्षर का एक वर्णवृत्त; **चण्डी कुसुम**-(पुं०) लाल कनेर का फूल ; **चण्डीपति**-(पुं०) शिव, महादेव; **चण्डीश**-(पुं०) चण्डीपति, शिव ।
चण्डेश्वर-(सं०पुं०)शिव का एक प्रचण्ड रूप ।
चण्डोदरी-(सं०स्त्री०) एक राक्षसी जिसको रावण ने सीता को समझाने लिये भेजा था।
चटरभंग-(हिं०पुं०) बैलों का एक दोष
चतुरङ्ग-(सं०पुं०)एक प्रकार का चलता गाना; चतुरङ्गिणी सेना का अधिपति (वि०) सेना का चार अंग यथा हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल; **चार अगवाला**-(पुं०) शतरंज का खेल ।
चतुरङ्गिणी-(सं०वि०) जिस सेना में हाथी, घोड़े रथ और पैदल सवार हों । **चतुरंगिनी**-(हिं०) देखो चतुरङ्गिणी ।
चतुरन्त-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, मेदिनी ।
चतुर-(सं०वि०) टेढ़ी चाल चलनेवाला वक्रगामी, फुरतीला, प्रवीण, आलस्यरहित, निपुण, धूर्त, शृंगार रस का एक नायक जो अपनी चतुराई से प्रेमिका के संयोग का साधन करता है । **चतुरई**-(स्त्री०)चतुरता, चतुराई; **चतुरई छोलना**-कपट व्यवहार करना; **चतुरता**-(स्त्री०) चतुराई, प्रवीणता; **चतुरनीक**-(पुं०) चतुरानन, ब्रह्मा; **चतुरपन**-(पुं०) चतुराई, चतुरता
चतुरभुज-(हिं०पुं०) देखो चतुर्भुज ।
चतुरमास-(हिं०पुं०) देखो चातुर्मास ।
चतुरमुख-(हिं०वि०) देखो चतुर्मुख ।
चतुरशीति-(सं०वि०) चौरासी (संख्या)
चतुरश्र-(सं०वि०) चौकोर, चतुष्कोण ।
चतुरह-(सं०पुं०) चार दिन में समाप्त होने वाला यज्ञ ।
चतुरा-(सं०वि०) चतुर, प्रवीण, धूर्त । **चतुराई**-(हिं०स्त्री०) निपुणता, धूर्तता,
चतुरात्मा-(सं०पुं०) ईश्वर, विष्णु ।
चतुरानन-(सं०पुं०) चार मुखवाले ब्रह्मा।
चतुरापन-(हिं०पुं०) निपुणता, चतुराई।
चतुरिन्द्रिय-(सं०पुं०) चार, इन्द्रियों वाले जीव ।
चतुर-(सं०वि०) चार, चारकी संख्या ।
चतुर्गुण-(सं०वि०)चौगुना चार गुणका
चतुर्णवति-(सं० स्त्री०) चौरानबे की संख्या ।
चतुर्थ-(सं०वि०) चौथा, चौथी संख्या का, **चतुर्थक**-(पु०) चौथे दिन आनेवाला ज्वर ।
चतुर्थांश-(सं०पुं०) चौथाई भाग, चार अंशों में से एक अंश ।
चतुर्थाश्रम-(सं०पुं०) सन्यास ।
चतुर्थी-(सं०स्त्री०) महीने के किसी पक्ष की चौथी तिथि, चौथ, विवाह के चौथे दिन होने वाला संस्कार ।
चतुर्दन्त-(सं०पुं०) ऐरावत हाथी ।
चतुर्दश-(सं०पुं०) चौदह (वि०) चौदहवां । **चतुर्दशी**-(सं०स्त्री०) महीने के किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि, चौदस ।
चतुर्दिक्-(सं० पुं०) चारो दिशायें (क्रि० वि०) चारो ओर । **चतुर्दिश**-(सं०पुं०) देखो चतुर्दिक ।
चतुर्दोल-(सं०पुं०) चार कहारों से ले चलने वाली सवारी ।
चतुर्धाम-(सं०पुं०) चारो मुख्य तीर्थ-जगन्नाथ पुरी, द्वारका, बदरिकाश्रम और रामेश्वरम् ।
चतुर्बाहु-(सं०पुं०) शिव, महादेव, विष्णु।
चतुर्भद्र-(सं०पुं०) धर्म, अर्थ काम और मोक्ष इन चारो का समुदाय ।
चतुर्भुज-(सं०वि०) चार भुजाओं वाला, (पुं०)विष्णु,वह क्षेत्र या आकृति जिसमें चारभुजायें और चार कोण हों । **चतुर्भुजा**-(सं०स्त्री०) गायत्री रूप धारिणी देवी । **चतुर्भुजी**-(हिं०पुं०) एक वैष्णव सम्प्रदाय का नाम ।
चतुर्मास-(सं०पुं०) चातुर्मास, बरसात के चार महीने, असाढ़, सावन, भादों और कुंआर ।
चतुर्मुख-(सं०वि०) चार मुख वाला, (पु०) ब्रह्मा (क्रि०वि०) चारो ओर,
चतुर्युगी-(सं०स्त्री०) चारों युगों का समय, चौकड़ी ।
चतुर्वक्त्र-(सं०पुं०) चार मुख वाले ब्रह्मा।
चतुर्वर्ग-(सं०पुं०) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।
चतुर्वर्ण-(सं०पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।
चतुर्वाही-(सं०पुं०) चार घोड़े की गाड़ी, चौकड़ी ।
चतुर्विंश-(सं० वि०) चौबीसवां ।
चतुर्विंशति-(सं०स्त्री०) चौबीस ।
चतुर्विद्या-(सं०स्त्री०) चारो वेदों की विद्या ।
चतुर्दवीर-(सं०पुं०) चार दिन में होने वाला एक यज्ञ ।
चतुर्वेद-(सं०पुं०) ईश्वर, परमेश्वर, चारों वेद। **चतुर्वेदी**-(सं०वि०) चारो वेद जानने वाला (पुं०) ब्राह्मणों की एक पदवी ।
चतुर्व्यूह-(सं०पुं०) चार मनुष्यों या पदार्थों का समुच्चय, विष्णु, योगशास्त्र, चिकित्साशास्त्र वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ।
चतुल-(सं० पुं०) स्थापक, स्थापन करने वाला।
चतुष्क-(सं०वि०) चौपहल, (पु०) एक प्रकार का गृह, चौक ।
चतुष्कर-(सं०पुं०) पंजे वाला पशु
चतुष्कल(सं०वि०) जिसमें चार कला मात्र हों।
चतुष्की-(सं०स्त्री०) चौकी, मसहरी ।
चतुष्कोण-(सं०वि०) चार कोण वाला, चौकोना, (पुं०) जिस आकृति में चार कोण हों ।
चतुष्टय-(सं० पुं०) चार की संख्या, चार पदार्थों का समुदाय ।
चतुष्टोम-(सं०पुं०) अश्वमेध यज्ञ का एक अंग ।
चतुष्पथ-(सं०पुं०) चौरहा, चौमुहानी,
चतुष्पद-(सं०पुं०) चार पैर वाला पशु, चौपाया (वि०) चार पैर वाला ।
चतुष्पदा-(सं०स्त्री०)एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तीस मात्रायें होती हैं (वि०) **चतुष्पदी** (सं०स्त्री०) चौपाई छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह मात्रायें होती हैं तथा अन्त में गुरु वर्ण होता है; चार पद की एक गीत ।
चतुष्पाठी-(सं०स्त्री०) विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान, पाठशाला ।
चतुष्पाणि-(सं०वि०) चार हाथ वाले
चतुष्फल-(सं०वि०) चौपहला ।
चत्वर-(सं०पुं०) चौमुहानी, चौरस्ता, चबूतरा, यज्ञ के लिये स्वच्छ किया हुआ स्थान, वेदी, आंगन ।
चत्वाल-(सं०पुं०) होमकुण्ड,वेदी,चत्वर
चदरा(हिं०) देखो चादर ।
चदिर-(सं०पुं०)चन्द्रमा,कपूर, सर्प,हाथी
चद्दर-(हिं०स्त्री०) चादर, किसी धातु का लंबी चौड़ी पत्तर, नदी के ऊपरी तल की समतल अवस्था ।
चनक-(हिं०पुं०) चणक, चना ।
चनकट-(हिं०स्त्री०) तमाचा, थप्पड़
चनकना-(हिं०क्रि०) देखो चटकना ।
चनखना-(हिं०क्रि०)रुष्ट होना, चिढ़ना, चिटिकना ।
चनन-(हिं०पुं०) देखो चन्दन ।
चनवर-(हिं०पुं०) ग्रास, कवर ।
चनसित-(सं०पुं०) महान्, श्रेष्ठ ।
चना-(हिं०पुं०) चणक, बूट, रहिला; **नाकों चना चबाना**-बहुत व्यग्र करना, बड़ा कष्ट देना, **लोहे का चना**-अत्यन्त दुष्कर काम; **लोहे का चना चबाना**-बड़ा कठिन काम करना ।
चनाखार-(हिं०पुं०) चने की पत्ती और डंठल में से निकाला हुआ क्षार ।
चनार-(हिं०पुं०) एक पहाड़ी बड़ा वृक्ष जिसकी पुष्ट लकड़ी घरबनाने केकाम में लाई जाती है ।
चनियारी-(हिं०पुं०) एक सुन्दर पर का जलपक्षी ।
चनोरी-(हिं०स्त्री०) सफ़ेद रोवें की भेंड़ी
चन्दन-(सं०पुं०) एक वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी अति सुगन्धित होता है इसको घिसकर हिन्दू लोग देव पूजन में प्रयोग करते है तथा शरीर में भी पोतते है, श्रीखण्ड, मलयज, एक प्रकार का बड़ा सुग्गा; **चन्दनगिरी**-मलायाचल पर्वत । **चन्दनयात्रा**-(स्त्री०स्त्री०) अक्षय तृतीया **चन्दनहार**-(हिं०पुं०) पहिरने की माला ।
चन्द्र-(सं०पुं०) चन्द्रमा, एक की संख्या कपूर, सोना, लाल रंग का मोती, हीरा, मृगशिरा नक्षत्र; **चन्द्रक**-(पुं०) चन्द्रमा का मण्डल, चाँदनी, कपूर, नख एक राग का नाम; **चन्द्रकला**-(स्त्री०) चन्द्रमण्डल का सोलहवाँ अंश, चन्द्रमा की किरण, छोटा ढोल, एक वर्णवृत्त का नाम; **चन्द्रकलाधर**-(पुं०) शिव, महादेव; **चन्द्रकान्त**-(पुं०) एक रत्न जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है वह चन्द्रमा के सामने आने से पसीजता है, कुमुद, चन्दन, एक राग का नाम;
चन्द्रकान्ता-(स्त्री०) चन्द्रमा की स्त्री, रात्रि, पन्द्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त; **चन्द्रकुमार**-(पुं०) चन्द्रमा का पुत्र,बुध; **चन्द्रकेतु**-(सं०पुं०) लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम; **चन्द्रक्षय**-(पुं०) अमावास्या; **चन्द्रगुप्त**-(पुं०) मगध देश के प्रथम मौर्यबंशी राजा का नाम; **चन्द्रगृह**-(पुं०) कर्कराशि; **चन्द्रगोल**-(पुं०)चन्द्र मण्डल; **चन्द्रगोलिका**-(स्त्री०)चन्द्रिका, चाँदनी; **चन्द्रचूड़**-(पुं०)शिव,महादेव; **चन्द्रज**-(पुं०) चन्द्रमा के पुत्र, बुध; **चन्द्रद्युति**-(स्त्री०) चन्द्रमा का प्रकाश, चन्दन; **चन्द्रधनु**-(पुं०) चन्द्रमा के प्रकाश से दिखाई देनेवाला इन्द्र धनुष **चन्द्रधर**-(पुं०) चन्द्रमा को धारण करनेवाले शिव, महादेव; **चन्द्रप्रभ**-(वि०) चन्द्रमा के समान प्रकाश वाला कान्तिमान्; **चन्द्रप्रभा**-(स्त्री०) चांदनी, कपूर; **चन्द्रबन्ध**-(पुं०) शंख, कुमुद; चन्द्रवधू, चन्द्रवधूटी, बीरबहूटी; **चन्द्रवाण**-(पुं०) अर्धचन्द्र के आकार का बाण जो सिर काटने के लियेछोड़ा जाता था; **चन्द्रबाला**-(स्त्री०) चन्द्रमा की स्त्री, चन्द्रमा की किरण, बड़ी इलायची; **चन्द्रबाहु**-(पुं०) एक दैत्य का नाम; **चन्द्रविन्दु**-(पुं०) अर्ध अनुस्वार का विन्दु जो अक्षर के ऊपर लगाया जाता है **चन्द्रबिम्ब**-(पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग; **चन्द्रभवन**-(पुं०) एक रागिणी का नाम ।
चन्द्रभा-(सं०स्त्री०)चन्द्रमा का प्रकाश : **चन्द्रभाग**-(सं०पुं०) चन्द्रमा की कला, सोलह की संख्या । **चन्द्रभागा**-चनाब पञ्जाबकी एक नदी । **चन्द्रभान**-(सं० पु०)श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा के एक पुत्र का नाम। **चन्द्रभाल**-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
चन्द्रभूषण-(सं०पुं०) देखो चान्द्रभाल ।
चन्द्रमणि-(सं०पुं०) चन्द्रकान्त मणि ।
चन्द्रमा-(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध उपग्रह जिसमें सूर्य का प्रकाश आता है और जो एक महीने में पृथ्वी को परिक्रमा करता है, सुधांशु, शशि ।
चन्द्रमाललाल, **चन्द्रमाललाम**-(सं०) शिव ।
चन्द्रमाला-(सं० स्त्री०) अट्ठाईस मात्रा का एकछन्द, चन्द्रहार, **चन्द्रमौलि**-(सं०पुं०) चन्द्रमा को शिर पर धारण करने वाले शिव । **चन्द्ररेखा**-(सं०पुं०) चन्द्रमा की कला। **चन्द्रलोक**-(सं०पुं०), चन्द्रमा का लोक, पितरलोक ।
चन्द्रवंशी-(सं०पुं०) चन्द्रवंश में उत्पन्न **चन्द्रवधू**-(सं०स्त्री०) इन्द्रवधू, बीरबहूटी। **चन्द्रवर्त्म**-(सं०पुं०) एक वर्णवृत्त का नाम । **चन्द्रवल्लरी**-(सं० स्त्री०

सोमलता, माधवी लता। **चन्द्रवार**-(सं०पु०) सोमवार। **चन्द्रवाला**-(सं०स्त्री०) बड़ी इलायची। **चन्द्रवेश**-(सं०पुं०) शिव, महादेव। **चन्द्रव्रत**-(सं०पु०) चान्द्रायण व्रत। **चन्द्रशाला**-(सं०स्त्री०) चन्द्रिका, चांदनी। **चन्द्रशूर**-(सं०पुं०) चंसुर नामक पौधा। **चन्द्रश्रृङ्ग**-(सं०पुं०) दुइज के चन्द्रमा की दोनों ओर की नोक। **चन्द्रशेखर**-(सं०पु०) शिव, महादेव, संगीत के भेद में से एक। **चन्द्रसरोवर**-(सं०पु०) व्रज का एक तीर्थ स्थान। **चन्द्रहार**-(सं०पुं०) गले में पहिरने का एक आभषण। **चन्द्रहास**-(सं०पुं०) खड्ग, तलवार, चांदी।

चन्द्रान्तिक-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

चन्द्रा-(सं०स्त्री०) चँदवा, छोटी इलायची

चन्द्रान्तप-(सं०पुं०) चन्द्रिका, चांदनी

चन्द्रापीड़-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

चन्द्रायतन-(सं०पु०) देखो चन्द्रशाला

चन्द्रालोक-(सं०पुं०) चन्द्रमा का प्रकाश। **चन्द्रावर्ता**-(सं०पु०) एक वर्णवृत्त का नाम। **चन्द्रावली**-(सं०स्त्री०) एक गोपी का नाम जो कृष्ण-पर आसक्त थी।

चन्द्रिका-(सं०स्त्री०) चांदनी, कौमुदी, चन्द्रमा का प्रकाश, जूही, चमेली, एक देवी, एक वर्णवृत्त, माथे का एक आभूषण, छोटी या बड़ी इलायची। **चन्द्रिकाभिसारिका**-एक नायिका जो शुक्लाभिसारिका भी कहलाती है। **चन्द्रिकोत्सव**-(सं०पु०) शरदपूर्णिमा। **चन्द्रिल**-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

चन्द्रोदय-(सं०पुं०) चन्द्रमा का उदय, चँदवा, आयुर्वेद का एक उत्तेजक रस।

चन्द्रोपराग-(सं०पुं०) चन्द्र ग्रहण।

चन्द्रोपल-(सं०पुं०) चन्द्रकान्त मणि।

चपकन-(हिं०स्त्री०) अंगा, अंगरखा, किवाड या सन्दूक मे ताला बन्द करने की कड़ी।

चपकना-(हिं०क्रि०) देखो चिपकाना।

चपकाना-(हिं०क्रि०) देखो चिपकाना।

चपट-(हि०पु०) तमाचा, चपत।

चपटना-(हिं०क्रि०) चिपकना, चिमटना

चपटा-(हिं०वि०) देखो चिपटा। **चपटाना**-(हिं०क्रि०) चिपकना, चिमटाना।

चपटी-(हिं०वि०) चिपटी. ताली. थपोड़ा।

चपड़गट्टू-(हिं० वि०) आपद ग्रस्त

चपड़ चपड़-(हिं०स्त्री०) जीभ से चट् चट् करने का शब्द।

चपड़ा-(हिं०पुं०) शोधी हुई लाह का पत्तर, लाल रंग का एक कीड़ा।

चपड़ी-(हिं०स्त्री०) पटिया,

चपत-(हिं०पुं०) थप्पड़, तमाचा, धक्का, हानि नकसान।

चपना-(हि०क्रि०) दबना, कुचल जाना, लज्जित होना, सिर नीचा करना, नष्ट होना, चौपट होना।

चपनी-(हि०स्त्री०) छोटी छिछली कटोरी, दरियाई नारियल का कमण्डल, हांड़ी का ढपना, घुठने की हड्डी, चक्की।

चपरउनी-(हि०स्त्री०) लोहा चिपटा करने का लोहार का एक अस्त्र,

चपरगट्टू-(हि०वि०) दुर्भाग्य, आभागा, उझला हुआ।

चपरना-(हिं०क्रि०) आपस मे मिलाना चुपड़ना, सानना, भाग जाना।

चपरा-(हि०अव्य०) तुरत, झटपट (वि०) झूठा। **चपराना**-(हि०क्रि०) झूठा बनाना।

चपरास-(हि०स्त्री०) पेटी या परतले में लगाने की पट्टी, मुलम्मा करने की कलम, मालखंभ का एक व्यायाम आरी का दाहिने बायें झुकाव।

चपरासी-(हि०पु०) सिपाही, अर्दली, प्यादा।

चपरि-(हि०क्रि०) शीघ्रता से, जल्दी से।

चपरी-(हि०स्त्री०) एक कदन्न, खेसारी।

चपल-(स०वि०) चंचल, बहुत हिलने डोलने वाला, चतुर, चुलबुला, क्षणिक, अभिप्राय साधने मे तत्पर (पुं०) पारा, पपीहा, एक प्रकार का चूहा, **चपलता**-(स्त्री०) चंचलता, उतावलापन, धृष्टता, **चपलत्व**-(नपुं०) चपलता, चंचलता।

चपला-(सं०वि०) चपल, (स्त्री०) लक्ष्मी, बिजली, चंचला, जीभ, भांग, मदिरा आर्या छन्द का एक भेद, **चपलाई**-(स्त्री०) चपलता, चचलता; **चपलाना**-(क्रि०) हिलना, डोलना, चलना, हिलाना।

चपली-(हि०स्त्री०) जूती, चट्टी।

चपाट-(हिं०पुं०) चौरस तल्ले का जूता जिसकी एंड़ी उठी न हो।

चपाती-(हि०स्त्री०) हाथ से बढाकर बनाई हुई रोटी।

चपाना-(हि०क्रि०) दबाने का काम दूसरे से बनाना, दबवाना, फंसाना, जोड़ना, लज्जित करना।

चपेट-(हि०स्त्री०) रगड़, घिस्सा, अघात, झोंका, दबाव, थप्पड़ संकट, दबाव, **चपेटना**-(क्रि०) दबाना, रगड़ा देना, मारते पीटते हटना, फटकार बतलाना।

चपेटा-(हिं०पुं०) देखो चपेट।

चपेटी-(हिं०स्त्री०) भादों सुदी छठ।

चपेरना-(हिं०क्रि०) दबाना, चापना।

चपौटी-(हिं०स्त्री०) सिरमें चिपकी हुई छोटी टोपी।

चपौरं-(हिं०पुं०) चपाट जूता।

चप्पड़-(हिं०पु०) देखो चिप्पड़।

चप्पन-(हिं०पुं०) नीची बारी का छोटा कटोरा।

चप्पल-(हिं०पु०) चिपटी एंड़ी का जूता, वह जूता जिसमें एंड़ी न हो।

चप्पा-(हिं०पु०) चतुर्थांश, चौथाई भाग, थोड़ा भाग, थोड़ा स्थान।

चप्पी-(हि०स्त्री०) हाथ पैर दबाने की सेवा।

चप्पू-(हिं०पु०) चौड़े पत्ते का डाँडा, कलवारी।

चफाल-(हिं०पु०) भूमि का वह भाग जिसके चारो ओर दलदल हो।

चबक-(हिं०स्त्री०) पीड़ा टीस (वि०) डरपोक

चबकना-(हिं०क्रि०) टीसना, चिलकना।

चबकी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के बाल बांधने की गुथी हुई डोर, परांदा।

चबवाना-(हि०क्रि०) चबाने का काम करना।

चबाना-(हिं०क्रि०) दांतों से कुचलना, दांत से काटना, दरदराना, **चबा चबा कर बातें करना**-धीरे धीरे ठमक ठमक कर बोलना; **चबे को चबाना**-बारंबार एक ही काम को करना।

चबारा-(हिं०पु०) घर के ऊपर का कमरा, चौबारा।

चबूतरा-(हि०पु०) चौरस ऊंचा स्थान, बड़ा थाना, कोतवाली।

चबेना-(हि०पु०) सूखा भूना हुआ अन्न, चर्वण, भूंजा।

चबेनी-(हिं०स्त्री० जलपान की सामग्री, कर्मकारो का दोपहर का कलेवा।

चब्बू, चब्भू-(हिं०वि०) अधिक भोजन करनेवाला।

चम्भो-(हिं०पुं०) दूसरे का दिया हुआ गोता, डुबकी।

चभक-(हि०पुं०) किसी वस्तु का पानी में गिरनेका शब्द, डंक मारने की क्रिया

चभड़चभड़-(हिं०स्त्री०) खाते समय मुख से निकलने का शब्द।

चभकना-(हिं०क्रि०) दबाया जाना

चभाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना, खिलाना।

चभोक-(हिं०वि०) मूर्ख, निर्बुद्धि

चभोकना चभोरना-(हिं०क्रि०) गोता देना, डुबाना, भिगाना।

चमक-(हिं०स्त्री०) प्रकाश, ज्योति, आभा, दीप्ति, कान्ति झलक, लचक, शरीर के किसी अंग की पेशियों का एकाएक तनना। **चमकचांदनी**-(हिं० स्त्री०) बनी ठनी दुश्चरित्रा स्त्री

चमकदमक-(हिं०स्त्री०) दीप्ति, झलक, तड़क भड़क, ठाटबाट, आभा।

चमकदार-(हिं०वि०) चमकीला, भड़कीला; **चमकना**-(हिं०क्रि०) दीप्तियुक्त देख पड़ना, प्रकाशित होना, कान्ति युक्त होना, दमकना, जगमगाना, भड़कीला होना, प्रसिद्ध होना, कीर्त्ति लाभ करना, उन्नति करना, समृद्ध होना, चौंकना, भड़क उठना, जल्दी से निकल भागना, भटकना, एकाएक पीड़ा उत्पन्न होना, लचकना, झटका लगाना, हावभाव दिखलाना।

चमकनी-(हिं०वि०) जल्दी से चिढ़ जानेवाली। **चमकवाना**-(हि०क्रि०) चमकाने का काम दूसरे से कराना।

चमकाना-(हिं०क्रि०) चमकीला करना चमक लाना, उज्ज्वल करना, निर्मल करना, चिढ़ाना, चौकाना, भड़काना, मटकाना।

चमकारा-(हिं०पु०) चमक, प्रकाश; **चमकारी**-(हिं०स्त्री०) चमक, प्रकाश।

चमका-(हिं०स्त्री०) कारचोबी में लगाने के छोटे छोटे चिपटे गोल टुकड़े, सितारे।

चमकीला-(हिं०वि०) चमकदार, चमकनेवाला, भड़कीला।

चमकीला-(हिं०स्त्री०) चमकाने की क्रिया, मटमौवल।

चमकौवल-(हि०स्त्री०) चमकने मटकने की क्रिया, मटकौवल।

चमक्को-(हिं०स्त्री०) चमकने वाली स्त्री, निर्लज्ज चंचल स्त्री, कुलटा, पुंश्चली झगडालू स्त्री, जल्दी से चिढ़नेवाली स्त्री।

चमगादड़-(हिं०पु०) एक उड़नेवाला जन्तु जिसकी बनावट चूहे के समान होती है, इसके कान होते हैं, और यह बच्चा देता है, इसका पर झिल्ली का बना होता है।

चमचम-(हि०स्त्री०) छेने की एक बंगला मिठाई, (क्रि०वि०) चमाचम।

चमचमाना-(हिं०क्रि०) चमकाना, प्रकाशित होना, चमक लाना, झलकना।

चमछिच्चड़-(हि० वि०) किलनी की तरह चमड़े में चिपटनेवाला, पीछा न छोड़ने वाला।

चमची-(हिं० स्त्री०) छोटा चिम्मच, आचमनी।

चमजुई-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की बहुत छोटी किलनी, चिमटने वाली वस्तु

छमटना-(हिं०क्रि०) देखो चिमटना।

चमटा-(हिं०पुं०) देखो चिमटा।

चमड़ा-(हि०पुं०) शरीर का बाहरी आवरण, चर्म, त्वचा, खाल, छाल, छिलका; **चमड़ा उधेड़ना**-शरीर में से चमड़ा अलगाना; **चमड़ा सिझाना**-पानीमे उबाल कर चमड़ा मृदु करना

चमड़ी-(हिं०स्त्री०) त्वचा, चमड़ा, खाल

चमत्कार-(स०पु०) आश्चर्य, आश्चर्य का विषय, विस्मय, अद्भुत व्यापार, विचित्र घटना, विचित्रता, अनूठापन, विलक्षणता; **चमत्कारक**-(वि०) आश्चर्यजनक, अनूठा; **चमत्कारी**-(वि०) विलक्षण, अद्भुत, आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला। **चमत्कृत**-(वि०) आश्चर्य युक्त, विस्मित; **चमत्कृति**-(स्त्री०) आश्चर्य, अनूठापन।

चमर-(सं०पुं०) सुरागाय, सुरागाय की पोंछ का बना हुआ चँवर।

चमरी-(हिं०स्त्री०) सुरागाय।

चमरख-(हिं०स्त्री०) चमड़े की चकती जिसमें से होकर चरखे का टेकुआ घूमता है (वि०) दुबली पतली।

चमरशिखा-(हिं०स्त्री०) घोड़े की कलँगी

चमरसे-(हिं०पुं०) चमड़े की रगड़ से उत्पन्न घाव।

चमरी-(सं०स्त्री०) सुरागाय, चूवरा।

चमरौट-(हिं०पुं०) कृषि फल का अंश

जो चमारों के परिश्रम के बदले में दिया जाता है।
चमरौधा-(हिं०पु०) देखो चमौवा।
चमला-(हिं०पु०) भीखमांगनेका खप्पर
चमस-(सं०पु०) लकड़ी का चम्मच के आकार का एक यज्ञपात्र, चम्मच, उर्द का आंटा, एक ऋषि का नाम।
चमसा-(हिं०पु०) चमचा, चम्मच।
चमाऊ-(हिं०पु०) चामर, चँवर, चमर।
चमाचम-(हिं०वि०) झलकता हुआ, उज्वल, कान्ति युक्त।
चमाक-(हिं०पु०) प्रकाश, चमक।
चमार-(हिं०पु०) चर्मकार, चमड़े का काम करने वाला, झाड़ देने वाला अन्त्यज। **चमारचौदस**-चमारों का उत्सव।
चमारनी, चमारिन-(हिं०स्त्री०) चमार की स्त्री।
चमारी-(हिं०स्त्री०) चमार की स्त्री, चमार का व्यवसाय।
चमीकर-(सं०पु०) वह खान जिसमें से सोना निकलता है।
चमू-(सं०पु०) सेना, वह सेना जिसमें ७२९ हाथी ७२९ रथ, २१८७ घोड़सवार और ३६४५ पैदल सिपाही रहते थे; **चमूचर**-सेनापति; **चमूहर**-शिव, महादेव।
चमेलिया-(हिं०वि०) चमेली के रंग का
चमेली-(हिं०स्त्री०) एक लता जिसमें सुगन्धित श्वेत पुष्प फूल होता है, इस लता का फूल; जाति पुष्प।
चमोटा-(हिं०पु०) मोटे चमड़े का छोटा टुकड़ा जिस पर नाई छूरे की धार तेज करते हैं।
चमोटी-हिं०स्त्री० कोड़ा, चाबुक, पतली छड़ी, बेंत, कमाचो,
चमौवा-(हिं०पु०) जूता जिसका तल्ला चमड़े से सिला हो।
चय-(सं०पु०) ढेर समूह, राशि, टीला, धुस, गढ़, कोट, प्राकार, नीव, चौकी, चबूतरा, ऊंचा स्थान।
चयन-(सं०पु०) संग्रह, संचय, चुनने का कार्य, चुनाई यज्ञ के लिये अग्नि का संस्कार। चयन शील-(वि०) संग्रही।
चर-(सं०पु०) गूढ़ पुरुष, भेदिया, चलने वाला, खंजन पक्षी, कौड़ी, मंगलग्रह, पासे का जुआ, कीचड़, दलदल, नदी के बीचमें बालू का बना हुआ ठापू, नटीतट, नदी के बहाव से बह कर आई हुई मिट्टी। (वि०) अस्थिर, जंगम, आप से आप चलने वाला, आहार करने वाला, खाने वाला।
चरई-(हिं०स्त्री०) चौपायों को चारा पानी देने का गड्ढा।
चरक-(सं०पुं०) गुप्तचर, भेदियां, दूत, आयुर्वेद के एक प्रधान आचार्य, पथिक, बटोही, भिक्षुक, भिखमंगा, श्वेतकुष्ठ
चरकटा-(हिं०पुं०) हाथी या ऊंट के लिये चारा काटने वाला, तुच्छ मनुष्य,
चरकना-(हिं०क्रि०) टूटना फूटना।
चरखपूजा-(स्त्री०) चैत्र की संक्रान्ति में करने की एक पूजा।
चरकाह-(हिं०पु०) जिसको चरक हो।
चरखा-(हिं०पुं०) गोल घूमने वाला चक्कर, ऊन कपास या रेशम कातकर सूत निकालने का यन्त्र; कुवें से पानी निकालने का रहट, सोने चांदी का तार खींचने की पहिया, सूत लपेटने की गड़ारी, बड़ी पहिया, वह ढांचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा निकाला जाता है, झगड़े या बखेड़े का काम।
चरखी-(हिं०स्त्री०) छोटा चरखा, सूत लपेटने की फिरकी, कपास ओटने की चरखी, घिरनी, कुवे की गँड़ारी, कुम्हार का चाक, एक प्रकार की घूमने वाली अग्निक्रीड़ा।
चरचना-(हिं०क्रि०) शरीर में चन्दन पोतना, लेपना, अनुमान करना, समझ लेना।
चरचरा-(हिं०वि०) देखो चिड़चिड़ा।
चरचराना-(हिं०क्रि०) चरचर शब्द करते हुए टूटना; घाव का सूख कर पीड़ा उत्पन्न करना, चर्राना।
चरचराहट-(हिं०स्त्री०) शब्द निकलते हुए किसी पदार्थ का टूटना, चर्राहट
चरचा-(हिं०स्त्री०) देखो चर्चा।
चरचारी-(हिं०वि०) निन्दक, निन्दा करने वाला।
चरजना-(हिं०क्रि०) भुलावा देना, बहकाना, अनुमान करना।
चरट-(सं०पुं०) खंजन पक्षी।
चरण-(सं०पुं०) पग, पांव, पैर, बड़ोंका साथ, किसी पदार्थ का चौथा भाग, किसी पद्य का आदि का पद, घूमने का स्थान, क्रम, गोत्र, झूल, गमन, सूर्यादि की किरण, आचार, भक्षण; **चरणगुप्त**-(सं०पुं०) एक प्रकार का चित्र काव्य जिसके कई भेद होते हैं। **चरणचिह्न**-(सं०पु०) पैर के तलवे की रेखा, पैर के आकार का चिह्न; **चरणतल**-(सं०पु०) पैर का तलवा; **चरणदासी**-(सं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी, जूता, पनही; **चरणपर्वण**-(सं०पु०) गुल्फ, एँडी; **चरणपादुका**-(सं०स्त्री०) खड़ाऊं, चरण चिह्न, पत्थर आदि पर बना हुआ पैर का चिह्न जिसका पूजन होता है; **चरणपीठ**-(सं०पु०) चरणपादुका; **चरणसेवा**-(सं०स्त्री०) बड़ों की सेवा, शुश्रूषा;
चरणाक्ष-(सं०पुं०) अक्षपाद, गौतम।
चरणानुग-(सं०वि०) अनुगामी, शरणागत.
चरणामृत-(सं०पुं०) वह जल जिसमें किसी महात्मा के चरण धोये गये हों, पादोदक, एक में मिला हुआ, दूध, दही, घी, शहद और शक्कर जिससे देव मूर्ति स्नान कराई जाती है।
चरणायुध-(सं०पुं०) अरुण शिखा, मुरगा
चरणार्ध-(सं०वि०) किसी पदार्थ का आठवाँ भाग, श्लोक के पद का आधा भाग।
चरणि-(सं०पुं०) मनुष्य, आदमी।
चरणोदक-(सं०पु०) चरणामृत।
चरता-(हिं०स्त्री०) चरने का भाव, पृथ्वी, भूमि।
चरती-(हिं०पुं०) जो व्रत के दिन उपवास न करता हो।
चरथ-(सं०वि०) चलने वाला, जंगम।
चरन-(हिं०पुं०) देखो चरण।
चरनचर-(हिं०पुं०) पैदल सिपाही।
चरनदासी-(हिं०स्त्री०) जूती, पनही, पत्नी
चरनबरदार-(हिं०पुं०) जूता उठाने और रखने वाला नौकर।
चरना-(हिं०क्रि०) पशुओं का घूम घूम कर चारा खाना, इधर उधर घूमना, विरचना (पुं०) धोती का काछा, नकाशी करने का सोनार का एक अस्त्र।
चरनायुध-(हिं०पुं०) देखो चरणायुध।
चरनि-(हिं०स्त्री०) चाल, गति।
चरनी-(हिं०स्त्री०) पशुओं के चरने का स्थान, जिस नांद में चौपायों को खाने के लिए चारा दिया जाता है, पशुओं का आहार, घास इत्यादि
चरन्नी-(हिं०स्त्री०) चवन्नी।
चरपट-(हिं०पुं०) चपत, थप्पड़, तमाचा, चाई उचक्का, एक प्रकार का छन्द
चरपनी-(हिं०स्त्री०) रंडी का गाना, मुजरा
चरपरा-(हिं०वि०) स्वाद मे तीखा, चटपटा, तीता, तीव्र, फूला; **चरपराना**-(क्रि०) घाव सूखकर इसमें पीड़ा होना; **चरपराहट**-(हिं०स्त्री०) स्वाद की तीक्ष्णता, घाव में जलन होना, द्वेष, ईर्ष्या।
चरफरा-(हिं०वि०) देखो चरपरा;
चरफराना-(हिं०क्रि०) तड़फड़ाना, तड़पना
चरबन-(हिं०पुं०) भूना हुआ अन्न, चबैना
चरबाँक, चरबाक-(हिं०वि०) चतुर, निडर, निर्भय, चंचल, ढीठ।
चरकाना-(हिं०क्रि०) ढोल पर चमड़ा मढ़ाना।
चरबी-(सं०स्त्री०) शरीर में के सात धातुओं में से एक जो मांस से बनता है, मेद, वसा; **चरबी चढ़ना**-स्थूल होना, मोटा होना; **चरबी छाना**-मदान्ध होना।
चरभ-(सं०पुं०) ज्योतिष में चर राशि
चरम-(सं०वि०) अन्तिम, सब से बढ़ा हुआ, (पुं०) पश्चिम, अन्त; **चरमकाल**-अन्त काल, मृत्यु।
चरमगिरि-अस्ताचल
चरमर-(हिं०पुं०) किसी तनी हुई वस्तु के दबने से उत्पन्न शब्द; **चरमराना**-(क्रि०) चरमर शब्द उत्पन्न होना या करना।
चरराशि-(सं०स्त्री०) फलित ज्योतिष में मेष, कर्क, तुला और मकर राशि का नाम।
चरवाँक-(हिं०वि०) देखो चरबाँक।
चरवा-(हिं०पुं०) धम्मन नामक उत्तम प्रकार का पशुओं का चारा;
चरवाई-(स्त्री०) चराने का कार्य
चरवाना-(क्रि०) चराने का काम दूसरे से कराना; **चरवाहा**-(पु०) चौपायों को चराने वाला, चौपायों का रक्षक; **चरवाही**-(स्त्री०) पशुओं को चराने का काम, चराने का शुल्क। **चरवैया**-(हिं०पुं०) चरने या चराने वाला।
चरव्य-(सं०वि०) चरु बनाने योग्य।
चरस-(हिं०पुं०) बैल या भैंस के चमड़े का बना हुआ बड़ा डोल जिससे खेत सींचने के लिये कुवें से पानी खींचा जाता है, पुरवट मोट, भूमि नापने का एक परिमाण, गांजे के पेड़ से निकाला हुआ गोंद जिसको लोग गांजे की तरह पीते हैं, वन-मयूर, एक प्रकार का पक्षी।
चरसा-(हिं०पुं०) बैल, भैंस आदि का चमड़ा, इसका बना हुआ मोट, पुरवट। **चरसी**-(हिं०पुं०) चरस द्वारा खेत सींचने वाला, चरस पीने वाला।
चरही-(हिं०स्त्री०) देखो चरनी।
चराई-(हिं०स्त्री०) चरने की क्रिया, चराने का काम,
चराऊ-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहां पशु चरते हैं, चरागाह।
चराग-(हिं०पुं०) देखो चिराग़, दीपक
चराचर-(सं०वि०) चर और अचर, स्थावर और जंगम, जड़ और चेतन, संसार, जगत। **चराचरगुरु**-(सं०पुं०) ब्रह्मा, परमेश्वर।
चरान-(हिं०पु०) चौपायों के चरने का स्थान।
चराना-(हिं०क्रि०) चौपायों को चरने के लिये मैदान में छोड़ना, छलना, धोखा देना, बहकाना।
चराव-(हिं०पुं०) चरनी, चरागाह;
चरावना-(हिं०क्रि०) चराना।
चरावर-(हिं०स्त्री०) व्यर्थ की वार्तालाप, बकवाद।
चरित-(हिं०पु०) आचरण, कृत्य, करतूत, चरित्र, किसी मनुष्य की जीवनी की विशेष घटनाओं का वर्णन; **चरित नायक**-वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र के आधार पर कोई पुस्तक लिखी जावे। **चरितवान्**-(हिं०पु०) देखो चरित्रवान्।
चरितव्य-(सं०वि०) करने योग्य।
चरितार्थ-(सं०वि०) जिसकी अभिलाषा पूर्ण हो चुकी हो, कृतार्थ, कृतकृत्य, जो ठीक ठीक घटे।
चरित्तर-(हिं०पुं०) धूर्तता, बहाना, ढोंग, चरित्र।
चरित्र-(सं०पुं०) स्वभाव, करनी

करतूत, चरित, कार्य, जो कुछ किया जावे । **चरित्रवान्**-(वि०) अच्छे चरित्र या आचरण का, सदाचारी ।
चरिष्णु-(सं०वि०) चलने वाला, चर, जंगम ।
चरी-(हिं०स्त्री०) पशुओं के चरने की भूमि, छोटे ज्वार के हरे पौधे जो चौपायों को काट कर खिलाये जाते हैं, सन्देश पहुँचाने वाली दूती, दासी,
चरु-(सं०पुं०) हवन के लिये पकाया हुआ अन्न, वह पात्र जिसमें यह पकाया जाता है, बिना माड़ निकाला हुआ भात, पशुओं के चरने की भूमि, यज्ञ, मेघ। **चरुआ**-(हिं०पुं०)चौड़े मुख का मिट्टी का पात्र **चरुका**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का धान । **चरुखाला**-(हिं०पुं०) सूत कातने का चरखा ।
चरुचेली-(सं०पुं०) शिव, महादेव । **चरुपात्र**-(सं०पु०) चरु पकाने या रखने का पात्र । **चरुव्रण**-(सं०पुं०) एक प्रकार का पक्वान्न । **चरुस्थाली**-(सं०स्त्री०) चरु रखने का पात्र ।
चरेर, चरेरा-(हिं०वि०) कर्कश, कड़ा, रूखा, खुरखुरा ।
चरेरू-(हिं०पुं०) पक्षी, चिड़िया ।
चरेली-(हिं० स्त्री०) ब्राह्मी बूटी ।
चरैया-(हिं०वि०) चरनेवाला, चराने वाला ।
चरैला-(हिं०पुं०) एक साथ चार वस्तु पकाने का चूल्हा ।
चरोखर-(हिं०स्त्री०) चौपायों के चरने का स्थान ।
चरोतर, चरौवा-(हिं०पु०)किसी मनुष्य को जीवन भर के लिये दी हुई भूमि।
चर्ख-(हिं०पु०) देखो चरख; **चर्खकश**-खराद की डोरी खींचने वाला ।
चर्खा-(हिं०पुं०) देखो चरखा ।
चर्खी-(हिं०स्त्री०) देखो चरखी ।
चर्चक-(सं०पुं०) चर्चा करने वाला ।
चर्चर-(सं० वि०) गमनशील, चलने वाला ।
चर्चरिका-(सं०स्त्री०)नाटक में वह गान जो किसी विषय के समाप्त होने पर और दूसरे विषय के आरम्भ होने के पहिले होता है। **चर्चरी**-(सं०स्त्री०) वह गान जो बसन्त में गाया जाता है, फाग, होली का उत्सव, हथोंली पीटना, प्राचीन काल का ढोल, चर्चरिका, एक प्रकार का वर्णवृत्त, आमोद प्रमोद, क्रीड़ा सामूहिक गान ।
चर्चरीक-(सं०पु०) महाकालभैरव ।
चर्चा-(सं०स्त्री०) वर्णन, कथन, बयान, बातचीत, वार्तालाप, जनश्रुति, लेप, दुर्गा, गायत्रीरूपा देवी।
चर्चिका-(सं०स्त्री०) वर्णन, चर्चा, एक-देवी ।
चर्चित-(सं०वि०) लगाया या पोता हुआ, जिसकी चर्चा की जाती हो ।
चर्पट-(सं०पु०) थप्पड़, चणत, खुली हुई हथेली; (वि०) अधिक ।
चर्पटी-(सं०स्त्री०)एक प्रकारकी चपाती
चर्परा-(हिं०वि०) देखो चरपरा ।
चर्बी-(हिं०स्त्री०)देखो चरबी ।
चर्भट-(सं०पु०) ककड़ी ।
चर्भटी-(सं०स्त्री०) चर्चरी गीत, चर्चा, आमोद प्रमोद ।
चर्म-(सं०पु०)चमड़ा, ढाल; **चर्मकशा-(षा)** (सं०स्त्री०) एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य, एक प्रकार का थूहर; **चर्मकार**-(सं०पु०) चमड़े का काम करनेवाला, चमार, रयदास; **चर्मकार्य**-(सं०पु०) चमड़े की सिलाई का काम; **चर्मकील**-(सं०स्त्री०)बवासीर नामक रोग; **चर्मग्रीव**-(सं०पु०) शिव का एक अनचर; **चर्मचक्षु**-(सं०पुं०) सामान्य दृष्टि का मनुष्य;
चर्मचटका-(सं०स्त्री०) चमगादड़;
चर्मचित्रक-(सं०पु०) कुष्ट रोग, कोढ़;
चर्मज-(सं०पुं०) रक्त, लोहू, रोम ।
चर्मण्वती-(सं० स्त्री०) चंबल नदी, कदली वृक्ष, केले का पौधा । **चर्मतरङ्ग**-(सं०पुं०) चमड़े पर पड़ी हुई झुर्री । **चर्मदण्ड**-(सं०पुं०) चमडे की बनी हुई चमोटी । **चर्मदूषिका**-(सं०स्त्री०) दादका रोग । **चर्मदृष्टि**-(सं०स्त्री०) देखो चर्मचक्षु । **चर्मदेहा**-(सं०स्त्री०) मसक के आकार का एक प्राचीन मुंह से बजाने का बाजा । **चर्मद्रुम**-(सं०पु०)भोजपत्र का वृक्ष ।
चर्मनालिका, चर्मनासिका-(सं०स्त्री०) देखो चर्मदण्ड । **चर्मपत्रा, चर्मपत्री**-(सं०)देखो चर्मचटका । **चर्मपादुका**-(सं०स्त्री०) चमड़े का जूता । **चर्मपीड़िका**-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का शीतल रोग । **चर्मपुट, चर्मपुटक**-(सं०पु०)चमड़ेका बड़ा कुप्पा जिसमें घृत, तैल इत्यादि रक्खा जाता है ।
चर्मप्रभेदिका-(सं०स्त्री०) चमड़ा काटने की रुखानी, सुतारी । **चर्मबन्ध**-(सं०पुं०)चमड़ेकी बनी हुई चमोटी ।
चर्ममसूरिका-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का शीतल रोग । **चर्ममुण्डा**-(सं० स्त्री०)दुर्गा देवी, चर्चिका । **चर्मयष्टि**-(सं०स्त्री०)चमड़े की छड़ी । **चर्मवंश**-(सं०पु०)एक प्रकार का मुंह से फूंक कर बजाने का प्राचीन काल का बाजा । **चर्मवसन**-(सं०पु०) शिव, महादेव । **चर्मवृक्ष**-(सं०पुं०) देखो चर्मद्रुम । **चर्मसम्भवा**-(सं०स्त्री०) इलायची । **चर्मरी**-(सं०स्त्री०) एक लता जिसका फल बहुत विषैला होता है ।
चर्मार-(सं०पु०) चर्मकार, चमार ।
चर्मिक-(सं०पुं०) ढाल हाथ में लेकर लड़ने वाला योद्धा ।
चर्य-(सं०वि०) करने योग्य, जिसका करना आवश्यक है, कर्तव्य ।
चर्या-(सं०स्त्री०)जो किया जावे, आचरण, चाल चलन, वृत्ति, व्यवसाय, कामकाज, सेवा, भक्षण, गमन, चलने की क्रिया, भोजन का कार्य, जीविका ।
चर्राना-(हिं०क्रि०) लकड़ी का टूटते समय चरचर शब्द करना, शरीर में हलकी पीड़ा होना, चमड़े का रूखा होने से पड़पड़ाना, तीव्र अभिलाषा होना ।
चर्री-(हिं०स्त्री०)व्यंग पूर्ण बात, लगती हुई बात ।
चर्वण-(सं० पु०) दाँतों से चबाने का कार्य, दबाई जाने वाली वस्तु, भूना हुआ अन्न, चबैनी, बहुरी ।
चर्वित-(सं०वि०)दाँतों से चबाया हुआ, **चर्वितचर्वण**-(सं० पुं०) पिष्ट पेषण, किये हुए काम को दुबारा करना ।
चर्व्य-(सं० वि०) चबाने योग्य, जो चबा कर खाया जाय ।
चर्षणि-(सं०पु०)मनुष्य, नर, आदमी । **चर्षणी**-(सं०स्त्री०) मानव जाति ।
चर्स-(हिं०पुं०) देखो चरस ।
चलंता-(हिं०वि०) चलता हुआ, चलने वाला ।
चलंदरी-(हिं०स्त्री०)पानी का पौसरा ।
चल-(सं० वि०) चलायमान, अस्थिर, चंचल (पु०)कंम्पन, पारा, दोष, भूल चूक, धोखा, कपट, छल, दोहा छन्द का एक भेद, नाचने में एक प्रकार की चेष्टा। **चलकना**-(हिं० क्रि०) चमकना । **चलकर्ण**-(सं०वि०) सर्वदा कान हिलाने वाला (पु०) हाथी । **चलकेत**-(सं० पु०) एक प्रकार का पुच्छल तारा । **चलचञ्चु**-(सं०पु०) चकोर पक्षी । **चलचलाव**-(हिं०पु०) यात्रा, प्रस्थान, मृत्यु । **चलचाल**-(हिं०वि०) अस्थिर, चंचल। **चलचूक**-(हिं०स्त्री०) छल, कपट, धोखा ।
चलता-(हिं०वि०) गतिमान, चलता हुआ, रहने वाला, बिना क्रम भंग का, जिसका प्रचार अधिक हो, काम करने योग्य, व्यवहारमें निपुण (स्त्री०) चंचलता, अस्थिरता; **चलता करना**-भेजना, निबटाना, तय करना; **चलता पुरजा**-व्यवहार पटु; **चलता बनना**-प्रस्थान करना; **चलता खाता या लेखा**-वह हिसाब जिसमें बराबर लेन देन होता रहे, बन्द न किया जावे; **चलता गाना**-सामान्य गाना जिसमें संगीत शास्त्र के अनुसार राग रागिणी की शुद्धता पर विशेष ध्यान न दिया जावे ।
चलती-हिं०स्त्री०)मान मर्यादा, अधिकार।
चलतू-(हिं०वि०) जोती बोई जाने वाली भूमि ।
चलदल-(हिं० पुं०) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष।
चलन-(हिं०पुं०) गति, चाल, व्यवहार, रीति, गति, भ्रमण, कम्पन, नाच में एक प्रकार की चेष्टा; **चलन से चलना**-मर्यादा के अनुसार काम करना; (सं०स्त्री०) विषुवत् की उस समय की गति जब दिन रात बराबर होते हैं । **चलन कलन**-(सं०पुं०) ज्योतिष की वह गणित जिसके द्वारा पृथ्वी की गति के अनुसार दिन के बढ़ने घटने का हिसाब किया जाता है **चलनदरी**-(हिं०स्त्री०) पुण्यार्थ जल पिलाने का स्थान, पौसरा । **चलन समीकरण**-(सं०पु०) गणित की एक विशेष क्रिया । **चलनसार**-(हिं०वि०) व्यवहार मे प्रचलित, चालू, अधिक दिनों तक चलने वाला ।
चलना-(हिं०क्रि०) गमन करना, जाना, प्रस्थान करना, हिलना डोलना, स्फुरित होना, बहना, टिकना, ठहरना, प्रचलित होना, व्यवहार में आना, प्रयुक्त होना, अच्छी तरह काम देना, तीर गोली आदि का छूटना, शत्रुता या विरोध होना, व्यवसाय में वृद्धि होना, सफल होना, निर्वाह होना, उपाय लगना, अग्रसर होना, बढ़ना, आरंभ होना, छिड़ना, भोजन करने के लिए रक्खा जाना; निगला जाना, लेन देन के काम मे आना, हटाना, बढ़ाना, पढ़ा जाना, निगल जाना, सड़ना, (पुं०) बड़ी चलनी के आकार का हलवाई का बड़ा करछुल, छन्ना; **पेट चलना**-अधिक शौच होना; **मन चलाना**-इच्छा होना; लालसा होना; **मुह चलना**-भक्षण होना, बकवाद करना; **चल बसना**-मृत्यु होना; **अपने चलते**-यथाशक्ति; **चल निकलना**-उन्नति करना, आगे बढ़ना, सफलता प्राप्त करना; **किसी की चलना**-उपाय लगना ।
चलनि-(हिं०स्त्री०) देखो चलन ।
चलनिका-(हिं०स्त्री०)स्त्रियों का घाघरा।
चलनी-(हिं० स्त्री०) आंटा आदि को महीन छानने की चलनी ।
चलनौस-(हिं०पुं०) चोकर, चालन ।
चलपत्र-(सं०पुं०)अश्वत्थ, पीपल का पेड़
चलबांक-(हिं०वि०) शीघ्रगामी, तीव्र चलने वाला ।
चलबिचल-(हिं०) देखो चलविचल ।
चलवंत-(हिं०पुं०) पैदल सिपाही ।
चलवाना-(हिं०क्रि०) चलाने का काम दूसरे से करना ।
चलविचल-(हिं०वि०) अपने स्थान से हटा हुआ, बेठिकाने, अव्यवस्थित, अंडबंड (स्त्री०) व्यतिक्रम, नियम का उल्लंघन ।
चलवैया-(हिं०पुं०) चलने वाला ।
चला-(सं०स्त्री०) बिजली, भूमि, पृथ्वी, लक्ष्मी, पिप्पली, (पुं०) व्यवहार, प्रचार, रीति, अधिकार,
चलाऊ-(हिं०वि०) बहुत दिनों तक टिकने वाला, पुष्ट, टिकाऊ ।
चलाँक-(हिं०वि०)दक्ष, पटु । **चलाँकी**-

(हिं०स्त्री०) दक्षता ।

चलांका-(हिं०स्त्री०) विद्युत, बिजली।

चलाचल-(हिं०वि०) चंचल ।

चलाचली-(हिं०स्त्री०)गति, चाल, (वि०) चपल, चंचल ।

चलाचली-(हिं०स्त्री०) चलते समय की व्यग्रता, धूमधाम, तैयारी, हड़बड़ी, बहुत से लोगों का प्रस्थान, चलने की तैयारी (वि०) जो चलने को तैयार हो ।

चलान्तक-(स०पुं०) कम्प वायु ।

चलान-(हिं०स्त्री०) भेजने या चलाने की क्रिया, भेजे जाने या चलने का कार्य; अपराधी का पकड़ा जाकर न्यायालय में न्याय के लिये भेजा जाना; सामग्री एक स्थान से दूसरी स्थान को भेजा जाना, एक स्थान से दूसरे स्थान भेजी हुई सामग्री, माल की सूची का कागज, रवन्ना; **चलानदार**-चलान के साथ जाने वाला मनुष्य ।

चलाना-(हिं०क्रि०) चलने में लगाना या प्रेरित करना, हिलाना डोलाना, कार्य निर्वाह के योग्य करना, व्यवहार करना, व्यापार में वृद्धि होना, किसी शस्त्र से मारना, तीर या गोली छोड़ना, प्रेरित करना, उन्नति करना, अगुआ बनना, आरंभ करना, बनाये रखना, टिकाना, काम में लाना, प्रचलित करना, व्यवहार मे लाना; **मन चलाना**-लालसा करना; **मुंह चलाना**-खाना: **हाथ चलाना**-मारने के लिये हाथ उठाना ।

चलायमान-(स०वि०) चंचल, चलने वाला, विचलित ।

चलाव-(हिं०पु०) चलने का भाव, प्रयाण, यात्रा ।

चलावना-(हिं०क्रि०) देखो चलाना ।

चलावा-(हिं०पुं०) रीति, चाल द्विरागमन, गौना ।

चलित-(सं०वि०) चलायमान, अस्थिर, चलता हुआ ।

चलैया-(हिं०वि०) चलने वाला ।

चलौना-(हिं०पुं०) चरखा चलाने का डंडा, दूध चलाने का करछा ।

चलौवा-(हि०पु०) देखो चलावा ।

चल्ली-(हिं०स्त्री०) तकली पर लपेटा हुआ तागा ।

चवकी-(हिं०स्त्री०) देखो चौकी ।

चवन्नी-(हिं०स्त्री०) चार आने के मूल्य का सिक्का ।

चवर-(हिं०पुं०) देखो चँवर ।

चवर्ग-(सं०पुं०) 'च' से 'ञ' तक के पांच अक्षरों का समूह ।

चवा-(हिं०स्त्री०) चारो ओर से बहने वाली हवा ।

चवाई-(हिं०पुं०) दुर्नाम फैलाने वाला, निन्दक, झूठी बात कहने वाला, ।

चवालीस-(हिं०पु०) देखो चौवालीस ।

चवाव-(हिं०पुं०) प्रवाद, निन्दा की चर्चा; पीठ पीछे की निन्दा ।

चव्य, चव्यक-(स०पुं०) चाव नामक औषधि ।

चशक-(हिं०पुं०) देखो चसका ।

चशम-(हिं०पु०) आंख, नेत्र ।

चशमा-(हिं०पु०) उपनेत्र ।

चष-(हिं०पुं०) चक्षु, नेत्र, आंख ।

चषक-(सं०पुं०) मदिरा पीने का पात्र, मधु, शहद ।

चषचोल-(हि०पु०) आंख की पलक ।

चषण-(सं०पुं०) भोजन, वध करना, क्षय, नाश ।

चस-(हिं०स्त्री०) वस्त्र के किनारे पर लगाई हुई रेशम या कलाबत्तू की डोरी।

चसक-(हि०स्त्री०) हलकी पीड़ा, गोंट के आगे लगाने की पतली डोरी ।

चसकना-(हिं०क्रि०) मन्द पीड़ा होना, टीसना ।

चसका-(हिं०पु०)दुर्व्यसन, लत, चाट ।

चसना-(हिं०क्रि०) प्राण त्यागना, मरना, दो पदार्थों का परस्पर सटना, चपकना, लगना ।

चसम-(हिं०पु०) रेशम का खुजा ।

चसमा-(हिं०पु०) उपनेत्र ।

चस्का-(हिं०पु०) देखो चसका ।

चस्सी-(हिं०पुं०) हथेली और तलवे की खुजली ।

चह-(हिं०पु०) नदी के कच्चे घाट पर बल्ले गाड़ कर उस पर बनाया हुआ मचान जिस पर से मनुष्य नाव पर चढते हैं, इसी तरह का बना हुआ पुल; (स्त्री०) गड्ढा ।

चहक-(हिं०स्त्री०)पक्षियोंका मधुर कलरव

चहकना-(हिं०क्रि०) पक्षियों का मधुर शब्द करना, चहचहाना, उमग में बकवाद करना ।

चहका-(हिं०पु०) पत्थर या ईट का बना स्थान, लुआठी, जलती हुई लकड़ी, बनेठी, चहला, कीचड़ ।

चहकार-(हिं०पुं०) देखो चहक ।

चहकारना-(हिं०क्रि०) देखो चहकना।

चहकारा-(हिं० वि०) मधुर ध्वनिकरने वाला ।

चहचहा-(हिं०पुं०) चहक, हँसी ठट्ठा, (वि०) आनन्द उत्पन्न करने वाला, अति मनोहर, ताजा । **चहचहाना**-(हिं०क्रि०) पक्षियों का शब्द करना, चहकना।

चहटा-(हिं०पुं०) पंक, कीचड, चहला।

चहनना-(हिं०क्रि०) पैर से कुचलना, रौंदना ।

चहना-(हिं०क्रिं०) देखो चाहना ।

चहनि-(हिं०स्त्री०)चाह,अभिलाषा,इच्छा

चहबच्चा-(हिं०पु०) मैले पानी का गड्ढा, धन गाड़ने की छोटी कोठरी ।

चहर-(हिं०स्त्री०) आनन्द का उत्सव, हल्ला, उपद्रव (वि०) उत्तम चंचल, तीव्र, तेज । **चहरना**-(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना, आनण्दित होना ।

चहर पहर-(हिं०स्त्री०) चहल पहल ।

चहराना-(हिं०क्रि०) तड़कना, फटना, चटकना ।

चहल-(हिं०स्त्री०) कीच, कीचड़,कीचड़में मिली हुई चिकनी मिट्टी ; आनन्द का उत्सव, धूमधाम ।

चहल पहल-(हिं०स्त्री०) अनेक मनुष्यों का आने जाने की धूम,आनन्दकीधूम।

चहला-(हि०पु०) पंक, कीचड़ ।

चहली-(हिं०स्त्री०) कुवे से पानी खींचने की गड़ारी ।

चहलुम-देखो चेहलुम ।

चहुं-(हिं०वि०) चार, चारो।

चहुंक-(हिं०स्त्री०) देखो चिहुंक ।

चहुंधा-(हि०क्रि०वि०) चारो ओर ।

चहुरा-(हिं०वि०) चौहरा, चौपरता ।

चहुवान-(हि०पुं०) देखो चौहान ।

चहूँ-(हिं०वि०) देखो चहुँ ।

चहूँटना-(हि०क्रि०)सटना,मिलना,लगना।

चहेटना-(हिं०क्रि०)दबाकर रस निचोड़ना,चपेटना,दौड़ा कर पीछाकरना

चहेता-(हि०वि०) जिससे प्रेम हो, प्यारा । **चहेती**-(हि०स्त्री०) प्रियतमा, प्यारी ।

चहेल-(हिं०स्त्री०) चहला,कीचड़,दलदल

चहोरना-(हि०क्रि०) पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरी जगह बैठाना, रोपना, देख भाल करना, संभालना ।

चहोरा-(हिं०पुं०) जड़हन धान ।

चांइयां, चाईं-(हिं०पु०) ठग, उचक्का (वि०) कपटी, छली, (स्त्री०) सिर के बाल झड़ने का रोग ।

चांक-(हिं०पु०)खलिहान में अन्न की ढेर पर चिह्न करने की लकड़ी की थापी, किसी स्थान के चारों ओर खींचा हुआ घेरा **चांकना**-(हिं०क्रि०) खलिहान में अनाज की ढेर पर चिह्न लगाना, सीमा बांधने के लिये चिह्नित करना, हद्द बांधन, पहिचानने के लिये किसी प्रकार का चिह्न लगाना ।

चांगला-(हि०वि०) आरोग्य, स्वस्थ, हृष्टपुस्ट, चतुर ।

चांगेरी-(हि०स्त्री०) खट्टी लोनिआ का शाक ।

चांचर चांचरि-(हिं०स्त्री०) एक राग जो वसन्त ऋतु मे गाया जाता है, भूमि जो कई वर्ष तक परती पड़ी रहती है, मटियारी भूमि ।

चांचल्य-(सं०नपुं०) चंचलता,चपलता।

चांचिया जहाज-(हिं० पुं०) समुद्री लुटेरों जा जहाज ।

चांचु-(हिं०पुं०) चंचु, चोंच ।

चांटा-(हिं०पु०) चिउंटा,थप्पड़,तमाचा

चाटी-(हि०स्त्री०) चींटी ।

चांड़-(हिं०स्त्री०) बलवान, प्रबल,उद्धत, तृप्त, अधाया हुआ, (स्त्री०) बांस का द्वार या पपाखा, भाँर संभालने की थूनी, टेक, आकुलता, व्याकुलता, बड़ी लालसा, संकट, दबाव, प्रबल इच्छा, अधिकता; **चांड सरना**-इच्छा पूर्ण होना । **चांड़ना**-(हिं०क्रि०) खोद कर गिराना, उजाड़ना । **चांड़िला**-(हि०वि०) प्रबल, प्रचंड, उद्धत; बहुत अधिक ।

चाण्डाल-(सं०पुं०) श्वपच, डोम,अत्यंत नीच जाति, दुष्ट, दुरात्मा, क्रूर, निष्ठुर, पतित मनुष्य । **चाण्डाली**-(सं०स्त्री०) चाण्डाल की स्त्री, डोमिन

चांद-(हिं०पु०) चन्द्रमा, दुइज के चन्द्रमा के आकार का गहिना, ढाल के ऊपर की फलिया, कमरखी,घोड़े के सिर पर की भँवरी, एक प्रकार का गोदना, (स्त्री०) मस्तक के बीच का भाग; **चांद का कुण्डल**-चन्द्रमा के चारों ओर का प्रभा मण्डल; **चांद का टुकड़ा**-अति सुन्दर मनुष्य; **चांद दीखे**-शुक्ल पक्ष की दुइज के बाद ; **चांद पर थूकना**-किसी महात्मा को कलंकित करना; **चांद पर धूल डालना**-किसी निर्दोष व्यक्ति पर लांछन लगाना; **चांदसा-मुखड़ा**-अति सुन्दर मुख ; **किधर चांद निकले**-आप किधर से देख पड़े; **चांदपर बाल न छोड़ना**-सिर पर खूब जूते लगाना ।

चांदतारा-(हिं०स्त्री०) बूटी बिना हुआ महीन मलमल,एक प्रकार की गुड्डी या पतंग ।

चांदना-(हिं०पु०) प्रकाश, उजाला ।

चांदनी-(हि०स्त्री०) चन्द्रिका, चन्द्रमा का प्रकाश, कौमुदी,ज्योत्स्ना,बिछाने की उज्वल चादर, श्वेत चँदवा, छतगीर, तगर, गुलचांदनी; **चांदनी छिटकना**-चन्द्रमा का स्वच्छ प्रकाश फैलना; **चांदनी मारना**-घाव पर चन्द्रिका का बुरा प्रभाव पड़ना; **चार दिन की चांदनी**-थोड़े दिनों का वैभव या आनन्द ।

चांदबाला-(हिं०पुं०) कान में पहिरने का एक आभूषण ।

चांदमारी-(हिं०स्त्री०) दीवार, पटरे इत्यादि पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास ।

चांदला-(हि०वि०) वक्र, कुटिल, टेढ़ा ।

चांदा-(हिं०पु०) वह निर्धारित स्थान जहां से भूमि की नाप की जाती है छप्पर का पाखा ।

चांदी-(हिं०स्त्री०) एक श्वेत कोमल चमकीली धातु, रजत, रौप्य; आर्थिक लाभ खोपड़ी का मध्य भाग; **चांदी डालना**-जलाकर राख करना; **चांदी का जूता**-उत्कोच, घूस ; **चांदी काठना**-खूब माल मारना ; **चांदी का पहरा**-समृद्धि का समय ।

चांप-(हिं०पुं०) चपना,दबाव, भूमि पर पैर पड़ने का शब्द, धक्का, वह अंश जिससे बन्दूक की नली कुन्दे से जटी रहती है, चम्पा का फूल, तीव्र प्रेरणा

चांपना-(हिं०क्रि) दबाना ।

चायँचायँ-(हिं०पुं०)व्यर्थ की बकबक ।
चावँचावँ-(हिं०पुं०) देखो चायँचायँ ।
चा-(हिं०स्त्री०) देखो चाव ।
चाउ-(हिं०पु०) देखो चख ।
चाउर-(हिं०पु०) देखो चावल ।
चाऊ-(हिं०पु०)ऊँट या बकरे का रोवाँ
चाक-(हिं०पु०)कुम्हार का गोल पत्थर जिसको घुमा कर तथा मिट्टी का लोंदा रखकर यह पात्र आदि बानता है, कुलालचक्र, गाड़ी या रथ की पहिया, कुवें से पानी खींचने की चरखी, मिश्री जमाने की घरिया, चाकू, सान, ऊख का रस रखने का पात्र, मण्डलाकार चिह्न ।
चाकचक-(हिं०वि०) चारो ओर रक्षित, दृढ़ ।
चाकचक्य-(स०स्त्री०)चमचमाहट, उज्वलता, सुन्दरता, शोभा ।
चाकना-(हि०क्रि०) सीमाबद्ध करने के लिये चारो ओर रेखा खींचना, हद बनाना,अन्न की ढेर पर मिट्टी थोपना, पहिचानने के लिये चिह्न लगाना ।
चाकरनी, चाकरानी-(हिं०स्त्री०) नौकरनी, दासी ।
चाकसू-(हिं०पुं०)बन कुलथी का पौधा ।
चाका-(हि०पु०) चाक, चीनी का बड़ा बताशा ।
चाकी-(हिं०स्त्री०) आटा पीसने की चक्की, वज्र, बिजली ।
चाक्रायण-(सं०पु०)एक ऋषि का नाम
चाक्रिक-(स०पु०) स्तुति गायक, बन्दी, भाट, तेली, गाड़ीवान्, कुम्हार, (वि०) चक्राकार, चक्र सम्बन्धी ।
चाक्षुष-(सं०वि०) चक्षु संबंधी, जिसका ज्ञान देखने से हो, न्याय में ऐसा प्रमाण जिसका बोध आँखों से हो, स्वयभुव मनु के पुत्र का नाम ।
चाखना-(हिं०क्रि०) देखो चखना ।
चाचर, चाचरि(हिं०स्त्री०) होली में गाने की गीत, होली के खेल और स्वांग, उपद्रव, हुल्लड़ ।
चाचरी-(हि०स्त्री०) योग की एक मुद्रा।
चाचा-(हिं०पुं०)पितृव्य,पिता का भाई।
चाची-(हिं०स्त्री०) चाचा की स्त्री ।
चाट-(हिं०स्त्री०)चरपरी वस्तुओं के खाने की उत्कट अभिलाषा, स्वाद लेने की इच्छा, चसका, लालसा, लोलुपता, व्यसन,टेव,गजक,(पु०)ठग, उचक्का; **चाटकी टँगड़ी**-मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।
चाटना-(हिं०क्रि०) स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को जीभ से उठाना, जीभ लगाकर खाना, पोंछकर खा जाना, प्रेम से जीभ फेरना, कीड़ों से खाया जाना; **चूमना चाटना**-प्यार करना ।
चाटपुट-(हिं०पु०)तबले का एक ताल।
चाटा-(हिं०पुं०) पेरा हुआ ऊख का रस रखने का मिट्टी का पात्र ।
चाटी-(हिं०स्त्री०) मोटे दल की मिट्टी की चटकी ।

चाटु-(स०पुं०) मीठी बात, प्रिय वार्ता, झूठी प्रशंसा, **चाटुकार**-झूठी प्रशंसा करनेवाला ; **चाटुकारी**-देखो चाटुकार; **चाटपटु**-भांड़, विदूषक ।
चाड़-(हिं०स्त्री०) तीव्र अभिलाषा, प्रेम, चाह, चाँड़ ।
चाड़ी-(हिं०स्त्री०) पीठ पीछे निन्दा ।
चाढ़ा-(हिं०पु०) प्रेम पात्र, प्यारा आसक्त, चाहने वाला ।
चाणक्य-(सं०पुं०) अनेक नीति ग्रन्थों के रचने वाले प्रसिद्ध मुनि जो कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध थे, ये पाटलीपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त के मन्त्री थे
चाणूर-(स०पु०) कंस का योद्धा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ।
चाण्डाल-(सं०पुं०) श्वपच, डोम, एक अत्यन्त नीच जाति, कुकर्मी, दुरात्मा, क्रूर मनुष्य । **चाण्डाली**-(स०स्त्री०) चाण्डाल की स्त्री, डोमिन ।
चातक-(सं०पु०) एक पक्षी जो वर्षा ऋतु में बहुत बोलता है, पपीहा ।
चातकानन्दन (सं०पुं०) वर्षाकाल;मेघ
चातर-(हिं०पुं०) मछली पकड़ने की बड़ी जाल, षड्यन्त्र ।
चातुर-(स०वि०) चतुर, धूर्त (पु०) चार पहिये की गाड़ी; **चातुरई**-देखो चतुरई; चातुरी; **चातुरता**-देखो चतुरता ।
चतुराश्रम-(सं०पुं०) हिन्दू धर्म के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ये चार आश्रम।
चातुरिक-(सं०पुं०) सारथी, रथ हांकने वाला ।
चातुरी-(हिं०स्त्री०) चतुराई, धूर्तता
चातुर्थक, चातुर्थिक-(सं०पुं०) चौथे दिन आनेवाला ज्वर; **चातुर्दश**-(स०वि०) चतुर्दशी से उन्पन्न एक राक्षस का नाम । **चातुर्भद्र**(स०पु०) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पदार्थ ।
चातुर्महाराजिक- (सं०पुं०) विष्णु भगवान् । **चातुर्मास**-(सं०पु०) वर्षा के चारमास (वि०) चार मास में होने वाला; **चातुर्मासिक**-चारमहीने में होने वाला यज्ञ । **चातुर्मासी**-(सं०स्त्री०) पौर्णमासी ।
चातुर्मास्य-(सं० पु०) चौमासे में होने वाला एक वैदिक यज्ञ ।
चातुर्य-(स०नपुं०) चतुराई, दक्षता, निपुणता ।
चातुर्वर्ण्य-(स०पु०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण ।
चात्र-(सं०पु०) अग्निमन्थन की खैर की लकड़ी ।
चात्वाल-(स०पु०) हवन कुण्ड, यज्ञ का गड्ढा ।
चदरा-(हिं०पु०) बड़ी चादर ।
चानक-(हिं० क्रि० वि०) अकस्मात्,
चानन-(हिं०पु०) चन्दन ।
चानस-(हिं०पु०) ताश का एक खेल (अं०चान्स का यह शब्द अपभ्रंश है।

चान्द्र-(सं०वि०) चन्द्रमा संबंधी (पु०) चान्द्रायण व्रत, चन्द्रकान्तमणि, मृगशिरा नक्षत्र । **चान्द्रक**- (सं०पु०) शुण्ठि, सोंठ;
चान्द्रमस-(स०वि०) चन्दमा सम्बन्धी, मृगशिरा राशि; **चान्द्रमसायन**-(स०पु०) बुधग्रह; **चान्द्रमाण** (स०पुं०) काल का वह परिमाण जो चन्द्रमा की गति से स्थिर किया जाता है;
चान्द्रमास-(स०पुं०) वह मास जो चन्द्रमा की गति के अनुसार विभक्त किया गया हो; **चान्द्रवत्सर**-(स०पु०) चन्द्रमा की गति के अनुसार वर्ष का परिमाण; **चान्द्रव्रतिक**-(सं०वि०)चन्द्रायण करने वाला ।
चान्द्रायण-(सं०पुं०) महीने भर में समाप्त होने वाला एक व्रत जिसमे आहार की कवल मात्रा चन्द्रमा के घटने बढ़ने के अनुसार घटाई बढाई जाती है, एक मात्रिक छन्द का नाम
चान्द्री-(स०स्त्री०) चन्द्रमा की स्त्री चन्द्रिका, ज्योत्स्ना ।
चाप-(सं०पु०) धनुष, कमान, रेखागणित में अर्धवृत्त क्षेत्र, वृत्त की परिधि का अंश, धनु राशि (हिं०स्त्री०) दबाव, पैर की आहट,
चाप जरीब-(हिं०स्त्री०) खेत की लंबाई की नाप ।
चापट-(हि०स्त्री०) देखो चापड़; चोकर
चापड़-(हिं०वि०) दबकर चिपटा हो गया हुआ, समतल, बराबर, चौपट, उजाड़, नष्ट भ्रष्ट, (हिं०स्त्री०) चोकर, भूसी ।
चापदण्ड-(स०पु०) वह डंडा जिससे कोई वस्तु आगे की ओर ढकेली जावे
चापना-(हिं०क्रि०) दबाना, ढकेलना ।
चापर-(हिं०वि०) देखो चापड़ ।
चापल-(स०पु०) अस्थिरता, चंचलता, (वि०) चंचल; **चापल्य, चपलता**-चंचलता, ढिठाई ।
चापी-(हिं०पुं०)धनुष धारण करनेवाला, शिव, महादेव, धनु राशि ।
चापू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कोमल रोवें का पहाड़ी बकरा ।
चाफन्द-(हिं०पु०) एक प्रकार की मछली पकड़ने की जाल ।
चाब-(हिं०स्त्री०) चव्य, एक पौधा जिस की जड़ और डाल औषधियों के काम में आती हैं, एक प्रकार का बांस, चौघड़ दाँत, दाढ ।
चाबना- (हिं०क्रि०) दाँतों से कुचल कर खाना, चबाना ।
चाबी-(हिं०स्त्री०) कुंजी, ताली, यन्त्र के किसी भाग को दृढ़ करने की फन्नी; **चाबी देना**-कुंजी उमेठ कर ताला बन्द करना, **चाबी भरना**-चाबी देना
चाभना-हिं०क्रि०)भोजन करना,खाना; **माल चाभना**-नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजन करना ।
चाभा-(हिं०पुं०) बैलों के जीभ का एक

रोग जिसके होने पर उनसे कुछ खा नहीं जाता ।
चाभी-(हिं०स्त्री०) देखो चाबी, ताली, कुंजी ।
चाम-(हिं०पुं०) चर्म, चमड़ा, खाल; **चाम के दाम**-चमड़े के सिक्के; **चाम के दाम चलाना**-अन्धेर मचाना;
चामसोरी-(हि० स्त्री०) गुप्त रुप से परस्त्रीगमन ।
चामड़ी-(हि०स्त्री०) देखो चमड़ी ।
चामर-(स०पु०) चँवर, मुरछल, एक वर्णवृत्त का नाम । **चामरपुष्प**-(स०पु०) सुपारी का वृक्ष, आम, केतकी । **चामरिक**-(स०पुं०) चंवर डोलाने वाला; **चामरी**-(स०स्त्री०) सुरा गाय ।
चामीकर-(स०पु०) सुवर्ण, सोना, धतूरा (वि०) सोनहला ।
चामुण्डा-(सं०स्त्री०) शुम्भ निशुम्भ नामक दैत्यों को मारने वाली देवी, भैरवी ।
चाय-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसकी पत्तियो को उबाल कर इसमे दूध और चीनी मिलाकर सर्वत्र लोग पीते हैं; **चाय पानी**-जलपान, कलेवा ।
चायक-(हिं०वि०) चाहने वाला, प्रेमी, इकट्ठा करने वाला ।
चार-(हिं०वि०) तीन और एक की सख्या का, अनेक, कई एक, थोड़ासा थोड़ा बहुत, (हिं०पु०) गति, चाल, गमन, गुप्तचर, जासूस, कारागृह, बन्धन, सेवक, दास, रीति, आचार, व्यवहार; **चार आंखें करना**-आखें मिलाना; **चारआंखें होना**-साक्षात्कार होना; **चार के कंधे पर चढ़ना**-मर जाना, **चार पांच** हीला हवाली, **चारो खाने चित्त गिरना**-हाथ पाव फलते हुए पीठ के बल गिरना; **चार दिन**-थोड़े दिन, **चार पैसे**-कुछ धन;
चारक-(सं०पुं०) चरवाहा, गति, चाल सहचर, साथी, जासूस, भेदिया।
चारकाने-(हिं०पुं०) चौसर या पासे का एक दाव ।
चारखाना-(हिं०पु०) एक प्रकार का कपड़ा जिसमें ताने और बाने के रंगीन डारों से चौखूटे खाने बने दोते हैं ।
चारण-(सं०पुं०) कीर्ति गायक, भाट, बन्दी, घूमने वाला मनुष्य ।
चारदा-(हिं०पुं०) चौपाया ।
चारन-(हिं०पुं०) देखो चारण ।
चरना-(हिं०क्रि०) पशुओ को चराना ।
चारपाई-हिं०स्त्री०) छोटी पलंग, खटिया, खाट; **चारपाई पर पड़ना**-खाट पर लेटना, रोगी होना; **चारपाई पकड़ना**-इतना रोगी होना कि चारपाई पर से उठ न सकना ।
चारयारी-(हिं०स्त्री०) चार मित्रों की मण्डली, मुसलमानों में सुन्नी सम्प्र-

दाय की मण्डली, चांदी का चौकोर सिक्का जिस पर खलीफ़ों के नाम अथवा कलमा खोदा रहता है।

चारवा-(हिं०पुं०) चौपाया, पशु।

चारवायु-(सं०पुं०) गरमी के दिनों की हवा, लू।

चारा-(हिं०पुं०) पशुओं के खाने की घास पात, जिस वस्तु को बंसी मे लगाकर मछली फँसाई जाती है।

चारि-(हिं०वि०) देखो चार।

चारिणी-(सं०वि०)आचरण करने वाली

चारित-(सं०वि०) जो चलाया गया हो, चलाया हुआ।

चारित्र-(सं०पुं०) परम्परा का अचार व्यवहार, चालचलन, स्वभाव, मरुत्-गणों में से एक; **चारित्र विनय**-(सं०पुं०) शिष्टाचार, नम्रता; **चारित्रवती**-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की समाधि। **चारित्र्य**-(सं०पुं०) चरित्र।

चारी-(हिं०वि०) चलनेवाला, आचरण या व्यवहार करनेवाला (पुं०) पैदल सिपाही।

चारु-(सं०वि०) सुन्दर, रुचिर, मनोहर, (पु०) वृहस्पति के पुत्र का नाम जो रुक्मिणी से उत्पन्न थे, कुकुम, केसर

चारुक-(स० पु०) सरपत का बीज; **चारुकेशरी**-(स० स्त्री०) सेवती का पुष्प; **चारुचित्र**-(स०पुं०) धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम; **चारुता**-(स०स्त्री०) मनोहरता, सुन्दरता; **चारुधारा**-(सं०स्त्री०) इन्द्र की पत्नी, शची।

चारुनालक-(सं० पुं०) लाल कमल, कोकनद; **चारुनेत्र**-(स०पुं०) हरिन (वि०) सुन्दर नेत्र का; **चारुफला**-(स०स्त्री०) अंगूर की लता; **चारुरावा**-(स०स्त्री०)इन्द्र की पत्नी, शची। **चारुहासी**-(स० वि०) सुन्दर हँसने वाली; **चारुहासिनी**-(स०वि०) सुन्दर मुसकान वाली, वैताली छन्द का एक भेद।

चारोली-(हिं०पुं०) फल की गुठली।

चार्वाक-(सं०पुं०) एक अनीश्वरवादी तथा नास्तिक तार्किक का नाम।

चार्वी-(स०स्त्री०) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, दीप्ति, बुद्धि, सुन्दर स्त्री।

चाल-(हिं०स्त्री०) गति, गमन, चलने का ढंग, आचरण, व्यवहार, आकृति, बनावट, रीति, ढंग, कार्य करने की रीति, छलने की युक्ति, कपट, छल, धूर्तता; **चाल सुधारना**-कुटेव ठीक करना; **चाल चलना**-छल से अपना कार्य सिद्ध करना, धूर्तता करना; **चाल में आना**-धोखे में पड़ना; (हिं०स्त्री०) ढंग, रीति, आहट, आन्दोलन, किराये का बड़ा घर, छप्पर, घर की छत।

चालक-(हिं०वि०) चलानेवाला, संचालक, छल करनेवाला, धूर्त, चतुर।

चालचलन-(हिं०पुं०)आचरण, व्यवहार, शील, चरित्र; **चालढाल**-(हिं०स्त्री०) आचरण, व्यवहार, ढंग।

चालन-(हिं०पुं०) चलने या चलाने की क्रिया, गति, गमन। **चालनहार**-(हिं०पुं०)चलाने वाला, लेजाने वाला

चालना-(हिं०क्रि०) चलाना, एक स्थान से दूसरे स्थान का ले जाना, वधू का बिदा कराके अपने घर लाना, हिलाना डोलाना, कार्य निभाना, प्रसंग छेड़ना, चलनी में आँटे हिलाकर चोकर अलगाना, गति में होना, बिदा होकर आना।

चालनी-(हिं०स्त्री०) देखो चलनी, छलनी

चाला-(हिं०पु०) प्रस्थान, प्रस्थान करने का शुभ मुहूर्त; **चाला देखना**-यात्रा करने के लिये शुभ मुहूर्त का विचार करना।

चालान-(हिं०पुं०) भेजे हुए माल की सूची, बीजक, भेजे हुए माल का ब्योरेवार हिसाब, रवन्ना, अपराधी का विचार के लिये अदालत में भेजा जाना।

चालानदार-(हिं० पुं०) जमादार जो चालान के साथ भेजा जाता है।

चालिया-(हिं०वि०) धूर्त, छली।

चालिस-(हिं०वि०) देखो चालीस।

चाली-(हिं०वि०) धूर्त, उपद्रवी, नटखट।

चालीस-(हिं०वि०) बीस और दस की संख्या का। **चालीसवां**-(हिं०वि०) उनतालीस वस्तु के बाद का; (पु०) मृतक कर्म में चालीसवें दिन का कृत्य। **चालीसा**-(हिं०पुं०) चालीस वस्तुओं का समूह, चालीस दिन का समय, चालीस पद्यों का काव्य।

चालुक्य-(सं०पुं०) भारत के दक्षिण के एक अति प्रतापी राजवंश का नाम।

चाल्ह-(हिं०स्त्री०)चेल्हवा नामक मछली

चाल्ही-(हिं०स्त्री०) नाव में खेने वाले मल्लाह के बैठने का स्थान।

चाँव, चावँ-(हिं०) देखो चायँ चायँ।

चाव-(हिं०पु०) अभिलाषा, लालसा, उत्कट इच्छा, अनुराग प्रेम, चाह, दुलार, प्यार, उमंग, उत्साह,आनंद।

चावड़ी-(हिं०स्त्री०) यात्रियों के ठहरने का स्थान, चट्टी, पड़ाव।

चावर, चावल-(हिं०पुं०) तण्डुल, धान के भीतर से निकाला हुआ अन्न, रत्ती के आठवें भाग के बराबर का परिमाण।

चाशनी-(हिं०स्त्री०) मिश्री, चीनी अथवा गुड़ का अग्नि पर पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस जिसमें डुबाकर अनेक मिठाइयाँ बनती हैं, थोड़े से मीठे की मिलावट, चसका, नमूने का सोना जो सोनार को गहना बनाने के लिये देने वाला ग्राहक बने हुए गहने के सोने को मिलाने के लिये अपने पास रख लेता है; **चाशनी में पागना**-चाशनी में डुबोकर मिठाई तैयार करना।

चाष-(सं०पुं०) नीलकण्ठ पक्षी, चाहा, नेत्र, आँख।

चास-(हिं०पुं०) खेती।

चासना-(हिं०क्रि०) खेत जोतना।

चासनी-(हिं०स्त्री०) देखो चाशनी।

चासा-(हिं० पुं०) हरवाहा, किसान, खेतिहर।

चाह-(हिं० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, प्रीति, प्रेम, आदर, आवश्यकता, समाचार, मर्म, गुप्त भेद; देखो चाय, चाव।

चाहक-(हिं० वि०) चाहने वाला, प्रेम करने वाला।

चाहत-(हिं०स्त्री०) चाह, प्रेम।

चाहना-(हिं०क्रि०) प्रेम करना, अभिलाषा करना, प्यार करना, इच्छा करना, पाने की इच्छा करना, माँगना, प्रयत्न करना निहारना ताकना, खोजना, ढूढना (स्त्री०) आवश्कता, चाह।

चाहा-(हिं०पुं०) एक जलपक्षी जो बगले के सदृश होता है।

चाहि-(हिं०अव्य०) अपेक्षा, से।

चाहिए-(हिं०अव्य०)उचित है, ठीक है।

चाही-(हिं०वि०) चाही हुई, चहेती, प्यारी, कुवें के पानी से सींची जानेवाली (भूमि)।

चाहे-(हिं०अव्य०) इच्छा हो, मन में आवे, चाहे तो, या तो, होने वाला हो तो।

चिआँ-(हिं० पु०) इमली का बीज; **चिआँसी**-छोटी सी, नन्ही सी।

चिउँटा-(हिं० पु०) एक काले रंग का कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है और उसको जल्दी नहीं छोड़ता; **गुड़ चिउँटा होना**-एक दूसरे से सिमट जाना, सहज में अलग न होना; **चिउंटे के पर जमना**-ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो

चिउंटी-(हिं०स्त्री०) चींटी, पिपीलिका, **चिउंटी की चाल**-अत्यन्त मन्द गति।

चिंगट-(हिं०पुं०) झिंगवा मछली।

चिंगना-(हिं०पुं०)पक्षी का छोटा बच्चा, छोटा बालक।

चिंगारी-(हिं०स्त्री०) देखो चिनगारी।

चिंगुरना-(हिं०क्रि०)अंग के किसी भाग का संकुचित होना या जकड़ना।

चिंगुरा-(हिं०पुं०)एक प्रकार का बगुला

चिंगला-(हिं०पुं०) देखो चिनगा।

चिंघाड़-(हिं०स्त्री०) पशु के चीखने का शब्द, चिल्लाहट, हाथी का शब्द।

चिंघाड़ना-(हिं०क्रि०) चीखना, हाथी का चिल्लाना।

चिंचिनी-(हिं० स्त्री०) इमली का वृक्ष या फल।

चिंआ-(हिं०स्त्री०) इमली का बीया।

चिंजा-(हिं०पुं०) पुत्र, बेटा, लड़का।

चिंजी-(हिं०स्त्री०) बेटी, पुत्री।

चिंड-(हिं०पुं०) नाच का एक भेद।

चिंता, चिंत्य-देखो चिन्ता, चिन्त्य।

चिंदी-(हिं०स्त्री०) टुकड़ा; **चिंदी चिंदी करना**-टुकड़े करना; **हिन्दी की चिंदी निकालना**-तुच्छ अशुद्धि करना, कुतर्क करना।

चिंपा-(हिं०पुं०) कृषि फसल को नाश करने बाला कीड़ा।

चिउड़ा, चिउरा-(हिं०पुं०) हरे धान को कूट कर बनाया हुआ चिपटा चावल, चिवड़ा, चूरा।

चिउला-(हिं० स्त्री०) महुए की जाति का एक जंगली वृक्ष, एक प्रकार का रंगीन रेशम वस्त्र, चिकनी सुपारी।

चिकट-(हिं० वि०) मैल जमा हुआ, चिपचिपा, लसलसा, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। **चिकटना**-(हिं०क्रि०) जमी हुई मैल के कारण लसीला होना

चिकटा-(हिं०वि०) देखो चिकट।

चिकना-(हिं०वि०) चिक्कण, जो रूखा न हो, जिस पर से पैर फिसल जावे, स्निग्ध, तेल लगा हुआ स्वच्छ, सुथरा, मीठी मीठी बातें करने वाला, अनुरागी, प्रेमी (पु०) स्निग्धता पूर्ण पदार्थ, यथा तेल, घी, चरबी आदि; **चिकना देख फिसल पड़ना**-धन या रूप रंग देखकर लुब्ध होना; **चिकनाघड़ा**-निर्लज्ज, बेहया; **चिकने घड़े पर पानी पड़ना**-सदुपदेश का कुछ प्रभाव न पड़ना; **चिकना चुपड़ा**-ठाट बाट बनाये हुए, सिंगार किये हुए; **चिकनी चुपड़ी बातें**-मिठी मीठी बात जो धोखा देने के लिये कही जाय; **चिकने मुँह का ठग**-धूर्त जो देखने में शिष्ट मनुष्य ज्ञात होता है। **चिकनाई**-(हिं०स्त्री०) चिकनाहट, स्निग्धता, चिकनापन, घी, तेल, इत्यादि चिकने पदार्थ। **चिकनाना**-(हिं०क्रि०) चिकना करना, तैलयुक्त करना, सँवारना, चिकना होना, मोटा होना, अनुरक्त होना, स्नेह युक्त होना, प्रेमपूर्ण होना, रूखा न होने देना। **चिकनापन**-(हिं०पुं०) चिकनाई, चिकनाहट। **चिकनावट**

चिकवाहट-(हिं०स्त्री०) देखो चिकनाप

चिकनिया-(हिं०वि०) छैला, बांका बना ठना हुआ।

चिकनी मिट्टी-(हिं० स्त्री०) लसदार मिट्टी, करैली मिट्टी।

चिकनी सुपारी-(हिं०स्त्री०) खैर के जल में उबाली हुई चिपटी सुपारी।

चिकरना-(हिं०क्रि०) चीखना, चिग्घाड़ना, चिल्लाना।

चिकवा-(हिं०पुं०) मांस बेंचने वाला, कस्साई।

चिकार-(हिं०पुं०) चित्कार, चिग्घाड़, चीख। **चिकारना**-(हिं०क्रि०) चीखना चिग्घाड़ना।

चिकारा-(हिं०पुं०) सारंगी की तरह का एक बाजा, हरिन की जाति का एक जंगली पशु।

चिकारी-(हिं०स्त्री०) छोटा चिकार, एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
चिकित्सक-(सं०पुं०)- रोग हटाने का उपाय करने वाला, वैद्य, हकीम, डाक्टर।
चिकित्सा-(सं०स्त्री०) रोग दूर करने तथा शरीर नीरोग करने की विधि, रोग शान्ति का उपाय, वैद्य का व्यवसाय या कार्य; **चिकित्सालय**-रोगियों की भलीभांति चिकित्सा करने का स्थान; **चिकित्सित**-(सं०-वि०) चिकित्सा किया हुआ। **चिकित्स्य**-(सं०वि०) चिकित्सायोग्य, साध्य
चिकिल-(सं०पुं०) कीचड़, पक।
चिकिर्षा-(सं०स्त्री०) करने की इच्छा।
चिकुटी-(हिं०स्त्री०) देखो चुटकी।
चिकुर-(सं०पुं०) सिरके बाल, केश, पर्वत, रेंगने वाले जन्तु, छछून्दर, गिलहरी (वि०) चपल, चंचल।
चिकोटी-(हिं०स्त्री०) देखो चुटकी।
चिक्का-(सं०पु०)छछून्दर (वि०) चिपटी नाक वाला।
चिक्कट-(हिं०पुं०) तेल आदि की गर्द से जमी हुई मैल,कीट (वि०) मैला कुचैला
चिक्कण-(सं०वि०) चिकना; (पु०) सुपारी का वृक्ष या फल। **चिक्कणा**-(स०स्त्री०) सुपारी।
चिक्कन-(हिं०वि०) चिक्कण, चिकना।
चिक्करना-(हिं०क्रि०) चिंघाड़ना।
चिक्कस-(सं०पुं०) जव का आटा, बुलबुल का बैठने का लोहे पीतल आदि का बना हुआ अड्डा।
चिक्का-(सं०स्त्री०) सुपारी (हिं०पु०) चक्का, चूहा।
चिक्कार-(हिं०पु०) देखो चिकार।
चिक्कारा-(हिं०पुं०) देखो चिकारा।
चिखना-हिं०पुं०) चाट।
चिखर-(हिं०पुं०)चने का छिलका या भूसी
चिखुरन-(हिं०स्त्री०) घास जो खेत को स्वच्छ करने के लिये निकाली जाती है
चिखूरना-(हिं०क्रि०) जोते हुए खेत में से घास पात हटाना।
चिखुरा-(हिं०पुं०) गिलहरी।
चिखुरी-(हिं०स्त्री०) गिलहरी।
चिखौनी-(हिं०स्त्री०) स्वाद लेने की क्रिया, स्वाद लेने की वस्तु, स्वाद की थोड़ी सी वस्तु।
चिचड़ा-(हिं०पुं०) एक पौधा जिसकी जड़ तथा पत्तियां औषधियों में प्रयोग होती हैं, अपामार्ग, लटजीरा, एक कीड़ा जो चौपायों के शरीर में चिपट कर उनका लोहू चूसता है।
चिचिडी-(हिं०स्त्री०) किलनी, किल्ली, अपामार्ग।
चिचान-(हिं०पुं०) श्येन, (बाज) पक्षी।
चिचण्ड-(सं०पुं०) चिचींड़ा।
चिचियाना-(हिं० क्रि०) चिल्लाना, चीखना।
चिचियाहट-(हिं०स्त्री०) देखो चिल्लाहट
चिचकना-(हिं०क्रि०) देखो चुचुकना।
चिचोड़ना-(हिं०क्रि०) देखो चचोड़ना।
चिजारा-(हिं०पुं०) राजगीर, मेमार।
चिञ्चा-(सं०स्त्री०)इमली,इमली का चिआं
चिञ्ची-(सं०स्त्री०) गुंजा, घुमची।
चिटकना-(हिं०क्रि०) रूक्षता या गरमी से ऊपरी तल में दरार होना, गंठीली लकड़ी का जलती समय चिट्‌चिट्‌ करना, चिढ़ना, बिगड़ना।
चिटका-(हिं०पुं०) चिता। **चिटकाना**-(हिं०क्रि०) किसी सूखे पदार्थ को तड़काना, खिजलाना, चिढ़ाना।
चिटनवीस-(हिं०पुं०) चिट्ठी पत्री हिसाब किताब लिखनेवाला लेखक।
चिटी-(सं० स्त्री०) तंत्रानुसार एक चांडाल योगिनी।
चिटुकी-(हिं०स्त्री०) देखो चुटकी।
चिट्ट-(हिं०स्त्री०) देखो चिट।
चिट्टा-(हिं०पुं०) झूठा बढ़ावा, किसी को कार्य करने के लिए ऐसी उत्तेजना देना जिससे उसकी हानि हो।
चिट्टालड़ाना-उत्तेजना देना,बढ़ावा देना
चिट्ठा-(हिं०पुं०) हिसाब की बहीखाता, सालभर का हिसाब किताब का लेखा, सूची, खर्च का विवरण, ब्योरा, वेतन या मजूरी **चिट्ठा बांधना**-लेखा तैयार करना; **कच्चा चिट्ठा**-विस्तार पूर्वक वर्णन जिसमें कोई बात छिपाई न गई हो।
चिट्ठी-(हिं०स्त्री०) कागज की वह टुकड़ी जिसमें कहीं भेजने के लिये समाचार इत्यादि लिखा हो, माल का दाम लिखा हुआ पुरजा, छोटा कागद का टुकड़ा जिसपर कुछ लिखा हो, आज्ञापत्र, निमन्त्रणपत्र, किसी विषय के अधिकारी निर्णय करने के लिये उनके नाम अलग अलग छोटे छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर इनको मोडकर और गोली बनाकर किसी बालक से एक गोली उठवा ली जाती है और जिसके नाम की गोली उठती है वह व्यक्ति अधिकारी माना जाता है। **चिट्ठी पत्री**-(हिं०स्त्री०)पत्र व्यवहार। **चिट्ठीरसा**(हिं०पुं०) चिट्ठी बांटने वाला डाकिया।
चिड़चिड़ा-(हिं०पुं०) चिचिड़ा, अपामार्ग, एक भूरे रंग का छोटा पक्षी (वि०) थोड़ी सी बातपर अप्रसन्न होनेवाला, जल्दी चिढ़नेवाला। **चिड़चिड़ाना**-(हिं०क्रि०) गीली लकड़ी का जलती समय चिट् चिट् शब्द करना, सूखकर फट जाना, चिढ़ना, झुलझुलाना **चिड़चिड़ाहट**-(हिं०स्त्री०) चिढ़ने की क्रिया का भाव।
चिवड़ा-(हिं०पुं०) हरे धान को कूट कर चिपटा किया हुआ दाना, चिउड़ा।
चिड़ा-(हिं०पुं०) चटक, गौरैया पक्षी।
चिड़ारा-(हिं०पुं०) जड़हन बोने की नीची भूमि।
चिड़िया-(हिं०स्त्री०) पक्षी, आकाश में उड़नेवाला जीव, पंछी, पखेरू; चिड़िया के आकार का लकड़ी का टुकड़ा जो लंगड़ों के टेकने की बैसाखी पर जड़ा रहता है, ताश में चिड़ी के पत्ते, तराजू की डंडी में लगा हुआ लोहे का टुकड़ा; **चिड़िया का दूध**-अलभ्य पदार्थ; **चिड़िया नोचन**-चारों ओर की मांग; **सोने की चिड़िया**-अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति, खूब धन देने वाला आसामी। **चिड़ियाखाना**-(हिं०पुं०) वह स्थान जिसमें नाना प्रकार के पशु पक्षी देखने के लिये पाले जाते हैं। **चिड़ियावाला**-(हिं०पुं०) मूर्ख, जड़, निर्बुद्धि। **चिड़िहार**-(हिं०पु०) चिड़ीमार, बहेलिया, व्याध।
चिड़ी-(हिं०स्त्री०) चिड़िया, ताश का एक रंग। **चिड़ीमार**-(हिं०पुं०)व्याध, बहेलिया।
चिढ़-(हिं०स्त्री०)क्रोध सहित अप्रसन्नता, कुढ़न, खिजलाहट, विरक्ति; **चिढ़ निकालना**-कुढ़ाना, खिजलाने का ढंग निकालना। **चिढ़कना**-(हिं०क्रि०) देखो चिढ़ना। **चिढ़काना**-(हिं०क्रि०) देखो चिढ़ाना। **चिढ़ना**-(हिं०क्रि०) अप्रसन्न होना, कुढ़ना, विरक्त होना, झल्लाना, बुरा मानना, द्वेष करना।
चिढ़वाना-(हिं० क्रि०) चिढ़ाने का काम दूसरे से कराना। **चिढ़ाना**-(हिं०क्रि०) अप्रसन्न करना, कुढ़ाना, खिझाना, कुपित और खिन्न करना, किसी को खिझाने के लिये मुंह बनाना हांथ बनाना, हाथ चमकाना या और किसी प्रकार की चेष्टा, करना, उपहास करना, ठट्ठा करना, **मुँह चिढ़ाना**-किसी को कुढ़ाने या खिजाने के लिये मुंह की विलक्षण आकृति बनाना।
चित्-(सं०स्त्री०)चेतना, ज्ञान, चित्तवृत्ति (पुं०) अग्नि, संस्कृत का अनिश्चय सूचक शब्द।
चित-(सं०वि०) इकट्ठा या ढेर किया हुआ, ढका हुआ (हिं०पुं०) चित्त, चितवन, दृष्टि (हिं०वि०) पीठ के बल पढ़ा हुआ; **चित करना**-मल्लयुद्ध में पटकना; **चारो खाने चित**-हाथ पैर फैलाये हुए पीठ के बल पड़ा हुआ, हक्का, बक्का,; **चित-होना**-अचेत होना। **चितकबरा**-(हिं०वि०)रंग विरंगा, कबरा, चितला।
चितकूट-(हिं०पुं०) देखो चित्रकूट।
चितचोर-(हिं०पुं०) चित्त को चुराने वाला, मनको लुभाने वाला, प्यारा, प्रिय, मनोहर।
चितपट-(हिं०पुं०) मल्लयुद्ध।
चितभंग-(हिं०पुं०) ध्यान न लगना, उदासी, मतिभ्रम, बुद्धि का नाश, चैतन्य ठिकाने न रहना।
चितरनहार-(हिं०पुं०)चित्रण करनेवाला
चितरना-(हिं० क्रि०) चित्र बनाना, नकाशी करना।
चितरवा-(हिं०पुं०) चित्रक पक्षी, एक प्रकार की लाल चिड़िया।
चितला-(हिं०वि०) चितकवरा, रंग-बिरंगा, एक प्रकार का लखनऊ का खरबूजा, एक प्रकार की मछली।
चितवन-(हिं० स्त्री०) देखने का ढंग, दृष्टि कटाक्ष; **चितवन चढ़ाना**-भौं चढ़ाना। **चितवना**-(हिं० क्रि०) दृष्टि डालना, देखना। **चितवनि**-(हिं०-स्त्री०) देखो चितवन। **चितवाना**-(हिं०स्त्री०) दिखाना, तकाना।
चिता-(सं० स्त्री०) लकड़ी का ढेर जिस पर शव जलाया जाता है श्मशान, मरघट, **चिता पर चढ़ना**-मरना।
चिताना-(हिं०क्रि०) सचेत करना, सावधान करना, किसी ओर चित्त आकर्षण करना, स्मरण करना, याद दिलाना, जलाना आग सुलगाना।
चिताभूमि-(सं०स्त्री०) श्मशान।
चितावनी-(हिं०स्त्री०) सावधान करने की क्रिया, पहिले से सावधान होने के लिये सचेत करना।
चिति-(सं०स्त्री०) चिता, ढेर, सग्रह, एकत्र करनेका कार्य, यज्ञ में ईंटोंका एक संस्कार,ईंटों की जोड़ाई,चैतन्य, दुर्गा।
चितिका-(सं०स्त्री०) मेखला, करधनी।
चितियागुड़-(हिं०पुं०) खजूर की जूसी से बनाया हुआ गुड़।
चितिव्यवहार-(सं०पुं०) गणित से घर की लगी हुई ईंटों की संख्या निकालने की विधि।
चितु-(हिं०पुं०) देखो चित्त।
चितेरा-(हिं०पुं०) चित्रकार,चित्र बनाने वाला।
चितेरिन,चितेरी-(हिं०स्त्री०)चित्र बनाने वाली स्त्री, चित्रकार की पत्नी।
चितेला-(हिं०पुं०) देखो चितेरा।
चितौनि,चितौनी-(हिं० स्त्री०) देखो चितवन।
चित्कार-(हिं०स्त्री०) देखो चीत्कार।
चित्त-(सं०पु०) अन्तःकरण कीएक वृत्ति जी, मन; **चित्त उचटना**-मन न लगना; **चित्त करना**-जी चाहना; चितचोराना-मोहित करना; **चित्तदेना**-ध्यान लगाना, **चित्त धरना**-ध्यान देना, **चित्त बंटना**-चित्त एकाग्र न रहना, **चित्र बटाना**-ध्यान एक ओर न रहना; **चित्त होना**-इच्छा करना; **चित्त लेना**-जी चाहना; **चित्तसे उतरना**-भूल जाना।
चित्तज-(सं०पुं०)चित्त से उत्पन्न,कामदेव
चितभू-(सं०पुं०)कामदेव; **चित्तभूमि**-(सं०स्त्री०) योग में चित्त की पांच अवस्था, क्षिप्त, मूढ़, विक्षित, एकाग्र और निरुद्ध। **चित्तवान्**-(सं०वि०) उदार चित्तका। **चित्तविक्षेप**-(सं०पुं०) मनकी चंचलता या अस्थिरता। **चित्तविप्लव**-(सं०पुं०)उन्माद। **चित्तविभ्रम**-(सं०पुं०) भ्रम, भ्रान्ति,

उन्माद। **चित्तवृत्ति**-(सं०स्त्री०) चित की गति, चित्त की अवस्था।

चित्तल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का हरिन, चीतल।

चित्तापाहरक-(सं०वि०) रुचिर, सुन्दर, मनोहर।

चित्ति-(सं०स्त्री०) ख्याति, वृद्धि।

चित्ती-(हिं०स्त्री०)छोटा धब्बा या चिन्ह, बूंदकी. मादा लाल पक्षी, अजगर की जाति का एक प्रकार का मोटा साँप कुम्हार के चाक में का गड्ढा जिसमे डंडा डालकर यह घुमाया जाता हैं, चिपटी पीठकी कौड़ी, **चित्ती पड़ना**-काले धब्बे पड़ना।

चितौर-(हिं०पु०) उदयपूर के महाराजाओं की प्रचीन राजधानी।

चित्य-(सं०वि०) चिता संबधी (पुं०) अग्नि।

चित्र-(सं०पुं०)मस्तक पर चन्दन आदि से लगाया हुआ चिन्ह, तिलक, कागज, कपड़े आदि पर अनेक रंगों के मेल से बनी हुई आकृति, काव्य के तीन अंगों में से एक, पदों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाने की विधि कि हाथी, घोड़ा, रथ आदि का आकार बन जावे, एक प्रकार का वर्णवृत्त, आकाश, एक प्रकार का कुष्ट रोग, चित्रगुप्त, अशोक का वृक्ष, (वि०) अद्भुत, विलक्षण, आश्चर्यजनक, रंग विरंगा, चितकबरा, अनेक प्रकार का; **चित्र उतारना**-चित्र बनाना। **चित्रकण्ठ**-(सं०पु०)कपोत, कबूतर। **चित्रक**-(सं०पुं०) चीते का वृक्ष, चित्ता, व्याघ्र चिरायता, शूरवीर चित्रकार। **चित्रकर**-(सं०पुं०)चित्रकार। **चित्रकर्मी**-(हिं०पुं०)चित्रकार। **चित्रकला**-(सं०स्त्री०) चित्र बनाने की विद्या। **चित्रकार**-(सं०पु०)चित्र बनानेवाला, **चित्रकारी**-(हिं०स्त्री०)चित्र विद्या, चित्र बनाने की कला, चित्र बनाने का व्यवसाय। **चित्रकाव्य**-(सं०पुं०) एक प्रकार का काव्य जिसके अक्षरों को क्रम से लिखने पर कोई विशेष चित्र बन जाता हैं। **चित्रकुण्डल**-(सं०पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। **चित्रकूट**-(सं०पु०)एक पर्वत जिसपर सीता और राम ने वनवास के समय बहुत दिनों तक निवास किया था। **चित्रकेतु**-(सं०पु०)लक्ष्मण के एक पुत्री का नाम। **चित्रकोण**-(सं०पुं०)कुटकी नामक औषधि। **चित्रगन्ध**-(सं०पु०) हरताल। **चित्रगुप्त**-(सं०पु०) चौदह यमों में से एक जो प्रत्येक प्राणी के पाप पुण्य का लेखा रखते हैं। **चित्रघण्टा**-(सं०स्त्री०) नव दुर्गा में से एक का नाम। **चित्रचाप**-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। **चित्रजल्प**-(सं०पुं०)वह अभिप्राय पूर्ण वाक्य जो नायक और नायिका रूठ कर आपस मे कहते हैं। **चित्रतण्डूल**-(सं०पु०) वायविड़ंग। **चित्रताल**-(सं०पुं०) सगीत में एक प्रकार का चौताला ताल। **चित्रतैल**-(सं०पु०) रेंड़ी का तेल। **चित्रदेव**-(सं०पु०) कार्तिकेय का अनुचर। **चित्रधाम**-(सं०पुं०) सर्वतोभद्र नामक अनेक रंगों से भरा हुआ चौखूटा चक्र।

चित्रना-(हि०क्रि०)चित्रित करना, चित्र बनाना

चित्रनेत्रा-(सं०स्त्री०) सारिका, मैना।

चित्रपक्ष-(सं०पु०) तित्तिर पक्षी, तीतर

चित्रपट-(सं०पुं०)वह कागज या कपड़े का टुकड़ा जिसपर चित्र बनाया जाता है, छींट। **चित्रपत्र**-(सं०पु०) आँख की पुतली के पीछे मस्तिष्क में का वह भाग जिसपर आंख के ताल द्वारा पदार्थों का प्रतिबिम्ब पड़ता है (वि०)रंगविरंगे परवाला, **चित्रपदा**-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का छन्द, सारिका मैना, लाजाधुर, छुई-मुई नामक पौधा। **चित्रपर्णी**-(सं०स्त्री०) मजीठ, जलपिप्पिली। **चित्रपादा**-(सं०स्त्री०) सारिका, मैना **चित्रपिच्छक**-(सं०पुं०) मयूर, मोर। **चित्रपुंख**-(सं०पुं०) बाण, तीर। **चित्रपुट**-(सं०पु०) एक प्रकार का छ ताला ताल। **चित्रपुष्प**-(सं०पु०) एक प्रकार की घास। **चित्रपृष्ठ**-(सं०पुं०) चटक, गौरैया पक्षी। **चित्रफल**-(सं०पु०) एक प्रकार की मछली, तरबूज। **चित्रफला**-(सं०स्त्री०) ककड़ी, बैंगन, भटकटैया। **चित्रबर्ही**-(सं०पु०) मयूर मोर। **चित्रभानु**-(सं०पु०) अग्नि, सूर्य, मदार का वृक्ष, भैरव, अश्विनी कुमार, एक युग का नाम। **चित्रमद**-(सं०पु०) नाटक आदि में किसी स्त्री का अपने प्रियतम का चित्र देखकर विरह भाव दिखलाना। **चित्रमृग**-(सं०पुं०)चितकबरा हरिन। **चित्रमेखल**-(सं०पुं०) मयूर, मोर। **चित्रयोग**-(सं०पुं०) वृद्ध को युवा अथवा युग को वृद्ध या नपुसक बनाने की कला। **चित्रयोधी**-(सं०वि०) विचित्र युद्ध करने वाला, (पुं०) अर्जुन, अर्जुन नामक वृक्ष। **चित्ररथ**-(सं०पुं०) सूर्य, एक गन्धर्व का नाम, श्रीकृष्ण के एक पौत्र का नाम, **चित्ररेखा**-(सं०स्त्री०) बाणासुर की कन्या उषा की एक सहेली का नाम।

चित्रल-(सं०वि०) रंग बिरंगा, चितकबरा

चित्रलिखन-(सं०पु०) सुन्दर अक्षरों की लिखावट, चित्र बनाने का कार्य। **चित्रलेखनी**-(सं०स्त्री०) चित्र बनाने की लेखनी या कूंची। **चित्रलेखा**-(सं०स्त्री०)देखो चित्ररेखा, एक अप्सरा का नाम, तसवीर बनाने की कूंची, एक वर्णवृत्त का नाम। **चित्रलोचना**-(सं०स्त्री०) सरिका, मैना। **चित्रवर्मा**-(सं०पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। **चित्रविचित्र**-(सं०वि०) रंग विरंग। अनेक रंगका, बेलबूटेदार।

चित्रविद्या-(सं०स्त्री०) चित्र बनाने की कला या विद्या। **चित्रशाला**-(सं०स्त्री०) वह घर जहां चित्र बनाये जाते हों अथवा विकने या देखने के लिये रक्खे हों। **चित्रशिखण्डिज**-(सं०पुं०) सप्त ऋषियों के नाम जो मरीच, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु और वसिष्ठ हैं। **चित्रशिर**-(सं०पुं०) एक गन्धर्व का नाम। **चित्रसङ्ग**-(सं०पु०) सोलह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। **चित्रसारी**-(हिं०स्त्री०) वह कमरा जिसमे चित्र टंगे हों, विलासभवन, सजा हुआ सोने का कमरा। **चित्रसेन**-(सं०पु०) एक गन्धर्व का नाम धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चित्रहस्त-(सं०पुं०) शस्त्र से आक्रमण करने का एक हाथ।

चित्राङ्ग-(सं०वि०)जिसका अग विचित्र हो, जिसके अङ्ग पर धारी या चित्तियाँ हो (पु०) चित्रक नाम की औषधि, ईंगुर, हरताल। **चित्राङ्गद**-(सं०पु०) राजा शान्तनु के एक पुत्र का नाम जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न थे। **चित्रांगदा**-(सं०स्त्री०) चित्रवाहन की पुत्री जो अर्जुन को ब्याही थी, रावण की एक स्त्री का नाम। **चित्राङ्गी**-(सं०स्त्री०)मजीठ, कनखजूरा नामक कीड़ा।

चित्रा-(सं०स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में से चौदहवां नक्षत्र, दन्ती नामक वृक्ष, चितकबरी गाय, सुभद्रा, बायबिडंग, अजवाइन, एक अप्सरा का नाम, संगीत मे मूर्छना, एक-रागिणी का नाम, पन्द्रह अक्षरों का एक वर्णावृत्त, प्राचीन काल का तारका एक प्रकार का बाजा, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्रा होती है। **चित्राक्ष**-(सं०वि०) विचित्र अथवा सुन्दर नेत्र वाला। **चित्राक्षी**-(सं०स्त्री०) सारिका, मैना। **चित्राटीर**-(सं०पु०) चन्द्रमा, शिवके अनुचर का नाम। **चित्रायुध**-(सं०पु०) विलक्षण अस्त्र। **चित्रावसु**-(सं०स्त्री०)नक्षत्रों से आच्छादित रात्रि।

चित्रिक-(सं०पुं०) चैत का महीना।

चित्रिणी-(सं०स्त्री०) स्त्री के पद्मिनी आदि चार भेदों में से एक।

चित्रित-(सं०वि०) चित्र द्वारा दिखलाया हुआ, चित्र बना हुआ, जिसपर बेल बूटे बने हों या नकाशी हो, जिसपर धारियाँ या चित्तियां हों।

चित्रेश-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा।

चित्रोक्ति-(सं०स्त्री०)अलंकारिक भाषा में वर्णन।

चित्रोत्तर-(सं०पुं०) वह काव्यालङ्कार जिसमें प्रश्न के शब्दों में उत्तर हो अथवा अनेक प्रश्नों का उत्तर एकही में हो।

चित्र्य-(सं०वि०) पूज्य, इकट्ठा करने योग्य।

चिथड़ा-(हिं०पुं०) फटा पुराना वस्त्र, लत्ता, कपड़े की धज्जी; **चिथड़ा लपेटना** फटे पुराने वस्त्र पहिरना। **चिथाड़ना**-(हिं०क्रि०) चीरना, फाड़ना, धज्जी करना, टुकड़े टुकड़े करना, लज्जित करना।

चिदात्मा-(सं०पु०)चैतन्य रूप परब्रह्म।

चिदानन्द-(सं०पुं०) चैतन्य और आनन्दरूप परब्रह्म।

चिदाभास-(सं०पु०) चैतन्यरूप परब्रह्म का प्रतिबिम्ब जो मनुष्य के अन्तःकरण पर पड़ता है, जीवात्मा।

चिद्रूप-(सं०पुं०) ज्ञानमय परब्रह्म।

चिद्विलास-(सं०पुं०) चैतन्य रूप ईश्वर की माया, शङ्कराचार्य के एक शिष्य का नाम।

चिन-(हिं०पुं०) एक पहाड़ी बहुत बड़ा वृक्ष, एक घास जिसको चौपायेबड़ी रुचि से खाते हैं।

चिनक-(हिं०पुं०) जलन युक्त पीड़ा, चुनचुनाहट।

चिनगारी-(हिं०स्त्री०) जलती हुई अग्नि का छोटा कण, स्फुलिङ्ग, अग्निकण; **आंखों से चिनगारी छूटना**-क्रोध के कारण आँखें लाल होना; **चिनगारी छोड़ना**-ऐसी बात कहना जिससे कोई झगड़ा खड़ा हो जावें; **चिनगारी डालना**-आग लगाना।

चिनगरा-(हिं०पुं०) चिथड़ा।

चिनगी-(हिं०स्त्री०) चिनगारी (पुं०) चतुर बालक, नट के साथ का लड़का

चिनना-(हिं०क्रि०) भीत उठाना।

चिनाना-(हिं०क्रि०) बिनवाना, चुनवाना, ईंट की जोड़ाई कराना।

चिनिया-(हिं०वि०) चीनी के रंग का सफ़ेद, चीन देश का चीनी। **चिनिया केला**-छोटी जात का बहुत मीठा केला। **चिनिया घोड़ा**-वह घोड़ा जिसके चारो पैर श्वेत हों और शरीर में लाल और श्वेत धब्बे हों

चिनिया बादाम-मूंगफली।

चिन्त-(सं०स्त्री०) चिन्तता, चिन्ता, ध्यान सोचा विचार। **चिन्तक**-(सं०वि०) चिन्तन या ध्यान करनेवाला, सोच विचार करने वाला। **चिन्तन**-(सं०पुं०) ध्यान, किसी विषय का बारम्बार स्मरण, विवेचना, विचार। **चिन्तना**-(सं०क्रि०) चिन्तन करना, स्मरण करना, सोचना, समझना, विचारना (स्त्री०) स्मरण, चिन्ता, ध्यान, सोच। **चिन्तनीय**-(सं०वि०) चिन्ता करने योग्य, ध्यान करने योग्य।

चिन्ता-(सं०स्त्री०) ध्यान, भावना, सोच खटक; **चिन्ता लगना**-निरन्तर चिन्ता में लीन रहना; **चिन्ताकुल**-(सं०वि०) सोच में पड़ा हुआ; **चिन्तातुर**-(सं०वि०) शोच से व्याकुल। **चिन्तामणि**-(सं०पुं०) एक रत्न जिसके विषय

यह प्रसिद्धि है कि वह सब मनोकामना को पूर्ण करता है, परमेश्वर, ब्रह्मा, घोड़े के गले की एक भौंरी, यात्रा का एक योग, सरस्वती का एक मन्त्र। **चिन्तावेश्म**-(सं०नपुं०) सलाह करने का स्थान, मन्त्रणा गृह।
चिन्तिडी-(सं०स्त्री०) इमली का वृक्ष।
चिन्तित-(सं०वि०) चिन्तायुक्त।
चिन्त्य-(सं०वि०) विचारणीय, भावनीय।
चिन्न-(सं०पुं०) चणक, चना।
चिन्मय-(सं०वि०) ज्ञानमय (पुं०) परमेश्वर।
चिन्ह-(हिं०पुं०) देखो चिह्न।
चिन्हवाना, चिन्हाना-(हिं०क्रि०) परिचित कराना, पहिचनवाना, ठीक ठीक लक्षण बतला देना।
चिन्हाटी-(हिं०स्त्री०) देखो चिह्नानी।
चिन्हानी-(हिं०स्त्री०) पहिचान, लक्षण चिह्नाने की वस्तु, स्मारक, चिह्न, धारी, लकीर।
चिन्हार-(हिं०वि०) परिचित, जिससे जान पहिचान हो, जान पहिचान का। **चिन्हारी**-(हिं०स्त्री०) परिचय।
चिन्हित-(हिं०वि०) देखो चिह्नित।
चिपकना-(हिं०क्रि०) दो पदार्थों का परस्पर जुटना, या सटना चिमटना; लिपटना, व्यवसाय में लगना, स्त्री पुरुष का परस्पर प्रेम में फंसना।
चिपकाना-(हिं०क्रि०) दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ना, चिमटाना, लिपटाना, आलिङ्गन करना, काम धंधे में लगाना।
चिपचिप-(हिं०पुं०) लसदार वस्तु के छूने से चिपकने का शब्द। **चिपचिपा**-(हिं०वि०) लसदार, लसीला चिपकने वाला। **चिपचिपाना**-(हिं०क्रि०) लसदार ज्ञात होना, छूनेसे चिपचिपा मालूम होना। **चिपचिपाहट**-(हिं०स्त्री०) लसलसाट, चिमचिपापन।
चिपटना-(हिं०क्रि०) चिपकना, चिमटना, सटना।
चिपटा-(हिं०वि०) जिसका कोई भाग उभड़ा न हो जिसका तल दबा हुआ तथा बराबर फैला हो। **चिपटाना**-(हिं०क्रि०) चिपकाना, सटाना, लिपटाना, आलिंगन करना।
चिपटी-(हिं०वि०) देखो चिपटा, (स्त्री०) एक प्रकार की कान में पहिरने की बाली, भग, योनि। **चिपटी खेलना**-कामतुर होकर दो स्त्रियोंका परस्पर योनि से योनि घिसना।
चिपड़ा (हिं०वि०) जिसकी आँख से अधिक कीचड़ निकलता हो।
चिपडी चिपरी-(हिं०स्त्री०) गोबर को पाथ कर सुखाये हुए टुकड़े, उपली, गोहरी।
चिपिट, चिपिटक-(हिं०वि०) चिपटा (पुं०) चिवड़ा, चिपटी नाक का मनुष्य।
चिपीटक-(सं०पुं०) चिउड़ा, चिवड़ा।
चिप्प-(सं०पुं०) एक प्रकार का नख का रोग।
चिप्पड़-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का छोटा चिपटा टुकड़ा, पपड़ी, छील-कर निकाला हुआ टुकड़ा।
चिप्पिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया।
चिप्पी-(हिं०स्त्री०) देखो चिप्पड़।
चिबिल्ला-(हिं०वि०) देखो चिलबिल।
चिबुक-(सं०पुं०) ठुड्ढी, ठोंड़ी।
चिमगादड़-(हिं०पुं०) देखो चमगादड़।
चिमटना-(हिं०क्रि०) चिपकना, सटना, लिपटना, आलिंगन करना, गुथना, कसकर पकड़ना, पीछा न छोड़ना, पीछे पड़ना। **चिमटवाना**-(सं०क्रि०) चिमटाने का काम दूसरे से कराना।
चिमटा-(हिं०पुं०) धातु की दो पट्टियों से बना हुआ अस्त्र जो जलते हुए अंगारे इत्यादि के उठाने के काम में आता है। **चिमटाना**-(हिं०क्रि०) सटाना, आलिगन गरना, लिपटाना चिपकाना। **चिमटी**-(हिं०स्त्री०) छोटा चिमटा, सोनारों का तार इत्यादि मोड़ने का अस्त्र।
चिमड़ा-(हिं०वि०) देखो चीमड़।
चमोटा-(हिं०पुं०) देखो चमोटा।
चिरंजीव-(सं०वि०) चिरंजीवी, अनेक वर्षों तक जीवित रहने वाला; (पुं०) आशीर्वाद का शब्द। **चिरजीवी**-हिं०वि०) देखो चिरजीवी।
चिरंट-(सं०पुं०) युवावस्था।
चिरंटी-(हिं०स्त्री०) पिता के घर रहने वाली अधिक वय की कन्या, युवती।
चिरन्तन-(सं०वि०) पुरातन, बहुत दिनों का पुराना।
चिर-(सं०वि०) बहुत दिनों तक रहने वाला, दीर्घायु, चिरायु, (क्रि०वि०) अधिक समय तक (पुं०) तीन मात्राओं का एक गण जिसका पहिला वर्ण गुरु हो।
चिरई-(हिं०स्त्री०) चिड़िया, पक्षी।
चिरकना-(हिं०क्रि०) गुदा में से थोड़ा थोड़ा करके मल निकलना।
चिरकारी-(सं०वि०) दीर्घसूत्री, सब कामों में देर करने वाला।
चिरकाल-(सं०पुं०) दीर्घकाल, बहुत समय।
चिरकुट-(हिं०पुं०) फटा पुराना वस्त्र, गूदड़, चिथड़ा।
चिरक्रिया-(सं०वि०) दीर्घसूत्री, काम में विलम्ब करने वाला। **चिरक्रियता**-(सं०स्त्री०) दीर्घसूत्रता।
चिरचना-(हिं०क्रि०) चिड़चिड़ाना।
चिरचिटा-(हिं०पुं०) चिड़चिड़ा, अपामार्ग।
चिरजीवी-(सं०वि०) दीर्घजीवी, बहुत दिनों तक जीने वाला, अमर, (पुं०) विष्णु, कौवा, मार्कण्डेय ऋषि, सेम्हर का वृक्ष।
चिरचिरा-(हिं०पुं०) देखो चिड़चिड़ा।
चिरत्न-(सं०वि०) पुरातन, प्राचीन, पुराना।
चिरना-(हिं०क्रि०) फटना, एक सीधा या लकीर में कटना, लकीर की तरह फटना; (पुं०) चीरने का अस्त्र।
चिरपाकी-(सं०पुं०) कपित्थ, कैथ।
चिरपुष्प-(सं०पुं०) मौलसिरी, बकुल।
चिरबत्ती-(हिं०वि०) टुकड़ा टुकड़ा; **चिरबत्ती कर देना**-फाड़ कर टुकड़े टुकड़े करना।
चिरमिटी-(हिं०स्त्री०) गुञ्जा, घुमची।
चिरवल-(हिं०पुं०) एक पौधा जिसकी जड़ की छाल से सुन्दर लाल रंग निकलता है।
चिरवाई-(हिं०स्त्री०) चिरवाने का कार्य या पारिश्रमिक। **चिरवाना**-(हिं०स्त्री०) फड़वाना, चीरने का कार्य दूसरे से कराना।
चिरस्थायी-(सं०वि०) बहुत दिनों तक ठहरने वाला। **चिरस्मरणीय**-(सं०वि०) बहुत दिनों तक याद रखने योग्य; प्रशंसा योग्य, पूजनीय।
चिरहँटा-(हिं०पुं०) चिड़ीमार, व्याध, बहेलिया।
चिराँदा-(हिं०वि०) थोड़ी सी बात पर चिढ़ने वाला।
चिराइता-(हिं०पुं०) देखो चिरायता।
चिराई-(हिं०स्त्री०) चीरने का कार्य या मज़दूरी।
चिराक-(हिं०पुं०) देखो चिराग।
चिरातन-(हिं०वि०) पुरातन, पुराना।
चिराद-(सं०पुं०) बत्तक के प्रकार का एक पक्षी।
चिराना-(हिं०क्रि०) फड़वाना, चीरने का काम कराना, (वि०) पुरातन, पुराना।
चिरायँध-(हिं०स्त्री०) चमड़े बाल आदि के जलने से उत्पन्न दुर्गन्ध; **चिरायँध फैलाना**-दुर्नाम करना।
चिरायता-(हिं०पुं०) एक कड़ुवा पौधा जो औषधि में प्रयोग होता है।
चिरायु-(सं०वि०) अधिक वय का, दीर्घायु बहुत दिनों तक जीने वाला।
चिरारी-(हिं०स्त्री०) चिरौंजी का वृक्ष,
चिराव-(हिं०पुं०) चीरने का भाव या क्रिया, चिरने से उत्पन्न व्रण।
चिरिया-(हिं०स्त्री०) चिड़िया पक्षी।
चिरिहार-(हिं०पुं०) व्याधा, बहेलिया।
चिरी-(हिं०स्त्री०) देखो चिड़िया।
चिरु-(सं०पुं०) कन्धे और बांह का जोड़
चिरैता-(हिं०पुं०) देखो चिरायता।
चिरैया-(हिं०स्त्री०) देखो चिड़िया।
चिरोंटी-(हिं०पुं०) गौरैया पक्षी।
चिरौंजी-(हिं०स्त्री०) पियार नामक वृक्ष के फलों की गरी।
चिर्मटी-(सं०स्त्री०) ककड़ी चारमंजी।
चिर्री-(हिं०स्त्री०) वज्र, बिजली।
चिरल-(हिं०स्त्री०) द्युति, कान्ति, आभा, झलक, टीस, रह रह कर उठनेवाली पीड़ा चमक। **चिलकना**-(हिं०क्रि०) रह रह कर पीड़ा उठना, चमकना, चमचमाना।
चिलका-(हिं०पुं०) चमकता हुआ चांदी का रुपया।
चिलकाना-(हिं०क्रि०) चमकाना, मांज कर सफ़ेद करना।
चिलचिल-(हिं०पुं०) अभ्रक, अदरख
चिलचिलना-(हिं०क्रि०) चमकना।
चिलड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्वान्न, उलटा।
चिलता-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कवच
चिलबिल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
चिलबिला, चिलबिल्ला-(हिं० वि०) चपल, चंचल।
चिलमचट-(हिं०वि०) अधिक तमाखू पीनेवाला, चिलमपर की सब तमाखू पी जाना।
चिलमीलका-(सं०स्त्री०) खद्योत, जुगनू, बिजली।
चिलवाँस-(हिं०पुं०) चिड़ियों को फँसाने का एक प्रकार का फन्दा।
चिलमिलिका-(सं०स्त्री०) गले में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण, जुगनू।
चिल्लड़-(हिं०पुं०) जूं की तरह का एक सफेद कीड़ा।
चिल्लपों-(हिं०स्त्री०) चिल्लाने का शब्द, दोहाई, पुकार, कलरव
चिल्लवाना-(हिं०क्रि०) चिल्लाने में प्रवृत्त करना, चिल्लाने का काम दूसरे से कराना।
चिल्लाना-(हिं०क्रि०) हल्ला मचाना।
चिल्लाहट-(हिं०स्त्री०) कोलाहल, हल्ला।
चिल्लिका-(सं०स्त्री०) दोनों भौंहों के बीच का स्थान।
चिल्ली-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा बिजली, वज्र, बथुवा नामक शाक जिसके पत्ते छोटे होते हैं।
चिल्ही-(हिं०स्त्री०) चील नामक पक्षी।
चिवि-(सं०स्त्री०) चिबुक, ठुड्डी।
चिविट-(सं०पुं०) चिउड़ा, चिवड़ा।
चिबुक-(सं०पुं०) ठुड्ढी, ढोंढी।
चिहुंका-(हिं०पुं०) पक्षी की बोली
चिहुँकना-(हिं०क्रि०) चौकना।
चिहुँटना-(हिं०क्रि०) चिकोटी काटना, लिपटना, चिमटना; चित्त **चिहुँटना**-मन में क्षोभ उत्पन्न करना, मर्मवेध करना।
चिहुँटनी-(हिं०स्त्री०) गुञ्ज, घुमची
चिहुँटी-(हिं०स्त्री०) चुटकी, चिकोटी।
चिहुँकार-(हिं० स्त्री०) चहक।
चिहुर-(हिं०पुं०) सिर के बाल, केश
चिन्ह-(सं०पुं०) किसी वस्तु को पहिचानने का लक्षण, निशान, झण्डा, पताका, धब्बा।
चिन्हित-(सं०वि०) चिन्हित किया हुआ,
चीं, चींचीं-(हिं०स्त्री०) पक्षियों के बच्चों का धीमा शब्द, मधुर धीमें शब्द में बोलना।
चीबोलना-(हिं०क्रि०) अयोग्यता प्रकट करना।

चींथपड़-(हिं०स्त्री०)किसी बड़े के विरोध में कुछ कहना का करना।
चींटवा-(हिं०पुं०) चीटा, च्यूँटा।
चींटा-(हिं०पुं०) देखो चिउटा।
चींटी-(हिं०स्त्री०) पिपीलका, चिउटी।
चीतना-(हिं० क्रि०) चित्रित करना।
चीथना-(हिं०क्रि०) चियना, फाड़ना।
चीक-(हिं० स्त्री०) चीत्कार, चीखने का शब्द, चिल्लाहट,(पु०)कसाई, मांस बेचने वाला, कीच, कीचड़।
चीकट-(हिं०पुं०)तेल की मैल, तलछट लसदार मिट्टी, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, (वि०) बहुत मैला।
चीकड़-(हिं०पु०) देखो कीचड़।
चीकन, चीकना-हिं०वि०) पीड़ा के कारण चिल्लाना, ऊंचे स्वर से बोलना।
चीकर-(हिं०पुं०) पानी की हौद जिसमें कुवें से खीचा हुआ पानी भरा जाता है।
चीखना-(हिं०क्रि०) स्वाद लेने के लिये किसी पदार्थ को थोडासा खाना या पीना।
चीखना-(हिं०क्रि०) चीकना, वेग से चिल्लाना।
चीकर, चीकल-(हिं०पुं०) कीच, कीचड़,
चीखुर-(हिं०पु०) चिखुरा, गिलहरी
चीठ-(हिं०स्त्री०) कीट, मैल।
चीठा-हिं०पु०) देखो चिट्ठा।
चीठी-(हिं०स्त्री०) देखो चिट्ठी।
चीड़-(हिं०पुं०) एक प्रकार का देसी लेहा, एक पहाड़ी वृक्ष जिसमें से बिरोजा निकलता है।
चीढ-(हिं०पु०) एक पहाड़ी ऊंचा वृक्ष जिसमे से बिरौंजा नामक गोंद निकली है।
चीत-(हिं०पु०) चित्त, मन, चित्रा नक्षत्र, सीसा नामक धातु, इस नाम की ओषधि।
चीतकार-(हिं० पुं०) देखो चीत्कार, चित्रकार।
चीतना-(हिं०क्रि०) सोच विचार करना, याद करना, चैतन्य होना, चित्रित करना, बेल बूटे काढना।
चीतर, चीतल-(हिं० पु०) एक प्रकार का मृग जिसके शरीर पर श्वेत बिन्दियां होती हैं, एक प्रकार का छोटा अजगर,एक प्रकार का सिक्का।
चीता-(हिं०पुं०) चित्रक, एक प्रकार का बाघ जिसकी गरदन पर लंबे बाल नहीं होते, एक प्रकार का पौधा जिसकी छाल और जड़ औषधियों में प्रयोग होती है, हृदय, मन, होश हवास (वि०) सोचा विचारा हुआ।
चितावना-(हिं०स्त्री०) स्मारक।
चीत्कार-(स०पुं०) चिल्लाने का शब्द चिल्लाहट, हल्ला।
चीथड़ा-(हिं०पुं०) फटे पुराने वस्त्र का छोटा टुकड़ा, चीथड़ा लपेटना-फटा पुराना वस्त्र पहिरना, चीथड़ों-लगना-अति दरिद्र होना।
चींथना-(हिं० क्रि०) फाडना, टुकड़े टुकड़े करना।
चीथरा-(हिं०पु०) देखो चीथडा।
चीन-(स०पु०) झंडा पताका, एक प्रकार की ऊख,एक प्रकार का अन्न, सूत,तागा,सीसा धातु,एक प्रकार का रेशमी वस्त्र,एशिया महाद्वीप के दक्षिण पूर्व का एक प्रसिद्ध देश,इस देश का निवासी, चीन की दीवार-चीनदेश की एक बड़ी और ऊँची इतिहास प्रसिद्ध-प्राचीन भीत चीनी का खिलौना-चीनी मिट्टी का बना हुआ खिलौना, (हि० पु०) देखो चिह्न, चुनन।
चीनक-(स०पु०) चेना या कंगनी नामक अन्न, चीनी कपूर।
चीनना-(हि०क्रि०) चीन्हना, पहिचानना
चीनपिष्ट-(सं०पु०) सिन्दूर, सेंदुर।
चीनांशुक-(स०पु०) चीन सेआने वाला रेशमी वस्त्र, एक प्राकर की लाल रंग की बनात जो पहिले चीनसे आती थी।
चीनी-हिं०पुं०) चीन देश का रहने वाला, चेना, चीनी कपूर, एक प्रकार का श्वेत कबूतर (वि०) चीन देश का चाइना सम्बन्धी। चीना बादाम-(हिं०पुं०) मूगफली।
चीनिया-हिं०वि०) चीन देश संबंधी, चीन देश का।
चीनी-(हिं०स्त्री०) ईख आदि के रस से बनाया हुआ चूर्ण, शक्कर, (वि०) चीन देश संबंधी। चीनी कबाब-(हिं०स्त्री०) देखो कबाबचीनी; चीनी चम्पा-(हिं०पुं०) एक प्रकार अति मधुर छोटे आकार का केला।
चीनी मिट्टी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की शुभ्र मिट्टी जिसके पात्र खिलौने आदि बनते हैं।
चीन्ह-(हिं०पु०) देखो चिह्न। चीन्हना-(हि०क्रि०) पहचानना, परिचय प्राप्त करना। चीह्ना-(हिं०पु०)देखो चिह्न।
चीप--हि०स्त्री०) छोटी फन्नी
चीपड़-(हिं०पु०) आंख का कीचड़।
चीमड़-(हिं०वि०) जो खीचने या मोड़ने से न टूटे, चिमड़ा, लचीला।
चीमप-(हि०वि०)देखो चीमड़,चिमड़ा।
चीयां-(हिं०पुं०)चियां,इमली का बीज
चीर-(हि०पुं०)वस्त्र,कपना,पुराने कपड़े का टुकड़ा, लत्ता, चिथड़ा, गाय का थन, वृक्ष की छाल, चार लड़ियों की माला, चीरने का भाव या क्रिया, दरार,छप्पर का बडेर, सीसा नामक धातु, मल्ल युद्ध की एक युक्ति चीरफाड़-चीरने फाड़ने का काम,
चीरक-(सं०पु०) विकृत लेख।
चीर चरम-(हिं०पुं०) चीरचर्म, मृग छाला, बाघंबर।
चीरना-(हिं०क्रि०) विदीर्ण करना, फाड़ना, माल चीरना-अनुचित रीति सेधन कमाना।
चीरपर्ण-(सं०पु०) साल का वृक्ष।
चीरफाड़-(हिं०स्त्री०) चीरने फाड़ने का कार्य
चीरवासा-(सं०पुं०)शिव,महादेव,यक्ष।
चीरा-(हिं०पु०) एक प्रकार का लहरियादार रंगीन वस्त्र जिसकी पगड़ी बनती है, गांव की सीमा पर गाड़ा हुआ पत्थर, चीरकर बनाया हुआ घाव, चीरा उतारना-पुरुष का स्त्री के साथ पहिली बार का समागम।
चीरा बन्द-चीरा बांधने वाला।
चीरिका-(स०स्त्री०) झींगुर, झिल्ली।
चीरी-(स०पुं०) झींगुर (हिं०स्त्री०) पक्षी, चिड़िया।
चीरू-(हिं०पुं०)विदेशी लाल रंग का सूत
चीर्ण-(स०वि०) फाटा या चिरा हुआ, किया हुआ।
चील-(हिं०स्त्री०)बाज के जाति की एक चिड़िया, चीलझपट्टा-किसी वस्तु को झपट कर ले जाना,चीलका मूत-अप्राप्य वस्तु।
चीलड़ चीलर-(हिं०पुं०) जूं की तरह का एक छोटा कीड़ा।
चीलवा चीला-(हिं०पुं०)चिलड़ा,उलटा नामक पक्वान्न।
चीलिकी-(स०स्त्री०) झींगुर, झिल्ली।
चीलू-(हिं०पु०) एक प्रकार का पहाड़ी मेवा।
चील्लक-(स०पु०) देखो चीलिका।
चील्ह-(हिं०स्त्री०) देखो चील।
चील्हड, चील्हर-(हिं०पुं०)देखो चीलर
चील्ही-(हिं०स्त्री०)बच्चों के कल्याण के लिये किया जाने वाला एक तन्त्रोपचार।
चीवर-(सं०पुं०)सन्यासियो या भिक्षुकों का फटा पुराना वस्त्र। चीवरी-(स०पुं०) भिक्षुक, भिखमंगा।
चीह-(हिं०स्त्री०) चीत्कार, लिल्लाहट।
चुंगना-(हिं०क्रि०) देखो चुगना।
चगल-(हिं०पु०)पक्षियों का टेढ़ा झुका हुआ पंजा, बटोरा हुआ मनुष्य का पंजा; चुंगल में फंसना-वश में आना
चुगली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का नाक का आभूषण।
चुगवाना-(हिं०क्रि०) देखो चुगवाना।
चुंगी-(हिं०स्त्री०) चुटकी भर वस्तु नगर के भीतर आने वाली सामग्री पर का कर।
चुंघाना-(हिं०क्रि०) चुसाना, चुसाकर पिलाना।
चुंचचुंचरी-(हिं०स्त्री०) चंचु, चोंच।
चुंटली-(हिं०स्त्री०) गुञ्जा, घुमची।
चुंटा-(हिं०पुं०) देखो चुडा।
चुंन्डिन-(हिं०वि०) चुंडी चोटी वाला चुंडी (हिं०स्त्री०) चुटिया।
चुंदरी-(हिं०स्त्री०) देखो चुनरी।
चुंदी-(हि०स्त्री०) दूतौ, शिखा, सिरके बीच की वालों की चुटिया,चुटैया।
चुंधलाना-चुंधियाना-(हिं०क्रि०) अधिक प्रकाश के कारण आंखों का चौंधाना, आंखोंका तिलमिलना।
चुंवक-(हिं०पु०) देखो चुंबक; चुंबन-(हिं० पु०) देखो चुम्बन; चुबना-(हिं०क्रि०) चूमना,स्पर्श करना, छूना।
चुंभना-(हिं०क्रि०) देखो चुभना।
चुअना-(हिं०क्रि०) चूना,रसकर बहना।
चुआई-(हिं० स्त्री०) चुआने या टपकाने का काम, चुआने का शुल्क।
चुआन-(हिं०स्त्री०)सोता,नहर,खाई,गड्ढा
चुआना-हिं०क्रि०) टपकाना, बूंद बूंद करके गिराना, चिकनाना, रसीला बनाना।
चुआव-(हिं० स्त्री०) चुआने की क्रिया या भाव।
चुकन्दर-(हि० पु०) शलजम के प्रकार की एक तरकारी।
चुकचुकाना-(हि०क्रि०) किसी द्रव पदार्थ का रसकर बाहर आना, पसीजना।
चुकचुहिया-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया, चूं चूं करने वाला वालकों का एक खिलौना।
चुकटा-(हिं०स्त्री०) चगुल, चुटकी।
चुकटी-(हिं०स्त्री०) देखो चुटकी।
चुकता-(हि० वि०) चुकाया हुआ, ऋण मुक्त किया हुआ।
चुकती-(हि०स्त्री०) देखो चुकता।
चुकना-(हि०क्रि०)समाप्त होना,निःशेष होना, बच न जाना, निबट जाना, भूल चूक करना, अवसर पर काम न करना,निष्फल होना,व्यर्थ होना।
चुकरी-(हिं०स्त्री०) रेवतचीनी।
चुकरैंड़-(हिं०पुं०) दुमुहा सर्प।
चुकवाना-(हिं०क्रि०) निवटवाना।
चुकाई-(हिं०स्त्री०) चुकता होने का भाव
चुकाना-(हिं०क्रि०) ऋण निःशेष करना, तय करना, निबटाना।
चुकिया-(हिं०स्त्री०) छोटा कुल्हड़ या पुरवा।
चुकौता--(हिं०पुं०) ऋणका परिशोध; चुकता लिखना-ऋण चुकता पाने की रसीद लिखना।
चुक्कड़-(हिं०पुं०) मिट्टीका छोटा पात्र, पुरवा।
चुक्कार-(हिं० पुं०) शेरकी चिग्घाड़, गरज।
चुक्की-(हिं०स्त्री०) छल, कपट,।
चुक्र-(सं० नपुं०) चूक नामकी खटाई, एक प्रकार का खट्टा शाक, अम्लवेंत, कांजी; चुक्रफल-इमली।
चुक्षा-(स०स्त्री०) हत्या, हिंसा।
चुखाना-(हिं०क्रि०) गाय दूहनेके पहिले बछवे को पिलाना, चखाना।
चुगना-(हिं० क्रि०) पक्षी का चोंच से दाना उठा कर खाना।
चुगलाना-(हिं०क्रि०) देखो चुभलाना।
चुगा-(हि० पु०) चिड़ियों के चुगने का चारा; चुगाई-(हिं० स्त्री०) चुगने की क्रिया; चुगाना-(हिं०क्रि०) चिड़ियों को दाना खिलाना।
चुगुल-(हिं०पुं०) देखो चुगल।
चुगुलखोर-(हिं०पु०) निन्दक।
चुगुलखोरी-(हिं०स्त्री०) निन्दा।

चुगुली-(हिं०स्त्री०) देखो चुगली।

चुग्घी-(हिं०स्त्री०) चखने को थोड़ी सी वस्तु, चाट।

चुचकारना-(हिं० क्रि०) चुमकारना, पुचकारना,प्यार करना,दुलार करना, प्रेम दिखलाना।

चुचकारी-(हिं० स्त्री०) चुमकारने की क्रिया या भाव।

चुग्राना-(हिं०क्रि०) बूंद बूंद करके टपकना, रसना, निचुड़ना, चूना।

चुचुग्राना-(हिं०क्रि०) देखो चुआना।

चुचुक-(सं०पुं०)स्तनका अग्रभाग याघुंडी

चुचुकना-(हिं० क्रि०) संकुचित होना, सूखकर सिकुड़ जाना।

चुच्चु-(सं०पु०) चौपतिया शाक।

चुटक-(हिं०पु०) एक प्रकारका गलीचा, कोड़ा, चाबुक।

चुटकना-(हिं०क्रि०) कोड़ें या चाबुक से मारना, चुटकी से तोड़ना, सॉप का काटना।

चुटकला-(हिं०पुं०) देखो चुटकुला।

चुटका-(हिं०पुं०) बड़ी चुटकी।

चुटकी-(हिं०स्त्री०) अंगूठे और बीच की अगुली के मिलने की स्थिति, अल्पमात्रा थोड़ासा; **चुटकी देना**-चुटकी बजाना; **चुटकी बजाना**-अनामिका और कानी अंगुली को बन्द करके बीचकी अंगुली पर अंगूठा छटका कर शब्द करना; **चुटकी बजाते बजाते** बातकी बातमें, बहुत थोड़े समयमें; **चुटकी बजाने वाला**-चापलूस. ; **चुटकीभर**-बहुत थोड़े परिमाण का; **चुटकी बैठना**-किसी काम करने का अभ्यास होना ; **चुटकियों में**-बहुत जल्द ; **चुटकियों पर उड़ाना**-तुच्छ समझना, **चुटकी मांगना** - भिक्षा मांगना; **चुटकीभरना**-चुटकी काटना, मर्मभेद्री बात कहना; **चुटकी लेना**-हँसी उड़ाना।

चुटकी-(हिं०स्त्री०) अंगुलियोंसे मोड़कर बनाया हुआ गोखरू,बन्दूकका घोड़ा, पैरकी अंगुलियों का गहना, कपड़ा छापने की एक विधि, कागज़ आदि को पकड़ने की काठ की चिमटी।

चुटकुला-(हिं०पुं०)कोई विलक्षण वार्ता, विनोदपूर्ण बात, अधिक गुण करने वाला विशिष्ट औषधि, **चुटकुला-छोड़ना**-विलक्षण बात कहना, कोई ऐसी बात कहना जिससे कोई नई स्थिति उपस्थित हो जावे।

चुटफुट-(हिं०स्त्री०) फुटकर वस्तु।

चुटला-(हिं०पु०)चोटी, जूरा,चोटी पर पहिरने का कोई गहना।

चुटाना-(हिं०क्रि०)चोटखाना,घायलहोना

चुटिया-(हिं० स्त्री०) सिर के बिचोबीच रक्खी जाने वाली बालों की लट, शिखा, चुन्दी; **किसीकी चुटिया हाथ में होना**-किसी का अपने अधिकार में होना। **चुटियाना,चुटीलना**-(हिं० क्रि०) चोट पहुँचाना, घायल करना, काटना, डसना।

चुटीला-(हिं० वि०) चोट खाया हुआ, (पुं०) पतली छोटी चोटी, (वि०) सबसे उत्तम, भड़कीला।

चुटुकी-(हिं०स्त्री०) देखो चुटकी।

चुटैल-(हिं०वि०)जिसको चोट लगी हो, आक्रमण करने वाला।

चुड़िया-(हिं०स्त्री०) देखो चूड़ी।

चुड़िहारा-(हिं०पुं०) चूड़ी बनाने और बेंचने वाला।

चुडुक्का-(हिं०पुं०) लाल की तरह एक छोटी चिड़िया।

चुड़ैल-(हिं०स्त्री०) प्रेतनी,भूतनी,डायन, पिशाचिनी, क्रूर स्वभाव की स्त्री, कुरूपा, भयंकर स्त्री।

चुड्ड-(हिं० स्त्री०) भग, योनि। **चुड्डो**-(हिं०स्त्री०) छिनाल, व्यभिचारिणी।

चुण्डा-(सं०पु०) कूप, कुवाँ।

चुण्डित-(सं० वि०) चुटिया वाला, चुण्डीवाला।

चुत-(हिं०पुं०) देखो च्युत।

चुत्थल-(हिं०वि०) ठिठोलिया, मसखरा।

चुदक्कड़-(हिं० वि०) अत्यन्त कामी, अधिक स्त्री प्रसंग करने वाला।

चुदना-(हिं० स्त्री०) स्त्री का पुरुष से संयुक्त होना।

चुदवाई-(हिं० स्त्री०) मैथुन करने या करानेके बदले दिया जानेवाला धन।

चुदवाना-(हिं० क्रि०) देखो चुदाना।

चुदवास-(हिं०स्त्री०)मैथुनकी कामना।

चुदवासी-(हिं०स्त्री०) मैथुन करानेकी इच्छा करने वाली स्त्री। **चुदवैया**-स्त्री प्रसंग करने वाला, कामुक।

चुदाई-(हिं०स्त्री०) स्त्री प्रसंग,मैथुन, मैथुन के बदले मिलने वाला धन।

चुदाना-(हिं०क्रि०)पुरुषसे प्रसंग कराना, मैथुन कराना। **चुदास**-(हिं० स्त्री०) स्त्री प्रसंग की कामना। **चुदासा**-(हिं० पुं०) स्त्री प्रसंग करने की कामना वाला मनुष्य।

चुन-(हिं०पुं०)आटा,चूर्ण,बुकनी,पिसान।

चुनचुना-(हिं०पु०)कसेराका एक अस्त्र, सफेद महीन कीड़े जो बच्चों के पेट में पड़ जाते हैं (वि०) जिसके स्पर्श से चुनचुनाहट उत्पन्न हो; **चुनचुना लगना**-बहुत बुरा लगना। **चुनचुनाना**-(हिं० क्रि०) चुभने के समान जलन और पीड़ा होना,चींचींकरना, बालकों का रोना। **चुनचुनाहट**-(हिं०स्त्री०) शरीर पर जलन लिये हुए चुभने की सी पीड़ा।

चुनट-(हिं०स्त्री०) चुनन, बल।

चुनन-(हिं० स्त्री०) कपड़े या कागज़ पर की सिकुड़न, शिकन। **चुननदार**-(हिं०वि०) जिसमें चुनन पड़ी है, जो चुना गया हो।

चुनना-(हिं०क्रि०) एक एक दाना करके उठाना, बीनना,छांट कर अलगाना, इच्छानुसार ढेरमें से कुछ लेना, क्रम में या सजा कर रखना, तह पर तह रखना,भीत उठाना,कपड़ेमें सिकुड़न डालना,चुटकीसे नोचकर अलगाना, **चुना हुआ**-उत्तम, श्रेष्ठ, **दीवार में चुनना**-जीता हुआ भीतमे गड़वा देना

चुनरी-(हिं०स्त्री०) रंगीन कपड़ा जिसके बीच बीच में सफेद बुन्दकियां हों, लाल रंग का नगीना, चुन्नी।

चुनवाँ-(हिं०वि०) चुना हुआ, बढिया।

चुनवाना-(हिं०क्रि) चुनने का काम दूसरे से कराना।

चुनाचुनी-(हिं०स्त्री०) इधर उधर की बात, बनावटी बात, इस तरह या उस तरह। **चुनाई**-(हिं०स्त्री०) चुनने की क्रिया, बिनने का काम, भीतकी जोड़ाई, चनने का शुल्क।

चुनाखा-(हिं०पुं०) परकाल, कम्पास।

चुनाना-(हिं० क्रि०) बिनाना, इकट्ठा करवाना, अलगवाना, छँटवाना,भीत में गड़वाना,भीतकी जोडाई करवाना, चुनन डलवाना।

चुनाव-(हिं० पुं०) चुनने या बिनने का काम, अनेक वस्तुओंमें से किसी एक को चुनने का काम। **चुनावट**-(हिं० स्त्री०) देखो चुनन।

चुनियाँ गोंद-(हिं०पु०) परास या ढाक की गोंद।

चुनियां चुनी-(हिं०स्त्री०) माणिक या अन्य रत्न का टुकड़ा; दाल आदिका पिसा हुआ चूर्ण; **चुनीभूसी**-मोटे अन्न, पिसा हुआ चूर्ण।

चुनैटी-(हिं०स्त्री०) देखो चुनौटी।

चुनौटिया-(हिं० पु०) एक प्रकार का खैरा रंग।

चुनौटी-(हिं०स्त्री०) पान पर लगाने या सुरती में मिलाने का चूना रखनेका छोटा पात्र।

चुनौती-(हिं० स्त्री०) उत्तेजना, बढ़ावा, ललकार, लड़ने के लिये पुकार।

चुन्नन-(हिं०स्त्री०) देखो चुनन।

चुन्ना-(हिं०पु०) देखो चूना।

चुन्नी-(हिं०स्त्री०) मानिक आदि रत्न का टुकड़ा,अन्नके छोटे टुकड़े, स्त्रियों की ओढ़नी, लकड़ी का बारीक चूर, कुनाई।

चुप-(हिं०वि०) मूक, मौन, अवाक्; **चुपचाप**-शान्त भाव से, बिना कुछ बोले हुए, गुप्त रूप से, **चुप लगना**-खामोश रहना, **चुप मारना**-मौन होना। **चुपका**(हिं०वि०) चुपकी,मौन, **चुपकेसे**-छिपकर, बिना कुछ कहे, गुप्त रूप से। **चुपकाना**-(हिं०क्रि०) मौन करना, बोलने न देना।

चुपकी-(हिं०स्त्री०) मौन, खामोशी।

चुपचाप-(हिं०वि०क्रि०) मौन रहकर, गुप्त रूप से।

चुपडना-(हिं०क्रि०) किसी गीली वस्तु को फैलाना, दोष छिपाना, शुश्रूषा की बातें कहना।

चुपड़ा-(हिं०वि०) जिसकी आखें कीचड़ से भरी हों।

चुपाना-(हिं०क्रि०) चुप हो रहना, न बोलना।

चुप्पा-(हिं०वि०) कम बोलने वाला,जो किसी बात का उत्तर जल्दी से न दे।

चुप्पी-(हिं०स्त्री०) मौन।

चुबलाना, चुभलाना-(हिं०क्रि०) स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को मुख में रखकर जीभ से इधर उधर डोलाना।

चुभकना-(हिं०क्रि०) पानी में डूबना उतराना, चुभचुभ करके गोते खाना

चुभकाना-(हिं०क्रि०) पानीमे गोते देना

चुभकी-(हिं०स्त्री०) डुबकी, गोता।

चुभना-(हिं०क्रि०) किसी नुकीली वस्तु का कोमल पदार्थ मे धुसना, गड़ना, धँसना, मन मे खटकना, चित्त पर प्रभाव डालना, (वि०) मग्न, लीन।

चुभुरचुभुर-(हिं०पु०) बच्चों के दूध पीने का शब्द।

चुभलाना-(हिं०क्रि०) देखो चुबलाना

चुभवाना-(हिं०क्रि०) चुभने का काम दूसरे से कराना।

चुभाना-(हिं०क्रि०) धँसाना, गड़ाना।

चुभीला-(हिं०वि०) चुभने वाला।

चुभोना-(हिं०क्रि०)देखो चुभाना,गड़ाना

चुमकार-(हिं०स्त्री०) चूमने के समान उच्चारित शब्द, पुचकार। **चुमकारना**-(हिं०क्रि०) प्रेम दिखलाने के निमित्त मुख से चूमने के समान शब्द निकालना, दुलार दिखलाना, पुचकारना।

चुमकारी-(हिं०स्त्री०) देखो चुमकार।

चुमवाना-(हिं०क्रि०) चूमने का काम दूसरे से कराना।

चुम्मक-(हिं०पुं०) देखो चुम्बक।

चुम्मा-(हिं०पु०) चुम्बन, बोसा।

चुम्बक-(सं०पुं०) कामुक, चुम्बन करने वाला, धूर्त मनुष्य, पुस्तकोंको उलट पलट करने वाला जो विषय को अच्छी तरह न समझता हो, घड़े के मुख का फन्दा जो पानी भरते समय इसमें बांधा जाता है; पत्थर या धातु का वह टुकड़ा जो लोहेको खींच कर पकड़ लेता है।

चुम्बन-(सं०पुं०) प्रेम में किसी के होठों से गाल इत्यादिको स्पर्श करने या दबानेकी क्रिया,चम्मा। **चुम्बित**-(सं०वि०) प्रेम किया हुआ,चूमा हुआ, स्पर्श किया हुआ। **चुम्बी**-(सं०वि०) चूमने वाला, स्पर्श करने वाला।

चुर-(हिं०पु०) शेर बाघ आदिकी मांद, चार पांच मनुष्यों के बैठनेका स्थान, (वि०) अधिक, बहुत।

चुरकना-(हिं०क्रि०) बोलना,चहचहाना, चें चें करना,चूर होना,टूटना,फटना।

चुरकी-(हिं०स्त्री०) चोटी, चुटिया,शिखा

चुरकुट, चुरकुस-(हिं०क्रि०वि०)कूर्णित, चूरचूर।

चुरचुरा-(हिं०वि०) थोड़े से दबाव में चुरचुर करके टूटने वाला। **चुरचुराना**-(हिं०क्रि०) चुरचुर शब्द करना

चुरट-(हिं॰स्त्री॰) देखो चुरुट ।

चुरना-(हिं॰क्रि॰) किसी वस्तु का पानी में खौलना, परस्पर गुप्त मन्त्रणा करना; (पुं॰) पेटमें उत्पन्न होनेवाले महीन कीड़े ।

चुरचुर-(हिं॰पुं॰) कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द । **चुरमुरा**-(हिं॰वि॰) चुरचुर शब्द करके सहज में टटने वाला, कुड़कीला । **चुरमुराना**-(हिं॰क्रि॰) चुरमुर शब्द करके टूटना या तोड़ना ।

चुरवाना-(हिं॰क्रि॰) पकाने का काम दूसरे से कराना; देखो चोरवाना ।

चुरस-(हिं॰स्त्री॰) वस्त्रादि की सिकुड़न ।

चुरा-(हिं॰पुं॰) देखो चूरा ।

चुराई-(हिं॰स्त्री॰) चुराने की क्रिया या भाव, पकने का काम । **चुराना**-(हिं॰क्रि॰) परोक्ष में किसी की वस्तु का अपहरण करना, चोरी करना, लोगों की दृष्टि से छिपाना, **चित्त चुराना**-मन को मोहित करना; **आँख चोराना**-सन्मुख मुंह न करना, (हिं॰क्रि॰) किसी द्रव्य पदार्थ को उबलने तक पकाना ।

चुरिहारा-(हिं॰ पु॰) देखो चुड़ीहारा

चुरी-(हिं॰स्त्री॰) देखो चूड़ी ।

चुरू-(हिं॰ पुं॰) चुल्लू ।

चुल-(हिं॰स्त्री॰) खुजलाहट, कामोद्वेग, **चुल उठना**-खुजली होना; काम का वेग होना; **चुल मिटना**-कामोद्वेग का तृप्त होना ।

चुलचुलाना-(हिं॰क्रि॰) खुजलाहट होना **चुलमलाहट चुलबुली**-(हिं॰ स्त्री॰) खुजलाहट, चुल ।

चुलबुल-(हिं॰स्त्री॰) चंचलता, चपलता । **चुलबुला**-(हिं॰वि॰) चपल, चचल, नटखट । **चुलबुलाना**-(हिं॰क्रि॰) रह रह कर हिलना डोलना, चंचल होना, चपलता करना । **चुलबुलापन**-(हिं॰पुं॰) चंचलता, चपलता । **चुलबुलाहट**-(हिं॰स्त्री॰) देखो चुलबुलापन । **चुलबुलिया**-(हिं॰वि॰) देखो चुलबुला ।

चुलाव-(हिं॰पु॰) विना मांस का पुलाव ।

चुलियाला-एक मात्रिक छन्द ।

चुलुक-(हिं॰पुं॰) बड़ा दलदल, गहरा, काचड़, चुल्लू, एक प्रकार का नापने का पात्र ।

चुलूक-(हिं॰पुं॰) चुल्लू ।

चुलकी-(सं॰स्त्री॰) सूस नामक जलजन्तु

चुल्ला-(हिं॰वि॰) दुष्ट, नटखट, पाजी ।

चुल्ली-(सं॰स्त्री॰) चूल्हा, (वि॰) नटखट ।

चुल्लू-(हिं॰पुं॰) एक हाथ की हथेली का गड्ढा; **चुल्लू भर पानी में डूब मरो**-लज्जा वश प्राण निकाल दो; **चुल्लू में उल्लू होना**-थोड़ी-सी भांग पीकर बेसुध हो जाना; **चुल्लुओं रोना**-अधिक अश्रुपात करना; · ·

चुल्हौना-(हिं॰पुं॰) देखो चूल्हा ।

चुवना-(हिं॰क्रि॰) चूना, रसकर बहना ।

चुवा-(हिं॰पुं॰) मज्जा, हड्डी के भीतर का रस, भेजा । **चुवाना**-(हिं॰क्रि॰) बूंदबूंद करके गिराना, टपकाना, थोड़ा थोड़ा करके गिराना ।

चुसकी-(हिं॰स्त्री॰) चषक, मद्य पीने का पात्र, ओंठ से किसी वस्तु के पीने की क्रिया, घूंट । **चुसना**-(हिं॰क्रि॰) चूसा जाना, चिचोरा जाना, निचोड़ा जाना, निगल जाना, शक्ति हीन होना, निर्धन होना । **चुसनी**-(हिं॰स्त्री॰) बच्चों को चूसने का खिलौना ।

चुसवाना-(हिं॰क्रि॰) चूसने का काम दूसरे से कराना । **चुसाई**-(हिं॰स्त्री॰) चूसने की क्रिया या भाव । **चुसाना**-(हिं॰क्रि॰) चूसने का काम कराना, चूसने देना । **चुसौअल, चुसौवल**-(हिं॰स्त्री॰) चूसने की क्रिया ।

चुहँटी-(हिं॰स्त्री॰) चुटकी ।

चुहचाहट-(हिं॰स्त्री॰) चिड़ियों का कलकल शब्द ।

चुहचुहा, चुहचुहाता-(हिं॰वि॰) चुहचुहाता हुआ चटकीला, तेज़ रंग का, रसीला । **चुहचुहाना**-(हिं॰क्रि॰) चटकीला जान पड़ना, रस टपकना, चिड़ियोंका बोलना, कलरव करना ।

चुहचुही-(हिं॰स्त्री॰) एक चमकीले रंग की फूलों पर बैठने वाली बहुत छोटी चिड़िया ।

चुहटना-(हिं॰क्रि॰) पैरों से कुचलना, रौंदना ।

चुहड़ा-(हिं॰ पुं॰) श्वपच, डोम, चाण्डाल, भंगी ।

चुहना-(हिं॰क्रि॰) दांतों से दबाकर रस चूसना ।

चुहल-(हिं॰स्त्री॰) हँसी ठट्ठा, ठिठोली, विनोद । **चुहलपन**-(हिं॰पुं॰) ठिठोलियापन ।

चुहिया-(हिं॰स्त्री॰) मादा चूहा, छोटा चूहा

चुहिल-(हिं॰वि॰) रमणीक ।

चुहिली-(हिं॰स्त्री॰) चिकनी सुपारी ।

चुहुकना-(हिं॰क्रि॰) चूसना ।

चुहुटना-(हिं॰क्रि॰) चिपकना ।

चुहुटना-(हिं॰स्त्री॰) घुमची ।

चूं-(हिं॰पुं॰) छोटी चिड़िया का बोलने का शब्द ।

चूंकरना-कुछ कहना ।

चुंच-(हिं॰स्त्री॰) चोंच ।

चूंचरा-(हिं॰पुं॰) विरोध, बहाना ।

चूंची-(हिं॰स्त्री॰) देखो चूची, चूचुक ।

चूंचूं-(हिं॰पुं॰) चिड़ियों के बोलने का शब्द

चूंदरी-(हिं॰स्त्री॰) देखो चुनरी ।

चूंनी-(हिं॰स्त्री॰) अन्न का कण ।

चूऊ-(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार महीन ऊनी वस्त्र ।

चूक-(हिं॰ स्त्री॰) भूल, दरार, फटन, कपट, छल, धोखा, एक प्रकार का खट्टा साग, खट्टे फलको गाढ़ा करके बनाया हुआ एक अत्यन्त खट्टा पदार्थ; (वि॰) अत्यन्त खट्टा । **चूकना**-(हिं॰क्रि॰) अशुद्धि करना, भूल करना अवसर चूक जाना ।

चूका-(हिं॰पु॰) एक प्रकार का खट्टा शाक ।

चूची-(हिं॰स्त्री॰) चूचुक, कुच के ऊपर की घुंडी, स्तन, स्त्री की छाती; **चूची, पीता**-बहुत छोटा माँ का दूध पीनेवाला बच्चा, नादान; **चूची पीना**-स्तनपान करना; **चूची मलना**-स्त्री का स्तन मर्दन करना । **चूचुक**-(सं॰पुं॰) देखो चूची ।

चूड़, चूड़क-(सं॰ पुं॰) शिखा, चोटी, माथे पर की कलँगी, खम्भे या घर का ऊपरी भाग, कंकण ।

चूड़ान्त-(सं॰वि॰) पराकाष्ठा, अन्तिम सीमा ।

चूड़ा-(सं॰स्त्री॰) शिखा, चोटी, चुरकी, मोर या मुरगे के सिरपर की कलगी, कुवां, घुमची, बांह के पहिरने का एक गहना, प्रधान नायक, हाथ में पहिरने का हाथीदांत का कड़ा । **चूड़ाकरण**-(सं॰ पुं॰) बालक का पहिली बार शिर मुण्डन करने का संस्कार । **चूड़ाकर्म**-(सं॰) देखो चूड़ाकरण ।

चूड़ामणि-(सं॰पुं॰) सिरमें पहिरने का एक आभूषण, शीशफूल, अग्रगण्य, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, गुञ्जा, घुमची ।

चूड़ाम्ल-(सं॰पुं॰) इमली का फल ।

चूड़ाला-(सं॰ स्त्री॰) सफ़ेद घुमची, नागरमोथा ।

चूड़िया-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का धारीदार वस्त्र ।

चूड़ी-(हिं॰स्त्री॰) कोई वृत्ताकार पदार्थ, हाथ में पहिरने का कोई गहना, रेशम स्वच्छ करने का एक अस्त्र; **चूड़ियां ठंढी करना**-पति के मरनेपर स्त्रीका चूड़ियां तोड़ना या उतारना; **चूड़ियां पहिरना**-स्त्री का वेष धारण करना । **चूड़ीदार** (हिं॰ वि॰) जिसमें चूड़ी के घेरे पड़े हों ।

चूत-(सं॰पुं॰) आम का वृक्ष; (हिं॰स्त्री॰) भग, योनि । **चूतक**-(सं॰ पुं॰) आम्र का वृक्ष ।

चूतड़, चूतर-(हिं॰पुं॰) कमर के नीचे तथा जांघ के ऊपर का मांसल भाग, नितम्ब; **चूतड़ दिखाना**-पीठ दिखाना, कठिन समय पर भाग जाना; **चूतड़ पीटना**-बहुत प्रसन्न होना ।

चूतिया-(हिं॰वि॰) मूर्ख, फूहड़ । **चूतियापंथी**-मूर्खता ।

चून-(हिं॰पुं॰) चूर्ण, आंटा, पिसान, एक प्रकार का थूहड़ ।

चूनर, चूनरी-(हिं॰स्त्री॰) देखो चुनरी ।

चूना-(हिं॰पुं॰) पत्थर, ककड़ आदि को फूंककर बनाया हुआ तीक्ष्ण भस्म, किसी वस्तु का ऊपर से नीचे अचानक गिरना, छिद्र से रसकर बहना; (वि॰) छिद्र द्वारा टपकने वाला; **चूना फेरना**-पानी में चूना घोलकर भीत पर पोतना; **चूना लगाना**-धोखादेना, लजाना, हानि पहुँचाना; (क्रि॰) बूंदबूंद करके टपकना ।

चूनादानी-(हिं॰स्त्री॰) चुनौटी, चूना रखने की डिबिया ।

चूनी-(हिं॰स्त्री॰) अन्न का कण या छोटा टुकड़ा, माणिक रत्न का छोटा टुकड़ा, चुन्नी ।

चूपड़ी-(हिं॰वि॰) चुपड़ी हुई ।

चूमना-(हिं॰क्रि॰) ओंठों से शरीर के किसी अंग को या किसी पदार्थ को दबाना का स्पर्श करना, **चूमकर छोड़ देना**-किसी कार्य को आरंभ करके बिना समाप्त किये छोड़ना ।

चूमा-(हिं॰पुं॰) चुम्बन, चुम्मा । **चूमा चाटी**-(हिं॰पु॰) प्रेम से चूमने की क्रिया ।

चूर-(हिं॰पु॰) किसी पदार्थ छोटे छोटे टुकड़े, महीन कण, चूर्ण, (वि॰) निमग्न, लीन, उत्मत्त; **चूर करना**-किसी पदार्थ के छोटे छोटे टुकड़े करना, चूर्ण करना ।

चूरण, चूरन-(हिं॰पु॰) चूर्ण, चूरन । महीन पिसी हुई औषधि ।

चूरना-(हिं॰क्रि॰) चूर चूर करना, तोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना, चूर्ण करना ।

चूरमा-(हिं॰पुं॰) एक पक्वान जो रोटी वा पूरी को चूर चूर करके घी में भून कर चीनी मिलाकर बनाई जाती है ।

चूरा-(हिं॰पुं॰) किसी वस्तु का पीसा हुआ भाग, बुरादा । **चूरामणि**-(हिं॰स्त्री॰) देखो चूड़ामणि ।

चूरी-(हिं॰स्त्री॰) चूरा, चूरमा, चूड़ी ।

चूरू-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार की चरस ।

चूर्ण-(सं॰पुं॰) महीन पिसा हुआ पदार्थ बुकनी, धूल, कौड़ी, अबीर, चूना (वि॰) तोड़ा फोड़ा हुआ, पीसा हुआ । **चूर्णक**-(सं॰पुं॰) सत्तू, सतुआ, छोटे छोटे शब्दों से बना हुआ गद्य, एक प्रकार का वृक्ष । **चूर्णकार**-(सं॰पुं॰) चूर्ण करने वाला, आटा बेचने वाला **चूर्णकुन्तल**-(सं॰पुं॰) अलक, लूट । **चूर्णखण्ड**-(सं॰पुं॰) कंकड़ ।

चूर्णा-(सं॰स्त्री॰) आर्या छन्द का एक भेद ।

चूर्णि-(सं॰स्त्री॰) कपर्दक, कौड़ी ।

चूर्णिका-(सं॰स्त्री॰) सत्तू, सतुआ; देखो चूर्णक । **चूर्णित**-(सं॰वि॰) चूर्ण किया हुआ ।

चूर्मा-(हिं॰पु॰) देखो चूरमा ।

चूल-(सं॰पुं॰) चोटी, शिखा (हिं॰स्त्री॰) लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी छेद में पहिराया या ठोंका जाता है अथवा जिसपर कोई पदार्थ घूमता है; **चूलें ढीली होना**-अधिक परिश्रम से थक जाना ।

चूलक-(सं॰पुं॰) हाथ की कनपटी, खंभे का ऊपरी भाग ।

चूलदान-(हिं॰पुं॰) पाकशाला, रसोईयांघर

चूलिक-(सं॰पुं॰) पूरी, लूची ।

चूलिका-(सं०स्त्री०) नाटक का वह अंग जिसमें किसी घटना के होने की सूचना नेपथ्य से दी जाती है ।

चूल्हा-(हिं०पुं०) मिट्टी का अथवा लोहे का बना हुआ वह पात्र जिसमें आंच रख कर पकाने का काम होता है, **चूल्हा जलाना**-भोजन पकाने का प्रबन्ध करना, **चूल्हा फूंकना**-भोजन बनाना; **चूल्हे मे जाना**-नष्ट भ्रष्ट होना; **चूल्हे में डालना**-नाश करना ।

चूषण-(सं०पुं०) चूसने की क्रिया ।

चूषणीय-(सं०वि०) चूसने योग्य ।

चूषना-(हिं०क्रि०) दूध पीना,

चूषा-(सं०स्त्री०) हाथी की कमर में बांधने की पेटी ।

चूष्य-(सं०वि०) चूसने योग्य ।

चूसना-(हिं०क्रि०) ओंठ और जीभ को मिला कर किसी पदार्थ का रस खींचना, किसी वस्तु का सार भाग लेना ।

चूहड़, चूहड़ा-(हिं०पुं०) श्वपच, भंगी, मेहतर ।

चूहरी-(हिं०स्त्री०) चूड़ी बेंचने या पहिराने वाली स्त्री, चुड़िहारिन ।

चूहा-(हिं०पुं०) मूषक, मूसा । **चूहा-दन्ती**-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पहिरने की एक प्रकार की पहुँची (वि०) चूहे के दांत के आकार का । **चूहा-दान, चूहेदानी**-(हिं०पुं०) चूहों को फंसाने का पिंजड़ा।

चें-(हिं०स्त्री०) पक्षी के बोलने का शब्द **चेंचें करना**-वृथा की बकवाद करना

चेंगड़ा-(हिं०पुं० छोटा बालक, बच्चा ।

चेंगी-(हिं०स्त्री०)चमड़े की गोल छेद की हुई चकती जो गाड़ी के धूरे पर पहिराई रहती है ।

चेंच-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बरसाती शाक, पटुआ की एक जाति

चेंचर-(हिं०वि०) बकवाद करने वाला ।

चेंचआ-(हिं०पुं०)चातक पक्षी का बच्चा

चेंचला-(हिं०पुं०)एक प्रकार का पक्वान्न।

चेंचे-(हिं०स्त्री०) चिड़ियों के बोलने का शब्द ।

चेंटुआ-(हिं०पुं०) पक्षिशावक, चिड़िया का बच्चा ।

चेंपें-(हिं०स्त्री०)चेंचपड़, व्यर्थकीबकवाद

चेफ़-(हिं०पुं०) ऊख का छिलका ।

चेउरी-(हिं०पुं०) कुम्हार का चाक पर के गढ़े हुए पात्र को काटने का डोरा

चेकितान-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।

चेजा-(हिं०पुं०) छिद्र, छेद ।

चेट, चेटक-(सं०पुं०) सेवक, दास, पति, नायक नायिका को मिलाने वाला पुरुष, भड़ुआ, विदूषक, भाड़, दूत, जल्दी, चसका, इन्द्रजाल, जादू का खेल ।

चेटका-(हिं०स्त्री०)चिता, श्मशान, मरघट

चेटकी-(सं०पुं०) इन्द्रजाली, जादूगर, कौतुकी ।

चेटिका, चेटिकी-(हिं०स्त्री०) दासी, नौकरानी ।

चेटिया-(हिं०पुं०) शिष्य, चेला,

चेटी-(सं०स्त्री०) दासी, लौंडी ।

चेटुवा-(हिं०पुं०) चिड़िये का बच्चा ।

चेड़क-(हिं०पुं०) देखो चेटक ।

चेत्-(सं०अव्य०) कदाचित्, यदि,

चेत-(हिं०पुं०) चित्तवृत्ति,चेतना,ज्ञान, बोध, सावधानी, स्मरण, सुध, चौकसी, चित्त ।

चेतकी-(सं०स्त्री०) हरीतकी,छोटी हर्रे, चमेली का पौधा, एक रागिणी का नाम ।

चेतन-(सं०पुं०) जीव, आत्मा, मनुष्य, प्राणी, जीवधारी, मनुष्य ।

चेतनकी-(सं०स्त्री०) हरितकी, हर्रे ।

चेतनता, चेतनत्व-(सं०स्त्री०) (सं०नपुं०) चैतन्य, सज्ञानता ।

चेतना-(सं० स्त्री०) मनोवृत्ति, बुद्धि, स्मृति, स्मरण, सुध, संज्ञा, चेतनता (हिं०क्रि०) समझना, विचारना ।

चेतनीय-(सं०वि०) जानने योग्य ।

चेतन्य-(हिं०पुं०) देखो चैतन्य ।

चेतवनि-(हिं० स्त्री०) देखो चेतवनि, चितवन ।

चेतव्य-(सं०वि०) इकट्ठा करने योग्य ।

चेतावनी-(हिं०स्त्री०) सावधान होने की सूचना ।

चेतिका-(हिं०स्त्री०) श्मशान, चिता ।

चेतात्मजा-(सं०पुं०) कामदेव ।

चेतौनी-(हिं०स्त्री०) देखो चेतावनी ।

चेत्य-(सं०वि०)ज्ञातव्य, जानने योग्य ।

चेदि-(सं०पुं०) एक प्राचीन देश का नाम, इस देश का राजा- इस देश का निवासी, **चेदिराज**-शिशुपाल नामक राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ।

चेना-(हिं०पुं०) सांवा की जाति का एक अन्न ।

चेप-(हिं० पुं०) कोई गाढा चिपचिपा रस, चिड़ियो को फँसाने का लासा, उत्साह । **चेपदार**-(हिं०वि०) लसदार, चिपचिपा, **चेपना**-(हिं०क्रि०) सटाना, चिपकाना ।

चेय-(सं०वि०) सग्रह करने योग्य ।

चेर-(हिं०पुं०) दास, सेवक ।

चेरना-(हिं०पुं०)एक प्रकारकी नकाशी करने की छेनी ।

चेरा-(हिं०पुं०) नौकर, दास, चेला, विद्यार्थी । **चेराई**-(हिं०स्त्री०) दासत्व, नौकरी, सेवा ।

चेरायता-(हिं०पुं०) देखो चिरायता ।

चेरि, चेरी-(हिं०स्त्री०)दासी, नौकरनी ।

चेरु-(सं०वि०) संग्रह करने वाला ।

चेरुई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का मिट्टी का बड़ा घड़ा ।

चेल-(सं०पुं०) वस्त्र, कपड़ा ।

चेलकाई-(हिं०स्त्री०) शिष्यवर्ग, चेलों का समूह ।

चेलहाई-(हिं०स्त्री०) देखो चेलकाई ।

चेला-(हिं०पुं०) वह जिसने कोई दीक्षा ली हो अथवा कोई धार्मिक उपदेश अपने गुरु से ग्रहण किया हो, शिष्य, छात्र, विद्यार्थी; **चेला मूड़ना**-शिष्य बनाना ।

चेलान-(सं०पुं०) तरबूज की लता ।

चेलिका-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।

चेलिकाई-(हिं०स्त्री०) देखो चेलहाई ।

चेलिन, चेली-(हिं०स्त्री०)शिष्या, स्त्रीछात्र

चेलुक-(सं०पुं०) एक प्रकार का बौद्ध भिक्षुक ।

चेल्हवा-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की छोटी मछली ।

चेवा-(हिं०स्त्री०)एक रागिणी का नाम ।

चेष्टक-(सं०पुं०) चेष्टा करने वाला ।

चेष्टा-(सं०स्त्री०)शरीर की वह स्थिति जिससे चित्त का भाव प्रगट होता है, इच्छा, कामना, कार्य, प्रयत्न, उद्योग, परिश्रम; **चेष्टा नाश**-सृष्टि का अन्त, प्रलय ।

चेहरई-(हिं०) हलका गुलाबी रंग ।

चेंटी-(हिं०स्त्री०) चींठी, चिउंटी ।

चै-(हिं०पुं०) चय, समूह, ढेर ।

चैत-(हिं०पुं०) चैत्र, हिन्दूओं के वर्ष का पहिला महीना, एक चान्द्रमास जिसकी पूर्णिमा में चित्रा नक्षत्र पड़ता है ।

चैतन्य-(सं०पुं०) चित् स्वरूप आत्मा, ज्ञान (वि०) सचेत, सावधान ।

चैता-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी ।

चैती-(हिं०स्त्री०) चैत में कटनेवाली अन्न, रब्बी, चैत्र मास में गाने का एक चलता गाना; (वि०) चैत्र संबधी

चैत्त-(सं०वि०) चित्त का ।

चैत्य-(सं० पुं०) मन्दिर, देवालय, यज्ञशाला, बुद्ध की मूर्ति, पीपल का वृक्ष, बौद्ध भिक्षुक, बौद्ध सन्यासियों का मठ, विहार, चिता (वि०) चिता सम्बन्धी ।

चैत्यक, चैत्यतरु-(सं० पुं०) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष ।

चैत्यपाल-(सं०पुं०)प्रधान अधिकारी ।

चैत्यमुख-(सं०पुं०) कमण्डलु ।

चैत्यवन्दन-(सं०पुं०) जैनियों या बौद्धों का मन्दिर । **चैत्यविहार**-(सं०पुं०) बौद्धों का मठ । **चैत्यवृक्ष**-(सं०पुं०) देखो चैत्यतरु । **चैत्यस्थान**-(सं०पुं०) वह मन्दिर जिसमें बुद्धदेव की मूर्ति स्थापित हो ।

चैत्र-(सं०पुं०) चैत का महीना, संवत् का पहिला महीना, बौद्धभिक्षुक, यज्ञभूमि, देवालय, मन्दिर, चैत्य । **चैत्रक**-(सं०पुं०) चैत्र मास, चैत का महीना; **चैत्रगौड़ी**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी; **चैत्ररथ**-(सं०पुं०) कुबेर के बगीचे का नाम । **चैत्र-सखा**-(सं०पुं०) मदन, कामदेव ।

चैत्रावली-(सं०स्त्री०) चैत्रमास की पूर्णिमा ।

चैत्री-(सं०स्त्री०)चित्रा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा

चैदिक-(सं०वि०) चेदि देश संबंधी ।

चैन-(हिं०पुं०) आनन्द, सुख; **चैन उड़ाना**-आनन्द करना; **चैन से कटना**-आनन्द पूर्वक समय बीतना ।

चैपला-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पक्षी

चैयाँ-(हिं०स्त्री०) बाहु ।

चैल-(सं०पुं०) वस्त्र, कपड़ा, पहिरावा

चैला-(हिं०पुं०) कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का टुकड़ा जो जलाने के काम में आता है ।

चैलिक-(सं०पुं०) कपड़े का टुकड़ा ।

चैली-(हिं०स्त्री०) चीरी हुई लकड़ी का छोटा चैला ।

चोंक-(हिं०स्त्री०) चुम्बन में गाल पर पड़ा हुआ दांत का चिह्न ।

चोंकर-(हिं०पुं०) देखो चोकर ।

चोंगा-(हिं०पुं०) बांस क़ागद आदि की एक ओर बन्द तथा दूसरी ओर खुली हुई पोली नली । **चोंगी**-(हिं०स्त्री०) भाथी में की हवा निकलने की नली ।

चोंधना-(हिं०क्रि०) देखो चुगना ।

चोंच-(हिं०स्त्री०) पक्षी के मुख का नोकीला अगला भाग, चञ्चु, तुण्ड, ठोर, मुंह; **दो दो चोंचें होना**-कहा सुनी या झगड़ा होना ।

चोंचला-(हिं०पुं०) देखो चोचला ।

चोंटना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, खोंटना,

चोंड़ा-(हिं०पुं०) स्त्रियों के सिर के वाल, झोंटा; खेत के पास खोदा हुआ कच्चा छोटा कुवाँ, सिर, मस्तक, माथा ।

चोंथ-(हिं०पुं०) गाय भैंस आदि का उतना गोबर जितना एक बार गिरे

चोंथना-(हिं०क्रि०) नोचना, चोथना ।

चोंधर चोंधरा-(हिं०वि०) बहुत छोटी आंख वाला, मूर्ख ।

चोआ-(हिं०पुं०) एक सुगन्धित द्रव पदार्थ जो चन्दन और देवदार के बुरादे तथा मरसे के फूलों को मिला कर और गरम करके टपकाने से बनता है, तौलने में किसी बाँट की कमी पूरी करने लिये जो कंकड़ पत्थर का टुकडा प्रयोग किया जाता है ।

चोई-(हिं०स्त्री०) दाल का छिलका जो उबालते समय इसमें से अलग होता है

चोक-(सं०पुं०) भड़भाड़ की जड़ जो औषधियों में प्रयोग होती है ।

चोकर-(हिं०पुं०) पीसे हुए अन्न की भूसी या छिलका जो आंटे के चालने पर निकलता है ।

चोका-(हिं०पुं०) चूसने की क्रिया ।

चोक्ष-(सं०वि०) शुद्ध, पवित्र, तीक्ष्ण, प्रशंसनीय ।

चोख-(हिं०स्त्री०) वेग, फुरती,

चोखना-(हिं०क्रि०) चूसना, **चूस कर पीना** (पुं०) चहा, मूसा ।

चोखा-(हिं०पुं०) शुद्ध, बिना मिलावट का, उत्तम, सच्चा, पैनी धार का, चतुर, श्रेष्ठ; बैगन, अरुई आदि

का भुरता, चावल। **चोखाई-**(हिं॰स्त्री॰) चुसाई, चोखापन।

चोगर-(हिं॰पुं॰) उल्लू के समान आँख वाला घोड़ा।

चोच-(सं॰पुं॰) छाल, वल्कल, केला, नारियल।

चोचलहाई-(हिं॰वि॰) चोचला करने वाली

चोचला-(हिं॰पु॰) अपने प्रिय को मोहित करने के लिये अंगों की गति या चेष्टा, हावभाव।

चोज-(हिं॰पुं॰) दूसरों को हँसाने वाली वार्ता, हँसी ठट्ठा, व्यङ्ग पूर्ण उपहास, सुभाषित।

चोट-(हिं॰स्त्री॰) प्रहार, आघात, टक्कर, मार, घाव, आघात का प्रभाव, आक्रमण, मानसिक व्यथा, शोक, सन्ताप, दुःख, व्यंग-पूर्ण विवाद, ताना, धोखा; **चोट खाना-**प्रहार सहन करना; **चोट उभड़ना-**चोट मे फिर से पीड़ा होना; **चोट खाली जाना-**आक्रमण वृथा होना; **चोट बसाना-**चोट न लगने देना; **चोटइल-**(वि॰) चुटैल, चोट खाया हुआ; **चोटहा-**(वि॰) जिसके अंग पर आघात का चिह्न हो।

चोटा-(हिं॰पुं॰) राब का पसेव जो कपड़े में छानने पर इसमें से निकलता है, सीरा।

चोटाना-(हिं॰क्रि॰) चोट खाना।

चोटार-(हिं॰वि॰) चोट पहुँचाने वाला, चुटैल।

चोटारना-(हिं॰क्रि॰) चोट करना।

चोटिया-(हिं॰स्त्री॰) चोटी।

चोटियाना-(हिं॰क्रि॰) चोट मारना, बल प्रयोग करना, चोटी पकड़ना।

चोटी-(हिं॰स्त्री॰) शिखा, चुन्दी, स्त्रियों के एक में एक गुथे हुए बाल, चोटी में बांधने का डोरा, जूड़े में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण, पक्षियों के सिर पर की कलंगी, शिखर, उठा हुआ ऊपर का भाग; **चोटी हाथ में होना-**वश में होना; **चोटी करना-**बालों को गूथकर चोटी बनाना; **चोटी का-**सर्व श्रेष्ठ; **चोटीदार-**(वि॰) जिसके चोटी हो, चोटी वाला; **चोटीपोटी-**(स्त्री॰) झूठी बात, प्रशंसा, से भरी हुई बात, बनावटी बात; **चोटी वाला-**(पु॰) पिशाच, प्रेत।

चोट्टा-(हिं॰पुं॰) तस्कर, चोरी करनेवाला

चोड़-(सं॰पुं॰) उत्तरीय वस्त्र, उपरना

चोड़क-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का पहिरने का वस्त्र।

चोड़ी-(सं॰स्त्री॰) स्त्रियों की पहिरने की साड़ी।

चोथ-(हिं॰पुं॰) देखो चोंथ।

चोद-(सं॰पुं॰) चाबुक, नुकीले सिरे की छड़ी। **चोदक-**(सं॰वि॰) प्रेरणा करने वाला, उसकाने वाला।

चोदक्कड़-(हिं॰पु॰) अधिक स्त्री प्रसंग करने वाला! **चोदना-**(सं॰स्त्री॰) विधि वाक्य; प्रेरणा, (हिं॰क्रि॰) स्त्री प्रसंगकरना। **चोदाई-**(हिं॰स्त्री॰) स्त्री के साथ संभोग, मैथुन **चोदास-**(हिं॰स्त्री॰) मैथुन की इच्छा, कामेच्छा **चोदासा-**(हिं॰वि॰) संभोग की अधिक इच्छा वाला।

चोद्य-(सं॰वि॰) प्रेरणा करने योग्य, (पु॰) छोटा प्रश्न।

चोप-(हिं॰पु॰) इच्छा, चाह, उमंग, उत्साह, उत्तेजना, बढ़ावा, वह चिपचिपा रस जो कच्चे आम की ढपनो तोड़ने पर निकलता है।

चोपदार-(हिं॰पुं॰) देखो चोबदार।

चोपना-(हिं॰क्रि॰) मोहित होना, मुग्ध होना।

चोपी-(हिं॰स्त्री॰) देखो चोप; (वि॰) इच्छा करने वाला, उत्साही।

चोबचीनी-(हिं॰स्त्री॰) एक लता की जड़ जो औषधि के काम में आती है

चोभाना-(हिं॰क्रि॰) देखो चुभाना।

चोभा-(हिं॰पु॰) वह पोटली जिसमें दवा बांध कर शरीर के कोई अंग सेके जाते हैं; **चोभा देना-**इस पोटली से सेकना

चोया-(हिं॰पु॰) देखो चोआ।

चोर-(सं॰पुं॰) छिपकर पराये की वस्तु हरण करने वाला, तस्कर, घाव आदि का दूषित विकार जो शरीर में रह जाता है, अनिष्टकारक पदार्थ, छिपाया हुआ पदार्थ, चोरक नामक गन्ध द्रव्य; **चोर पड़ना-**चोर का आकर कुछ चुरा ले जाना; **चोर पर मोर पड़ना-**धूर्त के साथ धूर्तता करना; **मन में चोर पैठना-**मन में कोई खटका उत्पन्न होना; **काम चोर-**काम करने में आलस्य करने वाला; **चोर उड़द-**(हिं॰पुं॰) उड़द का कड़ा दाना जो कंकड़ के समान होता है।

चोरक-(सं॰पुं॰) एक प्रकार का गन्ध द्रव्य।

चोरकट-(हिं॰पुं॰) चोर, उचक्का।

चोरखाना-(हिं॰पुं॰) सन्दूक आदि में लगा हुआ गुप्त स्थान या घर। **चोर खिड़की-**(हिं॰स्त्री॰) छोटा गुप्तद्वार; **चोर गली-**(हिं॰स्त्री॰) वह पतली गली जिसमें से बहुत कम लोग चलते हैं, पायजामे का वह भाग जो जांघों के बीच में रहता है। **चोर चकार-**(हिं॰पुं॰) चोर, उचक्का। **चोरछिद्र-**(सं॰पुं॰) गुप्त छिद्र, सन्धि, दरज। **चोर जमीन-**(हिं॰स्त्री॰) वह भूमि जो ऊपर से ठस जान पड़े पर नीचे से पोली हो।

चोरटा-(हिं॰पुं॰) देखो चोट्टा।

चोरताला-(हिं॰पुं॰) वह ताला जिसका पता सबको न लग सके, अथवा जो गुप्त विधिसे खुल सके।

चोरथन-(हिं॰पुं॰) गाय या भैंस का वह थन जिसमें वह दूध चुरा लेती हो। **चोरदन्त-**(सं॰पुं॰) वह दाँत जो बत्तीस दाँत के अतिरिक्त निकलता है। **चोर दरवाजा-**(हिं॰पुं॰) गुप्तद्वार

चोरना-(हिं॰क्रि॰) चोराना। **चोर पहरा-**(हिं॰पुं॰) गुप्तरूप से बैठाया हुआ पहरा। **चोरपुष्प, चोरपुष्पी-**(सं॰) अंधाहुली, शंखाहुली नामक पौधा। **चोरपेट-**(हिं॰पुं॰) किसी वस्तु के मध्य का गुप्त स्थान।

चोरबदन-(हिं॰पु॰) वह बलवान पुरुष जो देखने में दुर्बल तथा बलहीन देख पड़े। **चोर महल-**(हिं॰पु॰) वह बड़ा घर जिसमें राजा या रईस रखनी या प्रेमिका को रखते हैं। **चोर मिहीँचिनी-**(हिं॰स्त्री॰) आँख मिचौली का खेल।

चोर रस्ता-(हिं॰पुं॰) देखो चोरगली।

चोर स्नायु-(सं॰पु॰) कौवाठोंठी।

चोर हटिया-(हिं॰पु॰) वह दुकानदार जो चोरों से माल मोल लेता हो।

चोरा चोरी-(हिं॰क्रि॰वि॰) छिपे छिपे, चुपके से।

चोराना-(हिं॰क्रि॰) देखो चुराना।

चोरिका-(सं॰स्त्री॰) चुराने का काम, चोरी।

चोरी-(हिं॰स्त्री॰) चुराने का काम, चुराने का भाव; **चोरी चोरी-**गुप्त-रूप से; **चोरी लगना-**चोरी करने का दोष आरोपण होना; **चोरी लगाना-**चोरी करने का दोष आरोपित करना।

चोल-(सं॰ पुं॰) एक प्राचीन देश का नाम जो भारत के दक्षिण में है, इस देश का निवासी, अँगिया, चोली, वल्कल, कवच।

चोलकी-(हिं॰पुं॰) नारंगी का वृक्ष, हाथ की कलाई।

चोलना-(हिं॰ पु॰) देखो चोला।

चोलरंग-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का लाल पक्का रंग।

चोल सुपारी-हिं॰स्त्री॰) चिकनी सुपारी

चोला-(हिं॰पु॰) साधु का पहिरने का ढीला लंबा कुरता, बच्चों को नवीन वस्त्र पहिराने की रीति।

चोली-(हिं॰ स्त्री॰) स्त्रियों की एक प्रकार की अँगिया; **चोली दामन का साथ-**अधिक घनिष्ठता।

चोली मार्ग-(सं॰पुं॰) वाममार्ग का एक भेद।

चोल्ला-(हिं॰पुं॰) देखो चोला।

चोवा-(हिं॰ पुं॰) देखा चोआ।

चोषक-(सं॰ वि॰) चूसने वाला।

चोषण-(सं॰पु॰) चूसने की क्रिया, चूसना।

चोषना(हिं॰क्रि॰) चूसना, दूध पीना।

चोष्य-(सं॰वि॰) चूसने योग्य, चूसने लायक।

चोसा-(हिं॰पुं॰) लकड़ी रेतने की रेती।

चोस्क-(सं॰ पुं॰) उत्तम जाति का घोड़ा।

चोहान-(हिं॰पुं॰) देखो चौहान।

चौवालिस-(हिं॰) देखो चौवालिस।

चौंक-(हिं॰स्त्री॰) आश्चर्य, पीड़ा या भय के कारण शरीर का झटके से हिल उठना तथा जी घबड़ाना; भड़क, झिझक। **चौंकना-**(हिं॰क्रि॰) आश्चर्य, भय, पीड़ा आदि के कारण शरीर कँप जाना, भड़कना, झिझकना; चकित होना, भौचक्का होना, विस्मित होना, हैरान होना, हिचिकना, चौकन्ना होना, सचेत होना, खबरदार होना; **चौंकाना-**(हिं॰क्रि॰) एकाएक भय उत्पन्न करके कँपा देना, भड़काना, जी धड़काना; सतर्क करना, चौकन्ना करना, आश्चर्य में डालना, विस्मित करना

चौंचा-(हिं॰पु॰) सिचाई के लिये पानी भरा हुआ गड्ढा जिसमें से पानी ऊपर चढ़ाया जाता है। **चौंतरा-**(हिं॰पु॰)- देखो चबूतरा।

चौंटना-(हिं॰पुं॰) चुटकी से तोड़ना।

चौंडोल-(हिं॰पु॰) पर्देदार डोली।

चौंतिस-(हिं॰वि॰) तीस और चार की संख्या ३४; **चौंतिसवाँ-**तेंतीस संख्या के बाद का।

चौंध-(हिं॰स्त्री॰) अधिक प्रकाश या चमक के कारण दृष्टि की अस्थिरता, तिलमिलाहट; **चौंधना-**चमकना। **चौंधियाना-**(हिं॰क्रि॰) अधिक प्रकाश या चमक के कारण दृष्टि स्थिर न कर सकना, दृष्टि मन्द होना। **चौंधी-**(हिं॰स्त्री॰) देखो चकचौंध।

चौं-(हिं॰पुं॰) देखो चोपा।

चौम्बक-(सं॰वि॰) चुम्बक की शक्ति का आकर्षण करनेवाला, जिसमें चुम्बक मिला हो।

चौंर-(हिं॰पु॰) चँवर, झालर, फुन्दना।

चौंरगाय-(हिं॰स्त्री॰) सुरागाय।

चौंरा-(हिं॰पुं॰) अन्न रखने का गड्ढा, गाड़

चौंराना-(हिं॰क्रि॰) चँवर डोलाना, झाड़ू देना, बुहारना।

चौंरी-(हिं॰स्त्री॰) मक्खी हांकने का छड़ी में बंधा हुआ घोड़े के पूंछ के बालों का गुच्छा, वह डोरी जिससे स्त्रियां सिर के बाल गूंथ कर बांधती हैं, सफेद पूंछ की गाय।

चौंसठ-(हिं॰वि॰) साठ और चार की संख्या ६४। **चौंसठवां-**(हिं॰ वि॰) संख्या में तिरसठ के बाद का।

चौंह-(हिं॰पुं॰) गलफड़ा।

चौंही-(हिं॰स्त्री॰) हल की एक लकड़ी जिसको परिहारी भी कहते हैं।

चौ-(हिं॰वि॰) चार (पुं॰) जौहरियों की मोती तौलने का एक परिमाण।

चौआ-(हिं॰पुं॰) चौपाया; (पुं॰) चार अंगुल की नाप, ताशका वह पत्ता जिसमें चार बूटियां हों: **चौआई-**(हिं॰स्त्री॰) देखो चौवाई। **चौआना-**(हिं॰क्रि॰) चकित होना, भौंचक्का होना, विस्मित होना, चकपकाना,

व्यग्र होना, घबड़ाना।

चौक-(हिं०पुं०) चौकोर भूमि, घर के बीच का चौखूटा स्थान जिसके ऊपर छाजन हो, मांगलिक अवसर पर अबीर आंटे इत्यादि से बनाया हुआ चित्र जिसके ऊपर देवता का स्थापन तथा पूजन होता है, नगर का चौड़ा मैदान जहा बड़ी बड़ी दूकानें हो, चौरहा, चौमुहानी, चौसर खेलने का कपड़ा, सामनेके चार दांतों की पंक्ति, **चौक पूरना**-समतल भूमि पर आटे आदि से चौकोर चित्र बनाना।

चौकठ, चौकठा-(हिं०) देखो चौखटा।

चौकड़-(हिं०वि०) उत्तम, बढ़िया, अच्छा

चौकड़ा-(हिं०पुं०) कानमेंपहिरनेकीबाली जिसमें दो मोती रहते हैं, उपज की बंटाई जिसमें स्वामी को चौथा भाग मिलता है।

चौकड़ी-(हिं०स्त्री०) हरिन की वह गति जिसमेंवह चारो पैर एक साथ फेंकता हुआ दौड़ता है, फलांग, उड़ान, चार मनुष्यों की गुट्ट, पलथी. चार युगों का समूह, एक प्रकार का आभूषण चार चार रस्सियों को इकट्ठा करके चारपाई बीनने की रीति, चार घोड़े की गाड़ी; **चौकड़ीभूल जाना**-बुद्धि काम में न आना, सब उपाय तरकीब भूल जाना; **चण्डाल चौकड़ी**-उपद्रवी मनुष्यों का समूह।

चौकन्ना-(हिं०वि०) सावधान, सजग, सुचेत, चौकस, चौंका हुआ।

चौकरी-(हिं०स्त्री०) देखो चौकड़ी।

चौकल-(सं०पुं०) चार मात्राओं का समूह।

चकस-(हिं०वि०) सावधान, सचेत, चौकन्ना, ठीक। **चौकसाई, चौकसी**-(हिं०स्त्री०) सावधानी।

चौका-(हिं०पुं०) पत्थर का चौकोर टुकड़ा, रोटी बेलने का काठ या पत्थर का गोल टुकड़ा, चकला, सामने के चार दांतोंकी पंक्ति, सिर पर पहिरने का एक आभूषण, सीसफल, चौकोर ईंट, हिन्दुओं के रसोई बनाने का स्थान, स्वच्छता के लिये मिट्टी गोबर का लेप, एक प्रकार का जंगली बकरा, एक साथ मिले हुए चार पदार्थ, चार बूटियों का ताश का पत्ता, एक प्रकार का ठस बिनाहुआ वस्त्र; **चौका बरतन करना**-रसोई-घर को लीपने पोतने तथा जूठे पात्रों को मांजने का काम। **चौका चोलना या लगाना**-चौपट करना, नष्ट करना, **चौकिया सोहागा**-(हिं०पु०) छोटे छोटे टुकड़ों वाला स्वच्छ किया हुआ सोहागा जो ओषधियों में प्रयोग होता है।

चौकी-(हिं०स्त्री०) काठ या पत्थर का चार पावे लगा हुआ आसन, कुरसी खंभे के ऊपर या नीचे का चौकोर भाग, पड़ाव का स्थान, अड्डा, सराय, पुलीस का छोटा थाना जहां थोड़ेसे सिपाही रहते हैं, सिपाहियों की नियुक्ति जो रक्षा के लिये की जाती है, पहरा, देवता को भेंट जो उनको चढ़ाई जाती है, जादू टोना, गले में पहिरने का एक आभूषण, पटरी, रोटी बेलने का चकला, भेंड़ों का रात में किसी खेत में रखना; **चौकी देना**-किसी के बैठने के लिये कुरसी रखना; **चौकी देना**-रखवाली करना पहरा देना; **चौकी बैठना**-रक्षा के निमित्त पहरेदारों का नियुक्त होना।

चौकीदार-(हिं०पु०) पहरा देनेवाला, गोड़ैत। **चौकीदारी**-(हिं०स्त्री०) पहरा देने का काम, रखवाली, चौकीदार का पद, वह धन जो चौकीदार रखने के लिये दिया जावे।

चौकोन, चौकोना, चौकोर-(हिं०वि०) चतुष्कोण, चौखूटा।

चौखंड-(हिं०वि०) चार खंड का, चार आंगन या चौक का।

चौखट-(हिं०स्त्री०) चार लकड़ियों से बना हुआ ढांचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे होते हैं, देहली; **चौखट लांघना**-घर के भीतर जाना या बाहर आना। **चौखटा**-(हिं० पुं०) देखो छौखट। **चौखना**-(हिं० वि०) चार खंड का। **चौखा**-(हिं० पु०) (हिं०पुं०) वह स्थान जहां चार गांवों की सीमा मिलती है।

चौखानि-(हिं०स्त्री०) चार प्रकार के जीव यथा अण्डज, पिण्डज, स्वेदज और उद्भिज।

चौखूंट-(हिं०पुं०)चारो दिशा, भूमण्डल।

चौखूंटा-(हिं०वि०) चौकोर, चौखूटा; चौकोना।

चौगड़ा-(हिं० पु०) देखो चौघड; शशक, खरहा।

चौगड्डा-(हिं०पु०) देखो चौखा।

चौगड्डी-(हिं०स्त्री०) पशुओं को फंसाने का बास की फट्टियों का बना हुआ ढांचा।

चौगुन-(हिं०वि०) चौगुना, चतुर्गुण।

चौगुना चौगून-(हिं० वि०) चतुर्गुण; **लन चौगुना होना**-उत्साह बढना, चित्त अति प्रसन्न होना।

चौगोड़ा-(हिं०वि०) चार पैर वाला (पुं०) शशक खरहा।

चौगोडिया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की चार पावे की ऊची चौकी जिस पर चढने के लिये सीढ़ियां लगी होती हैं, टिकठी, बहिलये का बांस की फट्टियों का बना हुआ चिड़ियों को फंसाने का ढांचा।

चौगोशा-(हिं०पु०) मिठाई आदि भेजने की चौखूंटी थाली।

चौघड़-(हिं०पुं०) दाढ़ का वह चौडा दांत जो चिपटा होता है और जिससे आहार को चबाने और कूंचने का काम लिया जाता है।

चौघड़ा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का चार खाने का डिब्बा, जिसमें मसाला आदि रक्खा जाता है, लवंग इलायची सुपाडी आदि रखने का चांदीका चार खानें का डिब्बा, पत्ता जिसमें चार बिड़े पान लपेट कर रक्खे होते है।

चौघड़ी-(हिं० वि०) चार तह या परत वाली।

चौघर-(हिं०वि०) घोडे की एक चाल, चौफाल।

चौघरा-(हिं०पुं०) देखो चौघड़ा (वि०) चार खाने का।

चौघोड़ी-(हिं०स्त्री०) चार घोडे की गाडी या रथ।

चौचंद-(हिं० पु०) निन्दा की चर्चा, अपवाद **चौंचंद पारना**-अपवादकरना।

चौचंदहाई-(हिं० वि०) अपवाद फैलाने वाली।

चौजुगी-(हिं०स्त्री०) चार युगों का काल

चौड़-(हिं०पु०) चौल संस्कार, मुण्डन।

चौड़ा-(हिं०वि०) लंबाई से भिन्न दिशा मे विस्तृत, (पु०) अन्न रखनेका गड्ढा।

चौड़ाई, चौड़ान-(हिं०स्त्री०) लंबाई से भिन्न दिशा का फैलाव। **चौड़ाना**-(हिं० क्रि०) चौड़ा करना, फैलाना।

चौड़ाव-(हिं०पुं०) देखो चौड़ान।

चौडाल-(हिं०पुं०) देखो चंडोल।

चौतग्गी-(हिं०वि०) चार तागा मिलाया हुआ डोरा।

चौतनियां-(हिं०स्त्री०) बच्चों की टोपी जिसमें चार बंद लगे होते हैं, अंगिया, चोली।

चौतनी-(हिं०स्त्री०) देखो चौतनियां।

चौतरका-(हिं०पुं०)एक प्रकार का तम्बू।

चौतरा-(हिं०पुं०) देखो चबूतरा।

चौतही-(हिं०स्त्री०) चार तह करके बिछाने की मोटी चांदनी।

चौतारा-(हिं०पु०) एक बाजा जिसमें चार तार लगे होते है।

चौताल-(हिं०पु०) मृदंग का एक ताल होली में गाने की एक प्रकारकी गीत।

चौताला-(हिं०वि०) चार ताल वाला।

चौताली-(हिं०स्त्री०) कपास की बोड़ी जिसमें से रूई निकलती है।

चौथ-(हिं०स्त्री०) महीने के प्रत्येक पक्ष का चौथा दिन, चतुर्थांश, चौथाई भाग. मराठों का लगाया हुआ एक कर जिसमें आय का चौथाई अंश राजा को मिलता था; **चौथका चांद** भादों सुदी चौथ का चन्द्रमा जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि जो उसको देखता है उसको झूठा कलंक लगता है; (वि०) चौथा। **चौथपन**-(हिं०पुं०)मनुष्य के जीवन की चौथी अवस्था, वृद्धावस्था, बुढ़ापा। **चौथा**-(हिं०वि०) क्रममें तीसरेके बादका।

चौथाई चौथिआई-(हिं०पु०) चतुर्थांश, चौथा भाग।

चौथिया-(हिं०पुं०) चौथे दिन आने वाला ज्वर, (वि०)चौथाई का हकदार

चौथी-(हिं०स्त्री०) विवाह के चौथे दिन होने वाली एक रीति जिसमें वर और कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते है।

चौथैया-(हिं०पुं०) चतुर्थांश, चौथाभाग।

चौदंता-(हिं०वि०) चार दात वाला, उग्र, उद्दण्ड।

चौदंती-(हिं०स्त्री०) धृष्टता, उद्दण्डता।

चौदस-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि।

चौदह-(हिं०वि०) जो गिनती में दस और चार हो। **चौदहवां**-(हिं०वि०) क्रममें तेरह के बादका।

चौदांत-(हिं०पुं०)दो हाथियों की लड़ाई।

चौदानी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कान में पहिरने की बाली।

चौधराई-(हिं०स्त्री०) चौधरी का काम या पद। **चौधराना**-(हिं०स्त्री०) वह धन जो चौधरी को उसके काम के लिये दिया जाय।

चौधरी-(हिं०पुं०)किसी जाति या समाज का मुखिया।

चौना-(हिं०पुं०) कुवें के जगत पर की ढाल, लिलारी। **चौप** (हिं० पु०) देखो चोप।

चौपई-(हिं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे पंद्रह मात्रा होती हैं

चौपरवा-(हिं०पुं०) चहारदीवारी।

चौपग-(हिं०पुं०) चार पैरका प्राणी, चौपागा।

चौपट-(हिं०वि०) चारो ओर से खुला हुआ, नष्ट भ्रष्ट, विध्वंस; **चौपट चरण**-वह व्यक्ति जिसके पहुँचते ही सर्वनाश हो।

चौपटहा-(हिं०वि०) नष्ट करने वाला, सर्वनाशी।

चौपटा-(हिं०वि०) देखो चौपटहा।

चौपड़-(हिं०स्त्री०) चौसर का खेल।

चौपत-(हिं०स्त्री०) कपड़े की तह, वह पत्थर का टुकड़ा जिसमें कील जड़ी होती है जिसपर कुम्हार का चाक घूमता है।

चौपतना-(हिं०क्रि०)कपड़ेकीतहलगाना।

चौपतिया-(हिं०स्त्री०)एकप्रकार का साग

चौपथ-(हिं०पु०) चौरा, चौमुहानी।

चौपद-(हिं०पुं०) चौपाया, पशु।

चौपर-(हिं०स्त्री०) देखो चौपड़।

चौपरतना-(हिं०क्रि०) कपड़े की तह लगाना।

चौपल-(हिं०पुं०) देखो चौपत।

चौपहरा-(हिं०वि०) चार पहर का।

चौपहल-(हिं०वि०) जिसमें चार पहल हों वर्गात्मक। **चौपहला, चौपहलू**-(हिं०वि०) वर्गात्मक, चार पहल का।

चौपहिया-(हिं०वि०) जिसमें चार पहिये हों (स्त्री०) चार पहिये की गाड़ी।

चौपहलू-(हिं०वि०) देखो चौपहला।

चौपाई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्रा होती हैं, चारपाई, खटिया।

चौपाया-(हिं०पुं०) चार पैर वाला

पशु, गाय, बैल, भैंस आदि पशु ।
चौपाल-(हिं०पुं०) बैठने उठने का स्थान जो ऊपर से ढपा तथा चारो ओर से खुला हो, दालान, एक प्रकार की खुली पालकी ।
चौपुरा-(हिं०पुं०) वह बड़ा कूवाँ जिसपर चार मोट एक साथ चलसकें ।
चौपैया--(हिं०पुं०) देखो चौपाई ।
चौफला-(हिं०वि०) जिसमें चार फल या धार हों ।
चौफेर-(हिं०क्रि०, वि०) चारो ओर, **चौफेरी**-(हिं०स्त्री०) चारो ओर घमना, परिक्रमा ।
चौबन्दी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिरजई, राजस्व, कर, घोड़े की चारो सूम की नालबन्दी ।
चौबंसा-(हिं०पु०) एक प्रकार का वर्णवृत्त ।
चौबगला-(हिं०पु०) कुरता, फतुही इत्यादि में बगल के नीचे तथा कली के ऊपर का भाग, (वि०) चारो ओर का; **चौबगली**-(हिं०स्त्री०) बगलबन्दी ।
चौबच्चा-(हिं०पु०) देखो चहबच्चा ।
चौबरदी-(हिं०स्त्री०)चार बैलों की गाड़ी
चौबरसी-(हिं० स्त्री०) वह श्राद्ध या उत्सव जो घटना से चार वर्ष बाद किया जावे ।
चौबरा-(हिं० पुं०) कृषिफल की वह बँटाई जिसमें भूस्वामी को चतुर्थांश मिलता है ।
चौबाइन-(हिं०स्त्री०) चौबे की स्त्री ।
चौबाई-(हिं०स्त्री०) चारो ओर बहने वाली हवा, किंवदन्ती ।
चौबारा-(हिं०पुं०) घर के ऊपर की वह कोठरी जिसमें चारो ओर खिड़-किया हों, खुली बैठक वाला खाना (क्रि०वि०) चौथी बार ।
चौबिस, चौबीस-(हिं०वि०) बीस और चारकी संख्या का, यह संख्या २४ । **चौबीसवाँ**-(हिं०वि०) संख्या में तेईस के बाद का ।
चौबे-(हिं०पु०)ब्राह्मणों की एक शाखा, चतुर्वेदी, मथुरा के पंडे इस नाम से पुकारे जाते है ।
चौबोल-(हिं० पुं०) एक प्रकार का मात्रिक छन्द ।
चौभड़-(हिं०पु०) देखो चौघड़ ।
चौमंजिला-(हिं०वि०) चार खण्ड का (घर) ।
चौमसिया-(हिं० वि०) वर्षा ऋतु के चार महीने में होने वाला (पुं०) चार माशे की बाँट ।
चौमहला-(हिं०वि०) देखो चौमंजिला ।
चौमार्ग-(हिं०पु०)चौरस्ता, चौमुहानी ।
चौमासा-(हिं०पु०) चातुर्मास, वर्षा के चार महीने, वर्षाऋतु के संबंध की कविता । **चौमासी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बरसाती गाना ।
चौमुख-(हिं०क्रि०वि०) चारो ओर ।
चौमखा-(हिं०वि०) चारो ओर मुख वाला; **चौमुखा दिया जलाना**-दीवाला निकालना ।
चौमुहानी-(हिं०स्त्री०)चतुष्पथ, चौरहा, चौरस्ता ।
चौमेड़ा-(हिं०पु०) चार सीमा मिलने का स्थान ।
चौरंग-(हिं०पु०) तलवार चलाने का एक हाथ, तलवार से कई टुकड़े किया हुआ ।
चौरंगा-(हिं०वि०)जिसमें चार रंग हों, चार रंग का । **चौरंगिया**-(हिं०पु०) मालखम्भ की एक व्यायाम ।
चौर-(सं० पु०) दूसरे की वस्तुचोराने वाला, चोर, तस्कर, चौरपुष्पी, एक गन्ध द्रव्य ।
चौरस-(हिं० वि०) जो ऊँचा नीचा न हो, समतल, बराबर; वर्णात्मक, चौपहल, एक प्रकार का वर्णवृत्त, ठठेरे का पात्र चिकनाने का अस्त्र ।
चौरसा-(हिं०पुं०) चार रुपये भर का बाँट । **चौरसाई**-(हिं०स्त्री०) समतल होने की अवस्था । **चौरसाना**-(हिं० क्रि०)समतल करना, बराबर करना ।
चौरसी-(हिं०स्त्री०) चौरस करने का अस्त्र । **चरस्ता**-(हिं० पुं०) चौरहा, चौमुहानी । **चौरहा**-(हिं०पुं०) चतुष्पथ
चौरा-(हिं०पुं०)चबूतरा, वेदी, चौपाल, चौबारा, बाड़ा, अरवा, सफेद पोंछ का बैल ।
चौराई-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का शाक चौलाई ।
चौरानवे-(हिं०वि०) नब्बे और चार की संख्या का ९४ ।
चौरासी-(हिं०वि०) अस्सी और चार की संख्या ८४, एक प्रकार का घुंघुरू, एक प्रकार की रुखानी, लक्ष योनि; **चौरासी में पड़ना**-अनक बार शरीर धारण करना ।
चौराहा-(हिं०पुं०) देखो चौराहा ।
चौरी-(हिं०स्त्री०) छोटा चबूतरा या वेदी, चोरी ।
चौरेठा-(हिं०पुं०) पानी के साथ पीसा हुआ चावल ।
चौर्य-(सं०पुं०) स्तेय, चोरी ।
चौलकर्म-(हिं०वि०)चूड़ा संस्कार, मुण्डन
चौलड़ा-(हिं०वि०) जिस माला में चार लड़ी हों ।
चौलाई-(हिं०स्त्री०)एक प्रकारका शाक ।
चौली-(हिं०पुं०) बोड़ा ।
चौवन-(हिं०वि०)पचास और चार की संख्या का ५४ ।
चौवा-(हिं०पु०) हाथ की चार अंगुलियों का समूह, चार अंगुलियों में लपेटा हुआ तागा, चार अंगुल की नाप, ताश का पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों, चौपाया ।
चौवालीस-(हिं० वि०) चालिस और चार की संख्या ४४ ।
चौसई-(हिं०स्त्री०) हाथ का बुना मोटा कपड़ा ।
चौसर-(हिं०पु०) एक खेल जो बिसात पर चार रंग की चार चार गोटियाँ से दो मनुष्यों में खेला जाता है, चौपड़ इस खेल की बिसात, चार लड़ों का हार ।
चौहट, चौहट्ट-(हिं० पुं०) वह स्थान जहां चारो ओर दूकाने हों, चौक, चौरस्ता, चौमुहानी ।
चौहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और चार की संख्या ७४ ।
चौहद्दी-(हिं०स्त्री०)चारो ओर की सीमा ।
चौहरा-(हिं०वि०) चार तह या परत का, चौगुना; (पुं०) चौघड़ा ।
चौहान-क्षत्रियोंकी एक प्रसिद्ध शाखा ।
चौहैं-(हिं०क्रि०वि०) चारो ओर,
च्यवन-(सं०पुं०)टपकना, चूना, रसना, झरना, एक ऋषि का नाम; **च्यवन-प्रास**-आयुर्वेद का एक प्रसिद्ध अव-लेह जो शरीर को पुष्ट करता है ।
च्युत-(सं०वि०)गिरा हुआ, चुवा हुआ, भ्रष्ट, पतित, पराङमुख, अपने स्थान से हटा हुआ ।
च्युति-(सं०स्त्री०)पतन, स्खलन, झड़ना, गिरना, स्थान से हटना, चूक, अभाव, गुदद्वार, भग ।
च्योना-(हिं०पुं०) घरिया ।

छ

छ-हिन्दी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसका उच्चारण तालु से होता है; (सं०पु०) आच्छा-दन, घर, खण्ड, टुकड़ा (वि०) स्वच्छ, तरल, निर्मल, (हिं०वि०)पांच से एक अधिक संख्या का, गिनती में पांच से एक अधिक, जोतिषमें ७ की संख्या
छंग-(हिं०पुं०) उत्संग, गोद, अंक ।
छंगा-(हिं०वि०) छ अंगुलियों वाला, जिसके एक पंजे में छ अंगुलियां हों ।
छगुनिया-(हिं०वि०) छगुनी ।
छंछौरी-(हिं०स्त्री०) छांछ से बनाया हुआ एक पक्वान्न ।
छंटना-(हिं०क्रि०) कटकर अलग होना, समूह से अलग होना, अलग होना, छितराना, साथ छोड़ना, चुनकर अलग किया जाना, मैल निकलना, दुर्बल होना; **छंटे छंटे फिरना**-दूर दूर रहना, कुछ संबंध न रखना; **छंटा हुआ**-धूर्त, चतुर ।
छंटवाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का अनावश्यक भाग कटवा देना, कट-वाना, चुनवाना, छिलवाना । **छंटाई**-(हिं०स्त्री०) छाँटने या अलग करने का काम, चनने का काम, **छंटाना**-(हिं०क्रि०) देखो छंटवाना । **छंटाव**-(हिं०पुं०) छांटन, छांटने का काम ।
छंडना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना, छांटना, वमन, कय करना ।
छंडरना-(हिं०क्रि०)छेद का फैल जाना ।
छंड़ाना-(हिं०क्रि०)छीनना,छुड़ालेजाना
छंड़ुआ-(हिं०वि०) छोड़ा हुआ, मुक्त, (पु०) देवता को समर्पण करके छोड़ा हुआ पशु, व्याज ।
छंद-(हिं०पु०) युक्ति, चाल, रंगढंग, अभिप्राय, ढकना, एकान्त विष, स्त्रियों का हाथ मे पहिरने का एक आभूषण; **छलछंद**-कपट छल, छंदक, कपट
छंदना-(हिं०क्रि०)पैरों में रस्सी लगाकर बांधा जाना ।
छंदछन्द-(हिं०पु०) छलकपट, धोखा ।
छंदी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के हाथ में पहिरने का एक अभूषण ।
छई-(हिं०स्त्री०) देखो क्षयी ।
छक-(हिं०स्त्री०) तृप्ति
छकड़ा-(हिं०पु०) बोझ लादने की दुपहिया गाड़ी, (वि०) टूटाफूटा हुआ, जिसका ढांचा ढीला हो गया हो ।
छकड़िया-(हिं०स्त्री०) छ कहारों से उठाने की पालकी ।
छकड़ी-(हिं०स्त्री०) छ का समूह,जिसके छ अवयव हों, देखो छकड़िया ।
छकना-(हिं०क्रि०)खापीकर तृप्त होना उन्मत्त होना, चकराना,
छकाछक-(हिं०वि०)परिपूर्ण, भरा हुआ, अघाया हुआ, तृप्त, उन्मत्त ।
छकाना-(हिं०क्रि०) खिला पिलाकर तृप्त करना, उन्मत्त करना,अचंभे मे डालना, कष्ट देना परास्त करना; **छकीला**-(हिं०वि०) छका हुआ,
छकुर-(हिं०पुं०) कृषिफल की बटाई जिसमे भूस्वामी छठा भाग पाता है।
छक्का-(हिं०पु०) छका समूह, पासे का दांव जिसमे छ बिन्दियां ऊपर पड़ें, जुए का दांव जिसमें छ कौड़ियां चित्त पड़ें,वह ताश जिसमें छ बूटियां हों, सुधबुध, चेतना; **छक्का पंजा**-दाव-पेंच; **छक्का पंजा भूलना**-बुद्धि काम न करना, चाल न चलना; **छक्के छूटना**-साहस छूटना ।
छग-(सं०पु०) छाग, बकरा ।
छगड़ा-(हिं०स्त्री०) छाग, बकरा ।
छगण-(सं०पु०) सूखा गोबर, कंडा ।
छगन-(हिं०पु०) छोटा बालक, प्रिय बालक; **छगन मगन**-हसने खेलने वाले प्यारे बच्चे ।
छगरी-(हिं०स्त्री०) छोटी बकरी ।
छगल-(सं०पु०) छाग, बकरा ।
छगुनी-(हिं०स्त्री०) हाथ की सबसे छोटी अँगुली ।
छछिआ, छछिया-(हिं०स्त्री०)छाछ पीने का छोटा पात्र, छाछ, मट्ठा, तक्र ।
छछुंदर, छछूंदर-(हिं०पु०) चूहे की जाति का जन्तु जिसका थूथन अधिक नुकीला होता है, एक एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा, **छछूंदर छोड़ना**-हलचल मचाने की बात कहना
छजना-(हिं०क्रि०) शोभा देना, अच्छा लगना, सजना, उचित जान पड़ना,

ठीक जंचना । छजाना-बनाना

छज्जा-(हिं०पुं०) छाजन या छत का बाहर निकला हुआ भाग, ओलती, भीत के बाहर निकला हुआ भाग, द्वार के ऊपर की पत्थर की पटिया जो बाहर की ओर निकली रहती है, टोपीके किनारेका निकला हुआ भाग

छटंकी-(हिं०स्त्री०) एक छटांक का बटखरा, बहुत छोटी वस्तु।

छटक-(हिं०पु०)रुद्रताल का एक भेद।

छटकना-(हिं०स्त्री०)वेग के साथ निकल जाना, सिटकना,अलग अलग रहना, दांव में से निकल जाना, हाथ न आना, उछलना, कूदना।

छटका-(हिं०पुं०)मछली फँसानेकागड्ढा **छटकाना**-(हिं०क्रि०) छटकने देना, बन्धनसे छुड़ाना,बलपूर्वक अलगकरना

छटपट--(हिं०पुं०)-पीड़ा या बन्धन के कारण पैर फटकने का क्रिया, (वि०) चंचल, चपल। **छटपटाना**-(हि०क्रि०) तड़फड़ाना, व्याकुल होना, घबड़ाना, बेचैन होना, उत्कंठित होना।

छटपटी-(हिं०स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट, तीव्र उत्कंठा।

छटांक-(हिं०स्त्री०) एक सेर का सोलहवां भाग; **छटांक भर**-पावभर का चौथाई, बहुत थोड़ा सा।

छटा-(सं०स्त्री०) प्रकाश, प्रभा, छलक, शोभा, सौन्दर्य, छबि, बिजली। **छटाफल**-(स०नपु०) ताड़का वृक्ष। **छटाभा**-(सं०स्त्री०)बिजली की चमक।

छटैल-(हिं०वि०) छटा हुआ, चतुर, चालाक।

छट्ठ, छट्ठी-देखो छठ, छठी।

छठ-(हिं०स्त्री०) पक्ष की छठवीं तिथी।

छठई, छठवां, छठां-(हिं० वि०) क्रम में पाँच वस्तु के बाद का; **छठे छमासे**-कभी कभी, बहुत दिनों बाद।

छठी-(हिं०स्त्री०) जन्म से छठे दिन अथवा छठें मास का पूजन, षष्ठी देवी का पूजन; **छठी का दूध पड़ना**-बड़ी हैरानी में पड़ना; **छठी का राजा**-जन्म का अमीर।

छड़-(हिं०स्त्री०) धातु या लकड़ी का लंबा पतला टकड़ा या गज।

छड़ना-(हिं०क्रि०) अन्न की भूसी अलगाने के लिये ओखली में रख कर मूसल से कूटना।

छड़ा-(हिं०पु०) स्त्रियों की पैर में पहिरने की चूड़ी, (वि०) अकेला।

छड़िया-(हि०पुं०) दरवान, द्वारपाल, डेवढ़ीदार।

छड़ियाल-(हिं०पुं०)एकप्रकार का बरछा

छड़ी-(हि०स्त्री०)पतली लकड़ी या लाठी पैजामे आदि की सीधी टंकाई,झंडी, (वि०) अकेली; **छड़ी सवारी**-अकेला, बिना सामग्री के यात्रा। **छड़ीदार**-(हिं०वि०) छड़ी लिये हुए, लकीरदार सीधी लकीर का, (पु०) द्वारपाल, दरवान; **छड़ी बरदार**-(हिं०पुं०) चोबदार।

छड़ीला-(हिं०पुं०) देखो छरीला।

छण-(हिं०पु०) देखो क्षण।

छत-(स०स्त्री०) चूना कंकड़ आदि डालकर बनाई हुई घर की भूमि, पाटन, घर में का खुला हुआ कोठा, घाव, जख्म, (क्रि०वि०) रहते हुए, होते हुए छतगीरी;चंदवा **छतपाटना**-चूना आदि पीटकर छत बनाना; **छत बंधना**-बादलों का घेर जाना।

छतना-(हिं०पु०)पत्तोंका बना हुआ छाता **छतनार**-(हिं०वि०) छाते की तरह फैला हुआ।

छतवंत-(हि०वि०) क्षतयुक्त।

छतरी-(हि०स्त्री०) छाता,पत्तों का बना हुआ छाता; मण्डप, राजाओं की चिता अथवा साधुओं की समाधि के ऊपर बना हुआ मण्डप, कबूतरों पर बैठनेका टट्टर जो बांस पर बंधा रहता है, टट्टर, इक्के के ऊपर की छाजन, कुकुरमुत्ता।

छतलोट-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का व्यायाम।

छात-(हि०पु०) आतपत्र, छाता।

छतिया-(हिं०स्त्री०) वक्षःस्थल, छाती।

छतियाना-(हिं०क्रि०) छाती के पास के पास ले जाना, बन्दूक तानना।

छतिवन-(हिं०पुं०) सप्तपर्णी नाम का बड़ा वृक्ष।

छतीसा-(हिं०वि०) चतुर, सयाना धूर्त, **छतीसापन**-धूर्तता, चालाकी।

छत्तौना-(हिं०पुं०) छाता, छत्रक।

छत्तर-(हिं०पु०) देखो छत्र, देखो सत्र।

छत्ता-(हिं०पुं०) छाता, छतरी, पटाव जिसके नीचे से मनुष्य के चलने का मार्ग हो, मधुमक्खियों के रहने का मोम का बना हुआ घर; छतवार, फैली हुई वस्तु,कमल का बीजकोष

छत्तीस-(हिं०पु०) तीस और छ की सख्या ३६। **छत्तीसवां**-(हिं०वि०) पैंतीस के बाद की संख्या का।

छत्तीसा-(हि०पु०) नाई, हज्जाम,(वि०) धूर्त, चतुर, चालाक।

छत्तीसी-(हिं०वि०) छलछंद वाली, छिनाल।

छत्तर-(हिं०पुं०) छाता, कंडे की ढेर पर पोतने का गोबर, छप्पर जो भूसे की ढेर पर रक्खा जाता है।

छत्र-(सं०पुं०) छाता, छतरी, राजाओं का छाता, बच की तरह का एक पौधा, कुकुरमुत्ता। **छत्रक**-(स०पुं०) भूंफोड़, कुकुरमुत्ता, एक प्रकार का पक्षी, शहद का छत्ता, देवमन्दिर, मिश्री का कूजा, मन्दिर। **छत्रचक्र**-(सं०पुं०) शुभाशुभ फल निकालने के लिये फलित ज्योतिष का एक चक्र। **छत्रधर**-(सं०पुं०) छत्र धारण करने वाला मनुष्य, राजा, राजा के ऊपर छाता लगाने वाला सेवक।

छत्रधारी-(सं०वि०) देखो छत्रधर।

छत्रपति-(स०पु०) छत्र का अधिपति, राजा। **छत्रपत्र**-(सं०नपु०) भोजपत्र का वृक्ष। **छत्रबन्धु**-(स०पुं०) नीच कुल का क्षत्रिय। **छत्रभंग**-(सं०पु०) ज्योतिष का एक योग जिसमे राजा का नाश होता है, अराजकता।

छत्रवती-(सं०स्त्री०) पाँचाल देश के उत्तर का एक प्राचीन राज्य। **छत्रवृक्ष**-(सं०पु०) मुचकुन का पेड़।

छत्रांग-(स०नपुं०) गोदन्ती हरताल।

छत्रा-(स०स्त्री०) छत्रक, धनियां, मजीठ

छत्री-(सं०वि०) छत्र धारण करने वाला, छत्र युक्त, (पुं०) नापित।

छत्वर-(सं०पुं०) घर, कुञ्ज।

छदंव-(हिं०पु०) गोपन, छल।

छद-(सं०पुं०) आवरण, ढपना, छाल, पत्ता, पक्षियों का पर, तमाल वृक्ष, तेजपत्ता।

छदन-(सं०नपुं०) आवरण, ढपना, पत्ता, पक्षियों का पर।

छदाम-(हिं०पु०) पैसे का चतुर्थाश।

छद्दर-(हिं०पु०) उपद्रवी बालक, नटखट लड़का।

छद्म-(स०पु०) छिपाव, बहाना, मिस, छल, कपट; **छद्मवेश**-दूसरों को ठगने के लिये धारण किया हुआ वेश; **छद्मवेशी**-रूप बदले हुए।

छद्मी-(हि०वि०) बनावटी रूप धारण करने वाला, कपटी, छली।

छन-(हिं०पु०) देखो क्षण।

छनक-(हि०स्त्री०) झनझनाहट,झनकार, जलती हुई वस्तु पर पानी पड़ने से उत्पन्न शब्द; भड़क (पु०) एक क्षण। **छनकना**-(हिं०क्रि०) तपी हुई वस्तु पर पानी पड़ने से छनछन शब्द करके पानी उड़ जाना,झनकार करना, चौकन्ना होना, भड़कना।

छनकमनक-(हिं०स्त्री०) आभूषणों की झनकार, साजबाज।

छनकाना-(हिं०क्रि०) छनछन शब्द करना, चौकन्ना करना, भड़काना, बलकाना। **छनकार**-छनछनशब्द।

छनछनाना-(हिं०क्रि०) छन छन् शब्द करना, छन छन शब्द होना; झनछनाना, झनकार करना।

छनछवि-(हिं०स्त्री०) क्षणप्रभा, बिजली

छनदा-(हिं०स्त्री०) देखो क्षणदा,रात्रि,रात

छनन मनन-(हिं०पु०) खौलते हुए तेल या घी में गीली वस्तु पड़ने से उत्पन्न शब्द।

छनना-(हि०क्रि०) महीन छिद्रों में से किसी पदार्थ का नीचे गिरना; छोटे छोटे छेदों में से होकर आना, कोई मादक पदार्थ का पिया जाना, स्थान स्थान पर छेद हो जाना, अनेक स्थानों पर चोट खाना, निर्णय होना, छानबीन होना, (पुं०) छानने का महीन वस्त्र; **गहरी छनना**-गाढ मैत्री होना, रहस्य की बातें होना,आपस में बिगाड़ होना।

छनभंगु-(हिं०वि०) क्षणभर में नष्ट होने वाला।

छनवाना-(हि०क्रि०) देखो छनाना।

छनाका-(हि०पु०) झनकार, ठनाका, रुपयों के बजने का शब्द ठनकार **छनाना**-(हिं०क्रि०) किसी दूसरे से छानने का काम कराना, मादक द्रव्य पिलाना।

छनिक-(हिं०वि०) क्षणिक, अल्प काल का (पुं०) एक क्षण।

छन्न-(सं०वि०) आवृत, ढपा हुआ, लुप्त, (हि०पुं०) गुप्त स्थान, किसी तपी हुई वस्तु पर पानी पड़ने का शब्द, ठनकार, छोटी कंकड़ी; **छन्न होना**-सूख जाना, उड़ जाना। **छन्नमति**-(हिं०वि०) मूर्ख, अज्ञान।

छन्ना-(हि०पुं०) देखो छनना।

छन्द-(सं०पुं०) वेद वाक्यों का वह भेद जो अक्षरों की गणना के अनुसार किया जाता है, वेद, वह वाक्य जिसमे वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि के नियम हों, वह विद्या जिसमें छन्दों के विचार हों, इच्छा, अभिलाषा, बन्धन, गांठ, कपट, छल

छन्दक-(स०पुं०) रक्षक, छली।

छन्दज-(सं०पुं०) एक वैदिक देवता का नाम।

छन्दपातन-(सं०पु०) बनावटी साधु।

छन्दस्कृत-(सं०पु०) वेद का मन्त्र।

छन्दोग--(स०पु०) सामगान करने वाला पुरुष, सामवेदी। **छन्दोबद्ध**-(स०वि०) श्लोकबद्ध, जो पद्य में न हो। **छन्दोभङ्ग**-(सं०पुं०) छन्द रचना का एक दोष।

छन्दोम-(स०पु०) द्वादशाह योग के अन्तर्गत एक कृत्य।

छप-(हिं०स्त्री०) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द। **छपकना**-(हिं०क्रि०) पतली लचीली छड़ी से मारना, छिन्न करना, तलवार से किसी वस्तु को काट डालना, पानी को छीटते हुए पानी में चलना या तैरना।

छपका-(हि०पु०) सिर में पहिरने का एक आभूषण, पतली लचीली छड़ी, पानी का भरपूर छींटा, कबूतर फँसाने का एक प्रकार का जाल, पानी में हाथ पांव मारने का काम।

छपछपाना-(हिं०क्रि०) पानी में छपछप शब्द करना।

छपटना-(हिं०क्रि०) आलिंगन होना, चिपकना। **छपटाना**-(हि०क्रि०) चिपकाना, आलिंगन करना, छाती से लगाना।

छपटी-(हि०स्त्री०) लकड़ी से निकली हुई चैली (वि०) दुबला पतला, कुट्टी

छपद-(हिं०पुं०) षट्पद, भ्रमर, भौंरा।

छपन-(हिं०वि०) गुप्त, (पुं०) विनाश, संहार।

छपनहार-(हिं०वि०) नाश करने वाला
छपना-(हिं०क्रि०) छापा जाना, अंकित होना, शीतला का टीका लगना, छिपना।
छपरखट, छपरखाट-(हिं०पु०) मसहरीदार पलंग।
छपरछपर-(हिं०वि०) तराबोर
छपरबंद-(हिं०वि०) जिनका घर बना हो, छप्पर छाने वाला। **छपरबंदी**-(हिं०स्त्री०) छप्पर छाने का काम।
छपरा-(हिं०पुं०) पत्तों से मढा हुआ पान रखने का टोकरा; छप्परवाला गाँव; **छपरिया**-(हिं०स्त्री०)छोटा छप्पर; **छपरी**-(हिं०स्त्री) झोपड़ी, मड़ई।
छपवाई, छपवाना-देखो छपाई,छपाना
छपवैया-(हिं०वि०) छपाने या छपवाने वाला।
छपहीं-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के हाथ की अंगुलियों में पहिरने का एक गहना
छपा-(हिं०स्त्री०) क्षपा,रात्रि,रात,हलदी
छपाई-(हिं०स्त्री०) छापने का काम या ढंग, मुद्रण, छापने की मजदूरी।
छपाकर-(हिं०पुं०) क्षपाकर, चन्द्रमा, कपूर।
छपाका-(हिं०पु०) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द, वेग से फेका हुआ पानी का छींटा।
छपाना-(हिं०क्रि०) छापने का काम कराना, छापेखाने में मुद्रित करना, शीतला का टीका लगवाना, खेत को जोतने के लिये सींचना।
छपानाथ-(हिं०पुं०) देखो क्षपानाथ; चन्द्रमा।
छपाव-(हिं०पुं०) देखो छिपाव।
छप्पन-(हिं०वि०) पचास और छ की संख्या ५६।
छप्पय-(हिं०पुं०) एक मात्रिक छन्द जिसमें छ चरण होते हैं।
छप्पर-(हिं०पुं०) लकड़ी फूस आदि की बनाई हुई छाजन, पोखरी, बरसाती पानी इकट्ठा होने का गड्ढा, तलैया; **छप्पर पर रखना**-अलग करना दूर हटना; **छप्पर पर फूस न होना**-कंगाल होना; **छप्पर फाड़कर देना**-अनायास देना; **छप्पर रखना**-कलक लगाना; **छप्परबन्द**-(हिं०पुं०) छप्पर बनाने वाला।
छब-(हिं०स्त्री०) देखो छवि।
छबड़ा-(हिं०पुं०) छितना,झाबा,खाचा, टोकरा।
छबतखती-(हिं०स्त्री०) सुंदरता, सजधज
छबरा-(हिं०पुं०) देखो छबड़ा।
छबि-(हिं०स्त्री०) शोभा, सुन्दरता, **छबिधर, छबिमान, छबिवंत**-(हिं०वि०) सुन्दर।
छबीला-(हिं०वि०) सुन्दर, सोहावना, छैलाबाँका, सजधज का।
छबुंदा-(हिं०पुं०) गोबरौले की तरह का एक कीड़ा जिसकी पीठ पर बुंदियां रहती हैं, वह विषैला कीट
छब्बीस-(हिं०वि०) बीस और छ की संख्या २६। **छब्बीसवां** (हिं०वि०) संख्या में पचीस के बाद का।
छब्बीसी-(हिं०स्त्री०) छब्बीस वस्तुओं का समूह।
छमंड-(हिं०पुं०) पितृहीन बालक।
छम-(हिं०स्त्री०) घुंघरू बजने का शब्द
छमक-(हिं०स्त्री०) ठसक, ठाटबाट।
छमकना-(हिं०क्रि०) घुंघरू आदि का बजना, झनकार करना, ठसक दिखलाना।
छमछम-(हिं०स्त्री०) घुंघरू पायल आदि के बजने का शब्द; (क्रि०वि०) ऐसे शब्द के साथ। **छमछमाना**-(हिं०क्रि०) छमछम शब्द करना, छमछम शब्द करते हुए चलना
छमना-(हिं०क्रि०) क्षमा करना,
छमा-(हिं०स्त्री०) देखो क्षमा।
छमाई-(हिं०स्त्री०) क्षमा करने का कार्य
छमाछम-(हिं०स्त्री०) गहने के बजने या पानी बरसने का शब्द; (क्रि०वि०) निरन्तर छमछम शब्द के साथ।
छमाना-(हिं०क्रि०) क्षमा करना।
छमावान-(हिं०वि०) देखो क्षमावान।
छमाशी-(हिं०स्त्री०)छ माशे का बटखरा
छमासी-(हिं०स्त्री०) मृत्यु के छ महीने बाद होने वाला श्राद्ध।
छमिच्छा-(हिं०स्त्री०) समस्या, संकेत,
छमुख-(हिं०पुं०) षडानन, कार्तिकेय।
छय-(हिं०पुं०) क्षय, नाश, विनाश।
छयना-(हिं०क्रि०) क्षय को प्राप्त होना, नष्ट होना।
छर-(हिं०पु०) देखो क्षर, कणों के वेग से निकलने का शब्द।
छरई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का ठप्पा
छरकना-(हिं०क्रि०) छिटकना,बिखरना
छरकीला-(हिं०वि०) लबा तथा सुडौल
छरछंद,छरछंदी-देखो छलछंद,छलछंदी
छरछर-(हिं०पुं०) कणों के वेग से निकलने का शब्द, लचीली पतली लकड़ी के पटकने का शब्द। **छरछराना**-(हिं०क्रि०) घाव पर नमक लगने से पीड़ा होना, किसी वस्तु पर कणों का वेग से गिराना। **छरछराहट**-(हिं०स्त्री०) छर्रो या कणों के वेग से निकलने का भाव, शरीर के कटे भाग पर या घाव पर नमक या क्षार लगकर पीड़ा होना।
छरना-(हिं०क्रि०) टपकना,चूना,झरना, दूर, होना, चकचकाना, बहना,धोखा देना, ठगना,मोहित करना,लोभाना।
छरपुरी-(हिं०स्त्री०) छड़ीला, एक सुगन्धित द्रव्य। **छरभार**-(हिं०पुं०) कार्य का भार, बखेड़ा, झंझट।
छरहरा-(हिं०वि०) क्षीण अंग का, हलका, फुरतीला,(व०) बहुरूपिया।
छरहरापन-(हिं०पुं०) फुरती,
छरा-(हिं०पुं०) छड़ा, लड़ी, रस्सी, पैजामे की नीवी, नारा, रस्सी, बन्द, नीवीं।
छरिंदा-(हिं०वि०) देखो छरींदा।
छरिया-(हिं०पुं०) छड़िया, चोबदार।
छरिला-(हिं०पुं०) देखो छड़ीला।
छरी-(हिं०स्त्री०) देखो छड़ी।
छरींदा-(हिं०वि०) बिना संग साथ का, अकेला, बिना किसी प्रकार का बोझ लिये हुए।
छरीदार-(हिं०वि०) पहरेदार।
छरीला-(हिं० पुं०) एक प्रकार का पौधा, पत्थरफूल।
छरोरा-(हिं०पु०) शरीर पर पड़ी हुई खरोंच।
छर्दन-(सं०पुं०) वमन, कय करना।
छर्दि-(सं०स्त्री०) वमन, कय, उलटी।
छर्रा-(हिं०पु०) कंकड़ आदि का छोटा टुकड़ा, बन्दूक में भरने के सीसे के छोटे छोटे टुकड़े, पानी का छींटा।
छलंक, छलंग-(हिं०स्त्री०) देखो छलांग
छल-(सं०पुं०) दूसरे को धोखा देने का कार्य, धूर्तता, वंचना,व्याज,मिस, बहाना, कपट, जल के छींटों के गिरने का शब्द।
छलक-(हिं०स्त्री०) छलकने का भाव या क्रिया। **छलकन**-(हिं०स्त्री०) पानी आदि की उछाल, उद्गार,स्फुरण।
छलकना-(हिं०क्रि०) किसी द्रव पदार्थ का बरतन से उछल कर बाहर गिरना, बाहर होना, उमड़ना।
छलकाना-(हिं०क्रि०) किसी भरे हुए पात्र के द्रव पदार्थ को हिला कर बाहर गिराना।
छलछंदी-(हिं०वि०) धूर्त, कपटी,
छलछलाना-(हिं०क्रि०) किसी पात्र में से थोडा थोड़ा करके जल आदि गिराना।
छलछात-(हिं०पु०) देखो छलछिद्र
छलछाया-(हिं०स्त्री०) कपटजाल।
छलछिद्र-(सं०पु०) कपट व्यवहार, धूर्तता। **छलछिद्री**-(हिं०पुं०) कपटी, छली।
छलन-(हिं०पु०) छल करने का कार्य।
छलना-(हिं०क्रि०) प्रतारित करना, धोखा देना, (स्त्री०) छल,कपट, धोखा
छलनी-(हिं०स्त्री०) आंटा चालने का बरतन, चलनी; **छलनी करना**-छिद्र पूर्ण करना; **कलेजा छलनी होना**-निरन्तर कष्ट सहते सहते जी ऊब जाना, हृदय जर्ज होना।
छलहाई-(हिं०वि०) धूर्त, छली, कपटी, धोखेबाज।
छलांग-(हिं०स्त्री०) फलांग, कुदान, चौकड़ी; **छलांग भरना**-चौकड़ी मारना। **छलांगना**-(हिं०क्रि०) कूदकर आगे बढ़ना, फलांग मारना।
छला-(हिं०पुं०) अंगुली में पहिरने का छल्ला या अंगूठी; (स्त्री०) आभा, चमक, झलक।
छलाई-(हिं०स्त्री०) छल, कपट।
छलाना-(हिं०क्रि०) प्रतारित करना, धोखे में डालना।
छलावा-(हिं०पुं०) भूत प्रेत की छाया जो एक बार दिखलाई पड़ती है परन्तु तुरट लुप्त हो जाती है, माया दृश्य, दलदल के किनारे देख पड़ने वाली लूक, अगिया बैताल (वि०) चपल, चंचल; **छलवासा**-अति चंचल।
छलिक-(सं०पुं०) नाटयशास्त्र में रूपक का एक भेद।
छलित-(सं०वि०) वंचित, धोखा दिया हुआ। **छलिया**-(हिं०वि०) छल करने वाला, कपटी, धोखेबाज। **छली**-(हिं०वि०) कपटी।
छलौरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का अंगुलियों का रोग।
छल्ला-(हिं०पुं०) अगुली में पहिरने की सादी अंगूठी, मुंदरी, कड़ा, वलय, कोई मण्डलाकार वस्तु, कुण्डली एक प्रकार की पजाबी गीत। **छल्ली**-(हिं० स्त्री०) छाल, छोटा छल्ला, सन्तति। **छल्लेदार**-(हिं०वि०) जिसमें छल्ले लगे हों, जिसमें मण्डलाकार चिह्न हों।
छवना-(हिं०पुं०)बच्चा,सूअरका बच्चा
छवड़-(हिं०पु०) टोकरा; **छवड़ी**-(हिं० स्त्री०) टोकरी।
छवा-(हिं०पुं०) पशुका बच्चा, बछड़ा, एँड़ी।
छवाई-(हिं०स्त्री०) छाने का काम या पारिश्रमिक। **छवाना**-(हिं०क्रि०)छाने का काम करना।
छवि-(सं०स्त्री०)शोभा, कान्ति, सौन्दर्य, प्रभा, चमक, प्रतिकृति, चित्र।
छवैया-(हिं० पुं०) छप्पर छानेवाला।
छह-(हिं०वि०) छ।
छहरना-(हिं० क्रि०) बिखरना, फैलना, छिटकना।
छहरा-(हिं०वि०) छपरत का,छ पल्लेका
छहराना-(हिं० क्रि०) छितराना, चारो ओर फैलाना, बिखराना, फैलाना, भस्म करना।
छहरीला-(हिं०वि०) छरहरा।
छहियां-(हिं०स्त्री०) छांहँ, छाया।
छांक-(हिं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा।
छांगना-(हिं० क्रि०) डाल, टहनी आदि काटना छाँटना।
छांगुर-(हिं०पुं०) जिसके पजे में छ अगुलियाँ हों, छ अगुलियों वाला।
छांछ-(हिं०स्त्री०) देखो छाछ।
छांट-(हिं० स्त्री०) काटने छांटने की क्रिया, छाटने का ढंग, कतरन, अन्न की भूसी, अलग की हुई बेकार चीज, वमन, कै। **छांटन**-(हिं० स्त्री०) अलग की हुई बेकार चीज, कतरन।
छांटना-(हिं० स्त्री०) काटकर अलग करना, टुकड़ा अलगाना, अन्न स्वच्छ करने के लिये कूटना, चुन लेना, मलिन वस्तु निकाल देना, हटाना, संक्षिप्त करना, अलग करना, गढ़गढ़ कर बातें करना।
छांड़ना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना।

छाँद-(हिं० स्त्री०) पशुओं के पैर बांधने की छोटी रस्सी, गाय दूहते समय बछवे को गाय के पैर में बांधने की रस्सी, नाई। छाँदना-(हिं० क्रि०) रस्सी से बांधना, कसना, जकड़ना, पशुओं के पैर बांधना।

छाँदा-(हिं०पुं०) बखरा, बांट, हिस्सा, उत्तम भोजन।

छाँव-(हिं० स्त्री०) छांह।

छाँवड़ा-(हिं० पुं०) बालक, पशु का छोटा बच्चा।

छाँस-(हिं०स्त्री०) भूसी, कूड़ा करकट।

छाँह-(हिं०स्त्री०) जिस स्थान में धूप या चांदनी न पड़ती हो, छाया, छाया हुआ स्थान, शरण, परछाहीं, प्रतिबिम्ब, भूत प्रेत का प्रभाव; छाह में होना-छिपना; छाँह न छूने देना-पास में न आने देना; छाँह बचाना-दूर दूर रहना; छाँह छूना-पास में आना।

छाँहगीर-(हिं० पुं०) राजछत्र, दर्पण, आइना।

छाँहीं-(हिं०स्त्री०) देखो छांह।

छाई-(हिं० स्त्री०) राख, खाद।

छाक-(हिं० स्त्री०) इच्छा पूर्ति, सन्तोष, काम करने वालों का दोपहर का भोजन, कलेवा, मद, मादकता, एक प्रकार का पक्वान्न।

छाकना-(हिं०क्रि०)खा पीकर तृप्त होना अघाना, अफरना, मद्य पीकर मस्त होना, चकित होना, भौचक्का रहजाना

छाग-(हिं० पुं०) बकरा।

छागन-(हिं० पु०) गोहरी या उपले की आंच।

छागमित्र-(सं०पुं०) एक प्राचीन देश का नाम। छागमुख-(सं०पुं०) कार्तिकेय का छठां मुख जो बकरे का है।

छागर-(सं०स्त्री०) छगल, बकरी।

छागरथ-(सं०पुं०) अग्नि, आग।

छागल-(सं०पुं०) बकरा, बकरेके खाल की बनी हुई वस्तु, मसक, मिट्टी का करवा, स्त्रियों के पैर में पहिरने का एक गहना, झांझ।

छाछ-(हिं०स्त्री०) मक्खन निकाला हुआ दूध या दही।

छाछठ-(हिं०वि०) देखो छासट।

छाज-(हिं०पुं०)सूर्य, सूप,छाजन, छप्पर; छाजों मेंह बरसना-मुसलाधार वृष्टि होना। छाजन-(हिं० पुं०) आच्छादन, वस्त्र, कपड़ा, छप्पर, खपरैल, छवाई, अपरस रोग; भोजन छाजन-अन्न वस्त्र।

छाजना-(हिं०क्रि०)उपयुक्त जान पड़ना, अच्छा लगना, शोभा देना, सुशोभित होना भला लगना।

छाजा-(हिं०पुं०) छज्जा।

छाजित-(हिं०वि०) शोभित, सजा हुआ।

छाड़ना, छांडना-(हिं० क्रि०) वमन करना, कै करना।

छात-(हिं०पुं०) राजछत्र, छाता, आधार, आश्रय, (वि०) कृश, दुर्बल।

छाता-(हिं०पुं०) आतपत्र, छड़ी छतरी, छत्ता, चौड़ी छाती, छाती की चौड़ाई की नाप; छाता लगाना-छाते का व्यवहार करना।

छाती-(हिं० स्त्री०) वक्षःस्थल, कलेजा, हृदय, मन, स्तन, कुच, साहस, दृढ़ता; छाती पर का पत्थर-चिन्ता उत्पन्न करनेवाली वस्तु; छाती पत्थर की करना-कष्ट सहने के लिये हृदय कठोर करना; छातीपर कोदो दरना-किसी को दिखाकर ऐसा काम करना जिससे उसको बड़ा कष्ट हो; छाती तले रखना-सर्वदा अपनी रक्षा मे रखना; छाती तले रहना-आँखों के सामने रहना; छाती निकाल कर चलना-अकड़ कर चलना; छाती पर चढ़ना-कष्ट पहुँचाने के लिये पास आना; छाती पर पत्थर रखना-किसी भारी शोक के आघात को सहन करना; छाती पर बाल होना-उदारता के लक्षण होना; छाती पर सांप लोटना-मानसिक व्यथा होना, ईर्ष्या होना; छाती फटना-अत्यन्त सन्ताप होना; छाती फुलाना-तनकर चलना; छाती से लगाना-आलिंगन करना; छाती उड़ी जाना-छाती दहलना; छाती उमड़ आना-प्रेम या करुणासे गद्गद होना; छाती जलना-अनपच के कारण हृदय में जलन मालूम होना, सन्ताप होना; छाती जलाना-चिढाना, कुढाना; छाती जुड़ाना-चित्त को प्रसन्न और शान्त करना; छाती ठडी होना-चित्तका उद्वेग शान्त होना, मनोकामना पूर्ण होना; छाती ठोंकना-साहस सहित प्रतिज्ञा करना; छाती थाम कर रह जाना-शोक के कारण ठक रह जाना; छाती भर आना-गद्गद होना; छाती मसोसना-मन ही मन संतप्त होना; छाती उमड़ना-स्त्रियों के स्तन का बढ़ना; छाती भर आना-दूध से स्तनों का भरना।

छात्र, छात्रक-(सं० पुं०)- विद्यार्थी, शिष्य, चेला।

छात्रगण्ड-(सं०पुं०) तीक्ष्ण बुद्धि का विद्यार्थी। छात्रदर्शन-(सं०पुं०)नवीन मक्खन। छात्रवृत्ति-(सं०स्त्री०)विद्यार्थियों को विद्याभ्यास की दशा में आर्थिक सहायता। छात्रा-(सं०स्त्री०) स्त्री अध्येत्री; छात्रालय-(सं० पुं०) विद्यार्थियों के रहने का स्थान।

छादक-(सं०पुं०) खपरैल या छप्पर छाने वाला।

छादन (सं०पुं०) आवरण, ढाकने का काम, छिपाव, आच्छादन, जिससे छाया की जाय।

छादित-(सं०वि०)आच्छादित, ढपा हुआ।

छादी-(सं०वि०) अच्छादन करनेवाला।

छाद्मिक-(सं०स्त्री०पाखंडी, बहुरूपिया।

छान-(हिं० स्त्री०) घास फूसकी छाजन, खपरैल, पशुके पैर बाँधनेकी रस्सी, बन्धन। छाननहारी-(हिं०पुं०)छानने वाला।

छानना-(हिं० पुं०) किसी तरल पदार्थ या चूर्ण को महीन कपडे आदि के पार निकालना, मिली हुई वस्तु को अलगाना, जांचना, पड़ताल करना, देखभाल करना, छेदकर पार निकालना, जकड़ना, रस्सी से बांधना।

छानबीन-(हिं०स्त्री०) भली भाँति अनुसन्धान, जांच पड़ताल, विस्तृत विचार, पूर्ण विवेचना।

छाना-(हिं०वि०) ऊपर से आच्छादित करना, न ढाँपना, धूप, पानी आदि से बचाने के लिये ऊपर से कोई वस्तु फैलाना, बिछाना, रक्षा करना, पसरना, भर जाना, आच्छादित होना, डेरा डालना, टिकना।

छानबे-(हिं० वि०) नब्बे और छ की संख्या का, नब्बे से छ अधिक ९६।

छानी (हिं०स्त्री०) छप्पर।

छानेछाने-(हिं०क्रि०वि०) गुप्त रूप से।

छान्दस-(सं०वि०) वेदज्ञ, वेदपाठी।

छान्दोग्य-(सं० पुं०) सामवेद के एक ब्राह्मण का नाम।

छाप-(हिं०स्त्री०) किसी उभड़े या खुदे हुए ठप्पे का चिह्न, अक्षर खुदी हुई अंगूठी, कवियों का उपनाम, लकड़ी का बोझ, सिंचाई में पानी उछलने की टोकरी।

छापना-(हिं०क्रि०) ठप्पे आदिमें स्याही या रंग लगा कर चिह्नित करना; ठप्पेसे निशान डालना, मुद्रित करना, छापे के यन्त्र में दबाकर अक्षर या चिह्न अंकित करना।

छापा-(हिं० पुं०) ठप्पा, मुद्रा, व्यापार के मालपर डाला हुआ चिह्न, शंख, चित्र आदि का चिह्न जिससे वैष्णव लोग अपनी शरीर को अंकित करते हैं, भीत पर ठोंकने का पंजे का चिह्न, मुद्रायन्त्र, प्रेस, प्रतिकृति, असावधान शत्रु पर रात्रिमें आक्रमण; छापा मारना-रात में सोते हुए शत्रु पर सहसा धावा करना।

छापाखाना-(हिं०पुं०) पुस्तक समाचार-पत्र आदि छापने का स्थान, मुद्रालय, प्रेस।

छाम-(हिं०पुं०) क्षाम, दुर्बल, कृश।

छामोदरी-(हिं० वि०) कृशोदरी, छोटे पेट वाली।

छाय-(हिं०स्त्री०) छाया।

छायल-(हिं०पुं०)स्त्रियोंका एक पहिरावा

छायांक-(हिं०पुं०) चन्द्रमा।

छाया-(सं० स्त्री०) प्रकाश का अभाव, उजाला फेकने वाली वस्तु के सामने अन्य वस्तु के आने पर उत्पन्न होने वाली कालिमा, प्रकाश को रोकने वाली वस्तु, परछाई, प्रतिबिम्ब, सदृश वस्तु, प्रतिकृति, अनुहार, अनुकरण, सूर्य की पत्नी, कान्ति, रक्षा, उत्कोच, घूस, अन्धकार, पंक्ति, भूतप्रेत का प्रभाव, एक रागिणी का नाम, आर्या छन्द का एक भेद।

छायागणित-(सं० नपुं०) गणित की एक क्रिया जिसमें छाया की सहायता से ग्रहों की गति अयनांश आदि का निरूपण किया जाता है। छायाग्रह-(सं०पुं०) दर्पण, आइना। छायाग्राहिणी-(सं० स्त्री०) एक राक्षसी का नाम जिसने समुद्र लांघते समय हनुमान जी की छाया को पकड़ कर उनको खींच लिया था। छायातनय-(सं०पुं०) शनैश्चर। छायादान-(सं० नपुं०) घी या तेल में अपने मुख की छाया देखकर इसमें कुछ दक्षिणा डालकर दान करने की विधि।

छायानट-(सं०पुं०)एक राग का नाम।

छायान्वित-(सं० वि०) छायायुक्त, छायादार। छायापथ-(सं०पुं०)आकाशगङ्गा, देवपथ, आकाश। छायापद-(सं०नपुं०) सूर्य की छाया द्वारा समय जानने को यन्त्र, सूर्य घड़ी। छायापुरुष-(सं०पुं०) हठयोग के अनुसार मनुष्य की छायारूप आकृति जो उसको स्थिर दृष्टि से आकाश की ओर अधिक काल तक देखने पर दष्टिगोचर होती है।

छायामान-(सं०नपुं०) चन्द्रमा। छायामित्र-(सं० नपुं०) छाता, छतरी।

छायायन्त्र-(सं० नपुं०) धूपघड़ी।

छायालोक-(सं०पुं०) अदृश्य जगत।

छायावाद-(सं० पुं०) रहस्यवाद।

छायावान्-(सं०वि०)छायायुक्त, छांहवाला। छार-(हिं० पुं०) वनस्पतियों को जलाकर इनका निकाला हुआ नमक, क्षार, भस्म, राख; धूर, छार खार करना-नष्ट भ्रष्ट करना।

छाल-(हिं० स्त्री०) वृक्षों के ऊपर का आवरण, वल्कल, बोकला, एक प्रकार की मिठाई।

छालटी-(हिं०स्त्री०)छाल का बना हुआ वस्त्र, सन या पटुवे का बना हुआ कपड़ा।

छालना-(हिं० क्रि०) छलनी में रखकर आटा आदि छानना, चालना, झंझरा करना, छेद करना।

छाला-(हिं०पुं०) छाल या चमडे के ऊपरकी झिल्ली का उभड़ आना, आबला, झलका, फफोला।

छालित-(हिं०वि०) धोया हुआ।

छालिया-(हिं० पुं०) कांसे का प्याला जिसमें घी या तेल भर कर छायादान किया जाता है, सुपारी।

छाली-(हिं०स्त्री०) कटी हुई सुपारी का चिपटा टुकडा, सुपारी का फल।

छावँ-(हिं०स्त्री०)प्रतिबिम्ब, छाया, शरण।

छावना-(हिं० क्रि०) देखो छना।

छावनी-(हिं०स्त्री०) छान, छप्पर, पड़ाव डेरा, सेना के ठहरने का स्थान।

छावर-(हिं०पुं०) मछलियों के बच्चों

का झंड ।
छावरा-(हिं०पुं०)पशुका बच्चा, छौना
छावा-(हिं०पुं०) पुत्र, बेटा, बच्चा ।
छासठ-(हिं०वि०) गिनती में साठ और छ की संख्या ६६ ।
छिउँका-(हिं०पुं०)एक प्रकार का छोटा चींटा । **छिउँकी**-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की छोटी चींटी, एक प्रकार का छोटा उड़ने वाला चींटा, रस्सी का एक प्रकार का फन्दा ।
छिकाना-(हिं०क्रि०)छींक लाना ।
छिगुनिया, छिगुनी-(हिं० स्त्री०) कानी अँगुली ।
छिछ, छिछि-(हिं० स्त्री०) छींटा, धार, फोहारा
छिटुआ, छिटुवा-(हिं० पुं०) बीज बोने की एक रीति ।
छिड़ाना-(हिं०क्रि०) छीनना, ज़बरदस्ती ले लेना ।
छिः-(हि०अव्य०) घृणा, तिरस्कार अथवा अरुचि सूचक शब्द ।
छिउला-(हिं०पुं०) छोटा पेड़ या पौधा
छिकनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास जिसके घुंडी के आकार के फूलों को सूंघने से बहुत छींक आती है, नकछिकनी ।
छिकरा(हिं०पुं०) हरिन की जाति का एक पशु
छिका-(स०स्त्री०) छींक ।
छिगुनी-(हिं०स्त्री०)हाथ की सबसे छोटी अँगुली, कनिष्ठिका ।
छिच्छ-(हिं०स्त्री०) छींटा, बूंद ।
छिछकारना-(हिं०क्रि०) छिड़कना ।
छिछड़ा-(हिं०पु०) देखो छीछड़ा ।
छिछला-(हिं०वि०) पानी का तल जो गहरा न हो, उथला ।
छिछलाई-(हिं०स्त्री०) छिछला होने का भाव ।
छिछली-(हिं०वि०) देखो छिछला ।
छिछोरपन, छिछोरापन-(हिं० पु०) क्षुद्रता, ओछापन, नीचता ।
छिछोरा-(हिं०वि०) क्षुद्र, ओछा, नीच प्रकृति का ।
छिजना-(हि० क्रि०) देखो छीजना । **छिजाना**-(हि० क्रि०) छीजने देना, नष्ट होने देना ।
छिटकना-(हिं०क्रि०)छितराना, चारोओर बिखरना, चारो ओर प्रकाश फैलना
छिटकनी-(हिं०स्त्री०) देखो सिटकिनी ।
छिटक-(हिं० पुं०) पालकी के ओहार का द्वार के सामने का भाग ।
छिटकना-(क्रि०)छींटे इधर उधर फैलना।
छिटकाना-(हि०क्रि०)चारो ओर फैलना, बिखराना । **छटकाना**-विखराना ।
छिटकी-(हिं०स्त्री०) छींट, छींटा ।
छिटुकुनी-(हिं०स्त्री०)पतली छड़ी, खमाची
छिटनी-(हिं० स्त्री०) बांस की छोटी टोकरी, डलिया ।
छिटवा-(हिं०पुं०) बडी टोकरी, टोकरा
छिटाका-(हिं०पुं०) धुनिये की मुंगरी ।
छिट्टी-(हिं० स्त्री०) सूक्ष्म जलकण, महीन छींटा ।
छिड़कना-(हि० क्रि०) पानी के छींटे फेंकना, भिगोकर पानी बिखराना, न्योछावर करना । **छिड़कवाना**-(हि० क्रि०) छिड़कने का काम दूसरे से कराना । **छिड़काई**-(हिं०स्त्री०) छिड़कने का काम या पारश्रमिक । **छिड़कना**-(हि०क्रि०) देखो छिड़कवाना ।
छिड़काव-(हिं०पुं०) पानी आदि छिड़कने की क्रिया !
छिड़ना-(हिं०स्त्री०)आरंभ होना, शुरू होना
छिड़ाना-(हि०क्रि०) देखो छुड़ाना ।
छिण-(हि०पुं०)देखो क्षण ।
छितनी-(हिं०स्त्री०) बांस की छिछली टोकरी ।
छितर, बितर-(हिं० वि०) देखो तितर बितर । **छितराना**-(हिं०क्रि०) तितर बितर होना, बिखरना, इधर उधर डालना, इधर उधर फैलाना, छीटना, दूर दूर करना, सटी हुई वस्तुओं को अलग अलग करना । **छितराव**-(हिं० पुं०) छितराने का भाव ।
छिति-(हि०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी, एक का अंक । **छितिकंत**-(हिं० पुं०) भूपति, राजा । **छितिपाल**-(हिं० पुं०) क्षितिपाल, राजा । **छितिरुह**-(हिं० पुं०) क्षितिरुह, वृक्ष, पेड़ । **छितीस**-(हिं० पुं०) क्षितीश, भूपित, राजा ।
छित्वर-(स०वि०) धूर्त, छेदक, वैरी ।
छिदना-(हिं० क्रि०) छिद्रयुक्त होना, सूराखदार होना, भिदना, घायल होना, सहारे के लिये पकड़ना, चुभना, (पुं०) बरच्छा ।
छिदरा-(हिं०वि०)छितराया हुआ, विरल, झंझरीदार, फटा हुआ, जर्जर ।
छिदवाना, छिदाना-(हिं० कि०) देखो छेदाना ,
छिद्र-(सं० पुं०) छेद, सूराख, गड्ढा, बिल, अवकाश, दोष, त्रुटि, नव की संख्या; **छिद्रदर्शी**-दूसरे का दोष देखनेवाला ।
छिद्रात्मा-(स०वि०)खलस्वभाव, दुष्ट ।
छिद्रान्वेषण-(सं० पुं०) दोष ढूंढ़ना, खुचुर निकालना । **छिद्रान्वेषी**-(सं० वि०) पराया दोष ढूंढनेवाला, खुचुर निकालने वाला ।
छिद्राफल-(स० पु०) माजूफल ।
छिद्रित-(सं० वि०) दूषित, छेदा हुआ, बेधा हुआ ।
छिद्रोदर-(स०पुं०) एक प्रकार का पेट का रोग ।
छिन-(हिं० पुं०) देखो क्षण ।
छिनक-(हिं०क्रि०वि०) क्षण भर, दमभर **छिनकना**-(हिं०क्रि०) नाक का मल सांस बाहर फेंकते हुए निकालना; चमकना, भड़क कर भागना ।
छिनछवि-(हिं० स्त्री०) विद्युत, बिजली
छिनदा-(हिं०स्त्री०) देखो क्षणदा ।
छिनना-(हिं०क्रि०) छीन लिया जाना, हरण होना, कूटा जाना ।
छिनभंग-(हिं०वि०) क्षण भरमें नष्ट होने वाला ।
छिनरा-(हिं०पुं०) परस्त्रीगामी, लम्पट पुरुष ।
छिनवाना-(हिं०क्रि०) छीनने का काम कराना ।
छिनाना-(हि० क्रि०) छीनना, हरण करना, पत्थर आदि को टाँकीसे कटाना ।
छिनार, छिनाल-(हिं०स्त्री०) पर पुरुष गामिनी, व्यभिचारिणी, कुलटा ।
छिनालपन, छिनालपना-(हिं० पु०) छिनारा, व्यभिचार ।
छिनाला-(हिं०पु०) व्यभिचार ।
छिन्न-(सं०वि०) खण्डित, कट कर अलग किया हुआ । **छिन्न भिन्न**-(स०वि०) खण्डित, टूटाफूटा, नष्ट भ्रष्ट, तितरबितर । **छिन्नमस्ता**-(स०वि०) जिसका मस्तक कटा हो (स्त्री०) महाविद्याओं में से एक ।
छिन्नव्रण-(सं०पुं०) किसी शस्त्रसे कटा हुआ घाव ।
छिन्ना-(स०स्त्री०) पुंश्चली, छिनाल ।
छिपकली-(हिं०स्त्री०) गोह जाति का एक जन्तु जो घरों में रहता है, गृहगोधिका, भित्तिका, कान का एक आभूषण ।
छिपना-(हि०क्रि०) ओट में आना, देख न पड़ना, अदृश्य होना, गुप्त रहना; **छिपाछिपी**-(हिं०क्रि०वि०) गुप्त रीति से, छिपाकार, चुपचाप ।
छिपाना-(हिं०क्रि०) ओट में करना, ढाँकना, गोपन करना, गुप्त रखना, प्रगट न करना, दोष छिपाना ।
छिपा रुस्तम-(हिं०पु०)वह व्यक्ति जो गुणोंसे पूर्ण हो परन्तु विख्यात न हो, गुप्त गुंडा । **छिपाव**-(हिं० पुं०) भेद छिपाने का भाव ।
छिप्र-(हिं० वि०) देखो क्षिप्र, (पुं०) पैर के अंगूठे और उसके पास की अंगुलियों के बीच का मर्म स्थान ।
छिबड़ी-(हिं०स्त्री०)छोटा टोकरा, खांची ।
छिमा(हिं०स्त्री०)देखो क्षमा ।
छिया-(हिं० स्त्री०) घृणित वस्तु, मल (वि०) मलिन; **छियाछरद करना**-मल के समान घृणित समझना ।
छियानबे-(हिं०वि०) देखो छानबे ।
छियालिस, छियालीस-(हिं० वि०) चालिस और छ की संख्या, ४६ ।
छियासी-(हिं०वि०) अस्सी और छ की सख्या ८६ ।
छिरकना-(हिं०क्रि०) देखो छिड़कना ।
छिरहा-(हिं०वि०) हठी ।
छिरेटा-(हिं० पु०) एकप्रकार की लता जिसका रस जल में डालने से वह जम जाता है, छिलहिण्ड ।
छिलका-(हिं०पु०) फल कन्द आदि के ऊपर का आवरण, फलों की त्वचा या झिल्ली ।
छिलना-(हिं० क्रि०) छिलके या चमड़े का कटकर अलग होना, उधड़ना, खरोंच जाना, गले के भीतर खुजली सी होना ।
छिलछिला-(हिं०वि०) छिछला ।
छिलवा-(हिं०पुं०) ऊख की पत्तियों को छीलकर अलग करने वाला ।
छिलवाना-(हिं०क्रि०) छीलने का काम दूसरे से कराना । **छिलाव, छिलावट**-(हिं०स्त्री०)छीलने का काम या भाव, छिलाई ।
छिलौरी-(हिं० स्त्री०) शरीर पर का छोटा छाला ।
छिहत्तर-(हिं० वि०) सत्तर और छ की संख्या ७६ ।
छिहरना-(हिं०क्रि०)छितराना, फैलाना ।
छिहाना-(हिं०क्रि०)ढेर लगाना, गांजना ।
छिहानी-(हिं० पुं०) मरघट, श्मशान ।
छींक-(हिं० स्त्री०) वेग के साथ नांक और मुंह से एकाएक निकलने वाला वायु का झोंका; **छींक होना**-अपशकुन होना; **छींकना**-(हिं० क्रि०) शब्द करते हुए नाक और मुंह से वायु का झटके से निकलना; **छींकते नाक काटना**-थोड़ी सी बात पर ज़ोर से चिढ़ना ।
छींट-(हिं०स्त्री०) जल का छोटा कण, जलविन्दु, रंग बिरंगे बूटे का छपा हुआ वस्त्र ।
छींटना-(हिं०क्रि०) विखराना, छितराना
छींटा-(हिं०पुं०) किसी द्रव पदार्थ के फैलकर गिरने वाले महीन बूंद, जलकण, महीन बूंदों की वृष्टि, झड़ी, बूंद का चिह्न, मादक पदार्थ की एक मात्रा, दंभ, गुप्त रूप से किया हुआ ताना ।
छींवा-(हिं०स्त्री०) छीमी, फली ।
छी-(हिं०अव्य०) घृणा सूचक शब्द; (पुं०) वह शब्द जो धोबी लोग कपड़ा पछाड़ते समय बोलते हैं; **छीछी करना**-घृणा या, अरुचि दिखलाना ।
छीउल-(हिं०पुं०) पलास का वृक्ष, ढाक का पेड़ ।
छीका-(हिं०पुं०) रस्सियोंका बना हुआ गोल जाल जो वस्तुओं को रखने के लिये छत में से लटका दिया जाता है, सिकहर, बैलों के मुखपर बांधने की जाल या खोंता, झूले का पुल, बड़े बड़े छिद्र का टोकरा, खचिया, छितना ; **छीका टूटना**-अनायास किसीके लाभ के लिये घटना होना ।
छीछड़ा-(हिं० पुं०) मांस का बेकाम लच्छा, पशुओंके पेटकी मल की थैली
छीछल-हिं०वि०) देखो छिछला ।
छीछालेदर-(हिं०स्त्री०) दुर्गति, दुर्दशा खराबी ।
छीज-(हिं० स्त्री०) कमी, घाटा, टोटा । **छीजना**-(हिं०क्रि०) क्षीण होना, कम होना, घटना ।
छीट-(हिं०स्त्री०) देखो छींट ।

छीटा-(हिं॰पुं॰) बांसका टोकरा,खांचा, चिलम ।

छीड़-(हिं॰स्त्री॰) मनुष्यों की कमी ।

छीतना-(हिं॰ क्रि॰) बिच्छ बरें इत्यादि का डंक मारना ।

छीता-(हिं॰ पुं॰) बहू के ससुराल या नैहर जाने की शुभ मुहूर्त ।

छीति-(हिं॰स्त्री॰) क्षति, हानि, बुराई; **छीति छान**-(हिं॰ वि॰) तितर बितर, छिन्न भिन्न ।

छीदा-(हिं॰वि॰) झंझरा,अनेक छिद्रवाला

छीन-(हिं॰ पु॰) क्षीण, कृश, दुबला पतला,शिथिल, मलिन । **छीन चन्द्र**-क्षीण चन्द्र द्वितीया का चन्द्रमा; **छीनता**-(हिं॰स्त्री॰) देखो क्षीणता ।

छीनना-(हिं॰ क्रि॰) काटकर अलगाना, छिन्न करना, बल पूर्वक किसीकी वस्तु हर लेना, छेनीसे पत्थर काटना, सिल चक्की आदिको खुरखुरा करना, पुरवट का पानी गिराना ।

छीनाखसोटी-(हिं॰स्त्री॰) देखो छीना झपटी ; **छीनाछीनी**, **छीनाझपटी**-(हिं॰स्त्री॰) किसी वस्तु को छीन लेना

छीना-(हिं॰ क्रि॰) स्पर्श करना, छूना (पु॰) कुम्हार का मिट्टी का सांचा, घड़े के नीचे का कपाल ।

छीप-(हिं॰ वि॰) क्षिप्र, वेगवान्, (स्त्री॰) छाप, चिह्न, शरीर परके छोटे चिह्न, मछली फंसाने की बंसी, सीप नामक तरकारी; **छीपना**-(हिं॰क्रि॰) मछली को फँसा कर जल के बाहर फेंकना ।

छीपा-(हिं॰पुं॰) दूध रखनेकी मटकी ।

छीपी-(हिं॰ पुं॰) वस्त्र पर छींट छापने वाला ।

छीवर-(हिं॰ स्त्री॰) वह वस्त्र जिस पर बेलबूटे छपे हों ।

छीमी-(हिं॰स्त्री॰) मटर आदिकी फली ।

छीर-(हिं॰पुं॰) देखो क्षीर, कपड़े का वह किनारा जहां उसकी लंबाई समाप्त होती है, छोर, कपड़े के फटने का चिह्न; **छीर डालना**-किनारे का तागा निकाल कर झालर बनाना ।

छीरज-(हिं॰पु॰) क्षीरज, दधि, दही ।

छीरधि-(हिं॰ पुं॰) क्षीरसागर, दूध का समुद्र ।

छीरप-(हिं॰पुं॰) बालक, बच्चा ।

छीरफेन-(हिं॰पुं॰) दूध की मलाई ।

छीरसार-(हिं॰पुं॰) देखो क्षीरसागर ।

छीलक-(हिं॰पुं॰) छिलका ।

छीलना-(हिं॰ क्रि॰) किसी वस्तु का छिलका उतारना, खुरच कर अलगाना, गले के भीतर चुनचुनाहट उत्पन्न करना ।

छीलर-(हिं॰पुं॰) छिछला गड्ढा, लिलारी, तलैया ।

छीव-(हिं॰पुं॰) देखो क्षीव ।

छुगली-(हिं॰ स्त्री॰) घुंघुरू लगी हुई अंगूठी ।

छुआना-(हिं॰ क्रि॰) देखो छुलाना ;

छुआछत-(हिं॰ स्त्री॰) अस्पृश्य का स्पर्श, छूत का विचार, अशुचि का संसर्ग ।

छुआना-(हिं॰क्रि॰) स्पर्श कराना ।

छुईमुई-(हिं॰ स्त्री॰) एक छोटा कँटीला पौधा, लजाधुर, लज्जावन्ती ।

छुघरू-(हिं॰पु॰) घुंघरू ।

छुच्छा-(हिं॰वि॰) देखो छूछा ।

छुच्छी-(हिं॰ स्त्री॰) पोली पतली नली, नरकट का टुकड़ा, नाक में पहिरने का एक गहना, वह पतली नली जिसका एक छोर गिलास के आकार का होता है, कीप, टीप ।

छुछकारना-(हिं॰क्रि॰) कुत्ते को आखेट के पीछे लगाना, ललकारना, डांट फटकर बतलाना ।

छुछमछली-(हिं॰स्त्री॰) मेढक का अंडे से फूटा हुआ अंडा जिसका आकार मछली सा होता है ।

छुछहंड़-(हिं॰स्त्री॰) छूछी हांडी ।

छुछुंदर-(हिं॰पु॰) देखो छछूंदर ।

छुछुआना-(हिं॰क्रि॰) व्यर्थ इधर उधर घूमना, वृथा का बनावटी प्रेम दिखलाना ।

छुट-(हिं॰ अव्य॰) अतिरिक्त, सिवाय, छोड़कर ।

छुटकाना-(हिं॰ क्रि॰) अलग करना, छोड़ना, पकड़े न रहना, साथ न लेना, मुक्त करना, छुटकारा देना ।

छुटकारा-(हिं॰पु॰) बन्धन से मुक्ति, बाधा, आपत्ति या चिन्ता से रक्षा, किसी काम से छुट्टी ।

छुटना-(हिं॰क्रि॰) देखो छूटना ।

छुटपन-(हिं॰पुं॰) लघुता, छोटाई, लड़कपन, बचपन ।

छुटवाना-(हिं॰क्रि॰) देखो छोड़वाना ।

छुटाई-(हिं॰स्त्री॰) देखो छोटाई ।

छुटाना-(हिं॰ क्रि॰) छुड़ाना, बंधन से मुक्त करना ।

छुटौती-(हिं॰स्त्री॰) वह व्याज की रकम जो छोड़ी जाय ।

छुट्टा-(हिं॰वि॰) जो लंबा न हो, अकेला, जिसके पास असबाब न हो, **छुट्टा पान**-पान का पत्ता, बिना लगा हुआ पान; **छुट्टा छरिंदा**-अकेला, जिसके पास यात्री की कुछ सामग्री न हो ; **छुट्टे हाथ**-खाली हाथ ।

छुट्टी-(हिं॰स्त्री॰) मुक्ति, छुटकारा, अवकाश, वह समय जिसमें कोई काम न हो, कार्यालय के बन्द रहने का दिन, काम से छुड़ाये जाना, प्रस्थान करने की आज्ञा, **छुट्टी पाना**-पीछा छोड़ना, झंझट से बरी होना; **छुट्टी होना**-काम समाप्त होना; **छुट्टी पर जाना**-अवकाश ग्रहण करना; **छुट्टी मनाना**-अवकाश के दिनों में आनन्द लेना ।

छुड़वाना-(हिं॰ क्रि॰) छोड़ने का काम कराना, छोड़नेके लिये उद्यत करना

छुड़ाई-(हिं॰ स्त्री॰) छोड़ने की क्रिया; छुड़ाई; **छोड़ छोड़ाई** मुक्त ।

छुड़ाना-(हिं॰ क्रि॰) दूसरे की पकड़ से अलग करना, फँसी या उलझी हुई वस्तुको पृथक् करना, दूसरे के अधिकार से मुक्त करना, नौकरी से हटाना, किसी प्रवृत्तिको दूर करना, कार्यसे अलग करना, किसी वस्तु पर पोते हुए रंग आदि को दूर करना; **छुड़ौती**-(हिं॰ स्त्री॰) बंधन से मुक्त करने के लिये दिया हुआ धन, ऋणशेष जो छोड़ दिया जाय ।

छुत्-(हिं॰स्त्री॰) क्षुधा, भूख ।

छुतिहर-(हिं॰पुं॰) वह पात्र जो अशुचि वस्तु के संसर्ग से अशुद्ध हो गया हो, कुपात्र ।

छुतिहा-(हिं॰ वि॰) अस्पृश्य, दूषित, कलंकित, जिसमें छूत लग गई हो, (पु॰) शोरे का नमक ।

छुद्र-(हिं॰पु॰) देखो क्षुद्र ।

छुद्रावलि-(हिं॰स्त्री॰) करधनी ।

छुधा-(हिं॰स्त्री॰) क्षुधा, भूख ।

छुधित-(हिं॰वि॰) क्षुधित, भूखा ।

छुनछुनाना-(हिं॰वि॰) झनझन करना ।

छुनमुन, छुननमुनन-(हिं॰पुं॰) बच्चों के पैर के आभूषण का शब्द ।

छुप-(हिं॰पुं॰) क्षुप,झाड़ी, वायु, स्पर्श ।

छुपना, छुपाना-देखो छिपना,छिपाना ।

छुबुक-(हिं॰पुं॰) चिबुक, ठड्डी ।

छुभित-(हिं॰ वि॰) चंचल चित्त, घबड़ाया हुआ ।

छुभिराना-(हिं॰ क्रि॰) क्षुब्ध होना, चंचल होना ।

छुरधार-(हिं॰स्त्री॰) छुरे की धार ।

छुरा-(हिं॰ पुं॰) नाई का उस्तरा, बेंट लगा हुआ एक धारदार आक्रमण करने का अस्त्र ।

छुरित-(सं॰नपुं॰)लास्य नामक नृत्य का एक भेद, बिजली की चमक (वि॰) जड़ित, खचित ।

छुरी-(हिं॰स्त्री॰) फल तरकारी आदि काटने का बेंटदार, चाकू ; **छुरी चलाना**-छुरी से आक्रमण करना, किसी को अधिक कष्ट देदा ; **छुरी तेज करना**-हानि पहुँचाने की तैयारी करना ; **छुरी फेरना**-किसी का अनिष्ट करना ।

छुलछुलाना-(हिं॰ क्रि॰) थोड़ा थोड़ा करके पानी डालना, इतराना ।

छुलाना-(हिं॰क्रि॰) स्पर्श कराना ।

छुवना-(हिं॰क्रि॰) देखो छूना ।

छुवाछूत-(हिं॰स्त्री॰) देखो छुआछूत ।

छुवाना-(हिं॰ क्रि॰) छुलाना, स्पर्श कराना ।

छुवाव-(हिं॰ पु॰) संसर्ग, संबन्ध, लगाव ।

छुहना-(हिं॰क्रि॰) छू जाना, रंगा जाना, लीपा पोता जाना, छूना ।

छुहारा-(हिं॰पु॰) एक प्रकारका खजूर, पिंड खजूर का फल ।

छुही-(हिं॰स्त्री॰) सफ़ेद मिट्टी, खड़िया ।

छूंछा-(हिं॰वि॰) रिक्त,पोला, नि:सत्व, नि:सार, निर्धन ।

छूछा हाथ-बिना हथियार का हाथ, द्रव्य से खाली हाथ ।

छूंछी-(हिं॰स्त्री॰) देखो छुच्छी ।

छू-(हिं॰ पुं॰) मन्त्र पढ़कर मुख से हवा फेंकनेका शब्द, मन्त्रकी फूंक ; **छू होना**-चले जाना, **छछ बनना**-मूर्ख बनाना ; **छूमंतर होना**-जल्दी से लुप्त होना ।

छूचक-(हिं॰पु॰) अशौच, सूतक ।

छूछू-(हिं॰वि॰) मूर्ख,

छूट-(हिं॰स्त्री॰) मुक्ति, छुटकारा, अवकाश, देनदार के ऋण की छुड़ौती, किसी कार्य या उसके किसी अंग को भूल जानेका भाव, स्वतन्त्रता, गाली गलौज, स्त्री पुरुषका परस्पर त्याग, छींटा, बौछार, मलखंभ का एक व्यायाम ।

छूटना-(हिं॰क्रि॰) किसी बंधी या फँसी हुई वस्तु का अलग होना, लगाव में न रहना, दूर होना, किसी बांधने वाली वस्तुका अलग होना, छुटकारा होना, प्रस्थान करना, वियुक्त होना, बिछुड़ना, बन्द होना, दूर तक जाने वाले अस्त्रका चल पड़ना, किसी वस्तु का वेगसे निकलना, रस रस कर निकलना, शेष रहना, किसी काम का भूल से न किया जाना, नौकरी से हटाया जाना, जीविका का न रहना, पशुओं का अपनी मादा से संयोग करना , नियम भंग होना, किसी वस्तुका-वेगके साथ निकलना; **शरीर छूटना**-मृत्यु होना ; **छूट पड़ना**-गिर पड़ना; **बंदूक छूटना**-बंदूक से गोली निकल कर शब्द होना; **नाड़ी छूठना**-नाड़ी की गति बन्द होना ।

छूत-(हिं॰स्त्री॰) स्पर्श, संसर्ग, छुवाव, अस्पृश्य का संसर्ग, अपवित्र वस्तु के छूने का दोष, भूत प्रेत लगने का बुरा प्रभाव; **छूत का रोग**-संक्रामक रोग; **छूत उतारना**-अस्पृश्यता दूर करना,

छूना-(हिं॰क्रि॰) स्पर्श होना, उंगलियों को संसर्ग में लाना; दौड़ में किसी को पकड़ना, थोड़ा व्यवहार करना, लीपना, पोतना, धीरे से मारना, उन्नति में बराबर पहुंचना; **आकाश छूना**-बहुत ऊँचाई तक पहुंचना; **छूने से होना**-ऋतुमती या रजस्वला होना ।

छूरा-(हिं॰ पुं॰) देखो छुरा; **छूरी**-देखो छुरी ।

छेंकना-(हिं॰ क्रि॰) आच्छादित करना, घेरना, गति का अवरोध करना, रोकना, रेखाओं से घेरना, लिखे हुए अक्षर या वाक्य को लकीर खींचकर काटना ।

छेक-(हिं॰पुं॰) छिद्र, विभाग, कटाव,

घर का पालतू पक्षी ।
छेकानुप्रास-(सं० पुं०) वह अनुप्रास जिसके एक ही चरण में दो या अधिक वर्णो की आवृत्ति कुछ अन्तर पर होती हैं ।
छेकापह्नुति-(सं०स्त्री०) वह अलंकार जिसमें दूसरे के यथोचित अनुमान का खण्डन अयथार्थ उक्ति से किया जाता है ।
छेकोक्ति-(सं० स्त्री०) वह लोकोक्ति जिससे दूसरे अर्थ की ध्वनि निकलती हो ।
छेटा-(हिं०स्त्री०)बाधा, अवरोध, रुकावट
छेड़-(हिं०स्त्री०) संकुचित करने की क्रिया, हँसी दिल्लगी करने या कुढाने का काम, चिढ़ाने वाली बात, विरोध, आपस का झगड़ा, चुटकी बजाने के लिये सितार आदि के तारों का स्पर्श, छेड़ निकालना-चिढाने वाली बात की खोज करना (हिं०पुं०) छेद ।
छेड़ना-(हिं० क्रि०) छूना, दबाना, कोंचना, भड़कना, व्यग्र करना, चिढ़ना, कुढाना, चुटकी लेना, कोई कार्य आरंभ करना, बाजे को बजाने लिये स्पर्श करना, छेद करना, फोड़ा चीरना । छेड़वाना-(हिं० क्रि०) छेड़ने का काम दूसरे से कराना ।
छेड़ा-(हिं०पुं०) रस्सी, साँट ।
छेत्र-(हिं०पुं०) देखो क्षेत्र ।
छेद-(सं० पुं०) काटने या छेदने का काम, ध्वस, नाश, गणितमें भाजक, खण्ड, टुकड़ा, विवर, छिद्र, छेद, कुहर, दोष, बिल । छेदक-(सं०वि०) छेद करने वाला, विभाजक, छेद ।
छेदन-(सं०पुं०) काटने या चुभाने की क्रिया, चीरफाड़, नाश, विध्वंस, काटने का अस्त्र । छेदना-(हिं०क्रि०) किसी नुकीली वस्तु को चुभाकर छिद्रकरना, बेधना, भेदना, काटना, घाव करना, छिन्न करना । छेदनहार-(हिं०वि०) छेद करने वाला ।
छेदा-(हिं० पु०) घुन नामक कीड़ा ।
छेद्य-(सं० वि०) छेदनीय, छेद करने योग्य; छेद्यकंठ-कबूतर ।
छेना-(हिं०पुं०)फाड़ा हुआ दूध जिसका पानी निचोडकर अलगा दिया गया हो, फटे दूधका खोया, पनीर, कंडा, गोहरा, (क्रि०)घाव करना, काटना ।
छेनी-(हिं० स्त्री०) पत्थर, धातु आदि काटने का अस्त्र, टांकी, पोस्ते को चीरने की नहरनी ।
छेमंड-(हिं०वि०)बिना मां बापका लड़का
छेम-(हिं०पु०) देखो क्षेम ।
छेमकरी-(हिं०स्त्री०) सफेद चील ।
छेरना-(हि० क्रि०) अपच के कारण बारबार शौच होना ।
छेरी, छेली-(हिं०स्त्री०) बकरी, अजा ।
छेव-(हिं०पुं०)वार, चोट, घाव, आने वाली आपत्ति, अनिष्ट; छल-छेव-कपट व्यवहार ।
छेवन-(हिं० पुं०) कुम्हार का डोरा जिससे वह चाक पर के बरतन को काटता है ।
छेवना-(हिं०स्त्री०) ताड़ी (क्रि०) छिन्न करना, चिह्नित करना, काटना, फेकना, मिलाना, ऊपर डालना, छिनगाना ।
छेवर-(हिं०पु०)वल्कल,छिलका, त्वचा, छाल, चमड़ा ।
छेवा-(हिं०पुं०) छीलने या काटने का काम, घाव ।
छेह-(हिं०पुं०) देखो छेव, खण्डन, नाश (वि०) न्यून, टुकड़ा किया हुआ, (पुं०) नाच का एक भेद,(स्त्री०)छाया ।
छेहर-(हिं०वि०) छाया, साया ।
छै-(हिं०वि०)देखो छः (वि०)देखो क्षय ।
छैना-(हिं०वि०)क्षीण होना, नष्ट होना, कम होना ।
छैजाना-छेद का फट जाना ।
छैया-(हिं०पुं०) बच्चों के लिये प्यार का शब्द ।
छैल-(हिं०पुं०) बनाठना सुन्दर मनुष्य, बाँका, छैल चिकनियां-बना ठना मनुष्य; छैल छबीला-सजाधजा युवा पुरुष । छैला-(हिं०पुं०) सुन्दर वेष पहिरा हुआ मनुष्य, बांका ।
छोंकर, छोंकरा-(हिं०पुं०)शमीका वृक्ष
छोंड़ा-(हिं०पुं०)दही मथने की लकड़ी, मथानी ।
छोंड़ि-(हिं०स्त्री) देखो छोड़ा ।
छो-(हिं०पुं०)छोह, प्रीति, दया, क्षोभ,
छोई-(हिं०पुं०) ऊख की पत्ती, बिना रस की ऊख की गड़ेरी, सीठी ।
छोकड़ा-(हिं० पुं०) बालक, लड़का, अनुभवहीन युवक । छोकड़ापन-लड़कपन, नादानी । छोकड़िया, छोकड़ी-(हिं०स्त्री०) लड़की, बेटी ।
छोकला-(हिं०पुं०) वल्कल, छिलका ।
छोटका-(हिं०वि०) देखो छोटा ।
छोटपन-(हिं०पुं०) देखो छोटापन ।
छोटफ़न्नी-(हिं० स्त्री०) छोटे मुंह की गगरी ।
छोट भैया-(हिं० पुं०) पद में छोटा मनुष्य, कम हैसियत का आदमी ।
छोटा-(हिं०वि०) विस्तार या आकार में न्यून, डील डौल में कम, अल्पवय का, पद या प्रतिष्ठा में कम, जो महत्व का न हो, जिसमें गम्भीरता तथा शिष्टता का अभाव हो; छोटा मोटा-छोटासा, सामान्य । छोटाई-(हिं०स्त्री०) लघुता, क्षुद्रता, छोटापन, नीचता । छोटा कपड़ा-(हिं०पुं०) चोली, अंगिया । छोटापन-(हिं०पुं०) लघुता छोटाई, लड़कपन । छोटा पाट-(हिं०पुं०) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा ।
छोटी इलायची-(हिं०स्त्री०) सफेद गुजराती इलायची । छोटी हाजिरी-(हिं०स्त्री०) भारत में रहने वाले अंगरेजों का प्रातः काल का भोजन ।
छोड़छुट्टी-(हिं० स्त्री०) नाता या संबंध का त्याग ।
छोड़ना-(हिं० क्रि०) पकड़ से अलग करना, चिपकी हुई वस्तु को पृथक् करना, किसी स्थान पर पड़े रहने देना, साथ न ले जाना, परित्याग करना, पास न रखना, ग्रहण न करना, छूट देना, अपराध क्षमा करना, बंधन से निर्मुक्त करना, छुटकारा देना, प्रस्थान करना, दूर तक जाने वाले अस्त्र को फेंकना, आगे बढ़ जाना,बचा रखना,भीतर से वेग सहित बाहर आना, किसी काम को बन्द करना, किसी कार्य को भूल से न करना, ऊपर से गिराना, किसी व्याधि को दूर होना; स्थान छोड़ना-किसी स्थान से अन्यत्र चले जाना; किसी के पीछे छोड़ना-पकड़ने के लिये पीछे दौड़ना; छोड़कर-अतिरिक्त, सिवाय ।
छोड़वाना-(हिं०क्रि०) छोडने का काम दूसरे से कराना । छोड़ाना-(हि० पुं०) देखो छुडाना ।
छोत-(हिं०स्त्री०) छूत ।
छोनिप-(हिं०पुं०) भूपति, राजा ।
छोनी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि ।
छोप-(हिं०पु०) किसी गीली वस्तु की मोटी परत जो किसी वस्तु के ऊपर चढ़ाई जाना. मोटा लेप, चढ़ाने का काम, प्रहार, आघात, वार, छिपाव बचाव; छोपछाप-मरम्मत, दोष आदि का छिपाव या उद्धार ।
छोपना-(हिं०क्रि०)मोटी तह चढ़ाना, लेप करना, गोली मिट्टी का लोंदा रखना, किसी बात को छिपाना, आक्रमण से रक्षा करना, आच्छादित करना, छेंकना, ढाँपना, ग्रसना, घर दबाना, थोपना ; छोपना छापना-मरम्मत करना, नष्ट नहीं होने देना ।
छोपा-(हिं०पुं०) पाल के चारो कोनों पर बंधी हुई रस्सी जो ऊपर चढ़ाई जाती हैं ।
छोपाई-(हिं०स्त्री०) छोपने की क्रिया या परिश्रमिक ।
छोभ-(हिं०पुं०) क्षोभ, चित्त की खलबली । छोभना-(हिं० क्रि०) क्षुब्ध होना, चित्त का विचलित होना ।
छोभित-(हिं०वि०) विचलित, चंचल ।
छोभ्-(हिं०वि०) चिकना, कोमल,
छोर-(हिं०पुं०)किसी वस्तु का किनारा जहाँ उस की लम्बाई का अन्त हो, विस्तार की सीमा, नोक, किनारे पर का सूक्ष्म भाग; ओरछोर-आदि अन्त ।
छोरना-(हिं०क्रि०)बन्धन अलग करना, बंधन मुक्त करना, उलझन हटाना, छीनना, हरण करना ।
छोरा-(हिं०पुं०)बालक, लड़का,छोकड़ा ।
छोरा छोरी-(हिं०स्त्री०) नोच खसोट, बखेड़ा, छीना छीनी, झझट ।
छोरी-(हिं०स्त्री०) लड़की, छोकड़ी ।
छोल-(हिं०स्त्री०) छिल जाने का चिह्न, घाव । छोलना-(हिं० क्रि०), देखो छीलना, खुरुचना ।
छोलदारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा खेमा ।
छोलना-(हिं०क्रि०) छीलना ।
छोलनी-(हिं०स्त्री०)छीलने का उपकरण, हलवाई की खुरुचनी ।
छोला-(हिं० पु०) ऊख का छीलने वाला, चना ।
छोह-(हिं० पुं०) स्नेह, प्रेम, ममता, दया, कृपा । छोहना-(हिं०क्रि०)क्षुब्ध होना, चंचल होना, प्रेम दिखलाना,
छोहरा-(हिं० पुं०) बालक, लड़का, छोकड़ा । छोहरी-(हिं०स्त्री०)बालिका, लड़की ।
छोहाना-(हिं० क्रि०) प्रेम दिखलाना, अनुग्रह करना, दया दिखलाना ।
छोहारा-(हिं०पुं०) देखो छुहारा ।
छोहिनी-(हिं०स्त्री०) देखो अक्षौहिणी ।
छोही-(हिं०वि०)प्रेमी, स्नेही, अनुरागी, (स्त्री०)रस निकाली हुई ऊखकी सीठी ।
छौंक-(हिं० स्त्री०) तड़का, बघार ।
छौंकना-(हिं०क्रि०)हींग, जीरा, मरचा आदि से बघार देना ।
छौड़ा-(हिं० पुं०) अन्न रखने का खत्ता, गाड़ ।
छौकना-(हि० क्रि०) किसी पशु का चारो पैर उठाकर किसी की ओर झपटना ।
छौना-(हिं०पुं०) पशु का बच्चा ।
छौर-(हिं०पुं०) देखो क्षौर,
छौलदारी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा तंबू या खेमा ।
छौरा-(हिं०पुं०) ज्वार या बाजरे का डंठल जो काट कर चौपायों को खिलाया जाता है, डंठल ।

ज

ज-हिन्दी भाषा का एक व्यञ्जन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है इसका उच्चारण स्थान तालु है, (सं०पुं०) मृत्युञ्जय, विष्णु, पिता, जन्म, विष, तेल,पिशाच वेग, मुक्ति (वि०) वेग युक्त, जीतने वाला, (प्रत्य०) उत्पन्न ।
जंगरा-(हिं०पुं०) मूंग, मटर उर्द इत्यादि के डंठल जो दाना निकाल लेने पर बच जाते हैं, जेंगरा ।
जंगरैत-(हिं०वि०) परिश्रमी,
जंगल-(हिं०पुं०) बन,
जंगल जलेबी-(हिं०पु०) पुरीष ।
जंगला-(हिं०पुं०) खिड़की आदि में लगी हुई छड़ों की पंक्ति, कटहरा, साड़ी, दुपट्टे आदि के किनारे पर

काढा हुआ बेल बूटा, एक राग का नाम, जंगरा।
जंगली-(हिं०वि०) जगल में होने वाला जंगल संबंधी, आपसे आप उगने, वाले पौधे, जंगल में रहने वाला, बनैला, जो पालतू न हो।
जंगा-(हिं०पुं०) घुंघरू का दाना।
जंगारी-(हिं०वि०)नीले रंग का,नीला।
जंगाल-(हिं०पु०) देखो जंगार।
जंगाली-(हिं०पुं०) नीले रंग का एक प्रकार का चमकीला रेशमी वस्त्र।
जंघा-(हिं०स्त्री०) जांघ,
जंघामथानी-(हिं० स्त्री०) कुलटा, छिनाल स्त्री।
जंघार-(हिं०स्त्री०) जांघ का फोड़ा।
जंघाल, जंघारा-(हिं०पु०)राजपूतों की एक जाति, दूत।
जंघिया-(हिं०स्त्री०)जांघ तक का चस्त पायजामा।
जँचना-(हिं०क्रि०) देखा भाला जाना, जाँच में ठीक ठहरना, उचित जान पड़ना, प्रतीत होना।
जँचा-(हिं०वि०) सुपरिक्षित,जँचा हुआ, अचूक, ठीक ठीक।
जंजल-(हिं०वि०) पुराना और जर्जर,
जंजाल-(हिं०पुं०) झंझट,प्रपंच, बखेड़ा, फँसाव, उलझन, पानी का भँवर, एक प्रकार की लंबी नाल की बंदूक, बड़ी जाल, बड़े मुंह की तोप,
जंजाल में पड़ना-संकट में पड़ना।
जंजालिया, जंजाली-(हिं०वि०) उपद्रवी, झगड़ालू बखेड़िया।
जंजीरा-(हिं०पु०) जंजीर के समान सिलाई। **जंजीरी**-(हिं०वि०) जिसमे जंजीर लगी हो।**जंजीरेदार**-(हिं०वि०) जंजीरदार।
जंड-(हिं०पु०) विवाह के अन्त में समधियों का भोज।
जंतर-(हिं०पुं०) यन्त्र, गले में पहिरने का एक गहना,कठुला, जतर, मंतर, पत्थर का बड़ा ढोका, बीन बाजा, **जंतर मंतर**-यंत्र मंत्र, जादू टोना।
जंतरा, जंत्रा-(हिं०स्त्री०) बैलगाड़ी के ढांचे पर कसने की रस्सी।
जंतरी-(हिं०पुं०) सोनार का तार महीन करने का यंत्र, तिथि पत्र, पंजिका, जादूगर, बीन आदि बाजा बजानेवाला; **जंतरी में खींचना**-तार को इस यंत्र में खींच कर पतला करना।
जँतसार-(हिं०स्त्री०) जांता गाड़ने का स्थान।
जंता-(हिं०पुं०) पक्के लोहे की छिद्र की हुई पटरी जिसमें तार खींच कर महीन किया जाता है, (वि०) दंड देनेवाला।
जंताना-(हिं०क्रि०)जाँते में पिसजाना।
जती-(हिं०स्त्री०)देखोजंतरी,माता मां।
जंतु-देखो जन्तु।
जंत्र-(हिं०पुं०) कल, यंत्र, ताला,
जंत्रना-ताला लगाना, ताले में बन्द करना; **जंत्र मंत्र**-देखो जंतर मंतर।
जंत्रित-(हिं०वि०) बंद किया हुआ, बंधा हुआ।
जंत्री-(हिं०पुं०) बीन आदि बाजा बजाने वाला, (वि०) जकड़बन्द करने वाला (पुं०) बाजा, (स्त्री०)देखो जंतरी
जंदरा-(हिं०पु० यंत्र, जाँता, ताला
जंबाल-(हिं०पु०) पक, कीचड,सेवार, केवड़ा।
जंबालिनी-(हिं०स्त्री०) नदी
जंबाला-(हिं०स्त्री०) केतकी का वृक्ष।
जंबीर-(हिं०पु०) जंबारीनीबू, वनतुलसी
जंबु, जंबुक-देखो जम्बु जम्बुक।
जंबूरा-(हिं०पु०) जिस चरखे पर तोप चढ़ाई जाती हैं, भँवरकली, चिमटे के तरह की छोटी संडसी, बांक।
जंभ-(हिं०पुं०) जबड़ा, दाढ, जभीरी नीबू, जंभाई।
जंभ-देखो जम्भ।
जंभाई-(हिं०स्त्री०) आलस्य आदि के कारण मुख खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया, उबासी।
जंभाना-(हिं०क्रि०) जंभाई लेना, उबासी लेना।
जंभारि-(हिं०पुं०) इन्द्र, विष्णु, वज्र, अग्नि।
जई-(हिं०पुं०) जव की जाति का एक अन्न, जव का छोटा अंकुर, **जई डालना**-अंखुवा निकलने के लिये किसी अन्नको तर करना,**जई,लेना**-यह देखनें के लिये किसी अन्न को बोना कि उसमें अँखुवा निकलता है या नहीं।
जऊ-(हिं०क्रि०वि०) यद्यपि।
जकंदना-(हिं०क्रि०) उछाल मारना, कूदना, टूट पड़ना, जकंदनि,दौड़धूप
जक-(हिं०पु०) भूत, प्रेत, यज्ञ, कंजूस, आदमी (स्त्री०) हठ, जिद, धुन, **जक बंधना**-धुन लगना।
जकड़-(हिं०स्त्री०) जकड़ने का भाव,
जकड़बंद करना-कसकर बांधना,
जकड़ना-कसकर बांधना, अंग का टस से मस नहीं होना।
जकना-(हिं०क्रि०) भौचक्का होना,
जकित-(हिं०वि०)विस्मित,चकित,व्यग्र।
जकुट-(हिं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।
जक्की-(हिं०स्त्री०)एकप्रकारकी बुलबुल
जक्त-(हिं०पुं०) देखो जगत,
जक्ष-(हिं०पुं०) देखो यक्ष।
जक्षण-(सं०पुं०) भक्षण, भोजन।
जक्ष्मा-हिं०स्त्री० देखो यक्ष्मा।
जखम-(हिं०पुं०) घाव, मानसिक क्लेश; **जखम ताजा (हरा) होना**-बीती हुई आपत्ति का पुनरागमन।
जखमी-(हिं०वि०) घाव लगा हुआ, घायल।
जखेड़ा-(हिं०पुं०) देखो जखीड़ा, समह, जमाव।
जग-(हिं०पुं) जगत्, संसार, जन समुदाय, संसार के लोग; देखो यज्ञ।
जगकर-ब्रह्मा।
जगच्चक्षु-(सं०पुं०) सूर्यनारायण।
जगजगा-(हिं०पुं०) पन्नी (वि०) जगमगाता हुआ चमकीला; **जगजगाना**-चमकना, जगमगाना।
जगजोनि--(हिं०पुं०) जगयोनि, ब्रह्मा।
जगझंप-(हिं० पुं०) एक प्रकार का प्राचीन ढोल।
जगड्वाल-(हिं०पुं०)व्यर्थका आडम्बर।
जगण-(सं०पुं०) पिगल शास्त्र के अनुसार तीन अक्षरों का एक गण जिसके आदि अन्त के अक्षर लघु तथा मध्य का अक्षर गुरु होता है।
जगत्-(सं०पुं०) विश्व, संसार,महादेव, वायु, भुवन, जंगम, गोपीचन्दन।
जगत-(हिं०स्त्री०)कुवेंके ऊपर का चारो ओर का चबूतरा।
जगतसेठ-(हिं०पुं०) बहुत बड़ा धनवान महाजन।
जगती-(सं०स्त्री०) संसार, पृथ्वी, एक वैदिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं।
जगतीतल-(सं०पुं०) भूमि, पृथ्वी।
जगत्साक्षी-(सं०पुं०) सूर्य।
जगदन्तक-(सं०पुं०) मृत्यु, यम।
जगदम्बा, जगदम्बिका-(सं०स्त्री०) दुर्गा
जगद-(हिं०पुं०) रक्षक, पालक। **जगदादि**-(सं०पु०) परमेश्वर, ब्रह्मा।
जगदाधार-(सं०पुं०) परमेश्वर, वायु, हवा; **जगदानन्द**-(सं०पु०) परमेश्वर।
जगदीश, जगदीश्वर-(सं०पुं०) परमेश्वर, विष्णु, जगन्नाथ। **जगदीश्वरी** (सं०स्त्री०) भगवती, दुर्गा।
जगद्गुरु-(सं०पु०) परमेश्वर, महादेव, नारद,अत्यन्त पूजनीय पुरुष, शंकराचार्य के गद्दी के महन्त की उपाधि। किसी संप्रदाय के आचार्य की उपाधि। **जगद्गौरी**-(सं०स्त्री०)दुर्गा।
जगद्धाता-(सं०पु)ब्रह्मा,विष्णु महादेव।
जगद्धात्री-(सं०पुं०) दुर्गा, सरस्वती।
जगद्बल-(सं०पुं०) वायु, हवा।
जगद्योनि-(सं०पुं०) शिव, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, परमेश्वर, पृथ्वी।
जगद्वहा-(सं०पुं०) पृथ्वी, भूमि।
जगद्विनाश-(सं०पुं० प्रलय काल।
जगना-(हिं०क्रि०)नींद से उठना, सावधान होना, सचेत होना, देवी देवता का अधिक प्रभाव दिखलाना, चमकना, जगमगाना, अग्निका जलना, उत्तेजित होना, उभड़ना।
जगन्नाथ-(सं०पु०) संसार का स्वामी, ईश्वर, विष्णु की प्रसिद्ध मूर्ति।
जगन्निवास-(सं०पुं०)परमेश्वर, विष्णु।
जगन्नियन्ता-(सं०पुं०)ईश्वर,परमात्मा
जगन्मय-(सं०पु०) विष्णु। **जगन्मयी**-(सं०स्त्री०) सम्पूर्ण विश्व को चलाने वाली शक्ति, लक्ष्मी। **जगन्माता**-(सं०स्त्री०)दुर्गा। **जगन्मोहिनी**-(सं०स्त्री०) महामाया, दुर्गा।
जगप्रान-(हिं०पुं०) वायु,
जगमग-(हिं०वि०) प्रकाशित,चमकीला,
जगमगाना-प्रकाश से किसी वस्तु का अति चमकना,झलकना,**जगमगाहट**-चमक, चमचमाहट।
जगर-(सं०पुं०) कवच।
जगरनाथ-(हिं०पु०) देखो जगन्नाथ।
जगरमगर-(हिं०वि०) देखो जगमग।
जगरा-(हिं०स्त्री०) खजूर की खांड़।
जगल-(सं०पु०) कल्क, मद्य, गोबर।
जगवाना-(हिं०क्रि०) निद्राभंग कराना, सोतेसे उठवाना।
जगहर-(हिं०स्त्री०) जगने की अवस्था।
जगात-(हिं०पु०) दान, कर,
जगाती-(हिं०पुं०) कर उगाहने वाला कर्मचारी।
जगाना-(हिं०क्रि०)नींद छोड़ने के लिये किसीको प्रेरणा करना,चैतन्य करना, होश दिलाना, उत्तेजित करना सुलगाना, फिर से ठीक स्थिति में लाना।
जगार-(हिं०स्त्री०) जागरण, जागृति।
जगीर-(हिं०स्त्री०) देखो जागीर।
जगीला-(हिं०वि०) जागने से अलसाया हुआ।
जग्धि-(सं०स्त्री०) खाने की क्रिया, भोजन।
जग्य-(हिं०पुं०) देखो यज्ञ।
जग्मि-(सं०पुं०) वायु, हवा।
जघन-(सं०नपुं०) कमर के नीचे का भाग, नितंब चूतड़। **जघन चपला**-(सं०स्त्री०) कुलटा स्त्री; आर्या छन्द का एक भेद।
जघन्य-(सं०वि०) अन्तिम, आखिरी, त्याज्य, क्षुद्र, नीच, निकृष्ट, बहुत बुरा, (पुं०) शूद्र जाति, हीन वर्ण; **जघन्यज**-अन्त्यज।
जघ्नि-(सं०पुं०) वध करनेवाला; वह अस्त्र जिससे वध किया जाय।
जंगम-(सं०वि०) चलने फिरने वाला, एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने योग्य; **जङ्गम गल्म**-पैदल सिपाहियों की सेना; **जङ्गम विष**-चर प्राणियों के दंश से उत्पन्न विष।
जङ्गल-(सं०पुं०) जलशून्य भूमि, वन, अरण्य, मांस; **जङ्गल में मङ्गल**-सूनसान स्थान में चहल पहल; **जङ्गल जाना**-टट्टी जाना, शौच का जाना।
जंगुल-(सं०पुं०) विष।
जङ्घा-(सं०स्त्री०) उरु, जांघ, पिंडली।
जङ्घारथ-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम।
जङ्घाल-(सं०पुं०) धावक, दूत।
जचना-(हिं०क्रि०) देखो जँचना।
जच्छ-(हिं०पुं०) देखो यक्ष।
जजबा-(पुं०) धोखा, छल।
जजमान-(हिं०पुं०) देखो यजमान।
जजी-(हिं०स्त्री०) जज की कचहरी, जज की अदालत, जज का काम, जज का पद।

जटना-(हिं०क्रि०) ठगना, धोखा देकर कुछ ले लेना, देखो जडना ।
जटल-(हिं०स्त्री०) झूठ मूठ की बात, बकवाद ।
जटा-(सं०स्त्री०) एक में एक उझले हुए सिर के बाल, जड़के पतले सूत्र, कवांच, बालछड़ जटामासी, झकरा, उझले हुए रेशे, **जटाचीर**-(सं०पुं०) शिव, महादेव, **जटाजूट**-(सं०पुं०) जटा का समूह, महादेव जी की जटा; **जटाटंक, जटाटीर**-(सं०पुं०) शिव, महादेव; **जटाधर**-(सं०पुं०) महादेव,. शिव; **जटाधारी**-(सं०वि०) जिसके जटा हो (पुं०) शिव, महादेव ।
जटाना-(हिं०क्रि०) ठगा जाना, धोखे में आकर हानि कर लेना ।
जटामाली-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
जटामासी-(सं०स्त्री०) एक वनस्पति की सुगन्धित जड़, बालछड़ ।
जटायु-(सं०पुं०) वह गृध्र जो रावण से लडा था जब रावण सीता को हरण करके लिये जाता था ।
जटाल-(सं०वि०) जटाधारी, (पुं०) बरगद का वृक्ष ।
जटाव-(हिं०स्त्री०) कुम्हार की पात्र गढ़ने की मिट्टी ।
जटासुर-(सं०पुं०) एक राक्षस जिसको भीम ने मार डाला था ।
जटित-(सं०वि०) जडा हुआ, खचित ।
जटिल-(सं०वि०) जटा वाला, अत्यन्त कठिन, क्रूर हिंसक, दुर्बोध (पुं०) सिंह, महादेव ।
जटिला-(सं०स्त्री०) ब्रह्मचारिणी, पिप्पली
जटी-सं०स्त्री०) जटामासी ।
जट्टल-(सं०पुं०) शरीर पर का धब्बा, लच्छन ।
जठर-(सं०नपुं०) पेट, कुक्षि, एक देश का नाम, शरीर, उदर का एक रोग, (वि०) वृद्ध, बूढ़ा, कठिन । **जठराग्नि**-(हिं०स्त्री०) अन्न को पचाने की पेट में की अग्नि या गरमी । **जठरामय**-(सं०पुं०) अतिसार, जलोदर रोग ।
जठल-(सं०पुं०) वैदिक काल का एक जलपात्र ।
जठेरा-(हिं०वि०) जेठा, वय में बड़ा ।
जड़-(सं०वि०) अचेतन, जिसमें चेतना न हो, स्तब्ध, चेष्टाहीन, मर्ख, मन्दबुद्धि, जिसके चित्त में मोह हो, अनजान, मूक, गूंगा, गहरा, सरदी से ठिठुरा हुआ, (हिं०पुं०) जल, पानी, कारण, हेतु, आधार, वृक्ष का वह भाग जो भूमि के भीतर रहता है, नीव; **जड़ उखाड़ना या खोदना**-समूल नाश करना; **जड़ जमना**-स्थायी होना; **जड़ पकड़ना**-जमना; **जड़ क्रिया**-दीर्घसूत्रता । **जड़ता**-(सं०स्त्री०) अचेतन अवस्था, मूर्खता, अचलता, स्तब्धता, चित्त के विवेक शून्य होने की अवस्था में उत्पन्न एक संचारी भाव । **जड़ताई**-(हिं०स्त्री०) देखो जड़ता । **जड़त्व**-(सं०नपुं०) अचेतन स्थिति, स्वय हिल डोल न सकने की स्थिति, गति का अभाव ।
जड़ना-(हिं० क्रि०) बैठाना, पिच्ची करना, किसी पदार्थ से ठोंकना, किसी के विरुद्ध कुछ कहना ।
जड़भरत-(सं०पुं०) अंगिरस गोत्र के एक ब्राह्मण जो जडवत् रहते थे ।
जड़वाना-(हिं०क्रि०) जड़ने का काम दूसरे से कराना ।
जड़वी-(हिं०स्त्री०) धान का छोटापौधा ।
जड़हन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान जो एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में बैठाया जाता है ।
जड़ाई-(हिं०स्त्री०) जड़ने का काम, पिच्चीकारी ।
जड़ाऊ-(हिं०वि०) जिसपर रत्न जड़े हों, पिच्चीकारी किया हुआ ।
जड़ान-(हिं०स्त्री०) जड़नें का कास, जड़ाई । **जड़ाना**-(हिं०क्रि०) जड़ने काम दूसरे से कराना, ठंढ खाना, शीत लगना ।
जड़ाव-(हिं०पुं०) जड़ने का काम ।
जड़ावट-(हिं०स्त्री०) देखो जड़ाव ।
जड़ावर-(हिं०पुं०) जाड़े में पहिरने के कपड़े ।
जड़ावल-(हिं०पुं०) देखो जड़ावर ।
जड़ित-(हिं०वि०) जड़ा हुआ, जिसमें रत्न जड़े हों ।
जड़िमा-(हिं०स्त्री०) अज्ञान ।
जड़िया-(सं०स्त्री०) जड़ता, जड़त्व ।
जड़िया-(हिं०पुं०) आभूषणों में नगीने जड़ने वाला ।
जड़ी-(हिं०स्त्री०) औषधि की जड़ जो औषधियों में प्रयोग की जाती है; **जड़ी बूटी**-बनौषधि ।
जड़ीला-(हिं०वि०) जड़दार, जिसमें जड़ हो ।
जड़ुआ-(हिं०पुं०) अंगूठे में पहिरने का चांदी का छल्ला ।
जड़ैया-(हिं०स्त्री०) वह ज्वर जिसके आरंभ में जाड़ा लगता है, जूड़ी ।
जढाना-(हिं०क्रि०) जड़ हो जाना, हठ करना ।
जत-(हिं०वि०) जिस मात्रा का, जितना ।
जतन-(हिं०पुं०) देखो यत्न; **जतनी**-(हिं०पुं०) यत्न करने वाला, चतुर, चालाक ।
जतलाना, जताना-(हिं०क्रि०) पहिले से सूचना देने वाला, बतलाने वाला ।
जतारा-(हिं०पुं०) वंश, घराना, जाति, कुल ।
जति, जती-(हिं०पुं०) यति, सन्यासी ।
जतु-(सं०पुं०) गोंद, लाह, शिलाजीत ।
जतुक-(सं०नपुं०) हींग, लाक्षा, लाह, शरीर पर का धब्बा या चिह्न, लच्छन । **जतुका**-(सं०स्त्री०) पहाड़ी नामक लता, चमगादड़ । **जतुगृह**-(सं०नपुं०) जल्दी से जल जाने वाला घास फूस का बना हुआ घर ; **जतुपुत्रक**-(सं०पुं०) शतरंज का मोहरा, चौसर की गोंटी । **जतुमुख**-(सं०पुं०) एक प्रकार का धान । **जतुरस**-(सं०पुं०) लाह का बना हुआ रंग ।
जतूका-(हिं०स्त्री०) देखो जतुका ।
जतेक-(हिं०वि०) जितना ।
जत्था-(हिं०पुं०) अनेक जीवों का झुंड, समूह, वर्ग ।
जत्रु-(सं०नपुं०) कन्धे और बांह का जोड़, हँसिया ।
जथा-(हिं०क्रि०वि०) यथा, जिस प्रकार से (स्त्री०) समूह मण्डली, ।
जद-(हिं०क्रि०वि०) जब, जब कभी, (अव्य०) यदि, अगर ।
जदपि-(हिं०क्रि०वि०) यद्यपि ।
जदवद-(हिं०पुं०) देखो जद्दवद्द ।
जदवर, जदवार-(अ०पुं०) निर्विषी, निर्विसी ।
जदुपति जदुपाल-(हिं०पुं०) यदुपति, श्रीकृष्ण; **जदुपुर**-मथुरा; **जदुवंसी**-(हिं०पुं०) देखो यदुवंशी । **जदुराई**-(हिं० पुं०) यदुपति, श्रीकृष्ण । **जदुराज, जदुराय, जदुवर, जदुबीर**-(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण ।
जद्दपि-(हिं०क्रि०वि०) यद्यपि ।
जद्दबद्द-(हिं०पुं०) न कहने योग्य बात, दुर्वचन ।
जनगम-(हिं०पुं०) चाण्डाल ।
जन-(सं०पुं०) लोक, लोग, समूह, समुदाय, प्रजा, अनयायी, गंवार, दास, अनुचर, ऊपर के सात लोकों में से पांचवां लोक; **जनक**-(सं०पुं०) जन्मदाता, पिता, बाप, सीता के पिता का नाम, संबरासुर के पुत्र का नाम; **जनकता**-(सं०स्त्री०) उत्पन्न करने की शक्ति; **जनकनन्दिनी**-(सं०स्त्री०) जानकी, सीता; **जनकपुर**-(सं०नपुं०) मिथिला की प्राचीन राजधानी । **जनकौर**-(हिं०पुं०) जनक का स्थान, जनक नगर, राजा जनक के वंश का । **जनचक्षु**-(सं०पुं०) सूर्य । **जनचर्चा**-(सं०स्त्री०) जन प्रवाद, लोकप्रवाद । **जनता**-(सं०स्त्री०) जनसमूह, सर्वसाधारण लोग । **जनदेव**-(सं०पुं०) नरपति, राजा ।
जनधा-(सं० पुं०) अग्नि, आग ।
जनन(सं०नपुं०) उत्पत्ति, जन्म, आविर्भाव, तंत्र के अनुसार मंत्रों का प्रथम संस्कार, कुल, वंश, पिता ईश्वर । **जनना**-(हिं० क्रि०) प्रसव करना, सन्तान उत्पन्न करना; **जननाशौच**-जन्म होने पर अशुचि, वृद्धि अशौच ।
जननी-(सं० स्त्री०) उत्पन्न करने वाली, माता, जूही का वृक्ष, मजीठ, कुटकी, जटामासी, दया, कृपा, चमगादड़ ।
जननेन्द्रिय-(सं०नपुं०) भग, योनि ।
जनपद-(सं०पुं०) देश, देशवासी, प्रजा, **जनपद कल्याणी**-वेश्या ।
जनपाल, जनपालक-(सं०पुं०) मनुष्यों का पालन पोषण करने वाला ।
जनप्रवाद-(सं०पुं०) लोकनिन्दा, लोकप्रवाद, किवदन्ती, जनश्रुति ।
जनप्रिय-(सं०वि०) सर्वप्रिय, सबका प्यारा; **जनप्रियता**-(सं०स्त्री०) सर्वप्रियता ।
जनम-(हिं०पुं०) उत्पत्ति, जन्म, आयु, जीवन, **जनम गँवाना**-व्यर्थ समय नष्ट करना; **जनम बिगड़ना**-धर्म नष्ट होना; **जनमघूंटी**-(हिं०स्त्री०) वह घूंटी जो बच्चों को जन्म काल से दो तीन वर्ष तक पिलाई जाती है **जनम दिन**-(हिं०पुं०) उत्पति का दिन, जन्म दिन; **जनमना**-(हिं०क्रि०) उत्पन्न होना, जन्म लेना । **जनमसघाती**-(हिं०पुं०) जन्म से साथ देने वाला, बहुत दिनों से साथ रहने वाला, जिसका साथ जन्मभर रहे ।
जनमाना-हिं०क्रि०) प्रसव कराना ।
जनमारो-(हिं० पुं०) जन्म ।
जनमेजय-(सं०पुं०) देखो जन्मेजय ।
जनयिता-(सं०पुं०) जन्म देने वाला पिता, बाप ।
जनयित्री-(सं०स्त्री०) जन्म देनेवाली, माता
जनरव-(सं०पुं०) जनश्रुति, लोकनिन्दा, किवदन्ती, दुर्नाम, कोलाहल ।
जनवल्लभ-(सं०नपुं०) जनप्रिय, लोकप्रिय।
जनवाई-(हिं०स्त्री०) देखो जनाई ।
जनवाद-(हिं०पुं०) देखो जनरव ।
जनवाना-(हिं०क्रि०) प्रसव कराना, सन्तति उत्पन्न कराना, समाचार दिलवाना, किसीकेद्वारासूचितकराना।
जनवास-(सं०पुं०) लोगों के ठहरने का स्थान, बरातियों के ठहरने का घर, सभा, समाज । **जनवासा**-(हिं०पुं०) देखो जनवास ।
जनश्रुत-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध ।
जनश्रुति-(सं०स्त्री०) किंवदन्ती ।
जनस्थान-(सं०) दण्डकारण्य, दण्डकवन
जनसंख्या-(सं०स्त्री०) नगर देश आदि के निवासियों की गणना, आबादी ।
जनहरण-(सं०) दण्डकवृत्त का एक भेद
जना-(हिं०वि०) उत्पन्न हुआ ।
जनान्त-(सं०पुं०) जिसकी प्रदेश सीमा निश्चितहो, यम, मनुष्योंके रहनेकास्थान
जनान्तिक-(सं०) संकेत द्वारा वार्तालाप
जना-(हिं० स्त्री०) उत्पत्ति । **जनाई**-(हिं० स्त्री०) जनाने वाली दाई, पैदा कराई ।
जनाऊ-(हिं०पुं०) देखो जनाव ।
जनाचार-(सं०हिं०) देश या समाज की प्रचलित रीति ।
जनाधिनाथ-(सं०पुं०) ईश्वर राजा ।
जनाना-(हिं० क्रि०) जताना, मालूम कराना, उत्पन्न कराना, जनन कम काम कराना ।
जनार्दन-(सं०पुं०) विष्णु, (वि०) दुखदायी
जनाव-(हिं०पुं०) सूचना ।

जनावर-(हिं॰पुं॰) देखो जानवर।
जनाशन-(सं॰पुं॰)मनुष्य भक्षक,भेडिया
जनाश्रय-सं॰पुं॰) यात्रियों के ठहरने का स्थान, धर्मशाला।
जनि-(सं॰स्त्री॰) उत्पत्ति, जन्म, माता, स्त्री,पुत्रवधू,पतोह, भार्या,जन्मभूमि (वि॰) मतवाली।
जनिका-(हिं॰) पहेली, बुझौवल।
जनित-(सं॰वि॰) उत्पन्न, जनमा हुआ, उत्पन्न कि हुआ। **जनिता**-(हिं॰पु॰) उत्पन्न करने वाला, पिता।
जनित्र-(सं॰नपुं॰) जन्मस्थान, जन्म भूमि। **जनित्री**-(सं॰स्त्री॰) उत्पन्न करने वाली, माता।
जनियां-(हिं॰स्त्री॰)प्रियतमा, प्राणप्यारी
जनी-(सं॰स्त्री॰) उत्पन्न करने वाली माता, स्त्री, अनुचरी, पुत्री, कन्या, दासी, वधू।
जनु-(हिं॰ क्रि॰ वि॰) मानो (स्त्री॰) जन्म, उत्पत्ति।
जनेन्द्र-(स॰पुं॰) भूपति, राजा।
जनेऊ-(हिं॰पुं॰) ब्रह्मसूत्र, यज्ञोपवीत, यज्ञोपवीत सस्कार।
जनेत-(हिं॰स्त्री॰) वरयात्रा, बारात।
जनेता-(हिं॰पुं॰) पिता, बाप।
जनेरा-(हिं॰पु॰)एक प्रकार का बाजरा जिसके पौधे बहुत लम्बे होते हैं,मक्का
जनेव-(हिं॰पुं॰) देखो जनेऊ।
जनेश-(सं॰पुं॰) भूपति, नरेश, राजा।
जनेष्टा-(सं॰स्त्री॰) हल्दी, पर्पट,पपडी।
जनैया-(हिं॰वि॰) जानने वाला,जानकार
जनो-(हिं॰पुं॰) जनेऊ, (क्रि॰वि॰) मानो
जन्तु-(सं॰ पुं॰) जन्म लेनेवाला जीव, प्राणी, जानवर; **जन्तुकम्बू**-शंख का कीडा, शख। **जन्तुका**-(सं॰ स्त्री॰) लक्ष,लाख, लाह। **जन्तुघ्न**-(स॰वि॰) कृमिघ्न, प्राणि नाशक। **जंतुघ्नी**-(सं॰स्त्री॰) बायविडंग। **जन्तुफल**-(सं॰नपुं॰)उदुंबर,गूलर। **जन्तुमारी**-(सं॰स्त्री॰) नीबू।
जन्म-(सं॰नपुं॰) उत्पत्ति,उद्भव,जीवन, अविर्भाव; **जन्म लेना**-उत्पन्न होना; **जन्मकाल**-उत्पन्न होने का समय; **जन्मकाल**-(सं॰पुं॰) विष्णु; **जन्म कुण्डली**-(सं॰स्त्री॰) एक प्रकार का चक्र, जिससे किसी के जन्म के समय मे ग्रहों की स्थिति का पता गलता है; **जन्मक्षेत्र**-(सं॰नपु॰) जन्मभूमि, जन्म स्थान; **जन्मग्रहण**-(सं॰) उत्पत्ति; **जन्मज्येष्ठ**-(स॰वि॰) प्रथम जात, जो पहिले उत्पन्न हुआ हो; **जन्मतिथि**-(सं॰स्त्री॰) जन्म दिन-वह तिथि जिसमें जन्म हुआ हो; **जन्मद**-(सं॰वि॰) जन्म देने वाला, पिता; **जन्मदिन**-(सं॰नपु॰) जन्म का दिन, वर्षगांठ; **जन्म नक्षत्र**-(सं॰ नपु॰) जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो।
जन्मना-(हिं॰क्रि॰) जन्म लेना, पैदा होना, अस्तित्व में आना। **जन्मपति**-(सं॰पुं॰) जन्मराशि के अधिपति।
जन्मपत्र-(सं॰नपुं॰) किसी वस्तु के आदि से अन्त तक का विवरण; जीवन चरित्र,जन्मपत्री। **जन्मपत्रिका**; **जन्मपत्री**-(स॰ स्त्री॰) वह पत्र जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति, दशा, अन्तर्दशा आदि दिये हों। **जन्मभाज**-(सं॰पु॰)प्राणी, जीव; **जन्मभूमि**-(सं॰ स्त्री॰) वह देश जहां किसी का जन्म हुआ हो, जन्म स्थान। **जन्मराशि**-(सं॰ पु॰) वह राशि जिसमें किसी का जन्म हुआ हो। **जन्मरोगी**-(सं॰पुं॰) वह जो जन्म काल से ही रोगी हो; **जन्म सुधा**-(स॰स्त्री॰)जन्म स्थान, जन्मभूमि **जन्मविधवा**-(सं॰ स्त्री॰) वह स्त्री जिसका पति उसके बचपन मे ही मर गया हो। **जन्मशय्या**-(सं॰स्त्री॰) वह चारपाई जिस पर किसी का जन्म होता हो। **जन्मस्थान**-(स॰नपुं॰) जन्मभूमि, माता, गर्भ, कुण्डली में वह स्थान जिसमें जन्म समय के ग्रह रहते हैं।
जन्मा-(हिं॰ पु॰) जन्मवाला (वि॰) उत्पन्न। **जन्माधिप**-(सं॰पु॰) जन्म लग्न का स्वामी, शिव। **जन्माना**-(हिं॰क्रि॰) जन्मदेना, उत्पन्न करना। **जन्मान्तर**-(सं॰नपु॰) अन्य जन्म, लोकान्तर। **जन्मान्ध**-(सं॰वि॰)जन्म का अन्धा। **जन्माशौच**-(स॰नपुं॰) जन्म संबंधी अशौच, वृद्धि। **जन्माष्टमी**-(सं॰स्त्री॰) श्रीकृष्ण के जन्म की अष्टमी तिथि। **जन्मास्पद**-(स॰नपुं॰) जन्म स्थान, जन्म भूमि।
जन्मेजय-(हिं॰ पु॰) राजा परीक्षित के पुत्र का नाम जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था, विष्णु।
जन्मेश-(सं॰पुं॰)जन्म राशिका स्वामी।
जन्मोत्सव-(सं॰पुं॰) किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव।
जन्य-(सं॰नपुं॰) हाट, बाजार, निन्दा, संग्राम, युद्ध, (पु॰) जनक, पिता, शिव, महादेव, शरीर, किंवदन्ती, वि॰) उत्पादक, जन्म देने वाला, जातीय,राष्टीय,जन सबंधी, मनुष्यों का हितकर, जो उत्पन्न हुआ हो, (पु॰) नव विवाहिता के भाईबन्द मित्र, सामान्य मनुष्य, बराती लोग वर, दुलहा।
जन्या-(सं॰स्त्री॰) प्रीति, प्रेम, वधू की सहेली।
जन्यु-(सं॰पुं॰) अग्नि,ब्रह्मा,प्राणी,जन्म
जप-(सं॰पु॰) पाठ, अध्ययन, मन्त्र आदि का बारंबार उच्चार, मन्त्रका संख्या पूर्वक पाठ। **जपजी**-(हिं॰पु॰) सिक्खों का एक पवित्र धर्म ग्रन्थ। **जपतप**-(हिं॰पुं॰)पूजा पाठ। **जपता**-(सं॰ स्त्री॰) जप करने का काम।
जपना-(हिं॰क्रि॰) किसी वाक्य या वाक्य खण्ड को धीरे धीरे देर तक दोहराना, किसी मन्त्र की संख्या नुसार धीरे धीरे बारंबार उच्चारण करना, खाजाना, जल्दी जल्दी निगल जाना।
जपनी-(हिं॰स्त्री॰) जपने की माला, गोमुखी। **जपनीय**-(सं॰ वि॰) जप करने योग्य। **जपपरायण**-(स॰वि॰) जप करने में आसक्त। **जपमाला**-(सं॰स्त्री॰) जप के निमित्त व्यवहार होने वाली माला।
जपा-(सं॰स्त्री॰)अड़हुल का बृक्ष या पुष्प
जपिया, जपी-(हिं॰पुं॰) जप करनेवाला
जप्त-(हिं॰पु॰) राज्य द्वारा अपहरण।
जप्य-(सं॰वि॰) जपनीय, जपने योग्य।
जब-हि॰क्रि॰वि॰)जिस समय,जिसवक्त
जबड़ा-(हिं॰पु॰)कल्ला, गालके भीतर का भाग।
जबरा-(हिं॰वि॰) शक्तिमान्, बली, एक प्रकार का अन्न रखने का बड़ा पात्र, एक प्रकार का घोड़ेके आकार का पशु जिसकी शरीर पर काली लंबी धारियां होती हैं (अं॰जीब्रा)
जबाला-(सं॰स्त्री॰) सत्यकाम ऋषि की माता का नाम।
जभन-(सं॰पु॰) स्त्री प्रसग, मैथुन।
जम-(हिं॰पु॰) देखो यम।
जमक-(हिं॰पु॰) देखो यमक।
जमकात, जमकातर-(हिं॰पुं॰) पानी का भँवर, यमराज का छुरा।
जमघट-(हिं॰पु॰) देखो यमघंट।
जमघट-(हिं॰पु॰) मनुष्यों की भीड़भाड़, जमावड़ा।
जमज-(हिं॰वि॰) देखो यमज, जुटुवा।
जमडाढ-(हिं॰स्त्री॰) कटारों की तरह का एक अस्त्र।
जमदग्नि-(सं॰पुं॰) एक वैदिक ऋषि का नाम।
जमदिसा-(हिं॰स्त्री॰) दक्षिण दिशा।
जमधर-(हिं॰ ॰) देखो जमडाढ।
जमन-(सं॰नपु॰) भोजन, खाद्य पदार्थ (हिं॰पुं॰) देखो यवन।
जमना-(हि॰क्रि॰) किसी तरल पदार्थ का गाढ़ा होना,एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में दृढ़ता पूर्वक बैठ जाना, एकत्र होना, अधिक चोट पड़ना, किसी काम करने में हाथ बैठना; स्थिर होना, निश्चल होना, अनेक मनुष्यों के सन्मुख किसी कार्य का उत्तम रूप से होना, किसी काम का अच्छी तरह चलने योग्य होना, उत्पन्न होना, उगना।
जमनिका-(हिं॰स्त्री॰) जवनिका, परदा।
जमनौना-(हिं॰पुं॰) प्रतिम के बदले में दिया जाने वाला धन।
जमवट-(हिं॰स्त्री॰) लकड़ी का गोल चक्कर जो कुवें की पेंदी में रखकर इस पर ईंटों की जोड़ाई की जाती है, जमोट।
जमराज-(हिं॰ ॰) देखो यमराज।
जमवार-(हिं॰पुं॰) यम का द्वार।
जमीर-(अ॰पुं॰) अन्तःकरण।
जमाई-(हिं॰पु॰) जमाता, दामाद, जवाई, (स्त्री॰) जमने की क्रिया, जमाने की पारिश्रमिक।
जमाजत्था-(हिं॰स्त्री॰) धन, सम्पत्ति।
जमाना-(हिं॰क्रि॰) किसी तरल पदार्थ को गाढ़ा करना, एक पदार्थ को दूसरे में दृढ़ता पूर्वक बैठाना, चोट लगाना, हाथ से होने वाले काम का अभ्यास करना, उत्पन्न करना, उपजाना।
जमामार-(हिं॰वि॰) अनुचित रूप से दूसरे का धन दबा लेने वाला।
जमालगोटा-(हिं॰पुं॰) एक पौधे का फल जो अत्यन्त रेचक औषधि है।
जमाव-(हिं॰स्त्री॰) जमने या जमाने का भाव; **जमावट**-जमने का भाव।
जमावड़ा-(हिं॰पु॰) मनुष्यों की भीड़, जत्था।
जमीकन्द-(फा॰पु॰) सूरन, ओल।
जमुकना-(हिं॰क्रि॰) अति समीप होना
जमुना-(हिं॰स्त्री॰) देखो यमुना।
जमुनियां-(हिं॰वि॰) जामुन के रंग का, जामुनी।
जमुहाना-(हिं॰क्रि॰) देखो जँभाना।
जमोग-(हिं॰पुं॰) स्वीकार करने की क्रिया
जमोगना-(हिं॰क्रि॰) हिसाब किताब की जांच करना, भार सौंपना, सरेखना, जांच कराना।
जम्ब-(सं॰पुं॰) जंभीरी नीबू का वृक्ष।
जम्बा-(सं॰स्त्री॰) जामुन का फल।
जम्बाल-(सं॰पु॰)पंक,कीचड़,सेवार, एक सुगंधित घास, केतकी का वृक्ष।
जम्बालिनी-(सं॰स्त्री॰) नदी,पद्मिनी।
जम्बी-(सं॰पुं॰) तुलसी का पौधा, पुदीने का शाक।
जम्बु-(सं॰स्त्री॰) जामुन का वृक्ष, जम्बूद्वीप। **जम्बुक**-(सं॰पुं॰) जामुन, सोनापाठा, शृगाल, केवड़ा, वरुण वृक्ष। **जम्बुल**-(सं॰पु॰) जामुन का वृक्ष,केतकी, कर्णपाली नामक रोग।
जम्बूक-(स॰पुं॰) शृगाल, सियार, वाराहीकन्द।
जम्बूका-(सं॰स्त्री॰) किशमिश।
जम्बूद्वीप-(सं॰पु॰) पृथ्वी के सात द्वीपों में से एक।
जम्भक-(सं॰वि॰) जंभाई लेनेवाला; (पुं॰) शिव। **जम्भन**-(सं॰नपुं॰) रति, भोजन, जभाई।
जम्भा-(सं॰स्त्री॰) जृम्भा, जंभाई।
जम्हाई-(हिं॰स्त्री॰) देखो जृम्भा।
जम्हाना-(हिं॰क्रि॰) उबासी लेना।
जंभाना-(हिं॰कि॰) जंभाई लेना।
जयक-(सं॰वि॰) जययुक्त।
जयकरी-(स॰स्त्री॰)चौपाई नामक छन्द
जय-(सं॰पु॰) युद्ध आदि में शत्रु का का पराजय, जीत, युधिष्ठिर, विष्णु के एक पौर्षद का नाम, विष्णु, एक राजर्षि का नाम, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, दक्षिण द्वारका,

घर, हरी मूंग, इन्द्र, सूर्य, अयन, लाभ, इन्द्र को पुत्र जयन्त ; **जय मनाना**-विजय की कामना करना । **जयकोलाहल**-(स०पु०) जयध्वनि, कलकल ध्वनि । **जयखाता**-(हिं०पु०) बनियों की आय व्यय लिखने की बही । **जयघोषणा**-(सं०नपु०) जीत की घोषणा ।
जयजयवन्ती-(हिं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम ।
जयजीव-(हिं०पुं०)अभिवादन का शब्द
जयती-(हिं०स्त्री०) श्रीराग के अन्तर्गत एक रागिणी का नाम ।
जयद-(स०वि०) जयदाता,जीतनेवाला
जयदुर्गा-(सं०स्त्री०) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम ।
जयद्रथ-(स०पु०) सिन्धु सौवीर देश के राजा जो दुर्योधन के बहनोई थे ।
जयध्वज-(सं०पु०) अवन्ती के राजा का नाम, जयपताका ।
जयन्तिका-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी ।
जयन्ती-(सं०स्त्री०) दुर्गा, इन्द्र की कन्या, पताका, ध्वजा, जन्माष्टमी, किसी महात्मा की जन्म तिथि पर होनेवाला उत्सव, हलदी, पार्वती, बच, मजीठ ।
जयना-(हिं०क्रि०) जीतना ।
जयपत्र-(सं०पु०) वह पत्र जिसपर किसी विवाद के बाद राजकीय मन्तव्य लिखा जाता है ।
जयपाल(सं०पुं०) विधि, विष्णु, भूपाल
जयप्रिय-(स०पुं०)विराट राजा के भाई का नाम, ताल का एक भेद ।
जयमङ्गल-(सं०पुं०) राजा के सवारी की हाथी ।
जयमाल-(हिं०स्त्री०)विजय प्राप्त करने पर विजयी को पहिराने की माला, वह माला जिसको स्वयंवर के समय कन्या अपने चुने हुए मनुष्य के गले में डालती है ।
जययज्ञ-(स०पु०) अश्वमेध यज्ञ ।
जयलेख-(सं०पुं०) वह पत्र जो द्वारा हुआ पुरुष अपने जीतने वाले को लिख देता है ।
जयवाहिनी-(स०स्त्री०) इन्द्राणी, शची ।
जयशब्द-(सं०पु०) जयध्वनि ।
जयश्री-(सं०स्त्री०) विजयलक्ष्मी, विजय, एक ताल का नाम ।
जयस्तम्भ-(स०पुं०)जयसूचक स्तंभ,वह स्तंभ जिसको विजयी राजा किसी देश को जीतने पर विजयके स्मारक रूप में बनवाता है ।
जया-(सं०स्त्री०) दुर्गा,पार्वती, त्रयोदशी अष्टमी और तृतीया तिथिका नाम, हरड़, हरी दूब, पताका,ध्वजा, भाँग, अड़हुल का फूल, सोलह मात्रिकाओं में से एक,केंवाच, (वि०)जय वाला ।
जयाञ्जन-(सं०नपु०)स्त्रोतोञ्जन,सुरमा।
जयावती-(स० स्त्री०)एक संकररागिणी ।
जयिष्णु-(स०वि०)जयशील, जीतनेवाला।
जयी-(हिं०वि०) पिजयी, जयशील ।
जर-(सं०पुं०) जरा, वृद्धावस्था(हिं०पु०) देखो ज्वर ।
जरई-(हिं०पु०) जई नामक अन्न ।
जरक-(स०पुं०) हिङ्गु, हींग ।
जरकटी-(हिं०पुं०)एकप्रकार का पक्षी।
जरजर-(हिं०पुं०) देखो जर्जर ।
जरठ-(सं० वि०) कर्कश, कठोर, कड़ा, वृद्ध, जीर्ण, पुराना (पु०) जरा बुढ़ापा । जरठाई, वृद्धावस्था ।
जरण-(सं०नपु०) हींग, जीरा, काला नमक, बुढापा ।
जरत-(सं०वि०) वृद्ध, पुराना, (पुं०) बुड्ढा मनुष्य ।
जरतार--(हिं०पुं०) सोने चाँदी का तार, जरी; जरतारी-जरी का काम,
जरती-(सं०स्त्री०) बुड्ढी औरत ।
जरत्कारु-(स०पुं०)एक ऋषिका नाम।
जरदष्टि-(सं०वि०) दीर्घजीवी (पुं०) **जरदगव**-(सं०पु०) बुड्ढा बैल, एक वृद्धावस्था, गृद्ध का नाम ।
जरन-(हिं०स्त्री०) देखो जलन ।
जरनि-(हिं०स्त्री०) दह, जय,
जरना-(हिं०क्रि०) देखो जलना ।
जरन्त-(सं०पुं०) महिष, भैंसा, वृद्ध मनुष्य ।
जरमुआ-(हिं०वि०)-स्त्री०जरमुई) अधिक ईर्ष्या करने वाला, जलने वाला ।
जरस-(सं०नपुं०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
जरांकुश-(हिं०पुं०) एक प्रकारकी सुगंधित घास ।
जरा-(सं०स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा, वार्धक्य । **जराग्रस्त**-(सं०वि०) जराभिभूत, वृद्ध, बुड्ढा । **जराउ**-(हिं०वि०) देखो जड़ाऊ । **जरातुर**-(सं०वि०)जीर्ण, पुराना,बहुत दिनों का ।
जराना-(हिं०क्रि०) देखो जलाना ।
जराभीरु-(स०पुं०)कामदेव (वि०) वृद्धावस्था से डरने वाला ।
जराय, जराव-(हिं०पुं०) जड़ाव ।
जरायु-(स०पुं०) गर्भ की झिल्ली जिसमें बंधा हुआ बच्चा उत्पन्न होता है, गर्भाशय, कलल, खेड़ी, भग, योनि,जटायु पक्षी । **जरायुज**-(सं०पुं०) वह प्राणी जो खेड़ी में लिपटा हुआ गर्भ से पैदा होता है ।
जरासन्ध-(सं०पुं०) चन्द्रवंशीय राजा बृहद्रथ के पुत्र का नाम ।
जरिया-(हिं०पुं०) देखो जड़िया ।
जरीबाना-(हिं०पुं०) देखो जुरमाना ।
जरौट-(हिं०वि०) देखो जड़ाऊ ।
जर्जर-(स०पुं०) शैलज, पत्थरफूल, इन्द्र की ध्वजा का नाम, शैवाल, सेवार, (वि०) जीर्ण, बहुत पुराना, टूटा फटा, वृद्ध, बुड्ढा । **जर्जरता**-(हिं०स्त्री०) जीर्णता । **जर्जरित**-(सं०वि०) खंडित, टूटा फूटा ।
जलंधर-(हिं०पुं०) पेटमें पानी भर आने का रोग ।
जल-(स०नपुं०) पानीय, पानी, अप्, उशीर, खास, नेत्रवाला, पूर्वाषाढा नक्षत्र ।
जल अलि-(स०पुं०) पानी का भँवर, जल के तल पर तैरने वाला एक प्रकार का काला कीड़ा ।
जलई-(हिं०स्त्री०) दोनों ओर मुड़ा हुआ काँटा ।
जलक-(सं०नपुं०) शंख, कपर्दक, कौड़ी । **जलकण्टक**-(सं० पु०) शृङ्गाटक, सिंघाड़ा, जलकुंभी । **जलकन्द**-(सं०पुं०) कदली, केला, सिंघाड़ा । **जलकपि**-(स०पुं०) शिशुमार, सूंस नामक जलजन्तु । **जलकर**-(हिं०पुं०) जल से होने वाली आय पर कर । **जलकरङ्क**-(सं०पुं०) नारियल,कमल, शंख, मेघ । **जलकल्क**-(स० पुं०) कर्दम, कीचड़, काई । **जलकान्त**-(स०पुं०) जल के अधिष्ठाता वरुण । **जलकामुक**-(सं०पु०) जलाभिलाषी । **जलकिराट**-(स०पुं०) मगर,घड़ियाल, सूंस । **जलकुंभी**-(हि० पु०) जल के तल पर होने वाली एक वनस्पति, कुंभी । **जलकुक्कुट**-(स०पुं०) उहुक कपक्षी । **जलकुण्डल**-(सं०पुं०)शैवाल, सेवार । **जलकूपी**-(सं०स्त्री०) कुवाँ, तालाब । **जलकेतु**-(स०पुं०) पश्चिम दिशा में उदय होने वाला एक पुच्छल तारा । **जलकेलि**-(सं०पुं०) जलक्रीड़ा, जल में खेलने की क्रीड़ा । **जलकेश**-(स०पुं०) शैवाल, सेवार । **जलक्रिया**-(स०स्त्री०) पित्रादि का तर्पण । **जलक्रीडा**-(सं०स्त्री०) जल में खेलने या उछलने की क्रीडा, जलविहार । **जलखग**-(स०पु०) जल के किनारे रहने वाला पक्षी । **जलखर, जलखरी**-(हिं०) फल तरकारी आदि को ले जाने की जालीदार थैली । **जलखावा**-(हिं०पुं०) जलपान,कलेवा; **जलगुल्म**-(स०पुं०) जल का भँवर, कछुवा, चौखूटा तालाब । **जलघड़ी**-(हिं०स्त्री०) समय जानने का एक प्राचीन यन्त्र जिसमें नांद में भरे जल में एक महीन छिद्र की कटोरी डाल दी जाती है जो एक घंटे में जल से भर कर डूब जाती है । **जलचर**-(सं०पु०) जलमें रहनेवाला जन्तु । **जलचरजीव**-(सं०पुं०) मत्स्यजीवी, मछली खाकर निर्वाह करने वाला मनुष्य । **जलचादर**-(हिं०स्त्री०) पानी का विस्तृत प्रवाह । **जलचारी**-(स०वि०) देखो जलचर । **जलडिम्ब**-(सं०पुं०) शंबूक, घोंघा । **जलतरङ्ग**-(स०पुं०) जल की तरग, लहर, धातु की छोटी बड़ी कटोरियों में जल भर कर लकड़ी के डंडे से बजाने का एक बाजा । **जलज**-(सं०वि०) जो पानी में उत्पन्न हो, कमल, मछली, जलजन्तु, शंख, मोती । **जैलजात**-(हिं०वि०) देखो जलज (स०पुं०) कमल, पद्म ।
जलडमरूमध्य-(स०पु०) दो बड़े समुद्रों को जोड़ने वाला समुद्र का पतला भाग । **जलतरंग**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बाजा । **जलतापी**-(स०पु०) ह्वेल नामक बड़ी समुद्री मछली । **जलताल**-(सं०पु०) देखो जलतापी । **जलत्रा**-(सं०स्त्री०) छत्र, छाता; जंगमकुटी-जो एक स्थान से दूसरे स्थान में हटाई जा सकती है । **जलत्रास**-(सं०पु०) कुत्ते, सियार आदि के काटने पर जल देख कर जो भय उत्पन्न होता है ।
जलथंभ-(हिं०पुं०) देखो जलस्तम्भ ।
जलद-(स०वि०) जल देने वाला (पुं०) मेघ, बादल, कपूर, मोथा, कुचले का वृक्ष; **जलदकाल**-वर्षाऋतु, बरसात; **जलदक्षय**-शरदऋतु; **जलदागम**-वर्षाकाल; **जलदेव**-पूर्वाषाढा नक्षत्र; **जलदेवता**-वरुण ।
जलधर-(सं०पुं०) मेघ, बादल, मोथा, समुद्र । **जलधरमाला**-(स०स्त्री०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते है । **जलधरी**-(सं०स्त्री०) पत्थर धातु आदि का बना हुआ अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है । **जलधारा**-(स०स्त्री०) जलप्रवाह, पानी की धारा, जल की धारा के नीचे बैठे रहने की तपस्या।
जलधारी-(स०वि०) जल धारण करने वाला,जलधारक; (पुं०) मेघ,बादल
जलधि-(सं०पुं०) समुद्र, दश शङ्ख की संख्या । **जलधिगा**-(सं०स्त्री०) नदी, लक्ष्मी । **जलधिज**-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा ।
जलन-(हिं०स्त्री०) बहुत अधिक ईर्ष्या, जलने का कष्ट या पीड़ा ।
जलनकुल-(सं०पुं०) ऊदबिलाव ।
जलना-(हिं०क्रि०) दग्ध होना, भस्म होना, बलना अग्नि के कारण भाप बनना या कोयला हो जाना, झुलसना, अधिक डाह के कारण चिढना **जले पर नमक छिड़कना**-दुःखित को और कष्ट देना; **जली कटी बात**-मर्मवेधी वार्ता, लगती हुई बात ।
जलनिधि-(सं०पुं०) समुद्र, चार की संख्या । **जलनिर्गम**-(सं०पुं०) पानी का निकास ।
जलन्धम-(सं०स्त्री०) सत्यभामा से उत्पन्न कृष्ण की एक कन्या का नाम
जलन्धर-(सं०पु०) एक असुर का नाम
जलपक्षी-(सं०पुं०) जल के आस पास रहने वाली चिड़िया ।
जलपति-(सं०पुं०) समुद्र, पूर्वाषाढ नक्षत्र । **जलपथ**-(सं०पुं०) जल बहने का मार्ग, प्रणाली, नाली ।
जलपना-(हिं०क्रि०) डींग मारना,(स्त्री०) व्यर्थ की बात, **जलपाटल**-(हिं०पुं०) कज्जल,काजल । **जलपादप**-(सं०पुं०) हंस ।
जलपान-(हिं० पुं०) प्रातराश, कलेवा

जलपीपल-(हिं०स्त्री०) मत्स्यगंधा नामक औषधि ।
जलपूर-(सं०पुं०)जल से भरी हुई नदी ।
जलप्रदान-(सं०नपुं०) प्रेत पितर आदि को तर्पण ।
जलप्रपा-(सं०स्त्री०) पौसरा, सबील ।
जलप्रपात-(सं०पुं०) किसी नदी के स्रोत का ऊंचे स्थान से नीचे को गिरना । जलप्रवाह-(सं०पुं०) पानी का बहाव, नदी मे शव आदि को बहा देने की क्रिया । जलप्रान्त-(सं०पुं०) जलालय के आस पास का स्थान । जलप्राय-(सं०नपुं०) अनुपदेश, जिस देश मे जल अधिकता से हो । जलप्रिय-(सं०पुं०)चातक पक्षी, पपीहा, मछली, (वि०) जो जल बहुत चाहता हो ।
जलप्लव-(सं०पुं०) जलनकुल, ऊदबिलाव । जलप्लावन-(सं०नपुं०)बाढ़, पानी से किसी स्थान का डूब जाना।
जलप्लावित-(सं०वि०) जल में मग्न, पानी से डूबा हुआ ।
जलफल-(सं०नपुं०)श्रृङ्गाटक, सिंघाड़ा;
जलबन्ध जलथन्धु-(सं०पुं०) मत्स्य, मछली ।
जलबालिका-(सं०स्त्री०) विद्युत्,बिजली
जलबिम्ब-(सं०पुं०) पानी का बुलबुला
जलबिल्व-(सं०पुं०) कर्कट, केंकड़ा ।
जलबेंत-(हिं०पुं०) एक प्रकार की बेंत जो जलाशयों के पास भूमि में उत्पन्न होती है ।
जलभँवरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का काला कीड़ा जो पानी पर बड़े वेग से दौड़ता है ।
जलभाजन-(सं०नपुं०) पानी रखने का पात्र ।
जलभालू-(हिं०पुं०) सील जाति का एक प्रकार का जलजन्तु ।
जलभू-(सं०पुं०) मेघ, बादल, कपूर ।
जलभृत्-(सं०पुं०) मेघ, बादल, पानी रखने का पात्र ।
जलमय-(सं०वि०) जलपूर्ण, पानी से भरा हुआ ।
जलमापनयन्त्र-(सं०पुं०) जल मापने का यन्त्र ।
जलमानुष-(सं०पुं०) पराऊ नामक जलजन्तु जिसका नाभि के ऊपर का भाग मनुष्य के समान तथा नीचे का भाग मछली के ऐसा होता है ।
जलमार्ग-(सं० पुं०) जलपथ, पानी बहने की नाली । जलमार्जार-(सं०पुं०) ऊदबिलाव । जलमुच्-(सं०पुं०) मेघ, बादल, कपूर ।
जलमूर्ति-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
जलमूर्तिका-(सं०स्त्री०)करका, ओला।
जलमोद-(सं०पुं०) उशीर, खस ।
जलयन्त्र-(सं०नपुं०)धारायन्त्र,जलघड़ी
जलयात्रा-(सं०स्त्री०) अभिषेक आदि शुभ कार्य के लिये जल लाने की यात्रा
जलयान-(सं०नपुं०) वह सवारी जो जल में काम आती है,जहाज,नाव इ०
जलरङ्क-(सं०पुं०) बक पक्षी, बकुला ।
जलराशि-(सं०पुं०) जल समूह, समुद्र ।
जलरूह-(सं०नपुं०) पद्म, कमल ।
जल रूप-(सं०पुं०) जल का आकार, मकर राशि ।
जल लता-(सं०स्त्री०) पानी की लहर ।
जल वल्ली-(सं०स्त्री०)श्रृंगाटक,सिंघाड़ा
जलवाद्य-(सं०नपुं०) पानी का बाजा, जलतरंग ।
जलवाना-(हिं०क्रि०) जलाने का काम दूसरे से कराना ।
जलवानीर-(सं०पुं०) देखो जलबेत ।
जलवास-(सं०पुं०) उशीर, खस ।
जलवाह-(सं०पुं०) मेघ, बादल (वि०) जल ले जाने वाला । जलवाहक-(सं०पुं०) पानी ढोने वाला । जलवाहन-(सं०पुं०) देखो जलवाहक ।
जलविडाल-(सं०पुं०) ऊदबिलाव ।
जलवीर्य-(सं०पुं०) भरत के एक पुत्र का नाम ।
जलव्याघ्र-(सं०पुं०) सील के प्रकार का एक जल जन्तु । जलव्याल-(सं०पुं०) पानी में का सर्प ।
जलशयन, जलशायी-(सं०पुं०) विष्णु ।
जलशुचि-(सं०पुं०) श्रृंगाटक,सिंघाड़ा
जलसंस्कार-(सं०पुं०) स्नान करना, नहाना ।
जलसन्ध-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
जलसर्पिणी-(सं०स्त्री०) जलौका, जोंक।
जलसुत-(हिं०पुं०) कमल, मोती ।
जलसूचि-(सं०पुं०) सूंस, जलौकस, जोंक, कछुआ ।
जलसेना-(सं०स्त्री०) समुद्र में जहाजों पर लड़ने वाली सेना ।
जलस्तम्भ-(सं०पुं०) एक दैवी घटना जिसमें जलीय बाष्प स्तंभ रूप में देख पड़ती है । जलस्तम्भन-(सं० नपुं०) मन्त्रों के से बल से जल की गति रोकना ।
जलस्थान-(सं०नपुं०) जलाशय ।
जलहर-(हिं०वि०) जलमय, जल से भरा हुआ (सं०) जलाशय । जलहरण-(सं०नपुं०) जल का एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, एक प्रकार का छन्द जिसके चार चरणों में बत्तीस अक्षर होते हैं । जलहरी-(हिं०स्त्री०) पत्थर या धातु का बना हुआ शिवलिंग स्थापित करने का अर्घा, छिद्र किया हुआ पात्र जिसमें से बूंद बूंद करके पानी टपकता है, यह शिवलिंग के ऊपर गरमी में टांग दिया जाता है ।
जलहस्ती-(सं०पुं०) सील की जाति का एक बड़ा समुद्र का जलजन्तु ।
जलहार, जलहारी-(सं०वि०)जलवाहक, पानी भरने वाला ।
जलहास-(सं०पुं०) समुद्र का फेन ।
जलाक-(हिं०पुं०) उदर की ज्वाला ।
जलाकर-(सं०पुं०) समुद्र, नदी आदि, जलाशय ।
जलाका-(सं०स्त्री०) जलौका, जोंक ।
जलकाश-(सं०पुं०) बादल और ताराओं सहित आकाश ।
जलाखु-(सं०पुं०) जलनकुल,ऊदबिलाव
जलाजल-(हिं०पुं०) गोट आदि की झालर ।
जलाञ्चल-(सं०नपुं०) पानी की नहर, सेवार ।
जलाञ्जलि-(सं०पुं०) प्रेत पितर आदि का जल से तर्पण ।
जलातङ्क-(सं०पुं०) देखो जलत्रास ।
जलाद-(हिं०पुं०) घातक ।
जलातन-(हिं०वि०) क्रोधी, ईर्षालु, रूक्ष प्रकृति का ।
जलात्मिका-(सं०स्त्री०) जोंक, कुवाँ ।
जलाधर-(सं०पुं०) वरुण, पूर्वाषाढा नक्षत्र ।
जलाधिप-(सं०पुं०) जल के अधिपति वरुण ।
जलाना-(हिं०क्रि०) प्रज्वलित करना, दहकाना, भस्म करना, अधिक गरमी से किसी पदार्थ को भाफ़ या कोयले के रूप में बदलना, गरमी से पीडित करना, झुलसना, किसी के चित्त को सन्तप्त करना, डाह उत्पन्न करना ।
जलापा-(हिं०पुं०) डाह या ईर्ष्या के कारण उत्पन्न होने वाला दुःख ।
जलापात-(सं०पुं०) देखो जलप्रपात ।
जलायुका-(सं०स्त्री०) जलौका, जोंक ।
जलार्क-(सं०पुं०) पानी में सूर्य का प्रतिबिम्ब ।
जलार्णव-(सं०पुं०) वर्षा काल,बरसात
जलार्थी-(सं०वि०) जलाभिलाषी,प्यासा
जलार्द्र-(सं०वि०) पानी से भीगा हुआ।
जलालुक-(सं०नपुं०) पद्मकन्द,भसीढ़ ।
जलाव-(हिं०पुं०)खमीर उठना,किमाम।
जलावन-(हिं०पुं०) इन्धन, जलाने की लकड़ी, जल जाने वाला किसी वस्तु का अंश ।
जलावर्त-(सं०पुं०) पानी का भँवर ।
जलाशय-(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पानी जमा हो । जलाहल-(हिं०वि०) जलमय, पानी से भरा हुआ ।
जालका, जलुका-(हिं०स्त्री०) जोंक ।
जलेचर-(सं०पुं०) जलचर पक्षी (वि०) जो पानी में चलता हो ।
जलज, जलेजात-(सं०नपुं०) पद्म,कमल (वि०) पानी में होने वाला ।
जलेन्द्र-(सं०पुं०) वरुण, महा समुद्र ।
जलेतन-(हिं०वि०) जलदी क्रुद्ध होने वाला, चिड़चिड़ा ।
जलेबा-(हिं०पुं०) बड़ी जलेबी ।
जलेबी-(हिं०स्त्री०) इमरती की तरह की एक प्रकार की कुण्डलाकार मिठाई, कुण्डली, गोल घेरा, लपेट, एक प्रकार की आतिशबाज़ी ।
जलेरुहा-(सं०वि०) जलजात, पानी में होने वाला ।
जलेवाह-(सं०पुं०) पानी में गोता लगा कर पदार्थों को निकालने वाला ।
जलेश-(सं०पुं०) वरुण,समुद्र, जलाधिपति । जलेशय-(सं०वि०) जल में रहने वाला । जलेश्वर-(सं०पुं०) वरुण, समुद्र ।
जलोका, जलोकिका-(सं०स्त्री०) जोंक ।
जलोच्छ्वास-(सं०पुं०) पानी की बाढ़ ।
जलोदर-(हिं०स्त्री०) मछली ।
जलचरी-(सं०नपुं०) एक रोग जिसमें पेट में पानी भर जाता है ।
जलोद्भव-(सं०वि०) जल में उत्पन्न होने वाला ।
जलौकस, जलौका-(सं०पुं०) जोंक ।
जल्दी-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता,
जल्प-(सं०पुं०) कथन, कहना, प्रलाप, व्यर्थ की बातचीत, बकवाद ।
जल्पक-(सं०पुं०) वाचाल, बकवादी;
जल्पन-(सं०नपुं०) वाचालता,प्रलाप, बकवाद, डींग; जल्पना-(हिं०क्रि०) व्यर्थ की बकवाद करना, डींग मारना ।
जल्ला-(हिं०पुं०) तालाब, झील ।
जव-(सं०पुं०) वेग (हिं०पुं०) यव, जौ ।
जवन-(सं०पुं०) वेग (वि०) वेग युक्त, (पुं०) अरब देश ।
जवनिका-(हिं०स्त्री०) देखो यवनिका ।
जवनी-(हिं०स्त्री०) यवन स्त्री, मुसलमानिन, ग्रीक देश की स्त्री ।
जवा-(सं०स्त्री०) जपा पुष्प, अड़हुल, लहसुन ।
जवाई-(हिं०स्त्री०) जाने की क्रिया, गमन,जाने के लिये दिया हुआ धन ।
जवाइन-(हिं०स्त्री०) देखो अजवाइन ।
जवाखार-(हिं०पुं०) यवक्षार, जौ से निकाला हुआ क्षार या नमक ।
जवारि-(हिं०पुं०) एक सुगंधित पदार्थ
जाधिक-(सं० वि०) बहुत तत्र दौड़ने वाला ।
जवापुष्प-(सं०पुं०) देखो जपा ।
जवारा-(हिं०पुं०) जौ के हरे अंकुर,जई
जवारी-(हिं०स्त्री०) सितार सारंगी आदि में का वह लकड़ी का छोटा टुकड़ा जिसपर से तार खूंटी तक जाता है, एक प्रकार की माला ।
जवास, जवासा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का काँटेदार पौधा जो औषधि में प्रयोग होता है ।
जवैया-(हिं०वि०) गमनशील,जानेवाला
जसद-(सं०पुं०) जस्ता नामक धातु ।
जस-(हिं०पुं०) देखो यश (हिं०क्रि०) जैसा ।
जसवत-(हिं०पुं०) एक प्रकार का फूल
जसोदा, जसोवै-(हिं०स्त्री०)देखो यशोदा
जस्त-(हिं०पुं०) देखो जस्ता । जस्तई-(हिं०वि०) जस्ते के रंग का, खाकी ।
जस्ता-(हिं०पुं०) एक भारी धूसर वर्ण का धातु ।

जहुँ-(हिं०क्रि०वि०)जहाँ,जिस स्थान पर
जहँड़ना-(हिं०क्रि०) धोखे में पड़ना।
जहक-(सं०पुं०) काल, समय (वि०) निर्मोह।
जहतिया-(हिं०पु०) भूमि का कर उगाहने वाला।
जहत्स्वार्था-(हिं०स्त्री०)लक्षणा काएक भेद
जहदना-(हिं०क्रि०वि०) कीचड़ होना, दलदल होना,शिथिल पड़ना,थकजाना
जहदा-(हिं०पु०) कीचड़, दलदल।
जहना-(हिं०क्रि०) छोड़ना, त्यागना।
जहरीला-(हिं०वि०) विषैला, जिसमें जहर हो।
जहला-(हिं०स्त्री०) ताप, गरमी।
जहल्लक्षणा-(सं०पु०) वह लक्षण जिसमें पद या वाक्य अपने अर्थ को बिलकुल छोड़ें हों।
जहाँ-(हिं०क्रि०वि०) जिस स्थान पर, जिस जगह; **जहाँ का तहाँ**-जिस स्थान पर हो उसी स्थान पर; **जहाँ तहाँ**-यहाँ वहाँ, इधर उधर, सर्वत्र।
जहिया-(हिं०क्रि०वि०) जिसदिन, जिस समय, जब।
जहीं-(हिं०अव्य०) जिस स्थान पर।
जह्नु-(सं०पु०) विष्णु, कुरु के पुत्र का नाम, एक राजर्षि का नाम; इन्होंने गंगा को पी लिया था और भागीरथ की बड़ी स्तुति करने पर कान से निकाल दिया था इसीसे गंगा का जाह्नवी नाम पड़ा। **जह्नुकन्या,जह्नुतनया, जह्नुसुता**-(सं०स्त्री०) गंगा।
जा-(सं०स्त्री०) माता, मा, देवर की स्त्री, देवरानी, (वि०) उत्पन्न; जायमान, संभूत, (फा०वि०) उचित,
जांग-(हिं०पु०) घोड़े की एक गति, उरु, जांघ।
जाँगड़ा-(हिं०पु०) बन्दी, भाट, राजाओं का यश गाने वाला।
जाँगर-(हिं०पु०) शरीर, देह, हाथ, पैर, बल।
जाँगरा-भाट, वन्दी, जॉगड़ा।
जाँगी-(हिं०पुं०) नगाड़ा।
जाँघ-(हिं०स्त्री०) उरु, जंघा, घुटने और कमरके बीच का अङ्ग।
जाँघा-(हिं०पुं०) हल, कुवें के ऊपर गड़ा हुआ खंभा।
जाँघिया-(हिं०पु०) पैजामे की तरह का घुटने तक का नीचा पहिरावा, काछा।
जाँघिल-(हिं०पुं०) वह बैल जिसका पिछला पैर चलने पर लचकता हैं।
जाँच-हिं०स्त्री०) परीक्षा परख, खोज,
जाँचक-(हिं०पुं०) देखो याचक।
जाँचना-(हिं०क्रि०) सचाई झुठाई का पता लगाना,परीक्षा करना, मंगाना।
जाँजरा-(हिं०वि०) देखो जाजरा,जर्जर।
जाँत, जाँता-हिं०पुं०) आटा पींसने की चक्की।
जाँपना-(हिं०क्रि०) चाँपना।
जांव,जाँव-(हिं०पुं०) जामुन।
जांबुनद-(हिं०पुं०) धतूरा।
जाँवल-(हिं०क्रि०वि०) जितना।
जाँवर-हिं०पु०) प्रस्थान।
जाइन्ट-(अं०पुं०) गिरह, गाँठ जोड़।
जा-(हिं०सर्व०) जो (वि०) यह।
जाइ-हिं०स्त्री०) देखो जाय।
जाई-(हिं०स्त्री०) जाया, पुत्री, बेटी।
जाउर-(हिं०स्त्री०) खीर।
जाक-(हिं०पु०) यक्ष।
जाकड़-(हिं०पुं०) दूकानदार से इस शर्त पर माल लाना कि नापसन्द हो तो वापस होगा। **जाकड़बही**-(हिं०स्त्री०) जाकड़ दिये हुए माल का नाम और दाम लिखने का खाता।
जाखिनी-(हिं०स्त्री०) देखो यक्षिणी।
जाग-(हिं०पुं०) यज्ञ (हिं०स्त्री०) स्थान, जागने की क्रिया, जागरण (फा० पुं०) कौआ
जागत-(सं०पुं०) जागती छन्द।
जागता-(हिं०वि०)प्रकाशित, प्रत्यक्ष।
जागती कला, जागती जोत-(हिं०स्त्री०) किसी देवी या देवता का प्रत्यक्ष चमत्कार, दीपक।
जागना-(हिं०क्रि०) निद्रा त्यागना, सोकर उठाना, निद्रा शून्य होना, उदित होना, चमक उठना, जलना, प्रसिद्ध होना।
जागनौल-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का शस्त्र।
जागवलिक-(हिं०पुं०)देखो याज्ञवल्क्य।
जागरक-(सं० वि०) निद्रा रहित, जागता हुआ।
जागरण-(सं०पु०) निद्रा का अभाव, जागना, किसी पर्व के उपलक्ष में रात भर जागते रहना।
जागरित-(सं०नपु०) जागरण, नींद का न आना, सांख्य और वेदान्त मत से वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इन्द्रियों द्वारा सब प्रकार के व्यवहार और कार्यो का अनुभव होता रहता है। **जागरिता**-(सं०पुं०) जागरणशील, जिसको नींद न आती हो।
जागरिण्ड-(स०वि०) देखो जागरिता।
जागरुक-(हिं०वि०) जो जागत अवस्था में हो।
जागरूप-(हिं०स्त्री०) जो बिलकुल प्रत्यक्ष और स्पष्ट हो।
जागर्ति-(सं०स्त्री०) जागरण, नींद का न होना। **जागा**-(हिं०स्त्री०) स्थान
जैगी-(हिं०पुं०) भाट, बन्दी।
जागृत-(सं०वि०) जागरण अवस्था का, ऐसी अवस्था जिसमें सब बातों का ज्ञान हो। **जागति**-(सं०स्त्री०) जागरण, जगाने की क्रिया।
जाङ्गल-(सं०नपुं०) मांस, (पुं०) तीतर पक्षी, वह स्थान जहां पानी और घास कम हो, (वि०) जंगल में हरने पाले पशु।
जाङ्गलिक-(स०पु०) विषवैद्य, सर्प का विष उतारने वाला। **जाङ्गली**-(सं०स्त्री०) कौंच, केंवांच। **जाङ्गुलि**-(सं०पु०) सपेरा, मदार, विष जहर।
जाङ्गुली-(सं०स्त्री०) सांप के विष उतारने की विद्या।
जाचक-(हिं०पुं०) याचक, भिक्षुक, भिखारी। **जाचकता**-(हिं०स्त्री० भीख मांगने की क्रिया, भिखमांगी।
जाचना-(हिं०क्रि०) याचना, मांगना।
जाजल-(स०वि०) जिसका स्वभाव युद्ध करने का हो।
जाजमलार-हिं०पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
जाजरा-(हिं०वि०)जर्जर, टूटा फूटा हुआ
जाजलि-(सं०पुं०)एक ऋषि का नाम।
जाज्वल्य-(स०वि०) प्रकाशयुक्त, प्रज्वलित, तेजवान्। **जाज्वल्यमान**-(सं०वि०) दीप्तिमान्, तेजस्वी, तेजवान्, प्रज्वलित।
जाट-(हिं०पु०)भारतकी एक प्रसिद्ध जाति
जाठ-)हिं०पुं०) तालाब आदि के बीच में गड़ा हुआ लकड़ी का मोटा लट्ठा, कोल्हू की कूंड़ी के बीच में लगाने का लट्ठा।
जाठर-(स०पुं०) पेट की वह अग्नि जिसकी सहायता से खाया हुआ अन्न पचता है, उदर, पेट, क्षुधा।
जाठर-(हिं०वि०) जठर संबधी, जठर में उत्पन्न। **जाड़, जाड़ा**-(हिं०पुं०) शीतकाल।
जाड्य-सं०नपुं०) जड़ता, मूर्खता, आलस्य।
जात-(सं०वि०) उत्पन्न, जन्मा हुआ, व्यक्त, प्रकट, प्रशस्त, अच्छा, ग्रहण किया हुआ, जिसने जन्म लिया हो, पुत्र, प्राणी जीव, देखो जाति।
जातक-(सं०नपु०) वह ग्रंथ जिसमें उत्पन्न हुए बालक के शुभाशुभ लक्षण का वर्णन रहता है, वह ग्रंथ जिसमें बुद्धदेव के एक एक जन्म का विवरण रहता है, (पुं०) शिशु, बच्चा, भिक्षुक, भिखारी।
जातकर्म-(सं०नपु०) हिन्दुओं के दश संस्कारों में से चौथा संस्कार।
जातकाम-(सं०वि०) जिसको इच्छा उत्पन्न हुई हो। **जातकोप**-(सं०वि०) जो क्रुद्ध हो गया हो।
जातना-(हिं०स्त्री०) देखो यातना।
जातपांत-(हि०स्त्री०) जाति,
जातपुत्रा-(सं०स्त्री०) जिस स्त्री को पुत्र उत्पन्न हुआ हो।
जातबल-(सं०वि०) शक्तिमान्।
जातवेधस्-(सं० पुं०) अग्नि, सूर्य, परमेश्वर।
जातवेश्म-(सं०नपुं०)जिस घर में बालक का जन्म हो, सूतिका गृह, सौरी।
जातश्रम-(स०वि०) विश्रान्त,थका हुआ।
जातस्नेह-(सं०पु०) जिसको प्रेम हुआ हो।
जाता-(सं० स्त्री०) कन्या, बेटी, पुत्री, (वि०) उत्पन्न।
जातापत्य-(सं०पु०) जिसको पुत्र हुआ हो। **जातापत्या**-(सं०स्त्री०)प्रसूता स्त्री
जाताश्रु-(सं०वि०) जिसकी आँखों में से आंसू टपकता हो।
जाति-(सं०स्त्री०) जन्म, [illegible] एक प्रकार का छन्द, मालती, चमेली, चूल्हा, सप्तम स्वर, व्याकरण में किसी शब्द का प्रतिपाद्य अर्थ, आकृति द्वारा जिस पदार्थ का ज्ञान हो, सामान्य सत्ता, धर्म, आकृति आदिकी समानता से किया हुआ विभाग, निवास-स्थान आदि के विचार से मनुष्य समाज का विभाग,
जातिकोश-(नपु०) जातीफल, जायफल; **जातिच्युत**-(वि०) जो जाति से अलग कर दिया गया हो; **जातित्व**-जाति का भाव, जातीयता; **जातिधर्म**-ब्राह्मण आदि चारों वर्णो का धर्म; **जातिपत्र, जातिपत्री**-जायफल; **जातिपाँति**-(हिं०स्त्री०) जातिवर्ण, आदि; **जातिवैर**-स्वाभाविक शत्रुता, सहज वैर; **जातिसङ्कर**-वर्णसङ्कर, **जातिसम्पन्न**-उच्च कुल का; **जातिहीन**-जाति रहित, नीच जाति का।
जाती-(सं०स्त्री०)चमेली का फूल,आँवला, मालती, जायफल (हिं०पुं०)-हाथी।
जातीय-(स०वि०) जातिसंबंधी जातिवाला। **जातीयता**-(स०स्त्री०) जातिका भाव।
जातीरस-(स०पुं०) बोल नामक गन्धद्रव्य।
जातुक-(सं०नपुं०) हिङ्गु, हींग।
जातुधान-(हिं०पुं०) राक्षस।
जातुपर्णी-(सं०स्त्री०) एक वृक्ष का नाम
जातुज-(सं० पुं०) दोहद, गर्भिणी स्त्री की इच्छा।
जातुधान-(सं०पुं०) निशाचर, राक्षस, असुर।
जात्रा-(हिं०स्त्री०) देखो यात्रा। **जात्य**-(स० वि०) कुलीन, श्रेष्ठ, सुन्दर, त्रिकोण। **जात्यत्रिभुज**-वह त्रिभुज क्षेत्र जिसमें का एक कोण समकोण हो
जात्यन्ध-(सं०वि०) जन्म का अन्धा।
जाथका-(हिं० स्त्री०) राशि।
जादव-(हिं०पुं०) देखो यादव। **जादवपति**-(हिं० पुं०) देखो यादवपति, श्रीकृष्ण।
जादसपति-(हिं० पुं०) जल का स्वामी वरुण।
जादा-(हिं०वि०) अधिक।
जादौ-(हिं०)देखो यादव। **जादौराय**-(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण।
जान-(हिं०स्त्री०)ज्ञान, अनुमान। **जान पहिचान**-सामान्य परिचय; (वि०) चतुर, प्राण, जीव, दम, शक्ति, सामर्थ्य, तत्व, सार, कान्ति बढ़ाने वाली वस्तु, **जानकार**-(हिं०पुं०)देखो यान, **जान के लाले पड़ना**- प्राण बचना कठिन देख पड़ना; **जान**

को जान न समझना-अधिक परि-करना; जान खाना-तंग करना; जान छोड़ाना-प्राण बचाना, सकट से हटाना; जान जोखिम-प्राण जाने का भय; जान निकलना-मरना, जानपर खेलना-प्राण को संकट में डालना, जान जोखिम में पड़ना; जान आजाना-सुन्दरता का बढ़ना।
जानकार-(हिं० वि०) जानने वाला, चतुर, दक्ष। जानकारी-(हिं० स्त्री०) अभिज्ञता, परिचय, विज्ञता, निपुणता
जानकी-(सं० स्त्री०) राजा जनक की पुत्री, रामचन्द्र की पत्नी। जानकी जानि-(हिं०पुं०)श्रीरामचन्द्र। जानकी जीवन-(हिं०पु०)श्रीरामचन्द्र। जानकीनाथ-(हिं०पुं०) श्रीरामचन्द्र।
जाननहार-(हिं०वि०) जानने वाला।
जानना-(हिं०क्रि०) ज्ञान प्राप्त करना, अभिज्ञ होना, सूचना पाना, परिचित होना, अनुमान करना, पता पाना, मालूम करना।
जानपद-(सं० पु०) जनपद सम्बन्धी वस्तु, देशस्थ, जनपद में रहनेवाला लोक, देश, कर। जानपदिक-(सं० वि०) जनपद सम्बन्धी। जानपदी-(हिं०स्त्री०)वृत्ति, एक अप्सरा का नाम
जानपना-(हिं०पुं०) जानकारी, चतुराई, जानपनी-(हिं० स्त्री०) चतुराई, बुद्धिमानी।
जानमनि-(हिं०पुं०) ज्ञानियों में श्रेष्ठ, बड़ा ज्ञानी पुरुष।
जानराज्य-(सं०नपुं०)राजत्व, अधिकार
जानराय-(हिं०पुं०)अत्यन्त ज्ञानी पुरुष।
जानहार-(हिं०वि०) नष्ट होने वाला।
जानहु-(हिं०अव्य०) मानो।
जाना-(हिं०क्रि०)प्रस्थान करना, गमन करना, अलग होना, दूर होना, नष्ट करना, खो जाना, व्यतीत होना, बिगड़ना, मरना,नष्ट होना, बढ़ना, हटना, अधिकार से निकल जाना, बहना, उत्पन्न करना, जाने दो-क्षमा करो।
जानि-(सं०स्त्री०) भार्या, पत्नी।
जानु-(सं० नपुं०) उरुसन्धि, घुटना, जाँघ, रान, चक्रिका, पैर की चक्की।
जानुपाणि-(सं०क्रि०वि०) घुठनों और हाथों के बल।
जानो-(हिं०अव्य०) मानो, जैसे।
जाप-(सं० पुं०) मन्त्र की विधि पूर्वक आवृत्ति, मन्त्र का जप करनेवाला, जपने की माला या गोमुखी। जापक-(सं०वि०) जपसंबंधी जप करनेवाला
जापन-(सं०नपुं०)निरसन,परिहार,जप।
जापो-(हिं०पुं०) सूतिकागृह, सौरी।
जापी-(सं०वि०) जप करनेवाला।
जाप्य-(सं०वि०) जपने योग्य।
जाबाल-(सं०पुं०)एक ऋषि का नाम, इनके पुत्र का नाम सत्यकाम था।
जाबालि-(सं०पुं०) कश्यप वंश के एक मुनि जो राजा दशरथ के गुरु थे।
जाम-(हिं०पुं०)जामुन, प्रहर, तीन घटे या साढ़े सात घड़ी का काल, जहाज़ की दौड़।
जामगी-(हिं०पुं०) तोप या बन्दूक का पलीता।
जामन-(हिं०पुं०) दूध को जमाने के लिये प्रयोग में आने वाला थोड़ा सा दही या अन्य खट्टा पदार्थ।
जामना-(हिं०क्रि०) देखो जमना।
जामनी-(हिं०स्त्री०) देखो यावनी।
जामर्य-(सं० वि०) प्राणियों को अमर करने वाला।
जामल-(सं०नपुं०)एक प्रकार का तन्त्र।
जामवन्त-(सं०पुं०) देखो जाम्बवान्।
जामा-(हिं०स्त्री०)दुहिता, कन्या, बेटी।
जामाता-(हिं०पु०)दामाद,कन्या का पति
जामि-(सं०स्त्री०)भगिनी, बहिन,दुहिता, कन्या, पुत्रबधू, पतोहू।
जामिक-(हिं०पु०) पहरुआ, रक्षक।
जामित्व-(सं०नपुं०) रिश्ता, सम्बन्ध।
जामिनी-(हिं०स्त्री०) देखो यामिनी।
जामी-(हिं०स्त्री०) भूमि।
जामुन-(हिं०पुं०)जम्बू, एक सदा बहार वृक्ष जिसके बेर के समान बैगनी रंग के मीठे फल होते हैं। जामुनी-(हिं०वि०)जामुन के रंग का, बैगनी।
जामेय-(सं०पु०)भानजा, बहिन का बेटा
जामेवार-(हिं० पु०) दुशाला जिसमे सर्वत्र बेलबूटे काढ़े होते हैं, इसी तरह छपी हुई छींट जो दुशाले के समान देख पड़ती है।
जाम्बवन-(सं० नपुं०) जामुन, सुवर्ण, जामुन का सिरका।
जाम्बवन्ती-(सं०स्त्री०) जाम्बवान् की कन्या तथा श्रीकृष्ण की पत्नी।
जाम्बवन्त, जाम्बवान्-(सं० पुं०) एक ऋक्षराज जो सुग्रीव के मंत्री थे।
जाम्बवि-(सं०पुं०) वज्र, बिजली।
जाॅय-(हिं०वि०) उचित।
जायका-(सं०नपुं०) पीला चन्दन।
जायपत्री-(हिंस्त्री०) देखो जावित्री।
जायफर, जायफल-(हिं०पुं०) एक सुगंधित गोल फल जो सुपारी के आकार का होता है।
जाया-(सं०स्त्री०)पत्नी, विवाहिता स्त्री ज्योतिष में सातवें लग्न का नाम, उपजाति वृत्त का सातवां भेद।
जायाजीव-(सं० पुं०) नट, वेश्यापति, बगला पक्षी। जायात्व-(सं०नपुं०) पत्नीत्व, स्त्री का धर्म।
जायी-(सं०वि०) जययुक्त (पुं०) ध्रुवक जाति का एक ताल।
जार-(सं०पुं०)पराई स्त्री से प्रेम करने वाला पुरुष, उपपति, यार, परस्त्रीगामी (वि०) नाश करनेवाला, मारनेवाला।
जारक-(सं०वि०) पाचन करनेवाला।
जारकर्म-(सं०पुं०)व्यभिचार, छिनरा।
जारज-(सं० पुं०) किसी की स्त्री की उसके उपपति से जन्मी हुई सन्तान,
जारज योग-फलित से ज्योतिष मे कहा हुआ वह योग जिससे यह सिद्धान्त निकाला जाता है कि बालक अपनी माता के उपपति से उत्पन्न है। जारजात, जारजातक-(सं०पुं०) उपपति से उत्पन्न पुत्र।
जारण-(सं० पुं०) धातु इत्यादि का भस्म बनाना, जलाना।
जारणी-(सं०स्त्री०) सफेद जीरा।
जारता-(सं०स्त्री०) उपपतित्व।
जारना-(हिं०क्रि०) देखो जलाना।
जारा-(हिं० पु०) सोनार की सोना चांदी गलाने की भट्ठी।
जारिणी-(सं० स्त्री०) दुश्चरित्रा स्त्री, पुंश्चली, छिनार स्त्री।
जारित-(सं० वि०) शुद्ध किया हुआ, मारा हुआ।
जारु-(सं०पु०) आँवल, खेंड़ी।
जाल-(सं०पुं०) पशु पक्षी या मछली पकड़ने के लिये तार, सूत आदि का दूर दूर पर बुना हुआ पट, गवाक्ष, झरोखा, समूह, किसी को फँसाने की युक्ति, दम्भ, घमंड, अहंकार, इन्द्रजाल, कदम्ब वृक्ष, लोहे के तार की बनी हुई जाली, एक प्रकार की तोप, मकड़ी का जाला किसी को ठगने के अभिप्रायसे बनाया हुआ झूठा लिखित पत्र, झूठी कार्रवाई।
जालक-(सं०नपुं०) गवाक्ष, झरोखा; जालकारक-(सं० पुं०) जाल बनाने वाला; जालकिरिच-(हिं०स्त्री०) परतला मिली हुई पेटी; जालकीट-(सं० पुं०) मकड़ा मकड़ी की जाल में फँसा हुआ कीड़ा; जालजीवी-(सं०पुं०) धीवर, मछुवा; जालदार-(हिं०वि०) जिसमें जालके समान बहुतसे छेद हों।
जालना-(हिं०क्रि०) जलाना; जालन्धर-(सं० पुं०) शतद्रु और चन्द्रभागा नदी के बीच का द्वार; जालन्धर विद्या-इन्द्रजाल।
जालन्ध्र-(सं०पुं०) झरोखे में की जाली
जालपाद-(सं०पुं०) हंस, जाबालि ऋषि के एक शिष्य का नाम।
जालबन्द-(हिं० पुं०) एक प्रकार का गलीचा जिसमें जाल की तरह बेल बनी होती हो।
जाला-(हिं०पुं०) मकड़ी का बिना हुआ जाल, आँख का एक रोग जिसमें पुतली के ऊपर झिल्ली सी पड़ जाती हैं, माड़ा, पानी रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र; जालाक्ष-(सं०पुं०) गवाक्ष, झरोखा।
जालिक-(सं० पुं०) धीवर, मछुआ, मकड़ी, मदारी।
जालिका-(सं० स्त्री०) कवच, बख्तर, चिड़ियोंके पकड़नेका फन्दा, मकड़ी।
जालिनी-(सं०स्त्री०) तरोई, घिया।
जालिया-(हिं० वि०) धोखा देने वाला, (पुं०) जाल से मछली पकड़ने वाला, धीवर।
जाली-(हिं०स्त्री०) पत्थर धातु आदि में बने हुए छोटे छोटे छिद्रों के समूह, एक प्रकारका कसीदेका काम, महीन छेदवाला वस्त्र, कच्चे आम की गुठली के ऊपर के रेशे (अ० वि०) नकली, झूठा, बनावटी; जालीदार-(हिं०वि०) जिसमें जाली बनी हो।
जालीलेट-(हिं० पुं०) एक प्रकार का जालीदार वस्त्र।
जाल्म-(सं०वि०) नीच, पामर, मूर्ख।
जावक-(सं० पुं०) लाह से बना हुआ रंग, अलता, महावर।
जावल्य-(सं० नपुं०) द्रुत गति।
जावत्-(हिं०अव्य०) देखो यावत्।
जावन-(हिं०पुं०) देखो जामन।
जावित्री-(हिं०स्त्री०) जायफल के ऊपर का छिलका जो सुगन्धित होता है, यह औषधियों में प्रयोग होता है।
जाषनी-(हिं०स्त्री०) देखो यक्षिणी।
जासु-(हिं०वि०) जिसका।
जासू-(हिं० पुं०) अफ़ीम में मिलाने का पान का टुकड़ा जिससे मदक द्रव्य बनता है।
जासूसी-(हिं०स्त्री०) जासूस का काम।
जाहक-(सं०पुं०) घोंघा, जोंक, गिरगिट
जाही-(हिं० स्त्री०) चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगन्धित फूल, एक प्रकार की आतिशबाजी।
जाह्नवी-(सं०स्त्री०) जह्नुतनया,गंगानदी
जिवाना-(हिं०क्रि०) जिमाना, भोजन कराना।
जिआना-(हिं०क्रि०) देखो जिलाना।
जिउ-(हिं०पुं०) देखो जीव; जिउका-(हिं०स्त्री०) देखो जीविका; जिउकिया-(हिं० पुं०) जीविका करने वाला, व्यवसायी, रोज़गारी, पहाड़ी लोग जो जंगलों से वस्तु लाकर नगरों में बेंचते हैं; जिउतिया-(हिं० स्त्री०) आश्विन मास की अष्टमी के दिन होनेवाला एक व्रत, जिताष्टमी।
जिगतु-(सं०पुं०) प्राणवायु, उच्छ्वास।
जिगमिषा-(सं० स्त्री०) गमन करने की इच्छा।
जिगरा-(हिं० पुं०) साहस।
जिगिन-(हिं० स्त्री०) एक बहुत बड़ा जंगली वृक्ष।
जिगीषा-(सं०स्त्री०) विजय प्राप्त करने की इच्छा, उत्तमता, उद्योग।
जिगीषु-(सं०वि०) जो श्रेष्ठता चाहता हो, परिश्रमी, मेहनती।
जिघत्सा-(सं०स्त्री०) भोजन करने की इच्छा, भूख।
जिघांसक-(सं० वि०) हिंसक, हत्यारा; जिघांसी-(सं० वि०) वध करनेवाला;
जिघांसु-(सं०वि०) मारने वाला।
जिङ्गी-(सं०स्त्री०) मंजिष्ठा, मजीठ।
जिच, जिच्च-(हिं० स्त्री०) विवशता, शतरंजके खेलमें वह स्थिति जब एक पक्षके खेलाड़ीको कोई मोहरा चलने की जगह नहीं रहती, (वि०) विवश।

जिजीविषा-(सं०स्त्री०) जीनेकी इच्छा ; **जिजीविषु**-(सं० वि०) जीने की इच्छा करनेवाला ।

जिज्ञासन-(सं०नपुं०) जानने की इच्छा से पूछना, पूछताछ ; **जिज्ञासमान**-(सं०वि०)जिज्ञासु,पूछताछ करनेवाला; **जिज्ञासा**-(सं०स्त्री०) ज्ञान प्राप्त करने की कामना, जाननेकी इच्छा, प्रश्न; **जिज्ञासित**-(सं० वि०) जिससे पूछा गया हो; **जिज्ञासु**-(सं०वि०)ज्ञान प्राप्त करने के लिये इच्छुक, जानने की इच्छा रखनेवाला, खोजी; **जिज्ञास्यमान्**-(सं०वि०)जो विषय पूछा जाता हो

जिठानी-(हिं० स्त्री०) पतिके बड़े भाई की स्त्री, जेठानी ।

जित्-(सं०वि०) जीतनेवाला, जेता ।

जित्-(सं० वि०) पराजित, जीता हुआ. (पुं०) जय, जीत (क्रि०वि०) जिधर, जिस ओर ; **जितक्रोध**-(सं० वि०) जिसको क्रोध न हो (पुं०) विष्णु ।

जितना-(हिं०वि०) जिस मात्रा का, जिस परिमाण का ।

जितनेमि-(सं०वि०) क्रोध शून्य,(पुं०)विष्णु

जितवना-(हिं० क्रि०) देखो जिताना ; **जितवाना**-(हिं०क्रि०) जीतने में समर्थ करना, जिताना ।

जितवार जितवैया-(हिं०वि०)जीतनेवाला

जितशत्रु-(सं०पुं०) विजयी, जिसने शत्रु का पराजय किया हो ।

जितात्मा-(सं०वि०) देखो जितेन्द्रिय ।

जिताना-(हिं०क्रि०) जीतने में सहायता देना ।

जितारि-(सं०पुं०) कामादि शत्रुओं को जीतनेवाला ।

जिताष्टमी-(सं० स्त्री०) जिउतिया, आश्विन कृष्ण अष्टमी के दिन हिन्दुओं की पुत्रवती स्त्रियां इस व्रत को करती हैं ।

जिताहव-(सं० पुं०) वह जिसने लड़ाई जीती हो ।

जितेन्द्रिय-(सं० वि०) जिसने अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हो, शान्त स्वभाव वाला मनुष्य ; **जितेन्द्रियता**-(सं० स्त्री०) जितेन्द्रिय होने का कार्य ।

जिते-(हिं०वि०) (संख्यामें)-जितने ।

जितै-(हिं०क्रि०वि०) जिधर, जिस ओर

जितैया-(हिं०वि०) जीतने वाला ।

जितो-(हिं०वि०) जितना (क्रि०वि०) जिस मात्रा में ।

जित्वर-(सं०वि०) जेता, जीतने वाला ।

जिधर-(हिं०क्रि०वि०) जहां,जिस ओर ।

जिन-(सं०पुं०) बुद्ध, विष्णु, सूर्य, जैनों के तीर्थंकर (हिं० सर्व०) जिस ।

जिनि-(हिं०अव्य०) मत, नहीं ।

जिन्ह-(हिं०सर्व०) देखो जिन ।

जिब्भा,जिभ्या-(हिं०स्त्री०) देखो जिह्वा

जिमाना-(हिं० क्रि०) भोजन कराना, खाना खिलाना ।

जिमि-(हिं०क्रि०वि०) ज्यों, जैसे, जिस प्रकार से ।

जिमींदार-(हिं०पुं०) भूस्वामी ।

जिम्भा-(सं०स्त्री०) जृम्भा जंभाई,उबासी

जिय-(हिं०पुं०) चित्त, मन ।

जियन-(हिं०पुं०) जीवन ।

जियबधा-(हिं०पुं०) हत्यारा, जल्लाद ।

जियरा-(हिं० पुं०) जीव ।

जियाना-(हिं०क्रि०) जिलाना, जीवित रखना, पालना ।

जियारी-(हिं०स्त्री०) जीवन, जीविका, चित्तकी दृढ़ता, जीवट ।

जिरिया-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पतला धान ।

जिलाट-(सं०पुं०) चमड़े से मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा ।

जिलाना-(हिं०क्रि०) जीवित करना, प्राण रक्षा करना, मरने न देना, पालना पोसना ।

जिलाह-(हिं०पुं०) अत्याचारी ।

जिलेदार-(हिं०पुं०)देखो जिलादार ।

जिलेबी-(हिं०स्त्री०) देखो जलेबी ।

जिल्होर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का अगहनियां धान ।

जिव-(हिं०पुं०) देखो जीव ।

जिवाना-(हिं०क्रि०) देखो जिलाना ।

जिष्णु-(सं०पुं०) विष्णु, इन्द्र, अर्जुन, सूर्य, वसु ।

जिस-(हिं०वि०) "जो" का वह रूप जो उसको विभक्ति युक्त विशेष्य के साथ आने से प्राप्त होता है ।

जिसिम-(हिं०पुं०) शरीर ।

जिस्ता-(हिं०पुं०) देखो जस्ता ।

जिहान-(सं०वि०) जानेवाला ।

जिहानक-(सं०पुं०) संसार का नाश, प्रलय

जिहासा-(सं०स्त्री०)त्याग करनेकी इच्छा

जिहीर्षु-(सं०वि०) हरण करने की इच्छा वाला ।

जिह्म-(सं०वि०) कुटिल, कपटी, दुष्ट, अप्रसन्न ।**जिह्मगति**-(सं०पुं०)सर्प(वि०) टेढ़ी चाल चलने वाला ।**जिह्मगामी**-(सं०वि०) कुटिल, टेढ़ी चाल चलने वाला, मन्दगति । **जिह्मता**-(सं०स्त्री०) कुटिलता,मन्दता,टेढ़ापन । **जिह्मित**-(सं०वि०)घूमा हुआ फिराहुआ,चकित ।

जिह्व-(सं०पुं०) जिह्वा, जीभ, ज़बान ।

जिह्वल-(सं०वि०) भोजनलोलुप,चटोरा

जिह्वा-(सं०स्त्री०)जीभ,ज़बान।**जिह्वाग्र**-(सं०नपुं०) जीभ का अग्र भाग,जीभ, की नोक; **जिह्वाग्र करना**-कण्ठस्थ करना । **जिह्वातल**-(सं०नपुं०)जिह्वा का पृष्ठ भाग । **जिह्वामल**-(सं०नपुं०) जीभ पर की मैल । **जिह्वामूल**-(सं० पुं०) जीभ की जड़, जीभका पिछला भाग । **जिह्वामूलीय**-(सं०पुं०) वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वा के मूलसे होता है यथा क, ख, ग, घ, ङ का उच्चारण । ⌣क ⌣ख इसे जिह्वामूलीय कहते हैं । **जिह्वालिह**-(सं०पुं०)कुक्कुर, कुत्ता । **जिह्वालोल्य**-(सं०स्त्री०) भुक्खड़पन ।

जींगन, जीवानि-(हिं०पुं०) जुगनू ।

जी-(हिं०पु०) चित्त, मन, दम, जीवट, इच्छा, संकल्प, (अव्य०) एक सम्मान सूचक शब्द जो किसी व्यक्ति के नाम के पीछे लगाया जाता है; यह शब्द हामी भरने या स्वीकार देखलाने में भी प्रयोग होता है; **किसी पर जी आना**-प्रेमासक्त होना; **जी उचटना**-मन न लगना; **जी उड़ जाना**-चित्त व्यग्र होना; **जी करना**-साहस करना; **जी खट्टा होना**-घृणा उत्पन्न होना; **जी खोल कर**-बिना संकोच के, यथेष्ट; **जी चलना**-अभिलाषा होना; **जी चुराना**-काम करने में आलस्य करना; **जी छोटा करना**-उदारता न दिखलाना; **जी टँगा रहना**-चिन्तित रहना; **जी दुखना**-मन में कष्ट होना; **जी जान देना**-अति प्रेम करना; **जी धड़कना**-कलेजा धड़कना; **जी पर आ बनना**-जान बचाना कठिन हो जाना; **जी पर खेलना**-प्राणों को संकट में डालकर काम करना; **जी बहलाना**-मनोरंजन का उपाय करना; **जी बिगड़ना**-मचली आना; **जी भरना**-सन्तुष्ट होना; **जी भरकर**-यथेष्ट, **जी भर आना**-दया कृपा आदि का प्रादुर्भाव होना, **जी मचलाना**-वमन करने की इच्छा होना; **जी लगना**-चित्त एकाग्र होना. प्रेम होना; **जीसे**-ध्यानपूर्वक; **जीसे उतर जाना**-चित्त से हट जाना, अच्छा न लगना ।

जीअ, जीउ-(हिं०पु०) देखो जीव ।

जीगन-(हिं०पुं०) खद्योत, जुगनू ।

जीजा-(हिं०पु०) बड़ी बहिन का पति, बहनोई । **जीजी**-(हिं०स्त्री०)बड़ी बहिन

जीत-(हिं०स्त्री०) जय, विजय, लाभ, ऐसे कार्य में सफलता जिसमें दो या दो से अधिक विपक्षी हों ।

जीतना-(हिं०क्रि०) विजय प्राप्त करना, शत्रु को हराना, किसी ऐसे कार्य में सफलता प्राप्त करना जिसमें दो या दो से अधिक विरुद्ध पक्ष में हों ।

जीतल-एक प्रकार की प्राचीन तांबे की मुद्रा ।

जीता-(हिं०वि०) जीवित, तौल या नाप में कुछ अधिक; **जीता लोहा**-चुम्बक ।

जीतालू-(हिं०पु०) अरारूट ।

जीति-(सं०स्त्री०) जय, जीत, हानि ।

जीन-(सं०वि०) जीर्ण,पुराना,वृद्ध, बुड्ढा

जीना-(हिं०क्रि०) जीवित रहना, प्रसन्न या प्रफुल्लित होना; **जीता जागता**-भला चंगा, आरोग्य; **जीती मक्खी निगलना**-जान बूझकर कोई पाप करना, **जीना भारी होना**-दु:खमय जीवन होना ।

जीभ-(हिं०स्त्री०) जिह्वा, रसना; **जीभ चलना**-अनेक स्वादिष्ट पदार्थों को खाने का मन चलना; **जीभपकड़ना**-बोलने न देना; **जीभ हिलाना**-मुंह से शब्द निकालना; **जीभी**-(हिं०स्त्री०) जीभ के आकार की कोई वस्तु, जीभ का मल हटाने की पतली धनुषाकार पट्टी, लोहे या पीतल की निब, छोटी जीभ, गलशुण्डी ।

जीमट-(हिं०पु०) पेड़ पौधों की शाखा के भीतर का गूदा ।

जीमना-(हिं०क्रि०) भोजन करना ।

जीमूत-(सं०पु०) पर्वत, पहाड़, मेघ, बादल, मोथा, इन्द्र, सूर्य, एक प्रकार का दण्डक वृत्त । **जीमूतवाहन**-(सं० पु०) मेघवाहन, इन्द्र । **जीमूतवाही**-(हिं०पु०) धूम्र, धुवां, ।

जीय-(हिं०पु०) देखो जी ।

जीयट-(हिं०स्त्री०) देखो जीवट ।

जीयति-(हिं०स्त्री०) देखो जीवन ।

जीयदान-(हिं०पु०)प्राणदान,जीवनदान

जीर-(सं०पुं०) जीरक, जीरा, खड्ग, तलवार, केसर, पुष्प का जीरा,(वि०) शीघ्रगामी, शत्रु को हानि पहुँचाने वाला, (वि०) जीर्ण, पुराना ।

जीरक-(सं०पुं०) सौंफ के आकार का एक पदार्थ, जीरा ।

जीरण-(हिं०वि०) देखो जीर्ण ।

जीरना-(हिं०क्रि०)जीर्णहोना. मुरझाना

जीरा-(हिं०पुं०) देखो जीरक ।

जीरी-(हिं०पुं०) अगहन मे पकने वाला एक प्रकार का धान ।

जीर्ण-(सं०वि०)जरायुक्त,बुड्ढा पुराना, फटा पुराना, बहुत दिनों का पेट में परिपाक हुआ । **जीर्णज्वर**-(सं०पुं०) पुराना ज्वर, बारह दिन से अधिक ज्वर रह जाने पर जीर्ण ज्वर कहलाता है । **जीर्णता**-(सं०स्त्री०) वृद्धत्व, बुढ़ापा, पुरानापन । **जीर्णदेह**-(सं० पुं०) वृद्ध शरीर, जीर्ण कलेवर । **जीर्णसंस्कार**-(सं०पु०)पुरानी वस्तुओं की मरम्मत । **जीर्णोद्धार**-(सं०पु०) देखो जीर्ण सस्कार ।

जीला-(हिं०वि०) महीन, पतला ।

जीलानी-(अ०पुं०) एक प्रकार का लाल रंग ।

जीव-(सं०पु०) प्राणी, जीवधारी, जानदार, वृहस्पति, कर्ण, वृत्ति, आजीविका, जीवात्मा, प्राणियों का चेतन, तत्व, आत्मा. अश्लेषा नक्षत्र; **जीवक**-(सं०पु०) प्राणधारक, ब्याज लेकर जीविका निर्वाह करने वाला, सेवक, क्षपणक, सँपेरा, पीतसाल वृक्ष, एक जैन मुनि का नाम ।

जीवग्राह-(सं०पु०) बन्दी, कैदी ।

जीवित-(हिं०स्त्री०) जीविका ।

जीवधन-(सं०पुं०) हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा ।

जीवज-(सं०वि०) जिसने जीवन ग्रहण किया हो

जीवजीवक-(सं०पुं०) चकोर पक्षी ।

जीवट-(हिं०स्त्री०) साहस, जिगरा ।

जीवत्पति-(सं०स्त्री०) सौभाग्यवती स्त्री, सोहागिन । **जीवत्व**-(सं०नपुं०) जीव

का भाव।
जीवद-(सं०पुं०) वैद्य (वि०) जीवनदाता
जीवदाता-(सं०वि०) जीवनदायी, जीवन देने वाला। **जीवदान**-(सं० नपुं०) अपने वश मे आये हुए शत्रु को प्राणदान देना, प्राण रक्षा।
जीवधन-(सं०नपुं०) पशुओं के रूप में सम्पत्ति, देखो जीवनधन। **जीवधारी**-(सं०पुं०) प्राणी, चेतन, जन्तु, जानवर।
जीवन-(सं०नपुं०)वृत्ति,जीविका, प्राणधारणा, पानी, परमेश्वर, गंगा, वायु, पुत्र, मज्जा, घी जन्म और मरण के बीच का काल,जीवित रखनेवाली वस्तु, प्राण प्यारा, परमप्रिय।
जीवनचरित-(सं० नपुं०) जीवन का वृत्तान्त,जीवन वृत्तान्त ग्रथ। **जीवनधन**-(सं०नपुं०) जीवन का सर्वस्व, प्राणधार, प्राणप्रिय, प्यारा।
जीवनधार-(हिं०वि०) जीवरक्षक,
जीवनबूटी जीवनमूरि-(हिं०स्त्री०) सजीवनी नामक पौधा जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह मरे को भी जिला देता है। **जीवनवृत्त**-(सं०नपुं०) जीवनचरित्र, जीवनी **जीवनवृत्तान्त**-(सं०पुं०) देखो जीवन चरित। **जीवनवृत्ति**-(सं०वि०) जीविका, **जीवनसाधन**-((सं०नपुं०) देखो जीवनवृत्ति।
जीवनहेतु-(सं०पुं०) देखो जीवन साधन।
जीवना-(हिं०क्रि०) देखो जीना,
जीवनाघात-विष, गरल,
जीवनवास-(सं० पुं०) वरुण (वि०) जल में रहनेवाला।
जीवनि-(हिं०स्त्री०) संजीवनी बूटी, प्राणाधार,
जीवनी-(सं०स्त्री०) काकोली नामक औषधि, (हिं०स्त्री०) जीवन चरित्र, जीवन भर का वृतान्त।
जीवनीय-(सं०नपुं०) जल, पानी (वि०) जीविका करने योग्य।
जीवनोपाय-(सं०पुं०) जीविका,
जीवन्त-(सं०पुं०) प्राण, औषधि (वि०) जीताजागता। **जीवन्तिका**-(सं०स्त्री०) बंदा जो वृक्ष पर उत्पन्न होता है, गुरुच।
जीवन्मुक्त-(सं०वि०) जो आत्मज्ञान से माया के बन्धन से छूट गया हो।
जीवन्मृत-(सं०वि०) जो जीवित दशा में मृतक के समान हो, जिसका जीना मरना दोनों समान हो।
जीवन्यास-(सं०पुं०) मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा का मन्त्र।
जीवपति-(सं०स्त्री०)सधवास्त्री,सोहागिन
जीवप्रभा-(हिं०स्त्री०) आत्मा,
जीवबन्ध-बंधु (हिं० पु०) गुलदुपहरिया
जीवमन्दिर-(सं०नपुं०) शरीर, देह।
जीवमातृका-(सं०स्त्री०) सात देवियां जो माता के समान जीवोंका पालन करती हैं, उनके नाम-कुमारी,धनदा, नन्दा, विमला, मंगला, बला और पद्मा है।
जीवयाज-(सं०पुं०) पशु द्वारा किया जानेवाला यज्ञ; **जीवयोनि**-(सं०स्त्री०) सजीव जन्तु, जानवर। **जीवरत्न**-(सं०नपुं०) पुष्पराग, पोखराज मणि।
जीवरा-(हिं०पुं०) प्राण। **जीवरि**-(हिं०पुं०) प्राण धारण की शक्ति।
जीवलोक-(सं० पुं०) मर्त्य लोक, भूलोक, पृथ्वी।
जीववृत्ति-(सं०स्त्री०) पशु पालने का व्यवसाय।
जीवशून्य-(सं० वि०) जीव रहित, मरा हुआ।
जीवसंक्रमण-(सं०नपुं०) जीव का एक शरीर से दूसरे शरीर में गमन।
जीवसुता-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पुत्र जीवित हो।
जीवस्थान-(सं०नपुं०) शरीर का मर्म स्थान, हृदय।
जीवहत्या जीवहिंसा-(सं०स्त्री०)प्राणियों का बध, ऐसे बध का दोष।
जीवा-(सं०स्त्री०) ज्या, धनुष की डोरी, जीविका, जीवन, प्राण, हरीतकी।
जीवागार-(सं०नपुं०)शरीरकामर्मस्थान।
जीवाजून-(हिं०पुं०)पशपक्षिकीटादिजीव
जीवात्मा-(सं०पुं०) देही,आत्मा,चैतन्य स्वरूप एक पदार्थ, आत्मा।
जीवाधान-(सं०पुं०) शरीर, देह।
जीवाधार-(सं०पुं०) हृदय, आत्मा का स्थान।
जीवानुज-(सं०पुं०) गर्गाचार्य मनि।
जीवन्तक-(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया।
जीविका-(सं०स्त्री०)जीवन का उपाय, भरण पोषण का साधन,वृत्ति,जीव।
जीवित-(सं०वि०) जीता हुआ,
जीवित काल-आयुष्य, वय।
जीवितघ्न-(सं०वि०) प्राण नाशक।
जीवितान्तक-(सं०वि०) जीवों का वध करने वाला।
जीवी-(सं०वि०)प्राण धारक,जीनेवाला, जीविका करने वाला।
जीवेश-(सं०पुं०) परमात्मा, ईश्वर।
जीवेष्टि-(सं०स्त्री०) वृहस्पति के लिये किया जाने वाला यज्ञ।
जीह-(हिं०स्त्री०) देखो जीभ, जिह्वा।
जुइँ-(हिं०स्त्री०) छोटी जुवां।
जुन्दर-(हिं०पुं०) बन्दर का बच्चा।
जुंबली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी भैंस।
जु-(हिं०क्रि० वि०) देखो जी।
जुअति-(हिं०स्त्री०) देखो युवती,
जुआं-(हिं०स्त्री०) देखो जूं।
जुआ-(हिं०पुं०) बाजी लगाकर हार जीत का खेल,वह लकड़ी का ढाँचा जो बैल के कन्धे पर रक्खा जाता है जाँते की मुठिया। **जुआचोर**-(हिं०पुं०) वह जुआरी जो दाँव जीतकर भाग जाता है, ठग, वंचक, धोखेबाज।
जुआचोरी-(हिं०स्त्री०) ठगी।
जुआर-(हिं०स्त्री०) देखो ज्वार।
जुआरा-(हिं०पुं०) एक जोड़ी बैल से एक दिनमें जोती जाने वाली जमीन।
जुआरी-(हिं०पु०) जुआ खेलने वाला।
जुई-(हिं०स्त्री०) छोटी जुवां, सेम, मटर आदि की फलियोंमें का छोटा कीड़ा।
जुई-(हिं०पु०) हवन करने का करछी के आकार का एक पात्र।
जुग-(हिं०पु०) देखो युग, जोड़ा दल, पीढी, चौसर के खेल मे दो गोटियोंका एकही कोठे में इकट्ठा होना।
जुगजुगाना-(हिं०क्रि०) जगमगाना, मन्द प्रकाश से चमकना, टिमटिमाना, उन्नति की दशा को प्राप्त होना।
जुगजुगी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
जुगत-(हिं०स्त्री०) युक्ति, उपाय, व्यवहार में कुशलता, चतुराई, चमत्कार पूर्ण उक्ति, चुटकुला।
जुगनी-(हिं०स्त्री०) खद्योत, जुगुनी, एक प्रकार की पंजाबी गीत।
जुगनू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बरसाती छोटा कीड़ा जिसका पिछला भाग की चिनगारी की तरह रह रह कर चमकता है, खद्योत, पान के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियाँ गले में पहिरती हैं।
जुगम-(हिं०वि०) देखो युग्म।
जुगल-(हिं०वि० देखो युगल।
जुगवाना-(हिं०क्रि०) संचित करना। इकट्ठा करना, सुरक्षित करना, संभाल कर रखना।
जुगादरी-(हिं०वि०)जीर्ण,बहुत पुरानी।
जुगाना-(हिं०क्रि०) देखो जुगवना।
जुगार-(हिं०स्त्री०) जुगाली।
जुगालना-(हिं० क्रि०) चौपायों का पागुर करना।
जुगाली-(हिं०स्त्री०) पशुओं की निगले हुए चारेको गले में से थोड़ा निकाल कर दांत से चबाने की क्रिया, रोमन्थ, पागुर।
जुगुत-(हिं०स्त्री०) युक्ति उपाय।
जुगुप्सक-(सं०वि०) दूसरे की व्यर्थ निन्दा करने वाला। **जुगुप्सन**-(हिं०नपुं०) घृणा, निन्दा, बुराई।
जुगुप्सा-(सं०स्त्री०)निन्दा,बुराई,गर्हणा
जुगुप्सित-(सं०वि०) घृणित, निन्दित।
जुगुप्सु-(सं०वि०) निन्दक, बुराई करने वाला।
जुगुल-(हिं०वि०) युग्म, जोड़
जुङ्ग-(सं०पुं०) विधारा का वृक्ष।
जुङ्गित-(सं०वि०)परित्यक्त,छोड़ा हुआ
जुज्झ-(हिं०स्त्री०) देखो युद्ध।
जुझावाना-(हिं०क्रि०) लड़ा देना।
जुझाऊ-(हिं०वि०) युद्ध सबंधी, लड़ाई में काम आने वाला।
जुझार-(हिं०वि०)लड़नेवाला, लड़ाका, वीर, लड़ाई।
जुट-(हिं०स्त्री०) दो वस्तुओं का समूह, जोड़ी, मण्डली, जत्था, दल।
जुटक-(सं०नपुं०) सिर के उलझे हुए बाल, जटा।
जुटना-(हिं०क्रि०)संबद्ध होना,संश्लिष्ट होना, सटना,चिपटना, लगा रहना, प्रसंग करना मैथुन करना, एकत्र होना, प्रवृत्त होना, किसी कार्य में सम्मिलित होना, इकट्ठा होना, मिलना, सहमत होना।
जुटली-(हिं०वि०) लंबे बालों की जटा रखने वाल`।
जुटाना-(हिं०क्रि०) दो या अधिक वस्तुओं को परस्पर दृढता पूर्वक जोड़ना, भिड़ाना, सटाना, एकत्र करना, जमा करना।
जुटिका-(सं०स्त्री०)शिखा,चुटैया, चुन्दी
जुट्टी-(हिं०स्त्री०) घास, पुआल आदि का मुट्ठा, अँटिया,सूरन आदि के नये कल्ले,एक ही प्रकार की वस्तुओं की ढेर जो तले ऊपर रखी हो, गड्डी, गांज(वि०) संयुक्त, मिली हुई।
जुठारना-(हिं०क्रि०) उच्छिष्ट करना, किसी खाने पीनेकी वस्तु में से कुछ खाकर छोड़ देना,जूठा करना, किसी वस्तु में हाथ लगाकर दूसरे के व्यवहार के अयोग्य कर देना। **जुठिहारा**-(हिं०पु०) जूठा खानें वाला मनुष्य।
जुड़ना-(हिं०क्रि०) संयुक्त होना,संभोग करना, एकत्र होना, किसी काम में सहायता देने के लिये तैयार होना, उपलब्ध होना, मिलना, जुतना।
जुड़पित्ती-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर भर में चिकोते पड़जाते हैं और इनमें खुजली रहती है
जुड़वां-(हिं०वि०) एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे, यमल, युग्म।
जुड़वाई-(हिं०स्त्री०) देखो जोड़वाई।
जुड़ाई-(हिं०स्त्री०) देखो जोड़ाई।
जुड़ाना-(हिं०क्रि०) शीतल होना, ठढा होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना।
जुड़वाना-(हिं०क्रि०) शान्त करना, ठंढा करना, देखो जोड़वाना।
जुड़ावना-(हिं०क्रि०) देखो जुड़ाना।
जुत-(हिं०वि०) देखो युक्त।
जुतना-(हिं०क्रि०) बैल घोड़े आदि को हल गाड़ी आदि में रस्सी से नथना, किसी काम करनेमें सपरिश्रम लग जाना, लड़ाई में प्रवृत्त होना, गुटना, हलसे भूमिका मृदु किया जाना। **जुतवाना**-(हिं०क्रि०) दूसरे से हल चलवाना। **जुताई**-(हिं०स्त्री०) देखो जोताई, जोतने का काम।
जुताना-(हिं०क्रि०) देखो जोताना।
जुतियाना-(हिं०क्रि०) जूतों से मारना निरादर करना, अपमानित करना, तिरस्कार करना। **जुतियौवल**-(हिं०स्त्री०) आपस में जूतों को मार।
जुत्थ-(हिं०पु०) देखो यूथ।
जुथौली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
जुद्ध-(हिं०स्त्री०) देखो युद्ध, लड़ाई।

जुन्हरी-(हिं०स्त्री०) ज्वार नामक अन्न ।

जुन्हाई-(हिं०स्त्री०) चन्द्रिका, चांदनी, चन्द्रमा ।

जुवराग-(हिं०पुं०) देखो युवराज ।

जुबान-(हिं०स्त्री०) भाषा, जीभ ।

जुबानी-(हिं०वि०) मौखिक ।

जुमना-(हिं०पु०) खेत मे खाद देने की एक विधि ।

जुरझुरी-(हिं०स्त्री०)ज्वर की कँपकपी, ज्वराश ।

जुरना-(हिं०क्रि०) देखो जुड़ना ।

जुरा-(हिं०स्त्री०) देखो जरा ।

जुराना-(हिं०क्रि०) देखो जुटाना,

जुराफ़ा-(हिं०पुं०)अफ्रीका का एक पशु

जुल-(हिं०पु०) धोखा, छल, दम पट्टी ।

जुलना-(हिं०क्रि०) भेट करना ।

जुलबाज़-(हिं०पु०) धूर्त, छली; जुलबाजी-(हिं०स्त्री०) धूर्तता ।

जुलाहा-(हिं०पुं०) कपड़ा बिननेवाला मुसलमान, तन्तुकार, (वि०) मूर्ख; एक प्रकार का बरसाती कीड़ा ।

जुलू-दक्षिण अफ़्रीका की एक असभ्य जाति ।

जुलोक-(हिं०पुं०) द्युलोक, वैकुण्ठ ।

जुवराज-(हिं०पुं०) देखो युवराज ।

जुवा-(हिं०पु०) देखो जुवा द्यूत ।

जुवारी-(हिं०पु०) देखो जुआरी ।

जुषाण-(सं०पु०) यज्ञ सम्बन्धी मन्त्र ।

जुष्ट-(सं०नपुं०) उच्छिष्ट, जूठा, (वि०) सेवा किया हुआ, प्रसन्न, खुश ।

जुहाना-(हिं०क्रि०) एकत्रित करना, जुटाना, सचित करना ।

जुहार-(हिं०पुं०) राजपूतों में प्रचलित एक प्रकार का अभिनन्दन,

जुहारना-(हिं०क्रि०) किसी से कुछ सहायता मांगना,

जुही-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का घना छोटा पौधा जिसमें बरसात मे सुगन्धित फूल लगते हैं ।

जुहु-(सं०नपुं०) प्राची दिशा, पूर्व दिशा

जुहुराण-(सं०पुं०) चन्द्रमा (वि०) कपट व्यवहार करने वाला ।

जुहू-(सं०स्त्री०)देखो जुहु, स्रुवा,यज्ञपात्र

जुहोता-(हिं०पुं०) यज्ञ में आहुति देने वाला ।

जू-(सं०स्त्री०) आकाश,सरस्वती,गमन, गतियुक्त ।

जू-(हिं०अव्य०) एक आदर सूचक शब्द जो वृज, राजपुताना, बुंदेलखण्ड आदि स्थानों में बड़े लोगों के नाम के साथ लगाया जाता है ।

जूं-(हिं०स्त्री०) बालों में पड़ने वाला एक छोटा स्वेदज कीड़ा ।

जूंठ, जूंठन-देखो जूठ, जूठा ।

जूंदन-(हिं०पु०) बन्दर, बानर ।

जूंमुहां-(हिं०वि०) धूर्त मनुष्य जो देखने में सीधा सादा भलामानुस जान पड़े

जूआ-(हिं०पु०) हार जीत का खेल, द्यूत, चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसको पकड़ कर यह चलाई जाती है, रथ या गाड़ी के अगले भाग में लगा हुआ वह चिकना काठ जिसमें बैल कन्धा लगाकर गाड़ी खींचता है ।

जूजू-(हिं०पुं०) एक कल्पित भयंकर जीव, लोग बच्चों को इसके नामसे डराते है, हाऊ ।

जूझ-(हिं०स्त्री०) युद्ध, झगड़ा, लड़ाई । जूझना-(हिं०क्रि०) लड़ना, रणक्षेत्र मे प्राण त्यागना ।

जूट-(सं०पु०) जटा की गाँठ, जूड़ा, लट, पटुआ, पटसन, इसका बना हुआ वस्त्र ।

जूटक-(सं०नपु०) जटा, केशवन्ध, लट

जूटि-(हिं०स्त्री०) जोडी ।

जूठन-(हिं०स्त्री०) उच्छिष्ट भोजन,वह भोजन जिसमें से कुछ अंश किसीने मुंह लगाकर खाया हो, वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसीने दो एक बार कर लिया हो, भुक्त पदार्थ । जूटना-जोड़ना जूठा-(हिं०वि०) उच्छिष्ट, किसी के खाने से बचा हुआ भाग,भुक्त,भोग करके अपवित्र किया हुआ (पुं०) उच्छिष्ट भोजन । जूठी-(हिं०वि०) देखो जठा ।

जूड़-(हिं०वि०) ठंढा, प्रसन्न

जूड़ा-(हिं०पु०)सिर के बालों की ग्रन्थि, चोटी, कलंगी, मूंज आदि का पूला, पगड़ी के पीछे का भाग, घास आदि को लपेट कर बनाई हुई गेंडुरी जिसपर पानी का घड़ा रक्खा जाता है ।

जूड़ी-(हिं०स्त्री०) जाड़ा देकर आने वाला ज्वर ।

जूत-(सं०वि०) बीता हुआ,खींचा हुआ, दिया हुआ ।

जूत, जूता-(हिं०पुं०)पादत्राण,उपानह, पनही, जोड़ा; देखो पादुका; जूता उठाना-चापलूसी करना, नौकरी करना; जूता चलाना-लड़ाई झगड़ा करना, मारपीट करना । जूताखोर-(हिं०वि०) जो जूता खाया करे, निर्लज्ज; जूती-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पहिरने का जूता; जूतीकारी-(हिं०स्त्री०) जूतों की मार । जूतीखोर-(हिं०वि०) निर्लज्ज, मार और गाली की परवाह न करने वाला । जूती-पैजार-(हिं०स्त्री०) मारपीट, लड़ाई झगड़ा, जूतों की मार ।

जूथ-(हिं०पु०) देखो यूथ ।

जून(हिं०पुं०) समय, काल, तृण, घास

जूना-(हिं०पुं०) बोझ बांधने की रस्सी, उसकन ।

जूप-(हिं०पुं०) द्यूत, जुआ, विवाह में होने वाली एक प्रथा जिसमें वर और वधू परस्पर जुआ खेलते हैं,पासा

जूमना-(हिं०क्रि०) जुटना,इकट्ठा होना,

जूर-(हिं०पुं०) संचय, जोड़ा ।

जूरना-(हिं०क्रि०) देखो जोड़ा ।

जूरा-(हिं०पुं०) देखो जूड़ा ।

जूरी-(हिं०स्त्री०) घास, पत्तों या टहनियों का एक में बंधा हुआ पूल, एक प्रकार का पकवान, सूरन आदि के नये कल्ले ।

जूष-(सं०नपुं०पु०) झोल, कढी, रसा, उबाली हुई दाल का पानी ।

जूस-(हिं०पु०) मूँग, अरहर आदि की पकी हुई दाल का पानी, उबाली हुई वस्तु का रस, युग्म संख्या, जूसताक-(हिं०पुं०) छोटे लड़कों के खेलने का एक प्रकार का जुआ जिसमें एक लड़का अपनी मुट्ठी में कुछ कौड़ियों को छिपाकर दूसरे से पूछता है कि ये जूस हैं या ताख, यदि ठीक बताता है तो जीत होती है

जूसी-(हिं०स्त्री०) वह गाढा लसदार रस जो ऊखके पकते समय इसमें से अलग हो जाता है, खांड़ का पसेव,

जूह-(हिं०पुं०) देखो यूथ ।

जूहर-(हिं०पु०) राजपूतों की वह प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार जब स्त्रियों को निश्चय हो जाता था कि शत्रुओं का दुर्ग में प्रवेश रुक नहीं सकता तो वे चिता पर बैठ कर भस्म हो जाती थीं और पुरुष लोग दुर्ग के बाहर लड़ने के लिये चले जाते थे ।

जूही-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसमें चमेली के समान सुगन्धित फूल होते है, सेम, मटर आदि के फलियों में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा ।

जृम्भ-(सं०पुं०) जँभाई, जमुहाई, उबासी, आलस्य, जृम्भक-(सं०वि०) जो सर्वदा जंभाई लेता हो; (पु०) रुद्रगणों में से एक । जृम्भण-(सं०नपु०) जंभाई लेना, जृम्भा । जृम्भमाण-(सं०वि०) जंभाई लेता हुआ । जृम्भा-(सं०स्त्री०) जृम्भ, जंभाई, आलस्य । जृम्भित-(सं०वि०) चेष्टा किया हुआ, विकसित ।

जेंगना-(हिं० पुं०) जुगन ।

जेंवना-(हिं०क्रि०)भक्षण करना,खाना

जेंवनार-(हिं०स्त्री०) देखो जेवनार ।

जेंवाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना, खिलाना ।

जे-(हिं०सर्व०) "जो" का बहु वचन ।

जेइ, जेउ, जेऊ, (हिं०सर्व०) जो ।

जेट-(हिं०स्त्री०) समूह, ढेर, मिट्टी के पात्र या रोटियों की तह ।

जेठ-(हिं०पुं०) वैशाख और आषाढ के बीच का चन्द्रमास; पति का बड़ा भाई, भसुर, (वि०) अग्रज, वयमें बड़ा । जेठरा-(हिं०वि०) जेठा,बड़ा । जेठवा-(हिं०पु०) जेठ के महीने वाली कपास ।

जेठा-(हिं०वि०) अग्रज, बड़ा, सबसे उत्तम, बढ़िया । जेठाई-(हिं०स्त्री०) जेठापन, वय की बड़ाई ।

जेठानी-(हिं०स्त्री०) पति के बड़े भाई (जेठ) की स्त्री ।

जेठी-(हिं०वि०) जेठ का एक प्रकार का धान जो चैत में बोया जाता है और जेठ में काटा जाता है । जेठी मधु-(हिं०स्त्री०) यष्टि मधु,मुलेहठी ।

जेठौत जेठौता-(हिं०पुं०) पति के बड़े भाई (जेठ) का पुत्र;

जेतव्य-(सं०वि०)जेय,जो जीता जा सके

जेता-(हिं०वि०) जयशील, विजयी, जीतने वाला, (पु०) विष्णु (हिं०वि०) जितना ।

जेतिक-(हिं०वि०) जितना, जिस परिमाणका । जेते-जितने

जेतो-(हिं०क्रि०वि०) जितना ।

जेबकतरा-(हिं०पुं०) देखो जेबकट ।

जेबघड़ी-(हिं०स्त्री०) जेब में रखने की छोटी घड़ी, वाच ।

जेमन-(सं०नपु०)भक्षण,भोजन, जीमना

जेय-(सं०वि०) जेतव्य, जीतने योग्य ।

जेर-(हिं०पुं०) वह झिल्ली जिसमें गर्भ का बालक रहता और पुष्ट होता है आँवल ।

जेरीं-(हिं०स्त्री०) चरवाहे की लाठी जिससे वे कँटीली झाड़ियों को हटाते हैं, फरुही के आकार का एक अस्त्र ।

जेली-(हिं०स्त्री०)घास भूसा जमा करने का एक साधन ।

जेवड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो जेवरी ।

जेवना-(हिं०क्रि०) देखो जीमना ।

जेवनार-(हिं०स्त्री०) बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना, पंगत, भोज, जीमनवार, भोजन ।

जेवरा-(हिं०पुं०) रस्सा ।

जेवरी-(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी ।

जेष्ठ-(सं०वि०)जेठ महीना,अग्रज,बड़ा ।

जेष्ठा-(हिं०स्त्री०) देखो ज्येष्ठा ।

जेहड़-(हिं०स्त्री०) पानी से भरे हुए अनेक घड़े जो एक के ऊपर एक रक्खे रहते हैं ।

जेहर-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पैर का एक आभूषण, पायजेब ।

जेहल,जेहलखाना-देखो जेल,जेलखाना

जेहि-(हिं०सर्व०) जिसको, जिससे ।

जै-(हिं०स्त्री०) देखो जय; (वि०)जितना, जिस संख्या का ।

जैजैकार-(हिं०स्त्री०)देखो जयजयकार ।

जैजैवन्ती-(हिं०स्त्री०) प्रातःकाल में गाई जाने वाली एक रागिणी ।

जैढक-(हिं०पु०)जंगी ढोल, विजय ढोल

जैत-(हिं०स्त्री०) अगस्त्य की जाति का एक वृक्ष ।

जैतपत्र-(हिं०पु०) देखो जयपत्र ।

जैतवार-(हिं०वि०) विजयी,जीतनेवाला

जैती-(हिं०स्त्री०) खेत में होने वाली एक प्रकार की घास ।

जैत्र-(सं०वि०) विजयी, जीतने वाला (पुं०) पारा ।

जैत्री-(सं०स्त्री०) जातीकोष, जावित्री ।

जैन-(सं०पुं०)भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध धार्मिक, सम्प्रदाय जिसमें अहिंसा

परम धर्म माना जाता है, यह दिगम्बर और श्वेताम्बर दो श्रेणियों में विभक्त हैं, इस धर्म में ईश्वर नहीं माना जाता। जैनी-(हिं०पुं०) जैन मतावलम्बी, जैन।
जैनु-(हिं०पु०) भोजन।
जैन्य-(सं०वि०) जैन संबंधी।
जैपाल-(सं०पुं०) जमालगोटे का बीज
जैपत्र-(हिं०पु०) देखो जयपत्र।
जैबो-(हिं०क्रि०) देखो जाना।
जैमाल-(हिं०स्त्री०) देखो जयमाल।
जैमिनि-(सं०पु०) कृष्णद्वैपायन के शिष्य, पूर्वमीमासा नामक दर्शन इन्हीं का प्रणीत है।
जैव-(सं०वि०) जीवन संबंधी, बृहस्पति संबंधी।
जैसा-(हिं०वि०) जिस आकृति या गुण का, जिस प्रकार का, जितना, जिस परमाण का, सदृश, तुल्य, समान, बराबर, (क्रि०वि०) जिस मात्रा में, जितना; जैसे का तैसा-ज्यों का त्यों; जैसा चाहिये-जैसा उचित हो, उपयुक्त। जैसी-(हिं०वि०) 'जैसा' का स्त्रीलिंग का रूप। जैसे-(हिं०क्रि०वि०) जिस प्रकार या ढंग से; जैसे तैसे-किसी न किसी प्रकार से कठिनाई से। जैसो-(हिं०क्रि०वि०)देखो जैसा।
जों-(हिं०क्रि०वि०) देखो ज्यों।
जोंक-(हिं०स्त्री०) एक पानी का कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपक कर उनका रक्त चूसता है, सेवार से बनाया हुआ चीनी शोधने का छन्ना, वह मनुष्य जो अपना स्वार्थ निकालने के लिये पिण्ड न छोड़े।
जोंकी-(हिं०स्त्री०) दोहरे मुँह का कांटा जो दो पटरों को जोड़ने के काम में आता है, देखो जोंक।
जोंदरी, जोंधरी-(हिं०स्त्री०) छोटी ज्वार, बाजरा।
जोंधैया-(हिं०स्त्री०) चन्द्रिका, चांदनी।
जो-(हिं०सर्व०) एक संबंध वाचक सर्वनाम जिसके द्वारा निर्दिष्ट संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ अधिक वर्णन की योजना की जाती है (अव्य०) यदि।
जोअना-(हिं०क्रि०) देखो जोवना।
जोई-(हिं०स्त्री०) जाया, पत्नी, स्त्री। (सर्व०) जो।
जोइसी-(हिं०पुं०) देखो ज्योतिषी।
जोइ-(हिं०सर्व०) देखो जो।
जोक-(हिं०स्त्री०) देखो जोंक।
जोखना-(हिं०क्रि०) तौलना, जांचना।
जोखा-(हिं०पुं०)लेखा, हिसाब किताब।
जोखिम-(हिं०स्त्री०)विपत्ति की आशंका, वह पदार्थ जिससे बड़ी आपत्ति आने की संभावना हो। जोखिम उठाना-ऐसा कार्य करना जिससे कोई बड़ी आपत्ति आने का भय हो। जान जोखिम होना-प्राण निकलने की आशंका होना।
जोखिता-(हिं०स्त्री०) पत्नी, स्त्री।
जोखों-(हिं०स्त्री०) देखो जोखिम।
जोजंधर-(हिं०पुं०) शत्रु से चलाये हुए अस्त्र से अपना बचाव करने की युक्ति, विश्वामित्र से यह युक्ति श्रीरामचन्द्रजी ने सीखी थी।
जोग-(हिं०पुं०) देखो जोग (हिं०अव्य०) के समीप, के वास्ते।
जोगड़ा-(हिं०पुं०) पाखंडी, बनावटी, ढोंगी।
जोगता-(हिं०स्त्री०) योग्यता।
जोगवाना-(हिं०क्रि०) यत्न से रखना, रक्षित रखना, संचित करना, बटोरना, सत्कार करना, जाने देना, पूरा करना।
जोगसाधन-(हिं०पु०)देखो योगसाधन।
जोगा-(हिं०पुं०) अफ़ीम की छानी हुई मैल।
जोगानल-(हिं०स्त्री०) योगानल, योग से उत्पन्न अग्नि।
जोगिन-(हिं०स्त्री०) जोगी की स्त्री, साधुनी, विरक्त स्त्री, पिशाचिनी, रणदेवी, देखो योगिनी।
जोग्य-(हिं०वि०) देखो योग्य।
जोगिंद-(हिं०पुं०) देखो योगीन्द्र।
जोगिनिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लाल रंग की ज्वार, एक प्रकार का अगहनियां धान।
जोगिनी-(हिं०स्त्री०) देखो योगिनी।
जोगिया-(हिं०वि०) जोगी संबंधी, गैरिक, गेरू के रग में रंगा हुआ, गेरू के रंग का।
जोगी-(हिं०पु०) योग करनेवाला, योगी, एक प्रकार के भिक्षुक जो गेरुवा वस्त्र पहिने रहते हैं और सारंगी बजाकर भिक्षा मागते हैं।
जोगीड़ा-(हिं०पुं०) वसन्त ऋतु में गाये जाने का एक प्रकार का चलता गाना, गायकों की मण्डली।
जोगीश्वर-(हिं०पुं०) देखो योगीश्वर।
जोगू-(सं०वि०) स्तुति करनेवाला।
जोगेश्वर-(हिं०पुं०) देखो योगेश्वर।
जोङ्ग-(सं०नपुं०)पीला मुसब्बर, अगर
जोटा-(हिं०पुं०) जोड़ा युग।
जोटिङ्ग-(सं०पु०) महाव्रती, महादेव।
जोटी-(हिं०स्त्री०) जोड़ी, बराबर का, समान।
जोड़-(हिं०पु०) बन्धन, युग्म, तुल्य, समधर्मी, गणित में कई संख्याओं का योग, जोड़ने की क्रिया योगफल, जोड़ने का टुकड़ा, शरीर का सन्धिस्थान, मेल, समानता, बराबरी, जोड़ा, एक प्रकार की दो वस्तु, समान धर्म वाला, छल, कपट, वह स्थान जहां दो टुकड़े जुटे हों किसी कार्य में प्रयुक्त होने वाली आवश्यक सामग्री, मेलमिलाप। जोड़तोड़-छल कपट। जोड़ती-(हिं०स्त्री०) अनेक संख्याओं का योग, जोड़। जोड़न-(हिं०पुं०) जामन जो दही जमाने के लिये दूध में डाला जाता है।
जोड़ना(हिं०क्रि०) टूटे हुए पदार्थ के टुकड़ों को मिलाकर एक करना, संबंध करना, दो वस्तुओं को दृढ़ता से एक करना, सामग्री को क्रम से रखना, एकत्र करना, संग्रह करना, प्रज्वलित करना, जलना, संबंध स्थापित करना, नाता जोड़ना।
जोड़वाई-(हिं०पुं०) जोड़ने की क्रिया, जोड़वाने का शुल्क। जोड़वाना-(हिं०क्रि०) जोड़ने का काम दूसरे से कराना।
जोड़ा-(हिं०पुं०)एक तरह के दो पदार्थ, दोनों पैरों के जूते, एक साथ पहिरे जानेवाले दो कपड़े, एक आकार की वस्तु, स्त्री पुरुष, नर मादा।
जोड़वा-(हिं०वि०)एक ही साथ उत्पन्न, एक ही माता के दो बच्चे, यमज।
जोड़ाई-(हिं०स्त्री०) दो या अधिक वस्तुओं को जोड़ने का शुल्क, दीवार बनाने में ईंटों या पत्थरों के टुकड़ों को जोड़ने की क्रिया।
जोड़ा सन्देस-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मिठाई।
जोड़ी-(हिं०स्त्री०) एक ही तरह के दो पदार्थ, एक साथ पहिरने के वस्त्र, स्त्री पुरुष, नर मादा, दो घोड़ों से खींची जानेवाली गाड़ी, ताल, मजीरा, बराबरी का जोड़, मुगदर की जोड़ी।
जोड़ू-(हिं०स्त्री०) देखो जोरू, पत्नी।
जोत-(हिं०स्त्री०) ऊंट घोड़े आदि जोते जाने वाले पशुओं के गले की रस्सी जिसका एक छोर पशु के गले में बँधा रहता है तथा दूसरा उस वस्तु में बंधा होता है जिसमें पशु जोता जाता है, तराजू के पलरे में बंधी हुई रस्सी, उतनी भूमि जितनी किसी आसामी को जोतने बोने के लिये दी गई हो। जोतदार-(हिं०पुं०) वह असामी जिसको जोतने बोने के लिये कुछ भूमि मिली हो। जोतना-(हिं०क्रि०) रथ, गाड़ी कोल्हू आदि चलाने के लिये उसमें बैल आदि बांधना, हल चलाना, किसी को किसी काम करने के लिये लगाना, गाड़ी आदि में बैल आदि जोत कर उसको चलने के लिये तैयार करना।
जोता-(हिं०पुं०)जुआ में की वह पतली रस्सी जो बैल की गरदन में फंसाई जाती है, बड़ी बरन, हल.जोतने या खेती करनेवाला। जोताई-(हिं०स्त्री०) जोतने का काम, जोतने की पारिश्रमिक।
जोति-(हिं०स्त्री०) देखो ज्योति; देवी देवता के सामने जलाने का घी का दीपक।
जोतिक, जोतिसी-(हिं०पुं०) ज्योतिषी
जोतिर्लिंग-(हिं०पु०)देखो ज्योतिर्लिङ्ग।
जोती-(हिं०स्त्री०) ज्योति, घोड़े की लगाम, तराजू के पल्ले की रस्सी।
जोधन-(हिं०स्त्री०) वह रस्सी जिससे जुए की ऊपर नीचे की लकड़ियां बँधी होती हैं।
जोधा-(हिं०पुं०)देखो योद्धा,लड़नेवाला
जोना-(हिं०क्रि०) देखना।
जोनि-(हिं०स्त्री०) देखो योनि।
जोह, जोहाई-(हिं०स्त्री०) चन्द्रिका।
जोप-(हिं०अव्य०) देखो यूप।
जोपै-(हिं०पुं०) यदि, यद्यपि।
जोबना-(हिं०पुं०) यौवन।
जोय-(हिं०स्त्री०) जोरू, पत्नी, (सर्व०) जो, जिस।
जोबना-(हिं०क्रि०) जलाना, बालना,
जोयसी-(हिं०क्रि०) देखो ज्योतिषी।
जोरई-(हिं०स्त्री०) एक साथ बँधे हुए लंबे बांस जिनके किनारे पर मोटा रस्सा बँधा होता है, यह कोल्हू के जाठ को रोकने के काम में आताहै, एक प्रकार का हरा कीड़ा जो कृषिफल जो की पत्तियों को खा जाता है।
जोरना-(हिं०क्रि०) जोड़ना, मिलाना।
जोराजोरी-(हिं०स्त्री०) विवशता (क्रि०वि०) बल पूर्वक।
जोरी-(हिं०स्त्री०) जोड़ी।
जोरू-(हिं० स्त्री०) भार्या, पत्नी, घरवाली, स्त्री।
जोल-(हिं०पुं०) झुण्ड, समूह।
जोलाहल-(हिं०स्त्री०) अग्नि, अग्नि की ज्वाला।
जोलाहा-(हिं०पु०) देखो जुलाहा।
जोली-(हिं०स्त्री०) जोड़ी, बराबरी।
जोवना-(हिं०क्रि०) देखना, जोहना, ढूंढना, आसरा देखना।
जोवादी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मैना चिड़िया।
जोशी-(हिं०पु०) देखो ज्योतिषी।
जोष-(सं०स्त्री०) स्त्री, नारी (पुं०) प्रेम, प्रीति।
जोषक-(सं०पु०) सेवक, टहलुआ।
जोषण-(सं०पुं०) प्रीति, प्रेम, सेवा।
जोषिका-(सं०स्त्री०) कलियों का समूह।
जोषिता-(सं०स्त्री०) स्त्रीमात्र, नारी।
जोषी-(हिं०पुं०) ज्योतिषी, गुजराती, ब्राह्मणों की एक जाति।
जोह-(हिं० स्त्री०) खोज, प्रतीक्षा, कृपादृष्टि।
जोहड़-(हिं०पुं०) कच्चा तालाब।
जोहन-(हिं०स्त्री०) प्रतीक्षा, खोज।
जोहना-(हिं०क्रि०) देखना, ताकना, प्रतीक्षा करना, राह देखना, ढूंढना, पता लगाना।
जोहार-(हिं०पु०)अभिवादन, नमस्कार प्रणाम, देखो जौहर।
जौं-(हिं०अव्य०)यदि,जो (हिं०क्रि०)ज्यों।
जौंकना-(हिं०स्त्री०) क्रोध में चिल्ला कर बोलना।
जौंची-(हिं०क्रि०) गेहूँ या जौं के कृषिफल में होने वाला एक रोग।
जौंराभौंरा-(हिं०पुं०) महल या गढ के

भीतर की वह कोठरी जिसमें गुप्त कोष आदि रहता है (पुं०) दो बालकों का जोड़ा।
जौ-(हिं०पुं०) गेंहू की तरह का एक अन्न, यव, एक तौल जो छराई के बराबर होती है (क्रि०वि०) जब (अव्य०) यदि।
जौ केराई-(हिं०स्त्री०) जौ का ढेर जिसमें मटर मिला हो।
जौख-(हिं०पुं०) सेना, झुण्ड, जत्था, पक्षि-समूह।
जौगढवा--(हिं०पुं०) एक प्रकार का अगहनियाँ धान।
जौचनी-(हिं०स्त्री०) चना मिला हुआ जव
जौतुक-(हिं०पु०) यौतुक, दहेज।
जौधिक-(स०पु०) खड्ग के बत्तीस हथों में से एक।
जौन-(हिं०सर्व०) जो, (वि०) जो (पु०) यवन
जौनाल-(हिं०स्त्री०) रबी का खेत।
जौ पै-(हिं०अव्य०) यदि।
जौवति-(हिं०स्त्री०) युवति।
जौरा-(हिं० पुं०) नाऊ बारी आदि को उनके काम के बदले में दिया जाने वाला अन्न।
जौहर-(हिं०पुं०) विशेषता, आत्महत्या, प्राणत्याग दुर्ग में राजपूत स्त्रियों के जलने के लिये बनाई हुई चिता, प्रवलशत्रु द्वारा गढ के पराजय की सभावना देखकर राजपूत स्त्रियों का जलती चिता में प्रवेश करके प्राण देना।
जौहरी-(हिं० पु०) रत्न बेंचनेवाला, रत्नों की परख करनेवाला, गुणग्राहक, किस वस्तु के गुणदोष को पहिचानने वाला, पारखी।
ज्ञ-यह संयुक्त अक्षर 'ज' और 'ञ' के योग से बनता है। (सं० पुं०) ज्ञानी, जानने वाला, ब्रह्मा, पण्डित बोध, बुधग्रह, मंगलग्रह।
ज्ञक-(स०वि०) ज्ञाता, जाननेवाला।
ज्ञपित-(सं० वि०) जाना हुआ, तुष्ट किया हुआ, देखा हुआ, चोखा किया हुआ। **ज्ञप्त**-(सं०वि०) ज्ञापित, जाना हुआ।
ज्ञप्ति-(सं०स्त्री०) बुद्धि, तुष्टि, स्तुति, विज्ञापन, जलाने की क्रिया।
ज्ञा-(सं०-स्त्री०) जानकारी, कविता की आज्ञा।
ज्ञात-(सं०वि०) विदित, प्रतीत, अवगत, जाना हुआ।
ज्ञातक-(स०वि०) विदित, जाना हुआ; **ज्ञात यौवना**-(सं० स्त्री०) वह मुग्धा, नायिका जिसको अपनी युवावस्था का ज्ञान हो। **ज्ञातव्य**-(सं०वि०) ज्ञेय, जो जाना जा सके। **ज्ञात सिद्धान्त**-(स०पु०) वह जो शास्त्र को अच्छी तरह जानता हो। **ज्ञातसार**-(स०पुं०) वह जो किसी विषय के तत्व को जानता हो।
ज्ञाता-(हिं०पुं०) जानकार, जाननेवाला
ज्ञाति-(सं०पुं०) एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य, बान्धव, गोती, सपिण्ड (स्त्री०) जाति।
ज्ञातित्व-(सं०नपुं०) ज्ञाति के धर्म कर्म का व्यवहार।
ज्ञातिभव-(स०पु०) सम्बन्ध, रिश्ता।
ज्ञातिभेद-(स०पु०) ज्ञातविच्छेद, आपस की फूट।
ज्ञान-(सं०नपुं०) बोध, प्रतीति, जानकारी, बुद्धिमात्र, तत्वज्ञान, यथार्थ ज्ञान, परब्रह्म, विष्णु। **ज्ञानकल्प**-(सं०पु०) शंकराचार्य के एक शिष्य का नाम। **ज्ञानकाण्ड**-(स० पुं०) वेद के तीन विभागों में से एक, इसमे ब्रह्म आदि का विचार है। **ज्ञानकृत**-(सं० वि०) बुद्धि पूर्वक (जानबूझ कर) किया हुआ। **ज्ञानकेतु**-(सं० पु०) ज्ञान का चिह्न। **ज्ञानगर्भ**-(स०वि०) ज्ञानयुक्त, जिसमें ज्ञान हो। **ज्ञानगोचर**-(स० वि०) ज्ञानेद्रियों से जानने योग्य। **ज्ञानचक्षु**-(स०पुं०) पण्डित, विद्वान्। **ज्ञानद**-(स० वि०) ज्ञानदायक, ज्ञान देनेवाला। **ज्ञानदाता**-(स०पुं०) ज्ञान देनेवाला गुरु। **ज्ञानदुर्बल**-(स०वि०) ज्ञानहीन, मूर्ख। **ज्ञानपति**-(स०पुं०) ज्ञान का उपदेश करनेवाला गुरु, परमेश्वर। **ज्ञानमद**-(स०पु०) ज्ञानी होने का गर्व। **ज्ञानयज्ञ**-(सं० पु०) ब्रह्मज्ञान। **ज्ञानयोग**-(स०पु०) ज्ञान-प्राप्ति का उपाय, ब्रह्मप्राप्ति के लिये निष्ठा विशेष। **ज्ञानवान्**-(स० वि०) ज्ञानी, जिसको ज्ञान हो। **ज्ञानवापी**-(स० स्त्री०) काशी में वापी रूप एक तीर्थ। **ज्ञानवृद्ध**-(सं० वि०) जिसको अधिक ज्ञान हो। **ज्ञानसाधन** (स०नपु०) तत्वज्ञान साधन; **ज्ञानहत**-(स० वि०) जिसका ज्ञान भ्रष्ट हो गया हो।
ज्ञानापन्न-(सं०वि०) ज्ञान प्राप्त, ज्ञानी, बुद्धिमान्।
ज्ञानी-(स० वि०) ज्ञानयुक्त, ब्रह्मज्ञानी आत्मज्ञानी, जिसको सच्चा ज्ञान हो।
ज्ञानेंद्रिय-(सं०नपुं०) वे इन्द्रिया जिनमे जीवों को विषयों का ज्ञान होता है, ये पांच हैं, श्रोत्रेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय, दर्शनेन्द्रिय, रसना और घ्राणेन्द्रिय।
ज्ञानोदय-(स० पुं०) ज्ञानकी उत्पत्ति।
ज्ञापक-(सं० वि०) बोधक, सूचक, जाननेवाला।
ज्ञापन-(स०नपुं०) जताने या बतलाने का कार्य। **ज्ञापनीय**-(सं०वि०) निवेदनीय, जो बतलाने के योग्य हो। **ज्ञापित**-(सं० वि०) सूचित, बतलाया हुआ।
ज्ञाप्ति-(सं०स्त्री०) ज्ञापन, सूचित करने का कार्य।
ज्ञेय-(सं० वि०) ज्ञातव्य, ज्ञानयोग्य, जिसका जानना योग्य हो, जानने योग्य
ज्ञेयज्ञ-(सं०वि०) आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञ, सिद्ध
ज्ञेयता-(सं०स्त्री०) ज्ञेयत्व, बोध।
ज्या-(सं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला, किसी चापके एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा, पृथ्वी, माता, वह लम्ब रेखा जो किसी चाप के एक छोर से दूसरे छोर तक गये हुए व्यास पर गिरती हो। **ज्याघोष**-(सं०पुं०) धनुष की टकार।
ज्याना, ज्यावना-(हिं०क्रि०) जीवित करना
ज्यामिति-(सं०स्त्री०) गणित शास्त्र का वह विभाग जिसके द्वारा भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोण, समतल घनपरिमाण आदि बिषय का निरूपण होता है।
ज्यायस्-(सं०वि०) वृद्ध, जीर्ण, पुराना, प्रशस्त, बढ़िया।
ज्यारना-(हिं०क्रि०) देखो जिलाना।
ज्यावना-(हिं० क्रि०) देखो जिलाना।
ज्यूँ-(हिं०अव्य०) देखो ज्यों।
ज्येष्ठ-(सं०वि०) अति वृद्ध, बड़ा, बूढ़ा, उत्तम।
जेष्ठ-(पु०) जेठ का महीना, परमेश्वर, प्राण। **ज्येष्ठतम**-(सं० वि०) अत्यन्त ज्येष्ठ, इन्द्र। **ज्येष्ठता**-(स० स्त्री०) श्रेष्ठता, बड़ापन, बड़ाई।
ज्येष्ठतात-(सं०पु०) पिता के बड़े भाई।
ज्येष्ठत्व-(स०नपु०) ज्येष्ठता बड़ाई।
ज्येष्ठा-(सं०स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से अठारहवाँ नक्षत्र, यह तीन तारों से बना हुआ कुंडल के आकार का है, छिपकली, बीच की (मध्यमा) अंगुली, गंगा, वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा पति की अधिक प्यारी हो, अलक्ष्मी, केले का पेड़ (वि०) बड़ा। **ज्येष्ठामलक**-(स०पुं०) निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़।
ज्येष्ठाश्रम-(सं०पुं०) उत्तमाश्रम, गृहस्थ
ज्यों-(हिं०क्रि०वि०) जिस प्रकार, जिस रूप से, जैसे, जिस प्रकार, जिस रूप से, जैसे, जिस ढंग से, जिस क्षण में; **ज्यों त्यों**-किसी न किसी प्रकार से; **ज्यों ज्यों**-जितना।
ज्योक-(सं०अव्य०) जल्दी के लिये।
ज्योतिःशिखा-(सं०स्त्री०) विषम वर्ण वृत्तों का भेद।
ज्योति-(स०स्त्री०) प्रकाश, उजाला, अग्निशिखा, ज्वाला, सूर्य, नक्षत्र, आँख की पुतली के बीच का विन्दु, मेथी, दृष्टि, विष्णु का एक नाम।
ज्योतिक-(हिं०पुं०) देखो ज्योतिषी।
ज्योतित-(हिं०वि०) प्रकाशित।
ज्योतिरिङ्गण-(सं० पुं०) खद्योत, जुगनू। **ज्योतिरीश**-(सं०पुं०) सूर्य, परमेश्वर। **ज्योतिर्मय**-(सं०वि०) प्रकाशमय, जगमगाता हुआ।
ज्योतिर्माली-(स०पुं०) खद्योत, जुगनू
ज्योतिर्मुख-(सं०पुं०) श्रीराम जी के एक अनुचर का नाम। **ज्योतिर्लता**-(सं०स्त्री०) मालकंगनी। **ज्योतिर्लिङ्ग**-(सं०नपु०) शिव, महादेव।
ज्योतिर्लोक-(स०पुं०) ध्रुवलोक।
ज्योतिर्विद-(स०पुं०) ज्योतिष जानने वाला, ज्योतिषी। **ज्योतिर्विद्या**-(सं०स्त्री०) ज्योतिष। **ज्योतिर्वीज**-(सं०नपुं०) खद्योत, जुगनू।
ज्योतिर्हस्ता-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।
ज्योतिश्चक्र-(सं०नपुं०) नभमण्डल में स्थित मेषादि बारह राशियों तथा नक्षत्रों का मण्डल।
ज्योतिःशास्त्र-(सं०नपुं०) सूर्यादि ग्रह तथा काल आदि का बोध कराने वाला शास्त्र।
ज्योतिष-(सं०नपुं०) वह विद्या या शास्त्र जिससे आकाशस्थित ग्रह नक्षत्र, आदि की गति, परिमाण, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है।
ज्योतिषिक-(सं०नपुं०) ज्योतिष शास्त्र का पढ़ने वाला (वि०) ज्योतिष संबंधी।
ज्योतिषी-(हिं०पुं०) ज्योतिः शास्त्र जानने वाला मनुष्य, दैवज्ञ, गणक।
ज्योतिष्क(सं०पुं०) मेथी, चीता, ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह।
ज्योतिष्का-(सं०स्त्री०) मालकंगनी।
ज्योतिष्ना-(हिं०स्त्री०) ज्योस्ना।
ज्योतिष्टोम-(स०पुं०) एक यज्ञ जिसमें सोलह ब्राह्मणोंकी आवश्यकता होतीहै
ज्योतिष्पथ-(स०पुं०) आकाश।
ज्योतिष्पुञ्ज-(सं०पुं०) नक्षत्र समूह।
ज्योतिष्मती-(स०स्त्री०) एक लता का नाम, मालकंगनी, योगशास्त्रोक्त सत्व प्रधान एक चित्तवृत्ति, रात्रि एक वैदिक छन्द का नाम।
ज्योतिष्मान्-(सं०वि०) प्रकाश युक्त; (पु०) सूर्य।
ज्योतीरथ-(स०पुं०) ध्रुव नक्षत्र
ज्योतीरस-(स०पुं०) एक प्रकारिकारत्न
ज्योत्स्ना-(सं०स्त्री०) कौमुदी, चन्द्रमा का प्रकाश; चाँदनी रात, दुर्गा, प्रभातकाल; **ज्योत्स्ना कोली**-वरुण के पुत्र पुष्कर की पत्नी; **ज्योत्स्ना प्रिय**-चकोर, चकवा; **जेत्स्नावृक्ष**-दीपाधार, डीवट।
ज्योत्स्नेश-(सं०पुं०) ज्योत्स्ना के अधिपति सूर्य।
ज्योनार-(हिं०स्त्री०) पका हुआ भोजन, रसोई, भोज।
ज्योरा-(हिं०पुं०) कृषि तैयार हो जाने पर गाँव के नाइ धोबी आदि को दिया जाने वाला अन्न।
ज्योहत, ज्योहर-(हिं०पुं०) देखो जौहर।
ज्यौ-(हिं०अव्य०) यदि जो - यह शब्द बहुधा कवित। में प्रयोग होता है।
ज्यौतिष-(स०वि०) ज्योतिष संबंधी।
ज्यौतिषक-(स०पु०) ज्योतिष शास्त्र जानने वाला।
ज्यौत्स्ना-(सं०वि०) दीप्त, जगमगाता हुआ
ज्यौत्स्निका-(सं०स्त्री०) चाँदनी रात।
ज्वर-(स०पुं०) शरीर की अस्वस्थता में उत्पन्न गरमी, ताप। **ज्वरघ्न**(सं०वि०) ज्वर नाशक, ज्वर हटाने वाली।
ज्वराग्नि-(स०पुं०) ज्वर रूप अग्नि
ज्वराङ्कुश-(सं०पुं०) ज्वर की एक प्रसिद्ध औषधि।

ज्वरार्त-(सं०वि०) ज्वर पडित।
ज्वरित-(सं०वि०) ज्वर युक्त, ज्वर से पीडित।
ज्वल-(स०पुं०) दीप्ति,ज्वाला, प्रकाश; **ज्वलका**-(स० स्त्री०) ज्वाला, आग की लपट।
ज्वलन-(स०वि०) दीप्तिमान्, जगमगाता हुआ (पुं०) अग्नि, ज्वाला,जलन,दाह
ज्वलन्त-(स०वि०) देदीप्यमान, प्रकाशमान, जलता हुआ, अत्यन्त स्पष्ट।
ज्वलिनी-(सं०स्त्री०) मुर्रा नामक लता।
ज्वान-(हिं०पु०) देखो जवान।
ज्वार-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास जिसकी बाल के दाने अन्न में गिने जाते हैं, जुंधरी, समुद्र के जल का उभाड़, भाटा का उलटा। **ज्वारभाटा**-(हिं०पुं०) समुद्र के जल का चढाव उतार जो चन्द्रमा के आकर्षण से होता है, चढाव को ज्वार और उतार को भाटा कहते हैं।
ज्वाल-(सं०पुं०) अग्नि शिखा, अग्नि की लौ, आँच, (वि०) प्रकाश युक्त, चमकता हुआ, (स्त्री०) रसोई (पुं०) दीप्ति,प्रकाश। **ज्वालमाली**-(सं०पु०) सूर्य।
ज्वाला (सं०स्त्री०) अग्निशिखा, आग की लपट, ऋक्षकी पत्नी का नाम।
ज्वालाजिह्व-(स० पुं०) अग्नि, एक प्रकार का चित्रक वृक्ष, चीता। **ज्वालादेवी**-(स०स्त्री०) शारदा पीठ में स्थित एकदेवी, इनका स्थान कांगड़ा जिले के अन्तर्गत देरा इस्माईल में विद्यमान है।
ज्वालमुखी पर्वत-(सं०पुं०) वह पर्वत जिसकी चोटी में से धुवाँ, राख, तथा जले हुए और पिघले हुए पदार्थ समय समय पर अथवा निरन्तर निकलते रहते है।
ज्वालावक्त्र-(सं०पुं०) महादेव, शिव। **ज्वाला हलदी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की हल्दी जो वस्त्र आदि के रंगने में काम आती है।
ज्वालिन्-(सं०पुं०) शिव,महादेव,दीप्त, प्रभा तेज, चमक (वि०) शिखा युक्त।
ज्वालेश्वर-(सं०पुं०) एक प्राचीन तीर्थ विशेष का नाम।

झ

झ-संस्कृत और हिन्दी व्यंजन वर्ण का नवां वर्ण तथा च वर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान तालु है।
झ-(सं०पुं०) वर्षा मिली हुई तीव्र आंधी, जल का गिरना, एक प्रकार का शब्द, देवदारु, ध्वनि, वृहस्पति, तीव्र वायू, दैत्यराज।
झई-(हिं०स्त्री०) देखो झाई।
झउआ-(हिं०पुं०) टोकरा, खाँचा,झाबा
झं-(हिं०पुं०)धातु खण्ड के परस्पर टकराने से उत्पन्न शब्द।
झंकना-(हिं०क्रि०) देखो झीखना।
झंकार-(हिं०स्त्री०) झनकार, झींगुर आदि के बोलने का शब्द। **झंकारना**-(हिं० क्रि०) झनझन शब्द उत्पन्न करना या होना।
झंकृत-(हिं०वि०) ध्वनित।
झंखना-(हिं०क्रि०)झीखना, पश्चात्ताप करना।
झंखाड़-(हिं०पुं०) एक प्रकार का घना कांटेदार पौधा, काँटेदार पौधों का समूह, जिस पौधे के पत्ते झड़ गये हों, बहुत निकृष्ट वस्तुओं की ढेर
झंगरा-(हिं०पुं०) बांस का बना हुआ गोल टोकरा, झांपा।
झंगा-(हिं०पु०) देखो झगा।
झंगुली-(हिं०स्त्री०) देखो झगा।
झंझ-(हिं०पु०) झांझ
झंझट-(हिं०स्त्री०) व्यर्थ का झगड़ा, प्रपंच, टंटा, बखेड़ा
झंझनाना-(हिं०क्रि०) झंकारना, झनझन शब्द करना।
झंझर-(हिं०पु०) देखो झञ्झर।
झंझरा-(हिं०वि०) झीना, महीन महीन छेदवाला।
झंझरी-(हि०स्त्री०) वह जाली जिसमें बहुत से छोटे छेद हों, भीत में बनी हुई जालीदार खिड़कीं, दमचूल्हे के पेंदी की जाली, आंटा चालने की चलनी। **झंझरीदार** - (हि०वि०) जालीदार।
झंझा-(हिं०पुं०)वर्षा सहित तीव्र आंधी
झंझार-(हिं०पुं०) अग्निशिक्षा, आग की लपट।
झंझावात-(हिं०पुं०) देखो झंझा।
झंझी-(हिं०स्त्री०) फूटी कौड़ी।
झंझोड़ना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को तोड़ने या नष्ट करने की इच्छा से हिलाना, झकोरना, किसी बड़े पशु को छोटे पशु को दांतों से पकड़ कर मार डालने के निमित्त झटका देना।
झंडा-(हिं०पुं०) कपड़े का तिकोना या चौकोर टुकड़ा जिसका एक कोना डण्डे मे लगा रहता है इसका व्यवहार संकेत करने तथा उत्सव आदि सूचित करने में प्रयोग होता है, ध्वजा पताका, फरहरा, **झंडा खड़ा करना**-सैनिकों को इकट्ठा करने के लिये सूचना देना; **झंडा गाड़ना**-किसी स्थान में विजय सूचित करने के लिये झंडा फहरान; **झंडी**-(हि०स्त्री०) छोटा झंडा। **झंडीदार**-(हि०वि०) झंडीवाला, जिसमें झण्डी लगी हो।
झंडूला-(हि०वि०) जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों; जिसका मंडन हुआ हो; मुण्डन संस्कार के पहिले का, सघन, जिसमें बहुत सी पत्तियां हों (पुं०) सघन वृक्ष।
झंप-(हिं०पुं०)फलाँग,खछाल; **झंप देना** कूदना, घोड़े के गले का एक प्रकार, का गहना। **झंपना**-(हिं०क्रि०)ढाँकना, छिपना, उछलना, कूदना, आक्रमण करना, टूट पड़ना, लज्जित होना, झेंपना।
झपड़िया, झपरी-(हिं०स्त्री०) वह कपड़ा जिससे पालको ढाँपी जाती है, ओहार
झंपान-(हिं०पु०)एक प्रकारकी खटोली जो पहाड़ पर सवारी के काम मे आती है, झप्पान।
झंपित-(हिं०वि०) छिपा हुआ।
झंपोला-(हिं०पुं०) छोटा झांप, छबड़ा
झंव-(हिं०पुं०) गुच्छा।
झंकार-(हिं०वि०) झाँवरे रंगका,काला
झवराना-हिं०वि०) कुछ काला पड़ जाना, कुम्हलाना, फीका पड़ना।
झंवा-(हिं०पु०) देखो झांवा।
झंवाना-(हि०क्रि०)झवांरे रंग का होना, कुछ काला पड़ जाना, अग्नि का मन्द होना, न्यून होना, घटना, कम होना, कुम्हलाना, मुरझाना, झांवे से रगड़ा जाना, कुछ काला करना, घटाना, आग बुझाना, मुरझा देना।
झंसना-(हिं०क्रि०) सिर या तलवे में तेल की मालिश करना, किसी को बँहका कर उसका धन छीन लेना।
झक-(हिं०स्त्री०) धुन, सनक, देखो झख; (वि०) स्वच्छ, चमकीला। **झकझक**-(हिं०स्त्री०)व्यर्थ की बकबाद, फजूल का झगड़ा,बकबक, किचकिच
झकझका-(हिं० स्त्री०) चमकीला, चमकदार। **झकझकाहट**-(हिं०स्त्री०) जगमगाहट. चमकीलापन। **झकझेलना**-(हिं०क्रि०) झकझोरना। **झकझोर**-(हिं०पु०) झटका, झोंका, (वि०) तेज, जिसमें बहुत झोंका हो। **झकझोरना**-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को पकड़ कर झटका देना। **झकझोरा**-(हिं०पुं०) धक्का, झोंका।
झकना-(हिं०क्रि०) व्यर्थ की बातें करना, बकबक करना, क्रोध में आकर अनुचित बातें बोल बैठना।
झकर-(हिं०पु०) आंधी।
झकाझक-(हिं०वि०) चमकता हुआ, उज्वल, चमकीला।
झकार-(स०पु०) 'झ' मात्र वर्ण।
झकोर-(हिं०पु०) हवा का झोंका या झटका। **झकोरना**-(हिं०क्रि०) हवा-का झोंका मारना, **झकोरा**-(हिं०पु०) वायु का वेग हवा का झोंका।
झकोल-(हिं०पु०) देखो झकोर।
झक्क-(हिं०वि०)चमकीला, जगमगाता हुआ।
झक्कड़(हिं०-पुं०) तीव्र वायु, अन्धड़ (वि०) झक्की।
झक्का-(हिं०पुं०)वायु का तीव्र झोंका।
झक्की-(हिं०वि०) व्यर्थ की बकवाद करने वाला, जो अपनी धुन में दूसरे की बात न सुने, सनकी।
झक्खना-(हिं०क्रि०)देखो झीखना।
झख-(हिं०स्त्री०) झींखने का भाव या क्रिया; **झखकेतु**-(पुं०)कामदेव; **झखराज**-मगर; **झख मारना**-व्यर्थ समय बिताना।
झखना-(हिं०क्रि०) देखो झीखना।
झखी-(हिं०स्त्री०) मत्स्य, मछली।
झगझगायमान-(स०वि०) देदीप्यमान, चमकीला।
झगड़ना-(हिं०क्रि०)वादा विवाद करना, झगड़ा करना, लडना।
झगड़ा-(हिं०पु०)लड़ाई, बखेड़ा टंटा। **झगड़ालू**-(हिं०वि०) कलहप्रिय, बात बातमें झगड़ा करनेवाला। **झगड़ी**-(हिं०स्त्री०) देखो झगड़ालू।
झगर-(हिं०पु०)एक प्रकार का पक्षी।
झगरा-(हिं०पुं०) देखो झगड़ा।
झगराऊ-(हिं०वि०) झगड़ालू।
झगरी-हिं०वि०) झगड़ालू।
झगला, झगा-(हिं०पुं०) छोटे बच्चों को पहिरने का ढीला वस्त्र।
झगुली-(हिं०स्त्री०) देखो झगा।
झग्गर-(हिं०पुं०) काँटा, कुएं से निकालने का साधन।
झङ्कार-(हिं०पु०) भौंरे आदि की गुंजन, झनझन शब्द, झनकार।
झङ्कारिणी-(सं०स्त्री०) गङ्गा।
झङ्कारित-(सं०वि०)झनझन-शब्द वाला।
झञ्झर-(हिं०पु०)पानी रखने का चौड़े मुंह का मिट्टीका पात्र।
झञ्झी-(हिं०स्त्री०) फूटी कौड़ी।
झझक-(हिं०स्त्री०) भय की आशंका से रुकने की क्रिया, भड़क, चमक, कुछ क्रोध से बोलना, झुंझुलाहट, दुर्गन्ध, रह रहकर होनेवाली सनक; **झझकना**-(हिं०वि०) डर से रुकना, भड़कना, चमकना, कुछ क्रोध से बोलना, झुंझलाना, खिजलाना, चौंकना। **झझकाना**-(हिं०वि०) झुंझलाना, खिजलाना, चौंकना,भड़काना, भय उत्पन्न कराके किसी काम से रोक देना। **झझकार**-(हिं०स्त्री०) झझकारने का भाव या क्रिया। **झझकारना**-(हिं०क्रि०) डाटना, डपटना, दुरदुराना, किसीको अपने आगे तुच्छ बना देना।
झञ्झन-(सं०नपुं०) झनकार, झनझनाहट। **झञ्झना**-(हिं०स्त्री०)झनकार।
झञ्झनी-(सं०स्त्री०)अस्त्र का शब्द।
झञ्झा-(सं०स्त्री०) जलकण की वर्षा, अंधड़।
झञ्झा वायु-(स०पुं०) वह आंधी जिसके साथ पानी भी बरसता हो, प्रचण्ड वायु।
झट-(हिं०क्रि०वि०) तत्क्षण, तुरंत, उसी समय।
झटक-(हिं०पुं०) देखो झटका। **झटकना**-(हिं०क्रि०) भटका देना, हलका धक्का देना, झोंका देना, बलपर्वक किसी वस्तु को लेना, ऐंठना।

झटका-(हिं०पु०) झोंका, झटकने की क्रिया, इस प्रकार किसी पशु का वध करना कि एक ही आघात से वह मर जावें, व्यायामकी एक युक्ति
झटकारना-(हिं०वि०)झटकना, किसी वस्तु को गिराने या नष्ट करने की इच्छा से हिलना ।
झटपट-(हिं०अव्य०)अति शीघ्र, जल्दी ।
झटा-(स०स्त्री०) शीघ्र भूआमाला ।
झटाका-(हिं०वि०) देखो झड़ाका ।
झटिका-(हिं०स्त्री०) झाड़ी ।
झटिति-(स०अव्य०) शीघ्र, जल्दी, झटपट, तत्क्षण ।
झड़-(हिं०स्त्री०) ताले के भीतर का खटका जो ताली से हटता और ताले को खोलता है ।
झड़न-(हिं०स्त्री०) झड़ने की क्रिया या भाव, झड़ी हुई वस्तु । **झड़ना**-(हिं०क्रि०) कण या बिन्दु रूप में गिरना, अधिक संख्या में गिरना, वीर्यपतन होना, झाड़ा जाना ।
झड़प-(हिं०स्त्री०) आवेग, लड़ाई, मुठभेड़, क्रोध; **झड़पना**-(हिं०क्रि०) वेग से किसी पर टूट पड़ना, आक्रमण करना, लड़ना, झगड़ना, झटकना, किसीसे कुछ छीन लेना ।
झड़पाझड़पी-(हिं०स्त्री०) हाथापाई ।
झड़बेरी-(हिं०स्त्री०) जंगली बेर ।
झड़वाना-(हिं०क्रि०) झाड़ने का काम दूसरे से कराना ।
झड़ाई-(हिं०स्त्री०)झड़ने की क्रिया ।
झड़ाक-(हिं०क्रि०वि०) तुरत ।
झड़ाका-(हिं०पु०) दो जीवों का परस्पर मुठभेड़, (हिं०वि०) शीघ्रता से, झटपट ।
झड़ाझड़-(हिं० क्रि० वि०) अविरल, लगातार ।
झड़ी-(हिं०स्त्री०) बूंदबूंद कर गिरने का कार्य, महीन महीन बूंदों की वर्षा, निरन्तर वर्षा, ताले के भीतर का अंश जो चाभी से हटाता बढ़ाता है निरन्तर बहुत सी बातें कहते जाना या चीजें रखते जाना ।
झणत्कार-(स०पुं०)झनुझन् का शब्द ।
झन-(हिं०स्त्री०) किसी धातुखण्ड के आघात से उत्पन्न शब्द ।
झनक-(हिं०स्त्री०) धातु आदि के परस्पर टकराने का शब्द । **झनकना**-(हिं०क्रि०) झनकार का शब्द करना क्रोध में हाथ पैर पटकना, चिड़चिड़ाना, झीखनां ।
झनकमनक-(हिं०स्त्री०) आभूषण आदि का शब्द ।
झनकार-(हिं० स्त्री०) देखो झंकार ।
झनझन-(हिं०स्त्री०) झनकार, झनझन शब्द । **झनझना**-(हिं०वि०) झनझन शब्द करने वाला । **झनझनाना**-(हिं०क्रि०) झनझन शब्द करना या होना। **झनझनाहट**-(हिं०स्त्री०)झंकार, झनझन शब्द, झुनझुनी ।
झनम-(हिं० पुं०) चमड़ा मढा हुआ एक प्रकार का प्राचीन बाजा ।
झनाझन-(हिं०स्त्री०) झंकार, झनझन शब्द; (क्रि०वि०) झनझन शब्द सहित
झन्नाहट-(हिं०स्त्री०)झनकार, झनझनाहट
झप-(हिं०क्रि०वि०) शीघ्रता से, तुरत, झटपट ।
झपक-(हिं०स्त्री०) बहुत थोड़ा समय, पलक गिरना, हलकी नीद, झपकी, लज्जा । **झपकना**-(हिं०क्रि०) भय खाना, डरना, सहमना, पलक गिराना, ढकेलना, वेग से आगे को बढ़ना, ऊंघना, झपकी लेना, लज्जित होना ।
झपका-(हिं०पु०) हवा का झोंका । वायु का वेग । **झपकाना**-(हिं०क्रि०) पलकों का बन्द करना ।
झपकी-(हिं०स्त्री०) अल्प निद्रा, हलकी नींद, आँख झपकने की क्रिया, अन्न ओसाने का वस्त्र । **झपकौंहां**-(हिं०वि०) निद्रा में भरा हुआ, झपकता हुआ, मस्त, निद्रित, नशे में चर ।
झपट-(हिं०स्त्री०) झपटने की क्रिया या भाव ।**झपटना**-(हिं०क्रि०) आक्रमण करना, धावा करना, टूट पड़ना, वेग से आगे बढ़कर कोई वस्तु ले लेना । **झपटाना**-(हिं०क्रि०) आक्रमण करना, उसकाना ।
झपताल-(हिं०पु०) संगीत में पांच मात्राओं का एक ताल ।
झपना-(हिं०क्रि०) पलकों को बन्द करना, झुकना, लज्जित होना ।
झपट्टा-(हिं०पु०) देखो झपट ।
झपनी-(हिं०स्त्री०) ढपना, पेटारी ।
झपवाना-(हिं०क्रि०) झापने का काम दूसरे से कराना ।
झपस-(हिं०स्त्री०) गुंजान होने की क्रिया । **झपसना**-(हिं०क्रि०) वृक्ष या लता की शाखाओं का सघन होकर फैलना ।
झपाका-(हिं०पु०) शीघ्रता, जल्दी (क्रि०वि०) शीघ्रता से ।
झपाटा-(हिं०पुं०) आक्रमण, धावा ।
झपाना-(हिं०क्रि०) बन्द करना,मूदना ।
झपाव-(हिं०पुं०) घास काटने का एक प्रकार या यन्त्र ।
झपित-(हिं०वि०) ढपा हुआ, मूंदा हुआ, लज्जित, नींद में भरा हुआ, झपकौंहा ।
झपिया-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के गले में पहिरनेका एक प्रकारका आभूषण ।
झपेट-(हिं०स्त्री०)देखो झपट । **झपेटना**-(हिं०क्रि०) दबोचना, धावा करके ले लेना । **झपेटा**-(हिं०पुं०) चपेट, भूत प्रेत का आक्रमण ।
झपोला-(हिं०पुं०) देखो झपोला ।
झप्पड़-(हिं०पुं०) झापड़, थप्पड़ ।
झप्पान-(हिं०पुं०) चार आदमियों से उठाने की एक प्रकार की पहाड़ी सवारी । **झप्पानी**-(हिं०पुं०) झप्पान उठाने वाला कहार ।
झबझबी-(हिं०स्त्री०) कान मे पहिरने का एक प्रकार का आभूपण ।
झबड़ा-(हिं०वि०)देखो झबरा ।
झबरा झबरीला-(हिं०वि०) जिसके बिखरे हुए लंबे बाल हों ।
झबरैरा-(हिं०वि०) झबरीला, बिखरा हुआ बाल ।
झबा-(हिं०पु०) देखो झब्बा ।
झबार-(हिं०स्त्री०) लड़ाई झगड़ा, बखेड़ा, टंटा ।
झबिया-(हिं०स्त्री०) छोटा झब्बा या फुंदना ।
झब्बा-(हिं०पुं०) एक में बँधा हुआ रेशम; कलाबत्तू सूत आदि के तारों का गुच्छा, एक में गुंथी हुई अनेक वस्तुओं का समूह, गुच्छा ।
झमक-(हिं०स्त्री०) चमक, प्रकाश, उजेला, झकझम शब्द । **झमकना**-(हिं०क्रि०) झमझम शब्द करना, झपकना, प्रज्वलित होना, प्रकाश करना, युद्ध में अस्त्रों का चमकना, गहनों का शब्द करते हुए नाचना, रहरह कर चमकना, झनकार होना ।
झमकना-(हिं०क्रि०) शस्त्रों को युद्ध मे चमकना, चमक उत्पन्न करना चलते समय गहनों का बजना और चमकना ।
झमकारा-(हिं०वि०) झमाझम बरसने वाला (बादल); झमकीला-चांचल ।
झमझम-(हिं०स्त्री०) घुंघरू आदि के बजने का शब्द, बर्षा होने का शब्द, चमक दमक, (वि०) प्रकाश युक्त, जगमगाता हुआ ; (हिं० क्रि०) चमक दमक के साथ । **झमझमाना**-(हिं०क्रि०) चमचमाना । जगमगाना ।
झमझमाहट-(हिं० स्त्री०) झमझम शब्द होने की क्रिया, चमकने का भाव ।
झमना-(हिं०स्त्री०) नम्र होना, झुकना दबना ।
झमाका-(हिं०पु०) पानी बरसने अथवा आभूषणों के बजने का शब्द, ठसक, मटक ।
झमाझम-(हिं०स्त्री०) घुंघरू आदि के बजने का शब्द (क्रि०वि०) झमझम शब्द सहित ।
झमाट-(हिं०पुं०) एक में गुथे हुए अनेक झाड़, झुरमुट ।
झमाना-(हिं० क्रि०) झपकना, छाना, घेरना ।
झमूरा-(हिं०पु०) घने बालों वाला पशु, प्यारा बच्चा ।
झमेल-(हिं०स्त्री०) देखो झमेला । **झमेला**-(हिं०पुं०) झंझट, झगड़ा, बखेड़ा, भीड़भाड़ । **झमेलिया**-(हिं०पुं०) झगड़ालू, झगड़ा करनेवाला ।
झम्प-(सं०पुं०) उछाल, फलांग, कुदान; (हिं०पुं०) घोडे के गले में पहिराने का एक आभूषण ।
झम्पाक, झम्पारु-(सं०पुं०) कपि,बन्दर।
झर-(सं०पुं०) निर्झर, पानी गिरने का स्थान, पहाड़ से निकला हुआ झरना, सोता, झुंड, समूह, वेग, पानी की झड़ी, लगातार वृष्टि, ज्वाला, लपट, ताले के भीतर का वह भाग जिसको ताली हटा कर उसको खोलती है।
झरकना-(हिं०क्रि०) देखो झलकना, झिड़कना।
झरझर-(हिं०स्त्री०) वह शब्द जो पानी बरसने, वायु चलने या वर्षा होने से उत्पन्न होता है । **झरझराना**-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ को किसी पात्र मे झाड़ कर गिरा देना ।
झरन-(हिं०स्त्री०) झरने की क्रिया, वह जो झरा हो।
झरना-(हिं०पु०) जल प्रवाह, सोता, लोहे आदि की बनी हुई बड़ी झरनी या छलनी, एक प्रकार की बरछी जिसका अगला भाग चिपटा तथा छिद्र पूर्ण होता है, पौना, (वि०) झरनें वाला, जो झरता हो (क्रि०) सोते का ऊंचे स्थान से गिरना,झड़ना।
झरनि-(हिं०स्त्री०) देखो झरन ।
झरप--(हिं०स्त्री०) झकोरा, बेग झोंका, टेक, चाँड़, परदा, देखो झड़प, **झरपना**-(हिं०क्रि०) झोंका देना, झड़पना
झरवेरी-(हिं०स्त्री०) जंगली वेर ।
झरसना-(हिं०क्रि०) झुलसाना ।
झरहराना-(हिं०क्रि०) हवा के झोंके से पत्तोंका शब्द करना, झटकना, झाड़ना ।
झरहरा-((हिं०वि०) देखो झंझरा ।
झरा-(हिं०पुं०) पानी से भरे हुए खेत में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का धान ।
झराझर-(हिं०क्रि०वि०) झरझर शब्द करते हुए, लगातार ।
झरापन-(हिं०क्रि०) झगड़ना ।
झरि-(हिं०स्त्री०) देखो झड़ी ।
झरित-(सं०वि०) गलित, गला हुआ ।
झरी-(सं०स्त्री०) स्रोत, पानी का झरना, (हिं०स्त्री०) दरार, वह कर जो किसी स्थान में हाट लगाने के लिये दिया जाता है, झड़ी ।
झरुआ-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास।
झरोखा-(हिं०पुं०) भीत में बनी हुई झंझीरीदार छोटी खिडकी या मोखा, गवाक्ष ।
झर्झर-(सं०पुं०) डिण्डिम, डमरू,बड़ा ढोल, लोहे का झरना, झांझ ।
झर्झरक-(सं०पुं०) कलियुग ।
झर्झरा-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी, पानी का शब्द, (हिं०वि०) देखो झरझरा ।
झर्झरावती-(सं०स्त्री०) गंगा, कटसरैया।
झर्झरिका-(सं०स्त्री०) तारादेवी,पापड़ ।
झर्झरी-(सं०स्त्री०) झांझ नामक बाजा ।
झर्झरीक-(सं०पुं०) शरीर,देह,देश,चित्र
झर्रा-(हिं०पुं०) बया पक्षी ।

झल-(हिं०पुं०) दाह, जलन, उत्कट इच्छा, संभोग को कामना, क्रोध, रोष, समूह, झुण्ड ।
झलक-(हिं०स्त्री०) आभा, द्युति, चमक, दमक, आकृति का अभास, प्रतिबिम्ब । झलकदार-(हिं०वि०) जिससे चमक दमन हो, चमकीली ।
झलकना-(हिं०वि०) चमकना, थोड़ा सा प्रगट होना ।
झलकनि-(हिं०स्त्री०) देखो झलक ।
झलका-(हिं०पुं०) शरीर पर पड़ा हुआ छाला, फफोला । झलकाना-(हिं०क्रि०) चमकना, आभास देना, दिखलाना, दरसाना ।
झलकी-(हिं०स्त्री०) देखो झलक ।
झलझल-(हिं०स्त्री०) चमक दमक (वि० वि०) ठहर ठहर कर निकलने वाली, चमक के साथ । झलझलाना-क्रि० क्रि०) चमकना, चमचमाना । झलझलाहट-(हिं०स्त्री०) चमक दमक, चिडचिड़ाहट ।
झलना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ से हवा लगाना, हवा करने के लिये कोई वस्तु का हिलाना, इधर उधर हिलना गर्व करना, किसी वस्तु को रांगे से जोड़ना, देखो झेलना ।
झलमल-(हिं०पुं०) अल्प प्रकाश, चमक, देखो झलझल । झलमला-(हिं०वि०) चमकीला, चमकता हुआ । झलमलाना-(हिं०वि०) चमचमाना, रह रह कर चमकना, निकलते हुए प्रकाश का हिलना डोलना, अस्थिर ज्योति का निकलना।
झलरा-(हिं०पुं०) एक प्रकारका पकवान
झलराना-(हिं०क्रि०) फैलकर छाजाना।
झलरी-(हिं०स्त्री०) हुडुक नाम का बाजा, झांझ ।
झलवाना-(हिं०वि०) किसी दूसरे से झलने या झालने का काम कराना ।
झलहाया(हिं०पुं०)ईर्ष्याकरनेवाला मनुष्य
झला-(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी, धूप, घाम
झींगुर-(हिं०पुं०) हलकी वर्षा, तोरण, पंखा, समूह, झिल्ली, एक प्रकार का कीड़ा ।
झलाझल-(हिं०वि०)खूब चमकता हुआ, खूब झलमलाता हुआ, चमाचम ।
झलाझली-(हिं० वि०) चमकीला, चमकदार ।
झलाबोर(हिं०पुं०) साड़ी, दुपट्टे आदि का चौड़ा अंचल जो कलाबतून का बिना होता है, कारचोबी, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा, चमक दमक (वि०) चमकीला ।
झलामल-(हिं०स्त्री०) चमक दमक (वि०) चमकीला ।
झलि-(सं०स्त्री०) सुपारी ।
झल्ल-(सं०पुं०) एक वर्णसंकर जाति, विदूषक, भांड़, हुड़क नामका बाजा, सनक, पागलपन ।
झल्लक-(सं०नपुं०) कांसे का बना हुआ करताल झाल ।
झल्लकण्ठ-(सं०पुं०)पारावत, परेवापक्षी।
झल्लरा-(सं०स्त्री०) हुडुकनामका बाजा, झांझ, छोटे बच्चों के बाल, स्वेद, पसीना ।
झल्लरी-(सं०स्त्री०) देखो झल्ली ।
झल्ला-(हिं०पुं०) बड़ी टोकरी, खांचा, वृष्टि, वर्षा, बौछार, (वि०) जो बहुत गाढ़ा न हो, सनकी, पागल । झल्लाना-((हिं०क्रि०) खिजलाना, चिढ़ाना ।
झल्लिका-(सं०स्त्री०) शरीर पोछने का अगौछा, तौलिया, शरीर की मैल जो पोंछनेसे निकले, दीप्ति ।
झल्ली-(सं०स्त्री०) बजाने की झाँझ ।
झवर-(हिं०पुं०) झगड़ा ।
झष-(सं०पुं०) मत्स्य, मीन, मछली, मगर, मीनराशि, ग्रीष्म, ताप, गरमी, देखो झख । झषकेतु-(सं०पुं०) मदन, कामदेव । झषनिकेत-(सं०पुं०) जलाशय, समुद्र । झषराज-(सं०पुं०) मकर, मगर । झषाङ्क-कन्दर्प, कामदेव
झषाशन-(सं०पुं०) शिशुमार, सूंस ।
झसना-(हिं०क्रि०) देखो झँसना ।
झहनना-(हिं०क्रि०) झनझन शब्द होना, रोंगटे खड़े होना, सन्नाटे में आना ।
झहनाना-(हिं०क्रि०) झनझन करना, झनकारना।
झहरना-(हिं०क्रि०) झरझर शब्द करना, शिथिल होना, ढीला पड़ना, झिड़कना, झल्लाना । झहराना-(हिं०क्रि०) झल्लाना, खिजलाना, शिथिल होकर या झल्लाते हुए गिरना, हिलाना ।
झा-(हिं० पुं०) मैथिल ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।
झाऊ-(हिं०पुं०) एकप्रकारकाछोटा झाड़
झाई-(हिं०स्त्री०) प्रतिबिंब, परछाई, छाया, छल, अन्धकार, प्रतिबिंब, प्रतिशब्द, मनुष्यके मुख पर होने वाले एक प्रकार के हलके धब्बे; झाई बताना-छलना, धोखा देना ।
झांक-(हिं० स्त्री०) ताकने की क्रिया या भाव । झांकना-(हिं०क्रि०) आड़ में से मुख निकाल कर देखना, इधर उधर झुक कर देखना । झांकनी-(हिं०स्त्री) देखो झांकी ।
झांका-(हिं०पुं०) जालीदार खाँचा, झरोखा । झांकी-(हिं०स्त्री०) झांकने की किया, दर्शन, दृश्य, वह जो देखा जाय, अवलोकन, झरोखा, खिड़की।
झांख-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा जंगली हरिन । झांखना-(हिं०वि०) देखो झींखना ।
झांखर-(हिं०पुं०) झंखाड़, अरहर काटने के बाद खेत में लगी हुई खूंटी ।
झांपला-(हिं०वि०) ढीलाढाला(पोशाक)
झांगा-(हिं०पुं०) देखो झंगा ।
झांझ-(हिं०स्त्री०) कांसे के ढले हुए दो गोलाकार टुकड़ोंका जोड़ा जो मजीरे से बड़ा होता है, क्रोध, दुष्टता, पाजीपन, चित्तका बुरा आवेग, सूखा तालाब, भोग की इच्छा ।
झांझड़ी, झांझन-(हिं० स्त्री०) पैर में पहिरनेका घुघरूदार गहना, पैजनी, पायल ।
झांझर-(हिं०वि०) जर्जर, पुराना, छिन्न-भिन्न, फटा टूटा, छिद्रमय (स्त्री०) पैजनी, झांझन ।
झांझरी-(हिं०स्त्री०)झांझनामक आभूषण
झांझ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पत्ती खाने वाला कीड़ा, झंझट, बखेड़ा, पैरका गलका, झांझिया-(हिं० पुं०) झाझ बजाने वाला ।
झांट-(हिं०स्त्री०) पुरुष या स्त्री के मूत्रेन्द्रिय पर के बाल, अति क्षुद्र पदार्थ
झांप-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु को ढाँपने की वस्तु, नींद, झपकी, पर्दा, चिक, (पुं०) उछल कूद । झांपना-(हिं०वि०) आवरण डालना, ढाँकना, पकड़ कर दबा लेना, लज्जित करना ।
झांपी-(हिं०स्त्री०) ढाँपने की डलिया या टोकरी, मूंज की बनी हुई पिटारी ।
झांपो-(हिं०स्त्री०) पुंश्चली, छिनार स्त्री
झांवना-(हिं०क्रि०) झाँवेसेरगड़करधोना
झावर-(हिं०स्त्री०) नीची भूमिजह पानी ठहरता हो; (वि०) मलिन, मैला, मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, शिथिल, मन्द ।
झांवली-(हिं०स्त्री०) झलक, आँख की कनखी ।
झांवा-(हिं०पुं०) ईंट जो अधिक पकने के कारण काली हो गई हो जिससे रगड़कर मैल छोड़ाई जाती है ।
झांसना-(हिं०क्रि०) धोखा देना, ठगना, स्त्री को व्यभिचार में प्रवृत्त करना ।
झांसा-(हिं०पुं०) बहकाने का कार्य, छल, धोखाधड़ी । झांसिया-((हिं०पुं०) धोखा देने वाला, धोखेबाज ।
झांसी-(हिं०पुं०) एक जिला, एक प्रकार का गोबरौला ।
झांसू-(हिं०पुं०) छल करनेवाला ।
झाऊ-(हिं०पुं०) एक वृक्ष ।
झाग-(हिं०पुं०) नल आदिका फेन, गाज
झागड़-(हिं०पुं०) झगड़ा, तकरार ।
झागना-(हिं०क्रि०) फेन उत्पन्न होना ।
झाट-(सं०पुं०) लतागृह, ऐसा स्थान जो घनी लताओं से घिरा हो ।
झाटल-(सं०पुं०) मोखा नामक वृक्ष ।
झाड़-(हिं०पुं०) छोटा वृक्ष जिसकी डालियां भूमिके बहुत पाससे निकल कर चारो ओर फैली रहती हैं, प्रकाश करने का काँच का झाड़ जो छत में से लटकाया जाता है, गुच्छा, लच्छा, झाड़ने की क्रिया, डाटडपट, फटकार; झाड़फूंक-मन्त्रोपचार ।
झाड़खंड-(हिं०पुं०) जंगल, वन ।
झाड़झंखाड़-(हिं०पुं०) अनेक काँटेदार झाड़ियां, व्यर्थ की बेकार वस्तुओं का समूह ।
झाड़दार-(हिं०वि०) काँटेदार, कँटीला, घना, सघन, (पुं०) बड़े बड़े बेल बूटों का गलीचा ।
झाड़न-(हिं०स्त्री०) धूर इत्यादि हटाने का कपड़ा, झाड़ू देने पर निकली हुई वस्तु।
झाड़ना-(हिं०क्रि०) धूलइत्यादि हटाना, झटकारना निकालना, फटकारना, झटके से किसी वस्तु को गिराना, छलबल से किसी का धन ले लेना, झटकना, भूत प्रेत दूर करने के लिये मन्त्र पढ़ कर फूकना, डांटना, डपटना, चिढ़कर किसी को दुर्वचन कहना ।
झाड़फूंक-(हिं०स्त्री०) मन्त्र पढ़ कर भूत प्रेत दूर करने की क्रिया ।
झाड़बुहार - (हिं० स्त्री०) परिष्कार, शुद्धता, सफ़ाई ।
झाड़ा--(हिं०पुं०) मन्त्र आदि का उच्चारण, झाड़ फूंक, अनुसन्धान, विष्ठा, मैला, पुरीष ।
झाड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटा झाड़, पौधा, अनेक छोटे पेड़ों का समुदाय, सूअर के बालों को कूंची, बड़ौछी।
झाड़ीदार-(हिं०वि०) झाड़ी के समान, काँटेदार ।
झाड़ू-(हिं०पुं०) कूचा, बोहारी, सोहारी, पुच्छल तारा, केतु; झाड़ू फिरना-सब कुछ नष्ट हो जाना, कुछ न रहना; झाड़ू मारना-तिरस्कार करना । झाड़ू बरदार-झाड़ू देने वाला मनुष्य, चमार, भंगी मेहतर ।
झापड़-(हिं०पुं०) थप्पड़, तमाचा, छप्पड़ ।
झाबर-(हिं०पुं०) दलदली भूमि ।
झाबा-(हिं०पुं०) टोकरा, खांचा, देखो झब्बा । झाबी-(हिं०स्त्री०) छोटा झाबा, टोकरी ।
झामक-(सं०नपुं०) जली हुई ईंट, झाँबा
झाम-(हिं०पुं०) झब्बा, गुच्छा, डाँट डपट, घुड़की, छल, कपट, धोखा, कुवें की मिट्टी खोदने का यंत्र ।
झामर-(सं०पुं०) एक प्रकार का पैर का गहना, टेकुआ, रगड़ने की सिल्ली।
झामी-(हिं०पुं०) छली, कपटी ।
झायँझायँ-(हिं०स्त्री०) झनझन शब्द, झनकार, सूनसान स्थान में वायु का शब्द ।
झावँझावँ-(हिं०स्त्री०) वकवाद, वादा-विवाद ।
झार-(हिं०वि०) एकमात्र, केवल, कुल, सम्पूर्ण, सब, समूह, झुण्ड; (स्त्री०) ईर्ष्या, डाह, जलन, दाह, ज्वाला, अग्निशिखा, लपट, झाल, चरपराहट, (पुं०) झरना, पौना ।
झारखंड-(हिं०पुं०) वैद्यनाथ से जगन्नाथ पुरी तक फैला हुआ एक जंगल ; देखो झाड़खंड ।
झारझरस-(हिं०स्त्री०) उष्णता गरमी
झारन-(हिं०पुं०) देखो झाड़न ।

झारना-(हिं०क्रि०) बालों को सँवारने और मैल निकालने के लिये कधी करना, पृथक् करना, अलग करना; देखो झाड़ना ।
झारफंक-(हिं०स्त्री०) देखो झाड़फूक ।
झारा-(हिं०क्रि०) अन्न को स्वच्छ करना, झारना ।
झारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की टोंटी लगी हुई लोटिया ।
झारू-(हिं०पुं०) देखो झाड़ू ।
झार्झर-(सं०पुं०)झरझर शब्द करनेवाला
झाल-(हिं०पुं०) कांसे का बना हुआ ताल देने का बाजा, झांझ, खाँचा, टोकरी, जाड़े के दिनों की निरन्तर वृष्टि, तीक्ष्णता, चरपराहट, झालने की क्रिया, तरंग, लहर, कामेच्छा (वि०) देखो झार ।
झालड़-(हिं०स्त्री०) पूजा आदि के समय बजाया जाने वाला घड़ियाल।
झालना-(हिं०क्रि०) धातु की वस्तुओं को टाँका लगाकर जोड़ना ।
झालर-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु के छोर पर लटकता हुआ किनारा जो शोभा के लिये लगाया जाता है, इस आकार की कोई वस्तु, किनारा, छोर, झांझ । झालरदार-(हिं०वि०) जिसमें झालर लगी हो ।
झालरना-(हिं०क्रि०) देखो झलराना ।
झाला-(हिं०पुं०) मकली का जाला ।
झालि-(हिं०स्त्री०) पानी की झड़ी (सं०) एक प्रकार की कांजी ।
झाँवझाँव-(हिं०स्त्री०) कलह, बकवाद ।
झावु-(सं०पुं०) झाऊ नामक पौधा ।
झिगन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्तों से लाल रंग बनता है।
झिगवा-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी मछली ।
झिगरना-(हिं०क्रि०)झगड़ना ; झिंगुली-(हिं०स्त्री०) देखो झगा । झिंझिया-(हिं०स्त्री०) अनेक छोटे छोटे छिद्र किया हुआ घड़ा जिसमें दीपक रखकर लड़कियां कुवाँर के महीने में घुमाती हैं ।
झिझोटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी का नाम ।
झिञ्झाक-(सं०नपु०) कर्कटी, ककड़ी ।
झिञ्झिनी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष ।
झिझकना-(हिं०क्रि०) देखो झझकना ।
झिझकार-(हिं०स्त्री०) देखो झझकार ।
झिझकारना-(हिं०क्रि०) झटकना, झझकारना ।
झिझिट (हिं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम ।
झिञ्झिम-(सं०पुं०) दावानल, वन की अग्नि ।
झिञ्झिरा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की झाड़ी ।
झिञ्झी-(सं०स्त्री०). एक प्रकार का कीड़ा, झींगुर । झिटका-(हिं०पुं०) देखो झटका ।
झिड़कना-(हिं०क्रि०) तिरस्कार अथवा अवज्ञा पूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना, झटकना, किसी वस्तु को दूर फेंक देना ।
झिड़की-(हिं०क्रि०) झिड़क कर कही हुई बात, डाँट फटकार ।
झिड़झिड़ाना-(हिं०क्रि०) कटु बचन कहना, चिड़चिड़ाना, भला बुरा कहना
झिड़झिड़ाहट-(हिं०स्त्री०) झिड़झिड़ाने की क्रिया ।
झिण्टिका-(सं०स्त्री०) झिंटी, कटसरैया
झिण्टीश-(सं०पु०) शिव, महादेव ।
झिनवा-(हिं०पुं०) महीन चावल का धान ।
झिनया-(हिं०क्रि०) देखो झेंपना ।
झिपाना ; झिपना (हिं०क्रि०) लज्जित होना। झिपाना (हिं०क्रि०) लज्जित करना, शर्माना ।
झिरकना-(हिं०क्रि०) डपटना, फेंक देना
झिरझिर-(हिं०क्रि०वि०) धीरे, धीरे, झिर झिर शब्द सहित। झिरझिरा; झिरझिर-(हिं०वि०) बहुत पतला, बारीक, झंझरा, झीना ।
झिरना-(हिं०क्रि०) देखो झुरना; (पुं०) छिद्र, छेद । झिराना-(हिं०क्रि०) देखो झुराना । झिरझिरिका,झिरी-(सं०स्त्री०) झिल्ली, झींगुर ।
झिरी-(हिं०स्त्री०) छोटा छेद, दराज कुवे में का सोता जिसके द्वारा, नीचे से पानी आता है ।
झिरी-(हिं०स्त्री०) नाली आदि में पानी रोकने के लिये बनाया हुआ गड्ढा ।
झिलंगा-(हिं०पु०) टूटी हुई खटिया का बाध, वह खटिया जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो ।
झिलना-((हिं०सि०) बलपूर्वक प्रवेश करना, सन्तुष्ट होना, अघा जाना, सहन होना, झेला जाना ।
झिलम-(हिं०स्त्री०) लोहे की जाल का बना हुआ लड़ाई का पहिरावा, ।
झिलमटोप-(हिं०पुं०) देखो झिलम ।
झिलमा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान ।
झिलमिल-(हिं०स्त्री०) झलमलाता हुआ प्रकाश, प्रकाश की चंचलता, ठहर ठहर कर प्रकाश घटने बढ़ने की क्रिया, एक प्रकार का सुन्दर महीन वस्त्र (वि०) रह रह कर चमकने वाला; देखो झिलम ।
झिलमिला-(हिं०वि०) जो सघन न हो, छिद्र युक्त, जिसमें अनेक छोटे छिद्र हों, झंझरा, झीना, ठहर ठहर कर हिलता प्रकाश देने वाला, चमकता हुआ, जो बहुत स्पष्ट न हो । झिलमिलाना-(हिं०क्रि०) रह रह कर चमकना, जुगजुगाना, प्रकाश का हिलना, हिलाना । झिलमिलाहट-(हिं०स्त्री०) झिलमिलाने की क्रिया ।
झिलमिली-(हिं०स्त्री०) अनेक पतली आड़ी पटरियों का ढाँचा जो किवाड़ों में प्रकाश धूल आदि रोकने के लिये जड़ा रहता है, चिक, चिलमन, कान मे पहिरने का एक प्रकार का आभूषण ।
झिल्ल-(सं०पुं०) नील की जाति का एक प्रकार का पौधा ।
झिल्लड़-(हिं०वि०) पतला और झंझरा
झिल्लन-(हिं०स्त्री०) दरी बुनने के करगह की मजबूत लकड़ी ।
झिल्लि-(सं०पुं०)एकप्रकार का बाजा।
झिल्लिका, झिल्ली-(सं०स्त्री०) कीट विशेष, झींगुर ।
झिल्ली-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु की पतली तह, महीन छाल, आँख का जाला (वि०) बहुत पतली ।
झिल्लीक-(सं०पुं०) झिल्ली, झींगुर ।
झिल्लीकण्ठ-(सं०पुं०) पालतू कबूतर ।
झिल्लीदार-(हिं०वि०)जिसके ऊपर की तह बहुत पतली हो,जिसपर झिल्ली हो
झींकना-(हिं०क्रि०) देखो झींखना ।
झींका-(हिं०पुं०) अन्न का वह परिमाण जो पीसने के लिये चक्की में एक बार डाला जाता है ।
झींखना-(हिं०क्रि०) दुखी होकर पछताना और चिढ़ना, अपनी विपत्ति का हाल सुनाना, खोजना, (पुं०) दुःख का वर्णन, दुखड़ा ।
झींगट-(हिं०पुं०) कर्णधार,मल्लाह, केवट
झींगा-(हिं०पुं०)एक प्रकारकी मछली, एक प्रकार के धान का नाम ।
झींगुर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो अंधेरे में रहता है,बरसात में झन्-झन् शब्द करता है, झिल्ली, घुरघुरा ।
झींसी-(हिं०स्त्री०) छोटी बूदों की वर्षा, फूही ।
झीखना-(हिं०क्रि०) देखो झींखना ।
झीड़ना (हिं०क्रि०) धँसना, घुसना
झील-(हिं०पुं०) जहाज के पाल का बटन ।
झीना-(हिं०वि०) बहुत महीन, पतला, छिद्रयुक्त, जिसमें बहुत से छेद हों, झंझरा, दुर्बल, दुबला, धीमा, मन्द ।
झीमना-(हिं० सि०) झूमना; झीमर (हिं०पुं०) धीवर ।
झील-हिं० स्त्री०) चारो ओर भूमि से घिरा हुआ एक प्राकृतिक जलाशय, बहुत बड़ा तालाब ।
झीलर-(हिं०पुं०) छोटी झील ।
झीली-(हिं०स्त्री०) दूध से निकाली हुई मलाई ।
झींवर-(हिं०पुं०) कर्णधार, माझी, मल्लाह ।
झुंझलाना-(हिं०सि०) चिड़चिड़ाना, खिजलाना ।
झुंकवाना-(हिं०सि०) देखो झोंकवाना ।
झुंकाई-(हिं०स्त्री०) देखो झोंकाई ।
झुंगना-(हिं०पुं०) जुगनू, झुंझना (हिं०पुं०) झुनझुना, घुनघुना झुंझलाना (हिं०क्रि०) चिढ़ना ।
झुंगरी-(हिं०पुं०) सावां नामक अन्न ।
झुंड-(हिं०पुं०) प्राणियों का समुदाय, यूथ, गरोह ।
झुंडी-(हिं०स्त्री०) पौधे को काट लेने के बाद बची हुई खूंटी ।
झुकझोरना-(हिं०क्रि०) देखो झकझोरना
झुकना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का नीचे को लटकना, नवना, निहुरना, किसी वस्तु के एक या दोनों सिरों का नवना, किसी सीधी वस्तु का एक ओर लटक जाना, प्रवृत्त होना, क्रुद्ध होना, रिसाना, विनीत होना, नम्र होना, किसी वस्तु को लेने के लिये अग्रसर होना, दत्तचित्त होना ।
झुकमुक-(हिं०पुं०) ऐसा अन्धकार जब कोई वस्तु स्पष्ट न देख पड़े ।
झुकरना-(हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना, खिजलाना, चिढ़ना; झुकराना-(हिं०क्रि०) झोंका देना; झुकवाई-(हिं० स्त्री०) झुकवाने की क्रिया ; झुकवाना-(हिं० क्रि०) झुकाने का काम दूसरे से कराना; झुकाई-(हिं०स्त्री०) झुकाने का काम या पारिश्रमिक; झुकाना-(हिं०क्रि०) निहुराना, किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों को किसी ओर नवाना, प्रवृत्त करना, नम्र करना, विनीत करना ।
झुकामुखी-(हिं० स्त्री०) देखो झुकमुक ।
झुकार-(हिं० पुं०) हवा का झोंका या झकोरा ।
झुकाव-(हिं०पुं०) किसी ओर नवने या झुकनेकी क्रिया, झुकने का भाव, चित्तका किसी ओर लगना, प्रवृत्ति, ढाल, उतार; झुकावट-(हिं० स्त्री०) झुकनेका भाव,प्रवृत्ति, झुकाव,चाह ।
झुटपुटा-(हिं० पु०) ऐसा समय जब थोड़ा अन्धकार और कुछ प्रकाश हो
झुटुंग-(हिं०वि०) जटावाला, झोंटेवाला
झुठकाना-(हिं० क्रि०) झूठी बात द्वारा दूसरे को धोखा देना ।
झुठलाना झुठवाना-(हिं० क्रि०) झूठा ठहराना, झूठा बनाना, असत्य कह कर ठगना, झुठकाना ।
झुठाई-(हिं०स्त्री०) असत्यता, झूठापन ।
झुठाना-(हिं०क्रि०) झूठा ठहराना ।
झुठामुठो-(हिं०स्त्री०) देखो झूठमूठ ।
झुठालना-(हिं०क्रि०) देखो झुठलाना ।
झुण्ट-(सं०पुं०) स्तम्भ, खंभा, गुल्म ।
झुन-(हिं०स्त्री०) एक चिड़िया, झुनझुनी
झुनक-(हिं०पुं०) नुपूरका शब्द, पैंजनी का शब्द; झुनकना-(हिं०क्रि०) झुन-झुन शब्द करना, झुनझुन बजना; झुनकार-(हिं० वि०) महीन, बारीक, पतला
झुनझुन-(हिं० पुं०) नूपुर आदि के बजने का झुनझुन शब्द ।
झुनझुना-(हिं० पुं०) छोटे लड़कों के खेलने का झुनझुन शब्द करने वाला

खिलौना ; झुनझुनाना-(हिं०क्रि०) झुनझुन शब्द होना या उत्पन्न करना; झुनझुनियाँ-(हिं० स्त्री०) सनई का पौधा, एक प्रकार का झुनझुन शब्द करनेवाला गहना, बेड़ी।
झुनझुनी-(हिं० स्त्री०) शरीर के किसी अंग में उत्पन्न एक प्रकार की सन-सनाहट।
झुपरी-(हिं०स्त्री०) देखो झोपड़ी।
झुप्पा-(हिं०पुं०) झब्बा, गुच्छा, झुण्ड।
झुबझुबी-(हिं० स्त्री०) स्त्रियों का कान में पहिरने का एक गहना।
झुमका-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कान में पहिरने का छोटी गोल कटोरीके आकार का गहना, एक पौधा।
झुमाना-(हिं०क्रि०) झूमने में किसी को प्रवृत्त करना।
झुमिरना-(हिं०क्रि०) झूमना।
झुरझुरी-(हिं० स्त्री०) कम्प, कँपकपी।
झुरना-(हिं०क्रि०) देखो झुराना,सूखना, दुःखाकुल होना, चिन्ता के कारण दुबला होना,अधिक पछतावा करना
झुरमुट-(हिं०पुं०) एक में एक गुथे हुए पौधे, घनी झाड़ी, मनुष्यों का समूह या जत्था, शरीर को चारो ओर से ढाँप लेने की क्रिया।
झुरवाना-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को सुखाने का काम दूसरे से कराना।
झुमरा-(हिं० पुं०) लोहरों का बड़ा हथौड़ा, धन।
झुमरि-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी।
झुमरी-(हिं० स्त्री०) लकड़ी की मुंगरी, छत पीटनेका एक प्रकारका पिटना
झुमाऊ-(हिं०) झूमने वाला, जो झूमता हो।
झुरकुट-(हिं० वि०) कुम्हलाया हुआ, सूखा, दुर्बल।
झुरकुटिया-(हिं० वि०) कृश, दुबला पतला।
झुरवन-(हिं० स्त्री०) किसी सूखे पदार्थ से निकला हुआ अंश।
झुरसना-(हिं०क्रि०) देखो झुलसना ; झुरसाना-(हिं०क्रि०) देखोझुलसाना।
झुरहुरी-(हिं०स्त्री०) देखो झुरझुरी।
झुराना-(हिं०क्रि०)शुष्ककरना,सुखाना, दुःख से व्याकुल होना, क्षीण, होना, दुबला होना।
झुरावन-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु को सुखाने के कारण उसमें से निकला हुआ अंश।
झुर्री-(हिं०स्त्री०) वह चिह्न जो किसी वस्तु के सूख जाने या मुड़ने पर पड़ जाता है, सिकुड़न, शिकन।
झुलका-(हिं०पुं०) देखो झुनझुना।
झुलना-(हिं०पुं०) स्त्रियों के पहिरने का ढीला कुरता, पालना, झूला, (वि०) झूलनेवाला; झुलनी-(हिं०स्त्री०) तारमें गुथा हुआ छोटे छोटे मोतियों का गुच्छा जिसको स्त्रियां नाक की नथमें लटका कर पहिनती हैं, झूमर;
झुलनीबीर-(हिं०पुं०) धान की बाल।
झुलमुला-(हिं०वि०) देखो झिलमिल।
झुलवा-(हिं०पुं०) देखो झूला,पालना।
झुलवाना-(हिं०क्रि०) झुलाने का काम दूसरे से कराना।
झुलसना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का आधा जल जाना, झौंसना, अधिक उष्णता के कारण किसी पदार्थका ऊपरी भाग सूखकर काला पड़ना।
झुलसवाना-(हिं० क्रि०) झुलसने का काम दूसरे से कराना; झुलसना-(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ के ऊपरी अंशको आधा जला देना; झुलाना-(हिं०क्रि०) किसी को झूलने में प्रवृत्त करना,झोंका देकर लगातार हिलाना, अनिश्चित अवस्था में रखना, आसरे में रखना, किसीको हिंडोले में बैठा-कर हिलाना।
झुहिरना-(हिं० क्रि०) लदना या लादा जाना।
झूक-(हिं०पुं०) झोंका।
झूकना-(हिं०क्रि०) देखो झीखना।
झूखना-(हिं०स्त्री०) देखो झुंझलाहट।
झूझना-(हिं० क्रि०) झुलसना, किसी पदार्थ के ऊपरी भाग को आधा जला देना।
झूंकटी-(हिं०स्त्री०) छोटी झाड़ी।
झूंका-(हिं०पुं०) देखो झोंका, धक्का।
झूझ-(हिं०पुं०) युद्ध।
झूझना-(हिं०क्रि०) देखो जूझना।
झूट-(हिं०पुं०) देखो झूठ, असत्य।
झूठ-(हिं० पुं०) जो बात यथार्थ न हो, असत्य बात; झूंठ सच कहना-निन्दा करना।
झूठन-(हिं०स्त्री०) देखो जूठन।
झूठमूठ-(हिं०क्रि०वि०) असत्य रूप में, निष्प्रयोजन, व्यर्थ।
झूठा-(हिं०वि०) असत्य, मिथ्या, झूठ बोलने वाला, कृत्रिम, बनावटी, जो अपने किसी अंग के बिगड़ जाने से ठीक ठीक काम न दे सके। (वि०) देखो 'जूठा'; झूठों-हिं०क्रि०वि०) नाम मात्र के लिये, वृथा, योंही।
झूम-(हिं०स्त्री०) झूमनेकी क्रिया; झपकी
झूमक-(हिं०पुं० होली में गाये जाने की एक गीत जिसको स्त्रियां एक घेरेमें नाचती हुई झूमझूम कर गाती हैं, झूमर गीत के साथ होनेवाला नाच, एक प्रकारकी गीत जो विवा-हादि मंगल अवसर पर गाई जाती है, गुच्छा, साड़ी आदि के पल्ले में सिला हुआ मोतियों का गुच्छा ; झूमकसाड़ी-जिस साड़ी के पल्ले में मोतियों के गुच्छे लगे हों।
झूमका-(हिं०पुं०) देखो झूक, झुमका।
झूमड़-(हिं०पुं०) देखो झूमर; झमड़झामड़-(हिं०पुं०) झूठा विषय, निर-र्थक प्रपंच।
झूमड़ा-(हिं०पुं०) देखो झूमरा।
झूमना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तुका इधर उधर हिलना या झोंके खाना लह-राना, सिर और धड़ को बारम्बार आगे पीछे तथा नीचे ऊपर हिलाना; बादल झूमना-बादलों का इकट्ठा होकर झुकना।
झूमर-(हिं०पुं०) सिर में पहिरने का एक प्रकार का सोने का आभूषण जिसमें घुंघरू या झब्बे लटकते रहते हैं, एक प्रकार का कान में पहिरने का गहना, होली में गाई जाने की एक प्रकार की गीत, इस गीत के साथ होनेवाला नाच, बहुत सी स्त्रियों या पुरुषों का मण्डलाकार घूम घूम कर नाचना; बच्चों का एक प्रकारका खिलौना, झूमरा ताल।
झूमरी-(हिं०पु०) चौदह मात्राओं का एक प्रकारका ताल;झूमरी-(हिं०स्त्री०) शालक राग का एक भेद।
झूर-(हिं०स्त्री०) जलन, दुःख, दाह, परि-ताप (वि०) शुष्क, सूखा, व्यर्थ।
झूरना-(हिं०क्रि०) सूचना देना।
झूरा-(हिं० वि०) शुष्क, सूखा (पुं०) सूखा स्थान, पानी न बरसना, अव-र्षण, न्यूनता, कमी।
झूरि-(हिं०स्त्री०) देखो झूर।
झूरै-(हिं०क्रि०वि०) निरर्थक, व्यर्थ, झठमूठ, देखो झूर।
झूल-(हिं० स्त्री०) चौपायों के पीठ पर डालनेका चौकोर वस्त्र, वह कपड़ा जो पहिरने पर ढीला और भद्दा जान पड़े, देखो झूला।
झूलदंड-(हिं०पुं०) वर्षाऋतु में श्रावण शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक होने वाला एक उत्सव जिसमें मूर्तियां झूले पर बैठाकर झुलाई जाती हैं।
झूलना-(हिं० क्रि०) किसी आधार के सहारे लटक कर कई बार इधर उधर हिलना, झूले पर बैठकर पेंग लगाना, अनिर्णीत अवस्था में रहना, अस्थिर रहना, आसरे में देरतक पड़े रहना, (वि०) झूलने वाला, (पुं०) छब्बीस मात्राका एक छन्द,हिन्दोल, झूला।
झूलनी बगली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का व्यायाम; झूलनी बैठक-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बैठक की व्यायाम।
झूलरि-(हिं०स्त्री०) वह छोटा गुच्छा या झुमका जो सर्वदा झूलता रहता है।
झूला-(हिं० सं०) हिंडोला, एक प्रकार का पुल जो पुष्ट रस्सों जंजीरों या तारोंका बना होता है, जाड़ेमें पशुओं की पीठ पर डाले जाने वाला वस्त्र, एक प्रकार का स्त्रियों के पहिरने का ढीला कुरता, झोंका, झटका, वह विस्तर जिसके दोनों छोर दो खूंटियों में बंधे रहते हैं।
झूलि-(सं०पुं०) एक प्रकारकी सुपारी।
झूली-(हिं० स्त्री०) वह चादर जिससे हवा करके अनाज ओसाया जाता है
झेपना-(हिं०क्रि०) लज्जित होना।
झेर-(हिं०स्त्री०) देर, विलंब, झगड़ा, बखेडा।
झेरना-(हिं० क्रि०) झेलना, आरंभ करना।
झेरा-(हिं०पुं०) प्रपंच, झंझट, बखेड़ा।
झेल-(हिं०स्त्री०) वह क्रिया जो तैरने में हाथ पैर से पानी हटाने के लिये की जाती है, हलका धक्का, हलोरा, झेलने की क्रिया, विलंब, देरी।
झेलना-(हिं०क्रि०) सहन करना, ऊपर लेना, तैरने में पानीको हाथ पैर से हिलाना, ढकेलना, हेलना, तैरना, पचाना, ग्रहण करना, आगे बढ़ना, अग्रसर करना।
झेलनी-(हिं०स्त्री०) कानके आभूषण का भार संभालने के लिये बालोंमें अट-काई हुई जंजीर।
झेली-(हिं०स्त्री०) स्त्री को बच्चा जन-मते समय अनेक प्रकार से हिलाने डोलाने की क्रिया।
झोंक-(हिं० स्त्री०) प्रवृत्ति, झुकाव, तराजू के किसी पलडे का अधिक नीचा ऊंचा होना, प्रचंड गति, बोझ, भार,वेग, कार्यकी गति, किसी कार्य को बड़े समारोह से आरम्भ करने की क्रिया, सजावट, ठाटबाट, पानी का हलरा, बैलगाड़ी की पुष्टि के लिये दोनो ओर लगाये हुए लट्टे, नोंक झोंक-ठाट बाट।
झोंकना-(हिं०क्रि०) जल्दी से आगे की ओर डालना, वेग से आगे की ओर बढाना, बिना सोचे विचारे अधिक व्यय करना, अधिक कार्यभार किसी पर डालना,किसी की आपत्ति में डालना,बिना विचारे दोषारोपण करना, ठेलना, ढकेलना, बुरे स्थान में पटकना; भाड़ झोंकना-नीच कार्य करना।
झोंकवा-(हिं०पुं०) भट्टी या भाड़ में इन्धन फेकने वाला। झोंकवाई-(हिं०स्त्री०) झोंकने की क्रिया या वेतन
झोंकवाना-(हिं०क्रि०) झोंकने का काम किसी से कराना।
झोंका-(हिं०पु०) आघात, रेला,झपट्टा, हवा का झकोरा, वायु का आघात, पानी का हिलोरा,ऐसा धक्का जिससे कोई पदार्थ गिरपड़े, सजावट, ठाट, व्यायाम की एक युक्ति। झोंकाई-(हिं०स्त्री०) झोंकने की क्रिया या पारिश्रमिक; झोंकिया-(हिं०पुं०) भाड़ में पत्ते झोंकने वाला।
झोंकी-(हिं०स्त्री०) उत्तरदायित्व, भार, बोझ,अनिष्ट की आशंका, जोखिम।
झोंझ-(हिं०पुं०) घोंसला,खोंता,पक्षियों के गले की लटकती हुई मांस की थैली, खुजली, सुरसुराहट।
झोंझल-(हिं०पुं०)क्रोध,रोष,कुढन,गुस्सा
झोंझा-(हिं०स्त्री०)बया पक्षीका घोंसला

झोंट-(हिं०पुं०)झाड़ी,झाड़,समूह, जत्था
झोंटा-(हिं०पु०) बड़े बड़े बालों का समूह,एकबार हाथमें आ जाने वाला लंबी पतली वस्तुओं का समूह, झूले को इधर उधर हिलानेके लिये दिया हुआ धक्का,झोका,पेंग,भैंस का पड़वा
झोंटी-(हिं०स्त्री०) देखो झोटा।
झोंपड़ा-(हिं०पु०) कच्ची मिट्टी की भीत बनाकर घास फूस से छाया हुआ घर, पर्णशाला कुटी; अंधा झोंपड़ा-उदर,पेट। झोंपड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटा झोंपड़ा, कुटिया।
झोपा-(हिं०पु०) झब्बा, गुच्छा।
झोझर-(हिं०पु०) देखो ओझर।
झोंटिंग-(हिं०वि०) जिसके माथे पर बड़े खड़े बाल हों, झोंटेवालो वाला (पुं०) भूत प्रेत पिशाच।
झोंड़-(हिं०पु०)गुल्म, सुपारी का वृक्ष।
झोंपड़ा, झोंपड़ी-देखो झोंपड़ा, झोंपड़ी
झोरई-(हिं०वि०) झोलदार (रसदार) तरकारी।
झोरना-(हिं०क्रि०)झटका देकर कँपाना या हिलाना, एकत्र करना,
झोरा-(हिं०पुं०) झब्बा, गुच्छा।
झोरि-(हिं०स्त्री०) देखो झोली।
झोरी-(हिं०स्त्री०)झोली,एकप्रकारकीरोटी
झोर, झोल-(हिं०पुं०) तरकारी आदि का गाढा रसा, एक प्रकार की पतली लेई जो कढी की तरह पकाई जाती है,पीच,माँड़ धातु पर चढाया जाने वाला मोलम्मा, झूले की तरह लटकता हुआ कपड़ा,आंचल, पल्ला, आड़ ओट, परदा, गर्भ से निकले, हुए बच्चे या अंडे की झिल्ली, गर्भ, भस्म, राख दाह, जलन, अशुद्धि भूल, (हिं वि०) ढीला, निकम्मा,
झोलदार-(हिं०वि०) रस भरा हुआ, रस युक्त, मुलम्मा किया हुआ, ढीला ढाला, झोल सबंधी।
झोलना-(हिं०क्रि०)जलाना,दाह करना।
झोला-(हिं०पु०) कपड़े की बड़ी थैली, एक प्रकार का वात रोग, आघात, झोंका, बाधा, खोली,चोली, साधुओं का ढीला ढीला पोशाक, एक रोग, अपत्ति, बाधा, झटका।
झोलिहारा-(हिं०पुं०) वह जो झोली लटकाता हो।
झोली-(हिं०स्त्री०)कपड़ा मोड़कर बनाई हुई थैली, धोकरी,घास आदि बांधने की जाल, चरसा, मोट, ओसाने का कपड़ा, पेच यांत्रिक बिस्तर जिसके चारो कोनो पर रस्सी बंधी रहती है, भारी वस्तु को उठाने का फन्दा राख, भस्म।
झौंका-हिं०पु०) झोका।
झौंलना-(हिं०क्रि०) जलाना।
झौंझट-(हिं०पु०) देखो झंझट।
झौंद-(हिं०पुं०) उदर, पेट।
झौंर-(हिं० पु०) समूह झंड, पेडों या झाड़ियों का समूह, कुंज, कलियों पत्तियों या छोटे फलों का गुच्छा, झब्बा,एक प्रकार का गहना जिसमें मोतियो या चांदी सोने के दानों के गुच्छे लटकते रहते है।
झौंरना-(हिं०क्रि०) गुंजना, गुंजारना।
झौंराना-हिं०क्रि०) झूमना, इधर उधर हिलना, कुम्हलाना,मुरझाना, झाबरे रग का होना,
झौंसना-(हिं०क्रि०) देखो झुलसना।
झौर-(हिं०पुं०) प्रपंच, वादा-विवाद, कहा. सुनी, डांटडपट।
झौरना-(हिं०क्रि०) लपक कर पकड़ लेना, छोप लेना, दबा लेना।
झौरा-(हिं०पुं०) झझट, बखेड़ा।
झौरे-(हिं०क्रि०वि०) सग, साथ,समीप।
झौवा-(हिं० पुं०) खचिया, रहठे की बनी हुई दौरी, नदी तट पर एक पौधा।
झौहाना-(हिं० क्रि०) कुढना, चिड़-चिड़ाना, गुर्राना, रोष दिखलाना।

ञ
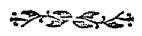
ञ-हिन्दी और संस्कृत व्यंजनवर्ण का दसवां अक्षर, चवर्गका पांचवां अक्षर इसकाउच्चारणस्थानतालुऔरनासिका है; ञ-(सं० पु०) गानेवाला, घरघर शब्द, बैल, अधर्मी, (वि०)।
ञकार-(सं०पु०) 'ञ' स्वरूप वर्ण।

ट

ट-संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवां व्यंजन, तथा टवर्ग का पहिला अक्षर, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।
-(सं०नपु०) नारियल का वृक्ष, (पुं०) वामन, चतुर्थांश, चौथाई भाग, निःस्वन, शब्द।
टँकना-(हिं०क्रि०) कील आदि जड़कर जोड़ा जाना, सिला जाना, सिलाई से जुड़ना, सिलाई,करके अटकाया जाना, रेती के दांतों का पैना होना, अंकित होना, लिखा जाना, कुटना, रेता जाना।
टँकवाना-(हिं क्रि०) देखो टँकाना।
टँका-(हिं०पु०) पुराने काल की तौल जो तोले के बराबर मानी जाती थी, तांबे का एक पुरानी मुद्रा, एक प्रकार का गन्ना।
टँकाई-(हिं०स्त्री०) टांकने की क्रिया या वेतन; टँकाना-(हिं०क्रि०) टांकों से सिलाना, सिलाकर लगवाना, कुटाना खुरखर करना। मुद्रा की जाँच करना। टकार-(हिं०स्त्री०) तार को अंगुली से मारने पर उत्पन्न टनटन् शब्द, धनुष की कसी हुई डोरी को खीचने से उत्पन्न शब्द, धातुखण्ड पर चोट पड़ने से उत्पन्न शब्द, ठनाका, झनकार। टंकारना-(हिं०क्रि०) धनुष की डोरी तानकर ध्वनि उत्पन्न करना, चिल्ला खींचकर शब्द करना।
टंकी-(हिं०स्त्री०) श्री राग की एक रागिणी, पानी रखनेका कुण्ड, टांका।
टंकोर-(हिं० पुं०) देखो टंकार।
टंकोरना-(हिं०क्रि०) धनुष की डोरी खींच कर ध्वनि उत्पन्न करना, देखो टंकारना।
टंकोरी-(हिं०स्त्री०) सोना चांदी तौलने की चोटी तराजू, कांटा।
टँगड़ी-(हिं०स्त्री०) घुटने से लेकर एँड़ी तक का भाग, टांग।
टँगना-(हिं०क्रि०) लटकना, फांसी पर चढ़ना या लटकाना, कपड़ा रखने की अलगनी।
टँगरी-(हिं०स्त्री०) देखो टँगड़ी।
टँगा-(हिं०पुं०)मूज,एक प्रकारकी घास
टँगारी-(हिं०स्त्री०) छोटा टांगा।
टंच-(हिं०वि०) कृपण, कंजूस, कठोर-हृदय, निष्ठुर,
टंटघंट-(हिं० पुं०) शंख घंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या आड-म्बर, झूठा प्रपंच, काठ कबार।
टंटा-(हिं०पुं०) प्रपञ्च, आडम्बर,खट-राग, उपद्रव, लड़ाई झगड़ा।
टंडल-(हिं०पु०)मजदूरों का जमादार।
टंडिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बांह में पहिरने का आभूषण।
टंडुलिया-(हिं०स्त्री०)कांटेदारवनचौराई।
टंडैल-(हिं०पु०) देखो टंडल।
टंसरी-(हिं०स्त्री०)एकप्रकारकाबीन बाजा
टई-(हिं०स्त्री०) युक्ति,
टक-(हिं०स्त्री०) स्थिर दृष्टि, लकड़ी घास आदि तौलने की तराजू का चौखूटा पलड़ा; टक बांधना-टकटकी लगाकर देखना; टकटक देखना-बिना पलक गिराये देखना; टक लगाना-प्रतीक्षा करते रहना।
टकटका-(हिं०पु०)स्थिर दृष्टि,टकटकी
टकटकाना-(हिं०क्रि०) टकटकी बांध कर देखना, टकटक शब्द करना।
टकटकी-(हिं० स्त्री०) स्थिर दृष्टि, अनिमेष; टकटकी बांधना-स्थिर दष्टि से देखना।
टकटोना; टकटोरना, टकटोलना-(हिं०स्त्री०)हाथसे छूकर पता लगाना, टटोलना, ढढ़ना।
टकटोहन-(हिं०पु०) छकर या टटोल कर देखने की क्रिया। टकटोहना-(हिं०क्रि०) देखो टटोलना।
टकबीड़ा-(हिं०पु०)वह भेंट जो किसान विवाहादि के अवसर पर भूस्वामी को देता है।
टकराना-(हिं०क्रि०) वेग से ठोकर लगना, भिड़ना, धक्का खाना, मारे फिरना, इधर उधर घूमना, पटकना, मारना
टकसरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बांस।
टकसाल(र)-(हिं०स्त्री०) टंकशाला, मुद्रा ढालनेका कार्यालय, प्रामाणिक वस्तु, जंची हुई वस्तु। टकसाली-(हिं०वि०) टकसाल का बना हुआ, खरा, चोखा, जंचा हुआ, परीक्षित, प्रामाणिक, सर्व-सम्मत, सबसे माना हुआ, (पुं०) टक-साल का अध्यक्ष।
टकहाई-(हिं०वि०)वेश्याओं में निष्कृष्ट।
टका-(हिं०पु०) चांदी की पुरानी मुद्रा, धन, रुपया, पैसा, तीन तौले की तांबे का अधन्ना, दो पैसे का तांबे का सिक्का; टकासा जबाब देना-स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना; टका सा मुंह लेकर रह जाना-अति लज्जित होना, खिसिया जाना; टके गज की चाल-थोड़े व्यय में निर्वाह मोटी चाल।
टकाई-(हिं०वि०) देखो टकाही।
टकाटकी-(हिं०स्त्री०) देखो टकटकी।
टकातोप-(हिं०स्त्री०) जहाज पर लगाने की तोप।
टकाना-(हिं०क्रि०) देखो टँकाना।
टकार-(सं०पुं०) 'ट' अक्षर का स्वरूप
टकासी-(हिं०स्त्री०) दो पैसे प्रति रुपये का व्याज।
टकाही-(हिं०वि०) देखो टकहाई।
टकी-(हिं०स्त्री०) देखो टकटकी।
टकुआ-(हिं०पुं०) चरखे में लगाने का सूजा, तकला जिसपर सूत काता और लपेटा जाता है, वह तार जो छोटे तराजू या कांटे में बांधा जाता है।
टकुली-(हिं० स्त्री०) पत्थर काटने की टाँकी, बेल बनाने या नकाशी करने की छेनी।
टकैत-(हिं०वि०) जिसके पास धन हो, अमीर।
टकोर-(हिं०स्त्री०) प्रहार, आघात, हल-

की चोट, थपेड़ा, ठेस, नगाड़े का शब्द, धनुष की टंकार, दवा भरी हुई औषधि से सेंक करने की क्रिया, तीक्ष्णता,चरपराहट, खट्टी वस्तु खाने से दांतों की टीस। **टकोरना**-(हिं० क्रि०) ठोंकर लगाना, हलकी चोट लगाना, बजाना, सेंकना।

टकोरा-(हिं०पुं०) डके की चोट,नगाड़े पर का आघात।

टकोरी-(हिं०स्त्री०) आघात, टक्कर।

टकौरी-(हि० स्त्री०) वह छोटा तराजू (कांटा) जिससे सोना चांदी तौला जाता है।

टक्कर-(हिं०स्त्री०) दो वस्तुओं का वेग से परस्पर मिलना, ठोकर, लड़ाई, भिड़न्त, क्षति, हानि, सिर पटकने का आघात; **टक्कर खाना**-मारे फिरना, टकराना; **टक्कर का**-तुल्य, समान, बराबरी का; **टक्कर लेना**-आघात सहना; **टक्कर मारना**-निष्फल प्रयत्न करना; **टक्कर लड़ाना**-सिर से सिरपर मार करना।

टखना-(हि०पुं०)एँड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी, पैर का गट्टा।

टगण-(सं०पुं०)छ मात्राओं का एक गण

टगर-(सं० पुं०) टंकण क्षार, सोहागा, विलास, क्रीड़ा (वि०) ऐंचा, भेंगा।

टगरा-हिं०वि०) भेंगा, ऐंचाताना।

टघरना-(हिं०क्रि०) द्रवित होना,पिघलना

टघराना-(हिं०क्रि०) पिघलना।

टङ्क-(सं०पुं०) क्रोध, कोष, तलवार, पत्थर काटने की टांकी, जंघा, एक तोले चार मासे का परिमाण (नपुं०) कुदाल, फरसा, दर्प, पहाड़ की चोटी पत्थर का टुकड़ा, सम्पूर्ण जाति का एक राग।

टङ्कक-(सं०पुं०) चांदी की मुद्रा,रुपया, **टङ्कक शाला**-मुद्रागृह, टकसाल।

टङ्कटीक-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

टङ्कण-(सं०पुं०) सोहागा।

टङ्कपति-(सं०पुं०)टकसाल का अधिकारी

टङ्कविज्ञान-(सं० नपुं०) भिन्न देशों की प्राचीन मुद्राओं के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की विद्या। **टङ्कशाला**-(सं०स्त्री०) टकसाल।

टङ्का-(सं० स्त्री०) जँघा, जांध, एक रागिणी का नाम।

टङ्कार-(सं० पुं०) विस्मय, धनुष की डोरी खींचने से उत्पन्न ध्वनि, झनकार, ठनाके का शब्द, कीर्ति।

टङ्किका-(सं०स्त्री०) टाँकी, छेनी।

टङ्कित-(सं०वि०) सिला हुआ, धनुष के चिल्ले को फटकार कर शब्द किया हुआ

टङ्ग-(सं०पुं०) फरसा, जाँघ, सोहागा, चार मासे की तौल।

टङ्गण-(सं०पुं०) सोहागा।

टङ्गिणी-(सं०स्त्री०) पाठा नामक पौधा

टचटच-(हिं०क्रि०वि०)धांय-धांय,धकधक

टटका-(हिं० वि०) नया, कोरा, हलका, तुरत का तैयार किया हुआ।

टटनी-(हिं० स्त्री०) कसेरे की विच्छिति करने की टाँकी।

टटलबटल-(हिं० वि०) अस्तव्यस्त, ऊट पटांग।

टटावली-(हिं० स्त्री०) टिटिहरी नामक पक्षी।

टटिया-(हिं०स्त्री०) देखो टट्टी।

टटियाना-(हिं०क्रि०) सूख कर कड़ा हो जाना।

टटीवा-(हिं०पुं०) चक्कर, घिरनी।

टटीरी-(हिं०स्त्री०) टिटिहरी चिड़िया।

टटुआ-(हि० पुं०)देखो टट्टू,

टटुई-(हिं० स्त्री०) मादा टट्टू, छोटी जात की घोड़ी।

टटोना, टटोरना-(हिं० क्रि०) देखो टटोलना।

टटोल (हिं० स्त्री०) टटोलने का भाव, अंगुलियों से छू कर किसी वस्तु का अनुभव करना, ढूढने के लिये इधर उधर हाथ फेरना, बोल चाल से ही किसी के मन के भाव का पता लगा लेना, जाँच करना, परीक्षा करना, परखना।

टट्टनी-(सं०स्त्री०) छिपकली।

टट्टर-(हिं०पुं०) बाँस की पट्टियों आदि का बना हुआ ढाँचा या पल्ला जो रोक के लिये कहीं पर लगाया जाता है

टट्टरी-(सं०स्त्री०) ढोल का शब्द, लम्बी चौड़ी बात।

टट्टा-(हिं०पुं०) देखो टट्टर। **टट्टी**-(हिं० स्त्री०) देखो टट्टर, चिक, परदा, चिलम आड़ रोकने की पतली भीत, छाजन जिसपर लता चढाई जाती है; **टट्टी की आड़में शिकार करना**-गुप्त रूप से किसी का अनहित करना; **धोखे की टट्टी**-छलने का उपाय।

टट्टुर-(सं०पुं०) तुरुही बजने का शब्द

टट्टू-(हिं०पुं०) छोटे आकार का घोड़ा, टाँगन; **भाड़े का टट्टू**-धन लेकर किसी का काम करने वाला।

टठिया-(हिं०स्त्री०) देखो टाटी।

टड़िया-(हिं०स्त्री०) बांह में पहिरने का स्त्रियों का एक गहना।

टन-(हि० स्त्री०) धातुखण्ड पर आघात करने से उत्पन्न किया हुआ शब्द, झनकार।

टनकना-(हिं० क्रि०) टनटन बजाना, गरमी से मस्तक में पीड़ा होना।

टनटन-(हिं०स्त्री०) घंटा बजने का शब्द;

टनटनाना-(हि० क्रि०) टनटन शब्द निकालना, घटा बजाना, घंटा बजना

टनमन-(हिं०पुं०) तन्त्र मन्त्र, जादू, टोना

टनमना-(हि०वि०) स्वस्थ, चंगा, जो सुस्त न हो।

टना-(हिं० पुं०) योनि, भग, योनि के बीच की उभड़ी हुई मांस की ग्रन्थि

टनाका-(हिं०पुं०) घंटा बजने का शब्द, (वि०) कड़ी धूप।

टनाटन-(हिं०स्त्री०) निरन्तर घंटा बजने का शब्द।

टप-(हिं० स्त्री०) फ़िटिन, टमटम आदि गाड़ियों में लगा हुआ चमड़े या कपड़े का ओहार, कलंदरा, लटकाने वाले लम्प के ऊपर की छतरी, (पुं०) नांद के आकार का पानी रखने का बड़ा पात्र, टांका, कान में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण, बूंद बूंद करके टपकने का शब्द,एकाएक किसी वस्तु के गिरने का शब्द, ढिबरी की पेंच बनाने का यन्त्र।

टपक-(हिं०स्त्री०) टपकने का भाव, बूंद बूंद करके गिरने का शब्द, रह रह कर होने वाली पीड़ा। **टपकना**-(हिं० क्रि०) बूंद बूंद करके गिरना, रसकर बहना, चूना, पके हुए आम का वृक्ष पर से आप से आप गिरना, टूट पड़ना, किसी भाव का अधिकता से प्रगट होना, ढल पड़ना, फिसलना, चोट, आदि के कारण शरीर में पीड़ा होना, टीस मारना, चिलकना, युद्ध में घायल हो कर गिर पड़ना।

टपका-(हिं०पुं०) बूंद बूंद कर गिरने का भाव, ठहर ठहर कर होने वाली पीड़ा, पक कर आप से आप गिरा हुआ फल, टपकी हुई वस्तु, रसाव।

टपकाटपकी-(हि० स्त्री०) वर्षा की बूंदा बूंदी, किसी वस्तु को लेने के लिये मनुष्यों का एक पर एक टूटना, एक के बाद दूसरे को मारना, (वि०)भूला भटका, थोड़ा सा, एक आध।

टपकाना-(हिं० क्रि०) बूंद बूंद करके गिराना, चुआना, भभके से अर्क उतारना। **टपकाव**-(हिं०पुं०)टपकाने की क्रिया।

टपना-हिं० क्रि०) बिना खाये पिये रहना, निराहार रहना, व्यर्थ किसी के आसरे बैठे रहना, आच्छादित करना, ढाँपना।

टपमाल-(हिं० पुं०) जहाजों पर काम में लाने वाला लोहे का बड़ा घन।

टपाटप(हिं०क्रि०वि०) बराबर टपटप शब्द के साथ, शीघ्रता से, झटपट।

टपाना-(हिं०क्रि०) निराहार पड़े रहने देना, निष्प्रयोजन आसरे में रखना।

टप्पर-(हिं०पुं०) छाजन, छप्पर।

टप्पा-(हिं०पुं०)दो स्थानों के बीच की विस्तृत भूमि, परगने का विभाग, भूमि का छोटा भाग, अन्तर, दूर दूर की सिलाई, पाल पर वेग से चलने वाला नाव का बेड़ा,एक प्रकार का हुक या काँटा,वह ठहराव जहाँ पालकी के कँहार बदले जाते हैं, नियत दूरी, गतिमान पदार्थ के बीच में भूमि का स्पर्श, उछल कर जाती हुई वस्तु का बीच बीच में टिकाव।

टमकी-(हिं० स्त्री०) छोटा नगाड़ा, डुगडुगिया।

टमटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पात्र।

टमाटर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का विलायती मटर या बैंगन जो खट्टा होता है।

टर-(हिं०पुं०)कर्कश शब्द, कड़ई बोली, मेढक की बोली, अहंकार युक्त वचन, हठ, तुच्छ वार्ता, अकड़ ऐंठन,।

टरटरकरना-भ्रष्टता से बोलना।

टरकना-(हिं० क्रि०) चले जाना, हट जाना।

टरकाना-(हिं० क्रि०) स्थान परिवर्तन करना, हटाना, खिसकाना, टाल देना, भगा देना,।

टरकुल-(हिं०वि०) अति सामान्य।

टरगी-(हि०पुं०) एक प्रकार की घास

टरटराना-(हिं० क्रि०) व्यर्थ की बातें करना, बकबक करना, टरटर करना;

टरना-(हिं०क्रि०) देखो टलना।

टरनि-(हिं०स्त्री०)टरने का ढग या भाव

टर्रा-(हिं०वि०)धृष्टता से बोलने वाला, कटुवादी, घमंड से बात करनेवाला;

टर्राना-(हिं० क्रि०) उद्दंडता और घमड के साथ उत्तर देना, कठोर वचन बोलना। **टर्रापन**-(हिं० पुं०) कटुवादिता, बात करने में कठोरता

टर्रू-(हिं०पुं०) चिढ़कर बोलनेवाला, मेढ़क, एक प्रकार का खिलौना।

टलन-(सं०नपुं०) व्यग्रता।

टलना-(हिं०क्रि०) अपने स्थान से सरकना, हटना, अनुपस्थित होना, किसी स्थान पर न रहना, चंगा होना, दूर होना, मिटना, अन्यथा होना, ठीक न रहना, समय बढ़ना, उल्लंघित होना, पूरा न किया जाना, समय-बीतना, अन्यथा होना; **बात से टलना**-प्रतिज्ञा भंग करना।

टलमल-(हिं० वि०) हिलता हुआ।

टलाटली-(हिं०स्त्री०) टालमटोल।

टलित-(सं०वि०) विचलित, अधीर।

टलहा-(हिं०वि०)खोटा (सिक्का इ०)

टल्लो-(हिं०पुं०) बांस का एक भेद।

टल्लेनवीसी-(हिं०स्त्री०) देखो टिल्लेनवीसी।

टवर्ग-(सं० पुं०) ट, ठ, ड, ढ, ण इन पांच वर्गों का समूह।

टवाई-(हिं० स्त्री०) व्यर्थ की घुमाई,

टस-(हिं०स्त्री०)टसकने का शब्द, कपड़े आदि के फटने का शब्द; **टस से मस न होना**-किसी भारी पदार्थ का स्थान से न खिसकना, विनती आदि का कुछ प्रभाव न पड़ना।

टसक-(हिं०स्त्री०) ठहर ठहर कर होने वाली पीड़ा, टीस, चमक, पीड़ा।

टसकना-(हिं०क्रि०)किसी भारी वस्तु का स्थान से खिसकना, हटना, टीस मारना, ठहर ठहर कर पीड़ा होना, प्रभावित होना। **टसकाना**-(हिं० क्रि०) खिसकाना, किसी भारी वस्तु को स्थान से हटाना।

टसर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कड़ा मोटा रेशम।

टसुआ-(हिं० पुं०) अश्रु, आँसू।

टहकना-(हिं० क्रि०) ठहर ठहर कर पीड़ा, होना ।

टहना-(हिं०पुं०) वृक्ष की शाखा ढाल । **टहनी**-(हिं०स्त्री०)वृक्षकी पतली डाली ।

टहरकट्टा-(हिं०पुं०)वह काठका टुकड़ा जिस पर तकली से उतारा हुआ सूत लपेटा जाता है ।

टहल-(हिं० स्त्री०) सेवा, सुश्रूषा, काम धंधा, चाकरी ।

टहलना-(हिं० क्रि०) मन्द गति से भ्रमण करना, धीरे धीरे चलना, **टहल जाना**-चले जाना, सरक जाना । **टहलनी**-(हिं०क्रिं०) दासी, नौकरनी, लौंडी, बत्ती उसकाने की लकड़ी ।

टहलाना-(हिं०क्रि०)धीरे धीरे चलाना; फिराना, दूर करना ।

टहलुआ-(हिं०पुं०) टहल करने वाला, सेवक, चाकर । **टहलुई**-(हिं०स्त्री०) दासी, लौंडी । **टहलुवा**-(हिं०पुं०) देखो टहलआ । **टहलू**-(हिं० पुं०) चाकर, नौकर, सेवक ।

टही-(हि० स्त्री०) मतलब साधने का ढंग, प्रयोजन सिद्ध करने की युक्ति ।

टहूका-(हिं०पुं०) पहेली, चुटकुला ।

टहोका-(हिं०पुं०)धक्का झटका; **टहोका देना**-ढकेलना; **टहोका खाना**-ठोकर खाना ।

टा-(सं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी ।

टाँक-(हि० स्त्री०) चार माशे की एक तौल जिसका प्रचार जवहरियों में है, लिखावट, लेखनी की नोक, जाँच, हिस्सेदारों का बखरा ।

टाँकना-(हिं०क्रि०) कील के कांटे को दूसरे से मिलाना, सिलाई करके जोड़ना, रेती से तीक्ष्ण करना, कूटना, याद करने के लिये लिख लेना, चढ़ाना, चट कर जाना, उड़ा जाना, सिल चक्की आदि के तल को खुरखुरा बनाना, अनुचित रूप से धन हरण करना ।

टाँकली-(हिं०स्त्री०) जहाज़ के पाल की रस्सी लपेटने की घिरनी ।

टाँका-(हिं०पुं०)जोड़ मिलाने का काँटा या कील, सिलाई का अलग अलग भाग, डोभ, सिलाई, सियन, चिप्पी, चकती, शरीर के घाव पर या कटे स्थान पर की सिलाई, वह मसाला जिससे धातु जोड़े जाते हैं, पानी रखने का खुले मुंह का बड़ा पात्र, कंडाल ।

टाँकाटक-(हिं० वि०) जो तौलने में ठीक ठीक हो ।

टाँकी-(हिं०स्त्री०)पत्थर गढ़ने की छेनी, काटकर बनाया हुआ छेद, आरी का दाँत, एक प्रकार का फोड़ा, छोटा हौज, छोटी कंडाल ।

टाँग-(हिं०स्त्री०) जांघ से लेकर एँड़ी तक का शरीर का अंग, मल्लयुद्ध की एक युक्ति, चतुर्थांश, चौथाई भाग; **टाँग अड़ाना**-बिना अधिकार में हस्तक्षेप करना; **टाँग के नीचे से निकल जाना**-हार मानना; **टाँग पसार कर सोना**-निश्चिन्त हो कर सोना ।

टाँगन-(हिं०पुं०) कम ऊंचाई का घोड़ा, टट्टू ।

टाँगना-(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ को दूसरे पर लटकाना, फाँसी देना ।

टाँगा-(हिं० पुं०) बड़ी कुल्हाड़ी, बैल या घोड़े से खींची जानेवाली एक प्रकारकी दो पहिया वाली गाड़ीजिसका पिछला भाग भूमि के पास रहता है ।

टाँगानोचन-(हिं०स्त्री०) नोचखसोट ।

टाँगुन-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का गरीबों के खाने का अन्न ।

टाँगी-(हिं०स्त्री०)छोटा गणासा, कुल्हाड़ी

टाँच-(हिं०स्त्री०) दूसरे का काम बिगाड़ने की बात, टांका, सिलाई, डोभ, वह टुकड़ा जो किसी फटे कपड़े में सिला जाय, चकती । **टाँचना**-(हिं० क्रि०) टांकना, सीना, डोभ लगाना, काटना, छांटना, छीलना, तराशना

टाँची-(हिं०स्त्री०)कपड़े की लंबी पतली थैली जिसमें रुपये भर कर लोग कमर में बाँधते हैं ।

टाँट-(हिं०पुं०) कपार, खोपड़ी ।

टाँठ, टाँठा-(हिं० वि०) कठोर, दृढ़, हृष्ट पुष्ट ।

टाँड़-(हिं० स्त्री०) सामग्री रखने की पाटन, परछत्ती, मचान जिस पर बैठ कर किसान खेत की रखवाली करता है, स्त्रियों के बांह में पहिरने का एक आभूषण, ढेर, राशि, घरों की पंक्ति ।

टाँड़ा-(हिं०पुं०) बनजारों के बैलों का झुंड जिनपर अन्न लदा होता है, व्यापारियों के माल की चलान, व्यापारियों का झुंड, परिवार, कुटुम्ब

टाँड़ी-(हिं०स्त्री०) शलभ, टिड्डी ।

टाँय टाँय-(हिं०स्त्री०)अप्रिय शब्द,टें टें, बकवाद; **टाँय टाँय फिस**निरर्थक बात जिसका कुछ परिणाम न हो ।

टाँस-(हिं०स्त्री०) हाथ पैर से नसों की सिकुड़न ।

टाकू-(हिं०पुं०) टेकुआ, तकला ।

टाकुर-(सं० पुं०) स्वेच्छाचारी, व्यभिचारी ।

टाट-(हिं०पुं०) सन या पटुवे का बना हुआ मोटा कपड़ा, बिरादरी, साहूकार के बैठने की गद्दी; **टाट उलटना**-महाजन का दीवाला बोलना । **टाट बाफ़ी जूता**-(हिं०पुं०) कामदार बढ़िया जूता ।

टाटर-(हिं०पुं०) टट्टर, टट्टी, मस्तक की हड्डी, कपाल, खोपड़ी ।

टाटिक, टाटी-(हिं०स्त्री०) देखो टट्टी ।

टान-(हिं० स्त्री०) फैलाव, तनाव, खिंचाव, मचान ।

टानना-(हिं० क्रि०) खींचना तानना ।

टाप-(हिं०पुं०)घोड़े के पैर का निचला भाग, वह शब्द जो चलते समय घोड़े के पैर होता है, झाबा जिससे मछलियां पकड़ी जाती हैं, मुरगियों के बन्द करने का झाबा ।

टापड़-(हिं०पुं०) ऊसर मैदान ।

टापदार-(हिं० वि०) जिसका ऊपरी या नीचे का भाग फैला हुआ हो ।

टापना-(हिं०क्रि०) घोड़े का पैर पटकना इधर उधर व्यर्थ घूमना, उछलना, कूदना, टक्कर मारना, निराहार पड़े रहना, वृथा किसी की प्रतीक्षा करना, पछताना ।

टापर-(हिं०पुं०) टट्टू आदि की सवारी

टापा-(हिं०पुं०) टप्पा, उजाड़ मैदान, किसी वस्तु को ढापने का टोकरा या झाबा ।

टापू-(हिं०पुं०)वह भूमिखण्ड जो चारो ओर से पानी से घिरा हो, द्वीप ।

टाबर-(हिं०पुं०)लड़का बालक,छोकरा ।

टाबू-(हिं०पुं०) कटोरे के आकार की जाली जो बैलोंके मुख पर बाँध दी जाती है ।

टामक-(हिं०पुं०) डिमडिम, डुगडुगी ।

टामन-(हिं०पुं०)तन्त्र विधि, टोटका ।

टार-(सं०पुं०)तुरंग, घोड़ा, देखो टाल । (हिं०पुं०) राशि, ढेर (स्त्री०) टाल ।

टारन-(हिं०पुं०) सरकारने की वस्तु, कोल्हू में पड़ा हुआ लकड़ी का डंडा ।

टाल-(हिं०स्त्री०) बड़ी राशि, ऊंचा ढेर, गंज, अटाला, लकड़ी भूसे आदि, की दूकान, बैल गाड़ी के पहिये का छोर स्त्री पुरुष का समागम कराने वाला कुटना, दलाल । **टालटूल**-(हिं०स्त्री०) देखो टालमटूल ।

टालना-हिं०क्रि०) उल्लंघन करना, न मानना, समय व्यतीत करना, किसी कार्य को पूरा करने की झूठी आशा देना, किसी को निराश करके लौटा देना पलटना, फेरना, तरह देना, बचा जाना, हटाना, सरकाना, अनुपस्थित करना, भाग देना, दूर करना, मिटाना, नियत समय से आगे ठहराना ।

टालमटाल-(हिं० स्त्री०) देखो टालमटूल (क्रि०वि०) आवेआध ।

टालमटूल-(हिं०पुं०) मिस, बहाना ।

टाला-(हिं०वि०) अर्ध, आधा ।

टाली-(हिं०स्त्री०)गाय बैल के गरदन में बाँधने की घंटी, जवान बछिया, एक प्रकार का बाजा, आधे रुपये का सिक्का, अठन्नी ।

टालहो-(हिं०पुं०) देखो टहलुआ ।

टिंड-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है

टिंडर-(हिं०पुं०) रहट में लगी हुई हँड़िया ।

टिंडसी-(हिं०स्त्री०) देखो टिंड ।

टिंडी-(हिं०स्त्री०) हल की मूठ, जाँता घुमाने का खूंटा ।

टिक-(हिं०पुं०) टिक्कर, लिट्टी ।

टिकटिक-(हिं०स्त्री०) घोड़ा हाँकते समय मुँह से किया हुआ शब्द, घड़ी के चलने से उत्पन्न शब्द । **टिकटिकी, टिकटी**-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का बना हुआ वह ढाँचा जिसमें बाँधकर अपराधी को बेंत लगाई जाती है, अथवा गले में फ़ाँसी का फन्दा बाँधा जाता है, ऊँची तिपाई ।

टिकड़ा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का गोल चिपटा टुकड़ा, आँच पर सेंकी हुई मोटी रोटी, बाटी । **टिकड़ी**-(हिं० स्त्री०) छोटा गोल टुकड़ा ।

टिकना-(हिं०क्रि०) डेरा देना, कुछ काल के लिये कहीं पर ठहरना, तलछट रूप में नीचे बैठना, स्थायी रहना, कुछ दिनों तक काम देना, अड़ा रहना, ठहरना, इधर उधर न गिरना ।

टिकरी-(हिं०स्त्री०) टिकिया,एक प्रकार का नमकीन पकवान । **टिकली**-(हिं०स्त्री०) छोटी टिकिया, काँच या पन्नी की बनी हुई छोटी टिकिया जिसको स्त्रियाँ माथे पर चिपकाती हैं, टिकुली, छोटी बिन्दी, सूत कातने का एक अस्त्र ।

टिकस-(हिं०पुं०) कर, महसूल ।

टिकाई-(हिं०स्त्री०) टिकने का भाव । **टिकाऊ**-(हिं०वि०) कुछ दिनों तक काम देने वाला, टिकने वाला । **टिकान**-(हिं०स्त्री०) टिकने का स्थान, बोझ उतारने का स्थान, चट्टी, पड़ाव **टिकाना**-(हिं०स्त्री०) रहने के लिये स्थान देना, स्थित् करना, ठहराना, अड़ाना । **टिकानी**-(हिं० स्त्री०) टिकाव । **टिकाव**-(हिं०पुं०) स्थायित्व, ठहरने का स्थान, पड़ाव, ठहराव ।

टिकिया-(हिं०स्त्री०) छोटा गोल टुकड़ा, कोयले की बुकनी से बना हुआ छोटा गोल टुकडा जो सुलगा कर चिलम पर रक्खा जाता है, एक प्रकार की रोटी, एक प्रकार की गोल चिपटी मिठाई ।

टिकुरा-(हिं०पुं०) टीला, भीठा ।

टिकुरी-(हिं०स्त्री०) सूत कातने की फ़िरकी, टिकली ।

टिकुला-(हिं०पुं०) देखो टिकोरा ।

टिकुली-(हिं०स्त्री०) देखो टिकली ।

टिकैत-(हिं०पुं०) राजा का उत्तराधिकारी कुमार,युवराज,अधिष्ठाता, सरदार ।

टिकोर-(हिं०स्त्री०) देखो टकोर ।

टिकोरा-(हिं०पुं०) आम का कच्चा छोटा फल ।

टिक्कड़-(हिं०पुं०) बड़ी टिकिया, आंच पर सेंकी हुई छोटी मोटी रोटी, लिट्टी

टिक्का-(हिं०पुं०) देखो टीका ।

टिक्की-(हिं०स्त्री०) गोल चिपटा टुकड़ा, टिकिया, लिट्टी, बाटी, गोल टीका, बिंदी, ताश की बूटी, भीत पर

अंगुलियों से लगाया हुआ चिह्न ।
टिखटिख-(हिं०स्त्री०) देखो टिकटिक ।
टिघलना-(हिं०क्रि०) गलना, पिघलना ।
टिघलाना-(हिं०क्रि०) गलाना, पिघलाना
टिचन-(हिं०वि०) प्रस्तुत, उद्यत, ठीक, तैयार ।
टिटकारना-(हिं०क्रि०) टिकटिक करके किसी पशु को हाँकना ।
टिटिभ-(सं०पुं०) टिटिहरी नाम का पक्षी
टिटिह-(हिं०पुं०) एक पक्षी का नाम ।
टिटिहरी-(हिं०स्त्री०) एक छोटी चिड़िया जो प्रायः पानी के किनारे पर रहती है ।
टिटिहारोर-(हिं०पुं०) चिल्लाहट, शोरगुल ।
टिट्टिभ-(सं०पुं०) कुररी, टिटिहरी, टिड्डी
टिड्डा-(हिं०पुं०) पंखयुक्त एक प्रकार का कीड़ा ।
टिड्डी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा जो दल बांधकर चलता है, पेड़ पत्ती को खाता और कृषि को हानि पहुँचाता है ।
टिढबिड़ंगा-टिढबिंगा-(हिं०वि०) वक्र, टेढ़ा मेढ़ा ।
टिण्टिनिका-(सं०स्त्री०) जलौका, जोंक ।
टिपका-(हिं०पुं०) पानी का बूंद ।
टिपटिप-(हिं०स्त्री०) बूंद बूंदकर पानी गिरने का शब्द ।
टिपवाना-(हिं०क्रि०) धीरे धीरे प्रहार करवाना, पिटवाना, दबवाना, टीपने का काम दूसरे से कराना ।
टिपारा-(हिं०पुं०) मुकुट के आकार की कलँग़ीदार टोपी ।
टिपुर-(हिं०पुं०) अभिमान, घमंड, पाखण्ड, आडम्बर ।
टिप्पणी-(हिं०स्त्री०) देखो टिप्पनी ।
टिप्पन-(सं०पुं०) टीका, व्याख्या, जन्म पत्रिका । **टिप्पनी**-(सं०स्त्री०) व्याख्या, टीका ।
टिप्पा-(हिं०स्त्री०) वह चिह्न जो अंगुली में रंग पोत कर बनाया जाता है, ताश की बूटी ।
टिबरो-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया ।
टिमटिमाना-(हिं०क्रि०) कम प्रकाश देना, मन्द मन्द जलना, झिलमिलाना, बुतने पर होना, मरणासन्न होना ।
टिमाक-(हिं०स्त्री०) शृंगार, बनावट, ठसक ।
टिर-(हिं०स्त्री०) देखो टर ।
टिरफिस-(हिं०स्त्री०) प्रतिवाद, विरोध, चींचपड़ ।
टिर्राना-(हिं०क्रि०) देखो टर्राना ।
टिलटिलाना-(हिं०क्रि०) दस्त आना ।
टिलवा-(हिं०पुं०) लकड़ी का टेढ़ामेढ़ा गँठीला टुकड़ा, नाटा मनुष्य, चापलूस आदमी ।
टिल्ला-(हिं०पुं०) धक्का, ठोकर, चोट
टिल्लेनवीसी-(हिं०स्त्री०) नीच सेवा, व्यर्थ का काम, बहाना, देखो टीला, कुटन वृत्ति ।
टिसुआ-(हिं०पुं०) अश्रु, आँसू ।
टिहुक-(हिं०स्त्री०) चमक ।
टिहुकना-(हिं०क्रि०) ठिठकना, चौंकना, रूठना ।
टिहुनी-(हिं०स्त्री०) घुठना, कोहनी ।
टींड-(हिं०पुं०) रहट में बांधने की हंडिया
टींडसी-(हिं०स्त्री०) एक लता जिसके फल की तरकारी खाई जाती है ।
टींडा-(हिं०पुं०) वह खूंटा जिससे जाँता घुमाया जाता है ।
टीक-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के गले में पहिरने का एक आभूषण ।
टीकन-(हिं०पुं०) वह खंभा जो बोझ रोकने के लिये नीचे की ओर लगाया जावे, टांड, खंभा ।
टीका-(सं०स्त्री०) व्याख्या ग्रन्थ, किसी वाक्य या पद का अर्थ स्पष्ट करने वाला वाक्य ।
टीका-(हिं०पुं०) वह चिह्न जो गीले चन्दन, रोली, केशर आदि से मस्तक बाहु आदि अंगोंपर शोभा के लिये अथवा सांप्रदायिक संकेत सूचित करने के लिये लगाया जाता है, तिलक, आधिपत्य का चिह्न, वह भेंट जो असामी राजा को देता है, मस्तक पर पहिरने का एक गहना, घोड़े का मध्य भाग, धब्बा, चिह्न, किसी रोग से बचने के लिये उसी रोग का रस लेकर शरीर में सूई से प्रवेश करना, विवाह संबंध स्थिर करने के लिये वर के मस्तक पर तिलक लगाने तथा कुछ धन आदि देने की प्रथा, दोनों भौंह के बीच का मस्तक का भाग, श्रेष्ठ मनुष्य, शिरोमणि, राजगद्दी, राज्य का उत्तराधिकारी, युवराज ।
टीकाकार-(सं०पुं०) व्याख्याकार, वह जो किसी ग्रन्थ का अर्थ लिखता हो
टीप-(हिं०स्त्री०) दाब, दबाव, हलका प्रहार, छत की पिटाई, धनुष के चिल्ले से उत्पन्न ध्वनि, तीव्र शब्द, दूध और पानी का शीरा, रूठना, वह लकीर जो बिना पलस्तर की भीत पर ईंटों के जोड़ों में मसाला देकर बनाई जाती है, जन्मपत्री, टिप्पन, गंजीफ़े का एक खेल, सेना का एक भाग, हुंडी, स्मरण रखने के लिये किसी बात को टांक लेने की क्रिया;
टीपटाप-(हिं०स्त्री०) आडंबर, ठाटबाट, दिखावट । **टीपन**-(हिं०स्त्री०) गाँठ, टांका, थेट्टा, जन्मपत्री । **टीपना**-(हिं०क्रि०) अंकित करना, जंगीफ़े के खेल की जीत, ऊंचे स्वर से गाना; टीप लगाना, प्रहार करना, धीरे धीरे ठोंकना, चाँपना ।
टीवा-(हिं०पुं०) भीटा, टीला ।
टीमटाम-(हिं०स्त्री०) शृंगार, सजावट, तड़क भड़क, पाखण्ड ।
टीला-(हिं०पुं०) पृथ्वी का तल से ऊंचा भाग, भीटा, मिट्टी या बालू का ऊंचा ढेर, छोटी पहाड़ी ।
टीस-(हिं०स्त्री०) ठहर ठहर कर होने वाली शरीर की पीड़ा, चमक;
टीसना-(हिं०क्रि०) ठहर ठहर कर पीड़ा होना, कसक होना ।
टुंगना-(हिं०क्रि०) कोमल पत्तियों को दाँत से कुतरकर खाना, कुतरना ।
टुंच-(हिं०वि०) क्षुद्र, नीच, तुच्छ ।
टुंटा-(हिं०वि०) बिना हाथ वाला, लूला
टुंड-(हिं०पुं०) वह वृक्ष जिसकी शाखा कट गई हो, ठूंठ, बिना पत्तियों का वृक्ष, कटे हुए हाथ का, लूला ।
टुंडा-(हिं०वि०) ठूंठा, जिसमें शाखा और पत्तियां न हों, लूला, लुंजा, एक सींघ का बैल, डूंड़ा, (पुं०) लूला मनुष्य । **टुंडी**-(हिं०स्त्री०) बाहुदण्ड, भुजा (वि०) जिसके हाथ न हो, लूली ।
टुइयाँ-(हिं०स्त्री०) छोटे जात का सुग्गा, सुग्गी, (वि०) नाटा, बौना, छोटी झारी
टुक-(हिं०वि०) किञ्चित्, तनिक, थोड़ा
टुकड़गदा-(हिं०पुं०) घरघर रोटी का टुकड़ा मांगने वाला, भिखारी; (वि०) तुच्छ, नीच, निर्धन, कंगाल ।
टुकड़गदाई-(हिं०पुं०) देखो टुकड़गदा (स्त्री०) टुकड़ा मांगने का काम ।
टुकड़तोड़-(हिं०पुं०) पराश्रित मनुष्य, वह मनुष्य जो दूसरे का दिया हुआ अन्न खाकर रहता है ।
टुकड़ा-(हिं०पुं०) काटा हुआ अंश, खण्ड, भाग, हिस्सा, रोटी का टुकड़ा, ग्रास; **टुकड़ा तोड़ना**-पराश्रित रहना, दूसरे के दिये हुए अन्न पर निर्वाह करना; **टुकड़ा माँगना**-भिक्षा मांगना; **टुकड़ा सा जबाब देना**-स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना । **टुकड़ी**-(हिं०स्त्री०) खण्ड, छोटा टुकड़ा, मण्डली, समुदाय, दल, झुंड, जत्था, सेना का एक भाग, कपड़े का टुकड़ा या थान ।
टुकनी-(हिं०स्त्री०) देखो टोकनी ।
टुकरी-(हिं०स्त्री०) देखो टुकड़ी ।
टुघलाना-(हिं०क्रि०) मुख में रखकर धीरे धीरे कुचलना, चुभलाना, पागुर करना ।
टुच्चा-(हिं०वि०) तुच्छ, नीच, ओछा ।
टुटका-(हिं०पुं०) देखो टोटका ।
टुटनी-(हिं०स्त्री०) पतली नली, छोटी टोंटी ।
टुटपुंजिया-(हिं०वि०) थोड़ी पूंजी का,
टुटरूं-(हिं०पुं०) छोटी पेड़की, **टुटरूंटूं**-(हिं०स्त्री०) पेड़की की बोली, (वि०) अकेला, दुर्बल, दुबला पतला ।
टुटुका-(हिं०स्त्री०) चमड़े से मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा ।
टुड्डी-(हिं०स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी, टुकड़ी, डली
टुण्टुक-(सं० पुं०) सोनापाठा, (वि०) अल्प, थोड़ा ।
टुनका-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मूत्ररोग ।
टुनकी-(हिं०स्त्री०) एक परदार कीड़ा जो धान की उपज को हानि पहूँचाता है ।
टुनगा-(हिं०पुं०) डाल का आगे का भाग
टुनगी-(हिं०स्त्री०) टहनी का अगला भाग जिसकी पत्तियां छोटी और कोमल होती हैं ।
टुनहाया--(हिं० विं०) जादू टोना करनेवाला ।
टुनहाई-(हिं०स्त्री०) टोना करनेवाली स्त्री
टुन्ना-(हिं०पुं०) वृक्ष की वह नाल जिसमें फल लगता है ।
टुपकना-(हिं०क्रि०) धीरे से काटना या डंक मारना, चुगली खाना ।
टुम्मा-(हिं०पुं०) वह रसीद जो रुपया मिलने पर लिख दी जाती है ।
टुर्रा-(हिं०पुं०) कण, टुकड़ा, दाना, डली
टुसकना-(हिं०क्रि०) देखो टसकना ।
टूं-(हिं०स्त्री०) गुदा से वायु निकलने का शब्द ।
टूंगना-(हिं०क्रि०) कोमल पत्तियों को दांत से काटना, थोड़ा थोड़ा करके खाना ।
टूंड़-(हिं०पुं०) डँसनेवाले कीड़ों के मुख के आगे निकली हुई दो पतली नलियां जिसको चुभा कर वे रक्त चूसती हैं, गेहूँ जव धान आदि की बालों के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अवयव, सींग । **टूंड़ी**-(हिं०स्त्री०) छोटा टूंड़, नाभि, ढोंढ़ी, गाजर मुरई आदि की नोक, किसी पदार्थ की नोक जो दूर तक निकली हो।
टूक-(हिं०पुं०) टुकड़ा खंड ।
टूकर-(हिं०पुं०) टुकड़ा, खण्ड; देखो टूक ।
टूका-(हिं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा, रोटी के चार भाग में से एक भाग, रोटी का टुकड़ा, भीख ।
टूट-(हिं०स्त्री०) टूट कर अलग हो गया हुआ अंश, खण्ड, टुकड़ा, टूटने का भाव, भूल, त्रुटि, भूल से छूटा हुआ वह शब्द या वाक्य जो पुस्तक के किनारे पर पीछे लिखा जाता है (पुं०) घाटा, टोटा; **टूटना**-(हिं०क्रि०) खण्डित होना, भग्न होना, टुकड़े टुकड़े होना, चलते हुए क्रम का भंग होना, किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना, झुकना, झपटना, आक्रमण करना, अकस्मात् कहीं से जाना, क्षीण होना दुर्बल होना, अलग होना; रुपये का बाकी पड़ना, हानि, होना, टोटा होना, निर्धन होना, शरीर में पीड़ा होना, संबंध छूटना, युद्ध में दुर्ग का लिया जाना; **टूट टूट कर बरसना**-मुसलाधार वृष्टि होना ।
टूटा-(हिं०वि०) खण्डित, भग्न, टुकड़ा किया हुआ, शिथिल, दुर्बल, निर्धन; **टूटी फूटी बोली**-असंबद्ध वार्ता, अस्पष्ट बोली ।
टूठना-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट होना, तृप्त होना ।
टूठनि-(हिं०स्त्री०) सन्तोष, तुष्टि ।

टूठ रोटी-(हिं०स्त्री०) चुंगी, शुल्क।
टूम(हिं०स्त्री०) आभूषण, गहना, धक्का, झटका, व्यंग, ताना, सुन्दर स्त्री, चतुर मनुष्य; **टूमटाम**-वस्त्र तथा गहना
टूमना-(हिं०क्रि०) धक्का देना, ताना मारना।
टूसा-(हिं० पुं०) खण्ड, टुकड़ा, कली।
टूसी-(हिं०स्त्री०) फूल की कली।
टें-(हिं०स्त्री०) सुग्गे की बोली; **टें टें करना**-वृथा की बकवाद करना; **टें बोलना**-मर जाना।
टेंकिका-(हिं०स्त्री०) ताल का एक भेद।
टेंगड़ा, टेंगना-(हिं०) एक प्रकार की मछली।
टेंघुना-(हिं० पुं०) घुटना। **टेंघुनी**-(हिं०स्त्री०) घुटने पर की चक्की।
टेंट-(हिं०स्त्री०) कमर पर लपेटी हुई धोती की ऐंठन, कपास की ढोढ़ी; देखो टेंटर करील वृक्ष।
टेंटड़, टेंटर-(हिं०पु०) आंख के ढेले पर चोट या रोग के कारण मांस का उभड़ा हुआ भाग, ढेंढर।
टेंटा-(टेंटार)-(हिं०पुं०) एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।
टेंटी-(हिं०स्त्री०) करील वृक्ष (वि०) व्यर्थ झगड़ने वाला।
टेंटुवा-(हिं०पु०) गला, घेंटू, अंगूठा।
टेंटें-(हिं०स्त्री०) सुग्गे की बोली, व्यर्थ की बकवाद।
टेंड़, टेंड़सी-(हिं०स्त्री०) देखो टिंड।
टेउकी-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु को लुड़कने या गिरने से बचाने के लिये लगी हुई वस्तु, आड़, रोक, ओट।
टेक-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु को अड़ाये रखने के लिये नीचे से लगाया हुआ खंभा, आश्रय, सहारा, थूनी, चांड़, बैठने का ऊँचा चबूतरा, अवलम्ब, हठ, संस्कार, अभ्यास, गीत का पद, स्थायी, छोटी पहाड़ी, ऊंचा टीला; **टेक निभाना**-प्रतिज्ञा पूर्ण होना; **टेक पकड़ना**-हठ करना।
टेकड़ी-(हिं०स्त्री०) टीला।
टेकन-(हिं०पुं०) अटकन, रोक, चांड।
टेकना-(हिं०क्रि०) सहारा लेना, ठहराना, हाथ का सहारा लेना, सहारे के लिये थांमना, बीचा में पकड़ना या रोकना, जिद् करना; **माथा टेकना**-पैर छूना, प्रणाम करना।
टेकनी-(हिं०स्त्री०) देखो टेकन।
टेकर, टेकरा-(हिं०पुं०) टीला, भीटा, छोटी पहाड़ी। **टेकरी**-(हिं० स्त्री०) देखो टेकरा।
टेकला-हिं०स्त्री०) धुन, रट।
टेकली-(हिं०स्त्री०) वह यन्त्र जिससे कोई भारी चीज़ उठाई जाती है।
टेकान-(हिं०पुं०) टेक, चाड़, खंभा, ऊंचा चबूतरा जिस पर ढोने वाला बोझ रखकर कुछ काल के लिये सुस्ता लेता हैं, धरमढीहा। **टेकाना**-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को ले जाने को सहारा देने के लिये थांमना, सहारा देने के लिये पकड़ना।
टेकानी-(हिं० पु०) वह लोहे की कील जो पहिये को रोकने के लिये लगाई रहती है, किल्ली।
टेकी-(हिं०पुं०) अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर रहने वाला मनुष्य (वि०) हठी, दुराग्रही।
टेकुआ-(हिं०पुं०) कते हुए हुए सूत को लपेटने का चरखे का तकला, वह वस्तु जिससे कोई वस्तु अड़ाई जाती है।
टेकुरी-(हिं०स्त्री०) सुआ लगी हुई फिरकी जिसमे रस्सी या सूत बटा जाता है, सूत कातने का तकला, तागा खींचने और निकालने का चमार का सुआ, जुलाहे की फिरकी।
टेघरना-(हिं०क्रि०) पिघलना, गलना।
टेटका-(हिं०पुं०) कान का एक प्रकार का गहना।
टेढ़-(हिं०पुं०) वक्रता, टेढापन, ऐंठन।
टेढ़ बिड़ंगा-(हिं०वि०) टेढ़ा, बेढंगा, टेढा मेढा।
टेढ़ा-(हिं०वि०) वक्र, कुटिल, जो एक सीध में न हो, तिरछा, इधर उधर घूमा या झुका हुआ, जो समानान्तर न हो, उद्धत, पेचीला, कठिन; **टेढी खीर**-कठिन कार्य; **टेढा होना**, क्रुद्ध होना, बिगड़ना, भयंकर रूप धारण करना; **टेढी सीधी सुनाना**-भली बुरी बात सुनाना।
टेढ़ई, टेढ़ाई-(हिं० स्त्री०) टेढापन।
टेढ़ापन-(हिं०पु०) टेढा होने का भाव।
टेढ़े-(हिं०क्रि०वि०) घुमाव फिराव के साथ, पेचीली तरह से; **टेढे टेढे जाना**-इतरा कर चलना।
टेना-(हिं०क्रि०) शस्त्र को पैना तीखा करने के लिये पत्थर आदि पर रगड़ना, मूंछ के बालों को खड़ा करने के लिये ऐंठना।
टेनी-(हिं०स्त्री०) छोटी अंगुली।
टेम-(हिं०स्त्री०) दीपक की ज्योति, दीपशिखा, लौ, समय।
टेमन-(हिं०पु०) एक प्रकार का साँप।
टेमा-(हिं०पुं०) कटे हुए चारे की छोटी अँटिया।
टेर-(हिं०स्त्री०) गाने में ऊँचा स्वर, तान, टीप, पुकारने का शब्द, बुलाहट, निर्वाह।
टेरक-(सं०पु०) ऐंचा, भेंगा।
टेरना-(हिं०क्रि०) तान लगाना, पुकारना, बुलाना, पूरा करना, निबाहना, बिताना।
टेरवा-(हि० पुं०) हुक्के की नली।
टेरा-(हिं०पुं०) वृक्ष स्तम्भ, पेड़ की धड़ (वि०) ऐंचा ताना।
टेरी-(हिं०स्त्री०) पतली शाखा, टहनी, एक प्रकार की सरसों।
टेव-(हिं०स्त्री०) अभ्यास, बान।
टेवकी-(हिं०स्त्री०) नाव की सबसे ऊपर की छोटी पाल।
टेवना-(हिं०क्रि०) देखो टेना।
टेवा-(हिं०पुं०) जन्मकुण्डली, लग्नपत्रिका, जन्मपत्री, वह लग्नपत्र जिसमे विवाह की मिती, दिन घटी पल आदि लिखी रहती है।
टेसू-(हिं०पु०) पलाश का फूल, ढाक का फूल लड़कों का एक उत्सव जिसमें वे विजया दशमी के दिन गाते हुए द्वार द्वार घूमते हैं।
टेंवैया-(हिं०वि०) हथियार चोखा करने वाला।
टैयां-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिपटी कौड़ी, चित्ती।
टैन-(हिंस्त्री०) एक प्रकार की घास जो चमड़ा सिझाने के काम में आती है।
टोआ-(हिं०पुं०) गर्त, गड्ढा।
टोइयां-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा सुग्गा जिसकी ठोर पीली तथा कण्ठ बैगनी रंग का होता है।
टोई-(हिं०स्त्री०) अंगुली की पोर।
टोंका-(हि० पुं०) किनारा, सिरा, कोना, नोक।
टोंगा-(हिं०पु०) देखो टांगा।
टोंगू-(हिं०पुं०) एक प्रकार की झाड़ी जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है।
टोंचना-(हिं०क्रि०) चुभाना, गड़ाना।
टोंट-(हिं० स्त्री०) पक्षी की चोंच ठोर।
टोंटा-(हिं०पुं०) पक्षी की चोंच के आकार की पानी आदि गिराने के लिये पात्र में लगी हुई नली।
टोंटी-(हिं०स्त्री०) भारी में लगी हुई नली, पशुओं का थूथुन।
टोक-(हिं०पुं०) उच्चारण किया हुआ अक्षर; (स्त्री०) प्रश्न करके किसी बात में बाधा डालना, बुरी दृष्टि का प्रभाव; **टोकटाक**-पूछताछ करके बाधा डालना; **रोकटोक**-निषेध, रुकावट। **टोकना**-(हिं०क्रि०) प्रश्न आदि करके किसी कार्य में बाधा डालना, बीच में बोल उठना, बुरी दृष्टि डालना, नजर लगाना, लड़ने के लिये ललकारना; (पुं०) एक प्रकार का टोकारा, डंडा।
टोकनी-(हिं० स्त्री०) टोकरी, डलिया, पानी रखने का छोटा पात्र, बटलोही, डेगची।
टोकरा-(हिं०पुं०) खांचा, झाबा, डला। **टोकरी**-(हिं०स्त्री०) छोटा डला, झांपी, झपोली, बटलोही, डेगची।
टोकवा-(हिं०पुं०) नटखट बालक।
टोकसी-(हिं०स्त्री०) नारियल की आधी खोपड़ी।
टोका-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा जो उर्द की उत्पत्ति को हानि पहुंचाता है।
टोट-(हिं०पुं०) देखो टोटा।
टोकारा-(हिं०पुं०) स्मरण दिलाने के लिये कही हुई कोई बात।
टोटका-(हिं०पुं०) तान्त्रिक प्रयोग, यंत्र मन्त्र, टोना; लटका, वह काली हांडी जो खेत में कुदृष्टि न लगने के लिये टांग दी जाती है; **टोटका करने आना**-आकर तुरंत चले जाना;
टोटकहाई-(हिं० स्त्री०) जादू टोना करनेवाली स्त्री।
टोटा-(हिं०पु०) बांस का खण्ड, मोमबत्ती का जल कर बचा हुए शेष, कारतूस, घाटा, हानि, कमी, अभाव
टोड़ा-(हिं०पुं०) दीवार में गड़ी हुई खूंटी जो आगे की ओर लटकी हुई छाजन को सहारा देने के लिये लगाई जाती है, टोंटा।
टोड़ी-(हिं०स्त्री०) रागिणी का एक भेद।
टोनहा-(हिं०वि०) जादू टोना करनेवाला
टोनहाई-(हिं०स्त्री०) जादू टोना करने वाली स्त्री; जो स्त्री मंत्र पढ़कर झाड़ फूंक करती है, कुदृष्टि लगाने वाली स्त्री। **टोनहाया**-(हिं० पुं०) जादू टोना करने वाला मनुष्य।
टोना-(हिं०पुं०) मन्त्र तन्त्र का प्रयोग, जादू टोना, एक प्रकार की गीत जो विवाह के अवसर पर गाई जाती है, एक प्रकार की आखेटी चिड़िया; (क्रि०) छूना, हाथ से टटोलना। **टोनाहाई**-(हिं०स्त्री०) देखो टोनहाई।
टोप-(हिं०पु०) बड़ी टोपी, सिर पर पहरने का बड़ा पहरावा, वह लोहे की टोपी जो लड़ाई के समय शिर की रक्षा के लिये पहिरी जाती है, शिरस्त्राण, कूंड, खोल, अंगुली पर पहिरने की धातु की टोपी, बूंद।
टोपन-(हिं०पुं०) टोकरा, खांचा।
टोपा-(हि० पुं०) बड़ी टोपी जो कान तक ढाँपने के लिये पहिरी जाती है, टोकरा, टाँका, डोभ।
टोपी-(हिं०स्त्री०) शिर पर का पहरावा, राजमुकुट, ताज, कोई गोल वस्तु जो गहरी हो, कटोरी, धातु की बनी हुई एक कटोरी जिसमें बंदूक के घोड़े का आघात पहुँचने पर आग लगती है, बन्दूक का पड़ाका, आखेटी पशु के मुख पर चढ़ाई जाने वाली थैली, लिंग का अग्र भाग। **टोपीदार**-(हिं०वि०) टोपी लगी हुई। **टोपीवाला**-(हिं०पुं०) वह दरज़ी जो टोपियां बनाता है, अहमदशाह और नादिरशाह की सेना के सिपाही जो टोपियां पहन कर भारतवर्ष में आये थे।
टोभ-(हिं०पुं०) टांका।
टोर-(हिं०स्त्री०) शोरे की मिट्टी का पानी, कटारी।
टोरना-(हिं०क्रि०) अलगाना, तोड़ना; **आँख टोरना**-लज्जावश आँख छिपा लेना।
टोरा-(हिं० पुं०) जुलाह का रेशम तौलने का तराजू।
टोर्रा-(हिं०पुं०) छिलका सहित अरहर का खड़ा दाना जो दाल में रह

जाता है।

टोरू-(हिं०पु०) देखो टौर्रा।

टोल-(हिं०स्त्री०) समूह, मण्डली, जत्था, झुंड, चटसाल, पाठशाला, सम्पूर्ण जाति का एक राग।

टोला-(हिं०पु०) महल्ला, बड़ी बस्ती का एक भाग, रोड़ा, पत्थर या ईंट का टुकड़ा, चोट से पड़ा हुआ चिह्न, बड़ी कौड़ी। **टोलिया**-(हिं०स्त्री०) छोटा मोहल्ला, टोली।

टोली-(हिं०स्त्री०) बस्ती का छोटा भाग, समूह, झुण्ड, मंडली, जत्था, पत्थर की चौकोर पटिया, सिल, एक प्रकार का बांस।

टोवना-(हिं०क्रि०) टोना, टटोलना।

टोवा-(हिं० पु०) पानी की गहराई नापने वाला माँझी।

टोह-(हिं०स्त्री०) अन्वेषण, खोज, ढूँढ, देख-भाल। **टोहना**-(हिं०क्रि०) खोजना, पता लगाना। **टोहाटाई**-(हिं०स्त्री०) अन्वेषण, छानबीन, देख भाल। **टोहिया**-(हिं० वि०) ढूँढने वाला, भेदिया, जासूस।

टौरना-(हिं०क्रि०) जांच करना, थाह लेना, पता लगाना।

ठ

ठ-संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का तेरहवां अक्षर, टवर्ग का द्वितीय वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है अर्थात् यह अक्षर जीभ के मध्य भाग को तालु मे लगाने से होता है।

ठ-(सं०पुं०) शिव, महादेव, महाध्वनि, चन्द्रमण्डल, शून्य, स्थान, लोकगोचर इन्द्रियग्राह्य वस्तु।

ठंठ-(हिं०वि०)जिस वृक्ष की शाखा और पत्तियाँ काटकर या सूखकर गिर-गई हों, ठूंठा, सूखा, परिवारशून्य, असहाय।

ठंठनाना-(हिं०क्रि०) ठनठन शब्द होना या करना।

ठंठार-(हिं०वि०) रिक्त, छूंछा, खाली।

ठंठी-(हिं० स्त्री०) दाना पीटनेके बाद बालों में लगा हुआ अनाज (वि०) जिस गाय या भैंस को बच्चा न हो और जो दूध न देती हो।

ठंठपाल-(हिं०वि०) निर्धन, धनहीन।

ठंड, ठंडक-(हिं०स्त्री०) देखो ठंढ, ठंढक।

ठंडा-(हिं० वि०) देखो ठंढा। **ठंडई**-(हिं०स्त्री०) देखो ठंढई।

ठंढ-(सं०स्त्री०) शीत, जाड़ा, ठंढक; **ठंढ पड़ना**-शीत का वेग बढना, **ठंढ लगना**-जाड़ा लगना। **ठंढई**-(हिं०स्त्री०) शरीर में ठंढक पहुँचाने वाले पदार्थ, भांग, विजया। **ठंढक**-(हिं०स्त्री०) उष्णता का अभाव, ठंढ, जाडा, तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता, रोग या उपद्रव की शान्ति; **ठंढक पड़ना**-शीत का प्रभाव होना, तृप्त होना, किसी उपद्रव की शान्ति होना। **ठंढा**-(हिं० वि०) शीतल, जिसमे उष्णता न हो, उद्गार रहित, बुझा हुआ उत्साहहीन, नपुंसक, मन्द, उदासीन, गंभीर, शान्त, जिसको शीघ्र क्रोध न आता हो, विरोध न करने वाला, धीमा, प्रसन्न, तृप्त, निश्चेष्ट, जड़, मरा हुआ, जिसमे चमक दमक न हो; **ठंढा करना**-शीतल करना, क्रोध के वेग को शांत करना, तोड़ना, फेकना, दीपक को बुझाना, उपद्रव के आवेग को दबा देना; **ठंढा होना**-अन्त होना, मर जाना, चहल-पहल न होना, काम काज मन्दा पड़ना; **ठंढेठंढे**-बिना अवरोध के, आनन्द से, बड़े तड़के; **ठंढा रखना**-किसी बात का कष्ट न होने देना।

ठंढाई-(हिं० स्त्री०) शरीर की गरमी शान्त करने वाली दवा, सिद्धि, पीसी हुई भाग।

ठंढा मोलम्मा-(हिं० पुं०) बिना तपाये हुए सोना चांदी चढाने की रीति।

ठंढी-(हिं०वि०) शीतल (स्त्री०) शीतला रोग, चेचक; **ठंढी ढलना**-शीतला के दानों का धीरे धीरे सूखना; **ठंढी निकलना**-शीतला रोग के दाने शरीर पर निकल आना।

ठई-(हिं०वि०)स्थिर की हुई, ठहराई हुई

ठक-(हिं०स्त्री०) दो वस्तुओं के परस्पर टकराने का शब्द, (वि०) स्तब्ध, भौचक्का; (पुं०) चंडूबाजों की किवाम लगाने की सलाई; **ठक होना**-स्तब्ध होना, आश्चर्य या व्यग्रता से अवाक् हो जाना। **ठकठक**-(हिं०स्त्री०) ठकठक का शब्द, प्रपच, झंझट, झगड़ा, टंटा, बखेड़ा। **ठकठकाना**-(हिं०क्रि०) ठोंकना, पीटना, ठकठक करना, खटखटाना। **ठकठकाहट**-(हिं०स्त्री०) ठकठक शब्द।

ठकठकिया-(हिं०वि०)टंटा करने वाला, बखेड़िया, झगड़ालू।

ठकठौवा-(हिं० पु०) एक प्रकार की करताल जिसको बजाकर भिखमंगे भीख माँगते है, एक प्रकार की छोटी हलकी नाव।

ठकार-(सं०पुं०) "ठ" स्वरूप वर्ण।

ठकुरई-(हिं०स्त्री०) देखो ठकुराई।

ठकुरसुहाती-(हिं० स्त्री०) दूसरों को प्रसन्न करने के लिये कही जाने वाली बात, चाटूक्ति।

ठकुराइत-(हिं०स्त्री०) देखो ठकुरायत।

ठकुराइन-(हिं० स्त्री०) ठाकुर की स्त्री, स्वामिनी, मालकिन, क्षत्रिय की स्त्री, क्षत्राणी, नाइन, नाउन। **ठकुराई**-(हिं०स्त्री०) आधिपत्य, प्रभुत्व, सरदारी, प्रधानता, ठाकुर का अधिकार, उच्चता, महत्व, श्रेष्ठता, बड़ाई, राज्य, बड़प्पन।

ठकुरानी-(हिं०स्त्री०) ठाकुर की स्त्री, सरदारिन, रानी, स्वामिनी, अधीश्वरी, क्षत्रिय की स्त्री, क्षत्राणी।

ठकुराय-(हिं०पुं०) क्षत्रिय जाति का एक भेद। **ठकुरायत**-(हिं०स्त्री०) प्रभुत्व, आधिपत्य, सरदारी, अधिकार,

ठकोरी-(हिं०स्त्री०) साधुओं की कमर टेकने की T के आकार की लकड़ी, बैरागिन।

ठक्कर-(हिं०स्त्री०) दो पदार्थों का परस्पर आघात, टक्कर।

ठक्कुर-(हिं०पुं०) देवप्रतिमा, पूजा करने की किसी देवता की मूर्ति, मैथिल तथा गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि, देवता तथा ब्राह्मण तुल्य पूजनीय व्यक्ति।

ठग-(हिं०पुं०) डाकू, धोखा देकर किसी का धन हरने वाला, धूर्त, छली, चचल; **ठग लगना**-यात्रा मे ठगो से पीछा किया जाना, ठगो का आधिक्य। **ठगई**-(हिं०स्त्री०) ठगो का या कार्य, छल, धूर्तता।

ठगण-(सं०पुं०) पांच मात्राओं का एक गण जो मात्रिक छन्दो मे प्रयोग होता है।

ठगना-(हिं०क्रि०) धोखा देकर किसी का धन छीन लेना, धूर्तता करना, छलना, धोखा देना, भुलावा देना, किसी माल के बेचने मे उचित से अधिक दाम लेना, ठगा जाना, धोखा खाना, आश्चर्य से स्तब्ध होना, लुटा जाना, दंग होना; **ठगासा**-भौचक्का, स्तब्ध, चकित, धोखा खाया हुआ।

ठगनी-(हिं०स्त्री०)ठग की स्त्री, वह स्त्री जो दूसरे को भुलावा देकर उसका माल छीन लेती है, धूर्त स्त्री, कुटनी।

ठगपन, ठगपना-(हिं०पुं०) ठगने या छलने का कार्य या भाव, कपट, छल, धूर्तता। **ठगमूरी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की विषैली जड़ी बूटी जिसको खिलाकर ठग लोग पथिकों को अचेत करके लूटते थे; **ठगमूरी खाना**-मतवाला होना, सुधबुध खो बैठना, बेसुध होना। **ठगमोदक, ठगलाड़ू**-(हिं०पुं०) मादक पदार्थो को मिलाकर बनाया हुआ लड्डू जिसको ठग लोग किसी बहाने से पथिकों को खिला देते थे और जब उसके खाने से पथिक मूर्छित हो जाता था तब इसका सर्वस्व हरण कर लेते थे; **ठगलाड़ू खाना**-बेसुध होना, स्तब्ध होना

ठगवाई-(हिं०पुं०) ठग। **ठगवाना**-(हिं०क्रि०) किसी को दूसरे से धोखा दिलवाना। **ठगविद्या**-(हिं०स्त्री०)छल, कपट, धूर्तता। **ठगहाई**-(हिं०स्त्री०) बंचकता, ठगपना। **ठगहारी**-(हिं०स्त्री०) ठगपन, ठगी। **ठगाई**-(हिं०स्त्री०) ठगपन, ठगी। **ठगाठगी**-(हिं०स्त्री०) धूर्तता,

ठगाना-(हिं०क्रि०) धोखे में आ जाना; ठगा जाना। **ठगाही**-(हिं०स्त्री०) देखो ठगाई, ठगहाई। **ठगिन, ठगिनी**-(हिं०स्त्री०) वह स्त्री जो दूसरे को धोखा देकर उसका धन लूटती है, ठग की स्त्री, धूर्त स्त्री, लुटेरिन।

ठगिया-(हिं०पुं०) धूर्त, छली, वंचक, ठग। **ठगी**-(हिं०स्त्री०) ठग का काम, ठगने या लूटने का भाव, धूर्तता, चालबाजी।

ठगोरी-(हिं०स्त्री०) मोहित करने की शक्ति, छल, जादू टोना, भुलावा, वंचकता।

ठट-(हिं०पुं०) भीड़, झुड, जमावड़ा, समूह, पक्ति, रचना, सजावट, बनावट; **ठट के ठट**-झुड के झुड, समुदाय मे; **ठट लगाना**-भीड़ लगना, ढेर लगना; **ठटकीला**-ठाठदार, तड़क, भड़क वाला।

ठटना-(हिं०क्रि०)स्थिर करना, निश्चित करना, ठहराना, सुसज्जित करना, आरभ करना, छोड़ना, तैयार करना, गीत आरभ करना; **ठट कर बोलना**-प्रत्येक शब्द पर जोर दे देकर बोलना।

ठटनि-(हिं०स्त्री०) आडंबर, सजावट, रचना। **ठटरी**-(हिं०स्त्री०)अस्थिपजर, हड्डियों का ढाँचा, किसी वस्तु का ढाँचा, घास भूसा बांधने की जाल, खड़िया, मुरदा उठाने की अरथी; **ठटरी होना**-अति दुर्बल होना, शरीर मे केवल अस्थि मात्र रह जाना।

ठटु-(हिं०पुं०) ठाटबाट, सजावट, श्रृंगार

ठट्ट-(हिं०पु०) समुदाय, समूह, झुड।

ठट्टी-(हिं०स्त्री०) ढाँचा, ठठरी, अस्थिपजर।

ठट्ठई-(हिं०स्त्री०)हँसी दिल्लगी, उपहास

ठट्ठा-(हिं०पुं०) हंसी दिल्लगी, उपहास; **ठट्ठा उड़ना**-उपहास करना; **ठट्ठा लगाना**-खिलखिला कर हँसना; **ठट्ठेबाज**-उपहासक; **ठट्ठेबाजी**-उपहास।

ठठ-(हिं०पुं०) झुड, जमावड़ा, समूह। **ठठई**-(हिं०स्त्री०) उपहास।

ठठक-(हिं०स्त्री०)अवरोध, रुकावट, भय; **ठठकना**-(हिं०क्रि०) सहसा रुकना या ठहर जाना, किसी कार्य मे प्रवृत्त होना, स्तभित होना, भौंचक रह जाना। **ठठकान**-(हिं०स्त्री०) रुकावट, अवरोध।

ठठना-(हिं०क्रि०) देखो ठटना।

ठठरी-(हिं०स्त्री०) देखो ठटरी।

ठठरा-(हिं०पुं०) टट्टर, ओट।

ठठवा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा वस्त्र, गज्जी।

ठठा-(हिं०पु०) देखो ठट्ठा।

ठठाई-(हिं०स्त्री०) मारपीट, ठोकाई।

ठठाना-(हिं०क्रि०) आघात लगाना, पीटना, ठोंकना, ठट्ठा मार कर हँसना।

ठठिरिन-(हिं० स्त्री०) देखो ठठेरिन, ठठेरे की स्त्री।
ठठेरमंजारिका-(हिं०स्त्री०)ठठेरे कीबिल्ली जो खट खट के शब्द से नहीं डरती।
ठठेरा-(हिं०पुं०) पीतल तांबे आदि के पात्र बनाने वाला, कसेरा, ज्वार बाजरे का डंठल; **ठठेरे ठठेरे बदलौवल**-जैसे से तैसा व्यवहार, दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार; **ठठेरे की बिल्ली**-ऐसा मनुष्य जो किसी खटके से नहीं चौंकता या घबड़ाता।
ठठेरिन-(हिं०स्त्री०) ठठेरे की स्त्री।
ठठेरी-(हिं०पुं०)ठठेरिन, बरतन बनाने का काम, ठठेरे का काम ; **ठठेरी बाजार**-जिस बाजार में ठठेरे पात्र आदि बनाते और बेंचते हैं।
ठठोल-(हिं०पु०) हँसी, उपहास। **ठठोलिया**-(हिं०पु०) ठट्ठेबाज। **ठठोली**-(हिं०स्त्री०) उपहास।
ठड़कना-(हिं०क्रि०) ठठकना।
ठड़ा-(हिं०वि०) खड़ा हुआ।
ठड़िया-(हिं०पुं०) एक प्रकार का नैचा।
ठड्डा-(हिं०पु०) पीठ की रीढ़ की हड्डी, पतंग (गुड्डी) के बीच की खड़ी सींक या तीली।
ठढ़ा-(हिं०वि०) लंबमान, खड़ा हुआ।
ठढ़िया-(हिं०स्त्री०)काठ की ऊँची ओखली जिसमें धान खड़े होकर कूटा जाता है। **ठढ़ियाना**-(हिं०क्रि०)खड़ा होना।
ठन-(हिं०स्त्री०) धातु के किसी पदार्थ पर आघात का शब्द। **ठनक**-(हिं० स्त्री०) ढोल मृदंग आदि की ध्वनि, ठहर ठहरकर चोट लगने के समान पीड़ा, टीस ; **ठनकना**-(हिं०क्रि०) ठनठन शब्द होना, ढोल, तबला आदि बाजे का बजना, ठहर ठहर कर पीड़ा होना, टीसना ; **माथा ठनकना**-बुरे लक्षण को देख कर चित्त व्यग्र होना, खटका उत्पन्न होना।
ठनका-(हिं०पुं०) धातु के टुकड़े पर चोट पड़ने का शब्द, आघात, ठोकर टीस, ठहर ठहर कर होने वाली पीड़ा। **ठनकाना**-(हिं०क्रि०) किसी धातु के टुकड़े या ढोल, मृदंग आदि पर चोट लगा कर शब्द उत्पन्न करना, बजना, रुपये को बजाकर परख करना; **रुपया ठनका लेना**-बजाकर रुपया लेना, रुपया आदाय कर लेना। **ठनकार**-(हिं०पुं०)ध्वनि, शब्द,धातु के टुकड़े से उत्पन्न शब्द।
ठनगन-(हिं०पु०) अड़, हठ, दुलार के कारण मचलाहट।
ठनठन-(हिं०पुं०) धातु खण्ड के बजने का शब्द। **ठनठन गोपाल**-(हिं०पुं०) निःसार वस्तु, तुच्छ पदार्थ, निर्धन मनुष्य, खोखा मनुष्य। **ठनठनाना**-(हिं०क्रि०) ठनठन शब्द निकालना, बजाना, रुपये को पटककर शब्द करना, ठनठन शब्द होना।
ठनना-(हिं०क्रि०) दृढ़ संकल्प से किसी कार्य को आरम्भ करना, पक्का होना, छिड़ना, निमग्न होना, ठहरना, उद्यत होना, लगना, जमना, निश्चित होना। **ठनाका**-(हिं०पुं०) ठनकार, ठनठन का शब्द। **ठनाठन**-(हिं०क्रि०वि०) निरन्तर ठनकार के साथ ठनठन शब्द करते हुए।
ठपका-(हिं०पुं०)ठोकर, आघात,धक्का
ठपना-(हिं०क्रि०)प्रयुक्त करना,लगाना, मन में दृढ़ होना, स्थापित करना, ठहराना, स्थित होना,जमना,लगना, आरम्भ करना, निश्चित करना, पक्का करना, समाप्त करना।
ठप्पा-(हिं०पुं०) साँचा, छापा,बेलबूटा आदि खुदा हुआ लकड़ी या धातु का टुकड़ा जिसमें रंग पोतकर कपड़े आदि पर छापा जाता है,एक प्रकार का गोटा
ठमोली-(हिं०स्त्री०) ठिठोली, ताना।
ठमक-(हिं०स्त्री०) चलते चलते रुक जाने का भाव रुकावट, ठहराव, लचक की चाल। **ठमकना**-(हिं०क्रि०) रुकना, ठहरना, ठिठकना, चलते चलते रुक जाना, रुक रुक कर मटकते हुए चलना, हाव भाव दिखलाते हुए चलाना। **ठमकाना, ठमकारना**-(हिं०क्रि०) ठहराना, रोंकना, चलते चलते रोकना।
ठयना-(हिं०क्रि०)स्थिर करना, ठानना, पूरी तरह से करना, चित्त में दृढ़ करना, निश्चित करना, दृढ़ निश्चय से आरम्भ करना, स्थापित करना, लगाना, नियुक्त करना, चित्त में स्थिर होना, जमना, लगना, प्रयुक्त होना, ठनना।
ठरन-(हिं०स्त्री०)ठिठुरन, अधिक जाड़ा;
ठरना-(हिं०क्रि०) अधिक शीत से ठिठुरना, अधिक ठंढ पड़ना, अधिक शीत के कारण अकड़ना या चेतनाशून्य होना, अधिक ठंढ पड़ना।
ठरमराना-(हिं०क्रि०)ठंढ से सिकुड़ जाना
ठरमरुआ-(हिं०वि०) पाला मारी हुई खेत की उत्पत्ति या उपज।
ठरुआ-(हिं०वि०) देखो ठरमरुआ।
ठर्रा-(हिं०पुं०) बटा हुआ मोटा सूत, अधपकी ईंट, अँगिया का बन्द, टेढ़ा मेढ़ा भद्दा मोती।
ठर्री-(हिं०स्त्री०) बिना अँखुवा निकले हुए धान की बोवाई।
ठवना-(हिं०क्रि०) गिराना।
ठवना-(हिं०क्रि०)देखो ठयना। **ठवनी**-(हिं०स्त्री०)बैठने का ढंग, मुद्रा,आसन, स्थिति, बैठक।
ठवर-(हिं०पुं०) ठौर, स्थान, जगह।
ठस-(हिं०वि०) कड़ा, ठोस, भींतर से भरा हुआ, घनी बिनावट का, दृढ़, भारी, सुस्त, मट्ठर, कृपण, कंजूस, हठी, धनाढ्य, खोटा (रुपया) जिसमें से ठीक शब्द न निकले।
ठसक-(हिं०स्त्री०) अभिमान पूर्ण चेष्टा, गर्व, अहंकार, ऐंठन। **ठसकदार**-(हिं०वि०) अभिमानी, घमंडी। **ठसकना**-हिं०क्रि०) टूटना, पटकना।
ठसका-(हिं०पुं०) सूखी खाँसी जिसमें कफ नहीं निकलता, धक्का, ठोंकर।
ठसनी-(हिं०स्त्री०)ठूसने का गज या छड़
ठसमस, ठसाठस-(हिं०वि०) ठूंस कर भरा हुआ, खचाखच, ठसमठस।
ठस्सा-(हिं०पुं०) विच्छित्ति करने की छोटी रुखानी,ठसक,अहंकार, गर्वपूर्ण हावचाव, ठाटबाट, मुद्रा,अभिमान।
ठहक-(हिं०स्त्री०)नगाड़े की ध्वनि; **ठहक कर वर्षा**-गर्जना सहित पानी बरसना
ठहना-(हिं०क्रि०)घोड़े का हिनहिनाना, घंटे का बजना, ठनठनाना, ठहर ठहर कर, संभाल कर कोई काम करना, संवारना, बनाना; **ठहककर**-स्थिर होकर; **ठहठहर कर बोलना**-रुकरुक कर हावभाव दिखलाते हुए बोलना
ठहर-(हिं०पुं०) ठौर, स्थान, जगह, भोजन बनाने का स्थान, चौका, चूल्हे चौके की लिपाई पोताई; **ठहरदेना**-चौका लगाना।
ठहरना-(हिं०क्रि०) गति युक्त न होना, रुकना, टिकना, स्थिर रहना, विश्राम करना, डेरा डालना, इधर उधर न डोलना, एक ही स्थान पर बने रहना, जमा रहना, टिके रहना, नष्ट न होना, प्रतीक्षा करना, पेंदी में जमजाना, थिराना,आसरा देखना, निश्चत होना। **ठहराई**-(हिं०क्रि०) अधिकार, ठहरने की क्रिया या मजदूरी। **ठहराऊ**-(हिं०वि०)टिकाऊ, ठहरने वाला पुष्ट, अधिक्र काल तक न रहनेवाला, निश्चय करनेवाला, दृढ़। **ठहराना**-(हिं०क्रि०) टिकाना, विश्राम देना, गति रोकना,डेरा देना, रहने के लिये स्थान देना, हिलने डोलने न देना, स्थिर करना, तय करना, अड़ाना, मूल्य स्थिर करना, विबाह सम्बन्ध पक्का करना।
ठहराव-(हिं०पु०)स्थिरता,दृढ विचार, निश्चय। ठहरौनी-(हिं०स्त्री०) विवाह संबंध में तिलक, दहेज इत्यादि का लेन देन स्थिर करना।
ठहाका-(हिं०पु०) अट्टहास, जोर की हंसी, कहकहा।
ठहियाँ-(हिं०स्त्री०)ठाँव ठिकाना,जगह।
ठाँ-(हिं०पु०) बंदूक की शब्द, ठांव, ठौर, स्थान, जगह।
ठाँई-(हिं०पुं०)स्थान, जगह, (क्रि०वि०) निकट, पास, प्रति, तईं।
ठाँउँ-(हिं०पुं०)ठिकाना,ठाँव, (क्रि०वि०) समीप, पास, निकट।
ठाँठ-(हिं०वि०) शुष्क, रसहीन,नीरस; दूध न देने वाली (गाय भैंस आदि)
ठाँठर-(हिं०पुं०) ठठरी।
ठाँयं-(हिं०स्त्री०) ठौर, स्थान, ठिकाना, समीप, पास, बंदूक छूटने का शब्द
ठाँयं ठाँयं-(हिं०स्त्री०) बदूक छूटने का शब्द, वाक्युद्ध, कलह, झगड़ा।
ठाँव-(हिं०पुं०स्त्री०) ठाँव, ठिकाना,जगह
ठांसना-(हिं० क्रि०) कसकर घुसना, रोकना, दवा दबाकर भरना, मना करना, बिना कफ निकाले हुए-ठनठन शब्द करते हुए खाँसना।
ठाँहीं-(हिं०पुं०) देखो ठाईं।
ठाकुर-(हिं०पुं०) देवता, देवता की मूर्ति, परमेश्वर, पूज्य व्यक्ति,स्वामी, मालिक, अधिष्ठाता,सरदार,भस्वामी, क्षत्रियों की एक उपाधि, नाऊ की एक उपाधि। **ठाकुरद्वारा**-(हिं०पुं०) देवस्थान, किसी देवता का मन्दिर।
ठाकुरवाड़ी-(हिं० स्त्री०) देवस्थान, देवालय, मन्दिर। **ठाकुरसेवा**-(हिं०स्त्री) किसी देवता का पूजन, देवता प्रीत्यर्थ दी हुई सम्पत्ति।
ठाकुरी-(हिं०स्त्री०) ठकुराई, शासन, अधिकार, स्वामित्व।
ठाट-(हिं०पुं०) ढांचा, ठठरी, लकड़ी या बांस की पटरियों का बना हुआ टट्टर या परदा, शृंगार, वेश, प्रकार, शैली, ढब, आडंबर, धूमधाम, रचना, बनावट, दिखावट, वेश, तैयारी, ढंग, सामग्री, उपाय, सुख, सामग्री,युक्ति, समूह, झुंड, अधिकता; **ठाट खड़ा करना**-ढाँचा तैयार करना; **ठाट बदलना**-नया वेशधारण करना; **ठाट मारना**-चैन से काल बिताना।
ठाटना-(हिं० क्रि०) निर्माण करना, बनाना, ठानना, साजना, संवारना,
ठाटबन्दी-हिं०स्त्री०) खपरैल बनाने के लिये बांस का ढांचा तैयार करना।
ठाटबाट-(हिं०पु०)सजधज,शोभा, सजावट, शृंगार,तड़क भड़क,आडम्बर।
ठाटर-(हिं०पुं०)टट्टी,ढांचा,टट्टर,ठाटबाट, शृंगार,कबूतर के बैठने की छतरी।
ठाटी-(हिं०स्त्री०) समूह, श्रेणी; देखो ठट
ठाठ-(हिं०पु०) देखो ठाट।
ठाठर-(हिं०पु०) नदी का वह गहरा भाग जहां पर मल्लाह की लग्गी नही पहुंचती।
ठाड़ा-(हिं०वि०) खड़ा,सीधा,खड़े बल का
ठाठ-(हिं०वि०) खड़ा, बिना पीसा हुआ।
ठाढ़,ठाढा-(हिं०वि०) दंडायमान, सीधा, खड़ा,समूचा,उत्पन्न; **ठाढादेना**-ठहरने का स्थान देना,ठहराना, टिकाना।
ठाढेश्वरी-(हिं०पु०) एक प्रकार के साधु जो अहोरात्र खड़े ही रहने की तपस्या करते हैं।
ठादर-(हिं०पु०) राढ़, झगड़ा,।
ठान-(हिं०स्त्री०) किसी कार्य का आरंभ, छिड़ा हुआ काम, अनुष्ठान, दृढ़ संकल्प, चेष्टा, मुद्रा, आयोजन, हठ; **ठानना**-(हिं०क्रि०) तत्परता सहित किसी काम को आरंभ करना, स्थिर करना, पक्का करना, ठहराना, चित्त में कोई विचार स्थिर करना
ठाना-(हिं०क्रि०) ठानना, दृढ़ता के साथ आरंभ करना, निश्चित करना स्थापित करना।

ठाम-(हिं०पु०स्त्री०) स्थान, ठाँव, अग स्थिति, मुद्रा।

ठायँ-(हिं०स्त्री०) ठाव, ठाँयँ।

ठार-(हिं०पु०) अत्यन्त शीत, गहरा जाड़ा, पाला, हिम।

ठाल-(हिं०स्त्री०) अवकाश।

ठाला-(हिं०पुं०) काम काज का न रहना, आमदनी बंद होना (वि०) व्यवसाय-हीन; बैठा ठाला जिसके पास कोई काम करने के लिये न हो।

ठाली-(हिं० वि०) रिक्त, बेकाम, निठल्ला

ठावँ-(हिं०स्त्री०) स्थान, जगह।

ठावना-(हिं०क्रि०) देखो ठाना।

ठाँसना-(हिं०क्रि०) देखो ठाँसना।

ठासा-(हिं०पुं०) धातु की चद्दर मोड़ने का अस्त्र।

ठाहर-(हिं०स्त्री०) स्थान, डेरा, रहने का स्थान, टिकाना।

ठाहरु-(हिं०पुं०) देखो ठाहर।

ठाहरूपक-(हिं०पु०) मृदंग का एक ताल

ठिंगना-(हिं०वि०) छोटे डील डौल का, नाटा।

ठिक-(हिं०स्त्री०) धातु की चद्दर का छोटा टुकड़ा चिकती।

ठिकठैन-(हिं०पु०) ठीकठाक।

ठिकड़ा-(हिं०पु०) ठीकरा, मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ अंश।

ठिकौना-(हिं०पुं०) प्रबन्ध, ठीकठाक

ठिठौर-(हिं०स्त्री०) ठीकरों से व्याप्त स्थान।

ठिकना-(हिं०क्रि०) रुकना, अड़ना ठहरना।

ठिकरा-(हिं०पुं०) देखो ठिकड़ा।

ठिकरी-(हिं०स्त्री०) मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ छोटा खंड।

ठिकरौर-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहां खपड़े ठिकरे का बहुत सा ढेर पड़ा हो

ठिकना-(हिं०पुं०) ठिकाना, पता।

ठिकाना-(हिं०पुं०) निवास स्थान, पता, आश्रय स्थान, ठौर, प्रबन्ध, स्थिरता, सीमा निश्चय, प्रमाण, आ योजन, (क्रि०) ठहराना; ठिकाना ढूंढ़ना-रहने के लिये जगह ढूंढ़ना; व्यापार की खोज करना; ठिकाना करना-व्यवस्था करना, अन्त करना, सन्देह मिटाना; ठिकाने आना-निर्धारित स्थान पर पहुँचना; ठिकाने की बात-समझ की बात; ठिकाने पहुँचना (लगना)-निर्धारित स्थान पर पहुँचना, न रहने देना, हत्या करना, नष्ट करना; ठिकाने न रहना-चंचल हो जाना।

ठिठक-(हिं०क्रि०) भयभीत अवस्था, घबड़ाहट। ठिठकना-(हिं०क्रि०) एकाएक रुक जाना, ठमकना, ठहर कर जाना, न हिलना न डोलना, स्तब्ध होना।

ठिठरना-(हिं०क्रि०) ठंढ के कारण अकड़ना या सिकुड़ना; ठिठुर, ठिठुरन-(हिं०स्त्री०) अधिक ठंढ के कारण अकड़ या सिकुड़न। ठिठरना-(हिं०स्त्री०) देखो ठिठरना।

ठिठुरा-(हिं०वि०) पाले से जकड़ा हुआ, सिकुड़ा हुआ, ठंढ।

ठिठोलिया-(हिं०वि०) उपहासी, पन-उपहास। ठिठोली-(हिं०स्त्री०) हंसी।

ठिनकना-(हिं०स्त्री०) छोटे बालकों का ठहर ठहर कर रोना,

ठिया-(हिं०पुं०) देखो ठीहा।

ठिर-(हिं०स्त्री०) गहरी ठंढ, पाला।

ठिरना-(हिं०क्रि०) ठढ से ठिठुरना, अधिक शीत से अकड़ना, अधिक शीत पड़ना।

ठिलना-(हिं०क्रि०) ठेला जाना, ढकेला जाना, घुसना, धंसना, जमना, बलपूर्वक घसकाया जाना।

ठिलवा-(हिं०पुं०) मिट्टी का घड़ा,

ठिलाठिल-(हिं०क्रि०वि०) एक पर एक गिरते हुए, एक दूसरे पर धक्का देते हुए

ठिलिया-(हिं०स्त्री०) मिट्टी की छोटी गगरी, मटकी।

ठिलुआ-(हिं०वि०) निकम्मा, निठल्ला

ठिल्ला-(हिं०पुं०) घड़ा, गगरा, पानी रखने का मिट्टी का पात्र। ठिल्ली-(हिं०स्त्री०) ठिलिया, छोटी गगरी।

ठिहार-(हिं०वि०) विश्वसनीय, विश्वास के योग्य। ठिहारी-(हिं०स्त्री०) विराम, ठहरावा निश्चय।

ठीक-(हिं०वि०) युक्त, यथार्थ, यथोचित, प्रामाणिक, उचित, निश्चित, अच्छा, शुद्ध, बिना त्रुटि का, किसी स्थान पर अच्छी तरह से बैठने वाला, ठहराया हुआ, निर्दिष्ट, पक्का, स्थिर, जो बिगड़ा न हो, योग, जोड़, सीधा, नम्र; ठीक आना-बराबर होना, ढीला या कसा न न होना; ठीक बनाना-उपयुक्त करना; ठीक उतरना-न्यूनाधिक न होना; ठीक करना-सुधारना, शोधना, शुद्ध करना; ठीक देना-चित्त में स्थिर करना, जोड़ना।

ठीकठाक-(हिं०क्रि०वि०) व्यवस्थित रूप से, उचित रीति से, अच्छी तरह से; (हिं०पुं०) व्यवस्था, उचित प्रबन्ध, पक्की बात, ठौर, ठिकाना, (वि०) प्रस्तुत, बनकर तैयार; ठीकठाक करना-व्यवस्था करना, ठिकमठीक-(हिं०अव्य०) पूरी तरह से ठीक

ठीकड़ा ठीकरा-(हिं०पुं०) मिट्टी के पात्र का टूटा फूटा अश, टूटा फूटा, पात्र, भीख माँगने का पात्र; ठीकरा फोड़ना-कलंक लगाना, दोषी ठहराना ठीकरा समझना-तुच्छ समझना।

ठीकरी-(हिं०स्त्री०) टूटे हुए मिट्टी के बरतन का छोटा टुकड़ा, योनि का उभड़ा हुआ तल, उपस्थ, तुच्छ पदार्थ,

ठीका-(हिं०पुं०) किसी व्यक्ति को किसी निर्धारित समय में कोई काम पूरा करने के लिये उत्तरदायी बनाना, कुछ समय के लिये किसी को आय ग्रहण करने के लिये समर्पण करना, पट्टा।

ठीकुरी-(हिं०स्त्री०) परदा।

ठीकेदार-(हिं०पुं०) ठीका लेने वाला मनुष्य। ठीकेदारिन-(हिं० स्त्री०) ठीकेदार की स्त्री।

ठीठी-(हिं०स्त्री०) हँसी का शब्द।

ठीप-(हिं०स्त्री०) आघात ठोकर।

ठीलना-(हिं०क्रि०) ठेलना, ढकेलना।

ठीवन-(हिं०पुं०) थूक, खखार।

ठीहँ-(हिं०स्त्री०) घोड़े की हिनहिनाहट।

ठीहा-(हिं० पु०) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिसपर रखकर कसेरा, बढ़ई, सोनार आदि पीटने या ठोंकने आदि का काम करते हैं, बढइयों का लकड़ी गढ़ने का आधार, बैठने के लिये ऊँचा किया हुआ स्थान, सीमा, गद्दी, हद; ठीहा न जमना-काम ठीक ठीक न होने का असुविधा होना।

ठुंठ-(हिं० पुं०) वृक्षस्तंभ, वह वृक्ष जिसकी डाल और पत्तियाँ गिर गई हों या काटी गई हों, कटे हुए हाथ वाला मनुष्य, लूला।

ठुकना-(हिं०क्रि०) आघात सहना, पिटा जाना, मार खाना, मारा जाना, गड़ना, दबना, चोट खाकर धँसना, हानि होना, गले पड़ना, फँसना, होना, पैर में बेड़ी पड़ना, घाटा लगना।

ठुकराना-(हिं० क्रि०) ठोकर मारना, लातसे मारना, पैरसे मारकर हटाना, तुच्छ समझना, तिरस्कार करना, उपेक्षा करना।

ठुकवाना-(हिं०क्रि०) पिटवाना, दूसरे से मार खिलवाना, गड़वाना, धँसवाना, प्रसंग करना।

ठुड्डी, ठुड्ढी-(हिं० पु०) चिबुक, निचले ओंठ की जड़, दाढ़ी, अन्न का दाना जिसका छिलका भूनने पर अलग न हुआ हो, ठोरीं।

ठुनकना-(हिं०क्रि०) ठुनुकना, अंगुली से ठोंक लगाना।

ठुनक-(हिं०स्त्री०) सुसकी; ठुनकाना-(हिं० क्रि०) अंगुली से धीरे धीरे चोट पहुँचाना।

ठुनठुन-(हिं०पुं०) बच्चों के रोने का शब्द

ठुमक-(हिं०पुं०) बच्चों की उछल कूद की गति, ठसक; ठुमकना-(हिं०क्रि०) प्रसन्नता पूर्वक धीरे धीरे पैर पटक पटक कर चलना कूदते हुए चलना।

ठुमका-(हिं० वि०) छोटे डीलडौल का, नाटा, ठेंगना, (हिं०पुं०) पतंग, (गुड्डी) की डोरमें झटका देना; ठुमकारना-(हिं० क्रि०) गुड्डी की डोरी में झटका देना; ठुमकी-(हिं० स्त्री०) थपका, झटका, रुकावट, मन्द गति, (वि०) छोटे आकृति की, नाटी।

ठुमरी-(हिं०स्त्री०) दो बोलकी छोटी गीत

ठुर्री-(हिं०स्त्री०) बिना छिलका उतारा हुआ भूना दाना।

ठुरियाना-(हिं० क्रि०) ठुर्री बन जाना, सिकुड़ना।

ठुसकना-(हिं०क्रि०) ठिनक कर रोना, मन्द शब्द करना, धीरे से बोलना।

ठुसकी-(हिं०स्त्री०) अपान वायु का धीरे से निकलना, धीरे से पादना।

ठुसना-(हिं० क्रि०) कसकर प्रवेश होना या भरा जाना; ठुसवाना-(हिं०क्रि०) कसकर घुसवाना; ठुसाना-(हिं०क्रि०) भरवाना, कसाना, ठुसवाना, अधिक भोजन कराना।

ठुस्सी-(हिं० स्त्री०) देखो ठस्सी; एक प्रकार का गले का आभूषण।

ठूंग-(हिं० स्त्री०) चोंच, चोंच से मारने का काम।

ठूंठ-(हिं० पुं०) शाखा तथा पत्र हीन वृक्ष, सूखा हुआ पेड़, कटा हुआ हाथ, जुआर बाजरा आदि की उपज को नष्ट करनेवाला एक प्रकारका कीड़ा

ठूंठा-(हिं० वि०) बिना शाखा और पत्तियों का वृक्ष, बिना हाथ का, लूला; ठूंठिया-(हिं० वि०) लूला, लंगड़ा, हिजड़ा।

ठूंठी-(हिं०स्त्री०) अरहर बाजरा आदि को जड़से काटने पर बची हुई खूंटी।

ठूंसना-(हिं०क्रि०) देखो ठूसना, घुसाना, अच्छी तरह कस कर भरना, बलपूर्वक डालना, खूब पेटभर कर खाना

ठेंउना-(हिं०पुं०) ठेहुना, घुटना।

ठेंगना-(हिं०वि०) छोटे डीलका, नाटा।

ठेंगा-(हिं० पुं०) अंगूठा, डंडा, सोंटा, गदका; ठेंगा दिखाना-अशिष्टता पूर्वक अस्वीकार करना; ठेंगेसे-बला से; ठेंगा बजना-लड़ाई झगड़ा होना।

ठेंगाठेंगी-(हिं० अव्य०) आपस की मार पीट।

ठेंगुर-(हिं०पुं०) दुष्ट चौपायों के गले में बाँधने का लकड़ी का बड़ा टुकड़ा।

ठेंघा-(हिं०पुं०) देखो ठेंगा।

ठेंठ-(हिं०वि०) देखो ठेठ।

ठेंठी-(हिं०स्त्री०) कान की मैल, कान का छेद बन्द करने की रूई आदि; बोतल में लगाने का डट्टा, काग; कान में ठेंठी लगाना-किसी की बात न सुनना।

ठेंपी-(हिं०स्त्री०) ढपनी, ढेंठी।

ठेक-(हिं० स्त्री०) सहारा, टेक, अवलंब, चाँड़, पुच्छड़, तल, पेंदी, टट्टियों से घिरा हुआ अन्न रखने का स्थान, लाठी में लगी हुई सामी, घोड़े की एक विशेष गति, धातु के पात्र में जड़ी हुई चकती; ठेकना-(हिं०क्रि०) टेकना, सहारा लेना, ठहरना, रहना, टिकना।

ठेका-(हिं० पुं०) देखो ठीका, सहारा लेने का पदार्थ, ठहरने का स्थान, अड्डा, ठेक, बैठक, रुकने का स्थान, धक्का, ठोंकर, तबलेका बायाँ, पट्टा, मृदंग, तबले आदि की एक बोल

ठेका भरना-उछल कूद करना।

ठेकाई-(हिं० स्त्री०) काले किनारे की छपाई; **ठेकाना**-(हिं०पुं०)निवास स्थान

ठेकी-(हिं०स्त्री०) विश्राम,स्थान,सहारा।

ठेगड़ी-हिं०पुं०) देहाती कुत्ता।

ठेगना-(हिं०क्रि०) सहारा लेना, विश्राम लेने के लिये सिर के बोझ को टेकना, रोकना मना करना; **ठेगनी**-(हिं०स्त्री०) सहारा लेने की लकड़ी।

ठेघना-(हिं०क्रि०) देखो ठेगना।

ठेघनी-(हिं०स्त्री०) देखो ठेगनी।

ठेघा-(हिं०पुं०) सहारा, पच्चड़, चांड़।

ठेठ-(हिं० वि०) बिना मेल का, निर्मल, स्वाभाविक, अकृत्रिम (स्त्री०) सीधी सादी बोली जिसमें साहित्यिक शब्दों का प्रयोग न हो।

ठेप-(हिं०पु०) दीपक।

ठेपी-(हिं०स्त्री०) बोतल शीशी आदिका मुंह बन्द करने का डट्टा।

ठेलना-(हिं० क्रि०) ढकेलना, रेलना, धक्का देकर आगेको बढ़ाना; **ठेलमठेल**-(हिं०क्रि०वि०) एक के ऊपर एक गिरते हुए।

ठेला-(हिं० पुं०) टक्कर, धक्का, पीछे की ओर से आघात, एक प्रकार की गाड़ी जिसको आदमी ठेलकर चलाते हैं,भीड़भाड़,धक्का मुक्का; **ठेलाठेल**, **ठेलाठेली**-(हिं०पुं०स्त्री०) अनेक मनुष्यों का एक के ऊपर दूसरे का गिरना, धक्कमधक्का।

ठेवका-(हिं०पुं०) खेत सींचने के लिये पानी गिराने का स्थान।

ठेवकी-(हिं०स्त्री०) ओट, लुड़कने वाली वस्तुको टिकानेके लिये प्रयुक्त वस्तु।

ठेवना-(हिं०पुं०) जानु, घुठना।

ठेस-(हिं०स्त्री०) आघात, ठोंकर, चोट, धक्का; **ठेसना**-(हिं० क्रि०) ठूसना, दबाकर भरना।

ठेसरा-(हिं०वि०) अभिमानी, घमंडी।

ठेहरी-(हिं०स्त्री०) किवाड़ के नीचे की लकड़ी जिसपर पल्लेकी चूल घूमती है, आश्रय, सहारा।

ठेही-(हिं०स्त्री०) छोटा छोटा टुकड़ा की हुई ईख।

ठेहुका-(हिं० पुं०) वह चौपाया जिसके पिछले घुठने चलने में आपस में टकराते हैं।

ठेहुना-(हिं०पुं०) देखो घुठना।

ठैकर-(हिं०पुं०) नीबू की जात का एक खट्टा फल।

ठैन-(हिं०स्त्री०) जगह, स्थान।

ठैयां-(हिं०स्त्री०) स्थान।

ठैरना-,**ठैराना**-(हिं० क्रि०) देखो ठहरना, ठहराना।

ठैराई-(हिं० स्त्री०) देखो ठहराई।

ठैल-(हिं०स्त्री०) चोट, ठेंस।

ठोंक-(हिं०स्त्री०)आघात, प्रहार, चोट। **ठोंकना**-(हिं०स्त्री०) पीटना, चोट लगाना, मारना, पीटना, थपथपाना, बेंड़ी लगाना, गाड़ना, अभियोग; खटखटाना, कसकर जकड़ना, हाथ मार कर शब्द उत्पन्न करना; **ठोंक ठोंक कर लड़ना**-ताल ठोंक ठोंक कर लड़ना; **ठोकना बजाना**-जांचना, परखना।

ठोंकवा-(हिं०पुं०) मोटी पूड़ी।

ठोंग-(हिं०स्त्री०) चोंच, चोंच की मार, अंगुलियो के पीछे की हड्डी की मार।

ठोंगना-(हिं०क्रि०) चोंच से मारना।

ठोंठा-(हिं० पुं०) ज्वार, बाजरा तथा ऊख की उपज को हानि पहुंचने वाला कीड़ा।

ठोंठी-(हिं०स्त्री०) फली, बोड़ी, ठोंठी, चने के दानें का कोष।

ठो-(हिं०अव्य) संख्या, यह शब्द सख्यावाचक शब्दों के पहिले प्रयोग होता है।

ठोकचा-(हिं० पुं०) आम की गुठली के ऊपर का कड़ा छिलका।

ठोकना-(हिं०क्रि०) देखो ठोंकना।

ठोकर-(हिं०स्त्री०) किसी कड़ी वस्तु से टकराने से अंग में चोट लगना, ठेस, जते का नुकीला भाग, मार्ग में पड़ा हुआ कंकड़ पत्थर जिस पर टकराने से पैर में चोट लग जाती है, पैर से धक्का लगाना; **ठोकर उठाना**-हानि प्राप्त करना; **ठोकर खाना**-असावधानी के कारण कष्ट उठाना; **ठोकर खाता फिरना**-व्यर्थ मारे मारे फिरना; **ठोकर लेना**-ठेस खाना, किसी वस्तु से टकराकर गिर पड़ना; **ठोकर निकलना**-गाल सूख कर हड्डी उभड़ आना।

ठोकरा-(हिं०वि०) कठिन, कड़ा; **ठोकराना**-(हिं०क्रि०) जूते की नोक से प्रहार करना, स्वयं ठोकर खा जाना

ठोकरी-(हिं०स्त्री०) कई महीने की ब्याई हुई गाय जिसका दूध गाढ़ा हो गया हो।

ठोकवा-(हिं०पुं०) देखो ठोंकवा।

ठोका-(हिं०पुं०)स्त्रियों के हाथ में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण।

ठोट-(हिं०वि०) निःसत्व,नीरस, मूर्ख।

ठोठरा-(हिं०वि०) रिक्त, पोला।

ठोड़ी,ठोढी-(हिं०स्त्री०)चिबुक,ठुड्डी, दाढी।

ठोप-(हिं०पुं०) बिन्दु, बूंद।

ठोर-(हिं०पुं०)चंचु, चोंच, एक प्रकार का मीठा पकवान।

ठोला-(हिं०पुं०) छोटा पात्र, गाँठ, आदमी। **ठोली**-(स्त्री०) ठिठोली।

ठोस-(हिं०वि०) जो भीतर से खोखला न हो,घन,पुष्ट,दृढ़,(पुं०)ईर्ष्या,डाह।

ठोसा-(हिं०पुं०)हाथ का अंगूठा, ठेंगा; **ठोसा दिखलाना**-अस्वीकार करना।

ठोहना-(हिं० क्रि०) पता लगाना, ठिकाना खोजना।

ठोहर-(हिं०पुं०) अकाल, मँहगी।

ठौका-(हिं०पुं०) वह स्थान जहाँ दौरी से उछाल कर गड्ढे आदि का पानी ऊंचे खेत से भरा जाता है।

ठौनि-(हिं० स्त्री०) स्थिति, स्थान, देखो "ठवनि"।

ठौर-(हिं०पुं०) ठिकाना, स्थान, अवसर, एक प्रकार का मीठे का पकवान; **ठौर ठिकाना**-पता ठिकाना; **ठौर कुठौर**-भले तथा बुरे स्थान पर; **ठौर न आना**-पास में न आना; **ठौर रहना**-जहां का तहां रहना, मर जाना; **ठौर रखना**-उसी स्थान पर मार कर गिरा देना; **किसी के ठौर**-किसी के स्थापनापन्न, किसी के समान।
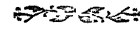
ड

ड-संस्कृत तथा देवनागरी वर्णमाला का तेरहवां व्यंजन तथा टवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण मूर्धा से होता है अर्थात् यह अक्षर जीभ के मध्य भाग को तालू मे लगाने से होता है।

ड-(सं०पुं०)शिव, महादेव, शब्द, त्रास, भय, वाड़वाग्नि (स्त्री०) डाकिनी।

डंक-(हिं०पुं०) वह विषैला कांटा जो बिच्छू, मधुमक्खी, बरें आदि कीडों के पीछ की ओर रहता हो जिसको वे जीवों के शरीर में चुभा देते हैं, लेखनी की जीभी, वह स्थान जहां डंक मारा गया हो। (हिं० वि०) **डंकदार**-जिसमें डंक हो।

डंकना-(हिं०क्रि०) गरजना, डरावना शब्द उत्पन्न करना।

डंका-(हिं०पुं०) एक प्रकार का नगाड़ा, जहाज के ठहरने का स्थान; **डंके की चोट कहना**-सबके सन्मुख स्पष्ट शब्दों में कहना।

डंकिनी-(हिं०स्त्री०) देखो डाकिनी।

डंकी-(हिं०स्त्री०) मलखंभ का एक व्यायाम, मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

डंकुर-(हिं०पुं०) प्राचीन समय का एक प्रकार का बाजा।

डंग-(हिं०पुं०)आधा पका हुआ छोहारा

डंगम-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी होती हैं।

डंगर-(हिं०पुं०) चौपाया।

डंगरी-(हिं०स्त्री०) लंबी लकड़ी, एक प्रकार की मोटी बेंत, चुड़ैल,डाइन।

डंगवारा-(हिं०पुं०) वह सहायता जो किसान लोग जोताई बोवाई में परस्पर देते हैं, हूंड़।

डंगोरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कड़ी लकड़ी का वृक्ष।

डंटैया-(हिं०वि०) डाटने या घुड़कने वाला, धमकाने वाला।

डंठल-(हिं०पुं०)**डंठी**-(हिं०स्त्री०) पौधों की शाखा या पेड़ी।

डंड-(हिं०पुं०) लाठी, सोंटा, डंडा, बाहुदण्ड, बाँह, एक प्रकार का व्यायाम जो हाथ पैर के पंजों के बल झुक कर किया जाता है; अर्थदण्ड, हानि, देखो दण्ड; **डंड पेलना**-व्यायाम करना।

डंडक-(हिं०पुं०) देखो दण्डक।

डंड़-(हिं०पुं०) देखो दंड; **डंडपेल**-व्यायाम करने वाला, पहलवान्, बलवान् मनष्य।

डंडल-(हिं०स्त्री० एक प्रकार की मंछली,

डंडवत्-(हिं०पुं०) देखो दण्डवत्।

डँडवारा-(हिं०पुं०) खुली हुई नीची भीत जो किसी स्थान को घेरने के लिये बनाई जाती है, दक्षिण वायु; **डँडवारी**-(हिं०स्त्री०) किसी स्थान को घेरने के लिये उठाई हुई नीची भीत

डँड़हरा-(हिं०स्त्री०) द्वार में ताला लगाने के लिये जड़ा हुआ लोहे या पीतल का सरकौवा डंडा।

डंड़वी-(हिं०पुं०) दण्ड देने वाला।

डँड़हिया-(हिं०पुं०) वह डंडा जिससे बैल की पीठ पर दोनों ओर लदे हुए बोरे फँसाये जाते हैं।

डंडा-(हिं०पुं०) लकड़ी बाँस आदि का लंबा सीधा टुकड़ा, सोंटा, लाठी, मोटी छड़ी, डांड़ा, डँड़वारा।

डंडकरन-(हिं०पुं०) देखो दंडक बन।

डंडाल-(हिं पुं०) दुन्दुभी, नगाड़ा।

डडिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की साड़ी जिसमें गोंट सिलकर लंबी लकीरें बनाई गई हों, गेंहू के पौधे की लंबी सीक जिसमें बाल लगते हैं; (पुं०) कर उगाहने वाला मनुष्य।

डंड़ियाना-(हिं०क्रि०) दो कपड़ों की लंबाई के किनारों को एक में मिलाना

डंडी-(हिं०स्त्री०) छोटी पतली लंबी लकड़ी, किसी अस्त्र की मठिया, हत्या, तराजू की वह लकड़ी जिसमें रस्सियां लटका कर पल्ले बँधे रहते हैं, पत्ता, फूल या फल लगा हुआ वृक्ष का डंठल,नाल,फूल के नीचे का लंबा भाग, हरसिंगार का फूल, एक प्रकार की पहाड़ी सवारी, झंपान, लिंगेन्द्रिय, वह सन्यासी जो दण्ड धारण करता हो, (वि०)झगड़ा लगने वाला चुगलखोर।

डंडीर-(हिं०स्त्री०)सीधी रेखा या लकीर

डंडोरना-(हिं०क्रि०) उलट पुलट करके खोजना, ढूंढ़ना।

डंडौत-(हिं०पुं०) देखो दण्डवत्।

डंबर-(हिं०पुं०) ढकोसला, आडम्बर, एक प्रकार का चँदवा, विस्तार; **मेघडम्बर**-बहुत बड़ा, चँदवा, दल, बादल; **अम्बर डंबर**-सन्ध्या के समय आकाशमें देख पड़ने वाली लाली

डंवरुआ-(हिं०पुं०)एक प्रकार का वात रोग,गठिया। **डंवरुआ साल**-(हिं०पुं०) धातु या लकड़ी के दो टुकड़ोंको मिलाने का एक प्रकार का जोड़।

डवांडोल-(हिं०वि०)चंचल,घबड़ायाहुआ

डंस-(हिं०पुं०) जंगली मच्छड़, डाँस,

वह स्थान जहां पर डंक चुभा हो या विषैले कीड़े का दांत चुभा हो।
डंसना-(हिं०क्रि०) देखो डँसना
डकई-(हिं०स्त्री०) केले की एक जाति।
डकरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की काली मिट्टी।
डकरना-(हिं०क्रि०) डकार लेना।
डकराना-(हिं०क्रि०) बैल या भैंस का बोलना।
डकार-(सं०पु०) 'ड' स्वरूप अक्षर, 'ड' वर्ण। **डकार**-(हिं०पुं०) मुख से बायु का निकला हुआ उद्गार, सिंह, बाघ आदि की गरज, दहाड़, गुर्राहट; **डकार जाना**-किसी का धन दबा लेना। **डकारना**-(हिं०क्रि०) मुख से वायु का निकलना, डकार लेना, किसी का धन पचा जाना, व्याघ्र, सिंह आदि का गरजना।
डकैत-(हिं०पुं०) बलपूर्वक दूसरे का माल छीनने वाला लुटेरा, डाकू। **डकैती**-(हिं०स्त्री०) डाकू का काम लूटमार, छापा।
डकौत-(हिं०पुं०) ढोंगी ज्योतिषी, भड्डर।
डक्कारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा ढोल।
डग-(हिं०पुं०) उतनी दूरी जितने पर एक पग से दूसरे पग पर पैर पड़े, फाल, पेंड; **डग देना**-चलती समय आगे की ओर पैर रखना; **डग मारना**-लंबे लंबे पैर बढ़ाना। **डगडगाना**-(हिं०क्रि०)हिलना, डोलना काँपना। **डगडीर**-(हिं०वि०) चलायमान, हिलने वाला।
डगण-(सं०पुं०) छन्द ग्रन्थ के अनुसार पांच भागों में विभक्त एक गण।
डगडोलना-(हिं०क्रि०)देखो डगमगाना।
डगडौर-(हिं०वि०) देखो डावांडोल।
डगना-(हिं०क्रि०) हिलना, घसकना, स्थान छोड़ना, डिगना, डगमगाना, लड़खड़ाना, भूल चूक करना।
डगडगाना-(हिं०क्रि० इधर उधर झुकना, लड़खड़ाना, दृढ़ न रहना थरथराना। **डगमगाना**-(हिं०क्रि०) इधर-उधर डोलना, विचलित होना, किसी बात पर स्थिर रहना, थरथराना।
डगर-(हिं०स्त्री० मार्ग, पथ। **डगरना**-(हिं० क्रि०) मार्ग?पथ। **डगरवा**-(हिं० क्रि०)मार्ग,चलना, लुड़कना। **डगरा**-(हिं०पुं०)मार्ग, टोकरा, बाँस का बना हुआ छिछला पात्र, छबड़ा। **डगा**-(हिं०पुं०)नगाड़ा बजाने की लकड़ी। **डगाना**- हिं०क्रि०) देखो डिगाना।
डग्गर-(हिं०पुं०)एक प्रकार का हिंसक पशु, लंबे तथा पतले पैरका घोड़ा।
डड्गा-(हिं० क्रि०) दुंदुभी की ध्वनि, टिकारा।
डड्करी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकारकी ककड़ी।
डट-(हिं०पुं०) चिह्न।
डटना-(हिं०क्रि०) स्थिर रहना, अड़ना, ठहरा, रहना, स्पर्श होना, छू जाना, भिड़ना, देखना, लग जाना।
डटाना-(हिं०क्रि०)एक वस्तुको दूसरी वस्तुसे लगाना,खड़ा करना,जमाना, सटाना। **डटाई**-(हिं०स्त्री०)डटाने का का काम।
डट्टा-(हिं०पुं०) हुक्के का नैचा, टेंरुआ, काग, बडी मेख, ठप्पा, साँचा।
डड्डार-(हिं० वि०) बडी दाढ़ी वाला, दढ़ियल, साहसी वीर।
डड़ही-(हिं०स्त्री०)एक प्रकारकी मछली।
डढ़न-(हिं०स्त्री०) देखो जलन। **डढ़ना**-(हिं०क्रि०) देखो जलना।
डढ़ार, डढ़ारा-(हिं० वि०) वह जिसको डोढ़े हों, दाँत वाला,जिसको दाढ़ीहो।
डढ़ियल-(हिं०वि०) जिसको बड़ी दाढ़ी हो, डाढी वाला।
डढ्ना-(हिं०क्रि०) जलाना।
डढ्योरा-(हिं०वि०) दढियल।
डपट-(हिं०स्त्री०) डाँट, झिड़की, घुड़की, घोडे की सरपट चाल। **डपटना**-(हिं०क्रि०) क्रोध में कठोर शब्द से बोलना डाँटना, वेग से दौड़ना।
डपोरसंख-(हिं०पु०)अपनी झूठी बड़ाई करने वाला, वह जो देखने में बडे डीलडौल का हो परन्तु निर्बुद्धि हो, कहै पर करै नहीं।
डप्पू-(हिं०वि०) बहुत मोटा बड़ा।
डफ-(हिं० पुं०) चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा, डफला,चंग बाजा, जिसको बजाकर लोग लावनी गाते हैं
डफर-(हिं०पुं०) जहाज़ की एक ओर की पाल।
डफला-(हिं०पुं०) डफ नाम का बाजा।
डफ़ली-(हिं० स्त्री०) छोटा डफ, खंजड़ी; **अपनी अपनी डफली अपना अपना राग**-अलग अलग आदमियों की अलग सम्मति।
डफालची, डफाली-(हिं० पुं०) वह जो ठफ़ बजाता हो।
डफार-(हिं० स्त्री०) चिल्लाने या रोने का शब्द, चिग्घाड़। **डफारना**-(हिं० क्रि०) जोर से चिल्लाना या रोना।
डफोरना-(हिं०क्रि०) ललकारना,पुकारना
डब-(हिं०पुं०) थैला, जेब, वह चमड़ा जिससे कुप्पा बनाया जाता है।
डबकना-(हिं०क्रि०) धातु की चद्दर को कटोरीके आकार का गहरा बनाना, पीड़ा देना, टीसना, लंगड़ाना। **डबकौहाँ**-(हिं० वि०) आँसू से भरा हुआ, डबडबाया हुआ। **डबडबाना**-(हिं० क्रि०) अश्रुपूर्ण होना, आँखों में आँसू भर आना।
डबरा-(हिं० पुं०) पानी जमा रहने का छिछला गड्ढा, कुंड, खेत जोतने में छूटा हुआ कोना।
डबरी-(हिं०स्त्री०) छोटा गड्ढा।
डबल-(हिं०पुं०) पैसा। **डबलरोटी**-(हिं०स्त्री०) पावरोटी।
डबला-(हिं०पु०) कुल्हड़, मिट्टी का छोटा पात्र।
डबी-(हिं०स्त्री०) देखो डिब्बी, डिबिया।
डबोना-(हिं०क्रि०)बोरना, डुबाना, नष्ट करना, बिगाड़ना।
डब्बा-(हिं०पु०) किसी वस्तु को रखने का ढपनेदार छोटा पात्र, रेलगाड़ी की एक कोठरी।
डब्बू-(हिं०पुं०) खाने पीने की वस्तु परोसने का डंडी लगा हुआ एक प्रकार का कटोरा।
डभकना-(हिं०क्रि०) पानी में डबना उतराना; आंख डबडबाना-आँखों में पानी भर आना।
डभका-(हिं०पु०) कुवें में से निकाला हुआ तुरत का पानी।
डभकौरी-(हिं०स्त्री०) उड़दकीपीठीकीबरी
डमर-(सं०नपुं०) डर के कारण भगदड़, उपद्रव, हलचल, डामर।
डमरी-(सं०स्त्री०) छोटा डफ, खजड़ी।
डमरू-(सं०पुं०) एक बाजा जो बीच में पतला तथा किनारों पर चौड़ा होता है, इन्हीं चौड़े भागों पर चमड़ा मढा होता है, इसके बीच में एक डोरी बंधी रहतीहै तथा डोरियों के सिरों पर दो कौड़ियाँ बंधी रहती है,इसको इधर उधर हिलानेसे शब्द होता है, वह वस्तु जो बीच में पतली तथा दोनों ओर बराबर चौड़ी होती गई हो, बत्तीस लघुवर्ण युक्त एक प्रकार का दण्डक वृत्त, विस्मय, आश्चर्य।
डमरुका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का तन्त्रोक्त आसन।
डमरुमध्य-(सं०पुं०) भूमि का वह संकीर्ण भाग जो बड़े बड़े दो खण्डों को मिलाता हो; **जलडमरुमध्य**-जल का वह पतला भाग जो जल के दो बड़े बड़े भागों को मिलाता हो।
डमरु यन्त्र-(सं०पु०) दो घड़ों के मुख मिला कर बनाया हुआ यन्त्रजो अर्क खींचनें, सिंगरिफ में से पारा अलगाने आदि के काम में आता है।
डम्फ-(हिं०पुं०) लकड़ी के गोल मेड़रे परचमड़ाचढाकरबनायाहुआ बाजा।
डम्बर-(सं०पुं०) समूह, आडम्बर,धूमधाम, विस्तार।
डयन-(सं० नपुं०) पालकी, डोली, उड़ने की क्रिया।
डर-(हिं०पुं०) भीति, भय, आशंका, अनिष्ट की भावना, त्रास; **डरना**-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, आशंका करना; **डरपना**-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना। **डरपना**-(हिं०क्रि०) देखो डराना। **डरपोक**-(हिं०वि०) भीरु, कायर, जो बहुत डरता हो।
डरवाना-(हिं०क्रि०) देखो डराना।
डरा-(हिं०पुं०) डांका,**डराकू**-(हिं०वि०) डरपोक
डराडरी-(हिं०स्त्री०) भय, त्रास, डर।
डराना-(हिं०क्रि०) भयभीत करना, डर दिखलाना; **डरावना**-(हिं०वि०) डर उत्पन्न करने वाला, भयानक, भयंकर। **डरावा**-(हिं०पुं०)फल वाले वृक्षों में बँधी हुई एक लकड़ी जो पक्षियों को उड़ाने के लिये बँधी रहतीहै,डरानेकेनिमित्त कहीहुई बात।
डरिया-(हिं०स्त्री०) देखो डाल, शाखा।
डरी-(हिं०स्त्री०) देखो डली।
डरील, डरीला-(हिं०वि०)जिसमें शाखा हो, डार वाला, शाखायुक्त।
डरैला-(हिं०वि०) डरावना, भयकर।
डल-(हिं०पुं०) खण्ड, अश, टुकडा, (स्त्री०) झील।
डलई-(हिं०स्त्री०) देखो डलिया।
डलना-(हिं०क्रि०) डाला जाना, पड़ना।
डलावा-(हिं०पु०) देखो डला।
डलवाना-(हिं०क्रि०) डालने का काम दूसरे से करना।
डला-(हिं०पुं०) खण्ड, टुकडा, बेत, बाँस आदि की फट्टियों का बना हुआ पात्र दौरा, टोकरा।
डलिया-(हिं०स्त्री० छोटा टोकरा, दौरी
डली-(हिं०स्त्री०) खण्ड, छोटा टुकड़ा, छोटा ढेला, सुपारी, डलिया।
डल्लक-(सं०नपु०) बेंत बाँस आदि का बना हुआ पात्र, डला दौरा।
डवँरू-(हिं०पु०) देखो डमरू।
डवरा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा कटोरा।
डस-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मदिरा, तराजू के पलड़ेकीडोरी,कपड़े का छोर,
डसन-(हिं०स्त्री०)डसनेकी क्रिया या ढंग;
डसना-(हिं०क्रि०) साँप आदि विषैले कीड़ों का काटना, डंक मारना।
डसवाना, डसाना-(हिं०क्रि०) दांत से कटवाना।
डहकना-(हिं०क्रि०) ठगना, छल करना, फैलाना, छितराना, ललचाना, विलाप करना, गरजना; **डहकाना**-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, गँवाना, छल करना, वञ्चना।
डहडहा-(हिं०वि०) हराभरा,लहलहाता हुआ, आनन्दित, प्रसन्न, प्रफुल्लित, टटका। **डहडहाना**-(हिं०क्रि०) लहलहाना,हरा भरा,होना,प्रसन्न होना,
डहडहाटव-(हिं०पुं०)प्रसन्नता,प्रफुल्लता।
डहन-(हिं०पुं०) पंख, पर, डैना (स्त्री०) दाह, ज्वलन।
डहना-(हिं०क्रि०) भस्म होना, जलना, द्वेष करना, कुढना, चिढना, बुरा मानना, क्लेश पहुँचाना।
डहर-(हिं०स्त्री०)पथ, मार्ग आकाशगंगा
डहरना-(हिं०क्रि०)चलाना,घूमना फिरना
डहराना-(हिं०क्रि०) चलाना, फिराना।
डहार-(हिं०पुं०) कष्ट देने वाला।
डहु, डहू-(सं०पुं०) बड़हर का वृक्ष।
डा-(सं०स्त्री०, डाइन, (हिं०पुं०) सितार की गत का एक बोल।
डाइन-(हिं०स्त्री०) राक्षसी, चुड़ैल, डहि

स्त्री जिसकी कुदृष्टि के प्रभाव से बच्चे मर जाते हैं।
डांक-(हिं०स्त्री०) तावे या चाँदी का बहुत महीन पत्तर जो नगीनों के नीचे बैठाया जाता है, वमन, (पु०) देखो डंका।
डांकना-(हिं०क्रि०)कूद कर पार करना, फांदना, वमन करना।
डाँग-(हिं०स्त्री०) डंका
डाँगर-(हिं०पुं०) चौपाया, एक नीच जाति का नाम (वि०) कृश, दुबला पतला, मूर्ख, जड़।
डांगा-(हिं०पु०) जहाज के मस्तूल मे लगाई हुई बेड़े का बल्ला।
डांट-(हिं०स्त्री०)क्रोध का शब्द, घुडकी, शासन, दाब,दबाव, डपट। डांटना-(हिं०क्रि०) क्रोध पूर्वक कठोर शब्द कहना, डपटना, घुडकना।
डांठ-(हिं०पु०) देखो डंठल।
डांड़-(हिं०पु०) डंडा, सीधी लकड़ी, गदका, आड करने के लिये उठाई हुई नीची भीत,भीटा, टीला, सीमा, समुद्र का ढालुआँ किनारा, जगल काट कर बनाया हुआ स्थान, अर्थदंड, कट्ठा, बाँस, नाव खेने का पटरा लगा हुआ डडा, अंकुश का हत्था, खेत के चारो ओर बनाई हुई मेड। डांडना-(हिं०क्रि०)अर्थ दण्ड देना
डांड़र-(हिं०पु०) बाजरे आदि की खूटी जो कृषिफल काट लेने पर खेत में रह जाती है।
डाड़ा-(हिं०पु०) नाव खेने का पटरा लगा हुआ बांस का डंडा, सीमा, हद, डंडा, छड़, गदका।
डाड़ा मेडा-(हिं०पुं०) आपस की अति समीपता या लगाव, झगड़ा, टंटा।
डाड़ी-(हिं०स्त्री०) लंबा पतला काठ, लंबा हत्था, अस्त्र की मुठिया, तराजू की डंडी, पतली शाखा, फूल या फल लगा हुआ डंठल, मर्यादा, चिड़ियों के बैठने का स्थान, फूल के नीचे का पतला भाग, पालकी में लगाने का डडा, एक प्रकार की पहाड़ी सवारी, झप्पान, हिंडोले मे लगाने की लकड़ी,
डांवू-(हिं०पुं०) एक प्रकार की नरकट जो दलदल मे उत्पन्न होती है।
डांघरा-(हिं०स्त्री०) पुत्र, बेटा,लड़का।
डांवरी-(हिं०स्त्री०) पुत्री, कन्या, बेटी।
डांवरू-(हिं०पु०) बाघ का बच्चा।
डांवाडोल-(हिं०वि०) स्थिर न रहनेवाला, चंचल, विचलित।
डांश पाहिड़-(हिं०पु०) रुद्र ताल के ग्यारह भेदों में से एक।
डांस-(हिं०पुं०) बड़ा मच्छड़, देश, चौपायों को काटने वाली एक प्रकार की मक्खी।
डांमर-(हिं०पुं०)इमली का बीज, चियां
डाइन-(हिं०स्त्री०) कुरूपा स्त्री, जिस स्त्री की बुरी दृष्टि से बच्चे मर जाते हैं, चुड़ैल, भूतिन।
डाक-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहां पर घोड़े गाडी बदले जाते हैं, चिट्ठियो के जाने आने की राजकीय व्यवस्था, इस प्रबन्ध से चिट्ठी पत्री जो भेजी जावे, वमन, कय, उलटी; डाक बैठाना-शीघ्र यात्रा के निमित्त स्थान स्थान पर घोडे गाड़ी बदलने का प्रबन्ध करना; डाक चौकी-वह स्थान जहां घोडे गाडी बदले जाते है
डाकखाना-(हिं०पुं०) वह सरकारी स्थान जहां पर मनुष्य भिन्न भिन्न स्थानो मे पत्र आदि भेजने के लिये इनको छोडते है तथा भिन्न भिन्न स्थानों से आये हुए पत्र आदि जहां पर बाँटे जाते है। डाकगाड़ी-(हिं०स्त्री०) वह रेलगाड़ी जो डाक को ले जाती है। डाकघर-(हिं०पुं०) देखो डाकखाना।
डाऊना-(हिं०स्त्री०) लाँघना, फाँदना, कूदना, उलटी करना, वमन करना।
डाकबंगला-(हिं०पुं०) वह राजकीय गृह जो एक स्थान से दूसरे स्थान मे जानेवाले राजपुरुषों तथा यात्रियो के सुविधा और विश्राम के लिये बना होता है। डाकमुन्शी-(हिं०पु०) डाकघर का प्रबंध करनेवाला, पोस्टमास्टर
डाकर-(हिं०पु०) सूखे हुए तालाब की मिट्टी जो धूप से फट जाती है।
डाकव्यय-(हिं०पु०)डाक महसूल, डाक का खर्च।
डाका-(हिं०पु०) किसी का धन छीनने के लिये आक्रमण या धावा, बटमारी
डाकाजनी-(हिं०स्त्री०) डकैती करने का काम।
डाकिन, डाकिनी-(सं०स्त्री०) काली के एक गणका नाम, पिशाची, डाइन, चुड़ैल, शिव और पार्वती का अनुचर जो संहार शक्ति का अङ्ग विशेष कहा जाता है।
डाकी-(हिं०स्त्री०) उलटी, वमन कय, (पुं०) पेटू मनुष्य।
डाकू-(हिं०पुं०) वह जो अन्याय से दूसरे का माल लूट लेता है, लुटेरा, बटमारा, पेटू मनुष्य।
डाकोर-(हिं०पुं०) विष्णुभगवान्,ठाकुर,
डाक्टरी-(हिं० स्त्री०) चिकित्सा शास्त्र, पाश्चात्य आयुर्वेद विद्या।
डाक्तर-(हिं०पुं०) देखो डाक्टर।
डागा-(हिं०पुं०)वह डंडा जिससे नगाड़ा बजाया जाता है, चोब।
डागुर(हिं०पुं०) जाटों की एक जाति।
डाट-(हिं०स्त्री०) टेक, चाँड़, छेद बन्द करने की प्रयुक्त कोई वस्तु, बोतल का मुंह बन्द करने की वस्तु, डट्टा, माग, देखो डाँट। डाटना-(हिं०क्रि०) एक वस्तु को दूसरे के ऊपर रखकर बलपूर्वक दबाना, चांड़ लगाना, टेकना, ठेपी लगाना, छेद बन्द करना, ठूस ठूसकर भरना, पेट भर भोजन करना, डटाना, भिड़ाना, मिलाना।
डाढ़-(हिं०स्त्री०) चबाने के चौडे दांत, दाढ, वट आदि वृक्षों की जटा, बरोह
डाढ़ना-(हिं०क्रि०) जलाना।
डाढ़ा-(हिं० स्त्री०) दावानल, जगल की आग, अग्नि, जलन, दाह।
डाढ़ी-(हिं० स्त्री०) चिबुक और गण्डस्थल पर के बाल, दाढ़ी, चिबुक, ठुड्डी।
डाब-(हिं०स्त्री०) कच्चा नारियल, तलवार लटकाने की चौड़ी पट्टी परतला
डाबर-(हिं०पु०) पोखरी, गड्ढा, ताल, हाथ धोने तथा कुल्ला करने का पात्र, चिलमची,(वि०)मटमैला जल।
डाबा-(हिं०पुं०) देखो डब्बा।
डाबी-(हिं०स्त्री०) कटी हुई घास।
डाभ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कुश (कुशा), आम की बौर, कच्चा नारियल।
डाभक-(हिं०वि०) टटका।
डामचा-(हिं०पुं०) खेत में खड़ी करने की मचान।
डामर-(सं० पुं०) महादेवजी का कहा हुआ एक तन्त्रशास्त्र, आडम्बर, चमत्कार गर्व, अहकार एक प्रकार का चक्र जो दुर्ग के शुभाशुभ जानने के लिये बनाया जाता है, एक क्षेत्रपाल का नाम, धूमधाम, हलचल; (हिं० पुं०) साखू के वृक्ष की गोंद. राल, एक प्रकार की राल जो छोटी मधुमक्खियों के छत्तों मे से निकलती हैं, मधुमक्खी जो ऐसी राल बनाती है।
डामल-(हिं०स्त्री०) जीवनपर्यन्त कारागार, जन्म भर के लिये बंदी, 'देश निकाल का राजकीय दण्ड।
डामाडोल-(हिं०वि०) देखो डावांडोल।
डाँय डाँय-(हिं०क्रि०वि०) व्यर्थ इधर उधर घूमते हुए।
डायन-(हिं०स्त्री०)कुरूपा, भयकर स्त्री, डाकिनी, पिशाचिनी, वह स्त्री, जिसकी कुदृष्टि से बच्चे मर जाते हैं
डार-(हिं०स्त्री०)डलिया,टोकरी, शाखा, डाल, एक प्रकार की खूटी जो भीत में लगाई जाती है।
डारना-(हिं०क्रि०) देखो डालना।
डाल-(हिं०स्त्री०) शाखा, तलवार का फल, एक प्रकार का गहना, डालियों में सजाकर भेजने का खाद्य पदार्थ, फानस की खूंटी, डलिया, चगेरी, विवाह के समय वर पक्ष की ओर से वधू को दिया जाने वाला वस्त्र और आभूषण।
डालना-(हिं० क्रि०) नीचे गिराना, फेकना, छोड़ना, ऊपर से गिराना, रखना, मिलाना, भीतर घुसाना, सुध न लेना, भुला देना, चिन्हित करना, फैलाना, शरीर पर धारण करना, सौंपना, वमन करना, उपयोग करना, लगाना, गर्भपात करना, मिश्रित करना, पत्नी की तरह रखना, बिछाना, सुसज्जित करना, खोज करना; डाल रखना-रख छोडना।
डाली-(हिं० स्त्री०) फूल फल या खाने पीने की वस्तु सजाकर किसीके यहाँ भेजने की टोकरी, छितनी।
डावड़ा,(डावरा)-(हिं०पुं०) पुत्र, बेटा
डावरी-(हिं०स्त्री०)कन्या, बेटी, पुत्री।
डास-(हिं० पुं०) चमार का चमड़ा स्वच्छ करने का एक यन्त्र।
डासन-(हिं० पुं०) बिस्तर, बिछावन, बिछौना। डासना-(हिं०क्रि०)फैलाना, बिछाना। डासनी-(हिं० स्त्री०) चारपाई, पलंग, खाट।
डाह-(हिं० स्त्री०) ईर्ष्या, द्वेष, जलन।
डाहना-(हिं०क्रि०) कष्टदेना, जलाना,
डाही, डाहूक-(हिं०पुं०)कष्ट देने वाला,
डिगल-(हिं०वि०)दूषित, घृणित, नीच, अधम, (स्त्री०) राजपूताने की भाषा जिसमे भाट और चारण काव्य तथा वंशावली आदि लिखते हैं।
डिंड़स, डिंड़सी-(हिं०) एक प्रकार की तरकारी।
डिंडिभी-(हिं०स्त्री०) देखो डिण्डिम।
डिंभ-देखो डिम्भ।
डिभिया-(हिं० वि०) पाखण्डी, अभिमानी, घमण्डी।
डिक्की-(हिं० स्त्री०) सींघ का धक्का, आक्रमण, धावा।
डिगना-(हिं०क्रि०) हिलना,
डिगाना-(हिं०क्रि०) जगह से हटाना, घसकाना, सरकाना, बात पर स्थिर न रहना, विचलित करना।
डिग्गी-(हिं०स्त्री०)तालाब,पोखरी,साहस
डिङ्गर-(सं०पुं०) मोटा आदमी,जंगल, बन, सेवक, धूर्त मनुष्य, ठग।
डिठार, डिठियार-(हिं०वि०) आंख वाला, जिसको सुझाई दे।
डिठोरी-(हिं०स्त्री०) चौलमुग्रा नामक औषधि, एक वृक्ष का बीज।
डिठोहरी-(हिं०स्त्री०) देखो डिठोरी।
डिठौना-(हिं०पुं०) काजल का टीका जिसको स्त्रियां दृष्टि न लगने के लिये बच्चों के सिरपर लगाती हैं।
डिडका-(सं०स्त्री०) युवावस्था मे मुख पर होने वाला रोग, मुहांसा।
डिडकारी-(हिं०स्त्री०) चिग्घार मार कर रोना।
डिड़वा, डिड़ई-(हिं०पुं०) एक प्रकार का अगहनिया धान।
डिढ-देखो दृढ; डिढाना-दृढकरना।
डिण्डिभ-(सं०पुं०)डिमडिमी,डुगडुगिया
डिण्डिश-(सं०पुं०) डिण्डिसी नाम की तरकारी।
डिबिया-(हिं०स्त्री०)ढपनेदारछोटाडिब्बा
डिबिया टेंगड़ी-(हिं०स्त्री०) कुश्ती का एक पेच, मल्ल युद्ध की एक युक्ति
डिब्बा-(हिं०पुं०) ढपनेदार छोटा पात्र, रेलगाड़ी का एक कमरा, संपुट

छोटे बच्चो की पसली चलने का रोग, पसई।
डिभकना-(हि०क्रि०) मोहित करना।
डिम-(सं०पुं०) दृश्य काव्यरूप नाटक का एक भेद जिसमे माया, इन्द्रजाल लड़ाई आदिका समावेश विशेष रूप से होताहै,यह रौद्र-रस प्रधान होता है और इसमें चार अङ्क होते है।
डिमडिमी-(हि०स्त्री०) डुगडुगिया,डग्गी
डिम्ब-(सं०पुं०) भय, डर,कलल, गर्भाशय मे वीर्य और रज की एक अवस्था, फेफड़ा, भय से उत्पन्न कलह,हलचल,अडा, पिलही, प्लीहा कीड़े का बच्चा, उपद्रव।
डिम्बक-(सं०पुं०) देखो डिम्भक।
डिम्बज-(सं०पुं०) अण्डज, जिसकी उत्पत्ति अंडे से हो।
डिम्बाहव-(सं० नपुं०) ऐसी लड़ाई जिसमें राजा सम्मिलित न हो।
डिम्बिका-(सं०स्त्री०) मदमाती स्त्री, जल की परछाहीं।
डिम्भ-(सं०पुं०)शिशु,बछवा,बालक, मूर्ख
डिम्भक-(सं०पुं०) बालक, लड़का।
डिम्भचक्र-(सं०नपु०) एक चक्र जिससे मनुष्यों का शुभाशुभ निर्णय किया जाता है। डिभज-(सं०वि०) जिसकी उत्पत्ति अंडे से हो।
डिम्भा-(सं०स्त्री०) गोद का बच्चा।
डिल-(हि०पुं०)मोथाघास,ऊनकी लच्छी
डिल्ला-(सं०पुं०)एक प्रकार का वर्णवृत्त (हिं०पुं०) बैल के कंधे पर का उठा हुआ कूबड़, ककुत्थ, बढ़े हुए मांस का पिण्ड।
डींग-(हिं० स्त्री०) अपनी बड़ाई की झूठी बात।
डीक-(हि० स्त्री०) आख का जाला, मोतियाबिन्द।
डीठ-(हि० स्त्री०) दृष्टि, देखने की शक्ति,ज्ञान,सूझ। डीठना-(हि०क्रि०) दृष्टिपथ में आना,देख पड़ना, दृष्टि लगाना, दिखाना।
डीठबंध-(हि०पुं०) इन्द्रजाल,वह जादूगर जो इन्द्रजाल दिखलाता हो।
डीठिमूठि-(हि०स्त्री०) जादू, टोना, कुदृष्टि, नज़र।
डीतर-(सं०वि०)दूसरेकापीछाकरनेवाला
डीन-(सं०नपुं०) पक्षियों की गति, उड़ान, आगम शास्त्र (अ०पु०)विश्व-विद्यालय का एक प्रबंधकर्त्ता।
डीबुआ-(हिं०पुं० डबल, पैसा।
डीमडाम-(हिं०पुं०)ठाटबाट, आडम्बर, ऐठ, ठसक, धूमधाम।
डील-(हिं०पुं०) शरीर का विस्तार, शरीर, देह, व्यक्ति, प्राणि, मनुष्य।
डीलडौल-शरीर की लबाई चौड़ाई, शरीर का ढाचा,काठी (संस्कृत डित्थ)
डीहदारी-(हि०स्त्री०) जिमीदारों का एक प्रकार का अधिकार।
डुंग-(हि०पुं०) अटाला, ढेर, राशि, भीटा, छोटी पहाड़ी, टीला।
डुंड-(हि०पुं०)पेड़कीसूखीहुईशाखा, ठूंठ
डुक-(हिं०पुं०) घूसा, मुक्का।
डुकिया-(हि०स्त्री०) देखो डोकिया।
डुकियाना-(हि०स्त्री०) घूसा मारना, मुक्का लगाना।
डुगडुगी-(हि०स्त्री०) चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा, डुग्गी, डम्मल
डुग्गी-(हिं०स्त्री०) देखो डुगडुगी।
डुङ्गरी-(सं०स्त्री०) कद्दू, लौकी।
डुगडुगाना-(हिं०क्रि०) नगाडा, ताशा आदि को लकड़ी से बजाना।
डुण्डु-(सं०पुं०) दो मुँह वाला सांप।
डुण्डुभ-(सं०पुं०) पानी मे रहने वाला सर्प, डोड़हा सांप।
डुण्डुल-(सं०पुं०) छोटी जाति का उल्लू पक्षी।
डुन्डुक-(हि०पुं०)एक प्रकार का हिरन।
डुपटना-(हि०क्रि०) कपड़े को चुनना, चुनियाना।
डुपट्टा-(हि०पुं०) देखो दुपट्टा।
डुबकी-(हि०स्त्री०) जल मे डूबने का कार्य, बुड़की, बिना घी या तेल मे तली हुई बरी।
डुबवाना-(हिं०क्रि०) डुबाने का काम दूसरे से कराना। डुबाना-(हिं०क्रि०) मग्न करना, गोता देना, बोरना, नष्ट करना, सत्यानाश करना; नाम डुबाना-अपनी मान मर्यादा को नष्ट करना; लुटिया डुबाना-प्रतिष्ठा को खो बैठना। डुबाव-(हि०पु०) डूबने भर की जल की गहराई।
डुबोना-(हि०क्रि०) देखो डुबाना,बोरना
डुब्बी-(हि०स्त्री०) देखो डुबकी।
डुभकौरी-(हि०स्त्री०) झोल मे पकाई हुई बिना तली हुई बरी।
डुमई-(हि०स्त्री०) एक प्रकार का चावल
डुलि-(सं०स्त्री०) कच्छपी, कछुई, सवारी
डुलिका-(सं०स्त्री०) खजन जाति का एक पक्षी।
डुली-(सं०स्त्री०) लाल पत्तीका बथुआ
डुलना-(हिं०क्रि०) देखो डोलना। डुलाना-(हि०क्रि०) चलाना, हटाना, घुमाना, फिराना, गति युक्त करना, हिलाना, टहलाना।
डूगर-(हि०पुं०) खंडहर, टीला,भीटा, छोटी पहाड़ी। डूंगरफल-(हि०पुं०) बंदाल का फल।
डूगरी-(हि०स्त्री०) छोटी पहाड़ी, छोटा टीला।
डूंगा-(हि० पुं०) चम्मच,चमचा, रस्से का गोल लपेटा हुआ लच्छा।
डूबना-(हिं०क्रि०) मग्न होना, गोता खाना, सूर्य, चन्द्रमा ग्रह आदि का अस्त होना, सत्यानाश होना, मारा जाना, बुड़जाना, लीन होना,अच्छी तरह ध्यान लगाना, दरिद्र के घर कन्या का विवाह होना, किसी का दिये हुए अथवा व्यवसाय में लगाये हुए धन का नष्ट होना; डूब मरना-लज्जा वश किसी को मुँह न दिखलाना; चुल्लू भर पानी मे डूब मरना-लाज के मारे मुँह न दिखलाना; डूबना उतराना-चिन्तित रहना; जी डूबना-जी घबड़ाना, नाम डूबना-मान मर्यादा नष्ट होना
डूमा-(हि०पुं०) रूसकीराज सभाकानाम
डेड़सी-(हि०स्त्री०) एक प्रकारकी तरकारी जो ककडी की तरह की होती है
डेग, डेगची-(हि०) देखो देग, देगची।
डेड़हा-(हि०पुं०) जल का सर्प।
डेढ़-(हि०वि०) एक पूरा और आधा; डेढ़ ईट की मसजिद बनाना-अपने अभिमान मे सबसे अलग रहना; डेढ़ चावल की खीर पकाना-अपनी अनुमति सबसे निराली रखना। डेढ़ खम्मन-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की गोल रुखानी। डेढ़खम्मा-(हि०पुं०) बिना कुल्फी का नैचा। डेढ़गोशी-(हि० पुं०) एक प्रकार का छोटा पुष्ट जहाज।
डेढ़ा-(हि०वि०) डेढगुना, एक प्रकार का पहाड़ा जिसमे प्रत्येक संख्या की डेढ़गुनी सख्या बतलाई जाती है।
डेढ़ी-(हि०स्त्री०) किसी वस्तु का आधा और देना।
डेरा-(हि०पुं०) ठहराव, पड़ाव, टिकान, ठहराने का स्थान, छावनी, खेमा, तम्बू, शामियाना, निवासस्थान,घर, मकान, नाचने या गानेवालों की मण्डली, ठहराव का आयोजन; डेरा डालना-कहीं पर टिकने के लिये सामान फैलाना; डेरा पड़ना-टिकना, ठहरना।
डेराना-(हि०क्रि०)देखोडराना डरवाना
डेल-(हि०स्त्री०) रबी की उत्पत्ति के लिये जोती हुई भूमि, (पुं०) एक प्रकार का बडा वृक्ष उल्लू पक्षी, पत्थर या मिट्टी का टुकडा, ढेला रोडा, पक्षियों को बन्द करने का झाबा या टोकरी।
डेला-(हि०पुं०) आंख का कोया, वह काठ का टुकड़ा जो नटखट पशु के गले मे बांधा जाता है।
डेलिया-(हि०पुं०) एक प्रकारका पौधा जिसमे लाल या पीले फूल निकलतेहैं
डेली-(हि०स्त्री०)बांसकीबनी हुईडलिया
डेवढ़-(हि०वि०) डेढ़गुना,डेवढ़ा, (स्त्री०) क्रम, सिलसिला।
डेवढ़ना-(हि०क्रि०) रोटी का आँच पर फूलना, कपड़े की तह लगाना, हिसाब बन्द करना।
डेवढ़ा-(हि०वि०) एक और आधा, डेढ़ गुना; (पुं०) डेढ़गुनी सख्याकापहाड़ा कुछ ऊंचे स्वर मे गान।
डेवढ़ी-(हि०स्त्री०) देखो ड्योढ़ी।
डेहरी-(हि०स्त्री०) दहलीज़, देहली।
डेहल-(हि०पुं०) देखो डेहरी।
डेंगना-(हि०पुं०) नटखट चौपायों के गले मे बांधनेका लकड़ी का टुकड़ा, ठेंगुर।
डोंगर-(हि०पु०) पहाड़ी, टीला, भीटा
डोंगा-(हि०पुं०) वह नाव जिसमे पाल नहीं लगाई जाती, नाव।
डोंगी-(हि०स्त्री०) बिना पाल की छोटी नाव, छोटी नाव, लोहार का वह पानी का पात्र जिसमे वह लोहा लाल करके बुझाता है।
डोंड़ा-(हि०पुं०) बड़ी इलायची, टोटा, कारतूस।
डोंड़ी-(हिं०स्त्री०) पोस्ते का फल जिसके छिलके को चीर कर अफीम निकाली जाती है, टोटी, किसी पात्र का उभड़ा हुआ मुह, छोटी नाव।
डोई-(हि०स्त्री०) कटोरे मे बेट जड़ी हुई करछी जिससे हलवाई लोग घी, चाशनी आदि कड़ाहे मे से निकालते है।
डोक-(हि०पुं०) पका हुआ छोहारा।
डोकर, डोकरा-(हि०पुं०) अशक्त बुड्ढा आदमी। डोकरी-(हि०स्त्री०) बूढ़ी स्त्री, बुड्ढी औरत।
डोका-(हि०पुं०) तेल घी आदि रखने का काठ का छोटा पात्र। डोकिया, डोकी (हि०स्त्री०) तेल आदि रखने का काठ का बरतन।
डोड़हथी-(हि०स्त्री०) करवाल, तलवार
डोड़हा-(हि०पुं०) जलमे रहनेवाला सर्प
डोड़ी-(हि०स्त्री०) मटर सेम आदि की कच्ची फली, जीवन्ती नामकी लता
डोडी-(हिं०स्त्री०) बत्तक के आकार का एक पक्षी।
डोब, डोबा-(हि०पुं०) गोता, डुबकी।
डोबना-(हिं०क्रि०) डुबाना।
डोम-(हि०पुं०)भारतवर्षकी एकअस्पृश्य नीच जाति, ये लोग मृतक शरीरको एक स्थानसे दूसरे स्थानको ले जाते हैं, तथा चिता जलाते और बॉस के पात्र बनाते, बेचते है। डोमकौवा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा कौवा जिसका सम्पूर्ण शरीर काला होता है। डोमड़ा-(हिं०पुं०) देखो डोम।
डोमनी-(हि०स्त्री०) डोम जाति की स्त्री, डोमिन।
डोमा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सर्प।
डोमिन-(हि०स्त्री०) डोम जातिकी स्त्री।
डोर-(हि०पुं०) बन्धन सूत्र, डोरा, सूत; डोर पर लगना-किसी व्यवस्थित कार्य मे नियुक्त करना।
डोरना-(हिं०क्रि०)हाथपकड़करलेचलना
डोरा-(हि०पुं०) सूत, तागा, धारी, लकीर, आँखों में की पतली लाल नसे जो उन्मत्तता में उभड़ आती है, तलवार की धार, एक प्रकार की बड़ी करछी, पल्ली, अनुसन्धान, स्नेहसूत्र, प्रेम का बन्धन, काजल या सुरमे की लकीर, नाचने मे कण्ठ की गति, पोस्ते की डोंड़ी, तपाये हुए घी की धार; डोरा डालना-स्नेह सूत्र मे बाँधना, परचाना।
डोरिया-(हि०पुं०) एक प्रकार का सूती

कपड़ा जिसमें मोटे सूत की लम्बी धारियाँ बनी रहती हैं, हरे पैर का एक प्रकार का बगला, एक नीच जाति। **डोरियाना**-(हिं०क्रि०) बन्धन लगाकर पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थानको ले जाना; **डोरिहार**-(हि० पुं०) पटवा जो रेशम या सूत में गहने गुथता है, एक प्रकार का शैव योगी।

डोरी-(हिं०स्त्री०) रज्जु, पाश, रस्सी, बधन. कड़ाही में का दूध चाशनी आदि निकालनेका डंडीदार कटोरा, डोई; **डोरी ढीली करना**-चौकसी करने में कमी करना।

डोरे-(हिं०वि०क्रि०) सगसग, साथसाथ

डोल-(हिं०पुं०) कुवें से पानी खींचने का लोहे का गोल बरतन, हिंडोला, झूला, पालना, पालकी, डोली, हलचल, एक प्रकार की उपजाऊ काली मिट्टी।

डोलक-(सं०पुं०) ताल देने का एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

डोलची-(हिं०स्त्री०) छोटा डोल।

डोलडाल-(हि०पुं०) चलना फिरना, टट्टी जाना। **डोलना**-(हिं०क्रि०) गति में होना, हिलना, टहलना, चलना, घमना फिरना, हटना, दूर चला जाना, विचलित होना, स्थिर न रहना।

डोला-(हिं०पुं०) शिविका, पालकी, डोली, मियाना, झूले में दिया जाने वाला झोंका,पेंग; **डोला देना**-अपनी बहू बेटी को किसी राजा को भेंट देना, कन्या को वर के घर जाकर व्याहना।

डोलाना-(हिं०क्रि०) गति युक्त करना, हिलाना, चलाना, भगाना,हटाना,दूर करना, अलग करना। **डोलायन्त्र**-(हिं०पुं०) देखो दोलायन्त्र।

डोली-(हिं०स्त्री०) शिबिका, पालकी; **डोली करना**-हटाना, टालना, दूर करना।

डोही-(हिं०स्त्री०) देखो डोई।

डौड़ी-(हिं०स्त्री०) ढिंढोरा, घोषणा, डुगडुगिया; **डौंड़ी देना**-ढिंढोरा पीटना, मुनादी करना; **डौंड़ी बजना**-घोषणा या मुनादी होना, जयजयकार होना।

डौंरा-(हिं०पुं०) खेत में उगने वाली एक प्रकार की घास।

डौंरू-(हिं०पुं०) देखो डमरू।

डौआ-(हिं०पुं०) काठ का बना हुआ बड़ा चम्मच।

डौल-(हिं०पुं०) प्रारंभिक रूप, ढांचा, रचना प्रकार, शैली, ढब, भाँति, प्रकार, उपाय, खेतकी मेड़, डांड़, लक्षण, रंग ढंग, सामान; **डौल पर लाना**-ढबपर लाना; **डौल बाँधना**-उपाय करना। **डौलडाल**-(हिं०पुं०) युक्ति, उपाय। **डौलदार**-(हिं०वि०) सुन्दर।

डौलियाना-(हिं०क्रि०) ढग पर लाना, दुरुस्त करना।

ड्योढा-(हिं०वि०) पूरा और आधा, डेवढा, (पुं०) डेढगुनी संख्या का पहाड़ा, गीतका ऊंचा स्वर।

ड्योढी-(हिं०स्त्री०) फाटक, चौखट. द्वार में प्रवेश करती समय घर का पहला बाहरी कमरा, पौरी।

ड्योढीदार, ड्योढीवान-(हिं०पुं०) दरवान, चौकीदार।

ढ

ढ संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का चौदहवां व्यंजन वर्ण तथा टवर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।

ढ-(सं०पुं०) बड़ा ढोल, नगाड़ा, ध्वनि, नाद, कुत्ता, सर्प, कुत्ते की पूंछ, निर्गुण परमेश्वर।

ढंकन--(हिं०पुं०) देखो ढक्कन।

ढँकना-(हिं०क्रि०) देखो ढकना।

ढंख-(हिं०पुं०) देखो ढाक।

ढंग-(हिं० पुं०) प्रणाली, पद्धति शैली, रीति, प्रकार, भांति,रचना, बनावट, उपाय, युक्ति, आचरण, चालढाल, लक्षण, आभास, स्थिति, अवस्था, दशा, ब्यवहार, पाखण्ड, बहाना; **ढंग पर चढ़ना**-अनुकूल होना; **ढंग पर लाना**-अपने अभिप्राय के अनुसार करना; **रंगढंग**-लक्षण; **ढंग उजाड़**-(हिं०पुं०) घोड़े के दुम के नीचे की एक भौंरी जो बुरी मानी जाती है।

ढंगलाना-(हिं०क्रि०) लुड़का देना।

ढंगी-(हिं०वि०) चतुर, घूर्त, छली।

ढंढस-(हिं०पुं०) देखो ढोंग

ढंढार-(हि०वि०) अत्यन्त जीर्ण, बहुत बुड्ढा।

ढंढोर-(हिं०पुं०) ज्वाला. आगकी लपट, लौ, काले मुंह का बन्दर, लंगूर। **ढंढोरची**-(हिं०पुं०) ढिंढोरा फेरनेवाला, मुनादी करने वाला।

ढंढोरना-(हिं० क्रि०) इधर उधर ढूंढना

ढंढोरा-(हिं०पुं०) घोषणा करने का ढोल, डुगडुग्गी, ढोल बजाकर की हुई घोषणा। **ढंढोरिया**-(हिं०पुं०) डुग्गी बजाकर घोषणा करने वाला।

ढँपना-(हिं०क्रि०) ढंक जाना (पुं०) वह वस्तु जिससे कोई चीज ढाँकी जाती हैं

ढई-(हिं०स्त्री०) किसीके घर पर जाकर जब तक अपना काम पूरा न हो तब तक धरना देना।

ढकना-(हिं०पुं०) ढापने की वस्तु, ढक्कन, (क्रि०) छिपना, ढाँकना।

ढकनिया, ढकनी-(हिं०स्त्री०) ढाँपने की वस्तु।

ढकिल-(हिं०पुं०) तीव्र आक्रमण।

ढकेलना-(हिं०क्रि०) धक्का देकर आगे बढ़ाना, घुमाना।

ढकोसना-(हिं०क्रि०) बड़े बड़े घूंट पीना

ढकोसला-(हि० स्त्री०) पाखंड।

ढक्कन-एक प्रकार का गोदना जो हथेली के पीछे गोदा जाता है।

ढक्का-(हिं०पुं०) बड़ा ढोल, नगाड़ा, डंका।

ढक्कारी-(सं०स्त्री०) तारा देवी।

ढक्की-(हिं०स्त्री०) पहाड़ की ढालुवाँ भूमि।

ढगण-(सं०पुं०) एक मात्रिक गण जिसमे तीन मात्राएँ होती हैं,ताण्डव

ढङ्कण-(सं०नपुं०) शैवाल, सेवार।

ढचर-(हिं०पुं०) प्रपंच, टंटा, बखेड़ा, आडम्बर, झूठा आयोजन (वि०) अत्यन्त जीर्ण तथा दुर्बल।

ढटिंगड़-(हि०वि०) वड़े डील डौल का।

ढट्ठा-(हिं०पुं०) कान तक ढाँपने वाला मुरेठा।

ढट्ठी (हिं०स्त्री०) डाढी बाँधने की कपड़े की पट्टी, छेत्र बंद करने की ठेंपी, डाट।

ढड्ढा-(हिं०वि०) आवश्यकता से अधिक बहुत बड़ा (पुं०) ढाँचा, आडम्बर, झूठा ठाटबाट।

ढनमनाना-(हिं०क्रि०) लुड़क जाना।

ढड्ढी-(हिं० स्त्री०) बुड्ढी, स्त्री, बकवादी स्त्री।

ढप-(हिं०पुं०) देखो ढब; रीति,युक्ति, प्रकृति, अभ्यास।

ढपना-(हिं०पुं०) ढक्कन, ढाकने की वस्तु, (क्रि०) ढपा होना।

ढपरी-(हिं०स्त्री०) चुड़िहारे की अगीठी का ढपना।

ढप्पू-(हिं०वि०) अत्यन्त दीर्घ, बहुत बड़ा

ढफ-(हिं०पुं०) देखो डफ।

ढढोरना-देखो ढँढोरना।

ढब-(हि०पुं०) ढंग, युक्ति, रीति, प्रकार, बनावट, गढन; **ढब पर चढ़ना**-अपना आशय सिद्ध होने की अवस्था पर होना; **ढब पर लगाना**-आशय सिद्ध होने की रीति पर नियुक्त करना।

ढमढम-(हिं०पुं०) नगाड़े या ढोल का शब्द।

ढयना-(हिं०क्रि०) घर मकान आदि का ध्वस्त होना या गिर पड़ना।

ढरकना-(हिं०क्रि०) ढलना, गिर कर बह जाना, द्रव पदार्थ का नीचे की ओर बह जाना।

ढरका-(हिं०पुं०) आँख का एक रोग जिसमें आँसू बहा करता है, चौपायों को दवा पिलाने की बाँस की नुकीली नली।

ढरकी-(हिं०स्त्री०) बाने का सूत फेंकने का जुलाहे का एक साधन। **ढरकाना**-(हिं०क्रि०) पानी आदि को नीचे तल में गिराना, बहाना।

ढरना-(हिं०क्रि०) देखो ढलना।

ढरनि-(हिं०स्त्री०) पतन, गिरने की क्रिया, हिलने डोलने की क्रिया, चित्तवृत्ति, झुकाव, स्वाभाविक करुणा, दयाशीलता, कृपा।

ढरहना-(हिं०क्रि०) झुकना, गिरना, ढरकना, सरकना।

ढरहरा-(हिं०वि०) ढालुवाँ।

ढरहरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पक्वान्न, पकौड़ी।

ढराना-(हि०क्रि०)देखो ढराना,ढरकाना

ढरारा-(हिं०वि०) ढरकने वाला, गिर कर बह जानेवाला, लुड़कने वाला, शीघ्र प्रवृत्त होने वाला, आकर्षित होनेवाला।

ढर्रा-(हि०पुं०) पथ, मार्ग, शैली, ढंग, उपाय, युक्ति, आचरण।

ढलकना-(हिं०क्रि०) ढलना, बह जाना, सरकना, लुड़कना।

ढलका-(हिं०पुं०) देखो ढरका। **ढलकाना**-(हिं०क्रि०) बहाना, गिराना, लुडकाना।

ढलकी--(हिं०स्त्री०) देखो ढरकी।

ढलमल-(हिं०वि०) शिथिल

ढलना-(हिं०क्रि०) पानी या किसी द्रव पदार्थ का एक पात्र से दूसरे में डाला जाना, गिरकर बहना, बीतना, लुड़कना, लहराना, साँचे में ढाल कर बनाया जाना, प्रसन्न होना, प्रवृत्त होना झुक जाना; **दिन ढलना**-सूर्यास्त होना, साँझ होना; **सूरज या चाँद का ढलना**-इनका अस्त होना; **साँचे में ढला हुआ**-बड़ा सुडौल, अति सुन्दर।

ढलवाँ-(हिं० वि०) साँचे में ढाल कर बनाया हुआ। **ढलवाना**-(हिं०क्रि०) ढालने का काम दूसरे से कराना।

ढलाई-(हिं०स्त्री०) ढालने का काम. ढालने का शुल्क या पारिश्रमिक।

ढलाना-(हिं०क्रि०) देखो ढलवाना।

ढलुवाँ-(हिं०वि०) ढालकर बनाया हुआ

ढलैत-(हिं०पुं०) ढाल बाँधने वाला सिपाही।

ढवरी-(हि०स्त्री०) धुन, रट, लगन।

ढहना-(हिं०क्रि०) घर आदि का गिरना, नष्ट होना, ध्वस्त होना, निर्मूल होना। **ढहवाना**-(हिं०क्रि०) ढहाने का काम दूसरे से कराना, मकान आदि को गिरवाना, **ढहरी**-(हिं०स्त्री०) देहली।

ढहाना-(हिं०क्रि०) मकान आदि को ध्वस्त कराना, गिराना।

ढाँक-(हिं०पुं०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति

ढाँकना-(हिं०क्रि०) छिपाना, आड़ में रखना, किसी वस्तु को इस प्रकार फैलाना कि उसके नीचे की वस्तु छिप जावे।

ढाँख-देखो ढाक, **ढाँचा**-(हिं०पुं०) किसी रचना की आदि की अवस्था, डौल, ठाट, ठठरी, पंजर, बनावट,

गढन, रचना, तरह, प्रकार, लकड़ी आदि की छड़ या बल्ले जो परस्पर इस प्रकार जड़े होते हैं कि उनके बीच में कोई दूसरी वस्तु लगाई जा सके, पंजर, ठठरी।

ढाँपना-(हिं०क्रि०) देखो ढाकना।

ढाँस-(हिं०स्त्री०) गले का वह शब्द जो सूखी खाँसी के साथ निकलता है।

ढाँसना-(हिं०क्रि०) सूखी खाँसी खाँसना

ढाई-(हिं०वि०) दो से आधा अधिक २॥

ढाक-(हिं० पुं०) पलाश का वृक्ष, बड़ा ढोल जो लड़ाई में बजाया जाता है; **ढाक के तीन पात**-सर्वदा एक समान

ढाकापाटन-एक प्रकार का महीन कपड़ा जिसमें फूलके चिह्न बने रहते हैं

ढाटा-(हिं०पुं०) डाढी बाँधने की कपड़े की पट्टी, वह बड़ा मुरेठा जिसका एक फेटा डाढी और गाल पर भी लपेटा रहता है।

ढाड़-(हिं०स्त्री०)चिल्लाहट,गरज,चिग्घाड़ चीख; **ढाड़ मारना**-चीख कर रोना।

ढाढ़ना-(हिं०क्रि०) देखो दाढ़ना।

ढाढ़स-(हिं०पुं०)आश्वासन,धैर्य, सान्त्वना, दृढ़ता, साहस।

ढाढिन-(हिं०स्त्री०) ढाढी की स्त्री।

ढाढ़ी-(हिं०पुं०) एक प्रकार की नीच जाति, ये लोग जन्मोत्सव के अवसर पर लोगों के घरों पर जाते हैं और बधाई की गीत गाते हैं, पौरिया

ढाढौन-(हिं०पुं०) जल सिरिस का वृक्ष

ढाना-(हिं०क्रि०) ढहवाना, ध्वस्त करना, गिराना।

ढापना-(हिं०क्रि०) ढपना बन्द करना, ढांपना।

ढाबर-(हिं०वि०) मट मैला।

ढाबा-(हिं०पुं०) ओलती, जाल, रोटी की दूकान बाहरी, बारहदरी।

ढामक-(हिं०पुं०) नगाड़े ढोल आदि का शब्द।

ढामना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का साँप।

ढामरा-(सं०स्त्री०) मादा हंस, हंसी।

ढार-(हिं०पु०) उतार, ढालवाँ भूमि, मार्ग, रचना, ढाँचा (स्त्री०) स्त्रियों के कान मे पहिरने का एक प्रकार का गहना, बिरिया। **ढारना**-(हिं०क्रि०) देखो ढालना, गिराना।

ढारस-(हिं०पुं०) देखो ढाढस, आश्वासन

ढाल-(सं०पुं०) थाली के आकार का चमड़े का बना हुआ एक अस्त्र जो तलवार, भाले आदि के आक्रमण को रोकने के लिये धारण किया जाता है, उतार, तिरछी भूमि, ढार, प्रकार, रीति, ढंग।

ढालना-(हिं०क्रि०) किसी तरल पदार्थ को एक पात्र से दूसरे में गिराना, उंडेलना, मदिरा पीना, बिक्री करना, कम दाम पर माल बेंचना, व्यंग बोलना, ताना मारना, पिघले हुए धातु आदि को सांचे में ढाल कर कोई वस्तु तैयार करना।

ढालवाँ-(हिं०वि०) ढालू, जो बराबर नीचा होता हुआ हो, ढालदार।

ढालिया-(हिं० पु०) सांचो मे ढालकर पात्र आदि बनाने वाला, कसेरा।

ढाली-(स० स्त्री०) ढालधारी, ढाल बांधने वाला।

ढालुआं, ढलू-(हिं०वि०) देखो ढालवां

ढास-(हिं०पुं०) ठग, लुटेरा, डाकू।

ढासना-(हिं०पुं०) सहारा लेने की वस्तु, टेक, ओटकन, सहारा।

ढाहना-(हिं०क्रि०) ढाना, ध्वस्त करना।

ढिंढोरना-(हिं०क्रि०) अनुसन्धान करना, खोजना, हाथ डाल कर ढूंढना।

ढिंढोरा-(हिं०पुं०) घोषणा करने का ढोल, डुगडुगी, ढोल बजाकर की हुई घोषणा।

ढिकचन-(हिं०पुं०) एक प्रकार की ऊख

ढिकुली-(हिं०स्त्री०) देखो ढेकुली।

ढिग-(हिं० क्रि० वि०) समीप, निकट, पास, (स्त्री०) तट, किनारा, कोर, पाढ।

ढिठाई-(हिं० स्त्री०) अनुचित व्यवहार, धृष्टता, चपलता, निर्लज्जता, अयोग्य साहस।

ढिबरी-(हिं० स्त्री०) वह मिट्टी की कुल्हिया जिसमें बत्ती लगाकर करासन तेल जलाया जाता है, लोहे का पहलदार टुकड़ा जो पेंच के ऊपर चढ़ाकर कसा जाता है, चरखे में लगाने की गोल चकती।

ढिमका-(हिं०स्त्री०) अमुक, ठेकाना।

ढिलढिला-(हिं०वि०) ढीलाढाला, तरल, पतला।

ढिलाई-(हिं० स्त्री०) ढीला होने का भाव, आलस्य, शिथिलता।

ढिलाना-(हिं-क्रि०) ढीलने का काम दूसरे से कराना, ढीला करना।

ढिल्लड़-(हिं० क्रि०) मट्ठर, आलसी

ढिसरना-(हिं० क्रि०) प्रवृत्त होना, झुकना, सरकना, फिसलना, फलों का पकना आरंभ होना।

ढींगर-(हिं० पुं०) हृष्टपुष्ट मनुष्य, जार, पति।

ढींड, ढींढा-(हिं०पुं०) निकला हुआ पेट, गर्भ।

ढींढस-(हिं०पुं०)एक प्रकार की तरकारी

ढींच-(हिं०स्त्री०) कूबड़।

ढीट-(हिं०स्त्री०) लकीर, रेखा।

ढीठ-(हिं०वि०) जो बड़ों के सामने संकोच न करता हो, धृष्ट, उदण्ड, भय रहित, साहसी, निडर।

ढीठता-(हिं०स्त्री०) धृष्टता, ढिठाई।

ढीठया-(हिं०पुं०) देखो ढीठ, धृष्ट।

ढीम, ढीमा-(हिं०पुं०) पत्थर आदि का टुकड़ा, ढेला, ढोंका।

ढील-(हिं०स्त्री०) शिथिलता, बंधन को ढीला करने का भाव, बालों में पड़ने वाली जुवां। **ढीलना**-(हिं०क्रि०) तना न रखना, ढीला करना, बंधन से छुटकारा देना, छोड़ देना, कुवें में लटकाना। **ढीला**-(हिं०वि०) जो तना न हो, जो दृढ़ता से बंधा न हो, जो जकड़ कर पकड़े न हों, जिसमें जल का भाग अधिक हो, बहुत गीला पनीला, जो गाढ़ा न हो, खुला हुआ, शान्त, मन्द, जो अपने संकल्प पर दृढ़ न हो, शिथिल, आलसी, नपुंसक; **ढीली आंख**-मदोन्मत्त चक्षु।

ढीलापन-(हिं०पुं०) ढीला होने का भाव, शिथिलता।

ढीह-(हिं० पुं०) ऊंचा टीला, भीटा।

ढुंढ़-(हिं०पुं०) ठग, चोर, उचक्का।

ढुंढपाणि-(हिं०पुं०) दण्डपाणि, शिव के एक गण का नाम।

ढुंढ़वाना-(हिं०क्रि०) अन्वेषण कराना, ढुंढ़वाने का काम कराना।

ढुंढा-(सं०स्त्री०) हिरण्यकश्यपु की बहिन का नाम जो एक राक्षसी थी।

ढुंढिराज-(सं०पुं०) गजानन, गणेश।

ढुंढी-(हिं०स्त्री०) बाहु, बांह; **ढुंढियां चढ़ाना**, बांह बांधना।

ढुकना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना, आक्रमण करना। धावा करना, टूट पड़ना, घात में रहना, छिप कर कोई बात सुनना, **ढुकास**-तीव्रप्यास।

ढुक्का(हिं०पुं०) देखो ढूका।

ढुटौना-(हिं० पु०) लड़का।

ढुण्ढन-(सं० नपु०) अन्वेषण, खोज।

ढुण्ढा-(सं०स्त्री०) देखो ढुंढा।

ढुण्ढि-(सं० पुं०) देखो ढुंढि।

ढुण्ढुभ-(सं०पुं०) जलसर्प, डेड़हा सांप।

ढुरकना-(हिं०क्रि०) फिसलकर गिर पड़ना, ढुलकना, झुकना।

ढुनमुनिया-(हिं०स्त्री०) ढुलकते की क्रिया या भाव।

ढुरना-(हिं०क्रि०) ढलना, टपकना, गिरकर बहना, इधर उधर डोलना डगमगाना, हिलना डोलना, लुड़कना, फिसलना, झुकना, प्रवृत्त होना, प्रसन्न होना अनुकूल होना।

ढुरहुरी-(हिं०स्त्री०) फिसलने की क्रिया, पगडंडी, नथ में लगी हुई सोने की गोल दाने की पंक्ति।

ढुराना-(हिं०क्रि०) ढरकाना, टपकाना, लुड़काना, हिलाना, डोलाना।

ढुरुआ(हिं० पुं०) मटर का दाना।

ढुर्री-(हिं०स्त्री०) पतला मार्ग, पगडंडी।

ढुलकना-(हिं०क्रि०) गिरना, सरकना, लुड़कना। **ढुलकाना**-(हिं०क्रि०) सरकाना, लुढ़काना।

ढुलढुल-(हिं०वि०) लुड़कने वाला।

ढुलना-(हिं० क्रि०) गिरकर बहना, लुड़कना, फिसलना, प्रसन्न होना, झुकना, प्रवृत्त दोना, लहराना, इधर उधर हिलना डोलना प्रसन्न करना।

ढुलवाई-(हिं०स्त्री०) ढोने का काम, ढोने का शुल्क। **ढुलवाना**-(हिं०क्रि०) ढोने का काम दूसरे से कराना।

ढुलाना-(हिं०क्रि०)ढरकाना, ढालना, नीचे को गिराना, लुड़काना, सरकाना, प्रवृत्त करना झुकाना, इधर उधर हिलाना, फहराना, चलाना फिराना, अनुकूल करना, प्रसन्न करना, ढोने का काम दूसरे से कराना, फेरना।

ढुलुवा-(हिं०स्त्री०) खजूर से निकाली हुई चीनी।

ढुवारा-(हिं०पुं०) अन्न में लगने वाला कीड़ा, घुन।

ढुंकना-(हिं०क्रि०) देखो ढुकना।

ढूंका-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ के देखने के लिये छिपने का काम।

ढूंढ़-(हिं०स्त्री०) अन्वेषण, खोज, **ढूंढ़ना**-(हिं०क्रि०) अन्वेषण करना।

ढूका-(हिं०पुं०) घासपात के बोझ का एक मान।

ढूसर-(हिं०पुं०) बनियों की एक जाति,

ढूसा-(हिं०पुं०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति।

ढूह, ढूहा(हिं०पुं०) अटाला, राशि, ढेर, भीटा, टीला।

ढेक-(हिं०पुं०) एक प्रकार की चिड़िया जो सदा पानी के पास रहती है।

ढेंकली-(हिं०स्त्री०) सिंचाई के लिये कुवें से पानी निकालने का एक यन्त्र, धान कूटने का एक प्रकार का लकडी का यन्त्र ढेंका, कलैया, भभके से अर्क उतारने का यन्त्र।

ढेंका-(हिं०पु०) कोल्हू में लगा हुआ बांस

ढेंकी ढेंकुली-(हिं०स्त्री०) अनाज कूटने की ढेंकली।

ढेंढ़-(हिं०पुं०) काका कौवा, मरे हुए जन्तुओं को खाने वाली एक प्रकार की नीच जाति, मूढ़, मूर्ख, कपास आदि की फली, ढोंढी।

ढेंढ़र-(हिं०पुं०) आख के ढेले, घर का उभडा हुआ मांस, टेंटर।

ढेंढ़वा-(हिं०पुं०)काले मुँहका बन्दर, लंगूर

ढेंढ़ा-(हिं०पुं०) देखो ढेंढ।

ढेंढ़ी-(हिं०स्त्री०) कपास पोस्ते आदि की फली, ढोंढा, कान में पहिरने का एक गहना, तरकी।

ढेंप, ढेंपी-(हिं०स्त्री०) टहनी से लगा हुआ फल या पत्ते के छोर का भाग, कुचाग्र, उभडा हुआ कोना।

ढेबरी-(हिं०स्त्री०) देखो ढिबरी।

ढेबुवा-(हिं०पुं०) पैसा।

ढेम मौज-(हिं०स्त्री०)समुद्र की ऊंची लहर

ढेर-(हिं० पुं०) अटाला, राशि, पुंज, समूह, टाल, गंज; **ढेर करना**-मार डालना; **ढेर हो जाना**-गिरकर मृत्यु होना, बहुत थक जाना; (वि०) अधिक, बहुत।

ढेराना-(हिं०पुं०) रस्सी बटनेकी फिरकी

ढेटा-(हिं०पुं०) लड़का।

ढेरा-(हिं०पुं०) सुतली बटने की फिरकी, मोट के मुंह पर लगा हुआ घेरा।

ढेरी-(हिं०स्त्री०) ढेर, समूह, टाल, राशि,

ढेल-(हिं०पुं०) देखो ढेला।

ढेलवांस-(हिं०स्त्री०) ढेला फेकने का रस्सी का बना हुआ फन्दा।

ढेला-(हिं०पुं०) पत्थर, ईंट आदि का

छोटा टुकड़ा, खण्ड, टुकड़ा, चक्का, धान का एक भेद। **ढेलाचौथ**-(हिं० स्त्री०) भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी, कहा जाता है कि इस तीथि को चन्द्रमा देखने से कलंक लगता है, यदि कोई गाली सुन ले तो कलंक नहीं लगता, इसीसे लोग दूसरों के घर पर ढेला फेंकते हैं।

ढेंचा-(हिं०पुं०) एक पौधा (जयन्ती) जिसकी छालसे रस्सी बनाई जाती है

ढैया-(हिं०स्त्री०) अढ़ाई सेर तौलने का वटखरा, अढाई गुने का पहाड़ा, शनैश्चर का एक राशिपर अढाई वर्ष तक रहने का काल।

ढोंकना-(हिं०क्रि०) पीना, पीजाना।

ढोंका-(हिं०पुं०) पत्थर आदि का अनगढ़ा टुकड़ा, कोल्हू का बास, चार सौ या दो ढोली पान की गड्डी

ढोंग-(हिं०पुं०) आडंबर, पाखंड, ढकोसला। **ढोंग धतूर**-(हिं०पुं०) धूर्त विद्या, पाखण्ड। **ढोंगबाजी**-(हिं०स्त्री०) आडम्बर, धूर्त विद्या, पाखंड; **ढोंगी**-(हिं०वि०) पाखण्डी, झूठा आडंबर करने वाला, ढकोसला करने वाला

ढोंढ-(हिं०पुं०) कपास, पोस्ते आदिकी कला, डोंडा।

ढोंढी-(हिं०स्त्री०) नाभि।

ढोका-(हिं०पुं०) देखो ढोंका।

ढोटा-(हिं०पुं०) पुत्र, लड़का, बेटा।

ढोटी-(हिं०स्त्री०) पुत्री, बेटी, लड़की।

ढोटौना-(हिं०पुं०) देखो ढोटा।

ढोना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना, बोझ ले चलना या पहुंचाना, निर्वाह करना, उठा ले जाना।

ढोर, ढोरा-(हिं०पुं०) मवेशी, चौपाया।

ढोरना-(हिं०क्रि०) ढालना, लुढ़काना।

ढोरी-(हिं०स्त्री०) ढालने की क्रिया या भाव, धुन, लगन, रट।

ढोल-(सं०पुं०) कानका परदा (हिं०पुं०) एक प्रकार का दोनों ओर चमड़ा मढा हुआ मेड़रा जो गले में लटका कर बजाया जाता है, एक राग विशेष; **ढोल पीटना**-चारो ओर समाचार फैलाते फिरना।

ढोलक-(हिं०स्त्री०) छोटा ढोल। **ढोलकिया**-(हिं०पुं०) ढोल बजाने वाला मनुष्य। **ढोलकी**-(हिं०स्त्री०) छोटा ढोलक। **ढोलना**-(हिं०पुं०) ढोलक के आकार का गले में पहिरने का यंत्र, सड़क पीटने का ढोल के आकार का बड़ा बेलन, बच्चों का छोटा झूला, पालना, (क्रि०) ढरकाना, ढालना। **ढोलनी**-(हिं०स्त्री०) बच्चों का छोटा झूला, पालना।

ढोला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा जो सड़ी हुई वस्तु में पड़ जाता है, सीमा सूचित करने का चिह्न, गोल मेहराव बनाने का ढांट, लदाव, शरीर, देह, पिण्ड, प्रियतम, पति, एक प्रकार की गीत, मूर्ख मनुष्य।

ढोलिनी-(हिं०स्त्री०) ढोल बजाने वाली स्त्री, डफालिन। **ढोलिया**-(हिं०पुं०) ढोल बजाने वाला पुरुष।

ढोली-(सं० वि०) ढोल बजाने वाला (हिं०स्त्री०) दो सौ पान की गड्डी, परिहास, हँसी, दिल्लगी, ठिठोली।

ढोव-(हिं० पुं०) वह पदार्थ जो मंगल अवसर पर राजा, सरदार आदि को भेंट रूप में दिया जाता है, ढोवना, डाली, भेंट।

ढोबा-(पुं०) फूट।

ढोहना-(हिं०क्रि०) खोजना।

ढौंचा-(हिं० पुं०) वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक अंक की साढ़ेचार गुनी संख्या दोहराई जाती है।

ढौंसना-(हिं०क्रि०) आनन्द ध्वनि करना

ढौकन-(सं०पुं०) गमन, उत्कोच, घूंस,

ढौरी-(हिं०स्त्री०) रट, लव, धुन।

ण

ण-संस्कृत तथा हिन्दी के व्यंजन वर्णों का पंद्रहवां अक्षर तथा टवर्ग का पाँचवा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।

ण-(सं० पुं०) विन्दुदेव, एक बुद्ध का नाम, आभूषण, निर्णय, शिव का एक नाम, ज्ञान, दान, पानी का घर (वि०) गुण रहित, गुणशून्य।

णकार(सं०पुं०) 'ण' स्वरूप वर्ण।

णगण-(सं०पुं०) दो मात्राओं का एक मात्रिक गण।

णणोकार मन्त्र-(सं०पुं०) जैनों का एक प्रधान मन्त्र।

ण्य-(सं०पुं०)ब्रह्मलोक में के एक सरोवर का नाम।

त

त-संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का सोलवां अक्षर तथा तवर्ग का पहिला वर्ण; इसका उच्चारण स्थान दन्त है।

त-(सं०पुं०) चोर, अमृत, पोंछ, गोद, म्लेच्छ, रत्न, गर्भ, शठ, नौका, नाव, झूठ, पुण्य, तरण, वह जिसमें अभिमान न हो।

तइक-(हिं०पुं०) मोची, चमार।

तइनात-(हिं०पुं०) देखो तैनात।

तई-(हिं०) (प्रत्य०) से, प्रति, को, (अव्य०) लिये, वास्ते।

तई-(हिं०स्त्री०) थाली के आकार की कड़ा लगी हुई छिछली कड़ाही।

तउ-(हिंअव्य०) तब, त्यों, उस तरह।

तऊ-(हिं०अव्य०) तथापि, तौभी, तिस पर भी।

तं-(सं०स्त्री०) नौका, नाव, पवित्र, पुण्य

तंतुकीट-(हिं०पुं०) रेशम का कीड़ा, मकड़ा।

तंगा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष,

तंड-(हिं० पुं०) नृत्य, नाच। **तंडव**-(हिं०पुं०) एक नृत्य विशेष; देखो ताण्डव।

तंडुल-(हिं०पुं०) चावल; देखो तण्डुल।

तंत-(हिं० पुं०) तार लगा हुआ एक प्रकार का बाजा, आतुरता, क्रिया, तन्त्रशास्त्र, प्रबल इच्छा, अधीनता, परवशता (वि०) जो तौल में ठीक हो

तंतमन्त-(हिं०पुं०) देखो तन्त्रमंत्र।

तन्तरी-(हिं० पुं०) वह जो तार वाले बाजे बजाता हो, देखो तन्त्री।

तन्तु-(हिं० पुं०) सूत, डोरा, तागा, विस्तार, तांत, वंशपरंपरा, मकड़ी का जाला; देखो तन्तु।

तन्तुवादक-(हिं० पुं०) तारके बाजे बजाने वाला; देखो तंत्री। **तन्तुवाप** (हिं०पुं०) कपड़ा बुनने वाला, जुलाहा

तंत्र-(हिं०पुं०) तांत, सूत, कपड़ा, धन, सम्पत्ति, प्रमाण, कारण, औषध; देखो तन्त्र। **तंत्रण**-(हिं०पुं०) शासन कर्म; देखो तन्त्रण।

तंत्री-(हिं० स्त्री०) बीणा आदि तारके बाजे, शरीर की नस, रस्सी, बाजा बजाने वाला; देखो तन्त्री।

तंदरा-(हिं०स्त्री०) देखो तन्द्रा।

तन्दान-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा अंगर जिसको सुखाकर किशमिश बनती है।

तंदुआ-(हिं०पुं०) एक प्रकार की पशुओं के खाने की घास जो सर्वदा उत्पन्न होती है।

तंदुल-(हिं०पुं०) देखो तण्डुल, चावल।

तंदूरी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का उत्तम महीन रेशम, (वि०) तंदूर में बनाया हुआ, तंदूर संबंधी।

तन्देही-(हिं०स्त्री०) प्रयत्न, प्रयास, आज्ञा, चेतावनी, परिश्रम।

तंद्रा-(हिं०स्त्री०) ऊंघ, ऊंघाई; देखो तन्द्रा। **तंद्रालु** (हिं०वि०) जिसको नींद आती हो, ऊंघनेवाला, देखो तन्द्रालु।

तंबा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का चौड़ी मोहरी का पायजामा।

तंबाकू-(हिं०पुं०) देखो तमाखू। **तंबाकूगर**-(हिं०पुं०) तमाखू बनानेवाला मनुष्य।

तंबिया-(हिं०पुं०) तांबे का बना हुआ एक प्रकार का छोटा तसला।

तंबियाना-(हिं० क्रि०) तांबे के रंग का होना, तांबे के पात्र में किसी पदार्थ को रखने से इसमें तांबे का स्वाद या गन्ध आ जाना।

तंबू-(हिं०पुं०) मोटे कपड़े, टाट आदि का बना हुआ घर, डेरा, शिबिर।

तंबूरा-(हिं०पुं०) सितार की तरह का एक बाजा जो केवल सुर का सहारा देने के लिये बजाया जाता है।

तंबूरातोप-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी तोप।

तंबूल-(हिं०पुं०) पान; देखो ताम्बूल।

तंबोरा-(हिं०पुं०) देखो तमोरा।

तंबोल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्ते लिसोड़े के आकार के होते हैं; बारात की समय वर को दिया जाने वाला टीका।

तंबोलिन-(हिं०स्त्री०) पान बेंचनेवाली स्त्री, तमोलिन।

तंबोलिया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली जो गंगा तथा यमुना नदी में पाई जाती है।

तंबोली-(हिं० पुं०) पान बेंचने वाला मनुष्य, बरई।

तंभ, तंभन-(हिं०पुं०) शृङ्गार रस का स्तंभ नाम का भाव; देखो स्तम्भन

तँवार-(हिं०स्त्री०) सिर में आने वाला चक्कर, घुमटा।

तंसु-(सं०पुं०) पुरुवंश के एक राजा का नाम।

तक-(सं०वि०) निन्दित, दूषित, बुरा, सहनशील।

तक-(हिं०अव्य०)किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करने वाली एक विभक्ति, पर्यन्त, (स्त्री०) तराज का पल्ला।

तकड़ी-(हिं० स्त्री०) रेतीली भूमि में उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की घास।

तकन-(हिं०स्त्री०)ताकने की क्रिया, दृष्टि

तकना-(हिं० क्रि०) अवलोकन करना, निहारना, देखना, आश्रय लेना, पनाह लेना।

तकमा-(हिं०स्त्री०) देखो तमगा, तुकमा

तकरी-(सं० स्त्री०) भ्रष्ट चरित्र मनुष्य की स्त्री।

तकला-(हिं०पुं०) लोहे की सलाई जो

चरखे में सूत कातने के लिये लगी होती है, टेकुआ, टेकुरी जिससे रस्सी बनाई जाती है। **तकली**-(हिं०स्त्री०) छोटा तकला, टेकुरी।
तकवाना-(हिं०क्रि०) देखने का काम दूसरे से कराना।
तकाई-(हिं०स्त्री०) देखने की क्रिया या भाव, जो धन देखने के बदले में दिया जावे।
तकान-(हिं०स्त्री०)देखो थकान, थकावट
तकाना-(हिं०क्रि०) ताकने में दूसरे को प्रवृत्त करना, दिखाना, बतलाना।
तकार-(सं०नपुं०) 'त' स्वरूप अक्षर, त अक्षर।
तकिल-(सं०वि०) धूर्त,
तकिला-(सं०स्त्री०) औषधि, दवा।
तकुआ-(हिं०पुं०)देखनेवाला,ताकनेवाला
तक्कन-(सं०नपुं०) सन्तति, सन्तान।
तक्कोल-(सं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष
तक्त-(सं०नपुं०) छिन्न भिन्न।
तक्य-(सं०वि०) सहन करने योग्य।
तक्र-(सं०नपुं०) मठा, छाछ, मथित द्रव्य; **तक्रकूर्चिका**-फटा हुआ दूध, छेना; **तक्रजननी**-मठा; **तक्रजन्म**-दही; **तक्रपिण्ड**-छेना, **तक्रमेह**-एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्र सफेद होता है और इसमे मठे के समान गन्ध रहता है; **तक्रभिद्**-कपित्थ, कैथ; **तक्रमांस**-अखनी; **तक्रवामन**-नारंगी; **तक्रसन्धान**-एक प्रकार की कांजी; **तक्रसार**-मक्खन।
तक्राट-(सं०पुं०) मन्थन दण्ड,मथानी।
तक्वा-(सं०वि०)गतिशील,जल्दीजानेवाला
तक्ष-(सं०पुं०) रामचन्द्र के भाई भरत के बड़े पुत्र का नाम।
तक्षक(सं०पुं०) कद्रु के गर्भ से उत्पन्न एक सर्प का नाम, श्रृङ्गीऋषि के शाप को सफल करनेके लिये इन्होंने राजा परीक्षितको काटा था, विश्वकर्मा, एक प्राचीन अनार्य जाति, बढई, प्रसेनजित् के पुत्र का नाम, सूत्रधार, सर्प।
तक्षकीय-(सं०वि०) सर्प सबन्धी।
तक्षण-(सं०नपुं०) लकड़ी को खुरुच कर स्वच्छ करने का काम, बढई, पत्थर लकड़ी आदि को गढ़ कर मूर्ति बनाने का काम। **तक्षणी**-(सं०स्त्री०) बढ़ई का रन्दा।
तक्षन्-(सं० पुं०) बढ़ई, विश्वकर्मा, चित्रा नक्षत्र।
तक्षशिला-(सं०स्त्री०) भरतके पुत्र तक्ष की राजधानी का नाम, यह अत्यन्त प्राचीन नगर रावलपिंडी के पास था, यहीं पर राजा जनमेजय ने सर्पयज्ञ किया था।
तखरी-(हिं०स्त्री०) देखो तकड़ी।
तगड़ा-(हिं०वि०)बलवान,सबल,पुष्ट,बड़ा
तगड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो तागड़।
तगण-(सं०पुं०) छन्द शास्त्र में तीन वर्णोका समूह जिसमें पहिले दो गुरु और अन्तिम लघु वर्ण होता है।
तगना-(हिं०क्रि०) तागा दिया जाना, सिला जाना।
तगपहनी-(हिं०स्त्री०)जुलाहोंकाएक अस्त्र
तगमा-(हिं०पुं०) देखो तमगा।
तगर-(सं०पुं०) नदी के समीप होने वाला एक वृक्ष जिसकी सुगन्धित लकडी औषधियों में प्रयोग होती है।
तगला-(हिं०पुं०) तकला, सरकंडे की दो हाथ लंबी छड़ जिससे जुलाहे साथी मिलाते हैं।
तगसा-(हिं०पुं०)एकप्रकारकीपहाड़ीलकड़ी
तगाई-(हिं०स्त्री०) सिलाई का काम।
तगाड़, तगाड़ा-(हिं०पुं०) वह कुण्ड जिसमें मसाला चूना आदि जोड़ाई करने के लिये साना जाता है।
तगादा-(हिं०पुं०) देखो तकाजा।
तगाना-(हिं०क्रि०) सिलने का काम दूसरे से कराना।
तगार-(हिं०स्त्री०) ओखली गाड़ने का गड्ढा, गारा चूना आदि रखने बनाने या मिलानेका स्थान, हलवाइयों का मिठाई बनाने का मिट्टी का पात्र।
तगारी-(हिं०स्त्री०) छोटा तगार।
तगियाना-(हिं०क्रि०) देखो तागना।
तगीर-(हिं०पुं०) परिवर्तन; **तगीरी**-(हिं०स्त्री०) देखो तगीर।
तघार,तघारी-(हिं०स्त्री०)देखो तगार।
तङ्क-(सं०पुं०) देखो तंक।
तङ्क-(सं०पुं०)पत्थर काटने की टाँकी, प्रियके विरह से उत्पन्न सन्ताप,भय, डर, पहिरने का वस्त्र।
तचना-(हिं०क्रि०) तपना, जलना।
तचाना-(हिं०क्रि०) परितप्त करना, जलाना, दुःखी करना।
तचित-(हिं० वि०) दुःखित। **तच्छक**-(हिं०पुं०) देखो तक्षक।
तच्छिन-(हिं०क्रि०वि०) तत्क्षण, उसी समय, तत्काल।
तच्छील-(सं०वि०) स्वभाव से ही काम करने वाला।
तज-(हिं०पुं०) एक प्रकारका सदाबहार वृक्ष जो दारचीनी की जाति का होता है, इसके पत्ते को तेजपत्ता कहते हैं, इसकी सुगंधित छाल तज है जो औषधियों में प्रयोग होती है।
तजन-हिं०पुं०)त्याग,परित्यागकीक्रिया।
तजना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
तजरुबा-(हिं० पुं०) देखो तजरबा।
तजरुबाकार-(हिं०वि०) देखो तजरबाकार; **तजरुबाकारी**-(हिं० वि०) तजरबा, अनुभव,
तज्ज-(सं० वि०) उसीसे उत्पन्न, उसीसे लगा हुआ।
तज्ञ-(सं०वि०)तत्वकोजाननेवाला,ज्ञानी
तटंक-(हिं०पुं०) कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना, कर्णफूल, देखो ताटंक।
तट-(सं०पुं०,नपुं०)नदी आदिका किनारा, तीर, कूल, ऊँची भूमि, क्षेत्र, प्रदेश, (पुं०) शिव (वि०) उन्नत, उठा हुआ, पास पास, निकट।
तटका-(हिं०वि०)देखो तटका, ताजा
तटग-(सं०पुं०) तडाग, सरोवर, (वि०) तालाव पर जाने वाला।
तटनी-(हिं०स्त्री०)तटनी, नदी, सरिता।
तटस्थ-(सं० वि०) समीप, किनारे पर या अलग रहने वाला, निरपेक्ष, उदासीन,प्रकृति का, व्यस्त, आश्चर्यान्वित, विस्मित (पुं०) वह लक्षण जो किसी पदार्थ के स्वरूप को न वर्णन करके उसके गुण और धर्म का वर्णन करता है।
तटाक-(सं० पु०) सरोवर, तड़ाग, तालाब।
तटाघात-(सं०पु०) पशुओं का सींघ या दाँतों से भूमि खोदना।
तटिनी-(सं०स्त्री०) नदी, सरिता।
तटी-(सं० स्त्री०) तीर, किनारा, नदी, तराई, घाटी।
तट्य-(सं०पु०) महादेव, शिव।
तड़-(हिं० पु०) पक्ष, एक ही जाति में होने वाला विभाग, स्थल, थप्पड़आदि मारने या किसी वस्तु के पटकने से उत्पन्न शब्द, लाभ का आयोजन।
तड़क-(हिं०स्त्री०)तड़कने की क्रिया, वह चिह्न जो तड़कने के कारण किसी वस्तु पर पड़ जाता है, स्वाद लेने की इच्छा, तड़क भड़क, (पु०) चमक दमक। **तड़कना**-(हिं०क्रि०)चटकना, कड़कना, तड़तड़ शब्द करके फूटना, या टटना, तीव्र शब्द करना, चिढ़ना, झुंझलाना, तडपना, उछलना, कूदना
तड़का-(हिं०पुं०) प्रभातकाल,सबेरा घी या तेलमें मसालों को भूनकर तरकारी आदि में डालना, बघार। **तड़काना**-(हिं०क्रि०) किसी सूखी वस्तु को इस प्रकार तोड़ना कि 'तड़' शब्द निकले, तीव्र शब्द करना, क्रोध दिखलाना।
तड़क्का-(हिं०क्रि०वि०) देखो तड़ाका।
तड़ग-(सं०पुं०) तड़ाग, सरोवर।
तड़तड़ाहट-(हिं०क्रि०)तड़तड़ानेकी क्रिया
तड़प-(हिं०स्त्री०) चमक, भड़क, कूदने का काम। **तड़पदार**-(हिं०वि०) चमकीला भड़कीला। **तड़पाना**-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना, अधिक पीड़ा के कारण तड़फड़ाना, गरजना, चिल्लाना।
तड़पवाना-(हिं०क्रि०) कूदने का काम दूसरे से करना। **तड़पाना**-(हिं०क्रि०) वेदना पहुंचा कर व्याकुल करना, किसीको चिल्लाने के लिये प्रवृत्त करना। **तड़फड़ाना**-(हिं०क्रि०) देखो तड़पना। **तड़फना**-(हिं०क्रि०) देखो तड़पना।
तड़बंदी-(हिं०स्त्री०) जाति अथवा समाज में पृथक् पृथक् पक्षों का बनना।
तड़ाक-(सं०पुं०) तड़ाग, हृद (हिं० पुं०) किसी पदार्थ के तड़ाके के साथ फटने का शब्द, (क्रि०वि०) तड़ाक शब्द के साथ, चटपट, जल्दी से तुरन्त।
तड़ाका-(सं०स्त्री०) नदी या समुद्र का तट, आघात, चोट, प्रभा (हिं०पुं०) तड़तड़ शब्द (क्रि०वि०) तुरत।
तड़ाग-(सं०पुं०) तालाव, सरोवर, पुष्कर, ताल। **तड़ागना**-(हिं०क्रि०) कूद फाँद करना, डींग हांकना।
तड़ागज-(सं०पुं०) एक प्रकार का कन्द, मनसारू।
तड़ातड़-(हिं०क्रि०वि०) तड़ तड़ शब्द करते हुए। **तड़ाना**-(हिं०क्रि०) ताड़ने के लिये किसी दूसरे को प्रवृत्त करना
तड़ावा-(हिं० स्त्री०) दिखावटी तड़क भड़क, आडम्बर, छल, कपट, धोखा
तड़ि-(सं०पुं०) आघात, चोट; (वि०) चोट पहुंचाने वाला।
तड़ित्-(सं० स्त्री०) विद्युत् बिजली; **तडित्कुमार**-(सं०पुं०) जैनों की एक देवता का नाम; **तडित्पति**-(सं०पुं०) मेघ, बादल; **तडित्प्रभा**-(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मात्रिका का नाम; (वि०) जिसमें बिजली के समान चमक हो।
तडित्वत्-(सं० पुं०) मेघ, बादल, नागरमोथा; **तडित्वती**-(सं०वि०) जिसमें बिजली के सदृश चमक हो।
तडिद्गर्भ-(सं०पुं०) मेघ, बादल;
तडिन्मय-(सं०वि०)बिजली के स्वरूपका
तड़िता-(हिं०स्त्री०) देखो, तडित्, बिजली
तड़िया-(हिं०स्त्री०) समुद्र के तटकी वायु
तड़ी-(हिं० स्त्री०) चपत, धौल, छल, कपट, धोखा, बहाना।
तड़ीत-(हिं०स्त्री०) देखो तड़ित्।
तण्ड-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम, (स्त्री०) चोट।
तण्डक-(सं०पुं०) खञ्जन पक्षी, फेन, घरमें लगाने का खंभा, वृक्ष का तना, शुद्धि, सफाई बहुरूपिया, (वि०) मायावी, छली, कपटी।
तण्डि-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम जिन्होंने शिवजी की बड़ी तपस्या की थी।
तण्डु-(सं०पुं०) महादेवजी के द्वारपाल, नन्दिकेश्वर।
तण्डुरीण-(सं०पुं०) कीड़ा मकोड़ा, चावल का पानी।
तण्डुल-(सं०नपुं०) चावल, बायबिडंग, चौराई का साग, हीरे की प्राचीन तौल जो आठ सरसों के बराबर मानी जाती थी। **तण्डुली**-(सं०स्त्री०) बायबिडंग, ककही नामक पौधा।
तण्डुलिया, तण्डुली-(हिं०स्त्री०)चौराई का शाक।
तत्-(सं०अव्य०) हेतु, लिये, (सर्व०) उस, (नपुं०) परब्रह्म या परमात्मा का एक नाम, वायु, हवा।
तत-(सं०नपुं०) एक प्रकार का तार का बाजा जो बीन के सदृश होता है, (वि०) फैला हुआ, व्याप्त (नपुं०) वायु, विस्तार, पिता, पुत्र, बेटा (वि०) तपा हुआ, गरम (हिं०) तत्व।

ततकाल-(हिं०क्रि०वि०) देखो तत्काल
ततखन-देखो तक्षण।
ततताथेई-(हिं०स्त्री०) नाचने का शब्द या बोल।
ततपत्री-(सं०स्त्री०) केले का पेड़।
ततबाउ-(हिं०पुं०) देखो तन्तुवाय।
ततबीर-(हि०स्त्री०) देखो तदबीर।
ततरी-(हिं०स्त्री०) एक फल वाला वृक्ष।
ततसार-(हि०स्त्री०)आँच लगनेका स्थान
ततःप्रभृति-(सं०अव्य०) तब से।
ततहड़ा-(हिं०पु०) मिट्टी का पानी गरम करने का पात्र।
ततामह-(सं०पुं०) पितामह, दादा।
तताई-(हिं०स्त्री०) उष्णता, गरमी।
ततारना-(हि०क्रि०) गरम पानी से धोना, धार देकर धोना।
तति-(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, तांता, समूह, विस्तार, उतना परिमाण।
ततुवाऊ-(हि०पु०) देखो तन्तुवाय।
ततैया-(हि०स्त्री०) हड्डा, भिड़,बरैं, (वि०) तीव्र कष्ट देने वाला।
ततुरि-(सं०वि०) हिंसा करने वाला, तारने वाला।
तत्काल-(सं०पुं०) वर्तमान काल, (क्रि०वि०) उसी समय तुरंत। **तत्कालधी**-(स०वि०) उपस्थित बुद्धि वाला,प्रत्पुतपन्नमति; **तत्काल सम्भूत** (सं०वि०) उस समय होने वाला। **तत्कालीन**-(सं०वि०) उसी काल या समय का।
तत्क्रिय-(सं०वि०) बिना कुछ लिये कार्य करने वाला।
तत्क्षण-(सं०पुं०) उसी समय, तत्काल, तुरत।
तत्त-(हिं०पुं०) देखो तत्व।
तत्ता-(हिं०पुं०) उष्ण, गरम, जलता हुवा।
तत्तुल्य-(सं०वि०) उसके समान।
तत्तोथबो-(हिं०पुं०) दम दिलासा, बहलावा. झगड़ा शान्त करना, बीच बचाव।
तत्व-(स०नपुं०) यथार्थता, वास्तविक स्थिति, स्वरूप, आरोपित स्वरूप, परमात्मा, चेतन वस्तु, सार वस्तु, सारांश, पंचभूत, यथा-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश; संसार का मूल कारण, सत्व, रज और तम।
तत्वज्ञ-(स०वि०) तत्वज्ञानी, जिसको ईश्वर विषयक ज्ञान उत्पन्न हुआ हो, ब्रह्मज्ञानी, दार्शनिक। **तत्वज्ञान**-(स०नपु०) ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान, यथार्थ रूप से प्रकृति और पुरुष के भेद का ज्ञान। **तत्वज्ञानी**-(सं०पुं०) तत्वज्ञ, दार्शनिक. जिसको ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के संबंध का यथार्थ ज्ञान हो।
तत्वतः-(स०अव्य०) वस्तुतः, यथार्थ रूप से। **तत्वता**-(सं०स्त्री०) यथार्थता, तत्व होने का भाव या गुण। **तत्वदर्श**-(सं०वि०) जिसको तत्वज्ञान प्राप्त हुआ हो। **तत्वदर्शिता**, **तत्वदर्शी**-(सं०वि०) दर्शनशास्त्र जानने वाला, तत्वज्ञानी। **तत्वदीपन**-(सं० नपुं०) तत्वज्ञान की आभा। **तत्वदृष्टि**-(सं०स्त्री०) वह दृष्टि जो तत्वज्ञान प्राप्त करने में सहायक हो, दिव्यचक्षु, ज्ञानदृष्टि। **तत्वनिरूपण**-(स०नपु०) ब्रह्मनिर्णय। **तत्वप्रकाश**-(स०पु०) तत्वज्ञान की आभा। **तत्वबोधिनी**-(सं०स्त्री०) जिसके द्वारा तत्वज्ञान प्राप्त हो। **तत्वभाव**-(सं०पु०) प्रकृति. स्वभाव। **तत्वभाषी**-(स०वि०) यथार्थवादी, स्पष्ट रूप से कहने वाला। **तत्ववत्**-(स०वि०) तत्वज्ञान से परिपूर्ण। **तत्ववाद**-(सं०पुं०) दर्शनशास्त्र संबंधी विचार। **तत्ववादी**-(सं०पुं०) यथार्थवादी, वह जो तत्वज्ञान को जानता हो और उसका समर्थन करता हो, यथार्थ वात कहने वाला। **तत्वविद्**-(सं०पुं०तत्ववेत्ता, परमेश्वर। **तत्वविद्या**-(सं०स्त्री०) दर्शनशास्त्र। **तत्ववेत्ता**-(सं०पुं०तत्वज्ञानी, दार्शनिक। **तत्वशास्त्र**-(स० पुं०) दर्शनशास्त्र। **तत्वसञ्चय**-(सं० नपुं०) बौद्धशास्त्र का एक भेद।
तत्वानुसन्धान-(सं०नपुं०) यथार्थता का अन्वेषण सच्ची बातकी जाँचपड़ताल; **तत्वानुसन्धायी**-(सं०वि०) तत्व का अनुसन्धान करनेवाला। **तत्वावधान**-(सं०नपुं०) निरीक्षण. जांच पड़ताल। **तत्वावधारक**-(सं०पुं०) तत्व निरूपण करने वाला। **तत्वावधारण**-(स० नपुं०) यथार्थ बोध. तत्वनिर्णय। **तत्वावबोध**-(सं०पु०) देखो तत्वज्ञान
तत्व-(हिं०वि०) मुख्य, प्रधान, (पु०) शक्ति, बल।
तत्पत्री-(स०स्त्री०) कदली वृक्ष, केले का पेड़।
तत्पद-(सं०नपुं०) परमपद, निर्वाण।
तत्पदार्थ-(स०पुं०)सृष्टिकर्ता,परमात्मा।
तत्पर-(सं०वि०) उसमें लगा हुआ, उद्यत, सन्नद्ध, तैयार, निविष्ट,यत्न करने वाला, निपुण, दक्ष, चतुर, सतर्क। **तत्परता**-(सं०स्त्री०)निपुणता, दक्षता, चतुराई, यत्न, आग्रह।
तत्परायण-(स०वि०) उसमें लगा हुआ, उसमें श्रेष्ठ।
तत्पुरुष-(सं०पुं०) व्याकरण में एक प्रकार का समास जिसमें उत्तर पद की प्रधानता होती है, एक रुद्र का नाम, ईश्वर, परमेश्वर, एक कल्प का नाम।
तत्पूर्व-(सं०वि०) सर्व प्रथम, सबसे पहला।
तत्प्रकार-(सं०त्रि०) उसी तरह।
तत्फल-(स०पु०) नील कमल, कूट नामक औषधि।
तत्र-(सं०क्रि०वि०) उस स्थान पर, वहां। **तत्रभवान्**-(सं०वि०) पूज्य, मान्य, प्रशंसनीय, श्रेष्ठ।
तत्रापि-(स०अव्य०) तथापि, तौभी।
तत्सदृश-(सं०वि०) तथाविध, उसके समान। **तत्सम**-(सं०पुं०) हिन्दी प्राकृत आदि भाषा में प्रयोग होने वाला संस्कृत का शब्द। **तत्समानन्तर**-(सं०अव्य०) तदनन्तर, उसके बाद।
तत्स्वरूप-(स०वि०) उसके समान, उसी के सदृश।
तथा-(सं०अव्य०) इसी तरह, ऐसे ही, और; निकट, समीप, (पुं०) पहिले कही हुई बात, सत्य, समानता। **तथागत**-(सं०पुं०) गौतमबुद्ध (वि०) उसी रूप से आये हुए। **तथागुण**-(सं०वि०) वैसाही गुणवान्।
तथाच-(स०अव्य०) तथापि, तौभी।
तथापि-(स०अव्य०)तिसपर भी, तौभी।
तथाभावी-(सं०वि०) उसी स्वभाव का
तथाभूत-(सं०वि०) उसी प्रकार से होता हुआ। **तथामुख**-(स०क्रि०वि०) उसी ओर मुख करके। **तथारूप**-(सं०वि०)तदनुरूप, उसी प्रकार का। **तथाविध**-(सं०वि०) तादृश, उसी प्रकार का। **तथाविधेय**-(स०वि०)उसी प्रकार किया हुआ। **तथास्तु**-(स० अव्य०) वैसाही हो। **तथास्वर**-(स० वि०) उसी तरह उच्चारण किया हुआ। **तथैव**-(स०अव्य०)उसी तरह, वैसे ही।
तथ्य-(सं०नपु०) यथार्थता, सत्य, सचाई। **तथ्यज्ञान**-(सं०नपुं०) यथार्थ ज्ञान, तत्वज्ञान। **तथ्यबोध**-(सं०पु०) तथ्यज्ञान, तत्वज्ञान। **तथ्यभाषी**, **तथ्यवादी**-(स०वि०)यथार्थ या सच्ची बात कहनेवाला। **तथ्यानुसन्धान**-(सं०नपुं०) तत्वज्ञान का अन्वेषण।
तद्-(सं०वि०) वह (क्रि० वि०) तब, उस समय, तदन्तर, तदनन्तर; देखो तदन्तर, तदनन्तर।
तदंश--(सं०पुं०)उसका भाग या हिस्सा
तदतिरिक्त-(सं०वि०) उसके अतिरिक्त, उसके सिवाय।
तदधिक-(सं० वि०) उसके अतिरिक्त, उसके अलावा।
तदन्त-(सं० वि०) उसी प्रकार समाप्त होना, (पुं०) अभिप्राय।
तदन्तर, तदनन्तर-(सं०नपुं०) उसके उपरान्त, उसके बाद।
तदनु-(सं० क्रि० वि०) तदन्तर, उसी तरह उसके बाद। **तदनुरूप**-(सं०वि०) उसी के समान रूप का; **तदनुसार**-(सं०वि०) उसके अनुकूल। **तदनुसारी**-(स०वि०) उसके अनुसार चलनेवाला।
तदन्य-(सं०वि०)उससे भिन्न या पृथक्।
तदपि-(सं०अव्य०) तथापि, तौभी।
तदभिन्न-(हि० वि०) उसीके समान, उसी के ऐसा।
तदर्थ-(सं०क्रि०वि०) उसके लिये, उस प्रयोजन से।
तदर्पण-(स०वि०)उस पदार्थ का देना।
तदवधि-(सं०क्रि०वि०) तबतक।
तदा-(सं०अव्य०) उस समय, तब।
तदाकार-(सं०वि०) तद्रूप, उसी आकार का, तन्मय, तल्लीन।
तदात्मा-(सं०वि०) उसी के सदृश, तत्स्वरूप।
तदानीं-(सं०अव्य०) उसी समय, तब; **तदानींतन**-उसी समय का; **तदाप्रभृति**-उसी समय से।
तदामुख-(सं०पु०) आरम्भ, शुरू।
तदीय-(सं०वि०) उससे सम्बन्ध रखनेवाला, तत्सम्बन्धी, उसका।
तदुपरान्त-(हि०अव्य०) उसके पीछे, उसके बाद।
तदुपरि-(सं०क्रि०वि०) उसके ऊपर।
तदेक-(सं०वि० तत्स्वरूप, उसके समान
तदेकात्मा-(स०वि०) उसके समान, उसके ऐसा।
तदौजस-(सं०वि०) उसके समान बलवान्।
तद्गत-(स०वि०) उससे सम्बन्ध रखने वाला, उसके अन्तर्गत।
तद्गुण-(सं०नपुं०) वह अर्थालङ्कार जिसमें कोई पदार्थ अपने गुण को त्याग कर समीपवर्ती किसी दूसरे उत्तम पदार्थ के गुण को ग्रहण करता हुआ वर्णन किया जाता है, उसका गुण, प्रधान विशेशण।
तद्दिन-(सं० नपुं०) वह दिन उस समय
तद्धन-(सं०वि०) कृपण, कंजूस।
तद्धित-(सं०नपुं०) व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसको संज्ञा में जोड़ कर नया शब्द बनाया जाता है-जैसे भिन्न-से-भिन्नता।
तद्बल-(सं०पुं०)एक प्रकार का बाण।
तद्भव-(सं० पुं०) संस्कृत शब्द का अपभ्रंश रूप जो भाषा में प्रयोग होता है, जैसे चक्र—चक्कर।
तद्भाव-(सं०पु०) उसका असाधारण धर्म, विषय की चिन्ता।
तद्भिन्न(सं०वि०)उससे भिन्न या पृथक्
तद्यपि-(हिं०अव्य०) तथापि, तौभी।
तद्रूप-(सं०वि०सदृश समान, वैसाही।
तद्रूपता-(सं०स्त्री०)सादृश्य,समानता
तद्वत्-(सं०अव्य०) तत् सदृश, उसीके समान, ज्यौंका त्यों, उसकी नाई।
तद्वत्ता-(सं०स्त्री०) सदृश, समानता। **तद्विध**-(स०वि०) तथाविधि, उसी तरहका।
तद्व्यतिरिक्त-(सं०वि०) उसके सिवाय।
तन-(स०पुं०) वंशज, सन्तान (हिं०पुं०) शरीर. देह, मूत्रेन्द्रिय, योनि; **तन को लगाना**-चित्त पर प्रभाव पड़ना; **तन देना**-ध्यान लगाना; **तनमन, मारना**-इन्द्रियों को अपने वश में करना, **तन**- (क्रिं०वि०) ओर (वि०) थोड़ासा।
तनक-(हि० पुं०)एक रागिणी का नाम
तनकना-(हिं०क्रि०वि०)देखो तिनकना।
तनत्राण-(हिं०पुं०) कवच।

तनख्वाह-(हिं०पुं०) वेतन ।
तनतना-(हिं०पुं०)क्रोध, गुस्सा, प्रभाव, **तनतनाना**-(हिं०क्रि०) प्रभाव दिखलाना; क्रोध करना ।
तनदिही-(हिं०स्त्री०) उद्योग, प्रयत्न ।
तनधर-(हिं०वि०) देखो तनुधारी ।
तनना-(हिं० क्रि०) झटके या खिंचाव के कारण किसी पदार्थ का फ़ैलाना, वेग से खिंचना, अकड़कर खड़ा होना, गर्व से ऐंठना, रुष्ट होना ।
तनपात-(हिं०पुं०) देखो तनुपात ।
तनपोषक-(हिं० वि०) स्वार्थ परायण, स्वार्थी ।
तनमय-(हिं०वि०) देखो तन्मय ।
तनय-(सं०पु०) पुत्र, लड़का, बेटा । चन्द्रवंशी राजा कुश के पुत्र का नाम । **तनया**-(सं०स्त्री०) कन्या, पुत्री, बेटी, घृतकुमारी, काली तुलसी
तनराग-(हिं० पुं०) देखो तनुराग ।
तनरुह-(हिं०पुं०) रोवां, पंख ।
तनवाना-(हिं०क्रि०) तानने का काम दूसरे से कराना ।
तनवाल-(हिं०पुं०) वैश्यों की एक जाति
तनसल-(हिं०पुं०) स्फटिक, बिल्लौर ।
तनसुख--(हि० पुं०) एक प्रकार का सुन्दर फूलदार कपड़ा ।
तना-(सं०स्त्री०) धन दौलत (फा०पुं०) वृक्ष की धड़ (क्रि०वि०) ओर ।
तनाई, तनाउ-(हिं०स्त्री०)देखो तनाव ।
तनाकु-(हिं०क्रि०वि०) तनिक, थोड़ा ।
तनाना-(हिं०क्रि०) तानने का काम दूसरे से कराना ।
तदाव, तनाव-(हि०पुं०)तानने का भाव या क्रिया, धोबी के कपड़े सुखाने की रस्सी ।
तनि, तनिक-(हिं०वि०) अल्पमात्र, थोड़ा, कम, छोटा, (क्रि०वि०) थोड़ा ।
तनिका-(सं०स्त्री०) किसी वस्तु को बाँधने की रस्सी ।
तनिमन्-(सं०पुं०) दुर्बलता,दुबलापन ।
तनियाँ-(हिं०स्त्री०) लँगोट, कौपीन, कछनी,जांघिया, चोली ।
तनिष्ठ-(सं० वि०) अति दुर्बल ।
तनी-(हिं०स्त्री०) अगरखे आदि में पल्ला बांधने के लिये लगा हुआ, बन्द; बन्धन (क्रि०वि०) तनिक, थोड़ा
तनु-(सं०स्त्री०) शरीर, देह, चमड़ा, त्वचा,(स्त्री०) केंचुली; (वि०) कृश, दुबला पतला, अल्प, थोड़ा, सुन्दर, कोमल (स्त्री०) जन्म कुण्डली में लग्न का स्थान । **तनुक**-(सं०नपुं०) शरीर, देह, दारचीनी । **तनुकूप**-(सं०पु०) शरीर का रोमकूप । **तनुगृह**-(सं०पुं०) ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का घर । **तनुच्छद**-(सं०पुं०) शरीर की रक्षा करने वाला कवच ।
तनुच्छाय-(स०पुं०) शरीर की परछाहीं, (वि०) थोड़ी छाया वाला
तनुज-(सं०पुं०) पुत्र, लड़का, बेटा ।
तनुजा-(सं०स्त्री०) पुत्री, बेटी, लड़की
तनुता-(सं०स्त्री०) कृशता, दुर्बलता, लघुता, छोटाई; **तनुत्यज**-(सं०वि०) शरीर को त्याग करने वाला ।
तनुत्याग-(स०पुं०) देहत्याग । **तनुत्र, तनुत्राण**-(सं०नपुं०) वह वस्तु जिससे शरीर की रक्षा हो, कवच ।
तनुत्वच्-(सं०वि०) पतली छाल वाला । **तनुधारी**-(सं०वि०) शरीरधारी, देह धारण करने वाला ।
तनुपत्र-(सं०पुं०) इङ्गुदी वृक्ष (वि०) जिसमें बहुत कम पत्ते हों । **तनुपात**-(सं०पुं०) मृत्यु, मौत । **तनुबीज**-(स०वि०) जिसके बीज छोटे हों;
तनुभव-(सं०पु०) पुत्र, बेटा (स्त्री०) कन्या, बेटी । **तनुभस्त्रा**-(सं०स्त्री०) नासिका, नाक । **तनुभाव**-(सं०पुं०) दुर्बल मनुष्य । **तनुभृत**-(स०वि०) देहधारी, शरीर धारण करने वाला।
तनुमध्या-(सं०स्त्री०) कृशमध्या, जिस स्त्री की कमर पतली हो; चौरस नामक वर्णवृत्त; **तनुरस** (सं०पु०) घर्म, पसीना । **तनुराग**-(सं०पु०)केसर, कस्तूरी, चन्दन अगर आदि मिलाकर बनाया हुआ उबटन । **तनुरुह**-(सं०पुं०) शरीर पर के बाल, या रोवें ।
तनुल-(सं०वि०) विस्तृत, फैला हुआ ।
तनुवात-(सं०पु०)एक नरक का नाम, वह स्थान जहां वायु कम हो ।
तनुवार-(सं०नपुं०) कवच, बख्तर ।
तनुवीज-(सं०वि०) जिसके बीज छोटे हों । **तनुव्रण**-(सं० पुं०) वाल्मीक रोग । **तनुसर**-(स०पुं०) घर्म, स्वेद, पसीना । **तनुह्रद**-(स०पु०) मलद्वार, गुदा ।
तनू-(सं०पु०) पुत्र, बेटा, शरीर, प्रजापति, गाय, जल, पानी ।
तनूकरण-(सं०नपु०) छोटा करने की क्रिया । **तनूकृत**-(सं०वि०) छीला हुआ । **तनूज**-(स०पुं०) तनुज, पुत्र, बेटा । **तनूजा**-(स०स्त्री०) कन्या, पुत्री, बेटी । **तनूत्यज**-(सं०वि०) शरीर छोड़ने वाला । **तनूदेश**-(सं०पुं०) शरीर का अंग प्रत्यंग, **तनूद्भव**-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा (स्त्री०) कन्या, पुत्री
तनूनप-(सं०नपुं०) घृत, घी ।
तनूपा-(सं०पुं०) जठराग्नि,(वि०) शरीर का पालन पोषण करने वाला ।
तनूबल-(सं०नपुं०) शरीर का बल ।
तनूरुह-सं०नपुं०) रोम, रोवाँ, पुत्र, बेटा ।
तनैना, तनैना-(हिं०वि०) तिरछा,खिचा हुआ, टेढ़ा, क्रुद्ध ।
तनै-(हिं०पुं०) देखो तनय; बेटा ।
तनैला-(हिं० पुं०) एक प्रकार का सुगन्धित सफेद फूलों का पौधा ।
तनोज-(हिं०पुं०) रोवाँ, पुत्र ।
तनोरुह-(हिं०पुं०) देखो तनूरुह ।
तन्ति-(सं०स्त्री०)गौ,लंबी रस्सी,विस्तार, फैलाव; **तन्तिपाल**-गोरक्षक, गौ की रक्षा करने वाला ।
तन्तु-(सं०पुं०) सूत, तागा, सन्तान, तात, विस्तार, फैलाव, वंशपरम्परा, मकड़ी का जाला; **तन्तुक**-(स०पु०) सरसों, जंगली सुअर, नाड़ी, जलजन्तु, सूत; **तन्तुकाष्ठ**-(स०पु०) जुलाहे का तूली नाम का अस्त्र ।
तन्तुकी-(सं०स्त्री०) शिरा, नाड़ी ।
तन्तुकीट-(सं०पुं०) रेशम का कीड़ा ।
तन्तुजाल-(सं०नपुं०) नसों का समूह ।
तन्तुनाग-(सं०पु०) ग्राह, मगर ।
तन्तुनाभ-(सं०पुं०) लूता, मकड़ी ।
तन्तुभ-(स०पुं०) सर्षप, सरसों, बछवा
तन्तुमती-(सं०स्त्री०) मुरारि की माता का नाम; **तन्तुर, तन्तुल**-(सं०पुं०) कमल की जड़, भसींड़; **तन्तुवादक**-(सं०पु०) बीन सितार आदि तार के बाजों को बजाने वाला; **तन्तुवाय**-(सं०पुं०) लूता, मकड़ी; **तन्तुशाला**-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहां पर कपड़ा बीना जाता है; **तन्तुसन्तति**-(सं०स्त्री०) कपड़ा बुनने की क्रिया; **तन्तुसार**-(सं०पुं०) सुपारी का वृक्ष ।
तन्त्र-(स०नपुं०) कुटुम्ब के पालनपोषण का कार्य, शिव के मुख से कहा हुआ एक शास्त्र, दूत, तन्तु, ताँत, पद, समूह, ढेर, कपड़ा बुनने की सामग्री, राज्य, शासन, आनन्द, घर, सम्पत्ति, आधीनता, दल, समुदाय, उद्देश्य, कुल, शपथ, वेद की एक शाखा, दृढ़ प्रमाण, विचार, वस्त्र, औषधि, झाड़ने फूकने का मन्त्र, उपाय, कारण, राजा का कर्मचारी, सेना, अधिकार, कर्तव्य, धर्म, राज्य का प्रबन्ध, चमड़े की पतली रस्सी । **तन्त्रवाय**-(सं०पुं०) देखो तन्तुवाय, ताँत, मकड़ी ।
तन्त्रा-(सं०स्त्री०)देखो तन्द्रा; अल्पनिद्रा
तन्त्रि, तन्त्रिका-(सं०स्त्री०) शरीर की नस, नाड़ी, बीन आदि में लगा हुआ तार, रज्जु, रस्सी, बाजा बजाने वाला,गवैया,(वि०) आलसी, अधीन ।
तन्द्र-(सं०नपुं०) पंक्ति छन्दका एक भेद
तन्द्रा-(सं०स्त्री०) ऊँघाई, ऊँघ, आलस्य।
तन्द्रालु-(सं०वि०)आलस्ययुक्त, आलसी
तन्द्रि, तन्द्रिका-(सं०स्त्री०)देखो तन्द्रा ।
तन्द्रिता-(सं०स्त्री०) निद्रालुता, आलस्य
तन्द्री-(सं०स्त्री०) तन्द्रा,ऊंघ,भृकुटी,भौंह
तन्ना-(हिं०पुं०) बुनाई में लम्बे बल का सूत जो ताना जाता है, ऐसा पदार्थ जिस पर कोई वस्तु तानी जाती है।
तन्निमित्त-(सं०क्रि०वि०) तदर्थ,उसी लिये
तन्नी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लोहे का मैल खुरचने की अँकुसी, जहाज के मस्तूल की जड़ में बांधा हुआ रस्सा, तराजू की रस्सी जिसमें पल्ला बँधा होता है ।
तन्मध्यस्थ-(सं०वि०) उसके बीच का ।
तन्मय-(स०वि०) दत्तचित्त, मन लगाये हुए,लवलीन, लगा हुआ । **तन्मयता**-(सं०स्त्री०) एकाग्रता, लीनता, लगन ।
तन्मनस्क-(वि०)तन्मय । **तन्मयासक्ति**-(सं०स्त्री०) भगवान में दत्तचित्त होने की अवस्था ।
तन्मात्र-(स०नपुं०)सांख्य मत के अनुसार पंचभूत अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और गन्ध का सूक्ष्म अमिश्र रूप ।
तन्मात्रा-(स०) देखो तन्मात्र । **तन्मात्रिक**-(सं०वि०) तन्मात्र संबंधी ।
तन्वी-(सं०स्त्री०) कृशाङ्गी, वह स्त्री जो दुर्बल और कोमल हो, श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम, एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस वर्ण होते हैं ।
तप-(सं० पुं०) शरीर को कष्ट देकर चित्त को एकाग्र करने की क्रिया, तपस्या, ग्रीष्मकाल, ज्वर,अग्नि,नियम
तपःकृश-(सं० वि०) जिसका शरीर तपस्या करने से दुर्बल हो गया हो ।
तपःप्रभाव-(सं०पुं०)तपस्या का प्रभाव
तपःशील-(स० वि०) वह जो तपस्या में लीन हो । **तपःसिद्ध**-(सं०वि०)वह जिसने तपस्या करके सिद्धि प्राप्ति की हो ।
तपकना-(हिं० क्रि०) देखो टपकना, उछलना, धड़कना ।
तपचाक-(हि० पुं०) एक प्रकार का तुर्की घोड़ा ।
तपड़ी-(हिं० स्त्री०) ढूहा, छोटा टीला, एक प्रकार का शरद ऋतु में होने वाला फल ।
तपती-(सं०स्त्री०)सूर्य की कन्या का नाम।
तपन-(स०पुं०) सूर्य, भिलावे का वृक्ष, मदार, ग्रीष्मकाल, एक नरक का नाम, सूर्यकान्त मणि,अरणी का वृक्ष, जलन, दाह, ताप, आँच, धूप, शिव, महादेव, वह हाव भाव या क्रिया जो नायिका अपने प्रेमी के वियोग में दिखलाती है ।
तपनक-(स०पुं०)एक प्रकार का धान ।
तपनकर-(स०पुं०) सूर्य की किरण ।
तपनच्छद-(स०पु०) मदार का पेड़ ।
तपनतनय-(सं० पुं०) सूर्य के पुत्र यम, शनि, सुग्रीव आदि । **तपनतनया**-(स०स्त्री०) शमी वृक्ष, यमुना नदी ।
तपनमणि-(स०पुं०)सूर्यकान्त मणि ।
तपनांशु-(सं० पुं०) सूर्य की किरण ।
तपना-(हिं० क्रि०)सन्तप्त होना, कष्ट सहना, तप्त होना,गरम, होना,गरमी फैलाना,प्रबलता दिखलाना, तपस्या करना, बुरे काम में बहुत धन का व्यय करना ।
तपनात्मज-(सं०पुं०) सूर्य के पुत्र, यम, कर्ण आदि (स्त्री०)यमुना नदी, गोदावरी नदी ।
तपनि-(हि०स्त्री०) देखो तपन ।
तपनी-(हिं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर बैठ कर जाड़े के दिनों में लोग आग तापते हैं, कौड़ा, तपस्या,तप ।
तपनीय-(सं०नपुं०)सुवर्ण,सोना,धतूरा ।
तपनेष्ट-(सं०नपुं०)ताम्र, तांबा ।

तपनेष्टा-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का शमी वृक्ष।
तपनोपल-(सं०पुं०) सूर्यकान्त मणि।
तपभूमि-(हिं० स्त्री०) देखो तपोभूमि।
तपराशि-(हिं० पुं०, देखो तपोराशि।
तपलोक-(हिं० पुं०) देखो तपोलोक।
तपवाना-(हिं०क्रि०)गरम करने का काम दूसरे से कराना, निष्प्रयोजन व्यय करवाना।
तपवृद्ध-(हिं०वि०) देखो तपोवृद्ध।
तपश्चरण, तपश्चर्या-(सं० स्त्री०) तप, तपस्या।
तपस-(सं०पुं०) सूर्य, चन्द्रमा, पक्षी। **तपसा**-(हिं० स्त्री०) तप, तपस्या, तापती नदी।
तपसाली-(हिंपुं०) तपस्वी।
तपसी-(हिंपुं०) तपस्या करने वाला।
तपस्पति-(सं०पुं०) विष्णु, हरि।
तपस्या-(सं०स्त्री०) तप, व्रतचर्या, (सं० पुं०) फागुन का महीना। **तपस्विता**-(सं०स्त्री०) तपस्वी होने की अवस्था।
तपस्विपत्र-(सं०पुं०) दौने का पौधा।
तपस्विनी-(सं० स्त्री०) तपस्या करने वाली स्त्री, जटामासी, कुटकी, दीन दुखिया स्त्री, पतिव्रता स्त्री, तपस्वी की स्त्री।
तपस्वी-(सं०पुं०) तपस्या करने वाला मनुष्य, दीन, दुखिया, घीकुआर, नारद
तपा-(सं० पुं०) ग्रीष्मऋतु, (हिं०पुं०) तपस्वी; **तपात्यय**-(सं०पुं०)वर्षाकाल, बरसात।
तपातल-(सं०पुं०)तप से उत्पन्न,तेज।
तपाना-(हिं० क्रि०) तप्त करना, गरम करना, क्लेश देना, दुःख देना।
तपान्त-(सं०पुं०) ग्रीष्मऋतु का अन्त।
तपाव-(हिं०पुं०) ताप, गरमाहट।
तपावन्तत-(हिंपुं०) तपस्वी, तपसी।
तपित-(सं०वि०) तप्त, उष्ण, गरम, तपा हुआ, मल्ल युद्ध की एकयुक्ति
तपिया-(हिंपुं०) तपस्वी।
तपिष्ठ-(सं०वि०) अधिक तपा हुआ।
तपिष्णु-(सं०वि०)जलनउत्पन्नकरनेवाला
तपी-(हिंपुं०) तपस्वी, ऋषि, सूर्य।
तपु-(सं०वि०) तप्त, गरम (पुं०) सूर्य, अग्नि, शत्रु।
तपुर्जम्भ-(सं०पुं०) अग्नि, आग।
तपुषी-(सं०स्त्री०) क्रोध, रोष, गुस्सा।
तपेला-(हिंपुं०) भट्ठी।
तपोज-(सं०वि०) अग्निजात, अग्नि से उत्पन्न।
तपोजा-(सं०स्त्री०) जल, पानी।
तपोड़ी-(हिं० स्त्री०) काठ का बना हुआ पात्र।
तपोदान-(सं०नपुं०) एक प्रधान तीर्थ का नाम।
तपोधन-(सं०पुं०) तपोरत, बड़ा तपस्वी
तपोधना-(सं०स्त्री०) गोरखमुण्डी।
तपोधर्म-(सं०पुं०) तपस्या का धर्म, तपस्वी।
तपोधृत-(सं०पुं०) तपोरत, तपस्वी।

तपोनिधि-(सं०पुं०) देखो तपोधन
तपोनिष्ठ-(सं०पुं०) तपोरत तपस्वी।
तपोबल-(सं०पुं० तपकाप्रभावया शक्ति
तपोभूमि-(सं०स्त्री०) तपस्या करने का स्थान, तपोवन। **तपोमय**-(सं०पुं०) प्रचुर तपस्या,परमेश्वर। **तपोमयी**-(सं०स्त्री०) तप स्वरूपा जिसने बहुत तपस्या की हो। **तपोमूर्ति**-(सं०पुं०) परमेश्वर, तपस्वी। **तपोयुक्त**-(सं० वि०) तपस्या से पूर्ण। **तपोरति**-(सं० वि०) जो तपस्या में लीन हो। **तपोरवि**-(सं०पुं०) जो सूर्य के समान तेजयुक्त हो; **तपोराशि**-(सं०पुं०)बड़ा तपस्वी। **तपोलोक**-(सं०पुं०) ऊर्ध्व स्थित सात लोकों में से छठां लोक।
तपोवन-(सं०नपुं०) मुनियों का आश्रय स्थान, वह निर्जन स्थान जहा ऋषि लोग कुटी बना कर तपस्या करते हैं। **तपोवृद्ध**-(सं०वि०) जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो।
तपौनी-(हिं०स्त्री०) ठगों का एक रस्म।
तप्त-(सं०वि०) दग्ध,तपा हुआ, जलता हुआ, उष्ण, गरम, दुःखित, पिडित; **तप्तक**-(सं०नपुं०) सोना, चाँदी; सुवर्णमाक्षिक; **तप्तकांचन**-(सं० पुं०) अग्नि संयोग से शुद्ध किया हुआ सोना; **तप्तकुण्ड**-(सं०पुं०) प्राकृतिक उष्ण जलधारा, गरम पानी का सोता, एक भयानक नरकका नाम; **तप्तकृच्छ्र**-(सं०पुं०) बारह दिनों में समाप्त होने वाला एक प्रकार का व्रत जो प्रायश्चित्त रूप मे किया जाता है; **तप्तखल्ल**-(सं०पुं०)औषधि कूटने का गरम किया हुआ खरल; **तप्तमाष**-(सं०पुं०)प्राचीनकाल की एक प्रकार की परीक्षा जो किसी मनुष्य को अपराधी या निरपराधी सिद्ध करने के लिये की जाती थी; **तप्तमुद्रा**-(सं०स्त्री०)शंख, चक्र आदि के लोहे या पीतल के छापे जिनको तपाकर वैष्णव लोग अपनी शरीर पर दागते हैं; **तप्तरूपक**-(सं०नपुं०) तपाई हुई चाँदी; **तप्तलोमश**-(सं०पुं०) कसीस नामक धातु; **तप्तलोह**-(सं० पुं०) एक नरक का नाम; **तप्तशर्मी**-(सं० पुं०) एक नरक का नाम।
तप्तान्न-(सं०नपुं०) गरमभाग,तप्त अन्न
तप्ताम्भ-(सं०नपुं०) गरम जल।
तप्प-(हिं०पुं०) देखो तप, तपस्या।
तब-(हिं०अव्य०) उस समय, उस वक्त, इस कारण से, इसलिये।
तबिअत-(हिं०स्त्री०) चित्त, मन।
तबेला-(हिं०पुं०) घोड़साल।
तब्बर-(हिं०पुं०) पुत्र।
तभ-(सं०पुं०) छाग, बकरा।
तभी-(हिं० अव्य०) उसी समय, इस, कारण से।
तम-(सं० नपुं०) अन्धकार, अंधेरा, पैर का अगला भाग राहु तमोगुण, (पुं०) मोह, नरक, सांख्य के अनुसार अविद्या, प्रकृति का तीसरा गुण, क्रोध, पाप, सुअर, तमालवृक्ष, कालिख, कालिमा।
तमक-(सं० पुं०) श्वास रोग का एक भेद, उद्वेग, जोश, तीव्रता, क्रोध, तमतमाहट। **तमकना**-(हिं० क्रि०) क्रोध का आवेश दिखलाना, क्रोध के कारण उछल पड़ना। **तमकप्रभा**-(सं०स्त्री०) जैन शास्त्र के अनुसार छठाँ नरक जहाँ घोर अन्धकार है।
तमकश्वास-(सं० पुं०) श्वास का एक भयंकर रोग जिसमें कण्ठ रुक जाता है।
तमका-(सं०स्त्री०)तमालवृक्ष,भूमिआँवला
तमगुन-(हिं०पुं०) देखो तमोगुण।
तमङ्ग, तमंगक-(सं०पुं०) मचान।
तमचर-(हिं० पुं०) निशाचर, राक्षस, उल्लू पक्षी।
तमचुर तमचोर-(हिं० पुं०) ताम्रचड़, कुक्कुट, मुरगा।
तमत-(सं०वि०)पिपासा युक्त, प्यासा। **तमतमाना**-(हिं०क्रि०) अधिक गरमी, या क्रोध के कारण चेहरा लाल होना, चमकना, दमकना। **तमतमाहट**-(हिं०स्त्री०)तमतमाने का भाव।
तमता-(सं०स्त्री०) अन्धकार, अन्धेरा।
तमप्रभ-(सं०पुं०) एक नरक का नाम।
तमरंग-(हिंपुं०)एक प्रकार का नीब।
तमर-(सं० नपुं०) बङ्ग धातु, राँगा; (हिं०पुं०) अन्धकार, अन्धेरा।
तमस-(सं० नपुं०) अन्धकार, अज्ञान, पाप, तमसा नदी।
तमलेट-(हिंपुं०) एक प्रकार का टीन या लोहे का छोटा पात्र।
तमसाकृत-(सं० वि०) अन्धकार से घिरा हुआ।
तमस्क-(सं०त्रि०) तमः स्वरूप। **तमस्कान्त**-(सं०पुं०) अन्धकार समूह।
तमस्तति-(सं० स्त्री०) तमिस्र, अन्धकार। **तमस्वती**-(सं० स्त्री०) रात्रि, रात, हल्दी।
तमहंडी-(हिं० स्त्री०) ताम्बे की बनी हुई डेगची।
तमहर-(हिंपुं०) देखो तमोहर।
तमाँचा-(हिंपुं०) देखो तमाचा।
तमा-(सं०स्त्री०)काकोली,भूमि आँवला, रात्रि, रात, तमाल वृक्ष।
तमाई-(हिं०स्त्री०)खेत जोतने के पहिले उसमें की घास आदि निकालने की क्रिया।
तमाखू-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते तथा डंठल को लोग खाते और जला कर धूम्रपान करते हैं।
तमाचारी-(सं०पुं०)निशाचर, राक्षस।
तमारि-(हिंपुं०) दिनकर, सूर्य।
तमाल-(सं० पुं०) एक बड़ा सदाबहार सुन्दर वृक्ष, पत्रक, तेजपात, तिलक का वृक्ष, एक तरह की तलवार, काली खैर का वृक्ष, बाँस की छाल, काली तिल, दारचीनी; **तमालक**-(सं० नपुं०) पत्रक, तेजपात, एक प्रकार का भूमि में होने वाला कमल; **तमालच्छद**-(सं०नपुं०) तेजपत्र, तजपात; **तमाल पत्र**-(सं०नपुं०) दारचीनी।
तमाली-(सं०स्त्री०) वरुणवृक्ष, मजीठ।
तमाशबीन-(हिं०पुं०) तमाशा देखने वाला, वेश्यागामी। **तमाशबीनी**-(हिं०स्त्री०) वेश्यागमन, रंडीबाज़ी।
तमि-(सं० पुं०) रात्रि, रात, मोह, हरिद्रा, हल्दी। **तमिनाथ**-(सं०पुं०) निशानाथ, चन्द्रमा।
तमिस्र-(सं० नपुं०) अन्धकार, क्रोध, गुस्सा, एक नरक का नाम; **तमिस्रपक्ष**-कृष्णपक्ष। **तमिस्रा**-(सं०स्त्री०) अन्धेरी रात, अमावस्या की रात, हरिद्रा, हल्दी।
तमी-(सं० स्त्री०) रात्रि, रात, हरिद्रा, हल्दी। **तमीचर**-(सं०पुं०) निशाचर, दैत्य।
तमीपति, तमीश-(सं०पुं०) निशाकर, चन्द्रमा।
तमेरु-(सं०वि०) ग्लानियुक्त, जिसको लज्जा आती हो।
तमोगा-(सं० वि०) अन्धकार में जाने वाला।
तमोग-(सं० पुं०) राहु ग्रह।
तमोगुण-(सं०पुं०) प्रकृति का तृतीय गुण, इसके प्राधान्य से मनुष्य बुरे से बुरा काम करता है। **तमोगुणी**-(सं०वि०) जिसमे तमोगुण की अधिकता हो।
तमोघ्न-(सं०वि०) अन्धकार को नाश करने वाला, (पुं०) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, बुद्ध, विष्णु, महादेव, ज्ञान, दीपक।
तमोज्योतिः-(सं०पुं०) खद्योत, जुगनू।
तमोदर्शन-(सं०नपुं०) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।
तमोनुद-(सं०वि०)सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीपक; जिसमें अन्धकार न हो वि०) अज्ञान नाशक।
तमोभिद्-(सं० पुं०) खद्योत, जुगनू (वि०) अँधेरा दूर करने वाला।
तमोभूत-(सं०वि०)अँधेरा किया हुआ, अज्ञानी, मूर्ख।
तमोमणि-(सं० पुं०) जुगनू, गोमेदक मणि।
तमोमय-(सं०वि०)अन्धकार पूर्ण, तमोगुण युक्त, अज्ञानी, मूर्ख, (पुं०) राहु ग्रह।
तमोर-(हिंपुं०) ताम्बूल, पान। **तमोरि**-(सं०पुं०) सूर्य, भानु।
तमोरी-(हिंपुं०) तमोली, पान बेचने वाला। **तमोल**-(हिं० पुं०) पान का बीड़ा,ताम्बूल। **तमोलिन**-(हिं०स्त्री०) तमोली की स्त्री। **तमोली**-(हिंपुं०) तँबोली पान बेचने वाला।
तमोविकार-(सं० पुं०) तमोगुण का

विकार, तमिसू, रात्रि, रात ।
तमोव्रण-(सं०पुं०)वल्मीक नामक रोग ।
तमोहन्-(सं०वि०) अज्ञान नाशक,(पुं०) सूर्य, चन्द्र ।
तमोहर-(सं० वि०) अज्ञान नाशक, अन्धकार दूर करने वाला; (पुं०) सूर्य, चन्द्रमा ।
तमोहरि-(सं० पुं०) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, ज्ञान ।
तम्पा, तम्बा-(सं०स्त्री०) गाय ।
तम्बीर-(सं०पुं०)ज्योतिष का एक योग ।
तम्र-(सं०वि०)ग्लानि उत्पन्न करनेवाला ।
तयना-(हिं०क्रि०) देखो तपना ।
तयार-(हिं०वि०) देखो तैयार, बनाया हुआ ।
तरंगा-(हि०पुं०) देखो तरङ्ग ।
तर-(सं०पुं०) पार करने की क्रिया, अग्नि, वृक्ष, पथ, गति, नाव की उतराई ।
तर-(सं०प्रत्य०) जो गुण वाचक शब्दों में दो वस्तुओं में से एक का उत्कर्ष या अपकर्ष सूचित करने के लिये प्रयोग होता है यथा-श्रेष्ठतर, कष्टतर
तरई-(हिं०स्त्री०) तारा नक्षत्र ।
तरक-(हिं०स्त्री०) देखो तड़क; (पुं०) शोच विचार, ऊहापोह, तर्क, चतुराई का वचन, व्यतिक्रम, भूलचूक, वह अक्षर या शब्द जो पृष्ठ के समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर लिखा जाता है । **तरकना**-(हिं०क्रि०) तर्क करना, शोच विचार करना, झपटना, उछलना, कूदना, देखो तड़पना ।
तरकस-(हिं०पुं०)तीर रखने का चोंगा ।
तरकसी-(फा०स्त्री०) छोटा तरकश ।
तरका-(हि०पुं०)देखो तड़का; (अ०पुं० वह सम्पत्ति जो किसी के मरने पर उसके उत्तराधिकारी को मिलती है ।
तरकी-(हिं०स्त्री०) कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना ।
तरकुला-(हि० पुं०) कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना । **तरकुली**-(हिं०स्त्री०)कान का एक प्रकार का गहना ।
तरक्षु-(सं०पुं०) व्याघ्र विशेष, लकड़बग्घा ।
तरखा-(हिं०स्त्री०)जल का तीव्र प्रवाह, नदी के पानी का बहाव ।
तरखान-(हिं०पुं०) वह जो लकड़ी का काम करता हो, बढ़ई ।
तरगुलिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का अक्षत रखने का छिछला बरतन ।
तरङ्ग-(सं०पुं०) लहर, हिलोरा, वस्त्र कपड़ा चित्तका उमंग, मनकी मौज, संगीत में स्वरों का उतार चढाव हाथ में पहिरने की एक प्रकार की चूड़ी ।
तरङ्गक-(सं०पुं०) देखो तरङ्ग । **तरङ्गवती**-(सं०स्त्री०) तरङ्गिणी, नदी ।
तरङ्गिणी-(सं०स्त्री०) सरिता, नदी ।
तरङ्गित-(सं०वि०) लहराता हुआ, हिलोरा मारता हुआ,चञ्चल,चपल नीचे ऊपर उठता हुआ । **तरङ्गी**-(सं०वि०) तरंग युक्त, जिसमें लहर हो, आनन्द करने वाला,मनमौजी ।
तरचरबी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सुन्दर पत्तियों का पौधा ।
तरछट-(हिं०स्त्री०) देखो तलछट ।
तरछा-(हिं०पुं०) वह स्थान जहाँ तेली गोबर जमा करता है ।
तरज-(हिं०पुं०) विधि, प्रकार ।
तरजना-(हिं०क्रि०) डाँटना, डपटना, ताड़न करना, उचित अनुचित कहना, बिगड़ना ।
तरजील-(हि०वि०) क्रोध युक्त,
तरजनी-(हिं०स्त्री०) तर्जनी, अंगूठे के पासकी अंगुली, भय, डर ।
तरट-(सं०पु०) चकवँड़ का वृक्ष ।
तरण-(सं०पु०) पानी पर तैरने वाला पटरा, बेड़ा, स्वर्ग (नपुं०) बेड़े पर बैठ कर दूर देश को जाना, नदी पार करने की क्रिया,निस्तार,उद्धार
तरणि-(सं०पुं०) सूर्य, मदार का वृक्ष, बेड़ा किरण, ताँबा, नाव, घीकुआर (वि०) उद्धार करने वाला, शीघ्र जाने वाला; **तरणिकुमार**-(सं०पु०) देखो तरणिसुत ; **तरणिजा**-(सं०स्त्री०) सूर्य की कन्या, यमुना, एक वर्णवृत्त का नाम; **तरणितनय**-(सं०पु०) सूर्य के पुत्र, यम, शनि, कर्ण आदि; **तरणितनुजा**-(सं०स्त्री०) देखो तरणिजा; **तरणिधन्य**-(सं०पु०) शिव, महादेव; **तरणिपेटक**-(सं०पु०) नाव में का पानी फेंकने का पात्र; **तरणिरत्न**-(सं०नपुं०) पद्मरागमणि; **तरणिसुत**-(सं०पुं०) देखो तरणितनय; **तरणी**-(सं०स्त्री०) नौका,नाव, स्थल कमलिनी, घृतकुमारी, घिकुआर । **तरणीय**-(सं०वि०) पार करने योग्य ।
तरण्ड, तरण्डक-(सं०पुं०) वह छोटी लकड़ी जो मछली फँसाने की डोरी में बँधी रहती है,नाव खेने का डाँड़ा
तरण्डी-(सं०स्त्री०) नौका, नाव ।
तरतम-(सं०वि०)न्यूनाधिक,थोड़ा बहुत
तरतराना-(हिं०क्रि०) तड़तड़ शब्द करना, तड़तड़ाना ।
तरन-(हिं०पु०) देखो तरण । **तरनतार**-(हिं०पुं०) निस्तार, मुक्ति,मोक्ष
तरनतारन-(हि०पु०) वह जो भवसागर से पार करे, मोक्ष, निस्तार, उद्धार ।
तरना-(हिं०क्रि०) पार करना, मुक्त होना, उद्धार होना, देखो तलना ।
तरनाग-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी
तरनाल-(हिं०पुं०) पाल में बांधने का रस्सा ।
तरनि-(हिं०स्त्री०) देखो तरणि । **तरनिजा**-(हिं०स्त्री०) देखो तरणिजा ।
तरनी-(हिं०स्त्री०) नौका, नाव, मिठाई का थाल या खोमचा रखने का छोटा मोढा, तन्नी ।
तरन्त-(सं०पुं०) समुद्र, मेढ़क, बेड़ा, राक्षस ।
तरन्ती-(सं०स्त्री०) नौका, नाव ।
तरपण्य-(सं०नपुं०) नदी की उतराई, नदी पार करने का शुल्क ।
तरगल-(हि०पु०) सुविधा, आराम, सुख चैन ।
तरपन-(हि०पु०) देखो तरपण ।
तरपना-(क्रि०वि०) देखो तड़पना ।
तरपर-(हि०क्रि०वि०) नीचे ऊपर, क्रमानुगत, एक के पीछे दूसरा ।
तरपीला-(हि०वि०) चमकदार ।
तरपू-(हिं०पुं०)एक प्रकार का पहाड़ीवृक्ष
तरफराना-(हिं०क्रि०) देखो तड़फड़ाना
तरब-(हिं०पुं०) सरंगी के तार जो तांत के नीचे लगे रहते हैं ।
तरबहना-(हि०पुं०) किसी देवी देवता की मूर्ति को स्नान कराने का पात्र
तरबालिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा कटार ।
तरबूजिया-(हिं०वि०) तरबूज के छिलके के रंग का, गहरा हरा ।
तरबोना-(हि०क्रि०) भिगाना ।
तरभर-(हिं०स्त्री०) तड़ातड़ शब्द ।
तरमाची-(हि०स्त्री०) देखो तरवाची ।
तरमाना-(सं०पुं०) नदी को पार करने का साधन यथा नाव, बेड़ा आदि ।
तरमानी-(हिं०स्त्री०) जोती हुई भूमि मे की तरी ।
तरम्बुज-(सं०नपुं०) देखो तरबूज ।
तरराना-(हि०क्रि०) ऐंठना ।
तरल-(सं०पुं०) हार, तल, पेंदी (वि०) चंचल,हिलता हुआ,चपल, विस्तीर्ण, फैला हुआ, चमकीला, क्षणभंगुर, अनित्य, बहनेवाला द्रव,(पुं०) लोहा, घोड़ा,मधुमक्खी ; **तरलता**-(सं०स्त्री०) तरलत्व, चपलता, चंचलता; **तरलनयन**-(सं०पुं०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण होते हैं; **तरलनयनी**-(सं०स्त्री०) चंचलाक्षि, एक प्रकार का छन्द; **तरलभाव**-(सं०पुं०) चंचलता, चपलता, पतलापन; **तरललोचन**-(सं०वि०) चंचल नेत्र वाला (सं०नपुं०) चलायमान आँख; **तरल लोचना**-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसकी आँखे चंचल हों ।
तरला-(सं०स्त्री०) मदिरा मधुमक्खी ।
तरला-(हिं०पुं०)छाजन के नीचे का बाँस
तरलाई-(हिं०स्त्री०) द्रवत्व, चंचलता, चपलता ।
तरलित-(सं०वि०) काँपता हुआ, थरथराता हुआ ।
तरवट-(सं०नपुं०) एक प्रकार का वृक्ष
तरवड़ी-(हि०स्त्री०) छोटी तराजू का पलड़ा ।
तरवन-(हि०पुं०) कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना,तरकी,करनफूल
तरवर(हि०पुं०) देखो तरुवर, बड़ा वृक्ष
तरवरिया-(हिं०पुं०)खड्ग चलाने वाला
तरवा-(हिं०पुं०) देखो तलवा ।
तरवाँची-(हिं०स्त्री०) जुए के नीचे की लकड़ी ।
तरवाई सिवाई-(हिं० स्त्री०) ऊँची नीची भूमि ।
तरवाना-(हिं०क्रि०) बैलों का लंगड़ा कर चलना ।
तरवार-(हिं०स्त्री०) तलवार, खड्ग ।
तरवारि-(सं०पुं०) तलवार, खड्ग ।
तरस-(हि०पुं०) दया, करुणा; **तरस खाना**-दया करना,करुणा दिखलाना
तरसना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ के अभाव का दुःख सहना ।
तरसान-(सं०पुं०) नौका, नाव ।
तरसाना-(हिं०क्रि०) अभाव का क्लेश देना, वृथा के लिये किसी को ललचाना ।
तर स्थान-(सं०नपुं०) नाव से उतरने चढ़ने का स्थान, घाट ।
तरस्वत्-(सं०वि०) शूर वीर, बहादुर, बेग युक्त ।
तरस्वी-(सं०वि०) शूरवीर (पुं०) गरुड़, वायु ।
तरहटी-(हि०स्त्री०) पहाड़ की तराई, नीची भूमि ।
तरहर-(हि०क्रि०वि०) नीचे की ओर (वि०) नीचे का, निकृष्ट, अधम,बुरा
तरहा-(हिं०पुं०) एक हाथ की नाप जो कुंवा खोदने मे प्रयोग होती है, एक प्रकार का वस्त्र । **तरहरि**-(क्रि०वि०) नीचे ।
तरहेल-(हि०वि०) आधीन, पराजित, जीता हुआ ।
तराई-(हि०स्त्री०) पहाड़ के नीचे का स्थान जहाँ तरी रहती है, पहाड़ के नीचे की भूमि, घाटी, मूज का मुट्ठा जो छाजन में खपरैल के नीचे लगाया जाता है ।
तराप-(हि०स्त्री०) तोप बन्दूक आदि का तड़ाके का शब्द ।
तरापा-(हिं०पुं०) जल में तैरती हुई लकड़ी, हाहाकार ।
तरामर-(हि०स्त्री०) तड़ातड़ शब्द,
तराबोर-(हिं०वि०) भींगा हुआ ।
तरामल-(हिं०स्त्री०) जुए की लकड़ी ।
तरामीरा-(हिं०पुं०) सरसों की तरह का एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है ।
तरायला-(हिं०वि०) चपल, तीव्र ।
तरारा-(हि०पुं०) उछाल, छलांग, किसी वस्तु पर निरन्तर गिरने वाली जल की धारा ।
तरालु-(सं०पुं०) एक प्रकार की नाव
तारिंदा-(हिं०पुं०) लंगर पर बांधा हुआ पीपा ।
तरि-(सं०स्त्री०) नौका, नाव, कपड़े का किनारा । **तरिक**-(सं०पुं०) मल्लाह, केवट, मांझी ।
तरिका-(हिं०पुं०) कान में पहिरने का

एक गहना; तरकी, (स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
तरिणी-(सं०स्त्री०) नौका, नाव।
तरित-(सं०वि०)उत्तीर्ण,पार किया हुआ
तरिता-(सं०स्त्री०) कानी अंगुली,गांजा, लहसुन।
तरिरथ-(सं०पुं०) नाव खेने का डांड़ा।
तरियाना-(हिं०क्रि०) तरह में बैठाना, छिपाना, पेंदी या तल में बैठाना।
तरिवन-(हिं०पुं०) स्त्रियों के कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना, तरकी, करनफूल।
तरिवर-(हिं०पुं०)देखो तरुवर,श्रेष्ठ वृक्ष
तरिहँत-(हिं०क्रि०वि०) तल में, नीचे।
तरी-(सं०स्त्री०) नौका, नाव, गदा, कपड़ा रखने की पेटी, धूवां, छोटी नाव, कपड़े का किनारा, गीलापन।
तरीष-(सं०पुं०) सूखा गोबर नौका, नाव, समुद्र, स्वर्ग, पानी में चलने वाला बेड़ा, सामर्थ्य।
तरीषी-(सं०स्त्री०) इन्द्र की कन्या का नाम।
तरु-(सं०पुं०) वृक्ष, गाछ, पेड़, एक प्रकार का चीड़ का पेड़।
तरुआ-(हिं०पुं०) उबाले हुए धान का चावल।
तरुक्ष-(सं०वि०) गाय घोड़े आदि के पालने में नियुक्त किया हुआ।
तरुखण्ड-(सं०पुं०) वृक्ष समूह।
तरुज-(सं०वि०) वृक्ष से उत्पन्न (पुं०) सफेद कत्था। **तरुजीवन**-(सं०नपुं०) वृक्ष का मूल, पेड़ की जड़।
तरुण-(सं०नपुं०)मोतिया का फूल,बड़ा जीरा,रेंड़ का पेड़ (वि०) युवा,जवान नूतन, नया, **तरुणक**-(सं०पुं०) पाँच-दिन का दही; **तरुणज्वर**-(सं०पुं०) वह ज्वर जो सात दिन का हो गया हो; **तरुण तरणि**-(सं०पुं०) तरुण सूर्य, दोपहर का सूर्य; **तरुणदारु**-(सं०पुं०) विधारा का वृक्ष; **तरुण-पीतिका**-(सं०स्त्री०) मनःशिला, मैन-सिल; **तरुणसूर्य**-(सं०पुं०) दोपहरकासूर्य
तरुणाई-(हिं०पुं०)युवावस्था, जवानी; **तरुणाना**-(हिं० क्रि०) युवावस्था प्राप्त करना; **तरुणास्थि**-(सं०स्त्री०) पतली लचीलीहड्डी; **तरुणी**-(सं०स्त्री०) युवती, जिसकी अवस्था होलह से बत्तीस वर्ष तक की हो, घृतकुमारी, जमालगोटा, एक प्रकार का बड़ा काला जीरा,मेघरागकी एक रागिणी।
तरुतुलिका-(सं०स्त्री०) चमगादर।
तरुत्र-(सं०वि०) तारक, तारने वाला।
तरुनख-(सं०पुं०) वृक्ष का काँटा।
तरुन-(हिं०पुं०) देखो तरुण। **तरुनई, तरुनाई**-(हिं०स्त्री०)युवावस्था,जवानी
तरुनापा-(हिं०पुं०) युवावस्था,जवानी।
तरुपातका-(हिं०स्त्री०) लता
तरुपंक्ति-(सं०स्त्री०) वृक्षों की पंक्ति।
तरुभुज-(सं०पुं०)वृक्षपरउगनेवालाबंडा
तरुबांही-(हिं०स्त्री०) वृक्ष की शाखा या डाल। **तरुमूल**-(सं०नपुं०) वृक्ष-मूल,पेड़ की जड़। **तरुमृग**-(सं०पुं०) शाखामृग,बन्दर। **तरुराग**-(सं०नपुं०) किसलय, कोमल नया पत्ता।
तरुराज-(सं०पुं०) ताल वृक्ष, कल्प-वृक्ष। **तरुरुहा, तरुरोहिणी**-देखो **तरुभुज**। **तरुवल्ली**-(सं०स्त्री०)जतुका लता, पानड़ी; **तरुविलसिनी**-(सं०स्त्री०) नवमल्लिका,चमेली। **तरुश**-(सं०वि०) वृक्षों से घिरा हुआ। **तरुशायी**-(सं०स्त्री०)पक्षी, चिड़िया। **तरुसार**-(सं०पुं०) कपूर, गोंद। **तरुस्थ**-(सं०वि०) वृक्षपर टिका हुआ।
तरूट-(सं०पुं०)पद्म की जड़, भसीड़।
तरेंदा-(सं०पुं०) जलके तल पर तैरता हुआ काठ, बेड़ा, पानी पर तैरने वाली वस्तु।
तरे-(हिं० क्रि०वि०) नीचे की ओर,नीचे
तरेटी-(हिं०स्त्री०) तराई, घाटी।
तरेरना-(हिं०क्रि०)दृष्टि कुपित करना, आँख के संकेत से असन्तोष प्रगट करना।
तरैनी-(हिं०स्त्री०) हलमें हरिस लगाने का पच्चड़।
तरैया-(सं०वि०) नक्षत्र।
तरैला-(हिं०पुं०) किसी स्त्री का वह पुत्र जो उसके दूसरे पतिसे उत्पन्न हो।
तरैली-(हिं०स्त्री०) देखो तरैनी।
तरोंच-(हिं० स्त्री०) कंघी में के दाँतों का नीचे का भाग।
तरोंड़ा-(हिं० पुं०) हरवाहे आदि के देनेके लिये निकालाहुआ अन्न।
तरोई-(हिं०स्त्री०)देखो तुरई,एक तरकारी
तरोवर-(हिं०पुं०)देखो तरुवर,श्रेष्ठ वृक्ष
तरौछी-(हिं०स्त्री०)वह लकड़ी जो बैल-गाड़ी मे सुजाबाके नीचे लगी होती है
तरौंटा-(हिं०पुं०)चक्कीका निचला पल्ला
तरौंता-(हिं०पुं०)छाजनके नीचे लगाने की लकड़ी।
तरौंस-(हिं०पुं०) तट, किनारा।
तरौना-(हिं०पुं०) स्त्रियों के कान में पहिरने की तरकी, कर्णफूल, मिठाई का खोमचा रखने का मोढा।
तर्क-(सं०पुं०) किसी विषय के अज्ञात तत्व को निश्चित करने की युक्ति, आकांक्षा, आगमार्थ, परीक्षा,विचार मात्र,मीमांसा शास्त्र,तर्क शास्त्र,व्यंग, नाना; **तर्कक**-(सं०वि०)याचक,मांगने वाला, तर्क करने वाला; **तर्ककारी**-(सं० वि०) तर्क करनेवाला; **तर्कण**-(सं०नपुं०) चिन्तन, तर्क करने की क्रिया; **तर्कणा**-(सं०स्त्री०) विचार, युक्ति, उपाय; **तर्कणीय**-(सं०वि०) चिन्तनीय, विचार करने योग्य; **तर्कना**-(हिं०स्त्री०) तर्क करना; **तर्क-वागीश**-(सं०पुं०) वह जो तर्क शास्त्र को भली भाँति जानता हो; **तर्क वितर्क**-(सं० पुं०) विवेचना, सोच विचार, वादाविवाद; **तर्क विद्या**-(सं०स्त्री०) न्यायशास्त्र, अन्वीक्षिकी विद्या; **तर्कशास्त्र**-(सं० नपुं०) वह शास्त्र जिसमें ठीक तरह से तर्क करने के नियम आदि निरूपित होते हैं, न्यायशास्त्र।
तर्काभास-(सं०पुं०) कुतर्क, ऐसा तर्क जो ठीक न हो।
तर्कािण-(सं०पुं०) चकवँण का वृक्ष।
तर्कित-(सं०वि०) आलोचित, संभावित, विचारा हुआ, अनुमान किया हुआ;
तर्की-(हिं० वि०) तर्क करने वाला।
तर्कीब-(हिं०स्त्री०) देखो तरकीव।
तर्कु-(सं०स्त्री०) तकला, टेकुआ।
तर्कुट-(सं० नपुं०) कर्तन, कातना;
तर्कुटी-(सं०स्त्री०) तकला, टेकुआ।
तर्कुल-(हिं० पुं०) ताड़ का वृक्ष।
तर्क्य-(सं०वि०)विचार्य, जिस विषयपर कुछ सोच विचार करना आवश्यक हो
तर्क्षु-(सं०पुं०) तेंदुआ, चीता।
तर्क्ष्य-(सं०पुं०) यवक्षार, जवाखार।
तर्जन-(सं०नपुं०) तिरस्कार, फटकार, घृणा करने का कार्य, धमकाने का काम, ताड़न, क्रोध आस्फालन,डाँट-डपट; **तर्जना**-(हिं० क्रि०) डाटना, डपटना, धमकाना।
तर्जनी-(सं०स्त्री०) अंगूठे के पास की हाथ की अगुली।
तर्जित-(सं०वि०) अनाहूत, अपमान किया हुआ।
तर्ण-(सं०पुं०) एक प्रकार का धान, बछवा।
तर्णक-(सं०पुं०) तुरत का जनमा हुआ गाय का बछवा, शिशु बच्चा।
तर्णि-(सं०पुं०) सूर्य, प्लव, बेड़ा।
तर्तरीक-(सं०नपुं०) नौका, नाव (वि०) पार करने वाला।
तर्तव्य-(सं०वि०) पार करने योग्य।
तर्दू-(सं०स्त्री०) हथियार की मुठिया।
तर्मम्-(सं०पुं०) छेद, सूराख।
तर्पण-(सं० नपुं०) सन्तोष होने की क्रिया देवर्षि,-पितर आदिको सन्तुष्ट करने के लिये अंजुलि में पानी भर कर जलदान देनेकी क्रिया; **तर्पणी**-(सं० स्त्री०) खिरनी का वृक्ष, गंगा (वि०) तृप्ति देने वाली; **तर्पणीय**-(सं० वि०) तर्पण करने योग्य, तृप्ति के योग्य; **तर्पितव्य**-(सं० वि०) तृप्ति के योग्य।
तर्पिणी-(सं०स्त्री०) भूमि कमलिनी।
तर्पित-(सं०वि०) सन्तुष्ट किया हुआ।
तर्यौना-(हिं०पुं०) देखो तरौना।
तर्पी-(सं० वि०) तर्पण करने वाला, सन्तुष्ट करने वाला।
तर्बूज-(हिं०पुं०) देखो तरबूज़।
तर्वट-(सं०पुं०) वर्ष, चकवँड़ का वृक्ष।
तर्रा-(हिं०पुं०) चाबुकमें लगी हुई डोरी
तर्राना-(हिं०पुं०)एक प्रकारका गाना।
तर्री-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का घास।
तर्ष-(सं० पुं०) समुद्र, सूर्य, अभिलाषा, चाह। **तर्षण**-(सं० नपुं०) प्यास, अभिलाषा, इच्छा; **तर्षित**-(सं०वि०) अभिलाषित, चाहा हुआ, प्यासा।
तर्हि-(सं०अव्य०) उस समय, तब।
तल-(सं०पुं०)मध्य देश,स्वभाव, जंगल, गड्ढा,घर की छत, थप्पड़, तमाचा, ताड़ का वृक्ष,अधोभाग,पेंदी,पाताल, पृष्ठ देश, मूल देश, हथेली, पैर का तलवा, तलवारकी मूठ,गोह, कलाई, पहुँचा, एक नरक का नाम, सहारा, आधार, जल के नीचेकी भूमि,वक्षः-स्थल, छाती, बित्ता, महादेव, सात पातालों में से पहिला पाताल।
तलक-(सं०नपुं०) ताल, पोखरा, (हिं० अव्य०) पर्यन्त, तक।
तलकर-(हिं०पुं०) वह कर या लगान जो भूस्वामी सूखे तालाब की भूमि पर लगाता।
तलकी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका वृक्ष।
तलगू-(हिं०स्त्री०)तैलंग देशकी भाषा।
तलघरा-(हिं०पुं०) भूमिगृह।
तलछट-(हिं०स्त्री०) किसी द्रव पदार्थ के के नीचे बैठी हुई मैल,तलौंछ, गाद।
तलताल-(सं०पुं०) हथेली से बजाने का एक प्रकार का बाजा।
तलत्र, तलत्राण-(सं० नपुं०) चमड़े का बना हुआ दस्ताना।
तलध्वनि-(सं०पुं०) हथेली (ताली) बजाने का शब्द।
तलना-(हिं०क्रि०)घी या तेल को गला कर इसमें किसी वस्तु को पकाना।
तलप-(हिं०पुं०) देखो तल्प
तलपट-(हिं०वि०) नष्ट,बरबाद,चौपट।
तलप्रहार-(सं०पुं०) थप्पड़ तमाचा।
तलफना-(हिं० क्रि०) देखो तड़फना, व्याकुल होना, छटपटाना।
तलबेली-(हिं०स्त्री०)उत्कण्ठा, आतुरता, छटपटी बेचैनी।
तलभेद-(सं०पुं०) जिसकी पेंदी में छेद हो गया हो।
तलमल-(सं०पुं०) तलछट, तरौंछ।
तलमलाना-(हिं०क्रि०) छटपटाना।
तलमलाहट-(हिं० स्त्री०) व्याकुलता, बेचैनी।
तलमीन-(सं०पुं०) झींगा मछली।
तलयुद्ध-(सं० नपुं०) मुक्के से लड़ाई करने की क्रिया।
तललोक-(सं०पुं०) पाताल।
तलवकार-(सं० पुं०) सामवेद की एक शाखा, एक उपनिषद् कनाम।
तलवा-(हिं०पुं०) पादतल, पैर के नीचे का भाग; **तलवा चाटना-बड़ी शुश्रूषा** करना; **तलवा छलनी होना-यात्रा** करते करते शिथिल होना; **तलवे से आग निकलना**-बहुत क्रोध चढ़ना।
तलवार-(हिं०स्त्री०) करवाल, असि, खड्ग, कृपाण; **तलवार का खेत**-रणभूमि; **तलवार का घाट**-खड्गका वह स्थान जहाँ से इसका ऊपर का भाग टेढ़ा होता है; **तलवार का पानी**-तलवार की चमक; **तलवार की छाँह में**-रणक्षेत्र में; **तलवार**

खींचना-युद्ध करने के लिये तलवार को म्यान से बाहर निकालना।

तलवारण-(सं०नपुं०)तलवार, खड्ग।

तलसारक-(सं०नपुं०) घोड़े की छाती में बँधी हुई रस्सी।

तलस्थिता-(सं०वि०) नीचे की ओर रहने वाला।

तलहटी-(हिं०स्त्री०) पहाड़की तराई,घाटी

तलहृदय-(सं० नपुं०) पदतल का मध्य भाग।

तला-(सं०स्त्री०) चमड़े का बल्ला जो धनुष की डोरी की रगड़ बचाने के लिये बाईं बाँह में पहिराया जाता है; (हिं०पुं०) किसी वस्तु के नीचे का तल, पेंदी, जूते के नीचे का चमड़ा

तलाई-(हिं०स्त्री०) छोटा ताल, तलैया।

तलाची-(सं०स्त्री०) बेंत या बांस की फट्ठियों की बनी हुई चटाई।

तलातल-(सं०नपुं०) सात पातालों में से एक पाताल का नाम।

तलाभिघात-(सं०पुं०) करतल द्वारा प्रहार, तमाचा, थप्पड़।

तलामणि-(सं०पुं०) प्रवाल, मूँगा।

तलाब-(हिं०पुं०) देखो तालाब, ताल।

तलाशना-(हिं०क्रि०) खोजना, ढूंढना।

तलाशा-(सं०स्त्री०) एक वृक्ष का नाम।

तालिका-(सं०स्त्री०) घोड़े की छाती में बँधी हुई रस्सी।

तलित्-(सं०स्त्री०) देखो तड़ित्, बिजली

तलित-(सं०नपुं०) तली हुई मांस।

तलिन-(सं०नपुं०) शय्या, पलंग, (वि०) थोड़ा, कम, शुद्ध, दुर्बल, दुबला पतला

तालिम-(सं०नपुं०) शय्या, खड्ग, चँदवा

तलिया-(हिं०स्त्री०) समुद्र का थाह।

तली-(हिं०स्त्री०) तल, पेंदी, तलछट, तलौंछ।

तलुन-(सं०पुं०)वायु, हवा, युवा मनुष्य; **तलुनी**-(सं०स्त्री०) युवती स्त्री।

तले-(हिं०क्रि०वि०) नीचे, नीचे की ओर

तलेक्षण-(सं०पुं०) शूकर, सुअर।

तलेटी-(हिं०स्त्री०) पेंदी, तलहटी, तराई, घाटी।

तलैचा-(हिं०पुं०) घर का वह हिस्सा जो मेहराब के ऊपर और छत के नीचे रहता है।

तलैया-(हिं०स्त्री०) छोटा ताल।

तलोदरी-(सं०स्त्री०) भार्या, पत्नी।

तलोदा-(सं०स्त्री०) नदी, दरिया।

तलौंछ-(हिं०स्त्री०) तरल पदार्थ के नीचे जमी हुई मैल, तलछट।

तल्क-(सं०नपुं०) वन, जंगल।

तल्प-(सं०पुं०)पलंग,शय्या, अटारी,स्त्री

तल्पक-(सं०पुं०) पलंग को सजाने वाला भृत्य। **तल्पकीट**-(सं०पुं०) मत्कुण, खटमल। **तल्पज**-(सं०पुं०) क्षेत्रज पुत्र।

तल्पन-(सं०नपुं०) पीठ की हड्डी पर का मांस।

तल्पशीवन्-(सं०वि०) सर्वदा पलंग पर पड़ा रहने वाला।

तल्प्य-(सं०पुं०) एक रुद्र का नाम।

तल्ल-(सं०नपुं०) बिल, गड्ढा, पोखरी; (वि०) उसमें लगा हुआ।

तल्लज-(सं०पुं०) सम्मान सूचक शब्द।

तल्लह-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।

तल्ला-(हिं०पुं०) तले की परत, पास, अस्तर, जूते की पेंदी का चमड़ा।

तल्लिका-(सं०स्त्री०) कुञ्जिका, कुञ्जी, ताली।

तल्ली-(सं०स्त्री०) नौका, नाव, युवती, वरुण की स्त्री, तल्लीन (वि०) निमग्न।

तल्लीट-(हिं०स्त्री०) जूते का तला,तलछट

तल्लुआ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

तल्व-(सं०नपुं०) वह सुगन्ध जो किसी पदार्थ की रगड़ से उत्पन्न हो।

तल्वकार-(सं०पुं०)सामवेद की एकशाखा

तव-(सं०सर्व०) तुम्हारा।

तवक्का-(हिं०पुं०) भरोसा।

तवक्षीर-(सं०नपुं०) तवाखीर, तीखुर, कनकचूर।

तवनी-(हिं०स्त्री०) छोटा तवा।

तवना-(हिं०क्रि०) तपना, गरम होना, तेज का प्रस्तार होना, क्रोध से लाल होना, कुढ़ना।

तवर-(सं०नपुं०) कोई बड़ी संख्या।

तवरक-(हिं०पुं०)एक प्रकार का बड़ावृक्ष

तवराज-(सं०पुं०) जवास, शर्करा।

तवर्ग-(सं०पुं०) त,थ,द,ध,न ये पांच अक्षर। **तवर्गीय**-(सं०वि०) तवर्ग से उत्पन्न वर्ण।

तवस्-(सं०वि०) वृद्ध, बुड्ढा, बड़ा।

तवस्वत्-(सं०वि०) बलयुक्त, पुष्ट।

तवा-(हिं०पुं०) रोटी सेकने का छिछला लोहे का गोल पात्र, खपड़े का गोल ठीकरा जिसको चिलम पर रख कर तमाखू पी जाती है, एक प्रकार की लाल मिट्टी; **तवे की बूंद**-केवल क्षणभर ठहरने वाला, जो चिरस्थायी न हो।

तवाखीर-(हिं०पुं०) वंशलोचन।

तवाना-(हिं०क्रि०)दूसरे से गरम कराना

तवारा-(हिं०पुं०) दाह ताप, जलन।

तविपुला-(सं० स्त्री०) विपुला छन्द का भेद।

तविष-(सं०पुं०) स्वर्ग, समुद्र, शक्ति, सोना, (वि०) बलवान्, बुड्ढा, बड़ा।

तविषी-(सं०स्त्री०)देवकन्या, भूमि,नदी

तविषीवत्-(सं०वि०) साहसी, पराक्रमी

तष्ट-(सं०वि०) दो टुकड़ा किया हुआ, छीला हुआ, पीटा हुआ, गुणा किया हुआ।

तष्टा-(सं०पुं०) एक आदित्य का नाम विश्वकर्मा, छील छाल कर गढ़नेवाला (फ़ा०पुं०) तांबे की छोटी थाली जिसमें मूर्तियां नहलाई जाती है।

तष्टी-(सं०स्त्री०) तक्षण, रन्दने का काम

तस-(हिं०वि०) तैसा, वैसा।

तसगर-(हिं०पुं०) जुलाहे की ताने में लगाने की एक लकड़ी।

तसर-(सं०पुं०) जुलाहे की ढरकी, एक प्रकार का कीड़ा, मोटा रेशम।

तसली-(हिं०स्त्री०) छोटा तसला।

तसू-(हिं०पुं०) इमारती गज़ का चौबीसवाँ अंश जो प्रायः सवा इंच के बराबर होता है।

तस्कर-(सं०पुं०) चोर, चोट्टा, एक प्रकार का शाक, श्रवण, कान, चोर नामक गन्ध द्रव्य। **तस्करता**-(सं०स्त्री०) चोर का काम, चोरी।

तस्करस्नायु-(सं०पुं०) कौवाठोंठी।

तस्करी-(सं०स्त्री०) चोर की स्त्री, चोरी करने वाली स्त्री, चोरी का काम, कौवाटोंठी।

तस्थिवन्-(सं०वि०) स्थित, ठहरा हुआ

तस्थू-(सं०वि०) एक स्थान पर रहने वाला।

तस्मा-(हिं०पुं०) देखो तसमा।

तस्मात्-(सं०अव्य०) इस कारण से, इस लिये।

तस्य-(सं०सर्व०) उसका।

तस्सू-(हिं०पुं०) देखो तसू।

तहँ, तहँवां-(हिं० क्रि० वि०) उस स्थानपर।

तह-(हिं०स्त्री०) परत, तल, पेंदी, थाह, झिल्ली, महीन पटल; **तह करना या लगाना**-किसी वस्त्र को लपेट कर या मोड़कर समेटना; **तह तोड़ना**-झगड़ा तय करना; **तह देना**-हलका रंग चढ़ाना; **तहकी बात**-रहस्य, गुप्त वार्ता; **तह तक पहुँचना**-रहस्य का पता लगा लेना।

तहरी-(हिं०स्त्री०) बरी और चावल की खिचड़ी, मटर की खिचड़ी, कालीन बुनने वालों की ढरकी।

तहसनहस-(हिं०वि०) नष्टभ्रष्ट।

तहसीलता-(हिं०क्रि०) चन्दा लगान आदि उगाहना।

तहां-(हिं०क्रि०वि०) वहाँ, उस स्थान पर

तहाना-(हिं०क्रि०) लपेटना, तह करना

तहियाँ-(हिं०क्रि०वि०) उस समय, तब।

तहियाना-(हिं०क्रि०) तह लगाना, तहाना।

ताहीं-(हिं०क्रि०वि०) उसी स्थान पर, वहीं।

ता-(सं०पुं०) विशेषण तथा संज्ञा शब्दों में लगाने का एक भाव वाचक प्रत्यय (सर्व०) उस (वि०) उस।

ताइ-(हिं०स्त्री०) ताप, जाड़ा देकर आने वाला ज्वर, एक प्रकार की छिछली कड़ाही, पिता के बड़े भाई की स्त्री, चाची।

ताईं-(हिं०अव्य०) पर्यन्त, समीप, निकट, पास, वास्ते, विषय में, निमित्त।

ताऊ-(हिं०पुं०) पिता का बड़ा भाई, बड़ा चाचा, **बछिया के ताऊ**-मूर्ख।

ताँगा-(हिं०पुं०) देखो टाँगा।

ताँत-(हिं०स्त्री०) चमड़े या पशुओं की नसों से बनी हुई डोरी, धनुष की डोरी, सूत, डोरी, सारंगी का तार, जुलाहों की राँच।

ताँतड़ी-(हिं०स्त्री०) ताँत, तन्तु।

ताँतवा-(हिं०पुं०) आँत उतरने का रोग

ताँता-(हिं०पुं०) पंक्ति; **ताँता लगना**-एक के बाद दूसरे का चला चलना।

ताँति-(हिं०स्त्री०) देखो तांत; तन्त्र।

ताँतिया-(हिं०वि०) जो ताँत की तरह पतला हो।

ताँती-(हिं० स्त्री०) पंक्ति, क्रम, बाल-बच्चे (पुं०) जुलाहा।

ताँबा-(हिं०पुं०) ताम्र, लाल रंग का एक मोलायम धातु जो पीटने से बढ़ सकता है।

ताँबिया, ताँबी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पात्र जिसका मुंह चौड़ा होता है, तांबे की करछी।

ताँबूल-(हिं०पुं०) देखो ताम्बूल, पान।

ताँबेकारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का लाल रंग।

ताँबेल-(हिं०पुं०) कच्छप, कछुवा।

ताँवर-(हिं०स्त्री०) ताप जूड़ी, मूर्छा।

ताँवरी-(हिं०स्त्री०) देखो ताँवर।

ताँसना-(हिं० क्रि०) डाटना, डपटना, धमकाना, कष्ट देना, सताना, दुखी करना।

ताक-(हिं०स्त्री०) अवलोकन, देखने की क्रिया; खोज, स्थिर दृष्टि, टकटकी, किसी अवसर की प्रतीक्षा, घात, दाँव **ताक में रहना**-अवसर देखते रहना; **ताक लगाना**-घात में रहना, अवसर की प्रतीक्षा करते रहना।

ताकझांक-(हिं० स्त्री०) ठहर ठहर कर बारंबार देखने की क्रिया, निरीक्षण, देखभाल, छिपकर देखने की क्रिया, अन्वेषण, खोज।

ताकना-(हिं०क्रि०) अवलोकन करना, देखना, दृष्टि रखना, रखवाली करना, पहिले से देखकर स्थिर कर लेना, एक दृष्टि से देखना, टकटकी लगाना,लखना, समझ जाना, सोचना विचारना, चाहना।

ताकीली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा।

ताक्षक-(सं०वि०) तक्षक सम्बन्धी।

ताक्षण्य-(सं०पुं०) बढ़ई की सन्तान।

ताग-(हिं०पुं०) देखो तागा।

तागड़-(हिं०स्त्री०) पटरों की बनी हुई सीढ़ी जो जहाज पर लगी होती है।

तागड़ी-(हिं० स्त्री०) कमर में पहिरने का गहना, कटिसूत्र, करधनी, कमर में पहिरने का रंगीन डोरा।

तागना-(हिं०क्रि०) सिलाई करना, दूर दूर की सिलाई करना, लंगर डालना

तागपहनी-(हिं० स्त्री०) वह लकड़ी जिसका एक छोर नुकीला तथा दूसरा चिपटा होता है। **तागपाट**-(हिं०पुं०) रेशम के तागे में पिरोया हुआ एक गहना जो विवाह में पहिरा जाता है।

तागा-(हिं०पुं०) सूत, डोरा, धागा, वह कर जो प्रति मनुष्य के अनुसार

लगाया जाता है।

तल्छील्य-(सं०नपुं०) देखो तच्छीलता।

ताजन, ताजना-(हिं०पुं०) चाबुक,कोड़ा

ताटंक-(सं०पुं०) कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना, तरकी करनफूल, छप्पय छन्द का एक भेद।

ताटंक-(सं०पुं०) देखो ताटङ्क

ताटस्थ्य-(सं०नपुं०) निकट में होने का भाव, समीपता, उदासीनता।

ताडंक-(सं०पुं०) कान का एक गहना, तरकी।

ताड़-(सं०पुं०) ताडन, प्रहार, आघात, चोट, गुञ्जन, ध्वनि का शब्द, घास आदि का जुट्टा, पर्वत, पहाड़, हाथ का एक आभूषण, शाखा रहित एक बड़ा वृक्ष, ताल वृक्ष।

ताड़क-(सं० वि०) प्रहार करनेवाला, ताड़न करनेवाला।

ताड़का-(सं०स्त्री०)एक राक्षसी जिसको रामचन्द्र ने मारा था; **ताड़काफल**-(सं०नपुं०) बड़ी इलायची; **ताड़कायन**-(सं०पुं०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम; **ताड़कारि**-(सं०पुं०) ताड़का के शत्रु श्रीरामचन्द्र; **ताड़केय**-(सं०पुं०) ताड़का का पुत्र, मारीच।

ताड़घ-(सं० पुं०) बेंत मारनेवाला, घातक। **ताड़घात**-(सं०पुं०) वह जो हथौड़े आदि से पीटकर काम करता हो।

ताडङ्क-(सं०पुं०) कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना, करनफूल।

ताडन-(सं०नपुं०)आघात, प्रहार, मांग, शासन, दण्ड, डाँटडपट, घुड़की।

ताड़ना-(सं०स्त्री०)मार, प्रहार, शासन कष्ट, (हिं० क्रि०) डाँटना, डपटना, दण्ड देना, मारना, पीटना, मारपीट कर भगाना, हटा देना, छिपी हुई बात का पता लगा लेना, भाँफना, लखँ लेना।

ताड़नी-(हिं० स्त्री०) कोड़ा, चाबुक।

ताड़नीय-(सं०वि) शासन करने योग्य, दण्ड देने योग्य।

ताड़पत्र-(सं० नपुं०) कर्णभूषण, कान का एक गहना, ताड़ का पत्ता।

ताड़बाज-(हिं०वि०) छिपी हुई बात को समझ जानेवाला, ताड़नेवाला।

ताड़ाग-(सं०पुं०) तालाब का पानी।

ताड़ित-(सं०वि०) आहत, मार खाया हुआ, तिरस्कार किया हुआ, दण्डित, दूरीकृत, (नपुं०) विद्युत, बिजली; **ताड़ितपदार्थ**-दो वस्तुओं की रगड़ से निकली हुई बिजली; **ताड़ितवार्ता**-तार का समाचार।

ताड़ी-(हिं०स्त्री०) वह नशीला रस जो ताड़ के फूलते हुए डंठलों में से निकलता है।

ताड़्य-(सं०वि०) ताड़न योग्य, डाँटने डपटने योग्य। **ताड़्यमान**-(सं०वि०) जो डाटा जाता हो, जो पीटा जाता हो, (पुं०) ढक्का, ढोल।

ताण्ड-(सं०नपुं०) नृत्यशास्त्र। **ताण्डव**-(सं०पुं०) नृत्य, नाच, पुरुष का नाच वह नृत्य जो शिव को अति प्रिय है, एक प्रकार की घास; **ताण्डव तिलक**-शिवजी के द्वारपाल नन्दी; **ताण्डव प्रिय**-शिव, महादेव। **ताण्डवित**-(सं०वि०) नाच किया हुआ।

ताण्डवी-(सं०पुं०) संगीत के चौदह तालों में से एक। **ताण्डि**-(सं०नपुं०) नृत्य शास्त्र।

तात-(सं०पुं०) पिता, बाप, प्यार का शब्द जो भाई बन्धु विशेष कर अपने से छोटे के लिये व्यवहार किया जाता है, दया, (वि०) आदर के योग्य, पूज्य (हिं०वि०) गरम,उष्ण

तातगु-(सं०पुं०) पितृव्य, चाचा।

तातन-(सं०पुं०) खजन पक्षी।

तातल-(सं०पुं०)पिता तुल्य,पिता सम्बन्धी,अति वेगवान् (वि०) तप्त,गरम।

ताता-(हिं०वि०)तपा हुआ, उष्ण,गरम

ताताथेई-(हिं० स्त्री०) नाचने में पादविक्षेप का शब्द।

ताति-(सं०स्त्री०) उन्नति, वृद्धि।

तात्कालिक-(सं०वि०) तत्कालीन, उसी समय का। **तत्काल्य**-(सं०नपुं०)तत्कालता, वह जो उसी समय का हो।

तात्पर्य-(सं०नपुं०) आशय, अभिप्राय, मतलब,तत्परता। **तात्पर्यक**-(सं०वि०) अर्थबोधक, भाव उत्पन्न करने वाला

तात्य-(सं०वि०)तत्कालीन,उसी समय का

तात्विक-(सं०वि०)तत्व ज्ञान सम्बन्धी, यथार्थ।

ताथेई-(हिं०स्त्री०) देखो ताताथेई।

तादर्थिक-(सं०वि०) उसी अर्थ का, उसी तरह का। **तादर्थ्य**-(सं०नपुं०) तन्निमित्त,तदर्थता। **तादात्म्य**-(सं०नपुं०) तत्स्वरूपता, एक वस्तु का दूसरे में मिलकर उसी के रूप का हो जाना।

तादुरी-(सं० स्त्री०) मेढक। **तादृश**, **तादृग्विध**-(सं०वि०) उसी तरह का, उसी के समान।

तादृश-(सं०वि०) उसी तरह, उसी के समान, तत्तुल्य। **तादृशी**-(सं०स्त्री०) उसी के समान, वैसी।

ताधर्म्य-(सं०नपुं०) एकधर्म,एक नियमता

ताधा-(हिं०स्त्री०) देखो ताताथई।

तान-(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव,खींच, ज्ञान का विषय, गाने का एक भेद जिसमें सुर अनेक विभाग करके खींचा जाता है, लय का विस्तार, आलाप, वह पदार्थ जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा होता है, पलंग या हौदे को पुष्ट करने के लिये लगाया हुआ लोहे का छड़, एक प्रकार का वृक्ष; **तान उड़ाना**-गीत गाना।

तानतरङ्ग-(सं०स्त्री०) लय की लहर।

तानना-(हिं०क्रि०) वेग से खींचना, बढ़ाना, कारागार में भेजना, किसी के विरुद्ध चिट्ठी पत्री या प्रार्थना पत्र भेजना, प्रहार के लिये अस्त्र उठाना, परदा लगाना, किसी पदार्थ को एक ऊँचे स्थान से दूसरे ऊँचे स्थान तक ले जाकर बाँधना; **तान कर**-बल के साथ; **तान कर सोना**-बेफ़िक्र होकर सोना।

तानपूरा-(हिं०पुं०) चार तार का सितार के आकार का एक बाजा जो गायक के सुर बाँधने में सहायक होता है, तम्बूरा।

तानवान-(हिं०पुं०) देखो ताना बाना।

तानसेन-अकबर के समय का एक अति प्रसिद्ध गवैया; यह पहिले कट्टर हिन्दू थे परन्तु बाद में मुसलमान हो गये थे।

ताना-(हिं०पुं०) कपड़े की बनावट में वह सूत जो लंबाई के बल में रहता है, करघा जिससे दरी या क़ालीन बुनी जाती है।

ताना-(हिं०क्रि०) तप्त करना, तपाना, गरम करना, सोने चांदी को गरम करके परीक्षा करना, पिघलाना, जाँचना, गीली मिट्टी से पात्र का मुंह बन्द करना, मूंदना।

तानाबाना-(हिं०पुं०) कपड़े के बुनावट में लंबाई तथा चौड़ाई बल के फैलाये हुए सूत।

तानारीरी-(हिं०स्त्री०) सामान्य गायन, मामूली गाना, राग, आलाप।

तानी-(हिं०स्त्री०) कपड़े की बुनाव में वह सूत जो लंबाई के बल हो।

तानीयक-(सं०पुं०) भुट्टे का पौधा।

तानूर-(सं०पुं०) जलावर्त, पानी का भँवर

तान्त-(सं०वि०) म्लान, मुरझाया हुआ, थका हुआ।

तान्तव-(सं०नपुं०) वस्त्र, कपड़ा।

तान्तवता-(सं०स्त्री०) पदार्थों में का वह गुण जिसके रहने से वह खींचा जाकर तार बनाया जा सकता है।

तान्तव्य-(सं०पुं०) जुलाहे की सन्तान।

तान्त्र-(सं०नपुं०) जिसमें तार लगा हो, तन्त्र शास्त्र सम्बन्धी। **तान्त्रिक**-(सं०वि०) सिद्धान्त को जानने वाला, जो शास्त्र से परिचित हो, तन्त्र शास्त्र को जानने वाला, जो मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन के प्रयोगों को जानता हो,तन्त्र संबंधी; (पुं०) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

तान्त्रिकी-(सं०स्त्री०) तन्त्र सम्बन्धी।

तान्दन-(सं०पुं०) वायु, हवा।

तान्दुर-(सं०नपुं०) तन्दूर में पकाया हुआ मांस।

ताप-(सं०पुं०) वह सन्ताप जो उष्ण वस्तु के स्पर्श से उत्पन्न होता है, दुःख, उष्णता, आँच की लपट, ज्वर, कष्ट, यातना, हृदय का दुःख, मानसिक कष्ट, आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक क्लेश, वह प्राकृतिक शक्ति जिसका प्रभाव पदार्थों को पिघलाने, बाष्प बनाने आदि में देख पड़ता है।

तापक-(सं०पुं०) तापकारक, ताप उत्पन्न करने वाला, ज्वर, रजोगुण।

तापतिल्ली-(हिं०स्त्री०) प्लीहा रोग, पिलही के बढ़ जाने का रोग।

तापती-(सं०स्त्री०) सूर्य की कन्या तापी नदी जो सतपुरा पर्वत से निकल कर पश्चिम की ओर बहती हुई खंभात की खाड़ी मे जा मिली है

तापत्य-(सं०पुं०) तापती के वंशज कुरु

तापत्रय-(सं०नपुं०) तीन प्रकार के दुःख यथा-आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

तापन-(सं०नपुं०) ताप देने वाला,सूर्य, सूर्यकान्त मणि, कामदेव के पाँच बाणों में से एक, मदार का वृक्ष, ढोलक बाजा, एक नरक का नाम, तन्त्र का वह प्रयोग जिसके विधान से शत्रु को पीड़ा होती है। **तापना**-(हिं०क्रि०) अग्नि की गरमी से अपने शरीर को गरम करना, शरीर गरम करने के लिये जलाना, फूंकना, नष्ट करना।

तापनी-(सं०स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम,(वि०) सुवर्णमय, गरम होने योग्य

तापमान यन्त्र-(सं०पुं०) गरमी की मात्रा नापने का यन्त्र, जिसको अंग्रेजी में थर्मामेटर कहते हैं।

तापयिष्णु-(सं०वि०)तापनीय,तापनेयोग्य

तापश्चित-(सं०स्त्री०) यज्ञ की अग्नि का एक भेद, एक यज्ञ का नाम।

तापस-(सं०पुं०) तपस्या करने वाला; तपस्वी, दौना नामक पौधा, तमालपत्र, तेजपत्ता, एक प्रकार का गन्ना।

तापसक-(सं०पुं०) सामान्य योगी, छोटा तपस्वी; **तापसज**-(सं०नपुं०) तमालपत्र, तेजपत्ता; **तापसतरु**-(सं०पुं०) हिंगोट का वृक्ष; **तापसद्रुम**-(सं०पुं०) देखो तापसतरु;

तापसपत्री-(सं०स्त्री०) दमनक (दौना) वृक्ष; **तापसप्रिय**-(सं०पुं०) चिरौंजी का वृक्ष; **तापसप्रिया**-(सं०स्त्री०) द्राक्षा, मुनक्का; **तापसवृक्ष**-(सं०पुं०) देखो तापसतरु।

तापसा-(सं०स्त्री०) द्राक्षा,दाख,मुनक्का

तापसी-(सं०स्त्री०) तपस्या करने वाली स्त्री, तपस्वी की स्त्री।

तापस्य-(सं०नपुं०) तापस धर्म।

तापसवेद-(सं०पुं०) आँच आदि की सेंक के द्वारा पसीना निकालने की विधि।

तापहर-(सं०वि०) तापनाशक, ज्वर को दूर करने वाला।

तापहरी-(सं०स्त्री०) उरदी की बरी और चावल की बनी हुई खिचड़ी, ताहरी।

तापा-(हिं०पुं०) मछली मारने का साधन, मुरगी का दरबा।

तापिक-(सं०वि०) गरमी से उत्पन्न होने वाला।

तापिच्छ-(सं०पुं०) तमालवृक्ष, एक

प्रकार का फूल।

तापिन्ज-(सं०नपुं०) तमालवृक्ष, सुवर्ण-माक्षिक नामक धातु।

तापित-(सं०वि०) तापयुक्त, जो तपाया गया हो, दुःखित पीडित। **तापी**-(सं०वि०) तापक, ताप देने वाला, तापयुक्त, जिसमें ताप हो (पुं०) बुद्ध देव (स्त्री०) सूर्य की कन्या तापी नदी, यमुना नदी।

तापीज-(सं०पुं०) सुवर्णमाक्षिक नामक धातु।

तापेन्द्र-(सं०पुं०) सूर्य।

तापेश्वर-(सं०पुं०) एक तीर्थ का नाम

ताप्य, ताप्यक-(सं०नपुं०) देखो तापीज

ताबड़तोड़-(हिं०क्रि०वि०) लगातार, क्रम से, बराबर।

ताबा-(हिं०वि०) देखो ताबे।

ताम-(सं०पु०) भयंकर, डरावना, दोष, विकार, दुःख, क्लेश, कष्ट, व्याकुलता, घबड़ाहट, ग्लानि, पाप, (हिं०पु०) क्रोध, अन्धकार; अँधेरा।

तामजान-(हिं०पुं०) छोटी बिना ढपने की एक प्रकार की पालकी।

तामड़ा-(हिं०वि०) ताँबे के समान रंग का (पु०) ऊदे रंग का एक प्रकार का पत्थर, एक प्रकार का कागज, गंजी खोपड़ी।

तामर-(सं०नपु०) जल, घृत, घी।

तामरस-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, सोना, तांबा, धतूरा, सारस पक्षी, एक प्रकार का छन्द जिसमें बारह अक्षर होते हैं।

तामरसी-(सं०स्त्री०) पद्मिनी, कमलिनी

तामलकी-(सं०स्त्री०) भूआँवला।

तामलिग-(सं०पुं०) एक देश का नाम;

तामलूक-(हिं०पुं०) ताम्रलिप्त, वंग देश के एक प्रान्त का नाम।

तामलेट-(हिं०पुं०)अंग्रेजी टम्बलर शब्द का अपभ्रंश, टीन या लोहे के गिलास के आकार का पात्र।

तामस-(सं०पुं०) सर्प, साँप, दुष्ट, उल्लू, क्रोध, अज्ञान, मोह,अन्धकार, अँधेरा, चतुर्थ मनु का नाम, (वि०) जिसमें तमोगुण प्रधान हो, (पुं०) शिव के एक अनुचर का नाम। **तामसमद्य**-(सं०नपुं०) मदिरा जो कई वार खींची गई हो। **तामसबाण**-(सं०पुं०) एक शस्त्र का नाम। **तामस सन्यासी**-(सं०पुं०) गृहस्थाश्रम त्याग कर मोक्ष की कामना से जंगल जंगल घूमघूम कर तपस्या करने वाला मनुष्य। **तामसिक**-(सं०नपुं०) तमोगुण का कार्य। **तामसी**-(सं०वि०) तमोगुण वाली, (स्त्री०) अँधेरी रात, महाकाली, जटामासी, बालछड़, एक प्रकार की महाविद्या।

तामालेय-(सं०पुं०) तमाल वृक्ष के पास का भाग।

तामिल-भारत की दक्षिण प्रान्त वासी एक जाति और उनकी भाषा, द्राविड़ भाषा।

तामिस्र-(सं०पुं०) एक नरक का नाम जहाँ सर्वदा घोर अन्धकार बना रहता है, क्रोध, द्वेष, वह क्रोध जो भोग की इच्छा पूर्ति न होने पर आता है।

तामी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पात्र जिसमें द्रव पदार्थ नापा जाता है।

तामेसरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का तामड़ा रंग जो गेरू के योग से बनाया जाता है।

तामीर-(फ़ा०पुं०) घर की मरम्मत।

ताम्मुल-(फ़ा०पुं०) आगा पीछा।

ताम्बुली, ताम्बूल-(सं०)नागवल्ली,पान **ताम्बूल पात्र**-(सं० पुं०) पान रखने का पात्र; **ताम्बूल दायक**-(सं० पुं०) पान लगाने वाला नौकर; **ताम्बूल पेटिका**-(सं०स्त्री०)देखो ताम्बूल पात्र; **ताम्बूल राग**-(सं०पुं०)पान की पीक; **ताम्बूल वल्ली**-(सं०स्त्री०)पान की बेल या लता; **ताम्बूल वाहक**-(सं० पुं०) पान देने वाला भृत्य; **ताम्बूलिक**-(सं०पुं०) पान बेंचने वाला, तमोली; **ताम्बूली**-(सं०) पान बेचने वाला।

ताम्र-(सं० नपुं०) तांबा नामक धातु, (सं० पुं०) महिषासुर के एक प्रधान सेनापति का नाम; **ताम्रक**-(सं०नपुं०) ताम्र, ताँबा; **ताम्रकण्टक**-(सं० पु०) लाल खैर का पेड़; **ताम्रकर्णी**-सं० स्त्री०) तांबे का पात्र बनाने वाला,

ताम्रकार-(सं० पुं०) कसेरा जाति, **ताम्रकिलि**-(सं०पुं०)बीरबहूटी नामक कीड़ा, **ताम्रकुट्ट**-(सं०पुं०)तमाकू का पेड़, **ताम्रकुण्ड**-(सं० पुं०) वह ताँबे का पात्र जिसमें पूजा का जल गिराया जाता है; **ताम्रकूट**-(सं०पुं०) तमाकू का पेड़; **ताम्रकृमि**-(सं० पुं०) देखो ताम्रकिलि, बीरबहूटी।

ताम्रगर्भ-(सं०नपुं०) तुत्थ, तूतिया; **ताम्रचक्षु**-(सं०पुं०) कपोत, कबूतर (वि०) लाल नेत्रोंवाला; **ताम्रचूड़**-(सं०पु०) कुक्कुट, करौंदे का पेड़, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम; **ताम्रजाक्ष**-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न थे; **ताम्रतनु**-(सं०वि०) जिसके शरीर का रंग ताँबे के समान हो; **ताम्रतुण्ड**-(सं०पुं०) लाल मुंह का एक प्रकार का बन्दर; **ताम्रत्रपुज**-(सं०पु०) कास्य, काँसा; **ताम्रत्व**-(सं०नपु०) रक्तवर्ण, लाली; **ताम्रद्रु**-(सं०पुं०) रक्त चन्दन, लाल चंदन; **ताम्रधातु**-(सं०पुं०) ताम्र, तांबा; **ताम्रधूम्र**-(सं०स्त्री०) तामड़ा, लाल रंग; **ताम्रध्वज**-(सं०पुं०) मयूरध्वज के पुत्र का नाम जिन्होंने श्रीकृष्ण और अर्जुन को युद्ध में हराया था; **ताम्रपक्षा**-(सं०स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम; **ताम्रपक्षी**-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; **ताम्रपट्ट, ताम्रपत्र**-(सं०पु०) लाल रंग के पत्ते वाला एक प्रकार का वृक्ष; तांबे की चद्दर का टुकड़ा जिस पर प्राचीन समय में दानपत्र आदि खुदवाये जाते थे; लाल रंग की नई पत्ती; **ताम्रपत्रक**-(सं०पुं०) देखो ताम्रपत्र; **ताम्रपर्ण**-(सं०पुं०) सिंहलद्वीप का प्राचीन नाम; **ताम्रपर्णी**-(सं०स्त्री०) मद्रास के अन्तर्गत तिन्नेवेलि जिले की एक नदी, सिंहल द्वीप का एक नगर, सरोवर, तालाब, मजीठ; **ताम्रपल्लव**-(सं० पु०) अशोक वृक्ष; **ताम्रपाकी**-(सं०पुं०) पाकर का वृक्ष; **ताम्रपात्र**-(सं०नपु०) तर्पण आदि करने का तांबे का पात्र; **ताम्रपादी**-(सं०स्त्री०) हंसपदी नामक लता; **ताम्रपुष्प**-(सं०पुं०) लाल फूल का कचनार; **ताम्रपुष्पी**-(सं०स्त्री०) धव का वृक्ष, नारंगी का पेड़; **ताम्रफल**-(सं०पुं०) लाल रग का फल; **ताम्रफलक**-(सं०पुं०) तांबे के चद्दर का टुकड़ा; **ताम्रमुख**-(सं०वि०) जिसका मुख लाल रंग का हो; **ताम्रमूला**-(सं०स्त्री०)जवासा,लजालु, केंवाच, मजीठ, लाल जड़ वाला वृक्ष; **ताम्रमृग**-(सं०पुं०) लाल रंग का हिरन; **ताम्रलिप्त**-(सं०पुं०) तमलूक नामक स्थान का प्राचीन नाम; **ताम्रवर्ण**-(सं०पुं०) लाल रंग, सिंहलद्वीप, सीलोन; **ताम्रवर्णा**-(सं०स्त्री०) अड़हुल का वृक्ष; **ताम्रवल्ली**-(सं०स्त्री०) मञ्जिष्ठा, मजीठ; **ताम्रवीज**-(सं०पुं०) कुलथी, वह वृक्ष जिसके फल लाल होते हों; **ताम्रवृक्ष**-(सं०पुं०) लाल चन्दन का वृक्ष, कुलथी; **ताम्रवृन्त**-(सं०पुं०) कुलथी का पौधा या बीज; **ताम्रशासन**-(सं०नपुं०) राजा का अनुशासन जो तांबे की चद्दर पर खुदा हो; **ताम्रशिखी**-(सं०पुं०) कुक्कुट; **ताम्रसार**-(सं०पुं०) रक्तचन्दन,रक्तसार; **ताम्रसारक**-(सं०पुं०) लाल खैर

ताम्रा-(सं०स्त्री०) दक्ष प्रजापति की कन्या का नाम,गुजा,घुमची की लता।

ताम्राक्ष-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल (वि०) जिसकी आँखें लाल हों।

ताम्राभ-(सं०नपुं०) लाल चन्दन (वि०) जिसमें लाल रंग की आभा हो।

ताम्रार्ध-(सं०नपुं०) काँसा नामक धातु

ताम्रावती-(सं०स्त्री०) एक नदी का नाम

ताम्राश्म-(सं०पुं०) पद्मराग नामक मणि

ताम्रिक-(सं०पु०) कसेरा, (वि०) तांबे का बना हुआ।

ताम्रिका-(सं०स्त्री०) घुमची,एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

ताम्री-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का बाजा, प्राचीन काल की समय बतलाने की जलघड़ी।

ताम्रेश्वर-(सं०पुं०) पारद के योग से बना हुआ ताम्र का भस्म।

ताम्रोपजीवी-(सं०पुं०)कांस्यकार,कसेरा

ताम्रोष्ठ-(सं०पुं०) जिसके ओंठ लाल रंग के हों।

ताँय-(हिं०) तक।

ताय-(हिं०पुं०) ताप,गरमी,धूप,उष्णता जलन (सर्व०) देखो ताहि।

तायन-(सं०नपुं०) वृद्धि,बढती,उत्तम गति

तायदाद-(हिं०स्त्री०) संख्या।

तायना-(हिं०क्रि०) तपाना,गरम करना

ताया-(हिं०पुं०) पिता का बड़ा भाई, बड़ा चाचा।

तायु-(सं०पु०) दस्यु, चोर।

तार-(सं०नपुं०) रूपा, चाँदी, प्रणव, ॐ कार मन्त्र,एक प्रकार का बन्दर, शुद्ध मोती, तारण, उद्धार, शिव, नक्षत्र, तारा,विष्णु, तीव्र शब्द (वि०) निर्मल, स्वच्छ (नपुं०)तीर, किनारा, ऊंचा स्वर, वह वर्णवृत्त जिसमें अठारह अक्षर होते हैं, धातु का खीच कर बनाया हुआ सूत, वह सूत जिसमें से बिजली की सहायता के एक स्थान से दूसरे स्थान को समाचार भेजा जाता है, समाचार जो इस प्रकार आती जाती है, सूत्र, तागा, परम्परा, क्रम, युक्ति, उपाय, कार्य सिद्धि का प्रयोग, व्यवस्था, सुविधा, संगीत का एक सप्तक, करताल, मजीरा, तल, सतह, कान में पहिरने का एक गहना, तरकी; **तार तार करना**-सूत सूत अलगाना; **तार बंधना**-किसी कार्य क्रम आरंभ होना; **तार बैठना**-सुविधा होना।

तारक-(सं०नपुं०) चक्षु, आँख, आँख की पुतली, (पुं०) नक्षत्र, तारा, तारकासुर, वह जो पार उतारता हो, भवसागर से पार करने वाला, राम का षडक्षर मन्त्र, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं, मिलावा। **तारकजित्**-(सं०पुं०) कुमार कार्तिकेय जिन्होंने तारकासुर का वध किया था। **तारक टोड़ी**-(हिं०स्त्री०) एक राग का नाम; **तारक तीर्थ**-(सं०नपुं०) गया तीर्थ। **तारक ब्रह्म**-(सं०नपुं०) राम षडक्षर मन्त्र "ॐरामायनमः", रामतारक मन्त्र।

तार कमानी-(हिं०स्त्री०) तार लगा हुआ धनुष जो नगों के काटने के काम में आता है, जेबी घड़ी की महीन कमानी।

तारकश-(हिं०पुं०) वह जो धातु के तार खींचता हो। **तारकशी**-(हिं० स्त्री०) सार खींचने का व्यवसाय।

तारका-(सं०स्त्री०) तारा, नक्षत्र, आँख की पुतली, इन्द्रवारुणी नामक लता, मुक्ता, मोती, देवताड़ नामक वृक्ष, बालि की स्त्री तारा, तारांच

नामक छन्द का नाम, देखो ताड़का।
तारकाक्ष तारकाख्य-(सं०पुं०)तारकासुर के बड़े पुत्र का नाम। **तारकान्तक**-(सं०पुं०) कुमार कार्तिकेय।
तारकान्तक-(सं०पुं०) कुमार कार्तिकेय
तारकामय-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
तारकायण-(सं०पुं०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। **तारकासुर**-सं०पुं०) एक असुर का नाम जो शिव के पुत्र कुमार कार्तिकेय से मारा गया था।
तारकित-(सं०वि०) नक्षत्रयुक्त, जो तारों से सुशोभित हो।
तारकिनी-(सं०स्त्री०)नक्षत्रों से पूर्ण रात्रि
तारकूट-(हिं०पुं०) चांदी और पीतल के योग से बना हुआ एक धातु।
तारकेश्वर-(सं०पु०) हुगली नदी के अन्तर्गत एक पुण्य स्थान,महादेव,शिव
तारघर-(हिं०पुं०) वह घर जहां से तार द्वारा समाचार भेजा जाता और प्राप्त होता है।
तारघाट-(सं०पुं०) कार्यसिद्धि का योग, व्यवस्था।
तारण-(सं०पु०) तेली, विष्णु, (वि०) तारन या उद्धार करनेवाला, (नपुं०) पार उतरने की क्रिया, उद्धरण, निस्तार, साठ संवत्सरों में से अठारहवां वर्ष।
तारणि-(सं०स्त्री०) नौका, नाव।
तारणी-(सं०स्त्री०) कश्यप की एक पत्नी का नाम।
तारतम्य-(सं०नपुं०) न्यूनाधिक्य, कमी बढ़ती का हिसाब, कमबेशी के हिसाब का क्रम, परिमाण, गुण आदि का परस्पर मेल। **तारतम्यबोध**-(सं०पुं०) अनेक वस्तुओं में से अच्छे बुरे की पहिचान।
तारतार-(सं०नपुं०) सांख्य दर्शन के अनुसार गौण की तृतीय सिद्धि
तारतार-(हिं०वि०) उघड़ा हुआ, जिसके टुकड़े टुकड़े किये गये हों।
तारतोड़-(हिं०पुं०) कारचोबी का काम
तारदी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का कांटेदार वृक्ष।
तारन-(हिं०पुं०) छत या छाजन का ढालुआं भाग,देखो तारण। **तारना**-(हिं०क्रि०) पार लगाना,उद्धार करना, मुक्त करना, भवसागर से पार करना, सब क्लेशों से निवृत्त करना
तारनाद-(सं०पुं०) उच्चनाद,
तारपीन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का तेल जो चीड़ के पेड़ से निकलता है।
तारपुष्प-(सं०पुं०) कुन्द का वृक्ष।
तारबर्की-(हिं०पुं०) वह तार जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार पहुँचाया जाता है।
तारमाक्षिक-(सं० नपुं०) रूपामक्खी नामक एक उपधातु।
तारयिता-(सं० वि०) उद्धार करने वाला,तारनेवाला,निस्तार करनेवाला

तारल-(सं०वि०) सन्तुष्ट, तरल।
तारल्य-(सं०नपुं०) तरलता का गुण, द्रवत्व।
तारवायु-(सं०पुं०) बहुत वेग से बहने वाली हवा।
तारविमला-(सं०स्त्री०)देखो तारमाक्षिक
तारशुद्धिकर-(सं०नपुं०) सीसा नामक धातु जिससे चांदी शुद्ध की जाती है
तारसार-(सं०पुं०)एक उपनिषद् का नाम
तारहार-(सं०पुं०) बड़े बड़े मोतियों का हार।
तारा-(सं०स्त्री०) वानरराज बाली की पत्नी का नाम, अश्विनी नक्षत्र, दश महाविद्याओं में से एक का नाम, आंख की पुतली, कनीनिका, जैन-शक्ति विशेष, भाग्य, सितारा; **तारा गिनना**-चिन्ता के कारण रात में नींद न आना; **तारा टूटना**-उल्कापात, तारे का आकाश से टूटकर पृथ्वी पर गिरना; **तारा डूबना**-शुक्रास्त होना; **तारा तोड़ लाना**-किसी बड़े कठिन कार्य को पूरा करना; **तारों की छाँह में**-सबेरे, बहुत तड़के।
ताराकूट-(सं०नपुं०) फलित ज्योतिष मे विवाह स्थिर करने के लिये वर और कन्या के शुभाशुभ फल को सूचित करने वाला एक योग।
ताराक्ष-(सं०पु०) एक दैत्य का नाम।
ताराचक्र-(सं०नपुं०) एक तन्त्रोक्त चक्रभेद।
ताराग्रह-(सं०पुं०) मंगल, बुध, शुक्र, गुरु और शनैश्चर ग्रह।
तारादेवी-(सं०स्त्री०) एक महाविद्या का नाम।
ताराधिप, ताराधीश, तारानाथ-(सं०पुं०) चन्द्रमा, शिव, महादेव, बृहस्पति, बालि और सुग्रीव, नक्षत्रों के अधिपति। देखो ताराधीश।
तारापथ-(सं०पुं०) आकाश, आसमान।
तारापीड़-(सं०पुं०)चन्द्रमा,चन्द्रावलोक के एक पुत्र का नाम।
ताराभ-(सं०पुं०) नारद।
ताराभषा(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
ताराभ्र-(सं०पुं०) कर्पूर, कपूर।
तारामण्डल-(सं०नपुं०) नक्षत्र मण्डल, नक्षत्रों का समूह, एक प्रकार की अग्नि क्रीडा।
तारामयी-(सं०स्त्री०) तारास्वरूप।
तारामृग-(सं० पुं०) मृगशिरा नक्षत्र।
तारायण-(सं०पुं०)आकाश,आसमान।
तारावती(सं०स्त्री०) इक्ष्वाकु वंशी राजा चन्द्रशेखर की पत्नी का नाम।
तारावर्ष-(सं०नपुं०)ताराओं का गिरना, उल्कापात।
तारावली-(सं०स्त्री०) मणिभद्र यक्ष की कन्या का नाम।
तारिक-(सं०नपुं०) नदी आदि का उतारने का भाड़ा।
तारिका-(सं०स्त्री०) ताड़ी नामक मदिरा।

तारिणी-(सं०स्त्री०) बौद्धों की एक देवी का नाम (वि०) उद्धरिणी, उद्धार या निस्तार करने वाली।
तारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पक्षी, समाधि स्थान; देखो ताली।
तारुण-(सं०वि०)तरुण,छोटी अवस्थाका
तारुण्य-(सं०नपुं०) युवावस्था, यौवन, जवानी।
तारेश-(हिं०पुं०) चन्द्रमा। **तारेय**-(सं०पु०) बलि के पुत्र अंगद।
तार्किक-(सं०वि०) तर्कशास्त्र को जानने वाला, तर्क शास्त्र का अध्ययन करने वाला।
तार्क्ष-(सं०पु०) कश्यप ऋषि, गरुड़।
तार्क्षी-(सं०स्त्री०) गरुड़, छिरेटी की लता
तार्क्ष्य-(सं०पु०) गरुड़, घोड़ा, सोना, रथ, महादेव। **तार्क्ष्यकेतन**-(सं०पुं०) गरुड़ध्वज, विष्णु। **तार्क्ष्यध्वज**-(सं०पु०) देखो तार्क्ष्य निकेतन।
तार्क्ष्यप्रसव-(सं०पु०) एक प्रकार का साल का वृक्ष। **तार्क्ष्यशैल**-(सं०नपुं०) रसाञ्जन, रसवत।
तार्ण-(सं०वि०) घास से संबंध रखने वाला, घास का बना हुआ, घास से उत्पन्न अग्नि।
तार्तीयिक-(सं०वि०) तृतीय, तीसरा।
तार्य-(सं०वि०) पार करने योग्य।
ताल-(सं०पुं०) करतल, हथेली, हरताल, तालीसपत्र, करतलध्वनि, ताली, हाथी के कान फटकारने से उत्पन्न शब्द, दुर्गा के सिंह का नाम, ताड़ का पेड़, महादेव, एक नरक का नाम, तलवार की मूठ, बेल का फल, उपनेत्र (चश्मे) के पत्थर या कांच का एक पल्ला, एक बित्ते की नाप, ताला, बेल का फल, मजीरा, झांझ, वह शब्द जो जाँघ या बाहु पर हथेली मारने से उत्पन्न होता है, नाचने गाने में उसके काल और क्रिया का परिमाण जो हाथ पर ठोंक देकर सूचित किया जाता है; **ताल बेताल**-मोके बोमोके; **ताल ठोंकना**-लड़नेके लिये ललकारना
तालक-(सं०नपु०) हरताल, ताड़ का वृक्ष, गोपीचन्दन, ताला, द्वार का कपाट। **तालकन्द**-(सं०नपुं०) तालमूली, मूसली। **तालकरीर**-(सं०पुं०) ताड़ का कोमल पत्ता। **तालकाभ**-(सं०पुं०) हलदी का पीला रंग।
तालकी-(सं०स्त्री०) तालरस, ताड़ी।
तालकूटा-(हिं०पुं०) झांझ बजाकर भजन करने वाला।
तालकेतु-(सं०पुं०) जिसके पताका पर ताड़ का चिह्न हो, भीष्म, बलराम।
तालकोश-(सं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष। **तालक्षीर**-(सं०पु०) खजूर की चीनी। **तालगर्भ**-(सं०पुं०) ताड़ का गूदा।
तालङ्क-(सं०पुं०) एक प्रकार का गहना
तालजटा-(सं०पुं०) ताड़ के वृक्ष की जटा।
तालजंघ-(सं०पुं०) एक प्राचीन देश का नाम।
तालध्वज-(सं०पु०) देखो तालकेतु, बलराम।
तालनवमी-(सं०स्त्री०) भादों सुदी नवमी
तालपत्र-(सं०नपुं०) कान में पहिरने की तरकी, ताड़ का पत्ता। **तालपत्रिका**-(सं० स्त्री०) तालमली, मूसली।
तालपर्णी-(सं०स्त्री०) सौंफ़, कपूरकचरी, मूसली, सोये का साग।
तालपुष्प, तालपुष्पक-(सं०नपु०) ताड़ के पेड़ की जटा।
तालबन्द-(हिं०पुं०) वह हिसाब जिसमें आय का प्रत्येक मद अलग अलग दिखलाया जाता है।
तालबैताल-(हिं०पु०) दो यक्ष या देवता जिनको राजा विक्रमादित्य ने अपने वश में कर लिया था और वे सर्वदा इनकी सेवा में रहा करते थे।
तालभृत्-(सं०पुं०) बलराम।
तालमखाना-(हिं०पु०) एक प्रकार का छोटा काँटेदार वृक्ष जिसके बीज औषधि में प्रयोग होते हैं, देखो मखाना
तालमर्दक-(सं०पुं०)एक प्रकारका बाजा
तालमूलिका, तालमूली-(सं०स्त्री०) मूसली।
तालमेल-(हिं०पु०) तालसुर का मिलान, मेलजोल, अनुकूल संयोग, सुअवसर
तालयन्त्र-(सं०नपु०) एक प्रकार का यन्त्र जो नाक कान, तथा नाड़ी के शल्य निकालने में प्रयोग होता है।
तालरस-(सं०पु०) ताड़ का मद्य, ताड़ी
ताल लक्षण-(सं०पुं०)बलराम, तालध्वज
ताल वन-(सं०पुं०) ताड़ के पेड़ों से भरा हुआ जंगल, मधुवन के पास के ब्रज के एक जंगल का नाम।
तालवाही-(सं०वि०) वह बाजा जिससे ताल दिया जावे।
तालवृन्त-(सं०नपुं०) ताड़ के पत्ते का बना हुआ पंखा।
तालव्य-(सं०वि०) तालु से उच्चारण किया जाने वाला वर्ण, इ, ई, च, छ, ज,झ,ञ,य और श-ये वर्ण तालव्य हैं।
तालशस्य-(सं०नपुं०) ताड़ के फल के भीतर का गूदा।
तालसत्व-(सं०नपु०) हरताल की भस्म
तालमांस-(हिं०पुं०) ताड़ के फल के भीतर का गूदा।
तालस्कन्ध-(सं०पुं०) एक प्रचीन अस्त्र का नाम, तमालवृक्ष।
ताला-(हिं०पु०) किवाड़ सन्दूक आदि में बन्द करने का वह यन्त्र जो विशिष्ट ताली से ही खुलता है; **ताला तोड़ना**-किसी की वस्तु चुराने के लिये उसके ताले को तोड़ना; **ताला कुञ्जी**-(हिं०स्त्री०) वह यन्त्र जिससे किवाड़ सन्दूक आदि बन्द की जाती हैं, लड़कों का एक खेल।
तालाङ्क-(सं०पुं०) बलदेव, करपत्र, एक

प्रकार का शाक, शुभ लक्षण का पुरुष
तालाङ्कुर-(सं०नपुं०) ताड़ के फल के भीतर का गूदा, मन शिला, मैनसिल
तालाब-(हिं०पु०) जलाशय, सरोवर।
तालबेली-(हिं०स्त्री०) व्याकुलता।
तालावचर-(सं०पु०) नट।
तालि-(सं०स्त्री०) सुनने की रुकावट, आघात।
तालिक-(सं०पुं०) तमाचा, चपत, तालपंत्रों के बांधने का डोरा।
तालिका-(सं०स्त्री०) मूसली, मजीठ, तालपत्र अथवा कागज़ का पुलिन्दा, सूची, ताली, कुंजी।
तालित-(सं०नपुं०) रंगा हुआ वस्त्र, डोरी, रस्सी।
तालियामार-(हिं०पुं०) जहाज या नाव का पानी काटनेवाला अगला भाग।
तालिश-(सं०पु०) पर्वत, पहाड़।
ताली-(सं०स्त्री०) भूईं आमला, मूसली, अरहर, एक प्रकार का छोटा ताड़ का वृक्ष, ताला खोलने का यन्त्र, कुंजी, मेहराब के बीचोबीच का पत्थर या ईंट, एक प्रकार का वर्णवृत्त, ताड़ का मद्य, ताड़ी, हथेलियों को परस्पर पीटने की क्रिया, करतल-ध्वनि, (हिं०स्त्री०) छोटा ताल या गड़ही; **ताली बजाना**-उपहास करना, हँसी उड़ाना।
तालीपत्र-(सं०नपुं०) देखो तालीसपत्र।
तालीयक-(सं०पुं०) करताल, मजीरा।
तालीश, तालीशपत्र-(सं०नपुं०) तमाल या तेजपत्ते की जाति का एक वृक्ष जिसकी पत्ती बहुत खरी होती है, एक प्रकार का भूमि आँवला।
तालु-(सं०नपुं०) मुख के भीतर ऊपर की ओर की पूरी छत; **तालुक**-(सं०नपु०) एक प्रकार का तालू का रोग; **तालुकण्टक**-(सं०पुं०) बच्चों का एक रोग जिसमें तालू धँस जाता है और पतला दस्त होता है; **तालु जिह्व**-(सं०पु०) कुम्भीर, घड़ियाल, अलिजिह्व, गले का कौवा; **तालुपाक**-(सं०पुं०) तालू का एक प्रकार का रोग; **तालुपात**-(सं०पु०) बच्चों के तालु में होने वाला एक रोग; **तालुयन्त्र**-(सं०नपुं०) देखो तालयन्त्र।
तालु विशोषण, तालु शोष-(सं०नपुं०) तालू सूखने का रोग।
तालू-(हिं०पुं०) मुख के भीतर की उपरी छत, खोपड़ी के नीचे का भाग; **तालू में दाँत जमना**-कोई अनहित होना; **तालू से जीभ न लगना**-निरन्तर बकते जाना। **तालूफाड़**-(हिं०पु०) हाथी के तालु में होने वाला एक रोग।
तालूर-(सं०पु०)पानी का भँवर, आवर्त
तालेवर-(हिं०वि०) धनाढ्य, अमीर, धनी।
ताल्लुक-(हिं०पुं०) देखो तअल्लुक।

ताल्वर्बुद-(सं०पुं०) एक प्रकार का रोग जिसमें तालु में काँटा सा निकल आता है।
ताव-(हिं०पु०) वह उष्णता जो किसी वस्तु को गरम करने या पकाने के लिये दी जावे, क्रोध का आवेश जिसमें अधिकार की झलक हो, अहङ्कार, तत्काल होनेकी आवश्यकता, कागज़ का एक तख्ता; **ताव आना**-गरम होना; **ताव खाना**-अग्नि द्वारा गरम होना; **ताव देना**-गरम करना, हथियार आदि पर पानी रखना; **मूछोंपर ताव देना**-गर्व के कारण मूछों पर हाथ फेरना; **ताव दिखलाना**-अभिमान सहित क्रोध दिखलाना; **ताव में आना**-उत्तेजित होना; **ताव चढ़ना**-उत्कट, इच्छा होना।
तावक-(सं०वि०) तुम्हारा, तेरा।
तावकीन-(सं०वि०) त्वदीय, तुम्हारा।
तावत्-(सं०अव्य०) उतने परिमाण का, उतना, उतनी देर तक, वहां तक।
तावना-(हिं०क्रि०) तपाना, गरम करना, कष्ट देना।
तावन्मात्र-(सं०वि०) उतने ही परिमाण का, उतना।
तावबन्द-(हिं०पुं०) एक प्रकार की औषधि जिसका प्रयोग तब किया जाता है जब तपाने पर भी चाँदी के खोटेपन का पता नहीं चलता।
तावभाव-(हिं०पुं०)परिस्थिति, अवसर।
तावर-(सं०नपुं०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
तावरी-(हिं०स्त्री०)दाह, ताप, धर्म, धूप, घाम, ज्वर, मूर्छा, सिरका चक्कर।
तावरो-(हिं०पुं०) देखो तावरी।
ताविष-(सं०पुं०) स्वर्ग, समुद्र।
ताविषी-(सं०स्त्री०) देव कन्या, पृथ्वी, नदी।
तावीष-(सं०पुं०) स्वर्ग, समुद्र, सोना।
तावीषी-(सं०स्त्री०) इन्द्र की कन्या का नाम।
ताश-(हिं०पुं०) खेलने के लिये मोटे कागज का आयत टुकड़ा जिसपर लाल या काले रंग की बूटियाँ या तस्वीरें बनी रहती हैं, एक प्रकार का ज़र-दोज़ी कपड़ा तागा लपेटने की मोटे कागज की छोटी दफ्ती।
तासला-(हिं०पुं०)भालू के गले में बँधी हुई एक रस्सी जिसको पकड़कर कलन्दर उसको नचाते हैं।
तासु-(हिं०सर्व०) उसका।
तासुन-(सं०पुं०)सन का पौधा। **तासुनी**-(सं०स्त्री०) सन की डोरी।
तास्कर्य-(सं०नपुं०) तस्करता, चोरी।
तास्तू-(हिं०वि०) देखो तासों।
तासों-(हिं०सर्व०) उससे।
ताहि-(हिं०सर्व०) उसको, उसे
ताहीं-(हिं०अव्य०) ताई, तई।
तिआ-(हिं०स्त्री०) देखो त्रिया।
तिंतिड़ी-(हिं० स्त्री०) देखो तिन्तिणी, इमली।
तिआह-(हिं० पुं०) किसी पुरुष का तीसरा विवाह।
तिक-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम।
तिकड़ी-(हिं० स्त्री०) वह जिसमें तीन कड़ियाँ हों, तीन तीन रस्सियों को एक साथ लेकर चारपाई बिनने की विधि।
तिकानी-(हिं०स्त्री०) पहिये को रोकने के लिये बैलगाड़ीमें लगी हुई लकड़ी।
तिकुरा-(हिं०पु०) उपज की तीन बराबर राशि जिसमें से एक भूस्वामी लेता है।
तिकोना-(हिं०वि०) तीन कोने वाला, एक प्रकार का नमकीन पकवान, समोसा। **तिकोनिया**-(हिं०वि०)तीन कोने का, त्रिकोण।
तिक्का-(हिं०स्त्री०) वह ताश का पत्ता जिसमें तीन बूटियां रहती हैं।
तिक्की-(हिं० स्त्री०) गंजीफे का वह ताश जिसमे तीन बूटियां रहती है।
तिक्ख-(हिं०वि०)तीक्ष्ण, तीखा, चोखा, चतुर।
तिक्त-(सं० पुं०) पितपापड़ा, कूटज वृक्ष, (वि०) तीते रस वाला, तीता, कड़ुवा, नीम या चिरायते के स्वाद का; **तिक्तक**-(सं०पुं०)परवल, चिरायता, काली खैर, नीम का वृक्ष, तीता रस, इङ्गुदी वृक्ष, कुटज; **तिक्तकन्दिका**-(सं०स्त्री०) बनकचूर; **तिक्तका**-(सं० स्त्री०) कड़ुवा कद्दू, काकजंघा; **तिक्तकाण्ड**-(सं० पु०) भूनींम; चिरायता; **तिक्तकोषातकी**-(सं०स्त्री०) कड़ुई तरोई; **तिक्तगन्धा**-(सं०स्त्री०)वाराहीकन्द, सफेद सरसों; **तिक्त गुञ्जा**-(सं०स्त्री०) करंजुआ; **तिक्ततण्डुला**-(सं० स्त्री०) पिप्पली, पीपल; **तिक्तता**-(सं०स्त्री०)तीतापन, कड़ुवापन; **तिक्त तुण्डी**-कड़ुई तरोई की लता; **तिक्ततुम्बी**-(सं० स्त्री०) तितलौकी; **तिक्तदुग्धा**-(सं० स्त्री०) खिरनी, मेढासिंघी; **तिक्तधातु**-(सं०पुं०) पित्त; **तिक्तपत्र**-(सं० पु०) ककोड़ा, खेसका, (नपु०)कड़ुई पत्ती; **तिक्तपर्णिका, तिक्तपर्णी**-(सं०स्त्री०) कचहरी, पेंहटा; **तिक्तपर्वा**-(सं० स्त्री०) गुरुच, मुलेठी, दूब; **तिक्तपुष्पा**-(सं०स्त्री०) पाठा; **तिक्तफल**-(सं०पुं०) कतक वृक्ष, रीठा, (वि०) कड़ुवे फल वाला; **तिक्तफला**-(सं० स्त्री०) भटकटैया, **तिक्तभद्रक**-(सं०पुं०) पटोल, परवल; **तिक्तयवा**-(सं०स्त्री०) शंखिनी लता; **तिक्तरोहिणी**-(सं० स्त्री०) कुटकी; **तिक्तवल्ली**-(सं०स्त्री०) मरोरफली, मुर्रा; **तिक्तबीजा**-(सं० स्त्री०) तितलौकी; **तिक्तशाक**-(सं० पुं०) एक प्रकार का कड़वा साग; **तिक्तसार**-(सं०पुं०) खादिर, खैर।
तिक्ता-(सं०स्त्री०) कुटकी, पाठा, नकछिकनी।

तिक्ताह्वा-(सं०स्त्री०) तितलौकी।
तिक्तिका-(सं०स्त्री०)कुटकी, तितलौकी।
तिक्ष-(हिं०वि०)तीक्ष्ण, तीखा, चोखा।
तिक्षता-(हिं०स्त्री०) तीक्ष्णता, चोखापन, तेज़ी।
तिखू-(हिं०वि०) जो तीन बार जोता गया हो।
तिखटी-(हिं०स्त्री०) देखो टिकठी।
तिखाई-(हिं०स्त्री०)तीक्ष्णता, तीखापन।
तिखारना-(हिं० क्रि०) सहेजना, कई बार कहना।
तिखूंटा-(हिं० वि०) त्रिकोण, जिसमें तीन कोने हों, तिकोना।
तिगना-(हिं०क्रि०) दृष्टि डालना, देखना।
तिगित-(सं०वि०) चोखा।
तिगुना-(हिं०वि०) तीन बार अधिक, तीन गुना। **तिगुनचा**-(हिं० वि०) देखो तिगुना।
तिग्म-(सं०नपु०)वज्र, पिप्पली, पीपल, (वि०) तीक्ष्ण, तेज़। **तिग्मकर**-(सं० पुं०) सूर्य, तेज़ प्रकाश। **तिग्मजम्भ**-(सं०वि०) तेज़ मुंहवाला। **तिग्मता**-(सं०स्त्री०) तीक्ष्णता, **तिग्मदीधिति**-(सं०पु०)तिग्मांशु, सूर्य। **तिग्ममन्यु**-(सं०वि०) जिसको अति क्रोध हो, (पुं०) शिव, महादेव। **तिग्मरश्मि**-(सं०पु०) सूर्य, (वि०) जिसकी किरण तीव्र हो। **तिग्मशृङ्ग**-(सं०वि०) पैनी सींग वाला। **तिग्महेति**-(सं०वि०) तीक्ष्ण ज्वाला। **तिग्मांशु**-(सं०पु०) सूर्य, (वि० जिसकी किरण तीव्र हो, (नपु०) तीव्र प्रकाश। **तिग्मायुध**-(सं०पु०) पैना शस्त्र।
तिच्छ-(हिं० वि०) तीक्ष्ण। **तिच्छन**-(हिं०वि०) तीक्ष्ण, तेज।
तिजरा-(हिं० पुं०) तीसरे दिन आने वाला ज्वर, तिजारी।
तिजवाँसा-(हिं० पु०) स्त्री के तीन महीने का गर्भ होने पर का संस्कार।
तिजारी-(हिं०स्त्री०) जाड़ा देकर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।
तिजिल-(सं०पु०) चन्द्रमा, राक्षस।
तिजोरी-(हिं०स्त्री०) लोहे की सन्दूक।
तिड़ी-(हिं० स्त्री०) ताश का वह पत्ता जिसमें तीन बूटियाँ हों; **तिड़ी करना**-हटा देना, छितराना।
तिड़ीबिड़ी-(हिं० वि०)अस्तव्यस्त, छितराया हुआ, तितरबितर।
तित-(हिं०क्रि०वि०) तहाँ, वहाँ, इधर की ओर, उस ओर।
तितउ-(सं०पुं०)छलनी, चलनी, छाता।
तितना-(हिं०क्रि०वि०) उतने परिमाण का, उतना।
तितरबितर-(हिं० वि०) अव्यवस्थित, बिखरा हुआ, छितराया हुआ, तिड़ीबिड़ी।
तितरोखी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पक्षी।
तितली-(हिं० स्त्री०) एक उड़नेवाला रङ्गबिरङ्गे परका कीड़ा या फतिंगा

जो फूलों के पराग और रस पीकर जीता है, एक प्रकार की घास जो गेंहू जव आदिके खेतोंमें उपजती है।
तितलौआ-(हिं०पुं०)कड़वा कद्दू, तितलौकी। **तितलौकी**-(हिं०स्त्री०)कड़ुवा कद्दू।
तितारा-(हिं०पुं०) सितार के प्रकार का बाजा जिसमे तीन तार लगे रहते हैं, खेत की तीसरी बार की सिंचाई।
तितिक्ष-(सं०वि०)जो सरदी गरमी को समान भाव से सहन करता हो, सहनशील, एक ऋषि का नाम।
तितिक्षा-(सं०स्त्री०) सरदी गरमी सहन करने का सामर्थ्य, क्षमा, शान्ति। **तितिक्षित**-(सं०वि०)सहिष्णु, क्षान्त। **तितिक्षु**-(सं०वि०) क्षमाशील, क्षान्त, सहिष्णु।
तितिभ-(सं०पुं०) इन्द्रगोप, बीरबहूटी, जुगनू।
तितिर-(सं०पुं०) तीतर नाम का पक्षी
तितिल-(सं०नपुं०) मिट्टी की नाँद, एक प्रकार का तिल का पकान्न, ज्योतिष में एक करण का नाम।
तितीर्षा-(सं०स्त्री०) तैरने की अभिलाषा, तर जाने की इच्छा। **तितीर्षु**-(सं०वि०)तैरने की इच्छा करनेवाला, जो निस्तार प्राप्त करने की इच्छा करता हो।
तित्तिर-(सं०पुं०) तीतर नामक पक्षी, तितली नाम की घास।
तित्तिरि-(सं०पुं०)तीतर नाम का पक्षी, यजुर्वेद की एक शाखा।
तित्तिरीक-(सं०नपुं०) आंख में लगाने का एक प्रकार का अंजन जो तीतर के परों को जला कर बनाया जाता है।
तिते-(हिं०वि०)उतने, उतनी संख्या के। **तितेक**-(हिं० वि०) उतना। **तितै**-(हिं० क्रि० वि०) वहां, उधर, वहीं। **तितो**-(हिं०क्रि०वि०) उतना।
तिथि-(सं० स्त्री०) चान्द्रमास के अलग अलग, दिन, अमावस्या से पूर्णिमा तक तथा पूर्णिमा से अमावस्या तक की चन्द्रमा की कलायें, दिन, मिति पंद्रह की संख्या; **तिथिक्षय**-(सं०पुं०) किसी तिथि का नाश, दिन का क्षय; **तिथिपति**-(सं०पुं०)तिथियों के अधिपति; **तिथिप्रणी**-(सं०पुं०) चन्द्रमा, **तिथियुग्म**-(सं०नपुं०)तिथि का जोड़ा, दो तिथि, **तिथिसन्धि**-(सं०पुं०) दो तिथियों का एक में मिलना; **तिथिपत्र**-(सं०पुं०) जन्त्री, पञ्चाङ्ग।
तिदरी-(हिं०स्त्री०) वह कोठरी जिसमें तीन खिड़कियां या दरवाजे हों।
तिदारी-(हिं० स्त्री०) बत्तक के प्रकार का एक पक्षी।
तिद्वारी-(हिं०स्त्री०) देखो तिदरी।
तिधर-(हिं०क्रि०वि०)उस ओर, उधर।
तिधारा-(हिं०पुं०)एक प्रकार का सेंहुड़ जिसमें पत्ते नहीं होते और जिसकी डालियां तिकोनी होती हैं।
तिन-(हिं०सर्व०) तिस का बहुवचन (पुं०) तृण, तिनका।
तिनकना-(हिं०क्रि०)चिढना, क्रुद्ध होना, चिड़चिड़ाना, नाराज होना।
तिनका-(हिं०पुं०) तृण, सूखी घास का टुकड़ा; **तिनका तोड़ना**-सम्बन्ध का त्याग करना; **तिनके का सहारा**-थोड़ा सा अवलम्ब; **तिनकेका पहाड़ करना**-छोटी सी बात को बढ़ा कर करना; **दाँतों तले तिनका पकड़ना**-गिड़ गिड़ाना, विनय करना।
तिनगना-(हिं०क्रि०) देखो तिनकना।
तिनगरी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का पकान्न
तिनधरा-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की तिकोनी रेती।
तिनपहल, तिनपहला-(हिं०वि०) जिसमें तीन पहल हों, तीन पहल वाला।
तिनभिना-(हिं०पुं०) वह माला जिसके बीच में सोने का जड़ाऊ जुगनू हो।
तिनवा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का नाटा बाँस।
तिनिश-(सं०पुं०)शीशम की जाति का एक वृक्ष।
तिनुका-(हिं०पुं०) तृण, तिनका।
तिन्तिड़-(सं०पुं०) **तिन्तिड़ी**-(सं०स्त्री०) इमली का पेड़। **तिन्तिड़ीद्यूत**-(सं०पुं०) चियें से खेलने का जुआ। **तिन्तिरांग**-(सं०पुं०) वज्रलोह, इस-पात लोहा। **तिन्तिलिका, तिन्तिली**-(सं०स्त्री०) इमली। **तिन्दिलीफल**-(सं०नपुं०) जमालगोटे का बिया।
तिन्दिश-(सं०पुं०)डेढ़सी नामक तरकारी
तिन्दु, तिन्दुक-(सं०) तेन्दुवे का पेड़।
तिम्दुज-(सं०पुं०) लोध का वृक्ष।
तिन्ना-(हिं०पुं०) तिन्नी नामक धान, रोटी के साथ खाने की रसदार तरकारी, एक वर्णवृत्त का नाम।
तिन्नी-(हिं०स्त्री०) तालों में होनेवाला एक प्रकार का छोटा धान, फफुन्दी।
तिन्ह-(हिं०सर्व०) देखो तिन।
तिपड़ा-(हिं० पुं०) किमखाब बुनने के करगह की एक लकड़ी।
तिपति-(हिं०स्त्री०) देखो तृप्ति।
तिपल्ला-(हिं०वि०)जिसमे तीन परत हों
तिपाई-(हिं०स्त्री०) तीन पावे की छोटी ऊँची चौकी।
तिपाड़-(हिं०पुं०)तीन किनारे या तीन पल्लेकी कोई वस्तु, तीन पाट जोड़ कर बना हुआ ओढ़ना।
तिपारी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का बरसाती पौधा, छोटी मकोय।
तिपैरा-(हिं०पुं०)वह कुवाँ जिसमें तीन चरस या पुरवट चल सके।
तिबद्धी-(हिं०वि०)जिसमें तीन रस्सियां एक साथ खींची जा सकें।
तिबारा-(हिं०वि०) तीसरीबार(पुं०)वह घर या कोठरी जिसमे तीन द्वार हों, तीन बार उतारा हुआ अर्क या मद्य।
तिबासी-(हिं०वि०)वह खाद्य पदार्थ जो तीन दिन का बासी हो।
तिबी-(हिं०स्त्री०)खेसारी नामक अन्न।
तिब्बत-(हिं०पुं०) हिमालय पर्वत के उत्तर के एक देश का नाम, भोट; **तिब्बती**-(हिं०वि०)तिब्बत मे उत्पन्न, तिब्बत सम्बन्धी, (स्त्री०) तिब्बती (पुं०) तिब्बत देश का रहनेवाला।
तिमंजिला-(हिं०वि०) तीन खण्ड का (गृह आदि)।
तिम-(हिं०पुं०) ढक्का, नगाड़ा, डंका।
तिमाशी-(हिं०स्त्री०)तीन माशेकी तौल।
तिमि-(सं० पुं०) स्तनपान करानेवाला सबसे बड़ा समुद्री मत्स्य, व्हेल मछली, समुद्र, रतौंधी का रोग।
तिमि-(हिं०अव्य०) उसी प्रकार से।
तिमिंगिल-(सं० पुं०) व्हेल नामक मछली, एक प्राचीन द्वीप का नाम।
तिमिज-(सं०नपुं०)तिमि नामक मछली से निकलने वाला मोती।
तिमित-(सं०वि०) निश्चय,स्थिर, भीगा हुआ, आर्द्र।
तिमिध्वज-(सं० पुं०) एक दानव का नाम जिसको रामचन्द्र ने मारा था।
तिमिर-(सं० नपुं०) अन्धकार, अँधेरा, आँखों के आगे धुँधला देख पड़नेका रोग; **तिमिरभिद्**-(सं०वि०)अन्धकार को नाश करने वाला; **तिमिररिपु**-(सं०पुं०) सूर्य, दीपक; **तिमिरहर**-(सं०पुं०) सूर्य, दीपक।
तिमिरा-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।
तिमिरारि-(सं०पुं०)अन्धकार का शत्रु, सूर्य; **तिमिरारी**-(हिं०स्त्री०) अन्धकार का समूह; **तिमिरावलि**-(सं० स्त्री०) देखो तिमिरारी।
तिमिरि-(सं०पुं०) तिमि नामक मछली
तिमिरी-(सं०पुं०)अन्धकार करनेवाला, इन्द्रगोप, जुगनू।
तिमिष-(सं०पुं०) ककड़ी,फूट,कुम्हड़ा।
तिमी-(सं० स्त्री०) दक्ष की एक कन्या का नाम।
तिमीर-(सं०पुं०) एक वृक्ष का नाम।
तिमुहानी-(हिं० स्त्री०) वह स्थान जहां तीन सड़कें मिली हों।
तिय-(सं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
तियला-(हिं०पुं०)स्त्रियों का एक प्रकार का पहिरावा।
तिया-(हिं० पुं०) वह ताश का पत्ता जिसमें तीन बूटियां हों; देखो तिय।
तिरकट-(हिं०पुं०)नावका अगला पाल।
तिरगटडोल-(हिं० पुं०) जहाज का अगला मस्तूल।
तिरकाना-(हिं०क्रि०)रस्सा ढीला करना
तिरकुटा-(हिं०पुं०) त्रिकटु,सोंठ, मिर्च, पीपल इन तीनों कटु औषधियों का समुदाय।
तिरखा-(हिं० स्त्री०) तृषा, प्यास। **तिरखित**-(हिं०वि०) देखो तृषित।
तिरखूंटा-(हिं० वि०) त्रिकोण युक्त, तिकोना, जिसमें तीन कोने हों।
तिरछाई-(हिं०स्त्री०) तिरछापन।
तिरछउंड़ी-(हिं०स्त्री०) मलखम्भ का एक व्यायाम।
तिरछा-(हिं० वि०) तिर्यक्, तिरश्चीन, जो ठीक सामने न जाकर इधरउधर फिर गया हो, एक प्रकार का वस्त्र जो अस्तर में लगाया जाता है; **तिरछा बाँका**-छैला; **तिरछी चितवन**-तिर्यक् दृष्टि, सिर को बिना घुमाये हुए एक ओर देखना; **तिरछी बात**-अप्रिय या कटु वचन; **तिरछाई**-(हिं० स्त्री०) तिरछापन; **तिरछाना**-(हिं०क्रि०) तिरछा होना; **तिरछापन**-(हिं०पुं०) तिरछा होने का भाव।
तिरछी(हिं०स्त्री०)रहर के तिरछे दाने; **तिरछी बैठक**-मलखम्भ का एक व्यायाम।
तिरछौंहां-(हिं०वि०)जो कुछ तिरछापन लिये हो; **तिरछौंहें**-(हिं० क्रि० वि०) वक्रता से, तिरछापन लिये हुए।
तिरना-(हिं० क्रि०) पानी के तल के ऊपर रहना, उतराना,तैरना, पैरना, पार होना, मुक्त होना,उद्धार प्राप्त करना।
तिरनी-(हिं० स्त्री०) घाघरा बाँधने की डोरी, नीवी,तिन्नी, घाघरे या धोती का नाभिके नीचे लटकता हुआ भाग।
तिरप-(हिं० स्त्री०) नाच में एक प्रकार का ताल।
तिरपट, तिरपटा-(हिं०वि०) तिरछा, टेढा, ऐंचा।
तिरपन-(हिं०वि०) पचास और तीन की संख्या का (पुं०) वह संख्या ५३।
तिरपाई-(हिं०स्त्री०)तीन पावेकी छोटी ऊंची चौकी।
तिरपाल-(हिं०पुं०) छाजन में खपड़ों के नीचे बिछाने के फूस या सरकंडे के लंबे पूले,मुट्ठा, रंग चढा हुआ टाट।
तिरपित-(हिं०वि०)देखो तृप्त,सन्तुष्ट।
तिरपौलिया-(हिं०पुं०) वह बड़ा स्थान जिसमें तीन बड़े फाटक हों जिनमें से होकर हाथी ऊंट घोड़े आदि की सवारियां जा सकें।
तिरफला-(हिं०पुं०) देखो त्रिफला; हर्रा, बहेड़ा, आमला।
तिरबेनी-(हिं०स्त्री०) देखो त्रिवेणी।
तिरमिरा-(हिं०पुं०)दृष्टि का वह दोष जो शरीर की दुर्बलतासे उत्पन्न होता है,तीव्र प्रकाशमें दृष्टि का स्थिर न रहना, चकचौंध; **तिरमिराना**-(हिं० क्रि०) तीव्र प्रकाश के कारण आँखों का न ठहरना, झपना, चौंधियाना।
तिरवट-(हिं०पुं०)एक प्रकार का राग।
तिरशूल-(हिं०पुं०) देखो त्रिशूल।
तिरश्च-(सं०नपुं०) चारपाई के तिरछे पाये; **तिरश्चता**-(सं०नपुं०) तिरछापन, टेढापन।
तिरश्ची-(सं० पुं०) अङ्गिरस वंश के एक ऋषि का नाम।
तिरश्चीन-(सं० वि०) कुटिल, तिरछा, टेढा; **तिरश्चीन गति**-मल्ल युद्ध की

एक युक्ति।

तिरसठ-(हिं० वि०) साठ और तीस संख्या का; (पुं०) साठ और तीस की संख्या ६३।

तिरसा-(हिं०पुं०)वह पाल जिसका एक भाग चौड़ा तथा दूसरा सकरा होता है

तिरस्कर, तिरस्करी-(सं०वि०)आच्छादक, परदा करने वाला, ढांपने वाला

तिरस्करिणी-(सं०स्त्री०)परदा, कनात, चिक,ओट, आड़। **तिरस्करी**-(हिं०स्त्री०) परदा, चिक।

तिरस्कार-(सं०पुं०) अपमान, भर्त्सना, अनादर,अपमान पूर्वक त्याग। **तिरस्कारी**-(सं० वि०) अपमान करने वाला। **तिरस्कृत**-(सं०वि०) अनाहृत अपमान किया हुआ, अनादर पूर्वक छोड़ा हुआ, छिपा हुआ (नपुं०) तन्त्र सार का एक मन्त्र। **तिरस्क्रिया**-(सं०स्त्री०)तिरस्कार, अपमान, आच्छादन, वस्त्र, पहिरावा।

तिरहुत-(हिं०पुं०)मिथिला प्रदेश जिसका प्राचीन नाम तीरभुक्ति था। **तिरहुतिया**-(हिं० वि०) तिरहुत सबंधी, तिरहुत देश का निवासी, तिरहुत की भाषा।

तिरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पौधा

तिराटी-(सं०स्त्री०)निसोथ नामक औषधि

तिरानबे-(हिं०वि०)नब्बे और तीन की संख्या का (पु०) नब्बे और तीन की संख्या ९३।

तिराना-(हिं० स्त्री०) पानी के तल पर ठहरना, उतराना,तैरना, पार करना, निस्तार करना।

तिरास-(हिं०पुं०) देखो त्रास। **तिरासना**-(हिं०क्रि०) कष्ट देना।

तिरासी-(हिं०वि०) अस्सी और तीन की सख्या का, (पुं०) अस्सी और तीन की संख्या ८३।

तिराहा-(हिं० पुं०)वह स्थान जहां से तीन मार्ग गये हों, तिरमुहानी।

तिराही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की तलवार।

तिरिटि-(सं०पुं०) ऊख की गांठ।

तिरणीकण्ट-(सं०पुं०)परजाते का वृक्ष

तिरिन-(हिं०पुं०) तृण, घास।

तिरिम-(सं०पुं०)एक प्रकार का धान।

तिरिया-(हिं०स्त्री०)स्त्री; **तिरिया चरित्र**-वह चतुराई जो स्त्रियों में स्वाभाविक होती है।

तिरीछा-(हिं०वि०) देखो तिरछा।

तिरीफल-(हिं०पुं०)दन्ती नामक वृक्ष।

तिराबिरी-(हिं०वि०)देखो तिड़ीबिड़ी।

तिरीपशालि-(सं०पुं०) एक प्रकार का धान जो तीन महीने में तैयार हो जाता है।

तिरेंदा-(हिं०पुं०) समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिये छिछले पानी पर या जहाँ चट्टान रहती हैं रक्खा जाता है, मछली मारने की बंसी में बँधी हुई छोटी लकड़ी जिसके डूबने से मछली के फँस जाने का पता लग जाता है।

तिरोगत-(सं० वि०) अदृश्य। **तिरोध**-(हिं० स्त्री०) अन्तर्धान। **तिरोधातव्य**-(सं०वि०) ढापने योग्य।

तिरोधान-(सं०नपुं०) अन्तर्धान,अदर्शन **तिरोधायक**-(सं०पुं०) छिपाने वाला, गुप्त करनेवाला। **तिरोभाव**-(सं०पुं०) अदर्शन, अन्तर्धान, आच्छादन, गुप्त-भाव, गोपन, छिपाव। **तिरोभूत**-(सं०हिं०)अन्तर्हित, गुप्त, छिपा हुआ

तिरोवर्ष-(सं०वि०) वृष्टि से सुरक्षित।

तिरोहित-(सं०वि०) अन्तर्हित, अदृष्ट, छिपा हुआ, आच्छादित, ढपा हुआ।

तिरौंछा-(हिं०वि०)देखो तिरछा,तिर्यक्

तिर्य-(सं०वि०) तिल का बना हुआ।

तिर्यक्-(सं०वि०) वक्र, तिरछा, टेढ़ा, आड़ा, (पु०) पशु पक्षी आदि जीव, चंचल धातु, पारा। **तिर्यक्क्षिप्त**-(सं०वि०)तिरछा फेंका हुआ। **तिर्यक्ता**-(सं०स्त्री०) तिरछापन, टेढ़ापन। **तिर्यक्त्व**-(सं०नपुं०)वक्रता, तिरछापन।

तिर्यग्गति-(सं०स्त्री०)वक्रगति, तिरछी चाल। **तिर्यक् प्रमाण**-(सं० नपुं०) विस्तार, चौड़ाई। **तिर्यक् प्रेक्षण**-(सं०नपु०) तिरछी दृष्टि से देखने-वाला। **तिर्यक्प्रेक्षी**-(सं०वि०)तिरछी दृष्टि से देखने वाला, ऐंचा। **तिर्यक् भेद**-(सं०पुं०) दो आधार पर रक्खी हुई वस्तु का बीच में से टूट जाना।

तिर्यग्योनि-(सं० स्त्री०) पशु की पक्षी आदि जीव। **तिर्यक्लोक**-(सं०पु०) जैनमत के अनुसार वह लोक जहाँ मनुष्य, देव आदि रहते हों।

तिर्यगयन-(सं० नपुं०) वक्रगति, टेढ़ी चाल।

तिर्यगोक्ष-(सं०वि०) तिरछी नजर से देखने वाला।

तिर्यगीश-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण का एक नाम **तिर्यग्गति**-(सं०स्त्री०)वक्रगति, तिरछी चाल। **तिर्यग्गमन**-(सं० नपुं०) देखो तिर्यग्गति।

तिर्यग्ज-(सं०वि०)पशुपक्षी आदि से उत्पन्न

तिर्यग्जन-(सं०पुं०)कुटिल, कपटीमनुष्य

तिर्यग्जाति-(सं०स्त्री०) पशु पक्षियों की जाति।

तिर्यग्दिश-(सं०स्त्री०) उत्तर दिशा।

तिर्यग्धार-(सं०पुं०) तीव्र धार वाला।

तिर्यग्नासा-(सं०वि०) टेढ़ी नाक वाला

तिर्यग्यान-(सं०नपु०) कुलीर केंकड़ा।

तिर्यग्योनि-(सं०स्त्री०) पशु, पक्षी, मृग, सर्प आदि।

तिर्यङ्नास-(सं०पुं०) वह जिसकी नाक टेढ़ी हो।

तिर्यञ्ची-(सं०स्त्री०) पशु पक्षियों की मादा।

तिलंगा-(हिं० पुं०) अंग्रेजी सेना का देशी सिपाही, एक प्रकार की बड़ी कनकैया या पतंग।

तिलंगाना-(हिं०पुं०) तैलंग देश।

तिलंगी-(हिं०वि०) तैलंग देश का (स्त्री०) एक प्रकार की कनकैया, पतंग, गुड्डी।

तिल-(हिं०पुं०) एक पौधा जिसमें काले या सफ़ेद दाने होते है, इसको पेर कर तेल निकाला जाता है जो "मीठा तेल" कहलाता है, शरीर पर का काले रंग का छोटा धब्बा, गोदना जो काली बिन्दी के आकार का होता है, आँख की पुतली के बीच की गोल बिन्दी, **तिल की ओट पहाड़**-किसी छोटी सी बात के अन्तर्गत बड़ी बात; **तिल का ताड़ करना**-किसी छोटी सी बात को बहुत बढ़ा देना; **तिल तिल**-अल्प मात्रा में; **तिल धरने की जगह न होना**-स्थान का सर्वथा अभाव होना; **तिल भर**-अल्प मात्रा मे;

तिलक-(सं०नपु०) ललाट आदि स्थानों में चन्दनादि द्वारा धारण करने का चिह्न जो अंगों की शोभा अथवा साम्प्रदायिक संकेत के लिये लगाया जाता है, टीका, लोध का वृक्ष, घोड़े की एक जाति, पीपल के वृक्ष का एक भेद, पेट की तिल्ली का एक रोग, संगीत में ध्रुवक का एक भेद, पुन्नग जाति का एक वृक्ष, राज्याभिषेक, राजगद्दी, स्त्रियों के मस्तक पर धारण करने का एक आभूषण, विवाह संबंध स्थिर करने की एक रीति, किसी ग्रन्थ की अर्थबोधक व्याख्या, एक प्रकार की कुरती; (वि०) श्रेष्ठ, शिरोमणि, किसी समुदाय का श्रेष्ट व्यक्ति। **तिलक**-महाराष्ट्र देश के सर्वजन मान्य सुप्रसिद्ध लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जिनका जन्म सन् १८६६ में हुआ था और मृत्यु सन् १९२० में हुई

तिलक कामोद-(सं०पुं०) एक रागिणी का नाम।

तिलकट-(सं०नपुं०) तिलक का चूर्ण।

तिलकना-(हिं०क्रि०) ताल आदि की मिट्टी का सूख कर फट जाना।

तिलकमुद्रा-(सं०पु०) चन्दन आदि का टीका और शंख चक्र आदि का छाप जिसको वैष्णव लोग लगाते हैं।

तिलकराज-(सं०पु०) काश्मीर के एक राजा का नाम।

तिलकल्क-(सं०पु०) तिल का चूर्ण।

तिलकहार-(हिं०पुं०) वह मनुष्य जो कन्या की ओर से वर को तिलक चढ़ाने के लिये ले जाता है।

तिलका-(सं०स्त्री०) कण्ठ में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण, हार एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में छ अक्षर होते हैं। **तिलकालक**-(स० पुं०) शरीर पर का तिल के आकार का काला चिह्न। **तिलकाश्रय**-(सं०पु०) ललाट, माथा।

तिलकिट्ट-(सं०नपुं०) तिल की खली।

तिलकित-(सं०वि०) अंकित, छापा हुआ।

तिलकी-(सं०वि०) तिलक लगाये हुए।

तिलकुट-(हिं०पु०) तिल को कूट कर चीनी मिला कर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई।

तिलखलि-(सं०स्त्री०) तिल की खली।

तिलखा-(हिं० पु०) एक प्रकार की चिड़िया।

तिलङ्ग-(सं०नपुं०) एक प्राचीन देश का नाम।

तिलचटा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का झींगुर, तरकुल नामक कीट।

तिलचावली-(हिं० स्त्री०) तिल और चावल की खिचड़ी, (वि०) जो कुछ काला और सफ़ेद हो।

तिलचूर्ण-(सं०नपु०) तिलकुट।

तिलच्छक-(सं०पुं०) ईहामृग, भेड़िया।

तिलछना-(हिं०क्रि०) व्यग्र होना, घबड़ाना, छपटाना।

तिलज-(स० नपुं०) तिल का तैल।

तिलजटा-(सं०स्त्री०) तिल की मंजरी।

तिलड़ा-(हिं०वि०) तीन लर वाला, जिसमें तीन लरें हों, (पु०) एक प्रकार की विच्छिति करने की छेनी।

तिलड़ी-(हिं०स्त्री०) तीन लड़ियों की बनी हुई माला।

तिलतेजा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार कीलता।

तिलतैल-(सं०नपुं०) तिल्ली का तेल।

तिलदानी-(हिं०स्त्री०) कपड़े की थैली जिसमें दरजी सुई तागा, आदि रखते है।

तिलनामा-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का धान।

तिलनी-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का धान।

तिलपट्टी, तिलपपड़ी-(हिं०स्त्री०) खांड़ या गुड़ में पागे हुए तिलों की पपड़ी

तिलपर्ण-(सं०पु०) लाल चन्दन, तिल के पौधे का पत्ता।

तिलपर्णिका, तिलपर्णी-(सं० स्त्री०) लालचन्दन।

तिलपिच्चट(सं०नपुं०) तिल की पीठी।

तिलपिञ्ज-(सं०पु०) तिल का वह पौधा जिसमे फल-फूल नहीं लगते।

तिलपिण्डी-(सं०स्त्री०) तिल का चूर्ण।

तिलपिष्टक-(सं०नपुं०) तिलकी पीठी।

तिलपीड़-(सं०पुं०) तैलिक, तेली।

तिलपुष्प-(सं०नपुं०) तिल का फूल, व्याघ्र नख नामक वृक्ष। **तिलपुष्पक**-(सं० पुं०) बहेड़ा, तिल का फूल, नासिका, नाक।

तिलबटा-(हिं०पुं०) चौपायों के मुख का एक रोग।

तिलबर-(हिं० पुं०) एक प्रकार की चिड़िया।

तिलभाविनी-(सं०स्त्री०)चमेली का पौध।

तिलभुञ्जा-(हिं०पुं०) तिलकुट।

तिलभेद-(सं०पुं०) पोस्ते का दाना, खसखस।

तिलमयूर-(सं०पुं०) एक प्रकार का मोर जिसके शरीर पर तिल के

समान काले चिह्न होते हैं ।
तिलमिल-(हिं० स्त्री०) तिलमिलाहट, चकाचौंध । **तिलमिलाना**-(हिं०क्रि०) चकाचौंध होना ।
तिलमोदक-(हिं०पु०) तिल का बना हुआ लड्डू ।
तिलरस-(सं०पुं०) तिल का तैल ।
तिलरा-(हिं०पु०) टेढ़ी रेखा बनाने की कसेरी की छेनी ।
तिलवट-(हिं०पुं०) तिलपट्टी, तिलपपड़ी
तिलवन-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा जिसमें सफेद या नीले फूल निकलते हैं।
तिलवा-(हिं०पुं०) तिल का लड्डू ।
तिलवासिनी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का धान।
तिलशकरी-(हिं०स्त्री०) तिपपड़ी ।
तिलशालि (सं०स्त्री०) एक प्रकार का सुगन्धित धान ।
तिलस्तुद-(सं०पु०) तिल का तेल पेरने वाला, तेली ।
तिलस्नेह-(सं०पुं०) तिल का तेल ।
तिलहन-(हिं०पुं०) वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकाला जाता है ।
तिला-(हिं०पुं०) वह तेल या लेप जो लिङ्गेन्द्रिय की शिथिलता दूर करने के लिये लगाया जाता है ।
तिलाञ्जलि-(सं०स्त्री०) मृतक संस्कार का एक अंग जो मुरदा जल जाने के बाद स्नान करती समय किया जाता है, इसमें अंजुली मे पानी भर कर इसमे तिल डाल कर मृतक के नाम पर छोड़ा जाता है ।
तिलान्न-(सं०नपुं०) तिल की खिचड़ी ।
तिलपत्या-(सं०स्त्री०) काला जीरा ।
तिलम्बु-(सं०नपुं०)तिल मिला हुआजाल
तिलार्ध-(सं०नपुं०) तिल का आधा भाग, बहुत छोटा परिमाण ।
तिलावा-(हिं०पुं०) बड़ा कुर्वा ।
तिलित्स-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प ।
तिलिया-(हिं०पुं०) सरपत, सरकंडा ।
तिली-(हिं०स्त्री०) तिल, तिल्ली ।
तिलेती-(हिं०स्त्री०) तेलहन के पौधों को काट लेने पर बचा हुआ भाग ।
तिलेदानी-(हिं०स्त्री०) देखो तिलदानी ।
तिलेगू-(हिं०स्त्री०) देखो तेलगू ।
तिलोक-(हिं०पु०) देखो त्रैलोक ।
तिलोकपति-(हिं०पुं०) त्रैलोक्यपति, विष्णु । **तिलोकी**-(हिं०पुं०) देखो त्रिलोकी; उपजाति छन्द का एकभेद **तिलोचन**-(हि०पु०) देखो त्रिलोचन, महादेव ।
तिलोत्तमा-(सं०स्त्री०) स्वर्ग की एक वेश्या, परम सुन्दरी अप्सरा जिसको ब्रह्माने ब्रह्माण्ड के सब उत्तम पदार्थों में से तिल प्रमाण लेकर बनाया था।
तिलोदक-(सं०नपुं०) तिल मिला हुआ जल, देखो तिलाञ्जलि ।
तिलोरी-(हिं०स्त्री०) एल प्रकारकी मैना
तिलौंछना-(हिं०क्रि०) तेल पोत कर चिकना करना । **तिलौंछा**-(हिं०वि०) जिसमें तेल लगा हो, जिसमें तेल का स्वाद हो ।
तिलौरी-(हिं०स्त्री०) तिल मिलाकर बनाई हुई वरी ।
तिल्य-(सं०वि०) तिल उत्पन्न करने वाला ।
तिल्लना-(हिं०पुं०) तिलका नामक वर्णवृत्त ।
तिल्लर-(हिं०वि०) देखो तिलड़ा ।
तिल्ला-(अ०पु०) कलाबत्तू का काम, पगडी, दुपट्टे या साड़ी के अंचल या किनारे पर किया हुआ कलाबत्तू का काम ।
तिल्लाना-(हिं०पुं०) देखो तराना ।
तिल्ली-(हिं०स्त्री०) पेट के भीतर का एक अवयव, प्लीहा, पिलही, तिल नामक अन्न ।
तिल्व, तिल्वक-(सं०पुं०)लोध का वृक्ष
तिल्विल-(सं०पुं०) वह स्थान जहा पर देवता का पूजन किया जाता है ।
तिवाड़ी,तिवारी-(सं०पुं०) त्रिपाठी, ब्राह्मण जाति की एक उपाधि ।
तिवास-(हिं०पुं०)तीन दिन का काल ।
तिवासी-(हि०वि०) देखो तिबासी ।
तिवी-(हिं०स्त्री०)खेसारी नामक अन्न ।
तिष्ठ-(सं०क्रि०) ठहरो, रुक जाओ ।
तिष्ठना-(हिं०क्रि०) ठहरना ।
तिष्ठा-(सं०स्त्री०) एक नदी का नाम जो हिमालय से निकल कर गंगा में मिली है ।
तिष्षन-(हिं०वि०)तीक्ष्ण, तीव्र, ।
तिष्य-(सं०पु०) पुष्य नक्षत्र ।
तिष्यक-(सं०पुं०) पौष मास, पूस का महीना ।
तिष्यपुष्पा-(सं०स्त्री०)आमला । **तिष्या**-(सं० स्त्री०) आँवले का पेड़ ।
तिस-(हिं०सं०पुं) का, ता, **तिसपर**-ऐसा होने पर, ऐसी स्थिति में ।
तिसना-(हिं०स्त्री०) देखो तृष्णा ।
तिसरायत-(हिं०स्त्री०) तीसरा होने का भाव । **तिसरैत**-(हिं०पु०)एक तीसरा मनुष्य जो झगड़ा तय करता है, मध्यस्थ, तीसरे अंश का मालिक ।
तिसाना-(हिं०क्रि०) प्यास होना ।
तिस्वा-(सं०स्त्री०) शंखपुष्पी नामक वनस्पति ।
तिस्स-(हिं०पुं०) राजा अशोक के सगे भाई का नाम ।
तिहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और तीन की संख्या वाला (पुं०) सत्तर और तीन की संख्या ७३ ।
तिहद्दा-(हिं०पुं०) वह स्थान जहां तीन सीमा मिली हों ।
तिहरा-(हिं०वि०) देखो तिहरा, (स्त्री०) दही जमाने का मिट्टी का बरतन ।
तिहराना-(हिं०क्रि०)तिबारा करना, तीन बार करना ।
तिहरी-(हिं०स्त्री०)तीन जड़ों की माला, दही जमाने का मिट्टी का बरतन ।
तिहवार-(हिं०पुं०) त्योहार, पर्व का दिन **तिहवारी**-(हिं०स्त्री०) त्योहारी, मिष्ठान्न फल आदि जो उत्सव के दिन संबंधियों के घर भेजे जाते हैं।
तिहाई-(हिं०पुं०) तृतीयांश, तीसरा भाग, खेत की उपज ।
तिहानी-(हि० स्त्री०) वह लकड़ी जिस पर चुड़िहारे चूड़ियाँ बनाते हैं ।
तिहायत-(हिं०पु०)तिसरैत, मध्यस्थ ।
तिहारा, तिहारो-(हिं०सर्व०)तुम्हारा ।
तिहाव-(हिं०पु०) रोष, क्रोध, गुस्सा, झगड़ा ।
तिहि-(हिं०सर्व०) देखो तेहि ।
तिहू-(हि०वि०) तीन, तीनो ।
तिहैया-(हिं०पु०) तृतीयांश, तीसरा भाग ।
ती-(हिं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी, मनोहरण छन्द, भ्रमरावली ।
तीकुर-(हिं०पु०) खेत की उपज की बँटाई जिसमें तीसरा भाग जमींदार लेता है ।
तीक्षण, तीक्षन-(हिं०वि०)तीक्ष्ण,तेज ।
तीक्ष्ण-(सं०नपु०) तीक्ष्णता, उष्णता, गरमी, विष, युद्धशस्त्र, मरण, समुद्र लवण,चाब नामक औषधि,महामारी (वि०) उग्र, प्रचण्ड, तीव्र, प्रखर, तीखा, तीव्र तेज धार वाला, असह्य, जो सुनने में अप्रिय हो, जिसको आलस्य न हो, चरपरे स्वाद का, (पु०) यवक्षार, आर्द्रा अश्लेषा और मूल नक्षत्र । **तीक्ष्णक**-(सं०पुं०) सफेद सरसों । **तीक्ष्ण कण्टक**-(सं०पुं०) धतूरा, बबूल का वृक्ष, (वि०) जिसमें तीखे काँटे हो; **तीक्ष्ण कन्द**-(सं०पुं०) प्याज; **तीक्ष्ण कर्म**-(सं०वि०) जो काम करने में दक्ष हो; **तीक्ष्ण कल्क**-(सं०पुं०) धनियां; **तीक्ष्ण कान्ता**-(सं०स्त्री०) तारादेवी; **तीक्ष्णकी**-(सं०नपुं०)अकरकरा; **तीक्ष्ण क्षीरी**-(सं०स्त्री०) वंशलोचन; **तीक्ष्ण गन्ध**-(सं०पु०) सहिजन का वृक्ष, लाल तुलसी, सफेद मुसली; **तीक्ष्ण गन्धा**-(सं०स्त्री०) राई, बच, सफेद जीरा, छोटी इलायची; **तीक्ष्ण तण्डुला**-(सं०स्त्री०) पिप्पली, पीपल; **तीक्ष्णता**-(सं०स्त्री०) तीव्रता; **तीक्ष्णताप**-(सं०पु०) महादेव, शिव; **तीक्ष्णतैल**-(सं०नपुं०) सरसों का तेल, मदिरा, राल; **तीक्ष्णत्वक्**-(सं०पुं०) धनियां, (पुं०) व्याघ्र; **तीक्ष्णदंष्ट्र**-(सं०वि०) जिसके दाँत तीखे हों; **तीक्ष्णदन्त**-(सं०वि०) देखो तीक्ष्णदंष्ट्र; **तीक्ष्ण दृष्टि**-(सं०स्त्री०) सूक्ष्म दृष्टि. जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पड़ती हो; **तीक्ष्णधार**-(सं०पु०) खड्ग, तलवार (वि०) पैनीधार वाला; **तीक्ष्ण-पत्र**-(सं०पुं०) धनिया (वि०) जिसके पत्तों में पैनी धारहो; **तीक्ष्ण-पुष्प**--(सं०पुं०) लवङ्ग, लौग (वि०) जिसके फल में पैनी धार हो; **तीक्ष्ण-पुष्पा**-(सं०स्त्री०) केतकी केवड़ा; **तीक्ष्णप्रिय**-(सं०पुं०)यव, जौ; **तीक्ष्ण-फल**-(सं०पुं०) धनियां; **तीक्ष्णफला**-(सं०स्त्री०) राई; **तीक्ष्णबुद्धि**-(सं०पुं०) प्रखर बुद्धि, अति बुद्धिमान्, जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो; **तीक्ष्ण मञ्जरी**-(सं०स्त्री०)पान का पौधा; **तीक्ष्ण मूल**-(सं०पु०) कुलाञ्जन, **तीक्ष्ण रश्मि**-(सं०पु०) सूर्य (वि०) जिसकी किरण तीव्र हो; **तीक्ष्ण रस**-(सं०पु०) यवक्षार, जवाखार (वि०) जिसका रस बहुत तीक्ष्ण हो; **तीक्ष्ण लौह**-(सं०नपु०) पक्का लोहा, इस्पात; **तीक्ष्णवल्क**-(सं०पु०) धनियां; **तीक्ष्ण वेग**-(सं०वि०) अधिक वेग युक्त; **तीक्ष्णशक**-(सं०पु०) पैनी नोक; **तीक्ष्णसारा**-(सं० स्त्री०) महुवे का पेड़, लोहा (वि०) जिसका रस बहुत तेज हो ।
तीक्ष्णा-(सं०स्त्री०) केबाँच, जोंक; मिर्च, तारा देवीका एक नाम, **तीक्ष्णांशु**-(सं०पु०) सूर्य; **तीक्ष्णांशु-तनय**-सूर्य के पुत्र । **तीक्ष्णाग्नि**-(सं०पु०) जठराग्नि, अजीर्ण का रोग । **तीक्ष्णाग्र**-(सं०वि०) तीखी नोक वाला जिसकी नोक तेज हो । **तीक्ष्णायस**-(सं०नपुं०) पक्का लोहा, इस्पात ।
तीख-(हिं०वि०) देखो तीक्ष्ण, तीखा ।
तीखन-(हिं०वि०) देखो तीक्ष्ण ।
तीखा-(हिं०वि०) जिसकी नोक या धार पैनी हो, तीक्ष्ण, तीव्र, प्रखर, प्रचण्ड, उग्र, उग्र स्वभाव का, उत्तम, बढिया, सुनने में अप्रिय ।
तीखुर तीखल-(हिं०पु०) तवक्षीर, हल्दी की जाति का एक प्रकार का पौधा,इसकी जड़ से आरारूट तैयार किया जाता है (हिं० पुं०)देखो तिखुर
तीछ-(हिं०वि०) देखो तीक्ष्ण ।
तीज-(हिं०स्त्री०)प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि, भादों सुदी तीज, हरतालिका तृतीया ।
तीजा-(हिं०पुं०) मुसलमानों में किसी व्यक्ति के मरने के दिन से तीसरा दिन (वि०) तीसरा ।
तीतर-(हिं०पुं०) एक वेग से दौड़ने-वाला छोटा पक्षी जो किसी स्थान में स्थिर नहीं रहता, तित्तिर ।
तीता-(हिं०वि०) तिक्त, तीखे चरपरे स्वाद का, कटु, कड़ुवा, गीलापन, नम, (पुं०)भूमि का गीलापन, ऊसर भूमि, ढेंकी या रहट का अगला भाग ।
तीतुरी-(हिं०स्त्री०) देखो तितली ।
तीतुल-(हिं०पु०)देखो तितिर, तित्तिर।
तीन-(हिं०वि०) जो दोसे एक अधिक हो (पु०) दो और एक के योग से बनी हुई सख्या; **तीन पांच करना**-फेरवट की बात करना ; **तीन तेरह करना**-पृथक् करना, छितराना;

न तीन में न तेरह में-जो किसी गणना (गिनती) में न हो।
तीनपान-(हिं०पुं०)एक प्रकार का बहुत मोटा रस्सा।
तीनलड़ी-(हिं०स्त्री०) तीन लड़ों की माला।
तीनि-देखो तीन।
तीपड़ा-(हिं०पुं०) रेशमी वस्त्र बुनने के काम में आनेवाला एक अस्त्र।
तीय, तीया-(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत।
तीर-(सं०नपुं०)नदी आदि का किनारा तट, पास, समीप, बाण, शर, त्रपु; तीर चलाना या फेंकना-युक्ति निकालना।
तीरण-(सं०नपुं०) करंज की लता।
तीरथ-(हिं०पुं) देखो तीर्थ।
तीरभुक्ति-(सं०पुं०) तिरहुत देश, विदेह।
तीरवर्ती-(सं०वि०)तट पर रहने वाला, पास रहनेवाला, पड़ोसी।
तीरस्थ-(सं०वि०) तीरस्थिति, तीर पर रहनेवाला, मरणासन्न व्यक्ति जो नदी के तीर पर लाया गया हो।
तीरा-(हिं०पुं०) देखो तीर।
तीराट-(सं०पुं०) लोध्र, लोध।
तीरान्तर-(सं०नपुं०)दूसरे पार।
तीरु-(सं०पुं०) शिव, महादेव, शिव की स्तुति।
तीर्ण-(सं०वि०) उत्तीर्ण, जो पार हो गया हो. हराया हुआ, भीगा हुआ, उल्लंघन करने वाला।
तीर्णपदा,तीर्णपदी-(सं०स्त्री०) तालमूल, भूसली।
तीर्णा-(सं०स्त्री०)एक वर्णवृत्तका नाम।
तीर्थ-(सं०नपुं०) पुण्य स्थान, दर्शन, खटिया, ब्राह्मण, अग्नि, आगम, निदान, योनि, भग, मन्त्री, गुरु, उपाध्याय, पात्र, शास्त्र, यज्ञ, क्षेत्र, स्थान, उपाय, रजस्वला स्त्री का रज, अवतार, पात्र, ऋषियों के सेवन करने का जल, हाथ में के कई विशिष्ट स्थानों का नाम, राष्ट्र की अठारह सम्पतियां, पुण्यकाल, तारक, मोक्ष देनेवाला,ईश्वर, माता पिता, अतिथि, सन्यासियों की एक उपाधि, अवसर, वैर त्याग कर परस्पर का उचित व्यवहार; तीर्थक-(सं०वि०) योग्य, तीर्थयात्रा करनेवाला, (पुं०) ब्राह्मण, तीर्थङ्कर; -तीर्थकर-(सं०पुं०)विष्णु;तीर्थकाक-(सं०पुं०) वह मनुष्य जो गुरुकुल में चिरकाल नहीं रह सकता वह मनुष्य जो तीर्थस्थान में जाकर अपनी जीविका खोजता है;तीर्थकृत-(सं०पुं०) जिनदेव, शास्त्रकार; तीर्थङ्कर-(सं०पुं०) दिगम्बर जैनियों के आराध्य देवता; तीर्थतम-(सं०नपुं०) श्रेष्ठ तीर्थ, तीर्थराज; तीर्थदेव-(सं०पुं०) शिव, महादेव; तीर्थपति-(सं०पुं०) देखो तीर्थराज, तीर्थपद-(सं०पुं०) हरि, विष्णु; तीर्थपदीय-(सं०पुं०) वैष्णव; तीर्थभूत-(सं०वि०) तीर्थ स्वरूप;तीर्थयात्रा-(सं०स्त्री०) तीर्थ (पवित्र) स्थान में स्नान, दर्शन आदि के लिये जाना, तीर्थाटन; तीर्थराज-(सं०पुं०) प्रयाग तीर्थ; तीर्थराजि-(सं० स्त्री०) काशी क्षेत्र, तीर्थवाक-(सं०पुं०) केश, बाल; तीर्थवायस-(सं०पुं०) देखो तीर्थ काक; तीर्थसेनि-(सं०स्त्री०)कार्तिकेय एक मातृका का नाम, तीर्थसेवा-(सं०स्त्री०) तीर्थाटन, तीर्थ यात्रा; तीर्थसेवी-(सं०वि०) तीर्थ यात्रा करने वाला (पुं०) बक पक्षी, बगला।
तीर्थाटन-(सं०नपुं०)तीर्थयात्रा, तीर्थसेवा
तीर्थिक-(सं०पुं०) तीर्थङ्कर, तीर्थकारी ब्राह्मण, तीर्थ का पडा, बौद्ध धर्म का द्वेष करने वाला ब्राह्मण।
तीर्थिया-(हिं० पुं०) तीर्थङ्करों को मनाने वाला जैनी।
तीर्थकरण-(सं० वि०) पवित्रीकरण।
तीर्थभूत-(हिं०वि०)तीर्थ स्वरूप, पवित्री
तीर्थ्य-(सं० पुं०) एक रुद्र का नाम, सहपाठी।
तीलखा-(हिं०पुं०)एक पुकारका पक्षी।
तीवर-(सं०पुं०) समुद्र, व्याध, मछुवा, बहेलिया, एक वर्णसंकर नीच जाति
तीवरी-(सं०स्त्री०) तीवर जाति की स्त्री, व्याध पत्नी।
तीव्र-(सं०वि०) अत्यन्त, तीक्ष्ण, अति उष्ण, बहुत गरम, निन्तान्त, असह्य, न सहन करने योग्य, तीखा, प्रचण्ड वेगयुक्त, कटु, कड़ुआ,(नपु०)इस्पात लोहा, नदी तट, त्रिपु, टीन, (पुं०) शिव, महादेव; तीव्रकण्ठ;तीव्रकन्द-(सं०पुं०) जमीकन्द, प्याज;तीव्रगति-(सं०वि०) वेग की गति वाला (पुं०) वायु हवा, तीव्रगन्ध-(सं०पुं०)जिसकी तेज गन्ध हो; तीव्रगन्धा-(स्त्री०पु०) अजवाइन;तीव्रगांधका-(सं०स्त्री०) देखो तीव्रगन्धा;तीव्रज्ञानी-(सं०वि०) बुद्धिमान ; तीव्र ज्वाला-(सं०स्त्री०) धव का फूल, तेज जलन; तीव्रता-(सं०स्त्री०) ऊष्णता, तीक्ष्णता, तीखापन, तीव्रबन्ध-(सं०पुं०) तामसगुण, तमोगुण।
तीव्रवेदना-(सं० स्त्री०) अत्यन्त पीड़ा,
तीव्रसंवेग-(सं०पुं०) बड़ा वैराग्य,
तीव्रसन्ताप-(सं०पुं०) बहुत बड़ा कष्ट, श्येन पक्षी।
तीव्रा-(सं०स्त्री०) कुटकी, राई, बड़ी मालकंगनी, तुलसी, खुरासानी अजवाइन। तीव्रानन्द-(सं०पुं०)शिव, महादेव।
तीस-(हिं०वि०) बीस और दसकी संख्या का (पुं०) बीस और दस की संख्या३०; तीसोदिन-हमेशा; तीसमारखां-(व्यंगोक्ति) बड़े वीर।
तीसरा-(हिं०वि०) जो दो के बाद आता हो, सम्बन्ध रखने वालों से भिन्न।
तीसी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का तेलहन अनाज अलसी (पुं०) तिहाई।
तु-(सं०अव्य०)निरर्थकपादपूरकशब्द,तो
तुआल-(हिं०पुं०) फुंदना लगा हुआ, ओहार जो घोड़े की पीठ पर ओढ़ाया जाता है।
तुंदैला-(हिं०वि०) लम्बोदर, तोंद वाला
तुंबड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का वृक्ष।
तुअ-(हिं०सर्व०) तुव, तव तुम्हारा।
तुअना-(हिं० क्रि०) गिर पड़ना, गर्भपात होना।
तुअर-(हिं०पुं०) अरहर, आढकी।
तुई-(हिं०स्त्री०) कपड़े पर बनी हुई एक प्रकार की बेल।
तुक-(हिं०स्त्री०) किसी गीत या पद्य का कोई टुकड़ा,कड़ी,किसी पद्य के अन्त में रहने वाला अक्षर, मैत्री, अन्त्यानुप्रास, पद्य के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षर का परस्पर मेल।
तुक जोड़ना या मिलाला-भद्दी कविता करना। तुकबन्दी-(हिं०स्त्री०) भद्दी कविता करने की क्रिया, भद्दा काव्य ऐसी कविता जिसमें काव्य के गुण न हों।
तुकान्त-(हिं०स्त्री०) पद्य के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षरों का परस्पर मेल, अन्त्यानुप्रास,
तुकाक्षीरी-(सं०स्त्री०) वंशलोचन।
तुकार-(हिं०स्त्री०) अशिष्ट संबोधन, 'तू, तू' करके बोलने की रीति,
तुकारना-(हिं०क्रि०)तूतूकरकेपुकारना
तुक्कड़-(हिं०पु०) वह जो भद्दी कविता बनाता हो।
तुख-(सं०पु०)छिलका, भूसा, अडे के ऊपर का छिलका।
तुखार-(सं०पुं०) एक प्राचीन देश का नाम, यहां के घोड़े प्राचीन काल में बहुत अच्छे समझे जाते थे।
तुङ्ग-(सं०पुं०) पुन्नाग वृक्ष, पर्वत, पहाड़,नारियल का पेड़ (वि०) उन्नत, ऊंचा, उग्र,प्रचंड, प्रधान, (पु०) शिव, कमल केसर, एक प्रकार का वर्णवृत्त
तुङ्गक-(सं०पु०)एक तीर्थ का नाम।
तुङ्गकूट-(सं०पुं०)ऊंचीचोटीकापहाड़
तुङ्गता-(सं०स्त्री०) उच्चता, ऊंचाई।
तुङ्गत्व-(सं०नपुं०) तुङ्गता, तुङ्गनाभ-(सं०पुं०) हिमालयपर एक शिवलिङ्ग और तीर्थ स्थान। तुङ्गनाथ-(सं० पुं०) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।
तुङ्गप्रस्थ-(सं०पुं०) रामगढ़ के समीप का एक पर्वत। तुङ्गभद्र-(सं०पु०) मतवाला हाथी। तुङ्गभद्रा-(सं०स्त्री०) भारत के दक्षिण की एक बड़ी नदी
तुङ्गमुख-(सं०पुं०) गण्डक, गैंडा।
तुङ्गबीज-(सं०पु०) पारद, पारा,
तुङ्गवृक्ष-(सं०पुं०) नारियल का पेड़।
तुङ्गशेखर-(सं०पुं०) पहाड़, पर्वत की ऊंची चोटी।
तुङ्गा-(सं०स्त्री०) शमीवृक्ष, वंशलोचन
तुङ्गारि-(सं०पुं०)सफेद कनेर का वृक्ष
तुङ्गिनी-(सं०स्त्री०) बड़ी सतावर।
तुङ्गी-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी, रात्रि, रात। तुङ्गीनास-(सं०पु०)एकप्रकार का विषैला कीड़ा। तुङ्गीपति-(सं० पुं०) चन्द्रमा, रजनीपति। तुङ्गीश-(सं०पुं०) कृष्ण, सूर्य, चन्द्रमा, शिव।
तुच, तुचा-(हिं०स्त्री) देखो त्वचा
तुचार-(हिं०वि०) तीखा, पैना।
तुच्छ-(सं०नपुं०)भूसी, छिलका,(वि०)क्षुद्र, हीन, शून्य, निःसार, खोखला, अल्प, थोड़ा,ओछा। तुच्छज्ञान-(सं०नपुं०) सामान्य बोध; तुच्छता-(सं०स्त्री०) नीचता, हीनता, अल्पता, ओछापन, तुच्छत्व-(सं०नपुं०)ओछापन; तुच्छद्रुम-(सं०पुं०) रेंडीका पेड़; तुच्छ धान्यक-(सं०नपुं०) भूसी, छिलका। तुच्छा-(सं०स्त्री०) नील का वृक्ष,तुत्थ,तूतिया
तुच्छीकृत-(सं०वि०) अपमानित, तिरस्कार किया हुआ।
तुच्छातितुच्छ-(सं०वि०) अत्यन्त क्षुद्र,
तुजुक-(हिं०पुं०) बड़ों का सम्मान
तुज्-(सं०स्त्री०)जोरक्षाकरनेमें समर्थहो।
तुजह-(हिं०स्त्री०) धनुष, कमान।
तुज्य-(सं०वि०) वध करने योग्य।
तुझ-(हिं०सर्व०)'तू'शब्दका वह रूप जो प्रथमा और षष्ठी विभक्ति के सिवाय अन्य विभक्तियों के पहिले लगाया जाता है। तुझे-(हिं०सर्व०) "तू"का कर्म और सम्प्रदान का रूप
तुञ्ज-(सं०पु०) वज्र।
तुट-(हिं०वि०)अल्पमात्रा में,थोड़ा सा।
तुटना-(हिं० क्रि०)सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना।
तुटितुट-(सं०पुं०) शिव।
तुटुम-(सं०पुं०) इन्दुर, चूहा।
तुड़वाना-(हिं०क्रि०) तोड़ने का काम दूसरे से कराना। तुड़ाई-(हिं०स्त्री०) तोड़ने की क्रिया या भाव, तोड़वाने का शुल्क; तुड़ाना-(हिं०क्रि०) तोड़ने का काम किसी दूसरे से कराना, तुड़वाना, बन्धन छुड़ाना, सम्बन्ध तोड़ना, बड़ी मुद्रा के बदले में छोटी मुद्रा लेना,भुनाना। तुड़ि-(सं०स्त्री०) तोड़ने की क्रिया।
तुड़म-(हिं०पु०) तुरही, बिगुल।
तुणि, तुणिक-(सं०पुं०) तुन का पेड़।
तुण्ड-(सं०नपुं०) मुख, मुह, (पुं०) महादेव, एक राक्षस का नाम, (नपु०) चोंच, थूथुन, तलवार का अगला भाग;तुण्डकेरिका-कपास का पौधा;
तुण्डकेशरी-मुख का एक रोग जिसमें तालु फूल आता है।
तुण्डी-(सं०पुं०) मुख,मुंह, चोंच, कुंदरू, (स्त्री०) नाभि।
तुण्डिका-(सं०स्त्री०)नाभि,ढोढ़ी,कुन्दरू।
तुण्डिभ-(सं० वि०) जिसकी नाभि निकली हो।
तुण्डिल-(सं०वि०) तोंदीला, तोंद-

वाला, वकवादी,
तुण्डी-(सं०वि०) चोंचवाला,मुख वाला थूथन वाला (पुं०) गणेश (स्त्री०) नाभि, ढोढ़ी।
तुतरा-(हिं० वि०) देखो तोतला। तुतराना-(हिं०क्रि०) तोतला कर बोलना। तुतरौहा-(हिं०वि०) देखो तोतला।
तुतलाना-(हिं०क्रि०) शब्दों तथा अक्षरों का शुद्ध उच्चारण न करना, अस्पष्ट टूटे फूटे शब्द बोलना।
तुतली-(हिं०वि०) देखो तोतली।
तुतरी-(सं०स्त्री०) शृङ्गी, सींघा बाजा।
तुत्थ-(सं०पुं०) पत्थर, अग्नि, नील का पौधा, ततिया नामक उपधातु, नीलायोथा। तुत्थक-(सं० नपुं०) नीलाथोथा।
तुत्का-(सं०स्त्री०) नील का पौधा, छोटी इलायची।
तुथ-(सं०पुं०) हत्या करने वाला, बध करने वाला।
तुदना-(सं०पुं०) पीड़ा देने की क्रिया, व्यथा,पीड़ा,चुभानेयागड़ानेकी क्रिया
तुन-(हिं०पुं०) एक बहुत बड़ वृक्ष।
तुनतुनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का तुन्‌तुन् शब्द करने वाला बाजा।
तुनी-(हिं०स्त्री०) तुन का वृक्ष।
तुनीर-(हिं०पुं०) देखो तूणीर।
तुन्तुभ-(सं०पुं०) सरसों का पौधा।
तुन्द-(सं०नपुं०) उदर,पेट, तुन्दकूपिका, तुन्दकूपी-ढोढी; तुन्दवत्-तोंद वाला, तोंद निकला हुआ। तुन्दी-(सं०स्त्री०) नाभि, ढोंढी।
तुन्दिक, तुन्दिकर-(सं०वि०) बड़े पेट वाला, तोंदवाला।
तुन्दिकफला-(सं०क्रि०) खीरेकी लता।
तुन्दिका-(सं०स्त्री०) नाभि, ढोंढो।
तुन्दिन-(सं०वि०)उभड़े हुए पेटवाला
तुन्दिभ, तुन्दिल-(सं०वि०) स्थूलोदर, तोंदीला।
तुन्न-(हिं०स्त्री०) तुन का वृक्ष, फटे हुए वस्त्र की चीर (वि०)पीडित, दुःखित फटाहुआ। तुन्नवाय-(सं०पुं०) कपड़ा सीने वाला, दरजी।
तुपक-(हिं० स्त्री०) छोटी तोप या बन्दूक, कड़ाबीन।
तुफंग-(हिं०स्त्री०) हवाईबन्दूक,वह लंबी नली जिसमें मिट्टी याआंटे की गोली रख कर मुख से फूंककर चलाते हैं।
तुभना-(हिं०क्रि०) स्तब्ध रहना,चकित हो रहना।
तुम-(हिं०सर्व०) 'तू' शब्द का बहुवचन का रूप।
तुमड़ी-(हिं०स्त्री०) गोल कद्दू का सूखा हुआ फल, इस फल का बना हुआ पात्र,सूखे कद्दू का बना हुआ बाजा जिसको सपेरे बजातेहैं,महुवर
तुमतड़ाक-(हिं०स्त्री०) देखो तूमतड़ाक।
तुमरा-(हिं०सर्व०) देखो तुम्हारा।
तुमरू-(हिं०पुं०) देखो तुमरू।

तुमल-(हिं०वि०) देखो तुमुल, प्रचण्ड।
तुमाना-(हिं०क्रि०) रुई के तुनने का काम दूसरे से कराना।
तुमुँती-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पक्षी।
तुमुर,तुमुल-(सं०नपुं०)सेना का कोलाहल. लड़ाई का शब्द,मुठभेड़,क्षत्रियों की एक जातिका नाम (वि०) प्रचण्ड, उग्र; तुमुल युद्ध-घमासान लड़ाई।
तुम्ब-(सं०पुं०) गोल लौकी, लौवा।
तुम्बक-(सं०पुं०) लौकी, धनियां।
तुम्बर-(सं०पुं०)एक प्रकार का बाजा।
तुम्बरू-(सं०पुं०) एक गन्धर्व का नाम
तुम्बा-(सं०स्त्री०) कड़ुवा कद्दू, एक प्रकार का जंगली धान (हिं०पुं०) कद्दू का बना हुआ जलपात्र।
तुम्बिका-(सं०स्त्री०) कड़ुवा कद्दू।
तुम्बिनी-(सं०स्त्री०)कटुतुम्बी, तितलौकी
तुम्बी-(सं०स्त्री०) छोटा कद्दू, बहेड़े का वृक्ष। तुम्बी तैल-(सं०नपुं०) कद्दू के बीज का तेल।
तुम्बुकी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का चमड़ा चढ़ा हुआ बाजा।
तुम्बुर-(सं०पुं०)विन्ध्य पर्वत पर रहने वाली एक जाति।
तुम्बुरी-(सं०स्त्री०)कुक्कुरी,कुतिया,धनियाँ
तुम्बुरु-(सं०नपुं०) धनियाँ (पुं०) एक तपस्वी का नाम, एक गन्धर्व का नाम; तुम्बुरु वीणा-तानपुरा।
तुम्र-(सं०वि०)हिंसक,मारनेवाला,प्रेरक
तुम्ह-(हिं०सर्व०)देखो तुम। तुम्हारा-(हिं० सर्व०) 'तु' का सम्बन्ध कारकका रूप; तुम्हें-(हिं०सर्व०)तुमको
तुरंग-देखो तुरङ्ग
तुरंत-(हिं०क्रि०वि०) अत्यन्त शीघ्र, झटपट, जल्दी से,
तुरंता-(हिं०पुं०) गांजा।
तुर-(सं०वि०) वेगवान्, जल्दी चलने वाला,(हिं०पुं०)जुलाहेकी वह लकड़ी जिस पर वे कपड़ा बुन कर लपेटते जाते है, वह बेलन जिस पर गोटा बीन कर लपेटा जाता है।
तुरई-(हिं०स्त्री०)एक लता जिसके फलों की तरकारी बनाई जाती है।
तरक-(हिं०पुं०) देखो तुर्क। तुरकटा-(हिं०पुं०) मुसलमान, यह घृणा, सूचक शब्द है। तुरकाना-(हिं०पुं०) तुर्क के समान, तुर्कोका देश या बस्ती
तुरकानी,तुरकिन-(हिं०स्त्री०) तुर्क की स्त्री। तुरकिस्तान-(हिं०पुं०)तुर्क देश
तुरग-(सं० पुं०) घोड़ा, चित्त (वि०) शीघ्रगामी, तुरगगन्धा-(सं० स्त्री०) अश्वगन्धा, असगन्ध; तुरगदानव-(सं० पुं०)केशी नामक दैत्य; तुरगप्रिय (सं०पुं०)यव,जौ; तुरगरक्षक-(सं०पुं०) अश्वरक्षक, साईस; तुरगलीलक-(सं०पुं०) संगीत में एक ताल का नाम
तुरगानन-(सं०पुं०) एक किन्नर जाति जिनका मुख घोड़े के समान और और शेष अंग मनुष्य के समान हो।

तुरगारोह-(सं०पुं०) अश्वारोही, घुड़सवार।
तुरगी-(सं०स्त्री०) असगन्ध, घोड़ी।
तुरगीय-(सं० वि०) अश्व संबंधी, घोड़े का।
तुरगुला-(हिं० पुं०) झुमका, लोलक, कर्णफूल।
तुरङ्ग, तुरङ्गक-(सं०पुं०) घोड़ा, वित्त, सेंधा नमक, सात की संख्या (व०) शीघ्र चलने वाल।
तुरङ्गद्वेषिणी-(सं०स्त्री०) महिषी,भैंस
तुरङ्गप्रिय-(सं०पुं०) यव, जौ।
तुरङ्गम-(सं०पुं०) घोड़ा, चित्त वि०) शीघ्र चलने वाला (पुं०) एक वर्णवृत्त का नाम; तुरङ्गमशाला-अश्वशाला; तुरङ्गमेध-अश्वमेध; तुरंगवक्त्र तुरंगवदन-घोड़े के मुख का किन्नर।
तुरंगारि-(सं०पुं०) करवीर,कनेर का वृक्ष
तुरंगिन्-(सं०वि०)अश्वारोही,घुड़सवार
तुरंगी-(सं०स्त्री०) असगन्ध, घोड़ी।
तुरण-(सं०नपुं०) जल्दीसे जानेकी क्रिया
तुरण्य-(सं०पुं०) त्वरा, शीघ्रता।
तुरत-(हिं० अव्य०) तत्क्षण, शीघ्र, जल्दी से।
तुरपई-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की कपड़ा मोड़ कर सीने की विधि।
तुरपन-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की सिलाई, लुढियावन। तुरपना-(हिं०क्रि०) तुरपन की सिलाई करना, लुढियाना। तुरपवाना-(हिं०क्रि०) तुरपाना, तुरपने का काम दूसरे से करना। तुरपाना-(हिं०क्रि०) देखो तुरपवाना।
तुरम-(हिं०पुं०) तुरही बाजा।
तुरमती-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया।
तुरमनी-(हिं० स्त्री०) नारियल रेतने की रेती।
तुरय-(हिं०पुं०) तुरङ्ग, घोड़ा।
तुरया-(सं०क्रि०वि०)शीघ्रतासे,जल्दी से
तुरसिला-(हिं०वि०) पैना, तीखा।
तुरही-(हिं०स्त्री०) मुंह से फूक कर बजाने का एक बाजा।
तुरा-(हिं०स्त्री०) देखो त्वरा; शीघ्रता; देखो तुरङ्ग, घोड़ा।
तुराई-(हिं०स्त्री०)रुई भरा हुआ गद्दा।
तुराना-(हिं०क्रि०)व्यग्र होना,घबड़ाना: देखो तुड़ाना।
तुराय-(हिं०क्रि०वि०)अतुरता से।
तुरायण-(सं०नपुं०) एक प्रकार का यज्ञ, (वि०) आसक्त, लीन।
तुरावत्-(हिं०वि०)वेगयुक्त, वेगवाला।
तुरावती-(हिं०वि०) वेगयुक्त, वेग से बहने वाली।
तुराषाट-(सं०पुं०) इन्द्र का एक नाम।
तुरास-(हिं०पुं०) वेग
तुरि-(सं०स्त्री०) तोड़िया नामक जुलाहे का यन्त्र।
तुरिया-(हिं०स्त्री०) देखो तुरीय।
तुरी-(सं०स्त्री०) देखो तुरि, (सं०वि०) वेग युक्त, (हिं०स्त्री०) घोड़ी, लगाम; (पुं०) घुड़सवार (अ०स्त्री०) फूलों का गुच्छा, मोती की लड़ी का गुच्छा जो पगड़ी में कान के पास लटकाया जाता है। तुरीय-(सं०वि०)गति युक्त, चतुर्थ, चौथा, उद्धार करनेवाला, तारक, वेद के अनुसार वाणी की वह अवस्था जब वह मुख में आकर उच्चारित होती है, प्राणियों की अन्तिम अवस्था। तुरीयक-(सं०वि०) चतुर्थ, चौथा। तुरीयन्त्र-(सं०पुं०) सूर्य की गति जानने का एक यन्त्र।
तुरीयवर्ण-(सं०पुं०) चतुर्थ वर्ण, शूद्र।
तुरुप-(हिं०पुं०) ताश का एक खेल जिसमें कोई एक रंग प्रधान मान लिया जाता है।
तुरुपना-(हिं०क्रि०) देखो तुरपना।
तुरुष्क-(सं०पुं०) एशिया और यूरोप के अन्तर्गत एक देश का नाम,तुर्की, तुर्क जाति, इस देश का निवासी, इस देश का घोड़ा।
तुरुही-(हिं०स्त्री०) देखो तुरही।
तुरैया-(हिं०स्त्री०) तुरही बाजा।
तुर्क-(हिं०पुं०) तुर्किस्तान का निवासी
तुर्किनी-(हिं०स्त्री०) देखो तुर्किन।
तुर्फरी-(सं०वि०) अंकुश मारने का भाला जिसकी नोक सीधी होती है।
तुर्य-(सं०वि०) चतुर्थ, चौथा; तुर्यगोल समय जानने का एक प्राचीन यन्त्र,
तुर्यवाह-चार वर्ष का पशु।
तुर्या-(सं०स्त्री०)वह ज्ञान जिससे मुक्ति प्राप्त होती है।
तुर्याश्रम-(सं०पुं०)चतुर्थाश्रम,संन्यासाश्रम
तुर्वन्-(सं०नपुं०) शत्रु की हत्या करना
तुर्वश-(सं०पुं०) राजा ययाति के पुत्र का नाम। तुर्वसु-(सं० पुं०) राजा ययातिका एक पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
तुल-(हिं०वि०) देखो तुल्य, बराबर।
तुलना-(हिं०क्रि०) तौला जाना, उद्यत होना, पूरित होना, भरना, नियमित होना, तुल्य होना, तौल में बराबर होना, गाड़ी की पहिये के धुरे में घी, चर्बी आदि भरना; साधकर शस्त्र चलाना, बंधना, (सं० स्त्री०) सादृश्य, उपमा, समता, तारतम्य, मिलान, बराबरी।
तुलनी-(हिं०स्त्री०) वह लोहा जो तराजू के कांटे के दोनों ओर लगा रहता है
तुलबुली-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता।
तुलवाई-(हिं०स्त्री०) तौलने का परिश्रमिक, पहिये को औंगने का शुल्क।
तुलवाना-(हिं०क्रि०) तौल कराना, गाड़ी की पहिये को औंगवाना।
तुलसारिणी-(सं०स्त्री०) तूण, घास।
तुलसी-(सं०स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसको हिन्दू लोग अति पवित्र मानते हैं; तुलसीदल-तुलसी की पत्ती; तुलसीदाना-(हिं० पुं०) एक प्रकार का गहना; तुलसीदास-

भारतवर्ष के एक सर्वप्रधान भक्त कवि जो सरयूपारीय ब्राह्मण थे, इनका जन्म संवत् १५८९ में राजगाँव बांदा जिलामें हुआ था, इनके बनाये हुए रामचरित मानस का भारतवर्ष के घर घर में प्रचार है; **तुलसीपत्र**-(सं०नपुं०) तुलसी की पत्ती; **तुलसीवास**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सुगन्धित अगहनियां धान; **तुलसीमाला**-(सं०स्त्री०) तुलसी की माला। **तुलसीवन**-(सं०पुं०) तुलसी का जंगल, वृन्दावन।

तुला-(सं०स्त्री०)सादृश्य, तुलना, तराजू, काँटा, मान, तौल, प्राचीन काल की एक तौल जो लगभग पांच सेर के बराबर होती थी, अन्न आदि नापने का पात्र, सातवीं राशि जिसका आकार हाथ में तराजू लिये हुए मनुष्य के सदृश माना जाता है; **तुलाई**-(हिं०स्त्री०) तौलने का भाव या काम, रूई भरा हुआ दोहरा कपड़ा, दुलाई।

तुलाकूट-(सं०स्त्री०) तौलने में कसर करने वाला, डाँड़ी मारने वाला। **तुलाकोटि**-(सं०स्त्री०) तराजू की डंडी जिसके दोनों ओर रस्सी में पलड़े बंधे होते हैं, अर्बुद संख्या। **तुलाकोष**-(सं०पुं०) तुला परीक्षा। **तुलादण्ड**-(सं०पुं०) मानदण्ड, नापने की डंडी। **तुलादान**-(सं०नपुं०) एक महादान जिसमें किसी मनुष्य के तौल के बराबर द्रव्य का दान होता है। **तुलाघट**-(सं०पुं०) तराजू की डंडी जिसमें पलड़े बंधे रहते हैं। **तुलाधर**-(सं०पुं०) तुला राशि, तराज की डोरी (क्रि०) तराजू पकड़ने वाला, **तुलाधार**-(सं०पुं०) तराज की डोरी जिसमें पलड़े बँधे रहते है, तुलाराशि, वाराणसी निवासी एक व्याध जो सर्वदा माता पिता के सेवा में तत्पर रहता था, वाराणसी निवासी एक बनियाँ जिसने महर्षि जाजलि को मोक्ष धर्म का उपदेश दिया था।

तुलाना-(हिं०क्रि०)बराबर होना, समीप आना, पूरा होना; गाड़ी की पहिये के धुरे में चिकना दिलाना। **तुलापरीक्षा**-(सं०पुं०) प्राचीन काल में प्रचलित अभियुक्त की एक परीक्षा जिसमें उसको एक बार तराजू के पलड़े पर बिठला कर मिट्टी आदि से तौलते थे, फिर उतार कर दुबारा तौलते थे यदि दुबारा तौलने में पलड़ा झुक जाता था तो अभियुत दोषी माना जाता था। **तुलाग्रह**-(सं०पुं०) तुलादण्ड, तराजू में बंधी हुई डोरी। **तुलावीज**-(सं०नपुं०) घुमची के दाने जो तौलने के काम में आते हैं। **तुलामान**-(सं०नपुं०) तुलादण्ड, वह मान जो तौलकर लिया जावे, बाँट, बटखरा। **तुलायन्त्र**-(सं०पुं०) तुला दण्ड, तराजू। **तुलायष्टि**-(सं०स्त्री०) तराजू में बंधी हुई डोरी।

तुलावा-(हिं०पुं०) वह लकड़ी जिसके सहारे गाड़ी उठाकर पहिया निकाली जाती है और धुरेमे चिकनाई पोती जाती।

तुलासूत्र-(सं० नपुं०) तराजू की रस्सी जिसमें पलड़े बँधे रहते हैं।

तुलि-(सं०स्त्री०) जुलाहे की कूँची,चित्रकार की कूँची,।

तुलिका-(सं०स्त्री०) खंजन पक्षी, कूँची

तुलित-(सं०वि०) परिमित, तुला हुआ, बराबर, समान।

तुलिनी-(सं०स्त्री०) शाल्मली, सेम्हर का पेड़।

तुली-(सं०स्त्री०) तुरी, जुलाहे की कूँची

तुलूली-(हिं०स्त्री०) मूत्र की बंधी हुई धार जो दूर पर जा पड़ती है।

तुल्य-(सं०वि०) सदृश, समान, बराबर; **तुल्यकारिणक**-(सं०वि०) जिस क्षेत्र के सब कोण बराबर हों; **तुल्यज्ञ**-(सं०पुं०) तुल्यज्ञानवाला; **तुल्यता**-(सं०स्त्री०) सादृश्य, समता, बराबरी; **तुल्यदर्शन**-(सं०वि०) समान दर्शन; **तुल्यपान**-(सं० नपुं०) स्वजाति के लोगों के साथ मिलजुल कर खाना पीना; **तुल्य प्रधान व्यंग**-(सं०पुं०) वह व्यंग जिसमें वाच्यार्थ और व्यंगार्थ बराबर होते हैं; **तुल्य बल**-(सं०वि०) सम शक्ति वाला, (नपुं०) बराबरी का बल; **तुल्यभावन**-(सं० नपुं०) ज्योतिष में एक प्रकार की राशि की मिलान; **तुल्य मूल्य**-(सं० वि०) बराबर दामवाला, समान; **तुल्ययोगिता**-(सं०स्त्री०) एक काव्यालङ्कार जिसमें अनेक प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत विषयों का (उपमेय और उपमानों का) समान धर्म बतलाया जाता है; **तुल्ययोगी**-(सं०वि०)समान सम्बन्ध रखनेवाला; **तुल्यरूप**-(सं०वि०) एक रूप, सदृश; **तुल्यवृत्ति**-(सं०त्रि०) एक व्यवसाय का।

तुल्याकृति-(सं० वि०) जो देखने में समान आकृति हो।

तुव-(हिं०सर्व०) देखो तव।

तुवर-(सं० पुं०) कसैला रस, एक प्रकार का धान, अरहर, एक प्रकार का पौधा (वि०) कसैला, तीता,बिना मोछ दाढ़ी का।

तुवरिका-(सं०स्त्री०)गोपीचन्दन, अरहर

तुवरी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का धान, अरहर। **तुवरी शिम्ब**-(सं०पुं०)चकवड़ का पेड़।

तुवि-(सं०त्रि०) तुम्बी; **तुविग्र**-(सं०वि०) तीव्र शब्द करने वाला। **तुविग्रीव**-(सं०वि०) जिसका कन्धा चौड़ा और पुष्ट हो; **तुविजात**-(सं०वि०) पराक्रमी,ओजस्वी; **तुविप्रति**-(सं०वि०) बहुत से मनुष्यों से भेंट करने वाला; **तुविमन्यु**-(सं०वि०) जिसका विचार पक्का हो, स्थिर सिद्धान्त वाला।

तुवीरव-(सं०वि०) बहुशब्द युक्त।

तुशियार-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी पौधा।

तुष-(सं०पुं०) अन्नके ऊपर का छिलका, भूसी, अंडे के ऊपर का छिलका, बहेड़े का वृक्ष; **तुषग्रह**-(सं०पुं०) अग्नि, आग; **तुषज**-(सं०वि०) भूसी में से निकलने वाली आग; **तुषधान्य**-(सं०नपुं०) छिलका सहित धान।

तुषाग्नि, तुषानल-(सं०पुं०) भूसी या करसी की आँच।

तुषाम्बु-(सं०नपुं०)तुषोदक, एक प्रकार की काँजी।

तुषार-(सं०पुं०) हिम, हिमकण, पाला, शीतल स्पर्श, चीनिया कपूर, हिमालय के उत्तर का एक देश, इस देश में बसने वाली जाति, (वि०) जो स्पर्श करने में अति शीत जान पड़े; **तुषारकण**-हिमकण; **तुषारकाल**-शीतकाल; **तुषारकिरण**-चन्द्रमा; **तुषारगिरि**-हिमालय पर्वत; **तुषारगौर**-कपूर; **तुषारपाषाण**-ओला; **तुषारमूर्ति**-हिमकर; चन्द्रमा; **तुषाररश्मि**-चन्द्रमा; **तुषाराद्रि**-हिमालय पर्वत; **तुषाराम्बु**-कुहरे का पानी, ओस।

तुषित-(सं०पुं०) एक प्रकार के गण देवता।

तुषोदक-(सं० पुं०) एक प्रकार की काँजी जो छिलका समेत जव को पानी में कूटकर बनाई जाती है।

तुष्ट-(सं०वि०) सन्तुष्ट, तृप्त, प्रसन्न, (पुं०) विष्णु; **तुष्टता**-(सं० स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति; **तष्टना**-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट होना, तृप्त होना।

तुष्टि-(सं० स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता, कंस के आठ भाइयों में से एक का नाम, गौरी आदि सोलह मातृकाओं में से एक शक्ति विशेष, बौद्धमत के अनुसार एक स्वर्ग का नाम; **तुष्टिकर**-(सं०वि०) सन्तोष देने वाला, **तुष्टिजनक**-(सं०वि०) सन्तोषजनक **तुष्टिमान**-(सं०पुं०) कंस के भाई का नाम।

तुष्टु-(सं०पुं०)कान में पहिरने की मणि।

तुष्य-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

तुस-(सं०पुं०) तुष, भूसी।

तुसार-(हिं०पुं०) देखो तुषार।

तुसी-(हिं० स्त्री०) अन्न के ऊपर का छिलका, भूसी।

तुस्त-(सं०नपुं०) धूलि, गर्दा।

तुहमत-(हिं०स्त्री०) दोष, कलंक।

तुहर-(सं० पुं०) कुमार कार्तिकेय का एक अनुचर।

तुहार-(हिं०सर्व०) तुम्हारा।

तुहिं-(हिं०सर्व०) तुझको, तुमको।

तुहिन-(सं०नपुं०) हिम, पाला, कुहिरा, ठंढक, तुषार, चन्द्रिका, चाँदनी(वि०) शीतल, ठढा, **तुहिनकण** हिमकण; **तुहिनकर**-चन्द्रमा; **तुहिनकिरण**-चन्द्रमा; **तुहिनगिरि**-हिमालय पर्वत, **तुहिनदीधिति**-चन्द्रमा; **तुहिनद्युति**-चन्द्रमा; **तुहिनरश्मि**-चन्द्रमा; **तुहिनशैल**-हिमालय पर्वत; **तुहिनांशु**-चन्द्रमा; **तुहिनाचल, तुहिनाद्रि**-हिमलय पर्वत; **तुहिनाश्रु**-(सं०पुं०)चन्द्रमा, कपूर।

तुहुण्ड-(हिं०सर्व०)एक दानव का नाम।

तू-(हिं०सर्व०) यह शब्द उस पुरुष के साथ प्रयोग होता है जिसको सम्बोध करके कुछ कहा जाता है, (स्त्री०)कुत्ते को पुकारने का शब्द; **तू तू करना**-अशिष्ट वाक्यों का प्रयोग करना।

तूं-(हिं०सर्व०) देखो तू।

तूंबड़-(हिं०पुं०) देखो तुवा।

तूंबना-(हिं० क्रि०) देखो. तूमना।

तूंबा-(हिं०पुं०)गोल लौकी, तितलौकी, सूखे कद्दू का बनाया हुआ जलपात्र;

तूंबी-(हिं०स्त्री०) कडुवा गोल, कद्दू सूखे कद्दू का वनाया हुआ जलपात्र।

तूख-(हिं० पुं०) देखो तुष, तिनके या सींक का टुकड़ा।

तूटना-(हिं०क्रि०) देखो टूटना।

तूठना-(हिं०क्रि०)तृप्त होना, प्रसन्न होना।

तूण-(सं० पुं०) तूणीर, तीर रखने का चोंगा, तरकश, चामर नामक वृत्त।

तूणक-(सं०नपुं०) एक प्रकार का छन्द।

तूणधार-(सं० पुं०) तूणधारी, तीर धारण करने वाला।

तूणव-(सं०पुं०) तरकश के आकार का एक प्राचीन बाजा।

तूणी, तूणीक-(सं०पुं०) देखो तूण।

तूणी-(सं०स्त्री०)तूनका वृक्ष, तूण, तरकश, एक वात रोग जिसमें मूत्राशय के पास पीडा होने लगती है।

तूणीक-(सं०पुं०) तून का वृक्ष।

तूणीर-(सं०पुं०) तीर रखने का चोंगा, तरकश।

तूतक-(सं०नपुं०) तूतिया, नीलाथोथा

तूतिया-(हिं०पुं०) नीलाथोथा।

तूतुम-(सं०वि०) शीघ्रता, वेग, जल्दी।

तूद-(सं०पुं०)शहतूत का वृक्ष, इसके फल

तूदी-(सं०स्त्री०) एक देश का नाम।

तून-(हिं०पुं०) तुन का वृक्ष, एक प्रकार का लाल मोटा वस्त्र, तूल, देखो तूण

तूना-(हिं०क्रि०) चूना टपकना, गिरना, खड़ा न रहना, गर्भपात होना।

तूनीर-(हिं०स्त्री०) देखो तूणीर।

तूबर-(सं० पुं०) बिना सींग का बैल, बिना डाढ़ी मोंछ का मनुष्य, कसैला रस (वि०) जिसमे कसैलापन हो।

तूमडी-(हिं०स्त्री०) देखो तुम्बी, एक प्रकार का सूखे कद्दू का बना हुआ बाजा जिसको सँपेरे बजाते हैं।

तूमना-(हिं०क्रि०) रूई के गोले के रेशों को अलग अलग करना, उधेड़ना, धज्जी अलगाना, हाथों से मलना, पोल खोलना, गुप्त बात को

प्रगट करना।

तूमा पटली-(हिं०स्त्री०)हेर फेर, अदली बदली।

तूमारिया सूत-(हिं०पुं०) अति महीन काता हुआ सूत।

तूय-(सं०नपुं०) जल, पानी, शीघ्रता, जल्दी।

तूया-(हिं०स्त्री०) काली सरसों।

तूर-(सं०नपुं०) नगाड़ा, तुरही नामक बाजा। (हिं०स्त्री०) जुलाहे के करगह की लंबी लकड़ी जिसमें तानी लपेटी जाती है, अरहर का पौधा।

तूरज-(हिं०पुं०) देखो तूर्य।

तूरण, तूरन-(हिं०क्रि०वि०)देखो तूर्ण।

तूरना-(हिं०क्रि०) देखो तोड़ना, (पुं०) तुरही।

तूरी-(सं०स्त्री०) धतूरे का पौधा।

तूर्ण-(सं०क्रि०वि०) त्वरा युक्त, शीघ्र, तुरन्त।

तूर्णाश-(सं०नपुं०) उदक, जल, पानी।

तूर्ण-(सं०पुं०) मल, विष्टा, त्वरा, शीघ्रता। (वि०) शीघ्रगामी।

तूर्त-(सं०पुं०) शीघ्रता, जल्दी।

तूर्य खण्ड-(सं० पु०) एक प्रकार का बाजा। **तूर्य जीव**-(सं०वि०) जो बाजा बजा कर अपनी जीविका निर्वाह करता हो। **तूर्याचार्य**-(सं०पुं०) वह जो बाजा बजाने की शिक्षा देता हो।

तूर्व-(सं०नपुं०) शीघ्रता, जल्दी।

तूल-(सं०नपुं०) आकाश, शहतूत का वृक्ष, कपास सेम्हर आदि के डोंडे के भीतर का घुआ (हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा लाल रंगी का कपड़ा, गहरा रंग (हिं०वि०) तुल्य सदृश, समान; **तूलक**-(सं०नपुं०) तूल कपास; **तूलकार्मुक**-(सं० पुं०) रूई धुनने का यन्त्र, धनकी; **तूलचाप**-(सं०पुं०)रूई धुनने का यन्त्र, धुनकी; **तूलता**-(सं० स्त्री०) समता, बराबरी; **तूलना**-(हिं०क्रि०)गाड़ी की पहिये के धुरे में चिकना पोतना, बराबर होना; **तूलनलिका**, **तूलनाली**-(सं० स्त्री०) पिंजिका, प्यूनी, रूई की पोली मोटी वत्ती जिसमें से कात कर सूत निकाला जाता है; **तूलपिचु**-(सं०स्त्री०)कपास का पौधा; **तूलफल**-(सं०पुं०) अर्कवृक्ष, अकवन का पेड़; **तूलफला**-(सं०स्त्री०) शालमली, सेम्हर का पेड़; **तूलवृक्ष**-(सं० पुं०) देखो तूलफला; **तूलशर्करा**-सं०स्त्री०)कपास का बीज, बिनौला; **तूलसेचन**-(सं० नपुं०) रूई से सूत निकालने का काम।

तूला-(सं० स्त्री०) कपास, रूई।

तूलि, तूलिका-(सं०स्त्री०)चित्रकार की रंग भरने की कूंची।

तूलिका-(सं० स्त्री०) सोना ढालने का पात्र, लालटेन आदि की बत्ती, रूई भरा हुआ गद्दा।

तूलिनी, तूलिफला-(सं०स्त्री०)शालमली; सेम्हर का वृक्ष।

तूली-(सं०स्त्री०) नील का वृक्ष, चित्रकार की रंग भरने की कूंची, जुलाहे की कूंची।

तूवर-(सं०पुं०) कसैला रस (वि०) कसैले रस का।

तूवरक-(सं०पुं०) बिना सींघ का बैल, बिना दाढ़ी मोछ का मनुष्य।

तूवरिका, तूवरी-(सं० स्त्री०) गोपीचन्दन, अरहर।

तूष्णी-(हिं०वि०)मौन, चुप; **तूष्णीक**-(सं०वि०)मौन साधने वाला। **तूष्णीं**-(सं०अव्य०) मौन चुप। **तूष्णीभूत**-(सं०वि०) मौन, चुपचाप।

तूस-(हिं०पुं०) भूसी, भूसा, पहाड़ी बकरे का ऊन, तूस के ऊन का जमाया हुआ कंबल; **तूसदान**-(हिं०पु०) कारस्तूस।

तूसना-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, तृप्त होना।

तृख-(सं०नपुं०)जातीफल, जायफल।

तृखा-(हिं०स्त्री०)देखो तृषा, प्यास।

तृजग-(हिं०वि०) देखो तिर्यक्, टेढा।

तृहण-(सं०नपुं०) हत्या।

तृण-(सं०नपुं०) नरकट, सरपत, घास, एक प्रकार का कपूर; **तृण गहना या पकड़ना**-हीनता दिखलाना; **तृण तोड़ना**-सम्बन्ध तोड़ना; **तृणवत्**-अत्यन्त क्षुद्र; **तृणक**-(सं०नपुं०)थोड़ा सा तृण, चेना धान **तृणकर्ण**-(सं०पु०)एक ऋषि का नाम

तृणकाण्ड-(सं०नपुं०) घास की ढेर।

तृणकीय-(सं०वि०) घास से उत्पन्न।

तृणकुङ्कुम-(सं०नपुं०) एक प्रकार की सुगन्धित वास; **तृणकुटी**-(सं०स्त्री०) तृण से छाई हुई मड़ई; **तृणकट**-(सं०नपुं०) घास की ढेर; **तृणकर्म**-(सं०पुं०) श्वेततुंबी; **तृणकेतकी**-(सं०स्त्री०) वंशलोचन; **तृणकेतु, तृणकेतुक**-(सं०पुं०) ताल वृक्ष, बांस; **तृणकेसर**-(सं०नपुं०) एक प्रकार की सुगन्धित घास; **तृणगण**-(सं०पुं०) एक प्रकार का समुद्री केंकड़ा; **तृणगन्धा**-(सं०स्त्री०) शालपर्णी लता; **तृणगोधा**-(सं०स्त्री०) छिपकली, एक प्रकार की जोंक; **तृणगौर**-(सं०नपु०) एक प्रकार की सुगन्धित घास; **तृणग्राही**-(सं०पु०) नीलमणि, एक प्रकार का रत्न; **तृणचर**-(सं०पुं०) गोमेदक मणि; **तृणजम्भन्**-(सं०वि०) घास चरने वाला (वि०) तृणतुल्य; **तृणजलूका**-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का जोंक; **तृणजलौकान्याय**-नैयायिक लोक इस वाक्य का प्रयोग तब करते हैं, जब वे एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाने का दृष्टान्त देते हैं; **तृणजीवन**-(सं०वि०) जो प्राणी घास खाकर जीते हैं, **तृणता**-(सं०स्त्री०) धनुष, कमान, तृणत्व; **तृणदुह**-(सं०पुं०) बड़वानल; **तृणद्रुह**-(सं०पुं०) नारियल, ताड़ का पेड़, सुपारी, केतकी, केवड़ा, खजूर का वृक्ष; **तृणधान्य**-(सं०नपुं०) तिन्नी का चावल सावाँ; **तृणध्वज**-(सं०पु०) ताड़ का पेड़; **तृणनिम्ब**-(सं०पु०) चिरायता; **तृणप**-(सं०पुं०) एक गन्धर्व का नाम; **तृणपति**-(सं०पुं०) काला कपूर; **तृणपत्रिका, तृणपत्री**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की घास; **तृणपदी**-(सं०स्त्री०) घास के समान जड़वाली लता; **तृणपाणि**-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम; **तृणपीड़**-(सं०नपुं०) एक प्रकार का युद्ध; **तृणपुष्प**-(सं०नपुं०)ग्रन्थिपर्णी, गठिवन, **तृणपुष्पिका**-(सं०स्त्री०) सिन्दूरपुष्पी नामक घास; **तृणपूली**-(सं० स्त्री०) घास की बनी हुई चटाई; **तृणप्राय**-(सं०वि०)निकृष्ट, निकम्मा बुरा; **तृणमणि**-(सं०पुं०) एक रत्न का नाम; **तृणमत्कुण**-(सं०पुं०) प्रतिभू; **तृणमय**-(सं०वि०) घास का बना हुआ, तृणपूर्ण; **तृणमयी**-(सं०स्त्री०) तृण निर्मिता, घास की बनी हुई। **तृणमल्लिका**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का चमेली का फूल; **तृणमृद्ग**-(सं०पु०) एक प्रकार का काला धान; **तृणमुस्तिका**-(सं०स्त्री०) मोथा नामक घास; **तृणमेरु**-(सं०पुं०) रुद्राक्ष का पेड़; **तृणराज**-(सं०पु०) नरियल या ताड़ का वृक्ष, बांस, ऊख खजूर; **तृणबिन्दु**-(सं०पुं० एक ऋषि का नाम; **तृणबीज**-(सं०नपुं०) तिन्नी का धान; **तृणवृक्ष**-(सं०पुं०) नारियल, ताड़, सुपारी, केतकी, ताड़ी, खजूर; **तृणशय्या**-(सं०स्त्री०) घास का बिछौना, चटाई; **तृणशीत**-(सं०नपुं०) रोहित घास जिसमें से नीबू के समान गन्ध निकलती है; **तृणशीता**-(सं०स्त्री०) जल पिप्पली; **तृणशून्य**-(सं०नपु०) केवड़ा, चमेली, नारंगी (वि०) बिना घास का; **तृणशूली**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की लता; **तृणशोणित**-(सं०नपुं०) रोहित घास; **तृणशोक**-(सं०पु०) एक प्रकार का साँप; **तृणषट्पद**-(सं०पु०) एक प्रकार का कीड़ा; **तृणसारा**-(सं०स्त्री०) केले का पेड़; **तृणसिंह**-(सं०पु०) कुठार, कुल्हाड़ी; **तृणस्कन्द**-(सं०वि०) चंचल स्वभाव का; **तृणहर्म्य**-(सं०पुं०) वह अटारी जिसपर फूस की छाजन हो।

तृणाग्नि-(सं०पुं०) घासफूस की आग।

तृणाञ्जन-(सं०पुं०)कृकलास, गिरगिट

तृणाढ्य-(सं०नपुं०) पर्वत पर उगने वाली घास।

तृणान्न-(सं०नपुं०) तिन्नी का चावल।

तृणाम्ल-(सं०नपुं०) नोनिया नामक घास।

तृणारणिन्याय-(सं० पुं०) न्याय भेद, तृण और अरणि से अग्नि उत्पन्न होने के समान अलग अलग कारणों की व्यवस्था, अग्नि उत्पन्न होने में तृण और अरणि दोनो कारण हैं परन्तु ये परस्पर निरपेक्ष हैं।

तृणावर्त-(सं०पुं०) चक्रवात, घूर्ण वायु, बवण्डर, एक दैत्य का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

तृणसृज्-(सं०नपुं०) एक सुगन्धित घास, रोहित।

तृणेन्द्र-(सं०पुं०) ताड़ का पेड़।

तृणोद्भव-(सं०पु०) तिन्नी का धान; (वि०) जो केवल घास से उत्पन्न हुआ हो।

तृणोल्का-(सं० स्त्री०) घास फूस की मसाल।

तृणौषध-(सं०नपुं०) एक गन्धद्रव्य।

तृणमान-(सं०वि०) तृण युक्त, तृण से भरा हुआ।

तृण्या-(सं०स्त्री०) घास फूस की ढेर।

तृतीय-(सं०वि०) तीसरा। **तृतीयक**-(सं०पुं०) तीसरे दिन आने वाला ज्वर, तिजरिया। **तृतीयता**-(सं०स्त्री०) तृतीयत्व, तीन का भाव। **तृतीयप्रकृति**-(सं० स्त्री०) क्लीव, नपुंसक, हिजड़ा। **तृतीयांश**-(सं०पुं०) तीसरा भाग या हिस्सा। **तृतीया**-(सं०स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि, तीज, व्याकरण मे करण कारक। **तृतीयाकृत**-(सं०वि०) तीन बार जोता हुआ खेत। **तृतीयाप्रकृति**-(सं०स्त्री०) देखो तृतीय प्रकृति। **तृतीयाश्रम**-(सं०पुं०) वानप्रस्थ आश्रम।

तृन-(हिं०पुं०) देखो तृण।

तृदिल-(सं०वि०)भेदक, फूट या विग्रह कराने वाला।

तृपत्-(सं०पुं०) इन्द्र, चन्द्रमा, छत्र।

तृपति-(हिं०स्त्री०) देखो तृप्ति।

तृपल-(सं०वि०) चंचल, तीव्र।

तृपला-(सं०स्त्री०) देखो त्रिफला।

तृपित-(हिं०वि०) देखो तृप्त, सन्तुष्ट।

तृपिता-(हिं०स्त्री०) तृप्ति।

तृप्त-(सं०वि०) तृप्ति युक्त, जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो, प्रसन्न, अघाया हुआ।

तृप्ता-(सं०स्त्री०) गायत्री का एक भेद।

तृप्ताना-(हिं०क्रि०) तृप्त होना।

तृप्ति-(सं०स्त्री०) सन्तोष, वह आनन्द और शान्ति जो इच्छा पूर्ण होने पर प्राप्त होती है, प्रसन्नता, आकांक्षा की निवृत्ति; **तृप्तिकर**-(सं०वि०) सन्तोष देने वाला; **तृप्तिदा**-(सं०स्त्री०) गायत्री का एक भेद; **तृप्तिवत्**-(सं०वि०) तृप्ति युक्ति (नपुं०) जल।

तृप्र-(सं०पुं०) घृत, घी, पुरोडाश, (वि०) सन्तुष्ट करने वाला।

तृफला-(हिं०स्त्री०) हर्रा, बहेड़ा और आमला ये तीन फल।

तृफू-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का सर्प।

तृमा-(हिं०पुं०) भूसी, चोंकर।

तृषा-(सं०स्त्री०) आकांक्षा, अभिलाषा,

इच्छा, लोभ, प्यास, कामदेव की कन्या। **तृषालु, तृषालु**-(सं०वि०) पिपासित, प्यासा। **तृषावंत**-(हिं०वि०) प्यासा।
तृषाह-(सं०नपुं०) जल, पानी, एक प्रकार की सौंफ।
तृषित-(सं०वि०)प्यासा, लोभी, लालची, अभिलाषी, इच्छायुक्त।
तृष्ट-(सं० वि०) तृषित, प्यासा।
तृष्णज्-(सं०वि०) लोभी, प्यासा।
तृष्णा-(सं०स्त्री०) प्यास, अप्राप्त अभिलाषा, लिप्सा, लोभ, लालच; **तृष्णा-क्षय**-शान्ति; **तृष्णाघ्न**-तृष्णा नाशक, जल; **तृष्णार्त**-प्यास के मारे छटपटाता हुआ; **तृष्णारि**-पित्तपापड़ा; **तृष्णातुर**-पिपासा युक्त, प्यासा; **तृष्णाल**-लोभी, लालची, प्यासा।
तृसी-(हिं०(वि०)भूसे के रंग का, करंजई
तृस्त-(सं०नपुं०) धूलि, धनुष, अणु कण।
तेईस-(हिं०वि०) देखो तेइस। **तेईस**-(हिं०वि०) बीस और तीन की संख्या का (पुं०) बीस और तीन की संख्या २३। **तेईसवां**-(हिं०वि०) जो क्रम से तेईस के स्थान पर हो।
तें-(हिं०प्रत्य०) से द्वारा।
तेंतरा-(हिं०पुं०) बैलगाड़ी के फड़ के नीचे लगी हुई लकड़ी।
तेंतालिस, तेंतालिसवां-देखो तेतालीस तेंतालीसवां। **तेंतालिस**-(हिं०वि०) चालीस और तीन की संख्या का (पुं०) चालीस और तीन की संख्या ४३। **तेंतीलसवां**-(हिं०वि०) जो क्रम में तेंतालीस के स्थान पर हो
तेंतिस, तेंतिसवां-देखो तेतीस, तेतीसवां, **तेंतीस**-(हिं०वि०) तीस और तीन की संख्या का (पुं०) तीस और तीन की संख्या ३३, **तेंतीसवां**-(हिं०वि०) जो क्रम से तेंतीसवें स्थान पर हो।
तेंदुआ-(हिं०पुं०) चीते की जाति का एक हिंसक पशु।
तेंदू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली वृक्ष, इस वृक्ष की काली लकड़ी आबनूस कहलाती है।
ते-(हिं०अव्य०) वे, (सर्व०) वे लोग।
तेखना-(हिं०क्रि०) रोष दिखलाना, क्रुद्ध होना।
तेज, तेजस्-(सं०नपुं०) दीप्ति, कान्ति, चमक, प्रभाव, बल, पराक्रम, वीर्य, शरीर की चमक, दमक, मक्खन, पित्त, अग्नि, सोना, प्रताप, साहस, सामर्थ्य, शत्रु का वह गुण जिससे विजय प्राप्त नहीं हो सकता, वह आज्ञा जो उल्लंघन नहीं की जा सकती, चैतन्यात्मक ज्योति, लिंग शरीर, पंच महाभूतों में से तीसरा।
तेजःपुञ्ज-(सं०पुं०) आभाका समूह।
तेजधारी-(हिं०वि०) तेजस्वी प्रतापी।
तेजन-(सं०पुं०) सरपत, मूंज, (नपुं०) उत्पन्न करने की क्रिया, भोजन, चटाई। **तेजनक**-(सं०पुं०) शरतण, सर्पत। **तेजनाख्य**-(सं०पुं०) मूंज।
तेजनी-(सं०स्त्री०) मूर्वालता, चांब, मालकंगनी।
तेजपत्र, तेजपात-(हिं०पुं०) दारचीनी की जाति का एक वृक्ष जिसकी जड़ और छाल में सुगन्ध होती है।
तेजबल-(हिं० पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी कांटेदार वृक्ष।
तेजवती-(सं०स्त्री०) देखो तेजबल।
तेजवन्त, तेजवान-(हिं०वि०)तेज युक्त, तेजस्वी, वीर्यवान, बली, चमकीला।
तेजस्-(सं०नपुं०) देखो तेज।
तेजसी-(हिं०वि०)तेज युक्त, तेजस्वी।
तेजस्कर-(सं०वि०) तेजकी वृद्धि करने वाला।
तेजस्य, तेजस्व-(सं० पुं०) शिव, महादेव।
तेजस्वत्-(सं०वि०)तेज युक्त, तेजस्वी।
तेजस्वती-(सं०स्त्री०) गुणवर्मा की कन्या का नाम, गजपीपल, मालकगनी।
तेजस्विता-(सं०स्त्री०) प्रभावशालिता, तेजस्वी होने का भाव। **तेजस्वित्व**-(सं०नपुं०) बलवत्व, बलवान् होने का भाव।
तेजस्विनी-(सं०स्त्री०) मालकगनी।
तेजस्वी-(सं०वि०) तेज युक्त, प्रतापी, प्रभावशाली, जिसमें तेज हो (पुं०) इन्द्र के पुत्र का नाम।
तेजारत-(हिं०स्त्री०) देखो तिजारत।
तेजिका-(सं०स्त्री०) मालकगनी।
तेजित-सं०वि०) सान पर चढ़ाकर जो चोखा किया गया हो।
तेजिष्ठ-(सं०वि०) अत्यन्त प्रभावशाली
तेजीयस्-(सं०वि०) तेज युक्त, तेजस्वी।
तेजोद्वेष-(सं०पुं०) पित्त के बिगड़ने से उत्पन्न रोग।
तेजोधातु-(सं०पुं०) पित्त। **तेजोमण्डल**-(सं०नपुं०) चन्द्र अथवा सूर्य का मण्डल। **तेजोमन्थ**-(सं०पुं०) गनियारी का वृक्ष। **तेजोमय**-(सं०वि०) ज्योतिर्मय, जिसमें खूब चमक हो।
तेजोमात्रा-(सं०स्त्री०)चमकीला भाग;
तेजोमूर्ति-(सं०पुं०) सूर्य (वि०) जिसमें अधिक तेज हों तेज से परिपूर्ण।
तेजोराशि-(सं०पुं०) तेज का समूह।
तेजोरूप-(सं०नपुं०) जो अग्नि या तेजरूप हो ब्रह्म। **तेजोवती**-(सं०स्त्री०) गजपिप्पली, मालकंगनी। **तेजोविन्दु**-(सं०पुं०) एक उपनिषद् का नाम।
तेजोबीज-(सं०नपुं०) मज्जा। **तेजोवृक्ष**-(सं०पुं०) अरणी का वृक्ष।
तेतना-(हिं० वि०) तितना, उतना।
तेता-(हिं०वि०) उस प्रमाण का, उतना
तेतीस-(हिं०वि०) देखो तेंतीस।
तेतालीस-(हिं०वि०) देखो तेंतालीस।
तेतिक-(हिं०वि०)उसका, उस प्रमाण का
तेतो-(हिं०वि०) देखो तेता।
तेन-(सं०पुं०) गान का एक अङ्ग।
तेम-(सं० पुं०) आर्द्रता, गीलापन।
तेमन-(सं०नपुं०) गीला करने की क्रिया, पका हुआ भोजन।
तेमनी-(सं०स्त्री०) चूल्हा।
तेमरू-(हिं०पुं०)तेंदूका पेड़, आबनूस।
तेरज-(हिं०पुं०)पटवारी की खतियौनी।
तेरस-(हिं०स्त्री०)किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि।
तेरह-(हिं० वि०) दस और तीन की संख्या का (पुं०) दस और तीन की संख्या १३। **तेरहवां**-(हिं०वि०) जो क्रम मे तेरह के स्थान में हो, तेरहीं।
तेरहीं-(हिं०स्त्री०) किसी मनुष्य के मृत्यु के दिन से तेरहवीं तिथि जिस दिन हिन्दूलोग पिण्ड दान ब्राह्मण भोजनादि करते हैं और इस दिन दाह करने वाला और मृतक व्यक्ति के परिवार शुद्ध होते हैं।
तेरा-(हिं०सर्व०) सबंध कारक सर्वनाम का मध्यम पुरुष एक वचन।
तेरुस-(हिं०अ०) देखो त्योरुस, तेरस।
तेरे-(हिं०अव्य०) से।
तेरो-(हिं०सर्व०) तेरा।
तेल-(हिं०पुं०)किसी बीज या वनस्पति आदि से निकाला हुआ स्निग्ध पदार्थ, तैल, विवाह काल में वर और कन्या के शरीर में हल्दी और तेल मिलाकर लगाने की रीति; **तेल उठना(चढ़ना)**-तेल लगाने की रीति पूरा होना।
तेलगू-(हिं०स्त्री०) तैलंग देश, की भाषा।
तेलङ्ग-(सं०पुं०) तैलङ्ग देश, तैलङ्ग देश के मनुष्य।
तेलवाई-(हिं० पुं०) विवाह के समय तेल लगाने की प्रथा।
तेलसुर-(हिं०पुं०)एक प्रकारका जंगली वृक्ष।
तेलहंडा-(हिं०पुं०) तेल रखने का बड़ा पात्र। **तेलहंडी**-(हिं०स्त्री०)तेल रखने का छोटा पात्र। **तेलहन**-(हिं०पुं०) वे बीज जिनमें से तेल निकाला जाता है।
तेलहा-(हिं०वि०)तेल युक्त, जिसमें तेल पड़ा हो (पुं०) एक प्रकार का अचार
तेला-(हिं० पुं०) तीन दिन रात का उपवास।
तेलिन-(हिं०स्त्री०) तेली की स्त्री, एक प्रकार का बरसाती कीड़ा जिसके स्पर्श से शरीर में छाला पड़ जाता है।
तेलियर-(हिं०पुं०)काले रंग का पक्षी।
तेलिया-(हिं०वि०) जो तेल की तरह चिकना और चमकीला हो, (पुं०) काला चमकीला रंग, काले चमकीले रंग का घोड़ा, एक प्रकार का बबूल एक प्रकार की छोटी मछली, सींगिया नामक विष।
तेलियाकन्द-(हिं० पुं०) एक प्रकार का कन्द; देखो तैलकन्द। **तेलियाकत्था**-(हिं०पुं०) एक प्रकार की काली खैर। **तेलियाकुम्मैत**-(हिं० पुं०)घोड़े का रंग जो अधिक कालापन लिये लाल होता है, उस रंगका घोड़ा
तेलियापखान-(हिं०पुं०) चिकना काला पत्थर। **तेलियापानी**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत खारा पानी।
तेलियासुरग-(हिं०पुं०) देखो तेलिया कुम्मैत। **तेलिया सोहागा**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का चिकना सोहागा।
तेली-(हिं०पुं०) हिन्दुओं में एक शूद्र जाति जो सरसो, तीसी, तिल आदि पेर कर तेल निकालने का व्यवसाय करते है; **तेली का बैल**-वह मनुष्य जो सर्वदा किसी न किसी काम में लगा रहता है।
तेवट-(हिं०स्त्री०) एक ताल का नाम जिसमें सात दीर्घ अथवा चौदह लघु मात्रायें होती हैं।
तेवन-(सं०नपुं०) क्रीड़ा, खेल, प्रमोद-वन, आमोद प्रमोद का स्थान (हिं० पु०) कुपित दृष्टि, भृकुटी; (स्त्री०) एक प्रकार का लहँगा।
तेवरसी-(हिं०स्त्री०)ककड़ी, खीरा, फूट।
तेवरा-(हिं०पुं०) एक ताल का नाम।
तेवरना-(हिं०क्रि०) भ्रम मे पड़ना, विस्मित होना, अचेत होना।
तेवर, तेवरी-(हिं०स्त्री०) देखो त्योरी।
तेवहार-(हिं०पुं०)देखो त्योहार, उत्सव।
तेवाना-(हिं०क्रि०) सोचना, विचारना, चिन्ता करना।
तेवान-(हिं०पुं०) चिन्ता; **तेवाना**-चिन्ता करना।
तेह-(हिं०पुं०) कोध, अहंकार, घमंड, प्रचण्डता, तीव्रता।
तेहरा-(हिं०वि०)तीन परत किया हुआ, जिसकी एक साथ तीन प्रतियां हों, जो दो बार होकर या किया जाकर तीसरी बार फिर किया जावे, त्रिगुणित, तिगुना। **तेहराना**-(हिं०क्रि०) तीन परत करना, किसी काम को तीन बार करना।
तेहवार-(हिं०पुं०) देखो त्योहार।
तेहा-(हिं०पुं०) घमंड, अहंकार, शेखी, क्रोध।
तेहि-(हिं०सर्व०) उसको, उसे।
तेही-(हिं० वि०) अभिमानी, घमंडी, क्रोध करने वाला।
तैतालिस-(हिं०वि०) देखो तैतालिस।
तैतीस-(हिं०वि०) देखो तैतीस।
तै-(हिं० क्रि०) से, तें (सर्व०) तू।
तै-(वि०) जिसका निर्णय हो चुका हो, समाप्त, जो पूरा हो चुका हो, **तै तमाम**-समाप्ति।
तैक्त-(सं०पुं०) तिक्तता, चरपराहट।
तैक्ष्ण्य-(सं०नपुं०) तीक्ष्णता, कठोरता, क्रूरता, कड़ाई, निष्ठुरता।
तैखाना-(हिं०पुं०) भूमिगृह।
तैग्म्य-(सं०नपुं०) तिग्मता, तीक्ष्णता।
तैजस-(सं०नपुं०) कोई चमकीली वस्तु घृत, घी, एक तीर्थ का नाम, पराक्रम, शरीर की वह शक्ति जो आहार को पचाकर धातु में परि-

णत करती है, (पुं०) सुमति के एक पुत्र का नाम, भगवान, एक प्रकार की शारीरिक शक्ति, वह अहंकार जो राजस अवस्था में प्राप्त होता है (वि०) तेज संबंधी, तेज से उत्पन्न; **तैजसवर्तिनी**-सोना चांदी गलाने की घरिया।

तैजसी-(सं०स्त्री०) गजपिप्पली।

तैतल-(हिं०वि०) एक ऋषि का नाम।

तैतिक्ष-(सं०वि०) क्षमाशील।

तैतिर-(सं०पुं०) तीतर पक्षी, गैंड़ा।

तैतिल-(सं०पुं०) गण्डक, गैंड़ा (नपुं०) फलित ज्योतिष के ग्यारह करणों में से चौथा करण, देवता।

तैत्तिर-(सं०नपुं०) तीतर पक्षी, गैंड़ा।

तैत्तिरि-(सं०पुं०) कृष्ण यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम। **तैत्तिरीय**-(सं०पुं०) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा, इस शाखा का उपनिषद्। **तैत्तिरीयक**-(सं०पुं०)तैत्तिरीय शाखा का पढ़ने वाला। **तैत्तिरीया**-(सं० स्त्री०)यजुर्वेद की एक शाखा। **तैत्तिरीयारण्यक**-(सं०पुं०)तैतिरीय शाखा का आरण्यक अंश जिसमें वानप्रस्थों के लिये अनेक उपदेश लिखे हैं।

तैत्तिल-(हिं०पुं०) देखो तैतिल।

तैनाती-(हिं०स्त्री०) नियुक्ति।

तैन्तिडीक-(सं०स्त्री०) इमली का रस, वह व्यंजन जिसमें इमली मिली हो।

तैमिर-(सं०पुं०) आँख का एक रोग। **तैमिरिक**-(सं०वि०) जिसको तिमिर रोग उत्पन्न हुआ हो।

तैया-(हिं०पुं०) मिट्टी का छोटा बरतन जिसमें छीपी रंग रखते है।

तैयारी-(हिं०स्त्री०) तत्परता, समारोह, सजावट, धूमधाम, शरीर हृष्टपुष्ट होना।

तैयो-(हिं०क्रि०वि०)देखो तऊ, तौभी।

तैर-(सं०नपुं०) कुलत्थ, कुलथी।

तैरणी-(सं०स्त्री०)एक प्रकार की लता।

तैरना-(हिं०क्रि०) पानी के ऊपर ठहरना, उतराना, हाथ पैर हिलाते हुए पानी में चलना; **तैराई**-(हिं० स्त्री०) तैरने की क्रिया। **तैराक**-(हिं० वि०) तैरनेवाला, जो तैरना अच्छी तरह जानता हो। **तैराना**-(हिं०क्रि०) तैरने का काम दूसरे से कराना, घुसाना, धँसाना।

तैर्थ-(सं०वि०)तीर्थ में सम्बन्धी। **तैर्थिक**-(सं०वि०) तीर्थ में उत्पन्न होने वाला, (पुं०) कपिल, कणाद आदि शास्त्रकार। **तैर्थ्य**-(सं०वि०)तीर्थ के पासका

तैलंग-(हिं०पुं०)भारत के दक्षिणके एक देश का नाम जहाँ की भाषा तेलगू कहलाती है।

तैलंगी-(हिं०पुं०)तैलङ्ग देशका निवासी, इस देश की भाषा।

तैल-(सं०नपुं०) तेलहनसे निकाला हुआ तरल पदार्थ, तेल; **तैलक**-(सं० नपुं०) थोड़े परिमाण का तेल; **तैलकन्द**-(सं०पुं०) करवीर कन्द; **तैलकल्कज**-(सं० पुं०) तैलकिट्ट; खली; **तैलकार**-(सं० पुं०) तेल पेरनेवाला, तेली; **तैलकिट्ट**-(सं० नपुं०) तेल का मैल, खली; **तैलकीट**-(सं० पुं०) तेलिन नामक कीड़ा; **तैलचोरिका, तैलचौरिका**-(सं० स्त्री०) तैलकीट, तेल का कीड़ा; **तैलत्व**-(सं० नपुं०) तैल का भाव या गुण; **तैलद्रोणी**-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का काठ का बड़ा पात्र जिसमें प्राचीन काल में चिकित्सा के लिये मनुष्य लिटा दिये जाते थे और इसमें औषधि का तेल भर दियाजाता था; **तैलधान्य**-(सं० नपुं०) सरसों, राई, खसखस और कुसुम के बीज **तैलनिर्यास**-(सं०पुं०) गन्धराज;**तैलनी**-(सं०स्त्री०) तैलकिट्ट, खली; **तैलपक**-(सं० पुं०) तेलिन नाम का कीडा; **तैलपर्णक**-(सं०पुं०) ग्रन्थिपर्ण (गठिवन) वृक्ष; **तैलपर्णिक**-(सं० नपुं०) लाल चन्दन, **तैलपर्णी**-(सं०स्त्री०)सलई की गोंद, चन्दन,तुरुष्क नामक गन्धद्रव्य; **तैलपा**-(सं० स्त्री०) तेल का कीड़ा; **तैलपायिका, तैलपायी**-(सं० स्त्री०) झींगुर चपड़ा; **तैलपिञ्ज**-(सं०पुं०) तिल का वह वृक्ष जिसमें फलफूल नहीं लगते। **तैलपिष्ठक**-(सं० पुं०) खली; **तैलफल**-(सं०पुं०)इंगुदी,बहेड़ा; **तैलभाविनी**-(सं० स्त्री०) चमेली का पेड़; **तैलमर्दन**-(सं० नपुं०) शरीर में तेल मलना; **तैलमाली**-(सं०स्त्री०)तेल की बत्ती, पलीता; **तैलयन्त्र**-(सं०पुं०) तेल पेरने का कोल्हू; **तैलवल्ली**-(सं० स्त्री०) छोटी सतावर; **तैलसाधन**-(सं०नपुं०) शीतलचीनी; **तैलस्फटिक**-(सं० पुं०) अम्बर नामक गन्धद्रव्य।

तैलाक्त-(सं० वि०) जिसमें तेल पोता हुआ हो।

तैलागुरु-(सं०पुं०) अगर की लकड़ी। **तैलांग**-(सं० पु०) बकुल, मौलसिरी का वृक्ष।

तैलाटी-(सं०स्त्री०) बर्रें, भिड़।

तैलाधार-(सं०पुं०)तेल रखने का पात्र **तैलाभ्यंग**-(सं० पु०) शरीर में तेल मलना। **तैलाम्बुका**-(सं०स्त्री०)झींगुर, चपड़ा।

तैलिक-(सं० पुं०) तेल पेरनेवाला, तेली; **तैलिक यन्त्र**-(सं० पुं०) तेल पेरने का कोल्हू।

तैलिन-(सं० वि०) तेल मिला हुआ, तैलयुक्त। **तैलिनी**-(सं०स्त्री०)तैलकिट्ट, तेल की बत्ती। **तैलिशाला**-(सं०स्त्री०) तेल पेरने का कार्यालय।

तैलीन-(सं०पुं०) तिल का तेल।

तैष-(सं०पुं०) पौष मास पूस का महीना **तैषी**-(सं०स्त्री०) पूस महीने की पूर्णिमा

तैसा-(हिं०वि०) उस प्रकार का, वैसा। **तैसे**-(हिं०क्रि०वि०) उस प्रकारसे,वैसे

तों-(हिं०क्रि०वि०) देखो त्यों।

तोंअर-(हिं०पुं०) देखो तोमर।

तोंद-(हिं०स्त्री०) पेट के आगे का बढ़ा हुआ भाग, पेटका फुलाव। **तोंदल**-(हिं०वि०) तोंदवाला, जिसका पेट आगे की ओर खूब फूला हो।

तोंदा-(हिं०पुं०) तालाव का पानी निकालने का मार्ग, लक्ष्य का अभ्यास करने के लिये मिट्टी की भीत या टीला, राशि, ढेर।

तोंदी-(हिं०स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी।

तोंदीला, तोंदैल-(हिं०वि०) देखो तोंदल

तोंबा-(हिं०पुं०) देखो तुम्बा। **तोंबी**-(हिं०स्त्री०) देखो तुम्बी।

तो-(हिं०सर्व०) तेरा (अव्य०) उस स्थिति में तब; (अव्य०) ज़ोर देने के लिये भी इस शब्द का प्रयोग होता है; (सर्व०) तुझ (वृजभाषा में प्रयोग होता है।

तोइ-(हिं०पुं०) तोय, जल, पानी।

तोई-(हिं०स्त्री०) वह पट्टी जो कुरते आदि के कमर के भाग में लगाई जाती है, चादर आदि में लगाने की गोंट।

तोक-(सं०पुं०) अपत्य, लड़का या लड़की, छोटा बालक।

तोकक-(सं०पुं०) नीलकण्ठ पक्षी।

तोकरा-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लता

तोक्म-(सं०पुं०) हरा रग मेघ, बादल, (नपुं०)कान का खूट, जव का नया अकुर

तोख-(हिं०पुं०) सन्तोष; **तोखना**-सन्तुष्ट करना।

तोटक-(सं०पुं०) एक वृत्त का नाम।

तोटका-(हिं०पुं०) देखो टोटका।

तोड़-(हिं०पुं०) तोड़ने की क्रिया, नदी की तीव्र धारा, प्रतीकार, मारक, दही का पानी, मल्लयुद्ध की वह युक्ति जो दूसरे पेंच को रद्द कर देती हो, वार। **तोड़जोड़**-(हिं०पुं०) युक्ति, विधि, चाल।

तोड़न-(सं०नपुं०) छेद करने की क्रिया, चीरने का काम, मारने का काम। **तोड़ना**-(हिं०पुं०) भग्न करना, टुकड़े करना, किसी वस्तु के अंग को अलग करना, किसी अंश को बेकाम करना, किसी संस्था या संगठन को नष्ट करना, स्थिर न रहने देना, अलग करना, दूर करना, सिद्धान्त के विरुद्ध आचरण करना, दुर्बल करना, सेंध लगाना, कुमारीत्व नष्ट करना, किसी वस्तु के खरीदने के लिये दाम घटाकर तय करना।

तोड़ल-(सं०नपुं०) तन्त्र का एक भेद।

तोड़तोड़ा-(हिं०पुं०) सोने या चांदीकी चौड़ी लच्छेदार सिकड़ी जो हाथों में पहिरी जाती है, रुपया रखने की टाट की थैली, किनारा, तट, नदी के संगम पर बना हुआ मैदान, घाटा, टोटा, कमी, रस्सी का टुकड़ा, हल में की लंबी लकड़ी, हरिस, पलीता, आग निकालने का लोहा जो चकमक पत्थर पर मारा जाता है; **तोड़े उलटना**-बहुत सा धन देना; **तोड़ेदार बंदूक**-वह पुराने चाल की बंदूक जो पलीता जलाकर छोड़ी जाती थी।

तोड़ाई-(हिं० स्त्री०) देखो तुड़ाई।

तोड़ाना-(हिं०क्रि०) देखो तुड़ाना।

तोड़ी-(सं०स्त्री०) एक प्रकारकी रागिणी (हिं०स्त्री०) एक प्रकार की सरसों।

तोण-(हिं०पुं०) तूण, तरकश।

तोतई-(हिं० वि०) तोते के रग का, धानी रंग का।

तोतरंगी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया।

तोत-(हिं०पुं०) राशि, ढेर। **तोतकर**-(हिं०पुं०) पपीहा।

तोतर, तोतरा-(हिं०वि०)देखो तोतला **तोतराना**-(हिं० क्रि०) देखो तुतलाना। **तोतला**-(हिं० वि०) तुतला कर बोलने वाला, अस्पष्ट बोलने वाला।

तोती-(हिं०स्त्री०) तोते की मादा, सुग्गी, उपपत्नी, रखनी।

तोत्र-(सं०नपुं०) जानवरोंको हाँकने की छड़ी या चाबुक।

तोद-(सं०पुं०) व्यथा,पीड़ा, (वि०)कष्ट पहुँचाने वाला। **तोदन**-(सं०नपुं०) चमोटी, चाबुक, कोड़ा व्यथा, पीड़ा, एक प्रकार का वृक्ष।

तोदपत्री-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का खराब धान।

तोपचीनी-(हिं०स्त्री०)देखो चोबचीनी।

तोपड़ा-(हिं०पुं०)एक प्रकार का कबूतर

तोपना-(हिं०क्रि०)ढाँपना, बन्द करना।

तोपा-(हिं०पुं०)एक प्रकारकी सिलाई।

तोपाना-(हिं० क्रि०) ढाँपने का काम दूसरे से कराना।

तोपास-(हिं०पुं०) झाड़ू देने वाला।

तोफा-(हिं०पुं०) सुन्दर।

तोम-(हिं०पुं०) समूह, ढेर।

तोमड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो तूंबड़ी।

तोमर-(सं० पुं०) भाले की तरह का भारत का एक प्राचीन अस्त्र, बाँस की मूठ का बरछा, एक प्राचीन देश का नाम, एक प्रकार का छन्द जिसमें नव मात्रायें रहती हैं राजस्थान का एक प्राचीन राजपूत क्षत्रिय राजवंश।

तोमरधर-(सं०पुं०) तोमरधारी योद्धा।

तोमरिका-(सं०स्त्री०) गोपीचन्दन।

तोय-(सं०नपुं०) जल, पानी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र; **तोयकर्म**-तर्पण; **तोयकाम**-एक प्रकार की बेंत; **तोयकुम्भ**-शैवाल, सेवार; **तोयकृच्छ्र**-(सं०नपुं०) एक व्रत जिसमें जल के सिवाय कोई आहार नहीं किया जाता; **तोयक्रीड़ा**-(सं०स्त्री०)जलक्रीड़ा; **तोयचर**-(सं०पुं०) जलचर प्राणी; **तोयज**-(सं०वि०)जल से उत्पन्न; **तोयडिम्ब**-(सं०पुं०) ओला, तुषार; **तोयद**-(सं० पुं०)मेघ, बादल, नागरमोथा; (नपुं०) घृत, घी; (वि०) जल देने वाला;

तोयदागम-(सं० पुं०) वर्षाकाल, बरसात; **तोयधर, तोयधार**-(सं०पुं०) मेघ, बादल, मोथा साग; **तोयधारा**-(सं०स्त्री०) जल की धारा; **तोयधि**-(सं०पुं०) समुद्र, सागर; **तोयधिप्रिय**-लवंग, लौंग, **तोयनिधि**-(सं०पुं०) समुद्र, सागर; **तोयपर्णी**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का धान; **तोयपिप्पली**-(सं०स्त्री०) जलपिप्पली; **तोयपुष्पी**-(सं०स्त्री०) जलकुम्भी; **तोयप्रसादन**-(सं० नपुं०) निर्मली; **तोयफला**-(सं० स्त्री०) तरबूज की लता, ककड़ी; **तोयमल**-(सं०नपुं०) समुद्र का फेन; **तोयमुच्**-(सं०पुं०)मेघ, बादल, मोथा; **तोय यन्त्र**-(सं० नपुं०) जल घड़ी, फौवारा; **तोयराज, तोयराशि**-(सं० पुं०) समुद्र, सागर; **तोयवल्लिका, तोयवल्ली**-(सं०स्त्री०) करैला; **तोयबिम्ब**-(सं० नपुं०) जल में की परछाहीं; **तोयवृक्ष**-(सं०पुं०) शैवाल, सेवार; **तोयशाला**-(सं०स्त्री०) बारिशाला, पौसरा; **तोयशूका**-(सं०पुं०) शैवाल, सेवार; **तोयसपिका**-(सं० स्त्री०) मेढक; **तोयसूचक**-(सं० पुं०) ज्योतिष का वह योग जिसमें वर्षा की सूचना मिले।

तोयात्मा-(सं०पुं०) परमेश्वर।

तोयाधार-(स०पुं०) जलाशय, तालाब

तोयालय-(सं०पु०) समुद्र, सागर।

तोयेश-(सं० पुं०) वरुण, शतभिषा नक्षत्र।

तोर-(हिं०पुं०) अरहर।

तोरई-(हिं०स्त्री०) देखो तुरई।

तोरण-(सं०पु०) किसी घर या नगर का बाहरी फाटक, सजावट के लिये खंभो या दीवारों में लटकाई जाने वाली माला, बन्दनवीर, ग्रीवा,गला, गरदन, (पुं०) शिव, महादेव।

तोरण स्फटिका-(सं०स्त्री०) दुर्योधन की सभा का नाम।

तोरन-(हिं०पु०) देखो तोरण।

तोरना-(हिं०क्रि०) देखो तोड़ना।

तोरश्रवा-(सं०पुं०) अङ्गिरा ऋषि का नाम।

तोरा-(हिं०सर्व०) तेरा।

तोराना-(हिं०क्रि०) देखो तुड़ाना।

तोरावान्-(हिं०वि०)तीव्र, तेज,वेगवान्

तोरिया-(हिं०स्त्री०) गोटा बनाने वालों का बेलन जिसपर वे किनारी गोटा आदि लपेटते हैं, एक प्रकार की सरसों, वह गाय या भैंस जिसका बच्चा मर गया हो।

तोरी-(हिं०स्त्री०) देखो तुरई।

तोल-(हिं० स्त्री०) देखो तौल; (पु०) नाव का डाँडा। **तोलक**-(सं०पु०) एक तोले का परिमाण। **तोलन**-(सं०नपु०) तौलने की क्रिया, उत्तोलन, उठाने की क्रिया; (हिं०स्त्री०) चाँड़ जो छत में लगाई जाती है।

तोलना-(हिं० क्रि०) देखो तौलना।

तोलवाना-(हिं०क्रि०) देखो तौलवाना

तोला-(हिं०पुं०) बारह माशे या छानबे रत्ती की तौल, इस तौल का बाँट।

तोल्य-(सं० वि०) तोलनीय, तौलने योग्य।

तोशकखाना-(हिं०पुं०) देखो तोशखाना

तोष-(स०पु०)सन्तोष, तृप्त, प्रसन्नता, आनन्द, श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम; (वि०) अल्प, थोड़ा। **तोषक**-(स० वि०) तुष्टिकारक, सन्तुष्ट करने वाला। **तोषण**-(स०पुं०) तृप्ति, सन्तोष, सन्तुष्ट करने की क्रिया (वि०) सन्तोष जनक; **तोषना**-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट होना या करना, तप्त होना। **तोषयितव्य**-(स०वि०) सन्तुष्ट करने योग्य।

तोषल-(स०पुं०) कंस के एक पहलवान का नाम जो अमुर था, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

तोषित-(स० वि०) तप्त, सन्तुष्ट। **तोषी**-(सं० वि०) जो सन्तुष्ट करता हो, तप्त करने वाला। **तोष्य**-(सं०वि०) सन्तुष्ट करने योग्य।

तोस-(हिं०पु०) देखो तोष।

तोसक-(हिं०पु०) रूईदार गद्दा।

तोसल-(हिं०पु०) देखो तोषल।

तोसा-(हिं०पुं०) देखो तोषा।

तोसागार-(हिं०पु०) देखो तोशाखाना।

तोहरा-(हिं० सर्व०) तुम्हारा।

तोहि-(हिं०सर्व०) तुझको, तुमको, तुझे

तौंकना-(हिं०क्रि०) देखो तौंसना।

तौंस-(हिं०स्त्री०) धूप से उत्पन्न प्यास जो किसी तरह न बुझे। **तौंसना**-(हिं०क्रि०) गरमी के कारण सन्तप्त होना। **तौंसा**-(हिं०पुं०)अधिक गरमी या ताप।

तौ-(हिं०क्रि०वि०) तो (हिं०क्रि०) या।

तौक्षिक-(स०पुं०) धनुराशि।

तौचा-(हिं०पु०) सिर पर पहिरने का एक प्रकार का गहना।

तौतिक-(स० नपुं०) मोती, मोती का सीप।

तौदी-(स०स्त्री०) घृतकुमारी,घिकुआर।

तौन-(हिं०सर्व०) वह, जो, (हिं०स्त्री०) वह रस्सी जिससे गाय दूहते समय उसका बछवा गाय के पैर में बांध दिया जाता है।

तौनी-(हिं०स्त्री०) रोटी सेंकने का छोटा तवा, तई।

तौबा-(हिं०स्त्री०) देखो तोबा।

तौरा-(हिं० पु०) वह रस्सी जिससे मथानी मथी जाती है, नेत्री।

तौरयान-(सं०नपुं०)वेग से चलने वाला।

तौरि-(हिं०स्त्री०) घुमरी, चक्कर।

तौर्य-(सं० नपुं०) ढोल, मजीरा आदि बाजे।

तौल-(स० नपुं०) तुला, तराजू (पु०) तुला राशि, (हिं०स्त्री०) किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण, तौलने की क्रिया; **तौलकर**-तौलने वाला।

तौलना-(हिं०क्रि०) जोखना, तारतम्य जानना, साधना, मिलान करना, गाड़ी की पहियों को औंगना, धुरे में तेल पोतना। **तौलवाई**-(हिं०स्त्री०) देखो तौलाई। **तौला**-(हिं०पु०) दूध नापने का मिट्टी का पात्र, अन्न तौलने वाला मनुष्य, बया, मिट्टी का कोसरा; **तौलाई**-(हिं०स्त्री०) तौलने का कार्य, तौलने का शुल्क।

तौलाना-(हिं०क्रि०) तौलने का काम दूसरे से कराना।

तौलिक-(स०पुं०) चित्रकार, रंगसाज़।

तौलिया-(हिं० स्त्री०) शरीर पोंछने के काम में आने वाला मोटा अंगौछा।

तौली-(हिं०स्त्री०) चौड़े मुंह का मिट्टी का पात्र, (स०पुं०) तुला राशि, बंगाल की तेली जाति।

तौषार-(स०पु०) पाले का पानी (वि०) पाला संबंधी।

तौसना-(हिं० क्रि०) गरमी के कारण व्याकुल होना।

त्यक्त-(स० वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, उत्सृष्ट। **त्यक्तव्य**-(स० वि०) त्याग करने योग्य। **त्यक्ता**-(सं०वि०) त्याग करने वाला, छोड़ने वाला।

त्यगल-(स०पुं०) पुस्तक लिखने वाला

त्यजन-(सं०नपुं०) त्याग, छोड़ने का काम। **त्यजनीय**-(स० वि०) त्याग करने योग्य। **त्यज्यमान**-(सं०वि०) जो छोड़ दिया जावे।

त्यद्-(सं०त्रि०) वायु, आकाश,प्रसिद्ध।

त्याग-(स० पुं०) उत्सर्ग, किसी पदार्थ पर से अपना अधिकार हटा लेने की क्रिया, छोड़ने का काम, दान, विवेकी पुरुष, वैराग्य उत्पन्न होने पर सब सांसारिक विषयों को छोड़ने की क्रिया, सम्बन्ध न रखने की क्रिया, कन्यादान। **त्यागना**-(हिं०क्रि०) त्याग करना, छोड़ना। **त्यागपत्र**-(सं०नपुं०) दानपत्र, वह पत्र जिसमें किसी तरह के त्याग का उल्लेख हो, दारपरित्याग। **त्यागवान्**-(स०वि०) त्यागी, जिसने त्याग किया हो।

त्यागशील-(सं०वि०) दानशील, उदार, दानी।

त्यागी-(स० वि०) सांसारिक सुख को छोड़ने वाला, विरक्त, दाता, दानी, शूर।

त्याज्य-(सं० वि०) वर्जनीय, छोड़ने योग्य, दान के योग्य।

त्यादृश-(सं०वि०)तादृश, उसके समान, वैसा।

त्यार-(हिं०वि०) देखो तैयार।

त्यू त्यों-(हिं०क्रि०वि०) उसी प्रकार से, उसी तरह से, उसी समय, तत्काल।

त्योरस-(हिं० पु०) पिछला अथवा आगामी तीसरा वर्ष।

त्योरी-(हिं० स्त्री०) दृष्टि, चितवन, अवलोकन; **त्योरी चढ़ाना या बदलना**-आँख चढ़ाना, ऐसी आँख बनाना जिससे क्रोध जान पड़े।

त्योहार-(हिं० पु०) धार्मिक अथवा जातीय उत्सव दिन, पर्व का दिन।

त्योहारी-(हिं०स्त्री०) त्योहार के उपलक्ष मे छोटे लड़कों को, बहू बेटियों को अथवा नौकरों को मिठाई धन इत्यादि देना।

त्यौं-(हिं०क्रि०वि०) देखो त्यों, उसी प्रकार से।

त्यौनार-(हिं०पु०) ढंग, विधि।

त्यौर-(हिं०पुं०) देखो त्योरी।

त्यौराना-(हिं० क्रि०) सिर में चक्कर आना, माथा घूमना।

त्यौरस-(हिं०पु०) देखो त्योरस।

त्यौहार-(हिं०पु०) देखो त्योहार, पर्व-दिन। **त्यौहारी**-(हिं० स्त्री०) देखो त्योहारी।

त्रपा-(सं०स्त्री०)लज्जा, लाज, कुटिला, छिनाल स्त्री, कीर्ति, यश, कुल, वंश, (वि०) लज्जित; **त्रपाक**-(सं० पुं०) नीच म्लेच्छ जाति, **त्रपानिरस्त**-(स०वि०) लज्जाहीन; **त्रपान्वित**-(सं०वि०) लज्जायुक्त; **त्रपारण्डा**-(सं०स्त्री०)वेश्या, रण्डी; **त्रपावत्**-(सं०वि०) लज्जाशील; **त्रपित**-(सं० वि०) लज्जित; **त्रपिष्ठ**-(सं०वि०) अत्यन्त लज्जित।

त्रपु-(सं०नपुं०) सीसा, सीसा नामक धातु।

त्रपुटी-(स०स्त्री०) छोटी इलायची।

त्रपुल, त्रपुष-(सं०नपु०) रङ्ग, राँगा।

त्रपुषी-(स०स्त्री०) ककड़ी, खीरा।

त्रपुस-(सं०नपुं०) रांगा ककड़ी।

त्रपुसी-(सं०स्त्री०)बड़ा इन्द्रायण खीरा।

त्रय-(सं०नपुं०) त्रितय, तीसरी संख्या।

त्रयी-(स०स्त्री०)तीन वस्तुओं का समूह, ऋक् यजुः और साम ये तीनों वेद, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सोमराजी लता, भवानी, दुर्गा। **त्रयीधर्म**-(सं०पुं०) वैदिक धर्म। **त्रयीमय**-(सं०पुं०) सूर्य, परमेश्वर। **त्रयीमुख**-(स० पुं०) ब्राह्मण।

त्रयोदशी-(सं० स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की तेरहवीं तिथि, तेरस।

त्रष्टा-(सं०पुं०) तष्टा, तश्तरी।

त्रस-(स०नपुं०) बन, जंगल।

त्रसन-(सं० नपुं०) उद्वेग, भय, डर।

त्रसरेणु-(सं०पु०) वे सूक्ष्म कण जो छोटे छोटे छेद में से धूप में नाचते हुए दीख पड़ते हैं, परमाणु (स्त्री०) सूर्य की एक पत्नी का नाम।

त्रसाना-(हिं०क्रि०)धमकाना, डराना।

त्रसित-(सं०वि०)भयभीत, डरा हुआ, पीड़ित।

त्रसुर-(सं०वि०) भीरु, डरपोक।

त्रस्नु-(सं०वि०) त्रास युक्त,डरा हुआ।

त्राटक-(सं०पुं०) योग के षट्कर्मों में से छठाँ साधन।

त्राण-(सं०नपुं०) रक्षण, रक्षा, बचाव रक्षा करने का साधन, कवच;

त्राणकर्ता-(सं० पुं०) रक्षक, रक्षा करने वाला।
त्रात-(सं०वि०) रक्षित, रक्षा किया हुआ। **त्रातव्य**-(सं०वि०) रक्षा करने योग्य। **त्राता-त्रातार**-(सं०पुं०) रक्षक, बचाने वाला।
त्रापुष-(सं०पुं०) राँगे का बना हुआ पात्र
त्रायमाण-(सं०वि०) रक्ष्यमाण, बचाने वाला, (स्त्री०) एक प्रकार की लता का नाम। **त्रायमाणा**-(सं०स्त्री०) बलभद्रा नामक लता।
त्रायवृन्त-(सं०पुं०) गुंडरी नामक शाक
त्रास-(सं० पु०) डर, भय, कष्ट, **त्रासक, त्रासकर**-(सं०पुं०) भयभीत करनेवाला, डरानेवाला, निवारक, दूर करने वाला।
त्रासदायी-(सं०वि०)भयदाता,डरानेवाला
त्रासदिष्ट-(सं०पुं०) कुत्ते के काटने से उत्पन्न रोग।
त्रासन-(सं०नपुं०) भयोत्पादन, डराने का काम। **त्रासनीय**-(सं०वि०) ताड़नीय, दण्ड देने योग्य। **त्रासना**-(हिं०क्रि०) भय दिखलाना, डराना। **त्रासित**-(सं०वि०) त्रस्त, भयभीत, डराया हुआ।
त्राहि-(सं०क्रि०) रक्षा करो, बचाओ
त्रि-(सं०वि०) तीन; त्रिकाल-भूत, भविष्य, वर्तमान; **त्र्यग्नि**-दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय; **त्रिभुवन**-स्वर्ग, मर्त्य, पाताल; **त्रिगुण**-सत्य, रज, तम; **त्रिराम**-परशुराम, दाशरथी राम और बलराम।
त्रिंशत्पत्र-(सं०नपुं०) कोईं का फूल।
त्रिकंटक-(सं०वि०)जिसमें तीन काँटे हों
त्रिक-(सं०नपुं०) तीन का समूह, रीढ़ के बीच का भाग, कटि भाग, कमर, त्रिफला, त्रिकटु, तिरमुहानी, गोखरू, तीसरे दिन आनेवाला ज्वर, शरीर का जोड़। **त्रिककुद्**-(सं०पुं०) त्रिकूट पर्वत, विष्णु, दस दिन में होने वाला एक यज्ञ (वि०) तीन सींग वाला।
त्रिककुभ-(सं०पुं०) उदान वायु जिससे छींक और डेकार आती है।
त्रिकग्रह-(सं०पुं०) एक प्रकार का वात रोग।
त्रिकट-(सं०पुं०) गोक्षुरक, गोखरू।
त्रिकटु-(सं०नपुं०) सोंठ, मिर्च, पीपल ये तीन कटु पदार्थ।
त्रिकण्ट-(सं०पुं०) गोखरू, थूहर।
त्रिकण्टक-(सं०पुं०) गोखरू, त्रिशूल।
त्रिकल-(सं०पुं०) तीन मात्राओं का शब्द, दोहे का एक भेद।
त्रिकशूल-(सं०नपुं०) एक प्रकार का वात रोग।
त्रिका-(सं०स्त्री०) कुवें के मुख पर का वह चौखटा जिसमें गराड़ी लगाई जाती है।
त्रिकाण्ड-(सं०पुं०) अमरसिंह कृत कोष का नाम, निरुक्त जिसमें नैघण्टुक, नैगम और दैवत नाम के तीन काण्ड हैं। **त्रिकाण्डी**-(सं०स्त्री०) वह ग्रन्थ जिसमें कर्म, उपासना और ज्ञान तीनों का वर्णन हो।
त्रिकाम, त्रिकाय-(सं०पुं०) बुद्धदेव।
त्रिकाल-(सं०नपुं०) भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल; प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्या; **त्रिकालज्ञ**-(सं०पुं०) सर्वज्ञ (वि०) भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञाता; **त्रिकाल दर्शक**-(सं०वि०) वह जो तीनो कालों की बात को जानता हो, त्रिकालज्ञ; **त्रिकालदर्शी**-(सं०पुं०) ऋषि, मुनि (वि०) भूत भविष्य वर्तमान को जानने वाला।
त्रिकुटी-(सं०स्त्री०) दोनों भौंहों के बीच के ऊपर का स्थान।
त्रिकूट-(सं०पुं०) तीन शिखर वाला पर्वत, वह पर्वत जिस पर लंकापुरी बसी थी (नपुं०) सेंधा नमक।
त्रिकूटा-(सं०स्त्री०) तान्त्रिकों की एक भैरवी। **त्रिकूटाह्वय**-(सं०नपुं०)काला नमक।
त्रिकूर्चक-(सं०नपुं०) अस्त्र चिकित्सा के एक प्राचीन साधन का नाम।
त्रिकोण-(सं०नपुं०) योनि, भग, जोतिष में लग्न स्थान से पाँचवाँ और नवाँ स्थान, त्रिभुज क्षेत्र, तीन कोने वाला क्षेत्र, मोक्ष; **त्रिकोण घण्टा** एक प्रकार का बाजा; **त्रिकोणफल** (सं०नपुं०) शृङ्गाटक, सिंघाड़ा, त्रिभुज का क्षेत्रफल; **त्रिकोण भवन** (सं०नपुं०) फलित ज्योतिष में लग्न से पाँचवाँ और नवाँ स्थान; **त्रिकोण मण्डल भूमि**-(सं०स्त्री०) नदी के मुहाने पर बालू मिट्टी आदि केजमने से बनी हुई भूमि, डेल्टा; **त्रिकोणमिति** (सं०स्त्री०) वह गणित शास्त्र जिसमें त्रिकोण, त्रिभुज, चतुर्भुज आदि क्षेत्रों की बाहुवर्ग, विस्तार आदि का मान निकलने की विधि बतलाई जाती है।
त्रिकोणा-(सं०स्त्री०) शृङ्गाटक वृक्ष, सिंघाड़े की लता, योनि, भग।
त्रिक्षार-(सं०नपुं०) जवाखार, सज्जीखार और सोहागे का समूह।
त्रिक्षुर-(सं०पुं०) तालमखाना।
त्रिख-(सं०नपुं०) खीरा।
त्रिखा-(हिं०स्त्री०) देखो तृषा, प्यास।
त्रिगङ्ग-(सं०पुं०) एक तीर्थ का नाम
त्रिगण-(सं०पुं०) धर्म, अर्थ और काम, त्रिवर्ग।
त्रिगम्भीर-(सं०पुं०) जिसका सत्व, स्वर और नाभि गम्भीर हो।
त्रिगर्त-(सं०पुं०) आधुनिक जालन्धर का प्राचीन नाम।
त्रिगर्ता-(सं०स्त्री०) कामुकी स्त्री, पुंश्चली, छिनाल स्त्री।
त्रिगर्तिक-(सं०पुं०) त्रिगर्त देश।
त्रिगुण-(सं०पुं०) सत्व, रज तथा तम-इन तीनो गुणों का समूह।
त्रिगुणा-(सं०स्त्री०) दुर्गा, माया, एक तन्त्रोक्त बीज का नाम; **त्रिगुणाकृत**-(सं०वि०) तीन बार जोता हुआ खेत।
त्रिगुणात्मक-(सं०वि०) जिसमें सत्व, रज और तम ये तीनो गुण हों।
त्रिगुणित-(सं०वि०) तिरावृत, तिगुना किया हुआ। **त्रिगुणी**-(सं०स्त्री०) विल्ववृक्ष, बेल का पेड़।
त्रिगूढ़-(सं० पुं०) स्त्रियों के वेश में पुरुष का नाच।
त्रिगामी(सं०स्त्री०)तीन गावोंका समूह।
त्रिघण्टा-(सं० स्त्री०) वह पर्वत जहाँ विद्याधर रहते हैं।
त्रिचक्र-(सं०पुं०) अश्विनी कुमारों का रथ।
त्रिचक्षु-(सं०पुं०) त्रिनेत्र, महादेव,शिव।
त्रिजग-(सं० पुं०) देखो तिर्यक्; पशु पक्षी और कीड़े मकोड़े; तीनों लोक।
त्रिजगत्-(सं०नपुं०) स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल ये तीनों लोक।
त्रिजट-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
त्रिजटा-(सं०स्त्री०)इस नाम की राक्षसी जो विभीषण की बहिन थी, अशोक बाटिका में यह जानकी के पास रहने के लिये रावण से नियुक्त की गई थी, बेल का वृक्ष।
त्रिजटी-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
त्रिजड़-(हिं०पुं०)कटार, तलवार, खड्ग।
त्रिजातक-(सं० नपुं०) इलायची, दारचीनी और तेजपत्ता इन तीनों औषध का समूह।
त्रिजामा-(हिं० स्त्री०) देखो त्रियामा, रात्रि।
त्रिजीवा-(सं० पुं०) चाप की ज्या जो नब्बे अंशों तक फैली हो।
त्रिज्या-(सं०स्त्री०) वह रेखा जो किसी वृत्त में केन्द्र से परिधि तक खींची गई हो, व्यासार्ध रेखा।
त्रिण-(हिं०पुं०) तृण, शष्प, घास।
त्रिणता-(सं०स्त्री०) धनुष(वि०)जो तीन स्थानों में झुका हो। **त्रिणत्व**-(सं० नपुं०) तृण का भाव, तिनकापन।
त्रिणयन-(सं०पुं०) त्रिनयन, महादेव।
त्रित-(सं० पुं०) गौतम मुनि के पुत्र का नाम।
त्रितन्त्री-(सं०स्त्री०)तीन तार की वीणा
त्रितय-(सं० नपुं०) धर्म, अर्थ तथा काम इन तीनों का समुदाय, सन्निपात ज्वर, (वि०) तीन प्रकार का।
त्रितल-(सं०वि०) तीन खण्ड का घर।
त्रिताप-(सं०नपुं०) आध्यात्मिक,आधिभौतिक तथा आधिदैविक इन तीनों प्रकार का दुःख।
त्रिदण्ड, त्रिदण्डक-(सं० पुं०) सन्यास आश्रम का चिह्न, सन्यासी का चार अंगुल का तीन दण्ड जो एक दूसरे में बँधा रहता है। **त्रिदण्डी**-(सं० पुं०) त्रिदण्डधारी यति, वह सन्यासी जो ज्ञानबलसे मन, वचन और कर्म इन तीनों को वश में कर सकता है, यज्ञोपवीत, जनेऊ। वैष्णव सन्यासी।
त्रिदल-(सं० पुं०) बिल्व वृक्ष, बेल का पेड़।
त्रिदश-(सं०पुं०) देवता, (वि०) तीस;
त्रिदशगुरु-(सं०पुं०) देवताओं के गुरु, बृहस्पति; **त्रिदशगोप**-(सं०पुं०)बीरबहूटी नामक कीड़ा, **त्रिदशत्व**-(सं० नपुं०) देवत्व; **त्रिदशादीर्घिका**-(सं० स्त्री०) आकाश गङ्गा; **त्रिदशपति**-(सं०पुं०) इन्द्र, देवताओं का राजा; **त्रिदश मञ्जरी**-(सं०स्त्री०) तुलसी; **त्रिदशवधू**-(सं० स्त्री०) अप्सरा; **त्रिदशवर्त्म**-(सं० नपुं०) नभ, आकाश।
त्रिदशाङ्कुश-(सं०पुं०)इन्द्र का वज्र।
त्रिदशाचार्य-(सं० पुं०) देवताओं के गुरु, बृहस्पति। **त्रिदशाधिप**-(सं० पुं०) देवताओं के राजा इन्द्र। **त्रिदशाध्यक्ष**-(सं०पुं०) विष्णु। **त्रिदशायन**-(सं० पुं०) देखो त्रिदशाध्यक्ष।
त्रिदशायुध-(सं० पुं०) वज्र, इन्द्रका धनुष। **त्रिदशारि**-(सं०पुं०)देवताओं के शत्रु, असुर। **त्रिदशालय**-(सं०पुं०) स्वर्ग, सुमेरु पर्वत। **त्रिदशावास**-(सं०पुं०) देखो त्रिदशालय। **त्रिदशाहार**-(सं० पुं०) अमृत, सुधा।
त्रिदशेश्वर-(सं० पुं०) देवताओं के राजा इन्द्र। **त्रिदशेश्वरी**-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।
त्रिदिनस्पृश-(सं०पुं०)वह तिथि जो तीन दिनों को स्पर्श करती है अर्थात् जिसका थोड़ा थोड़ा अंश तीन दिनों से रहता है।
त्रिदिव-(सं०पुं०)स्वर्ग, आकाश, सुख।
त्रिदिवा-(सं०स्त्री०) एला, इलायची।
त्रिदिवाधीश-(सं०पुं०) इन्द्र।
त्रिदिवेश-(सं०पुं०) देवता।
त्रिदिवोद्भवा-(सं० स्त्री०) गंगा, बड़ी इलायची।
त्रिदिवौकस्-(सं० पुं०) देवता।
त्रिदृश्-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
त्रिदोष-(सं०पुं०)वात, पित्त, और कफ, **त्रिदोषघ्न**-त्रिदोष नाशक, **त्रिदोषसम्भव**-सन्निपात रोग।
त्रिदोषना-(हिं० क्रि०) काम क्रोध और लोभ इन तीनों दोषों के फन्दे में पड़ जाना।
त्रिधनि-(सं० पुं०) एक प्रकार की रागिणी।
त्रिधर्मा-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
त्रिधा-(सं०क्रि०वि०) तीन प्रकार से, तीन तरह से।
त्रिधातु-(सं० पुं०) सोना, चाँदी और ताँबा ये तीन धातु।
त्रिधात्व-(सं०नपुं०) तीन प्रकार का भाव।
त्रिधामन्-(सं०पुं०) अग्नि, मृत्यु, शिव, विष्णु, तीनों धाम, स्वर्ग।
त्रिधामूर्ति-(सं०पुं०) परमेश्वर जिनके अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं
त्रिधारक-(सं०पुं०) नागरमोथा, कसेरु

का पेड़ : **त्रिधारास्नुही**-(सं० स्त्री०) त्रिधारा सेंहुड़ ।
त्रिधारा-(सं० स्त्री०) स्वर्ग मर्त्य और पाताल तीनों लोकों में बहनेवाली गंगा, तीन पहल वाला सेंहुड़ ।
त्रिन-(हिं०पुं०) देखो तृण, तिनका ।
त्रिनयन-(सं०पु) शिव, महादेव ।
त्रिनयना-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी ।
त्रिनाक-(सं०पु०) स्वर्ग, पुण्यलोक ।
त्रिनाभ-(सं०पुं०) विष्णु ।
त्रिनेत्र-(सं०पुं०) शिव, महादेव, सुवर्ण, सोना; **त्रिनेत्र चूड़ामणि**-चन्द्र, चन्द्रमा
त्रिनेत्रा-(सं०स्त्री०) वाराही कन्द ।
त्रिपट-(सं०पुं०) कांच, सेंधा और काला नमक ।
त्रिपत्र-(सं०पुं०) बिल्व वृक्ष, बेल का पेड़ । **त्रिपत्रक**-(सं०पुं०) पलाश का वृक्ष । **त्रिपत्रा**-(सं०स्त्री०) तिनपतिया घास ।
त्रिपथ-(सं०नपुं०) कर्म, ज्ञान और उपासना इन तीनो मार्गो का समूह, तिरमुहानी । **त्रिपथगा**, **त्रिपथगामिनी**-(सं०स्त्री०) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल इन तीनों लोकों में बहने वाली गंगा
त्रिपद-(सं०पुं०) त्रिविक्रम, परमेश्वर, तिपाई ।
त्रिभुज-(सं०वि०) तीन पद युक्त, जिसमें तीन चरण हों । **त्रिभुज**-(सं०स्त्री०) हंसपदी लता, त्रिपादयुक्त गायत्री ।
त्रिपदी-(सं०स्त्री०) गायत्री छन्द जिसके प्रत्येक पद में आठ अक्षर होते हैं, हाथ के पैर में बांधने की रस्सी, तिरपाई ।
त्रिपादिका-(सं०स्त्री०) पिताई, सकीर्ण राग कई एक भेद ।
त्रिपन्न-(सं०पुं०) चन्द्रमा के दस घोड़ों में एक ।
त्रिपर्ण-(सं०पुं०) पलास का वृक्ष (वि०) जिसमें तीन पत्ते हों । **तिपर्णिका**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मूली, आम्ल वल्ली । **त्रिपर्णी**-(सं०स्त्री०) शालपर्णी, पिठवन लता ।
त्रिपर्याय-(सं०स्त्री०) जिसमें तीन तहे हों
तिपला-(सं०स्त्री०) देखो त्रिफला ।
त्रिपाठी-(सं०पुं०) जिसने तीन वेदों का अध्ययन किया हो, त्रिवेदी, ब्राह्मणों की एक जाति, तिवाड़ी ।
त्रिपाण-(सं०पुं०) वल्कल, छाल ।
त्रिपाद-(सं०पु०) परमेश्वर, बुखार, विष्णु ।
त्रिपादिका-(सं०स्त्री०) हंसपादी लता, लाल रंग का लज्जालु, तिपाई ।
त्रिपापचक्र-ज्योतिष का वर्ष भर का एक चक्र ।
त्रिपिटक-(सं०नपुं०) बौद्धों का एक धर्मग्रन्थ जिसमें अनेक उपदेशों का संग्रह है ।
त्रिपिण्ड-(सं०नपुं०) पार्णव श्राद्ध में पिता, पितामह और प्रपितामह के उद्देश्य से दिये हुए पिण्ड ।
त्रिपिताना-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट होना या करना ।
त्रिपिब-(सं०पुं०) लंबे कान वाला बकरा ।
त्रिपिष्टप-(सं०नपुं०) स्वर्ग, आकाश ।
त्रिपिष्टपसद-(सं०पुं०) देवता ।
त्रिपुट-(सं०पुं०) तीर, किनारा, तारा, शर, खेसारी, गोखरू का पौधा ।
त्रिपुटक-(सं०पुं०) त्रिभुज ।
त्रिपुटा-(सं०स्त्री०) चमेली, बेल का वृक्ष, छोटी इलायची, निसोथ, कुलथी, एक तन्त्रोक्त देवी । **त्रिपुटी**-(सं०पुं०) खेसारी, रेंड़ का पेड़, छोटी इलायची ।
त्रितुण्ड-(सं०नपुं०) भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव लोग ललाट पर लगाते हैं ।
त्रिपुर-(सं०स्त्री०) मय दानव के बनाये हुए असुरों के तीनों नगर (पु०) बाणासुर का एक नाम । **त्रिपुरघ्न**-**त्रिपुरदहन**-(सं०पुं०) शिव, महादेव;
त्रिपुरभैरवी-(सं०स्त्री०) एक देवी का नाम; **त्रिपुरमल्लिका**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की चमेली की लता ।
त्रिपुरा-(सं०स्त्री०) कामाख्या देवी की एक मूर्ति का नाम । **त्रिपुरान्तक**, **त्रिपुरारि**-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
त्रिपुरासुर-(सं०पुं०) देखो त्रिपुर ।
त्रिपुरुष-(सं०नपु०) पिता, पितामह और प्रपितामह, (वि०) जो तीन पीढ़ी से चला आता हो ।
त्रिपुष-(सं०पुं०) ककड़ी, खीरा ।
त्रिपौलिया-(हिं०स्त्री०) देखो तिरपौलिया
त्रिप्रश्न-(सं०पुं०) दिशा, देश और काल सम्बन्धी प्रश्न ।
त्रिफला-(सं०स्त्री०) हर्रा बहेड़ा और आमले का फल ।
त्रिफलीकृत-(सं०वि०) वह चावल जिसकी भूसी तीन बार निकाली गई हो ।
त्रिवलि-(सं०स्त्री०) पेट में पड़ने वाले तीन बल या रेखा ।
त्रिवलीक-(सं०नपुं०) वायु मलद्वार, गुदा ।
त्रिबाहु-(सं०पुं०) रुद्र के एक अनुचर का नाम ।
त्रिभ-(सं०नपुं०) तीन राशियों का समुदाय, लग्नादि तीनों राशियां;
त्रिभङ्ग-(सं०वि०) जिसमें तीन स्थान पर वलि पड़ती हो, श्रीकृष्ण की वह मूर्ति जिसमें ग्रीवा, कटि और जानु कुछ वक्र भाव से बने होते हैं;
त्रिभंगी-(सं०स्त्री०) एक मात्रिक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस मात्रायें होती हैं, एक राग का नाम, (वि०) जो तीन स्थानमें टेढ़ा हो
त्रिभजीवा-(सं०स्त्री०) अर्ध व्यास, त्रिज्या; **त्रिभद्र**-(सं०नपुं०) स्त्रीप्रसंग रतिक्रिया ।
त्रिभाग-(सं०पुं०) तृतीय भाग, तीसरा हिस्सा ।
त्रिभुक्ति-(सं०पुं०) तिरहुत, मिथिला देश ।
त्रिभुज-(सं०पु०) तीन भुजाओं का क्षेत्र, वह समतल जो तीन रेखाओं से घिरा हो ।
त्रिभुवन-(सं०नपु०) त्रिलोक अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल; **त्रिभुवन सुन्दरी**-(सं०स्त्री०) दुर्गा, पार्वती ।
त्रिभूम-(सं०पुं०) तीन खण्ड वाला (तिमहला) घर ।
त्रिमण्डला-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मकड़ी ।
त्रिमद-(सं०पुं०) परिवार विद्या और धन इन तीन कारणों से उत्पन्न अभिमान, मोथा, चीता और बायबिडंग-इन तीनों का समुदाय ।
त्रिमधु, **त्रिमधुर**-(सं०नपुं०) घी, चीनी, और शहद का समुदाय, ऋग्वेद का एक यज्ञ ।
त्रिमात्रिक-(सं०वि०) जिसमें तीन मात्रायें हों, लुप्त ।
त्रिमार्ग-(सं०नपुं०) तिरमुहानी जहाँ तीन मार्ग मिलते हैं । **त्रिमार्गगा**-(सं०स्त्री०) गङ्गा । **त्रिमार्गगामिनी**-(सं०स्त्री०) गंगा नदी ।
त्रिमार्गा-(सं०स्त्री०) गंगा, तिमुहानी ।
त्रिमुकुट-(सं०पुं०) जिस पहाड़ में तीन शिखर हों ।
त्रिमुखा-(सं०स्त्री०) माया देवी **त्रिमुखी**-(सं०स्त्री०) बुद्ध की माता, माया देवी ।
त्रिमुनि-(सं०नपुं०) पाणिनी, कात्यायन और मातञ्जलि ये तीन मुनि ।
त्रिमूर्ति-(सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीन देवता, सूर्य, ब्रह्मा की एक शक्ति ।
त्रिमूर्ध-(सं०वि०) जिसके तीन मस्तक हों ।
त्रियम्बक-(सं०पुं०) त्रिनेत्र, महादेव ।
त्रियव-(सं०नपुं०) एक परिमाण जो तीन यव के बराबर होता है ।
त्रियष्टि-(सं०स्त्री०) पित्तपापड़ा ।
त्रिया-(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत, **त्रियाचरित्र**-वह छल कपट जो स्त्रियों में स्वाभाविक होते हैं ।
त्रियामक-(सं०नपुं०) पाप ।
त्रियामा-(सं०स्त्री०) निशा, रात्रि, हरिद्रा, हलदी, यमुना नदी, नील का पेड़ ।
त्रियुग-(सं०पु०) विष्णु, वसन्त आदि तीन ऋतु, सत्ययग, त्रेता और द्वापर ये तीन युग ।
त्रियूह-(सं०पुं) सफेद रंग का घोड़ा ।
त्रिरात्र-(सं०नपुं०) एक प्रकार का व्रत जिसमें तीन दिनों तक उपवास करना पड़ता है ।
त्रिरूप-(सं०पुं०) अश्वमेघ का घोड़ा ।
त्रिरेख-(सं०पुं०) शंख (वि०) तीन रेखा युक्त ।
त्रिलघु-(सं०वि०) जिसकी गरदन, जाँघ और लिङ्गेन्द्रिय छोटी हो (ये शुभ लक्षण हैं)
त्रिलवण-(सं०नपुं०) सेंधा, साम्हर और सोंचर नमक ।
त्रिलिङ्ग-(सं०नपुं०) अहंकार, गर्व तैलङ्ग देश ।
त्रिलोक-(सं०नपु०) त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक ।
त्रिलोकपति-परमेश्वर; **त्रिलोकनाथ**-परमेश्वर ।
त्रिलोकी-(सं०स्त्री०) देखो त्रिलोक ।
त्रिलोकीनाथ-(सं०पुं०) परमेश्वर, ईश्वर । **त्रिलोकेश**-(सं०पुं०) परमेश्वर सूर्य ।
त्रिलोचन-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
त्रिलोचना, **त्रिलोचनी**-(सं०स्त्री०) दुर्गा ।
त्रिलोह-(सं०नपुं०) सोना, चाँदी, और तांबा ।
त्रिवण-(सं०पु०) सम्पूर्ण जाति का एक राग ।
त्रिवणी-(हिं०स्त्री०) एक संकर रागिणी
त्रिवत्स-(सं०पुं०) तीन वर्ष का बालक ।
त्रिवर्ग-(सं०पु०) धर्म, अर्थ और काम, त्रिफला, त्रिकटु, वृद्धि, स्थिति और क्षय, सत्व, रज और तम ये तीनों गुण, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये प्रधान जातियां, सुनीति, गायत्री ।
त्रिवर्ण-(सं०नपुं०) तीन प्रधान रंग, काला, लाल और पीला रंग । **त्रिवर्णक**-(सं०नपुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन प्रधान जातियां, त्रिफला, गोखरू, त्रिकटु ।
त्रिवर्णा-(सं०स्त्री०) जंगली कपास ।
त्रिवर्त-(सं०पुं०) एक प्रकार का मोती ।
त्रिवर्त्मगा-(सं०स्त्री०) त्रिपथगा, गङ्गा ।
त्रिवर्त्म-(सं०नपुं०) त्रिपथ तिनमुहानी ।
त्रिवर्ष-(सं०वि०) तीन वर्ष का जीव ।
त्रिवर्षा-सं०स्त्री०) तीन वर्ष की गाय ।
त्रिवर्षीय-(सं०वि०) तीन वर्ष का, तीन वर्ष ठहरने वाला ।
त्रिवल्ली-सं०स्त्री०) इन्दीवर, नील कमल
त्रिवल्य-(सं०पु०) एक प्रकार का चमड़ा मढ़ा हुआ बाजा ।
त्रिवार-(सं०वि०) तीन बार, (पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम ।
त्रिविक्रम-(सं०पु०) विष्णु, वामन का अवतार ।
त्रिविद्-(सं०वि०) तीनों वेदों को जानने वाला । **त्रिविद्य**-(सं०पुं०) तीनों वेदों को जानने वाला द्विज ।
त्रिविध-(सं०वि०) तीन प्रकार का ।
त्रिविष्टप-(सं०नपु०) स्वर्ग, तिब्बत देश ।
त्रिविस्तीर्ण-(सं०पुं०) जिसका ललाट, कमर और छाती ये तीनों अंग चौड़े हों ।
त्रिवीज-(सं०पुं०) श्यामक, सावां ।
त्रिवृत्-(सं०पुं०) मिश्रित तेज, यज्ञ, (वि०) तिगुना ।
त्रिवृत्करण-(सं०नपुं०) तेज, जल और

अन्न का त्र्यात्मक करण, पृथ्वी, जल और तेज का मिश्रण। त्रिवृत्पर्णी-(सं०स्त्री०) हुरहुर का वृक्ष या फूल।
त्रिवृन्त-(सं०पु०) पलाश का वृक्ष।
त्रिवेणी-(सं०स्त्री०) तीन नदियों का सङ्गम, प्रयाग में वह स्थान जहां गंगा यमुना और सरस्वती नदियों का संगम है, हठ योग के अनुसार इडा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीनों नाड़ियों का एक स्थान में मिलना।
त्रिवेणु-(सं०पु०) रथ के अगले भाग का नाम।
त्रिवेद-(सं०पुं०) ऋक्, यजु और साम ये तीनों वेद, वेदत्रय में बतलाये हुए कर्म; **त्रिवेदी**-(सं०पुं०) तीनों वेदों को जानने वाला, ब्राह्मणों का एक भेद, त्रिपाठी, तिवाड़ी।
त्रिवेनी-(हिं०स्त्री०) देखो त्रिवेणी।
त्रिशक्ति-(सं०स्त्री०) काली, तारा, और त्रिपुरा ये तीन देवियाँ, राजा का प्रभाव, उत्साह और मन्त्र ये तीन शक्तियां, गायत्री।
त्रिशङ्कु-(सं०पुं०) मार्जार, बिल्ली, पतंग, टिड्डी, चातक पक्षी, पपीहा, एक पर्वत का नाम, जुगनू, सूर्य-वंशी एक राजा का नाम जिन्होंने सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से यज्ञ किया था, देवताओं को ऐसा करने में विरोध था अतएव वे आकाश में लटके रह गये, एक नक्षत्र का नाम जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशंकु हैं जिनको आकाश से इन्द्र गिरा रहे थे परन्तु विश्वामित्र ने अपने योग-बल से उन्हें मार्ग में ही रोक दिया था।
त्रिशत-(सं०नपुं०) तीन सौ।
त्रिशरण-(सं०नपुं०) जैनियों के एक आचार्य।
त्रिशर्करा-(सं०स्त्री०) गुड़, चीनी और मिश्री इन तीनों का समुदाय।
त्रिशाख-(सं० वि०) तीन शाखा युक्त, जिसमें आगे की ओर तीन शाखायें निकली हों। **त्रिशाखपत्र**-(सं०पु०) बेल का पेड़।
त्रिशालक-(सं०नपु०) वह घर जिसके उत्तर की ओर दूसरा घर न हो।
त्रिशिख-(सं० पुं०) त्रिशूल, किरीट, रावण के एक पुत्र का नाम, (वि०) तीन शिखा वाला।
त्रिशिखर-(सं०पुं०) वह पहाड़ जिसमें तीन चोटियां हों।
त्रिशिरस्-(सं०पुं०) कुबेर, रावण के एक पुत्र का नाम, खर के एक सेना-पति का नाम, एक असुर का नाम, (वि०) तीन सिर वाला।
त्रिशीर्ष-(सं०वि०) तीन चोटियों वाला। **त्रिशीर्षक**-(सं०नपुं०) त्रिशूल।
त्रिशुच-(सं० पु०) वह जिसकी दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के दुःख हों।
त्रिशूल-(सं०पुं०) एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं, यह महादेवजी का अस्त्र माना जाता है; दैविक, दैविक और भौतिक क्लेश; तन्त्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा। **त्रिशूली**-(सं० पुं०) शिव, महादेव, (स्त्री०) दुर्गा, (वि०) त्रिशूल धारण करने वाला। (नपुं०) पारा।
त्रिशृङ्ग-(सं०पुं०) त्रिकूट पर्वत, त्रिकोण
त्रिशोक-(सं०पुं०) कण्व ऋषि के एक पुत्र का नाम।
त्रिषवण-(सं०नपुं०) प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल।
त्रिषित-(हिं०वि०) देखो तृषित।
त्रिष्टुभ-(सं०स्त्री०) एक वैदिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
त्रिष्टोम-(सं०पु०) एक प्रकार का यज्ञ।
त्रिसङ्गम-(सं० पुं०) तीन नदियों के मिलने का स्थान, तीन वस्तुओं का मेल।
त्रिसन्धि-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का फूल जो सफेद लाल और काला तीन रंग का होता है।
त्रिसन्ध्य-(सं०नपुं०) प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्या ये तीन काल; **त्रिसन्ध्य-व्यापनी**-वह तिथि जो सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक रहती हो।
त्रिसन्ध्या-(सं०स्त्री०) प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनो सन्धि के काल
त्रिसर-(सं०पुं०) तिल मिली हुई खिचड़ी
त्रिसरी-(सं०पुं०) एक प्रकार का घोड़ा जिसका केवल शिर काला हो तथा अन्य सब अङ्ग भिन्न भिन्न वर्ण के हों।
त्रिसर्ग-(सं०पुं०) सत्व, रज और तम ये तीनो गुण, सृष्टि।
त्रिसुगन्धि-(सं० नपुं०) दालचीनी इलायची और तेजपात इन तीनों सुगन्धित पदार्थों का समूह।
त्रिस्कन्ध-(सं०नपुं०) ज्योतिष शास्त्र।
त्रिस्तनी-(सं०स्त्री०) एक राक्षसी जिसके तीन स्तन थे, गायत्री।
त्रिस्तली-(सं०स्त्री०) गया, काशी और प्रयाग ये तीन पुण्य स्थान।
त्रिस्थान-(सं० पु०) तीनों लोकों में रहने वाला परमेश्वर।
त्रिस्नान-(सं०नपुं०) सबेरे दोपहर तथा सन्ध्या तीनों समय का स्नान।
त्रिस्रोता-(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
त्रिस्रोतसी-(सं०स्त्री०) जिस नदी से तीन स्रोत निकलें हों।
त्रिहल्य-(सं०नपुं०) वह खेत जो तीन बार जोता गया हो।
त्रिहायण-(सं० पुं०) तीन वर्ष का बछवा।
त्रिहायणी-(सं०स्त्री०) द्रौपदी जो सत्य-युग में वेदवती, त्रेता में जनकात्म-जा और द्वापर में द्रौपदी नाम से कहलाई थीं।
त्रिष्टक-(सं० पुं०) एक प्रकार की वैदिक अग्नि।
त्रुटि-(सं० स्त्री०) छोटी इलायची, न्यूनता, अभाव, संशय, समय का अत्यन्त सूक्ष्म भाग, कार्तिकेय की एक मात्रिका का नाम, भूलचूक, वचनभङ्ग।
त्रुटित-(सं० वि०) टूटा फूटा हुआ, जिसपर आघात पड़ा हो, गिरा हुआ
त्रुटिबीज-(सं०पुं०) अरुई।
त्रुटिस्वीकार-(सं०पुं०) दोष की स्वीकृति
त्रुटी-(हिं०स्त्री०) देखो त्रुटि।
त्रेता-(सं०स्त्री०) दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय नामक तीन अग्नि, तीन कौड़ियों से खेला जानेवाला जुआ, चार युगों में से दूसरा युग, जो कार्तिक शुक्ल नवमी से आरम्भ हुआ था। **त्रेतायुग**-(सं० नपुं०) देखो त्रेता।
त्रेधा-(सं०अव्य०) तीन प्रकार से।
त्रै-(हिं०वि०) तीन।
त्रैककुद-(सं०नपुं०) काजल या सुरमा।
त्रैकटु-(सं०नपुं०) देखो त्रिकटु।
त्रैकालज्ञ-(सं०वि०) त्रिकालज्ञ सबंधी।
त्रैकालिक-(सं०वि०) तीनों काल में अर्थात् सर्वदा रहनेवाला।
त्रैकोणक-(सं०पुं०) वह जिसमें तीन कोण हों, तिपहला।
त्रैगुणिक-(सं० वि०) तीन बार गुणा किया हुआ। **त्रैगुण्य**-(सं०नपुं०) सत्व, रज, और तम इन गुणों का धर्म या भाव।
त्रैदशिक-(सं०नपुं०) अंगुली का अग्र भाग जो तीर्थ कहलाता है।
त्रैध-(सं०अव्य०) तीन प्रकार से।
त्रैधावती-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का यज्ञ।
त्रैपुर-(सं०पुं०) त्रिपुर देश।
त्रैबलि-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम।
त्रैमातुर-(सं०पुं०) लक्ष्मण जी।
त्रैमासिक-(सं०वि०) तीन महीने का, हर तीसरे महीने होने वाला।
त्रैयम्बका-(सं०स्त्री०) गायत्री।
त्रैराशिक-(सं०नपु०) गणित की वह क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशि से चौथी अज्ञात राशि निकाली जाती है
त्रैरूप्य-(सं०नपु०) त्रिधा रूप जिसका आकार तीन प्रकार का हो।
त्रैलोक, **त्रैलोक्य**-(सं०पु०) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल, इक्कीस मात्राओं का एक छन्द। **त्रैलोक्यविजया**-(सं०स्त्री०) सिद्धि, भाँग।
त्रैवर्गिक-(सं०वि०) जिसमें धर्म, अर्थ और काम इन तीनों की साधना हो।
त्रैवर्ग्य-(सं०वि०) देखो त्रैवर्गिक।
त्रैवर्णिक-(सं० पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनो जातियों का धर्म, (वि०) तीन वर्ण सम्बन्धी।
त्रैवार्षिक-(सं०वि०) तीन बरस में होने वाला, हर तीसरे वर्ष होने वाला।
त्रैविक्रम-(सं०पुं०) त्रिविक्रम के अवतार, विष्णु।
त्रैविद्य-(सं० पु०) तीनों वेदों का जानने वाला।
त्रैविध्य-(सं०नपुं०) तीन प्रकार, तीन तरह।
त्रैविष्टप-(सं०पुं०) स्वर्ग में रहने वाले देवता।
त्रैष्टुभ-(सं०वि०) त्रिष्टुभ सम्बन्धी।
त्रैहायण-(सं०वि०) तीन वर्ष में होने वाला, (नपु०) तीन वर्ष का समय।
त्रोटक-(सं०वि०) छेदक, भेदक (नपु०) दृश्य काव्य का एक भेद, इसमें ५, ७, ८, या ९ अंक होते हैं और इसमें स्वर्गीय या पार्थिव विषय वर्णन होते हैं, यह नाटक शृंगार रस प्रधान होता है, एक राग का नाम, एक विषैला कीड़ा, शंकराचार्य के एक शिष्य का नाम।
त्रोटकी-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम
त्रोटि-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का पक्षी, चोंच, जायफल, एक प्रकार की मछली।
त्रोटिहस्त-पक्षी, चिड़िया।
त्रोटी-(सं०स्त्री०) चिड़िया की चोंच।
त्रोण, **त्रोन**-(हिं०पुं०) तरकस।
त्रोतल-(सं०वि०) तुतलाकर बोलनेवाला
त्र्यंश-(सं०पुं०) तिगुना अंश, तिगुना भाग
त्र्यक्ष-(सं०पु०) त्रिनेत्र, शिव (वि०) जिसको तीन आंखें हों।
त्र्यक्षर-(सं०पुं०) प्रणव, ओंकार, एक प्रकार का छन्द (वि०) तीन अक्षरोंका
त्र्यङ्कट-(सं०नपुं०) छिक्का, सिकहर, ईश्वर, चन्द्रमा।
त्र्यङ्गुल-(सं०वि०) तीन अङ्गुल का प्रमाण
त्र्यधिपति-(सं०पुं०) तीनो लोकों के अधिप्रति, कृष्ण, विष्णु।
त्र्यधीश-(सं०पु०) कृष्ण, विष्णु।
त्र्यध्वगा-(सं०स्त्री०) गङ्गा।
त्र्यम्बक-(सं० नपुं०) शिव, महादेव, ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र; **त्र्यम्बक-सख**-कुबेर।
त्र्यब्द-(सं०नपुं०) तीन वर्ष का काल
त्र्यम्बका-(सं०स्त्री०) दुर्गा-जिसके सोम सूर्य और अनल ये तीन नेत्र हैं।
त्र्यवि-(सं०पु०) अठारह महीने का पशु
त्र्यष्टक-(सं०नपुं०) शरीर में का वह स्थान जहां से जल फेंका जाता है।
त्र्यस्त्र-(सं०नपु०) व्याघ्रनख (स्त्री०) चमेली
त्र्यस्रफल-(सं०स्त्री०) सेंम्हर का वृक्ष।
त्र्याह-(सं० पुं०) तीन दिन का काल।
त्र्याहिक-(सं०पुं०) वह गृहस्थ जिसके पास तीन दिन खाने का अन्न हो।
त्र्यायुष-(सं०नपुं०) बाल्य, यौवन और स्थविर ये तीन अवस्थायें।
त्र्याहिक-(सं०पुं०) तीसरे दिन आने वाला ज्वर।
त्वक्-(सं०पुं०) छिलका, छाल, खाल, चमड़ा, स्पर्श करने की इन्द्रिय, कंचुक, केंचुली; **त्वक्कण्डुर**-फोड़ा; **त्वक्क्षीरा**-वंशलोचन; **त्वक्छेद**-मुसलमानों का शिश्न का अगला

चमड़ा काटने का संस्कार, त्वक्-पत्र-दारचीनी; त्वक्पुष्प-रोमाञ्च; त्वक्सार-बांस का छिलका, तार-चीनी; त्वक्सारा-वंशलोचन; त्वक्-सुगन्ध-लवंग।
त्वगगन्ध-(सं०पुं०) नारङ्गी, नीबू।
त्वचकना-(हिं०क्रि०) पचकना।
त्वचा-(सं०स्त्री०) चमड़ा, छाल, वल्कल, केंचुली।
त्वत्कृत-(सं०वि०) तुमसे किया हुआ।
त्वदीय-(सं०स्त्री०) तुम्हारा। **त्वरण, त्वरा**-(सं०) शीघ्रता, जल्दी।
त्वरारोह-(सं०पुं०) पारावत, कबूतर।
त्वरावान्-(सं०वि०) शीघ्रता करनेवाला
त्वरित-(सं०पुं०) शीघ्र, जल्दी (वि०) (क्रि०वि०) जल्दी से। **त्वरितगति**-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
त्वलग-(सं० पुं०) जलसर्प, डोंड़हा।
त्वष्टा-(सं० पुं०) विश्वकर्मा, शिव, महादेव, बढ़ई, एक वैदिक देवता, बारह आदित्यों में से एक, एक प्रजापति का नाम।

थ

थ-हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाला का सत्रहवां व्यञ्जन तथा तवर्ग का दूसरा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है।
थ-(सं०पु०) पर्वत, पहाड़, भय, आहार, रक्षण, एक रोग, (वि०) भयंरक्षक।
थंका-(हि०पुं०) थोक में।
थंब, थंभ-(हिं०पु०) स्तम्भ, खंभा, सहारा, चाँड़, टेक, थूनी सहारे का बल्ला।
थंभन-(हिं०पु०) स्तम्भन, रुकावट, ठहराव, तन्त्र के छ प्रयोगों में से एक।
थंभना-(हिं०क्रि०) देखो थमना।
थंभित-(हिं०वि०) स्तंभित, रुका हुआ, स्थिर, निश्चल, अचल।
थक-(हिं०पुं०) देखो थाक।
थकना-(हिं० क्रि०) क्लान्त होना, शिथिल होना, ऊब जाना, बुढापे के कारण अशक्त होना, शिथिल पड़ना, धीमा पडना, मोहित होना।
थकान-(हिं०स्त्री०) शिथिलता, थकावट।
थकाना-(हिं०क्रि०) शिथिल करना, श्रान्त करना। **थकामांदा**-(हिं०वि०) परिश्रम करते करते अशक्त, श्रमित, क्लान्त।
थकार-(सं०पुं०) 'थ' स्वरूप अक्षर। **थकारादि**-(सं०पुं०) जिसके आदि में 'थ' अक्षर हो। **थकारान्त**-(सं०वि०) जिसके अन्त में 'थ' अक्षर हो।
थकाव, थकावट-(हिं०स्त्री०) शिथिलता, थकने का भाव। **थकाहट**-(हिं०स्त्री०) देखो थकावट, शिथिलता। **थकित**-(हिं०वि०) श्रान्त, शिथिल, थका हुआ, मुग्ध, मोहित।
थकिया-(सं०स्त्री०) वह मोटी तह जो किसी गाढ़ी वस्तु के जमने से बन जाती है, गलाई हुई धातु का लोंदा।
थकौहां-(हिं०वि०) शिथिल, कुछ थका हुआ, थका मांदा।
थक्का-(हिं०पुं०) गली हुई धातु का जमा हुआ लोंदा, जमा हुआ कतरा, किसी गाढ़ी वस्तु की मोटी तह।
थगित-(हिं०वि०) ठहरा हुआ, रुका हुआ, शिथिल, मन्द, ढीला।
थड़ा-(हिं०पुं०) बैठने का स्थान, बैठक।
थति-(हिं०स्त्री०) देखो थाती।
थत्ती-(हिं०स्त्री०) राशि, ढेर, पुंज।
थन-(हिं०पुं०) चौपायों का स्तन।
थनकुदी-(हिं०पुं०) कीडा मकोड़ा खाने वाला एक चमकीले रंग का पक्षी।
थनगन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पुष्ट लकड़ी घरों में लगाई जाती है।
थनदुट्ट-(हिं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके स्तन से दूध नहीं निकलता।
थनी-(हिं०स्त्री०) बकरी के गले के नीचे लटकती हुई स्तन के आकार की मांस की दो थैलियां, गलथना, थन के आकार का लटकता हुआ मांस का पिण्ड।
थनेला-(हिं०पुं०) स्त्रियों के स्तन पर होने वाला एक प्रकार का फोड़ा, गोबरौले के आकार का एक प्रकार का कीड़ा।
थनैत-(हिं०पुं०) गाँव का प्रधान पुरुष या मुखिया, वह मनुष्य जो भूस्वामी की ओर से कृषकों से कर उगाहता है
थपकन-(हिं०पुं०) वह आघात जो प्रेम से किसी के शरीर पर किया जाय; देखो थपकी। **थपकना**-(हिं० क्रि०) स्नेहवश किसी के शरीर पर धीरे धीरे हाथ मारना, बच्चे को सुलाने के लिये उसको धीरे धीरे ठोकना, पुचकारना, ढाढ़स देना, किसी का क्रोध शान्त करना।
थपका-(हिं० पुं०) थक्का। **थपकी**-(हिं०स्त्री०) वह आघात जो प्रेमवश किसी के शरीर पर हथेली से धीरे धीरे पहुँचाया जाता है; धीरे धीरे हाथ से ठोंकने की क्रिया, हाथ से झटका पहुँचाने का काम; थापी, धोबी का कपड़ा पीटने का मुंगरा।
थपड़ी-(हिं०स्त्री०) ताली बजाने की आवाज।
थपथपी-(हिं०स्त्री०) देखो थपकी।
थपन-(हिं०पु०) स्थापन, ठहरने का काम। **थपना**-(हिं०क्रि०) स्थापित होना, ठहरना, जमना, धीरे धीरे ठोंकना (पु०) पीटने का कोई अस्त्र, थापी।
थपुआ-(हिं०पुं०) चौरस चौड़ा छाजन का खपड़ा जिसके दोनों ओर नरिया बैठाई जाती है।
थपेड़ना-(हिं०क्रि०) थप्पड़ मारना।
थपेड़ा-(हिं०पुं०) हथेली से पहुँचाया हुआ आघात, थप्पड, ठोकर, टक्कर
थपोड़ी, थपोली-(हिं०स्त्री०) थाली।
थप्पड़-(हिं०पुं०) तमाचा, चपेट, धक्का, ठक्कर, आघात।
थप्पा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का जहाज।
थम-(हिं०पुं०) खंभा, थूनी, केले का वृक्ष।
थमकारी-(हिं०वि०) स्तम्भन करने वाला, रोकने वाला।
थमना-(हिं० क्रि०) ठहराना, रुकना, बन्द होना, धैर्य्य रखना।
थर-(हिं०स्त्री०) तह, परत, (पुं०) बाघ की मांद।
थरकना-(हिं०क्रि०) भय से काँपना, थर्राना।
थरकौंहा-(हिं०वि०) काँपने वाला।
थरथर-(हिं०स्त्री०) भय के कारण कम्पन, डर से काँपने की मुद्रा, (क्रि०वि०) काँपते हुए। **थरथराना**-(हिं०क्रि०) भय से काँपना। **थरथराहट**-(हिं०स्त्री०) भय से उत्पन्न कँपकपी। **थरथरी**-(हिं०स्त्री०) देखो थरथराहट।
थरना-(हिं०क्रि०) काँटी आदि की नोक को हथौड़ी से पीटकर चौड़ी करना, (पुं०) नकाशी बनाने का एक औजार।
थरहरी-(हिं० स्त्री०) भय से उत्पन्न कँपकपी।
थरि-(हिं०स्त्री०) बाघ आदि की माँद।
थरिया-(हिं०स्त्री०) देखो थाली।
थरसल-(हिं०क्रि०) थहराया हुआ।
थर्राना-(हिं०क्रि०) भय से काँपना।
थल-(हिं०पुं०) स्थल, ठिकाना, स्थान, फोड़े का लाल फूला हुआ घेरा, सूखी भूमि, रेत, भड़, बाघ की माँद, ऊंची धरती, टीला।
थलकना-(हिं० क्रि०) झोल होने के कारण ऊपर से नीचे हिलना, मोटेपन से शरीर का मांस हिलना।
थलचर-(हिं०पुं०) स्थलचर, भूमि पर रहने वाला प्राणी। **थलचारी**-(हिं०) भूमि पर चलने वाला, स्थलचर।
थलथल-(हिं०वि०) मोटाई के कारण हिलता हुआ।
थलज-(हिं०पु०) गुलाब का फूल।
थलथलाना-(हिं०क्रि०) मोटाई के कारण शरीर के मांस का झूल कर हिलना।
थलपति-(हिं०पुं०) भूपति, राजा।
थलबेड़ा-(हिं०पुं०) नाव या जहाज के टिकने का स्थान।
थलरुह-(हिं०वि०) स्थलरुह, भूमि पर उत्पन्न होने वाला वृक्ष, लता आदि।
थलिया-(हिं०स्त्री०) देखो थाली।
थली-(हिं०स्त्री०) स्थली, स्थान, ठिकाना, ऊंची भूमि, ढीला, परती या रेतीली भूमि, बैठने का स्थान, जलके नीचे का तल।
थवई-(हिं०पुं०) स्थपति, मकान बनाने-वाला राज।
थवन-(हिं०पुं०) वधू की तीसरी बार पति के घर जाने की यात्रा।
थवना-(हिं० पु०) कच्ची मिट्टी का बनाया हुआ गोला जिसमे चरखी चलाने के लिये बाँस की पोली नली धँसाई रहती है।
थहना-(हिं०क्रि०) थाह लगाना।
थहराना-(हिं०क्रि०) थरथराना, काँपना, थाह लेना, गहराई का पता लगाना, देखो थहाना।
थहरि-(हिं०स्त्री०) भूमि।
थहाना-(हिं०क्रि०) गहराई का पता लगाना, थाह लगाना, किसी के आशय को जानने का प्रयत्न करना।
थहरना-(हिं०क्रि०) जहाज को स्थल पर ठहराना।
थाँग-(हिं०स्त्री०) वह गुप्त स्थान जहां चोर या डाकू आकर ठहरते हैं, अनुसन्धान, खोज, पता, गुप्त रुप से किसी बात का पता लगाना, भेद।
थाँगी-(हिं०पु०) वह मनुष्य जो चोरी का माल लेता हो या अपने पास रखता हो, चोरों का भेदिया, चोरी का पता लगाने वाला, जासूस, चोरों का सरदार। **थाँगीदारी**-(हिं०स्त्री०) थाँगी का काम।
थाँम-(हिं०पुं०) खंभा, थूनी, चांड़।
थाँवला-(हिं०पु०) थाला या घेरा जो किसी पेड़ के चारो ओर बनाया जाता है।
था-(हिं०क्रि०) "है" शब्द का भूतकाल का रूप, रहा।
थाई-(हिं०वि०) स्थायी, स्थिर रहने वाला, बहुत दिनों तक बना रहने वाला (पु०) बैठने का स्थान, बैठक; ध्रुवपद, वह पद जो गाने में बार-बार कहा जाता है।
थाक-(हिं०पुं०) गाँव की सीमा या सरहद, राशि, ढेर, समूह।
थाकना-(हिं०क्रि०) ठहरना।
थाति-(हिं०स्त्री०) स्थिरता, टिकाव, ठहराव।
थाती-(हिं०स्त्री०) धरोहर, जमा, पूंजी, संचित धन, अमानत।
थान-(हिं०पुं०) स्थान, ठिकाना, निवास स्थान, डेरा, घोड़े या चौपायों को बाँधने का स्थान, मन्दिर, देवालय, संख्या, कपड़े गोटे आदि का पूरा टुकड़ा, घोड़े के नीचे बिछाई जाने वाली घास, बिचाली। **थानक**-(हिं०पुं०) स्थान, वह गड्ढा जिसके भीतर वृक्ष लगाया जाता है, थाला।
थाना-(हिं०पुं०) ठहरने का स्थान, अड्डा, टिकान, पुलीसकी बड़ी चौकी, बाँस की कोठी।
थानापति-(हिं०पुं०) ग्रामदेवता।
थानी-(हिं०पुं०) स्थान का मालिक, दिक्पाल, लोकपाल, सरदार (वि०) सम्पूर्ण, पूरा।
थानैत-(हिं०पु०) देखो थानैत।
थानेदार-(हिं०पुं०) थाने का प्रधान

अधिकारी । **थानेदारी**-(हि०स्त्री०) थानेदार का पद या कार्य।

थानेश्वर-(हिं० पु०) पंजाब में स्थित एक हिन्दू तीर्थ ।

थानैत-(हिं० पु०) किसी स्थान का स्वामी, ग्राम देवता या किसी स्थान के देवता ।

थाप-(हिं०स्त्री०) मृदंग, तबले आदि पर पूरे पंजे का आघात, ठोंक, शपथ, महत्व, प्रतिष्ठा, धाक, साक, थप्पड़, छाप, स्थिति, जमाव, प्रमाण, पंचायत । **थापन**-(हिं०पुं०) स्थापित करने की क्रिया, प्रतिष्ठित करने का कार्य, रखने का काम । **थापना**-(हिं०क्रि०) स्थापित करना, बैठाना, हाथ या सांचे से पीट कर या दबा कर किसी गिली वस्तु का कुछ बनाना (स्त्री०) स्थापन, नवरात्र में घट स्थापन, किसी प्रतिमा का स्थापन या प्रतिष्ठा ।

थापर-(हिं०पु०) थप्पड़ ।

थापरा-(हिं०पुं०) छोटी नाव, डोंगी ।

थापा-(हि०पु०) पंजे का छापा जिसको स्त्रियां मंगल अवसर पर घर की भीत पर लगाती हैं, रंग पोत कर कोई चिह्न बनाने का साँचा या छापा, खलिहान में अन्न की ढेर पर लगाने का गोबर का चिह्न; वह चन्दा जो गांव में देवी देवता की पूजा के लिये इकट्ठा किया जाता है, सांचा जिसमें कोई गीली वस्तु डाल कर कुछ बनाया जाता है ।

थापिया-(हिं० स्त्री०) देखो थापी, (पुं०) थापने वाला ।

थापी-(हिं०स्त्री०) कुम्हार की कच्चा घड़ा पीटने की मुंगरी, गच पीटने की राज की चिपटी मुंगरी ।

थाम-(हिं०(पु०)स्तम्भ, खंभा, मस्तूल, (स्त्री०) पकड़,थमनेकी रीति या ढंग ।

थामना-(हिं०क्रि०) पकड़ रखना,गिरने से रोकना,किसी कार्यका भार अपने ऊपर लेना, पकड़ना, हाथ में लेना, मदद देना, संभालना, सहारा देना, चौकसी में रखना, ग्रहण करना ।

थायी-(हि०वि०) स्थायी, स्थिर, दृढ़ ।

थार-(हिं०पुं०) बड़ी थाली

थारू-(हिं०) विहार प्रान्त की एक जाति विशेष; थारुहट-थारूका रहने का प्रदेश

थाल-(हिं० पुं०) आलवाल, थाँवला, वह गड्ढा जिसमें पेड़ बैठाया जाता है । **थाली**-(हिं०स्त्री०) गोल, छिछला बरतन, छोटा थाल, नाच की एक गत; **थाली का बैंगन**-लाभ हानिके अनुसार पक्ष बदलने वाला; **थावर**-(हिं०वि०) देखो स्थावर ।

थाह थाव-(हिं०स्त्री०) जल की गहराई का अंत, जलाशयका तल भाग, कम गहरा पानी, अन्त, पार, किसी संख्या या परिमाण का अनुमान, परिमिति, हद, किसी बात का गुप्त रीतिसे लगाया हुआ पता । **थाहना**-(हिं०क्रि०) गहराई का पता लगाना, अनुमान करना । **थाहरा**-(हिं०वि०) कम गहरा, छिछला, जिसमें जल गहरा न हो ।

थिगली-(हिं०स्त्री०) किसी फटे हुए वस्त्र के छेद पर लगाने की चकती, पेवन, **बादल में थिगली लगाना**-बड़ा कठिन या असंभव काम करना ।

थित-(हिं०वि०) स्थित, ठहरा हुआ, स्थापित,रक्खाहुआ । **थिति**-(हिं०स्त्री०) स्थायित्व, ठहराव,विश्राम करने का स्थान, बने रहने का भाव, रहन, अवस्था, दशा, रक्षा ।

थियासफ़ी-(अं० स्त्री०) ब्रह्मविद्या ।

थिवाऊ-(हिं०पुं०)दहिनेअंगका फड़कना ।

थिर-(हिं०वि०) स्थिर, अचल, ठहरा हुआ, स्थायी, शान्त, दृढ़, टिकाऊ । **थिरक**-(हिं०पुं०) नृत्य में पैरों का हिलनाडोलना । **थिरकना**-(हिं०क्रि०) नृत्य में अंगों का संचालन, ठमक ठमक कर नाचना ।

थिरजीह-(हिं० पुं०) स्थिरजिह्व, मत्स्य, मछली ।

थिरता थिरताई-०(हिं०स्त्री०) स्थिरता, ठहराव, स्थायित्व,शान्ति,अचञ्चलता

थिरथिरा-(हिं०पुं०) भारतवर्ष का एक प्रकार का बुलबुल ।

थिरना-(हिं०क्रि०) जलका क्षुब्ध न रहना, पानी का हिलना बंद होना, पानी छन जाना, निथरना, पानी में मिली हुई वस्तु का तल मे जमना, थिरकर स्वच्छ होना ।

थिरा-(हिं०स्त्री०) स्थिरा, पृथ्वी ।

थिराना-(हिं०क्रि०) हिलतेहुए जल को स्थिर होने देना, किसी तरल पदार्थ को स्थिर करना जिससे उसमें मिली हुई वस्तु तलमें बैठ जावे,थिरा कर किसी घुली हुई वस्तु को तल में बैठनेदेना,पानीको थिरा कर छानना ।

थी-(हि०क्रि०)"था" का स्त्रीलिंगकारूप

थीता-(हिं०पुं०) स्थिरता,शान्ति,चैन ।

थीरु-(हिं०वि०) स्थिर ।

थुकवाना-(हिं०क्रि०) देखो थुकाना ।

थुकहाई-(हिं०वि०) वह स्त्री जिसकी निन्दा सब कोई करता हो ।

थुकाई-(हिं०स्त्री०) थूकने का काम ।

थुकाना-(क्रि०वि०) किसी से थूकने का काम करना, उगलवाना, तिस्कार या निन्दा करना ।

थुक्का फजीहत-(हिं०स्त्री०) थुड़ीथुड़ी, निन्दा और तिरस्कार,लड़ाई झगड़ा, धिक्कार ।

थुक्की-(हिं०स्त्री०) रेशमके रेशे अलगाने के लिये उसमें थूक लगाना ।

थुड़ी-०(हिं०स्त्री०)तिरस्कार और घृणा-सूचक शब्द, धिक्कार, लानत; **थुड़ी थुड़ी करना**-धिक्कारना ।

थुत्कार-(सं०पुं०) वह शब्द जो मुख से थूक निकलती समय उत्पन्न होता है

थुथना-(हिं०पुं०) देखो थूथन ।

थुथाना-(हिं० क्रि०) अप्रसन्न होना, मुँह बनाना ।

थुथुक्कृत्-(सं०स्त्री०) देखो थुत्कार

थुनेर-(हिं० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष (गठिवन) ।

थुन्नी-(हिं०स्त्री०)स्तम्भ खंभा,चाड़,थूनी ।

थुपरना-(हिं०क्रि०) महुवे के फलों को इकट्ठा करके दबाकर रखना ।

थुपरा-(हिं०पुं०) महुवे के फलों का ढेर

थुरना-(हिं०क्रि०) मारना,पीटना,कूटना

थुरहथा-(हिं०वि०) छोटे हाथ वाला, जिसकी हथेली में थोड़ी वस्तु समा सके, मितव्ययी ।

थुर्वण-(सं०नपुं०) हत्या ।

थुलमा-(हिं०पुं०)पहाड़ी मोटा कम्बल।

थुली-(हिं०स्त्री०) दलिया, दल कर महीन किया हुआ अन्न ।

थूक-(हिं०पुं०) देखो थूक । **थूकना**-(हिं०क्रि०) देखो थूकना ।

थू-(हिं०अ०) तिरस्कार सूचक शब्द, छिः, थूकने का शब्द; **थू थू करना**-धिक्कारना ।

थूक-(हिं०पुं०) निष्ठीवन, खखार, **थूकों सत्तू सानना**-थोड़ीसी सामग्री लेकर बड़ा काम करने के लिये उद्यत होना। **थूकना**-(हिं०क्रि०) मुख से थूक निकालना,मुखमें रक्खी हुई वस्तुको गिराना, उगलना, तिरस्कार करना, धिक्कारना, **थूक कर चाटना**-किसी दी हुई वस्तु को फेर लेना, प्रतिज्ञा करके मुकर जाना; **थूक देना**-निन्दा करना, तिरस्कार करना ।

थूथन-(हिं०पु०) मुख का अग्र भाग जो आगे को निकला हुआ हो । **थूथनी**-(हिं०स्त्री०) थूथन हाथी के मुख का एक रोग। **थूथरा**-(हिं०वि०) थूथन की तरह बाहर को निकला हुआ मुख, भद्दा मुखौटा ।

थून-(हिं०स्त्री०) स्तम्भ, खंभा, चांड़ ।

थूना-(हिं०पु०) मिट्टी का लोंदा जिसमें परेता खोंस कर रेशम या तागा उतारा जाता है । **थूनी**-(हिं०स्त्री०) खंभा, चांड, बोझ रोकने के लिये लगाया हुआ डंडा,मथानी का डंडा, अँटकाने का साधन ।

थूवी-(हिं०स्त्री०) सर्पका विष दूर करने के लिये डँसे हुए स्थान को तपे हुए लोहे के दागने की विधि ।

थरना-(हिं० क्रि०) मारना पीटना, कूटना,कसकर भरना, ठूंस कर खाना

थूल-(हिं०वि०) स्थूल, भद्दा, भारी,

थूला-(हिं०वि०) हृष्ट पुष्ट ।

थूली-(हिं०स्त्री०) दलकर अलग किया हुआ,अन्नका मोटा कण,दलिया,सूजी

थूला-(हिं०पु०) ऊँची भूमि,टीला, ढूह, मिट्टी का लोंदा, मिट्टी का ढूहा जो सीमा सूचित करने के लिये उठाया जाता है (स्त्री०) धिक्कार का शब्द ।

थूहड़, थूहर-(हिं०पुं०)एक छोटा पौधा जिसकी गांठों पर से गुल्ली या डण्डे के आकार के डण्ठल निकलते हैं, इसके डण्ठलों और पत्तोंमेंसे विषैला दूध निकलता है जो औषधियों में प्रयोग किया जाता है, सेंहुड ।

थूहा-(हिं०पु०) ऊँची भूमि, टीला, राशि, ढेर ।

थूही-(हिं०स्त्री०)मिट्टीका ढेर, मिट्टी का खम्भा जो कुवें पर बनाया जाता है जिस पर लकड़ी रखकर पानी खींचनेके लिये गड़ारी लगाई जाती है

थेंहर-(हिं०वि०) श्रान्त, थका हुआ ।

थेई, थेई-(हिं०वि०) ताल सूचक ताल और मुद्रा ।

थेगली-(हिं०स्त्री०) देखो थिगली ।

थेबा-(हिं०पुं०) अँगूठी का नगीना, वह गड्ढा जिसमें नगीना बैठाया जाता है

थैचा-(हिं०पुं०) वह छप्पर जो खेत में मचान के ऊपर रक्खा जाता है ।

थैला-(हिं०पुं०)कपड़े या टाट का बना हुआ झोला जिसमें कोई वस्तु रक्खी जा सके, रुपयों का तोड़ा, पायजामें का जांघ से लेकर घुटने तक का भाग । **थैली**-(हिं०वि०) छोटा थैला, रुपयों से भरा हुआ कोष, तोड़ा; **थैली खोलना**-थैली से रुपये निकाल करदेना; **थैलीदार**-(हिं०पु०)रोकड़िया

थोक-(हिं०पुं०) राशि,ढेर,झुण्ड, समूह, एकत्रित वस्तु, इकट्ठा बेंचने की वस्तु, भूमि का टुकड़ा; **थोक करना**-इकट्ठा करना; **थोकदार**-इकट्ठा माल बेंचने वाला व्यापारी ।

थोड़ना-(स०नपुं०) अच्छादन, ढपना ।

थोड़ा-(हिं०वि०) न्यून, कम, अल्प, कम परिमाण का, (क्रि०वि०) तनिक, **थोड़ा बहुत**-न्यूनाधिक; **थोड़ा ही**-बिलकुल नहीं ।

थ.ती-(हिं०स्त्री०) देखो थूथन ।

थोथ-(हिं०स्त्री०) पोलापन, तोंद, पेटी ।

थोथरा-(हिं०वि०)निःसार,पोला,व्यर्थका

थोथा-(हिं०वि०) निःसार, खोखला, बिना पूंछ का, बांड़ा, निकम्मा, मिट्टी का वह सांचा जिसमें पात्र आदि ढाला जाता है ।

थोथी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास

थोपड़ी-(हिं०स्त्री०) थप्पड़, चपत, धौल

थोपना-(हिं०क्रि०) पानी में सनी हुई मिट्टी आदि को फैलाना, मोटा लेप चढ़ाना, अरोपित करना,आक्रमण से बचाना, छोपना ।

थोबड़ थोबड़ा-(हिं०पुं०)पशुओंका थूथन

थोर, थोरा-(हि०वि०) देखो थोड़ा ।

थोरिक-(हिं०वि०) थोड़ासा,अल्पमात्रामें

थोनेयक-(सं०पुं०) गठिवन का वृक्ष ।

थौंद-(हिं०पु०) तोंद ।

थ्यावस-(हिं० पुं०) स्थिरता, दढ़ता, धीरता ।

द्

द-संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन,तवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है।

द-(सं०पुं०) अचल पर्वत, दांत, दाता, (स्त्री०) भार्या, पत्नी, (नपुं०) खण्डन, (वि०) दाता, देनेवाला।

दइत-(हिं०पुं०) देखो दैत्य

दई-(हिं०पुं०) दैवयोग,प्रारब्ध,विधाता, ईश्वर। **दईमारा**-(हिं०वि०) जिसपर परमेश्वर का कोप हो, हतभाग्य, अभागा,

दंगली-(हिं०वि०) झगड़ालू

दंगवारा-(हिं०पुं०) किसानों का परस्पर हल बैल की सहायता देना।

दंगा-(हिं०पुं०) उपद्रव, झगड़ा।

दगैत-(हिं०वि०) उपद्रवी, लड़ाका.

दंड-(हिं०पुं०) देखो दण्ड, डंडा,सोंटा। **दंडभरना**-किसी की हानिको पूरा करना; **दंड भोगना**-दंड सहना; **दंडसहना**-घाटा सहना; **दंडना**-(हिं०क्रि०) दंड देना, सज़ा देना।

दंडना, दंडनीय दंडी-देखो दण्डना, दण्डनीय, दण्डी

दंत-देखो दन्त।

दंपति, **दंभ**-देखो-दम्पति, दम्भ,

दँतिया दँतुरिया-(हिं०स्त्री०) छोटे छोटे दाँत।

दँतुला-(हिं०वि०) बड़े बड़े दाँत वाला।

दंद-(हिं०स्त्री०) किसी पदार्थ से निकलती हुई गरमी, (पुं०) लड़ाई झगड़ा, उपद्रव, गुल गपाड़ा।

दंदारु-(हिं०पुं०) छाला, फफोला।

दंदी-(हिं०वि०) उपद्रवी, झगड़ालू।

दंपा-(हिं०स्त्री०) बिजली।

दँवरी-(हिं०स्त्री०) अन्न के सूखे डंठलों में से दाने अलगाने के लिये बैलों के खुरों से रौंदवाने का काम।

दँवारी-(हिं०स्त्री०) देखो दवाग्नि।

दंश-(सं०पुं०) गोमक्षिका, एक प्रकार का कीड़ा जो विष्ठा मूत्र आदि में से उत्पन्न होता है, दाँत से काटने की क्रिया, दोष, साँप के काटने का घाव, दाँत काटने से उत्पन्न घाव, द्वेष वैर, दाँत, विषैले जन्तुओं के डंक, आक्षेप वचन, कटूक्ति; **दंशक**-(सं०पुं०) डाँस नाम की मक्खी,(वि०) दाँत से काटने वाला; **दंशन**-(सं०पुं०) दाँत से काटना, डँसना, **दंशनाशिनी**-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का तेल का कीड़ा; **दंशभीरु**-(सं०पुं०) महिष, भैंसा; **दंशमूल**-(सं०पुं०) सहजन का वृक्ष; **दंशवदन**-(सं०पुं०) सफ़ेद चील

दंशिका-(सं०स्त्री०) वनमक्षिका, डाँस।

दंशित-(सं०वि०) दाँत से काटा हुआ, कवच आदि से ढपा हुआ।

दंशी-(सं०स्त्री०) छोटा डाँस, (वि०) काटने वाला, व्यंग बोलने वाला, द्वेष करने वाला।

दंशूक-(सं०वि०) डँसने योग्य।

दंशेर-(सं०वि०) अपकारकरने वाला।

दंष्ट्र-(सं०पुं०) दाँत, शूकर, सुअर।

दंष्ट्रा-(सं०स्त्री०) दाढ, चौवड़, बिछुआ नामक पौधा; **दंष्ट्रायुध**-(सं०पुं०) वराह, सुअर; **दंष्ट्राल**-(सं०वि०) बड़े बड़े दाँतो वाला; **दंष्ट्राविष**-(सं०पुं०) वह सर्प जिसके दाँत में विष रहता है; **दंष्ट्रास्त्र**-(सं०पुं०) वराह, सुअर; **दंष्ट्रिका**-(सं०स्त्री०) दाढ़, चौघड़; **दंष्ट्री**-(सं०पुं०) शूकर, सुअर (वि०) बड़े बड़े दाँत वाला।

दंस-(हिं०पु०) देखो दंश।

दंसना-(सं०स्त्री०) कर्म, काम।

दंसु-(सं०नपुं०) अलौकिक शक्ति। **दक**-(सं०नपुं०) उदक, जल, पानी।

दकार-(सं०पुं०) तवर्ग का तीसरा अक्षर "द"। **दकारादि**-(सं०वि०) जिसके आदि में "द" हो।

दकारान्त-(सं०वि०) जिसके अन्त में "द" हो।

दकोदर-(सं०नपुं०) एक प्रकार का पेट का रोग।

दक्खिन-(हिं०पुं०) सूर्य की ओर मुख करके खड़े होने पर दहिने हाथ की ओर पड़ने वाली दिशा, भारत के दक्षिण की ओर का भाग। **दक्खिनी**-(हिं०वि०) जो दक्षिण दिशा में हो (पु०) दक्षिण देश का रहने वाला।

दक्ष-(सं०पुं०) अत्रि ऋषि, शिवका, बैल महेश्वर, बल, विष्णु (वि०) निपुण, चतुर, कुशल, सुगमता से काम करने वाला, दक्षिण भाग; (पुं०) एक प्रजापति का नाम; **दक्षकन्या**-(सं०स्त्री०) दक्ष की पुत्री सती जिसका विवाह शिव से हुआ था; **दक्षक्रतु**-(सं०पुं०) दक्ष का वह यज्ञ जिसमें शिव बुलाये नहीं गये थे; **दक्षजा**-(सं०स्त्री०)दक्ष की कन्या सती आदि; **दक्षजापति**-महादेव; **दक्षतनया**-(सं०स्त्री०) दक्ष प्रजापति की कन्या दुर्गा, अश्विनी प्रभृति; **दक्षता**-(सं० स्त्री०) निपुणता, पटुता, योग्यता। **दक्षपति**-(सं० पुं०) जिसमें सबसे अधिक बल हो; **दक्षयज्ञ**-(सं०नपुं०) दक्ष प्रजापति से किया हुआ यज्ञ; **दक्षविहिता**-(सं० स्त्री०) एक गीत का नाम (वि०) दक्ष से किया हुआ; **दक्षसुत**-(सं०पुं०) देवता।

दक्षा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी।

दक्षाय्य-(सं०पुं०) गरुड़ पक्षी, गृध्र।

दक्षिण-(सं०वि०) उत्तर के सामने की दिशा अपसव्य, दहिना, अनुकूल, निपुण, चतुर, दक्ष, समर्थ; (पुं०) विष्णु, दक्षिणाग्नि, वह नायक जिसका प्रेम अपनी सब नायिकाओं पर समान हो, तन्त्रोक्त आकार विशेष, प्रदक्षिणा; **दक्षिण कालिका**-कालिका देवी; **दक्षिण गोल**-(सं०पुं०) वे छ राशियां जो विषुवत रेखा के दक्षिण में हैं; **दक्षिण तार**-(सं०नपुं०) दहिना किनारा; **दक्षिण तीर**-(सं०नपुं०) दहिना किनारा। **दक्षिण दिक्**-(सं०स्त्री०) दक्षिण दिशा। **दक्षिणधुरीण**-(सं० स्त्री०) बैलगाड़ी के दहिने ओर का धुरा; **दक्षिणपश्चात्**-(सं०अव्य०) नैर्ऋत्य कोण; **दक्षिणपश्चिमा**-(सं० स्त्री०) नैर्ऋत्य कोण; **दक्षिणपूर्वा**-(सं०स्त्री०) अग्निकोण; **दक्षिणमानस**-(सं०नपुं०) गया के दक्षिण के एक तीर्थ का नाम; **दक्षिणमेरु**-(सं०पु०) दक्षिण केन्द्र या ध्रुव। **दक्षिणसमुद्र**-(सं०पु०) लवण समुद्र।

दक्षिणस्थ-(सं०स्त्री०) वह सारथी जो मालिक के दहिनी ओर खड़ा हो; (वि०) जो दहिनी ओर पड़ा हो।

दक्षिणा-(सं० स्त्री०) दक्षिण दिशा, प्रतिष्ठा, सम्मान, पुरस्कार, भेंट, ब्राह्मण को दिया जाने वाला दान, वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों पर आसक्त होने पर भी पहिले की तरह प्रेम करती है; **दक्षिणाकपर्द**-(सं०पु०) ऋषि वसिष्ठ का नाम; **दक्षिणाकाल**-(सं० पुं०) दक्षिणा देने का समय; **दक्षिणाग्नि**-(सं०पुं०) वह अग्नि जो यज्ञ के दक्षिण की ओर स्थापित की जाती है; **दक्षिणाचल**-(सं० पु०) मलयपर्वत मलयाचल; **दक्षिणाचार**-(सं०पु०) तन्त्रोक्त आचार भेद; **दक्षिणान्तिका**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का वैतालीय छन्द; **दक्षिणापथ**-(सं०पुं०) दक्षिण की ओर जाने का मार्ग विन्ध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश; **दक्षिणापरा**-(सं०स्त्री०) नैर्ऋत्य कोण; **दक्षिणामुख**-(सं०वि०) जिसका मुख दक्षिण की ओर हो।

दक्षिणामूर्ति-(सं०पु०) तन्त्र के अनुसार शिव की एक मूर्ति; **दक्षिणायन**-(सं०नपु०) सूर्य की दक्षिण की ओर की गति सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति, भूमध्य रेखा से दक्षिण ओरका; **दक्षिणारण्य**-(सं०नपु०) एक जगल का नाम जो भारत के दक्षिण में है।

दक्षिणार्ह-(सं०पुं०) वह जो दक्षिणा के उपयुक्त हो; **दक्षिणावर्त**-(सं०वि०) जो दक्षिण की ओर घूमा हुआ हो, दक्षिण देश सबंधी (पुं०) वह शंख जिसका भीतरी घुमाव दाहिनी ओर का हो; **दक्षिणावह**-(सं०पुं०) दक्खिन की ओरसे आनेवाली वायु; **दक्षिणाशा**-(सं०स्त्री०)दक्षिण दिशा; **दक्षिणाशापति**-मङ्गल ग्रह।

दक्षिणी-(हिं०स्त्री०) दक्षिण देश की भाषा, मराठी (वि०) दक्षिण देश सम्बन्धी **दक्षिणीय**-(सं०वि०) जो दक्षिण का पात्र हो,दक्षिण संबंधी।

दक्षिणेतर-(सं०वि०) दहिने से इतर, बाँया।

दक्षिण्य-(सं०वि०) जो दक्षिणा का पात्र हो।

दखमा-(हिं०पुं०) पारसियों के शव रखने का स्थान।

दखिन-(हिं०पुं०) देखो दक्षिण।

दखिनहा-(हिं०वि०)दक्खिन का,दक्षिणी

दगड़-(हिं०पुं०) बड़ा ढोल जो लड़ाई के मैदान में बजाया जाता है।

दगड़ना-(हिं०स्त्री०) सच्ची बात पर विश्वास न करना।

दगदगाना-(हिं०क्रि०)चमकना,दमकना, दमकाना, चमकाना। **दगदगाहट**-(हिं०स्त्री०) चमक दमक।

दगदगी-(हिं०स्त्री०) भय, सन्देह।

दगध-(हिं०पुं०) दाह क्रिया, दग्ध; **दगधना**-(हिं०क्रि०) जलना, जलाना, दुःख देना।

दगना-(हिं०क्रि०) बन्दूक या तोप का छूटना, दागा जाना, दग्ध होना, जलना।

दगर,दगरा-(हिं०पुं०) विलम्ब, देर. मार्ग, डगर, रास्ता।

दगरी-(हिं०स्त्री०) बिना मलाई की दही।

दगल-(हिं०पुं०) देखो दगला।

दगला-(हिं०पुं०) रुईदार अथवा मोटे कपड़े का बना हुआ अंगरखा।

दगवाना-(हिं०क्रि०) दागने के काम में किसी दूसरे को लगाना।

दगहा-(हिं०वि०) दागवाला, जिसमें सफ़ेद दाग हो, जिसने मृतक का दाहकर्म किया हो, दग्ध किया हुआ, दागा हुआ।

दगार्गल-(सं०नपुं०) भूमि के ऊपर के लक्षण देखकर भूमि के नीचे पानी होने या न होने का ज्ञान।

दगैल-(हिं०वि०) जिसमें कुछ दोष हो, (पुं०) छली, कपटी,।

दग्ध-(सं०वि०) जला हुआ, जलाया हुआ, जिसका हृदय दग्ध हुआ हो, पीडित दुःखित। **दग्धकाक**-सं०पुं०) द्रोणकाक. डोम कौवा; **दग्धरथ**-(सं०पुं०) इन्द्र के एक सारथीका नाम

दग्धा-(सं०स्त्री०) सूर्य के अस्त होने की दिशा, पश्चिम दिशा, कुरु नामक वृक्ष, राशि भेद युक्त कुछ तिथियों के नाम, यथा रविवार की द्वादशी, सोमवार की एकादशी, इत्यादि। **दग्धाक्षर**-सं०पुं० पिङ्गल के अनुसार झ. ह. र, भ और ष-ये पांच अक्षर जिनसे किसी छन्द का आरंभ करना मना है।

दग्धास्य-(सं०पु०) लालमिर्च का पौधा।

दग्धिका-(सं०स्त्री०) जला हुआ भात।

दाग्धेत-(सं०वि०) जलाया हुआ।

दग्धेष्टका-(सं०स्त्री०) जली हुई ईंट, झांवा।

दग्धोदर-(सं०नपुं) जला हुआ पेट।

दचक-(हिं०स्त्री०) दबाव या झटके से

लगी हुइ चोट, दवाव, धक्का।
दचकना-(हिं॰क्रि॰) ठोकर खाना, दब जाना, झटका खाना, झटका देना, ठोकर देना, झटका देना।
दचक्का-(हि॰पु॰) धक्का।
दचना-(हि॰क्रि॰) गिरना पड़ना।
दच्छ-(हि॰ पु॰) देखो दक्ष; **दच्छकुमारी**-(हिं॰स्त्री॰) देखो दक्षकन्या; **दच्छना, दछिना**-(हिं॰ स्त्री॰) देखो दक्षिणा; **दच्छसुता**-(हिं॰ स्त्री॰) देखो दक्षसुता।
दच्छिन-(हिं॰वि॰) देखो दक्षिण।
दड़घल-(हिं॰पु॰)सहदेई नामक पौधा।
दड़ोकना-(हिं॰क्रि॰)बाघ, साँड़ इत्यादि पशुओं का बोलना।
दढना-(हिं॰क्रि॰) जलना।
दढ़ियल-(हिं॰वि॰) जिसने दाढ़ी रक्खी हो, दाढी वाला।
दणियर-(हिं॰पुं॰) सूर्य, भानु।
दण्ड-(सं॰नपु॰) यष्टि,लाठी,डंडा,एक प्रकारके व्यूह का नाम,दमन,शासन, घोड़ा,कोना,मथानी,सेना, अभिमान, घमंड, दण्ड के आकार का एक ग्रह, यम, इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम, विष्णु, राजाओंकी ओर से किया जाने वाला चौथा उपाय लंबी लकड़ी जो हलमें लगी रहती है,चार हाथ की नाप, २४ मिनट का समय, घड़ी;
दण्डक-(सं॰ पुं॰) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सत्ताईस अक्षर होते हैं, डंडा, दण्ड देने वाला पुरुष,दण्डकारण्य, एक राग का नाम; **दण्डकन्दक**-(सं॰ पुं॰) सेम्हर का मुंसरा; **दण्डकर्ता**-(सं॰वि॰) दण्ड देने वाला; **दण्डकाल**-(सं॰पु॰) एक प्रकार का छन्द; **दण्डकाक**-(सं॰पु॰)डोम कौवा, काला कौवा; **दण्डकारण्य**-(सं॰नपुं॰) एक प्राचीन वन जो विन्ध्य पर्वत से से लेकर गोदावरी नदी के किनारे तक फैला हुआ था,वनवास के समय श्रीरामचन्द्र इसी वन में चौदह वर्ष रहे थे; **दण्डकी**-(सं॰ स्त्री॰) ढोलक;
दण्डगौरी-(सं॰ स्त्री॰) एक अप्सरा का नाम; **दण्डग्रहण**-(सं॰ नपुं॰) संन्यास आश्रम का ग्रहण करना; **दण्डग्राह**-(सं॰वि॰) दण्ड धारण करने वाला; **दण्डघ्न**-(सं॰वि॰) राजा के दिये हुए दण्ड को न मानने वाला; **दण्डचक्र**-(सं॰पु॰) सेना विभाग का एक क्रम; **दण्डढक्का**-(सं॰स्त्री॰) दुन्दुभि,नगाड़ा; **दण्डताम्री**-(सं॰स्त्री॰) वह जलतरंग बाजा जो ताँबे के प्यालियोंमें जल भर कर बजाया जाता है; **दण्डत्व**-(सं॰नपुं॰) दण्ड का भाव, दण्डता; **दण्डदास**-(सं॰ पुं॰) वह जो अर्थदण्ड का रुपया न देनेके कारण दास बना हो; **दण्डदेव कुल**-(सं॰नपु॰) पुलिस विभाग, शासन क्रम; **दण्डधर**-(सं॰ वि॰) डंडा धारण करने वाला; (पु॰) यमराज, शासनकर्ता,राजा,संन्यासी; **दण्डधार**-(सं॰ पु॰) यमराज राजा, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, (वि॰) शासक, शासन करने वाला, दण्डधारक; **दण्ड धारण**-(सं॰नपु॰)सन्यास आश्रम को ग्रहण करना; **दण्डधारी**-(सं॰वि॰) दण्ड धारण करने वाला सन्यासी; **दण्डन**-(सं॰नपु॰) दण्ड देने की क्रिया, शासन; **दण्डनायक**-(सं॰ पु॰)सेनापति,दण्ड देनेका अधिकारी, सूर्य का एक अनुचर; **दण्डनिपातन**-(सं॰नपुं॰) शासनपद्धति; **दण्डनीति**-(सं॰ स्त्री॰) अर्थशास्त्र, वह शास्त्र जिसमे राज्यशासनके संबंधके नियम और उपदेश हों; **दण्डनीय**-(सं॰वि॰) दण्ड देने योग्य; **दण्ड नेता**-(सं॰वि॰) दण्ड (सजा) देने वाला; **दण्डप**-(सं॰पुं॰)दण्ड द्वारा शासन करनेवाला राजा; **दण्डपांशुल**-(सं॰पुं॰)द्वारपाल; **दण्डपाणि**-(सं॰ पु॰) यम जो सर्वदा अपने हाथ मे दण्ड धारण करता है; **दण्डपात**-(सं॰पुं॰) एक प्रकार का सन्निपात रोग; **दण्डपाल**-(सं॰नपुं॰) द्वारपाल डयोढ़ीदार; **दण्डपाली**-(सं॰स्त्री॰) तुलायन्त्र, तराजू; **दण्डपाशक, दण्डपाशिक**-(सं॰पुं॰) दण्ड देने वाला कर्मचारी,घातक; **दण्डप्रणाम**-(सं॰पु॰) भूमि पर डंडे के समान पड़ कर प्रणाम करना।
दण्डवध-(सं॰ पुं॰) प्राणदण्ड; **दण्डवालाधि**-(सं॰पुं॰) हस्ती, हाथी, **दण्डबाहु**-(सं॰वि॰) जिसकी बाँह डंडे के समान हों; **दण्डभीति**-(सं॰स्त्री॰) दण्ड पाने का भय; **दण्डभृत्**-(सं॰पुं॰) कुम्हार,(वि॰)दण्डधारक, **दण्डमाथ**-(सं॰ पु॰) सीधापन या रास्ता; **दण्डमाथिक**-(सं॰पुं॰) सीधे मार्ग से चलनेवाला; **दण्डमानव**-(सं॰पुं॰) वह जिसको दण्ड देने की आश्यकता होती है, बालक; **दण्डयात्रा**-(सं॰स्त्री॰) सेना की चढाई, बारात; **दण्डयाम**-(सं॰पुं॰) यमराज, दिन, अगस्त्य मुनि; **दण्डयोग**-(सं॰पु॰) देखो दण्डविधान; **दण्डरी**-(सं॰स्त्री॰) एक प्रकार की ककड़ी;
दण्डवत्-(सं॰वि॰) दण्ड के समान, दण्डधारी (स्त्री॰) पृथ्वीपर लेट कर प्रणाम करना; **दण्डवादी, दण्डवासिक**-(सं॰पु॰) द्वारपाल,डचोढीदार; **दण्डवासी**-(सं॰पुं॰) गांवका मुखिया **दण्डवाही**-(सं॰पु॰) दण्ड धारण करने वाला कर्मचारी; **दण्डविधि**-(सं॰स्त्री॰) अपराधी को दण्ड देने की व्यवस्था **दण्डविष्कम्भ**-(सं॰पु) मथानी बाँधने का खंभा; **दण्डवृक्ष**-(सं॰पुं॰) थूहर, सेहुड़; **दण्डसंहिका**-(सं॰स्त्री॰) अपराधी को दण्ड देने की व्यवस्था, **दण्डसेन**-(सं॰पुं॰)पुरुवंश के एक राजा का नाम; **दण्डस्थान**-(सं॰ पु॰) शरीर का वह अंग जहां पर दण्ड दिया जा सकता है; **दण्डा**-(हिं॰पु॰) देखो डंडा; **दण्डाघात**-(सं॰पुं॰) डंडे की मार; **दण्डाज्ञा**-(सं॰स्त्री॰) दण्ड देनेकी आज्ञा; **दण्डादण्डि**-(सं॰अव्य॰) डंडों की मारपीट; **दण्डाधिप, दण्डाधिपति**-(सं॰पुं॰) दण्डाधिपति,राजा; **दण्डापूप न्याय**-(सं॰पुं॰) एक प्रकार का न्याय या दृष्टान्त कथन जिससे यह सूचित किया जाता है कि जब किसीसे कठिन काम हो गया तो उससे सहज काम अवश्य हो गया होगा; **दण्डायमान**-(सं॰वि॰) जो डंडे की तरह सीधा खड़ा हो; **दण्डार**-(सं॰पु॰) मतवाला हाथी, एक प्रकार का धनुष; **ददण्डालय**-(सं॰पु॰) वह न्यायालय जहां दण्ड देने का विधान हो, एक प्रकार का छन्द जो दण्डकला भी कहलाता है; **दण्डासन**-(सं॰नपु॰) हठयोग का एक आसन; **दण्डाहत**-(सं॰वि॰) डंडे से माराहुआ
दण्डिका-(सं॰स्त्री॰) दण्ड देनेवाला, मारने वाला।
दण्डिक-(सं॰स्त्री॰) डोरी, रस्सी, एक प्रकार का हार, बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
दण्डित-(सं॰वि॰) वह जिसको दण्ड मिला हो।
दण्डिन्-(सं॰पुं॰) यम, राजा,द्वारपाल, (वि॰) दण्ड धारण करनेवाला; (पु॰) महादेव, धृतराष्ट्रके एक पुत्र का नाम
दण्डी-(सं॰पु॰) हिन्दुओं का एक उपासक संप्रदाय, ये लोग दण्ड कमण्डलु लिये इधर उधर घूमते हैं।
दण्डच-(सं॰वि॰) दण्डनीय, जो दण्ड पाने योग्य हो।
दतवन-(हिं॰स्त्री॰ देखो दतुवन।
दतारा-(हिं॰वि॰) दाँत वाला।
दतिया-(हिं॰स्त्री॰) छोटा दाँत।
दतुअन,दतुवन-(हिं॰स्त्री॰)बबूल,नीमआदि की पतली टहनी जिसको दाँतों से कूंच कर तथा कूंची बनाकर लोग दांतों को रगड़ते हैं, दाँत स्वच्छ करने की क्रिया; **दतौन**-(हिं॰स्त्री॰) देखो दतुवन
दत्त-(सं॰वि॰) रक्षित, बचाया हुआ, दान दिया हुआ, (पुं॰) दान, एक ऋषि का नाम,वैश्यों की एक उपाधि; दत्तक, **दत्तक**-(सं॰पुं॰) बारह प्रकार के पुत्रों में से एक, जो वास्तव में पुत्र न हो परन्तु पुत्र मान लिया गया हो, गोद लिया हुआ बेटा; **दत्तकपुत्र**-(सं॰पुं॰) गोद लिया हुआ पुत्र; **दत्तचित्त**-(सं॰वि॰) जिसने किसी कार्य के करने मे खूब मन लगाया हो; **दत्तप्राण**-(सं॰वि॰) जिसने अपना प्राण उत्सर्ग किया हो; **दत्तमार्ग**-(सं॰वि॰) मार्ग से अलग हो जाना; **दत्तवर**-(सं॰वि॰) जिसको वर दिया गया हो; **दत्तशुल्का**-(सं॰ स्त्री॰) वह कन्या जिसको पण दिया गया हो; **दत्तहस्त**-(सं॰वि॰) जिसको रक्षा के लिये हाथ का सहारा दिया गया हो, रक्षित।
दत्तात्मा-(सं॰पु॰) माता पिता से त्यागा हुआ पुत्र जो स्वयं किसी के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बन गया हो
दत्तात्रेय-(सं॰पु॰) एक ऋषि जो विष्णु के एक अवतार माने जाते हैं।
दत्तावधान-(सं॰वि॰) एकाग्र चित्त, सावधान।
दत्तासन-(सं॰वि॰) जिसको आसन दिया गया हो।
दत्तिक-(सं॰वि॰) अल्पदत्त, थोड़ा दिया हुआ।
दत्ती-(हिं॰स्त्री॰) दृढ़ सम्बन्ध, सगाई का पक्का होना।
दत्तेय-(सं॰पुं॰) इन्द्र।
दत्तोपनिषद्-(सं॰स्त्री॰) एक उपनिषद का नाम।
दत्र-(सं॰नपुं॰) धन, सुवर्ण सोना।
दत्रिक-(सं॰वि॰) दान द्वारा दिया हुआ, (पु॰) दत्तक पुत्र।
दद-(सं॰वि॰) दाता, देने वाला।
ददन-(सं॰नपुं॰) दान।
ददरा-(हिं॰पु॰)छाननेका कपड़ा,छन्ना
ददरी-(हिं॰स्त्री॰) तमाखू के पत्ते पर पड़ा हुआ चिह्न,एक मेला जो कार्तिक पूर्णिमा को बलिया तथा सोनपुर में लगता है।
ददा-(हिं॰पुं॰) देखो दादा।
ददिया ससुर-(हिं॰पु॰)ससुर का पिता, पत्नी या पति का दादा। **ददिया सास**-(हिं॰स्त्री॰)पति या पत्नी की दादी
ददिहाल-(हिं॰पु॰) दादा का कुल, दादा का घर।
ददोरा-(हिं॰पु॰) शरीर पर उभड़ा हुआ चकोता जो मच्छर, बर्रे आदि के काटने से उत्पन्न होता है।
दद्रु-(सं॰पु॰) कच्छप, कछुआ, दादका रोग; **दद्रुक**-(सं॰पुं॰)दद्रु दादका रोग,
दद्रुघ्न-(सं॰पु॰) चकवेंड़ का वृक्ष,
दद्रुण दद्रूण-(सं॰वि॰) जिसको दाद का रोग हुआ हो।
दद्रू दद्रूण-(सं॰पु॰) दाद का रोग।
दध-(हिं॰पु॰) देखो दधि, दही।
दधसार-(हिं॰पु॰)दहीका तत्व या सार
दधि-(सं॰पु॰) जमाया हुआ दूध, दही, वस्त्र, कपड़ा,(हिं॰पुं॰) समुद्र, सागर;
दधिक-(सं॰पु॰) सलई का पेड़;
दधिकाँदो-(हिं॰पु॰) जन्माष्टमी के दूसरे दिन होने वाला एक उत्सव जिसमे लोग दहीमें हलदी मिलाकर एक दूसरेपर फेंकते हैं; **दधिकूर्चिका**-(सं॰स्त्री॰) छेना; **दधिका**-(सं॰पु॰) अश्व; घोड़ा; **दधिग्राम**-(सं॰पु॰) श्रीकृष्ण का एक लीला स्थान;
दधिचार-(सं॰पुं॰)दही मथनेकी मथानी
दधिज-(सं॰पुं॰) नवनीत, मक्खन; **दधिजात**-(सं॰पुं॰) मक्खन, चन्द्रमा; **दधित्थ दधिनाम**-(सं॰पुं॰) कपित्थ, कैथ; **दधिपुष्पी**-(सं॰स्त्री॰) जोतिष्म-

ती लता; **दधिपूप**-(सं० पु०) एक प्रकार का पक्वान; **दधिफल**-(सं०पु०) कपित्थ, कैथ; **दधिभव**-(सं०नपुं०) नवनीत, मक्खन; **दधिमण्ड**-(सं०पुं०) दही का पानी; **दधिमुख**-(सं०पुं०) सुग्रीव के मामा का नाम; **दधियार**-(हिं०पु०) अर्कपुष्पी नामक लता;

दधिलेह-(सं०पु०) दही के ऊपर की मलाई; **दधिवत्**-(सं० पु०) दही मिलाया हुआ; **दधिवारि**-(सं०नपुं०) दही का पानी; **दधिवास्तुका**-(सं०स्त्री०) गोदन्ती हरताल, जवासा; **दधिवाहन**-(सं०पुं०) राजा अङ्ग के पुत्र का नाम; **दधिशोण**-(सं०पु०) सफेद बन्दर; **दधिसक्तु**-(सं०पु०) दही मिला हुआ सत्तू; **दधिसर**-(सं०पुं०) दही के ऊपर की मलाई; **दधिसार**-(सं०पु०) नवनीत; मक्खन; **दधिसुत**-(हिं० पुं०) कमल, मोती, चन्द्रमा, विष; (सं० पुं०) नवनीत, मक्खन; **दधिसुता**-(हिं०स्त्री०) शुक्ति, सीप; **दधिस्नेह**-(सं०पु०) दही पर की मलाई; **दधिस्वेद**-(सं०पु०) तक्र, छाछ, मठा।

दधीच-(सं०पु०) शुक्राचार्य के पुत्र का नाम। **दधीचस्थि**-(सं०पु०) दधीचि की हड्डी, वज्र, हीरा।

दधीचि-(सं० पु०) शुक्राचार्य के पुत्र, वृत्रासुर को मारने के लिये इनसे उनकी हड्डी माँगी गई थी, इस निमित्त उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये थे, तबसे इनकी गणना सबसे बड़े दानियों में प्रसिद्ध है।

दधीमख-(सं०पु०) एक बन्दर का नाम।

दध्न-(सं०पुं०) चौदह यमों में से एक।

दध्यग्र-(सं०नपुं०) दही के ऊपर की मलाई।

दध्कङ्कु-(सं०पुं०) लोहबान।

दध्यन्न-(सं०नपुं०) दही मिला हुआ अन्न।

दध्यानी-(सं०स्त्री०) सुदर्शन का पौधा।

दध्योदन-(सं०पुं०) दही मिला हुआ भात

दन-(हिं०पुं०) दिन।

दनकर-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।

दनगा-(हिं०पुं०) खेत का छोटा टुकड़ा।

दनदनाना-(हिं०क्रि०) दनदन शब्द करना, आनन्द करना।

दनमणि-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।

दनादन-(हिं०क्रि०वि०) दनदन शब्द के साथ, तुरत।

दनु-(सं०स्त्री०) दक्ष की एक कन्या का नाम जिसका विवाह कश्यप ऋषि से हुआ था, इनके चालीस पुत्र थे, ये सब दानव कहलाते है; **दनुज**-(सं०पु०) असुर, राक्षस; **दनुजदलनी**-असुरों का नाश करनेवाली दुर्गा, **दनुजपति**-रावण।

दनुजद्विष्-देवता; **दनुजराय**-(हिं०पु०) हिरण्यकश्यपु। **दनुजारि**-(सं०पुं०) दनुजशत्रु, देवता। **दनुजेन्द्र**-(सं०पुं०) दानवों का राजा रावण; **दनुजेश**-(सं०पु०) हिरण्यकश्यपु, रावण।

दनुष-(सं०पुं०) रावण।

दनुसम्भव दनुसूनु-(सं० पु०) दनु के पुत्र, राक्षस।

दन्त-(सं०पु०) पर्वत का मध्य भाग, हाथी का दाँत, ऊँचा पथरीला मैदान, दाँत, बत्तीस की संख्या, **दन्तक**-(सं०पु०) पहाड़ की चोटी, दाँत। **दन्तकथा**-(सं०स्त्री०) सुनी हुई बात, जनश्रुति; **दन्तकराल**-(सं०पुं०) एक प्रकार का दाँत का रोग, **दन्तकर्षण**-(सं०पुं०) जंभीरी नीबू; **दन्तकाष्ठ**-(सं०नपु०) दतवन, **दन्तकाष्ठक**-(सं०नपुं०) तरवट का पेड़; **दन्तकूर**-(सं० पुं०) संग्राम, युद्ध; **दन्तकेतु**-(सं०पुं०) छोटे नीबू का पेड़। **दन्तग्राही**-(सं०वि०) दाँतों को नष्ट करने वाला; **दन्तघर्ष**-(सं०पुं०) दाँत किरकिराना; **दन्तघात**-(सं०पुं०) दाँत से काटना; **दन्तचाल**-(सं०पुं०) दाँतों का हिलाना; **दन्तच्छद**-(सं०पुं०) ओष्ठ, ओठ; **दन्तच्छदी**-(सं०स्त्री०) बिंबाफल, कुन्दरू; **दन्तजात**-(सं०वि०) दाँत निकलने योग्य; **दन्तजाह**-(सं०नपुं०) दन्तमूल, दाँत की जड़; **दन्तादशन**-(सं०नपुं०) दाँत दिखलाना; **दन्तधावन**-(सं० नपुं०) दाँत धोने या स्वच्छ करने की क्रिया; **दन्तपत्र**-(सं०नपुं०) कान का एक आभूषण; **दन्तपवन**-(सं०नपुं०) दातुन दतवन करने का काम; **दन्तपात**-(सं०पुं०) दाँतों का गिर जाना। **दन्तपाली**-(हिं०स्त्री०) दाँत का अगला भाग; **दन्तपीठक**-(सं०नपुं०) दाँत के ऊपर का मांस, मसूड़ा; **दन्त पुष्प**-(सं०नपुं०) कुन्द का फूल, पीपल का वृक्ष; **दन्तप्रक्षालन**-(सं०नपुं०) दाँत स्वच्छ करने का काम; **दन्तफल**-(सं०नपुं०) कपित्थ, कैथ; **दन्तफला**-पिप्पली, छोटी पीपल; **दन्तभङ्ग**-(सं०पुं०) दाँत का टूटना; **दन्तमय**-(सं०वि०) दाँत के समान; **दन्तमला**-(सं०नपुं०) दाँतों की मैल या मठ; **दन्तमाँस**-(हिं०नपुं०) मसूढ़ा; **दन्तमूल**-(सं०नपुं०) दाँत की जड़; **दन्तमूलिका**-(सं०स्त्री०) जमालगोटे का वृक्ष; **दन्तमूलीय**-(सं०पुं०) दन्तमूल से उच्चारण किये जाने वाले वर्ण-तवर्ग; **दन्तरञ्जन**-(सं०नपुं०) कौशीष, कोसीस; **दन्तरोगी**-(सं०वि०) जिसको दाँत का रोग हुआ हो; **दन्त लेखन**-(सं०नपुं०) मसूढ़े को चीर कर इसमें की पीब निकालने की क्रिया; **दन्तवक्र**-(सं०पुं०) शिशुपाल के भाई का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था; **दन्तवल**-(सं० पु०) हाथ; **दन्तवल्क**-(सं०नपुं०) मसूढ़ा; **दन्तवस्त्र**-**दन्तवासस**-(सं०नपुं०) ओष्ठ, ओंठ; **दन्तविद्रधि**-(सं०पुं०) दाँत का एक रोग; **दन्तबीज**-(सं०पुं०) दाड़िम, अनार; **दन्तवीणा**-(सं०स्त्री०) दाँत में लगाकर बाजने की एक प्रकार की वीणा; **दन्तवेदना**-(सं०स्त्री०) दाँत की पीड़ा; **दन्तवेष्ट**-(सं०पुं०) दाँतों का एक रोग; **दन्तव्यसन**-(सं०नपुं०) दाँतों का नष्ट होना; **दन्तशङ्कु**-(सं०पुं०) प्राचीन काल का चीड़ फाड़ करने का एक प्रकार अस्त्र; **दन्तशठ**-(सं०पुं०) जंभीर, नीबू, कैथ, कमरख, नारंगी, खटाई; **दन्तशठा**-(सं०स्त्री०) खट्टी लोनिया; **चूक**, **दन्तशर्करा**-(सं०स्त्री०) दाँतों मे मठ जम जाने से उत्पन्न रोग।

दन्तशाण-(सं०पुं०) दाँतों में लगाने की एक प्रकार की मिस्सी।

दन्तशिरा-(सं०स्त्री०) मसूढ़ा; **दन्तशुद्धि**-(सं०स्त्री०) दाँतों को स्वच्छता; **दन्तशूल**-(सं०पुं०) दाँत की पीड़ा; **दन्तशोफ**-(सं०पुं०) मसूड़े में होने वाला फोड़ा; **दन्तसंघर्ष**-(सं० पुं०) दाँत किरकिराना, **दन्तहर्ष**-(सं० पुं०) दाँत का एक रोग जिसमें ठंढी या गरम वस्तु के दाँतों में स्पर्श करने पर बड़ा कष्ट होता है; **दन्तहर्षक**-(सं०पुं०) जम्भीरी नीबू।

दन्ताग्र-(सं०नपुं०) दाँत की नोक या अग्रभाग। **दन्ताघात**-(सं०पु०) दाँत का आघात या चोट। **दन्ताद**-(सं०पुं०) दाँतों में कीड़े पड़ने का रोग। **दन्तादन्ति**-(सं०स्त्री०) एक दूसरे को दाँत काटने का युद्ध। **दन्तान्तर**-(सं०नपुं०) दाँत का मध्य। **दन्तायुद्ध**-(सं०पुं०) शूकर, सुअर। **दन्तार्बुद**-(सं०पुं०) मसूढ़े में होने वाला फोड़ा। **दन्तालिका, दन्ताली**-(सं०स्त्री०) घोड़े की लगाम। **दन्तावल**-(सं०पु०) हस्ती, हाथी।

दन्तिका, दन्तिजा-(सं०स्त्री०) दन्तीवृक्ष, जमालगोटा। **दन्तिदन्त**-(सं०पुं०) हाथी के दाँत।

दन्तिनी-(सं०स्त्री०) जमालगोटा।

दन्ती-(सं०स्त्री०) हाथी, अण्डी की जात का एक वृक्ष; **दन्तीफल**-पिप्पली, छोटी पीपल।

दन्तुर-(सं०वि०) जिसके दाँत आगे को निकले हों, दँतुला, हाथी, शूकर, सुअर; **दन्तुरच्छद**-(सं०पुं०) बिजौरा नीबू।

दन्तोच्छिष्ट-(सं०वि०) दाँत से जूठा किया हुआ। **दन्तोत्पाटन**-(सं० पुं०) दाँत का उखाड़ना। **दन्तोद्भेद**-(सं० पुं०) दाँत का निकलना।

दन्तोष्ठ्य-(सं०पुं०) वह वर्ण जिसका उच्चारण दाँत और ओंठ से हो।

दन्त्य-(सं०वि०) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो, तवर्ग।

दन्दश-(सं०पुं०) दन्त, दाँत।

दन्दशूक-(सं०पुं०) सर्प, राक्षस, (वि०) हिंसा करने वाला।

दन्दह्यमान-(सं० वि०) दहकता हुआ।

दन्न-(हिं० पु०) तोप आदि के छूटने का 'दन' शब्द।

दपट-(हिं०स्त्री०) डपट, घुड़की। **दपटना**-(हिं०क्रि०) डाटना, घुड़कना, झिड़कना

दपु-(हिं०पुं०) दर्प, अहकार, शेखी।

दपेट-(हिं०स्त्री०) देखो दपट, झिड़की; **दपेटना**-(हिं०क्रि०) झिड़कना, डपेटना

दफ्तर-(हिं०पुं०) कार्यालय, **दफ्तरी**-(हिं०पु०) कार्यालय का कर्मचारी।

दफरा-(हिं०पुं०) काठ का टुकड़ा जो नाव के दोनों ओर धक्का बचाने के लिये लगाया जाता है। **दफराना**-(हिं०क्रि०) रक्षा करना, बचाना

दफला-(हिं० पुं०) देखो डफला।

दबंग-(हिं०वि०) दबदबेवाला, प्रभावशाली

दबक-(हिं०स्त्री०) छिपाने का भाव, दबने की क्रिया, सिकुड़न, धातु को पीटकर लंबा करने की क्रिया, **दबकगर**-(हिं०पु०) धातु के तार बनाने वाला, **दबकना**-(हिं०क्रि०) डर के मारे संकुचित स्थान में छिपना, लुकना, छिपना, धातु को पीटना या बढ़ाना, डाँटना, डपटना; **दबकनी**-(हिं० स्त्री०) भाथी का छिद्र जिसमें से होकर हवा भीतर जाती है; **दबकवाना**-(हिं० क्रि०) दबकाने में किसी दूसरे को प्रवृत्त करना; **दबका**-(हिं०पुं०) कामदानी का चिपटा तार,; **दबकाना**-(हिं०क्रि०) ढाँपना, छिपाना, डपटना, छिपा कर रखना; **दबकी**-(हिं०स्त्री०) सुराही के आकार का मिट्टी का पात्र, बरतन, दबकने की क्रिया।

दबकैया-(हिं० पुं०) सोने चाँदी के तार को पीटकर बढाने वाला।

दबगर-(हिं० पुं०) चमड़े के कुप्पे या ढाल बनाने वाला।

दबाना-(हिं०क्रि०) भार से नीचे को आना, दाब या पंजे में आना, ऐसी अवस्था में आना जब कुछ बस न चले, किसी वस्तु का दूसरे के अधिकार मे अनुचित रीति से चले जाना शान्त रहना, संकोच करना, धीमा पड़ना, अच्छा न जान पड़ना, किसी के दबाव से विवश होना, अपने स्थान पर टिका न रहना, पीछे को हटना, किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना, मन्द पड़ना; **दबी जबान कहना**-किसी बात को स्पष्ट न कहना परन्तु ऐसे शब्दों में कहना जिसमें सच्ची बात की कुछ झलक आती हो।

दबमो-(हिं०पुं०) हिमालय पर्वत का एक प्रकार का बकरा।

दबवाना-(हिं०क्रि०) दबाने के काम म दूसरे को लगाना।

दबस-(हिं०पुं०) जहाज़ पर की रसीद।

दबाई-(हिं०स्त्री०) दबाने का कार्य।

दबाऊ-(हिं० वि०) दबाने वाला, जिसका पिछला भाग आगे के भाग से भारी हो।

दबाना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ को नीचे की ओर धँसाने के लिये ऊपर भार देना, किसी पदार्थ पर बहुत ज़ोर लगाना, भार के नीचे रखना, किसी को फैलने न देना परन्तु गुप्त रखना दूसरे के गुणों को या महत्व को छिपा रखना, विवश करना, धरती में गाड़ना, अपने स्थान से पीछे को हटना, अनुचित रीति से किसी का माल ले लेना, आगे बढ़कर किसी वस्तु को पकड़ना, असहाय अवस्था में किसी को लाना, दमन करना, शान्त करना।

दबाव-(हिं०पुं०) लकड़ी का बना हुआ लंबा चौड़ा सन्दूक; **दबाव**-(हिं०पुं०) दबाने की क्रिया, चाँप, प्रताप।

दबिल-(हिं०पुं०) हलवाइयों का खुरपी की तरह का लकड़ी का बना हुआ एक अस्त्र।

दबूसा-(हिं०पुं०) बड़ी नाव का पिछला भाग जिसमें पतवार लगाई होती है, पिच्छल।

दबेला-(हिं०वि०) जिस पर प्रभाव या दबाव पड़ा हो, शीघ्र होने वाला। **दबैल**-(हिं०वि०) जो किसी के प्रभाव या दबाव में हो, बहुत डरनेवाला, दब्बू।

दबोचना-(हिं०क्रि०) किसी को अकस्मात् पकड़कर दबा लेना, छिपाना, धर दबाना।

दबोस-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का चमकीला पत्थर।

दबोरना-(हिं०क्रि०) देखो दबाना।

दबौता-(हिं०पुं०) नील के डंठलों को दबाने का लकड़ी का कुंदा।

दबौनी-(हिं०स्त्री०) फूल पत्ती उभाड़ने का नकाशी करनेवाले का एक अस्त्र

दभ्य-(सं०वि०) हन्तव्य, मारने योग्य।

दभ्र-(सं०वि०) अल्प, थोड़ा (पुं०)समुद्र, उत्तर दिशा।

दम-(सं०पुं०) दण्ड, दमन, इंद्रियों के वश में करना, कीचड़, घर, एक प्राचीन ऋषि का नाम, विष्णु, दमयन्ती के एक भाई का नाम, बुद्ध का एक नाम।

दमक-(सं० वि०) दम करनेवाला, शासन कर्ता, (हिं०स्त्री०) द्युति, चमक, चमचमाहट। **दमकना**-(हिं०क्रि०) चमकना, चमचमाना।

दमकला-(हिं०स्त्री०) वह यन्त्र जिसके द्वारा किसी तरल पदार्थ का फ़ौवारा बड़े वेग से बड़ी दूर तक फेंका जाता है। **दमकला**-(हिं०पु०) एक बड़ा पात्र जिसमें पिचकारी लगी होती है, इससे बड़ी महफ़िलों में गुलाब-जल या रंग छिड़का जाता है, बड़ी अंगीठी जो दमकल के आकार की होती है, देखो दमचूल्हा।

दमचा-(हिं० पु०) खेत के कोने पर बनी हुई मचान जिसपर बैठ कर किसान अपने खेत की रखवाली करता है।

दमचूल्हा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लोहे का बना हुआ चूल्हा जिसके बीच में जाली होती है और बगल में हवा देने के लिये एक बड़ा छेद होता है।

दमजोड़ा-(हिं० पुं०) असि, खड्ग, तलवार।

दमड़-(हिं०पुं०) धन, रुपया पैसा।

दमड़ी-(हिं०स्त्री०) एक पैसे का आठवां भाग।

दमथ-(सं०पुं०) दण्ड, सज़ा।

दमन-(सं० पुं०) दबाने की क्रिया, दण्ड, इन्द्रियों की चंचलता को रोकना, कन्दपुष्प का वृक्ष, शिव, महादेव विष्णु, एक ऋषि का नाम।

दमनक-(सं०पुं०) एक प्रकार का पौधा, दौना, एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में छ अक्षर होते हैं, (वि०) दमन करने वाला।

दमनशील-(सं०वि०) जिसकी प्रकृति दमन करने की हो, दमन करने वाला।

दमना-(हिं०क्रि०) दमन करना।

दमनी-(सं०स्त्री०) अग्निदमनी नामक वृक्ष, (हिं० स्त्री०) संकोच, लज्जा। **दमनीय**-(सं०वि०) दमन करने योग्य, जो दबाया जा सके।

दमयत्-(सं०वि०) शासन करने वाला।

दमयन्ती-(सं०स्त्री०) नल राजा की पत्नी जो विदर्भ के राजा भीमसेन की कन्या थी।

दमवाज-(हिं०वि०) फुसलाने वाला।

दमाद-(हिं० पु०) जामाता, कन्या का पति।

दमादम-(हिं०क्रि०वि०) दमादम शब्द के साथ, लगातार, बराबर।

दमान-(हिं०पुं०) दामन, पालकी की चादर।

दमानक-(हिं०स्त्री०) तोपों की बाढ़।

दमारि-(हिं०पुं०) वन की आग।

दमाह-(हिं०पु०)बैलका श्वास का रोग

दमावति-(हिं०स्त्री०) दमयन्ती।

दमित-(सं०वि०) वश में किया हुआ,, कष्ट सहने वाला।

दमी-(सं० वि०) दम करने वाला, (हिं०वि०) दम लगाने वाला, गाँजा पीने वाला।

दमैया-(हिं०वि०) दमन करने वाला।

दमोड़ा-(हिं०पुं०) मूल्य।

दमोदर-(हिं०पुं०) देखो दामोदर।

दम्पती-(सं० पुं०) पति पत्नी, स्त्री पुरुष का जोड़ा।

दम्भ-(सं०पुं०) कपट, छल, धोखा।

दम्भक-(सं०पुं०) पाखंडी, ढकोसला करने वाला।

दम्भचर्या-(सं०स्त्री०)दुष्टता.शठता,ठगी।

दम्भन-(सं० पु०) दम्भ, पाखण्ड, लुभाने की क्रिया।

दम्भी-(सं० वि०) अभिमानी, घमंडी, पाखंडी, आडम्बर करनेवाला।

दम्भोद्भव-(सं०वि०)अभिमान से किया हुआ।

दम्भोलि-(सं०पु०) इन्द्र का अस्त्र,वज्र

दम्य-(सं०वि०) दमनीय, दमन करने योग्य।

दयंत-(हिं०पु०) देखो दैत्य।

दय-(सं०पुं०) दया, कृपा, करुणा।

दया-(सं०स्त्री०) वह दुःख पूर्ण वेग जो किसी मनुष्य के मन में दूसरे को कष्ट में देख कर उत्पन्न होता है और वह उस कष्ट को दूर करने का प्रयत्न करता है, करुणा, दक्ष की एक कन्या जिसका विवाह धर्म से हुआ था, अलंकार में शान्त रस का व्यभिचार; **दयादृष्टि**-(सं०स्त्री०) किसी के प्रति करुणा या अनुग्रह का भाव।

दयाना-(हिं०क्रि०) दयालु होना, कृपा दिखलाना।

दयानिधान-(सं० पु०) अति दयालु पुरुष। **दयानिधि**-(सं० पुं०) वह मनुष्य जिसके चित्त में बहुत दया हो, ईश्वर का एक नाम। **दयापात्र**-(सं०पु०) वह जिस पर दया करना उचित हो। **दयामय**-(सं०वि०) दया से पूर्ण, अत्यन्त दयालु, ईश्वर का एक नाम।

दयार-(हिं०पुं०) देवदार का वृक्ष।

दयार्द्र-(सं०वि०) दयापूर्ण, दयालु।

दयाल-(हिं० वि०) दयालु, कृपालु। **दयालु**-(सं०वि०) दया युक्त, दयावान्, कृपालु। **दयालुता**-(सं०स्त्री०) दया करने की प्रवृत्ति, दया होने का भाव। **दयावंत**-(हिं०वि०) दयायुक्त, दयालु। **दयावती**-(सं०वि०) दया करने वाली। **दयावना**-(हिं० वि०) दया करने योग्य, दयावान, दीन। **दयावान**-(हिं०वि०) जिसके चित्त में दया हो, कृपालु। **दयावीर**-(सं०पुं०) वह मनुष्य जो दूसरे के दुःख दूर करने के लिये प्राण तक दे सकता है, दया युक्त नायक। **दयाशील**-(सं०वि०) दयावान् कृपालु; **दयासागर**-(सं० पुं०) जिसके चित्त में अगाध दया हो, अत्यन्त दयालु मनुष्य।

दयित-(सं०पुं०) पति, (वि०) प्रियतम, प्यारा।

दयिता-(सं० स्त्री०) पत्नी, भार्या; **दयिताधीन**-स्त्री के वशीभूत, जोरू का गुलाम।

दयित्नु-(सं०वि०) दयाशील, दयालु।

दर-(सं०नपु०) शंख, गदा, भय,कन्दरा पहाड़ की गुफा।

दर-(हिं०पु०) सेना समूह दल, स्थान (स्त्री०) भाव, निर्ख, प्रतिष्ठा, कद्र, ठिकाना, विदीरण, (वि०) थोड़ासा; **दर दर मारा फ़िरना**-दुर्दशा में पड़ कर इधर उधर भटकना।

दरक-(सं०वि०) डरपोक, कायर, भीरु, (हिं०स्त्री०) वह दरार जो दाब पड़ने से उत्पन्न होती है। **दरकना**-(हिं०क्रि०) विदीर्ण होना, फटना।

दरकाठिका-(सं०स्त्री०) शतावर नामक औषधि।

दररना-(हिं०क्रि०) धक्का देना; **दरराना** (हिं०क्रि०) वेगसे आ पहुंचना।

दरकच-(हिं०स्त्री०) वह चोट जो रगड़ खाने से या चोट लगने से उत्पन्न हो, कुचल जाने से लगी हुई चोट।

दरकटी-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु के भाव का ठहरना।

दरकना-(हिं०क्रि०)विदीर्ण होना, दबाव से फट जाना, चिरना। **दरका**-(हिं०पुं०) विदीर्ण होने का चिह्न, दरार, वह चोट जिससे कोई वस्तु फट जाय। **दरकाना**-(हिं०क्रि०)फटना, फाड़ना।

दरखत-(हिं०पुं०) वृक्ष।

दरज-(हिं०स्त्री०) दरार, फटन।

दरजन-(हिं०पुं०) बारह का समूह।

दरजा-(हिं०पुं०) स्थिति, लोहा ढालने का एक प्रकार का यन्त्र।

दरजिन-(हिं०स्त्री०) दर्जी की स्त्री।

दरजी-(हिं०पु०)कपड़ा सीने का व्यापार करने वाला।

दरण-(हिं०पुं०) ध्वस, नाश, पीसने की क्रिया।

दरथ-(सं०पुं०) प्रसारण, फ़ैलाव, गर्त, गड्ढा।

दरद्-(सं०स्त्री०) पर्वत, पहाड़, प्रताप, किनारा।

दरद-(सं०नपुं०)हिंगुल, सिगरिफ़,खर्पर, खपड़िया, एक म्लेच्छ जाति का नाम, कश्मीर और हिन्दूकुश पर्वत के प्रदेश का नाम।

दरद-(हिं०स्त्री०) पीड़ा, व्यथा, दया।

दरदरा-(हिं०वि०) जिसके कण मोटेहों, जो महीन पिसा न हो। **दरदराना**-(हिं० क्रि०) बहुत महीन न पीसना, थोड़ा पीसना जिसमें मोटे रवे रह जावें। **दरदरी**-(हिं० वि०) जिसके रवे मोटे हों।

दरद्-(हिं०पु०) पीड़ा

दरन-(हिं०वि०) नाश करने वाला।

दरना-(हिं०क्रि०) दरदरा बनाना, मोटा पीसना, नष्ट करना।

दरप-(हिं०पु०) देखो दर्प।

दरपन-(हिं० पु०) दर्पण।

दरपना-(हिं०क्रि०) अहंकार करना, क्रोध करना।

दरपनी-(हिं०स्त्री०) छोटा दर्पण।

दरब-(हिं०पुं०) धन, धातु, मोटे किनारे की चादर।

दरबहारा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मदिरा जो सड़ी हुई बनस्पतियों से बनती है।

दरभ-(हिं०पुं०) देखो दर्भ,कुश,बन्दर।

दरमा-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बांस की चटाई।
दररना-(हिं०क्रि०) धक्का देना।
दरराना-(हिं०क्रि०) वेग से आ पहुँचना।
दरवी-(हिं०स्त्री०) साँप का फन, सँड़सी, करछुल, पौना; **दरवीकर**-सर्प साँप।
दरश-(हिं०पुं०) देखो दर्श।
दरशन-(हिं०पुं०)देखो दर्शन। **दरशाना**-(हिं०क्रि०) दरसाना, दिखलाना
दरस--(हिं०पुं०) दर्शन, देखा देखी, भेंट, सुन्दरता, छवि; **दरसन**-(हिं०पुं०) दर्शन,भेंट; **दरसना**-(हिं०क्रि०) देखना, दिखाई पड़ना, देखने में आना।
दरसनिया-(हिं०पुं०) शीतला की शान्ति के लिए पूजा करने वाला।
दरसनी-(हिं०स्त्री०) दर्शन, दर्पण; **दरसनी हुन्डी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की हुंडी जिसके भुगतान की मिति में दस दिन या इससे कम बाकी हों, वह वस्तु या पत्र जिसके दिखलाते ही कोई वस्तु मिल जाय।
दरसनीय-(हिं०वि०) देखो दर्शनीय।
दरसान-(सं०पुं०) प्रकाश, चमक।
दरसाना दरसावना-(हिं०क्रि०)दिखलाना प्रगट करना स्पष्ट करना,समझाना।
दराँती-(हिं०स्त्री०)घास आदि काटने की हँसिया।
दरार-(हिं०स्त्री०) दरज।
दरारना-(हिं०क्रि०) विदीर्ण होना फटना
दरारा-(हिं०पुं०) धक्का, रगड़,दरेरा।
दरि-(सं०स्त्री०) गुहा, कन्दरा।
दरित-(सं०वि०) भयभीत,डरपोक।
दरिद्र-(सं०वि०) निर्धन, कंगाल,(पुं०) कंगाल मनुष्य; **दरिद्रता**-(सं०स्त्री०) निर्धनता; **दरिद्रत्व**-(सं०नपुं०)दरिद्रता
दरिद्राण-(सं०नपुं०)दरिद्रता;**दरिद्रायण** (सं०वि०) देखो दरिद्राण, दरिद्र,
दरियाव-(हिं०पुं०) देखो दरिया, समुद्र
दरी-(सं०स्त्री०) पर्वत की गुहा, खोह, पर्वत के बीच का वह स्थान जिसमें से कोई नदी बहती हो अथवा जिसमें कोई नदी गिरती हो।
दरी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का मोटे दल का बिछौना जो मोटे सूत से बनाया जाता है,(वि०)फाड़ने वाला,डरपोक।
दरीभृत्-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़।
दरीमुख-(सं०नपुं०) गुफा का मुख,राम की सेनाके एक बन्दर का नाम।
दरीवत्-(सं०वि०) वह पर्वत जिसमें बहुत सी गुफायें हों।
दरेंती-(हिं०स्त्री०) अनाज दरने की छोटी चक्की।
दरेक-(हिं०पुं०) बकाइन का पेड़।
दरेरना-(हिं०क्रि०) रगड़ते हुए धक्का देना, पीसना, रगड़ना। **दरेरा**-(हिं०पुं०) धक्का, रगड़, निरन्तर वर्षा, बहाव, पानी का तोड़।
दरेस-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छींट, (वि०) तैयार, बना हुआ।
दरेसी-(हिं०स्त्री) तैयारी।
दरैया-(हिं० पुं०) दाल दरने वाला, घातक।
दरोगा-(हिं० पुं०) देखो दारोगा।
दरोदर-(सं०पुं०) पासे से खेलने का जुआ।
दर्कार-(हिं०क्रि०वि०) देखो दरकार।
दर्गाह-(हिं०पुं०) देखो दरगाह।
दर्ज-(हिं०स्त्री०)देखो दरज, (वि०) कागज पर लिखा हुआ।
दर्जन-(हिं०पुं०) बारह वस्तु का समूह, इकट्ठो की हुई बारह वस्तुएँ।
दर्दर-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, वह पात्र जिसका कुछ अंश टूट गया हो।
दर्दरीक-(सं०नपुं०) एक प्रकार का बाजा, मेढक।
दर्दी-(हिं०वि०) देखो दर्दमन्द।
दर्दुर-(सं०पुं०) भेक, मेढक,मेघ, बादल, एक राक्षक का नाम, अभ्रक, बीरबहूटी नामक कीड़ा, एक प्रकार का धान। **दर्दुरक**-(सं० पुं०) देखो दर्दुर।
दर्दुराच्छदा-(सं०स्त्री०) ब्राह्मी बूटी।
दर्दुरा-(सं०स्त्री०) चण्डिका, दुर्गा।
दर्प-(सं०पुं०) गर्व, अहङ्कार,अभिमान, घमंड, कोप, रोष, उद्दण्डता, उत्साह, दबाव, अतङ्क, कस्तूरी, एक प्रकार का मृग; **दर्पक**-(सं०पुं०) कामदेव, (वि०) अभिमान करने वाला, घमंडी; **दर्पण**-(सं०पुं०) चक्षु,नेत्र, उत्तेजना, (नपुं०) आइना, आरसी, एक पर्वत जिस पर कुबेर रहते हैं; **दर्पद**-(सं०वि०) अभिमान उत्पन्न करने वाला; गर्वदायक (पुं०) विष्णु।
दर्पपत्रक-(सं० पु०) कुश; **दर्पहन्**-(सं०वि०) अभिमान दूर करने वाला, (पु०) विष्णु।
दर्पा-(सं०स्त्री०) कस्तूरी।
दर्पारम्भ-(सं०पुं०)अहङ्कार का आरम्भ;
दर्पित-(सं०वि०) अअंकार से भरा हुआ; **दर्पी**-(सं०वि०)अहंकारी,घमंडी
दर्ब-(हिं०पुं०) द्रव्य,धन, सोना चांदी।
दर्बान, दर्बार-देखो दरवान दरबार
दर्भ-(सं०पुं०) एक प्रकार का कुश, डाभ, कुशका बना हुआ आसन; **दर्भक**-(सं०पुं०) घोड़े के टाप का एक रोग; **दर्भकुसुम**-(सं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा; **दर्भकेतु**-(सं०पुं०) राजा जनक के भाई का नाम; **दर्भट**-(सं०नपुं०) घर के भीतर की कोठरी; **दर्भपत्र**-(सं० पुं०) काश, काँस, **दर्भपुष्प**-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प। **दर्भमूला**-(सं०स्त्री०) कुश कीजड़;**दर्भर**-(सं०पुं०)लवा नामकपक्षी
दर्भवट-(सं०नपुं०) देखो दुर्भट।
दर्भासन-(सं०पुं०) कुश का बना हुआ बिछावन, कुशासन।
दर्म-(सं०वि०) विदारक, फाड़नेवाला।
दर्मियान दर्मियानी-(हिं०क्रि०वि०) बीच बीच का।
दर्राना-(हिं०क्रि०) बेधड़क किसी स्थान में प्रवेश करना,बिना भयके चले जाना
दर्व-(सं०पुं०) राक्षस,हिंसा करने वाला मनुष्य,पंजाब के उत्तर देश में रहने वाली एक प्राचीन जाति, राजा उशीनर की एक पत्नी का नाम।
दर्वट-(सं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढीदार,
दर्वरीक-(सं०पुं०) इन्द्र, वायु, एक प्रकार का बाजा।
दर्वि-(सं०स्त्री०) करछी, डोवाँ,साँप का फन। **दर्विका**-(सं०स्त्री०) बनगोभी की लता, आंख में लगाने का एक प्रकार का काजल।
दर्वी-(सं०स्त्री०) करछी,चम्मच, चमचा
दर्वीकर-(सं०पुं०) फन वाला साँप।
दर्श-(सं०पुं०) सूर्य और चन्द्रमा का संगम काल,आमावास्या तिथि,अमावास्याकेदिन किया जाने वाला यज्ञ
दर्शक-(सं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढीदार, (वि०) निपुण, मुख्य, प्रधान, देखने वाला, दिखलाने वाला।
दर्शत-(सं०पुं०) सूर्य, चन्द्रमा, (वि०) दर्शनीय, देखने योग्य। **दर्शतश्री**-(सं०स्त्री०) देखने योग्य ऐश्वर्य।
दर्शन-(सं०नपुं०) नयन, स्वप्न, धर्म, बुद्धि, दर्पण, वर्ण,भेट, इज्या, दृष्टि द्वारा ज्ञान, साक्षात्कार, चाक्षुष, ज्ञान, देखादेखी, वह शास्त्र जिसके द्वारा यथार्थ तत्व का ज्ञान होता है साङ्ख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त-षड् दर्शन कहलाते हैं;
दर्शनपथ-(सं०पुं०) दृष्टिपथ; **दर्शनप्रतिभू**-(सं०पुं०)वह मनुष्य जो किसी दूसरे को उपस्थित करने का भार अपने ऊपर लेता है,
दर्शनी-(सं०स्त्री०)तेलिन नामक कीड़ा।
दर्शनीय-(सं०वि०) देखने योग्य,सुन्दर;
दर्शनोज्ज्वला-(सं०स्त्री०) सफ़ेद जायफल का पेड़।
दर्शनोपनिषद्-(सं०स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम।
दर्शयामिनी-(सं०स्त्री०) अँधेरी रात, आमावास्या की रात।
दर्शयिता-(सं०वि०) दर्शक, दिखलाने वाला (पुं०) द्वारपाल।
दर्शविपद्-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा।
दर्शाना-(हिं०क्रि०) दिखलाना।
दर्शित-(सं० वि०) प्रकाशित, दिखलाया हुआ।
दर्शी-(सं०वि०) विचार करने वाला, देखनेवाला, भेट कराने वाला।
दर्श्य-(सं०वि०) दर्शनीय;देखने योग्य
दल-(सं०नपुं०) खण्ड, टुकड़ा, पौधों का पत्ता, आधा भाग, तलवार आदि की म्यान, बुरी वस्तु, झुण्ड, समूह, काठ की पटरी, फ़ूल की पंखड़ी, मण्डली, सेना, तमालपत्र, जल में होने वाली एक घास।
दलइलामा-(हिं०स्त्री०)तिब्बत की राजधानी लासा के बाहर ये मन्दिरों में वास करते हैं,बौद्ध लोग इनको बुद्धदेव का साक्षात् अवतार मानते हैं।
दलक-(हिं०स्त्री०) चोट से उत्पन्न कँपकँपी,थरथराहट,शरीर की वह पीड़ा जो रह रह कर उठती है, टीस, गुदड़ी, (पुं०) नक्काशी करने वालों का एक अस्त्र; **दलकन**-(हिं० पुं०) दलकने की किया, थरथराहट,टीस।
दलकना-(हिं०क्रि०) डराना, कँपाना, थर्राना, चौकाना, उद्विग्न होना, चिरना, फट जाना; **दलकपाट**-(सं०पुं०) फूल का वह कोश जिसके भीतर कली रहती है,**दलकोमल**-(सं०नपु०) पद्म, कमल; **दलकोष**-(सं०पु०) कन्द का पौधा, चमेली की लता; **दलगञ्जन**-(सं०वि०)सेना को मारने वाला, (पु०) एक प्रकार का धान ; **दलगन्ध**-(सं०पुं०) सप्तपर्णी वृक्ष;**दलघुसरा**-((हिं०पुं०) एक प्रकार की रोटी जिसके भीतर मसाला मिली हुई पीसी दाल भरी रहती है
दलदल-(हिं०स्त्री०) वह भूमि जो बहुत गहराई तक गीली और मृदु हो, कीचड़,पंक,वह भूमि जिसपर चलने से पैर धँस जाता हो; **दलदल में फँसना**-आपत्ति में पड़ना। **दलदला**-(हिं०वि०) जिसमें दलदल हो।
दलदार-(हिं०वि०)मोटी तह या परत क
दलन-(सं०पुं०) कूट पीस कर टुकड़े टुकड़े करने का काम, विनाश, संहार, नाश। **दलना**-(हिं०क्रि०) चूर्ण करना, टुकड़े टुकड़े करना, कुचलना, नष्ट करना,मीड़ना, मसलना, चक्की में डाल कर अन्न के दानों को टुकड़े टुकड़े करना अथवा दो दलों में अलगाना।
दलनिर्मोक-(सं०पुं०) भोजपत्र का वृक्ष
दलनी-(सं०स्त्री०) ढेला, (वि०) विच्छेद करने वाला।
दलप-(सं०पुं०)सुवर्ण,सोना,शस्त्र प्रहार
दलपति-(सं०पुं०) दल का प्रधान व्यक्ति,सरदार,सेनापति। **दलपुष्पा** (सं०स्त्री०) केतकी, केवड़ा।
दलबल-(सं०पुं०) सैन्य समूह।
दलबादल-(हिं०पुं०) बादलों का समूह या झुण्ड, बड़ी सेना, बड़ा खेमा
दलमलना-(हिं०क्रि०) कुचलना, नष्ट करना, मार डालना।
दलवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से दलने का काम कराना।
दलवाल-(सं०पुं०) सेनापति।
दलसालिनी-(सं०स्त्री०) कच्चू का सा
दलसायसी-(सं०स्त्री०) सफ़ेद तुलसी का पौधा।
दलवैया-(हिं०वि०) कुचलने वाला
दलसूचि-(सं० पुं०) कण्टक, कांटा, वा पौधा जिसके पत्तों में कांटे हों।
दलस्थ-(सं०वि०)दलयुक्त,जिसमें दल
दलस्नसा-(सं०स्त्री०) पत्ते की नस।
दलहन-(हिं०पुं०) वह अन्न जिसकी दाल बनाई जावे। **दलहरा**-(हिं०पुं०

दाल बेचने वाला।
दलहीनफला-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का खजूर।
दलाकान्त-(सं०वि०) देखो दलस्थ।
दलाढक-(सं०पुं०) जंगली तिल, गेरू, फेन, जलकुम्भी, अंधड़, आंधी, गजकर्णी का पेड़, नागकेशर का वृक्ष। **दलाढकी**-(सं०स्त्री०) पिठवन नामक लता।
दलाम्ब-(सं० पुं०) पंक, कीचड़, कन्द का वृक्ष।
दलान-(हिं०पुं०) ओसारा।
दलामल-(स०नपुं०) मरुवे का पौधा, मैनफल का वृक्ष।
दलाम्ल-(सं०नपुं०) लोनिया शाक।
दलारा-(हिं०पुं०) जहाज पर झूले का बिस्तरा।
दलाह्रय-(सं०नपुं०) जेजपत्ता।
दलि-(स०पुं०) ढेला।
दलिक-(स०नपुं०) काष्ठ, काठ।
दलित-(सं०वि०) प्रफुल्ल, खण्डित, विदीर्ण, कुचला हुआ, नष्ट किया हुआ।
दलिया-(हिं०पुं०) वह अन्न जो दल कर टुकड़े टुकड़े किया गया हो।
दलेगन्धि-(स०पुं०) सप्तपर्णी का वृक्ष।
दलेपंज-(हिं०पुं०) बुड्ढा घोड़ा, अधिक वय का मनुष्य,
दलेल-(हिं०स्त्री०) अंग्रेजी ड्रिल् शब्द का अपभ्रंश, सिपाहियों की क़वायद।
दलोद्भव-(स०वि०) वह शहद जो पत्तों से उत्पन्न होती है।
दल्भ-(सं०पुं०) प्रतारणा, धोखा, पाप, चक्र, पहिया।
दल्मि-(स०पुं०) इन्द्र, इन्द्र का वज्र;
दल्मिमत्-वज्रयुक्त।
दल्लाल-(हिं०पुं०) देखो दलाल।
दल्लाली-(हिं०स्त्री०) देखो दलाली।
दवँरी-(हिं०स्त्री०) देखो दँवरी।
दवँगरा-(हिं०पुं०) वर्षा की झड़ी।
दव-(स०पुं०) वन, जंगल, वह अग्नि जो जंगलों में आपसे आप लग जाती है, उष्णता, गरमी, दुःख, कष्ट।
दवथु-(सं०पुं०) दाह, जलन, दुःख।
दवदग्धक-(सं०नपुं०) रोहित नामक घास
दवदहन-(सं०पुं०) दावाग्नि, जंगल की आग।
दवन-(हिं०पुं०) नाश, दौने का पौधा।
दवनपापड़ा-(हिं०पुं०) पित्तपापड़ा।
दवना-(हिं०क्रि०) दग्ध करना, जलाना, (पुं०) दौने का पौधा।
दवनी-(हिं०स्त्री०) देखो दँवरी; मिसाई, मड़ाई।
दवरिया-(हिं०स्त्री०) देखो दवारि।
दवाईखाना-(हिं०पुं०) देखो दवाखाना
दवागिन-(हिं०स्त्री०) देखो दवाग्नि।
दवाग्नि-(सं०पुं०) वन में लगने वाली अग्नि, दावानल।
दवादर्पन-(हिं० पुं०) औषधि; **दवान**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का शास्त्र।
दवानल-(सं० पुं०) देखो दवाग्नि।

दवारि-(हिं०स्त्री०) वनाग्नि, दावानल।
दविष्ठ-(सं०वि०) दूर देश का दूरवर्ती
दश-(सं०वि०) पाँच की दूनी संख्या, दश; **दशक**-(सं० नपुं०) दस की संख्या; **दशकण्ठ**-(सं०पुं०) जिस को दस कंठ हों, रावण; **दशकण्ठजहा**, **दशकण्ठजित्**, **दश कण्ठारि**-श्री रामचन्द्र; **दशकन्ध**, **दशकन्धर**-(सं०पुं०) रावण।
दशकर्म-(सं०नपुं०) द्विजोंके दस संस्कार यथा-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रामण, नामकरण, अन्नप्राशन चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह; **दश काम व्यसन**-(सं०नपुं०) काम से उत्पन्न दस प्रकार के व्यसन यथा-मृगया द्यूत, दिवानिद्रा परनिन्दा, प्रमदासक्ति, नृत्य, गीत, क्रीड़ा, वृथाभ्रमण और मद्यपान; **दशकुमारचरित**-(सं०नपुं०) महाकवि दण्डी का बनाया हुआ संस्कृत का एक गद्य ग्रन्थ; **दशकुलवृक्ष**-(सं०पुं०) तन्त्र के अनुसार दश वृक्ष यथा-लिसोड़ा, करंज, बेल, पीपल, नीम, कदंब, गूलर, बरगद, इमली और आँवला;
दशकोषी-(सं०स्त्री०) रुद्रताल का एक भेद; **दशक्षीर**-(सं० नपुं०) दस जन्तुओं का दूध यथा-गाय, भैंस, ऊंटनी, घोड़ी, बकरी, स्त्री, हथिनी, हरिन और गदही का दूध; **दशगात्र** (सं० पुं०) शरीर के दस प्रधान अंग, मृतक संबंधी एक कर्म जो मरने के बाद दस दिन तक किया जाता है; **दशग्रामिक**, **दशग्रामी**-(सं०पुं०) दस गांव का स्वामी।
दशग्रीव-(सं०पुं०) रावण, एक असुर का नाम; **दशजटा**-(सं०स्त्री०) दशमूल;
दशतय-(सं०वि०) दश संख्या वाला।
दशति-(सं०स्त्री०) सौ की संख्या, सौ।
दशदशी-(सं०वि०) सौगुना।
दशदिक्-(सं०स्त्री०) दशो दिशा, यथा, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, अग्नि, नैर्ऋत्य, वायु, ईशान, अधः और ऊर्ध्व। **दशदिक्पाल**-(सं०पु०) दशो दिशा की रक्षा करने वाले दस देवता यथा, पूर्व दिशा के इन्द्र, अग्नि कोण के अग्नि, दक्षिण दिशा के यम, नैर्ऋत्य कोण के नैर्ऋत, पश्चिम दिशा के वरुण, वायुकोण के मरुत्, उत्तर दिशा के कुबेर, ईशान कोण के ईश, ऊर्ध्व दिशा के ब्रह्मा और अधः दिशा के रक्षक अनन्त हैं।
दशद्वार-(सं०पुं०) शरीर के दस छिद्र यथा दो कान, दो आँख, नाक के दो छिद्र, मुख, गुदा, लिङ्ग और ब्रह्माण्ड
दशधा-(सं०अव्य०) दस प्रकार से, दस तरह से।
दशन-(सं०नपुं०) दांत, शिखर, कवच।
दशनच्छद-(सं०पुं०) ओष्ठ, ओंठ।
दशनपद-(सं०नपु०) वह स्थान जहाँ पर दांत काटा गया हो।

दशनवास-(सं०नपुं०) ओष्ठ, ओंठ।
दशनबीज-(सं०पु०) दाडिम, अनार।
दशनांशु-(सं०पुं०) दातों की चमक।
दशनाङ्क-(सं०पुं०) देखो दशनपद।
दशनाढ्या-(सं०स्त्री०) लोनिया शाक।
दशनाम-(सं०पुं०) सन्यासियों के दस भेद यथा-तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी। इनमें पाँच तान्त्रिकों के थे, तान्त्रिकों को परास्त करनेके बाद उनके पांच नाम भी शांकरमत में मिलगये, शांकर तीर्थ, अरण्य, गिरि, सरस्वती, आकाम तान्त्रिक सागर, वन, पर्वत, भारती, पुरी।
दशनामी-(हिं०पुं०) सन्यासियों का एक वर्ग जिसको अद्वैतवादी सुप्रसिद्ध प्रचारक शंकराचार्य के एक शिष्य ने चलाया था, या क्रमशः चलपड़े
दशनोच्छिष्ट-(सं०नपुं) नाक या मुख से निकला हुआ श्वास, होंठों का चुम्बन।
दशपिण्ड-(सं०पु०) मृत्यु के बाद दिया जाने वाला दस पिण्ड।
दशपुर-(सं०नपुं०) मुस्तक, मोथा।
दशपुरुष-(सं०पु०) अपने से लेकर दस पीढी।
दशपूर्वरथ-(सं०पुं०) दशरथ।
दशपेय-(सं०पुं०) एक प्रकार का यज्ञ।
दशबल-(सं० पु०) बुद्ध के दस बल यथा-दान, शील, क्षमा, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा, उपाय, बल, प्रणिधि और ध्यान।
दशबाहु-(सं०स्त्री०) दशभुजा, दुर्गा, (वि०) जिसको दस बाहु हों।
दशभुजा-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।
दशभूमिग, **दशभूमीश**-(सं० पुं०) बुद्धदेव।
दशम-(सं०वि०) दस संख्या का पूरक, दसवाँ। **दशम दशा**-(सं०स्त्री०) साहित्य में वियोगी की वह दशा जिसमें वह प्राण त्याग देता है।
दशमलव-(सं०पु०) गणित में वह भिन्न जिसके हर मे दस या उसका कोई घात होता है।
दशमहाविद्या-(सं०स्त्री०) वे दस देव मूर्तियाँ जिनकी उपासना शाक्त करते हैं इनके नाम-काली, तारा, षोड़शी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातंगी और कमला हैं-इनको सिद्धविद्या भी कहते हैं।
दशमांश-(सं० पुं०) दसवां हिस्सा, दसवाँ भाग।
दशमी-(स०स्त्री०) चान्द्र मास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि, मरणावस्था।
दशमीस्थ-(सं० वि०) अति वृद्ध, जो नब्बे वर्ष से अधिक हो।
दशमुख-(सं०पुं०) रावण।
दशमुखान्तक, **दशमुखरिपु**-रामचन्द्र।
दशमूल-(सं०नपुं०) वैद्यक में कहे हुए दस वनस्पतियों की जड़, इनके नाम सरिवन, पिठवन, छोटी कटाई, बड़ी कटाई, गोखरू, बेल, सोनापाठा, गंभारी, गनियारी और पाठा है।
दशमौलि-(सं०पुं०) रावण।
दशरथ-(सं०पुं०) इक्ष्वाकुवंश के राजा जो अयोध्या में राज्य करते थे, रामचन्द्र के पिता।
दशरात्र-(सं०पुं०) दस रात में समाप्त होने वाला एक यज्ञ।
दशलक्षण-(सं०पुं०) धर्म के दस लक्षण यथा-धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह धी, विद्या, सत्य और अक्रोध।
दशवक्त्र-(सं०पुं०) रावण।
दशवाजिन्-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा।
दशवार्षिक-(सं०वि०) दस वर्ष में होने वाला।
दशबाहु-(स०पुं०) शिव, महादेव।
दशविध-(सं०वि०) दस प्रकार का।
दशवीर-(सं०नपुं०) एक यज्ञ का नाम।
दशशतनयन-(सं०पुं०) इन्द्र।
दशशतरश्मि-(सं०पुं०) सूर्य।
दशशताक्ष-(सं०पुं०) इन्द्र।
दशशताङ्घ्रि-(सं०स्त्री०) शतावरी।
दशहरा-(सं०स्त्री०) ज्येष्ठ मासकी शुक्ल दशमी, इस दिन गंगा का जन्म हुआ था, गंगादशहरा।
दशा-(सं०स्त्री०) अवस्था, चित्त, कपड़े का किनारा, दिये की बत्ती, मनुष्य के जीवन की दस अवस्था यथा-गर्भवास, जन्म, बाल्य, कौमार, पौगण्ड, यौवन, स्थविरता, जरा, प्राणरोध और मृत्यु, प्रकार, विरहियोंकी कामकृत अवस्था, फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की अपने अपने भोगे काल की अवस्था।
दशाकर्ष-(सं० पुं०) प्रतीप, वस्त्र का अंचल। **दशाकर्षी**-(सं०पुं०) प्रदीप,
दशाक्षर-(सं०पुं०) पंक्ति नामक छन्द
दशांगधूप-(सं० नपुं०) देवताओं के पूजन में दिया जाने वाला धूप जो दस द्रव्यों को चूर्ण करके तैयार किया जाता है।
दशांगुल-(सं०नपुं०) खरबूजा।
दशाधिपति-(सं०पुं०) ज्योतिष में दशा का स्वामी, दस सैनिकों का अध्यक्ष, जमादार।
दशानन-(सं०पुं०) रावण।
दशानिक-(सं०पुं०) द्रण्डी वृक्ष, जमालगोटा।
दशान्त-(सं०पुं०) बत्तीका पिछला भाग।
दशार्ण, **दशार्णक**-(सं०पुं०) एक देश का नाम जो विन्ध्य पर्वत के दक्षिण पूर्व भाग में है, दसान नामक नदी इसी देश में से होकर बहती है, इस देश का राजा या निवासी, दशाक्षर मन्त्र। **दशार्णा**-(सं०स्त्री०) दसान या धस[illegible] नामक नदी जो कालपी के पास [illegible]मना नदी में मिली है।

दशार्ध-(सं०नपुं०) दस का आधा, पाँच
दशार्ह-(सं०पुं०) राजा वृष्णि के पौत्र, विष्णु।
दशावतार-(सं०पुं०) विष्णु के प्रसिद्ध दस अवतार जो मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, दाशरथी-राम, बलराम, बुद्ध और कल्की हैं।
दशाश्व-(सं०पुं०)चन्द्रमा, इक्ष्वाकु राजा के दसवें पुत्र का नाम।
दशाश्वमेध-(सं०नपुं०)काशीके अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम, प्रयागमें त्रिवेणी के पास एक घाट का नाम।
दशास्य-(सं०पुं०) दशमुख, रावण।
दशास्यजित्-श्रीराम।
दशाह-(सं०पुं०) दस दिन, मृतक के कृत्य का दसवा दिन।
दशेन्धन-(सं०पुं०) प्रदीप।
दशेर-(सं०पुं०) हिंस्रक जीव।
दशेरक-(सं०पुं०) वर्तमान माड़वार का प्राचीन नाम, मरुभूमि। **दशेरुक**-(सं०पुं०) मरुदेश, माड़वार।
दशेश-(सं०पुं०) ज्योतिष में दशा का अधिपति।
दष्ट-(सं०वि०) दांत से काटा हुआ।
दस-(हि०वि०) जो गिनती में नव और एक अर्थात् पाँच का दुगना हो (पुं०) पाच की दूनी संख्या १०।
दसठौन-(हि०पुं०) प्रसव के दस दिन बाद प्रसूता का सौरी के घर से दूसरे घर में प्रवेश।
दसखत-(हिं०पुं०) हस्ताक्षर।
दसन-(हिं०पुं०) देखो दशन।
दसना-(हिं०क्रि०) फैलना, फैलाना, बिछाना, (पुं०) बिस्तर, बिछौना।
दसमरिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की नाव जो नदियों में बरसात के समय चलाई जाती है।
दसमाथ-(हिं०पुं०) दशशिर, रावण।
दसमी-(हिं०स्त्री०) देखो दशमी।
दसरंग-(हि०वि०) मलखंभ का एक व्यायाम।
दसरान-(हिं०पुं०)मल्लयुद्ध की एक युक्ति
दसवां-(हिं०पुं०) गिनती में दसवें स्थान का।
दसा-(हिं०स्त्री०) देखो दशा, अग्रवाल वैश्यों का एक भेद।
दसाना-(हिं०क्रि०) बिछाना।
दसारी-(हिं०स्त्री०) पानीके समीप रहने वाली एक प्रकार की चिड़िया।
दसी-(हिं०स्त्री०) वस्त्र के किनारे पर का सूत, पल्ला, बैलगाड़ी की पटरी, चमड़ा छीलने का एक प्रकार का अस्त्र।
दसेंद-(हि०पुं०) तेन्दुवे का वृक्ष।
दसेरक-(सं०पुं०) गर्दभ, गदहा, मरुदेश
दसैं-(हिं०स्त्री०) दशमी तिथि।
दसोतरा-(हिं०वि०) दस अधिक।
दसौंधी-(हिं०पुं०)भाटों की एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहते हैं, ब्रह्मभट्ट।
दस्म-(सं०वि०) आक्षेप करने वाला, देखने योग्य, (पुं०) यजमान, अग्नि, चोर, दुष्ट मनुष्य।
दस्यु-(सं०पुं०) डकैत, डाकू, चोर, दुष्ट मनुष्य, अनार्य, म्लेच्छ असुर, दैत्य (वि०) उपेक्षा करने वाला; **दस्युजूत**-डकैती करने वाला; **दस्युता**-(सं०स्त्री०) लुटेरापन, डकैती, दुष्टता; **दस्युभय**-(सं०पुं०) चोर या डाकू का भय; **दस्युवृत्ति**-(सं०स्त्री०) चोरी, डकैती, लुटेरापन।
दस्र-(सं०पुं०) गर्दभ, गदहा, अश्विनी-कुमार, अश्विनी नक्षत्र, (वि०) हिंसा करने वाला; **दस्र देवता**-(सं०स्त्री०) अश्विनी नक्षत्र।
दह-(हि०पुं०) नदी के भीतर का गड्ढा, पौल, कुण्ड, (स्त्री०) अग्नि की ज्वाला या लपट; **दहक**-(हिं०स्त्री०) आग दहकने की क्रिया, धधक, ज्वाला, लपट, लज्जा; **दहकन**-(हिं०स्त्री०) दहकने की क्रिया; **दहकना**-(हिं०क्रि०) ज्वाला के साथ बलना, धधकना भडकना, तपना, शरीर का गरम होना। **दहकाना**-(हिं०क्रि०) धधकना, क्रोध दिलाना, भड़काना इस प्रकार जलाना कि ज्वाला ऊपर को उठे।
दहड़ दहड़-(हिं०क्रि०) अग्नि की लपट फेंकते हुए, धाय धायँ।
दहन-(सं०पुं०) अग्नि, चीते का वृक्ष, भिलावां, दुष्ट मनुष्य; (पुं०) कबूतर एक रुद्र का नाम, तीन की संख्या, ज्योतिष का एक योग, जलने की क्रिया, कृत्तिका नक्षत्र (नपुं०) अगर, गुग्गुल; **दहनकेतन**-(सं०नपुं०) धूम, धुवां; **दहनप्रिया**-(सं०स्त्री०) स्वाहा देवी; **दहनबकुल**-(सं०पुं०) अग्नि, आग; **दहनशील**-(सं० वि०) जलने वाला; **दहनसारथि**-(सं०पुं०) वायु हवा।
दहना-(हि० क्रि०) जलना, जलाना, भस्म होना या भस्म करना, क्रोध दिलाना, कुढाना, दुःखी करना, कष्ट पहुंचाना, धँसना, नीचे बैठना, (वि०) दहिना।
दहनाराति-(सं० पुं०) जल, पानी।
दहनि-(हिं० स्त्री०)जलने की क्रिया, दहन
दहनीय-(सं०वि०) जलने या जलाने योग्य।
दहनोपल-(सं०पुं०) सूर्यकान्तमणि।
दहनोल्का-(सं०स्त्री०)आग की चिनगारी
दहपटना-(हिं०क्रि०) ध्वस्त करना, नष्ट करना चौपट करना।
दहर-(सं० पुं०) चूहा, भाई, बालक, मुर्गा, (वि०) सूक्ष्म, छोटा (हि० पुं०) नदी का गहरा स्थान, पाल, कुण्ड,
दहर दहर-(हिं०क्रि०वि०) धधकते हुए।
दहरसूत्र-(सं०नपुं०)बौद्धों का एक ग्रन्थ
दहरना-(हिं०क्रि०)दहलना, दहलाना।
दहल-(हिं०स्त्री०) भय से काँप उठने का कार्य। **दहलना**-(हिं०क्रि०) डर से काँप उठना।
दहलाना-(हि० क्रि०) भयभीत करना, डराना, डराकर कँपाना।
दहाड़-(हिं०स्त्री०) किसी भयंकर जीव की चिल्लाहट, आर्तनाद, चिल्लाकर रोने का शब्द; **दहाड़ मारना**-चिल्लाकर रोना। **दहाड़ना** (हि०क्रि०) गुर्राना, गरजना, चिल्लाकर रोना।
दहिअल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी
दहिना-(हि०वि०) अपसव्य, बायें का उलटा। **दहिनावर्त**-(हि०वि०) देखो दक्षिणावर्त्त।
दहिने-(हि० क्रि० वि०) दाहिने ओर; **दहिने होना**-अनुकूल होना, **दहिने बायें**-इधर उधर, दोनों ओर।
दहियद-(हिं०पुं०)देखो दहला, थाला।
दही-(हिं० पुं०)खटाई डालकर जमाया हुआ दूध; **दही दही करना**-किसी वस्तु को मोल लेने के लिये लोगों से कहते फिरना।
दहुँ-(हि०अव्य०)किवा, अथवा; कदाचित
दहेंगर-(हिं०पुं०) दही का घड़ा।
दहेंड़ी-(हि०स्त्री०) दही रखने का मिट्टी का पात्र।
दहेला-(हि० वि०) दग्ध, जला हुआ, सन्तप्त, दुखी, आर्द्र, भीगा हुआ।
दहोतरसौ-(हिं०पुं०) एक सौ दस।
दह्यमान-(सं०वि०) जो जल रहा हो।
दह्र-(सं०पुं०) दावानल, दावाग्नि, नरक, अग्नि।
दह्राग्नि-(सं०पुं०) जठराग्नि।
दा-(सं०स्त्री०) दान, रक्षा, छेद, गरमी (हिं०पुं०) सितार का एक बोल।
दाइज, दाइजा-(हिं०पुं०) दहेज।
दाईं-(हिं० वि०) दाहिनी (स्त्री०) बार।
दाई-(हिं० स्त्री०) धात्री, धाय, प्रसूता के उपचार के लिये नियुक्त स्त्री, छोटे बच्चों की देख भाल करने वाली दासी, बूढ़ी स्त्री, दासी।
दाऊ-(हिं०पुं०) ज्येष्ठ भ्राता, बड़ा भाई, कृष्ण के बड़े भाई बलदेव।
दाऊदी-(अ०पुं०) सफेद नरम छिलके की गेंहू।
दाँ-(हिं०पुं०) बार, बारी, दफा।
दाँक-(हिं०स्त्री०)गरजना गरज, दहाड़।
दाँकना-(हिं०क्रि०) गरजना, दहाड़ मारना।
दाँक-(हिं०पुं०) डंका, नगाड़ा, छोटा पहाड़ी टीला, पहाड़ की चोटी।
दाँगर-(हिं० वि०) देखो डांगर।
दागी-(हिं०स्त्री०) जुलाहों की कंघी में लगी हुई लकड़ी।
दाँज-(हिं०स्त्री०) बराबरी।
दाँज-(हिं०स्त्री०)समता, तुलना, बराबरी
दाँड़ना-(हिं०क्रि०) दण्ड देना।
दाँडिक-(हिं०पुं०) घातक।
दाँत-(हिं०पुं०) मुख में की नुकीली हड्डी जो आहार चबाने के काम में आती है, दाँत के आकार की कोई वस्तु, दाँता, दन्दाना; **दाँतों-उँगली काटना**-अंगुलियों को दाँतों से दबाना, आश्चर्य करना। **दाँत काटी रोटी**-घनिष्ठता, **दाँत खट्टे करना**-बहुत व्यग्र करना; हराना; **दाँत चबाना**-क्रोध से दांत पीसना; **दाँत तले अंगुली दबाना**-चकित होना; **दाँत तोड़ना**-हराना; **दाँत पीसना**-क्रोध से दाँतों को किट-किटाना; **दाँत बजना**-बड़ी ठंड के कारण दाँतों का परस्पर लड़कर बोलना; **दाँत बैठ जाना**-दाँत पर दाँत इस प्रकार बैठ जाना कि मूह न खुल सके; **दाँतों में तिनका लेना**-दया प्राप्त करने की आशा से प्रार्थना करना; **दाँत लगाना**-किसी वस्तु को प्राप्त करने की बड़ी अभिलाषा करना, **तालु में दाँत जमना**-दुर्दशा के दिन आना।
दाँतघुंघुनी-(हि०स्त्री०) पोस्ते के दाने की घुघुनी।
दाँतली-(हि०स्त्री०) काग, डट्टा।
दाँता-(हिं०पुं०)एक प्रकार का नुकीला कँगूरा। **दाँताकिटकिट, दाँताकिल-किल**-(हिं० स्त्री०) वाक्युद्ध, कहा-सुनी, गालीगलौज।
दाँतिया-(हिं०पुं०) रेह का नमक जो पोने की तमाखू में मिलायी जाती है
दाँती-(हिं०स्त्री०) घास, चारा आदि काटने की हँसिया, वह बड़ा खूंटा जिसमें नाव बाँधी जाती है, एक प्रकार का बरै की जाति का कीड़ा, दाँतों की पंक्ति, दर्रा, घाटी।
दाँना, दाँवना-(हिं० क्रि०) पकी हुई उपज के डंठलों में से दाना अल-गाने के लिये बैलों से रौंदवाना।
दाँवनी-हिं० स्त्री०) एक प्रकार का गहना, दामिनी।
दाँबरी-(हिं०स्त्री०) रस्सी, डोरी।
दाक-(सं० पुं०) दाता, यजमान।
दाक्षायण-(सं०त्रि०) दक्ष से उत्पन्न, दक्ष के गोत्र का (पुं०) सोने का एक आभूषण, दक्ष द्वारा किया हुआ यज्ञ।
दाक्षायणी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, रोहिणी नक्षत्र, कश्यप की स्त्री, अदिति, दक्ष की कन्या कद्रू; **दाक्षायणीपति**-चन्द्रमा; **दाक्षायणीरमण**-चन्दमा।
दाक्षायण्य-(सं०पुं०) आदित्य, सूय।
दाक्षि-(सं०पुं०) दक्ष सन्तान।
दाक्षिण-(सं० वि०) दक्षिणा सम्बन्धी।
दाक्षिणक-(सं०वि०) चन्द्रलोक गामी;
दाक्षिणशाल-(सं० पुं०) वह घर जिसका द्वार दक्खिन की ओर हो।
दाक्षिणात्य-(सं०वि०) जो दक्षिण में उत्पन्न हो, दक्षिण देश संबधी, (पुं०) भारतवर्ष का विन्ध्य पर्वतके दक्षिण का देश।
दाक्षिण्य-(सं नपुं०) अनुकूलता प्रसन्नता, उदारता, सरलता सुशीलता, साहित्य में नाटक का एक अङ्ग, (वि०) दक्षिण संबंधी, दक्षिण का।

दाक्षी-(सं०स्त्री०) दक्ष की कन्या।
दाक्षीपुत्र, दाक्षेय-(सं० पुं०) पाणिनी ऋषि।
दाक्ष्य-(सं०नपुं०) दक्षता, निपुणता।
दाख-(हिं०स्त्री०) द्राक्षा, मुनक्का, अंगूर, किसमिस।
दाखी-(हिं०स्त्री०) देखो दाक्षी।
दाग-(हिं० पुं०) दग्ध, दाह, मृतक का दाह कर्म, शव जलाने की क्रिया जलन, जलने का चिह्न; **दागदेना**-मृतक का दाह कर्म करना।
दागना-(हिं०क्रि०) दग्ध करना, जलाना, तपे हुए लोहे से शरीर पर चिह्न लगाना, किसी के अंग को जलाना, रंजक में आग लगाना बंदूक तोप आदि छोड़ना, फोड़े आदि पर ऐसी औषधि लगाना जिसमें वह जल जाय, रंग आदि से अङ्कित करना।
दाघ-(सं० पुं०) दाह, जलन, उष्णता, गरमी।
दाजन-(हिं० स्त्री०) दाझन, जलन।
दाजना-(हिं० क्रि०) जलना, डाह करना, जलाना।
दाझन-(हिं० स्त्री०) दाजन, जलन।
दाझना-(हिं० क्रि०) जलना, जलाना, सन्तप्त होना।
दाड़ल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सर्प।
दाड़िम-(सं० नपुं०) एला, इलायची, अनार; **दाड़िमपत्रक**-(सं० पुं०) रोहितक वृक्ष; **दाड़िमपुष्प**-(सं०पुं०) रोहितक वृक्ष, अनार का फूल; **दाड़िमप्रिय, दाड़िम भक्षक**-(सं० पुं०) शुक, सुग्गा।
दाड़िमी-(सं०स्त्री०) अनार का वृक्ष।
दाडी-(सं०स्त्री०) अनार का फल।
दाढ़-(सं०स्त्री०) भयंकर शब्द, चौघड़, जबड़े के भीतर के चौड़े दांत; **दाढ़ मारकर रोना**-जोर से चिल्लाकर रोना। **दाढ़ना**-(हिं०क्रि०) अग्नि में भस्म करना, जलाना, दुःखी करना।
दाढ़ा-(सं०स्त्री०) दंष्ट्रा, चौघड़, दाढ़, प्रार्थना, विनती, समूह, (हिं०स्त्री०) दावानल, वन की आग।
दाढ़िका-(सं० स्त्री०) श्मश्रु, दाढी, चिबुक,ठुड्डी पर के बाल, चौघड़।
दाढ़ी-(हिं० स्त्री०) चिबुक, ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल। **दाढ़ीजार**-(हिं० पुं०) वह मनुष्य जिस की दाढी जल गई हो,एक प्रकारकी गाली जिसको स्त्रियां क्रोध में आकर पुरुष को देती हैं।
दाण्ड-(सं०पुं०) दण्ड समूह, वह पुरुष जो शस्त्र चलाकर अपनी जीविका चलाता है।
दाण्डपाता-(सं०स्त्री०) वह दिन जिसमें कोई तिथि केवल एक दण्ड रहती है।
दाण्डमाथिक-(सं० वि०) केवल डण्डे से मथने योग्य।
दाण्डिक-(सं०पुं०) दण्ड देने के लिये नियुक्त पुरुष।

दात-(सं० वि०) काटा हुआ, छिन्न, शुद्ध, पवित्र।
दातव्य-(सं०वि०) दान देने योग्य, (पुं०) उदारता,दान देने का काम; **दातव्य चिकित्सालय**-वह औषधालय जहाँ बिना मूल्य दिये दवा मिलती है।
दाता-(सं०पुं०) दानशील,देने वाला।
दातापन-(हिं० पुं०) दानशीलता।
दातार-(हिं०पुं०) दाता, देने वाला।
दाति-(सं०स्त्री०) शुद्धि, दान, वह वस्तु जो दी गई हो।
दाती-(हिं०स्त्री०) देने वाली।
दातु-(सं०नपुं०) दान।
दातुन-(हिं०स्त्री०) देखो दतुवन।
दातून-(हिं०स्त्री०) जमालगोटेकी जड़, दतुवन।
दातृ-(सं०त्रि०) दानशील, दान देने वाला; **दातृता**-(सं०स्त्री०) दानशीलता देने की प्रवृत्ति; **दातृत्व**-(सं० नपुं०) देखा दातृता, दानशीलता।
दातौन-(हिं०स्त्री०) देखो दतुवन।
दात्यूह-(सं० पुं०) चातक, पपीहा, मेघ, बादल; **दात्यूहक**-(सं० पुं०) देखो दात्यूह।
दात्र-(सं० नपुं०) हँसुआ, दानकर्ता।
दात्री-(सं० स्त्री०) दान देनेवाली, हँसिया, गंगा।
दाद-(सं०पुं०) दान, (हिं०स्त्री०) एक प्रकार का चर्म रोग; देखो दद्रु।
दादमर्दन-(हिं० पुं०) चकवँड़ का वृक्ष।
दादरा-(हिं०पुं०)एक प्रकार का चलता गाना, एक प्रकार का ताल जिसमें दो अर्धमात्रा रहती है।
दादस-(हिं० स्त्री०) सास की सास, ददिया सास।
दादा-(हिं०पुं०) पिता का पिता, पितामह, बड़ा भाई, एक आदर सूचक शब्द जो बड़े बूढ़ों के लिये प्रयोग होता है।
दादी-(हिं० स्त्री०) पिता की माता।
दादु-(हिं० स्त्री०) दद्रु, दाद नामक चर्मरोग।
दादुपन्थी-एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय।
दादुर-(हिं०पुं०) मेढक, भेक।
दादू-(हिं०पुं०) दादा के प्रति प्यार का शब्द, एक साधारण संबोधन का शब्द, एक साधु का नाम जिनके नाम पर एक पंथ चला है-इनकी अकबर के समय बहुत प्रतिष्ठा थी, इन्होंने बहुत सी कवितायें बनाई हैं। **दादूदयाल**-(हिं०पुं०) देखो दादू।
दादूपन्थी-(हिं० पुं०) दादू नामक साधु अथवा इनका चलाया हुआ सम्प्रदाय।
दाधिक-(सं०वि०) दही में बना हुआ।
दाध-(हिं०स्त्री०)दाह, जलन **दाधना**-(हिं०क्रि०) जलाना, भस्म करना।
दाधीचि-(हिं० पुं०) दधीचि के वंश का मनुष्य।
दान-(सं० नपुं०) हाथी का मद, राजनीति के चार उपायों में से एक, शुद्धि, कर, महसूल, पालन, छेदन, वह वस्तु जो दान में दी जावे, देने का कार्य, त्याग, उत्सर्जन, धर्मार्थ कार्य।
दानक-(सं०नपुं०) कुत्सित दान, बुरा दान; **दानकर्म**-(सं०नपुं०) दानक्रिया, देने का काम; **दानकाम**-(सं०वि०) दानशील, देने वाला; **दानकुल्या**-(सं०स्त्री०)हाथी का मद; **दानघाटी**-(हिं०स्त्री०) गोवर्धन में श्रीकृष्ण की लीला का एक स्थान; **दानधर्म**-(सं०पुं०) दान का धर्म, दान पुण्य;
दानपति-(सं० पुं०) सर्वदा दान देने वाला; **दानपत्र**-(सं० नपुं०) त्याग पत्र, वह लेख या पत्र जिसके द्वारा कोई सम्पत्ति किसी को दान के रूप में दी जावे; **दानपद्धति**-(सं०स्त्री०) दान देने की प्रणाली; **दानपात्र**-(सं० नपुं०) दान पाने के उपयुक्त व्यक्ति;**दानफल**-(सं०नपुं०) दान देने का फल; **दानलीला**-(सं०स्त्री०) श्री कृष्ण की वह लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर लिया था, वह पुस्तक जिसमें श्रीकृष्ण की इस लीला का वर्णन है।
दानव-(सं०पुं०)दनु की सन्तति, असुर, राक्षस। **दानवगुरु**-(सं०पुं०) दानवों के गुरु-शुक्राचार्य।
दानवज्र-(सं० पुं०) एक प्रकार का घोड़ा जो देवताओं और गन्धर्वों की सवारी में रहता था।
दानवप्रिया-(सं०स्त्री०) नागवल्ली लता, पान की लता।
दानवारी-(सं० पुं०) देवता, विष्णु, इन्द्र, हाथी का मद।
दानविधि-(सं० पुं०) दान देने का नियम।
दानवी-(सं० स्त्री०) दानव की स्त्री, राक्षसी। **दानवी**-(हिं० वि०) दानव सम्बन्धी, दानवों का।
दानवीर-(सं० पुं०) अत्यन्त दान देने वाला, वीर रस के अन्तर्गत एक प्रकार का नायक।
दानवेन्द्र-(सं०पुं०) राजा बलि।
दानवेय-(सं०पुं०) दक्ष की कन्या दनु की सन्तान।
दानव्रत-(सं०नपुं०) दानरूपी व्रत।
दानशक्ति-(सं० स्त्री०) दान करने की योग्यता।
दानशील-(सं०वि०) दाता, दानी, दान करने वाला। **दानशीलता**-(सं०स्त्री०) उदारता।
दानशूर-(सं०पुं०)दानवीर, शाक्यमुनि।
दानशौण्ड-(सं०वि०) अत्यन्त दानी।
दानसागर-(सं० पुं०) एक प्रकार का महादान जिसमें भूमि, आसन तथा सोलह पदार्थो का दान किया जाता है।
दानकेश-(हिं०पुं०)एक प्रकार का जरदोजी किया हुआ कपड़ा जिसके चोगे बनते हैं।

दानाचारा-(हिं०पुं०) भोजन खानापीना
दानाध्यक्ष-(सं०पुं०) वह कर्मचारी जो दान किये हुए द्रव्य को बाँटता है।
दानापानी-(हिं०पुं०) अन्न जल, भरण पोषण, जीविका रहने का संयोग; **दाना पानी छोड़ना**-अन्न जल कुछ भी ग्रहण न करना।
दानिनी-(सं०स्त्री०) दान देने वाली स्त्री।
दानी-(हिं० वि०) दान करने वाला, उदार, दाता, कर उगाहने वाला; (पुं०) नेपालके पहाडियों की एक जाति
दानीय-(सं०वि०) दान करने योग्य।
दानु-(सं० पुं०) दाता, वायु, राक्षस, (नपुं०) देने योग्य धन।
दानुद-(सं०वि०) धन देने वाला।
दानौ-(हिं०पुं०) देखो दानव।
दान्त-(सं०वि०) जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, जिसका दमन किया गया हो, दांत संबंधी, (पुं०) मैनफल, दाना, दमयन्ती के भाई का नाम।
दान्ता-(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
दान्ति-(सं०स्त्री०) इन्द्रियों का दमन, वश्यता, नम्रता; **दान्तिक**-(सं०वि०) हाथीदांत का बना हुआ।
दाप-(हिं० पुं०) दर्प, अहंकार, गर्व, घमंड, शक्ति, बल, उत्साह, उमंग, ताप, जलन, क्रोध; **दापक**-(हिं०वि०) दबाने वाला।
दापनीय-(सं०वि०) दण्ड देने योग्य।
दापित-(सं०पुं०) दण्डित, जिसको दण्ड मिला हो, धन आदि देकर वश में किया हुआ।
दाब-(हिं०स्त्री०) दबने या दबाने का भाव, चांप,आतङ्क, अधिकार, भार, बोझा, शासन।
दाबकस-(हिं० पुं०) लोहारों के छेद करने के अस्त्र एक भाग।
दाबदार-(हिं०वि०) प्रभावशाली,प्रतापी,
दाबना-(हिं०क्रि०) देखो दबाना।
दाबा-(हिं०पुं०) वृक्ष की कलम बाँधने की एक विधि।
दाबिल-(हिं० पुं०) एक प्रकार की सफेद चिड़िया।
दाबी-(हिं० स्त्री०) कटी हुई उपज के बँधे हुए पूले।
दाभ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कुश,डाभ
दाभी-(सं०स्त्री०) अनिष्टकारक, हानि पहुँचने वाला।
दाभ्य-(सं० वि०) शासन किये जाने योग्य, बाधा देने योग्य।
दाम-(सं०पुं०) पशुको बांधने की रस्सी, हार, माला, समूह,अनुसन्धान, खोज, विश्व, लोक, धन द्वारा शत्रु को वश में करने की राजनीति, दाननीति, (वि०) दाता, देने वाला।
दाम-(हिं०पुं०) एक दमड़ी का तीसरा अंश, धन, रुपया पैसा, मूल्य, रुपया, **दाम दाम भरना**-ऋण की दमड़ी

दमड़ी चुकाना; दाम खड़ा करना-किसी वस्तु को बेंच कर दाम वसूल करना; दामचुकाना-मूल्य दे देना; दाम भरना-डांड़ देना।
दामक-(सं०पुं०) बागडोर, लगाम।
दामग्रन्थि-(सं०पुं०) बिराट के राजा के सेनापति का नाम।
दामन्-(स०पु०) वह रस्सी जो गाय के दूहते-समय उसके पिछले पैर में बांधी जाती है, माला, हार।
दामनपर्व-(स०नपु०) चैतसुदी द्वादशी पर होने वाला पर्व।
दामनी-(सं०स्त्री०) रस्सी, डोरी
दामर-(हिं० स्त्री०) नाव की पेंदी में लगाने का मसाला, छोटे कान वाली भेड़ी।
दामार,दामरी-(हिं०स्त्री०) रस्सी,डोरी
दामासाह-(हिं०पुं०) वह दिवालिया या महाजन जिसकी सम्पत्ति लहनेदारों को हिस्से रसदी बाँट दी जावे; दामासाही-(हिं०स्त्री०)दिवालिये महाजन की सम्पत्ति का वह अंश जो लेहनेदार को बांटा जावे।
दामिनी-(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली, स्त्रियों के पहिरने का एक गहना, बेंदी, दांवनी।
दामी-(हिं०स्त्री०) कर,
दामोद-(सं०पु०) अथर्ववेद की एक शाखा का नाम।
दामोदर-(सं०पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, हृषीकेश, बंगाल की एक प्रसिद्ध नदी का नाम।
दाम्पत्य-(सं० नपुं०) दम्पत्ति सम्बधी अग्निहोत्र आदि कर्म, स्त्री पुरुष का परस्पर प्रेम, (वि०) स्त्री पुरुष संबंधी
दाम्पत्यप्रणय-पतिपत्नीका परस्पर प्रेम
दाम्भिक-(स०वि०) दर्म्भयुक्त,पाखण्डी (पुं०) बकुला।
दाय-(सं०पुं०) दाम आदि में दिया जाने वाला धन,उत्तराधिकारियों में बांटी जाने वाली सम्पत्ति, खण्डन, विभाग, दान;दायक-(सं०वि०) दाता, देने वाला,दायज, दायजा-(हिं०पुं०) यौतुक, दहेज, वह धन जो विवाह के समय कन्या पक्ष वाले वर पक्ष को देते है; दायबन्धु-(सं०पुं०) भ्राता, भाई; दायभाग-(सं०पु०) पैत्रिक धन का पुत्र पौत्र तथा संबंधियों में विभाग।
दायम-(हिं०क्रि०वि०) सर्वदा।
दायमी-(हिं०वि०) सर्वदा का।
दायाँ-(हिं०वि०) दाहिना।
दाया-(हिं० स्त्री०) देखो दया।
दायागत-(सं०वि०) पैत्रिक अंश का बांट में आया हुआ।
दायाद-(सं०पुं०) दायग्राही सपिण्ड, कुटुम्बी, (वि०) जो दाय की अधिकारी हो, (पुं०) अंशभागी पुत्र।
दायादवत्-पुत्र, बेटा।
दायादी-(स०स्त्री०) पुत्री,बेटी, कन्या।
दायाद्य-(स० स्त्री०) दाय भागी होने का भाव।
दायित-(सं०वि०) दिया हुआ।
दायित्व-(सं०पुं०) दायाद का भाव
दायिनी-(सं०वि०) देने वाली।
दायी-(सं०वि०) दाता, देने वाला।
दाये-(हिं०क्रि०वि०) दाहिनी ओर।
दार-(सं०पुं०) पत्नी, भार्या, विदारण, फाड़ने का वाला; दारक-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा, लड़का, (वि०) विदारक, फाड़नेवाला; दारकर्म-(सं०नपु०) विवाह; दारकाचार्य-(सं०पुं०) बुद्ध के गुरु का नाम; दारक्रिया-(स०स्त्री०) दारकर्म विवाह; दारग्रहण-(सं०नपुं०)विवाह,पत्नीग्रहण,
दारण-(सं०नपु०) निर्मली का फल, चीरने फाड़नेका काम, चीरने फाड़ने का अस्त्र; दारद-(सं०नपुं०) पारा, हिंगुल, समुद्र; दारपरिग्रह-(सं०पु०) दारकर्म, विवाह; दारपरिग्रही-(स०पु०) जिसने विवाह किया हो; दारवलिभुज-(स०पु०)बकुला पक्षी।
दारन-(हिं० वि०) देखो, दारुण।
दारना-(हिं०क्रि०) निदीर्ण करना-
दारव-(सं०वि०) काष्ठ सम्बन्धी, लकड़ी का बना हुआ।
दारसंग्रह-(सं०पु०) देखो दारपरिग्रह।
दारा-(हि०स्त्री०) भार्या, पत्नी,
दाराधिगमन-(स० नपु०) विवाह,
दाराधीन-(स० वि०) जो स्त्री के वशीभत हो।
दारि-(सं०वि०) दारक, फाड़नेवाला, (हिं०) दाल।
दारिउँ-(हि०पु०)देखो दाड़िम,अनार।
दारिका-(स०स्त्री०)कन्या,बेटी, बालिका
दारिकादान-कन्यादान।
दारित-(सं० वि०) विदीर्ण, चीरा फाड़ा हुआ।
दारिद-(हिं०पु०) देखो दारिद्र,दरिद्रता
दारिम-(हिं०पु०) अनार।
दारिद्र्य-(सं०नपुं०) दरिद्रता, निर्धनता,
दारी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का रोग जिसमे पैरके लके फट जाते हैं,बवाय, (हि०स्त्री०) लड़ाई में जीतकर लाई हुई दासी। दारीजार-(हिं० पुं०) लौंडी का पति, दासी का पुत्र,
दारु-(सं०पुं०) काष्ठ, काठ, लकड़ी, देवदार, पीतल, बढ़ई, चीर फाड़ करनेवाला मनुष्य,(वि०) टूटने फूटने वाला, दानशील; दारुक-(सं०नपु०) देवदार,काठ का पुतला, श्रीकृष्ण के एक सारथी का नाम; दारुकच्छ-(स०पु०) एक देश का नाम; दारुकदली-(सं०स्त्री०) जगली केला, कठकेला; दारुका-(सं०स्त्री०) कठपुतली, दारुगन्ध-(सं० स्त्री०) चीड़ के वृक्ष से निकलने वाला द्रव्य; दारुचीनी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का तज, दालचीनी; दारुज-(सं०पु०) एक प्रकार का बाजा, (वि०) काष्ठ में से उत्पन्न होनेवाला।
दारुण-(स०पु०)चीते का वृक्ष,भयानक रस, विष्णु,शिव,एक नरक का नाम, रौद्र नामक नक्षत्र, राक्षस, (वि०) विदारक,फाडनेवाला,प्रचण्ड,भयकर, विकट, कठिन, दुःसह; दारुणक-(स०नपुं०) मस्तकमें होने वाला एक रोग; दारुणता-(सं०स्त्री०) कठिनता, कठोरता; दारुणा-(स०स्त्री०) अक्षय तृतीया, नर्मदा खण्ड की अधिष्ठात्री देवी; दारुणादि-(स०पु०) विष्णु।
दारुण्य-(सं० नपुं०) कठोरता, भीषणता उग्रता।
दारुनटी,दारुनारी-(सं०स्त्री०) कठपुतली
दारुनिशा-(सं०स्त्री०)दारुहरिद्रा,दारुहल्दी
दारुपात्र-(सं०नपुं०)काठ का बना हुआ पात्र, तुमड़ी।
दारुपीता-(स०स्त्री०) दारुहल्दी।
दारुपुत्रिका-(सं०स्त्री०) कठपुतली।
दारुफल-(स०पुं०)पिस्ता नामक मेवा।
दारुब्रह्म-(स०पु०) जगन्नाथ।
दारुमय-(स०वि०) काठका बना हुआ।
दारुमुखाह्वया-(सं०स्त्री०)गोहनामकजन्तु
दारुमुच-(स०पु०) एक प्रकार का स्थावर विष।
दारुमूषा-(स०स्त्री०)एक प्रकार का विष
दारुयन्त्र-(स०नपुं०)काठका बना हुआ एक यन्त्र
दारुयोषिता-(सं०स्त्री०) कठपुतली।
दारुवह-(सं०पु०) लकड़ी ढोने वाला।
दारुसार-(स०पुं०) चन्दन।
दारुसिता-(स० स्त्री०) दारचीनी।
दारुहरिद्रा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी डंठल और जड़ औषधियों में प्रयोग होती हैं।
दारुहल्दी-(हि०स्त्री०) देखो दरुहरिद्रा।
दारुहस्तक-(सं०पुं०) काठ का बना हुआ हाथ।
दारों-(हिं०पुं०) देखो दार्यों।
दार्ढ्य-(सं०नपुं०) दृढ़ता।
दार्दुर-(सं०पु०) एक प्रकार का शंख, (नपुं०) लाह, जल।
दार्दुरिक-(स०वि०) कुम्हार।
दार्भ-(स०वि०) कुश संबंधी।
दार्यों-(हिं०पुं०) दाडिम, अनार।
दार्व-(सं०पु०) एक प्राचीन देश का नाम जो आजकल के काश्मीर देश के अन्तर्गत पड़ता है।
दार्वट-(स०नपुं०) चिन्तागृह, वह कोठरी जिसमें बैठ कर किसी विषय पर मनन किया जाता है।
दार्वण्ड-(सं०पुं०) मयूर, मोर-जिसका अंडा काठ की तरह कड़ा होता है।
दार्वाघाट-(स०पु०) कठफोड़वा पक्षी।
दार्वाघात-(सं०वि०)काष्ठ पर आघात करने वाला।
दार्विका-(सं०स्त्री०) दारुहल्दी।
दार्विपत्रिका-(सं०स्त्री०) बनगोभी।
दार्वी-(स०स्त्री०) बनगोभी, देवदार, दारुहल्दी।
दार्श-(स०वि०) जो देखने से उत्पन्न हो, नेत्रभव, जो आँख से उत्पन्न हो।
दार्शनिक-(स०पुं०) दर्शनशास्त्र जानने वाला, तत्वज्ञानी, (वि०) दर्शन शास्त्र संबंधी।
दार्षद-(स०वि०) पत्थर का बना हुआ, पाषाण निर्मित।
दार्ष्टान्त-(सं०वि०) दृष्टान्त युक्त, जो उदाहरण देकर समझाया गया हो।
दार्ष्टान्तिक-(सं०वि०) दृष्टान्त युक्त
दाल-(सं०नपु०) वृक्ष के खोखले में उत्पन्न मधु, (पु०)कोदो नामक अन्न, चूर करने का काम।
दाल-(हिं०स्त्री०) दला हुआ अन्न जो सालन की तरह खाया जाता है, दाल के आकार की कोई वस्तु जो पानी में उबाल कर तथा नमक या मसाला मिलाकर रोटी या भात के साथ खाई जाती है, वह पपड़ी जो चेचक, फोड़ आदि के सूखने पर पड़ जानी है, तुन जाति का एक वृक्ष; दाल गलना-आशय सिद्ध होना; दाल दलया-रूखा सूखा भोजन; दाल में कुछ काला होना-कोई सन्देह युक्त होना; दाल रोटी-सामान्य भोजन; जूतियों दाल बंटना-आपस में कलह होना।
दालचीनी-(हिं०स्त्री०)देखो दारचीनी।
दालन-(स०पुं०) दाँत का एक रोग।
दालमोट-(हिं०स्त्री०) घी तेल आदि में तली हुई तथा नमक मिर्च मिलाई हुई दाल।
दालव-(सं०पु०) एक प्रकार का स्थाविर विष।
दाला-(स०स्त्री०)महाकाल नामक लता।
दालि-(स०स्त्री०) दाडिम, अनार।
दालका-(स०स्त्री०) महाकाल नामक लता।
दालिम-(सं०पुं०) दाडिम, अनार।
दाल्म-(सं०पु०) इन्द्र।
दाँव-(हिं०पु०) कार्य साधन का उपाय, युक्ति, चाल, छल, कपट, खेलने की बारी, जीत का पासा या कौड़ी, स्थान, ठौर, अवसर, मौका, पारी बार, अनुकूल सयोग, कुटिल युक्ति, दाँव करना-युक्ति लगाना, घात में बैठना; दाँव लगना-अच्छा अवसर मिलना; दाँव लेना-बदला लेना; दाँव पर चढ़ना-पूर्ण रूप से किसी के वश में होना; दाँव पर रखना या लगाना-रुपये पैसे का पण लगाना; दाँव देना-किसी खेल में हार जाने पर जो दण्ड निश्चित हुआ हो उसको भोगना।
दाँवना-(हिं०क्रि०) सूखे हुए अन्न के डंठलों को भूसा अलगाने के लिये बैलों से रौदवाना।
दाँवनी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की माथे पर पहिरने का एक प्रकार का आभषण
दाँवरी-(हिं०स्त्री०) रस्सी, डोरी

दाव-(सं०पुं०) वन, जंगल, बड़वानल, वन की आग, ताप, जलन (हिं०पुं०) एक प्रकार का शस्त्र, एक वृक्ष का नाम।

दावदी-(हिं०स्त्री०) गुलदावदी का फूल।

दावन-(हिं०पुं०) दमन, नाश, एक प्रकार का टेढ़ा छुरा, खुखड़ी, हंसिया।

दावना-(हिं०क्रि०) देखो दाँवना, दमन करना, नष्ट करना।

दावनी-(हिं०स्त्री०) देखो दाँवनी।

दावरा-(हिं०पुं०) धावरा नामक वृक्ष।

दावसु-(सं०पुं०) अङ्गिरा ऋषि के एक पुत्र का नाम।

दावा-(हिं०स्त्री०) वन में बाँस तथा अन्य वृक्षों की डालियों के परस्पर रगड़ से उत्पन्न अग्नि।

दावाग्नि-(सं० पुं०) जंगल में लगने वाली अग्नि।

दावानल-(सं०पुं०) दावाग्नि, वन में लगने वाली आग।

दावारथि-(हिं०पुं०) दशरथ के पुत्र।

दाविनी-(सं०स्त्री०) बिजली, एक गहना जिसको स्त्रियां माथेपर पहिरती हैं

दावी-(हिं०पुं०) धव का पेड़।

दाश-(सं०पुं०) धीवर, केवट, भृत्य, नौकर। **दाशक**-(सं०पुं०) धीवर, केवट। **दाशग्राम**-(सं०पुं०) धीवरों के रहने का गाँव। **दाशनन्दिनी**-(सं०स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती। **दाशपुर**-(सं०पुं०) धीवरों की बस्ती।

दाशरथ-(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र। **दाशरथि**-(सं० पुं०) दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र।

दाशु-(सं०वि०) दाता, देने वाला, दिया हुआ।

दाशेय-(सं० स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती।

दाशेरक-(सं०पुं०) मरुदेश, माड़वार, मरुदेश के राजा।

दाश्व-(सं० वि०) दानी, दाता।

दास-(सं० पुं०) शूद्र, धीवर सेवक, नौकर चाकर, वह जिसने अपना जीवन स्वामी के सेवा में लगा दिया हो, भृत्य, एक उपाधि जो शूद्रों के नाम के अन्त में लगाई जाती है, दस्यु, वृत्रासुर, (वि०) घृणा करने वाला, उपक्षेपक; **दासता, दासत्व**-(सं०) सेवावृत्ति; **दासन**-(हिं०पुं०) देखो डासन; **दासनन्दिनी**-(सं०स्त्री०) धीवर कन्या; **दासपत्नी**-(सं०स्त्री०) दास की स्त्री; **दासपन**-(हिं०पुं०) दासत्व, सेवापन; **दासमित्र**-(सं०नपुं०) दास का मित्र।

दासा-(हिं०पुं०) वह पोश्ता जो भीत में सटाकर उठाया जाता है, यह कुछ ऊँचा होता है और इस पर वस्तु भी रक्खी जा सकती है, वह चबूतरा जो आँगन के चारो ओर भीत से सटाकर उठाया जाता है; भीत के ऊपर बैठाया हुआ मोटा पत्थर, लकड़ी या पत्थर जो द्वार के ऊपर भीत के आर पार रहता है, हँसिया; **दासानुदास**-(सं०पुं०) सेवक का सेवक, अति तुच्छ सेवक, यह शब्द विनय तथा नम्रता दिखलाने के लिये प्रयोग होता है।

दासिका, दासी-(सं०स्त्री०) दास की पत्नी, टहलनी, लौंड़ी, दासी, मल्लाहिन, काकजंघा, कटसरैया, वेदी; **दासीत्व**-(सं०नपुं०) दासी का कर्म, सेवावृत्ति; **दासीपाद**-(सं०वि०) जिसके पांव दासी के समान हों; **दासीसभ**-(सं०नपुं०) दासियों की मण्डली।

दासेय-(सं०पुं०) दास, धीवर (वि०) जो दास से उत्पन्न हो।

दासेयी-(सं० स्त्री०) व्यास की माता का नाम।

दासेर-(सं०पुं०) दास, धीवर।

दासेरक-(सं०पुं०) दासीपुत्र, ऊँट।

दास्य-(सं०नपुं०) दासत्व, सेवा, भक्ति के नव भेदों में से एक।

दास्यमान-(सं०वि०) दान दिया जाने वाला पदार्थ।

दास्र-(सं०नपुं०) अश्विनी नक्षत्र।

दाह-(सं०नपुं०) भस्म करने या जलाने की क्रिया, शव जलाने की क्रिया, जलन, दाह, सन्ताप, शोक, अत्यन्त दुःख, ईर्ष्या, वह रोग जिसमें प्यास अधिक लगती है और संपूर्ण शरीर में जलन मालूम होती है, **दाहक**-(सं० वि०) जलाने वाला, (पुं०) अग्नि, लाल चीते का वृक्ष, **दाहकता**-(सं०स्त्री०) जलाने का गुण या भाव, **दाहकर्म**-(सं०पुं०) शव फूंकने का काम, **दाहकाष्ठ**-(सं० नपुं०) अगरू की लकड़ी, **दाहक्रिया**-(सं०स्त्री०) दाहकर्म, **दाहघ्न**-(सं०नपुं०) शरीर की जलन मिटाने वाली औषधि, **दाहज्वर**-(सं०पुं०) वह ज्वर जिसमें शरीर में बहुत गरमी मालूम होती है, **दाहदा**-(सं०स्त्री०) नाग वल्ली लता, पानकी लता **दाहन**-(सं०स्त्री०) भस्म करने या जलाने की क्रिया, **दाहना**-(हिं० क्रि०) भस्म, करना, जलाना, फूंकना, (हिं०वि०) दहिना, **दाहनागुरू**-(सं०नपुं०) अगर नामक गन्ध द्रव्य, **दाहमय**-(सं०वि०) दाह पूर्ण, **दाहसर**-(सं०पुं०) श्मशान, **दाहहरण**-(सं०नपुं०) बीरणमूल, खस।

दाहागुरू-(सं०नपुं०) जलाने का अगर।

दाहिन्-(सं०वि०) जलाने वाला।

दाहिकाशक्ति-(सं०स्त्री०) जलानेकीशक्ति

दाहिना-(हिं०वि०) अपसव्य, दक्षिण, बायाँ का उलटा, अनुकूल, प्रसन्न, **दाहिनी देना**-दक्षिण की ओर से परिक्रमा करना; **दाहिना हाथ होना**-बड़ा सहायक होना। **दाहिनावर्त**-(हिं०वि०) देखो दक्षिणावर्त। **दाहिने**-(हिं० क्रि० वि०) दहिने हाथ की ओर।

दाही-(हिं०वि०) जलाने या भस्म करने वाला। **दाहुक**-(सं०वि०) दाहक, जलाने वाला; **दाह्य**-(सं०वि०) जलाने योग्य।

दिअरी, दिअली-(हिं० स्त्री०) मिट्टी का बहुत छोटा दिया दिउली।

दिआ-(हिं०पुं०) देखो दीया; **दिआना**-(हिं०क्रि०) देखो दिलाना; **दिआवत्ती**-(हिं०स्त्री०) देखो दियाबत्ती, **दिआसलाई**-(हिं०स्त्री०) देखो दियासलाई।

दिउली-(हिं० स्त्री०) घाव या फोड़े पर पड़ी हुई पपड़ी, दाल, मछली के ऊपर की चोइयाँ, सेहरा।

दिक्-(सं०स्त्री०) दिशा ओर।

दिकचन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का गन्ना।

दिकदाह-(हिं०पुं०) देखो दिग्दाह।

दिकोड़ी-(हिं०स्त्री०) हड्डा बर्रे।

दिक्क-(हिं०वि०) देखो दिक।

दिक्कन्या-(हिं०स्त्री०) दिशा रूपी कन्या, पुराण के अनुसार सब दिशायें ब्रह्मा की कन्या मानी जाती है।

दिक्करी-(सं०स्त्री०) दिग्गज, युवती स्त्री

दिक्कामिनी-(सं०स्त्री०) दिक्रूपी स्त्री।

दिक्चक्र-(सं०नपुं०) चक्रवाल, आठो दिशाओं का समूह।

दिक्पति-(सं०पुं०) ज्योतिष के अनुसार दिशाओं के स्वामी ग्रह, आठों दिशाओं के पति।

दिक्पाल-(सं०पुं०) पुराण के अनुसार दशो दिशाओं के पालन करने वाले देवता, पूर्व के देवता इन्द्र, अग्नि कोण के अग्नि, दक्षिण के यम, नैर्ऋत्य के नैर्ऋत, पश्चिम के वरुण, वायुकोण के मरुत्, उत्तर के कुबेर, ईशान कोण के ईश्वर ऊर्ध्व दिशा के ब्रह्मा और अधोदिशा के देवता अनन्त हैं, चौवीस मात्राओं का एक छन्द।

दिक्शूल-(सं०नपुं०) ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास, दिक्शूल में यात्रा करना मना है; शुक्र और रविवार को पश्चिम में, मंगल और बुध को उत्तर, सोम और शनिवार को पूरब तथा बृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा में दिक्शूल माना जाता है।

दिक्साधन-(सं०नपुं०) वह उपाय जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है।

दिक्सुन्दरी-(सं०स्त्री०) देखो दिक्कन्या।

दिक्स्वामी-(सं०पुं०) दिशाओंके स्वामी।

दिक्षा-(हिं०स्त्री०) देखो दीक्षा।

दिखना-(हिं० क्रि०) दिखाई पड़ना, देख पड़ना। **दिखराना**-(हिं० क्रि०) देखा दिखलाना।

दिखरावना-(हिं०क्रि०) देखो दिखलाना।

दिखरावनी-(हिं० स्त्री०) दिखलाने की क्रिया। **दिखलवाई**-(हिं०स्त्री०) दिखलवाने के बदले में दिया जाने वाला धन देखो दिखलाई। **दिखलवाना**-(हिं०क्रि०) दिखलाने में दूसरे को प्रवृत्त करना। **दिखलाई**-(हिं०स्त्री०) दिखलाने की क्रिया या भाव, दिखलाने के बदले में दिया हुआ धन। **दिखलाना**-(हिं० क्रि०) दृष्टिगोचर कराना, दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना, अनुभव कराना, **दखहार**-(हिं०वि०) देखने वाला।

दिखाई-(हिं०स्त्री०) देखने का काम, दिखाने का भाव, दिखाई के बदले में दिया जाने वाला धन, देखने का काम या भाव। **दिखाऊ**-(हिं०वि०) दर्शनीय, देखने योग्य। दिखौवा, बनावटी, जो केवल देखने योग्य हो काम में न आ सके। **दिखादिखी**-(हिं० स्त्री०) देखो देखा देखी।

दिखाना-(हिं०क्रि०) देखो दिखलाना।

दिखाव-(हिं०पुं०) देखने का भाव या क्रिया दृश्य **दिखावट**-(हिं० स्त्री०) दिखलाने का भाव या ढंग ऊपरी तड़कभड़क। **दिखावटी**-(हिं० वि०) जो केवल देखने के योग्य हो पर काम न आ सके, दिखौवा। **दिखावा**-(हिं० पुं०) आडंबर, ऊपरी तड़कभड़क। **दिखैया**-(हिं०वि०) देखने या दिखलाने वाला। **दिखौवा**-(हिं०वि०) दिखावटी, बनावटी। **दिगंश**-(सं०पुं०) क्षितिज वृत्त का तीन सौ साठवां अंश; **दिगंशयन्त्र**-वह यन्त्र जिसके द्वारा किसी नक्षत्र का दिगंश जाना जाता है।

दिगन्त-(सं०पुं०) दिशाओं का छोर या अन्त, आकाश का छोर, क्षितिज, दसो दिशायें। (हिं०पुं०) आंख का कोना

दिगन्तर-(सं०नपुं०) दिशाओं के बीच का स्थान, विपरीत दिशा।

दिगम्बर-(सं० पुं०) शिव, महादेव, क्षपणक जाति, तम, अन्धार, नंगे रहने वाली जैन जाति, (वि०) नंगा, नग्न। **दिगम्बरता**-(सं०स्त्री०) नग्नता, नंगापन।

दिगम्बरी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, पार्वती (वि०) नंगी।

दिग्-(हिं०स्त्री०) दिशा। **दिग्गिभ**-(सं०पुं०) दिग्गज।

दिगीश्वर-(सं०पुं०) इन्द्रादि दिक्पाल।

दिग्दती-(हिं०पुं०) देखो दिग्गज।

दिग्गज-(सं०पुं०) पुराण के अनुसार आठो दिशा के आठ हाथी जो पृथ्वी को दबाये रखते है और इनकी रक्षा के लिये स्थापित हैं, इन आठो हाथियों के नाम ये है-पूर्व में ऐरावत पूर्व दक्षिण कोण में पुण्डरीक, दक्षिण में वामन, दक्षिण पश्चिम में कुमुद पश्चिम में अञ्जन, पश्चिमोत्तर कोण में पुष्पदन्त उत्तर में सार्वभौम और उत्तर पूर्व के कोण नें सुप्रीतक। (वि०) बहुत भारी या बड़ा।

दिग्ज्ञान-(सं०नपुं०) वह ज्ञान साधन

जिससे सभी दिशाओं का ज्ञान हो।
दिग्ज्या-(सं०स्त्री०) दिशा का छोर।
दिग्घ-(हिं०वि०) दीर्घ, लंबा, बड़ा।
दिग्दर्शक यन्त्र-(सं०पुं०) शीशा लगी हुई डिबिया के आकार का यन्त्र जिससे दिशा का बोध होता है।
दिग्दर्शन-(सं०नपुं०) वह यन्त्र जिससे दिशा का ज्ञान होता है, अभिज्ञता, जो कुछ उदाहरण रूप में दिखलाया जाय।
दिग्दाह-(सं०पुं०) एक उत्पात विशेष जिसमें सूर्यास्त होने पर भी दिशायें लाल जलती हुई देख पड़ती हैं।
दिग्देवता-(सं०स्त्री०) सभी दिशाओं के साक्षीभूत देवता, दिक्पाल।
दिग्ध-(सं०पुं०) विष में बुताया हुआ बाण, अग्नि, प्रेम, तैल, प्रबन्ध, (हिं०वि०) लंबा चौड़ा।
दिग्पट-(हिं०पुं०) दिशा रूपी वस्त्र, दिगम्बर, नंगा।
दिग्पति, दिग्पाल-(हिं०पुं०)देखो दिक्पाल
दिग्बल-(सं०नपुं०) ज्योतिष के अनुसार लग्नादि में स्थित ग्रहों का बल।
दिग्भाग-(सं०पुं०) दिशा का विभाग।
दिग्भ्रम-(सं०पुं०) दिशाओं का भ्रम होना, दिशा भूलजाना, **दिग्भ्रान्त** (वि०) जिसको दिशाका भ्रम हो गया हो।
दिग्मण्डल-(सं०पुं०) सब दिशायें, दिशाओं का समूह।
दिग्राज-(हिं०पुं०) देखो दिक्पाल।
दिग्वदन-(सं०नपुं०) सब दिशाओं में स्थित राशिभेद।
दिग्वसन-(हिं०पुं०) देखो दिग्वस्त्र।
दिग्वस्त्र-(सं०पुं०) शिव, महादेव, जैन, क्षपणक (वि०) नग्न, नंगा।
दिग्वान्-(सं०पुं०) पहरेदार, ड्योढीदार।
दिग्वारण-(सं०पुं०) दिग्गज।
दिग्वास-(सं०पुं०) शिव, महादेव, नंगा रहने वाला जैन क्षपणक, (वि०) नग्न नंगा।
दिग्विजय-(सं०पुं०) युद्ध द्वारा चारो दिशाओं की विजय, राजाओं का देश देशान्तर में सेना लेकर जाना और युद्ध करके विजय प्राप्त करना, विद्या द्वारा देश देशान्तर में जाकर अपना महत्व स्थापित करना; **दिग्विजयी**-(सं०वि०) दिग्विजय करने वाला, जिसने दिग्विजय किया हो।
दिग्वि,देक्-(सं०नपुं०) सब दिशायें।
दिग्विभाग-(सं०पुं०) दिशा ओर।
दिग्विलोकन-(सं०नपुं०) शून्य दृष्टि।
दिग्व्यापी-(सं०वि०) जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।
दिग्व्रत-(सं०पुं०) जैनियों का एक व्रत।
दिग्शिखा-(सं०पुं०) पूर्व दिशा।
दिग्सिन्धुर-(सं०पुं०) देखो दिग्गज।
दिघोंच-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी।
दिङ्क-(सं०पुं०) बाल में पड़ने वाली जुवाँ, जूं।
दिङ्नक्षत्र-(सं०नपुं०) दिशाओंमें अवस्थित नक्षत्र। **दिङ्नाग**-(सं०पुं०) दिग्गज, एक प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थकार का नाम। **दिङ्नारि**-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी, व्यभिचारिणी स्त्री।
दिङ्मण्डल-(सं०पुं०)दिक्चक्र, दिशाओं का समूह। **दिङ्मातङ्ग**-(सं०पुं०) दिग्गज। **दिङ्मात्र**-(सं०नपुं०) उदाहरण मात्र। **दिङ्मूढ**-(सं०वि०) जिसको दिशाका भ्रम हुआ हो, मूर्ख। **दिङ्मोह**-(सं०पुं०) दिक् भ्रम, दिशा भूल जाना।
दिण्डि, दिण्डिर-(सं०पुं०) एक प्रकार का बाजा।
दिण्डी-(सं०पुं०) उन्नीस मात्राओं का एक छन्द।
दिण्डीर-(सं०पुं०) समुद्र फेन।
दिच्छित-(हिं०पुं०) देखो दीक्षित।
दिजराज-(हिं०पुं०) देखो द्विजराज।
दिठवन-(हिं०स्त्री०) देखो देवोत्थान।
दिठादिठी-(हिं०स्त्री०) देखो देखादेखी।
दिठाना-(हिं०क्रि०) बुरी दृष्टि लगाना।
दिठौना-(हिं०पुं०) काजल का टीका जो बालकों के माथे पर कुदृष्टि न लगने के लिये लगाया जाता है।
दिढ़-(हिं०वि०) देखो दृढ, पुष्ट, मजबूत
दिढ़ाना-(हिं०क्रि०) दृढ करना, पोढा करना, निश्चित करना। **दिढ़ाव**-(हिं०पुं०) दृढ़ बनाना।
दित-(सं०वि०) चीरा हुआ, फाड़ा हुआ।
दिति-(सं०स्त्री०) कश्यप ऋषि की स्त्री, दैत्यमाता। **दितिकुल**-(सं०स्त्री०) दैत्यवंश। **दितिज**-(सं०पुं०) दिति के पुत्र, दैत्य। **दितितनय, दितिसुत**-(सं०पुं०) दैत्य, राक्षस।
दित्य-(सं०पुं०) असुर, राक्षस (वि०) जो छेदने या काटने योग्य हो।
दित्सा-(सं०स्त्री०) दान करने की इच्छा
दित्सु-(सं०वि०) जो दान करना चाहता हो।
दिदार-(हिं०पुं०) देखो दीदार।
दिदृक्षमान-(सं०वि०) जो देखने की इच्छा करता हो। **दिदृक्षा**-(सं०स्त्री०) देखने की अभिलाषा। **दिदृक्षु**-(सं०वि०) जो देखना चाहता हो
दिद्यु-(सं०पुं०) वज्र, बाण।
दिधक्षमाण-(सं०वि०) जिसको जलाने की इच्छा हो।
दिधिषु-(सं०पुं०)गर्भाधान करने वाला मनुष्य।
दिन-(सं०नपुं०) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय, साठ दण्ड परिमित काल, समय, काल, नियुक्त काल, निश्चित समय; **दिनको तारे देख पड़ना**-चित्त ठिकाने न रहना; **दिनको रात, रात को रात न समझना**-कार्य में इतने व्यापृत होना कि अपने शारीरिक सुख का ध्यान छोड़ देना; **दिन चढ़ना**-सूर्य उदय होना, गर्भ धारण होना; **दिन डूबना**-सन्ध्या होना; **दिन ढलना**-सन्ध्या समय निकट होना; **दिन दहाड़े-दिन दुपहर**-सूर्य रहते; दिन के समय; **दिन दूना रात चौगुना होना**-जल्दी जल्दी बढ़ना; **दिन निकलना**-सूर्योदय होना; **दिन रात**-सर्वदा, हर समय; **दिन पर दिन**-प्रतिदिन; **दिन काटना**-किसी प्रकार निर्वाह करना; **दिन धरना**-दिन निर्धारित करना; **दिन फिरना**-दुःख के बाद सुख के दिन आना; **दिन भरना**-दिन बिताना।
दिनअर-(हिं०पुं०) देखो दिनकर, सूर्य।
दिनकंत-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनकर-(सं०पुं०) सूर्य, मदार का वृक्ष; **दिनकर कन्या**-(सं०स्त्री०) यमुना नदी; **दिनकर तनय**-(सं०पुं०) शनि, यम, कर्ण, सुग्रीव; **दिनकरदेव**-(सं०पुं०) सूर्यनारायण; **दिकरात्मजा**-(सं०स्त्री०) सूर्य की कन्या, यमुना, तापती; **दिनकर्ता**-(सं०पुं०) सूर्य, अर्कवृक्ष; **दिनकृत**-(सं०पुं०) देखो दिनकर्ता; **दिनकेशर**-(सं०पुं०) अंधेरा **दिनक्षय**-(सं०पुं०) किसी तिथि का क्षय; **दिनचर्या**-(सं०स्त्री०) दिन भर का काम धंधा, दिनभर में करने का कर्म या कर्तव्य; **दिनचारी, दिनज्योति, दिनदीप**-(सं०पुं०) सूर्य; **दिन दुःखित**-(सं०पुं०) चकवा पक्षी; **दिननाथ, दिन नायक**-(सं०पुं) सूर्य, दिनकर; **दिननाह**-(सं०पुं०) दिननाथ, सूर्य; **दिनप, दिनपति**-(सं०पुं०) सूर्य, अर्क वृक्ष; **दिनपात**-(सं०पुं०) तिथि का क्षय; **दिनपाल**-(सं०पुं०) सूर्य; **दिनप्रणी**-(सं०पुं०) सूर्य, अर्क वृक्ष; **दिनबन्धु**-(सं०पुं०) सूर्य, मदार का वृक्ष; **दिनमणि**-(सं०पुं०) सूर्य, मदार का वृक्ष; **दिनमयूख**-(सं०पुं०) देखो दिनमणि, **दिनमल**-(सं०नपुं०) मास, महीना; **दिनमान**-(सं०नपुं०) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय का मान; **दिनमाली**-(सं०पुं०) दिनकर, सूर्य; **दिनमुख**-(सं०नपुं०) प्रभात, सबेरा; **दिनयौवन**-(सं०नपुं०)मध्याह्न, दोपहरका समय; **दिनरत्न** (सं०नपुं०) सूर्य, मदारका पेड़; **दिनराइ**-(हिं०पुं०) देखा दिनराज; **दिनराज**-(सं०पुं०) सूर्य, दिनकर।
दिनांश-(सं०पुं०) दिन के तीन अथवा पाँच भाग में से एक भाग।
दिनाइ-(हिं०पुं०) दद्रु, दाद का रोग।
दिनाई-(हिं०स्त्री०) ऐसी विषैली वस्तु जिसके खाने से थोड़े ही दिनों में मृत्यु हो जावे।
दिनागम-(सं०पुं०) प्रातःकाल, तड़का।
दिनाण्ड-(सं०नपुं०) अन्धकार, अंधेरा
दिनाती-(हिं० स्त्री०) कर्मकारों का एक दिन का वेतन।
दिनाधीश-(सं०पुं०) सूर्य, मदार का वृक्ष
दिनान्त-(सं०पुं०) सन्ध्याकाल, शाम।
दिनान्तक-(सं०पुं०) अन्धकार, अंधेरा
दिनारम्भ-(सं०पुं०)प्रातःकाल, सबेरा
दिनार्ध-(सं०पुं०) मध्याह्न, दोपहर।
दिनावसान-(सं०नपुं०) सन्ध्या, शाम
दिनास्त-(सं०पुं०)सूर्यास्त, सन्ध्या, शाम
दिनिका-(सं०स्त्री०) एक दिन का वेतन
दिनियर-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनी-(हिं०वि०) बहुत दिनों का, पुराना
दिनेर-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनेश-(सं०पुं०) अर्क, वृक्ष, दिन के अधिपति ग्रह, सूर्य। **दिनेशपुष्प**-(सं०नपुं०) कुमुद नामक फूल।
दिनेशात्मज-(सं०पुं०)शनि, यम, कर्ण, सुग्रीव। **दिनेश्वर**-(सं०पुं०) दिनेश, सूर्य, अर्क वृक्ष।
दिनौंधी-(हिं०स्त्री०) आंख का वह रोग जिसमें सूर्य के तीव्र प्रकाश में अच्छी तरह नहीं देख पड़ता।
दिप्सु-(हिं०वि०) हानि पहुँचाने वाला
दिपति-(हिं०स्त्री०) देखो दीप्ति।
दिपना-(हिं०क्रि०) प्रकाश युक्त होना, चमकना। **दिपाना**-(हिं० क्रि०) चमकाना।
दिब-(हिं०वि०)देखो दिव्य (पुं०) सत्यता प्रमाणित करने की परीक्षा।
दिमाक-(हिं०पुं०) मस्तिष्क।
दिमात-(हिं०वि०) जिसकी दो माता हों, दो मात्रा वाला।
दिमाना-(हिं०वि०) देखो दीवाना।
दिय-(सं०वि०) देय, देने योग्य।
दियट-(हिं०स्त्री०) देखो दीयट।
दियना-(हिं०क्रि०) चमकाना।
दियरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मीठा पकवान; देखो दीया।
दियांर-(हिं०स्त्री०) दीमक।
दिया-(हिं०पुं०) देखो दीया।
दियानत-(हिं०स्त्री०) देखो दयानत।
दियानतदारी-(हिं०स्त्री०) देखो दयानतदारी।
दियाबत्ती-(हिं०स्त्री०) दीया जलाने का काम।
दियासलाई-(हिं०स्त्री०) वह लकड़ी जो रगड़ने से जल उठती है। **दियासा**-मृगतृष्णा।
दिर-(हिं०पुं०) सितार का एक बोल।
दिरद-(हिं०पुं०) देखो द्विरद।
दिरानी-(हिं०स्त्री०) देवरानी।
दिरिपक-(सं०पुं०) कन्दुक, गेंद।
दिरिस-(हिं० पुं०) देखो दृश्य, एक प्रकार की छींट, दरेस, दुरुस्त करने की क्रिया।
दिर्हम-(हिं०पुं०) देखो दिरद।
दिलचोर-(हिं० वि०) काम करने में सुस्ती करने वाला।
दिलजला-(हिं०वि०) जिसका दिल जला हो, अत्यन्त दुःखी।
दिलदरियावा-(हिं० पुं०) देखो अति उदार।
दिलवाना-(हिं०क्रि०) देखो दिलाना।
दिलवैया-(हिं०वि०) दिलाने वाला, सहायक।

दिलहा-(हिं० पुं०) देखो दिल्ला।
दिलहेदार-(हिं०वि०) देखो दिल्लेदार।
दिलाना-(हिं०क्रि०) देने का कार्य दूसरे से कराना।
दिलासा दमदिलासा-(हिं०पुं०) आश्वासन, ढाढ़स।
दिली-(हिं०वि० हार्दिक, अति घनिष्ट,
दिलीप-(सं०पुं०) इक्ष्वाकु वंश के एक प्रसिद्ध राजा का नाम, रघु के पूर्वज
दिलीर-(सं०नपुं०) गोवर, छत्ता।
दिल्ला-(हिं०पुं०) किवाड़ के पल्ले में जड़ा हुआ लकड़ीका चौखटा, दिलहा
दिल्लीवाल-(हिं०वि०) दिल्ली नगर का, दिल्ली में रहने वाला (पुं०) एक प्रकार का दिल्ली का बना हुआ देसी जूता।
दिव-(सं०स्त्री०) आकाश, दिन, सोना (नपुं०) वन, जगल।
दिवक्ष-(सं०वि०) स्वर्गीय, (पुं०) इन्द्र।
दिवगृह-(हिं० पुं०) देखो देवगृह।
दिवङ्गम-(सं० वि०) आकाशगामी, स्वर्गगामी। दिवराज-(सं०पुं०) स्वर्ग के राजा, इन्द्र।
दिवरानी-(हिं०स्त्री०) देखो देवरानी।
दिवल-(हिं०पुं०) दीया।
दिवस-(सं०पुं०)दिन, वासर; दिवसकर सूर्य, मदार का वृक्ष। दिवसकृत्, दिवसनाथ दिवसभर्ता-(सं० पुं०) दिवाकर, सूर्य। दिवसमुख-(सं०नपुं०) प्रभात, सबेरा। दिवसमुद्रा-(सं०स्त्री०) एक दिन का वेतन। दिवस विगम-(सं० पुं०) सन्ध्या काल।
दिवसान्तर-(सं०पुं०) दूसरा दिन।
दिवसेश्वर-(सं०पुं०) सूर्य, दिनकर।
दिवस्पति-(सं० पुं०) सूर्य, तेहरवें मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।
दिवस्पृश-(सं० पुं०) विष्णु-जिन्होंने वामन के अवतार में स्वर्ग को पैर से छुवा था।
दिवा-(सं०पुं०) दिवस, दिन, बाइस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।
दिवाकर-(सं० पुं०) सूर्य, अर्क वृक्ष, कौवा। दिवाकरसुत-(सं० पुं०) सूर्य के पुत्र, शनि, यम कर्ण और सुग्रीव।
दिवाकीर्ति-(सं० पुं०) नापित, नाई, चाण्डाल, उल्लू।
दिवाचर-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, चाण्डाल। दिवाचारी-(सं० वि०) दिन में चलने वाला।
दिवातर-(सं०नपुं०) बहुत प्रकाश का दिन जिस दिन बहुत उजाला हो।
दिवान-(हिं०पुं०) दीवान, मन्त्री।
दिवाना-(हिं० पुं०) देखो दीवाना, दिलवाना।
दिवानाथ-(हिं०पुं०) सूर्य।
दिवानिश-(सं०स्त्री०) रात दिन।
दिवानी-(हिं०स्त्री०) देखो दीवानी।
दिवान्ध-(सं०पुं०) उल्लू (वि०) जिसको दिन में न सूझता हो, दिनौंधी के रोग वाला।
दिवान्धकी-(सं०स्त्री०) छछूंदर।
दिवापृष्ठ-(सं०पुं) सूर्य, दिवाकर।
दिवाप्रदीप-(सं०पुं०) नीच पुरुष।
दिवाभिसारिका-(सं०स्त्री० वह नायिका जो शृंगार करके दिन में अपने प्रेमी से मिलने के निर्दिष्ट स्थान में जावे।
दिवाभीत-(सं० पुं०) उल्लू, सफ़ेद कमल चोर।
दिवाभीति-(सं०वि०) जिसको दिन में बाहर निकलने से भय हो।
दिवामणि-(सं०पुं०) सूर्य, अर्क वृक्ष।
दिवामध्य-(सं०नपुं०)मध्याह्न, दोपहर।
दिवाल-(हिं०वि०) दाता, देने वाला (पुं०) भीत।
दिवाला-(हिं०पुं०) महाजन व्यापारी आदि की वह अवस्था जब उसके पास अपना ऋण चुकाने के लिये धन न रह जाय; दिवाला निकलना-दिवाला होना; दिवाला मारना-ऋण चुकाने योग्य न रह जाना।
दिवालिया-(हिं० वि०) जिसके पास ऋण चुकाने के लिये धन न बचा हो
दिवाली-(हिं० स्त्री०) देखो दीपावली, दीवाली।
दिवावसान-(सं०नपुं०) सन्ध्या, शाम।
दिवावसु-(सं०पुं०)सूर्य,मदार का वृक्ष।
दिवाशय-(सं०पुं०) बादल से घिरा हुआ दिन, अँधेरा दिन।
दिवासञ्चर-(सं०पुं०) दिन में घूमने वाला प्राणी।
दिवास्वप्न-(सं०पुं०) दिन में निद्रा लेना। दिवास्वाप-(सं० पुं०) दिवा निद्रा, दिन में सोना।
दिवास्वापा-(सं०स्त्री०) बगला पक्षी।
दिवि-(सं०पुं०) नीलकण्ठ पक्षी।
दिविक्षया-(सं०वि०) स्वर्गवासी।
दिविगत-(सं०वि०) जो स्वर्ग में गया हो
दिविचर, दिविचारी-(सं०वि०) आकाशगामी, आकाश में घूमने वाला।
दिविज-(सं०पुं०) वह जो स्वर्ग में उत्पन्न हो। दिविजात-(सं०वि०) स्वर्ग में उत्पन्न।
दिविता-(सं०स्त्री०) द्युति, दीप्ति, चमक
दिवियोनि-(सं०वि०) जिसका जन्म स्वर्ग में हुआ हो।
दिविषद्-(सं०पुं०) देवता (वि०) स्वर्गवासी।
दिविष्टम्भ-(सं०वि०) स्वर्ग में स्थापित
दिविष्टि-(सं०नपुं०) योग, यज्ञ।
दिविष्ठ-(सं०वि०) स्वर्ग में रहने वाला
दिविस्पृश-(सं०वि०) स्वर्ग को स्पर्श करने वाला।
दिवी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा
दिवेश-(सं०पुं०) दिक्पाल।
दिवैया-(हिं०वि०)देने वाला,जो देता हो
दिवोकस्-(सं०पुं०) देवता, चातक पक्षी (वि०) आकाशवासी।
दिवोजा-(सं०वि०) जो स्वर्ग में उत्पन्न हुआ हो।
दिवोदास-(सं०पुं०)एक चन्द्रवंशी राजा का नाम जो काशी में राज्य करते थे
दिवोद्भव-(सं०वि०) स्वर्गजात, स्वर्ग में उत्पन्न (स्त्री०) इलायची।
दिवोल्का-(सं०स्त्री०) वह उल्का या चमकीला पिण्ड जो दिन में आकाश से गिरता हो।
दिवौकस्-(सं०पुं०) देवता, चातक पक्षी। (वि०) स्वर्ग में रहने वाला।
दिवौकस-(सं०पुं०) देवता।
दिवौका-(हिं०पुं०)स्वर्ग में रहने वाला देवता।
दिव्य-(सं०वि०) स्वर्गीय, स्वर्ग से संबंध रखने वाला, आकाश सबंधी, प्रकाशमान्, चमकीला, अति सुन्दर, अलौकिक, अच्छी तरह स्वच्छ किया हुआ, (पुं०) यम, गुग्गल, लवंग, हरिचन्दन, गंगा जल लेकर शपथ, तत्ववेत्ता (स्त्री०) सतावर, ब्राह्मी, सफ़ेद दूब, हर्रे, (नपुं०) वह जो स्वर्ग में उत्पन्न हो, यव, जौ, सुअर, दैवदिन, आकाशभव, एक प्रकार का उत्पात (पुं०) स्वर्गीय, अथवा अलौकिक नायक, अपराधी या निरपराधी सिद्ध करने के लिये एक प्रकार की प्राचीन परीक्षा; दिव्यक-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प; दिव्य कवच-(सं०पुं०) देवताओं का दिया हुआ कवच, अंगरक्षक स्तोत्र विशेष; दिव्य क्रिया-(सं०स्त्री०) दिव्यद्वार, परीक्षा करने की विधि; दिव्य गन्ध-(सं०पुं०) मनोहरगन्ध, लवग; दिव्य गन्धा-(सं० स्त्री०) बड़ी इलायची; दिव्य गायक-(सं०पुं०) गन्धर्व; दिव्य चक्षु-(सं०पुं०) ज्ञानचक्षु,सुन्दर आँख, उपनेत्र, बन्दर, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, (वि०) अन्धा; दिव्य-चन्दन-(सं० नपुं०) हरिचन्दन; दिव्यता-(सं०स्त्री०) दिव्य का भाव, उत्तमता, सुन्दरता; दिव्यदर्शी-(सं०वि०) अलौकिक पदार्थों को देखने वाला; दिव्य दोहद-(सं०नपुं०) अभीष्ट सिद्धि के लिये देवता को अर्पण किया हुआ पदार्थ; दिव्य दृष्टि-(सं०स्त्री०) अलौकिक दृष्टि, दिव्य चक्षु; दिव्य धर्मी-(सं०वि०) सुशील, अच्छा; दिव्य नगर-(सं० पुं०) ऐरावती नगरी; दिव्य नदी-(सं०स्त्री०) आकाश गङ्गा; दिव्य नारी-(सं०स्त्री०) दिव्य स्त्री, अप्सरा; दिव्य पुष्प-(सं०नपुं०) सुन्दर फूल, कनेर; दिव्य पुष्पिका-(सं०स्त्री०) लाल रंग का मदार; दिव्य रत्न-(सं०नपुं०) चिन्तामणि रत्न जो सब कामनाओं को पूर्ण करता है; दिव्यरथ-(सं०पुं०) देवताओं का विमान; दिव्य रस-(सं०पुं०) मीठा-रस, पारा; दिव्य लता-(सं०स्त्री०) दूर्वा लता; दिव्य वस्त्र-(सं०पुं०) सूर्य का प्रकाश (नपुं०) सुन्दर वस्त्र; दिव्य वाक्य-(सं०पुं०) देववाणी, आकाश वाणी; दिव्य वाह-(सं० स्त्री०) वृषभानु नामक गोप की एक कन्या का नाम; दिव्य श्रोत-(सं० नपुं०) वह कान जिससे सब कुछ सुन पड़े; दिव्य सरित्-(सं०स्त्री०) आकाश गङ्गा। दिव्यसार-(सं०पुं०) साखू का पेड़। दिव्यसूरि-(सं०पुं०) रामानुज संप्रदाय के बारह आचार्य जिनके नाम, भूत, महत् भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्त, भक्ताङ्घ्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्क वीन्द, रामानुज और गोदा देवी हैं; दिव्य स्त्री-(सं०स्त्री०) देवाङ्गना, अप्सरा।
दिव्याङ्गना-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
दिव्यांशु-(सं०पुं०) दिवाकर, सूर्य।
दिव्या-(सं०स्त्री०) धात्री, धाय,शतावर, ब्राह्मी बूटी, बड़ा जीरा, सफ़ेद दूब, हर्रे, स्वर्गनायिका; दिव्यादिव्य-(सं०पुं०) वह नायक जिसमें देवता के भी गुण हों; दिव्यादिव्या-(सं० स्त्री०) वह नायिका जिसमें स्वर्गीय स्त्रियों के भी गुण हों; दिव्याश्रम-(सं०पुं०) पुण्याश्रम, पवित्र आश्रम; दिव्यासन-(सं०नपुं०) तन्त्र के अनुसार एक प्रकार का आसन; दिव्यास्त्र-(सं०पुं०) देवताओं का दिया हुआ अस्त्र, मन्त्रों की शक्ति से चलने वाला अस्त्र।
दिव्योदक-(सं०नपुं०) वर्षा का पानी।
दिव्यौषधि-(सं०नपुं०) मैनसिल।
दिश्-(सं०स्त्री०) दिक् दिशा।
दिशा-(सं०स्त्री०) ओर, क्षितिज वृत्त के चार कल्पित विभागों में से एक विभाग या विस्तार, इनको पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण कहते हैं, प्रत्येक दो दिशाओं के बीच के कोण का नाम इस प्रकार है-पूर्व और दक्षिण के बीच के कोण का नाम अग्निकोण,दक्षिण और पश्चिम के बीच के कोण का नाम नैर्ऋत्य, पश्चिम और उत्तर के बीच के कोण का नाम वायव्य कोण तथा उत्तर और पूर्व के कोण का नाम ईशान कोण है, रुद्रकी एक पत्नी का नाम, दस की संख्या। दिशागज-(सं०पुं०) दिग्गज। दिशाचक्षु-(सं०पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम; दिशापाल-(सं०पुं०) देखो दिक्पाल; दिशाभ्रम-(सं०पुं०) दिशा के विषय में भ्रम होना; दिशाशल-(सं०पुं०) देखो दिक्शूल।
दिशि-(हिं०स्त्री०) देखो दिशा।
दिशेभ-(सं०पुं०) दिग्गज।
दिशोदण्ड-(सं०पुं०) अनादर द्वारा दण्ड
दिश्य-(सं०वि०) दिशा सम्बन्धी।
दिष्ट-(सं०नपुं०) भाग्य, काल,वैवस्वत, मनु के एक पुत्र का नाम, दारुहल्दी (वि०) दिखलाया हुआ, उपदेश

किया हुआ, दिया हुआ।
दिष्टबन्धक-(हिं० पु०) वह बंधक जिसमें महाजन को केवल रुपये का सूद मिलता है और बंधक की हुई वस्तु पर कोई अधिकार नहीं होता।
दिष्टान्त-(सं०पुं०) मरण, मृत्यु, मौत।
दिष्टि-(सं०स्त्री०) हर्ष, उपदेश, कथन उत्सव, भाग्य।
दिष्णु-(सं०वि०) दाता, देने वाला।
दिसंतर-(हिं०पुं०) देशान्तर, विदेश, परदेश, (क्रि०वि०) बहुत दूर तक।
दिस-(हिं०स्त्री०) दिशा।
दिसना-(हिं०क्रि०) दिखना, देखाई पड़ना
दिसा-(हिं०स्त्री०) देखो दिशा; मलत्याग **दिसादाह**-(हिं०पु०) देखो दिग्दाह; **दिसाबल**-(हिं०पुं०) वैश्यों की एक जाति।
दिसावर-(हिं०पुं०) देशान्तर, परदेश, दूसरा देश; **दिसावरी**-(हिं०वि०) विदेश से आया हुआ, बाहरी; **दिसासूल**-(हिं०पुं०) देखो दिकशूल।
दिसि-(हिं०स्त्री०) दिशा; **दिसिटि**-(हिं० स्त्री०) देखो दृष्टि; **दिसिदुरद**-(हिं० पु०) देखो दिग्गज; **दिसिनायक**-(हिं० पु०) देखो दिक्‌पाल; **दिसिप**-(हिं० पुं०) दिक्‌पाल, दिसिनायक; **दिसिराज**-(हिं०पुं०) देखो दिसिनायक।
दिसैया-(हिं०वि०) देखने या दिखलानेवाला।
दिस्टी-(हिं०स्त्री०) देखो दृष्टि; **दिस्टीबंध**-(हिं०पुं०) इन्द्रजाल, जादू।
दिस्ता-(हिं०पुं०) देखो दस्ता।
दिस्सा-(हिं०स्त्री०) ओर,
दिहली-(हिं०स्त्री०) देहली, दहलीज।
दिहाड़ा-(हिं०पुं०) दुर्गति, बुरी अवस्था
दिहाड़ी-(हिं०स्त्री०) दिनभर का वेतन।
दिहात-(हिं०स्त्री०) देखो देहात। **दिहाती**-(हिं०वि०) देखो देहाती, ग्रामीण; **दिहातीपन**-(हिं०पुं०) देहातीपन, ग्रामीणता।
दिहुड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो ड्योढ़ी।
दिहुला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान
दिहेज-(हिं०पुं०) देखो दहेज।
दीं-(हिं०स्त्री०) दीमक।
दीअट-(हिं०स्त्री०) देखो दीयट।
दीआ-(हिं०पुं०) देखो दीया।
दीक-(हिं०पुं०) काद्रू या हिजली का वृक्ष।
दीक्षक-(सं०वि०) दीक्षा देनेवाला, उपदेश देनेवाला, शिक्षक। **दीक्षण**-(सं०नपुं०) दीक्षा देने की क्रिया।
दीक्षणीय-(सं०पु०) दिक्षा संस्कार में कियाजाने वाला एक प्रकार का होम
दीक्षा-(सं०स्त्री०) सोमयोगादि का सकल्प पूर्वक अनुष्ठान, यज्ञकर्म, यजन, पूजन, नियम, उपनयन संस्कार. जिसमें गुरु गायत्री मन्त्र का उपदेश देता है, यज्ञोपवीत, गुरु से नियम पूर्वक मन्त्र ग्रहण करना, गुरुमन्त्र, यज्ञादि कर्म में संस्कार; **दीक्षागुरु**-(सं०पुं०) वह जो दीक्षा देता हो, मन्त्र का उपदेश करने वाला;
दीक्षान्त-(सं०पु०) अवभृथ स्नान आदि कर्म; **दीक्षापाल**-(सं० पुं०) दीक्षापति; **दीक्षायूप**-(सं०पुं०) काठ का वह शस्त्र जिससे यज्ञ का पशु मारा जाता है।
दीक्षित-(सं०वि०) जिसने आचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा ली हो, जिसने सोम यज्ञ आदि का संकल्प पूर्वक अनुष्ठान किया हो, (पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
दीक्षितायनी-(सं०स्त्री०) दीक्षित की स्त्री
दीखना-(हिं०क्रि०) दृष्टिगोचर होना, देख पड़ना।
दीघी-(हिं०स्त्री०) दीर्घिका, तालाब, पोखरी।
दीच्छा-(हिं०स्त्री०) देखो दीक्षा।
दीठ दीठि-(हिं०स्त्री०) नेत्र की ज्योति, देखने की शक्ति, दृष्टिपात, दृक्‌पथ, आँख की ज्योति का प्रसार, देखने के लिये खुली हुई आँख, किसी अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि डालना जिसका बुरा प्रभाव पड़े, देखभाल, निरीक्षण, पहचान, कृपादृष्टि, संकल्प, उद्देश्य, आशा; **दीठ उतारना**-झाड़ फूंककर बुरी दृष्टि का प्रभाव हटाना; **दीठ खाजाना**-टोक लग जाना; **दीठजलाना**-राई नमक आदि का अग्नि में डालना।
दीठबंद-(हिं० पुं०) इन्द्रजाल, जादू; **दीठबंदी**-(हिं०स्त्री०) जादू; **दीठवंत**-(हिं०वि०) जिसको दिखलाई पड़े, सुझाका।
दीति-(सं०स्त्री०) दीप्ति, प्रकाश।
दीदिव-(सं०पुं०) स्वर्ग, वृहस्पति, अन्न खाने की वस्तु (वि०) फिरफिर, बारंबार।
दीदी-(हिं०स्त्री०) बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द।
दीधिति-(सं०स्त्री०) सूर्य चन्द्रमा आदि की किरण, अंगुल, अंगुली; **दीधितिमान्**-सूर्य।
दीन-(सं०वि०) दुःखित दरिद्र, उदास, हीन, कातर, सन्तप्त, क्षुब्ध, नम्र, विनीत।
दीनता-(सं०स्त्री०) दरिद्रता, नम्रता; **दीनताई**-(हिं०स्त्री०) दीनता, विनीत भाव; **दीनत्व**-(सं० पुं०) दीनता; **दीनदयालु**-(सं० वि०) दुःखियों पर दया करने वाला, (पुं०) परमेश्वर का एक नाम; **दीनबन्धु**-(सं० पुं०) वह जो दुःखियों की सहायता करता है, ईश्वर का एक नाम; **दीन साधक**-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
दीना-(सं०स्त्री०) मूसा, चुहिया (वि०) दरिद्रा। **दीनानाथ**-(सं०पुं०) दुःखियों का रक्षक, परमेश्वर। **दीनानाथ**-द्रौपदी का नाथ।
दीनार-(सं०पुं०) सोने का आभूषण, सुवर्ण मुद्रा, निष्क की तौल, सोने की मोहर, आठ रत्ती की तौल।
दीनारी-(हिं०पुं०) लोहारों का ठप्पा।
दीप-(सं०पुं०) जलती हुई बत्ती, दीर्या, दस मात्राओं का एक छन्द; (हिं०पुं०) देखो द्वीप।
दीपक-(सं०नपुं०) एक वाक्यालंकार जिसमें प्रस्तुत (वर्णनीय) और अप्रस्तुत (अवर्णनीय) विषय का एक ही धर्म कहा जाता है अथवा जिसमें अनेक कार्यों का करने वाला एकही होता है, संगीत के छ रोगों में एक राग, एक ताल का नाम, दीया, श्येन पक्षी, अजवाइन, केसर, एक प्रकार की अग्नि क्रीड़ा, (वि०) प्रकाश फैलाने वाला, पाचन शक्ति को तीव्र करने वाला, उत्तेजक;
दीपकमाला-(सं०स्त्री०) दस अक्षरों का एक छन्द, दीपक अलंकार का एक भेद। **दीपकालिका, दीपकली**-(सं०स्त्री०) दिया की टेम। **दीपकवृक्ष**-(सं०पु०) एक प्रकार का बड़ा दीवट जिसमें दिया रखने के लिये अनेक शाखायें होती है। **दीपकसुत**-(सं० पुं०) कज्जल, काजल। **दीपकाल**-(सं०पुं०) सन्ध्या समय दीया जलाने का समय। **दीपकावृत्ति**-(सं०पु०) दीपक अलंकार का एक भेद। **दीपकिट्ट**-(सं०नपुं०) कज्जल, काजल।
दीपकूपी, दीपखोरी-(सं० स्त्री०) दीये की बत्ती।
दीपङ्कर-(सं०पुं०) बुद्ध का एक अवतार
दीपत-(हिं०स्त्री०) कान्ति, शोभा, कीर्ति
दीपदान-(सं० पुं०) किसी देवता के सामने दीपक जलाने का कार्य, कातिक के महीने में राधा दामोदर के सामने अनेक दीपकों को जलाने का काम।
दीपदानी-(हिं०स्त्री०) घी की बोरी हुई बत्ती रखने की डिबिया।
दीपध्वज-(सं०पुं०) कज्जल, काजल।
दीपन-(सं०पुं०) कुंकुम, केशर, प्याज, एक प्रकार का शाक, कर दा, मंत्र के संस्कार का एक भेद, प्रकाशित करने का काम, आवेग उत्पन्न करना, क्षुधा को तीव्र करना, उत्तेजन (वि०) दीपन करने वाला, भूख को बढ़ाने वाला। **दीपना**-(हिं० क्रि०) प्रकाशित होना, चमकना, जगमगाना, चमकाना।
दीपनी-(सं० स्त्री०) मेथी, अजवाइन, पाठा, ककड़ी। **दीपनीय**-(सं०वि०) उत्तेजित करने योग्य। **दीपनीया**-अजवाईन।
दीपपादप-(सं०पुं०) दीपवृक्ष, दीवट। **दीपपुष्प**-(सं० पुं०) चम्पा का फूल। **दीपभाजन**-(सं० नपुं०) दीपपात्र, दीवट। **दीपमाला**-(सं०स्त्री०) जलते हुये दीपकों की पंक्ति। **दीपमालिका**-(सं०स्त्री०) जलते हुए दीपकों की पंक्ति, दीवाली। **दीपमाली**-(हिं० स्त्री०) दीवाली।
दीपवत्-(सं०वि०) जिसके घर में दिये जलते हों। **दीपवृक्ष**-(सं०पुं०) दीवट, दीयट, दीपाधार। **दीपशत्रु**-(सं० पुं०) पतङ्ग, फतिङ्गा। **दीप शिखा**-(सं० स्त्री०) काजल, दिये की टेम। **दीपशृङ्खला**-(सं० स्त्री०) जलते हुए दीपकों की पंक्ति। **दीपसुत**-(सं० पु०) कज्जल, काजल।
दीपान्वित-(सं० त्रि०) दीपयुक्त। **दीपान्विता**-(सं०स्त्री०) कार्तिक मास की अमावस्या, दीवाली।
दीपावती-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम। **दीपावली**-(सं० स्त्री०) दीपकों की पंक्ति, दीवाली।
दीपिका-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम (वि०) प्रकाश करने वाली, उजाला फैलाने वाली।
दीपित-(सं०वि०) प्रकाशित, प्रज्वलित, चमकता हुआ, उत्तेजित।
दीपोत्सव-(सं०पुं०) दीपावली, दीवाली।
दीप्त-(सं०वि०) प्रज्वलित, जलता हुआ, चमकता हुआ, जगमगाता हुआ, (नपु०) सुवर्ण, हींग, नीबू, सिंह, नाक का एक रोग (वि०) उज्वल, सफेद, प्रकाशमय; **दीप्तकंस**-(सं० नपुं०) शुद्ध कांसा धातु; **दीप्तक**-(सं० नपुं०) सोना; **दीप्तकिरण**-(सं०पु०) सूर्य अर्कवृक्ष; **दीप्तकीर्ति**-(सं०वि०) जिसका यश दूर तक फैला हो, (पुं०) कार्तिकेय; **दीप्त जिह्वा**-(सं०स्त्री०) शृगाली, सियारिन; **दीप्त पिङ्गल**-(सं०पु०) सिंह, शेर; **दीप्त मूर्ति**-(सं०पु०) जो मूर्ति बहुत सफेद हो, विष्णु; **दीप्त रस** (सं०पुं०) केंचुआ; **दीप्तलोचन**-(सं० पुं०) बिड़ाल, बिल्ली; **दीप्त लौह**-(सं० नपु०) तपाया हुआ लाल लोहा, काँसा; **दीप्त वर्ण**-(सं०वि०) जिसका रंग सोने के समान चमकता हो (पु०) कार्तिकेय; **दीप्तशक्ति**-(सं० पु०) देखो दीप्ति वर्ण।
दीप्तांशु-(सं०पुं०) सूर्य, अर्क वृक्ष।
दीप्ता-(सं० स्त्री०) ज्योतिष्मती लता, (वि०) चमकती हुई।
दीप्ताक्ष-(सं०वि०) जिसकी आँखें चमकीली हों (पुं०) बिड़ाल, बिल्ली; **दीप्ताग्नि**-(सं०पुं०) अगस्त्य मुनि;
दीप्ताङ्ग-(सं०वि०) जिसका अङ्ग चमकता हो, (पुं०) मयूर, मोर।
दीप्ति-(सं०पुं०) द्युति, प्रकाश, उजाला, प्रभा, चमक, कान्ति, छबि, शोभा, ज्ञान का प्रकाश, लाह, कांसा, एक विश्वदेव का नाम। **दीप्तिमान्**-(सं०वि०) दीप्तियुक्त, चमकता हुआ, शोभा युक्त, कान्तियुक्त, (पुं०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न थे।
दीप्तोपल-(सं०पुं०) सूर्यकान्त मणि।

दीप्य-(सं०पुं०) अजवाइन, जोरा, रुद्रजटा (वि०) जो जलाने योग्य हो, दीप्यक-सं०नपुं० अजवाइन, अजमोदा, लाल चीता, रुद्रजटा, कुंकुम, केसर, तगर, नीबू का पेड़, श्वेत पक्षी।

दीप्यका-(सं०स्त्री०) अजवाइन।

दीप्यमान-(सं०वि०) प्रज्वलित, चमकता हुआ।

दीप्या-(सं०स्त्री०) पिण्ड खजूर, अजवाइन

दीबो-(हिं०पुं०) देखो देना।

दीयट-(हिं०पुं०) देखो दीवट।

दीयमान-(सं०वि०) जो देने योग्य हो।

दीया-(हिं०पुं०) वह बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती हो, दीपक, (स्त्री०) वह पात्र जिसमें तेल डालकर बत्ती जलाई जाती है; दीया ठंढा करना-दीपक बुताना; किसी के घर का दीया ठंढा होना- किसीके मरने के कारण परिवार में अंधकार छा जाना; दीया बढ़ाना-दीया बुझाना; दीया बत्ती करना-दीपक जलाने का प्रबंध करना; दीया लेकर ढूंढ़ना-चारो ओर व्यग्र होकर किसी वस्तु को ढूंढना।

दियासलाई-(हिं० स्त्री०) लकड़ी को छोटी सींक जिसके छोर पर मसाला लगा होता है जो रगड़ने से जल उठती है।

दीरघ-(हिं०वि०) देखो दीर्घ।

दीर्घ-(सं०वि०) आयत, लंबा, बड़ा, (पुं०) एक प्रकार का साल का पेड़, ऊँट, नरकट, ज्योतिष में सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक राशि, द्विमात्रा वर्ण अर्थात् वह वर्ण जिसका उच्चारण खींच कर होता है यथा आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ और औ, संगीत में दो मात्रा का स्वर; दीर्घकणा-(सं०स्त्री०) सफेद जीरा; दीर्घकण्टक-(सं० पुं०) बबूल का पेड़; दीर्घकण्ठ-(सं० पुं०) बकुला, एक दानव का नाम (वि०) जिसकी गर्दन लंबी हो; दीर्घ कण्ठक-(सं० पुं०) बगुला; दीर्घकन्द, दीर्घकन्दक-(सं० नपुं०) मालाकन्द, मूली; दीर्घकान्दिका-(सं०स्त्री०) ताल मूली, मूसली; दीर्घकन्धर-(सं० वि०) जिसकी गरदन लंबी हो (पुं०) बगला पक्षी; दीर्घकर्ण-(सं० वि०) जिसके कान लंबे हों; दीर्घकाण्ड-(सं०पुं०) गौंदला नामक घास; दीर्घकाय-(सं०वि०) लंबे चौड़े शरीर वाला; दीर्घकाल-(सं०नपुं०) अनेक दिन दीर्घकील-(सं० पुं०) अंकोलका वृक्ष; दीर्घकुल्या-(सं० स्त्री०) गजपिप्पली; दीर्घकूरक-(सं०पुं०) एक प्रकार का धान; दीर्घकेश-(सं०पुं०) भालू (वि०) जिसके बाल लंबे हों; दीर्घकोशिका-(सं०स्त्री०) शुक्कि, सुतुही; दीर्घगति-(सं०पुं०) ऊँट (वि०) लंबी डग मारने वाला; दीर्घगमन-(सं०नपुं०) तीव्रगति; दीर्घग्रन्थि-(सं०स्त्री०) गजपिप्पली गजपीपल। दीर्घग्रीव-(सं०वि०) जिसकी गरदन लंबी हो (पुं०) ऊँट; दीर्घघाटिका-(सं०पुं०) ऊँट, बकुला; दीर्घच्छद-(सं०पुं०) इक्षु; ऊख (वि०) जिसके पत्ते लबे हों; दीर्घजंघ-(सं० पुं०) ऊँट, बकुला (वि०) जिसकी टांगे लंबी हो; दीर्घजिह्व-(सं०पुं०) सर्प, एक राक्षस का नाम (वि०) जिसकी जीभ लंबी हो; दीर्घजिह्वा-(सं०स्त्री०) एक राक्षसी जिसको इन्द्र ने मारा था, कार्तिकेय की एक अनुचरी; दीर्घजिह्वी-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता; दीर्घजीवी-(सं०वि०) बहुत दिनों तक जीने वाला; दीर्घतन्तु-(सं०पुं०) लंबा तागा; दीर्घतमा-(सं०पुं०) उतथ्य के पुत्र का नाम, इनकी स्त्री का नाम ममता था, ये जन्मान्ध थे; दीर्घतरु-(सं०पुं०) ताड़ का वृक्ष। दीर्घता-(सं०स्त्री०) लंबाई; दीर्घतमिषा-(सं०पुं०) ककड़ी; दीर्घतुण्डा-(सं०स्त्री०) छछूंदरी; दीर्घतृण-(सं०पुं०) लंबी घास; दीर्घदण्ड-(सं०पुं०) रेंड़का वृक्ष ताड़ का पेड़; दीर्घदण्डी-(सं०स्त्री०) गोरख इमली; दीर्घदर्शिता-(सं०स्त्री०) बहुदर्शिता; दूरदर्शिता; दीर्घदर्शी-(सं०पुं०) वह जो सब बातों का परिणाम सोंच लेता है, पंडित, भालू, गिद्ध; दीर्घदृष्टि-(सं०पुं०) वह जो दूर तक की बात सोचता हो, पण्डित; दीर्घद्रुम-(सं०स्त्री०) सेम्हर का वृक्ष, दीर्घनाद-(सं०पुं०) शंख, तीव्र स्वर; दीर्घनाल-(सं०पुं०) ज्वार, गोंदला घास; दीर्घनास-(सं० वि०) जिसकी नाक लंबी हो; दीर्घ निद्रा-(सं०स्त्री) बहुत देर तक रहने वाली नींद, मृत्यु; दीर्घ निश्वास-(सं०पुं०) लंबी साँस जो दुःख या शोक के आवेग से ली जाती है; दीर्घनिस्वन-(सं०पुं०) शङ्ख; दीर्घ पक्ष-(सं०पुं०) कलिंग पक्षी (वि०) जिसके डैने लंबे हों; दीर्घ पत्र-(सं०पुं०) लाल प्याज, एक प्रकारका कुश, एक प्रकारकी ऊख; दीर्घ पत्रक, दीर्घ पत्रिक-(सं०पुं०) लहसुन, रेंडी, बेंतका वृक्ष, रेंड का वृक्ष, समुद्रफल; दीर्घपत्रा-(सं०पुं०) सरिवन, केतकी, मंजीठ; दीर्घपत्रिका-(सं०स्त्री०) सफेद बच, घीकुआर पुनर्नवा, शालपर्णी, सरिवन; दीर्घपत्री-(सं०पुं०) खिरनी का पेड़; दीर्घपर्ण-(सं०वि०) जिसके पत्ते लंबे हों; दीर्घपर्णी-(सं०स्त्री०) पिठवन का पेड़; दीर्घपल्लव-(सं०पुं०) सन का पेड़, लंबा पत्ता; दीर्घपाद-(सं०पुं०) सारस पक्षी ताडका वृक्ष; (वि०) लंबीटांगोंवाला, सुपारी का वृक्ष; दीर्घपृष्ठ-(सं०पुं०) सर्प साँप; दीर्घप्रज्ञ-(सं०वि०) दूरदर्शी, दीर्घफल-(सं०पुं०) अमलतास दीर्घफलक-(सं०पुं०) अगस्त्य का वृक्ष; दीर्घफला-(सं०स्त्री०) अंगूर की लता, दीर्घफलिका-(सं०स्त्री०) मेढ़ासींघी की लता, तीता कद्दू, लम्बा अगूर; दीर्घबाहु-(सं० पुं०) शिव के एक अनुचर का नाम, धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम, (वि०) जिसकी भुजा लम्बी हो; दीर्घभुज-(सं०पुं०) देखो दीर्घबाहु, दीर्घमारुत-(सं०पुं०) हस्ती, हाथी, दीर्घमुख-(सं०पुं०) एक यक्षका नाम, (वि०) जिसका मुख लम्बा हो; दीर्घमूल-(सं०पुं०) एक प्रकार की लता, (नपुं०) जवासा, बेल का वृक्ष मूलक, मूली; दीर्घमूल-(सं० नपुं०) मूलक, मूली, मुरई, दीर्घमूला-(सं०स्त्री०) शालपर्णी सरिवन, दीर्घमूलिका-(सं० स्त्री०) जवासा, धमासा; दीर्घमूली-(सं०स्त्री०) देखो दीर्घमूलिका; दीर्घयज्ञ-(सं०वि०) जिसने बहुत कालतक यज्ञ किया हो; दीर्घरङ्गा-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी; दीर्घरत-(सं० पुं०) कुक्कुर, कुत्ता; दीर्घरद-(सं०पुं०) शूकर, सूअर, (वि०) जिसके दाँत लबे हों; दीर्घरसन-(सं० पुं०) सर्प, साँप; दीर्घरागा-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी, दीर्घरात्र-(सं०नपुं०) अधिक समय, चिरकाल; दीर्घराव-(सं० वि०) दीर्घस्वर से चिल्लाने वाला; दीर्घरोगी-(सं०वि०) बहुत दिनों का रोगी, दीर्घरोम-(सं०पुं०) भालू, (वि०) बड़े बड़े बालों वाला; दीर्घलोचन-(सं०वि०) बड़ी बड़ी आँखो वाला, (पुं०) शिव के एक अनुचर का नाम, धृतराष्ट्र के एक पुत्रका नाम, (नपुं०) लम्बी आंख; दीर्घवंश-(सं०पुं०) नरकट, बड़ा कुल, (वि०) जो प्राचीन वंश से उत्पन्न हो। दीर्घवक्त्र-(सं०पुं०) हस्ती, हाथी (वि०) लंबे मुख वाला, दीर्घवच्छिका-(सं० स्त्री०) कुम्भीर, घड़ियाल; दीर्घवल्ली-(सं० स्त्री०) महेन्द्र वारुणी लता; दीर्घवृक्ष-(सं०पुं०) साखू का पेड़, ताड़का पेड़, दीर्घवृन्त-(सं०पुं०) लताशाल, सोना पाठा, दीर्घशर-(सं० पुं०) जुआर, जोधरी; दीर्घशाख-(सं०पुं०) साल का वृक्ष; दीर्घशूक-(सं०नपुं०) एक प्रकार का धान; दीर्घश्मश्रु-(सं०वि०) बड़ी दाढ़ी वाला; दीर्घश्रवा-(सं०पुं०) दीर्घतमा ऋषि के एक पुत्र का नाम (नपुं०) लबा कान; दीर्घश्रुत-(सं०वि०) जो दूर तक सुनपड़े, जिसका नाम दूर तक प्रसिद्ध हो; दीर्घसत्र-(सं०नपुं०) जो यज्ञ बहुत दिनों में समाप्त हो; दीर्घसूत्र-(हिं०वि०) देखो दीर्घ सूत्री; दीर्घसूत्रता-(सं०स्त्री०) प्रत्येक कर्म में विलंब करने का अभ्यास। दीर्घसूत्री-(सं०वि०) विलंब करने वाला; दीर्घस्वर-(सं०पुं०) वह स्वर जिसमें दो मात्रा हों।

दीर्घायु-(सं० वि०) बहुत दिनों तक जीने वाला, दीर्घजीवी।

दीर्घारण्य-(सं० नपुं०) निबिड़ वन, घना जंगल।

दीर्घालर्क-(सं०पुं०) सफेद मदार का वृक्ष

दीर्घास्य-(सं०पुं०) शिवके एक अनुचर का नाम, हाथी, पश्चिमोत्तर प्रदेश, (वि०) बड़े मुख वाला।

दीर्घाहन्-(सं०पुं०) ग्रीष्म काल।

दीर्घिका-(सं०स्त्री०) छोटा तालाब, बावली

दीर्घोच्चारण-(सं०नपुं०) गुरु उच्चारण

दीर्ण-(सं०वि०) विदारित, फटा हुआ।

दीवट-(हिं०स्त्री०) दीया रखने का धातु या लकड़ी का बना हुआ आधार,

दीवाल-(हिं०स्त्री०) देखो दीवार, भीत।

दीवालदण्ड-(हिं०पुं०) एक प्रकार का व्यायाम।

दीवाला-(हिं०पुं०) देखो दिवाला।

दीवाली-(हिं०स्त्री०) एक उत्सव जो कार्तिक की अमावास्याके दिन होता है जिसमें सन्ध्या के समय घर में तथा घर के बाहर जलते हुए दीपकों की पंक्ति रक्खी जातीहै तथा लक्ष्मी का पूजन होता है इस दिन रात्रि में लोग जआ भी खेलते हैं।

दीवि-(सं०पुं०) नीलकण्ठ नामक पक्षी

दीसना-(हिं०क्रि०) दृष्टिगोचर होना, देख पड़ना।

दीह-(हिं०वि०) दीर्घ, लंबा, बड़ा।

दुंका-(हिं०पुं०) छोटा कण, दाना।

दुंगरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का मोटा वस्त्र।

दुंद-(हिं०पुं०) युग्म, जोड़ा, दो मनुष्यों में होने वाला युद्ध या झगड़ा, उत्साह, उधम, उपद्रव, दुन्दुभि, नगाड़ा।

दुंदुह-(हिं०पुं०) जलसर्प, पानीकासांप, डेड़हा

दुःकंत्व-(हिं०पुं०) देखो दुष्यन्त।

दुःख-(सं०नपुं०) संकट, व्याध, रोग, व्यथा, कष्ट, पीड़ा, मानसिक क्लेश, खेद; दुःख उठाना या भोगना-कष्ट सहना; दुःख पहुचाना-कष्ट देना; दुःख बँटाना-सहानुभूति प्रगट करना; दुःख भरना-संकट के दिन बिताना; दुःखकर-(सं० वि०) कष्ट पहुँचाने वाला; दुःखकोद्रवा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मसूर; दुःखग्राम-(सं०पुं०) दुःखपूर्ण संसार, दुःखों का समुदाय; दुःखयाम-(सं०वि०) दुःख से उत्पन्न, दुःखमय; दुःखजीवी-(सं०वि०) कष्ट से समय बिताने वाला; दुःखता-(सं०स्त्री०) दुःख का भाव, दुःखत्व; दुःखत्रय-(सं० नपुं०) आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक, ये तीन प्रकारके दुःख; दुःखद-(सं०वि०) दुःखदायी, क्लेश पहुँचाने वाला; दुःखदग्ध-(सं०वि०) कष्ट में पड़ा हुआ; दुःख दर्शन-(सं०पुं०) गृध्र, गिद्ध; दुख दाता-(सं०वि०) क्लेश पहुँचाने वाला; दुःखदायक, दुःखदायी-(सं०वि०) क्लेश देने वाला; दुःखदिर-(सं०पुं०) एक प्रकारकी खैर, कत्था; दुःखदोह्या-(सं०स्त्री०) वह गाय जो कठिनता से दूही जा सके, दुःखनिवह-(सं०वि०)

अत्यन्त कष्ट कारक; **दुःखप्रद**-(सं० वि०) कष्ट देने वाला; **दुःखबल**-(स०वि०) क्लेश से भरा हुआ; **दुःखभागं**-(स०वि०) दुःख भोगने वाला; **दुःखभावित**-(स०वि०)कष्ट से उच्चारण किया हुआ; **दुःखभोग**-(स०पुं०) दुःख का सहना; **दुःखमय**-(स०वि०) क्लेश से भरा हुआ, **दुःखलभ्य**-(स० वि०) दुःसाध्य, जो कठिनता से मिल सके; **दुःखलोक**-(स०पु० वह लोक जहाँ दुःख भोगना पड़े, यह संसार, **दुःखवर्धन**-(स०पुं०) कान की लर में होने वाला एक रोग; **दुःख शील**-(स०वि०)जो सर्वदा दुःख भोगता हो; **दुःखसञ्चार**-(सं०पु०) कष्ट से समय बिताना, **दुःख सागर**-(सं पु०) दुःख का समुद्र, अत्यन्त क्लेश; बहुत दुःख; **दुःख साध्य**-(सं०वि०) दुःख से होने योग्य,जिसका करना कठिन हो

दुःखहरा-(सं०स्त्री०) दुःख नाश करने वाली दुर्गा।

दुःखाकर-(स०पु०) दुःख की खान, संसार (वि०) कष्ट पहुँचाने वाला।

दुःखाचार-(सं०त्रि०)दुःस्वभाव,दुःशासन

दुखान्त-(स०पुं०) दुःख का अन्त,क्लेश की समाप्ति, (वि०) जिस नाटक आदिके अन्त में दुःख का वर्णन हो।

दुखनिवत-(स० वि०) दुःखयुक्त, जिसको कष्ट हो।

दुखायतन-(स०पु०) यह संसार।

दुःख्रार्त-(स०वि०) दुःखपीडित, कष्ट से व्याकुल।

दुःखित-(स०वि०) जिसको दुःख हो।

दुःखिनी-(सं०वि०) जो दुखिया हो।

दुःखी-(सं०वि०) क्लेशित, पीडित, जो क्लेश में हो।

दुःशकुन-(स०पु०) बुरा शकुन।

दुःशला-सं०स्त्री०) राजा धृतराष्ट्र की एक मात्र कन्या जो गान्धारी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जयद्रथ से व्याही थी।

दुःशासन-(सं०वि०) जिसपर शासन करना कठिन हो, जो किसी की बात को न माने, (पुं०) धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक का नाम जो गान्धारी के गर्भ से उत्पन्न थे, ये दुर्योधन के मन्त्री थे, कुरु पाण्डवों में युद्ध के यही कारण थे, इनका स्वभाव बड़ा क्रूर था, जब पाण्डव लोग जुए में हार गये थे तब इन्होंने द्रौपदी को सभा में लाकर उसके वस्त्र को खींचने की चेष्टा की थी।

दुःशील-(सं०वि०) दुष्टशील, बुरे स्वभाव का; **दुःशीलता**-(स०स्त्री०) दुष्टता, अविनय।

दुःशोध-(स०वि०) जिसका शोधन या सुधार कठिनता से हो।

दुःश्रव-(सं०वि०) जिसके सुनने से दुःख उत्पन्न हो, (पुं०) कान में कर्कश शब्द आने से उत्पन्न काव्य का एक दोष।

दुःसंकल्प-(सं०पुं०) दुष्ट विचार।

दुःसंग-(सं०पु०) कुसंग।

दुःसन्धान-(स०पुं०) काव्य का एक रस जिसमें एक तो मेल की बात कहता है और दूसरा विगाड़ की।

दुःसह-(सं०वि०) दुःख द्वारा सहनीय, जिसका सहना कठिन हो (पुं) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। **दुःसहा**-(सं०स्त्री०) नागदमनी नामक लता।

दुःसाध-(हिं०वि०) देखो दुःसाध्य।

दुःसाध्य-(सं०वि०) जिसका सहन करना कठिन हो, जिसका उपाय कठिन हो। **दुःसाधी**-(सं०वि०) दुष्ट साधक (पु०) द्वारपाल।

दुःसाहस-(सं०पु०) अनुचित साहस,

दुःसाहसिक-(सं०वि०) जिसके लिये साहस करना बुरा हो; **दुःसाहसी**-(सं०वि०) व्यर्थ का साहस करना।

दुःसुप्त-(स०वि०) बुरे सपने से युक्त।

दुःस्त्री-(स०स्त्री०) दुष्ट स्त्री।

दुःस्थ-(स०वि०) जिसकी स्थिति बुरी हो, मूर्ख, लोभी, दरिद्र। **दुःस्थित**-(सं०वि०) दुःख में अवस्थित, दरिद्र। **दुःस्थिति**-(सं०स्त्री०) दुर्दशा, बुरी अवस्था।

दुःस्पर्श-(सं०वि०) जिसका छूना कठिन हो (स्त्री०) केवाच, भटकैया।

दुःस्फोट-(स०पुं०)एक प्रकार का शास्त्र

दुःस्वप्न-(स०पुं०) अशुभ सूचक स्वप्न, ऐसा सपना जिसका फल बुरा माना जाता हो।

दुःस्वभाव-(सं०पुं०) दुःशीलता, बुरा स्वभाव, (वि०)बुरे स्वभाव का, नीच

दु-(हिं०वि०) 'दो' शब्द का छोटा रूप जो समस्त पद के पहिले जोड़ा जाता है।

दुअन-(हिं०पुं०) देखो दुवन।

दुआ-(हिं० पुं०) एक प्रकार का गले में पहिनने का आभूषण।

दुआदस-(हिं०वि०)देखो द्वादश, बारहवां

दुआर-(हिं०पुं०) द्वार। **दुआरी**-(हिं०स्त्री०) छोटा दरवाजा।

दुआला-(हिं०पुं०) छींट छापने का लकड़ी का बेलन।

दुआली-(हिं०स्त्री०) वह आरा जिसको दो आदमी चलाते हैं।

दुइ-(हिं०वि०) दो संख्या का, दो।

दुइज-(हिं०स्त्री०) द्वितीया, किसी पक्ष की दूसरी तिथि; **दुइज का चाँद**-द्वितीया का चन्द्रमा, थोड़ी देर तक रहने वाली वस्तु।

दुऊ-(हिं०वि०) दोनों।

दुकड़हा-(हिं०वि०) जिसका दाम दो दमड़ी या एक छदाम हो, तुच्छ, नीच **दुकड़ा**-(हिं०पुं०) एक मे लगी हुई दो वस्तु, एक पैसे का चौथा अंश, छदाम, वह वस्तु जो दो एक के साथ लगी हो, जोड़ा। **दुकड़ी**-(हिं०वि०) जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो, (स्त्री०) वह ताश का पत्ता जिसमें दो बूटियां हों, चारपाई की वह बिनावट जिसमें दो दो बाध एक साथ विने जाते हों, दो घोड़े की गाड़ी, दो कड़ियों की लगाम।

दुकना-(हिं०क्रि०) छिपना।

दुकाल-(हिं०पुं०) दुष्काल, अकाल, वह समय जब अन्न कठिनता से प्राप्त हो, दुर्भिक्ष।

दुकुल्ली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का चमड़ा मढ़ा हुआ प्राचीन बाजा।

दुकूल-(सं०न०पुं०) सन या तीसी के रेशे का बना हुआ वस्त्र, महीन वस्त्र, कपड़ा।

दुकेला-(हिं०वि०) जो अकेला न हो, जिसके साथ और भी साथी हों; **अकेला दुकेला**-जो अकेला हो अथवा जिसके साथ दो एक आदमी हों। **दुकेले**-(हिं०क्रि०वि०) दूसरे व्यक्ति को साथ लिये हुए।

दुक्कड़-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाजा जो तबले की तरह का होता है और शहनाई के साथ बजाया जाता है, दो नावों का बेड़ा जो एक में एक जुटी होती हैं।

दुक्का-हिं०वि०) जो अकेला न हो, जिसके साथ और भी कोई मनुष्य हो, जो एक साथ दो हो, जोड़ा; (हिं०पुं०) देखो दुक्की; **इक्का दुक्का**-अकेला अथवा जिसके साथ अन्य व्यक्ति भी हो। **दुक्की**- हिं०स्त्री०) ताश का पत्ता जिसमें दो बूटियाँ हों।

दुखंडा-(हिं०वि०) दो तल्ला, जिस (मकान) में दो खण्ड हों।

दुखंत-(हिं०पुं०) देखो दुष्यन्त।

दुख-(हिं०पुं०) देखो दुःख; **दुखड़ा**-(हिं०पुं०) दुःख का वृत्तान्त, दुःख की कथा, विपत्ति का वर्णन, कष्ट; **दुखड़ा रोना**-अपने दुःख की स्थिति किसी से कहना; **दुखदाई**-(हिं०वि०) दुःखदाई, कष्ट देनेवाला; **दुखदुंद**-(हिं०पु०) दुःख का उपद्रव; **दुखना**-(हिं० क्रि०) पीड़ा युक्त होना, पीड़ित होना; **दुखरा**-(हिं०पुं०) देखो दुखड़ा; **दुखवाना**-(हिं०क्रि०) देखो दुखाना; **दुखहाया**-(हिं०वि०) देखो दुखित, दुखी।

दुखाना-(हिं०क्रि०) कष्ट पहुँचाना, पीड़ा देना, व्यथित करना, पके घाव इत्यादि का स्पर्श करना जिससे पीड़ा हो; **जी दुखाना**-मानसिक कष्ट, देना।

दुखारा, दुखारी दुखारो-(हिं०वि०) दुःख, पीड़ित।

दुखित-(हिं०वि०) देखो दुःखित, पीड़ित

दुखिया-(हिं०वि०) जिसको किसी प्रकार का कष्ट या दुःख हो, दुःखी, पीड़ित। **दुखियारा**-(हिं०वि०)जिसको किसी बात का दुःख हो, दुखिया जिसको कोई शारीरिक कष्ट हो, रोगी।

दुखी-(हिं०वि०) जिसको कोई कष्ट या दुःख हो, जिसको किसी प्रकार का मानसिक कष्ट हुआ हो, जिसके मन में क्लेश हो, रोगग्रस्त रोगी,

दुखीला-(हिं०वि०) दुःख पूर्ण, जो दुःख भोगता हो। **दुखौंहाँ**-(हिं०वि०) दुःखदायी, कष्ट देने वाला।

दुगई-(हिं०स्त्री०) ओसारा।

दुगड़ा-(हिं०पुं०) दुनली बन्दूक, दोहरी गोली।

दुगदुगी-(हिं०स्त्री०) गरदन के नीचे और छाती के ऊपर का गहरा भाग, धुकधुकी, गले में पहिरने का एक गहना जो छाती के ऊपर लटकता रहता है।

दुगना-(हिं०वि०) द्विगुण, दूना।

दुगासरा-(हिं०पुं०) वह गाँव जो किसी गढ के किनारे बसा हो।

दुगुण-(हिं०वि०) देखो द्विगुण दूना।

दुगुन-(हिं०वि० देखोदुगुण,द्विगुण,दूना,

दुगूल-(हिं०पुं०) देखो दुकूल।

दुग्ग-(हिं०पुं०) देखो दुर्ग।

दुग्ध-(सं०नपुं०) स्त्री जाति के स्तनों से निकलने वाला सफेद तरल द्रव्य जिससे उनके बच्चों का बहुत दिनों तक पालन पोषण होता है, (वि०) भरा हुआ, दूहा हुआ; **दुग्धकूपिका**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का पकवान।

दुग्धतालीय-(सं० पुं०) दूध का फेन, मलाई। **दुग्धतुम्बी**-(हिं०वि०) सफेद कद्दू। **दुग्धत्रय**-(सं०नपु०) गाय, भैंस और बकरी का दूध। **दुग्धदा**-(स०वि०) दूध देने वाली (स्त्री०) एक प्रकार की घास। **दुग्धपरिमापक यन्त्र**-(सं०नपुं०) वह यन्त्र जिससे दूध में मिलाये हुए पानी का पता चलता है; **दुग्धपाचन**-(सं०नपुं०) दूध गरम करने का पात्र; **दुग्धपाषाण**-(सं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष; **दुग्धपोष्य**-(स०वि०) जो केवल दूध पिलाकर पाला जाता हो, (पु०) शिशु, बच्चा; **दुग्धफेन**-(सं०पुं०) दूध का फेन; **दुग्धफेनी**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पौधा। **दुग्धबन्धन**-(सं०पुं०) दूध दूहने के लिये गाय को बाँधना, **दुग्धबीजा**-(सं०स्त्री०) ज्वार, जोंधरी, **दुग्धसमुद्र** (सं०पुं०) देखो क्षीरसमुद्र।

दुग्धाक्ष-(सं०पुं०) एक प्रकार का सफेद रत्न।

दुग्धाब्धि-(सं०पुं०) क्षीरसागर, दुग्ध समुद्र। **दुग्धाब्धितनया**-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी। **दुग्धाम्बुधि**-(स०पुं०) क्षीरसागर, **दुग्धाश्रम**-(सं० नपुं०) दूध पर की मलाई; **दुग्धाश्मन्**-(स०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष।

दुग्धिका-(सं० वि०) दुद्धी नामक वृक्ष, खिरनी; **दुग्धिनिका**-(सं०स्त्री०) लाल अपामार्ग, चिड़चिड़ा।

दुग्धि-(सं०स्त्री०) दुद्धी नामकी घास

वि०) दूध वाला, जिसमें दूध हो।

दुघ-(सं० वि०) जो दूहता हो, दूहने वाला।

दुघड़िया-(हिं०वि०) दो घड़ी का (मुहूर्त)। दुघड़िया मुहूर्त-दो दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त जो आवश्यकता के लिये स्थिर किया जाता है।

दुघरी-(हिं०स्त्री०) दुघड़िया मुहूर्त।

दुचल्ला-(हिं०पुं०) दोनो ओर ढार-वाली छत।

दुचित-(हिं०वि०)अस्थिर चित्त, जिसका मन एक बात पर स्थिर न हो। चिन्तित।

दुचितई,दुचिताई-(हिं०स्त्री०) चित्त की अस्थिरता, आशंका, चिन्ता, द्विविधा, खटका, शंका।

दुचित्ता-(हिं०वि०) जिसका मन अस्थिर हो, अस्थिर चित्त, चिन्तित, जो खटके में हो, जो सन्देह में हो।

दुच्छक-(सं०पुं०)कपूरकचरी,तालीसपत्र

दुच्छुन-(सं०पुं०) पागल कुत्ता।

दुज-(हिं०पुं०) देखो द्विज।

दुजन्मा-(हिं०पुं०) देखो द्विजन्मा।

दुजड़-(हिं०स्त्री०) तलवार, खड्ग।

दुजड़ी-(हिं०स्त्री०) कटार।

दुजपति-(हिं०पुं०) देखो द्विजपति।

दुजाति-(हिं०पुं०) द्विज।

दुजानू-(हिं०क्रि०वि०) दोनों जाँघ के बल।

दुजीह-(हिं०पुं०) देखो द्विजिह्व, सर्प, साँप।

दुटप्पी बात-संक्षिप्त वार्ता; **दुजेश**-(हिं०पुं०) देखो द्विजेश।

दुटूक, दुटक-(हिं०वि०) खण्डित, दो टुकड़ों में किया हुआ; **दुटूक बात**-बिना फेरवट की बात।

दुडि-(सं०स्त्री०) कच्छपी, कछुई।

दुण्डुक-(सं०वि०) दुष्टचित्त, खोटे दिल वाला।

दुण्डुभ-(सं०पुं०) जल सर्प, डेंड़हा।

दुण्डुभा-(सं०स्त्री०)एक प्रकार की सरसों।

दुण्डुभि-(सं०पुं०)देखो दुन्दुभि, नगाड़ा।

दुत-(सं०वि०)पीडित, जिसको कष्ट हो।

दुत्-(हिं०अव्य०) तिरस्कार सूचक शब्द जो हटाने के लिये प्रयोग होता है, घृणा सूचक शब्द।

दुतकार-(हिं०स्त्री०) धिक्कार, तिरस्कार, फटकार। **दुतकारना**-(हिं० क्रि०) तिरस्कार करना,धिक्कारना,दुत् दुत् करके अपने पास से किसी का हटाना

दुतारा-(हिं०पुं०) दो तार लगा हुआ एक प्रकार का बाजा जो अंगुली से बजाया जाता है।

दुति-(हिं०स्त्री०) द्युति, आभा, चमक।

दुतिमान-(हिं०वि०) देखो द्युतिमान।

दुतिय-(हिं०वि०) देखो द्वितीय, दूसरा।

दुतिया-(हिं०स्त्री०) द्वितीया, पक्ष की दूसरी तिथि, दूज।

दुतिवंत-(हिं०वि०) द्युतिमान, चमकीला, आभा युक्त, सुन्दर, मनोहर।

दुतिय-(हिं०वि०) द्वितीय, दूसरा।

दुतिया-(हिं०स्त्री०) देखो द्वितीय, दूज।

दुथरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी मछली।

दुदल-(हिं०वि०) द्विदल, जिसके टूटने पर दो बराबर टुकड़े हो जावें, (पुं०) दाल।

दुदलाना-(हिं०क्रि०) दुतकारना।

दुदहंडी-(हिं०स्त्री०) दूध रखने का मिट्टी का पात्र।

दुदामी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सूती कपड़ा।

दुदिला-(हिं०वि०)जो दुबधे में पड़ा हो, दुचित्ता, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।

दुद्धी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास जो भूमि पर दूर तक फैलती है, खड़िया मिट्टी, सफेद मिट्टी, सारिवा लता, जंगली नील।

दुद्रुम-(सं०पुं०) हरा प्याज।

दुधपिठवा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पकवान।

दुधमुख-(हिं०वि०) दूध पीता हुआ, दुध मुँहा।

दुधमुहाँ-(हिं०वि०) देखो दूधमुहाँ।

दुधहंडी, दुधहांडी-(हिं०स्त्री०) दूध रखने या गरम करने का मिट्टी का छोटा पात्र।

दुधाँड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो दुधहंडी।

दुधाधारी-(हिं० पुं०) एक सन्यासी सम्प्रदाय वाममार्गी।

दुधार-(हिं०वि०)दूध देने वाली,जिसमें दूध हो।

दुधारा-(हिं०वि०) जिसमें दोनों ओर धार हो (पुं०) एक प्रकार की चौड़ी तलवार, खाँड़ा। **दुधारी**-(हिं० वि०) दूध देनेवाली,जो दूध देती हो,जिसमें दोनों ओर धार हो (स्त्री०)एक प्रकार की कटार।

दुधारू-(हिं०वि०) देखो दुधार।

दुधिया-(हिं०वि०) दूध मिला हुआ, जिसमें से दूध निकलता है, सफेद रंग का, दूध की तरह सफेद, (स्त्री०) दुद्धी नाम की घास, एक प्रकार की पशुओं को खिलाने की चरी, खड़िया मिट्टी, एक प्रकार का विष; **दुधिया कजई**-एक प्रकारका रंग; **दुधिया पत्थर**, एक प्रकार का कोमल पत्थर जिसके कटोरी आदि बनती है, एक प्रकार का रत्न; **दुधिया विष**-कलियारी जाति का एक विष।

दुधेली-(हिं०स्त्री०) देखो दुद्धी।

दुधैल-(हिं०वि०) जो बहुत दूध देतीहो

दुध्र-(सं०वि०) हिंसक, मारने वाला, प्रेरक, प्रबल, जिसका दबाना कठिन हो। **दुध्रकृत**-(सं०वि०) बुरा काम करने वाला।

दुनया-(हिं०पुं०) दो नदियों का संगम स्थान।

दुनरना, दुनवना-(हिं०क्रि०) लचक कर दोहरा हो जाना।

दुनाली-(हिं०वि०) जिसमें दो नाली लगी हो (स्त्री०) दुनाली बंदूक जिसमें एक साथ गोलियां भरी जा सके।

दुनी-(हिं०स्त्री०) संसार, दुनिया।

दुन्दुभ-(सं०पुं०) दुन्दुभि,नगाड़ा।

दुन्दु-(सं०पुं०) वसुदेव, नगाड़ा।

दुन्दुभि-(सं०पुं०) बड़ा ढोल, नगाडा, एक राक्षस का नाम, विष, एक पर्वत का नाम, पासे का एक दाँव;

दुन्दुभिक-(सं०पुं०) एक प्रकार का कोड़ा; **दुन्दुभिस्वन**-(सं०पुं०) एक प्रकार की विष चिकित्सा,

दुन्दुभिस्वर-(सं०पुं०) नगाडेका शब्द।

दुन्दुभ्य-(सं०पुं०) एक रुद्र का नाम, एक प्रकार का मन्त्र।

दुन्दुमार-(सं० पुं०) राजा त्रिशङ्कु के एक पुत्र का नाम।

दुपटा, दुपट्टा-(हिं०पुं०)दो पाटकी चद्दर, वह लम्बा वस्त्र जो कन्धे या गले पर से ओढा जाता है; **दुपट्टा तान कर सोना**-निश्चिन्त होकर निद्रा लेना।

दुपट्टी-(हिं० स्त्री०) देखो दुपट्टा।

दुपद-(हिं०पुं०) देखो द्विपद।

दुपर्दी-(हिं०स्त्री०) मिरजई,

दुपलिया-(हिं०वि०) दो पल्ले वाली

दुपहर, दुपहरी-(हिं०स्त्री०)देखो दोपहर; **दुपहरिया**-(हिं०स्त्री०) मध्याह्न, दोपहर एक प्रकार का सीधे डंठल का पौधा जिसमें सुन्दर फूल लगते हैं।

दुफसली-(हिं० वि०) दोनों फ़स्लों में (अर्थात् रबी और भदई दोनों में), उत्पन्न होने वाला (वि०) सन्दिग्ध, अनिश्चित।

दुबगली-(हिं०स्त्री०) मलखम्भ का एक व्यायाम।

दुबड़ा-(हिं०पुं०)एक प्रकारकी चौपायों के खाने की घास।

दुबधा-(हिं०स्त्री०) चित्त की अस्थिरता, अनिश्चिय, आगा पीछा, असमंजस, चिन्ता, संशय, सन्देह, खटका।

दुबरा-(हिं०वि०) देखो दुबला।

दुबराना-(हिं०क्रि०)दुर्बल होना, दुबला होना।

दुबराल गोला-(हिं०पुं०) तोप मे छोड़ा जाने वाला लंबे आकार का गोला।

दुबराल पलंग-(हिं०पुं०) पाल में लगाने की डोरी।

दुबला-(हिं०वि०) दुर्बल, कृश, क्षीण शरीरका, अशक्त; **दुबलापन**-(हिं०पुं०) दुर्बलता, कृशता।

दुबाइन-(हिं०स्त्री०) दूबे की स्त्री।

दुबागा-(हिं०पुं०) सन की मोटी डोरी।

दुबारा-(हिं०क्रि०वि०) देखो दोबारा।

दुबाहिया-(हिं० वि०) वह योद्धा जो दोनों हाथों से तलवार चलाता हो।

दुबिद-(हिं०पुं०) देखो द्विविद। **दुबिध, दुबिधा**-(हिं०स्त्री०) देखो दुबधा।

दुबिसी-(हिं०स्त्री०)बीस रुपये के लगान पर सरकार की दी हुई दो रुपये की छूट।

दुबे-(हिं०पुं०)ब्राह्मणों की एक उपाधि,

दुभाखी-(हिं०पुं०) देखो द्विभाषी।

दुभाषिया दुभासी-(हिं०पुं०) वह जो दो भाषाओं को जानता हो, वह जो दो मनुष्यों की भिन्न भाषाओं को जानता है और एक का अभिप्राय दूसरे को बता देता है।

दुमन-(हिं०पुं०) अप्रसन्न, खिन्न,

दुमाता-(हिं०वि०)सौतेली माता,बुरी माँ

दुमाला-(हिं०पुं०) पाश, फन्दा।

दुमुहाँ-(हिं०वि०) दो मुख वाला।

दुम्बक-(सं०पुं०) एक प्रकार का भेंड़ा।

दुरंगा-(हिं०वि०) जिसमें दो रंग हों, दो रंग का, दो तरह का, दो पक्ष का अवलम्बन करने वाला। **दुरंगी**-(हिं०स्त्री०) द्विविधा, कभी एक पक्ष का और कभी दूसरे पक्ष का अवलम्बन।

दुरंत, दुरंद-(हिं०वि०) अपार, दुर्गम, कठिन, भारी, अशुभ, बुरे परिणाम वाला, दुस्तर, दुष्ट।

दुरंधा-(हिं०वि०) दो छेद वाला,जिसमें आर पार छिद्र हो।

दुर्-(सं०अव्य०) क्रिया के साथ लगाने से इस शब्द का अर्थ, दुष्ट, बुरा, निषेध, दुःख, थोड़ा संकट तथा, दुबला होता है (हिं०अव्य०) तिरस्कार पूर्वक हटाने के लिये इस शब्द का व्यवहार होता है इसका अर्थ है "दूर हो", **दुरदुर करना**-दुरदुराना, तिरस्कार पूर्वक हटाना।

दुरक्ष-(सं० पुं०) पासा, चौपड़, बुरी दृष्टि।

दुरखा-(हिं०पुं०) खेत की उपज को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

दुरखुम-(हिं० पुं०) दरी के तानों को दो दो को एक में बाँधना।

दुरजन-(हिं०वि०) देखो दुर्जन, दुष्ट।

दुरजोधन-(हिं०पुं०) देखो दुर्योधन।

दुरतिक्रम-(सं०वि०)अलंघनीय, जिसका अतिक्रमण न हो सके, अपार, प्रबल, जिसको कोई जीत न सके, (पुं०) विष्णु।

दुरत्यय-(सं०वि०) दुस्तर, जिसका पार करना कठिन हो।

दुरद-(हिं०पुं०) देखो द्विरद।

दुरदाम-(हिं०वि०) कष्ट साध्य।

दुरदाल-(हिं०पुं०) द्विरद, हस्ती, हाथी

दुरदिन-(हिं०पुं०) देखो दुर्दिन।

दुरदुराना-(हिं०क्रि०) तिरस्कार दिखलाते हुए हटाना या दूर करना, भगा देना।

दुरदृष्ट(सं० नपुं०) अदृष्ट, दुर्भाग्य, अभाग्य।

दुरद्मनी-(सं०स्त्री०) बुरा भोजन।

दुरधिग, दुरधिगम्य-(सं०वि०) कठिनता से मिलने योग्य, जिसका जानना कठिन हो।

दुरधिष्ठित-(सं०वि०) जो धीरे धीरे

किया जावे।
दुरधीत-(सं०वि०) बुरी तरह से अध्ययन किया हुआ, जो पढा गया हो परन्तु उसका मर्म न समझा गया हो।
दुरध्यय-(सं०वि०) अध्ययन करने में अशक्य। **दुरध्यवसाय**-(सं०पुं०) बुरा काम करने की चेष्टा।
दुरध्व-(सं०पुं०) कुपथ, कुमार्ग।
दुरना-(हिं० क्रि०) आँखों के आगे से हटना, आड़ में होना, दिखलाई न पड़ना, छिप जाना।
दुरनुपालन-(सं०वि०) जिसका पालन करना कठिन हो।
दुरनुबोध-(सं० वि०) जिसका याद करना कठिन हो।
दुरनुष्ठित-(सं० वि०) जो दुःख से किया जावे।
दुरन्त-(सं०वि०) जो पहिले अच्छा जान पड़े परन्तु जिसका अन्त बुरा हो, (सभी व्यसन दुरन्त होते है) दुर्ज्ञेय, जिसका जानना कठिन हो, दुर्गम, कठिन।
दुरन्तक-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
दुरन्वय-(सं० वि०) जो कठिनता से अनुसरण किया जावे।
दुरन्वेष्य-(सं०वि०) जिसका अनुसन्धान कष्ट से हो सके।
दुरपदी-(हिं०स्त्री०) देखो द्रौपदी।
दुरबार-(हिं०वि०) अटल।
दुरबास-(हिं०पुं०) दुर्गन्ध, बुरी महक।
दुरपचार-(सं०वि०) जो विरक्त नहीं किया जा सकता।
दुरपनेय-(सं० वि०) जिसका हटाना कठिन हो।
दुरभिग्रह-(सं०पुं०) अपामार्ग, चिचिड़ा, जवासा, केंवाच, (वि०) जो कठिनता से प्राप्त हो।
दुरभिगाह-(सं०वि०) जिसका जानना कठिन हो।
दुरभिसन्धि-(सं०स्त्री०) बुरे अभिप्राय से मिल जलकर किया हुआ परामर्श।
दुरभेव-(हिं०पुं०) दुर्भाव, मनोमालिन्य, मनमोटाव।
दुरमुस-(हिं०पुं०) गदा के आकार का यन्त्र जिससे कंकड़ या मिट्टी पीट कर बैठाई जाती है।
दुरवगत-(सं०वि०) जो कठिनतासे जाना जा सके। **दुरवगम**-(सं०वि०) दुर्ज्ञेय, जिसका जानना कठिन हो। **दुरवग्राह्य**-(सं०वि०) जो कठिनतासे ग्रहण किया जा सके। **दुरवबोध**-(सं०वि०) दुर्बोध, जो कठिनतासे जाना जा सके। **दुरवरोह**-(सं०वि०) जो कठिनतासे चढ़ा जा सके। **दुरववद**-(सं०नपुं०) जिससे सहज मे कटु वाक्य न बोला जाव।
दुरवस्थ-(सं०वि०) जो दुर्दशा में हो, जिसकी दशा अच्छी न हो। **दुरवस्था**-(सं०स्त्री०) बुरी दशा हीनदशा। **दुरवाप**-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, कठिनता से प्राप्त होने योग्य। **दुरवेक्षित**-(सं०नपुं०) मन्द दृष्टि, बुरी दृष्टि।
दुरस-(हिं०पुं०) सहोदरभ्राता, सगाभाई
दुरह्न-(सं०सं०) दुर्दिन, बुरा दिन।
दुराउ-(हिं०पु०) देखो दुराव।
दुराक-(सं०पुं०) एक म्लेच्छ जाति का नाम।
दुराकाङ्क्ष-(सं०वि०) जो बुरे विषयकी आशा करता हो। **दुराकाङ्क्षा**-(सं०स्त्री०) बुरे विषय की अभिलाषा।
दुराकृति-(सं०स्त्री०) बुरी आकृति, बुरा स्वरूप।
दुराक्रन्द-(सं०) बड़े दुःख से रोना।
दुराक्रम-(सं०वि०) जो बड़ी कठिनता से आक्रमण किया जावे। **दुराक्रम्या**-(सं०वि०) जिस पर सहज में चढ़ाई न की जा सके।
दुराक्रोश-(सं०पुं०) दुःख का विलाप।
दुरागत-(सं०वि०) दुःखित, जो बड़े कष्ट में हो। **दुरागम**-(सं०पुं०) बुरी रीति से प्राप्त करना। **दुरागमन**-(हिं०पु०) देखो द्विरागमन।
दुरागौन-(हिं०पुं०) वधू का दूसरी बार ससुराल को जाना, द्विरागमन।
दुराग्रह-(सं०पुं०) किसी विषय में बुरी तरह से हठ करना, अपने मत के ठीक सिद्ध न होने पर भी हठ करके उस पर स्थिर रहना। **दुराग्रही**-(हिं०वि०) जो बिना उचित अनुचित बिचार किये हुए अपने मत पर अड़ा रहता है, हठी।
दुराचरण-(सं०पुं०) खोटी चालचलन, बुरा व्यवहार। **दुराचार**-(सं०नपुं०) बुरा आचरण, बुरी चाल चलन।
दुराचारी-(हिं० वि०) बुरे चाल चलन का।
दुराज-(हिं०पुं०) दुष्ट शासन, वह राज्य जिसमें दो राजा शासन करते हों। **दुराजी**-(हिं०वि०) दो राजाओं का, जिसमें दो राजा हों।
दुराढ्यसम्भव-(सं०नपुं०) जो बहुत कष्ट से बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में पहुँचा हो।
दुरात्मता-(सं०स्त्री०) दुरात्मा का कार्य या भाव।
दुरात्मा-(सं०वि०) नीचप्रकृतिका, खोटा
दुरादान-(सं०वि०) जो कष्ट से धारण किया जावे।
दुरादुरी-(हिं०पुं०) गोपन, छिपाव; **दुरादुरी करके**-गुप्त रूप से, छिपेहुए
दुराधन-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। **दुराधर**-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
दुराधर्ष-(सं०पुं०) सफेद सरसों, विष्णु, (वि०) जिसका दमन करना कठिन हो, अभिमानी, प्रबल; **दुराधर्षता**-(सं०स्त्री०) प्रबलता प्रचण्डता; **दुराधर्षा**-(सं०स्त्री०) कुटुम्बिनी वृक्ष।
दुराधार-(सं०वि०) जो कठिनता से सहारा पा सके, चिन्तनीय, (पुं०) शिव, महादेव।
दुराधि-(सं०वि०) क्लेशजनक।
दुराधी-(सं०वि०) दुष्ट प्रकृति या आचरण का।
दुरानम-(सं०वि०) जो बड़ी कठिनता से सन्तुष्ट किया जा सके।
दुराना-(हिं०क्रि०) दूर होना, हटना, छिपना, हटाना, दूर करना, छोड़ना हटाना, दूर करना, छोड़ना, छिपाना
दुराप-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, कठिनता से मिलने योग्य। **दुरापन**-(सं०वि०) देखो दुराप, दुष्प्राप्य। **दुरापादान**-(सं०वि०) जो कठिनता से जा सके।
दुरापूर-(सं०वि०) जो कठिनतासे पूरा किया जा सके।
दुराबाध-(सं०वि०) जो पीड़ा देनेयोग्य न हो, (पु) शिव, महादेव।
दुराम्नाय-(सं०वि०) जो बड़ी कठिनता से वश में लाया जा सके।
दुराध्य-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, जो कठिनता से प्राप्त हो सके। **दुरारक्ष्य**-(सं०वि०) जो कठिनता से बचाया जा सके। **दुराराध्य**-(सं०वि०) दुःख द्वारा आराधनीय, जिसको सन्तुष्ट करना कठिन हो (पुं०) विष्णु।
दुरारुह-(सं०पु०) बेल का वृक्ष, नारियल का पेड़। **दुरारुहा**-(सं०स्त्री०) खजूर का पेड़ ताड़ का पेड़, बाँस
दुरारोह, दुरारोहा-(सं०पुं०) गिरगिट ताड़ या खजूर का पेड़ (वि०) जिस पर चढ़ना कठिन हो।
दुरालक्ष्य-(सं०वि०) जो कठिनता से देख पड़े। **दुरालभ**-(सं०वि०) दुर्लभ, जिसका मिलना कठिन हो। **दुरालभा**-(सं०स्त्री०) एक कँटीला पौधा, जवासा, हिंगुआ, कपास, रूई का पेड़। **दुरालम्भ**-(सं०वि०) जिसका मिलना कठिन हो।
दुरालाप-(सं०पु०) कटुवचन गालीगलौज
दुरालोक-(सं०वि०) बहुत सफेद (पुं०) चमक
दुराव-(हिं०पुं०) किसीसे बात गुप्त रखने का भाव, कपट, छल।
दुरावर्त-(सं०वि०) जो कठिता से घुमाया जा सके। **दुरावह**-(सं०वि०) जिसका लाना कठिन हो।
दुराश्य-(सं०नपु०) दुष्टमति, बुरा विचार
दुराश-(सं०पुं०) जिसको अच्छी आशा न हो, **दुराशय**-(सं०पुं०) दुष्ट आशा, (वि०) जिसका अभिप्राय बुरा हो।
दुराशा-(सं०स्त्री०) व्यर्थ की आशा,
दुरास-(सं०वि०) अजेय, जिसको कोई जीत न सके। **दुरासा**-(हिं०स्त्री०) देखो दुराशा।
दुरासद-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, जिसका मिलना कठिन हो। **दुरासन**-(सं० नपुं०) वह स्थान जो रहने योग्य न हो। **दुराहर**-(सं०वि०) जिसके खाने में कष्टहो। **दुराहा**-(सं०वि०) अभागा
दुरित-(सं०नपु०) पातक, पाप, छोटा पाप (वि०) पापी; **दुरितक्षय**-(सं० पुं०) पाप का क्षय या घटना; **दुरितदमनी**-(सं०स्त्री०) शमीवृक्ष (वि०) पाप का नाश करने वाला। **दुरितारि**-(सं०वि०) पापकानाशकरनेवाला
दुरियाना-(हिं०क्रि०) दूर करना, हटाना, तिरस्कार के साथ भगाना, दुरदुराना
दुरिष्ट-(सं०नपुं०) मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ, पातक, पाप।
दुरिष्टि-(सं०स्त्री०) अभिचार निमित्त किया जाने वाला यज्ञ।
दुरिष्ठ-(सं०वि०) खोटा, निकृष्ट।
दुरीश-(सं०पुं०) निन्दित प्रभु या स्वामी
दुरीशणा-(सं०स्त्री०) शाप, दुराशय।
दुरुक्त-(सं०नपुं०) कटुवचन, अपशब्द।
दुरुक्ति-(सं०स्त्री०) कटुवाक्य, कठोरवचन
दुरुच्चार-(सं०वि०) अश्लील, लज्जाजनक, फूहड़। **दुरुच्चार्य** (सं०वि०) जो सहज में उच्चारण न किया जा सके।
दुरुच्छेद-(सं०वि०) जो कठिनाई से उखाड़ा जा सके। **दुरुच्छेद्य**-(सं० वि०) जो सहज में न उखड़ सके।
दुरुत्तर-(सं०वि०) दुस्तर, जिसको पार करना कठिन हो, अनुत्तर, जिसका उत्तर देना कठिन हो, (नपुं०) बुरा उत्तर या जवाब।
दुरुत्तोल्य-(सं०वि०) जो कठिनता से उठाया जा सके।
दुरुत्सह-(सं०वि०) दुःसह, न सहन करने योग्य।
दुरुदय-(सं०वि०) जो अच्छी तरह न देख पड़े, भयकर।
दुरुदाहर-(सं०वि०) जिसका उदाहरण सहज में न दिया जा सके।
दुरुद्वह-(सं०वि०) दुःसह।
दुरुपक्रम-(सं०वि०) दुर्गम, जहां जाना कठिन हो।
दुरुपचार-(सं०वि०) बुरा व्यवहार।
दुरुपयोग-(सं०पुं०) अनुपयुक्त व्यवहार, बुरा उपयोग।
दुरुपलक्ष-(सं०वि०) जिसको देखते न बने।
दुरुपसर्पी-(सं० वि०) अकस्मात् आ जानेवाला।
दुरुपस्थान-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, जिसका मिलना कठिन हो।
दुरुपाय-(सं०पुं०) बुरा विचार।
दुरुम-(हिं०पुं०) एकप्रकार का पतले दाने का गेहूँ।
दुरुह-(सं०वि०) जो जल्दी से विचार में न आ सके, गूढ़, कठिन, जटिल।
दुरेफ-(हिं०पुं०) देखो द्विरेफ।
दुरोक-(सं०वि०) जो स्थान रहने योग्य न हो।
दुरोदर-(सं०पुं०) पाण, दांव, पासा, (नपुं०) जुआ।
दुरोह-(सं०पुं०) नागकेशर का वृक्ष।
दुरौंधा-(हिं०पुं०) द्वार के ऊपर लगाई हुई लकड़ी।
दुर्ग-(सं०पुं०) कोट, गढ़, एक असुरका

नाम जिसका वध करने के कारण देवी का नाम दुर्गा पड़ा। दुर्गकर्म-कोट या गढ़ बनाने का काम। दुर्ग-कारक-गढ़ बनानेवाला।

दुर्गत-(सं०वि०) दुर्दशाग्रस्त, जिसकी अवस्था बुरी हो, दरिद्र, (स्त्री०) देखो दुर्गति। दुर्गतता-(सं०स्त्री०) दरिद्रता।

दुर्गतरणी-(सं०स्त्री०)एक देवी का नाम

दुर्गति-(सं०स्त्री०) नरक, बुरी स्थिति या अवस्था, दुर्दशा, कठिन मार्ग, (वि०) दीन; दुर्गतिनाशिनी-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।

दुर्गन्ध-(सं०पुं०) बुरी गन्ध, (वि०) बुरी गन्ध का, (सं०नपुं०) काला नमक। दुर्गन्धता-(सं०स्त्री०) दुर्गन्ध का भाव; दुर्गन्धी-(सं०वि०) जिसकी गन्ध बुरी हो।

दुर्गपति-(सं०पुं०) दुर्गरक्षक, वह अधिकारी जिसपर किले की रक्षा का भार सौंपा गया हो। दुर्गपाल-(सं०पुं०) दुर्ग का रक्षक, किलेदार।

दुर्गपुष्पी-(सं०स्त्री०)मानसी नाम वृक्ष।

दुर्गम-(सं०वि०) जहां पहुंचना कठिन हो, दुर्ज्ञेय, जिसका जानना कठिन हो, दुस्तर, विकट, (पुं०) दुर्ग, विष्णु, एक असुर का नाम, (नपुं०) वन, जंगल, कठिन अवस्था। दुर्गमणीय-(सं०वि०) जहां पर पहुंचना कठिन हो। दुर्गमता-(सं०स्त्री० दुर्गम होने का भाव।

दुर्गरक्षक-(सं०पुं०) गढ़पति, किलेदार।

दुर्गलंघन-(सं०पुं०) ऊष्ट्र, ऊंट।

दुर्गसंस्कार-(सं०पुं०) गढ़ की मरम्मत

दुर्गसंचर-(सं०पुं०) देखो दुर्गसञ्चर।

दुर्गा-(सं०स्त्री०) आदि शक्ति, सृष्टि, स्थिति और लय करनेवाली आद्याशक्ति शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेय संहिता में अम्बिका देवी का उल्लेख मिलता है। वहां पर यह रुद्र की बहिन कही गई हैं, सायनाचार्य के मत से वेदोक्त दुर्गा की महापूजा शरत्काल में होती है, अनेक असुरों का वध करने के कारण इनके अनेक नाम हैं, नव वर्ष की कन्या, श्यामा पक्षी, कौवाठोंठी, एक संकर रागिणी का नाम, दुर्गाधिकारी, दुर्गाध्यक्ष-(सं०पुं०) दुर्ग का रक्षक, दुर्गामाहात्म्य-(सं०नपुं०) देवी, महात्म्य, भगवती की महिमा; दुर्गावती-(सं०स्त्री०) चित्तौर के राना सांगा की कन्या का नाम; दुर्गाष्टमी-(सं०स्त्री०), आश्विन और चैत्र के शुक्ल पक्ष की अष्टमी। दुर्गास्मरण-(सं०नपुं०) दुर्गा के नाम का जप।

दुर्गुण-(सं०पुं०)बुरा गुण, दोष, बुराई।

दुर्गेश-(सं०पुं०) दुर्ग का अध्यक्ष।

दुर्गोत्सव-(सं०पुं०) दुर्गापूजन का उत्सव जो आश्विन के नवरात्र में होता है।

दुर्ग्रह-(सं०वि०)जो कठिनता से पकड़ा जा सके, दुर्ज्ञेय, जो सहज में न समझा जा सके (स्त्री०) अपामार्ग, चिचिड़ा। दुर्ग्राह्य-(सं०वि०)कठिनता से पकड़े जाने योग्य।

दुर्घट-(सं०वि०)कठिनता से होने योग्य; दुर्घटना-(सं०स्त्री०) अशुभ घटना, विपत्ति, बुरा संयोग, आपत्।

दुर्घोष-(सं०पुं०) भालू, कटु वचन, (वि०) जो कर्कश वचन वाले।

दुर्जन-(सं०पुं०)दुष्ट मनुष्य, खोटा आदमी। दुर्जनता-(सं०स्त्री०)खोटापन दुष्टता।

दुर्जय-(सं०वि०)जिसको जीतना कठिन (पुं०) विष्णु, एक राक्षस का नाम। दुर्जयन्त-(सं०पुं०) एक राजा का नाम।

दुर्जर-(सं०वि०) जो कठिनता से पच सके।

दुर्जर-(सं०नपुं०) ककड़ी का फल।

दुर्जरा-(सं०स्त्री०)माल कंगनीकी लता।

दुर्जात-(सं०वि०) जिसका जन्म बुरी तरह से हुआ हो, नीच, अभागा (नपुं०) व्यसन, संकट, कठिनता। दुर्जाति-(सं०वि०) निन्दित कुल का, बुरी या नीच जातिका।

दुर्जीव-(सं०वि०) दूसरे के दिये हुए अन्न पर निर्भर रहने वाला, (नपुं०) बुरा जीवन, दूसरे के अधीन जीवन।

दुर्जेय-(सं०वि०) दुर्जय, जिसको जीतना कठिन हो।

दुर्ज्ञेय-(सं०वि०) दुर्बोध, जो सहज में समझ में न आ सके।

दुर्णय-(सं०पुं०) बुरी नीति या चाल (वि०) बुरी चाल वाला।

दुर्णश-(सं०वि०) जो कठिनाई से नष्ट हो सके।

दुर्णीत-(सं०स्त्री०) देखो दुर्नीति।

दुर्दम-(सं०वि०) जो सहज में न जीता जा सके, प्रचण्ड (पुं०) वासुदेव के एक पुत्र का नाम जो रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न थे; दुर्दमन-(सं०पुं०) राजा जनमेजय के वंश के एक राजा का नाम, (वि०) जिसका दमन करना कठिन हो; दुर्दमनीय-(सं०वि०) जो कठिनता से जीता जा सके, प्रचण्ड प्रबल। दुर्दम्य-(सं०वि०) जो शीघ्र जीता न जा सके (पुं०) गाय का बछवा।

दुर्दर्ग-(सं०पुं०) भिलावा, बुरा गर्व या घमंड।

दुर्दर्श-(सं०वि०) जिसको देखना कठिन हो, जो भयंकर रूप का हो; दुर्दर्शन-(सं०पुं०) कौरवों के एक सेनापति का नाम (वि०) जो जल्दी से देख न पड़े।

दुर्दशा-(सं०स्त्री०) बुरी अवस्था, बुरी दशा, खराब हालत, दुर्गति।

दुर्दान्त-(सं०वि०) जिसका दमन करना कठिन हो, प्रचण्ड, प्रबल (पुं०) कलह, शिव, महादेव।

दुर्दिन-(सं०नपुं०) ऐसा दिन जिसमें बादल छाये हों, बड़ा अंधकार, वृष्टि, वर्षा, दूषित दिन, बुरादिन, कष्ट का समय, दुर्दशा का दिन। दुर्दिवस-(सं०पुं०) दुर्दिन, बरसात का का दिन।

दुर्दुरूढ़-(सं०वि०) नास्तिक।

दुर्दुहा-(सं०स्त्री०) जिसको दूहने में कठिनाई हो।

दुर्द्यूत-(सं०नपुं०) कपट द्यूत, छलसे जुआ खेलना।

दुर्दैव-(सं०नपुं०) दुर्भाग्य, पाप, बुरा सयोग, दिनों का बुरा प्रभाव। दुर्दैववत्-(सं०वि०) अभागा।

दुर्द्रुम-(सं०पुं०) पलाण्डु, प्याज।

दुर्धर-(सं०पुं०) एक नरक का नाम, पारा, भिलावां, महिषासुर का एक सेनापति, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, विष्णु, रावण का सेनापति, वह राक्षस जिसको हनुमानने मारा था, (वि०) कठिनता से होने योग्य, प्रचण्ड, प्रबल, दुर्ज्ञेय, जो सहज में समझ में न आसके।

दुर्धर्तु-(सं०वि०) देखो दुर्धर।

दुर्धर्म-(सं०वि०) दुष्ट धर्म युक्त।

दुर्धर्ष-(सं०वि०) जिसका दमन करना कठिन हो, प्रबल, प्रचण्ड, (पुं०) धृतराराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। दुर्धर्षण-(सं०वि०) जो सहज में वश में न लाया जा सके।

दुर्धर्षता-(सं०स्त्री०) दुर्धर्ष का भाव।

दुर्धर्वा-(सं०स्त्री०) नागदौना, कन्यारी वृक्ष।

दुर्धार्य-(सं०वि०) जो जल्दी से समझ में न आ सके।

दुर्धाव-(सं०वि०) जिसका संशोधन करना कठिन हो।

दुर्धी-(सं०वि०) बरी बद्धि का।

दुर्नय-(सं०पुं०) नीति विरुद्ध आचरण,

दुर्नाद-(सं०पुं०) अप्रिय ध्वनि (वि०) कर्कश शब्द करने वाला।

दुर्नामक-(सं०पुं०) आर्शरोग, बवासीर का रोग।

दुर्नाम-(सं०पुं०) सुतुही, सीप, दुष्ट वचन गाली गलौज।

दुर्नामारि-(सं०पुं०) सूरन, जिमीकन्द। वह कन्द जो अर्श का नाश करे अर्थात् ओल।

दुर्नाम्नि-(सं०स्त्री०) शुक्ति, सीप।

दुर्निग्रह-(सं०वि०) दुर्गम, जो शीघ्र वश में न आ सके।

दुर्निमित-(सं०वि०) जो बुरे विचार से फेंक दिया गया हो। दुर्निमित्त-(सं०नपुं०) अपशकुन, बुरा सगुन।

दुर्नियन्ता-(सं०नपुं०)जो बड़ी कठिनता से आधीन किया जा सके।

दुर्निरीक्ष दुर्नम्य-(सं०वि०) जिसको देखते न बने, कुरूप, भयंकर।

दुर्निवर्त्य-(सं०वि०) जो कठिनता से किया जा सके। दुर्निवार-(सं०वि०) जो कठिनता से हटाया जा सके। दुर्निवार्य-(सं०वि०) जो जल्दी से हटाया न जा सके, जिसका होना प्रायः निश्चित हो।

दुर्नीत-(सं०नपुं०) बुरी नीति, कुचाल (वि०) बुरी चाल वाला। दुर्नीत-(सं०स्त्री०) अयुक्त आचरण, अन्याय।

दुर्नृप-(सं०पुं०) अन्यायी राजा।

दुर्बचन-(हिं०पुं०)दुर्वचन,कुवाक्य, गाली

दुर्बद्ध-(सं०वि०) बुरी तरह से बाँधा हुआ।

दुर्बल-(सं०वि०) बलहीन, दुबला पतला कृश, शिथिल। दुर्बलता-(सं०स्त्री०) कृशता, दुबलापन; दुर्बलत्व-(सं०नपुं०) दुर्बलता, कमजोरी।

दुर्बला-(सं०स्त्री०) जलसिरिसका पेड़।

दुर्बाल-(सं०वि०) गांजा, खल्वाट (पुं०) घुंघराले बाल।

दुर्बुद्धि-(सं०स्त्री०) दुर्मति, कुबुद्धि (वि०) मन्द बुद्धि वाला, दुष्ट।

दुर्बुध-(सं०वि०) बुरे चित्त का, दुष्ट। दुर्बोध-(सं०वि०) दुर्ज्ञेय, जो सहज में न समझा जा सके, गूढ़, कठिन, क्लिष्ट। दुर्बोध्य-(सं०वि०) जिसका बोध कठिनता से हो सके।

दुर्ब्राह्मण-(सं०पुं०) निन्दित ब्राह्मण, जिसके तीन पुरुष से ब्राह्मणत्व का लोप हो गया हो।

दुर्भक्ष-(सं०वि०) जो जल्दी से खाया जा सके, खाने में जो अच्छा न लगे, दुर्भिक्ष का समय।

दुर्भक्ष्य-(सं०वि०) जिसका खाना कठिन हो।

दुर्भग-(सं०वि०) बुरे भय का, अभागा,

दुर्भगत्व-(सं०नपुं०) दुर्भगता, आभाग्य।

दुर्भगा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पतिके स्नेहसे रहित हो, (वि०) मन्दभाग्या, अभागिन।

दुर्भग्न-(सं०वि०)जोसहजमेंटूट नसके।

दुर्भर-(सं०वि०) दुःसह, गुरु, भारी, जिसको उठाना कठिन हो।

दुर्भागी-(सं०वि०)मन्दभाग्य का, अभागा

दुर्भाग्य-(सं०नपुं०) मन्द भाग्य, पाप(वि०) हतभाग्य, अभागा।

दुर्भाव-(सं०पुं०) बुरा भाव, द्वेष, मनोंमालिन्य, मन मोटाव। दुर्भावना-(सं०स्त्री०) बुरी भावना, चिन्ता, अन्देशा, खटका। दुर्भाव्य-(सं०वि०) जिसकी भावना सहज में न हो सके

दुर्भाषित-(सं०नपुं०) बुरा वचन (वि०) कटु वचन बोलने वाला। दुर्भाषी-(सं०वि०) कटु वचन बोलने वाला

दुर्भिक्ष-(सं०नपुं०) ऐसा काल जब भिक्षा या भोजन कठिनता से प्राप्त हो, अकाल; दुर्भिच्छ-(हिं०पुं०) देखो दुर्भिक्ष, अकाल।

दुर्भिद-(सं०वि०) जो जल्दी से भेदा न जा सके, जिसके पार जाना कठिन हो।

दुर्भिषज्य-(सं०वि०) जिसकी चिकित्सा सहज में नहो सके।

दुर्भृत्य-(सं०पुं०)दुष्ट भृत्य, बुरा नौकर
दुर्भेद, दुर्भेद्य-(सं०वि०) जो सहज मे भेदा या छेदा न जा सके।
दुर्भ्रातृ-(सं०पुं०)दुष्ट भ्राता, कपटी भाई; दुर्मङ्गल-(सं०वि०) अशुभ, बुरा।
दुर्मति-(सं०स्त्री०) दुर्बुद्धि,(वि०)जिसकी समझ ठीक न हो, दुष्ट, नीच।
दुर्मद-(सं०वि०) मद मे चूर, अभिमान में भरा हुआ (पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दुर्मनस्-(सं०नपुं०) बुरा मन या चित (वि०) खिन्न, उदास, बुरे चित्त का।
दुर्मना-(सं०स्त्री०) शतावरी, सतावर,
दुर्मनायमान-(सं०वि०) चिन्तित,उदास
दुर्मनुष्य-(सं० पुं०) दुष्ट मनुष्य, खोटा आदमी।
दुर्मन्तु-(सं०वि०)जो दुष्ट समझा जाता हो
दुर्मन्त्र, दुर्मन्त्रणा-(सं०) बुरा परामर्श
दुर्मन्त्रित-(सं०वि०) जिसने बुरी मन्त्रणा दी हो, दुर्मन्त्रि-(सं०पुं०) कुमन्त्री, दुष्ट मन्त्री, वह मन्त्री जो राजा को बुरी मंत्रणा दे।
दुर्मर-(सं०वि०)जिसकीमृत्युबड़ेकष्ट सेहो
दुर्मरण-(सं०नपुं०) बुरी तरह से (बड़े कष्ट से) होने वाली मृत्यु।
दुर्मरा-(सं०स्त्री०) सफेद दूब, शतमूली
दुर्मर्ष-(सं०पुं०) जिसको सहन करना कठिन हो।
दुर्मर्षण-(सं०पुं०) वह जो कठिनाई से सहन किया जावे (पुं०) विष्णु, धृतराष्ट के एक पुत्र का नाम। दुर्मर्षित-(सं०वि०) जो वैर का बदला लेने के उद्योग में हो।
दुर्मल्लिका-(सं०स्त्री०) दृश्य काव्य का एक भेद जिसमें हास्य रस प्रधान होता है और जो चार अङ्कों में समाप्त होता है।
दुर्मली-(सं०स्त्री०) देखो दुर्मल्लिका।
दुर्मात्सर्य-(सं०नपुं०) ईर्षा, डाह,
दुर्मायुध-(सं०वि०)बुरा शस्त्र फेंकनेवाला
दुर्मित्र-(सं०पुं०) अमित्र, शत्रु (वि०) जिसके दुष्ट मित्र हों।
दुर्मिल-(सं०पुं०) भरत के सात पुत्रों में से एक, एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं। दुर्मिलका-(सं०स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तेईस वर्ण होते हैं।
दुर्मुख-(सं०पुं०) अश्व, घोड़ा, राम की सेना के एक बन्दर का नाम, महिषासुर का एक सेनापति, रामचन्द्र के एक गुप्तचर का नाम, एक नाग का नाम, शिव, महादेव, एक संवत्सर का नाम, गणेश का एक गण, वह घर जिसका द्वार उत्तर की ओर हो, (वि०) अप्रियवादी, कटु वचन बोलने वाला। दुर्मुखा-(सं०स्त्री०) सफेद घुमची, श्वेत गुञ्जा।
दुर्मुस-(हिं०पुं०)लोहे या पत्थर का डंडा लगा हुआ गदा के आकार का एक यन्त्र जो मिट्टी या कंकड़ पीटने के काम में आता है, दुरमिस।
दुर्मुहूर्त-(सं०पुं०)बुरी मुहूर्त, बुरा समय।
दुर्मूल्य-(सं०वि०) जिसका दाम अधिक हो, मँहगा।
दुर्मेधस्-(सं०वि०)मन्द बुद्धि, दुर्मेधत्व-(सं०नपुं०) अज्ञानता; दुर्मेधावी-(सं० वि०) देखो दुर्मेधस्।
दुर्मैत्र-(सं०पुं०) दुष्ट बन्धु,बुरा मित्र।
दुर्मोका-(सं० स्त्री०) श्वेत गुञ्जा, सफेद घुमची।
दुर्मोह-(सं०पुं०)काकतुण्डी,कौवाठोंठी।
दुर्मोहा-(सं०स्त्री०)सफेदयालालघुमची
दुर्य-(सं०पुं०) घर द्वार पर का खंभा।
दुर्यश-(सं०नपुं०) अपयश, अपकीर्ति।
दुर्योग-(सं०पुं०) दुर्भाग्य सूचक योग।
दुर्योध-(सं०पुं०) युद्ध में स्थिर रहने वाला, विकट, लड़ाका।
दुर्योधन-(सं०पुं०) कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट के सबसे बड़े पुत्र, यह महाभारत के युद्ध में प्रधान नायक तथा कौरव दल के नेता थे, इन्हीं के साथ जुआ खेलने पर तथा जूए में हारकर युधिष्ठिर ने अपना सारा राज्य गवाँ दिया था; हारने पर युधिष्ठिर को अपने चारो भाइयों सहित बारहवर्ष तक वनवास करना पड़ा था तथा इनका एक वर्ष तक अज्ञातवास भी करना पड़ा था; यहाँ से लौट आने पर दुर्योधनने पाण्डवों को राज्य देना अस्वीकार किया जिस कारण से महाभारत का युद्ध हुआ था।
दुर्योनि-(सं०स्त्री०)म्लेच्छ या नीच जाति
दुर्लक्षण-(सं०नपुं०) अशुभ लक्षण।
दुर्लक्ष्य-(सं०वि०) अदृश्य,जो कठिनता से देख पड़े, (पुं०) बुरा उद्देश्य,
दुर्लङ्घन-(सं०वि०) जो सहज में लांघ न जा सके। दुर्लङ्घ्य-(सं० वि०) अलङ्घ्य,जो जल्दीसे लाँघा न जा सके।
दुर्लतिका-(सं०स्त्री०)एकप्रकारका छन्द।
दुर्लभ-(सं०वि०)दुष्प्राप्य,जो कठिनता से मिल सके, अति प्रशस्त, अनोखा, प्रिय, प्यारा, (पुं०) विष्णु।
दुर्लभा-(सं०स्त्री०) सफेद भटकटैया, लाल जवासा।
दुर्ललित-(सं०नपुं०) दुष्कर्म, पाप (वि०) दुष्कर्म करने वाला, चंचल, चपल।
दुर्लसित-(सं०नपुं०)बुरीचेष्टा,बुरा काम।
दुर्लाभ-(सं०पुं०) दुःख द्वारा लाभ।
दुर्लेख्य-(सं०नपुं०) निन्दित लेखपत्र। (वि०) जिसकी लिखावट बुरी हो।
दुर्वच, दुर्वचन-(सं०पुं०) कटु बचन, गाली गलौज।
दुर्वराह-(सं०पुं०) पाला हुआ शूकर।
दुर्वर्ण-(सं०नपुं०) रजत, चाँदी (वि०) नीच जाति का, बुरे रंग का (पुं०) बुरा अक्षर।
दुर्वर्तु-(सं०वि०)जिसका हटाना कठिन हो
दुर्वस-(सं०नपुं०) जहाँ रहने में बड़ा कष्ट हो; दुर्वसति-(सं०स्त्री०)देखो दुर्वस
दुर्वह-(सं०वि०) जिसको उठाकर ले जाना कठिन हो।
दुर्वाच्-(सं०स्त्री०) निन्दित वाक्य, दुर्वचन। दुर्वाच्य-(सं०नपुं०) अपकीर्ति, निन्दा। दुर्वाद-(सं०पुं०) अपकीर्ति, निन्दा, स्तुति पूर्वक कहा हुआ अप्रिय वचन, अनुचित वचन।
दुर्वान्ति-(सं०नपुं०) बुरी तरह से या अनियम से होने वाली उलटी या कै।
दुर्वार-(सं०वि०)जिसका निवारण करना या हटाना कठिन हो। दुर्वारण-(सं०वि०) जो सहज में रोक न जा सके (पुं०)शिव, महादेव। दुर्वारित-(सं०वि०) धीरे से हटाया हुआ।
दुर्वार्ता-(सं०स्त्री०) बुरा समाचार,
दुर्वार्य-(सं० वि०) जो जल्दी से न रोका जा सके
दुर्वासना-(सं०स्त्री०) बुरी वासना, बुरी आकाक्षा, ऐसी कामना जो कभी पूरी न हो।
दुर्वासा-(सं०पुं०) एक बड़े धर्मनिष्ठ ऋषि जो अत्रि मुनि के पुत्र थे, इनका स्वभाव बड़ा उग्र था।
दुर्वाहित-(सं०नपुं०) जिसको उठाकर ले जाना कठिन हो।
दुर्विकत्थन-(संवि०) बड़े अभिमान से कहा हुआ।
दुर्विगाह-(सं०वि०) जिसका थाह जल्दी न लग सके। दुर्विगाह्य-(सं०वि०) जिसका थाह लगाना कठिन हो।
दुर्विचिन्त्य-(सं०वि०) जो जल्दी से सोचा न जा सके।
दुर्विज्ञान-(सं०नपुं०) जो कठिनता से जाना जा सके। दुर्विज्ञेय-(सं०वि०) जिसका कठिनता से ज्ञान हो।
दुर्वितर्क्य-(सं०वि०) जिसके निश्चय करने में कठिनता हो,
दुर्विद-(सं०वि०)जिसको जानना कठिनहो
दुर्विदग्ध-(सं०वि०)अहंकारी,अधजला
दुर्विदग्धता-(सं०स्त्री०)निपुणताकाअभाव।
दुर्विद्य-(सं०वि०) अशिक्षित, मूर्ख।
दुर्विध-(सं०वि०) दरिद्र,मूर्ख,खल,दुष्ट।
दुर्विधि-(सं०पुं०) कुनियम, बुरी नीति।
दुर्विनय-(सं०पुं०) बुरा शिष्टाचार।
दुर्विनीत-(सं०वि०)अविनीत,अशिष्ट,उद्धत
दुर्विनीति-(सं०स्त्री०) विनय का अभाव, अक्खड़पन।
दुर्विपाक-(सं०पुं०) बुरा परिणाम, बुरा फल, दुर्घटना, बुरा संयोग।
दुर्विभाग-(सं०पुं०)वह जिसका विभाग जल्दी से न हो सके।
दुर्विभाव्य-(सं०वि०) दुर्बोध, जिसका अनुमान न किया जा सके।
दुर्विभाष-(सं०नपुं०)दुर्वाच्य,बुरा वचन
दुर्विमोचन-(सं०वि०)जिसका छुटकारा पाना कठिन हो, (पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
दुर्विलसित-(सं०नपुं०)दुष्कार्य,बुरा काम
दुर्वक्ता-(सं०पुं०)कटुभाषणकरनेवाला
दुर्विवाह-(सं०पुं०) निन्दित स्त्री से विवाह करना।
दुर्विष-(सं० पुं०) शिव, महादेव।
दुर्विषह-(सं०वि०) असह्य, जो अत्यन्त दुःख से सहा जा सके (पुं०) शिव, महादेव, धृतराष्टके एक पुत्र का नाम। दुर्विषह्य-(सं०वि०) अत्यन्त दुःख से सहन योग्य।
दुर्वृत्त-(सं०नपुं०) निन्दित आचरण, बुरा व्यवहार, (वि०) दुर्जन।
दुर्वृत्ति-(सं०स्त्री०) निन्दित आचरण, बुरा काम।
दुर्वेद-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ।
दुर्व्यवस्था-(सं०स्त्री०) कुप्रबन्ध, दुर्व्यवस्थापक-(सं०पुं०)कुप्रबन्ध करनेवाला
दुर्व्यवहार-(सं०पुं०) दुष्ट आचरण, बुरा व्यवहार। दुर्व्यसन-(सं०पुं०) बुरी टेव। दुर्व्यसनी-(सं०वि०)जिसको बुरी लत लगी हो। दुर्व्याहृत-(सं०वि०) बुरे शब्दों का व्यवहार।
दुर्व्रत-(सं० पुं०) दुष्ट मनोरथ, बुरा आशय।
दुर्हण-(सं० वि०) जिसको मारना कठिन हो।
दुर्हल-(सं०वि०) बुरे हल वाला।
दुर्हित-(सं० पुं०) शत्रु, वैरी।
दुर्हुत-(सं०नपुं०) निन्दित होम।
दुर्हृद-(सं०पुं०) शत्रु, वैरी। दुर्हृदय-(सं०वि०)दुष्ट अन्तःकरण का, खोटा।
दुलकना-(हिं०क्रि०) अस्वीकार करना,
दुलकी-(हिं०स्त्री०) घोड़े की वह चाल जिसमें वह कुछ उछलता हुआ पैरों को अलग अलग उठा कर चलता है।
दुलखना-(हिं०क्रि०) बारंबार बतलाना या कहना।
दुलखी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कृषिफल को हानि पहुँचाने वाला कीड़ा।
दुलड़ा-(हिं०वि०) दो लड़ों का। दुलड़ी-(हिं०स्त्री०) दो लड़ों की माला।
दुलत्ती-(हिं०स्त्री०) मलखंभ की एक व्यायाम, चौपायों का पिछले दोनों पैरों का एक साथ उठा कर फटकारना।
दुलना-(हिं० क्रि०) देखो डुलना।
दुलभ-(हिं०वि०) देखो दुर्लभ।
दुलरा-(हिं०वि०) दुलारा।
दुलराना-(हिं०क्रि०) लाड़ करना, प्यार करना, बच्चों को बहलाना।
दुलरी-(हिं०स्त्री०) देखो दुलड़ी।
दुलहन-(हिं०स्त्री०) नव विवाहिता वधू, नई ब्याही हुई स्त्री।
दुलहा दुल्हा-(हिं० पुं०) देखो दूल्हा।
दुलहाई-(हिं०स्त्री०) विवाह की गीत।
दुलहिन-(हिं०स्त्री०) देखो दुलहन।
दुलहेटा-(हिं०पुं०)दुलारा बेटा, प्रियपुत्र
दुलहिया, दुलही-(हिं०स्त्री०)देखो दुलहन
दुलाई-(हिं०स्त्री०) रूई भरा हुआ ओढ़ने का दोहरा कपड़ा।
दुलाना-(हिं०क्रि०) देखो डुलाना।

दुलार-(हिं०पुं०) अनुराग, प्रेम, लाड़ प्यार। **दुलारना**-(हिं०क्रि०) बच्चों को प्रसन्न करने के लिये उनके साथ अनेक प्रकार की चेष्टा करना, लाड़ करना, प्रेम दिखलाना। **दुलारा**-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा, लाड़ला (पुं०) प्रिय पुत्र, लाड़ला बेटा। **दुलारी**-(हिं०वि०) प्रिय कन्या, लाड़ली बेटी।

दुलीचा दुलैचा-(हिं०पुं०) गलीचा।

दुलोही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की तलवार जो लोहे के दो टुकड़ों को जोड़कर बनाई जाती है।

दुल्लल-(सं०नपुं०) रेशम।

दुल्लभ-(हिं०वि०) देखो दुर्लभ।

दुव-(हिं०वि०) दो संख्या का, दो।

दुवन-(हिं०पुं०) दुर्जन, बुरा मनुष्य, राक्षस, दैत्य, शत्रु, बैरी।

दुवस-(सं०नपुं०)टहल। **दुवस्य**-(सं०वि०) सेवा करने योग्य।

दुवाज-(हिं०पुं०) एक प्रकारका घोड़ा।

दुवादस-(हिं०वि०)देखो द्वादश, बारह।

दुवाली-(हिं० स्त्री०) परतले में लगा हुआ तस्मा जिसमें तलवार आदि लटकाई जाती है, छपे वस्त्र पर चमक लाने का एक औज़ार।

दुवार-(हिं० पुं०) देखो द्वार।

दुवाया-(सं०स्त्री०) पूजा।

दुविधा-(हिं० (स्त्री०) देखो दुबधा।

दुवो-(हिं०वि०) देखो दोनों। (वि०) वैरी, शत्रु।

दुश्चक्रम-(सं०पुं०) गोक्षुर, गोखरू।

दुश्चर-(सं०वि०)दुष्कर, जिसका करना कठिन हो, दुर्गम, जहां जाना कठिन हो (पुं०) भालू, सीप; **दुश्चरत्व**-(सं०नपुं०)दुर्गमता, कठिनता;**दुश्चरित**-(सं०नपुं०) बुरा आचरण, पाप, कुचाल (वि०) कठिन, बुरे आचरण का,

दुश्चरित्र-(सं० वि०) बुरे चरित्र या आचरण का, (पुं०) बुरा आचरण।

दुश्चर्म-(सं० पुं०) वह मनुष्य जिसके लिङ्गेन्द्रिय के मुख पर ढापने वाला चमड़ा न हो।

दुश्चलन-(हिं०स्त्री०) बुरा चरण, खोटी चाल।

दुश्चारित्र-(सं०नपुं०) दुष्टचरित्र, पाप, (वि०) बुरे चरित्र का।

दुश्चिकित्स-(सं०वि०)जिसकी चिकित्सा करना कठिन हो। **दुश्चिकित्सा**-(सं०स्त्री०)निन्दित चिकित्सा। **दुश्चिकित्सित**-(सं०वि०)जिसकी चिकित्सा बड़ी कठिनतासे हो सके। **दुश्चिकित्स्य**(सं०वि०) जिसकी चिकित्सा बड़ी कठिनाई से हो सके।

दुश्चित-(सं०पुं०) व्यग्रता, घबड़ाहट।

दुश्चिन्ता-(सं०स्त्री०)आशंका;**दुश्चिन्त्य**-(सं०वि०) जो कठिनता से समझा जा सके।

दुश्चेष्टा-(सं०स्त्री०)कुचेष्टा, बुरा काम।

दुश्चेष्टित-(सं०नपुं०) निन्दित कर्म, पाप, दुष्कर्म।

दुश्च्यवन-(सं०पुं०)इन्द्र का एक नाम।

दुश्च्याव-(सं०पुं०) शिव, महादेव (वि०) जो सहज में हटाया न जा सके।

दुष्कर-(सं०वि०) अत्यन्त दुःख से करने योग्य, जिसको करना कठिन हो, दुःसाध्य। **दुष्करण**-(सं० वि०) जो कठिनता से किया जा सके।

दुष्कर्ण-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्कर्म-(सं० नपुं०) कुकर्म, पाप, बुरा काम। **दुष्कर्मी**-(हिं०वि०) दुराचारी, कुकर्मी, पापी।

दुष्कलेवर-(सं०पुं०) बुरी शरीर।

दुष्काल-(सं०पुं०) निन्दित काल,कुसमय, दुर्भिक्ष अकाल, शिव, महादेव।

दुष्कीर्ति-(सं०स्त्री०) अपयश, (वि०) जिसमें अपयश हो।

दुष्कुल-(सं०नपुं०) निन्दित कुल,**दुष्कुलीन**(सं०वि०) नीच कुल का।

दुष्कृत-(सं० नपुं०) नीच कार्य, बुरा काम, पाप; **दुष्कृतकर्मा**-(सं०वि०) पापी, बुरा काम करने वाला; **दुष्कृतात्मा**-(सं० वि०) दुरात्मा, खोटा; **दुष्कृति**-(सं०पुं०) कुकर्म, बुरा काम।

दुष्कृष्ट-(सं०वि०) कठिनता से खींचा जाने वाला।

दुष्क्रिया(सं०स्त्री०) कुकार्य, बुरा काम।

दुष्क्रीत-(सं०वि०)मँहगा, मँहगे दामका।

दुष्ट-(सं० वि०) अधम, नीच, खोटा, दोषयुक्त, दुराचारी, दुर्जन, पित्त आदि दोष से युक्त, खल; **दुष्टचारी**-(सं०वि०) बुरा आचरणकरने वाला, दुर्जन; **दुष्टचेता**-(सं०वि०)बुरे विचार का, अहित चाहने वाला, कपटी; **दुष्टता**-(सं०स्त्री०)दुर्जनता, दोष, बुराई **दुष्टत्व**(सं०नपुं०) दुष्टता, खोटाई, **दुष्टपना**-(हिं०पुं०) दुष्टता, दुष्टत्व, खोटाई; **दुष्टयोग**-(सं०पुं०) ज्योतिष के अनुसार अरिष्ट सूचक योग;**दुष्टर**(सं०वि०) दुस्तर, जो कठिनता से पार किया जा सके; **दुष्टवृष**-(सं० पुं०) गलियर बैल; **दुष्टव्रण**-(सं० पुं०) वह घाव जो जल्दी से अच्छा न हो; **दुष्टसाक्षी**-(सं०वि०)कूटसाक्षी। **दुष्टाचार**-(सं०पुं०) कुकर्म, कुचाल, खोटा काम; **दुष्टाचारी**-(सं०वि०) कुकर्मी,।

दुष्टात्मा-(सं०वि०) खोटी प्रकृति का, जिसका अन्तःकरण बुरा हो। **दुष्टान्न**(सं०पुं०) कुत्सित अन्न, बासी अन्न, पाप की कमाई का अन्न। **दुष्पच**-(सं०वि०) जो जल्दी से न पचे।

दुष्पतन-(सं० नपुं०) अपशब्द।

दुष्पत्र-(सं०पुं०)चोर नामक गन्ध द्रव्य।

दुष्पद-(सं०वि०) दुःख से प्राप्त।

दुष्परिग्रह-(सं० वि०) जो सहज में वश में न लाया जा सके, (स्त्री०) कुलटा, (वि०) जिसकी स्त्री व्यभिचारिणी हो।

दुष्परिहन्तु-(सं० वि०) जिसको मारना कठिन हो।

दुष्परीक्ष-(सं० वि०) जिसकी जाँच कठिनता से हो।

दुष्पर्श-(सं०वि०) जिसको स्पर्श करना कठिन हो, दुष्प्राप्य, जो सहजमें प्राप्त न हो सके।

दुष्पान-(सं०वि०,जो कठिनता से पिया जा सके।

दुष्पार-(सं०वि०) दुःसाध्य, कठिन।

दुष्पुत्र-(सं०पुं०) कुपुत्र, नीच लड़का, (वि०) जिसके पुत्र बुरे हों।

दुष्पूर-(सं०वि०) अनिवार्य, जो सहज में पूरा न हो सके।

दुष्प्रकाश-(सं०पुं०) अन्धकार, अंधेरा

दुष्प्रकृति-(सं०वि०) दुःशील, बुरे स्वभाव का (स्त्री०) खोटा स्वभाव।

दुष्प्रज्ञ-(सं०वि०) निर्बोध, अनजान।

दुष्प्रज्ञान-(सं०नपुं०) निन्दनीय ज्ञान।

दुष्प्रतिग्रह-(सं०वि०)जो जल्दी से ग्रहण न किया जा सके।

दुष्प्रधर्ष-(सं० वि०) जो जल्दी से न पकड़ा जा सके,(पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्प्रमेय-(सं०वि०) जो सहज में न नापा जा सके। **दुष्प्रलम्भ**-(सं०वि०) जो सहज में न ठगा जा सके, जो सहज में प्राप्त न हो सके। **दुष्प्रवाद**-(सं० पुं०) दुष्ट प्रवाद।

दुष्प्रवृत्ति-(सं०स्त्री०) बुरी प्रवृत्ति।

दुष्प्रवेश-(सं० वि०) जिसमे घुसना कठिन हो। **दुष्प्रसह**-(सं०वि०) दुःसह, जिसका सहना कठिन हो, भीषण, भयानक। **दुष्प्रसाद**-(सं०वि०) जो कठिनता से प्रसन्न किया जा सके।

दुष्प्रसाह-(सं०वि०) जिसका सहन करना कठिन हो। **दुष्प्रहर्ष**-(सं०वि०) जो सहज में प्रसन्न न हो, (पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्प्राप-(सं०वि०) दुर्लभ, जो कठिनता से प्राप्त हो सके। **दुष्प्राप्ति**-(सं०स्त्री०) वह वस्तु जो कठिनता से प्राप्त हो सके। **दुष्प्राप्य**-(सं०वि०) जो सहज में प्राप्त न हो सके।

दुष्प्रीति-(सं०स्त्री०) अप्रीति, बुरा प्रेम।

दुष्प्रेक्ष-(सं०वि०) दुदर्श, जिसको देखना कठिन हो, भीषण, भयंकर। **दुष्प्रेक्षणीय**-(सं०वि०) दुदर्शनीय।

दुष्मन्त-(सं० पुं०) देखो दुष्यन्त।

दुष्योदर-(सं०पुं०) एक प्रकार का पेट का रोग।

दुष्यन्त-(सं०पुं०) एक पुरु वंशी राजा जिन्होंने कण्व ऋषि के आश्रम में शकुन्तला से गन्धर्व विवाह किया था और इनसे भरत नामक अति प्रतापी राजा उत्पन्न हुए थे।

दुसह-(हिं०वि०) असह्य, जो सहन न हो सके।

दुसही-(हिं०वि०) जो कठिनता से सहा जा सके।

दुसाखा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का प्रदीपक जिसमें दोशाख निकली होती हैं।

दुसाध-(हिं० पुं०) हिन्दुओं की एक नीच जाति का नाम, ये लोग सुअर पालते हैं।

दुसार-(हिं०पुं०) आरपार छेद, (क्रि० वि०) आर पार। **दुसाल**-(हिं०पुं०) देखो दुसार, आर पार छेद।

दुसासन-(हिं०पुं०) देखो दुःशासन।

दुसाहा-(हिं०पुं०) वह खेत जिसमे दो बार खेती हो।

दुसूती-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मोटी चादर जिसमें दो तागों का ताना और बाना रहता है।

दुसेजा-(हिं०पुं०,पलंग, दो आदमियों के सोने की खाट।

दुस्तर-(सं०वि०) दुर्घट,विकट, जिसको पार करना कठिन हो। **दुस्त्यज**-(हिं०वि०) जिसका त्यागना कठिनहो

दुस्थ-(सं०वि०) जिसका रहना कठिनहो

दुस्पृष्ट-(सं०नपुं०) जो बुरी तरह से पूछा गया हो।

दुस्पर्शा-(सं०स्त्री०) आकाशवल्ली लता, भटकटैया।

दुस्फोट-(सं०पुं०) बुरा व्रण या घाव, एक प्रकार का शस्त्र।

दुस्सह-(हिं०वि०) देखो दुःसह।

दुहता-(हिं० पुं०) दोहिता, नाती, बेटी का पुत्र।

दुहत्था-(हिं०वि०)दोनों हाथों से किया हुआ, जिसमें दो मूठ हों। **दुहत्थी**-(हिं०स्त्री०)मालखंभ का एक व्यायाम।

दुहना-(हिं० क्रि०) स्तन में से दूध निकालना,निचोड़ना,तत्वनिकालना, सार खींचना; **दुह लेना-लूट** लेना, धन हर लेना। **दुहनी**-(हिं०स्त्री०) वह पात्र जिसमें गाय भैंस आदि का दूध दुहा जाता है।

दुहरा,दुहराना-देखो दोहरा,दोहराना।

दुहाई-(हिं०स्त्री०) घोषणा, सहायता के लिये पुकार, शपथ, सौगन्ध, गाय भैंस आदि को दुहने का काम दुहने की मजदूरी; **दुहाई फिरना**-घोषणा करना; **दुहाई देना**-सहायता के लिये किसी का नाम लेकर पुकारना

दुहाग-(हिं०पुं०) दुर्भाग्य वैधव्य,रंडापा।

दुहागिन-(हिं०स्त्री०) विधवा स्त्री।

दुहागी-(हिं०वि०) अभागा, दुर्भाग्य।

दुहाजू-(हिं०वि०) वह मनुष्य या स्त्री जो स्त्री या पति के मरने पर दूसरा विवाह करे।

दुहाना-(हिं०क्रि०) किसी अन्य पुरुष से दूहने का काम कराना।

दुहाव-(हिं०स्त्री०) भूपति का उत्सवके दिन पर किसान की गाय भैंस का दूध दुहाकर ले लेना, इस प्रथा के अनुसार लियाहुआ दूध। **दुहावनी**-(हिं०स्त्री०) दुहाई दूध दूहने का शुल्क

दुहिता-(हिं० स्त्री०) दुहितृ कन्या, लड़की,पुत्री। **दुहितुःपति,दुहितृपति**-(सं०पुं०) जामाता, दामाद।

दुहिन-(हिं०पुं०) ब्रह्मा।

दुहेल-(हिं०पुं०) संकट, क्लेश।
दुहेला-(हिं०वि०) दु:साध्य, दु:खदायी, कठिन, (पुं०) कठिन कार्य, विकट खेल।
दुहोतरा-(हिं०पुं०) कन्याका पुत्र, नाती (वि०) दो, दो अधिक।
दुह्य-(सं०वि०) दुहने योग्य; **दुह्यमान**-(सं०वि०) जो दुहा जाय।
दूंद-(हिं०पुं०) उधम,
दूँदना-(हिं०क्रि०) उधम करना,
दू-(सं०पुं०) रोग, बीमारी।
दूआ-(हिं०पुं०) कलाई पर पहिरने का एक प्रकार का आभूषण, ताश का पत्ता जिसमें दो बूटियां हों, किसी खेल का दांव।
दूइज-(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, दूज।
दूक-(हिं०वि०) दो एक, एकाध।
दूकान-(हिं०पुं०) देखो दुकान। **दूकानदार, दूकानदारी**-देखो दुकानदार, दुकानदारी।
दूखन-(हिं०पुं०) दोष,
दूखना-(हिं०क्रि०) दोषलगना, पीड़ाहोना।
दूगा-(हिं०पु०) एकप्रकारकापहाड़ीबकरा।
दूज-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया; **दूज का चांद होना**-बहुत दिनों बाद दर्शन होना, थोड़े देर के लिये दर्शन होना।
दूजा-(हि०वि०) दूसरा।
दूडाश-(सं०वि०) पीडित, दु:खित।
दूधी-(सं०स्त्री०) दुष्ट बुद्धि।
दूत-(सं०पु०) संवाद पहुँचाने वाला, चर, प्रेमी प्रेमिका का सन्देश एक दूसरे से जाकर कहने वाला; **दूतक**-(सं०पुं०) राजा की आज्ञा को सर्वसाधारणमें पहुँचाने वाला; **दूतकत्व**-(सं० नपु०) दूत का काम; **दूतकर्म**-(सं०पुं०) समाचार पहुँचाने का काम; **दूतघ्नी**-(सं०स्त्री०) गोरखमुण्डी; **दूतता**-(सं०स्त्री०) दूत का काम; **दूतत्व**-(सं० नपुं०) दूतता। **दूतपन**-हिं०पु०) दूत का काम। **दूतर**-(हि०वि०) देखो दुस्तर।
दूतावास-(हिं०पुं०) दूत के रहने का स्थान।
दूति, दूतिका-(सं०स्त्री०) दूती, कुटनी।
दूती-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिका का सन्देश एक दूसरेके पास पहुँचाती हैं, संचारिका, कुटनी।
दूत्य-(सं०नपुं०) दूत कर्म, दूतका काम
दूदला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष
दूध-(हिं०पुं०) स्तनमें से निकलने वाला वह सफेद तरल पदार्थ जिससे बच्चों का बहुत दिनों तक पालन पोषण होता है; दूध के समान वह तरल द्रव्य जो अनेक पौधे की डंठल तथा पत्तियों में से निकलता है; **दूध उतरना**-स्तनों में दूध भर जाना; **दूध का दूध और पानी का पानी** ऐसा न्याय जिसमें पक्षपात का कुछ लेश न हो; **दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक देना**-किसी मनुष्य को अति तुच्छ जान कर अलग देना; **दूध का दाँत टूटना**-बाल्यावस्था रहना; **दूधों नहाओ पूतों फलो**-परिवार तथा धन की वृद्धि के लिये आशीर्वाद; **दूध फटना**-दूध का छेना और पानी अलग हो जाना; **दूध भर आना**-माता के स्तन में बच्चे के स्नेह के कारण दूधभर आना। **दूध चढ़ी**-(हिं०वि०) जिसके स्तन में दूध पहिले से बढ़ गया हो। **दूध पिलाई**-(हिं०स्त्री०) दूध पिलाने वाली धाय, विवाह की एक प्रथा जिसमें वर को उसकी माता बारात के समय अपना दूध पिलाने की मुद्रा करती है, वह धन जो इस क्रिया के बदले उसको दिया जाता है। **दूध पूत**-(हिं०पु०) धन और सन्तति। **दूध बहन**-(हिं०स्त्री०) वह लड़की जो किसी ऐसी स्त्री का दूध पीकर पली हो जिसका दूध पीकर दूसरा बालक भी पला हो। **दूध भाई**-(हिं०पु०) ऐसे दो बालकों में से एक जो एक ही स्त्री के स्तन का दूध पी कर पले हों परन्तु वे सहोदर भाई न हों। **दूध मसहरी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का महीन रेशमी कपड़ा। **दूधमुहाँ**-(हिं०वि०) जो अभी तक माता का दूध पीता हो, शिशु, बालक, छोटा बच्चा। **दूधमुख**-(हिं०वि०) छोटा बच्चा, शिशु, **दूधराज**-(हि०पु०) एक प्रकार की बुलबुल, चौड़े फन का एक प्रकार का सर्प। **दूधवाला**-(हिं०पुं०) दूध बेंचने वाला ग्वाला। **दूध हंडी**-(हिं० स्त्री०) दूध गरम करने का मिट्टी का पात्र।
दूधा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का अगहनियां धान, अनाज के कच्चे दाने का रस। **दूधाभाती**-(हिं०स्त्री) विवाह की एक रीत जिसमें वर कन्या को तथा कन्या वर को दूध और भात खिलाते हैं।
दूधिया-हिं० वि०) दुग्ध संबंधी, जिसमें दूध मिला हो; दूधके रंग का, सफेद; (पुं०) एक प्रकार का चिकना सफ़ेद, पत्थर, एक प्रकार का रत्न, एक प्रकार का सोहन हलुआ; **दूधिया खाकी**-(हिं०पु०) एक प्रकार का मटमैला सफेद रंग।
दून-(सं०पुं०) चलते चलते थका हुआ, दु:खित, दु:ख से व्याकुल। **दून**-(हिं०स्त्री०) दूने का भाव, साधारण से कुछ जल्दी जल्दी गाना, (पुं०) तराई, घाटी; **दूनकी लेना या हाँकना**-अति श्लाघा करना, डींग हांकना।
दूनर-(हिं०वि०) जो लचक कर दोहरा हो गया हो।
दूनसरिस-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी सिरिस का वृक्ष।
दूना-(हिं०वि०) द्विगुण, दुगुना।
दूनौं-(हिं०वि०) दोनों।
दूब-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की प्रसिद्ध घास, दूर्वा।
दूबरा-(हिं०वि०) दुर्बल, दुबला।
दूबिया-(हिं०वि०) एकप्रकारका हरारंग।
दूबे-(हिं०पुं०) ब्राह्मणोंकी एक उपाधि, द्विवेदी।
दूभर-(हिं०वि०) दु:साध्य, कठिन।
दूमना-(हिं०क्रि०) हिलना डोलना।
दूमा-(हि० पुं०) चमड़े का छोटा थैला जिसमें पहाड़ी लोग चाय की पत्ती रखते हैं।
दूर-(हिं०क्रिवि०) अनिकट; **दूर करना**-अलग करना, हटाना, मिटाना; **दूर भागना**-अलग रहना, पास न जाना; **दूर होना**-हट जाना, नष्ट होना; **दूर की बात**-कठिन वार्ता।
दूरक-(सं०वि०) जो दूर पर हो।
दूरग-(सं०वि०) बहुत (पुं०) ऊंट, गदहा। **दूरगत, दूरगामी**-(सं०वि०) जो बहुत दूरतक चला गया हो।
दूरग्रहण-(सं०नपु०) बहुत दूर से ग्रहण करने की शक्ति।
दूरङ्गम-(सं०वि०) बहुत दूर तक जाने वाला।
दूरचर-(सं०वि०) दूरतक चलनेवाला।
दूरजम-(सं०नपु०) वैडूर्य मणि।
दूरता-(हिं०स्त्री) देखो दूरत्व। **दूरत्व**-(सं०नपु०) दूर होने का भाव, अन्तर, दूरी, फ़ासला। **दूरदर्शक**-(सं०वि०) देखो दूरदर्शी (पुं०) **दूर दर्शक यन्त्र**-दूरबीन। **दूरदर्शन**-(सं०नपुं०) दूर से दर्शन, दूरबीन (पुं०) गृध्र, गीध, पण्डित। **दूरदर्शिता**-(सं०स्त्री०) दूर की बात सोचने का गुण। **दूरदर्शी**-(सं०वि०) दूरदर्शक, बहुत दूर की बात सोचने वाला (पुं०) पडित, बुद्धिमान, गृध्र। **दूरदृष्टि**-(सं०स्त्री०) दूरदर्शन, भविष्य का विचार। **दूरनिरीक्षण**-(सं०पु०) दूरदर्शकयन्त्र, दूरबीन
दूरवा-(हिं०पुं०) देखो दूर्वा।
दूरमूल-(सं०पुं०) मूज जवासा, धमासा।
दूरयायी-(सं०वि०) दूरगामी, दूर जाने वाला।
दूरवर्ती-(सं०वि०) दूरस्थित, जो दूर का हो।
दूरवस्त्रक-(सं०वि०) वस्त्रहीन, नंगा।
दूरवासी-(सं०वि०) दूर देश में रहनेवाला
दूरवीक्षण-(सं०नपुं० वह यन्त्र जिससे दूर की वस्तु बहुत पास और बड़ी देख पड़ती है।
दूरवेधी-(सं०पुं०) वह जो दूर से लक्ष्य लगाता हो।
दूरसंस्थ-(सं०वि०) दूरवर्ती, दूरस्थित; **दूरस्थान**-(सं०नपु०) दूरस्थता, वह जो दूर हो। **दूरस्थ**-(सं०वि०) दूरस्थित, दूर का।
दूरापात-(सं०पुं०) वह अस्त्र जो दूर से फेंक कर मारा जाता हो।
दूराप्लाव-(सं० वि०) जो दूर से उछलता हो।
दूरावस्थित-(सं०वि०) दूरवर्ती, जो दूर में हो।
दूरी-(हिं०स्त्री०) दूरत्व; **दूरीकरण**-(सं०नपु०) बाहर निकाल देने की क्रिया; **दूरीकृत**-(सं०वि०) जो दूर निकाल दिया गया हो; **दूरीभूत**-(सं०वि०) बाहर निकाला हुआ।
दूरेत्य-(सं०वि०) दूरस्थ, जो दूर हो।
दूरेभा-(सं०वि०) दूर से चमकनेवाला।
दूरेयम-(सं०वि०) जहां पर यम न पहुंच सकें।
दूरेवध-(सं०वि०) दूर से मारने वाला।
दूरोह-(सं०पुं०) आदित्यलोक (वि०) जिसपर चढ़कर जाना कठिन हो; **दूरोहण**-(सं०पुं०) आदित्य, सूर्य, एक प्रकार का छन्द, (वि०) जो चढ़ने योग्य न हो, जिसपर चढ़ना कठिन हो।
दूर्य-(सं०नपुं०) पुरीष, विष्ठा।
दूर्वा-(सं०स्त्री०) दूब नाम की घास।
दूर्वाक्षी-(सं०स्त्री०) वासुदेव के भाई वृक की स्त्री।
दूर्वाष्टमी-(सं० स्त्री०) भादों सुदी अष्टमी का नाम। **दूर्वासोम**-(सं०पु०) एक प्रकार की सोमलता।
दूर्वेष्टका-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ में काम आती है।
दूलन-(हिं०पुं०) देखो दोलन।
दूलह-(हिं०पुं०) दुलहा, पति, स्वामी।
दूलाश-(सं० वि०) जो कठिनाई से मारा जा सके।
दूलिका-(सं० स्त्री०) नील का पेड़।
दूली-(सं०स्त्री०) देखो दूलिका।
दूल्हा-(हिं०पुं०) देखो दूलह।
दूवा-(हिं०पुं०) आशीर्वाद।
दूश्य-(सं०नपुं०) तम्बू।
दूषक-(सं०वि०) दोषोत्पादक, दोष लगाने वाला, वह पदार्थ जो दोष उत्पन्न करे (पुं०) एक प्रकार का धान। **दूषण**-(सं०नपुं०) दोष लगाने की क्रिया या भाव, अवगुण, रावण के एक भाई का नाम, (वि०) दोष उत्पन्न करने वाला। **दूषणारि**-(सं०पु०) श्रीरामचन्द्र जिन्होंने दूषण को मारा था। **दूषयिता**-(सं०वि०) दोष लगाने वाला। **दूषणीय**-(सं० वि०) दोष लगाने योग्य, अवगुण का पात्र। **दूषना**-(हिं०क्रि०) कलंक लगाना, ऐब लगाना।
दूषि-(सं०स्त्री०) आंख की मैल।
दूषिका-(सं०स्त्री०) नेत्र का मल, चित्रकार की कूंची, (वि०) दोष लगाने वाली।
दूषित-(सं०वि०) दोषयुक्त, जिसमें दोष हो। **दूषिता**-(सं०स्त्री०) वह कन्या जिसमें कोई दोष लगाया गया हो।

दूषी-(सं०स्त्री०) आंख की मैल ।
दूषीविष-(सं०नपुं०) शरीर में का एक प्रकार का विष जो शरीर के धातुओं को दूषित करता है ।
दूष्य-(सं०वि०) दूषणीय, दोष लगाने योग्य, निन्दा करने योग्य, राज्य को हानि पहुँचाने वाला, नीच, तुच्छ; (पुं०) कपड़ा, तम्बू, पीब ।
दूष्या-(सं०स्त्री०)हाथी बाँधने का रस्सा
दूष्युदर-(सं०नपुं०) पेट का एक रोग।
दूसना-(हिं०क्रि०) देखो दूषना ।
दूसर, दूसरा-(हिं०वि०) द्वितीय, अन्य, अपर, और, गैर ।
दूहना-(हिं०क्रि०)देखो दुहना । **दूहनी**-(हिं० स्त्री०) देखो दोहनी । **दूहा**-(हिं०पुं०) देखो दोहा ।
दृंहण-(सं०नपुं०)दृढ करने की क्रिया ।
दृंहित-(सं०वि०) वर्धित, बढ़ाया हुआ
दृक्-(सं०नपुं०) छिद्र, छेद, नेत्र ।
दृक्कर्ण-(सं०पुं०) सर्प, सांप;
दृक्काण-(सं०नपुं०) ज्योतिष के अनुसार एक राशि का तीसरा भाग जो दश अंशों का होता है; **दृक्क्षेप**-(सं०पुं०) दृष्टिपात, अवलोकन; **दृक्पथ**-(सं०पुं०) दृष्टि का मार्ग, दृष्टि की पहुच; **दृक्पात**-(सं०पुं०) देखो दृक्क्षेप,अवलोकन । **दृक्प्रिया**-(सं०स्त्री०) शोभा, सुन्दरता । **दृक्शक्ति**-(सं०स्त्री०) प्रकाश रूप चैतन्य आत्मा । **दृक्श्रुति**-(सं०पुं०) सर्प, सांप, देखो दृक्कर्ण ।
दृगंचल-(हिं०पुं०) आंख की पलक ।
दृग-(हिं०पुं०) दृष्टि, देने की शक्ति, आंख, दो की संख्या । **दृगञ्चल**-(सं०पुं०) आंख की पलक । **दृगध्यक्ष**-(सं०पुं०) नेत्र के अधिष्ठाता देवता, सूर्य । **दृगमिचाव**-(हिं०पुं०) आंख मिचौनी का खेल ।
दृगणित-(सं० पु०) ग्रहों का वेध करने की गणित ।
दृगति-(सं० स्त्री०) चक्षुगति, दृष्टि की पहुंच । **दृगोचर**-(सं०वि०) जो आंखों से देख पड़े । **दृग्भक्ति**-(सं०स्त्री०) प्रेम दृष्टि ।
दृग्भू-(सं०स्त्री०) सूर्य, वज्र, सर्प ।
दृग्विष-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प जिसकी आंखों में विष रहता है ।
दृग्वृत्त-(सं०नपु०) क्षितिज ।
दृङ्मण्डल-(सं०नपुं०) दृगोल ।
दृढ-(सं०वि०) अशिथिल, जो ढीला न हो,स्थूल, मोटा, हृष्ट पुष्ट, बलवान्, स्थायी, पक्का, कठिन, निडर, ढीठ, जो विचलित न हो, निश्चित, कड़ा, ठोस,(नपुं०)लोहा(पु०)विष्णु,धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम,तेरहवां मनु,सेमर का वृक्ष, हीरा, गणित में वह अंक जो किसी दूसरे अंक से पूरा पूरा भाग न हो सके ।
दृढकण्टक-(सं०पुं०) खजूर का पेड़, अखरोट का वृक्ष । **दृढकाण्ड**-(सं०पुं०) बांस, रोहिस नामक घास; **दृढकारी**-(सं०वि०) पुष्ट करने वाला, **दृढक्षत्र**-(सं०पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **दृढगर्भ**-(सं०नपुं०) हीरक, हीरा
दृढगात्रिका-(सं०स्त्री०) राब; खांड़, **दृढग्रंथि**-(सं०पुं०) बांस (वि०) जिसकी गांठे पुष्ठ हों । **दृढग्राही**-(सं०वि०) निश्चित रूप से ग्रहण करनेवाला; **दृढच्छद**-(सं० पुं०) ताड़ का वृक्ष। **दृढच्युत**-(सं०पुं०) अगस्त्य मुनि के एक पुत्र का नाम । **दृढतरु**-(सं०पुं०) धव का वृक्ष । **दृढता**-(सं०स्त्री०) दृढत्व, स्थिरता, पुष्टता । **दृढतृण**-(सं० पु०) मूंज नाम की घास; **दृढत्व**-(सं०नपुं०) दृढ़ता, **दृढत्वच्**-(सं०पुं०) जिसकी त्वचा या छाल कड़ी हो (पुं०) ज्वार का पौधा, मूंज नामक घास । **दृढदंशक**-(सं०पुं०) घड़ियाल । **दृढधन**-(सं०पु०) शाक्य-मुनि, बुद्ध । **दृढधन्वा**-(सं०पुं०) एक पुरुवंशी राजा का नाम । **दृढधन्वी**-(सं०वि०) जिसका धनुष बड़ा पुष्ट हो । **दृढधुर**-(सं०वि०) जो बोझ ढोने में समर्थ हो । **दृढनाभ**-(सं०पुं०) एक मन्त्र जो माया-अस्त्र को रोक सकता है, विश्वामित्र ने यह मन्त्र रामचन्द्र को बतलाया था । **दृढनिश्चय**-(सं०पु०) वह जो अपने संकल्प पर दृढ़ रहे । **दृढनीर**-(सं०पुं०) नारियल का फल जिसके भीतर का पानी धीरे धीरे ठोस हो जाता है ।
दृढनेत्र-(सं०पु०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम । **दृढनेमि**-(सं०पुं०) वह रथ जिसका धुरा पुष्ट हो ।
दृढ़पत्र-(सं०पुं०) मूंज की घास (वि०) पुष्ट पत्तों वाला । **दृढपद**-(सं०पुं०) तेईस मात्राओं के एक छन्द का नाम
दृढप्रतिज्ञ-(सं०वि०) जो अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे । **दृढपाद**-(सं० पुं०) ब्रह्मा (वि०) जो जो अपनी प्रतिज्ञापर स्थिर रहे । **दृढपादी**-(सं०स्त्री०)भूआमला । **दृढपृष्टक**-(सं०पुं०) कच्छप, कछुआ । **दृढप्ररोह**-(सं०पुं०) बरगद का वृक्ष;**दृढफल**-(सं०पुं०) नारियल; **दृढबन्धिनी**-(सं०स्त्री०)अनन्त मूल की लता; **दृढबालुक**-(सं०नपुं०) मुसब्बर; **दृढभार्गवक**-(सं०स्त्री०) हीरक वज्र, हीरा; **दृढभूमि**-(सं०पुं०) योग शास्त्र के अनुसार चित्त को एकाग्र और स्थिर करने का एक अभ्यास; **दृढमुष्टि**-(सं०वि०) कृपण, कंजूस, (वि०) मुट्ठी से कसकर पकड़ने वाला; **दृढमूल**-(सं०पुं०) नारिकेल, नारियल; **दृढरंगा**-(सं०स्त्री०) स्फटी, फिटकरी,
दृढरजा-(सं०स्त्री०) प्रौढ या युवा स्त्री **दृढरथ**-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । **दृढलता**-(सं०स्त्री) पाताल गारुड़ी नामक लता । **दृढलोम**-(सं०पुं०) शूकर, सुअर (वि०) कड़े रोवें वाला, **दृढवर्म**-(सं०वि०) जिसका कवच बड़ा पुष्ट हो, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । **दृढवल्कल**-(सं०वि०) कड़ी छाल वाला (पुं०) सुपारी का पेड़ । **दृढवल्ल**-(सं०पुं०) मूंज नामक घास;**दृढवीज**-(सं०पुं०) बेर, बबूल, नारियल (वि०) जिसका बीज कड़ा हो । **दृढवृक्ष**-(सं०पुं०)नारियल; **दृढवेधन**-(सं०नपुं०) दृढ़ता के साथ छेदने की क्रिया; **दृढव्रत**-(सं०वि०) अपने संकल्प पर दृढ़ रहने वाला; **दृढशक्तिक**-(सं०वि०) जिसको बड़ा बल हो । **दृढसन्ध**-(सं०वि०) अपनी प्रतिज्ञा का पक्का, (पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **दृढसन्धि**-(सं०वि०,निश्छिद्र,बिना,छेद का;**दृढसूत्रिका**-(सं०स्त्री०)मुर्रा नामक औषधि; **दृढस्कन्ध**-(सं० पु०)खिरनी का पेड़, (वि०) जिसका कन्धा पुष्ट हो; **दृढस्थिति**-(सं०पुं०) नारियल का पेड़; **दृढहस्त**-(सं०पुं०) शस्त्र पकड़ने में जिसका हाथ पक्का हो ।
दृढा-(सं०स्त्री०) मूसली । **दृढाङ्ग**-(सं०वि०) जिसके अङ्ग पुष्ट हों, हट्टा कट्टा, (नपुं०) जीरा । **दृढाई**-(हिं०स्त्री०) दृढ़ता । **दृढाना**-(हिं०क्रि०) दृढ़ करना, पक्का करना, स्थिर या पक्का होना ।
दृढायु-(सं०पुं०) ऐल नामक राजा का नाम जो उर्वशी के गर्भ से उत्पन्न थे
दृढायुध-(सं०वि०) जो शस्त्र पकड़ने में निपुण हो, (पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
दृढारङ्गा-(सं०स्त्री०) स्फटी, फिटकरी ।
दृत-(सं०वि०) सम्मानित, आदर किया हुआ, विदीर्ण, फाड़ा हुआ ।
दृता-(सं०स्त्री०) जीरक, जीरा ।
दृति-(सं०पुं०)खाल का बना हुआ पात्र, मछली, गाय के गले के नीचे का झूलता हुआ माँस, मेघ, बादल, रोम सहित चमड़ा । **दृतिहरि**-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता, **दृतिहार**-(सं०पुं०) मसक ढोने वाला ।
दृत्य-(सं०वि०) आदरणीय ।
दृन्भू-(सं०पुं०) वज्र, सूर्य, राजा ।
दृप्त-(सं०वि०) प्रबल, प्रचण्ड, घमण्डी
दृब्ध-(सं०वि०) भयभीत, डरा हुआ ।
दृश्-(सं०पुं०) चक्षु, नेत्र, आंख, ज्ञान, दर्शन, देखना, दृष्टि, दो की संख्या; (वि०) देखने या दिखलाने वाला ।
दृशद्वती-(सं०स्त्री०) कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक नदी जो ब्रह्मावर्त के सीमा पर थी, कात्यायनी ।
दृशा (सं०स्त्री०) चक्षु, आंख ।
दृशाक-(सं०वि०)दर्शनीय, देखने योग्य ।
दृशान-(सं०पुं०) लोकपाल, आचार्य, गुरु, ब्राह्मण, प्रकाश, (वि०) जो देख पड़ता हो ।
दृशि-(सं०स्त्री०) चक्षु नेत्र ।
दृशेन्य-(सं०वि०) दर्शनीय, देखने योग्य ।
दृशोपम-(सं०नपुं०) सफेद कमल ।
दृश्य-(सं०वि०) दर्शनीय,जो देखने योग्य हो, जो देखने में आ सके, जानने योग्य, मनोहर, सुन्दर, (पुं०) आँखों के सामने का पदार्थ, देखने की वस्तु, आँख के सामने होने वाला मनोरञ्जक व्यापार, अभिनय द्वारा दर्शकों का दखाये जाने वाला काव्य गणित में ज्ञात राशि ।
दृश्यकाव्य-(सं०नपुं०) वह काव्य जो नाटयशाला में नट लोगों से दिखलाया जाता है । **दृश्यमान**-(सं०वि०) जो देख पड़ता हो, सुन्दर, चमकीला
दृश्यादृश्य (सं०वि०) दृश्य और अदृश्य ।
दृश्वन्-(सं०वि०) दर्शक, देखने वाला ।
दृषद्-(सं०स्त्री०) पहाड़की चट्टान,पत्थर, सिल ।
दृषद्वत्-(सं०वि०) शिलायुक्त ।
दृषद्वती-(सं०स्त्री०) घरघर नदी का प्राचीन नाम ।
दृष्ट-(सं०वि०) अवलोकित, देखा हुआ, जाना हुआ, गोचर, प्रगट, प्रत्यक्ष, (नपुं०) साक्षात्कार, प्रत्यक्ष प्रमाण,
दृष्टकर्म-(सं० नपुं०) देखा या परीक्षा किया हुआ काम । **दृष्टकूट**-(सं०नपुं०) प्रहेलिका,पहेली,ऐसी कविता जिसका अर्थ वाच्यार्थ से न समझा जा सके परन्तु प्रसंग से ज्ञात हो; **दृष्टत्व**-(सं०नपुं०) दृष्टि का भाव, देखने का कारण; **दृष्टदोष**-(सं०पुं०) मनुष्य का वह दोष जो राग, लोभ आदि से देखा गया हो । **दृष्टनष्ट**-(सं०वि०) जो दर्शन मात्र से नष्ट हो जाय; **दृष्टपृष्ठ**-(सं०वि०) युद्ध में से भाग जाने वाला । **दृष्टप्रत्यय**-(सं०पुं०) देखकर किया जाने वाला संकल्प । **दृष्टरजस्**-(सं०स्त्री०)प्रौढा स्त्री;**दृष्टवत्**-(सं०वि०) लौकिक, सांसारिक, प्रत्यक्ष तुल्य; **दृष्टवाद**-(सं०पुं०) केवल प्रत्यक्ष को ही मानने वाला दार्शनिक सिद्धान्त । **दृष्टवीर्य**-(सं०वि०) जिसके बल की परीक्षा की गई हो । **दृष्टसार**-(सं०वि०) जिसका बल देखा गया हो।
दृष्टादृष्ट-(सं०वि०) जो देखने को वस्तु नहीं है, उसको जिसने देखा हो ।
दृष्टान्त-(सं० पुं०) किसी विषय को स्पष्ट रूप से बतलाने के लिये अथवा सिद्ध करने के लिये किसी जाने हुए अन्य विषय का उल्लेख, उदाहरण शास्त्र,वह अर्थालङ्कार जिसमें समान धर्म की वस्तु का प्रतिबिम्ब नहीं रहता है ।
दृष्टान्तित-(सं०वि०) जो उदाहरण रूप लिया गया हो ।
दृष्टार्थ-(वि०) जिसने अर्थ देखा हो, जिसका अर्थ स्पष्ट हो, (पुं०) वह शब्द जिसके सुनने से सुनने वाले को ऐसे अर्थ का बोध होता है, जिसका प्रत्यक्ष संसार में होता है ।
दृष्टि-(सं०स्त्री०)दर्शन, देखने की वृत्ति, अवलोकन, चक्षु, प्रकाश, पहचान,

आँख की ज्योति, कृपादृष्टि, ध्यान, अनुमान, विचार, आशा, उद्देश्य। **दृष्टि जुड़ना**-साक्षात्कार होना; **दृष्टि-जोड़ना**-आँख मिलाना; **दृष्टि रखना**-देख रेख में रखना। **दृष्टिकूट**-(सं०पुं०) देखो दृष्टकूट। **दृष्टिकृत्**-(सं०वि०) दर्शक,देखने वाला। **दृष्टिक्षेप**-(सं०पुं०) अवलोकन,देखना। **दृष्टिगत**-(सं०पुं०) नेत्र का विषय (वि०) जो देख पड़े। **दृष्टिगुण**-(सं० पुं०) नेत्रगुण, तीर आदि का लक्ष्य;**दृष्टिगोचर**-(सं०वि०) नेत्र द्वारा जिसका बोध हो, जो देख पड़ सके। **दृष्टिनिपात**-(सं० पुं०) अवलोकन,नेत्रों से देख पड़ना; **दृष्टि-पथ**-(सं०पुं०) दृष्टि का पथ,दृष्टि की पहुँच। **दृष्टिपात**-(सं०पु०) अवलोकन, ताकना, देखना; **दृष्टिपूत**-(सं०पुं०) जिसको देखने से आँखें पवित्र हों;

दृष्टिप्रदा-(सं०स्त्री०) नेत्र का एक रोग; **दृष्टिफल**-(सं० नपु०) ज्योतिष के अनुसार वह फल जो एक राशि में स्थित ग्रहके दूसरी राशि में स्थित ग्रह पर दृष्टि करने से होता है; **दृष्टिबन्ध**-(सं०पुं०) इन्द्रजाल, जादू, हस्तलाघव; **दृष्टिबन्धु**-(सं० पुं०) खद्योत,जुगनू। **दृष्टिमण्डल**-(सं०नपुं०) दर्शन; **दृष्टिमत्**-(सं० वि०) जिसको दृष्टि न हो।

दृष्टियोनि-(सं०पुं०) क्लीब, नपुसक, **दृष्टिरोग**-(सं०पुं०) नेत्र रोग; **दृष्टि-रोध**-(सं०पुं०)दृष्टि पहुंचने में रुकावट; **दृष्टिवन्त**-(हिं०वि०) दृष्टिवाला ज्ञानी। **दृष्टिवर्त्म**-(सं०नपुं०) आँख की पलक; **दृष्टिवाद**-(सं०पुं०)वह सिद्धान्त जिसके अनुसार दृष्टि ही प्रत्यक्ष प्रमाण मानी जाती है; **दृष्टिविभ्रम**-(सं०पुं०) देखने में भ्रम होना। **दृष्टिविज्ञान**-(सं०नपुं०) दर्शन विषयक विद्या। **दृष्टिविष**-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प जिसके नेत्रों में विष रहता है। **दृष्टिसन्धि**-(सं०पुं०) आँख का कोना; **दृष्टि स्थान** (सं०नपुं०) फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का अवलोकन स्थान। **दृष्या**-(सं० स्त्री०) हाथी की पीठ पर का ओहार।

दे-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के लिये प्रयोग करने का एक आदर सूचक शब्द,देवी

देई-(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के लिये एक आदर सूचक शब्द, देवी।

देख, देखन-(हिं०स्त्री०) देखने की क्रिया या भाव, अवलोकन। **देखनहारा**-(हिं०वि०) देखने वाला।

देखना-(हिं०क्रि०) अवलोकन करना, निरीक्षण करना, अन्वेषण करना, ढूंढना, परीक्षा करना, पता लगाना, संशोधित करना, शोधना, अनुभव करना, सोचना, समझना, परीक्षा करना, परखना, ताकते रहना विचारना, जांच करना ठीक करना भोगना, पढ़ना; **देखना सुनना**-पता लगाना; **देखने में**-साधारण व्यवहार में; **देखते देखते**-आंखों के सामने, तुरत; **देखते रह जाना**-अचभे में पड़ना; **देखा जायगा**-दुबारा विचार किया जायगा।

देखभाल-(हिं०स्त्री०) साक्षात्कार, निरीक्षण, जाँच पड़ताल।

देखराना, देखरावना-(हिं० क्रि०) देखो दिखलाना।

देखरेख-(हिं०स्त्री०) निरीक्षण, देखभाल।

देखाऊ-(हिं०वि०) जो केवल देखने के लिये हो, झूठी तड़क भड़क वाला, दिखौवा, बनावटी।

देखादेखी-(हिं०स्त्री०)साक्षात्कार, दर्शन (क्रि०वि०) दूसरों को करते हुए देख कर।

देखाना-(हिं०क्रि०) देखो दिखाना।

देखाभाली-(हिं०स्त्री०) देखो देखभाल।

देखाव-(हिं०पुं०) रूप रंग दिखाने की क्रिया या भाव, बनावट, दृष्टि की सीमा, तड़क भड़क। **देखावट**-(हिं०स्त्री०) रूप रंग दिखाने की क्रिया या भाव, तड़क भड़क, ठाटबाट। **देखावना**-(हिं०क्रि०) देखो दिखाना। **देखौवा**-(हिं०वि०) देखो देखाऊ।

देग-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाज पक्षी;

देदीप्यमान-(सं०वि०) जाज्वल्यमान; चमकता हुआ, अत्यन्त प्रकाशयुक्त।

देन-(हिं०स्त्री०) देने की क्रिया या भाव, दान की हुई वस्तु। **देनदार**-(हिं०पुं०) ऋणी, दानी, **देनदारी**-(हिं० स्त्री०) ऋणी होने की अवस्था।

देनलेन-(हिं०पुं०) महाजनी का व्यवसाय।

देनहारा-(हिं०वि०) देनेवाला।

देना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को अपने अधिकार से हटाकर दूसरेके अधिकार में स्थापित करना, प्रदान करना, सौंपना, उत्पन्न करना, निकालना, अनुभव करना,भोगना,मारना सौंपना हाथ पर रखना, पास रखना, लगाना, डालना, बन्द करना (पुं०) ऋण।

देमान-(हिं०पुं०) देखो दीवान।

देय-(सं०वि०) दातव्य, देने योग्य।

देरानी-(हिं० स्त्री०) देवरानी।

देरी-(हिं०स्त्री०) विलम्ब।

देव-(सं०पुं०) देवता, अमर, सुर, राजा, मेघ, पूज्य व्यक्ति, पारद, पारा, ब्राह्मणों की एक उपाधि, देवदार, तेजोमय व्यक्ति, ज्ञानेन्द्रिय,ऋत्विक, **देवअंशी**-(हिं०वि०) जो देवता के अंश से उत्पन्न हो; **देवऋण**-(सं०पु०) यज्ञादि कर्म जिसके करने से मनुष्य देवताओं के ऋण से मुक्त होता है, **देवऋषि**-(सं०पुं०) देवलोक में रहने वाले नारद, अत्रि, मरीचि आदि ऋषि, **देवक**-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण के नाना का नाम जो यदुवंशीय राजा थे, **देवकन्या**-(सं० स्त्री०) देवता की स्त्री देवी। **देवकपास**-(हिं०स्त्री०) नरमा, मनवा।

देवकर्दम-(सं०पुं०) एक सुगन्धित द्रव्य विशेष; **देवकर्म**-(सं० पुं०) वह कर्म जो देवता को प्रसन्न करने के लिये किया जाय; **देवकलि**-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।

देवकाँड़र-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पौधा जो औषधिमें प्रयोग होता है। **देवकात्मजा**-(सं० स्त्री०) देवकी

देवकार्य-(सं० नपुं०) देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किया हुआ कर्म **देवकाष्ठ**-(सं०नपुं०) देवदारु, देवदार, **देवकिरि**-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम. **देवकिल्बिष**-(सं०नपुं०) देवता का किया हुआ अनिष्ट। **देवकी**-(सं० स्त्री०) वासुदेव की स्त्री, श्रीकृष्ण की माता **देवकीनन्दन**-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण **देवकीपुत्र**-(सं० पुं०) देवकीनन्दन, श्रीकृष्ण; **देवकीय**-(सं० वि०) देवता संबंधी, देवता का. **देवकुण्ड**-(सं० नपुं०) देवस्थान के निकट का जलाशय। **देवकुल**-(सं०स्त्री०) देवताओं का वंश, देवता समूह। **देवकुल्या**-(सं०स्त्री०) गङ्गा नदी। **देवकुसुम**-(सं०नपुं०) लवङ्ग, लौंग। **देवकूट**-(सं०नपुं०) वसिष्ठ के आश्रम के पास एक पवित्र आश्रम। **देवकेसर**-(सं०पुं०) एक प्रकार का पुन्नाग।

देवक्षेत्र-(सं०नपुं०) यज्ञ।

देवक्षेत्र-(सं०नपुं०) पुण्य स्थान, स्वर्ग।

देवखात-(सं० नपुं०) ऐसा ताल जो आप से आप बन गया हो; **देवखातक**-(सं०नपुं०) गुहा, कन्दरा।

देवगढ़ी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की ऊख।

देवगण-(सं०पुं०) देवताओं का समूह, किसी देवताका अनुचर। **देवगणिका** (सं०स्त्री०) स्वर्ग की वेश्या, अप्सरा।

देवगति-(सं० स्त्री०) मरने के बाद देवयोनि की प्राप्ति, स्वर्ग लाभ। **देवगन्धक**-(सं०नपुं०) रोहिष नाम की घास। **देवगन्धर्व**-(सं०पुं०) वे गन्धर्व जो देवताओं के आगे गाते हैं। **देवगर्भ**-(सं०पुं०) वह मनुष्य जो देवता के वीर्य से उत्पन्न हुआ हो। **देवगान्धारी**-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम। **देवगायक,देवगायन**--(सं०पु०) गन्धर्व।

देवगिरा-(सं०स्त्री०) देववाणी, संस्कृत। **देवगिरि**-(सं०पुं०) रैवतक पर्वत का नाम जो गुजरात में हैं (स्त्री०) एक रागिणी का नाम। **देवगुरु**-(सं०पुं०) देवताओंके गुरु बृहस्पति। **देवगुही**-(सं०स्त्री०) सरस्वती। **देवगुह्य**-(सं० पुं०) जो विषय देवताओं को गुप्त हो। **देवगृह**-(सं०पुं०) गया के एक पुण्य स्थान का नाम; (नपु०) देवालय, मन्दिर। **देवग्रह**-(सं० पुं०) जो मनुष्य जागते सोते देवताओं को देखते हैं। **देवघन**-(हिं० पुं०) बगीचों में लगाने का एक वृक्ष।

देवङ्गम-(सं०वि०) जो देवताओं के पास हो।

देवचर्या-(सं०स्त्री०) देवताओं के निमित्त हवन आदि। **देवचाली**-(सं० पुं०) इन्द्रताल का एक भेद।

देवचिकित्सक-(सं०पुं०) देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार, दो की संख्या।

देवच्छन्द-(सं०पुं०) एक प्रकारका हार।

देवज-(सं०वि०) देवता से उत्पन्न।

देवजग्ध-(सं०वि०) देवताओं से खाया हुआ (नपु०) एक सुगन्धित घास।

देवजन-(सं० पुं०) देवताओं के सदृश मनुष्य, गन्धर्व। **देवजनविद्या**-(सं० स्त्री०) गन्धर्व विद्या, नाच गाना। **देवजाति**-(सं० स्त्री०) देवगण। **देवजामि**-(सं०स्त्री०) देवताओं की स्त्री। **देवजुष्ट**-(सं०वि०) देवताओं को चढ़ा हुआ। **देवट**-(सं० पुं०) शिल्पी, कारीगर।

देवठान-(हिं० पु०) कातिक सुदी एकादशी जिस दिन विष्णु भगवान् सोकर उठते है।

देवढ़ी-(हिं०स्त्री०) देखो ड्योढ़ी।

देवतर-(सं०वि०) बहुत चमकीला।

देवतरु-(सं० पु०) स्वर्ग के पांच वृक्ष यथा मन्दार, परिजात, सन्तान,कल्पतरु और हरिचन्दन।

देवतर्पण-(सं० पुं०) देवताओं का नाम लेकर पानी देने की क्रिया।

देवता-(सं० स्त्री०) स्वर्ग में रहनेवाले देव, सुर, निर्जर; **देवताकुसुम**-(सं०नपु०) लवङ्ग, लौग; **देवतागार** (सं०नपुं०) देवताओंका घर; **देवतागृह**-(सं०नपुं०) देवालय, ठाकुरद्वारा।

देवताड़-(सं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, बन्दाल। **देवताड़ी**-(हिं०स्त्री०) तुरई, तरोई।

देवतात-(सं०पुं०) देवताओं के पिता कश्यप; **देवताधिप**-(सं० पुं०) देवताओंके अधिपति,इन्द्र; **देवताध्यक्ष**-(सं०नपुं०) सामवेद का एक ब्राह्मण;

देवतानुक्रम-(सं० पुं०) देवताओं का उद्देश्य; **देवता प्रतिमा**-(सं० स्त्री०) देवता की प्रतिमूर्ति; **देवतामणि**-(सं०पु०) शिव, महादेव; **देवतामय**-(सं०वि०) देवता स्वरूप; **देवतायन**-(सं०नपुं०) देवगृह, ठाकुरद्वारा;

देवतालय-(सं०पुं०) देवतायतन; **देवतावेश्म**-(सं०नपुं०) देवतालय; **देवतीर्थ**-(सं० नपुं०) अगूठे को छोड़ कर अन्य अगुलियों का अग्र भाग।

देवत्त-(सं०वि०) देवता को अर्पण किया जानेवाला। **देवत्य**-(सं० वि०) देवता सम्बन्धी। **देवत्रयी**-(सं० पुं०) ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीनों देवताओं का समूह। **देवत्व**-(सं० नपु०) देवता का भाव, देवता का धर्म।

देवदग्ध-(सं०नपुं०) रोहिस घास।

देवदण्डा-(सं०स्त्री०) नागबला नामक क्षुप

देवदत्त-(सं० पुं०) वह सम्पत्ति जो

देवताओं के निमित्त दान दी गई हो, अर्जुन के एक शंख का नाम, (वि०) जो देवताओं से दिया गया हो, जो देवताके निमित्त दिया गया हो, (पु०) शुद्धोदन के भतीजे का नाम ।

देवदर्श-(सं०वि० देवता का दर्शन करने वाला, (पुं०) एक ऋषि का नाम । **देवदर्शन**-(सं०नपुं०) देवताका दर्शन ।

देवदाली-(सं०स्त्री०) बड़ी तरोई ।

देवदार-(हिं०पुं०) एक बहुत ऊंचा वृक्ष, देवदारु वृक्ष जो बहुत ऊंचा और सीधा होता है, इसमें से तारपोन की तरह का तेल निकलता है ।

देवदालिका-(सं० स्त्री०) महाकाल नामक वृक्ष ।

देवदासी-(सं० स्त्री०) बिजौरा नीबू, वेश्या, रंडी, मन्दिरों की दासी ।

देवदीप-(सं०पुं०) वह दीपक जो देवता के निमित्त जलाया गया हो, चक्षु, आँख । **देवदुन्दुभि**-(सं०पुं०) देवताओं का बाजा, लाल या काली तुलसी ।

देवदूत-(सं०पुं०) देवताओं का दूत, अग्नि । **देवदूती**-(सं० स्त्री०) अप्सरा, बिजौरी नीबू । **देवदेव**-(सं० पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश ; **देव-देवेश**-(सं०नपुं०) शिव, महादेव ।

देवद्रुम-(सं० पुं०) स्वर्ग का वृक्ष, देखो देवदारु । **देवद्रोणी**-(सं० स्त्री०) देवयात्रा, वह अर्घा जिसमें भूलिंग स्थापित किया जाता है । **देवधन**-(सं० नपुं०) देवता के निमित्त दिया हुआ धन । **देवधान्य**-(सं०नपुं०) ज्वार ।

देवधाम-(सं०पुं०) देव स्थान, तीर्थ स्थान ।

देवधुनी-(सं०स्त्री०) गङ्गा नदी ।

देवधूप-(सं०पुं०) गुग्गुल, गूगुल ।

देवन-(सं०नपुं०) व्यवहार, क्रीड़ा, खेल, द्युति, कान्ति, गति, जुआ, पद्म, कमल ।

देवनदी-(सं० स्त्री०) गङ्गा, सरस्वती और दृषद्वती ।

देवनन्दी-(सं०नपुं०) इन्द्र के द्वारपाल का नाम ।

देवनल-(सं०पुं०)एक प्रकार का नरकट

देवना-(सं०स्त्री०) क्रीड़ा,खेल,सेवा,टहल

देवनागर, देवनागरी-(सं०पुं०) भारतवर्षको वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत, हिन्दी, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं, यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि का एक रूप है ।

देवनाथ-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।

देवनामक-(सं०पुं०) देवयोनि, विद्याधर आदि । **देव नायक**-(सं०पुं०)सुरपति,इन्द्र

देवनाल-(सं०पुं०) बड़ा नरकट ।

देवनिकाय-(सं०पुं०) देवस्थान, स्वर्ग, **देवनिम्नगा**-(हिं०स्त्री०) गंगा । **देवनिर्मित**-(सं०वि०) देवता से बनाया हुआ (स्त्री०) गुडूची, गुरुच ।

देवनीथ-(सं० पुं०) सत्रह चरण का एक मन्त्र ।

देवपञ्चरात्र-(सं०पुं०) पांच दिन में होने वाला एक प्रकार का यज्ञ ।

देवपति-(सं०पुं०) देवताओं के स्वामी इन्द्र; **देवपतिमन्त्री**-(सं०पुं०) इन्द्र के मन्त्री बृहस्पति । **देवपत्नी**-(सं०स्त्री०) देवताओं की स्त्री **देवपथ**-(सं०पुं०) देवताओं का पथ, आकाश । **देवपथिनी**-(सं०स्त्री०) आकाश में बहने वाली गङ्गा ।

देवपर-(सं० पुं०) वह जो आपत्ति में पड़ने पर केवल देवता के भरोसे बैठा रहे ।

देवपशु-(सं०पुं०) वह पशु जो देवता के नाम पर छोड़ा गया हो, देवता का उपासक ।

देवपात्र-(सं०नपुं०) अग्नि, आग ।

देवपान-(सं०पुं०) सोमपान करने का पात्र ।

देवपालित-(सं०वि०) वह देश जहां वर्षा के जल से ही खेती होती है ।

देवपीयु-(सं०पुं०) देवताओं से द्वेष करने वाले असुर ।

देवपुत्र-(सं०पुं०) देवकुमार, इलायची ।

देवपुर-(सं०नपुं०) देवताओं की नगरी, अमरावती । **देवपुरी**-(सं०स्त्री०) अमरावती । **देवपुष्प**-(सं०नपुं०) लवङ्ग, लौंग । **देवपूजा**-(सं०स्त्री०) देवताओं का पूजन । **देवपूज्य**-(सं०पुं०) देवताओं से पूज्य, बृहस्पति ।

देवप्रतिकृति, देवप्रतिमा-(सं० स्त्री०) देवता की प्रतिमा ।

देवप्रयाग-(हिं०पुं०)-टेहरी राज्य के अन्तर्गत एक पुण्य स्थान ।

देवप्रश्न-(सं०पुं०)शुभाशुभ संबंधी प्रश्न ।

देवप्रसूत-(सं०वि०)जो देवता से उत्पन्न हुआ हो ।

देवप्रिय-(सं० पुं०) पीली भंगरैया, अगस्त्य का वृक्ष, नागवल्ली लता, सम्राट् अशोक की एक उपाधि ।

देववधू-(सं०स्त्री०) अप्सरा ।

देवबन्द-(हिं०पुं०) घोड़े के छाती पर की एक शुभ भौंरी ।

देवबन्धु-(सं०पुं०)एक ऋषि का नाम ।

देवबला-(सं० स्त्री०) सहदेइया नामक बूटी ।

देवबलि-(सं०पुं०) देवता के निमित्त बलि या उपहार ।

देवबाहु-(सं० पुं०) एक यदुवंशीय राजा का नाम ।

देवब्रह्म-(सं०पुं०) नारद ऋषि का एक नाम । **देवब्राह्मण**-(सं०पुं०) वह ब्राह्मण,जो किसी देवता की पूजा करके अपनी जीविका चलाता है ।

देवभवन-(सं०नपुं०) स्वर्ग, पीपल का वृक्ष, देवालय ।

देवभाग-(सं०पुं०) किसी सम्पत्ति या वस्तु का वह अंश जो देवताके लिये निकाला गया हो,देवताओं का भाग ।

देवभाषा-(सं०स्त्री०) संस्कृत भाषा ।

देवभिषक्-(सं०पुं०) अश्विनीकुमार ।

देवभीति-(सं०स्त्री०) देवताओं का भय

देवभू-(सं०पुं०) देवता, स्वर्ग । **देवभूति**-(सं०स्त्री०) देवताओं का ऐश्वर्य, मन्दाकिनी । **देवभूमि**-(सं० स्त्री०) देवताओं की प्रिय भूमि, स्वर्ग ।

देवभृत्-(सं०पुं०) विष्णु, इन्द्र ।

देवभोज्य-(सं०नपुं०) अमृत ।

देवमञ्जर-(सं०नपुं०) कौस्तुभ मणि ।

देवमणि-(सं०नपुं०) कौस्तुभ मणि,सूर्य ।

देवमत-(सं०वि०) देवताओं की सम्मति, एक ऋषि का नाम ।

देवमन्दिर-(सं०पुं०) जिस घर में किसी देवता की मूर्ति स्थापित हो, देवालय, ठाकुरद्वारा ।

देवमर्त्या-(सं०स्त्री०) महाभेदा ।

देवमाता-(सं० स्त्री०) देवताओं की माता, अदिति ।

देवमादन-(सं०पुं०) वह सोम जिसको पीकर देवता मोहित हो जाते हैं ।

देवमान-(सं०नपुं०) काल की गणना में देवताओं का मान, यथा एक सौर वर्ष देवताओं के एक दिन के बराबर होता है । **देवमानक**-(सं०पुं०)कौस्तुभ मणि । **देवमाया**-(सं०स्त्री०) परमेश्वर की माया जो अविद्या रूप में सब प्रकार के बन्धन का कारण होती है । **देवमार्ग**-(सं०पुं०) देखो देवपथ ।

देवमास-(सं०पुं०) गर्भाष्टम, गर्भ का आठवां महीना, तीस वर्ष का काल ।

देवमित्र-(सं०पुं०) शाकल्य ऋषि का एक नाम, अर्जुनवृक्ष,मदार का पेड़ ।

देवमुनि-(सं०पुं०) नारदादि ऋषि ।

देवयजन-(सं०नपुं०) यज्ञ की वेदी, यह स्थान जहां यज्ञ किया जाता है पृथ्वी ।

देवयजि-(सं०पुं०) देवता के निमित्त यज्ञ करने वाला । **देवयज्ञ**-(सं०पुं०) पंच यज्ञोंके अन्तर्गत होम आदि कर्म ।

देवयज्या-(सं० स्त्री०) देवताओं के निमित्त यज्ञ ।

देवयात-(सं०पुं०) जिसने देवत्व प्राप्त किया हो, जो देवता हो गया हो ।

देवयात्रा-(सं०स्त्री०) देवताओं की यात्रा

देवयान-(सं० नपुं०) देवताओं का विमान, शरीर के अलग होने के उपरान्त जीवात्मा के जाने के लिये दो मार्ग है, उनमें से वह मार्ग जिससे होता हुआ वह ब्रह्मलोक को जाता है । **देवयानी**-(सं० स्त्री०) दैत्यगुरु शुक्राचार्य की कन्या जो पहिले अपने पिता के शिष्य कच पर अनुरक्त हुई थी परन्तु जब असुरों ने कच को मार डाला तब उसका विवाह राजा ययाति से हुआ ।

देवयावन्-(सं०वि०) देवताओं के उद्देश से यात्रा करने वाला ।

देवयुग-(सं०पुं०) सत्य युग ।

देवयोनि-(सं०पुं०) देवजाति जिनके अन्तर्गत विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक और सिद्ध हैं ।

देवयोषा-(सं०स्त्री०) देवताओं की स्त्री

देवर-(सं० पुं०) पति का छोटा भाई,

देवरक-(सं०पुं०) पति का छोटा भाई

देवरक्षित-(सं०वि०) देवताओं से रक्षा किया हुआ । **देवरक्षिता**-(सं० स्त्री०) देवकी की बहिन का नाम ।

देवरथ-(सं०पुं०) सूर्य का रथ,देवताओं का रथ, विमान ।

देवरहस्य-(सं० नपुं०) देवताओं की गुप्त बात ।

देवरा-(हिं०पुं०) छोटा देवता, देवर ।

देवराज-(सं०पुं०) देवताओं के राजा इन्द्र । **देवराज्य**-(सं०पुं०, स्वर्ग ।

देवरात-(सं०पुं०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, एक प्रकार का सारस ।

देवरानी-(हिं०स्त्री०) देवर की स्त्री, पति के छोटे भाई की स्त्री, देवराज इन्द्र की रानी, शची ।

देवराय-(हिं० पुं०) देखो देवराज ।

देवर्षि-(सं०पुं०) नारद, अत्रि, मरीचि, भारद्वाज आदि ऋषि ।

देवल-(सं०पुं०) देवताओं की पूजा करके जीविका निर्वाह करने वाला, पुजारी, पंडा, देवर, नारद मुनि, धार्मिक पुरुष,एक स्मृतिकार का नाम (हिं०पुं०) देवमन्दिर, देवालय ।

देवलता-(सं० स्त्री०) नवमल्लिका, नेवारी की लता; उपजीविका के लिये देवपूजन ।

देवलोक-(सं०पुं०) स्वर्ग; भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम्-ये सातों देवलोक कहलाते हैं ।

देववक्त्र-(सं०नपुं०) देवताओं का मुख स्वरूप, अग्नि ।

देववती-(सं० स्त्री०) ग्रामणी नामक गन्धर्व की माता का नाम, यह सुकेश नामक राक्षस की पत्नी थी ।

देववर्णिनी-(सं०स्त्री०) भारद्वाज मुनि की कन्या का नाम ।

देववर्त्म-(सं०नपुं०) आकाश ।

देववर्धकि-(सं०पुं०) विश्वकर्मा ।

देववर्ष-(सं०नपुं०) एक द्वीप का नाम

देववला (सं०स्त्री०) सहदेई नामक बूटी

देववल्लभ-(सं०वि०) देवताओं के प्रिय, (पुं०) केसर ।

देववल्ली-(सं० स्त्री०) संस्कृत भाषा, आकाश वाणी । **देववाणी**-(सं०स्त्री०) देखो देववल्ली, संस्कृत भाषा ।

देववात-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम

देववायु-(सं०पुं०) बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम ।

देववाहन-(सं० नपुं०) देवताओं का वाहन, (पुं०) अग्नि ।

देवविद्या-(सं०स्त्री०) निरुक्त विद्या ।

देवविहाग-(हिं०पुं०) एक राग का नाम

देववीति-(सं०स्त्री०)देवताओं का भक्षण

देववृक्ष-(सं०पुं०)मदार का पेड़, गुग्गुल

देवव्रत-(सं० पुं०) एक प्रकार का सामगान ।

देवव्रती-(सं०पुं०) देवता के निमित्त व्रत करने वाला ।

देवशत्रु-(स०पुं०) देवताओं का शत्रु, असुर।
देवशर्मन्-(स०पु०) ब्राह्मण जाति की एक उपाधि।
देवशाक-(सं०पुं०)एक सङ्कर राग का नाम
देवशिल्पी-(सं०पुं०) विश्वकर्मा।
देवशुनी-(सं०स्त्री०) देवलोक की कुतिया, सुरमा।
देवशेखर-(स०पुं०) दौने का पौधा; (नपुं०) देवता का मस्तक।
देवशेष-(सं०नपुं०) अनन्त।
देवश्रवा-(सं०पुं०)विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, वसुदेव के भाई का नाम।
देवश्री-(स०पुं०) यज्ञ, (स्त्री०) देवताओं की लक्ष्मी।
देवश्रुत-(सं०वि०) देवताओं में प्रसिद्ध
देवश्रुत-(सं०पुं०) ईश्वर, नारद, शुक्राचार्य के एक पुत्र का नाम।
देवश्रेणी-(सं०स्त्री०) देवताओं की पंक्ति, मूर्वा लता।
देवश्रेष्ठ-(स०वि०) देवताओं में श्रेष्ठ; (पुं०) बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।
देवसख-(सं०पुं०) देवताओं का मित्र।
देवसखा-(सं०पुं०) उत्तर दिशा का एक पर्वत।
देवसंगीतयोनि-(सं०पुं०) नारद ऋषि।
देवसत्र-(स०पुं०) एक यज्ञ का नाम।
देवसत्व-(स०वि०) देवताओं के समान स्वभाव वाला।
देवसद्म-(सं०नपुं०) देवस्थान, देवालय; देवसदन-(सं०नपुं०) देवालय, स्वर्ग।
देवसम-(सं०नपुं०) देवालय, ठाकुरद्वारा।
देवसभा-(सं० स्त्री०) देवताओं का समाज, राजसभा, सुधर्मा नामक सभा जिसको मय दानव ने बनाया था।
देवसभ्य-(स०वि०) जुए में उपस्थित।
देवसमाज-(सं० पुं०) सुधर्मा नाम की सभा।
देवसरित्-(सं०स्त्री०) गङ्गा नदी।
देवसर्षप-(स०पुं०)एक प्रकारकी सरसों
देवसाक-(हिं०पुं०) देखो देवशाक।
देवसात्-(सं०अव्य०) देवता के निमित्त अर्पण किया हुआ।
देवसायुज्य-(सं०नपुं०) देवत्व प्राप्ति
देवसार-(सं० पुं०) इन्द्र ताल के छ भेदों में से एक।
देवसावर्णि-(सं०पुं०)तेरहवें मनु का नाम
देवसूरि-(सं० पु०) एक प्रसिद्ध जैन आचार्य का नाम।
देवसृष्ट-(सं०वि०)देवताओं का बनाया हुआ; देवसृष्टा-(सं०स्त्री०)मद्य, मदिरा
देवसेना-(सं०स्त्री०) देवताओं का सैन्य, प्रजापति की एक कन्या जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी, शिशुओं का पालन करनेवाली षष्ठी देवी; देवसेनापति-(सं०पु०) स्कन्द, कार्तिक
देवस्थान-(सं०पुं०) देवताओं के रहने का स्थान, देवालय, देवमन्दिर, ठाकुर द्वारा। देवस्व-(सं० नपुं०) देवप्रतिमा के लिये अर्पण की हुई सम्पत्ति।
देवहंस-(हिं०पुं०)एक प्रकारका बत्तक।
देवहरिया-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की नाव
देवहव्य-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम।
देवहित-(सं०स्त्री०) देवताओं का हित।
देवहू-(स०स्त्री०) देवताओं की पुकार, अन्न से भरी हुई गाड़ी, बायाँ कान (वि०) देवताओं को पुकारने वाला,
देवहूति-(स०स्त्री०) स्वयंभुव मनु, की एक कन्या जिसका विवाह महर्षि कर्दम से हुआ था, सांख्यशास्त्र के कर्ता कपिल मुनि इनके पुत्र थे;
देवहूय-(सं०पुं०) देवता और राक्षसों का युद्ध। देवहेति-(सं०स्त्री०)देवास्त्र।
देवह्लद-(सं०पुं०) एक तीर्थ का नाम।
देवा-(स०स्त्री०)विजयसार, मूर्वा लता (हिं०वि०) देनेवाला ऋणी, देवाक्रीड-(स०पु०)देवताओं का बगीचा। देवागार-(स०पु०) देवताओं का स्थान, देवालय। देवगारिक-(स०वि०) देवालय में काम करनेवाला; देवाङ्गना-(स०स्त्री०) देवताओं की स्त्री, अप्सरा, देवाची-(स०स्त्री०) देवता का पूजन करने वाली; देवाजीव-(स० स्त्री०) पंडा, पुजारी; देवाजीवी-(स०वि०) देवताओं की पूजा करके जीविका चलाने वाला; देवाट-(स० पु०) हरिहर क्षेत्र का नाम; देवातिदेव-(स०पु०) विष्णु; देवात्मा-(स० पु०) देवस्वरूप, अश्वत्थ, पीपल; देवाधिदेव(सं० पु०) परमेश्वर, महादेव, इन्द्र; देवाधिप-(सं०पु०) इन्द्र।
देवानांप्रिय-(सं० पुं०) देवताओं को प्रिय, छाग, बकरा, मूर्ख, राजा अशोक की उपाधि।
देवाना-(हिं०वि०) देखो दीवाना।
देवानीक-(सं०पु०) देवताओं की सेना, सगरवंश के एक राजा का नाम।
देवानुचर-(सं०पु०)देवताओं के साथ चलने वाले, विद्याधर आदि। देवानुयायी-(सं०पु०) देखो देवानुचर।
देवान्तक-(सं०पुं०)एक प्रकारके राक्षस
देवान्धस-(सं० नपुं०) देवता का अन्न, अमृत।
देवान्न-(स०पु०) चरु, हवि।
देवापि-(सं०पुं०)पुरुवंशीय राजा प्रतीप के एक पुत्र का नाम।
देवाब-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लेई जो फटी हुई छत आदि पर लगाई जाती है।
देवाभियोग-(सं०पुं०)किसी दुष्ट देवता का शरीर में प्रवेश।
देवायतन-(सं० नपुं०) देव मन्दिर, ठाकुरद्वारा।
देवायुध-(सं०नपु०) इन्द्रधनुष जो बरसात के दिनों में आकाश में दीख पड़ता है। देवायुष-(स०नपुं०) देवताओं का जीवन काल। देवारण्य-(सं०नपुं०) देवताओं का बगीचा।
देवाराधन-(सं०पुं०) देवताओं की पूजा। देवारि-(सं०पुं०) देवताओं के शत्रु, असुर।
देवारी-(हिं०स्त्री०) देखो दिवाली।
देवार्पण-(सं०नपुं०) किसी वस्तु का दान जो देवता के निमित्त किया जावे। देवार्ह-(सं०वि०) देवता के निमित्त दान देने योग्य।
देवाल-(हिं०वि०) दाता, देने वाला।
देवालय-(स० पु०) स्वर्ग, देवगृह, ठाकुरद्वारा।
देवाला-(स०स्त्री०) एक रागिणी का नाम; देवाला-(हिं०पुं०)देखो दिवाला
देवालिया-(हिं०वि०) देखो दिवालिया
देवावतार-(सं०पुं०) देवता का अवतार
देववास-(स०पुं०) स्वर्ग,सुमेरु पर्वत, देवालय।
देवाश्व-(सं०पुं०) इन्द्र का घोड़ा, उच्चैः श्रवा।
देवाहार-(स०पुं०) देवता के योग्य आहार, अमृत।
देवाह्वय-(सं०पुं०) देवदार का वृक्ष।
देविका-(सं०स्त्री०) युधिष्ठिर की एक पत्नी का नाम, धतूरा (वि०) देव संबंधी।
देविया-(सं०पु०) धतूरे का पेड़।
देविल-(स०वि०) धार्मिक।
देवी-(सं०स्त्री०) देवपत्नी, देवता की स्त्री, दुर्गा, राजमहिषी, वह रानी जिसका राजाके साथ अभिषेक हुआ हो, पटरानी, एक सुगन्धित घास, ब्राह्मण के स्त्री की एक उपाधि, अतीस, हर्रे, पाठा, नागरमोथा, हुड़हुल, का फूल, सफ़ेद इन्द्रायण, मूर्वालता, देवीतन्त्र-(स०नपुं०) एक तन्त्र का नाम, देवीत्व-(सं०नपु०) देवी का भाव, देवीपुराण-(सं०नपुं०) वह उपपुराण जिसमें देवी के माहात्म्य का वर्णन है, देवीभागवत-(सं०नपुं०) वह पुराण (अथवा कुछ लोगों की गणना में उपपुराण) जिसमें बारह स्कन्ध और अठारह हजार श्लोक हैं, इसमे विस्तृत रूप से देवी का माहात्म्य वर्णन किया हुआ है, देवीभोया-(हिं०पु०) देवी भक्त, ओझा, देवीमाहात्म्य-(सं०नपुं०) दुर्गा देवी का माहात्म्य, देवीलता-(सं० स्त्री०) अनन्त मूल।
देवीवीर्य-(सं०नपुं०) गन्धक, देवीसूक्त-(सं०नपुं०) ऋग्वेद की शाकल संहिता का एक सूक्त जिसकी देवता "देवी" हैं।
देवृ-(सं०पुं०)देवर, पति का छोटा भाई
देवेज्य-(सं०नपुं०) देवताओं के आचार्य बृहस्पति।
देवेन्द्र-(सं०पुं०)देवताओं के राजा इन्द्र,
देवेश-(सं०पु०)देवताओं के राजाविष्णु महादेव, परमेश्वर।
देवेशय-(सं० स्त्री०) देवी पार्वती, देवेशी-(सं०स्त्री०)देवी, पार्वती, देवेश्वर-(सं०पु०) शिव, महादेव। देवेष्ट-(सं०वि०) देवताओं को प्रिय (पुं०) गुग्गुल।
देवै-(हि०स्त्री०) देवक।
देवैया-(हिं०वि०) देने वाला, दाता।
देवोत्तर-(सं०पुं०) वह सम्पत्ति जो किसी देवता के नाम पर अलग निकाल दी गयी हो।
देवोत्थान-(स०नपुं०) विष्णु भगवान् का कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन शेष की शय्या पर से उठना, डिठवन एकादशी।
देवोद्यान-(सं०नपुं०) देवताओं के चार उद्यान या बगीचे जिनके नाम, नन्दन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र हैं।
देवोन्माद-(सं०पुं०) एक प्रकार का उन्माद या पागलपन जिसमें रोगी पवित्र रहता है, सुगन्धित फूलों की माला पहिरता है, आँखें बन्द नहीं करता और संस्कृत बोलता है, यह रोग देवता के कोप से उत्पन्न होता है।
देव्य-(सं०नपुं०) देखो देवत्व।
देव्या-(सं०स्त्री०) मूरा, ब्राह्मी बूटी।
देव्युन्माद-(सं०पुं०) एक प्रकार का उन्माद जिसमें पक्षाघात हो जाता है।
देश-(स०पुं०) पृथ्वी का वह भाग जिसका कोई विशिष्ट नाम हो और जिसके अन्तर्गत अनेक नगर ग्राम आदि हों, जनपद, न्याय अथवा वैशेषिक के अनुसार वह दिग्द्रव्य जिसके आगे पीछे, ऊपर नीचे, उत्तर दक्षिण आदि दिशाओं का ज्ञान होता है, सम्पूर्ण जाति का एक राग, शरीर का कोई अङ्ग, स्थान जगह, वह भूभाग जो एक राजा के शासन में हो अथवा जहां शासन में हो अथवा जहाँ शासन पद्धति एक हो।
देशक-(सं०वि०) उपदेश करने वाला,
देशकली-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम; देशकार-(सं०पुं०) एक सम्पूर्ण जाति का राग; देशकारी, देशगान्धार-(सं०) एक राग का नाम;
देशज-(सं०वि०) देशजात, देश में उत्पन्न; देशज्ञ-(हिं०पुं०) शब्द के तीन विभागों में से एक जो न तो शुद्ध संस्कृत हो, न संस्कृत का अपभ्रंश हो परन्तु किसी देश में बोले जाने के कारण भाषा में प्रचलित हो गया हो। देशज्ञ-(सं०पु०) वह जो देश की वार्ता जानता हो। देशधर्म-(सं०पुं०) देश की रीति के अनुसार व्यवहार। देशना-(सं०स्त्री०) नियोग, एक विधि, देशनिकाला-(हिं०पुं०) देश के बाहर निकाले जाने का दण्ड, देशपरिच्छन्न-(स०वि०) सर्वव्यापी, जो सब स्थान में फैला हो,
देशपाली-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम, देशभाषा-(सं०स्त्री०) किसी देश,

या प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा; **देशमल्लार**-(हिं०पुं०) एक सम्पूर्ण जाति का राग। **देशराज**-(सं०पु०) आल्हा ऊदल के पिता का नाम, यह राजा परमाल के सन्तानों में से थे।

देशरूप-(सं०वि०) उचित योग्य। **देशसमाख्य**-(सं०नपुं०) इन्द्रजव।

देशस्थ-(सं०वि०) देश में रहने वाला, (पु०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों का एक भेद।

देशाँकी-(हिं०स्त्री०)रागिणी का एक भेद

देशा-(सं०पु०) एक गन्धर्व का नाम।

देशाका,देशाखी-(सं०स्त्री०) एक रागिणी विशेष।

देशाचार-(सं०पुं०) देश की चाल या व्यवहार।

देशाटन-(सं०पुं०) देशभ्रमण, अनेक देशों में यात्रा।

देशान्तर-(सं०नपुं०) देशभेद, परदेश, विदेश, भूगोल में उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव तक गई हुई मध्य रेखा से पूरब या पच्छिम की ओर की दूरी, लम्बांश।

देशिक-(सं०पु०) यात्री, पथिक, बटोही, उपदेश करने वाला गुरु। **देशित**-(सं०वि०) जिससे उपदेश लिया गया हो। **देशिनी**-(सं०स्त्री०) अंगूठे और मध्यमा के बीच की अंगुली, तर्जनी नामक अंगुली, सूची।

देशी-(हिं०वि०) देशीय, देश का, देश संबंधी, अपने देश का बना हुआ, स्वदेश में उत्पन्न, (सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम। **देशीय**-(सं०वि०) देश का, अपने देश का उत्पन्न या बना हुआ। **देशीय बराड़ी**-(हिं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।

देश्य-(सं०नपुं०) पूर्व पक्ष, (वि०) देश संबंधी, देश का।

देष्ठ-(सं०वि०) अति दानी, बड़ा दान करने वाला।

देस-(हिं० पुं०) देखो देश; **देसकार**-(हिं०पुं०) देखो देशकार; **देसवाल**-(हिं०वि०) स्वदेश का, जो अपने ही देश का हो, (पु०) एक प्रकार का सन; **देसवाली**-गुजराती ब्राह्मणों का एक भेद।

देसाई-महाराष्ट्र या गुर्जर ब्राह्मणों का एक कुल नाम।

देसावर-(हिं०पुं०) देशान्तर, परदेश, विदेश। **देसावरी**-(पुं०) बाहरी।

देसी-(हिं० वि०) स्वदेशी, अपने देश का।

देह-(सं०पुं०,नपु०) शरीर, तनु तन, शरीर का कोई अङ्ग, जीवन, मूर्ति, चित्र; **देह छूटना**-मृत्यु होना; **देह छोड़ना**-मरना। **देह धरना**-शरीर धारण करना; **देह कर्ता**-(सं०पुं०) ईश्वर, सूर्य; **देहकृत्**-(सं०वि०) परमेश्वर; **देहकोष**-(सं०पुं०) त्वचा, चमड़ा; **देहक्षय**-(सं०पुं०) शरीर का नाश, रोग; **देहज**-(सं० पुं०) तनुज, पुत्र, बेटा, (स्त्री०) पुत्री, बेटी (वि०) जो शरीर से उत्पन्न हो; **देहत्याग**-(सं०पुं०) प्राणनाश, मृत्यु। **देहद**-(सं०वि०) देहदाता (पुं०) पारद पारा। **देहधारक**-(सं०वि०) शरीर धारण करने वाला, (नपुं०) आहार, भोजन, अस्थि, हड्डी। **देह धारण**-(सं०नपुं०) प्राण धारण,शरीर रक्षा; **देहधारी**-(सं०वि०) शरीर को धारण करने वाला; **देहधि**-(सं०पुं०) पक्षियों का पंख; **देहधृक्**-(सं०पुं०) वायु, पवन, हवा; **देह पर्याप्ति**-(सं० स्त्री०) शरीर का रस, रक्त, मांस आदि की उत्पत्ति; **देहपात**-(सं०पुं०) मृत्यु; **देहभाज्**-(सं०वि०) जीवधारी, शरीर को धारण करने वाला; **देहभुज्**-(सं०वि०) देहाभिमानी जीव, सूर्य; **देहभृत्**-(सं० पुं०) अपने अपने कर्म के अनुसार देह का अधिष्ठाता, जीव, **देहम्भर**-(सं०वि०) देहपोषक, शरीर का पोषण करने वाला; **देहयात्रा**-(सं०नपुं०) देह के रक्षण के उद्यम, भोजन, भरण, मृत्यु; **देहर**-(हिं०स्त्री०) नदी के किनारे की नीची भूमि; **देहरा**-(सं०पुं०) देवालय, टाकुरद्वारा **देहरी**-(हिं०स्त्री०) देखो देहली। **देहलक्षण**-(सं०नपुं०) सामुद्रिक शास्त्र, शरीर के ऊपर का चिह्न।

देहला-(सं०स्त्री०) मद्य।

देहली-(सं० स्त्री०) द्वार के चौखट के नीचे लगी हुई लकड़ी, देखो दिल्ली; **देहली दीपक**-(सं०पुं०) देहली पर रक्खा हुआ दीपक जो भीतर बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलता है, एक अर्थालङ्कार जिसमें कोई मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर लगता है; **देहली प्रदीप न्याय**-ऐसी बात जो दोनों ओर संकेत करती हो।

देहवन्त-(हिं०वि०) शरीरधारी (पुं०) देह धारण करने वाला मनुष्य।

देहवान्-(सं०वि०) शरीरधारी (पुं०) सजीव प्राणी। **देहवायु**-(सं०पुं०) देहस्थ पांच वायु जिनके नाम प्राण, अपान, व्यान, उदान तथा समान हैं। **देहशङ्कु**-(सं०पुं०) पत्थर का खम्भा। **देहसञ्चारिणी**-(सं०स्त्री०) कन्या, पुत्री, बेटी। **देहसाम्य**-(सं०नपुं०) शरीर की समता। **देहसार**-(सं०पु०) शरीर की धातु, मज्जा

देहातीत-(सं०पु०) वह ज्ञानी जिसको शरीर की ममता न हो। **देहात्मवादी**(सं०पुं०) शरीर को ही आत्मा समझने वाला। **देहात्मप्रत्यय**-(सं०पु०) शरीर को ही आत्मा समझने का अभिमान। **देहाध्यास**-(सं०पुं०) देह के धर्म को ही आत्मा समझने का धर्म। **देहान्त**-(सं०पु०) मृत्यु। **देहान्तर**- (सं० पु०) दूसरे शरीर की प्राप्ति,मृत्यु।

देहावरण-(सं०पुं०) चिड़ियों का पंख।

देहिका-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का कीड़ा

देही-(सं०पुं०) आत्मा, देहाधिष्ठात्री जीव।

देहेश्वर-(सं०पुं०) शरीर का अधिष्ठाता, आत्मा।

देहोद्भव-(सं०वि०) शरीर से उत्पन्न, देहजात।

दैउ-(हिं०पु०) देखो दैव।

दैक्ष-(सं०वि०) दीक्षा संबंधी।

दैर्घ्य-(सं०नपु०) लंबाई।

दैतेय-(सं०पुं०) दिति की सन्तान, दैत्य, (वि०) दिति से उत्पन्न।

दैत्य-(सं०पुं०) कश्यप ऋषि के वे पुत्र जो दिति के गर्भ से उत्पन्न थे जो देवताओं के विरोधी थे, असुर, राक्षस, बड़ा लंबा चौड़ा अति बलवान् मनुष्य, दुराचारी व्यक्ति, लोहा; **दैत्यगुरु**-(सं० पुं०) शुक्राचार्य; **दैत्यदानवमर्दन**-(सं० पुं०) इन्द्र; **दैत्यदेव**-(सं० पुं०) वरुण, वायु; **दैत्यद्वीप**-(सं०पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम; **दैत्यग्रह**-(सं०पु०) असुर ग्रह; **दैत्यधूमिनी**-(सं०स्त्री०) तारा देवी की तान्त्रिक उपासना में एक मुद्रा का नाम; **दैत्यनिसूदन**-(सं०पु०) विष्णु; **दैत्यपति**-(सं०पु०) हिरण्यकश्यपु; **दैत्यपुरोजस्**-(सं०पुं०) दैत्यों के पुरोहित, शुक्राचार्य। **दैत्यपूज्य**-(सं०पुं०) देखो दैत्य पुरोधरा; **दैत्यमाता**-(सं०स्त्री०) दैत्यों की माता दिति; **दैत्यमेदज**-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, गुग्गुल; **दैत्ययुग**-(सं०नपुं०) दैत्यों का युग जो बारह वर्ष का माना जाता है; **दैत्यसेना**-(सं० स्त्री०) प्रजापति की एक कन्या का नाम; **दैत्यहन्**-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

दैत्या-(सं०स्त्री०) दैत्य जाति की स्त्री,

दैत्यारि-(सं०पुं०) विष्णु, इन्द्र;

दैत्याहोरात्र-(सं०पुं०) दैत्यों की एक दिन रात जो मनुष्य के एक वर्ष के बराबर होता है।

दैत्येज-(सं०पुं०)दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य

दैत्येज्य-(सं०पुं०) शुक्राचार्य,

दैत्येंद्र-(सं०पुं०)दैत्यों के राजा, गन्धक।

दैत्येन्द्ररक्त-(सं०नपुं०) हिंगुल।

दैन-(सं०नपु०) दीन होने का भाव, दीनता, (वि०) दिन सम्बन्धी, दिन का। **दैनन्दिन**-(सं० वि०) प्रतिदिन का, प्रति दिन होनेवाला।

दैनं दिनी-(सं०स्त्री०) दिनचर्या पुस्तिका

दैनार-(सं० वि०) दीनार के सदृश सुवर्ण वस्तु।

दैन-(हिं०पुं०) दैत्य, दीनता।

दैनिक-(सं० वि०) दिन सम्बन्धी, प्रति दिन होनेवाला, प्रति दिन का (नपुं०) एक दिन का वेतन।

दैन्य-(सं०पु०) दीनता, दरिद्रता, काव्य के संचारी भावों में से वह भाव जिसमें दुःख आदि से विनीत भाव आ जाता है।

दैर्घ्य-(सं०नपु०) दीर्घता, लम्बाई।

दैयत-(हिं०पुं०) देखो दैत्य।

दैया-(हिं०पुं०) दई, दैव, (अव्य०) भय, आश्चर्य या क्लेश का सूचक शब्द जिसको स्त्रियाँ अधिक व्यवहार करती हैं।

दैव-(सं० वि०) देवता सम्बन्धी, जो कुछ देवता के विषय में किया जाय, देवता द्वारा होनेवाला, देवता को अर्पित (वि०) प्रारब्ध, भाग्य, विधाता, ईश्वर, आकाश; **दैव बरसना**-वर्षा होना; **दैवक**-(सं०पुं०) दैव, प्रारब्ध।

दैवकी-(सं० स्त्री०) वसुदेव की पत्नी, श्री कृष्ण की माता; **दैवकीनन्दन**-(सं०पुं०) वसुदेव, श्रीकृष्ण।

दैवकोविद-(सं०पुं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी, वह विद्वान जो देवता का विषय जानता हो। **दैवगति**-(सं० स्त्री०) ईश्वरी घटना, प्रारब्ध, भाग्य। **दैवचिन्तक**-(सं०पुं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।

दैवज्ञ-(सं०पुं०) गणक, ज्योतिषी।

दैवज्ञा-(सं०स्त्री०)ज्योतिषी की स्त्री।

दैवत-(सं०नपुं०) देवता, देवतासमूह, (वि०) देवता सम्बन्धी।

दैवतन्त्र-(सं०वि०) भाग्य के आधीन।

दैवतपति-(सं०पुं०) इन्द्र।

दैवतप्रतिमा-(सं०स्त्री०) देवता की मूर्ति या प्रतिमा।

दैवति-(सं०पुं०) देवता की सन्तति।

दैवतीर्थ-(सं०पुं०) अंगुलियों की नोक।

दैवत्य-(सं०पुं०) देवता।

दैवदीप-(सं०पु०) चक्षु, नेत्र, आँख।

दैवदुर्विपाक-(सं०पुं०) दैव की प्रतिकूलता, अभाग्य।

दैवपर-(सं०वि०) भाग्य पर भरोसा करनेवाला। **दैवप्रमाण**-(हिं०वि०) भाग्याधीन।

दैवप्रश्न-(सं०पुं०) शुभाशुभ जानने की जिज्ञासा, देववाणी।

दैवमति-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम।

दैवयुग-(सं०नपुं०) मनुष्यों के चार युगों के बराबर एक युग,दिव्य युग। **दैवयोग**(सं०पुं०) आकस्मिक फल, संयोग।

दैवराति-(सं० पुं०) जनक राजा के पिता का नाम। **दैवलेखक**-(सं०पुं०) मुहूर्तज्ञ, ज्योतिषी, गणक।

दैववंश-(सं०पुं०) देवताओं का वंश।

दैववर्ष-(सं०पुं०)देवताओं का एक वर्ष।

दैववश-(हिं०क्रि०वि०) दैवयोग से **दैववशात्**- (हिं०क्रि०वि०) अकस्मात्। **दैववाणी**-(सं०स्त्री०) आकाश वाणी, संस्कृत वाक्य। **दैववादी**-(सं०वि०) वह जो भाग्य के भरोसे रहता हो, निरुद्योगी, आलसी। **दैवविद**-(सं०पुं०) गणक,ज्योतिषी। **दैवविवाह**-(सं०पुं०) स्मृतियों में लिखे हुए आठ प्रकार के विवाहों में से एक। **दैवश्राद्ध**-(सं०पुं०) देवताओं के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध। **दैवसर्ग**-(सं०पुं०) देवताओं

की सृष्टि जिसके अन्तर्गत-ब्राह्मी, ऐन्द्र, पैत्र, गन्धर्व यक्ष, राक्षस और पैशाच हैं। **दैवसृष्टि**-(सं०स्त्री०) ब्रह्मा की बनाई हुई देवताओं की सृष्टि।
दैवहीन-(सं०वि०) जिसके भाग्य में कोई शुभ लक्षण न हो।
दैवाकरि-(सं०पुं०) शनि,यम(स्त्री०),यमुना
दैवागत-(सं०वि०) सहसा होने वाला, आकस्मिक।
दैवागारिक-(सं०वि०) जो देवालय में नियुक्त हो।
दैवात्-(सं०अव्य०)अकस्मात्, अचानक।
दैवात्पत्य-(सं०पुं०) अचानक होने वाला अनर्थ।
दैवाल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षि।
दैवासुर-(सं०नपुं०) देवता और असुर की शत्रुता।
दैवाहोरात्र-(सं०पुं०) देवताओं का एक दिन जो मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है।
दैविक-(सं०वि०) देवता संबंधी, देवताओं के उद्देश्य से किया हुआ।
दैवी-(सं०स्त्री०) देवता संबन्धी, देवकृत, देवताओं की की हुई,आकस्मिक,प्रारब्ध से होने वाली, सात्विक; **दैवीगति**-(सं०स्त्री०) भावी,प्रारब्ध, ईश्वरी बात
दैवोद्यान-(सं०नपुं०)देवताओं का बगीचा
दैवोपहतक-(सं०वि०) हतभाग्य, अभागा
दैव्य-(सं०नपुं०) देवता, भाग्य, नसीब, (वि०) देवता सबन्धी।
दैशिक-(सं०वि०) देश संबंधी,देशकृत।
दैष्टिक-(सं० वि०) भाग्य के भरोसे रहने वाला।
दैहिक-(सं०वि०)शरीर संबधी,शारीरिक, शरीर से उत्पन्न।
दोंकना-(हिं० क्रि०) गुर्राना।
दोंचना-(हिं०क्रि०) दबाव में डालना।
दोंकी-(हिं०स्त्री०) धौंकनी।
दोर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सर्प।
दो-(हिं०वि०) तीन से एक कम, एक और एक; **दोएक, दोचार**-अल्प संख्या का; **दोचार होना**-भेंट मुलाकात होना; **आँखें दोचार होना**-साक्षात् होना; **दो दिनका**-थोड़े काल का।
दोइ-(हिं०वि०) दो संख्या का, दो।
दोउ, दोऊ-(हिं०वि०) दोनों।
दोक-(हिं०पुं०) दो वर्ष का बछवा।
दोकला-(हिं०पुं०) दो कल या पेंच का ताला, एक प्रकार की पुष्ट बेड़ी।
दोकोहा-(हिं०पुं०) वह ऊंट जिसकी पीठ पर दो ककुद (कूबड़) हों।
दोख-(हिं०पुं०) देखो दोष।
दोखना-(हिं०क्रि०) दोष लगाना; **दोखी**-(हिं०वि०) देखो दोषी।
दोखंभा-(हिं०पुं०) बिना कुल्फी का नैचा
दोगंग-(हिं०स्त्री०) दो नदियों के बीच का प्रदेश।
दोगण्डी-(हिं०वि०) उपद्रव करने वाला, उत्पादि।
दोगा-(हिं० पुं०) छपे हुए मोटे देसी कपड़े का ओढ़ना, छूहने के लिये पानी में घोला हुआ चूना।
दोगाड़ा-(हिं०पुं०) दो नली की बन्दूक।
दोगुना-(हिं०वि०) देखो दुगना।
दोग्धव्य-(सं०वि०) दुहने योग्य।
दोग्धा-(सं०वि०) ग्वाला, अहीर, (वि०) दुहने वाला, दुहने योग्य। **दोग्ध्री**-(सं०स्त्री०) दुधार गाय।
दोघ-(सं०पुं०) दुहने वाला मनुष्य।
दोच-(हिं०स्त्री०)असमंजस, दुबधा, दुःख, कष्ट,दबाव। **दोचन**-(हिं०स्त्री०)दुबधा, असमंजस।
दोचना-(हिं०स्त्री०)किसी काम के करने के लिये बड़ा आग्रह करना, दबाव देना।
दोचित्ता-(हिं०वि०) जिसका चित्त एक विषय में स्थिर न हो, उद्विग्न चित्त का; **दोचित्ती**-(हिं० स्त्री०) चित्त की अस्थिरता, उद्विग्नता।
दोज-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितिया, दूज।
दोजानू-(हिं०क्रि०वि०) घुटने के बल।
दोतला, दोतल्ला-(हिं०वि०) दो खण्ड का (घर)।
दोतही-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चादर।
दोतारा-(हिं०पुं०)एक प्रकार का दुशाला, दो तारों का एक प्रकार का बाजा।
दोदना-(हिं०क्रि०) कही हुई बात को अस्वीकार करना।
दोदरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष।
दोदलक-(हिं०पुं०) चने की दाल या तरकारी।
दोदा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा कौवा।
दोदाना-(हिं०क्रि०) किसी को दोदने में प्रवृत्त करना।
दोदामी-(हिं०वि०) दखो दुदामी।
दोदिन-(हिं० पुं०) रीठे की जाति का एक वृक्ष।
दोदिला-(हिं०वि०) दोचित्ता, जिसका चित्त एकाग्र न हो। **दोदिली**-(हिं०स्त्री०) चित्त की अस्थिरता।
दोदुल्यमान-(सं०वि०) बारंबार झूलने वाला।
दोध-(सं०पुं०) गोप, ग्वाला, अहीर।
दोधक-(सं०नपुं०) एक वर्णवृत्त का नाम
दोधार-(हिं०पुं०) भाला, बरछा।
दोधारा-(हिं०वि०) जिस शस्त्र के दोनों ओर धार हों, (पुं०) एक प्रकार का थूहर का पौधा।
दोधूयमान-(सं०वि०) बारंबार काँपने वाला।
दोन-(हिं०पुं०) भूमि का वह नीचा भाग जो दो पर्वतों के बीच में हो, दो नदियों के बीच का प्रदेश, दो नदियों का संगम स्थान, दो वस्तुओं का मेल, धान सींचने का एक प्रकार का खोखला किया हुआ लंबा काठ।
दोनला, दोनली-(हिं०वि०) दो नाल या नली वाला।
दोना-(हिं०पुं०) कटोरी के आकार का पत्तों का बना हुआ पात्र। **दोनियाँ**-(हिं०स्त्री०) छोटा दोना।
दोनों-(हिं०वि०) उभय, एक और दूसरा
दोपंथी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की दोहरे खाने की जाली।
दोपट्टा-(हिं०पुं०) देखो दुपट्टा।
दोपल्का-(हिं०वि०) दो पल्ले का, (पुं०) दोहरा नगीना, एक प्रकार का कबूतर। **दोपलिया**-(हिं०वि०) देखो दोपल्ली। **दोपल्ली**-(हिं०वि०) दो पल्लेवाला, जिसमें दो पल्ले हों,(स्त्री०) दो टुकड़े कपड़ों को एक में सिलकर बनाई हुई टोपी।
दोपहर-(हिं० स्त्री०) प्रातःकाल और सन्ध्या के बीच का समय, मध्याह्नकाल।
दोपहरिया-(हिं०स्त्री०) देखो दोपहर।
दोपीठा-(हिं०वि०) जिस वस्त्र के दोनों ओर समान रंग रूप हों; (पुं०) कागज को एक ओर छापने के बाद दूसरी ओर छापना।
दोपौवा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का आधा भाग।
दोबल-(हिं०पुं०) अपराध, दोष।
दोवा-(हिं०पुं०) दुविधा।
दोभाषिया-(हिं०पुं०) देखो दुभाषिया।
दोमट-(हिं०स्त्री०) बालू मिली हुई मिट्टी।
दोमहला-(हिं० वि०) दो खण्ड का।
दोमरगा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का देसी मोटा कपड़ा।
दोमुँहा-(हिं०वि०) जिसके दो मुख हों, दोहरी चाल चलने वाला, कपटी; **दोमुहाँ साँप**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सांप जिसकी पोंछ मोटी होकर मुख के समान देख पड़ने लगती है; (वि०) कुटिल, कपटी। **दोमुँही**-हिं०स्त्री०) सोनारों का नक्काशी करने का एक अस्त्र।
दोय-(हिं० व०) दो, दोनों।
दोयरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष; **दोयल**-(हिं० पुं०) बया पक्षी।
दोरंगा-(हिं०वि०) जिसमें दो रंग हो, दो रंग वाला, दोनों ओर चलने वाला, वर्णसङ्कर, दोगला। **दोरंगी**-(हिं०स्त्री०) दोनों ओर चलने वाला, कपट, छल।
दोरक-(सं०पुं०) बीन का ताँत बाँधने की रस्सी।
दोरदण्ड-(हिं०वि०) देखो दुर्दण्ड।
दोरसा-(हिं०वि०) जिसमे दो तरह का स्वाद या रस हो, एक प्रकार का पीने का तमाखू जिसका धुवां कड़ुवा और मीठा मिला हुआ होता है; **दोरसा दिन**-ऐसा दिन जिसमें गरमी और सरदी दोनों रहती है।
दोराहा-(हिं०पुं०) वह स्थान जहां से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।
दोर्गुण्ड-(सं०पुं०) काठ की मुँगरी।
दोर्ग्रह-(सं०पुं०) हाथ डकड़ना, हाथ की पीड़ा।
दोर्ज्या-(सं० नपुं०) भुज के आकार की ज्या।
दोर्दण्ड-(सं०पुं०) बाहुरूप दण्ड,भुजदण्ड।
दोर्मध्य-(सं०पुं०) बाहु का मध्य भाग।
दोर्मूल-(सं०नपुं०) कक्ष, कोंख।
दोल-(सं०पुं०) हिंडोला, दोलना, झूला, डोली।
दोलड़ा-(हिं०वि०) जिसमें दो लड़ें हों।
दोलत्ती-(हिं०स्त्री०) देखो दुलत्ती।
दोला-(सं०स्त्री०) हिंडोला, झूला,डोली; **दोलायमान**-(सं०वि०) झूलता हुआ, हिलता हुआ; **दोलायुद्ध**-(सं०नपुं०) वह युद्ध जिसमें बारबार दोनों पक्षों की हार जीत रहती है।
दोलिका-(सं०स्त्री०) झूला,हिंडोला,डोली
दोलित-(हिं०वि०) चंचल, दोलायमान।
दोली-(सं०स्त्री०) देखो डोली।
दोलोत्सव-(सं०पुं०) वैष्णवों का एक उत्सव जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है।
दोहाबार-(सं०पुं०) बारह मात्रा का एक ताल।
दोश-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लाह जो रंग बनाने के काम में आती है।
दोशाला-(हिं०पुं०) देखो दुशाला।
दोष-(सं०पुं०) दूषण, अवगुण, बुरापन, अभियोग, कलंक लंछन। **दोष लगाना**-किसी के अवगुण या दोष को कहते फिरना।
दोष-(पुं०) पाप, शरीर का विकार जो वात, पित्त, कफ के कुपित होने से उत्पन्न होता है, गौ का बछवा, लगा हुआ अपराध, न्याय में वह त्रुटि जो तर्क के अवयवों का प्रयोग करने में होती है, मिथ्या ज्ञान से उत्पन्न होनेवाला मानसिक भाव प्रदोष काल, अपराध, साहित्य में वे बातें जो काव्यके गुण को कम कर देती हैं, द्वेष, शत्रुता। **दोषक**-(सं० पुं०) गाय का बच्चा, बछड़ा। **दोषग्राही**-(सं०वि०) दुर्जन, दुष्ट। **दोषघ्न**-(सं० वि०) कुपित दोषों की शान्ति करने वाली औषधि। **दोषज्ञ**-(सं०पुं०)चिकित्सक, वैद्य, पण्डित। **दोषता**-सं०स्त्री०) दोष का भाव। **दोषत्रय**-(सं०नपुं०) वात, पित्त और कफ। **दोषत्व**-(सं०नपुं०) दोष का धर्म या भाव।
दोषन-(हिं०पुं०) दूषण, दोष, अपराध।
दोषना-(हिं० क्रि०) अपराध या दोष लगाना। **दोषपत्र**-(सं०पुं०) वह कागज जिसमें अपराधी के अपराधों का विवरण लिखा रहता है। **दोषपाचन**-(सं०पुं०)कपित्थ, कैथ का पेड़।
दोषभेद-(सं०पुं०)आयुर्वेद के अनुसार बासठ प्रकार के दोषों में से एक।
दोषल-(सं०वि०) दोषयुक्त,जिसमें दोष हो
दोषा-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात, बाहु,

दोषाकर-(सं०पुं०) अवगुण की खान, चन्द्रमा; **दोषाक्लेशी**-(सं० स्त्री०) वनतुलसी; **दोषाक्षर**-(सं०पुं०) अभियोग, अपराध; **दोषातन**-(सं० वि०) रात्रिभव, रात मे होने वाला; **दोषातिलक**-(सं०पुं०) दीपक; **दोषान्ध**-(सं०पुं०) आंख का एक रोग; **दोषाभूत**-(सं० वि०) रात्रि मे परिणत; **दोषामान्द**-रात्रि समझकर; **दोषावस्तर**-(सं० पुं०) आलोक, प्रकाश; **दोषावह**-(सं०वि०) दोषपूर्ण, जिसमे दोष हो; **दोषास्य**-(सं०पुं०) प्रदीप; **दोषिक**-(सं०पुं०) रोग।

दोषिन-(हिं०स्त्री०) पाप करनेवाली स्त्री

दोषी-(सं०वि०) दोषयुक्त, अपराधी, अभियुक्त पापी।

दोषकदृश्य-(सं०वि०) वह जो गुणों को न देखकर केवल दोषों को खोजता फिरता है।

दोस-(हिं०पुं०) देखो दोष। **दोसदारी**-(हिं०स्त्री०) मित्रता।

दोसा-(हिं०पुं०) पानी मे उगने वाली एक प्रकार की घास।

दोसाध-(हिं०पुं०) देखो दुसाध।

दोसाल-(हिं०पुं०) बरमा देश की लकड़ी ढोने वाली हाथी।

दोसाला-(हिं० वि०) दोसाल, दो वर्ष पुराना।

दोसाही-(हिं०वि०) जिस वर्ष में दो फस्लें होती हों। **दोसूती**-(हिं०स्त्री०) बिछाने की मोटी चादर।

दोस्थ-(सं०वि०) जो बहुत दूर हो (पुं०) खेलने वाला।

दोह-(सं० पु०) दुहने का बरतन, दूध, दोहन, दुहने का काम; देखो द्रोह।

दोहगा-(सं०स्त्री०) उपपत्नी, रखनी।

दोहज-(सं०नपुं०) दुग्ध, दूध।

दोहड़िका-(सं०स्त्री०) एक वर्णवत्त का नाम।

दोहता-(हिं०पुं०) कन्या का पुत्र, नाती।

दोहत्थड़-(हिं०स्त्री०) वह थप्पड़ जो दोनों हाथों से मारा जाय। **दोहत्था**-(हिं०क्रि०वि०) दोनो हाथों से, दोनों हाथों के द्वारा (वि०) जो दोनों हाथों से किया जाय।

दोहद-(सं०स्त्री०) गर्भवतीकी अभिलाषा या इच्छा, उकौना, वान्ति जो गर्भवती स्त्री को होती है, गर्भ का चिह्न; **दोहद लक्षण**-(सं०नपुं०)दोहदके लक्षण, गर्भ के लक्षण; **दोहदवती**-(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री।

दोहदान्विता-(सं०स्त्री०) देखो दोहदवती; **दोहन** (सं०नपु०) पशुओं के स्तन से दूध निकलना, दुहने का पात्र, दोहनी। **दोहना**-(हिं०क्रि०) दोष या ऐब निकालना। **दोहनी**-(सं०स्त्री०) दूध दूहने का मिट्टी का पात्र, दूध दूहने का काम; **दोहनी कुण्ड**-वह कुण्ड जहां श्रीकृष्ण गाय दूहते थे।

दोहर-(हि० स्त्री०) दो परतों की बनी हुई ओढ़ने की चादर।

दोहरना-(हिं० क्रि०) दूसरी आवृत्ति होना, दोबारा होना, दो परत किया जाना।

दोहरा-(हिं०वि०) जिसमे दो परत या तह हों, दुगना, (पुं०) पान के दो बिड़े जो एक पत्ते में लपेटे हों, दोहा नामक छन्द। **दोहराना**-(हिं०क्रि०) किसी बात को दुबारा करना, पुनरावृत्ति, किसी वस्तु की दो तह करना।

दोहरीपट-(हि० स्त्री०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति।

दोहल-(सं०पुं०) देखो दोहद। **दोहलवती**-(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री।

दोहला-(हिं० वि०) जिसने दो बार बच्चा दिया हो।

दोहली-(सं०स्त्री०) अशोक वक्ष, मदार का पेड़।

दोहा-(हिं०पुं०) हिन्दी का एक मात्रावृत्त छन्द, संकीर्ण राग का एक भेद।

दोहाई-(हिं०स्त्री०) देखो दुहाई।

दोहापयन-(सं०पुं०) गाय का दूध।

दोहाक, दोहाग-(हिं० पुं०) दुर्भाग्य, अभाग्य। **दोहागा**-(हिं०वि०) अभागा

दोहित-(सं०वि०) दूहा हुआ, (हिं०पुं०) दोहिता, नाती। **दोही**-(सं०वि०) दूहने वाला (पु०) गोप ग्वाला।

दोही-(हिं०पुं०) दोहे के तरह का एक छन्द।

दोह्य-(सं०वि०)दोहनीय, दूहने योग्य।

दौं-(हिं०अव्य०) अथवा देखो 'धौं'।

दौंकना-(हिं०क्रि०) दमकना, चमकना।

दौंचना-(हिं० क्रि०) दबाव डालकर लेना।

दौंरी-(हिं० स्त्री०) खेती की उपज के डंठलो में से दाना अलगाने के लिये इसको बैल के खुरों से कुचलवाना, बैलों के बाँधने की रस्सी, झुण्ड।

दौ-(हिं० स्त्री०) जगल की अग्नि, सन्ताप, जलन।

दौकूल-(सं०पु०)कपड़ेसे घिरा हुआ रथ

दौड़-(हि० स्त्री०) दौड़ने की क्रिया, द्रुतगमन, धावा, चढ़ाई, गति की सीमा, पहुंच, आयत, विस्तार, लम्बाई, सिपाहियों का वह दल जो अपराधियों को पकड़ने के लिये एक साथ जाता है, बुद्धि की गति, अधिक से अधिक जो उपाय किया जा सके; **दौड़ मारना या लगाना**-वेग पूर्वक गमन करना, लम्बी यात्रा करना; **मन की दौड़**-कल्पना; **दौड़ धूप**-(हिं० स्त्री०) प्रयत्न, परिश्रम, किसी काम के लिये इधर उधर फिरने की क्रिया; **दौड़ना**-(हिं०क्रि०) द्रुत गति से चलना, प्रवत्त होना, झुक पड़ना, उपाय करना, उद्योग करना व्याप्त होना,फैलना,छा जाना; **चढ़ दौड़ना**-आक्रमण करना, धावा करना; **दौड़ दौड़ कर आना**-बारंबार आना; **दौड़ादौड़**-हिं०क्रि०वि०) अविश्रान्त; **दौड़ादौड़ी**-(हिं०स्त्री०) अनेक मनुष्यों का एक साथ इधर उधर दौड़ना, व्यग्रता, आतुरता, घबड़ाहट, **दौड़ान**-(हिं०पुं०) दौड़ने की क्रिया या भाव, वेग, क्रम, झोंक, फेरा; । **दौड़ाना**-हिं०क्रि०) जल्दी जल्दी चलाना बारंबार आने जाने के लिये विवश करना, चलाना, पोतना फैलाना, फेरना, किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना।

दौत्य-(सं०नपुं०) दूतकर्म, दूत का काम

दौन-(हिं०पुं०) देखो दमन।

दौना-(हिं०पुं०)एक प्रकार का सुगन्धित पौधा, (हिं०क्रि०) दमन करना।

दौनागिरि-(हिं०पुं०) द्रोण-गिरि नामक पर्वत।

दौरना-(हिं०क्रि०) देखो दौड़ना।

दौरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का टोकरा

दौरात्म्य-(सं०नपुं०)दुर्जनता, दुष्टता।

दौरादौर-(हि० क्रि० वि०) धुन मे, तेजी के साथ।

दौराना-(हिं०क्रि०) देखो दौड़ाना।

दौरित-(सं०नपु०) क्षति, हानि।

दौरी-(हिं०स्त्री०) छोटी टोकरी।

दौर्ग-(सं०नपुं०) दुर्ग सबंधी,

दौर्गत्य-(सं०नपु०) दरिद्रता, दुःखित अवस्था।

दौर्गन्ध्य-(सं०नपुं०) दुर्गन्धता।

दुर्ग्रह-(सं०पु०) अश्वमेध यज्ञ।

दौर्ग्य-(सं०वि०) दुर्ग संबधी,

दौर्जन्य-(सं०नपुं०) दुर्जनत्व, दुर्जनता, दुष्टता, बुरा व्यवहार।

दौमनस्य-(सं०पु०)कुमन्त्रणा,बुरा विचार

दौर्य-(सं०पुं०) दूरी, अन्तर।

दौर्योधन-(सं०वि०) दुर्योधन संबन्धी।

दौर्बल्य-(सं०पुं०) दुर्बलता,

दौर्वसिस-(सं०नपुं०) एक उपपुराण का नाम।

दौर्वीण-(सं०नपुं०) स्वच्छन्दता।

दौहार्द-(सं० नपुं०) दुष्ट प्रकृति, बुरा स्वभाव।

दौहृदय-(सं०नपुं०) दुष्टता, नीचता।

दौलेय-(सं०पु०) कच्छप, कछुवा।

दौल्मि-(सं०पु०) इन्द्र।

दौवारिक-(सं० पु०) द्वारपाल, द्वाररक्षक, डचोढीदार।

दौश्चर्म्य-(सं० नपुं०) जन्म ही से होने वाला एक रोग।

दौष्कुल-(सं०वि०) निन्दित कुल का।

दौष्कृत्य-(सं० नपुं०) दुष्टता, नीचता।

दौहिक-(सं०वि) प्रतिदिन दूहने योग्य।

दौहित्र-(सं०पुं०) लड़की का पुत्र, नाती

दौहृद-(सं०पु०) देखो दोहद।

द्यावाक्षमा-(सं०स्त्री०)स्वर्ग और पृथ्वी।

द्यावापृथ्वी-(सं०स्त्री०) सूर्य और पृथ्वी

द्यु-(सं०नपुं०) स्वर्ग, आकाश, दिन, अग्नि; सूर्य लोक; **द्युकारि**-(सं०पुं०) काक, कौवा; **द्युग**-सं०पु०) पक्षी, चिड़िया। **द्युगत्**-(सं०नपुं०) शीघ्र।

द्युचर-(सं०पु०) ग्रह, पक्षी। **द्युत**-(सं०वि०) प्रकाशवान्;**द्युतान**-(सं०वि०) चमकीला।

द्युति-सं०स्त्री०)दीप्ति, कान्ति, चमक, शोभा, देह का लावण्य, रश्मि, किरण। **द्युतिकर**-(सं०वि०)प्रकाश उत्पन्न करने वाला। **द्युतर**-(सं०पुं०) कल्पतरु; **द्युतित**-(सं०वि०) चमकता हुआ **द्युतिधर**-(सं०वि०) प्रकाश धारण; करने वाला। **द्युतिर्मणि**-(सं०पु०) मदार का वृक्ष। **द्युतिमत्**-(सं०वि०) चमकदार।

द्युधुनि-(सं०वि०) गङ्गा नदी।

द्युतिमा-(सं० स्त्री०) तेज, प्रकाश।

द्यु निवास द्युनिवासी-(सं०पु०) देवता।

द्युपति-(सं०पुं०) सूर्य, इन्द्र। **द्युपथ**-(सं० पुं०) स्वर्ग का मार्ग। **द्युमणि**-(सं०पुं०)सूर्य मदार का पेड़। **द्युमत्**-(सं०वि०) कान्तियुक्त, चमकदार।

द्युमत्सेन-(सं०पुं०) सत्यवान् के पिता का नाम जो शाल्व देश के राजा थे।

द्युमयी-(सं०स्त्री०) विश्वकर्मा की कन्या का नाम।

द्युम्न-(सं०नपुं०) सूर्य, धन, अन्न।

द्युलोक-(सं०पु०) स्वर्ग लोक।

द्युषद-(सं०पुं०) देवता, नक्षत्र, धन।

द्युसद्म-(सं०पुं०) स्वर्ग।

द्युसरित् द्युसिन्धु-(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी।

द्यूत-(सं०नपु०) दांव बद कर खेला हुआ खेल, जुआ; **द्यूतकर**-(सं०पुं०) जुआ खेलने वाला, जुआरी। **द्यूतकारक**-(सं०वि०) जुआ खेलने वाला।

द्यूतिपूर्णिमा-(सं०स्त्री०) कोजागरी, आश्विन मास की पूर्णिमा; **द्यूतफलक**-(सं०पु०) वह चौकी जिसपर जूए की कौड़ी फेंकी जाय;**द्यूतिवृत्ति**-(सं०स्त्री०) जो जुआ खेलकर अपनी वृत्ति चलाता हो। **द्यूतभमि**-(सं०स्त्री०) जुआ खेलने का अड्डा।

द्यून-(सं० वि०) क्षीण।

द्यो-(सं०नपुं०) स्वर्ग, आकाश, आठ वसुओं में से एक।

द्योत-(सं०पु०) प्रकाश, आतप; **द्योतक**-(सं०वि०) प्रकाश करने वाला।

द्योतन-(सं०स्त्री०) प्रकाशन, (पुं०) दीप, दीया, दिग्दर्शन, दिखलाने का काम। **द्योति**-(हिं० स्त्री०) कान्ति; **द्योतित**-(सं०वि०) प्रकाशित।

द्योतभूमि-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, (स्त्री०) स्वर्ग और भूमि।

द्योहरा-(हिं०पुं०) देखो देवहरा।

द्योस-(हिं०पुं०) देखो दिवस, दिन।

द्रग-(हि० पुं०) दृग, नेत्र।

द्रगड़-(सं०पुं०) एक प्रकार का बाजा, दगड़ा।

द्रढमन्-(सं०पुं०) दृढ़ता, मजबूती।

द्रप्स-(सं०नपुं०)तक्र, मठा, रस, शुक्र।

द्रम्म-(सं०पुं०) सोलह पण की एक

प्राचीन मुद्रा ।

द्रव-(सं०पुं०) द्रवण, पलायन, दौड़,हँसी, बहाव, आसव, रस, वेग, गति, (वि०) आर्द्र, गीला, तरल, पिघला हुआ ।

द्रवक-(सं०नपुं०) क्षरण शील, बहने वाला । **द्रवज**-(सं०पुं०) गुड़, रससे बनाई जानेवाली वस्तु **द्रवण**-(सं०वि०) गमन, दौड़, क्षरण, बहाव, गरमी, पिघलने की क्रिया, हृदय पर करुणापूर्ण प्रभाव पड़ने का भाव ।

द्रवता-(सं०स्त्री०) पानी की तरह पतला होना या बहना **द्रवत्व**-(सं० नपुं०) द्रवता । **द्रवना**-(हिं०क्रि०) बहना, पसीजना, पानी की तरह बहना, दयापूर्ण होना

द्रवरस-(सं०नपुं०) गीला रस ।

द्रवरसा-(सं०स्त्री०) लाक्षा, लाह ।

द्रवाधार-(सं०पुं०) तरल पदार्थ रखने का पात्र ।

द्रविड़-(सं०पुं०)दक्षिण भारत के देश का नाम, इस देशका निवासी, ब्राह्मणों का एक भेद जिसके अन्तर्गत आन्ध्र,कर्णाटिक, गुर्जर, द्रविड़ और महाराष्ट्र है

द्रवड़ी-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम

द्रविण-(सं०नपुं०) धन, सोना, पराक्रम, बल ।

द्रविणक-(सं० पुं०) अग्नि की एक स्त्री का नाम ।

द्रवीकरण-(सं०नपुं०) गलने की क्रिया ।

द्रवीकृत-(सं० वि०) गलाया हुआ ।

द्रवीभाव-(सं०पुं०) गलने का भाव ।

द्रवीभूत-(सं० वि०) जो जल के समान पतला हुआ हो, कृपालु, दयालु ।

द्रव्य-(सं०नपुं०) वस्तु, वित्त, धन, पृथ्वी आदि नव पदार्थ, औषधि, सामग्री, जतु, लाह, मद्य, वैशेषिक दर्शन के अनुसार नव पदार्थ यथा-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल,दिशा,आत्मा और मन; **द्रव्यक**-(सं०त्रि०) द्रव्य वाहक, **द्रव्यत्व**-(सं०पुं०) द्रव्य का भाव द्रव्यपन ।

द्रव्यवान्-(सं० वि०) धवनान् धनी,

द्रष्टव्य-(सं०वि०) दर्शनीय देखने योग्य, दिखाये जाने वाला, जिसको जताना या बतलाना हो ।

द्रष्टा-(सं०वि०) दर्शक, देखने वाला, प्रकाशक, साङ्ख्य मत के अनुसार पुरुष, योग दर्शन के अनुसार आत्मा।

द्रह-(सं० पुं०) अगाध जल का ताल ।

द्राक्षा-(सं०स्त्री०) दाख, अंगूर ।

द्राघिमा-(सं०स्त्री०) दीर्घता, लंबाई, भूमध्य के समानान्तर पूर्व और पश्चिम की ओर की वे कल्पित रेखायें जो अक्षांश को सूचित करती हैं ।

द्राण-(सं०वि०) सुप्त, सोया हुआ, (नपुं०) स्वप्न ।

द्राप-(सं०पुं०) कीचड़, आकाश, कौड़ी, (वि०) मूर्ख ।

द्राव-(सं०पुं०) क्षरण, बहाव, गमन, गरमी, अनुताप, उष्णता, पसीजने की-बहने की क्रिया; **द्रावक**-(सं०पुं०) चन्द्रकान्त मणि, (वि०) हृदयग्राही द्रवरूप में करने वाला, बहाने वाला, हृदय पर प्रभाव डालने वाला, पीछा करने वाला, चतुर, (नपुं०) व्यभिचारी, मोम सुहागा । **द्रावकर**-(सं०नपुं०) टङ्कण, सोहागा । **द्रावण**-(सं०नपुं०) द्रवीभूत करने का काम, पिघलाने का काम ।

द्राविका-(सं०स्त्री०) लार, मोम ।

द्राविड़-(सं० वि०) द्रविड़ देश में उत्पन्न, द्रविड़ देश में रहने वाला ।

द्राविड़क-(सं० पुं०) सेंचर लवण ।

द्राविड़ी-(हिं० स्त्री०) द्रविड़ जाति की स्त्री, (वि०) द्रविड़ देश का ।

द्रावित-(सं० वि०) द्रविन, गलाया हुआ । **द्राव्य**-(सं० वि०) गलने वाला, गलने योग्य ।

द्रु-(सं०पुं०) वृक्ष, शाखा, गति ।

द्रुघन-(सं० पुं०) मुद्गर के आकार का एक हथियार ।

द्रुण-(सं० नपुं०) धनुष, तलवार, भौंरा, मधुमक्खी ।

द्रुणस-(सं० वि०) लंबी नाक वाला ।

द्रुणाह-(सं० पुं०) तलवार की म्यान ।

द्रुणा-(सं० स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला ।

द्रुणि-(सं० स्त्री०) सन्दूक, पिटारा ।

द्रुणी-(सं० स्त्री०) कछुई, कठवत, कठौता ।

द्रुत-(सं० वि०) गला हुआ, शीघ्र, शीघ्रगामी, भागा हुआ, (पुं०) बिच्छू, बिल्ली, वह लय जो बीच में कुछ तीव्र हो, खरहा, हरिन, बिन्दु, व्यजन ।

द्रुतगति-(सं० स्त्री०) तीव्र गति (वि०) शीघ्र चलने वाला; **द्रुतगामी**-(सं० वि०) शीघ्र चलने वाला; **द्रुतचारी**-(सं० वि०) भूमि पर वेग से चलने वाला ।

द्रुतत्रिताली-(सं० स्त्री०) देखो कौआली;

द्रुतपद-(सं० नपुं०) शीघ्रगामी पद, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे बारह अक्षर होते हैं (वि०) द्रुतगामी, पद युक्त; **द्रुतमध्या**-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके पहिले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे पद समान होते हैं; **द्रुतमांस**-(सं० पुं०) हरिण, खरहे आदि का मांस । **द्रुतविलम्बित**-(सं०नपुं०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं ।

द्रुति-(सं० स्त्री०) द्रव, गति ।

द्रुनख-((सं० पुं०) कण्टक, कांटा;

द्रुपद-(सं० पुं०) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम जो महाभारत के युद्ध में मारे गये थे, इनके पुत्र का नाम शिखण्डी था ।

द्रुपदा-(सं० स्त्री०) एक वैदिक मन्त्र का नाम; **द्रुपदात्मज**-(सं० पुं०) द्रुपद के पुत्र शिखण्डी और धृष्टद्युम्न

द्रुम-(सं० पुं०) वृक्ष, पेड़, परजाता, अमलतास का वृक्ष, रुक्मिणी से उत्पन्न श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

द्रुमकिल-(सं०पुं०) देवदार का वृक्ष ।

द्रुमग-(सं०पुं०) वह देश जहाँ जल कम हो । **द्रुमध्वज**-(सं०पुं०) ताड़ का वृक्ष । **द्रुमनख**-(सं०पुं०) कण्टक, कांटा;**द्रुमव्याधि**-(सं०पुं०) लाक्षा,लाह।

द्रुमभर-(सं० पु०) कण्टक, कांटा ।

द्रुमभर-(सं०पु) देखो द्रुममर, कांटा।

द्रुमवल्क-(सं०नपुं०) वृक्ष की छाल ।

द्रुमशय-(सं० पुं०) बानर, बन्दर ।

द्रुमश्रेष्ठ-(सं० पुं०) ताड़ का वृक्ष ।

द्रुमशीर्ष-(सं०नपुं०) पेड का शिखर ।

द्रुमसार-(सं० पुं०) दाड़िम,अनार ।

द्रुमारि-(सं० पुं०) हस्ति, हाथी ।

द्रुमाश्रय-(सं०पुं०) गिरगिट; **द्रुमिणी**-(सं०स्त्री०) वन, जंगल ।

द्रुमिल-(सं०पुं०) एक दानव का नाम जो सौभ्र देश का राजा था ।

द्रुमिला-(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे बत्तीस मात्राएँ होती हैं और प्रत्येक चरण के अन्त का अक्षर गुरु होता है ।

द्रुमेश्वर-(सं० पुं०) ताड़ का वृक्ष, चन्द्रमा, पारिजात ।

द्रुमोत्पल-(सं० पु०) कनक चम्पा ।

द्रुसल्लक-(सं०पु०) चिरौजी का पेड़ ।

द्रुह-(सं०पु०) वृक्ष, पुत्र, बेटा, (वि०) द्रोह करने वाला । **द्रुहण, द्रुहिण**-(सं०पु०) ब्रह्मा ।

द्रुही-(सं० स्त्री०) दुहिता, कन्या, बेटी ।

द्रुह्य-(सं० पुं०) ययाति की पत्नी शर्मिष्ठा के बड़े लड़के का नाम जिन्होंने अपने पिता का बुढापा लेना अस्वीकार किया था इससे ययातिने उनको शाप दिया था ।

द्रू-(सं०पुं०) सुवर्ण, सोना ।

द्रूघण-(सं०पुं०) मुद्गर ।

द्रूण-(सं०पुं०) वृश्चिक, बिच्छू ।

द्रेक्काण-(सं०पुं०)ज्योतिष के अनुसार लग्न का तृतीय भाग ।

द्रोघमित्र-(सं० पुं०) हानि पहुँचाने वाला मित्र ।

द्रोण-(सं०पुं०) एक प्राचीन माप जो प्रायः सोलह सेर के बराबर होती थी, अरणी की लकड़ी, काठ का बना हुआ कलश जिसमें वैदिक काल में सोम का रस रक्खा जाता था, कठवत, लकड़ी का रथ, डोम कौवा, बिच्छू, वृक्ष, एक पर्वत का नाम, नाव, डोंगा, एक प्रकार का फूल, नील का पौधा, केला, महाभारत के एक प्रसिद्ध वीर का नाम जो ब्राह्मण थे; **द्रोण कलश**-(सं०पुं०) लकड़ी का बना हुआ कलसा जिसमें सोमलता का रस छाना जाता था;

द्रोणकाल-(सं०पु०) डोम कौवा; काला कौवा; **द्रोणक्षीरा**-(सं०स्त्री०) वह गाय जो सोलह सेर दूध देती हो; **द्रोणगिरि**-(सं०पुं०) एक पर्वत का नाम, हनुमानजी संजीवती जड़ी लेने के लिये इसी पर्वत पर गये थे;

द्रोणदुग्धा द्रोणदुधा-(सं०स्त्री०) देखो द्रोणक्षीरा; **द्रोणपुष्पी**-(सं० स्त्री०) गूमा नामक जड़ी; **द्रोणमुख**-(सं०नपु०) वह सुन्दर गाँव जो चारसौ गाँवों के बीच में हो;

द्रोणमेघ-(सं०पुं०) बादलों के एक अधिपति का नाम ।

द्रोणाचार्य-(सं०पुं०) भारद्वाज ऋषि के पुत्र जिन्होंने कौरवों तथा पाण्डवों को अस्त्र विद्या सिखलाई थी, इनके पुत्र का नाम अश्वत्थामा था ।

द्रोणास-(सं०पु०) एक दानवका नाम।

द्रोणाहाव-(सं०नपुं०) काठ का बना हुआ पात्र, कठवत ।

द्रोणि-(सं०स्त्री०) कटवत, डोंगी, दो पर्वतों के बीच की भूमि, एक सौ अट्ठाईस सेर का प्राचीन परिमाण, अश्वत्थामा का एक नाम ।

द्रोणिका-(सं०स्त्री०) नील का पौधा ।

द्रोणी-(सं०स्त्री०) काठ का बना हुआ पात्र, कठवत, एक प्रकार का नमक, एक सौ अट्ठाईस सेर का प्राचीन परिमाण, द्रोणाचार्य की स्त्री कृपी, केला, शीघ्रता, दो पर्वतों की सन्धि, नील का वृक्ष, छोटा दोना, इन्द्रायणका वृक्ष । **द्रोणीदल**-(सं०पुं०) केतकी का फूल ।

द्रोन-(हिं०पु०) देखो द्रोण ।

द्रोमिल-(सं०पु०) चाणक्य मुनि

द्रोह-(सं०पु०) दूसरे का अहित विचारना, धोखेसे मारना, द्वेष, वैर, हिंसा मात्र ।

द्रोहाट-(सं०पु०) ऊपर से देखने में भला पर भीतर का खोंटा मनुष्य, मृग तृष्णा ।

द्रोही-(सं०पु०) द्रोहक,द्रोह करने वाला,

द्रौहायण-(सं०पुं०) अश्वत्थामा ।

द्रौणिक-(सं०वि०)वह खेत जिसमें एक द्रोण या अड़तीस सेर बीज बोया जावे

द्रौपद-(सं०पु०) द्रुपद राजा का पुत्र ।

द्रौपदी-(सं०स्त्री०) द्रुपद राज की कन्या कृष्णा जिसका विवाह पाँचों पाण्डवों से हुआ था,दुर्योधन के मामा शकुनि के कपट द्यूत से युधिष्टिर अपना सर्वस्व हार गये थे यहाँ तक कि द्रौपदी को भी हार गये थे तब दुर्योधन ने दुःशासन द्वारा द्रौपदी को भरी सभा में बुलाकर उसका वस्त्र खिंचवाना चाहा था परन्तु श्रीकृष्ण ने कृष्णा की लाज रख ली, उस समय के रोदन से भीम बहुत उत्तेजित हो गये और भरी सभा में उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी द्रौपदी के अपमान करने वाले की छाती फाड़कर लोहू पीऊंगा, सचमुच भीम ने कुरुक्षेत्र के मैदान अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी ।

द्रौपदेय-(सं०पुं०) द्रौपदी के पांच पुत्र

द्रौहिक-(सं०वि०) द्रोह करने वाला।
द्वन्द, द्वन्द्व-(सं०नपुं०) मिथुन, जोड़ा, युग्म, दो मनुष्यों का परस्पर लड़ना, जोड़, कलह, झगड़ा, प्रतिद्वन्द्वी, द्वन्द युद्ध, दो चीजों का जोड़ा, यथा शीतोष्ण, दुःख-दुःख, भला बुरा आदि, दुर्ग, रहस्य, भेद की बात, उपद्रव, झगड़ा, संशय, दुवधा, कष्ट, दुःख, स्त्री पुरुष या नर मादा का जोड़ा।
द्वन्दर-(हि०वि०) झगड़ालू।
द्वन्द्वचर, द्वन्द्वचारी-(सं०पुं०) चक्रवाक, चकवा।
द्वन्द्वज-(सं०पुं०) त्रिदोष से उत्पन्न रोग।
द्वन्द्वयुद्ध-(सं०नपुं०) दो पुरुषों का परस्पर युद्ध।
द्वन्द्व-(सं०पुं०) युग्म, जोड़ा, नर मादा का जोड़ा, रहस्य, झगड़ा, लड़ाई, एक प्रकार का समास जिसमें सब शब्द जो जोड़े जाते हैं प्रधान रहते हैं और उनका अन्वय एकही क्रिया के साथ होता है।
द्वय-(सं०नपुं०) द्वन्द्व, युगल, दो, (वि०) दोहराया हुआ।
द्वर-(सं०वि०) विघ्न डालने वाला।
द्वाज-(सं०पुं०) जारज, दोगला पुत्र।
द्वादश-(सं०वि०) दस और दो की संख्या, (पुं०) बारह की सख्या, शिव, महादेव; द्वादशक-(सं०वि०) बारह का, द्वादशकर-(सं०पुं०) कार्तिकेय, वृहस्पति, (स्त्री०) भैरवी का एक भेद
द्वादशभाव-(सं०पुं०) फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म कुण्डली के बारह घर; द्वादशलोचन-(सं०पुं०) कार्तिकेय; द्वादशशुद्धि-(सं०स्त्री०) वैष्णव सम्प्रदाय में तन्त्रोक्त बारह प्रकार की शुद्धि; द्वादशांशु-(सं०पुं०) वृहस्पति; द्वादशाक्ष-(सं०पुं०)कार्तिकेय, बुद्ध; द्वादशाक्षर-(सं०पुं०) बारह अक्षर का विष्णु का मन्त्र "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय", जगती छन्द का नाम जिसमें बारह अक्षर होते हैं; द्वादशाख्य-(सं०पुं०) बुद्धदेव; द्वादशाङ्ग-(सं०वि०) जिसके बारह अंग या अवयव हों; द्वादशात्मन्-(सं०पुं०) अर्कवृक्ष, आक का पेड़; द्वादशायतन-(सं०नपुं०) जैन दर्शन के अनुसार पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पांच कर्मेन्द्रियों तथा मन और बुद्धि का समुदाय; द्वादशायु-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता; द्वादशार-(सं०नपुं०) तन्त्र के अनुसार सुषुम्णा नाड़ी के मध्य का हृदय स्थित बारह दल का पद्म।
द्वादशाशन-(सं०नपुं०) वैद्यक के अनुसार बारह प्रकार का आहार।
द्वादशाह-(सं०पुं०) बारह दिनों में किया जाने वाला एक यज्ञ, बारह दिनों का समुदाह, वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने के बारहवें दिन किया जाता है।
द्वादशी-(सं०स्त्री०) किसी मास के किसी पक्ष की बारहवीं तिथि।
द्वादसबानी-(हिं०स्त्री०)देखो बारहबानी
द्वापर-(सं०पुं०) चार युगों में से तीसरा युग जो भाद्रकृष्ण त्रयोदशी वृहस्पतिवार से आरम्भ हुआ था, यह युग आठ लाख चौसठ हजार वर्ष का माना गया है।
द्वार-(सं०नपुं०) मुख, मुहाना, इन्द्रियों के मार्ग या छेद, साधन, उपाय, छेदवाला अङ्ग, किसी रोकने वाली वस्तु में का वह छिद्र या खुला स्थान जिसमें से होकर कोई वस्तु आरपार जा सके; द्वारक-(सं०नपुं०) द्वारकापुरी; द्वारकण्टक-(सं० पुं०) कपाट, किवाड़, द्वारका-(सं० स्त्री०) चारो धाम में से एक, एक प्राचीन नगरी जो काठियावाड़ गुजरात में है।
द्वारकाधीश-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका में है, श्रीकृष्णचन्द्र।
द्वारकानाथ-(सं०पुं०) देखो द्वारकाधीश; द्वारकेश-(सं०पुं०) वासुदेव, द्वारकानाथ; द्वारगोप-(सं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढीदार; द्वारचार-(सं०पुं०) विवाह की एक रीति जो बारात के कन्या के द्वार पर पहुंचाने पर होती है। द्वारछेकाई-(हिं०स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें जब वर वधू घर पहुँचते हैं, तब वर की बहिन मार्ग रोकती हैं और उसको कुछ नेग दिया जाता है, यह नेग।
द्वारप-(सं०पुं०) द्वारपाल, विष्णु।
द्वारपण्डित-(सं०पुं०) किसी राजा के दरबार का पंडित।
द्वारपति, द्वारपाल-(सं०पुं०) प्रतिहारी, दरबान, कुत्ता। द्वारपालक-(सं०पुं०) द्वारपाल, दरबान। द्वारपिण्डी-(सं०स्त्री०) देहली, ड्योढ़ी।
द्वारपूजा-(हिं०स्त्री०) विवाह की एक रीति जो कन्या वाले के द्वार पर तब की जाती है जब वर बारात के साथ पहिले पहल कन्या वाले के घर आता है।
द्वारवती-(सं०स्त्री०) द्वारकापुरी।
द्वारयन्त्र-(सं०नपुं०) तालक, ताला।
द्वारवर्त्म-(सं०पुं०) द्वार, फाटक।
द्वारवृत्त-(सं० पुं०) काली पीपल।
द्वारशाखा-(सं०स्त्री०) द्वार का भाग।
द्वारसमुद्र-(सं०पुं०)कर्नाटक के राजाओं की पुरानी राजधानी का नाम।
द्वारस्तम्भ-(सं०पुं०) द्वार पर का खंभा
द्वारस्थ-(सं० वि०) द्वारपर बैठा हुआ (पुं०) द्वारपाल।
द्वारा-(हिं०पुं०) फाटक, मार्ग, (अव्य०) साधन से; द्वाराधिप-(सं०पुं०) द्वार का मालिक; द्वाराध्यक्ष-(सं० पुं०) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार; द्वारावती-(सं० स्त्री०) द्वारिका पुरी।
द्वारिक-(सं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढीदार, द्वारिका-(सं० स्त्री०) द्वारिकापुरी।
द्वारी-(हिं०स्त्री०) छोटा द्वार, दुआरी।
द्वाल द्वालबंद-(हिं०पुं०) देखो दुवालबंद
द्वाली-(हिं०स्त्री०) देखो दुवाली।
द्वास्थ-(सं०पुं०) द्वारपाल, दरवान।
द्वास्थित-(सं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
द्वि-(सं०वि०) द्वित्व, दो संख्या का, दो
द्विक-(सं०वि०) द्वय; दो, दूसरा, दो बार जिसमें दो अवयव हो, (पुं०) कौवा, चकवा।
द्विककुद-(सं० पुं०) उष्ट्र, ऊँट।
द्विकर-(सं०) दो भुजा, दो हाथ।
द्विकर्मक-(सं० वि०) वह क्रिया जिसमें दो कर्म हों।
द्विकल-(सं० पुं०) छन्द शास्त्र में दो मात्राओं का समूह।
द्विक्षार-(सं०पुं०)शोरा और सज्जीखार
द्विगु-(सं०पुं०)दो गौ संबंधी, जिसके पास दो गाय हों, वह कर्मधारय समास जिसका पूर्वपद संख्या वाचक शब्द हो
द्विगुण-(सं०पुं०) दुगना, दूना।
द्विगुणाकृत-(सं०वि०) दोबारा जोती हुई भूमि।
द्विगुणाकर्ण-(सं० वि०) दोबार गुणा किया हुआ।
द्विगुणित-(सं०वि०) दो से गुणा किया हुआ, दुगना, दूना।
द्विचक्र-(सं०पुं०) एक असुर का नाम, (वि०)जिसमें दो पहिया हों; द्विचरण-(सं०वि०) दो पैर वाला।
द्विज-(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जिसका संस्कार हुआ हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिसका उपनयन संस्कार हुआ हो, अण्डज प्राणी, पक्षी, चन्द्रमा, सर्प, (वि०)जिसका दो बार जन्म हुआ हो, द्विजत्व-(सं० नपुं०) द्विज का धर्म या भाव; द्विजदास-(सं० पुं०) द्विजों की सेवा करने वाला; द्विजन्मा-(सं०पुं०) ब्राह्मण, दाँत, पक्षी, क्षत्रिय, वैश्य, (वि०) जिसका दो बार जन्म हुआ हो; द्विजपति-(सं० पुं०) द्विजश्रेष्ठ ब्राह्मण, चन्द्रमा, गरुड़, कपूर; द्विजप्रपा-(सं० स्त्री०) पानी देने के लिये पेड़ के नीचे खोदा हुआ गड्ढा, आलवाल। द्विजप्रिया-(सं० स्त्री०) सोमलता, (वि०) जो द्विज का प्रिय हो; द्विजबन्धु-(सं०पुं०) संस्कार हीन द्विज, केवल नाम मात्र का द्विज।
द्विजराज-(सं० पुं०) देखो द्विजपति;
द्विजर्षभ-(सं०पुं०) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण;
द्विजवर-(सं०पुं०) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण;
द्विजवाहन-(सं०पुं०) नारायण, विष्णु;
द्विजव्रण-(सं०पुं०) दाँत का एक रोग;
द्विजश्रेष्ठ-(सं० वि०) श्रेष्ठ ब्राह्मण;
द्विजसेवक-(सं० पुं०) द्विजों की सेवा करने वाला।
द्विजसत्तम-(सं० पुं०) द्विजों में श्रेष्ठ।
द्विजा-(सं० स्त्री०) भंगरैया, पालक का शाक; द्विजाग्रह-(सं०पुं०) ब्राह्मण;
द्विजाङ्गिका-(सं०स्त्री०)कुटकी; द्विजाति-(सं०पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य; अण्डज, दाँत, पक्षी। द्विजातिमुख्य-(सं०वि०) ब्राह्मणों में श्रेष्ठ; द्विजानि-(सं०पुं०) वह पुरुष जिसके दो पत्नी हो
द्विजायनी-(सं०स्त्री०) यज्ञोपवीत, जनेऊ
द्विजालय-(सं० पुं०) कोटर, वृक्ष का वह पोला भाग जिसमें पक्षी अपने घोंसले बनाते है, ब्राह्मणों का घर
द्विजिह्व-(सं० पुं०) सर्प, साँप, पिशुन, दुष्ट, चोर, एक प्रकार का रोग, (वि०) जिसको दो जीभ हों।
द्विजेन्द्र, द्विजेश-(सं० पुं०) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण, चन्द्रमा, गरुड़, कपूर।
द्विजोत्तम-(सं० पुं०) ब्राह्मण।
द्विजोपासक-(सं०पुं०) द्विजसेवक, शूद्र।
द्विट्सेवा-(सं०स्त्री०) शत्रु की सेवा।
द्विट्सेवी-(सं०वि०) राजशत्रु, वह जो राजा के शत्रु से मिला हो।
द्वित-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम।
द्वितय-(सं०नपुं०) दो की संख्या, (वि०) दोहरा। द्वितीय-(सं० वि०) दूसरा, (पुं०)पुत्र, बेटा। द्वितीयक-(सं०नपुं०) प्रति दूसरे दिन होने वाला रोग, (वि०) दूसरा, द्वितीय। द्वितीया-(सं०स्त्री०) स्त्री, गेहिनी, प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि; द्वितीयाभा-(सं०स्त्री०) दारुहलदी; द्वितीयाश्रम-(सं०पुं०) गार्हस्थ्य आश्रम।
द्वित्र-(सं०वि०) दो या तीन।
द्वित्व-(सं० नपुं०)दोहरा होने का भाव
द्विदल-(सं० वि०) जिसमें दो दल या पिण्ड हों, दो पत्तों वाला, दो पंखडियों वाला, (पुं०) वह अन्न जिसमें दल हो, दाल।
द्विदश-(सं० वि०) बीस की संख्या।
द्विदिव-(सं० पुं०) दो दिन में समाप्त होने वाला यज्ञ।
द्विदेह-(सं०पुं०) गणेश।
द्विधा-(सं० अव्य०) दो प्रकार से, दो तरह से, दो टुकड़ों में; द्विधागति-(सं०पुं०) शिशुमार, घड़ियाल (वि०) जिसकी गति दो प्रकार की हो;
द्विधातु-(सं०पुं०) दो धातुओं के मेल से बनी हुई कोई धातु; द्विधात्मक-(सं० पुं०) जातिकोष, जायफल;
द्विधालेख्य-(सं०वि०)जो दो प्रकार से लिखा जा सके।
द्विप-(सं० पुं०) हस्ती, हाथी, (पुं०) नागकेशर।
द्विपक्ष-(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया एक महीना, (वि०) जिसके दो पक्ष हों, दो पक्ष वाला।
द्विपत्रक-(सं०पुं०) द्विदल वाला कमल
द्विपथ-(सं०नपुं०) दो मार्ग।
द्विपद-(सं०पुं०)मनुष्य, पक्षी, दो पैर।
द्विपदा-(सं० स्त्री०) वह ऋचा जिसमें केवल दो पाद हो।
द्विपदिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की गीत। द्विपदी-(सं०स्त्री०) दो पदों की गीत, वह छन्द जिसमें दो पद हों, चित्रकाव्य का एक भेद

द्विपमद-(सं०पुं०)हाथी के मद का जल
द्विपर्णी-(सं०स्त्री०)एक प्रकारके जंगली बेर का वृक्ष ।
द्विपाद-(सं०पुं०) मनुष्य, पक्षी; (वि०) जिसको दो पैर हों ।
द्विपाधिप-(सं०पुं०) गजश्रेष्ठ,ऐरावत ।
द्विपायी-(सं०पुं०) गज, हाथी ।
द्विपास्य-(सं० पुं०) गणेश ।
द्विपुरी-(सं० स्त्री०) मल्लिका, चमेली ।
द्विबन्धु-(सं०पुं०) दो लोकों का बन्धु, अग्नि ।
द्विबाहु-(सं०पुं०) मनुष्य आदि दो पैर वाले जीव;(वि०)जिसके दो बाहु हों ।
द्विभाग-(सं०पुं०) दो भाग, दो अंश ।
द्विभाव-(सं०वि०)दुष्ट स्वभाव का,कपटी
द्विभाषी-(सं०पुं०) दो भाषा जानने वाला मनुष्य ।
द्विभुज-(सं०वि०) दो हाथ वाला ।
द्विभूम-(सं०पुं०) दो खण्ड का घर ।
द्विमातृ-(सं०पुं०) जरान्ध का नाम ।
द्विमातृज-(सं०पुं०) गणेश, जरासन्ध ।
द्विमात्र-(सं०पुं०) दीर्घ स्वर ।
द्विमास्य-(सं०वि०)दो महीने के वय का
द्विमुख-(सं०पुं०) दो मुंह वाला सर्प; (वि०) जिसके दो मुख हों; (पुं०) गौ, गाय, जोंक । **द्विमुखी**-(सं०वि०) दो मुँह वाली; (स्त्री०) वह गाय जो बच्चा दे रही हो ।
द्विर-(सं०पुं०) भौंरा,शहद की मक्खी ।
द्विरद-(सं०पुं०) हाथी, दुर्योधन के एक भाई का नाम; (वि०) दो दाँत-वाला **द्विरदान्तक**-(सं०पुं०)सिंह शेर। **द्विरदाशन**-(सं०पुं०) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष । **द्विरभ्यस्त**-(सं०वि०) द्विगुणित,दुगना । **द्विरशन**-(सं०नपुं०) दो बार भोजन । **द्विरसन**-(सं०पुं०) सर्प, सांप । **द्विरागमन**-(सं०नपुं०) विवाह के बाद स्त्री का पिता के घरसे दूसरी बार पति के घरपर आना ।
द्विरात्र-(सं०नपुं०) दो रात में होने वाला यज्ञ; (नपुं०) दो रात । **द्विरात्रीण**-(सं०वि०) दो रातमें होनेवाला
द्विराप-(सं०पुं०) हस्ती, हाथी ।
द्विरुक्त-(सं०वि०) दो बार कहा हुआ । **द्विरुक्ति**-(सं०स्त्री०) दो बार कथन ।
द्विरूढा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका विवाह पहिले एक पति से तथा दुबारा दूसरे पति से हुआ हो ।
द्विरेतस्-(सं०पुं०) खच्चर, दोगला ।
द्विरेफ-(सं०पुं०)भ्रमर, भौंरा ।
द्विर्वचन-(सं०नपुं०) दो बार कथन ।
द्विलक्षण-(सं०वि०) दो तरह का ।
द्विवचन-(सं०नपुं०) संस्कृत व्याकरण में किसी विभक्ति का वह रूप जो दो व्यक्ति के लिये प्रयोग किया जाता है।
द्विवाहिका-(सं०स्त्री०) हिंडोला, झूला ।
द्विविद-(सं०पुं०) रामचन्द्र की सेना के एक बन्दर का नाम ।
द्विविध-(सं०वि०) दो प्रकार का, दो तरह का ।

द्विबिन्दु-(सं०पुं०) विसर्ग का चिह्न ।
द्विदन्त-(सं०पुं०) मेंहदी का पेड़ ।
द्विवेद-(सं०वि०) दो वेदों का पढने वाला । **द्विवेदी**-(सं०पुं०) ब्राह्मणों की एक उपजाति, दूबे ।
द्विशफ-(सं०पुं०) वह पशु जिसका खुर फटा हो ।
द्विशाल-(सं०वि०)जिसमें दो कोठरियां हों, दो दिशाओं में बना हुआ ।
द्विशीर्ष-(सं०पुं०) अग्नि, आग, (वि०) जिसके दो सिर हों ।
द्विशृङ्गी-(सं०वि०)जिसके दो सींग हों।
द्विष-(सं०पुं०) वैरी,शत्रु, (वि०) विरोध या द्वेष करने वाला ।
द्विषन्-(हिं०पुं०) शत्रु, वैरी, **द्विषन्तप**-(सं०वि०)शत्रु को पीड़ा पहुँचानेवाला
द्विषा-(सं०स्त्री०) एला, इलायची ।
द्विषेण्य-(सं०वि०) ईर्षालु, द्वेष करने का जिसका स्वभाव हो ।
द्विसम-(सं०वि०) दो वर्ष का ।
द्विसहस्राक्ष-(सं०पुं०) अनन्त जिनके एक हजार मुख है ।
द्विसीत्य-(सं० वि०) वह खेत जो दो बार जोता गया हो ।
द्विहन्-(सं०पुं०) हस्ती, हाथी ।
द्विहल्य-(सं०वि०) वह खेत जो दो बार हल से जोता गया हो ।
द्विहायन-(सं०पुं०)दो साल का बछवा।
द्विहृदया-(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।
द्वीन्द्रिय-(सं०पुं०) वह प्राणी जिसके केवल दो ही इन्द्रियाँ हों ।
द्वीप-(सं०पुं०) भूमि का वह भाग जो चारो ओर से जलसे घिरा हो,टापू, अवलंबन स्थान,आधार,कंकोल वृक्ष (नपुं०) व्याघ्रचर्म, बाघ का चमड़ा;
पवतद्वी-(सं० स्त्री०) भूमि, जमीन;
द्वेपशत्रु द्वेपिका-(सं०पुं०) सतावर ।
द्वेपिनख-(सं०पुं०) व्याघ्रनख, बाघ का नाखून ।
द्वेश-(सं०पुं०) विशाखा नक्षत्र ।
द्वेधा-(सं० अव्य०) दो प्रकार के ।
द्वेष-(सं०पुं०) शत्रुता, वैर, विरोध;
द्वेषण-(सं० नपुं०) शत्रु । **द्वेषी**-(सं० वि०) द्वेष करने वाला, विरोध करने वाला । **द्वेष्टा**-(सं० वि०) द्वेषी, विरोध करने वाला । **द्वेष्य**-(सं०वि०) जिससे द्वेष किया जावे ।
द्वैगुणिक-(सं०नपुं०) दूना व्याज लेने वाला ।
द्वैज-(हिं०स्त्री०) द्वितीया, दूज । **द्वैत**-(सं०नपुं०) द्वय, युगल, दो का भाव, भेद, अन्तर, भ्रम, अज्ञान, दुविधा द्वैतवाद, भेदभाव,अपने और पराये का भाव ।
द्वैतवन-(सं०नपुं०) वह तपोवन जिसमें युधिष्ठिर ने वनवास के समय कुछ दिन तक निवास किया था ।
द्वैतवाद-(सं०पुं०)वह दार्शनिक सिद्धांत जो जीव और ईश्वर को अलग अलग मानता है प्रायः सभी दर्शन शास्त्रों में द्वैतवाद का उपदेश दिया गया है द्वैतवादी जीव चैतन्य को ब्रह्म चैतन्य से पृथक् मानते हैं ।
द्वैतवादी-(सं०वि०) ईश्वर और जीव में भेद मानने वाला ।
द्वैध-(सं०अव्य०) दो प्रकार से (वि०) परस्पर का विरोध । **द्वैधीभाव**-(सं०पुं०) परस्पर विरोध ।
द्वैप-(सं०पुं०)व्याघ्रचर्म,बाघका चमड़ा ।
द्वैपायन-(सं०पुं०) वेदव्यास ।
द्वैप्य-(सं०वि०) द्वीप संबंधी ।
द्वैभाव्य-(सं०वि०) जो दो भागों में विभक्त हो ।
द्वैमातुर-(सं०पुं०) जरासन्ध, गणेश ।
द्वैमातृक-(सं०पुं०)वह भूमि जहाँ खेती नदी के जल से तथा वर्षा के जल से होती है ।
द्वैरथ-(सं०नपुं०) दो रथों द्वारा होने वाला युद्ध ।
द्वैराज्य-(सं०नपुं०) वह राज्य जो दो राजाओं में विभक्त हो ।
द्वैविध्य-(सं०नपुं०) भ्रम, दुविधा ।
द्व्यर्थ-(सं०वि०) जिस शब्द के दो अर्थ हों
द्वौ-(हिं० वि०) दोनों ।

ध

ध-हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यञ्जन तथा तवर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है ।
ध-(सं०नपुं०) धन, ब्रह्मा, कुबेर, धर्म, धकार वर्ण ।
धई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा ।
धंका-(हिं०पुं०) धक्का ।
धंगर-(हिं० पुं०) ग्वाल, अहीर, चरवाहा, एक प्रकार का धारीदार कपड़ा ।
धंध, धंधक-(हिं० पुं०) जंजाल, बखेड़ा, काम धन्धे का दिखाव, एक प्रकार का ढोल । **धंधकधोरी**-काम धन्धे का बोझ लादने वाला ।
धंधरक-(हिं०पुं०) काम धंधे का आडम्बर, बखेड़ा । **धंधरक धोरी**-(हिं०पुं०) देखो धंधक धोरी ।
धंधला-(हिं०पुं०) झूठा आडम्बर, ढोंग, बहाना । **धंधलाना**-(हिं०क्रि०) झूठा आडम्बर, रचना, ढंग करना ।
धंधा-(हिं०पुं०) काम या धन कमाने की इच्छा से उद्योग करना, व्यवसाय, कामकाज, उद्यम ।
धंधार-(हिं०पुं०) भारी पत्थर, लकड़ी आदि को उठाने का एक प्रकार का साधन ।
धंधारी-(हिं०स्त्री०)गोरखधंधारी जिसको गोरखपंथी साधु लिये रहते हैं ।
धंधाला-(हिं०स्त्री०) दूती, कुटनी ।
धंधोर-(हिं०पुं०) होलिका, होली, ज्वाला, आग की लपट ।
धंवना-(हिं०क्रि०) धौंकना ।
धँस-(हिं०पुं०) डुबकी, गोता; **धँसन**-(हिं०स्त्री०) धँसने की क्रिया, गति, चाल; **धँसना**-(हिं०क्रि०) किसी कड़ी वस्तु का कोमल वस्तु के भीतर, घुसना, गड़ना, बैठ जाना, खड़ी वस्तु का भूमि के भीतर चले जाना, बढ़ना, पैठना, नीचे खसकना या उतरना, नष्ट होना, बैठ जाना; **मन में धँसना**-चित्त पर प्रभाव होना
धँसनि-(हिं०स्त्री०) देखो धँसन ।
धँसान-(हिं०स्त्री०) धँसने की क्रिया या ढंग, ढार, उतार, दलदल । **धँसाना**-(हिं०क्रि०) गड़ाना, चुभाना, प्रवेश कराना, पैठाना, नीचे की ओर बैठाना । **धँसाव**-(हिं०पुं०) धँसने की क्रिया, दलदल ।
धक-(हिं०स्त्री०) हृदय धड़कने का भाव या शब्द , उमंग, उद्वेग, छोटी जुवाँ, (क्रि०वि०) अचानक ; **कलेजा धक होना**-किसी प्रकार के उद्वेग के कारण कलेजा धड़कना । **धकधकाना**-(हिं०क्रि०) हृदय का उद्वेग के कारण शीघ्रता, या वेग से चलना, दहकना, भभकना, अग्नि का लपट के साथ जलना ; **धकधकाहट**-(हिं० स्त्री०) धकधक करने की क्रिया या भाव, आशंका, धड़कन, खटका । **धकधकी**-(हिं०स्त्री०) धकधक करने की क्रिया, हृदय की धड़कन ।
धकपक-(हिं०स्त्री०) कलेजे की धड़कन, (क्रि०वि०) डरते हुए ; **धकपकाना**-(हिं०क्रि०) डरना दहलना, भय खाना
धकपेल-(हिं०स्त्री०) धक्काधक्की ।
धकार-(सं०पुं०) "ध" अक्षर का रूप ।
धका-(हिं०पुं०) देखो धक्का ।
धकाना-(हिं० क्रि०) धधकाना, आग सुलगाना ।
धकारा-(हिं०पुं०) सन्देह, भय ।
धकियाना-(हिं० क्रि०) धक्का देना, ढकेलना । **धकेलना**-(हिं०क्रि०) ठेलना, धक्का देना । **धकेलू**-(हिं०पुं०) धक्का देने वाला, ढकेलने वाला । **धकैत**-(हिं०वि०) धक्का देने वाला ।
धकपक्क-(हिं०स्त्री०) देखो धकपक ।
धक्कमधक्का-(हिं०पुं०) बहुत से मनुष्यों का आपस में धक्का देने का कार्य, बड़ी भीड़ में मनुष्यों का परस्पर शरीर से शरीर रगड़ा जाना ।
धक्का-(हिं० पुं०) आघात, टक्कर, झोंका, ऐसी बड़ी भीड़ जिसमें मनुष्यों की शरीर आपस में रगड़ खाती हो, ढकेलने की क्रिया,आपत्ति, विपत्ति, सन्ताप, हानि, टोटा, मल्लयुद्ध की एक युक्ति । **धक्कामुक्की**-मुठभेड़, मारपीट ।
धगड़, धगड़ा-(हिं०पुं०) उपपति, जार; **धगड़बाज**-(हिं० वि०) व्यभिचारी, कुलटा । **धगड़ी**-(हिं०स्त्री०) कुलटा

स्त्री, व्यभिचारिणी। **धगरा**-(हिं०पुं०) देखो धगड़ा।
धगरिन-(हिं०स्त्री०) बच्चे की नाल काटने वाली स्त्री।
धगवरी-(हिं०वि०) पति की मुँह लगी, धगरी, कुलटा, छिनाल।
धग्गड़-(हिं०पुं०) देखो धगड़।
धचका-(हिं०पुं०) आघात, धक्का, झोंका
धज-(सं०स्त्री०) सुन्दर रचना, सुन्दर ढंग, बैठने उठने का ढंग, आकृति, शोभा, चाल ढाल; **सजधज**-तैयारी
धजबड़-(हिं०स्त्री०) खड्ग, तलवार।
धजा-(हिं०स्त्री०) ध्वजा, पताका, झंडा आकृति, कपड़े की चीर।
धजीला-(हिं०वि०) सुन्दर ढंग का, सजीला, तरहदार।
धज्जी-(हिं०स्त्री०) कपड़ा या कागज का लंबा पतला टुकड़ा, लोहे की चद्दर या लकड़ी की पतली चीर या पट्टी; **धज्जी उड़ाना**-विदीर्ण करना, टुकड़े टुकड़े करना।
धट-(सं०पुं०) तुला राशि, धव का पेड़
धटक-(सं०पुं०) एक प्राचीन परिमाण जो बयालिस रत्तियों के बराबर होता था।
धट कर्कट-(सं०पु०) एक प्रकार की मुड़ी हुई लोहे की कील।
धटपरीक्षा-(सं०स्त्री०) देखो तुलापरीक्षा
धटिका-(सं०स्त्री०) एक प्राचीन परिमाण जो पांच सेर के बराबर होता था, कौपीन, लंगोट, चीर।
धटी-(सं०स्त्री०) कपड़े की चीर, कौपीन
धड़ंग-(हिं०वि०) वस्त्रहीन, नंगा।
धड़-(हिं०पुं०) शरीर का बिचला मोटा भाग जिसके अन्तर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं, कमर के ऊपर का भाग, वृक्ष का जड़ से ऊपर का मोटा भाग, तना, पेड़ी, (स्त्री०) किसी वस्तु के भूमि पर वेग से गिरने का शब्द।
धड़क-(हिं०स्त्री०) हृदय का स्पन्दन, हृदय के स्पन्दन का शब्द, खटका, तड़प, भय; **बेधड़क**-बिना किसी संकोच या रुकावट के। **धड़कन**-(हिं०स्त्री०) हृदय का स्पन्दन, कलेजे का धकधक करना। **धड़कना**-(हिं०क्रि०) हृदय का स्पन्दन करना, या धकधक करना, धड़धड़ शब्द करना; **दिल धड़कना**-किसी भय या आशंका से हृदय का वेग से चलना।
धड़का-(हिं०पुं०) हृदय के धड़कने का शब्द, खटका, साहस, गिरने पड़ने का शब्द, चिड़ियों को डराने के लिये खेत में डंडे के ऊपर उलटी रक्खी हुई काली हाँड़ी, विभीषिका।
धड़काना-(हिं०क्रि०) हृदय में धड़कन उत्पन्न करना, दहलाना, डराना, धड़ धड़ शब्द उत्पन्न कराना।
धड़क्का-(हिं०पुं०) देखो धड़का।
धड़टूटा-(हिं०वि०) जिसकी कमर झुक गई हो, कुबड़ा।
धड़धड़-(हिं०स्त्री०) किसी भारी वस्तु के चलने से उत्पन्न तीव्र शब्द, (क्रि० वि०) बिना रुकावट के, बेधड़क, धड़धड़ शब्द करते हुए।
धड़धड़ाना-(हिं०क्रि०) धड़धड़ शब्द करना; **धड़ धड़ाता हुआ**-बिना संकोच के, बेधड़क।
धड़क्का-(हिं०पुं०) देखो धड़ाका।
धड़ट्टा-(हिं०वि०) जिसकी कमर झुक गई हो, कुबड़ा।
धड़धड़-(हिं०स्त्री०) किसी भारी वस्तु के चलने से उत्पन्न घोर शब्द, (क्रि०वि०) बेधड़क, बिना रुकावट के। **धड़धड़ाना**-(हिं०क्रि०) धड़धड़ शब्द करना।
धड़ल्ला-(हिं०पुं०) धड़धड़ शब्द, धड़का भीड़ भाड़ धूम धाम, बड़ी भीड़; **धड़ल्ले से**-झोंक से, वेग से।
धड़वा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मैना चिड़िया।
धड़वाई-(हिं०पुं०) किसी वस्तु को तौलने वाला।
धड़ा-(हिं०पुं०) तराजू के पलड़े पर किसी पात्र आदिके भार को बराबर करने का तौल, बाँट, बटखरा, तुला, तराजू, चार सेर की तौल; **धड़ा बाँधना**-तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना।
धड़ाका-(हिं०पुं०) धड़धड़ शब्द करना; **धड़ाके से**-झट पट। **धड़ाधड़**-(हिं० क्रि०वि०) धड़धड़ शब्द के साथ, बिना रुकावट के, शीघ्रतासे। **धड़ाबन्दी**-(हिं०स्त्री०) धड़ा बाँधने का काम, समभार या शक्ति करने की क्रिया।
धड़ाम-(हिं०पुं०) वह शब्द जो किसी वस्तु के दूर से गिरने पर उत्पन्न होता है, किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
धड़ी-(हिं०स्त्री०) चार या पांच सेर की तौल।
धत्-(हिं०अव्य०) तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द, दुतकारने का शब्द
धत-(हिं०स्त्री०) बुरा अभ्यास, बुरी लत। **धतकारना**-(हिं०क्रि०) तिरस्कार के साथ हटाना, धिक्कारना, दुरदुराना
धता-(हिं०वि०) दूर किया हुआ, हटाया हुआ; **धता करना**-हटाना, भगा देना
धतिया-(हिं०वि०) बुरे अभ्यास का, कुटेव का।
धतींगड़, धतींगड़ा-(हिं०पुं०) मोटा मनुष्य
धतूर-(हिं०पुं०) सिंघा, तुरुही, धतूरा।
धतूरा-(हिं०पुं०) एक पौधा जिसके गोल फलके ऊपर काँटे होते हैं, इसका बीज बड़ा विषैला होता हैं; **धतूरा खाकर फिरना**-पागल की तरह घुमना
धतूरिया-(हिं०पुं०) ठगोंका एक सम्प्रदाय जो पथिकों को लूटने के लिये उनको धतूरा खिला कर बेहोश कर देते थे।
धत्ता-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छन्द जो दो पंक्तियों में लिखा जाता है।
धत्तानन्द-(हिं०पु०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक पंक्ति में इकतीस मात्रायें होती हैं।
धत्तर-(सं०पुं०) धतूरा।
धधक-(हिं० स्त्री०) आग की लपट का ऊपर को उठना, लौ, आँच की भड़कन। **धधकना**-(हिं०क्रि०) आग का लपट के साथ जलना, भड़कना, दहकना। **धधकाना, धधकाना**-(हिं० क्रि०) अग्नि को प्रज्वलित करना, दहकाना।
धनंजय-देखो धनञ्जय।
धन-(सं०नपुं०) द्रव्य, सम्पत्ति, स्नेहपात्र, अति प्रिय वस्तु, चौपायों का समूह जो किसी के पास हो, पूंजी, गणित में जोड़ का (+) चिह्न, (स्त्री०) जवान स्त्री, वधू, बहू, (हिं० वि०) देखो धन्य।
धनक-(सं०पुं०) धन की कामना, धन की इच्छा, (हिं०पुं०) धनुष, कमान एक प्रकार की ओढ़नी, टोपी में लगाने का गोटा।
धनकटी-(हिं०स्त्री०) धान काटने का समय, एक प्रकार का वस्त्र। **धनकर**-(हिं०पुं०) एक प्रकार की कड़ी मिट्टी जिसमें धान बोया जाता है, धान का खेत। **धनकुट्टी**-(हिं०स्त्री०) धान कूटने का व्यापार, धान कूटने का अस्त्र, एक प्रकार का कीड़ा।
धनकुबेर-(हिं० पुं०) कुबेर के समान धनी, अति धनाढ्य मनुष्य। **धनकेलि**-(सं०पु०) कुबेर।
धनकोटा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी पौधा जिससे कागज बनाया जाता है।
धनक्षय-(सं०पुं०) धन का नाश।
धनखर-(हिं० पुं०) वह खेत जो धान बोने के काम में आता है।
धनगर्व-(सं०पुं०) दौलत धन का घमंड।
धनगुप्त-(सं०पुं०) धन को बड़े यत्न से रक्षा करने वाला मनुष्य।
धनचिड़ी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पक्षी।
धनञ्जय-(सं०पुं०) अग्नि, आग, तृतीय पाण्डव, अर्जुन का एक नाम।
धनतेरस-(हिं० स्त्री०) कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, इस दिन लक्ष्मी का पूजन होता है।
धनद-(सं०पुं०) कुबेर, (वि०) धन देने वाला। **धनदण्ड**-(सं०पु०) धनरूप में दण्ड। **धनदत्त**-(सं०वि०) धन देने वाला। **धनदा**-(सं०स्त्री०) देवी का एक नाम, आश्विन कृष्ण एकादशी का नाम, (वि०) धन देने वाला।
धनदाक्षी-(सं०स्त्री०) लता करंज, पाटल वृक्ष।
धनदानुज-(सं०पुं०) रावण, कुम्भकर्ण आदि।
धनदायिका-(सं० स्त्री०) एक देवी का नाम। **धनदायी**-(सं०वि०) धन देने वाला, (पुं०) अग्नि।
धनदिशा-(हिं० पुं०) उत्तर दिया।
धनदेव-(सं०पुं०) धन के देवता, कुबेर।
धनधान्य-(सं०पुं०) धन और अन्न आदि सामग्री, सम्पत्ति। **धनधाम**-(सं०पुं०) रुपया पैसा और घरबार।
धनधारी-(हिं०पुं०) कुबेर, बड़ा धनी, मनुष्य। **धननाथ**-(सं०पुं०) धन का अधिष्ठाता, कुबेर। **धनपति**-(सं०पुं०) कुबेर, शरीर के एक वायु का नाम
धनपत्र-(सं०पु०) हिसाब लिखने का बही खाता।
धनपात्र-(सं० पु०) धनवान्, धनी।
धनपाल-(सं० विं०) धन की रक्षा करने वाला, (पुं०) कुबेर। **धनपिशाचिका**-(सं० स्त्री०) धन का लोभ, धन की आशा। **धनप्रयोग**-(सं० पुं०) धन को किसी व्यापार में लगाने का काम।
धनप्रिया-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की जामुन।
धनमद-(सं०पुं०) अग्नि जिसकी आराधना से धन प्राप्त होता है। **धनमूल**-(सं० वि०) धन का लोभी या लालची। **धनलोभ**-(सं०पुं०) धन की अभिलाषा। **धनवन्त**-(सं०वि०) देखो धनवान्। **धनवती**-(सं०स्त्री०) धनिष्ठा नक्षत्र (वि०) धन रखने वाली।
धनवा-(हिं०पु०) एक प्रकार की घास।
धनवान्-(सं०वि०) जिसके पास धन हो, **धनशाली**-(सं०वि०) धनवान्, धनी, **धनसंचय**-(सं०पुं०) धन इकट्ठा करना।
धनसार-(हिं०पुं०) अन्न रखने की कोठरी
धनसिरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया।
धनसू-(सं०पुं०) धन का संचय।
धनस्थ-(सं०वि०) धनाढ्य, धनी।
धनस्थान-(सं०नपुं०) कुण्डली में लग्न से दूसरा स्थान।
धनस्पृहा-(सं०स्त्री०) धन की अभिलाषा।
धनस्वामी-(सं०पु०) धन देवता, कुबेर।
धनहर-(सं० वि०) धन चोराने वाला, तस्कर। **धनहारी**-(सं०वि०) दूसरे के धन का उत्तराधिकारी। **धनहीन**-(सं०वि०) निर्धन, कंगाल, दरिद्र।
धनहृत-(सं० वि०) धन का हरण करने वाला।
धना-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम, धान्यक, धनियाँ; (हिं०स्त्री०) युवती
धनाकाङ्क्षा-(सं० स्त्री०) धन की अभिलाषा।
धनागम-(सं०पुं०) धन की प्राप्ति, धन का मिलना। **धनाढ्य**-(सं०वि०) धनवान्, मालदार। **धनाधिकारी**-(सं० पुं०) कोषाध्यक्ष, भण्डारी।
धनाधिकृत-(सं०वि०) जो धन देकर

लिया गया हो।

धनाधिप-(सं० पुं०) कुबेर, धनरक्षक, भण्डारी। **धनाधिपति, धनाध्यक्ष**-(सं०पुं०) धन रक्षक, कुवेर।

धनाना-(हिं०क्रि०)गाय का गर्भवती होना

धनार्थ-(सं० वि०) धन के लिये।

धनार्थी-(सं०वि०)धन चाहने वाला।

धनाशा-(सं० स्त्री०) धन का लोभ, धन की लालच।

धनाश्री-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम

धनि-(हिं०स्त्री०)युवती,(वि०) देखो धन्य।

धनिक-(सं०वि०) धनी, जिसके पास धन हो।

धनिका-(सं० स्त्री०) सच्चरित्र स्त्री, युवती, वधू, धनी स्त्री।

धनिता-(सं०स्त्री०) धनाढ्यता,

धनिया-(हिं० पुं०) एक छोटा पौधा जिसके फल सुगन्धित होते हैं और मसालों में प्रयोग होते हैं, देखो धनिका (युवती स्त्री)

धनिया माल-(हिं०स्त्री०) गले मे पहिरने का एक प्रकार का गहना।

धनिष्ठ-(सं०वि०) बहुत बड़ा धनी।

धनिष्ठा-(सं० स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में से तेइसवाँ नक्षत्र।

धनी-(सं०स्त्री०) युवती स्त्री, वधू, बहू, (हिं०वि०) जिसके पास धन हो, (पुं०) धनवान्, पुरुष, पति, मालिक।

धनीयक-(सं०नपुं०) धन्याक, धनियां।

धनु-(सं०पुं०) धनुष, कमान, बारह राशियों में से नवीं राशि; **धनुआ**-(हिं०पुं०) धनुष कमान, रुई धुनने की धुनकी; **धनुई**-(हिं०स्त्री०) छोटा धनुष; **धनुक**-(हिं०पुं०) धनुष, इन्द्र-धनुष; **धनुकबाई**-(हिं० पुं०) एक प्रकार का वायुरोग जिसमें जबड़े बैठ जाते हैं और मुंह नहीं खुलता।

धनु-(हिं०पुं०) धनुष चलाने वाला

धनुकेतकी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का फूल।

धनुर्गुण-(सं०पुं०)धनुष की डोरी,चिल्ला

धनुर्ग्रह-(सं०पुं०) धनुर्धर, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। **धनुर्द्रुम**-(सं०पुं०) वंशवृक्ष, बाँस। **धनुर्धर**-(सं० पुं०) धनुर्धारी, तीरन्दाज, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। **धनुर्धारी**-(सं०वि०) देखो धनुर्धर। **धनुर्भृत**-(सं० पुं०) धनुर्धर। **धनुर्मध्य**-(सं० नपुं०) धनुष का मध्य भाग जिसको पकड़कर तीर छोड़ी जाती है। **धनुर्मार्ग**-(सं०पुं०) धनुष की टेढी रेखा, (वि०) वक्र, टेढा। **धनुर्माला**-(सं०स्त्री०) मरोर फली। **धनुर्मुख**-(सं० पुं०) एक प्रकार का यज्ञ, धनुर्यज्ञ। **धनुर्यज्ञ**-(सं०पुं०) वह यज्ञ जिसको राजा जनक ने सीता के स्वयंवर के निमित्त किया था। **धनुर्यास**-(सं०पुं०) सोमलता। **धनुर्वक्त्र**-(सं०पुं०)कार्तिकेय का एक अनुचर। **धनुर्वात**-(सं०पुं०) एक प्रकार का वायु रोग जिसमें शरीर ऐंठ जाता है। **धनुर्विद्या**-(सं०स्त्री०) धनुष चलाने की विद्या, तीरन्दाजी। **धनुर्वीज**-(सं० पुं०) भिल्लातक,भिलावां; **धनुर्वृक्ष**-(सं०पुं०) अश्वत्थ, पीपल का पेड़। **धनुर्वेद**-(सं०पुं०) धनुर्विद्या बोधक शास्त्र।

धनुष-(सं०पुं०) कमान, कुत्ता।

धनुषाक्ष-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम

धनुष्कर-(सं०पुं०) धनुष बनाने वाला

धनुष्कोटि-(सं०पुं०)रामेश्वर के दक्षिण का एक तीर्थ। **धनुष्पाणि**-(सं०वि०) जो हाथ में धनुष लिये हो।

धनुस्-(सं०नपुं०) तीर फेंकने का अस्त्र, कमाने, बारह राशियों में से नवीं राशि, चार हाथ की एक नाप।

धनुस्तम्भ-(सं०पुं०) देखो धनुर्वात।

धनुहाई-(हिं०स्त्री०) धनुष की लड़ाई।

धनुहिया, धनुही-(हिं०स्त्री०) लड़कों के खेलने का कमान।

धनेयक-(सं०नपुं०) धन्याक, धनिया।

धनेश-(सं०पुं०) धन का स्वामी, कुबेर; **धनेश्वर**-(सं०पुं०) कुबेर, विष्णु।

धनेस-(हिं०पुं०) बगले की तरह का एक पक्षी।

धनैश्वर्य-(सं०नपुं०) धन, सम्पत्ति।

धनैषी-(सं०वि०) धन चाहने वाला।

धन्ना-(हिं०पुं०) देखो धरना, (वि०) धन्य

धन्नासिका-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।

धन्नासेठ-(हिं०पुं०) प्रसिद्ध धनिक, बड़ा धनाढ्य मनुष्य।

धन्नी-(हिं० स्त्री०) गाय बैल की एक जाति, घोड़े की एक जाति।

धन्य-(सं०वि०) पुण्यवान्,श्लाध्य, बड़ाई के योग्य, जो अपने नाम, यश आदि द्वारा प्रसिद्ध हो। **धन्यवाद**-(सं०पुं०) साधुवाद, प्रशंसा, कृतज्ञता सूचक शब्द। **धन्यव्रत**-(सं०नपुं०) धनजन के लिये किया जाने वाला व्रत।

धन्या-(सं०स्त्री०)छोटा आमला,उपमाता, धन्याक, धनिया, मनु की एक कन्या का नाम; **धन्याक**-(सं०नपुं०) धनियां

धन्व-(सं०नपुं०) धनुष, कमान, चाप;

धन्वचर-(सं०पुं०) वह जो धनुष चलाकर अपनी जीविका निर्वाह करता है; **धन्वतरु**-(सं०पुं०)सोमवल्ली; **धन्वदुर्ग**-(सं०नपुं०) वह किला जिसके चारो ओर बहुत दूरतक मरुभूमि हो;**धन्वन्**(सं०नपुं०) धनुष, मरुदेश, आकाश; **धन्वन्तर**-(सं०नपुं०) चार हाथ की नाप।

धन्वन्तरि-(सं०पुं०) देवताओं के वैद्य जो पुराणों के अनुसार समुद्र मन्थन के समय समुद्र से निकले थे।

धन्वपति-(सं०पुं०) मरु देश का राजा;

धन्वसह-(सं०पुं०) धनुर्धर, योद्धा, वीर

धन्वा-(हिं०पुं०) धनुष, कमान, चाप, मरुभूमि; **धन्वाकार**-(सं०वि०) कमान के आकार का, टेढ़ा।

धन्वी-(सं०पुं०) धनर्धर, वीर, निपुण; (पुं०) विष्णु, महादेव, धनु राशि।

धप-(हिं०स्त्री०) वह शब्द जो किसी भारी कोमल वस्तु के गिरने से होता है, थप्पड़, तमाचा; **धपना** (हिं०क्रि०) वेग से चलना, झपटना, लपकना, मारना पीटना घूमना, घुमाना।

धप्पा-(हिं०पुं०) धौल, थप्पड़, क्षति, हानि। **धप्पाड़**-(हिं०स्त्री०) दौड़।

धबधब-(हिं०स्त्री०) किसी भारी कोमल वस्तु के गिरने का शब्द, मोटे मनुष्य के पैर रखने से उत्पन्न शब्द।

धबला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का ढीला पहरावा।

धब्बा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु पर पड़ा हुआ ऐसा चिह्न जो देखने में बुरा लगे, कलंक, दोष; **नाम में धब्बा लगाना**-दुर्नाम करना,कलंकित करना

धम-(हिं०स्त्री०) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, धमाका; **धमक**-(हिं०स्त्री०) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, पैर रखने का शब्द, किसी भारी शब्द से हृदय पर होने वाला आघात, धमाका, चोट, आघात।

धमकना-(हिं०क्रि०) धम शब्द के साथ गिरना, धमाका करना, रह रह कर पीड़ा होना, व्यथित होना; **आ धमकना**-पहुँच जाना। **धमकाना** (हिं०क्रि०) भय दिखलाना, डराना, घुड़कना, डाँटना।

धमकी-(हिं०स्त्री०) त्रास दिखलाने की क्रिया, डर दिखलाने का काम, डाँट डपट, घुड़की; **धमकी में आना**-भय के मारे कोई काम करना।

धमगरज-(हिं०पुं०) उत्पात, उपद्रव, युद्ध।

धमधम-(सं०पुं०) कुमार कार्तिकेय के गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुए थे।

धमधमाना-(हिं०क्रि०) धमधम शब्द करना।

धमधूसर-(हिं०वि०)भद्दा मोटा आदमी

धमन-(सं०पुं०)हवा से फूंकने का काम, नरकट, नीम का वृक्ष।

धमना-(हिं०क्रि०) धौंकना, फूंकना।

धमनी-(सं०स्त्री०) नाड़ी, शरीर के भीतर की रक्त आदि का संचार करने वाली छोटी या बड़ी नली, हरिद्रा,हलदी,ग्रीवा,गला,नैली,चोंगा।

धमसा-(हिं०पुं०) नगाड़ा, धौंसा।

धमाका-(हिं०पुं०) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, बन्दूक का शब्द, आघात,धक्का,हाथी पर लादी जाने वाली बड़ी तोप, पथरकला, बन्दूक।

धमाचौकड़ी-(हिं०स्त्री०) उपद्र, उछल कूद, उधम, कूद फांद, मारपीट,

धमाधम-(हिं० क्रि० वि०) बारंबार धमधम शब्द के साथ, प्रहार के शब्दों के सहित, (स्त्री०) निरन्तर धमधम का शब्द, आघात।

धमार-(हिं०स्त्री०) उत्पात, उपद्रव, उछल कूद, विशिष्ट प्रकार के साधुओं का दहकती आँच पर कूदने की क्रिया, (पुं०) होली में गाने का एक प्रकार का ताल। **धमारिया**-(हिं०पुं०) उछल कूद करने वाला नट, उपद्रवी, (वि०) होली में धमार गाने वाला, (वि०) उपद्रवी।

धमारी-(हिं०वि०) उत्पाती, उपद्रवी।

धमाल-(हिं०पुं०) देखो धमार।

धमासा-(हिं०पुं०) जवासा, एक प्रकार का क्षुप।

धमि-(सं०स्त्री०) धमनी, नाड़ी, अँतड़ी।

धमिका-(हिं०स्त्री०) लोहार की स्त्री, लोहारिन।

धमूका-(हिं० पुं०) आघात, प्रहार, धमाका, घूंसा।

धमेख-(हिं०स्त्री०) बुद्ध के काल का स्तूप जो सारनाथ में है (सं०-धर्मेक्ष)

धम्मन-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास

धम्माल-(हिं०स्त्री०) देखो धमार।

धम्मिल-(सं०स्त्री०) चोटी, जूड़ा।

धयना-(हिं०क्रि०) दौड़ना, घूमना।

धरंता-(हिं० वि०) पकड़ने वाला, धरने वाला।

धर-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, पृथ्वी, एक वसु का नाम, श्रीकृष्ण, विष्णु, व्यभिचारी पुरुष, (वि०) धारक, धारण करने वाला, थामने वाला, (पुं०) कच्छप जो पृथ्वी को धारण किये हुए हैं। **धरपकड़**-अपराधियों को पकड़ने का काम।

धरक-(हिं०पुं०) देखो धड़क; **धरकना**-(हिं०क्रि०) देखो धड़कना।

धरण-(सं०नपुं०)धारण करने की क्रिया, (पुं०) लोक, स्तन, धान्य, सेतु, पुल, मदार का वृक्ष।

धरणि-(सं०स्त्री०) पृथ्वी धमनी, नाड़ी; **धरणिज**-(सं०पुं०) मंगल, नरकासुर, पानीका सोता जो पृथ्वी में से उत्पन्न हो; **धरणिधर**-(सं०पुं०)पर्वत, पहाड़, कच्छप, विष्णु शिव, महादेव, शेष नाग; **धरणिरुह**-(सं०पुं०) वृक्ष।

धरणी-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, नाड़ी, मेदा, खैर का वृक्ष; **धरणीधर**-(सं०पुं०) देखो धरणिधर; **धरणीधृत्**-(सं०पुं०) पर्वत, अनन्तदेव; **धरणीपूर**-(सं०पुं०) समुद्र, सागर; **धरणीभृत्**-(सं०पुं०) पर्वत, विष्णु, अनन्त; **धरणीश्वर**-(सं०पुं०) शिव, विष्णु, राजा; **धरणीसुत**-(सं०पुं०) मङ्गल, नरकासुर; **धरणीसुता**-(सं०स्त्री०) सीता।

धरता-(हिं० पुं०) ऋणी, देनदार, धारण करने वाला, किसी कार्य का भार अपने ऊपर लेने वाला।

धरती-(हिं०स्त्री०)धरित्री, पृथ्वी, संसार,

धरधर-(हिं० पुं०) देखो धराधर, धड़-धड़। **धरधरा**-(हिं०पुं०) देखो धड़कन

धरधराना-(हिं०क्रि०) देखो धड़धड़ाना

धरन-(हिं०स्त्री०) धरने की क्रिया या भाव, गर्भाशय को दृढ़ता से पकड़ने

वाली नस; गर्भाशय, टेक, हठ, अड़, लकड़ी लोहे आदि का लंबा लट्ठा, जो घरों में छत का बोझ थामने के लिये लगाया रहता है, कड़ी, धरनी

धरना-(हिं०क्रि०) इधर उधर हिलने से बचाना, स्थापित करना, ठहराना, रक्षा में रखा, बन्धक रखना, किसी स्त्री का रखनी की तरह रखना, फैलाने वाली वस्तु को किसी दूसरी वस्तु में लगाना, आश्रय लेना, ग्रहण वस्तु में लगाना, आश्रय लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, आरोपित करना, धारण करना, पहिरना; **धरा रह जाना**-काम मे न आना, पड़ा रह जाना ।

धरना-(हिं०पुं०) कोई मांग के पूरी न होने तक किसी के द्वार पर जाकर अड़े रहना ।

धरनि-(हिं० स्त्री०) देखो धरणी ।

धरनी-(हिं० स्त्री०) देखो धरणी ।

धरनेत-(हिं० पुं०) धरना देने वाला मनुष्य ।

धरम-(हिं०पुं०) धर्म; **धरमसागर**-(हिं० पुं०) देखो धर्मशाला; **धरम घड़ी**-(हिं० स्त्री०) लंगर पर चलने वाली भीत पर लगी हुई बड़ी घड़ी ।

धरवाना-(हिं० वि०) धरने का काम काम दूसरे से कराना, पकड़ाना, थमाना ।

धरषना-(हिं० क्रि०) मलना, दबाना ।

धरसना-(हिं०क्रि०) डर जाना, दब जाना, सहम जाना, दबाना ।

धरसनी-(हिं० स्त्री०) देखो धर्षणी ।

धरहर-(हिं० स्त्री०) धरपकड़, रक्षा, बचाव, धैर्य, धीरज, लड़ने वालों की धर पकड़ करके झगड़ा तय करने का काम, बीच बचाव ;

धरहरना-(हिं० क्रि०) धड़ धड़ शब्द करना ।

धरहरा-(हिं० पुं०) धौरहरा, ऊंचा बुर्ज या मकान जिसमें चढ़ने के लिये भीतर की ओर सीढ़ियां बनी रहती हैं ।

धरहरिया-(हिं० पुं०) बीच बिचाव करने वाला, बचाव करने वाला; रक्षक ।

धरा-(सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती, संसार, बटखरा, चार सेर की तौल, एक वर्णवृत्त का नाम ।

धराऊ-(हिं०वि०) बहुमूल्य, बहुत दिनों का रक्खा हुआ, पुराना ।

धराक-(हिं० पुं०) देखो धड़ाक ।

धरातल-(सं० पुं०) धरती, पृथ्वी, सतह जिसमें मोटाई, गहराई या ऊंचाई का कुछ विचार नहीं किया जाता, लंबाई और चौड़ाई का गुणनफल ।

धरात्मज-(सं०पुं०) नरकासुर, मङ्गलग्रह

धराधर-(सं पुं०) पर्वत, विष्णु, अनन्त, शेषनाग, (वि०) पृथ्वी की रक्षा करने वाला; **धराधर**-(सं० पुं०) संगीत में एक ताल का नाम । **धराधरन**-(हिं० पुं०) देखो धराधर ।

धराधार-(सं० पुं०) शेषनाग ।

धराधिप, धराधिपति, धराधीश-(सं० पुं०) नृप राजा ।

धराना-(हिं०क्रि०) स्थिर कराना, पकड़ाना थमाना निश्चय करना, ठहराना ।

धरान्तरचर-(सं०वि०) पृथ्वी पर घूमने वाला ।

धरापति-(सं०पुं०) नृप, राजा ।

धरापुत्र-(सं०पुं०) मङ्गल ग्रह ।

धराभृत-(सं०पुं०) पृथ्वी का मालिक ।

धरामय-(सं०पुं०) ब्राह्मण ।

धरासूनु-(सं०पुं०) नरकासुर, मङ्गलग्रह

धरासुर-(हिं०पुं०) ब्राह्मण ।

धराहर-(हिं०पुं०) धरहरा ।

धरिंगा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का चावल

धरित्री-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि ।

धरी-(हिं०स्त्री०) रखनी, कान में पहिरने का स्त्रियों का एक प्रकार का गहना

धरुण-(सं०पुं०) जल, अग्नि, पृथ्वी, सूर्य, ब्रह्मा स्वर्ग, इक्कीस की संख्या

धरेचा-(हिं०पुं०) देखो धरेला ।

धरेल-(हिं०स्त्री०) रखेली, रखनी ।

धरेल-(हिं०पुं०) राजा

धरेला-(हिं०पुं०) वह पति जिसको कोई स्त्री बिना व्याह किये ग्रहण कर ले ।

धरैया-(हिं०वि०) धरने या पकड़ने वाला

धरोत्तम-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।

धरोहर-(हिं०स्त्री०) न्यास, थाती, वह द्रव्य जो किसी के पास इस बिश्वास पर रक्खा जावे कि जब उसका मालिक उसको मांगेगा तब वह उसको लौटा देगा ।

धरौवा-(हिं०पुं०) स्त्री को बिना व्याह किये रख लेने की चाल ।

धर्णि-(सं०वि०) धारण करने वाला ।

धर्तव्य-(सं०वि०) पकड़ने योग्य, धरने योग्य, रहने योग्य, गिरने योग्य ।

धर्ता-(सं०पुं०) धारण बनाने वाला, अपने ऊपर किसी प्रकार का भार लेने वाला

धर्तूर-(सं०पुं०) धतूरा ।

धर्म-(सं०नपुं०) सुकृत, सत्कर्म, पुण्य, सदाचार, वह आचरण जिससे समाज की रक्षा और कल्याण हो, सुखशान्ति की वृद्धि हो और परलोक में सद्गति प्राप्त हो, कर्त्तव्य, मन की वृत्ति, इन्द्रियों का कार्य, गुण की क्रिया, पदार्थ का गुण काल तथा युग का भेद, कोई विशिष्ट व्यापार, प्रकृति, स्वभाव, नित्य नियम, अलंकार में उपमेय तथा उपमान, में समान रूप से रहने वाला गुण, विवेक, न्याय की व्यवस्था, नीतिमित, संप्रदाय, पंथ, उपासना का भेद; **धर्म कमाना**-धर्म कार्य करके उसके उत्तम फल इकट्ठा करना; **धर्म बिगाड़ना**-धर्म भ्रष्ट करना; **धर्म से कहना**-सच्ची बात कहना ।

धर्मकथक-(सं० पुं०) धर्म का उपदेश करने वाला ।

धर्मकर्म-(सं०नपुं०) वह कर्म जिसका करना किसी धर्म ग्रन्थ में आवश्यक बतलाया गया हो; **धर्मकाय**-(सं०पुं०) बुद्धदेव; **धर्मकार**-(सं०पुं०) धर्मशास्त्र कर्ता; **धर्मकार्य**-(सं०नपुं०) देखो धर्म कर्म; **धर्मकूप**-(सं०पुं०) एक तीर्थ का नाम; **धर्मकृत**-(सं०वि०) धर्म करने वाला (पुं०) विष्णु; **धर्मकेतु**-(सं०पुं०) बुद्धदेव; **धर्मकोष**-(सं० पुं०) धर्मरूप रक्षणीय वस्तु;

धर्मक्षेत्र-(सं० पुं०) कर्मभूमि, भारतवर्ष, कुरुक्षेत्र ; **धर्मगुप**-(सं० पुं०)-विष्णु (वि०) धर्मरक्षक; **धर्मग्रन्थ**-(सं०पुं०) वह ग्रन्थ जिसमें जनसमाज के आचार, व्यवहार तथा उपासना आदि के विषय में शिक्षा दी गई हो; **धर्मघट**-(सं०पुं०) धर्मार्थ दान करने का घड़ा; **धर्मघ्न**-(सं०वि०) धर्मद्वेषी, धर्मनाशक; **धर्मचक्र**-(सं०नपुं०) धर्मसमूह, धर्म का ढेर, प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र; **धर्मचर्या**-(सं०स्त्री०) धर्म का अनुष्ठान **धर्मचारिणी**-(सं०स्त्री०) सहधर्मिणी; जाया; **धर्मचारी**-(सं०वि०) धर्म का आचारण करने वाला; **धर्मचिन्तक**-(सं०वि०) धर्म संबंधी बातों का विचार करने वाला; **धर्मचिन्ता**-(सं० स्त्री०) धर्म विषयक विचार; **धर्मज**-(सं०पुं०) धर्मपत्नी से उत्पन्न प्रथम औरस पुत्र; **धर्मजन्मा**-(सं०पुं०) युधिष्ठिर; **धर्मजन्य**-(सं०वि०) धर्म से उत्पन्न होने वाला (सुख) । **धर्मजिज्ञासा**-(सं०स्त्री०) धर्म के विषय में सन्देह उत्पन्न होने पर वेद वाक्य द्वारा धर्म की मीमांसा; **धर्म जीवन**-(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जो धर्म कृत्य कराके जीविका निर्वाह करता है; **धर्मज्ञ**-(सं०वि०) धर्म को जानने वाला, (पुं०) युधिष्ठिर; **धर्मतः**-(सं०अव्य०) धर्म का ध्यान करते हुए, धर्म को साक्षी रख करके; **धर्मतत्त्व**-(सं०नपुं०) धर्म का गुप्त मर्म; **धर्मद**-(सं० पुं०) धर्मोत्पादक (वि०) धर्म देने वाला; **धर्मदान**-(सं०पुं०) वह दान जो धर्म समझकर किया जावे; **धर्मदार**-(सं०नपुं०) धर्मपत्नी ।

धर्मद्रवी-(सं०स्त्री०) गङ्गा नदी; **धर्मद्रोही**-(सं०पुं०) धर्म का द्रोही, राक्षस; **धर्मद्वेषी**-(सं०पुं०) धर्मद्रोही, राक्षस; **धर्मधक्का**-(हिं०पुं०) वह कष्ट जो धर्म के निमित्त उठाया जावे, वह कठिनाई जो परोपकार आदि के लिये सहना पड़े, व्यर्थ का कष्ट; **धर्म धातु**-(सं०पुं०) बुद्ध देव; **धर्मध्वज**-(सं०पुं०) मिथिला देश के जनक वंश के एक राजा जो परम ज्ञानी थे, वह मनुष्य जो धर्म का आडंबर रच के अपना स्वार्थ सिद्ध करता है; **धर्मध्वजी**-(हिं० वि०) पाखण्डी; **धर्मनन्दन**-(सं०पुं०) धर्मपुत्र, युधिष्ठिर; **धर्मनिष्ठा**-(सं० स्त्री०) धर्म में विश्वास, (वि०) धार्मिक; **धर्मनीति**-(सं० स्त्री०) वह शास्त्र जिसमें कतव्या कर्तव्य तथा उसके फलाफल का विचार हो; **धर्मपट्ट**-(सं०पुं०) वह व्यवस्था-पत्र जो किसी राजा या धर्माधिकारी की ओर से दिया जावे; **धर्मपति**-(सं०पुं०) वरुण देवता; **धर्मपत्नी**-(सं०स्त्री०) विवाहिता स्त्री, वह स्त्री जिसके साथ धर्मशास्त्र की विधि से विवाह हुआ हो; **धर्मपत्र**-(सं०नपुं०) औडुम्बर, गूलर; **धर्मपथ**-(सं०पुं०) धर्ममार्ग, कर्तव्यपथ; **धर्मपर**-(सं०वि०) जिसकी धर्म में आस्था हो; **धर्मपरायण**-(सं०वि०) सर्वदा धर्म कार्य का यथाशक्ति अनुष्ठान करने वाला; **धर्मपाल**-(सं०पुं०) राजा दशरथ के एक मन्त्री का नाम, (वि०) धर्म की रक्षा करने वाला; **धर्मपाश**-(सं०पुं०) न्याय या धर्म का बंधन ।

धर्मपीठ-(सं०नपुं०) धर्म का मुख्य स्थान; **धर्मपुत्र**-(सं०पुं०) धर्म के अनुसार स्वीकृत किया हुआ पुत्र, युधिष्ठिर; **धर्मप्रचार**-(सं०पुं०) धर्म विषय का प्रचार; **धर्मप्रचारक**-(सं०पुं०) धर्म का प्रचार करनेके लिये इधर उधर घूमकर व्याख्यान देने वाला; **धर्मप्रतिरूपक**-(सं०पुं०) न्यायालय; **धर्मप्रदीप**-(सं०पुं०) धर्म का प्रकाश, धर्मज्ञ (वि०) धर्मनिष्ठ; **धर्मप्रमाण**-(सं०वि०) धर्म जिसका साक्षी हो; **धर्मप्रवक्ता**-(सं०पुं०) धर्म का निर्णायक; **धर्मप्रवृत्ति**-(सं०स्त्री०) धर्ममें श्रद्धा; **धर्मवती**-(सं०स्त्री०) स्वर्ग में बहने वाली एक नदी; **धर्मबल**-(सं० पुं०) धर्म की शक्ति; **धर्मबुद्धि**-(सं०स्त्री०) धर्मज्ञान, भले बुरे का बिचार; **धर्मभगिनी**-(सं०स्त्री०) धर्म के अनुसार मानी हुई बहिन, गुरू की कन्या; **धर्मभय**-(सं० पुं०) धर्म का भय, यह विश्वास कि अधर्म करने से नरक यातना भोगना पड़ता है ; **धर्मभाणक**-(सं०पुं०) कथा पुराण बांचने वाला; **धर्मभीत**-(सं० वि०) धर्म के भय से डरने वाला; **धर्म भीरु**-(सं०वि०) जिसको धर्म का भय हो, जो अधर्म करते हुए बहुत डरता हो; **धर्मभृत्**-(सं०वि०) धर्मशील, धार्मिक; **धर्मभृत**-(सं० पुं०) तेरहवें मनु के एक पुत्र का नाम; **धर्मभ्राता**-(सं०पुं०) भाई के समान एक ही आश्रम में रहने वाला; **धर्ममति**-(सं०वि०) धार्मिक, पुण्यात्मा; **धर्ममय**-(सं०वि०) धर्म से परिपूर्ण; **धर्ममहामात्य**-(सं०पुं०) धर्म विषयक मन्त्री ।

धर्ममूल-(सं०नपुं०) धर्म का प्रमाण ।

धर्मयुग-(सं०नपुं०) सत्य युग; **धर्मयुज्**-(सं० वि०) धर्मयुक्त, (नपुं०) न्याय से उपार्जित धन; **धर्मयुद्ध**-(सं० पुं०) वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का अन्याय अथवा नियम भङ्ग न हो;

धर्मरक्षित-(सं० पु०) योन देश का एक स्थविर जो अशोक के समय में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये अपरान्तक देशमें भेजा गया था; **धर्मराइ**-(हिं० पुं०) देखो धर्मराज; **धर्मराज**-(सं०पुं०) नृपति, राजा युधिष्ठिर, न्यायाधीश,यम,धर्म का पालन करने वाला राजा, न्यायकर्ता; **धर्मराय**-(हिं०पुं०) देखो धर्मराज।

धर्मलुप्ता उपमा-(सं०स्त्री०) वह उपमा जिसमें धर्म अर्थात् उपमान और उपमेयमें समान रूपसे पाई जाने वाली बात का कथन न हो;**धर्मवत्**-(सं०पु०) धर्मयुक्त,धार्मिक;**धर्मवर्धन**-(सं० पुं०) शिव, महादेव; **धर्मवर्म**-(सं० पिं०) धर्मरक्षक, धार्मिक; **धर्मवत्सल**-(सं० वि०) धर्मनिष्ठ, धार्मिक; **धर्मवाद**-(स०पुं०)धर्म संबंधी तर्क; **धर्मवादी**-(सं०वि०) धर्म का उपदेश देने वाला; **धर्मवासर**-(स०पु०) पूर्णिमा; **धर्मवाहन**-(सं०पुं०) शिव, महादेव, (नपुं०) धर्मराज का वाहन,भैंसा; **धर्मवाह्य**-(सं०वि०) जो धर्म को न मानता हो; **धर्मविद**-(सं०वि०) धर्मज्ञ, धर्म जानने वाला; **धर्मविदुत्तम**-(सं०पु०) विष्णु; **धर्मवित्तम**-(सं०पुं०) विष्णु (वि०) धर्मिकोंमें श्रेष्ठ; **धर्मविद्या**-(सं०स्त्री०) मीमांसादि शास्त्र; **धर्मविप्लव**-(सं० पुं०) धर्म का व्यतिक्रम, **धर्मविवेचन**-(सं०नपुं०)धर्म और अधर्मका विचार **धर्मवीर**-(सं०पुं०) वीर रस के अनुसार वह पुरुष जो धर्म करने मे साहसी हो; **धर्मव्याध**-(सं० पुं०) मिथिलापुर वासी एक व्याध जिसने कौशिक नामक एक तपस्वी को धर्म का उपदेश किया था; **धर्मव्रता**-(सं०स्त्री०) धर्म की विश्वरूपा पत्नी से उत्पन्न एक कन्या; **धर्मवल**-(सं० पुं०) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष; **धर्मशरीर**-(सं०नपुं०) धर्म का चिह्न; **धर्मशाला**-(सं०स्त्री०) यात्रियों के लिये धर्मार्थ बना हुआ गृह, सत्र, विचारालय; **धर्मशासन**-(सं०नपुं०) धर्मशास्त्र; **धर्मशास्त्र**-(सं०नपुं०) वह ग्रन्थ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार संबंधी नियम लिखे हों; **धर्मशास्त्री**-(सं०पुं०) वह जो धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देता हो, वह पण्डित जो धर्मशास्त्र को भली भाँति जानता हो; **धर्मशील**-(सं० विं०) धार्मिक, धर्मके अनुसार आचरण करने वाला; **धर्मशीलता**-(सं० स्त्री०) धर्मशील होने का भाव, **धर्मसंकट**-(हिं०पुं०) ऐसी स्थिति का आ पड़ना जब किसी कार्य के करने या न करने पर धर्म पर आघात पड़ता हो। **धर्मसंश्रित**-(सं०विं०) धर्म तत्व का अभिलाषी; **धर्मसंहिता**-(स०स्त्री०) वह शास्त्र जिनमें धर्म का निरूपण हो, धर्मशास्त्र; **धर्म सङ्कर**-(सं०पुं०) विरुद्ध धर्म का एकत्र समवाय; **धर्मसभा**-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहां पर बैठ कर न्यायाधीश न्याय करे; **धर्मसार**-(संपुं०) पुण्य कर्म का साधन, श्रेष्ठ पुण्य कर्म; **धर्म सारी**-(हिं०पुं०) धर्मशाला; **धर्मसावर्णि**-(सं० पुं०) पुराणों के अनुसार ग्यारहवें मनु का नाम; **धर्मसुत**-(सं० पुं०) युधिष्ठिर; **धर्म सूत्र**-(सं०नपुं०)जैमिनिका बनाया वह ग्रन्थ जिसमें धर्म की मीमांसा की गई है; **धर्म सेतु**-(सं०पुं०) धर्म-का रक्षक।

धर्मस्थ-(सं०पुं०) न्यायाधीश, (वि०) जो केवल धर्म में लगा रहता है;

धर्मस्थल-(सं०नपुं०) वह स्थान जहां धर्मकार्य किये जाते हैं; **धर्मस्थविर**-(स०पुं०)धर्म में दृढ़चित्त; **धर्महन्ता**-(सं० वि०) धर्म के काम में बाधा डालने वाला।

धर्मागम-(सं०पुं०) धर्मशास्त्र।

धर्माचार्य-(सं०पु०)धर्मशिक्षक, धर्म की धर्मा शिक्षा देने वाला गुरु।

धर्मात्मा-(सं० वि०) धर्म करने वाला, धार्मिक।

धर्माधर्म-(सं० पुं०) पुण्य और पाप।

धर्माधिकरण (सं० नपु०) विचारालय, न्यायालय; (स०पु०) धर्माध्यक्ष।

धर्माधिकार-(सं०पुं०)न्याय और अन्याय के विचार का अधिकार; **धर्माधिकारी**-(सं०पुं०) धर्म, अधर्म की व्यवस्था देने वाला, न्यायाधीश, विचारक, दानाध्यक्ष; **धर्माधिपति**-(सं० पुं०) प्रधान व्यवस्थापक; **धर्माधिष्ठान**-(सं०नपु०) न्यायालय।

धर्माध्यक्ष-(सं० पुं०) धर्माधिकारी, विष्णु, शिव, महादेव।

धर्माध्वन-(स०पु०) न्याय का मार्ग।

धर्मानुगत-(सं०वि०) धर्मयुक्त,धार्मिक; **धर्मानुयायी**-(सं०वि०) धर्म के अनुसार चलने वाला।

धर्मायतन-(सं० नपुं०) धर्म का मानसिक ज्ञान।

धर्मार्थ-(सं०क्रि०वि०) धर्म के निमित्त, परोपकार के लिये।

धर्मालीक-(सं०वि०) कपटी, पाखण्डी।

धर्मावतार-(सं० पुं०) साक्षात् धर्म, अत्यन्त धर्मात्मा, अच्छी तरह न्याय कार्य करने वाला, न्यायाधीश, युधिष्ठिर।

धर्माश्रत-(सं०वि०)धर्मशील, धार्मिक।

धर्मासन-(सं० नपु०) न्यायाधीश के बैठने का आसन, चौकी आदि।

धर्मिणी-(सं० स्त्री०) पत्नी, स्त्री, (वि०) धर्म करने वाली।

धर्मिष्ठ-(सं० पुं०) पुण्यात्मा, अत्यन्त धार्मिक।

धर्मी-(सं०वि०) धार्मिक, जिसमें धर्म हो, जिसमें गुण हो, (पुं०) धर्म का अवतार, विष्णु, गुण या धर्म का आश्रय, धर्मात्मा पुरुष; **धर्मीपुत्र**-(सं०पुं०)नाटक का कोई पात्र; **धर्मीयस्**-(स०वि०) अत्यन्त धर्मात्मा।

धर्मेन्द्र-(सं०वि०) धर्मराज, यम।

धर्मेप्सु-(सं०वि०) धर्म लाभ करने का अभिलाषी।

धर्मेश-(सं०पुं०) धर्मराज, यम।

धर्मोत्तर-(सं०पु०) प्रधान धर्म।

धर्मोपदेश-(सं०पुं०)धर्मशास्त्र, धर्म की शिक्षा, धर्म विषयक उपदेश; **धर्मोपदेशक**-सं०वि०) धर्म का उपदेश देने वाला (पुं०) गुरु; **धर्मोपदेशना**-(स०स्त्री०)व्यवहार शास्त्र का उपदेश।

धर्मोपाध्याय-(सं०पुं०) पुरोहित।

धर्मोपेत-(सं०पुं०) धार्मिक, न्यायी।

धर्म्य-(सं०वि०)जो धर्म के अनुकूल हो।

धर्ष-(सं०पुं०)प्रगल्भता, वीरता, क्रोध, अविनय, अधीरता, अनादर।

धर्षक-(सं०वि०) अपमान करने वाला, तिरस्कार करने वाला,(पुं०)चतुर,नट, दमन करने वाला, व्यभिचारी।

धर्षकारिणी-(सं०स्त्री०) असती, व्यभिचारिणी।

धर्षकारी-(सं०वि०) दमन करने वाला, हराने वाला।

धर्षण-(स०नपुं०) अनादर, अपमान, असहनशीलता, (पुं०) शिव, महादेव, आक्रमण, (वि०) दबाने वाला।

धर्षणा-(सं०स्त्री०) अवज्ञा, अपमान, नीचा दिखाने का काम, संभोग, रति, सतीत्वहरण; **धर्षणात्मा**-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

धर्षणि, धर्षणी-(सं०स्त्री०) बन्धकी, कुलटा स्त्री। **धर्षणीय**-(स०वि०) दबाने या हराने योग्य। **धर्षित**-(स०वि०) अपमानित, नीचा देखाया हुआ। **धर्षी**-(सं०वि०) आक्रमण करने वाला, अपमान करने वाला, हराने वाला।

धव-(सं०वि०) कँपाने या डराने वाला, (पुं०) पति, स्वामी, नर, धूर्त मनुष्य, एक जंगली वृक्ष।

धवई-(हिं०स्त्री०) एक वृक्ष का नाम, धातकी।

धवनि-(सं०स्त्री०) अग्नि, आग।

धवनी-(हिं०स्त्री०) धौंकनी, (वि०) सफ़ेद

धवर-(हिं०पुं०)एक प्रकार की चिड़िया

धवरहर, धवराहर-(हिं०पुं०) देखो धरहरा।

धवरा-(हिं०विं०) उजला, सफ़ेद। **धवरी**-(हिं०वि०) उजली (स्त्री०) सफेद रंग की गाय।

धवल-(सं०पुं०) धव का वृक्ष, बड़ा बैल, एक राग का नाम, धवर पक्षी, छप्पय छन्द का एक भेद, सफेद कोढ, शंख, सफेद मिर्च, (वि०) सफेद, उजला, निर्मल, सुन्दर, मनोहर; **धवलगिरि**-(सं०पुं०) एक पर्वत का नाम।

धवलता-(हिं०स्त्री०) सफ़ेदी, उजलापन

धवलत्व-(स०नपुं०)धवलता; **धवलना**-(हिं०क्रि०) उज्वल करना, सफ़ेद करना,चमकाना; **धवलपक्ष**-(सं० पुं० हंस, शुक्ल पक्ष; **धवलमृत्तिका**-(स० स्त्री०) दुद्धी, खड़िया मिट्टी;**धवलश्री**-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम। न

धवला-(सं०स्त्री०) सफ़ेद गाय, वृन्दाव का एक पर्वत, (पुं०) सफ़ेद बैल,(वि०) सफ़ेद, उजली, (नपुं०) अनन्तमूल। **धवलाई**-(हिं० स्त्री०) उजलापन, सफ़ेदी। **धवलागिरि**-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।

धवलित-(सं०वि०) सफ़ेद किया हुआ;

धवली-(सं०स्त्री०) सफ़ेद गाय, सफ़ेद मिर्च; **धवलीकृत**-(स०वि०) सफ़ेद किया हुआ; **धवलीभूत**-(सं०वि०) जो सफ़ेद हुआ हो।

धवलेक्षु-(सं०पुं०) सफेद आँख।

धवलोत्पल-(सं०नपुं०) कुमुद, एक फूल का नाम।

धवाणक-(स०पु०) वायु, हवा।

धवाना-(हिं०क्रि०) दौड़ाना।

धवितव्य-(सं०वि०) हवा देने योग्य, धौंकने योग्य।

धवित्त-(सं०नपुं०) हरिन के चमड़े का बना हुआ पखा।

धस-(हिं०पुं०) जल आदि में प्रवेश, गोता,डुबकी, भुरभुरी भूमि; **धसक**-(हिं०स्त्री०) सूखी खाँसी से गले से निकलने वाला शब्द, सूखी खाँसी, ढसक, ईर्ष्या, डाह; **धसकना**-(हिं० क्रि०) नीचे को धँसना, दबना, बैठ जाना, ईर्ष्या करना, डाह करना; **धसका**-(हिं० पुं०) चौपायों के फेफड़े का एक रोग; **धसना**-(हिं०क्रि०) धँसना, नष्ट होना, मिट जाना; **धसनि**-(हिं०स्त्री०)देखो धँसनि; **धसमसाना**-(हिं०क्रि०) धरती में समाना, धँसना।

धसाल-हिं०स्त्री०) देखो धँसान; एक नदी का नाम।

धसाव-(हिं०पुं०) देखो धँसाव।

धाँक-(हिं०पुं०) भील की तरह की एक जंगली जाति।

धाँगड़-(हिं०पुं०) एक अनार्य जंगली जाति, ये लोग कुवाँ, तालाब आदि के खोदने का काम करते हैं।

धाँगर-(हिं०पु०) देखो धाँगड़।

धाँधना-(हिं०क्रि०) बन्द करना, बहुत अधिक (ठूंस कर) खा लेना।

धाँधल-(हिं०स्त्री०) उपद्रव, उधम,धोखा, अति शीघ्रता; । **धाँधलपन**-उपद्रव, पाजीपन; **धाँधली**-(वि०) उपद्रवी, उधमी, नटखट, पाजी।

धाँय-(हिं०स्त्री०) देखो धायँ।

धाँस-(हिं०स्त्री०) मिर्च, तमाखू आदि की तीव्र गन्ध जिससे खाँसी आने लगती है; **धाँसना**-(हिं० क्रि०) पशुओं का खाँसना। **धाँसी**-(हिं०स्त्री०) घोड़े की खाँसी।

धा-(सं०पुं०) ब्रह्मा, बृहस्पति, (वि०) धारण करने वाला (हिं०पुं०) संगीत में धैवत स्वर का संकेत, तबले का एक बोल ।

धार-(हिं०पुं०) धव का वृक्ष ।

धाई-(हिं०स्त्री०) देखो धाय, धातू ।

धाउ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का नाच ।

धाऊ-(हिं०पुं०) वह मनुष्य जो किसी मुख्य कार्य के लिये भेजा जाय, हरकारा ।

धाक-(सं०पुं०) बैल, आहार, अन्न, खंभा, आधार; (हिं०पुं०) दबदबा, प्रसिद्धि, ढाक, पलास वृक्ष; धाक बँधना-प्रभाव होना; धाक बाँधना-प्रभाव जमाना । धाकना-(हिं०क्रि०) रोब जमाना ।

धागा-(हिं०पुं०) बटा हुआ सूत, तागा, डोरा ।

धाड़-(हिं०स्त्री०) डाकुओं का धावा, झुंड, जत्था, दहाड़ ।

धाड़ना-(हिं०क्रि०) देखो दहाड़ना;

धाड़स-(हिं०स्त्री०) देखो ढाढस ।

धाड़ी-(हिं०पुं०) बड़ा भारी डाकू ।

धात-(हिं०स्त्री०) देखो धातु; धातकी-(सं०स्त्री०) धव का फूल ।

धाता-(सं०पुं०) विधाता, ब्रह्मा, शेषनाग, विष्णु, शिव, ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम, बारह सूर्यों में से एक, एक विशिष्ट वायु का नाम, आत्मा, भृगु मुनि के एक पुत्र का नाम, सप्तर्षि में से एक का नाम, (वि०) धारण करने वाला,पालन करने वाला

धातु-(सं०पुं०) परमात्मा, शरीर को धारण करने वाला द्रव्य यथा वात, पित्त और कफ, शरीर में रहने वाले सात धातु-रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र हैं, शब्द का वह रूप जिससे क्रिया बनती हैं, वे खान से निकलने वाले द्रव्य जो भारी हों जो गलाये जा सके, जिनमें गुरुत्व हो, जो पीट कर बढाये जा सकें तथा जिनका तार खींचा जा सके, शुक्र, वीर्य, तत्व, भूत, किसी महात्मा की अस्थि जो डिब्बे में बंद करके भूमि में गाड़ दी जाती थी और उसपर स्मारक बनाया जाता था ।

धातुक-(सं०पुं०) शिलाजतु, शिलाजीत । धातुकुशल-(सं०वि०)जो धातु क्रिया में कुशल हो । धातुक्षय-(सं०पुं०) प्रमेहादि रोग जिसमें धातु का अधिक क्षय होता है । धातुघ्न-(सं०नपुं०) शरीर के धातु को नष्ट करने वाला पदार्थ । धातुद्रावक-(सं०पुं०) धातु को गलाने वाला, सोहागा । धातुपुष्ट-(सं०वि०) वीर्य को गाढ़ा करने वाला । धातुपुष्पिका, धातुपुष्पी-(सं०स्त्री०) धव का फूल । धातुप्रदान-(हिं०पुं०) शुक्र, वीर्य । धातुवैरी-(हिं०पुं०) गन्धक ।

धातुभृत्-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, (वि०) धातु का पोषण करने वाला ।

धातुमर्म-(सं०पुं०) कच्ची धातु को शुद्ध करने की कला । धातुमल-(सं०पु०) धातु का मल, वैद्यक के अनुसार कफ, पित्त, पसीना आदि धातु के मल हैं । धातुमारिणी-(सं०स्त्री०) सोहागा । धातुराग-(हिं०पु०)धातु से निकला हुआ रंग । धातुराजक-(सं०नपु०) शुक्र, वीर्य । धातुवर्धक-(सं०वि०)वीर्यको बढ़ानेवाला ।

धातुवल्लभ-(सं०नपुं०)टङ्कन, सोहागा ।

धातुवाद-(सं०पु०) कच्ची धातु को निर्मूल करने तथा इसमें मिली हुई अनेक धातुओंको अलगाने की कला, रसायन बनाने का काम । धातुवादी-(सं०पुं०) रसायनिक क्रिया से सोना चाँदी बनाने वाला रसायनी ।

धातुविद्-(सं०स्त्री०) शीषक, सीसा धातु । धातुविष-(सं०स्त्री०) सीसा, हरताल । धातुवृद्धि-(सं०स्त्री०) वीर्य की वृद्धि । धातुवैरी-(सं०पुं०)गन्धक, धातुशेखर-(सं०नपु०)कासीस । धातुसंज्ञ, धातुसम्भव-(सं० वि०) सीसक, सीसा । धातुस्तम्भक-(सं०वि०) वीर्य को रोकने वाला; धातुहन-(सं०पुं०) गंधक; धातुपल-(सं०पुं०) खड़िया मिट्टी ।

धातृ-(सं० वि०) धारण करने वाला, पोषक, (पु०) ब्रह्मा, विष्णु, आत्मा, ब्रह्मा के एक पुत्रका नाम, आदित्य । मेद; धातृपुत्र-ब्रह्मा के पुत्र सनतकुमार धातृपुष्पिका-धव का फल ।

धात्री-(सं०नपुं०) भाजन, पात्र,

धात्री-(सं०स्त्री०) माता, माँ, किसी बच्चे को दूध पिलाने वाली स्त्री, बच्चे का पालन पोषण करने वाली स्त्री, धाय, दाई, पृथ्वी, गायत्री देवी, गंगा, आँवला, सेना, गाय, आर्या छन्द का एक भेद;

धात्रीपत्र-(सं०नपुं०) तालीस पत्र, आमले की पत्ती; धात्रीपुत्र-(सं०पुं०) धाय का बेटा,नट; धात्रीफल-(सं०नपु०) आँवला ; धात्रीविद्या-(सं० स्त्री०) लड़का जनाने और शिशु पालन की विद्या ।

धात्रेयी-(सं०स्त्री०) धात्री, धाय, दाई ।

धात्वर्थ-(सं०पुं०) किसी शब्द का धातु से निकलने वाला अर्थ ।

धाधि-(हिं०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला ।

धान-(हिं०पुं०) तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों का छिलका निकालने पर चावल होता है ।

धानक-(सं०नपुं०) धन्याक, धनिया, एक रत्ती का चौथा अंश (हिं०पुं०) धनुर्धारी

धानकी-(हिं०पुं०) धनुर्धारी, कामदेव ।

धानजई-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान । धानपान-(हिं०पुं०) विवाह के पहिले की एक रीति जिसमें वर पक्ष की ओर से कन्या के घर धान और हल्दी भेजी जाती है, (वि०) दुबला पतला । धानमाली-(हिं०पुं०) अस्त्र चलाने की एक क्रिया जिसमें दूसरे के चलाये हुए अस्त्र को रोका जाता है

धानाका-(सं०स्त्री०, धन्याक, धनिया ।

धाना-(हिं०क्रि०) दौड़ना, भागना,प्रयत्न करना ।

धानाचूर्ण-(सं०नपुं०) सक्तु, सत्तू ।

धानिका-(सं०स्त्री०) धानी, आधार ।

धानी-(सं०स्त्री०) आधार, वह जिसमें कोई वस्तु रक्खी जावे, स्थान, जगह, धन्याक, धनिया; (हिं० स्त्री०) धान की पत्ती के समान रंग, (वि०) हलके हरे रंग का (स्त्री०) एक संकर रागिणी का नाम, भूना हुआ जव या गेहूँ ।

धानुक-(हिं०पुं०) धमुर्धारी, एक नीच जाति ।

धानुष्क-(सं०पुं०) धनुर्धारी, धनुष चला कर अपनी जीविका निर्वाह करने वाला । धानुष्का-(सं०स्त्री०) अपमार्ग, चिचिड़ा ।

धानुष्य-(सं०पुं०) बाँस ।

धानेय, धानेयक-(सं०नपुं०) धान्यक, धनिया ।

धान्धा-(सं०स्त्री०) एला, इलायची ।

धान्य-(सं०नपु०) छिलका सहित चावल, धान, कोई भी अन्न, चार तिल का एक परिमाण, धन्याक, धनियाँ, एक प्रकार का नागरमोथा, प्राचीनकाल का एक अस्त्र ।

धान्यक-(सं०नपुं०) धन्याक, धनियाँ, धान्य, धान; धान्यकञ्चुकी-(सं०पुं०) धान का छिलका; धान्य कल्क-धान की भूसी; धान्यकोष्ठक-(सं०पुं०) अन्न भरनेका कोठिला; धान्य चमस-(सं०पुं०) चिपटिक, चिवड़ा । धान्यपति-(सं०पुं०) चावल, जव; धान्यबीज-(सं०पुं०) धन्याक, धनिया; धान्यभक्षक-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का पक्षी; धान्यमञ्जरी-(सं०पुं०) धान का अंकुर; धान्यमण्ड-(सं०पु०) धान की बनाई हुई मदिरा; धान्यमाय-(सं०स्त्री०) धान तौलने या बेचने वाला; धान्यमालिनी-(सं०स्त्री०) एक राक्षसी जो रावणके यहाँ रहती थी; धान्यमाष-(सं०पु०) दो धान के बराबर का एक प्राचीन परिमाण; धान्यमुख-(सं०पुं०) चीर फाड़ करने का एक प्राचीन अस्त्र; धान्यराज-(सं०स्त्री०) यव, जव,; धान्यवर्धन-(सं०पुं०) सवाई पर अन्न ऋण देने का व्यवहार; धान्यबीज-(सं०पु०) धान का बीज, धनियाँ; धान्यवीर-(सं०पुं०) माष, उड़द; धान्यशीर्षक-(सं०नपुं०) धान की मंजरी; धान्यसार-(सं०पुं०) तण्डुल, चावल ।

धान्या, धान्याक-(सं०स्त्री०) धन्याक, धनियाँ । धान्याकृत-(सं०पुं०)किसान, खेतिहर । धान्याम्ल-(सं०नपुं०) काञ्जिक, कांजी । धान्यारि-(सं०पुं०) मूषक, चूहा । धान्याशय-(सं०पुं०) अन्न रखने का स्थान, भंडार । धान्यास्थि-(सं०नपु०) तुष, भूसी ।

धान्व-(सं०वि०) जंगल में उत्पन्न होने वाला ।

धाप-(हिं०पुं०) लंबा चौड़ा मैदान, खेत की लंबाई चौड़ाई, दूरी की नाप जो एक या दो मील मानी जाती है, (स्त्री०) तृप्ति, सन्तोष, जल की धारा । धापना-(हिं०क्रि०) तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, अघाना, सन्तुष्ट करना, दौड़ना, भागना ।

धाबा-(हिं०पु०) छत के ऊपर का कमरा, अटारी, छत जिसके नीचे बाँस की फट्टियाँ लगी रहती हैं, वह स्थान जहाँ कच्ची रसोई बिकती है

धाभाई-(हिं०पुं०) देखो दूधभाई ।

धाम-(सं०पुं०) एक प्रकार के देवता, विष्णु, घर, शरीर, शोभा, प्रणाम, किरण, स्थान, जन्म, तेज. बागडोर, लगाम, ज्योति, देवस्थान, पुण्यस्थान, अवस्था, स्थिति, गति, स्वर्ग;

धामक-(सं०पुं०) एक प्रकारकी सुगन्धित घास, एक माशे की तौल;

धामकेशी-(सं०पुं०) किरण युक्त सूर्य; धामकधूमक-(हिं०स्त्री०) देखो धूमधाम; धामधा-(सं०पुं०) पालक, रक्षक; धामन्-(सं० नपुं०) देखो धाम;

धामनिका-(सं०स्त्री०) धमनी, नाड़ी;

धामनिधि-(सं०पुं०) भानु, सूर्य;

धामभाज-(सं०पुं०) वह देवता जो यज्ञ में भाग लेता है ।

धामा-(हिं०पुं०) भोजन का नेवता ।

धामार्गव-(सं०पुं०) अपामार्ग,चिचिड़ा, एक प्रकार की तरोई ।

धामिन-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बहुत लंबा सर्प जिसकी पूंछ में बहुत विष होता है ।

धायँ-(हिं०स्त्री०) तोप बंदूक आदि के छूटने का शब्द, किसी पदार्थ के वेग से गिरने का शब्द ।

धाय-(सं०वि०) धारण करने वाला, (हिं०स्त्री०) वह स्त्री जो दूसरे के बालक को दूध पिलाती है तथा उसका पालन पोषण करती है, दाई, धव का वृक्ष ।

धायना-(हिं०स्त्री०) दौड़ना धूपना ।

धायस-(सं०वि०) धारण करनेवाला, पालन पोषण करने वाला ।

धाय्य-(सं०पुं०) पुरोहित ।

धार-(सं०नपुं०)इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल, वेग से वर्षा होना, प्रान्त, प्रदेश, (वि०) गहरा ।

धार-(हिं०स्त्री०) निरन्तर जल का प्रवाह, पानी का सोता, जल डमरुमध्य, किसी काटने वाले हथियार का पैना किनारा, आक्रमण, धावा, सेना, दिशा, किनारा, छोर, ऋण, वर्तुलाकार काठ में (जमोट में) लगाया हुआ लोहा जिस पर कुवें

की कोठी बाँधी जाती हैं; **धार चढ़ाना**-किसी देवता को दूध आदि चढ़ाना; **धार देना**-दूध देना; **धार निकालना**-दूध दुहना; **धार मारना**-पानी का सोता निकल आना; **धार बाँधना**-किसी शस्त्र की धार पैनी करना।

धारक-(सं०पुं०) कलसा, घड़ा, (वि०) धारण करने वाला, रोकने वाला।

धारका-(सं०स्त्री०) स्त्री की योनि।

धारण-(सं०नपुं०) ग्रहण, थामना, अपने ऊपर लेना, पहिरना, सेवा, रक्षा, निवारण, ले जाना, स्थापन, ऋण लेना, अंगीकार करना, खाना पीना, (पु०) शिव, महादेव, कश्यप के एक पुत्र का नाम; **धारणक**-(सं०पु०) ऋणी

धारणा-(सं०स्त्री०) स्मरणशक्ति, बुद्धि, संकल्प, मर्यादा, पक्का विचार, स्मृति, परब्रह्ममें चित्त की स्थिरता।

धारणी-(सं०स्त्री०) नाड़ी, श्रेणी, पंक्ति, पृथ्वी, सीधी लकीर; **धारणीमति**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की समाधि।

धारणीय-(सं०वि०) धारण करनेयोग्य, जो धारण किया जा सके।

धारन-(हि०पुं०) देखो धारण; **धारना**-(हिं०क्रि०) धारण करना, ऋण लेना,

धारय-(सं०वि०) धारण करने वाला।

धारयितृ-(स०वि०) धारण करने वाला

धारयितव्य-(सं०वि०) धारण करने योग्य

धारयित्री-(सं०स्त्री०) धारण करने वाली, पृथ्वी।

धारयिष्णु-(सं०वि०) धारण करने वाला

धारा-(सं०स्त्री०) पानी आदि का बहाव, घोड़े की चाल, हथियार की धार, बाढ़, रथ की पहिया, कीर्ति, यश, उन्नति, समूह, झुंड, अधिक वर्षा, निरन्तर बहता हुआ कोई द्रव पदार्थ, पानी का झरना, समानता, गुरुच, हल्दी, आमला, घड़े में बनाया हुआ छिद्र, सेना का अगला भाग, पहाड़ की चोटी, राजा भोजकी राजधानी; **धारागृह**-(सं०नपुं०) वह घर जिसमें जलयन्त्र लगे हों; **धारांकुर**-(सं०पुं०) वर्षा की बूंद, थोड़ी वर्षा, ओला; **धाराङ्ग**-(सं०पुं०) खड्ग, तलवार; **धाराट**-(सं०पु०) चातक, पक्षी, मेघ, बादल, घोड़ा, मस्त हाथी; **धाराधर**-(सं०पुं०) मेघ, बादल, खड्ग; **धारान्तरचर**-(स० वि०) आकाश में उड़ने वाला। **धारापात**-(सं०पुं०) पानी का गिरना; **धारापूष**-(सं० नपुं०) एक प्रकार का मालपुआ; **धाराफल**-(सं० पुं०) मैनफल का वृक्ष; **धारायन्त्र**-(सं०पुं०) फुहारा; **धाराल**-(सं०वि०) धारदार, जिसमें धार हो; **धारावत**-(सं०वि०) जल के समान; **धारावनि**-(सं०पुं०) वायु, हवा; **धारावर**-(सं०पुं०) मेघ, बादल; **धारावर्ष**-(सं० पुं०) निरन्तर वर्षा; **धारावाही**-(सं०वि०) धारा रूप में (बिना रुकावट के) आगे को बढ़ने वाला; **धाराविष**-(सं० पुं०) खड्ग, तलवार; **धाराश्रु**-(सं०नपुं०) आँसू का गिरना; **धारासत्व**-(सं० नपु०) गुरुच का रस; **धारासम्पात**-(सं० पुं०) तीव्र और अधिक वृष्टि, मुसलाधार वर्षा; **धारासार**-(सं०नपुं०) जल की सतत वृष्टि; **धारास्नुही**-(सं०स्त्री०) त्रिधारा, सेंहुड़।

धारि-(सं०नपुं०) आयुष्य, वय (हिं० स्त्री०) समूह, झुंड, एक वर्णवृत्त का नाम।

धारिणी-(सं०स्त्री०) धरणी, पृथ्वी, भूमि, सेम्हर का वृक्ष, चौदह देवताओं की पत्नियां जिनके नाम-शची, वनस्पति, गार्गी, धूम्रोर्णा, रुचिराकृति, सिनिवाली, कुहू, राका, अनुमति, आयाति, प्रज्ञा और बेला है (वि०) धारण करने वाली।

धारी-(हिं०स्त्री०) सेना समूह, झुंड, लकीर, रेखा, (वि०) धारण करने वाला, ऋण लेने वाला; **धारीदार**-(हिं०वि०) वह वस्त्र आदि जिसमें लंबी लंबी रेखा या धारी हों।

धारु-(स०वि०) पीने वाला।

धारुजल-(हिं०पु०) खड्ग, तलवार।

धारोष्ण-(स०नपुं०) थन से निकला हुआ ताजा दूध जो कुछ गरम होता है।

धार्तराष्ट्र-(सं०पुं० धृतराष्ट्र कीसन्तान

धार्म-(सं०वि०) धर्म संबंधी; **धार्मपत्तन**-(सं०पुं०) कील, खूंटी।

धार्मिक-(सं०वि०) धर्माचरण करने वाला, पुण्यात्मा, धर्मशील, धर्मात्मा; **धार्मिकता**-(सं० स्त्री०) धार्मिक होने का भाव, धर्मशीलता; **धार्मिक्य**-(सं० नपुं०) धर्मानशीलन।

धार्य-(सं० वि०) धारण करने योग्य (पुं०) वस्त्र, कपड़ा; **धार्यत्व**-(सं० नपुं०) धारण करने का भाव।

धाष्ट्र-(सं०पुं०) धृष्टता।

धार्ष्टद्युम्न-(सं० पु०) धृष्टद्युम्न की सन्तान।

धार्ष्ट्र्य-(सं०वि०) धृष्टता, निर्लज्जता।

धाष्णक-(सं०नपुं०) राजा धृष्णु का पुत्र।

धाव-(हि०पुं०) एक प्रकार बड़ा लंबा सुन्दर वृक्ष।

धावक-(सं०पुं०) हरकारा, कपड़ा धोने वाला, धोबी।

धावड़ा-(हिं०पुं०) धव का वृक्ष।

धावण-(हिं०पुं०) दूर, हरकारा।

धावन-(सं०नपुं०) शीघ्रगमन, वेग, से दौड़ कर जाना, धोने या स्वच्छ करने का काम, (पुं०) दूत, हरकारा।

धावना-(हिं०क्रि०) दौड़ना, भागना।

धावनि-(सं०स्त्री०) पिठवन, भटकटैया। चड़ाई, धावा।

धावनिका-(सं०स्त्री०) पिठवन, कँटीली, मकोय।

धावनि-(सं०स्त्री०) धव का फूल, भटकटैया, पिठवन, केंवाच।

धावरी-(हिं०स्त्री०) सफ़ेद रंग की गाय।

धावा-(हिं० पु०) आक्रमण, चढ़ाई, किसी कार्य के निमित्त शीघ्र जाना; **धावा मारना**-आक्रमण करना।

धावति-(हि०वि) दौड़ता हुआ।

धासि-(सं०पुं०) अन्न, अनाज, गृह, घर।

धाह-(हि०स्त्री०) चिल्लाकर रोना, धाड़

धाही-(हिं०स्त्री०) देखो धाय।

धिंग-(हिं०स्त्री०) उधम, उपद्रव। **धिंगरा**-(हि०पुं०) देखो धींगरा; **धिंगा**-(हि० वि०) उपद्रवी, निर्लज्ज; **धिंगाई**-(हि० स्त्री०) उधम, उपद्रव, निर्लज्जता; **धिंगाधिंगी**-(हिं० स्त्री०) उपद्रव। **धिंगान**-(हिं० क्रि०) उधम मचाना, उपद्रव करना।

धिग्रा-(हिं० स्त्री०) धिय, कन्या, बेटी, छोटी लड़की।

धिग्रान-(हिं० पुं०) देखो ध्यान। **धिग्राना**-(हिं०क्रि०) देखो ध्यावना।

धिक्-(सं० अव्य०) घृणा सूचक शब्द, भर्त्सना, तिरस्कार, निन्दा।

धिक-(हिं०अव्य०) धिक्, लानत।

धिकना-(हिं० क्रि०) गरम होना; **धिकाना**-(हि० क्रि०) आँच पर गरम करना।

धिक्कार-(सं०पुं०) भर्त्सना, तिरस्कार या घृणा सूचक शब्द, अनादर, फटकार, **धिक्कारना**-(हिं० क्रि०) तिरस्कार करना, फटकारना।

धिग-(हिं०अव्य०) देखो धिक्।

धिग्दण्ड-(सं०पुं०) तिरस्कार रूप का दण्ड।

धिमचा-(हिं०पुं०) एक प्रकारकी इमली।

धित-(सं०वि०) स्थापित, रक्खा हुआ।

धिय-(हिं०स्त्री०) कन्या, बेटी, लड़की।

धियसान-(स०वि०) धारण करनेवाला।

धिया-(हिं०स्त्री०) देखो धिय, कन्या।

धियायु-(सं०वि०) अपनी बुद्धि के अनुसार काम करने वाला।

धिरकार-(हिं०स्त्री०) देखो धिक्कार।

धिरवना, धिराना-(हिं०क्रि०) डराना, धमकाना, धीमा होना, धीरज रखना

धिषण-(सं०पुं०) बृहस्पति, ब्रह्मा, शिक्षक, गुरु (वि०) बुद्धिमान। **धिषणा**-(सं०स्त्री०) बुद्धि, प्रशंसा, पत्थर, पृथ्वी, स्थान, (वि०) धारण करने वाली; **धिषणाधिप**-(सं०पुं०) देवताओं के गुरु, वृहस्पति।

धिष्ण्य-(सं०नपु०) स्थान, गृह, शक्ति, अग्नि, (वि०) स्तुति करने योग्य।

धींग-(हिं०पुं०) हृष्ट पुष्ट मनुष्य, हट्टा कट्टा आदमी, (वि०) पुष्ट, पापी, उपद्रवी; **धींगधुकड़ी**-(हिं०स्त्री०) उपद्रवी, **धींगड़ा**-(हिं० पुं०) हट्टाकट्टा मनुष्य, गुन्डा, बदमाश, कुकर्मी। **धींगरी**-(स्त्री०) दुष्ट, स्त्री।

धींगा-(हिं०पुं०) उपद्रवी, पाजी; **धींगाधींगी**-(हिं०स्त्री०) उपद्रव, बलप्रयोग, **धींगामुश्ती**-(हिं०स्त्री०) उपद्रव, हाथाबाँही, लड़ना; **धींगाड़**। **धींगाड़ा**-(हिं०वि०) दुष्ट, हृष्ट पुष्ट, हट्टा कट्टा, वर्णसंकर, दोगला।

धींवर-(हिं०पु०) देखो धीवर, मल्लाह।

धी-(सं०स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, मन, कर्म (हि०स्त्री०) लड़की, बेटी। **धींगुण**-(सं०पुं०) बुद्धि का गुण।

धीजना-(हिं०क्रि०) अंगीकार करना, स्वीकार करना, ग्रहण करना, धीरज धरना, अति प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना।

धीत-(स०वि०) अनादर किया हुआ, आराधित, प्यासा।

धीति-(सं० स्त्री०) प्यास, अनादर, आराधना।

धीदा-(प्रा०स्त्री०) कन्या, कुमारी, बेटी, (स०वि०) बुद्धिदायक,

धीन्द्रिय-(सं०नपुं०) ज्ञानेन्द्रिय, वह इन्द्रिय जिसके द्वारा किसी बात का ज्ञान प्राप्त होता है।

धीम-(हि०विं०) देखो धीमा।

धीमत्-(सं०वि०) बुद्धियुक्त, (पु०) पुरुरवा के एक पुत्र का नाम।

धीमर-(हिं०पु०) धीवर, मल्लाह।

धीमा-(हिं०विं०) जिसका वेग मन्द हो, जो तीव्र न हो, जो हलका हो, नीचा स्वर जो साधारण से कम हो; **धीमा तिताला**-संगीत में सोलह मात्रा का एक ताल।

धीमान्-(सं०पुं०) बुद्धिमान्, बृहस्पति।

धीमोदिनी-(सं०स्त्री०) मद्य, सुरा। **धीय, धीया**-(हिं०स्त्री०) दुहिता, लड़की।

धीर-(सं० वि०) धैर्यचित्त, जो शीघ्र घबड़ाता न हो, बलवान्, विनीत, नम्र, गंभीर, मन्द, धीमा, मनोहर, सुन्दर, (पुं०) धैर्य, सन्तोष।

धीरट-(हिं०पु०) हंस पक्षी।

धीरज-(हिं०पुं०) देखो धैर्य; **धीरता**-(स०स्त्री०) मन की स्थिरता, चित्त की दृढता, सन्तोष, पाण्डित्य, नायक का एक गुण; **धीरत्व**-(सं०नपुं०) धीरता; **धीरपत्री**-(सं०स्त्री०) जमीकन्द, सूरन;

धीरप्रशान्त-(सं०पुं०) नाटक का वह नायक जो अनेक गुणों से युक्त उत्तम वर्ण का हो। **धीरललित**-(सं०पुं०) नाटक आदि का वह नायक जो कलापरायण हो, मृदु हो तथा चिन्ता रहित हो, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं; **धीरशान्त**-(स०पुं०) वह नायक जो दयावान् गुणवान्, सुशील तथा पुण्यवान् हो।

धीरस्कन्ध-(सं०पुं०) भैंस, जंगली सुअर

धीरा-(सं०स्त्री०) मालकंगनी, काकोली, गुरुच, साहित्य में वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर परस्त्री गमन के चिह्न देखकर व्यंग रूप से क्रोध प्रकाशित करे, (हिं०वि०) मन्द, धीमा, (पुं०) धैर्य, धीरज; **धीराधीरा**-(सं०स्त्री०) साहित्य में वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-

स्त्री रमण के चिह्न देखकर अपना क्रोध कुछ गुप्त रूप से दिखलावे;
धीरावी-(हिं०स्त्री०) शीशम का पेड़।
धीरी-(हिं०स्त्री०) आँख की पुतली।
धीरे-(हिं०क्रि०वि०) मन्द गति से.
धीरोदात्त-(हिं० पु०) वह नायक जो आत्माभिमान नहीं दिखलाता, जो वलवान् हो, जो क्षमाशील, दयालु दृढ़ और अच्छा लड़ने वाला हो,वीर रस प्रधान नायक का मुख्य नाटक।
धीरोद्धत-(हिं० पु०) वह नायक जो प्रचण्ड चंचल, मायापटु, अहंकारादि युक्त हो,तथा आत्मश्लाघा करता हो
धीर्य-(हिं०वि०) कातर, डरपोक।
धीलटि-(हिं०स्त्री०) दुहिता, लड़की।
धीवर-(हिं०पुं०) मल्लाह, मछुआ, सेवक
धीवरक-(हिं०पुं०) धीवर, मछुआ।
धीवरी-(सं०स्त्री०) मल्लाहिन, मछली मारने की कँटिया।
धीशक्ति-(हिं०स्त्री०) बुद्धि का गुण।
धीसचिव-(हिं०पु०) बुद्धिमान मन्त्री।
धीहरा-(हिं०स्त्री०) कटहल, कुम्दरू।
धु-(हिं०स्त्री०) कँपकपी, थरथराहट।
धुँआँ-(हिं०पुं०) देखो धुआँ; धूम्र।
धुँकार-(हिं०स्त्री०) वेग का शब्द, गड़गड़ाहट।
धुंगार-(हिं०स्त्री०)बघार, तड़का, छौंक।
धुंगारना-(हिं०क्रि०) बघारना, छौंकना।
धुंज-(हिं०वि०) धुंधली।
धुंद-(हिं०स्त्री०) देखो धुंध।
धुंदा-(हिं०वि०) अन्धा, नेत्र हीन।
धुंध-(हिं०स्त्री०) वायु में उड़ती हुई धूलि, वह अन्धकार जो धूल मिली हुई हवा के चलने से उत्पन्न होती है, आँख का वह रोग जिसको कोई वस्तु स्पष्ट नहीं देख पड़ती।
धुंधक-(हिं०पुं०) देखो धुंध।
धुंधका-(हिं०पु०) धुवाँ निकलने का छिद्र, धुवाँकश।
धुंधकार-(हिं०पु०) धूंकार, गड़गड़ाहट, अंधकार, अँधेरा।
धुंधमार-(हिं०पुं०) देखो धुन्धुमार।
धुंधूर-(हिं०स्त्री०) वह धूल जो हवा में उड़ती हो, अत्युष्ण धूल उड़ने के कारण अंधेरा होना।
धुंधराना-(हिं० क्रि०) देखो धुंधलाना।
धुंधला-(हिं०वि०) धुएँ के रंग का, कुछ काला, अस्पष्ट, जो स्पष्ट रूप से देख पड़े, थोड़ा थोड़ा अंधेरा; **धुंधलई**-(हिं०स्त्री०)धुंधलापन; **धुंधलाना**-(हिं० क्रि०) धुंधला पड़ जाना; **धुंधलापन**-(हिं०पुं०) अस्पष्ट होने का भाव।
धुंधली-(हिं०स्त्री०) देखो धुंध।
धुंधुकार-(हिं०पुं०) अंधकार-अंधेरा, धुंधलापन, नगाड़े का शब्द।
धुंधुरि-(हिं०स्त्री०) वह अंधेरा जो धूंवे के कारण होता हो;
धुंधुरित-(हिं०वि०) धुंधला किया हुआ, दृष्टिहीन,धुंधली आँखवाला;**धुंधुवाना** (हिं० क्रि०) धुवाँ देना, धुवा देकर जलाना; **धुंधेरी**-(हिं०स्त्री०) धुंध, वह अन्धकार जो हवामें मिली हुई धूलि के कारण हो।
धुंधेला-(हिं०पुं०) वदमाश, दुष्ट, छली धोखेबाज।
धुअ-(हिं० पुं०) ध्रुवतारा।
धुआँ-(हिं०पुं०) भाफ जो जलती हुई वस्तुओं से निकल कर वायु में मिल जाती है,कोयले के सूक्ष्म कणों के मिले रहने से इसका रंग कुछ काला होता है; धूम्र, बड़ा समूह, उमड़ती हुई वस्तु,घटाटोप, धज्जी;**धुएँका धौरोहर** शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु; **धवें का बादल उड़ाना**-वृथा की बकझक करना; **धुआँकश**-(हिं०पुं०) भाफ से चलने वाली नाव या जहाज,अग्निबोट
धुवाँदान-(हिं० पुं०) छत में धुवाँ निकलनेका छिद्र;**धुआँधार**-(हिं०वि०) धुएँ से भरा हुआ, धूम्रमय, घोर, प्रचण्ड, काला धुएँ के समान, तड़क भड़क का, भड़कीला, गहरे रंग का, (क्रि०वि०) बड़े बेग से, बड़े जोर से;
धुआँना-(हिं०क्रि०) अधिक धुएँ में रहने के कारण स्वाद या गन्ध का बिगड़ जाना।
धुआँयँध-(हिं०वि०) धुएँके समान गन्ध का, (स्त्री०) अच्छी तरह अन्न का पाचन न होने के कारण जो डेकार आती हो; **धुआँरा**-(हिं०वि०) धुआँ निकलने के लिये छतमें छिद्र। **धुआँस**-(हिं०स्त्री०) देखो धुवाँस; **धुआँसा**-(हिं० पुं०) वह कालिख जो आग जलने के कारण छत में जम जाती है, (वि०) धुएं के स्वाद और गन्ध का।
धुक-(हिं० स्त्री०) कलावत्तू बटने की सलाई।
धुकड़पुकड़-(हिं०पुं०) चित्त की अस्थिरता, व्यग्रता, घबड़ाहट।
धुकड़ी-(हिं० स्त्री०) छोटी थैली या बटुआ।
धुकधुकी-(हिं०स्त्री०) छाती के बीच का गहरा स्थान, हृदय की धड़कन, कम्प, भय, डर, गले में पहिरने का एक प्रकार का गहना।
धुकन्धुक-(सं०नपुं०) बदरी, फल, बेर का फल।
धुकन-(हिं० क्रि०) झुकना, नीचे की ओर गिरना, झपटना, टूट पड़ना, गिर पड़ना, नवना।
धुकाना-(हिं०स्त्री०) गरज, गड़गड़ाहट का शब्द। **धुकाना**-(हिं० क्रि०) नवाना, झुकाना, पटकना, ढकेलना पछाड़ना, धूनी देना।
धुकार-(हिं० स्त्री०) नगाड़े का शब्द।
धुकी-(सं०स्त्री०) बेर का पेड़।
धुक्कना-(हिं०क्रि०) देखो धुकना।
धुगधुगी-(हिं०स्त्री०) देखो धुकधुकी।
धुज, धुजा-(हिं०स्त्री०)ध्वजा, पताका।
धुजिनी-(हिं० स्त्री०) सेना।
धुड़ंगा, धुड़ंगी-(हिं०वि०) वस्त्रहीन, बिलकुल नंगा, जिसके शरीर पर धूल लगी हो पर वस्त्र न हो।
धुत-(सं० वि०) छोड़ा हुआ, भगाया हुआ; **धुतकार**-(हिं० स्त्री०) देखो दुतकार; **धुतकारना**-(हिं०क्रि०) देखो दुतकारना।
धुताई-(हिं०स्त्री०) धूर्तता। **धुताटा**-(हिं०वि०) धूर्त।
धुतू-(हिं०पुं०) देखो धूतू।
धुतूरा-(हिं०पुं०) देखो धतूरा।
धुधुकार-(हिं० स्त्री०) धूधू का शब्द, कर्कश शब्द।
धुन-(सं० नपुं०) कम्पन, काँपने की क्रिया; **धुन**-(हिं०स्त्री०) किसी काम को निरन्तर बिना सोचे समझे करने की प्रवृत्ति, मन की तरंग, चिन्ता, सोच विचार, गाने का ढंग, संपूर्ण जाति का एक राग; **धुन का पक्का**-वह जो आरंभ किए हुए काम को बिना पूरा किए हुए नहीं छोड़ता।
धुनकना-(हिं०क्रि०) धुनना।
धुनकी-(हिं०स्त्री०) धुनियों का धनुष के आकार का रूई धुनने का साधन, लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।
धुनना-(हिं०क्रि०) धुनकी से रूई स्वच्छ करना जिसमें इसमें के बिनौले अलग हो जावें, धूर निकल जाय और रेशे अलग हो जावें, खूब मारना पीटना, किसी काम को निरन्तर किये जाना, बारंबार कहना। **धुनवाना**-(हिं०क्रि०) धुनने का काम किसी दूसरे से कराना।
धुनि-(सं०स्त्री०) एक असुर का नाम, (पुं०) कम्पन, ध्वनि।
धुनियाँ-(हिं०पुं०) रूई धुनने का काम करने वाला, बेहना।
धुनी-(हिं०वि०) निरन्तर किसी कार्य में लगा रहने वाला। (सं०स्त्री०)नदी।
धुनीनाथ-(सं०पुं०) सागर, समुद्र।
धुनेचा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सन का पौधा।
धुनेहा-(हिं०पुं०)देखो धुनिया, बेहना।
धुन्धु-(सं०पुं०) मधु नामक राक्षस के पुत्र का नाम। **धुन्धुमार**-वृहदश्व राजा के पुत्र जिन्होंने धुन्धु नामक राक्षस को मारा था, घरका कालिख, वीरबहूटी, छिपकली।
धुपना-(हिं० क्रि०) धुलना, धोना।
धुपाना-(हिं० क्रि०) सुखाने के लिये किसी वस्तु को धूप में रखना, धूप दिखाना।
धुपेली-(हिं० स्त्री०) गरमी के दिनों में पसीने से निकलने वाली छोटी छोटी फुंसी, अँभौरी।
धुमारा-(हिं०वि०) धुएँ के रंग का।
धुमिलना-(हिं०क्रि०) धूमिल करना।
धुमला-(वि०) धुंधला। **धुरंधर**-देखो धुरन्धर।
धुर-(सं०पुं०) गाड़ी या रथ का धुरा, अक्ष भार,बोझ, आरंभ, बैल आदि पशुओं के कन्धे पर रखने का जुआ, प्रधान स्थान, ऊंचा स्थान, घन, सम्पत्ति, भूमि की एक नाप जो एक बिसवे के बराबर होती है, भाग, अंश, चिनगारी, (वि०) दृढ़, पक्का,(अव्य०)ठीक स्थान पर, सटीक, सीधे सीध में; **धुरसिरेसे**-आरम्भ से।
धुरकट-(हिं०पुं०)भूमि की वह लगान जो कृषक भू-स्वामी जेठ के महीने में दे देता है।
धुरकिल्ली-(हिं०स्त्री०) गाड़ी के धुरे में लगाई हुई लोहे की कील।
धुरना-(हिं०क्रि०)मारना,पीटना,बजाना
धुरन्धर-(सं०पु०) भार उठाने वाला, बोझ ढोने वाला मनुष्य या पशु,एक राक्षस का नाम, धव का वृक्ष, (वि०) भार ढोने वाला, श्रेष्ठ, प्रधान, सबसे बड़ा या बलवान्।
धुरपद-(हिं०पुं०) देखो ध्रुवपद।
धुरा-(हिं० पुं०) वह लोहे का डंडा जिस पर गाड़ी आदि की पहिया घूमती हैं, अक्ष।
धुरिया धुरंग-(हिं०वि०) वह गाना जो बिना साज बाज के अकेले ही गाया जावे, अकेला, जिसके साथ दूसरा कोई न हो।
धुरियाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को धूर से ढाँपना, ऊख के खेत का पहिले पहल गोड़ा जाना, किसी कलंक या दोष का दबाया जाना।
धुरियामल्लार-(हिं० पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक मल्लार राग।
धुरी-(हिं०स्त्री०) छोटा धुरा; **धुरीण**-(सं०वि०) भार वाहक, बोझ लेजाने वाला, मुख्य, प्रधान,श्रेष्ठ, धुरन्धर।
धुरीय-(सं०पुं०) बोझ ढोने वाला पशु, (वि०) बोझ ढोने योग्य।
धुरेटना-(हिं० क्रि०) धूल लगाना या धूल से लपेटना।
धुर्य-(सं० वि०) धुरन्धर, श्रेष्ठ, बोझ ढोने योग्य।
धुर्री-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का बहुत छोटा भाग, कण, रजकण। **धुर्रे उड़ाना**-किसी वस्तु का बहुत छोटे छोटे टुकड़े करना।
धुलना-(हिं०क्रि०) जल के सहायता से स्वच्छ किया जाना, धोया जाना।
धुलवाना-(हिं० क्रि०) धोने का काम किसी दूसरे से कराना। **धुलाई**-(हिं०स्त्री०) धोने का काम या शुल्क।
धुलाना-(हिं० क्रि०) किसी दूसरे को धोनेके काममें प्रवृत्त करना,धुलवाना।
धुलियामिटिया-(हिं० वि०) जिस पर धूल या मिट्टी पड़ी हो, शान्त किया हुआ।
धुलेंड़ी-(हिं०स्त्री०) होली के दूसरे दिन होने वाला हिन्दुओं का त्योहार जिस दिन लोग आपस में गुलाल लगाते हैं।

धुव-(हिं॰पुं॰) क्रोध; देखो ध्रुव ।
धुवक-(सं॰वि॰) गर्भ नाश करने वाला।
धुवका-(सं॰स्त्री॰)गीत का पहिला पद।
धुवन-(सं॰ पुं॰) अग्नि, आग, (वि॰) चलाने वाला, हिलाने वाला।
धुवाँ-(हिं॰पुं॰) देखो धुआँ; **धुवाँकश**-(हिं॰पुं॰) देखो धुआँकश; **धुवाँरा**-(हिं॰पुं॰) धुआँ निकलने का छिद्र;
धुवाँस-(हिं॰ स्त्री॰) उड़द का आँटा जिसका पापड़ बनाया जाता है।
धुवाना-(हिं॰क्रि॰) देखो धुलाना।
धुवित्र-(सं॰नपुं॰) हरिन के चमड़े का बना हुआ पखा।
धुस्तूर-(सं॰पुं॰) धतूरा।
धुस्स-(हिं॰पुं॰) मिट्टी आदि का ऊंचा ढेर, टीला, नदी आदि के किनारे पर बनाया हुआ बाँध, बंद।
धुस्सा-(हिं॰पुं॰) मोटे ऊन की बनी हुई लोई जो ओढ़ने में काम आती है।
धूँध-(हिं॰ स्त्री॰) देखो धुंध। **धूँधर**-(हिं॰वि॰) धुंधला, अंधेरा जो हवा में फैली हुई धूल के कारण हो जाता है।
धू-(हिं॰पुं॰) ध्रुव तारा, धुरी, उत्तानपाद राजा के पुत्र का नाम;**धूआँ**-(हिं॰पुं॰) देखो धुआँ, धूम्र; **धूआँधार**-(हिं॰पुं॰)देखो धुआँधार; **धूई**-(हिं॰स्त्री॰) देखो धूनी। **धूक**-(सं॰ पुं॰) वायु, हवा, धूर्त मनुष्य, काल, मौलसिरी का वृक्ष, बिलैया; (हिं॰ पुं॰) कलाबत्तू बटने की सलाई।
धूजट-(हिं॰पुं॰)धूर्जटी, शिव, महादेव।
धूत-(हिं॰ पुं॰) कम्पित, काँपता हुआ, थरथराता हुआ, धमकाया या डाटा हुआ, छोड़ा हुआ; देखो धूर्त;
धूतना-(हिं॰क्रि॰) ठगना, धोखा देना।
धूतपाप-(सं॰पुं॰) जिसका पाप दूर हो गया हो; **धूतपापा**-(सं॰ स्त्री॰) काशी की एक प्राचीन छोटी नदी का नाम।
धूता-(सं॰स्त्री॰) भार्या, स्त्री।
धूती-(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकारकी चिड़िया।
धूतू-(हिं॰पुं॰) तुरुही बाजा।
धूधू-(हिं॰ पुं॰) आग में दहकने का शब्द, आग की लपट।
धून-(सं॰वि॰) कम्पित, काँपता हुआ।
धूनक-(सं॰पुं॰) गोंद, राल, धूप, (वि॰) हिलाने डोलाने वाला।
धूनन-(सं॰ नपुं॰) कम्प, थरथराहट; **धूनना**-(हिं॰ क्रि॰) धूनी देना, सुलगाना, जलाना, रूई के रेशे अलगाना; देखो धुनना।
धूनराज-(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।
धूना-(हिं॰पुं॰) गुग्गुल की जाति का एक बड़ा वृक्ष, इसमें से निकलने वाली गोंद जो धूप की तरह जलाई जाती है।
धूनि-(सं॰स्त्री॰) कम्प, थरथराहट।
धूनी-(हिं॰स्त्री॰)देवपूजन अथवा सुगन्ध के लिये कपूर, अगर, गुग्गुल, आदि सुगन्धित द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धूआँ; साधुओं के तापने की आग; **धूनी देना**-गन्ध द्रव्योंको जलाकर धूआँ पहुँचाना; **धूनी जगाना**-तप करना,साधु बनना; **धूनी रमाना**-धूनी जलाकर आँच तापना।
धूप-(सं॰पुं॰) मिश्रित गन्ध द्रव्यों का धूआँ अथवा इनसे बनी हुई बत्ती जो देवपूजन या सुगन्ध के लिये जलाई जाती है, सूर्य का प्रकाश, घाम; **धूप खाना**-ऐसे स्थान में बैठना जिसमे शरीरपर धूप पड़े; **धूप निकलना**-सूर्य का आकाश में ऊपर को चढ़ना; **धूप दिखाना**-धूप मे रखना; **धूप में बाल पकाना**-जीवन का अधिक समय बिना अनुभव प्राप्त किये व्यतीत करना; **धूपक**-(सं॰स्त्री॰) शहतूत की लकड़ी; **धूपघड़ी**-(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार का यन्त्र जिसमे सूर्य के प्रकाश से समय का ज्ञान होता है; **धूपछांह**-(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का वस्त्र जिसमें ताने और बाने का विभिन्न रंग होता है इसी कारण से ऐसे वस्त्र में एक ही स्थान पर कभी एक रंग और कभी दूसरा रग देख पड़ता है; **धूपदान**-(हिं॰पुं॰) वह पात्र जिसमे धूप या गन्ध द्रव्य रखकर जलाया जाता है; **धूपदानी**-(हिं॰ स्त्री॰) छोटा धूपदान। **धूपद्रुम**-(सं॰पुं॰) लाल खैर का वृक्ष; **धूपन**-(सं॰पुं॰) साल का वृक्ष, (नपुं॰) धूप देने की क्रिया; **धूपना**-(हिं॰क्रि॰) गन्ध द्रव्य जलाना, धूप देना, सुगन्धित धुएँ से बासना, दौड़ना, व्यग्र करना; **धूपपात्र**-(सं॰ नपुं॰) धूप जलाने का बरतन; **धूपबत्ती**-(हिं॰ स्त्री॰) मसाला लपेटी हुई सींक या बत्ती जिसके जलाने से सुगन्धित धूआँ उठकर फैलता है; **धूपमुद्रा**-(सं॰स्त्री॰) तन्त्रानुसार धूपदान के लिये मुद्रा; **धूपवास**-(सं॰पुं॰) स्नान करने के बाद सुगन्धित धुएँ से शरीर बाल आदि को सुवासित करने का काम; **धूपवृक्ष**-(सं॰पुं॰) सलई या गुग्गुल का वृक्ष; **धूपगुरु**-(सं॰नपुं॰) एक प्रकार का अगर।
धूपायित-(सं॰वि॰) चलते चलते थका हुआ, धूप दिखाया हुआ।
धूपार्ह-(सं॰ वि॰) धूप देने योग्य।
धूपित-(सं॰वि॰) सन्तप्त. थका हुआ, धूप दिया हुआ।
धूम-(सं॰पुं॰) धूम्र, धूआँ, डेकार, उल्कापात, धूम्रकेतु, एक ऋषि का नाम, एक देश का नाम; **धूम**-(हिं॰ पुं॰) अनेक मनुष्यों का एकत्रित होकर कोलाहल करना, आन्दोलन, ऊपद्रव, हलचल, उधम, उत्पात, समारोह, प्रसिद्धि, कोलाहल, हल्ला, ठाटबाट; **धूमक**-(सं॰ पुं॰) धूम्र, धूआँ, एक प्रकार का शाक; **धूमकधैया**-(हिं॰ स्त्री॰) उत्पात, उपद्रव, कूद-फाँद, हल्ला; **धूमकेतु**-(सं॰पुं॰) दुमदार सफेद तारा जो कभी कभी आकाश में देख पड़ता है, पुच्छल तारा, एक प्रकार का घोड़ा, केतु ग्रह, रावण का एक राक्षस सेनापति, अग्नि, महादेव; **धूमगन्धि**-(सं॰नपुं॰) वह अग्नि जिसका अनुमान धुवें से होता है; **धूमग्रह**-(सं॰ पुं॰) राहुग्रह; **धूमज**-(सं॰पुं॰) मेघ, बादल. मोथा घास; **धूमजाङ्गज**-(सं॰पुं॰) वज्रक्षार, नौसादर; **धूमदर्शी**-(सं॰ पुं॰) जिसके आँखों के धुवाँ देख पड़ता है, एक प्रकार का आँख का रोग; **धूमधड़क्का**-(हिं॰ पुं॰) समोरोह, भारी आयोजन, धूमधाम, ठाटबाट; **धूमधर**-(सं॰ पुं॰) अग्नि, आग; **धूमधाम**-(हिं॰ स्त्री॰) समारोह, ठाटबाट; **धूमध्वज**-(सं॰पुं॰) अग्नि, आग; **धूमप**-(सं॰ वि॰) धूआँ पीने वाला; **धूमपथ**-(सं॰पुं॰) धूआँ निकलने का मार्ग; **धूमपान**-(सं॰ नपुं॰) औषधियों का धूआं जो रोगी को नली द्वारा पान कराया जाता है तमाखू बीड़ी आदि पीने का काम; **धूमपोत**-(सं॰पुं॰) अग्निबोट धुवाँकस। **धूमप्रभा**-(सं॰ स्त्री॰) एक नरक का नाम; (विं॰) धुए के रंग का। **धूमप्राश**-(सं॰ वि॰) धूआं पीकर तपस्या करने वाला; **धूममार्ग**-(सं॰पुं॰) धुएँ का मार्ग; **धूममृत्तिका**-(सं॰स्त्री॰) सुवर्ण शोधने की एक प्रकार की मिट्टी; **धूमयोनि**-(सं॰पुं॰)मेघ, बादल,मोथा।
धूमर-(सं॰पुं॰) आँख का एक रोग जिसमें सब वस्तु धुएँ के समान देख पड़ती है, देखो धूमल।
धूमरज-(सं॰ नपुं॰) धुएँ की कालिख जो छतों में लग जाती है।
धूमल-(सं॰ पुं॰) कृष्ण लोहित वर्ण, (वि॰) धुए के रंग का; **धूमला**-(हिं॰ वि॰) धुए के रंग का, ललाई लिये काले रंग का, धुंधला, जो चटकीला न हो, मलिन; **धूमवार**-(सं॰वि॰) जिसमें धूआँ लगा हो; **धूमवर्त्म**-(सं॰पुं॰) धुएँ का मार्ग।
धूमशिख-(सं॰पुं॰)एक राक्षस का नाम।
धूमस-(सं॰पुं॰) एकप्रकार का शाक।
धूमसार-(सं॰पुं॰) घर का धूआँ।
धूमसी-(सं॰स्त्री॰) उड़द का आँटा।
धूमसंहति-(सं॰स्त्री॰) धुएँ का जमाव।
धूमाक्ष-(सं॰पुं॰) वह पुरुष जिसकी आँखें धुएँ के रंग की हों।
धूमाङ्ग-(सं॰ पुं॰) जिसका अंग धुएँ के समान हों।
धूमाग्नि-(सं॰पुं॰)बिना ज्वाला या लपट की आग।
धूमावती-(सं॰स्त्री॰) दश महाविद्याओं में से एक।
धूमिका-(सं॰स्त्री॰) एक प्रकार का पक्षी
धूमित-(सं॰वि॰) जिसमें धूंवाँ लगा हो।
धूमिता-(सं॰स्त्री॰) सूर्य के डूबने की दिशा, पश्चिम।
धूमिन-(सं॰पुं॰) अग्नि की एक जिह्वा का नाम।
धूमिल-(हिं॰वि॰) धुंधला, धुएँ के रंगका
धूमोद्गार-(सं॰पुं॰) धुएँ का निकलना, धुवायँध।
धूमोर्णा-(सं॰ स्त्री॰) यम की स्त्री॰; मार्कण्डेय की स्त्री का नाम; **धूमोर्णापति**-(सं॰पुं॰) यम।
धूम्याट-(सं॰पुं॰) भृंगराज नामक पक्षी
धूम्र-(सं॰पुं॰) धुवाँ, ललाई लिये काला रंग, शिला रस, लोबान, शिव, महादेव, मेघ, बादल, राम की सेना का भालू, (वि॰) धुएं के रंग का, सुंघनी के रंग का; **धूम्रक**-(सं॰ पुं॰) उष्ट्र, ऊंट; **धूम्रकेतु**-(सं॰पुं॰) राजा भरत के पुत्रका नाम (वि॰) जिसकी पताका धुएं के रंगकी हो; **धूम्रकेश**-(सं॰पुं॰) राजा पृथु के एक पुत्र का नाम; (वि॰) जिसक बाल सुंघनी के रंग के हों **धूम्रपत्रा**, **धूम्रपत्रिका**-(सं॰ स्त्री॰) कृमिघ्नी नामक पौधा; **धूम्रलोचन**-(सं॰पुं॰) कपोत, कबूतर, शुम्भ दानव का सेनापति जिसको भगवती ने मारा था; **धूम्रलोहित**-(सं॰पुं॰) शिव, महादेव, कालापन लिये हुए लाल रंग; **धूम्रवर्ण**-(सं॰पुं॰) ललाई लिये काला रग (वि॰) धुएं के रग का; **धूम्रवर्णा**-(सं॰ स्त्री॰) अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा का नाम; **धूम्रशूक**-(सं॰पुं॰) उष्ट्र, ऊंट; **धूम्रशूल**-(सं॰पुं॰) देखो धूम्रशूक।
धूम्रा-(सं॰स्त्री॰) एकप्रकार की ककड़ी;
धूम्राक्ष-(सं॰वि॰) जिसकी आँख धुएँ के समान हों, (पुं॰) रावण के एक सेनापति का नाम; **धूम्राट**-(सं॰पुं॰) भृङ्गराज नामक पक्षी। **धूम्राभ**-(सं॰पुं॰) वह जिसकी कान्ति धूमिल वर्ण की हो; **धूम्रायण**-(सं॰पुं॰) एक ऋषि का नाम; **धूम्रार्चि**-(सं॰स्त्री॰) अग्नि की दस कलाओं में से एक;
धूम्राश्व-(सं॰पुं॰) राजा इक्ष्वाकु के प्रपौत्र का नाम; **धूम्रिका**-(सं॰स्त्री॰) शीशम का पेड़।
धूर-(हिं॰स्त्री॰) धूलि, धूल।
धूरकट-(हिं॰पुं॰) वह पोत या लगान जो कृषक भूस्वामी को जेठ में पेशगी देता है।
धूरजटी-(हिं॰पुं॰) देखो धूर्जटि।
धूरत-(हिं॰वि॰) देखो धूर्त।
धूरधान-(हिं॰पुं॰) धूल की राशि, धूल का ढेर।
धूरधानी-(हिं॰स्त्री॰) धूर की ढेर, धूर, ध्वंस, नाश, एक प्रकार की बंदूक।
धूरा-(हिं॰पुं॰) धूल, चूरा, चूर्ण, बुकनी, **धूरा देना**-शीत आने पर शरीर पर

सोंठ की बुकनी रगड़ना ।

धूरि-(हिं०स्त्री०) देखो धूल । **धुरिया मल्लार**-(हिं०पुं०) मल्लार राग का एक भेद ।

धूरे-(हिं०क्रि०वि०) पासमें ।

धूर्जटि-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।

धूर्त-(सं०नपुं०) लोहे की मैल, धतूरा, चोर नामक गन्ध द्रव्य, जुआरी (वि०) मायावी वंचक, धोखा देने वाला ।

धूर्तक-(सं०पुं०) सियार, गोदड़, जुआरी; **धूर्तकृत्**-(सं०पु०) धतूरा (वि०) धोखा देन वाला; **धूर्तचरित**-(सं०नपुं०) धूर्तो का चरित्र, संकीर्ण नाटक का एक भेद । **धूर्तजन्तु**-(सं०पुं०) मनुष्यगण; **धूर्तता**-(सं० स्त्री०) शठता, ठगपना, वचकता, **धूर्तर**-(सं०पुं०) पारद, पारा।

धूर्ता-(सं०स्त्री०) सफद भटकटैया ।

धूर्धर-(सं०पुं०) धुरन्धर, बोझा ढोने वाला; **धूर्वह**-(स०वि०) देखो धूर्धर ।

धूल-(हिं०स्त्री०) मिट्टी रेत आदिका महीन कण, रेणु, रज, धूल के समान कोई तुच्छ वस्तु ; **धूल उड़ना**-नष्ट होना; शोभाका हटना, उपहास होना; **धूल उड़ाना**-अपमानित करना; हँसी उड़ाना ; **धूल की रस्सी बटना**-असभव बात के पीछे पड़ना; **धूल चाटना**-बड़ी विनती करना; **धूल डालना**-दबा देना, ध्यान मे न लाना; **धूल फाँकना**-इधर उधर मारे मारे फिरना; **धुलमे मिलाना**-चौपट करना; **पैर की धूल**-अति तुच्छ वस्तु या व्यक्ति, **सिर पर धूल डालना**-पछतावा करना; **धूल समझना**-तुच्छ जानना ।

धूलक-(सं०नपुं०) विष, गरल ।

धूलधानी-(हिं० स्त्री०) ध्वंस, नाश ।

धूला-(हि०पुं०) खण्ड, टुकड़ा ।

धूलि-(सं०स्त्री०) मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर । **धूलिका**-(स० स्त्री०) महीन जलकणों की झड़ी; **धूलिकुट्टिम**-(सं०नपुं-) जोता हुआ खेत; **धूलिकेदार**-(सं०पुं०) मिट्टी का टीला ; **धूलिगुच्छक**-(सं०पुं०) अबीर; **धूलिजङ्घ**-(सं०पुं०) काक, कौवा; **धूलिध्वज**-(सं०पुं०) पवन, वायु, हवा; **धूलि पुष्पिका**-(सं० स्त्री०) केतकी का फूल ।

धूली-(सं० स्त्री०) धूल । **धूलीपटल**-(सं०पु०) धूल का ढेर; **धूलीमय**-(सं०वि०) धूल से भरा हुआ ।

धूवाँ-(ह०पु०) देखो धुवाँ ।

धूसर-(सं०पु०) मटमैला रंग, गदहा, ऊंट कबूतर, बनियोंकी एक जाति, जंगली गौरैया; (वि०) धूलके रंगका, मटमैला, धूल लगा हुआ, धूल से भरा हुआ; **धूसरा**-(हिं० वि०) धूल लगा हुआ, मटमैला । **धूसराह्वय**-(स०पुं०) गर्दभ, गदहा ।

धूसरित-(सं०वि०) धूल से भरा हुआ, मटमैला किया हुआ ।

धूसरी-(सं०स्त्री०) एक किन्नरी का नाम।

धूसला-(हिं०वि०) देखो धूसरा ।

धूस्तूर(सं०पुं०) धतूरा ।

धूटा-(हिं०पुं०) देखो ढूसर ।

धृक, धृग-(हिं०अव्य०) देखो धिक् ।

धृत-(सं० वि०) धारण किया हुआ, स्थिर किया हुआ निश्चित, पतित, ग्रहण किया हुआ, (पुं०) तेरहवे मनु रौच्य के पुत्र का नाम; **धृतकेतु**-(स० पु०) वसुदेव के बहनोई का नाम; **धृतदेवा**-(सं०स्त्री०) देवकी की एक कन्या; **धृतपदा**-(सं०स्त्री०) गायत्री का एक भेद्र; **धृतमाली**-(सं०स्त्री०) अस्त्रो को निष्फल करने का एक अस्त्र विशेष; **धृतराष्ट्र**-(सं०पुं०) वह देश जो अच्छे राजा के शासन में हो, एक नगर का नाम, वह कौरव राजा जो दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य के पुत्र थे; **धृतराष्ट्री**-(सं०स्त्री०) धृतराष्ट्र की पत्नी;

धृतवत्-(सं० वि०) ग्रहण करने वाला; **धृतवर्म**-(सं०वि०) जो कवच धारण किये हो (पुं०)केतुवर्मा के पुत्र का नाम।

धृतव्रत-(सं०वि०) जिसने व्रत धारण किया हो, (पुं०) पुरुवंशीय एक राजा का नाम ।

धृतात्मा-(सं० वि०) चित्तको स्थिर रखने वाला, धीर (पुं०) विष्णु ।

धृति-(सं०स्त्री०) धारण करने या पकड़ने की क्रिया, सन्तोष, तृप्ति, मन की दृढता, गौर्यादि षोड़श मातृकाओं में से एक, मुख, फलित ज्योतिष का एक योग, अठारह अक्षरों का एक वृत्त, दक्ष की पुत्री, (पुं०) राजा जयद्रथ का पौत्र, एक विश्वदेव का नाम, अलंकार का एक व्यभिचारी भाव; **धृतिमत्**-(सं०वि०) धैर्ययुक्त, धीरजवान्; **धृतिहोम**-(सं०पुं०)विवाह के बाद करने का एक होम ।

धृत्वन्-(स० पुं०) विष्णु, धर्म, आकाश, समुद्र , (वि०) धारण करने वाला ।

धृषज्-(सं०वि०) दमन करने वाला, दबाने वाला ।

धृषु-(स०वि०) दक्ष, निपुण,

धृष्ट-(स०वि०) प्रगलभ, निर्लज्ज, उद्धत, निर्दय, ढीठ, वह नायक जो निर्लज्ज हो, जिसको किसी प्रकार का भय न लगता हो और जो झूठी बातों से अपना दोष छिपाने का प्रयत्न करता हो; **धृष्टकेतु**-(सं० पुं०) नवें रोहित के पुत्र का नाम राजा, शिशुपाल के एक पुत्र का नाम । **धृष्टता**-(सं० स्त्री०) अनुचित साहस, ढिठाई, निर्लज्जता; **धृष्टद्युम्न**-(सं० पुं०) द्रुपद राजा के पुत्र और द्रौपदी के भाई, कौरव और पाण्डवों के युद्ध में यह पाण्डवों की ओर से एक प्रधान सेनानायक नियुक्त थे, जिस समय द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार सुनकर अपना शरीर त्यागने के लिये योग में निमग्न थे उसी समय धृष्टद्युम्न ने उनका सिरकाट डाला था; **धृष्टधी**-(सं०स्त्री०) कठोर स्वभाव ।

धृष्टा-(सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी, कुलटा स्त्री ।

धृष्टि-(सं०पु०) दशरथके एक मन्त्री का नाम, यज्ञ का एक पात्र;

धृष्णज-(सं०वि०) निर्लज्ज, बेहया ।

धृष्णता-(सं०स्त्री०) धृष्टता, निर्लज्जता, **धृष्णत्व**-(सं०नपुं०) धृष्णता ।

धृष्णु-(सं०वि०) प्रगलभ, उद्धत, ढीठ, (पु०) एक रुद्र का नाम, वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम ।

धृष्य-(सं०वि०) धर्षणीय, दमन करने योग्य ।

धेड़ी कौवा-(हिं०पु०) डोम कौवा ।

धेन-(सं०पु०) समुद्र, नद, (हिं०स्त्री०) देखो धेनु, गाय ।

धेना-(सं०स्त्री०) स्वाद, रस ।

धेनु-(सं०स्त्री०) गाय, हाल की व्याई हुई गाय, बच्चे वाली गाय; **धेनुक**-(स०पुं०) एक असुर जिसको बलराम ने मारा था; **धेनुका**-(सं० स्त्री०) हथिनी, गाय, धनिया; **धेनुकारि**-(सं० पुं०) बलराम, नागकेशर का वृक्ष; **धेनुजिह्वा**-(सं०नपु०) गावजुबां नामक औषधि; **धेनुदुग्ध**-(स०नपु०) गाय का दूध; **धेनुदुग्धकर**-गर्जर गाजर; **धेनुमक्षिका**-डंस जो चौपायों के शरीर मे चिपक कर उनका रक्त चूसते है; **धेनुमती**-(सं०स्त्री०) गोमती नदी; **धेनुमुख**-(सं०पुं०) एक प्रकार का बाजा; **धेनुष्टरी**-(सं०स्त्री०) अच्छी गाय ।

धेय-(सं०वि०) धारण करने योग्य, पोषण करने योग्य, पीने योग्य(नपुं०) धारण, पोषण ।

धेर-(हि०पुं०) एक अनार्य जाति, इस जाति के लोग खेती का काम करते है और मरे चौपायों का मांस खाते हैं।

धेरिया-(हिं० स्त्री०) पुत्री, बेटी ।

धेलचा, धेला-(हिं० पुं०) आधे पैसे के मूल्य का तांबे का सिक्का ।

धेली-हिं० स्त्री०) आधा रुपया, अठन्नी ।

धेष्ठ-(सं०वि०)बहुरुप धारण करने वाला।

धैंताल-(हिं० वि०) उद्धत, चंचल, चपल ।

धैनव-(सं० पुं०) गाय का बच्चा (वि०) गाय से उत्पन्न ।

धैना-(हिं० स्त्री०) स्वभाव, कामधन्धा

धैनुक-(सं० नपुं०) गाय का समूह ।

धैर्य-(सं० नपुं०) चित्त की स्थिरता, धीरता, धीरज, अप्रमाद, मन में उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव, अनवधानता का भाव, अत्यन्त भयानक विघ्न उपस्थित होने पर भी अपने कार्य में कुछ भी विचलित न होने का भाव; (पुं०) महादेव; **धैर्यकलित**-(स० वि०) स्थिर, अटल; **धैर्यच्युत**-(सं० वि०) अस्थिर, धैर्यहीन; **धैर्यशाली**-(स० वि०) धैर्ययुक्त, शान्त; **धैर्यावलम्बन**-(स० नपुं०) शान्त होने की क्रिया; **धैर्यावलम्बी**-(सं० वि०) सहिष्णु, शान्त ।

धैवत-सं० पुं०) सगीत के सात स्वरों मे से छठां स्वर ।

धोंडाल-(हिं० वि०) जिसमें ककड़ पत्थर के ढोंके हों ।

धोधा-(हि० पु०) पिण्ड, लोंदा, भद्दा, शरीर; **मिट्टी के धोंधा**-मूर्ख,आलसी, सुस्त ।

धोई-(हिं० स्त्री०) उड़द या मूंग की छिलका निकाली हुई दाल ।

धोकड़-(हिं०वि०) हट्टा कट्टा ।

धोका-हिं०पुं०) देखो धोखा ।

धोखा-(हिं० पुं०) दूसरे को भ्रम में डालने का व्यवहार, छल, भुलावा, दगा, भ्रम, अनिष्ट की संभावना, प्रमाद, भूल, अज्ञान, भ्रान्ति उत्पन्न करने वाली वस्तु, संशय, बेसन का बना हुआ एक पकवान, पक्षियों को डराने के निमित्त खेत में खड़ा किया हुआ पुतला, फलदार वृक्षों पर रस्सी से बँधी हुई लकड़ी जिसको खींचने से खट् खट् शब्द होता है और पक्षी उड़ जाते हैं, असार वस्तु, माया; **धोखा खाना**-वंचित होना, ठगा जाना; **धोखा देना**-छलना, ठगना; **धोखे की टट्टी**-भ्रम में डालने वाली वस्तु ; **धोखा रचना**-किसी को ठगने के लिये उपाय रचना ; **धोखे से**-अज्ञान में, भूल से; **धोखा उठाना**-भ्रम में पड़ कर हानि उठाना ; **धोखा पड़ना**-भ्रम होना ; **धोखा लगना**-त्रुटि या कमी होना; **धोखा लगाना**-भ्रम में डालना ।

धोटा-(हिं०पुं०) देखो ढोटा ।

धोड़-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प ।

धोतर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा वस्त्र ।

धोती-(हिं० स्त्री०) नव दस हाथ लम्बा तथा दो ढाई हाथ चौड़ा वस्त्र जिससे भारतवासी हिन्दू लोग कमर से लेकर पैर तक का शरीर का भाग ढाँपते है तथा स्त्रियां सर्वाङ्ग ढापने के लिये कमर से बाँध लेती हैं, एक अंगुल चौड़ी और चौवन अंगुल लम्बी कपड़े की धज्जी जिसको हठयोगी धौति क्रिया में प्रयोग करते हैं; **धोती ढीली होना**-भयभीत होना, डर जाना ।

धोना-(हिं०क्रि०) जल से स्वच्छ करना, पखारना, हटाना, मिटाना, दूर करना; **किसी वस्तु से हाथ धोना**-गँवा देना, खो बैठना ; **हाथ धोकर पीछे पड़ना**-किसी के पीछे पड़जाना ।

धोप-(हिं० स्त्री०) खड्ग, तलवार ।

धोव-(हिं० पुं०) धोये जाने का काम,

भुलावट । **धोबिघटा**-(हिं० पुं०) वह घाट जहां धोबी कपड़े धोते हैं। **धोबिन**-(हि० स्त्री०) धोबी की स्त्री, धोबी जाति की स्त्री, एक प्रकार का पक्षी जो जल के किनारे प्रायः रहता है। **धोबी**-(हिं० पुं०) मैले कपड़ों को धोकर स्वच्छ करने वाला, रजक; **धोबी का कुत्ता**-एक स्थान पर स्थिर न रहने वाला मनुष्य, **धोबीघास**-(हि० स्त्री०) बड़ी दूब; **धोबीपछाड़, धोबीपाट**-(हिं०पु०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति ।

धोम-(हिं०पुं०) धूम्र, धूम, धुआँ ।

धोर-(हिं० स्त्री०) निकटता, सामीप्य, किनारा, बाढ़ ।

धोरण-(सं०नपुं०) हाथी घोड़े की सवारी घोड़े की सरपचाल, दौड़ ।

धोरणि-(सं०स्त्री०) परम्परा, श्रेणी ।

धोरी-(हि० पुं०) भार उठाने वाला, बड़ा आदमी, बैल, मुखिया, सरदार ।

धोरे-(हिं० क्रि० वि०) पास में ।

धोलधक-(हि० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष ।

धोला-(हिं० पु०) हिंगुआ, जवासा ।

धोवाना-(हिं० क्रि०) देखो धुलाना ।

धोवत-(हिं० पुं०) धोबी ।

धोवन-(हिं० पु०) धोने या पखारने की क्रिया, वह जल जिसमें कोई वस्तु कोई गई हो । **धोवाना**-(हिं० क्रि०) धुलने का काम किसी दूसरे से कराना।

धोंसा-(हिं० पुं०) गुड़ आदि का लोंदा ।

धौं-(हिं० अव्य०) मालूम नहीं, न जाने, अथवा, या, अच्छा, तो, भला, कि, अर्थों में यह शब्द प्रयोग किया जाता है ।

धौंक-(हिं० स्त्री०) अग्नि पर पहुँचाया हुआ वायु का आघात, गरमी की लपट, ताप, लू, हवा का वेग जो भाथी से उत्पन्न किया जाता है; **धौंकना**-(हिं० क्रि०) आग सुलगाने के लिये उस पर हवा का आघात पहुँचाना, ऊपर डालना, दण्ड आदि लगाना, भार डालना या पहुँचाना; **धौंकनी**-(हिं० स्त्री०) आग फूंकने की धातु या बाँस की सोनार की पोली नली, भाथी; **धौंका**-(हिं० पुं०) वायु का झोंका, लू, तीव्र वायु; **धौंकिया**-(हिं० पुं०) आग फूंकने वाला, भाथी चलाने वाला, पीपों की मरम्मत करने वाले व्यापारी जो अंगीठी भाथी आदि लेकर नगरों की गलियों में घूमा करते हैं । **धौंकी**-(हिं० स्त्री०) देखो धौंकनी ।

धौंज, धौंजन-(हिं० स्त्री०) उद्विग्नता, व्यग्रता, घबड़ाहट, दौड़ धूप ।

धौंजना-(हिं० क्रि०) दौड़ धूप करना, वस्त्र आदि को पैरसे कुचलना, कुचल कर भ्रष्ट करना ।

धौंटा-(हिं० पुं०) वह ढकना जो तेली के बैल के आँखों पर लगाया जाता है।

धौताल-(हिं० वि०) चतुर, साहसी, निपुण, हट्टा कट्टा, किसी धुन में लग जाने वाला ।

धौंधौंमर-(हिं० स्त्री०) शीघ्रता, उतावली।

धौंर-(हिं० स्त्री०) सफेद रंग की ऊख ।

धौंस-(हिं० स्त्री०) घुड़की, धमकी, डाँट डपट, अधिकार, छल, कपट, धोखा, **धौंसना**-(हिं० क्रि०) दण्ड देना, दमन करना, दबाना, धमकी देना, घुड़की देना, मारना, पीटना, डराना; **धौंस-पट्टी** (हिं० स्त्री०) धोखा, भुलावा, दम-दिलासा ।

धौंसा-(हिं० पुं०) डंका, बड़ा नगाड़ा, सामर्थ्य, शक्ति । **धौंसिया**-(हिं०पुं०) डाट डपट से काम लेने वाला, दम दिलासा देने वाला, नगाड़ा बजाने वाला, कर उगाहने का व्यय लेने वाला ।

धौ-(हिं० पुं०) देखो धव, एक पहाड़ी बड़ा वृक्ष ।

धौत-(सं० वि०) धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ, नहाया हुआ, (नपुं०) रूपा, चाँदी; **धौतकट**-(सं० पुं०) सूतकी बीनी हुई थैली; **धौतकोषज**-(सं० नपुं०) सोनापाठा नामक औषधि; **धौतखण्डी**-(सं० स्त्री०) ऊख का टुकड़ा; **धौतय**-(सं० नपुं०) सैन्धव, सेंधा नमक; **धौतशिल**-(सं० नपुं०) स्फटिक, बिल्लौर ।

धौति-(सं० स्त्री०) शुद्ध, विशुद्ध, हठ-योग की शरीर को बाहर से तथा भीतर से शुद्ध करने की क्रिया, यह चार प्रकार की होती है-अन्त धौति, दन्तधौति, हृद्धौति और मूलशोधन ।

धौती-(सं० स्त्री०) थरथराहट, कँपकपी।

धौमल-(सं० न०) रक्त विकार,

धौम्य-(सं०पुं०) धूम ऋषि के पुत्र जो युधिष्ठिर के पुरोहित थे ।

धौम्र-(सं० वि०) धुएँ के रंग का ।

धौर-(सं० वि०) धव का वृक्ष (हिं०वि०) सफेद परवा पक्षी; **धौरहर**-(हिं० पुं०) धौराहर ।

धौरा-(हिं० वि०) उजला, (पुं०) धव का वृक्ष, सफेद बैल, एक प्रकार का पक्षी, पंडुक; **धौराहर**-(हिं० पुं०) ऊँची अटारी, धरहरा ।

धौरित-(सं०नपु०) घोड़े की एक चाल ।

धौरी-(हि० स्त्री०) सफेद गाय, कपिला ।

धौरे-(हिं० क्रि० हि०) देखो धोरे ।

धौरेय-(सं० वि०) रथ आदि खींचने वाला; (पुं०) गाड़ी खींचने वाला बैल।

धौर्तिक-(सं० पुं०) शठत्व, शठता, **धौर्तेय**-(सं०पुं०) धूर्त मनुष्य की सन्तति **धौर्त्त**-(सं० नपुं०) शठता, धोखेका काम **धौत**-(सं०नपुं०) घोड़े की एक चाल ।

धौल-(हिं०स्त्री०) थप्पड़, तमाचा, चाँटा, धक्का, हानि का आघात, टोटा, हरा ज्वार, एक प्रकार की ऊख; (पु०) धव का पेड़, धरहरा; **धौलधूर्त**-बहुत बड़ा धूर्त; **धौलधक्कड़**-(हिं०पुं०) ऊधम, उपद्रव, दंगा, **धौलधक्का**-(हिं०पुं०) आघात, चपेट, **धौलधप्पड़**-(हिं० पुं०) उपद्रव, दंगा, मारपीट, धक्का, मुक्का; **धौलधप्पा**-(हिं०पुं०) देखो धौलधप्पड़; **धौलहर**(हिं० पु०) देखो धोरहर ।

धौला-(हिं० वि०) धवल, उजला, सफेद; (पु०) धव का वृक्ष, सफेद बैल; **धौलाई**-(हिं० स्त्री०) उजलापन, सफेदी; **धौलाखैर**-(हिं० पु०) बबूल की जाति का एक वृक्ष; **धौलागिरि**-(हिं० पु०) देखो धवलगिरि।

धौली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी कोमल होती है और पालकी खिलौने आदि के बनाने के काम में आती है ।

ध्माकार-(सं० पु०) धम् धम् का शब्द, लोहार ।

ध्माङ्क्ष अपभ्रंश-(पुं०) काक, कौवा, भिक्षुक, **ध्माङ्क्ष जङ्घा**-काक जघा। **ध्माङ्क्षनखी**-काकतुण्डी; **ध्माङ्क्षनाशिनी**-हाऊबेर; **ध्माङ्क्षपुष्ट**-कोयल; **ध्माङ्क्षाराति**-उल्लू पक्षी ।

ध्मापन-(सं० नपुं०) जलाने की क्रिया ।

ध्मापत-(सं० वि०) जलाकर राख किया हुआ ।

ध्यात-(सं० वि०) ध्यान किया हुआ, विचार किया हुआ, चिन्तित ।

ध्याता-(हिं० वि०) ध्यान करने वाला, विचार करने वाला ।

ध्यान-(सं० नपुं०) वाह्य इन्द्रियों के प्रयोग बिना केवल मन में लाने की क्रिया या भाव, चित्त की एकाग्रता, सोच विचार, धारणा, स्मृति, बुद्धि, समझ, भावना, विचार, **ध्यान में डूबना**-अन्य बातों को भूलकर एक विषय में चित्त एकाग्र करना; **ध्यान करना**-याद रखना; **किसी के ध्यान में लगना**-किसी के विचार में संलग्न होना; **ध्यान आना**-याद पड़ना; **ध्यान जमना**-चित्त एकाग्र होना; **ध्यान बँधना**-निरन्तर विचार बना रहना; **ध्यान रखना**-याद किये रहना, न भूलना; **ध्यान में न लाना**-विचार न करना; **ध्यान जाना**-चित्त की प्रवृत्ति किसी ओर होना; **ध्यान-दिलाना**-चेताना, याद दिलाना; **ध्यान देना**-चित्त लगाना; **ध्यान पर चढ़ना**-याद आना; **ध्यान बँटना**-अन्य विषय पर मन फिर जाना, चित्त एकाग्र न रहना; **ध्यान लगना**-चित्त एकाग्र होना; **ध्यान छूटना**-मन विचलित हो जाना ।

ध्यानगोचर-(सं० पुं०) जो ध्यान से जाना जावे ।

ध्यानना-(हिं० क्रि०) विचार करना ।

ध्यानमय-(सं० वि०) ध्यान स्वरूप ।

ध्यानयोग-(सं० पुं०) योग का वह विभाग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो, इन्द्रजाल की एक क्रिया ।

ध्यानबिन्दूपनिषद-(सं० स्त्री०) अथर्व वेद का एक उपनिषद् । **ध्यानिक**-(सं० वि०) जिसकी प्राप्ति ध्यान के द्वारा हो । **ध्यानी**-(हिं० वि०) ध्यान युक्त, समाधिस्थ, ध्यान करने में निमग्न ।

ध्याम-(सं० नपुं०) दौना नामक घास, (वि०) **ध्यामक**-(हि० नपुं०) एक प्रकार की सुगन्धित घास; **ध्यामन**-(सं०पुं०) चिन्ता, विचार, तेध, परिमाण,

ध्येय-(सं० वि०) जिसका ध्यान किया जावे, ध्यान करने योग्य, जो ध्यान का विषय हो ।

ध्राक्षा-(सं० स्त्री०) देखो द्राक्षा, दाख ।

ध्रुपद-(हि०पु०) वह गद्यपद्यमय गंभीर आशय की गीत जिसमें देवताओं की लीला राजाओं का यश अथवा बड़े-बड़े युद्धों का वर्णन स्वर, ताल, राग-रागिनी प्रगाढता से किया जाता है ।

ध्रुव-(सं०वि०) दृढ़, निश्चित, स्थिर, अचल, ठीक, पक्का, (पुं०) सन्तति, आकाश, तर्क, शंकु, कील, खंभा, फलित ज्योतिष का एक योग, विष्णु, बरगद का वृक्ष एक प्रकार का पक्षी, ध्रुव तारा, ध्रुवक पद, वासुदेव के एक पुत्र का नाम, नहुषका एक पुत्र, पर्वत, आठ वसुओं में से एक, उत्तानपाद के एक पुत्र का नाम, पृथ्वीके ऊपर नीचे का चिपटा भाग जिनमेंसे जाती हुई अक्ष रेखा मानी जाती है, रगण का एक भेद जिसमें क्रमसे एक लघु, एक गुरु और पुनः तीन लघु वर्ण होते हैं ।

ध्रुवका-(सं० स्त्री०) ध्रुपद, **ध्रुवकेतु**-(सं०पुं०) एक प्रकार का केतु तारा, **ध्रुवक्षेम**-(सं० पु०) स्थिर निवास; **ध्रुवगति**-(सं०स्त्री०) ध्रुवपद; **ध्रुवचरण**-(सं० पुं०) रुद्र ताल का एक भेद; **ध्रुवच्युत**-(सं०वि०) अचल पर्वत को हिलाने वाला; **ध्रुवता**-(सं० स्त्री०) अचलता, दृढता, स्थिरता, निश्चय; **ध्रुवतारा**-(हि०स्त्री०) मेरु के अग्र भाग में स्थित वह तारा जो सर्वदा ध्रुवमें रहता है कभी इधर-उधर नहीं हटता; **ध्रुवदर्शक**-(सं०पुं०) सप्तर्षि मण्डल, **ध्रुवदर्शन**-(सं०पुं०) विवाह संस्कार के अन्तर्गत एक कृत्य जिसमें मन्त्र पढ़कर वर और वधू को ध्रुव तारा दिखलाया जाता है; **ध्रुवधेनु**-(सं०स्त्री०) वह गाय जो दुहते समय चुपचाप खड़ी रहती है; **ध्रुवपद**-(सं० पुं०) देखो ध्रुपद; **ध्रुवमत्स्य**-(सं०पुं०) दिशा सूचक यन्त्र; **ध्रुवरत्ना**-(सं० स्त्री०) कुमार कार्तिकेय की एक मातृ का नाम; **ध्रुवरेखा**-(सं०स्त्री०) विषुवतरेखा; **ध्रुवलोक**-(सं०पुं०) मर्त्यलोकके अन्तर्गत एक लोक जिसमें ध्रुव स्थित है; **ध्रुवसन्धि**-(सं०पु०) हिरण्यनाभ के पुत्र का नाम; **ध्रुवसिद्धि**-(सं०पुं०) अग्निमित्र की सभा का एक वैद्य ।

ध्रुवा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का यज्ञ

पात्र; ध्रुवावर्त-(सं०पुं०) घोड़ों की एक भौंरी का नाम।
ध्रुवाश्व-(सं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा घोड़ा।
ध्वंस-(सं०पुं०) विनाश, क्षति, हानि; ध्वंसक-(सं०वि०) विनाशक, नाश करने वाला। ध्वंसकला-(सं०स्त्री०) हत्या, ध्वंसन-(सं०नपुं०) नाश करने की क्रिया, भ्रंश, नाश, अधः पतन, क्षय; ध्वंसित-(सं०वि०) नाश किया हुआ; ध्वंसी-(सं०वि०) नाश करने वाला; (पुं०) पहाड़ी पीलू का वृक्ष।
ध्वज-(सं०पुं०)ध्वजा लेकर चलने वाला मनुष्य, चिह्न, गर्व, अभिमान, खाट की पट्टी, मेढ़, लिङ्ग, पताके का डंडा, झंडा। ध्वजगृह-(सं०पुं०) वह घर जिसमें झंडा फहराया जाता है; ध्वजग्रीव-(सं०पुं०) एक राक्षस का नाम; ध्वजद्रुम-(सं०पुं०)ताड़ का वृक्ष; ध्वजग्रहण-(सं० पुं०) वायु, हवा; ध्वजभङ्ग-(सं०पुं०) नपुंसकता; ध्वजयन्त्र-(सं०नपुं०)वह यन्त्र जिसमें ध्वजा का डंडा रक्खा जाता है; ध्वजयष्टि-(सं०स्त्री०) झंडे का डंडा; ध्वजवत्-(सं०वि०) चिह्नयुक्त। ध्वजांशुक-(सं०नपुं०) झंडे का कपड़ा।
ध्वजा-(सं० स्त्री०) पताका, झंडा, मल खम्भ की एक व्यायाम; छन्द शास्त्र के अनुसार ठगण का पहिला भेद; ध्वजारोपण-(सं०नपुं०) देवालय तथा अट्टालिकाओं पर पताका फहराना।
ध्वजिक-(सं०वि०) धर्मध्वजी,पाखण्डी।
ध्वजिनी-(सं०स्त्री०) सेना का एक भेद, पांच प्रकार की सीमा में से एक।
ध्वजी-(हिं०वि०)ध्वजयुक्त,ध्वजा वाला, जो पताका लिये हो चिह्नयुक्त; (पुं०) ब्राह्मण, पर्वत, संग्राम, सर्प, घोड़ा, मयूर, मोर।
ध्वजोत्थान-(सं०नपुं०) भाद्रपद मास की शुक्ल द्वादशी के दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव।
ध्वन-(सं०पुं०) शब्द; ध्वनन-(सं०नपुं०) अव्यक्त शब्द; ध्वनमोदिन्-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा।
ध्वनि-(सं० पुं०) वह जिसका ज्ञान श्रवणेन्द्रिय द्वारा होता है, मृदंगादि शब्द, नाद, गूंजन, वैयाकरणों के अनुसार शब्द का स्फोट, लय, वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंगार्थ में अधिक विशेषता रहती है अर्थात् जब व्यंजना बोधित अर्थ वाच्यार्थ से अधिक चमत्कार दिखलाता है, गूढार्थ,आशय; ध्वनिकाव्य-(सं०नपुं०) उत्तम प्रकार का काव्य; ध्वनिग्रह-(सं०पुं०) श्रोत्र,कर्ण, कान; ध्वनित-(सं०वि०) शब्द किया हुआ, प्रगट किया हुआ, जमाया हुआ, (पुं०) मृदंगादि बाजा;ध्वनिताला-(सं०स्त्री०) वेणु,बांसुरी एक प्रकार का बड़ाढोल; ध्वनिविकार-(सं०पुं०) विकृत ध्वनि, ध्वनि का अन्यथा भाव; ध्वनिबोधक-(सं० पुं०) रोहित नामक घास।
ध्वन्य-(सं०पुं०) व्यंग्यार्थ।
ध्वन्यात्मक-(सं० वि०) ध्वनिमय,ध्वनि स्वरुप,जिस काव्यमें ध्वनि प्रधान हो
ध्वन्यार्थ-(हिं०पुं०) वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर केवल ध्वनि या व्यंजना से हो।
ध्वंसन्-(सं०वि०) ध्वंसकारक, नाश करने वाला;
ध्वसन-(सं०नपुं०) ध्वंस का स्थान।
ध्वसनि-(सं०पुं०) मेघ, बादल।
ध्वसिर-(सं०वि०)जिसका नाश हुआ हो।
ध्वस्त-(सं०वि०) गिरा पडा हुआ, नष्ट भ्रष्ट, टूटा हुआ, पराजित।
ध्वस्ति-(सं० स्त्री०) ध्वंस, नाश, क्षय।
ध्वस्मन्-(सं०वि०) ध्वंसक, नाश करने वाला।
ध्वस्र-(सं०वि०)ध्वंसक,नाश करनेवाला
ध्वाङ्क्ष-(सं०पुं०) काक, कौवा, बगला भिक्षुक; ध्वाङ्क्षजंघा-(सं०स्त्री०) काकजंघा; ध्वाङ्क्षदण्डी-(सं०स्त्री०) कौवाठोंठी; ध्वाङ्क्षपुष्ट-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल; ध्वाङ्क्षमाची-(सं०स्त्री०) काकमाची, मकोय।
ध्वाङ्क्षी-(सं०स्त्री०) शीतलचीनी।
ध्वान-(सं०पुं०) शब्द।
ध्वान्त-(सं०नपुं०) अन्धकार, अँधेरा, एक नरक जहाँ सर्वदा अँधेरा रहता है; ध्वान्तचर-(सं० पुं०) निशाचर, राक्षस; ध्वान्तवित्त-(सं०पुं०) खद्योत, जुगनू; ध्वान्तशात्रव-(सं०पुं०) सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा।
ध्वान्ताराति-(सं०पुं०)सूर्य, चन्द्र,अग्नि।
ध्वान्तोन्मेष-(सं०पुं०) खद्योत, जुगनू।

न

न-हिन्दी तथा संस्कृत व्यंजन वर्ण का बीसवाँ वर्ण तथा तवर्ग का पांचवां अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्त है
न-(सं०अव्य०) निषेध वाचक शब्द,मत, हीं या नहीं, कि नहीं, (पुं०) उपमा, बन्ध, नकार स्वरूप वर्ण, सुवर्ण,रत्न;
नइहर-(हिं०पुं०) स्त्रियों की माता का घर, मायका।
नई-(हिं०वि०) "नया" शब्द का स्त्री लिंग का रूप; देखो नदी; (हिं०वि०) देखो नीतिज्ञ।
नउंजी-(हिं०स्त्री०)लीची नाम का फल।
नउ-(हिं०वि०) नव, नौ।
नउआ-(हिं०पुं०) नापित, नाऊ,हज्जाम
नउका-(हिं० पुं०) देखो नौका; नाव।
नउत-(हिं० वि०) वह जो नीचे की ओर झुका हो।
नउलि-(हिं०वि०) नवीन, नया।
नउरंग-(हिं०स्त्री०) नारंगी।
नउर-(हिं०पुं०) देखो नेवला; नेउर।
नएपंज-(हिं०पुं०) पांच सालका जवान घोड़ा।
नओढ़-(हिं०वि०) देखो नबोढ़ा।
नँग-(हिं०पुं०) नग्नता, नंगापन, नंगे होने का भाव, गुप्त अंग, शरीर का छिपा हुआ भाग (वि०) नंगा, लुच्चा,
नगधड़ग-(हिं०वि०) दिगम्बर जिसके शरीर पर एक भी वस्त्र न हो;नंगपैरा (हिं०वि०) जिसके पांव नंगे हो जिसके पैर में जूता न हो; नंगमुनंगा-(हिं० वि०)देखो नंगधड़ंगा; नंगर-(हिं०पुं०) देखो लंगर;नंगरवारी-(हिं०पुं०)समुद्र में चलने वाली एक प्रकार की नाव।
नंगा-(हिं०वि०)नग्न, विवस्त्र, वस्त्रहीन, जो कपड़ा न पहिरे हो, जो किसी वस्तु से ढपा न हो, खुला हुआ,बिना ढपने का, दुष्ट, निर्लज्ज,(पुं०)शिव, महादेव, काश्मीर की सीमा पर का एक पर्वत; नंगा झोरी, नंगा झोली-(हिं०स्त्री०)किसी छिपाई हुई वस्तु का पता लगाने के लिये किसी मनुष्य के पहिरे हुए वस्त्र को उतरवाकर अथवा वस्त्र को भली भांति हाथों से टटोल कर देखना; नंगा लुंगा-(हिं० वि०) जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, नग-धड़ंग; नंगा बुच्चा, नंगा बूचा-(हिं० वि०) अति दरिद्र, कंगाल, जिसके पास कुछ भी न हो; नंगा-मादरजात-(हिं०पुं०) ऐसा नगा जैसा माता के उदर से निकलने के समय होता है; नंगा सुनंगा-(हिं०पुं०) बिलकुल नंगा; नंगा लुच्चा-(हिं० वि०) नीच और पाजी।
नंगियाना-(हिं०क्रि०) नंगा करना,शरीर परसे वस्त्र उतार लेना,सर्वस्व हरण करना, कुछ भी पास न रहने देना।
नंदना-(हिं०स्त्री०) पुत्री, लड़की, बेटी।
नंद-देखो नन्द; नंदन-देखो नन्दन; नंदिनी-देखो नन्दिनी।
नंदरुख-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियां रेशम के कीड़ों को खिलाई जाती हैं।
नंदिन-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की मछली।
नंदी-(हिं०पुं०) देखो नन्दिन; नंदीघंटा-(हिं०पुं०) बैलके गलेमें बाँधने कीघंटी
नंदोई-(हिं०पुं०)पति का बहनोई, ननद का पति।
नंदोला-(हिं०पुं०)मिट्टी की बड़ी नांद।
नंदोसी-(हिं०पुं०) देखो नंदोई।
नंबरदार-(हिं०पुं०)गांवका वह भूस्वामी जो अपनी पट्टीके तथा हिस्सदारोंका कर आदि लेता हो तथा सरकारी कर जमा करता हो; नंबरवार-(हिं०क्रि०वि०) यथाक्रम, एक एक करके।
नंबरी-(हिं०वि०) जिस पर नंबर या संख्या लिखी हो,नंबरवाला, प्रसिद्ध; नंबरी गज-(हिं०पुं०) तीन फुट का गज; नंबरी सेर-(हिं०पुं०) अस्सी रुपयेकी तौलका लोहेका अंग्रेजी सेर
नंश-(सं०पुं०) ध्वंश, नाश; नंशन-(सं० नपुं०) नाश, ध्वंस। नंशुक-(सं० वि०) नाश करने वाला; (पुं०) छोटा टुकड़ा, अणु। नंष्टव्य-(सं०वि०) नाश करने योग्य।
नंस-(हिं०पुं०) ध्वंस, नाश।
नकंद-(हिं०पुं०) एक प्रकार का अच्छा चावल।
न-(हिं०अव्य०) नहीं; नइहर-(हिं०पुं०) देखो नैहर; नउंजी-(हिं०स्त्री०) लीची नउ-(हिं० वि०) नया; नउका-(हिं० स्त्री०) देखो नौका; नउस-(हिं०वि०) नया; नओढ़-(हिं०स्त्री०) देखो नवोढ़ा
नककटा-(हिं०वि०) जिसकी नाक कटी हो, निर्लज्ज, जिसकी बड़ी दुर्दशा हुई हो, अप्रतिष्ठित। नककटी-(हिं० स्त्री०) नाक काटने की क्रिया, अप्रतिष्ठा, दुर्दशा। नकघिसनी-(हिं० स्त्री०) भूमि पर नाक घिसने की क्रिया, अति दीनता। नकचढ़ा-(हिं० वि०) बुरे स्वभाव का, चिड़चिड़ा।
नकछिकनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास जिसके फल को सूंघने से बहुत छींक आती है।
नकटा-(हिं०पुं०) वह जिसकी नाक कट गई हो, विवाह के समय गाने की एक गीत, एक प्रकार की चिड़िया (वि०)जिसकी नाक कटी हो,निर्लज्ज, जिसकी बड़ी दुर्दशा हुई हो।
नकटेसर-(हिं०पुं०)एक प्रकार का पौधा।
नकड़ा-(हिं० पुं०) बैलों के नाक फूल जाने का एक रोग।
नकतोड़-(हिं० पुं०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति। नकतोड़ा-(हिं० पुं०) नाक भौं सिकोड़ कर बड़े गर्व के साथ चोचला करना।
नकदावा-(हिं०पुं०) चने या मटर की दाल के साथ पकाई हुई बरी या कोंहड़ौरी।
नकना-(हिं०क्रि०) नाक में दम होना, उल्लंघन करना, त्यागना।
नकफूल-(हिं०पुं०) नाक में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण, नाक में पहिरने की लौंग।
नकबानी-(हिं०स्त्री०)व्यग्रता, नाकमें दम।
नकबेसर-(हिं०स्त्री०) नाक में पहिरने की छोटी नथ। नकमोती-(हिं० पुं०) नाकमें पहिरने का मोती या बुलाक, नथ का लटकन।
नकलेल-(हिं०स्त्री०)नाव खींचनेकी रस्सी
नकशा-(हिं०पुं०) मानचित्र।
नकशी-(हिं० वि०) प्रतिलिपी संबंधी; नकशी मैना-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मैना।
नकसा-(हिं०पुं०) मानचित्र।
नकसीर-(हिं०स्त्री०) आप से आप नाक से लोहू बहना जो बहुधा गरमी के दिनों में होता है; नकसीर भी न फूटना-थोड़ा भी कष्ट न होना।
नकाना-(हिं०क्रि०) नाक में दम होना, व्यग्र करना।
नकार-(सं०पुं०) "न" स्वरूप वर्ण,

नहीं, अस्वीकार।
नकारची-(हिं०पुं०) देखो नक्कार।
नकारना-(हिं०क्रि०) अस्वीकार करना,
नकाश-(हिं०पुं०) नकाशी करने वाला;
नकाशना-(हिं० क्रि०) धातु, पत्थर आदि पर बेल बूटे बनाना।
नकाशी-(हिं०स्त्री०) खोद कर चित्रकारी करने का काम।
नकास-(हिं०पुं०) देखो नक्काश; नकासना-(हिं० क्रि०) नकाशी करना।
नकासी-(हिं० स्त्री०) देखो नक्काशी;
नकासीदार-(हिं० वि०) जिस पर नकाशी की गई हो।
नकिंचन-(सं०वि०) दरिद्र, कंगाल।
नकियाना-(हिं०क्रि०) अनुनासिक उच्चारण करना, नाक से बोलना, अति दुःखी होना, नाक में दम करना, कष्ट देना।
नकिम्-(सं०अव्य०) रोकने की क्रिया।
नकुंच-(सं०पुं०) मदार का पेड़।
नकुटी-(सं०नपुं०) नासिका, नाक।
नकुल-(सं०पुं०) एक मांसहारी पशु, नेवला, महादेव, शिव, पाण्डु राजा के चौथे पुत्र का नाम जो माद्री के से उत्पन्न थे, पुत्र, बेटा, (वि०) कुल रहित, जिसके कुल न हो।
नकुलक-(सं० पुं०) एक प्रकार का प्राचीन आभूषण, रुपया रखने की एक प्रकार की थैली।
नकुला-(सं०स्त्री०) पार्वती।
नकुलान्धतर-(सं०स्त्री०) आँख का एक प्रकार का रोग।
नकुलारि-(सं०पुं०) बिड़ाल, बिलैया।
नकुली-(सं० स्त्री०) नेवले की मादा, कुक्कुटी, मुर्गी जटामासी; नकुलीश-(सं० पुं०) तान्त्रिकों के एक भैरव का नाम।
नकुवा-(हिं०पुं०) नासिका, नरक, तराजू की डंडी में का छेद।
नकेल-(हिं०स्त्री०) ऊंट के नाक में बंधी हुई रस्सी, मुहार; किसी की नकेल हाथ में लेना-किसी को अपने वश में करना।
नक्क-(सं०पुं०) नाश।
नक्का-(हिं०पुं०) सूई का छेद, नाका, ताश के पत्ते में की एक्का, कौड़ी।
नक्कार-(हिं० पुं०) तिरस्कार, अवज्ञा, अपमान।
नक्की-(हिं० स्त्री०) ताश के पत्ते की एक्की, जुए में वह दांव जिसमें जीतने के लिये एक का चिह्न नियत हो; नक्कीमूंठ-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका खेल जो कौड़ियों से खेला जाता है।
नक्कू-(हिं० वि०) बड़ी नाक वाला, सबसे भिन्न आचरण वाला, सबसे उलटा काम करने वाला।
नक्त-(सं०पुं०) रात्रि, रात, एक व्रत जो अगहन सुदी प्रतिपदा को किया जाता है और रात में विष्णु की पूजा होती है तथा रात में तारा देखकर भोजन किया जाता है, शिव, महादेव, राजा पृथु के पुत्र का नाम, (वि०) लज्जित; नक्तक-(सं०पुं०) गूदड़, चिथड़ा, आँखकी पलक;
नक्तचर-(सं०पुं०) शिव, महादेव, रातको घूमने वाला राक्षस, उल्लू; नक्तचारी-(सं०पुं०) बिल्ली, उल्लू, राक्षस;
नक्तञ्चर-(सं०पुं०) राक्षस, गुग्गुल, चोर, बिल्ली, नगाड़ा, (वि०) रात में घूमने वाला। नक्तचर्या-(सं० स्त्री०) रात में घूमने का काम;
नक्तञ्जात-(सं० वि०) जो रात में उत्पन्न हो; नक्तन-(सं०नपुं०) रात्रि, रात; नक्तान्तम-(सं०वि०) रात में होने वाला। नक्तभोजी-(सं०वि०) रात को भोजन करने वाला; नक्तमाल-(सं०पुं०) करंज का वृक्ष; नक्तमुखा-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात; नक्तव्रत-(सं०नपुं०) वह व्रत जिसमें दिन को खाया नहीं जाता, रात में खाया जाता है।
नक्तप्रभव-(सं०वि०) रात को उत्पन्न होने वाला।
नक्ता-(सं०स्त्री०) रात्रि, हलही, कलियारी नामक विषैला पौधा, एक प्रकार की घास; नक्तान्ध-(सं०वि०) जिसको रतौंधी आती हो, जिसको रात में न सूझ पड़ता हो; नक्ताह-(सं०पुं०) करंज का वृक्ष।
नक्ति-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
नक्द-(हिं०पुं०) मुद्रा, रुपया, पैसा।
नक्र-(सं०पुं०) कुम्भीर, मगर, घड़ियाल, नासिना, नाक; नक्रराज-(सं० पुं०) घड़ियाल, मगर। नक्रा-(सं० स्त्री०) नासिका, नाक, मधुमक्खी का डंक।
नक्षत्र-(सं०नपुं०) तारों का वह गुच्छा या समूह जो चन्द्रमाके पथमें घूमता है, पहिचानके लिये इनके भिन्न भिन्न नाम रक्खे गये हैं, इनकी संख्या सत्ताइस है, इनके नाम-अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्ता, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती हैं; नक्षत्रचक्र-(सं०नपुं०) राशिचक्र; नक्षत्रचिन्तामणि-(सं० पुं०) एक प्रकार का कल्पित रत्न जिसके विषयमें ऐसी प्रसिद्धि है कि उससे जो कुछ माँगा जाय वह मिलता है; नक्षत्रज-(सं० वि०) जो नक्षत्र से उत्पन्न हो; नक्षत्रजात-(सं० नपुं०) जिस नक्षत्र में किसीका जन्म हो; नक्षत्रदर्शी-(सं० वि०) नक्षत्रों को देखने वाला (पुं०) गणक, ज्योतिषी।
नक्षत्रदान-(सं०नपुं०) नक्षत्रों के भेद के अनुसार विशेष द्रव्यों का दान;
नक्षत्रनाथ-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा;
नक्षत्रनेमि-(सं०पुं०) ध्रुवतारा, चन्द्रमा, विष्णु; नक्षत्रप-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा; नक्षत्रपति-(सं० पुं०) चन्द्रमा; नक्षत्रपथ-(सं०पुं०) नक्षत्रों के चलने का मार्ग; नक्षत्रफल-(सं० नपुं०) नक्षत्र समूह का फल;
नक्षत्रभोग-(सं०पुं०) राशि चक्र में स्थित नक्षत्रों का एक दिनका भोग;
नक्षत्रमार्ग-(सं०पुं०) नक्षत्रपथ; नक्षत्रमाला-(सं०स्त्री०) नक्षत्रों की श्रेणी, सत्ताईस मोतियों का हार; नक्षत्रमालिनी-(सं०स्त्री०) जाती पुष्प, हुड़हुल का फूल; नक्षत्रयोग-(सं०पुं०) नक्षत्रों के साथ दुष्ट ग्रहों का योग;
नक्षत्रयोनि-(सं०स्त्री०) वह नक्षत्र जो विवाह के लिये निषिद्ध हो; नक्षत्रराज-(सं०पुं०) नक्षत्रों के अधिपति, चन्द्रमा; नक्षत्रलोक-(सं०पुं०) पुराण के अनुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र रहते हैं; नक्षत्रवर्त्म-(सं०नपुं०) नक्षत्रों के चलने का पथ; नक्षत्रविद्या-(सं० स्त्री०) ज्योतिष विद्या; नक्षत्रवृष्टि-(सं०पुं०) उल्कापात, तारा टूटना;
नक्षत्रव्यूह-(सं०पुं०) पुरुष और द्रव्य विशेष का शुभाशुभ सूचक नक्षत्र समूह; नक्षत्रव्रत-(सं० नपुं०) नक्षत्र निमित्त किया जाने वाला व्रत; नक्षत्रशूल-(सं० पुं०) पूर्वादि दिशा में यात्रा करने के समय जो नक्षत्र फलित ज्योतिष के अनुसार निषिद्ध माने गये हैं; नक्षत्रसत्र-(सं० नपुं०) नक्षत्र के निमित्त यज्ञ; नक्षत्रसाधक-(सं०पुं०) शिव, महादेव; नक्षत्रसाधन-(सं०नपुं०) वह गणना जिसके अनुसार यह जाना जाता है कि अमुक ग्रह पर अमुक नक्षत्र इतने समय तक रहता है।
नक्षत्रामृत-(सं०नपुं०) बारह निर्दिष्ट नक्षत्रों का योग।
नक्षत्रिन्-(सं०पुं०) चन्द्रमा, विष्णु।
नक्षत्रिय-(सं०पुं०) जो क्षत्रिय न हो।
नक्षत्री-(हिं०वि०) जो शुभ नक्षत्रों में उत्पन्न हुआ हो, भाग्यवान्।
नक्षत्रेश-(सं० पुं०) चन्द्रमा, कपूर, सीप; नक्षत्रेश्वर-(सं०पुं०) चन्द्रमा।
नक्षत्रेष्टि-(सं०स्त्री०) नक्षत्र के उद्देश से किया जाने वाला यज्ञ।
नख-(सं० नपुं०) अंगुलीके आगले भाग की कोमलास्थि, कररुह, नैखी नामक गन्ध द्रव्य, खण्ड, टुकड़ा; नखकर्तनि-(सं०स्त्री०) नाखून काटने की नहरनी;
नखकुट्ट-(सं०पुं०) नाई, नखक्षत-(सं० पुं०) नह गड़ाने से बना हुआ चिह्न;
नखखादिन्-(सं०वि०) दाँतों से नँह कुतरने वाला; नखच्छत-(हिं०पुं०) देखो नखक्षत; नखच्छेदन-(सं०नपुं०) नख का काटना; नखचारिन्-(सं०वि०) पंजे के बल चलने वाला; नखजाह-(सं०नपुं०) नहँ का अगला भाग।
नखत, नखतर-(हिं०पुं०) देखो नक्षत्र।
नखता-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी
नखतेस-(हिं०पुं०) चन्द्रमा
नखदारण-(सं०नपुं०) नहरनी।
नखना-(हिं०क्रि०) उल्लंघन होना या करना, नष्ट करना।
नखनामा-(सं०पुं०) नील का पेड़।
नखनिकृन्तन-(सं०नपुं०) नहरनी।
नखपद-(सं०नपुं०) नहँ का चिह्न।
नखपर्णी-(सं०स्त्री०) बिछुवा घास।
नखपुष्पफला-(सं०स्त्री०) सफेद सेम।
नखपूर्विका-(सं० स्त्री०) हरी सेम।
नखफलिनी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की सेम; नखभेद-(सं० नपुं०) कुलत्थ, कुलथी। नखमुच-(सं० नपुं०) धनुष, चिरौंजीका वृक्ष, (वि०) नाखून काटने वाला।
नखर-(सं०पुं०) नख, एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।
नखरञ्जनी-(सं०स्त्री०) मेंहदी का पौधा।
नखरञ्जिनी-(सं०स्त्री०) नहरनी।
नखरायुध-(सं०पुं०) सिंह व्याघ्र, कुत्ता।
नखरी-(सं०स्त्री०) नखीनामक गन्धद्रव्य।
नखरेखा-(सं०स्त्री०) नख का चिह्न।
नखरौट-(हिं०स्त्री०) शरीर परका नाखून से किया हुआ चिह्न। नखबिन्दु-(सं०पुं०) गोल या चन्द्रकार चिह्न जिसको स्त्रियाँ मेंहदी से अपने नहों पर बनाती हैं। नखविष-(सं०पुं०) वह जिसके नख में विष हो।
नखविष्किर-(सं०पुं०) वह पशु जो अपने शिकार को नख से फाड़ कर खाता है। नखवृक्ष-(सं०पुं०) नील का पेड़। नखशङ्ख-(सं०पुं०) छोटा शंख। नखशस्त्र-(सं०पुं०) नहरनी।
नखशिख-(हिं०पुं०) नख से लेकर शिखा तक सब अंग, शरीर के प्रत्येक अंग का वर्णन; नखशिख से-सिर से पैर तक। नखशूल-(सं०पुं०) नख का एक रोग। नखहरणी-(हिं० पुं०) नहरनी। नखाघात-(सं० पुं०) नख द्वारा आघात।
नखाङ्क-(सं०पुं०) नख के आघात का चिह्न। नखाङ्कुर-(सं०पुं०) नख।
नखाङ्ग-(सं० नपुं०) नख नामक गन्धद्रव्य।
नखानखि-(सं०अव्य०) परस्पर नख के आघात का युद्ध। नखायुध-(सं०पुं०) शेर, बाघ, कुत्ता।
नखारि-(सं०पुं०) शिव के एक अनुचर का नाम।
नखालि-(सं०पुं०) छोटा शंख, नख की पंक्ति।
नखालु-(सं०पुं०) नील का वृक्ष।
नखाशी-(सं०वि०) नख की सहायता से भक्षण करनेवाला, (पुं०) उल्लू पक्षी
नखास-(अ०पुं०) वह बाजार जिसमें चौपाये और विशेष कर घोड़े बिकते हैं, कोई बाजार।

नखिन्-(सं०पुं०) सिंह, व्याघ्र, किसी पदार्थ को नख से फाड़ कर खाने वाला पशु।
नखियाना-(हिं० क्रि०) नहँ गड़ाना।
नखी-(स०स्त्री०) नख नामक गन्धद्रव्य।
नखेद-(हिं०पुं०) निषेध।
नखोटना-हिं०क्रि०) नख से नोचना।
नखास-(हिं०पु०) गुदड़ीका हाट
नग-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, वृक्ष,पादप, पेड़, सर्प, सूर्य, सात की संख्या,(वि०) स्थिर, अचल, न चलने फिरने वाला
नग-(फा०पुं०) अँगूठी अथवा अन्य आभूषणों में जड़ने का रँगीन शीशे का टुकड़ा या रत्न, नगीना, संख्या,
नगज-(सं०नपुं०) हस्ती, हाथी, (वि०) वह जो पर्वत से उत्पन्न हो।
नगजा-(स०स्त्री०) पार्वती, पाषाण भेदी लता। **नगजित**-(सं०पुं०)पाषाण भेदक।
नगण-(सं०पुं०)पिङ्गल तथा छन्दशास्त्र में तीन लघु अक्षरों का एक गण।
नगणा-(सं०स्त्री०) इङगुदी, मालकँगनी
नगण्य-(सं०वि०) न गणना करने योग्य, तुच्छ, घृणा करने योग्य।
नगद-(हि० पुं०) देखो नकद।
नगदन्ती-(सं०स्त्री०) विभीषण की स्त्री का नाम।
नगदी-(हि०स्त्री०) देखो नकदी।
नगधर-(सं०पुं०) पर्वत को धारण करने वाले श्रीकृष्ण। **नगन**-(हि०वि०) देखो नग्न।
नगनदी-(सं०स्त्री०) किसी पर्वत से निकली हुई नदी। **नगनन्दिनी**-(सं० स्त्री०) हिमालय की कन्या, पार्वती।
नगन-(हि०वि०) नग्न, नगा, जिसके शरीर पर वस्त्र न हो। **नगना**-(हिं०स्त्री०) नग्ना, नंगी।
नगनिका-(हिं०स्त्री०) संकीर्ण राग का एक भेद, क्रीड़ा नामक वृत्त।
नगनी-(हिं०स्त्री०) वह कन्या जो रजस्वला न हुई हो, कन्या, बेटी, पुत्री,
नगपति-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत, चन्द्रमा, ताड़ का पेड़, कैलासपति शिव, सुमेरु पर्वत।
नगभित्-(सं०पुं०)इन्द्र,पाषाणभेदी लता
नगभू-(सं०स्त्री०) पहाड़ी भूमि, (वि०) पहाड़ से उत्पन्न।
नगमाल-(सं०पुं०) एक प्रकार का सुगन्धित धान।
नगमूर्धा-(सं०पुं०) पहाड़ की चोटी।
नगर-(सं०नपुं०) मनुष्यों के रहने की वह बस्ती जो गाँव और कस्बे से बड़ी हो जिसमें अनेक जातियाँ रहती हों; **नगरकाक**-(सं०पुं०) नगर का कौआ, एक घृणा सूचक शब्द; **नगरकीर्तन**-(सं०नपुं०) ईश्वर के नाम का भजन जिसको लोग नगर की सड़क या गलियों में घूम घूम कर गाते हैं; **नगरघात**-(सं०पुं०) हाथी, नगर के निवासियों की हत्या; **नगरजन**-(स०पुं०) पुरवासी; **नगरद्वार**-(स०नपु०)नगर का द्वार, **नगरनायिका**; ***नगरनारी**-(हि०स्त्री०) वेश्या, रंडी; **नगरपति**-(सं०पुं०)नगर का अध्यक्ष,
नगरपाल-(सं०पु०)नगर रक्षक,चौकीदार;
नगरप्रान्त-(सं०पु०) नगर के समीप का स्थान; **नागरमर्दी**-(स०पु०) मस्त हाथी; **नगरमार्ग**-(स०पु०) राजमार्ग, चौड़ी सड़क; **नगरमुस्ता**-(सं०स्त्री०) नागरमोथा; **नगररक्षा**-(सं०स्त्री०) नगर का शासन, नगर की रक्षा; **नगरवायस**-(स०पु०) नगरकाक, घृणा सूचक शब्द; **नगरवासी**-(स० वि०) पुरवासी, नागरिक; **नगर विवाद**-(हिं०पु०) संसार के झगड़े; **नगरस्थ**-(स०वि०)नगरवासी; **नगरहा**-(हिं०पु०) नगर मे रहने वाला; **नगरहार**-(सं०नपुं०)भारतवर्ष का एक प्राचीन नगर जो जलालाबादके पास बसा था
नगराई-(हिं०स्त्री०)नागरिकता,चतुराई।
नगराधिप-(सं० पु०) नगर पालक;
नगराधिपति, नगराध्यक्ष-(सं०पु०) नगर का अध्यक्ष।
नगराह्वय-(स०नपुं०) शुण्ठि, सोंठ।
नगरी-(स०स्त्री०)छोटा नगर; **नगरीकाक** (सं०पुं०)बक,बकुला;**नगरीय**-(सं०वि०) नागरिक, नगर का रहने वाला;
नगरीवक-(स०पुं०) काक, कौवा।
नगरोत्थ-(सं०वि०) जो नगर में उत्पन्न हुआ हो।
नगरौषधि-(सं०स्त्री०) कदली, केला।
नगवासी-(हिं०स्त्री०) नागपाश।
नगरवाहन-(सं० पु०) शिवजी का एक नाम।
नगरवृत्तिका-(सं०स्त्री०)सलई का पेड़।
नगस्वरूपिणी-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम।
नगाटन-(स०पुं०) वानर, बन्दर, (वि०) पहाड़ पर घूमने वाला।
नगाड़ा-(हिं०पु०) देखो नगारा।
नगाधिप-(सं०पु०) हिमालय पर्वत, सुमेरु पर्वत।
नगानिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार चार अक्षर होते हैं।
नगारि-(सं०पुं०) इन्द्र।
नगाधिप-(हिं०पुं०) हिमालय पर्वत।
नगावास-(सं०पुं०) वृक्ष पर रहने का स्थान,मयूर,मोर; **नगाश्रय**-(सं०वि०) पहाड और वृक्ष पर रहने वाला।
नगिचाना-(हिं०क्रि०) समीप आना।
नगी-(हि०स्त्री०) रत्न, मणि, नगीना, नग,पर्वतकी कन्या,पार्वती,पहाड़ीस्त्री
नगीच-(हिं०क्रि०वि०) पास।
नगेन्द्र,नगेश-(स०पुं०) हिमालय पर्वत।
नगेसरि-(हिं०पु०) नागकेसर।
नगौकस-(स०पु०) पक्षी, चिड़िया, शेर, कौवा (वि०) पर्वत और वृक्ष पर रहने वाला।
नग्न-(सं०वि०) विवस्त्र, नंगा, जिसके शरीर पर वस्त्र न हो,बिना आवरण का, दिगम्बर जैन; **नग्नक**-(स०पुं०) नग्न, नंगा; **नग्न क्षपणक**-(सं०पुं०) एक प्रकार का बौद्ध सन्यासी;**नग्नता**-(स०स्त्री०) नंगापन; **नग्न घोषित्**-(स०स्त्री०) नंगी स्त्री; **नग्नव्रतधर**-(स०पु०) महादेव, शिव।
नग्ना-(स०स्त्री०) नंगी स्त्री, वह स्त्री जिसके स्तन उभड़े न हों; **नग्नाट**-(सं० पुं०) वह जो सर्वदा नंगा रहता हो; **नग्नाटक**-(सं०पु०) सदा नंगा घूमनेवाला साधु। **नग्निका**-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो नंगी होकर घूमती हो, वह स्त्री जो रजस्वला न हुई हो।
नग्र-(हिं०पुं०) देखो नगर।
नग्रोध-(हिं०पुं०) बड़ का पेड़।
नघना-(हिं०क्रि०) लँघना,पार करना।
नघमारु-(स० पुं०) कुष्ट रोग, कोढ़ की बीमारी।
नघाना-(हिं० क्रि०) उल्लंघन करना।
नघारीब-(सं० पुं०) कुष्ट रोग।
नघुष-(सं० पुं०) नहुष राजा।
नङ्ग-(सं० पुं०) जार, उपपति,
नचना-(हिं० क्रि०) नाचना, इधर उधर घूमना। **नचनिया**-(हिं० वि०) नाचने वाला। **नचनी**-(हिं० स्त्री०) करघे की लकड़ी,(वि०) नाचने वाली। **नचाना**-(हिं० क्रि०) नाचने का काम दूसरे से कराना, किसी वस्तु को इधर उधर घुमाना, इधर उधर दौड़ाना, **नाच नचाना**-व्यर्थ व्यग्र करना।
नचिकेता-(स० पुं०) वाजश्रवा ऋषि के पुत्र, अग्नि, आग।
नचिरात-(सं० अव्य०) शीघ्र, तुरत।
नचीला-(हिं० वि०) चंचल।
नचेत-(सं०अव्य०) नहीं तो, ऐसा न हो कि
नचौंहा-(हिं० वि०) सर्वदा इधर उधर घूमने वाला।
नछत्र-(हिं० पुं०) देखो नक्षत्र।
नछत्री-(हिं०वि०)प्रभावशाली,भाग्यवान्
नजरना-(हिं०क्रि०) कुदृष्टि लगाना, देखना;
नजराना-(हिं० क्रि०) बुरी दृष्टि का प्रभाव होना या लगाना (पु०) भेंट, उपहार, वह वस्तु जो भेंट के रूप में दी जावे।
नजरि-(हिं० स्त्री०) देखो नजर।
नजिकाना-(हिं० क्रि०) समीप पहुँचना, निकट आना,
नजीक-(हिं०क्रि०वि०) समीप, पास।
नट-(सं० पुं०) नर्तक, नाट्य करने वाला, अशोक वृक्ष, एक वर्णसंकर जाति, सम्पूर्ण जाति का एक राग, एक नीच जाति जो गा बजाकर तथा खेल तमाशे दिखला कर अपनी जीविका चलाती है, बड़ी नरकट, लोध वृक्ष।
नटई-(हिं० स्त्री०) गला, गरदन, गले की घाँटी।
नटखट-(हिं० वि०) उपद्रवी, चंचल, धूर्त, ऊधमी;
नटखटी-(हिं० स्त्री०) उपद्रव।
नटगति-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रति चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
नटचर्या-(स० स्त्री०) अभिनय, नाटक।
नटता-(स० स्त्री०) नटत्व, नट का भाव, नट का काम।
नटन-(सं० नपुं०) नृत्य, नाच।
नटना-(हिं० क्रि०) नाट्य करना, अस्वीकार करना, कहकर बदल जाना, नृत्य करना, नाचना, नष्ट करना, (हिं० पुं०) बिना पेंदी का मछली पकड़ने का बड़ा टोकरा, रस छानने की छलनी।
नटनारायण-(सं० पु०) सम्पूर्ण जाति के एक राग का नाम।
नटनि-(हिं० स्त्री०) नृत्य, नाच, अस्वीकार; **नटनी**-(हिं०स्त्री०) नट की स्त्री, नट जाति की स्त्री। **नटपत्रिका**-(स० स्त्री०) बैंगन, भण्टा। **नटपर्ण**-(सं० नपुं०) दालचीनी। **नटभूषण, नटमण्डन**-(सं० नपुं०) हरिताल, हरताल। **नटमल**-(सं० पु०) एक प्रकार का राग। **नटमल्लार**-(सं०पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग।
नटमल्लारि-(हि० स्त्री०) एक रागिणी का नाम। **नटरंग**-(स० नपुं०) नट के समान अभिनय। **नटवट्**-(स०पुं०) युवक अभिनेता। **नटवना**-(हिं०क्रि०) अभिनय करना, नाटक दिखलाना।
नटवर-(सं० पुं०) नाट्य कला में बहुत चतुर मनुष्य, (वि०), बहुत चतुर या चालाक।
नटवा सरसों-(हिं०पुं०)साधारण सरसों।
नटसंज्ञक-(सं० पुं०) नट, गोदन्ती हरताल।
नटसाल-(हिं० स्त्री०) काँटे का टूटा हुआ भाग जो धँसा रह जाता है, छोटी फाँस, कसक, पीड़ा।
नटसार-(हिं० स्त्री०) नाट्यशाला।
नटाई-(हिं० स्त्री०) ताना तानने का जुलाहों का एक अस्त्र।
नटान्तिका-(स०स्त्री०) लज्जा।
नटिन-(हिं०स्त्री०) नट की स्त्री, नट जाति की स्त्री।
नटी-(सं० स्त्री०) नट जाति की स्त्री नाचने वाली स्त्री, वेश्या, अभिनय करने वाली स्त्री, अशोक वृक्ष, एक रागिणी का नाम।
नटुआ, नटुवा-(हि०पुं०)देखो नट,नटई।
नटेश्वर-(स०पुं०) शिव, महादेव।
नटैया-(हिं०स्त्री०) गला।
नट्ट-(हि०पुं०) देखो नट।
नट्या-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
नठना-हिं०क्रि०) नष्ट करना या होना।
नड़-(सं०पु०) नरसल, नरकट।
नड़क-(सं०स्त्री०) दो अस्थियों के बीच की हड्डी।
नड़प्राय, नड़मय-(सं०वि०) वह स्थान जहाँ नरकट बहुत होता है।

नड़मीन-(सं०पुं०) झींगा नामक मछली
नड़ह-(सं०वि०) सुन्दर, ललित, चमक दमक वाला।
नड़िनी-(सं०वि०) नड़युक्त नदी।
नड़ी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की अग्नि क्रीडा।
नढ़ना-(हिं० क्रि०) बाँधना, पिरोना, गूथना।
नत-(सं०वि०) झुका हुआ, वक्र, टेढा मेढा; **नतद्रुम**-(सं०पुं०) लता शाल नामक वृक्ष; **नत नाड़िका**-(सं०स्त्री०) दिनके दोपहर से रात के दो पहर का समय; **नत नासिक**-(सं० वि०) जिसकी नाक छोटी हो; **नतपाल**-(हिं०पुं०) प्रणतपाल, प्रणाम करने वाले का पालन करनेवाला; **नतपुर**-(सं०पुं०) आधुनिक नारियाद का संस्कृत नाम।
नतम-(हिं० वि०) बाँका।
नतर, नतरु-(हिं० क्रि० वि०) अन्यथा, नहीं तो।
नतांश-(सं० पुं०) वह वृत्त जिसका केन्द्र भूकेन्द्र पर रहता है और जो विषुवत् रेखा पर लम्ब होता है।
नताउल-(हिं० पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष।
नताङ्गी-(सं०स्त्री०) नारी, काकड़ासिंघी।
नति-(सं० स्त्री०) झुकान, नमन, नमस्कार, प्रणाम, विनय, विनती, फलित ज्योतिष में एक प्रकार की गणना, नम्रता।
नतिनी-(हिं०स्त्री०) लड़की की लड़की। नातिन।
नतु-(सं०अव्य०) अन्यथा, नहीं तो।
नतैत-(हिं० पुं०) सम्बन्धी, नातेदार नतैनी, (स्त्री०) संबंध।
नत्थ-(हिं०स्त्री०) देखो नथ, नथिया।
नत्थी-(हिं०स्त्री०) कागज कपड़े आदि के टुकड़ों की एक साथ सिली हुई गड्डी, इस प्रकार नथे हुए पत्र।
नथ-(हिं०स्त्री०) बाली की तरह का एक आभूषण जिसको स्त्रियाँ नाक में पहिरती है; **नथना**-(हिं०पुं०) नाक का अग्रभाग, नाक का छेद; **नथना फुलाना**-क्रोध दिखलाना; **नथना**-(हिं०क्रि०) नत्थी होना या करना, छिदना, छेदा जाना; **नथनी**-(हिं०स्त्री०) नाक में पहिरने की छोटी नथ, नथ के आकार की कोई वस्तु, बैल की नाक में पिरोने की रस्सी, तलवार की मूठ पर लगाने का छल्ला, बुलाक। **नथिया, नथुनी**-(हिं०स्त्री०) देखो नथ।
नद-(सं०क्रि०) स्तुति करना, पूजा करना, (पुं०) बड़ी नदी।
नदन-(सं० पुं०) शब्द करना, बजना, पशुओं का शब्द करना।
नदनदीपति-(सं०पुं०) समुद्र, सागर।
नदना-(हिं०क्रि०) रंभाना।
नदनिमन्-(सं०वि०) शब्द करनेवाला।
नदनु-(सं०पुं०) सिंह, शेर, मेघ, बादल,
नदम-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कपास।
नदर-(सं०वि०) भयशून्य, निडर।
नदराज-(सं०पुं०) समुद्र, सागर।
नदान-(हिं०वि०) अनभिज्ञ।
नदारत-(हिं०वि०) लुप्त।
नदाल-(सं० वि०) सौभाग्यशाली, भाग्ययुक्त।
नदि-(सं०पुं०) स्तुति, प्रशंसा।
नदी-(सं०स्त्री०) किसी पर्वत या जलाशय से निकलकर बहने वाला जल का बड़ा प्राकृतिक प्रवाह जो वर्ष भर होता रहता है, निम्नगा, तरङ्गिणी, किसी तरल वस्तु का बड़ा प्रवाह, चौदह अक्षरों के एक छन्द का नाम; **नदी नाव संयोग**-अकस्मात् होने वाला संयोग; **नदी कदम्ब**-(सं० पुं०) गोरखमुंडी; **नदीकान्त**-(सं०पुं०) समुद्र, सागर, जामुन का वृक्ष, जलवेंत, काकजंघा नामक लता; **नदीकान्ता**-(सं०स्त्री०) जामुन का वृक्ष; **नदीकूल**-(सं०नपुं०) तीर तट, किनारा; **नदीकूलस्थ**-(सं०वि०) तटस्थ, किनारे का; **नदीगर्भ**-(सं०पुं०) नदी के दोनों किनारों के बीच का स्थान; **नदी गूलर**-(हिं०पुं०) लिसोड़े का वृक्ष; **नदीज**-(सं०वि०) नदी से उत्पन्न (पुं०) एक प्रकार का धान, अर्जुन वृक्ष, खजूर का पेड़; **नदीजल**-(सं०नपुं०) नदी का पानी; **नदीजा**-(सं०स्त्री०) अरणी वृक्ष, सीप; **नदी जामुन**-(हिं० स्त्री०) छोटी जामुन; **नदीतर स्थान**-(सं०नपुं०) नदी का घाट; **नदीदोह**-(सं०पुं०) नदी पार करने का कर, **नदीधर**-(सं० पुं०) शिव, महादेव; **नदीन**-(सं० पुं०) समुद्र, सागर, वरुण देवता; (वि०) जो दरिद्र न हो; **नदीपङ्क**-(सं०पुं०) नदी के किनारे का कीचड़ युक्त स्थान; **नदीपति**-(सं० पुं०) समुद्र, सागर, वरुण; **नदीपुर**-(सं०पुं०) वह नदी जो बाढ के जल से किनारे पर के गाँवों को डुबा देती है; **नदीभव**-(सं०वि०) जो नदी में उत्पन्न हो (पुं०) सेंधा नमक, छोटा शंख; **नदीमातृक**-(सं०क्रि०) वह देश जहाँ पर खेती बारी का काम केवल नदी के जल से होता है; **नदीमुख**-(सं०नपुं०) वह स्थान जहाँ नदी समुद्र में गिरती है, नदी का मुहाना।
नदीया-(सं० स्त्री०) अरणी का वृक्ष।
नदीवङ्क-(सं० पुं०) नदी का टेढापन
नदीश-(सं० पुं०) समुद्र, सागर।
नदीसर्ज-(सं०पुं०) अर्जुन वृक्ष।
नदेया, नदेयी-(सं०स्त्री०) छोटी जामुन
नदोला-(हिं०पुं०) मिट्टी की छोटी नांद।
नद्दना-(हिं०क्रि०) देखो नदना।
नद्दी-(हिं०स्त्री०) देखो नदी।
नद्ध-(सं० वि०) बद्ध, बँधा हुआ,
नद्धि-(सं०स्त्री०) बन्धन, रस्सी। **नद्धी**-(सं० स्त्री०) चमड़े की डोरी, ताँत
नद्यावर्तक-(सं० पुं०) फलित ज्योतिष के अनुसार यात्रा के लिये एक शुभ योग।
नद्युत्सृष्ट-(सं०वि०) वह भूमि जो नदी के हट जाने से निकल आई हो,
नधना-(हिं०क्रि०) रस्सी या तसमे से बैल, घोड़े आदि का उस वस्तु के साथ बँधना जिसको उन्हें खींच कर ले जाना हो, जुतना, किसी कार्य का अनुष्ठान होना,
नधाव-(हिं० पुं०) भूमि में का वह गड्ढा जिसमे के पानी को सिंचाई के लिये ऊपर के खेत मे ले जाते हैं।
नध्री-(सं०स्त्री०) चमड़े की डोरी, तांत।
ननकारना-(हिं० क्रि०) अस्वीकार करना।
ननन्द्र-(सं०स्त्री) पति की बहिन, ननद।
ननँद, ननद-(हिं० स्त्री०) पतिकी बहिन, ननान्दृ।
ननदोई-(हिं०स्त्री०) पति का बहनोई, ननद का पति।
ननसार-(हिं० स्त्री०) नाना का घर, ननिहाल।
नना-(सं०स्त्री०) माता, दुहिता, कन्या।
ननान्दृ-(सं०स्त्री०) ननंद, ननन्द्र।
ननिया ससुर-(हिं०पुं०) पति या स्त्री का नाना; **ननिया सास**-(हिं०स्त्री०) स्त्री या पति की नानी।
ननिहारी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की ईंट।
ननिहाल-(हिं० पुं०) नाना का घर, ननसार।
ननु-(सं०अव्य०) प्रश्न, अनुज्ञा, विनय, अधिकार, आक्षेप, प्रत्युक्त, वाक्यारम्भ आदि में प्रयोग होता है।
ननोई-(हिं० पुं०) एक प्रकार का जंगली धान।
नन्द-(सं० पुं०) आनन्द, हर्ष, खुशी, हर्षात्मक परमेश्वर, मेढक, एक प्रकार की वीणा, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम, एक प्रकार का मृदङ्ग, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, विष्णु, एक राग का नाम, नव निधियों में से एक, पुत्र, लड़का, महात्मा बुद्ध के सौतेले भाई का नाम, मथुरा के अन्तर्गत यमुना नदी के उस पार गोकुल नामका नगर था, इसी नगर के अधिपति नन्द थे जिनकी स्त्री का नाम यशोदा था; देवकी के गर्भ से भगवान् श्रीकृष्ण ने जन्म लिया था और वसुदेव श्रीकृष्ण को उस समय नन्द के घरपर रख आये थे, बाल्यावस्था में श्रीकृष्ण नन्द के घर ही पर रहते थे; **नन्दक**-(सं०पुं०) विष्णु का खड्ग, मेढक कार्तिकेय का एक अनुचर, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, (वि०) आनन्द देने वाला, सन्तोष देने वाला वंश की रक्षा करने वाला। **नन्दकि**-(सं० स्त्री०) पिप्पली, छोटी पीपल; **नन्दकुमार**-(सं० पुं०) नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण; **नन्दगिरि**-(सं० पुं०) एक प्राचीन नगर का नाम जो चित्तौर के पास बसा हुआ था; **नन्दग्राम**-(सं०पुं०) नन्दगांव, अयोध्या के पास का एक गाँव जहाँ पर भरतने तपस्याकी थी।
नन्दन-(सं० नपुं०) इन्द्र का बगीचा जो स्वर्ग में है, अठारह अक्षर के एक वर्णवृत्त का नाम, (पुं०) बेटा, लड़का, विष्णु, महादेव, कार्तिकेय का एक अनुचर, भेक, मेंढक, एक सवत्सर का नाम, एक प्रकार का अस्त्र, देवदार, (वि०) आनन्द देने वाला; **नन्दनज**-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण, हरिचन्दन; **नन्दनन्दन**-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण; **नन्दनन्दिनी**-(सं० स्त्री०) नन्दकी पुत्री, योगमाया; **नन्दप्रधान**-(सं० पुं०) नन्दनवनके स्वामी इन्द्र; **नन्दनमाला**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय थी; **नन्दनवन**-(सं०पुं०) इन्द्र का बगीचा, कपास; **नन्दपाल**-(सं०पुं०) वरुण; **नन्दपुत्री**-(सं०स्त्री०) नन्दनन्दिनी योगमाया दुर्गा; **नन्दप्रयाग**-(सं०पुं०) बदरिकाश्रम के निकट के एक तीर्थ का नाम; **नन्दयन्त**-(सं०वि०) प्रसन्न करने वाला; **नन्दरानी**-(हिं०स्त्री०) नन्द की स्त्री, यशोदा; **नन्दलाल**-(हिं०पुं०) नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण; **नन्दवन**-(सं० पुं०) देखो नन्दन वन।
नन्दा-(सं०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम, एक प्रकार की सक्रान्ति, एक कामधेनु का नाम, प्रसन्नता, संगीत में एक मूर्छना का नाम, एक अप्सरा का नाम, बरवै छन्द, पति की बहन, ननद, लाल तुलसी; **नन्दात्मज**-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण (सं०स्त्री०) योगमाया; **नन्दादेवी**-(सं०पुं०) दक्षिण हिमालय की एक चोटी जो पचीस हज़ार फुट ऊँची है; **नन्दापुराण**-(सं०पुं०) एक उपपुराण का नाम; **नन्दावर्त**-(सं०पुं०) एक प्रकार की मछली।
नन्दि-(सं० पुं०) खण्ड, परमेश्वर, शिवके द्वारपाल बैल, एक प्रकार का जुआ, शिव, महादेव, एक गन्धर्व का नाम, आनन्द, प्रसन्नता।
नन्दिक-(सं०पुं०) तुनका वृक्ष, धव का पेड़; **नन्दिकर**-(सं०पुं०) शिव, महादेव
नन्दिका-(सं० पुं०) नन्दनवन, पानी रखने की मिट्टी की नाँद, हँसमुख स्त्री, किसी पक्ष की प्रतिपद, षष्ठी और एकादशी तिथि का नाम; **नन्दिकेश**-(सं०पुं०) शिव के द्वारपाल, नन्दिकेश्वर; **नन्दिकेश्वर**-(सं०पुं०) शिव के द्वारपाल बैल का नाम; **नन्दिघोष**-(सं०पुं०) अर्जुन के रथ का नाम, मङ्गल घोषणा; **नन्दित**-

(सं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न।
नन्दितरु-(सं०पु०) धव का पेड़; **नन्दितूर्य**-(सं०पुं०) एक प्रकारका प्राचीन बाजा; **नन्दिनी**-(सं०स्त्री०) गंगा, ननद, कन्या, पुत्री, वसिष्ठ की कामधेनु जो सुरभी की कन्या थी, पत्नी, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम, तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त, दुर्गा, हरीतकी, हर्रें, सफेद चिचिड़ा; **नन्दिपादप**-(सं०पुं०) तुन का वृक्ष; **नन्दिपुराण**-(सं०नपुं०) एक उपपुराण का नाम; **नन्दिमुख**-(सं०पुं०) एक प्रकार का चावल, शिव; **नन्दिरुद्र**-(सं०पुं०) महादेव का एक नाम; **नन्दिवर्धन**-(सं०नपुं०) शिव, महादेव, पुत्र, मित्र, (वि०)आनन्द बढ़ानेवाला; **नन्दि वृक्ष**-(सं०पुं०) देखो नन्दी वृक्ष; **नन्दिवृष्य**-(सं०पुं०) उड़द, माष।
नन्दी-(हिं०पुं०) देखो नन्दि; **नन्दीट**-गंजे सिर वाला; **नन्दीपति**-(सं०पु०) शिव, महादेव; **नन्दीवृक्ष**-(सं०पुं०) सुगन्धित तुन का वृक्ष; **नन्दीश**-(सं०पुं०) शिव, महादेव, एक ताल का नाम; **नन्दीश्वर**-(सं०पुं०) शिव, शिव का द्वारपाल।
नन्दक-(सं०पु०) महर्षि अत्रि के पुत्र का नाम।
नन्योरा-(हिं०पुं०) ननिहाल, नाना का घर।
नन्हा-(हिं०वि०) छोटा; **नन्हाई**-(हिं० स्त्री०) छोटाई, अप्रतिष्ठा। **नन्हिया**-(हिं०पुं०) एक प्रकारका धान;**नन्हैया**-(हिं०वि०) देखो नन्हा।
नपत-(हिं०पुं०) देखो नपाई।
नपता-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी
नपराजित्-(सं०पु०) शिव, महादेव।
नपाई-(हिं०स्त्री०) नापने का काम या शुल्क।
नपाक-(हिं०वि०) देखो नापाक, अशुद्ध
नपुंसक-(सं० नपुं०) क्लीब, हिजड़ा; (वि०) कायर, डरपोक; **नपुंसकता**-(सं०स्त्री०) नपुंसक होने का भाव; **नपुंसकत्व**-नपुंसकता।
नपुआ-(हिं०पुं०) नापने की वस्तु।
नपुत्री-(हिं०वि०) देखो निपुत्री।
नप्ता-(हिं०स्त्री०) लड़की या लड़के का लड़का, नाती या पोता।
नप्त्री-(सं०स्त्री०) पोती, नातिन।
नबेड़ना-(हिं०क्रि०) निपटाना, झगड़ा तय करना, समाप्त करना, अपने आशय की वस्तु लेकर बाकी को छोड़ देना, चुनना।
नबेड़ा-(हिं०पुं०) न्याय, निपटारा, **नबेरना**-(हिं०क्रि०) देखो नबेड़ा।
नबेरा-(हिं०पुं०) देखो नबेड़ा।
नब्बे-(हिं०वि०) जो गिनती में अस्सी और दस के बराबर हो; (पुं०) यह संख्या ९०।
नभ-(सं०पुं०) सावन या भादों का महीना, आकाश, शून्य स्थान, महादेव, शिव, गणित में शून्य, आश्रय, आधार, निकट, पास, अभ्रक, अवरख, राजा नल के एक पुत्र का नाम, जल, पानी, मेघ, बादल, वर्षा
नभःकेतन, नभःपान्थ-(सं०नपु०) सूर्य; **नभःप्राण**-(सं०पुं०) पवन, हवा; **नभःसद**-(सं०पुं०) देवता, पक्षी, चिड़िया; **नभःसरित्**-(सं०स्त्री०) आकाशगंगा, मन्दाकिनी; **नभःसुत**-(सं० पुं०) पवन, हवा; **नभःस्थल**-(सं०पुं०) शिव, महादेव; **नभःस्थित**-(सं०पुं०) एक नरक का नाम; **नभःस्पृश्**-(सं० वि०) आकाश छूनेवाला। **नभग**(सं० पुं०) वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम, पक्षी, पवन, हवा, मेघ, (वि०) आकाश में विचरनेवाला, भाग्यहीन, अभागा; **नभगनाथ**-(सं०पुं०) गरुड़; **नभगामी**-(हिं०पु०) सूर्य, तारा, देवता, चन्द्रमा, पक्षी;**नभगेश**-(सं०पुं०)गरुड़; **नभचर**-(हिं०पुं०) देखो नभश्चर; **नभधुज**-(हिं०पुं०) मेघ, बादल; **नभनीरप**-(हिं०पुं०) चातक, पपीहा; **नभस्य**-(सं०वि०) आकाश में उत्पन्न होने वाला; **नभश्चक्षुस्**-(सं०नपुं०) सूर्य; **नभश्चमस**-(सं०पुं०) चन्द्रमा, इंद्रजाल; **नभश्चर**-(सं०वि०) गगनचारी, आकाश में चलने वाला, (पु०) पक्षी, हवा, देवता, गन्धर्व आदि, मेघ, बादल।
नभसङ्गम-(सं०पुं०)खग, पक्षी, चिड़िया **नभस्थल**-(हिं०पुं०) आकाश; **नभस्थित**-(हिं०वि०) नभःस्थित; **नभस्य**-(सं०पु०) भाद्रपद का महीना; **नभस्वत्**-(सं०पु०) वायु, हवा।
नभाक-(सं०नपुं०) अन्धकार, अन्धेरा, राहु।
नभि-(सं०स्त्री०) चक्र, पहिया।
नभीत-(सं०वि०) भय रहित, निडर।
नभोग-(सं०वि०)नभश्चर, पक्षी, देवता, ग्रह।
नभोगज-(सं०पुं०)मेघ, बादल। **नभोगति**-(सं०स्त्री०) आकाश में चलना। **नभोज**-(सं० वि०) जो आकाश में उत्पन्न हो।
नभोदुह, नभोद्वीप, नभोधूम, नभोध्वज-(सं०पुं०) मेघ, वादल; **नभोनदी**-(सं०स्त्री०) आकाशगंगा, मन्दाकिनी; **नभोमणि**-(सं० पुं०) सूर्य; **नभोमण्डल**-(सं०नपुं०) गगनमण्डल; **नभोमण्डलदीप**-चन्द्रमा; **नभोम्बुप**-(सं०पुं०) चातकपक्षी, पपीहा; **नभोयोनि**-(सं०पुं०) शिव, महादेव; **नभोरजस**-(सं०नपुं०) अन्धकार, अन्धेरा **नभोरूप**-(सं०नपुं०)नीला रंग; **नभोरेणु**-(सं०स्त्री०) नीहार; कुहरा; **नभोलय**-(सं०पुं०) धूम, धुआँ; **नभोवट**-(सं०पुं०) आकाश मण्डल।
नभ्य-(सं० पुं०) पहिये के बीच का भाग, धुरी।
नभ्राज्-(सं०पुं०) मेघ, बादल।
नमत-(सं० पुं०) प्रभु, स्वामी, धुआँ, नट, (वि०) जो न झुके; नम्र।
नमन-(सं० नपुं०) प्रणाम, नमस्कार, झुकाव; **नमना**-(हिं०क्रि०) झुकना, नमस्कार करना; **नमनीय**-(सं०वि०) झुकने या झुकाने योग्य, नमस्कार करने योग्य, माननीय, पूजनीय, आदरणीय। **नमयिष्णु**-(सं० वि०) आदर करने योग्य, जो झुक सके।
नमस्-(सं० अव्य०) नमन, नमस्कार, त्याग, अन्न, वज्र, स्तोत्र।
नमसान-(सं० वि०) नमस्कार करने योग्य; **नमसित**-(सं०वि०) पूजित, नमस्कार किया हुआ। **नमस्कार**-(सं०पुं०) प्रणाम, झुक कर अभिवादन करने की क्रिया। **नमस्कारी**-(सं०स्त्री०) नीली घास, लजालू; **नमस्कार्य**-(सं० वि०) पूज्य, नमस्कार, करने योग्य। **नमस्क्रिया**-(सं०स्त्री०) नमस्कार, पूजा। **नमस्ते**-(सं०) एक वाक्य जिसका अर्थ हैं आपको नमस्कार।
नमस्य-(सं० वि०) पूज्य, आदरणीय। **नमस्या**-(सं०स्त्री०) पूजा।
नमित-(हिं०वि०) झुका हुआ।
नमाना-(हिं० क्रि०) झुकाना, देखो नवाना।
नमुचि-(सं०पुं०) कन्दर्प, एक दानव का नाम, एक ऋषि का नाम, पुष्पधनु, फूल का धनुष; **नमुचिसूदन**-(सं०पुं०) इन्द्र।
नमेरु-(सं०पुं०) रुद्राक्ष का पेड़।
नमोगुरु-(सं०पु०) ब्राह्मण।
नमोवाक्-(सं०पुं०)नमस्कार का वाक्य
नम्य-(सं०वि०)नमनीय, झुकने योग्य।
नम्र-(सं०वि०) झुका हुआ, विनीत, जिसमें नम्रता हो, (पुं०) बेल का पेड़। **नम्रक**-(सं०पुं०)बेंत का वृक्ष; **नम्रता**-(सं० स्त्री०) विनय; **नम्रत्व**-(सं०नपु०)नम्रता;**नम्रप्रकृति**-(सं० वि०) विनीत स्वभाव का; **नम्रमुख**-(सं० वि०) जिसका मस्तक झुका हो; **नम्रमति**-(सं०वि०) विनीत, जिसमें नम्रता हो; **नम्र स्वभाव**-(सं०वि०) देखो नम्र प्रकृति।
नय-(सं० पुं०) नीति, न्याय, नम्रता, विष्णु।
नयऋषि-(हिं०पुं०) देखो नैऋत।
नयक-(सं० वि०) नीति या न्याय में कुशल।
नयकारी-(हिं०पु०) नाचने वालों का प्रमुख, नाचने वाला मनुष्य, नचनियाँ
नयन-(सं० नपुं०) चक्षु, नेत्र, आँख, प्रापण, ले जाना; **नयनगोचर**-(सं० वि०) समक्ष देख पड़ने वाला, जो आँख के सामने हो; **नयनपट**-(सं० पु०) आँख की पलक; **नयनपथ**-(सं० पुं०) जितनी दूरी तक दृष्टि जा सके, आँख के सामने का स्थान। **नयनपुट**-(सं०पुं०) आँख की पलक; **नयनप्रसाद**-(सं०पुं०) निर्मली का पेड़; **नयनप्लव**-(सं०पुं०) आँसू से भरी हुई आँख; **नयनवारि, नयनसलिल**-(सं० पुं०) नेत्रजल, आंसू;
नयना-(हिं०क्रि०) नम्र होना, लटकना, झुकना, (पुं०) नयन, नेत्र, आँख; **नयनागर**-(सं० वि०) नीतिकुशल, नीतिज्ञ। **नयनाञ्जन**-(सं० नपुं०) काजल, सुरमा। **नयनापाङ्ग**-(सं० नपुं०) आँख की कोर। **नयनाभिराम**-(सं०वि०)आँखों को प्रिय लगने वाला, (पुं०) चन्द्रमा।
नयनागर-(हिं०पुं०) नीति निपुण।
नयनी-(सं० स्त्री०) आंख की पुतली, (हिं० वि०) आंख वाली, जिसको आँख हो।
नयनू-(हिं०पुं०) नवनीत, मक्खन, एक प्रकार की मलमल जिस पर सफेद बूटियां बनी होती हैं।
नयनोत्सव-(सं०पुं०) प्रदीप, दीया।
नयनोपान्त-(सं०पुं०)आंख का किनारा या कोर।
नयनौषध-(सं०नपुं०) पीला कसीस।
नयपीठी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का जुए का खेल।
नयलोचन-(सं० नपुं०) नीतिरूप चक्षु, (वि०) जिसकी आंखें न्याय की ओर जाती हैं।
नयर-(हिं०पुं०) देखो नगर।
नयवर्त्म-(सं०नपुं०) नीति मार्ग, न्याय का मार्ग। **नयविशारद**-(सं० पुं०) नीतिशास्त्रज्ञ, नीतिकुशल। **नयशास्त्र**-(सं०नपुं०) नीतिशास्त्र। **नयशील**-(सं०वि०)नीतिकुशल, विनीत।
नयसार-(सं०पुं०) नीतिसूत्र।
नया-(हिं० वि०) नूतन, नवीन, हाल का, जो पहिले किसी काम में न लाया गया हो; **नया पुराना करना**-पुराना हिसाब तय करके नये सिरे से चलता करना; **नयापन**-(हिं०पुं०) नया होने का भाव, नवीनता।
नर-(सं० पुं०) परमात्मा, विष्णु, शिव, महादेव, पुरुष, एक प्रकार के देवता, नरदेव के अवतार अर्जुन, रोहिस नामक घास, शङ्कु, लम्ब, नील का पौधा, दोहे का एक भेद, छप्पय का एक भेद, वह खूंटी जो छाया जानने के लिये खड़े बल गाड़ी जाती है, एक देवयोनि, (वि०) जो स्त्री न हो, पुरुष जाति का, (हिं०पुं०) पानी का कल, नरकट।
नरकंत-(हिं०पुं०) राजा, भूप।
नरई-(हिं०स्त्री०)गेहूँ के बाल का डंठल, जलमें होने वाली एक प्रकारकी घास
नरक-(सं० पुं०) हिन्दू धर्मशास्त्र तथा पुराणों के अनुसार वह स्थान जहां जाकर मनुष्य की आत्मा को अपने किये हुये पाप का फल भोगना पड़ता है; **नरककुण्ड**-(सं०नपुं०)पापियों के कष्ट भोगनेका एक स्थान; **नरक**

नामी-(सं०वि०)नरक में जाने वाला; **नरकचतुर्दशी**-(सं०स्त्री०) कातिक बदी चौदस, जिस दिन संपूर्ण गृह का कूड़ा करकट घर से बाहर फेका जाता है; **नरकचूर**-(हिं०पु०) देखो कचूर; **नरकजित्**-(सं० पुं०) नरकासुर को जीतने वाले श्रीकृष्ण; **नरकट**-(हिं०पु०) बेंत की तरह का एक पौधा; जिसके पोले डठल अनेक काम में लाये जाते हैं; **नरकपाल**-(सं०नपुं०) मृतक की खोपड़ी; **नरकभूमि**-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहां पापी लोगों को जाकर दुःख भोगना पड़ता है; **नरकभूमिका**-(सं०स्त्री०) नरकलोक। **नरकट,नरकुल**-(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध पौधा। **नरकमुक्त**-(सं० वि०)नरक से छुटकारा पाया हुआ।

नरकल,नरकस-(हिं०पुं०) देखो नरकट

नरकस्थ-(सं० वि०) जो नरक भूमि में स्थित हो।

नरकान्तक-(सं०पुं०)नरकजीत,श्रीकृष्ण

नरकामय-(सं० पुं०) नरक रूप एक प्रकार का अति कष्टदायक रोग, प्रेत। **नरकासुर**-(सं०पुं०) पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न एक असुर जिसका सिर सुदर्शन चक्र से विष्णु ने काटा था।

नरकी-(हिं०वि०) देखो नारकी।

नरकीलक-(सं०वि०) गुरुघ्न, गुरु की हत्या करने वाला।

नरकुल-(हिं०पुं०) देखो नरकट।

नरकेशरी-(सं०पु०)नरसिंह, वह मनुष्य जो अन्य मनुष्यों में अति श्रेष्ठ हो।

नरकेहरि-(हिं०पुं०) देखो नरकेशरी।

नरकौकस-(सं०पु०) नरकगामी।

नरकौतुक-(सं०पुं०) मदारी का खेल।

नरगण-(सं०पुं०) फलित ज्योतिष में नक्षत्रों का एक गण।

नरङ्ग-(सं०पुं०) नारंगी का पेड़।

नरचा-(हिं०पुं०)एक प्रकारका पटुआ।

नरता-(सं०स्त्री०) नरत्व, मनुष्यत्व।

नरतात-(सं०पुं०) नृपति, राजा।

नरत्व-(सं०नपुं०) मनुष्यत्व।

नरदन-(हिं०स्त्री०)नाद करना, गरजना,

नरदारा-(हिं०पुं०) नपुंसक, हिजड़ा, वह जो पुरुष होकर स्त्री का काम करे, (वि०) डरपोक, कायर।

नरदेव- सं०पुं०)नृपति, राजा, ब्राह्मण; **नरदेवदेव**-(सं०पु०) नृपति, राजा, नरदेव।

नरद्विष् (सं०पुं०) राक्षस, असुर।

नरनाथ, नरनायक-(सं०पुं०) नरश्रेष्ठ, नृपति, राजा।

नरनारायण-(सं०पुं०) नर और नारायण नामके दो ऋषि जो भृगु ऋषि के शाप के कारण तथा पृथ्वी का भार हरने के लिये अर्जुन और कृष्ण के रूप में संसार में उत्पन्न हुए थे।

नरनारि-(सं०स्त्री०) नर (अर्जुन) की स्त्री द्रौपदी।

नरनाह-(हिं०पुं०) नृप, राजा।

नरनाहर-(हिं०पुं०) नृसिंह भगवान्।

नरनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा

नरन्धिप-(सं०पुं०) संसार का पालन करने वाले विष्णु।

नरपति-(सं०पुं०) नृपति, राजा।

नरपद-(सं०पुं०) नगर, देश।

नरपशु-(सं०पुं०) जिस मनुष्य का आचरण पशु के सदृश हो, नृसिंह।

नरपाल-(सं०पु०) मनुष्यों का रक्षक, राजा।

नरपालि-(सं०पुं०) छोटा शंख।

नरपिशाच-(सं०पुं०) पिशाच की तरह काम करने वाला मनुष्य, अति दुष्ट, नीच मनुष्य।

नरपुङ्गव-(सं०पुं०) मनुष्यों में श्रेष्ठ या प्रधान।

नरपुर-(सं०पुं०) भूलोक, मनुष्य लोक।

नरप्रिय-(सं०वि०) जो मनुष्य को अच्छा लगे, (पुं०) कबूतर।

नरबदा-(हिं०स्त्री०) देखो नर्मदा।

नरबलि-(सं०पुं०) देवता की वह पूजा जिसमें नर की हत्या की जाती है; नरमेध।

नरभक्षी-(सं०पुं०) दैत्य, दानव, राक्षस

नरभू-(सं०स्त्री०) भारतवर्ष, मनुष्यों की उत्पत्ति। **नरभूमि**-(सं० पु०) भारतवर्ष।

नरम-(हिं०वि०) कोमल, जो कठोर न हो, लचीला, मृदु, शीघ्र पचने वाला, जिसमें पराक्रम का अभाव हो।

नरमट-(हिं०स्त्री०) वह भूमि जहां की मिट्टी कोमल हो।

नरमदा-(हिं०स्त्री०) देखो नर्मदा।

नरम लोहा-(हिं०पुं०) वह लोहा जो आग मे तपाकर ठंढा किया जाता है

नरमा-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की कपास, मनवा, सेम्हर की रूई, कान के नीचे का भाग, एक प्रकार का कोमल कपड़ा। **नरमाई**-(हिं०स्त्री०) कोमलता, **नरमाना**-(हिं०क्रि०)कोमल करना, धीमा करना, शान्त करना,

नरमानिका नरमानिनी-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसको डाढ़ी मूंछ नीकल आई हों।

नरमाला-(सं०स्त्री०) नरमुण्ड की माला

नरमालिनी-(सं०स्त्री० देखो नरमानिका

नरमावड़ी-(हिं०स्त्री०) बन कपास।

नरमेध-(सं०पुं०) एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीन काल में पुरुष का वध करके उसके मांसकी आहुति दी जाती थी।

नरम्मन्य-(सं०पु०) वह जो अपने को राजा कहकर अभिमान करता हो।

नरयन्त्र-(सं०नपुं) एक प्रकार की धूपघड़ी।

नरयान-(सं०पुं०) मनुष्य से खींचे जाने वाली सवारी या गाड़ी।

नरराज-(सं० पु०) नरश्रेष्ठ, मनुष्यों में श्रेष्ठ। **नरराज्य**-(सं०नपु०) मनुष्य का राज्य। **नररूप**-(सं०वि०)मनुष्य के समान आकृति का।

नरर्षभ-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

नरलोक-(सं०पु०)पृथ्वीलोक, संसार।

नरवल्लभ-(सं०पुं०) कपोत, कबूतर।

नरवा-(हिं०पु०)एक प्रकार का पक्षी।

नरवाई-(हिं०स्त्री०) देखो नरई।

नरवाह-(सं०पुं०) वह यान जिसको मनुष्य खींचकर ले चलते हैं। **नरवाहन**-(सं०पुं०) कुबेर, किन्नर।

नरवृक्ष-(सं०पुं०) नील का पेड़।

नरव्याघ्र-(सं०पुं०) मनुष्यों में श्रेष्ठ; एक प्रकार का जल में रहने वाला जन्तु।

नरशक्र-(सं०पुं०) नरेन्द्र, राजा।

नरशृंग-(सं०नपुं०) मिथ्या वस्तु।

नरसख-(सं०पु०)मानव बन्धु, नारायण

नरसंसर्ग-(सं०पुं०) मनुष्यों का संसर्ग।

नरसल-(हिं०पुं०) देखो नरकट।

नरसादर, नरसार-(सं०पु०)नौसादर।

नरसिंग-(हिं०पुं०)एक प्रकार का फल।

नरसिंगा-(हिं०पुं०) देखो नरसिंघा।

नरसिंघ-(हिं०पुं०) देखो नरसिंह।

नरसिंघा-(हिं०पुं०) मुख से फूंक कर बजाने वाला तुरही के आकार का एक बाजा।

नरसिंह-(सं० पुं०) नरश्रेष्ठ, विष्णु। **नरसिंहपुराण**-(सं० नपुं०) एक उपपुराण का नाम।

नरसेज- हिं०पुं०) त्रिधारा सेंहुड़।

नरसों-(हिं०क्रि०वि०) परसों से पहिले या बाद के दिन।

नरस्कन्ध-(सं०पुं०) मनुष्यों का समूह।

नरहय-(सं०पुं०) वह मनुष्य जिसका मुख घोड़े के समान हो।

नरहर-(हिं०स्त्री०) पैर को पिड़ली के ऊपर की हड्डी।

नरहरि-(सं०पु०) भगवान् के दस अवतारों में से चौथे अवतार, नृसिंह।

नरहरी- (सं०पुं०) एक मातृक छन्द का नाम।

नरहीरा-(हिं०पुं०) आठ या छ पहल का बड़ा हीरा।

नरा-(हिं०पुं०) नरकट की छोटी नली।

नराङ्ग-(सं० पुं०) नाभि, ढोंढी, एक प्रकार का फोड़ा।

नराच-(हिं०पुं०) नाराच, तीर, बाण, शर, नागराज नामक छन्द।

नाराचिका-(सं० स्त्री०) वितान वृत्त का एक भेद।

नराज-(सं०पु०) एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।

नराज-(हिं०वि०) अप्रसन्न;

नराजना-(हिं०क्रि०) अप्रसन्न होना या करना।

नराट-(हिं०पुं०) नृपति, राजा।

नराधम-(सं०पुं०) नीच मनुष्य

नराधिप-(सं०पु०) राजा, सोनापाठा, बड़े अमलतास का वृक्ष।

नरान्तक-(सं०पुं०) रावण के एक पुत्र का नाम (वि०) मनुष्य का संहार करने वाला।

नरायण-(सं०पुं०) नारायण, विष्णु।

नराश-(सं०पुं०) नरभोजी, राक्षस।

नराशंस-(सं०पुं०) यज्ञ, अग्नि।

नरासन-(सं०नपु०) मनुष्य के आकार का एक प्रकार का आसन।

नार-(हिं०स्त्री०) नदी।

नारियर-(हिं०पु०) देखो नारियल।

नरिया-(हिं०पुं०) अर्धवृत्ताकार मिट्टी का खपड़ा। **नरियाना**(हिं० क्रि०) चिल्लाना।

नरी-(सं०स्त्री०) स्त्री, नारी,त्वक्,चमड़ा

नरी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बगला, सोनार की फुंकनी।

नरुई-(हिं०स्त्री०)छोटी नली या छुच्छी।

नरुआ-(हिं०पुं०) अन्न के पौधे की डंडी जो पीली होती है।

नरेन्द्र-(सं०पुं०) नरेश, नृप, राजा, विषवैद्य,सांप,बिच्छू आदि के काटने की चिकित्सा करने वाला,सोनापाठा, अमलतास, अगर का पेड़, एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में इक्कीस मात्रायें होती हैं।

नरेबी-(हिं०पु०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल से एक प्रकार का खाकी रंग बनता है।

नरेश-(सं०पुं०) नरेन्द्र, राजा, नृप।

नरोत्तम-(सं०पु०) ईश्वर, नरश्रेष्ठ, मनुष्यों में श्रेष्ठ।

नरोह-(सं०स्त्री०) पैर की पिडली की हड्डी,कोल्हू की नली जिसमे से रस निकलता है।

नर्क-(हिं०पु०) देखो नरक।

नर्कट-(हिं०पुं०) देखो नरकट।

नर्कुटक-(सं० नपुं०) घ्राणेन्द्रिय, नासिका, नाक।

नर्गिस-(हिं०पुं०)देखो नरगिस। **नर्गिसी**-(हिं० वि०) देखो नरगिसी।

नर्त, नर्तक-(सं०पुं०) नट,नाचने वाला, बन्दी जन, भाट, एक प्रकार की संकर जाति, नृप, राजा, महादेव, मोर, नरकट, महुवा। **नर्तकी**-(सं०स्त्री०) नाचने वाली स्त्री, नटी, वेश्या, हस्तिनी, हथिनी।

नर्तन-(सं०नपुं०) नृत्य, नाच, (वि०) नाचने वाला। **नर्तनप्रिय** (सं० पुं०) वह जिसको नाचना प्रिय हो, मयूर, मोर; **नर्तनशाला**-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहां नाच होता है, नाचघर,

नर्तनागार-(सं०पुं०) नर्तन शाला।

नर्तना-(हिं०क्रि०) नाचना। **नर्तित**-(सं०वि०) जो नचाया गया हो।

नर्दकी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की कपास

नर्दटक-(सं० नपुं०) एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं।

नर्दन-(सं०नपुं०)भीषण ध्वनि, गरज।

नर्दबान-(हिं०पुं०) लकड़ी की बनी हुई

सीढ़ी, मार्ग।
नर्दा-(हिं०पुं०)गन्दापानी बहनेकीनाली,
नर्बदा-(हिं०स्त्री०) देखो नर्मदा।
नर्म-(सं०पुं०)वह देवता जिसके उद्देश्य से नरमेध यज्ञ किया जाता है, हँसी दिल्लगी हँसी करने वाला,(वि०)देखो नरम; नर्मकील-पति, स्वामी।
नर्मट-(सं०पुं०) सूर्य, खपड़ा,
नर्मठ-(सं०पुं०) जार, यार, ठिठोलिया, चिबुक, ठुड्ढी, स्तन की ढेपी, चूचुक, स्त्री प्रसंग।
नर्मद-(सं० वि०) आनन्द लेने वाला (पुं०) ठिठोलिया भाँड़।
नर्मदा-(सं०स्त्री०) मध्य प्रदेश की एक बड़ी नदी, एक गन्ध द्रव्य।
नर्मदेश्वर-(सं०पुं०) स्फटिक का शिव लिङ्ग जो नर्मदा नदी में से निकलता है।
नर्मद्युति-(सं०स्त्री०)नाटक मे का प्रतिमुख, सन्धि का एक अंग।
नर्मसचिव-(सं० पुं०) विदूषक, वह मनुष्य जो राजा को हँसाने के लिये रक्खा जाता है।
नर्मरा-(सं०स्त्री०) गुफा, खोह, पात्र, वृद्धा स्त्री, भाथी, धौंकनी।
नर्मवत्-(सं०वि०) आनन्दयुक्त, (स्त्री०) आनन्द, हँसी।
नर्मसुहृद-(सं० पुं०) देखो नर्मसचिव।
नर्मस्फोट-(सं०नपुं०) साधारण ठिठोली
नर्य-(सं०वि०) बलवान्, साहसी वीर,
नर्री-(हिं०स्त्री०) उसर में जमने वाली एक प्रकार की घास।
नल-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, नरकट, (पुं०) निषध देश के राजा बीरसेन के पुत्र जिनका विवाह भीम राजा की कन्या दमयन्ती से हुआ था-यह अश्वविद्यामें बड़े निपुण थे;विश्वकर्मा का पुत्र,राम का एक वानर सैनिक; एक दानव का नाम, यदु के पुत्र का नाम,(हिं०पुं०) कोई लंबी पीली वस्तु, धातुकी बनी हुई पोली वस्तु,परनाली, शरीर में की मूत्र निकलने की नाली
नलक-(सं०नपुं०) नली के आकार की हड्डी। **नलका**-(हिं०स्त्री०)नली,नाल।
नलकानन-(सं०नपुं०) नरकट का जंगल
नलकिनी, नलकील-(सं०स्त्री०) जंघा, जांघ, घुटना।
नलकूबर-(सं०पुं०) कुबेर के एक पुत्र का नाम,इसके भाई का नाम मणिग्रीव था, नारद के शाप से ये दोनों भाई अर्जुन वृक्ष हो गये थे और श्रीकृष्ण के स्पर्शसे शाप युक्त हुए थे।
नरकोल-(सं०पुं०) एक प्रकारका बैल।
नलद-(सं०नपुं०) फूल का रस,मकरन्द, उशीर, खस, जटामासी।
नलदम्बु-(सं०पुं०) नीम का पेड़।
नलदा-(सं०स्त्री०) जटामासी,बालछड़।
नलनी-(सं०स्त्री०) देखो नलिनी;
नलनीसह-(सं०पुं०)मृड़ाल,कमलकाडंडा
नलपट्टिका-(सं०स्त्री०) नरकट की बनी हुई चटाई।
नलमीन-(सं०पुं०)एकप्रकार की मछली
नलवा-(हिं०पुं०) गाय, बैल को दवा पिलाने की बांस की ढरकी।
नलसेतु-(सं०पुं०) रामेश्वर के पास समुद्र पर बँधा हुआ पुल जिसको श्रीरामचन्द्र ने नल नील आदि से बनवाया था।
नला-(हिं०स्त्री०) पेड़ू के भीतर की नली जिसमें से होकर मूत्र नीचेको उतरता है, नली के आकार की हाथ या पैर की लंबी हड्डी।
नलाई-(हिं०स्त्री०) बोये हुए खेत में से घास पात हटाने का काम निराई।
नलाना-(हिं०स्त्री०) बोने के खेत में से निरर्थक घासआदि दूरकरना, निराना
नलिक-(सं०पुं०) नरकुल, नरकट।
नलिका-(सं०स्त्री०) नाड़ी नामक सुगन्धित द्रव्य, प्राचीन काल का एक शस्त्र, जल बहने की नाली, नली के आकार की कोई वस्तु, चोंगा, तीर रखने का तरकश,पुदीना, करेमू का शाक; **नलिका यन्त्र**-नली के आकार का जलोदर का पानी निकालने का एक प्राचीन यन्त्र।
नलिन-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, पानी, नील, (स्त्री०) सारस पक्षी, करौंदा, पद्मकेशर, नीम, वह देश जहाँ कमल का ढेर, हो नदी,गंगा की एक धारा का नाम, नारियल की बनी हुई मदिरा, बाईं नाक का छिद्र, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में पाँच सगण होते है-इसको भ्रमरावली और मनहरण भी कहते हैं।
नलिनी-(सं०स्त्री०) कमलिनी।
नलिनीखण्ड-(सं०नपुं०) पद्मिनी समूह;
नलिनीनन्दन-(सं०नपुं०) कुबेर के बगीचे का नाम। **नलिनीरुह**-(सं० नपुं०) कमल की नाल, (पुं०) ब्रह्मा, मन:शिला, मैनसिल।
नलिनेशय-(सं०पुं०) ब्रह्मा।
नली-(सं०स्त्री०) नली, एक प्रकार का गन्धद्रव्य; (हिं०स्त्री०) छोटी पतली नल, चोंगा, नल के आकार की हड्डी, बन्दूक की नली जिसमें से गोली छुटती है; घुटने के नीचे का भाग, पिंडली।
नलुआ-(हिं०पुं०) बाँस की पोर, छोटी नली, पशुओं का एक रोग।
नलुका-(हिं०स्त्री०) जायफल का वृक्ष।
नलोत्तम-(सं०पुं०) बड़ी जातिका नरकट
नल्ल-(सं०पुं०) प्राचीन काल की एक प्रकार की नाप।
नल्ली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास
नल्वण-(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक प्रकार का परिमाण जो प्राय: सोलह सेर का होता था।
नव-(सं०पुं०) स्तोत्र, (वि०) नवीन, नूतन, नया।
नव-(हिं०वि०) दस से एक कम की संख्या का (पुं०) आठ और एक की संख्या ९; **नवक**-(सं०नपुं०) एक ही तरह के नव पदार्थों का समूह, (वि०) जिसमें नव संख्या हो; **नवकारिका**-(सं० स्त्री०) नवविवाहिता स्त्री, वह स्त्री जिसका विवाह हाल में हुआ हो; **नवकालिका**-(सं०स्त्री०) युवा स्त्री; **नवकुमारी**-(सं० स्त्री०) नवरात्र में पूजनीय नव कुमारियाँ जिनमें कुमारिका, त्रिमूर्ति,कल्याणी, रोहिणी, काली,चण्डिका, शाम्भवी, दुर्गा और सुभद्रा देवियों की कल्पना की जाती है; **नवखण्ड**-(सं०पुं०) भूमि के नव भाग।
नवका-(हिं०स्त्री०) देखो नौका।
नवग्रह-(सं०पुं०) रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु-ये नवग्रह कहलाते हैं;
नवचक्राङ्ग-(सं०पुं०) शिव, महादेव;
नवछात्र-(सं०नपुं०) नवीन विद्यार्थी;
नवछावरि-(हिं०स्त्री०) देखो न्यौछावर;
नवछिद्र-(सं० नपुं०) शरीर के नवछिद्र या द्वार; **नवज**-(सं०वि०) जो अभी उत्पन्न हुआ हो।
नवड़ा-(हिं०पुं०) मरसे का शाक।
नवत-(सं०पुं०) हाथी की झूल, रेशमी वस्त्र, कम्बल।
नवतन्तु-(सं०पुं०) नया सूत, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
नवतन-(हिं०वि०) नवीन,नया। **नवता**-(हिं०पुं०) ढालुआँ भूमि, (स्त्री०) नवीनता, नयापन।
नवतिका-(सं० स्त्री०) चित्रकार की रंग भरने की कूची।
नवदल-(सं० नपुं०) नया पत्ता।
नवदीधति-(सं० पुं०) मंगल ग्रह।
नवदुर्गा-(सं० स्त्री०) पुराणानुसार नव दुर्गा जिनकी नवरात्र में क्रम से नव दिन पूजा होती है उनके नाम शैलपुत्री ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कुष्माण्डी, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा हैं।
नवदोला-(सं० स्त्री०) नया हिंडोला।
नवद्वार-(सं० नपुं०) शरीर के नवद्वार या छिद्र यथा दो आँख, दो कान, नाक के दो छिद्र, मुख, गुदा, लिंग या भग।
नवद्वीप-(सं० पुं०) बंगाल के नदिया नामक नगर का प्राचीन नाम।
नवधा-(सं०अव्य०) नवगुणा, नव बार; **नवधा अङ्ग**-(सं० पुं०) शरीर के नव अंग यथा दो आँख, दो कान, दो हाथ दो पैर, और एक नाक; **नवधातु**-(सं० पुं०) नव प्रकार के धातु यथा सोना, चांदी, लोहा, सीसा, तांबा, रांगा, इस्पात कांसा और कान्ति लोहा, **नवधाभक्ति**-(सं०स्त्री०) नव प्रकार की भक्ति यथा श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।
नवन-(हिं० पुं०) देखो नमन।
नवना-(हिं० क्रि०) झुकना, नम्र होना, विनीत भाव दिखलाना। **नवनि**-(हिं० स्त्री०) झुकने का भाव, विनीत भाव, दीनता, नम्रता।
नवनिधि-(सं० स्त्री०) देखो निधि।
नवनी, नवनीत-(सं० स्त्री०नपुं०) मक्खन।
नवनीतक-(सं० नपुं०) घृत, घी, गधर्की
नवनीतज-(सं० नपुं०) घृत, घी।
नवनीतोद्भव-(सं० नपुं०) दधि,दही, घृत, घी।
नवपद-(सं० नपुं०) मात्रावृत्त का एक प्रकार का छन्द। **नवपदी**-(सं०स्त्री०) चौपाई या जनकरी छन्द।
नवपाठक-(सं० पुं०) नया शिक्षक।
नवप्राशन-(सं० नपुं०) नया अन्न या फल खाना।
नवफलिका-(सं० स्त्री०) नवयौवना,वह स्त्री जो पहिले पहल रजस्वला हुई हो
नवम-(सं०वि०) जो गिनती में नव के स्थान में हो, नवाँ।
नवमल्लिका-(सं० स्त्री०) चमेली या नेवारी का फूल।
नवमालिका, नवमालिनी-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम।
नवमी-(सं० स्त्री०) चान्द्रमास के किसी पक्ष की नवीं तिथि।
नवयज्ञ-(सं० पुं०) नये अन्न के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ।
नवयुवक, नवयुवा-(सं० पुं०) तरुण, नवयुवक। **नवयौवन**-(सं० नपुं०) तरुण अवस्था, जवानी; **नवयौवना**-(सं० स्त्री०) युवती, तरुण स्त्री।
नवरंग-(हिं० वि०) रूपवान्, सुन्दर, नई शोभायुक्त, नये ढंग का। **नवरंगी**-(हिं० वि०) प्रति दिन नया आनन्द लेने वाला, हँसमुख, रंगीला, (हिं० स्त्री०) देखो नारंगी।
नवरत्न-(सं० नपुं०) नव प्रकार के रत्न जिनके नाम—मोती, पन्ना, मानिक, गोमेदक, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम है; राजा विक्रमादित्य की कल्पित सभा के नव पण्डित जिनके नाम—क्षपणक, धन्वन्तरि, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वाराहमिहिर और वररुचि थे, एक प्रकार का गले में पहिरने का हार जिसमें नवों रत्न जड़े होते हैं।
नवरस-(सं० पुं०) शृङ्गार, शास्त्र के प्रधान नवरस यथा-शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शान्त, इन नवों रसों के स्थायी भाव क्रम से-रति, हास, (हँसी) शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और शान्ति है।
नवरात्र-(सं० नपुं०) आश्विन शुक्ल प्रतिपद से लेकर नवमी तक के नव दिन जिनमें दुर्गा का घट स्थापन, पूजन आदि होता है; चैत्र शुक्ल

प्रतिपद से लेकर नवमी पर्यन्त भी उपरोक्त प्रकार का पूजन होता है।
नवल-(सं॰ पुं॰) नव्य, नूतन, नवीन, नया, सुन्दर, शुद्ध, उज्वल; **नवल अनङ्गा**-(सं॰ स्त्री॰) केशव के अनुसार मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक; **नवलकिशोर**-(सं॰पुं॰) श्रीकृष्ण।
नवलक्षण-(सं॰ नपुं॰) वेदान्त के अनुसार ब्रह्म को प्रमाणित करने के नव लक्षण यथा-विश्व की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, इसका उपादान, गोचर, अपरोक्ष ज्ञान, चिकीर्षा और कृत्रिमत्व हैं।
नवलता-(हिं॰ स्त्री॰) नयापन।
नवलवधू-(सं॰ स्त्री॰) केशव के अनुसार मुग्ध नायिका के चार भेदों में से एक।
नवला-(सं॰ स्त्री॰) तरुणी, स्त्री।
नववधू-(सं॰ स्त्री॰) वह स्त्री जिसका विवाह हाल में हुआ हो।
नववध्वागमन-(सं॰ नपुं॰) ब्याही हुई स्त्रीका पहिलेपहल स्वामीकेघर जाना।
नववरिका-(सं॰ स्त्री॰) नवोढ़ा, नई व्याही हुई स्त्री।
नववर्ष-(सं॰ पुं॰) नया वर्ष, नई वर्षा।
नववल्लभ-(सं॰ पुं॰) एक प्रकार का सुगन्धित अगर।
नववस्त्र-(सं॰ नपुं॰) नया वस्त्र।
नवविध-(सं॰ वि॰) नव प्रकार का,
नवविष-(सं॰ पुं॰) नव प्रकार के विष जिनके नाम-वत्सनाभ, हारिद्रिक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृङ्गक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र हैं।
नवशक्ति-(सं॰ स्त्री॰) नव शक्ति जिनके नाम-प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नन्दिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा हैं।
नवशस्य-(सं॰ नपुं॰) नया अन्न।
नवशिक्षित-(सं॰ वि॰) जिसने कुछ काल पूर्व कुछ पढ़ा या सीखा है, नवसिखुआ, आधुनिक रीति की शिक्षा प्राप्त किया हुआ।
नवशोभ-(सं॰ पुं॰) युवक, तरुण, नई शोभा वाला।
नवसङ्गम-(सं॰ पुं॰) पति से पत्नी की पहिली भेंट।
नवसत-(हिं॰ पुं॰) देखो नवसप्त।
नवसप्त-(सं॰ पुं॰) नव और सात अर्थात् सोलह श्रृङ्गार।
नवसर-(हिं॰ पुं॰) नव लड़ी का हार।
नवससि-(हिं॰ पुं॰) द्वितीया का चन्द्रमा, नया चाँद।
नवसिखा-(हिं॰ पुं॰) नव शिक्षित, नवसिखुआ।
नवसू, नवसूतिका-(सं॰ स्त्री॰) नई प्रसूता गाय या स्त्री।
नवाँ-(हिं॰ वि॰) आठवें के बाद तथा दसवें के पहिले का, नौवां। **नवांश**-(सं॰ पुं॰) फलित ज्योतिष के अनुसार मेषादि बारहों लग्न का नवाँ भाग।
नवाई-(हिं॰स्त्री॰) विनीत होनेका भाव।
नवागत-(सं॰ वि॰) जो अभी आया हो, नया आया हुआ।
नवाङ्गा-(सं॰ स्त्री॰) कोकड़ासिंघी।
नवाजना-(हिं॰ क्रि॰) दया दिखलाना।
नवाड़ा-(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार की नाव।
नवाना-(हिं॰क्रि॰) विनीतकरना, झुकाना।
नवान्न-(सं॰ पुं॰) नया अन्न, एक प्रकार का श्राद्ध जो नया अन्न, तैयार होने पर पितरों के उद्देश्य से किया जाता है।
नवार-(हिं॰ स्त्री॰) एकप्रकारकीबड़ीनाव
नवारी-(वि॰ स्त्री॰) देखो नेवारी।
नवासिका-(सं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का वर्णवृत्त।
नवासी-(हिं॰ वि॰) अस्सी और नव की सख्या का; (पुं॰) अस्सी और नव की सख्या ८९।
नवाह-(सं॰ पुं॰) नव दिन, किसी सप्ताह, पक्ष, मास या वर्ष का नया दिन, नव दिन में समाप्त होनेवाला यज्ञ अथवा रामायण आदि का पाठ।
नवि-(हिं॰ स्त्री॰) गाय को दूहते समय बछड़े का गला बाँधने की रस्सी जो गाय के पैर में बाँध दी जाती है।
नविका-(सं॰ स्त्री॰) जिसमें नव शब्द आये हों।
नवीन-(सं॰ वि॰) नूतन, नया, विचित्र, अपूर्व, विलक्षण, तरुण, नवयुवक,
नवीनता-(हिं॰ स्त्री॰) नयापन; **नवीभाव**-(सं॰पुं॰) नया होनेका भाव या क्रिया।
नवेद-(हिं॰ स्त्री॰) निमन्त्रण, न्योता,
नवेला-(हिं॰ वि॰) नवीन, नया, तरुण, **नवेली**-(हिं॰ स्त्री॰) तरुणी, युवती, नई स्त्री।
नवोढा-(सं॰ स्त्री॰) नव विवाहिता स्त्री, वधू, नवयौवना; साहित्य में वह मुग्धा नायिका जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाना चाहती हो।
नवोदक-(सं॰नपुं॰) नूतनजल, नयापानी
नवोद्धृत-(सं॰वि॰) तुरत निकाला हुआ, (नपुं॰) नवनीत, मक्खन।
नव्य-(सं॰ वि॰) नूतन, नवीन, नया, स्तुति करने योग्य।
नव्वाब-(हिं॰ पुं॰) देखो नबाब।
नव्वाबी-(हिं॰ स्त्री॰) देखो नवाबी।
नशन-(सं॰ नपुं॰) जिसका नाश हो।
नशना-(हिं॰ क्रि॰) नाश होना।
नशाना-(हिं॰ क्रि॰) नष्ट करना,
नशावन-(हिं॰ वि॰) नष्टकरनेवाला;
नशोहर-(हिं॰वि॰) नाशक, नाश करने वाला।
नश्वर-(सं॰वि॰) नष्ट होने वाला, जो नष्ट हो जावे; **नश्वरता**-(सं॰स्त्री॰) नाश।
नष-(हिं॰पुं॰) देखो नख; **नषत**-(हिं॰ पुं॰) देखो नक्षत्र।
नष्ट-(सं॰वि॰) जो अदृश्य हो, जो देख न पड़े, अधम, नीच, पामर, जिसका प्रचार हो चुका हो, जो भाग गया हो, निष्फल, व्यर्थ, जिसका नाश हो गया हो, (नपुं॰) नाश, **नष्टचन्द्र**-(सं॰पुं॰) भादों महीने की दोनों पक्ष की चतुर्थी को उगने वाला चन्द्रमा जिसका दर्शन पुराण के अनुसार निषिद्ध माना जाता है; **नष्टचित्त**-(सं॰वि॰) उन्मत्त, मतवाला; **नष्टचेतन**-(सं॰पु॰) अचेत; **नष्टचेष्ट**-(सं॰वि॰) जिसमें हिलने डोलने की शक्ति न रह गई हो; **नष्टचेष्टता**-(सं॰स्त्री॰) मूर्छा, प्रलय; **नष्टजन्मा**-(सं॰नपु॰) वर्णसंकर, दोगला; **नष्टता**-(सं॰स्त्री॰) नाश, दुराचारिता; **नष्टदृष्टि**-(सं॰वि॰) दृष्टिहीन, अन्धा; **नष्टप्रभ**-(सं॰वि॰) कान्ति रहित, तेज हीन; **नष्टबुद्धि**-(सं॰वि॰) बुद्धिहीन, मूढ, मूर्ख; **नष्टभ्रष्ट**-(सं॰वि॰) जो बिलकुल नष्ट हो गया हो अथवा टूट फूट गया हो; **नष्टमार्गण**-(सं॰नपुं॰) खोई हुई वस्तु की खोज; **नष्टरूप**-(सं॰वि॰) मृत, मरा हुआ; **नष्टरूपा**-(सं॰स्त्री॰) अनुष्टुप् छन्द का एक भेद; **नष्टविष**-(सं॰वि॰) वह विषैला जन्तु जिसका विष नष्ट हो गया हो।
नष्टबीज-(सं॰नपुं॰) वह अन्न जो बोने पर न जमे; **नष्टवेदन**-(सं॰नपुं॰) खोई हुई वस्तु की खोज; **नष्टशुक्र**-(सं॰वि॰) जिसका वीर्य नष्ट हो गया हो।
नष्टा-(सं॰स्त्री॰) व्यभिचारिणी, कुलटा, वेश्या; **नष्टाग्नि**-(सं॰पु॰) वह अग्निहोत्री जिसकी अग्नि बुझ गई हो; **नष्टात्मा**-(सं॰वि॰) दुष्ट, खल; **नष्टाशङ्क**-(सं॰वि॰) निर्भय, निडर; **नष्टार्थ**-(सं॰वि॰) निर्धन, दरिद्र, **नष्टासु**-(सं॰वि॰) मृत, मरा हुआ।
नष्टेन्दुकला-(सं॰स्त्री॰) वह अमावास्या जिस दिन चन्द्रमा बिलकुल देख न पड़े
नसंक-(हिं॰वि॰) निःशङ्क, निर्भय।
नस-(हिं॰स्त्री॰) पुरुष की मूत्रेन्द्रिय, लिंग, शरीर के भीतर के तन्तुओं का वह लच्छा जो पेशियों के छोर पर रहता है और दूसरी पेशियों को अथवा हड्डी आदि को बाँधे रहता है, रक्तवाहिनी नली, पत्ते के बीच का तन्तु; **नस पर नस चढ़ना**-शरीर के किसी स्थान के नस का विचलित होना; **नस नस में**-संपूर्ण शरीर में; **नस नस फड़क उठना**-अति प्रफुल्ल होना, रोमाँचित होना।
नसकटा-(हिं॰पुं॰) नपुंसक, हिजड़ा। **नसतरंग**-(हिं॰पुं॰) शहनाई के आकार का पीतल का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जो गले की घंटी के पास की नसों पर रखकर गले से स्वर भरकर बजाया जाता है।
नसना-(हिं॰क्रि॰) नष्ट होना, भाग जाना
नसफाड़-(हिं॰पुं॰) हाथी के पैर फूलने का एक रोग।
नसवार-(हिं॰स्त्री॰) तमाखू के सूखे पत्ते जो खूब पीसकर सूंघने के काम में आते है, नस्य, सुंघनी।
नसहा-(हिं॰वि॰) जिसमें नस हों।
नसा-(सं॰स्त्री॰) नासिका, नाक।
नसाना नसावना-(हिं॰क्रि॰) नष्ट होना, बिगड़ जाना।
नसी-(हिं॰स्त्री॰) हल के फार का अगला भाग।
नसीठ-(हिं॰पुं॰) अपशकुन, असगुन।
नसीनी-(हिं॰स्त्री॰) निसैनी, सीढी।
नसीपूजा-(हिं॰पुं॰) बोवाई हो जाने पर हलकी पूजा।
नसीबा-(हिं॰पुं॰) भाग्य।
नसीला-(हिं॰वि॰) जिसमें नस हो, नसदार।
नसीहा-(हिं॰पुं॰) हलका हल जो कोमल मिट्टी जोतने में व्यवहार किया जाता है।
नसूढ़िया-(हिं॰वि॰) जिसके दर्शन मात्र से हानि या दोष हो।
नसूर-(हिं॰पु॰) देखो नासूर।
नसेनी-(हिं॰स्त्री॰) सीढी।
नस्त-(सं॰पुं॰) नासिका, नास, एक प्रकार की सुंघनी।
नस्ता-(सं॰स्त्री॰) पशुओंके नाकका छेद।
नस्य-(सं॰ नपुं॰) नासिका द्वार, नाक में देने का चूर्ण, नास, सुंघनी; **नस्यधानी**-(सं॰स्त्री॰) सुंघनी रखने की डिबिया। **नस्या**-(सं॰स्त्री॰) नासिका, नाक, नाक का छेद।
नस्वर-(हिं॰वि॰) देखो नश्वर।
नहँ-(हिं॰पु॰) नख।
नहछू-(हिं॰पु॰) विवाह की एक रीति रस्म जिसमे वर का क्षौर किया जाता है, नहँ काटे जाते हैं तथा उसके शरीर में उबटन आदि लगाये जाते हैं।
नहट्टा-(हिं॰पु॰) नख से की हुई खरोंच
नहन-(हिं॰पुं॰) पुरवट खींचने की मोटी रस्सी, नार।
नहना-(हिं॰क्रि॰) काम में लगाना, जोतना, नाँधना।
नहरनी-(हिं॰स्त्री॰) नख काटने का यन्त्र, एक प्रकार का यन्त्र जिससे पोस्ते की ढोंढी चीरी जाती है।
नहरम-(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकारकी मछली
नहरुआ-(हिं॰पुं॰) कमर के नीचे के भाग में होने वाला एक रोग जिसमें घाव में से डोरी की तरह का कीड़ा धीरे धीरे निकलने लगता है।
नहला-(हिं॰पुं॰) ताश का वह पत्ता जिसमें नौ बूटियाँ रहती है, नकाशी बनाने का करनी की तरह का एक अस्त्र।
नहलाई-(हिं॰स्त्री॰) नहलाने की क्रिया या भाव, नहलाने के बदले में दिया जाने वाला धन। **नहलाना, नहवाना**-(हिं॰क्रि॰) स्नान कराना।
नहसुत-(हिं॰पुं॰) नख का चिह्न, परास

की तरह का एक वृक्ष।
नहाँ-(हिं॰पु॰) पहिये के बीच का छिद्र, घरके आगे का आँगन।
नहान-(हिं॰पुं॰) नहाने की क्रिया, स्नान का पर्व; **नहाना**-(हिं॰क्रि॰) स्नान करना, संपूर्ण शरीर को पानी से धोना, बिलकुल भींग जाना; **दूधों नहाना पूतों फलना**-धनधान्य की वृद्धि होना।
नहानी-(हिं॰स्त्री॰) स्त्री का रजस्वला होना।
नहि-(सं॰अव्य॰) कभी नहीं। **नहीं**-(हि॰अव्य॰) निषेध या अस्वीकृति सूचक अव्यय; **नहीं तो**-इस बात के न होने पर; **नहीं सही**-कुछ चिन्ता नहीं।
नहिअन, नहियां-(हिं॰पुं॰) स्त्रियों की अगुलियों में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण।
नहिरनी-(हिं॰स्त्री॰) देखो नहरनी।
नहुष-(सं॰पु॰) विष्णु, एक नाग का नाम, चन्द्र वंश के एक राजा का नाम जो अम्बरीष के पुत्र और ययाति के पिता थे।
नहूर-(हि॰स्त्री॰)एक प्रकार की तिब्बत में पाई जाने वाली भेंड़।
नाउँ-(हिं॰पुं॰) देखो नाम।
नाँगा-(हिं॰वि॰) देखो नंगा, (पु॰) एक प्रकार के साधु जो सर्वदा नंगे रहते हैं
नाँघना-(हिं॰क्रि॰) उछल कर एक पार से दूसरे पार जाना, लाँघना।
नाँठना-(हिं॰क्रि॰) नष्ट होना।
नाँद-(हिं॰स्त्री॰) चौड़े मुंह का मिट्टी का बड़ा पात्र जिसमें पशुओं को खाने के लिये चारा दिया जाता है।
नाँदना-(हिं॰क्रि॰) शब्द करना, आनन्दित होना, छींकना, दीपक का बुतने के पहिले भभकना।
नाँयँ-(हिं॰पुं॰) देखो नाम, (अव्य॰) नहीं
नाँवँ-(हिं॰पु॰) देखो नाम।
नाँह-(हिं॰पु॰) नाथ, स्वामी, मालिक।
ना-(सं॰अव्य॰) अस्वीकृति या निषेध सूचक शब्द, न, नहीं।
नाइक-(हिं॰पुं॰) देखो नायक।
नाइन-(हिं॰स्त्री॰) नाई जाति की स्त्री, नाई की स्त्री।
नाइब-(हिं॰पुं॰) देखो नायब।
नाईं-(हिं॰स्त्री॰)समान दशा या स्थिति (वि॰) तुल्य, सदृश, समान।
नाई-(हिं॰पुं॰) नापित, नाऊ।
नाउँ-(हिं॰पु॰) देखो नाम।
नाउ-(हिं॰पुं॰) देखो नाव।
नाउत-(हिं॰पुं॰) भूत प्रेत झाड़ने वाला, ओझा।
नाउन-(हिं॰स्त्री॰) देखो नाइन।
नाऊ-(हिं॰पुं॰) नाई, नापित।
नाक-(सं॰ पुं॰) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, आकाश, किसी अस्त्र का एक आघात, (हिं॰पुं॰) नास, नासिका, नाक से निकलने वाला मल, लकड़ी का डंडा जिस पर चढ़ाकर पात्र खरादा जाता है, चरखा घुमाने की लकड़ी, शोभा की वस्तु, मान, प्रतिष्ठा, मगर की जाति का एक जन्तु; **नाक घिसनी**-गिड़गिड़ा कर विनती करना; **नाक कट जाना**-मान में बट्टा लगना; **नाक कान काटना**-कठोर दण्ड देना; **नाक का बाल**-घनिष्ठ मित्र; **नाक चढ़ना**-क्रुद्ध होना, रोष आना; **नाकों चने चबाना**-बहुत व्यग्र करना; **नाक भौं सिकोड़ना**-अप्रसन्नता दिखलाना; **नाक में दम करना**-बहुत कष्ट देना। **नाक रगड़ना**-गिड़गिड़ाते हुए मिनती करना; **नाकों आना**-व्यग्र होना; **नाक सिकोड़ना**-घृणा दिखलाना; **नाक रख लेना**-मान मर्यादा की रक्षा करना।
नाकचर-(सं॰पुं॰) आकाश में भ्रमण करने वाले ग्रह, देवता आदि।
नाकड़ा-(हिं॰पुं॰) नाक का एक रोग जिसमें नाक के छिद्र के भीतर फोड़ा हो जाता है।
नाकनटी-(सं॰स्त्री॰) स्वर्ग की नर्तकी, अप्सरा।
नाकना-(हिं॰ क्रि॰) उल्लंघन करना, लाँघना।
नाकनाथ, नाकनायक-(स॰ पुं॰)इन्द्र; **नाकपाल**-(सं॰पुं॰) देवता; **नाकपृष्ठ**-(स॰ नपुं॰) स्वर्गलोक; **नाकलोक**-(सं॰पुं॰) स्वर्गलोक, आकाशलोक; **नाकवनिता**-(सं॰स्त्री॰) स्वर्गीय स्त्री, अप्सरा; **नाकनेषक**-(सं॰ पुं॰) इन्द्र।
नाकसद्-(सं॰पुं॰) स्वर्गवासी, देवता
नाका-(हिं॰पुं॰) प्रदेश, द्वार, मुहाना, सड़क, गली आदि का आरंभ स्थान, नगर अथवा गढ का फाटक, ताने का तागा बांधने का जोलाहे का एक अस्त्र, सूई का छेद; मगर की जाति का एक जन्तु, वह प्रधान स्थान जहां निरीक्षण करने के लिये अथवा कर लेने के लिये सिपाही नियुक्त रहते हैं; **नाका छेंकना**-आने जाने का मार्ग रोंकना।
नाकापगा-(सं॰ स्त्री॰) स्वर्ग नदी, मन्दाकिनी।
नाकाबन्दी-(हिं॰स्त्री॰) जाने आने के मार्ग का छेंका जाना, प्रवेश द्वार पर नियुक्त सिपाही, चौकीदार, पहरेदार।
नाकिनाथ-(सं॰पुं॰) इन्द्र।
नाकी-(हिं॰पुं॰) देवता।
नाकु-(सं॰पुं॰) एक ऋषि का नाम, पर्वत, पहाड़, भीटा, टीला, दीमक की लगाई हुई मिट्टी का ढेर।
नाकुल-(सं॰नपुं॰) मार्ग, रास्ता, सेम्हर का मुसरा।
नाकुली-(सं॰स्त्री॰) सर्पगन्धा नामक कन्द, सफेद भटकटैया, (वि॰) नकुल नामक पाण्डव का बनाया हुआ।
नाकेदार-(हिं॰पुं॰) फाटक पर रहने वाला सिपाही, वह प्रधान कर्मचारी जो नाके पर कर आदि लेने के लिये नियुक्त रहता है (वि॰) जिसमें नाका या छेद हो। **नाकेबन्दी**-(हिं॰स्त्री॰) देखो नाकबन्दी।
नाकेश, नाकेश्वर-(सं॰पुं॰) स्वर्ग के आधिपति इन्द्र।
नाकौकस्-(सं॰पु॰) स्वर्गबासी, देवता
नाक्षत्र-(सं॰वि॰) नक्षत्र संबंधी।
नाखना-(हिं॰ क्रि॰) विगाड़ना, नाश करना, उल्लंघन करना, गिराना।
नाग-(सं॰नपुं॰) सीसा, रांगा, सर्प, हाथी, मेघ, नागकेसर, मोथा, शरीर की एक वायु का नाम; कश्यप की सन्तान, हिमालय के उस पार के एक देश का नाम, इस देश में रहने वाली एक जाति, पुन्नाग, आठ की संख्या, क्रूर मनुष्य, ज्योतिष मे एक करण का नाम; **नागकन्या**-(सं॰स्त्री॰) नाग की अति सुन्दर कन्या; **नागकर्ण**-(सं॰पु॰) पलास का वृक्ष, हाथी का कान; **नागकिञ्जल्क**-(सं॰नपुं॰) नागकेसर; **नागकुमारिका**-(सं॰स्त्री॰) गुरुच, मजीठ; **नागकेशर**-(सं॰पुं॰) एक वृक्ष जिसके सूखे फल औषधियों में प्रयोग होते हैं; **नागगति**-(सं॰स्त्री॰) ग्रहों की एक विशिष्ट गतिका नाम; **नागगर्भ**-(सं॰नपुं॰) सिन्दूर; **नागचम्पा**-(हि॰पुं॰) नागकेसर का फल; **नागचूड**-(सं॰पु॰) शिव, महादेव; **नागज**-(स॰वि॰) जो सर्प या हाथी से उत्पन्न हो,(नपुं॰)फूंका हुआ राँगा; **नागजम्बू**-(सं॰स्त्री॰) एक प्रकार की जामुन; **नागजिह्वा**-(सं॰स्त्री॰)अनन्तमूल;**नागजिह्विका**-(सं॰स्त्री॰)मन:शिला, मैनसिल;**नागजीवन**-(सं॰नपुं॰) फूंका हुआ राँगा;**नागझाग**-(हिं॰पुं॰)अहिफेन, अफीम; **नागतुम्बी**-(सं॰स्त्री॰) छोटा कड़ुआ, कद्दू; **नागदन्त नागदन्तक**-(सं॰पुं॰) हाथीदाँत, भीत में लगाने की खूंटी; **नागदन्ती**-(सं॰स्त्री॰) श्वेत पुष्पा नामक औषधि; **नागदमन**-(सं॰पुं॰) नागदौना का पौधा; **नागदमनी**-(सं॰स्त्री॰)नागदमन; **नागदला**-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी होती है; **नागदा**-(सं॰स्त्री॰) हरीतकी, हर्रे; **नागदुमा**-(हिं॰वि॰) जिसकी पूंछ का छोर सर्प के फन के आकार का हो; **नागदौन, नागदौना**-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का कटीला दौना जिसके पेड़ लंबे होते हैं, इसकी पत्तियों को कागज या कपड़ों के बीच में रखने से इनमें कीड़े नहीं लगते; **नागद्रुम**-(सं॰पुं॰) सेंहुड़, नागफनी; **नागधर**-(सं॰पुं॰) शिव, महादेव; **नागध्वनि**-(सं॰स्त्री॰)एक संकर रागिणीका नाम; **नागनक्षत्र**--(सं॰पुं॰) अश्लेषा नक्षत्र; **नागनग**-(हि॰) गजमुक्ता; **नागनायक**-(सं॰पुं॰) नागों का अधिपति, अनन्त, वासुकि आदि; **नागनासा**-(सं॰पुं॰) सफेद या काली तुलसी; **नागनासा**-(सं॰स्त्री॰) हाथी का सूंड; **नागपञ्चमी**-श्रावण शुक्ल पंचमी जिस दिन हिन्दू लोग नाग की पूजा करते हैं; **नागपति**-(सं॰पुं॰) नागों का अधिपति वासुकि, हाथियों का अधिपति ऐरावत; **नागपत्नी**-(सं॰स्त्री॰) लक्षणा नामक कन्द; **नागपत्र**-(सं॰नपुं॰) पान का पत्ता; **नागपद**-(सं॰पुं॰) सोलह प्रकार के रतिबन्धों में से एक,(नपुं॰) हाथी का पैर; **नागपर्णी**-(सं॰स्त्री॰) नागवल्ली, पान; **नागपाश**-(सं॰पुं॰) वरुण के एक अस्त्र का नाम जिससे वे शत्रु की जाँघ को बाँध लेते थे; **नागपुष्प**-(सं॰पु॰) नागकेशर,चम्पक, चंपा; **नागपुष्पक**-(सं॰पुं॰) कपित्थ, कैथ का पेड़, पीली जूही, कूष्माण्ड; **नागपुष्पा**-(सं॰स्त्री॰) नागदौना, मनःशिला, मैनसिल;**नागपुष्पी**-(सं॰स्त्री॰) जूही, मेंढासींघी;**नागफनी**-(हिं॰स्त्री॰) सिंघे की तरह का एक बाजा; थूहर की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियाँ कांटों से भरी रहती हैं. कान मे पहिरने का एक गहना; **नागफल**-(सं॰पुं॰) पटोल, परवल; **नागफाँस**-(हिं॰पुं॰) देखो नागपाश; **नागफेन**-(सं॰पुं॰) अहिफेन, अफीम; **नागवधू**-(सं॰स्त्री॰) नागों की स्त्री;**नागबन्धु**-(सं॰पुं॰) पीपल, गूलर का वृक्ष; **नागबल**-(सं॰पुं॰) भीम का एक नाम, हाथी के समान बल; **नागबला**-(सं॰स्त्री॰) गुलसकरी, गंगेरन; **नागबेल**-(हिं॰स्त्री॰) नागवल्ली, पान की लता; **नागभगिनी**-(सं॰स्त्री॰)वासुकिकी बहिन जरत्कारु; **नागभूषण**-(सं॰पुं॰) शिव, महादेव;**नागमण्डलिक**-(सं॰पुं॰) नाग पकड़ने या रखने वाला, सँपेरा।
नागमती-(सं॰स्त्री॰) काली तुलसी।
नागमरोड़-(हिं॰पुं॰) मल्लयुद्ध की एक युक्ति; **नागमल्ल**-(सं॰पुं॰) ऐरावत हाथी; **नागमाता**-(सं॰स्त्री॰) नागों की माता कद्रु, मैनसिल; **नागसार**-(सं॰पुं॰) काला भंगरा, (वि॰) सर्पमारक; **नागमुख**-(सं॰पुं॰) गणेश; **नागयष्टि**-(सं॰स्त्री॰) तालाब के बीचो बीच खड़ा किया हुआ खम्भा।
नागर-(सं॰ वि॰) नगर सम्बन्धी, नगर मे रहनेवाला, (पुं॰) देवर, नारङ्गी, (नपुं॰) नागरमोथा, एक देशका नाम, नगर की भलाई, (पुं॰) चतुर मनुष्य, सभ्य मनुष्य, गुजराती ब्राह्मणों की एक श्रेणी; **नागरक**-(सं॰पुं॰)चोर, शिल्पी; **नागरक्त**-(सं॰नपुं॰) सर्प या हाथी का रक्त, सिन्दूर; **नागरघन**-(सं॰पुं॰) नागरमोथा; **नागरङ्ग**-(सं॰पुं॰) नारङ्गी का वृक्ष; **नागरता**-(सं॰स्त्री॰ नगर की रीति और व्यवहार, नाग

रिकता, सभ्यता; **नागरबेल**-(सं०पुं०) एक प्रकार का झूला; **नागरबेल**-(हिं०स्त्री०) ताम्बूल, पानी की लता; **नागरमुस्ता**-(सं०स्त्री०) नागरमोथा; **नागरमोथा**-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास जिसकी जड़ औषधियों में प्रयोग होती है।

नागराज-(सं०पुं०) शेषनाग, ऐरावत, पञ्चमार या नाराच छन्दका दूसरा नाम।

नागराह्न-(सं०नपुं०) शुण्ठी, सोंठ।

नागरिक-(सं०वि०) नगरमें रहनेवाला, नगर संबधी, नगर निवासी, चतुर, सभ्य; **नागरिकता**-(सं०स्त्री०) नगर के अधिकारों से युक्त होने की अवस्था। **नागरी**-(सं०स्त्री०) थूहर का पेंड़, चतुर स्त्री, नागर ब्राह्मण की स्त्री, भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी लिखी जाती है, देवनागरी, पत्थर की मोटाई की एक नाप, पत्थर की बहुत मोटी पटिया, (वि०) नगर में उत्पन्न होने वाली; **नागरी कन्या**-(सं०स्त्री०) बाँझ ककड़ी; **नागरीट**-(सं०वि०) लम्पट, व्यभिचारी, दोगला।

नागरुक-(सं पुं०) नागरङ्ग, नारंगी।

नागरेयक-(सं०वि०) नगर सम्बन्धी, नगर का।

नागर्य-(सं०नपुं०) जुएकी रस्सी जिससे बैल का कन्धा बाँधा जाता है।

नागलता-(सं०स्त्री०) पानीकी एक लता

नागलोक-(सं०पुं०) पाताल।

नागवंश-(सं०पुं०) शक जाति की एक शाखा।

नागवल्लरी, नागवल्लिका-(सं०स्त्री०) पान की लता।

नागवारिक-(सं०नपुं०) हस्तिपालक, महावत, गरुड़, मयूर, मोर।

नागवास-(सं०पुं०) नाग गण के रहने का स्थान।

नागवीट-(सं०वि०) लम्पट, धूर्त; **नागवृक्ष**-(सं०पुं०) नागकेसर का पेड़। **नागशुण्डी**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी। **नागहनु**-सं०पुं०)नख नामक सुगन्ध द्रव्य।

नागा-(हिं०पुं०) शैव सम्प्रदाय के वे साधु जो वस्त्र धारण नहीं करते एक दम नंगे रहते है, आसाम के पूर्व नागा पर्वत और उसके आस पास के देशमें रहनेवाली एक जाति।

नागाख्य-(सं०पु०) नागकेशर।

नागाङ्गना-(सं०स्त्री०) नागों की स्त्री।

नागाञ्जना-(सं०स्त्री०)हस्तिनी, हथिनी

नागाधिप, नागाधिपति-(सं०पुं०) हाथी अथवा सर्प के अधिपति।

नागानन-(सं०पु०) गजानन, गणेश।

नागान्तक-(सं०पुं०)गरुड, मोर, सिंह।

नागार्जुन-(सं० पुं०) विदर्भ नगर के रहने वाले एक ब्राह्मण जो बौद्धधर्म के प्रचारक थे।

नागार्जुनी-(सं०स्त्री०) दूधिया घास।

नागालाबु-(सं०पुं०) गोल कद्दू।

नागाशन-(सं०पुं०)गरुड़,मोर,सिंह,शेर।

नागिन-(हिं० स्त्री०) मादा सर्प, बैल घोड़े आदि चौपायों की पीठ पर रोवें की एक भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।

नागीय-(सं०पुं०) नागकेशर;

नागुला-(सं०पुं०) नकुल, नेवला।

नागेन्द्र, नागेश्वर-(सं०पुं०) ऐरावत, शेषनाग, बड़ा हाथी, बड़ा सर्प।

नागेसर-(हिं० पुं०) देखो नागकेशर।

नागेसरी-(हि० वि०) नागकेशर के रंग का, पीला।

नागोद-(सं०पु०) छाती पर पहिरने का लोहे का कवच।

नागोदर-(सं०नपुं०) गर्भिणी के गर्भ का एक प्रकार का उपद्रव।

नागौर-(हिं०पुं०) बीकानेर राज्य के पास का एक स्थान जो गाय, बैलों के लिये बड़ा प्रसिद्ध है। (वि०) अच्छी जाति का (बैल, बछड़ा)

नगौरी-(हिं०वि०) नागौर का बैल, बछवा आदि, एक जाति की गाय।

नाच-(हिं०पुं०) अंगों की वह गति जो चित्त के उमंग के कारण उत्पन्न हो, नाट्य, खेल, क्रीड़ा, कामधंधा; **नाच काछना**-नाचने के लिये वस्त्र आदि पहिनकर तैयार होना; **नाच दिखाना**-उछल कूद करना, हाव भाव दिखलाना; **नाच नचाना**-मन चाहा काम किसी से कराना; **नाच-कूद**-(हिं० स्त्री०) प्रयत्न, आयोजन, नाच तमाशा, वह उद्योग जिसमें गुण योग्यता महत्व आदिका दिखाव किया जाता है, क्रोध, में उछलना डींग लेना; **नाचघर**-(हिं० पुं०)नृत्यशाला, वह स्थान जहां नाच गाना आदि होता हो। **नाचना**-(हिं०क्रि०) चित्त के उमंग से उछलना, कूदना तथा अंगों में तरह तरह की आकृति बनाना; तालसुर के अनुसार हाव भाव दिखलाते हुए हिलना डोलना कूदना अथवा दूसरी चेष्टा करना, चक्कर मारना, इधर उधर घूमना, दौड़ना धूपना, स्थिर न रहना, क्रोध में उद्विग्न और चंचल होना, क्रोध में आकर उछलना कूदना, काँपना थर्राना; **सिर पर नाचना**-त्रास देना, कष्ट देना। **नाचमहल**-(हिं० पुं०) नृत्यशाला, नाचघर। **नाचरंग**-(हिं०पुं०) आमोद प्रमोद।

नाचार-(हिं०वि०) असहाय, लाचार, व्यर्थ, तुच्छ।

नाचारी-(हिं०स्त्री०) लाचारी।

नाचिकेत-(सं० पुं०) अग्नि, उद्दालक ऋषि के एक पुत्र का नाम।

नाज-(हिं०पु०) अन्न, अनाज, भोजन की सामग्री।

नाट-(सं०पुं०) नृत्य, नाच, एक राग का नाम, जिसमें वीर रस का गान होता है, करनाटक के समीप के एक देश का नाम।

नाटक-(सं०वि०) नर्तक, नट, नाट्य पर अभिनय करने वाला, (नपुं०) रंगशाला में नटों के हाव भाव वेश वचन आदि द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन वह दृश्य जिसमें स्वांग द्वारा चित्र दिखलाये जाते हैं, गद्यपद्यपूर्ण वह ग्रन्थ जिसमें स्वांग द्वारा कोई चरित्र दिखलाया जाता है, दृश्य, काव्य, रूपक; **नाटकशाला**-(सं०स्त्री०) वह स्थान या घर जहां नाटक का अभिनय होता है। **नाटकावतार**-(सं०पुं०) किसी नाटक के बीचमें दूसरे नाटक का अभिनय, अन्तर्नाटक। **नाटक्रिया, नाटकी**-(हिं०पु०)नाटक करके अपनी जीविका चलाने वाला।

नाटकीय-(सं०वि०)नाटकी सम्बन्धी।

नाटना-(हिं०क्रि०) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहना, अस्वीकार करना, इनकार करना।

नाटवसन्त-(सं०पुं०)एक राग का नाम

नाटा-(हिं०वि०) छोटे डील डौल का, (पुं०) छोटा बैल।

नाटाम्र-(सं०पुं०) तरम्बुज, तरबूज।

नाटिका-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का दृश्य काव्य जिसमें कल्पित वृत्तान्त का वर्णन रहता है, इसमे केवल चार अङ्क होते है तथा स्त्री पात्र अधिक रहते है। एक रागिणी का नाम।

नाटित-(सं० वि०) जिसका अभिनय हुआ हो। **नाटितक**-(सं०नपुं०) वह जो अभिनय करता हो।

नटेर-(सं०पु०) नटी की सन्तान।

नाट्य-(सं० नपुं०) नृत्य, गीत और वाद्य, नटों का काम या समूह, चेष्टा द्वारा प्रदर्शन, अभिनय, स्वांग;

नाट्यकार-(सं०पुं०)नाटक करने वाला नट; **नाट्यप्रिय**-(सं० पुं०) शिव, महादेव; **नाट्यमन्दिर**-(सं० पुं०) देखो नाट्यशाला; **नाट्यरासक**-(सं०पुं०) एक प्रकार का दृश्य काव्य जिसमें केवल एक ही अङ्क होते हैं; **नाट्यशाला**-(सं० स्त्री०) राजभवन के पास का घर, नाटक घर।

नाट्यशास्त्र-(सं० पुं०) भरतमुनि का रचित एक प्राचीन ग्रन्थ, नृत्य, गीत और अभिनय की क्रिया। **नाट्यालङ्कार**-(सं०पु०) नाटक का भूषण हेतु अथवा वह अलंकार जो नाटक की सुन्दरता को अधिक बढ़ा देता है। **नाट्योक्ति**-(सं० स्त्री०) नाटक विषयक वाक्य, वे विशिष्ट संबोधन के शब्द जो नाटक में विशिष्ट व्यक्तियों के लिये प्रयोग किये जाते हैं, यथा ब्राह्मण के लिये महाराज, पति के लिये आर्यपुत्र, राजा के लिये देव आदि।

नाठ-(हिं० पुं०) नाश, ध्वंस, हानि-अभाव; **नाठना**-(हिं० क्रि०) नष्ट करना या होना; **नाठा**-(हिं०पुं०)वह जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

नाड़-(हिं०स्त्री०) ग्रीवा, गरदन।

नाड़ा-(हिं०पुं०) सूत की मोटी डोरी जिससे स्त्रियां घाघरा या धोती बाँधती हैं, नीवी; देवताओं के चढ़ाने का लाल पीला रंग हुआ बिना बटा हुआ (कच्चा) सूत।

नाडि-(सं०स्त्री०) देखो नाड़ी।

नाडिक-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का शाक, घटिका दण्ड।

नाडिकेल-(सं०पु०)नारिकेल,नारियल।

नाडिन्धम-(सं०पु०)स्वर्णकार, सोनार, (वि०) श्वास को जल्दी जल्दी चलाने वाला, भयदर्शक, नली को फूंकने वाला, भयंकर, नाड़ियों को हिलाने वाला, दहलाने वाला।

नाड़िया-(हिं०पुं०) चिकित्सक, वैद्य।

नाड़ी-(सं० स्त्री०) नाल, देहस्थित शिरा, गाँड़र घास, हठ योग के अनुसार वाहिनी, शक्ति श्वास प्रश्वास, वाहिनी तथा शक्तिवाहिनी नालियां, फोड़े का छिद्र, छ क्षण का काल का मान, बन्दूक की नली; **नाड़ी चलना**-नाड़ी में फड़कन होना; **नाड़ी छूटना**-नाड़ी की फरकन बन्द होना, मृत्यु होना; **नाड़ी देखना**-कलाई की नाड़ियों पर हाथ की अँगुलियों को रखकर इसके स्पन्दन से रोग का अनुमान करना। **नाड़ीचक्र**-(सं०नपु०) हठयोग के अनुसार नाभि देश में स्थित एक अंडाकार गांठ जिससे निकलकर सब नाड़ियां शरीर भर में फैली हैं, **नाड़ीचरण**-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया; **नाड़ीजङ्घ**-(सं० पुं०) काक, कौवा; **नाड़ीदेह**-(सं०वि०) बहुत दुबला पतला (पुं०) शिव का एक द्वारपाल, भृङ्गी; **नाड़ी मण्डल**-(सं० पुं०) विषुवद् रेखा; **नाड़ी यन्त्र**-(सं०नपुं०) शस्त्र चिकित्सा का एक प्राचीन अस्त्र; **नाड़ी वलय**-(सं०नपुं०) समय निश्चित करने का एक प्राचीन यन्त्र, एक प्रकार की घड़ी; **नाड़ी व्रण**-(सं० पुं०) वह घाव जिसके भीतर ही भीतर नली की तरह छेद हो जाय और इसमें से बराबर पीब निकला करे; **नाडी शुद्धि**-(सं०स्त्री०) हठयोग के अनुसार नाड़ी शोधन की एक विधि।

नाणक-(सं०पुं०) मुद्रा, धातु; **नाणक परीक्षा**-धातु परीक्षा।

नात-(हिं० पु०) नातेदार, सम्बन्धी, सम्बन्ध, नाता।

नातरु-(हिं०अव्य०) अन्यथा नहीं तो।

नाता-(हिं०पुं०)ज्ञाति सम्बन्ध, कुटुम्ब की घनिष्ठता, सम्बन्ध, लगाव।

नातिदीर्घ-(सं० वि०) जो अधिक लंबा न हो।

नातिन-(हिं॰स्त्री॰) लड़की की लड़की ।
नातिशीतोष्ण-(सं॰वि॰) जो अधिक गरम या ठंढा न हो, गुनगुना ।
नाती-(हिं॰पु॰) बेटी का बेटा ।
नाते-(हिं॰क्रि॰वि॰) सम्बन्ध से, वास्ते, लिये; **नातेदार**-(हिं॰वि॰) संबंधी ।
नाथ-(सं॰पुं॰) अधिपति, प्रभु, स्वामी, मालिक, पति, बैल, भैंसा आदि की नाक छेदकर उसमें बंधी हुई रस्सी, सांप पालने वाला मदारी (स्त्री॰) लड़ी के रूप में जोड़ने की क्रिया, नत्थी, पशूओं की नकेल नाथने की क्रिया या भाव; **नाथता**-(हिं॰स्त्री॰) प्रभुता, स्वामित्व; **नाथत्व**-(सं॰नपुं॰) प्रभुता, प्रभुत्व ।
नाथना-(हिं॰ क्रि॰) बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उसमें रस्सी डालना, नाक छेदना, नकेल लगाना, किसी वस्तु को छेदकर उसमें तागा या रस्सी डालना, नत्थी करना, लड़ी के रूप में जोड़ना ।
नाथद्वारा (सं॰पु॰) उदयपुर राज्य के अन्तर्गत एक नगर जहां वल्लभ संप्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध मन्दिर है जिसमें श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापित है ।
नाथविद-(सं॰वि॰) शरण देने वाला ।
नाथहरि-(सं॰ पु॰) पशु, चौपाया ।
नाद-(सं॰ पुं॰) शब्द, अनुस्वार के समान उच्चारित होने वाला वर्ण, ब्रह्म स्वरूप घोष विशेष, अर्धचन्द्र, संगीत के अनुसार वह शब्द जो नाभि के ऊर्ध्व देश से उच्चारित होकर मुख से निकलता है, वर्णो के उच्चारण का एक प्रयत्न जिसमें कण्ठ को बिना बहुत फैलाये या सिकोड़े वायु निकालना पड़ता है, एक ऋषि का नाम, संगीत; **नादज**-(सं॰ वि॰) वह जो नाद से उत्पन्न हो; **नादना**-(सं॰ स्त्री॰) शब्द का गुण; **नादना**-(हिं॰ क्रि॰) शब्द करना, बजना, चिल्लाना, गरजना, प्रसन्न होना, **नादपुराण**-(सं॰ नपुं॰) एक उपपुराण का नाम; **नादमुद्रा**-(सं॰नपुं॰) तन्त्रोक्त एक मुद्रा जिसमें दहिने हाथ की मुट्ठी को बन्द करके अंगूठा ऊपर को उठाया रहना है; **नाद विद्या**-(सं॰ स्त्री॰) संगीत शास्त्र ।
नादित-(सं॰ वि॰) शब्द करता हुआ, बजता हुआ ।
नादिया-(हिं॰ पु॰) नादी, वह विशेष अंग वाला बैल जिसको साथ लेकर साधु भीख माँगते हैं ।
नादी-(हिं॰ वि॰) शब्द करने वाला, बजने वाला ।
नादेय-(सं॰ नपुं॰) सेंधा नमक, (वि॰) नदी में होने वाला, नदी-सम्बन्धी ।
नादेयी-(सं॰ स्त्री॰) नारंगी, अड़हुल, नागरमोथा, रेंड़ी का वृक्ष, बैजयन्ती ।
नादेहंद-(हिं॰वि॰) जो ऋण न चुका सके ।
नाद्य-(सं॰ वि॰) नदी में होने वाला ।
नाधन-(हिं॰ स्त्री॰) चरखे के तकले में तागा रोकने के लिए लगाई हुई गोल टिकिया । **नाधना**-(हिं॰ स्त्री॰) बैल या घोड़े को रस्सी आदि से उस वस्तु में बांधना जिसको उन्हें खींचकर ले जाना हो, जोतना, जोड़ना, सम्बन्ध करना, गूंथना गुहना, आरम्भ करना, शुरू करना ।
नाधा-(हिं॰ पु॰) वह रस्सी जिससे हल या कोल्हू की हरीस जुए से बाँधी जाती है, नारी, वह नाली जिसमे से होकर कुवें का पानी सिंचाई के लिये चलता है ।
नानक, गुरुनानक-सिक्खों के धर्म प्रवर्तक प्रसिद्ध गुरु; **नानकपंथी**-(हिं॰ पु॰) गुरु नानक के धर्म का अनुयायी, सिक्ख ।
नानकशाही-नानक पंथियों के अन्तर्गत एक सन्यासी सम्प्रदाय. सिक्ख ।
नानकीन-हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का मटमैले रंग का सूती कपड़ा जो पहिले चीन में बनता था ।
नानस-हिं॰ स्त्री॰) सास की माता ।
नानसरा-(हिं॰ पु॰) पति या स्त्री का नानी ।
नाना-(सं॰ अव्य॰) अनेक प्रकार के बहुत तरह के, अनेक, बहुत ।
नाना-(हिं॰ पुं॰) माता का पिता, मातामह, माँ का बाप, (क्रि॰) नीचा करना, प्रविष्टकरना फेंकना, घुसाना;
नानाकन्द-(सं॰ पुं॰) पिण्डालू ।
नानात्मवादी-(सं॰ पु॰) साख्य दर्शन का वह सिद्धान्त जो आत्मा को अनेक मानता है ।
नानान्द्र-(सं॰ पुं॰) ननद की सन्तति ।
नानाप्रकार-(सं॰ वि॰) बहुविध, अनेक प्रकार से; **नानारूप**-(सं॰ नपुं॰) विविध प्रकार की आकृति; **नानार्थ**-(सं॰ वि॰) वह शब्द जिसके एक से अधिक अर्थ हों; **नानावर्ण**-(सं॰वि॰) जिसमे कई एक रंग हों; **नानाविध**-(सं॰ वि॰) अनेक प्रकार या तरहसे ।
नानाशब्द संग्रह-(सं॰ पुं॰) अनेक शब्दों का संग्रह, शब्द कोष; **नानाशस्त्र**-(सं॰ पुं॰) अनेक प्रकार के शस्त्र;
नानाशास्त्र-(सं॰नपु॰) अनेक प्रकार की विद्या; **नानाशास्त्रज्ञ**-(सं॰ पुं॰) वह जो अनेक शास्त्रों का पण्डित हो ।
ननिहाल-(हिं॰ पुं॰) नाना नानी के रहने का घर । **नानी**-(हिं॰ स्त्री॰) माता की माता, मातामही ।
नानुकर-(हिं॰ पुं॰) अस्वीकार, नहीं ।
नान्तरीयक-(सं॰ नपुं॰) अवश्य होने वाला, होनहार ।
नान्त्र-(सं॰ नपुं॰) स्तोत्र ।
नान्दन-(सं॰नपुं॰) अमरावती का एक बगीचा ।
नान्दिक-सं॰ पु॰) तोरण, द्वार पर का मांगलिक चिह्न ।
नान्दिकर-(सं॰पुं॰) नाटक का सूत्रधार, वह जो नाटक से नान्दी पाठ करता है ।
नान्दी-(सं॰ स्त्री॰) अभ्युदय, नाटक का मंगलाचरण; **नान्दीक**-(सं॰पुं॰) तोरण स्तम्भ, नान्दी मुख श्राद्ध; **नान्दीकर**-(सं॰पुं॰) देखो नान्दिकर; **नान्दीघोष**-(सं॰ पुं॰) दुन्दुभी आदि का शब्द; **नान्दीपट**-(सं॰ पुं॰) कुवें पर रखने का ढपना; **नान्दीमुख**-(सं॰ पुं॰) देखो नान्दीपट, वृद्धिश्राद्ध भोजी, पितृगण यथा पिता, पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह, और वृद्ध प्रमातामह; **नान्दीवादी**-(सं॰वि॰) दुन्दुभि बजाने वाला; **नान्दी श्राद्ध**-(सं॰ नपुं॰) नान्दीमुख श्राद्ध ।
नान्ह-(हिं॰ वि॰) क्षुद्र, छोटा, महीन, पतला । **नान्ह कातना**-बड़ा कठिन काम करना ।
नान्हक-(हिं॰ पुं॰) देखो नानक ।
नान्हरिया-(हिं॰ वि॰) क्षुद्र, छोटा ।
नान्हा-(हिं॰ वि॰) नन्हा, छोटा ।
नाप-(हिं॰स्त्री॰) किसी वस्तु का विस्तार जिसका निर्धारण किसी स्थिर परिमाण से किया जाय, परिमाण, माप, किसी निर्दिष्ट लम्बाई को एक मानकर यह स्थिर करना कि अमुक वस्तु का विस्तार कितना है, मानदण्ड, नापना; **नाप जोख**-(हिं॰स्त्री॰) नापने या तौलने की क्रिया परिमाण या तौल जो नाप कर या तौल कर स्थिर की जावे । **नाप तौल**-(हिं॰ स्त्री॰) देखो नाप जोख । **नापना**-(हिं॰ क्रि॰) किसी वस्तु का विस्तार इस प्रकार नियत करना कि वह अमुक विस्तार का कितना गुना है, अनुमान करना, पतालगाना, मापना; **सिर नापना**-सिर काट लेना ।
नापित-(सं॰ पुं॰) नाई, नाऊ; **नापित शाला**-वह स्थान जहां क्षौरकर्म किया जाता है ।
नाभ-(सं॰ स्त्री॰) चन्द्रमा का प्रकाश; (हिं॰ स्त्री॰) नाभि, ढोंढी, धुन्नी, शिव का एक नाम, अस्त्रों का संहार (पुं॰) सूर्य वंश के एक राजा का नाम ।
नाभक-(सं॰ नपुं॰) हरीतकी, हर्रे ।
नाभस-(सं॰ पुं॰) फलित ज्योतिष का एक योग; **नाभादास**-भक्तमाल के रचयिता एक प्रसिद्ध वैष्णव कवि ।
नाभाक-(सं॰पुं॰) एक ऋषि का नाम ।
नाभाग-(सं॰ पुं॰) वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम ।
नाभारत-(हिं॰ स्त्री॰) घोड़े की नाभि के नीचे की एक भौंरी ।
नाभि-(सं॰ पुं॰) चक्रमध्य, पहिये का बिचला भाग, क्षत्रिय, गोत्र, व्यक्ति, महादेव, (स्त्री॰) ढोंढी, धुन्नी, तुण्डी, कस्तूरी; **नाभिकण्टक**-(सं॰ पुं॰) निकली हुई ढोंढी; **नाभिगुप्त**-(सं॰पुं॰) प्रियव्रत राजा का पौत्र; **नाभिगोलक**-(सं॰पु॰) नाभि का उभड़ा हुआ भाग;
नाभिच्छेदन-(सं॰पुं॰) नवजात शिशु की नाल काटने की क्रिया; **नाभिज**-(सं॰ पुं॰) चतुर्मुख ब्रह्मा जिनकी उत्पत्ति ब्रह्मा की नाभि से है;
नाभिनाल-(सं॰स्त्री॰) नाभि में स्थित नाल; **नाभिपाक**-(सं॰ पुं॰) बच्चों का ढोंढी पकने का एक रोग; **नाभिभू**-(सं॰ पुं॰) ब्रह्मा; **नाभिल**-(सं॰ वि॰) उभड़ी हुई नाभि वाला; **नाभिशोथ**-(सं॰ पुं॰) बालकों की नाभि सूजने का एक रोग; **नाभि सम्बन्ध**-(सं॰पुं॰) गोत्र सम्बन्ध ।
नाभी-(सं॰ स्त्री॰) देखो नाभि ।
नाभील-(सं॰ नपुं॰) स्त्रियों के कमर के नीचे का भाग, तोंदी का उभड़ा हुआ भाग ।
नाभ्य-(सं॰वि॰) नाभि सम्बन्धी, (पु॰) शिव, महादेव ।
नाम-(सं॰ अव्य॰) संभावना, क्रोध, विस्मय, स्मरण विकल्प आदि अर्थ में प्रयोग होता है विभक्ति हीन शब्द; (हिं॰ पु॰) वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु या समूह का बोध हो; संज्ञा, प्रसिद्धि, अच्छा नाम, सुनाम; **नाम उछालना**-दुर्नाम या अपयश करना; **नाम उठ जाना**-नाम तक हट जाना; **नाम करना**-थोड़ा ही सा करना; **नाम का**-नामधारी; केवल नाम के लिए **नाम को**-थोड़ा सा; **नाम चढ़ना**-नामावली में नाम का लिखा जाना; **नामचलना**-नामकी यादगार बनी रहना; **नाम जपना**-किसी देवता का बारंबार नाम लेना; **नाम धरना**-कलंकित करना; **नाम धराना**-दुर्नाम करना; **नाम न लेना**-दूर रहना; **नाम निकल जाना**-किसी बात के लिये प्रसिद्ध या कलंकित होना; **किसी के नाम पर**-किसीके निमित्त; **किसी के नाम पड़ना**-किसी के भरोसे रक्खा जाना; **किसी के नाम पर मरना**-किसी के प्रेम में लिप्त होना; **किसीके नाम पर बैठना**-किसी के भरोसे रहना; **नाम बद करना**-अपयश करना; **नाम बाकी रहना**-मरने पर सिवाय नाम के कुछ न रह जाना; **नाम बिकना**-प्रसिद्ध होना; **नाम मिटना**-कीर्ति का लोप होना; **नाम मात्र**-बहुत अल्प परिमाण का; **नाम रखना**-नामकरण करना; **नाम लगाना**-अपराध में सम्मिलित करना. अपराधी ठहराना; **किसीके नाम लिखना**-किसीके वास्ते लिखना; **किसी का नाम लेकर**-किसीके नाम के प्रभाव पर; **नाम लेना**-कहना, उच्चारण करना, प्रशंसा करना; **नामोनिशान**-पता; **नाम से**-किसी शब्द के व्यवहार से संबंध से, प्रगट करते हुए **किसीके नाम से कांपना**-नाम सुनते ही डर जाना; **नाम होना**-प्रसिद्ध

होना, किसी अपराध का दोष लगाना; **नाम कमाना**-प्रसिद्ध होना; **नाम को मरना**-यश प्राप्त करने का उद्योग करना; **नाम जगाना**-यश फैलाना; **नाम डुबाना**-यश का नाश करना; **नाम डूबना**-अपमानित होना; **नाम पर धब्बा लगना**-अपमान प्राप्त करना, **नाम पाना**-प्रसिद्ध होना; **नाम रह जाना**-कीर्ति बनी रहना।

नामक-(सं०वि०) नाम से प्रसिद्ध, नाम धारण करने वाला।

नामकरण-(सं० नपुं०) हिन्दुओं के दस संस्कारों में से एक संस्कार जिसमें बालक का नाम रक्खा जाता है, नाम रखने का काम। **नामकर्म**-(सं०पुं०) नामकरण संस्कार; **नामकीर्तन**-(सं०पुं०) ईश्वर के नाम का जप, भगवत् का भजन; **नामग्राम**-(सं०पुं०) नाम और पता; **नाम ग्राह**-(सं०पुं०) नाम ग्रहण।

नामदेव-(सं० पुं०) एक देवभक्त जो नामदेव के दौहित्र थे, इनकी कथा भक्तमाल में लिखी है।

नामधन-(सं०पुं०) एक संकर राग का नाम।

नाम धराई-(हिं० स्त्री०) अपकीर्ति, निन्दा, **नामधाम**-(हिं० पुं०) पता ठिकाना; **नामधारक**-(स०वि०) किसी नाम को धारण करने वाला, नाम मात्र का। **नामधारी**-(हिं०वि०) नाम वाला, नामक; **नामधेय**-(सं०नपुं०) नामकरण, नाम का, नाम वाला।

नामन्-(सं० नपुं०) संज्ञा, आख्या, आह्वान।

नामनामिक-(सं०पुं०) परमेश्वर।

नामनिक्षेप-(सं०पुं०) नामस्मरण।

नामबोला-(हिं०वि०) नाम लेने वाला, जपने वाला।

नाममात्र-(सं०वि०) संज्ञा मात्र धारी।

नाममाला-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का कोष।

नाममुद्रा-(सं०स्त्री०) अगूठी पर खोदा हुआ नाम, नामाङ्कित मुद्रा।

नामयज्ञ-(सं०पुं०) यह यज्ञ जो केवल नाम के लिये किया जाता है।

नामरूप-(सं०पुं०) जिसका केवल नाम मात्र अस्तित्व इन्द्रियों से ज्ञात न हो।

नाम लेवा-(हिं०पुं०) नाम लेने वाला, उत्तराधिकारी, सन्तति।

नामशेष-(सं० वि०) मृत, मरा हुआ, जिसका केवल नाममात्र बच गया हो।

नामा-(हिं०वि०) नामधारी, नाम वाला, (पुं०) नामदेव भक्त।

नामाङ्कित-(स०वि०) नाम के अक्षर द्वारा अंकित।

नामापराध-(सं० पुं०) बड़ों की वचन द्वारा नाम लेकर निन्दा।

नामावली-(सं०स्त्री०) नामों की सूची. वह कपड़ा जिसपर चारो ओर किसी देवता का नाम छपा हो, रामनामी।

नामिक-(सं० वि०) नाम सम्बन्धी।

नामित-(सं०वि०) झुकाया हुआ।

नामी-(हिं०वि०) नामवाला, नामधारी, प्रसिद्ध, **नामी गिरामी**-विख्यात, प्रसिद्ध।

नाम्ना-(सं०वि०) नाम वाला, नामधारी

नाम्य-(सं०वि०) झुकाने योग्य।

नायँ-(हि० पु०) देखो नाम, (अव्य०) नहीं।

नाय-(सं०पुं०) नय, नीति, युक्ति, नेता, अगुआ। **नायक**-(सं० पुं०) नेता, अगुआ, श्रेष्ठ पुरुष, माला के बीच का नग, सुमिरनी, सरदार, स्वामी, सेनापति, वह प्रधान पुरुष जिसका चरित्र किसी नाटक या काव्य में वर्णन किया जावे, संगीत विद्या में निपुण मनुष्य, कलावन्त, एक वर्णवृत का नाम, एक रोग का नाम; **नायका**-(हिं० स्त्री०) वेश्या की माँ, कुटनी, दूती, देखो नायिका; **नायकाधिप**-(सं०पु०) नृप, राजा; **नायकी**-(स०स्त्री०) एक राग का नाम; **नायकी कान्हड़ा**-एक राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते है; **नायकी मल्लार**-सम्पूर्ण जाति का एक राग।

नायडू-कोचीन के उत्तर भाग में रहने वाली एक उत्कृष्ट जाति।

नायत-(हिं०पुं०) चिकित्सक, वैद्य।

नायन-(हिं० स्त्री०) नापित की स्त्री।

नायर-(हिं०पुं०) बड़ी नाव।

नायिका-(सं०स्त्री०) दुर्गाशक्ति, श्रृंगार रस का अवलंबन करने वाली सुन्दर स्त्री, वह स्त्री जिसके चरित्र का वर्णन किसी काव्य या नाटक में किया गया हो।

नार-(सं०स्त्री०) नर समूह तुरत का जनमा हुआ गाय का बछवा, जल, पानी, सोंठ, (वि०) मनुष्य सबधी, परमात्मा सम्बन्धी।

नार-(हिं०स्त्री०) गरदन, गला, जुलाहे की ढरकी, नाला, मोटा रस्सा, नारा, जुआ बांधनें की रस्सी, पशुओं का समूह जो चरने के लिए जाता हो; **नार नवाना या नीचा करना**-सिर झुकाना, लज्जावश सामने न ताकना।

नारक-(सं०पुं०) नरक में रहने वाला जीव; **नारकी**-(सं०वि०)नरक भोगी, नरक में जाने योग्य कर्म करने वाला, पातकी।

नारकीट-(सं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, वह अधम पुरुष जो दूसरे को आशा देकर निराश करता हो।

नारकेर-(सं०नपुं०) नारिकेल, नारियल

नारंग-(सं० नपु०) नारगी, गाजर, यमज प्राणी। **नारङ्गी**-(हिं०स्त्री०) नीबू की जाति का एक वृक्ष जिसमें मीठे रसदार सुगन्धित फल लगते हैं, नारङ्गी के छिलके के समान पीलापन लिये हुए लाल रंग, (वि०) ऐसे रंग का।

नारद-(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र थे, वह बड़े हरिभक्त और कलह प्रिय थे, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, एक प्रजापति का नाम, एक गन्धर्व का नाम, झगड़ा लगाने वाला मनुष्य। **नारद-पुराण**-(सं०नपु०) अठारह महापुराणों में से एक जिसको महामुनि वेदव्यास ने रचा था, इसमें नाना प्रकार की धर्म कथा वर्णन की हुई हैं, बृहन्नारदीय नामक एक उपपुराण का नाम; **नारदसंहिता**-(सं० स्त्री०) एक धर्मशास्त्र का नाम।

नारदा-(सं०स्त्री०) ऊख की जड़।

नारदीय-(सं० वि०) नारद संबंधी, नारद का।

नारना-(हि०क्रि०) थाह लगाना, पता लगाना।

नारबेवार-(हिं० पुं०) नाल, खेड़ी, आदि।

नारसिंह-(सं० नपु०) एक उपपुराण जिसमें नृसिंह के अवतार की कथा का वर्णन है, तन्त्र का नाम (वि०) नृसिंह भगवान् सम्बन्धी; **नारसिंही**-(हिं०वि०) नरसिंह संबधी।

नारा-(सं०स्त्री०) जल, पानी, (हिं०पुं०) सूत की डोरी जिससे स्त्रियां घाघरा बांधती हैं, नीवी, हल के जुए में बांधने की रस्सी बरसाती पानी बहने की नाली, छोटी नदी, लाल या पीला रंगा हुआ सूत जो देवताओं को चढाया जाता है, मौली, देखो नाला।

नाराच-(सं०पुं०) लोहे का बना हुआ बाण दुर्दिन, ऐसा दिन जिसमे बादल हों और अंधड़ चले, एक वर्णवृत्त का नाम जिसको तारका या महामालिनी भी कहते हैं, चौबीस मात्राओं का एक छन्द। **नाराचिका**-(सं०स्त्री०) सोनारों का सोना चाँदी तौलने का कांटा, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ आठ अक्षर होते हैं। **नाराची**-(सं०स्त्री०) रत्न तौलने का छोटा काँटा।

नारायण-(सं०पु०) परमात्मा, विष्णु, ईश्वर, दुर्योधन की एक सेना का नाम, कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद्, एक अस्त्र का नाम; **नारायणप्रिय**-(सं० पुं०) शिव, महादेव, पीला चन्दन; **नारायणबलि**-(सं०पुं०) वह कर्म जो पापियों के मरने पर प्रायश्चित्त रूपमें किया जाता है।

नारायणास्त्र-(सं० नपुं०) विष्णु के चार अस्त्र यथा शंख, चक्र, गदा और खड्ग।

नारायणी-(सं० स्त्री०) दुर्गा, लक्ष्मी, गंगा, सतावर, मंगल मुनि की स्त्री का नाम, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, श्रीकृष्ण की उस सेना का नाम जिसको उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिये दिया था। **नारायणीय**-(सं०वि०) नारायण सम्बन्धी।

नाराशंस-(सं०पुं०) पितरों को सोमपान अर्पण करने का चमचा, वेदों के वे मन्त्र जिनमें विशेष मनुष्य आदिकी प्रशंसा की गई है, प्रशस्ति, पितर (वि०) स्तुति संबन्धी; (स्त्री०) मनुष्यों की प्रशंसा।

नारि-(हिं०स्त्री०) देखो नारी।

नारिक-(सं० वि०) जल संबंधी, आत्मा संबन्धी।

नारिकेर, नारिकेल-(सं०पुं०)नारियल। **नारिकेलोदक**-(सं०नपुं०)नारियल का पानी। **नारियल**-(हिं०पुं०) खजूर की जाति का एक वृक्ष जो खम्भे की तरह पचास साठ गज ऊंचा होता है इसके फलोंपर बहुत रेशेदार छिलका होता है फल के भीतर की सफेद गरी खाने में मीठी होती है, नारियल के फल का बना हुआ हुक्का। **नारियली**-(हिं०स्त्री०) नारियल की खोपड़ी, नारियल का हुक्का, नारियल की ताड़ी।

नारी-(सं०स्त्री०) अबला, वामा, स्त्री, देखो नाड़ी, नाली।

नारीच-(सं०नपुं०) एक प्रकारका शाक

नारीतरंगक-(सं० पुं०) व्यभिचारी मनुष्य, स्त्रियों के चित्त को चंचल करने वाला मनुष्य।

नारीदूषण-(स०नपुं०) स्त्रियों के छ दोषणीय कार्य यथा-सुरापान, दुर्जन संसर्ग, पतिविरह, भ्रमण, अन्य गृह में वास, अधिक सोना।

नारीयान-(सं०नपुं०)स्त्रियोंकी सवारी

नारीष्ट-(सं०वि०) जो स्त्रियों को प्रिय हो; (स्त्री०) मल्लिका, चमेली।

नारीष्ठ-(सं०स्त्री०)एक गन्धर्व का नाम

नारुन्तुद-(सं०वि०) जिसकी शरीर पर किसी प्रकारका आघात न लग सके।

नारू-(हिं०पुं०) जूं, ढील; नाहरुआ नामक रोग।

नार्तिक-(स०वि०) खूब नाचनेवाला।

नार्पत्य-(सं०वि०)नृपति या राजा संबंधी

नार्मत-(सं०पुं०) पूर्व पुरुष के नाम से उत्पन्न।

नार्मद-(स०पुं०) वह शिवलिंग जो नर्मदा नदी में पाया जाता है।

नार्मर-(सं०पुं०) एक असुर का नाम जिसको इन्द्र ने मारा था।

नार्मिन्-(सं०वि०) सहजमें झुकनेवाला, कोमल।

नार्यङ्ग-(सं०पुं०)नारंगी, स्त्रीका अङ्ग।

नार्यतिक्त-(सं०पुं०) चिरायता।

नाल-(सं०पुं०) कमल दण्ड, कमल, कुमुद आदि के फूलोंकी पोली लम्बी डण्डी, पौधे का डण्ठल, (नपुं०) हरताल, लिंग, (पुं०) जल बहने का स्थान, गर्भस्थ बालक की नाभि से

मिली हुई मज्जातन्तु की बनी हुई रक्त की नली, वह रेशा जो कलम बनाती समय छीलने पर निकलता है, सोनारों की फुंकनी, जोलाहों की सूत लपेटने की छुच्छी, बन्दूक की नली, गेंहू जौ आदि की पतली लम्बी डण्डी जिसमें बाल लगती है, नली, नाली, एक प्रकार का पहाड़ी बांस, जल में उगनेवाला एक पौधा।

नाल कटाई-(हिं०स्त्री०) नवजात शिशु की नाल काटने की क्रिया; इस काम का शुल्क।

नालक-(सं०पुं०) उड़द।

नालकी-(हिं०स्त्री०) धन्वाकार छाजन की दोनों ओर से खुली हुई पालकी जिसपर ब्याह के समय दुलहा बैठकर जाता है।

नालबाँस-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी बाँस।

नालम्बी-(सं०स्त्री०) महादेव जी की वीणा का नाम।

नालवंश-(सं०पुं०) नरसल, नरकट।

नालशाक-(सं०स्त्री०) एकप्रकारका साग

नाला-(हिं०पुं०) वर्षा का जल बहने की चौड़ी नाली, जलप्रणाली, जल-प्रवाह, ऐसे मार्ग से बहने वाला जल, रंगीन गंडेदार सूत।

नालि-(सं०स्त्री०)कमलकी डंडी, नाड़ी, शिरा; **नालिक**-(सं०पु०) भैंसा, कमल, एक प्रकार का शस्त्र, एक प्रकार का शाक; **नालिका**-(सं० स्त्री०) छोटा डंठल, नाली, जुलाहों की सूत लपेटने की छुच्छी, एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य; **नालिकेर**-(सं०पु०) नारियल; **नालिकेरी**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का शाक; **नालिजङ्घ**-(सं०पुं०)डोमकौवा

नालिनी-(सं०स्त्री०) नाकका एक छेद।

नाली-(सं०स्त्री०) करेमू का साग,पद्म, कमल, घटीयन्त्र, घड़ी, नाड़ी,धमनी, मनःशिला; (हिं० स्त्री०) जल बहने का पतला मार्ग, मोरी, पनाला, तलवार के बीचोबीच की लंबे बल की लकीर, घोड़े के पीठ पर का गड्ढा, चौपायों को दवा पिलाने का ढरका।

नालीक-(सं०पु०) शर, बाण, पद्म समूह, मृडाल, की डंडी।

नालीघटी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की घड़ी जिससे दण्ड आदि का पता लग जाता है।

नालीय-(सं०पुं०) कदम्ब का वृक्ष।

नालीव्रण-(सं०पुं०) नाड़ीव्रण, नासूर।

नालुक-(सं० पुं०) एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

नालौट-(हिं०वि०) अपनी प्रतिज्ञा भंग करने वाला,कहकर मुकर जानेवाला

नावँ-(हिं०पुं०) देखो नाम।

नाव-(हिं०स्त्री०) जल के ऊपर तैरने वाली लोहे लकड़ी आदि की बनी हुई सवारी, जलयान।

नावक-(हिं०पुं०) मल्लाह, माँझी, केवट।

नावघाट-(हिं०पुं०) नावों के ठहरने का घाट।

नावना-(हिं०क्रि०) झुकना, नवाना, झुकाना, घुसाना, फेंकना, गिराना, डालना, प्रविष्ट करना।

नावमिक-(सं०वि०) नव संख्यायुक्त, जिस संख्या में ९ हो।

नावर-(हिं०पुं०) नाव, नौका, नाव को जल में लेजाकर चक्कर देने की क्रीडा

नावरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी बड़ी पुष्ट होती है।

नावाँ-(हिं०पु) वह द्रव्यजो किसी के नाम लिखा गया हो।

नाविक-(सं०पु०) कर्णधार, मल्लाह, मांझी; **नाविक-विद्या**-(सं० स्त्री०) जहाज चलाने की विद्या। **नावी**-(सं०स्त्री०) नौका, जहाज आदि जल पर चलने वाली सवारी।

नावोपजीवी (सं०पुं०)वह जो जहाज आदि चला कर अपनी जीविका चलाता है।

नाव्य-(सं०वि०) जो नाव के बिना पार नहीं किया जा सकता (पुं०)नयापन, युवावस्था।

नाव्युदक-(स० नपुं०) नाव में जमा हुआ पानी।

नाश-(स०पु०) ध्वंस, अदर्शन,पलायन, भाग जाना। **नाशक**-(सं०वि०)ध्वंसक, नाश करने वाला, वध करने वाला, दूर करने वाला,न रहने देने वाला; **नाशकारी**-(हिं०वि०) देखो नाशक; **नाशन**-(सं०नपुं०) उच्छेदन, विलोपन

नाशना-(हिं०क्रि०)देखो नासना; **नाशपाती**-(स०स्त्री०) एक मझोले आकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ अमरूत की पत्ती के समान होती हैं इसका गोल फल कुरकुरा और खटमीठा होता है।

नाशयित्री-(स०स्त्री०)नाशकरनेवाली।

नाशवान्-(सं०वि०) नाश होने वाला, नश्वर, अनित्य।

नाशित-(सं०वि०) नाश किया हुआ।

नाशी-(सं०वि०) नाश होनेवाला नष्ट होनेवाला,नाशक, नाश करनेवाला।

नाशुक-(सं० वि०) ध्वंसशील नाश होने वाला।

नाश्य-(सं०वि०) नाश होने योग्य।

नास-(हिं०स्त्री०) नाक से सूंघी जाने वाली औषधि, सुंघनी।

नासत्य-(सं० पुं०) अश्विनीकुमार।

नासत्या-(सं०स्त्री०) अश्विनी नक्षत्र।

नासदान-(हिं० पु०) सुंघनी रखने की डिबिया।

नासना-(हिं० क्रि०) नष्ट करना, मार डालना।

नासा-(सं०स्त्री०) नासिका, नाक, नाक का छेद, नथना, अडूसे का पौधा, द्वार के ऊपर की लकड़ी, भरेटा।

नासाग्र-(सं०नपुं०)नाकका अगला भाग

नासाज्वर-(सं०पुं०)वह ज्वर जो नाक के भीतर फोड़ा होने से उत्पन्न होता है। **नसादारु**-(सं०नपुं०) द्वार के ऊपर लगी हुई लकड़ी, भरेटा।

नासानाह-(सं०पु०) एक प्रकार का नाक का रोग; **नासान्तिक**-(सं०वि०) नाक तक। **नासापाक**-(सं०पु०) नाक का एक रोग। **नासापुट**-(सं०पु०) नाक की झिल्ली, नथना। **नासावेध**-(सं०पु०) नाक का वह छेद जिसमें नथिया पहिनी जाती है। **नासारोग**-(सं०पुं०) नाक में होने वाला रोग।

नासालु-(सं०पु०) कायफल का वृक्ष।

नासावंश-(सं०पुं०) नाक का बाँसा।

नासाविवर-(सं०नपु०) नाक का छेद।

नासिक-बम्बई प्रान्त के अन्तर्गत एक जिले का नाम, इस जिले के एक प्रधान नगर का नाम; **नासिकन्धम**-(सं०वि०) नकिया कर बोलने वाला।

नासिका-(सं०स्त्री०) घ्राणेन्द्रिय, नाक, नासा; **नासिकाग्र**-(सं०नपुं०) नाक का अगला भाग; **नासिकामल**-(स० नपुं०) नाक का मल, नेटा; **नासिका-शब्द**-(स०पुं०) नाक से निकलने वाला शब्द; **नासिक्य**-(सं० नपुं०) नासिका, नाक, दक्षिण का एक देश, नासिक, अश्विनीकुमार, (वि०) नाक से उत्पन्न।

नासी-(हिं०वि०) देखो नाशी।

नासीर-(स०नपुं०) सेना नायक के आगे आगे जय शब्द करके चलने वाला सैन्यदल,(वि०) आगेचलनेवाला

नास्ति-(सं०अव्य) अविद्यमानता, नहीं; **नास्तिक**-(सं०पुं०) वह जो ईश्वर का अस्तित्व नहीं मानता, पाषण्ड, परलोक को न मानने वाला; **नास्तिकता**-(सं०स्त्री०) ईश्वर या परलोक न मानने की बुद्धि, ईश्वरमें अविश्वास; **नास्तिक्य**-(सं०नपु०) देखो नास्तिकता

नास्तिता-(सं०स्त्री०) नास्तित्व, अविद्यमानिता; **नास्तिद**-(सं०पुं०) आम्र वृक्ष, आम का पेड़; **नास्तिवाद**-(सं०पुं०) नास्तिकों का मत।

नास्य-(स० वि०) नासिका संबंधी, (नपुं०)बैल के नाक में बँधी हुई रस्सी

नाह-(सं०पुं०) बन्धन, किनारा (हिं०पुं०) नाथ; (सं०पुं०) नाभि, पहिये के मध्य का छिद्र।

नाहनूह-(हिं०स्त्री०) अस्वीकार, नहीं नहीं का शब्द।

नाहर-(हिं०पुं०) सिंह, शेर, व्याघ्र, बाघ, टेसू का फूल; **नाहरसाँस**-(हिं० पुं०) घोड़े का दम फूलने का रोग।

नाहरू-हिं०पुं०) नहरूवा नामक रोग।

नाहिनै-(हिं०अव्य०) नहीं है।

नाहीं-(हिं०अव्य०) नहीं।

नाहुष-(सं०पुं०) नहुष राजा के पुत्र

नि-(सं० अव्य०) एक उपसर्ग जिसके शब्द में लगने से निषेध, संशय, समीप, बन्धन, अन्तर्भाव, संघ, समूह, अधोभाव आदि अर्थ होते हैं; (हिं०पुं०) निषाद स्वर का सङ्केत।

निअर,निअरे-(हिं०क्रि०वि०) निकट, पास में (वि०) तुल्य, समान।

निअराना-(हिं०क्रि०) निकट जाना, समीप पहुँचना, पास आना।

निआउ-(हिं०पुं०) देखो न्याय।

निआन-(हिं०पुं०) अन्त, (अव्य०) अन्त में

निकंटक-(हिं०वि०) देखो निष्कण्टक।

निकंदन-(हि०पु०) नाश, ध्वंस।

निकंदना-हि०क्रि०) नाश करना।

नित्व-(हि०क्रि०वि०) देखो नित्य।

निंद-(हिं०वि०) देखो निन्द्य; **निंदना**-(हि०क्रि०) निन्दा करना, अपमानित करना; **निंदरना**-(हि०क्रि०) निन्दा करना।

निंदरिया-(हिं०स्त्री०) निद्रा, नींद।

निंदय, निंदित-देखो निन्दा, निन्दित।

निंद्य निंब-देखो निन्द्य निम्ब।

निदाई-(हिं०स्त्री०) खेत की घास, तृण आदि उखाड़ने का काम, निराने का शुल्क; **निंदाना**-(हि० क्रि०) देखो निराना; **निंदासा**-(हिं०वि०) जिसको नींद आती हो, उनींदा; **निंदिया**-(हि०स्त्री०) निद्रा, नींद।

निः-(सं०अव्य०) विहीन अर्थ का एक उपसर्ग। **निःकपट**-(हिं०वि०) देखो निष्कपट; **निःकाम**-(हिं०वि०) देखो निष्काम; **निःकारण**-(सं०वि०)कारण शून्य,अनिमित्त; **निःकासन**-(सं०नपु०) बहिष्कार, अपसरण; **निःकासित**-(सं०वि०) बहिष्कृत, निःसारित; **निःक्षत्र**-(सं०वि०) क्षत्रिय रहित स्थान; **निःक्षिप्त**-(सं०वि०) प्रक्षिप्त, फेंका हुआ; **निःक्षेप**-(सं०पुं०) अर्पण, विश्वास पूर्वक अपना द्रव्य दूसरे के पास रखना; **निःछल**-(सं०वि०) देखो निश्छल।

निःपक्ष-(सं०वि०) देखो निष्पक्ष;

निःपाप-(सं० वि०) देखो निष्पाप;

निःप्रभ-(स० वि०) ज्योति रहित;

निःप्रयोजन-(सं० वि०) व्यर्थ;

निःफल-(सं०वि०) देखो निष्फल;

निशङ्क-(सं०वि०) शंका रहित,निर्भय, निडर; **निःशब्द**-(सं०वि०)शब्द रहित, जहां शब्द न हो अथवा जो शब्द न करता हो; **निःशलाक**-(सं०वि०) निर्जन, सूनसान; **निःशल्या**-(सं०वि०) निष्कण्टक, बिना प्रतिबन्ध का; **निःशेष**-(सं०वि०) सम्पूर्ण, समूचा, पूरा, समाप्त, जिसका कोई अंश बच न गया हो; **निःशोषित**-(सं०वि०) जो समाप्त हो चुका हो **निःशोध्य**-(सं० वि०) शोधा हुआ; **निश्रयणी**, **निःश्रयिणी**-(सं०स्त्री०) काठ की सीढ़ी।

निःश्रेणि निःश्रेणी-(सं०स्त्री०) काठ की सीढ़ी, खजूर का वृक्ष; **निःश्रेयस**-(सं०नपुं०) मुक्ति, मोक्ष, मंगल कल्याण, भक्ति,(पुं०) शिव, महादेव।

निःश्वास-(सं०पुं०) प्राण वायु व नाक या मुख से निकलना, नाक निकली हुई वायु, साँस; **निःषभ**

(सं०अव्य०) निन्दा, शोक, चिन्ता;

निःषन्धि-(सं०वि०) जिसमें सन्धि या छेद न हो,कसा हुआ, दृढ; **निःसंकोच** (सं०क्रि०वि०) बिना संकोच के, बेधड़क; **निःसंशय**-(सं०वि०) जिसमें सन्देह न हो; **निःसङ्कल्प** (सं०वि०) इच्छा रहित;**निःसङ्कोच**-(हिं०क्रि०वि०) देखो निःसकोच; **निःसङ्ग**-(सं०वि०) बिना मेल का,जिसमें अपना कुछ अर्थ न हो, निर्लिप्त; **निःसन्देह**-(सं० वि०) जिसमें सन्देह न हो, (क्रि०वि०) बिना सन्देह के, **निःसत्व**-(सं०वि०) जिसमें तत्व या सार न हो; **निःसन्तान**-(सं०वि०) जिसके संतान न हो: **निःसंशय**-(सं०वि०) बिना सन्देह का;**निःसन्धि**-(सं०वि०) जिसमें सन्धि या दरार न हो, सन्धि रहित, कसा या गठा हुआ; **निःसम्पात**-(सं०पुं०) रात्रि, रात (वि०) जिसमें से जाना आना न हो सके;**निःसरण**-(सं०पु०) मृत्यु, मरण, निर्वाण निर्गम, निकास, निकलने का मार्ग; **निःसार**-(सं०वि०) घर में से निकलने का पथ द्वार या मार्ग; **निःसारा**-(सं०स्त्री०) कदली वृक्ष, केले का पेड़; **निःसारित**-(सं०वि०) बाहर निकाला हुआ

निःसीम-(सं०वि०) बहुत बड़ा या अधिक, सीमा रहित; **निसृत**-(सं०वि०) निकाला हुआ; **निःस्नेह**-रसहीन, प्रेमरहित, जिसमें चिकनाहट न हो, घृत या तैल से रहित; **निःस्नेहा**-(सं०वि०) अनुराग रहित, जिसमें प्रेम न हो; **निःस्पन्द**-(सं०वि०) निश्चल, जो हिलता डोलता न हो; **निःस्पृह**-(सं० वि०) आशाशून्य, इच्छारहित निर्लोभ; **निःस्यन्द**-(सं०पुं०) निकास, स्राव; **निःस्रव**-(सं०पुं०) निर्गमन, निकास; **निःस्राव**-(सं०पुं०) क्षरण, निकाल, व्यय; **निःस्व**-(सं० वि०) धनहीन, दरिद्र, कंगाल; **निःस्वार्थ**-(सं० वि०) जो अपना आशय निकलता न हो। जो वह अपना अर्थ न साधता हो।

निकट-(सं०वि०) समीप का, पास का, (क्रि०वि०) पास, सन्निकट; **किसी के निकट**-किसी की समझ में;**निकटता**-(सं०स्त्री०) समीपता; **निकटपना**-(हिं० पुं०) समीपता; **निकटवर्ती**-(सं०वि०) निकट का, समीप का; **निकटस्थ**-(सं०वि०) पास का, समीप का; **निकटसंबंधी**-(सं० वि०) निकट का सम्बन्धी।

निकटागत-(सं०वि०) जो पास मे आ गया हो। **निकटागमन**-(सं० नपुं०) समीप में आना।

निकन्दन-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश।

निकती-(हिं०स्त्री०) छोटा तराजू या काँटा।

निकम्वरोग-(सं०पुं०)योनि का एक रोग

निकम्मा-(हिं०वि०) जो कोई व्यवसाय न करता हो, जिससे कुछ काम करते न बने, जो किसी काम में न आ सके, बुरा।

निकर-(सं०पुं०) समूह, झुंड, राशि, ढेर, निधि, धन।

निकरना-(हिं०क्रि०) निकलना।

निकर्तन-(सं०नपुं०) काटने की क्रिया।

निकर्मा-(हिं०वि०) जो काम धंधा न करता हो, आलसी।

निकर्षण-(सं० नपुं०) घर के बाहर का मैदान, समीपस्थता।

निकलंक-(हिं०वि०) निर्दोष।

निकलंकी-(हिं०पुं०) विष्णु का दसवां अवतार, कल्कि अवतार।

निकलना-(हिं०क्रि०) भीतर से बाहर आना, किसी मिली हुई वस्तु का अलग होना जाना, अतिक्रमण करना, पार जाना, व्यतीत होना, घोड़े आदि का सवारी लेकर चलने योग्य बनाया जाना, प्रकाशित होना, हिसाब करने पर कुछ धन बाकी देने का होना, प्राप्त होना, अलग होना, उचड़ना, हटना, मिटना, दूर होना, अलग हो जाना, शरीर पर उत्पन्न होना, मुक्त होना, छूटना, नई बात का अलग होना, उत्तीर्ण होना, खुलना, पृथक् होना, उदय होना, निश्चित होना, ठहराया जाना, किसी ओर उभड़ा होना, ऊपस्थित होना, देख पड़ना, किसी प्रश्न का ठीक उत्तर प्राप्त होना, फैलाव होना, जारी होना, प्रचलित होना, कहकर अस्वीकार करना, प्रमाणित होना, सिद्ध होना; खपना; बचजाना, बिकना, छूटना, छिड़ना; **निकल जाना**-चला जाना; नष्ट होना; **निकल चलना**-अति करना।

निकलवाना-(हिं०क्रि०) निकलने का काम दूसरे से कराना।

निकष-(सं०पुं०) कसौटी; सान चढ़ाने का पत्थर; **निकषण**-(सं० नपुं०) घिसने का काम, सान पर चढने का काम।

निकषा-(सं०स्त्री०) विश्रवा की पत्नी जिसके गर्भ से रावण, कुम्भकर्ण शूर्पणखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे, (अव्य०) समीप, पास;**निकषात्मज**-(सं०पुं०) राक्षस।

निकषोपल-(सं०पुं०) सान का पत्थर।

निकस-(सं०पु०) निकष, कसौटी।

निकसना-(हिं०क्रि०) देखो निकलना।

निकाई-(हिं०पुं०) देखो निकाय।

निकाज-(हिं०वि०) निकम्मा, वेकाम,

निकाना-(हिं०क्रि०) देखो निराना।

निकाम-(सं०पुं०) यथेष्ट,पर्याप्त,बहुत।

निकाम-(हिं० वि०) निकम्मा, बुरा, (क्रि०वि०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

निकाय-(सं०पुं०) समूह, झुंड, ढेर, राशि, परमात्मा, निवासस्थान,लक्ष्य

निकार-(सं०पुं०) अपमान, अपकार, मानहानि, अनादर, तिरस्कार धिक्कार; **निकार**-(हिं०पुं०) निकालने का काम, निकास, ऊख का रस पकाने का बड़ा कड़ाहा।

निकारण-(सं०नपुं०) मारण, वध।

निकाल-(हिं०पुं०) निकास, मल्ल युद्ध की एक युक्ति; **निकालना**-(हिं०क्रि०) भीतर से बाहर करना, उपस्थित करना, निश्चित करना, ठहराना, प्रगट करना, खोलना, घटाना, कम करना, दूर करना, निर्वाह करना, आविष्कार करना, सूई से बेल बूटे बनाना, घोड़े बैल आदि को गाड़ी में चलने की शिक्षा देना, ढूंढ कर पता लगाना, अपनी वस्तु दूसरे के पास से लाना, हटाना, आरभ करना, छोड़ना, चलाना, ले जाना, सामने लाना, अतिक्रमण करना, मिली हुई वस्तु को अलगाना, प्रकाशित करना,सिद्ध करना,फैलाना, संकट से छुटकारा देना, सिद्ध करना, बेंचना,खपाना,नौकरी से छुड़ाना,अलग अलग करना; **निकाला**-(हिं० पुं०) निकालने का काम, बहिष्कार, किसी स्थान से निकाले जाने का दण्ड।

निकाश-(सं०पुं०) प्रकाश, समीप।

निकास-(हिं०पुं०) निकालने या निकलने की क्रिया या भाव, निर्वाह की रीति, ढर्रा, क्रम, द्वार, आय वह स्थान जिसमें से होकर कोई वस्तु निकले, खुला मैदान, मूलस्थान संकट या कठिनाई से मुक्त होने की विधि, छुटकारे का उपाय, वंश का मूल, आय का ढंग; **निकासना**-(हिं० क्रि०) देखो निकालना; **निकासपत्र**-(हिं०पुं०)आय व्यय तथा वचत समझाने की बही; **निकासी**-(हिं०स्त्री०) निकलने की क्रिया या भाव, बिक्री, खपत, चुंगी, रवन्ना, भरती, लदाई, प्राप्ति, आय, वह वचत जो भूस्वामी को सरकारी कर देकर बचे।

निकियाना-(हिं०क्रि०) नोच कर धज्जी धज्जी अलग करना, चमड़े पर से पंख या रोवां नोच कर अलग करना।

निकिल्विष-(सं०नपुं०)पाप का अभाव।

निकिष्ट-(हिं०वि०) देखो निकृष्ट।

निकुच-(सं०पुं०) लकुट, बड़हर।

निकुंचक-(सं०पुं०) एक प्राचीन परिमाण जो प्रायः आठ तोले के बराबर होता था।

निकुंचित-(सं०वि०) संकुचित, सिकुड़ा हुआ।

निकुञ्ज-(सं० पुं०) लतागृह, वृक्षों अथवा लताओंसे घिरा हुआ मण्डप।

निकुम्भ-(सं०पुं०) कुम्भकर्ण का एक पुत्र जिसको हनुमान ने मारा था, एक असुर का नाम, जमालगोंटा, जल में उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की बेंत, शिव के एक अनुचर का नाम, कुमार कार्तिकेय का एक गण, एक विश्वदेव, प्रह्लाद के एक पुत्र का नाम, दन्ती वृक्ष।

निकुम्भाख्य बीज-(सं० नपुं०) जमालगोटा।

निकुम्भित-(सं० पुं०) एक प्रकार का नाच।

निकुम्भिला-(सं०स्त्री०)लंका के पश्चिम की एक गुफा का नाम।

निकुम्भी-(सं०स्त्री०)कुम्भकर्ण की कन्या

निकुरम्ब-(सं०नपुं०) समुदाय, समूह, झुंड।

निकुही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पक्षी।

निकृत-(सं०वि०) निकाला हुआ, तिरस्कार किया हुआ, लांछित।

निकृतन-(सं०पुं०) गन्धक।

निकृति-(सं०स्त्री०) तिरस्कार, अपकार, शठता, नीचता। **निकृती**-(सं०वि०) दुष्ट, शठ, नीच।

निकृत्त-(सं०वि०) जड़ से काटा हुआ।

निकृत्या-(सं०स्त्री०) दुष्टता, नीचता।

निकृन्तन-(सं०वि०)काटने वाला (नपुं०) छेदन, खण्डन।

निकृष्ट-(सं०वि०) अधम, नीच, तुच्छ; **निकृष्टता**-(सं० स्त्री०) अधमता, नीचता; **निकृष्टत्व**-(सं०नपुं०) निकृष्टता; **निकृष्ट प्रकृति**-(सं०वि०)नीच स्वभाव का।

निकेत-(सं०पु०) घर, मकान; **निकेतन**-(सं० नपुं०) गृह, घर, प्याज, जल बेंत।

निकोचन-(सं०नपु०) संकुचय,सिकुड़न।

निकोसना-(हिं० क्रि०) दाँत पीसना, कटकटाना।

निकौनी-(हिं०स्त्री०) निराई का काम या शुल्क।

निक्का-(हिं०वि०) छोटा, नन्हा।

निक्रमण-(सं०नपुं०) स्थान।

निक्रोड़-(सं०पुं०) कौतुक, तमाशा।

निक्वण, निक्वाण-(सं०पुं०) वीन की झनकार।

निक्षण-(सं०पुं०) चुम्बन की क्रिया।

निक्षा-(सं०स्त्री०) जू का अंडा, लीख।

निक्षिप्त-(सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, रक्खा हुआ (धरोहर)।

निक्षुभा-(सं० स्त्री०) सूर्य की पत्नी का नाम।

निक्षेप-(सं० पुं०) फेंकने की क्रिया या भाव, धरोहर, थाती, पोंछने की क्रिया या भाव; **निक्षेपक**-(सं०पुं०) फेंकने वाला। **निक्षेपण**-(सं०नपुं०) त्यागना, फेंकना, छोड़ना डालना, चलाना; **निक्षेपी**-(हिं० वि०) फेंकने वाला, छोड़ने वाला, धरोहर रखने वाला; **निक्षेप्य**-(सं० वि०) छोड़ने योग्य।

निखंग-(हिं०पुं०)देखो निषंग। **निखंगी**-(हिं०वि०) देखो निषंगी।

निखण्ड-(हिं० वि०) ठीक मध्य या बीच का, सटीक।

निखट्टर-(हिं० वि०) निष्ठुर, निर्दय, कठोर चित्त का।
निखट्टू-(हिं०वि०) जो कोई कामकाज न करता हो, बेकार, इधर उधर घूमने वाला, आलसी, निकम्मा।
निखनन-(सं०नपुं०) खनना, खोदना, गाड़ना।
निखरना-(हिं० क्रि०) स्वच्छ होना, निर्मल होना, धुलकर निर्मल होना। **निखरवाना**-(हिं० क्रि०) धुलवाना, स्वच्छ कराना।
निखरी-(हिं०स्त्री०) घी में पकाया हुआ भोजन द्रव्य।
निखर्व-(सं०पुं०) वामन, बौना।
निखर्वट-(सं०पुं०) रावण की सेना का एक राक्षस।
निखवख-(हिं० वि०) बिलकुल, सब, और कुछ शेष नहीं।
निखात-(सं०त्रि०) रक्खा हुआ, गाड़ा हुआ।
निखाद-(हिं०पुं०) देखो निषाद।
निखार-(हिं०पुं०)निर्मलता, स्वच्छता, सफ़ाई, शृङ्गार, सजावट; **निखारना**-(हिं०क्रि०) स्वच्छ करना, मांजना, पवित्र करना, पाप रहित करना।
निखारा-(हिं० पुं०) गुड़ बनाने का कड़ाहा।
निखालिस-(हिं०वि०) विशुद्ध, जिसमें किसी अन्य, वस्तु का मेल न हो।
निखिल-(सं०वि०)समग्र, सम्पूर्ण, सब।
निखुटना-(हिं० क्रि०) घटना, समाप्त होना।
निखेध-(हिं०वि०) देखो निषेध; **निखेधना**-(हिं०क्रि०) मना करना।
निखोट-(हिं०वि०) जिसमें कोई दोष न हो, निर्दोष, स्पष्ट, खुला हुआ, स्वच्छ, (क्रि०वि०) बिना संकोच के बेधड़क, खुल्लमखुल्ला।
निखोड़ा-(हिं०वि०)कठोरहृदय, निर्दय।
निखोड़ना-(हिं०क्रि०) नख से नोचना या उखाड़ना।
निगन्द-(हिं० पु०) रक्तशोधन करने की एक जड़ी; **निगंदना**-(हिं०क्रि०) रूई से भरी हुई गद्दी आदि में तागा डालना।
निगंध-(हिं०वि०)देखो निर्गन्ध, गन्धहीन
निगड़-(सं० नपुं०) हाथी के पैर में बाँधने की लोहे की सिकड़ी, अँदू, बेड़ी। **निगड़न**-(सं०नपुं०) सिकड़ी से बाँधने का काम। **निगड़ित**-(सं०वि०) सिकड़ी से बँधा हुआ।
निगण-(सं०पुं०) होम से निकालने वाला धुआँ।
निगद-(सं०पुं०) भाषण, कथन, ऊँचे स्वर से किया हुआ जप। **निगदित**-(सं०वि०) भाषित, कहा हुआ।
निगंधिक-(सं०पुं०) सुवर्ण, चम्पक।
निगम-(सं० पुं०) वाणिज्य, व्यापार; वेद, हाट, मेला, पथ, मार्ग, निश्चय।
निगमन-(सं०नपुं०) न्याय से अनुमान के पांच अवयवों में से एक; हेतु, उदाहरण और उपनय के उपरान्त प्रतिज्ञा को सिद्ध करने के लिये उसका फिर से कथन, परिणाम, पाँचो अवयवों के नाम इस प्रकार हैं-यहाँ पर अग्नि है (प्रतिज्ञा), क्योंकि यहाँ धुआँ है (हेतु), जहाँ पर धुआं रहता है वहाँ अग्नि रहती है जैसे रसोई घर में (उदाहरण), यहाँ पर धुआँ है, (अपनय); अतएव यहां अग्नि है (निगमन)।
निगमवासी-(सं०पुं०) विष्णु, नारायण
निगमागम-(सं०पुं०) वेदशास्त्र।
निगयी-(सं०पुं०) वेद जानने वाला।
निगर-(सं०पुं०) भोजन; **निगर**-(हिं० वि०) सब, (पुं०) देखो निकर।
निगरण-(सं० नपुं०) भोजन, भक्षण, (पुं०) ग्रीवा, गला।
निगरा-(हिं०वि०)जिसमें जल न मिला हो; **निगराना**-(हिं० क्रि०) निर्णय करना, निबटाना, अलग करना, स्पष्ट करना; **निगरानी**-(फ़ा०स्त्री०) निरीक्षण, देखरेख; **निगरु**-(हिं०वि०) हलका, जो भारी न हो।
निगलना-(हिं० क्रि०) गले के नीचे उतारना, घोंट लेना, गटक जाना, खा जाना, लीलना, किसी का धन पचा जाना;
निगाद-(सं० पुं०) भाषण, कथन; **निगादी**-(सं० पुं०) बोलने वाला, वक्ता।
निगार-(सं०पुं०) भक्षण, भोजन।
निगाल-(सं० पुं०) भोजन घोड़े का गला।
निगालिका-(सं० स्त्री०) आठ अक्षरों का एक वर्णवृत्त, जिसको प्रमाणिका या नगस्वरूपिणी भी कहते हैं।
निगाली-(हिं० स्त्री०) हुक्के की नली जिसको मुँह मे रखकर धुवां खींचा जाता है।
निगिभ-(हिं०वि०) अत्यन्त गोपनीय, जिसका बहुत लोभ हो, अत्यन्त प्रिय।
निगु-(सं० पु०) मन, अन्तःकरण, भ्रम, भूल।
निगुण-(हिं०वि०)देखो निर्गुण। **निगुनी**-(हिं०वि०)गुण रहित, जो गुणी न हो।
निगुरा-(हिं०वि०) जिसने गुरु न किया हो, जिसने गुरु से मन्त्र न ग्रहण किया हो।
निगूढ़-(सं०वि०) गुप्त, छिपा हुआ; **निगूढ़ार्थ**-(सं० वि०) जिसका अर्थ छिपा हो, स्पष्ट न हो; **निगूहक**-(सं०वि०) छिपाने वाला; **निगूहन**-(सं०नपु०) गोपन, छिपाव; **निगूहनीय**-(सं०वि०)गोपनीय, छिपाने योग्य
निगृहीत-(सं० वि०) आक्रमित, जिस पर धावा किया गया हो, पीड़ित, दण्डित, पकड़ा हुआ, घेरा हुआ, जिस पर शासन किया गया हो, जो वश में लाया गया हो।
निगृह्य-(सं०वि०) दण्ड देने योग्य।
निगोड़ा-(हिं०वि०,जिसका कोई रक्षक न हो, जिसके आगे पीछे कोई न हो, दुष्ट, नीच।
निग्रन्थन-(सं०नपुं०) मारण, वध।
निग्रह-(सं० पुं०) अवरोध, रुकावट, मारण, वध, चिकित्सा, विष्णु, महादेव, सीमा, हद, दण्ड, भर्त्सना, डाट फटकार, बन्धन, पीड़न; **निग्रहण**-(सं०पुं०) दण्ड देने का कार्य, रोकने का काम।
निग्रहना-(हिं०क्रि०) रोकना, थामना, पकड़ना।
निग्रहस्थान-(सं० नपुं०) न्यायदर्शन के सोलह पदार्थों में से एक, वादाविवाद अथवा शास्त्रार्थ में जहाँ विप्रतिपत्ति (उलटा पुलटा ज्ञान) या अप्रतिपत्ति (अज्ञान) किसी पक्ष के ओर से कहा जाता है तो उसको निग्रह स्थान कहते हैं, प्रतिज्ञा हानि, प्रतिज्ञान्तर आदि बाइस निग्रह स्थान न्याय में माने गये हैं।
निग्रही-(हिं०वि०) रोकने वाला, दबाने वाला, दण्ड देने वाला; **निग्रहीतव्य**-(सं०वि०) जो दण्ड देने योग्य हो।
निग्राह-(सं०पु०) आक्रोश, शाप।
निग्राह्य-(सं०वि०) ग्रहण करने योग्य।
निघण्ट-(सं०पुं०) निघण्टु, सूचीपत्र।
निघण्टिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का कन्द।
निघण्टु-(सं०पुं०) नाम संग्रह, वैदिक शब्दों की सूची, वह कोष जिसमें केवल एकार्थ शब्द लिखे होते है।
निघटना-(हिं०क्रि०) देखो घटना।
निघरघट-(हिं०वि०) जिसको कहीं रहने का ठिकाना न हो, निर्लज्ज, जो घूम फिर कर वहीं आवे जहाँ से दुतकारा गया हो।
निघरा-(हिं०वि०)जिसके घरबार न हो।
निघर्ष, **निघर्षण**-(सं०पुं०) घिसना, रगड़ना।
निघस-(सं०पुं०) आहार, भोजन।
निघात-(सं०पुं०) प्रहार, चोट।
निघाति-(सं०स्त्री०) लोहार की निहाई; **निघाती**-(सं०वि०) आघात करने वाला, मारने वाला।
निघृष्व-(सं०पुं०) खुर, वायु, मार्ग, सुअर।
निघ्न-(सं०वि०) जिसको चोट लगी हो, घायल, निर्भर, (गणित में) गुणा किया हुआ।
निचन्द्र-(सं०पुं०) एक राक्षस का नाम।
निचमन-(सं०नपुं०) थोड़ा थोड़ा करके पीना।
निचय-(सं०पुं०) समूह, निश्चय, संचय।
निचल-(हिं०वि०) देखो निश्चल।
निचला-(हिं०वि०) नीचे का, नीचे वाला, शान्त, अचल, अचपल।
निचाई-(हिं०स्त्री०) नीचापन, नीचा देखने का भाव, नीचे की ओर विस्तार, नीचता, ओछापन। **निचान**-(हिं०स्त्री०) नीचापन, ढालुवाँपन।
निचाय-(सं०पुं०) धान आदि का ढेर।
निचिंत-(हिं०वि०) चिन्ता रहित।
निचिका-(सं०स्त्री०) अच्छी गाय।
निचित-(सं०वि०) व्याप्त, पूरित, रचित, निर्मित।
निचिर-(सं०नपुं०)अत्यन्त चिर काल।
निचुङ्कण-(सं०नपुं०) गरज, बड़बड़ाहट
निचुड़ना-(हिं०क्रि०) रस से भरी हुई किसी वस्तु का इस प्रकार दबना कि रस उसमें निकलकर गिर जाय, गरना, पानी का टपकना या चूना, रसहीन होना, शरीर का रस निकल जाने से शरीर का दुर्बल होना।
निचेता-(सं०वि०) पाई हुई वस्तु का संचय करने वाला। **निचेय**-(सं०वि०) संग्रह करने योग्य।
निचेरु-(सं०पुं०) सर्वदा इधर उधर घूमने वाला मनुष्य।
निचै-(हिं०पुं०) देखो निचय।
निचोड़-(हिं०पुं०) निचोड़ने से निकला हुआ जल, रस आदि, सार वस्तु, सत्व, मुख्य तात्पर्य, सारांश। **निचोड़ना**-(हिं०क्रि०) गीली या रस से भरी वस्तु को दबाकर या ऐंठकर इसमें का रस या पानी निकालना, गारना, किसी वस्तु का सार भाग अलग करना, सर्वस्व हरण करना, सब कुछ ले लेना। **निचोना**-(हिं० क्रि०) देखो निचोड़ना। **निचोरना**-(हिं०क्रि०) देखो निचोड़ना।
निचोल, **निचोलक**-(सं०पु०) शरीर की ऊपर से ढाँपने का वस्त्र, उत्तरीय वस्त्र, स्त्रियोंके घूंघट का वस्त्र, लहंगा, घाघरा।
निचोवना-(हिं०क्रि०) देखो निचोड़ना।
निचौहाँ-(हिं०वि०)नीचे की ओर किया हुआ या झुका हुआ। **निचौहैं**-(हिं०क्रि०वि०) नीचे की ओर।
निछक्का-(हिं०पुं०)वह समय या स्थान जिसमें कोई दूसरा न हो, एकान्त,
निछत्र-(हिं०वि०) छत्रहीन, बिना छत्र का, बिना राजचिह्न का, क्षत्रियों से रहित।
निछनियाँ-(हिं०क्रि०वि०)देखो निछान।
निछल-(हिं०वि०) बिना छल कपट का। **निछला**-(हिं०वि०) बिना मिलावट का।
निछान-(हिं०वि०) विशुद्ध, बिना मिलावट का, केवल; (क्रि०वि०) एकदम।
निछावर-(हिं०स्त्री०) एक उपचार जिसमें किसी की रक्षा के निमित्त कोई वस्तु उसके संपूर्ण शरीर के ऊपर से घुमाकर फेंक दी जाती है अथवा किसी को दे दी जाती है, उत्सर्ग, उतारा, वह द्रव्य या वस्तु जो इस प्रकार उतारी जाती है, नेग, किसी व्यक्ति पर निछावर

होना-किसी के लिये प्राण देने के लिये तैयार होना।
निछेद-(सं०पु०) छेदन, कतरना।
निछोह, निछोही-(हिं०वि०) निर्दयी, निष्ठुर, जिसमें प्रेम या छोह न हो।
निज-(सं०वि०) स्वकीय, अपना, जो पराया न हो, प्रधान, मुख्य, वास्तविक, यथार्थ, सच्चा, (अव्य०) ठीक ठीक, विशेष करके; **निजका**-अपना; **निज करके**-निश्चित रूप से; **निज कर्म**-(सं०नपुं०) अपना काम; **निजकाना**-(हिं०क्रि०) समीप आना, निकट पहुँचना; **निजकारी**-(हिं०स्त्री०) बँटाई का कृषिफल; **निजकृत**-(सं०वि०) अपने आप किया हुआ; **निजघ्नी**-(सं०वि०) जो सर्वदा हत्या करता हो; **निजधृति**-(सं०वि०) बुद्धिमान; **निजन**-(हिं०वि०) देखो निर्जन।
निजि-(सं०वि०) शुद्धियुक्त, जो शुद्धि सहित हो।
निजी-(हिं०वि०) स्वयं अपना।
निजुर-(सं०स्त्री०) हत्या, नाश।
निजू-(हिं०वि०) निजका, अपना।
निजोर-(हिं०वि०) बलहीन, निर्बल।
निझरना-(हिं०क्रि०) लगा या अँटका न रहना, झड़ जाना, अपने को निर्दोष प्रमाणित करना, दोष से मुक्त बनना, तत्व या सार न रह जाना।
निझाना-(हिं०क्रि०) छिप कर देखना, ताकझांक करना।
निझोटना-(हिं०क्रि०) झपटना, खींचकर छीनना।
निटर-(हिं०वि०) जो उपजाऊ न रह गया हो, जिसमें कुछ दम न हो,
निटल-(सं०पुं०) मस्तक, कपाल। **निटलाक्ष**-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
निटोल-(हिं०पुं०) टोला, मुहल्ला, बस्ती, पुरा।
निठल्ला, निठल्लू-(हिं०वि०) जिसके पास कोई काम धंधा न हो, बेकार, व्यवसाय रहित।
निठाला-(हिं०पु०) ऐसा समय जब कोई काम धंधा न हो, जीविका का अभाव, वह समय जब किसी प्रकार की आय न हो।
निठुर-(हिं०वि०) निष्ठुर, क्रूर, निर्दय, जिसको दूसरे के कष्ट या पीड़ा का अनुभव न हो। **निठुरई**-(हिं०स्त्री०) देखो निठुरता। **निठुरता**-(हिं०स्त्री०) हृदयकी कठोरता, निर्दयता, क्रूरता; **निठुराई**-(हिं०स्त्री०) निष्ठुरता, निर्दयता, क्रूरता; **निठुराव**-(हिं०पु०) निठुराई।
निठौर-(हिं०पुं०) बुरी जगह, कुठाँव, बुरी अवस्था।
निडर-(हिं०वि०)निर्भय, साहसी, धृष्ट, ढीठ; **निडरपन, निडरपना**-(हिं०पुं०) निर्भयता, साहस।
निडीन-(सं०नपुं०) पक्षियों के उड़ने की एक गति।
निड़े-(हिं०क्रि०वि०) निकट, समीप, पास।
निढाल-(हिं०वि०) अशक्त, शिथिल उत्साह हीन, मरा हुआ। **निढिल**-(हिं०वि०) जो ढीला न हो, कसा हुआ
निण्य-(सं०वि०) अन्तर्हित।
नितंत-(हिं०क्रि०वि०) देखो नितान्त।
नित-(हिं०अव्य०) सर्वदा, नित्य, प्रतिदिन; **नित नित**-प्रति दिन; **नित नया**-सर्वदा नया रहनेवाला।
नितम्ब-(सं०पुं०) स्त्री का कमर के पीछे का उभड़ा हुआ भाग, चूतड़, कन्धा, किनारा, पहाड़ का ढालुवाँ किनारा। **नितम्बदेश**-(सं०पु०) पिछला भाग। **नितम्बी**-(सं०वि०) नितम्ब युक्त। **नितम्बिनी**-(सं०स्त्री०) सुन्दर नितम्ब वाली स्त्री; (वि०) सुन्दर नितम्ब वाली।
नितराम्-(सं०अव्य०) सर्वदा।
नितल-(सं०नपुं०) सात पातालों में से एक का नाम।
नितान्त-(सं०वि०) अतिशय, बहुत, अधिक, सर्वथा, निरा।
निति-(हिं०अव्य०) नित, प्रति दिन।
नित्य-(सं०वि०) सतत, प्रति दिन का, सब दिन रहने वाला, शाश्वत, जिसकी परम्परा कभी न टूटे, त्रिकालव्यापी, अविनाशी, समुद्र, सागर (अव्य०) प्रति दिन, हर दिन, सर्वदा; **नित्य कर्म**-(सं०नपुं०) वह धर्म संबंधी कार्य जिसका प्रति दिन करना आवश्यक नियत किया गया हो। **नित्य क्रिया**-(सं०स्त्री०) नित्य कर्म, प्रति दिन करने का कार्य यथा स्नान सन्ध्या आदि; **नित्यग**-(सं०पुं०) आयुष्य; **नित्यगति**-(सं०पुं०) वायु, हवा; **नित्यता**-(सं०स्त्री०) नित्य होने का भाव; **नित्यत्व**-(सं०नपुं०) नित्यता; **नित्यदा**-(सं०अव्य०) सर्वदा; **नित्य दान**-(सं०नपुं०) वह दान जो प्रति दिन किया जाता है; **नित्यनर्त**-(सं०पुं०) शिव, महादेव; **नित्य नियम**-(सं०पुं०) प्रति दिन के करने का निश्चित व्यापार, प्रति दिन का नियम; **नित्य नैमित्तिक**-(सं०नपुं०) पर्व श्राद्ध आदि कार्य; **नित्य प्रति**-(सं०अव्य०) प्रति दिन; **नित्यप्रलय**-(सं०पुं०) सुषुप्ति की अवस्था जब नींद आती है और किसी विषय का ज्ञान नहीं रहता; **नित्यमय**-(सं०वि०) अनन्त; **नित्यमुक्त**-(सं०पुं०) परमात्मा; **नित्य यज्ञ**-(सं०पुं०) अग्निहोत्र आदि प्रति दिन करने के यज्ञ; **नित्ययुक्त**-(सं०वि०) जो सर्वदा काम में लगा रहता हो; **नित्य यौवन**-(सं०नपुं०) स्थिर यौवन, जिसकी युवावस्था बहुत दिनों तक बनी रहे।
नित्य वैकुण्ठ-(सं०पुं०) विष्णु का स्थान विशेष।
नित्यशः-(सं०अव्य०) प्रति दिन, सर्वदा,
नित्यसम-(सं०पु०) न्याय शास्त्र के चौबीस अयुक्त खण्डन में से एक जो इस प्रकार किया जाता है कि अनित्य वस्तुओं मे भी अनित्यता नित्य है, अतः धर्म के नित्य होने से धर्मी भी नित्य हुआ; **नित्य समास**-(सं०पु०) 'कु' शब्द तथा 'आदि' शब्द के साथ जो समास होता है वह नित्य समास कहलाता है; **नित्य स्तोत्र**-(सं०वि०) सर्वदा प्रशंसित, वह स्तोत्र जिसका सर्वदा पाठ किया जावे; **नित्य होम**-(सं०पुं०) वह हवन जो द्विजों को प्रतिदिन करना कर्तव्य हो।
नित्या-(सं०स्त्री०) देवी की एक शक्ति, पार्वती, मनसा देवी, एक शक्ति का नाम; **नित्यानन्द**-(सं०पुं०) वह जो सर्वदा आनन्द रहे; **नित्यानुबद्ध**-(सं०वि०) रक्षा करने वाला, बचाने वाला।
नियंभ-(हिं०पुं०) स्तम्भ, खंभा।
नियरना-(हिं० क्रि०) जल आदि का इस तरह स्थिर होना कि इसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय, घुली हुई वस्तु का नीचे बैठकर जल आदि का स्वच्छ हो जाना।
निथार-(हिं०पुं०) पानी के स्थिर होने से उसके जल में बैठी हुई वस्तु, स्वच्छ जल जो घुली हुई वस्तु के तल में बैठ जाने से प्राप्त होता है।
निथारना निथालना-(हिं० क्रि०) घुली हुई वस्तु को नीचे बैठाकर जल को स्वच्छ करना, पानी छानना।
निद-(सं०नपुं०) विष, (वि०) निन्दा करने वाला।
निदई-(हिं०वि०) देखो निर्दयी।
निदद्रु-(सं०वि०) जिसको दाद का रोग न हुआ हो।
निदरना-(हिं०क्रि०) अपमान करना, निरादर करना, तिरस्कार करना, हराना।
निदर्शक-(सं०वि०) दिखलाने वाला।
निदर्शन-(सं०नपुं०) प्रकाशित करने या दिखलाने का काम, उदाहरण, दृष्टान्त; **निदर्शना**-(सं० स्त्री०) वह अर्थालङ्कार जिसमें कोई बात दूसरी किसी बात को ठीक ठीक करके दिखलाई जाती है, निदर्शना अलंकार वहां होता है जहां भली भांति सोच विचार कर देखने में समता बोध होती है।
निदलन-(हिं० पुं०) देखो निर्दलन।
निदहना-(हिं०क्रि०) जलाना।
निदाघ-(सं०पुं०) ग्रीष्म काल, गरमी, उष्णता, ताप, घाम, धूप; **निदाघकर**-(सं०पु०) सूर्य, मदार का वृक्ष; **निधिकाल**-(सं० पुं०) ग्रीष्म ऋतु।
निदान-(सं०नपुं०) रोग की पहिचान, अन्त, तप के फल की इच्छा, आदि कारण, कारण का क्षय, शुद्धि, (अव्य०) अन्त में, (वि०) अन्तिम श्रेणी का, जो बहुत गया बीता हो।
निदारुण-(सं०वि०) कठिन, भयानक, निर्दय, कठोर, दुःसह।
निदिग्ध-(सं० वि०) लेप किया हुआ।
निदिग्धा, निदिग्धिका-(सं० स्त्री०) इलायची, भटकटैया।
निदिध्यासन-(सं० नपुं०) बारंबार स्मरण, बार बार स्मरण करना।
निदेश-(सं०पुं०)शासन, आज्ञा, कथन, भाजन, समीप्य, पास, पृथ्वी।
निदेशी-(सं०वि०) आज्ञा करने वाला, आज्ञा देने वाला।
निदेस-(हिं० पु०) देखो निदेश।
निदोष-(हिं० वि०) देखो निर्दोष।
निद्धि-(हिं०स्त्री०) देखो निधि।
निद्र-(सं०पु०) एक प्रकार का अस्त्र।
निद्रा-(सं०स्त्री०) स्वप्न, नींद, सुषुप्ति, मन की वह वृत्ति जिसमें सभी मनोवृत्तियां लीन हो जाती हैं तथा जब अज्ञान का अवलम्बन करके मनोवृत्ति उदित रहती हैं; **निद्राकर**-(सं०वि०) निद्राकारक, सुलानेवाला; **निद्राकर्षण**-(सं० नपुं०) निद्रा का आकर्षण, निद्रालुता; **निद्राकारी**-(सं०वि०) निद्राकार, सुलानेवाला; **निद्राकाल**-(सं०पु०) निद्रा लेने (सोने) का समय; **निद्राकुल**-(सं० वि०) निद्रा से पीड़ित; **निद्राकृष्ट**-(सं०वि०) जिसको नींद आ गई हो; **निद्राक्रान्त**-(सं०वि०) निद्राकुल; **निद्रागत**-(सं०वि०) निद्रित, जो सो गया हो; **निद्रागार**-(सं०पुं०) सोने का कमरा; **निद्रागौरव**-(सं० नपुं०) बहुत नींद आना; **निद्राग्रस्त**-(सं०वि०) निद्राकुल, निद्रालु; **निद्राजनक**-(सं० वि०) सुलानेवाला; **निद्रादरिद्र**-(सं० पुं०) नींद का न आना; **निद्रान्वित**-(सं० वि०) निद्रागत, सोया हुआ; **निद्राभंग**-(सं० नपुं०) नींद टूटना; **निद्राभाव**-(सं०पु०)निद्रा का अभाव, नींद न आना; **निद्रायमान**-(सं०वि०) जो नींद में हो, सोता हुआ; **निद्रायोग**-(सं० पुं०) निद्रा और गहरी चिन्ता; **निद्रारि**-(सं०पुं०) चिरायता; **निद्रालु**-(सं० वि०) निद्राशील, सोनेवाला, (स्त्री०) वनतुलसी; **निद्रावस्था**-(सं०स्त्री०)निद्रित अवस्था; **निद्राविमुख**-(सं०वि०)अनिद्रा, जागरुक; **निद्रावृक्ष**-(सं०पुं०) अन्धकार, अँधेरा; **निद्रावेश**-(सं०पुं०) सोने की इच्छा; **निद्राशाला**-(सं०स्त्री०) सोने का घर; **निद्राशील**-(सं०वि०)निद्रालु सोनेवाला, **निद्रित**-(सं०वि०) निद्रागत, सोया हुआ; **निद्रोत्थित**-(सं०वि०) जो जागकर उठा हो।
निधड़क-(हिं०क्रि०वि०) बिना किसी रुकावट के, बिना संकोच के, निःशंक, बिना भय या चिन्ता के

निधन-(सं०नपुं०) मरण, नाश, विष्णु, कुल, कुल का अधिपति, (वि०) धनहीन, दरिद्र । **निधनक्रिया**-(सं०स्त्री०) अन्त्योष्टि क्रिया; **निधनता**-(सं०स्त्री०) दरिद्रता, कंगाली; **निधनपति**-(सं०पुं०)प्रलयकर्ता शिव; **निधनवत्**-(सं०वि०) मरण तुल्य ।
निधनी-(हिं०वि०) धनहीन, दरिद्र।
निधमन-(सं०पुं०)नीम का पेड़ ।
निधातव्य-(सं० वि०) स्थापन करने योग्य ।
निधान-(सं०नपुं०) आश्रय, आधार, निधि, लयस्थान, स्थापन, वह स्थान जहां सभी वस्तु लीन होती हो ।
निधि-(सं०पुं०) समुद्र, विष्णु, जीवक नामक औषधि, आधार, शिव, महादेव, नव की संख्या, कुबेर के नव रत्न यथा-पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्च; गड़ा हुआ धन; **निधिगोप**-(सं० पुं०) वह जो वेद वेदांग पढ़कर गुरुकुल में गया हो; **निधिनाथ**-(सं०पुं०) निधिपति, कुबेर। **निधिपा, निधिपति**-(सं० पु०) धनेश्वर, कुबेर ।
निधिपा-(सं०पुं०) यक्षों का अधिपति; **निधिपाल**-(सं० पु०) निधिपति, कुबेर । **निधिमान्**-(सं०वि०) धनाढ्य; जिसके पास धन हो ।
निधेय-(सं०वि०) स्थापन करने योग्य ।
निध्यान-(सं०नपुं०) दर्शन, देखना ।
निनद-(सं० पुं०) शब्द, घरघराहट ।
निनन्दू-(सं०स्त्री०) मृतवत्स, मरा हुआ बछवा ।
निनय-(सं०स्त्री०) नम्रता ।
निनरा-(हिं०क्रि०) न्यारा, अलग, दूर ।
निनाद-(सं०पुं०)शब्द मात्र, **निनादित**-(सं०वि०) ध्वनित, शब्द किया हुआ ।
निनादी-(सं०वि०)शब्द करने वाले ।
निनान-(हिं०वि०) बिलकुल, एकदम, घोर, निकृष्ट, बुरा, (क्रि०वि०)अन्त में
निनारा-(हिं०वि०)भिन्न, न्यारा, अलग, हटा हुआ, दूर ।
निनावां-(हिं०पुं०) महीन लाल दाने जो जीभ और मसूढ़ पर निकल जाते हैं ।
निनावी-(हिं०स्त्री०) वह जिसका नाम लेना अशुभ माना जाता है, डाइन, चुड़ैल ।
निनित्सु-(सं०पुं०) जो निन्दा न करने का इच्छुक हो ।
निनीषा-(सं०स्त्री०) एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने की अभिलाषा ।
निभौना-(हिं०क्रि०) नवाना, झुकाना, नीचे करना ।
निनौरा-(हिं०पुं०) नाना नानी का घर
निन्दक-(सं० वि०) दूसरों का दोष या बुराई कहने वाला । **नीन्दन**-(सं०नपुं०) निन्दा, बुराई का वर्णन । **नीन्दनीय**-(सं० वि०) निन्द्य, निन्दा करने योग्य ।
निन्दा-(सं०स्त्री०) अपवाद, दुष्कृति, आक्षेप, जुगुप्सा;**निन्दाकर**-(सं०पु०) अपवादक, दूसरे की निन्दा करने वाला; **निन्दान्वित**-(सं०वि०) निन्दायुक्त, निन्दित; **निन्दाई**-सं०वि०) निन्दा के योग्य । **निन्दास्तुति**-(सं०स्त्री०) निन्दा के बहाने स्तुति ।
निन्दित-सं०वि०) निन्दा किया हुआ
निन्दु-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके संतान उत्पन्न होकर मर जाते हों।
निन्द्य-(सं० वि०) निन्दनीय, निन्दा करने योग्य; **निन्द्यता**-(सं० स्त्री०) निन्दनीयता, दूषणीयता ।
निन्यानबे-(हिं०वि०) एक कम सौ की गणना का (पुं०) नब्बे और नव संख्या ९९ ।
निन्यारा-(हिं०वि०) देखो न्यारा ।
निप-(सं०नपुं०) कलश, कलसा (पुं०) कदंब का पेड़ ।
निपजना-(हिं० क्रि०) उपजना, उगना, उत्पन्न होना, बढ़ना, बनना, पुष्ट होना ।
निपजी-(हिं०स्त्री०)लाभ, उपज, **निपट** (हिं०अव्य०) निरा, खाली, नितान्त, बिलकुल, एकदम ।
निपट-(हिं०वि०) निरा । **निपटना**-(हिं० क्रि०) देखो निबटाना; **निपटाना**-(हिं० क्रि०) देखो निबटाना;
निपटारा-(हिं०पुं०) देखो निबटारा;
निपटावा-(हिं०पु०) देखो निबटावा;
निपटेरा-(हिं०पुं०) देखो निबटेरा ।
निपठ-(सं०पुं०) पाठ अध्ययन । **निपठित**-(सं०वि०) अशिक्षित, जो पढ़ा लिखा न हो ।
निपतन-(सं०नपुं०)अधःपतन, गिराव; **निपतित**-(सं० वि०) पतित, गिरा हुआ ।
निपत्र-(हिं०वि०) पत्रहीन ।
निपत्या-(सं०स्त्री०) युद्ध भूमि, ऐसी भूमि जिसपर पैर फिसलता हो ।
निपरन-(सं०नपुं०) प्रेम का अभाव ।
निपलाश-(सं०वि०) जिसका पत्ता गिर गिर गया हो ।
निपात-(सं०पुं०)पतन, गिराव, नाश, मृत्यु, अधः पतन, विनाश; वह शब्द जो व्याकरण में दिये हुए नियमों के अनुसार न बना हो (वि०) बिना पत्ते का; **निपातन**-(सं० नपुं०) मारण, वध करने का काम, गिराने का काम; **निपातना**-(हिं० क्रि०) गिराना, नष्ट करना, वध करना; मारकर गिराना, काटकर गिराना;
निपातनीय-सं०वि०)वध करने योग्य
निपातित-(सं०वि०) जो नीचे फेंक दिया गया हो; **निपाती**-(सं०पुं०) शिव, महादेव. (वि०) घातक, मारने वाला. गिराने वाला फेंकने वाला ।
निपाद-(सं०पुं०) नीचा प्रदेश, नीची भूमि ।
निपान-(सं०नपुं०) तालाव, गड्ढा, दूध दूहने का पात्र ।
निपीड़क-(सं०वि०) पीड़ा देने वाला, निचोड़ने वाला, पेरने वाला; **निपीड़क**-(सं०नपुं०) कष्ट देने का कार्य, पसेव निकलना, पेर कर निकालना, मलना, दलना; **निपीड़ित**-(सं०वि०) आक्रान्त, दबाया हुआ, पेरा हुआ ।
निपीत-(सं०वि०) जो अन्त में पिया गया हो । **निपीयमान**-(सं०वि०) जो पिया जा रहा हो ।
निपुड़ना-(हि०क्रि०) खोलना, उघारना
निपुण-(सं०वि०) कार्य कुशल, काम करने में दक्ष, विद्वान, (पुं०)चिकित्सक वैद्य; **निपुणता**-(सं०स्त्री०) कुशलता;
नीपुणाई-(हिं० स्त्री०) दक्षता ।
निपुत्री-(हिं०वि०) निःसन्तान, निपूता।
निपुर्-(सं०पुं०)लिङ्ग देह, सूक्ष्म शरीर
निपुन-(हिं०वि०) देखो निपुण, दक्ष; **निपुनई**-(हिं०स्त्री०) निपुणता, दक्षता ।
निपूत, निपूता-(हिं०वि०) अपुत्र, जिसके सन्तान न हो ।
निपोड़ना-(हि० क्रि०) दाँत निकालना
निफन-(हिं० वि०) निष्पन्न, पूर्ण, पूरा, (क्रि०वि०) अच्छी तरह से, पूर्ण रूप से
निफरना-(हिं० क्रि०) चुभ कर इस पार से उस पार निकल जाना, उद्घाटित होना, प्रगट होना, खुलना, स्वच्छ होना ।
निफल-(हिं०वि०) देखो निष्फल ।
निफारना-(हिं० क्रि०) इस पार से उस पार तक छेद करना, खोलना, स्पष्ट करना ।
निफालन-(सं० नपुं०) दर्शन, दृष्टि ।
निफेन-(सं० नपुं०) अहिफेन, अफीम ।
निफोट-(हिं० वि०) स्पष्ट, स्वच्छ ।
निबकौरी-(हिं० स्त्री०) नीम का फल या बीज ।
निबटना-(हिं० क्रि०) निर्णीत होना, निश्चित होना, चुकना, निवृत्त होना, छुट्टी पाना, समाप्त होना, पूरा होना, शौचादि से निवृत्त होना, अन्त होना; **निबटाना**-(हिं० क्रि०) समाप्त करना, पूरा करना, भुगताना, चुकाना; **निबटाव**-(हिं०स्त्री०) निबटाने का भाव या क्रिया, निर्णय;
निबटेरा-(हिं० पुं०) निबटाने का भाव या क्रिया, समाप्ति, छुट्टी, झगड़े का निर्णय, निश्चय ।
निबड़ना-(हिं० क्रि०) देखो निबटना ।
निबड़ा-(हि० पुं०) एक प्रकार का बड़ा घड़ा ।
निबद्ध-(सं० वि०) बद्ध, निरुद्ध, बेधा हुआ, रुका हुआ, गुथा हुआ, बैठाया हुआ, जड़ा हुआ, (हिं० पुं०) वह गीत जिसमें गाते समय ताल, रस आदि का विशेष ध्यान रक्खा जाता है ।
निबन्ध-सं०पु०) मूत्र रुकने का रोग, करक; पुस्तक की टीका, बंधन, नीम का पेड़, वह व्याख्या जिसमें अनेक मतों का संग्रह हो, लिखित प्रबन्ध, लेख, (नपुं०) गीत; **निबन्धदान**-द्रव्य समर्पण; **निबन्धन**-(सं० नपुं०) हेतु, कारण, ग्रन्थि, गांठ, बन्धन, नियम, व्यवस्था, ग्रन्थ, पुस्तक; **निबन्धना**-(सं० स्त्री०) बंधन, बेड़ी; **निबन्धी**-सं० वि०) निबन्ध करने वाला; **निबन्धित**-(सं० वि०) बद्ध, बँधा हुआ ।
निबर-(हिं० वि०) देखो निर्बल; **निबरना**-(हिं० क्रि०) किसी बँधी हुई वस्तु का अलग होना, छूटना, मुक्त होना, उद्धार होना, बिलग होना, छँटना, निर्णय होना, समाप्त होना, अवकाश पाना, सुलझना, अन्त होना, दूर होना, उलझन दूर होना ।
निबर्हण-(सं० नपुं०) नष्ट होने की क्रिया या भाव, मारण ।
निबल-(हिं० वि०) देखो निर्बल । **नीबलाई** (स्त्री०) दुर्बलता
निबह-(हिं०पुं०)देखो निर्बह, समूह, झुण्ड।
निबहना (हिं० क्रि०) छुटकारा पाना, पार पाना, निर्वाह होना, बराबर चला चलना, व्यवहार होना, चरितार्थ होना, पूरा होना, किसी स्थिति सम्बन्ध आदि का निरन्तर बना रहना
निबहुर-(हिं० पु०) यमद्वार जहाँ से कोई लौट कर न आवे ।
निबहुरा-(हिं० वि०) जो जाकर फिर न लौटे ।
निबाह-(हिं० पुं०) निबाहने की क्रिया या भाव, निर्वाह छुटकारे का ढंग, निरन्तर व्यवहार, चरितार्थ करने का कार्य, रहन, परपरा की रक्षा, पूरा करने का काम; **निबाहक**-(हिं० वि०) निर्वाह करने वाला;
निबाहना-(हिं०क्रि०) निर्वाह करना, चरितार्थ करना, पूरा करना, निरन्तर साधन करना, पालन करना ।
निबिड़-(हिं० वि०) बँधा हुआ; **निबिड़ना**-(हिं० क्रि०) बन्धन आदि से मुक्त करना, छोड़ाना, दूर करना, अलग करना, बिलगाना, अलगाना, निर्णय करना, उलझन दूर करना, भुगताना, पूरा करना ।
निबुकना-(हिं०क्रि०)बंधनसेमुक्तहोना।
निबेड़ा-(हि० पुं०) देखो निबेरा ।
निबेरना-(हि० क्रि०) उन्मुक्त करना, पूरा करना, निबटाना, दूर करना, हटाना, अलग करना, निर्णय करना, उलझन दूर करना, छाँटना, चुनना, मिटाना ।
निबेरा-(हिं० पुं०) मुक्ति, छुटकारा, समाप्ति, भुगतान, चुनाव, सुलझने की क्रिया या भाव, उलझन दूर होना, निर्णय, निबटेरा ।
निबेहना-(हिं० क्रि०) देखो निबेरना ।
निबौरी, निबौली-(हिं०स्त्री०) नीम का फल, निमकौड़ी ।
निभ-(सं० वि०) सदृश, तुल्य (पुं०

प्रकाश, प्रभा; **निभना**-(हिं० क्रि०) निकलना, बचना, पार पाना, छुटकारा पाना, निर्वाह होना, पालन होना, पूरा होना, सपरना, चरितार्थ होना, बराबर होता चलना।
निभरभा-(हिं० वि०) जिसका विश्वास उठ गया हो, जिसकी मर्यादा न रह गई हो।
निभरम-(हिं० वि०) भ्रमरहित, जिसमें कोई शका नहो, (क्रि० वि०) बेधड़क।
निभरोस-(हिं० वि०) निराश, हताश,
निभरोसी-(हिं० वि०) निराश्रय, जिसको कोई भरोसा न रह गया हो।
निभागा-(हिं०वि०) अभागा, हतभाग्य
निभाना-(हि० क्रि०) निर्वाह करना, बनाये रखना, बराबर करते जाना, चलाना, भुगताना, चरितार्थ करना, पालन करना, पूरा करना, किसी बात के अनुसार निरन्तर व्यवहार करना।
निभालन-(सं० नपुं०) दर्शन, भेंट।
निभाव-(हिं० पुं०) देखो निबाह।
निभीम-(सं०वि०) भयानक, डरावना।
निभूत-(सं०वि०) भूत, बीता हुआ।
निभूयप-(सं० पुं०) विष्णु भगवान्।
निभृत-(सं० वि०) धरा हुआ, रक्खा हुआ, पूर्ण, भरा हुआ, निश्चित, स्थिर, शान्त, अस्त होने के निकट, निर्जन, सूना, छिपा हुआ, बन्द किया हुआ, एकाग्र, विनीत, नम्र, निश्चल, अटल।
निभ्रोत-(हिं० वि०) देखो निर्भ्रान्ति।
निमंत्रना-(हिं०क्रि०) नेवता देना।
निम-(सं० पु०) शंकु, शलाका।
निमक-(हिं० पुं०) देखो नमक।
निमकी-(हिं० स्त्री०) नीबू का अचार, घी में तली हुई मैदे की नमकीन मोयनदार टिकिया।
निमकौड़ी-(हिं० स्त्री०) नीमकी फली या बीज।
निमग्न-(सं० वि०) जल आदि मे मग्न, डूबा हुआ, तन्मय।
निमछड़ा-(हिं० पुं०) अवकाश।
निमज्जक-(सं० वि०) डूबकी या गोता लगाने वाला; **नमज्जन**-(स० नपुं०) अवगाहन, पानी में डुबकी लगाकर किया जाने वाला स्नान; **निमज्जना**-(हिं० क्रि०) गोता लगाना, स्नान करना; **निमोज्जत**-(सं० वि०) डूबा हुआ, स्नान किया हुआ; **निमटना**-(हिं० क्रि०) देखो निबटना; **निमटाना**-(हिं०क्रि०) देखो निबटाना; **निमटेरा**-(हि० पुं०) देखो निबटारा।
निमन्त्रक-(सं० पुं०) निमन्त्रण या नेवता देने वाला।
निमंत्रण-(सं० नपुं०) किसी कार्य के लिये नियत समय पर आने के लिये अनुरोध करना, भोजन का बुलावा, न्योता; **निमंत्रणपत्र**-(सं० नपुं०) वह पत्र जिसके द्वारा किसी पुरुष से भोज उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिये अनुरोध किया जाता हैं; **निमंत्रित**-(सं० वि०) जिसको न्योता दिया गया हो।
निमता-(हिं० वि०) जो उन्मत्त न हो।
निमन्यु-(सं० वि०) क्रोध रहित,
निमय-(स० पु०) विनिमय, बदला।
निमरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की कपास।
निमान-(हिं०नपुं०) मूल्य, दाम, कीमत (हिं० वि०) नीचा, ढालुआँ, विनीत नम्र, (पुं०) गड्ढा।
निमाना-(हिं० वि०) नीचा, ढालुआँ, नम्र, विनीत।
निमि-(सं० पुं०) दत्तात्रेय के एक पुत्र का नाम, इक्ष्वाकु राजा के एक पुत्र नाम, निमेष, आँख का मिचना।
निमिख-(हिं० पुं०) देखो निमिष।
निमित्त-(सं० वि०) जिसकी लंबाई चौडाई बराबर हो।
निमित्त-(सं० नपुं०) चिह्न, लक्षण, हेतु, कारण शकुन, उद्देश्य, फल की ओर लक्ष्य; **निमित्तक**-(सं० वि०) जनित, उत्पन्न, किसी हेतु से होने वाला, (नपुं०) निमित्त कारण, चुम्बन। **निमित्त कारण**-(सं०नपुं०) न्याय के अनुसार वह कारण जो किसी वस्तु को बनावे अथवा जिसकी सहायता से कोई वस्तु बने; **निमित्त काल**-(सं० पुं०) निमेष समय या काल; **निमित्तकृत**-(सं० पुं०) काक, कौवा; **निमित्ततत्व**-(स०नपुं०) कारणत्व; **निमित्तधर्म**-(सं०पुं०) निष्कृति, प्रायश्चित्त; **निमित्त मात्र**-(सं० नपुं०) हेतुमात्र, कारण मात्र; **निमित्तविद**-(स०पुं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी; **निमित्ती**-(सं० वि०) कर्ता, प्रयोजक।
निमिराज-(सं० पुं०) राजा जनक।
निमिष-(सं० पुं०) आँख मिचना, पलकों का गिरना, वह समय जो पलक के एक बार गिरने में लगता है, परमेश्वर; **निमिषित**-(स० वि०) पलक मारता हुआ।
निमीलन-(सं० नपुं०) निमेष, पलक मारना, मरण।
निमीला-(सं० स्त्री०) आँख का मूँदना, निद्रा, नींद। **निमीलिका**-(सं० स्त्री०) आँख की झपकन, छल। **निमीलित**-(सं० वि०) बँद किया हुआ, ढपा हुआ, मरा हुआ।
निमुहाँ-(हिं० वि०) जिसकी बोलने का मुँह न हो, न बोलने वाला।
निमूँद-(हिं० वि०) बन्द किया हुआ, मूँदा हुआ।
निमूल-(सं० वि०) मूल रहित।
निमख-(हिं० पुं०) देखो निमेष।
निमेय-(सं० वि०) परिवर्तनीय, बदलने योग्य।
निमेट-(हिं० वि०) न मिलने वाला।
निमेष-(सं०पुं०) पलक मारने भर का समय, पल, क्षण, आँख का झपकना एक यक्ष का नाम; **निमेषक**-(सं०पुं०) खद्योत, जुगनू। **निमेषकन्**, **निमेषकृत्**-(सं० स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
निमोना-(हिं०पु०) पिसे हुए हरे चने या मटर के दानों को भून कर बनाया हुआ एक व्यंजन।
निमौनी-(हिं०स्त्री०) वह दिन जब ऊख की उपज में से पहिले पहल कटाई होती है।
निम्न-(सं०वि०) नीच, नीचा; **निम्नग**-(सं० वि०) अधोगामी, नीचे नीचे जाने वाला; **निम्नगत**-(सं०वि०) जो नीचे की ओर गया हो; **निम्नगा**-**निम्नदेश**-(सं० स्त्री०) सरिता, नदी, दरया; **निनदेश**-(स० पुं०) तल देश, निचला भाग।
निम्ब-सं० पुं०) नीम का वृक्ष; **निम्बपत्र**-नीम का पत्ता; **निम्ब प्रसव**-नीम का पत्ता; **निम्बबीज**-निमकौड़ी।
निम्बाक-(सं०पुं०) कागजी नीबू।
निम्बार्क-(स० पुं०) निम्बादित्य का चलाया हुआ एक वैष्णव सम्प्रदाय।
निम्बू-(सं०स्त्री०) नीबू, जम्भीर।
निम्लोच-(सं०पुं०) सूर्यका अस्त होना।
निम्लोचा-(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
नियत-(सं०वि०) नियम द्वारा स्थिर किया हुआ, संयत, स्थिर, ठहराया हुआ. नियोजित, स्थापित, परिमित, ठीक किया हुआ, बँधा हुआ (पुं०) गन्धक; **नियतमानस**-(सं० वि०) जितेन्द्रिय, जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो; **नियतात्मा**-(सं० वि०) देखो नियतमानस; **नियताप्ति**-(सं० स्त्री०) नाटक में अनेक उपायों को छोड़ कर एक ही उपाय से फल प्राप्ति का निश्चय; **नियताहार**-(सं० वि०) परिमित आहार करने वाला, आल्पाहारी, थोड़ा खाने वाला।
नियति-(स० स्त्री०) नियम, बन्धेज, स्थिरता, भाग्य, अवश्य होने वाली घटना, पूर्वकृत कर्म का निश्चत परिणाम. जड़ प्रकृति, एक देवीका नाम।
नियतेन्द्रिय-(सं०वि०) जितेन्द्रिय, इन्द्रियों को अपने वश में करनेवाला। **नियन्तव्य**-(सं०वि०) दमन या शासन करने योग्य।
नियन्ता-(हिं० वि०) विष्णु, शिक्षक, घोड़ा फेरनेवाला, विधायक, कार्य चलाने वाला, नियम बाँधने वाला,
नियम-(सं०पु०) प्रतिज्ञा, अङ्गीकार, परिमिति, रोक, विधि या निश्चय के अनुसार प्रतिबन्ध, निश्चय, व्यवस्था, पद्धति परम्परा, क्रम, शासन, दबाव, संकल्प, योग का एक अंग, विष्णु, शिव, महादेव, एक अर्थालंकार जिसके किसी बात का निर्दिष्ट स्थान पर होना स्थिर कर दिया जावे; **नियमतंत्र**-(सं०वि०) नियम के आधीन; **नियमन**-(सं०नपुं०) नियमबद्ध करने का कार्य, बांधना, शासन, नीम का वृक्ष, (वि०) नियम बांधने वाला; **नियम पत्र**-(सं० नपुं०) प्रतिज्ञापत्र; **नियमपर**-(सं० वि०) नियम के आधीन;
नियमबद्ध-(सं०वि०) नियमों के अनुकूल, नियमों से बँधा हुआ; **नियमभंग**-(सं०पुं०) प्रतिज्ञा भङ्ग, नियम का उल्लंधन; **नियमवत्**-(सं० वि०) नियम के अनुसार; **नियमसेवा**-(सं० स्त्री०) नियम पूर्वक ईश्वर की उपासना
नियर-(हिं० अव्य०) पास, समीप,;
नियराई-(हिं० स्त्री०) सामीप्य, निकटता; **नियराना**-(हि० क्रि०) पास होना, निकट आना; **नियरे**-समीप।
नियाई-(हिं०वि०) देखो न्यायी।
नियाज-(हिं०पुं०) प्रार्थना।
नियातन-(सं० नपुं०) निपातन, नाश करने का कार्य।
नियान-सं०पुं०) गोशाला; (हिं०पुं०) निदान, परिणाम, अन्त।
नियाम-(सं०पुं०) नियम, **नियामक**-(सं० वि०) नियम या व्यवस्था करनेवाला, मारने वाला, (पुं०) मल्लाह, मांझी।
नियामिका-(हिं०वि०) नियमकरनेवाली
नियार-(हिं०पुं०) जौहरी या सोनार की दुकान में का कूड़ा करकट।
नियारना-(हिं०क्रि०) अलगाना।
नियारा-(हिं०वि०) पृथक्, अलग, न्यारा, जुदा, (पु०) देखो नियार; **नियारिया**-(हि०पुं०) सुनारों या जौहरियों की दुकान के कूड़ा करकट में से माल निकालने वाला, चतुर मनुष्य,
नियारे-(हिं०अव्य०) देखो न्यारे।
नियाव-(हिं०पुं०) देखो न्याय।
नियुक्त-(स० वि०) अधिकार किया हुआ, लगाया हुआ, प्रेरित, तत्पर किया हुआ, स्थिर किया हुआ। **नियुक्ति**-(स०स्त्री०) नियुक्त होने का भाव,
नियुत-(सं०नपुं०) लक्ष, एक लाख, दस लाख।
नियुद्ध-(सं०नपुं०) बाहु युद्ध, मल्लयुद्ध,
नियोक्तव्य-(सं०वि०) नियोजित करने योग्य। **नियोक्ता**-(सं०पुं०) नियोजित करनेवाला, किसी काम में लगाने वाला, नियोग करनेवाला।
नियोग-(सं०पु०) प्रेरणा में नियुक्ति, अवधारण, आज्ञा, निश्चय, पुत्र उत्पादन करने के लिये निःसन्तान बड़े भाईकी स्त्री के साथ सम्भोग।
नियोगी-(सं०वि०) जो नियुक्त किया गया हो, जो किसी स्त्री के साथ नियोग करे। **नियोगकर्ता**-(सं०वि०) किसी कर्म में नियुक्त करने वाला;
नियोगपत्र-(सं०नपुं०) वह पत्र जिसमें किसी की नियुक्ति के विषय में लिखा हो।
नियोग विधि-(सं०पुं०) किसी को किसी कार्य मे नियुक्त करने की विधि;

नियोगार्थ-(सं०पुं०) नियुक्त करने का उद्देश्य। **नियोग्य**-(सं०वि०) नियोग करने योग्य।
नियोजक-(सं०पुं०) कार्य मे नियुक्त करने वाला; **नियोजन**-(सं०नपुं०) नियोग, प्रेरणा, किसी काम में लगाना, उत्तेजना, प्रवर्तन।
नियोजित-सं०वि०)नियुक्त कियाहुआ। **नियोज्य**-(सं०वि०) जो नियुक्त करने योग्य हो।
नियोद्धा-(सं०पुं०) युद्ध लड़ने वाला, पहलवान, मुर्गा।
निर्-(सं० अव्य०) वियोग अतिक्रम, निषेध आदि अर्थ में उपसर्गकी तरह प्रयोग किया जाता है।
निरंश-(सं० पुं०) भाग रहित, बिना अक्षांश का।
निरकार-देखो निराकार।
निरकेवल-हि०वि०)बिनामेलका,स्वच्छ,
निरक्षदेश-(सं०पुं०) भूमध्य रेखा के उत्तर तथा दक्खिन के वे देश जहां दिन रात बराबर होता है।
निरक्षन-(हिं०पुं०) देखो निरीक्षण।
निरक्षर-(सं०वि०) जिसने एक अक्षर भी न पढा हो, अनपढा, मूर्ख।
निरक्षरेखा-(सं०स्त्री०) नाड़ी मण्डल, क्रान्तिवृत्त।
निरखना-(हिं०क्रि०) देखना, ताकना।
निरग-(हिं०पुं०) देखो नृग।
निरगुन-(हि०वि०) देखो निर्गुण, वह जिसमें गुण न हो, अनाड़ी।
निरग्नि-(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जो श्रौत और स्मृति विधि के अनुसार अग्नि कर्म न करता है।
निरङ्कुश-(सं० वि०) बिना अंकुश या प्रतिबन्ध का, अनिवार्य, जो निवारण करने योग्य न हो, स्वेच्छाचारी, बिना डर या दबाब का, बेकहा।
निरङ्ग-(सं०वि०)अंग हीन,केवल, (नपुं०) रूपक अलंकार का एक भेद जहां उपमेय में उपमान का इस प्रकार आरोप होता है कि उपमान के सभी अंग नहीं आते; **निरङ्ग**-(हिं०वि०) बिना रंग का, उदास, फीका।
निरङ्गुल-(सं०वि०)जिसको अंगुली न हो
निरचू-(हिं०वि०) निश्चिन्त, जिसको अवकाश मिल गया हो, जिसने छुट्टी लिया हो।
निरच्छ-(हिं०वि०) चक्षुहीन, अन्धा।
निरजर-(हिं०वि०) जो कभी जीर्ण या पुराना न हो।
निरजल-(हिं०वि०) देखो निर्जल।
निरजिन-(सं० नपुं०) जिसको चमड़ा न हो।
निरजी-(हिं०स्त्री०) संतराश की संगमरमर काटने की महीन टांकी।
निरजोस-(हिं० पुं०) निर्णय, निचोड़, सारांश।
निरजोसी-(हिं०वि०) निर्णय करनेवाला सारांश निकालने वाला।
निरझर-(हिं०पुं०) देखो निर्झर।
निरञ्जन-(सं०वि०)काजल, रहित, दोष रहित, माया से लिप्त (पुं०) परमात्मा, महादेव।
निरञ्जना-(सं०स्त्री०) पूर्णिमा, दुर्गा का एक नाम।
निरञ्जनी-एक उपासक संप्रदाय का नाम।
निरत-(सं० वि०) नियुक्त, तत्पर, किसी काम में लगा हुआ, लीन, तन्मय, (हिं०पुं०)देखो नृत्य; **निरतना**-(हिं०क्रि०) नृत्य करना, नाचना।
निरति-(सं०स्त्री०) अत्यन्त प्रीति, लीन होने का भाव; **निरतिशय**-(सं०पुं०) अतिशय से परे, परमेश्वर, सर्वज्ञ, परमश्रेष्ठ।
निरत्यय-(सं०वि०) जिसका हद न हो, जिसका नाश न हो, आपत्ति रहित।
निरदई-(हिं०वि०) देखो निर्दय। **नरधन**-देखो निरधन। **निरधातु**-(हिं० वि०) बीर्यहीन, शक्तिहीन, अशक्त।
निरधार-(हिं० पुं०) देखो निर्धार; **निरधारना**-(हिं० क्रि०) निश्चय करना, स्थिर करना; ठहराना, मनमें धारण करना।
निरध्व-(सं०वि०) जो अपना मार्ग भूल गया हो।
निरनुक्रोश-(सं०पुं०) निर्दयता, निष्ठुरता; **निरनुक्रोशता**-(सं० स्त्री०) निर्दयता, **निरनुक्रोश युक्त**-(सं०वि०) निर्दय।
निरनुग-(सं० वि०) जिसके पास कोई सेवक न हो।
निरनुनासिक-(सं०वि०)जिसका उच्चारण नाक से न किया जावे।
निरनुरोध-(सं०वि०) निष्ठुर, कृतघ्न।
निरन्तर-(सं०वि०)निबिड़, घना, जिसके बीच में अन्तर न हो, सर्वदा रहने वाला, गझिन, जो दृष्टि के सम्मुख हो, जिसमें भेद या अन्तर न हो, अमध्य, अनात्मीय, (हिं०क्रि० वि०) सदा, सर्वदा, बराबर, **निरन्तराव**-(सं०वि०) निरन्तर अर्थ का;
निरन्तरावना-(सं०स्त्री०) घनिष्ठ संबध
निरन्ध-(हिं०वि०) भारी अंधा, बड़ा मूर्ख
निरन्न-(सं०वि०) अन्नहीन, बिना अन्न का, निराहार, जो अन्न न खाये हो
निरन्नता-(सं०स्त्री०) उपवास।
निरन्ना-(हिं०वि०) निराहार, जो अन्न न खाये हो।
निरन्वय-(सं० वि०) संबंध रहित; निर्वंश।
निरप-(सं०वि०)जलहीन, बिना पानी का
निरपत्रप-(सं० वि०) धृष्ट, निर्लज्ज।
निरपना-(हिं०वि०) जो आत्मीय न हो, पराया।
निरपराध-(सं०पुं०) दोषहीनता, निर्दोषता, शुद्धता, (वि०) अपराध रहित, निर्दोष, (हिं०क्रि०वि०) बिना कोई अपराध किये हुये; **निरपराधी**-(हिं० वि०) देखो निरपराध।
निरपवर्त-(सं०वि०) जो लौटा न देता हो जिसमें भाजक का पूरा भाग लग सके।
निरपवाद-(सं० वि०) अपवाद रहित, निर्दोष, जिसकी कोई बुराई न करे
निरपाय-(सं०वि०)जिसका नाश न हो।
निरपेक्ष-(सं० वि०) जिसको किसी वस्तु की आकांक्षा या चाह न हो, जिसको किसी दूसरे की आशा न हो, तटस्थ, पृथक अलग, (नपुं०) अनादर; **निरपेक्षा**-(सं०स्त्री०)अवज्ञा, निराशा; **निरपेक्षित**-(सं०वि०)जिसकी अपेक्षा या आकांक्षा न की गई हो; **निरपेक्षी**-(सं०वि०) अपेक्षा न रखने वाला।
निरफल-(हिं०वि०) निष्फल।
निरबंध-(हिं०वि०) बन्धन हीन।
निरबंसौ-देखो निर्वंशी।
निरबंसी-(हिं० वि०) निर्वंश, जिसको वंश या सन्तान न हों।
निरबल-(हिंवि०) देखो निर्बल।
निरबहना-(हिं०क्रि०) देखो निभना।
निरबान-देखो निर्वाण।
निरबाह-देखो निर्वाह।
निरबाहना-(हिं०क्रि०) निर्वाह करना।
निरबिसी-हिं०स्त्री०) देखो निर्विषी।
निरबेद-(हिं०पुं०) वैराग्य।
निरबेरा-(हिं०पुं०)देखो निबेरा।
निरभय-देखो निर्भय।
निराभिभव-(सं०वि०) जो जीता न जा सके, जो अपमानित न हो।
निरभिमान-(सं०वि०)अभिमान रहित।
निरभिलाष-(सं०वि०)अभिलाषा रहित,
निरभीमान-(सं०वि०) देखो निरभिमान
निरभै-देखो निर्भय।
निरभ्र-(सं०वि०) मेघ शून्य, बिना बादल का।
निरमण-(सं०नपुं०) अत्यन्त अनुराग, अधिक प्रेम।
निरमना-(हिं०क्रि०) निर्माण करना, बनाना, रचना।
निरमर्ष-(सं०वि०) जिसमें तेज न हो, धीर, धैर्ययुक्त, अमर्षशून्य।
निरमर, निरमल-(हिं०वि०) देखो निर्मल
निरमसोर-(हिं०पुं०) अफीम का विष दूर करने की एक जड़ी जो पंजाब में होती है।
निरमान-(हिं०पुं०) देखो निर्माण। **निरमाना**-(हिं०क्रि०) निर्माण करना, बनाना, तैयार करना।
निरमायल-(हिं०पुं०) देखो निर्माल्य।
निरमित्र-(सं०वि०) शत्रु रहित (पुं०) नकुल के एक पुत्र का नाम।
निरमूलना-(हिं०क्रि०) निर्मूल करना, नष्ट करना।
निरमोल-(हिं०वि०) अमूल्य, अनमोल, बहुत बढ़िया।
निरमोही-(हिं०वि०) देखो निर्मोही।
निरम्बर-(सं०वि०) वस्त्र शून्य, दिगम्बर, बिलकुल नंगा।
निरम्बु-(सं०वि०) जलहीन,बिनाजलका
निरय-(सं०पुं०) नरक।
निरयण-(सं० पुं०) ज्योतिष में गणना करनेकी एक रीति, अयनरहितगणना
निरर्गल-(सं०वि०) जिसमें कोई बाधा न हो।
निरर्थ-(सं०वि०) अर्थ शून्य; जिसका अर्थ न हो, निष्फल, व्यर्थ; **निरर्थक**-(सं०वि०) अर्थशून्य, निष्फल, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, न्याय का एक निग्रह स्थान, काव्य का एक दोष।
निरर्बुद-(सं०नपुं०) एक नरकका नाम
निरलंकार-(हिं०वि०) अलंकार रहित।
निरलस-(हिं०वि०) आलस्य हीन।
निरवकाश-(सं०वि०) जिसमें अवकाश न हो।
निरवग्रह-(सं०वि०) स्वतन्त्र, प्रतिबन्ध रहित, बिना विघ्न या बाधा का, जो दूसरे की इच्छा पर न हो।
निरवच्छिन्न-(सं०वि०) जिसका क्रम न टूटे, विशुद्ध,निर्मल, निरन्तर।
निरवद्य-(सं०वि०) अनिन्द्य, निर्दोष, अज्ञान शून्य, परमात्मा, गायत्री का एक भेद।
निरवधि-(सं०क्रि०वि०) निरन्तर, बराबर, असीम, अपार,सर्वदा।
निरवयव-(सं०वि०) अंगों से रहित, निराकार, न्याय के मत से परमाणु तथा आकाशादि निरवयव माने गये हैं तथा सर्वथा अवयव शून्य केवल ब्रह्म है।
निरवरोध-(सं०वि०) प्रतिबन्ध रहित, बिना रुकावट का।
निरवलम्ब(सं०वि०) आधार रहित, निराश्रय, बिना सहारे का, जिसको कहीं ठिकाना न हों, जिसका कोई सहायक न हो; **निरवलम्बन**-(सं०वि०) निराश्रय, असहाय; **निरशेष**-(सं०वि०) समग्र, समूचा।
निरवशेषित-(सं०वि०) जिसका कुछ बचा न हो; **निरवसाद**-(सं०वि०) जिसको दुःख या चिन्ता न हो।
निरवस्कृत-(सं०वि०) परिष्कृत, स्वच्छ किया हुआ।
निरवस्तार-(सं०वि०) बिनाबिछौने का।
निरवाना-(हिं०क्रि०) निराने का काम दूसरे से कराना।
निरवार-(हिं०पुं०) निस्तार, छुटकारा, सुलझाने का काम, निबटारा, गाँठ आदि का छुड़ाना,सुलझन, निर्णय; **निरवारना**-(हिं०क्रि०) युक्त करना, छोड़ाना, त्यागना, सुलझाना, गाँठ आदि छुड़ाना, निर्णय करना।
निरवाह-(हिं०पुं०) देखो निर्वाह।
निरशन-(सं०नपुं०) अनशन, भोजन न करना, लंघन, उपवास, (वि०) जिसने कुछ खाया न हो।

निरसंक-(हिं०वि०) देखो निःशङ्क।
निरस-(सं०वि०) नीरस,रसहीन,जिसमें रस न हो, फीका, निःसत्व, असार, सूखा, रूखा, विरक्त। **निरसन**-(सं०नपुं०) निराकरण, परिहार, वध, थूक, फेंकना, दूर करना, हटाना, निकालना, नाश।
निरसा-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी घास
निरस्त-(सं०वि०) जल्दी से निकाला हुआ, थूका हुआ,उगला हुआ,प्रेषित, भेजा हुआ, (पुं०) थूक, फेंकने की क्रिया, सोचने की क्रिया।
निरस्त्र-(सं०वि०) अस्त्र शून्य, बिना अस्त्र का।
निरस्थि-(सं०नपुं०) वह माँस जिसमें से हड्डी अलग कर दी गई हो।
निरस्य-(सं०वि०) खंडनीय, परिहार करने योग्य; **निरस्यमान**-(सं०वि०) अलग किया हुआ।
निरहंकार-(सं०वि०) अभिमान रहित।
निरहंकृत-(सं०वि०) अहंकार रहित; **निरहंकृति**-(सं० स्त्री०) निरभिमान, निरहंकार; **निरहंक्रिय**-(सं० वि०) जिसका घमंड नष्ट हुआ हो; **निरहंमति**-(सं०वि०) अभिमान रहित; **निरहंकार**-(सं०वि०) अहंकार रहित, जिसको घमंड न हो।
निरहेतु-(हिं० वि०) देखो निर्हेतु।
निरा-(हिं०वि०) विशुद्ध, बिना मेल का, केवल, एकमात्र, जिसके साथ और कुछ न हो, नितान्त, निपट।
निराई-(हिं०स्त्री०) निराने का काम, खेत में इधर उधर उगने वाली घास आदि हटाने का काम, निराने का शुल्क।
निराकरण-(सं०नपुं०) निवारण, किसी बुराई को दूर करने का काम,छाँटना, अलग करना, मिटाना, हटाना, दूर करना, सिद्धान्त, निर्णय, शमन, परिहार, युक्ति को काटने का काम, मीमांसा, अवधारण।
निराकांक्ष-(सं०वि०) जिसको अभिलाषा न हो; **निराकांक्षा**-(सं०स्त्री०) लोभ या लालसा का होना; **निराकांक्षी**-(सं०वि०) निस्पृह, जिसको कुछ इच्छा न हो।
निराकार-(सं०वि०) जिसका कोई आकार न हो, परमेश्वर, परब्रह्म, आकाश।
निराकाश-(सं०वि०) आकाश शून्य।
निराकुल-(सं०वि०) अनुद्विग्न, जो घबड़ाया न हो, अत्यन्त व्याकुल, बहुत घबड़ाया हुआ।
निराकृत-(सं०वि०) निरस्त, खंडन किया हुआ, निवारित, नष्ट किया हुआ, विचारा हुआ,दूर किया हुआ, हटाया हुआ। **निराकृति**-(सं०स्त्री०) प्रत्यादेश, परिहार, (पुं०) रोहित मनु के पुत्र का नाम।
निराक्रन्द-(सं०वि०) जहां कोई पुकार सुनने वाला या सहायता करनेवाला न हो, जिसकी सहायता कोई न करे
निराक्रिया-सं०स्त्री०) प्रतिबन्ध।
निराखर-(हिं०वि०) बिना अक्षर का, जिसमें अक्षर न हों, अपठित, मूढ़, मौन, चुप।
निराग-(सं०वि०) राग शून्य, रागहीन
निरागम-(सं०वि०) आगम रहित।
निरागस्-(सं०वि०) पापशून्य,पापरहित
निराग्रह-(सं०वि०) आग्रह रहित, बिना आग्रह का।
निराचार-(सं०वि०) आचार शून्य।
निराजी-(हिं०स्त्री०) जुलाहे के करघे की हत्थे पर की एक लकड़ी।
निराजीव्य-(सं०वि०) जिसका जीवन उपाय कुछ न हो।
निराट-(हिं०वि०)एकमात्र,निपट, निरा
निराडम्बर-(सं०वि०) आडम्बर रहित, बिना ठाट बाट का।
निरातंक-(सं०वि०) भयशून्य,रोगरहित
निरातप-(सं०वि०) आतप या उष्णता रहित। **निरातपा**-(सं०स्त्री०)रात्रि,रात
निरात्मक-(सं०वि०) आत्मा शून्य।
निरादर-(सं०पुं०)अपमान; **निरादान**-(सं०पुं०) लेनेका अभाव, जो प्रतिग्रह स्वीकार न करता हो।
निरादिष्ट-(सं०वि०) जो समाप्त कर दिया गया हो।
निरादेश-(सं०पुं०) चुकाने का काम, भुगतान, (वि०) आदेश रहित।
निराधान-(सं०वि०) आधार रहित।
निराधार-(सं०वि०)अवलम्ब या आश्रय रहित, जिसको सहारा न हो, जो सहारे पर न हो,जो बिना अन्न जल के हो, जो प्रमाणों से पुष्ट न हो, मिथ्या, अयुक्त, जिसको जीविका का सहारा न हो।
निराधि-(सं०वि०) रोग रहित, जिसको कोई चिन्ता न हो।
निरानन्द-(सं०वि०) आनन्द रहित, शोकाकुल (पुं०) आनन्द का अभाव, दुःख, चिन्ता।
निराना-(हिं०क्रि०) पौधोंके आस पास उगी हुई घास आदि को खोदकर हटाना।
निरान्त्र-(सं०वि०) अंग रहित।
निरापद्-(सं०स्त्री०) जिसको कोई आपत्ति या डर न हो, जिसको किसी प्रकार की विपत्ति की संभावना न हो, सुरक्षित, जहां किसी बात की डर न हो।
निरापन-(हिं०वि०) पराया, जो अपना न हो।
निरापुन-(हिं०वि०) देखो निरापन।
निराबाध-(सं०वि०) वृथा, शून्य।
निरामय-(सं०वि०) रोग शून्य, भला चंगा, उपद्रवशून्य, (पुं०) कुशल,शिव, महादेव।
निरामालु-(सं०पुं०)कैथकावृक्ष, निर्मली
निरामिष-(सं०वि०) बिना रोवें का, मांस रहित, जिसमें मांस न मिला हो, जो मांस न खाता हो; **निरामिषाशी**-(सं०वि०) मांस न खाने वाला, जितेन्द्रिय।
निराय-(सं०वि०)आय रहित, बिनाकरका
निरायण-(सं०वि०) अयन रहित।
निरायत-(सं०वि०) विस्तृत, फैला हुआ, आनायत, सिकुड़ाहुआ।
निरायास-(सं०वि०) आयास या चेष्टा रहित।
निरायुध-(सं०वि०) अस्त्रहीन।
निरारम्भ-(सं०वि०) आरम्भ या कार्य शून्य।
निरारा-(हिं०वि०) देखो निराला,पृथक्, अलग।
निरालम्ब-(सं०वि०) निराधार, बिना सहारे का, बिना ठिकानेका; **निरालम्बा**-(सं०स्त्री०) छोटी जटामासी; **निरालम्बन**-(सं०वि०) निराश्रय,बिना ठौर ठिकाने का।
निरालस-(हिं०वि०) बिना आलस्यका।
निरालस्य-(सं०वि०) जिसमें आलस्य न हो, तत्पर, (पुं०) आलस्यकाअभाव
निराला-हिं०पु०) एकान्त स्थान, ऐसा स्थान जहाँ कोई मनुष्य याबस्तीनहो; (वि०) निर्जन, एकान्त, अद्भुत, विलक्षण अपूर्व, सबसे भिन्न, अनोखा, अति उत्तम, अनूठा।
निरालोक-(सं०वि०) आलोक रहित, जिसमें से प्रकाश निकल गया हो, अन्धकार युक्त।
निरावना-(हिं०क्रि०) देखो निराना।
निरावर्ष-(सं०वि०) वृष्टि से निवारित।
निरावलम्ब-(सं० वि०) निराधार, बिना सहारे का।
निरावृत्त-(सं०वि०) जो ढँका न हो।
निराश-(सं०वि०) आशा रहित; **निराशक**-(सं०वि०) निराश करने वाला।
निराशङ्क-(सं०वि०) आशंका रहित, जिसमें किसी बात का सन्देह न हो। **निराशता**-(सं०स्त्री०) निराशा का धर्म या भाव। **निराशा**-(सं०स्त्री०) आशा का अभाव, **निराशित्व**-(सं०नपुं०) निराशा का भाव।
निराशी-(सं० वि०) आशा हीन, हताश. विरक्त, उदासीन।
निराशिष-(सं०वि०) बिना आशीर्वाद का, तृष्णा रहित।
निराश्रय-(सं०वि०) बिना आश्रय या सहारे का,असहाय, अशरण, जिसको कहीं ठिकाना न हो।
निराश्रम-(सं०वि०) आश्रम रहित।
निरास-(सं०पुं०) निराकरण, खण्डन।
निरासन-(सं०वि०) आसन रहित।
निरासी-(हिं०वि०) निराश, उदास।
निरास्वाद-(सं०वि०) स्वाद रहित,
निरास्वाद्य-(सं०वि०) सम्भोग रहित।
निराहार-(सं० वि०) आहार रहित, जो भोजन न किये हो, (नपुं०) आहार का अभाव।
निरिङ्ग-(सं०वि०) अचल, निश्चल,
निरिङ्गिणी-(सं०स्त्री०) चिक, परदा। झिलमिली।
निरिच्छ-(सं० वि०) इच्छा शून्य; जिसको इच्छा न हो।
निरिन्द्रिय-(सं०वि०) इन्द्रिय रहित, जिसको कोई इन्द्रिय न हो।
निरिच्छना-(हिं०क्रि०) निरीक्षण,देखना।
निरिन्धन-(सं०वि०) बिना इँधन का।
निरी-(हिं०वि०) देखो निरा।
निरीक्षक-(सं०वि०) दर्शकदेखनेवाला, देख रेख करने वाला; **निरीक्षण**-(सं०नपुं०) दर्शन, देख रेख, देखने का ढंग, चितवन, नेत्र, आँख, (वि०) दर्शक, देखने वाला; **निरीक्षमाण**-(सं०वि०) जो देख रहा हो; **निरीक्षा**-(सं०स्त्री०) दर्शन: **निरीक्षित**-(सं०वि०) देखा हुआ; **निरीक्ष्य**-(सं० वि०) देखने योग्य; **निरीक्ष्यमाण**-(सं०वि०) जो देखा जाता हो।
निरीश-(सं०वि०) बिना मालिक का, ईश्वर को न मानने वाला, नास्तिक।
निरीश्वर-(सं० वि०) अनीश्वरवादी, नास्तिक; **निरीश्वरवाद**-(सं० पुं०) यह सिद्धान्त के ईश्वर नहीं है।
निरीश्वरवादी-(सं०पुं०) नास्तिकवाद, जो ईश्वर को न मानता हो।
निरीष-(सं०नपुं०) हल की फार।
निरीह-(सं० वि०) चेष्टा शून्य, जो किसी बात के लिये प्रयत्न न करता हो, जिसको किसी बात की चाह न हो, विरक्त, उदासीन, तटस्थ, जो सर्वदा सबसे मेल रखता हो, (पुं०) विष्णु।
निरीहा-(सं०स्त्री०) निश्चेष्टा, विरक्ति,
निरुआर-(हिं० पुं०) देखो निरुवार;
निरुआरना-(हिं०क्रि०) देखो निरुवारना।
निरुक्त-(सं०नपुं०) निर्वचन, वेदाङ्गों में से वेद का चौथा अङ्ग, यास्क मुनि कृत वैदिक शब्दों के निघण्टु की व्याख्या जिसमें वैदिक शब्दों के अर्थों का निर्णय किया गया है, (वि०) व्याख्या किया हुआ, निश्चित किया हुआ।
निरुक्ति-(सं०स्त्री०) निर्वचन, व्युत्पत्ति आदि को बतलाते हुए किसी पद या वाक्य की व्याख्या, एक काव्यालङ्कार जिसमें किसी शब्द का मनमाना अर्थ किया जावे परन्तु वह अर्थ युक्तिपूर्वक हो।
निरुच्छ्वास-(सं०वि०) संकीर्ण, सकरा, जहां पर बहुत लोग भरे हों।
निरुज-(हिं०वि०) देखो निरूज।
निरुत्तर-(सं०वि०) उत्तर रहित, जो उत्तर न दे सके।
निरुत्पात-(सं०वि०) उपद्रव शून्य, उत्पात रहित।
निरुत्सव-(सं०वि०) उत्सव हीन, बिना धूम धाम का।

निरुत्साह-(सं०वि०) बिना उत्साह का;
निरुत्सुक-(सं० वि०) औत्सुक्यहीन, (पु०) रैवतक मनु के एक पुत्र का नाम
निरुदक-(सं०वि०) जलहीन, बिना जल का।
निरुद्ध-(सं०वि०) बँधा हुआ, रुका हुआ, (पुं०) योग की पांच प्रकार की मनोवृत्तियोंमें से चित्तकी वह अवस्था जिसमें वह अपनी कारणीभूत प्रकृति को प्राप्त होकर निश्चेष्ट हो जाता है; निरुद्धगुद-(संपुं०) एक रोग जिसमे मल द्वार प्रायः बन्द हो जाता है। निरुद्धप्रकाश-(संपुं०) मूत्र द्वार बन्द होने तथा बूंद बूंद मूत्र होने का रोग।
निरुद्यम-(सं०वि०) बिना उद्योग का, जिसके पास कोई उद्यम या काम न हो, बिना काम काज का; निरुद्यमी-(हिं०वि०) जो कोई उद्यम न करता हो; निरुद्योग-(सं० पुं०) जिसके पास कोई उद्योग न हो; निरुद्योगी (सं०वि०) जो कोई उद्योग न करता हो।
निरुद्विग्न-(सं० वि०) उद्वेग रहित, निश्चिन्त।
निरुद्वेग-(सं० वि०) उद्वेग रहित, निश्चिन्त।
निरुपक्रम-(सं०वि०) बिना उपक्रम का।
निरुपद्रव-(सं०वि०) उपद्रव रहित, जो उत्पात या उपद्रव न करता हो; निरुद्रपवता-(सं०स्त्री०) निरुपद्रव होने की क्रिया या भाव; निरुपद्रवी-(सं०वि०) जो उपद्रव न करता हो, शान्त। निरुपद्रुत-(सं०वि०) उपद्रव रहित।
निरुपाधि-(सं०वि०)जिसमें किसी प्रकार की उपाधि न हो।
निरुपपत्ति-(सं०वि०) जिसमें किसी प्रकार की उपपत्ति न हो।
निरुपपद-(सं०वि०) उपपद रहित।
निरुपप्लव-(सं०वि०) उत्पात रहित।
निरुपभोग-(सं०वि०) उपभोग रहित।
निरुपम-(सं०वि०)उपमा रहित, जिसकी उपमा या तुलना न हो, (स्त्री०) गायत्री। निरुपमा-(संस्त्री०) गायत्री का एक नाम।
निरुपयोगी-(सं०वि०) जिसका उपयोग न किया जा सके, निरर्थक, व्यर्थ।
निरुपरोध-(सं०वि०) उपरोध रहित, अपक्षपाती।
निरुपल-(सं०वि०) बिना पत्थर का।
निरुपलेप-(सं०वि०) उपलेप रहित।
निरुपसर्ग-(सं०वि०) उत्पात रहित, उपसर्गहीन।
निरुपस्कृत-(सं०वि०)पवित्र, स्वाभाविक, अकृत्रिम।
निरुपहत-(सं०वि०) शुभ सूचक।
निरुपाख्य-(सं०वि०) जिसकी व्याख्या न हो सके, असत्य, जिसके होने की संभावना न हो।
निरुपाधि-(सं०वि०)उपाधि शून्य, माया रहित, बाधा रहित, (पुं०) ब्रह्म।
निरुपाय-(सं० वि०) उपायहीन, जो कुछ उपाय न कर सके।
निरुपेक्ष-(सं०वि०)उपेक्षा रहित।
निरुवरना-(हिं० क्रि०) सुझलाना, कठिनाई हटाना।
निरुवार-(हिंपुं०) मोचन, मुक्ति, छुटकारा, बचाव, उलझन मिटाने का काम, निबटाने का काम, निर्णय, सुलझाने का काम। निरुवारना-(हिं०क्रि०) मुक्त करना, छोड़ाना, निर्णय करना सुलझाना, निबटाना, उलझन मिटाना।
निरुष्मन्-(सं०वि०) जो गरम न हो, शीतल।
निरूढ-(सं० वि०) प्रसिद्ध, प्रख्यात, व्युत्पन्न, अविवाहित, क्वारा, (पुं०) शक्ति तुल्य लक्षण द्वारा अर्थबोधक शब्द, एक प्रकार का पशु याग। निरूढलक्षणा-(संस्त्री०) लक्षण का वह भेद जिसमें किसी शब्द का वास्तविक अर्थ रूढ हो गया हो अर्थात् केवल प्रसंग से ही वह अर्थ लगाया गया हो। निरूढा-(संस्त्री०) अविवाहिता, कुंवारी स्त्री।
निरुढि-(सं० स्त्री०) प्रसिद्धि, निरूढ लक्षणा।
निरूप-(सं०वि०) रूप हीन, निराकार, कुरूप, भद्दा, (पुं०) वायु, देवता, आकाश। निरूपक-(सं०वि०) किसी विषय का निरूपण करने वाला; निरूपकता-(संस्त्री०) निरूपण करने का भाव। निरूपण-(सं० नपुं०) आलोक, विचार, विवेचन सहित निर्णय, निदर्शन, (वि०) निरूपक।
निरूपना-(हिं०क्रि०) निर्णय, निश्चत करना, स्थिर करना।
निरूपम-(हिं०वि०) देखो निरुपम।
निरूपित-(सं०वि०) विचारा हुआ, निर्णय किया हुआ, दृष्ट, देखा हुआ
निरूप्य-(सं० वि०) स्थिर किया हुआ, दृढ़।
निरूष्मन्-(सं०वि०) शीतल, ठंढा।
निरूह-(संपु०)एक प्रकार की पिचकारी
निरूहण-(सं०नपुं०) स्थिरता, निश्चय।
निर्ऋति-(संस्त्री०) अलक्ष्मी, दरिद्रता, निरुपद्रव, विपत्ति, मृत्यु, एक रुद्र का नाम।
निरेक-(सं०वि०) परिपूर्ण, पूरा।
निरेखना-(हिं०क्रि०) देखो निरखन।
निरै-(हिंपुं०) निरय, नरक।
निरोग, निरोगी-(हिं०वि०)रोग रहित, आरोग्य, स्वस्थ।
निरोध-(संपुं०) नाश, रुकावट, बंधन, प्रतिबंध, अवरोध, घेरा, योग में चित्त की सब वृत्तियों को रोकने का कार्य। निरोधक-(सं०वि०) रोकने वाला; निरोधन-(संनपुं०) गति का अवरोध, रुकावट; निरोधी-(सं०वि०) प्रतिबन्धक, रोकने वाला;
निर्गत-(सं०वि०) निकला हुआ, बाहर आया हुआ।
निर्गन्ध-(सं० वि०) गन्ध रहित; निर्गन्धता-(संस्त्री०) निर्गन्ध होने की क्रिया या भाव।
निर्गन्धन-(संनपुं०) मारण।
निर्गन्धपुष्पी-(संस्त्री०) सेम्हर का पेड़
निर्गम-(संपुं०) निःसरण, निकास;
निर्गमन-(सं०नपुं०) द्वार, द्वारपाल, ड्योढीदार; निर्गमना-(हिं०क्रि०) निकलना।
निर्गर्व-(सं०वि०) अहंकार रहित।
निर्गवाक्ष-(सं०वि०)जिसमें झरोखा न हो
निर्गुण-(सं०वि०) जिसमें गुण न हो, जिसमें गुण या चिल्ला न हो, (पुं०) जिसमें सत्व, रज, तमोगुण न हो, परमेश्वर; निर्गुणता-(सं० स्त्री०) निर्गुण होने की क्रिया या भाव, गुण हीनता; निर्गुणत्व-(संनपुं०) गुणहीनता, मूर्खता; निर्गुणात्मक-(सं०नपुं०) निर्गुण स्वरूप ब्रह्म; निर्गुणिया-(हिं०वि०) जो निर्गुण ब्रह्मकी उपासना करता हो; निर्गुणी-(हिं०वि०) जिसमें कोई गुण न हो, मूर्ख; निर्गुण्ठी-(संस्त्री०) निर्गुण्डी, निसोथ।
निर्गुण्डी-(संस्त्री०) एक पौधा जिसकी जड़ औषधियों में प्रयोग होती है, संभालू।
निगूढ-(सं० वि०) जो बहुत गूढ़ या गुप्त हो। निर्गृह-(सं०वि०)गृह शून्य जिसको घर न हो।
निर्गौरव-(सं०वि०) गौरव रहित, अहंकार शून्य, विनीत, नम्र।
निर्ग्रन्थ-(संपुं०) दिगम्बर जैनी, (वि०) जुआ खेलने वाला, निर्धन, निःसहाय, मूर्ख; निर्ग्रन्थक-(सं० वि०) निष्फल, वस्त्र रहित, नंगा।
निर्ग्रन्थन-(संनपुं०) मारण।
निर्ग्रन्थि-(सं० वि०) जिसमें गांठ या गिरह न हो; निर्ग्रन्थिक-(सं० पुं०) क्षपणक, (वि०) चतुर, हीन।
निर्ग्राह्य-(सं० वि०) जो अच्छी तरह से ग्रहण न किया जा सके।
निर्घट-(संनपुं०) वह हाट जहां किसी प्रकार का राजकर न लगता हो।
निर्घण्ट-(संपुं०) शब्द या ग्रन्थ सूची,
निर्घात-(सं० पु०) वायु के तीव्र चलने से उत्पन्न शब्द, चोट।
निर्घात्य-(सं०वि०) छेदने योग्य।
निर्घरिणी-(संस्त्री०) निर्झरिणी, पानी का सोता।
निर्घृण-(सं०वि०) दया शून्य, निर्दय, निन्दित, अयोग्य, जिसको बुरा काम करने में घृणा न हो।
निर्घोष-(सं० पुं०) शब्द मात्र, (वि०) शब्दशून्य, शब्द रहित।
निर्छल-(हिं०वि०) देखो निश्छल।
निर्जन-(सं०वि०)जन शून्य स्थान, जिस स्थान में, कोई मनुष्य न हो, सुनसान।
निर्जर-(सं० पुं०) देवता (वि०) जरारहित, जिसको बढ़ापा न आवे, (नपुं०) सुधा, अमृत। निर्जरा-(संस्त्री०) गुरुच, गिलोय, तालपर्णी।
निर्जरायु-(सं०वि०) जरायु हीन।
निर्जल-(सं० वि०) जल शून्य, बिना जल का, जल के संसर्ग से रहित, (पुं०) वह स्थान जहां पानी न हो।
निर्जला एकादशी-(संस्त्री०) जेठ सुदी एकादशी तिथि जिस दिन हिन्दू लोग व्रत करते है और पानी तक नहीं पीने।
निर्जित-(सं० वि०) पराजित, जीता हुआ, जो वशमें कर लिया गया हो।
निर्जिह्व-(सं० वि०) जिसको जीभ न हो
निर्जीव-(सं० वि०) प्राणहीन, मृतक, अशक्त, उत्साह हीन। निर्जीवन-(हिं०वि०) जीवनहीन। निर्जीवित-(वि०) जीवन हीन।
निर्झर-(सं० पुं०) पहाड़ से निकलता हुआ जलप्रवाह, झरना, सोता।
निर्झरिणी-(संस्त्री०) नदी, दरिया।
निर्झरी-(संपु०) पर्वत, गिरि, पहाड़ (संस्त्री०) पानी का झरना, सोता।
निर्णय-(संपुं०) उचित अनुचित का विचार करके किसी विषय के दो पक्षों में से एक पक्ष ठीक निर्धारित करना, किसी विषयमें कोई सिद्धान्त स्थिर करना, विचार, मीमांसा के किसी सिद्धान्त से कोई परिणाम निकालना, विरोध का परिहार, निबटारा; निर्णयन-(संनपुं०)निर्णय;
निर्णयोपमा-(सं० स्त्री०) वह अर्थालङ्कार जिसमें उपमेय और उपमान के गुण दोषों की विवेचना की जाती है।
निर्णाम-(संपुं०) अत्यन्त नमन, बहुत झुकाव।
निर्णायन-(संनपुं०) निर्णय का कारण
निर्णिक्त-(सं०वि०) शोधित, शुद्ध किया हुआ।
निर्णिज-(सं०वि०) जीता हुआ।
निर्णीत-(सं०वि०) निर्णय किया हुआ।
निर्णेक-(संपुं०) अत्यन्त शुद्ध।
निर्णेजक-(संपुं०) रजक, धोबी।
निर्णेजन-(संनपुं०) शुद्धि, प्रायश्चित्त।
निर्णेता-(सं०वि०) झगड़े को निबटाने वाला। निर्णेय-(सं०वि०) निर्णय करने योग्य।
निर्त-(हिंपु०) देखो नृत्य।
निर्तक-(हिंपु०) देखो नर्तक।
निर्तना-(हिं०क्रि०) नृत्य करना, नाचना।
निर्दई-(हिं०वि-) देखो निर्दय।
निर्दग्ध-(सं०वि०) जो जला न हो।
निर्दग्धिका-(संस्त्री०) इलायची।
निर्दट-(सं०वि०) निर्दय, कठोर हृदय, तीव्र।
निर्दड-(सं०वि०) निर्दय, निष्प्रयोजन।
निर्दण्ड-(सं०वि०) दण्डहीन, जिसको दण्ड न दिया जावे

निर्दम्भ-(सं०वि०) जिसको अभिमान न हो।
निर्दय-(सं०वि०) दया हीन, निष्ठुर; निर्दयता-(सं० स्त्री०) निष्ठुरता; निर्दयत्व-(सं०नपुं०) निर्दय का भाव या क्रिया।
निर्दयी-(हिं०वि०) देखो निर्दय।
निर्दर-(सं०नपुं०) गुहा, कन्दरा, (वि०) कठिन।
निर्दलन-(सं०नपुं०) विदारण।
निर्दशन-(सं०वि०) दशनहीन, बिना दांत का।
निर्दहन-(स० पु०) भिलावें का पेड़, (वि०) अग्निशून्य।
निर्दहनी-(सं०स्त्री०) मूर्वा लता।
निर्दहना-(हिं०क्रि०) जलाना।
निर्दाह-(सं०वि०) आग से जला हुआ।
निर्दिग्ध-(सं०वि०) पुष्ट, मोटा।
निर्दिष्ट-(सं०वि०) निश्चित, ठहराया हुआ, आदिष्ट, आज्ञा दिया हुआ।
निर्दूषण-(सं०वि०) देखो निर्दोष।
निर्देश-(सं०पुं०) उल्लेख, वर्णन, नाम, संज्ञा, चेतन, निश्चय, कथन, आज्ञा,
निर्देष्टा-(सं०वि०) आज्ञा देने वाला।
निर्दैन्य-सं०वि०) दीनता रहित।
निर्दोष-(सं०वि०) दोष रहित, जिसने कोई अपराध न किया हो, निर्दोषता-(सं०स्त्री०) दोषहीनता, शुद्धता; निर्दोषी-(हिं०वि०) जिसने कोई अपराध न किया हो, ।
निर्द्रव्य-(सं० वि०) दरिद्र, धनहीन।
निर्द्रोह-(सं०वि०) द्रोहरहित, मित्र।
निर्द्वन्द्व-(सं०वि०) जिसका विरोध करने वाला कोई न हो, जो राग द्वेष से रहित हो, स्वच्छन्द।
निर्धन-(सं० वि०) धन रहित, दरिद्र, कंगाल; निर्धनता-(सं०स्त्री०) दरिद्रता
निर्धर्म-(सं०वि०) जो धर्म से रहित हो।
निर्धार-(सं०पुं०) निर्धारण, निश्चित करना, ठहराना; निर्धारण-(सं० नपु०)निर्णय, निश्चय, न्याय के अनुसार किसी एक जाति के पदार्थों में से गुण कर्म आदि का विचार करते हुए कुछ व्यक्ति को अलगाना; निर्धारना-(हिं०क्रि०) निर्धारित करना, निश्चित करना, ठहराना; निर्धारित-(सं०वि०) निश्चित, ठहराया हुआ।
निर्धूत-(सं०वि०) खण्डित, टूटा हुआ, फेंका हुआ, छोड़ा हुआ, निन्दा किया हुआ।
निर्धूम-(सं०वि०) जहां धुआँ न हो।
निर्धौत-(सं० वि०) धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ।
निर्नमस्कार-(सं०वि०) प्रणाम रहित।
निर्नर-(सं०वि०)मनुष्य शून्य, नर रहित
निर्नाथ-(सं० वि०) नाथ शून्य, बिना मालिक का।
निर्नाभि-(सं०वि०)जिसको ढोंढ़ी न हो।
निर्नाशन-(सं०नपुं०)निर्वासन,वहिष्कार,
निर्निमित्त-(सं०वि०) अकारण।
निर्निमेष-(क्रि० वि०) जो पलक न गिराता हो; (क्रि० वि०) टकटकी लगाए हुए।
निर्निवार्य-(सं०वि०) अनिवार्य।
निर्नीड़-(सं०वि०) आश्रय शून्य, बिना घर दुआर का।
निर्पक्ष-(हिं०वि०) पक्षपात रहित।
निर्फल-(हिं०वि०) देखो निष्फल।
निर्बन्ध-(सं०पुं०) आग्रह, हठ, रुकावट; निर्बन्धी-(सं० वि०) आवश्यक काम का।
निर्बन्धु-(सं०वि०)बन्धु रहित,बन्धु हीन।
निर्बर्हण-(सं०वि०) निर्बल।
निर्बल-(सं०वि०) बलहीन।
निर्बलता-(सं०स्त्री०) शक्ति हीनता।
निर्बहना-(हिं० क्रि०) पार होना, दूर होना, अलग होना, पालन होना, निभना।
निर्बाचन-(हिं० पुं०) देखो निर्वाचन।
निर्बाण-(हिं०पु०) देखो निर्वाण।
निर्बाध-(सं०वि०) बिना प्रतिबन्ध का, निरुपद्रव।
निर्बुद्धि-(सं०वि०) बुद्धिहीन, मूर्ख।
निर्बुष-(सं०वि०) बिना भूसे का।
निर्बोध-(सं० वि०) खिसको हिताहित का ज्ञान न हो, अज्ञान।
निर्भट-(सं०वि०) दृढ, पुष्ट।
निर्भय-(सं०वि०) भय रहित, जिसको कोई डर न हो, निडर। निर्भयता-(हिं०स्त्री०) निडर होने की अवस्था।
निर्भर-(सं०वि०) बहुत युक्त, मिला हुआ, अवलंबित, आश्रित, भरा हुआ, (पुं०) वेतनशून्य भृत्य।
निर्भर्त्सन-(सं०नपुं०) निन्दा, तिरस्कार, डाटडपट;निर्भर्त्सना-(सं०स्त्री०) निन्दा; निर्भर्त्सित-(सं० वि०) जिसकी निन्दा की गई हो।
निर्भाग्य-(सं०वि०) मन्दभाग्य, अभागा
निर्भाज्य-(सं० वि०) जो भाग करने के योग्य न हो।
निर्भिन्न-(सं० वि०) अभिन्न, खण्डित।
निर्भीक-(सं०वि०) निःशंक, निडर, भय रहित; निर्भीकता-(सं०स्त्री०) निर्भीक या निडर होने की क्रिया या भाव।
निर्भीत-(सं०वि०) भयरहित, निडर।
निर्भुज-(सं०वि०) जिसका एक छोर मुड़ा हो। निर्भृति (सं०पुं०)-वेतन शून्य भत्य;निर्भेद-विदारण, फाड़ना;
निर्भेदी-(सं० वि०) भेद करने वाला;
निर्भेद्य-(सं०वि०) विभेद करने योग्य;
निर्भोग-(सं० वि०) संभोग रहित, सुख हीन; निर्भ्रम-(सं० वि०) भ्रम रहित, जिसमें कोई सन्देह न हो, (क्रि०वि०) बिना सन्देह के, बेखटके; निर्भ्रान्त-(सं०वि०) भ्रम रहित, जिसमें कोई सन्देह न हो; निर्मक्षिक-(सं० अव्य०) जिस देशमें मक्खियाँ न हों, निर्जन देश; निर्मज्ज-(सं०वि०) मज्जा रहित;
निर्मण्डूक-(सं० वि०) जहां मेढक न हों; निर्मत्सर-(सं०वि०) अहंकार हीन बिना घमंड का। निर्मत्स्य-(सं०वि०) जिसमें मछलियां न हों; निर्मद-(सं० वि०) निरभिमान, हर्षशून्य।
निर्मना-(हिं० क्रि०) देखो निर्माना।
निर्मनुज, निर्मनुष्य-(सं० वि०) मनुष्य शून्य, निर्जन।
निर्मन्त्र-(सं०वि०) मन्त्र शून्य, बिना मन्त्रका। निर्मन्थन-(सं०नपु०) अच्छी तरह मथना, मर्दन। निर्मन्यु-(सं० वि०) क्रोध रहित।
निर्मम-(सं०वि०) जिसको ममता या कोई वासना न हो; निर्ममता-(सं० स्त्री०) ममता का अभाव; निर्ममत्व-(सं० नपु०) जिसको ममता न हो।
निर्मर्याद-(सं०वि०) बिना मर्यादा का।
निर्मल-(सं० वि०) मलहीन, स्वच्छ, पवित्र, शुद्ध, पाप रहित, कलंकहीन, निर्दोष, (नपुं०) अभ्रक, निर्मली का वृक्ष; निर्मलता-(सं०स्त्री०)-विशुद्धता, स्वच्छता,शुद्धता पवित्रता; निर्मला-(हिं०पु०) एक नानक पंथी संप्रदाय जिसके प्रवर्तक रामदास नामक एक महात्मा थे; निर्मली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल का गूदा खाया जाता है, इसके बीज घिसकर गन्दले पानी में डाल देने से पानी स्वच्छ हो जाता है; निर्मलोपल-(सं०पुं०) स्फटिक, बिल्लौर।
निर्मशक-(सं० वि०) मच्छड़ रहित, जहाँ मच्छड़ न हों।
निर्मास-(सं०वि०) जिसमें मांस न हो, अति दुर्बल।
निर्मा-(सं०स्त्री०) परिमाण,मूल्य, दाम।
निर्माण-(सं०नपुं०) बनने का काम, रचना, बनावट; निर्माणविद्या-(सं०स्त्री०) मकान, पुल, आदि बनने की विद्या, वास्तु विद्या। निर्माता-(हिं०पुं०) निर्माण करने वाला, बनाने वाला।
निर्मात्रिक-(सं०वि०) बिना मात्रा का, जिसमें मात्रा न हों।
निर्मान-(हिं०वि०)अपार, असीम, (पुं०) देखो निर्माण। निर्माना-(हिं० क्रि०) निर्माण करना, बनाना।
निर्मायल-(हिं०पुं०) देखो निर्माल्य।
निर्माली-सिक्ख जाति के अन्तर्गत एक सम्प्रदाय।
निर्माल्य-(सं०नपुं०) देवता को अर्पित की हुई वस्तु।
निर्मित-(सं०वि०) रचा हुआ,बनाया हुआ
निर्मुक्त-(सं०वि०) जो मुक्त हो गया हो, जो छूट गया हो, जिसके लिये किसी प्रकार का बन्धन न हो;
निर्मुक्ति-(सं०स्त्री०) मोक्ष, छुटकारा
निर्मुट-(सं०नपुं०)सूर्य, खपड़ा, धूर्त, शठ
निर्मूल,निर्मूलक-(सं०वि०) मूल रहित, बिना जड़ का, जड़ से उखाड़ा हुआ, बिना आधार का, जो सर्वदा नष्ट हो गया हो; निर्मूलन-(सं० नपुं०) उत्पाटन, उखाड़ना, निर्मूल होना या करना।
निर्मेघ-(सं० वि०) मेघशून्य, बिना बादल का।
निर्मेध-(सं०वि०) बुद्धि हीन।
निर्मोक-(सं०पुं०)साँपकी केंचुली,मोचन, छुटकारा, आकाश, कवच।
निर्मोक्ता-(सं०वि०) मुक्त करने वाला।
निर्मोक्ष-(सं०पु०) त्याग, पूर्ण रूप का मोक्ष। निर्मोच्य-(सं०वि०) मुक्ति पाने योग्य।
निर्मोल-(हिं०वि०)अमूल्य, जिसका दाम बहुत अधिक हो।
निर्मोह-(सं० वि०) मोह शून्य, जिसके मन में मोह या ममता न हो; (पुं०) सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।
निर्मोहनी-(हिं० वि०) जिसके मनमें ममता या दया न हो, कठोर हृदय का; निर्मोही-(हिं० वि०) निर्दय, कठोर हृदय का।
निर्यत्न-(सं०वि०) यत्नशून्य,आलसी।
निर्यन्त्रण-(सं०वि०)बाधारहित,उद्दण्ड।
निर्याण-(सं० नपुं०) मुक्ति, मोक्ष, अदृश्य होना, शरीर में से आत्मा का निकलना।
निर्यात-(सं०वि०) निर्गत देश के बाहर भेजी हुई सामग्री, निकला हुआ; निर्यातक-(हिं० वि०) अनिष्ट करने वाला; निर्यातन-(सं० पुं०) प्रतीकार, बदला चुकाना, धरोहर को लौटा देना, ऋण चुकाना, मार डालना।
निर्याति-(सं० स्त्री०) प्रस्थान,
निर्याता-(सं० पुं०) कृषक, किसान।
निर्याम-(सं०पुं०)नाविक;मल्लाह,मांझी
निर्यास-(सं०पुं०) कषाय, काढा; (नपुं०) वृक्षों में से निकलने वाला रस, गोंद; लाह, वल्कल, छाल।
निर्युक्ति-(सं०स्त्री०)असंयोग,युक्तिहीनता
निर्यूथ-(सं० वि०) यूथ या झुण्ड से अलग किया हुआ।
निर्यूष-(सं० पुं०) निर्यास, गोंद।
निर्योग-(सं०पुं०) अलंकार, सजावट।
निर्लक्षण-(सं० वि०) क्षुद्र, अप्रसिद्ध।
निर्लक्ष्य-(सं०वि०) लक्ष्यहीन, जो दृष्टि पर न पड़े।
निर्लज्ज-(सं० वि०) लज्जाहीन; निर्लज्जता-(हिं० स्त्री०) लज्जाहीनता।
निर्लिङ्ग-(सं० वि०) जिसमें कोई निश्चित लिङ्ग या चिह्न न हो।
निर्लिप्त (सं०वि०) राग द्वेष आदि से मुक्त,जो किसी विषय में आसक्त न हो, जो किसी से संबंध न रखता हो,
निर्लुञ्चन-(सं० नपुं०) लूट मार करने का काम।
निर्लुण्ठन-(सं०नपुं०)अपहरण, लूटना।
निर्लेखन-(सं० नपुं०) किसी वस्तु पर की मैल खुरचना।
निर्लेप-(सं० वि०) जिसको लोभ या लालच न हो; निर्लोभी-(हिं० वि०) लोभ रहित।

निर्लोमन-(सं०वि०) जिसको रोएँ न हों
निर्लोह-(सं०नपुं०)बोल नामकगन्ध द्रव्य
निर्वंश-(सं० वि०) जिसके आगे वंश में कोई न हो; **निर्वंशता**-(सं० स्त्री०) निर्वंश होने का भाव।
निर्वक्तव्य-(स० वि०) निर्वाच्य, प्रकाश न करने योग्य।
निर्वचन-(सं० नपुं०) किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा वर्णन हो, (वि०)वक्तव्यता शून्य, मौन, प्रसिद्ध।
निर्वपण-(सं० नपुं०) अन्न आदि का संविभाग, दान।
निर्वयणी-(सं०स्त्री०) साँप की केचुली।
निर्वर-(सं०वि०)निर्लज्ज,निर्भय, कठिन; **निर्वसन**-(हिं० वि०) वस्त्र हीन।
निर्वहण-(सं०नपुं०) समाप्ति, निर्वाह।
निर्वहना-(हिं०क्रि०) निभाना, चलाना;
निर्वाक्-(सं० वि०) वाक्यहीन, जिसके मुख से बात न निकलती हो।
निर्वाक्य-(सं०वि०) वाक्य हीन, गूंगा।
निर्वाच्य-(सं०वि०)निर्वचनीय। **निर्वाचक**-(सं०पुं०) जो चुनता हो, चुनने वाला। **निर्वाचन**-(स० पुं०) किसी मुख्य कार्य के लिये अनेक व्यक्तियों में से एक या अधिक को चुन लेना।
निर्वाचित-(सं० वि०) चुना हुआ।
निर्वाण-(स० नपुं०) निवृत्ति, शान्ति, समाप्ति, विनाश, विष्णु, संगम, विश्रान्ति, मुक्ति, शून्यता, विद्या का उपदेश, (वि०) अस्त, डूबा हुआ, बुझा हुआ, शान्त, मृत, मरा हुआ।
निर्वात-(सं० वि०) वायु रहित, जहाँ हवा न हो, अचंचल, स्थिर।
निर्वाद-(स०पुं०)अपवाद,निन्दा,अवज्ञा।
निर्वानर-(सं०वि०) जहाँ बन्दर न हों।
निर्वान्त-(सं०वि०) प्रेरित, भेजा हुआ।
निर्वाप-(सं०पुं०) दान, भक्षण, भोजन; **निर्वापण**-(सं०नपुं०) वध,दान,सम्पादन
निर्वापित-(सं० वि०) जिसको निर्वाण मिला हो, नाश किया हुआ, बुझाया हुआ।
निर्वास-(हिं० पुं०) प्रवास, विदेश यात्रा, निर्वासन, देश से निकाला जाना,
निर्वासक-(सं०पुं०) निर्वास करनेवाला; **निर्वासन**-(सं० नपुं०) मारण, बध, नगर, देश, गाँव आदि से दण्ड रूप बाहर निकाला जाना, विसर्जन, निःसारण, निकालना; **निर्वासनीय**-(सं० वि०) देश से बाहर निकालने योग्य।
निर्वाह-(सं०पु०)कार्य सम्पादन, पालन, निबाह, समाप्ति, पूरा होना; **निर्वाहक**-(स०वि०) किसी काम का निर्वाह करने वाला; **निर्वाहना**-(हिं० क्रि०) निर्वाह करना, निबाहना; **निर्वाहित**-(सं० वि०) निबाहा हुआ।
निर्विकल्प-(सं० वि०) भेद से रहित, निश्चित,स्थिर; **निर्विकल्पक**-(सं०वि०) दर्शनों के अनुसार वह अवस्था जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय में भेद नहीं रह जाता तथा दोनों एक हो जाते है;
निर्विकल्प समाधि-(सं०पुं०) वह समाधि जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि का कोई भेद नहीं रह जाता और ज्ञानात्मक सच्चिदानन्द ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं देख पड़ता।
निर्विकार-(सं० पुं०) जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो, परमात्मा, (वि०) विकार शून्य।
निर्विकास-(सं०वि०)अस्फुटविकाररहित।
निर्विघ्न-(सं० वि०) जिसमें कोई विघ्न न हो, विघ्न रहित, बिना बाधा का।
निर्विचार-(सं० वि०) विचार रहित।
निर्विचेष्ट-(सं० वि०) अज्ञान, मूर्ख,
निर्वितर्क-(सं०वि०) वितर्क शून्य, (पुं०) पातजंल दर्शन के अनुसार एक प्रकार की समाधि।
निर्विद्य-(सं०वि०) विद्याहीन, जो पढ़ा लिखा न हो।
निर्विभेद-(सं०वि०)भेद रहित, अभिन्न।
निर्विमर्श-(सं० वि०) चिन्ताहीन,
निर्विरोध-(सं०वि०)विरोधहीन,शान्त।
निर्विरोधी-(सं०वि०)निर्विवादी,शान्त।
निर्विवर-(सं० वि०) छिद्र शून्य, बिना छेद का।
निर्विवाद-(सं०वि०) कलह शून्य, बिना झगड़े का।
निर्विवेक-(स० वि०) विवेचना रहित, अविवेकी; **निर्विवेकता**-(हिं० स्त्री०) निर्विवेक होने का भाव। **निर्विशङ्क**-(सं० वि०) निर्भय, निडर;
निर्विशङ्कित-(सं० वि०) शंका हीन, भ्रम रहित। **निर्विशेष**-(सं० नपुं०) परब्रह्म (वि०) विशेष रहित, तुल्यरूप। **निर्विष**-(सं०वि०) विष रहित, जिसमें विष न हो। **निर्विषय**-(सं० वि०) अगोचर, जो इन्द्रियग्राह्य न हो।
निर्विषा-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की घास **निर्विषी**-(सं० स्त्री०) असवर्ग जाति की एक घास जिसकी जड़ का प्रयोग अनेक विषों के नाश करने में किया जाता है।
निर्विष्ट-(स० वि०) कृतभोग, कृतविवाह, मुक्त, छोड़ दिया हुआ।
निर्वीज-(सं० वि०) बीज शून्य, जिसमें बीज न हो, कारण रहित; (पुं०) एक प्रकार की समाधि का नाम।
निर्वीजा-(सं०स्त्री०) किशमिश नामक मेवा।
निर्वीर-(स०वि०) प्रभुता हीन, वीरता शून्य। **निर्वीरा**-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति और पुत्र न हो।
निर्वीर्य-(स०वि०) वीर्य हीन, तेजरहित।
निर्वृक्ष-(सं०वि०)वृक्षशून्य,बिनावृक्षका
निर्वृत-(सं०वि०) प्रसन्न।
निर्वृति-(सं०स्त्री०) मोक्ष, मृत्यु, शान्ति; आनन्द; **निर्वृत्त**-(सं०वि०) निष्पन्न, जो पूरा हो गया हो; **निर्वृत्त शत्रु**-(स० पुं०) विष्णु।
निर्वृत्ति-(स० वि०) जीविका रहित, जीविका हीन।
निर्वृष-(स० वि०) बिना वर्षा का, बिना बैल का।
निर्वेग-(स० वि०) गति हीन, स्थिर।
निर्वेतन-(स० वि०) वेतन हीन,
निर्वेद-(स० पु०) अपमान, वैराग्य, दुःख, खेद, (वि०) वेद रहित।
निर्वेश-(सं०पु०) वेतन, मूर्छा, विवाह। **निर्वेशनीय**-(सं० वि०) भोग्य, प्राप्त करने योग्य।
निर्वेष्टन-(स०वि०) वेष्टन रहित, बिना ढपने का।
निर्वैर-(सं०वि०)शत्रुभाव वर्जित, मित्र।
निर्वोध-(सं०वि०) ज्ञान हीन, मूर्ख।
निर्व्यथ-(सं०वि०) व्यथा या पीड़ा से रहित; **निर्व्यथन**-(सं०वि०) जिसको व्यथा या पीड़ा न हो।
निर्व्यपेक्ष-(सं० वि०) निरपेक्ष।
निर्व्यलीक-(सं०वि०)छलरहित,सच्चा।
निर्व्याकुल-(सं० वि०) जो घबड़ाया न हो, स्थिरचित्त।
निर्व्याघ्र-(सं० वि०) जहाँ व्याघ्र का भय न हो।
निर्व्याज-(सं० वि०) छल रहित, बाधा रहित, बिना कपट का।
निर्व्याधि-(स० वि०) व्याधि मुक्त, आरोग्य, चंगा।
निर्व्यापार-(सं०वि०)बिनाकामकाजका
निर्व्यूढ-(स०वि०)निष्पन्न,समाप्त,स्थिर।
निर्व्रण-(सं० वि०) ब्रण रहित, जिसको घाव न हों।
निलज-देखो निर्लज्ज।
निव्रत-(सं०वि०)व्रत तथा आचारहीन।
निर्हरण-(सं०नपुं०) दहन, नाश करने का काम; **निर्हरणीय**-(स०वि०)अलग करने योग्य।
निर्हस्त-(सं० वि०) बिना हाथ का, हस्तशून्य।
निर्हिम-(सं०वि०) हिमशून्य, जहां बरफ़ न गिरती हो।
निर्हृत-(सं०वि०) निकाला या हटाया हुआ।
निर्हृति-(सं०स्त्री०) वह जो अपने स्थान से हटाया गया हो।
निर्हेतु-(सं०वि०) कारणहीन, जिसमें हेतु या कारण न हो।
निर्हीक-(सं०वि०) निर्भीक, साहसी।
निलज्ज-(हिं० वि०) देखो निर्लज्ज; **निलज्जता**-(हिं०स्त्री०) निर्लज्जता; **निलज्जी**-(हिं०वि०) निर्लज्ज।
निलय-(सं० पुं०) गृह, घर, मकान, आश्रयस्थान; **निलयन**-(सं० नपुं०) बैठने का स्थान, सम्बन्ध।
निलहा-(हिं० वि०) नीलवाला, नील सम्बन्धी।
निलाम-(हिं०पुं०) देखो नीलाम।
निलिम्प-(सं० पुं०) देवता; **निलिम्पनिर्झरी**-गंगा नदी। **निलिम्पा**-(सं०स्त्री०) गाय, दूध दुहने का पात्र।
निलीन-(सं०वि०)लीन,छिपा हुआ संलग्न
निवछावर-(हिं०स्त्री०) देखो निछावर।
निवड़िया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की नाव।
निवता-(सं०स्त्री०) वह जो नीचे को जाता हो।
निवर-(सं० वि०) निवारक; हटाने वाला।
निवरा-(सं०स्त्री०)अविवाहिता, कुमारी कन्या।
निवर्त-(सं०वि०) हटाया हुआ, लौटाया हुआ; **निवर्तक**-(सं०वि०) प्रतिबन्धक, रोकने वाला; **निवर्तन**-(स० नपुं०) साधन, पीछे हटाना या लौटाना; **निवर्तनीय**-(सं० वि०) लौटने योग्य पीछे हटने योग्य; **निवर्तमान**-(सं०वि०) जो लौट रहा हो; **निवर्तित**-(सं०वि०) लौटाया हुआ।
निवर्हण-(सं०वि०) उत्सन्न, ध्वस्त।
निवसति-(सं० स्त्री०) घर, मकान।
निवसथ-(सं०पुं०) गांव, सीमा, हद।
निवसन-(स० नपु०) घर, वस्त्र, कपड़ा; **निवसना**-(हिं०क्रि०) बसना, रहना, निवास करना।
निवस्तव्य-(सं० वि०) निर्वाह करने योग्य।
निवह-(स०पु०) समूह, यूथ, फलित ज्योतिष के अनुसार सात वायु के अन्तर्गत एक वायु।
निवाई-(हिं० वि०) नया, विलक्षण, अनोखा।
निवाज-(हिं०वि०) अनुग्रह करनेवाला, कृपा करनेवाला; **निवाजना**-(हिं०क्रि०) अनुग्रह करना, कृपा करना।
निवाड़-(हिं०स्त्री०) देखो निवार।
निवाड़ा-(हिं०पुं०) छोटी नाव, नदी के बीच में नाव को ले जाकर उसको चक्कर देने की क्रीड़ा।
निवात-(सं० स्त्री०) अश्रय, निवास, (वि०) बात शून्य; **निवातकवच**-एक दैत्य का नाम।
निवान-(हिं० पुं०) नीची भूमि जो कीचड़ या दलदल से भरी हो, बड़ा तालाब, झील। **निवाना**-(हिं०क्रि०) झुकाना, नीचे की ओर करना।
निवान्या-(सं०स्त्री०) वह गाय जिसका बच्चा मर गया हो, और दूसरे बच्चे को लाकर दूही जाती हो।
निवापक-(सं०वि०) बीच बोने वाला।
निवापी-(हिं०पुं०) बोने वाला।
निवार-(सं० पुं०) निवारण, बाधा, (हिं०स्त्री०) कुएँ की नीव में बैठाने का लकड़ी का गोल चक्कर, तिन्नी का धान, एक प्रकार की मूली।
निवार-(सं०वि०) रोकने वाला, दूर करने वाला, अवरोधक, मिटाने वाला।
निवारण-(सं०नपुं०) निवृत्ति, छुटकारा, हटाने या दूर करने की क्रिया;

निवारणीय-(सं॰वि॰) रोकने या हटाने योग्य।
निवारन-(हिं॰पुं॰) देखो निवारण; **निवारना**-(हिं॰क्रि॰) निषेध करना, मना करना, बचाना, हटाना, दूर करना।
निवारी-(हिं॰स्त्री॰) जूही की जाति का एक पौधा, इस पौधे का सफेद फूल।
निवास-(सं॰ पुं॰) रहने का स्थान, आश्रय, गृह, घर, वस्त्र; कपड़ा;
निवासस्थान-(सं॰ पुं॰) रहने का स्थान, घर।
निवासी-(सं॰वि॰) बसने वाला, रहने वाला; **निवास्य**-(सं॰ वि॰) रहने योग्य, कपड़े से ढपा हुआ।
निविड़-(सं॰वि॰) गहरा, घना, अविरल, गाढ़ा; **निविड़ता**-(सं॰ स्त्री॰) गहरापन, घनापन।
निविष्ट-(सं॰वि॰) प्रविष्ट, घुसा हुआ, बँधा हुआ, ठहरा हुआ, एकाग्र, लपेटा हुआ, जिसका चित्त एकाग्र हो।
निवीर्य-(सं॰ वि॰) वीर्यहीन, जिसमें पुरुषत्व न हो।
निवृत-(सं॰वि॰) घिरा हुआ, बाहर से ढपा हुआ।
निवृत्त-(सं॰ नपुं॰) मुक्ति, छुटकारा, निवृत्ति पूर्वक कर्म, (वि॰) विरक्त; छूटा हुआ, जो छुट्टी पा गया हो।
निवृतात्मा-(सं॰वि॰) जो विषय वासना से निवृत्त हो, (पुं॰) विष्णु।
निवृत्ति-(सं॰स्त्री॰) मुक्ति, छुटकारा, मोक्ष, महादेव, शिव।
निवेद-(हिं॰पुं॰) देखो नैवेद्य।
निवेदक-(सं॰वि॰) प्रार्थना करने वाला; **निवेदन**-(सं॰नपुं॰) समर्पण, प्रार्थना, विनय, विनती, **निवेदना**-(हिं॰ क्रि॰) विनती करना, प्रार्थना करना, किसी देवता के आगे कुछ नैवेद्य रखना, अर्पित करना; **निवेदनीय**-(सं॰वि॰) निवेन करने के योग्य; **निवेदित**-(सं॰वि॰) निवेदन किया हुआ, कहा हुआ, अर्पण किया हुआ, चढ़ाया हुआ, दिया हुआ। **निवेदी**-(सं॰वि॰) निवेदन करने वाला, प्रकाशक।
निवेद्य-(सं॰वि॰) निवेदन करने योग्य।
निवेरना-(हिं॰क्रि॰)निबटाना,तय करना।
निवेरा-(हिं॰वि॰) छाँटा हुआ, चुना हुआ, अनोखा।
निवेश-(सं॰पुं॰) शिबिर, डेरा,विवाह, प्रवेश, घर, विन्यास, खेमा।
निवेशन-(सं॰नपुं॰) स्थापन, स्थिति, प्रवेश, नगर; **निवेशनीय**-(सं॰वि॰) प्रवेश करनेयोग्य;**निवेशित**-(सं॰वि॰) स्थापित, प्रवेशित;**निवेश्य**-(सं॰ वि॰) प्रवेश करने योग्य।
निवेष्टन-(सं॰नपुं॰) वस्त्रद्वारा आच्छादक कपड़े से ढाँपने का कार्य।
निवेष्टव्य-(सं॰वि॰) ढाँपने योग्य।
निवेष्य-(सं॰नपुं॰)व्याप्ति,(पुं॰)आवर्त, पानी का भँवर, नीहारजल, रुद्र, (वि॰) व्याप्त, फैला हुआ।
निव्यूढ़-(सं॰नपुं॰) निरन्तर परिश्रम।
निश्-(सं॰स्त्री॰)रात्रि,रात,हरिद्रा हलदी;
निशंक-(हिं॰वि॰) जिसको किसी बात की शंका या डर न हो, निर्भय, निडर, (पुं॰) एक प्रकार का नाच।
निशंग-(हिं॰पुं॰) देखो निषङ्ग।
निश-(हिं॰स्त्री॰) देखो निश्, रात्रि।
निशमन-(सं॰नपुं॰) दर्शन, देखना, श्रवण सुनना।
निशा-(सं॰स्त्री॰) रात्रि, रात, हरिद्रा, हलदी। **निशाकर**-(सं॰पुं॰) चन्द्रमा, कुक्कुर, मुरगा, कपूर, एक महर्षि का नाम, शिव, महादेव।
निशाचर-(सं॰पुं॰) राक्षस, सियार उल्लू, सर्प, चोर, बिल्ली, प्रेत, भूत, चक्रवाक पक्षी, महादेव,चोरक नाम का गन्धद्रव्य, (वि॰) रात को चलने वाला; **निशाचरपति**-शिव, महादेव, रावण; **निशाचरी**-(सं॰स्त्री॰) कुलटा, राक्षसी, अभिसारिका नायिका;
निशाचम-(सं॰पुं॰)अन्धकार,अन्धेरा,
निशाचरी-(सं॰पुं॰) शिव, निशाचर;
निशाजल-(सं॰नपुं॰)हिम, पाला,ओस
निशाट-(सं॰पुं॰) उल्लू पक्षी, (वि॰), निशाचर। **निशाटक**-(सं॰ पुं॰) गुग्गुल (वि॰) रात को घूमने वाला;
निशाटन-(सं॰पुं॰) रात के समय में भ्रमण, उल्लू; **निशात्यय**-(सं॰पुं॰) प्रभात, सबेरा; **निशाद**-(सं॰ वि॰) केवल रात को खाने वाला; **निशादर्शिन**-(सं॰पुं॰) उल्लू पक्षी।
निशाधीश-(सं॰पुं॰) निशापति,चन्द्रमा
निशापति-(सं॰पुं॰) चन्द्रमा।
निशानाथ-(सं॰ पुं॰) निशापति, चन्द्रमा, कपूर।
निशान्त(सं॰नपुं॰) घर, पिछली रात, प्रभात, तड़का, (वि॰) अति शान्त।
निशान्ध-(सं॰पुं॰) जिसको रात में सूझ न पड़ता हो, जिसको रतौंधी आती हो।
निशापति(सं॰ पुं॰) देखो निशाकर;
निशापुत्र(सं॰ पुं॰) नक्षत्र आदि; आकाशीय पिण्ड; **निशापुष्प**-(सं॰ पुं॰) कुमुद, कोई; **निशाप्राणेश्वर**(सं॰पुं॰)निशापति,चन्द्रमा;**निशाबल**-(सं॰पुं॰) ज्योतिष के अनुसार वे राशियां जो रात में अधिक बलवती रहती हैं;**निशाभङ्गा**-(सं॰स्त्री॰) दुग्धपुच्छी नामक पौधा; **निशाभाग**-(सं॰ पुं॰) रात्रि, रात; **निशामणि**(सं॰ पुं॰) चन्द्रमा, कर्पूर, कपूर;
निशामन-(सं॰ नपुं॰) दर्शन, देखना, विचार।
निशामय-(सं॰पुं॰) शिव, महादेव;
निशामुख-(सं॰नपुं॰) गोधूलि बेला, प्रदोष काल; **निशामृग**-(सं॰ पुं॰) शृगाल, सियार।
निशायी-(सं॰वि॰) निद्रागत, सोयाहुआ
निशारण-(सं॰नपुं॰) रात्रि युद्ध, रात के समय की लड़ाई।
निशारत्न-(सं॰नपुं॰)चन्द्रमा,कर्पूर,कपूर
निशारुक-(सं॰पुं॰)एक प्रकारके ताल का नाम (वि॰)हिंसा करने वाला।
निशावन-(सं॰पुं॰) सन का पौधा।
निशावसान-(सं॰नपुं॰)रात का अन्त भाग तड़का; **निशाविहार**-(सं॰पुं॰) राक्षस। **निशावृन्द**-(सं॰नपुं॰) रात्रि गण,रात्रि समूह,**निशावेदिन**-(सं॰पुं॰) कुक्कुट, मुरगा।
निशाह्व-(सं॰पुं॰) कुमुदिनी कोई।
निशि-(सं॰स्त्री॰) रजनी, रात, हरिद्रा, हलदी; **निशिकर**-(सं॰पुं॰) चन्दमा शशि; **निशिचर**-(हिं॰पुं॰) निशाचर;
निशित-(सं॰वि॰) सान पर चढाया हुआ, चोखा किया हुआ; **निशिता**-(सं॰स्त्री॰) निशीथ, रात्रि, रात; **निशिदिन**-(हिं॰क्रि॰) रात दिन, सर्वदा,
निशिनाथ, **निशिनायक**, **निशिपति**-**निशिपाल**-(सं॰पुं॰) चन्द्रमा, एक प्रकार का छन्द; **निशिपालक**-(सं॰पुं॰) रात को पहरा देने वाला, द्वारपाल (नपुं॰) एक प्रकार का वर्ण वृत्त; **निशिपुष्पा**-(सं॰ स्त्री॰) निर्गुण्डी लता; **निशिवासर**-(हिं॰पुं॰) रात दिन, सर्वदा।
निशीथ-(सं॰पुं॰)रात्रि, रात,आधीरात
निशित-(हिं॰ वि॰) पैना, धारदार;
निशीथिनी-(सं॰स्त्री॰) रात्रि रात।
निशीथिनी नाथ-(सं॰पुं॰) चन्द्रमा, कपूर।
निशिथ्या-(सं॰स्त्री॰) रात्रि, रात।
निशुम्भ-(सं॰ पुं॰) हिंसा, वध, एक असुर जो दुर्गा के हाथ से मारा गया था, **निशुम्भन**-(सं॰ नपुं॰) वध, मार डालना; **निशुम्भ मर्दिनि**-(सं॰स्त्री॰) दुर्गा देवी; **निशुम्भिन्**-(सं॰वि॰) नाश करने वाला।
निशृत्य-(सं॰वि॰) उपनीत, लाया हुआ
निशेश-(सं॰पुं॰) निशिकर, चन्द्रमा।
निशैत-(सं॰पुं॰) वक, बगुला।
निशोत्सर्ग-(सं॰पुं॰) प्रभात, तड़का।
निशोपशाय-(सं॰वि॰)रात में विश्राम करने वाला।
निश्कुला-(सं॰ वि॰) अपने कुल से निकाली हुई।
निश्चक्षु-(सं॰वि॰) नेत्रहीन,अन्धा।
निश्चन्द्र-(सं॰ वि॰) चन्द्रमा रहित, जिसमें चमक न हो।
निश्चय-(सं॰पुं॰) ऐसी धारणा जिसमें किसी प्रकार का सन्देह न हो, निर्णय, विश्वास, दृढ संकल्प, पक्का विचार, वह अर्थालंकार जिसमें अन्य विषय का निषेध होकर यथार्थ विषय का स्थापन होता है; **निश्चयरूप**-(सं॰वि॰) आकृति युक्त। **निश्चयात्मक**-(सं॰वि॰) बिना सन्देह का, निश्चित। **निश्चयात्मकता**-(सं॰स्त्री॰) असन्दिग्धता, यथार्थता।
निश्चयी-(सं॰वि॰) स्थिर किया हुआ ठीक किया हुआ, विचारा हुआ।
निश्चल-(सं॰वि॰) स्थिर, जो हिलता डोलता न हो, अचल, जो अपने स्थान से न हटे, असम्भावना, **निश्चलता**-(सं॰स्त्री॰) दृढ़ता, स्थिरता;
निश्चला-(सं॰स्त्री॰)शालपर्णी,पृथ्वी;
निश्चलाङ्ग-(सं॰पुं॰) वक, बगला, (वि॰) जो हिलता डोलता न हो।
निश्चायक-(सं॰ वि॰) निश्चय करने वाला।
निश्चित-(सं॰ वि॰) निश्चय किया हुआ, तय किया हुआ।
निश्चिन्त-(सं॰ वि॰) चिन्तारहित;
निश्चतई-(हिं॰ स्त्री॰) निश्चिन्तता, (सं॰स्त्री॰) निश्चिन्त होने का भाव।
निश्चुक्कण-(सं॰नपुं॰) दाँतों में लगाने की मिस्सी।
निश्चेतन-(सं॰ वि॰) चैतन्यशून्य,
निश्चेतस्-(सं॰ वि॰) चेतना रहित बेसुध।
निश्चेष्ट-(सं॰ वि॰) चेष्टाहीन, असहाय, निश्चल, स्थिर, अचेत।
निश्चेष्टा-(सं॰स्त्री॰)निश्चलता,**निश्चेष्टाकरण**-(सं॰ नपुं॰) कामदेव के एक बाण का नाम।
निश्चै-(हिं॰ पुं॰) देखो निश्चय।
निश्चौर-(सं॰वि॰) वह स्थान जहाँ से डाकुओंने अपना अड्डा हटा लिया हो।
निश्छन्द-(सं॰ वि॰) जिसने वेद का अध्ययन किया हो।
निश्चै-(हिं॰पुं॰) देखो निश्चय। छल रहित, निष्कपट।
निश्छिद्र-(सं॰ वि॰) छिद्रशून्य, बिना छेद का।
निश्छेद-(सं॰वि॰) गणित में अविभाज्य राशि।
निश्रम-(सं॰ पुं॰) किसी काम से न थकना या घबड़ाना।
निश्रयणी-(सं॰स्त्री॰) सोपान, सीढ़ी।
निश्रावी-(सं॰वि॰) नाश होने वाला।
निश्रेणी-(सं॰ स्त्री॰) सोपान, सीढ़ी, मुक्ति।
निश्रेयस-(हिं॰पुं॰) दुःख का अभाव, कल्याण, मोक्ष।
निश्वस, **निश्वास**-(सं॰ पुं॰) दीर्घ निश्वास का परित्याग, आह भरना।
निश्शक्त-(सं॰वि॰)शक्तिहीन निर्बल।
निश्शङ्क-(सं॰ वि॰) निर्भय, निडर, सन्देह रहित, जिसमें शंका न हो।
निश्शील-(सं॰वि॰) बुरे स्वभाव का,
निश्शीलता-(सं॰स्त्री॰) दुष्ट स्वभाव।
निश्शेष-(सं॰वि॰) जिसमें कुछ बाकी न बचा हो।
निषकपुत्र-(सं॰पुं॰) निशाचर, राक्षस
निषकर्ष-(सं॰ पुं॰) स्वर साधन की एक प्रणाली।
निषक्त-(सं॰पुं॰) जनक, पिता, बाप।
निषङ्ग-(सं॰पुं॰)तूणीर, तरकश,खड्ग, मुंह से फूंक कर बजाने का एक प्राचीन बाजा।

निषण्ण-(सं०वि०) उपविष्ट, स्थित, बैठा हुआ।
निषद्-(सं०स्त्री०) यज्ञ की दीक्षा।
निषद-(सं० पुं०) संगीत का निषाद स्वर; एक राजा का नाम।
निषदन-(सं० नपुं०) गृह, घर।
निषद्या-(सं०स्त्री०)हाट, छोटी खटिया।
निषद्वर-(सं०पुं०) कीचड़, चहला।
निषद्वरी-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
निषध-(सं० पुं०) एक प्राचीन पर्वत का नाम, राजा जनमेजय के पुत्र का नाम, एक प्राचीन देश का नाम, जो विन्ध्य पर्वत पर बसा था, निषध देश के राजा का नाम, कुरु के एक पुत्र का नाम, सूर्य वंशीय रामात्मज कुश के पौत्र का नाम, (वि०)कठिन। **निषधाधिप**-(सं०पुं०) निषध देश के राजा का नाम। **निषधाधिपति**-(सं०पुं०) राजा नल।
निषधाभास-(सं०पुं०) आक्षेप, अलंकार के पाँच भेदों में से एक।
निषधाश्व-(सं० पुं०) कुरु के एक पुत्र का नाम।
निषाद-(सं०पुं०) एक अनार्य जाति जो भारतवर्ष में आर्यों के पहिले यहाँ रहती थी, रामायण के अनुसार श्रृङ्गवेर पुर में निषाद राज्य की राजधानी थी, संगीत मे सात स्वरों में से अन्तिम तथा सबसे ऊँचा स्वर
नीषादित-(सं०वि०)उपवेशित,बैठा हुआ, **निषादी**-(सं०पुं०) हाथीवान,महावत, (वि०) उपविष्ट, बैठा हुआ।
निषिक्तपा-सं०वि०) गर्भ की रक्षा करनेवाला।
निषिद्ध-(सं०वि०) जिसका निषेध किया गया हो, जो करने योग्य न हो, दूषित।
निषिद्धि-(सं०स्त्री०) निषेध, मनाही।
निषेक-(सं०पुं०) गर्भाधान, जल से सिचाई, चूना, सिंचाई,चूना,टपकना; **निषेक्तव्य**-(सं०वि०) सींचने योग्य। **निषेचन**-(सं० नपुं०) सींचना, तर करना, भिगाना।
निषेध-(सं०पुं०) वर्जन, बाधा, रुकावट, निवर्तन, वारण; **निषेधक**-(सं० वि०) निवारक, रोकनेवाला; **निषेधन**-(सं०नपुं०) निषेध, निवारण, मना करना; **निषेधपत्र**-(सं० नपुं०) वह पत्र जिसके द्वारा किसी प्रकार का निषेध किया जावे **निषेधविधि**-(सं० पुं०) वह आज्ञा जिसके द्वारा किसी बात का निषेध किया जावे; **निषेधित**-(सं० वि०) निवारित, निषेध किया हुआ, मना किया हुआ;**निषेधी**-(सं०वि०). निषेध करने वाला।
निषेधोक्ति-(सं०स्त्री०) निषेध वाक्य।
निषेव-(सं०वि०) अनुरक्त, अभ्यासशील; (नपुं०) अनुसरण, पूजा। **निषेवन**-(सं०नपुं०) सेवा व्यवहार।
निषेवनीय-(सं०वि०)सेवा करने योग्य **निषेवितव्य**-(सं०वि०) सेवनीय, सेवा करने योग्य।
निषेवी-(सं०वि०) सुखभोगी, अनुरत।
निषेव्य-(सं० वि०) सेवनीय, सेवा करने योग्य।
निष्क-(सं०पुं०) वैदिक काल का एक प्रकार की सोने की मुद्रा, सुवर्ण, सोना, हीरा, एक प्रकार का गलेका आभुषण,सोनेका पात्र,वैद्यक में चार माशे की तौल, प्राचीन काल की चाँदी तौलने की एक तौल जो चार सोने की मुद्रा के बराबर होती थी; **निष्क कण्ठ**-जिसके गले मे सोने का गहना हो; **निष्कग्रीव**-**निष्क**-कण्ठ।
निष्कण्टक-(सं० वि०) बाधा रहित, कंटक हीन, उपद्रव रहित, जिसमें काँटा न हो, निर्विघ्न, उपसर्गहीन।
निस्कण्ठ-(स०पुं०) वरुण नामक वृक्ष।
निस्कनिष्ठ-(सं०वि०) जिसकी कानी अंगुली कट गई हो।
निष्कन्द-(सं० वि०) जो कन्द खाने योग्य न हो।
निष्कपट-(सं०वि०)निश्छल, जो किसी प्रकार का छल न जानता हो; **निष्कपटता**-(सं० स्त्री०) सरलता, निश्छलता; **निष्कपटी**-(हिं० वि०) निष्कपट।
निष्कम्प-(स०वि०) कम्पहीन, जिसमें किसी प्रकार का कम्प न हो।
निष्कम्भ-(सं०पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।
निष्कर-(स०वि०) वह भूमि जिसका कर न देना पड़ता हो।
निष्करुण-(सं०वि०) दया रहित।
निष्करूष-(सं०वि०) परिच्छिन्न, स्वच्छ।
निष्कर्म-(सं०वि०)वह जो किसी काम में लिप्त न हो।
निष्कर्मण्य-(सं०वि०) अयोग्य, निकम्मा
निष्कर्मा-(सं०वि०) अकर्मी, आलसी।
निष्कर्ष-(सं० पुं०) निश्चय, सारांश, सार, निचोड़, निकालने की क्रिया। **निष्कर्षण**-(सं० नपुं०) निकालना, बाहर करना, निःसारण, बाहर निकालने की क्रिया।
निष्कला-(सं० वि०) कला रहित, निरवयव, जिसका कोई अंग या भाग नष्ट हो गया हो; नष्टवीर्य नपुंसक, सपूर्ण, समूचा, (पुं०) ब्रह्मा।
निष्कलङ्क-(सं० वि०) जिसमें किसी प्रकार का कलंक न हो, निर्दोष।
निष्कलत्व-(सं०नपुं०) अविभाज्य होने की अवस्था, किसी पदार्थ की वह अवस्था जिसमें उसके अधिक भाग न हो सकें।
निष्कल-(सं०स्त्री०)वृद्धा स्त्री, बुढ़िया। **निष्कली**-(सं०स्त्री०)वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बन्द हो गया हो।
निष्कल्मष-(सं०वि०) कलंकहीन, पाप रहित।
निष्कषाय-(सं० वि०) जिसका चित्त पवित्र और स्वच्छ हो।
निष्काम-(सं० वि०) कामना रहित, जो बिना किसी प्रकार की कामना या इच्छा से किया जावे; **निष्कामता**-(सं०स्त्री०) निष्काम होने की अवस्था या भाव। **निष्कामी**-(सं० वि०) कामना रहित, जिसको किसी प्रकार की आसक्ति न हो; **निष्कारण**-(सं० वि०) बिना कारण, वृथा, व्यर्थ।
निष्कालन-(स० नपुं०) मारण, मार डालने की क्रिया, निकालना।
निष्काश-(सं०पुं०)निष्कासन,ओसारा।
निष्काशन(सं०पुं०) निःसारण, बाहर करना; **निष्काशित**-(सं०वि०)बहिष्कृत, निकाला हुआ, निन्दित।
निष्कास-(सं०पुं०) घर का ओसारा; **निष्कासन**-(सं०पुं०) बाहर करना, निकालना; **निष्कासित**-(सं०वि०) निःसारित, बाहर निकाला हुआ, निन्दा किया हुआ।
निष्किञ्चन-(स०वि०) धनहीन,दरिद्र।
निष्किल्विष(सं०वि०)पापशून्य,पाप-रहित
निष्कीर्ण-(सं०वि०) निकाला हुआ।
निष्कुट-(सं०पुं०)घरके पासका बगीचा, कपाट, किवाड़, अन्तःपुर।
निष्कुटिका-(सं०स्त्री०)एकमातृका का नाम
निष्कुटी-(सं०स्त्री०) एला, इलायची।
निष्कुतूहल-(स० वि०) जिसको कोई कुतूहल न हो।
निष्कुल-(सं०वि०)सपिण्डादिकुलरहित।
निष्कुषित-(स० वि०) निःसारित, निकाला हुआ।
निष्कुह-(सं०पुं०) वृक्ष का कोटर या खोंड़रा।
निष्कृत-(सं०वि०) निश्चय किया हुआ, हटाया हुआ, मृत, मरा हुआ।
निष्कृति-(सं०स्त्री०)निस्तार,छुटकारा।
निष्कोषण-(सं०नपुं०) भीतरी अवयव का बाहर निकलना।
निष्क्रम-(सं०पुं०) घर से बाहर निकलने का कार्य, पतित होना, (वि०) बिना क्रम का; **निष्क्रमण**-(सं०नपुं०) घर से बाहर निकलना,दस संस्कारों में से एक संस्कार जो बालकके चार महीने का होने पर होता है।
निष्क्रय-(सं०पुं०)वेतन, बिक्री, सामर्थ्य, शक्ति, पुरस्कार, प्रत्युपकार।
निष्क्रिय-(सं०वि०) व्यापारशून्य, जो कोई काम न करता हो। **निष्क्रियता**-(सं०स्त्री०) निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।
निष्कीर्ति-(सं०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष।
निष्क्रोध-(सं०वि०) क्रोध हीन, जिसको क्रोध न हो।
निष्क्लेश-(सं० वि०) सब प्रकार के कष्टों से मुक्त।
निष्टि-(सं०स्त्री०) कश्यप की पत्नी का एक नाम।
निष्टुर-(सं० वि०) शत्रु का विजय करने वाला।
निष्ठ-(सं०वि०) स्थित, ठहरा हुआ, तत्पर, लगा हुआ, जिसमें किसी के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो।
निष्ठा-(सं०स्त्री०) निष्पत्ति, समाप्ति, नाश, सिद्धावस्था, अन्तिम स्थिति जिसमें आत्मा और ब्रह्म की एकता हो जाती है, चिकित्सा, प्रलय काल के सब भूत, स्थितिके आधार विष्णु, स्थिति, अवस्था, निश्चय, धर्मादि में श्रद्धा, निर्वाह।
निष्ठावत्,**निष्ठावान्**-(सं०वि०) निष्ठायुक्त, जिसमें श्रद्धा हो।
निष्ठित-(सं०वि०) दृढ़, ठहरा हुआ, जिसमें निष्ठा या श्रद्धा हो।
निष्ठीव-(सं०पुं०)**निष्ठीवन**-(सं० नपुं०) थूक, खखार।
निष्ठुर-(सं०वि०) कठिन, कठोर, क्रूर; **निष्ठुरता**-(सं०स्त्री०)कठोरता,निर्दयता, कूरता, कड़ाई।
निष्ठेव-(सं०पुं०) देखो निष्ठीव।
निष्ण-(सं०वि०) चतुर, कुशल।
निष्णात-(सं० वि०) किसी विषय में निपुण, चतुर, प्रधान, श्रेष्ठ।
निष्पक्व-(सं० वि०) पकाया हुआ, उबाला हुआ।
निष्पक्ष-(सं०वि०) पक्षपात रहित, जो किसी का पक्षपात न करता हो; **निष्पक्षता**-(सं०स्त्री०) निष्पक्ष होने का भाव।
निष्पङ्क-(सं०वि०) बिना कीचड़ का, निर्मल।
निष्पतन-(सं०नपुं०) निर्गमन, बाहर निकलना।
निष्पत्ति-(सं०स्त्री०) समाप्ति, सिद्धि, परिपाक, अन्त, विर्वाह, मीमांसा, निश्चय, चुकता, हठ योग के अनुसार नाद की अन्तिम अवस्था, गणित में अनुपात।
निष्पत्र-(सं०वि०) पत्रहीन, बिना पत्तों का; **निष्पत्रिका**-(सं०स्त्री०) करील का वृक्ष।
निष्पद-(सं०वि०)बिना पैर या पहिये का
निष्पन्द-(सं०वि०) स्पन्दन रहित, जिसमें किसी प्रकार का कम्प न हो।
निष्पन्न(सं०वि०) जो समाप्त या पूरा हो चुका हो।
निष्पराक्रम-(सं०वि०) शक्तिहीन,निर्बल,
निष्परिग्रह-(सं०वि०) जिसके पास कोई सम्पत्ति न हो, जो दान आदि न लेता हो, जिसको स्त्री न हो, अविवाहित, कुआरा।
निष्परिच्छद-(सं०वि०) बिना कपड़ा पहिरे हुए, बिना भृत्य का।
निष्परिदाह-(स०वि०) जो सहज में जल न सके।
निष्परीक्ष-(सं०वि०) जिसकी परीक्षा न की गई हो।
निष्परुष-(स०वि०) जो सुनने में कर्कश

न हो।

निष्पाद-(सं०पुं०) मटर, बोड़ा, सेम।

निष्पादित-(सं०वि०) सम्पादित, उत्पादित। **निष्पाद्य**-(सं०वि०) निर्वाह करने योग्य।

निष्पिष्ट-(सं०वि०) चूर्णित, चूर किया हुआ।

निष्पीड़, निष्पीडन-(सं०नपुं०) निचोड़ना, गारना। **निष्पीडित**-(सं०वि०) निचोड़ा हुआ।

निष्पुत्र-(सं०वि०) अपुत्रक, जिसके पुत्र न हो। **निष्पुरुष**-(सं०वि०) पुरुषशून्य, जहाँ आबादी न हो।

निष्पेष-(सं०पु०) घिसना, रगड़ना, चूर्ण करना।

निष्पौरुष-(सं०वि०)पौरुष हीन,निर्बल।

निष्प्रकाश-(सं०वि०) जिसमें प्रकाश न हो।

निष्प्रचार-(सं०वि०) जो एक स्थान से दूसरे स्थान में न जा सके।

निष्प्रताप-(सं०वि०) प्रतापहीन, तेजरहित।

निष्प्रतिघ-(सं०वि०) जिसमें कोई रुकावट न हो। **निष्प्रतिपक्ष**-(सं०वि०) शत्रुहीन,बिना शत्रु का। **निष्प्रतिभ**-(सं०वि०) मूर्ख, जड़, जिसमें चमक न हो। **निष्प्रतीकार**-(सं०वि०) प्रतिकार रहित, विघ्न शून्य।

निष्प्रत्यूह-(सं०वि०) निर्विघ्न, बाधा रहित।

निष्प्रधन-(सं०वि०) प्रधान शून्य, बिना सरदार का। **निष्प्रवञ्च**-(सं०वि०) प्रपंच रहित। **निष्प्रञ्चात्मा**-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

निष्प्रभ-(सं०वि०) प्रभा रहित, बिना चमक का। **निष्प्रभाव**-(सं०वि०) बिना प्रभाव या सामर्थ्य का।

निष्प्रयत्न-(सं०वि०) यत्नहीन, उपाय रहित। **निष्प्रयोजन**-(सं०वि०) प्रयोजन रहित, निरर्थक, व्यर्थ, जिसमें कोई अर्थ सिद्ध न हो, (क्रि०वि०) व्यर्थ।

निष्प्राण-(सं०वि०) श्वास रहित, मरा हुआ।

निष्प्रीति-(सं०वि०)प्रीति रहित, जिसमें प्रेम न हो।

निष्प्रेही-(हिं०वि०) देखो निस्पृह।

निष्फल-(सं०वि०) फलशून्य, जिसका कोई फल न हो, निरर्थक, वृथा।

निष्फलता-असफलता।

निष्फला-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका रजोधर्म होना बन्द हो गया हो।

निष्फली(सं०स्त्री०) निष्फला, वृद्धा स्त्री

निष्फेन-(सं०वि०) फेन रहित, जिसमें फेन न हो।

निष्पन्द-(सं०पुं०) देखो निष्पन्द।

निस्-(सं०अव्य०) यह शब्द निषेध, निश्चय, साकल्य तता अतिक्रम में व्यवहार होता है।

निसंक-(हिं०वि०) देखो निश्शंक।

निसंकल्प-(सं०वि०) सकलप रहित।

निसंज्ञ-(सं०वि०) संज्ञाहीन, अचेत।

निसठ-(हिं०वि०) निर्धन, दरिद्र।

निसंस-(हिं०वि०) नृशंस, क्रूर, निर्दय; **निसंसना**-(हिं०क्रि०) निःश्वास लेना, हाँफना।

निस-(हिं०स्त्री०) निशा, रात्रि, रात।

निसक-(हिं०वि०) अशक्त, दुर्बल।

निसकर-(हिं०पुं०) देखो निशाकर, चन्द्रमा।

निसचय, निसचै-देखो निश्चय।

निसत-(हिं०वि०) असत्य।

निसतरना-(हिं० क्रि) मुक्ति पाना, छुटकारा पाना। **निसतार**-(हिं०पु०) देखो निस्तार; **निसतारना**-(हिं०क्रि०) मुक्त करना, निस्तार देना।

निसद्योस-(हिं० क्रि० वि०) अहर्निश, रात दिन।

निसनेहा-(हिं०स्त्री०) देखो निःस्नेहा।

निसम्पात-(सं०पुं०) निशीथ, रात या दो प्रहर।

निसयाना-(हिं०वि०) जिसका चित्त ठिकाने न हो।

निसर-(सं०वि०) खूब चलने वाला; **निसरना**-(हिं०क्रि०) देखो निकलना।

निसर्ग-(सं० पु०) प्रकृति, स्वभाव, आकृति, स्वरूप, सृष्टि। **निसर्गज**-(सं०वि०) जो प्रकृति से उत्पन्न हो।

निसवादला-(हिं० वि०) बिना स्वाद का, फीका।

निसवासर-(हिं०पुं०) रातदिन, सर्वदा।

निसस-(हिं०वि०) श्वास रहित, अचेत, संज्ञाहीन।

निसाँक-(हिं०वि०) देखो निःशङ्क।

निसाँस,निसाँसा-(हिं०पुं०) ठढी सांस, (वि०) मृतप्राय।

निसा-(हिं० स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति; देखो निशा।

निसाकर-(हिं०पु०) देखो निशाकर।

निसाचर-(हिं०पुं०) देखो निशाचर;

निसाद-(हिं०पुं०) भंगी, त्रहतर;

निसान-(हिं०पुं०) चिन्ह नगाड़ा, धौंसा; **निसानन**-(हिं०पुं०) प्रदोष काल, सन्ध्या समय; **निसाना**-(हिं० पुं०) देखो निशाना; **निसानी**-(हिं०स्त्री०) देखो निशानी; **निसापति**-(हिं०पुं०) देखो निशापति, चन्द्रमा।

निसाफ-(हिं०पुं०) निर्णय।

निसार-(सं० पुं०) समूह; (अ०पुं०) निछावर, उतारा, चार आने के मूल्य का मुगल शासन काल का चांदी का एक सिक्का; **निसारक**-(सं०पु०) शालक राग का एक भेद; **निसारना**-(हिं०क्रि०) बाहर करना, निकालना।

निसारा-(सं० स्त्री०) कदली वृक्ष,केले का पेड़।

निसास-(हिं०पुं०) देखो निःश्वास; गहरी सांस। **निसासी**-(हिं० वि०) जिसकी साँस न चलती हो।

निसावरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कबूतर।

निसि-(हिं०स्त्री०) देखो निशि; एक प्रकार का वर्ण वृत्त; **निसिकर, निसिचर, निसिचारी**-(हिं० पुं०) देखो निशिचर।

निसित-(हिं०वि०) तीव्र।

निसिदिन-(हिं० क्रि० वि०) रात दिन, आठो पहर, सर्वदा, सदा।

निसि निसि-(हिं० स्त्री०) निशीथ, आधीरात।

निसियर-(हिं०पुं०) निशिकर,चन्द्रमा।

निसिवासर-(हिं०क्रि०वि०) रातदिन, सर्वदा, सदा।

निसीठा-(हिं० वि०) निःसार, जिसमें कुछ तत्व न हो, नीरस, फीका।

निसीथ (हिं०पु०) आधीरात।

निसु-(हिं०स्त्री०) निशा, रात्रि, रात।

निसुका-(हिं०वि०) दरिद्र।

निसुन्धार-(सं०पुं०)सभालू नामक वृक्ष

निसुन्धु-(सं०पुं०) एक असुर का नाम

निसूदक-(सं०वि०) हिंसक, हिंसा करने वाला; **निसूदन**-(सं०नपुं०)हिंसा, वध, (वि०) मारने वाला।

निसृत-(हिं०वि०) देखो निःसृत।

निसृता-(सं०स्त्री०)निसोथ, सोनापाठा।

निसृष्ट-(सं०वि०) प्रेरित, भेजा हुआ। दिया हुआ, त्याज्य, छोड़ा हुआ, मध्यस्थ।

निसृष्टार्थ-(सं०पुं०) वह दूत जो दोनों पक्षों के अभिप्राय को समझ कर स्वयं सब प्रश्नों का उत्तर देता और कार्य सिद्ध कर लेता है, अपने स्वामी का काम तत्परता से करनेवाला, धीर और वीर मनुष्य।

निसेनी-(हिं० स्त्री०) सोपान, सीढ़ी

निसेस-(हिं०वि०) देखो निःशेष।

निसेस-(हिं०पुं०) चन्द्रमा।

निसैनी-(हिं० स्त्री०) देखो निसेनी।

निसोढ़-(सं० वि०) भली भांति सहन करने योग्य।

निसोग, निसोच-(हिं० वि०) जिसको किसी प्रकार की चिन्ता न हो।

निसोत-(हिं०वि०) जिसमें किसी अन्य वस्तु का मेल न हो, विशुद्ध।

निसोथ-(हिं०स्त्री) एक प्रकार की लता जिसके डंठल और जड़ रेचक होते हैं।

निसोधु-(हिं०स्त्री०) सुध, समाचार, सन्देश।

निस्की-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

निस्केवल-(हिं० वि०) निर्मल, शुद्ध निष्केवल।

निस्तत्व-(सं०वि०) तत्वहीन, निःसार, जिसमें कोई तत्व न हो।

निस्तनी-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसको स्तन न हो, बटिका, गोली।

निस्तन्तु-(सं०वि०) पुत्रहीन,सन्तानहीन

निस्तन्द्र-(सं०वि०) तन्द्रारहित, आलस्य रहित, पुष्ट, बलवान्।

निस्तब्ध-(सं०वि०) निश्चेष्ट, जिसमें गति या व्यापार न हो, नीरव, सन्नाटा। **निस्तब्धता**-(सं० स्त्री०) सन्नाटा।

निस्तमस्क-(सं०वि०) अन्धकार शून्य, उजेला।

निस्तम्भ-(सं० वि०) स्तम्भ रहित, जिसमें खम्भा न हो।

निस्तरण-(सं० नपु०)निस्तार, छुटकारा, निगम, बाहर निकलना, पार जाने की क्रिया। **निस्तरना**-हिं०क्रि०) मुक्त होना, छूटना।

निस्तरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

निस्तरीक-(सं०वि०) बिना बेड़े का।

निस्तरीप-(सं० वि०) जिस नाव पर मांझी न हो।

निस्तर्क्य-(सं०वि०) जिसकी कल्पना न की जावे।

निस्तल-(सं० वि०) बिना पेंदी का, चलायमान।

निस्तार-(सं० पुं०) निस्तरण, उद्धार, पार होने का भाव, अभीष्ट प्राप्ति; **निस्तारक**-(सं०पुं०) मोक्ष देनेवाला, बचाने वाला छोड़ने वाला; **निस्तारण**-(सं०नपुं०)छुटकारा देना, मुक्त करना, पार करना, बचाना, छोड़ना; **निस्तारन**-(हिं०पुं०) देखो निस्तारण; **निस्तारना**(हिं० क्रि०) मुक्त करना छुटकारा देना; **निस्तारबीज**-(सं०नपुं०) वह उपाय जिससे मनुष्य जन्म मरण से मुक्त हो जावे। **निस्तारा**-(हिं०पुं०) देखो निस्तार।

निस्तिमिर-(सं०वि०)अन्धकार रहित।

निस्तीर्ण-(सं०वि०) जिसका निस्तार हो चुका हो, पार गया हुआ, जो तप कर चुका हो।

निस्तुति-(सं०वि०) प्रशंसा रहित।

निस्तुष-(सं०वि०) जिसमें भूसी न हो, निर्मल, (पुं०) गेहूँ। **निस्तुषित**-(सं०वि०) जिसमें भूसी न हो।

निस्तुषोपल-(सं०नपुं०) स्फटिकमणि, बिल्लौर।

निस्तेज-(सं०वि०) जिसमें तेज न हो, बिना चमक का, प्रभा रहित, मलिन।

निस्तैल-(सं० वि०) बिना तेल का, जिसमें तेल न हो।

निस्तोदन-(सं०नपु०) अति कष्ट।

निस्तोय-(सं०वि०) जल रहित, बिना जल का।

निस्त्रंश-(सं०वि०) भयहीन, निडर।

निस्त्रप-(सं०वि०) निर्लज्ज।

निस्त्रिंश-(सं०वि०) निर्दय, कठोर (पुं०) खड्ग, तलवार।

निस्त्रैगुण्य-(सं०वि०) जो सत्व रज तम इन तीनों गुणों से रहित हो।

निस्नेह-(सं०वि०) प्रेम शून्य, जिसमें प्रेम न हो, जिसमें तेल न हो;

निस्नेहफला-सफेद भटकैया।

निष्पन्द-(सं० वि०) जिसमें कम्प न हो **निस्पन्दी**-(सं०वि०) निस्पन्द युक्त, कांपता हुआ।
निस्पृह-(सं०वि०) जिसको किसी प्रकार का लोभ या लालच न हो; **निस्पृहता**-(सं०स्त्री०) निस्पृह होने का कार्य, लोभ या लालसा न होना;
निस्पृहा-(सं०स्त्री०) कलिहारी नामक वृक्ष
निस्रव-(सं० पु०) भात का माँड़।
निस्रावी-(सं० वि०) जो बहता न हो।
निस्व-(सं० वि०) दरिद्र, हीन, गरीब।
निस्वन-(सं० पुं०) शब्द।
निस्वास-(हिं० पुं०) देखो निःश्वास।
निसंकोच-(हिं० वि०) संकोच रहित, जिसमें संकोच या लज्जा न हो, बेधड़क।
निस्संतान-(हिं०वि०) संतति रहित।
निस्संदेह-(हिं० क्रि० वि०) अवश्य, (वि०) जिसमें सन्देह न हो।
निस्सरण-(सं० पुं०) निकलने का मार्ग या स्थान, निकास।
निस्सार-(सं० वि०) निस्तत्व, जिसमें कोई काम की वस्तु न हो, सार रहित।
निस्सहाय-(हिं० वि०) निराश्रय।
निस्सारित-(सं० वि०) निकाला हुआ, बाहर किया हुआ।
निस्सीम-(सं०वि०) जिसकी कोई सीमा न हो, असीम, अपार।
निस्सृत-(हिं० पुं०) तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।
निस्स्वादु-(हिं० वि०) जिसमें कोई स्वाद न हो, जिसका स्वाद बुरा हो।
निस्स्वार्थ-(हिं० वि०) स्वार्थ से रहित, जिसमें अपने कोई लाभ न हो।
निहंग-(हिं० वि०) एकाकी, अकेला, जो विवाह न करता हो अथवा स्त्री से संबंध न रखता हो, नंगा, निर्लज्ज,
निहंगम-(हिं०वि०) देखो निहंग; **निहंगलाड़ला**-(हिं० वि०) वह जो माता पिता के अधिक लाड़ प्यार के कारण बहुत उद्दण्ड बन गया हो।
निहन्ता-(हिं० वि०) नाश करने वाला, प्राणघातक।
निहकाम-(हिं० पु०) देखो निष्काम।
निहचय-(हिं० वि०) देखो निश्चय।
निहचल-(हिं० वि०) देखो निश्चल।
निहित-(सं० वि०) नष्ट, फेंका हुआ, मार डाला हुआ।
निहत्था-(हिं० वि०) शस्त्रहीन, जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो।
निहनन-(सं० नपुं०) मारण, वध।
निहतव्य-(सं० वि०) मारने योग्य।
निहपाप-(हिं० वि०) देखो निष्पाप।
निहफल-(हिं० वि०) देखो निष्फल।
निहल-(हिं० पुं०) वह भूमि जो नदी के हट जाने पर निकल आई हो, कछार।
निहाई-(हिं० स्त्री०) पक्के लोहे का भूमि में गड़ा हुआ वह चौकोर टुकड़ा जिस पर लोहार या सोनार हथौड़े से धातु पीटते हैं।
निहाउ-(हिं० पुं०) देखो निहाई।
निहाका-(हिं० स्त्री०) गोह, घड़ियाल।
निहानी-(हिं० स्त्री०) बारीक खोदाई की अर्धचन्द्राकार नुकीली रुखानी।
निहार-(सं० पुं०) नीहार, हिम, ओस, कुहरा, पाला।
निहारना-(हिं० क्रि०) ध्यान पूर्वक देखना, ताकना।
निहारिका-(सं० स्त्री०) आकाश में दिखने वाला एक पदार्थ जो देखने में धुंधले धब्बे की तरह जान पड़ता है।
निहाल लोचन-(हिं० पुं०) वह घोड़ा जिसके अयाल दोनों ओर बंटे होते है।
निहाव-(हिं० पु०) लोहे का बड़ा हथौड़ा या घन।
निहिंसन-(सं० नपुं०) मारण, वध।
निहिन-(सं०वि०) स्थापित, रक्खा हुआ।
निहीत-(सं० वि०) पामर, नीच।
निहुंकना-(हिं० क्रि०) झुकना।
निहुड़ना निहुरना-(हिं० क्रि०) झुकना, नवना। **निहुराना**-(हिं०क्रि०) झुकाना, नवाना।
निहुराई-(हिं० स्त्री०) निष्ठुरता।
निहोरना-(हिं० क्रि०) विनती करना, प्रार्थना करना, कृतज्ञ होना, मनौती करना, मनाना।
निहोरा-(हिं० पुं०) उपकार, अनुग्रह, आश्रम, आधार, भरोसा, विनती, प्रार्थना, (क्रि० वि०) वास्ते, लिये, कारण से, बदौलत, निमित्त, द्वारा।
निहुत-(सं० वि०) छिपाया हुआ।
नींद-(हिं० स्त्री०) निद्रा, स्वप्न; **नींद उचटना**-नींद खुल जाना; **नींद टूटना**-जाग पड़ना; **नींद पड़ना**-नींद आना; **नींद भर सोना**-पर्याप्त निद्रा लेना; **नींद हराम होना**-नींद न आना।
नीदड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो नींद।
नीक, नीका-(हिं०वि०) स्वच्छ, सुन्दर, अच्छा भला, (पुं०) उत्तमता, अच्छापन, सुन्दरता।
नीकार-(सं०पुं०) भर्त्सना, तिरस्कार।
नीकाश-(सं०वि०) तुल्य, समान, (पुं०) निश्चय।
नीके-(हिं० क्रि० वि०) भली भांति, अच्छी तरह से।
नीच-(सं० वि०) जाति, गुण अथवा कार्य से निकृष्ट, तुच्छ, अधम, पामर (पुं०) क्षुद्र मनुष्य, ओछा आदमी, **ऊच नीच**-भला बुरा, हानि, लाभ भलाई बुराई। **नीचक**-(सं० वि०) वामन, बौना, नाटा। **नीच कमाई**-(हिं०स्त्री०) खोटा काम, बुरे काम से कमाया हुआ धन।
नीचका-(सं०स्त्री०) उत्तम गौ, अच्छी गाय।
नीचगा-(सं०नपुं०) नीचे की ओर बहने वाला पानी, (वि०) पामर, ओछा, (स्त्री०) नीच के साथ गमन करने वाली स्त्री।
नीचगा-(सं० स्त्री०) निम्नगा, नदी; **नीचगामी**-(हिं० वि०) नीचे जाने वाला, ओछा, (पुं०) पानी।
नीचता-(सं०स्त्री०) नीचत्व, अधमता, खोटाई; **नीचत्व**-(सं०नपुं०) नीचता।
नीचट-(हिं० वि०) दृढ़, पक्का। **नीच भोज्य**-(सं० नपुं०) अखाद्य भोजन।
नीचा-(हिं० वि०) जिसके आस पास का तल ऊँचा हो, जो उतार या गहराई पर हो, जो ऊपर की ओर दूर तक न गया हो, छोटा, ओछा, मध्यम, धीमा, जो तीव्र न हो, झुका हुआ, जो ऊपर से भूमि की ओर दूर तक आया हो, अधिक लटका हुआ; **नीचा ऊँचा**-जो समतल न हो भला बुरा; **नीचा खाना**-लज्जित होना, हार जाना; **नीचा दिखाना**-अपमानित करना, हराना; **नीचा देखना**-अपमानित होना, हारना; **नीची दृष्टि करना**-सामने न देखना, सिर झुकाना।
नीचायक-(सं०वि०) बहुत चाहने वाला;
नीचाशय-(सं०वि०) तुच्छ विचार का, ओछा।
नीचू-(हिं०वि०) देखो नीचे, जो टपकता न हो। **नीचे**-(हिं०क्रि०वि०) नीचे की ओर, अधीनता में, न्यून, घट कर, कम; **नीचे ऊपर**-तले ऊपर; **नीचे गिरना**-प्रतिष्ठा नष्ट होना; पतित होना; **ऊपर से नीचे तक**-सर्वत्र, हर जगह।
नीचोच्चवृत्त-(सं० नपुं०) वह वृत्त जिसका केन्द्र किसी बड़े वृत्त के मध्य में घूमता हो। **नीचोपगत**-(सं०वि०) वह जो खगोल के नीचे के भाग में हो।
नीज-(हिं०पुं०) रज्जु, रस्सी।
नीजन-(हिं०पुं०) निर्जन स्थान,।
नीजू-(हिं०स्त्री०) पानी भरने की रस्सी।
नीझर-(हिं० पुं०) देखो निर्झर, पानी का सोता।
नीठ-(हिं०क्रि०वि०) कठिनाई से।
नीठि-(हिं०स्त्री०) अरुचि, अनिच्छा; (क्रि०वि०) किसी न किसी प्रकार से, कठिनता से।
नीठो-(क्रि०वि०) अप्रिय जो सुहावना न हो।
नीड़-(सं०पुं०) पक्षियों के रहने का घोंसला; **नीड़क**-(सं०पुं०) खग, पक्षी, चिड़िया; **नीड़ज**-(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया। **नीड़जेन्द्र**-(सं० पुं०) गरुड़ पक्षी। **नीडोद्भव**-(सं० पुं०) खग, पक्षी, चिड़िया।
नीत-(सं०वि०) स्थापित, गृहीत, लाया हुआ, प्राप्त, पाया हुआ, (पुं०) धान्य, धान।
नीति-(सं० स्त्री०) ले जाने की क्रिया या ढंग, आचार पद्धति, समाज का कल्याण करने वाली व्यवहार की की रीति, वह आचार तथा व्यवहार जो समाज के हित के लिये स्थिर किया गया हो, युक्ति, उपाय, किसी कार्य की सिद्धि के लिये व्यवहार में आने वाली चाल, युक्ति उपाय, किसी कार्य की सिद्धि के लिये व्यवहार में आने वाली चाल, वह युक्ति जो राज्य की रक्षा के लिये काम में लाई जाती है, राजा और प्रजा दोनों के लिये निर्धारण की हुई व्यवस्था, राजनीति। **नीतिघोष**-(सं०पुं०) बृहस्पति के रथ का नाम; **नीतिज्ञ**-(सं० वि०) नीति जानने वाला, नीति में प्रवीण, नीति में कुशल। **नीतिमान्**-(हिं०वि०) नीति कुशल, सदाचारी; **नीतिविद्या**-(सं० स्त्री०) नीति विषयक विद्या; **नीतिशास्त्र**-(सं० नपुं०) वह शास्त्र जिसमें मनुष्य समाज के हित के लिये देश काल तथा पात्र के अनुसार आचार व्यवहार, प्रबन्ध और शासन के नियम लिखे हों।
नीथ-(सं०पुं०) नयन, स्तोत्र।
नीदना-(हिं०क्रि०) निद्रा लेना, सोना।
नीधना-(हिं० वि०) निर्धन, दरिद्र।
नीध-(सं०नपुं०) छाजन की ओरी, पहिये की नाभि, चन्द्रमा, रेवती नक्षत्र।
नीनाह-(सं० पुं०) निबन्ध, बन्धन।
नीप-(सं० पुं०) पहाड़ का निचला भाग, अशोक वृक्ष; (पुं०) गाँठ देने के लिये रस्सी का फन्दा।
नीपराज-(सं०पुं०) राजकदम्ब का वृक्ष।
नीबू-(हिं० पुं०) गरम देशों में होने वाला एक मध्य आकार का कांटेदार वृक्ष जिसका गोल फल खट्टा होता है, **नीबूमिचोड़**-बड़ा कृपण।
नीम-(हिं०पुं०) गरम देश में होने वाला एक वृक्ष जिसका प्रत्येक भाग कड़ुआ होता है, चर्म रोग की यह विशिष्ट औषधि है। **नीमच**-(हिं०पुं०) एक प्रकार की नदी की मछली।
नीमटर-(हिं०वि०) जिसको किसी विद्या की पूरी जानकारी न हो।
नीमन-(हिं०वि०) अच्छा, भला, नीरोग, चंगा, जो बिगड़ा न हो, सुन्दर, बढ़िया
नीमर-(हिं०वि०) दुर्बल, बलहीन,।
नीमस्तीन-(हिं०स्त्री०) आधे बांह की कुरती।
नीमावत-(हिं०पुं०) वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।
नीर-(सं०नपुं०) जल, पानी, रस, कोई द्रव पदार्थ, फफोले के भीतर का पानी या रस, सुगंधबाला; **नीर ढलना**-आसू बहना।
नीरक्त-(सं०वि०) रक्तशून्य, वर्ण रहित
नीरङ्ग-(सं०वि०) बिना रंग का।
नीरज-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, मोती, उशीर, (पुं०) महादेव, (वि०) जल में उत्पन्न। **नीरजस्**-(सं०वि०) निर्धूल, जहां धूलि न हो, बिना पराग का।
नीरजात-(सं०वि०) जल से उत्पन्न, (नपुं०) कमल।

नीरत-(सं०वि०) विरत ।
नीरद-(सं०पुं०)मेघ, बादल, (वि०) अदन्त, बिना दाँत का । **नीरधर**-(सं०नपुं०) मेघ, बादल ।
नीरधि, नीरनिधि-(सं०पुं०) समुद्र ।
नीरन्ध्र-(सं०वि०) छिद्र रहित, जिसमें छेद न हो ।
नीरपति-(सं०पुं०) वरुण देवता ।
नीरप्रिय-(सं०वि०) जिसको जल बहुत प्यारा हो ।
नीरम-(हिं०पुं०) वह बोझ जो जहाज़ का समभार करने के लिये रक्खा जाता है ।
नीररुह-(सं०नपुं०) पद्म, कमल ।
नीरवा-(सं०वि०) स्तब्ध, बिना कोलाहल का
नीरस-(सं०पु०) दाडिम, अनार, (वि०) जिसमें रस न हो, सखा, स्वाद रहित, फीका, ।
नीरसन-(सं०वि०) विना करधनी या कटिबन्ध का ।
नीरसा-(सं०स्त्री०)एक प्रकार की घास ।
नीराखु-(सं०पुं०) ऊदबिलाव, नेवला ।
नीराजन-(सं०नपुं०) दीपदान, आरती ।
नीराजना-(सं० स्त्री०) देवता को दीपक दिखलाने की बिधि ।
नीराञ्जन-(सं०पु०) दीपदान, आरति, शस्त्र को शुद्ध करने या चमकाने का काम ।
नीरुच्-(सं०वि०) जिसमें बहुत चमक न हो ।
नीरुज्-(सं०पुं०) आरोग्य, स्वास्थ्य, (वि०) चतुर ।
नीरुज-(सं०वि०) रोगरहित, नीरोग, स्वस्थ ।
नीरूप-(सं०वि०) रूपहीन, कुरूप ।
नीरे-(हिं०क्रि०वि०) नियरे, पास मे ।
नीरोग-(हिं०वि०) रोगहीन, आरोग्य ।
नीरोह-(सं०पुं०) अंकुरित होना ।
नील-(सं०पुं०) गहरा नीला रंग, एक पर्वत का नाम, राम की सेना के एक बन्दर का नाम, नव निधियों में से एक, कलंक, लांछन, वटवृक्ष, बरगद का पेड़, सौ अरब की संख्या, मंगल ध्वनि, इन्द्रनील मणि, नीलम, एक नाग का नाम, काचं लवण, नीला वस्त्र, शरीर पर पड़ने वाला चोट का नीला धब्बा, एक यम का नाम, एक प्रकार का नाच, तालीसपत्र, विष; **नील का टीका लगाना**-अपमानित करना ।
नीलक-(सं०नपुं०) काला मृग, भैंरा, भिलावां, मटर, काच लवण, बीजगणित में अव्यक्त राशि का भेद ।
नीलकण-(सं०पुं०) नीलम का टुकड़ा, ठुड्ढी पर गोदे हुए गोदने का विन्दु
नीलकणा-(सं० स्त्री०) स्याहजीरा ।
नीलकण्टक-(सं० पुं०) चातक पक्षी, पपीहा । **नीलकण्ठ**-(सं०वि०) जिसका कंठ नीला हो, शिव, महादेव, गौरा पक्षी, चटक, मयूर, मोर, एक प्रकार की चिड़िया जिसके कंठ और डैने नीले रंग के होते हैं; **नीलण्ठक**-(सं०पु०) चातक पक्षी, पपीहा; **नीलकण्ठाक्ष**-(सं० नपुं०) रुद्राक्ष, (वि०) जिसकी आंखें खञ्जन के समान हों ।
नीलकर-(सं० पुं०) नील बनाने वाला । **नीलकान्त**-(सं०नपुं०) एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया, विष्णु, नीलम रत्न । **नीलकापिक**-(सं०पुं०) जिसका देह नीला हो । **नीलकुन्तला**-(सं०स्त्री०) पार्वती की एक सखी का नाम । **नीलकुसुमा**-(सं०स्त्री०) नीली कटसरैया । **नीलकेशी**-(सं० स्त्री०) नील का पौधा । **नीलक्रान्ता**-(सं०स्त्री०) विष्णुक्रान्ता नामक लता जिसमें नीले फूल होते हैं । **नीलक्रौञ्च**-(सं०पुं०) काला बगला; **नीलगङ्गा**-(सं०स्त्री०)एक नदी का नाम ।
नीलगर्भ-(सं०वि०) जिस फूल आदि का बिचला भाग नीला हो । **नीलगाय**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बड़ा हरिन जो गाय के बराबर होता हैं, यह जंगलों में दल बाँधकर पाया जाता है । **नीलचक्र**-(सं०पु०) दण्डक वृत्त का एक भेद । **नीलनीरज**-(सं०नपुं०) नीला कमल । **नीलता**-(हिं०स्त्री०) नीलापन ।
नीलपङ्क-(सं० नपुं०) काला कीचड़, अन्धकार । **नीलपत्र**-(सं० नपुं०) नील कमल, गोनरा घास जिसकी जड़ में कसेरू होता है, नीला पत्ता ।
नीलपत्री-(सं०स्त्री०) जंगली नील ।
नीलपद्म-(सं०नपुं०) नीला कमल ।
नीलपिङ्गला-(सं०स्त्री०) नीली और भूरापन लिये लाल रंग की गाय ।
नीलपिच्छ-(सं०पुं०) श्येन (बाज़) पक्षी । **नीलपुराण**-(सं०नपुं०) एक पुराण का नाम जिसमें काश्मीर सम्बन्धि कथा है । **नीलपुष्प**-(सं०पुं०) नीला फूल, नीली भंगरैया; **नीलपुष्पिका**-(सं० स्त्री०) अलसी, तीसी, नील का पौधा;
नीलपुष्पी-(सं०स्त्री०)देखो नीलपुष्पिका;
नीलपृष्ठ-(सं० पुं०) अग्नि, आग ।
नीलपोर-(सं०पुं०) एक प्रकार की ऊख; **नीलफला**-(सं०स्त्री०) बैंगन, भंटा । **नीलबरी**-(हिं० स्त्री०) कच्चे नील की बट्टी ।
नीलभ-(सं०पु०) चन्द्रमा, मेघ, बादल, मक्खी ।
नीलमक्षिका-(सं०स्त्री०) नीली मक्खी ।
नीलमणि-(सं० पुं०) इन्द्रनील, नीलम ।
नीलमण्डल-(सं०नपुं०) परुष, फालसा;
नीलमल्लिका-(सं० स्त्री०) कपित्थ, कैथ, बेल । **नीलमाधव**-(सं० पुं०) विष्णु, जगन्नाथ । जगन्नाथ दारु ब्रह्मके पूर्वकी प्रतिमा जो इन्द्रद्युम्नके आते ही अन्तर्हित होगई थीं; **नीलमाष**-(सं० पुं०) काली उड़द । **नीलमीलिक**-(सं० पुं०) खद्योत, जुगनू । **नीलमृत्तिका**-(सं०स्त्री०) हीरा कासीस । **नीलमेह**-(सं०पु०)एक प्रकार का प्रमेह रोग ।
नीलमोर-(हिं० पुं०) कुररी नामक पक्षी जो हिमालय पर्वत पर पाया जाता है । **नीलयष्टिका**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की काली ऊख ।
नीलरत्न-(सं०नपुं०) इन्द्रनील मणि, नीलम । **नीलरूपक**-(सं०पुं०) पाकड़ का वृक्ष । **नीललोचन**-(सं० वि०) नीली आंखवाला । **नीललोहित**-(सं० पुं०) शिव, महादेव, (वि०) नीलापन लिये लाल, बैंगनी । **नीललोहिता**-(सं०स्त्री०) शिव पार्वती, एक प्रकार की छोटी जामुन । **नीलवर्ण**-(सं० नपु०) परुष फल, फालसा; **नीलवर्षाभू**-(सं०पुं०) काला मेढक । **नीलवसन**-(सं०वि०) नीला वस्त्र पहिरे हुये, (पुं०) शनि ग्रह । **नीलवस्त्र**-(सं०पु०) परशुराम । **नीलवृन्त**-(सं० नपुं०) तूल, रूई, तरकस बनाने की लकड़ी । **नीलवृषा**-(सं०स्त्री०) वार्ताकी, बैंगन, भंटा । **नीलसरस्वती**-(सं०स्त्री०) तारा देवी । **नीलसस्य**-(सं०नपुं०) बाजरा । **नीलसार**-(सं० पु०)तेंदुआ का वृक्ष । **नीलसिर**-(हिं० पुं०) नीले सिर का बत्तक । **नीलस्वरूप**-(सं० पुं०) एक वर्णवृत्त का नाम ।
नीला-(सं०स्त्री०) नील का पौधा, नीली मक्खी, एक राग का नाम, (हिं०वि०) नीले रग का, (पु०) नीलम, एक प्रकार का कबूतर; **नीला पीला होना**-रोष दिखलाना । **नीलाक्ष**-(सं० वि०) नीली आँख का, (पु०) राजहंस । **नीलाङ्ग**-(सं०पुं०) सारस पक्षी, (वि०)नीले अंग का । **नीलाङ्गु**-(सं०पु०) कीड़ा, भौंरा, घड़ियाल ।
नीलाचल-(सं०पुं०) जगन्नाथ पुरी के पास की एक छोटी पहाड़ी का नाम;
नीलाञ्जन-(सं० नपुं०) सुरमा, तुत्थ, तूतिया । **नीलाञ्जना**-(सं० स्त्री०) विद्युत्, बिजली ।
नालाथोथा-(हिं०पुं०) तांबे का क्षार, तूतिया ।
नीलाब्ज-(सं० नपुं०) नीलपद्म, नीला कमल ।
नीलाभ्र-(सं०नपुं०) काला अभ्रक ।
नीलाम्बर-(सं०पुं०) बलदेव, शनि ग्रह, राक्षस, नीला वस्त्र, (वि०)नीला वस्त्र पहिरने वाला ।
नीलाम्बरी-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम ।
नीलाम्बुज-(सं० नपु०) नीलपद्म, नील कमल ।
नीलावती-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का चावल ।
नीलाश्मज-(सं०नपुं०) तुत्थ, तूतिया
नीलाश्मन्-(सं०पु०) नीलकान्त मणि ।
नीलासन-(सं०पुं०) एक रतिबन्ध का नाम ।
नीलाहट-(हिं०स्त्री०) नीलापन
नीलिका-(सं०स्त्री०) नीलबरी, नीली निर्गुण्डी, आँख का एक राग ।
नीलिनी-सं०स्त्री० नील का पौधा ।
नीलिमा-(हिं० स्त्री०) नीलापन, श्यामता
नीली-(हिं०वि०) नीले रंग की ।
नीली घोड़ी-(हिं०स्त्री०) जामें में सिली हुई कागज़ की घोड़ी जिसको पहिन लेने से जान पड़ता है कि आदमी घोड़े पर सवार है, डफाली लोग इसको पहन कर गाजीमियाँ की गीत गाकर भीख माँगते हैं ।
नीलोत्पल-(सं० नपुं०) नीलपद्म, नीला कमल
नीलोद-(सं०पु०) वह समुद्र या नदी जिसकी पानी नीला हो ।
नीवँ-(हिं०स्त्री०) घर बनाने के लिये गहरी नाली के आकार का गड्ढा, जिसके भीतर से भीत की जोड़ाई आरम्भ होती है, भीत का आधार स्थिति, जड़, मूल; **नीव देना**-गड्ढा खोदकर घर बनाने के लिये जोड़ाई करना, कोई कार्य आरंभ करना; **नीव जमाना**-आधार खड़ी करना;
नीव-(हिं०स्त्री०) देखो नीवँ ।
नीवानास-(हिं०पु०) सत्यनाश, बरबादी, सर्वनाश ।
नीवार-(सं०पु०) तिन्नी का चावल ।
नीवि-(सं०स्त्री०) पण, मूल धन, पूँजी, स्त्री का कमर पर के वस्त्र का बाँधने का डोरा, नारा, कमर में लपेटी हुई धोती की गाँठ, साड़ी, धोती लंहगे में पड़ी हुई डोरी, ।
नीवी-(हिं०स्त्री) देखो नीवि ।
नीव्र-(सं०नपु०) पहिये का घेरा, चन्द्र, रेवती नक्षत्र ।
नीशार-(सं०पुं०) सरदी से बचने का पर्दा, ।
नीस-(हिं०पुं०) सफ़ेद धतूरा ।
नीसक-(हिं०वि०) बलहीन
नीसानी-(हिं०स्त्री०) तेईस मात्राओं का एक छन्द ।
नीसुआ, नीसू-(हिं०पुं०) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिस पर रखकर गड़ासे से चारा काटा जाता है ।
नीहार-(सं०पुं०) तुषार, हिम, पाला, कुहिरा; **नीहारस्फोट**-(सं०पु०) हिम का बड़ा टुकड़ा । **नीहारिका**-(सं०स्त्री०) कुहरे की तरह आकाश में फैला हुआ धुंवे का मन्द प्रकाश जो अंधियारी रात मे धब्बे की तहर दीख पड़ता है ।
नु-(सं०पुं०) अनुस्वार ।
नुकरी-(हिं०स्त्री०) जल के पास रहने वाली एक चिड़िया जिसकी चोंच काली और पैर सफ़ेद होते हैं ।
नुकाई-(हिं०स्त्री०) खुरपी से निराने का काम ।
नुकाना-(हिं०क्रि०) छिपाना ।

नुकीला-(हिं०वि०) नोकदार, नोकझोंक का, तिरछा बाँका।
नुक्कड़-(हिं०पुं०) नोक, पतला सिरा, अन्त, छोर, निकला हुआ सिरा।
नुक्का-(हिं०पुं०) नोक,नुकीला भाग।
नुखरना-(हिं०क्रि०)भालू का चित्त लेटना
नुचना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का खिंच कर अलग होना, उखड़ना, नख आदि से छिला जाना,खरोंचा जाना। नुचवाना-(हिं०क्रि०) नोचने के लिये किसी दूसरे को लगाना, नोचने देना।
नुजट-(हिं०पुं०) संगीत की चौबीस शोभा में से एक।
नुत-(सं० वि०) प्रशंसा या स्तुति किया हुआ।
नुति-(सं०स्त्री०) स्तुति, वन्दना, पूजा
नुत्त-(सं०वि०) भेजा हुआ, चलाया हुआ
नुनखरा, नुनखारा-(हिं०वि०) स्वाद में नमक के सदृश।
नुनना-(हिं०क्रि०)लुनना,कृषिफल काटना
नुनी-(हिं०स्त्री०) छोटी जाति का शहतूत, जननेन्द्रिय।
नुनेरा-(हिं० पुं०) नोनिया नमक बनाने वाला।
नुन्न-(सं०वि०) प्रेरित, भेजा हुआ।
नुनाई-(हिं०स्त्री०) सुन्दरता, लावण्य।
नूत-(सं०वि०) स्तुत, प्रशंसा किया हुआ, (हिं०वि०)नूतन, नया, अनोखा, अनूठा; नूतन-(सं०वि) नवीन, नया, अपूर्व, अनोखा, विचित्र, विलक्षण, नूतनता-हिं०स्त्री०) नवीनता, नयापन;
नूतनत्व-(सं०नपुं) नवीनता, नूतनता।
नूद-(सं०पु०) शहतूत।
नून-(हिं०पु०) आल की जाति की एक लता; (हिं०पुं०) लवण, नमक; (हिं०वि०) देखो न्यून, कम; नून तेल-गृहस्थी की भोजन सामग्री आदि।
नूनताई-(हिं०स्त्री०) न्यूनता, कमी।
नूपुर-(सं०पुं०) स्त्रियों के पैर में पहिरने का एक गहना, पैजनी, नगण के पहिले भेद का नाम, इक्ष्वाकु बंश के एक राजा का नाम।
नूरा-(हिं०पु०) आपस में मिलकर लड़ी जाने वाली मल्लयुद्ध (वि०) प्रतापी, तेजस्वी।
नूरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सुन्दर छोटी चिड़िया।
नृ-(सं० पुं०) मनुष्य, पुरुष; नृकुक्कुर-(सं०पुं०) कुत्ते के समान व्यवहार करनेवाला मनुष्य; नृकेशरी-(सं०पुं०) नृसिंहावतार, विष्णु, अति पराक्रमी पुरुष; नृघ्न-(सं० वि०) नर घातक; नृजग्ध-(सं०वि०) नर भक्षक, मनुष्य को खानेवाला; नृजाति-(सं०स्त्री०) मनुष्य जाति।
नृतक-(हिं०वि०) नर्तक, नाचने वाला। नृति-(सं०स्त्री०) नर्तन, नाच। -नृत्त-(सं०नपुं०) नृत्य, नाच; नृत्तना-(हिं० क्रि०) नाचना।
नृत्य-(सं०नपुं०) संगीत के ताल और गति के अनुसार हाथ पाँव हिलाने उछलने, कूदने आदि का व्यापार, ताण्डव, नाच। नृत्यकी-(सं०स्त्री०) नर्तकी, नाचने वाली। नृत्यप्रिय-(सं०पुं०)ताण्डवप्रिय, महादेव, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम; नृत्यशाला-(सं०स्त्री०)नाट्यगृह, नाचघर; नृत्य स्थान-(सं० नपुं०) नाचने का स्थान।
नृदुर्ग-(सं०पुं०) सेना के चारो ओर का घेरा।
नृदेव, नृदेवता-(सं०पुं०)राजा,ब्राह्मण।
नृप-(सं०पु०)नरपति, राजा; नृपगृह-राजा महल; नृपतरु-खिरनी का पेड़; नृपता-(हिं०स्त्री०) राजा का गुण या भाव; नृपति-(सं०पुं०)राजा, कुबेर; नृपत्नी-(सं० स्त्री०) मनुष्यों का पालन करने वाली स्त्री; नृपत्व-(सं०नपुं०) राजत्व, राजा का काम; नृपद्रुम-(सं०पुं०) खिरनी का वृक्ष; नृपद्रोही-(सं०पुं)परशुराम; नृप प्रिय-(सं०पु०) जड़हन धान, आम का वृक्ष, पहाड़ी तोता, (वि०) राजा का प्रिय; नृपमन्दिर-(सं०नपुं०) राजगृह, राजभवन; नृपमान-(सं०नपुं०) एक प्रकार का बाजा जो राजाओं के भोजन के समय बजाया जाता था; नृपशु-(सं०पु०)नरपशु, मूर्ख; नृपसभ-(सं०नपुं०) राजाओं की सभा; नृपसुता-(सं०स्त्री०) राजकुमारी, छछूंदर
नृपानुचर-(सं०पुं०) राजभृत्य, राजा का नौकर। नृपाभीर-(सं० नपुं०) देखो नृपमान। नृपामय-(सं०पुं०) राजयक्ष्मा, क्षयरोग।
नृपाल-(सं०पुं०) नृपति, राजा। नृपालय-(सं० नपुं०) राजप्रसाद, राजमहल। नृपासन-(सं०नपुं०) राजा का सिंहासन।
नृपोचित-(सं०वि०) राजा के योग्य।
नृमण-(सं०पुं०) धन, सम्पत्ति।
नृमणि-(सं०पु०) एक प्रकार का भूत जो बच्चों को लगता और कष्ट देता है।
नृमर-(सं०पु०) मनुष्य को मारने वाला राक्षस।
नृमेध-(सं०पुं०) नरमेध यज्ञ। नृयज्ञ-(सं०पुं०) पंचयज्ञों में से एक जो गृहस्थ के लिये कर्तव्य है, अतिथि सेवा।
नृलोक-(सं०पुं०) नरलोक, मनुष्य लोक
नृवाहन-(सं०पुं०) नरवाहन, कुबेर।
नृवेष्टन-(सं० पु०) शिव, महादेव।
नृशंस-(सं०वि०) क्रूर, निर्दय, अपकारी, अनिष्टकारी, अत्याचारी; नृशंसता-(सं०स्त्री०) निर्दयता, क्रूरता।
नृषदन-(सं०नपुं०) यज्ञगृह, यज्ञशाला।
नृसिंह-(सं०पुं०) विष्णु का नरसिंह रूपी अवतार, दस अवतारों में से चौथा अवतार, श्रेष्ठ पुरुष। नृसिंह चतुर्दशी-वैशाख मास की शुक्ला चतुर्दशी जिस दिन नृसिंह देव के उद्देश से व्रत किया जाता है।
नृहन-(सं०पुं०) शत्रुहन्ता, नरघातक।
नृहार-(सं०पुं०) नृसिंहरूपी विष्णु।
ने-(हिं० प्रत्यय०) सकर्मक भूत कालिक क्रिया के कर्ता का चिह्न जो उसको आगे लगाया जाता है।
नेउतना-(हिं०क्रि०) निमंत्रण देना।
नेउला-(हिं०पुं०) देखो नेवला।
नेउली-(सं०स्त्री०) हठयोग का एक भेद
नेकरी-(हिं०स्त्री०) समुद्र की लहर का थपेड़ा जिससे जहाज़ एक ओर बढ़ता है।
नेकु-(हिं०स्त्री०वि०) देखो नेक।
नेग-(हिं०पुं०) पुरस्कार जो विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा इन कृत्यों में सहायता देने वालों को दिया जाता है, इस निमित्त दिया जाने वाला धन, पुरस्कार; नेगचार, नेगजोग-(हिं०पुं०) विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा काम करने वालोंको प्रसन्न करने के लिये दिया हुआ पुरस्कार; नेगटी-(सं०वि०) नेग पालन करने वाला; नेगी-(हिं०पुं०) नेग पाने वाला; नेगीजोगी-(हिं०पुं०) नेग पाने का अधिकारी, नेग पाने वाला।
नेचरिया-(हिं०पुं०) प्रकृति के अतिरिक्त ईश्वर को न मानने वाला, नास्तिक
नेजक-(सं०पुं०) निर्णेजक, घोबी।
नेछावर-(हिं०स्त्री०) देखो निछावर।
नेजाल (हिं०पुं०) भाला, बरछा।
नेटा-(हिं०पुं०) नाक से निकलने वाला कफ।
नेठना-(हिं०क्रि०) देखो नाठना।
नेड़े-(हिं०स्त्री०वि०) समीप,निकट, पास।
नेत-(हिं०पु०) निर्धारण, ठहराव, किसी बात का स्थिर होना, निश्चय, प्रबंध, व्यवस्था, संकल्प, एक प्रकार की चादर।
नेतली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पतली डोरी।
नेता-(हिं०पुं०) नायक, सरदार,अगुआ, स्वामी, प्रवर्तक, मालिक, विष्णु, नीमका पेड़, मथानी की रस्सी।
नेति-(सं०पुं०) हठ योग का एक भेद; एक संस्कृत वाक्य जिसका अर्थ है "इति नहीं" अर्थात् अन्त नहीं है।
नेती-(हिं० स्त्री०) मथानी में लपेट कर खींचने की रस्सी; नेतीधोती-(हिं० स्त्री०) हठ योग की वह क्रिया जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में डाल कर आँतें साफ़ की जाती हैं।
नेतृत्व-(सं०नपु०) नायकता, अध्यक्षता।
नेत्र-(सं० नपुं०) चक्षुरिन्द्रिय, चक्षु, नयन, आँख, एक प्रकार का वस्त्र, मथानी की रस्सी, पेड़ की जड़, जटा, रथ, नाड़ी, वस्ती की सलाई, हैहय राजा के पुत्र का नाम, दो की संख्या।
नेत्र कनीनिका-(सं० पुं०) आँख की पुतली; नेत्रकोष-आँख का परदा;
नेत्रज-(सं० पुं०) नेत्र से उत्पन्न आँसू।
नेत्रजल-(सं० नपुं०) अश्रु, आँसू; नेत्रपाक-(सं०पु०) आँख का एक रोग;
नेत्रपिण्ड-(सं०पुं०) बिल्ली, (नपुं०) आँख का ढेला; नेत्रबन्ध-(सं० पुं०) आँख मिचौली का खेल; नेत्रवाला-(हिं०पु०) सुगन्धवाला; नेत्रभाव-(सं० पुं०) संगीत या नृत्य में आँखों की चेष्टा से सुख दुःख का भाव दिखलाने की कला; नेत्र मण्डल-(सं०पु०) आँख का घेरा; नेत्रमल-(सं०नपुं०) आँख का कीचड़; नेत्रयोनि-(सं०पु०) इन्द्र, चन्द्रमा; नेत्ररञ्जन-(सं०नपुं०) कज्जल, काजल; नेत्ररोम-(सं०नपुं०) नेत्रपक्ष्म, आँख की बरौनी;
नेत्रवारि-(सं० नपुं०) अश्रुजल, आँसू;
नेत्रविष-(सं० पुं०) एक प्रकार का सर्प जिसकी आँख में विष रहता है।
नेत्रसन्धि-(सं० स्त्री०) आँख का कोना; नेत्रस्तम्भ-(सं० पुं०) आँख की पलकों का स्थिर हो जाना; नेत्रस्राव-(सं०पुं०) आँखों में से पानी बहना।
नेत्रान्त-(सं०पुं०) अपांग देश, कनपटी।
नेत्राभिष्यन्द-(सं० पुं०) आँख आने का रोग। नेत्रामय-आँख का एक रोग। नेत्राम्बु, नेत्राम्भस-(सं० नपुं०) अश्रु, आँसू।
नेत्री-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, नाड़ी, नदी, अग्रगामिनी, राह बतलाने वाली।
नेत्रोत्सव-(सं० ०) वह वस्तु जिसको देखने से आनन्द मिले।
नेनुआ, नेनुवा-(हिं० पुं०) एक प्रकार की तरकारी, घिया तरोई।
नेप-(सं०पु०) पुरोहित, उदक, जल।
नेपथ्य-(सं०पुं०) वेश, भूषण, अभिनय, नाटक आदि में परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट नटी नाना प्रकार के वेश सजते हैं।
नेपाल-भारतवर्ष के उत्तर का एक स्वाधीन राज्य। नेपालजा-(सं०स्त्री०) मनःशिला, मैनसिल। नेपाली-(हिं०वि०) नेपाल संबंधी, नेपाल में रहने वाला। नेपुर-देखो नूपुर।
नेब-(हिं०पुं०) सहायक, मन्त्री, दीवान।
नेबु-(हिं०पुं०) देखो नीबू।
नेम-(सं०पुं०) काल, समय, अवधि, खण्ड, टुकड़ा, छल, कपट, गड्ढा, अन्न, सायंकाल, मूल, जड़।
नेम-(हिं०पु०) नियम, बन्धेज, रीति, निरन्तर होने वाली बात, धर्म दृष्टि से कुल क्रियाओं का पालन; नेम-धरम-व्रत, पाठ पूजा आदि।
नेमत-(हिं० स्त्री०) वैभव।
नेमधिति-(सं०स्त्री०) संग्राम, युद्ध।
नेमि-(सं० स्त्री०) पहिये का घेरा, चक्कर, कुवें की जगत, वज्र, एक दैत्य का नाम, नेमिनाथ तीर्थंकर, प्रान्त भाग। नेमि वृक्ष-(सं०पु०) सफ़ेद खैर का पेड़।
नेमी-(हिं०वि०) धर्म की दृष्टि से पाठ,

पूजा, व्रत का उपवास आदि नियमों का पालन करने वाला।
नेय-(सं० वि०) लाने योग्य।
नेयार्थता-(सं०स्त्री०)काव्यदोषका एक भेद
नेरवती-(हिं०स्त्री०) नीले रंग की एक पहाड़ी भेंड़।
नेरे-(हिं०क्रि०वि०) निकट, समीप,पास।
नेब-(हिं०पुं०) देखो नेब; **नेवग**-(हिं०पु०) देखो नेग; **नेवगी**-(हिं०पुं०) देखो नेगी;
नेवछावर-(हिं० स्त्री०) देखो निछावर
नेवज-(हिं०पुं०) खाद्य पदार्थ जो देवता को अर्पण किया जावे, नैवेद्य, भोग।
नेवतना-(हिं०क्रि०) निमंत्रण देना, नेवता भेजना। **नेवतहरी**-(हिं०पुं०) जिसको निमंत्रण दिया जावे। **नेवता**-(हिं०पु०) देखो न्योता।
नेवर-(हिं०पु०) पैर का गहना, नूपुर, घोड़े के पैर से पैर की रगड़, (वि०) बुरा, खराब; **नेवरना**-(हिं०क्रि०) दूर होना, समाप्त होना।
नेवला-(हिं०पुं०) चार पैरों से भूमि पर चलने वाला गिलहरी के आकार का मांसाहारी पिण्डज जन्तु, जो भूरे रंग का होता है, यह सर्प को मार डालता है।
नेवा-(हिं०पुं०) लोकोक्ति, कहावत, (वि०) सदृश, समान।
नेवाज-(हिं०वि०) देखो निवाज।
नेवाड़ा-(हिं०पुं०) देखो निवाड़ा।
नेवारना-(हिं०क्रि०) देखो निवारना।
नेवारी-(हिं०स्त्री०) वनमल्लिका, जूही की जाति की एक लता।
नेष्ट-(सं०वि०)अनिष्ट,शास्त्रसे निषिद्ध।
नेष्टु-(सं०पुं०) लोष्ट्र ढेला।
नेसकुन-(हिं०पुं०) बन्दरों का जोड़ा खाना।
नेसुक-(हिं० वि०) अल्प, थोड़ा, तनिक; (क्रि० वि०) अल्प मात्रा में, थोड़ासा।
नेह-(हिं० पुं०) स्नेह, प्रीति, प्रेम, तेल या घी।
नेही-(हिं०वि०) प्रेमी, स्नेह करनेवाला
नै-(हिं०स्त्री०) नीति।
नैऋत-(हिं०वि०) देखो नैर्ऋत्य।
नैक-(सं०वि०) अनेक,बहुत,(पुं०) विष्णु, (हिं०वि०) देखो नेक।
नैकचर-(सं०वि०) जो अकेले चलते हों, झुंड में न चलते हों।
नैकटिक-(सं०वि०)निकटवर्ती,समीपका।
नैकट्य-(सं०नपुं०) निकटता।
नैकध-(सं०अव्य०) अनेक प्रकार से।
नैकभेद(सं०वि०) अनेक प्रकार का।
नैकरूप-(सं०वि०) नानारूप-(वि०) परमेश्वर।
नैकशः-(सं०वि०) अनेक बार।
नैकषेय-(सं०पुं०) राक्षस।
नैकसानुचर-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
नैकृतिक-(सं० वि०) कटुभाषी, कड़वा बोलनेवाला।
नैगम-(सं०नपुं०)नय, नीति उपनिषद् रूप वेदवाक्य, नगरवासी मनुष्य, (वि०) निगम संबंधी जिसमें निगम आदि का प्रतिपादन हो।
नैगमेय-(सं०पु०) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
नैचौ-(हिं०स्त्री०) पुरवट खींचते समय बैलों के चलने के लिये बनी हुई ढालू भूमि।
नैज-(सं०वि०) निज सम्बन्धी, अपना।
नैटी-(हिं०स्त्री०) दुधिया घास।
नैतिक-(सं०वि०)नीति सम्बन्धी।
नैत्य-(सं० नपुं०) नित्य कर्म; **नैत्यिक**-(सं० वि०) नित्य विहित, प्रतिदिन करने का।
नैदाघ-(सं० वि०) ग्रीष्म सम्बन्धी, गरमी का।
नैदेशिक-(सं०वि०) किंकर, दास।
नैद्र-(सं०वि०) निद्रा सन्बन्धी।
नैधन-(सं०नपुं०) निधन, मरण।
नैन-(हिं० पुं०) नयन, नेत्र, नवनीत, मक्खन; **नैनसुख**-(हिं०पुं०)एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।
नैनू-(हिं०पु०) एक प्रकार का उभड़ी हुई गोल बूटियों का सूती कपड़ा, मक्खन।
नैपाल-(सं०वि०) नेपाल संबंधी,नेपाल में रहनेवाला, (पुं०) एक प्रकार की ऊख, नेपाल; **नैपाली**-(सं०वि०)नेपाल देश का, (स्त्री०) मैनसिल, नील का पौधा।
नैपुण, नैपुण्य-(सं० नपुं०) निपुणता, चतुराई।
नैमय-(सं०पुं०) व्यवसायी।
नैमित्तिक-(सं०वि०) जो किसी निमित्त से किया जाय।
नैमिषारण्य(सं०नपुं०) एक प्राचीन वन जो आजकल हिन्दुओं का तीर्थ माना जाता है, यह स्थान सीतापूर के जिले मे है।
नैमेय-(सं०पुं०) विनिमय वस्तुओं का बदला।
नैयमिक-(सं० वि०) नियम विधि प्राप्त कर्म।
नैया-(हिं०स्त्री०) नाव।
नैयायिक-(सं० पुं०)न्याय शास्त्र का जाननेवाला, न्यायाध्येता।
नैर-(हिं०पुं०) देश, नगर,
नैरपेक्ष-(सं०नपुं०) अपेक्षा का अभाव।
नैरयिक-(सं०वि०) नरकवासी।
नैरर्थ्य-(सं०नपुं०) निरर्थकता।
नैराश्य-(सं०नपुं०) निराशा का भाव, आशाशून्यता।
नैर्ऋत-(सं०पुं०)राक्षस,मूला नक्षत्र; पश्चिम दक्षिण कोण का स्वामी।
नैर्ऋति-(सं०स्त्री०)दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच की दिशा।
नैर्गन्ध्य-(सं०नपुं०) गन्धहीनता।
नैर्मल्य-(सं०नपुं०)स्वच्छता,निर्मलता।
नैर्लज्ज-(सं०नपुं०) निर्लज्जता।
नैवेद्य--(सं० नपुं०) वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढाई जावे, भोग, देवबलि।
नैश-(सं०वि०) निशा संबंधी, रातका।
नैश्चित्य-(सं०नपु०) निश्चय।
नैषध-(सं०पु०) निषध देश के राजा नल, श्रीहर्षरचित एक संस्कृत महाकाव्य,(वि०)निषध देश का। **नैषधीय** (सं०वि०) नल संबंधी।
नैष्ठिक-(सं०वि०)निष्ठावान्,निष्ठायुक्त;
नैष्ठुर्य-(सं०नपुं०) निठुराई, क्रूरता।
नैष्फल-(सं०नपुं०) निष्फलता।
नैसर्गिक-(सं०वि०) स्वाभाविक,प्राकृतिक
नैसागकी-(हिं० वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक।
नैसा-(हिं०वि०) बुरा, खराब।
नैहर-(हिं०पुं०) स्त्री के पिता का घर, मायका।
नो-(सं० अव्य०) नहीं।
नोआ-(हिं०पुं०) दूध दुहते समय गाय के पैर बाँधने की रस्सी। **नोई**-(हिं०स्त्री०) देखो नोआ।
नोकझोंक-(हिं०स्त्री०) शृंगार,ठाटबाट, सजावट, आतंक, दर्प, तेज, चुभने वाली बात, व्यंग, ताना, परस्पर की छेड़छाड़; **नोकना**-(हिं०क्रि०) ललचना
नोकदार-(हिं०वि०) जिसमें नोक हो, चुभने वाला चित्त पर प्रभाव डालने वाला, पैना, तड़क भड़क का;
नोकपलक-(हिं०स्त्री०) चेहरे की बनावट; **नोकपान**-(हिं० पु०) जूते की सुन्दरता और पुष्टता।
नोकाझोंकी-(हिं०स्त्री०) वादाविवाद, छेड़छाड़, आपसकी व्यंगपूर्ण बाते।
नोकीला-(हिं० वि०) देखो नुकीला।
नोखा-(हिं०वि०)अनोखा, अपूर्व, अनूठा
नोच-(हिं०स्त्री०) नोचने की क्रिया या भाव, चारो ओर की माँग, छीनना, खसोटना; **नोचखसोट**-(हिं० स्त्री०) झटके से छीनना,छीना झपटी;**नोचना**-(हिं० क्रि०) जमी हुई या लगी हुई वस्तु को झटके से खींचकर अलग करना, उखाड़ना, खरोचना, दुखी और व्यग्र करके लेना, पीछे पड़ जाना नख आदि से विदीर्ण करना।
नोचू-(हिं० पुं०) नोचने वाला तंग करके लेने वाला।
नोण-(सं०नपु०) लवण, नमक।
नोदन-(सं०नपुं०)खण्डन,प्रेरणा, चलाने या हाँकने का काम, बैल हाँकने की छड़ी, पैना।
नोधा-(सं०अव्य०) नवधा, नव प्रकार।
नोन-(हिं०पुं०) लवण, नमक।
नोनचा-(हिं० पुं०) नमकीन अचार, वह भूमि जहाँ नमक अधिक पाया जाता है।
नोनछी-(हिं०स्त्री०) लोना मिट्टी।
नोना-(हिं०पुं०)नमक का वह अंश जो पुरानी भीतों में लग जाता है, लोनी मिट्टी, शरीफ़ा,नावकी पेंदी में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा, (वि०) नमक मिला हुआ, खारा, सुन्दर, सलोना; **नोना चमारी**-(हिं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध जादूगरनी जो कामरूप की रहने वाली थी; इसकी दोहाई अब तक मन्त्रों में दी जाती है।
नोनिया-(हिं०पु०) लोनी मिट्टी मे से नमक निकालने वाली जाति। **नोनी** (हिं०स्त्री०) लोनी मिट्टी, अमलोनी का पौधा, (वि०)रूपवती, सुन्दर, सलोनी।
नोनो-(हिं०वि०) देखो नोना।
नोर, नोल-(हिं०वि०) देखो नवल।
नोवना-(हिं०क्रि०)दूहते समय गाय का पिछला पैर रस्सी से बाँधना।
नोहर-(हिं० वि०) दुर्लभ, अलभ्य, जो सहज में प्राप्त न हो सके, अद्भुत, अनोखा।
नौ-(सं०स्त्री०) नौका, नाव।
नौ-(हिं०वि०) नव, जो गिनती में आठ और एक हों,एक कम दस की संख्या ९; **नौ दो ग्यारह होना**-भाग जाना;
नौकड़ा-(हिं० पुं०) तीन आदमियों के खेलने की कौड़ी का एक प्रकार का जुआ।
नौकर्णधार-(सं०पुं०) मल्लाह, मांझी।
नौकर्मा-(सं० नपुं०) नाव चलाने का काम।
नौका-(सं०स्त्री०) तरणि, नाव, पोत। **नौकादण्ड**-नाव का डाँड़ा। **नौक्रम**-(सं०नपुं०) नाव का बना हुआ पुल।
नौग्रही-(हिं०स्त्री०) हाथ में पहिरने का एक गहना।
नौचर-(सं० वि०) नाव पर चढ़कर घूमने वाला।
नौची-(हिं०स्त्री०) रंडी की पाली हुई लड़की जिसको वह अपना व्यवसाय सिखलाती है।
नौछावर-(हिं०स्त्री०) देखो निछावर।
नौज-(हिं०अव्य०) ईश्वर करे, ऐसा न हो कि, न सही, न हों।
नौजीविक-(सं०पुं०) वह जो नाव चला कर अपनी जीविका करता हो।
नौता-(हिं०पुं०) देखो न्यौता, निमन्त्रण, (वि०) नया।
नौतन-(हिं०वि०) देखो नूतन, नया।
नौतम-(हिं०वि०) अत्यन्त नवीन, बहुत नया; (पुं०) विनय, नम्रता।
नौतेरही-(हिं० स्त्री०) छटी ईंट; पासे से खेलने का एक प्रकार का जुआ।
नौतोड़-(हिं०वि०) नया तोड़ा हुआ, जो पहिले पहल तोड़ा गया हो, (स्त्री०) पहिली बार जोति हुई भूमि।
नौदण्ड-(सं०पुं०) नाव का डाँड़ा।
नौध-(हिं०पु०) नया पौधा, अंखुआ।
नौधा-(हिं० पुं०) देखो नवधा, नया लगाया हुआ फलों का बाग, वर्ष के आरंभ मे बोई हुई नील।
नौनगा-(हिं०पुं०) बाँह पर पहिरने का एक गहना, भुजबन्द।
नौना-(हिं०पुं०) नवना, झुकना, झक कर टेढ़ा होना।

नौनार-(हिं० स्त्री०) वह स्थान जहां नोनिया लोग मिट्टी से नमक निकालते हैं ।
नौबढ़-(हिं० वि०) वह जिसको हीन (दरिद्र) अवस्था से अच्छी दशा में आये हुए थोड़े दिन हुए हों ।
नौमासा- हिं०पुं०) गर्भका नवाँ महीना, वह रीत जो इस समय की जाती हैं।
नौमि-(सं०क्रि०) एक संस्कृत का वाक्य जिसका अर्थ है-मै नमस्कार करता हूँ।
नौमी-(हिं०स्त्री०) नवमी, किसी पक्ष की नवीं तिथि ।
नौयान-(सं०नपुं०) नाव आदि पर चढ़ कर देश यात्रा करना ।
नौरग-(हिं०पुं०) एक प्रकार की चिड़िया
नौरंग-(हिं० पुं०) 'औरंगजेब' का अपभ्रंश ।
नौरंगी-(हिं०स्त्री०) देखो नारंगी ।
नौरतन-(हिं० पुं०) देखो नवरत्न; एक प्रकार का गहना, एक प्रकार की चटनी जिसमें-खटाई, गुड़, मिर्च, सीतलचीनी,केशर,इलायची,जावित्री, सौंफ़ और जीरा-ये नौ चीजें पड़ती हैं
नौरस-(हिं०वि०) जिसका रस नया हो, नवयुवक ।
नौरूप-(हिं०पुं०) नील की उपज की पहिली कटाई ।
नौल-(हिं०वि०) जहाज पर माल लादने का भाड़ा ; **नौलक्खा - नौलखा**-(हिं०वि०) जिसका मूल्य नव लाख हो, बहुमूल्य, अनमोल **नौलखी**-(हिं०स्त्री०) जुलाहों की वह लकड़ी जिसमें ताने बनाये जाते है ।
नौला-(हिं०पुं०) देखो नेवला, नकुल ।
नौलासी-(हिं०वि०) मृदु, कोमल ।
नौवाह-(सं०वि०) जिससे नाव चलाई जाती है, नाव का डांडा ।
नौविद्या-(सं०स्त्री०) जहाज आदि के चलाने की विद्या ।
नौसत-(हिं० स्त्री०) सोलहो सिंगार, शृंगार ।
नौसरा-(हिं०पुं०) नौ लड़ीकी माला या हार ।
नौसादर-(हिं०पुं०) एक तीक्ष्ण झालदार क्षार या नमक जो सींग, हड्डी, खुर बाल आदि का भभके से अर्क खींच कर निकाला जाता है ।
नौसिख-(हिं०वि०) नया सीखा हुआ, नवशिक्षित;**नौसिखिया, नौसिखुआ**,-(हिं०वि०) जो किसी विद्या या कला को सीखकर पक्का न हुआ हो ।
नौसेना-(सं०स्त्री०) जल सेना, वह सेना जो जहाजों पर से लड़ती है ।
नौहँड़-(हिं०पुं०) मिट्टी की नई हांडी, कोरी हँड़िया ।
नौहँड़ा-(हिं०पुं०) पितृपक्ष, कनागत ।
न्यक्ष-(सं० पुं०) भैंसा, जमदग्नि, परशुराम ।
न्यग्रोध-(सं०पुं०) वट वृक्ष, बरगद, शमी वृक्ष, पुरसा, विष्णु, महादेव, उग्रसेन राजा के एक पुत्र का नाम; **न्यग्रोधिका**-(सं० स्त्री०) मूसाकानी नामक लता ।
न्यङ्कुभूरुह-(सं० पुं०) सोनापाठा, अमल तास ।
न्यङ्क शिरस-(सं०नपुं०) ककुभ छन्द ।
न्यस्त-(सं०पुं०) अपचय, नाश ।
न्यर्बुद-(सं०नपुं०) दस अरब की सख्या
न्यस्त-(सं०वि०)फेंका हुआ,डाला हुआ, त्यक्त, छोड़ा हुआ, रक्खा हुआ, धरा हुआ, स्थापित, बैठाया हुआ, **न्यस्त देह**-मृत शरीर; **न्यस्त शस्त्र**-जिसने हथियार रख दिया हो
न्यस्य-(सं०वि) स्थापनीय, रखने योग्य, छोड़ने योग्य ।
न्याउ-(हिं०पुं०) देखो न्याय ।
न्याति-(हिं०स्त्री०) ज्ञाति, जाति ।
न्याय-(सं० पुं०) नियम के अनुकूल बात, उचित बात, नीति, अधिकारी और अनधिकारी तथा दोषी और निर्दोषी का निर्णय, साधु, भोग, युक्ति, प्रतिज्ञा हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमनात्मक पञ्च अवयव वाक्य, न्याय शास्त्र जिसमें किसी विषय का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिये उचित रीति से विचार किया जाता है, न्याय का विषय छ दर्शनों में है, न्याय-शास्त्र के प्रवर्तक गौतम ऋषि थे युक्ति मूलक दृष्टान्त, जिन दृष्टान्तों में नाना प्रकार की युक्तियाँ दिखलाई जाती हैं वे लौकिक न्याय कहलाते है, कहावत-यथा घुणाक्षर न्याय, उषर वृष्टि न्याय, कूपमण्डूक न्याय आदि;
न्यायकर्ता-(सं०पुं०) न्याय करने वाला, दो पक्षों के विवाद का निर्णय करने वाला; **न्यायतः**-(सं० अव्य०) धर्म धर्म और नीति के अनुसार, ठीक ठीक तरह से; **न्यायता**-(सं० स्त्री०) न्याय का भाव, उपयुक्तता; **न्याय देश**-(सं० नपुं०) विचारालय, **न्याय पथ**-(सं०पुं० मीमांसा शास्त्र, उचित रीति; **न्याय परता**-(सं०स्त्री०) न्यायी होने का भाव; **न्याय शीलता**-न्याय का काम; **न्याय वत्**-(सं०वि०) न्याय युक्त, न्याय पर चलने वाला; **न्याय वर्ती**-(सं०वि०) देखो न्यायवत्; **न्याय वान्**-(हिं० पुं०) न्याय के अनुसार चलने वाला, न्यायी, विवेकी; **न्याय विहित**-(सं० वि०) न्याय के अनुसार अथवा न्याय पूर्वक किया हुआ; **न्याय विरुद्ध**-(सं०वि०)प्रत्यक्ष प्रमाण का विरोधी; **न्याय सभा**-(सं०स्त्री०) वह समाज जहाँ विवादों का निर्णय किया जाता है, न्यायालय ।
न्यायाधीश-(सं०पुं०)विवाद का निर्णय करने वाला अधिकारी, न्याय कर्ता,
न्यायालय-(सं०पुं०)वह स्थान जहाँ पर अभियोगों का न्याय किया जाता है
न्यायी-(सं० वि०) न्याय पर चलने वाला, उचित पक्ष का ग्रहण करने वाला । **न्याय्य**-(सं० वि०) न्याय संगत, न्याययुक्त, उचित ।
न्यारा-(हिं०वि०) जो पास न हो, दूर का, जो मिला न हो,अलग, निराला, अनोखा, भिन्न, अन्य ।
न्यारिया-(हिं०पुं०) सोनारों के नियार (कूड़ा करकट) को धोकर इसमें से सोना चांदी निकालने वाला ।
न्यारे-(हिं०क्रि०वि०) दूर, अलग, पास नही, पृथक् ।
न्याव-(हिं०पुं०) नियम नीति आचरण पद्धति, उचित अनुचित की बुद्धि, कर्तव्य, ठीक, निर्धारण, उचित पक्ष, विवाद या झगड़े का निबटारा, दो पक्षों के बीच का निर्णय।
न्यास-(सं० पुं०) उपनिधि, धरोहर, थाती, निक्षेप, स्थापन, रखना, अर्पण त्याग, सन्यास, किसी रोग या बाधा की शान्ति के निमित्त रोगी या बाधाग्रस्त मनुष्य के एक अंग पर हाथ ले जाकर मन्त्र पढ़ने का विधान, तान्त्रिक पद्धति के अनुसार देवता के भिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मन्त्रों को पढ़कर उनपर विशेष वर्णों का स्थापन, अङ्गन्यास, करन्यास तथा अन्तर्मातृका न्याम तथा बाह्य मातृका न्यास इसके प्रधान भेद हैं ।
न्यासिक-(सं०वि०)धरोहर रखने वाला।
न्यासिन्-(सं०वि०) त्यागी, सन्यासी ।
न्युब्ज-(सं० नपुं०) कर्मरङ्ग फल कमरख, कुश, एक प्रकार का यज्ञ पात्र, (वि०)कुब्ज, कुवड़ा, अधोमुख, औंधा, रोग से जिसकी कमर झुक गई हो ।
न्यून-(सं०वि०) क्षुद्र, हीन, अल्प, नीच, कम, थोड़ा; **न्यूनतर**-(सं०वि०) प्रचलित परिमाण से कम, चलते वजन, से कम; **न्यूनता**-(सं०स्त्री०) हीनता, अल्पता, कमी ।
न्यूनाङ्ग-(सं०वि०)अग हीन,खंज,लंगड़ा
न्यूनेन्द्रिय-(सं० वि०) जिसकी एक न एक इन्द्रिय कम हो ।
न्योछावर-(हिं०स्त्री०) देखो निछावर ।
न्योजी-(हिं०स्त्री०) लीची, चिलगोजा ।
न्योतना-(हिं०क्रि०) निमंत्रित करना, बुलाना, दूसरे को अपने घर भोजन के लिये बुलाना । **न्योतनी**-(हिं० स्त्री०) खाना पीना जो विवाहादि शुभ अवसर पर होता है ।
न्योतहरी-(हिं० पुं०) न्योते में आया हुआ मनुष्य ।
न्यौता-(हिं०पुं०)उत्सव आदिमें सम्मिलित होनेके लिये निमन्त्रण, बुलावा, भोजन स्वीकार करने की प्रार्थना, वह भेंट जो अपने इष्ट मित्रों या सबधी के घर से शुभ या अशुभ कार्य में सम्मिलित होने का न्योता पाकर भेजी जाती है ।
न्यौरा-(हिं०पुं०) बड़े दाने का घुँघरू, नेवर ।
न्योला-(हिं०पुं०) देखो नेवला ।
न्योली-(हिं०स्त्री०) नेत, धोती आदि के समान हठ योग की एक क्रिया जिसमें पेट के नलों को जल द्वारा शुद्ध करते हैं ।
न्हाना-(हिं०क्रि०) देखो नहाना, स्नान करना ।

प

प—हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाला के व्यञ्जन वर्ण का इक्कीसवां अक्षर, इसका उच्चारण ओंठ से होता है, इसके उच्चारण में दोनों ओंठ मिलते हैं अतएव यह स्पर्श वर्ण कहलाता है।

प-(सं॰पुं॰) पवन, हवा, पत्र, पत्ता, पतन, अन्त, शब्द के अन्त में लगने से इसका अर्थ 'पालन करने वाला' होता है।

पंक-देखो पङ्क, पंक्ति देखो पङ्क्ति।

पंख-(हिं॰पुं॰) पक्ष, पर, डैना; **पंख जलना**-नाश होने के चिह्न देख पड़ना; **पंख लगाना**-वेगयुक्त होना।

पंखड़ी-(हिं॰स्त्री॰) देखो पखड़ी।

पंखा-(हिं॰पुं॰) वह पदार्थ जिसको हिलाकर वायु का झोंका एक ओर ले जाते हैं, व्यजन, बिजना, बेना, **पंखा कुली**-पंखा खींचने के लिये नियुक्त भृत्य।

पंखाज-(हिं॰पुं॰) देखो पखाउज।

पंखापोश-(हिं॰पुं॰) पंखे के ऊपर का ढपना।

पंखिया, पंखी-(हिं॰पुं॰)पक्षी, चिड़िया, पखड़ी, फ़तिंगा, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, (स्त्री॰)छोटा पंखा, पहिये की कीचड़ रोकने की धातु या लकड़ी की पट्टी।

पखुड़ा पंखुरा-(हिं॰ पुं॰) कन्धे और बाँह का जोड़, पखुरा।

पंखुरी-(हिं॰स्त्री॰) फूल का दल, पंखड़ी;

पंखेरू-(हिं॰पुं॰) देखो पखेरू, पक्षी।

पंग-(हिं॰ वि॰) पंगु, लगड़ा, स्तब्ध, एक प्रकार का वृक्ष, एक प्रकार का नमक।

पंगत, पंगात-(हिं॰स्त्री॰) पंक्ति, पांती, भोजन के समय भोजन करने वालों की पंक्ति,सभा, समाज,भोज,जुलाहों के करगह का दो सरकंडों का बना हुआ एक अस्त्र।

पंगला, पंगा-(हिं॰वि॰) पंगु, लंगड़ा।

पंगायत-(हिं॰पुं॰) चारपाई का पायताना।

पंगी-(हिं॰स्त्री॰) धान के खेत में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा, वह मिट्टी जो नदी के घट जाने पर जम जाती है।

पंगु-देखो पङ्गु।

पंच-(हिं॰ पुं॰) पांच की संख्या या अंक, पांच या अधिक मनुष्यों का समुदाय, समाज, सर्व सामान्य, जनता, पांच या अधिक मनुष्योंका समुदाय जो किसी झगड़े को तय करने के लिये बैठाया जाता है, न्याय सभा,। **पंचकी भीख**-सामान्य लोककी कृपा;**पंचकी दुहाई**-न्यायके निमित्त सब लोगों से प्रार्थना; **पंच परमेश्वर**-एक मत होकर पंच का निर्णय ईश्वर का वाक्य माना जाता है; **पंच मानना**-विवाद के निबटारे के लिये पंच नियुक्त करना।

पंचकुर-(हिं॰स्त्री॰)एक प्रकार की बटाई जिसमें भूस्वामी उत्पत्ति का पाँचवाँ भाग दिया जाता है।

पंचक-देखो पञ्चक; **पंच**-देखो पञ्च,

पंचकोस-(हिं॰पुं॰)पांच कोस की लंबाई चौड़ाई के बीच में बसी हुई भूमि, काशी। **पंचकोसी**-(हिं॰स्त्री॰) काशी की परिक्रमा।

पंचतपा-(हिं॰पुं॰) अपने चारो ओर आग जलाकर तथा धूप में बैठकर तप करने वाला साधु,'पंचाग्नि तापने वाला।

पंचतोलिया-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का महीन कपड़ा।

पंचनाथ-(हिं॰पुं॰) बदरीनाथ, द्वारकानाथ,जगन्नाथ,रंगनाथ और श्रीनाथ

पंचपात-(हिं॰पुं॰)पंचोली नामक पौधा

पंचपीरिया-(हिं॰पुं॰) मुसलमानों के पांचों पीरों का पूजन करने वाला,

पंचभर्तारी-(हिं॰स्त्री॰) द्रौपदी।

पंचमेल-(हिं॰वि॰) जिसमें पांच वस्तु मिली हों, साधारण, मिला जुला ढेर।

पँचरंगा-(हिं॰वि॰) पांचरंग का, रंग-बिरंगा।

पँचलड़ा-(हिं॰वि॰) पांच लड़ों का।

पँचलड़ी का पँचलरी-(हिं॰स्त्री॰)गले में पहिरने की पांच लड़ों की माला।

पंचानवे-(हिं॰वि॰) नब्बे और पांचकी संख्या का, (पुं॰) नब्बे और पांच की संख्या-९५।

पंचायत-(हिं॰स्त्री॰) निर्धारित मनुष्यों का वह समाज जो किसी विवाद विषय को निश्चित करने के लिये नियुक्त किया जाता है; बहुत से लोगोंका एक साथ बकवाद करना; पंचों का वादविवाद।

पंचायती-(हिं॰वि॰) पंचायतका किया हुआ, पंचायत संबंधी, साझे का, मिला जुला, सर्व साधारण का।

पंचालिस-(हिं॰वि॰) देखो पैंतालीस।

पंचोली-(हिं॰स्त्री॰) एक पौधा जिसके डंठलों और पत्तों मेंसे एक प्रकार का सुगन्धित तेल निकलता है,(पुं॰) वंश परंपरा से चली आनेवाली एक उपाधि।

पंछा-(हिं॰पुं॰)छाला, फफोला, सीतला के दाने के भीतर भरा हुआ पानी, एक प्रकार का स्राव जो मनुष्य की शरीर से अथवा पौधों में से निकलता है।

पंछाला-(हिं॰पुं॰) फफोले में का पानी

पंछी-(हिं॰पुं॰) पक्षी, चिड़िया।

पंजड़ी-(हिं॰ स्त्री॰) चौसर के एक दाँव का नाम।

पंजना-(हिं॰क्रि॰)पात्र में टाँका लगाकर झलना। **पंजर**-देखो पञ्जर।

पंजरी-(हिं॰स्त्री॰) अरथी, टिकठी।

पंजातोड़ बैठक-(हिं॰ स्त्री॰) मल्ल युद्ध की एक युक्ति।

पंजाब-भारतवर्ष का वह पश्चिमोत्तर प्रदेश जिसमें सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम ये पाँच नदियाँ बहती हैं। **पंजाबी**-(हिं॰वि॰) पंजाब, देश का, पंजाब में रहने वाला पंजाब निवासी।

पंजारा-(हिं॰पुं॰)रूई धुनने वाला,धुनियां

पंजीरी-(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार की मिठाई जो आंटे को घी मे भूनकर उसमें धनियाँ, सोंठ, जीरा आदि मिलाकर बनाई जाती है, इसका व्यवहार विशेषतः नैवेद्य में होता है, एक प्रकार का पौधा जिसको इन्दुपर्णी भी कहते हैं।

पंजेरा-(हिं॰पुं॰) पात्र को झलने का काम करने वाला।

पंडल-(हिं॰ वि॰) पीले रंग का (पुं॰) शरीर, पिण्ड।

पंडव,पंडवा-(हिं॰पुं॰) देखो पाण्डव।

पँड़वा-(हिं॰पुं॰) भैंस का बच्चा।

पंडा-(हिं॰पुं॰) किसी तीर्थ या मन्दिर का पुजारी, घाटिया, ब्राह्मण, रसोइयादार, (सं॰स्त्री॰) ज्ञान, बुद्धि, विवेक, शास्त्रज्ञान।

पंडित-(हिं॰पुं॰) देखो पण्डित। **पंडिताई**-(हिं॰स्त्री॰) पाण्डित्य, विद्वत्ता।

पंडिताऊ-(हिं॰वि॰) पंडितों के ढंग का। **पंडितानी**-(हिं॰स्त्री॰) पंडित की स्त्री, ब्राह्मणी।

पंडु-देखो पाण्डु।

पंडुक-(हिं॰पुं॰) जंगल झाड़ियों तथा उजाड़ स्थानों में रहने वाला कबूतर की जाति का एक पक्षी।

पडोह-(हिं॰पुं॰) परनाला।

पंथ-(हिं॰पुं॰) मार्ग, व्यवहार का क्रम, रीति, चाल, व्यवस्था, सम्प्रदाय, धर्म मार्ग, मत, रोगी को लंघन या उपवास के बाद देने का हलका भोजन; **पंथ गहना**-मार्ग चलना, **पंथ दिखाना**-मार्ग बतलाना; **पंथ-निहारना**-प्रतीक्षा करना; **पंथ पर-पाँव धरना**-आचरण ग्रहण करना; **पंथ पर लगना**-सुमार्ग पर चलना; **किसी के पंथ पर लगना**-पीछा करना, व्यंग करना; **पथ सेना**-आसरा देखना, प्रतीक्षा करना।

पंथान-(हिं॰पुं॰) पथ, मार्ग।

पंथकी, पंथिक-(हिं॰पुं॰) पथिक, बटोही,

पंथी-(हिं॰पुं॰) पथ पर चलने वाला, पथिक, बटोही, किसी सम्प्रदाय का अनुयायी।

पंदरह-(हिं॰वि॰) दस और पाँच की संख्या का; (पुं॰) दस और पाँच की संख्या १५। **पंदरहवाँ**-(हिं॰वि॰) जो पन्दरह के स्थान पर हो।

पंधलाना-(हिं॰क्रि॰) फुसलाना, बहलाना, **पंपाल**-(हिं॰वि॰) पापी।

पँवर-(हिं॰स्त्री॰) देखो पँवरी, सामान, सामग्री।

पँवरना-(हिं॰क्रि॰) पानी में तैरना,थाह लेना, पता लगाना।

पँवरि-(हिं॰स्त्री॰) प्रवेश द्वार या गृह, डयोढ़ी।

पँवरिया-(हिं॰पुं॰) द्वारपाल, डयोढ़ीदार, दरवान, शुभ अवसर पर द्वार पर बैठकर मंगल गीत गाने वाला भिक्षुक।

पँवरी-(हिं॰स्त्री॰) देखो पँवरि, खड़ाऊँ, पाँवरी।

पँवाड़ा-(हिं॰पुं॰) कल्पित आख्यान, मनगढ़ी कहानी, लंबी कथा जिसको सुनते सुनते जी ऊब जावे, वृथा के विस्तार सहित कही हुई बात, एक प्रकार की गीत।

पँवार-(हिं॰पुं॰) राजपूतों की एक जाति, परमार।

पँवारना-(हिं॰क्रि॰) हटाना, फेंकना, दूर करना।

पँवारी-(हिं॰स्त्री॰) लोहे में छेद करने का लोहारों का एक अस्त्र।

पंसरहट्टा-(हिं॰पुं॰) वह हाट जहाँ पंसारियों की दूकानें हों। **पंसारी**-(हिं॰पुं॰) वह बनिया जो मसाले तथा औषधि के लिये जड़ी बूटी बेंचता हो।

पंसासार-(हिं॰पुं॰) पासे का खेल।

पंसुरी-(हिं॰स्त्री॰) देखो पँसुली।

पंसली-(हिं॰स्त्री॰) देखो पसली।

पंसेरी-(हिं॰स्त्री॰) पाँच सेर की तौल या बाँट।

पइता-(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का छंद जिसको पाइता भी कहते हैं।

पइसना-(हिं॰क्रि॰) देखो पैठना, घुसना

पइसार-(हिं॰पुं॰) प्रवेश, पैठ, घुसान।

पउनार-(हिं॰पुं॰) कमल का डंडा।

पउनी-(हिं॰स्त्री॰) देखो पौनी।

पउँरि, पउरी-(हिं॰स्त्री॰) देखो पौरी।

पकड़-(हिं॰स्त्री॰) पकड़ने या धरने की क्रिया, पकड़ने का ढंग, भिड़ंत, लड़ाई एक बार आकर भिड़ना, दोष या भूल ढूँढ़ कर निकालने की क्रिया; **पकड़ धकड़**-(हिं॰स्त्री॰) देखो धर पकड़; **पकड़ना**-(हिं॰क्रि॰) थामना, धरना, पता लगाना, रोक रखना, ठहराना, दौड़ने चलने आदि में बढ़े हुए के बराबर हो जाना, रोकना, टोकना, वश में लाना, लगकर फैलाना; अपने स्वभाव या वृत्ति के अन्तर्गत करना, धारण करना, घेरना, ग्रसना, संचार करना।

पकड़वाना-(हिं॰क्रि॰) पकड़ने में दूसरे को प्रवृत्त करना, ग्रहण करना।

पकड़ाना-(हिं॰ क्रि॰) किसी के हाथ में देना या रखना, पकड़ने का काम करना, ग्रहण कराना, थांभना।

पकना-(हिं॰क्रि॰) सिद्ध होना, सीझना, रिंधना, चुरना, कच्चा न रहना,

फोड़े आदि पीब से भर जाना, मूल्य ठहराना, सौदा पटना, आँच खाकर गलना या तैयार होना ; **बाल पकना**-बालों का सफ़ेद होना; **कलेजा पकना**-जी जलना ।
पकरना-(हिं०क्रि०) देखो पकड़ना ।
पकला-(हिं०पुं०) फोड़ा, फुन्सी ।
पकवान-(हिं०पुं०) घी या तेल में पका कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ; **पकवाना**-(हिं०क्रि०) पकाने का काम दूसरे से कराना, आँच पर तैयार कराना ।
पकाई-(हिं० स्त्री०) पकाने की क्रिया या शुल्क ; (हिं० क्रि०) फल आदि को पुष्ट और तैयार करना, गरमी से अथवा आँच से गलाना, रींधना, सिझाना, मात्रा पूरी करना, सौदा पूरा करना, फोड़े फुन्सी आदि को ऐसी अवस्था में पहुँचाना कि उसमें पीब आ जावे ।
पकार-(सं०पुं०) 'प' अक्षर, 'प' स्वरूप वर्ण; **पकारादि**-(स० वि०) जिसके आदि में 'प' अक्षर हो ; **पकारान्त**-(सं० वि०) जिसके अन्त में 'प' अक्षर हो ।
पकाव-(सं०पुं०) पकने का भाव, पीब ।
पकावन-(हिं०पु०) देखो पकवान ।
पकौड़ा-(हिं०पुं०) घी या तेल में पकी हुई बेसन या पीठी की बरी, फुलौरी; **पकौड़ी**-(हिं०स्त्री०) छोटे आकार का पकौड़ा ।
पक्कटी-(सं० स्त्री०) पाकर का वृक्ष ।
पक्करस-(हिं०पु०) मदिरा ।
पक्का-(हिं०पुं०) अन्न या फल जो पुष्ट होकर खाने योग्य हो गया हो, कच्चा न हो, पका हुआ, तैयार, अनुभव प्राप्त, निपुण, आंच पर गला या पकाया हुआ, निपुण व्यक्ति से बनाया हुआ, स्थिर, दृढ़, निश्चित, जो अभ्यास से मँज गया हो, प्रामाणिक, ठीक किया हुआ, जँचा हुआ, जो आँच पर कड़ा हो गया हो, जिसमें पूर्णता आगई हो, जो अपनी पूरी बाढ़ या प्रौढ़ता पर पहुँच गया हो ; **पक्का खाना**-केवल घी में पका हुआ भोजन ; **पक्का पानी**-औटाया हुआ जल ; **पक्का कागज**-वह पत्र जिस पर लिखा हुआ विषय प्रामाणिक सिद्ध हो ।
पक्काइत-(हिं०स्त्री०) निश्चय, दृढ़ता ।
पक्खर-(हिं०वि०) पक्का ।
पक्तव्य-(सं०वि०) पाक योग्य ।
पक्त्र-(सं०नपुं०) गार्हपत्य अग्नि ।
पक्व-(सं० वि०) पका हुआ, पुष्ट, पक्का; **पक्वकेश**-(सं० पुं०) पका बाल, सफ़ेद बाल; **पक्वता**-(सं०स्त्री०) पक्वावस्था, पक्कापन; **पक्वमान**-(सं०वि०) पकाया हुआ । **पक्व रस**-(सं०पुं०) मद्य, मदिरा । **पक्व वारि**-(सं०नपुं०) उबाला हुआ जल ।
पक्वान्न-(सं०नपुं०) पका हुआ अन्न, खाने की वस्तु जो घी, पानी आदि के साथ आग पर पकाई गई हो ।
पक्वाशय-(स०पु०) पेट के भीतर का नाभि के नीचे का भाग जो वस्तुतः अन्त्र का ही एक अंश है, थूक के साथ मिलकर खाया हुआ भोजन अन्न की नली द्वारा यहां पहुँचता है और जिसमें पित्त तथा श्योम रस मिलकर पाचन का कार्य आरंभ होता है ।
पक्ष-(सं०पुं०) पंदरह दिन का काल, पाख, पक्षियों का डैना, पर, तीर में लगा हुआ पर, समूह, किसी स्थान या पदार्थ के दोनों किनारे, किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अंगों में से एक, किसी विषय पर दो या परस्पर भिन्न मतों मे से एक, अनुकूल मत या प्रवृत्ति, पक्षी, चिड़िया, हाथ में पहिरने का कड़ा, राजा का हाथी, घर, चूल्हे का छेद, सहायक, साथी, विवाद करने वालों में से किसीके अनुकूल स्थिति, वह वस्तु जिसमें साध्य की प्रतिज्ञा की जाती है, सेना, बल, साथ रहने वालों का समूह; **पक्ष गिरना**-युक्तियों द्वारा मत का सिद्ध न होना; **पक्ष करना**-पक्षपात करना
पक्षक-(सं० पुं०) पक्षद्वार, सहाय ;
पक्षगम-(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, पर्वत; **पक्षग्रहण**-(स० नपुं०) किसी की सहायता लेना; **पक्षग्राह**-(सं०वि०) पक्ष लेने वाला; **पक्षघात**-(सं०पुं०) वह वात रोग जिसमें शरीर के एक ओर के अंग सुन्न हो जाते हैं, लकवा;
पक्षघ्न-(सं० वि०) पक्षनाशक ; **पक्षचर, पक्षज**-(सं०पुं०) चन्द्रमा; **पक्षति**-(सं० नपुं०) पक्षमूल, डैने की जड़ ;
पक्षत्व-(सं०नपुं०) पक्षधर्मता, पक्षता;
पक्षद्वारा-(सं०नपुं०)खिड़की का द्वार;
पक्षधर-(सं० पुं०) चन्द्रमा, शिव, महादेव, पक्षी ; **पक्षपात**-(स०पुं०) अनुचित और उचित का बिचार न करते हुए किसीके अनुकूल प्रवृत्ति ।
पक्षपातिता-(सं० स्त्री०) सहायता;
पक्षपाती-(सं० वि०) उचित अनुचित विचार न करके किसीके अनुकूल प्रवृत्त होना; **पक्षपोषक**-(सं०वि०) पक्षसमर्थक ; **पक्षमूल**-(सं० नपुं०) प्रतिपदा तिथि; **पक्षपालि**-(सं० पु०) खिड़की; **पक्षरचना**-(सं०स्त्री०) किसी का पक्ष साधन के लिये रचा हुआ आयोजन ; **पक्षरूप**-(सं० पुं०) शिव, महादेव; **पक्षवध**-(सं०पुं०) पक्षाघात;
पक्षवान्-(हिं० वि०) पक्षवाला, पर वाला, (पुं०) पर्वत, पहाड़ । **पक्षवाहन**-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया ।
पक्षाघात-(सं० पुं०) एक प्रकार का वायुरोग जिसमें शरीर का आधा भाग निश्चेष्ट और क्रियाहीन हो जाता है, लकवा ।
पक्षान्त-(सं०पुं०) अमावास्या, पूर्णिमा; **पक्षान्तर**-(सं० नपुं०) दूसरा पक्ष, मतान्तर ।
पक्षाभास-(सं०पुं०) मिथ्या अनुयोग ।
पक्षालु-(स० पुं०) पक्षी, चिड़िया ।
पक्षावसर-(सं०पुं०)पूर्णिमा,अमावस्या ।
पक्षिणी-(सं० स्त्री०) चिड़िया, मादा पक्षी, पूर्णिमा ।
पक्षिपति-(सं०पुं०) पक्षिराज, सम्पाति; **पक्षिप्रवर, पक्षिराज**-(स०पुं०) गरुड़ । **पक्षिशाला**-(सं० स्त्री०) चिड़ियों के रखने का घर ; **पक्षिसिंह**-(सं०पुं०) पक्षिराज, गरुड़ ।
पक्षी-(सं०पुं०) खग, विहंगम, शकुन्त, अण्डज, चिड़िया, (हिं०वि०) पक्षपाती; **पक्षीन्द्र**-(सं० पुं०) गरुड़, जटायु ; **पक्षीश्वर**-(सं०पु०) गरुड़ ।
पक्ष्म-(हिं० पुं०) आँख की बरौनी ।
पक्ष्मल-(वि०) बरौनी युक्त ।
पखंड-(हिं०पुं०) देखो पाखंड; **पखंडी**-(हिं०वि०) देखो पाखण्डी ।
पख-(हिं०स्त्री०) व्यर्थ की बढ़ाकर कही हुई बात, बाधक, नियम, अड़ंगा, झंझट, बखेड़ा, त्रुटि, दोष, हानि,
पखड़ी-(हिं०स्त्री०) पुरुष दल, फूलों का रंगीन पटल जो इसको पहिले बंद किये रहता है और खिलने पर फैल जाता है ।
पखनारी-(हिं० स्त्री०) चिड़ियों के पर का नलीके आकार का पिछला भाग ।
पखपान-(हिं०पुं०) पैर में पहिरने का एक गहना ।
पखरना-(हिं०क्रि०) धोना ; **पखराना**-(हिं० क्रि०) पखारने या धोने का काम कराना ।
पखरी-(हिं०स्त्री०) देखो पाखर, पंखडी ।
पखरैत-(हिं०पुं०) बैल घोड़ा या हाथी जिस पर लोहे की पाखर पड़ी हो ।
पखरौटा-(हिं०पुं०) चांदी सोने के महीन पत्र में लपेटा हुआ पान का बीड़ा ।
पखवाड़ा, पखवारा-(हिं०पु०) अर्धमास, पंदरह दिन का समय ।
पखाउज-(हिं०पुं०) देखो पखावज ।
पखाटा-(हिं०पुं०) धनुष का कोना ।
पखान-(हिं०पुं०) देखो पाषाण, पत्थर ; **पखाना**-(हिं० पुं०) उपाख्यान, कथा कहावत, मसल, कहनूत ; देखो पायखाना ।
पखारना-(हिं० क्रि०) पानी से धोकर मैल हटाना ।
पखाल-(हिं०स्त्री०) कुवें से पानी भरने की चमड़े की बड़ी मसक, धौंकनी ; **पखालपेटिया**-बड़े पेटवाला मनुष्य ।
पखाली-(हिं० पु०) मसक में पानी भरने वाला ।
पखावज-(हिं० स्त्री०) मृदंग से छोटा एक प्रकार का बाजा ; **पखावजी**-(हिं०पुं०) पखावज बजाने वाला ।
पखिया-(हिं०पुं०) झगड़ा करने वाला; बखेड़िया ।
पखी-(स्त्री०) पक्षी ।
पखुरी-(हिं०स्त्री०) देखो पखड़ी ।
पखुवा-(हिं० पुं०) बाँह के जड़ का बगली भाग ।
पखेरु-(हिं०पुं०) पक्षी, चिड़िया ।
पखेव-(हिं०पुं०) बच्चा जनने के बाद छ दिन तक गाय या भैंस को खिलाने का मसाला ।
पखौआ-(हिं०पुं०) पंख, पर ।
पखौटा-(हिं०पुं०) डैना, पर, मछली का पर ।
पखौरा-(हिं०पुं०) कंधे पर की डड्डी ।
पग-(हिं०पु०) पैर, पाँव, चलने में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर रखने की क्रिया, डग, फाल, चलती समय दोनों पैर के बीच का स्थान ; **पगडंडी**-(हिं०स्त्री०) मैदान या जंगल का वह पतला मार्ग जो मनुष्यों के चलने से बन गया हो ।
पगड़ी-(हिं०स्त्री०) सिर पर लपेट कर बाँधने का कपड़ा, चीरा, उष्णीश, मुरेठा; **पगड़ी अटकना**-बराबरी करना; **पगड़ी उछालना**-किसी का अपमान करना; **पगड़ी उतारना**-अपमान करना, ठगना; **पगड़ी बँधना**-सम्मान या प्रतिष्ठा प्राप्त करना; उत्तराधिकारी बनना; **पगड़ी बदलना**-भाईचारा दिखलाना ।
पगतरी-(हिं०स्त्री०) उपानह, जूता ।
पगदासी-(हिं०स्त्री०) जूता, खड़ाऊँ ।
पगना-(हिं०स्त्री०)रस के साथ पक्व कर मिलना, शक्कर के साथ इस प्रकार पकना कि चाशनी भीतर प्रवेश कर जावे और चारो ओर लिपट जावे मग्न होना, प्रेम में डूबना ।
पगनियाँ-(हिं०स्त्री०) जूती ।
पगपान-(सं०पुं०) पैर में पहिरने का एक गहना ।
पगरना-(हिं० पुं०) नक्काशी करने वालों का एक अस्त्र ।
पगरा-(हिं० पुं०) डग, पग, यात्रा आरंभ करने का काल, तड़का, सबेरा, सोने का एक आभूषण ।
पगरी-(हिं० स्त्री०) देखो पगड़ी ।
पगला-(हिं० पु०) देखो पागल ।
पगहा-(हिं०पुं०) पशु बाँधने की रस्सी, गिराँव ।
पगा-(हिं० पु०) पटका, दुपट्टा ।
पगाना-(हिं० क्रि०) चाशनी में किसी वस्तु को पागने का काम दूसरे से कराना, अनुरक्त करना, मग्न करना ।
पगार-(हिं० पुं०) पैर में लगी हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा, नह नदी या नाला जो पैदल चलकर पार किया जा सके, पैर से कुचलने योग्य वस्तु वेतन ।
पगारना-(हिं० क्रि०) फैलाना ।
पगियाना-(हिं० क्रि०) देखो पगाना ।
पगिया-(हिं० स्त्री०) देखो पगड़ी ।

पगुरना-(हिं० क्रि०) पागुर करना, जुगाली करना, डकार जाना।
पगा-(हिं० पुं०) पीतल तांबा गलाने की घरिया।
पघा-(हिं० पुं०) चौपायों को बाँधने की रस्सी पगहा।
पघाल-(हिं० पुं०) एक प्रकार का कड़ा लोहा।
पघिलना-(हिं० क्रि०) देखो पिघलना।
पधैया-(हिं० पुं०) गाँव गाँव घूमघूम कर माल बेचने वाला व्यापारी।
पङ्क-(सं० पु०) कीचड़, कींच, लेप, पाप। **पङ्कक्रीड़**-(स० पुं०) शूकर, सुअर, (वि०) कीचड़ में खेलने वाला। **पङ्कग्राह**-(सं० पुं०) मगर। **पङ्कज**-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, (वि०) कीचड़ मे उत्पन्न होने वाला। **पङ्कजन्मन**-(सं० पुं०) पद्मयोनि, ब्रह्मा। **पङ्कजदाटिका**-(सं० स्त्री०) तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। **पङ्कजात**-(सं० पुं०) पद्म, कमल। **पङ्कजावली**-(सं०स्त्री०) पद्म समूह, एक प्रकार का छन्द। **पङ्कजित्**-(सं० पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम। **पङ्कण**-(स० पुं०) चांडाल का घर। **पङ्कपर्पटी**-(सं०स्त्री०) गोपीचन्दन। **पङ्कप्रभा**-(सं० स्त्री०) एक नरक का नाम। **पङ्कमण्डूक**-(सं०पुं०) छोटीसीप,सुतुही। **पङ्करुह**-(स० नपुं०) पद्म, कमल। **पङ्कवास**-(सं० पुं०) कर्कट, केकड़ा। **पङ्कशुक्ति**-(सं०स्त्री०) शबूक, सुतुही, घोंघा।
पङ्कार-(सं०पुं०)सेवाल,सेवार,सिघाड़ा।
पङ्किल-(सं० वि०) पङ्कयुक्त, कीचड़ से भरा हुआ।
पङ्केज-(सं० नपुं०) पद्म, कमल। **पङ्केरुह**-(सं० नपु०) पद्म, कमल, (पुं०) सारस पक्षी। **पङ्केशय**-(स०स्त्री०) जलौका, जोंक।
पङ्क्ति-(सं०स्त्री०) श्रेणी, पांती, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पांच पांच अक्षर होते हैं, दस की संख्या, गौरव, पृथ्वी, भोज में एक साथ बैठकर खाने वालों की श्रेणी, कुलीन ब्राह्मणों की श्रेणी। **पङ्क्तिचर**-(सं० पुं०) कुरर पक्षी। **पङ्क्तिच्युत**-(सं० वि०) जाति बहिष्कृत, जाति से निकाला हुआ। **पङ्क्तिरथ**-(सं० पुं०) राजा दशरथ। **पङ्क्तिवाह्य**-(सं०वि०) जातिच्युत; **पङ्क्तिपाल**-(सं०पुं०)टिड्डी।
पङ्गु-(सं० पु०) शनि ग्रह, परिव्राजक, एक प्रकार का वातरोग, (वि०) खंज, लंगड़ा। **पङ्गुगति**-(सं० स्त्री०) वर्णिक छन्द का वह दोष जब किसी स्थान में गुरु के स्थान में लघु अथवा लघु के स्थान में गुरु का प्रयोग होता है।
पङ्गुग्राह-(सं० पुं०) मंगर, मकर राशि। **पङ्गुता**-(सं० स्त्री०) पङ्गुत्व, लंगड़ापन।
पङ्गुल-(सं० पुं०) रेड़ी का पेड़, सफेद रंग का घोड़ा, (वि०) पङ्गु, लंगड़ा।
पचक-(हिं० पुं०) कट नामक गुल्म।
पचकना-(हिं० क्रि०) देखो पिचकना।
पचकल्यान-(हिं०पुं०) देखो पंचकल्यान।
पचखना-(हिं०वि०) जिसमेंपांचखण्ड हों।
पचखा-(हिं० पुं०) देखो पंचक।
पचगुना-(हिं० वि०) पांच गुना, पांच बार अधिक।
पचग्रह-(हिं० पुं०) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि ग्रहों का समूह।
पचड़ा-(हिं०पुं०) प्रपंच, बखेड़ा, झंझट, लावनी या ख्याल के ढंग की एक प्रकार की गीत जिसमें पांच पाच चरणों के टुकड़े रहते हैं।
पचत-(सं०पुं०) सूर्य, अग्नि, इन्द्र, (वि०) परिपक्व, पक्का हुआ।
पचतूरा-(हिं०पुं०)एक प्रकारका बाजा।
पचतोलिया-(हिं०पु०) पांचतोलेकीबाँट।
पचन-(स० नपुं०) पकने या पकाने की क्रिया, अग्नि, (वि०) पकाने वाला।
पचना-(हिं० क्रि०) भोजन किये हुए पदार्थ का रसादि में परिणत होकर शरीर में लगने योग्य होना, शरीर का सूखना या क्षय होना, समाप्त होना, नष्ट होना, पराया माल अपने हाथ कर लेना, अनुचित उपाय से प्राप्त किये हुए धन आदि का काम में आना, एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में अच्छी तरह मिल जाना, खपना; **पचभरना**-किसी काम के करने में बड़ा यत्न करना। **पचनागार**-(सं० पुं०) रसोईघर, **पचनग्नि**-(स० पुं०) जठराग्नि।
पचनिका-(स० स्त्री०) कड़ाही।
पचमेल-(हिं० वि०) देखो पँचमेल।
पचनीय-(सं० वि०) पचने योग्य।
पचन्ती-(सं०स्त्री०) पकाने वाली, खाना बनाने वाली।
पचपच-(सं० पुं०) शिव, महादेव।
पचपचा-(हिं० वि०) वह अधपका भोजन जिसका पानी अच्छी तरह से सूखा या जला न हो।
पचपचाना-(हिं० क्रि०) आवश्यकता से अधिक गीला होना, कीचड़ होना।
पचपन-(हिं० वि०) पचास और पांच की संख्या का, (पुं०) पचास और पांच की संख्या ५५। **पचपनवां**-(हिं० वि०) जो गिनती में चौवन के बाद हो।
पचपल्लव-(हिं० पुं०) देखो पंचपल्लव।
पचमान-(स० वि०) पाक करने वाला, पकाने वाला।
पचमेल-(हिं० वि०) कई एक तरह या मेल का।
पचरंग-(हिं०पुं०)चौक पूरने की सामग्री-अबीर, बुक्का, मेंहदी की बुकनी, हल्दी और सुरवाली के बीज। **पचरंगा**-(हिं० वि०) जिसमें अलग अलग पांच रंग हों पांच रंगों से रंगा हुआ, अनेक रंग का, नव ग्रह आदि के पजन के लिये पूरा जाने वाला चौक।
पचरा-(हिं० पुं०) देखो पचड़ा।
पचलड़ी-(हिं० स्त्री०) पांच लड़ियों की माला या हार।
पचलोना-(हिं० पुं०) वह जिसमें पांच तरह के नमक मिलाये गये हों।
पचवाई-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की अन्नों से बनी हुई मदिरा।
पचहत्तर-(हिं० वि०) सत्तर और पांच की संख्या का, (पु०) सत्तर और पांच की संख्या ७५। **पचहत्तरवां**-(हिं०वि०) जिसका क्रम चौहत्तर के बाद हो।
पचहरा-(हिं० वि०) पांच बार लपेटा या मोड़ा हुआ, पांच परत का।
पचानक-(हिं०पु०) एक प्रकारका पक्षी।
पचाना-(हिं० क्रि०) आँच की सहायता से गलाना, पकाना, खाई हुई वस्तु को जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत करके शरीर में लगने योग्य बनाना, जीर्ण करना, नष्ट करना, क्षय करना, पराये माल को अपना कर लेना, समाप्त करना, अधिक परिश्रम करके शरीर को सुखाना, एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने में पूर्ण रूप से मिला लेना।
पचार-(हिं० पु०) जुए में बाँधने की लकड़ी या बांस।
पचारना-(हिं० क्रि०) ललकारना।
पचाव-(हिं० पुं०) पचने की क्रिया या भाव।
पचास-(हिं० वि०) चालीस और दस की संख्या का, (पुं०) चालीस और दस की संख्या ५०। **पचासवां**-(हिं० वि०) गिनती में पचास के स्थान पर पड़ने वाला। **पचासा**-(हिं० पुं०) एक ही प्रकार की पचास चीजों का समह।
पचासी-(हिं० वि०) अस्सी और पांच की संख्या का, (पुं०) अस्सी और पांच की संख्या ८५। **पचासीवां**-(हिं० वि०) जो क्रम से पचासी के स्थान पर हो।
पचित-(सं० वि०) जड़ा हुआ, बैठाया हुआ।
पचीस-(हिं० वि०) बीस और पांच की संख्या का; (पुं०) बीस और पांच की संख्या २५। **पचीसवां**-(हिं० वि०) जो गणना में पचीस के स्थान पर हो। **पचीसी**-(हिं० स्त्री०) चौसर की बिसात पर खेला जाने वाला एक खेल जो सात कौड़ियों से खेला जाता है, एक ही प्रकार की पचीस वस्तुओं का समूह, किसी की आयु के पहिले पचीस वर्ष, एक विशेष गणना जिसका सैकड़ा पचीस गाहियों या १२५ का माना जाता है।
पचूका-(हिं० पुं०) पिचकारी।
पचोतर-(हिं० वि०) किसी संख्या से पांच अधिक। **पचोतरसो**-(हिं० पुं०) एक सौ पांच की संख्या।
पचौनी-(हिं० स्त्री०) पाचन।
पचौर-(हिं० पु०) गाँव का मुखिया या सरदार, पंच।
पचौली-(हिं० पु०) देखो पचौरी।
पचौबर-(हिं० वि०) पांच तह या परत किया हुआ, पांच परत का।
पच्चड़, पच्चर-(हिं० स्त्री०) लकड़ी या बांस की फट्टी, पैबन्द, साल या जोड़ के छेद में ठोंकने की गावदुम लकड़ी की गुल्ली।
पच्ची-(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु के तल को खोदकर दूसरी वस्तु इस प्रकार उसमे बैठाई जावे कि देखने में अथवा हाथ फेरने पर उभड़ी हुई न जान पड़े और किसी प्रकार की झरी भी न रह जाय, किसी धातु के बने पदार्थ पर किसी अन्य वस्तु के पत्तर का जड़ाव; **पच्ची होजाना**-एकदम मिलकर एक हो जाना। **पच्चीकारी**-(हिं० स्त्री०) पच्ची करने की क्रिया या भाव।
पच्छ-(हिं० पु०) देखो पक्ष। **पच्छघात**-(हिं० पु०) देखो पक्षघात।
पच्छम, पच्छिम-(हिं० पुं०) देखो पश्चिम, पिछला, पीछे का।
पच्छी-(हिं०स्त्री०) पक्षी, चिड़िया।
पच्य-(सं०वि०) पकाने योग्य। **पच्यमान**-(सं० स्त्री०) जो पकाया जा रहा हो।
पछड़ना-(हिं० क्रि०) लड़ने में पटका जाना; देखो पिछड़ना।
पछताना-(हिं०क्रि०) किसी किये हुए अनुचित कार्य के संबंध में पीछे से दुःखी होना, पश्चात्ताप करना; **पछतानि**-(हिं० स्त्री०) देखो पछतावा।
पछतावा-(हिं०पु०)अनुताप,पश्चात्ताप
पछतावना-(हिं०क्रि०) देखो पछताना; **पछतावा**-हिं०पुं०) पश्चात्ताप, अपने किये हुए काम को बुरा समझने का शोक।
पछना-(हिं०क्रि०) पाछा जाना; (पु०) पाछने का यन्त्र।
पछमन-(हिं०क्रि०वि०) पीछे;
पछरना-(हिं०क्रि०) लौटना, **पछरा**-(हिं० पु०) पछाड़।
पछलगा-(हिं०पुं०) अनुयायी।
पछलना-(हिं०पु०) देखो पिछलना।
पछवत-(हिं०स्त्री०) वह अन्न जो उपज के अन्त में बोया जावे।
पछवाँ-(हिं०वि०) पश्चिम दिशा संबंधी, पश्चिमी, (स्त्री०) अंगिया का पीठ की ओर का भाग।
पछाँह-(हिं० स्त्री०) पश्चिम की ओर का प्रदेश। **पछाँहियाँ**-(हिं० वि०) पश्चिम देश का, पछाँह का।
पछाड़-(हिं०स्त्री०)मूर्छित होकर गिरना, शोक आदि के कारण अचेत होकर गिरना। **पछाड़ना**-(हिं०क्रि०) लड़ाई या मल्लयुद्ध में पटकना या गिराना, कपड़े को धोने के लिये पटकना; **पछाड़ खाना**-अचानक मूर्छित होकर गिर पड़ना।

पछाड़ी-(हिं० स्त्री०) देखो पिछाड़ी।
पछाया-(हिं० पुं०) किसी वस्तु का पिछला भाग।
पछारना-(हिं० क्रि०) कपड़े को पटक कर धोना।
पछावरि-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सिखरन, एक पकवान।
पछाँहीं-(हिं०वि०) पश्चिम प्रदेश का, पछांह का।
पछिआना-(हिं०क्रि०)पीछे पीछे चलना, पीछा करना।
पछिताना-(हिं०क्रि०) देखो पछताना।
पछिताव-(हिं०पु०) देखो पछतावा।
पछिनाव-(हिं०पुं०) चौपायों का एक रोग।
पछियाना(हिं०क्रि०) देखो पछिआना।
पछियाव-(हिं०पुं०) पश्चिमी वायु।
पछिलना-(हिं०क्रि०) देखो पिछड़ना।
पछिला-(हिं०वि०) देखो पिछला।
पछिवाँ-(हिं०वि०) पच्छिम की, (स्त्री०) पश्चिम की हवा।
पछवाँ-(हिं०पुं०) पैर में पहिरने का एक गहना।
पछीत-(हिं०स्त्री०) घर का पिछवाड़ा।
पछेड़ा-(हिं०पु०) देखो पीछा।
पछेलना-(हिं०क्रि०) आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ना।
पछेला-(हिं०पुं०) स्त्रियों के हाथ में पहिरने का एक गहना, मठिया, (वि०) पिछला। पछेली (हिं०स्त्री०) हाथ का एक अभूषण।
पछोड़ना,पछोरना-(हिं०क्रि०) सूप आदि में रख कर तथा फटक कर अन्न आदि को स्वच्छ करना, फटकना।
पछौरा-(हिं०पुं०) देखो पिछौरा।
पछ्यावर-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का शरबत।
पजर-(हिं०पुं०)चूने या टपकने की क्रिया
पजरना-(हिं०क्रि०) जलना। पजारना-(हिं०क्रि०) जलाना।
पजोखा-(हिं०पुं०) किसी की मृत्यु पर उसके संबंधियों का शोक प्रकाश।
पजोड़ा-(हिं०वि०) दुष्ट, पाजी।
पज्ज-(सं०पु०) शूद्रजाति, शूद्र।
पज्झटिक-(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्रायें होती हैं।
पञ्च-(सं०पुं०) देखो पच; पाँच, पाँच संख्या युक्त, जिसमें पाँच अब्द हों।
पञ्चक-(सं०नपुं०) पांच का समूह, शकुनशास्त्र, धनिष्ठा आदि पांच नक्षत्र जिनमें किसी नये कार्य का आरंभ करना निषिद्ध है, वह जिसके पाँच अवयव हों। पञ्च कन्या-(सं०स्त्री०) पुराण के अनुसार वे पाँच स्त्रियां जो सर्वदा कन्या हीं रहीं-इनके नाम-अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मन्दोदरी हैं। पञ्चकपाल (सं०नपु०) एक प्रकार का यज्ञ।
पञ्चकर्म-(सं०नपुं०) वैशेषिक के अनुसार उत्क्षेपण,अवक्षेपण,आकुञ्चन प्रसारण और गमन-ये पांच कर्म।
पञ्च कर्मेन्द्रिय-(सं०नपुं०) हस्त, पाद, पायु, उपस्थ और जिह्वा।
पञ्चकल्याण-(सं०पुं०) वह घोड़ा जिसका सिर और चारो पैर सफेद हो तथा शेष शरीर किसी एक रंग का हो; पञ्चकषाय-(सं० पुं०) पांच प्रकार का कसैला द्रव्य यथा-जामुर, सेम्हर, खिरैंटी, मौलसिरी और बेर;
पञ्चकाम-(सं०पुं०) तन्त्र के अनुसार कामदेव के पांच नाम यथा-काम, मन्मथ, कन्दर्प, मकरध्वज और मीन केतु। पञ्चकोण-(सं०नपुं०) पांच कोने का क्षेत्र। पञ्चकोशी-(सं० स्त्री०) पाँच कोस की लंबाई चौड़ाई के बीच में बसी हुई काशी नगरी।
पञ्चगङ्गा-(सं०स्त्री०) गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा-इन पांच नदियों का समूह, काशी का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ गगा में किरण और धूतपापा नदियां मिली थीं-ये दोनों नदियां अब लुप्त हो गई है। पञ्चगत-(सं०नपुं०) बीज गणित में पंचवर्ण युक्त राशि।
पञ्चगव्य-(सं०नपु०) गो सबधी पांच प्रकार के द्रव्य यथा-दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र पञ्चगुण-(सं०पुं०) पृथ्वी के पांच गुण यथा-शब्द. स्पर्श रूप. रस और गन्ध; (वि०) पांच से पांच से गुणा किया हुआ।
पञ्चगौड़-(सं०पु०) ब्राह्मणों का वह विभाग जिसके अन्तर्गत सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल हैं पञ्चचक्र-(सं०नपुं०) तन्त्र के अनुसार पांच प्रकार के चक्र जिनके नाम-राजचक्र, महा चक्र, देवचक्र, वीर चक्र, और पशुचक्र हैं।
पञ्चचामर-(सं० नपुं०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर रहते हैं; पञ्चजन-(सं०पु०)पुरुष, पाँच प्रकार के जनों का समूह, एक प्रजापति का नाम, राजा सगर के एक पुत्र का नाम। पञ्चजन्य-(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध शख जिसको श्रीकृष्ण बजाया करते थे। पञ्चतत्व-(सं०पु०) पांच तत्वों का समुदाय जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश हैं।
पञ्चमकार-(सं०पुं०) तन्त्रानुसार-मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन-पंचम कार कहलाते है। पञ्चतन्त्र-(सं०नपु०) विष्णुशर्मा विरचित एक संस्कृत ग्रन्थ का नाम। पञ्चतप-(सं०पुं०) चारो ओर अग्नि जलाकर ग्रीष्म काल में खुले मैदान में बैठकर तपस्या करने वाला। पञ्चतरु-(सं०पुं०) पांच वृक्ष यथा मन्दार, परिजात, सन्तान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन। पञ्चता-(सं०स्त्री०) मृत्यु. पञ्चतालेश्वर-(सं०पुं०) शुद्ध जाति का एक राग।
पञ्चतिक्त-(सं० नपुं०) पांच प्रकार के तीते द्रव्य यथा-गिलोय, कष्टकारी, सोंठ कुट और चिरायता। पञ्चत्व-(सं०नपु०) मरण, मृत्यु।
पञ्चदश-(सं०वि०) पंद्रहवां, (पुं०) पन्द्रह की संख्या। पञ्चदशधा-(सं० अव्य०) पंदरह प्रकार का। पञ्चदशाह-(सं०पुं०) पदरह दिन का समय। पञ्चदशी-पूर्णिमा, अमावास्या। पञ्चदेवता-(हिं०पु०) पांच प्रधान देवता जिनकी उपासना आजकल हिन्दुओं में प्रचलित है यथा-आदित्य, गणेश, देवी, रुद्र और केशव। पञ्चद्राविड-द्राविड राज्य के अधीन पांच प्रधान जनपद जिनके निवासी द्राविड़, अन्ध्र, कर्णाट, महाराष्ट्र और गुर्जर हैं।
पञ्चधा-(सं०अव्य०) पांच प्रकार।
पञ्चनद-(सं० पुं०) पँजाब प्रदेश जहां सतलज, व्यास, रावी चनाब और झेलम-ये पांच नदियां बहती हैं, पांच नदियों का समुदाय।
पञ्चपक्षी-(सं०पुं०) प्रश्नादि द्वारा शकुन जानने का शिवोक्त एक शास्त्र।
पञ्चपर्णिका-(सं०स्त्री०) गोरक्षा नाम का पौधा। पञ्चपर्व-(सं०नपुं०) चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा और रविसंक्रान्ति ये पांच दिन, पञ्चपल्लव (सं०नपुं०) आम, जामुन, कैथ, बिजौरा और बेल; -अथवा आम, पीपल बर, पाकर और औदुम्बर पञ्चपात्र-(सं०नपुं०) चौड़े मुख का गिलास के आकार का पात्र जो पूजा आदि में जल रखने के काम में आता है।
पञ्चपाद-(सं०वि०) पांच पैर वाला, (पु०) संवत्सर। पञ्चपितृ-(सं०पु०) जन्मदाता, उपनेता या आचार्य, कन्यादाता, अन्नदाता और भयत्राता ये पाच पिता माने गये है। पञ्चपुष्प-(सं०नपुं०) देवताओं को प्रिय पांच प्रकार के फूल यथा-चम्पा, आम, शमी, कमल और कनेर के फूल।
पञ्चप्राण-(सं०पु०) शरीर स्थित पांच प्राण वायु जिनके नाम-प्राण, अपान समान, उदान और व्यान हैं; हृदय देशमें प्राण वायु, गुह्यदेश में अपान वायु. नाभि देश म समान, कण्ठ देश में उदान वायु तथा सम्पूर्ण शरीर में व्यान वायु व्याप्त रहती है। पञ्चबाण-(सं०पु०) कामदेव के पांच बाण जिनके नाम-द्रवण, शोषण, तापन मोहन और उन्मादन हैं; तथा कामदेव के पांचो पुष्पबाणों के नाम कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल हैं। पञ्चबाहु-(सं० पुं०) शिव, महादेव। पञ्चभद्र-(सं० पुं०) वह घोड़ा जिसके शरीर में पाँच स्थान में फूल के चिह्न हों।
पञ्चभूत-(सं०नपुं०) पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश।
पञ्चम-(सं०वि०) पांचवां, सुन्दर, दक्ष, निपुण, (पुं०) संगीत के सात स्वरों में से पाचवाँ स्वर। पञ्च मकार-तन्त्र के अनुसारमद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन, ये पांच मकार।
पञ्चमहापातक-(सं०नपुं०) मनुस्मृति के अनुसार पांच बहुत बड़े पातक जिनके नाम-ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार, तथा इन पातकों के करने वालों के साथ संसर्ग। पञ्चमहायज्ञ-(सं०पुं०) पांच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थों के लिये परम आवश्यक है-इनके नाम-अध्ययन तथा अध्यापन (ब्रह्मयज्ञ), अन्न तथा उदक द्वारा पितृलोक को तर्पण (पितृयज्ञ) हवन, होम (देवयज्ञ) पशु पक्षी को अन्न खिलाना (भूतयज्ञ) तथा अतिथि सेवा (मनुष्य यज्ञ) हैं। पञ्चमहाव्याधि (सं०पुं०) पांच बड़े रोग यथा-अर्श (बवासीर) यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद। पञ्चमहाव्रत-(सं०पुं०) अहिंसा, (सूनृता) सच बोलना (आस्तेय) चोरी न करना, ब्रह्मचर्य और (अपरिग्रह) दान दक्षिणा न लेना।
पञ्चमार-(सं०पु०) बलदेव के एक पुत्र का नाम।
पञ्चमास्य-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल (वि०) पांच महीने का।
पञ्चमी-(सं०स्त्री०) पाण्डवों की पत्नी द्रौपदी, किसी पक्ष की पांचवी तिथि, एक रागिणी का नाम।
पञ्चमुख-(सं०पुं०) सिंह, शिव, महादेव. पंचमुखी रुद्राक्ष। पञ्चमुखी-(सं०स्त्री०) हुड़हुल का फूल, पार्वती।
पञ्चमुद्रा-(सं०स्त्री०) पूजा विधि में करने की पांच प्रकार की मुद्रा यथा आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनी, सम्बोधनी और सन्मुखी करणी।
पञ्चयाम-(सं०पुं०) दिवस, दिन।
पञ्चरत्न-(सं०नपुं०) पांच प्रकार के रत्न, कुछ लोग-सोना, हीरा, नीलम लाल और मोती को पञ्चरत्न कहते हैं, कुछ लोग-मोती, मूंगा, वैक्रान्त हीरा और पन्ना को पञ्चरत्न में गिनते हैं।
पञ्चरश्मि-(सं०पुं०) आदित्य, सूर्य-जिसकी किरणों में पिंगल, शुक्ल, नील पीत और लोहित ये पांच रंग हैं।
पञ्चरसा-(सं०स्त्री०) आमला, हरीतकी, हर्रे।
पञ्चरात्र-(सं०नपुं०) पांच रात में होने वाला यज्ञ, पांच रात।
पञ्चराशिक-(सं०पुं०) गणित जिसमें चार ज्ञात राशियों से पांचवीं निकाली जाती है।
पञ्चरीक-सं०पुं०) संगीत में एक ताल का नाम।
पञ्चल-(सं०पुं०) सकरकन्द।

पञ्चलवण-(सं०नपुं०) वैद्यक के अनुसार पांच नमक यथा-कांच, सेंधा, समुद्र, विट् और सांचर।
पंञ्चलोकपाल-(सं०पुं०) पांच लोकपाल यथा-विनायक, दुर्गा, वायु और दोनों अश्विनी कुमार।
पंञ्चलोह-(सं०नपुं०) सोना, चाँदी, तांबा, सीसा और रांगा ये पांच धातु पंचलोह कहलाते हैं।
पञ्चवक्त्र-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
पंञ्चवटी-(सं०स्त्री०) दण्डकारण्य का एक वन जहां वनवास के समय श्री रामचन्द्र रहते थे। **पञ्चवदन**-(सं०पुं०) शिव, महादेव। **पञ्चवर्ग**-(सं०पुं०) पाँच प्रहर में होने वाला एक यज्ञ।
पञ्चवर्ण-(सं०नपुं०) प्रणव के पांच वर्ण यथा—अ, उ, म, नाद और विन्दु **पञ्चवर्णक**-(सं०पुं०) धतूरे का पेड़।
पञ्चबाण-(सं० पुं०) कामदेव के पांच बाण। **पञ्चवायु**-(सं०पुं०) शरीर में स्थित—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ये पाँच वायु।
पञ्चवार्षिक-(सं०वि०) पाँच बरस का।
पञ्चविध-(सं०वि०) पांच प्रकार का।
पञ्चवृत्ति-(सं० स्त्री०) पातञ्जलि के अनुसार मन की पांच वृत्ति यथा—प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति; **पंञ्चशर**-(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव, कामदेव के पांच बाण।
पञ्चशः-(सं०अव्य०) पांच पांच करके।
पञ्चशाख-(सं०वि०) पनशाखा, जिसमें पाँच बत्तियां हों; **पञ्चशिख**-(सं०पुं०) सिंह, एक मुनि का नाम जो सांख्य शास्त्र के प्रधान आचार्य थे।
पंञ्चशीर्ष-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प
पञ्चशुक्ल-(सं०पुं०) एक प्रकारका कीड़ा
पंञ्चसन्धि-(सं०स्त्री०) व्याकरण में सन्धि के पाँच भेद।
पञ्चस्नेह-(सं०पुं०) घी, तेल, वसा, मज्जा और मोम।
पञ्चाक्षर-(सं०पुं०) प्रणव, पाँच अक्षर का मन्त्र।
पञ्चाग्नि-(सं०नपुं०) पांच प्रकार की अग्नि यथा-अन्वाहार्यपचन, गार्हपत्य सभ्य, आहवनीय और आवसथ्य।
पञ्चाङ्ग-(सं०नपुं०) किसी वृक्ष की छाल, पत्ता, फूल, फल और जड़, पुरश्चरण विशेष—जप, होम, तर्पण अभिषेक और ब्राह्मण भोजन, ज्योतिष के अनुसार वह पंजिका जिसमें वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण लिखे हों, कछुआ, एक प्रकार का घोड़ा, वह प्रणाम जो बाहु, जानु, मस्तक, वाक्य और दृष्टि द्वारा किया जावे; **पंञ्चाङ्गी**-(सं०स्त्री०) हाथी की कमर में बाँधने का रस्सा।
पञ्चांगुरि-(सं०वि०) पांच अंगुलियों का (स्त्री०) हाथ; **पञ्चांगुल**-(सं०वि०) जो पांच अंगुल का हो (पुं०) तेज-पत्ता, रेंड़।
पञ्चातप-(सं०पुं०) धूप में बैठकर अपने चारो ओर अग्नि रखकर तपस्या।
पंञ्चानन-(सं०पुं०) शिव, महादेव, सिंह, सिंह राशि, संगीत में स्वर साधन की एक रीति; **पंञ्चाननी**-(सं०स्त्री०) शिव की पत्नी, दुर्गा।
पञ्चामृत-(सं०नपुं०) एक स्वादिष्ट द्रव्य जो घी, दूध, दही मधु और चीनी मिलाकर बनाया जाता है।
पञ्चायत-(हिं०पुं०) भारतवर्ष की ग्राम्य विचारसभा, जो आपस के झगड़े निबटाती है।
पंञ्चायुध-(सं०पुं०) विष्णु का एक नाम
पंञ्चाल-(सं०पुं०) एक देश का नाम।
पंञ्चालिका-(सं०स्त्री०) पुतली, गुड़िया; **पंञ्चाली**-(सं०स्त्री०) गुड़िया द्रौपदी।
पञ्चावयव-(सं० पुं०) न्याय के पांच अवयव यथा प्रतिज्ञा, हेतु उदाहरण, उपनय और निगमन।
पञ्चाशिका-(सं०स्त्री०) वह पुस्तक जिसमें पचास श्लोक या कविता हों।
पञ्चास्य-(सं०पुं०) सिंह, शिव, महादेव
पञ्चिका-(सं० स्त्री०) पांच खण्ड या अध्यायों का समूह।
पंञ्चेन्द्रिय-(सं०नपुं०) पांच ज्ञानेन्द्रियां यथा श्रोत्र, त्वक्, नेत्र, रसना और घ्राण तथा पांच कर्मेन्द्रियां यथा-वाक्, पाणि, पायु, पाद और उपस्थ
पञ्चेषु-(सं०पुं०) कामदेव के पांच बाण
पंञ्चौदन-(सं०पुं०) एक यज्ञ का नाम।
पञ्जर-(सं०नपुं०) शरीर की हड्डियों का समूह, शरीर, देह, चिड़िया का पिंजड़ा, कलियुग।
पञ्जराखेट-(सं०पुं०) मछली पकड़ने का टोकरा।
पञ्जाब-देखो पंजाब।
पञ्जि-(सं०स्त्री०) पंजिका, पंचाङ्ग; **पंञ्जिका**-(सं०स्त्री०) रूई की प्योनी, तिथि वार आदि पञ्चाङ्ग युक्त पत्रिका।
पट-(सं०पुं०नपुं०) वस्त्र, कपड़ा, चित्र बनाने का कागज या कपड़ा, लकड़ी धातु आदि का वह पत्र जिसपर चित्र बनाया जाता है, वह चित्र जो बदरिकाश्रम, जगन्नाथपुरी आदि में यात्रियों को मिलता है, छान, छप्पर, बहली के ऊपर डालने का छप्पर, आड़, परदा, चिक, कपास, तृण, चिरौंजी का वृक्ष, (हिं०पुं०) किवाड़ा, सिंहासन, चिपटी चौरस भूमि, पालकी का सरकौवां द्वार, मल्लयुद्ध की एक युक्ति, टांग, टप् पट् का शब्द, (वि०) ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि पर हो तथा पीठ आकाश की ओर, (वि०) तुरत, शीघ्र; **पट खुलना**-देवता के दर्शन के लिए मन्दिर का द्वार खुलना; **पट पड़ना**-मन्द होना, रुक जाना, न चलना।
पटइन-(हिं०स्त्री०) पटहारे जाति की स्त्री
पटंक-(सं० पुं०) शिविर, तंबू, सूती कपड़ा।
पटकन-(हिं०स्त्री०) पटकने की क्रिया या भाव, चपत, तमाचा, छोटा डंडा या छड़ी।
पटकना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को वेग के साथ ऊंचे स्थान से नीचे को झोंक से गिराना, किसी बैठे या खड़े हुए मनुष्य को वेग से नीचे को गिराना, मल्लयुद्ध में पछाड़ना, शब्द करते हुए किसी वस्तु का फटना, अन्न का भींग कर सिकुड़ना, पचकना; **किसी पर कोई काम पटकना**-जिस काम को करने की किसी को नियुक्त करना।
पटकनियां-(हिं०स्त्री०) पटकने की क्रिया या भाव, पटकान, भूमि पर गिर कर लोटने की क्रिया, पछाड़, लोटनियां; **पटकनी**-(हिं०स्त्री०) देखो पटकनिया।
पटका-(हिं०पुं०) पेट में बाँधने का दुपट्टा, कमरपेंच, भीत मे जड़ी हुई पट्टी या बन्द।
पटकान-(हिं०क्रि०) देखो पटकनियाँ।
पटकार-(सं०पुं०) कपड़ा बुनने वाला, जुलाहा, चित्रकार।
पटकुटी-(सं०स्त्री०) कपड़े का घर, तंबू
पटच्चर-(सं०नपुं०) पुराना कपड़ा, चीर
पटझोल-(हिं०वि०) अचल।
पटड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पटरी।
पटतर-(हिं०पुं०) तुल्यता, समानता, समता, सादृश्य, उपमा; **पटतरना**-(हिं०क्रि०) बराबर ठहराना, उपमा देना; **पटतारना**-(हिं०क्रि०) असमतल भूमि को समतल करना, पड़तारना, भाला आदि शस्त्र को किसीके ऊपर चलाने के लिये थांमना या खींचना।
पटताल-(हिं०पुं०) मृदंग का एक ताल
टद-(सं०पुं०) कर्पास, कपास, रूई;
पटधारी-(हिं०वि०) जो वस्त्र पहिरे हो, (पुं०) कोष का अधिकारी।
पटना-(हिं०क्रि०) समतल या चौरस होना, पक्की या कच्ची छत बनाना, खेत आदि का सींचा जाना, किसी वस्तु से किसी स्थान का परिपूर्ण होना, घर का दूसरा खण्ड बनाया जाना, दो मनुष्यों के विचार में समानता होना, मन मिलना, लेन देन, बेंचा बिक्री आदि में मूल्य आदि का स्थिर होना, गाढ़ मैत्री होना, ऋण का चुकता हो जाना।
पटना-बिहार प्रान्त का एक प्रधान नगर इसका प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था; **पटनिया**-(हिं०वि०) पटना नगर में बनी हुई, पटना नगर से संबध रखने वाली।
पटनी-(हिं०स्त्री०) कोठे के नीचे का घर, स्थायी पट्टे पर मिली हुई भूमि, कोई वस्तु रखने के लिये दो खूंटियों पर रक्खी हुई पटरी।
पटपट-(हिं०स्त्री०) किसी हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द जो बार बार होवे, (क्रि०वि०) पट पट शब्द करता हुआ; **पटपटाना**-(हिं०क्रि०) भूख प्यास अथवा सरदी गरमी के कारण अधिक कष्ट उठाना, किसी वस्तु में से पट् पट् शब्द निकलना, पछताना, शोक या दुःख करना, किसी वस्तु को पीट कर पटपट शब्द उत्पन्न करना।
पटपर-(हिं०वि०) समतल, चौरस, (पुं०) नदी के आसपास की वह भूमि जो वर्षाकाल में प्रायः डूबी रहती है और जिसमें केवल रबी की उपज होती है, ऐसा स्थान जहाँ वनस्पति न उपजे, उजाड़ स्थान।
पटबास-(हिं०पुं०) वस्त्र को सुगन्धित करने का द्रव्य।
पटबंधक-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बंधक जिसमें महाजन बंधक की हुई सम्पत्ति के आय से सूद लेने के बाद जो बढ़ती होती है उसको मूल ऋण में काटता जाता है और संपूर्ण ऋण चुक जाने पर वह सम्पत्ति उसके मालिक को लौटा देता है।
पटबीजना-(हिं०पुं०) खद्योत, जुगनू।
पटम-(हिं०वि०) वह जो भूख के मारे अन्धा हो गया हो।
पट मंजरी-(सं०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी का नाम; **पट मण्डप**-(सं०पुं०) तंबू, कपड़े का बना घर; **पटमय**-(सं०नपुं०) तम्बू, लँहगा
पटरा-(हिं०पुं०) लकड़ी का लंबा चौरस पल्ला, पाटा, धोबी का पाट, हेंगा; **पटरा कर देना**-मार मार कर भूमि पर लेटा देना।
पटरानी-(हिं०स्त्री०) किसी राजा की सबसे बड़ी या मुख्य रानी जिसको राजा के साथ सिंहासन पर बैठने का अधिकार हो।
पटरी-(हिं०स्त्री०) काठ का लंबा पतला पटरा, लिखने की पटिया, नरिया जमाने का चौड़ा खपड़ा, सड़क के दोनों किनारों पर मनुष्यों के चलने के लिये बना हुआ ऊंचा मार्ग, बगीचों में कियारियों के चारों ओर चलने का मार्ग, जन्तर, स्त्रियों का हाथ में पहिरने का एक आभूषण, नहर के दोनों ओर के मार्ग कपड़े के किनारोंपर सीने की कलाबत्तू की बनी हुई पट्टी।
पटल-(सं० नपुं०) छान छप्पर, लाव लश्कर, मोतियाबिन्द नामक आँख का रोग, तिलक, टीका, पुस्तक का एक भाग, परिच्छेद, समूह, ढेर, आँख का परदा, लकड़ी का चौरस टुकड़ा, पटरा, आवरण, परत, तह, ग्रन्थ, वृक्ष, परवल की लता, करौंदे का वृक्ष।

पटलक-(सं०पुं०) राशि, समूह, ढेर, आवरण परदा, झिलमिली, बुरका, छोटी संदूक।
पटलता-(सं०स्त्री०) अधिकता।
पटली-(हिं०स्त्री०) पंक्ति।
पटवा-(हिं०पुं०) वह जो सूत या रेशम में गहनों को गूथता है, पटहरा, पटसन, पाट, नारंगी के रंग का बैल
पटवाद्य-(सं०पुं०) झांझ की तरह का एक प्राचीन बाजा।
पटवाना-(हिं० क्रि०) पाटने का काम दूसरे से कराना, ढँपवाना, छत ढलवाना, गढ्ढों को मिट्टी आदि से भरवाना, पानी से तर कराना, दाम चुकवा देना, शान्त करना, दूर कर देना।
पटवाप-(सं०पुं०) तंबू।
पटवारगरी-(हिं०स्त्री०) पटवारी का काम या पद।
पटवारी-(हिं०पुं०) वह कर्मचारी जो गाँव की भूमि, उसका कर आदि का हिसाब किताब रखता हो, (स्त्री०) कपड़ा पहिराने वाली लौंडी।
पटवास-(सं०पुं०) वस्त्र गृह, शिबिर, तंबू, साड़ी, लहँगा, वस्त्र को सुगन्धित करने का द्रव्य।
पटवेश्म-(सं०नपुं०) शिबिर, तम्बू।
पटसन-(हिं० पुं०) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशों से रस्सी, बोरे, टाट आदि बनाये जाते हैं, पाट, जूट।
पटहंसिका-(सं०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।
पटह-(हिं०पुं०, नपुं०) दुदुंभी, नगाड़ा, बड़ा ढोल। **पटहता**-(सं०स्त्री०) नगाड़े की ध्वनि। **पटहा**-(हिं०पुं०) देखो पटह
पटहार-(हिं०पुं०) वह जो रेशम के डोरे बनाता हो, रेशम के डोरे से गहना गूथने वाला, (पुं०) पटवा नामक जाति;
पटा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लोहे की पट्टी जो किर्च के आकार की होती है जिससे लोग तलवार की काट और बचाव सीखते हैं, चटाई, लबी धारी, सौदा, लेनदेन, लगाम की मुहरी, अधिकार पत्र; देखो पट्टा। **पटाई**-(हिं०स्त्री०) पटाने की क्रिया या भाव, सिंचाई, सिंचाई का वेतन, पाटने की क्रिया।
पटाक-(हिं०पुं०) किसी छोटी वस्तु के गिरने का शब्द।
पटाका-(हिं०पुं०) पट या पटाक शब्द, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा जिसके छूटने पर पटाक् शब्द निकलता है, कोड़े या पटाके का शब्द, थप्पड़, चमाचा।
पटाखा-(हिं०पुं०) देखो पटाका।
पटाना-(हिं० क्रि०) पटाने का काम कराना, गढ्ढेको पाटकर भूमि समतल करना, छतको पीटकर बराबर कराना, पाटन बनवाना, मूल्य स्थिर करना, ऋण चुका देना।
पटापट-(हिं०क्रि०वि०) निरन्तर पट पट शब्द करते हुए, (स्त्री०) निरन्तर पट पट शब्द होना।

पटापटी-(हिं०स्त्री०) वह वस्तु जो अनेक रंगों से रंगी हुई हो।
पटार-(हिं०स्त्री०) पिंजड़ा, पेटी, पिटारा, रेशम की डोरी।
पटालुका-(सं०स्त्री०) जलौका, जोंक।
पटाव-(हिं०पुं०) पाटने की क्रिया, पटा हुआ स्थान, पाटने का भाव, भीतों को पाटकर बनाया हुआ ऊँचा स्थान, पाटन, लकड़ी का वह पुष्ट पटरा जिसको द्वार के ऊपर रखकर भीत उठाई जाती है, भरेठा।
पटिका-(सं०स्त्री०) यवनिका, परदा।
पटिया-(हिं०स्त्री०) पत्थर का लंबा चौरस टुकड़ा, काठ का छोटा पटरा, खाट या पलंग की पट्टी, पाटी, हेंगा, माँग, पट्टी, कम्बल या टाट की पट्टी, लिखने की पट्टी, सकरा लंबा खेत।
पटी-(सं०स्त्री०) कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा, परदा, नाटक का पर्दा, पटका,
पटीमा-(हिं०पुं०) छीपियों का वह पटरा जिस पर वे कपड़ा बिछाकर वस्त्र छापते हैं।
पटीर-(सं०नपुं०) मूल, ऊंचाई, मेघ, बादल, वंशलोचन, चन्दन, खैर, कन्दर्प, उदर पेट, बरगद का वृक्ष, चालनी।
पटीलना-(हिं०क्रि०) किसी को भुलावे की बातें कहकर अपने अनुकूल करना, ढंग पर लाना, नीचा दिखाना, कमाना, प्राप्त करना, मारना, पीटना, पूर्ण करना, सफलता पूर्वक कोई काम समाप्त करना, ठगना, छलना।
पटु-(सं०वि०) दक्ष, चतुर, रोगरहित, स्वस्थ, तीक्ष्ण, मनोहर, प्रकाशित, कठोर हृदय का, उग्र, धर्त, (नपुं०) नमक, परबल, करेला, जीरा, बच, नकछिकनी, चीनी; कपूर।
पटुआ-(हिं०पुं०) देखो पटुवा।
पटुक-(सं०पु०) पटोल, परवल।
पटुका-(हिं० पुं०) गले में डालने का वस्त्र, चादर, धारीदार वस्त्र।
पटुता-(सं० स्त्री०) दक्षता, चतुराई, प्रवीणता। **पटुत्व**-(सं०नपु०) पटुता, दक्षता।
पटुपत्रिका-(सं०स्त्री०) पिण्ड खजूर।
पटुपर्णी-(सं०स्त्री०) सत्यानाशी, कटेहरी।
पटुरूप-(सं०वि०) बहुत चतुर।
पटुली-(हिं० स्त्री०) झूले के रस्से पर रखने की काठ की पटरी, गाड़ी या छकड़े में जड़ा हुआ काठ का पटरा, चौकी, पीढ़ा।
पटुवा-(हिं०पु०) पटसन, जूट, करेम का शाक।
पटूका-(हिं०पुं०) देखो पटका।
पटेबाज-(हिं०पुं०) वह जो पटा खेलता हो, पटे से लड़ने वाला, एक प्रकार का खिलौना, व्यभिचारी और धूर्त मनुष्य, कुलटा चतुर स्त्री।
पटेर-(हिं०स्त्री०) सरकण्डे की जाति का एक पौधा जो जल में होता है।
पटेरक-(सं०नपुं०) मुस्तक, मोथा।

पटेरा-(हिं०पुं०) देखो पटेला, पटैला।
पटेल-(हिं०पुं०) गाँव का मुखिया या चौधरी, दक्षिण भारत की एक उपाधि।
पटेलना-(हिं० क्रि०) देखो पटीलना।
पटेला-(हिं० पुं०) वह नाव जिसका बिचला भाग पटा हुआ हो, एक प्रकार की घास जिसकी चटाइयां बनती हैं, सिल, हेंगा, पटिया, मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
पटेली-(हिं०स्त्री०) छोटा पटेला।
पटैत-(हिं०पुं०) पटा खेलने या लड़ने वाला।
पटैला-(हिं० पु०) लकड़ी का किवाड़ बन्द करने के लिये लगा हुआ चिपटा डंडा, व्योड़ा।
पटोर-(हिं०पुं०) पटोल, रेशमी कपड़ा।
पटोरी-(हिं०स्त्री०) रेशमी साड़ी।
पटोल-(सं०नपुं०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, परवल की लता।
पटोलक-(सं०पुं०) शुक्ति, सीपी, सुतुही;
पटोलिका-(सं०स्त्री०) सफेद फूल की तरोई।
पटौनी-(हिं०पुं०) नाविक, मल्लाह, मांझी।
पटोहाँ-(हिं० पुं०) वह कमरा जिसके ऊपर दूसरा कमरा हो, पटबन्धक।
पट्ट-(सं० नपुं०) नगर, (पुं०) पहिया, घाव पर बाँधने की पट्टी, पाठ, दुपट्टा, ढाल, राजसिंहासन, पीढ़ा, पाटा, शिला, पगड़ी, रेशम, लाल रेशमी पगड़ी, चौरहा, (वि०) प्रधान।
पट्टक-(सं०पुं०) लिखने की पटिया, चित्रपट, ताम्रपट जिस पर राजा का आदेश खोदा जाता था, पटका।
पट्टदेवी-(हिं०स्त्री०) राजा की प्रधान स्त्री, पटरानी।
पट्टदोल-(सं०स्त्री०) कपड़े का बना हुआ झूला।
पट्टन-(सं०नपुं०) पत्तन, बड़ा नगर।
पट्टमहिषी-(सं०स्त्री०) राजा की प्रधान स्त्री, पटरानी।
पट्टरंग-(सं०नपुं०) पत्तरंग, बक्कम।
पट्टराज्ञी-(सं० स्त्री०) पटरानी।
पट्टा-(सं० पुं०) किसी भूमि अथवा स्थावर सम्पत्ति के उपयोग का अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से असामी ठीकेदार या किरायेदार को लिखा जाता है, एक आभूषण जिसको स्त्रियां चूड़ियों के बीच में पहिरती हैं, पीढ़ा, अधिकारपत्र, चपरास, पुरुष सिर पर के बाल जो पीछे की ओर गिरे रहते हैं और बराबर कटे होते हैं, कामदार जूतियों पर का कपड़ा जिसपर काम बना होता है, एक प्रकार की तलवार, विवाह के समय देने का वह नेग जो नाई धोबी आदि को वर पक्ष से दिलवाया जाता है, चमड़े का कटिबन्ध, घोड़े के माथे पर पहिराने का गहना, कुत्ते-बिल्लो आदि के गले में बाँधने की पट्टी।

पट्टिका-(सं०स्त्री०) पठानी लोध, एक बित्ता लंबा कपड़ा, चित्रपट, छोटी पट्टरी।
पट्टिकार-(सं०वि०) रेशमी कपड़ा बुनने वाला।
पट्टिश-(सं० पुं०) तलवार के समान एक अस्त्र।
पट्टी-(सं०स्त्री०) पठानी लोध, एक गहना जो पगड़ी में लगाया जाता है, तोबड़ा, घोड़े के सीने में बाँधने की रस्सी, घोड़े की सीधी दौड़ान, सरपट चाल, किसी भूमि का वह भाग जो एक पट्टीदार के अधिकार में हो, छत या छाजन में लगाने का बल्ला, कपड़े का किनारा, नाव के बीच में लगाने का पटरा, टाट बनाने की सन की धज्जी, तिल या चने की दाल चिपका कर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई, सूती या ऊनी वस्त्र की धज्जी, पंक्ति, पटिया, लिखने की खाट की पट्टी लंबे बल में लगी हुई लकड़ी, धातु कागज या कपड़े की धज्जी, घाव पर बाँधने की कपड़े की धज्जी, बहकाने वाली शिक्षा, उपदेश, सिखावन, पाठ, मांग के दोनों ओर के बैठाये हुए बाल, विभाग।
पट्टीदार-(हिं०पु०) वह व्यक्ति जिसका अंश किसी सम्पत्ति में हो, बराबर का अधिकारी, संयुक्त सम्पत्ति के अंश का स्वामी, वह जिसको अंश बांटने का अधिकार हो।
पट्टीदारी-(हिं०स्त्री०) पट्टी होने का भाव, अनेक विभाग होना, भाईचारा, वह भूसम्पत्ति जिसमें अनेक भागी हों।
पट्टीवार-(हिं०क्रि०वि०) हर पट्टी का हिसाब किताब अलग अलग करते हुए; (वि०) अलग अलग पट्टी के अनुसार तैयार किया हुआ।
पट्टीश-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
पट्टू-(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप में बना जाता है, शुक, तोता।
पट्टे पछाड़-(हिं०पुं०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
पट्टे बैठक-(हिं०पु०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
पट्टैत-(हिं० पुं०) पटेत, मूर्ख, एक प्रकार का कबूतर।
पट्टोपाध्याय-(सं० पुं०) दानपत्र का लिखने वाला।
पठमान-(हिं०वि०) पढ़े जाने योग्य।
पट्ठा-(हिं० पुं०) तरुण, नवयुवक, वह बच्चा जिसमें यौवन का आगमन हो चुका हो, लड़का, स्नायु, दलदार मोटा पत्ता, एक प्रकार का चौड़ा गोटा, बेल बनाई हुई गोंट, जांघ के जोड़ का स्थान, मोटी नस; **पट्ठा चढ़ाना**-नस पर नस का चढ़ जाना, **पट्ठापछाड़**-(हिं०वि०) हृष्ट पुष्ट।
पट्ठी-(हिं०स्त्री०) देखो पठिया।

पठक-(सं०पुं०) पाठक, पढ़ने वाला।
पठन-(सं०नपुं०) अध्ययन, पढ़ना।
पठनीय-(सं०वि०) पढ़ने योग्य।
पठमंजरी-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
पठनेटा-(हिं०पुं०) पठान का मित्र।
पठवना-(हिं०क्रि०) भेजना। **पठवाना**-(हिं० क्रि०) भेजवाना, दूसरे से भेजने का काम कराना।
पठान-(हिं०पुं०) भारतवर्ष के सीमा प्रान्त में रहने वाली एक मुसलमानी धर्म मानने वाली जाति।
पठाना-(हिं०क्रि०) भेजना, पठवाना।
पठानिन, पठानी-(हिं०स्त्री०) पठान की स्त्री
पठानी लोध-(हिं०पुं०) एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और फल औषधियों में प्रयोग होते हैं तथा छिलका रंग बनाने के काम में आता है।
पठावन-(हिं० पुं०) सन्देश ले जाने वाला, दूत।
पठावनि, पठावनीय-(हिं०स्त्री०) किसी मनुष्य को कहीं कोई वस्तु लेकर अथवा सन्देश पहुँचाने के लिये भेजना, इस कार्य का वेतन।
पठावर-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की घास
पठित-(सं०वि०) शिक्षित, पढ़ा, हुआ, पढ़ा लिखा। **पठितव्य**-(सं० वि०) पढ़ने योग्य।
पठिति-(सं० स्त्री०) शब्दालङ्कार का एक भेद।
पठियर-(हिं० स्त्री०) वह बल्ला या पटिया जो कुवें के मुख पर बीचोबीच रख दी जाती है।
पठिया-(हिं० स्त्री०) यौवन प्राप्त स्त्री, जवान पुष्ट स्त्री।
पठोर-(हिं० स्त्री०) बिना ब्याई हुई जवान बकरी।
पठौना-(हिं० क्रि०) भेजना।
पठौनी-(हिं० स्त्री०) किसी को कुछ देकर कहीं भेजने की क्रिया या भाव
पठ्यमान-(सं०वि०) जो पढा जाता हो।
पठछती-(हिं०स्त्री०) लकड़ी की पाटन, टांड, भीत की रक्षा के लिये लगाने वाला छप्पर।
पड़त, पड़ता-(हिं०पुं०) वह मूल्य जो किसी वस्तु को तैयार करने में या मोल लेने में लगा हो, सामान्य दर, लागत, लगान की दर; **पड़ता खाना**-व्यय लाभ मिल जाना; **पड़ता फैलाना**-लाभ रखते हुए किसी वस्तु का दाम स्थिर करना।
पड़ताल-(हिं०स्त्री०) अनुसन्धान, छानबीन, गांव या नगर के पटवारी द्वारा खेतों की उत्पत्ति आदि विषय की जाँच। **पड़तालना**-(हिं० क्रि०) अनुसन्धान करना, छानबीन करना।
पड़ती-(हिं०स्त्री०) वह भूमि जो कुछ दिनों से जोती बोई न गई हो; **पड़ती जमीन**-वह भूमि जो एक साल तक जोती बोई न गई हो; **पड़ती कदीम**-वह भूमि जो अनेक वर्षों से जोती बोई न गई हो।
पड़ना-(हिं०क्रि०) पतित होना, गिरना, बिछाया जाना, अधिक इच्छा होना, धुन लगना, देशान्तर होना, मैथुन करना, उत्पन्न होना, उपस्थित होना, संयोग वश आ पड़ना, जाँच करने पर ठहरना, रोगी होना, पड़ता खाना, अनिष्ट अवस्था को प्राप्त होना, हस्तक्षेप करना, विश्राम करने के लिये लेटना, डेरा डलना, ठहरना, मार्ग में मिलना, आय प्राप्ति आदि का औसत होना, ऊँचे स्थान से नीचे को आना, पाया जाना; **किसी पर पड़ना**-आपत्ति आना; **पड़ा होना**-एक ही स्थान पर बने रहना, **पड़े रहना**-बिना कुछ काम किये आलसी बने रहना, **तुमको क्या पड़ी है?**-तुमसे क्या आशय?
पड़पड़-(हिं० स्त्री०) निरन्तर पड़ पड़ शब्द होना।
पड़पड़ाना-(हिं०क्रि०) पड़ पड़ शब्द होना, तीक्ष्ण वस्तु के स्पर्श से जलन होना, चरपराना।
पड़पड़ाहट-(हिं० स्त्री०) पड़पडाने की क्रिया या भाव, चरपराहट।
पड़पोता-(हिं०पुं०) प्रपौत्र, पोते का पुत्र।
पड़म-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा जो खेमा आदि बनाने के काम में आता है।
पड़वा-(हिं० स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की पहिली तिथि; (पुं) भैंस का बच्चा।
पड़वाना-(हिं० क्रि०) गिरवाना।
पड़वी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की ऊख जो वैशाख या जेठ में बोई जाती है,
पड़ा-(हिं०पुं०) भैंस का बच्चा।
पड़ाइन-(हिं०स्त्री०) देखो पंडाइन।
पड़ाका-(हिं०पुं०) देखो पटाका।
पड़ाना-(हिं०क्रि०) झुकाना, गिराना।
पड़ापड़-(हिं०क्रि०वि०) देखो पटापट।
पड़ाव-(हिं०पुं०) यात्रा के बीच का ठहराव, वह स्थान जहां यात्री ठहरते हों, चट्टी, टिकान।
पड़िया-(हिं० स्त्री०) भैंस का मादा बच्चा। **पड़ियाना**-(हिं० क्रि०) देखो भैंसाना।
पड़िवा-(हिं० स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की पहिली तिथि, प्रतिपदा।
पड़ोस-(हिं०पुं०) किसी के समीप का घर, आसपास का स्थान, समीपवर्ती स्थान; **पड़ोस करना**-पड़ोस में बसना; **पड़ोसी, पड़ौसी**-(हिं०पुं०) प्रतिवासी, पड़ोस में रहने वाला।
पढंत-(हिं०क्रि०) पढ़ने की क्रिया या भाव, लगा हुआ मन्त्र, जादू; **पढता**-पढ़ने वाला।
पढ़ना-(हिं०क्रि०) किसी पुस्तक लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी हुई बात का ज्ञान हो जावे, उच्चारण करना, बांचना धीरे से कहना, नया सबक लेना, स्मरण रखने के लिये बारंबार उच्चारण करना, मन्त्र फूकना, जादू करना, अध्ययन करना, शिक्षा प्राप्त करना, तोता मैना आदि का मनुष्यों को सिखलाये हुए शब्दों का उच्चारण करना; **लिखना पढना**-शिक्षा प्राप्त करना।
पढनी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान।
पढनीउड़ी-(हिं० स्त्री०) उछल कर लाँघने का एक व्यायाम।
पढवाना-(हिं०क्रि०) किसी से पढ़ने का काम कराना, बँचवाना, किसी के द्वारा शिक्षा दिलाना। **पढवैया**-(हिं०पुं०) शिक्षार्थी, पढ़ने वाला; **पढाई**-(हिं० स्त्री०) विद्याभ्यास, पठन, अध्ययन, पढ़ने का काम, पाठन, पढ़ाने का काम, पढने का ढंग, पढाने के बदले में दिया जाने का धन, अध्यापन शैली, पठौनी।
पढाना-(हिं०क्रि०) अध्यापन करना, शिक्षा देना, सिखाना, समझाना, कोई कला सिखलाना, तोता मैना आदि पक्षियों को बोलना सिखलाना
पढिना-(हिं०पुं०) मीठे तथा खारे पानी में रहने वाली एक प्रकार की बिना सेहरे की मछली।
पढैया-(हिं०पुं०) पाठक, पढ़ने वाला।
पण-(सं० पुं०) तांबे का टुकड़ा जिसका व्यवहार प्राचीन काल में सिक्के के समान किया जाता था, वेतन, स्तुति, प्रशंसा, प्राचीन काल की एक माप जो एक मुट्ठी अन्न के बराबर होती थी, घर, विष्णु, बेंचा बिक्री करने वाला, द्यूत, जुआ, मूल्य, दाम, धन, सम्पत्ति, प्रतिज्ञा, वह वस्तु जिसका देना स्वीकार हो, व्यापार, व्यवहार, क्रय विक्रय की वस्तु, कोई कार्य जिसमें पण लगाया गया हो। **पणग्रन्थि**-(सं०पुं०) हाट।
पणन-(सं०नपुं०) बेचने की क्रिया या भाव, व्यापार करने की क्रिया।
पणनीय-(सं० वि०) खरीदने या बेचने योग्य।
पणफर-(सं०नपुं०) ज्योतिष की जन्म कुण्डली का दूसरा, पांचवां और ग्यारहवां घर।
पणव-(सं० पुं०) छोटा नगाड़ा, छोटा ढोल, एक वर्णवृत्त का नाम।
पणबन्ध-(सं० पुं०) बाजी या शर्त लगाना।
पणश-सं०पुं०) कटहल।
पणाशी-(हिं०वि०) नाश करने वाला।
पणास-(सं०पुं०) विक्री की वस्तु।
पणसुन्दरी, पणस्त्री, पणांगना-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
पणायित-(सं०वि०) स्तुति किया हुआ, मोल लिया हुआ।
पणि-(सं० स्त्री०) हाट।
पणित-(सं०वि०) व्यवहार किया हुआ मोल लिया हुआ।
पणितव्य-(सं०वि०) प्रशंसा करने योग्य, व्यवहार करने योग्य।
पण्ड-(सं०पुं०) क्लीब, नपुंसक, हिजड़ा, (वि०) निष्फल।
पण्डा-(सं०स्त्री०) तीक्ष्ण, बुद्धि शास्त्रज्ञान।
पण्डित-(सं०पुं०) शास्त्रज्ञ, जो शास्त्र को भली भांति जनता हो, विद्वान, विदग्ध, महादेव, (वि०) चतुर, संस्कृत भाषा का विद्वान्। **पण्डितता**-(सं०स्त्री०) देखो पांडित्य। **पण्डितराज**-(सं० पुं०) पण्डितों में श्रेष्ठ।
पण्डिता-(सं०स्त्री०) विदुषी, विद्वान् महिला। **पण्डिताइन**-(हिं० स्त्री०) देखो पाण्डितानी; **पण्डिताई**-(हिं०स्त्री०) विद्वत्ता, पाण्डित्य। **पण्डिताऊ**-(हिं० वि०) पाण्डितों के ढंग का।
पण्डितानी-(हिं० स्त्री०) पण्डित की स्त्री, ब्राह्मणी।
पण्ड-(सं०वि०) मटमैला, पीला सफेद,।
पण्य-(सं० वि०) मोल लेने या बेचने योग्य, व्यवहार करने योग्य, प्रशंसा करने योग्य; (पुं०) व्यापार, माल, हाट, दूकान। **पण्यदासी**-(सं०स्त्री०) लौंडी, दासी, बाँदी; **पण्यपति**-(सं०पुं०) बहुत बड़ा साहूकार, नगरसेठ; **पण्यफल**-(सं० पुं०) व्यापार में लाभ। **पण्यभूमि**-(सं० स्त्री०) सामग्री इकट्ठा करने का स्थान, कोठी, गोदाम। **पण्यविलासिनी**-(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी। **पण्यवीथिका**-(सं० स्त्री०) हाट, **पण्यशाला**-(सं०स्त्री०) विक्रय गृह।
पण्य स्त्री, पण्यांगना-रंडी।
पण्यजीवी-(सं० पुं०) बनिया, सौदागर।
पतंखा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बगला
पतंग-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष, बक्कम, (स्त्री०) हवा में ऊपर उड़ानेवाला एक खिलौना जो बांस की तीलियों के ढांचे पर कागज चिपका कर बनाया जाता है, कनकैया, गुड्डी, देखो पतङ्ग। **पतंगछरी**-(हिं०स्त्री०) पिशुन, मनुष्य। **पतंगबाज**-(हिं०पुं०) पतंग उड़ाने वाला, पतंग उड़ाने का व्यसनी। **पतंगबाजी**-(हिं० स्त्री०) पतंग उड़ाने की कला।
पतंगम-(हिं०पुं०) पक्षी, फतिंगा।
पतंगसुत-(हिं०पुं०) देखो पतङ्गसुत।
पतंगा-(हिं०पुं०) फतिंगा, एक प्रकार का परदार कीड़ा, स्फुलिंग, चिनगारी, दीपक की बत्ती का वह अंश जो जल कर गिर पड़ता है, फूल, गुल।
पत-(हिं०स्त्री०) लज्जा, प्रतिष्ठा, (पुं०) पति, स्वामी; **पत उतारना**-अपमान करना; **पतपानी**-मान प्रतिष्ठा; **पत रखना**-प्रतिष्ठा बचाना।
पतई-(हिं०स्त्री०) पत्र, पत्ती।
पतखोवन-(हिं०पुं०) ऐसा कार्य करने वाला जिससे अपनी या दूसरे का

अपमान हो।

पतंग-(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया।

पतङ्ग-(सं० पुं०) पक्षी चिड़िया, सूर्य, फतिंगा, टिड्डी, एक प्रकार का धान, चिनगारी, एक गन्धर्व का नाम, जल महुआ, शरीर, नाव, एक पर्वत का नाम, पारा, एक प्रकार का चन्दन, बाण, अग्नि, घोड़ा, पिशाच, मक्खी, कृष्ण का एक नाम, प्रजापति के एक पुत्र का नाम। **पतङ्गम**-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, शलभ, टिड्डी। **पतङ्गिका**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मधुमक्खी। **पतङ्गी**-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया। **पतङ्गेन्द्र**-(सं०पुं०) गरुड़।

पतझड़, पतझर, पतझार-(हिं०स्त्री०) वह ऋतु जिसमें वृक्षों की पत्तियां झड़ जाती हैं, माघ और फागुन का महीना, अवनति काल, नाश का समय।

पतञ्चिका-(सं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।

पतञ्जलि-(सं०पुं०)योगशास्त्र के प्रणेता, पाणिनिके महाभाष्य के प्रणेता।

पतत प्रकर्ष-(सं० पुं०) काव्य में एक प्रकार का रस दोष।

पतत्र-(सं० नपुं०) पक्ष, पंख, डैना, वाहन, सवारी। **पतत्रि**-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया। **पतत्रि केतन**-(सं० पुं०) गरुड़ध्वज, विष्णु। **पतत्री**-(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया। **पतत्रिराज**-(सं०पुं०) पक्षिराज, गरुड़।

पतद्भीरु-(सं०पुं०) श्येन पक्षी, बाज़।

पतन-(सं०नपुं०) गिरने या नीचे आने का भाव, गिरना, नीचे धँसने की क्रिया, अवनति, अधोगति, नाश, मृत्यु, पाप, जातिच्युति, उड़ान, किसी नक्षत्र का अक्षांश, (वि०) गिरता हुआ, उड़ने वाला या उड़ता हुआ। **पतनशील**-(सं०वि०) जिसका पतन निश्चित हो, गिरने वाला।

पतना-(हिं०पुं०) योनि का किनारा।

पतनारा-(हिं०पुं०) परनाला, मोरी।

पतनीय-(सं०वि०) पतित होने वाला, गिरने वाला, (नपुं०) पतित करने वाला पाप।

पतनोन्मुख-(सं०वि०) जिसका पतन, अधोगति या विनाश समीप आता हो, जो गिरना चाहता है।

पतपानी-(हिं० पुं०) प्रतिष्ठा, मान, लाज।

पतम-(सं०पुं०) चन्द्रमा, पक्षी, चिड़िया, फतिंगा।

पतयालु, पतयिष्णु-(सं०वि०) देखो पतनशील।

पतर-(हिं०वि०) पतला, कृश, (पुं०) पत्तल, पत्ता।

पतरा-(हिं० पुं०) पत्तल, सरसों का पत्ता, (वि०) पतला। पतराई-पतलापन। **पतरी**-(हिं० स्त्री०) पत्तल।

पतरू-(सं०वि०) पतनशील, गिरने वाला।

पतला-(हिं०वि०) कृश, जो मोटा न हो, जिसका दल मोटा न हो, झीना, हलका, अधिक तरल, अशक्त, असमर्थ, हीन; **पतला पड़ना**-आपत्ति में पड़ना; **पतला हाल**-दुर्दशा; **पतलाई, पतलापन**-(हिं०) पतला होने का भाव।

पतली-(हिं० स्त्री०) द्यूत, जुआ।

पतलून-(हिं०पुं०) वह पायजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और जो बटन से बंद किया जाता है।

पतलो-(हिं०स्त्री०) सरकंडा, सरपत।

पतवर-(हिं०क्रि०वि०) पंक्ति के क्रम से, बराबर से।

पतवा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मचान जिस पर बैठकर शिकार किया जाता है।

पतवार-(हिं०स्त्री०) नावका वह तिकोना अंग जो इसके पीछे की ओर लगा होता है जिसके द्वारा नाव मोड़ी और घुमाई जाती है, कर्ण, कन्हर।

पतवारी-(हिं०स्त्री०) ऊख का खेत।

पतवाल-(हिं०स्त्री०) देखो पतवार।

पतस-(हिं०स्त्री०) पक्षी।

पता-(हिं०पुं०) किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थानका ज्ञान करानेवाली वस्तु, लक्षण आदि जिसके द्वारा उसको पा सकें, अनुसन्धान, खोज, रहस्य, गूढ तत्व, जानकारी, चिट्ठी के पीठ पर लिखी हुए पते का शब्द; **पता ठिकाना**-किसी वस्तु का स्थान तथा परिचय; **पता निशान**-जिन बातों से कुछ जाना जा सके; **पते की बात**-भेद खोलने की बात।

पताई-(हिं० स्त्री०) सूख कर झड़ी हुई पौधे की पत्तियाँ।

पताका-(सं०स्त्री०) ध्वजा, झंडा, सौभाग्य, तीर चलाने में अंगुलियों की विशेष स्थिति, दस खर्व की संख्या, पिंगल के अनुसार किसी लधु गुरु वर्ण के छन्द अथवा छन्दों का स्थान जानने की रीति, वह डंडा जिसमें पताका पहिराई जाती है, नाटक मे वह स्थान जहाँ एक पात्र कोई बात सोच रहा हो और दूसरा पात्र आकर दूसरे विषय की कोई बात कहे जिससे उसके चिन्तागत विषय की घोषणा होती हो; **पताका उड़ना**-अधिकार हो जाना, प्रसिद्धि होना विजयी होना; **पताका गिराना**-हार जाना; **पताकिक, पताकी**-(सं० वि०) पताका युक्त, झंडी उठाने वाला; **पताकिनी**-(सं०स्त्री०) एक देवी का नाम, सेना।

पतार-(हिं०पुं०)देखो पताल,बन,जंगल।

पतारी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का जलपक्षी।

पताल-(हिं० पुं०) देखो पताल; **पताल आँवला**-(हिं० पुं०) एक प्रकार का पौधा जो औषधि में प्रयोग होता है; **पताल कुम्हड़ा**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली पौधा जिसकी बेल शकरकन्द की लता की तरह भूमि पर फैलती है और इसकी गाँठों में कन्द फूटते हैं; **पतालदंती**-(हिं०पुं०) वह हाथी जिसके दाँत नीचे की ओर झुक जाते हैं।

पतावर-(हिं० पुं०) पेड़ के सूखे पत्ते।

पतासी-(हिं० स्त्री०) बढ़इयों की छोटी रुखानी।

पतिंगा-(हिं०पुं०) फतिंगा।

पति-(सं०पुं०) मूल, गति, दूल्हा, स्त्री का विवाहित पुरुष, भर्ता, अधिपति, स्वामी, मालिक,प्रभु ईश्वर प्रतिष्ठा, मर्यादा, लज्जा।

पतियाना-(हिं० क्रि०) विश्वास करना, मानना।

पतिंवरा-(सं०स्त्री०) स्वयंवरा, जो स्त्री अपना पति स्वय चुन ले, काला जीरा

पतिआर-(हिं०पुं०) विश्वास।

पतिकामा-(सं०वि०) स्वामी को चाहने वाली स्त्री; **पतिघातिनी**-(सं०स्त्री०) पति को मारने वाली स्त्री।

पतित-(सं०वि०) चलित, गया हुआ, गलित,गिरा हुआ, नीतिभ्रष्ट,आचार च्युत, जाति बहिष्कृत, अति नीच, महापातकी, अधम; **पतित उधारन**-(हिं० वि०) पतित का उद्धार करने वाला ईश्वर, परमात्मा, ईश्वर का अवतार; **पतितता**-(सं०वि०) अधमता, नीचता, अपवित्रता;**पतितत्व**-(सं० पुं०) पतित होने का भाव;

पतितपावन-(सं०वि०) पापों को पवित्र करनेवाला ईश्वर; **पतित्व** (सं०नपुं०) स्वामीत्व, स्वामी होने का भाव।

पतित्वन-(सं०नपुं०) यौवन, जवानी।

पतिदेवता-(सं० स्त्री०) जिस स्त्री का आराध्य एक मात्र पति हो;**पतिदेवता**-(सं०स्त्री०) पतिव्रता स्त्री; **पतिधर्म**-(सं०पुं०) पति के प्रति स्त्री का धर्म; **पतिनी**-(हिं०स्त्री०)देखो पत्नी;**पतिया**-(हिं०स्त्री०) देखो पत्रिका।

पतियाना-(हिं० क्रि०) विश्वास करना, सच मानना।

पतिलोक-(सं० पुं०) पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता हो; **पतिवती**-(हिं० वि०) सौभाग्यवती, सधवा; **पतिवेदन**-(सं० पुं०) पति प्राप्त कराने वाले शिव; **पतिव्रत**-(सं०स्त्री०) पति में निष्ठा पूर्वक अनुराग; **पतिव्रता**-अपने स्वामी के प्रति अनन्य अनुराग करनेवाली तथा पति की सेवा करनेवाली स्त्री, सती, साध्वी।

पतीजन, पतीजना-(हिं०क्रि०) विश्वास करना, पतिआना।

पतीरा-(हिं०स्त्री०) पंक्ति, पाँति।

पतीरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चटाई।

पतील-(हिं० वि०) पतला।

पतीली-(हिं०स्त्री०) चौड़े मुँह की बटलोई, देगची।

पतुरिया-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी, व्यभिचारिणी स्त्री, छिनार औरत।

पतुली-(हिं०स्त्री०) कलाई में पहिरने का एक गहना।

पतेर-(हिं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, गर्त, गड्ढा।

पतोई-(हिं० स्त्री०) गुड़ बनाते समय खौलते रसमें से निकलने वाला फेन।

पतोखद-(हिं० स्त्री०) जड़ी बूटी की औषधि, खरबिरई।

पतोखा-(हिं० पुं०) पत्ते का बना हुआ पात्र, दोना, एक प्रकार का बगला; **पतोखी**-(हिं० स्त्री०) पत्तों का बना हुआ एक छोटा छाता, घोघी, एक पत्ते की बनी हुई दोनियाँ।

पतोह, पतोहू-(हिं० स्त्री०) पुत्र वधू, बेटे की स्त्री।

पतौआ-(हिं०पुं०) पत्र, पत्ता।

पत्त-(सं०पुं०) पाद, पैर, पाँव।

पत्तङ्ग-(सं० पुं०) रक्त चन्दन, बक्कम नाम की लकड़ी,एक प्रकारका धान।

पत्तन-(सं०नपुं०) नगर, मृदङ्ग।

पत्तर-(हिं० पुं०) किसी धातु को पीट कर तैयार किया हुआ पतला टुकड़ा, धातु की चद्दर; देखो पत्तला

पत्तरंग-(सं०नपुं०) लाल चन्दन,बक्कम

पत्तल-(हिं० स्त्री०) पत्तों को सींक से जोडकर बनाया हुआ पात्र जो थाली के काम में लाया जाता है, पत्तल में परोसी हुई भोजन सामग्री, परोसा, **एक पत्तल में खानेवाले**-जिनमें परस्पर खान पान और विवाह आदि का व्यवहार होता हो; **जिस पत्तल में खाना उसीमें छेद करना**-उपकार करनेवाले की हानि करना,कृतघ्नता दिखलाना।

पत्ता-(हिं०पुं०) पेड़ पौधे का टहनी से निकला हुआ हरे रंग का फैला हुआ अवयव, पर्ण पत्र, कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना, धातु की चद्दर, पत्तर, मोटे कागज़का चौकोर टुकड़ा, (वि०) बहुत हलका; **पत्ता खड़कना**-आशंका होना, खटका होना

पत्ति-(सं० पुं०) पैदल सिपाही, बीर, योद्धा, (स्त्री०) गति, चाल, प्राचीन काल की सेना का सबसे छोटा भाग जिसमें एक रथ,एक हाथी, तीन घोड़े और पांच पैदल सिपाही होते थे।

पत्तिक-(सं०पुं०) पदाति, पैदल सिपाही, प्राचीन काल की सेना का वह विभाग जिसमें दस घोड़े, दस हाथी, दस रथ और दस पैदल सिपाही होते थे-ऐसे सेना विभाग का अधिकारी, (वि०) पैदल चलने वाला।

पत्ती-(हिं० स्त्री०) छोटा पत्ता, भाग, हिस्सा, फूल की पंखड़ी या दल, भाग, पत्ती के आकार का लकड़ी, धातु आदि का टुकड़ा, पट्टी।

पत्तीदार-(हिं० पुं०) साझीदार, हिस्सेदार। **पत्तूर**-(सं० पुं०) जल पिप्पली, पाकड़ का वृक्ष, शमी का पेड़। **पत्य**-(हिं० पुं०) देखो पथ्य। **पत्थर**-(हिं० पुं०) पृथ्वी तल का कड़ा खण्ड या पिण्ड, सड़क की नाप बतलाने वाला भूमि में गड़ा हुआ पत्थर, रत्न, बिनौला, ओला, बिलकुल नहीं, कुछ नहीं, पत्थर की तरह कठोर तथा भारी अयोग्य वस्तु; **पत्थर का कलेजा**-करुणा तथा दया रहित हृदय; **पत्थर की छाती**-कठोर हृदय; **पत्थर की लकीर**-सर्वदा बनी रहने वाली वस्तु; **पत्थर चटाना**-पत्थर पर घिस कर शस्त्र चोखा करना; **पत्थर तले हाथ दबना**-ऐसे संकट में पड़ना जहाँ से छुटकारा कठिन हो; **पत्थर तले से हाथ निकालना**-संकट से छुटकारा पाना; **पत्थर पर दूब जमना**-असंभव घटना का होना; **पत्थर पसीजना**-अत्यन्त कठोर हृदय के मनुष्य में दया उत्पन्न होना; **पत्थर पर सिर पटकना**-असंभव बात के लिये उद्योग करना; **पत्थर पड़ना**-नष्ट होना; **पत्थर पानी**-आंधी का समय, अंधड़। **पत्थर कला**-(हिं० पुं०) पुरानी चाल की बन्दूक जिसमें बारूद सुलगाने के लिये चकमक पत्थर लगा रहता था; **पत्थर चटा**-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास, एक प्रकार का सर्प जो पत्थर चाटता है, एक प्रकार की मछली जो समुद्र के चट्टानों में चिपटी रहती है, (वि०) कृपण कंजूस जो घरके बाहर न निकलता हो, सर्वदा घरमें रहने वाला। **पत्थर चूर**-(हिं० पुं०) एक प्रकार का पौधा। **पत्थर फोड़**-(हिं० पुं०) एक प्रकार की वनस्पति जो पत्थरों की सन्द में उत्पन्न होती है। **पत्थर फोड़ा**-(हिं० पुं०) पत्थर तोड़ने का उद्यम करने वाला, **पत्थर बाज**-(हिं० पुं०) जो पत्थर फेंक कर किसी को मारता हो, ढेलवाह। **पत्थरबाजी**-(हिं० स्त्री०) पत्थर फेंकने की क्रिया, ढेलवाही। **पत्थल**-(हिं० पुं०) देखो पत्थर।

पत्नी-(सं० स्त्री०) वेद विधान के अनुसार विवाहिता स्त्री, भार्या, जाया, दारा, सधर्मिणी। **पत्नीत्व**-(सं० नपुं०) पत्नी का भाव या धर्म। **पत्नीवत्**-(सं० वि०) स्त्री की तरह, पत्नी के समान। **पत्नीव्रत**-(सं० पुं०) अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री के साथ गमन न करने का संकल्प या नियम।

पत्य-(सं० नपुं०) पति का भाव-यथा-सेनापत्य।

पत्याना-(हिं० क्रि०) देखो पतिआना। **पत्यारा**-(हिं० पुं०) देखो पतिआरा। **पत्यारी**-(हिं० स्त्री०) पंक्ति, पाँति।

पत्योरा-(हिं० पुं०) एक प्रकार की घी या तेल में बनाई हुई पत्तों की पकौड़ी। **पत्र**-(सं०नपुं०) पत्ता, तेजपत्ता, चिड़ियों का पर, तीर में लगा हुआ पर, वाहन, पत्री, चिट्ठी, धातु की चद्दर, लिखा हुआ कागज, पट्टा, समाचार पत्र, पृष्ठ। **पत्रक**-(सं० नपुं०) वृक्ष का पत्ता, तेजपत्ता, पत्तों की लड़ी, पलास का वृक्ष।

पत्रकार-(हिं० पुं०) समाचारपत्र का संपादक। **पत्रकृच्छ्**-(सं० पुं०) वह व्रत जिसमें पत्तों का काढ़ा पीकर निर्वाह किया जाता है। **पत्रगुप्त**-(सं० पुं०) त्रिधारा सेंहुड़। **पत्राङ्ग**-(सं० नपुं०) लाल चन्दन, बक्कम। **पत्रज**-(सं०पुं०) तेजपत्र, तेजपात। **पत्रजासव**-(सं०पुं०) परवल और ताड़ के पत्तों से बनाई हुई मदिरा। **पत्रद्रुम**-(सं० पुं०) तालवृक्ष, ताड़ का पेड़। **पत्रपरशु**-(सं० पुं०) सोनार या लोहार की छेनी। **पत्रपाल**-(सं० पुं०) लंबा छुरा या कटार। **पत्रपाली**-(सं० स्त्री०) कर्तनी, कैंची, वाण का पिछला भाग। **पत्रपुष्प**-(सं० पुं०) लाल तुलसी, छोटा उपहार या भेंट। **पत्रपुष्पक**-(सं० पुं०) भूर्जपत्र, भोजपत्र। **पत्रपुष्पा**-(सं० स्त्री०) छोटी पत्ती की तुलसी। **पत्रबन्ध**-(सं० पुं०) फलों और पत्तों की सजावट। **पत्रबाल**-(सं० पुं०) क्षेपणी, नावका डाँड़ा। **पत्रभङ्ग**-(सं० पुं०) वे चित्र और रेखायें जो स्त्रियाँ सुन्दरता बढ़ाने के लिये स्तन, कपोल आदि पर बनाती हैं। **पत्रमंजरी**-(सं० स्त्री०) पत्ते का अगला भाग। **पत्रमाल**-(सं० पुं०) बेंत का पौधा। **पत्रमाला**-(सं० स्त्री०) पत्तों की बनी हुई माला। **पत्रयौवन**-(सं० नपुं०) नया पत्ता, कोंपल। **पत्ररथ**-(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया। **पत्रलता**-(सं० स्त्री०) वह लता जिसमें प्रायः पत्ते ही पत्ते हों। **पत्रवल्ली**-(सं० स्त्री०) रुद्रजटा, पान। **पत्रबाज**-(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, बाण। **पत्रवाह पत्रबाहक**-(सं० पुं०) बाण, तीर, चिड़िया, चिट्ठीरसा, हरकारा (वि०) चिट्ठी लिखने वाला।

पत्रविष-(सं०नपुं०) पत्तों में से निकला हुआ विष। **पत्रवेष्ट**-(सं० पुं०) कान में पहिरने का एक आभूषण, करनफूल। **पत्रव्यवहार**-(सं० पुं०) चिट्ठी लिखने और उत्तर पाने की क्रिया। **पत्रशाक**-(सं० पुं०) वह पौधा जिसके पत्तों का शाक बनाकर खाया जाता है।

पत्रशिरा-(सं० स्त्री०) पत्तों की नस। **पत्रश्रेणी**-(सं० स्त्री०) देखो पत्रावली। **पत्रश्रेष्ठ**-(सं०पुं०) बिल्वपत्र, बेलपत्र। **पत्रा**-(हिं० पुं०) तिथिपत्र, जन्त्री, पंचाङ्ग, पन्ना, पृष्ठ। **पत्राख्य**-(सं०नपुं०) तेजपत्ता, तालीसपत्र। **पत्राङ्ग**-(सं० नपुं०) लाल चन्दन, बक्कम, भोजपत्र, कमलगट्टा। **पत्रांजन**-(सं० नपुं०) मसी, काली स्याही। **पत्रावलि, पत्रावली**-(सं० स्त्री०) देखो पत्रभङ्ग, पत्तों की पंक्ति।

पत्रिका-(सं० स्त्री०) चिट्ठी पत्री, कोई छोटा लेख, समाचार पत्र, कोई सामयिक पत्र या पुस्तक, एक प्रकार का कपूर।

पत्रिन्-(सं० पुं०) वाण, तीर, चिड़िया, श्येन, बाज पक्षी, ताड़ का पेड़, (वि०) वह जिसमें पत्ते हों।

पत्रिणी-(सं०स्त्री०) नया अंकुर, कोंपल। **पत्रिवाह**-(सं०पुं०) हरकारा, चिट्ठीरसा। **पत्री**-(सं० स्त्री०) लिपि, पत्र, चिट्ठी, दौने का पेड़, ताड़ का पेड़, खैर का वृक्ष, (हिं० स्त्री०) हाथ में पहिरने का एक आभूषण।

पथ-(सं० पुं०) पन्थ, मार्ग, व्यवहार आदि की रीति, विधान। (हिं० पुं०) पथ्य, रोग के लिये उपयुक्त हलका आहार। **पथक**-(सं० पुं०) प्रान्त, मार्ग। **पथकल्पना**-(सं० स्त्री०) जादू का खेल, इन्द्रजाल। **पथगामी, पथचारी**-(हिं० पुं०) पथिक, बटोही।

पथदर्शक-(सं० पुं०) मार्गदर्शक।

पथनार-(हिं० स्त्री०) गोबर के उपले या गोहरे बनाने का काम, पीटने या मारने की क्रिया।

पथप्रदर्शक-(सं० पुं०) देखो पथदर्शक। **पथरकला**-(हिं० पुं०) पुराने ढंग की कड़ाबीन या बन्दूक जिसकी बारूद में चकमक पत्थर से आग उत्पन्न की जाती थी। **पथरचटा**-(हिं० पुं०) एक प्रकार की औषधि।

पथरना-(हिं० क्रि०) शस्त्र को पत्थर पर रगड़ कर पैना करना। **पथराना**-(हिं० क्रि०) सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना, सजीव न रहना, स्तब्ध या जड़ होना।

पथरी-(हिं० स्त्री०) अश्मरी नामक रोग, मूत्राशय अथवा गुर्दे में पत्थर की तरह के छोटे बड़े टुकड़े पड़ जाने का रोग, कटोरे के आकार का पत्थर का बना हुआ पात्र, चकमक पत्थर, वह पत्थर जिस पर लोहे की चोट डालने से आग निकलती है, कुरुन पत्थर, एक प्रकार की मछली। **पथरीला**-(हिं० वि०) पत्थरों से युक्त, जिसमें पत्थर हो। **पथरौटी**-(हिं०स्त्री०) पत्थर की कटोरी, पथरी।

पथिक-(सं० पुं०) मार्ग चलने वाला, यात्री; **पथिकशाला**-सराय, यात्रियों के ठहरने की धर्मशाला।

पथिका-(सं०स्त्री०) काला द्राक्षा, मुनक्का। **पथिकार**-(सं०वि०) मार्ग बनाने वाला। **पथिकाश्रय**-(सं०पुं०) पथिकों के ठहरने का स्थान।

पथिन्-(सं० पुं०) पथ, मार्ग, पथ चलने वाला।

पथिल-(सं० पुं०) बोझ ढोने वाला; निष्ठुर, क्रूर।

पथी-(हिं० पुं०) पथिक, यात्री, मार्ग चलने वाला।

पथु-(हिं० पुं०) पथ, मार्ग। **पथेया**-(हिं० पुं०) देखो पाथेय। **पथेरा**-(हिं० पुं०) ईंट पाथने वाला, कुम्हार।

पथोरा-(हिं०पुं०) गोबर पाथनेका स्थान **पथ्य**-(सं०पुं०) हितकर चिकित्सा, वह हलका और शीघ्र से पचने वाला भोजन जो रोगी के लिये लाभकारक हो, सेंधा नमक, छोटी हर्रे का पेड़, हित, कल्याण, मंगल; **पथ्य से रहना**-संयम से रहना। **पथ्यकरी**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का लाल धान। **पथ्यका**-(सं०स्त्री०) मेथिका, मेथी। **पथ्यभोजन**-(सं० पुं०) लाभ कारक आहार।

पथ्यशाक-(सं० पुं०) चौलाई का साग। **पथ्या**-(सं० स्त्री०) हरितकी, हर्रे, आर्या छन्द का एक भेद। **पथ्यापथ्य**-(सं० नपुं०) रोग के हित और अहित कारक द्रव्य। **पथ्यावक्त्र**-(सं० नपुं०) माया वृत्त का एक भेद।

पद-(सं० नपुं०) पैर, पाँव, वस्तु, शब्द, पैर का चिह्न, प्रदेश, व्यवसाय, काम, रक्षा, स्थान, चिह्न, किरण, श्लोक या किसी छन्द का चौथा भाग, जूता, छाता, वस्त्र, पात्र, आभूषण आदि जो ब्राह्मणों को दान करके दिया जाता है, छ अंगुल का परिमाण, ऋग्वेद या यजुर्वेद का पद पाठ, विभक्ति युक्त शब्द या धातु, दर्जा, मोक्ष, निर्माण, गीत, भजन।

पदक-(सं० पुं०) एक प्रकार का आभूषण जिसमें किसी देवता के पैरों का चिह्न, सोने चाँदी अथवा अन्य धातु का बना हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा जो कोई विशिष्ट या अद्भुत कार्य करने के उपलक्ष में किसी व्यक्ति या समाज को दिया जाता है, यह प्रशंसा सूचक तथा योग्यता दिखलाने वाला होता है, तमगा।

पदग-(सं०पुं०) पैदल चलनेवाला, प्यादा। **पदगोत्र**-(सं० नपुं०) भारद्वाज आदि चार ऋषियों का गोत्र।

पदचतुरूर्ध्व-(सं० पुं०) विषम वृत्त का एक भेद।

पदचर-(सं० पुं०) पैदल, प्यादा। **पदचारी**-(सं० वि०) पैदल चलनेवाला। **पदचिह्न**-(सं० पुं०) वह चिह्न जो चलते समय भूमि पर बन जाता है।

पदच्छेद-(सं०पुं०) सन्धि और समास युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पदों को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग अलग करना।

पदच्युत-(सं०वि०) अपने पद या स्थान से हटाया या गिराया हुआ; **पदच्युति**-(सं०स्त्री०) अपने पद से हटने या गिरने की क्रिया।

पदज-(सं० पुं०) पैर की अंगुली, शूद्र

(वि०) जो पैर से उत्पन्न हो।
पदज्ञ-(स०वि०) मार्ग जानने वाला।
पदतल-(सं०पुं०) पैर का तलवा।
पदता-(सं०स्त्री०) पदत्व, पद का धर्म।
पदत्याग-(सं०पुं०) अपने पद को छोड़ने की क्रिया।
पदत्राण-(सं०पुं०) पैरों की रक्षा करने वाला, जूता; **पदत्रान**-(हिं० पुं०) देखो पदत्राण।
पदत्री-(स०पुं०) पक्षी, चिड़िया।
पददलित-(सं० वि०) पैरों से कुचला हुआ, दबा कर हीन किया हुआ।
पददारिका-(सं० स्त्री०) पैर का एक रोग, बेवाय।
पदन्यास-(सं०पुं०)गमन करना, चलना, पैर रखने की एक मुद्रा, गोखरू, पद रचने का काम।
पदपंक्ति-(सं०स्त्री०) पदश्रेणी, पैर का चिह्न; **पदपद्धति**-(सं०स्त्री०) पैर का चिह्न।
पदपटली-(स० स्त्री०) एक प्रकार का नाच; **पदबन्ध**-(सं०पु०) पद चिह्न।
पदभंजिका-(स०स्त्री०) पंजिका, टिप्पणी
पदम-(हिं० पु०) बदाम की जाति का एक जंगली पेड़; **पदमचल**-(हिं०पुं०) रेवन्द चीनी; **पदमनाभ**-(हिं० पुं०) पद्मनाभ, विष्णु, सूर्य; **पदमाकर**-(हिं० पुं०) जलाशय, तालाब; **पद-माला**-(स०स्त्री०) पदश्रेणी, पैरों का चिह्न; **पदमूल**-(सं० पुं०) पैर का तलवा; **पदमैत्री**-(सं०स्त्री०) काव्य में अनुप्रास; **पदयोजना**-(सं०स्त्री०)कविता बनाने के लिये शब्दों को मिलाना।
पदर-(हिं० पुं०) डयोढीदारों के बैठने का स्थान।
पदरथी-(सं०पुं०) जूता, खड़ाऊ।
पदरिपु-(हिं०पुं०) कण्टक, कांटा।
पदवाद्य-(सं० पु०) प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल।
पदवाना-(हिं० क्रि०) पदाने का काम दूसरे से कराना।
पदवाय-(स०वि०) मार्ग दिखलाने वाला
पदवि-(सं० स्त्री०) पद्धति, परिपाटी, पन्थ, उपाधि, नियोग।
पदविग्रह-(सं०पुं०)समास, समास वाक्य
पदविच्छेद-(सं०पुं०) पाद का विच्छेद, पदों को अलग अलग करने का काम
पदवी-(सं० स्त्री०) पद्धति, परिपाटी, विधि, उपाधि।
पदसमूह-(स०पुं०) कविता का चरण, पदपाठ।
पदस्थ-(सं०वि०)जो पैरों के बल खड़ा हो
पदाक-(सं०पु०) सर्प, सांप।
पदांक-(सं० पुं०) पैरों का चिह्न जो चलने में भूमि पर बन जाता है।
पदाति, पदातिक-(सं० पु०) पैदल सिपाही, प्यादा, (वि०) पैदल चलने वाला।
पदादिका-(हिं०पुं०) पैदल सेना।
पदाधिकारी-(सं० पुं०) वह जो किसी पद पर नियुक्त हो, अधिकारी।
पदाना-(हिं० क्रि०) पदाने का काम दूसरे से कराना, बहुत दिक करना, छकाना।
पदानुराग-(सं०पु०)देव चरण में भक्ति
पदान्त-(सं० पुं०) पद का शेष, पद का अन्त; **पदान्तर**-(सं०नपु०) स्थानान्तर, दूसरा पद।
पदार-(स०पु०) पाद धूलि, पैर की धूल
पदारथ-(हिं०पुं०) देखो पदार्थ।
पदारविन्द-(स० नपुं०) पद्मरूपी पैर।
पदार्घ्य-(स० पु०) वह जल जो किसी अतिथि या पूज्य के पैर धोने के लिये दिया जाय।
पदार्थ-(सं० पुं०) धर्म, सत्व, वस्तु, पुराण के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, वैद्यक के अनुसार रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति, पद का अर्थ, शब्द का विषय, सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति, विकृति, और अनुभव ये चार प्रकार के पदार्थ माने गये हैं, आधुनिक नैयायिकों के मत से द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ हैं; **पदार्थवाद**-(सं०पुं०) वह सिद्धान्त जिसमें भौतिक पदार्थ ही सब कुछ माने जाते हैं और ईश्वर तथा आत्मा का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया जाता।
पदार्थ विज्ञान-(सं०पु०) विज्ञान शास्त्र, वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान प्राप्त होता है; **पदार्थ विद्या**-(स० स्त्री०) वह शास्त्र जिसमे पदार्थों के गुणा-गुण का विचार करते हुए उनके कार्य आदि का वर्णन किया रहता हैं।
पदार्पण-(सं०पुं०) किसी स्थान में पैर रखने या जाने की किया (इस शब्द का प्रयोग केवल माननीय व्यक्ति के लिये किया जाता है)।
पदावनत-(सं०वि०) विनीत,नम्र,जो पैरों पर झुका हो, जो प्रणाम करता हो।
पदावली-(स०स्त्री०) पद समूह, वाक्यों की श्रेणी, भजनों का संग्रह।
पदाश्रित-(सं० वि०) शरण में आया हुआ, जो आश्रय में रहता हो।
पदास-(हिं० स्त्री०) पादने का भाव, पादने में प्रवृत्ति।
पदासन-(सं० नपुं०) पादपीठ, जिस पर पैर रक्खा जाय।
पदासा-(हिं० पुं०) जिसकी पादने की इच्छा हो।
पदिक-(सं० पुं०) पदाति, पैदल सेना, गले में पहिरने का एक प्रकार का गहना।
पदी-(हिं०पुं०) पैदल, प्यादा।
पदु-(हिं०पु०) पद अधिकार।
पदुम-(हिं०पु०) देखो पद्म; घोड़े का एक चिह्न; **पदुमिनी**-(हिं०वि०) देखो पद्मिनी।
पदोड़ा-(हिं०पुं०)जो बहुत पादता हो, डरपोक, कायर।
पदोपक-(सं० पुं०) पैर धोने का जल, चरणामृत।
पद्धटिका-(सं० पुं०) एक मातृकछन्द, पद्धड़ी।
पद्धति-(सं० स्त्री०) पथ, पंक्ति, वह ग्रन्थ जिसमें किसी दूसरी पुस्तक का तात्पर्य समझाया जाता है, पदवी, प्रणाली, रीति, ढंग, परिपाटी, कार्यप्रणाली, विधि, विधान; कर्म या संस्कार की विधि। **पद्धरि**-(हिं०पुं०) देखो पद्धटिका।
पद्म-(सं०पुं०, नपुं०) कमल का फूल या पौधा, हाथी के माथे या सूंड़ पर बनाये हुए चित्र, सेना का पद्मव्यूह, पुराण के अनुसार एक कल्प का नाम, सीसक, सीसा, कुबेर की नव निधियों में से एक, पुष्करमूल, कुट नाम की औषधि, गणित में सोलहवें स्थान की संख्या, एक वर्णवृत्त का नाम, साँप के फन पर के चित्रित चिह्न, शरीर पर का सफ़ेद दाग, एक प्रकार का गले का गहना, विष्णु का एक आयुध, सामुद्रिक के अनुसार पैर का एक विशेष चिह्न, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम, एक प्रकार का सर्प, तन्त्र के अनुसार शरीर के भीतरी भाग का एक कल्पित कमल, बलदेव का एक नाम, सोलह प्रकार के रतिबन्ध में से एक, एक नरक का नाम; एक प्राचीन नगर का नाम।
पद्मक-(सं०नपुं०) कुट नाम की औषधि, सफ़ेद कोढ़; **पद्मकन्द**-(सं०पुं०) कमल की जड़, भिस्सा, मसीड़; **पद्मकर**-(स० पुं०) पद्ममणि, विष्णु; **पद्म-किञ्जल्क**-(सं०पुं०) कमल का केसर; **पद्मकीट**-(सं० पुं०) एक प्रकार का विषैला कीड़ा; **पद्मकेतन**-(स० पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम। **पद्म-केतु**-(सं०पुं०) मृणाल के आकार का एक पुच्छल तारा; **पद्मकेशर**-(सं०पुं०) कमल का केशर; **पद्मकोष**-(सं०पु०) कमल के बीच का छत्ता; **पद्मगर्भ**-(सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, शिव, महादेव, कमल का भीतरी भाग; **पद्मगुण**-(स० स्त्री०) लक्ष्मी; **पद्मगृहा**-(सं०स्त्री०) पद्मालय, लक्ष्मी का एक नाम; **पद्मचारिणी**-(सं०स्त्री०) शमी वृक्ष, हलदी, लाख, वृद्धि, उन्नति; **पद्मज**-(स० पुं०) चतुर्मुख ब्रह्मा; **पद्मतन्तु**-(सं० पुं०) मृणाल, कमल की डंडी; **पद्मदर्शन**-(स०पु०) श्रीवास, लोहबान; **पद्मनाभ**-(स०पुं०) विष्णु, महादेव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, एक सर्प का नाम, एक स्तम्भन शस्त्र; **पद्म-नाभि**-(सं० पुं०) पद्मनाभ, विष्णु; **पद्मनाल**-(सं०नपुं०) मृणाल, कमलदण्ड; **पद्मनिधि**-(सं०स्त्री०) कुबेर की नवनिधियों में से एक; **पद्मपत्र**-(स० नपुं०) पुष्कर मूल, कमलदल; **पद्मपाणि**-(सं० पुं०) ब्रह्मा, बुद्ध की एक मूर्ति, सूर्य; **पद्मपाद**-(स०पु०) शंकराचार्य के एक प्रधान शिष्य का नाम; **पद्मपुष्प**-(सं० पुं०) कनेर का पेड़, एक प्रकार की चिड़िया।
पद्मप्रिया-(सं० स्त्री०) जगत्कारु मुनि की पत्नी, गायत्री रूप महादेवी।
पद्मबन्ध-(स० पुं०) एक प्रकार का चित्र काव्य जिसमें अक्षर इस प्रकार लिखे जाते हैं कि कमल का रूप बन जाता है; **पद्मबन्धु**-(स० पुं०) सूर्य, भ्रमर, भौंरा; **पद्मभास, पद्मभू**-(सं०पुं०) विष्णु; **पद्ममय**-(सं०वि०) पद्मयुक्त, पद्मनिर्मित; **पद्ममालिनी**-(सं०स्त्री०) गंगा; **पद्ममाली**-(सं०पुं०) एक राक्षस का नाम; **पद्ममुख**-(सं० वि०) कमल के समान मुख वाला; **पद्ममुखी**-(स० स्त्री०) भटकटैया, धमासा; **पद्ममुद्रा**-(सं० पुं०) एक तान्त्रिक मुद्रा; **पद्मयोनि**-(सं०पुं०) ब्रह्मा, बुद्ध का एक नाम;
पद्मरज-(स०पु०) कमल केशर; **पद्म-राग**-(सं०पु०) लाल रंग का असली मानिक; **पद्मरेखा**-(सं०स्त्री०) सामुद्रिक के अनुसार हथेली में की एक शुभ रेखा; **पद्मरेणु**-(सं०पुं०) पद्म केसर; **पद्मलांछन**-(सं० पुं०) ब्रह्मा, सूर्य, कुबेर, बुद्ध, (स्त्री०) तारा, लक्ष्मी, सरस्वती; **पद्मवासा**-(सं० स्त्री०) लक्ष्मी; **पद्मबीज**-(सं०नपुं०) कमल बीज, कमल गट्टा; **पद्मबीजाभ**-(सं० नपुं०) मखान्न फल, मखाना;
पद्मव्यूह-(सं० पुं०) एक प्रकार की समाधि, प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये सेना स्थापित करने की एक विधि इसमें सम्पूर्ण सेना कमल के आकार की हो जाती थी; **पद्मशायिनी**-(सं० स्त्री०) एक जलचर पक्षि; **पद्मसमासन, पद्मसम्भव**-(सं०पुं०) ब्रह्मा; **पद्मसूत्र**-(सं० नपुं०) कमल के फूलों की माला; **पद्मस्नुषा**-(सं० स्त्री०) गंगा, दुर्गा; **पद्महास**-(स०पु०) विष्णु।
पद्मा-(सं० स्त्री०) लक्ष्मी, मनसादेवी, कमल दण्ड, मजीठ, भादो सुदी एकादशी, कुसुम्भका फूल, लवंग, गेंदे का वृक्ष; **पद्माकर**-(स० पुं०) बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल उत्पन्न होते हैं; **पद्माक्ष**-(स० पुं०) कमलगट्टा, विष्णु; **पद्माख**-(हिं०पुं०) देखो पद्म; **पद्माधीश**-(स० पुं०) विष्णु; **पद्मान्तर**-(सं०नपु०) कमल के पत्ते; **पद्मालय**-(सं०पुं०) ब्रह्मा; **पद्मालया**-(सं० स्त्री०) लक्ष्मी, गंगा, लवंग; **पद्मावती**-(सं० स्त्री०) मनसा देवी, पद्मादेवी, गेंदे का पौधा,

पटना नगर का प्राचीन नाम, लक्ष्मी, स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम, युधिष्ठिर की एक रानी का नाम; **पद्मासन**-(सं०नपुं०) ब्रह्मा, शिव, सूर्य, मैथुन करने का एक आसन, योग साधन का एक आसन जिसमें बायें जाँघ पर दाहिनी जाँघ रक्खी जाती है, और छाती पर अंगूठा रखकर नासिका का अग्रभाग देखा जाता है, पद्म के आकार का धातुनिर्मित आसन।

पद्मिनी-(सं०स्त्री०) पद्मलता, कमलिनी, कोक शास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वश्रेष्ठ, सरोवर, तालाब, पद्म, कमल, कमलदण्ड, हथिनी, भीमसेन की प्रधान रानी का नाम, लक्ष्मी।

पद्मेशय-(हिं०पुं०) विष्णु।

पद्मोत्तम, पद्मोत्तर-(सं०पुं०) कुसुम्भ का फूल।

पद्मोद्भव-(सं०पुं०) ब्रह्मा। **पद्मोद्भवा**-(सं०स्त्री०) मनसा देवी।

पद्य-(सं०नपुं०) कविता, काव्य, श्लोक, पिंगल के नियमों के अनुसार चार चरण वाला छन्द; पद्य दो प्रकार का होता है, जिसके अक्षर समान होते है उसको वृत्त तथा जो मात्रा के अनुसार होता है उसको जाति कहते हैं; वह कीचड़ जो सूखा न हो, शुद्र; (वि०) पैरों से संबंध रखने वाला, जिसमें कविता के पद हों।

पद्यमय-(सं०वि०) पद्य स्वरूप।

पद्या-(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा, मार्ग, शर्करा, गुड़। **पद्यात्मक**-(सं०वि०) जो पद्यमय या छंदबद्ध हो।

पद्रथ-(सं०पुं०) पैदल चलने वाला।

पद्ध-(सं०पुं०) भूलोक; रथ, मार्ग।

पधरना-(हिं०क्रि०) किसी प्रतिष्ठित या पूज्य व्यक्ति का आगमन।

पधराना-(हिं०क्रि०) सम्मान पूर्वक ले जाना, किसी को आदर पूर्वक ले जाकर बैठाना, पधारने की क्रिया।

पधरावनी-(हिं०स्त्री०) आदर पूर्वक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को ले जाकर बैठाने की क्रिया, किसी देवता का स्थापन। **पधारना**-(हिं० क्रि०) चले जाना, आ पहुंचना, गमन करना, आना, चलना, प्रतिष्ठित करना, आदर पूर्वक बैठाना।

पनंग-(हिं०पुं०) सर्प, सांप।

पन-(हिं०पुं०) संकल्प, प्रतिज्ञा, आयु के चार भागों में से एक, ये चार विभाग, बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था है; (हिं०प्रत्य०) भाववाचक संज्ञा बनाने में प्रयोग होता है यथा-कड़ापन, लड़कपन। **पनकटा**-(हिं०पु०) वह मनुष्य जो खेतों में इधर उधर सिंचाई के लिये पानी ले जाता है।

पनकपड़ा-(हिं०पुं०) पानी से भिगाया हुआ लत्ता जो शरीर में कहीं पर कट जाने पर बाँधा जाता है।

पनकाल-(हिं०पुं०) अति वर्षा के कारण अकाल। **पनकुट्टी**-(हिं०स्त्री०) पान कूटने का छोटा खरल। **पनकौवा**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का जलपक्षी। **पनगनि**-(हिं०स्त्री०) सर्पिणी

पनगाचा-(हिं०पुं०) पानी से सींचा हुआ खेत। **पनघट**-(हिं०पुं०) पानी भरने का घाट, वह घाट जहाँ पर लोग पानी भरते हैं।

पनच-(हिं०स्त्री०) प्रत्यंचा; धनुष की डोरी, चिल्ला।

पनचक्की-(हिं०स्त्री०) पानी के वेग से चलाई जाने वाली चक्की या कल।

पनचोरा-(हिं०पुं०) वह पात्र जिसकी पेंदी चौड़ी और मुँह छोटा हो।

पनडब्बा-(हिं०पुं०) पान रखने का डब्बा

पनडुब्बा-(हिं०पुं०) पानी में गोता लगाने वाला पानी में गोता लगाकर मछली पकड़ने वाली चिड़िया, जलाशय में रहने वाला एक प्रकार का कल्पित प्रेत, मुरगाबी। **पनडुब्बी**-(हिं०स्त्री०) पानी में डुबकी लगाकर मछली पकड़ने वाली चिड़िया, एक प्रकार का छोटा जहाज़ जो पानी में डूबकर यन्त्र से चलता है,

पनपना-(हिं०क्रि०) पानी मिलने के कारण फिर से हरा हो जाना; रोग से मुक्त होकर स्वस्थ होना।

पनपनाहट-(हिं०स्त्री०) पनपन होने का शब्द।

पनपाना-(हिं०क्रि०) ऐसा कार्य करना जिससे कोई वस्तु पनपे।

पनफर-(सं०पुं०) फलित ज्योतिष के अनुसार लग्न से दूसरा, आठवां, पांचवां और ग्यारहवां स्थान।

पनबट्टा-(हिं०पुं०) पान के बीड़े रखने का छोटा डिब्बा।

पनबिछिया-(हिं०स्त्री०) डंक मारने वाला पानी का एक कीड़ा।

पनभरा-(हिं०पुं०) पानी भरने वाला, पनहरा।

पनलगवा-(हिं०पुं०) देखो पनकटा।

पनव-(हिं०पुं०) देखो प्रणव।

पनवां-(हिं०पुं०) हमेल का बीच का टुकड़ा

पनवाड़ी-(हिं०स्त्री०) पान का खेत, पान बेंचने वाला, तमोली।

पनवारा-(हिं०पुं०) पत्ती की बनी हुई पत्तल जिसपर रखकर लोग भोजन करते हैं, एक आदमी के खाने भर का पत्तल भर भोजन।

पनस-(सं०पुं०) कटहल। **पनसखिया**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का फूल

पनसतालिका, पनसलाका-(सं०) कटहल

पनसल्ला-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहां यात्रियों को पानी पिलाया जाता है, पनसाल, प्याऊ।

पनसाखा-(हिं०पुं०) एकप्रकारकी मसाल जिसमें तीन या पांच बत्तियां जलती है

पनसार-(हिं०पुं०) पानी से भली भाँति सींचने का काम।

पनसारी-(हिं०पुं०) देखो पंसारी।

पनसाल-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहां सर्व साधारण को पानी पिलाया जाता है. पौसरा, पानी की गहराई नापने की क्रिया।

पनसिका-(सं०स्त्री०) कान के भीतर फुनसी होने का रोग।

पनसी-(हिं०स्त्री०) कटहल का फल।

पनसुइया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी नाव जिसपर एकही खेने वाला दो डाँड़ा चला सकता है।

पनसूर-(हिं०पु०) एक प्रकार का बाजा

पनसेरी-(हिं०स्त्री०) पांच सेर की बाँट, पंसेरी।

पनसोई-(हिं०स्त्री०) देखो पनसुइया।

पनहड़ा-(हिं०पु०) तमोली का पानी रखने का पात्र।

पनहरा-(हिं०पुं०) पानी भरने वाला भृत्य, पनभरा, सोनार की पानी रखने की अथरी।

पनहा-(हिं०पुं०) कपड़े या भीत आदि की चौड़ाई, गूढ़ आशय, कर्म, चोरी का पता लगाने वाला, चुराई हुई वस्तु को लौटा देने के लिये दिया हुआ पुरस्कार।

पनहारा-(हिं०पुं०) वह जो पानी भरने का काम करता हो, पनभरा।

पनहिया-(हिं०स्त्री०) देखो पनही, जूता।

पनहियाभद्र-(हिं०पुं०) सिरपर जूतों की मार, सिर पर इतने जूते पड़े कि बाल उड़ जावें।

पनही-(हिं०स्त्री०) उपानह, जूता, जूती।

पना-(हिं०पु०) आम इमली आदि से बनाया हुआ एक प्रकार का शर्बत, प्रपानक, पन्ना।

पनाती-(हिं०पुं०) पुत्र अथवा कन्या का नाती, पोते अथवा नातीका लड़का।

पनारा, पनाला-(हिं०पुं०) देखो परनाला

पनासना-(हिं०क्रि०) पालन पोषण करना

पनिक-(हिं०पु०) जुलाहों का एक कैंची के आकार का अस्त्र।

पनिघट-(हिं०पुं०) देखो पनघट।

पनिच-(हिं०पुं०) देखो पनच।

पनियां-(हिं०वि०) पानी से उत्पन्न, पानी मिला हुआ, पानी में रहने वाला : **पनियां सोत**-तालाब या कुआँ जिसमें पानी का सोता निकला हो, बहुत गहरा।

पनियाला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का रंगीन कपड़ा, एक प्रकार का फल।

पनिसिगा-(हिं०पुं०) जलपीपल।

पनिहा-(हिं०वि०) पानी में रहने वाला जिसमें पानी मिला हो, जल संबंधी, (पुं०) जासूस।

पनिहार-(हिं०पुं०) देखो पनहर।

पनी-(हिं०पुं०) प्रतिज्ञा करने वाला पुरुष

पनीरी-(हिं०स्त्री०) वे छोटे पौधे जो एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में रोपे जाते हैं, बेहन की क्यारी

पनीला-(हिं०वि०) जल युक्त, जिसमें पानी मिला हो।

पनु-(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।

पनुआं-(हिं०पुं०) एक प्रकार का गुड़ का शर्बत, (वि०) फीका, जिसमें मिठास कम हो।

पनेथी-(हिं०स्त्री०) पानी मिला कर पोई हुई रोटी।

पनेहरा-(हिं०पुं०) देखो पनहरा।

पनैला-(हिं०पु०) गरम कपड़ों के नीचे अस्तर देने का चिकना गाढ़ा कपड़ा

पनौआ-(हिं०पुं०) पान के पत्तों की पकौड़ी। **पनौटी**-(हिं०स्त्री०) पान रखने की पिटारी, पानदान।

पन्थलिका-(सं०स्त्री०) पतली गली।

पन्न-(सं०वि०) गिरा हुआ, पड़ा हुआ, नष्ट, गत।

पनई-(हिं०वि०) पन्ने के रंग का, गहरे हरे रंग का।

पन्नग-(सं०पुं०) सर्प, साँप, पद्मकाष्ठ; (हिं०पुं०) पन्ना, मरकतमणि; **पन्नगकेशर**-(सं०पुं०) नाग, केसर का फूल। **पन्नगनाशक**-(सं०पुं०) गरुड़। **पन्नगपति**-(सं०पुं०) शेष नाग। **पन्नगारि, पन्नगाशन**-(सं०पुं०) गरुड़।

पन्नगी-(सं०स्त्री०) साँपिन, मनसा देवी

पन्ना-(हिं०पुं०) मरकत मणि, हरे रंग का एक रत्न, पृष्ठ, वरक़, पत्र।

पन्नी-(हिं०स्त्री०) रांगे या पीतल के बहुत पतले पत्र, सोनहला या रूपहला कागज़, बारुदकी एक तौल जो आधसेर के बराबर होती है, (पुं०) पठानों की एक जाति। **पन्नीसाज़**-(हिं०पुं०) पन्नी बनाने वाला।

पन्नीसाजी-(हिं०स्त्री०) पन्नी बनाने का काम।

पन्य-(सं०वि०) प्रशंसा करने योग्य।

पन्यारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सदा-बहार जंगली वृक्ष।

पन्हाना-(हिं०क्रि०) देखो पहिराना।

पन्हारा-(हिं०स्त्री०) गेंहू के खेत में होने वाला एक तृण।

पन्हैयां-(हिं०स्त्री०) देखो पनही।

पपटा-(हिं०पुं०) देखो पपड़ा, छिपकली

पपड़ा-(हिं०पु०) लकड़ी का पतला कुड़कीला, छिलका, चिप्पड़, रोटी के ऊपर का छिलका। **पपड़िया**-(हिं०वि०) पपड़ीदार, पपड़ी संबंधी, **पपड़िया कत्था**-सफ़ेद कत्था।

पपड़ियाना-(हिं०क्रि०) अत्यन्त सूख जाना, किसी वस्तु के परत का सूखकर सिकुड़ जाना।

पपड़ी-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु के ऊपर की परत जो सूखकर कड़ी हो गई हो; घाव के ऊपर की परत, खरंड, छोटा पापड़, एक प्रकार की मिठाई।

पपड़ीला-(हिं० वि०) जिसपर पपड़ी

जमी हो, पपड़ीदार।
पपनी, पपरी-(हिं०स्त्री०) पल्क के ऊपर के बाल, बरौनी।
पपहा-(हिं०पुं०) धान की उत्पत्ति को हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा, एक प्रकार का घुन।
पपी-(सं०पुं०) सूर्य, चन्द्रमा।
पपीहा-(हिं०पु० कीड़ा खाने वाला एक पक्षी जो वसन्त और वर्षाऋतु में बहुधा आम के वृक्षों पर बैठकर बड़े मीठे स्वर से गाता है, चातक; सितार में का लोहे का तार।
पपीता-(हिं०पुं०) रेंड़ की तरह का एक पौधा जिसका फल पकाकर खाया जाता है।
पपैया-(हिं०पुं०) आम का नया पौधा, अमोला।
पपोटन-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसके बाँधने से फोड़ा पक जाता है।
पपोटा-(हिं०पुं०) आँख के ऊपर का चमड़े का परदा, पलक।
पपोरना-(हिं०क्रि०) बाँह को ऐंठ कर उसको उभाड़ना; **पपोलना**-(हिं०क्रि०) चबाना, मुंह चलाना।
पबई-(हिं०स्त्री०) मैना की जाति का एक पक्षी।
पबारना-(हिं०क्रि०) फेक देना।
पबि-(हिं०पुं०) वज्र।
पब्बय-(हिं०पुं०) पर्वत, पहाड़।
पमार-(हिं०पुं०) अग्निकुल क्षत्रियों की एक शाखा, प्रमार, पवार।
पम्पा-(सं०स्त्री०) दक्षिण देश की एक नदी और उसके समीप का एक सरोवर जिसका उल्लेख महाभारत और रामायण में आया है।
पम्मन-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मोटी गेहूँ।
पयःकुण्ड-(सं०नपुं०) दूध या जल रखने का घड़ा; **पयःपान**-(सं०नपुं०) दुग्ध पान, दूध पीना; **पयः पालिनी**-(सं०स्त्री०) उशीर, खस; **पयः पेटी**-(सं०स्त्री०) नारिकेल, नारियल; **पयः प्रसाद**-(सं०पुं०) निर्मली का बीज।
पय-(सं०नपु०) जल, पानी, दूध, अन्न, रात्रि, रात; **पयद**-(हिं०पु०) मेघ; **पयधि**-(हिं०पु०) देखो पयोधि समुद्र;
पयना-(हिं०वि०) नुकीला, चोखा।
पयनिधि-(हिं०पुं०) देखो पयोनिधि; **पयस्वान्**-(हिं०वि०) पानी वाला; **पयस्विन्, पयस्विनी**-(सं०) नदी, दूध देने वाली गाय बकरी, धेनु रात्रि; गायत्री रूपा महादेवी।
पयस्वी-(हिं०वि०) पानी वाला, जिसमें जल हो।
पयहारी-(हिं०पुं०) वह तपस्वी या साधु जिसका आहार केवल दूध हो।
पयादा-(हिं०पुं०) देखो प्यादा।
पयान-(हिं०पुं०) गमन, यात्रा, जाना।
पयार, पयाल-(हिं०पुं०) धान के सूखे डंठल जिसमें से दाने निकाल लिये गये हों, पुआल; **पयाल झाड़ना**-वृथा का परिश्रम करना।
पयोगल-(सं०पुं०) घनोपल, ओला; **पयोज**-(सं०पुं०) पद्म, कमल; **पयोजन्मा**-(सं०पु०) मेघ, बादल, मोथा; **पयोद**-(सं०पुं०) मेघ, बादल, मुस्तक, मोथा; **पयोदन**-(हिं०पुं०) दूध भात; **पयोदेव**-(सं०पुं०) वरुण देवता।
पयोधर-(सं०पुं०) स्त्री का स्तन, मोथा, नारियल, तालाब मदार, कसेरु, पर्वत, एक प्रकार की ऊख, समुद्र, गाय का थन, दोहा छन्द का एक भेद, छप्पय छन्द का एक भेद; **पयोधरा**-सं०स्त्री०) जल की धारा।
पयोधि-सं०पुं०) समुद्र; **पयोनिधि**-(सं०पुं०) देखो पयोधि, समुद्र।
पयोमुख-(सं०वि०) दुग्धपीत, दुध मुहाँ,
पयोमुच्-(सं०नपुं०) मेघ, मोथा।
पयोवाह-(सं०पुं०) देखो पयोमुच्।
परंच-(सं०अव्य०) तौ भी, और भी, परन्तु।
परंतपा, परंतु-देखो परन्तप, परन्तु।
परंपरा-(हिं०स्त्री०) एक के पीछे दूसरा, सन्तति, वंश परंपरा; **परंपरागत**-(हिं०वि०) परंपरा से आता हुआ।
पर-(सं०नपुं०) केवल, ब्रह्म, मोक्ष, ब्रह्मा, शिव, विष्णु शत्रु, ब्रह्मा की आयु (वि०) श्रेष्ठ, जो दूर पर हो, अन्य, दूसरा।
पर-(हिं०अव्य०) पश्चात्, पीछे, परन्तु, किन्तु, चिड़िया का डैना, पंख; **पर कट जाना**-शक्ति का ह्रास होना; **पर जमना**-उपद्रव खड़ा करने के लिये उद्यत होना; **पर जलना**-साहस न होना; **पर न मारना**-पैर न खसकना।
परई-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का एक पात्र जो दिए से बड़ा होता है।
परकटा-(हिं०वि०) जिसके परकटे हों।
परकना-(हिं०क्रि०) अभ्यास पड़ना, हिलना मिलना, चसका लगना।
परकर्म-(सं०नपु०) दूसरे का काम।
परकलत्र-(सं०नपुं०) दूसरे की स्त्री।
परकसना-(हिं०क्रि०) प्रकाशित होना, प्रकट होना।
परकाजी-(हिं०वि०) परोपकारी, दूसरे का उपकार करने वाला।
परकान-(हिं०पुं०)तोप का कान या मूठ **परकाना**-(हिं०क्रि०) परचाना, हिलाना मिलाना, धड़का खोलना, चसका लगाना; **परकायप्रवेश**-(सं०पुं०) अपनी आत्मा को दूसरे के शरीर में प्रवेश करने की यौगिक क्रिया।
परकारना-(हिं०क्रि०)चारो ओर घुमाना
परकार्य-(सं०नपु०) दूसरे का कार्य।
परकाल-(हिं०पुं०) देखो परकार।
परकाला-(हिं० पुं०) सीढ़ी, देहली, चौखट, दहलीज, खण्ड, टुकड़ा, काँच का टुकड़ा, चिनगारी **आफ़त का परकाला**-भयंकर मनुष्य।
परकास-(हिं०पु०) देखो प्रकाश; **परकासना**-(हिं०क्रि०) प्रगट करना, प्रकाशित करना।
परकिति-(हिं०स्त्री०) देखो प्रकृति।
परकीय-(सं०वि०) पराया, दूसरे का, **परकीया**-(सं०स्त्री०) वह नायिका जो अपने पति को छोड़कर गुप्तभाव से अन्य पुरुष से प्रेम रखती हो।
परकृत-(सं० स्त्री०) दूसरे का किया हुआ काम।
परकोटा-(हिं०पुं०) गढ़ की रक्षा के लिये इसके चारो ओर बनाई हुई भीत, धुस, बांध, चह।
परख-(हिं०स्त्री०) गुण दोष का अच्छी तरह ज्ञान करने के लिये अच्छी तरह देखभाल या जांच, परीक्षा, भला बुरा जानने की शक्ति, पहचान; **परखना**-(हिं०क्रि०) जाँच करना, परीक्षा करना, गुण दोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देखना भालना, भला बुरा पहिचानना, प्रतीक्षा करना, आसरा देखना; **परखवाना**-(हिं०क्रि०) दूसरे से जँचवाना या परीक्षा करना; **परखवैया**-(हिं०पुं०) परखने वाला, जाँचने वाला; **परखाई**-(हिं०स्त्री०) परखने का काम या शुल्क; **परखाना**-(हिं०क्रि०) परखने का काम दूसरे से कराना, परीक्षा कराना, जँचवाना; **परखैया**-(हिं०पुं०) परखने वाला।
परग-(हिं०पु०) पग, कदम, डग; **परगट**-(हिं० वि०) देखो प्रगट; **परगटना**-(हिं०क्रि०) प्रगट करना, खुलना, प्रगट होना।
परगत-(सं०वि०) परप्राप्त, अपरगत।
परगनी, परगहनी-(हिं०स्त्री०) सोनारों का एक अस्त्र जिसमें चांदी या सोने की गुल्लियां ढाली जाती हैं।
परगसना-(हिं०क्रि०) प्रगट होना, प्रकाशित होना।
परगाछा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का गरम देश का पौधा; **परगाढ**-(हिं०वि०) कठिन, गहरा।
परगास-(हिं०पुं०) देखो प्रकाश; **परगासना**-(हिं०क्रि०) प्रकाशित होना या करना।
परगुण-(सं०वि०) उपकारी।
परग्रन्थि-(सं०पुं०) अंगुली की गाँठ।
परघट-(हिं०वि०) देखो प्रगट।
परघनी-(हिं०स्त्री०) देखो परगहनी।
परचंड-(हिं०वि०) देखो प्रचण्ड।
परचक्र-(सं०नपुं०) विपक्ष राजा।
परचन-(हिं०स्त्री०) जान पहचान।
परचना-(हिं०क्रि०) घनिष्टता प्राप्त करना, हिलना मिलना, चसका लगाना, धड़का खुलना।
परचाना-(हिं०क्रि०) आकर्षित करना, हिलाना मिलाना, घनिष्टता उत्पन्न करना, संकोच हटाना, धड़का खोलना, टेव या चसका लगाना।
परचार-(हिं०पुं०) देखो प्रचार।
परचारना-(हिं०क्रि०) प्रचार करना।
परचित्त ज्ञान-(सं०नपुं०) दूसरे के मन का भाव जान लेना।
परचून-(हिं०पुं०) आँटा, चावल, दाल, नमक, मसाला आदि भोजन सामग्री; **परचूनी**-(हिं०पुं०) परचून बेंचने वाला बनिया, मोदी।
परचै-(हिं०पु०) देखो परिचय।
परच्छन्द-(सं०वि०) पराधीन, वह जो दूसरे के अधीन हो।
परछत्ती-(हिं०स्त्री०) सामग्री रखने के लिये कोठरी के भीतर भीत से सटा कर कुछ दूर तक लगाई हुई पाटन, टोड़ा, हलकी छप्पर, छाजन।
परछन-(हिं०स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें द्वार पर बारात आने पर कन्या पक्ष की स्त्रियां वर की पूजा करती हैं और आरती उतारती हैं; **परछना**-(हिं०क्रि०) परछने की क्रिया करना।
परछा-(सं०पुं०) भीड़ हटना, समाप्ति, निर्णय।
परछाईं-(हिं०स्त्री०) प्रकाश के अवरोध के कारण पड़ने वाली किसी वस्तु की छाया, छायाकृति, प्रतिबिम्ब, **परछाई से डरना**-अति भयभीत होना, बहुत डरना।
परछिद्र-(सं०नपु०) दूसरे का दोष।
परछालना-(हिं०क्रि०) प्रक्षालन, धुलना
परजंक-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क।
परजा-(हिं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम, (पु०) कोयल (वि०) दूसरे से उत्पन्न
परजन-(हिं०पुं०) देखो परिजन।
परजन्य-(हिं०पुं०) देखो परिजन्य।
पर जरना-(हिं०क्रि०) सुलगना, दहकना, जलना, डाह करना, क्रुद्ध होना, कुढ़ना।
परजवट-(हिं०पुं०) देखो परजौट।
परजा-(हिं०स्त्री०) प्रजा, आश्रितजन, भूस्वामि, आसामी, काम धंधा करने वाला।
परजात-(सं०वि०) दूसरे से उत्पन्न, (पुं०) कोयल, दूसरी जाति या बिरादरी का मनुष्य।
परजाता-(हिं०पुं०) पारिजात, एक मझोले आकार का वृक्ष जिसके सुगन्धित फूल गुच्छों में लगते है, इसके फूल की डूंठी पीली होती है।
परजाति-(सं०स्त्री०) दूसरी जाति।
परजाय-(हिं०पुं०) देखो पर्याय।
परजारना-(हिं०क्रि०) जलाना।
परजित-(सं०वि०) शत्रु से पराजित।
परजौट-(हिं०पुं०) वह वार्षिक कर जो घर बनाने के लिये ली हुई भूमि पर लगे।
परञ्च-(सं०अव्य०) परन्तु, तौभी।
परञ्ज-(सं०पुं०) छुरी का फल।
परञ्जन-(सं०पुं०)वरुण देवता।
परञ्जय-(सं०पुं०) वरुण, (वि०) शत्रु को जीतने वाला।
परणना-(हिं०क्रि०) विवाह करना।
परतंचा-(हिं०स्त्री०) देखो पतञ्चिका।

परतंत्र-देखो परतन्त्र।

परतः-(सं०अव्य०) अन्य से, दूसरे से, पश्चात, पीछे, आगे।

परत-(हिं०स्त्री०) किसी तल के ऊपर का मोटाई का फैलाव, स्तर, तह, कपड़े कागज आदि के अलग अलग भाग जो जोड़ने से नीचे ऊपर हो गये हों।

परतन्त्र-(सं०वि०) पराधीन, परवश, (नपुं०)उत्तम शास्त्र, उत्तम परिच्छेद।

परतच्छ-(हिं०वि०) देखो प्रत्यक्ष।

परतल-(हिं०पुं०) लद्दू घोड़े की पीठ पर रखने का बोरा।

परतला-(हिं०पु०) कपड़े चमड़े आदि की चौड़ी पट्टी जो कन्धे पर से छाती और पीठ पर होती हुई तिरछी लटकती है और जिसमें तलवार लटकाई जाती है।

परता-(सं०स्त्री० श्रेष्ठता, (हिं०पुं०) देखो पड़ता।

परताजना-(हिं० पुं०) सोनारों का एक अस्त्र।

परताप-(हिं०पुं०) देखो प्रताप।

परतापन-(सं०पु०) वह जो दूसरे को कष्ट देता हो, गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

परताल-(हिं०स्त्री०) देखो पड़ताल।

परतिचा-(हिं०स्त्री०) देखो पतञ्चिका।

परतिग्या-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतिज्ञा।

परती-(हिं० स्त्री०) बिना जोती हुई भूमि, वह चद्दर जिससे हवा करके अन्न में से भूसी उड़ाई जाती है।

परतीत-(हिं० स्त्री०) देखो प्रतीति।

परतेजना-(हिं० क्रि०) त्याग करना, छोड़ना।

परतोली-(हिं०स्त्री०) गली।

परत्र-(स०अव्य०)अन्यत्र, दूसरे स्थान में, परलोक में; परत्रभीरु-धार्मिक जिसको परलोक का भय हो।

परत्व-(सं० नपुं०) परता, पहिले या पूर्व होने का भाव।

परथन-(हिं०पुं०) देखो पलेथन।

परदच्छिना-(हिं०स्त्री०)देखो प्रदक्षिणा।

परदनी-(हिं०स्त्री०) धोती।

परदादा-(हिं०पुं०) प्रपितामह, दादा का बाप।

परदार-(सं०पुं०) परभार्या, दूसरे की स्त्री, परदार गमन-पर स्त्री गमन; परदारगामी-दूसरे की स्त्री से सभोग करने वाला।

परदिवस-(सं०नपुं०) आज से दूसरा दिन।

परदेवता-(सं० स्त्री०) श्रेष्ठ या इष्ट देवता।

परदुम्न-(हिं०पुं०) देखो प्रद्युम्न।

परदेश-(सं०पुं०) दूसरा देश, विदेश; परदेशी-(सं० वि०) विदेशी, दूसरे देश में रहने वाला।

परदुःख-(सं०नपुं०) दूसरे का कष्ट।

परधर्म-(सं० पुं०) दूसरे का धर्म, श्रेष्ठ धर्म।

परदोस-(हिं०पुं०) देखो प्रदोष।

परधान-(हिं० वि०) देखो प्रधान, (पुं०) परिधान।

परधाम-(सं०पुं०) वैकुण्ठ, परलोक, ईश्वर, विष्णु।

परध्यान-(सं०नपुं०) दूसरे का अनिष्ट चिन्तन।

परन-(हिं०पुं०) प्रतिज्ञा, टेक, अभ्यास, मृदंग आदि बजाने में बोलों के खण्ड।

परना-(हिं०क्रि०) देखो पड़ना।

परनाना-(हिं०पुं०) नाना का पिता।

परनाम-(हिं०पुं०) देखो प्रणाम।

परनाला-(हिं०पुं०) मोरी, पनाला।

परनाली-(हिं०स्त्री०) छोटी मोरी।

परनि-(हिं०स्त्री०) आदत, टेक।

परनी-(हिं०स्त्री०)धातु की बनी हुई पन्नी

परनौत-(हिं०स्त्री०) नमस्कार प्रणाम।

परन्तप-(सं०वि०) प्रतापी, वैरियों को कष्ट देने वाला, जितेन्द्रिय, (पुं०) चिन्तामणि।

परन्तु-(हिं०अव्य०)लेकिन, देखो परंतु।

परपंच-(हिं०पुं०) देखो प्रपंच। परपंचक-(हिं०वि०) मायावी, बखेड़िया।

परपंची-(हिं० वि०)धूर्त, बखेड़िया।

परपक्ष-(सं० पुं०) विपक्ष की बात, विरोधियों का दल।

परपट-(हिं०पुं०) समतल भूमि, चौरस मैदान।

परपटी-(हिं०स्त्री०) देखो पर्पटी।

परपद-(सं०नपुं०) श्रेष्ठ स्थान, मुक्ति।

परपराना-(हिं०क्रि०) जीभ पर तीखा लगाना, चुनचुनाना। परपराहट-(हिं०स्त्री०) चुनचुनाहट।

परपाजा-(हिं०पुं०) प्रपितामह, दादा का पिता।

परपारा-(हिं० पुं०) दूसरी ओर का किनार, उस ओर का तट।

परपीडक-(सं० पुं०) दूसरे को कष्ट देने वाला, दूसरे की पीड़ा समझने वाला।

परपुरुष-(सं०पुं०) अन्य पुरुष, विष्णु।

परपुष्ट-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल।

परपुष्टा-(सं०स्त्री०) पराश्रया, वेश्या, रंडी।

परपूठा-(हिं०वि०) पक्व, पक्का।

परपूर्वा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति को छोड़कर दूसरा पति करती है।

परपोता-(हिं० पुं०) देखो परपौत्र।

परपौत्र-(हिं० पुं०) पोते का पुत्र। परपोता।

परफुल्ल-(हिं० वि०) देखो प्रफुल्ल।

परफुल्लित-(हिं०वि०)देखो प्रफुल्लित।

परबंद-(हिं०पुं०) नाच की एक गत।

परबंध-(हिं०पुं०) व्यवस्था।

परब-(हिं० पुं०) देखो पर्व, (स्त्री०) किसी रत्न का एक छोटा टुकड़ा।

परबत-(हिं०पुं०) पर्वत, पहाड़।

परबल-(हिं०वि०) देखो प्रबल।

परबस-(हिं०वि०)देखो परवस, पराधीन

परबसताई-(हिं०स्त्री०) पराधीनता, परवशता।

परबाल-(हिं० पुं०) आंख की बरौनी का कष्ट देने वाला।

परबीन-(हिं०वि०) देखो प्रवीण।

परबेस-(हिं०पुं०) देखो प्रवेश।

परबोध-(हिं०पुं०) देखो प्रबोध।

परबोधना-(हिं०क्रि०) ज्ञान का उपदेश करना, जगाना, समझाना।

परब्रह्म-(सं० नपुं०) निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म।

परभाइ-(हिं०पु०) देखो प्रभाव।

परभाग-(सं० पु०) बचा हुआ अंश, दूसरी ओर का भाग, पश्चिम भाग

परभाग्योपजीवी-(सं० त्रि०) दूसरे की कमाई पर जीने वाला।

परभात-(हिं० पुं०) देखो प्रभात।

परभाती-(हिं०स्त्री०) देखो प्रभाती

परभाव-(हिं० पु०) देखो प्रभाव

परभुक्त-(सं० वि०) दूसरे से भोगा हुआ; परभुक्ता-(सं०स्त्री०) परपुरुष से संभोग की हुई स्त्री।

परभृत्, परभृत-(सं०पु०) काक, कौवा (वि०) दूसरे को पालने वाला।

परभृत्य-(सं०पुं०) दूसरे का सेवक।

परम-(सं० वि०) उत्कृष्ट, बढ़कर, प्रधान, मुख्य, अत्यन्त, पहिला, (पुं०) विष्णु, शिव। परम गति-(सं०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष। परमजा-(सं०स्त्री०) प्रकृति।

परमट-(हिं०पुं०) संगीत में एक ताल।

परमतत्व-(सं० पुं०) मूल तत्व, मूल सत्ता, ब्रह्म, ईश्वर। परमदेवी-(सं०स्त्री०) महादेवी, पटरानी, परम धाम-(सं०पु०) वैकुण्ठ- स्वर्ग। परम पद-(सं०नपुं०) मोक्ष, मुक्ति। परम पिता-(सं० पुं०) परमेश्वर। परम पुरुष-(सं०पुं०) पुरुषोत्तम, विष्णु। परम पूतिक-(सं० पु०) अहिफेन, अफीम। परमफल-(सं०पु०) मोक्ष, मुक्ति। परम ब्रह्मचारिणी-(सं०स्त्री०) दुर्गा। परम भट्टारक-(सं० पुं०) महाराजाधिराज, एकछत्र राजाओं की एक उपाधि। परम भागवत-(सं० पुं०) वैष्णवों की एक साम्प्रदायिक उपाधि। परम महत्-(सं०वि०) सबसे बड़ा और व्यापक। परम रस-(सं० पुं०) पानी मिला हुआ मट्ठा।

परमर्षि-(सं० पुं०) वेदव्यास आदि ऋषि।

परमल-(हिं०पुं०) ज्वार या गेंहू का भूना हुआ दाना।

परमहंस-(सं० पुं०) ज्ञान की परम अवस्था को पहुँचा हुआ संन्यासी, जिसको यह पूर्ण ज्ञान हो जाता है कि मैं ही ब्रह्म हूं, मैं ही परमात्मा हूं, परमात्मा।

परमा-(हिं० स्त्री०) शोभा, छवि सुन्दरता।

परमाटा-(हिं० पुं०) संगीत का एक ताल।

परमाणु-(सं० पुं०) पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश इन चारों भूतों का सब से छोटा भाग जिसके फिर विभाग नहीं हो सकते, अत्यन्त सूक्ष्म अणु। परमाणुवाद-(सं०पुं०) न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों का यह सिद्धान्त कि परमाणुओं से ही जगत् की सृष्टि है।

परमाणुवादी-इस सिद्धान्त को मानने वाला।

परमात्मा-(सं०पुं०) परब्रह्म, ईश्वर, चिदात्मा।

परमाद्वैत-(सं०पुं०) सर्व भेद रहित परमात्मा, विष्णु। परमानन्द-(सं०पु०) परम आनन्द स्वरूप ब्रह्म, परमात्मा, ब्रह्मानन्द, ब्रह्मके अनुभव का आनन्द।

परमान-(हिं०पुं०) देखो प्रमाण, सत्य वार्ता, अवधि, सीमा। परमानना-(हिं० क्रि०) प्रमाण मानना, ठीक समझना।

परमान्न-(सं०नपु०) पायस, खीर, जो देवता और पितरों को अत्यन्त प्रिय है।

परमायु-(सं० स्त्री०) जीवित काल, अधिक से अधिक आयु, मनुष्य की परमायु एक सौ वर्ष मानी जाती है।

परमार-(हिं० पुं०) राजपूत जाति की एक प्रधान शाखा, पँवार,

परमारथ-(हिं०पुं०) देखो परमार्थ।

परमार्थ-(सं० पुं०) उत्कृष्ट पदार्थ, वास्तविक सत्ता, सार वस्तु, मोक्ष, सर्वथा अभाव रूप सुख। परमार्थता-(सं०स्त्री०) सत्य भाव। परमार्थवादी-(हिं०पुं०) तत्वज्ञ, वेदान्ती, ज्ञानी।

परमार्थविद्-(सं०वि०) परमार्थ वेत्ता,

परमार्थी-(सं०वि०) यथार्थ तत्व को ढूंढने वाला, मुमुक्षु, मोक्ष चाहने-वाला।

परमाह-(सं० पुं०) शुभ दिन अच्छा दिन।

परमित-(हिं०स्त्री०) मर्यादा।

परमुख-(हिं०वि०) पराङ्मुख, विमुख, विपरीत आचरण करने वाला।

परमेश, परमेश्वर-(सं० पु०) सृष्टि आदि का रचने वाला, सगुण त्रिमूर्तक ब्रह्म, विष्णु, शिव। परमेश्वरी-(सं०स्त्री०) दुर्गा।

परमेष्ठ-(सं०पुं०)प्रजापति। परमेष्ठी-(सं०पु०) अग्नि आदि देवता, ब्रह्मा, शिव, महादेव, विष्णु, गरुड़, प्रजापतिऔर उनके पुत्र।

परमेसर-(हिं०पु०) देखो परमेश्वर।

परमैश्वर्य-(सं०नपुं०) श्रेष्ठ ऐश्वर्य।

परमोद-(हिं०पुं०) देखो प्रमोद।

परमौधना-(हिं०क्रि०)जगाना, समझाना

परम्पर-(सं०पुं०) मृगमद, कस्तूरी।
परम्परा-(सं०स्त्री०) अपत्य, सन्तान, परिपाटी, अनुक्रम, एक के बाद एक। **परम्परागत**-(सं० वि०) वंशानुक्रम से प्रचलित। **परम्परा प्राप्त** (सं०स्त्री०) जनश्रुति, प्रवाद।
परयंक-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क।
पररमण-(सं०पुं०) पर स्त्री से रमण करने वाला, लम्पट, व्यभिचारी।
पररूप-(सं०वि०) दूसरे के समान रूप वाला।
परलउ-(हिं० पु०) देखो प्रलय।
परलत-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल और जड़ औषधि में प्रयोग होती है।
परलय-(हिं०स्त्री०) प्रलय, सृष्टि का नाश या अन्त।
परला-(हिं० वि०) दूसरी ओर का, उधर का; **परले सिरेका**-बहुत अधिक
परलै-(हिं०पु०) देखो प्रलय।
परलोक-(सं०पुं०) लोकान्तर, दूसरा लोक, स्वर्गादि, वह लोक जिसमें मृत्यु के बाद गति होती हैं; **परलोकवासी**-मृत्यु प्राप्त; **परलोक सिधारना**-मरना। **परलोक गत**-मृत्यु प्राप्त, मरा हुआ; **परलोक गमन**-मृत्यु मरण; **परलोक प्राप्ति**-मरण।
परवत्-(सं० वि०) पराधीन, परवश।
परवर-(हिं०पुं०)परबल आंख का एक रोग
परदल-(हिं०पु०) एक प्रकार की लता जो टट्टियों पर चढ़ाई जाती हैं और जिसके फलों की तरकारी बनती है।
परवश, परवश्य-(हिं०वि०) पराधीन, जो दूसरे के वश में हो। **परवश्यता**-(सं० स्त्री०) पराधीनता।
परवस्ती-(हिं०स्त्री०) पालन पोषण।
परवा-(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की पहली तिथि, एक प्रकार की घास।
परवाई-(हिं०स्त्री०) देखो परवा।
परवाच्य-(सं०वि०) जिसको दूसरे बुरा कहते हों, निन्दित।
परवाण-(सं०पुं०) मयूर, मोर।
परवाद-(सं० पुं०) प्रवाद, अपवाद, दूसरे की निन्दा।
परवान-(हिं० पु०) सीमा, अवधि, प्रमाण, यथार्थ बात।
परवानना-(हिं०क्रि०) उचित समझना।
परवाया-(हिं०पुं०) चारपाई के नीचे रखने का काठ का टुकड़ा।
परवाल-(हिं० पु०) देखो प्रवाल, मूंगा।
परवाय-(हिं०पुं०) आच्छादन, ढपना।
परवासी-(सं०वि०) दूसरे के घर बसने वाला।
परवाह-(हिं०पुं०) देखो प्रवाह, बहाने का काम, व्यग्रता, चिन्ता, भरोसा, ध्यान।
परवी-(हिं०स्त्री०) पर्व काल।
परवीन-(हिं० वि०) देखो प्रवीण।
परवेख-(हिं० पुं०) चन्द्रमा के चारो ओर का प्रभा मण्डल जो हलकी बदली में देख पड़ता है।
परवेश-(हिं०पुं०) देखो प्रवेश।
परवेश्म-(सं०नपुं०) वैकुण्ठ, स्वर्ग।
परव्रत-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र का एक नाम
परश-(सं०नपुं०) पारस पत्थर, स्पर्शमणि; (पुं०) स्पर्श, छूना।
परशाला-(सं० पुं०) परगृह, दूसरे का घर
परशासन-(सं०नपुं०) दूसरे का आदेश
परशु-(सं०पुं०) कुठार, कुल्हाड़ी, तवर, भलुआ, प्राचीन काल का हिन्दुओं का एक युद्ध शस्त्र। **परशुधर**-(सं० पुं०) गणेश, परशुराम; (वि०) परशु धारण करने वाला।
परशुराम-(सं०पुं०) जमदग्नि ऋषि के पुत्र, भृगुपति, इन्होंने पृथ्वी को इक्कीस बार निःक्षत्रिय किया था।
परशुवन-(सं०नपुं०) एक नरक का नाम
परश्वध-(सं०पुं०) कुठार, कुल्हाड़ी।
परसंग-(हिं०पु०) देखो प्रसङ्ग। **परसंसा**-(हिं० पु०) देखो प्रशंसा।
परस-(हिं०पुं०) स्पर्श, छूना, छूने की क्रिया, पारस पत्थर, स्पर्श मणि।
परसंग-(सं०त्रि०) देखो प्रसंग।
परसन-(हिं०पु०) छूने का भाव, स्पर्श, छूना, छूने का काम, (वि०) प्रसन्न।
परसना-(हिं० क्रि०) स्पर्श करना, छूना, स्पर्श कराना, छुलाना, किसी के सामने भोजन के पदार्थ रखना, परोसना।
परसन्न-(हिं०वि०) देखो प्रसन्न।
पर सम्बन्ध-(सं०पुं०) दूसरे का संबंध।
परस पखान-(हिं० पु०) स्पर्शमणि, पारस पत्थर।
परसवर्ण-(सं०पुं०) उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण।
परसा-(हिं० पुं०) कुल्हाड़ी, कुठार, फरसा; देखो परोसा, पत्तल।
परसाद-(हिं०पु०) देखो प्रसाद।
परसाना-(हिं० क्रि०) स्पर्श कराना, छुलाना, परोसवाना, भोजन बँटवाना
परसाल-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की जल में उगने वाली घास।
परसिद्ध-(हिं०वि०) देखो प्रसिद्ध।
परसिया-(हिं०स्त्री०) हँसिया।
परसीया-(हिं० पु०) एक वक्ष जिसकी लकड़ी काली और पुष्ट होती है।
परसु-(हिं०पुं०) देखो परशु।
परसूक्ष्म-(सं०पुं०) एक सूक्ष्म परिमाण जो आठ परमाणुओं के बराबर माना जाता है।
परसेद-(हिं०पुं०) देखो प्रस्वेद।
परसेवा-(सं०स्त्री०) दूसरे की सेवा।
परसों-(हिं०अव्य०) बीते हुए कल से एक दिन पहले आने वाला, कल से एक दिन आगे।
परसोतम-(हिं०पुं०) देखो पुरुषोत्तम।
परसोर-(हिं०पुं०)एक प्रकार का अगहनियां धान।
परसौंहां-(हिं०वि०)स्पर्श करने वाला।
परस्त्री-(सं०स्त्री०) दूसरे की स्त्री, परकीया नारी; **परस्त्रीगमन**-पराई स्त्री के साथ सम्भोग।
परस्पर-(सं०अव्य०)एक दूसरे के साथ, आपस में। **परस्परानुमति**-(सं०स्त्री०) एक दूसरे की अनुमति। **परस्परोपमा**-(सं०स्त्री०) एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है, उपमेयोपमा।
परस्वध-(सं० पुं०) परश्वध, कुठार, कुल्हाड़ी।
परहरना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
परहार-(हिं०पुं०) देखो प्रहार, परिहार।
परहारी-(हिं० पुं०) जगन्नाथ जी के पुजारी जो मन्दिर में ही रहते हैं।
परहित-(सं०नपुं०)दूसरे का कल्याण।
परहेलना-(हिं० क्रि०) तिरस्कार या निरादर करना।
परांचा-(हिं०पुं०)पटरी, पाटन, बेंड़ा।
परांठा-(हिं०पुं०) तवे पर घी लगा कर सेंकी हुई चपाती, परौंठा।
परा-(सं०अव्य०)प्राधान्य, गति, विक्रम वध आदि अर्थ में प्रयोग होता है; अनादर अर्थ में उपसर्ग की तरह प्रयोग होता है।
परा-(सं०स्त्री०) उपनिषद विद्या, ब्रह्मविद्या, एक प्रकार का सामगान, गायत्री, चार प्रकार की वाणियों में से पहली वाणी जो नाद स्वरूपा और मूलाधार से निकली हुई मानी जाती है, (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, (हिं०पुं०) पंक्ति, श्रेणी, रेशम खोलने का एक लकड़ी का औजार।
पराइ, पराई-(हिं०वि०) दूसरे की।
पराक-(सं० पुं०) एक व्रत विशेष।
पराकाष्ठा, पराकोटि-(सं०स्त्री०)चरम सीमा, हद, गायत्री का एक भेद, ब्रह्मा की आधी आयुष्य।
पराक्रम(सं०पुं०) शक्ति, बल, सामर्थ्य, पुरुषार्थ, उद्योग विष्णु। **पराक्रमज्ञ**-(सं० पुं०) शत्रु के बल को जानने वाला। **पराक्रमी**-(हिं० वि०) वीर, पुरुषार्थी, उद्यमी, उद्योगी, बलवान्।
पराग-(सं० पुं०) पुष्प धूलि, वह रज जो फूलों के बीच में केशरों पर जमी रहती हैं, धूलि, रज, उपराग, विख्याति, कपूर का चूर्ण, स्वच्छन्द गमन, एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण जिसको शरीर में पोत कर स्नान किया जाता है। **पराग केशर**-(सं०पुं०) फूलों के मध्य के वे लंबे पतले सूत जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।
परागति-(सं०पुं०)शिव, महादेव (स्त्री०) गायत्री।
परागना-(हिं०क्रि०) अनुरक्त होना।
परागम-(सं० पुं०) शत्रु का आगमन या आक्रमण।
पराङ्ग-(सं०नपुं०) शरीर का पिछला भाग। **पराङ्गद**-(सं०पुं०) शिव, महादेव। **पराङ्गव**-(सं०पुं०)समुद्र।
पराङ्मुख-(सं०वि०) विमुख, प्रतिकूल, विरुद्ध, निवृत्त, उदासीन, ध्यान न देने वाला। **पराङ्मुखता**-(सं०स्त्री०) प्रतिकूलता।
पराचित-(सं० वि०) दूसरे से पाला पोसा हुआ। **पराचीन**-(सं० वि०) पराङ्मुख, विमुख, पुराना।
परजय-(हिं० स्त्री०) पराभव, हार।
पराजिका-(हिं०स्त्री०) परज नाम की रागिणी।
पराजित-(सं०वि०) पराभूत, विजित, हारा हुआ। **पराजिष्णु**-(सं०वि०) विजयी, जीतने वाला।
पराण-(सं०पुं०) प्राण।
परातंस-(सं०वि०)धक्का देकर हटाया हुआ।
परात-(हिं० स्त्री०) थाली के आकार का बड़ा पात्र, बड़ी थाली, थाल।
परातर-(सं०वि०) बहुत दूर।
परात्पर-(सं०पुं०) परमात्मा, विष्णु।
परमेश्वर-(वि०) सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम, (सं० पुं०) परमात्मा।
परात्मा-(सं०पु०) परब्रह्म, परमात्मा, दूसरे की आत्मा।
पराधि-(सं०पुं०) दूसरे का दुःख, दूसरे की मानसिक व्यथा।
पराधीन-(सं० वि०) परवश, जो दूसरे के आधीन हो, परतन्त्र। **पराधीनता**-(सं०स्त्री०)परतन्त्रता, परवशता।
परान-(हिं०पुं०) देखो प्राण।
पराना-(हिं०क्रि०) भागना, पलायन।
परान्तक-(सं०पुं०)सर्वनाशक महादेव।
परान्तकाल-(सं०पुं०)मृत्यु का समय।
परान्तिका-(सं०स्त्री०) मात्रा वृत्त का एक भेद।
परान्न-(सं०नपुं०)दूसरे का दिया हुआ भोजन; **परान्नपरिपुष्ट**-दूसरे के भोजन से पली हुई शरीर; **परान्नभोजी**-दूसरे का अन्न खाने वाला।
परापर-(सं०पुं०) परुष फल, फालसा।
पराभव-(सं० पुं०) पराजय, हार, तिरस्कार, विनाश, मानहानि।
पराभिध-(सं०नपुं०) कुंकुम, केसर।
पराभूत-(सं०वि०) पराजित, हारा हुआ, नष्ट।
पराभूति-(सं०स्त्री०) पराजय, हार।
परामर्श-(सं० पुं०) विचार, युक्ति, निर्णय, अनुमान, मन्त्रणा, स्मृति, याद, **परामर्शन**-(सं०नपुं०) स्मरण, चिन्तन, विचार कल्पना, मन्त्रणा करना। **परामर्शी**-(सं०वि०) निर्देशक, परामर्श देने वाला। **परामर्ष**-(सं०पुं०) देखो परामर्श।
परामृत-(सं०नपुं०) मुक्ति, मोक्ष।
परामृष्ट-(सं०वि०) निर्णय किया हुआ, विचारा हुआ, पकड़ कर खींचा हुआ।
परायण-(सं०वि०) प्रवृत्त, तत्पर, लगा हुआ, (पुं०) विष्णु, आश्रय।
परायति-(सं०स्त्री०) उत्तर काल (वि०)

पराधीन। परायत्त-(सं०वि०)पराधीन परवश।
पराया-(हिं०वि०) अन्य का, दूसरे का, जो अपना न हो, जो आत्मीय न हो
परायु:-(सं०पुं०) ब्रह्मा।
परार-(हिं०वि०) दूसरे का, पराया।
परारध-(हिं०पुं०) देखो परार्ध।
परारुक-(सं०पुं०) प्रस्तर, पत्थर।
परार्थ-(सं०वि०) जिसकी उद्देश प्रधान न हो, दूसरे के निमित्त का, (पुं०) दूसरे का उपकार।
परार्ध-(सं०नपुं०)एक शंख की संख्या, ब्रह्मा की आयु का आधा काल, कुंकुम, केशर, खस, चन्दन।
परावत-(सं०नपुं०)परूपकफल, फालसा,
परावन-(हिं०पुं०) पलावन, एक साथ अनेक मनुष्यों का भागना, भगदड़, पर्व, पुण्य काल।
परावर-(सं० वि०) सर्व श्रेष्ठ, अगला पिछला।
परावरा-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की विद्या। परावर्त-(सं०पुं०) विनिमय, अदल, बदल पलटाव। परावर्तन-(सं०नपुं०) पलटना,लौटना; परावर्तन व्यवहार-दुबारा विचार की प्रार्थना।
परावर्तित-(सं०वि०) पलटाया हुआ, फेरा हुआ।
परावसु-(सं०पुं०) एक गन्धर्व का नाम।
परावह-(सं०पुं०) वायु के सात भेदों में से एक।
परावा-(हिं०वि०) देखो पराया।
परावाक्-(सं०पुं०)तिरस्कार का वचन।
परावृत्त-(सं०नि०) फेरा हुआ; बदला हुआ। परावृत्ति-(स० स्त्री०) पलटने या पलटाने की क्रिया या भाव।
पराशर-(सं०पुं०) एक सर्प का नाम, एक गोत्रकार, एक ऋषि जो वसिष्ठ और शक्ति के पुत्र थे, एक प्रसिद्ध स्मृतिकार का नाम।
पराश्रय-(सं०वि०) वह जो दूसरे के आश्रय में हो,अन्याश्रित। पराश्रित-(सं०वि०) पराधीन,दूसरे के आश्रित।
परास-(सं०पुं०) देखो पलाश।
परासन-(सं०नपुं०) मारण, वध, उत्तम आसन।
परासी-(सं०स्त्री०) एक रागिणीका नाम।
परास्त-(सं०वि०) पराजित हारा हुआ, ध्वस्त, जीता हुआ।
पराह-(सं०पुं०) परदिन, दूसरा दिन।
पराह्न-(सं०पुं०) अपराह्न, दोपहर के बाद का समय, तीसरा पहर।
परि-एक संस्कृत उपसर्ग जिसकेशब्द में जोड़ने से सर्वोत्तम, अच्छी तरह, अतिशय, त्याग, नियम अर्थों की वृद्धि होती हैं।
परिक-(हिं०स्त्री०) खोटी चांदी।
परिकथा-(सं०स्त्री०) वह कथा जिसके अन्तर्गत दूसरी कथा हो,धर्म विषयक कहानी। परिकम्प-(सं०पुं०) भय,डर
परिकर-(सं०पुं०) पर्यङ्क, पलंग, परिवार, तैयारी, समूह, विवेक, ज्ञान, सहकारी, अनुचर वर्ग, एक अलंकार जिसमें अभिप्रायपूर्ण विशेषणों के साथ विशेष्य का प्रयोग होता है।
परिकरमा-(हिं०स्त्री०) देखो परिक्रमा।
परिकराङ्कुर-(सं०पुं०)एक अर्थालङ्कार जिसमेंकिसी शब्दका प्रयोग विशिष्ट उद्देश्य से किया जाता है।
परिकर्तिका-(सं०स्त्री०) काटने के तरह की पीड़ा। परिकर्षण-(सं०नपुं०)खींच कर दूसरे स्थान में ले जाना। परिकल्कन-(सं०पुं०) वञ्चना, धोखा।
परिकल्प-(सं०नपुं०) स्थिर निश्चय, बनावट, निर्देश,रचना। परिकल्पन-(सं०पुं०) चिन्तन, मनन, बनावट।
परिकल्पित-(सं०वि०) स्थिर किया हुआ, ठहराया हुआ, मन में सोच कर बनाया हुआ।
परिकीर्ण-(सं०वि०)विस्तृत, फैला हुआ।
परिकीर्तन-(सं०नपुं०) गुणों का विस्तृत वर्णन, अधिक प्रशंसा। परिकीर्तित-(सं० वि०) प्रशंसा किया हुआ, कहा हुआ, गाया हुआ।
परिकूट-(सं०नपुं०) नगर या गढ़ के फाटक पर की खाई।
पपिकृश-(सं०वि०) अति दुर्बल।
परिकेश-(सं०पुं०) बालका अगला भाग
परिक्रम, परिक्रमण-(सं० पु०, नपुं०) प्रदक्षिणा,परिक्रमा,चारो ओर घूमना या फेरी देना।
परिक्रमा-(सं०स्त्री०) चारो ओर घूमना, चक्कर देना, किसी तीर्थ स्थान या देवमन्दिर के चारो ओर घूमने के लिये बना हुआ मार्ग।
परिक्रय-(सं०पुं०) मोल लेना। परिक्रिया-(सं०स्त्री०) खाई आदि घेरने की क्रिया। परिक्लेद-(सं०पुं०)आर्द्रता, भीगापन। परिक्लेश-(सं०पुं०) अत्यन्त दुःख।
परिक्षत-(सं०वि०) नष्ट, भ्रष्ट।
परिक्षय-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश, पतन।
परिक्षा-(सं०स्त्री०) मिट्टी, कीचड़ (हिं० स्त्री०) देखो परीक्षा।
परिक्षाम-(सं०वि०) अत्यंत दुर्बल।
परिक्षालन-(सं०नपुं०) धोने की क्रिया या भाव। परिक्षित-(सं०वि०) खाई आदि से घेरा हुआ। (हिं०वि०) देखो परिक्षित। परिक्षेप-(सं०पुं०) निक्षेप, चारो ओर घूमना। परिक्षेपक-(सं० वि०)फेरा लगाने वाला,घूमनेवाला।
परिखन-(हिं०वि०) रक्षक, रखवाली करने वाला। परिखना-(हिं०क्रि०) प्रतीक्षा करना,आसरा देखना,परीक्षा करना, जांचना।
परिखा-(सं०स्त्री०) किले को घेरने की खाई; परिखान-(सं०नपुं०)परिखा,खाई
परिखान-(हिं०स्त्री०) पहिये की लीक या लकीर।
परिखेद-(सं०पुं०)अत्यन्त दुःख,परिश्रम।
परिख्यात-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।
परिगण-(सं०पुं०) गृह, घर।
परिगणन, परिगणना-(सं०नपुं०) भली भाँति गणना करना, विचार करना, गिनती करना। परिगणनीय-(सं० वि०) गिनें जाने योग्य। परिगणित-(सं०वि०) गिना हुआ।
परिगण्य-(सं०वि०) परिगणनीय, गिनने योग्य।
परिगत-(सं०वि०) ज्ञात, जाना हुआ, प्राप्त,मिला,हुआ विस्मृत,भूला हुआ, बीता हुआ, घिरा हुआ, मरा हुआ।
परिगदित-(सं०वि०) कहा हुआ। परिगर्वित-(सं०वि०) बड़ा घमंडी, बड़े गर्व वाला। परिगर्हण-(सं०नपुं०) बड़ी निन्दा।
परिगह-(हिं०पुं०) कुटुम्बी,आश्रित जन।
परिगहन-(सं०नपुं०) बड़ा अन्धकार।
परिगीति-(सं०स्त्री०) एक छन्दका नाम
परिगुण्ठित-(सं०वि०) छिपा हुआ, ढपाहुआ। परिगूढ़-(सं०वि०) अत्यन्त गुप्त।
परिगृहीत-(सं० वि०) स्वीकृत, ग्रहण किया हुआ,मिला हुआ। परिगृह्या-(सं०स्त्री०) धर्मपत्नी, विवाहिता स्त्री
परिग्रह-(सं०पुं०) दान लेना, ग्रहण करना, सेना का पिछला भाग, अनुग्रह, कृपा, साधन, विष्णु, हाथ,शाप, शपथ, वेतन, पत्नी, भार्या, परिजन, परिवार, मूल, कन्द, अङ्गीकार, धन आदि का संग्रह, आदर पूर्वक कोई वस्तु लेना। परिग्रहण-(सं०नपुं०) पूर्ण रूपसे ग्रहणकरना,वस्त्र पहिरना।
परिघ-(सं०पुं०) अर्गला, मुद्गर,बरछी, भाला, कलसा, घड़ा, गोपुर, घर, प्रतिबन्ध, पर्वत,तीर,मूढगर्भ,चन्द्रमा, जल, वज्र, सूर्य,स्थान, सूर्यके सामने वाला बादल, ज्योतिषका एक योग, फाटक, घोड़ा।
परिघात-(सं०पुं०) हनन, हत्या, मार डालना। परिघाती-(सं०वि०) हत्या करनेवाला।
परिघोष-(सं०पुं०)बादलकीगरज,शब्द।
परिचना-(हिं०क्रि०) देखो परचना।
परिचपल-(सं०वि०) जो हर समय घूमता फिरता रहे।
परिचय-(सं०पुं०) विशेष रूप से ज्ञान, जानकारी, प्रमाण, लक्षण, अभ्यास, किसी व्यक्तिके नाम धाम गुण आदि का बोध, जान पहिचान।
परिचर-(सं०पुं०) रोगीकी सेवा शुश्रूषा करनेवाला, अनुचर, भृत्य, टहलुआ,
परिचरजा-(हिं०स्त्री०) देखो परिचर्या।
परिचरण-(सं०पुं०) सेवा, टहल।
परिचरणीय-(सं०वि०)सेवा करनेयोग्य
परिचरिता-(सं०वि०)सेवा टहल करने योग्य। परिचरजा-(हिं० स्त्री०) देखो परिचर्या। परिचारी-(सं० स्त्री०) दासी,टहलनी। परिचर्या-(सं० स्त्री०) सेवा, शुश्रूषा, रोगीकी सेवा।
परिचायक-(सं०पुं०) जान पहिचान कराने वाला, सूचित करने वाला
परिचार-(सं०पुं०) सेवा टहल, घूमने फिरने का स्थान।
परिचारक-(सं०पुं०) भृत्य,दास,किंकर, चेट, रोगीकी सेवा टहल करनेवाला, देव मन्दिर आदि का प्रबन्ध कर्ता।
परिचारण-(सं०नपुं०) सेवा, टहल, खिदमत सहवास करना, संग करना
परिचारना-(हिं०क्रि०)सेवा टहल करना
परिचारिक-(सं०पुं०) दास, सेवक।
परिचारिका-(सं०स्त्री०) दासी। परिचारी-(हिं०वि०) सेवक। परिचार्य-(सं०वि०) सेवा करने योग्य।
परिचालक-(सं०पुं०) संचालक, चलाने वाला, गति देने वाला, हिलानेवाला
परिचालन-(सं०पुं०)गतिदेना, हिलाना चलाना, कार्यक्रम चलाना, चलने के लिये प्रेरित करना। परिचालित-(सं०वि०) चलाया हुआ, निर्वाह किया हुआ,हिलायाहुआ। परिचित-जिसका परिचयहुआ हो,जानासमझा,अभिज्ञ, मिलने जुलने वाला, संचित, इकट्ठा किया हुआ; परिचिति-(सं० स्त्री०) अभिज्ञता, जानकारी।
परिचुम्बन-(सं० नपुं०) अति प्रेम से गाढ़ चुम्बन।
परिचो-(हिं०स्त्री०) परिचय, ज्ञान।
परिच्छद-(सं०पुं०) परिवार, परिजन, कुटुम्ब, वेश, पहिरावा, किसी पदार्थ को ढापने की वस्तु, असबाब, सामग्री, राजचिह्न, राजा के साथ रहने वाला नौकर।
परिच्छन्न-(सं० वि०) परिष्कृत, स्वच्छ किया हुआ, वस्त्रयुक्त, कपड़ा पहिने हुए, छिपा हुआ, ढपा हुआ, सजाया हुआ।
परिच्छा-(हिं० स्त्री०) देखो परिक्षा।
परिच्छित्ति-(सं०स्त्री०) परिच्छेद, सीमा, हद।
परिच्छिन्न-(सं०वि०) मर्यादित, विभक्त, सीमायुक्त।
परिच्छेद-(सं०पुं०) विभाजन, काट कर विभाग करना, टुकड़े करना, ग्रन्थ या पुस्तक का ऐसा खण्ड जिसमें स्वतन्त्र विषय का वर्णन हो,अध्याय, प्रकरण; परिच्छेद्य-(सं०वि०)विभाज्य, बाँटने योग्य।
परिच्युति-(सं०स्त्री०) पतन, गिरना।
परिछन-(हिं० पुं०) देखो परछन।
परिछाहीं-(हिं० क्रि०) देखो परछाईं।
परिछिन्न-(हिं० वि०) देखो परिच्छन्न।
परिजंक-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क।
परिजटन-(हिं०पुं०) देखो पर्यटन।
परिजन-(सं०पुं०) परिवार, आश्रित वर्ग, सर्वदा साथ रहने वाला सेवक, अनुचरवर्ग; परिजनता-(सं० स्त्री०) आधीनता।
परिजाड्य-(सं०स्त्री०) जडता, मूर्खता।
परिजात-(सं०वि०) जन्मा हुआ, उत्पन्न
परिज्ञप्ति-(सं०स्त्री०) जान पहिचान।

परिज्ञा-(सं०स्त्री०) सूक्ष्म ज्ञान; **परिज्ञात**-(स०वि०) विशेष रूप से जाना हुआ; **परिज्ञाता**-(हिं० पुं०) ज्ञानी, बुद्धिमान; **परिज्ञान**-(सं० नपुं०) किसी वस्तु का भली भाँति ज्ञान, सूक्ष्म ज्ञान; **परिज्ञेय**-(सं०वि०) जानने योग्य।
परिटील-(सं० पुं०) किसी पक्षी का आकाश में चक्कर खाते हुए उड़ना।
परिणत-(सं०वि०) पका हुआ, पचा हुआ, रूप बदला हुआ, प्रौढ, तुष्ट; **परिणति**-(सं०स्त्री०) अवनति झुकाव, परिपाक, अन्त, प्रौढता, पुष्टि, वृद्धता।
परिणद्ध-सं० वि०) बँधा हुआ, लपेटा हुआ, फैला हुआ, बटा हुआ।
परिणय-(सं० पुं०) विवाह, व्याह; **परिणयन**-(सं०पुं०) विवाह करने की क्रिया।
परिणाम-(सं०पु०) विकार, प्रकृति का अन्यथा भाव, एक अर्थालंकार जिसमे एक वर्णनीय विषय में अन्य किसी वस्तु का आरोप किया जाता है और वह आरोप्यमान वस्तु अभिन्न रूप में प्रकृत विषय की उपयोगी होती है, रूपान्तर प्राप्ति, बदलने का भाव या कार्य, फल, बढा होना, परिपुष्टि, विकास, समाप्त होना, बीतना, योग के अनुसार एक स्थिति का दूसरी स्थिति प्राप्त करना, सांख्य के अनुसार स्वाभाविक रूप से एक अवस्था त्यागकर दूसरी अवस्था प्राप्त करना; **परिणामदर्शी**-(स० वि०) भविष्य को जानकर काम करने वाला, सोच विचार कर काम करने वाला, सूक्ष्मदर्शी; **परिणाम दृष्टि**-(हिं०स्त्री०) आगामी फल की ओर दृष्टि; **परिणामवाद**-(सं० पुं०) वह सिद्धान्त जिसके अनुसार ससार की उत्पत्ति नाश आदि नित्य परिणाम रूप में मानी जाती है; **परिणामशूल**-(स० पु०) भोजन पचने के समय पेट में उत्पन्न होने वाला शूल; **परिणामी**-(सं०वि०) जो परिवर्तन स्वीकार करे, बदलने वाला।
परिणायक-(सं० पुं०) सेनापति, नेता, पति
परिणाह-(सं० पुं०) विस्तार, फैलाव, चौड़ाई।
परिणीत-(सं०वि०) विवाहित, जिसका व्याह हो गया हो, समस्प्त, पूर्ण; **परिणेता**-(हिं० पुं०) स्वामी, पति, भार्या; **परिणेय**-(सं०वि०) विवाह के योग्य; **परितः**-(सं० अव्य०) चारो ओर, पूर्ण रूप से, सब प्रकार से।
परितच्छ-(हिं०पुं०) देखो प्रत्यक्ष।
परितप्त-(सं०वि०) क्लेश अनभव करता हुआ, अत्यन्त गरम, तपा हुआ, जलता हुआ; **परितप्ति**-(सं० स्त्री०) जलन, दाह, गरमी।
परतर्पण-(स०नपु०) भली भाँति तृप्ति।
परिताप-(सं०पुं०) दुःख, सन्ताप, मानसिक क्लेश, पछतावा, भय, डर, अत्यन्त गरमी, कँपकपी, एक नरक का नाम; **परितापी**-(हिं०वि०) दुःखित, व्यथित, जिसको परिताप हो, पीडा देने वाला।
परितिक्त-(सं० वि०) बहुत कड़ुवा, बहुत तीता (पुं०) नीम का वृक्ष।
परितुष्ट-(स० वि०) अच्छी तरह से सन्तुष्ट, प्रसन्न; **परितुष्टि**-(सं०स्त्री०) सन्तोष, प्रसन्नता।
परितृप्त-(सं० वि०) अच्छी तरह से सन्तुष्ट, अघाया हुआ।
परितोष-(स० पु०) तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता; **परितोषक**-(सं० वि०) प्रसन्न करने वाला; **परितोषण**-सन्तोष, तुष्टि; **परितोषी**-(हिं० वि०) सन्तोषी; **परितोस**-(हिं०पु०) देखो परितोष।
परित्यक्त-(सं० वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ; **परित्याग**-(सं० पु०) त्यागने का भाव, अलग कर देना, छोड़ना; **परित्यागी**-(सं० वि०) त्याग करने वाला, छोड़ने वाला; **परित्यागन**-(स०नपु०) परित्याग, छोड़ना; **परित्याज्य**-(सं० वि०) परित्याग के योग्य।
परित्रस्त-(सं० वि०) भयभीत, डरा हुआ।
परित्राण-(सं०नपुं०) रक्षा, आत्मरक्षा, बचाव।
परित्रात-(सं० वि०) रक्षा किया हुआ; **परित्राता**-(सं० वि०) बचानेवाला, रक्षा करने वाला।
परिदर-(स०पु०) दाँत का एक रोग; **परिदर्शन**-(सं० नपुं०) अवलोकन, देखना; **परिदष्ट**-(सं०वि०) काटकर टुकड़ा किया हुआ; **परिदान**-(सं० नपु०) वापस करना, लौटा देना।
परिदाय-(सं०पुं०) सुगन्धि।
परिदाह-(सं०पु०) शोक, सन्ताप।
परिदीन-(सं० वि०) अत्यन्त खिन्न या उदास।
परिदेवक-(सं०पुं०) विलाप करनेवाला।
परिध-(हिं० पु०) देखो परिधि।
परिधन-(हिं० पु०) नीचे पहिरने का वस्त्र-धोती आदि; **परिधान**-(सं० नपुं०) पहिरने का वस्त्र, शरीर पर कपड़ा, लपेटना, कपड़ा पहिरना, स्तुति, गायन आदि का समाप्त करना; **परिधापन**-(सं०नपुं०) पहिरने की क्रिया; **परिधाय**-(सं० पुं०) परिधान, वस्त्र, नितंब चूतड़; **परिधायक**-(सं०पु०) ढाँपने या लपेटने वाला।
परिधि-(सं०पुं०) रेखा गणित में वह रेखा जो किसी वृत्त के चारो ओर खींची जाती है, सूर्य, चन्द्र आदि के चारो ओर का प्रभामण्डल, घेरा, बाड़ा, नियमित मार्ग, कक्षा, वस्त्र।
परिधीर-(सं०वि०) अत्यन्त गम्भीर।
परिधूपित-(सं०वि०) धूप द्वारा सुवासित।
परिधेय-(सं०वि०) पहिरने योग्य, (नपुं०) कपड़ा, पहिरने का वस्त्र।
परिध्वंस-(सं०पुं० अत्यन्त नाश।
परिनय-(हिं०पुं०) देखो परिणय।
परिनिर्वाण-(सं०नपु०) पूर्ण मोक्ष।
परिनिर्वृत्ति-(सं० वि०) पूर्ण रूप से निर्वाण प्राप्त; **परिनिर्वृत्ति**-सं०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष।
परिनिश्चय-(सं० पुं०) स्थिर निश्चय।
परिनिष्ठा-सं०स्त्री०) पूर्णता समाप्ति।
परिन्यास-(सं० पुं०) काव्य में वह स्थान जहाँ कोई विशेष अर्थ पूरा होता हो, नाटक में प्रधान कथा की मूलभूत घटना की सूचना सकेत द्वारा किया जाना; **परिपंचा**-(हिं०पुं०) देखो प्रपंचा। **परिपंथी**-(हिं०पुं०) शत्रु। **परिपक्व**-(स०वि०) विकसित, प्रौढ, अच्छी तरह से पका हुआ, बहुदर्शी, अनुभवी, निपुण, प्रवीण, जो अच्छी तरह पच गया हो; **परिपक्वता**-(सं०स्त्री०) बहु दर्शिता
परिपद्-(सं०स्त्री०) जाल, फन्दा।
परिपन्थ-(सं० पुं०) वह जो मार्ग को रोके हो; **परिपन्थक, परिपन्थी**-(स० पुं०) शत्रु।
परिपवन-सं० पुं०) चालनी, चलनी।
परिपाक-(सं० पुं०) पकना या पकाया जाना, पचने का भाव, बहुदर्शिता, निपुणता, कुशलता कर्म का फल, परिणाम, प्रौढ़ता, पूर्णता; **परिपाचन**-(सं०नपुं०) अच्छी तरहसे पच जाना।
परिपाटल-(सं० वि०) पिलाहट लिये लाल रंग का।
परिपाटी-(सं०स्त्री०) अनुक्रम, श्रेणी, प्रणाली, ढंग, रीति, पद्धति, चाव, अङ्कगणित।
पारिपश्वचर-(स०वि०) बगल में चरने जाने वाला।
परिपार-हि०पु०) मर्यादा।
परिपालक-(सं०वि०) रक्षा करनेवाला; **परिपालन**-(सं० नपुं०) परिरक्ष, देख रेख, रखवाली, रक्षा, बचाव।
परिपिच्छ-(सं० पुं०) मोर के पोंछ का बना हुआ प्राचीन काल एक आभूषण।
परिपिष्ट-(सं० वि०) दलित, कुचला हुआ; **परिपीडन**-(सं० नपुं०) अत्यन्त कष्ट या हानि पहुँचाने का कार्य।
परिपीवर-(सं०वि०) बहुत मोटा।
परिपुष्ट-(सं०वि०) अच्छी तरहसे पुष्ट, जिसका पालन पोषण भली भाँति हुआ हो।
परिपूत-(सं०वि०) विशुद्ध, अति पवित्र।
परिपूरक-(सं०वि०) समृद्ध कर्ता, धन-धान्यसे पूर्ण करनेवाला; **परिपूरित**-(स०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, समष्टि किया हुआ।
परिपूरन-(हि० वि०) देखो परिपूर्ण।
परिपूर्ण-(सं०वि०) सम्पूर्ण पूरा किया हुआ, तृप्त, अघाया हुआ; **परिपूर्णता**-(सं० स्त्री०) सम्पूर्णता; **परिपूर्णत्व**-(सं०नपुं०) परिपूर्णता; **परिपूर्ति**-(सं० स्त्री०) परिपूर्ण होने की स्थिति या भाव।
परिपृच्छक-(सं०पुं०) पूछने वाला।
परिपेलव-(स०वि०) अति सुकुमार।
परिपोट-(सं०नपुं०) कान का एक रोग।
परिपोषण-(सं०नपुं०) पालन पोषण।
परिप्रश्न-(सं०पुं०) युक्तायुक्त प्रश्न, जिज्ञासा।
परिप्राप्ति-(सं०स्त्री०) लाभ, मिलना।
परिप्रेषित-(स० वि०) भेजा हुआ; **परिप्रेष्य**-(सं०पुं०) दास, टहलुआ, (वि०) भेजने योग्य।
परिप्लव-(सं०वि०) अस्थिर, चंचल, काँपता हुआ, गति युक्त, चलता हुआ, (पु०) प्लावन, बाढ, नाव, अत्याचार; **परिप्लुत**-(सं०वि०) आर्द्र, भीगा हुआ, प्लावित, डूबा हुआ; **परिप्लुता**-(सं०स्त्री०) मदिरा।
परिप्लुष्ट-(सं० वि०) जला हुआ, भुना हुआ।
परिफुल्ल-(सं०वि०) अत्यन्त खिला हुआ, रोमांचित, अत्यन्त।
परिबन्ध-(सं०नपुं०) जकड़ कर बाँधना।
परिवर्ह-(सं०पुं०) राजा का छत्र, चमर आदि, राज चिन्ह।
परिबाधा-(सं०स्त्री०) कष्ट बाधा, पीड़ा।
परिवृंहण-(सं०नपुं०) उन्नति, बढ़ती।
परिबोध-(सं० पुं०) सम्यक् ज्ञान।
परिभक्ष-(सं० वि०) दूसरे का माल खाने वाला। **परभक्षण**-(सं० नपुं०) संपूर्ण रूप से खा जाना।
परिभङ्ग-(सं० वि०) अच्छी तरह से चूर किया हुआ।
परिभव, परिभवन-(सं० पुं०; नपुं०) अनादर, तिरस्कार, पराजय। **परिभवी**-(हि० वि०) तिरस्कार करने वाला। **परिभाव**-(सं० पुं०) अनादर, तिरस्कार।
परिभावन-(सं० नपुं०) संयोग, मिलाप, चिन्ता। **परिभावना**-(स०स्त्री०) चिन्ता, सोच, साहित्य में वह पद या वाक्य जिससे अधिक कुतूहल या उत्सुकता सूचित होती है या उत्पन्न होती है। **परिभावी**-(हि०वि०) तिरस्कार किया हुआ, (पु०) तिरस्कार या अपमान करने वाला।
परिभाषक-(सं० वि०) निन्दक, निन्दा द्वारा किसी का अपमान करनेवाला; **परिभाषण**-(स० नपुं०) निन्दा करते हुए उलहना देना।
परिभाषा-(सं० स्त्री०) स्पष्ट या संशय रहित कथन, किसी शब्द का इस प्रकार अर्थ करना कि जिसमें उसकी विशेषता और व्याप्ति पूर्णरूप से निश्चित हो जावे, किसी शास्त्र ग्रन्थ आदि की विशिष्ट संज्ञा, ऐसा शब्द जो किसी शास्त्र में निर्दिष्ट अर्थ में व्यवहार किया गया हो, शास्त्रका

की बनाई हुई संज्ञा, लक्षण, सूत्र के छ लक्षणों में से एक, निन्दा । **परिभषित**-(सं० वि०) जिसकी परिभाषा की गई हो, अच्छी तरह से कहा हुआ । **परिभाषी**-(हिं० वि०) बोलने वाला ।
परिभुक्त-(सं० वि०) जिसका उपभोग किया गया हो ।
परिभू-(सं० वि०) जो चारो ओर से आच्छादित हो, (पु०) परिपालक, ईश्वर ।
परिभूत-(सं०वि०) अवमानित, तिरस्कार किया हुआ, पराजित, हराया हुआ ।
परिभूषण-(सं० पुं०) सजाने की क्रिया या भाव।
परिभृति-(सं०स्त्री०) निरादर, तिरस्कार ।
परिभूषित-(सं० वि०) सजाया या सँवारा हुआ ।
परिभेद-(सं० पुं०) तलवार तीर आदि का घाव । **परिभेदक**-(सं०वि०) गहरा घाव करने वाला ।
परिभोक्ता-(सं० पु०) दूसरे के धन का उपभोग करने वाला । **परिभोग**-(स०पु०) उपभोग, स्त्री प्रसंग मैथुन ।
परिभ्रम-(सं० पुं०) भ्रमण, भटकना, भ्रम, भ्रान्ति । **परिभ्रमण**-(सं० नपुं०) पर्यटन, इधर उधर घूमना, चक्कर खाना, परिधि, घेरा ।
परिभ्रष्ट-(स०वि०) पतित, गिरा हुआ, भागा हुआ ।
परिमण्डल-(सं पुं०) वर्तुलाकार (स्त्री०) चन्द्रमा के चारो ओर की प्रभा, परिधि, घेरा ।
परिमन्थर-(सं०वि०) बहुत धीरा या धीमा
परिमन्द-(सं० वि०) बहुत थका हुआ ।
परिमर-(सं० पु०) वायु, हवा ।
परिमर्श-(सं० पुं०) परामर्श, विचार ।
परिमर्ष-(सं० पुं०) ईर्षा, डाह, कुढन ।
परिमल-(सं० पुं०) उत्तम गन्ध, मैथुन, सहवास, विमर्दन, मलने का काम, कुंकुम आदि का मलना; **परिमलज**-मैथुन से प्राप्त सुख ।
परिमाण-(सं० पुं०) माप, वह मान जो तौल या नापने से जानी जाय । **परिमापक**-(सं० नपुं०) नापनेका कोई यन्त्र ।
परिमान-(हिं० पुं०) देखो परिमाण ।
परिमार्गण-(सं०नपुं०) खोजना ढूंढना।
परिमाजक-(सं० नपुं०) धोने या माँजने वाला, परिशोधक, परिष्कारक। **परिमार्जन**-(सं०नपुं०) परिशोधन, मार्जन, एक प्रकार की मिठाई ।
परिमार्जनीय-(वि०) सशोधन करने योग्य । **परिमार्जित**-(सं० वि०) धोया हुआ, माँजा हुआ ।
परिमित-(सं० वि०) अल्प, थोड़ा, कम, यथार्थ परिमाण, जिसका परिमाण ज्ञात हो, तौला हुआ; मिला हुआ ।
परिमिति-(स० स्त्री०) भूमि मापन शास्त्र, (हिं० स्त्री०) मर्यादा, प्रतिष्ठा ।
परिमिलन-(स० नपुं०) अच्छी तरह मिलना ।
परिमुख-(सं०वि०) मुख के चारो ओर का ।
परिमुक्त-(सं०वि०) पूर्ण रूप से मुक्त ।
परिमूढ-(स० वि०) व्याकुल, विचलित,
परिमृज-(सं० वि०) धोना या माँजना ।
परिमृष्ट-(स० वि०) पकड़ा हुआ, परामर्श किया हुआ ।
परिमेय-(स० वि०) नापने या तौलने योग्य, जिसके नापने या तौलने का प्रयोजन हो, संकुचित, थोड़ा ।
परिमोक्ष-(सं० पुं०) सम्यक् मुक्ति, पूर्ण मोक्ष, परित्याग, छोड़ना, विष्णु ।
परिमोक्षण-(सं० नपुं०) परित्याग, मुक्ति, मोक्ष ।
परिमोष-(सं० पुं०) स्तेय, चोरी ।
परिमोषक-(सं० पुं०) चोरी करने वाला ठग, चोर ।
परिमोहन-(सं० नपुं०) वशीकरण ।
परिम्लान-(सं० वि०) कुम्हलाया हुआ ।
परियक-(हि० पुं०) देखो पर्यङ्क । **परियंत**-(हि० अव्य०) देखो पर्यन्त ।
परियत्त-(सं० वि०) चारो ओर से घिरा हुआ ।
परिया-(तामिल परैयान) दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति का नाम ।
परियाण-(सं० नपुं०) घुमाई फिराई ।
परियात-(स०वि०) लौटकर आया हुआ ।
परिरक्षक-(सं० वि०) सब तरह से रक्षा करने वाला । **परिरक्षण**-(सं० नपुं०) सब प्रकार से रक्षा । **परिरक्षणीय**-(स० वि०) रक्षा करने योग्य ।
परिरक्षा-(सं० स्त्री०) परिपालन ।
परिरक्षित-(स० वि०) उत्तम रूप से रक्षित । **परिरक्षी**-(हिं० क्रि०) रक्षाकारी, बचाने वाला ।
परिरथ्या-(सं० स्त्री०) चौड़ी सड़क ।
परिरम्भ-(सं० पु०) परिरम्भन (सं० नपुं०) आलिंगन । **परिरम्भना**-(हिं०क्रि०) आलिंगन करना ।
परिरोध-(सं० पु०) अवरोध, रुकावट ।
परिलघु-(सं० वि०) बहुत छोटा ।
परिलङ्घन-(स०नपुं०) फलांग मारना ।
परिलिखन-(स० पुं०) रगड़कर किसी वस्तु को चिकनाना । **परिलिखित**-(स० वि०) रेखा से घिरा हुआ ।
परिलुप्त-(सं०वि०) नष्ट, क्षति प्राप्त ।
परिलेख-(सं० पुं०) कलम या कूची जिससे रेखा या चित्र बनाया जाय, चित्र का स्थूल रूप जिसमें केवल रेखा हो रग न भरा हो, चित्र, उल्लेख, वर्णन । **परिलेखन**-(सं०नपुं०) किसी वस्तु के चारो ओर रेखा खींचना ।
परिलेखना-(हिं०क्रि०) समझना, विचार करना ।
परिवञ्च-(सं० पुं०) धोखा, छल ।
परिवत्सर-(सं० पुं०) एक पूरा वर्ष ।
परिवदन-(सं०नपुं०) परिवाद, निन्दा ।
परिवर्जक-(सं०वि०) त्याग करने वाला, छोड़ने वाला । **परिवर्जन**-(सं० नपुं०) परित्याग, मारण । **परिवर्जनीय**-(सं० वि०) त्याग करने योग्य । **परिवर्जित**-(सं०वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
परिवर्त-(सं० पुं०) विनिमय, बदला, घुमाव, चक्कर, युग का अन्त, अदल बदल, ग्रन्थ का अध्याय, स्वर साधन की एक प्रणाली । **परिवर्तक**-(सं०वि०) घूमने फिरने वाला, चक्कर खाने वाला, चक्कर देने वाला, बदलने वाला, उलटने पलटने वाला । **परिवर्तन**-(स०नपुं०) दो वस्तुओं का परस्पर अदल बदल, घुमाव, फेरा, जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जावे, बदलने की क्रिया, किसी काल या युग की समाप्ति । **परिवर्तनीय**-(सं०वि०) बदलने योग्य **परिवर्तित**-(सं०वि०) जिसका आकार या रूप बदल गया हो, बदला हुआ, जो बदले में मिला हो । **परिवर्ती**-(हिं० वि०) परिवर्तनशील, बार बार बदलने वाला, बारबार घूमने वाला, बदला करने वाला ।
परिवर्तुल-(सं० वि०) अत्यन्त गोल ।
परिवर्धन-(स०नपुं०) अच्छी तरह वृद्धि होना, किसी वस्तु का संख्या गुण आदि में बढ़ना । **परिवर्धित**-(स०वि०) बढा हुआ, बढाया हुआ ।
परिवसथ-(स० पुं०) ग्राम, गांव ।
परिवह-(सं०पु०) सात पवनों में से एक जो प्रातःकाल आकाश गंगा को बहाता हुआ शुक्र तारा को घुमाता है, अग्नि की सात जिह्वा में से एक ।
परिवा-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की पहिली तिथि, प्रतिपदा, पड़िवा ।
परिवाद-(सं० पुं०) अपवाद, निन्दा, सितार या बीन बजाने की अगूठी ।
परिवादक-(सं०वि०) निन्दा करने वाला, बीन बजाने वाला ।
परिवादी-(हिं०वि०) अपवादक, निन्दा करने वाला ।
परिवाप-(सं० पुं०) परिच्छद, मुण्डन ।
परिवार-(सं०पुं०) परिजन समूह, कुटुम्ब, तलवार की खोली, म्यान, कोई ढापने वाली वस्तु, राजा या रईस के अनुचर जो उनके पीछे पीछे चलते हैं, आश्रितजन, एक स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समुदाय, कुल।
परिवारण-(सं०नपुं०) आवरण, तलवार की म्यान । **परिवारी**-(हिं०पुं०) कुटुम्ब । **परिवास**-(स०पु०) प्रवास, परदेश निवास, घर, सुगन्ध । **परिवाह**-(स०पुं०) राजा को भेंट देने योग्य वस्तु, पानी के निकलने का मार्ग, मेड़ आदि के ऊपर से जल का बहना ।
परिवित्त-(सं०पुं०) वह मनुष्य जिसका छोटा भाई उससे पहिले अपना विवाह कर ले ।
परिविद्ध-(स०वि०) सब प्रकार से बँधा हुआ । **परिविष्ट**-(सं०वि०) परिवृत, घेरा हुआ ।
परिविहार-(सं०पुं०) भली भाँति विहार
परिवीत-(सं०वि०) घिरा हुआ, लपेटा हुआ । **परिवृत**-(सं०वि०) ढपा हुआ, छिपा हुआ; **परिवृत्ति**-(सं०स्त्री०) वेष्टन, छिपाने या घेरने की वस्तु । **परिवृत**-(सं०वि०) ढपा या घिरा हुआ, समाप्त
परिवृत्ति-(स०स्त्री०) घुमाव, चक्कर, वेष्टन, घेरा, विनिमय, अदला बदला, समाप्ति, अन्त, किसी शब्द या पद को दूसरे ऐसे शब्द या पद से बदलना कि अर्थ वही बना रहे; एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु को लेकर दूसरी वस्तु को लेने का वर्णन किया जाता है ।
परिवृद्ध-(सं०वि०) अत्यन्त बढा हुआ।
परिवृद्धि-(सं०स्त्री०) परिवर्धन, बढती।
परिवेत्ता-(हिं०पुं०) वह मनुष्य जो बड़े भाई से पहिले अपना विवाह करले ।
परिवेद-(स०पु०) परिज्ञान, पूरा ज्ञान ।
परिवेदक-(स०पुं०) पूरा ज्ञान कराने वाला ।
परिवेदन-(सं०नपुं०) विवाह, अग्निहोत्र के लिये अग्निस्थापन, विचरण, घूमना, पूरा ज्ञान, लाभ, प्राप्ति, विद्यमानता, बड़ा दुःख या कष्ट, वादाविवाद ।
परिवेश-(सं०पुं०) परिधि वेष्टन, घेरा।
परिवेष-(सं०पु०) परिधि, सूर्य का मंडल, परोसना, कोई ऐसी वस्तु जो चारों ओर से घेर कर किसी वस्तु की रक्षा करती हो, कोट, परकोटा,
परिवेषण-(सं०नपुं०) परिधि, घेरा, परोसना, सूर्य या चन्द्र के चारो ओर का मण्डल, भोजन पात्र में अन्न आदि का दान । **परिवेष्टन**-(स०नपु०) आच्छादन, चारों ओर से घेरना, ढापने या लपेटन की वस्तु, परिधि; घेरा । **परिवेष्टा**-(हिं०पुं०) परोसने वाला । **परिवेष्टित**-(सं०वि०) चारो ओर से घिरा हुआ ।
परिव्यक्त-(सं०वि०) अत्यन्त स्पष्ट या प्रगट ।
परिव्याध-(सं०पुं०) जलबेत, कनैर का वृक्ष, (वि०) चारो ओर से बेधने वाला
परिव्रज्या-(सं०स्त्री) तपस्या, इधर उधर घूमना, भिक्षुक की भांति जीवन बिताना ।
परिव्राज, **परिव्राजक**, **परिव्राट्**-(सं०पुं०) सब प्रकार के विषय भोगों का परित्याग करके भ्रमण करने वाला, सन्यासी, परमहंस, यति, श्रमणक ।
परिशमित-(सं०वि०) दूर किया हुआ ।
परिशाश्वत-(सं० वि०) जो सर्वदा समान रहे ।
परिशिष्ट-(सं०नपुं०) पुस्तक या लेख का वह अंश जिसमें ऐसी बातें हों जो यथास्थान लिखने में छूट गई हों, पुस्तक की उपयोगिता बढ़ाने के लिये अवशिष्ट विषयों की पूर्ति ।

(वि०) अवशिष्ट, छूटा हुआ।
परिशीलन-(सं०नपुं०) सब बातों या विषयों को सोच समझ कर पढना, आलिंगन, स्पर्श, छूना।
परिशुद्ध-(सं०वि०) अच्छी तरह से शुद्ध किया हुआ। **परिशुद्धि**-(सं०स्त्री०) पाप से छुटकारा।
परिशुश्रूषा-(सं०स्त्री०) भली भाँति सेवा करना।
परिशुष्क-(सं०वि०) बहुत सूखा हुआ, रसहीन।
परिश्रुत-(सं०नपुं०) सुरा, मद्य।
परिशेष-(सं०पुं०)समाप्ति, अन्त, (वि०) अवशिष्ट, बचा हुआ।
परिशोध-(सं०पुं०) पूर्ण शुद्धि, ऋण की चुकती। **परिशोधन**-(सं० नपुं०) पूर्ण रीति से शुद्ध करना,ऋण की चुकती।
परिशोधण-(सं०नपुं०) सब प्रकार से शुद्धता।
परिश्रम-(सं०पुं०)श्रम,क्लेश,प्रयास,उद्यम, व्यायाम। **परिश्रमी**-(सं०वि०) उद्यमी।
परिश्रय-(सं०पुं०) वेष्टन,घेरा, आश्रय, रक्षा का स्थान, सभा, परिषद्।
परिश्रयण-(सं०नपुं०) वेष्टन, घेरा।
परिश्रान्त-(सं०वि०) बहुत थका हुआ; **परिश्रान्ति**-(सं०स्त्री०) थकावट।
परिश्राम-(सं०पुं०) क्लान्ति, थकावट।
परिश्रुत-(सं०वि०) प्रसिद्ध।
परिश्लिष्ट-(सं०वि०) आलिंगित, छाती से लगाया हुआ।
परिषत्, परिषद्-(सं०स्त्री०) प्राचीन काल की विद्वान् ब्राह्मणों की सभा, समूह, समाज, सभा, भीड़।
परिषद-(सं०पुं०)सदस्य, सभासद,स्वामी के पीछे पीछे चलने वाले, अनुचर।
परिषद्वल-(सं०वि०) सभासद, सदस्य।
परिषिक्त-(सं०वि०) सींचा हुआ, जिस पर छिड़काव किया गया हो।
परिषीवण-(सं० पुं०) गाँठ देना, सीना
परिषेक-(सं०पुं०) छिड़काव, स्नान।
परिषेचक-(सं०वि०) सींचने वाला, छिड़कने वाला।
परिष्कार-(सं०पुं०) संस्कार, शुद्धि, शोभा, अलंकार, भूषण, सजावट, संयम, स्वच्छता, निर्मलता, शृंगार
परिष्कारण-(सं०पुं०) पाला पोसा हुआ, दत्तक पुत्र। **परिष्क्रिया**-(सं०स्त्री०) शुद्ध करना, माँजना, धोना सजाना, विभूषित करना, सँवारना
परिष्कृत-(सं०वि०) विभूषित, सजाया हुआ घिरा हुवा, शुद्ध किया हुआ।
परिष्टवन-(सं०पुं०) अच्छी तरह से स्तुति करना।
परिष्टोम-(सं०पुं०) हाथी के पीठ पर की झूल।
परिष्यन्द-(सं० पुं०) नदी, जल की धारा, द्वीप, टापू।
परिष्वङ्ग-(सं०पुं०)आलिंगन,गले मिलना
परिसंख्या-(सं० नपुं०) परिगणना गिनती, एक अर्थालंकार जिसमे पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के समान दूसरी बात को व्यंग या वाच्य के हटाने केनिमित्त कही जाती है, यह कही हुई बात अन्य प्रमाणों से सिद्ध जान पड़ती है। **परिसख्यान**-(सं०नपुं०) परिगणन, गिनती।
परिसञ्चर-(सं०पुं०)सृष्टि का प्रलय काल
परिसभ्य-(सं०पुं०) सभ्य, सभासद।
परिसमन्त-(सं० पुं०) किसी वृत्त के चारो ओर की सीमा।
परिसमाप्त-(सं० वि०) पूर्ण रूप से समाप्त, निःशेष।
परिसर-(सं०पुं०) नदी या पर्वत के आस पास की भूमि,मृत्यु ,विधि, शिरा,नाड़ी
परिसरण-(सं०नपुं०) इधर उधर घूमना, पराभव, हार, मृत्यु।
परिसर्प-(सं०पुं०) किसी चारों ओर घूमना, अपने कुटुम्बों से घिरा हुआ, घूमना फिरना, एक प्रकार का सर्प, एक प्रकार का कुष्ट रोग, नाटक में किसी व्यक्ति का केवल मार्ग के चिह्न आदि की सहायता से अनुमान करते हुए किसी को खोजने के लिए भटकते फिरना।
परिसाधन-(सं०नपुं०) परम विषय का साधन।
परिसारक-(सं०पुं०) इधर उधर भटकने वाला। **परिसारी**-(सं० वि०) भ्रमणकारी, घूमने वाला।
परिसीमा-(सं०स्त्री०) चारो ओर की सीमा।
परिस्कन्द-(सं०पुं०)वह व्यक्ति जिसका पालन पोषण उसके पिता के अतिरिक्त दूसरे ने किया हो।
परिस्तरण-(सं० नपुं०) छितराना, फैलाना, लपेटना।
परिस्थान-(सं०नपुं०)स्थिति,रहने का घर
परिस्पन्दन-(सं०नपुं०) अधिक हिलना या काँपना।
परिस्पर्धा-(सं० स्त्री०) धन, बल, यश आदि में किसी के बराबर होने की इच्छा; **परिस्पर्धी**-(सं०वि०) स्पर्धा करनेवाला।
परिस्फुट-(सं०वि०) व्यक्त, प्रकाशित, विकसित,अच्छी तरह से खिला हुआ।
परिस्पन्द-(सं०पुं०) क्षरण, झरना या बहना।
परिस्रव-(सं०पुं०) टपकाना,चूना, मन्द प्रवाह। **परिस्रुत**-(सं०वि०) टपकता या चूता हुआ, (पुं०) पुष्पसार, फूलों का इत्र। **परिस्रुता**-(सं०स्त्री०) अंगूर की मदिरा।
परिहँस-(हिं०पुं०) देखो परिहंस।
परिहत-(सं०वि०) मृत, मरा हुआ; (हिं०स्त्री०) हल के अन्तिम और मुख्य भाग की वह सीधी खड़ी लकड़ी जिसके ऊपर की ओर मुठिया लगी होती है तथा नीचे की ओर हरिस तथा तरेली ठोंकी रहती है।
परिहर-(हिं०पुं०) देखो परिहार।
परिहरण-(सं०नपुं०)परिवर्जन, त्याग, किसी की वस्तु को बलपूर्वक छीन लेना, निवारण, निराकरण, अनिष्ट दोष आदि का उपचार करना।
परिहरणीय-(सं०वि०) त्यागने योग्य, हटाने या दूर करने योग्य।
परिहरना-(हिं०क्रि०) त्यागना,छोड़ना
परिहँस-(हिं०पुं०)परिहास, हँसी, ईर्षा, दुःख, खेद, डाह।
परिहा-(सं०पुं०) एक प्रकार का छंद
परिहाटक-(सं०नपुं०)वलय,हाथ का कंगन
परिहानि-(सं०स्त्री०) विशेष हानि।
परिहार-(सं०पुं०)अवज्ञा,अनादर, उपेक्षा, पशुओं के चरने की सार्वजनिक भूमि, निःशुल्क भूमि छूट, खण्ड्डन, दोषादि दूर करने की युक्ति, लड़ाई में जीता हुआ धन, त्याग, छिपाने की क्रिया, उपचार, त्यागने का कार्य, तिरस्कार, सूर्य और चन्द्र वंशीय राजपूतों की एक स्वतन्त्र शाखा, किसी अनुचित कार्य के करने का प्रायश्चित्त नाटक में दिखाया जाना।
परिहाना-(हिं०क्रि०) प्रहार करना,मारना
परिहारक-(सं०वि०)परिहार करनेवाला
परिहारना-(हिं०क्रि०) प्रहार करना, मारना। **परिहारी**-(सं०वि०)निवारण, त्याग या हरण करनेवाला।
परिहार्य-(सं०वि०) जिसका परिहार किया जा सके।
परिहारयोग्य-(पुं०) वलय, कंकण।
परिहाना परिहास-(हिं०पुं०) परिहास, क्रीड़ा, खेल, हंसी, दिल्लगी, ठट्ठा।
परिहित-(सं०वि०) पहिरा हुआ, ऊपर डाला हुआ, आच्छादित, चारो ओर से छिपा हुआ।
परिहीण-(सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
परिहृत-(सं०वि०) पतित, भ्रष्ट, गिरा हुआ, नष्ट।
परीक्षक-(सं०पुं०) परखने या जांचने वाला, परिक्षा लेनेवाला।
परीक्षण-(सं० नपुं०) परीक्षा, जाँच, पड़ताल।
परीक्षा-(सं०स्त्री०) गुण दोष विवेचन, वह कार्य जिससे किसी योग्यता सामर्थ्य आदि जाना जावे, समीक्षा, समालोचना, निरीक्षण, जाँच पड़ताल, अनुभव प्राप्त करने के लिये, प्रयोग
परीक्षित्-(सं०पुं०) अर्जुन के पौत्र, अभिमन्यु के पुत्र-पाण्डु कुल के एक प्रसिद्ध राजा, शमीक ऋषि के शाप से इनको तक्षक ने डँसा था जिससे इनकी मृत्यु हुई थी, कलियुग का आरम्भ इनकी मृत्यु के बाद से हुआ था।
परीक्षित-(सं०वि०) जिसकी परीक्षा की गई हो। **परीक्ष्य**-(सं० वि०) परीक्षा करने योग्य, जिसकी परीक्षा करना उचित हो।
परीखना-(हिं०क्रि०) देखो परखना।
परीछत-(हिं०पुं०) देखो परीक्षित्।
परीछना-(हिं०क्रि०) परीक्षा लेना।
परीछन-(हिं०पुं०) पैर में पहिरने का एक आभूषण।
परीछा-(हिं०स्त्री०) देखो परीक्षा।
परीछित-(हिं०वि०) देखो परीक्षित।
परीत-(सं०वि०) परिवेष्टित,घिरा हुआ
परीताप-(सं०पुं०) देखो परिताप।
परीतोष-(सं०पुं०) परितोष, सन्तोष।
परीत्त-(सं०वि०) संकीर्ण, संकुचित।
परीप्सा-(सं०स्त्री०) प्राप्त करने की अभिलाषा।
परीभाव-(सं०पुं०) परिभाव, अनादर
परीरम्भ-(सं०पुं०) परिरम्भ,आलिङ्गन
परीवाद-(सं०पुं०) परिवाद, अपवाद, निन्दा।
परीवार-(सं०पुं०) तलवार की खोल, परिजन।
परीषह-(सं० पुं०) जैन शास्त्रों के अनुसार बाईस प्रकार के त्याग।
परीसार-(हिं०पुं०) इधर उधर घूमना;
परीहार-(सं०पुं०)अवज्ञा, अनादर।
परीहास-(सं०पुं०) परिहास, उपहास, क्रीड़ा।
परु-(सं०पुं०) पर्वत, समुद्र, स्वर्गलोक, ग्रन्थि।
परुई-(हिं०स्त्री०)भड़भूँजे की अन्न भूजने की नाँद।
परुख-(हिं० वि०) देखो परुष, कठोर, तीक्ष्ण; **परुखाई**-(हिं०स्त्री०) परुषता, कठोरता, कड़ाई।
परुष-(सं०नपुं०)कठोर बात,तीर, बाण, सरपत, (वि०) कठोर, कड़ा, निष्ठुर, अप्रिय, निर्दय, जिसको दया न हो।
परुषता-(हिं०स्त्री०)कर्कशता,कठोरता, निर्दयता, निष्ठुरता, (पुं०) परुषता।
परुषत्व-(सं०नपुं०) निष्ठुरता।
परुषा-(सं०स्त्री०) रावी नदी, फालसा, काव्य में कठोर शब्दों के प्रयोग करने की रीति जिसमें टवर्गीय, द्वित्व, संयुक्त, रेफ और श, ष आदि वर्ण प्रयोग किये गये हों तथा लम्बे लम्बे समास अधिक आवें।
परुषाक्षर-(सं० पुं०) कर्कश वचन, कठोर बात।
परुषित-(सं०वि०) कठोर वचन बोलने वाला।
परुषेतर-(सं०वि०) कोमल, मृदु।
परुषोक्ति-(सं०स्त्री०) निष्ठुर वचन।
परूंगा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी बशाहलूत का वृक्ष।
परूष, परूषक-(सं०नपुं०) फालसा।
परे-(हिं०अव्य०) दूर, उधर, उस ओर, अतीत,बाहर,ऊपर,बढ़कर, पीछे बाद,
परेई-(हिं०स्त्री०) पण्डकी, कबूतरी।
परेखना-(हिं०क्रि०)सब ओर से देखना, जाँचना, प्रतीक्षा करना, आसरा देखना।
परेखा-(हिं०स्त्री०)परीक्षा, जाँचपड़ताल, प्रतीति, विश्वास, पश्चात्ताप, पछ-

तावा, खेद।

परेग-(हिं०स्त्री०) लोहे की कील, छोटा काँटा।

परेट-(हिं०पुं०) सैनिक शिक्षा।

परेत-(हिं०पुं०) देखो प्रेत, एक भूत योनि का नाम, (वि०) मृत, मरा हुआ; परेत भूमि-प्रेतभूमि, श्मशान; परेत राज-यम; परेतवास-श्मशान भूमि।

परेता-(हिं०पुं०)सूत लपेटने का जुलाहों का एक अस्त्र, वह बेलन या चरखी जिसपर पतंग (गुड्डी) की डोरी, (नख) लपेटी जाती है।

परेर-(हिं०पुं०) आकाश।

परेली-(हिं० पुं०) ताण्डव नृत्य का एक भेद।

परेवा-(हिं०पुं०) पण्डुक पक्षी, कबूतर, तीव्र उड़ने वाली चिड़िया, शीघ्रगामी पत्रवाहक, हरकारा।

परेश-(सं०पुं०) ईश्वर, विष्णु, ब्रह्मा।

परेहा-(हिं० पुं०) वह भूमि जो हल चलाने के बाद सींची गई हो।

परोषित-(सं० वि०) दूसरे से पाला पोसा हुआ, (पुं०) कोकिल, कोयल।

परों-(हिं०क्रि०वि०) देखो परसों।

परोक्ष-(सं०नपुं०)अप्रत्यक्ष, अनुपस्थिति, अभाव, तपस्वी, (वि०) जो सामने न हो, गुप्त, छिपा हुआ।

परोक्षत्व-(सं०नपुं०) अदृश्य होने का भाव।

परोजन-(हिं०पुं०)देखो प्रयोजन।

परोट-(सं०पुं०) घी में पकाई हुई पूरी।

परोढा(सं०स्त्री०)विवाहित, ब्याहा हुआ।

परोना-(हिं०क्रि०) देखो पिरोना।

परोपकार-(सं०पुं०) दूसरे के हित का काम, दूसरे का उपकार। परोपकारक (सं० पुं०) वह जो दूसरे की भलाई करता हो। परोपकारी-(सं० वि०) दूसरे का हित करनेवाला।

परोपजाप-(सं०पुं०) शत्रुओं में परस्पर भेद करना।

परोरना-(हिं०क्रि०)अभिमन्त्रित करना, मन्त्र पढ़कर फूंकना।

परोवरीण-(सं०वि०)जिसमें भला बुरा दोनों गुण हो।

परोवरीयस्-(सं०वि०) अत्यन्त श्रेष्ठ; परमात्मा।

परोसना-(हिं०क्रि०)खाने के लिये किसी के सामने तरह तरह के भोजन रखना, परसना।

परोसा-(हिं०पुं०) एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो थाली या पत्तल पर रखकर कहीं भेजा जाता है।

परोसी-(हिं०पुं०) देखो पड़ोसी।

परोसैया-(हिं०पुं०)भोजन परसने वाला;

परोहन-(हिं०पुं०) वह जिस पर सवार होकर यात्रा की जाय यथा-घोड़ा, बैलगाड़ी आदि।

परौता-(हिं०स्त्री०) अन्न को ओसाने के लिये हवा करने की चादर।

पर्कट-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बंगला

पर्कटि, पर्कटी-(सं०स्त्री०)पाकड़ का वृक्ष;

पर्कार-(हिं०पुं०) देखो परकार,परकाल

पर्काला-(हिं०पुं०) देखो परकाला।

पर्गना-(हिं०पुं०) देखो परगना।

पर्चा-(हिं०पुं०) देखो परचा।

पर्चाना-(हिं०क्रि०) देखो परचाना।

पर्चून-(हिं०पुं०) देखो परचून।

पर्चूनिया-(हिं०पुं०) देखो परचूनी।

पर्ज-(हिं०पुं०) देखो परज।

पर्जक-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क।

पर्जनी-(सं०स्त्री०) दारु हरिद्रा, "दारुहलदी;

पर्जन्य-(सं० पुं०) इन्द्र, मेघ, बादल, विष्णु। पर्जन्या-(सं०स्त्री०)दारुहलदी;

पर्ण-(सं०नपुं०) पत्र, पत्ता, ताम्बूल, पान, पक्ष, डैना, परास का पत्ता।

पर्णकार-(सं०पुं०) पान बेंचने वाला, तमोली, बरई।

पर्णकुटिका, पर्णकुटी-(सं०पुं०) पर्णशाला, झोपड़ी, केवल पत्तों की बनी हुई कुटी; पर्ण कृच्छ-(सं०पुं०) एक व्रत जिसमें पांच दिन तक पत्तों का क्वाथ पीकर रहा जाता है। पर्णखण्ड (सं०पुं०) पुष्पहीन वनस्पति।

पर्णचीरपट-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

पर्णनाल-(सं०नपुं०) पत्तों का डंठल।

पर्णभोजन-(सं०वि०) जो केवल पत्ते खाकर रहता हो। पर्णमणि-(सं०पुं०) पान की जड़, कुलंजन।

पर्णमृग-(सं०पुं०)वृक्षों पर रहने वाला पशु। पर्णल-(सं०वि०)पर्णमुक्त,जिसमें पत्ते न हों। पर्णलता-(सं०स्त्री०) पान की बेल। पर्णवी-(सं० वि०) खग, पक्षी। पर्णशय्या-(सं०स्त्री०) पत्तों का बिछावन। पर्णशाला-(सं०स्त्री०)पत्रों की बनी हुई कुटी।

पर्णाटक-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम;

पर्णाद-(सं०वि०)पत्ते खाकर रहनेवाला;

पर्णाशन-(सं०वि०) देखो पर्णाद; (पुं०) मेघ, बादल।

पर्णास-(सं०पुं०) तुलसी।

पर्णाहार-(सं०वि०)जो पत्ते खाकर रहता हो।

पर्णिक-(सं०वि०) पत्ते बेंचने वाला।

पर्णिका-(सं०स्त्री०) पिठवन की लता।

पर्णी-(हिं०पुं०) वृक्ष, पेड़, तेजपत्ता, पिठवन, एक प्रकार की अप्सरा।

पर्णोटज-(सं०नपुं०) देखो पर्णशाला।

पर्त-(हिं०स्त्री०) देखो परत।

पर्दनी-(हिं०स्त्री०) धोती।

पर्दा-(हिं०पुं०) देखो परदा।

पर्दानशीन-(हिं०वि०) परदे में रहने वाली।

पर्पट-(सं०पुं०) पित्तपापड़ा, पपड़ी।

पर्पटी-(सं०स्त्री०) गोपीचन्दन, पपड़ी, उत्तर देश का एक सुगन्ध द्रव्य पानड़ी। पर्पटीरस-वैद्यक में एक प्रकार का रस। पर्परीक-(सं०पुं०) सूर्य, अग्नि, जलाशय।

पर्ब-(हिं०पुं०) देखो पर्व।

पर्बत-(हिं०पुं०) देखो पर्वत।

पर्बती-(हिं०वि०)पहाड़ संबंधी, पहाड़ी;

पर्यग्नि-(सं०पुं०) वह अग्नि जिसको लेकर परिक्रमा की जाती है।

पर्यङ्क-(सं०पुं०) पलंग, योग का एक आसन, एक प्रकार का वीरासन।

पर्यटन-(सं० नपुं०) भ्रमण, घूमना, फिरना।

पर्यन्त-(सं०पुं०) समीप, पास, (अव्य०) तक, लौ। पर्यन्तीकृत-(सं० वि०) समाप्त किया हुआ।

पर्यन्न-(सं०पुं०) गरजता हुआ बादल, बादल की गरज।

पर्यय-(सं०पुं०)किसी नियम का उल्लघन

पर्ययण-(सं०नपुं०) घोड़े की पीठ पर रखने का वस्त्र या गद्दी।

पर्यवरोध-(सं०पुं०) बाधा, रुकावट।

पर्यवसान-(सं०नपुं०) अन्त, समाप्ति, अन्तर्भाव, राग, क्रोध, ठीक अर्थ निश्चित करना।

पर्यवसायी-(हिं०वि०) समाप्त करने वाला।

पर्यवस्कन्द-(सं०पुं०) रथ से उतरना।

पर्यवस्थान-(सं०नपुं०) विरोध।

पर्यवस्थित-(सं०वि०) क्रोधयुक्त।

पर्यसन-(सं०नपुं०) चारो ओर फेंकना;

पर्यस्त-(सं० वि०) पतित, प्रसारित, फैलाया हुआ, दूर किया हुआ।

पर्यस्तापहुति-(सं० स्त्री०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु का गुण छिपाकर उस गुण का अन्य वस्तु में आरोपित होना वर्णन किया जाता है;

पर्यस्तिका-(सं० स्त्री०) पर्यङ्क, खाट, पलग।

पर्याकुल-(सं० वि०) बहुत व्यग्र या घबड़ाया हुआ।

पर्याकुलत्व-(सं०नपुं०) व्याकुलता।

पर्याण-(सं०नपुं०) घोड़े का साज।

पर्याप्त-(सं०वि०) यथेष्ट, पूरा, प्राप्त, मिला हुआ, जिसमें शक्ति या सामर्थ्य हो। पर्याप्ति-(सं० स्त्री०) प्रकाश, प्राप्ति, शक्ति, नैयायिकों के मत से एक प्रकार का स्वरूप संबंध;

पर्याय-(सं०पुं०) क्रम, परंपरा अनुक्रम, परिपाटी, प्रकार, अवसर; निर्माण, बनाने का काम, सम्पर्क विशेष, एकार्थ वाचक शब्द, वह अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रय लेना वर्णन किया जाता है।

पर्याय क्रम-बड़ाई छोटाई आदि के विचार से प्रकार या क्रम; पर्याय-वाचक-जिसमें पर्याय शब्द हों; पर्याय वृत्ति-एक वृत्ति को त्याग करके दूसरी ग्रहण करना; पर्याय-शयन-अपनी अपनी पारी से सोना।

पर्यायशब्द-पर्याय वाचक शब्द।

पर्यायिक-(सं०पुं०) संगीत या नृत्य का अंग भेद।

पर्यायोक्त-(सं०वि०) जो क्रम से कहा गया हो पर्यायोक्ति-वह शब्दालंकार जिसमें कोई बात स्पष्ट रूप से न कही जाकर घुमाव फिराव से कही गई हो अथवा किसी सुन्दर बहाने से कार्य साधन का वर्णन किया गया हो।

पर्यालोचन-(सं० नपुं०) अनुशीलन, अच्छी तरह से देख भाल।

पर्यालोचना-(सं०स्त्री०) किसी वस्तु की पूरी देख भाल, पूरी जांच पड़ताल;

पर्यावर्त-(सं०पुं०) लौटना।

पर्यास-(सं०पुं०) हनन, बध, नाश।

पर्यासन-(सं० नपुं०) किसी को घेर कर बैठना।

पर्युत्थान-(सं० नपुं०) अच्छी तरह से उठना।

पर्युदय-(सं०अव्य०) सूर्योदय का समीप होना।

पर्युपासक-(सं० नपुं०) सेवा करने वाला। पर्युपासन-(सं०नपुं०) सेवा सत्कार।

पर्युप्ति-(सं०स्त्री०) चारो ओर बीज बोना।

पर्व-(सं०नपुं०) बांस की गाँठ, अंगुलि की जोड़ उत्सव, प्रस्ताव, पूर्णिमा और प्रतिपदा की सन्धि, अंश, भाग, धर्म, क्षण, सन्धि स्थान, अवसर, सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण, यज्ञ आदि के समय होने वाला उत्सव, भाग, टुकड़ा, पक्ष। पर्वक-(सं०नपुं०) पैर का घुटना। पर्वकाल-(सं०पुं०) पर्वका समय, पुण्यकाल, पर्व के दिन, चन्द्रमा का क्षय काल। पर्वगामी-(सं०पुं०) पर्व के दिन स्त्री से संभोग करने वाला।

पर्वण-(सं०पुं०)पूरा करने की क्रिया या भाव। पर्वणी-(सं०स्त्री०) पूर्णिमा पौर्णमासी, सन्धि का एक रोग।

पर्वत-(सं० पुं०) शैल, गिरि, पहाड़, किसी वस्तु का ऊंचा ढेर, वृक्ष, पेड़, एक प्रकार का साग, सन्यासी, एक प्रकार के गन्धर्व, मरीचि के एक पुत्र का नाम; पर्वतकाक-डोम कौवा, पर्वतजा-(सं० स्त्री०) नदी, गौरी, पार्वती। पर्वतपति-(सं०पुं०) हिमालय। पर्वतमोचा-(सं०स्त्री०) पहाड़ी केला। पर्वतराज-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत। पर्वतराजपुत्री-(सं०स्त्री०) दुर्गा। पर्वतवासी-(हिं०वि०) पहाड़ पर रहने वाला। पर्वतात्मजा-(सं०स्त्री०) दुर्गा। पर्वतारि-(सं०पुं०) इन्द्र। पर्वताशय-(सं० पुं०) मेघ, बादल। पर्वताश्रय-(सं०वि०) पहाड़ पर रहने वाले। पर्वतास्त्र-(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकने पर शत्रु की सेना पर बड़े बड़े पत्थर गिरने लगते थे अथवा सेना के चारो ओर पहाड़ खड़े हो जाते थे।

पर्वती-(हिं०वि०)पर्वत संबंधी, पहाड़ी।

पर्वतीय-(सं०वि०)पर्वत संबंधी, पहाड़ी, पहाड़ पर रहने वाला, पहाड़ पर

रहने वाला, पहाड़ पर उत्पन्न होने वाला।
पर्वतेश्वर-(सं०पुं०)पर्वतराज, हिमालय
पर्वतोद्भव-(सं० पुं०) हिंगुल, पारद, पारा। **पर्वतोद्भुत**-(सं०नपुं०)अभ्रक, अबरख।
पर्वधि-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा।
पर्वमूल-(सं० नपुं०) चतुर्दशी और अमावस्या की मध्यवर्ती मुहूर्त।
पर्वमूला-(सं० स्त्री०) सफ़ेद दूब।
पर्वयोनि-(सं०पुं०) गाँठदार वनस्पति यथा ऊख।
पर्वर-(हिं०पुं०) देखो परवर, परवल।
पर्वरुट, पर्वरुह-(सं० पुं०) दाड़िम, अनार।
पर्वसन्धि-(सं०पुं०)घुटने पर का जोड़, सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण लगने का समय, पूर्णिमा अथवा अमावस्या, और प्रतिपदा के बीच का समय।
पर्वा-(हिं०स्त्री०) चिन्ता।
पर्वानगी-(हिं०स्त्री०) आज्ञा।
पर्वाना-(हिं०पुं०) आज्ञा पत्र।
पर्वाह-(सं० पुं०) पर्वदिन, उत्सव का दिन; (हिं०स्त्री०) चिन्ता।
पार्वणी-(हिं०स्त्री०) देखो पर्व।
पर्शनीय-(हिं०वि०) स्पर्श करने योग्य।
पर्शु-(सं०पुं०) परशु, फरसा, पसली। **पर्शुका**-(सं०स्त्री०) छाती पर की हड्डी, **पर्शुपाणि**-(सं०पुं०) परशुराम।
पर्शुराम-(सं०पुं०) देखो परशुराम।
पर्ष-(सं०वि०) निष्ठुर, कठोर।
पर्षद-(सं०स्त्री०) सभा, समाज।
पलंका-(हिं०स्त्री०)अति दूर का स्थान।
पलंग-(हिं०पुं०) पर्यङ्क, सुन्दर चारपाई। **पलंगड़ी**-(हिं० स्त्री०) छोटी पलंग। **पलंगतोड़**-(हिं० पुं०) एक प्रकार की स्तम्भन औषधि। **पलंगपोश**-(हिं०पुं०) पलंग पर बिछाने की चादर। **पलंगिया**-(हिं० स्त्री०) छोटी पलंग, खटिया।
पलड़ी-(हिं०स्त्री०) नावका वह बांस जिसमें पाल बाँधी जाती है।
पल-(सं०पुं०)समय का एक प्राचीन विभाग जो चौबीस सेकेन्ड के बराबर होता है, घड़ी या दण्ड का साठवां भाग, धान का पुआल, चलने की क्रिया, छल, तुला, तराजू, एक तौल जो चार कर्ष के बराबर होती है, आमिष, मांस, मूर्ख, दृग-चंचल, पलक, समय का अति सूक्ष्म विभाग, क्षण; **पल मारते**-अति सूक्ष्म काल में, तुरत; **पल के पलमें**-अति शीघ्र।
पलई-(हिं०स्त्री०) पेड़ की टहनी, वृक्ष का सिरा।
पलक-(सं०पुं०)आँख के ऊपर का चमड़े का परदा जिसके गिरने से आँख बन्द होती और उठने से खुलती है, क्षण, पल; **पलक झपते**-बहुत थोड़े समय में, बात की बात में; किसी के लिये **पलक बिछाना**-बड़े प्रेम से स्वागत करना; **पलक भाँजना**-पलक गिराना, **पलक मारना**-पलक गिराना, आँखों से संकेत करना, सेन देना; **पलक गिराना**-आँख बन्द होना, झपकी लगना; नींद आना; **पलक से पलक न लगना**-आँखें खुली रहना, नींद न आना। **पलक दरिया**-(हिं०वि०) अति उदार, बड़ा दानी। **पलकनेवाज**-(हिं०वि०) अति उदार, क्षण भर में निहाल कर देने वाला।
पलकपीटा-(हिं०पुं०)आंख की बरौनी झड़ने का एक रोग।
पलका-(हिं०पुं०) पलंग, चारपाई।
पलक्या-(सं०स्त्री०) पालकी का साग।
पलखन-(हिं०पुं०) पाकर का पेड़।
पलगण्ड-(सं० पुं०) कच्ची भीत में मिट्टी का लेप करने वाला।
पलङ्कट-(सं०वि०) भीरु, डरपोक।
पलङ्कष-(सं०पुं०) राक्षस, गुग्गुल।
पलङ्कषा-(सं० स्त्री०) गुग्गुल, पलाश, गोरखमुण्डी, लाह, मक्खी, छोटा गोखरू।
पलचर-(हिं०पुं०) राजपूत जाति के पुराणोक्त उपदेवता।
पलटन-(हिं०स्त्री०) अंग्रेजी पैदल सेना का एक विभाग इसमें प्रायः दो सौ सैनिक रहते है,समूह, समुदाय, दल।
पलटना-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु के ऊपर के भाग को नीचे और नीचे वाले को ऊपर करना या हो जाना, अच्छी स्थिति प्राप्त करना, दिन बहुरना, बार बार उलट फेर करना एक बात से मुकर कर दूसरी बात कहना, बदलना, लौटाना, फेरना, काया पलट होना, लौटना, पीछे फिरना, मुड़ना, एक वस्तु को त्याग कर दूसरी ग्रहण करना।
पलटनिया-(हिं० पुं०) पलटन में काम करने वाला सैनिक।
पलटा-(हिं० पुं०) पलटने की क्रिया या भाव, प्रतिफल, बदला, परिवर्तन, नाव में वह पटरी जिसपर खेने वाला बैठता है, मल्लयुद्ध की एक युक्ति, गाने में शीघ्रता से थोड़े से स्वरों पर चक्कर लगाना अथवा ऊँचे स्वर तक पहुँच कर धीरे धीरे नीचे स्वरों तक पहुँचना, लोहे या पीतल की बड़ी खुरचनी; **पलटा खाना**-परिस्थिति का बदल जाना।
पलटाना-(हिं०क्रि०) बदलना, फेरना, लौटाना। **पलटी**-(हिं०स्त्री०) देखो पलटा। **पलटे**-(हिं०क्रि०वि०) प्रतिफल स्वरूप में, बदले में।
पलड़ा-(हिं०पुं०) तुलापट, तराजू का पल्ला।
पलथा-(हिं०पुं०)पानीमें कलैया मारना।
पलथी-(हिं०स्त्री०) बैठने का एक ढंग जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाँएं और बाएँ पैर का पंजा दहिने पट्ठे के नीचे दबा कर रक्खा जाता है और दोनों टांगें ऊपर नीचे हो कर दोनों जांघों से त्रिकोण बनाती हैं।
पलद-(सं०वि०) वह द्रव्य जिसके खाने से मांस की वृद्धि होती है।
पलना-(हिं०क्रि०) पाला पोसा जाना, खा पीकर मोटा होना, तैयार होना कोई वस्तु किसी को देना।
पलनाना-(हिं०क्रि०) घोड़े के पीठ पर गद्दी कसकर तैयार करना।
पलप्रिय-(सं०वि०) मांस खाने वाला। **पलभक्षी**-(हिं०पुं०) मांसाहारी, मांस खाने वाला।
पलरा-(हिं०पुं०) देखो पलड़ा।
पलल-(सं०नपुं०) मांस, कीचड़, तिल का चूर्ण, तिलकुट, (पुं०) सेवार, पत्थर, दूध, शव, बल, शक्ति।
पललप्रिय-(सं०वि०) देखो पलप्रिय।
पलव-(सं० पुं०) मछली फँसाने का झाबा।
पलवल-(हिं०पुं०) देखो परवल।
पलवा-(हिं० पुं०) ऊख का अगौरा, अंगुली, चुल्लू।
पलवाना-(हिं०क्रि०) किसी के द्वारा पालन पोषण कराना।
पलवारी-(हिं०पुं०) नाव खेने वाला मांझी।
पलवाल-(वि०) हृष्ट पुष्ट, हट्टा कट्टा।
पलवैया-(हिं०वि०) पालन पोषण करने वाला।
पलस्तर-(हिं० पुं०) भीत आदि पर गारे आदि का लेप, लेट; **पलस्तर ढीला होना**-अति व्यग्र होना, **पलस्तरकारी**-पलस्तर करने या होने का काम।
पलहना-(हिं० क्रि०) पत्तियों से भर जाना, पल्लित होना, पत्तियां फूटना
पलहा-(हिं०पुं०)कोमल पत्ता, कोंपल।
पला-(हिं०पुं०) पल, निमिष, तराजू का पलड़ा, पल्ला, किनारा, अंचल।
पलाङ्ग-(सं०पुं०) शिशुमार, सुइन्स।
पलाण्डु-(सं०पुं०) प्याज।
पलाद-(सं०पुं०) मांसभक्षक, राक्षस।
पलान-(हिं०पुं०) पशुओं की पीठ पर चढ़ने या बोझ रखने का गद्दा। **पलानना**-(हिं०क्रि०) घोड़े आदि पर पलान कसना, गद्दी बांधना, धावा करने के लिए तैयारी करना।
पलाना-(हिं० क्रि०) पलायन करना, भाग जाना भगा देना।
पलानी-(हिं०स्त्री०) पैर की अंगुलियों में पहिरने का एक गहना, छप्पर।
पलान्न-(सं०नपुं०) चावल और मांस के मेल से बना हुआ भोजन।
पलायक-(सं० वि०) पलायन कारी, भग्गू, भागने वाला। **पलायन**-(सं० नपुं०) भागने की क्रिया या भाव, भागना।
पलायमान-(सं०वि०) भागता हुआ।
पलायित-(सं० वि०) भागा हुआ।
पलायी-(सं०वि०) पलायक, भग्गू।
पलाल-(सं०पुं०) किसी पौधे का सूखा डण्ठल, पुआल।
पलाश-(सं०नपुं०) पत्र, पत्ता, ढाक का फूल, पलास का वृक्ष कचूर, राक्षस, शासन, मगध देश, पाश, (वि०) निष्ठुर कठोर। **पलाशक**-(सं० पुं०) पलास का फूल। **पलाशन**-(सं०पुं०) सारिका, मैना। **पलाशनिर्यास**-(सं०पुं०)ढाक की गोंद। **पलाशपर्णी**-(सं०स्त्री०) अश्वगन्धा, असगन्ध। **पलाशिका**-(सं०पुं०) बिदारी कन्द। **पलाशी**-(सं०वि०) पलाशयुक्त, मांसाहारी, (पुं०) राक्षस।
पलास-(हिं०पुं०) पलाश, ढाक।
पलासना-(हिं०क्रि०) सिल जाने पर जूतेका निकला हुआ चमड़ा काटना।
पलिजी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास
पलिक-(सं०वि०)जो तौल में एक पल हो
पलिका-(हिं०पुं०) खाट, चारपाई।
पलिघ-(हिं०पुं०) घड़ा,प्राचीर,गोशाला, गोपुर, फाटक, अर्गला, अगरी।
पलित-(सं०नपुं०) ताप, गरमी, गुग्गुल, कीचड़, मिर्च, (वि०) वृद्ध, बूढ़ा, सफ़ेद बाल वाला।
पलिती-(हिं०वि०) पलित रोग वाला।
पलिया-(हिं०पुं०) पशुओं के गला फूलने का रोग।
पलिहर-(हिं०पुं०) वह खेत जो बरसात में बिना कुछ बोये हुए छोड़ दिया जाता है।
पली-(सं०स्त्री०) सामान्य मक्खी, (हिं० स्त्री०) आदि के बड़े पात्र में से घी या तेल निकालने की एक प्रकार की करछी।
पलीत-(हिं०पुं०) भूत, प्रेत, पिशाच, (वि०) दुष्ट, धूर्त, चालाक, मिट्टी; **पलीत होना**-दुर्दशा होना।
पलीती-(हिं०स्त्री०) छोटा पलीता।
पलुआ-(हिं०वि०) पाला हुआ, पालतू (पुं०) सन की जाति का एक पौधा
पलुहना-(हिं०क्रि०) पल्लवित होना कोंपल निकलना। **पलुहाना**-(हिं० क्रि०) हरा भरा करना।
पलूचना-(हिं०क्रि०) देना।
पलेट-(हिं०स्त्री०) लंबी पट्टी, गोंट।
पलेड़ना-(हिं०क्रि०) धक्का देना,ढकेलना
पलेथन-(हिं०पुं०) वह सूखा आंटा जो रोटी बेलती समय लोई में लगाया जाता है जिसमें वह चकले में चिपक जावे, परथन, किसी हानि के बाद होने वाला अनावश्यक व्यय; **पलेथन निकलना**-व्यग्र करना या होना।
पलेनर-(हिं०पुं०)चौरस करने की पटि
पलेना-(हिं०पुं०) देखो पलेनर।
पलेव-(हिं०पुं०)खेत की हलकी सिचाई, जूस को गाढ़ा करने के लिये इस मिलाया हुआ आंटा या मसाला

पलोटना-(हिं०क्रि०) पैर दबाना,कष्ट के कारण लोटना पोटना या तडफड़ाना

पलोथन-(हिं०पुं०) देखो पलेथन।

पल्टन-(हिं० पुं०) देखो पलटन।

पल्टा-(हिं०पुं०) देखो पलटा। **पलोवना**-(हिं०वि०) पैर दबाना, सेवा शुश्रूपा करना।

पलोसना-(हिं०क्रि०) जल आदि से धोना, शुश्रूपा करके अपने पक्ष पर लाना।

पल्यङ्क-(सं०पुं०) पलंग, पर्यङ्क, खाट।

पल्ल-(सं०पुं०) पलाल, पुआल।

पल्लव-(सं०पुं०) नये निकले हुए कोमल पत्ते, किसलय, विस्तार,बल, हाथ में पहिरने का कंगन, चपलता, नाच में हाथ रखने की एक विशेष स्थिति, पह्लव देश, दक्षिण का एक राजवंश। **पल्लवग्राही**-(सं०वि०) किसी विषय का पूर्ण ज्ञान न रखाने वाला। **पल्लवना**-(हिं०क्रि०) पत्ते निकलना, पल्लवित होना।

पल्लववाद-(सं०पुं०) हरिण हरिन।

पल्लवाधार-(सं०पुं०) ढ़ाल, शाखा।

पल्लवास्त्र-(सं०पुं०) कामदेव।

पल्लविक-(सं०वि०) कामुक, लम्पट।

पल्लवित-(सं०वि०) जिसमें नये नये पत्ते निकले हों, लहलहाता,हराभरा, विस्तृत, लंबा चौड़ा, रोमांच युक्त, जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों, (नपुं०) लाख का रंग।

पल्लवित्-(सं०पुं०) जिसमें पत्ते हों।

पल्ला-(हिं०पुं०)किसी वस्त्र का अंचल, दूरी, अधिकार में, पास, तराजू की एक ओर की डलिया, पलड़ा, कैंचीं के दो भागों में से एक भाग, पटल, किवाड़, पहल, तीन मन का बोझा, चादर जिसमे अन्न बाँध कर लोग ले जाते हैं, दुपलिया टोपी का एक भाग; **पल्ला छूटना**-छुटकारा पाना; **पल्ला पसारना**-किसी से कुछ मागने के लिये कपड़ा फैलाना; **पल्ले पड़ना**-प्राप्त होना, मिलना; **पल्ले बाँधना**-नियुक्त करना; **पल्ला भारी होना**-किसी पक्ष का बल बढ़ना।

पल्लि-(सं०स्त्री०) कुटी, ग्राम, गाँव, घर, छिपकली। **पल्ली**-(सं०स्त्री०) छिपकली, गोधा, बिस्तुइया।

पल्लू-(हिं०पुं०) चौड़ी गोंट, पल्ला, छोर, अँचरा।

पल्ले-(हिं०वि०) देखो परलय; पल्ला। **पल्लेदार**-(हिं०पुं०) आढ़त या दूकान में अन्न तौलने वाला मनुष्य, बया, अन्न ढोने वाला कूली। **पल्लेदारी**-(हिं०स्त्री०) अन्न तौलने का काम।

पल्लौ-(हिं०पुं०) देखो पल्लव; पल्ला।

पल्वल-(सं०पुं०)छोटा तालाब या गड्ढा

पल्वलावास-(सं०पुं०) कच्छप, कछुआ

पव-(सं०नपुं०) गोमय, गोबर, (पुं०) भूसी निकालना, ओसाना।

पवई-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की चिड़िया

पवन-(सं०पुं०) प्राण वायु, कुम्हार का आँवा, जल, पानी, विष्णु, श्वास, साँस, अन्न की भूसी अलगाना,(वि०) पावन, पवित्र।

पवन अस्त्र-(हिं०पुं०)वह अस्त्र जिसके चलाने से प्रचण्ड वायु बहने लगती है। **पवनकुमार**-(सं० पुं०) हनुमान, भीमसेन। **पवनचक्की**-(हिं०स्त्री) वायु के वेग से चलनेवाली चक्की या कल

पवनचक्र-(सं०पुं०) चक्कर खाती हुई वायु, चक्रवात, बवन्डर। **पवनज**, **पवनतनय**-(सं०पुं०)हनुमान, भीमसेन

पवनन्द, **पवननन्दन**-(सं०पुं०) हनुमान्, भीमसेन। **पवनपति**-(सं० पुं०) वायु के अधिष्ठाता देवता। **पवनपरीक्षा**-(सं०स्त्री०) ज्योतिषियों की एक क्रिया जिसके अनुसार आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा को देखकर ऋतु का भविष्य बतलाया जाता है।

पवनपुत्र-(सं०पुं०) हनुमान, भीमसेन

पवनबाण-(सं०पुं०) वह बाण जिसके चलने से वायु बड़े वेग से चलने लगे। **पवनवाहन**-(सं० पुं०) अग्नि।

पवनसंघात-(सं० पुं०) दो ओर से वायु का आकर आपस में वेग से टकराना। **पवनसुत**-(सं०पुं०)हनुमान भीमसेन। **पवनात्मज**-(सं०पुं०)भीमसेन, अग्नि। **पवनाश**, **पवनाशन**-(सं० पुं०) सर्प, साँप। **पवनाशिन्**-(सं०पुं०) सर्प, (वि०) जो हवा खाकर रहता हो। **पवनास्त्र**-(सं०पुं०) पुराण के अनुसार एक अस्त्र जिसके चलाने से वायु बड़े वेग से चलने लगती थी।

पवनी-(हिं० स्त्री०) गांव में वह नीच जाति जो गांव के रहनेवालों से नियमित रूप से कुछ खाना पीना पाती है।

पवनेष्ट-(सं०पुं०)बकायन,नीबू का पेड़

पवमान-(सं० पुं०) स्वाहा देवी के गर्भ से उत्पन्न अग्नि के एक पुत्र का नाम, चन्द्रमा का एक नाम।

पवर-(हिं०वि०) देखो प्रवर।

पवँरि-(हिं०स्त्री०) डचोढा।

पवंरिया-(हिं०पुं०) डचोढीदार।

पवर्ग-(सं०पुं०) वर्णमाला का पांचवाँ वर्ग, जिसमें, प, फ, ब, भ, म-ये पांच अक्षर है।

पवाँर-(हिं०पुं०)पमार क्षत्रियों की एक शाखा।

पवाँरना-(हिं० क्रि०) गिराना, फेंकना, खेत में छितरा कर बीज बोना।

पवाई-(हिं०स्त्री०) एक पैर का जूता, चक्की का एक पाट।

पवाड़-(हिं०पुं०) चकवड़।

पवाड़ा-(हिं०पुं०) देखो पँवाड़ा।

पवाना-(हिं० क्रि०) भोजन कराना, खिलाना।

पवार-(हिं०पुं०) देखो परमार।

पवि-(सं०पुं०) वज्र, बिजली, वाक्य, मार्ग, थूहर का वृक्ष।

पवित-(सं०वि०) पूत, पवित्र, शुद्ध।

पविताई-(हिं०स्त्री०) पवित्रता।

पवित्तर-(हिं०वि०) देखो पवित्र।

पवित्र-(सं० वि०) शुद्ध, निर्मल, (नपुं०) विष्णु, महादेव, कार्तिकेय, तिल का पौधा, कुश की बनी हुई हाथ में पहिरने की पवित्री, शुद्ध द्रव्य,मधु, घी, यज्ञोपवीत, वर्षा, तांबा, कुश, दूध, जल, पानी, रगड़।

पवित्रक-(सं०नपुं०) सूत का बना हुआ जाल, कुश, दौने का पेड़, गूलर या पीपल का वृक्ष, क्षत्रिय का यज्ञोपवीत।

पवित्रता-(सं० स्त्री०) स्वच्छता, शुद्धि,

पवित्रधान्य-(सं०नपुं०) यव, जौ।

पवित्रा-(सं०स्त्री०) श्रावण के शुक्लपक्ष की एकादशी, रेशम के दानों की बनी हुई माला, तुलसी, हल्दी, शमी का वृक्ष,पीपल का पेड़। **पवित्रात्मा** (हिं०वि०) जिसकी आत्मा पवित्र हो, शुद्ध अन्तःकरण वाला। **पवित्रित**-(सं०वि०) शुद्ध या निर्मल किया हुआ

पवित्री-(सं० स्त्री०) कुश का बना हुआ छल्ला जो यज्ञादि के समय अनामिका में पहिरा जाता है।

पविधर-(सं० पुं०) वज्र धारण करने वाले इन्द्र।

पवीर-(सं० नपुं०) आयुध, शस्त्र, हल की फार।

पवेरना-(हिं० क्रि०) छितराकर बोना।

पवेरा-(हिं०पुं०) वह बोवाई जो अन्न को हाथ से छितरा कर या फेंककर की जावे।

पशम-हिं० स्त्री०) बहुत बढ़िया कोमल ऊन जिसके दुशाले आदि बनते हैं, उपस्थ पर के बाल, शष्प; अति तुच्छ पदार्थ।

पशव्य-(सं०वि०) पशु सम्बन्धी।

पशु-(सं०पुं०) चार पैर से चलने वाले रोवाँ और पोंछ युक्त प्राणि, प्राणि मात्र, जीव, देवता, पागल, यज्ञ, सांसारिक मनुष्यों की आत्मा।

पशु कर्म-(सं० नपुं०) यज्ञ आदि में पशुओं का वलिदान। **पशुकाम**-(सं०वि०) गाय, भैंस आदि का अभिलाषी। **पशुक्रिया**-(सं०स्त्री०) मैथुन।

पशुघ्न-(सं० वि०) पशुघातक। **पशुचर्या**-(सं०स्त्री०)पशु के समान विवेकहीन आचरण। **पशुता**-(सं०स्त्री०) पशु का भाव, मूर्खता। **पशुत्व**-(सं० नपुं०) देखो पशुता।

पशुदा-(सं०स्त्री०) कुमार की एक अनुचरी का नाम। **पशुदेवता**-(सं०स्त्री०) पशुओं की अधिष्ठात्री देवता।

पशुधर्म-(सं०पुं०) पशुओं के समान यथेष्ट मैथुनादि कर्म, जो निन्दनीय समझे जाते हैं। **पशुनाथ**-(सं० पुं०) शिव, पशुस्वामी सिंह।

पशुप-(सं०वि०)पशुओं को पालनेवाला।

पशुपतास्त्र-(सं०पुं०)शिव का शूलास्त्र,

पशुपति-(सं० पुं०) शिव, महादेव, हुताशन, अग्नि, औषधि, दवा।

पशुपाल-(सं०पुं०) पशुओं को पालने-वाला; **पशुपालक**-(सं०वि०) पशुओं का रक्षक।

पशुपाश-(सं०पुं०) पशुरूप जीव का बंधन; **पशुपाशक**-(सं०पुं०) एक रतिबन्ध का नाम; **पशुबन्धक**-(सं०पुं०) पशुओं के बाँधने की रस्सी

पशुभाव-(सं० पुं०) पशुत्व, साधकों की मन्त्र सिद्धि का एक विशेष प्रकार।

पशुमार-(सं०अव्य०)पशु की तरह हिंसा

पशुरक्षि-(सं० पुं०) गोपाल,ग्वाला; **पशुरक्षी**-(सं०पुं०) पशु की रक्षा करने वाला; **पशुराज**-(सं० पुं०) सिंह,शेर; **पशुवत्**-(सं०वि०)पशु तुल्य,

पश्चात्-(सं०अव्य०) पीछे से बाद में, फिर, अनन्तर, (पुं०) पश्चिम दिशा, शेष अन्त; **पश्चात् कर्म**-(सं०नपुं०) वैद्यक के अनुसार वह कर्म जो शरीर के बल, वर्ण तथा अग्नि की वृद्धि के लिये रोग हटने पर किया जाता है।

पश्चात्ताप-(सं० पुं०) पछतावा; **पश्चात्तापी**-(सं०वि०) पछतावा करने वाला।

पश्चादुक्ति-(सं०स्त्री०) बाद में कहना।

पश्चाद्भाग-(सं०पुं०) पीछे का हिस्सा।

पश्चानुताप-(सं०पुं०) पछतावा।

पश्चान्मारुत-(सं०पुं०) पश्चिम की ओर बहने वाली वायु।

पश्चारुज-(सं०पुं०)बालकों का एक रोग

पश्चार्ध-(सं०वि०) शेषार्ध, अपरार्ध।

पश्चिम-(सं०वि०) अन्तिम, जो बाद में उत्पन्न हुआ हो, बाद का, (पुं०) वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है, प्रतीची, पच्छिम; **पश्चिमरात्र**-(सं०पुं०) रात्रि का शेष भाग; **पश्चिमवाहिनी**-(सं०वि०) पच्छिम की ओर बहने वाली (नदी)।

पश्चिमा-(सं०स्त्री०) सूर्यास्त की दिशा, पच्छिम; **पश्चिमाचल**-(सं०पुं०) एक कल्पित पर्वत जिसके विषय में लोगों की यह धारणा है कि अस्त होती समय सूर्य उसकी आड़ में छिप जाता है, अस्ताचल।

पश्चिमी-(हिं०वि०) पश्चिम संबंधी, पच्छिम का।

पश्चिमोत्तर-(सं० स्त्री०) वायुकोण, पच्छिम और उत्तर के बीच का कोण

पश्तो-(हिं०पुं०) भारत की आर्य भाषाओं में से एक देशी भाषा जो भारत के पश्चिमोत्तर सीमा से लेकर अफ़गानिस्तान में बोली जाती है। साढ़े तीन मात्रा का एक ताल।

पश्मीना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का उत्तम कोमल ऊनी वस्त्र।

पश्यन्ती-(सं०स्त्री०) नाद की उस समय की अवस्था या स्वरूप जब वह मूलाधार के उठकर हृदय में जाता है; वाणी या सरस्वती के चार चक्र

माने गये हैं-यथा-परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी।
पश्यतोहर-(सं०वि०) आँखों के सामने से वस्तु चुरा लेने वाला, जैसे सुनार
पश्वयन-(सं०नपुं०) एक प्रकार का यज्ञ; पश्वयन-(सं०पु०) एक प्रकार का वैदिक यज्ञ।
पश्वाचार-(सं०पु०) देवी का वह पूजन जो कामना और संकल्प पूर्वक वेदोक्त विधान से किया जाता है।
पष-(हिं०पु०) पक्ष, डैना, पंख।
पषा-(हिं०पुं०) श्मश्रु, दाढी।
पषाण-(न)-(हिं०पुं०) देखो पाषाण।
पषारना-(हिं०क्रि०)-प्रक्षालन, धोना।
पसंगा- (घा)-(हिं०पुं०) वह भार जो तराजू के पल्लों का समभार करने के लिये उस पल्ले की ओर जोती में बाँध दिया जाता है जो पल्ला हलका होता है, पासंग (वि०) बहुत कम या थोड़े परिमाण का; **पसंघा भी न होना**-कुछ भी न होना।
पसंती-(हिं०स्त्री०) देखो पश्यन्ती।
पसंदा-(हिं०पु०) एक प्रकार का कबाब
पसई-(हिं०स्त्री०) पहाड़ी राई।
पसताल-(हिं०पुं०) पानी के आस पास होने वाली एक प्रकार की घास।
पसनी-(हिं०स्त्री०) अन्न प्राशन संस्कार जिसमें बच्चों को पहिली बार अन्न खिलाया जाता है।
पसमीना-(हिं०पुं०) देखो पशमीना।
पसर-(हिं०पुं०) गहरी की हुई हथेली, आधी अंजली, विस्तार, फैलाव, आक्रमण, धावा, रात के समय पशु चुराने का काम; **पसरकटाली**-(हिं०स्त्री०) भटकटैया।
पसारना-(हिं०क्रि०) विस्तृत होना, बढ़ना, फैलाना, आगे की ओर बढ़ाना, पैर फैलाकर सोना, हाथ पैर फैलाकर लेटना।
पसरहा, पसरहट्टा-(हिं०पुं०) वह हाट जिसमें पंसारियों की दूकानें हों, जहां जड़ी बूटी, मसाले आदि बिकते हों।
पसराना-(हिं०क्रि०) पसारने का काम दूसरे से कराना; **पसरौंहाँ**-(हिं०वि०) पसारने या फैलाने वाला।
पसली-(हिं०स्त्री०) मनुष्यों तथा पशुओं के शरीर में छाती के अस्थिपंजर की गोलाकार आड़ी हड्डियों में से एक, पर्शु; **पसली फड़कना**-उमंग या जोश आना; **हड्डी पसली तोड़ना**-बहुत मारना।
पसवपेस-(हिं०पुं०) व्यग्रता, द्विविधा।
पसवा-(हिं०पुं०) हलका गुलाबी रंग।
पसही-(हिं०पुं०) तिन्नी का चावल।
पसा-(हिं०पुं०) अंजली।
पसाई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास,
पसाउ-(हिं०पुं०) प्रसाद, अनुकम्पा, प्रसन्नता।
पसाना-(हिं०क्रि०) भात में का माड़ निकालना, पसेव निकालना या गिराना।
पसार-(हिं०पुं०) पसारने की क्रिया या भाव, विस्तार, फैलाव; **पसारना**-(हिं०क्रि०) विस्तार करना, फैलाना, आगे को बढ़ाना।
पसारी-(हिं०पुं०) देखो पंसारी।
पसाव-(हिं०पुं०) वह पदार्थ जो पसाने पर निकले, माड़, पीच।
पसावन-(हिं०पुं०) किसी उबाली हुई वस्तु में का निकला हुआ पानी, माड़, पीच।
पसाहनि-(हिं०स्त्री०) अंगराग।
पसीजना-(हिं०क्रि०) किसी घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंशों का गरमी पाकर रसकर बहना, चित्त में दया उत्पन्न होना।
पसीना-(हिं०पुं०) परिश्रम या गरमी से शरीर में से निकलने वाला जल, श्रमवारि, स्वेद।
पसु-(हिं०पुं०) देखो पशु, जानवर; **पसुरी**-(हिं०स्त्री०) देखो पसली, पर्शु।
पसूज-(हिं०स्त्री०) वह सिलाई जिसमें तोपे लगाये जाते हैं; **पसूजना**-(हिं०क्रि०) सिलाई करना, सीना।
पसूता-(हिं०स्त्री०) प्रसूता, जिस स्त्री ने हाल में बच्चा जना हो।
पसेउ-(हिं०पु०) देखो पसेव।
पसेरी-(हिं०स्त्री०) पाँच सेर का बाँट, पंसेरी।
पसेव-(हिं०पुं०) वह तरल पदार्थ जो किसी पदार्थ के पसीजने पर निकले, रसकर निकलनेवाला जल, स्वेद, पसीना।
पसेवा-(हिं०पुं०) सोनार की अंगीठी पर रखने का ईंट का टुकड़ा।
पस्ताना-(हिं०क्रि०) देखो पछताना; **पस्तावा**-देखो पछतावा।
पस्स-(अं०पुं०) जहाज का भंडारी।
पस्सीबबूल-(हिं०पु०) एक प्रकार का पहाड़ी बबूल का वृक्ष, इस पेड़ की गोंद।
पहँ-(हिं०अव्य०) निकट, समीप, पास।
पहँसुल-(हिं०स्त्री०) तरकारी काटने का हँसुआ।
पहु-(हिं०स्त्री०) देखो पौ।
पहचनवाना-(हिं०क्रि०) पहचानने का काम करना।
पहचान-(हिं०स्त्री०) पहचानने की क्रिया या भाव, पहचानने की सामग्री, परिचय, जान-पहचान, लक्षण, भेद या विवेक करने की क्रिया या भाव, किसी की योग्यता, गुण आदि जानने की क्रिया या भाव; **पहिचानना**-(हिं०क्रि०) किसी व्यक्ति या वस्तु को देखते ही जान लेना कि वह कौन व्यक्ति या वस्तु है, विवेक करना, चीन्हना, किसी वस्तु का गुण दोष जानना, किसी वस्तु की आकृति रूप रंग देखकर उससे परिचित होना, अन्तर समझना।
पहटना-(हिं०क्रि०) भागने के लिये या पकड़ने के लिये किसी का पीछा करना, खदेड़ना, किसी शस्त्र की धार पैनी करना।
पहटा-(हिं०पुं०) देखो पाटा, पेठा।
पहनना-(हिं०क्रि०) परिधान करना, शरीर पर धारण करना; **पहनवाना**-(हिं०क्रि०) पहिरने का काम किसी दूसरे से कराना; **पहनाई**-(हिं०स्त्री०) पहनने की क्रिया या भाव, पहिनाने का शुल्क; **पहनाना**-(हिं०क्रि०) किसी के शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण कराना; **पहनावा**-(हिं०पुं०) परिधेय, पहिरने के प्रधान वस्त्र, वे वस्त्र जो मुख्य अवसर पर पहिने जाते हैं, पहिरने का ढंग।
पहपट-(हिं०पुं०) स्त्रियों के गाने की एक प्रकार की गीत, कोलाहल, गुप्तरूप से की हुई निन्दा, छल, ठगी, अपमान की चर्चा।
पहपटबाज-(हिं०पुं०) कोलाहल करने वाला, छली; **पहपटबाजी**-(हिं०स्त्री०) झगड़ालूपन, छल; **पहपटहाई**-(हिं०स्त्री०) झगड़ा करनेवाली।
पहर-(हिं०पुं०) युग, समय, दिन रात का आठवाँ भाग, तीन घंटे का समय।
पहरना-(हिं०क्रि०) देखो पहनना।
पहरा-(हिं०पुं०) रखवाली करने का प्रबन्ध, चौकी, रक्षकगण, चौकीदारों का समुदाय, रखवाली, नियुक्ति, पहरेदारों को तीन तीन घंटे पर बदले जाना, अभियुक्त को बन्द करने का घर, रक्षक का रात के समय भ्रमण या चक्कर, युग, समय, चौकीदार का शब्द, पैर रखने का शुभ या अशुभ फल, पहरे में रहने की स्थिति; **पहरा बदलना**-नये पहरेदार की नियुक्ति; **पहरा बैठाना**-किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये चौकीदार नियुक्त करना; **पहरा देना**-चौकसी करना; **पहरे में रखना**-बंद रखना।
पहराइत-(हिं०पुं०) पहरा देने वाला।
पहराना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना।
पहरावनी-(हिं०स्त्री०) वह पहिरावा जिसको कोई बड़ा अपने से छोटे को दे, खिलअत; **पहरावा**-(हिं०पुं०) देखो पहनावा।
पहरी-(हिं०पुं०) चौकीदार, पहरेदार; **पहरुआ, पहरू**-(हिं०पुं०) पहरा देने वाला, रक्षक, सन्तरी, चौकीदार।
पहल-(हिं० पुं०) किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई तथा मोटाई के कानों या रेखाओं से विभक्त समतल अंश, बगल, पहलू, गद्दी आदि में की दबी हुई रुई की तह, जमा हुआ ऊन, परत, तह, किसी कार्य का आरंभ, छेड़।
पहलदार-(हिं० वि०) जिसमें पहल हों, जिसमें चारो ओर अलग अलग बैठी हुई सतहें हों।
पहलनी-(हिं० स्त्री०) कोहड़े को गोल करने का सोनारों का एक अस्त्र।
पहला-(हिं० वि०) जो क्रम में प्रथम हो, आरंभ, जमी हुई पुरानी रुई, पहल।
पहले-(हिं० अव्य०) आरंभ में, पूर्व-काल में, बीते समय में, अगले समय में, स्थिति में पूर्व, देश क्रम में प्रथम, आगे।
पहलेज-(हिं० पुं०) एक प्रकार का खर्बूजा जो लंबोतरा होता है।
पहले पहल-(हिं० अव्य०) सर्वप्रथम, पहिली बार।
पहलौंठा, पहलौठा-(हिं०वि०) प्रथम गर्भजात, पहिली बार के गर्भ से उत्पन्न। **पहलौंठी, पहलौठी**-(सं०स्त्री०) प्रथम प्रसव, पहले पहल बच्चा जनना।
पहाड़-(हिं० पुं०) प्राकृतिक रीति से बना हुआ पत्थर, चूने मिट्टी आदि की चट्टानों का ऊंचा तथा बड़ा समूह, पर्वत, गिरि, किसी वस्तु का भारी ढेर, दुःसाध्य अथवा अतिक्लिष्ट कार्य, बहुत बड़े भार की वस्तु, वह जिससे निस्तार न हो सके; **पहाड़ उठाना**-कोई बहुत बड़ा काम अपने ऊपर लेना; **पहाड़ टूटना**-एकाएक कोई बड़ा संकट आ पड़ना; **पहाड़ से टक्कर लेना**-अपने से अधिक बलवान् से भिड़ना।
पहाड़ा-(हिं० पुं०) किसी अंक के एक से लेकर दस तक के गुणनफलों की क्रमागत सूची।
पहाड़िया-(हिं० वि०) देखो पहाड़ी
पहाड़ी-(हिं० वि०) पहाड़ पर रहने वाला, पहाड़ी संबंधी, (स्त्री०) छोटा पहाड़, पहाड़ी लोगों के गाने की धुन, संपूर्ण जाति की एक प्रकार की रागिणी।
पहार-(हिं०पु०) देखो पहाड़। **पहारी**-(हिं०वि०) देखो पहाड़ी। **पहिचानना**-(हिं०क्रि०) देखो पहचानना। **पहित, पहिती**-(हिं०स्त्री०) पकी हुई दाल।
पहिनना-(हिं०क्रि०) देखो पहनना।
पहिनाना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना
पहिनावा-(हिं०पुं०) देखो पहरावा।
पहियां-(हिं० अव्य०) देखो पहँ।
पहिया-(हिं० पुं०) गाड़ी, अंजन अथवा यन्त्र में लगा हुआ लकड़ी या लोहे का चक्का, किसी यन्त्र का वह चक्राकार भाग जो अपनी धुरी पर घूमता हो, चक्र, चक्कर।
पहिरना-(हिं० क्रि०) देखो पहनना।
पहिराना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना।
पहिरावना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना; **पहिरावनि, पहिरावनी**-(हिं० स्त्री०) देखो पहनावा।
पहिला-(हिं० वि०) प्रथम प्रसूता, पहले पहल ब्याई हुई, देखो पहला

प्रथम। **पहिले**-(हिं०अव्य०) आरंभ में, **पहिलौंठा**-(हिं०वि०) देखो पहलौठा। **पहिलौंठी**-(हिं०वि०) देखो पहलौठी। **पहीति**-(हिं० स्त्री०) देखो पहिती।

पहुँच-(हिं० स्त्री०) किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या शक्ति, किसी स्थान तक की गति, प्राप्ति, प्रवेश, रसाई, तात्पर्य समझने की शक्ति, जानकारी की सीमा, परिचय, किसी स्थान तक का लगातार फैलाव, पकड़, दौड़, पैठ।

पहुँचना-(हिं० क्रि०) गति द्वारा किसी स्थान में उपस्थित होना, एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त करना, तुल्य होना, अनुभव में आना, समझने में समर्थ होना, प्राप्त होना, मिलना, प्रविष्ट होना, पैठना, घुसना, गूढ़ अर्थ को जान लेना, कहीं तक फैलाना; **पहुँचा हुआ**-सिद्ध पुरुष, अभिज्ञ; **पहुँचनेवाला**-गुप्त बातों का जानकार।

पहुँचा-(हिं० पुं०) अग्र बाहु और हथेली के बीच का भाग, मणिबन्ध, कलाई, गट्टा।

पहुँचाना-(हिं० क्रि०) किसी निर्दिष्ट स्थान तक उपस्थित करना या ले जाना, अनुभव कराना, घुसाना, किसी को किसी विशेष अवस्था में ले जाना, अकेला न होने के लिये किसी के साथ कहीं पर जाना, प्रविष्ट कराना, पैठाना, परिणाम के रूप में प्राप्त करना, अनुभव कराना।

पहुँची-(हिं० स्त्री०) हाथ की कलाई पर पहिरने का एक गहना।

पहुनई-(हिं० स्त्री०) देखो पहुनाई।

पहुना-(हिं०पुं०) देखो पाहुना।

पहुनाई-(हिं०स्त्री०) अतिथि के रूप में कहीं जाना या आना, अतिथि सत्कार।

पहुनी-(हिं०स्त्री०) देखो पहुनाई।

पहुरी-(हिं० स्त्री०) वह पच्चड़ या फन्नी जिसको बढ़ई लकड़ी चीरते समय काठ में ठोंक देते हैं।

पहुप-(हिं०पुं०) पुष्प, फूल।

पहुमी-(हिं० स्त्री०) देखो पुहमी, पृथ्वी।

पहुरी-(हिं०स्त्री०) संगतराश की मठारने की टांकी।

पहुला-(हिं०स्त्री०)कुमुदनी, कोईं का फूल

पहेरी पहेली-(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु या विषय का इस प्रकार का वर्णन जो किसी अन्य वस्तु या विषय का वर्णन जान पड़ता हो और बहुत विचार करने पर घटाया जा सके, समस्या, बुझौवल, फेरवट की बात; **पहेलीबुझाना**-फेरवट की बात करना

पह्लव-(सं०पुं०)इस जाति के लोग पहिले क्षत्रिय थे जो बाद में मुसलमान हो गये। **पह्लव**-(सं० पुं०) एक प्राचीन जाति, पारसी या ईरानी जाति।

पह्लवी-ईरान राज्य की प्राचीन भाषा

पह्लिका-(सं०स्त्री०) जलकुंभी।

पां, पांइ-(हिं०पुं०) पद; पांव, पैर।

पाँइता-(हिं०पुं०) देखो पाँयता।

पाउँ-(हिं०पुं०) पद, पांव, पैर।

पाँक-(हिं०पुं०) पङ्क, कर्दम; कीचड़।

पाँका-(हिं०पुं०) देखो पाँक।

पाँख-(हिं०पुं०) पंख, पर।

पाँखड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पाखड़ी।

पाँखी-(हिं०स्त्री०) फतिंगा, चिड़िया, पक्षी।

पाँखरा-(हिं०स्त्री०) देखो पंखड़ी।

पाँग-(हिं० पुं०)गंगबरार, कछार।

पाँगल-(हिं०पुं०) उष्ट्र, ऊँट।

पाँगा, पाँगानोन-(हिं०पुं०)समुद्र के जल से निकाला हुआ नमक।

पाँच-(हिं० वि०) जो गिनती में चार और एक हो, (पुं०)चार और एक की संख्या ५, अनेक मनुष्य, बहुत से लोग; जाति के मुखिया लोग, पंच; **पाँचोंअंगुलियाँ घीमें होना**-सब प्रकार का सुख मिलना; **पाँचो सवारों में नाम लिखाना**-बड़े बड़े लोगों में अपनी गिनती करना।

पाँचक-(हिं०पुं०) देखो पंचक।

पाँचजन्य-(हिं० पुं०) देखो पंचजन्य, विष्णु के बजाने का शंख, अग्नि।

पाँचभौतिक-(हिं०पुं०) देखो पंचभौतिक पंचतत्व का बना हुआ शरीर।

पांचर-(हिं० वि०) कोल्हू के बीच में जड़े हुए लकड़ी के टुकड़े।

पाँचवाँ-(हिं०वि०) जो क्रम से पांच के स्थान पर हो।

पांचा-(हिं०पुं०) किसानो की घास भूसा हटाने की दाँतेदार फरुही।

पाँचाल-(हिं०पुं०) पंचाल, (वि०) पांचाल देशवासी, पांचाल देश संबंधी।

पांचालिका-(हिं० स्त्री०) देखो पांचाली; कपड़े की बनी हुई पुतली, गुड़िया।

पाँची-(हिं०स्त्री०)तालाब में होनेवाली एक प्रकार की घास।

पाँचै-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि, पंचमी।

पाँजना-(हिं० क्रि०) टीन, लोहे पीतल आदि के टुकड़ों को टाँका लगाकर जोड़ना, झालना।

पाँजर-हिं० पुं०) पार्श्व और कमर के बीच का वह भाग जिसमें पसलियाँ होती हैं, छाती के आस पास का भाग, पसली, पार्श्व, सामीप्य।

पाँजी-(हिं०स्त्री०)नदी का इतना सूख जाना कि उसको हलकर पार किया जा सके।

पाँझ-(हिं०स्त्री०) देखो पाँजी।

पाँडुक-(हिं०पुं०) देखो पंडुक।

पाँडरा-(हिं०पुं०)एक प्रकार की ऊंख।

पाड़ी-(हिं०स्त्री०) खड्ग, तलवार।

पाँडे-(हिं० पुं०) कान्यकुब्ज, सरयूपारी तथा गुजराती ब्राह्मणों की एक शाखा, कायस्थों की एक शाखा, पण्डित, विद्वान् शिक्षक, रसोई बनाने वाला ब्राह्मण।

पाँडेय-(हिं०पुं०) देखो पांडे।

पाँति-(हिं० स्त्री०) पगत, पंक्ति, पाँत, समूह, जाति के लोग जो एक साथ बैठ कर भोजन करते हैं।

-पाँथ-(हिं०वि०) पथिक, बटोही; **पाँथ निवास**-यात्रियों के ठहरने का स्थान

पाँयँ-(हिं०पुं०) पाद, पैर, चरण।

पाँयता-(हिं०पुं०) खाट या पलंग का उस ओर का भाग जिस ओर पैर किया जाता है, पैताना।

पाँव-(हिं०पुं०) पाद, पैर।

पाँवड़ी-(हिं०स्त्री०) खड़ाऊँ।

पाँवर-(हिं०वि०) देखो पामर।

पाँवरी-(हिं०स्त्री०) सोपान, सीढ़ी, जूता, पैर रखने का स्थान, पैरी, दालान, बैठका

पाँशव-(सं०पुं०) रेह से निकाला हुआ नमक।

पाँशु-(सं०पुं०) धूलि, रज, बालू, एक प्रकार का कपूर, गोबर की खाद।

पाँशुका-(सं० स्त्री०) केवड़े का पौधा।

पाँशुचत्वर-(सं०पुं०) ओला।

पांशुज-(सं० पुं०) नमक जो नोनी मिट्टी से निकाला गया हो। **पांशुपत्र**-(सं०पुं०) वथुवे का साग। **पाँशुभव**-(सं०नपुं०) देखो पांशुज। **पांशुलवण**-(नपुं) पांगा नमक।

पांशुल-(सं० वि०) व्यभिचारी, लंपट, धूल से ढपा हुआ (पुं०) शिव, महादेव; **पांशुला**-(सं०स्त्री०) कुलटा, रजस्वला; केतकी, भूमि।

पाँस-(हिं०स्त्री०) शराब निकाला हुआ महुआ, खाद, उफान जो किसी वस्तु को सड़ाने पर उठता है; **पाँसना**-(हिं०क्रि०) खेत में खाद डालना।

पांसा-(हिं० पुं०) हड्डी या हाथीदाँत के बने हुए चौसर खेलने के चौकोर टुकड़े; **पाँसा पलटना**-किसी उद्योग का विपरीत फल होना।

पांसी-(हिं० स्त्री०) भूसा आदि बाँधने का जाला।

पांसु-(सं० पुं०) धूलि, रज; **पांसुक**-(सं०पुं०) धूलि, पांगा नमक; **पांसुका**-रजस्वला स्त्री; **पांसुकुली**-(सं०स्त्री०) राजमार्ग, चौड़ी सड़क; **पांसुकृत**-(सं० वि०) जो धूल हो गया हो; **पांसुक्षा**-(सं०पुं०) पांगा नमक; **पाँसुखुर**-(सं०पुं०) घोड़े के खुर का एक रोग; **पांसुचंदन**-(सं० पुं०) शिव, महादेव; **पांसुचामर**-(सं०पुं०) तबू, प्रशंसा, धूलि का ढेर; **पांसुजालिक**-(सं० पुं०) विष्णु का एक नाम; **पांसुपत्र**-(सं०नपुं०) बथुवे का साग; **पांसुभिक्षा**-(सं० स्त्री०) धव का पेड़।

पांसुर-(सं०पुं०) दंशक, डाँस, खंज, लंगड़ा

पाँसुरी-(हिं०स्त्री०) देखो पसली।

पांसुल-(सं०पुं०) शिव, महादेव, पापी, दूसरे की स्त्री से प्रेम करने वाला, केतकी वृक्ष; **पांसुला**-(सं० स्त्री०) कुलटा, रजस्वला, केतकी।

पाँहीं-(हिं०क्रि०वि०)समीप, निकट, पास।

पाइ-(हिं०पुं०) देखो पाद, पाँव।

पाइक-(हिं०पुं०) देखो पायक।

पाइँता-(हिं०स्त्री०)चारपाई का पैताना

पांइरा-(हिं० पुं०) घोड़े की गद्दी में लगी हुई रकाब।

पाइल-(हिं०स्त्री०) देखो पायल।

पाई-(हिं०स्त्री०) एक पैसा, एक छोटी मुद्रा जो एक पैसे में तीन होता है, छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लिखने से चतुर्थांश प्रगट करती है स्त्रियों के आभूषण रखने की पिटारी, पूर्ण बिराम के लिये खींची हुई छोटी खड़ी रेखा, घुन की तरह का एक कीड़ा, घोड़े का एक रोग, दीर्घ आकार सूचक मात्रा, जुलाहों का एक ढाँचा जिस पर ताने माँजे जाते हैं, छापे के घिसे हुए टाइप, किसी निश्चित मण्डल में नाचने की क्रिया।

पाईता-(हिं०पुं०) एक वर्णवृत्त का नाम

पाउँ-(हिं० पुं०) देखो पाँव।

पाक-(सं० पुं०) पकाने की क्रिया, रींधन, रसोई, खाये हुए पदार्थ की पचने की क्रिया, एक असुर जिसको इन्द्र ने मारा था, भय, बुढ़ापे में बालों का पकना, परिणति, दूध पीने वाला बच्चा, चाशनी में पकाई हुई औषधि श्राद्ध में पिण्डदान के लिये पकाई हुई खीर।

पाककृष्ण-(सं०पुं०) करौंदे का फल।

पाकठ-(हिं०वि०) पका हुआ, पुराना, अनुभवी, बलवान।

पाकड़-(हिं०पुं०) देखो पाकर।

पाकद्विष्-(सं०पुं०) पाकशासन, इन्द्र।

पाकना-(हिं०क्रि०) देखो पकना।

पाकपात्र-(सं० नपुं०) भोजन पकाने का पात्र।

पाकपुटी-(सं०स्त्री०) कुम्हार का आवाँ।

पाकफल-(सं०पुं०) करौंदा।

पाकभाण्ड-(सं०नपुं०) बह पात्र जिसमें कुछ पकाया जावे या रक्खा जावे।

पाकयज्ञ-(सं०पुं०) वृषोत्सर्ग तथा गृह प्रतिष्ठा आदि का हवन जिसमें खीर की आहुति दी जाती है, पंच महायज्ञ के अन्तर्गत वैश्वदेव, होम, बलि कर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि भोजन इन चार प्रकार के महायज्ञ।

पाकर-(हिं०पुं०) समस्त भारतवर्ष में होने वाला एक वृक्ष जो पंचबटों में से एक है।

पाकरंजन-(सं०नपुं०) तेजपत्र, तेजपत्ता;

पाकरिपु-(सं०पुं०) इन्द्र का एक नाम

पाकलि-(सं०स्त्री०)कर्कटी, काकड़ासिंघी

पाकशाला-(हिं० स्त्री०) महानस, रसोई बनाने का घर; **पाकशासन**-(सं०पुं०) इन्द्र; **पाकशासनि**-(सं०पुं०) इन्द्र के पुत्र जयन्त; **पाकशुक्ला**-(सं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी; **पाकस्थली**-(सं०स्त्री०) उदर में का पक्वाशय जहाँ आहार का पाचन होता है।

पाका-(हिं०वि०) देखो पक्का।

पाकागार-(सं०पुं०) रसोइया घर

पाकातिसार-(सं०पुं०) अतीसार रोग का एक भेद।
पकारि-(सं०पुं०) पाकशासन, इन्द्र।
पाकु-(सं० वि०) रसोई बनाने वाला।
पाक्य-(सं० नपुं०) काला नमक, यवक्षार, (वि०) पचने योग्य, पाचनीय।
पाक्यक्षार-(सं०पुं०) जवाखार, शोरा।
पाक्यज-(सं०नपुं०) काच लवण।
पाक्या-(सं०स्त्री०) सज्जी, जवाखार।
पाक्षायण-(सं०वि०) पक्ष में एक बार होने वाला।
पाक्षिक-(सं०वि०) किसी विशेष व्यक्ति का पक्ष करने वाला, पक्षपाती, पक्षियों को मारने वाला, जो प्रति पक्ष में एक बार हो, पक्ष या पखवाड़े से सम्बन्ध रखने वाला, दो मात्राओं का।
पाखंड-(हिं० पुं०) देखो पाषण्ड; ढोंग, आडंबर; **पाखण्ड फैलाना**-किसी को छलने का उपाय करना; **पाखडी**-(हिं०वि०) वेद, विरुद्ध आचरण करने वाला, ढोंगी, धूर्त, कपटी, बनावटी धर्म दिखलाने वाला।
पाख-(हिं०पुं०) महीने का आधा भाग, पंद्रह दिन का समय, पखवाड़ा, मकान की चौड़ाई की भीतों के वे भाग जो ऊँचे किये होते हैं जिनपर बँड़ेर रक्खे जाते हैं।
पाखण्ड-(सं०पुं०) वेद विरुद्ध आचरण, वह व्यवहार जो किसी को धोखा देने के लिये किया जावे, कपट, छल, वह भक्ति या उपासना जो किसीको दिखलाने के लिये की जावे, ढोंग, ढकोसला, आडंबर, नीचता; **पाखण्डी**-(सं०वि०) दूसरों को ठगने के निमित्त अनेक प्रकार का आयोजन करने वाला, कपटाचारी, ढोंगी, धूर्त।
पाखर-(हिं० स्त्री०) राल चढ़ाया हुआ टाट, लोहे का झूल जो युद्ध के समय हाथी या घोड़े की पीठ पर डाल दिया जाता था; **पाखरी**-(हिं०स्त्री०) टाट का बना हुआ बड़ा चादर जिसको बैलगाड़ी में रख कर अनाज भूसा आदि लादा जाता है।
पाखा-(हिं०पुं०) कोना, छोर, देखो पाख
पाखान-(हिं०पुं०) देखो पाषाण, पत्थर।
पाग-(हिं० स्त्री०) पगड़ी, (पुं०) वह शीरा या चाशनी जिसमें डुबोकर मिठाइयां रक्खी जाती हैं, चाशनी में पकाई हुई औषधि, फल आदि।
पागना-(हिं०क्रि०) चाशनी में लपेटना या सानना।
पागल-(सं० वि०) उन्मत्त, बॉवला, विक्षिप्त, मूर्ख; **पागलखाना**-(हिं०पुं०) वह स्थान जहाँ पागलों को रख कर उनकी चिकित्सा की जाती है;
पागलपन-(हिं०पुं०) वह मानसिक रोग जिसमें मनुष्य की बुद्धि और इच्छा शक्ति में अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न हो जाते हैं और उसको कर्तव्याकर्तव्य का ध्यान नहीं रहता, उन्माद, बावलापन, मूर्खता, चित्तविभ्रम; **पागली**-(हिं० स्त्री०) देखो पगली।
पागुर-(हिं०पुं०) देखो जुगाली।
पाचक-(सं०नपुं०) पकाने या पचाने वाला, (पुं०) पाचन शक्ति को बढ़ाने वाली औषधि, रसोइयादार, पित्त में रहने वाली अग्नि।
पाचका-(सं०नपुं०) कर्कटी, ककड़ी।
पाचन-(सं०पुं०) प्रायश्चित्त, अपक्व दोष को पचाने वाली औषधि, खट्टा रस, अग्नि, आग, (वि०) पचाने वाला; **पाचनक**-(सं०पुं०) सोहागा; **पाचनशक्ति**-(सं० स्त्री०) भोजन को पचाने की शक्ति।
पाचना-(हिं० क्रि०) अच्छी तरह से पकाना; **पाचनीय**-(सं०वि०) पचाने या पकाने योग्य।
पाचर-(हिं०पुं०) देखो पच्चर।
पाचल-(सं०पुं०) अग्नि, वायु।
पाचिका-(सं० स्त्री०) रसोई बनाने वाली स्त्री।
पाची-(सं० स्त्री०) पच्ची नामक लता।
पाच्छा, पाच्छाह-(हिं०पुं०) राजा।
पाच्य-(सं०वि०) पाचनीय, जो अवश्य पचाया या पकाया जा सके।
पाछ-(हिं०स्त्री०) जन्तु या पौधे के अंग पर छुरी की धार से मार कर बनाया हुआ हलका घाव, रस निकालने के लिये वृक्ष की डाल या तने पर बनाया हुआ चीरा, अफ़ीम निकालने के लिये पोस्ते की ढोंढी पर बनाया हुआ चीरा, (पुं०) पिछला भाग, (क्रि० वि०) पीछे की ओर;
पाछना-(हिं०क्रि०) जन्तु या पौधे के अंग पर छुरी की धार से इस प्रकार मारना कि छुरी गहरी न धँसे और केवल ऊपर का रक्त या रस निकल आवे।
पाछल-(हिं० वि०) देखो पिछला;
पाछा-(हिं० पुं०) देखो पीछा;
पाछिल-(हिं०वि०) देखो पिछला।
पाछी, पाछु, पाछे-(हिं०क्रि०वि०) पीछे की ओर।
पाज-(हिं०पुं०) देखो पांजर।
पाजरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पौधा जिसकी छाल से रंग निकाला जाता है।
पाजस्य-(सं०पुं०) देखो पाँजर।
पाजा-(हिं०पुं०) देखो पायजा।
पाजी-(हिं० पुं०) पैदल सेना का सिपाही, प्यादा, चौकीदार, (वि०) दुष्ट, नीच, लुच्चा; **पाजीपन**-(हिं०पुं०) दुष्टता, नीचता।
पाञ्चजन्य-(सं० पुं०) वह शंख जिसको विष्णु धारण करते हैं; **पाञ्चजन्यधर**-विष्णु।
पाञ्चनद-(सं०वि०) पञ्चनद संबंधी।
पाञ्चभौतिक-(सं० वि०) पञ्चभूतों या तत्वों से बना हुआ मर्त्य शरीर।
पाञ्चालिका-(सं० स्त्री०) गुड़िया।
पाञ्चशर-(सं०वि०) कामदेव सम्बन्धी।
पाञ्चाल-(सं०पुं०) द्रुपदराज का नगर, इस देश का रहनेवाला बढ़ई, नाई, धोबी, जुलाहा और चमार इन पाँचों का समुदाय।
पाञ्चालिका-(सं०स्त्री०) लत्ते की बनी हुई गुड़िया; **पाञ्चाली**-(सं०स्त्री०) गुड़िया, पाञ्चाल देश की भाषा, पाण्डवों की स्त्री द्रौपदी का एक नाम, पोपल, स्वर साधन का एक ढङ्ग।
पाञ्चार्य-(सं०वि०) पञ्जर सम्बन्धी।
पाटबर-(हिं०पुं०) रेशमी वस्त्र।
पाट-(हिं०पुं०) जूट का पौधा, वस्त्र, कपड़ा, चक्की का एक पल्ला, धोबी के कपड़ा पटक कर धोने का पत्थर, पल्ला, पीढ़ा, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, रेशम, नख, बटा हुआ रेशम, राज्यशासन, सिंहासन, एक प्रकार का कीड़ा।
पाटक-(सं०वि०) छेदक, भेदक।
पाटकरण-(सं० पुं०) शुद्ध जाति का एक राग।
पाटच्चर-(सं०पुं०) चोर।
पाटन-(हिं०स्त्री०) पाटने की क्रिया या भाव, पटाव, कच्ची या पक्की छत, सर्प का विष उतारने का एक मन्त्र जो सर्प से काटे हुए मनुष्य के कान में चिल्लाकर पढ़ा जाता है।
पाटना-(हिं० क्रि०) किसी नीचे स्थान को उसके आस पास के धरातल के बराबर कर देना, सन्तुष्ट करना, खींचना, लकड़ीके बल्ले आदि बिछा कर आधार बनाना, ढेर लगा देना, दो भीतों के बीच में किसी गहरे स्थान के ऊपर बल्ला आदि रखना।
पाटपाट-(सं०वि०) अति चतुर।
पाटमहिषी-(हिं०स्त्री०) प्रधान रानी, पटरानी।
पाटम्बर-(सं० पुं०) रेशमी वस्त्र।
पाटरानी-(हिं०स्त्री०) देखो पटरानी।
पाटल-(सं० नपुं०) पाटली का फूल, गुलाबी रङ्ग, पाड़र का वृक्ष, रोहिष घास।
पाटलकीट-(सं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा।
पाटला-(सं०स्त्री०) पाटल का वृक्ष, लाल रंग का लोध, दुर्गा; **पाटला**-(हिं०पुं०) भारत का शुद्ध किया हुआ बढ़िया सोना।
पाटलावती-(सं०स्त्री०) दुर्गा।
पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र -(सं० नपुं०) मगध के प्रसिद्ध नगर का प्राचीन नाम, आजकल यह पटना नाम से प्रसिद्ध है।
पाटली-(सं०स्त्री०) मुष्यक या कटभी वृक्ष, पटना नगर की अधिष्ठात्री देवी, (हिं०स्त्री०) नाव में लगाने की लकड़ी, बल्ली।
पाटलोपल-(सं० पुं०) एक प्रकार का गुलाबी रत्न।
पाटव-(सं० नपुं०) पटुता, निपुणता, चतुराई, दृढ़ता, आरोग्य।
पाटविक-(सं०वि०) पटु, धूर्त।
पाटवी-(हिं० वि०) पटरानी से उत्पन्न, रेशमी वस्त्र।
पाटसन-(हिं०पुं०) पटसन, पटुआ।
पाटहिका-(सं० स्त्री०) गुञ्जा, घुमची, दुन्दुभी बजाने वाला।
पाटा-(हिं० पुं०) पीढ़ा, वह आधार स्थान जो दो भीतों के बीचमें बांस, बल्ली, पटिया आदि देकर बनाया जाता है।
पाटिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकारका पौधा
पाटित-(सं०स्त्री०) अनुक्रम, रीति परिपाटी, श्रेणी, पंक्ति, जोड़ती, बाकी, गुणा, भाग आदि का क्रम; (हिं०पुं०) वह लकड़ी की पट्टी जिस पर बालकोंको विद्याभ्यास कराया जाता है, पटिया, पाठ, खाट की लम्बाई बल की लकड़ी, शिला, जयन्ती, चट्टान, खपरैल का आधा भाग; **पाटी पढ़ना**-शिक्षा का पाना; **पाटीफूट**-(सं०पुं०) चित्रक वृक्ष; **पाटीगणित**-(सं० नपुं०) गणित शास्त्र, अङ्क विद्या।
पाटीर-(सं०पुं०) एक प्रकार का चंदन।
पाटूनी-(हिं० पुं०) वह मल्लाह जो किसी घाट का ठेकेदार हो।
पाटच-(सं०नपुं०) पटसन, पटुआ।
पाठ-(सं० पुं०) शिष्य का अध्यापन, पढ़ना, पढ़ने की क्रिया, किसी धर्म पुस्तक को नियम पूर्वक पढ़ने की क्रिया, किसी पुस्तक का वह अंश जो एक बार पढ़ा जाय, शब्दक्रम, अध्याय, किसी पुस्तक का परिच्छेद; **पाठ पढ़ाना**-स्वार्थ साधन के लिये किसी को बहकाना; **उलटा पाठ पढ़ाना**-उलटी पुलटी बातें समझा देना
पाठक-(सं० पुं०) उपाध्याय, पढ़ाने वाला, धर्मोपदेशक, बाँचने वाला, सारस्वत, गौड़, सरयूपारी तथा गुजराती ब्राह्मणों के एक वर्ग का नाम; **पाठदोष**-(सं०पुं०) पढ़ने का वह ढङ्ग अथवा पढ़ने के समय की वह चेष्टा जो निन्दित और वर्जित समझी जाती है; **पाठन**-(सं०नपुं०) पढ़ने का ढङ्ग या भाव, अध्यापन, पढ़ाना; **पाठना**-(हिं०क्रि०) पढ़ाना;
पाटपद्धति, पाठप्रणाली-(सं०स्त्री०) पढ़ने की रीति का ढङ्ग।
पाठभेद-(सं० पुं०) पाठान्तर, वह भेद जो एक ही ग्रन्थ की दो प्रतियों के पाठ में पाया जाता है।
पाठमञ्जरी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की मैना।
पाठशाला-(सं०स्त्री०) पढ़ाने का स्थान, अध्ययन गृह, विद्यालय, चटसाला।
पाठशालिनी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की

मैना।

पाठा-(सं०स्त्री०) पाढ नाम की लता, (हिं० पुं०) हृष्टपुष्ट, जवान मोटा बैल या भैंसा।

पाठान्तर-(सं०नपुं०) एक ही पुस्तक की दो प्रतियों के लेख में किसी विशेष स्थान में भिन्न वाक्य या क्रम का होना, पाठभेद।

पाठार्थी-(सं०वि०) पढ़ने वाला।

पाठालय-(सं०पुं०) पाठशाला, विद्यालय।

पाठिका-(सं०स्त्री०) पाठ पढ़ने वाली।

पाठित-(सं०वि०)पढ़ाया हुआ, सिखाया, हुआ।

पाठी-(हिं०पुं०) पाठ करने वाला, पाठक, पढ़नेवाला, चित्रक वृक्ष, चीता।

पाठीन-(सं०पुं०)पहिना मछली, गुग्गुल।

पाठ्य-(सं०वि०) पाठनीय, पढ़ने योग्य।

पाड़-(हिं०पुं०) धोती, साड़ी आदि का किनारा, मचान, पुस्ता, बाँध, लकड़ी का बना हुआ ठाट, कटघरा, चह, दो भीतों के बीच में पटिया देकर बनाया हुआ आधार स्थान, वह पटरा जिसपर खड़ा करके अपराधी को फाँसी दी जाती है।

पाड़र-(हिं०स्त्री०) पाटल नाम का वृक्ष।

पाडल-(हिं०पुं०) देखो पाटल।

पाडलीपुर-(हिं०पुं०) देखो पाटलीपुत्र।

पाड़ा-(हिं०पुं०)नगर का मुहल्ला टोला।

पाड़िनी-(सं०स्त्री०) मिट्टी का पात्र, हांड़ी

पाढ़-(हिं० पुं०) वह पीढ़ा या पाटा जिसपर बैठकर सुनार, लोहार या बढ़ई काम करते हैं, वह मचान जिस पर बैठकर किसान अपने खेत की रखवाली करता है, कुवें के मुंह पर रक्खी हुई लकड़ी, सुनारों की नक्काशी करने का एक अस्त्र, पाटा, लकड़ी की सीढ़ी।

पाढ़त-(हिं०स्त्री०) पढ़ने की क्रिया या भाव, जो कुछ पढ़ा जाय, मंत्र, जादू।

पाढ़र-(हिं०पुं०) पाड़र का वृक्ष।

पाढ़ल-(हिं०पुं०) देखो पाटल।

पाढ़ा-(हिं०पुं०) सफ़ेद चित्तीका हरिन।

पाढ़ी-(हिं०स्त्री०) सूतकी लच्छी, यात्रियों को पार उतारने की नाव।

पाण-(सं०पुं०) व्यापार, बेचाबिक्री, दाँव, प्रशंसा, कर, हाथ।

पाणि-(सं० नपुं०) हस्त, हाथ, कर, घुमचीका वृक्ष, एक कर्षका परिमाण।

पाणिक-(सं०वि०) जो मोल लिया जा सके सौदा, कर, हस्त, हाथ।

पाणिकर्ण-(सं०पुं०) शिव, महादेव;

पाणिकर्म-(सं०पुं०) हाथ से बाजा बजाने वाला।

पाणिका-(सं०स्त्री०)एक प्रकारका छन्द।

पाणिगृहीत-(सं० वि०) पाणि द्वारा ग्रहण किया हुआ, विवाहित; **पाणिग्रह**-(सं०पु०) विवाह, ब्याह; **पाणिग्रहण**-(सं०नपुं०) हिन्दुओं में विवाह की वह रीति जिसमें पिता कन्याका हाथ वर के हाथमें देता है, विवाह, ब्याह; **पाणिग्रहणीय**-(सं०वि०)विवाह में दिया जाने वाला उपहार; **पाणिग्राह**-(सं० वि०) पाणिग्रहण करने वाला पति।

पाणिघ-(सं०पुं०) हाथ से बजाने के बाजे, शिल्पी, कारीगर।

पाणिघात-(सं० पुं०) हाथ से मारने की क्रिया, थप्पड़, मुक्का।

पाणिज-(सं०पुं०)अंगुली, नख; **पाणितल**-(सं० नपुं०) हाथ का निचला भाग, करतल, हथेली, दो तोले के बराबर का परिमाण; **पाणिधर्म**-(सं०पुं०) विवाह संस्कार।

पाणिनि-(सं० पुं०) संस्कृत भाषा के सर्व प्रधान, तथा प्राचीन व्याकरण शास्त्रके रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि; **पाणिनीय**-(सं०वि०)पाणिनि का कहा हुआ, पणिनि का ग्रन्थ पढ़ाने वाला; **पाणिनीयदर्शन**-(सं० पुं०) पाणिनि की अष्टाध्यायी व्याकरण।

पाणिपल्लव-(सं०पुं०)हाथकी अंगुलियां

पाणिपीड़न-(सं० नपुं०) पाणिग्रहण, विवाह, क्रोध पश्चात्ताप आदि के कारण हाथों को परस्पर मलना।

पाणिप्रदान-(सं० नपुं०) हाथ द्वारा शपथ करना; **पाणिबन्ध**-(सं०पुं०) विवाह, ब्याह; **पाणिभुज**-(सं० पुं०) उदुम्बर, गूलर का पेड़; **पाणिमणिका**-(सं०स्त्री०) कलाई पर की हड्डी; **पाणिमन्थ**-(सं०पु०) करंज का वृक्ष; **पाणिमर्द**-(सं० पु०) करकर्दम, करौंदा; **पाणिमुक्त**-(सं०नपुं०)अस्त्र; **पाणिमूल**-(सं०नपुं०)बाहुमूल, कलाई;

पाणिरुह-(सं०पुं०) अगुली, नख; **पाणिवाद**-(सं० त्रि०) ढोल, मृदंग आदि बाजे बजाने वाला, ताली बजाना, हाथ से बजाने वाले बाजे, मृदंग, ढोल आदि बाजे; **पाणिरेखा**-(सं० स्त्री०) हथेली पर की लकीरें; **पाणिवादक**--(सं०वि०)ताली बजानेवाला; **पाणिसंग्रहण**-(सं०नपुं०) हाथ पकड़ना

पाणी-(हिं०पुं०) देखो पाणि; **पाणीकरण**-(सं०नपुं०) पाणिग्रहण, विवाह।

पाण्डर-(सं०नपुं०) गैरिक, गेरू, एक प्रकार का पक्षी, पानड़ी, (वि०) सफेद रग का।

पाण्डव-(सं० पुं०) पाण्डु राजा के युधिष्ठिर आदि पाँच पुत्र; **पाण्डव नगर**-दिल्लीका प्राचीन नाम;

पाण्डवायन-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण;

पाण्डवीक-(सं०पुं०) काली गौरैया;

पाण्डवीय-(सं०वि०) पाण्डव सम्बन्धी;

पाण्डवेय-(सं०पुं०) अभिमन्यु के पुत्र राजा परीक्षित्।

पाण्डित्य-(सं०नपुं०) विद्वता, पंडिताई।

पाण्डु-(सं०पुं०) पटोल, परवल, हलका पीला रंग, इस नामके राजा, सफेद रंग, सफेद हाथी, एक रोग जिसमें पित्त के विकार से शरीर पीला पड़ जाता है, कामला रोग, नाग का एक भेद, एक प्राचीन देश का नाम;

पाण्डुक-(सं०पुं०)पाण्डु राजा, परवल;

पाण्डुकण्टक-(सं० पुं०) अपामार्ग, चिचिड़ा; **पांण्डुकम्बल**-(सं० पु०) एक प्रकार का पत्थर; **पाण्डुतरु**-(सं० पु०) धव का पेड़; **पाण्डुता**-(सं०स्त्री०) **पाण्डुत्व**, पीलापन; **पाण्डुनाग**-(सं०पु०) पुन्नाग, वृक्ष, सफेद हाथी, सफेद रंग का साँप।

पाण्डुपुत्र-(सं० पुं०) पाण्डु के पुत्र, पाण्डव। **पाण्डुभाव**-(सं०पु०) देखो पाण्डुता। **पाण्डुमृत्तिका**-(सं०स्त्री०) रामरज, पीली मिट्टी।

पाण्डुर-(सं०पुं०) सफ़ेद रंग, कामला रोग, धव का वृक्ष, खड़िया, कबूतर, बगला, श्वेत कुष्ठ, (वि०) पीला, सफेद। **पाण्डुरङ्ग**-(सं०पुं०)एक प्रकार की घास; **पाण्डुरता**-(सं०स्त्री०) सफ़ेदी।

पाण्डुरा-(सं०स्त्री०) माषपर्णी, ककड़ी।

पाण्डुराग-(सं० पुं०) दमनक, दौना।

पाण्डुरागप्रिय-(सं० पुं०) मौलसिरी का पेड़।

पाण्डुरेक्षु-(सं० पु०) एक प्रकार की सफ़ेद ऊख।

पाण्डुरोग-(सं०पुं०) कामल रोग।

पाण्डुलिपि, पाण्डुलेख-(सं०पुं०) लेख आदि का पहिला रूप।

पाण्डुलोभा-(सं० वि०) जिसके रोवें सफ़ेद हों।

पाण्डुशर्मिला-(सं०स्त्री०) द्रौपदी।

पाण्ड्य-(सं० पुं०) पाण्डु देशवासी, पाण्डु देश के राजा।

पाण्य-(सं०वि०) स्तुति करने योग्य।

पात-(सं० पुं०) पतन, गिरने की क्रिया या भाव, खगोल का वह स्थान जहां नक्षत्रों की कक्षायें कान्ति वृत्त को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे उतरती है, गिरने की क्रिया या भाव, टूटकर गिरने की क्रिया या भाव, नाश, मृत्यु, पडना या लगाना, (वि०) बचाने वाला, गिराने वाला, (हिं०पुं०) पत्ता, कान में पहिरने का एक गहना, चाशनी।

पातक-(सं०पुं०) अशुभ, पाप, दुष्कृत,

पातकी-(हि० वि०) पाप करने वाला, कुकर्मी, पापी।

पातधावड़ा-(हिं०वि०) वह मनुष्य जो पत्तों के खड़कने से डर जाय।

पातङ्ग-(सं०पुं०) शनैश्चर, यम, कर्ण, सुग्रीव।

पातञ्जल-(सं०नपुं०) पातंजलि ऋषि का बनाया हुआ योगसूत्र अथवा व्याकरण का महाभाष्य, पातञ्जलि मुनि प्रणीत योग दर्शन; **पातञ्जलदर्शन**-योगदर्शन; **पातञ्जल भाष्य**-व्याकरण का महाभाष्य नामक ग्रन्थ; **पातञ्जलसूत्र**-योगसूत्र।

पातन(सं०पुं०) गिरने की क्रिया।

पातबंदी-(हिं० स्त्री०) वह मानचित्र जिसमें भू सम्पत्ति की आय और उस पर का देन लिखा होता है।

पातर-(हिं०वि०) सूक्ष्म, पतला, (स्त्री०) पत्तल, पतुरिया, वेश्या, रंडी।

पातराज-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प

पातल-(हिं०वि०) देखो पातर, पतला।

पातव्य-(सं० वि०) रक्षा करने योग्य, पीने योग्य।

पातशाह-(हि० पुं०) देखो बादशाह।

पातशाही-(हिं०वि०) देखो बादशाही।

पाता-(हि० पुं०) पत्ता, (वि०) रक्षक, रक्षा करने वाला।

पातखत-(हिं०पुं०) पत्र और अक्षत।

पातर-(हिं०पुं०) देखो पाताल।

पाताल-(सं०नपुं०) विवर, गुफा, बिल, वड़वानल, पुराणानुसार पृथ्वी तल के नीचे का सातवां लोक-पाताल सात माने गये हैं यथा अतल, नितल, वितल गभस्तिमत् तल, सुतल और पाताल, मात्रिक छन्द की संख्या कला आदि जानने का चक्र। **पातालकेतु**-(सं०पुं०) पाताल में रहने वाले एक प्रकार के दैत्य, **पातालखण्ड**-(सं०पुं०) पाताल लोक। **पातालगरुडी**-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की लता, तितलौकी। **पातालनिलय**-(सं०पुं०) दैत्य, सर्प। **पातालयन्त्र**-(सं०नपुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा कड़ी औषधियां पिघलाई जाती है, इस यन्त्र में काँच या मिट्टी का पात्र मुँह मिलाकर एक के ऊपर दूर रक्खा जाता है और सन्धि स्थान में कपड़मिट्टी कर दी जाती है।

पातालवासिनी-(हिं०स्त्री०) नागवल्ली लता।

पाताली-(हिं० स्त्री०) ताड़ के फल के गूदे की टिकिया जिसको निर्धन लोग खाते हैं।

पाति-(सं०पुं०) प्रभु, स्वामी, (हिं०स्त्री०) पत्ती, दल, पत्र, चिट्ठी।

पातिक-(सं०पुं०) शिशुमार, सूंस नामक जलजन्तु।

पातित-(सं०वि०) गिराया हुआ।

पातित्य(सं०नपुं०) पतित पतित होने का भाव, गिरावट, अधःपतन, कुमार्गी होने का भाव।

पातिली(सं०स्त्री०) चिड़िया पकड़ने का फन्दा, मिट्टी का पात्र, हाँड़ी।

पातिव्रत, पातिव्रत्य-(सं०नपुं०) स्त्री का पतिव्रता होने का धर्म।

पातिसाहि-(हिं०पुं०) देखो बादशाह।

पाती-(हिं०स्त्री०) मान, प्रतिष्ठा, पत्र, चिट्ठी, पत्ती।

पातुक-(सं०वि०) गिराने वाला, (पुं०) जल का प्रपात, झरना।

पातुर, पातुरनी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी

पात्त-(सं० पुं०) पापियों का उद्धार करने वाला।

पात्य-(सं०वि०) पतनीय, गिराने योग्य।

पात्र-(सं०वि०) अनेक गुणों से सम्पन्न, (नपुं०) वह वस्तु जिसमें कुछ रक्खा

जावे, भाण्ड, कोश, योग्य राजमन्त्री, नदी का पाट, पत्ता, स्त्रुवा आदि यज्ञ की सामग्री, आधार, भाजन, नाटक का अभिनेता अथवा नायक या नायिका, नट।

पात्रक-(सं॰नपुं॰) स्थाली, हाँड़ी, भीख माँगने का पात्र। **पात्रट**-(सं॰ नपुं॰) भिखमंगा, (वि॰) दुबला पतला।

पात्ररंग-(सं॰पुं॰) ताल देने का एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

पात्रता-(सं॰स्त्री॰) पात्रतत्व, उपयुक्तता, योग्यता, पात्र का धर्म। **पात्रत्व**-(सं॰नपुं॰) योग्यता।

पात्रदुष्टरस-(सं॰ पुं॰) केशवदास के अनुसार काव्य का वह रसदोष जिसमें कवि जिस वस्तु को जैसा समझाना चाहता है उसके विरुद्ध ही रचना में कह जाता है।

पात्रशेष-(सं॰ पुं॰) खाकर छोड़ा हुआ अन्न आदि, उच्छिष्ट, जूठा। **पात्र-संस्कार**(सं॰ पुं॰) पात्र की शुद्धि। **पात्रसंचार**-(सं॰पुं॰) भोजन के बाद जूठे पात्रों को उठाकर अलग रखना

पात्री-(हिं॰वि॰) जिसके पास सुयोग्य मनुष्य हों, (स्त्री॰) छोटे पात्र, उठौवा छोटी भट्ठी।

पात्रीय-(सं॰वि॰) पात्र सम्बन्धी।

पात्र्य-(सं॰नपुं॰)वह जो पापों से बचाताहो

पाथ-(सं॰नपुं॰) जल, पानी, (पुं॰) सूर्य, अग्नि,अन्न,वायु,आकाश,(हिं॰पुं॰)मार्ग

पाथना-(हिं॰क्रि॰) ठोंक पीटकर सुडौल बनाना,गढ़ना,पीटना,ठोंकना,मारना, किसी गीली वस्तु को सांचे में या हाथ से टिकिया आदि रूपमें करना।

पाथनाथ, पाथनिधि-(सं॰ पुं॰) समुद्र सागर। **पाथस्पति**-(सं॰पुं॰)वरुण देवता

पाथर-(हिं॰पुं॰) देखो पत्थर।

पाथा-(हिं॰पुं॰) खरिहान में अन्न नापने का बड़ा टोकरा, कोल्हू हाँकने वाला, एक प्रकार का अन्नमे लगनेवाला कीड़ा

पाथि-(हिं॰ पुं॰) समुद्र, आंच, घाव पर की पपड़ी।

पाथेय-(सं॰ पुं॰) वह धन जो यात्री मार्गव्यय के लिये ले जाता है, संबल, यात्री का रास्ते का कलेवा। **पाथेयक**-(सं॰ वि॰) वह जिसके पास मार्गव्यय हो।

पाथोज-(सं॰ नपुं॰) कमल, पद्म।

पाथोद-(सं॰ पुं॰) मेघ, बादल।

पाथोधर-(सं॰ पुं॰) मेघ, बादल।

पाथोधि, पाथोनिधि-(सं॰पुं॰)समुद्र।

पाथ्य-(सं॰वि॰) आकाश या हवा में रहने वाला।

पाद-(सं॰ पुं॰) चरण, पैर, पांव, चतुर्थांश, श्लोक का चौथा भाग, पेड़ की जड़, पुस्तक का विशेष अंश, गमन, मयूख, किरण, शिव, चिकित्सा के चार अंग यथा-वैद्य, रोगी, औषध और परिचारक, बड़े पर्वत के समीप का छोटा पर्वत, नीचे का भाग, (हिं॰पुं॰) अधो वायु गुदा द्वारा निकलने वाली वायु।

पादक-(सं॰वि॰) गमनकुशल, चलने वाला, चतुर्थ भाग, (पुं॰) छोटा पैर; **पादकटक**-(सं॰ पुं॰) नूपुर पैर में पहरने का एक गहना **पादगण्डिर**-(सं॰पुं॰) श्लीपद रोग। **पादग्रन्थि**-(सं॰पुं॰) गुल्फ, एँड़ी और घुट्ठी के बीच का स्थान। **पादग्रहण**-(सं॰नपुं॰) पैर छूकर प्रणाम करना। **पादग्राही**-(सं॰वि॰) वह जो पैर छूता हो। **पादचत्वर**-(सं॰पुं॰) बकरा, पीपल का वृक्ष, बालू का भीटा (वि॰) पिशुन **पादचारी**(सं॰ पुं॰) पदाति, पैदल चलने वाला। **पादचिह्न**-(सं॰नपुं॰) दोनों पैरों के चिह्न।

पादज-(सं॰पुं॰) शूद्र, (वि॰) जो पैर से उत्पन्न हो। **पादजल**-(सं॰नपुं॰) वह जल जिससे किसी के पैर धुले गये हों, पादोदक, तक्र, मट्ठा।

पादटीका-(सं॰स्त्री॰) वह टिप्पनी जो किसी पुस्तक के पृष्ट के नीचे लिखी गई हो।

पादतल-(सं॰नपुं॰) पैर का तलवा। **पादत्र, पादत्राण**-(सं॰पुं॰) पादरक्षक जो पैर की रक्षा करे, पादुका, खड़ाऊँ जूता। **पाददलित**-(सं॰वि॰) पैरसे कुचला हुआ, **पाददारिका**-(सं॰स्त्री॰) पैर में का बिवाई नामक रोग। **पाददाह**-(सं॰ पुं॰) पैर के तलवे में जलन होना।

पादधावन-(सं॰ पुं॰) पैर धोने की क्रिया। **पादनख**-(सं॰पुं॰) पैर की अंगुलियों के नख।

पादना-(हिं॰ क्रि॰) अपान वायु त्याग करना, वायु छोड़ना।

पादनालिका-(सं॰स्त्री॰)पैर में पहरने का एक गहना।

पादन्यास-(सं॰पुं॰)पैर रखना,नाचना।

पादप-(सं॰ पुं॰) वृक्ष, पेड़, बैठने का पीढा।

पादपद्म-(सं॰ नपुं॰) चरण, कमल। **पादपद्धति**-(सं॰ स्त्री॰) पगडंडी। **पादपाश**-(सं॰पुं॰) घोड़े के पिछले पैर बांधने की रस्सी, पिछाड़ी। **पादपाशी**-(सं॰स्त्री॰) शृंखला, सिक्कड़, बेड़ी; **पादपीठ**-(सं॰ नपुं॰) पैरका आसन, पीढ़ा। **पादपूरण**-(सं॰नपुं॰) किसी कविता के चरण को पूरा करना, वह शब्द या अक्षर जो कविता के पद को पूरा पूरा करने के लिये जोड़ा जाय।

पादप्रक्षालन(सं॰नपुं॰) पैरों का धोना।

पादप्रमाण-(सं॰पुं॰) साष्टाङ्ग दण्डवत। **पादप्रतिष्ठान**-सं॰पुं॰)पादपीठ, पीढ़ा। **पादप्रधारण**-(सं॰ नपुं॰) पादुका खड़ाऊं। **पादप्रहार**-(सं॰पुं॰) लात मारना, ठोकर मारना।

पादबद्ध-(सं॰ वि॰) श्लोक का एक चरण युक्त।

पादबन्द-(सं॰ पुं॰) पैर बांधने की सिकड़ी बेड़ी।

पादभाग-(सं॰ पुं॰) पैर का तलवा, चौथाई भाग।

पादभुज-(सं॰ पुं॰) शिव, महादेव।

पादमुद्रा-(सं॰ स्त्री॰) पैर का चिह्न। **पादमूल**-(सं॰नपुं॰) पैर का निचला भाग, पहाड़ की तराई। **पादरक्षक**-(सं॰वि॰) वह जिसके पैरों की रक्षा हो। **पादरक्षण**-(सं॰नपुं॰) पादुका, खड़ाऊं, जूता। **पादरज**-(सं॰नपुं॰) चरणों की धूलि। **पादरंज**-(सं॰स्त्री॰) पैर बांधने की रस्सी। **पादरथी**-(सं॰स्त्री॰) पादुका, खड़ाऊं।

पादरी-(हिं॰ पुं॰) ईसाई धर्म का पुरोहित जो ईसाइयों का जातकर्म आदि संस्कार कराता है।

पादरोह, पादरोहण-(सं॰पुं॰)वर का पेड़

पादलेप-(सं॰पुं॰) पैर में लगाने का आलता, महावर। **पादवन्दन**-(सं॰नपुं॰) पैर पकड़ कर प्रणाम करना। **पादवल्मीक**-(सं॰पुं॰) श्लीपद।

पादविक-(सं॰पुं॰) पथिक, यात्री।

पादविदारिका-(सं॰स्त्री॰) घोड़े के पैर का एक रोग। **पादविन्यास**-(सं॰पुं॰) पैर रखने का ढंग। **पादवेष्टनिक**-(सं॰पुं॰) पैर में पहिरने का मोजा। **पादशलाका**-(सं॰स्त्री॰) पैरकी पतली हड्डी। **पादशाखा**-(सं॰स्त्री॰) पैर की अंगुली।

पादशीली-(सं॰स्त्री॰) कचूर।

पादशुश्रूषा-(सं॰स्त्री॰) चरण सेवा, पैर दबाना। **पादशोथ**-(सं॰पुं॰) पैरसूजने का रोग। **पादशलाका**-(सं॰स्त्री॰)पैर की नली। **पादस्तम्भ**-(सं॰पुं॰)सहारा लगाने की लकड़ी। **पादस्फोट**-(सं॰ पुं॰) एक प्रकार का कुष्ठ। **पादस्वेदन**-(सं॰नपुं॰) पैर से पसीना निकलना। **पादहर्ष**-(सं॰पुं॰) पैर में झुनझुनी होने का रोग। **पादहारण**-(सं॰नपुं॰) चरण द्वारा हरण करना। **पादहीन**-(सं॰वि॰) जिसके चरण न हों, जिस कविता में तीन ही चरण हों। **पादहीना**-(सं॰स्त्री॰) आकाश लता। **पादाकुलक**-(सं॰नपुं॰) एक प्रकारका मात्रा वृत्त चौपाई। **पादाक्रान्त**-(सं॰वि॰) पैरों से कुचला हुआ **पादाग्र**-(हिं॰नपुं॰) पैर की नोक।

पादाघात-(सं॰पुं॰) पैरों का प्रहार।

पादाङ्गद-(सं॰नपुं॰) नूपुर, पैजनी।

पादाति,पादातिक-(सं॰पुं॰)पैदलसिपाही

पादानोन-(हिं॰पुं॰) काला नमक।

पादान्त-(सं॰पुं॰)पाद का अन्त या अन्तिम भाग, पैर के समीप। **पादाभ्यङ्ग**-(सं॰पुं॰) पैर के तलवे में तेल की मालिश। **पादाम्बु**-(सं॰नपुं॰)तक्र मठा।

पादारक-(सं॰पुं॰) नाव में यात्रियों के बैठने की लकड़ी की पटरी।

पादारध-(हिं॰पुं॰) देखो पादार्घ।

पादार्ध-(सं॰पुं॰) पाद का अर्ध भाग; आठवाँ हिस्सा।

पादालिन्दी-(सं॰स्त्री॰) नौका, नाव।

पादावर्त-(सं॰पुं॰) कुवेंसे जल निकालने का यन्त्र, रहट।

पादावसेचन-(सं॰नपुं॰) पैर धोना। **पादाविक**-(सं॰पुं॰) पदाति, पैदल सिपाही। **पादासन**-(सं॰पुं॰) पाँव रखने का आसन, पीढा।

पादी-(हिं॰पुं॰)पैर वाले जल.जन्तु यथा मगर घड़ियाल,गोह आदि। **पादीय**-(हिं॰ पुं॰) पद वाला, मर्यादा वाला।

पादुक-(सं॰पुं॰) गमनशील, चलनेवाला; **पादुका**-(सं॰स्त्री॰) खड़ाऊँ, जूता **पादुकाकार**-चर्मकार, मोची।

पादू-(सं॰पुं॰) पादुका, खड़ाऊँ।

पादोदक-(सं॰नपुं॰) वह जल जिसमें किसी का पैर धोया गया हो,चरणामृ

पादोदर-(सं॰पुं॰) सर्प, साँप।

पाद्य-(सं॰नपुं॰) वह जल जिससे पैर धोया गया हो, पदोदक। **पाद्यक**-(सं॰नपुं॰) पैर धोने की एक विधि। **पाद्यार्घ**-(सं॰पुं॰) हाथ पैर धुलानेका जल, पूजा की सामग्री, पूजामें दिया हुआ धन, भेंट।

पाधा-(हिं॰पुं॰)आचार्य,उपाध्याय,पण्डित

पान-(सं॰नपुं॰) पीना, घूंट घूंट करके गले के नीचे उतारना, मदिरा पीना, पीने का पदार्थ, मद्य, पीने का पात्र, रक्षा, नहर, कलवार, निःश्वास जल, पौसरा, जय, (वि॰) रक्षा करनेवाला

पान-(हिं॰पुं॰) पत्ता, एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्ते पर चूना, खैर, सुपारी रख कर बीड़ा बना कर लोग खाते हैं, ताम्बूल, पानके आकार की कोई वस्तु, ताश के पत्ते के चार भेदों में से एक, जूते में का पान के आकार का रंगीन चमड़ा, लड़ी, गून; **पानपत्ता**-तुच्छ उपहार, छोटी सी भेंट, **पानफूल**-सामान्यभेंट;बड़ीसुकुमारवस्तु

पानकुम्भ-(सं॰पुं॰) जल का कलसा।

पानगोष्ठिका-(सं॰स्त्री॰)वह स्थान जहां तान्त्रिक लोग इकट्ठा होकर मद्यपान करते हैं तथा कुछ जप पूजा करते हैं

पानड़ी-(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार की सुगन्धित पत्ती।

पानदान-(हिं॰पुं॰)वह डब्बा जिसमें पान, खैर सुपारी चना आदि रक्खा जाताहै

पानदोष-(सं॰पुं॰) मद्यपान का व्यसन

पानप-(सं॰वि॰)मद्यपीनेवाला,पियक्कड़ **पानभूमि**-(सं॰स्त्री॰) वह स्थान जहाँ एकत्र होकर लोग मदिरा पीते हैं। **पानमद**-(सं॰पुं॰) मद्य का नशा।

पानमात्रा-(सं॰ स्त्री॰) सूरापान की प्रशस्त मात्रा।

पानविभ्रम-(सं॰पुं॰) एक रागका नाम

पानस-(सं॰नपुं॰)कटहलसेबनाईहुईमदिर

पानरा-(हिं॰पुं॰) देखो पनारा, पनाला

पानही-(हिं॰स्त्री॰) पनही, जूता।

पाना-(हिं॰क्रि॰) प्राप्त करना, किसी विषय में किसी के बराबर होना,

पास पहुँचना, समर्थ होना, जानना, समझना, भोजन करना, किसी खोई हुई वस्तु का मिल जाना, मोल लेना, पता लगाना, साक्षात् करना, देखना, अनुभव करना,अच्छा बुरा परिणाम भोगना, कुछ सुन लेना या जानलेना, (वि०) जो प्राप्त हो सके, जिसके पाने का अधिकार हो ।

पानागार-(सं०पुं०) जहां बहुत से लोग मिल कर मद्य पीते हैं। **पानात्ययन**-(सं०पुं०) अधिक मदिरा पीनेसे उत्पन्न होने वाला एक रोग ।

पानि-(हिं०पुं०)देखो पाणि,हाथ,पानी,जल

पानिक-(सं०पुं०) मदिरा बेंचने वाला, कलवार ।

पानिग्रहण-(हिं०पुं०) देखो पाणिग्रहण, विवाह ।

पानिप-(हिं०पुं०) द्युति,चमक, कान्ति ।

पानिय-(हिं०पुं०) पानी ।

पानी-(हिं०पुं०) पानीय, जल, वृष्टि, वर्षा, मेघ, जीभ आँख त्वचा आदि से निकलने वाला रस या पसेव, वीर्य, शुक्र, वर्ष, साल, मुलम्मा, कोमल वस्तु, बारी, जलवायु,चमक, कोई तरल वस्तु. कोई द्रव पदार्थ, अर्क, मान, प्रतिष्ठा, अवसर, कोई नीरस फीका पदार्थ, मद्य, द्वंद्वयुद्ध, पानी की तरह का ठढा पदार्थ, पशुओं की वंशगत विशेषता, सामाजिक अवस्था,पौरुष, शास्त्र की उत्तमता, जूस, छबि; **पानीका बुलबुला**-क्षण भर में नष्ट होने वाला पदार्थ; **पानी की तरह धन बहाना**-अपव्यय करना, **पानी के मोल**-बड़े सस्ते दाम पर; **पानी टूटना**-तालाब, कुवें आदि में जल का अभाव; **पानी देना**-खेत सींचना, पितरों को तर्पण करना; **पानी पढना**-जल को मंत्र से अभिमंत्रित करके छिड़कना; **पानी पानी होना**-अति लज्जा युक्त होना; **पानी फूकना**-जलको अभिमन्त्रित करना; **पानी फेर देना**-पूर्ण रूपसे नष्ट कर देना; **पानी भरना**-अत्यन्त हीन प्रतीत होना; **पानीमें आग लगाना**-जहां झगड़ा होना असंभव हो वहां उत्पन्न कर देना, **पानी में फेंकना**-नष्ट कर देना; **सूखे पानीमें डूबना**-धोखे में पड़ना; **मुंहमें पानी आना**-बड़ी लालच उत्पन्न होना; **पानी उतर जाना**-अनिष्ट होना, **पानी जाना**-अपमानित होना; **पानी पानी कर देना**-क्रोध को शान्त करना; **पानी लगना**-कहीं का जल वायु स्वास्थ्य के हित न होना; **चुल्लू भर पानी में डूब मरना**-अति लज्जित होना,मुंह दिखाने योग्य न रहजाना

पानीदार-(हिं०पुं०)चमकदार,माननीय, प्रतिष्ठित, आत्माभिमानी, साहसी, जीवट वाला ।

पानीदेवा-(हिं०वि०) तर्पण या पिण्डदान देने वाला, अपने वंश या कुल का, पुत्र, बेटा ।

पानीफल-(हिं०पुं०) सिंघाड़ा ।

पानीय-(सं०नपुं०) जल, (वि०) पाने योग्य, जो पिया जा सके। **पानीय फल**-(सं०नपुं०) मखाना । **पानीय शालिका**-(सं०स्त्री०) प्यासों को पानी पिलाने का स्थान, पौसरा ।

पानौरा-(हिं०पुं०) पानकेपत्तोंकी पकौड़ी

पानूस-(हिं०पुं०) देखो फानूस ।

पान्थ-(सं०पुं०) पथिक, (वि०) वियोगी, विरही । **पान्थ निवास**-(सं०पु०) पथिकों के ठहरने का स्थान, चट्टी **पान्थशाला**-(सं०स्त्री०) चट्टी। **पान्थो** (हिं०पुं०) पान्थी ।

पान्हर-(हिं०पुं०)एक प्रकारकी सरपत।

पाप-(सं०नपुं०) अधर्म, दुष्कृत, शास्त्र विहित कर्म न करने तथा निन्दित कर्म करने अथवा इन्द्रियों में अत्यन्त आसक्त होना, अपराध, वध हत्या, अहित, बुराई, कठिनाई, संकट, पाप बुद्धि, क्लेश देने का विषय, (वि०) पापिष्ट नीच,दुराचारी, अशुभ; **पाप उदय होना**-पूर्व जन्म के किये हुए पापों का फल मिलना; **पाप कटना**-पाप का नाश होना; **पाप बटोरना**-पातक करना; **पाप लगना**-दुष्कृत होना; **पाप कटना**-झंझट दूरहोना; **पाप मोल लेना**-जान बूझकर झंझट में फँसना;**पाप पड़ना**-अनिष्ट सिद्ध होना

पापकर्म-(सं०पु०) निषिद्ध कार्य, जिसके करने से पाप हो । **पापकर्मी**-(हिं० वि०) पापी, पातकी । **पापकर्मी**-(हिं० वि०) पाप करने वाला । **पापकल्प**-(सं०वि०) दुष्कर्मी, पापकर्मसे जीविका चलाने वाला । **पापकारी**-(सं०वि०) पापकर्मा, पातकी । **पापकृत्**-(सं० वि०) पापी । **पापक्षय**-(सं०पुं०) पाप का नाश । **पापगण**-(सं०पुं०) छन्द शास्त्र के अनुसार ठगण का भेद ।

पापग्रह-(सं०पु०) फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्य,मंगल,शनि,राहु और केतु अथवा इन ग्रहों से युक्त बुध ग्रह जो अशुभ फल देनेवाले माने जाते हैं ।

पापघ्न-(सं०वि०) पाप नाशक, जिससे पाप का नाशहो । **पापघ्नी**-(सं०वि०) तुलसी ।

पापचारी-(सं०वि०) पाप करने वाला, पापी; **पापचेतस्**-(सं०वि०) पापबुद्धि, पापिष्ठ ।

पापड़-(हिं०पुं०) उर्द अथवा मूंग की धुली हुई बिना छिलके की दाल के आंटे से बनाई हुई मसालेदार महीन पपड़ी, (वि०) पतला, सूखा; **पापड़ बेलना**-बड़े परिश्रमका कार्य करना, दुःख के दिन बिताना ।

पापड़ा-(हिं०पु०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी को खरादकर खिलौने बनाते हैं, बनडाल । **पापड़ाखार**-(हिं०पुं०) केले के पेड़ से निकाला हुआ क्षार ।

पापत्व-(सं०नपुं०) पापका धर्म या भाव

पापदर्शी-(हिं० वि०) अनिष्ट करने की इच्छा से देखने वाला । **पापदृष्टि** (सं०वि०) अशुभ या अमंगल दृष्टि वाला ।

पापधी-(सं०वि०)पापमति, मन्द बुद्धि ।

पापनक्षत्र-(सं०नपुं०) निन्दित नक्षत्र ।

पापनाम-(सं०वि०)अमंगल नाम वाला, अपमानित ।

पापनाशन-(सं०वि०) पाप नाशक,(पुं०) विष्णु, शिव, वह प्रायश्चित जिसके करने से पापों का नाश हो ।**पापनाशिनी**-(सं०स्त्री०) काली तुलसी ।

पापपति-(सं०पुं०) उपपति, जार ।

पाप पुरुष-(सं०पुं०) तन्त्र में माना हुआ एक पुरुष जिसका सम्पूर्ण शरीर पापमय होता है । **पाप फल**-(सं०नपुं०) पाप का फल, जिसका फल अशुभ हो । **पाप बुद्धि**-(सं०वि०) पापमति, दुष्ट । **पापभक्षण**-(सं०पुं०) काल भैरव, शिव । **पाप मति**-(सं० वि०) पाप बुद्धि । **पापमुक्त**-(सं० वि०) निष्पाप, पाप से मुक्त । **पाप मोचनी**-(सं०स्त्री०) चैत्र के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम ।

पापयक्ष्म-(सं०पुं०)राजयक्ष्मा,क्षयरोग ।

पापयोनि-(सं० स्त्री०) पाप करने से प्राप्त होनेवाली मनुष्य के सिवाय पशु, पक्षी, वृक्ष आदि की योनि जिसको पातकी लोक नरक यातना भोग करने के बाद प्राप्त करते हैं ।

पापर-(हिं०पुं०) देखो पापड़ ।

पापरोग-(सं०पुं०) वह रोग जो किसी विशेष पाप करने से होता है, वसन्त रोग, छोटी माता । **पापरोगी**-(सं० वि०) वह जिसको कोई पाप रोग हुआ हो ।

पापलेन-(हिं०पुं०)एक प्रकार का सूती कपड़ा ।

पाप लोक- (सं०पुं०) पापियों के रहने का स्थान, नरक । **पाप लोक्य**-(सं०वि०) नरक सम्बन्धी । **पापवाद**-(सं०पुं०) अशुभ सूचक शब्द, अमङ्गल ध्वनि । **पाप विनाशन**-(सं०पुं०) एक तीर्थ का नाम । **पाप शमनी**-(सं०स्त्री०) शमी वृक्ष । **पापशील**-(सं०वि०) दुष्ट स्वभाव का । **पापसङ्कल्प**-(सं०वि०) जिसने पाप करने का दृढ़ निश्चय कर लिया हो । **पापसम**-(सं० वि०) पापतुल्य, पाप सदृश । **पापहन, पापहर, दादहा**-(सं०वि०) पाप को नाश करने वाला,

पापांकुशा-(सं०स्त्री०) आश्विन मास की शुक्ला एकादशी का नाम ।

पापा-(हिं०पुं०)ज्वार बाजरे की उपज में लगने वाला एक कीड़ा; बच्चों का पिता को संबोध करने का शब्द ।

पापाचार-(सं०पुं०) पाप कार्य, पाप का आचरण,(वि०) पापी, दुराचारी ।

पापात्मा-(सं० वि०) पापिष्ठ, पापी, पातकी ।

पापाशय-(सं० पुं०) अधार्मिक, दुष्ट, पातकी ।

पापह-(सं०पुं०)निन्दित या अशुभ दिन

पापाही-(सं०पु०) सर्प, साँप ।

पापिष्ठ-(सं०वि०)बहुत बड़ा पापी,पातकी

पापी-(हिं०वि०)पाप करने वाला निर्दय, क्रूर, दुराचारी, अपराधी,पाप करने वाला, दूसरे को कष्ट देने वाला ।

पापीयसी-(हिं०वि०)पाप करने वाली ।

पाप्मा-(हिं०पुं०) पाप, (विं०) पापी ।

पाम-(हिं०स्त्री०) गोटे किनारी के छोर पर लगी हुई डोरी, चमड़े पर की फुन्सियां, खाज, खुजली ।

पामघ्न-(सं०पुं०) गन्धक । **पामघ्नी**-(सं०स्त्री०) कुटकी ।

पामड़ा-(हिं०पुं०) देखो पांवड़ा ।

पामर-(सं०वि०) खल, दुष्ट, नीच कुल मे उत्पन्न, दुश्चरित्र, अधम, मूर्ख, निर्बुद्धि ।

पामरी-(हिं०स्त्री०) उपरना,डुपट्टा,पामड़ी

पामा-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का कुष्ट रोग

पायँ-(हिं०पु०)देखो पाँव । **पायँजेहरि**-(हिं०स्त्री०) पाजेब, नूपुर ।

पायँता-(हिं०पुं०) चारपाई का वह भाग जिस पर पैर रहता है, पायताना ।

पायँती-(हिं०स्त्री०) पायताना पैताना ।

पायँपसारी-(हिं० स्त्री०) निर्मली का पौधा और फल ।

पाय-(सं०नपुं०) जल, परिणाम, (हिं० पुं०) पाँव, पैर ।

पायक-(सं०वि०)पानेवाला,(हिं०पुं०)दूत, हरकारा, दास, सेवक,पैदल सिपाही

पायखाना-(हिं०पुं०) देखो पाखाना ।

पायजामा-(हिं० पुं०) देखो पाजामा ।

पायजेब-(हिं०स्त्री०) देखो पाजेब ।

पायड़ा-(हिं०पुं०) देखो पैड़ा ।

पायन-(सं०नपुं०) पान ।

पायना-(हिं०क्रि०) हथियार पर सान देना ।

पायपोश-(हिं०पुं०) जूता ।

पायरा-(हिं०पुं०) रेकाब, एक प्रकार का कबूतर ।

पायल-(हिं०स्त्री०) नूपुर, पाजेब, बांस की सीढ़ी, वेग से चलने वाली हथिनी, वह बच्चा जिसके पैर जन्मते समय पहले बाहर निकलें ।

पायस-(सं०पुं०) खीर, देवदार के वृक्ष से निकला हुआ गोंद ।

पायसा-(हिं०पु०) पड़ोस ।

पाया-(हिं०पु०) पलंग, कुर्सी, चौकी आदि के तले में खड़े बल का लगा हुआ डंडा जिनपर इनका ढाँचा जड़ा होता है, गोड़ा, पावा, खंभा, सीढ़ी, पद ।

पायिक-(सं०पुं०) पैदल सिपाही ।

पायित-(सं०वि०) सान धरा हुआ ।

पायी-(सं०वि०)पानकारी, पीने वाला ।

पायु-(सं०पु०) मलद्वार, गुदा, पाखाना

पारंगत, पारंपर-देखो पारंगता, पार-

म्पर्य ।

पार-(सं० नपुं०) नदी का किनारा. (पुं०) प्रान्त, भाग, छोर, ओर, पारद, पारा, अन्त, हद, (अव्य०) आगे, दूर; **आरपार**-नदी आदि के दोनों किनारे, **पार उतरना**-सफलता प्राप्त करना, किसी काम से छुट्टी पाना; **पार करना**-पूरा करना समाप्त करना; निर्वाह करना; **पार लगना**-नदी आदि के पार पहुंचना; **पार लगाना**-अन्त तक पहुंचाना, पूरा करना, उद्धार करना; **पार होना**-किसी कार्य को अन्त तक पहुँचा देना; **पारपाना**-अन्तिम सीमा तक पहुंचना, विजय प्राप्त करना।

पारक-(सं०पु०) सुवर्ण सोना, (वि०) पूर्ति करने वाला, पार करने वाला, निपुण।

पारक्य-(सं० वि०) परकीय, पराया, दूसरे का।

पारख-(हिं०स्त्री०)देखो पारिख, पारखी।

पारखद-(हिं०पु०) देखो पार्षद।

परखी-(हि० पुं०) परीक्षक, परखने वाला, जिसको परीक्षा करने की योग्यता हो।

पारग-(सं०वि०) पारगामी, पार जाने वाला, समर्थ, काम को पूरा करने वाला, अभिज्ञ।

पारगत-(सं०वि०)समर्थ,पूरा जानकार

पारजात-(हिं० पुं०) देखो पारिजात, परजाता।

पारजायिक-(सं०पुं०) पर स्त्री गामी, व्यभिचारी।

पारण-(सं० नपुं०) वह भोजन जो किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन प्रथम बार किया जावे, इस संबंध का कृत्य, मेघ, बादल, तृप्त करने की क्रिया या भाव, समाप्ति। **पारणा**-(सं०स्त्री०) उपवास, व्रत आदि के दूसरे दिन का प्रथम भोजन। **पारणीय**-(सं०वि०) पूरा करने योग्य।

पारतन्त्र्य-(सं०नपुं०) पराधीनता।

पारात्रक-(सं०वि०) पारलौकिक, परलोक सम्बन्धी।

पारथ, पारथिव-(हि०पु०)देखो पार्थ।

पारद-(सं० पुं०) पारा, एक प्राचीन म्लेच्छ जाति का नाम।

पारदर्शक-सं०वि०) जिसके भीतर से होकर प्रकाश की किरणें जा सके, आर पार दिखलाई देने वाला।

पारदर्शन-(सं०वि०) सर्वज्ञ, पारगामी।

पारदर्शी-(सं० वि०) परिणाम दर्शी, चतुर, विद्वान, दूरदर्शी, पटु, समर्थ।

पारदारिक-(सं० पुं०) पर स्त्री से संभोग करने वाला। **पारदार्य**-(सं० नपुं०) परदारागमन, व्यभिचार।

पारधी-(हिं० पुं०) बहेलिया, व्याध, बधिक, हत्यारा, (स्त्री०) ओट, आड़।

परधिपति-(हिं० पुं०) धनुष चलाने वाला कामदेव।

पारन-(हिं०पुं०) देखो पारण।

पारना-(हिं० क्रि०) डालना, गिराना, रखना, पहरना, मिलाना, बुरी स्थिति होना, साँचे आदि में कोई वस्तु तैयार करना, भूमि पर लंबा डालना, पछाड़ना, समर्थ होना, उत्पात मचाना, **पिंडा पारना**-पिण्ड दान करना।

पारवती-(हिं०स्त्री०) देखो पार्वती।

पारमार्थिक-(सं०वि०) परमार्थ संबंधी, वास्तविक, भ्रम रहित,स्वाभाविक।

पारम्परीण-(सं० वि०) परम्परा से आगत। **पारम्पर्य**-(सं०नपुं) परम्परा का भाव, कुल क्रम।

पारयिष्णु-(सं०वि०) पारगामी, पार जाने वाला।

पारलौकिक-(सं०पुं०) परलोक संबंधी, परलोक में शुभ फल देने वाला।

पारवत-(सं०पुं०) पारावत, कबूतर।

पारवश्य-(सं०नपुं०) परतन्त्रता, परवशता।

पारशव-(सं०पु०)पराई स्त्री से उत्पन्न पुत्र; एक वर्णसंकर जाति जो ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न हो, लोहा, एक देश का नाम जहां मोती निकलता था।

पारश्वध-(सं०पुं०) परशुधारी।

पारश्वय-(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना।

पारस-(हि० पुं०) स्पर्श मणि, एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में लोगों में ऐसी प्रसिद्धि है कि इसमें लोहा छुलाने से वह सुवर्ण हो जाता है, अत्यन्त लाभ देने वाली तथा उपयोगी वस्तु, खाने के लिये रक्खा हुआ भोजन, पत्तल जिसमें खाने की सामग्री हो, एक पहाड़ी वृक्ष, निकट, पास, भारतवर्ष के पश्चिम सिन्धु नदी और अफगानिस्तान के आगे का एक देश, (वि०) आरोग्य, चंगा।

पारसनाथ-(हिं०पुं०) देखो पार्श्वनाथ।

पारसव-(हिं०पु०) देखो पारशव।

पारसी-(हिं०वि०) पारस देश संबंधी, पारस देश का,(पुं०) पारस देश का रहने वाला मनुष्य, स्वदेश परित्याग करके जो लोग भारतवर्ष में आकार बसे है इन लोगों पर मुसलमानों ने बड़ा अत्याचार किया था जिससे इन को देश छोड़ना पड़ा। **पारसीक**-(सं० पुं०) पारस देश का निवासी, पारस देश का घोड़ा।

पारस्कर-(सं०पुं०)एक देश का प्राचीन नाम एक गृह्यसूत्रकारक मुनि का नाम

पारस्त्रैणेय-(सं०वि०)पर स्त्री से उत्पन्न पुत्र, जारज पुत्र।

पारिस्परिक-(सं०वि०) परस्पर वाला, आपस का।

पारस्य-एक देश जिसका दूसरा नाम ईरान है।

पारा-(हिं०पुं०) चाँदी की तरह श्वेत चमकता हुआ एक तरल धातु,जिसका द्रव रूप गरमी सरदी से नहीं बदलता; टुकड़ा, पत्थरों के ढोकों को जोड़कर बनी हुई दीवार; **पारा पिलाना**-किसी वस्तु को बहुत भारी बनादेना

पारायण-(सं०नपुं०)सम्पूर्णता, समाप्ति, नियमित समय में किसी ग्रन्थ का आदि से अन्त तक पाठ करना।

पारायणिक-(सं० पुं०, आद्योपान्त पाठ करने वाला,पाठ करने वाला।

पारारत-(सं०पुं०) चट्टान, शिला।

पारावत-(सं०पुं०) परेवा पंडुक, कबूतर, बंदर,पर्वत, एक नाग का नाम, तेंदू का वृक्ष, एक प्रकार का खट्टा पदार्थ, दत्तात्रेय के गुरु का नाम।

पारावती-(सं०स्त्री०) ग्वालों की गीत, लवली फल, हरफा रेवड़ी।

पारावार-(सं०नपुं०)आरापार, वारपार, सीमा, हद, समुद्र। **पारावारीण**-(सं०वि०) आर पार करने वाला।

पाराशर-(सं०पुं०) व्यासदेव, पराशर मुनि का वंशज,(वि०)पराशर संबंधी, पराशर का बनाया हुआ। **पराशरि**-(सं०पुं०) वेदव्यास, शुकदेव।

पारि-(सं० स्त्री०) पार, ओर, दिशा, किसी जलाशय का किनारा।

पारिकुट-(सं०पुं०) सेवक, नौकर।

पारिख-(हि०पुं०) देखो परख।

पारिक्षित-(सं०पुं०) परीक्षित् के पुत्र जनमेजय।

पारिगर्भिक-(सं०पुं०) कपोत, कबतर।

पारिग्रामिक-(सं०वि०) गाँव के चारो ओर का।

पारिजात-(सं०पुं०) एक वृक्ष जो समुद्र मथन के समय निकला था और इन्द्र के नन्दन वन में स्थापित हुआ, परजाता, हरसिंगार, कचनार, ऐरावत के कुल का एक हाथी, एक तन्त्र, शास्त्र का नाम, एक ऋषि का नाम;

पारितथ्या-(सं०स्त्री०) स्त्रियों का सिर के बालों पर पहिरने का एकआभूषण;

परितोषिक-(सं०वि०) प्रीतिकर,आनन्द देने वाला,(पुं०) वह वस्तु जो किसी को प्रसन्न करने के लिये दी जावे, भेंट, उपहार।

पारिन्द्र-(सं०पुं०) सिंह, शेर।

पारिपन्थिक-(सं०पुं०) डाकू चोर।

पारिपात्र-(सं०पुं०) सप्त कुलाचल में से एक पर्वत।

पारिपार्श्व-(सं०नपुं०) सेवक, अनुचर।

पारिपार्श्विक-(सं० पुं०) नाटक के अभिनय में एक विशेष नट जो स्थापक का अनुचर होता है। यह सूत्रधार नटों आदि के साथ प्रस्तावना में आता है, पास में खड़ा होनेवाला सेवक।

पारिप्लव-(सं०वि०) चंचल, (पुं०) एक जलपक्षी,नाव, जहाज। **पारिप्लवनेत्र** (सं०नपुं०) चंचल चक्षु।

पारिबर्ह-(सं०पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

पारिभद्र-(सं०पुं०)फरहद का पेड़,सरल वृक्ष, देवदारु, एक हरे रंग का रत्न;

पारिभाव्य-(सं०नपुं०) परिभू या होने का भाव।

पारिभाषिक-(सं०पुं०) परिभाषा द्वारा अर्थबोधक पद, जिस शब्द का व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत में किया जाता है।

पारिमण्डल्य-(सं०नपुं०)अणु या परमाणु का परिमाण।

पारिरक्षक-(सं०पुं०)तपस्वी, साधु।

पारिव्राजक-(सं० नपुं०) परिव्राज का भाव, सन्यास।

पारिश-(सं० पुं०) फलीश, कमण्डलु।

पारिशील-(सं० पुं०) एक प्रकार का मालपुआ।

परिशद-(सं०पुं०) सभा में बैठने वाला, सभ्य, सभासद, (वि०) सभा संबंधी।

पारिषदक-(सं०वि०)पंचसे किया हुआ

पारिसपीपल-(हिं०पुं०)भिंडी की जाति का एक पेड़।

पारिहारिक-(सं०वि०)परिहार करनेवाला

पारिहार्य-(सं०पुं०)वलय हाथ का कड़ा

पारिहास्य-(सं०नपुं०)परिहासका भाव।

पारी-(सं० स्त्री०)जलसमूह, (हिं० स्त्री०) वारी ओसरी, गुड़ का जमाया हुआ ढोंका।

पारीण(सं०वि०) पारगामी।

पारीन्द्र-(सं०पुं०) सिंह, अजगर, सर्प।

पारीरण-(सं०पुं०)कमठ, कछुआ, दण्ड

पारु-(सं०पुं०) अग्नि, सूर्य।

पारुष्य-(सं० नपुं) वाक्य की अप्रियता, कठोरता, इन्द्र के वन का नाम,(पुं०) वृहस्पति।

पारेरक-(सं०पुं०) खड्ग, तलवार।

परेवत-(सं०पुं०)एक प्रकार का अमरूद, एक प्रकार का खजूर।

पारेसिन्धु-(सं०अव्य०) समुद्र के दूसरे किनारे पर।

पारोक्ष-(सं०वि०) परोक्ष संबंधी।

पर्घट-(सं०नपुं०) भस्म, राख।

पार्थ-(सं० पुं०) पृथिवीपति, पृथा का पुत्र अर्जुन, अर्जुनवृक्ष।

पार्थक्य-(पुं० नपु०) पृथक् होने का भाव, बियोग।

पार्थव-(सं० नपुं०) स्थूलता, मोटाई, (वि०) पृथुराज संबंधी।

पार्थसारथि-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।

पार्थिव-(सं०नपुं०) तगर पुष्प, (पुं०) पृथिवीपति, राजा एक संवत्सर का नाम, मंगल ग्रह, मिट्टी का पात्र, मिट्टी का बना हुआ शिवलिङ्ग, (वि०) मिट्टी आदि का बना हुआ, राजा के योग्य। **पार्थिवी**-(सं०स्त्री०) सीता, उमा, पार्वती।

पार्पर-(सं०पुं०) यम।

पार्वण-(सं०पुं०) किसी पर्व के दिन किया जाने वाला श्राद्ध।

पार्वत-(सं०पुं०) महानिम्ब, बकायन

एक प्रकार का अस्त्र, (नपुं०) हिगुल, शिलाजीत, (वि०) पर्वत संबन्धी, पर्वत पर होने वाला।

पार्वती-(सं०स्त्री०) पर्वतराज की कन्या, दुर्गा, शिव की अर्धाङ्गिनी, गोपाल पुत्रिका, द्रौपदी, गोपी चन्दन, धातकी, सहेली; **पार्वतीनन्दन**-कार्तिकेय।

पार्वतीय-(सं०वि०) पर्वत संबन्धी, पहाड़ी; **पार्वतीलोचन**-(सं०पुं०) एक ताल का नाम। **पार्वतीश्वर**-(सं०पुं०) एक शिवलिंग का नाम।

पार्वतेय-(सं०नपुं०) सुरमा, (पुं०) हुड़हुड़ का पौधा, धाय का वृक्ष, (वि०) पर्वत पर होने वाला।

पार्शव-(सं०पुं०) परशु से लड़ने वाला योद्धा।

पार्शुका-(सं०स्त्री०) पर्शुका, पसली।

पार्श्व-(सं०पुं०) काँख के नीचे का भाग, पसलियाँ, निकटता, समीपता, आस पास का स्थान; **पार्श्ववर्ती**-समीपस्थ।

पार्श्वक-(सं०वि०) धूर्तता से अपनी उन्नति चाहने वाला। **पार्श्वग**-(सं० पुं०) अनुचर, सेवक, (वि०) पास में चलने वाला। **पार्श्वगत**-(सं०वि०) निकट में रहने वाला; **पार्श्वचर**-(सं०पुं०) अनुचर, भृत्य।

पार्श्वच्छाव-(हिं०स्त्री०) अप्रधान शोभा

पार्श्वतीय-(सं०वि०) जो पार्श्व में हो

पार्श्वद-(सं०पुं०) अनुचर, सेवक।

पार्श्वदेश-(सं० पुं०) पार्श्व भाग, **पार्श्वनाथ**-(सं०पुं०) जैनों के तेइसवें तीर्थङ्कर। **पार्श्वभाग**-(सं०पुं०) पक्ष-भाग, काँख। **पार्श्ववक्त्र**-(सं०पुं०) शिव, महादेव। **पार्श्ववर्ती**-(सं०पुं०) पास रहने वाला मनुष्य। **पार्श्व-शायी**-(सं०वि०) पास में सोने वाला, **पार्श्वसूत्रक**-(सं०पुं०) एक प्रकार का प्राचीन आभूषण।

पार्श्वस्थ-(सं०पुं०) पार्श्वस्थित नट, अभिनय के नटों में से एक जो पास में खड़ा रहता है, (वि०) पास में खड़ा रहने वाला। **पार्श्वस्थित**-(सं०वि०) पार्श्व में रहने वाला। **पार्श्वानुचर**-(सं०पुं०) अनुचर।

पार्श्वासन्न-(सं०वि०) पास में उपस्थित, **पार्श्वास्थि**-(सं०नपुं०) पर्शुका, पसली की हड्डी।

पार्श्विक-(सं०वि०) सहचर, छली।

पार्षत-(सं०पुं०) विराट के पुत्र धृष्ट-द्युम्न। **पार्षती**-(सं०स्त्री०) द्रौपदी।

पार्षद-(सं०पुं०) मन्त्री, पास में रहने वाला सेवक, पारिषद, दर्शक।

पार्ष्णि-(सं०पुं०) एँड़ी, पृष्ठ, (स्त्री०) कुन्ती

पाल-(सं०पुं०) पालक, पालन करने वाला, चीते का वृक्ष, (हिं०पुं०) पत्ता बिछा कर फलों को पकाने की विधि, वह स्थान जहां पत्तों को बिछा कर फल पकाये जाते हैं, तंबू, चंदवा, गाड़ी आदि ढांपने का वस्त्र, ओहार, नाव में बाँधने का मोटा वस्त्र, कबूतरों का जोड़ा खाना, (स्त्री०) ऊंचा किनारा, कगार, पानी रोकने की बाँध या मेड़।

पालऊ-(हिं०पुं०) देखो पालव।

पालक-(सं०पुं०) रक्षा करने वाला मनुष्य, चीते का वृक्ष, कुट नामक औषधि, हिंगुल (वि०) पालने वाला, (हिं०पुं०) एक प्रकार का शाक, पलंग, पाला हुआ पुत्र। **पालक जूही**-(हिं०स्त्री०) औषधि में प्रयोग होने वाला एक पौधा। **पालकपुत्र** (सं० पुं०) पाला हुआ पुत्र, दत्तक पुत्र।

पालकरी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का टुकड़ा जो चारपाई के सिरहाने को ऊंचा करने के किये लगाया जाता है।

पालकी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की सवारी जिसको कहार लेकर चलते हैं, पीनस, खड़खड़िया, (स्त्री०) पालक का साग; **पालकी गाड़ी**-पालकी के आकार की घोड़ा गाड़ी।

पालघ्न-(सं०पुं०) छत्राक, खुभी।

पालङ्क-(सं०पुं०) पालक का साग, बाज़ पक्षी, एक प्रकार का रत्न।

पालङ्की-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का गन्ध द्रव्य, कुन्दुरु।

पालट-(हिं०स्त्री०) पटेबाजी का एक हाथ, (वि०) पाला पोसा हुआ लड़का, दत्तक पुत्र।

पालतू-(हिं० वि०) पाला पोसा हुआ।

पालथी-(हिं०स्त्री०) देखो पलथी।

पालन-(सं०नपुं०) तुरत की ब्याई हुई गाय का दूध, रक्षण, भरण पोषण, अनुकूल व्यवहार से किसी बात का निर्वाह, भंग न करना, न टालना, लड़कों को बहलाने की गीत।

पालना-(हिं०क्रि०) पालन पोषण करना, पक्षी आदि को पोसना, अनुकूल आचरण द्वारा किसी बात की रक्षा या निर्वाह करना, (पुं०) बच्चों को सुलाने का खटोला या झूला जो रस्सियों से लटकाया रहता है। **पालनीय**-(सं०वि०) पालन करने योग्य। **पालयिता**-(हिं०वि०) पालन करनेवाला।

पालल-(सं०क्रि०) तिलपपड़ी।

पालव-(हिं० पुं०) कोमल पत्ता,

पाला-(हिं० पुं०) वायु में मिले हुए भाफ के अत्यन्त सूक्ष्म कण जो पृथ्वी केठढी रहने पर उस पर बूंदों के रूप में जम जाते हैं, हिम, ठंढक से जमा हुआ पानी, ठंढ, व्यवहार का संयोग, दस पांच आदमियों के बैठने की जगह, मुख्य स्थान, सीमा निर्धारित करने के लिये बनी हुई मेड़ या मीटा, अनाज रखने की मिट्टी का बड़ा पात्र, मल्लयुद्ध का स्थान, अखाड़ा; **पाला मार जाना**-पाला पड़ने से उपज को हानि पहुँचना; **पाला पड़ना**-आवश्यकता होना; **किसी के पाले पड़ना**-किसी के वश में आ जाना।

पालागन-(हिं०स्त्री०) नमस्कार, दण्डवत

पालागल-(सं०पुं०) झूठा समाचार देने वाला मनुष्य।

पालान-(हिं०पुं०) देखो पलान।

पालाश-(सं०वि०) हरितवर्ण, हरे रंग का

पालाशी-(सं०स्त्री०) खिरनी का पेड़।

पालि-मध्य एशिया में प्रचलित एक प्राचीन लिपि जिसमें लिखे हुए अशोक के समय के अनेक शिला लेख पाये जाते हैं, ईसकी वर्णमाला के अक्षर देवनागरी से बहुत कुछ मिलते जुलते है।

पालि-(सं० स्त्री०) पक्ति, श्रेणी, कोना, प्रान्त, किनारा, वह स्त्री जिसकी दाढ़ी मे बाल हों, सेतु, पुल, परिधि, जुवाँ, चीलर, एक प्राचीन तौल, मेड़, बाँध, बटलोही, सीमा, प्रशंसा, गोद, करारा, भीटा।

पालिक-(सं० पुं०) पलंग, चारपाई, पालकी।

पालिका-(सं०स्त्री०) घर का कोना, (वि०) पालने वाली।

पालित-(सं०वि०) रक्षित, पाला हुआ, (पुं०) कुमार का एक अनुचर, कायस्थों की एक उपाधि।

पालित्य-(सं०नपुं०) बालों की सफेदी।

पालिधा-(सं०स्त्री०) फ़रहद का पेड़।

पालिन्द-(सं०पुं०) कुन्दरू नामक सुगन्ध द्रव्य।

पालिन्दी-(सं०स्त्री०) भँगरैया, करैला।

पाली-(हिं०वि०) पालन करने वाला, रक्षा करने वाला, (सं०स्त्री०) जुवाँ, थाली।

पाली-(हिं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ तीतिर बटेर बुलबुल आदि पक्षी लड़ाये जाते हैं, पात्र का ढपना, परई, एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रन्थ लिखे हुए हैं।

पाली शोष-(सं०पुं०) कान का एक रोग

पालू-(हिं० वि०) पालतू, पाला हुआ।

पालो-(हिं०पुं०) गांव में बस्ती से दूर की भूमि जिसमें सिंचाई कुवें से होती है।

पाल्य-(सं० वि०) पालने योग्य।

पाल्वल-(सं०वि०) ताल में होने वाला, (पुं०) ताल का पानी।

पावँ-(हिं० पुं०) चलने का अंग, पाद, पैर; **पावँ अड़ाना**-हस्तक्षेप करना; **पाँव उखड़ जाना**-ठहरने की शक्ति न रहना, युद्ध में से भागना; **पांव उठाना**-चलने के लिये पैर बढ़ाना; **पाँव घिसना**-चलते चलते पैरों का थकना; **पाँव जमना**-दृढ़ होना; **पाँव तोड़ना**-पैर थकाना, अधिक प्रयास करना; **पाँव तोड़कर बैठना**-अपने स्थान में टिक जाना, हार जाना; **पाँव धरना**-पैर छूकर प्रणाम करना; **बुरे रास्ते पर पांव धरना**-बुरे आचरण में प्रवृत्त होना; **पांव पकड़ना**-पैर छूना, दीनता प्रगट करना, पैर छूकर प्रणाम करना; **पांव पखारना**-पैर धोना; **पांव पड़ना** साष्टांग दंडवत् करना, शुश्रूषा करना; **पांव पसारना**-पैर फैलाना; डाट बाट दिखलाना; **पांव पांव चलना**-पैदल चलना; **पांव पूजना**-बड़ा सत्कार करना; **पांव फूंक फूंक कर चलना**-बहुत सम्हल कर काम करना; **पांव फैलाना**-अधिक लालसा करना; **पांव बढ़ाना**-अधिक बढ़ना; **पांव भरजाना**-चलते चलते बहुत थक जाना; **पाँव भारी होना**-स्त्री का गर्भ धारण करना; **पाँव रोपना**-दृढ़ निश्चय करना; **पाँव लगना**-प्रणाम करना; **पाँव सोजाना**-पैर उठाने की शक्ति न रहना; **पांव न होना**-साहस खो देना; **धरती पर पाँव न रखना**-बहुत घमंड से चलना।

पाँव चप्पी-(हिं० स्त्री०) थकावट दूर करने के लिये पैर दबाना।

पाँवड़ा-(हिं० पुं०) पैर रखने के लिये फैलाया हुआ कपड़ा। **पाँवड़ी**-(हिं० स्त्री०) खड़ाऊँ, जूता, गोटा बुनने वालों का एक अस्त्र।

पाँवर-(हिं० वि०) पामर, तुच्छ, नीच, मूर्ख।

पाँवरी-(हिं० स्त्री०) देखो पावड़ी।

पाँव-(हिं० पुं०) चतुर्थ भाग, चौथाई, अंश, एक सेर का चौथाई भाग, चार छटाँक का परिमाण।

पावक-(सं० पुं०) अग्नि, सदाचार, चीते का वृक्ष, वरुण, एक ऋषि का नाम, सूर्य, अग्नि, मन्थवृक्ष, ऋषि-भेद, सरस्वती, (वि०) शुद्ध या पवित्र करने वाला। **पावकमणि**-(सं० पुं०) सूर्यकान्त मणि, **पावकवर्ण**-(सं०वि०) अग्नि के समान तेजस्वी।

पावका-(सं०स्त्री०) सरस्वती। **पावकात्मज**-(सं० पुं०) कार्तिकेय। **पावकि**-(सं० पुं०) कार्तिकेय, पावक का पुत्र जो इक्ष्वाकु वंशीय दुर्योधन की कन्या सुदर्शना से उत्पन्न हुआ था।

पावकुलक-(हिं० पुं०) पादाकुलक छन्द, चौपाई।

पावदान-(हिं०पुं०) पैर रखने की वस्तु या स्थान, इक्के गाड़ी आदि में पैर रखने का स्थान, मेज के नीचे पैर रखने के लिये छोटी चौकी।

पावन-(सं०पुं०) व्यास, पीली भंगरैया, जल, विष्णु, सिद्ध, गोबर, रुद्राक्ष, कुट, (नपुं०) चीता, चन्दन, प्रायश्चित्त, (वि०) शुद्ध, पवित्र, शुद्ध या पवित्र करने वाला। **पावनता**-(सं० स्त्री०) पवित्रता, शुद्धता। **पावनत्व**-(सं० नपुं०) शुद्धता। **पावनध्वनि**-(सं०पुं०) पवित्र ध्वनि, शंख। **पावना**-(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, अनुभव करना, जानना

समझना, भोजन करना, पाना (पुं०) लेहना।
पावनि-(सं० पुं०) पवनसुत, हनुमान।
पावनी-(सं०स्त्री०) तुलसी, गाय, गंगा, (वि०) पवित्र करने वाली, पवित्र, शुद्ध।
पावमुहर-(हिं०स्त्री०) शाहजहाँ के काल का सोने की एक मुद्रा जो मुहर का चौथाई होता था।
पावल-(हिं० स्त्री०) देखो पायल।
पावली-(हिं० स्त्री०) चार आने की मुद्रा, चवन्नी।
पावस-(हिं० स्त्री०) वर्षाकाल, बरसात, सावन भाद्रों का महीना।
पावा-(हिं० पुं०) देखो पाया, गोरखपुर जिले का एक बड़ा गाँव, यहाँ पर गौतम बुद्ध कुछ दिनों तक ठहरे थे।
पावित्र-(सं० नपुं०) एकप्रकारकाछन्द।
पावी-(हिं० स्त्री०)एकप्रकार की मैना।
पाव्य-(सं० वि०) पाक करने योग्य।
पाश-(सं० पुं०) आर्य जाति का एक प्रकार का प्राचीन युद्धास्त्र, पशु पक्षियों को फँसाने का फन्दा, जाल, डोरी, रस्सी, बन्धन, एक योग विशेष, शब्द के अन्त में जोड़ने से इसका अर्थ—समूह, तथा निन्दा होता है यथा-केशपाश, छात्रपाश।
पाशक-(सं०पुं०) पासा, चौपड़। **पाशकेलरी**-(सं० स्त्री०) पासा फेंक कर की जाने वाली फलित ज्योतिष की एक गणना। **पाशक्रीडा**-(सं० स्त्री०) पासा खेलना। **पाशधर**-(सं० पुं०) पाशधारी वरुण देवता।
पाशन-(सं० नपुं०) बन्धन।
पाशपाणि-(सं० पुं०) वरुण देवता।
पाशबन्धक-(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया।
पाशभृत्-(सं० पुं०) वरुण देवता।
पाशमुद्रा-(सं० स्त्री०) तन्त्रोक्त एक प्रकार की मुद्रा।
पाशव-(सं० वि०) पशु संबंधी, पशु के समान।
पाशवासन-(सं० नपुं०) एक आसन का नाम।
पाशहस्त-(सं० पुं०) वरुण, शतभिषा नक्षत्र।
पाशा-तुर्क देश के सरदारों की उपाधि
पाशान्त-(सं०पुं०) कपड़े का किनारा।
पाशिक-(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया।
पाशित-(सं०वि०) पाशयुक्त, बँधाहुआ।
पाशिन्-(सं० पुं०) वरुण, यम, व्याध, बहेलया।
पाशुक-(सं० वि०) पशु संबंधी।
पाशुपत-(सं० पुं०) अगस्त का फूल, पशुपति देवता, पशुपति देवता के भक्त या उपासक, शिव का कहा हुआ तन्त्र शास्त्र,(वि०) शिव संबंधी, पशुपति का। **पाशुपतदर्शन**-(सं०नपुं०) एक साम्प्रदायिक दर्शन जिसका उल्लेख माधवाचार्य ने सर्वदर्शन संग्रह में किया है। **पाशुपतास्त्र**-(सं० नपुं०) महादेव का वह अस्त्र जो बहुत प्रचण्ड था, अर्जुन ने कठोर तपस्या करके शिव से यह अस्त्र प्राप्त किया था। **पाशुपाल्य**-(सं० नपुं०) पशुओं के पालने की वृत्ति। **पाशुबन्धक**-(सं० नपुं०) वह स्थान जहाँ यज्ञ का वलि पशु बाँधा जाता है।
पाश्चात्य-(सं० वि०) पीछे होने वाला पीछे का, पिछला, पश्चिम देश या दिशा का; **पाश्चात्य दर्शन**-अंग्रेजी तथा अन्य युरोपीय भाषा में लिखा हुआ दर्शन शास्त्र।
पाषक-(सं० पुं०) पैर में पहरने का एक गहना।
पाषण्ड-(सं०पुं०) वैदिक धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला, मिथ्याधर्मी, झूठा मत मानने वाला, झूठा आडंबर दिखलाने वाला, कपट वेशधारी, ढोंगी, दूसरों को ठगने के लिये साधुओं के समान रूप रंग बनाने वाला। **पाषण्डी**-(सं० वि०) वैदिक धर्म के विरुद्ध मत और आचरण ग्रहण करने वाला, झूठा मत मानने वाला, धूर्त, ढोंगी।
पाषर-(हिं० स्त्री०) देखो पाखर।
पाषाण-(सं० पुं०) शिला, प्रस्तर, पत्थर गन्धक। **पाषाण कदली**-(सं० स्त्री०) पहाड़ी केला। **पाषाण गर्दभ**-(सं०पुं०) दाढ सूजने का, रोग, **पाषाणगैरिक**-(सं० नपुं०) गेरू। **पाषाण जतु**-सं० नपुं०) शिलाजतु, शिलाजीत। **पाषाणदारक**-(सं०पुं०) टाँकी, छेनी। **पाषाणभिद्**-(सं०पुं०) कुलत्थ, कुलथी। **पाषाणभेद**-(सं०पुं०) पथरचट् नाम का सुन्दर पत्तियों का एक पौधा। **पाषाणरोग**-(सं०पुं०) अश्मरीरोग, पथरी।
पाषाणी-(सं० स्त्री०) तौलने के काम में आने वाला पत्थर का टुकड़ा।
पास-(सं० पुं०) पाशा, लाल रंग का धमासा।
पास-(हिं० पुं०) पार्श्व, ओर, समीपता, निकटता, अधिकार, (अव्य०) निकट, समीप, में, अधिकार में किसी के प्रति किसी को संबोधनकरके **आसपास**,-लगभग, प्रायः करीब; **पास फटकना**-समीप आना।
पासना-(हिं०क्रि०) थनों में दूध आना।
पासनी-(हिं०स्त्री०) अन्नप्राशन, बच्चे को पहिले पहिल अन्न चटाने का संस्कार।
पासबंद-(हिं०पुं०) दरी बुनने के करघे की एक लकड़ी।
पासमान-(हिं०पुं०) पार्श्ववर्ती, पास में रहनेवाला।
पासवर्ती-(हिं०वि०) देखो पार्श्ववर्ती।
पासा-(हिं०पुं०) हाथीदाँत या हड्डी के के बने हुए छपहल, छोटे टुकड़े जिन पर बिन्दियां बनी होती हैं जो चौसर खेलने में काम आता है, कामी, गुल्ली, चौसर का खेल, पीतल या काँसे का ठप्पा; **पासा पड़ना**-भाग्य के अनुकूल होना; **पासा पलटना**-दुर्भाग्य आना।
पासासार-(हिं०पुं०) पासे की गोटी, पासे का खेल।
पासिका-(हिं०स्त्री०) पाश, फंदा, जाल।
पासी-(हिं०पुं०) जाल या फन्दा डालकर चिड़िया पकड़ने वाला, व्याध, बहेलिया, एक नीच और अस्पृश्य जाति, (स्त्री०) फन्दा, फाँसी, घास बाँधने की जाल, घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी, पिछाड़ी।
पासुली-(हिं०स्त्री०) देखो पसली।
पाहँ-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पत्थर, (हिं०अव्य०) निकट, समीप, पास, किसी के प्रति।
पाहन-(हिं०पुं०) पषाण, पत्थर।
पाहरू-(सं० पुं०) पहरा देनेवाला, चौकीदार।
पाहा-(हिं०पुं०) खेत के बीच में की मेड़
पाहात-(सं०पुं०) शहतूत का पेड़।
पाहिं-(हिं०अव्य०) समीप, निकट, पास, किसी के निकट।
पाहि-(सं०) एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो' 'बचाओ'।
पाही-(हिं०स्त्री०) वह खेती जिसका किसान दूसरे गाँव में रहता हो।
पाहुँच-(हिं०स्त्री०) देखो पहुँच।
पाहुना-(हिं०पुं०) अभ्यागत, अतिथि, जामाता, दामाद; **पाहुनी**-(हिं०स्त्री०) स्त्री अतिथि, आतिथ्य सत्कार।
पाहुर-(हिं०पुं०) भेंट, वह धन या वस्तु जो इष्ट मित्र या सम्बन्धी के यहाँ व्यवहार में दी जावे।
पाहू-(हिं०पुं०) मनुष्य, पत्थरों के जोड़ पर जड़ने का टेढ़ा लोहा।
पिंग-(हिं०वि०) भूरे रंग का, पीला; **पिंगल**-पीला।
पिंगला-देखो पिङ्गल।
पिंगूरा-(हिं०पुं०) बच्चों को सुलाकर झुलाने का पालना।
पिंजड़ा-(हिं०पुं०) देखो पिंजरा।
पिंजन-(हिं०पुं०) रुई धुनने की धुनकी
पिंजर-देखो पिञ्जर, पिंजड़ा।
पिंजरा-(हिं०पुं०) लोहे बाँस आदि की तिलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।
पिंजरापोल-(हिं०पुं०) गोशाला, पशुशाला, वह स्थान जहाँ पालने के लिये चौपाये रक्खे जाते हैं।
पिंजियारा-(हिं०पुं०) रूई ओटने वाला
पिंडी-(हिं०स्त्री०) गीली वस्तु का लोंदा
पिंडखजूर-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का खजूर जिसके फल मीठे होते हैं और इन फलों से गुड़ भी बनाया जाता है
पिंडरी, पिंडली-(हिं०स्त्री०) टांग के ऊपर का पिछला मांसल भाग।
पिंडवांही-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा।
पिंडा-(हिं०पुं०) गोलमटोल टुकड़ा, ढेला या लोंदा, गीली या ठोस वस्तु का टुकड़ा, शरीर, देह, श्राद्ध में पितरों को अर्पित करने का मधु, तिल आदि मिला हुआ लोंदा, स्त्रियों की गुप्तेन्द्रिय; **पिंडा पानी देना**-पिण्डदान और तर्पण करना।
पिंडारा-(सं०पुं०) एक प्रकार का शाक
पिंडारी-(हिं०पुं०) भारत के दक्षिण में बसनेवाली एक जाति जो पहिले खेती बारी करती थी परन्तु बाद में लटपाट करने लगी और मुसलमान हो गई।
पिंडालू-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सकरकन्द, शफ़तालू, सुथनी।
पिंड़िया-(हिं०स्त्री०) गुड़ आदि का मुट्ठी में बाँध कर बनाया हुआ छोटा टुकड़ा भेली, मुट्ठी, लपेटे हुए सूत, रस्सी या सुतली का छोटा गोला।
पिंडुरी-(हिं०स्त्री०) देखो पिंडारी।
पिंशन-(हिं०स्त्री०) देखो पेनशन।
पिअ-(हिं०वि०) देखो प्रिय।
पिअरवा-(हिं०पुं०) पति, (वि०) प्यारा।
पिअराई-(हिं० स्त्री०) पीलापन;
पिअरिया-(हिं०पुं०) पीले रंग का बैल
पिअरी-(हिं०स्त्री०) हल्दी से रंगी हुई धोती जो विवाहादि के समय वर तथा कन्या को पहिराई जाती है, देहाती स्त्रियाँ ऐसी धोती गंगाजी को भी चढ़ाती है।
पिआज-(हिं०पुं०) देखो प्याज; **पिआना**-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना; **पिआनो**-(अं०पुं०) देखो पिआनो; **पिआर**-(हिं०पुं०) देखो प्यार; **पिआरा**-(हिं०वि०) देखो प्यारा; **पिआस**-(हिं०स्त्री०) देखो प्यास; **पिआसा**-(हिं०वि०) देखो प्यासा।
पिउ-(हिं०पुं०) पति।
पिउनी-(हिं०स्त्री०) देखो पूनी।
पिक-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल; **पिकदेव**-आम का वृक्ष; **पिकप्रिय**-वसन्त काल, आम का वृक्ष; **पिकप्रिया**-(सं०स्त्री०) बड़ी जामुन, कोकिला; **पिकबन्धु, पिकवल्लभ**-(सं०पुं०) आम का पेड़।
पिकाक्ष-(सं०पुं०) तालमखाना, (वि०) जिसकी आखें कोयल की तरह लाल हों।
पिकाङ्ग-(सं०पुं०) चातक पक्षी, पपीहा,
पिकानन्द-(सं०पुं०) वसन्त ऋतु।
पिकी-(सं०स्त्री०)कोकिला, मादा कोयल
पिकुरस-(सं०पुं०) मद्य।
पिक्क-(सं०पुं०) हाथी का बच्चा।
पिघलना-(हिं०क्रि०) द्रवीभूत होना, किसी घन पदार्थ का गरमी से गलकर पानी के समान हो जाना, चित्त में दया उत्पन्न होना,पसीजना, **पिघलाना**-(हिं०पुं०) दयार्द्र करना, किसी के चित्त में दया उत्पन्न

करना, किसी वस्तु को गरमी पहुँचा-कर-पानी के रूप में लाना ।
पङ्ग-(सं०नपुं०) बालक, हरताल, भैंसा, (पुं०) चूहा, पीला रंग, भूरा-पन लिये लाल रंग, तामड़ा ; **पिङ्गकपिशा**-(सं०स्त्री०) गोबरौले के आकार का एक कीड़ा ; **पिङ्गचक्षु**-(सं०वि०) जिसकी आँखें भूरे रंग की हों; **पिङ्गजट**-(सं०पु०) शिव, महादेव
पिङ्गमूल-(सं०नपुं०) गर्जर, गाजर ।
पिगर, पिङ्गल-(सं०पुं०) नीला और पीला मिला हुआ रग, एक नाग का नाम, एक पर्वत का नाम, एक संवत्सर का नाम, पिङ्गलाचार्य का बनाया हुआ छन्द का एक ग्रन्थ, एक यक्ष का नाम, उलूक, उल्लू पक्षी, नेवला, वन्दर, अग्नि, एक प्रकार का स्थावर विष, (नपु०) पीतल, हरताल, खस, (वि०) तामड़ा, सुंघनी रंग का ।
पिङ्गलक-(स०पुं०) एक प्रकार के यक्ष
पिङ्गला-(स०स्त्री०) लक्ष्मी का एक नाम, हठयोग के अनुसार दक्षिण पार्श्व में अवस्थित एक नाड़ी का नाम, राजनीति, गोरोचन, शीशम का पेड़।
पिङ्गलिका-(सं०स्त्री०) मक्खी की तरह का एक कीड़ा जिसके काटने से जलन और सूजन होती है ।
पिङ्गसार-(सं०पुं०) हरिताल, हड़ताल।
पिङ्गस्फटिक-(सं०पुं०) गोमेदक मणि ।
पिङ्गा-(सं०स्त्री०) हलदी, गोरोचन, वंशलोचन, रक्तवाहिनी नाड़ी ; **पिङ्गाक्ष**-(स०पु०) शिव, महादेव, नक्र नामक जलजन्तु, बिल्ली, (वि०) जिसकी आँखें तामड़े रंग की हों; **पिङ्गाक्षी**-(सं०स्त्री०) कुमार की एक मंत्रिका नाम ।
पिङ्गाशी-(सं०स्त्री०) नील का पेड़ ;
पिङ्गक्षण-(सं०पु०) शिव, महादेव ;
पिङ्गेश-(सं०पु०) अग्नि का एक नाम
पिचक-(हिं०स्त्री०) देखो पिचकारी ।
पिचकना-(हिं०क्रि०) किसी उभड़े हुए अथवा फूले हुए तल का दब जाना ।
पिचकवाना-(हिं०क्रि०) पिचकाने का काम दूसरे से कराना ; **पिचका**-(हिं०पु०) बड़ी पिचकारी; **पिचकाना**-(हिं०क्रि०) फूले या उभड़े हुए तल को भीतर की ओर दबाना ।
पिचकारी-(हिं०स्त्री०) एक नलदार यन्त्र जिससे कोई तरल पदार्थ खींच कर वेग से फेंका जाता है यह बाँस, लोहा, पीतल, काँच, टीन आदि की बनी होती है; **पिचकी**-(हिं०स्त्री०) देखो पिचकारी ; **पिचण्ड**-(स०पुं०) पशु का उदर या पेट ; **पिचण्डक**-(सं०वि०) पेटू, उदर पूरण में कुशल;
पिचण्डिक-(सं०वि०) तुन्दिल तोंदीला
पिचपिचा-(हिं०वि०) देखो चिपचिपा ।
पिचपिचाना-(हिं०क्रि०) घाव आदि में से थोड़ा करके पंछा आदि निकलना
पिच,पिचाहट-(हिं०स्त्री०) गीले या आर्द्र रहने का भाव ।
पिचरिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा कोल्हू ।
पिचलना-(हिं०पु०) देखो कुचलना ।
पिचवय-(हिं०पुं०) वरगद का पेड़ ।
पिचिण्ड-(स०पुं०) उदर, पेट, पशु का अवयव ।
पिचिण्डिका-(सं०स्त्री०) जाँघ की हड्डी ।
पिचिण्डिल-(स०वि०) बड़े पेटवाला; तोंदीला ।
पिचु-(सं०पुं०) रूई, एक प्रकार का कुष्ट रोग, दो तोले के बराबर की तौल, एक असुर का नाम, एक प्रकार का धान ।
पिचुक-(सं०पुं०) मैनफल का वृक्ष ।
पिचुकिया-(हिं०स्त्री०) छोटी पिचकारी ।
पिचुक्का-(हिं०पु०)गोलगप्पा, पिचकारी
पिचुमर्द-(स०पु०) नीम का पेड़ ।
पिचुल-(सं०पुं०) झाऊ का पेड़, समुद्र फल ।
पिचू-(हिं०पुं०) सोलह मांशे की तौल ।
पिचोतरसो-(हिं०पुं०) पहाड़े में एक सौ पाच की संख्या के लिये कहा जाता है
पिच्चट-(सं०नपुं०) सीसा, राँगा, आँख का एक रोग ।
पिच्चिट-(सं०पुं०) एक प्रकार का विषैला कीड़ा; **पिच्चित**-(सं०वि०) पिचका हुआ, जो दबकर चिपटा हो गया हो ; **पिच्ची**-(हिं०वि०) देखो पिच्चित ।
पिच्छ, पिच्छक-(सं०पुं०)पशु की पोंछ, लांगूल, मयूर पुच्छ, मोर की पूँछ, चूड़ा, मोर की चोटी, मोचरस ।
पिच्छतिका-(सं०स्त्री०) शीशम का पेड़ ।
पिच्छन-(स०नपुं०) किसी वस्तु को दबाकर चिपटा करने की क्रिया ।
पिच्छबाण-(स०पुं०) श्येन पक्षी, बाज़ चिड़िया ।
पिच्छभार-(स०पुं०) मोर की पोंछ।
पिच्छल-(सं०पुं०) मोचरस, आकाश बेल, शिशप वृक्ष, शीशम का पेड़ ।
पिच्छिल-(हिं०वि०) जिस पर से पैर फिसल जावे, चिकना; **पिच्छिलपाद**-(सं०पुं०) घोड़े के पैर का एक रोग ;
पिच्छिलबीज-(सं०पुं०) दाडिम, अनार
पिच्छा-(सं०स्त्री०)पूग, सुपारी,मोचरस, निर्मली का पेड़, आकाश लता, नारंगी का पेड़ ।
पिच्छिका-(सं०स्त्री०) चँवर, मोरछल ।
पिच्छिल-(सं०वि०) गीला और चिकना, माड़ मिला हुआ भात, पानी मिली हुई तरकारी, फिसलने वाला, जिसके सिरपर जूड़ा हो, खट्टा, कोमल, फूला हुआ (पुं०) लिसोड़े का वृक्ष, रसीला व्यंजन ।
पिच्छिलक-(सं०पु०) साम्हर का वृक्ष, मोचरस ; **पिच्छिलच्छदा**-(सं० स्त्री०) पोय का साग, बेर का फल ।
पिच्छिला-(स० स्त्री०) शीशम, सेम्हर, तालमखाना, अगर, अरबी ।
पिछड़ना-(हिं० क्रि०) श्रेणी में आगे या बराबर न रहना, पीछे रह जाना
पिछलगा-(हिं०पुं०) सेवक, नौकर, आश्रित, आधीन, अनुगामी, दूसरे की मत से काम करने वाला, वह मनुष्य जो किसी के पीछे पीछे चले, शिष्य, किसी का मतानुयायी, चेला; **पिछलगी**-(हिं०स्त्री०) अनुसरण, अनुयायी होना, अनुगमन करना; **पिछलग्गू**-(हिं०वि०) देखो पिछलगा ।
पिछलना-(हिं० क्रि०) पीछे की ओर हटना या मुड़ना ।
पिछलपाई-(हिं०स्त्री०) जादूगरनी,चुड़ैल
पिछला-(हिं०वि०) पीछे की ओर का, अन्त की ओर का, गत, बीता हुआ, पुराना, भूतकाल का, बाद का, (पु०) एक दिन पहिले का पढ़ा हुआ पाठ, वह खाना जो रोज़े के दिनों में मुसलमान लोग रात रहते ही खा लेते हैं, सहरी ; **पिछली पहर**-आधी रात के बाद का समय; **पिछली रात**-पिछली पहर ।
पिछवाई-(हि० स्त्री०) पीछे की ओर लटकाने का परदा ।
पिछवाड़ा, पिछवारा-(हिं० पुं०) घर के पीछे का स्थान, किसी घर के पीछे का भाग ।
पिछाड़ी-(हिं० स्त्री०) पीछे का भाग घोड़े के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी ।
पिछान-(हिं० स्त्री०) देखो पहचान ;
पिछनना-(हिं०क्रि०) देखो पहचानना ।
पिछारी-(हिं० स्त्री०) देखो पिछाड़ी ।
पिछौड़-(हि० वि०) किसी के मुख की ओर पीठ किया हुआ, जिसने अपना मुँह पीछे कर लिया हो; **पिछौंड़ा**-(हिं०वि०) पीछे की ओर का ।
पिछौंता-(हिं०क्रि०वि०) पिछली ओर ।
पिछौंही-(हि० स्त्री०) देखो पिछौरी ।
पिछौंहें-(हिं०क्रि०वि०) पिछली ओर ।
पिछौरा-(हिं० पु०) मनुष्य के ओढ़ने का दुपट्टा या चादर ; **पिछौरी**-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की चादर जिसको वे धोती के ऊपर ओढती हैं, ऊपर से डालने का वस्त्र ।
पिञ्ज-(सं० नपुं०) शक्ति, वध, एक प्रकार का कपूर; **पिञ्जक**-(सं०नपु०) हरिताल,हड़ताल । **पिञ्जट**-(सं०पुं०) आँख का कीचड़ ।
पिञ्जन-(सं० नपुं०) धुनिये की कमान, धुनकी ।
पिञ्जर-(सं० नपु०) हरताल, सुवर्ण, सोना, पक्षियों के रखने का पिंजड़ा, हड्डी की ठठेरी, (पुं०) एक प्रकार का घोड़ा, पीला और लाल रंग, (वि०) पिला ऊदे रग का, भूरापन लिये लाल ; **पिञ्जरता**-(स० स्त्री०) भूरापन ।
पिञ्जल-(सं०नपुं०) हरताल,(पुं०) जल बेंत, (वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ, जिसका चेहरा पीला पड़ गया हो ।
पिञ्जा-(सं०स्त्री०) हलदी, रूई ।
पिञ्जान-(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना ।
पिञ्जिका-(सं०स्त्री०) रूई की पोली बत्ती, पूनी ।
पिञ्जूष-(सं०पु०) कान का मैल, खूंट ।
पिञ्जेट-(स०पुं०) आँख का कीचड़ ।
पिटंत-(हिं०स्त्री०) पीटने की क्रिया या भाव, मारपीट ।
पिटक-(स०पु०) बाँस बेत आदि का बना हुआ पेटारा, फुड़िया, फुंसी, किसी ग्रन्थ का विभाग या खंड;
पिटका-(सं०स्त्री०) पिटारी, फुंसी ।
पिटना-(हिं०क्रि०) आघात सहना, मार खाना, ठोंका जाना, आघात पाकर बजना, (पु०) छत पीटने की लकड़ी की मुंगरी ।
पिटपिट-(हि० स्त्री०) हलके आघात से उत्पन्न शब्द ।
पिटरिया-(हिं०स्त्री०) देखो पिटारी ।
पिटवाना-(हिं० क्रि०) पीटने का काम दूसरे से कराना, दूसरे से आघात कराना मार खिलवाना, कुटवाना, ठोंकवाना, बजवाना । **पिटाई**-(हिं० स्त्री०) प्रहार, आघात, पीटने का काम, मारकूट, पिटवाने का शुल्क, पीटने या मारने का वेतन ;
पिटापीट-(हि० स्त्री०) किसी वस्तु को कुछ देर तक बारम्बार पीटना, मारपीट ।
पिटारा-(हिं०पुं०) बाँस बेंत आदि के छिलके का बिना हुआ ढपनेदार गोल पात्र ; **पिटारी**-(हिं०स्त्री०) छोटा पिटारा, झांपी ।
पिट्टक-(सं०नपुं०) दाँत की मैल ।
पिट्टस-(हिं० स्त्री०) दुःख या शोक से छाती पीटना ।
पिट्टू-(हिं०वि०) जिसको मार खाने का अभ्यास हो ।
पिट्ठी-(हिं०स्त्री०) देखो पीठी ।
पिट्ठू-(हिं० पुं०) सहायक, अनुयायी, पीछे चलने वाला, खेल में साथ देने वाला, किसी खेलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसकी बारी में उसके बदले मे वह स्वयं खेलता है ।
पिठ-(स०पुं०) पीड़ा, दुःख ।
पिठर-(सं० नपुं०) मोथा, एक प्रकार का घर, थाली, एक दानव का नाम ; **पिठरक**-(सं० पुं०) एक नाग का नाम ।
पिठरिका-(सं०स्त्री०) पात्र, थाली ।
पिठवन-(हि० स्त्री०) पृष्ठिपर्णी लता जो औषधियों में प्रयोग होती है ।
पिठी-(हिं०स्त्री०) देखो पिट्ठी ।
पिठौनी-(हिं०स्त्री०) देखो पिठवन ।
पिठौरी-(हिं०स्त्री०) पीठी की बनी हुई बरी पकौड़ी आदि ।
पिड़क-(सं०पुं०) छोटा फोड़ा, फुंसी

पिड़िया-(हिं० स्त्री०) चावल का लड्डू।
पिड़का-(सं०स्त्री०) देखो पिड़क।
पिड़ई-(हिं०स्त्री०)छोटा पीढ़ा या पाटा।
पिण्ड-(सं०पुं०नपुं०) पित्रादि के उद्देश्य से दिया जाने वाला अन्न, जीविका, आहार, भोजन, मदनवृक्ष, कोई गोल द्रव्य, जपा पुष्प, खीर आदि का हाथ से बाँधा हुआ गोल लोंदा, बल, धन।
पिण्डक-(सं० नपुं०) पिण्डालु, बोल, (पुं०) पिशाच, कवल; पिण्डका-(सं०स्त्री०) मसूरिका, छोटी चेचक; पिण्डखर्जूर-(सं० पु०) देखो पिड खजूर।
पिण्डज-(सं० पुं०) वह जन्तु जो गर्भ से अण्डे के रूप में न निकले परन्तु बने हुए शरीर के रूप में निकले, जन्तु; पिण्डत्व-(सं० पुं०) पिण्ड का भाव या फल।
पिण्डद-(सं०पु०) पिण्डदान करने वाला, वह जो पिण्डदान का अधिकारी हो; पिण्डदान-(सं०नपुं०) पिण्ड देने का काम जो श्राद्ध में किया जाता है; पिण्डपात-(सं०पु०) पिण्डदान, भिक्षादान; पिण्डपात्र-(सं०नपुं०) वह पात्र जिसमें पिण्ड दिया जाता है, भिक्षापात्र; पिण्डपाद-(सं०पुं०) हस्ती, हाथी; पिण्डपुष्प-(सं० नपुं०) अड़हुल का फूल, कमल का फूल, अनार का वृक्ष; पिण्डपुष्पक-(सं० पुं०) बथुवा का साग; पिण्डफल-(सं०नपुं०) कद्दू; पिण्डफला-(सं० स्त्री०) तितलौकी; पिण्डबीज-(सं०पुं०) कनेर का पेड़; पिण्डभाज-(सं० वि०) पिण्डभोजी, पिण्ड खाने वाला; पिण्डमय-(सं० वि०) गोल-मटोल टुकड़ा; पिण्डमुस्ता-(सं०स्त्री०) नागर मोथा; पिण्डमूल-(सं० नपुं०) गाजर, शलजम; पिण्डयोनि-(सं०स्त्री०) योनि का एक प्रकार का रोग; पिण्डरोग-(सं०पु०) कुष्ट, कोढ।
पिण्डल-(सं०स्त्री०) सेतु, पुल।
पिण्डस-(सं० पुं०) भिक्षा से जीविका निर्वाह करने वाला।
पिण्डस्थ-(सं० वि०) संयुक्त, मिश्रित, एक साथ मिला हुआ।
पिण्डा-(सं०स्त्री०) हलदी, एक प्रकारकी कस्तूरी; पिण्डाकार-(सं० वि०) बँधे हुए लोंदे के आकार का गोल।
पिण्डामा-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का गुड़।
पिण्डालु-(सं० पुं०) एक प्रकार का सफ़ताल्।
पिण्डाश-(सं०पुं०) भिक्षुक, भिखारी।
पिण्डिका-(सं०स्त्री०) गोल टुकड़ा, पहिये की नाभि, इमली।
पिण्डित-(सं०वि०) घन, पिण्ड रूप में बँधा हुआ, गुणा किया हुआ (पुं०) काँसा।
पिण्डी-(सं०वि०) शरीरधारी, शरीरी।
पिण्डिरिका-(सं०स्त्री०) चौराई का साग
पिण्डिला-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी।
पिण्डी-(सं० स्त्री०) कद्दू, लौकी, एक प्रकार का तगर एक प्रकार का खजूर, ठोस टुकड़ा, लुगदी, वह वेदी जिस पर बलिदान किया जाता है, सूत, रस्सी आदि का लपेटा हुआ लच्छा; पिण्डीपुष्प-(सं० पु०) अशोक वृक्ष; पिण्डीशूर-(सं० पुं०) घर में बैठे बैठे शूरता दिखलाने वाला, पेटू।
पिण्डोद्भवा-(सं०स्त्री०) मदिरा, शराब।
पिण्डोलि-(सं० स्त्री०) उच्छिष्ट पदार्थ, जूठन।
पितम्बर-(हिं०पु०) देखो पीताम्बर।
पितपापड़ा-(हिं०पु०) एक झाड़ जिसका उपयोग औषधियों में होता है।
पितर-(हिं०पुं०) मृत पूर्व पुरुष, मरे हुए पुरखे जिनके नाम पर श्राद्ध और तर्पण किया जाता है; पितर-पति-(हिं०पुं०) यमराज।
पितराइंध, पितराई-(हिं० स्त्री०) खाद्य वस्तु में पीतल का कसाव।
पितरशूर-(सं० पुं०) वह जो पिता के सामन शूरता दिखलाता हो।
पितरिहा-(हिं०वि०) पीतल का बना हुआ, (पुं०) पीतल का घड़ा।
पिता-(हिं० पुं०) जनक, बाप, वह जो जन्म देकर पालन पोषण करता है; पितामह-(सं० पुं०) पिता का पिता, दादा, ब्रह्मा, विधाता, शिव, महादेव, भीष्म, मूँज नामक घास; पितामही-(सं० स्त्री०) पितामह की स्त्री, दादी।
पितिया-(हिं०पुं०)पिता का भाई, चाचा।
पितियानी-(हिं०स्त्री०) चाचा की स्त्री, चाची।
पितिया ससुर-(हिं०पु०) स्त्री या पति का चाचा; पितिया सास-(हिं०स्त्री०) स्त्री या पति का चाची।
पितु-(सं०पुं०) अन्न, अनाज, (हिं०पुं०) पिता; पितुःपुत्र-(सं० पु०) योग्य पिता का योग्य पुत्र; पितुःस्वसा-(सं० स्त्री०) पिता की बहिन, फुवा, मौसी।
पितृ-(सं०पुं०) उत्पादक, जनक, पिता, वह जो पुत्र का पालन पोषण करता है, चाणक्य ने पांच प्रकार के पिता बतलाये हैं यथा-अन्नदाता, भयत्राता, श्वशुर, जनक और उपनेता, किसी व्यक्ति के मरे हुए बाप, दादा, परदादा आदि; मृत पुरुष जिनका प्रेतत्व छूट गया हो, एक प्रकार के देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गये हैं; पितृऋण-(सं० पु०) धर्मशास्त्र के अनुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक जिस ऋण से मनुष्य पुत्र उत्पन्न करने पर मुक्त होता है।
पितृक-(सं० वि०) पैत्रिक, पिता का, पिता का दिया हुआ; पितृकर्म-(सं० नपुं०) जो श्राद्ध तर्पण आदि पितरों के उद्देश्य से किये जाते हैं; पितृकल्प-(सं० वि०) पिता के सदृश; पितृकानन-(सं०पु०) श्मशान; पितृकार्य-(सं० पुं०) देखो पितृकर्म। पितृकुल-(सं०पुं०) पिता के वंश के लोग, पिता की ओर के सम्बन्धी; पितृकृत-(सं० वि०) पूर्व पुरुषों द्वारा किया हुआ; पितृगण-(सं० पुं०) मनुपुत्र मरिचि आदि के पुत्र; पितृगीता-(सं० स्त्री०) पिता की माहात्म्य सूचक गीता; पितृगृह-(सं० नपुं०) श्मशान, बाप का घर, स्त्रियों का पीहर, नैहर, मायका; पितृघात-(सं०पु०)पिता की हत्या; पितृतर्पण-पितरों के उद्देश से किया जानेवाला बलिदान, तर्पण आदि; पितृतिथि-(सं० स्त्री०) अमावास्या; पितृतीर्थ-(सं०नपु०) गया तीर्थ, दहने हाथ की तर्जनी और अंगूठे के बीच का स्थान; पितृत्व-(सं० नपुं०) पिता का भाव या धर्म; पितृदत्त-(सं० वि०) पिता द्वारा दिया हुआ; पितृदान-(सं० नपुं०) पितरों के उद्देश से दिया हुआ अन्न आदि का दान; पितृदाय-(सं० पुं०) पिता से प्राप्त धन या सम्पत्ति, बपौती; पितृदिन-(सं०नपुं०) अमावास्या; पितृदेव-(सं० पुं०) पितृगण के अधिष्ठाता देवता; पितृदैवत-(सं०पुं०) मघा नक्षत्र, यम; पितृनाथ-(सं०पुं०) यमराज; पितृपक्ष-(सं० पुं०) आश्विन मास का कृष्ण पक्ष, पितृकुल, पिता के सम्बन्धी; पितृपति-(सं० पुं०) यमराज; पितृपद-(सं० पुं०) पितृत्व, पितर होने की स्थिति; पितृपितृ-(सं०पुं०)पितरों के पिता ब्रह्मा; पितृप्रिय-(सं०पुं०) पीपलका वृक्ष,भंगरैया; पितृभोजन-(सं० पुं०) माष, उड़द; पितृमन्दिर-पिता का घर; पितृमेध-(सं० पुं०) श्राद्ध से भिन्न वह यज्ञ जो पितरों की मृत्यु के बाद दशरात्र में किया जाता है; पितृयज्ञ-(सं० पुं०) पितरों के उद्देश से किया जाने वाला तर्पण; पितृयाण-(सं० पुं०) पितरों का चन्द्र लोक गमन मार्ग; पितृरूप-(सं०पुं०) शिव, महादेव; पितृलोक-(सं०पुं०) पितरों का लोक, वह स्थान जहां पितर लोग रहते हैं, यह चन्द्रलोक के ऊपर है; पितृवत्-(सं० अव्य०) पिता तुल्य, पिता के सदृश; पितृवन-(सं०नपुं०) श्मशान; पितृवसति-(सं० स्त्री०) श्मशान; पितृवित्त-(सं० नपुं०) बाप दादों की सम्पत्ति; पितृव्य-(सं० पुं०) पिता के भाई, चाचा; पितृहा-(सं० पुं०) पिता की हत्या करनेवाला।
पित्त-(सं०नपुं०) शरीर के भीतर यकृत में बननेवाला एक तरल पदार्थ जो खाये हुए अन्न को पचानेमें सहायता देता है; पित्त उबलना-तीव्र भूख लगना; पित्त गरम होना-शीघ्र क्रोध आना; पित्तकर-पित्त को उत्पन्न करना द्रव्य; पित्तघ्न-पित्त का नाश करनेवाला; पित्तज्वर-पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला ज्वर।
पित्तपापड़ा-(हिं०पुं०)देखो पितपापड़ा।
पित्तप्रकृति-(सं० वि०) जिसकी प्रकृति पित्त की हो; जिसकी शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त अधिक हो;
पित्तप्रकोपी-(सं०वि०) पित्त को बढ़ाने वाली खाने पीने की वस्तु; पित्तरक्त-(सं०नपुं०) एक प्रकार का रोग जो पित्त बिगड़ने से उत्पन्न होता है।
पित्तल-(सं०नपुं०) पीतल नामक धातु; भोजपत्र, हरताल, (वि०) पित्तयुक्त, पित्त को बढ़ाने वाला।
पित्ता-(हिं०पुं०) पित्ताशय, जिगर में की वह थैली जिसमे पित्त रहता है, साहस; पित्ता उबलना-क्रोध चढ़ना; पित्ता निकालना-बड़े परिश्रम का काम करना; पित्ता मारना-क्रोध दबाना, कठिन कार्य करने में न घबड़ाना।
पित्तातिसार-(सं० पुं०) पित्त के प्रकोप से होनेवाला अतिसार; पित्ताशय-(सं०पु०) पित्त की थैली जो यकृत में नीचे पीछे की ओर होती है।
पित्ती-(हिं० स्त्री०) गरमी के दिनों में पसीना मरने से शरीर में निकलने वाले महीन दाने; एक रोग जो पित्त की अधिकता अथवा रुधिरमें अधिक गरमी आ जाने से उत्पन्न होता है, इसमें शरीर भर में दाने और लाल चिकोते पड़ जाते हैं,(पुं०)पितृव्य, चचा।
पित्तोदर-(सं०नपुं०) पित्त के बिगड़नेसे होने वाला उदर का एक रोग।
पित्र्य-(सं०वि०) पितृ सम्बन्धी, जिसका श्राद्ध किया जा सके,(पुं०)बड़ा भाई।
पित्र्या-(सं०स्त्री०) अमावास्या, पूर्णमासी मघा नक्षत्र।
पिदड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पिद्दी।
पिद्दा-(हिं० पुं०) देखो पिद्दी; गुलेल के तांत के बीच में लगी हुई गोली फेंकने की गद्दी।
पिद्दी-(हिं० स्त्री०) बया की जात की छोटी सुन्दर चिड़िया, फुदकी, अति तुच्छ प्राणी।
पिधातव्य-(सं० वि०) ढापने योग्य।
पिधान-(सं०नपुं०) आवरण, आच्छादन, परदा, ढपना, किवाड़ा, तलवार की ढपनी; पिधानक-(सं०पुं०)खड्ग कोष।
पिनकना-(हिं०क्रि०) ऊँघना, नींद में आगे को झुकना, अफ़ीमचियों का ऊँघना।
पिनकी-(हिं० पुं०) पिनक लेनेवाला, अफ़ीमची।
पिनपिन-(हिं० स्त्री०) रोगी या दुर्बल बच्चे का अनुनासिक स्वर में रोना

बच्चों के पिन् पिन् करने का शब्द; **पिनपिनहा**-(हिं० त्रि०) पिनपिन करने वाला अथवा निरन्तर रोनेवाला बच्चा; **पिनपिनाना**-(हिं० क्रि०) धीमे स्वर में रुक रुक कर बच्चों का रोना **पिनापिनाहट**-(हिं० स्त्री०) पिनपिन करके रोने की क्रिया या भाव, पिनपिन करके रोने का शब्द।

पिनस-(सं०पुं०) देखो पीनस।

पिनसन पिनसिन-(हिं० स्त्री०) देखो पेंशन।

पिनाक-(सं० पुं०) शिवजी का धनुष जिसको श्री रामचन्द्र ने जनकपुर में तोड़ा था, त्रिशूल, एक प्रकारका अभ्रक

पिनाकी-(सं० पुं०) पिनाकधारी शिव, एक प्रकार तार लगा हुआ प्राचीन बाजा।

पिन्नस-(हिं०स्त्री०) देखो पीनस।

पिन्ना-(हिं० वि०) सर्वदा रोने वाला, (पुं०) धुनकी।

पिन्नी-(हिं०स्त्री०) आटे या अन्य प्रकार के अन्न के चूर्ण में गुड़ या चीनी मिलाकर बनाई हुई मिठाई।

पिन्यास-(सं०नपुं०) हिंगु, हींग।

पिन्हाना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना।

पिपरामूल-(सं०पुं०) पिप्पलीकी जड़।

पिपराही-(हिं०पुं०) पीपल का जंगल।

पिपासा-(सं०स्त्री०) तृष्णा, प्यास, लोभ, लालच, एक प्रकार की व्याधि; **पिपासित**-(सं० वि०) पिपासायुक्त, प्यासा; **पिपासु**-(सं० वि०) तृषित, प्यासा, उत्कट इच्छा करने वाला, लालची।

पिपिली-(सं०स्त्री०) पिपीलिका, चींटी।

पिपीलक-(सं०पुं०) चींटा, चिंउटा।

पिपियाना-(हिं०क्रि०) पीब निकलना।

पिपीलिका-(सं० स्त्री०) चींटी, च्यूंटी; **पिपीली**-(सं०स्त्री०)पिपीलिका, चींटी।

पिप्पटा-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।

पिप्पल-(सं०नपुं०) जल, पानी, (नपुं०) अश्वत्थ, पीपल का पेड़।

पिप्पली-(सं०स्त्री०) पीपल की लता, इसका शहतूत के आकार का फल।

पिप्पलीमूल-(सं० नपुं०) पिपरामूल।

पिप्पिका-(सं० स्त्री०) दांतों की मैल।

पिप्रीषा-(सं० स्त्री०) प्रीति, कामना; **पिप्रीषु**-(सं०वि०)प्रीतिके अभिलाषी।

पिय-(हिं०पुं०) स्वामी, भर्ता, पति।

पियदसी-सम्राट् अशोकका नामान्तर।

पियर-(हिं० वि०) पीला, पीले रंग का;

पियरवा-(हिं०वि०) प्रिय पति। **पियरई**-(हिं० स्त्री०) पीलापन; **पियराई**-(हिं० स्त्री०) पीलापन, जर्दी; **पियराना**-(हिं० क्रि०) पीला पड़ना या होना।

पियरी-(हिं०स्त्री०)पीली रंगी हुई धोती, पीलापन, एक प्रकारका पीला रंग।

पियरोला-हिं० पुं०) पीले रंग की एक प्रकार की चिड़िया।

पियली-(हिं०स्त्री०)नारियलकी खोपड़ी का टुकड़ा।

पियल्ला-(हिं०पुं०)दूध पीनेवाला बच्चा।

पियवास-(हिं० पुं०) देखो प्रियवास।

पिया-(हिं०पुं०) देखो पिय; प्रिय।

पियाज-देखो प्याज।

पियादा-(हिं०पुं०) देखो प्यादा।

पियाना-(हिं० क्रि०) देखो पिलाना।

पियाबांसा-(हिं०पुं०) कटसरैया।

पियार-(हिं०पुं०) महुवे की तरह का एक वृक्ष जिसके बीजकी गरी चिरौंजी कहलाती है जो खानेमें मीठी होती है।

पियारा-(हिं० वि०) देखो प्यारा।

पियाल-(सं०पुं०) चिरौंजी का पेड़।

पियाला-(हिं०पुं०) कटोरी।

पियास-(हिं०स्त्री०)देखो प्यास; **पियासा**-(हिं०वि०) प्यासा।

पियासाल-(हिं०पुं०) बहेड़े या अर्जुन की जात का एक वृक्ष, पीतसार।

पियूख, पियूष-हिं०पुं०) देखो पीयूष।

पिरकी-(हिं० स्त्री०) फुंसी, फोड़िया।

पिरता-(हिं० पुं०) पूनी दबानेका काठ का टुकड़ा।

पिरथी-(हिं०स्त्री०) देखो पृथ्वी।

पिरन-(हिं०पुं०)चौपायोंका लंगड़ापन।

पिराई-(हिं० स्त्री०) देखो पियराई।

पिराक-(हिं०पुं०) एक प्रकार की चीनी का ढाल कर बना हुआ बड़ा अर्ध चन्द्राकार पकवान।

पिराना-(हिं०क्रि०) पीड़ा होना, दुखना, पीड़ा का अनुभव करना, सहानुभूति करना, दुःख समझना।

पिरारा-(हिं०पुं०) देखो पिड़ारा।

पिरिच-(हिं०पुं०) कटोरी।

पिरिया-(हिं० पुं०) एक प्रकार का बाजा, कुवेंसे पानी खींचनेकी रहट।

पिरीतम-हिं०वि०) प्रिय, प्रियतम।

पिरीता-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा।

पिरीति-देखो प्रीति।

पिरोज-(हिं०पुं०)कटोरा, छोटी थाली।

पिरोजना-(हिं० पुं०) देखो प्रयोजन, कनछेदन।

पिरोजा-(फा०पुं०) हरापन लिये एक प्रकार का नीला पत्थर।

पिरोड़ा-(हिं०स्त्री०) पीली कड़ी मिट्टी की भूमि।

पिरोना-(हिं०क्रि०) तागे आदि को सूई के छेद में डालना, छेद के पार निकालना या पहिराना गूथना, पोहना,

पिरोला-(हिं०पुं०)एक प्रकारका पक्षी

पिलई-(हिं०स्त्री०) बरवट, तापतिल्ली।

पिलक-(हिं०पुं०) अबलक कबूतर, एक प्रकार की पीले रंग की चिड़िया।

पिलकना-(हिं०क्रि०)ढकेलना, गिराना, लुड़काना।

पिलकिया-(हिं० पुं) एक प्रकार की छोटी चिड़िया जिसका रंग पीलापन लिये भूरा होता है।

पिलखन- (हिं०पुं०) पाकर का वृक्ष।

पिलड़ी-(हिं०स्त्री०)मसालेदार पकवान।

पिलचना-(हिं०क्रि०) तत्पर होना, लीन होना, काममें लग जाना, दो मनुष्यों का परस्पर गुथना।

पिलना-(हिं०क्रि०) एक बारगी प्रवृत्त होना या लग जाना, लिपट जाना, तेल निकालने के लिये पेरा जाना, किसी ओर एक बारगी टूट पड़ना, भिड़ जाना।

पिलपिल, पिलपिला-(हिं०वि०) इतना नरम या ढीला कि दबाने से भीतर का रस या गूदा बाहर निकल आवे; **पिलपिलाना**-(हिं०क्रि०) गूदेदार या रसदार वस्तु को इस प्रकार दबाना कि इसमें का रस ढीला होकर बाहर निकलने लगे। **पिलपिलाहट**-(हिं०स्त्री०) वह नरमी या मृदुता जो गूदे या रस के ढीले होने के कारण आगई हो।

पिलवाना-(हिं०क्रि०) पिलाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को पिलाने में लगाना, पेरवाना, पेलने या पेरने का काम कराना।

पिलाना-(हिं० क्रि०) पीने का काम कराना, पीने को देना, भीतर करना, किसी छेद में डाल देना।

पिलिप्पिल-(सं०वि०) चिक्कण, चिकना;

पिलुंडा-(हिं०पुं०) देखो पुलिन्दा।

पिलु-(सं०पुं०) एक रागिणी का नाम।

पिलुनी-(सं०स्त्री०) मूर्वा लता।

पिल्ल-(सं० पुं०) आँख का एक रोग जिसमें आँखों में से कीचड़ बहा करता है।

पिल्लिका-(सं०स्त्री०)हस्तिनी, हथिनी;

पिल्ला-(हिं०पुं०)कुत्ते का छोटा बच्चा;

पिल्लू-(हिं०पुं०) बिना पैर का सफेद कीड़ा जो सड़े हुए फल घाव आदि में पड़ जाता है।

पिव-(हिं०पुं०) देखो पिय।

पिवाना-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना।

पिशङ्ग-(सं०पुं०) पीलापन लिये भूरा रंग, एक नाग का नाम, (वि०) धूमिल रंग का।

पिशङ्गक-(सं०पुं०) विष्णु भगवान्।

पिशङ्गरूप-(सं० वि०) पीतावर्ण, पीले रंग का।

पिशंगी-(हिं०वि०) पीला।

पिशङ्गाश्व-(सं० पुं०) पीले रंग का घोड़ा।

पिशाच-(सं०पुं०) एक हीन देवयोनि, भूत, प्रेत।

पिशाचक-(सं० पुं०) भूत प्रेत भगाने-वाला ओझा। **पिशाचघ्न**-(सं०पुं०) या पीली सरसों, (वि०) पिशाचों को हटाने या नाश करने वाला; **पिशाचता** (सं०स्त्री०) पिशाच का भाव या धर्म।

पिशाचवृक्ष-(सं० पुं०) सिहोर का वृक्ष। **पिशाचसभ**-(सं०नपुं०) पिशाचों की सभा। **पिशाचालय**-(सं० पुं०) पिशाचों का घर।

पिशाचिका, पिशाची-(सं०स्त्री०) छोटी जटामांसी।

पिशित-(सं०नपुं०) मांस।

पिशिता-(सं०स्त्री०) जटामासी।

पिशिताशन-(सं०वि०) मांस खानेवाला;

पिशील-(सं०नपुं०) मिट्टी की कटोरी।

पिशुन-(सं०नपुं०) कुंकुम, केशर, नारद, कौवा, कौशिक के एक पुत्र का नाम, (वि०) आपस में लड़ाई लगाने वाला, क्रूर, दुष्ट। **पिशुनता**-(सं० स्त्री०) क्रूरता, चुगलखोरी।

पिशोर-(हिं०पुं०)एक प्रकार की पहाड़ी झाड़ी।

पिष्ट-(सं०नपुं०) सीसा, मिट्टी, पीठी, (वि०) चूर्ण, किया हुआ। **पिष्टक**-(सं०नपुं०)तिल का चूर्ण, पिष्ट, पिठी, रोट, कचौड़ी, पूआ, एक प्रकार का आंख का रोग, सीसा। **पिष्टपचन**-(सं०नपुं०) पीठी पकाने का पात्र।

पिष्टपिण्ड-(सं०पुं०) पुरोडाश, पीठी।

पिष्टपूर-(सं०पुं०) वटक, बरी, एक प्रकारकी पीठी। **पिष्टपेषण**-(सं०पुं०) पीसे हुए को पीसना, एक बार कही हुई बात को बारंबार दोहराना।

पिष्टमेह-(सं० पुं०) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ एक सफेद द्रव्य गिरता है। **पिष्टयोनि**-(सं०पुं०) कचौरी या पुआ। **पिष्टसौरभ**-(सं०पुं०)चन्दन जिसके पीसने से सुगन्ध निकलती है।

पिष्टका-(सं०स्त्री०)दाल की पीठी, पीठी।

पिष्टोदक-(सं०नपुं०) पीसे हुए चावल का पानी।

पिसनहारी-(हिं० स्त्री०) आँटा पीसने वाली वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसकर चलती हो।

पिसना-(हिं०क्रि०)पीसकर तैयार होना, छोटे छोटे टुकड़ों में विभक्त होना, कष्ट उठाना, अति परिश्रम से क्लान्त होना, दबना, कुचल जाना।

पिसवाज-(हिं०पुं०) रंडियों के पहिरने का घाघरा।

पिसवाना-(हिं० क्रि०) पीसने का काम दूसरे से कराना।

पिसाई-(हिं०स्त्री०) पीसने की क्रिया या भाव, पीसने का शुल्क का धंधा, अत्यन्त अधिक श्रम।

पिसाच-(हिं०पुं०) देखो पिशाच।

पिसान-(हिं०पुं०) अन्न का महीन पिसा हुआ चूर्ण, आटा। **पिसाना**-(हिं०क्रि०) पिसवाना।

पिसिया-(हिं० पुं०) एक प्रकार का छोटा कोमल गेहूँ।

पिसुन-(हिं०पुं०) देखो पिशुन।

पिसुराई-(हिं०स्त्री०) सरकडे का छोटा टुकड़ा जिसपर लपेट कर पूनी बनाई जाती है।

पिसेरा-(हिं०पुं०)एक प्रकार का हिरन;

पिसौनी-(हिं०स्त्री०) पीसने का काम, चक्की पीसने का धंधा, परिश्रम का काम।

पिस्त-(सं०नपुं०) पिस्ता।
पिस्ता-(हिं०पु०)एक छोटा पेड़ जिसका फल अच्छे मेवों में गिना जाता है।
पिस्तौल-(हिं०स्त्री०)छोटी बंदूक,तमंचा
पिस्सी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार गेहूं।
पिस्सू-(हिं०पु०)उड़ने वाला एक छोटा कीड़ा जो मच्छड़ों की तरह काटता और रक्त चूसता है।
पिहकना-(हिं०क्रि०) मोर, कोयल,पपीहे आदि पक्षियों का बोलना।
पिहान-(हिं०पुं०) पिधान, ढपना।
पिहित-(सं०वि०) आच्छादित, छिपा हुआ, (पुं०) वह अर्थालंकार, जिसमें किसी व्यक्ति के मन का कोई भाव जान कर क्रिया द्वारा अपना भाव प्रगट करना वर्णन किया जाता है।
पिहुआ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी।
पिहोली-(हिं० पुं०) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियां बड़ी सुगन्धित होती है।
पींजना-(हिं०क्रि०) रूई धुनना।
पींजरा-(हिं० पुं०) देखो पिंजड़ा।
पींड-(हिं० पुं०) किसी गीली वस्तु का गोला, पिंडी,पिण्ड, चरखे का बेलन, पिंडखजूर, शरीर, देह, वृक्षका तना, पेड़ी।
पींडी-(हिं०स्त्री०) देखो पिंडी।
पींडुरी-(हिं० स्त्री०) देखो पिण्डुली।
पी-(सं०पु०)पपीहेकी बोली, देखो पिय।
पीक-(हिं०पु०) थूकसे मिला हुआ पान का रस, ऊंची नीची भूमि, वह रंग जो कपड़े पर पहिली बार चढ़ाया जाता है; पीकदान-(हिं० पुं०) एक प्रकार का डमरू के आकारका पात्र जिसमें पान को पीक डाली जाती है, उगालदान।
पीकना-(हिं०क्रि०)पिहिकना, पपीहे या कोयल का बोलना।
पीका-(हिं०पु०) किसी वृक्ष का नया कोमल पत्ता, कोंपल।
पीखग-(हिं०पुं०) पपीहा।
पीच-(सं० पु०) नीचे का जबड़ा; (हिं०स्त्री०) माड़।
पीचना-(हिं०क्रि०) पीसना, दबना।
पीचू-(हिं०पुं०) करील का पक्का फल, एक प्रकार का झाड़।
पीछ-(हिं०स्त्री०) देखो पीच, माड़।
पीछा-(हिं०पुं०) पश्चात् भाग, पिछला भाग, पीछे पीछे चल कर किसी के साथ लगे रहना,किसी घटना के बाद का काल; पीछा दिखाना-छूट जाना, भाग जाना; पीछा देना-किसी काम में पहिले साथ देकर बाद को हट जाना; पीछा करना-खदेड़ना; पीछा छुड़ाना-सम्बन्ध छोड़ाना; पीछा छूटना-छुटकारा पाना; पिंड छूटना; पीछा छोड़ना-समाप्त करना, बन्द करना।
पीछू-(हिं०क्रि०वि०) देखो पीछे।
पीछे-(हिं०अव्य०) विरुद्ध दिशा में, पीछे की ओर कुछ दूरपर, अन्त में, पीठ की ओर, निमित्त,कारण से वास्ते, लिये, किसी अनुपस्थिति या अभाव में, देश या कार्यक्रम में किसी के उपरान्त, कुछ देर बाद, अनन्तर; पीछे चलना-अनुकरण करना; पीछे छोड़ना-किसी का पीछा करने के लिये किसी को दौड़ाना; पीछे डालना-बटोर रखना; पीछे पड़ना-किसी काम में निरन्तर उद्योग करना, किसी काम के लिए किसी को व्यग्र करना; पीछे लगना-पीछे पीछे चलना, पीछा करना; पीछे लगाना-सहारा देना, कुछ पता लगाने के लिये किसी के साथ कर देना; पीछे छूटना-पीछे रह जाना; पीछे पड़ना-व्यग्र करना; पीछे छोड़ना-आगे बढ़ जाना।
पीजन-(हिं०पुं०) ऊन,धुननेकी धुनकी।
पीजर-(हिं०पुं०) देखो पिंजड़ा।
पीटन-(हिं०पुं०) देखो पीटना।
पीटना-(हिं०क्रि०)प्रहार करना,मारना, चोट देकर किसी वस्तु को चिपटी करना, किसी न किसी प्रकार से कोई वस्तु प्राप्त कर लेना, ठोंकना, किसी न किसी प्रकार से कोई काम समाप्त कर लेना, (पुं०) आपत्ति, मृत्यु शोक, छाती पीटना-अत्यन्त शोक या दुःख प्रगट करना।
पीठ-(सं० नपुं०) पीढ़ा, चौकी, आसन, वह स्थान जहांपर जपादि करके मंत्र सिद्ध किये जाते हैं, किसी मूर्ति के नीचे का आधार, पिण्ड, कंस के एक मन्त्री का नाम, बैठनेका एक विशेष ढङ्ग, सिंहासन, देवपीठ, एक असुर का नाम, वृत्त के किसी अंश का पूरक, अधिष्ठान, वेदी, प्रदेश,प्रान्त आश्वासन।
पृष्ठ-(हिं०स्त्री०) पेट के दूसरी ओर का स्थान,किसी वस्तु की रचना का ऊपरी भाग, किसी वस्तुके रहनेका स्थान; पीठ का-पृष्ठ देश का; चारपाई से पीठ लग जाना-रोग से अति दुर्बल होना; पीठ ठोकना-आश्वासन देना; पीठ दिखाना-युद्ध में से भाग जाना; पीठ देना-विदा होना, मुंह मोड़ना; पीठ पर-एक ही माता से उत्पन्न संतति के बाद का जन्मा हुआ; पीठ पर हाथ फेरना-आश्वासन देना; पीठ पर होना-सहायक होना; पीठ पीछे-किसी की अनुपस्थिति में; पीठ फेरना-विदा होना; पीठ लगना-घोड़े, बैल आदि की पीठ पर घाव होना; पीठ लगाना-लेटना।
पीठक-(सं०पुं०) आसव, पीढा,चौकी।
पीठग-(सं०वि०) खंज, लंगड़ा।
पीठ गर्भ-(सं० पु०) वह गड्ढा जो किसी मूर्ति के बैठाने के लिये खोदा जाता है; पीठचक्र-(सं० पु०) एक प्रकार का रथ;पीठदेवता-(सं० स्त्री०) आधार शक्ति आदि देवता; पीठपायिका-(सं० स्त्री०) भगवती, दुर्गा; पीठमर्द-(सं० पुं०) नायक के चार सखाओं में से एक जो बोलने की चतुराई से नायिका का मान मोचन कर सकता है, कुपित नायिका को प्रसन्न करनेवाला नायक,(वि०) अति धृष्ट, बड़ा ढीठ;पीठस्थान-(सं० नपुं०) देवता से अधिष्ठित देश; देखो पीठ।
पीठा-(हिं० पुं०) आटे की लोई में पीठी भर कर बनाया हुआ एक पकवान, पीढ़ा।
पीठि-(हिं०स्त्री०) देखो पीठ।
पीठिका-(सं० स्त्री०) मूर्ति अथवा खंभे का मूल भाग, अध्याय।
पीठी-(हिं०स्त्री०) उड़द मूंग आदि की छिलका उतार कर पीसी हुई दाल।
पीड़-(हिं०स्त्री०)सिर के बालों में बांधने का एक प्रकार का आभूषण।
पीड़क-(सं० पु०) दुःखदायी, पीड़ा देने वाला, अत्याचारी, एक प्रकार का चमड़े का रोग।
पीडन-(सं०नपुं०) आक्रमण द्वारा किसी देश को नष्ट करना, दुःख देना, चांपने या दबाने की क्रिया, नाश, लोप, सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण, किसी वस्तु की भली भांति पकड़ा।
पीडनीय-(सं०वि०) दुःख पहुंचाने योग्य।
पीड़ा-(सं०स्त्री०) शारीरिक अथवा मानसिक क्लेश, वेदना, व्यथा व्याधि, रोग, एक सुगन्धित औषधि, शिर में लपेटी हुई माला। पीड़ाकर-(सं०वि०) दुःखदायक। पीड़ास्थान-(सं०नपुं०) अशुभ ग्रहों के स्थान।
पीडित-(सं०वि०) क्लेशयुक्त, दुःखित, रोगी, दबाया हुआ, मर्दन किया हुआ; (पुं०) एक प्रकार के मन्त्र।
पीड़ुरी-(हिं०स्त्री०) देखो पिंडली।
पीढ़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी की छोटी नीचे पावे की चौकी जिसपर हिन्दू लोग भोजन करते समय बैठते हैं।
पीढ़ी-(हिं०स्त्री०) किसी वंश या कुल में किसी विशेष व्यक्ति से आरंभ करके उसके ऊपर या नीचे के पुरुषों की गणना क्रम से निश्चित स्थान, किसी विशेष व्यक्ति अथवा प्राणी की सन्तति समुदाय, सन्तान, सन्तति
पीत-(सं०नपुं०) हरिताल, हरिचन्दन, (पु०) पीला रंग, पुष्परागमणि, पुखराज, एक प्रकार की सोम लता, पदमाख, कुसुम, प्रवाल, मूंगा, भूरा रंग (वि०) पीले रंग का, पिया हुआ, भूरे रंग का।
पीतक-(सं० नपुं०) हरताल, अगुरु, केशर,पीतल, विजयसार, मधु पीला चन्दन,पीले रंग से रंगा हुआ, गाजर, सफेद जीरा, पीली लोध, चिरायता
पीतकन्द-(सं०पुं०) गाजर।
पीतका-(सं०स्त्री०) हल्दी, कूष्माण्ड, कटसरैया, पोई का साग, एक प्रकार का कीड़ा।
पीतकाष्ठ-(सं०नपुं०) पद्मकाष्ठ, पदमाख
पीतकेदार-(सं०पु०) एक प्रकार का धान।
पीतगन्ध-(सं० नपुं०) पीला चन्दन, हरिचन्दन। पीतचन्दन-(सं०नपुं०) पीले रंग का चन्दन, हरिचन्दन।
पीतघोष-(सं०पुं०) पलाश का फूल,टेसू
पीतता-(सं०स्त्री०) पीलापन।
पीततुण्ड-(सं०पुं०) बया पक्षी।
पीतत्व-(हिं०पुं०) देखो पीतता।
पीतदारु-(सं० पुं०) देवदार, हल्दी, चिरायता। पीतदुग्धा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का थूहर।
पीतद्रु-(सं०पुं०) दारुहल्दी।
पीतधातु-(सं०पुं०) गोपीचन्दन, रामरज
पीतन-(सं० नपुं०) कुंकुम, केशर, हरताल, देवदारु, पाकड़ का वृक्ष।
पीतनखता-(सं० स्त्री०) नाखून का एक रोग।
पीतनाश-(सं०पुं०) लकुच, बड़हर।
पीतनी-(सं०स्त्री०) शालपर्णी, सरिवन
पीतपराग-(सं०पुं०) कमल का केसर
पीतपादप-(सं० पुं०) सोनापाठा, लोध का वृक्ष।
पीतनादा-(सं० स्त्री०) सारिका;मैनापक्षी
पीतपुष्प-(सं०नपुं०) घिया, तोरई, (पु०) कनेर, चंपा, हिंगोट, लाल कचनार। पीतपुष्पक-(सं० पुं०) बबूल का पेड़। पीतपुष्पिका-(सं०स्त्री०) जंगली ककड़ी। पीतपुष्पा-(सं०स्त्री०) इन्द्र वारुणी, सहदेई, कटसरैया, अरहर, पीला कनेर, सोना जुही।
पीतपुष्पी-(सं०स्त्री०) महाबला, शंखपुष्पी।
पीतपृष्ठा-(सं०स्त्री०) पीले पीठ की कौड़ी
पीतफल-(सं०पुं०) कमरख। पीतफेन-(सं०पु०) अरिष्टक वृक्ष, रीठा।
पीतबीजा-(सं०पुं०) मेथिका, मेथी।
पीतभद्रक-(सं०पुं०) एक प्रकार का बबल।
पीतम-(हिं०वि०) देखो प्रियतम।
पीतमणि-(सं०पुं०) पुष्पराग,पुखराज।
पीतमस्तक-(सं०पुं०) एक प्रकार का बाज, पीतमुण्ड-(सं० पुं०) एक प्रकार का हरिन; पीतमूलक-(सं० नपुं०) गर्जन; गाजर। पीतमूली-(सं०स्त्री०) रेवन चीनी।
पीतर-(हिं०पुं०) देखो पीतल।
पीतरत्न-(सं०पुं०) पीतमणि,पुखराज;
पीतराग-(सं०नपुं०) पद्म केसर, (वि०) पीला।
पीतल-(हिं०पुं०) जस्ते और तांबे के संयोग से बनी हुई एक उपधातु।
पीतवर्ण-(सं०पु०)कदंब (नपुं०) मैनसिल, पीला चन्दन, केसर।
पीतवल्ली-(सं०स्त्री०) आकाश बेल।
पीतवान-(हिं०पुं०) हाथी के दोनों

आखों के बीच का स्थान ।
पीतवास-(सं०त्रि०) पीला वस्त्र पहिरने वाला, (पुं०) श्रीकृष्ण ।
पीतबीजा-(सं०स्त्री०) मेथी ।
पीतशाल-(स० पुं०) असना, विजयसार नामक वृक्ष ।
पीतशालि-(सं०पु०) एक प्रकार का महीन धान ।
पीतसरा-हिं०पु०) ससुर का भाई ।
पीतसार-(सं० नपुं०) पीला चन्दन, हरिचन्दन, मलयज, चन्दन, गोमेदकमणि, अकोल का वृक्ष, बीजक, शिलारस । **पीतसारक-**(स० नपुं०) नीम का पेड़ । **पीतसारि-**(सं०नपुं०) काला सुरमा । **पीतसाल-**(सं०पुं०) विजयासार का वृक्ष । **पीतस्कन्ध-**(सं०पु०)शूकर, सुअर । **पीतस्फटिक-**(सं०पुं०) पुष्पराग, पुखराज ।
पीतस्फोट-(सं०पु०)खजुली, दद्रु, दाद ।
पीता-(स० स्त्री०) हल्दी, दारुहलदी, अतीस, गोरोचन, हरताल, देवदार, राल, असगन्ध, आकाश बेल, (वि०) पीले रंग का ।
पीतांग-(सं० पु०) सोनापाठा, पीला मेढक, नारंगी का पेड़,(स्त्री०) हरिद्रा हल्दी ।
पीताब्धि-(सं०पुं०) अगस्त्य मुनि ।
पीताभ-(सं०पुं०) पीला चन्दन, (वि०) जिसमें से पीली आभा निकलती हो ।
पीताभ्र-(सं०नपुं०)पीले रंग का अभ्रक
पीताम्बर-(सं०पुं०)विष्णु, कृष्ण (नपुं०) पीला कपड़ा, रेशमी धोती जिसको पहन कर लोग पूजा पाठ करते है, (वि०) पीले वस्त्र वाला ।
पीताश्म-(सं०पुं०)पुष्परागमणि, पुखराज
पीति-(सं०पुं०) घोड़ा, हाथी का सूंड, गति ।
पीतिका-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी ।
पीतु-(सं०पुं०)सूर्य, अग्नि, यथपति ।
पीथ-(सं०नपुं०) जल, पानी, घी, सूर्य, अग्नि ।
पीदड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पिद्दी ।
पीन-(सं०वि०) पुष्ट, स्थूल, सम्पन्न, कठिन, प्रवृद्ध, (नपुं०) स्थूलता, मोटाई ।
पीनक-(हिं०स्त्री०) अफीम के नशे में ऊंघना, आगे को झुक पड़ना ।
पीनता-(सं०स्त्री०) स्थूलता, मोटाई ।
पीनना-(हिं०क्रि०) देखो पीजना ।
पीनस-(सं०पुं०) नाक का एक रोग, (हिं०स्त्री०) पालकी ।
पीनसा-(सं०स्त्री०) ककंटी, ककड़ी ।
पीना-(हिं०क्रि०)जल या जल के समान अन्य वस्तु को घूंट-घूंट करके गले के नीचे लतारना, घूंटना, मद्य पीना, सोखना, चूसना, धूम्र पान करना, हुक्का, चुरुट आदि का धुंआ भीतर खींचना, सहन करना, उपेक्षा करना, क्रोध या उत्तेजना का प्रगट न करना, मनोविकार को भीतर ही दबा लेना, कुछ भी लोप या बाकी न रहना, किसी संबध में मौन धारण करना, किसी बात को दबा देना, (हिं०पुं०) तीसी आदि की खली, डाट,डट्टा; **लोहू का घूंट पीना-** किसी बात को बड़े कष्ट से सहना कर लेना ।
पीनी-(हिं०स्त्री०) तीसी, तिल आदि की खली ।
पीप-(हिं० स्त्री०) फूटे हुए फोड़े या घाव के भीतर से निकलने वाला लसलसा सफेद पदार्थ, पीब, रीम ।
पीपर-(हिं०पुं०) देखो पीपल ।
पीपरपर्न-(हिं०पु०) कान में पहिरने का एक गहना ।
पीपरामल-(हिं०पु०)देखो पीपलामूल ।
पीपार-(हिं०पु०) देखो पीपल ।
पीपल-(हिं०पुं०) बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसको हिन्दू लोग बड़ा पवित्र मानते हैं, एक लता जिसके पत्ते पान की तरह होते हैं, इसकी कलियाँ औषधियों में प्रयोग होती है ।
पीपलामूल-(हिं०पुं०) पीपल की लता की जड़, देखो पिपरामूल ।
पीपा-(हिं०पुं०) ढोल के आकार का लोहे या काठ का बड़ा पात्र जो तरल पदार्थों के रखने के काम में लाया जाता है ।
पीब-(हिं०पुं०) देखो पीप । **पीय-**(हिं० पुं०) देखो पिय ।
पीयर-(हिं०वि०) पीला, पीले रंग का ।
पीयु-(सं०पुं०) सूर्य, काल, समय,थूक, उल्लू पक्षी, (वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, हिंसा करने वाला ।
पीयूख-(हिं०पुं०) देखो पीयूष ।
पीयूष-(सं०नपुं०) सुधा, अमृत, दूध, गाय के ब्याने पर उसका सात दिन के भीतर का दूध । **पीयूषमह, पीयूषभानु-**(सं०पुं०) चन्द्रमा, **पीयूष रुचि-**(सं०वि०)अमृत चाहने चन्द्रमा ।
पीयूष वर्ष-(सं०पु०) चन्द्रमा, कपूर, एक प्रकार का मातृक छन्द जिसको आनन्द वर्धक भी कहते हैं ।
पीयूषोत्था-(सं०स्त्री०) शालम मिश्री ।
पीर-(हिं०स्त्री०) सहानुभूति, करुणा, दया, पीड़ा, दुःख, प्रसव वेदना, (पुं०) मुसलमानों के धर्म गुरु ।
पीरमान-(हिं० पुं०) मस्तूल पर के वे डंडे जिन पर पाल चढ़ाई जाती है ।
पीरा-(हिं०स्त्री०) देखो पीड़ा, (वि०) देखो पीला ।
पीरू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मुर्गा ।
पीरोजा-(हिं०पुं०) देखो फीरोजा ।
पीलक-(सं० पुं०) पिपीलिका, चींटी, (हिं०पुं०) एक प्रकार की पीले रंग की चिड़िया ।
पीलपाल-(हिं०पुं०)हाथीवान, महावत ।
पीलपांव-(हिं० पुं०) श्लीपद, पैर के फूल जाने का एक रोग ।
पीलवान-(हिं०पुं०)हाथिबान, महावत ।
पीलसाज-(हिं०पु०) दीपक जलाने की दियट ।
पीला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का हल्दी या सोने के सदृश्य रंग, शतरंज का एक मोहरा, (वि०) निस्तेज, कान्ति हीन, धुँधला सफेद, **पीला पड़ना या होना-**रोग या भय के कारण शरीर तथा मुख का रंग पीला होना ।
पीलापन-(हिं० पु०) पीला होने का भाव जर्दी ।
पीलाम(हिं०पुं०) साटन नामक कपड़ा ।
पीलिया-(हिं० पु०) कामला रोग जिसमें मनुष्य का संपूर्ण शरीर और आंखें पीली पड़ जाती हैं ।
पलीचिट्ठी-(हिं० स्त्री०) विवाह का निमन्त्रण पत्र ।
पीलु-(सं०पुं०) फूल, परमाणु, हाथी, अस्थिखण्ड, हड्डी का टुकड़ा, कीड़ाबाण, अखरोट का वृक्ष, लाल कटसरैया, सरपत का फल ।
पीलूआ-(हिं०पुं०) मछली पकड़ने का बड़ा जाल ।
पीलुक-(सं० पुं०) एक प्रकार का कीड़ा ।
पीलुनी-(सं०स्त्री०) चने का साग ।
पीलू-(हिं०पुं०) सफेद लंबे कीड़े जो फलों के सड़ने पर उनमें पड़ जाते हैं, एक प्रकार का राग, एक प्रकार का कांटेदार वृक्ष ।
पीव-(हिं०पु०)पिय, पति; देखो पीव ।
पीवना-(हिं० क्रि०) देखो पीना ।
पीवर-(सं० वि०) स्थूल, गुरु, भारी, मोटा, (पुं०) जटा, कछुआ । **पीवरत्व-**(सं०नपुं०) स्थूलता, मोटापन ।
पीवरस्तनी-(सं० स्त्री०) बड़े थन की गाय ।
पीवरा-(सं०स्त्री०) असगन्ध, सतावर, (वि०) स्थूल, मोटा ।
पीवरी-(सं०स्त्री०) तरुणी, युवती स्त्री, गाय ।
पीवस-(सं० वि०) स्थूल, मोटा ।
पीवा-(हिं० वि०) स्थल, पुष्ट मोटा ।
पीसना-(हिं० क्रि०) कुचल कर बुकनी करना, भुरकुस करना कठोर परिश्रम करना, किसी वस्तु को जल की सहायता से रगड़ कर महीन करना, (पुं०) पीसी जाने वाली वस्तु, एक मनुष्य के पीसने का अंश; **किसी को पीसना-**अत्यन्त कष्ट देना ।
पीसू- (हिं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, देखो पिस्सू ।
पीह-(हिं०स्त्री०) वसा ।
पीहर-(हिं०पुं०) स्त्रियों के माता पिता का घर, मायका ।
पीहू-(हिं० पुं०) देखो पीसू ।
पुंख-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाज पक्षी ।
पुंखित-(हिं०वि०) पक्षयुक्त ।
पुंगफल, पुंगीफल-(हिं० पुं०) देखो पुङ्गीफल ।
पुँछल्ला-(हिं० पुं०) देखो पुंछाला ।
पुंछवाना-(हिं०क्रि०) देखो पुछवाना ।
पुंछार-(हिं०पुं०) मयूर, मोर ।
पुछाला-(हिं० पुं०) पोंछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु, पुछल्ला, अनावश्यक वस्तु जो किसी के साथ जोड़ी हुई हो, आश्रित, साथ न छोड़नेवाला ।
पुंज-(हिं० पु०)समूह, ढेर, देखो पुञ्ज ।
पुंजा-(हिं०पुं०) समूह, गुच्छा, पूला ।
पुंजी-(हिं०स्त्री०) देखो पूंजी ।
पुंजीकृत-(हिं०वि०) इकट्ठा, किया हुआ ।
पुंजीभूत-(वि०) रागी भूत ।
पुंड, पुंडरीक-देखो पुण्ड, पुण्डरीक ।
पुंड-(हिं०पुं०) दक्षिण की एक जाति जो पहिले रेशम के कीड़े पालने का काम करती थी, देखो पुण्ड ।
पुंडरी-(हिं०पुं०) भूमि कमल ।
पुंध्वज-(सं०पु०) मूषिका, चूहा ।
पुमन्त्र-(सं० पु०) वह मन्त्र जिसके अन्त में 'नम' या 'स्वाहा' हो ।
पुँयान-(सं० नपुं०) वह सवारी जिसको मनुष्य खींचते हों । **पुंरत्न-**(सं०नपुं) पुरुषों में श्रेष्ठ । **पुंराशि-**(सं० सं०)मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशियां । **पुंलक्षणा-**(स० स्त्री०) पुरुष लक्षणा नपुसक स्त्री ।
पुंलिङ्ग-(स० नपुं०) पुरुष का चिह्न शिश्न, पुरुष वाचक शब्द ।
पुंवत्-(सं० अव्य०) पुरुष की तरह, पुरुष वाची शब्द की तरह, **पुंवत्सा-**(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके केवल पुरुष सन्तान हों । **पुंवृष-**(सं०पुं०) छछुंदर । **पुंवेश-**(सं०पु०) पुरुष का वेश, (वि०) पुरुष की तरह वेश धारी ।
पुंश्चल-(सं० पु०) अभिचारी पुरुष ।
पुंश्चली-(सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी, असती, कुलटा, छिनार; **पुंश्चलीय-**(स० पुं०) वेश्या पुत्र, कुलटा का पुत्र ।
पुंस-(हिं०पुं०) पुरुष, मर्द ।
पुंसवन-(सं० नपुं०) दुग्ध, दूध, द्विजों के सोलह सस्कारों में से एक जो गर्भाधन के तीसरे महीने में किया जाता है, वैष्णवों के एक व्रत का नाम ।
पुँसवान-(हिं०वि०) पुत्रवाला ।
पुंस्कामा-(सं० स्त्री०) पुरुष की अभिलाषा करनेवाली स्त्री ।
पुंस्कोकिल-(सं०पुं०) नर कोयल पक्षी ।
पुंस्त्व-(सं० नपुं०) पुरुषत्व, पुरुष का धर्म, शुक्र, वीर्य ।
पुआ-(हिं०पुं०) चाशनी में पागी हुई आँटे की मोटी रोटी या टिकिया ।
पुआई-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष ।

पुआल-(हिं० पुं०) एक प्रकार का जंगली वृक्ष, देखो पयाल।
पुकार-(हिं० स्त्री०) रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट, अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये किसी को ऊंचे स्वर से संबोधन करना, किसी को नाम लेकर बुलाने की क्रिया, हाँक, माँग की चिल्लाहट, किसी पर पड़े हुए दुःख या हानि का निवेदन, अभियोग, गोहार।
पुकारना-(हिं० क्रि०)रक्षा के लिये चिल्लाना, गोहार लगाना, घोषित करना, चिल्ला कर कहना, रटना, धुन लगाना, किसी को नाम लेकर बुलाना, किसी से चिल्ला कर कुछ माँगना या कहना।
पुक्कश, पुक्कस-(सं०पुं०) अधम, नीच, चाण्डाल।
पुक्कसी-(सं०स्त्री०) नील का पौधा।
पुख-(हिं०पुं०) देखो पुष्य।
पुखता-(हिं०वि०) दृढ।
पुखर-(हिं० पुं०) पुष्कर, तालाब।
पुखराज-(हिं०पुं०) पीले रंग का एक रत्न।
पुच्य-(हिं०पुं०) देखो पुष्य।
पुगना-(हिं०क्रि०) देखो पूजना।
पुगाना-(हिं०क्रि०)पूरा करना,पुजाना।
पुङ्ख-सं०पुं०) बाण का पिछला भाग जिसमें पर खोंसे रहते है। पुङ्खित-(सं०वि०) वह बाण जिसमे पर लगे हों।
पुञ्ज-(सं०नपुं०) समूह, ढेर।
पुङ्गल-(सं०पुं०) आत्मा।
पुङ्गव-(सं०वि०)किसी शब्द के अन्त में जोड़ने से इसका अर्थ 'श्रेष्ठ' होता है। पुङ्गवकेतु-(सं०पुं०) वृषध्वज, शिव।
पुचकार-(हिं०स्त्री०) प्यार जताने के लिये ओंठो से निकाला हुआ चूमने का शब्द, चुमकार। पुचकारना-(हिं०क्रि०) चूमने का शब्द निकालकर प्यार दिखलाना, चुमकारना।
पुचकारी-(हिं० स्त्री०) प्यार दिखलाने के लिये ओठों से निकाला हुआ चूमने का शब्द, चुमकार।
पुचारना-(हिं०क्रि०) पोतना,पुचारा देना।
पुचारा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु के ऊपर पानी से तर किया हुआ कपड़ा फेरना, वह गीला कपड़ा जिससे पोता या पुचारा दिया जाता है, पतला लेप करने की क्रिया, पानी में घोली हुई कोई वस्तु जिससे लेप किया जाता है, हलका लेप, उत्साह बढ़ाने की बात,झूठी प्रशसा, प्रसन्न करने के लिये मीठे वचन, दगी हुई बन्दूक या तोप की गरम नली को ठंढा करने के लिये उस पर गीला कपड़ा रखना
पुच्छ-(सं०पुं०.नपुं०) लांगूल, पूंछ, किसी वस्तु का पिछला भाग, रोवेंदार पूंछ; पुच्छकण्टक-वृश्चिक, बिच्छू।
पुच्छटी-(सं०स्त्री०) अंगुली मटकाना।
पुच्छन्तक-(सं०पुं०) तक्षक वंश का एक नाग।
पुच्छफल-(सं०पुं०) बेर का पेड़।
पुच्छमूल-(सं०नपुं०) पूंछ की जड़।
पुच्छल-(सं०वि०) पूंछदार,पुच्छलतारा-(हिं०स्त्री०) देखो केतु।
पुच्छिका-(सं०नपुं०) जंगली उड़द।
पुच्छिन्-(सं०पुं०) मदार, मुरगा, (वि०) पोंछदार।
पुछल्ला-(हिं०पुं०) अश्रित, पीछे लगा रहने वाला, साथ न छोड़ने वाला, अनावश्यक वस्तु जो साथ में जुटी हो, पूछ की तरह की कोई वस्तु।
पुछार-(हिं०पुं०) पूछने वाला, आदर करने वाला, खोज लेने वाला।
पुछिया-(हिं०पुं० दुंबा मेढा।
पुछैया-(हिं०पुं०) पूछने वाला।
पुजना-(हिं०क्रि०) सम्मानित होना, पूजा जाना। पुजवाना-(हिं० क्रि०) पूजा करने में प्रवृत्त करना, आदर सम्मान कराना, पूरा कराना।
पुजाई-(हिं०स्त्री०) पूजने का भाव या क्रिया, पूजा करने की क्रिया या भाव, पूजा करने का शुल्क।
पुजाना-(हिं०क्रि०)पूजा में प्रवृत्त अथवा नियुक्त करना, दूसरे से पूजा कराना आदर सम्मान करना, भेंट चढवाना, धन लेना, घाव चोट आदि के गड्ढे भराना, पूर्ति करना, कभी दूर करना, सफल करना।
पुजापा-(हिं० पुं०) पूजा की सामग्री, पूजा की सामग्री रखने का पात्र।
पुजारी-(हिं०पुं०) देवमूर्ति की पूजा करने वाला, वह जो पूजा करता हो
पुजाही-(हिं०स्त्री०) पूजा की सामग्री रखने का पात्र।
पुजेरी-(हिं०पुं०) देखो पुजारी।
पुजैया-(हिं०पुं०) पूजा करने वाला,पूरा करने या भरनेवाला; देखो पुजाई।
पुजौरा-(हिं०पुं०) पूजा के समय देवता को अर्पण करने की सामग्री, पूजा।
पुञ्ज-(सं०पुं०) समूह, राशि, ढेर।
पुञ्जराज-(सं०पुं०) दलपति, सरदार
पुञ्जिक(सं०पुं०) हिम।
पुट-(सं०नपुं०) जायफल, घोड़े की टाप, कटोरा, औषधि पकाने का पात्र, अन्तःपट, एक वर्णवृत्त का नाम, दोना, ढापने की वस्तु, घेरा, संपुट, (हिं० पुं०) किसी वस्तु में हलका मेल देने के लिये डाला हुआ छींटा हलका छिड़काव, बहुत हलका मेल देने के लिये घुले हुए रंग में या किसी पतली वस्तु में डुबना।
पुटक-(सं०नपुं०) पद्म, कमल।
पुटकन्द-(सं०पुं०) वाराहीकन्द।
पुटकित-(सं०वि०) आबद्ध, बंधा हुआ।
पुटकिनी-(हिं०स्त्री०) पद्मिनी, कमलिनी, पद्म समूह, पद्मलता।
पुटकी-(हिं०स्त्री०) दैवी आपत्ति, आकस्मिक मृत्यु, पोटली, गठरी, तरकारी आदि के रसे को गाढ़ा करने के लिये मिलाया हुआ वेसन या आटा।
पुटग्रीव-(सं०पुं०) गगरी, तांबे का घड़ा
पुटपाक-(सं०पुं०) किसी मिट्टी आदि के पात्र में औषधि रखकर तथा उसका मुख अच्छी तरह से बन्द करके गड्ढे के भीतर गोहरा रख कर पकाने की विधि।
पुटभेद-(सं०पुं०) नदी आदि का चक्राकार जलवर्त, पानी का भँवर।
पुटभेदक-(सं०नपुं०) परतदार पत्थर।
पुटरिया-(हिं०स्त्री०) देखो पोटली।
पुटरी-(हिं०स्त्री०) देखो पोटली।
पुटास-(हिं०पुं०) देखो पोटास।
पुटिका(सं०स्त्री०)इलायची, सपुट पुड़िया
पुटित-(सं०वि०) पटा हुआ, सिला हुआ, बंद, संकुचित, सिकुड़ा हुआ।
पुटिनी-(सं०स्त्री०)फेनी नाम की मिठाई
पुटी-(सं०स्त्री०) कौपीन, लगोटी, छोटा कटोरा, छोटा दोना, पुड़िया।
पुटोदक-(सं०पुं०) नारिकेल, नारियल।
पुट्ठा-(हिं०पुं०) चूतड़ का ऊपरी कड़ा भाग, पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग, चौपायों का चूतड़, घोड़े की संख्या के लिये शब्द।
पुट्ठी-(हिं०स्त्री०)गाड़ी की पहियेके घेरे का वह भाग जिसमें आरे जड़े रहते है।
पुठवार-(हिं०क्रि०वि०) पीछे, बगल में।
पुठवाल-(हिं०पुं०) पृष्ठरक्षक, चोरों के दल का वह मनुष्य जो सेंध के मुंह पर पहरा देता है।
पुड़ा-(हिं०पुं०) बड़ी पुड़िया, ढोल मढ़ने का चमड़ा।
पुड़िया-(हिं०स्त्री०) आधार स्थान, भण्डार-घर, खान, मोड़ कर लपेटा हुआ कागज या पत्ता जिसमें कोई वस्तु रक्खी जाय, पुड़िया में लपेटी हुई औषधि की एक मात्रा।
पुड़ी-(हिं०स्त्री०) ढोल मढ़ने का चमड़ा
पुण्ड-(सं०पुं०)माथे पर लगानेका तिलक, टीका, दक्षिण देश की एक जाति।
पुण्डरीक-(सं०नपुं०) सफ़ेद कमल, एक प्रकार का कुष्ठ, रेशम का कीड़ा, सफ़ेद सर्प, दौने का पौधा, कमण्डलु, एक प्रकार का धान, सफ़ेद आम, आग,बाण सफ़ेद हाथी,एक प्रकार की ऊख,घी चीनी,एक अप्सरा का नाम।
पुण्डरीकाक्ष-(सं०नपुं०) विष्णु भगवान्
पुण्डरीयक-(सं०नपुं०) स्थल कमल।
पुण्ड्र-(सं०पुं०) श्वेत कमल, पाकर का वृक्ष तिल का पौधा,तिलक,टीका,एक प्रकार की ऊख, माधवी लता, कृमि, कीड़ा; पुण्ड्र केलि-हाथी; पुण्ड्र वर्धन-पुण्ड्र देश की राजधानी।
पुण्य-(सं०नपुं०) धर्म का कार्य, भला काम, शुद्धि, शुभ कार्य का सचय, (वि०) धर्म विहित पवित्र, शुभ, सुन्दर, अच्छा, सुगन्धित। पुण्यक-(सं०नपुं०) पुण्य देने वाला व्रत, विष्णु। पुण्यकर्ता-(सं०पुं०) पुण्य या शुभ कार्य करने वाला। पुण्य कर्म-(सं०नपुं०) शुभ कर्म, जिस कार्य के करने से पुण्य होता है। पुण्य काल-(सं०पुं०) शुभ समय, दान पुण्य करने का काल। पुण्य कीर्तन-(सं०पुं०) विष्णु, (नपुं०) पुण्य कथन। पुण्य कीर्ति-(सं०पुं०) पुण्य श्लोक जिसके कीर्तन से पुण्य होता है। पुण्य कृत्-(सं०वि०) पुण्यकर्ता, धार्मिक। पुण्य क्षेत्र-(सं०नपुं०) पुण्य भूमि, आर्यावर्त, जहाँ जानेसे पुण्य होता है। पुण्य गन्ध-(सं०पुं०) पवित्रगन्ध, चम्पा। पुण्य गन्धि-(सं०वि०) पवित्र-गन्ध युक्त। पुण्य गर्भा-(सं०स्त्री०) गङ्गा। पुण्य गृह-(सं०नपुं०) पुण्य-शाला, पवित्र गृह। पुण्य जन-(सं०पुं०) सज्जन, धर्मात्मा, यक्ष। पुण्य जनेश्वर-(सं०पुं०) कुबेर।
पुण्यता-(सं०स्त्री०) पुण्य कर्म का भाव,
पुण्य दर्शन-(सं०वि०) जिसके दर्शन का शुभ फल हो, (पुं०) नीलकण्ठ पक्षी। पुण्य नामन्-(सं० पुं०) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
पुण्य प्रताप-(सं०पुं०) पुण्य बल से प्रतापवान्। पुण्यप्रद-(सं० वि०) पुण्य देने वाला। पुण्य फल-(सं०पुं०) लक्ष्मी के रहने का वन, (नपुं०) पुण्य के अनुष्ठान का फल। पुण्यभाज-(सं०वि०) पुण्यात्मा। पुण्यभूमि-(सं०स्त्री०) आर्यावर्त, देश, पुत्रवती स्त्री। पुण्य रात्र-(सं०पुं०) पवित्र रात। पुण्य लोक-(सं०पुं०) पुण्य करके चन्द्रलोक की प्राप्ति, धार्मिक मनुष्य। पुण्यवत्-(सं० वि०) पुण्य-युक्त, धर्मात्मा। पुण्यवान्-(हिं०वि०) धर्मात्मा, पुण्य करने वाला। पुण्य शकुन-(सं०नपुं०) शुभ शकुन या चिह्न। पुण्य शाला-(सं०स्त्री०) पवित्र गृह, पाक गृह। पुण्य शील-(सं०वि०) पुण्य स्वभाव का, अच्छे स्वभाव वाला। पुण्यश्लोक-(सं०पुं०) विष्णु, युधिष्ठिर, राजा नल, (वि०) पुण्य चरित्र, पवित्र आचरण वाला।
पुण्य श्लोका-(सं०स्त्री०) द्रौपदी,सीता;
पुण्य सम-(सं०अव्य०) पुण्य तुल्य, पुण्य के समान। पुण्य स्थान-(सं० नपुं०) पवित्र स्थान, तीर्थ स्थान।
पुण्या-(सं०स्त्री०) तुलसी। पुण्याई-(हिं०स्त्री०) पुण्य का फल, पुण्य का प्रभाव। पुण्यात्मा-(सं० वि०) पुण्य शील, धर्मात्मा, जो पुण्य करने में प्रवृत्त हो। पुण्यालङ्कृत-(सं०स्त्री०) पुण्यात्मा। पुण्याह-(सं०स्त्री०) पुण्य-दिन, मंगल दिवस। पुण्याह वाचन-(सं०नपुं०) देवादि कर्म में मगल के निमित्त 'पुण्याह' इस शब्द का तीन बार उच्चारण।
पुण्योदय-(सं०पुं०) पुण्य कर्म का उदय
पुतरिया, पुतरी-(हिं०स्त्री०) देखो पुतली
पुतला-(हिं०पुं०) लकड़ी, मिट्टी, धातु कपड़े आदि की बनी हुई पुरुष की मूर्ति। पुतली-(हिं०स्त्री०) लकड़ी

मिट्टी, धातु अथवा कपड़े की बनी हुई स्त्री की आकृति, गुड़िया, आँख के बीच का काला भाग, घोड़े की टाप का निकला हुआ भाग, कपड़ा बुनने का यन्त्र, किसी स्त्री की सुकुमारता सूचित करने का शब्द; **पुतली फिरजाना**-आँखें पथरा जाना; **पुतलीघर**-कपड़ा बुनने का कार्यालय
पुताई-(हिं०स्त्री०) पोतने की क्रिया या भाव, भीत आदि पर मिट्टी गोबर चूना आदि पोतने का काम, पोतने का शुल्क।
पुतारा-(हिं०पुं०) पोतने के लिये भिगाया हुआ कपड़ा।
पुत्त-(हिं०पुं०) देखो पुत्र, बेटा।
पुत्तरी-(हिं०स्त्री०) पुत्री, बेटी।
पुत्तल, पुत्तलक-(सं०पुं०) पुतला।
पुत्तलिका-(सं०स्त्री०) लड़की, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई गुड़िया। **पुत्तली**-(स०नपुं०) प्रतिमूर्ति, पुतली।
पत्तिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मधुमक्खी।
पुत्र-(स०पुं०) तनय, तनुज, लड़का, बेटा। **पुत्रक**-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा, शरभ, टिड्डी, फतिंगा, दौने का पौधा, एक प्रकार का चूहा। **पुत्रकाम**-(सं०वि०) पुत्राभिलाषी। **पुत्रकामेष्टि**-(सं०स्त्री०) पुत्र प्राप्त करने के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ। **पुत्रकृतक**-(सं० पुं०) दत्तक पुत्र। **पुत्रकृत्य**-(सं०नपुं०) पुत्रका कार्य, पुत्रत्व। **पुत्रघ्नी**-(सं०स्त्री०) पुत्र घातिनी स्त्री। **पुत्रजात**-(सं०वि०) जिसको पुत्र उत्पन्न हुआ हो। **पुत्रजीव**-सं०पु०) पितौजिया नामक वृक्ष जिसकी छाल और बीज औषधियों में प्रयोग होते हैं। **पुत्रता**-(सं०स्त्री०) पुत्र का धर्म। **पुत्रदा**-(सं०स्त्री०) लक्ष्मण कन्द, सफ़ेद भटकटैया। **पुत्रपौत्र**-(स०नपुं०) लड़के पोतों का समुदाय। **पत्रप्रदा**-(सं० स्त्री०) सफ़ेद भटकटैया। **पुत्रभाव**-(सं०पुं०) पुत्रत्व, पुत्रता। **पुत्रवत्**-(सं०वि०) पुत्र तुल्य, पुत्र के सदृश। **पुत्रवती**-(सं०वि०) जिसके पुत्र हों, पुत्र वाली। **पुत्रवत्सल**-(सं०वि०) पुत्र के प्रति अधिक प्रेम युक्त। **पुत्रवधू**-(स०स्त्री०) पुत्र की पत्नी, पतोहू। **पुत्रशृङ्गी**-(सं०स्त्री०) मेढासिंधी। **पुत्रसख**-(सं०पुं०) पुत्र का मित्र। **पुत्रहत**-(सं०वि०) जिसका पुत्र मर गया हो, (पुं०) वसिष्ठ।
पुत्रिका-(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी, पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या, पुतली, गुड़िया, स्त्री का चित्र, आँख की पुतली; **पुत्रिका पुत्र**-बेटी का बेटा, नाती।
पुत्री-(सं०पुं०) पुत्रयुक्त, पुत्रवान्, (स्त्री०) सुता, कन्या, बेटी।
पुत्रीय-(सं०वि०) पुत्र संबन्धी।
पुत्रेष्टि-(सं०स्त्री०) वह यज्ञ जो पुत्र की कामना से किया जाता है।
पुत्रोत्सव-(सं०पुं०) पुत्र के जन्म दिन में किया जाने वाला उत्सव।
पुद्गल-(सं०पुं०) देह, शरीर, आत्मा, परमाणु, गन्ध, तृण, रामकपूर।
पुनः-(हिं०अव्य०) दोबारा, दूसरी बार, फिर, अनन्तर, उपरान्त, पीछे।
पुनःपराजय-(सं०पुं०) फिर से हार।
पुनःपाक-(सं०पु०) दूसरी बार पाक।
पुनः पुनः-(सं०अव्य०) बारंबार।
पुनःसंस्कार-(सं०पुं०) दूसरी बार उपनयन आदि संस्कार।
पुन-(हिं०पुं०) पुण्य, धर्म।
पुनना-(हिं०क्रि०) भला बुरा कहना।
पुनरपगम-(सं०पुं०) फिर से जाना।
पुनरपि-(स०अव्य०) फिर से।
पुनरवसु-(हिं०पु०) देखो पुनर्वसू।
पुनरभिधान-(सं०नपुं०) दुबारा कथन।
पुनरागत-(स०वि०) प्रत्यागत, दुबारा आया हुआ।
पुनरागम-(सं०पुं०) फिर से आना।
पुनरागमन-(सं०नपुं०) द्वितीय बार आगमन, फिर से आना, संसार में फिर जन्म लेना।
पुनरादि-(सं०वि०) प्रथम, पहिला।
पुनरायन(सं०नपुं०) पुनरागमन।
पुनरावर्त-(सं०नपुं०) पुनरागमन, चक्कर
पुनरावर्ती-(सं०वि०) बारंबार आनेवाला, फिर जन्म लेने वाला।
पुनरावृत्त-(सं०वि०) फिर से कहा हुआ, फिर से घूमकर आया हुआ।
पुनरावृत्ति-(सं०स्त्री०) पुनर्जन्म, फिर से घूम कर आना, किये हुए काम को फिर से करना।
पुनराहार-(स०पुं०) दुबारा भोजन।
पुनरुक्त-(सं०वि०) फिर से कहा हुआ; **पुनरुक्तता**-(सं०स्त्री०) साहित्य में वह दोष जो एक वाक्य को दुबारा कहने से होता है।
पुनरुक्तवदाभास-(सं०पुं०) वह अलंकार जिसमें शब्द सुनने से पुनरुक्ति सी जान पड़े परन्तु वस्तुतः ऐसा न हो
पुनरुक्ति-(स०स्त्री०) एक बार कही हुई बात को फिर से कहना, कहे हुए बचन को दोहराना।
पुनरुत्पत्ति-(सं०स्त्री०) पुनर्जन्म।
पुनर्गमन-सं(०नपुं०) दुबारा गमन, दोहराकर जाना। **पुनर्ग्रहण**-(सं० नपुं०) फिर से लेना, पुनरुक्ति।
पुनर्जन्म-(सं०नपुं०) फिर से उत्पत्ति, एक शरीर छूटने पर दूसरी शरीर धारण करना। **पुनर्जात**-(सं०वि०) फिर से उत्पन्न।
पुनर्नवा-(सं०स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ चौराई की पत्तियों के समान होती हैं, गदहपूरना।
पुनर्भव-(स०पु०) नख, फिर से होना।
पुनर्भाव-(सं०पुं०) मृत्यु के बाद फिर से जन्म।
पुनर्भू-(सं०स्त्री०) वह विधवा स्त्री जिसका विवाह पति के मरने पर दूसरे पुरुष से हो।
पुनर्मृत्यु-(सं०पुं०) दुबारा मृत्यु।
पुनर्यज्ञ-(स०पुं०)फिर से किया हुआ यज्ञ
पुनर्लाभ-(सं०पुं०) खोई हुई वस्तु को फिर से पाना।
पुनर्वचन-(सं०नपुं०) किसी वाक्य का बारबार प्रयोग।
पुनर्वसु-(सं०पुं०) विष्णु, शिव, कात्यायन मुनि, सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र, एक लोक।
पुनर्विवाह-(सं०पुं०) दुबारा विवाह।
पुनि-(हिं०क्रि०वि०)फिर फिर से,दुबारा
पुनिम पुनी-(हिं०स्त्री०) पूर्णिमा।
पुनी-(हिं०स्त्री०) पूर्णिमा, पूनी, पूनो, (पु०) पुण्यात्मा, धर्मात्मा।
पुनीत-(हिं०वि०) पवित्र, शुद्ध, पक।
पुन्न-(हि०पुं०) देखो पुण्य।
पुन्नाग-(सं०पु०) एक बड़ा फूल का वृक्ष, सुलतान चम्पा, जातिफल, श्वेत पद्म, सफ़ेद कमल, जायफल।
पुन्नाट-(सं०पुं०) चकवट का पौधा।
पुन्य-(सं०पु०) देखो पुण्य।
पुन्यताई-(हिं०स्त्री०) पवित्रता।
पुपली-(हिं०स्त्री०) बांस की पतली नली।
पुप्पुट-(सं० पुं०) तालु का एक रोग।
पुप्फुस-(सं०पुं०) कमलगट्टे का छत्ता।
पुमान्-(सं०पुं०) पुरुष, मर्द, नर।
पुरः-(हिं०अव्य०) आगे, पहिले। **पुरःसर**-(हिं०वि०) अग्रगण्य, अगुआ, संगी, साथी, सहित, (पुं०) अग्रगमन।
पुर-(सं०नपुं०) नगर, गृह, घर, दुर्ग, गढ़, गुग्गुल, राशि, समूह, एक प्रकार के दैत्य चमड़ा, पीली कटसरैया, देह, शरीर, कोठरी, अटारी, लोक, नक्षत्र, (वि०) पूर्ण, भरा हुआ (हिं०पुं०)चरसा,कुवें से पानी निकालने का चमड़े का बड़ा डोल, पुरवट।
पुरइन-(हिं०स्त्री०) कमल का पत्ता,कमल
पुरखा-(हिं०पुं०) पूर्वज, पूर्व पुरुष, कुल का वृद्ध पुरुष, बड़ा बूढ़ा; **पुरखे तर जाना**-पुरखों की परलोक में उत्तम गति होना।
पुरग-(सं० वि०) नगर में जाने वाला।
पुरगुर-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी के खिलौने बनायें जाते हैं।
पुरचक-(हिं०स्त्री०) चुमकार पुचकार, प्रोत्साहन, बढावा, प्रेरणा, उसकान, पृष्ठपोषण, समर्थन।
पुरजन-(हिं०पुं०) नागरिक।
पुरजित्-(सं०पुं०) त्रिपुरारि, शिव।
पुरञ्जन-(सं०पुं०) जीव।
पुरञ्जनी-(सं०स्त्री०) बुद्धि।
पुरञ्जय-(सं०पुं०) जनमेजय के पिता का नाम, ऐरावत हाथी के एक पुत्र का नाम (वि०) पुरको जीतने वाला।
पुरट-(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना।
पुरण-(सं०पुं०) समुद्र, सागर।
पुरतटी-(सं०स्त्री०) छोटा हाट।
पुरत्राण(सं०पुं०) प्राकार, परकोटा।
पुरद्वार-(सं०नपुं०) परकोटे का फाटक
पुरद्विष्-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
पुरनियां-(हिं०वि०) वृद्ध, बुड्ढा।
पुरनी-(हिं०स्त्री०) अंगूठे में पहिरने का छल्ला, पुरुही, बंदूक का गज।
पुरन्दर-(सं०पु०) इन्द्र, ज्येष्ठा नक्षत्र, मिर्च, (वि०) नगर या घर को तोड़ने वाला; **पुरन्दर पुरी**-इन्द्रपुरी।
पुरन्ध्री-(सं०स्त्री०) कुटुम्बिनी।
पुरपाल-(सं०पु०) नगरपाल, कोतवाल
पुरबला, पुरबुला-(हिं०वि०) पूर्ण का, पहिले का, पूर्व जन्म संबंधी।
पुरबिया, पुरबिहा-(हि०वि०) पूर्व देश में उत्पन्न, पूरब का।
पुरभिद, पुरमथन-(सं० पुं०) शिव, महादेव।
पुरमार्ग-(सं०पुं०) नगर का मार्ग।
पुररक्ष-(सं०पुं०) नगर का रक्षक।
पुरला-(सं०स्त्री०) दुर्गा।
पुरवइया-(हिं०स्त्री०) देखो पुरवाई।
पुरवट-(हिं० पु०) खेत सींचने के लिये कुएं से पानी खींचने का चमड़े का बड़ा डोल, मोट, चरसा।
पुरवना-(हिं०क्रि०) पूरा करना या होना, भरना, पुजाना, पर्याप्त होना; **साथ पुरवना**-साथ देना।
पुरवा-(हिं० पु०) छोटा गांव, पुरा, पूर्व दिशा से चलने वाली हवा, पशुओं का गला फूलने का एक रोग, मिट्टी का कुल्हड़।
पुरवाई-(हिं० स्त्री०) पूर्व दिशा से चलने वाली हवा।
पुरवासी-सं०वि०) नगर में रहने वाला
पुरवैया-(हिं वि०) देखो पुरवाई।
पुरशासन-(सं०पुं०) महादेव, शिव।
पुरश्चरण-(सं०नपुं०) किसी कार्य की सिद्धि के लिये पहिले उपाय सोचकर अनुष्ठान करना, किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के निमित्त नियम पूर्वक मन्त्र का जप या स्तोत्र पाठ।
पुरषा-(हिं०पुं०) देखो पुरखा।
पुरसा-(हिं०पुं०) ऊंचाई या गहराई की एक नाप जो प्रायः साढ़े चार या पांच हाथ की होती है।
पुरस्कार-(सं०पुं०) आदर, पूजा, प्रधानता, स्वीकार उपहार, पारितोषिक, सींचने की क्रिया। **पुरस्कृत**-(सं०वि०) पूजित, स्वीकृत, आगे किया हुआ, जिसको उपहार मिला हो।
पुरःसर-(स० स्त्री०) अगुआ, साथी, (वि०) आगे का, पहिला।
पुरहत-(हिं०पुं०) वह अन्न द्रव्य आदि जो मंगल कार्य में पुरोहित या प्रजा को पहिले दिया जाता है, आखत।
पुरहन-(सं०पुं०) विष्णु, शिव।
पुरहा-(हिं० पुं०) वह मनुष्य जो पुरवट का पानी गिराने के लिये नियुक्त रहता है।

पुरहूत-(हिं०पु०) देखो पुरूहूत ।
पुरा-(सं० अव्य०) प्राचीन काल में, पुराने समय में, (वि०) प्राचीन, पुराना (हिं०पुं०) पुरवा, गांव,बस्ती।
पुराकल्प-(सं० पुं०) प्राचीन कल्प, पहिले का कल्प, प्राचीन, काल, एक प्रकार का अर्थवाद जिसके अनुसार प्राचीन समय का इतिहास कहकर किसी विधि के करने के लिये लोग प्रवृत्त किये जाते हैं ।
पुराकृत-(सं०वि०) पूर्व जन्म में किया हुआ, पहिले समय में किया हुआ, (पुं०) पूर्व जन्म का पाप ।
पुराग-(सं०वि०) पूर्वगामी ।
पुराचीन-(हिं०वि०) देखो प्राचीन ।
पुराज-(सं०वि०) जो पूर्व काल मे हुआ हो ।
पुराण (सं० वि०) प्राचीन,पुराना,(सं०पु०) शिव, महादेव, प्राचीन आख्यान, पुरानी कथा, हिन्दुओं का धर्म संबंधी आख्यान ग्रन्थ जिनमें संसार की सृष्टि, लय, प्राचीन ऋषि मुनियों और राजाओं की कथा रहती है, परंपरागत कथा सग्रह, पुराण अठारह हैं इनमे विष्णु, ब्रह्माण्ड, मत्स्य आदि महापुराणों में सृष्टि तत्व, पुनःसृष्टि और लय, देव और पितरों की वंशावली, मन्वतर का अधिकार तथा सूर्य और चन्द्रवंशीय राजाओं का संक्षिप्त वर्णन पाया जाता है, इन अठारहो पुराणों के नाम-ब्रह्मपुराण, पाद्म, वैष्णव, शैव या वायु, भविष्य, मार्कण्डेय, आग्नेय, नारदीय, भागवत, ब्रह्मवैवर्त, लैङ्ग, वाराह, स्कान्द, वामन, कौर्म, मत्स्य, गारुड और ब्रह्माण्ड है ।
पुराणकिट्ट-(सं०नपुं०) लौहमल, कौसीस।
पुराण पुरुष-(सं० पु०) विष्णु ।
पुराणप्रोक्त-(सं० वि०) जो पुराण में कहा गया हो । पुराणवित्-(सं० वि०) पुराण जानने वाला; पुराणान्त-(सं०पुं०) पुराण का शेष, यम ।
पुरातत्व-(सं०पुं०) प्राचीन काल संबंधी विद्या ।
पुरातन-(सं०पुं०) विष्णु, (वि०) प्राचीन, पुराना ।
पुरातल-(सं० नपुं०) तलातल, सात पाताल के नीचे की भूमि ।
पुराधिप-(सं०पुं०) नगर का अध्यक्ष ।
पुरान-(हिं०पुं०) देखो पुराण (वि०) पुराना । पुराना-(हिं०वि०) जो बहुत दिनों से चला आता हो, प्राचीन काल का, जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो, जीर्ण, जो बहुत दिनों होने के कारण अच्छी दशा में न हो, परिपक्व, पुरातन (हिं०क्रि०) पूरा करना, भरना, अनुसरण करना, पालय करना, इस प्रकार बांटना कि सबको मिल जावे, अंटाना, पुजवाना, भरना, किसी घाव या गढ्ढे को भरना; पुराना खुर्राट-वृद्ध अनुभवी मनुष्य; पुराना घाघ-बड़ा धूर्त ।
पुरारति पुरारि-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
पुराल-(हिं०पुं०) देखो पयाल ।
पुरावसु-(सं०पुं०) भीष्म ।
पुरावित्-(सं० वि०) पुराण जानने वाला । पुरावृत्त (सं० नपुं०) पुराना वृत्तान्त, इतिहास, पुराना चरित्र ।
पुरि-(सं०स्त्री०) पुरी, नदी, शरीर,राजा, एक प्रकार के सन्यासी ।
पुरिखा-(हिं०पुं०) देखो पुरखा ।
पुरिया-(हिं०स्त्री०) देखो बुढिया ।
पुरी-(सं०स्त्री०) नगरी, जगन्नाथपुरी ।
पुरीतत्-(सं०पुं०) अन्त्र, आंत ।
पुरीमोह-(सं० पुं०) धतूरा ।
पुरीष-(सं०नपुं०) विष्ठा, मल, गू ।
पुरीषम-(सं०पुं०) माष, उड़द ।
पुरु-(सं०पुं०) देवलोक, दैत्य, वह पर्वत जिसपर पुरूरवा का जन्म हुआ था, शरीर, पराग ।
पुरुकृत्-(सं०वि०) कर्म कर्ता ।
पुरुक्ष-(सं०वि०) वह जिसके पास बहुत अन्न हो ।
पुरुख-(हिं०पुं०) देखो पुरुष ।
पुरुखा-(हिं०पुं०) देखो पुरखा ।
पुरुचेतन-(सं०वि०) अनेक विषयों को जानने वाला ।
पुरुच-(सं०पुं०) पुरुराज के एक पुत्र का नाम । पुरुजित्-(सं०पुं०) विष्णु पुरुदिन-(सं०नपुं०) बहु दिन, अनेक दिन । पुरुप्रशस्त-(सं० वि०) अनेक प्रकार से स्तुति किया हुआ । पुरुभुज-(सं०वि०) बहुत खाने वाला । पुरुभूत-(सं०पुं०) पुरुहूत, इन्द्र । पुरुमित्र-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । पुरुरुच्-(सं० वि०) बहुत चमकीला ।
पुरुरूप-(सं०वि०) अनेक रूप धारण करने वाला ।
पुरुष-(सं०पुं०) मनुष्य, सांख्य के अनुसार प्राणियों का आत्मा स्वरूप, विष्णु शिव, जीव, पूर्वज, पति, मनुष्य का शरीर या आत्मा, सूर्य, चेतना, धातु, गुग्गुल, पुन्नाग वृक्ष, पारा, तिलक, व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम अथवा क्रियापद अपने लिये अथवा अन्य के लिये प्रयोग किया गया है-यथा "मैं" उत्तम पुरुष; "तुम" मध्यम पुरुष और "वह" प्रथम पुरुष कहलाता है । पुरुषकार-(सं० पुं०) पुरुष की कृति, पौरुष, उद्योग । पुरुषकुंजर-(सं०पुं०) पुरुषश्रेष्ठ । पुरुषकेशरी-(सं०पुं०) नरसिंह रूपी विष्णु । पुरुषग्रह-(सं०पुं०) फलित ज्योतिष के अनुसार मंगल, सूर्य और बृहस्पति । पुरुषच्छन्दस्-(सं०पुं०) दो पद का छन्द ।
पुरुषता-(सं०स्त्री०) पुरुषत्व, पुरुष का भाव । पुरुषत्व-(सं०नपुं०) पुरुषता । पुरुष नक्षत्र-(सं०पुं०) ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हस्त, मूल श्रवण, पुनर्वसु, मृगशिरा और पुष्य नक्षत्र । पुरुषनाग-(सं०पुं०) पुरुष श्रेष्ठ । पुरुषनाथ-(सं०पुं०) नरपाल, सेनापति । पुरुष पुङ्गव-(सं०पुं०) पुरुष श्रेष्ठ । पुरुष पुण्डरीक-(सं०पुं०) देखो पुरुष पुङ्गव।
पुरुषपुर-(सं०नपुं०) प्राचीन गान्धार राज्य की राजधानी, उसका वर्तमान नाम पेशावर ।
पुरुषमख-(सं० वि०) पुरुष के समान मुख वाला ।
पुरुषमेध-(सं० पुं०) अश्वमेध, गोमेध आदि के समान एक यज्ञ जो वैदिक काल मे किया जाता था, इसमें नर बलि दी जाती थी । पुरुषराज-(सं० पुं०) पुरुषश्रेष्ठ । पुरुषराशि-(सं०स्त्री०) ज्योतिश शास्त्र के अनुसार मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुम्भ राशि । पुरुषरूप-(सं०नपुं०) पुरुषाकार । पुरुषरेषण-(सं० वि०) पुरुष की हत्या करने वाला । पुरुषवध-(सं० पुं०) नर हत्या । पुरुषवत्-(सं० वि०) मनुष्य के समान । पुरुषवाह-(सं० पुं०) नरवाहन, कुबेर । पुरुषर्षभ, पुरुष व्याघ्र-(सं० पुं०) पुरुषश्रेष्ठ । पुरुषव्याधि-(सं० स्त्री०) उपदंश रोग । पुरुषशार्दूल-(सं०पु०) पुरुष श्रेष्ठ । पुरुषशीर्ष-(सं० नपुं०) पुरुष का मस्तक । पुरुषसिंह-(सं०पुं०) पुरुषों में श्रेष्ठ । पुरुष सूक्त-(सं० पु०) ऋग्वेदोक्त एक सूक्त जो "सहस्र शीर्षा पुरुषः" से आरंभ होता है, इसमें सोलह ऋचाएं हैं, इसका पाठ अभिषेकादि अनेक कार्यों में होता है ।
पुरुषाद्य-(सं०पुं०)विष्णु, राक्षस । पुरुषाधम-(सं० पुं०) निकृष्ट नर, अधम मनुष्य । पुरुषानुक्रम-(सं०पुं०) पुरुखों से चली आती हुई परम्परा । पुरुषान्तर-(सं० पु०) अन्य पुरुष, पुरुषान्तरात्मा-(सं० पुं०) जीवात्मा । पुरुषायितबन्ध-(सं०पुं०) विपरीत रति । पुरुषायुष-(सं० नपुं०) पुरुष का आयु काल । पुरुषारथ-(हिं० पु०) देखो पुरुषार्थ । पुरुषार्थ-(सं० पुं०) पुरुष का प्रयोजन जो चार प्रकार का है यथा-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष; पौरुष, पराक्रम, उद्यम, पुंस्त्व, सामर्थ्य, शक्ति, बल । पुरुषार्थी-(सं० वि०) पराक्रमी, परिश्रमी, उद्योगी, सामर्थ्यवान, बली । पुरुषाशी-(सं०पुं०) नर भक्षक, राक्षस ।
पुरुषेन्द्र-(सं० पुं०) पुरुष श्रेष्ठ ।
पुरुषोत्तम-(सं० पुं०) विष्णु, पुरुषश्रेष्ठ, ईश्वर, कृष्ण, जगन्नाथ भगवान् जिनका मन्दिर उड़ीसा में है, नारायण, मलमास का महीना, अधिक मास।
पुरुह-(सं० वि०) प्रचुर, पर्याप्त ।
पुरुहूत-(सं० पुं०) इन्द्र, इन्द्रयव ।
पुरुहूता-(सं० स्त्री०) भगवती की एक मूर्ति । पुरुहूति-(सं० स्त्री०) विष्णु ।
पुरूद्वह-(सं० पुं०) सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम ।
पुरूरवा--(सं० पुं०) एक राजा का नाम जो ऋग्वेद के अनुसार इला के पुत्र थे, इनकी पत्नी का नाम उर्वशी था, पार्वण श्राद्ध के एक देवता का नाम, विश्वदेव ।
पुरूवसु-(सं०पु०) बहुत धन,बड़ी सम्पत्ति
पुरेथा-(हिं०पु०) हल की मूठ, परिहथा।
पुरैन-(हिं० स्त्री०) देखो पुरइन ।
पुरोग-(सं० वि०) अग्रगामी, आगे जाने वाला । पुरोगत-(सं० वि०) जो पहिले गया हो । पुरोगति-(सं० पुं०) कुक्कुर, कुत्ता । पुरोगम, पुरोगव, पुरोगा-(सं०वि०)अग्रगामी,आगे जाने वाला । पुरोगामी-(सं०वि०)अग्रगामी
पुरोगुरु-(सं० वि०) जिसका अगला भाग भारी हो ।
पुरोचन-(सं० पुं०) दुर्योधन के एक मित्र का नाम जिसको उसने पाण्डवों को जतुगृह में जलाने के लिये नियुक्त किया था ।
पुरोजन्मा-(सं० वि०) बड़ा भाई ।
पुरोजव-(सं० वि०) आगे बढ़ने वाला, रक्षा करने वाला ।
पुरोट-(सं० पुं०) पत्तों का शब्द ।
पुरोडाश-(सं० पुं०) यज्ञीय द्रव्य, वह वस्तु जो यज्ञ में होम की जावे, जव के आंटे की बनी हुई रोटी, यज्ञ में हवन करने से बचा हुआ भाग, एक प्रकार का पीठा, सोमरस ।
पुरोद्भवा-सं० स्त्री०) महामेदा नामक औषधि ।
पुरोद्यान-(सं० नपुं०) नगर का बगीचा ।
पुरोध-(सं० पुं०) पुरोहित । पुरोधा-(हिं० स्त्री०) पुरोहिताई ।
परोधिका-(सं० स्त्री०) प्यारी स्त्री ।
पुरोभाग-(सं०पुं०) अग्रभाग, पुरोभागी-(सं०वि०) केवल दोषों को देखने वाला
पुरोमारुत-(सं० पु०) पुरवैया हवा ।
पुरोवर्ती-(सं०वि०) सामने रहने वाला।
पुरोवात-(सं० पुं०) पूरब से बहने वाली हवा ।
पुरोहित-(सं० पुं०) यजमान के यहाँ यज्ञादि श्रौत कर्म, गृह कर्म, संस्कार शान्ति आदि कराने वाला, कर्म कराने वाला ब्राह्मण । पुरोहिताई-(हिं०स्त्री०) पुरोहित का काम । पुरोहितानी-(हिं० स्त्री०) पुरोहित की स्त्री ।
पुरौ-(हिं०पुं०) पुरवध पुरौती-(हिं०स्त्री०) देखो पूर्ति ।
पुर्जल-(हिं० पुं०) कलाबत्तू लपेटने का यन्त्र ।
पुर्जा-(हिं० पुं०) देखो पुरजा ।
पुर्तगाल-यूरोप के दक्षिण पश्चिम के कोण में स्थित एक प्रदेश । पुर्तगाली-

(हिं॰ वि॰) पुर्तगाल देश संबंधी, इस देश का रहने वाला।
पुर्य-(सं॰ वि॰) दुर्ग के मध्य का।
पुर्सा-(हिं॰ पुं॰) देखो पुरसा।
पुलक-(सं॰ पुं॰) रोमाञ्च, प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से रोमकूपों का प्रफुल्लित होना, एक प्रकार का रत्न, एक प्रकार का मोटा अन्न। **पुलकना**-(हिं॰क्रि॰) रोमांचित होना, गद्गद होना। **पुलकाई**-(हिं॰ स्त्री॰) पुलकित होने का भाव गद्गद होना। **पुलकाङ्ग**-(सं॰ वि॰) रोमाञ्चित अंग वाला, (पुं॰) वरुण का पाशास्त्र।
पुलकालि, पुलकावलि-(सं॰ स्त्री॰) हर्ष, प्रेम आदि से प्रफुल्ल रोम।
पुलकित-(सं॰ वि॰) रोमाञ्चित, हर्ष युक्त, गद्गद प्रेम या हर्ष से जिसके रोएँ उभड़ आये हों।
पुलकी-(सं॰ वि॰) रोमाञ्च युक्त; **पुलकीकृत**-हर्ष या प्रेम से रोमांचित।
पुलकोद्गम-(सं॰ पुं॰) हर्ष, आनन्द।
पुलट-(हिं॰ स्त्री॰) देखो पलट।
पुलपुला-(हिं॰ वि॰) जो छूने में कड़ा न हो, जो इतना कोमल हो कि छूने से धँस जावे। **पुलपलाना**-(हिं॰ क्रि॰) किसी कोमल वस्तु को दबाना, मुँह में लेकर दबाना, बिना चबाये हुए खाना, चूसना। **पुलपुलाहट**-(हिं॰ स्त्री॰) पुलपुला होने का भाव।
पुलस्त-(हिं॰ पुं॰) देखो पुलस्त्य।
पुलस्ति-(सं॰ पुं॰) सप्तर्षि के अन्त के पुलस्त्य मुनि।
पुलस्त-(सं॰ पुं॰) ब्रह्मा के मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से एक तथा एक प्रजापति माने जाते हैं, शिव का एक नाम।
पुलह-(सं॰ पुं॰) ब्रह्मा के मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से एक यथा एक प्रजापति भी माने जाते हैं, एक गन्धर्व का नाम, शिव, महादेव।
पुलाक-(सं॰ पुं॰) एक तुच्छ धान्य, उबाला हुआ चावल, भात का माड़, सक्षेप, शीघ्रता। **पुलाककारी**-(सं॰ वि॰) क्षिप्रकारी।
पुलाव-(हिं॰ पुं॰) मांस और चावल को एक साथ पका कर बना हुआ एक व्यंजन।
पुलिंदा-(हिं॰ पुं॰) लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का छोटा मुट्ठा, गड्डी।
पुलकेशि-(सं॰ पुं॰) चालुक्य वंश के एक राजा का नाम।
पुलिन-(सं॰ पुं॰) तट, किनारा, नदी के बीच में पड़ी हुई रेती, एक यक्ष का नाम, पानी के भीतर से निकली हुई भूमि; **पुलिनवती**-एक नदी का नाम। **पलिन्द**-भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति; **पुलिन्दक**-पुलिन्द जाति और उनके रहने का देश।
पुलिरिक-(सं॰ पुं॰) सर्प, सांप।
पुलिहोरा-(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का पकवान।
पुलुकाम-(सं॰ वि॰) नाना प्रकार की कामना करने वाला।
पुलोमन्-(सं॰ पुं॰) एक दैत्य, इन्द्र का ससुर। **पुलोमजा**-(सं॰ स्त्री॰) पुलोम की कन्या, शची, इन्द्राणी। **पुलोमजित्, पुलोमभिद्**-(सं॰ पुं॰) इन्द्र।
पुलोमही-(सं॰स्त्री॰) अहिफेन, अफीम।
पुलोमा-(सं॰ स्त्री॰) भृगु की पत्नी, च्यवन ऋषि की माता।
पुल्ल-(सं॰वि॰) विकसित, खिला हुआ।
पुल्ला-(हिं॰ पुं॰) नाक में पहिरने का एक गहना।
पुल्ली-(हिं॰ स्त्री॰) घोड़े के सूम का ऊपरी भाग।
पुवा-(हिं॰ पुं॰) पूवा, मालपुवा।
पुवार-(हिं॰पुं॰) देखो पयाल, पुवाल।
पुश्तैन-(हिं॰ स्त्री॰) वंशपरंपरा,
पुषित-(सं॰ वि॰) पोषण किया हुआ, पाला पोसा हुआ, वर्धित, बढ़ा हुआ।
पुष्कर-(सं॰ नपुं॰) हाथी के सूंड का अगला भाग, ढोल, मृदंग आदि का मुखड़ा जिसपर चमड़ा मढ़ा जाता है, आकाश, तलवार की म्यान, कमल, एक प्रकार का रोग, पुराण में कहे हुए सात द्वीपों में से एक, राजा नल के छोटे भाई का नाम, सारस पक्षी, बाण, तीर, पिंजड़ा, नाचने की कला, सूर्य, मद, शिव, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, एक दिग्गज का नाम, एक प्रकार का ढोल, ताल, पोखरा, विष्णु, सर्प; करछी की कटोरी, ज्योतिष के अनुसार एक योग, आकाश, अंश, पुष्करमूल, बुद्ध का एक नाम, एक तीर्थ जो अजमेर के पास है।
पुष्परक-(सं॰नपुं॰) पुष्करमूल; **पुष्करनाभ**-(सं॰ पुं॰) पद्मनाभ, विष्णु; **पुष्करपर्ण**-(सं॰पुं॰) कमल का पत्ता; **पुष्करमूल**-(सं॰नपुं॰) पुष्कर देश में होने वाली एक औषधि।
पुष्करस्थपति-(सं॰पुं॰) शिव, महादेव।
पुष्कराक्ष-(सं॰पुं॰) विष्णु, श्रीकृष्ण।
पुष्करिका-(सं॰ स्त्री॰) शिश्न का एक रोग।
पुष्करिणी-(सं॰ स्त्री॰) भूमि कमल, पुष्करमूल, जलाशय, पोखरा।
पुष्करी-(सं॰पुं॰) गज, हाथी।
पुष्कल-(सं॰पुं॰) शिव, महादेव, एक प्रकार का ढोल, एक असुर का नाम, वरुण के एक पुत्र का नाम, (नपुं॰) अन्न नापने की एक प्राचीन नाप, (वि॰) प्रचुर, अधिक, परिपूर्ण, भरा हुआ, उपस्थित, पवित्र, श्रेष्ठ।
पुष्कलक-(सं॰पुं॰) कस्तूरीमृग।
पुष्कलावती-(सं॰स्त्री॰) गान्धार राज्य की प्राचीन राजधानी।
पुष्ट-(सं॰ वि॰) पालन पोषण किया हुआ, बलवर्धक, बलिष्ठ, मोटा, दृढ़, पक्का, (नपुं॰) पुष्टि, (पुं॰) विष्णु। **पुष्टई**-(हिं॰स्त्री॰) बल वीर्य को पुष्ट करने वाली औषधि; **पुष्टता**-(सं॰स्त्री॰) दृढ़ता, पोढ़ापन।
पुष्टि-(सं॰स्त्री॰) पोषण, वृद्धि, सोलह मातृकाओं में से एक, धर्म की एक पत्नी, एक योगिनी का नाम, बलिष्टता, बात की समर्थता, दृढ़ता, मजबूती; **पुष्टिकर**-(सं॰ वि॰) पुष्ट करने वाला, बलवीर्य वर्धक; **पुष्टिकरी**-(सं॰स्त्री॰) गङ्गा; **पुष्टिकर्म**-(सं॰ नपुं॰) पुष्टि के लिये काम; **पुष्टिका**-(सं॰ स्त्री॰) जल की सीप, सुतुही, **पुष्टिकान्त**-(सं॰पुं॰) गणाधिप, गणेश। **पुष्टिकाम**-(सं॰वि॰) जो पुष्ट होने की इच्छा करता हो। **पुष्टिकारक**-(सं॰वि॰) देखो पुष्टिकर।
पुष्टिद-(सं॰वि॰) पुष्टि देने वाला।
पुष्टिदा-(सं॰स्त्री॰) वृद्धि नामक औषधि
पुष्टिमति-(सं॰पुं॰) अग्निका एक भेद, सरस्वती।
पुष्टिमार्ग-(सं॰ पुं॰) वल्लभाचार्य के मतके अनुसार वैष्णवोंका भक्ति मार्ग; **पुष्टिम्भर पुष्टिवर्धन**-(सं॰वि॰) पुष्टि देने वाला।
पुष्प-(सं॰नपुं॰) कुसुम, सुमन, फूल, स्त्रियों के ऋतुकालका रज, आँखका फूली नामक रोग, कुबेर का विमान पुष्पक, लवंग, मांस, रसवत, एक प्रकार का सुरमा, पुष्करमूल, घोड़ों का एक लक्षण।
पुष्पक-(सं॰नपुं॰) कुबेर का विमान जिसको रावण ने छीन लिया था और रावण वध के बाद श्रीरामचन्द्र ने उसको कुबेर को दे दिया था, एक प्रकार का नेत्र रोग, फूली, रसवत, (नपुं॰) एक पर्वत का नाम, घर बनाने में एक प्रकार का मण्डप, पुष्प, फूल, इन्द्र का एक प्रिय तोता, हीरा कसीस।
पुष्पकर्ण-(सं॰ वि॰) वह जिसके कान पर फूल हो। **पुष्पकाल**-(सं॰पुं॰) स्त्रियों का ऋतु समय, वसन्त ऋतु, **पुष्पकीट**-(सं॰पुं॰) भौंरा, फूल का कीड़ा। **पुष्पकृच्छ्र**-(सं॰पुं॰) एक व्रत जिसमें फूलोंका क्वाथ पीकर महीना भर रहना होता है। **पुष्पकेतन पुष्पकेतु**-(सं॰पुं॰) कामदेव। **पुष्पगन्धा**-(सं॰स्त्री॰) सफेद जूही। **पुष्पगृह**-(सं॰नपुं॰) फूल का घर। **पुष्पग्रन्थन**-(सं॰नपुं॰) माला गूथना, **पुष्पचाप**-(सं॰पुं॰) फूल का धनुष, कामदेव।
पुष्पचामर-(सं॰पुं॰) केतक, केवड़ा, दौना
पुष्पंज-(सं॰नपुं॰) फूल का रस, फूलों से उत्पन्न वस्तु। **पुष्पजासव**-(सं॰पुं॰) फूलों से बनाई हुई मदिरा।
पुष्पद-(सं॰वि॰) फूल देने वाला, (पुं॰) वृक्ष। **पुष्पदन्त**-(सं॰पुं॰) वायु कोण के दिग्गज का नाम, एक विद्याधर का नाम, एक नाग का नाम, विष्णु का एक अनुचर।
पुष्पदर्शन-(सं॰नपुं॰) स्त्रियोंकारजोदर्शन,
पुष्पदाम-(सं॰नपुं॰) फूलों की माला, एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में सोलह अक्षर होते है।
पुष्पद्रव-(सं॰पुं॰) फूल का रस।
पुष्पधनु, पुष्पधन्वा-(सं॰पुं॰) कामदेव।
पुष्पधर-(सं॰पुं॰) महादेव, शिव।
पुष्पधारण-(सं॰नपुं॰) विष्णु।
पुष्पध्वज-(सं॰पुं॰) पुष्पकेतन कामदेव।
पुष्पनिक्ष-(सं॰पुं॰) भ्रमर, भौंरा।
पुष्पनिर्यास-(सं॰पुं॰) मकरन्द, फूलकारस
पुष्पपत्री-(सं॰पुं॰) कुसुमशर, कामदेव।
पुष्पपथ-(सं॰पुं॰) स्त्रियोंके रज निकलने का मार्ग, योनि। **पुष्पपिण्ड**-(सं॰पुं॰) अशोक का वृक्ष। **पुष्पपुट**-(सं॰पुं॰) फूलकी पंखड़ियोंका कटोरी के आकार का आधार।
पुष्पपुर-(सं॰नपुं॰) पाटलिपुत्र का एक प्राचीन नाम।
पुष्पफल-(सं॰पुं॰) कुष्माण्ड कुम्हड़ा, कैथ।
पुष्पभद्र-(सं॰ पुं॰) वह मण्डप जिसमें बासठ खंभे हों।
पुष्पभद्रक-(सं॰नपुं॰) देवताओं का एक उपवन। **पुष्पभव**-(सं॰पुं॰) मकरन्द, मधु। **पुष्पभूषित**-(सं॰वि॰) फूलों से सुशोभित। **पुष्पमण्डन**-(सं॰ नपुं॰) फूलोंका अलंकार। **पुष्पमास**-(सं॰पुं॰) वसन्त ऋतुके दो महीने। **पुष्पमित्र**-(सं॰नपुं॰) एक राजवंश जिसको स्कन्द गुप्त ने हराया था; देखो पुष्य मित्र।
पुष्पमृत्यु-(सं॰पुं॰) एक प्रकार का नरकट। **पुष्परज**-(सं॰नपुं॰) फूल की धूर, पराग। **पुष्परथ**-(सं॰पुं॰) फूल का रथ, **पुष्परस पुष्परसोद्भव**-(सं॰पुं॰) फूल का मधु। **पुष्पराग**-(सं॰पुं॰) पुखराज। **पुष्परेणु**-(सं॰पुं॰) फ़ूल की धूल, पराग। **पुष्परोचन**-(सं॰पुं॰) नागकेसर। **पुष्पलावी**-(सं॰ स्त्री॰) मालाबनाने वाली। **पुष्पलिक्ष**-(सं॰पुं॰) भ्रमर, भौंरा। **पुष्पलिपि**-(सं॰स्त्री॰) एक प्रकार की प्राचीन लिपि। **पुष्पलिह**-(सं॰पुं॰) भ्रमर, भौंरा। **पुष्पवती**-(सं॰स्त्री॰) रजस्वला स्त्री, (वि॰) फूली हुई। **पुष्पवाटिका**-(सं॰स्त्री॰) फूलों का बगीचा फुलवारी; **पुष्पबाण**-(सं॰पुं॰) कामदेव, फूलों का बाण। **पुष्पवृष्टि**-(सं॰स्त्री॰) फूलों की वर्षा। **पुष्पवेणी**-(सं॰स्त्री॰) फूलों की चोटी। **पुष्पशय्या**-(सं॰स्त्री॰) फूलों की सेज। **पुष्पशर; पुष्पशरासन**-(सं॰ पुं॰) कामदेव। **पुष्पशून्य**-(सं॰वि॰) बिना फूल का, (पुं॰) गूलर। **पुष्पसमय**-(सं॰पुं॰) वसन्तकाल। **पुष्पसायक**-(सं॰पुं॰) कन्दर्प, कामदेव।
पुष्पसार-(सं॰पुं॰) पुष्प का रस।
पुष्पसारा-(सं॰स्त्री॰) तुलसी। **पुष्पहास**-(सं॰पुं॰) विष्णु, फूलों का खिलना

पुष्पहासा-(सं०स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।
पुष्पहीन-(सं०वि०) बिना फूल का, गूलर का वृक्ष । पुष्पहीना-(सं०स्त्री०) वन्ध्या, बाँझ स्त्री ।
पुष्पा-(सं०स्त्री०) चम्पा, मालिनी, सौंफ; पुष्पाकर-(सं० पुं०) वसन्त ऋतु ।
पुष्पाजीव, पुष्पाजीवी-(सं०पुं०) मालाकार, माली । पुष्पाञ्जलि-(सं०पुं०) अंगुली भर कर फूल जो किसी देवता पर चढ़ाये जावें । पुष्पाम्बुज-(सं० नपुं०) मकरन्द । पुष्पायुध-(सं०पुं०) कुसुमायुध, कामदेव । पुष्पार्क-(सं०पुं०) फूलों का अर्क । पुष्पासव-(सं०नपुं०) मधु, फूलोंसे बना हुआ मद्य । पुष्पास्त्र-(सं०पुं०) कुसुमायुध, कामदेव । पुष्पिका-(सं०स्त्री०) दाँत की मैल, किसी ग्रन्थ की समाप्ति के अन्त के वाक्य जो "इति श्री" करके आरभ होते हैं ।
पुष्पिणी-(सं०स्त्री०) धव का पेड़, रूई।
पुष्पित-(सं०स्त्री०) कुसुमित, फूला हुआ,
पुष्पिता-(सं०स्त्री०) रजस्वला स्त्री । पुष्पिताग्रा-(सं० स्त्री०) एक अर्धसमवृत्त जिसके पहिले और तीसरे चरण में बारह तथा दूसरे और चौथे चरण में तेरह अक्षर होते है ।
पुष्पी-(सं०पुं०) फला हुआ वृक्ष ।
पुष्पेषु-(सं०पुं०) कामदेव ।
पुष्पोत्सव-(सं०पुं०) कुसुम क्रीड़ा, फूल का खेल ; पुष्पोद्यान-(सं०पुं०) पुष्पवाटिका, फुलवारी ।
पुष्य-(सं०पुं०) सत्ताईस नक्षत्रों में से आठवां नक्षत्र, इसकी आकृति बाण के सदृश है, पुष्टि, पोषण, फल या सार वस्तु, पूस का महीना, मूल या सार वस्तु । पुष्यनेत्रा-(सं०स्त्री०) वह रात्रि जिसमें रात भर पुष्य नक्षत्र हो
पुष्यमित्र-(सं०पुं०) एक प्रतापी राजा जिसने मौर्यों के पीछे मगध देश में शुंग वंश का राज्य स्थापित किया था; पुष्यलक-(सं०पुं०) कस्तूरी मृग; पुष्यस्नान-(सं०नपुं०) पूस के महीने में उस समय स्नान जब चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता हो ।
पुष्या-(सं०स्त्री०) पुष्य नक्षत्र; पुष्यार्क-(सं०पुं०) ज्योतिष का एक योग जो कर्क की संक्रान्ति में सूर्य के पुष्य नक्षत्र में रहने पर होता है ।
पुस-(हिं०पुं०) बिल्ली को पुकारने का प्यार का शब्द ।
पुसाना-(हिं०क्रि०) उचित जान पड़ना, शोभा देना, अच्छा लगना, बन पड़ना, पूरा पड़ना ।
पुस्त-(सं०नपुं०) शिल्पकर्म ।
पुस्तक-(सं०नपुं०) पोथी; पुस्तकमुद्रा-एक तान्त्रिक मुद्रा ; पुस्तकाकार-(सं०वि०) पुस्तक के आकार का, पोथी के रूप का; पुस्तकागार-(सं०पुं०) जिस भवन में पुस्तकों का संग्रह हो, पुस्तकालय ; पुस्तकालय-(सं०नपुं०) पुस्तकागार, जिस भवन में पुस्तकों का संग्रह हो ।
पुस्तिका-(सं०स्त्री०) छोटे आकार की पोथी ।
पुस्फुस-(सं०पुं०) फुसफुस रोग ।
पुहकर-(हिं० पुं०) देखो पुष्कर ; पुहकरमूल-(हिं०पुं०) पुष्करमूल ।
पुहाना-(हिं०क्रि०) गुथवाना, पिरोने का काम दूसरे से कराना ।
पुहुप-(हिं०पुं०) देखो पुष्प, फूल ; पुहुपराग-(हिं०पुं०) पुखराज ।
पुहुमी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि ।
पुहुरेनु-(हिं०पुं०) पुष्परेणु, पराग ।
पुहुमी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि ।
पूंगा-(हिं० पुं०) साँप का कीड़ा (स्त्री०) सँपेरे का बाजा, महुवर ।
पूंछ-(हिं०स्त्री०) पशु पक्षी, कीड़े आदि के शरीर का सबसे पिछला भाग, लांगूल, पोंछ, किसी वस्तु का पीछे का भाग, पुछिल्ला जो किसी के पीछे रहे, पिछलग्गू ।
पूंछड़ी-(हिं०स्त्री०) लांगूल, पुच्छ, पोंछ
पूंछताछ-(हिं०स्त्री०) देखो पूछताछ ।
पूंछना-(हिं०क्रि०) देखो पूछना ।
पूंछलतारा-(हिं०पुं०) देखो केतु ।
पूंछना-(हिं०क्रि०) नये बन्दर को पकड़ना
पूंजी-(हिं०स्त्री०) मूल धन, वह द्रव्य या धन जिससे कोई व्यापार आरंभ किया जावे, किसी कार्यालय की अचल सम्पत्ति, रुपया पैसा, धन, किसी विषय में सामर्थ्य, समूह, पुंज, ढेर; पूंजीदार, पूंजीपति-वह जो किसी व्यवसाय में धन लगावे ।
पूंजीवाद-(हिं०पुं०) समाज में धनपति द्वारा उत्पादन के साधनों पर अधिकार करने की व्यवस्था ।
पूंठ-(हिं०स्त्री०) देखो पीठ ।
पूआ-(हिं०पुं०) मालपुआ, एक प्रकार की पूरी जो आँटे को गुड़ या चीनी के रस में गूथ कर घी में पका ली जाती है ।
पूखन-(हिं०पुं०) देखो पोषण ।
पूग-(सं०नपुं०) सुपारी का वृक्ष या फल, कटहल, शहतूत का वृक्ष, ढेर, समूह, छन्द, भाव ; पूगकृत-इकट्ठा किया हुआ ; पूगपात्र-पीकदान ; पूगपीठ-उगालदान; पूगफल-सुपारी; पूगवृक्ष-सुपारी का पेड़ ।
पूगना-(हिं०स्त्री०) पूरा होना, पूगना ।
पूगी-(सं०स्त्री०) सुपारी ; पूगीफल-(सं०नपुं०) गुवाक, सुपारी ।
पूंछ-(हिं०स्त्री०) पूछने का भाव, जिज्ञासा, आदर, खोज, चाह ।
पूछताछ-(हिं० स्त्री०) अनुसन्धान, जिज्ञासा, जाँच पड़ताल ।
पूछना-(हिं०क्रि०) किसी बात को जानने के लिये प्रश्न करना, जिज्ञासा करना, पता लगाना ; किसी का सत्कार, जानने की चेष्टा करना, आदर करना, ध्यान देना, टोकना, बात न पूछना-तुच्छ समझ कर ध्यान न देना
पूछपाछ-(हिं०स्त्री०) देखो पूछताछ । पूछाताछी, पूछापाछी-(हिं० स्त्री०) पूछने की क्रिया या भाव ।
पूछरी-(हिं०स्त्री०) पोंछ, पीछे का भाग ।
पूजक-(हिं०वि०) पूजा करने वाला ।
पूज-(हिं०पुं०) देवता, (वि०) पूजने योग्य; पूजक-(हिं०वि०) पूजा, अर्चना, देवता की वन्दना, आदर, सम्मान, आराधना
पूजना-(हिं०क्रि०) गहराई भरना या बराबर होना, पूरा होना, समाप्त होना बीतना, ऋण आदि का चुकता होना, श्रद्धा भक्ति से किसी की सेवा करना, किसी देवता की आराधना करना, सम्मान करना, आदर करना, घूस देना, सिर झुकाना ।
पूजनी-(सं०स्त्री०) चटका, गौरैया पक्षी
पूजनीय-(सं०वि०) आराध्य, पूजा करने योग्य, आदरणीय, अर्चनीय ।
पूजमान-(हिं०वि०) पूजनीय, पूज्य ।
पूजा-(सं०स्त्री०) पूजन, अर्चन, आराधना, ईश्वर या देवी देवता के प्रति श्रद्धा, विनय सम्मान और समर्पण का भाव प्रगट करने का कार्य, किसी को प्रसन्न करने के लिये कुछ देना, आदर सत्कार, वह धार्मिक कृत्य जो जल फल फूल, अक्षत, नैवेद्य आदि देवता पर चढ़ा कर किया जाता है; ताड़ना, दण्ड ; पूजार्ह-(सं०वि०) मान्य, पूजने योग्य; पूजित-(सं०वि०) अर्चित, जिसकी पूजा की गई हो; पूजितव्य-(सं०वि०) पूजा करने योग्य; पूजेता-(हिं०पुं०) पुजारी ।
पूज्य-(सं०वि०) पूजनीय, माननीय, आदर के योग्य, पूजा के योग्य ; पूज्यता-(सं०स्त्री०) पूजा योग्य होना ; पूज्यपाद-(सं०वि०) जिसके पैर पूजनीय हों, अत्यन्त पूज्य या मान्य ; पूज्यमान-(सं०वि०) जो पूजा जाता हो
पूटीन-(हिं०स्त्री०) देखो पुटीन ।
पूठा-(हिं०पुं०) देखो पुट्ठा ।
पूठि-(हिं०स्त्री०) देखो पीठ, पृष्ठ ।
पूड़ा-(हिं०पुं०) देखो पूआ ।
पूड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पूरी, मृदंग या तबले पर मढा हुआ गोल चमड़ा ।
पूणू-(हिं०स्त्री०) पूणिमा, पुनवासी ।
पूत-(सं०वि०) व्रतादि द्वारा शुद्ध, पवित्र, सत्य, सच्चा, (पुं०) शंख, सफ़ेद कुशा, पलास, तिल का पौधा, भूसी निकला हुआ अन्न, जलाशय ।
पूत-(हिं०पुं०) पुत्र, बेटा, चूल्हे के दोनों ओर तथा पीछे का उभड़ा हुआ भाग; पूतक्रतु-(सं०पुं०) इन्द्र ।
पूतड़ा-(हिं०पुं०) छोटे बच्चों के नीचे मलमूत्र त्याग करने के लिये बिछाने का छोटा बिछौना ।
पूतदारु-(सं०पुं०) पलाश, ढाक ।
पूतद्रु-(सं०पुं०) खदिर, खैर का वृक्ष । पूतधान्य-(सं०नपुं०) तिल ।
पूतन-(सं०पुं०) गुदा का एक रोग ।
पूतना-(सं०स्त्री०) हरीतकी, हरैं, जटामासी, एक दानवी जिसको कंस ने बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिये भेजा था, जिसको श्रीकृष्ण ने मार डाला था, एक बालग्रह या बाल रोग ; पूतनारि-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण ।
पूतनिका-(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृ का नाम ।
पूतनी-(सं०स्त्री०) पुदीना ।
पूतपत्री-(सं०स्त्री०) तुलसी पत्र ।
पूतफल-(सं०पुं०) पनस, कटहल ।
पूतमति-(सं०वि०) पवित्र बुद्धि, पवित्र अन्तकरण वाला, (पुं०) शिव, महादेव
पूतरा-(हिं०पुं०) देखो पुतला, बाल-बच्चा; पूतरी-(हिं०स्त्री०) देखो पुतली
पूता-(सं०वि०) पवित्र, शुद्ध, (स्त्री०) दूब; पूतात्मा-(सं०वि०) शुद्ध अन्तः करण का, (पुं०) विष्णु ।
पूति-(सं०नपुं०) रोहित तृण, (स्त्री०) पवित्रता, दुर्गन्ध, (वि०) दुर्गन्धयुक्त।
पूतिक-(सं०नपुं०) विष्टा; पूतिकन्या-(सं०स्त्री०) पूतिका, पुदीना; पूतिकर्ण-(सं०पुं०) कान का एक रोग जिसमें कान से पीब निकलती है और दुर्गन्ध आती है ; पूतिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मधुमक्खी, पोई का साग; पूतिकामुख-शंबूक, घोंघा; पूतिकाष्ठ-(सं०नपुं०) देवदारु, देवदार; पूतिकेसर-(सं०पुं०) नागकेसर; पूतिगन्ध-(सं०नपुं०) एक प्रकार की सुगन्धित घास, दुर्गन्ध ।
पूतिगन्धा-(सं०स्त्री०) बगुची; पूतितैला-(सं०स्त्री०) मालकंगनी ; पूतिदला-(सं०स्त्री०) तेजपत्र, तेजपात; पूतिनस्य-(सं०पुं०) नाक का एक रोग; पूतिपत्र-(सं०पुं०) सोनापाठा, पीला लोध ; पूतिमारुत-(सं०पुं०) छोटी बेर, बेल का वृक्ष; पूतिमांस-(सं०नपुं०) दुर्गन्धी मांस; पूतिमूषिका-(सं०स्त्री०) छछूंदर
पूती-(हिं०स्त्री०) लहसुन की गाँठ ।
पूतुद्र-(सं०पुं०) देवदारु, देवदार ।
पूथ, पूथा-(हिं०पुं०) बालूका ऊंचा टीला
पून-(सं०वि०) नष्ट, (हिं०पुं०) जंगली बादाम का वृक्ष, देखो पुण्य, पूर्ण ।
पूनना-(हिं०पुं०) एक प्रकार की ऊख।
पूनव-(हिं० स्त्री०) देखो पूर्णिमा, पूनो ।
पूनसलाई-(हिं०स्त्री०) पूनी बनाने की सलाई ।
पूनाक-(हिं०स्त्री०) तेलहन में की बची हुई खली ।
पूनिउं-(हिं०स्त्री०) देखो पूनो; पूर्णिमा ।
पूनी-(सं० स्त्री०) पवित्रता, शुद्धि, (हिं०स्त्री०) धुनी हुई रूई की बड़ी बत्ती जो सूत कातने के लिये बनाई जाती है ।
पूनो-(हिं०स्त्री०) पूर्णमासी, पूर्णिमा ।
पूप-(सं०पुं०) पूआ, मालपूआ ।
पूपला-(सं० स्त्री०) प्राचीन काल का एक प्रकार का पकवान ।
पूपली-(सं०स्त्री०) बांस आदि की पोली नली, बच्चों के खेलने का एक प्रकार

का खिलौना।
पूपाली-(सं०स्त्री०) पूआ, मालपूआ।
पूय-(सं०नपुं०) मवाद, पीव; **पूयकुण्ड**-(सं०पुं०) एक नरक का नाम;
पूयरक्त-(सं०पुं०) नाक का एक रोग
पूयारि-(सं०पुं०) नीम का वृक्ष।
पूयोद-(सं०नपुं०) एक नरक का नाम
पूर-सं०पुं०) जल समूह, बाढ़, मसाले आदि जो पकवान के भीतर भरे जाते हैं, प्राणायाम में सांस के भरने की क्रिया, (हिं०वि०) देखो पूर्ण।
पूरक-(सं०पुं०) वह अंक जिसमें किसी संख्या का गुणा किया जावे, प्राणायाम का वह अंग जिसमें नाक के एक छिद्र को बन्द करके दूसरे छिद्र द्वारा सांस ऊपर को खींची जाती है, अशौच काल में मृत व्यक्ति के निमित्त दिया जाने वाला दस पिण्ड, (वि०) पूरा करने वाला।
पूरण-(सं०नपुं०) पूरक पिण्ड, वृष्टि, अंकों का गुणा करना, कान में तेल डालना, (पुं०) सेतु, पुल, नागरमोथा, समुद्र, वात के प्रकोप से होने वाला एक व्रण, परिपूर्ण करने की क्रिया।
पूरणी-(सं०स्त्री०) पूरा करने वाली, सेम्हर का वृक्ष; **पूरणीय**-(सं०वि०) पूरा करने योग्य।
पूरन-(हिं०वि०) देखो पूर्ण; **पूरनकाम**-(हिं०वि०) देखो पूर्णकाम; **पूरनपूरी**-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की मीठी कचौड़ी
पूरनमासी-(हिं०स्त्री०) देखो पूर्णमासी।
पूरना-(हिं०क्रि०) पूर्ति करना, टोटा पूरा करना, मनोरथ सिद्ध करना मंगल अवसरों पर भूमि पर अबीर आटे आदि से चौखूटे क्षेत्र बनाना, चौक बनाना, बटना, पूर्ण या व्याप्त होना, बजाना, फूंकना, ढापना।
पूरब-(हिं०पुं०) वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है, पूर्व दिशा।
पूरबल-(हिं० पुं०) प्राचीन समय, इस जन्म से पहिले का जन्म, पूर्वजन्म।
पूरबला-(हिं०वि०) प्राचीन काल का, पुरातन, पुराना, पहिले जन्म का।
पूरबिया, पूरबी-(हिं०वि०) पूर्व संबंधी, पूरब का,(स्त्री०)पूर्वी नाम की रागिणी
पूरयितव्य-(सं०वि०) पूरा करने योग्य।
पूरा-(हिं०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, समस्त, समूचा, बिना भाग किया हुआ पूर्ण, जिसमें कोई कमी न हो, यथेष्ट, परिपूर्ण, भरपूर, तुष्ट, सम्पन्न; **बात का पूरा**-अपने वचन पर दृढ़ रहने वाला; **काम पूरा उतरना**-काम का पूरी तरह से संपादन होना; **बात पूरी उतरना**-कही हुई बात सच्ची ठहरना; **दिन पूरे करना**-किसी न किसी प्रकार से दिन बिताना; **दिन पूरे होना**-मृत्युकाल समीप आना।
पूरिका-(सं०स्त्री०) पूरी, बरा
पूरित-(सं०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, पूरा किया हुआ, गुणा किया हुआ, तृप्त, सन्तुष्ट।
पूरिया-(हिं०पुं०) पाडव जाति का एक राग; **पूरिया कल्याण**-संपूर्ण जाति का एक संकर राग।
पूरी-हिं०स्त्री०) एक खाद्य पदार्थ जो आटे को साधारण रोटी की तरह बेल कर घी में पका लिया जाता है, वह गोल चमड़ा जो ढोल मृदंग आदि के मुख पर मढा रहता है।
पूरुजित्-(सं०पुं०) विष्णु।
पूरुष-सं०पुं०)पुरुष, नर, चेतन, आत्मा।
पूर्ण-(सं०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, जिसको किसी प्रकार की इच्छा न हो, अखण्डित, समूचा, समग्र, परितृप्त, यथेष्ट, समाप्त, सफल, सिद्ध, (पुं०) एक गन्धर्व का नाम, जल, परमेश्वर, विष्णु, संगीत या ताल में वह स्थान जो 'सम अतीत' के एक मात्रा के बाद आता है।
पूर्णक-(सं०पुं०) देवताओं की एक योनि, ताम्रचूड़, मुर्गा; **पूर्णकंस**-(सं०पुं०) भरा हुआ घड़ा; **पूर्णकाम**-(सं०पुं०) परमेश्वर; (वि०) निष्काम, जिसकी सब कामना पूरी हो चुकी हों; **पूर्णकूट**-(सं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी; **पूर्णकुम्भ**-(सं०पुं०) जल से भरा हुआ घड़ा; **पूर्णकोषा**-(सं०स्त्री०) कचौरी नाम का पकवान;
पूर्णगर्भा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसको शीघ्र ही प्रसव होने वाला हो।
पूर्णचन्द्र-(सं०पुं०)पूर्णिमा का चन्द्रमा
पूर्णतया, पूर्णतः-सं०अव्य०) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से। **पूर्णता**-(सं०स्त्री०) पूर्णत्व, पूर्ण होने का भाव। **पूर्णपरिवर्तक**-(सं०पुं०) वह जीव जो अपने जीवन में अनेक बार अपना रूप बदलता है। **पूर्णपात्र**-(सं०नपुं०) वस्तुपूर्ण पात्र, होम के अन्त में ब्रह्मा को देय दक्षिणा रूप द्रव्य, जलपूर्ण पात्र। **पूर्णप्रज्ञ**-(सं०वि०) पूर्ण ज्ञानी, बड़ा बुद्धिमान, पूर्णप्रज्ञ दर्शन के कर्ता माध्वाचार्य;
पूर्णप्रज्ञदर्शन-वेदान्त सूत्र तथा इस पर के रामानुज कृत्य भाष्य का अवलंबन करके बनाया हुआ दर्शन शास्त्र
पूर्णबीज-(सं०पुं०) बीजपूर, बिजौरा नीबू। **पूर्णभद्र**-सं०पुं० एक नाग का नाम। **पूर्णमा**-(सं०स्त्री०) देखो पूर्णिमा। **पूर्णमासी**-(सं०स्त्री०) चन्द्रमास की अन्तिम तिथि, शुक्लपक्ष का अन्तिम या पन्द्रहवां दिन।
पूर्णविराम-(सं०पुं०) लिखने में वह चिह्न जो वाक्य के पूरे होने पर लगाया जाता है, नागरी बंगला आदि में इसके लिये एक खड़ी पाई "।" का प्रयोग किया जाता है।
पूर्णविषम-(सं०पुं०) संगीत के ताल में वह स्थान जो कभी कभी सम का काम देता है।
पूर्णहोम-(सं०पुं०) हवन के अन्त में पूर्णाहुति।
पूर्णा-(सं०स्त्री०) ज्योतिष के अनुसार, पंचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावास्या तिथि। **पूर्णाघात**-(सं०पुं०) संगीत का एक ताल। **पूर्णाञ्जलि**-(सं०वि०) जितना परिमाण एक अञ्जलि मे समा सके। **पूर्णानन्द**-(सं०पुं०) परमेश्वर, परब्रह्म। **पूर्णामृता**-(सं०स्त्री०) चन्द्रमा की सोलह कलाओं का नाम।
पूर्णायु-(सं०पुं०) सौ वर्ष का जीवन काल (वि०) पूरी आयुष्य वाला।
पूर्णावतार-(सं०पुं०) किसी देवता का सोलहो कलाओं से युक्त अवतार।
पूर्णाहुति-(सं०स्त्री०) होम समाप्ति में अन्तिम आहुति।
पूर्णिका-(सं०स्त्री०) दोहरी चोंच का एक पक्षी।
पूर्णिमा-(सं०स्त्री०) पौर्णमासी, पुनवासी
पूर्णेन्दु-(सं०पुं०) पूर्णिमा का चन्द्रमा, पूर्णचन्द्र।
पूर्णोत्सङ्ग-(सं०वि०)जिसकी गोद भरी हो
पूर्णोपमा-(सं०स्त्री०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उसके चारो अंग अर्थात्-उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म-पूर्ण रूप से प्रगट हों।
पूर्त-पालन, खोदने या बनाने का काम, (वि०) पूरित, आच्छादित, ढपा हुआ; **पूर्तविभाग**-वह सरकारी विभाग जो सड़क, नहर, पुल, मकान आदि बनवाता है।
पूर्ति-(सं० स्त्री०) पूरण करने का काम, गुणन, गुणा करने का काम, बावली कूप तालाब आदि का उप्सर्ग, पूर्णता, किसी आरंभ किये हुए काम की समाप्ति, किसी काम मे जितनी वस्तु आवश्यक हों उनको पूरी करने का काम। **पूर्तिकाम**-(सं० वि०) धन आदि से अपनी कामना पूरी करने वाला।
पूर्वभक्षिका-(सं०स्त्री०) प्रातःकाल किया जाने वाला भोजन, जलपान।
पूर्भिद्य-(सं०नपुं०) संग्राम, युद्ध।
पूर्य-(सं०वि०) पालन करने योग्य, पूरा करने योग्य।
पूर्व-(सं०वि०) प्रथम, आदि, पहिले का, आगे का, बड़ा, प्राचीन, पुराना, पिछला, (पुं०) वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है, (अव्य०) पहले।
पूर्वक-(सं०पुं०) पूर्वज, बाप दादा, (अव्य०) साथ, सहित-इस अर्थ में प्रायः संयुक्त संज्ञा के अन्त मे प्रयोग होता है, यथा ध्यान पूर्वक।
पूर्वकर्म-(सं०नपुं०) पहले किया जाने वाला कार्य। **पूर्वकल्प**-(सं० पुं०) पूर्वकाल, पहला समय; **पूर्वकाय**-(सं० पुं०) शरीर मे नाभि के उपर का भाग; **पूर्वकाल**-(सं० पुं०) प्राचीन काल। **पूर्वकालिक**-(सं० वि०) पूर्व काल संबंधी, जिसकी स्थिति पूर्वकाल में हो, जिसका जन्म पूर्वकाल मे हुआ हो; **पूर्वकालिक क्रिया**-वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले होता हो।
पूर्वकाष्ठा-(सं०स्त्री०) पूर्व दिशा।
पूर्वकृत्-(सं०पुं०)पूर्व दिशा के कर्ता, सूर्य
पूर्वकृत्-(सं०वि०)पूर्वकाल में किया हुआ
पूर्वग-(सं०वि०) पूर्वगामी।
पूर्वगङ्गा-(सं०स्त्री०) नर्मदा नदी।
पूर्वज-(सं०पुं०) पूर्वपुरुष, पुरखा, चन्द्रलोकमे रहने वाले पितर लोग, (वि०) पूर्व काल मे उत्पन्न। **पूर्वजन**-(सं० पुं०) पुराने समय के लोग। **पूर्वजन्म**-(सं०नपुं०) पहिले का जन्म, पिछला जन्म। **पूर्वजन्मा**-(सं०पुं०) अग्रज, बड़ा भाई। **पूर्वजा**-(सं०स्त्री०) बड़ी बहन। **पूर्वजाति**-(सं०स्त्री०) पूर्वजन्म, पिछला जन्म। **पूर्वज्ञान**-(सं० नपुं०) पहिले का ज्ञान, पूर्व जन्म का ज्ञान।
पूर्वतन-(सं०वि०) पुराने समय का।
पूर्वतः-(सं० अव्य०) पहले से।
पूर्वत्व-(सं०नपुं०)पूर्व का भाव, पुरानापन
पूर्वदक्षिणा-(सं०स्त्री०) अग्निकोण, पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना।
पूर्वदिन-(सं० नपुं०) आज से पहिले का दिन। **पूर्वदेह**-(सं०पुं०) पहले का शरीर।
पूर्वनिरूपण-(सं०पुं०) भाग्य।
पूर्वपक्ष-(सं०पुं०) कृष्णपक्ष, शास्त्रार्थ में संशय हटाने के लिये जो प्रश्न किया जाता है, फक्किका, अभियोग में वादी का अधिकार प्रगट करना। **पूर्वपक्षी**-(सं० वि०) पूर्व पक्ष उपस्थित करने वाला, वह जो किसी प्रकार का अभियोग उपस्थित करे। **पूर्वपक्षीय**-(सं०वि०) पूर्व पक्ष संबंधी।
पूर्वपद-(सं०नपुं०) पूर्ववर्ती स्थान।
पूर्वपितामह-(सं०पुं०)प्रपितामह, परदादा
पूर्वपुरुष-(सं०पुं०) बाप दादा परदादा आदि पुरखा, ब्रह्मा। **पूर्वप्रज्ञा**-(सं०स्त्री०) पूर्वज्ञान, पूर्वस्मृति।
पूर्वफाल्गुनी-(सं० स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से ग्यारहवां नक्षत्र जिसका आकार दो तारका युक्त चारपाई की तरह है; **पूर्वाफाल्गुनीभव**-वृहस्पति। **पूर्वा भाद्रपद**-(सं० पुं०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से पचीसवां नक्षत्र, इसका आकार घण्टे की तरह का है तथा दो नक्षत्र युक्त है
पूर्वभाग-(सं० पुं०) प्रथम भाग, ऊर्ध्व भाग। **पूर्वभाषी**-(सं०वि०) पहिले बोलने वाला; **पूर्वभूत**-(सं० वि०) जो पहिले बीत गया हो।
पूर्वमीमांसा-(सं०स्त्री०) जैमिनि ऋषि कृत एक दर्शन शास्त्र जिसमें कर्मकाण्ड सम्बन्धी विषयों का वर्णन है।
पूर्वरङ्ग-(सं०पुं०) नाटक आरम्भ करने

के पहिले विघ्न शान्ति अथवा दर्शकों को सावधान करने के लिये जो संगीत या स्तुति पढ़ी जाती है। **पूर्वराग**-(सं०पुं०) पूर्वानुराग, प्रथम अनुराग, साहित्य में नायक अथवा नायिका की वह अवस्था जो दोनों के परस्पर संयोग होने से पहले प्रेम के कारण होती है।

पूर्वरात्र-(सं०पु) रात्रि का पूर्व भाग। **पूर्वरूप**-(सं०नपु०) पहिले का रूप, किसी वस्तु का वह रंग ढङ्ग जिसमें वह पहिले रही हो, पूर्व लक्षण, आगम सूचक चिह्न जो उसके उपस्थित होने से पहिले प्रगट हो, आसार। **पूर्वलक्षण**-(सं० नपुं०) पूर्व चिह्न सूचक लक्षण। **पूर्ववत्**-(सं०अव्य०) पूर्व तुल्य, पहले की तरह, कारण देखकर किसी कार्य का अनुमान।

पूर्ववयस-(सं०नपुं०) अल्प वय

पूर्ववर्ती-(सं०वि०) पहिले का, जो पहिले रह चुका हो।

पूर्ववाद-(सं०पुं०) पहिला अभियोग। **पूर्ववादी**-(सं०पुं०) जो न्यायालय में जाकर पहिले अभियोग उपस्थित करे।

पूर्ववायु-(सं०पु०) पुरवैया हवा।

पूर्ववार्षिक-(सं०वि०) वर्षाकाल के पहिले का।

पूर्वविद्-(सं०वि०) पुरानी बातों को जानने वाला। **पूर्ववृत्त**-(सं०नपुं०) प्राचीन घटना, इतिहास।

पूर्ववैरी-(हिं०पु०) पहिले का शत्रु।

पूर्वशारद-(सं० वि०) शरदऋतु के पहले का।

पूर्वशैल-(सं०पु०) उदयाचल।

पूर्वसर-(सं०वि०) अग्रगामी, आगे चलने वाला।

पूर्वा-(सं०स्त्री०) पूर्व दिशा, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र। **पूर्वाग्नि**-(सं०पुं०) आवसथ्य अग्नि। **पूर्वाचल**-(सं०पुं०) उदयाचल। **पूर्वानिल**-(सं०पु०) पूरब से बहने वाली वायु। **पूर्वानुराग**-(सं०पुं०) अनुराग या प्रेम का आरम्भ, किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होनेवाला प्रेम, साहित्य में पूर्वानुराग तब तक माना जाता है जब तक प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप न हो, मिल जाने के उपरान्त उसको प्रेम या प्रीति कहते हैं।

पूर्वापर-(सं०क्रि०वि०) अगला और पिछला, क्रमानुसार, (पुं०) पूर्व और पश्चिम। **पूर्वापर्य**-(सं०नपु०) पूर्वापर का भाव।

पूर्वाफाल्गुनी-(सं०स्त्री०) अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से ग्यारहवां नक्षत्र, इसका आकार पलंग की तरह का माना जाता है, इसमें दो तारे हैं। **पूर्वाभाद्रपद**-(सं०पु०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में पचीसवां नक्षत्र।

पूर्वाभिभाषी-(सं०वि०) पहिले बोलने वाला। **पूर्वाभिमुख**-(सं०वि०) पूरब की ओर मुख किया हुआ।

पूर्वार्जित-(सं०वि०) पहिले का उपार्जित या कमाया हुआ।

पूर्वार्ध-सं०वि०) किसी पुस्तक का पहिला आधा भाग।

पूर्वाशी-(सं० वि०) पहले भोजन करने वाला।

पूर्वाषाढा-(सं०स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से बीसवां नक्षत्र जिसका आकार सूर्य की तरह का माना जाता है, इसमें चार तारे हैं, यह नक्षत्र अधोमुख है और इसका अधिष्ठाता देवता जल है।

पूर्वाह्न-(सं०पुं०) दिनमान का प्रथम भाग, प्रातःकाल से दोपहर तक का समय।

पूर्वित-(सं०वि०) पहिले किया हुआ, पहले बुलाया हुआ।

पूर्वी-(हिं० वि०) पूर्व दिशा से संबंध रखने वाला, पूरब का, (पु०) एक प्रकार का चावल जो पूरब में होता है, बिहार प्रान्त में गाया जानेवाला एक प्रकार का दादरा; **पूर्वीघाट**-दक्षिणी भारत के पूर्वी किनारे पर की पर्वतों की श्रेणी।

पूर्वेतर-(सं०वि०, पूर्व से भिन्न, पश्चिम।

पूर्वेद्युः-(सं०अव्य०) प्रातःकाल, सबेरा।

पूर्वोक्त-(सं०वि०) पूर्व कथित, पहले कहा हुआ।

पूर्वोत्तरा-(सं०स्त्री०) पूरब और उत्तर के बीच की दिशा, ईशान कोण। **पूर्वोत्पन्न**-(सं० वि०) पूर्वकाल में उत्पन्न।

पूलक-(सं०पुं०) घास का टीला या ढेर, मूंज आदि का बँधा हुआ गट्ठा।

पूला-(हिं०पु०) मूंज आदि का बंधा हुआ गट्ठा।

पूलिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का पूआ।

पूली-(हिं०स्त्री०) छोटा पूला।

पूवा-(हिं०पुं०) देखो पूआ।

पूष-(सं०पु०) शहतूत का वृक्ष, पौष मास। **पूषक**-(सं०पुं०) शहतूत का पेड़,

पूषण-(सं०पु०) सूर्य पुराण के अनुसार ग्यारह आदमियों में से एक, (नपुं०) पार्थिव पदार्थ मिट्टी की बनी हुई वस्तु।

पूषणा-(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका नाम।

पूषघ्न-(सं०पुं०) वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।

पूषा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, दाहिने कान की एक नाड़ी का नाम, देखो पूषण; सूर्य; **पूषात्मज**-मेघ, बादल; **पूषा सुहृद**-शिव महादेव।

पूस-(हिं० पुं०) पौष मास, अगहन के बाद तथा माघ के पहिले का महीना।

पृक्का-(सं० स्त्री०) असवरग नामक एक गन्ध द्रव्य।

पृकथ-(सं०नपुं०) धन, सम्पत्ति।

पृक्ष-(सं०पु०) अन्न, अनाज।

पृच्छक-(सं०वि०) जिज्ञासु जानने की इच्छा करने वाला, प्रश्न करने वाला, पूछने वाला। **पृच्छना**-(सं०स्त्री०) जिज्ञासा करना, पूछना।

पृच्छा-(सं०स्त्री०) प्रश्न, सवाल।

पृत्-(सं०स्त्री०) सेना, युद्ध, संग्राम।

पृतना-(सं०स्त्री०) सेना, संग्राम लड़ाई, प्राचीन सेना विभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घुड़सवार और १२१५ पैदल सिपाही रहते थे; **पृतनापति**-सेनापति।

पृथक्-(सं०अव्य०) भिन्न, अलग, जुदा। **पृथक्करण**-(सं०नपु०) अलग करने का भाव, अलगाव। **पृथक्क्षेत्र**-(सं० पुं०) एक ही पिता परन्तु भिन्न माता से उत्पन्न सन्तान। **पृथक्छद**-(सं० पु०) अखरोट का वृक्ष। **पृथकता**-(सं०वि०) अलगाव; **पृथकत्व**-(सं० नपुं०) अलग होने का भाव।

पृथकपर्णी-(सं०स्त्री०) पिठवन नामक औषधि।

पृथगात्मता-(सं०स्त्री०) विरक्तता, विराग, अन्तर, भेद।

पृथकजन-(सं०पुं०) नीच पापी पुरुष। **पृथक बीज**-(सं० पुं०) भल्लातक, भिलावां।

पृथग्भाव-(सं०पुं०) देखो पृथकृत्व।

पृथग्विध-(सं०वि०) नाना रूप का।

पृथवान-(सं०पुं०) पृथ्वी, भूमि।

पृथवी-(सं० ०) देखो पृथिवी।

पृथा-(सं० ०) पाण्डु की राजपत्नी, कुन्ती का दूसरा नाम; **पृथाज**-कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर आदि; **पृथापति**-पाण्डुराज।

पृथिवी-(सं०स्त्री०) अचला, भूमि, धरा धरणी; **पृथिवीकम्प**-भूकम्प, **पृथिवी गीता**-पृथिवी की कथा जिसका वर्णन विष्णु पुराण में वर्णन किया गया है। **पृथिवीपति**-राजा, यम; **पृथिवीमय**-मृत्तिकामय; **पृथिवीलोक**-भूलोक; **पृथिवीश्वर**-राजा; **पृथिवीस्थ**-भूमि पर रहनेवाला।

पृथु-(सं०पु०) त्रेतायुग के सूर्यवंशीय पंचम राजा जो राजा वेणु के पुत्र थे, चतुर्थ मन्वन्तर के एक सप्तर्षि, दानवों का एक भेद, शिव, महादेव, अग्नि, विष्णु, काला जीरा, अहिफेन, अफ़ीम, एक हाथ का मान, (वि०) महत्, बड़ा, विस्तृत, चौड़ा, अधिक चतुर, प्रवीण।

पृथुक-(सं० पुं०) चिपिटक, चिवड़ा, बालक।

पृथुकीर्ति-(सं० वि०) जिसकी कीर्ति अधिक हो। **पृथुग्रीवा**-सं०वि० जिसकी गरदन लंबी हो। **पृथुजय**-(सं०वि०) वेग से चलने वाला। **पृथुता**-(सं० स्त्री०) विस्तार फैलाव। **पृथुत्व**-(हिं० पुं०) देखो पृथुता। **पृथुदर्शी**-(सं० वि०) बहुदर्शी, चतुर, प्रवीण। **पृथुपाणि**-(सं०वि०) जिसके हाथ बहुत लम्बे हों। **पृथुप्रथ**-(सं०वि०) जिसका यश दूर तक फैला हो। **पृथुयशस्**-(सं०वि०) बड़ा यशस्वी।

पृथुल-(सं० वि०) महत्, बड़ा भारी, स्थूल, अधिक।

पृथुलाक्ष-(सं०वि०) बड़ी-बड़ी आखों वाला।

पृथुवक्त्र-(सं०वि०) बड़े मुख वाला।

पृथुशिरा-सं०स्त्री०) काली जोंक।

पृथुशेखर-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़।

पृथुश्रव-(सं०वि०) बड़े कान वाला।

पृथुस्कन्ध-(सं०पुं०) शूकर, सुअर।

पृथूदर-(सं०पुं०) मेष, मेढ़ा, (वि०) बड़े, पेट वाला।

पृथ्वी-(सं०स्त्री०) सौर जगत् का वह ग्रह जिस पर हम सब प्राणी चलते फिरते हैं, भूमि, धरती मिट्टी काला जीरा, पुनर्नवा, बड़ी इलायची, मदारका पौधा, पञ्चभूतों या तत्वों में से एक जिसका प्रधान गुण गन्ध है परन्तु गौण रूप से इसमें स्पर्श, शब्द, रूप और रस ये चारो गुण भी विद्यमान हैं, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक पाद में सत्रह अक्षर होते हैं।

पृथ्वीका-(सं० स्त्री०) बड़ी इलायची, काला जीरा।

पृथ्वी कुरवक-(सं०पु०) सफेद मदार।

पृथ्वीगर्भ-(सं०पुं०) लम्बोदर, गणेश।

पृथ्वीगृह-(सं०नपुं०) गह्वर, गुफा।

पृथ्वीज-(सं० वि०) भूमि से उत्पन्न, (नपुं०) सांभर नमक।

पृथ्वीतल-(सं०पुं० संसार, वह धरातल जिस पर हम लोग चलते फिरते हैं। **पृथ्वीधर**-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़।

पृथ्वीनाथ-(सं०पुं०) राजा। **पृथ्वीपति**, **पृथ्वीपाल**-(सं० पुं०) पृथ्वीपालक, राजा।

पृथ्वीपुत्र-(सं०पु०) मंगल ग्रह।

पृथ्वीश-(सं०पुं०) भूपति, राजा।

पृश्नि-(सं० वि०) जिसका शरीर दुर्बल हो, सफेद रंग का, चितकबरा, सामान्य, साधारण, (स्त्री०) किरण, चितकबरी गाय, (पुं०) एक प्राचीन ऋषि का नाम, अन्न, जल, वेद, अमृत। **पृश्निका**-(सं०स्त्री०) कुंभिका, जलकुम्भी। **पृश्निगर्भ**-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण। **पृश्निपर्णी**-(सं० स्त्री०) पिठवन नाम की लता। **पृश्निभद्र**-(सं०पु०) श्रीकृष्ण। **पृश्निशृङ्ग**-(सं०पु०) गणेश।

पृषत्-(सं०पु०) विन्दु, बूँद।

पृषदश-(सं०पु०) वायु, हवा।

पृषद्वरा-(सं०स्त्री०) मेनका की कन्या का नाम।

पृषद्वल-(सं०पु०) वायु का घोड़ा।

पृषोदर-(सं०पुं०) जिसका पेट छोटा हो

पृषोद्यान-(सं०नपुं०) छोटा बगीचा।

पृष्ट-(सं०वि०) सींचा हुआ, पूछा हुआ।

पृष्टहायन-(सं०पुं०) गज, हाथी।

पृष्टि-(सं०स्त्री०) जिज्ञासा, पूछने की

क्रिया, पिछला भाग।
पृष्ठिपर्णी-(सं०स्त्री०) पिठवन लता।
पृष्ठ-(सं०नपुं०) शरीर के पीछे का भाग, पीठ, किसी वस्तु के तल का ऊपरी भाग, पीछा, पुस्तक का पत्र या पन्ना, पुस्तक के पत्र के एक ओर का तल। **पृष्ठगोप**-(सं०पु०) सेना के पिछले भाग की रक्षा करने वाला सैनिक। **पृष्ठग्रन्थि**-(सं०पुं०) गण्डुरोग, कूबड़। **पृष्ठचर**-(सं० वि०) पीछे चलने वाला। **पृष्ठज**-(सं०वि०) जिसका जन्म पीछे हुआ हो। **पृष्ठद,ष्ट**-(सं०पुं०)भालू, रीछ। **पृष्ठपोषक**-(सं०पुं०)पीठ ठोंकने वाला सहायक। **पृष्ठफल**-(सं०पुं०) किसी पिण्ड के ऊपरी भाग का क्षेत्रफल; **पृष्ठभङ्ग**-(सं०पुं०)युद्ध की वह रीति जिसमें शत्रु की सेना का पिछला भाग आक्रमण करके नष्ट कर दिया जाता है। **पृष्ठभाग**-(सं०पुं०)पिछला भाग, पीठ। **पृष्ठमांस**-(सं० नपुं०) पशु आदि के पीठ पर का मांस। **पृष्ठमांसद**-(सं०वि०)पीठ पीछे निन्दा करने वाला, पीठ का मांस खाने वाला। **पृष्ठयान**-(सं० नपुं०) पीठ के बल चलना फिरना। **पृष्ठवंश**-(सं०पुं०) पीठ पर की हड्डी, रीढ़क, रीढ। **पृष्ठवाह्य**-(सं०पु०) वह पशु जिसकी पीठ पर बोझ लादा जाता है। **पृष्ठशय**-(सं० वि०) पीठ के बल सोने वाला। **पृष्ठशृङ्ग**-(सं० पुं०) जंगली बकरा। **पृष्ठशृंगी**-(सं०पुं०) भैंसा, भीमसेन, भेंड़ा, नपुंसक, हिजड़ा। **पृष्ठानुग, पृष्ठानुगामी**-(सं०वि०) पीछे जाने वाला। **पृष्ठास्थि**-(सं०नपुं०) देखो पृष्ठवंश।
पृष्ठ्य-(सं०नपुं०)बोझ ढोनेवाला घोड़ा।
पृष्णिपर्णी-(सं०स्त्री०) पिठवन लता।
पें-(हिं०पुं०) रोने या बाजा फूंकने से निकलने का शब्द।
पेंग-हिं०स्त्री०) हिंडोले या झूले का झूलते सयय एक ओर से दूसरी ओर जाना, (पुं०) एक प्रकार का पक्षी; **पेंग मारना**-झूले का वेग बढ़ाना।
पेंघट, पेंघा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मटमैले रंग की चिड़िया।
पेंच-(हिं० पु०) देखो पेंच। **पेंचक**-(हिं०पुं०) देखो पेंचक। **पेंचकश**-(हिं०पुं०)देखो पेचकश। **पेंजनी**-(हिं० स्त्री०) देखो पैजनी। **पेंठ**-(हिं०स्त्री०) देखो पैंठ, पैठ।
पेंड़-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पीली चोंच का सारस।
पेंडुकी-(हिं०स्त्री०) पंडुक पक्षी, सोनार की फुकनी, गुझिया नामक पकवान।
पेंदा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का निचला भाग, या आधार तला। **पेंदी**-(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु का निचला भाग, गुदा, मूली या गाजर की जड़।
पेंशन-(हिं०स्त्री०) देखो पेन्शन। **पेन्शनर**-(हिं०पु०)देखो पेन्शन। **पेंसिल**-(हिं०स्त्री०) देखो पेन्सिल।
पेउश-(हिं० पुं०) देखो पेउसी।
पेउसी-(हिं०स्त्री०) व्याई हुई गाय या भैंस का पहिले दिन का दूध, एक प्रकार का पकवान।
पेखक-(हिं०वि०)प्रेक्षक, देखने वाला।
पेखना-(हिं०क्रि०) देखना।
पेच-(सं०पु०) उलूक पक्षी।
पेचक-(सं०पु०) उलूक पक्षी, उल्लू, पर्यङ्क, पलंग, मेघ, बादल।
पेचना-(हिं० क्रि०) किसी दो वस्तुओं के बीच में तीसरी वस्तु को इस प्रकार से जमा देना कि पता न चले।
पेचनी-(सं० स्त्री०) सीधी लकीर पर काढ़ा हुआ कसीदा।
पेचा-(हिं० पुं०) उलूक पक्षी, उल्लू।
पेचिका-(सं०स्त्री०) मादा उल्लूपक्षी।
पेचिल-(सं० पुं०) गज, हाथी।
पेचुली-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का साग।
पेज-हिं० स्त्री०) रबड़ी, बसौंधी।
पेट-(हिं० पु०) शरीर के भीतर का वह भाग जहाँ पहुँच कर भोजन पचता है, उदर, अन्त:करण, मन, बन्दूक या तोप का गोला भरने का स्थान, किसी पोली वस्तु को भरने का स्थान, समाई, गर्भ, चक्की का भीतरी भाग, जीविका, पचौनी, ओझर; **पेट काटना**-जान बूझ कर कम खाना; **पेट का धन्धा**-जीविका के निर्वाह का उपाय; **पेट का पानी न पचना**-रोक न सकना; **पेट का हलका**-ओछे स्वभाव का, जो गंभीर न हो; **पेट की आग**-भूख; **पेट की बात**-गुप्त वार्ता; **पेट खलाना**-भूखे दिखलाना, दीनता प्रगट करना; **पेट चलना**-बारंबार शौच होना; **पेट जलना**-बड़ी भूख लगना; **पेट देना**-मन की बात कह देना; **पेट पालना**-जीविका चलाना; **पेट फूलना**-किसी बात को जानने के लिये उत्कण्ठित होना; पेट में वायु का भर जाना; **पेट में दाढ़ी होना**-बाल्यावस्था से ही चतुर होना; **पेट में होना**-छिपी तरह से कोई वस्तु किसी के पास में होना; **पेट से पाँव निकलना**-बुरे मार्ग में लगना; **पेट गिरना**-गर्भपात होना; **पेट रहना**-गर्भ रहना; **पेट वाली**-गर्भवती; **पेट से होना**-गर्भवती होना; **पेट में पैठना**-गुप्त वार्ता जानने के लिये घनिष्ठता बढ़ाना; **पेट नें होना**-मन में होना,
पेटक-(सं० पुं०) मंजूषा, पेटारा, समूह, ढेर।
पेटकैया-(हिं०क्रि०वि०) पेट के बल।
पेटल-(हिं०वि०) बड़े पेट वाला, तोंदीला
पेटा-(हिं० पुं०) सीमा, पूरा विवरण, ब्योरा वृत्त, घेरा, किसी पदार्थ का मध्य भाग, बड़ा टोकरा, पशुओं की अँतड़ी, नदी बहने का मार्ग, नदी का पाट।
पेटाक-(सं० पु०) पेटक, पिटारा।
पेटागि-(हिं०स्त्री०) पेट की आग, भूख।
पेटारा-हिं० पु०) देखो पिटारा।
पेटार्थी, पेटार्थू-(हिं०वि०) पेट भरने के लियेसबकुछकरनेवाला,पेटू,भुक्खड़।
पेटिका-(हिं० स्त्री०) छोटी पिटारी,
पेटी-(हिं० क्रि०) छोटा संदूक, चपरास, पेट का वह भाग जहां त्रिवली पड़ती है, छाती और पेडू के बीच का स्थान, कटिबन्ध, चौड़ा तसमा, नाई का कैंची छुरा आदि रखने का थैला, बुलबुल की कमर में बाँधने की डोरी;
पेटी पड़ना-तोंद निकल आना।
पेटू-(हिं०वि०) जो खाता हो, भुक्खड़।
पेठ-(हिं० पुं०) देखो पैठ।
पेठा-(हिं०पु०)कूष्माण्ड सफेद कुम्हड़ा।
पेड़-(हिं० पु०) वृक्ष,
पेड़ना-(हिं० स्त्री०) देखो पेरना।
पेड़ा-(हिं० पुं०) खोवे की बनी हुई गोल चिपटी मिठाई, गुंथे हुए आंटे की लोई।
पेड़ी-(हिं० स्त्री०) काण्ड, पेड़ की धड़, शरीर का ऊपरी भाग, पुराने पौधे में का पान, वह खेत जिसमें पहिले पहिले ऊख बोई गई हो बाद में वह खेत गेहूँ बोने के लिये जोता जावे।
पेड़ू-(हिं०पुं०) गर्भाशय, उपस्थ, नाभि और मूतेन्द्रिय के बीच का स्थान।
पेत्व-(सं० नपुं०) अमृत, घी, बकरा।
पेदड़ी-(हिं० स्त्री०) देखो पिद्दी।
पेन-(हिं० पुं०) लिसोड़े की जाति का एक वृक्ष।
पेन्हाना-(हिं० क्रि०) देखो पहनाना, दूहते समय गाय भैंस आदि के थन में दूध उतरना।
पेपरमिन्ट-(हिं०पुं०) देखो पिपरमिन्ट।
पेम-(हिं० पुं०) देखो प्रेम।
पेमचा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
पेय-(सं० पुं०) जल, दूध, पीने की वस्तु, (वि०) पीने योग्य, जो पिया जा सके।
पेया-(सं० स्त्री०) चावल की बनी हुई एक प्रकार की लपसी।
पेयूष-(सं० पुं०) व्याई हुई गाय का सात दिन के भीतर का दूध, पेउस, अमृत, तुरत का निकाला हुआ घी।
पेरना-(हिं० क्रि०) किसी काम के करने में देर लगाना, रस निकालने के लिये किसी वस्तु को दबाना, कष्ट देना, प्रेरणा करना, चलाना, भेजना, किसी वस्तु को किसी यन्त्र में डाल कर घुमाना।
पेरली-(हिं० स्त्री०) ताण्डव नृत्य का एक भेद।
पेरवा-(हिं०पुं०) कोल्हू मे किसी वस्तु को पेरने वाला।
पेरा-(हिं० पुं०) घर आदि पोतने की पीली मिट्टी।
पेरिस-फ्रांस देश की राजधानी।
पेरी-(हिं० स्त्री०) देखो पियरी।
पेरु-(सं०पुं०) अग्नि, सूर्य, समुद्र।
पेरोज-(सं०नपुं०)फीरोजा नामक रत्न।
पेल-(सं० नपुं०) पुरुष का अण्डकोष।
पेलढ-(हिं० पु०) देखो पेल्हढ।
पेलना-(हिं० क्रि०) धक्का देना, ढकेलना, टालना, बल प्रयोग करना, घुसाना जोर से भीतर को दबाना, गुदा मैथुन करना, त्यागना, हटाना, आक्रमण करने के लिये आगे बढ़ना, ढीलना, देखो पेरना।
पेलव-(सं० वि०) मृदु, कोमल, लघु, विरल, कृश, दुबला पतला, सूक्ष्म।
पेलवाना-(हिं० क्रि०) पेलने का काम दूसरे से कराना।
पेला-(हिं०पु०) आक्रमण,धावा,झगड़ा, अपराध,पेलने की क्रिया या भाव।
पेलि-(सं०वि०) गमनशील,जानेवाला।
पेलिशाला-(सं० स्त्री०) अश्वशाला,
पेलू-(हिं० पु०) उपपति, जार, गुदा भंजन करने वाला।
पेल्हढ़-(हिं० पुं०) अण्डकोष।
पेवँ-(हिं० पु०) प्रेम, स्नेह।
पेवक्कड़-(हिं० पुं०) देखो पियक्कड़।
पेवड़ी-(हिं स्त्री०) रामरज, पीले रंग की बुकनी।
पेवर-(हिं० पुं०) पीला रग।
पेवस-(हिं० पुं०) हाल की ब्याई हुई गाय या भैंस का दूध।
पेवसी-(हिं० स्त्री०) देखो पेवस।
पेशल-(सं० वि०) दक्ष, प्रवीण, चतुर, धूर्त, कोमल, (पुं०) विष्णु। **पेशलता**-(सं० स्त्री०) सुकुमारता, सुन्दरता, धूर्तता। **पेशलत्व**-(सं० नपुं०) देखो पेशलता।
पेशस्कार-(सं०क्रि०) रूप बदलने वाला कीड़ा।
पेशावर-पंजाब के एक जिले तथा नगर का नाम।
पेशि-(सं०स्त्री०)अंडा,अरहर की दाल।
पेशिका-(सं०स्त्री०) अंडा।
पेशी-(सं० स्त्री०) अंडा, वज्र, उड़द की दाल, पकी हुई फूल की कली, जटामासी, तलवारकी म्यान,एक प्रकार का ढोल, गर्भकोष, शरीर के भीतर की मांस की गाँठ, पट्ठा।
पेशीकोष-(सं०पुं०) अण्डकोष।
पेषक-(सं० वि०) पीसने वाला; **पेषण**-(सं०नपुं०)चूर्ण करना,पीसना; **पेषणी**-(सं० स्त्री०) वह सिल जिस पर कोई वस्तु पीसी जावे; **पेषणीय**-(सं०वि०) पीसने योग्य।
पेषना-(हिं०क्रि०) देखो पेखना।
पेस-(हिं० वि०) देखो पेश।
पेसल-(हिं०वि०) देखो पेशल।
पेहँटा-(हिं० स्त्री०) कचरी नामक लता का फल जो कुंदरू के आकार का

होता है।
पैकड़ा-(हिं०पुं०) पैरका कड़ा, ऊंट की नकेल।
पैंग-(हिं० स्त्री०) मोर की पूंछ, धनुष की डोरी।
पैंचना-(हिं० क्रि०) अनाज फटकना, पछोरना।
पैंचा-(हिं०पुं०) पलटा, हेरफेर।
पैंजना-(हिं० पुं०) पैर में पहरने का एक गहना; पैंजनियाँ, पैंजनी-(हिं० स्त्री०) पैर में पहरने का एक गहना जो चलने पर झनझन शब्द करता है, सग्गड़ या बैल के पहिये के आगे की ओर की वह टेढी लकड़ी जिसके छेदमें पहिये या धुरा निकला रहता है।
पैंठ-हिं०स्त्री०) हाट, दूकान, हाट लगने का दिन; पैंठोर-हिं०पुं०) दूकान, हाट
पैंड़-(हिं०पुं०) मार्ग, पगडंडी, पग, डग।
पैंड़ा-(हिं०पुं०) प्रणाली, रीति, मार्ग, पथ, घुड़साल; पैड़े पड़ना-व्यग्र करना।
पैंड़िया-(हिं० पुं०) कोल्हूमें गन्ना भरने वाला।
पैंत-(हिं०स्त्री०) पण, दाँव।
पैंतालिस-(हिं० वि०) चालीस और पाँच की संख्या का, (पुं०) चालीस और पाँच की संख्या ४५।
पैंती-(हिं० स्त्री०) श्राद्धादि कर्म करती समय अंगुलियों में पहिरने का कुश का बना हुआ छल्ला, पवित्री।
पैंतीस-(हिं० वि०) तीस और पाँच की संख्या का, (पुं०) तीस और पाँच की संख्या ३५।
पैयाँ-(हिं०स्त्री०) पांव, पैर।
पैंसठ-(हिं०वि०) साठ और पांच की संख्या का, (पुं०) साठ और पांच की संख्या ६५।
पै-(हिं०पुं०) माड़ी देनेकी क्रिया, (स्त्री०) दोष, ऐब, त्रुटि, (अव्य०) प्रति, ओर, निकट, पास, समीप, परन्तु, पर, अनन्तर, पीछे, निश्चय, (प्रत्य०) अधिकरण सूचक विभक्ति-पर ऊपर, करणसूचक विभक्ति-द्वारा, से; जोपै-यदि; तोपै-तो, फिर।
पैकर-(हिं०पुं०) कपास की रूई इकट्ठा करने वाला।
पैकरमा-(हिं०स्त्री०) देखो परिक्रमा।
पैकरी-(हिं०स्त्री०) पाव में पहिरने का एक गहना।
पैका-(हिं० पुं०) पैसा।
पैकारी-(हिं०पुं०) देखो पैकार।
पैकी-(हिं० पुं०) मेले आदिमें घूम घूम कर तमाखू पिलाने वाला।
पैकेट-(हिं०पुं०) पुलिन्दा, छोटी गठरी।
पैखाना-(हिं०पु०) देखो पायखाना।
पैग-(हिं०पु०) क़दम, डग।
पैङ्गल-(सं०पुं०) पिङ्गल कृत छन्दशास्त्र
पैज-(हिं० स्त्री०) प्रतिज्ञा, पण, टेक, किसी के विरोधमें किया हुआ हठ, (पुं०) पैंतरा।
पैजनी-(हिं०स्त्री०) देखो पैंजनी।
पैजा-(हिं० पुं०) किवाड़ के छेद में पहिराया हुआ लोहेका कड़ा, पायना।
पैजामा-(हिं०पुं०) देखो पायजामा।
पैजावा-(हिं०पुं०) ईंट पकानेका स्थान
पैठ-(हिं०स्त्री०) प्रवेश, घुसने का काम, पहुंच, गति, आना जाना; पैठाना-(हिं०क्रि०) प्रवेश कराना, घुसाना;
पैठार-(हिं० पु०) प्रवेश, पैठ, प्रवेश द्वार; पैठारी-(हिं० स्त्री०) प्रवेश, पैठ, गति, पहुंच।
पैठी-(हिं०स्त्री०) बदला।
पैड़ी-(हिं० स्त्री०) सीढ़ी, पुरवट खींचते समय बैलों के चलने के लिये बना हुआ ढालुआ मार्ग, पौदर।
पैतरा-(हिं० पु०) मल्ल युद्ध में अथवा तलवार चलाती समय घूम फिर कर पैर रखने की मुद्रा, धूल पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न।
पैतरी-(हिं० स्त्री०) रेशम की परेती।
पैतला-(हिं०वि०) छिछला, कम गहरा।
पैताना-(हिं०पुं०) देखो पायताना।
पैतामह-(सं०वि०) पितामह सम्बन्धी।
पैतृक-(सं० वि०) पितृसम्बन्धी; पैतृक भूमि-जिस स्थान में बापदादे बसे रहे हों।
पैत्त-(सं०वि०) पित्तज, पित्त से उत्पन्न, पित्त सम्बन्धी।
पैत्तल-(सं०वि०) पीतल सम्बन्धी।
पैत्तिक-(सं० वि०) पित्त से उत्पन्न, पित्त सम्बन्धी।
पैत्र्य-(सं०वि०) पितृ सम्बन्धी।
पैथला-(हिं०वि०) छिछला, उथला।
पैदर-(हिं०पुं०) देखो पैदल।
पैदल-(हिं० पुं०) पदाति, पैदल सिपाही, पाँव पांव चलना, (वि०) पाँव पाँव चलने वाला, (क्रि०वि०) पांव पांव, पैदल।
पैदावारी-(हिं०स्त्री०) उत्पत्ति।
पैन-(हिं०पुं०) छोटा नाला, नाली, परनाली
पैना-(हिं०पुं०) हलवाहों की बैल हाँकने की छोटी छड़ी, लोहे की नुकीली छड़, अंकुश, धातु गलाने का मसाला, (वि०) तीक्ष्ण, धारदार, चोखा।
पैनाक-(सं०वि०) पिनाक सम्बन्धी।
पैनाना-(हिं०क्रि०) छुरी आदि की धार चोखी करना।
पैन्हना-(हिं०क्रि०) देखो पहनना।
पैमक-(हिं०स्त्री०) कलाबत्तू की बनी हुई एक पकार की सुनहली गोंट।
पैमाल-(हिं०वि०) नष्ट।
पैयाँ-(हिं०स्त्री०) पैर, पाँव।
पैया-(हिं०पुं०) पोला दाना, बिना सत्त का अन्न का दाना, दीन हीन, खुक्ख।
पैर-(हिं०पु०) गति साधक अंग, चरण, पाँव धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न, खलिहान, डंठल सहित अन्न का अटाला, प्रदर रोग; पैर उठान-(हिं०पुं०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति; पैरगाड़ी-(हिं० स्त्री०) वह हलकी गाड़ी जो बैठे बैठे पैर घुमाने से चलती है, यथा बाइसिकल।
पैरना-(हिं० क्रि०) पानी के ऊपर हाथ पैर चलाते हुए जाना, तैरना।
पैरा-(हिं०पुं०) पड़े हुए चरण, आया हुआ पग, पैर में पहिरने का एक प्रकार का कड़ा, बाट, बटखरे रखने का लकड़ी का खाना, ऊंची भूमि पर चढ़ने के लिये बरके रख कर बना हुआ मार्ग।
पैराई-(हिं०स्त्री०) तैरनेकी क्रिया, तैरने की कला।
पैराक-(हिं०पुं०) तैरने वाला, तैराक।
पैराना-(हिं०क्रि०) तैरानेका काम कराना
पैराव-(हिं० पुं०) डुबाव, इतना गहरा पानी जो तैर कर ही पार किया जा सकता है।
पैरी-(हिं०पुं०) पैर में पहिरने का एक चौड़ा गहना, दवाँई, सूखे पौधों पर बैल चलाकर दाना अलगानेका कार्य, बाल कतरने का काम।
पैरेखना-(हिं०क्रि०) देखो परेखना।
पैरोकार-(हिं० पुं०) आज्ञानुसार काम करने वाला।
पैलगी-(हिं०स्त्री०) पालागन, प्रणाम।
पैला-(हिं०पुं०) अन्न नापनेकी डलिया, दूध दही ढापने का मिट्टी का पात्र।
पैली-(हिं०स्त्री०) देखो पैला।
पैशलय-(सं०नपुं०) पेशलता, कोमलता।
पैशाच-(सं०वि०) पिशाच सम्बन्धी; पैशाच विवाह-आठ प्रकारके विवाहों मे से वह विवाह जो सोई हुई कन्या को हरण करके अथवा मदोन्मत्त कन्या को फुसला कर उसके साथ विवाह किया जाता है; पैशाचिक-(सं०वि०) पिशाच सम्बन्धी, राक्षसी, बीभत्स; पैशाची-(सं०स्त्री०) प्राकृतिक भाषा का एक भेद।
पैशुन-(सं०नपुं०) पिशुनता, चुगुलखोरी; पैशुनिक-(सं० वि०) पीठ पीछे निन्दा करने वाला, चुगुलखोर; पैशुन्य-(सं०नपुं०) पिशुनता।
पैष्टिक-(सं०नपुं०) अन्नों को सड़ा कर बनी हुई मदिरा।
पैसना-हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना, पैठना।
पैसरा-(हिं०पुं०) व्यापार, प्रयत्न, झंझट, बखेड़ा।
पैसा-(हिं० पुं०) तीन पाई अथवा पाव आने के मूल्यका ताँबेकी मुद्रा, धन।
पैसार-(हिं०पु०) प्रवेश द्वार, भीतर का मार्ग।
पैसिंजर गाड़ी-(हिं०स्त्री०) यात्रियों को ले जाने वाली रेलगाड़ी।
पैसे वाला-(हिं०पुं०) धनी, धनवान्।
पैहरा-(हिं०पुं०) पैकार, बनिया।
पैहारी-(हिं० वि०) केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।
पों-(हिं०स्त्री०) अधोवायु निकलने का शब्द, भोंपा फूंकने से निकला हुआ शब्द।
पोंकना-(हिं०क्रि०) बहुत डरना, पतला शौच होना।
पोंका-(हिं०पुं०) वह फतिंगा जो पौधों पर उड़ता फिरता है।
पोंगरा-(हिं०पुं०) टीन आदि की नली, चोंगा बांस की पोर या नली, (वि०) पोला खोखला, मूर्ख। पोंगी-(हिं०स्त्री०) छोटी पोली नली, बाँस या ऊख का दो गाँठों के बीच का स्थान।
पोंछ-(हिं०स्त्री०) देखो पूंछ।
पोंछन-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का पोंछ कर निकाला हुआ अंश। पोंछना-(हिं० क्रि०) किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु को कपड़े आदि से हटाना, रगड़ कर स्वच्छ करना, काछना, (पुं०) पोंछने का कपड़ा।
पोंटा-(हिं०पुं०) नाक से निकला हुआ मल।
पोआ-(हिं०पुं०) साँप का छोटा बच्चा;
पोआना-(हिं० क्रि०) पोने का काम दूसरे से कराना, आँटे की लोई को बेलकर सेंकने के लिये देना।
पोइयाँ-(हिं० स्त्री०) घोड़े का दो दो पैर फेंक कर दौड़ना, घोड़े की सरपट चाल।
पोइस-(हिं० स्त्री०) घोड़े की सरपट चाल, (अव्य०) देखो, हटो बचो।
पोई-(हिं०स्त्री०) एक लता जिसकी पत्तियों का साग खाया जाता हैं, अंकुर, गेहूँ आदि का छोटा पौधा, ऊख की आँख या पोर।
पोकना-(हिं०पुं०) महुए का पका हुआ फल।
पोकल-(हिं०वि०) निःसार, पुलपुला, पोला, खोखला, तत्वहीन।
पोख-(हिं०पुं०) पालने पोसने का संबंध, पोस।
पोखनरी-(हिं०स्त्री०) जुलाहे की ढरकी के बीच का गड्ढा।
पोखना-(हिं० क्रि०) पालना, पोसना, थलकना, सोखना।
पोखर-(हिं०पुं०) तालाब, पोखरा।
पोखरा-(हिं० पुं०) खोद कर बनाया हुआ तालाब।
पोखराज-(हिं०पुं०) देखो पुखराज।
पोखरी-(हिं० स्त्री०) छोटा पोखरा या ताल।
पोगण्ड-(सं० पुं०) पांच वर्ष से लेकर दस वर्ष तक की अवस्था का बालक, वह मनुष्य जिसका कोई अंग छोटा बड़ा या अधिक हो।
पोच-(हिं० वि०) क्षीण, हीन, तुच्छ, नीच, क्षुद्र।
पोचारा-(हिं०पुं०) देखो पुचारा।
पोची-(हिं०स्त्री०) निचाई, हेठापन, बुराई
पोचना-(हिं०क्रि०) देखो पोछना।
पोट-(सं० पुं०) स्पर्श, मेल, मिलान; (हिं०स्त्री०) मोटरी, पोटली, बगुचा, ढेर, पुस्तक के पन्ने का वह स्थान जहां सिलाई होती है।

पोटगल-(सं०पुं०) नरकट, कांस, एक प्रकार का सर्प।
पोटना-(हिं०क्रि०) फुसलाना, बातों में लाना, समेटना, बटोरना।
पोटरी-(हिं०स्त्री०)देखो पोटली। **पोटला** (हिं०पु०) बड़ी गठरी।
पोटली-(हिं० स्त्री०) छोटी गठरी या बगचा।
पोटा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसमें पुरुष के लक्षण हों; दासी-(हिं०पुं०) पेट की थैली, सामर्थ्य, समाई, चिड़िया का बच्चा, गेदा, नाक का मल, आँख की पलक, अंगुली का छोर।
पोट्टलिका, पोट्टली-(सं०स्त्री०) पोटरी, छोटी गठरी।
पोड़-(सं०पुं०) खोपड़ी का ऊपर का भाग।
पोढ़ा-(हिं० वि०) दृढ़, पुष्ट, कठोर, कड़ा। **पोढ़ाना**-(हिं०क्रि०)पुष्ट करना पक्का करना या होना, पुष्ट होना।
पोत-(सं०पुं०) नाव, जहाज, घर की नीव, वस्त्र, दस बरस का हाथी, छोटा पौधा, पशु आदि का छोटा बच्चा।
पोत-(हिं०स्त्री०) माला या गुरिया का का दाना, काँच की गुरिया, (पुं०) प्रवृत्ति, ढंग, अवसर, दाँव, भूमि कर जो किसान देता है।
पोतक-(सं०पुं०)तीन महिने का बच्चा, एक नाग का नाम।
पोतकी-(सं०स्त्री०)पोई नाम का लता।
पोतज-(सं०पुं०) घोड़े हाथी आदि का वह बच्चा जो खेड़ी सहित उत्पन्न हो;
पोतड़ा-(हिं०पुं०) बच्चों के चूतड़ के नीचे रखने का वस्त्र, गंतरा।
पोतदार-(हिं०पुं०) कोषाध्यक्ष जिसके पास लगान का रुपया रक्खा जावे, कोष में रुपयों का परखने वाला।
पोतधारी-(सं०पुं०)जहाज़ का अध्यक्ष।
पोतन-(हिं०पुं०) स्वच्छ, पवित्र, (क्रि०) पवित्र करने वाला।
पोतनहार-(हिं०स्त्री०) वह पात्र जिसमें पोतने के लिये मिट्टी घोल कर रक्खी हो, घर पोतने वाली स्त्री, औंत, अंतड़ी।
पोतना-(हिं०क्रि०)किसी गीले पदार्थ को दूसरे पदार्थ पर फैला कर लगाना, चुपड़ना, गोबर, मिट्टी चूने आदि से किसी स्थान को लीपना,(पुं०) पोतने का कपड़ा।
पोतनायक-(सं०पुं०) जहाज का अधिकारी, नाव का मांझी। **पोतभङ्ग**-(सं०पुं०) जहाज़ का टक्कर खाकर नष्ट होना। **पोतरक्ष**-(सं०पुं०) नाव चलाने का डाड़ा या लग्गी।
पोतला-(हिं०पुं०) तवे पर घी लगाकर सेकी हुई चपाती, परांठा।
पोतवाह-(सं०पुं०) मल्लाह, मांझी।
पोता-(हिं० पुं०) पौत्र, बेटे का बेटा, पवित्र वायु, विष्णु, घुली हुई मिट्टी जो भीत आदि पर पोती जाती है, पोतने का कपड़ा, अंडकोष।
पोताच्छादन-(सं०नपुं०) तम्बू डेरा।
पोताण्ड-(सं०पुं०) घोड़े के अण्डकोष का एक रोग।
पोतारा-(हिं०पुं०) देखो पुतारा।
पोतारी-(हिं०स्त्री०)पोतने का कपड़ा।
पोताश्रय-(सं०पुं०) बन्दरगाह।
पोतास-(सं०पुं०) भीमसेनी कपूर।
पोतिका-(सं० स्त्री०) पोई की लता, वस्त्र, कपड़ा।
पोतिया-(हिं०पुं०)सुरती, चूना सुपारी आदि रखने की छोटी थैली, एक प्रकार का खिलौना।
पोती-(हिं०स्त्री०) पौत्री, पुत्र की बेटी, रेशमी कपड़े पर माड़ी चढ़ाने की क्रिया, मिट्टी का लेप जो हंडिये की पेंदी में किया जाता है।
पोत्र-(सं० नपुं०) हल की फार, वज्र, जहाज, नाव।
पोत्रायुध-(सं०पुं०) शूकर, सुअर।
पोथकी-(सं०स्त्री०)छोटे बच्चों की आँख का एक रोग। **पोथा**-(हिं० पुं०) कागजों की गड्डी, बड़े आकार की पोथी। **पोथी**-(हिं०स्त्री०) पुस्तिका, किताब।
पोदना-(हिं०पु०) छोटे डीलडौल का पुरुष, नाटा या ठेंगना आदमी, एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
पोद्दार-(हिं०पु०) देखो पोतदार।
पोना-(हिं०क्रि०) गीले आँटे की लोई को हाथों में घुमाकर रोटी बनाना, पिरोना, गूथना, पकाना।
पोपला-(हिं०वि०) सिकुड़ा हुआ, पचका हुआ, बिना दाँत का, जिसके मुख में दाँत न हों। **पोपलाना**-(हिं०क्रि०) पोपला होना। **पोपली**-(हिं०स्त्री०) आम की गुठली को घिसकर बनाया हुआ बच्चों का बाजा।
पोय-(हिं०स्त्री०) देखो पोई।
पोया-(हिं०पुं०)नरम छोटा पौधा, बच्चा, सांप का छोटा बच्चा।
पोयाबोई-(हिं०स्त्री०) कपट वार्ता।
पोर-(हिं० स्त्री०)अंगुली की गाँठ या जोड़, दो गांठों के बीच का अगुली का भाग, रीढ, पीठ, ऊख, बांस आदि का वह भाग जो दो गांठों के बीच में हो।
पोरा-(हिं०स्त्री०)लकड़ी का मण्डलाकार टुकड़ा, लकड़ी का गोल कुन्दा, कुन्दे की तरह मोटा मनुष्य।
पोरिया-(हिं०स्त्री०) छल्ले के आकार का वह गहना जो हाथ या पैर के पोरों पर पहना जाता है।
पोरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कड़ी मिट्टी।
पोर्तुगीज-देखो पुर्तगीज़।
पोल-(सं०वि०) प्रभाव युक्त, (पुं०) एक प्रकार का फुलका, नाभि के नीचे का भाग, (हिं०पुं०) अवकाश, शून्य स्थान, सारहीनता खोखलापन, प्रवेश द्वार, आँगन; **पोल खोलना**-गुप्त बात अथवा किसी के दोष को प्रकट करना
पोलच-(हिं०पुं०)वह ऊसर भूमि जिसको जोते हुए तीन बरस हो गये हों।
पोला-(हिं०वि०) जो भीतर से भरा न हो, पुलपुला, खोखला, निःसार, तत्वरहित,(पुं०)एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और मृदु होती है।
पोलाद-(हिं०पुं०) पक्का लोहा।
पोलारी-(हिं०स्त्री०) सोनार का छेनी के आकार का एक छोटा अस्त्र।
पोलाव-(हिं०पु०) देखो पुलाव।
पोलिका-(सं०स्त्री०)एक प्रकारकी चपाती
पोलिन्द-(सं०पुं०) नाव में यात्रियों के बैठने की दोनों ओर की पटरी।
पोलिया-(हिं०स्त्री०) पैर में पहिरने का एक पोला गहना।
पोली-(सं०स्त्री०) पतली रोटी,(हिं०स्त्री०) जंगली कुसुम।
पोष-(सं० पुं०) पालन पोषण, वृद्धि, बढ़ती, सन्तोष, तृप्ति, उन्नति, धन।
पोषक-(सं०वि०) पालक, पालने वाला, बढ़ाने वाला, सहायता देनेवाला।
पोषण-(सं०नपुं०)पुष्टि, पालन, बढ़ती, सहायता।
पोषध-(हिं०पुं०) उपवास व्रत।
पोषधोषित-(सं०वि०)उपवास किया हुआ।
पोषना-(हिं०क्रि०) पालना।
पोषयिष्णु-(सं०वि०)पोषक, पालनेवाला,
पोषित-(सं०वि०)पाला हुआ।
पोष्य-(सं०वि०) पोषणीय, पालने योग्य, (पुं०)भृत्य, सेवक, नौकर;
पोष्यपुत्र-पुत्र के समान पाला हुआ लड़का, दत्तक पुत्र, पालट।
पोस-(हिं०पुं०) पालने वाले के साथ प्रेम। **पोसन**-(हिं०पुं०)रक्षा, पालन;
पोसना-(हिं०क्रि०)रक्षा करना, पालना, अपनी रक्षा में रखना।
पोहना-(हिं० क्रि०) पिरोना, गूंथना, घिसना, पीसना, घुसाना, धँसाना, जड़ना, छेदना, पोतना, (वि०) घुसने वाला।
पोहर-(हिं० पुं०) पशुओं के चरने का स्थान, चरहा, पशुओं का चारा।
पोहमी-(हिं०स्त्री०) देखो पुहमी।
पोहा-(हिं०पुं०) पशु, चौपाया।
पोहिया-(हिं०पुं०) चरवाहा।
पौंचा-(हिं०पुं०)साढ़े पांच का पहाड़ा।
पौंड़ई-(हिं० वि०) गन्ने के रंग का।
पौंड़ा-(हिं० पुं०) एक प्रकार की बड़ी और मोटी जाति की ऊख जिसका छिलका कड़ा होता है परन्तु रस बहुत मीठा होता है।
पौंड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पौरी।
पौंढ़ना, पौरना-(हिं०क्रि०) तैरना।
पौंरि-(हिं०स्त्री०) देखो पौरी।
पौंरिया-(हिं०पुं०) देखो पौरिया।
पौंश्चल्य-(सं०नपुं०) पुरुष और स्त्री का छिपकर व्यभिचार।
पौंसवन-(सं०नपुं०) पुंसवन संस्कार।
पौ-(हिं०स्त्री०) पौसला, प्याऊ, ज्योति, किरण, पासे की एक चाल या दाँव, (पुं०) पैर, जड़; **पौ फटना**-प्रातः काल होना; **पौ बारह होना**-जीत का दांव पड़ना, बन पड़ना, लाभ होना।
पौआ-(हिं०पुं०) देखो पौवा।
पौगण्ड-(सं०नपुं०) पांच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था।
पौठ-(हिं० स्त्री०) जोत की वह रीति जिसके अनुसार जोतने का अधिकार प्रतिवर्ष बदलता जाता है।
पौढ़ना-(हिं० क्रि०) लेटना, सोना, आगे पीछे हिलाना। **पौढ़ाना**-(हिं० क्रि०) इधर उधर हिलाना, झुलाना, लेटाना, सुलाना।
पौण्डरीक-(सं०नपुं०) एक प्रकार का यज्ञ, स्थल कमल।
पौण्ड्र, पौण्ड्रक-(सं०पुं०) मोटा गन्ना पौढा, भीमसेन के एक शंख का नाम. पुड्र देश का राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था, एक प्राचीन पतित जाति।
पौण्य-(स० वि०) पुण्य कर्मकारक।
पौताना-(हिं०पुं०) देखो पैताना।
पौत्तलिक-(सं०वि०) पुतली संबन्धी।
पौत्र-(सं० पुं०) पुत्र का पुत्र, पोता।
पौत्रिकेय-(सं०पुं०) लड़की का लड़का, (नाती), जो अपने नाना की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होना।
पौत्री-(सं०स्त्री०) पुत्र की बेटी, पोती।
पौद-(हिं० स्त्री०) छोटा पौधा, नया निकला हुआ पेड़, वह छोटा पौधा जो एक स्थान से निकल कर दूसरे स्थान में लगाया जा सके, सन्तान, वंश, बड़े लोगों के चलने के लिये भूमि पर बिछाया हुआ वस्त्र, पावड़ी।
पौदर-(हिं० स्त्री०) पैर का चिह्न, पगडंडी, वह ढालुआ मार्ग जिसपर से बैल कुवें से पुरवट खींचते हैं।
पौधा-(हिं० पुं०) देखो पौधा; छोटा वृक्ष।
पौधन-(हिं० स्त्री०) वह पात्र जिसमें रखकर खाना परोसा जाता है।
पौधा-(हिं०पुं०) नया निकलता हुआ पेड़, छोटा पेड़, क्षुप, गुल्म आदि।
पौधि-(हिं० स्त्री०) देखो पौद।
पौनः पुनिक-(सं० नपुं०) गणित में दशमलव के अंक जो बारंबार आते हैं।
पौनरुक्त-(सं०वि०) वारंबार कहना।
पौनर्णव-(सं०पुं०) सन्निपात ज्वर का एक भेद।
पौनर्भव-(सं० पुं०) वह पुत्र जो उस स्त्री से उत्पन्न हो जो विधवा होने पर अथवा पति से छोड़ी जाने पर अपनी इच्छा से दूसरे से विवाह कर ले। **पौनर्भवा**-(सं०स्त्री०) वह कन्या जिसका किसी के साथ एक बार विवाह हो चुका हो और दूसरी

वार दूसरे के साथ विवाह किया जावे

पौन-(हिं० पुं०) देखो पवन, वायु, हवा; (वि०) तीन चौथाई भाग।

पौना-(हिं०पुं०) पौन का पहाड़ा; लोहे की बड़ी करछी या झरनी।

पौनार, पौनारि-(हिं०स्त्री०) कमल के फूल की डंडी।

पौनी-(हिं० स्त्री०) नाऊ, वारी, धोबी आदि जो विवहादि उत्सवों पर धन पाते हैं, छोटा पौना।

पौने-(हिं० वि०) किसी संख्या का तीन चौथाई।

पौमान-(हिं०पुं०) जलाशय, पोखरा।

पौर-(सं० स्त्री०) रोहिष नाम की घास, नखी नामक गन्धद्रव्य, (वि०) नगर संबंधी, नगर में उत्पन्न पूर्व दिशा का।

पौरक-(सं० पुं०) घर के बाहर का बगीचा।

पौरजन-(सं०पुं०) नगर में रहने वाला।

पौरन्दर-(सं०वि०) इन्द्र संबंधी, (स्त्री०) ज्येष्ठा नक्षत्र।

पौरव-(सं०पुं०) पुरुवंश, पुरु देश का निवासी, (वि०) पुरु के वंश का।

पौरवी-(सं०स्त्री०) युधिष्ठिर की एक स्त्री का नाम, संगीत में एक मूर्छना।

पौरसख्य-(सं० पुं०) वह मैत्री जो एक नगर या ग्राम में रहने से परस्पर होती है। **पौरस्त्री**-(सं०स्त्री०) अन्तःपुर में रहने वाली स्त्री।

पौरा-(हिं०पुं०) पड़े हुए चरण।

पौराण-(सं० वि०) पुराण में लिखा या कहा हुआ, पुराण सम्बन्धी; **पौराणिक**-(सं० स्त्री०) पुराणवेत्ता पुराणपाठी, प्राचीन काल का अठारह मात्रा के छन्दों की संख्या।

पौरि-(हिं०स्त्री०) देखो पौरी।

पौरिया-(हिं०पुं०) द्वारपाल डयोढीदार

पौरी-(हिं०स्त्री०) ड्योढी, सीढी, खड़ाऊ

पौरुष-(सं० नपुं०) पुरुषत्व, पराक्रम, साहस, उद्यम, उद्योग, गहराई या ऊँचाई की एक नाप, पुरुसा, (वि०) पुरुष संबंधी। **पौरुषिक**-(सं०वि०) पुरुष संबंधी। **पौरुषेय**-(सं०पुं०) जन समुदाय, पुरुष का कर्म, (वि०) आदमी का किया हुआ, आध्यात्मिक। **पौरुष्य**-(सं०नपुं०) पुरुषता, साहस। **पौरुहूत**-(सं०पुं०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र।

पौरू-(हिं०पुं०) मिट्टी का एक भेद।

पौरोहित-(सं० नपुं०) पुरोहित का धर्म या कार्य। **पौरोहित्य**-(सं०नपुं०) पुरोहित का कर्म, पुरोहिताई।

पौर्णमास-(सं० पुं०) पौर्णमासी के दिन होने वाला एकयज्ञ। **पौर्णमासिक**-(सं०वि०) पौर्णमा संबंधी। **पौर्णमासी**-(सं० स्त्री०) पूर्णमासी।

पौर्वदैहिक-(सं०वि०) पूर्व देह संबंधी।

पौर्वापर्य-(सं०नपुं०) अनुक्रमण।

पौल-(हिं०स्त्री०) मार्ग।

पौलना-(हिं० क्रि०) कहना।

पौलस्ती-(सं०स्त्री०) पुलस्य की कन्या, सूर्पनखा।

पौलस्त्य-(सं०पुं०) पुलस्त्य का पुत्र या उनके वंश का पुरुष, रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण, चन्द्रमा।

पौला-(हिं०पुं०) बिना खूटी का खड़ाऊं जिसमें छेद में फंसी हुई रस्सी से अंगूठा फँसा रहता है।

पौलि-(हिं०स्त्री०) पोलिका, फुलका, रोटी

पौलिया-(हिं०पुं०) देखो पौरिया।

पौली-(हिं०स्त्री०) पौरी, ड्योढी, पैर को एँडी से लेकर अंगुलियों तक का भाग, धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न।

पौलोमी-(सं० स्त्री०) इन्द्राणी, भृगु ऋषि की पत्नी का नाम।

पौवा-(हिं०पुं०) एक सेर का चौथाई अंश, पाव भर दूध, पानी आदि अटने योग्य पात्र।

पौष-(सं०पुं०) बारह महीनों के अन्तर्गत नवाँ महीना, जिस महीने की पुनवासी पुष्य नक्षत्र में हो, पूस का महीना।

पौष्कर-(सं०नपुं०) पुष्करमूल, भसीड़, स्थलपद्म, रेंडी की जड़। **पौष्करिणी**-(सं०स्त्री०) छोटा पोखरा या तालाब।

पौष्कल्य-(सं०नपुं०) सम्पूर्णता।

पौष्टिक-(सं०वि०) पुष्टि करने वाला, बल वीर्य को बढ़ाने वाला।

पौष्प-(सं०वि०) पुष्प संबंधी, फूल का बना हुआ।

पौसरा, पौसला-(हिं०स्त्री०) प्यासों को पानी पिलाने का स्थान अथवा प्रबन्ध

पौसार-(हिं०स्त्री०) जुलाहे का राछ को ऊंचा नीचा करनेके लिये लगा हुआ डंडा।

पौसेरा-(हिं०पुं०) पाव सेर की तौल।

पौहारी-(हिं०पुं०) वह जो केवल दूध पीकर रहता है अन्नआदि न खाता हो

प्याऊ-(हिं०पुं०) पौसरा, पौसला।

प्याना-(हिं०क्रि०) पिलाना।

प्यार-(हिं०पुं०) प्रेम, स्नेह, प्रेम दिखलाने का कार्य यथा आलिंगन, चुम्बन आदि, पियार नाम का वृक्ष जिसका बीज चिरौजी कहलाता है। **प्यारा**-(हिं०वि०) प्रीतिपात्र, जिसको प्यार करे, जो अच्छा लगे, जो छोड़ा न जाय

प्यावना-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना।

प्यास-(हिं०स्त्री०) जल पीने की इच्छा, तृष्णा, तृषा, पिपासा, किसी पदार्थ को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा, प्रबल कामना; **खून का प्यासा**-हत्या करने के लिये उद्यत। **प्यासा**-(हिं० वि०) जिसको प्यास लगी हो, जो पानी पीना चाहता हो।

प्युष-(सं०नपुं०) विभाग, दाह।

प्यूनी-(हिं०स्त्री०) सूत कातने की रूई की बत्ती।

प्यूस-(हिं०पुं०) देखो पेवस।

प्यो-(हिं०पुं०) पति, स्वामी।

प्योरी-(हिं०स्त्री०) रुई की मोटी बत्ती, एक प्रकार का पीला रंग।

प्योसर-(हिं०पुं०) हाल की ब्याई हुई गाय का दूध।

प्योसार-(हिं०पुं०) स्त्री के पिता माता का घर, पीहर, मायका।

प्र-(सं०अव्य०) एक संस्कृत का उपसर्ग जो गति, उत्कर्ष, उत्पत्ति, आरंभ, ख्याति तथा व्यवहार अर्थ के लिये प्रयोग किया जाता है।

प्रउग-(सं०नपुं०) एक प्रकार का शस्त्र

प्रकच-(सं०वि०) जिसके रोंगटे खड़े हों।

प्रकट-(सं०वि०) स्पष्ट, व्यक्त, जो प्रत्यक्ष हुआ हो, आविर्भूत, उत्पन्न। **प्रकटन**-(सं०नपुं०) प्रकट होनेकी क्रिया, **प्रकटित**-(सं० वि०) जो प्रकट हुआ हो, प्रकाशित।

प्रकथन-(सं०नपुं०) स्पष्ट रूप से कथन

प्रकम्प-(सं० नपुं०) कँपकँपी, थरथराहट; **प्रकम्पन**-(सं०पुं०) वायु हवा, एक नरक का नाम, एक राक्षस का काम (नपुं०) कम्प, बड़ी थरथराहट; **प्रकम्पमान**-(सं० वि०) वेग से थरथराता हुआ; **प्रकम्पित**-(सं०वि०) कम्पनयुक्त।

प्रकर-(सं० नपुं०) समूह, खिला हुआ फूल, अधिकार, सहारा, (वि०) बहुत काम करने वाला।

प्रकरण-(सं० नपुं०) प्रस्ताव, वृत्तान्त, प्रसंग का विषय, किसी ग्रन्थ का एक छोटा विभाग, दृष्ट काव्य के अन्तर्गत रूपक के दस भेदों में से एक; **प्रकरणी**-(सं०स्त्री०) श्रृंगार रस प्रधान कोई छोटा नाटक जिसको नाटिका भी कहते हैं।

प्रकरी-(सं० स्त्री०) नाटक के प्रयोजन सिद्धि के पांच साधनों में से एक, इसमें किसी एक देशव्यापी चरित्र का वर्णन होता है, एक प्रकार का गान।

प्रकर्तव्य-(सं०वि०) अवश्य करने योग्य।

प्रकर्ता-(सं०वि०) अच्छी तरह से काम करने वाला।

प्रकर्ष-(सं० पुं०) उत्तमता, अधिकता, बहुतायत; **प्रकर्षक**-(सं० पुं०) उत्तमता से करने वाला; **प्रकर्षण**-(सं०नपुं०) आधिक्य, अधिकता।

प्रकला-(सं० स्त्री०) एक कला का साठवां भाग।

प्रकल्पना-(हिं०क्रि०) निश्चित करना, स्थिर करना; **प्रकल्पित**-(सं०वि०) निश्चित किया हुआ।

प्रकश-(सं० पुं०) पीड़ा देना, कोड़े की मार।

प्रकाण्ड-(सं०पुं०) वृक्ष का तना, शाखा, (वि०) बहुत विस्तृत, बहुत फैला हुआ, बहुत बड़ा।

प्रकाम-(सं०वि०) यथेष्ट, (पुं०) कामना इच्छा।

प्रकार-(सं० पुं०) सादृश्य, समानता, भेद, भाँति, तरह, (हिं० स्त्री०) प्रकार, परकोटा, घेरा।

प्रकारता-(सं०स्त्री०) विषय का भेद;

प्रकारान्त-(सं०पुं०) अन्य प्रकार, दूसरी तरह।

प्रकाश-(सं० पुं०) वह जिसके द्वारा नेत्रों को वस्तुओं के रूप, रंग आकार आदि का ज्ञान होता है, दीप्ति, आभा, धूप, ज्योति, स्पष्ट रूप से समझ में आना, गोचर होना, विस्तर, विकास, प्रसिद्धि, ख्याति, किसी ग्रन्थ या पुस्तक का विभाग, शिव, महादेव, वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम, (वि०) प्रकाशित, जगमगाता हुआ, प्रत्यक्ष, अति प्रसिद्ध; **प्रकाशक**-(सं० वि०) प्रकट करने वाला, (पुं०) सूर्य, शिव, महादेव; **प्रकाशकार**-(हि० पुं०) देखो प्रकाशक;

प्रकाशता-(सं०स्त्री०) प्रकाश का भाव या धर्म, प्रकाशत्व; **प्रकाशधर्म**-(सं०पुं०) सूर्य; **प्रकाशधृष्ट**-(सं०पुं०) वह नायक जो प्रकट रूप से नायिका के साथ धृष्टता का व्यवहार करता है तथा किसी प्रकार का संकोच नहीं करता; **प्रकाशन**-(सं० पुं०) विष्णु का एक नाम, प्रकाशित करने का काम, किसी ग्रन्थ को छापकर सर्वसाधारण में प्रचलित करने का काम; **प्रकाशमान**-(सं०वि०) प्रकाशयुक्त, चमकीला, प्रसिद्ध, विख्यात; **प्रकाशवान**-(हिं० वि०) देखो प्रकाशमान; **प्रकाशवियोग**-(सं० पुं०) वह वियोग जो गुप्त न रहे सबको विदित हो जावे; **प्रकाशसंयोग**-(सं०पुं०) वह संयोग जो सबको विदित हो जावे; **प्रकाशात्मा**-(सं०पुं०) सूर्य, विष्णु, (वि०) व्यक्त स्वभाव वाला; **प्रकाशित**-(सं० वि०) जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो, चमकता हुआ, जो प्रकाश में आ चुका हो, शोभित, प्रकट।

प्रकाशिता-(सं०स्त्री०) प्रकाश का भाव या धर्म; **प्रकाशी**-(सं०वि०) प्रकाशयुक्त, जिसमें प्रकाश हो; **प्रकाश्य**-(सं०वि०) प्रकाशनीय, प्रकाश करने योग्य, (हिं०क्रि०वि०) प्रकट रूप से, स्पष्ट रूप से।

प्रकास-(हिं०पुं०) देखो प्रकाश; **प्रकासना**-(हिं०क्रि०) प्रकट करना।

प्रकीर्ण-(सं० वि०) छितराया हुआ, फैलाया हुआ, मिलाया हुआ, अनेक प्रकार का, भिन्न जाति का; **प्रकीर्णक**-(सं० नपुं०) अध्याय, प्रकरण, विस्तार, वह जिसमें विभिन्न वस्तु मिली हों, फुटकर, पदार्थ, घोड़ा।

प्रकीर्णकेशी-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।

प्रकीर्तन-(सं० नपुं०) उच्च स्वर से

चिल्लाकर कीर्तन करना, घोषणा करना।

प्रकीर्ति-(सं०स्त्री०) प्रशसा, प्रसिद्धि, घोषणा; **प्रकीर्तित**-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।

प्रकुपित-(सं० वि०) अतिक्रुद्ध, जिसका क्रोध बहुत बढ़ गया हो।

प्रकुल-(सं० नपु०) प्रशस्त देह, सुन्दर शरीर।

प्रकृत-(सं० वि०) अधिकृत, आरंभ किया हुआ, निमित, रचा हुआ, यथार्थ, वास्तविक, सच्चा, विकार रहित, श्लेष अलंकार का एक भेद;

प्रकृतता-(सं०स्त्री०) यथार्थ्य।

प्रकृति-(सं०स्त्री०)स्वभाव, किसी पदार्थ का गुण जो सर्वदा बना रहता हो, लिंग, योनि, संसार का निर्माण करने वाली मूल शक्ति, आकाशादि पांचो तत्व, शक्ति, परमात्मा, जन्तु, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में इक्कीस अक्षर होते हैं, माता, भगवान् की माया शक्ति, सत्त्व, रज, और तम की साम्यावस्था; **प्रकृतिज**-(सं० वि०) जो प्रकृति या स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो; **प्रकृतिपुरुष**-(सं० पुं०) प्रधान पुरुष; **प्रकृतिभाव**-(सं० पुं०) स्वभाव, व्याकरण में सन्धि का वह नियम जिसमें दो पदों के मिलने से इनमें से किसी में कोई परिवर्तन नहीं होता; **प्रकृतिशास्त्र**-(सं० पुं०) वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों का विचार किया जाता है **प्राकृतिसिद्धि**-(सं०वि०) स्वाभाविक, नैसर्गिक, प्राकृत; **प्रकृतिस्थ**-(सं० वि०) स्वाभाविक, जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो।

प्रकृष्ट-(सं०वि०) मुख्य, प्रधान, (वि०) आकृष्ट, खींचा हुआ; **प्रकृष्टता**-(सं०स्त्री०) उत्तमता, श्रेष्ठता।

प्रकोट-(सं०पुं०) परकोटा, परिखा।

प्रकोप-(सं० पुं०) अधिक क्रोध, क्षोभ, चचलता, वात पित्त कफ में से किसी के बिगड़ने से रोग का उत्पन्न होना; **प्रकोपन**-(सं०नपु०) क्रोध, क्षोभ, आग का सुलगाना, चंचलता, वात, पित्त अथवा कफ का कोप जिससे रोग उत्पन्न होता है; **प्रकोपनीय**-(सं०वि०) क्रुद्ध करने योग्य; **प्रकोपित**-(सं० वि०) उत्तेजित किया हुआ।

प्रकोष्ठ-(सं०पुं०) केहुनी के नीचे का भाग, घर के प्रधान द्वार के पास की कोठरी, बड़ा आँगन जिसके चारो ओर कोठरियाँ हों।

प्रक्खर-(सं० पु०) घोड़े की पाखर, कुत्ता, खच्चर, (वि०) प्रचण्ड, बहुत तेज।

प्रक्रम-(सं०पुं०)क्रम, अवसर, उल्लंघन, किसी के आरंभ में किया हुआ उपाय; **प्रक्रमण**-(सं० नपुं०) पार करना, आरंभ करना; **प्रक्रमभंग**-(सं०पु०) साहित्य का वह दोष जो तब होता है जब किसी नियम के आरंभ किये हुए क्रम का ठीक पालन नहीं किया जाता।

प्रक्रान्त-(सं०वि०)आरंभ किया हुआ।

प्रक्रिया-(सं० स्त्री०) प्रकरण, नियत विधि, युक्ति।

प्रक्रोश-(सं०पुं०) आक्रोश।

प्रक्लेद-(सं० पुं०) आर्द्रता, नमी, तरी।

प्रक्लेदन-(सं० नपुं०) गीला करना, भिगोना।

प्रक्ष-(हिं० वि०) पूछने वाला।

प्रक्षय-(सं०पुं०) नाश; **प्रक्षयण**-(सं०पुं०) विनाशन, नाश करना।

प्रक्षर (सं०पुं०) घोड़े का पाखर।

प्रक्षरण-(सं०नपुं०) झरना, बहना।

प्रक्षालन-(सं० नपुं०) मार्जन, जल से धोने की क्रिया; **प्रक्षालनीय**-(सं०वि०) धोने या स्वच्छ करने योग्य; **प्रक्षालित**-(सं० वि०) धोया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।

प्रक्षिप्त-(सं०वि०) फेंका हुआ, ऊपर से बढ़ाया हुआ, भीतर रक्खा हुआ।

प्रक्षेप-(सं० पुं०) वह द्रव्य जो औषध आदि में ऊपर से डाला जाय, फेंकना, छितराना, मिलाना, बढ़ाना, किसी व्यापार में अंशधारी की अलग अलग लगाई हुई पूँजी;

प्रक्षेपण-(सं०नपुं०) निक्षेपण, फेंकना, ऊपर से मिलाना, निश्चित करना;

प्रक्षेपलिपि-(सं०स्त्री०) अक्षर लिखने की एक विशेष रीति।

प्रक्षोभण-(सं०नपुं०)व्यग्रता, घबड़ाहट।

प्रक्ष्वेदन-(सं०पुं०) लोहे की तीर।

प्रखर-(सं०पुं०) घोड़े की पाखर, (वि०) तीक्ष्ण,प्रचण्ड, धारदार, पैना, चोखा।

प्रखल-(सं०वि०) अति दुष्ट,बड़ा पाजी,

प्रख्या-(सं० स्त्री०) उपमा, समता;

प्रख्यात-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध,

प्रख्याति-(सं०स्त्री०) विख्याति, प्रसिद्धि।

प्रगट-(हिं०वि०) देखो प्रकट; **प्रगटना**-(हिं०क्रि०) सन्मुख होना, प्रकट होना, सामने आना।

प्रगटाना-(हिं०क्रि०) प्रकट करना।

प्रगण्ड-(सं०पुं०) कन्धे से लेकर केहुनी तक का भाग।

प्रगण्डी-(सं०स्त्री०) दुर्ग की बाहरी भीत जिस पर बैठकर दूर की वस्तु देख पड़ती है।

प्रगतजानु-(सं०वि०)मुड़े हुए पैर वाला

प्रगति-(हिं०स्त्री०) ढंग, चाल; **प्रगतिशील**-(वि०) गतियुक्त।

प्रगम-(सं०नपुं०) आगे को बढ़ना।

प्रगमन-(सं० पुं०) उन्नति, लड़ाई, झगड़ा।

प्रगमनीय-(सं०वि०) आगे बढ़ने योग्य।

प्रगर्जन-(सं०नपुं०) अति भयंकर शब्द, गरज।

प्रगल्भ-(सं०वि०)उद्धत, जिसमें नम्रता न हो, निर्लज्ज, धृष्ट, अभिमानी, चतुर, उत्साही, साहसी, ठीक समय पर उत्तर देने वाला, बकवादी, निर्भय, निडर, गम्भीर, समर्थ, मुख्य, प्रधान, पुष्ट; **प्रगल्भता**-(सं० स्त्री०) गम्भीरता, प्रधानता पुष्टता, सामर्थ्य, वृथा की बकवाद, उत्साह, साहस, धृष्टता, निर्लज्जता, अभिमानी, चातुरी, निर्भयता, **प्रगल्भवचना**-(सं० स्त्री०) वह मध्या नायिका जो बात ही बात में अपना दुःख और क्रोध प्रकट करती और उलाहना देती है। **प्रगल्भा**-(सं० स्त्री०) प्रौढा नायिका। **प्रगल्भित**-(सं०वि०) प्रगल्भ युक्त।

प्रगसना-(हिं०क्रि०) देखो प्रगटना।

प्रगाढ़-(सं०वि०) अतिशय, अधिक, दृढ़, गहरा, गाढ़ा, घना, कठोर, कड़ा।

प्रगाता-(सं०वि०) अच्छा गाने वाला।

प्रगाद्य-(सं०नपुं०)कथनीय, कहने योग्य।

प्रगामी-(सं०वि०) जाने वाला।

प्रगाहन-(सं०नपुं०) अवगाहन, मज्जन, प्रमार्जना।

प्रगीति-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का छंद।

प्रगुणी-(सं०वि०)अति गुणी, गुणवान।

प्रगुण्य-(सं०वि०) चतुर।

प्रगृहीत-(सं० वि०) अच्छी तरह से पकड़ा हुआ।

प्रगेशय-(सं०वि०) प्रातःशायी, सबेरे सोने वाला।

प्रगह-(सं० पुं०) तराजू में बँधी हुई डोरी, घोड़े की लगाम, किरण, भुजा, बाहु, बन्दी, अनुग्रह, कृपा, किसी ग्रह के साथ रहनेवाला छोटा ग्रह, उपग्रह, ग्रहण का आरम्भ, आधार, सोना, विष्णु, शासन, धारण करने का ढङ्ग, आदर, सत्कार, मार्गदर्शक।

प्रग्रहण-(सं०पुं०) ग्रहण करने की क्रिया या भाव।

प्रग्रीव-(सं० पुं०) झरोखा, छोटी खिड़की, अस्तबल।

प्रघट-(हिं०वि०) देखो प्रकट।

प्रघटना-(हिं०क्रि०) देखो प्रकटना।

प्रघट्टक-(सं० पुं०) सिद्धान्त, (वि०) संयोजक, मिलाने वाला।

प्रघंड-देखो प्रचण्ड।

प्रघण-(सं०पुं०) आलिन्द, बरामदा, तांबे का घड़ा।

प्रघंस-(सं० पुं०) असुर, राक्षस, रावण की सेना का एक सेनानायक जिसको हनुमान् ने मारा था, (वि०) भक्षक, खाने वाला।

प्रघुर्ण, प्रघूर्ण-(सं० पुं०) अतिथि, पाहुन।

प्रघोर-(सं० वि०) अधिक कठिन।

प्रचण्ड-(सं०वि०) अधिक तीव्र, प्रबल, कठोर, भयङ्कर, असह्य, प्रतापी, पुष्ट, उग्र, बलवान्, (पु०) शिव के एक गण का नाम। **प्रचण्डता**-(सं० स्त्री०) तीखापन। **प्रचण्डत्व**-(सं०पुं०) प्रचंडता। **प्रचण्डमूर्ति**-(सं० स्त्री०) उग्रमूर्ति, वरुण वृक्ष। **प्रचण्डा**-(सं० स्त्री०) अति कोपवती, दुर्गा, चण्डी, सफ़ेद दूब।

प्रचय-(सं० पुं०) समूह झुण्ड, ढेर, वृद्धि, बीज गणित में एक प्रकार का संयोग।

प्रचर-(सं०पुं०) मार्ग, गमन। **प्रचरना**-(हिं०क्रि०) चलना, फैलना। **प्रचरण**-(सं०नपुं०) विचरण, चलना फिरना।

प्रचरित-(सं०वि०) चलता हुआ।

प्रचल-(सं०पुं०) मयूर, मोर।

प्रचलन-(सं० नपु०) प्रवर्तन, चलना।

प्रचला-(सं०स्त्री०) वह निद्रा जो कुछ लोगों को खड़े खड़े या बैठे हुए आ जाती है, गिरगिट।

प्रचलित-(सं० वि०) चलता हुआ, जिसकी चलन हो,स्थिर,दृढ़,प्रसिद्ध।

प्रचाय-(सं० पुं०) राशि, ढेर, संचय, अधिकता। **प्रचायक**-(सं० वि०) देर लगाने वाला।

प्रचार-(सं०पुं०)प्रचरण, चलन, प्रसिद्धि; **प्रचारक**-(सं० वि०) प्रचार करने वाला, फैलाने वाला। **प्रचारण**-(सं०नपुं०) प्रचार, चलन, रीति।

प्रचारना-(हिं०क्रि०) प्रचार करना, विस्तार करना, फैलाना ललकारना।

प्रचारित-(सं०वि०) विस्तृत, फैलाया हुआ, प्रचार किया हुआ। **प्रचारी**-(सं०वि०) प्रचार करने वाला।

प्रचालित-(सं०वि०)प्रचार किया,हुआ

प्रचिकीर्षु-(सं०वि०) जो बदला लेना चाहता हो।

प्रचित-(सं० नपुं०) दण्डक वृत्ति का एक भेद। **प्रचुर**-(सं०वि०) अनेक, प्रभूत, बहुत। **प्रचुरता**-(सं०स्त्री०) बहुलता, अधिकता। **प्रचुर पुरुष**-(सं०पुं०) अनेक लोग।

प्रचेता-(हिं०पुं०) मुनिविशेष, वरुण, एक प्रजापति का नाम, राजा पृथु के प्रपौत्र का नाम; (वि०) चतुर, बुद्धिमान्।

प्रचेय-(सं०वि०) चुनने या संग्रह करने योग्य।

प्रचोद-(सं०पुं०) प्रेरणा, उत्तेजना।

प्रचोदक-(सं०वि०) उत्तेजित करने वाला। **प्रचोदन**-(सं०नपुं०) उत्तेजना, प्रेरणा, आज्ञा, नियम। **प्रचोदित**-(सं०वि०) उत्तेजित किया हुआ।

प्रच्छक-(सं०वि०) पूछने वाला।

प्रच्छद-(सं०पुं०) लपेटने का वस्त्र, चोगा, कंबल।

प्रच्छना-(सं०स्त्री०) जिज्ञासा, पूछना।

प्रच्छन्न-(सं०वि०) आच्छादित, ढपा हुआ गोपित, छिपा हुआ।

प्रच्छर्दन-(सं०नपुं०) वमन, उल्टी।

प्रच्छादन-(सं०नपुं०) ओढ़ने का वस्त्र, चादर, आँख की पलक, छिपाना, ढापना। **प्रच्छादित**-(सं०वि०) आच्छा

दित, ढका हुआ।
प्रच्छाम-(हिं०वि०) घनी छप्पल वाला।
प्रच्छालना, प्रछालना-(हिं०क्रि०) धोवी
प्रच्छाय-(सं०नपुं०) उत्तम छाया।
प्रच्छिल-(सं०वि०) निर्जन, जनशून्य।
प्रच्छेदन-(सं०नपुं०) काटने की क्रिया।
प्रच्छेद्य-(सं०वि०) काटने योग्य।
प्रच्यवन-(सं०नपुं०) झरना, बहना।
प्रजंत-(हिं०अव्य०) देखो पर्यन्त।
प्रजन-(सं०पुं०) पशुओं के गर्भ धारण करने का समय, सन्तान उत्पन्न करने का कार्य।
प्रजनन-(सं०नपुं०) जन्म, धात्री कर्म, दाई का काम, सन्तान उत्पन्न कराने का काम। **प्रजनिका**-(सं०स्त्री०) जन्म देने वाली माता। **प्रजनिष्णु**-(सं० वि०) जन्म देने वाला। **प्रजय**-(सं०पुं०) अच्छी जीत।
प्रजरना-(हिं०क्रि०) अच्छी तरह से जलना।
प्रजल्प, प्रजल्पन-(सं०पु०) व्यर्थ की इधर उधर की बातचीत। **प्रजल्पित**-(सं०वि०) व्यक्त, प्रकट, कहा हुआ। **प्रजल्पिता**-(सं०स्त्री०) बकवादी स्त्री।
प्रजव-(सं०पुं०) तीव्र गति।
प्रजा-(सं०स्त्री०) सन्तति, सन्तान, वह जनसमूह जो किसी एक राजा के आधीन या एक राज्य के अन्तर्गत रहता हो, उत्पत्ति, राज्य के निवासी; **प्रजाकाम**-(सं०वि०) पुत्र की इच्छा रखने वाला। **प्रजाकार**-(सं०पुं०) प्रजापति, ब्रह्मा।
प्रजागर-(सं०पुं०) पूरी तरह का जागरण, नींद न आना, विष्णु, प्राण, (वि०) रक्षा करने वाला। **प्रजागरण**-(सं०नपु०) नींद न आना।
प्रजागरा-(सं०स्त्री०)एक अप्सरा का नाम।
प्रजाघ्न-(सं० वि०) प्रजा का नाश करने वाला।
प्रजातन्तु-(सं०पुं०) सन्तान, वंशकुल।
प्रजातन्त्र-(सं०पुं०) वह शासन पद्धति जिसमें कोई राजा नहीं होता परन्तु जन समूह समय समय पर अपना शासक चुन लेते हैं।
प्रजाता-(सं०स्त्री०) प्रसूता स्त्री, वह स्त्री जिसको बालक उत्पन्न हुआ हो
प्रजाद्वार-(सं०नपुं०) सन्तान उत्पन्न करने का साधन। **प्रजाधर्म**-(सं०पु०) प्रजा या पुत्र का कर्तव्य।
प्रजाध्यक्ष-(सं०पुं०) प्रजापति, सूर्य।
प्रजानाथ-(सं०पुं०) लोकनाथ, राजा, ब्रह्मा, मनु।
प्रजानाक-(सं० पुं०) काल, यम।
प्रजान्तक-(हिं०पुं०) यमराज।
प्रजापति-(सं०पुं०) सृष्टि कर्ता, ब्रह्मा, महीपाल, राजा, इन्द्र, जामाता, सूर्य, अग्नि, विश्वकर्मा, यज्ञ, घर का मालिक, तितुली, एक तारे का नाम, साठ संवत्सरों में से पाँचवाँ संवत्सर, आठ प्रकार के विवाहों में से एक, पिता, बाप।
प्रजापाल-(सं० पुं०) प्रजा का पालन करनेवाला।
प्रजायिनी-(सं० स्त्री०) माता।
प्रजारना-(हिं०क्रि०) अच्छी तरह से जलाना।
प्रजावती-(सं०स्त्री०) बड़े भाई की स्त्री, भौजाई, गर्भवती स्त्री।
प्रजासत्ता-(सं०स्त्री०) देखो प्रजातन्त्र।
प्रजाहित-(सं०स्त्री०) जल, पानी, (वि०) प्रजा की भलाई।
प्रजित-(सं०पुं०) वायु हवा।
प्रजीवन-(सं० नपुं०) जीविका।
प्रजुरना-(हिं०क्रि०) प्रकाशित होना, जगमगाना।
प्रजुलित-(सं०वि०) देखो प्रज्वलित।
प्रजुष्ट-(सं०वि०) प्रसक्त, लगा हुआ।
प्रजेश्वर-(सं० पुं०) राजा, नृप।
प्रजोग-(हिं०पुं०) देखो प्रयोग।
प्रज्झटिका-(सं०स्त्री०) प्राकृत छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।
प्रज्ञ-(सं० पुं०) विद्वान्, पण्डित, जानकार। **प्रज्ञप्ता**-(सं०स्त्री०) विद्वत्ता, पाण्डित्य। **प्रज्ञप्ति**-(सं०स्त्री०) संकेत, ज्ञान, सूचना।
प्रज्ञा-(सं०स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि, सरस्वती।
प्रज्ञाचक्षु-(सं०पु०) धृतराष्ट्र, (वि०) जिसके पास प्रज्ञारूपी चक्षु हो, अन्धा। **प्रज्ञाढ्य**-(सं० वि०) बुद्धि-युक्त, विद्वान्।
प्रज्ञान-(सं०नपुं०) बुद्धि, ज्ञान, चिह्न।
प्रज्ञापरिमिता-(सं० स्त्री०) बौद्धों की एक देवी का नाम।
प्रज्ञाप्त-(सं०वि०) आज्ञा दिया हुआ।
प्रज्ञामय-(सं० वि०) प्रज्ञा स्वरूप, बुद्धिमान्।
प्रज्वलन-(सं०नपु०) अच्छी तरह से जलने की क्रिया। **प्रज्वलित**-(सं०वि०) दहकता या धधकता हुआ, अति स्वच्छ
प्रज्वलिया-(हिं०पुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।
प्रज्वालन-(हिं०क्रि०)जलाना, दहकाना।
प्रण-(हिं० पुं०) किसी काम के करने के लिये किया हुआ अटल निश्चय, प्रतिज्ञा।
प्रणखर-(सं०पुं०)नख का अगला भाग
प्रणत-(सं०वि०) प्रणाम करता हुआ, वक्र, बहुत झुका हुआ, (पुं०) प्रणाम करनेवाला, दास, सेवक, भक्त, उपासक। **प्रणतपाल**-(सं०पुं०) दीन रक्षक, दास या भक्तों का पालन करनेवाला।
प्रणति-(सं० स्त्री०) विनती, नम्रता, प्रणाम, दण्डवत।
प्रणम-(हिं०पुं०) देखो प्रणाम। **प्रणमन**-(सं०पुं०) दण्डवत या प्रणाम करना, झुकना। **प्रणम्य**-(सं० वि०) प्रणाम करने योग्य, वन्दनीय।
प्रणय-(सं० पुं०) प्रीति युक्त प्रार्थना, प्रेम, निर्वाण, मोक्ष, विश्वास, भरोसा, श्रद्धा, प्रार्थना, स्त्री का सन्तान उत्पन्न करना।
प्रणयन-(सं० नपुं०) रचना, बनाना, करना, होम के समय अग्नि का एक संस्कार।
प्रणयिनी-(सं०स्त्री०) प्रेमिका, प्रियतमा, स्त्री, पत्नी।
प्रणयी-(सं०पुं०) प्रेम करने वाला, पति, स्वामी।
प्रणव-(सं० पुं०) ओंकार, परमेश्वर, ओंकार मन्त्र जो-अ, उ और म् की सन्धि से बना है, इसमें अकार शब्द से विष्णु, उकार से महेश और मकार से ब्रह्मा का बोध होता है।
प्रणवना-(हिं०क्रि०) प्रणाम या नमस्कार करना, श्रद्धा भक्ति पूर्वक किसी के सामने झुकना।
प्रणस-(सं०वि०)बिना नाक का, नकटा
प्रणाद-(सं०पुं०) अति तीव्र ध्वनि।
प्रणाम-(सं०पु०) दण्डवत्, नमस्कार।
प्रणामी-(सं०वि०) प्रणाम करने वाला
प्रणायक-(सं०पुं०) सेनानायक, सरदार।
प्रणाल-(सं० पु०) जल निकलने का मार्ग। **प्रणालिका**-(सं०स्त्री०) परनाली, बन्दूक की नली। **प्रणाली**-(सं०स्त्री०) पानी निकलने का मार्ग, नाली, परिपाटी, श्रेणी, रीति, पद्धति चाल, ढंग, जल के दो बड़े भागों को मिलाने वाला जल मार्ग।
प्रणाश-(सं०पुं०) मृत्यु, नाश। **प्रणाशन**-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश। **प्रणाशी**-(सं०वि०) नाश करने वाला।
प्रणिधान-(सं०पुं०) ध्यान, मन की एकाग्रता समाधि, भक्ति, प्रयत्न, अधिक उपासना, अर्पण, भावी जन्म के संबंध में किसी प्रकार की प्रार्थना।
प्रणिधि-(सं० पुं०) प्रार्थना, विनती, भेदिया।
प्रणिनाद-(सं०पु०) वज्र के समान गरजना।
प्रणिपतन-(सं०नपुं०) प्रणाम, दण्डवत; **प्रणिपात**-(हिं०पुं०) प्रणाम।
प्रणिहित-(सं० वि०) रक्खा हुआ, मिलाया हुआ।
प्रणीत-(सं० वि०) बनाया हुआ, फेंका हुआ, सुधारा हुआ, प्रवेश किया हुआ, भेजा हुआ, (पुं०) मन्त्र से संस्कार किया हुआ जल, अग्नि।
प्रणीता-(सं०स्त्री०) मन्त्रोच्चारण सहित छान कर रक्खा हुआ जल, वह पात्र जिसमें ऐसा जल रक्खा जाता है।
प्रणुत-(सं०वि०) स्तुति किया हुआ, प्रशंसा किया हुआ।
प्रणेजन-(सं०वि०) धोने या स्वच्छ करने वाला।
प्रणेता-(सं०वि०) रचयिता, बनानेवाला
प्रणोदित-(सं०वि०) प्रेरित, नियोजित।
प्रतत-(सं०वि०) विस्तृत, लंबा चौड़ा।
प्रतति-(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव।
प्रतन-(सं०वि०) पुरातन, पुराना।
प्रतनु-(सं०वि०) बहुत छोटा, बहुत महीन, क्षीण।
प्रतपन-(सं०नपु०) एक नरक का नाम
प्रतंचा-(हिं०पुं०) देखो प्रत्यंचा।
प्रतच्छ-(हिं०वि०) देखो प्रत्यक्ष।
प्रतप्त-(सं०वि०) तापित, तपा हुआ।
प्रतमक-(सं० पु०) एक प्रकार का श्वास रोग।
प्रतमाली-(हिं० स्त्री०) छोटा कटोरा, कटोरी।
प्रतर्क-(सं०पुं०)संशय, सन्देह, वादाविवाद
प्रतर्दन-(सं०नपुं०) ताडन, (पु०) काशी के एक प्राचीन राजा दिवोदास का पुत्र, एक ऋषि का नाम, विष्णु, (वि०) मारने वाला।
प्रतल-(सं०नपु०) हाथ की हथेली, पाताल के सातवें भाग का नाम।
प्रतान-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम, एक प्रकार का वायुरोग जिसमें बारंबार मूर्छा आती है, बेल, लता, रेशा, (वि०) विस्तृत, लंबा चौड़ा, रेशेदार।
प्रताप-(सं०पुं०) पौरुष, वीरता, बल, पराक्रम, तेज, ताप, गरमी, ऐसा प्रभाव जिसके कारण उपद्रवी या विरोधी शान्त रहें, मदार का पौधा; **प्रतापन**-(सं०नपुं०) पीडन, कष्ट पहुँचाना, (पुं०) विष्णु, एक नरक का नाम, (वि०) कष्ट देने वाला।
प्रतापवान्-(हिं०वि०) प्रताप युक्त।
प्रतापस-(सं०पुं०) उत्तम तेजस्वी, सफ़ेद मदार।
प्रतापी-(हिं०वि०)प्रतापवान्, दुःख दायी
प्रतारक-(सं०वि०) वंचक, ठग, धूर्त।
प्रतारण-(सं०नपुं०) वंचन, धूर्तता, ठगी। **प्रतारणा**-(सं०स्त्री०) प्रतारण **प्रतारणीय**-(सं०वि०) ठगने योग्य।
प्रतारित-(सं०वि०) वंचित, जो ठगा गया हो।
प्रतिंचा-(हिं० स्त्री०) प्रत्यंचा, धनुष की डोरी, ज्या, चिल्ला।
प्रति-(सं०अव्य०) एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में-प्रतिनिधि, प्रतिकूल, विपरीत, प्रत्येक, दुबारा, ऊपर, समीप, लक्षण, विरोध, अल्पमात्रा, निश्चय, अंश, निन्दा, स्वभाव, प्रतिदिन तथा व्याप्ति-अर्थों को बोधित करने के लिये जोड़ा जाता है।
प्रति-(हिं०अव्य०) सामने, ओर, (स्त्री०) एकही प्रकार की अनेक वस्तुओं में से एक वस्तु। **प्रतिकण्ठ**-(सं०अव्य०) कण्ठ के समीप; **प्रतिकर्तव्य**-(सं०वि०) बदला चुकाने योग्य; **प्रतिकर्म**-(सं०नपुं० किसी दूसरे के द्वारा प्रेरित कर्म, वेश, भेस, बदला, शरीर को संवारना;
प्रतिकांक्षी-(सं०वि०)आकांक्षा युक्त।
प्रतिकामिनी-(सं०स्त्री०) सपत्नी, सौत

प्रतिकाय-(सं०पुं०) प्रतिमा, प्रतिरूप, चित्र।
प्रतिकार-(सं०पुं०) बदला, किसी की बात का उचित उपाय।
प्रतिकारक, प्रतिकारी-(सं०वि०) बदला चुकाने वाला।
प्रतिकाश-(सं० वि०) तुल्य, सदृश्य, समान।
प्रतिकुंचित-(सं० वि०) वक्र, टेढा किया हुआ।
प्रतिकूप-(सं०पुं०) परिखा, खाई।
प्रतिकूल-(सं०वि०) जो अनुकूल न हो, उलटा, विपरीत, विरुद्ध, (नपुं०) प्रतिपक्षी। **प्रतिकूलता**-(संस्त्री०) प्रतिकूल आचरण। **प्रतिकूल वचन**-(सं०नपुं०) विरुद्ध वाक्य।
प्रतिकृत-(सं०वि०) जिसका बदला हो चुका हो। **प्रतिकृति**-(सं० स्त्री०) प्रतिमूर्ति; प्रतिमा, चित्र, प्रतीकार, बदला, प्रतिविम्ब, छाया। **प्रतिकृत्य**-(सं०वि०) प्रतीकार करने योग्य।
प्रतिक्रम-(सं०पुं०) प्रतिकूल आचरण।
प्रतिक्रिया-(सं०स्त्री०) प्रतीकार, बदला, सस्कार, सजावट, शमन या निवारण का उपाय।
प्रतिकृष्ट-(सं०वि०) दरिद्र, नीरस।
प्रतिक्षण-(सं० अव्य०) बारंबार, फिरफिर।
प्रतिक्षिप्त-(सं०वि०) तिरस्कार किया हुआ, रोका हुआ, बुलाया हुआ, भेजा हुआ, फेंका हुआ।
प्रतिक्षेप-(सं० पुं०) फेंकना, रोकना तिरस्कार।
प्रतिख्याति-(सं०स्त्री०) विख्याति, प्रसिद्ध
प्रतिगत-(सं०वि०) जो लौट आया हो।
प्रतिगिरि(सं० पुं०) छोटा पर्वत।
प्रतिगृह-(सं०अव्य०) घर घर में।
प्रतिगृहीत-(सं०वि०) ग्रहण किया हुआ, लिया हुआ। **प्रतिगृहीता**-(सं०स्त्री०) धर्मपत्नी, वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। **प्रतिगृह्य**-(सं० वि०) लेने योग्या।
प्रतिगेह-(सं०अव्य०) घर भर में।
प्रतिग्या-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतिज्ञा।
प्रतिग्रह-(सं०पुं०) ग्रहण, स्वीकार, सेना का पिछला भाग, ब्राह्मण का विधि पूर्वक दिये हुये दान को लेना, प्रतिकूल ग्रह, विरोध करना, पाणिग्रहण, अभ्यर्थना, स्वागत, अधिकार में लाना, पकड़ना, किसी के अभियोग चलाने पर उस पर बदले में अभियोग चलाना, ग्रहण। **प्रतिग्रहण**-(सं०नपुं०) विधि पूर्वक दिया हुआ दान लेना। **प्रतिग्रही प्रतिग्रहीता**-(हिं०वि०) प्रतिग्रह या दान लेने वाला
प्रतिग्राह-(सं० पुं०) प्रतिग्रह ग्रहण करना। **प्रतिग्राहक, प्रतिग्राही**-(सं०वि०) देखो प्रतिग्रही, **प्रतिग्राह्य**-(सं०वि०) ग्रहण करने योग्य।
प्रतिघ-(सं० पुं०) क्रोध, मूर्छा, प्रतिफल, रुकावट डालने वाला।
प्रतिघात-(सं०पुं०) प्रतिबन्ध, बाधा, निराशा, वह आघात जो एक आघात लगने पर आप से आप उत्पन्न हो, टक्कर मारण, मारना। **प्रतिघातक**-(सं०वि०) प्रतिघात करने वाला।
प्रतिघातन-(सं०नपुं०) हत्या, बाधा, रुकावट। **प्रतिघाती**-(सं०वि०) टक्र लगाने वाला, विरोध करने वाला, (पुं०) शत्रु, वैरी।
प्रतिचिन्तन-(सं०पुं०) पुनर्विचार, फिर से सोचना।
प्रतिच्छन्द-(सं०नपुं०) प्रतिकृति, अनुरोध
प्रतिच्छा-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतीक्षा।
प्रतिच्छाया-(सं०स्त्री०) प्रतिमूर्ति, सादृश्य, चित्र, प्रतिबिम्ब, परछाई; **प्रतिच्छयित** (वि०) प्रतिबिंबित।
प्रतिच्छेद-(सं०पुं०) प्रतिबन्ध, रुकावट,
प्रतिछाई-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतिच्छाया।
प्रतिछाया-(हिं० स्त्री०) प्रतिबिंब, परछाई।
प्रतिछाहीं-(हिं० स्त्री०) देखो प्रतिछाया।
प्रतिजङ्घा-(सं०स्त्री०) जांघ का अगला भाग।
प्रतिजल्प-(सं०पुं०) सम्मति देना।
प्रतिजागर-(सं०पु०) बड़ी सावधानी से रखना।
प्रतिजिह्वा-(सं०स्त्री०) गले के भीतर घाँटी, कौवा।
प्रतिजीवन-(सं०नपुं०) फिर से जन्म होना
प्रतिज्ञा-(सं०स्त्री०) किसी काम के करने के लिये दृढ़ निश्चय, न्याय के पांच अवयवों में से पहला अवयव, शपथ, सौंगन्ध, अभियोग।
प्रतिज्ञात-(सं०वि०) अंगीकृत, स्वीकार किया हुआ।
प्रतिज्ञान्तर-(सं०नपुं०) तर्क में निग्रह स्थान का एक भेद।
प्रतिज्ञापत्र-(सं०नपुं०) वह पत्र जिसपर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो, **प्रतिज्ञाविरोध**-(सं०पुं०) न्याय में वह स्थिति जब प्रतिज्ञा और हेतु दोनों का विरोध होता है। **प्रतिज्ञाहानि**-(सं०नपुं०) न्याय में निग्रह स्थान का एक भेद।
प्रतिज्ञेय-(सं० वि०) प्रतिज्ञा करने योग्य।
प्रतिताल-(सं०पुं०) संगीत में ताल का एक भेद।
प्रतितूणी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का वातजन्य रोग।
प्रतिदत्त-(सं० वि०) लौटाया हुआ, बदले में दिया हुआ।
प्रतिदान-(सं०नपुं०) विनिमय, बदला, ली हुई या रक्खी हुई वस्तु का लौटाना
प्रतिदारण-(सं०नपुं) युद्ध, लड़ाई।
प्रतिदिन-(सं०नपुं०) प्रत्यह, हर दिन।
प्रतिदिवन्-(सं०पुं०) प्रतिदिन, सूर्य।
प्रतिदिवस-(सं०अव्य०) देखो प्रतिदिन।
प्रतिदेय-(सं०क्रि०) मोलकी वस्तु को फेर देना।
प्रतिद्वन्द्व-(सं०नपुं०) बराबरी वालों की लड़ाई। **प्रतिद्वन्द्वी**-(सं० पुं०) शत्रु, बराबरी का लड़ने वाला।
प्रतिधावन-(सं०नपुं०) पीछे की ओर दौड़ना।
प्रतिध्वनि-(सं०पुं०) प्रतिशब्द, वह शब्द जो अपनी उत्पत्ति स्थान पर फिर से सुनाई पड़े, गूंजना, दूसरे के भावों या विचारों का दोहराया जाना
प्रतिध्वनित-(वि०) गूंजता हुआ।
प्रतिनन्दन-(हिं०नपुं०) आशीर्वाद पूर्बक अभिनन्दन।
प्रतिनव-(सं०वि०) नूतन, नया।
प्रतिना-(हिं०स्त्री०) देखो पृतना।
प्रतिनाड़ी-(सं०स्त्री०) उपनाड़ी, छोटी नाड़ी।
प्रतिनाद-(सं०पुं०) प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि
प्रतिनायक-(सं०पुं०) नाटकों तथा काव्यों के आदि में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र
प्रतिनाह-(सं०पुं०) श्वास बन्द होने का एक रोग।
प्रतिनिधि-(सं० पुं०) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिये नियुक्त पुरुष।
प्रतिनिधित्व-(सं०पुं०) प्रतिनिधि होने का कार्य या भाव।
प्रतिनियम-(सं०पुं०) व्यवस्था, प्रत्येक के लिये एक नियम।
प्रतिनिर्जित-(सं० वि०) पराजित, हराया हुआ।
प्रतिनिर्देश-(सं० पु०) वह जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका हो।
प्रतिनिर्यातन-(सं०नपुं०) अपकार के बदले में किया हुआ अपकार।
प्रतिनिवृत्त-(सं० वि०) प्रत्यागत, लौटा हुआ।
प्रतिप-(सं०पुं०) राजा शन्तनु के पिता का नाम।
प्रतिपक्ष-(सं०पुं०) प्रतिवादी, शत्रु, विरुद्ध पक्ष। **प्रतिपक्षता**-(सं०स्त्री०) विपक्षता, विरोध **प्रतिपक्षी**-(सं०पुं०) विपक्षी, विरोधी, शत्रु।
प्रतिपच्छ-(हिं०पुं०) देखो प्रतिपक्ष।
प्रतिपच्छी-(हिं०पुं०) देखो प्रतिपद।
प्रतिपत्-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतिपक्षी।
प्रतिपत्ति-(सं०स्त्री०) प्राप्ति ज्ञान, अनुमान, निरूपण, प्रतिपादन, निश्चय, दृढ़ विचार, परिणाम, आदर, सत्कार, गौरव, स्वीकृति, प्रतिष्ठा, चित्त में स्थिर होना, कार्य में परिणत होना; **प्रतिपत्ति कर्म**-श्राद्ध आदि में सबसे अन्त में किया जाने वाला कर्म।
प्रतिपद्-(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, मार्ग, आरंभ, बुद्धि, अग्नि की जन्म तिथि।
प्रतिपद-(सं०अव्य०) पद पद में, स्थान स्थान में।
प्रतिपदा-(सं०स्त्री०) किसी पक्ष की पहली तिथि।
प्रतिपन्न-(सं०वि०) जाना हुआ, स्वीकार किया हुआ, परिपूर्ण, निश्चित, शरणागत, प्रतिष्ठित, प्राप्त, जो मिला हो, अभियुक्त, गृहीत, प्रचण्ड।
प्रतिपात्र-(सं०अव्य०) प्रत्येक मनुष्य।
प्रतिपादक-(सं०वि०) निर्वाह करने वाला, उत्पन्न करने वाला। **प्रतिपादन**-(सं०नपुं०) दान, उत्पत्ति, पुरस्कार, प्रमाण, प्रतिपत्ति, अच्छी तरह समझना, निरूपण। **प्रतिपादनीय**-(सं०वि०) दान करने योग्य।
प्रतिपादित-(सं०वि०) दिया हुआ, स्थिर या निश्चय किया हुआ, शोधा या सुधारा हुआ।
प्रतिपाद्य-(सं०वि०) निरूपण करने योग्य, दातव्य, देने योग्य।
प्रतिपाप-(सं०पुं०) किसी पापी के प्रति किया जाने वाला कठोर व्यवहार।
प्रतिपार-(हिं०पुं०) देखो प्रतिपाल।
प्रतिपाल, प्रतिपालक-(सं०वि०) रक्षक, पोषक, राजा, पालन पोषण करने वाला। **प्रतिपालन**-(सं०नपुं०) पालन पोषण करने की क्रिया या भाव, निर्वाह, रक्षा। **प्रतिपालना**-(हिं० क्रि०) रक्षा करना, पालन पोषण करना। **प्रतिपालनीय**-(सं०वि०) प्रतिपालन करने योग्य। **प्रतिपालित**-(सं०वि०) पालन किया हुआ।
प्रतिपुरुष-(सं०अव्य०) प्रत्येक पुरुष, (पुं०) प्रतिनिधि, वह पुतला जिसको प्राचीन काल में चोर लोग प्रवेश करने के पहले घर में फेंक देते थे।
प्रतिपुस्तक-(सं०नपु०) किसी ग्रन्थ या पुस्तक की प्रतिलिपि।
प्रतिपूजन-(सं०पुं०) दूसरे को पूजा करते देखकर तदनुसार स्वयं पूजा करना, अभिवादन।
प्रतिपोषक-(सं०पुं०) समर्थक।
प्रतिप्रहार-(सं०पुं०) मार पर मार, अनुरूप प्रहार।
प्रतिप्राकार-(सं०पुं०) गढ़ के बाहर की भीत।
प्रतिप्रिय-(सं०नपुं०) किसी उपकार के बदले में किया हुआ उपकार।
प्रतिप्लवन-(सं०नपुं०) पीछे की ओर कूदना।
प्रतिफल-(सं०नपुं०) प्रतिबिम्ब, छाया, प्रत्युपकार, परिणाम। **प्रतिफलित**-(सं०वि०) प्रतिबिम्बित।
प्रतिबद्ध-(सं०वि०) जिसमें किसी प्रकार का प्रतिबन्ध या रुकावट न हो।
प्रतिबन्ध-(सं०पु०) बाधा, विघ्न, रुकावट, प्रबन्ध। **प्रतिबन्धक**-(सं०वि०) बाधा डालने वाला, रोकने वाला। **प्रतिबन्धकता**-(सं०स्त्री०) विघ्न रुकावट, अड़चन।
प्रतिबन्धु-(सं०पुं०) जो वन्धु के समान हो।
प्रतिबल-(सं०वि०) समान शक्ति वाला
प्रतिबला-(सं०स्त्री०) ककही नाम का पौधा।
प्रतिबाधक-(सं०वि०) बाधा करने

वाला, कष्ट पहुँचाने वाला।
प्रतिबाहु-(सं०पुं०) बांह का अगला भाग
प्रतिबिम्ब-(सं०पुं०) प्रतिमा मूर्ति, परछाईं, दर्पण, चित्र। **प्रतिबिम्बक**-परछाहीं के समान पीछे पीछे चलने वाला। **प्रतिबिंबना**-(हिं०क्रि०) प्रतिबिंबित होना; **प्रतिबिम्बवाद**-(सं०पुं०) वेदान्त का वह सिद्धान्त जिसके अनुसार जीव ईश्वर का प्रतिबिम्ब माना जाता है। **प्रतिबिम्बित**-(सं०वि०) जिसकी परछाहीं पड़ती हो जो परछाहीं पड़ने के कारण देख पड़ता हो।
प्रतिबीज-(सं०वि०) जिसकी उत्पन्न करने की शक्ति नष्ट हो गई हो।
प्रतिबुद्ध-(सं०वि०) जागता हुआ, ज्ञात, जो जाना गया हो, जिसकी उन्नति हुई हो।
प्रतिबुद्धि-(सं०स्त्री०) विपरीत बुद्धि, उलटी समझ।
प्रतिबोध-(सं०पुं०) जागरण, ज्ञान। **प्रतिबोधक**-(सं०पुं०) शिक्षक, प्रतिरोध करने वाला, ज्ञान उत्पन्न करने वाला, जगानेवाला। **प्रतिबोधन**-(सं०नपुं०) ज्ञान उत्पन्न करना, जागरण।
प्रतिभट-सं०पुं०) शत्रु, बैरी, बराबरी का योद्धा। **प्रतिभटता**-(सं०स्त्री०) शत्रुता, वैर।
प्रतिभा-(सं०स्त्री०) बुद्धि, दीप्ति, चमक, समानता, असाधारण बुद्धिमानी।
प्रतिभाग-(सं०नपुं०) प्रत्येक भाग।
प्रतिभानु-(सं०पुं०) सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। **प्रतिभात**-(हिं०वि०) चमकताहुआ
प्रतिभामुख-(सं० वि०) प्रभावशाली, प्रगल्भ। **प्रतिभावत्**-(सं०वि०) प्रभावशाली, चमकदार। **प्रतिभावान्**-(हिं०वि०) प्रतिभाशाली। **प्रतिभाशाली**-(सं०वि०) प्रभावशाली। **प्रतिभाषा**-(सं०स्त्री०)प्रत्युत्तर वादीका कथन
प्रतिभास-(सं०पुं०) प्रकाश, चमक, आकृति, भ्रम। **प्रतिभासम्पन्न**-(सं० वि०) प्रतिभाशाली। **प्रतिभाहानि**-(सं०पुं०) बुद्धिनाश।
प्रतिभू-(सं०वि०) जमानत करने वाला,
प्रतिभेद-(सं०पुं०) अन्तर।
प्रतिभेदन-(सं०नपुं०) विभाग करना, खोलना।
प्रतिभोग-(सं०पुं०) उपभोग।
प्रतिम-(सं०वि०) समान, सदृश।
प्रतिमण्डक-(सं०पुं०) एक राग का नाम।
प्रतिमण्डल-(सं०त्रि०) सूर्य आदि चमकते हुए ग्रहों का मण्डल।
प्रतिमन्त्रण-(सं०नपुं०) उत्तर देना।
प्रतिमल्ल-(सं०पुं०) शत्रुता विरोध।
प्रतिमा-(सं०स्त्री०) अनुकृति, किसी वास्तविक या कल्पित आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र, प्रतिबिम्ब, छाया, धातु, पत्थर, मिट्टी आदि की बनाई हुई किसी देवता की मूर्ति, बाँट, बटखरा, वह अलंकार जिसमें किसी मनुष्य, पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन किया होता है।
प्रतिमान-(सं०नपुं०) प्रतिबिम्ब, परछाहीं, हाथी के निकले हुए दाँतों के बीच का स्थान, समानता, बराबरी, हाथी का ललाट, दृष्टान्त उदाहरण, प्रतिनिधि।
प्रतिमाया-(सं०स्त्री०) प्रतिरूप माया।
प्रतिमाला-(सं०स्त्री०) अन्त्याक्षरी पढ़ना
प्रतिमास-(सं०अव्य०) हर महीने।
प्रतिमुक्त-(सं०वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ, फिरसे दिया हुआ।
प्रतिमुख-(सं०नपुं०) नाटक की पांच अंग सन्धियों में से एक।
प्रतिमुद्रा-(सं०स्त्री०) नामाङ्कित मुद्रा की छाप।
प्रतिमुहूर्त-(सं०अव्य०) निरन्तर।
प्रतिमूर्ति-(सं०स्त्री०) देवतादि की मूर्ति
प्रतिमोक्षण-(सं०नपुं०) मोक्ष की प्राप्ति,
प्रतिमोचन-(सं०नपुं०) बन्धन से मुक्त करना।
प्रतियत्न-(सं०पुं०) लालच,रचना,संस्कार
प्रतियान-(सं० पुं०)लौटना, वापस आना
प्रतियुद्ध-(सं०नपुं०) बराबरी की लड़ाई
प्रतियोग-(सं०पुं०) शत्रुता, विरुद्ध पदार्थों का सयोग, फिर से किया जाने वाला उद्योग, किसी पदार्थ के परिणाम को नष्ट करने वाली वस्तु **प्रतियोगिता**-(सं०स्त्री०) प्रतिद्वन्द्विता, विरोध, शत्रुता, उपराचढ़ी। **प्रतियोगी**-(हिं०वि०) विरोधी, वैरी, सहायक, साथी, बराबर वाला।
प्रतियोद्धा-(हिं०पुं०) शत्रु, वैरी, लड़ने वाला।
प्रतिरक्षण-(सं०पुं०) रक्षा।
प्रतिरव-(सं०पुं०) बराबरी का लड़ने वाला।
प्रतिराज-(सं०पुं०) विपक्ष राजा।
प्रतिरात्र-(सं०अव्य०) प्रत्येक रात का। **प्रतिरुद्ध**-(सं०वि०) अवरुद्ध रुका हुआ
प्रतिरूप-(सं०नपुं०) प्रतिमा, मूर्ति,चित्र, (वि०) अनुरूप, समान। **प्रतिरूपक**-(सं०नपुं०) प्रतिबिम्ब।
प्रतिरोद्धा-(हिं०वि०) विरोधी, बाधा डालने वाला।
प्रतिरोध-(सं०पुं०) विरोध, तिरस्कार, प्रतिबिम्ब। **प्रतिरोधक**-(सं०पुं०) रोकने या बाधा डालने वाला। **प्रतिरोधन**-(सं०नपुं०) प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव। **प्रतिरोधित**-(सं०त्रि०) निवारित, रोका हुआ। **प्रतिरोधी**-(हिं०पुं०) प्रतिरोधक।
प्रतिलक्षण-(सं०नपुं०) चिह्न।
प्रतिलभ्य-(सं०वि०) प्राप्त करने योग्य
प्रतिलम्भ-(सं०पुं०) लाभ, प्राप्ति।
प्रतिलाभ-(सं० पुं०) लाभ, एक राग का नाम।
प्रतिलिपि-(सं०स्त्री०) किसी लेख का अनुकरण।
प्रतिलोम-(सं०वि०) विपरीत, प्रतिकूल, उलटा, जो सीधा न गया हो, जो नीचे से ऊपर गया हो। **प्रतिलोमज**-(सं०पुं०) नीच वर्णके पुरुष तथा उच्च वर्ण की कन्या से उत्पन्न सन्तान। **प्रतिलोम विवाह**-(सं०पुं०) वह विवाह जिसमें वर नीच वर्ण का तथा कन्या उच्च वर्ण की हो।
प्रतिवक्तव्य-(सं०वि०) उत्तर देने योग्य
प्रतिवचन-(सं०नपुं०) उत्तर, विरुद्धवाक्य
प्रतिवत्स-(सं०अव्य०) हर साल।
प्रतिवर्तन-(सं०नपुं०) लौट आना।
प्रतिवसथ-(सं०पुं०) ग्राम, गाँव।
प्रतिवस्तु-(सं०स्त्री०) तुल्य रूप पदार्थ।
प्रतिवस्तूपमा-(सं०स्त्री०) वह अलंकार जिसमें उपमेय और उपमानके साधारण धर्मका वर्णन पृथक्पृथक् वाक्यों में किया जाता है।
प्रतिवहन-(सं०नपुं०) विरुद्धदिशामें जाना
प्रतिवाक्य-(सं०नपुं०) प्रतिध्वनि,प्रत्युत्तर
प्रतिवाणि-(सं० स्त्री०) प्रतिकूल वाक्य, प्रतिध्वनि।
प्रतिवात-(सं०वि०) जिस ओर से वायु बहती हो।
प्रतिवाद-(सं०पुं०) किसी के वाक्य या सिद्धान्त को खण्डन करने के लिये अथवा उसका विरोध करने के लिये कहा हुआ वाक्य, विवाद, विरोध, खण्डन, उत्तर। **प्रतिवादक**-(सं०पुं०) प्रतिवाद करने वाला। **प्रतिवादिता**-(सं०स्त्री०) प्रतिवाद का भाव। **प्रतिवादी**-(सं०पुं०) प्रतिवाद का खण्डन करने वाला, वह जो किसी बात में तर्क करे, वादी का उत्तर देनेवाला।
प्रतिवारण-(सं०पुं०) निवारण, रोकना, मना करना, मस्त हाथी।
प्रतिवार्य-(सं०वि०) निवारणकरने योग्य
प्रतिवास-(सं०स्त्री०) सुगन्धि, पड़ोस। **प्रतिवासिता**-(सं० स्त्री०) पड़ोस का निवास। **प्रतिवासी**-(सं०पुं०) पड़ोस में रहने वाला, पड़ोसी। **प्रतिविधान**-(हिं०पुं०) प्रतीकार।
प्रतिविधि-(सं०पुं०) प्रतिकार। **प्रतिविधेय**-(सं०वि०) प्रतीकार करने योग्य
प्रतिविन्ध्य-(सं०पुं०) द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न युधिष्ठिर के एक पुत्रका नाम
प्रतिविभाग-(सं०पुं०) प्रत्येक विभाग।
प्रतिविरक्ति-(सं०त्रि०) वैराग्य,विराम।
प्रतिविरुद्ध-(सं०वि०) विरुद्ध आचरण करने वाला।
प्रतिविशिष्ट-(सं०वि०) उत्कृष्ट।
प्रतिविषा-(सं०स्त्री०) अतिविषा, अतीस।
प्रतिवीक्षणीय-(सं०वि०) देखने योग्य।
प्रतिवीर-(सं०पुं०) बराबरी का योद्धा।
प्रतिवेश-(सं०पुं०) पड़ोसकाघर,पड़ोस।
प्रतिवेशी-(सं०वि०) प्रतिवासी, पड़ोस में रहने वाला।
प्रतिवेश्म-(सं० नपुं०) पड़ोस का घर।
प्रतिवेश्य-(सं०पुं०)पड़ोस में रहने वाला
प्रतिशङ्का-(सं० स्त्री०) बराबर बनी रहने वाली शंका।
प्रतिशब्द-(सं०पुं०) प्रतिध्वनि, गूंज।
प्रतिशम-(सं०पुं०) नाश मुक्ति।
प्रतिशयन-(सं० नपुं०) धरना देना। **प्रतिशयित**-धरना देने वाला।
प्रतिशशी-(सं० वि०) चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब।
प्रतिशाप-(सं०पुं०) फिर से शाप देना। **प्रतिशिष्य**-(सं०पुं०) चेले (शिष्य) का चेला।
प्रतिशिष्ट-(सं० वि०) भेजा हुआ, लौटा हुआ।
प्रतिशीवन-(सं०नपुं०) ठहरने का स्थान।
प्रतिशोध-(हिं० पुं०) बदला चुकाने के लिये किया जाने वाला काम।
प्रतिश्याय-(सं०पुं०) पीनस रोग।
प्रतिश्रम-(सं०पुं०) परिश्रम।
प्रतिश्रय-(सं०पुं०) यज्ञशाला, सभास्थान, निवास।
प्रतिश्रव-(सं०नपुं०) अंगीकार, स्वीकार।
प्रतिश्रुत-(सं० वि०) स्वीकार किया हुआ। **प्रतिश्रुति**-(सं०स्त्री०) अंगीकार, प्रतिध्वनि, गूंज, प्रतिज्ञा, **प्रतिश्रोता**-(सं०पुं०) अनुमति देने वाला।
प्रतिषिद्ध-(सं०वि०) निषेध किया हुआ।
प्रतिषेध-(सं०पुं०) खण्डन, निषेध वह अर्थालंकरा जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध का इस प्रकार वर्णन किया जाता है जिसमें इससे कोई विशेष अर्थ निकले; **प्रतिषेधक**-(सं०वि०) मना करने वाला, रोकने वाला। **प्रतिषेधन**-(सं० नपुं०) प्रतिषेध, निषेध।
प्रतिषेधनीय-(सं०वि०)मना करने योग्य।
प्रतिषेधोपमा-(सं०स्त्री०) उपमा अलंकार का वह भेद जहां उपमान और उपमेय की समानता प्रतिषेध द्वारा विलक्षण रूप से वर्णन की जाती है।
प्रतिष्टम्भ-(सं०पुं०) प्रतिबन्ध, रुकावट।
प्रतिष्ठा-(सं० स्त्री०) मान, मर्यादा, गौरव, आदर, सत्कार, व्रत का उद्यापन, देवता की प्रतिमा का स्थापन, स्थान, आश्रय, चार वर्णों का एक वृत्त, स्थिति, ठहराव, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति, एक प्रकार का छन्द।
प्रतिष्ठान-(सं० नपुं०) पुरूरवा की राजधानी, प्रतिष्ठित करने की क्रिया, उपाधि, पदवी, प्रसिद्धि, देवमूर्ति की स्थापना, स्थापित करने की क्रिया, वह कृत्य जो व्रतादि के समाप्त होने पर किया जाता है; **प्रतिष्ठानपुर**-चन्द्र वंश के पहिले राजा पुरूरवा की राजधानी।
प्रतिष्ठापन-(सं०नपुं०) किसी देवमूर्ति की स्थापना। **प्रतिष्ठापत्र**-(सं० पुं०) सम्मानपत्र, वह पत्र जो किसी की प्रतिष्ठा करने के लिये दिया जावे।
प्रतिष्ठावान्-(हिं०वि०) प्रतिष्ठा योग्य,

प्रतिष्ठित-(सं०वि०) प्रतिष्ठा युक्त, आदरप्राप्त, प्रशंसित, विख्यात, जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो, (पुं०) विष्णु।
प्रतिसंक्रम-(सं०पु०) संचार, प्रतिच्छाया
प्रतिसंख्या-(सं०स्त्री०) सांख्य के अनुसार ज्ञान का एक भेद, चेतना।
प्रतिसंवत्सर-(सं०अव्य०) हरसाल प्रतिवर्ष
प्रतिसंहृत-(सं०वि०) संकुचित, सिकुड़ा हुआ।
प्रतिसंचर-(सं०पुं०) प्रलय काल।
प्रतिसदृश-(सं० वि०) सबको समान देखने वाला।
प्रतिसन्धान-(सं० नपुं०) अनुसन्धान, ढूंढ़ना।
प्रतिसन्धि-(सं०पुं०) अनुसन्धान, पुनर्जन्म।
प्रतिसम-(सं० वि०) जो देखने में समान न हो।
प्रतिसर-(सं०पु०) जादू का मन्त्र, एक प्रकार का हाथ में पहरने का गहना, प्रातःकाल, सेना का पिछला भाग, भृत्य, नौकर, हथनी, मण्डल।
प्रतिसर्ग-(सं०पु०) ब्रह्मा की सृष्टि के बाद दक्ष आदि की सृष्टि।
प्रतिसव्य-(सं०वि०) विपरीत, प्रतिकूल।
प्रतिसन्धानिक-(सं०पुं०) मागध, स्तुति पाठक।
प्रतिसामन्त-(सं०पुं०) विपक्ष, शत्रु।
प्रतिसार-(सं०पु०) दूरीकरण, अलग करना। **प्रतिसरणीय**-(सं०वि०) एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान में ले जाने योग्य। **प्रतिसारित**-(सं०वि०) अलग किया हुआ, बदला हुआ, शोधा हुआ।
प्रतिस्त्री-(सं० स्त्री०) परनारी, दूसरे की स्त्री।
प्रतिस्थान-(सं०अव्य०) प्रत्येक स्थान में।
प्रतिस्पर्धा-(सं०स्त्री०) किसी काम में दूसरे से बढ़ने की इच्छा या उद्योग, चढा उपरी, विवाद, झगड़ा। **प्रतिस्पर्धी**-(सं० वि०) विद्रोही, उदण्ड, बराबरी करने वाला।
प्रतिस्राव-(सं० पुं०) कान में से पीब निकलने का एक रोग।
प्रतिहत-(सं०वि०) हटाया हुआ, मना किया हुआ, चोट खाया हुआ, उसकाया हुआ, रुका हुआ, बंधा हुआ, आशाहीन।
प्रतिहति-(सं०स्त्री०) क्रोध, हटाने की चेष्टा, टक्कर।
प्रतिहन्ता-(सं० पु०) बाधक, रोकने वाला; **प्रतिहन्तव्य**-(हिं०वि०) मारने योग्य।
प्रतिहरण-(सं०नपुं०) विनाश।
प्रतिहस्त-(सं०पुं०) प्रतिनिधि।
प्रतिहार-(सं०पुं०) द्वारपाल, दरवान, चोबदार, द्वार, ड्योढ़ी, ऐन्द्रजालिक, बाजीगर, प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी जो सर्वदा राजा के पास रहता था और उनको समाचार आदि सुनाया करता था। **प्रतिहारक**-(सं०पुं०) ऐन्द्रजालिक।
प्रतिहारी-(सं०पु०) द्वारपाल, दरवान।
प्रतिहार्य-(सं०वि०) परिहार्य, छोड़ने योग्य
प्रतिहास-(सं०पुं०) हंसी करने वाले के साथ हंसी, सफ़ेद कनेर का वृक्ष।
प्रतिहिंसा-(सं० स्त्री०) बदला लेना, बदला चुकाने के लिये हिंसा करना।
प्रतीक-(सं०पुं०) अवयव अंग, चिह्न परवल, मरु के पुत्र का काम, उपासना का एक भेद मुख, आकृति, किसी गद्य या पद्य के आदि या अन्त के कुछ शब्दों को लिख या पढ़कर पूरे वाक्य, या पद का पता लगाना।
प्रतीकार-(सं०पुं०) अपकार का बदला चुकाने लिये किया हुआ काम।
प्रतीकाश-(सं०पु०) प्रतिकाश, उपमा।
प्रतीकोपासना-(सं०स्त्री०) व्यापक ब्रह्म की भावना करके किसी विशेष पदार्थ का पूजन करना।
प्रतीक्ष-(सं०वि०) प्रतीक्षा करने वाला, **प्रतीक्षक**-(सं० वि०) आसरा देखने वाला, पूजा करने वाला। **प्रतीक्षण**-(सं०नपुं०) आसरा देखना, कृपादृष्टि,
प्रतीक्षा-(सं० स्त्री०) प्रतीक्षण, आसरा, प्रतिपालक, पालन पोषण। **प्रतीक्षणीय**-(सं०वि०) प्रतीक्षा करने योग्य।
प्रतीघात-(सं० पुं०) रुकावट, बाधा, टक्कर, निराशा।
प्रतीची-(सं० स्त्री०) पश्चिम दिशा। **प्रतीचीन**-(सं० वि०) पश्चिम दिशा का, पछांह का, पराङ्मुख, जिसने मुंह फेर लिया हो।
प्रतीच्छक-(सं०वि०) गाहक, लेने वाला।
प्रतीच्य-(सं०वि०) पश्चिम दिशा का।
प्रतीत-(सं०वि०) प्रसिद्ध, प्रसन्न, विदित, जाना हुआ।
प्रतीति-(सं०स्त्री०) विश्वास, दृढ़ निश्चय, प्रसिद्धि, आदर, आनन्द, ज्ञान।
प्रतीनाह-(सं०पुं०) कान का एक रोग, पताका।
प्रतीप-(सं० वि०) प्रतिकूल, उलटा, (पुं०) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम, एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय को उपमान के समान न कहकर इसके विपरीत उपमान को उपमेय के समान वर्णन करते हैं अथवा उपमेय द्वारा उपमान का तिरस्कार दिखलाया जाता है।
प्रतीपग-(सं० वि०) उलटा आचरण करने वाला। **प्रतीपगति**-(सं० स्त्री०) प्रतिकूल गति। **प्रतीपगमन**-(सं०नपुं०) प्रतिकूल गमन। **प्रतीपतरण**-(सं० नपु०) जल के प्रवाह के विपरीत नाव चलाना। **प्रतीपदर्शिनी**-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो देखते ही अपना मुंह फेर ले। **प्रतीपवचन**-(सं० नपुं०) प्रतिकूल वाक्य, खण्डन। **प्रतीपोक्ति**-(सं०स्त्री०) प्रतीप वचन।
प्रतीयमान-(सं०वि०) ध्वनि या व्यंग द्वारा प्रकट होता हुआ।
प्रतीर-(सं०नपुं०) तट, किनारा।
प्रतीवत-(सं०वि०) गोलाकार, वर्तुल।
प्रतीवाप-(सं०पुं०) देवी उपद्रव।
प्रतीवेश-(सं० पुं०) प्रतिवेश, पड़ोस। **प्रतीवेशी**-(सं०वि०) पड़ोस में रहने वाला, पड़ोसी।
प्रतीहार-(सं०पु०) द्वार, देखो प्रतिहार।
प्रतीहारी-(सं० पुं०) द्वारपालिका, ड्योढीदारिन।
प्रतुण्डुक-(सं०पु०) जीवक नामका साग।
प्रतुद-(सं०पु०) ऐसे पक्षी जो चोंच से तोड़कर अपना भक्ष्य खाते है।
प्रतुष्टि-(सं०स्त्री०) अधिक सन्तोष।
प्रतूलिका-(सं०स्त्री०) गद्दा।
प्रतोद-(सं०पु०) पैना, चाबुक।
प्रतोली-(सं०स्त्री०) सड़क, गली, गढ का वह द्वार जो नगर की ओर हो जिसमें सीढ़ियां लगी हों।
प्रतोशना-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट करना।
प्रत्न-(सं० वि०) पुरातन, प्राचीन, पुराना। **प्रत्नतत्व**-(सं० नपु०) वह विद्या जिसमें प्राचीन बातों का विवरण हो।
प्रत्यंचा-(हिं० स्त्री०) देखो प्रत्यंचा; धनुष की डोरी।
प्रत्यंश-(सं० नपुं०) प्रत्येक अंश या विभाग।
प्रत्यक्-(हिं०क्रि०वि०) पीछे, पश्चिम।
प्रत्यक् पुष्पी-(सं० स्त्री०) अपामार्ग, चिचिड़ा।
प्रत्यक्ष-(सं०वि०) इन्द्रिय ग्राह्य, जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा होसके, इन्द्रियगोचर, जो आँखों के सामने हो, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जो सबसे श्रेष्ठ माना जाता है; (हिं०क्रि०वि०) आंखों के सामने।
प्रत्यक्षता-(सं०स्त्री०) प्रत्यक्ष होने का भाव **प्रत्यक्षदर्शन**-(सं०नपु०) साक्षात् सबंध से देखना, वह साक्षी जिसने अपनी आंखों से किसी घटना को देखा हो। **प्रत्यक्षदर्शी**-(सं० वि०) वह साक्षी जिसने अपनी आंखों से घटना देखा हो। **प्रत्यक्षदृष्ट**-(सं०वि०) जो प्रत्यक्ष रूप से देखा गया हो।
प्रत्यक्षप्रमा-(सं०स्त्री०) यथार्थ ज्ञान।
प्रत्यक्षवादी-(सं० पुं०) वे लोग जो प्रत्यक्ष के भिन्न और किसी प्रमाण को नहीं मानते। **प्रत्यक्षीकरण**-(सं० नपुं०) इन्द्रियों द्वारा ज्ञान करा देना। **प्रत्यक्षीभूत**-(सं० वि०) जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हुआ हो।
प्रत्यगात्मन्-(सं० पुं०) ब्रह्मचैतन्य, परमेश्वर।
प्रत्यगाशापति-(सं०पुं०) पश्चिम दिशा के अधिपति, वरुण।
प्रत्यग्र-(सं०वि०) नूतन, नया, शोधा हुआ
प्रत्यंगिरा-(सं० स्त्री०) तान्त्रिकों की एक देवी।
प्रत्यञ्चा-(सं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
प्रत्यनीक-(सं० पुं०) विरोधी, शत्रु, विघ्न बाधा, प्रतिवादी, एक अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहने वाले या सबंधी के प्रति किसी हित या। अहित का किया जाना, वर्णन किया जाता है।
प्रत्यनुमान-(सं० नपु०) तर्क में वह अनुमान जो किसी दूसरे के अनुमान का खण्डन करते हुए किया जावे।
प्रत्यन्तपर्वत-(सं०पु०) किसी बड़े पर्वत के समीप का छोटा पर्वत।
प्रत्यन्तर-(सं० वि०) समीप, पास।
प्रत्यपकार-(सं० पुं०) किसी अपकार के बदले में किया हुआ अपकार।
प्रत्यभिचरण-(सं० पु०) रोकने या हटाने की क्रिया।
प्रत्यभिज्ञा-(सं० स्त्री०) वह ज्ञान जो किसी देखी हुई वस्तु को अथवा उसके समान किसी अन्य वस्तु के फिरसे देखने पर उत्पन्न हो। **प्रत्यभिज्ञादर्शन**-(सं० नपुं०) वह दर्शन जिसके अनुसार भक्तवत्सल महेश्वर ही परमेश्वर माने जाते हैं।
प्रत्यभिज्ञान-(सं० नपुं०) सदृश वस्तु देखकर किसी पहले देखी हुई वस्तु का स्मरण।
प्रत्यभिभाषी-(वि० वि०) अभिनन्दन करने वाला।
प्रत्यभियोग-(सं० पुं०) वह अभियोग जो अभियुक्त अपने अभियोग लगाने वाले पर चलावे।
प्रत्यभिवाद-(सं० पुं०) वह आशीर्वाद जो किसी बड़े का अभिवादन करने पर मिले।
प्रत्यमित्र-(सं० पुं०) शत्रु।
प्रत्यय-(सं० पु०) ज्ञान, बुद्धि, शपथ, सौगन्ध, विश्वास, प्रमाण, रूप, निश्चय, व्याकरण में वह अक्षर या शब्द जो मूल शब्द के अन्त में लगाने से विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करता है, छन्दों के भेद और उनकी संख्या जानने की रीति सम्मति निर्णय चिह्न, आवश्यकता, व्याख्या, विचार, आचार, प्रसिद्धि, कारण, हेतु, छिद्र, सहायक, स्वाद। **प्रत्ययकारी**-(सं० वि०) विश्वास दिलाने वाला। **प्रत्ययित**-(सं०वि०) विश्वस्त, विश्वास किया हुआ, लौटाया हुआ। **प्रत्ययी**-(सं०वि०) विश्वस्त, विश्वास पात्र।
प्रत्यर्चन-(सं० नपुं०) प्रति पूजा।
प्रत्यर्थक-(सं० पु०) वैरी, शत्रु।
प्रत्यर्थी-(सं० पुं०) शत्रु, प्रतिवादी,
प्रत्यर्पण-(सं० नपुं०) दान में पाये हुए धन को फिर से दान करना
प्रत्यर्पित-(सं० वि०) फिर से लौटाया हुआ।
प्रत्यवरोह-(सं० पुं०) सोपान, सीढ़ी, उतरना। **प्रत्यवरोही**-(सं० वि०) उतरने वाली।

प्रत्यवसान-(सं० नपुं०) भोजन ।

प्रत्यवसित-(सं० वि०) खाया हुआ ।

प्रत्यवस्कन्द-(सं० पुं०) प्रतिवादी का वह उत्तर जो वादी के कहने का खण्डन करने के लिये दिया जावे ।

प्रत्यवस्थान-(सं० नपुं०, शत्रु के रूप में रहना ।

प्रत्यवहार-(सं०पुं०)संहार,मारडालना ।

प्रत्यवाय-(सं० पुं०) नित्य कर्म न करने से उत्पन्न पाप,बड़ा परिवर्तन, उलटफेर ।

प्रत्यवेक्षण-(सं० नपुं०) अनुसन्धान, खोज, विचार, सावधानी ।

प्रत्यस्तगमन-(सं०नपुं०) सूर्यकाडूबना ।

प्रत्यस्त्र-(सं०नपुं०) तुल्य रूप का अस्त्र ।

प्रत्यह-(सं० अव्य०) प्रति दिन ।

प्रत्यक्षेपक-(सं० वि०) उपहास करने वाला, हँसी उड़ाने वाला ।

प्रत्याख्यात-(सं० वि०) अस्वीकृत ।

प्रत्याख्यान-(सं० नपुं०) निराकरण, दूर करना, खण्डन ।

प्रत्यागत-(सं० वि०) लौटा हुआ ।

प्रत्यागति-(सं० स्त्री०) दुबारा आना ।

प्रत्यागमन-(सं० नपुं०) लौट आना, वापसी ।

प्रत्याघात-(सं० पुं०) चोट के बदले चोट टक्कर ।

प्रत्याचार-(सं०पुं०) अच्छेआचरणवाला ।

प्रत्यात्मा-(सं० वि०) एकाकी, अकेला, (नपुं०) प्रतिबिम्ब, छाया ।

प्रत्यादिष्ट-(सं० वि०) जताया हुआ, छोड़ा हुआ ।

प्रत्यादेश-(हिं०पुं०) निराकरण,खण्डन ।

प्रत्यानयन-(हिं०नपुं०) फिर से लाना ।

प्रत्यानीत-(सं०वि०) फिरसे लायाहुआ ।

प्रत्यापत्ति-(सं०स्त्री०) वैराग्य पुनरागमन ।

प्रत्याम्नाय-(सं० पुं०) प्रतिनिधि रूप में किया जाने वाला ।

प्रत्यायक-(सं० वि०) विश्वासकारक ।

प्रत्यायित-(सं० वि०) विश्वस्त ।

प्रत्यालीढ-(सं० नपुं०) धनुष चलाने वाले के बैठने का एक ढंग ।

प्रत्यावर्तन-(सं० नपुं०) प्रतिनिवृत्ति, लौट आना ; **प्रत्यावृत्त**-(सं० वि०) लौटा हुआ, दोहराया हुआ ।

प्रत्याशा-(सं०स्त्री०) आकांक्षा, भरोसा,

प्रत्याशी-(हिं० वि०) अभिलाषी ।

प्रत्याश्रय-(सं० पुं०) शरण का स्थान ।

प्रत्यासत्ति-(सं०स्त्री०)निकटता,समीपता ।

प्रत्यासन्न-(सं०वि०)निकटवर्ती,समीपका ।

प्रत्यासर, प्रत्यासार-(सं०पुं०) सेना के पीछे का भाग ।

प्रत्याहार-(सं० नपुं०) योग के आठ अंगों में से एक जिसमे इन्द्रियों को उनके विषयों से हटा कर चित्त की ओर अनुसरण कराया जाता है, इन्द्रियों का पूर्ण रूप से निग्रह ।

प्रत्युक्त-(सं० वि०) उत्तरित, उत्तर दिया हुआ ।

प्रत्युत-(सं०अव्य०)इसके विरुद्ध, वरन्, विपरीतता, विपरीत भाव ।

प्रत्युत्कर्ष-(सं०पुं०) मूल्य की अधिकता ।

प्रत्युत्तर-(सं० नपुं०) उत्तर का उत्तर,

प्रत्युत्थान-(सं० नपुं०) किसी बड़े या पूज्य के आने पर उसके स्वागत के लिये आसन छोड़ कर खड़े हो जाना ।

प्रत्युत्पन्न-(सं०वि०) जो फिर से अथवा ठीक समय पर उत्पन्न हुआ हो, सत्वर; **प्रत्युत्पन्नमति**-ठीक समय पर काम करने वाली बुद्धि ।

प्रत्युदाहरण-(सं० नपुं०) उदाहरण के विपरीत उदाहरण ।

प्रत्युद्गम, प्रत्युद्गमन-(सं० नपुं०) देखो प्रत्युत्थान ।

प्रत्युपकार-(सं० पुं०) किसी उपकार के बदले में किया जाने वाला उपकार ।

प्रत्युपकारी-(सं० वि०) उपकार का बदला देने वाला । **प्रत्युपक्रिया**-(सं० स्त्री०) देखो प्रत्युपकार ।

प्रत्युपभोग-(हिं०पुं०) सुख का उपभोग ।

प्रत्युपवेश-(सं०पुं०) बलपूर्वक स्वीकार कराना ।

प्रत्युपस्थान-(सं०नपुं०)निकटवर्तीस्थान ।

प्रत्युपहार-(सं०नपुं०)भेटदेनेयोग्यद्रव्य।

प्रत्यूष, प्रत्यूष-(सं०पुं०) प्रभात,सवेरा, सूर्य, एक वसु का नाम ।

प्रत्यूह-(सं० पुं०) विघ्न, बाधा ।

प्रत्येक-(सं०वि०) बहुतों में से हर एक, अलग अलग । **प्रत्येकत्व**-(सं० पुं०) अलग अलग होने का भाव ।

प्रत्रास-(सं० पुं०) कम्प, कँपकँपी ।

प्रथम-(सं०वि०) प्रधान, मुख्य, पहिला, सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम, (क्रि०वि०) आगे, पहले; **प्रथम, कल्पित**-जिसकी कल्पना पहले की गई हो; **प्रथम कारक**-व्याकरण में कर्ता कारक; **प्रथम गर्भ**-प्रथम, बार का गर्भ ।

प्रथमज, प्रथमजात-(सं० वि०) अग्रज, जो पहले उत्पन्न हुआ हो ।

प्रथमत:-(सं० अव्य०) पहले से,सबसे पहले

प्रथम पुरुष-(सं० नपुं०) आदि पुरुष, पुराने समय का मनुष्य, व्याकरण में वह सर्वनाम जिसके विषय में कुछ कहा जाता है यथा-वह पुरुष, वह स्त्री, वह पशु आदि । **प्रथम रात्र**-(सं०पुं०) रात का पहला भाग ।

प्रथम सङ्गम-(सं०पुं०)पहलीबारभेंट ।

प्रथमा-(सं० स्त्री०) व्याकरणमें कर्ता कारक, मद्य, । **प्रथमार्ध**-(सं० पुं०) पहिले का आधा अंश ।

प्रथमी-(हिं० स्त्री०) देखो पृथ्वी ।

प्रथमेतर-(सं० वि०) भिन्न, दूसरा ।

प्रथा-(सं० स्त्री०) ख्याति, प्रसिद्धि, रीति, चाल, नियम ।

प्रथित-(सं० वि०) प्रसिद्ध ।

प्रथिवी-(सं० स्त्री०) देखो पृथ्वी ।

प्रथु-(सं० पुं०) देखो पृथु, विष्णु ।

प्रद-(सं० वि०) दाता, देने वाला, यौगिक शब्द के अन्त में इस शब्द का प्रयोग होता है जैसे सुखप्रद, कष्टप्रद इत्यादि ।

प्रदक्षिण-(सं० पुं०) देवमूर्ति को दाहिनी ओर करके भक्तिपूर्वक उसके चारों ओर घूमना, परिक्रमा ।

प्रदक्षिणा-(सं० स्त्री०) परिक्रमा ।

प्रदग्धव्य-(सं० वि०) दहन योग्य ।

प्रदत्त-(सं० वि०) अर्पित दिया हुआ, (पुं०) एक गन्धर्व का नाम ।

प्रदर-(सं० पुं०) तोड़ने या फाड़ने का काम, स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसदार स्राव निकलता है ।

प्रदर्श-(सं०पुं०) भेंट, आज्ञा । **प्रदर्शक**-(सं०वि०) देखने या दिखलाने वाला, (पुं०) गुरु । **प्रदर्शन**-(सं०नपुं०) उल्लेख, दिखलाने का काम, प्रदर्शनी ।

प्रदर्शनी-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहां पर भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तु लोगों को दिखलाने के लिये रक्खी जाती है ।

प्रदर्शित-(सं० वि०) दिखलाया हुआ ।

प्रदल-(सं० पुं०) वाण, तीर ।

प्रदव्य-(सं० पुं०) दावानल, जङ्गल की आग ।

प्रदहन-(सं०नपुं०)अच्छीतरहसेजलना ।

प्रदाता-(सं० वि०) अधिक दान देने वाला, (पुं०) इन्द्र । **प्रदातव्य**-(सं०वि०) दान देने के योग्य ।

प्रदान-(सं० नपुं०) दान देने की क्रिया, विवाह, अंकुश । **प्रदानरुचि**-(सं०वि०) जिसको दान देने में रुचि हो ।

प्रदानशूर-(सं० पुं०) दान वीर, बड़ा दानी । **प्रदायक**-(सं० वि०) दानकारी, दान देने वाला । **प्रदायी**-(सं० वि०) दान देने वाला ।

प्रदाव-(सं० नपुं०) दावाग्नि, जङ्गल की आग ।

प्रदाह-(सं० पुं०) शरीर में जलन जो अधिक ज्वर आदि में उत्पन्न होती है ।

प्रदिग्ध-(सं० नपुं०) विशेष प्रकार से पकाया हुआ मांस ।

प्रदिव-(सं० वि०) अत्यन्त चमकने वाला, पुरातन, पुराना, (स्त्री०) पर्व का दिन ।

प्रदिशा-(सं० स्त्री०) दो मुख्य दिशाओं के बीच का कोना ।

प्रदीप-(सं० पुं०) दीप, दीया, प्रकाश, सम्पूर्ण जाति का एक राग । **प्रदीपक**-(सं० पुं०) प्रकाशक, प्रकाश में लाने वाला, एक प्रकार का भयंकर स्थावर विष जिसके सूँघने से ही मनुष्य मर जाता है ।

प्रदीपति-(हिं० स्त्री०) देखो प्रदीप्ति ।

प्रदीपन-(सं० नपुं०) प्रकाश करने का काम, उद्दीपन, चमकाना, उजाला करना । **प्रदीपिका**-(सं० स्त्री०) छोटी लालटेन, एक रागिणी का नाम ।

प्रदीप्त-(सं० वि०) उज्वल, चमकता हुआ, प्रकाशवान्, जगमगाता हुआ ।

प्रदीप्ति-(सं० स्त्री०) प्रकाश, चमक ।

प्रदुमन-(हिं० पुं०) देखो प्रद्युम्न ।

प्रदेय-(सं० वि०) दान के उपयुक्त, दान करने योग्य ।

प्रदेश-(सं० पुं०) किसी देश का बड़ा विभाग, प्रान्त, सूबा, स्थान, संज्ञा, नाम, अङ्ग, अवयव, भीत, पद, अँगूठे के अगले सिरे से लेकर तर्जनी के अगले सिरे तक की दूरी, छोटा बित्ता ।

प्रदेशकारी-(सं० पुं०) योगियों का एक सम्प्रदाय । **प्रदेशन**-(सं०नपुं०)भेंट,

प्रदेशनी, प्रदेशिनी-(सं० स्त्री०) तर्जनी, अंगूठे के पास की अंगुली ।

प्रदेशी-(सं०वि०) प्रदेश सम्बन्धी ।

प्रदेह-(सं०पुं०) फोड़े आदि के ऊपर लगाने का लेप ।

प्रदोष-(सं० पुं०) रजनीमुख,रात्रि के प्रथम चार दण्ड का काल, सूर्यास्त के बाद चार दण्ड का काल, भारी अपराध, संध्या समय होने वाला अँधेरा, त्रयोदशी का व्रत जिसमे दिन भर उपवास करके सन्ध्या समय शिव का पूजन करके भोजन किया जाता है ।

प्रदोह-(सं०पुं०) दोहन, दुहना ।

प्रद्धटिका-(सं०स्त्री०) देखो प्रज्झटिका ।

प्रद्युम्न-(सं० पुं०) कन्दर्प, कामदेव, रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, (वि०) अत्यन्त बलवान, बड़ा वीर ।

प्रद्योत-(सं०पुं०) रश्मि, किरण,दीप्ति, चमक, एक यक्ष का नाम । **प्रद्योतन**-(सं०पुं०) सूर्य, (नपुं०) दीप्ति, चमक,

प्रद्राव-(सं०पुं०) पलायन, भागना ।

प्रद्वार-(सं०नपुं०) द्वार का अगला भाग

प्रद्वेष-(सं०पुं०) शत्रुता, वैर ।

प्रद्वेषण-(सं०नपुं०) घृणा, द्वेष ।

प्रधन-(सं०नपुं०) युद्ध, लड़ाई, (वि०) जिसके पास बहुत धन हो ।

प्रधर्ष-(सं० पुं०) आक्रमण, धावा ।

प्रधर्षक-(सं० वि०) आक्रमण करने वाला । **प्रधर्षण**-(सं०नपुं०)आक्रमण, चढ़ाई, अनादर, अपकार, बलात्कार

प्रधा-(सं०स्त्री०) दक्ष प्रजापति की कन्या जिसका विवाह कश्यप से हुआ था ।

प्रधान-(सं०नपुं०) ईश्वर, परमात्मा, सेनाध्यक्ष, सचिव, मन्त्री, सरदार, नेता; (वि०) मुख्य, सर्वश्रेष्ठ, उत्तम, प्रमुख । **प्रधानक**-(सं०नपुं०) सांख्य के अनुसार बुद्धितत्व । **प्रधानता**-(सं०स्त्री०) प्रधान होने का भाव या धर्म, कार्य या पद, पृष्ठता,उत्तमया ।

प्रधानात्मा-(सं०पुं०) परमात्मा विष्णु ।

प्रधानी-(हिं०स्त्री०)प्रधान का कर्म या पद

प्रधावन-(सं० नपुं०) वेग से दौड़ना, (पुं०) वायु, हवा ।

प्रधि-(सं० पुं०) नेमि,पहिये का धुरी ।

प्रधी-(सं०स्त्री०) तीव्र बुद्धि,

प्रधूपित-(सं०वि०) तप्त, तपाया हुआ,

दीप्त, चमकता हुआ।
प्रध्मात-(सं० वि०) शब्द करता हुआ।
प्रध्यान-(सं०नपुं०) गम्भीर ध्यान।
प्रध्वंस-(सं०पुं०) नाश, सांख्य के अनुसार किसी पदार्थ की अतीत अवस्था, **प्रध्वंसक**-(सं०वि०) नाश करने वाला, **प्रध्वंसन**-(सं० नपुं०) नाश; **प्रध्वस्त**-(सं०वि०) जो नष्ट हो गया हो, जो बीत गया हो।
प्रन-(हिं०पुं०) देखो प्रण, संकल्प, दृढ़ निश्चय।
प्रनति-(हिं०स्त्री०) देखो प्रणति।
प्रनवना-(हिं०क्रि०) देखो प्रणमना।
प्रनष्ट-(सं०वि०) अच्छी तरह से नष्ट।
प्रनामी-(हिं०पुं०) प्रणाम करने वाला, (स्त्री०) वह धन या दक्षिणा जो गुरु ब्राह्मण आदि को शिष्य या भक्त लोग प्रणाम करती समय देते हैं।
प्रनाली-(हिं०स्त्री०) प्रणाली।
प्रनाशन-(हिं०पुं०) देखो प्रणाशन।
प्रनाशी-(स०वि०) नाश करने वाला।
प्रनिघातन-(सं०नपुं०) वध, हत्या।
प्रनिपात-(हिं०पुं०) देखो प्रणिपात।
प्रनीड-(सं०वि०) घोंसला छोड़ने वाला (पक्षी)।
प्रपक्व-(सं०वि०)अच्छी तरहसे पका हुआ
प्रपक्ष-(सं०पुं०) पंख का अगला भाग।
प्रपञ्च-(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव, संचय, भवजाल, संसार, विपर्यास, उलट पुलट, संसारी जंजाल,झमेला, बखेड़ा, धोखा, आडम्बर, ढोंग। **प्रपञ्चक**-(सं०वि०) फैलाने वाला। **प्रपञ्चित**-(सं०वि०) भ्रमयुक्त, ठगा हुआ। **प्रपञ्ची**-(सं०वि०) प्रपञ्च करने वाला, छली, कपटी, ढोंगी, बखेड़िया, झगड़ालू।
प्रपण-(सं०पुं०) विनिमय, बदला।
प्रपत्ति-(स०स्त्री०) अनन्य भक्ति।
प्रपद-(स०नपुं०)पैर का अगला भाग।
प्रपन्न-(सं०वि०) प्राप्त, आया हुआ, शरणागत, शरण में आया हुआ।
प्रपर्ण-(सं०नपुं०) गिरा हुआ पत्ता।
प्रपलायन-(हिं०पुं०) पलायन, वेग से भाग जाना।
प्रपा-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहां प्यासों को पानी पिलाया जाता है,पौसरा।
प्रपाक-(सं०पुं०) पकाने की क्रिया।
प्रपाठक-(सं०पुं०) श्रौत ग्रन्थ (वेद) के अध्यायों का एक अंश।
प्रपाणि-(सं०पुं०) पाणितल, हथेली। **प्रपात**-(सं०पुं०) पहाड़ या चट्टान का खड़ा किनारा, पानी का झरना, फूल, किनारा, जल की धारा जो ऊंचे स्थान से गिरती हो,एकबारगी नीचे को गिरना।
प्रपाद-(सं०पुं०) असमय में प्रसव।
प्रपान-(सं०नपुं०) पौसरा, प्याऊ।
प्रपापूरण-(सं०नपुं०) पानी के कुण्ड को जल से भरना।
प्रपालन-(सं०नपुं०) अच्छी तरह रक्षा करना।
प्रपितामह-(सं०पुं०) परब्रह्म, ब्रह्मा, दादा के बाप, परदादा।
प्रपितव्य-(सं०पुं०) परदादा का भाई।
प्रपित्व-(सं०पुं०) संग्राम, युद्ध, (वि०) पाया हुआ, समीप का।
प्रपित्सु-(सं०वि०) पाने की इच्छा करने वाला।
प्रपीडन-(सं०नपुं०) अधिक कष्ट देना या सताना।
प्रपीडित-(वि०)अधिक कष्ट दिया हुआ
प्रपुञ्ज-(स०पुं०) बहुत बड़ा समूह या झुण्ड।
प्रपुत्र-(सं०पुं०) पौत्र, बेटे का बेटा।
प्रपुन्नड़, प्रपुनाट-(स० पु०) चकवड़ का वृक्ष।
प्रपुष्पित-(सं०वि०)फूलों से लदा हुआ।
प्रपूरक-(स०वि०) पूरा करने वाला, प्रसन्न करने वाला।
प्रपूरिका-(सं०वि०)कण्टकारी,भटकटैया
प्रपूरित प्रपूर्ण-(सं०वि०) परिपूर्ण किया हुआ, भरा हुआ।
प्रपृष्ठ-(सं०वि०) जिसकी पीठ ऊंची हो
प्रपौत्र-(सं०पु०) पोते का लड़का, परपोता **प्रपौत्री**-(सं०स्त्री०) पोते की कन्या, परपोती **प्रप्लावन**-(सं०नपुं०) पानी से आग बुझाना। **प्रफुड़ना, प्रफुलना**-(हिं०क्रि०)फूलना। **प्रफुला**-(हिं०स्त्री०) कमलिनी,कुमुदिनी,कोईं।
प्रफुलित-(हिं०वि०) कुसुमित, खिला हुआ, प्रफुल्ल, आनन्दित। **प्रफुल्ल**-(स०वि०) विकसित, खिला हुआ, कुसुमित,फूला हुआ प्रसन्न,आनन्दित, खुला हुआ,जो बंद या मुंदा हुआ न हो
प्रफुल्लित-(हिं०वि०) प्रफुल्ल।
प्रबन्ध-(सं०पुं०)बांधने की डोरी आदि, कई वस्तुओं या बातों का एक में गंठना, योजना, वाक्य रचना का विस्तार, उपाय, आयोजन,व्यवस्था, पूर्वापर संगति, बँधा हुआ क्रम।
प्रबन्धकल्पना-(स०स्त्री०)सन्दर्भ रचना, प्रबंध रचना,ऐसा लेख जिसमें थोड़ी ही बात सच हो और कथा में बहुत सी बातें मनसे गढ़कर मिलादी गई हो
प्रबर्ह-(स०वि०) प्रधान, श्रेष्ठ।
प्रबल-(सं०वि०) बलवान्, प्रचण्ड, उग्र, बड़ा, घोर।
प्रबला-(सं०स्त्री०) बहुत बलवती,प्रचण्ड
प्रबलाकी-(सं०पुं०) सर्प, साँप।
प्रबाल-(हिं०पुं०) देखो प्रवाल, मूंगा।
प्रबालपद्म-(सं०नपुं०) लाल कमल।
प्रबास-(हिं०पुं०) देखो प्रवास। **प्रबाह**-(हिं०पुं०) देखो प्रवाह।
प्रबाहु-(सं०पुं०) हाथ का अगला भाग, पहुँचा।
प्रबीन-(हिं०वि०) देखो प्रवीण।
प्रबुद्ध-(सं०वि०) पण्डित, ज्ञानी, जागा हुआ, खिला हुआ, सचेत; **प्रबुद्धता**-(सं०स्त्री०) यथार्थ या पूर्ण ज्ञानी।
प्रबोध-(सं०पुं०) यथार्थ ज्ञान, विकाश, चेतावनी नींद हटना,जागना, सान्त्वना, ढाढस, पूर्ण बोध। **प्रबोधक**-(सं०वि०) चेताने वाला, जगाने वाला, समझाने वाला, ढाढस देने वाला। **प्रबोधन**-(सं०नपु०) यथार्थ ज्ञान, जागरण, जागना, विकाश, खिलना, नींद से उठना, आश्वासक, ज्ञान देना। **प्रबोधना**-(हिं०क्रि०) नींद से उठना, जागना, समझना, बुझाना, सचेत करना, मन में बैठाना, ढाढस देना, सिखाना, पट्टी पढ़ाना। **प्रबोधनी**-(स०स्त्री०) कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी, देवोत्थान एकादशी जिस दिन भगवान् सोकर उठते हैं।
प्रबोधित-(स०वि०) जगाया हुआ, ज्ञान प्राप्त। **प्रबोधिता**-(सं०स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम जिसको सुनन्दिनी या मञ्जुभाषिणी भी कहते है।
प्रबोधी-(स० वि०) जगाने वाला।
प्रबोधिनी-(सं०स्त्री०) देखो प्रबोधनी।
प्रभग्न-(स०वि०)भग्न,टूटा फूटा हुआ।
प्रभञ्जन-(सं०पुं०) प्रचण्ड वायु,आंधी, तोड़ फोड़, विनाश।
प्रभद्र-(सं०पुं०)नीम का पेड़,(वि०) श्रेष्ठ
प्रभद्रक-(सं०नपुं०) पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
प्रभद्रा-(स०स्त्री०) प्रसारिणी लता।
प्रभव-(सं०पुं०) जन्म हेतु, जल निकलने का मार्ग, पराक्रम, उत्पत्ति, सृष्टि, संसार, विष्णु, एक संवत्सर का नाम, एक मुनि का नाम।
प्रभवन-(सं०नपुं) उत्पत्ति, अधिष्ठान
प्रभविष्णु-(सं०वि०) प्रभावशील,(पु०) विष्णु।
प्रभा-(स०स्त्री०) दीप्ति, चमक, प्रकाश, तेज, दुर्गा, कुबेरपुरी, राजा नहुष की माता का नाम, एक अप्सरा का नाम, सूर्य का विम्ब, बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसको मन्दाकिनी भी कहते हैं।
प्रभाउ-(हिं०पुं०) देखो प्रभाव।
प्रभाकर-(सं०पुं०) सूर्य, चन्द्रमा,अग्नि, समुद्र, एक नाग का नाम।
प्रभाकीट-(सं०पुं०) खद्योत, जुगनू।
प्रभाग-(सं०पुं०) विभाग का विभाग, भग्नांश।
प्रभात-(सं०नपुं०) प्रातःकाल, प्रत्यष, **प्रभाती**-(सं०स्त्री०) दनाधावन, दातुन, प्रातःकाल गाने की एक प्रकारकीगीत
प्रभान-(सं०नपुं०) ज्योति, दीप्ति।
प्रभापन-(स०नपुं०) उजाला करना।
प्रभापर्ण-(सं०वि०) प्रकाश करने वाला
प्रभामण्डल-(सं०नपुं०) गोलाकार रश्मि
प्रभामय-(स०वि०) दीप्तिमय।
प्रभाव (स०पुं०) प्रताप, तेज सामर्थ्य, महिमा, विक्रम, माहात्म्य, शक्ति, शान्ति, उद्भव,साहब,अन्तःकरण को किसी ओर प्रवृत्त करने का गुण, प्रवृत्ति पर होने वाला फल या परिणाम।
प्रभावज-(सं०वि०) प्रभाव से उत्पन्न।
प्रभावती-(सं०स्त्री०) बड़े प्रभाव वाली स्त्री, कुमार की एक मातृका का नाम, सूर्य की पत्नी, शिव की एक वीणा का नाम, तेरह अक्षरों का एक छन्द जिसको रुचिरा भी कहते हैं, एक राग का नाम।
प्रभावन-(सं०वि०) प्रभावशाली।
प्रभाष-(सं०पु०) एक वसु का नाम।
प्रभाषण-(सं०नपुं०) अच्छी तरह कहना
प्रभाषी-(स०वि०) अच्छी तरह से बोलने वाला।
प्रभास-(सं०पुं०) एक वसु का नाम, कुमार का एक अनुचर, ज्योति, दीप्ति, (वि०) पूर्ण प्रभा युक्त।
प्रभासन-(सं०नपुं०) दीप्ति, ज्योति।
प्रभासना-(हिं०क्रि०) दिखाई पड़ना।
प्रभिन्न-(सं०वि०) पूर्ण भेद युक्त।
प्रभु-(सं०पु०) विष्णु, शिव, पारद, पारा, अधिपति, नायक, स्वामी, नेता, अधिप, पालक, शब्द, भगवान् ईश्वर; **प्रभुता, प्रभुताई**-(सं०स्त्री०) महत्व, बड़ाई, वैभव, शासन का अधिकार; **प्रभुत्व**-(सं०पु०) देखो प्रभुता।
प्रभुत्वाक्षेप-(स०पुं०) एक अर्थालंकार जिसमें कोई नायिका अपने प्रभुत्व के अभिमान से नायक को बाहर जाने से रोकती है।
प्रभुभक्त-(सं०पुं०) बढ़िया घोड़ा,(वि०) स्वामिभक्त।
प्रभूत-(सं०वि०) प्रचुर, अधिक, उन्नत बढ़ा हुआ, निकाला हुआ, बहुत, (पुं०) पञ्चभूत, तत्व।
प्रभूति-(सं०स्त्री०) उत्पत्ति, शक्ति, अधिकता।
प्रभृति-(सं०अव्य०) इत्यादि, आदि।
प्रभेद-(स०पु०) विभिन्नता, भेद, अन्तर; शरीर में फोड़ा निकालना।
प्रभेदक-(सं०वि०) विभाग करने वाला; **प्रभेदनी**-(सं०स्त्री०) छेद करने का अस्त्र; **प्रभेदिका**-(सं०वि०) छेद करने वाली।
प्रभ्रंश-(सं०पुं०) विभिन्न होना, भ्रष्ट होना।
प्रभ्रष्ट-(सं०वि०) टूटा फूटा हुआ।
प्रमण्डल-(स०पुं०) पहिये का धुरा।
प्रमत्त-(सं०वि०) उन्मत्त, मतवाला, विक्षिप्त, पागल, जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो, जो सन्ध्या वन्दन आदि न करता हो, (पुं०) एक प्रकार का कौवा; **प्रमत्त गीत**-जो गीत पागल गाता हो; **प्रमत्तता**-(स्त्री०) पागलपन।
प्रमथ-(सं० पुं०) घोटक, घोड़ा, [illegible] के परिषद या गण जिनकी संख्या छत्तीस करोड़ कही जाती है, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
प्रमथन-(सं०स्त्री०) वध, हत्या, [illegible]

जड़ से उखाड़ना, रौंदना, छोड़ना, तिरस्कार, अपमान ।

प्रमथनाथ, प्रमथाधिप-(सं०पुं०) शिव, महादेव; **प्रमथालय**-(सं०पुं०) एक नरक का नाम ।

प्रमथित-(सं०नपुं०) नवनीत, मक्खन ।

प्रमद-(सं०पुं०) हर्ष, आनन्द, धतूरे का फल या फूल, वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम, उन्मत्तता, मतवालापन, (वि०) मतवाला ; **प्रमदकानन**-(सं०नपुं०) राजाओं के अन्तःपुर का बगीचा ।

प्रमदा-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर रहते हैं, देवी का एक नाम ; **प्रमदावन**-(सं०नपुं०) प्रमद कानन ;

प्रमन-(हिं०वि०) प्रसन्न ।

प्रमन्यु-(सं०वि०) बड़ा क्रोधी, (पुं०) अतिक्रोध ।

प्रमय-(सं०पुं०) बध, हिंसा ।

प्रमर्दन-(सं०वि०) अच्छी तरह से रगड़ने वाला, (पुं०) एक असुर का नाम, अच्छी तरह से मलना दलना, रौंदना, दमन करना, नष्ट करना ।

प्रमा-(सं०वि०) यथार्थ ज्ञान, शुद्ध बोध, वह ज्ञान जिसमें किसी प्रकार का भ्रम न हो ।

प्रमाण-(सं०नपुं०) सत्यता, सचाई, निश्चय, विष्णु, नित्य, मर्यादा, शास्त्र, एक अलङ्कार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का वर्णन हो, प्रमाणिक वस्तु, प्रमा, मूल धन, आदेश, प्रमाण पत्र, (वि०) सच बोलने वाला, मान्य, स्वीकार करने योग्य, प्रमाणित, चरितार्थ, (अव्य०) पर्यन्त, तक ; **प्रमाण कुशल**-अच्छा तर्क करने वाला ; **प्रमाण कोटि**-प्रमाण मानी जाने वाली बातों का समुदाय

प्रमाणता-(सं०स्त्री०) प्रमाण का भाव या धर्म ।

प्रमाणना-(हिं०क्रि०) देखो प्रमानना ।

प्रमाणपत्र-(सं०पुं०) वह लिखा हुआ कागज़ जिसपर का लेख किसी बात का प्रमाण हो; **प्रमाण पुरुष**-(सं०पुं०) जिसके निर्णय को मानने के लिये दोनों पक्ष के लोग तैयार हों, पंच;

प्रमाणलक्षण-(सं०नपुं०) वह लक्षण जिससे प्रमाण सिद्ध हो ; **प्रमाण वाक्य**-(सं०नपुं०) आप्त वाक्य, वेद वाक्य ।

प्रमाणान्तर-(सं०स्त्री०) अन्य प्रकार का उपाय ।

प्रमाणिक-(सं०वि०) वह जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध हो ।

प्रमाणिका-(सं०स्त्री०) छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं, इसका दूसरा नाम, नगस्वरूपिणी है; **प्रमाणित**-(सं०वि०) प्रमाण द्वारा सिद्ध, सच्चा ठहराया हुआ ।

प्रमाणी-(सं०स्त्री०) प्रमाणिका छंद ;

प्रमाणीकृत-(सं०वि०) प्रमाण रूप से जो स्वीकार किया गया हो ।

प्रमाता-(सं०वि०) प्रमाणों द्वारा प्रमेय के ज्ञान को प्राप्त करनेवाला, ज्ञान उत्पन्न करने वाला, आत्मा, चेतन पुरुष, विषय से भिन्न विषयी, द्रष्टा, साक्षी, (स्त्री०) पिता की माता, दादी

प्रमातामह-(सं०पुं०) मातामह का पिता, परनाना ; **प्रमातामही**-(सं०स्त्री०) प्रमातामह की पत्नी, परनानी ।

प्रमात्व-(सं०नपुं०) प्रमा का धर्म या भाव

प्रमाथ-(सं०पुं०) मथन बल पूर्वक हरण, मर्दन नाश करना दुःख देना, हत्या करना, शिव के एक गण का नाम, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, किसी स्त्री के साथ बलात्कार ; **प्रमाथी**-(सं०वि०) मारनेवाला, पीड़ा देनेवाला धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम एक अप्सरा का नाम ।

प्रमाद-(सं०पुं०) भ्रम, भ्रान्ति, असावधानी, अन्तःकरण की दुर्बलता, योग शास्त्र के अनुसार समाधि के साधनों को झूठा मानना ।

प्रमादिक-(सं०वि०) भूल चूक करनेवाला

प्रमादिका-(सं०स्त्री०) वह कन्या जिसको किसी ने दूषित कर दिया हो ।

प्रमादी-(सं०वि०) असावधानी करने वाला, (पुं०) बावला, पागल ।

प्रमादिनी-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम

प्रमान-(हिं०पुं०) देखो प्रमाण ; **प्रमानना**-(हिं०क्रि०) प्रमाणित मानना या करना, सिद्ध करना, स्थिर करना, यथार्थ जानना ।

प्रमानी-(हिं०वि०) प्रमाणिक, प्रमाण योग्य, माननीय, मानने योग्य ।

प्रमापण-(सं०नपुं०) मारण, नाश ।

प्रमापयिता-(सं०वि०) घातक, नाश करने वाला ।

प्रमार-(सं०पुं०) राजपूत क्षत्रियों की एक श्रेणी; देखो परमार ।

प्रमार्जक-(सं०वि०) निर्मल करने वाला; **प्रमार्जन**-(सं०नपुं०) अच्छी तरह से शुद्ध करना, झाड़ना, पोछना, हटाना

प्रमित-(सं०वि०) ज्ञात, विदित, निश्चित, अल्प, थोड़ा, परिमित, प्रमाणित ।

प्रमिताक्षरा-(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं

प्रमिताशन-(सं०नपुं०) अल्प भोजन ।

प्रमीति-(सं०स्त्री०) मृत्यु, मरण ।

प्रमीलक-(सं०पुं०) शरीर का आलस्य या दुर्बलता, झपकी, उँघाई; **प्रमीलन**-(सं०नपुं०) निमीलन, मूंदना; **प्रमीला**-(सं०स्त्री०) तन्द्रा, उँघाई, अवसाद, थकावट, ग्लानि, शिथिलता ; **प्रमीली**-(सं०वि०) आँख मूंदने वाला

प्रमुक्ति-(सं०स्त्री०) निर्वाण, मोक्ष ।

प्रमुख-(सं०नपुं०) समूह ढेर, आरम्भ, (वि०) मुख्य, प्रधान, पहला, प्रतिष्ठित, मान्य, (अव्य०) इससे आरम्भ करके, तत्काल, उसी समय, सामने, इत्यादि ।

प्रमुच-(सं०वि०) मुक्ति देने वाला ।

प्रमुद-(सं०स्त्री०) अत्यन्त आनन्द, (वि०) आनन्दित ; **प्रमुदित**-(सं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न ; **प्रमुदितवदना**-(सं०स्त्री०) बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसको मन्दाकिनी भी कहते हैं ।

प्रमुषित-(सं०वि०) अपहृत, चोराया हुआ

प्रमृश-(सं०वि०) पण्डित, विद्वान् ।

प्रमृष्ट-(सं०वि०) मार्जित धोया हुआ ।

प्रमेय-(सं०वि०) जो प्रमाण का विषय हो सके, जिसका मान बतलाया जा सके, निर्धारण करने योग्य, (पुं०) यथार्थ ज्ञान का विषय ; **प्रमेयत्व**-(सं०नपुं०) प्रमेय का भाव या धर्म ।

प्रमेह-(सं०पुं०) मूत्र दोष, बहुमूत्र का रोग, वह रोग जिसमें मूत्र के साथ शरीर के अनेक पोषक धातु निकला करते है; **प्रमेही**-(सं०पुं०) प्रमेह का रोगी ।

प्रमोक्ष-(सं०पुं०) निर्वाण, मुक्ति, छुटकारा ।

प्रमोचन-(सं०नपुं०) अच्छी तरह से छुड़ाना ।

प्रमोद-(सं०पुं०) हर्ष, आनन्द, सुख, कुमार के एक अनुचर का नाम, एक सिद्धि का नाम; **प्रमोदक**-(सं०पुं०) साठी नाम का धान ; **प्रमोदन**-(सं०पुं०) विष्णु, (नपुं०) आनन्द देना

प्रमोदा-(सं०स्त्री०) सांख्य के अनुसार आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जो आधिदैविक दुःखों पर प्राप्त होती है ।

प्रमोदित-(सं०वि०) हर्षित, आनन्दित ।

प्रमोदी-(सं०वि०) अति प्रसन्न, हर्षजनक ।

प्रमोह-(सं०पुं०) मूर्छा ; **प्रमोही**-(सं०वि०) मोह जनक ।

प्रयंक-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क ।

प्रयंत-(हिं०अव्य०) देखो पर्यन्त ।

प्रयत-(सं०वि०) पवित्र, नम्र, दीन, दिया हुआ ।

प्रयतात्मा-(सं०वि०) जितेन्द्रिय, संयमी ।

प्रयत्न-(सं०पुं०) चेष्टा, प्रयास, इष्ट साधन का ज्ञान, किसी काम करने की इच्छा, प्राणियों की क्रिया या व्यापार, व्याकरण में वर्णों के उच्चारण में होने वाली एक क्रिया जो दो प्रकार की होती है-मुख से ध्वनि निकलने के पहिले वागिन्द्रियों की क्रिया को आभ्यन्तर प्रयत्न तथा ध्वनि के अन्त की क्रिया को वाह्य प्रयत्न कहते हैं ।

प्रयत्नवान्-(हिं०वि०) प्रयत्न में लगा हुआ

प्रयसा-(सं०स्त्री०) एक राक्षसी जिसको रावण ने सीता को समझाने के लिये नियुक्त किया था ।

प्रयस्त-(सं०वि०) परिश्रम से किया हुआ

प्रयाग-(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा और यमुना के संगम पर है,

प्रयागवाल-(हिं०पुं०) प्रयाग तीर्थ का पंडा ।

प्रयाचक-(सं०वि०) याचना करने वाला, माँगने वाला ; **प्रयाचन**-(सं०नपुं०) याचना, प्रार्थना ।

प्रयाण-(सं०नपुं०) गमन, जाना, युद्ध-यात्रा, चढ़ाई, आरम्भ ; **प्रयाण काल**-जाने का समय, मृत्युकाल ।

प्रयात-(सं०पुं०) ऊंचा किनारा, (वि०) गया हुआ, मरा हुआ, सोया हुआ, (नपुं०) गमन, जाना ।

प्रयातव्य-(सं०वि०) चढ़ाई करने योग्य

प्रयास-(सं०पुं०) प्रयत्न, उद्योग आयास, श्रम, इच्छा ।

प्रयुक्त-(सं०वि०) अच्छी तरह से जोड़ा हुआ, प्रेरित, लगाया हुआ, जिसका प्रयोग किया गया हो, अच्छी तरह से मिला हुआ ।

प्रयुक्ति-(सं०स्त्री०) प्रयोजन, प्रयोग ।

प्रयुज्यमान-(सं०वि०) जिसका प्रयोग किया गया हो ।

प्रयुत-(सं०नपुं०) दस लाख की संख्या, (वि०) सहित, समेत, अस्पष्ट, अच्छी तरह मिला हुआ ।

प्रयुत्सु-(सं०पुं०) योद्धा, वीर, वायु, इन्द्र, सन्यासी ।

प्रयोक्ता-(सं०पुं०) प्रयोग का व्यवहार करने वाला, प्रधान अभिनय करने वाला, सूत्रधार, ऋण देने वाला, महाजन ।

प्रयोग-(सं०पुं०) अनुष्ठान, साधन, अनुमान में अवयवों का उच्चारण, नाटक का खेल, व्यवहार, क्रिया का साधन, कोई तान्त्रिक उपचार या साधन, दृष्टान्त, घोड़ा, यज्ञ आदि कर्मों की पद्धति, सूदपर रुपया देना, साम दण्ड आदि उपायोंका अवलंबन ।

प्रयोगातिशय-(सं०पुं०) नाटकाङ्ग प्रस्तावना का एक भेद ।

प्रयोगी-(सं०वि०) प्रयोग करने वाला ।

प्रयोजक-(सं०वि०) अनुष्ठान करने वाला, प्रेरक, काम में लाने वाला, प्रेरक, प्रदर्शक, प्रबन्ध करने वाला ।

प्रयोजन-(सं०नपुं०) हेतु, कार्य, काम, कारण, उद्देश्य, अभिप्राय, व्यवहार, उपयोग ।

प्रयोजनवती लक्षणा-(सं०स्त्री०) वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रगट करती हो ।

प्रयोजनवत्-(सं०वि०) अभिप्राय रखने वाला ।

प्रयोजनीय-(सं०वि०) काम का ।

प्रयोज्य-(सं०वि०) प्रयोग में लाने योग्य कर्तव्य, काम में लगाये जाने योग्य, (पुं०) मूल धन, नौकर ।

प्ररोच्य-(सं०वि०) प्रशंसा या आराधना करने योग्य ।

प्ररुह-(सं०वि०) भूमि के ऊपर बढ़ने वाला ।

प्ररूढ-(सं०वि०) प्रवृद्ध, अत्यन्त बढ़ा हुआ

उत्पन्न।
प्ररोचन-(सं० नपुं०) रुचि दिलाना, उत्तेजित करना, मोहित करना; **प्ररोचना**-(सं०स्त्री०) उत्तेजना, बढ़ावा, रुचि उत्पन्न करनेकी क्रिया, नाटक की प्रस्तावना का एक अंग जिसमें दर्शकों को रुचि उत्पन्न करने की बात कही जाती हैं, अभिनयके बीच में आगे आने वाली बातका रुचिकर रूप में कथन।
प्ररोह-(सं० पुं०) अंकुर, अंखुआ, ऊपर की ओर निकालना; **प्ररोहण**-(सं० नपुं०) उत्पत्ति, आरोह, चढाव, भूमि से निकालना, उगना; **प्ररोहभूमि**-(सं० स्त्री०) उर्बरा भूमि, उपजाऊ भूमि; **प्ररोहशाखी**-(सं०पुं०) ऐसे वृक्ष जिनकी कलम लगाने से लग जाय।
प्रलपन-(सं०नपुं०) अनर्थक बात।
प्रलपित-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।
प्रलम्ब-(सं०पुं०) एक दानव जिसको बलराम ने मारा था, पयोधर, स्तन, कार्य में शिथिलता, व्यर्थ का विलम्ब, ताड़ का अंकुर, रांगा, अंकुर, अखुआ, शाखा, डाल, एक प्रकार का हार, प्रलम्बन, लटकाव, (वि०) लम्बमान, लटका हुआ, निकला हुआ, बढ़ा हुआ, शिथिल; **प्रलम्बन**-(सं०नपुं०) लटकाव, झुलाव अवलम्बन, सहारा लेना; **प्रलम्बित**-(सं० वि०) नीचे तक लटका हुआ; **प्रलम्बी**-(सं०वि०) आश्रयी, सहारा लेने वाला, दूर तक लटकने वाला।
प्रलम्भ-(सं०नपुं०) अधिक लाभ।
प्रलम्भन-(सं०नपुं०) अतिलाभ छल, धोखा
प्रलय-(सं०पुं०) संसारके नाना रूपोंका प्रकृति में लीन होकर मिट जाना, कल्पान्त, वैष्णवों के मत से नायिकों के सात्विक भावों में से एक भाव, साहित्य में सात्विक भाव का एक भेद, मूर्छा, विलीन होना, लय को प्राप्त होना; **प्रलयता**-(सं० स्त्री०) प्रलयका भाव या धर्म; **प्रलयंकर**-(हिं० वि०) प्रलय करने वाला;
प्रलव-(सं० पुं०) खण्ड, टुकड़ा, छोटा अंश; **प्रलवन**-(सं०नपुं०) अच्छी तरह से काटना।
प्रलाप-(सं० पुं०) अनर्थक बात, व्यर्थ की बकवाद, पागलोंकी सी बकझक।
प्रलापक-(सं० पुं०) सन्निपात ज्वर का एक भेद; **प्रलापन**-(सं०नपुं०) बकवाद, बकझक; **प्रलापी**-(सं०वि०) अंडबंड बकने वाला।
प्रलीन-(सं० वि०) चेष्टा शून्य, जड़वत्; **प्रलीनता**-(सं० स्त्री०) प्रलय, नाश।
प्रलेन-(सं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, (वि०) छिन्न भिन्न, कटा हुआ।
प्रलेप-(सं०पुं०) शरीरपर किसी औषधि का लेप चढ़ाना; **प्रलेपक**-(सं० वि०) लेप करने वाला, (पुं०) एक प्रकार का पुराना ज्वर; **प्रलेपन**-(सं० पुं०) लेप करने या पोतने की क्रिया।
प्रलेहन-(सं०नपुं०) जीभसे किसी वस्तु को चाटना।
प्रलोप-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश।
प्रलोभ-(सं०पुं०) अति लोभ, लालच; **प्रलोभक**-(सं० वि०) ललचाने वाला; **प्रलोभन**-(सं०नपुं०) लोभ दिखाना, ललचाना; **प्रलोभी**-(सं०वि०) लोभ मे फंसाने वाला; **प्रलोभित**-(सं०वि०) ललचाया हुआ।
प्रलोलुप-(सं०वि०) बड़ा लालची।
प्रवंचना-(हि०स्त्री०) वर्तता, छल, कपट।
प्रवक्ता-(सं०वि०) उपदेश देनेवाला, अच्छी तरह समझाकर कहनेवाला।
प्रग-(सं०पुं०) खग, पक्षी।
प्रवचन-(सं० नपुं०) अर्थ खोल कर समझाना, वेदाङ्ग, किसी वाक्य की व्याख्या; **प्रवचनीय**-(सं०वि०) समझाकर कहने योग्य।
प्रवट-(सं०पुं०) गोधूम, गेहूँ।
प्रवण-(सं० वि०) जो क्रम से नीचा होता गया हो, ढालुवाँ, आयत, लंबा, उदार, आसक्त, क्षीण, विनीत, अनुकूल, नम्र, निपुण, नत, झुका हुआ, स्निग्ध, (पुं०) ढाल, उतार, चौरहा, पहाड़ का किनारा, आहुति, उदर, पेट
प्रवत्स्यत्पतिका-(सं०स्त्री०) वह नायिका जिसका पति विदेश जाने वाला हो। **प्रवत्स्यत्प्रयसी**-(सं० स्त्री०) देखो प्रवत्स्यत्पतिका।
प्रवदन-(सं० नपुं०) घोषणा।
प्रवपन-(सं०नपुं०) मूछ दाढ़ी मुड़वाना
प्रवपन-(सं०नपुं०) वेग से चलना।
प्रवयस्-(सं०वि०) बड्ढा, पुरातन, पुराना,
प्रवर-(सं० नपुं०) अगर की लकड़ी, गोत्र, सन्तति, काली मूँग, (वि०) श्रेष्ठ, मुख्य। **प्रवरललिता**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।
प्रवरा-(सं०स्त्री०) अगर की लकड़ी, पलाश वृक्ष।
प्रवर्ग-(सं० पुं०) हवन करने की अग्नि
प्रवर्त-(सं०पुं०) एक प्रकार का गोल आभूषण, एक प्रकार के मेघ, कार्यारम्भ, ठानना। **प्रवर्तक**-(सं० वि०) आरम्भ करनेवाला, किसी काम को चलाने वाला, प्रवृत्त करने वाला, काम में लगाने वाला, गति देनेवाला, न्याय करने वाला, आविष्कार करने वाला, उसकाने वाला, (नपुं०) नाटक में प्रस्तावना का वह भेद जिसमें सूत्रधार वर्तमान समय का वर्णन करता है। **प्रवर्तन**-(सं०नपुं०) प्रवृत्त कार्य आरम्भ करना, ठानना, प्रचार करना, काम को चलाना, उत्तेजना उसकाना। **प्रवर्तना**-(सं०स्त्री०) आरम्भ उत्तेजना, उभाड़ना, उसकाना, किसी कार्य में प्रवृत्ति।
प्रवर्तित-(सं० वि०) चलाया हुआ, आरंभ किया या ठाना हुआ, उभाड़ा हुआ, लौटाया हुआ।
प्रवर्ती-(सं०वि०) प्रवाहशील, अग्रगामी।
प्रवर्धक-(सं० वि०) वृद्धि करने वाला।
प्रवर्ष-(सं०पुं०) अति वृष्ठि। **प्रवर्षण**-(सं०नपुं०) अति वृष्टि, बहुत वर्षा, किष्किन्धा के समीप का एक पर्वत जिसपर राम लक्ष्मण ने निवास किया था।
प्रवर्ह-(सं०वि०) श्रेष्ठ, प्रधान।
प्रवल्हिका-(सं०स्त्री०) प्रहेलिका, पहेली।
प्रवसन-(सं०नपुं०) विदेश गमन।
प्रवह-(सं०पुं०) वह कुंड जिसमें नाली द्वारा जल जाता हो, बड़ा बहाव, सात वायुओं में से एक, घर, नगर आदि से बाहर निकलना।
प्रवहन-(सं०नपुं०) यान, सवारी, पोत, नाव, कन्या को व्याह देना।
प्रवाच-(सं०वि०) युक्ति पूर्वक बोलने वाला। **प्रवाचक**-(सं० वि०) अच्छा बोलने वाला। **प्रवाचन**-(सं० नपुं०) अच्छी तरह से कहना।
प्रवाण-(सं० नपुं०) कपड़े का किनारा बनाना।
प्रवात-(सं० पुं०) प्रबल वायु।
प्रवाद-(सं० पुं०) आपस की बातचीत, जन समाज में प्रसिद्ध वाक्य, अपवाद, जनरव, जनश्रुति। **प्रवादक**-(सं०पुं०) बाजा बजाने वाला। **प्रवाद्य**-(सं०वि०) कहने योग्य, प्रकाशित, करने योग्य।
प्रवान-(हिं० पुं०) देखो प्रमाण।
प्रवादी-(सं०वि०) बोने वाला।
प्रवार-(सं०पुं०) चादर, दुपट्टा।
प्रवारण-(सं०पुं०) निषेध।
प्रवाल-(सं०नपुं०) विद्रुम, मूँगा।
प्रवास-(सं०पुं०) विदेश, अपना घर या देश त्याग कर दूसरे देश में निवास करना।
प्रवासन-(सं०पुं०) देश या नगर से बाहर निकालना, वध। **प्रवासित**-(सं०वि०) देश से निकाला हुआ, हत, मारा हुआ। **प्रवासी**-(सं०वि०) परदेश में रहने वाला, परदेसी।
प्रवाह-(सं० पुं०) प्रवृत्ति, झुकाव, पानी की गति, जल का स्रोत, धारा, बहता हुआ पानी, विस्तार, चलता हुआ क्रम, कार्य का बराबर चलता रहना; **प्रवाहक**-(सं०वि०) अच्छी तरह लेजाने वाला।
प्रवाहणी-(सं०स्त्री०) मलद्वार की सबसे ऊपरी कुण्डली जो मल को बाहर फेंकती है।
प्रवाहिका-(सं० स्त्री०) ग्रहणी रोग, अतीसार, बहनेवाली नदी।
प्रवाहित-(सं०वि०) बहता हुआ, ढोया हुआ; **प्रवाहिनी**-(स्त्री०) नदी।
प्रवाही-(सं० वि०) बहने या बहाने वाला, तरल, द्रव, प्रवाह युक्त, (स्त्री०) वालुका, बालू।
प्रविख्याति-(सं० स्त्री०) अति प्रसिद्धि।
प्रविचय-(सं०पुं०) परीक्षा, अनुसन्धान खोज।
प्रविचार-(सं०पुं०) उत्तम रूपसे विचार।
प्रविदारण-(सं०नपुं०) युद्ध, लड़ाई।
प्रविपल-(सं०पुं०) विपल के साठ भाग में से एक भाग।
प्रविरल-(सं०वि०) अत्यल्प, बहुत थोड़ा
प्रविवाद-(सं०पुं०) तर्क वितर्क करना।
प्रविषा-(सं०स्त्री०) अतिविषा, अतीस।
प्रविष्ट-(सं०वि०) पैठा हुआ, घुसा हुआ। **प्रविष्टक**-(सं०नपुं०) घरमें घुसनेवाला
प्रविसना-(हि०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना
प्रविस्तार-(सं० पुं०) पर्याप्ति चौड़ाई।
प्रवीण-(सं० वि०) निपुण, शिक्षित, कुशल, चतुर अच्छा गाने बजाने वाला। **प्रवीणता**-(सं०स्त्री०) कुशलता, चतुराई।
प्रवीर-(सं०वि०) बड़ा योद्धा, बहादुर, **प्रवीरवर**-एक प्रकार के असुर; **प्रवीरबाहु**-एक प्रकार के राक्षस।
प्रवृत्-(सं०नपुं०) अन्न, अनाज।
प्रवृत्त (सं० वि०) नियुक्त, रत, लीन, किसी ओर झुका हुआ, उत्पन्न।
प्रवृत्तक-(सं० नपुं०) एक मात्रावृत्त का नाम।
प्रवृत्ति-(सं०स्त्री०) प्रवाह, बहाव, वार्ता, वृत्तान्त, चित्त का किसी ओर लगाव या झुकाव, उत्पत्ति, सांसारिक विषयों का ग्रहण, नैयायिकों के मत से एक यत्न विशेष, हाथी का मद।
प्रवृद्ध-(सं० वि०) प्रौढ, अत्यंत पका हुआ, अच्छी तरह से बढा हुआ, (पुं०) तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।
प्रवृद्धि-(सं०स्त्री०) उन्नति।
प्रवेण-(सं०पुं०) एक प्रकार का बकरा।
प्रवेता-(सं० पुं०) रथ हाँकने वाला, सारथी।
प्रवेद-(सं०पुं०) अच्छी समझ।
प्रवेदन-(सं०नपुं०) ज्ञापन, घोषणा।
प्रवेप-(सं०पुं०) कम्पन, कँपकँपी।
प्रवेरित-(सं०वि०) इधर उधर पड़ा हुआ;
प्रवेश-(सं० पु०) गति, पहुँच, भीतर जाना, घुसना, किसी विषय की जानकारी।
प्रवेशक-(सं०पुं०) नाटक के अभिनय में वह स्थल जहाँ कोई पात्र अपनी वार्तालाप से दो अकों के बीच की घटना का परिचय देता है।
प्रवेशना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना।
प्रवेशनीय-(सं०वि०) घुसने योग्य।
प्रवेशिका-(सं० स्त्री०) प्रवेश के लिये दिया जाने वाला धन, वह पत्र, चिह्न आदि जिसको दिखला कर कोई कहीं प्रवेश पा सकता है। **प्रवेशित**-(सं०वि०) प्रवेश कराया हुआ। **प्रवेश्य**-(सं०वि०) घुसने योग्य।
प्रवेष्ट-(सं०पुं०) बाहु का निचला भाग।
प्रवेष्टक-(सं०पुं०) दक्षिण बाहु, दहना हाथ।
प्रबोध-(सं०नपुं०) ज्ञान, समझ।

प्रव्रजन-(सं०नपुं०) सन्यास ।
प्रव्रजिता-(सं०स्त्री०)जटामासी, गोरखमुंडी
प्रव्रज्या-(सं०स्त्री०) सन्यासिन ।
प्रव्रश्चन-(सं०पुं०) कुठार, कुल्हाड़ी ।
प्रव्राज-(सं०पुं०) बहुत नीची भूमि, सन्यास ।
प्रव्राजित-(सं०वि०)निर्वासित,देशनिकाला
प्रशंस-(हिं०वि०) प्रशंसा के योग्य,(स्त्री०) प्रशंसा। **प्रशंसक**-(सं०वि०)प्रशंसाकारी, स्तुति करने वाला। **प्रशंसन**-(सं०नपुं०) गुणकीर्तन, गुणों का वर्णन करते हुए स्तुति करना, सराहना, धन्यवाद।
प्रशंसना-(हिं०क्रि०)गुणानुवाद करना, प्रशंसा या स्तुति करना।
प्रशंसनीय-(सं०वि०)प्रशंसा के योग्य,
प्रशंसा-(सं० स्त्री०) प्रशंसन, बड़ाई, स्तुति। **प्रशंसित**-(सं०वि०) प्रशंसा युक्त, सराहा हुआ।
प्रशंसोपमा-(सं०स्त्री०) वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशंसा करके उपमा की प्रशंसा दिखलाई जाती है।
प्रशंस्य-(सं०वि०) प्रशंसनीय।
प्रशम-(सं०पुं०) उपशमन, शान्ति।
प्रशमन-(सं०स्त्री०)मारण, वध, शमता, शान्ति, स्थिर करना, वश में लाना, (वि०) शान्ति करनेवाला।
प्रशस्त-(सं०वि०) प्रशंसनीय, मनोहर, अति श्रेष्ठ,उत्तम, (नपुं०) क्षेम,कुशल;
प्रशस्तपाद-(सं०पुं०)एक प्रसिद्ध नैयायिक जिन्होंने वैशेषिक सूत्र की टीका लिखी हैं।
प्रशस्ति-(सं०स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति, वह प्रशंसा सूचक वाक्य जो किसी को पत्र लिखते समय पत्र के आदि में लिखा जाता है, सिरनामा, राजा के वह आज्ञापत्र जो प्राचीन समय में पत्थरों, चट्टानों या ताम्रपत्रों पर खोदे जाते थे, प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों के आदि और अन्त की कुछ पंक्तियां जिनमे पुस्तक के कर्ता, विषय, काल आदि का कुछ पता चलता है। **प्रशस्तिकृत्**-(सं० वि०) प्रशंसा करने वाला।
प्रशस्य-(सं०वि०)प्रशंसनीय,श्रेष्ठ,उत्तम;
प्रशाखा-(सं०स्त्री०) शाखा में से निकली हुई शाखा, टहनी।
प्रशान्त-(सं०वि०) स्थिर, चंचलता रहित, शान्त, निश्चल वृत्ति का, (पुं०)एक महासागर जो एशिया और अमेरिका के बीच में है। **प्रशान्तता**-(सं०स्त्री०) निश्चलता, शान्ति।
प्रशान्तात्मा-(सं०पुं०) शिव, महादेव, प्रशांत स्वभाव वाला।
प्रशासित-(सं० वि०) अच्छा शासन किया हुआ, शिक्षित।
प्रशास्ता-(सं०पुं०) शासनकर्ता।
प्रशिथिल-(सं०वि०)अति शिथिल, बहुत थका हुआ।
प्रशिष्य-(सं०पुं०) शिष्य का शिष्य।

प्रशोष-(सं०पुं०)शुष्क होना, सोखना,।
प्रशोषण-(सं०पुं०) सोखना, सुखाना।
प्रश्न-(सं०पुं०)जिज्ञासा, पूछने की बात विचारणीय विषय, एक उपनिषद् का नाम।
प्रश्नदूती-(सं०पुं०) प्रहेलिका, पहेली, बुझौवल।
प्रश्नि-(सं०स्त्री०) एक ऋषि का नाम, जलकुम्भी।
प्रश्नोत्तर-(सं०नपुं०) प्रश्न का उत्तर, वह काव्यालङ्कार जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं।
प्रश्रय-(सं०पुं०) विनय, आश्रय स्थान, सहारा, टेक, एक देवता का नाम।
प्रश्रयण-(सं०नपुं०)विनय, शिष्टाचार;
प्रश्रयी-(सं०वि०) शान्त, नम्र,विनीत;
प्रश्लिष्ट-(सं०वि०) अच्छी तरह मिला हुआ।
प्रश्लेष-(सं०पुं०) व्याकरण की सन्धि में स्वरों का परस्पर मिल जाना।
प्रश्वास-(सं०पुं०) साँस लेती समय वह वायु जो नाक से बाहर निकलती हैं;
प्रष्टव्य-(सं०वि०) पूछा जाने योग्य।
प्रष्टा-(सं०पुं०) प्रश्नकर्ता पूछनेवाला।
प्रष्ठि-(सं०पुं०) तीन बैल की गाड़ी मे वह बैल जो आगे जोता जाता है,तिपाई;
प्रसंख्या-(सं०स्त्री०) चिन्ता, ध्यान।
प्रसक्त-(सं०वि०)सबद्ध,आसक्त,संश्लिष्ट, लगा हुआ, मिला हुआ। **प्रसक्ति**-(सं०स्त्री०) प्रसंग, अनुमति, आपत्ति।
प्रसङ्ग-(सं०पुं०) घनिष्ठ सबंध, मेल, हेतु,कारण,प्रस्ताव, मैथुन, अनुरक्ति, लगन, विषयों का परस्पर संबंध, व्याप्ति, रूप संबन्ध, प्रकरण, अर्थ की संगति, विस्तार। **प्रसङ्गसम**-(सं०पुं०) न्याय में जाति के अन्तर्गत एक प्रकार का प्रतिषेध।
प्रसत्ति-(सं०स्त्री०) निर्मलता, शुद्धि।
प्रसंसना-(हिं०क्रि०) बड़ाई करना।
प्रसन्न-(सं०वि०) सन्तुष्ट,निर्मल,स्वच्छ, अनुकूल, (पुं०) महादेव, शिव।
प्रसन्नता-(सं०स्त्री०) अनुग्रह, कृपा, हर्ष, आनन्द प्रफुल्लता,निर्मलता,स्वच्छता;
प्रसन्नमुख-(सं०वि०) जिसकी आकृति से प्रसन्नता टपकती हो। **प्रसन्नात्मा**-(सं०वि०) जो सदा प्रसन्न रहे, (पुं०) विष्णु। **प्रसन्नित**-(सं० वि०) देखो प्रसन्न।
प्रसन्नान्ध-(सं०पुं०) घोड़े की आँख का एक रोग।
प्रसभ-(सं०वि०) बलात्कार संबंधी।
प्रसर-(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव, वेग, समूह, व्याप्ति, साहस, वीरता, उत्पत्ति, प्रेम।
प्रसरण-(सं०नपुं०)सेना का इधर उधर जाना, आगे बढ़ना, फैलाव, उत्पत्ति, व्याप्ति, विस्तार।
प्रसरित-(सं०वि०)विस्तृत, फैला हुआ, आगे बढ़ा हुआ।
प्रसर्जन-(सं०वि०) गिराना, डालना।

प्रसर्पण-(सं०नपुं०) फैलाव, घुसना, पैठना।
प्रसर्पी-(सं०वि०)गतिशील, रेंगने वाला।
प्रसव-(सं०पुं०) बच्चा जनने की क्रिया, प्रसूति, जन्म, उत्पत्ति,सन्तान,आज्ञा;
प्रसवन-(सं० नपुं०) बच्चा जनना, गर्भपात। **प्रसवना**-(हिं०क्रि०) उत्पन्न होना।
प्रसव वेदना-(सं०स्त्री०) वह पीड़ा जो बच्चा जानने के समय होती है।
प्रसविता-(सं०वि०) जन्म देने वाला, आज्ञा देने वाला, पिता, बाप।
प्रसवित्री-(सं०वि०) जन्म देने वाली, माता। **प्रसविनी**-(सं० स्त्री०) जन्म देने वाली, माता।
प्रसव्य-(सं०वि०) प्रतिकूल, (पुं०) बाईं ओर से परिक्रमा करना।
प्रसहन-(सं०पुं०)सहन, क्षमा, आलिंगन;
प्रसातिका-(सं०स्त्री०)सावाँ नाम का अन्न;
प्रसाद-(सं०पुं०) प्रसन्नता, स्वच्छता, कृपा, अनुग्रह, स्वास्थ्य, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय, वह पदार्थ जिसको देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें,देवता को चढाने की वस्तु, काव्य का गुण या भेद,वह स्वच्छ भाषा जिसको सुनते ही भाव समझ में आ जावे, शब्दालंकार के अन्तर्गत एक वृत्ति, धर्म की पत्नी मूर्ति से उत्पन्न एक पुत्र।
प्रसादक-(सं०वि०)निर्मल, प्रसन्न करने वाला,(पुं०)प्रसाद। **प्रसादन**-(सं०वि०) प्रसन्न करने वाला,प्रसन्नता देनेवाला;
प्रसादना-(सं०स्त्री०) परिचर्या, सेवा।
प्रसादनीय-(सं०वि०)प्रसन्न करने योग्य।
प्रसादान्न-(सं०नपुं०) देवता का प्रसाद रूप अन्न।
प्रसादी-(हिं०स्त्री०) नैवेद्य, देवताओं को चढ़ाया हुआ पदार्थ, वह पदार्थ जो बड़ा छोटे को देता हो।
प्रसाधक-(सं०वि०)सम्पादन करनेवाला राजाओं को कपड़ा गहना आदि पहनाने वाला। **प्रसाधन**-(सं०नपुं०) अलंकार, शृगार, वेश। **प्रसाधनी**-(सं०स्त्री०) सिद्धि, कंघी। **प्रसाधित**-(सं०वि०) अलंकृत, सजाया हुआ।
प्रसार-(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव इधर उधर जाना, निर्गम, निकास, संचार;
प्रसारना-(हिं०क्रि०) फैलाना।
प्रसारण-(सं०नपुं०) विस्तारकरण, फ़ैलाना,पसारना,बढ़ाना। **प्रसारिणी**-(सं०स्त्री०)गन्धप्रसारी लता, चारुपर्णी;
प्रसारित-(सं०वि०)विस्तरित, फैलाया हुआ। **प्रसारिणी**-(सं०स्त्री०)लजालू, लाजवन्ती,देववान। **प्रसारी**-(सं०वि०) फैलाने वाला।
प्रसित-(सं०नपुं०) पीब, मवाद।
प्रसिति-(सं०स्त्री०) किरण, ज्वाला, रस्सी।
प्रसिद्ध-(सं० वि०) विख्यात, अलंकृत, विभूषित, सजाया हुआ। **प्रसिद्धता**-(सं० स्त्री०) प्रसिद्ध होने का भाव;
प्रसिद्धि-(सं०स्त्री०) ख्याति, सिंगार;
प्रसुत-(सं०वि०)दबाकर निचोड़ा हुआ।
प्रसुप्त-(सं०वि०) निद्रित, सोया हुआ।
प्रसुप्ति-(सं०स्त्री०)उत्तम निद्रा, गहरी नींद।
प्रसू-(सं० स्त्री०) माता, जननी,घोड़ी, केला, (वि०) उत्पन्न करने वाली।
प्रसूका-(सं०स्त्री०) घोड़ी, असगन्ध।
प्रसूत-(सं०वि०) संजात, उत्पन्न, (पुं०) कुसुम, फूल, स्त्रियों का एक रोग जो प्रसव के बाद होता है, (हिं०पुं०) एक रोग जिसमें हाथ पैर से पसीना छूटता है। **प्रसूता**-(सं०स्त्री०) बच्चा जनने वाली स्त्री। **प्रसूति**-(सं०स्त्री०) प्रसव, जनन, उद्भव, तनय, बेटा बेटी, सन्तान कारण, उत्पत्ति स्थान, दक्ष प्रजापति की स्त्री का नाम, वह स्त्री जिसने प्रसव किया हो।
प्रसूतिका-(सं०स्त्री०) प्रसूता।
प्रसून-(सं०नपुं०) पुष्प, फूल, मदार का वृक्ष। **प्रसूनक**-(सं०पुं०)मुकुल, कली, फूल। **प्रसूनबाण, प्रसूनेषु**-(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव।
प्रसृत-(सं०वि०) बढ़ा हुआ, फैला हुआ, नियुक्त, तत्पर, भेजा हुआ, गया हुआ, (पुं०)हथेली भर का मान,गहरी की हुई हथेली।
प्रसृता-(सं०स्त्री०) जंघा, जांघ।
प्रसृति-(सं०स्त्री०)विस्तार,फैलाव,सन्तति, सोलह तोले का परिमाण।
प्रसृष्ट-(सं० वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ, दुःखित।
प्रसेक-(सं०पुं०) सेंकना, निचोड़,छिड़काव, एक असाध्य रोग, पसेव।
प्रसेद-(हिं०पुं०) पसीना।
प्रसेदिका-(सं०स्त्री०) छोटा बगीचा।
प्रसेव-(सं०पुं०) बीन की तुंबी, कपड़े की थैली, (वि०) सिला हुआ; विख्यात, प्रसिद्ध।
प्रस्कन्द-(सं०नपुं०) विरेचन, अतिसार रोग, शिव, महादेव। **प्रस्कन्दिका**-(सं०स्त्री०) संग्रहणी रोग।
प्रस्खलन-(सं०नपुं०) पतन, गिराव।
प्रस्तर-(सं०पुं०) शिला, पत्थर, मणि, बिछावन, चमड़े की थैली, प्रस्तार, समतल, एक ताल का नाम। **प्रस्तरण**-(सं०नपुं०) बिछावन, बिछौना।
प्रस्तरिणी-(सं० स्त्री०) गोजिह्वा, गावजवाँ।
प्रस्तव-(सं०पुं०)स्तुति, प्रशंसा, प्रभाव।
प्रस्तरोपल-(सं०पुं०)चन्द्रकान्त मणि।
प्रस्तान्न-(सं०पुं०) पुराना चावल।
प्रस्तार-(सं० पुं०) घास का जंगल, पत्तों का बिछौना, विस्तार, फैलाव, वृद्धि, परत, सीढ़ी, समतल भूमि, छन्द शास्त्र के अनुसार वह प्रत्यय जिससे छन्दों के भेद की संख्या और रूपों का ज्ञान होता है; प्रस्तार,

पङ्क्ति-पंक्ति छन्द का एक भेद ।
प्रस्ताव-(सं० पुं०) अवसर, प्रकरण, विषय, छिड़ी हुई बात, चर्चा, सभा के सामने उपस्थित की हुई बात, विषय, परिचय, भूमिका ।
प्रस्तावक-(सं०पुं०)प्रस्ताव करनेवाला ।
प्रस्तावन-(सं०पुं०) प्रस्ताव करने का भाव । **प्रस्तावना**-(सं०स्त्री०) आरम्भ कथोद्घात, वह प्रसंग जो नाटकादि ग्रन्थमें अभिनय के पर्व विषय का परिचय देने के लिये उठाया जाता है । **प्रस्तावित**-(सं०वि०)जिसके लिये प्रस्ताव किया गया हो ।
प्रस्तुत-(सं०वि०)उपयुक्त, योग्य,प्राप्त, उद्यत, तैयार, प्रकरण युक्त, जिसकी प्रशंसा की गई हो, जो किया गया हो, जो कहा गया हो ।
प्रस्तुतालङ्कार-(सं०पुं०) वह अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत विषय के संबंध में कोई बात कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत में घटाया जाता है ।
प्रस्तुति-(सं०स्त्री०) प्रस्तावना, प्रशंसा, उपस्थित, स्मृति ।
प्रस्थ-(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक मान जो प्रायः एक द्रोण का सोलहवां भाग माना जाता था, पहाड़ का ऊंचा किनारा,विस्तार, फैलाव ।
प्रस्थपुष्प-(सं० पुं०) छोटे पत्तों की तुलसी, जंबीरी नीबू ।
प्रस्थान-(सं०नपुं०) मार्ग, गमन, पहरने के वस्त्र आदि जिसको ठीक मुहूर्त न मिलने पर लोग यात्रा की दिशा मे किसी के घर रख आते हैं और यात्रा करते समय ले लेते हैं । **प्रस्थानत्रयी**-ब्रह्मसूत्र उपनिषद और गीता । **प्रस्थानी**-(हिं० वि०) प्रस्थान करने वाला, जाने वाला । **प्रस्थापन**-(सं० नपुं०) स्थापन, प्रस्थान करना, भेजना । **प्रस्थायी**-(सं०वि०) प्रेषित, भेजा हुआ ।
प्रस्थायी-(सं०वि०) जो भविष्यमें यात्रा करने वाला हो ।
प्रस्थिका-(सं०स्त्री०) आमड़ा पुदीना ।
प्रस्थित-(सं०वि०) जो जाने को तैयार हो, जो गया हो, स्थिर,ठहरा हुआ, दृढ़. **प्रस्थिति**-(सं० स्त्री०) प्रस्थान, यात्रा ।
प्रस्निग्ध-(सं०वि०) तेल लगाया हुआ ।
प्रस्नषा-(सं०स्त्री०)पतोह, पुत्र की स्त्री ।
प्रस्फट-(सं०वि०) प्रकट, खिला हुआ ।
प्रस्फुरण-(सं०पुं०) प्रकाशित होना ।
प्रस्फोटन-(सं०नपुं०)सूर्प, सूप, पीटना, विकसित होना, फटकना किसी पदार्थका एकाएक फूटना या खुलना, जिसमें भीतर का पदार्थ वेग से बाहर निकल आवे ।
प्रस्रव-(सं०पुं०) झरना, बहना । **प्रस्रवण**-(सं०पुं०) स्वेद, पसीना, किसी स्थान से निकल कर बहता हुआ पानी, सोता, झरना, दूध, मूत्र ।
प्रस्राव-(सं०पुं०) अच्छी तरह से बहना, मत्र ।
प्रस्रुत-(सं०वि०)झड़ा हुआ,गिरा हुआ ।
प्रस्वाद-(सं०वि०) अच्छा स्वाद देने वाला ।
प्रस्वाप-(सं०पुं०) वह वस्तु जिसके प्रयोग से निद्रा आवे ।
प्रस्वेद-(सं०पुं०) घर्म, पसीना ।
प्रहत-(सं०वि०) प्रताड़ित, पीटा हुआ, प्रसारित, फैलाया हुआ,(पुं०) प्रहार।
प्रहन्ता-(सं०वि०) मारने वाला ।
प्रहर-(सं०पुं०)दिन रात में आठ भागों में से एक भाग, तीन घन्टे का समय । **प्रहरक**-(सं० पुं०) पहरेदार जो घण्टा बजाता हो ।
प्रहरखना-(हिं०क्रि०) आनन्दित होना,
प्रहरण-(सं० नपुं०) मारना, फेंकना, हटाना, हरण करना, छीनना ।
प्रहरणकालिका-(सं० स्त्री०) चौदह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति । **प्रहरणीय**-(सं०वि०) हरण करने योग्य ।
प्रहरी-(सं०पुं०) पहर-पहर पर घंटा बजाने वाला, पहरा देने वाला, चौकीदार ।
प्रहर्ता-(सं०वि०) प्रहार करने वाला, योद्धा ।
प्रहर्ष-(सं०पुं०) हर्ष, अत्यन्त आनन्द ।
प्रहर्षण-(सं०पुं०) बुध ग्रह, आनन्द । एक अलंकार जिसमें बिना प्रयत्न के किसी वाँछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है, (वि०) हर्ष देने वाला **प्रहर्षणी**-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी, एक वर्णवृत्त का नाम ।
प्रहस-(सं०पुं०) एक असुर का नाम ।
प्रहसन-(सं०नपुं०) अट्टहास, परिहास रूपकका एक अंग, व्यंगोक्ति,चुहल, खिल्ली ।
प्रहाण-(सं० नपुं०) परित्याग, चित्तकी एकाग्रता ।
प्रहार-(सं०पुं०) आघात, चोट, युद्ध ।
प्रहारक-(सं०पुं०)प्रहारी, मारनेवाला ।
प्रहारना-(हिं०क्रि०) आघात पहुंचाना, मारना । **प्रहारित**-(सं० वि०) जिस पर प्रहार किया गया हो ।
प्रहारी-(सं०वि०) प्रहार करने वाला, मारने वाला, नष्ट करने वाला, फेंकने वाला, (पुं०) एक राक्षस का नाम ।
प्रहार्य-(सं०वि०) हरण करने योग्य ।
प्रहास-(सं०पुं०) वेग की हँसी, ठहाका, शिव, कार्तिकेय के अनुचर का नाम **प्रहासिक, प्रहासी**-(सं० पुं०) लोगों को हँसाने वाला ।
प्रहित-(सं०वि०)प्रेरित, उसकाया हुआ, फेंका हुआ ।
प्रहुत-(सं० वि०) फेंका हुआ, मारा हुआ ।
प्रहृष्ट-(सं०वि०) अत्यन्त प्रसन्न ।
प्रहेणक, प्रहेलक-(सं०नपुं०) लपसी ।
प्रहेलिका-(सं० स्त्री०) कूटार्थ, कथा, पहेली ।
प्रह्रास-(सं०पुं०) क्षय, नाश ।
प्रह्लाद-(सं०पुं०)दैत्यपति हिरण्यकश्यपु के पुत्र जो विष्णु के बड़े भक्त थे, आनन्द, आमोद । **प्रह्लादक**-(सं० वि०)आनन्दकर । **प्रह्लादन**-(सं०नपुं०) प्रसन्न करना । **प्रह्लादिनी**-(सं०स्त्री०) लाल लाजवन्ती ।
प्रह्व-(सं०वि०) नम्र, विनीत ।
प्रह्वण-(सं०नपुं०) बुलाना ।
प्रांगण प्रांजल-देखो प्रङ्गण,प्राञ्जल ।
प्रांत-देखो प्रान्त ।
प्रांशु-(सं०वि०)उच्च, उन्नत । **प्रांशुता**-उच्चता, ऊँचावन ।
प्राकर्षिक-(सं०पुं०) स्त्रियों के बीच में नाचने वाला मनुष्य, रंडियों का दलाल ।
प्राकाम्य-(सं० नपुं०) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक ।
प्राकार-(सं०पुं०)प्राचीर, चहारदीवारी ।
प्राकास्य-(सं०पुं०) ख्याति, प्रसिद्धि ।
प्राकृत-(सं०वि०)नीच प्रकृति से उत्पन्न, स्वाभाविक, लौकिक,संसारी, साधारण, (स्त्री०) बोल चाल की वह भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रान्त में हो, एक प्राचीन भाषा जिसका प्रचार प्राचीन समय में भारतवर्ष में था, बहुत से पंडितों का मत है कि प्राकृत भाषा से ही संस्कृत भाषा निकली है । **प्राकृतज्वर**-(सं० पुं०) ऋतु के प्रभाव से होने वाला ज्वर । **प्राकृततन्त्र**-(सं० नपुं०)प्रजा के हस्तगत राज्य शासन, प्रजातन्त्र । **प्राकृतमित्र**-(सं० नपुं०) जिसके साथ स्वाभाविक मित्रता हो । **प्राकृतशत्रु**-(सं० पुं०) स्वाभाविक शत्रु । **प्राकृतसमाज**-(सं० पुं०) साधारण लोक का समाज ।
प्राकृतिक-(सं० वि०) प्रकृति संबंधी, स्वाभाविक, साधारण, जो प्रकृति से उत्पन्न हो, सांसारिक, लौकिक; **प्राकृतिक इतिवृत्त**-वह शास्त्र जिससे सृष्ट (प्राकृतिक) पदार्थ के स्वरूप और अवस्था का ज्ञान हो; **प्राकृतिक भूगोल**-भूगोल विद्या का वह अंग जिसमें भौगोलिक तत्वों का तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाता है; **प्राकृतिक विज्ञान**-वह शास्त्र जिसके द्वारा प्राकृतिक कार्य विषयक ज्ञान प्राप्त होता है ।
प्राक्-(सं०वि०)पहिले का अगला, (पुं०) पूर्व दिशा, पूरब । **प्राक्केवल**-(सं० वि०) जो पहले ही से भिन्न रूप में प्रकट रहा हो । **प्राक्छाय**-(सं०नपुं०) जिस समय छाया पूर्व की ओर पड़ती हो। **प्राक्तन**-(सं०वि०)प्राचीन, पुराना । **प्राक्फल**-(सं०पुं०) पनस, कटहल । **प्राक्सन्ध्या**-(सं०स्त्री०)सूर्योदय के समय का काल, प्रातःकाल, सबेरा ।
प्राखर्य-(सं०नपुं०)प्रखरता, तीक्ष्णता ।
प्रागभाव-(सं०पुं०)वह अभाव जो प्रतियोगी उत्पन्न करता है, वह पदार्थ जिसका अन्त होता हो ।
प्रागल्भ्य-(सं०नपुं०) निर्भयता, साहस, वीरता, प्रधानता, प्रबलता, घमंड, चतुराई ।
प्रागुक्ति-(सं०स्त्री०)पूर्वोक्ति, पूर्वकथन ।
प्रागुत्तरा-(सं० स्त्री०) पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा ।
प्राग्गामी-(सं०वि०)अग्रगामी, पूर्वगामी
प्राग्जन्म-(सं० नपुं०) पूर्व जन्म ।
प्राग्ज्योतिष-(सं० पुं०) कामरूप देश, कामख्या देश । **प्राग्ज्योतिषपुर**-इस देश की राजधानी, जो आजकल गोहाटी के नाम से प्रसिद्ध है ।
प्राग्द्वार-(सं०स्त्री०) पूरब की ओर का दरवाजा ।
प्राग्भार-(सं०पुं०) पर्वत का अग्रभाग ।
प्रागसर-(सं०वि०) अगला, पहला, श्रेष्ठ
प्राग्वत्-(सं०अव्य०) पहले के समान ।
प्राघात-(सं०पुं०) कड़ी चोट ।
प्राघुण-(सं०पुं०) पाहुन, अतिथि ।
प्रांग-(सं०पुं०) छोटा नगाड़ा । **प्रांगण**-(सं० नपुं०) एक प्रकार का ढ़ोल, घर के बीच का खुला हुआ स्थान, आँगन ।
प्राचर्य-(सं०पुं०) गुरु, शिक्षक, आचार्य, पण्डित ।
प्राचिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की जंगली मक्खी ।
प्राची-(सं०स्त्री०) पूर्व दिशा, पूरब ।
प्राचीन-(सं०वि०) पूर्व देश का, पहिले का, वृद्ध, बुड्ढा पुरातन, पुराना, अग्रज, (पुं०) प्राचीर । **प्राचीनता**-(सं० स्त्री०) पुराना होने का भाव, पुरानापन । **प्राचीनतिलक**-(सं०पुं०) चन्द्रमा । **प्राचीनत्व**-(सं०नपुं०)पुरानापन, प्राचीनता ।
प्राचीनशाला-(सं०पुं०) पुराना घर ।
प्राचीपति-(सं०पुं०) इन्द्र ।
प्राचीर-(सं०नपुं०) परकोटा ।
प्राचुर्य-(सं०नपुं०)प्रचुरता, बहुतायता ।
प्राचेतस्-(सं०पुं०) बाल्मीकि मुनि का नाम, विष्णु, वरुण के पुत्रका नाम ।
प्राच्छित-(हिं० पुं०) देखो प्रायश्चित ।
प्राच्य-(सं० पुं०) पूर्व देश या पूर्व दिशा में उत्पन्न, (वि०) पूर्वी, पूर्व काल का, पुराना । **प्राच्यवृत्ति**-(सं० स्त्री०) वैताली वृत्ति (छन्द) के एक भेद का नाम ।
प्राजन-(सं०नपुं०) कोड़ा, चबुक ।
प्राजापत्य-(सं०नपुं०) बारह दिन के एक व्रत का नाम, रोहिणी नक्षत्र, आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें पिता कन्या को अलंकृत करके वर को दान करके देता है, प्रजापति के पुत्र, (वि०) प्रजापति से उत्पन्न, प्रजापति संबंधी ।
प्राजिक-(सं०पुं०) श्येन, बाज पक्षी ।

प्राज्ञ-(सं० पु०) वेदान्त के अनुसार जीवात्मा, (वि०) बुद्धिमान्, चतुर, पण्डित, समझदार। **प्राज्ञत्व**-(सं०पुं०) बुद्धिमत्ता, पाण्डित्य।

प्राज्ञा- सं०स्त्री० बुद्धिमती, विदुषी, सूर्य की पत्नी का नाम।

प्राज्य- सं०वि० प्रचुर, अधिक, बहुत, जिस पदार्थ में बहुत घी पड़ा हो।

प्राञ्जल- सं०वि०,सरल,सीधा, सच्चा।

प्राञ्जलि-(सं०वि०)जो अंगुली बांधे हो

प्राड्विवाक-(सं०पुं०)विचारक, न्यायाधीश।

प्राण-(सं०पुं०) ब्रह्म, ब्रह्मा, वायु, हवा श्वास, शक्ति, पुराण के अनुसार एक कल्प का नाम, जीवन, जान, अग्नि, परम प्रिय व्यक्ति, धाता के पुत्र का नाम, विष्णु, देहस्थित वायु जिससे प्राणी जीवित रहता है, काल का वह भाग जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके; **प्राण उड़जाना**-बहुत घबड़ा जाना या डर जाना; **प्राण का गले तक आजाना**-मृत्यु का समीप आ जाना; **प्राण जाना या निकलना**-मृत्यु प्राप्त होना; **प्राण डालना**-जीवन प्रदान करना; **प्राण छोड़ना**-मरना; **प्राण देना**-मर जाना; **किसी पर प्राण देना**-किसी को प्राण से अधिक चाहना; **प्राण निकलना**-मर जाना; **प्राणों पर बीतना**-बड़े संकट में पड़ना; **प्राण लेना**-मार डालना; **प्राण हारना**-साहस छोड़ देना।

प्राण आधार-(हिं०पु०) स्वामी, पति, अति प्रिय व्यक्ति।

प्राणक-(सं०पुं०) प्राणिमाण, जीवक वृक्ष। **प्राणकर**-(सं० वि०) शक्तिवर्धक, **प्राणकष्ट**-(सं०पुं०)बहुत बड़ा कष्ट या दुःख। **प्राणकान्त**-(सं०पुं०) प्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी। **प्राणघात**-(सं०पु०) हत्या, वध। **प्राणघ्न**-(सं०वि०) प्राण लेने वाला। **प्राणजीवन**-(सं०पुं०) परम प्रिय व्यक्ति अत्यन्त प्रिय मनुष्य, विष्णु। **प्राणत्याग**-(सं०पु०) प्राण का परित्याग, मरना। **प्राणद**-(सं०नपुं०) जल, पानी, रुधिर, विष्णु, (वि०) प्राणों की रक्षा करनेवाला। **प्राणदा**-(सं०स्त्री०)हरितकी, हर्रे। **प्राणदाता**-(सं०वि०) जीवन देने वाला। **प्राणदान**-(सं०नपुं०) जीवनदान, किसी को मारने या मारे जाने से बचाना।

प्राणद्रोह-(सं० पुं०) प्राणहत्या।

प्राणधन-(सं० पु०) अत्यन्त प्रिय।

प्राणधार-(सं०वि०) जीवित, प्राणवाला

प्राणधारण-(सं०नपुं०) जीव धारण, शिव। **प्राणधारी**-(सं०वि०) प्राणयुक्त, जीवित, जो साँस लेता हो, चेतन।

प्राणनाथ-(सं०पुं०) पति, स्वामी; प्रिय व्यक्ति, प्रियतम। **प्राणनाथी**-(हिं०पुं०) गुरु प्राणनाथ के संप्रदाय का अनुयायी, इनका चलाया हुआ संप्रदाय।

प्राणनाश-(सं०पुं० प्राणत्याग। **प्राणनाशक**-(सं०वि०)मार डालने वाला

प्राणनिग्रह-(सं०पु०) प्राणायाम की क्रिया।

प्राणपति-(सं०पुं०) आत्मा, स्वामी, पति, हृदय, प्रिय व्यक्ति। **प्राणपत्नी**- सं० स्त्री०) प्राण के समान पत्नी। **प्राणपरिग्रह**-(सं०पुं०) प्राणधारण, जन्म। **प्राणपरिवर्तन**-(सं०पु०) किसी मरे हुए पुरुष की आत्मा को किसी जीवित पुरुष के शरीर में बुलाना।

प्राण प्यारा-(हिं०पुं०) अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी।

प्राणप्रतिष्ठा-(सं०स्त्री०) प्राण धारण करना, हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार किसी नई बनी हुई मूर्ति को मन्दिर में स्थापित करते समय मन्त्रों को पढ़कर उसमें प्राण आरोपण करना।

प्राणप्रद-(सं०वि०) प्राणदाता, शरीर का स्वास्थ्य तथा बल आदि बढ़ाने वाला **प्राणप्रिय**-(सं०वि०) प्राण के समान प्यारा, अतिप्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी, प्रियतम। **प्राणबल्लभ**-(हिं०पुं०) देखो प्राणवल्लभ।

प्राणभृत्-(सं०वि०) प्राण धारण करने वाला, (पुं०) विष्णु।

प्राणमय-(सं० वि०) प्राणसंयुक्त, जिसमें प्राण हो। **प्राणमयकोश**-(सं०पुं०) वेदान्त के अनुसार पांच कोशों में से दूसरा कोश जो प्राण अपान, व्यान, उदान, और समान पांचों प्राणों से बना हुआ माना जाता है। **प्राणयात्रा**-(सं०स्त्री०) सांस का खींचना और छोड़ना वह व्यापार जिससे मनुष्य जीवित रहता है।

प्राणयोनि-(सं०पु०)प्राणवायु परमेश्वर।

प्राणरन्ध्र-(सं०नपुं०) नासिका,नाक।

प्राणरोध-(सं०पुं०)प्राणायाम। **प्राणवध**-(सं०पु०)जान से मार डालना।

प्राणवल्लभ-(सं०पुं०) अत्यन्त प्रिय, बहुत प्यारा, पति, स्वामी, **प्राणवायु**-(सं०स्त्री०)प्राण,जीव। **प्राणव्यय**-(सं०पुं०) प्राणनाश। **प्राणशरीर**-(सं०पुं०) उपनिषदों के अनुसार एक सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना गया है। **प्राणसंयम**-(सं०पुं०)प्राणायाम।

प्राणसंशय, प्राणसङ्कट, प्राणसन्देह-(सं०पु०)जीवन की आशंका। **प्राणसम**-(सं०पुं०) प्राणों के समान।

प्राणसम्भूत-(सं० पुं०) वायु, हवा।

प्राणसार-(सं०वि०) बलिष्ठ ; **प्राणहार**-(सं०वि०) मारक, नाश करने वाला। **प्राणहानि**-(सं० स्त्री०) वह अवस्था जिसमें प्राणों पर संकट हो,

प्राणहारी-(हिं० वि०) प्राण लेने वाला। **प्राणघात**-(सं० पुं०) पीड़ा, कष्ट, हत्या। **प्राणाधार,प्राणाधिक**-(सं० वि०) प्राणों से अधिक प्रिय, प्यारा। **प्राणाधिनाथ**-(सं० पु०) पति, स्वामी। **प्राणान्त**-(सं०पुं०) प्राणनाश, मरण। **प्राणान्तक**-(सं० वि०, जान लेनेवाला। **प्राणाबाध**-(सं० पुं० प्राणसंशय, जानजोखिम।

प्राणायाम- सं०पुं० प्राण वायु गति विच्छेद कारक व्यापार भेद, योग के आठ अङ्गों में से एक जिसमें श्वास और प्रश्वास को यथाविधि अपने अधिकार में किया जाता है।

प्राणायामी-(सं० वि०) प्राणायाम करनेवाला।

प्राणिद्यूत-(सं० नपुं०)मेढा, तीतर, घोड़ आदि जीवों की लड़ाई या दौड़ का जुआ।

प्राणी-(हिं०पुं०) जीव, जन्तु, मनुष्य, व्यक्ति,पुरुष या स्त्री, (वि०) जिसमें प्राण हो।

प्राणेश, प्राणेश्वर-(सं० पुं०) पति, स्वामी, प्रिय व्यक्ति, बहुत प्यारा।

प्राणोपहार-(सं०पुं०) आहार,भोजन।

प्रात-(हिं०अव्य०) सबेरे, तड़के।

प्रातः-सं०पुं०) प्रभात, तड़का।

प्रातःकर्म-(सं० पुं०) प्रातःकाल के समय किया जाने वाला कर्म, प्रातः कार्य। **प्रातःकाल**-(सं०पुं०) प्रभात काल, सबेरे का समय। **प्रातःकालीन**- (सं० वि०) प्रातःकाल संबंधी। **प्रातःकृत्य**-(सं० नपुं०) वह शास्त्रविहित कर्म जो प्रातःकाल किया जाता है। **प्रातःसन्ध्या**-(सं०स्त्री०) वह वैदिक अथवा तान्त्रिक उपासना जो प्रातःकाल की जाती है।

प्रातःस्नायी-(सं० वि०) प्रातःकाल स्नान करने वाला। **प्रातःस्मरण**-(सं० पुं०) प्रातःकाल के समय ईश्वर देवतादिके नामों का स्मरण;

प्रातःस्मरणीय-(सं० वि०) जो प्रातःकाल के समय स्मरण करने योग्य हो।

प्रातनाथ-(हिं० पु०) सूर्य।

प्रातरभिवादन-(सं० पुं०) प्रातःकाल का प्रणाम।

प्रातराश-(सं० पु०) प्रातःकाल का जलपान, कलेवा। **प्रातर्भोजन**-(सं० नपुं०) प्रातराश।

प्रातस्त्रिवर्गा-(सं०स्त्री०) दुर्गा।

प्रातिकामी-(सं० पुं०) दुर्योधन के एक दूत का नाम, भृत्य, नौकर।

प्रातिज्ञ-(सं० नपुं०) आलोचना का विषय।

प्रातिपक्ष-(सं०वि०) विरुद्ध, प्रतिकूल।

प्रातिपद-(सं०वि०) प्रतिपद संबंधी।

प्रातिपदिक-(सं० वि०) प्रतिपद तिथि में होने वाला, (पु०) अग्नि, संस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो न धातु हो, और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगाने से हुई हो-इसके अन्तर्गत ऐसे नाम सर्वनाम, तद्धितान्त, कृदन्त और समासान्त पद हैं जिनमें कारक की विभक्तियाँ न लगाई गई हों।

प्रातिभ- सं० वि०) प्रतिभा युक्त, (पु० एक प्रकार का विघ्न जो योगियों की उनकी योगक्रिया में होता है।

प्रातिभाव्य-(सं० नपुं०) प्रतिभू का भाव।

प्रातिरूप्य-(सं० नपुं०) प्रतिरूप का भाव, अनुरूपता।

प्रातिलोमिक-(सं०वि०)विपक्ष, विरुद्ध।

प्रातिवेश्यक-(सं०पुं०)प्रतिवेशी,पड़ोसी।

प्रातिशाख्य-(सं० नपुं०) वह ग्रन्थ जिसमें विभिन्न वेदों के स्वर, पद, संहिता आदि का निर्णय लिखा हुआ है।

प्रातिहार-(सं०पुं०)जादूगर, द्वारपाल।

प्रातिहार्य-(सं०नपुं०) इन्द्रजाल,माया।

प्रातीपिक-(सं० वि०) विरुद्ध आचरण करने वाला।

प्रात्यक्ष-(सं० वि०) प्रत्यक्ष संबंधी।

प्रात्यहिक-(सं०स्त्री०)दैनिक, प्रतिदिनका

प्राथमिक-(सं० वि०) प्रारंभिक, जो पहले उत्पन्न हुआ हो।

प्राथम्य-(सं०नपुं०)प्रथमता, पहलापन।

प्रादुर्भाव-(सं० पु०)आविर्भाव, प्रकट होना, उत्पत्ति, विकास।

प्रादुर्भूत-(सं० वि०) प्रकटित, विकसित, उत्पन्न, निकला हुआ। **प्रादुर्भूत मनोभवा**-(सं० स्त्री०) मध्या नायिका का एक भेद यह तब कही जाती है जब इसके चित्त में काम का पूरा प्रादुर्भाव होता है और इसमें काम कला के सब चिह्न प्रगट होते हैं।

प्रादेश-(सं० पुं०) तन्त्र के अनुसार तर्जनी और अंगठे के बीच का भाग, प्रदेश, स्थान। **प्रादेशिक**-(सं० वि०) किसी एकदेश का, प्रान्तिक, प्रसंगानुसार, (पुं०) सूबेदार।

प्रादेशी-(सं०वि०) वित्ताभर का।

प्रादोष- सं०वि०) प्रदोष संबंधी।

प्राधनिक-(सं०पुं०) योद्धा, लड़का।

प्राधा-(सं० स्त्री०) दक्ष की एक कन्या का नाम, कश्यप की एक स्त्री का नाम।

प्राधान्य-(सं०नपुं०) प्रधानता, मुख्यता, श्रेष्ठता।

प्राधीत-(सं०वि०)अच्छी तरह पढ़ा हुआ

प्राध्य-(सं० पुं०) लंबी राह, प्रहर।

प्राध्वन-(सं०पुं०) अच्छी सड़क।

प्राध्वर-(सं० पुं०) वृक्ष की शाखा।

प्रान-(हिं० पुं०) देखो प्राण।

प्रान्त-(सं० पु०) अन्त, किनारा, दिशा, प्रदेश। **प्रान्तग**-(सं० वि०) सीमा प्रदेश पर रहने वाला। **प्रान्तभूमि**-(सं० स्त्री०) सोपान, सीढ़ी,

योग शास्त्र के अनुसार समाधि।'
प्रान्तर-(सं० नपुं०) वन, जगल, दो गांव के बीच की भूमि, वृक्ष का खोखला अंश।
प्रान्तिक-(सं०वि०)प्रान्तसंबंधी,प्रान्तीय।
प्रांशु-सं० वि०) ऊँचा, (पुं०) विष्णु।
प्रापक-(स० वि०) पाने वाला।
प्रापण-(सं०नपुं०) ले आना, मिलना।
प्रापणिक-(सं०पु०) माल बेंचने वाला।
प्रापति-(हिं० स्त्री०) देखो प्राप्ति।
प्रापना-(हिं०क्रि०)प्राप्त होना,मिलना।
प्राप्त-(स० वि०) लब्ध, उत्पन्न, पाया हुआ, मिला हुआ। **प्राप्तकाल**-(सं० पुं०) कोई काम करने योग्य समय, उपयुक्त या उचित समय, मरण योग्य काल,विवाह योग्य वय, (वि०) जिसका काल आ गया हो। **प्राप्तजीवन**-(स० वि०) पुनर्जीवन, जिसका नया जीवन हो। **प्राप्तदोष**-(स० वि०) जिसने कोई अपराध किया हो। **प्राप्तबुद्धि**-(स० वि०) बुद्धिमान्, चतुर, जो अचेत होने पर फिर से सचेत स्थिति में हो। **प्राप्त मनोरथ**-(स० वि०) जिसकी वांछा पूरी हुई हो। **प्राप्त यौवन**-(स०वि०) जिसकी युवावस्था आ गई हो। **प्राप्त रूप**-(स०वि०)पण्डित, रूपवान्
प्राप्तव्य-(सं० वि०)मिलनेयोग्य,प्राप्य।
प्राप्ति-(सं०स्त्री०)उदय, धन की वृद्धि, लाभ, मिलना, पहुँच, आय, भाग्य, प्रवेश, कामदेव की पत्नी, समिति, संघ, कंस की एक स्त्री का नाम, संगति, मेल, फलित ज्योतिष के, अनुसार लग्न से ग्यारहवां स्थान, आठ प्रकार की सिद्धि में से एक, नाटक का सुखद उपसंहार, प्राणायाम की चार अवस्थाओं में से एक। **प्राप्तिसम**-(स० नपुं०) न्याय दर्शन के अनुसार वह प्रत्यवस्थान जो हेतु और साध्य को ऐसी स्थिति में जब कि दोनों साध्य हों अवशिष्ट बतला कर दी जावे। **प्राप्य**-(स० वि०) प्राप्त करने योग्य, जहां तक पहुँच हो सकती हो, गम्य, मिलने योग्य। **प्राप्यकारी**-(स० पुं०) वह इन्द्रिय जो किसी विषय तक पहुँच कर मनुष्य को उस वस्तु का ज्ञान कराती है।
प्राबल्य-(सं०नपुं०) प्रबलता,प्रधानता।
प्राबोधक-(स० पु०) वह मनुष्य जो राजाओं को उनकी स्तुति सुनाकर जगाने के लिये नियुक्त हो।
प्राभव-(स० नपुं०) प्रभुत्व, अधिकार, श्रेष्ठता।
प्राभृत-(सं० नपुं०) उपहार, भेंट।
प्रामाणिक-(स० पुं०) हैतुक, जो प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो, माननीय, शास्त्र सिद्ध, सत्य, (पुं०) व्यापारियों का मुखिया।
प्रामाण्य-(सं० नपुं०) मान; मर्यादा।
प्रामाद्य-(सं०नपुं०) उन्माद, पागलपन, अडूसा।
प्राय-सं० पुं०) मरण, अवस्था, वय, समान, तुल्य, लगभग, (वि०) जाने वाला।
प्रायः-सं० अव्य०) बहुधा, विशेष कर, लगभग।
प्रायण-(स० नपुं०) एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, जन्मान्तर,पारण।
प्रायणान्त-(सं० पुं०) मृत्यु, मरण।
प्रायदर्शन-(सं० नपुं०) साधारण घटना जो प्राय: देखने में आती हो।
प्रायद्वीप-(सं० पुं०) स्थल का वह भाग जो तीन ओर से पानी से घिरा हो तथा केवल एक ओर स्थल से मिला हो।'
प्रायभव-(स० वि०) जो सामान्य रूप से होता हो।
प्रायवृत्त-(सं०वि०)वर्तुलाकार,अण्डाकार
प्रायशः-(सं० अव्य०) सब प्रकार से, बहुधा।
प्रायश्चित-(सं० नपु०) शास्त्रानुसार किया हुआ वह कृत्य जिससे शुद्ध होकर मनुष्य पापों से निर्मुक्त हो जाता है। **प्रायश्चित्तिक**-(सं० वि०) प्रायश्चित्तसंबंधी,प्रायश्चित्तकेयोग्य।
प्रायश्चित्ती-(सं० वि०) प्रायश्चित्त करने वाला।
प्रायिक-(सं० वि०) प्राय: होने वाला।
प्रायोगिक-(स० वि०) जिसका प्रयोग नित्य होता है। **प्रायोज्य**-(स० वि०) प्रयोग में आने वाला।
प्रायोपवेश-(सं० पुं०) अनशन व्रत।
प्रारब्ध-(सं० नपु०) भाग्य, अदृष्ट, (वि०) आरम्भ किया हुआ। **प्रारब्धी**-(हिं० वि०) भाग्यवान्।
प्रारम्भ-(सं० पुं०) आरंभ, आदि।
प्रारम्भण-(सं०नपुं०) आरम्भ करना।
प्रारम्भिक-(स० वि०) प्राथमिक, आरम्भ का।
प्रार्जयिता-(सं० वि०) दान करने वाला, दानी।
प्रार्ण-(स० वि०) जिसके ऊपर बहुत सा ऋण हो।
प्रार्थक-(स०वि०) प्रार्थना करने वाला।
प्रार्थना-(सं०स्त्री०) याचना, माँगना, किसी से नम्रता पूर्वक कुछ कहना, विनती, अवरोध, घेरा डालना, एक तान्त्रिक मुद्रा का नाम। **प्रार्थनापत्र**-(सं०पुं०)निवेदन पत्र। **प्रार्थना समाज**-(सं० पुं०) ब्राह्म समाज की तरह का एक मत, इसके अनुयायी जात पांत का भेद नहीं मानते और न मूर्ति पूजा करते हैं। **प्रार्थनीय**-(स० वि०) प्रार्थना करने योग्य। **प्रार्थयिता**-(सं० वि०) प्रार्थना करने वाला।
प्रार्थित-(सं० वि०) याचित, मांगा हुआ। **प्रार्थी**-(स० वि०) निवेदक, प्रार्थना करने वाला, इच्छुक।
प्रालब्ध(हिं० पुं०) देखो प्रारब्ध।
प्रालम्ब-(सं० नपु०) वह माला जो गरदन से छाती तक लटकी हो।
प्रालम्बिका-(सं० स्त्री०)गले में पहरने का एक प्रकार का हार।
प्रालेय-(सं० नपु०) हिम, तुषार।
प्रालेयरश्मि,प्रालयांशु-(स०पु०)चंद्रमा।
प्रावर-(स० पु०) प्रचार। **प्रावरण**-(सं० नपु०) आच्छादन, ढपना, ओढ़ने का वस्त्र, चादर।
प्रावार-(स०पु०)उत्तरीय वस्त्र,ओढ़ना।
प्रावीण्य-(सं० पु०)प्रवीणता,कुशलता।
प्रावृट्-(स० पुं०) वर्षा ऋतु। **प्रावृषा**-(स० स्त्री०) वर्षा काल। **प्रावृषेय**-(स० वि०) वर्षाकाल में होने वाला।
प्रावेप-सं० वि०) काँपने वाला।
प्रावेशिक-(सं० वि०) प्रवेश करने में सहायता देने वाला।
प्राशन-(सं० स्त्री०) भोजन, खाना। **प्राशनीय**-(सं० वि०) खाने योग्य। **प्राशित**-(स० वि०) भक्षित, खाया हुआ। **प्राशी**-(स० वि०) भक्षक, खाने वाला।
प्राश्निक-(सं०वि०)प्रश्नकर्ता,पूछनेवाला।
प्रास-(सं० पुं०) प्राचीन काल की एक प्रकार की माला,(हिं०पुं०) अनुप्रास।
प्रासङ्ग-(सं० पुं०) हल का जूआ तराजू की डंडी। **प्रासङ्गिक**-(स०वि०) प्रसंग संबधी, प्रसंग का, प्रसंग द्वारा प्राप्त।
प्रासच-(सं० पुं०) अति वृष्टि, बाढ़।
प्रासाद-(सं० पुं०) देवता और राजाओं का घर, हर्म्य; **प्रासाद कुक्कुट**-कबूतर; **प्रासाद प्रस्तर**-हर्म्य आदि की समतल छत; **प्रासादशृङ्ग**-राजभवन का शिखर।
प्रासादिक-(सं० वि०) दयालु, कृपालु, सुन्दर।
प्रासेव-(सं० पुं०) घोड़े की लगाम।
प्राहारिक-(सं०पु०)पहरुआ,चौकीदार।
प्राहुण-(सं० पुं०) पाहुन, अतिथि।
प्रिन्सिपल् (सं०पुं०) महाविद्यालय का अध्यक्ष।
प्रिय-(सं० पुं०) भर्ता, स्वामी, पति, जामाता, हित, भलाई, ईश्वर, ऋद्धि नामक औषधि,(वि०) जिससे प्रेम हो, प्यारा, ललित, मनोहर।
प्रियंवद-(सं० पुं०) खेचर, एक प्रकार के गन्धर्व, (वि०) प्रिय वचन बोलने वाला। **प्रियंवदा**-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते है, प्रियम्वादिनी।
प्रियकर्म-(सं० नपु०) हित कार्य।
प्रियकांक्षी-(सं० वि०) भला चाहने वाला। **प्रियकार**-(सं० वि०) हितचिन्तक। **प्रियकृत्**-(स० पुं०) विष्णु का एक नाम।
प्रियङ्कर-(स० पुं०) एक दानव का नाम, अश्वगन्ध, असगन्ध, सफेद भटकटैया।
प्रियंगु-(स०स्त्री०) कगनी नामक अन्न।
प्रियजन-(सं० पुं०) प्रिय व्यक्ति।
प्रियजात-(सं० वि०) अग्नि का एक नाम। **प्रियतनु**-(सं० वि०) सुन्दर शरीर वाला। **प्रियतम**-(स० पुं०) स्वामी, पति, (वि०) प्राणों से बढ़कर प्रिय। **प्रियतर**-(सं० वि०) जो दो में से अधिक प्रिय हो।
प्रियता-(स०स्त्री०) प्रिय होने का भाव।
प्रियत्व-(सं०नपुं०) प्रेम, स्नेह, प्रियता।
प्रियदत्ता-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
प्रियदर्शन-(सं० वि०) जो देखने में सुन्दर हो, एक गन्धर्व का नाम। **प्रियदर्शी**-(स० वि०) सब को प्रिय समझने वाला, (पु०) राजा अशोक की एक उपाधि।
प्रियधाम-(स० नपुं०) प्यारा स्थान। **प्रियपात्र**-(सं० वि०) जिसके साथ प्रेम किया जावे।
प्रियभाषण-(सं० नपु०) मधुर वचन बोलना। **प्रियभाषी**-(सं०वि०) मधुर वचन बोलने वाला।
प्रियरूप-(सं० वि०) अति सुन्दर।
प्रियवक्ता-(सं०वि०) प्रिय वचन बोलने वाला। **प्रियवचन**-(सं० नपुं०) प्रिय वाक्य, मधुर वचन।
प्रियवर-(सं० वि०) अति प्रिय, सबसे प्यारा।
प्रियवाद-(सं० पु०) मधुर वचन। **प्रियवादी**-(सं० वि०) मीठा बोलने वाला। **प्रियवादिनी**-(सं० स्त्री०) सारिका, मैना।
प्रियसख-(स० पु०) प्रिय बन्धु, प्रिय का सखा।
प्रियसन्देश-(सं० पुं०) प्रिय संवाद।
प्रिया-(सं० स्त्री०) नारी, भार्या, पत्नी, इलायची, चमेली, मदिरा, वार्ता, सन्देश, प्रेमिका, स्त्री, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पांच अक्षर होते हैं।
प्रियातिथि-(सं० वि०) अतिथि का सत्कार करने वाला।
प्रियात्मा-(स० पु०) जिसका चित्त उदार और सरल हो।
प्रियाम्बु-(सं० पुं०) आम का वृक्ष या फल।
प्रियोदित-(सं० पुं०) मीठे वचन।
प्री-(स० स्त्री०) प्रेम, प्रीति, कान्ति, चमक।
प्रीअक-(हिं० पुं०) कदम्ब, कदम।
प्रीत-(सं० वि०) प्रसन्न, तृप्त, प्रीति युक्त, देखो प्रीति। **प्रीतात्मा**-(सं०पुं०) शिव का नाम। **प्रीतम**-(हिं० पुं०) पति, स्वामी, प्यारा।
प्रीति-(सं० स्त्री०) तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द, प्रेम, स्नेह, फलित ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से दूसरा योग। **प्रीतिकर, प्रीतिकारक**-(सं० वि०) प्रीतिजनक, प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला। **प्रीतिद**(सं० पुं०) विदूषक, भाँड़, (वि०)

सुखदायक। **प्रीतिदत्त**-(सं० नपुं०) प्रीति पूर्वक दिया हुआ दान। **प्रीतिपात्र**-(सं० पुं०) जिसके साथ प्रीति की जाय, प्रेम-भोजन, प्रेमी। **प्रीतिभोज**-(सं० पुं०) वह भोजन या खानपान जिसमें मित्र और बन्धु-बांधव प्रेम पूर्वक सम्मिलित हों। **प्रीतिभोज्य**-(सं० वि०) प्रीति पूर्वक भोजनीय। **प्रीतिमत्**-(सं०वि०) प्रेम रखने वाला। **प्रीतिरीति**-(सं०स्त्री०) प्रेम का परस्पर संबंध। **प्रीतिवर्धन**-(सं०पुं०) विष्णु का एक नाम।

प्रीत्यर्थ-(सं०अव्य०) प्रीति के कारण, प्रसन्न करने के लिये, वास्ते, लिये।

प्रेक्षक-(सं०वि०) दर्शक, देखने वाला।

प्रेक्षण-सं०नपुं०) चक्षु, आँख, देखने की क्रिया, दर्शन। **प्रेक्षणीय**-(सं०वि०) देखने योग्य।

प्रेक्षा-(सं० स्त्री०) प्रज्ञा, बुद्धि, नाच-रंग, शाखा, दृष्टि, शोभा, किसी विषय की अच्छी बुरी बातों का विचार करना। **प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह**-(सं० नपुं०) मंत्रणा गृह, राजाओं आदि का मन्त्रण करने का स्थान।

प्रेक्षित-(सं०वि०) दृष्ट, देखा हुआ।

प्रेक्षी-(सं०वि०) बुद्धिमान्।

प्रेत-(सं०पुं०) मरा हुआ प्राणी, मृत मनुष्य, नरक में रहने वाला प्राणी, एक देवयोनि जो पिशाचों की तरह की होती है, वह कल्पित शरीर जो मृत्यु के बाद प्राप्त होती है। **प्रेतकर्म**-(सं०नपुं०) प्रेत कार्य, हिंदुओं में वह कर्म जो मृतक के दाह के बाद से सपिण्डीकरण तक किया जाता है। **प्रेतकार्य**-(सं० पुं०) प्रेतकर्म। **प्रेतगृह**-(सं०पुं०) शव जलाने का स्थान, श्मशान, मरघट। **प्रेतगेह**-(हिं०पुं०) प्रत गृह, मरघठ। **प्रेतत्व**-(सं० नपुं०) प्रेतता, प्रेत का भाव या धर्म। **प्रेतदाह**-(सं० पुं०) मृतक को जलाने का कार्य। **प्रेतदेह**-(सं० पुं०) पुराण के अनुसार मृतक का वह कल्पित शरीर जो मृत्यु समय से सपिण्डीकरण तक उसकी आत्मा को प्राप्त होता है।

प्रेतनदी-(हिं०स्त्री०) वैतरणी नदी, **प्रेतनाह**-(पुं०) यम, **प्रेतपुर**-(पुं०) यमपुरी

प्रेतनी-(हिं० स्त्री०) प्रेत की स्त्री, चुड़ैल, भूतनी। **प्रेतयज्ञ**-(सं०नपुं०) वह यज्ञ जिसके करने से प्रेतयोनि प्राप्त होती है। **प्रेतराज**-(हिं० पुं०) यमराज। **प्रेतलोक**-(सं०पुं०) यमपुरी

प्रेतविधि-(सं० पुं०) मृतक का दाह आदि करना। **प्रेतशिला**-(सं०स्त्री०) गया की वह शिला जिस पर प्रेतों के उद्देश्य से पिण्डदान किया जाता है। **प्रेतहार**-(सं०पु०) मृत शरीर को उठाकर श्मशान पर ले जानेवाला।

प्रेता-(सं० स्त्री०) पिशाची, भगवती कात्यायनी का एक नाम। **प्रेताधिप**-(सं० पुं०) प्रेताधिपति, यमराज।

प्रेतान्न-(सं० नपुं०) वह अन्न जो प्रेत के उद्देश्य से दिया जावे।

प्रेताशिनी-(सं०स्त्री०) मृतकों को खाने वाली भगवती का एक नाम।

प्रेताशौच-(सं०नपुं०) हिन्दुओं में सपिण्ड की मृत्यु के बाद होनेवाला अशौच जो ब्राह्मणों में दस, क्षत्रियों में बारह वैश्यों में पन्द्रह और शूद्रों में तीस दिन होता है, मरणाशौच।

प्रेतास्थि-(सं०नपुं०) मृत व्यक्ति की हड्डी

प्रेति-(सं०पुं०)अन्त, मरण, आगे बढ़ती।

प्रेतिक-(सं०पुं०) मृत व्यक्ति, प्रेत।

प्रेतिनी-(हिं०स्त्री०) पिशाचिनी, डाइन।

प्रेती-(हिं०पु०) प्रेतपूजक, प्रेत की उपासना करने वाला।

प्रेतेश-(सं०पुं०) यमराज।

प्रेतोन्माद-(सं०पुं०) एक प्रकार का उन्माद जिसको लोग समझते हैं कि प्रेतों के कोप से होता है।

प्रेत्य-(सं०पु०) लोकान्तर, परलोक।

प्रेत्यभाव-(सं०पुं०) मरणोत्तर,पुनर्जन्म।

प्रेप्सु-(सं० वि०) जो किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा करता हो।

प्रेम-(सं०पुं०नपुं०)प्रियता, स्नेह, प्रीति, अनुराग, प्यार, माया और लोभ, स्त्री जाति और पुरुष जाति का पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप, गुण, स्वभाव,सान्निध्य अथवा कामवासना के कारण होता है, एक अलंकार का नाम। **प्रेमकर्ता**-(सं०पुं०) प्रेम करनेवाला, प्रेमी। **प्रेमकलह**-(सं०पुं०) प्रेम के कारण हँसी दिल्लगी या झगड़ा करना। **प्रेमगर्विता**-(सं० स्त्री०) साहित्य मे वह नायिका जिसको अपने पति के प्रेम का बड़ा अभिमान हो, जिसको इस बात का अभिमान हो कि मेरा पति मुझको बहुत चाहता है। **प्रेमजाल, प्रेमनीर**-(सं० पु०) प्रेम के कारण आँखों में निकलने वाला आंसू, प्रेमाश्रु। **प्रेमपातन**-(सं०नपु०) प्रेम के आवेग में रोना। **प्रेमपात्र**-(सं०पुं०) वह जिससे प्रेम किया जाय। **प्रेमपाश**-(सं०स्त्री०) प्रेम का फन्दा या जाल। **प्रेमपुत्तलिका**-(सं०स्त्री०) प्यारी स्त्री, भार्या। **प्रेमपुलक**-(सं०स्त्री०) प्रेम के कारण होने वाला रोमाञ्च। **प्रेमबन्ध**-(सं०पुं०) गहरा प्रेम। **प्रेमभक्ति**-(सं०स्त्री०) श्रीकृष्ण की वह भक्ति जो बड़े प्रेम से की जाय। **प्रेमवारि**-सं०नपुं०) प्रेम के कारण निकलने वाला आँसू।

प्रेमा-(सं० पुं०) स्नेही, इन्द्र, वायु, उपजाति वृत्त का ग्यारहवाँ भेद। **प्रेमाक्षेप**-(सं०पु०) वह अलकार जिसमें प्रेम का वर्णन करने ही में बाधा दिखलाई जाती है। **प्रेमामृत**-(सं० नपु०) प्रेमरूप सुधा। **प्रेमालाप**-(सं० पुं०) प्रेम पूर्वक वार्तालाप। **प्रेमालिङ्गन**-(सं० पुं०) प्रेम पूर्वक आलिंगन, नायक और नायिका का एक विशेष प्रकार का आलिगन। **प्रेमाश्रु**-(सं०नपु०) देखो प्रेमवारि।

प्रेमिक, प्रेमी-(सं०पुं०) प्रेम करनेवाला, वह जो प्रेम करता हो, आसक्त।

प्रेममार्ग-(सं०पुं०) वह मार्ग जो मनुष्य को सासारिक विषयों में फँसाता है।

प्रेय-(सं०पु०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें कोई एक भाव किसी दूसरे भाव का अथवा स्थायी का अंग होता है।

प्रेयस्-(सं०पुं०) पति, स्वामी, वल्लभ, प्रियतम।

प्रेयसी-(सं०स्त्री०) प्रियतमा, प्यारी स्त्री

प्रेयस्ता-(सं०स्त्री०) प्रियता।

प्रेरक-(सं० वि०) प्रेरणा करने वाला, किसी काम में प्रवृत्त करने वाला।

प्रेरणा-(सं०स्त्री०) दबाव डालना, उत्तेजना देना, दबाव।

प्रेरणार्थक क्रिया-(सं०स्त्री०)किसी क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि वह कर्ता से किसी प्रेरणा द्वारा हुआ है यथा 'पढ़ना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप 'पढवाना' है।

प्रेरणीय-(सं०वि०) प्रेषणीय, भेजने योग्य, प्रेरणा करने योग्य।

प्रेरना-(हिं०वि०) प्रवृत्त करना।

प्रेरयिता-(सं०पुं०) प्रेरणा करने वाला, उभाड़ने वाला, आज्ञा करने वाला, भेजने वाला।

प्रेरित-(सं०वि०) प्रेषित, भेजा हुआ, उत्तेजित, उभाड़ा हुआ, धक्का दिया हुआ। **प्रेषक**-(सं०नपुं०) प्रेरक, भेजने वाला। **प्रेषण**-(सं० नपुं०) भेजने का काम।

प्रेषना-(हिं०क्रि०) भेजना।

प्रेषयिता-(हिं०वि०) भेजने वाला।

प्रेषित-(सं०वि०) प्रेरणा किया हुआ, भेजा हुआ, (नपुं०) स्वर साधन की एक प्रणाली।

प्रेषितव्य-(सं०वि०) भेजने योग्य।

प्रेष्य-(सं०पु०) दास, सेवक, दूत।

प्रेष्यता-(सं०स्त्री०) दासत्व, दूतत्व।

प्रोक्त-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।

प्रोक्षण-(सं०नपुं०) सेचन, पानी छिड़कना, पानी का छींटा, विवाह की एक रीति, परिछन।

प्रोक्षणी-(सं०स्त्री०) कुश की बनी हुई मुद्रिका। **प्रोक्षित**-(सं०वि०) सींचा हुआ, बलिदान किया हुआ, निहत, मारा हुआ।

प्रोज्झित-(सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ।

प्रोत-(सं०नपु०) वस्त्र, कपड़ा, (वि०) सिला हुआ, अच्छी तरह गुथा हुआ, गाँठ दिया हुआ।

प्रोत्कर्ष-(सं०नपुं०) श्रेष्ठता, उत्तमता।

प्रोत्खात-(सं० वि०) गड्ढा किया हुआ।

प्रोतुङ्ग-(सं०वि०) बहुत ऊँचा।

प्रोत्तेजित-(सं०वि०) अत्यन्त उभाड़ा हुआ।

प्रोत्फुल्ल-(सं०वि०) अच्छी तरह खिला हुआ।

प्रोत्साह-(सं० पुं०) बहुत उत्साह। **प्रोत्साहक**-(सं०पु०) ढाढ़स बाँधने वाला।

प्रोत्साहन-(सं०नपु०) अधिक उत्साह बढाना, नाटक में एक अलंकार। **प्रोत्साहित**-(सं०वि०)उत्तेजित, उत्साह बढ़ाया हुआ, प्रवर्तित, ठाना हुआ।

प्रोथ-(सं०पुं०) कमर, गर्भाशय, पथिक, चिथड़ा, (वि०) स्थापित, रक्खा हुआ, प्रसिद्ध।

प्रोथित-(सं० वि०) भूमि के भीतर गाड़ा हुआ।

प्रोष-(सं०पु०) अति सन्ताप, बड़ा दुःख

प्रोषित-(सं०वि०) प्रवासी, जो विदेश गया हो। **प्रोषित नायक**-(सं० पुं०) वह नायक जो विदेश में अपनी नायिका के वियोग से विकल हो। **प्रोषितपतिका**-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति के विदेश जाने से दुःखित हो। **प्रोषितप्रेयसी, प्रोषितभर्तृका**-(सं०पुं०) वह स्त्री जिसका स्वामी परदेश में रहता हो। **प्रोषितभार्या नायक**-(सं० स्त्री०) वह नायक जिसकी नायिका विदेश में रहती हो। **प्रोष्यत्पत्नी नायक**-(सं० स्त्री०) वह नायक जिसकी नायिका परदेश जाने वाली हो।

प्रोष्ठपद-(सं०पुं०) भादों का महीना, पूर्वाभाद्रपद और उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र। **प्रोष्ठपदी**-(सं०पुं०) भाद्रपद मास की पूर्णिमा।

प्रोष्ण-(सं०पु०) अति उष्ण,बहुत गरम

प्रोह-(सं०स्त्री०) पर्व-सन्धिस्थान, (वि०) चतुर।

प्रोहित-(हिं०पुं०) देखो पुरोहित।

प्रौढ़-(सं०वि०) वर्धित, अच्छी तरह बढ़ा हुआ, पुष्ट, प्रगल्भ, निपुण, चतुर, युवा, पुरातन, गंभीर, गूढ़, (पुं०) चौबीस अक्षर का एक तान्त्रिक मन्त्र। **प्रौढ़ता**-(सं०स्त्री०) प्रौढ का भाव, प्रौढत्व। **प्रौढत्व**-(सं०नपुं०) प्रौढता, प्रौढावस्था।

प्रौढ़ा-(सं० स्त्री०) अधिक वय वाली स्त्री, तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की स्त्री, कामकला भली भांति जानने वाली स्त्री, **प्रौढा अधीरा**-(सं०स्त्री०) वह प्रौढा नायिका जो अपने नायक में विलास सूचक चिह्न देख कर प्रत्यक्ष रूप में क्रोध दिखलावे। **प्रौढाधीरा**-(सं०स्त्री०) वह प्रौढा नायिका जो अपने नायक में विलास सूचक चिह्न देख कर व्यंग रूप से क्रोध दिखलावे। **प्रौढाधीराधीरा**-(सं०स्त्री०) वह नायिका जो अपने नायक में परस्त्रीगमन के

चिह्न देख कर कुछ व्यंग और कुछ प्रत्यक्ष क्रोध दिखलावे।
प्रौढ़ि-(सं०स्त्री०) प्रौढता, धृष्टता, वादा-विवाद।
प्रौढोक्ति-(सं०स्त्री०) गूढ रचना, किसी बात को बढा कर कहना; वह अलंकार जिसमें उत्कर्ष का हेतु न रहने पर कल्पित किया जाता है।
प्रौण-(सं०वि०) निपुण, चतुर,
प्रौष्ठपदी-(सं०स्त्री०) भाद्रपद मास की पूर्णिमा।
प्रौह-(सं०पुं०) यथाविधि विवाह।
प्लक्ष-(सं०पु०) पाकर का वृक्ष, पीपल का पेड़, सात कल्पित द्वीपों मे से एक।
प्लक्षादेवी-(सं०स्त्री०) सरस्वती नदी।
प्लव-(सं० नपुं०) नागरमोथा, एक प्रकार की सुगंधित घास, प्लवन, बाढ, बन्दर, शब्द, लौटना, साठ संवत्सरों में से एक, स्नान करना, नहाना, तैरना, जल में तैरने वाली चिड़िया (वि०) तैरता हुआ।
प्लवग-(सं०पु०) बन्दर मेढक, हरिण, (वि०) तैरने वाला।
प्लवङ्ग-(सं०पुं०) बन्दर, हरिन, साठ संवत्सरों में से एक। **प्लवङ्गम**-(सं०पुं०) बन्दर, एक प्रकार का मातृक छन्द, (वि०) कूद कूद कर चलने वाला,
प्लवन-(सं०पुं०) उछलना, कूदना, तैरना, उतार।
प्लवगं-(सं०पुं०) अग्नि, जलपक्षी।
प्लावगा-(सं०पुं०) मर्कट, वन्दर।
प्लावन-(सं०नपुं०) मज्जन, संतरण, तैरना, बाढ, किसी पदार्थ को अच्छी तरह से धोना।
प्लावित-(सं०वि०) जल में डूबा हुआ।
प्लीहा-(सं०पुं०) पेट की तिल्ली; **प्लीहाकर्ण**-कान का एक रोग; **प्लीहोदर**-प्लीहा का रोग।
प्लुक्षि-(सं०पुं०) स्नेह, प्रेम, अग्नि।
प्लुत-(सं०नपुं०) घोड़े की टेढी चाल जिसको पोई कहते हैं, स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्रा का होता है; **प्लुतगति**-शशक, खरहा।
प्लुष-(सं०पुं०) स्नेह, प्रेम, दाह।

फ

फ-हिन्दी वर्णमाला का बाईसवां व्यंजन तथा पवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है-इसके उच्चारण करने में जीभ का अगला भाग ओठों से लगता है।
फ-(सं०नपुं०) रूखा वचन, फुफकार, निष्फल भाषण, जृम्भा, जंभाई, फललाभ।
फंक-(हिं०स्त्री०) देखो फाँक।
फंका-(हिं०पुं०) सूखे दाने या टुकनी की उतनी मात्रा जितनी एक बार मुंह में फांकी जा सके, खण्ड, टुकड़ा।
फंकी-(सं०स्त्री०) सूखी फाँकने की चूर्ण आदि की पुड़िया, फाँकने की दवा, उतनी औषधि जितनी एक बार में फाँकी जा सके।
फांग-(हिं०पुं०) वन्धन, फन्दा, अनुराग,
फंद-(हिं०पु०) बंधन, फन्दा, दुःख, कष्ट, गूंज, मर्म, रहस्य, जाल, छल, धोखा, नथिये की काँटी फसाने का फन्दा।
फंदनां-(हिं०क्रि०) फन्दे मे पड़ना, फँसना, उल्लघन करना, फाँदना।
फंदरा-(हिं०पुं०) देखो फदा।
फदवार-(हिं०वि०) फदा लगाने वाला
फंदा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु या प्राणी को फँसाने के लिये लगाया हुआ रस्सी आदि का घेरा, कष्ट, दुःख, पाश, फाँस; **फंदा लगाना**-किसी को फँसाने के लिये जाल फैलाना, धोखा देना; **फंदे में पड़ना**-धोखे में पड़ना।
फंदाना-(हिं०क्रि०) जाल में फँसाना, फन्दे में लाना, उछालना, कुदाना।
फँफाना-(हिं०क्रि०) शब्द को उच्चारण करते समय जीभ काँपना, हकलाना, खौलते हुए दूध आदि का ऊपर को उठना।
फँसना-(हिं०क्रि०) बन्धन में पड़ना, पकड़ा जाना, उलझना, अटकना।
फँसनी-(हिं०स्त्री०) कसेरे की एक प्रकार की हथौड़ी।
फँसाना-(हिं०क्रि०) वशीभूत करना, अपने वश मे लाना, अटकाना, बझाना
फंसिहारा-(हिं०वि०) फँसाने वाला।
फक-(हिं०वि०) स्वच्छ, सफेद, (स्त्री०) दो मिली हुई वस्तु का अलग होना; **रंग फक पड़ना**-घबड़ाहट से चेहरे का रंग फीका पड़ जाना।
फकड़ी-(हिं० स्त्री०) दुर्गति, दुर्दशा, आपत्ति।
फ़कीरी-(हिं०स्त्री०) भिखमंगापन, निर्धनता, साधुता।
फक्किका-(सं०स्त्री०) अनुचित व्यवहार, छलकपट, जो बात शास्त्र के कठिन स्थल को स्पष्ट करने के लिये पूर्व-पक्ष में कही जाय, कूट प्रश्न।
फग-(हिं०पुं०) देखो फंग, बन्धन।
फगुआ-(हिं०पुं०) होली के उत्सव का दिन, फागुन के महीने में लोगों का वह आमोद प्रमोद जो वसन्त ऋतु के उपलक्ष में मनाया जाता है इसमें लोग आपस में रंग डालते हैं तथा अनेक प्रकार के अश्लील गाने गाते हैं, फाग के उपलक्ष में दी जाने वाली वस्तु, अश्लील गीत जो फागुन के महीने में गाई जाती है।
फगुआना-(हिं०क्रि०) फागुन के महीने में किसी के ऊपर रंग छोड़ना अथवा उसको सुनाकर अश्लील गीत गाना। **फगुनहट**-(हिं०स्त्री०) फागुन में चलने वाली तीव्र वायु जो धूल से भरी होती है, फागुन मे होने वाली वर्षा।
फगुनियाँ-(हिं०पुं०) त्रिसन्धि नामका फूल
फगुहारा-(हिं०पुं०) फगुआ गाने वाला पुरुष, वह जो फागुन मे होली खेलने के लिये किसी के घर जावे।
फजहलाई-(हिं०स्त्री०) दुर्दशा।
फ़जीहती-(हिं०स्त्री०) आपत्तिकारी।
फञ्जिका-(सं०स्त्री०) भंगरैया, जवासा।
फट्-(सं०अव्य०) तन्त्रोक्त अस्त्र नामक मन्त्रभेद जो आवाहन, प्रोक्षण आदि में प्रयोग होता है।
फट-(सं०पु०) फणा, फन, पाखण्ड, धोखा; (हिं०स्त्री०) किसी पतली हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द।
फटक-(हिं०पु०) स्फटिक, बिल्लौर पत्थर, (हिं०अव्य०) तत्क्षण, झटपट।
फटकन-(हिं०स्त्री०) अन्न की भूसी आदि जो फटक कर निकाली जाय।
फटकना-(हिं०क्रि०) फटफट शब्द करना, सूप पर अन्न आदि को हिलाकर स्वच्छ करना, फेंकना, पटकना, चलाना, पहुँचाना, अलग होना, तड़फड़ाना, श्रम करना, परखना, जांचना, फटके से रूई धुनना।
फटकरी-(हिं०स्त्री०) देखो फिटकरी।
फटका-(हिं०पुं०) धुनिये की धुकनी, तड़फड़ाहट, गुणहीन कविता, एक प्रकार की बलुई मिट्टी, चिड़ियों को उड़ाने के लिये पेड़ पर बँधी हुई लकड़ी जिसकी रस्सी खींचने और ढीली करने से उसमें से फटफट शब्द होता है।
फटकाना-(हिं०क्रि०) फटकने का काम दूसरे से कराना, फेंकना, अलग करना
फटकार-(हिं०स्त्री०) झिड़की, दुतकार, शाप; देखो फिटकार। **फटकारना**-(हिं०क्रि०) झटका देकर फेंकना, शस्त्र आदि चलाना, अलग करना, दूर करना, छितराना, कपड़े को पटक कर धोना, किसी मिली हुई वस्तु को इस प्रकार से हिलाना कि वह छितरा जावे, लाभ उठाना, लेना, किसी को कड़ी बात कहकर चुप कर देना।
फटकिया-(हिं०पुं०) एक प्रकार का विष
फटकी-(सं०स्त्री०) फिटकरी, (हिं०स्त्री०) बहेलियों की चिपटी टोकरी जिसमें वे चिड़ियों को बन्द करते हैं।
फटना-(हिं०क्रि०) आघात लगने पर किसी वस्तु का टूटना या उसमें दरार पड़ना, किसी वस्तु का बीच का भाग कटकर अलग हो जाना, किसी पदार्थ का बीच में से कटकर छिन्न भिन्न होना, किसी बात की अधिकता होना, अधिक पीड़ा होना, अलग होना किसी द्रव पदार्थ में ऐसा विकार हो जाना कि उसमें का सारा भाग और पानी अलग हो जावे; **छाती फटना**-असह्य दुःख पहुँचना; **मन (चित्त) का फटना**-संबंध त्याग देना; **फटपड़ना**-सहसा पहुँच जाना।
फटफट-(हिं०स्त्री०) फटफट शब्द, वृथा की बकवाद, जूते आदि के पटकने का शब्द। **फटफटाना**-(हिं०क्रि०) फट शब्द होना, टक्कर मारना, इधर उधर फिरना, हिलाकर फट फट शब्द करना या होना। **फटहा**-(हिं०वि०) फटा हुआ।
फटा-(सं०स्त्री०) सर्प का फन, दम्भ, धमंड, छल, (हिं०पुं०) छेद; **किसी के संकटमें फटे पाँव डालना**-किसी के सकट को अपने ऊपर ले लेना।
फटिक-(हिं०पु०) स्फटिक, बिल्लौर, संगमरमर पत्थर।
फटिका-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मदिरा।
फटिकारी-(सं०स्त्री०) फिटकरी।
फटेहाल-(हिं०पुं०) कंगाल, दरिद्र।
फट्ठा-(हिं०पु०) चिरे हुए बाँस की छड़, फलटा। **फट्ठी**-(हिं०स्त्री०) बांस की चिरी हुई पतली छड़।
फड़-(हिं० स्त्री०) जुआ खेलने की एक रीति, जुए का दांव है, पक्ष, दल, जुएका अड्डा, वह स्थान जहां दुकान-दार बैठकर मोल लेता या बेंचता है, वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है चरख, गाड़ी का हरसा, लकड़ी का मोटा चिरा हुआ बल्ला
फड़क, फड़कन-(हिं०स्त्री०) फड़कने की क्रिया या भाव, फड़फड़ाहट, पड़कन, उत्सुकता, लालसा। **फड़कना**-(हिं०क्रि०) फड़फड़ करना, फड़फड़ाना, हिलना डोलना, उद्यत होना, हिलना डोलना, तड़फड़ाना, नीचे ऊपर या इधर उधर बारंबार हिलना, किसी अंग में गति होना, पक्षियों का पर हिलाना; **फड़क उठना**-प्रसन्न होना; **बोटी फड़कना**-अति चंचल होना।
फड़काना-(हिं०क्रि०) विचलित करना, हिलाना, उत्सुक बनाना, उमंग दिलाना।
फड़नवीस-(हिं० पुं०) महाराष्ट्र राज-कर्मचारी का एक विशेष पद।
फड़फड़ाना-(हिं०क्रि०) फड़फड़ शब्द उत्पन्न करना या होना, घबड़ाना, उत्सुक होना, तड़फड़ाना।
फतिङ्गा-(सं०स्त्री०) झींगुर, फतिंगा।
फड़काज-फड़िया-(हिं०पुं०) वह पुरुष जो लोगों को अपने घर जुआ खेलाता है
फड़िया-(हिं०पुं०) जुए के अड्डे का स्वामी।
फड़ी-(हिं०स्त्री०) ईंटों की ढेर।
फड़ोलना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को उलटना पुलटना या इधर उधर करना
फण-(सं०पुं०) सांप का फन, रस्सी का फन्दा, मुट्ठी, नाव का ऊपरी अगला भाग।

फणकर, फणधर, फणभृत्, फणवत्-(सं०पुं०) सर्प, सांप।
फणा-(सं०स्त्री०) सर्प का फन।
फणाकर, फणाधर फणाभर-(सं०पुं०) सर्प, सांप।
फणि-(सं०पुं०, विप। फणिक-(हिं०पुं०) नाग, सर्प। फणिकेशर-(सं०नपुं०) नागकेसर। फणिचम्पक-(सं०पुं०) जंगली चम्पा। फणिजा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की तुलसी जिसकी पत्तियाँ बहुत छोटी होती हैं। फणितल्पग-(सं०पुं०) भगवान् विष्णु। फणिपति-(सं०पुं०) देखो फणीन्द्र। फणिप्रिय-(सं०पुं०) वायु, हवा। फणि फेन-(सं०पुं०) अहिफेन, अफ़ीम। फणिभुज-(सं०पुं०) पन्नगाशन, गरुड़।
फणिमुक्ता-(सं०स्त्री०) सांप की मणि
फणिमुख-(सं०नपुं०) चोर की सेन लगाने की सबरी। फणिलता, फणिवल्ली-(सं०स्त्री०) नागवल्ली, पान। फणीन्द्र, फणीश(सं०पुं०) शेष नाग, वासुकि, बड़ा सांप। फणी-(हिं०पुं०) सर्प, सांप।
फतिंगा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा।
फदकना-(हिं०क्रि०) फदफद शब्द करना, खदबदाना; देखो फुदकना।
फदका-(हिं०पुं०) गुड़ का पाग जो बहुत गाढ़ा न हुआ हो।
फन-(हिं०पुं०) सांप का फैलाया हुआ सिर, फण।
फनकना-(हिं०क्रि०) सनसनाते हुए हवा में हिलना, फनफनाना। फनकार-(हिं०स्त्री०) फनफन होने का शब्द, वैसा शब्द जैसा सांप के फुफकारने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न होता है।
फनगना-(हिं०क्रि०) पौधों में नये नये अंकुर निकलना।
फनगा-(हिं०पुं०) देखो फतिंगा।
फनना-(हिं०क्रि०) कार्य का आरंभ होना।
फनफनाना-(हिं०क्रि०) फनफन शब्द उत्पन्न करना, चंचलता के कारण इधर उधर हिलना।
फनस-(हिं०पुं०)कटहल।
फनिधर, फनिपति-(हिं० पुं०) सर्प, सांप।
फनिग-(हिं०पुं०) देखो फणीन्द्र सर्प; सांप।
फनिंद-(हिं०पुं०) देखो फणीन्द्र।
फनि-(हिं०पुं०) देखो फण, फणी।
फनिग, फनिप, फनिधर-(हिं०पुं०) सर्प
फनूस-(हिं०पुं०) देखो फानूस।
फन्नी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली वस्तु को दृढ़ करने के लिये ठोंका जाता है, जोलाहों का एक प्रकार का कंघी की तरह का अस्त्र।
फफदना-(हिं०क्रि०) किसी गीले पदार्थ का बढ़कर फैलना, बढ़ना।
फफसा-(हिं०पुं०)फुसफुस, फेफड़ा।
फफूंदी-(हिं०स्त्री०) काई की तरह की सफेद तह जो बरसात के दिनों में फल, लकड़ी आदि पर लग जाती है, स्त्रियों की साड़ी का बंधन, नीवी।
फफोर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली प्याज।
फफोला-(हिं०पुं०) आग में जलने से चमड़े पर का पोला उभाड़ जिसके भीतर पानी भर जाता है, छाला; दिल के फफोले फोड़ना-अपने चित्त का रोष प्रगट करना।
फबकना-(हिं०क्रि०) मोटा होना।
फबती-(हिं०स्त्री०) समय के अनुकूल बात, हँसी की बात जो किसी पर घटती हो, चुटकी, व्यंग; फ़बती उड़ाना-हँसी उड़ाना; फबती कहना-हँसी उड़ाना।
फबन-(हिं०स्त्री०) सुन्दरता, शोभा, छबि। फबना-(हिं० क्रि०) उचित स्थान पर रखना, सुन्दर या भला जान पड़ना, ऐसे स्थान पर रखना या लगाना जहाँ अच्छा जान पड़े।
फबि-(हिं०स्त्री०) फबन; फबीला-(हिं०वि०) जो भला जान पड़ता हो, सुन्दर, शोभा देने वाला।
फम्फण-(सं०पुं०) सन्निपात रोग।
फर-(सं०नपुं०) फलक, सामना।
फरक-(हिं०स्त्री०) फरकने का भाव या क्रिया, फुरती से उछलने कूदने की चेष्टा।
फरकन-(हिं०पुं०) फड़कने का भाव या क्रिया। फरकना-(हिं०क्रि०) फड़कना, उड़ना, उभड़ना, आप से आप बाहर आना।
फरका-(हिं०पुं०) छप्पर जो अलग से छाकर बड़ेर पर चढ़ाया जाता है, द्वार पर लगाने का टट्टर, बड़ेर की एक ओर की छाजन, पल्ला।
फरकाना-(हिं०क्रि०) संचालित करना, हिलाना, बारबार हिलाना, फड़फड़ाना, अलग करना।
फरकी-(हिं०स्त्री०)बांस की पतली तीली जिसमें लासा लगाकर चिड़ीमार चिड़ियों को फँसाता है, भीत में खड़े बल रखने के पत्थर।
फरकीला-(हिं०पुं०) देखो फड़कीला।
फरचा-(हिं०वि०) जो जूठा न हो, शुद्ध, पवित्र। फरचाना-(क्रि०) शुद्ध करना।
फरना-(हिं०क्रि०) देखो फलना।
फरफंद-(हिं०पुं०) चोचला, दाँवपेंच, छल कपट।
फरफर-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ के उड़ने या फड़फड़ाने से उत्पन्न शब्द; फरफराना-(हिं०क्रि०)देखो फड़फड़ाना
फरफुँदा-(हिं०पुं०) देखो फतिंगा।
फ़रमा-हिं०पुं०) किसी वस्तु में ढालने का सांचा, ढाँचा, डौल, लकड़ी आदि का बना हुआ ढांचा जिसपर रखकर मोची जूता बनाते हैं, कागज का पूरा तख्ता जो प्रेस में एक बार में छापा जाता है।
फ़रयारी-(हिं०स्त्री०) हल की वह लकड़ी जिसमें फल लगा रहता है।
फरराना-(हिं० क्रि०) देखो फहराना।
फ़रवार-(हिं०पुं०) खलिहान।
फरवी-(हिं० पुं०) एक प्रकार का भूना हुआ चावल, लुनलुना, चावल।
फरस-(हिं०पुं०)समतल भूमि।
फरसा-(हिं० पुं०) चौड़ी धार की कुल्हाड़ी।
फरसी-(हिं०स्त्री०) देखो फ़रशी।
फरहटा-(हिं० पुं०) चरखी के बीच में जड़ी हुई पतली चौड़ी पटरी।
फरहर-(हिं० वि०) शुद्ध, निर्मल, हरा-भरा, प्रसन्न।
फरहरना-(हिं०क्रि०) फरकना, फहराना, उड़ाना।
फरहरा-(हिं० पुं०) झंडा, पताका; (वि०) स्पष्ट शुद्ध, निर्मल, अलग अलग, प्रसन्न, खिला हुआ।
फरहरी-(हिं० स्त्री०) फल।
फरहा-(हिं०पुं०) धुनिये का रूई धूनने का कमान।
फरही-(हिं० स्त्री०) लकड़ी का वह चौड़ा टुकड़ा जिसपर पात्र रखकर कसेरे रेतते है।
फराक-(हिं० पुं०) मैदान, (वि०) लंबा चौड़ा।
फराल-(हिं० स्त्री०) विस्तार, फैलाव, पटरा।
फ़रासीसी-(हिं० वि०) फ्रान्स देश का रहने वाला, फ्रान्स देश का बना हुआ, फ्रान्स देश का।
फरिया-(हिं० स्त्री०) वह लंहगा जो सामने की ओर सिला नहीं रहता, (पुं०) मिट्टी की नांद।
फरियाना-(हिं० क्रि०) छांट कर अलग करना, पक्ष निर्णय करना, तय करना, स्वच्छ करना, स्पष्ट देख पड़ना।
फरी-(हिं०स्त्री०) फाल, गाड़ी का हरसा, फड़, गतके की मार रोकने की चमड़े की ढाल फली।
फरुहा-(हिं० पुं०) देखो फवड़ा।
फरुही-(हिं०स्त्री०) छोटा फावड़ा, फावड़े के आकार का एक लकड़ी का अस्त्र जो घोड़े की लीद हटाने अथवा खेत की क्यारी बनाने के काम में आता है, एक प्रकार का भूना हुआ चावल जो भीतर से पोला हो जाता है, लाई।
फरुहरी-(हिं०स्त्री०) देखो फुरहरी।
फरेंदा-(हिं० पुं०) एक प्रकार की बड़ी गूदेदार मीठी जामुन।
फरेन्द्र-(सं०पुं०) जामुन का वृक्ष।
फरेरी-(हिं०स्त्री०) जंगल के फल, जंगली मेवा।
फ़र्क़-(हिं० पुं०) अन्तर।
फ़र्च-(हिं० वि०) देखो फरच। फर्चा-(हिं० पुं०) देखो फरचा। फर्जंद-(हिं०पुं०) देखो फ़रजद।
फर्रा-हिं०पुं०) गेहूं या धान की कृषि-फल का एक रोग।
फर्राटा-(हिं०पुं०) वेग, देखो खर्राटा।
फल-(सं०नपुं०) लाभ, वनस्पति में होने वाला गूदे से परिपूर्ण वह बीजकोश जो फूलों में से विशिष्ट ऋतु में उत्पन्न होता है, गणित की किसी क्रिया का परिणाम, उद्देश्य की सिद्धि, त्रैराशिक की तीसरी राशि, व्याज, सूद, क्षेत्रफल, प्रयोजन, स्त्री का रज, वमन, त्रिफला, दान, इन्द्र-जव, गुण, प्रभाव, बदला, कर्म का भोग, शुभ कर्मों का परिणाम, बाण भाले आदि का नुकीला भाग, ढाल, हल की फाल, प्रतिफल, बदला, न्याय के अनुसार प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न अर्थ, फलित ज्योतिप में ग्रहों के योग का सुख अथवा दुःख सूचक परिणाम।
फलक-(सं०नपुं०) चक्र, ढाल, लकड़ी आदि का पटरा, चौकी, हथेली, बरक, चादर, जलपात्र रखने का आधार, धोबी का पाट, नितंब, हड्डी का टुकड़ा, खाट की बीनन।
फलकण्टक-(सं०पुं०) पनस, कटहल।
फलकना-(हिं०क्रि०) छलकना, फरकना।
फलकपाणि-(सं०पुं०) हाथ में ढाल लेकर लड़ने वाला योद्धा।
फलकयन्त्र-(सं० नपुं०) ज्योतिष का एक यन्त्र।
फलकर-(हिं० पुं०) वह कर जो वृक्षों के फल पर लगाया जाता है।
फलकृष्ण-(सं०पुं०)करंज वृक्ष, जल आंवला।
फलकेशर-(सं०पुं०) नारियल का वृक्ष।
फलकोष-(सं०पुं०) अण्डकोष। फल-ग्राही-(सं० वि०) फल देने वाला।
फलतः-(सं०अव्य०) फलस्वरूप, इसलिये।
फलत्रय फलत्रिक-(सं०नपुं०) त्रिफला, हर्रा, बहेरा, आमला।
फलद-(सं० वि०) फल देने वाला।
फलदान-(हिं०पुं०) हिन्दुओं में विवाह स्थिर करने की एक रीति, वर रक्षा, विवाह सम्बन्धी टीके की रीति।
फलदार-(हिं०वि०) फल वाला, जिसमें फल लगे हों।
फलद्रुम-(सं०पुं०) फला हुआ वृक्ष।
फलना-(हिं० क्रि०) फल से युक्त होना, फल लगना, परिणाम निकलना लाभदायक होना, शरीर के किसी भाग में छोटे छोटे दाने निकलना; फलना-फूलना-सम्पन्न और सुखी होना।
फलपाक-(सं०पुं०) कमर्दक, करौंदा।
फलपादप-(सं० पुं०) फल का वृक्ष।
फलपुच्छ-(सं० पुं०) वह वनस्पति

जिसकी जड़ में गांठ पड़ती है। **फलपुष्पा**-(सं० स्त्री०) पिण्डखजूर। **फलपूर**-(सं० पुं०) दाडिम, अनार, बिरौजा नीबू; **फलप्रद**-(सं०वि०) फल देने वाला। **फलभागी**-(सं० वि०) फल का भोग करनेवाला। **फलभूमि**-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहां कर्मों का फल भोगना पड़ता है। **फलभोग**-(सं०पु०) कर्मफल, सुख दुःख आदि का भोग। **फलमत्स्या**-(सं० स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुंआर। **फलमुख्या**-(सं० स्त्री०) अजमोदा। **फलमुण्ड**-(सं०पुं०) नारियल का पेड़। **फलयोग**-(सं०पुं०) नाटक में वह स्थान जिसमें फल की प्राप्ति अथवा उसके नायक की अर्थसिद्धि हो। **फलराज**-(सं०पुं०) तरबूज, खरबूजा। **फललक्षणा**-(सं० स्त्री०) फल हेतु का लक्षण। **फलवर्ति**-(सं०स्त्री०) घाव में रखने की कपड़े की मोटी बत्ती। **फलवर्तुल**-(सं०नपुं०) कुम्हड़ा, तरबूज। **फलवान्**-(सं०वि०) जिसमें फल लगे हों। **फलविक्रयी**-(सं० वि०) फल बेचने वाला। **फलवृक्ष**-(सं० पुं०) फल का पेड़। **फलश्रेष्ठ**-(सं०पुं०) आम का वृक्ष।

फलस-(सं०पु०) कटहल का वृक्ष।

फलस्थापन-(सं० नपुं०) दस प्रकार के संस्कारों में से तीसरा संस्कार। **फलस्नेह**-(सं०पुं०) अखरोट का वृक्ष। **फलहरी**-(हिं०स्त्री०) वन के वृक्षों के फल, मेवा। **फलहार**-(हिं०पुं०) देखो फलाहार। **फलहारी**-(सं० वि०) फल चुराने वाला, (स्त्री०) कालिका देवी। **फलहारी**-(हिं०वि०) जो अन्न से न बना हो, जिस खाद्य पदार्थ के बनाने में केवल फलों का उपयोग किया गया हो।

फलांग-(हिं०स्त्री०) एक स्थान से उछल कर दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या उसका भाव, मलखंभ का एक व्यायाम एक फलांग में तय करने की दूरी। **फलांगना**-(हिं०क्रि०)कूदना, फांदना।

फलांश-(हिं०पुं०) तात्पर्य, सारांश।

फला-(सं०स्त्री०) प्रियंगु, शमी वृक्ष।

फलागम-(सं०पुं०) फल आनेका काल, शरद काल। **फलादन**-(सं०वि०) फल खाने वाला, (पुं०) शुक, तोता।

फलादेश-(सं०पुं०) किसी बात का फल या परिणाम बतलाना, फल कहना।

फलाध्यक्ष-(सं०नपुं०) फल देने वाला, ईश्वर।

फलाना-(हिं०क्रि०)फलने में प्रवृत्त करना

फलान्त-(सं०पुं०) फल का अन्त या शेष। **फलाफल**-(सं० नपुं०) अच्छा और बुरा फल। **फलाम्ल**-(सं०नपुं०) अमलबेंत। **फलाराम**-(सं०पुं०) फल की बगीचा। **फलार्थी**-सं०वि०) फल की कामना करने वाला।

फलालैन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कोमल ऊनी वस्त्र।

फलाशी-(सं०वि०) फलभोजी, फल खाने वाला। **फलासव**-(सं०पु०) फलों से बनी हुई मदिरा। **फलास्थि**-(सं०पुं०) नारियल का वृक्ष।

फलाहार-(सं०पुं०) केवल फलों का भोजन। **फलाहारी**-(हिं०पु०) वह जो केवल फल खाकर निर्वाह करता हो, (वि०) जो केवल फलों से बना हो, फलाहार संबंधी।

फलित-(सं०वि०) फलवान्, फला हुआ, पूर्ण संपूर्ण, (पुं०) पत्थरफूल, छरीला; **फलित ज्योतिष**-ज्योतिष शास्त्र का वह भाग जिसमें ग्रहों के योग से फलाफल बतलाया जाता है।

फलितव्य-(सं०वि०) फलने योग्य।

फलिन-(सं०वि०) फला हुआ, जिसमें फल लगे हों, (पुं०) पनस, कटहल। **फलिनी**-(सं०स्त्री०) मूसली, इलायची, मेंहदी।

फली-(हिं०स्त्री०) पौधों के वे फल जो चिपटे और लंबे होते हैं जिनमें बीज भरे होते हैं।

फलीभूत-(सं०वि०)फलदायक,लाभदायक

फलेंदा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा, गूदेदार मीठा जामुन।

फलोदय-(सं०पुं०) लाभ, हर्ष, आनन्द, फल की उत्पत्ति। **फलोद्भव**-(सं० वि०) जो फल से उत्पन्न हुआ हो। **फलोपजीवी**-(सं०वि०) जो केवल फल खाकर जीविका निर्वाह करता हो।

फल्गु-(सं०वि०) असार, निरर्थक, व्यर्थ, सामान्य, क्षुद्र, छोटा (स्त्री०) गया क्षेत्र की एक नदी। **फल्गुनीभव**-(सं०पु०) बृहस्पति का एक नाम।

फल्ला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पीले रंग का रेशम।

फसकड़ा-(हिं०पुं०) पथली।

फसकना-(हिं०क्रि०) बैठना, धँसना, (वि०) जल्दी से धँसने या फट जाने वाला। **फसकाना**-(हिं०क्रि०) कपड़ेको दबाकर फाड़ना, धँसाना, बैठाना।

फसिल-(हिं०स्त्री०) देखो फसल।

फहरना-(हिं०क्रि०) हवा में उड़ना।

फहरान-(हिं०स्त्री०) फहराने का भाव या क्रिया। **फहराना**-(हिं०क्रि०) हवा में उड़ने के लिये किसी वस्तु को छोड़ देना, हवामें रहरह कर हिलना या उड़ना। हवा में पसरना। **फहरानि**-(हिं०स्त्री०) देखो फहरान।

फहरिस्त-(हिं०स्त्री०) सूची।

फांक-(हिं०स्त्री०) किसी फल आदि का एक सिरे से दूसरे सिरे तक काटकर अलगाया हुआ टुकड़ा, किसी गोल या पिण्डाकार वस्तु का काटा या चिरा हुआ टुकड़ा, खण्ड, कोई टुकड़ा

फाँकड़ा-(हिं०वि०)तिरछा बांका, हृष्टपुष्ट

फाँकना-(हिं० क्रि०) चूर दाने या बुकनी के रूप की किसी वस्तुको दूर से मुंह में डालना; **धूल फाँकना**-दुर्दशा भोगना।

फाँका-(हिं०पुं०) उतनी वस्तु जो एक बार फाँकी जाय।

फाँग, फाँगी-(हिं०स्त्री०)एकप्रकारका साग

फाँट-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु को यथाक्रम कई भागों में बाँटने की क्रिया, क्रम से बाँटा हुआ भाग, औषधि का क्वाथ या काढ़ा करना। **फाँटना**-(हिं०क्रि०) विभाग करना, बाँटना, काढ़ा करना; **फाँटबंदी**-(हिं०स्त्री०) वह कागज जिसमें किसी गाँव के पट्टीदारों के अनुसार गाँव का आय लिखा होता है।

फाँटा-(हिं०पु०) दो वस्तुओंको परस्पर जोड़ने की कोनियां।

फाँड़, फाड़ा-(हिं०पुं०) धोती या दुपट्टे का वह भाग जो कमरमें बँधारहता है

फाँद-(हिं०स्त्री०)उछलनेकाभाव, उछाल, चिड़ियोंके फँसाने का फन्दा। **फाँदना**-(हिं०क्रि०) झटके से शरीर को ऊपर उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा पड़ना, कूदना कूदकर लाँघना फँसाना, फंदे में डालना।

फाँदा-(हिं०स्त्री०)गट्ठरबांधनेकी रस्सी।

फाँफी-(हिं०स्त्री०) बहुत महीन झिल्ली, मलाईकी पतली तह जो दूधके ऊपर पड़ जाती है, जाला या माड़ा जो आँख की पुतलियों पर पड़ जाता है।

फांस-(हिं०स्त्री०) पाश, बंधन, वह रस्सी जिसका फन्दा डालकर प्रशु पक्षी फँसाये जाते हैं बांस या काठ का कड़ा रेशा या नोक, महीन काँटा, पतली तीली या खमाची।

फाँसना-(हिं०क्रि०) बंधन में डालना, पकड़ना धोखे में डालना, जाल में फँसाना, किसी पर ऐसा प्रभाव डालना कि वह वश में हो जावे।

फाँसी-(हिं०स्त्री०) पाश, फँसानेका फंदा, मृत्युदण्ड जो गले में फन्दा डालकर दी जाती है, पाश द्वारा प्राण दण्ड; **फाँसी चढ़ना**-पास द्वारा प्राण दण्ड पाना; **फाँसी देना**-पाश द्वारा मार डालना, अत्यन्त कष्ट देना।

फा-(सं०पुं०) सन्ताप, व्यर्थ की बकवाद

फ़ाख़तई-(हिं०वि०) भूरापन लिये लाल रंग का।

फाग-(हिं०पुं०) फाल्गुन महीने में होने वाला उत्सव जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग या गुलाल डालते हैं और वसन्त ऋतु की गीत गाते हैं, फाग में गाई जाने वाली गीत।

फागुन-(हिं०पुं०)शिशिर ऋतु का दूसरा महीना, माघ के बाद का महीना फाल्गुन। **फागुनी**-(हिं०वि०) फागुन संबंधी।

फाटक-(हिं०पुं०) बड़ा द्वार, तोरण, फटकन, पछोड़न।

फाटकी-(हिं०स्त्री०) फिटकरी।

फाटना-(हिं०क्रि०) देखो फटना।

फाड़न-(हिं०पुं०) कागज या कपड़े का फाड़ कर निकाला हुआ भाग, दही के ताजे मक्खन की छाछ। **फाड़ना**-(हिं०क्रि०) खण्ड करना, टुकड़े करना, चीरना, संधि या जोड़ फैला कर खोलना, धज्जियां उड़ाना, किसी गाढ़े द्रव पदार्थ का जल और सार भाग अलगाना।

फाणि-(सं०स्त्री०) गुड़।

फाणित-(सं०नपुं०)खौलाकर गाढ़ा किया हुआ ऊख का रस, राब, शीरा।

फाण्ड-(सं०नपुं०) गर्भ।

फानना-(हिं०क्रि०) किसी कामको हाथ मे लेना, रूई को फटकना या धुनना

फाफर-(हिं०पु०) कटू।

फाफा-(हिं०स्त्री०) पोपली बुढ़िया।

फाब-(हिं०स्त्री०) देखो फबन। **फाबना**-(हिं०क्रि०) देखो फबना।

फाया-(हिं०पु०) देखो फाहा। **फार**-(हिं० पु०) देखो फाल।

फारना-(हिं०क्रि०) देखो फाड़ना।

फारस-देखो पारस।

फारा-(हिं०पुं०) फाल, कतरा; देखो फाल।

फाल-(सं०नपुं०)लोहे की चौकोर लंबी छड़ जिसका सिरा नुकीला होता है जो हल की अँकड़ी के नीचे लगाई होती है, कुस, कुसी, सूता, कपड़ा, फावड़ा महादेव, बलदेव। **फाल**-(हिं० स्त्री०) किसी ठोस वस्तु में से काटा हुआ पतला टुकड़ा; (पु०) डग, फलांग; (स्त्री०) कटी हुई सुपारी; **फाल बांधना**-उछल कर लाँघना।

फालकृष्ट-(सं०वि०)हल से जोता हुआ;

फालगुप्त-(सं०पु०)बलराम का नाम।

फाल्गुन-(सं०पु०) अर्जुन का नाम, वह चान्द्रमास जिसकी पूर्णिमा फाल्गुनी नक्षत्र में होती है, फाल्गुन का महीना; **फाल्गुनप्रिय**-(सं०पुं०)शंख। **फाल्गुनि**-(सं०पुं०)अर्जुन का एक नाम; **फाल्गुनी** (सं०स्त्री०) पूर्वा फाल्गुनी तथा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।

फावड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लोहे का अस्त्र जो मिट्टी खोदने तथा हटाने मे काम आता है, फरसा।

फावड़ी-(हिं०स्त्री०)छोटा फावड़ा, फरुही;

फाहा-(हिं०पुं०)फाया, घाव, फोड़े आदि पर लगाने की मरहम से तर की हुई पट्टी।

फिकवाना-(हिं०क्रि०) देखो फेंकवाना।

फिंगा-(हिं०पुं०)एक प्रकार की चिड़िया

फि-(सं०पुं०)पाप, कोप, निष्फल वाक्य;

फिकई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का मोटा अन्न।

फिकैत-(हिं०पुं०)फरी या गदका चलाने वाला।

फिङ्गक-(सं०पुं०) फिंगा नामक पक्षी;

फिचकुर-(हिं०स्त्री०) वह फेन जो मूर्छा में मुख से निकलता है।

फिट-(हिं०अव्य०) धिक्कार का शब्द, धिक्, छिः।

फिटकरी-(हिं०स्त्री०) देखो फिटकिरी।

फिटकार-(हिं०पु०)धिक्कार, शाप, कोसा

हलकी, मिलावट, भावना।
फिटकिरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो लाल, काला पीला तथा सफेद भी होता है।
फिटकी-(हिं०स्त्री०) छींटा, कपड़े का फुचड़ा।
फिटाना-(हिं०क्रि०) भगाना।
फिट्टा-(हिं०वि०) अपमानित, फटकार खाया हुआ।
फिना-(हिं०स्त्री०) मृत्यु, नाश।
फिनिया-(हिं०स्त्री०) कान में पहरने का एक गहना।
फिनीज-(हिं०स्त्री०)दो मस्तूल की छोटी नाव। **फिफरी**-(हिं०स्त्री०) पपड़ी।
फिरंग-(हिं०पुं०)देखो फिरङ्ग। **फिरंगी**-(हिं०वि०) देखो फिरङ्गी।
फिरंट-(हिं० वि०) विरुद्ध, विरोध करने के लिए उद्यत।
फिर-(हिं०क्रि०वि०)पुनः,दुबारा,अनन्तर, उपरान्त, भविष्य में, किसी समय, आगे बढ़कर, आगे चलकर, उस अवस्था में, इसके अतिरिक्त; **फिर फिर**-बारबार; **फिर क्या है?**-तब तो कोई चिन्ता की बात नहीं है;
फिरक-(हिं०स्त्री०) सामग्री ढोने की एक प्रकार की छोटी गाड़ी।
फिरकना-(हिं०क्रि०) किसी गोल वस्तु का एक स्थान पर घूमना, थिरकना, नाचना।
फिरकी-(हिं०स्त्री०) लड़कों के नचाने का एक खिलौना, मालखंभ का एक व्यायाम मल्ल युद्ध की एक युक्ति, तागा बटने की तकली के नीचे लगा हुआ धातु आदि का गोल टुकड़ा जो तकले मे लगाकर चरखे में लगाया जाता है। **फिरकैया**-(हिं०पुं०)चक्कर
फिरङ्ग-(स०पुं०) युरोप का एक देश, गोरों का देश, फिरगिस्तान, आतशक रोग गरमी।
फिरङ्गी-(हिं०वि०)फिरंग देश का रहने वाला गोरा। (हिं०स्त्री०) बिलायती तलवार।
फिरता-(हिं०पुं०) अस्वीकार, (वि०) वापस, लौटाया हुआ।
फिरना-(हिं०क्रि०) विचरना, टहलना, चक्कर या फेरा लगाना, इधर उधर चलना, ऐंठा जाना, पलटना, विपरीत होना, मुड़ना, प्रचारित होना, मुड़ना, झुकना, विरुद्ध होना, लड़ने को तैयार हो जाना, स्थिति बदलना, दूसरी ओर जाना, एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्पर्श करते हुए जाना, वापस होना,उलटा होना, प्रवृत्त होना; **जी फिर जाना**-विरक्त या उदासीन होना; **सिर फिरना**-बुद्धि भ्रष्ट होना, पागल होना।
फिरवा-(हिं०पुं०) गले में पहरने का सोने का एक गहना।
फिरवाना-(हिं०क्रि०) फेरने या फिराने का काम दूसरे से कराना।
फिराना-(हिं०क्रि०)इधर उधर चलाना, चक्कर देना नचाना,विचलित करना, बात पर स्थिर न रहने देना,पलटाना घुमाना, ऐंठना, मरोड़ना, स्थिति बदलना, बारंबार फेरे लगाना।
फिरि-(हिं०क्रि०वि०) देखो फिर।
फिरहरा-(हिं०पुं०)एक प्रकार का पक्षी।
फिरिहरी-(हिं०स्त्री०) बच्चों का घुमाने का खिलौना, फिरकी।
फिल्ली-(हिं०स्त्री०) लोहे के छड़ का टुकड़ा जो करघे के तूर में लगाया जाता है, पिंडली।
फिस्-(हिं०वि०) कुछ नहीं; **टाँय टाँय फिस्**-धूमधाम देख पड़े पर परिणाम कुछ न निकले।
फिसड्डी-(हिं०वि०)जो काम के पीछे रह जावे, जो किसी काम में बढ़ न सके, जिसका कुछ किया न हो सके।
फिसफिसाना-(हिं०क्रि०) शिथिल होना, ढीला पड़ना।
फिसलन-(हिं०स्त्री०) फिसलने की क्रिया या भाव, रपटन, सरकन। **फिसलना**-(हिं०क्रि०)चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर का न जमना, झुकना, प्रवृत्त होना। **फिसलाना**-(हिं०क्रि०) किसीको ऐसा करना कि वह फिसल जाय।
फीका-(हिं० वि०) नीरस, स्वादहीन, मलिन,जो चटकीला, न हो,प्रवाह हीन व्यर्थ, कान्तिहीन, धूमिल, निष्फल।
फीफरी-(हिं०स्त्री०) देखो फेफरी।
फीली-(हिं०स्त्री०) घुटने के नीचे एड़ी तक का भाग, पिंडली।
फुँकना-(हिं०क्रि०) भस्म होना, जलना, मुंह में हवा भर कर निकाला जाना, नष्ट होना। (पुं०) बांस पीतल आदि की नली, प्राणियों के शरीर का मूत्र रहने का अवयव।
फुँकनी-(हिं०स्त्री०) बांस पीतल आदि की नली जिसमें मुंह की हवा भर कर आग को दहकाने के लिये उस पर छोड़ते हैं, भाथी।
फुंकरना-(हिं०क्रि०) मुंह से हवा छोड़ना,
फुंकवाना-(हिं०क्रि०) फूंकने का काम दूसरे से कराना, मुंह से हवा का झोंका निकलवाना, भस्म करवाना, जलवाना। **फुंकाना**-(हिं०क्रि०) फूंकने का काम कराना।
फुंकार-(हिं०पुं०) फूत्कार।
फुंदना-(हिं०पुं०) फूल के आकार की गांठ जो झालर आदि के छोर पर शोभा के लिये बाँधी जाती है,झब्बा;
फुंदिया-(हिं०स्त्री०) फुंदना।
फुंदी-(हिं० स्त्री०) फंदा, गांठ, बिंदी, गाँठ, टीका।
फुंसी-(हिं०स्त्री०) छोटी फोड़िया।
फुआरा-(हिं०पुं०) देखो फुहारा।
फु-(सं०पुं०)तुच्छ वाक्य।
फुक-(सं०पुं०) पक्षी।
फुकना-(हिं०क्रि०) देखो फुकना।
फुकाना-(हिं०क्रि०) देखो फुंकाना।
फुगना-(हिं०क्रि०) खोलना।
फुचड़ा-(हिं०पुं०) वह सूत या रेशा जो कपड़े, चटाई आदि बुनी हुई वस्तु के बाहर निकला रहता है।
फुट-(सं०पुं०) साँप का फन (हिं०वि०), अयुग्म,जिसका परस्पर संबंध अलग हो
फुटकर, फुटकल-(हिं०वि०) विषम,अकेला थोड़ा थोड़ा, इकट्ठा नहीं जिसका जोड़ा न हो, भिन्न भिन्न, कई प्रकार का, जिसका कोई क्रम न हो।
फुटका-(हिं० पुं०) फफोला, धान का लावा।
फुटकी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की छोटी चिड़िया, फुदकी, किसी वस्तु के छोटे लच्छे या कण जो दूध आदि के ऊपर अलग अलग देख पड़ते हैं, रुधिर, पीब आदि का छींटा जो किसी वस्तु पर देख पड़ता है।
फुटेहरा-(हिं०पुं०) मटर या चने का भूना हुआ दाना जिसका छिलका फटकर अलग हो गया हो।
फुटैल-(हिं०वि०) देखो फुट्टैल।
फुट्ट-(हिं०वि०) देखो फुट।
फुट्टक-(सं०नपुं०) एक प्रकार का वस्त्र।
फुट्टैल-(हिं०वि०) झुंड या समूह से अलग, अकेला रहने वाला, जिसका जोड़ न हो, हतभाग्य, अभागा।
फुत्कार-(सं०पुं०) फूंक, मुंह से हवा छोड़ने का शब्द; **फुत्कृति**-(सं०स्त्री०) देखो फुत्कार।
फुदकना-(हिं०क्रि०) उछल उछल कर कूदना, फूले न समाना, उमंग में आना
फुदकी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
फुनंग-(हिं०स्त्री०) वृक्ष या शाखा का अगला भाग, अंकुर।
फुन-(हिं०अव्य०) पुनः, फिरसे।
फुनगी-(हिं०स्त्री०) वृक्ष या वृक्ष की शाखाओं का अग्र भाग, फुनंग।
फुनना-(हिं०पुं०) देखो फुंदना।
फुनफुनि-(हिं०अव्य०) बारंबार।
फुप्फुस-(सं०पुं०) फेफड़ा जो हृदय के दोनों ओर रहता है।
फुफुंदी-(हिं०स्त्री०) वह डोर जो लँहगे, या स्त्रियों की साड़ी में कसी जाती है, नीवी।
फुफकाना-(हिं०क्रि०)देखो फुफकारना।
फुफकार-(हिं०पुं०) फूत्कार, हवा का शब्द जो सांप के मुख से निकलता है; **फुफकारना**-(हिं० क्रि०) फूत्कार करना।
फुफुनी-(हिं०स्त्री०) देखो फुफूंदी।
फुफू-(हिं०स्त्री०) देखो फूफी।
फुफेरा-(हिं०वि०) फूफा संबंधी।
फुर-(हिं०स्त्री०) पक्षी का पर फड़फड़ाने का शब्द, (वि०) सत्य, सच्चा।
फुरकाना-(हिं०क्रि०) देखो फड़काना।
फुरती-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता; **फुरतीला**-(हिं०वि०) जो मन्द न हो।
फुरना-(हिं०क्रि०) सच्चा ठहरना, पूरा उतरना, प्रभाव उत्पन्न करना, प्रकाशित होना, चमक उठना, सफल होना, मुख से शब्द निकालना, उदय होना, फड़कना, हिलना, पूरा उतरना
फुरफुर-(हिं०स्त्री०) उड़ने में पर की फड़फड़ाहट से उत्पन्न शब्द;
फुरफुराना-(हिं०क्रि०) फुरफुर शब्द करना, हलकी वस्तु का लहराना, उड़कर परों से शब्द निकालना, कान में रूई की फुरेरी फिराना;
फुरफुराहट-(हिं०स्त्री०) पंख फड़फड़ाने का भाव।
फुरफुरी-(हिं०स्त्री०) देखो फुरफुराहट।
फुरमान-(हिं०पुं०) राजा की आज्ञा।
फुरमाना-(हिं०क्रि०) देखो फ़रमाना।
फुरहरना-(हिं०क्रि०) स्फुरित होना, निकलना।
फुरहरी-(हिं०स्त्री०) पर को फुला कर फड़फड़ाने का शब्द, फरफराहट, कँपकँपी, रोमाञ्च, कपड़े आदि का हवा के हिलने से उत्पन्न शब्द; देखो फुरेरी।
फुराना-(हिं०स्त्री०) प्रमाणित करना।
फुरेरी-(हिं०स्त्री०) रोमाञ्च युक्त कँपकपी, रोंगटे खड़े होना, रूई लपेटी हुई सींक जो तेल इत्र आदि में डुबो कर काम में लाई जाती है; **फुरेरी लेना**-ठंढ से काँपना।
फुर्ती-(हिं०स्त्री०) देखो फुरती।
फुलका-(हिं०पुं०) पतली हलकी रोटी, चपाती, फफोला,छाला, छोटी कड़ाही
फुलचुही-(हिं०स्त्री०) एक छोटी चिड़िया जो सर्वदा फलों पर उड़ती फिरती है
फुलझड़ी, फुलझरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा जिसमें से फूलों के समान चिनगारियां निकलती हैं, विवाद या कलह उत्पन्न करने वाली बात।
फुलनी-(स०स्त्री०) ऊसर में होने वाली एक प्रकार की घास।
फुलमती-(सं०स्त्री०)एक रागिणी का नाम
फुलरा-(हिं०पुं०) देखो फुंदना।
फुलवर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कपड़ा जिसपर रेशम के बेल बूटे कढे होते हैं।
फुलवाई-(हिं०स्त्री०) देखो फुलवारी।
फुलवार-(हिं०पुं०) प्रसन्न।
फुलवारी-(हिं०स्त्री०) उद्यान, बगीचा, वह उत्सव जिसमें फूलों की सजावट होती है, कागज के बने हुए फूल, वृक्ष आदि जो बारात के साथ निकाले जाते हैं।
फुलसरा-(हिं०पुं०) काले रंग की एक चिड़िया।
फुलसुंघी-(हिं०स्त्री०)एक छोटी चिड़िया; देखो फुलचुही।
फुलहारा-(हिं०पुं०) माली।
फुलाई-(हिं०स्त्री०) फूलने का भाव।

फुलाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु के फैलाव को वायु आदि का दबाव पहुँचा कर बाहर की ओर बढ़ाना, गर्वित करना, अति आनन्द देकर आपे से बाहर करना, फूलों से युक्त करना, रोमाञ्चित करना; **मुंह फुलाना**-रूठना।
फुलायल-(हिं०पुं०) देखो फुलेल।
फुलाव-(हिं०पुं०) फूलने का भाव या अवस्था; **फुलावट**-(हिं०स्त्री०) फूलने की क्रिया, या भाव, उभाड़, या सूजन
फुलावा-(हिं०पुं०) स्त्रियों के सिर के बालोंको गूथने की क्रिया, फुंदनेदार डोरी।
फुलिंग-(हिं०पुं०) स्फुलिङ्ग, चिनगारी।
फुलिया-(हिं०स्त्री०) कील या कांटा जिसका माथा फैला हुआ हो, कील या छड़ के आकार की कोई वस्तु जिसका सिरा गोल और उभड़ा हुआ हो, कान में पहरने का लौंग नाम का गहना।
फुलुरिया-(हिं०स्त्री०) छोटे बच्चों के चूतड़ के नीचे बिछाने का मोटा कपड़ा आदि।
फुलेरा-(हिं०पुं०) फूल की बनी हुई छतरी जो देवताओं की मूर्ति के ऊपर लगाई जाती है।
फुलेल-(हिं०पुं०) सुगन्ध युक्त तेल, फूलों के सुगंध से बसा हुआ तेल; **फुलेली**-(हिं०स्त्री०) फुलेल रखने का काँच का पात्र।
फुलेहरा-(हिं०पुं०) उत्सवों में द्वार पर लगाने के सूत, रेशम आदि के बने हुए झब्बेदार बन्दरवार।
फुलौरा-(हिं०पुं०) बड़ी फुलौरी, पकौड़ा
फुलौरी-(हिं०स्त्री०) चने मटर आदि के बेसन की बरी, बेसन की पकौड़ी।
फुल्ल-(सं०वि०) विकसित, फूला हुआ; (पुं०) पुष्प, फूल; **फुल्लदाम**-(सं०पुं०) उन्नीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त; **फुल्लन**-(सं०वि०) वायु से भरा हुआ; **फुल्ललोचन**-(सं०वि०) प्रफुल नेत्रों वाला; **फुल्लारविन्द**-(सं०स्त्री०) फूला हुआ कमल।
फुल्ली-(हिं०स्त्री०) फुलिया, फूल के आकार का कोई आभूषण।
फुवारा-(हिं०पुं०) देखो फुहारा।
फुस-(हिं०स्त्री०) अति मन्द स्वर।
फुसकारना-(हिं०क्रि०) फूंक मारना।
फुसड़ा-(हिं०पुं०) देखो फुचड़ा।
फुसफुसा-(हिं०वि०) जो पुष्ट न हो, मद, नरम, ढीला, शीघ्रता से टूट जाने वाला; **फुसफुसाना**-(हिं०क्रि०) अति मन्द स्वर से बोलना।
फुसलाना-(हिं०क्रि०) भुलावा देकर शान्त और चुप करना, बहलाना, मीठी मीठी बातें कहकर अनुकूल करना, किसी ओर प्रवृत्त करने के लिये इधर उधर की बातें करना।
फुहार-(हिं०पुं०) जलकण, पानी का छींटा, महीन बूदो की झड़ी, झींसी।
फुहारा-(हिं०पुं०) जल की वह टोंटी जिसमें से महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठते और नीचे गिरते हैं, जल का महीन छींटा; **फुही**-(हिं०स्त्री०) पानी का महीन छींटा, महीन महीन बूंदों की झड़ी।
फूंक-(हिं०स्त्री०) वह हवा जो ओठों को चारों ओर से सिकोड़ कर निकाली जाय, साँस, मुंह की हवा, मन्त्र पढ़ कर मुंह से फेंकी हुई हवा; **फूंक निकल जाना**-मृत्यु होना, प्राण निकल जाना; **झाड़ फूंक**-मन्त्र तन्त्र की विधि; **फूंकना**-(हिं०क्रि०) ओठों को चारों ओर से सिकोड़ कर वेग से हवा फेंकना, धातुओं को रसायन की रीति से भस्म करना, फूंककर प्रज्वलित करना या जलाना, मन्त्र आदि पढ़कर किसी पर फूंक मारना, बाँसुरी आदि बाजों को मुख से हवा फूंककर बजाना, कष्ट देना, चारों ओर फैलाना, व्यर्थ व्यय करना; **फूंक फूंक कर पैर रखना**-बड़ी सावधानी से कोई काम करना; **फूंक तापना**-सब कुछ व्यय कर डालना।
फूंका-(हिं०पुं०) भाथी या नली से आग पर फूंक मारने की क्रिया, फोड़ा, फफोला, बाँस की नली में जलन उत्पन्न करने वाली औषधियों को भरकर गाय के थन में लगाकर फूंकना जिसमें उसका सब दूध बाहर निकल आवे।
फूंद, फूंदा-(हिं०स्त्री०) फुँदना, झब्बा।
फूई-(हिं०स्त्री०) घी के ऊपर का गाज जो उसको तपाने पर आ जाता है।
फूट-(हिं०स्त्री०) फूटने की क्रिया या भाव, विरोध, वैर, बिगाड़, एक प्रकार की बड़ी ककड़ी जो पकने पर फूट जाती है।
फूटन-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो फूटकर अलग हो गया हो, शरीर के जोड़ों की पीड़ा।
फूटना-(हिं०क्रि०) मग्न होना, खण्ड होना, नष्ट होना, बिगड़ना, शरीर पर दाने के रूप में प्रगट होना, अंकुर शाखा आदि के रूप में निकलना, अंखुआ फूटना, व्याप्त होना, फैलना, मिला रहना, कली का खिलना, शब्द का मुख से निकलना, शरीर के जोड़ों में पीड़ा होना, किसी पतली वस्तु का रस कर निकलना, भेद खुलना, रोक का दबाव से हट जाना, खौलते पानी में बुलबुले निकलना, मुख से शब्द निकालना, बोलना, साथ छोड़ना, भीतर से झोंक के साथ निकलना, प्रकाशित होना, कुरकना, दूसरे पक्ष में जाना, मेड़ बाँध आदि का टूट जाना; **फूटी आंखों न भाना**-बहुत बुरा लगना; **फूटफूट कर रोना**-अति विलाप करना।
फूटा-(हिं०वि०) भग्न, टूटा हुआ।
फूत्कार-(सं०पुं०) मुख से हवा छोड़ने का शब्द।
फूफा-(हिं०पुं०) पिता की बहिन का पति; **फूफी**-(हिं०स्त्री०) पिता की बहिन, बुआ।
फूल-(हिं०पुं०) पुष्प, कुसुम, शरीर पर का सफ़ेद चिह्न, श्वेत कुष्ट, पहली बार की उतारी हुई देसी मदिरा, मासिक धर्म में निकलने वाला स्त्रियों का रुधिर, फुलिया, फूल के आकार के बेलबूटे; स्त्रियों के पहरने का एक प्रकार का गहना, दीपक का गुल, आग की चिनगारी, तांबे और रांगे के मेल से बनी हुई एक मिश्र धातु, सूखे साग या भांग की पत्तियाँ, गर्भाशय, आंटे चीनी आदि का उत्तम भेद, घुठने पर की गोल हड्डी, टिकिया, वह हड्डी जो शव जलाने पर बच जाती है; **फूल झड़ना**-मधुर और प्रिय शब्द बोलना; **फूल सा**-सुन्दर और सुकुमार; **फूल सूंघकर रहना**-बहुत कम आहार करना।
फूल-(हिं०स्त्री०) प्रफुल्ल होने का भाव आनन्द प्रसन्नता, उत्साह। **फूलकारी** (हिं०स्त्री०) बेलबूटे बनाने का काम। **फूलगोभी**-(हिं० स्त्री०) गोभी की एक जाति जिसमें मंजरियों का बँधा हुआ ठोस पिण्ड होता है जो तरकारी के काम में आता है। **फूलडोल**-(हिं०पुं०) चैत्र शुक्ल एकादशी के दिन होने वाला एक उत्सव। **फूलदान**-(हिं०पुं०) काँच, पीतल, चीनी, मिट्टी आदि का गिलास के आकार का फूलों को रखने का पात्र। **फूलदार**-(हिं०वि०) जिस पर बेलबूटे या फूल पत्ते काढ़कर अनेक प्रकार से बनाये गये हों।
फूलना-(हिं०क्रि०) फूलों से युक्त होना, किसी तल का उठा होना, विकसित होना, खिलना, घमंड करना, मोटा होना, रूठना, शरीर के किसी भाग का सूजना, प्रफुल्ल होना, आनन्दित होना, भीतर से किसी वस्तु के भर जाने से बाहरी भाग बढ़ जाना; **फूलना फलना**-समृद्ध और सुखी होना; **फूलना फलना**-प्रफुल्ल होना; **फूला फूला फिरना**-आनन्द में घूमना; **फूले अंग न समाना**-अति आनन्द युक्त होना; **मुंह फुलाना**-रूठना। **फूलबिरंज**-(हिं० पुं०) एक प्रकार का धान। **फूलमती**-(हिं०स्त्री०) एक देवी का नाम, एक प्रकार की रागिणी।
फूला-(हिं०पुं०) पक्षियों का एक रोग, ऊख का रस पकाने का बड़ा कड़ाहा, लावा।
फूली-(हिं०स्त्री०) सफेद चिह्न जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है, एक प्रकार की सज्जी।
फूस-(हिं० पुं०) छप्पर आदि छाजने की सूखी हुई लंबी घास, तृण, तिनका, खर।
फूहड़, फूहर-(हिं० वि०) जो किसी काम को भली भाँति न कर सके, जो बेढंगी बातें करता हो, देखने में कुरूप और भद्दा।
फूहा-(हिं०पुं०) रूई का गोला।
फूही-(हिं०स्त्री०) पानी की महीन बूंद, महीन बूदों की झड़ी, झींसी।
फेंक-(हिं० स्त्री०) फेंकने की क्रिया या भाव। **फेंकना**-(हिं०क्रि०) इस प्रकार की गति देना कि वस्तु दूर पर जा गिरे, एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर डालना, मल्लयुद्ध में पटकना, अपने ऊपर का भार दूसरे पर डालना, गँवाना, खोना, जुए में पासे आदि को भूमि पर लुड़काना; अपव्यय करना, चलाना, उछालना, छोड़ना, असावधानी से इधर उधर हटाना।
फेंकरना-(हिं० क्रि०) चीत्कार सहित रोना।
फेंट-(हिं०स्त्री०) कमर का मण्डल या घेरा, कमर में बाँधा हुआ कपड़ा, फेंटा, लपेट; **फेंट धरना**-कमर पकड़ लेना जिसमें भाग न सके, (स्त्री०) फेंटने की क्रिया या भाव। **फेंटना**-(हिं०क्रि०) लेप या लेई की तरह की किसी वस्तु को हाथ या अंगुलियों से मथना, ताश की गड्डी को उलट पलट कर के अच्छी तरह मिलाना;
फेंटा-(हिं०पुं०) कमर का घेरा, पटुका, सिर पर लपेटने की छोटी पगड़ी।
फेंटी-(हिं० स्त्री०) अटेरन पर लपेटा हुआ सूत।
फेकरना-(हिं० क्रि०) आच्छादन रहित होना, नंगा होना।
फेकारना-(हिं० क्रि०) खोलना या नंगा करना।
फेन-(सं०पुं०) जल के ऊपर उठा हुआ बुलबुला, झाग, नाक का मल, नेटा
फेनक-(सं० पुं०) टिकिया के आकार का एक पकवान।
फेनका-(सं०स्त्री०) रीठे का वृक्ष।
फेनप-(सं०वि०) फेन पीने वाला।
फेनमेह-(सं० नपुं०) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें वीर्य फेन की तरह थोड़ा थोड़ा गिरता है।
फेनल-(सं०वि०) फेनयुक्त।
फेनाग्र-(सं० नपुं०) बुद्बुद, बुलबुला।
फेनिका-(सं० स्त्री०) फेना नाम की मिठाई।
फेनिल-(सं०नपुं०) बेर का फल, मैनफल, रीठे का पेड़, (वि०) फेनयुक्त।
फेनी-(हिं० स्त्री०) लपेटे हुए सूत के लच्छे के आकार की मिठाई।
फेफड़ा-(हिं० पुं०) शरीर के भीतर

छाती के हड्डियों के नीचे का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव सांस लेते है, फुप्फुस।

फेफड़ी-(हिं०स्त्री०) गरमी से ओठों पर पपड़ी पड़ना।

फेफरी-(हिं०स्त्री०) देखो फेफड़ी।

फेर-(सं०पुं०) शृगाल, सियार।

फेर-(हिं०पुं०) घुमाव, चक्कर, उलट-फेर, मोड़, झुकाव, उलझन, भ्रम, संशय, हानि, घाटा, भूत प्रेत का प्रभाव, युक्ति, उपाय, अदला बदला, अन्तर, भेद, धोखा, दुबधा, झंझट, ढंग, युक्ति, दिशा, ओर (हिं०अव्य०) पुनः, एकबार फिर; **फेर खाना**-घूम कर जाना; **दिनों का फेर**-समय या दशा का परिवर्तन; **कुफेर**-बुरे दिन, दुर्दशा; **सुफेर**-अच्छी दशा, **फेर में पड़ना**-भ्रम में पड़ना; **निन्यानबे का फेर**-धन संचित करने की लालसा; **हेर फेर**-उलट फेर, लेन देन।

फेरण्ड-(सं० पु०) शृंगाल, सियार।

फेरना-(हिं० क्रि०) पलटना, बदलना, बारंबार दोहराना, स्थान या क्रम बदलना, प्रचार करना, सामने ले जाकर रखना, घुमाना, घोड़े आदि को ठीक चलने की शिक्षा देना, लौटाना, ऐंठना, मरोड़ना; पीछे चलाना-भिन्न दिशा में प्रवृत्त करना, किसी वस्तु पर रखकर इधर उधर ले जाना, पोतना, तह चढ़ाना; **पानी फेरना**-नष्ट करना।

फेरपलटा-(हिं० पुं०) द्विरागमन, गौना।

फेरफार-(हिं०पुं०) परिवर्तन, उलटफेर, चक्कर, अन्तर, घुमाव फिराव, पेंच, टालमटूल, बहाना।

फेरव-(सं०पुं०) सियार, राक्षस, (वि०) धूर्त।

फेरवट-(हिं० स्त्री०) फेरने का भाव, लपेटने में एकबार का घुमाव, पेंच, अन्तर, घुमाव फिराव।

फेरवा-(हिं० पुं०) तार को दो तीन बार लपेट कर बनाया हुआ छल्ला।

फेरा-(हिं० पुं०) परिक्रमण, टक्कर, फिर आना, लपेट, फेर, बारंबार आना जाना, आवर्त, घेरा, मण्डल, लपेटने में एकबार का घुमाव।

फेराफेरी-(हिं०स्त्री०) हेराफेरी, इधर का उधर।

फेरि-(हिं०अ०) पुनः, फिर से।

फेरी-(हिं० स्त्री०) परिक्रमा, प्रदक्षिणा, वह चरखी जिसपर रस्सी पर ऐंठन चढाई जाती है, कई बार आना, चक्कर, किसी फकीर का किसी वस्ती में भिक्षाके लिये फेरा लगाना; देखो फेरा, फेर। **फेरीवाला**-(हिं०पु०) घूम घूम कर सौदा बेंचने वाला व्यापारी।

फेरुआ-(हिं०पुं०) देखो फेरवा।

फेरौरी-(हिं० स्त्री०) टूटे फूटे खपरैल निकाल कर उनके स्थान में नये खपरैल रखने की क्रिया।

फेल-(सं०पुं०) उच्छिष्ट, जूठा पदार्थ।

फेला-(सं०स्त्री०) जूठा पदार्थ।

फ़ेहरिस्त-(हिं०स्त्री०) सूची।

फैल-(हिं० स्त्री०) विस्तृत, लंबा चौड़ा, फैला हुआ।

फैलना-(हिं०क्रि०) लगातार स्थान घेरना, बहुतायत से मिलना, पूरी तरह से तन करके किसी ओर बढ़ना, मुड़ा न रहना, इधर उधर तक पहुँचना, आग्रह करना, प्रसिद्ध होना, ज़िद करना, स्थूल होना, मोटाना, बिखरना, अधिक खुलना, संख्या बढ़ना, व्यापक होना, भाग का ठीक ठीक लगना, छितराना, बिखरना।

फैलाना-(हिं० क्रि०) लगातार स्थान घिरवाना, इधर उधर दूर तक पहुँचाना, छेद या गड्ढे को बड़ा करना, हिसाब किताब करना, वृद्धि करना, बढ़ाना गुणा भाग की क्रिया को ठीक होने की परीक्षा करना, पसारना, प्रचलित करना, पूरा तान कर किसी ओर बढ़ाना, बिखेरना, व्यापक करना, छा लेना, प्रसिद्ध करना, चारो ओर प्रकट करना।

फैलाव-(हिं० स्त्री०) विस्तार, प्रचार, लंबाई चौड़ाई।

फोंक-(हिं०पुं०) तीर के पीछे की नोक जिसपर पर लगाये जाते है, वस्त्र की फटन।

फोंका-(हिं०पुं०) लंबा और पोला चोंगा,

फोंका गोला-(हिं० पुं०) तोप का लंबा गोला।

फोंकट-(हिं०वि०) निःसार, पोला, व्यर्थ।

फोंकला-(हिं०वि०) छिछला।

फोंफर-(हिं० वि०) खोखल, **फोंफी**-(हिं०स्त्री०) छोटी नली।

फोट-(हिं०पुं०) स्फोट, धड़ाका।

फोटा-(हिं०पु०) बूंद, तिलक, बुन्दा।

फोड़ना-(हिं०क्रि०) खरी वस्तु के टुकड़े टुकड़े करना, फूट करके विग्रह करना, भेद खोल देना, अंकुर, कनखे आदि का निकलना, शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना, किसी पोली वस्तु पर आघात डालकर उसके खण्ड करना, साथ छुड़ाना, शरीर में घाव या फोड़ों का निकलना, भेदभाव उत्पन्न करना विदीर्ण करना।

फोड़ा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का शोथ या उभाड़ जो शरीर पर रुधिर के बिगड़ने से उत्पन्न हो जाता है, इसमें जलन और पीड़ा होती है और रुधिर सड़ कर पीब हो जाता है।

फोड़िया-(हिं०स्त्री०) छोटा फोड़ा, फुंसी।

फोया-(हिं० पु०) रुई का लच्छा।

फोरना-(हिं०क्रि०) देखो फोड़ना।

फोहारा-(हिं०पुं०) देखो फुहारा।

फौआरा-(हिं०पुं०) देखो फुहारा।

फौंकिना-(हिं० क्रि०) डींग हांकना, बढ़बढ़ कर बातें करना।

फ्रान्स-पश्चिम युरोप में की फरासीसियों की जन्मभूमि, यह राज्य।

ब

ब-हिन्दी वर्णमाला का तेइसवां व्यंजन तथा पवर्ग का तीसरा वर्ण; इसका उच्चारण दोनों आठों को मिलाकर किया जाता है।

ब-(सं० पु०) वरुण, जल, सिन्धु, गन्ध, कुम्भ, गत।

बंक-(हिं०वि०) टेढ़ा, तिरछा, पुरुषार्थी, दुर्गम, जहां पहुँचना कठिन हो।

बंकट-(हिं०वि०) बक्र, टेढ़ा।

बंकनाल-(हिं० स्त्री०) सुनारों को महीन फुकनी जिससे दीपक की लौ फूक कर वे महीन काम जोड़ते है।

बंकराज-(हिं० पुं०) एक प्रकार का सर्प।

बंकवा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का अगहनियाँ धान।

बंकसाल-(हिं०पुं०) जहाज का बड़ा कमरा।

बंका-(हिं० वि०) टेढ़ा, तिरछा, बलवान् पराक्रमी।

बाँका-(पुं०) हरे रंग का एक प्रकार का कीड़ा जो धान की उत्पत्ति को हानि पहुँचाता है।

बंकाई-(हिं०स्त्री०) टेढ़ापन, तिरछापन।

बंकी-(हिं० स्त्री०) देखो बांक।

बकुर-(हिं० पुं०) देखो वंक, टेढ़ा।

बंकुरता-(हिं०स्त्री०) वक्रता, टेढ़ापन।

बंग-देखो वङ्ग।

बंगला-(हिं० पुं०) एक खंड का चारो ओर से खुला हुआ घर जिसमें चारो ओर बरामदे होते हैं, घर की ऊपरी छत पर बना हुआ हवादार कमरा, बंगाल देश का पान, बंगाली भाषा, (वि०) बंगाल संबंधी।

बंगाला-(हिं० पुं०) बंगाल प्रान्त, एक रागिणी का नाम। **बंगालिका**-(हिं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।

बंगालिन-(हिं० स्त्री०) बंगाली की स्त्री। **बंगाली**-(हिं० पु०) बंगाल देश का निवासी, संपूर्ण जाति का एक राग, (स्त्री०) बंगाल देश की भाषा।

बंगू-(हिं० पुं०) लड़कों का नाचने का एक खिलौना। **बंगोमा**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कछुआ।

बचक-(हिं० पुं०) धूर्त, पाखंडी।

बंचकता, **बंचकताई**-(हिं० स्त्री०) धूर्तता। **बंचन**-(हिं०पुं०) छल, धूर्तता।

बंचनता-(हिं० स्त्री०) ठगी, छल।

बंचना-(हिं०स्त्री०) छल, ठगी, (क्रि०) ठगना धोखा देना।

बंचर-(हिं० पुं०) देखो बनचर।

बंचवाना-(हिं० क्रि०) दूसरे को पढने में प्रवृत्त करना, पढ़वाना।

बंचित-(सं० वि०) देखो वञ्चित।

बंछना-(हिं० क्रि०) इच्छा करना, चाहना।

बछनीय, बंछित-(हिं०वि०) देखो वाञ्छित

बज-(हिं० पुं०) देखो बनिज, एक प्रकार का पहाड़ी बलूत का वृक्ष।

बंजर-(हिं० पुं०) वह भूमि जिसमें कुछ उत्पन्न न हो सके, ऊसर।

बंजारा-(हिं०पुं०) देखो बनजारा।

बंजुल-(हिं०पुं०) अशोक वृक्ष।

बंझा-(हिं०वि०) जिसको संतान न हो, बाँझ

बँटना-(हिं०क्रि०) अलग अलग विभाग होना, कई व्यक्तियों को किसी वस्तु का अलग अलग दिया जाना (पुं०) देखो बटना। **बँटवाई**-(हिं०स्त्री०) बाँटने का शुल्क। **बँटवाना**-(हिं०क्रि०) वितरण करवाना, सबको अलग अलग करके दिलवाना, बाँटने का काम दूसरे से करवाना। **बँटवारा**-(हिं०पुं०) बाँटनेकी क्रिया, विभाग। **बँटवैया**-(हिं०वि०) बाँटने वाला।

बंटा-(हिं०पुं०) चौकोर या गोल छोटा डब्बा, (वि०) छोटे आकार का;

बँटाई-(हिं० स्त्री०) वितरण, बाँटने का काम या शुल्क, बाँटने का भाव, खेती वह रीति जिसमें किसान भूमि की लगान न देकर उपजु का निर्धारित अंश देता है।

बँटाना-(हिं०क्रि०) अंश ले लेना, भाग करा लेना, किसी काम में अंशधारी होने के लिये अथवा दूसरे का बोझ हलका करने के लिये मिलाना; **बँटावन**-(हिं०वि०) बाँटनेयाभागकरने वाला

बंटी-(हिं०स्त्री०) छोटा बटा, पशुओं को फँसाने की जाल।

बँटैया-(हिं०पुं०) भागदेनेवाला, बाँटनेवाला

बंडा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कच्चू जो गोल गाँठदार होता है।

बंडी-(हिं०स्त्री०) मिरजई, बगलबन्दी, फतुही।

बंडेरा-(हिं०) खपरैल की छाजन में मगरे पर रखने की लकड़ी।

बंदगोभी-(हिं०स्त्री०) करमकल्ला, पातगोभी

बंदन-(हिं०पुं०) देखो बन्दन, (हिं०स्त्री०) रोली, ईंगुर, सिन्दूर।

बंदनता-(हिं० स्त्री०) आदर या वन्दना किये जाने की योग्यता।

बंदनवार-(हिं०पु०) वन्दनमाला, फल पत्ते आदि की बनी हुई माला जो शुभ अवसरों में द्वार पर लटकाई जाती है, तोरण।

बंदना-(हिं०स्त्री०) देखो वन्दना, (क्रि०) प्रणाम करना।

बंदनी-(हिं०स्त्री०) सिर पर पहरने का स्त्रियों का एक आभूषण, (वि०) देखो

वन्दनीय । बंदनीमाला-(हिं०स्त्री०) वह लंबी माला जो गले से पैरों तक लटकती हो ।
बंदर-(हिं०पुं०) मनुष्य के आकार से मिलता जुलता एक पशु, कपि, मर्कट; बंदर घुड़की (भभकी) केवल डराने या धमकाने की डांट डपट । बंदर-(फ़ा०पुं०) समुद्र के किनारे पर का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते है ।
बंदली-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान ।
बंदवान-(हिं०स्त्री०) बदीगृह का रक्षक ।
बंदसाल-(हिं०पुं०) बदीगृह ।
बंदारू-(हिं०वि०) आदरणीय, पूजनीय, बन्दन करने योग्य ।
बंदाल-(हिं०पुं०) देवदाली, घघरबेल ।
बंदि-(हिं०स्त्री०) कारानिवास ।
बंदिया-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के सिर पर पहरने का एक आभूषण, बंदी ।
बंदी-हिं०पुं०) चारणों की एक जाति जो प्राचीन कालमें राजाओंकी कीर्ति गान करती थी, भाट, (स्त्री०) एकप्रकार का आभूषण जिसको स्त्रियाँ सिरपर पहरती हैं ।
बंदीघर-(हिं० पुं०) कारागृह ।
बंदीवान-(हिं० पुं०) कैदी ।
बंदूख-(हिं०स्त्री०) देखो बंदूक ।
बंध-(हिं० पुं०) देखो बन्ध, बन्धन; बंधक, बंधन-देखो बन्धक, बन्धन ।
बँधना-(हिं० क्रि०) बाँधा जाना मुग्ध होना, वचन बद्ध होना, फँसना, अटकना, बंदी होना, ठीक होना, स्थिर होना, (पुं०) कोई बांधने की वस्तु, वह थैली जिसमें स्त्रियाँ सीने परोने की सामग्री रखती हैं ।
बँधनि-(हिं०स्त्री०) वह जिसमें कोई वस्तु बँधी हो, बंधन, उलझाने या फँसाने की वस्तु । बँधवाना-(हिं०क्रि०) बांधने का काम दूसरे से कराना, तालाब कुआ आदि बनवाना, नियत कराना ।
बंधान-(हिं० पुं०) लेन देन के विषय में निश्चित क्रम या नियम, पानी रोकने का बांध, संगीत में ताल का सम, वह धन या पदार्थ जो लेन देन की परिपाटी के अनुसार दिया जावे ।
बंधाना-(हिं० क्रि०) बांधने का काम दूसरे से कराना, धारण कराना ।
बंधाल-(हिं०पुं०) जहाज या नाव की पेंदी में वह स्थान जहां पर पानी छेदों में से जमा हो जाता है ।
बंधिका-(हिं० स्त्री०) ताने की साथी बांधने की डोरी ।
बंधित-(हिं०स्त्री०) वन्ध्या, बाझ ।
बंधी-(हिं०पु०) वह जिसमें किसी प्रकार का बंधन हो, बंधेज ।
बंधु-देखो बन्धु ।
बंधुआ बँधुवा-(हिं० पुं०) बंदी ।
बंधुक-(हिं०पुं०) देखो बन्धुक । बंधुता, बंधुत्व-देखो बन्धुता, बन्धुत्व ।
बंधुर-(हिं०पुं०) मुकुट ।

बंधेज-(हिं०पुं०) किसी वस्तु को रोकने या बांधने की क्रिया या युक्ति, नियत समय पर अथवा नियत रूप से कुछ देने की क्रिया या भाव, प्रतिबन्ध, रुकावट, वाजीकरण, नियत समय पर नियत रूप से दिया जाने वाला धन या पदार्थ ।
बंध्या-(हिं०स्त्री०) देखो बन्ध्या, बांझ स्त्री । बंध्यापन-(हिं०पुं०) बांझपन ।
बंध्यापुत्र-(हिं० पु०) कोई असम्भव घटना ।
बंपुलिस-(हिं० स्त्री०) म्युनिसिपैलिटी आदि का बनाया हुआ सार्वजनिक मलत्याग करने का स्थान ।
बंबं-(हिं०स्त्री०) बंबं शब्द जो शैव लोग कहा करते हैं, युद्ध के आरभ में वीरों का उत्साहवर्धक नाद, दुंदुभी, नगाड़ा ।
बंबा-(हिं०पुं०) पानी की कल, जल का सोता, पानी बहने की नल ।
बंबाना-(हिं०क्रि०) गौ आदि पशुओं का बाँबाँ शब्द करना, रंभाना ।
बंबू-(हिं०पुं०) बांस की छोटी पतली नली जिससे चंडू पिया जाता है ।
बंस-(हिं०पुं०) देखो वंश, परिवार ।
बंसकार-(हिं० पुं०) बांसुरी । बंसरी-(हिं०स्त्री०) बंसी । बंसलोचन-(हिं०पु०) बांस का सार भाग जो उसके जल जाने के बाद सफ़ेद छोटे छोटे टुकड़ों में पाया जाता हैं ।
बँसवाड़ी-(हिं०स्त्री०) बांस का बगीचा
बंसार-(हिं०पुं०) भण्डार घर ।
बंसी-(हिं०स्त्री०) बांसुरी, मछली फँसने का एक अस्त्र, धान के खेतों में होने वाली एक प्रकारकी घास, विष्णु, कृष्ण और रामजी के चरणों का रेखा चिह्न, (पुं०) एक प्रकार का गेहूँ । बंसीधर-(हिं०पु०) बंशीधर, श्रीकृष्ण ।
बँहगी-(हिं०स्त्री०) भार ढोने का एक उपकरण जिसमें बांस के डंडे के दोनों सिरों पर रस्सियों में छीके लटकाये रहते हैं ।
बंहिष्ट-(सं० वि०) बहुत अधिक ।
बहोली-(हिं० स्त्री०) कुरते आदि का हाथ का भाग ।
बइठना-(हिं० क्रि०) देखो बैठना ; बउर-हिं० पुं०) देखो बौर ।
बउरा-(हिं० वि०) बावाला, पागल ।
बउराना-(स्त्री०) पागलाना ।
बक-(सं०पुं०) बगुला, अगस्त का फूल, कुबेर, एक राक्षस जिसको भीमसेन ने मारा था, बकासुर (हिं०स्त्री०) बकबक, बकवाद । बकचंदन-(हिं० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष ।
बकचा-(हिं०पुं०) देखो बकुचा ।
बकची-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मछली
बकजित्-(स०पुं०) भीमसेन, श्रीकृष्ण ।
बकझक-(हिं०स्त्री०) बकवाद ।
बकठाना-(हिं०क्रि०) किसी बहुत कसैले पदार्थ के खाने से मुख का स्वाद बिगड़ जाना ।
बकता बकतार-(हिं०वि०) देखो वक्ता ।
बकदर्शी-(सं० पुं०) पारावत, कबूतर ।
बकध्यान-(हिं०पुं०) पाखंड पूर्ण मुद्रा, ऐसी चेष्टा या ढङ्ग जो देखने में बड़ी साधु जान पड़े परन्तु जिसका भीतरी आशय अनुचित और दुष्ट हो ।
बकध्यानी-(हिं०वि०) वह जो देखने में सीधा सादा परन्तु वस्तुतः कपटी हो ।
बकना-(हिं०क्रि०) प्रलाप करना, बड़बड़ाना, ऊटपटांग बातें करना ।
बकनिसूदन-(सं०पुं०) भीमसेन, श्रीकृष्ण ।
बकपंचक-(सं० नपु०) कार्तिक महीने की शुक्ल पक्ष की एकादशी से पूर्णमासी तक का समय ।
बकबक-(हिं०स्त्री०) प्रलाप, बकवाद ।
बकमौन-(हिं०पुं०) अपना उद्देश्य सिद्ध करने के लिये बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहने की क्रिया या भाव, (वि०) चुपचाप अपना काम साधने वाला ।
बकयन्त्र-(सं०पु०) मुड़े हुए लंबे गरदन की कांच की गोल पेंदे की शीशी जिसको वैद्य लोग तेल आदि उतारने के काम में लाते हैं ।
बकरना-(हिं०क्रि०) आप से आप बकना, बड़बड़ाना, अपना दोष या करतूत स्वय स्वीकार करना था कह देना ।
बकरा-(हिं०पुं०) फटे हुए खुर का एक प्रसिद्ध छोटे जाति का चौपाया जिसकी पूंछ और सींग छोटी होती है, यह जुगाली करता है, कुछ बकरों की ठोढी के नीचे दाढी भी होती है ।
बकराना-(हिं०क्रि०) दोष या करतूत कहलाना ।
बकल-(हिं०पुं०) देखो बकला ।
बकला-(हिं०पुं०) पेड़ की छाल, फल के ऊपर का छिलका ।
बकली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का सुन्दर लंबा वृक्ष ।
बकवाद-(हिं० स्त्री०) व्यर्थ की वार्ता, बकबक । बकवादी-(हिं०वि०) बकबक करने वाला, बकवाना-(हिं० क्रि०) बकने के लिये किसी को प्रेरणा करना, किसी से बकवाद कराना ।
बकवास-(हिं०स्त्री०) व्यर्थ की बातचीत, बकबक करने का अभ्यास या इच्छा ।
बकवृत्ति-(सं०पुं०) कपटचारी मनुष्य जो बगले के समान नीचा मुख किये रहता है ।
बकवैरी-(सं०पुं०) बलराम, श्रीकृष्ण ।
बकव्रती-(सं० पुं०) मिथ्या विनीत, कपटी ।
बकस-(हिं० पुं०) कपड़े कागज आदि रखने का संदूक, छोटा डब्बा ।
बकसा-(हि० पुं०) जल में होने वाली एक प्रकार की घास ।

बकसना-(हिं० क्रि०) देना बकसाना-(हिं०क्रि०) क्षमा कराना ।
बकसी-(हिं०पुं०) क्षमा करनेवाला ।
बकसीला-(हिं०वि०) जिसके खाने से जीभ ऐंठने लगे और मुख का स्वाद बिगड़ जाय ।
बकसीस-(हिं०स्त्री०) पारितोषिक ।
बकसुआ-(हिं०पुं०) देखो बकलस ।
बकाउर-(हिं०स्त्री०) देखो बकावली ।
बकाना-(हिं०क्रि०) बकबक करने के लिये उद्यत करना, बकबक कराना,
बकायन-(हिं०पुं०) नीम की जाति का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सफ़ेद और हलकी होती है ।
बकारि-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण, भीमसेन ।
बकारी-(हिं० स्त्री०) मुख से निकलने वाला शब्द ।
बकावली-(हिं०स्त्री०) देखो गुलबकावली
बकासुर-(स०पुं०) एक दैत्य जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ।
बकी-(हिं०स्त्री०) बकासुर की बहिन पूतना का एक नाम ।
बकुचा-(हिं०पुं०) छोटी गठरी, बकचा ।
बकुचना-(हिं० क्रि०) संकुचित होना, सिकुड़ना । बकुचाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को गठरी बांध कर कंधे पर लटकाना या पीठ पर बांधना ।
बकुची-(हिं० स्त्री०) एक पौधा जो औषधियों के काम में आता है, छोटी गठरी ; बकुचौंहाँ-(हिं०वि०) बकुचे के समान ।
बकुर-(सं० पुं०) सूर्य, बिजली, (वि०) भयंकर, डरावना ।
बकुरना-(हिं० क्रि०) देखो बकरना ।
बकुराना-(हिं०क्रि०) स्वीकार कराना,
बकुल-(स०पु०) मौलसिरी का वृक्ष ।
बकुला-(हिं०पुं०) देखो बगला ।
बकुली-(सं०स्त्री०) बकुल, मौलसिरी ।
बकेन, बकेना-(हिं० स्त्री०) वह गाय या भैंस जिसको बच्चा दिये प्रायः सालभर हो गया हो, जो बरदाई न हो और दूध देती हो ।
बकेल-(हिं०स्त्री०) परास की जड़ जिसको कूटकर रस्सी बनाई जाती है ।
बकैयां-(हिं० पुं०) बच्चों का घुटने के बल चलने का ढङ्ग ।
बकोठ-(हिं०स्त्री०) बकोटने या नोचने की क्रिया या भाव, किसी पदार्थ की उतनी मात्रा जो एक बार चंगुल में पकड़ी जा सके; बकोटना-(हिं०क्रि०) पंजा मारना, नख से नोचना ।
बकौड़ा-(हिं०पुं०) परास की कूटी हुई जड़ जिसकी रस्सी बनाई जाती है ।
बकौरी-(हिं० स्त्री०) गुलबकावली ।
बक्कल-(हिं०पुं०) वल्कल, छिलका, छाल
बक्का-(हिं०पुं०) धान के उपज में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा ।
बक्की-(हिं०वि०) बकवाद करने वाला, बहुत बोलने वाला, (पुं०) एक प्रकार का भदहिया धान ।

बक्कुर-(हिं० पुं०) बचन, बोली ।
बक्खर-(हिं०पुं०) वह खमीर जो कई प्रकार के पौधे, पत्तियों और जड़ों को कूटकर तैयार किया जाता है ।
बक्स-(हिं०पुं०) पेटी, संदूक ।
बखत-(हिं०पुं०) समय ।
बखतर-(हिं०पुं०) कवच ।
बखर-(हिं०पुं०) देखो बक्खर ।
बखरा-(हिं०पुं०) भाग, हिस्सा, बाँट ।
बखरी-(हिं०स्त्री०) एक कुटुम्ब के रहने योग्य ईंट मिट्टी आदि का बना हुआ गाँव का घर ।
बखरैत-(हिं०पुं०) हिस्सेदार, साझीदार ।
बखसीस-(हिं०स्त्री०) देखो बकसीस ।
बखान-(हिं०पुं०) वर्णन, कथन, गुण-कीर्तन, प्रशंसा, बड़ाई । **बखानना**-(हिं०क्रि०) वर्णन करना, कहना, बुरा भला कहना, गाली गलौज देना, प्रशंसा करना ।
बखार-(हिं०पुं०) भीत या टट्टी आदि से घेर कर बनाया हुआ अन्न रखने का स्थान । **बखारी**-(हिं० स्त्री०) छोटा बखार ।
बखिया-(फा०पुं०) एक प्रकार की महीन पुष्ट सिलाई । **बखियाना**-(हिं०क्रि०) किसी वस्त्र पर बखिया की सिलाई करना, बखिया करना ।
बखीर-(हिं०स्त्री०) मीठे रस में पकाया हुआ चावल, एक प्रकार की खीर ।
बखेड़ा-(हिं०पुं०) आडम्बर, व्यर्थ का विस्तार, कठिनता, विवाद, झगड़ा, झंझट, उलझन ।
बखेड़िया-(हिं०वि०) बखेड़ा करने वाला, झगड़ालू ।
बखेरना-(हिं०क्रि०) पदार्थों को इधर उधर फैलाना या फेंकना ।
बखेरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कँटीला वृक्ष ।
बखोरना-(हिं०क्रि०) टोकना, छेड़ना ।
बग-(हिं०पुं०) बगला ।
बगई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास, एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती हैं ।
बगछुट-(हिं०क्रि०वि०) बड़े वेग से, सरपट चाल से ।
बगदना-(हिं०क्रि०) बिगड़ना, नष्ट होना, बहकना, भूलना, ठीक मार्ग से हट जाना, गिरना ।
बगदर-(हिं०पुं०) मच्छड़ ।
बगदवाना-(हिं० क्रि०) बिगड़वाना, नष्ट कराना, भुलवाना, प्रतिज्ञा भंग करना, गिराना ।
बगदाद-तुरकी की राजधानी ।
बगदाना-(हिं० क्रि०) बिगाड़ना, भड़काना, भुलाना ।
बगना-(हिं०क्रि०) घूमना फिरना ।
बगनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास, बगई ।
बगमेल-(हिं०पुं०) पांति बांध कर चलना, समानता ।
बगर-(हिं० पुं०) प्रासाद, बड़ा घर, द्वार के सामने का खुला स्थान, आँगन, गाय बाँधने का स्थान, घर, कोठरी, (स्त्री०) बगल ।
बगरना-(हिं०क्रि०) बिखरना, फैलना, छितराना । **बगराना**-(हिं०क्रि०) छितराना, फैलाना, बिखरना ।
बगरी-(हिं०पुं०) एक प्रकारका भदैयाँधान
बगरूरा-(हिं०पुं०) देखो बगुला ।
बगल गंध-(हिं० पुं०) कांख का फोड़ा, कँखौरी, एक प्रकार का रोग जिसमें कांख से बड़ी दुर्गन्ध निकलती है ।
बगलबंदी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मिरजई जिसमें बगल के नीचे बंद लगे रहते हैं ।
बगला-(हिं०पुं०) सफ़ेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, एक झाड़ीदार पौधा ।
बगलामुखी-(हिं०स्त्री०) एक तान्त्रिक देवी
बगलियाना-(हिं०क्रि०) अलग करना, बगल में लाना या करना, बगल से होकर जाना राह काट कर निकलना;
बगली-(हिं०वि०) बगल का, बगल से संबंध रखने वाला, कपड़े का वह टुकड़ा जो अंगे, कुरते आदि के बगल में लगाया जाता है, वह थैली जिसमें दर्जी सूई तागा रखते हैं; **बगली टांग**-मल्लयुद्ध की एक युक्ति; **बगली बांह**-एक प्रकार का व्यायाम; **बगली लंगोट**-मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।
बगलौहां-(हिं०वि०) बगल की ओर झुका हुआ, तिरछा ।
बगसना-(हिं०क्रि०) देखो बकसना ।
बगा-(हिं०पुं०) जामा, बागा; (पुं०) बगला
बगाना-(हिं०क्रि०) टहलाना, घुमाना, फिराना, जल्दी जल्दी जाना, भागना
बगार-(हिं०पुं०) गाय बांधने का स्थान
बगारना-(हिं०क्रि०) पसाना, फैलाना ।
बगिया-(हिं०स्त्री०) छोटा बगीचा, छोटा उपवन । **बगीचा**-(हिं०पुं०) उपवन, हाटिका,
बगुला-(हिं०पुं०) बकपक्षी ।
बगुलाभगत-पाखण्डी मनुष्य ।
बगूला-(हिं०पुं०) वह वायु जो गरमी के दिनों में कभी कभी एक स्थान पर भँवर सी घूमती हुई देख पड़ती है, वातचक्र, बवन्डर ।
बगेदना-(हिं० क्रि०) विचलित करना ।
बगेरी-(हिं० स्त्री०) भूरे रंग की एक छोटी चिड़िया ।
बगैचा-(हिं०पुं०) देखो बगीचा ।
बग्गी, बग्घी-(हिं० स्त्री०) पालकी के आकार की चौपहिया गाड़ी ।
बघम्बर-(हिं०पुं०) बाघ की खाल जिस पर साधु लोग बैठ कर ध्यान लगाते हैं, बाघ की खाल की तरह बिना हुआ कम्बल ।
बघनहां-(हिं०पुं०) एक प्रकार का शस्त्र जिसमें नख के समान चिपटे टेढे कांटे रहते हैं, यह अंगुलियों में पहना जाता है, एक प्रकार का गहना जिसमें बाघ के नख सोने या चांदी में मढ़े रहते हैं ।
बघार-(हिं०पुं०) छौंक, तड़का, बघारने की महँक बघारने का मसाला । **बघारना**-(हिं०क्रि०) तड़का देना, छौंकना, अपनी योग्यता से अधिक कुसमय व्यय करना ।
बघूरा-(हिं०पुं०) बवंडर
बघेरा-(हिं०पुं०) लकड़बग्घा ।
बघेली-(हिं० स्त्री०) पानों को सरादने वालों का खूंटा ।
बच-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ औषधों में प्रयोग होती हैं, बचन, वाक्य ।
बचका-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पकवान
बचकाना-(हिं०वि०) बच्चों के योग्य, बच्चों के समान, थोड़ी अवस्था का ।
बचत-(हिं०स्त्री०) वह अंश जो व्यय होने के बाद बच रहे, शेष, बचाव, लाभ ।
बचन-(हिं०पुं०) वाणी, वचन; **बचन डालना**-माँगना; **बचन छोड़ना**-प्रतिज्ञा भंग करना, **बचन बाँधना**-प्रतिज्ञा करना; **बचन हारना**-दांत हारना ।
बचना-(हिं०क्रि०) रक्षित रहना, हटना, अलग होना, दूर रहना, छूट जाना, किसी के अन्तर्गत न आना ।
बचपन-(हिं०पुं०) बाल्यावस्था, लड़कपन
बचवैया-(हिं०वि०) बचाने वाला, रक्षा करने वाला ।
बचा-(हिं०पुं०) देखो बच्चा, लड़का ।
बचाना-(हिं०क्रि०) कष्ट या आपत्ति से हटा रखना, रक्षा देना, पीछे करना, हटाना, व्यय न होने देना, किसी बुरी बात से अलग रखना, छिपाना, चुराना, प्रभाव न पड़ने देना, ऐसे रोग से मुक्त करना जिसमें मृत्यु का भय हो ।
बचाव-(हिं०पुं०) बचाने का भाव, रक्षा
बचिया-(हिं० स्त्री०) कसीदे के काम में छोटी छोटी बूटियाँ ।
बचून-(हिं०पुं०) भालू का बच्चा ।
बच्ची-(हिं०पुं०) एक प्रकार की बारहमासी लता ।
बच्ची-(हिं०स्त्री०) छोटी कन्या, बालिका
बच्छ-(हिं०पुं०) बच्चा, बेटा, बछड़ा ।
बच्छनाग-(हिं०पुं०) देखो बछनाग ।
बच्छल-(हिं०वि०) देखो वत्सल, माता पिता के समान लाड़ प्यार करनेवाला ।
बच्छस-(हिं०पुं०) छाती, सीना ।
बच्छा-(हिं०पुं०) गाय का बछवा, किसी पशु का बच्चा ।
बछ, बछड़ा-(हिं०पुं०) गाय का बच्चा ।
बछनाग-(हिं०पुं०) हिरन के सींग के आकार का एक स्थावर विष जो एक पहाड़ी पौधे की जड़ है ।
बछरा-(हिं०पुं०) देखो बछड़ा । **बछरू**-(हिं०पुं०) देखो बछड़ा, बछवा ।
बछल-(हिं०वि०) देखो वत्सल ।
बछवा, बछेड़ा-(हिं०पुं०) गाय का बच्चा, **बछेरू**-(हिं०पुं०) देखो बछड़ा ।
बछौटा-(हिं०पुं०) वह चन्दा जो हिस्से के अनुसार लगाया जावे ।
बजंत्री-(हिं०पुं०) बाजा बजाने वाला, बजनियाँ ।
बजकन्द-(हिं० पुं०) एक प्रकार की जंगली लता ।
बजकना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ का सड़कर बुलबुले फेंकना, बजबजाना ।
बजका-(हिं०पुं०) बेसन की पकौड़ी जो पानी में भिगोकर दही में डाली जाती है ।
बजड़ना-(हिं०क्रि०) पहुंचना, टकराना ।
बजड़ा-(हिं०पुं०) देखो बजरा ।
बजनक-(हिं०पुं०) पिस्ते का फूल जिससे रेशम रंगा जाता है ।
बजना-(हिं०क्रि०) किसी प्रकार के आघात या हवा के वेग से बाजे आदि में शब्द उत्पन्न होना, प्रसिद्ध होना, प्रहार होना, आघात पड़ना, हठ करना, शस्त्रों का चलाना, बोलना, हठ करना, (पुं०) बजाने वाला, बाजा, रुपया, (वि०) बजानेवाला
बजनियाँ, बजनिहाँ-(हिं०पुं०) बाजा बजाने वाला ।
बजनी-(हिं०वि०) बजाने वाला, जो बजाता हो ।
बजमारा-(हिं०वि०) वज्र से मारा हुआ, जिस पर बज्र पड़ा हो ।
बजरंग-(हिं०वि०) वज्र के समान पुष्ट शरीर वाला । **बजरंगबली**-(हिं०पुं०) महाबीर, हनुमान ।
बजर-(हिं०पुं०) देखो बज्र ।
बजरबट्टू (हिं०पुं०) एक वृक्ष के फल का दाना जिसकी माला बनाकर बच्चों को पहराई जाती है । **बजरंग बोंग**-(हिं०पुं०) बांस का मोटा भारी डंडा, एक प्रकार का अगहनियां धान ।
बजरहड्डी-(हिं० स्त्री०) घोड़े के पैर में होने वाला एक प्रकार का फोड़ा ।
बजरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की बड़ी पटी हुई नाव, देखो बाजरा ।
बजरागि-(हिं०स्त्री०) देखो बिजली ।
बजरी-(हिं०स्त्री०) कंकड़ के छोटे छोटे टुकड़े जो गच के ऊपर की ओर बैठाया जाता है, गढ़ की भीत के ऊपर बना हुआ कंगूरा जिसके छिद्रों में से गोली चलाई जाती है, ओला,
बजवाई-(हिं०स्त्री०) बाजा बजाने का परिश्रमिक । **बजवाना**-(हिं० क्रि०) बजाने के लिये किसी को प्रेरणा करना, बजाने में किसी को प्रवृत्त करना । **बजवैया**-(हिं०वि०) बजानेवाला
बजागि-(हिं०पुं०) वज्रकी आग, बिजली ।
बजाना-(हिं० क्रि०) बाजे आदि पर आघात पहुंचाकर अथवा हवा के वेग से उसमें से शब्द उत्पन्न करना, आघात पहुंचाना, किसी वस्तु से

मारना, **बजाकर**-सब के सन्मुख प्रत्यक्ष रूप से; **ठोंकना बजाना**-भलीभांति जांच पड़ताल करना।

बजार-(हिं०पुं०) हाट।

बजारी, बजारू-(हिं० वि०) साधारण, सामान्य।

बजुआ-(हिं०पुं०) देखो बाजू।

बजूला-(हिं०पुं०) बाजू।

बज्जर-(हिं०वि०) कड़ा, पुष्ठ, (पुं०) देखो वज्र।

बज्जात-(हिं०वि०) दुष्ट, पाजी।

बज्जाति-(हिं०स्त्री०)दुष्टता, पाजीपन।

बज्र-(हिं०पुं०) देखो वज्र।

बझवट-(हिं०स्त्री०) बांझ स्त्री, कोई मादा पशु, तोड़ी हुई पौधोंकी डंठल,

बझना-(हिं० क्रि०) बंधन में पड़ना, फँसना, उलझना, हठ। **बझान**-(हिं०स्त्री०) बझने की क्रिया या भाव, बझाव। **बझाना**-(हिं०क्रि०) बंधन मे डालना, उलझाना, फंसाना।

बझाव, बझावट-(हिं० पुं०) फँसने की क्रिया या भाव, अटकाव, उलझन, (हिं०स्त्री०) बझने की क्रिया या भाव, उलझन।

बझावना-(हिं०क्रि०) देखो बझाना।

बट-(हिं०पुं०) देखो वट, बड़ा नामक का पकवान, गोल वस्तु, मार्ग, बट्टा, लोढ़िया, बाँट, बखरा, रस्सी की ऐंठन या बल।

बटई-(हिं०स्त्री०)बटेर नामकी चिड़िया

बटखर, बटखरा-(हिं०पुं०) तौलने का मान, बाँट।

बटन-(हिं०स्त्री०) रस्सी आदि बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव, एक प्रकार का बादले का तार। **बटना**-(हिं०क्रि०) कई तन्तुओं तागों या तारों को एक साथ मिलाकर इस प्रकार ऐंठना कि वे सब मिलकर एक हो जावें, सिल पर रख कर किसी वस्तु का पिसा जाना।

बटपरा-(हिं०पुं०) देखो बटमार।

बटपार-(हिं०पुं०) देखो बटमार।

बटपारी-(हिं० स्त्री०) डकैती, ठगी।

बटम-(हिं०पुं०)कोना नापने का यन्त्र, गोनिया।

बटमार-(हिं०पुं०) डाकू, लुटेरा।

बटला-(हिं० पु०) देग, देगचा, बड़ी बटलोई।

बटली, बटलोई-(हिं०स्त्री०) चौड़े मुंह का गोल पात्र, देगची।

बटवाना-(हिं०क्रि०) देखो बँटवाना।

बटवायक, बटवार-(हिं०पुं०)चौकीदार।

बटा-(हिं० पु०) गोल वस्तु, गोला, पथिक,बटोही, राही,गेंद, ढेला,रोड़ा, गणित में अपूर्ण संख्या में अंग भाग ३/४ यथा तीन बटा चार।

बटाई-(हिं०स्त्री०)बटने या ऐंठन डालने का काम, बटने का शुल्क; देखो बंटाई।

बटाऊ-(हिं०पुं०) बाट चलने वाला, बटोही,पथिक; **बटाऊ होना**-चलेजाना।

बटाक-(हिं० वि०) बड़ा ऊंचा।

बटाना-(हिं०क्रि०) रुक जाना, बंद हो जाना।

बटाली-(हिं०स्त्री०) बढ़ाइयों का एक अस्त्र, रुखानी।

बटिया-(हिं०स्त्री०) कोई गोलमटोल टुकड़ा, छोटा गोला, लोढ़िया, छोटा बट्टा।

बटी-(हिं०स्त्री०)वड़ी नामका पकवान।

बटुआ-(हिं०पुं०) देखो बटुवा; (वि०) सिल बट्टे से पिसा हुआ।

बटुक-(सं०पुं०) लड़का, बच्चा।

बटुरना-(हिं० क्रि०) सिमटना, फैला न रहना, इकट्ठा होना।

बटुला-(हिं०पु०) बड़ी बटलोई।

बटुवा-(हिं०पुं०) कपड़े या चमड़े की थैली जिसमें कई घर रहते हैं, वड़ी बटलोई।

बटेर-(हिं०स्त्री०) तीतर या लवा की जात की एक छोटी चिड़िया जो भूरे रंग की होती हैं। **बटेरबाज**-बटेर पालने या लड़ाने वाला।

बटेरबाजी-(हिं०स्त्री०) बटेर पालने या लड़ाने का काम।

बटेरा-(हिं०पु०)कटोरा, गहरी थाली।

बटोई-(हिं०पुं०) देखो बटोही।

बटोर-(हिं०पुं०) बहुत से मनुष्यों का इकट्ठा होना, जमघट, जमावड़ा, कूड़े करकट का ढेर, वस्तुओं का ढेर जो इधर उधर से बटोर कर इकट्ठा किया गया हो। **बटोरन**-(हिं०स्त्री०) बटोर कर इकट्ठा किया हुआ ढेर कूड़े करकट का ढेर। **बटोरना**-(हिं०क्रि०) बिखरी हुई वस्तुओं को इकट्ठा करके ढेर लगाना, समेटना, फैला न रहने देना।

बटोहिया-(हिं०पुं०) देखो बटोही।

बटोही-(हिं०पुं०) पथिक, यात्री।

बट्ट-(हिं०पुं०) गेंद, गोला, बाँट, बटखरा, बल, मुर्री।

बट्टा-(हिं० पुं०) दलाली, हानि, पूरे मूल्य में वह कमी जो किसी मुद्रा आदि के तुड़ाने में देना पड़े, पान अथवा रत्न रखने का डिब्बा, एक प्रकारकी उबाली हुई सुपारी, पत्थर आदि का गोल टुकड़ा, कूटने या पीसने का पत्थर, लोढ़ा, वह कमी जो लेन देन में किसी वस्तु के मूल्य में दी जाती है; **बट्टा लगना**-कलंक लगना। **बट्टा खाता**-(हिं०पुं०) वह बही जिसमें डूबी हुई रकम का लेखा रहता है। **बट्टा ढाल**-(हिं० वि०) समतल और चिकना।

बट्टी-(हिं०स्त्री०) छोटा बट्टा, पत्थर आदि का गोल छोटा टुकड़ा, कूटने पीसने का पत्थर, लोढ़िया।

बट्टू-(हिं० पुं०) धारीदार चारखाना, बजरबट्टू, लोबिया नामक तरकारी।

बट्टेबाज-(हिं०वि०) जादूगर, धूर्त।

बठिया-(हिं०स्त्री०) पाथे हुये सूखे कंडों का ढेर।

बठूचना-(हिं०क्रि०) देखो बैठना।

बडेंगा-(हिं०पुं०) देखो बड़ेरी।

बडगी-(हिं०पुं०) अश्व, घोड़ा।

बड़-(हिं०स्त्री०) प्रलाप, बकवाद, (पु०) बरगद का वृक्ष, (वि०) बड़ा, (क्रि०वि०) बढ़कर।

बड़कुइयाँ-(हिं०पुं०) कच्चा कुआँ।

बड़गूजर-राजपुतानावासी एक क्षत्रिय जाति।

बड़गुल्ला-(हिं० पु०) एक प्रकार का बगला।

बड़दुमा-(हिं०पुं०)लंबी पोंछका हाथी।

बड़प्पन-(हिं०पुं०)महत्व,गौरव,श्रेष्ठता, बड़ाई।

बड़बट्टा-(हिं०पुं०) बरगद का फल।

बड़बड़-(हिं०स्त्री०) व्यर्थ का बोलना, बकवाद। **बड़बड़ाना**-(हिं० क्रि०) प्रलाप करना, व्यर्थ की बकवाद करना, मुंह में ही कुछ बोलना।

बड़बड़िया-(हिं० वि०) बड़बड़ करने वाला, बकवादी।

बड़बेरी-(हिं० स्त्री०) देखो झरबेरी।

बड़बोल, बड़बोला-(हिं० वि०) लंबी चौड़ी बातें करनेवाला, सीटने वाला

बड़भाग, बड़भागी-(हिं०वि०)भाग्यवान्,

बड़रा-(हिं०वि०) विशाल, बड़ा।

बड़राना-(हिं० क्रि०) बर्राना, बरबर करना।

बड़वा-(हिं० स्त्री०) घोड़ी, आश्विनी नक्षत्र, दासी, समुद्र के भीतर की अग्नि। **बड़वाग्नि, बड़वानल**-(सं० पुं०) समुद्र के भीतर की अग्नि या ताप।

बड़वामुख-(सं० पुं०) महादेवजी का एक नाम।

बड़वार-(हिं०वि०) बड़ा, विशाल।

बड़वारी-(हिं० स्त्री०) महत्व, बड़प्पन, प्रशंसा।

बड़वाल-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी भेड़।

बड़वासुत-(सं०पुं०) अश्विनी कुमार।

बड़हंस-(हिं०पुं०) एक संकर राग का नाम। **बड़हंस सारंग**-(हिं०पुं०) सपूर्ण जाति का एक राग। **बड़हंसिका**-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम। **बड़हन**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान।

बड़हल-(हिं०पुं०)एक बड़ा वृक्ष जिसके फल शरीफे के आकार के बेडौल होते हैं और खाने में मीठे होते हैं।

बड़हार-(हिं०पुं०) बरातियों की वह ज्योनार जो विवाह के बाद की जाती है।

बड़ा-(हिं०वि०) अधिक, विस्तृत, लंबा चौड़ा, अवस्था में अधिक, गुण प्रभाव आदि में उत्तम, किसी बात में बढ़कर, श्रेष्ठ, उत्तम, अधिक परिमाण का, (पुं०) मसाला मिली हुई उर्द की पीठी को घी या तेल में तल कर बनाया हुआ एक पकवान। **बड़ा घर**-बन्दी गृह। **बड़ाई**-(हिं० स्त्री०) परिमाण या विस्तार की अधिकता, महिमा, प्रशंसा, पद, मान मर्यादा, वय विद्या आदि की बृद्धि, बड़प्पन, श्रेष्ठता; **बड़ाई देना**-आदर सत्कार करना।

बड़ादिन-(हिं०पुं०) २५ दिसंबर का दिन जो इसुमसीह का जन्मदिवस माना जाता है, ईसाई लोग इस दिन त्योहार मनाते हैं। **बड़ापीलू**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा। **बड़ाबोल**-(हिं०पुं०) अहंकार के शब्द।

बड़ासबरा-(हिं०पुं०) कसेरों का पात्रों में जोड़ लगाने का अस्त्र।

बड़ी-(हिं०स्त्री०) उड़द मूंग आदि की पीठी की बनाई हुई छोटी छोटी टिकिया, माँस की बोटी।

बड़ी कटाई-(हिं०स्त्री०) बड़ी जाति की भटकैया। **बड़ीगोटी**-(हिं० स्त्री०) चौपायों का एक रोग।

बड़ी माता-(हिं० स्त्री०) शीतला रोग, चेचक। **बड़ी मैल**-(हिं० स्त्री०) भूरे रंग को एक चिड़िया। **बड़ी मौसली**-(हिं० स्त्री०) लोहे का ठप्पा जिससे थालियों में नकाशी की जाती है।

बड़े लाट-(हिं० पुं०) भारतवर्ष में साम्राज्य के प्रधान शासक।

बड़ेरर-(हिं० पुं०) चक्रवात, बवंडर।

बड़ेरा-(हिं० पु०) छाजन में लंबे बल की लकड़ी जिस पर ठाठ रक्खा जाता है, कुवें पर खंभों पर रक्खी हुई वह लकड़ी जिस पर घिरनी लगाई रहती है।

बड़ौखा-(हिं० पु०) एक प्रकार का नरम गन्ना।

बड़ौना-(हिं० पुं०) प्रशंसा।

बढ़-(हिं० वि०) अधिक।

बढ़ई-(हिं० पुं०) काठ को छील और गढ़कर अनेक प्रकार की सामग्री बनाने वाला।

बढ़ती-(हिं० स्त्री०) मात्रा, मान या संख्या में वृद्धि, धन धान्य की वृद्धि, सम्पत्ति आदि का बढ़ना।

बढ़दार-(हिं० स्त्री०) पत्थर काटने की टाँकी।

बढ़न-(हिं० स्त्री०)वृद्धि, बढ़ती।

बढ़ना-(हिं० क्रि०) वृद्धि को प्राप्त होना, उन्नति करना,अग्रसर होना, भाव में वृद्धि होना, लोभ होना, दुकान आदि का बन्द होना, दीपक का बुझना, परिमाण या संख्या में अधिक होना, किसी से किसी बात में अधिक होना, किसी स्थान में आगे जाना; **बढ़कर चलना**-घमंड करना।

बढ़नी-(हिं० स्त्री०) झाडू, बोहारी।

अन्न या रुपया जो खेती करने के लिये अग्रिम दिया जाता है।
बढ़ाना-(हिं० क्रि०) फैलाना, लम्बा करना, किसी कार्यालय को बन्द करना, भाव अधिक कर देना, समाप्त होना, पद, अधिकार, सुख सम्पत्ति आदि में अधिक करना, चलाना, उन्नत करना, बल, प्रभाव गुण आदि में अधिक करना, अधिक तीव्र करना, दीपक बुझाना, चुक जाना, समाप्त होना।
बढ़ाली-(हिं० स्त्री०) कटारी, कटार।
बढ़ाव-(हिं० पुं०) बढ़ने की क्रिया या भाव, विस्तार, वृद्धि, अधिकता। **बढ़ावना**-(हिं० क्रि० देखो बढ़ाना। **बढ़ावा**-(हिं० पुं०) उत्तेजना, प्रोत्साहन, साहस दिखलाने वाली वार्ता, मन बढ़ाने की बात, कठिन काम में प्रवृत्त करने के शब्द।
बढ़िया हिं० वि०) उत्तम, अच्छा, (पुं०) एक प्रकार का कोल्हू, अन्न, गन्ने आदि की कृषि फल का एक रोग।
बढ़ेल-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कोमल रोंवें की भेड़।
बढ़ेला-(हिं० पुं०) जंगली सुअर।
बढ़ैया-(हिं० वि०) बढ़ने या बढ़ाने वाला, उन्नति करने वाला।
बढ़ोतरी-(हिं० स्त्री०) उन्नति, बढ़ती, उत्तरोत्तर वृद्धि।
बणिक्-(सं० पु०) वाणिज्य करने वाला, बनियाँ, विक्रेता, बेंचने वाला; **बणिक्पथ**-हाट।
बणिग्बन्धु-(सं० पुं०) नील का पौधा, बनियों का बन्धु।
बणिग्भाव-(सं०पुं०)वाणिज्य, बनियाई।
बणिज्-(सं०पु०) देखो वणिक्,बनियाँ।
बणिज्य,बणिज्या-(सं०देखोवाणिज्य।
बत-(हिं० स्त्री०) वात-योगिक शब्दों में इसका प्रयोग होता है, यथा बतकही।
बतक-(हि० स्त्री०) देखो बतख।
बतकहाव-(हिं० पुं०) वातचीत, वाद विवाद।
बतकही-(हिं०स्त्री०)वार्तालाप बातचीत।
बतख-(हिं०स्त्री०) हंस की जाति की पानी में तैरनेवाली एक सफेद चिड़िया।
बतचल- हिं० वि०) बकवादी बक्की। **बतबढ़ाव**-(हिं० पुं०) व्यर्थ बात बढ़ाना, झगड़ा बढ़ाना।
बतर-(हिं० वि०) कुरा।
बतरस-(हिं० पुं०) वार्तालाप का आनन्द।
बतरान-(हिं० स्त्री०) बातचीत।
बतराना-(हिं० क्रि०) बातचीत करना। **बतरौंहा**-(हिं० वि०) बातचीत करने का उत्सुक।
बतलाना बताना-(हिं०क्रि०) निर्देश करना, दिखाना, जताना, समझाना, बुझाना, नाचने गाने में भाव बताना, किसी कार्य में नियुक्त करना, दण्ड देकर ठीक मार्ग पर लाना, मारपीट कर ठीक करना, प्रदर्शित करना (हिं० पुं०) हाथ का कड़ा, वह पुराने कपड़े की चीर जिस पर पगड़ी बाँधी जाती है।
बताशा-(हिं० पु०) देखो बतासा।
बतास-(हिं० स्त्री०) गठिया, वात रोग, वायु, हवा।
बतासफेनी-(हिं० स्त्री० टिकिया के आकार की एक मिठाई।
बतासा-(हिं० स्त्री०) चीनी की चाशनी टपकाकर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई, बुलबुला, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा।
बतिया-(हिं० पुं०) थोड़े दिनों का लगा हुआ कच्चा छोटा फल।
बतियाना-(हिं०क्रि०) वातचीत करना।
बतियार-(हिं० स्त्री०) वातचीत।
बतीसी-देखो बत्तीसी।
बतू-(हिं० पुं०) देखो कलाबत्तू।
बतौरी-(हिं० स्त्री०) सूजन।
बत्तक-(हिं० स्त्री०) देख बत्तख।
बत्तिस-(हिं० वि०) देखो बत्तीस।
बत्ती-(हिं० स्त्री०) सूत रूई कपड़े आदि की पतली छड़ या मोटा फीता जो दीपक जलाने के लिये उपयोग में आता है, प्रकाश, पगड़ी का ऐंठा हुआ कपड़ा, मोमबत्ती, बत्ती के आकार की कोई वस्तु, फूस का मुट्ठा जो छाजन में लगाया जाता है, घाव में की पीव निकाल कर भरने की कपड़े की लंबी धज्जी, पलीता।
बत्तीस-(हिं० वि०) तीस और दो की संख्या का, (पु०) तीस और दो की संख्या ३२। **बत्तीसा**-(हिं० पुं०) बत्तीस औषधियों को मिलाकर बना हुआ पुष्टई का एक प्रकार का लड्डू। **बत्तीसी**-(हिं० स्त्री०) बत्तीस का समूह, मनुष्य के नीचे ऊपर के दाँतों की पंक्ति जिनकी पूरी संख्या बत्तीस होती है।
बथान-(हिं० पुं०) गाय बैल के रहने का स्थान।
बथुआ-(हिं० पुं०) एक छोटा पौधा जिसका साग बना कर खाया जाता है।
बदना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना, कहना, स्थिर करना, ठहराना, स्वीकार करना, मान लेना, होड़ लगाना, गिनती में लाना, कुछ समझना, बड़ा मानना; **बदकर**-हठपूर्वक, जान बूझकर।
बदर-(सं० नपुं०) कपास, बिनौला, बड़ा बेर का वृक्ष, बेर का फल, आठ माशे की तौल।
बदरबीज-(सं०नपुं०) बेर की गुठली।
बदरा-(सं० स्त्री०) कपास, वाराहीकन्द (हिं० पुं०) बादल, मेघ।
बदराई-(स्त्री०) बदली।
बदरामलक-(सं० नपुं०) जल आमला।
बदरास्थि-(सं०नपुं०) बेर की गुठली।
बदरि-(सं०स्त्री०) बेर का पौधा या फल।
बदरिकाश्रम-(सं० पुं० नपुं०) श्रीनगर (गढ़वाल) के पास अलकनन्दा नदी के पश्चिमी किनारे पर अवस्थित एक तीर्थ यहां पर नारायण तथा व्यास का आश्रम है।
बदरिया- हिं० स्त्री० देखो बदली
बदरी- हिं० स्त्री० देखो बदली।
बदरीनाथ-(सं०पुं० हिमालय पर्वत के एक शिखर का नाम जहाँ पर बदरीनारायण का मन्दिर है। **बदरीनारायण**-(सं० नपुं० बदरीनारायण की मूर्ति जो बदरिकाश्रम में है।
बदरौह-(हिं०वि०) कुमार्गी, (हिं० पुं०) बदली का आभास। भला बुरा कहने में कुछ संकोच नहीं होना।
बदलना-(हिं०क्रि०) परिवर्तित होना, भिन्न होना, एक स्थान पर दूसरे को करना, एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना अथवा एक के स्थान पर दूसरा हो जाना; **बात बदलना**-कोई बात कहकर उससे मुकर जाना **बदलवाना**-(हिं० क्रि०) बदलने का काम दूसरे से कराना।
बदला (हिं०पुं०) विनिमय, परस्पर लेन देन का व्यवहार, किसी वस्तु के स्थान की दूसरी वस्तु से पूर्ति, प्रतीकार, प्रतिफल, पलटा, किसी कर्म का परिणाम जो भोगना पड़े, किसी वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु दे। **बदलाना**-(हिं० क्रि०) देखो बदलवाना।
बदली-(हिं०स्त्री०) फैलकर छाया हुआ बादल, एक के स्थान पर दूसरे की उपस्थिति, एक स्थान या पद से दूसरे स्थान पर नियुक्ति। **बदलौवल**-(हिं०स्त्री०) अदलबदल, हेरफेर, उलट फेर।
बदा-(हिं०वि०) प्रारब्ध में लिखा हुआ।
बदान-(हिं०स्त्री०)किसी बात का प्रतिज्ञा पूर्वक पहले से स्थिर किया जाना।
बदाबदी-(हिं०स्त्री०) दो पक्षों का एक दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ, लाग डांट।
बदाम-(हिं०पुं०) देखो बादाम।
बदामी-(हिं०वि०) बदाम के रंग का।
बदि-(हिं०स्त्री०) बदला, पलटा, (अव्य०) वास्ते, बदले में।
बदी-(हिं०स्त्री०) कृष्णपक्ष, अंधेरा पाख
बदे-(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये।
बद्दर, बद्दल-(हिं०पुं०) देखो बादल।
बद्द-(हिं०वि०) अपमानित।
बद्ध-(सं०वि०) बंधन युक्त बंधा हुआ, फँसा हुआ, बिना रोक का, परिमित, व्यवस्थित, निर्धारित, पड़ा हुआ, ठहरा हुआ, अज्ञान में फँसा हुआ।
बद्धक-(सं०पुं०) बन्दी।
बद्धकोष्ठ-(सं०पुं०) अच्छी तरह मल न निकलने की अवस्था या रोग।
बद्धचिह्न-(सं० वि०) जिसको जीभ हिलाने में कष्ट होता हो। **बद्धपरिकर**-(सं०वि०) कमर बाँधे हुए, तैयार **बद्धपुरीष**-(सं०वि०) जिसका मल रुक गया हो।
बद्धफल-(सं०पुं०) करंज का वृक्ष। **बद्धमुष्टि**-(सं०वि०) जिसकी मुट्ठी बँधी हो, कृपण, कंजूस।
बद्धरसाल-(सं०पुं०) एक उत्तम जाति का आम।
बद्धवर्चस-(सं०वि०) मल का अवरोध करने वाला। **बद्धवीर**-(सं० त्रि०) जिसकी सेना शत्रुओं में घिर गई हो। **बद्धशिख**-(सं० वि०) जिसकी शिखा या चोटी बँधी हो।
बद्धी-(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी, बाँधने की कोई वस्तु, चार लड़ी का एक आभूषण।
बध-(सं०पुं०) हनन, हत्या।
बधक-(सं०वि०)वध करने वाला, हत्या करने वाला, (नपुं०) व्याधि, मृत्यु।
बधगराड़ी-(हिं० स्त्री०) रस्सी बटने का एक अस्त्र।
बधना-(हिं०क्रि०) बध करना, हत्या करना।
बधभूमि-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर अपराधियों को प्राणदण्ड दिया जाता है। **बधस्थली**-(सं० स्त्री०) श्मशान।
बधाई-(हिं०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, मंगल अवसर का गाना बजाना, शुभ अवसर पर दिया जाने वाला उपहार, चहल पहल, आनन्द प्रगट करने वाला सन्देश।
बधांगक-(सं०नपुं०) कारागार।
बधाना-(हिं०क्रि०) बध कराना।
बधाया-(हिं०पुं०) देखो बधाई।
बधावना-(हिं०पुं०) देखो बधावा।
बधावा-(हिं०पुं०) बँधाई मंगल अवसरों पर संबंधियों तथा इष्ट मित्रों के यहां से आने वाला उपहार, मंगलाचार, मंगल अवसर पर का गाना बजाना।
बधिक-(हिं०पुं०) बध करने वाला, मारने वाला, व्याध, बहेलिया।
बधिया-(हिं०पुं०) वह पशु जो अण्डकोश कुचल कर या निकाल कर षंड नपुंसक कर दिया गया हो, खस्सी, एक प्रकार की मीठी ऊख।
बधियाना-(हिं०क्रि०) बधिया करना या बनाना।
बधिर-(सं०वि०) बहरा, जिसमें सुनने की शक्ति न हो। **बधिरता**-(सं०स्त्री०) बहरापन।
बधू-(सं०स्त्री०) स्त्री नव विवाहिता स्त्री, पतोहू, भार्या, पत्नी; **बधूजन**-नारी, स्त्री।
बधूटी-(सं०स्त्री०) पुत्र की स्त्री, पतोहू, नई आई हुई बहू, सौभाग्यवती स्त्री।
बधूत्सव-(सं० पुं०) वधू का प्रथम रजोदर्शन।
बधूरा-(हिं०पुं०) अंधड़, बवंडर।

बधैया-(हिं०स्त्री०) बधाई ।
बधोद्यत-(सं०वि०) वह जो मारने के लिये उद्यत हो ।
बध्य-(सं०वि०) मार डालने योग्य ; **बध्यभूमि**-बध करने का स्थान, श्मशान ।
बन-(हिं०पु०) देखो बन ; जंगल, अरण्य, बाग, बगीचा; **बन श्राल**-ज़मीकन्द के प्रकार का एक पौधा; **बनकंडा**-वह कंडा जो जंगल में आप से आप सूखकर तैयार होता है ।
बनउर-(हिं०पुं०) बिनौला । **बनकंडा**-(हिं०पुं०) जगल का सूखा गोबर ।
बनक-(हिं०स्त्री०) बन की उपज, जगल की उपज (स्त्री०) सजधज, वेशभूषा ।
बनकटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बाँस । **बनकर**-(हिं०पु०) जंगल में होने वाले पदार्थों की आय । **बनकल्ला**-(हिं०पु०) एक प्रकार का जंगली वृक्ष । **बनकस**-(हिं०पुं०) एक प्रकार की जगली घास। **बनकोरा**-(हिं०पुं०) लोनिया का साग।
बनखंड-(हिं० पुं०) जंगल का कोई भाग । **बनखंडी**-(हिं०स्त्री०) छोटा सा जंगल (वि०) वन में रहने वाला ।
बनखरा-(हिं०पुं०) वह खेत जिसमें पिछली उपज में कपास बोई गई हो । **बनगाव**-(हिं०पु०) एक प्रकार का बड़ा हिरन । **बनचर**-(हिं०पु०) वन्य पशु, जंगल में रहने वाला पशु, जंगली मनुष्य । **बनचारी**-(हिं०पुं०) वन में घूमने वाली, जंगल में रहने वाला मनुष्य या पशु ।
बनचौर-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की जंगली गाय ।
बनज-(हिं०पु०) कमल, शख, जल में होने वाले पदार्थ, वाणिज्य, व्यवसाय
बनजना-(हिं०क्रि०) व्यापार करना ।
बनजर-(हिं०स्त्री०) देखो बंजर ।
बनजात-(हिं०पु०) कमल, पद्म ।
बनजारा-(हिं०पुं०) वह व्यापारी जो बैलों पर अन्न लादकर देश देश में घूम कर बेंचता है टँड़िया, व्यापारी, बनिया । **बनजी**-(हिं०पुं०) व्यापारी।
बनज्योत्स्ना-(हिं०स्त्री०) माधवी लता ।
बनड़ा-(हिं०पुं०) एक राग का नाम; **बनड़ा जैत**-रूपक ताल पर बजने वाला एक राग ।
बनत-(हिं०स्त्री०) रचना, बनावट, अनुकूलता, मेल, एक प्रकार की रेशम या मखमल पर काढ़ने की बेल ।
बनताई-(हिं०स्त्री०) जगल का घनापन या भयंकरता ।
बनतुरई-(हिं०स्त्री०) बंदाल। **बनतुलसी**-(हिं० स्त्री०) बवई नाम का पौधा जिसकी पत्ती और मंजरी तुलसी के समान होती हैं ।
बनद-(हिं०पु०) मेघ, बादल ।
बनदाम-(हिं०स्त्री०) वनमाला ।
बनदेवी-(हिं०स्त्री०) वन की अधीष्ठात्री देवी ।
बनधातु-(सं० स्त्री०) गेरू या कोई रंगीन मिट्टी ।
बनना-(हिं०क्रि०) रचा जाना, तैयार होना, आपस में मित्रता होना, अच्छा अवसर प्राप्त होना, स्वरूप धारण करना, मूर्ख ठहरना, शृंगार करना, महत्व की मुद्रा धारण करना, समाप्त होना, कोई विशेष पद या अधिकार प्राप्त करना अविष्कार होना, अपने को अधिक योग्य प्रमाणित करना, संभव होना ठीक होना, व्यवहार में आने योग्य किसी पदार्थ का होना, एक पदार्थ का रूप बदल कर दूसरा पदार्थ हो जाना, **बना रहना**-जीवित रहना ; **बनकर**-अच्छी तरह से ।
बननि-(हिं०स्त्री०)बनावट,सिंगार पटार
बननिधि-(हिं०पुं०) समुद्र ।
बनपट-(हिं०पुं०) वृक्षों की छाल आदि से बनाया हुआ कपड़ा ।
बनपति-(हिं०पु०) सिंह, शेर ।
बनपथ-(हिं०पुं०) वह मार्ग जिसमें बहुत से जंगल पड़ते हों । **बनपाट**-(हिं०पुं०) जंगली पटुआ । **बनपाती**-(हिं०स्त्री०) देखो वनस्पति । **बनपाल**-(हिं०पु०) बन या बाग का रक्षक ।
बनप्रिय-(हिं०पु०) कोकिल, कोयल ।
बनफल-(हिं०पु०) जंगली मेवा ।
बनबारी-(हिं०स्त्री०) वनकन्या, फूल का बगीचा, **बनवास**-(हिं०पुं०) वन में रहने या बसने की क्रिया या अवस्था, प्राचीन काल का देश से निकाले जाने का दंड । **बनवासी**-(हिं०वि०) वन में रहने वाला, जंगली
बनवाहन-(हिं०पुं०) जलयान, नाव ।
बनबिलाव-(हिं०पुं०) बिल्ली की जाति का एक जगली जन्तु । **बनमानुष**-(हिं०पुं०) जो बन्दर से बड़ा होता है, जिसका आकार मनुष्य से बहुत मिलता जुलता है, बिलकुल जंगली आदमी । **बनमाला**-(हिं०स्त्री०) तुलसी, कद, मदार परजाता और कमल इन पांचो फूलों से बनी हुई माला। **बनमाली**-(हिं०पुं०) वनमाला धारण करने वाला, विष्णु नारायण, मेघ, बादल । **बनमुर्गा**-(हिं० पु०) जंगली मुरगा ।
बनर-(हिं०पुं०) एक प्रकार अस्त्र ।
बनरखा-(हिं० पुं०) वन का रक्षक, जंगल की रखवाली करने वाला, बहेलियों तथा जंगल में रहने वालों की एक जाति ।
बनरा-(हिं०पुं०) वर, दूल्हा, विवाह के समय की एक प्रकार की मगल गीत।
बनराज, बनराय-(हिं०पु०) जंगल का राजा, सिंह, बहुत बड़ा वृक्ष ।
बनरी-(हिं०स्त्री०) नववधू, नई व्याही हुई बहू ।
बनरीठा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली रीठा ।
बनरीहा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास
बनरुह-(हिं०पुं०) वह पौधा जो जंगल में आप से आप उगता है, जंगली पेड़, पद्म, कमल ।
बनवना-(हिं०क्रि०) देखो बनाना ।
बनवर-(हिं०पु०) बिनौला ।
बनबसन-(हिं०पुं०) वृक्ष की छाल का बना हुआ कपड़ा ।
बनवा-(हिं० पुं०) पनडुब्बी नामक जलपक्षी ।
बनवाना-(हिं०क्रि०) बनाने का काम दूसरे से करना ।
बनवारी-(हिं०पु०) वनमाली, श्रीकृष्ण एक नाम ।
बनवासी-(हिंपुं०) जंगल में रहनेवाला
बनवैया-(हिं०वि०) बनाने वाला ।
बनसपती-(हिं०स्त्री०) देखो वनस्पति ।
बनसार-(हिं०पुं०) जहाज पर चढ़ने उतरने का स्थान ।
बनसी-(हिं०स्त्री०) देखो वंशी ।
बनस्थली-(हिं०स्त्री०) बनखण्ड, जंगल का कई भाग ।
बनस्पती-(हिं०पुं०) देखो बनस्पति; **बनस्पति विद्या**-वनस्पति शास्त्र ।
बनहटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी नाव ।
बनहरदी-(हिं०स्त्री०) दारुहल्दी ।
बना-(हिं०पु०) वर, दूल्हा, एक छन्द का नाम, इसका दूसरा नाम दण्ड कला है ।
बनाइ-(हिं० क्रि० वि०) अत्यन्त,बहुत, भली भाँति, अच्छी तरह ।
बनाउ-(हिं०पुं०) देखो बनाव ।
बनाउरि-(हिं०स्त्री०) देखो बाणवली ।
बनाग्नि-(हिं०स्त्री०) दावानल ।
बनात-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का ऊनी वस्त्र जो कई रग का होता है ।
बनाती-(हिं०वि०) बनात का बना हुआ
बनाना-(हिं०क्रि०)प्रस्तुत करना, रचना, एक पदार्थ को बदल कर दूसरा तैयार करना, रूप बदल कर अपने व्यवहार योग्य करना, आविष्कार करना, पूरा करना, दोष हटाकर ठीक करना, मूर्ख ठहराना,कोई विशेष पद अथवा शक्ति देना,अच्छी स्थिति में पहुँचना, प्राप्त करना, ठीक रूप या दशा में लाना, उपार्जित करना; **बनाकर**-भली भांति, अच्छी तरह से ।
बनाफर-(हिं०पु०) क्षत्रियों की एक जाति ।
बनावंत-(हिं०पुं०) विवाह करने के निमित्त लड़के और लड़की की जन्म कुण्डली मिलाना।
बनाय-(हिं०क्रि०वि०) पूर्ण रूप से, अच्छी, तरह से ।
बनार(हिं०पुं०) काला कसोंदा, एक प्राचीन राज्य जो वर्तमान काशी की उत्तरी सीमा पर था, कहा जाता है कि 'बनारस' नाम इसी राज्य के नाम पर पड़ा है । **बनारसी**-(हिं० वि०) काशी संबंधी, काशी निवासी ।
बनारी-(हिं०स्त्री०) कोल्हू में लगी हुई रस गिरने की लकड़ी की नली ।
बनाव-(हिं०पु०) रचना, बनावट, शृंगार, सजावट, युक्ति । **बनावट**-(हिं०स्त्री०) बनाने या बनने का भाव, गढन, ऊपरी दिखावा, आडंबर ।
बनावटी-(हिं०वि०)कृत्रिम, दिखौवा ।
बनावन-(हिं०पुं०) कंकड़ी, मिट्टी, छिलके आदि जो अन्न को स्वच्छ करने पर निकलें,बिनन । **बनावनहारा**-(हिं०पुं०) रचयिता, बनाने वाला, बिगड़े को बनाने वाला ।
बनावरि-(सं०वि०) बाणों की पंक्ति।
बनासपति बनासपाती-(हिं०स्त्री०) देखो वनस्पति, जड़ी, बूटी, पत्ती, फल फूल आदि ।
बनि-(हिं०वि०) समस्त, सब ।
बनिक-(हिं०पुं०) वणिक् , बनिया ।
बनिज-(हिं०पुं०) वस्तुओं का क्रय विक्रय, व्यवसाय, व्यापार की वस्तु
बनिजाति-(स्त्री०) व्यापार की सामग्री
बनिजना-(हिं०क्रि०) व्यापार करना, खरीदना, बेचना, अपने अधीन करना ।
बनिजारा-(हिं०पुं०) देखो वनजारा ।
बनजारिन-(हिं०स्त्री०) बनजारा । जाति की स्त्री ।
बनजारी-(हिं०स्त्री०) बनजारे की स्त्री
बनित-(हिं०स्त्री०) वेषभूषा, बानक ।
बनिता-(हिं०स्त्री०) स्त्री, भार्या, पत्नी ।
बनिया-(हिं०पुं०) व्यापार करने वाला मनुष्य वैश्य, आदि आटा चावल आदि बेंचने वाला मोदी ।
बनियाइन-(हिं०स्त्री०) बनिये की स्त्री सूत रेशम आदि की बनी हुई बंडी या कुरती जो शरीर में चिपकी रहती है ।
बनिहार-(हिं० पुं०) वह भृत्य जो रखवाली आदि के लिये नियुक्त किया जाता है ।
बनी-(हिं०स्त्री०) बनस्थली, वन का टुकड़ा, वाटिका, (पु०) नायिका, दुलहिन । **बनीनी**-(हिं०स्त्री०) वैश्य जाति की स्त्री, बनिये की स्त्री ।
बनेठी-(हिं०स्त्री०) वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे है जिसका व्यवहार पटेबाजी के खेल और अभ्यासों में किया जाता है
बनैला-(हिं० वि०) वन्य, जगली ।
बनौटी-(हिं०वि०) कपासी, कपास के फूल के समान ।
बनौरी-(हिं०स्त्री०) वर्षा के साथ गिरने वाला,ओला या पत्थर ।
बनौवा-(हिं०वि०) कृत्रिम, बनावटी
बन्दर-(हिं० पुं०) देखो बंदर ।
बन्ध-(सं०पु०) बन्धन, शरीर, गांठ, पानी रोकने का बाँध, योग साधना की एक मुद्रा ।

बन्धक-(सं०नपुं०) ऋण के बदले में महाजन के पास रखने की वस्तु, गिरवीं, बदला, बांधने वाला। **बन्धकी**-(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री, वेश्या, रंडी।
बन्धकर्ता-(हिं०पुं०) शिव, महादेव।
बन्धन-(सं० नपुं०) बांधने की क्रिया, वह जिससे कोई वस्तु बांधी जाय, वध हत्या, रस्सी, बंधन स्थान, बंदीगृह, शरीर का सन्धि-स्थान, शिव, महादेव (वि०) बांधने वाला।
बन्धनी-(सं०स्त्री०) शरीर के बन्धन स्थान पर की मोटी नसें जो अवयवों को बांधे रहती हैं। **बन्धनीय**-(सं०वि०) बांधने योग्य।
बन्धमोचनिका-(सं०स्त्री०) एक योगिनी का नाम।
बन्धयिता-(हिं०वि०) बांधने वाला।
बन्धस्तम्भ-(सं०पुं०) हाथी बांधने का खूंटा।
बन्धु-(सं०पु०) सगोत्र, बान्धव, स्वजन, भाई बन्द।
बन्धुक-(सं०पुं०) दुपहरिया नाम के फूल का पौधा।
बन्धुजन-(सं०पुं०) आत्मीय कुटुम्ब। **बन्धुता**-(सं०स्त्री०) बन्धु होने का भाव, भाईचारा। **बन्धुत्व**-(सं०पु०) मित्रता।
बन्धुदा-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी, व्यभिचारिणी स्त्री।
बन्धुपाल-(सं०पु०) अपने कुटुम्ब का पालन करने वाला।
बन्धुर-(सं०नपुं०) मुकुट, गुलदुपहरिया, बहरा मनुष्य, हंस, काकड़ासिंघी, चिड़िया (वि०) सुन्दर, नम्र ऊंचा नीचा।
बन्धुल-(सं०पु०) रंडी का लड़का, (वि०) सुन्दर।
बन्धूर-(सं०वि०) रम्य, सुन्दर।
बन्ध्य-(सं०वि०) निष्फल, विफल।
बन्ध्या-(सं०स्त्री०) जिस स्त्री को सन्तान न होता हो, बांझ स्त्री; **बन्ध्या तनय**-अनहोनी बात; **बन्ध्यापुत्र**-कभी न होने वाली बात।
बन्नी-(हिं०स्त्री०) उपज का कोई अंश जो खेत में काम करने वालों को वेतन के बदले में दिया जाता है।
बह्नि-(हिं०स्त्री०) देखो वह्नि।
बप-(हिं०पुं०) बाप, पिता। **बपमार**-(हिं०वि०) अपने पिता की हत्या करने वाला, सबके साथ अन्याय करने वाला।
बपना-(हिं०क्रि०) बीज बोना।
बपु-(हिं०पुं०) देखो वपु; शरीर, अवतार, रूप। **बपुख**-(हिं० पुं०) शरीर, देह।
बपुरा-(हिं०वि०) अशक्त, बेचारा।
बपौती-(हिं०स्त्री०) पिता से मिली हुई सम्पत्ति।
बप्पा-(हिं०पु०) पिता, बाप।
बफौरी-(हिं० स्त्री०) भाफ से पकाई हुई बरी।
बबकना-(हिं०क्रि०) आवेग में आकर वेग से बोलना, बमकना।
बबा-(हिं०पुं०) देखो बाबा।
बबुआ-(हिं०पुं०) पुत्र या दामाद के लिये प्यार का शब्द; रईस, भूमि स्वामी **बबुई**-(हिं०स्त्री०) कन्या, बेटी, किसी सरदार या बाबू की बेटी, छोटी ननद।
बबूर, बबूल-(हिं० पुं०) एक प्रसिद्ध कांटेदार वृक्ष जो मझोले कद का होता है।
बबूला-(हिं०पु०) देखो बगूला बुलबुला
बभनी-(हिं०स्त्री०) छिपकली के आकार का एक पतला छोटा कीड़ा जिसकी शरीर पर सुन्दर लम्बी धारियां होती हैं।
बभूत-(हिं०स्त्री०) देखो भभूत, विभूति
बभ्रु-(सं०पु०) अग्नि, शिव, विष्णु, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, कपिला गौ। **बभ्रुक**-(सं०वि०) नेवला, बन्दर। **बभ्रुधातु**-(सं०पुं०) सोना, सुवर्ण, गेरू। **बभ्रुवाह**-(सं० पुं०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम।
बम्-(हिं०पुं०) शिव के उपासकों का बम् बम् शब्द, शहनाई वालों का बाईं ओर का नगाड़ा, वह लम्बा बाँस जो गाड़ी आदि में आगे की ओर लगा रहता है जिसमें घोड़ा खड़ा करके जोता जाता है; **बम बोलना**-सब सामग्री का समाप्त होना।
बमकना-(हिं०क्रि०) डींग हाँकना।
बमचख-(हिं० स्त्री०) लड़ाई झगड़ा।
बमना-(हिं०क्रि०) वमन करना।
बमपुलिस-(हिं०पु०) देखो बंपुलिस।
बमीठा-(हिं०पुं०) बल्मीक, बांबी।
बम्भर-(सं०पु०) भ्रमर, भौंरा।
बम्भारि-(सं०पु०) वह जो संसार का पालन पोषण करता हो।
बम्हनपियाव-(सं० पुं०) ऊख को पहिले पहिल पेरती समय इसका कुछ रस ब्राह्मणों को पिलाना।
बम्हनी-(हिं०स्त्री०) देखो बभनी, ऊख का एक रोग, लाल रंग की भूमि, आँख का एक रोग।
बयण्ड-(हिं०स्त्री०) हाथी, गज।
बय-(हिं०पुं०) देखो वय।
बयन-(हिं०पुं०) वाणी, बात।
बयना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना, कहना, बीज जमाना या लगाना, (पुं०) देखो बौना।
बयनी-(हिं०स्त्री०) बोलने वाली।
बयर-(हिं०पुं०) देखो बैर।
बयल-(हिं०पु०) सूर्य।
बयस-(हिं० स्त्री०) देखो वय, **बयस सिरोमनि**-यौवन, युवावस्था।
बया-(हिं०पु०) गौरैया के आकार तथा रङ्ग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो बड़ी चातुरी से अपना घोंसला तृणों से बनाता है, अनाज तौलने वाला मनुष्य; **बयाई**-(हिं०स्त्री०) अन्न आदि तौलने की शुल्क, तौलाई।
बयाना-(हिं०पुं०) वह धन जो किसी काम के लिये दिये जानेवाले पुरस्कार के लिये बात पक्की हो जाने पर अग्रिम दिया जाता है और पुरस्कार देती समय काट लिया जाता है।
बयार-(हिं०स्त्री०) पवन, हवा।
बयारा-(हिं०पुं०) हवा का झोंका।
बयारी-(हिं०स्त्री०) देखो बियारी।
बयाला-(हिं०पुं०) भीत में का छेद या झरोखा, ताख आला, गढ़ भीत का वह छोटा छिद्र जिसमें से तोप का गोला पार करके जाता है, पटाव के नीचे का स्थान, गढ़ में वह स्थान जहाँ तोपें लगी रहती हैं।
बयालिस-(हिं०पुं०) चालीस और दो की सख्या ४२ (वि०) जो संख्या में चालीस और दो हो; **बयालिसवाँ**-जो क्रम से बयालिस के स्थान पर हो।
बयासी-(हिं०वि०) अस्सी और दो की संख्या का (पु०) अस्सी और दो की संख्या ८२।
बरंग-(हिं०पु०) एक छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और मृदु होती है।
बरंगा-(हिं०पु०) छत पाटने की पत्थर या लकड़ी की पटिया।
बर-(सं०नपुं०) देखो बर।
बर-(हिं०पुं०) वह जिसका विवाह होता हो, दूल्हा, आशीर्वाद सूचक वचन, बल, शक्ति, वर का पेड़ (वि०) श्रेष्ठ **बर परना**-श्रेष्ठ होना; **बर खांचना**-दृढ़ता दिखलाना; **बर आना (पाना)**-बढ़कर होना; (अव्य०) बरन् देखो बल, सिकुड़न।
बर अंग-(हिं० स्त्री०) योनि, भग।
बरई-(हिं०पुं०) पान के खेती करने वाली एक जाति, तमोली।
बरकना-(हिं० क्रि०) निवारण होना, जचना अलग रहना, हटना।
बरकाज-(हिं०पुं०) विवाह।
बरकाना-(हिं०क्रि०) निवारण करना, बचाना, पीछा छोड़ना, फुसलाना।
बरख-(हिं०पुं०) वर्ष, साल।
बरखना-(हिं०क्रि०) वर्षा होना, पानी बरसना। **बरखा**-(हिं०स्त्री०) वर्षा, वृष्टि, पानी बरसना; वर्षा ऋतु।
बरगन्ध-(हिं०पुं०) सुगन्धित मसाला।
बरगद-(हिं०पुं०) वट वृक्ष, बर का पेड़
बरगेल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लवा पक्षी।
बरचर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का देवदार वृक्ष।
बरचस-(हिं०पुं०) मल, विष्टा।
बरछा-(हिं०पुं०) फेंक कर या भोंककर मारने का एक अस्त्र, भाला। **बरछैत**-(हिं०पुं०) बरछा चलाने वाला।
बरजन-(हिं०क्रि०) मना करना, रोकना; **बरजनि**-(हिं०स्त्री०) रुकावट, मनाही।
बरजोर-(हिं०वि०) प्रबल, अत्याचार या अनुचित रीति से बल का प्रयोग करने वाला; (क्रि०वि०) बहुत वेग से;
बरजोरी-(हिं० स्त्री०) बल का प्रयोग (क्रि०वि०) बलपूर्वक।
बरट-(सं०पुं०) एक प्रकार का अन्न।
बरणना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना।
बरत-(हिं०पुं०) व्रत, उपवास, (स्त्री०) रस्सी, वह रस्सा जिसपर चढ़कर नट खेल करता है।
बरतन-(हिं०पुं०) कोई वस्तु रखने का मिट्टी या धातु का पात्र, व्यवहार।
बरतना-(हिं० क्रि०) व्यवहार में लाना।
बरतनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लकड़ी की लेखनी, लिखने का ढग।
बरताना-(हिं०क्रि०) वितरण करना, बाँटना।
बरताव-(हिं०पुं०) किसी के प्रति किया जाने वाला कार्य, व्यवहार।
बरती-(हिं०स्त्री०) बत्ती (वि०) जिसने व्रत या उपवास किया हो।
बरतेला-(हिं०स्त्री०) जुलाहे की करगह के दाहिने ओर की खूंटी।
बरतोर-(हिं० पुं०) बाल की जड़ टूट जाने से होने वाला फोड़ा।
बरदना-(हिं०क्रि०) देखो बरदाना।
बरदवान-(हिं०पुं०) तीव्र वायु।
बरदवाना-(हिं०क्रि०) बरदाने का काम दूसरे से कराना।
बरदा-(हिं०पुं०) देखो बरधा।
बरदाना-(हिं०क्रि०) गाय, भैंस, बकरी आदि पशुओं की उनकी जाति के नर पशुओं से संतान उत्पन्न कराने के लिये सयोग कराना, जोड़ा खिलवाना
बरदौर-(हिं०पु०) मवेशियों को बांधने का स्थान।
बरधा-(हिं०पु०) बैल।
बरधवाना, बरधाना-(हिं० क्रि०) देखो बरदाना।
बरघी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का चमड़ा
बरन-(हिं० पुं०) देखो वर्ण।
बरनन-(हिं० पुं०) देखो वर्णन।
बरनना-(हिं० क्रि०) वर्णन करना।
बरना-(हिं०क्रि०) पति या पत्नी के रूप में अंगीकार करना, दान देना, किसी में लगाना, किसी काम के लिये, किसी को चुनना; देखो बलना।
बरनाल-(हिं०पुं०) जहाज में का पानी निकलने का मार्ग या परनाला।
बरनेत-(हिं०स्त्री०) विवाह मुहूर्त के पहले होने वाली एक रीत।
बरफ-(हिं०स्त्री०) हिम।
बरबड-(हिं० पुं०) प्रचण्ड, बलवान्, उद्दण्ड, देखो बलवन्त।
बरबट-(हिं०वि०) देखो बरबस।
बरबर-(हिं०स्त्री०) व्यर्थ की बात, बर्बर
बर्बरी-(हिं०स्त्री०) एक देश का नाम, एक प्रकार की बकरी।

बरबस-(हि०क्रि०वि०) बलपूर्वक, व्यर्थ।
बरम-(हिं०पुं०) कवच।
बरमा-(हि०पुं०) लकड़ी आदि में छेद करने का एक अस्त्र, ब्रह्मदेश।
बरमी-(हिं०पुं०) बरमा देश का रहने वाला, (स्त्री०) बरमा देश की भाषा, छोटा बरमा।
बरम्हा-(हिं०पु०) ब्रह्मा, बरमा देश।
बरम्हाना-(हिं० क्रि०) ब्राह्मण का आशीर्वाद देना। **बरम्हाव**-(हिं०पुं०) ब्राह्मण का आशीर्वाद।
बररै-(हिं०पुं०) देखो वर्रे।
बरबट-(हिं०स्त्री०) ताप तिल्ली नाम का रोग।
बरवल-(हिं० पुं०) एक प्रकार की पहाड़ी भेंड़।
बरवा बरवै-(हिं०पुं०)ध्रुव या कुरङ्ग नाम का छन्द, जिसमें उन्नीस मात्रा होते हैं।
बरषना-(हि०क्रि०)बरसना,वर्षा होना।
बरषा-(हि०स्त्री०)वृष्टि, पानी बरसना, वर्षा काल, बरसात। **बरषाना**-
बरषासन-(हिं० पुं०) अन्न का उतना परिमाण जितना एक परिवार एक वर्ष में खा सके।
बरस-(हिं० पुं०) वर्ष, तीन सौ पैंसठ दिन अथवा बारह महीने का समूह,
बरसगाँठ-(हि०स्त्री०) सालगिरह, वह दिन जिसमें किसी का जन्म हुआ हो, जन्म दिन।
बरसना-(हिं०क्रि०) आकाश से जल के बूंदों का निरन्तर गिरना, वर्षा के जल की तरह किसी पदार्थ का ऊपर से गिरना, अधिक प्रगट होना, ओसाया जाना।
बरसाइत-(हि०स्त्री०)ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या जिस दिन स्त्रियां वटसावित्री का पूजन करती हैं।
बरसाइन-(हि०स्त्री०) प्रति वर्ष ब्याने वाली गाय।
बरसाऊ-(हिं०स्त्री०)वर्षाऋतु, वर्षाकाल।
बरसाती-(हिं०वि०) वर्षा सम्बन्धी, बरसात का, (पुं०) बरसात में होनेवाला घोड़ों का एक रोग, चरस पक्षी,बरसात में होने वाली एक प्रकार की फुंसियां, एक प्रकार का वर्षा ऋतु में पहरने का कपड़ा जिसके पहनने से शरीर नहीं भींगता।
बरसाना-(हिं०क्रि०) वृष्टि या बरसा करना, अन्न को ओसाना, वर्षा की तरह निरन्तर ऊपर से गिरना, अधिक मात्रा या संख्या में चारों ओर से प्राप्त कराना।
बरसायत-(हि०स्त्री०) शुभ मुहूर्त; देखो बरसाइत।
बरसावना-(हिं०क्रि०) देखो बरसाना।
बरसी-(हिं० स्त्री०) वह श्राद्ध जो किसी मृतक के उद्देश्य से उसके मरने की तिथि के ठीक एक वर्ष बाद होता है।
बरसीला-(हिं०वि०) बरसने वाला।
बरसू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष।
बरसौंड़ी-(हिं० स्त्री०)प्रति वर्ष लिया जाने वाला कर।
बरसौंहा-(हिं०वि०) बरसने वाला।
बरहेटा-(हिं०पुं०) कड़वा भंटा।
बरह-(हिं० पुं०) वृक्ष पौधे आदि का पत्ता।
बरहा-(हिं०पुं०) खेत में सिंचाई के लिये बनाई हुई छोटी नाली,मोटा रस्सा।
बरही-(हिं० पुं०) मोर, मुर्गा, अग्नि इन्धन का बोझ, पत्थर आदि उठाने का मोटा रस्सा, साही नामक जन्तु प्रसूता का सन्तान उत्पन्न करने के बारहवें दिन का स्नान तथा अन्य क्रियायें।
बराहीपीड़-(हिं० पुं०) मोर के परों का बना हुआ मुकुट। **बराहीमुख**-(हिं० पुं०) देखो वर्हिमुख, देवता।
बरहीं-(हिं०पुं०) देखो बरही।
बरह्मंड-(हिं०पुं०) देखो ब्रह्माण्ड।
बरह्मावना-(हि० क्रि०) ब्राह्मण का आशीर्वाद देना, असीस देना।
बरांडल-(हिं०पुं०) मस्तूल के बांधने का जहाज पर का रस्सा।
बरांडा-(हिं०पु०)देखो बरामदा।
बरा-(हिं० पु०) एक प्रकार का पकवान जो उड़द की दाल को पीसकर बनाया जाता है, भुजा पर पहरने का एक गहना।
बराई-(हिं० स्त्री०) देखो बड़ाई।
बराक-(हिं० पुं०)युद्ध लड़ाई, महादेव (वि०) अधम पापी, बेचारा, बापुरा।
बराट-(हिं०स्त्री०) कौड़ी।
बरात-(हिं० स्त्री०) वर पक्ष के लोग जो विवाह के समय वर को लेकर कन्या वाले के घर पर जाते हैं, जनेत, एक साथ जाने वाले अनेक मनुष्यों का समुदाय। **बराती**-(हिं० पुं०) वर के साथ कन्या के घर बरात जाने वाला मनुष्य।
बरान कोट-(हिं०पुं०)वह बड़ा कोट जो सिपाही लोग जाड़े या बरसात में बर्दी के ऊपर पहनते हैं।
बराना-(हिं० क्रि०) जान बूझकर अलग करना, बचाना, रक्षा करना, प्रसंग पड़ने पर भी कोई बात छिपा रखना, देख रेख कर अलग करना, करना, छांटना, खेत में सिंचाई का काम करना, चुनना, छांटना।
बरायन-(हिं० पु०) विवाह के समय वर के हाथ में पहराने का लोहे का छल्ला।
बरार-(हिं०पुं०) देखो बरार (हिं०पु०) एक प्रकार का जंगली पशु।
बरारक-(हिं०पु०) हीरक, हीरा।
बरारी-(हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी; **बरारी श्याम**-एक संकर राग का नाम।
बराव-(हिं०पुं०) निवारण बचाव।
बरास-(हिं० पुं०) भीमसेनी कपूर, पाल को घुमाने की रस्सी।
बराह-(हिं०पु०) देखो वराह।
बराही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की पतली ऊख।
बरिआत-(हि०स्त्री०) देखो बरात।
बरिआर-(हि० वि०) प्रवल, बलवान्।
बरिच्छा-(हि०पु०)देखो बरच्छा।
बरिया-(हिं० वि०) बलवान्, पुष्ट।
बरियाई-(हि०क्रि०वि०) हठपूर्वक।
बरियारा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छतनारा छोटा पौधा, खिरेंटी बनमेथी।
बरियाल-(हिं० पुं०) एक प्रकार का पतला बांस।
बरिल-(हिं० पुं०) पकौड़ी या बरे की तरह एक पकवान।
बरिल्ला-(हिं०पु०) सज्जी खार।
बरिषा-(हिं० स्त्री०) देखो वर्षा।
बरिष्ठ-(हिं०पुं०) देखो बरिष्ठ।
बरिस-(हिं०पुं०) वर्ष, साल।
बरी-(हि०स्त्री०) गोल टिकिया, बटी, एक प्रकार की घास, उर्द या मूंग की पीठी के सुखाये हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े, वह मेवा या मिठाई जो विवाह के बाद वर पक्ष की ओर से दुलहिन के घर भेजे जाते हैं (का० वि०) मुक्त, छूटा हुआ।
बरीस-(हिं० पुं०) देखो वर्ष साल।
बरीसना-(हिं०क्रि०) देखो बरसना।
बरु-(हिं० अव्य०) चाहे, कुछ चिन्ता नहीं, भले ही (हिं०पुं०) देखो बर।
बरुआ-(हिं०पुं०) ब्रह्मचारी, ब्राह्मण का पुत्र, बटु, उपनयन संस्कार, मूंज के छिलके की बनी हुई बद्धी जिससे डलिया आदि बनाई जाती हैं।
बरुक-(हिं०अव्य०) देखो बरु।
बरुना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सीधा सून्दर वृक्ष, बन्ना।
बरुनी-(हिं०स्त्री०) आंख की पलक के किनारे पर के बाल।
बरुण-देखो वरुण, **बरुणालय**-समुद्र
बरुनी-(हिं०स्त्री०) बरौनी।
बरुला-(हिं०पुं०)देखो बल्ला। **बरुवा**-(हिं०पुं०) देखो बरुआ।
बरुथी-(हिं०स्त्री०) सई और गोमती के बीच की एक नदी।
बरेड़ा-(हिं० स्त्री०) लकड़ी का एक मोटा गोल लट्ठा जो लंबाई बल में छाजन के नीचे लगाया जाता है, छाजन या खपरैल के बीच का सबसे ऊंचा स्थान।
बरेड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो बरेड़ा।
बरे-(हिं०अव्य०) बदले में, पलटे में, निमित्त, वास्ते, (क्रि०वि०) बड़े वेग से, हठ से ऊंचे स्वर से।
बरेखी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का गहना जिसको स्त्रियां भुजा पर पहरती हैं, (हिं० स्त्री०) विवाह संबंध के निमित्त कन्या को देखना, ठहरौनी।
बरेजा-(हिं० पुं०) पान का बगीचा या भीटा।
बरेठा-(हिं०पुं०) धोबी।
बरेत, बरेता-(वि० पुं०) सन का मोटा रस्सा, नार।
बरेदी-(हि०पुं०) चरवाहा।
बरेषी-(हिं०स्त्री०) देखो बरेखी।
बरो-(हि० स्त्री०) आल की जड़ का पतला रेशा।
बरोक-(हिं० पुं०) विवाह संबंध पक्का होने। पर कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जाने वाला द्रव्य, बरच्छा।
बरोठा-(हिं० पुं०) ड्योढी, पौरी, बैठक, **बरोठे का चार**-द्वार पूजा।
बरोधा-(हिं० पुं०) वह खेत जिसकी पिछली उपज कपास रही हो।
बरोरु-(हिं०वि०) देखो बरोरु।
बरोह-(हिं० स्त्री०) बरगद की जटा जो नीचे की ओर बढ़ती हुई भूमि को जाकर जड़ पकड़ लेती है।
बरौंछी-(हिं० स्त्री०) सोनार की गहना निर्मल करने की सुअर के बालों की बनी हुई कूंची।
बरौंखा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का ऊंचा और लंबा गन्ना।
बरौठा-(हिं० पुं०) देखो बरोठा।
बरौनी-(हि०स्त्री०) देखो बरुनी।
बरौरी-(हिं० स्त्री०) बरी नाम का पकवान, बड़ी।
बर्कत-(हिं०स्त्री०) देखो बरकत।
बर्खास्त-(हि० वि०) हटाया हुआ।
बर्छा-(हिं० पुं०) देखो बरछा।
बर्ज-(हिं०वि०) देखो वर्य। **बर्जना**-(हिं० क्रि०) देखो बरजना।
बर्णना-(हिं० क्रि०) वर्णन करना।
बर्तन-(हिं० पुं०) पात्र।
बर्तना-(हिं० क्रि०) व्यवहार करना, काम में लाना।
बर्ताव-(हिं० पुं०) व्यवहार।
बर्द-(हिं०पु०) वृष, बैल।
बर्न-(हिं० पुं०) देखो वर्ण।
बर्फी-(फा०स्त्री०) देखो बरफी।
बर्फीला-(वि०) बरफ से ढंका हुआ।
बर्बट-(सं० पुं०) राजमाष, बोड़ा।
बर्बटी-(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी, एक प्रकार का धान।
बर्बर-(सं०वि०) हकलाता हुआ, घुंघुरुवा, असभ्य, बंगाली, अशिष्ठ, उद्दण्ड, (पुं०) जंगली आदमी, असभ्य मनुष्य, शस्त्रों की झनकार, एक प्रकार का नाच, एक प्रकार का कीड़ा।
बर्बता-(स्त्री०) असभ्यता, अत्याचार।
बर्बरा-(सं० स्त्री०) बमतुलसी, एक प्रकार की मक्खी। **बर्बरी**-(सं०स्त्री०) बन तुलसी, ईंगुर, पीत चन्दन।
बर्रा-(हिं० पुं०) रस्से की सिचाई

जो प्रायः गावों में कुंआर मुदी चौदस को होती है।

बर्राना-(हिं०क्रि०) व्यर्थ बकबक करना स्वप्न की अवस्था में बोलना।

बर्रे-(हिं० पु०) भिड़ नामक कीड़ा, तितैया।

बर्बुर-(सं० नपुं०) जल-पानी, बबूल का पेड़।

बर्सात-(हिं०स्त्री०) देखो बरसात।

बर्ह-(सं०नपुं०) मोर का पंख, पत्र, पत्ता।

बर्हणा-(सं० वि०) शत्रु का सहार करने वाला।

बर्हिण-(सं०पुं०) मयूर, मोर; **बर्हिण-वाहन**-कार्तिकेय। **बर्ही**-(सं० पुं०) मयूर, मोर। **बर्हिमुख**-(सं० पुं०) देवता, अग्नि।

बर्हिसद्-(सं०पुं०) पितरों के अधिष्ठता देवगण।

बल-(सं०नपुं०) सेना, स्थूलता, मोटापन, सामर्थ्य, वरुण वृक्ष, बलदेव, बलराम, रुधिर, कौवा, कोपल, शरीर, वीर्य, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम, मेघ, बादल, आश्रय, सहारा, भरोसा, भार उठाने की शक्ति, पार्श्व।

बल-(हिं० पुं०) लपेट, फेरा, ऐंठन, मरोड़, टेढ़ापन; सिकुड़न घूमाव, अन्तर; **बल खाना**-ऐंठन के साथ टेढ़ा होना; झुकना, घाटा सहना; **बल पड़ना**-अन्तर होना।

बलकट-(हिं० वि०) अग्रिम।

बलकना-(हिं० क्रि०) उफान खाना, उबलना, खौलना, आवेश में आना, उमड़ना।

बलकर-(सं० वि०) जिसमें बल की वृद्धि हो।

बलकल-(हिं०पुं०) देखो वल्कल।

बलकाना-(हिं०क्रि०) उबालना, खौलाना, उत्तेजित करना।

बलकुआ-(हिं०पु०) एक प्रकार का बांस।

बलकृत-(सं० वि०) शक्ति देने वाला।

बलक्ष-(सं०वि०) बलयुक्त।

बलचक्र-(सं० नपुं०) सेना का व्यूह, राजदण्ड।

बलज-(सं०नपुं०) खेत, नगर का द्वार, धान का ढेर, युद्ध, लड़ाई, द्वार।

बलजा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, रज्जु, रस्सी

बलद-(सं०पुं०) वृषभ, सांड़, बैल, असगंध, (वि०) बल देने वाला। **बल-दण्ड**-(सं० पुं०) व्यायाम करने का एक प्रकार का लकड़ी का ढाँचा।

बलदाऊ-(हिं०पुं०) बलदेव, बलराम।

बलदीनता-(सं०स्त्री०) ग्लानि, लज्जा।

बलदेव-(सं०पुं०) बलराम।

बलना-(हिं०क्रि०) जलना, दहकना।

बलनिग्रह-(सं० पुं०) शक्ति या बल का क्षय।

बलनेह-(हिं० पुं०) एक संकर राग का नाम।

बलन्धरा-(सं०स्त्री०) भीमसेन की पत्नी

बलपति-(सं०पुं०) इन्द्र का एक नाम।

बलपुच्छक-(सं०पुं०) काक, कौवा।

बलप्रद-(सं०वि०) बल देनेवाला, बल दायक

बलप्रसू-(सं०स्त्री०) बलराम की माता, रोहिणी।

बलबलाना-(हिं०क्रि०) ऊंट का बोलना, निरर्थक शब्द बोलना, व्यर्थ की बकवाद करना। **बलबलाहट**-(हिं०स्त्री०) ऊंट की बोली, व्यर्थ की बकवाद, अहंकार, घमंड।

बलबीज-(हिं०पुं०) ककही नामक पौधे का बीज।

बलबीर-(हिं० पुं०) बलराम के भाई, श्री कृष्ण।

बलभ-(सं० पुं०) एक विषैला कीड़ा।

बलभद्र-(सं०पुं०) अनन्त, बलदेव जी, लोध, नील गाय, एक पर्वत का नाम

बलभद्रा-(सं० स्त्री०) कुमारी, जंगली गाय।

बलभी-(हिं०स्त्री०) वह कोठरी जो घर के सबसे ऊपर वाली छत पर बनी हो, चौवारा।

बलम बलमा-(हिं० पुं०) पति, नायक।

बलय-(हिं०पुं०) देखो वलय।

बलराम-(सं०पुं०) श्री कृष्ण के बड़े भाई जो रोहिणी से उत्पन्न थे।

बलल-(सं०पुं०) बलराम।

बलवत्-(सं०वि०) शक्तिमान्,(पुं०) शिव।

बलवंड-(हिं०वि०) बलवान्। **बलवन्त**-(हिं०वि०) बलवान्, बली।

बलवर्धन-(सं० पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, (पुं०) सेना की वृद्धि।

बलवला-(सं०स्त्री०) गन्धक।

बलवान्-(सं० वि०) बलिष्ट, दृढ़, शक्तिमान्।

बलविवर्णिका-(सं० स्त्री०) दुर्गा का एक नाम।

बलविन्यास-(सं० पुं०) युद्ध के लिये सैन्य व्यूह की रचना।

बलवीर-(हिं०पु०) देखो बलबीर।

बलव्यसन-(सं० पुं०) सेना को तितर बितर करना।

बलव्यूह-(सं० पुं०) एक प्रकार की समाधि।

बलशाली-(सं०वि०) बलवान्।

बलशील-(सं०वि०) बलवान्, बली।

बलसंभव-(सं०पुं०) साठी का धान।

बलसुम-(हिं० वि०) बलुआ, जिसमें बालू हो।

बलसूदन-(सं०पुं०) विष्णु।

बलसेना-(सं०स्त्री०) सेनादल।

बलस्थिति-(सं०स्त्री०) शिविर, छावनी।

बलहर-(सं०वि०) बल नाशक।

बलहीन-(सं०वि०) बलशून्य, बल रहित।

बला-(सं०स्त्री०) बरियरा नाम का पौधा, दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम, लक्ष्मी, पृथ्वी, नाटकों में छोटी बहन के लिये संबोधन का शब्द, वह विद्या जिसको विश्वामित्र ने रामचन्द्र को सिखलाया था, इसके प्रभाव से युद्ध में भूख प्यास नहीं लगती।

बलाई-(हिं०स्त्री०) देखो वलाय।

बलाक-(सं० पुं०) बक, बगला, एक राक्षस का नाम।

बलाका-अत्यन्त, बहुत

बलाकी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का नाच, कामुकी स्त्री। **बलाकी**-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

बलाग्र-(सं० नपुं०) सेना का अगला भाग, सेनापति, (वि०) बलवान्।

बलाङ्क-(सं०पुं०) वसन्त ऋतु।

बलाट-(सं० पुं०) मुद्ग, मूंग।

बलाढ्य-(सं० वि०) शक्तिशाली, बलवान्।

बलात्-(सं०अव्य०) बलपूर्वक, हठ से। **बलात्कार**-(सं०पुं०) किसी की इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक कोई काम करना अत्याचार, अन्याय, किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छाके विरुद्ध संभोग करना।

बलात्मिका-(सं० स्त्री०) हाथीसूड़ नामक पौधा।

बलाधिक-(सं०पु०) अधिक बलशाली।

बलाध्यक्ष-(सं०पुं०) सेनापति।

बलानुज-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।

बलाय-(सं०पु०) वरुण वृक्ष, (हिं०पुं०) आपत्ति, विपत्ति, दुःख कष्ट, प्रेत आदि की बाधा, बहुत कष्ट देनेवाला मनुष्य।

बलाराति-(सं०पुं०) इन्द्र, विष्णु।

बलालक-(सं०पुं०) जल आमला।

बालवलेप-(सं०पुं०) दर्प, गर्व, अहङ्कार।

बलाश-(सं० पु०) गले का एक रोग।

बलास-(हिं०पुं०) बरुना नाम का पौधा।

बलाह-(हिं०पुं०) घोड़ा, अश्व।

बलाहक-(सं०पु०) मेघ, बादल, मोथा, एक दैत्य का नाम, श्रीकृष्ण के रथ के एक घोड़े का नाम, एक प्रकार का बगला, एक नाग का नाम।

बलि-(सं०पु०) भूमि का कर, उपहार, भेंट, चंवर का डंडा, पूजा सामग्री, पंच महायज्ञों में से एक खाने की वस्तु, अन्न, चढावा, नैवेद्य, वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जावे, प्रह्लाद का पोता जो दैत्यों का राजा था, (स्त्री०) सखी, छोटी बहन; **बलि चढना**-मृत्यु को प्राप्त होना; **बलि चढाना**-पशु को मारकर देवता को चढ़ाना; **बलि जाना**-न्योछावर होना; **बलि जाऊँ**-अपने प्राण मैं तुमपर न्योछावर करता हूँ।

बलिकर्म-बलिदान।

बलित-(हिं०वि०) बलिदान किया हुआ।

बलिदान-(सं०नपुं०) किसी देवता के उद्देश्य से नैवेद्य आदि पूजा की सामग्री चढ़ाना, दुर्गा आदि देवता को चढ़ाने के लिये बकरे आदि पशु को मारना। **बलिध्वंसी**-(हिं० पुं०) विष्णु। **बलिनन्दन**-(सं० पुं०) बलि के पुत्र बाणासुर। **बलिसूदन**-(सं०पुं०) बलिध्वंसी, विष्णु। **बलिपशु**-(हिं०पुं०) वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाता हो। **बलिपुष्ट**-(सं०पुं०, काक, कौवा। **बलिप्रदान**-(सं०पुं०) बलिदान। **बलिप्रिय**-(सं०पुं०) काक, कौवा। **बलिबन्धन**-(सं० पुं०) विष्णु।

बलिभ-(सं० पुं०) वृद्ध पुरुष, बूढा आदमी।

बलिभुक्-(सं०पुं०) कौवा।

बलिभृत्-(सं० वि०) कर देने वाला, आधीन।

बलिभोजन, बलिभोजी-(सं०पुं०) कौवा

बलिमन्दिर-(सं० नपुं०) अधोलोक, पाताल।

बलिया-(हिं०वि०) बलवान्।

बलिवर्द-(सं०पुं०) वृष, सांड़। **बलिवेश्म**-(सं०नपुं०) पाताल।

बलिवैश्वदेव-(सं०पुं०) भूतयज्ञ नामक पांच महायज्ञों में से चौथा यज्ञ जिसमें गृहस्थ पके हुए अन्न में से एक एक ग्रास लेकर मन्त्र पूर्वक भिन्न भिन्न स्थानों में रखता है।

बलिश-(सं०पुं०) मछली फँसाने की बंसी

बलिष्ठ-(सं०पुं०) ऊँट, (वि०) अधिक बलवान्।

बलिसद्म-(सं०नपुं०) रसातल।

बलिहन्-(सं०पुं०) विष्णु, वामनदेव।

बलिहारना-(हिं०क्रि०) बलिदान करना, न्योछावर करना।

बलिहारी-(हिं०स्त्री०) श्रद्धा भक्ति प्रेम आदि के कारण अपने को निछावर करना, **बलिहारी जाना**-निछावर होना; **बलिहारी लेना**-प्रेम दिखलाना।

बली-(सं०स्त्री०) चमड़े पर की झुर्री, वह रेखा जो चमड़े के सिकुड़ने से पड़ती हो, (वि०) पराक्रमी, बलवान्।

बलीक-(सं०नपुं०) ओलती, ओरी।

बलीन-(सं०पुं०) वृश्चिक, बिच्छू।

बलीबैठक-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बैठक।

बलीमुख-(सं०पुं०) बानर, बन्दर।

बलीयान्-(सं०पु०) गर्दभ, गदहा।

बलीवर्द-(सं०पुं०) वृषभ, बैल।

बलीशक-(सं०पुं०) आमड़े का पेड़।

बलु-(हिं०अव्य०) देखो वरु।

बलुआ-(हिं० वि०) रेतीला, जिसमें बालू अधिक मिला हो।

बलूच, बलूची-बलूचिस्तान देश का निवासी।

बलैया-(सं०स्त्री०) बला, बलाय; **बलैया लेना**-मंगल कामना सहित प्यार करना, किसी के रोग कष्ट आदि को अपने ऊपर ले लेना।

बलोत्कट-(सं०वि०) अति बल युक्त।

बल्कल-(हिं०पुं०) देखो वल्कल।

बल्कस-(सं० पुं०) वह तलछट जो आसव बनाने में नीचे बैठ जाता है।

बल्लभ-(हिं०पुं०) देखो वल्लभ।
बल्लभी-(हिं०स्त्री०) प्रिया।
बल्लम-(हिं०पुं०) बरछा, भाला, डंडा, सोंटा, वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसको प्रतिहारी या चोबदार राजाओं के आगे आगे लेकर चलते हैं।
बल्लव-(सं०पुं०) चरवाहा, रसोइयादार, भीम का वह नाम जो उन्होंने विराट के यहां रसोइये के रूप में रक्खा था।
बल्ला-(हिं० पुं०) लकड़ी का मोटा लंबा डंडा, मोटा दण्ड, गेंद मारने की लकड़ी का डंडा, नाव खेने का डंडा।
बल्लारी-(हि० स्त्री०) संपूर्ण जाति की एक रागिणी।
बल्ली-(हिं०स्त्री०) छोटा बल्ला, देखो वल्ली।
बल्व-(सं० नपुं०) ज्योतिष में एक करण का नाम।
बवंड़ना-(हिं०क्रि०) व्यर्थ इधर उधर घूमना।
बवंडर-(हि० पुं०) चक्रवात, चक्र की तरह घूमती हुई वायु, आंधी।
बव-(सं०पु०) ज्योतिष में पहले करण का नाम।
बवघूरा-(हिं०पुं०) बवंडर, चक्रवात।
बवन-(हिं०पुं०) देखो वमन।
बवना-(हि०क्रि०) छिटकना, बिखरना, छितराना, (पुं०) वामन, बौना।
बवरना-(हिं०क्रि०) देखो बौरना।
बवादा-(हि०स्त्री०) हल्दी की तरह की एक जड़ी।
बशिष्ट-(हिं०पु०) देखो बसिष्ठ।
बसंत-(हिं०पुं०) देखो वसन्त।
बसता-(हि०पुं०)हरे रंगकी एक चिड़िया
बसंती-(हिं०वि०) बसन्त ऋतु संबंधी, वसन्त का, सरसों के फूल के समान रंग, पीला कपड़ा (वि०) पीले रंग का
बसंदर-(हिं०पुं०) अग्नि, आग।
बस-(हिं०पुं०) देखो वश।
बसन-(हिं०पुं०) देखो वसन।
बसना-(हिं०क्रि०) स्थायी रूपसे रहना, **निवास करना**, रहना, जनपूर्ण होना, **ठहरना**, **सुगन्ध से** पूर्ण हो जाना, **डेरा डालना**, (पुं०)वह कपड़ा जिसमें **कोई वस्तु लपेट कर** रक्खी जाय, बेठन, थैली; **घर बसना**-गृहस्थी का बनना, कुटुम्ब सहित आनन्द से रहना; **मन में बसना**-याद रखना।
बसनि-(हिं०स्त्री०) निवास, रहना, वास।
बसवार-(हिं०पुं०) छौंक, बघार।
बसवास-(हिं०पुं०) निवास, रहना, रहने का ढंग या सुविधा, रहने का ढग, ठिकाना, स्थिति।
बसह-(हिं०पुं०) वृषभ, बैल।
बसा-(हिं०स्त्री०) वसा, चर्बी, बर्रे, भिड़।
बसात-(हिं०पुं०) देखो बिसात।
बसाना-(हिं०क्रि०) रहने का ठिकाना देना, ठहराना, टिकाना, रखना, बैठाना बास देना; महकाना, दुर्गन्ध करना; **घर बसाना**-गृहस्थी जमाना, कुटुम्ब सहित रहने की व्यवस्था करना।
बसिऔरा-(हिं०पुं०) बासी भोजन, सीतला अष्टमी आदि के वे दिन जिनको स्त्रियां बासी भोजन करती हैं। **बसिया**-(हिं०वि०) देखो बासी। **बसियाना**-(हिं०क्रि०) बासी हो जाना।
बसिष्ठ-(हिं०पुं०) देखो वसिष्ठ।
बसीकत-(हिं०स्त्री०) बसने का भाव या क्रिया, रहन।
बसीकर-(हिं०वि०) वश में करने वाला; **बसीकरन**-(हिं०पुं०) देखो वशीकरण।
बसीठ-(हिं०पुं०) दूत, सन्देश ले जाने वाला मनुष्य।
बसीठी-(हिं०स्त्री०) दौत्य, दूत का काम।
बसीना-(हिं०पुं०) बसन, रहन।
बसु-(हिं०पु०) देखो वसु।
बसुफला-(हिं०पुं०) एक वर्णवृत्त जिसको तारक भी कहते हैं।
बसुदेव-(हिं०पुं०) देखो वसुदेव।
बसुधा-(हिं०स्त्री०) देखो वसुधा।
बसुमती-(हिं०स्त्री०) देखो वसुमती।
बसुरी-(हिं०स्त्री०) बाँसुली। **बसुला, बसूला**-(हिं०पुं०) बढई का लकड़ी छीलने और गढ़ने का अस्त्र, **बसूली**-(हिं०स्त्री०) मेमार का बसुले के आकार का छोटा अस्त्र।
बसेरा-(हिं०वि०) रहने वाला, बसने वाला, (पुं०) यात्रियों का टिकने का स्थान, वह स्थान जहां पक्षी रात में रहते है, निवास। **बसेरा करना**-टिकना, डेरा देना; **बसेरा लेना**-टिकना, ठहरना; **बसेरा देना**-ठहराना, ठहरने का स्थान देना।
बसेरी, बसैया-(हिं०वि०) निवासी, रहने वाला।
बसोबास-(हिं०पुं०) निवास स्थान।
बसौंधी-(हिं०स्त्री०) एक प्रक प्रकार की रवड़ी जो सुगन्धित और लच्छेदार होती है।
बस्त-(सं०पुं०) सूर्य, बकरा; **बस्तकर्ण**-शाल का वृक्ष, असना का पेड़; **बस्तगन्धा**-अजमोदा।
बस्तर-(हिं०पुं०) देखो वस्त्र।
बस्ती-(हि०स्त्री०) जनपद, निवास, बहुत से घरोंका समूह जिसमें लोग बसते है
बस्तु-(हिं० पुं०) देखो वस्तु। **बस्त्र**-(हिं०पुं०) देखो वस्त्र। **बस्य**-(हिं०वि०) देखो वश्य।
बस्साना-(हिं०क्रि०) दुर्गन्ध देना।
बहँगा-(हिं०पुं०) बड़ी बँहगी। **बहँगा**-(हिं०स्त्री०) तराजू के आकार का एक ढांचा जिसके दोनों ओर के पलरों पर बोझ ले जाते हैं, काँवर।
बहकना-(हिं०क्रि०) मार्ग भ्रष्ट होना, भटकना, किसी की बात या भुलावे में आ जाना, या कोई कामकर बैठना, किसी बात में लग जाने पर शान्त होना, मद से चूर रहना, आपे में न रहना, चूकना, बिना भला बुरा बिचारे **बहकी बहकी बातें करना**, मतवाले की तरह बकबक करना।
बहकाना-(हिं०क्रि०)ठीक लक्ष्य या स्थान से दूसरी ओर ले जाना, फेरना या कर देना, भुलावा देना, भटकाना, शान्त करना, बहलाना, बातों मे फुसलाना, भरमाना। **बहकावट**-(हिं० स्त्री०) बहकाने की क्रिया या भाव।
बहतोल-(हिं०स्त्री०) पानी बहाने की नाली, बरहा।
बहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और दो की सख्या का, (पुं०) सत्तर और दो की संख्या ७२; **बहत्तरवाँ**-जिसका स्थान बहत्तर पर पड़े।
बहदुरा-(हिं०पुं०) एक प्रकारका कीड़ा जो चने की उपज को नष्ट करताहै।
बहन-(हिं० स्त्री०) देखो बहिन, (स्त्री०) बहने की क्रिया या भाव।
बहना-(हिं०क्रि०) हट जाना या दूर होना, पानी की धारा में पड़कर जाना, ऊपर रख कर ले चलना, व्यर्थ खर्च हो जाना, उठना, चलना, धारण करना, रखना, हवा का चलना, बहुतायत से मिलना, द्रव रूप के पदार्थ का किसी ओर चलना, बुरा या अधम होना, ठीक लक्ष्य से हट जाना, फिसलना, बूंद बूंद करके या धारा रूप में निकलना, मारा मारा फिरना, सत् मार्ग से विचलित होना, गर्भपात होना, निर्वाह करना, धन डूब जाना, कुमार्गी होना; **बहती गंगा में हाथ धोना**-ऐसी बात से लाभ उठाना जिससे अनेक लोग लाभ उठाते हों।
बहनापा-(हिं०पु०) बहन का सम्बन्ध।
बहनी-(हिं०स्त्री०) वह्नि, आग, ऊख का रस रखने की ठिलिया।
बहनु-(हिं०पुं०) देखो वहन, यान।
बहनेली-(हिं०स्त्री०) वह जिसके साथ बहनापा हो।
बहनोई-(हिं०पुं०) बहन का पति।
बहनौता-(हिं०पुं०) बहिन का पुत्र।
बहनौरा-(हिं०पुं०) बहिन का ससुराल
बहम-(हिं०पुं०) संकट, भ्रम।
बहर-(हिं०पुं०) समुद्र, लय।
बहरा-(हिं०पुं०) वह जो कान से कम सुनता हो, जो बिलकुल न सुनता हो, **बहराना**-(हिं० क्रि०) भुलावा देना, बहकाना, दुःख की बात भुलाने के लिये ऐसी बात कहना जिसमें चित्त प्रसन्न हो जावे।
बहरिया-(हिं०पुं०) वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिर के वे कर्मचारी जो मन्दिर के बाहर रहते हैं।
बहरियाना-(हिं०क्रि०) बाहर निकालना, अलग करना, अलग होना, बाहर की ओर होना, नाव का किनारे से हट कर मझधार की ओर जाना या ले जाना।
बहरू-(हिं०पुं०) मझोले आकारका एक वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट और सुन्दरा होती है।
बहरूपिया-(हिं०पुं०) वह जो नाना प्रकार के रूप धारण करता हो।
बहल-(सं०पुं०) नाव, ईख, (वि०) पुष्ट, प्रचुर, अधिक स्थूल, मोटा, (हिं०क्रि०) बैल से खींची जाने वाली एक प्रकार की छतरीदार गाड़ी।
बहलत्वच्-(सं०पु०)सफ़ेद लोध, भोजपत्र का वृक्ष।
बहलना-(हिं०क्रि०) दुःखकी बात भूल कर चित्त का दूसरी ओर लगना, मनोरञ्जन होना, चित्त प्रसन्न होना।
बहला-(सं०स्त्री०) बड़ी इलायची।
बहलाना-(हिं०क्रि०) दुःख की बात भुलवाकर मन को दूसरीओर फेरना, भुलवा, देना, बातों में लगाना, चित्त प्रसन्न करना, मनोरञ्जन करना।
बहलाव-(हिं०पुं०) मनोरंजन, प्रसन्नता, बहलने या बहलाने का भाव।
बहलिया-(सं०पुं०) देखो बहेलिया।
बहली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छतरीदार या परदेदार बैलगाड़ी, खड़खड़िया।
बहल्ला-(हिं०पुं०) प्रसन्नता, आनन्द।
बहल्ली-(हिं०पुं०)मल्ल युद्धकी एक युक्ति
बहसना-(हिं०क्रि०) वादाविवाद करना, तर्क वितर्क करना, होड़ लगाना।
बहाना-(हिं०क्रि०) द्रव पदार्थों को नीचे की ओर छोड़ना, ढलकाना, लुढ़काना, वृथा व्यय करना, हवा चलाना, फेंकना, डालना, सस्ता बेचना, पानी की धारा में डालना, लगातार बूंद या धारा के रूप में छोड़ना, खोना, गँवाना।
बहारना-(हिं०क्रि०) देखो बुहारना।
बहारी-(हिं०स्त्री०) देखो बुहारी।
बहाव-(हिं०पुं०) प्रवाह, बहनेकी क्रिया या भाव, बहती हुई धारा, बहता हुआ जल आदि।
बहिः-(सं०अव्य०) बाहर।
बहिअर-(हिं०स्त्री०) स्त्री।
बहिक्रम-(हिं०पुं०) आयुध, व्यय।
बहित्र-(सं०पुं०) देखो वहित्र, नाव।
बहिन-(हिं०स्त्री०) भगिनी, माता की बेटी। **बहिनापा**-(हिं०पुं०)देखो बहनापा
बहियाँ-(हिं०स्त्री०) बाहु, बांह।
बहिरंग-(सं०वि०) बाहर वाला, बाहरी, जो मण्डली में न हो।
बहिर-(हिं०वि०) देखो बहरा।
बहिरत-(हिं०अव्य०) बाहर।
बहिराना-(हिं०क्रि०) निकाल देना, बाहर करना; **बहिर्गत**-(सं०वि०) जो बाहर गया हो, अलग, जुदा; **बहिर्जानु**-(सं०अव्य०) दोनों हाथों को घुटनों के बाहर किये हुए; **बहिर्द्वार**-(सं०नपुं०) तोरण, बाहरी द्वार; **बहिर्ध्वजा**-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी; **बहिर्निर्गमन**-(सं०नपुं०) बाहर जाना; **बहिर्भूत**-(सं०वि०) अलग, जो बाहर

गया हो; **बहिर्भूमि**-सं०स्त्री०) बस्ती के बाहर की भूमि; **बहिर्मुख**-(सं०वि०) पराङ्मुख, विरुद्ध ; **बहिर्यान**-(सं०नपुं०) बहिर्गमन; **बहिर्लम्ब**-(सं०वि०) बाहर की ओर लम्बायमान, **बहिर्लापिका**-(सं०स्त्री०) वह पहेली जिसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दों में नहीं रहता, बाहर रहता है

बहिला-(हिं०वि०) वन्ध्या, बांझ ।

बहिष्क-(सं०वि०) बहिःस्थित, जो बाहर हो ; **बहिष्करण**-(सं०नपुं०) बाहर करना ; **बहिष्कार**-(सं०पुं०) निकालना, बाहर करना, दूर करना, हटाना ; **बहिष्कृत**-(सं०वि०) त्यागा हुआ, अलग किया हुआ; **बहिष्कृति**-(सं०स्त्री०) बाहर करने की क्रिया ।

बहिष्प्राण-(सं०वि०)जिसके प्राण बाहर निकल गये हों ।

बही, बहीखाता-(हिं०स्त्री०) हिसाब किताब लिखने की पुस्तक ।

बहीर-(हिं०स्त्री०) जनसमूह, भीड़भाड़, सेना के साथ चलनेवाले सेवक, दुकानदार आदि का झुंड, सेना की सामग्री, (अव्य०) बाहर ।

बहीरा-(हिं०पुं०) देखो बहेड़ा ।

बहु-(सं०वि०) एक से अधिक, अधिक, (स्त्री०) देखो बहू ; वधू ।

बहुक-(सं०पुं०) केकड़ा, चातक, पपीहा, छोटा तालाब, (वि०) अधिक मूल्य देकर मोल लिया हुआ ।

बहुकण्टक-(सं० पु०) छोटा गोखरू, जवासा, खजूर का वृक्ष, सहिजन का वृक्ष ।

बहुकुन्द-(सं०पुं०) सूरण, ओल ।

बहुकन्या-(सं०स्त्री०) घृतकुमारी, घिकुआर

बहुकर-(सं०पु०) ऊँट, (वि०) झाड़ू देने वाला, बहुत से काम करने वाला । **बहुकरी**-(सं०स्त्री०) मार्ज्जनी, झाड़ ।

बहुक्षम-(सं०वि०) अधिक सहने वाला ।

बहुगन्ध-(सं०नपुं०) दारचीनी, पीत चन्दन; **बहुगन्धदा**-(सं०स्त्री०) कस्तूरी; **बहुगन्धा**-(सं०स्त्री०) चम्पा, जूही, स्याह जीरा ।

बहुगुण-(सं०वि०) अनेक गुणों से युक्त, (पु०) गन्धर्वों का एक भेद ।

बहुगुना-(हिं०पुं०) चौड़े मुंह का एक गहरा पात्र जो अनेक कामों में लाया जाता है ।

बहुज्ञ-(सं०वि०) बहुदर्शी, बहुतसी बातों को जानने वाला ।

बहुग्रन्थि-(सं०पु०) झाऊ का पेड़ ।

बहुचारी-(सं०वि०) अनेक स्थानों में घूमने वाला ; **बहुचित्र**-(सं०वि०) अनेक प्रकार का; **बहुजल्प**-(सं०वि०) बहुत बोलने वाला, बकवादी ; **बहुजात**-(सं०वि०) तेज चलने वाला;

बहुटनी-(हिं०स्त्री०) बांह पर पहरने का एक गहना ।

बहुत-(हिं०वि०) आवश्यकता से अधिक, अनेक, परिमाण, मात्रा या गिनती में अधिक, पर्याप्त, (क्रि०वि०) अधिक परिमाण में; **बहुत अच्छा**-स्वीकार सूचित करने वाला वाक्य; **बहुत करके**-अधिकतर, प्रायः; **बहुत कुछ**-संख्या में अधिक; **बहुत खूब**-वाह वाह, बहुत अच्छा ।

बहुतक-(हिं०वि०) बहुत से, बहुतेरे ।

बहुतर-(सं०वि०) प्रभूत, अनेक ।

बहुताँ-(हिं०वि०) बहुत ।

बहुता-(सं०स्त्री०) अधिकता, बहुत्व ; **बहुताइत**-(सं०स्त्री०) देखो बहुतायत ; **बहुताई**-(हिं० स्त्री०) अधिकता ; **बहुतात, बहुतायत**-(हिं० स्त्री०) अधिकता, ज्यादती ।

बहुतृण-(सं०नपुं०) काकमाची ।

बहुतृण-(सं०नपुं०) मूंज नाम की घास ।

बहुतेरा-(हिं०वि०) अधिक, बहुतसा (क्रि०वि०) बहुत परिमाण में, बहुत प्रकार से; **बहुतेरे**-(हिं०वि०) संख्या में अधिक, बहुत से; **बहुत्व**-(सं०पुं०) आधिक्य, अधिकता ।

बहुदर्शिता-(सं०स्त्री०) बहुत सी बातों का ज्ञान; **बहुदर्शी**-(सं०पुं०) जिसने बहुत कुछ देखा हो, अनुभवी ।

बहुदल, बहुदला-(सं०) चेंच नाम का साग ।

बहुदुग्ध-(सं०पुं०) गोधूम, गेंहू, थूहर का पेड़ ।

बहुधन-(सं०वि०) धनी; **बहुधनेश्वर**-(सं०पु०) कुबेर ।

बहुधर-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।

बहुधा-(सं०अव्य०) अनेक प्रकार या ढंग से, प्रायः अधिकतर; **बहुधात्मक**-स्वयम्भु ।

बहुधान्य-(सं०वि०) जिसके पास बहुत अन्न हो, (नपुं०) बारहवें संवत्सर का नाम ।

बहुधार-(सं०नपुं०) एक प्रकार का हीरा

बहुध्वज-(सं०पुं०) शूकर, सुअर ।

बहुनाद-(सं०पुं०) शंख ।

बहुपत्र-(सं०पु०) अभ्रक, अबरख, प्याज, हरताल; **बहुपत्री**-(सं०स्त्री०) घीकुआर, तुलसी ।

बहुपत्नीक-(सं०वि०) जिनके अनेक स्त्रियां हो ।

बहुपद-(सं०पुं०) बरगद का पेड़ ।

बहुपशु-(सं०वि०) जिसके पास बहुत से पशु हों

बहुपुत्र-(सं०वि०)जिसके बहुत से पुत्र हों

बहुपुष्प-(सं०पु०) नीम का वृक्ष ।

बहुप्रकार-(सं०वि०) अनेक तरह का ।

बहुप्रज-(सं०वि०) जिसके बहुत से संतान हो; **बहुप्रद**-(सं०वि०) बहुत देने वाला, (पुं०) शिव, महादेव ।

बहुफल-(सं०पु०)कदंब वृक्ष, बर का पेड़

बहुफली-(सं०स्त्री०) जंगली गाजर ।

बहुबल-(सं०पु०) सिंह, शेर, (वि०) बलवान् ।

बहुबाहु-(सं०पुं०) रावण ।

बहुबीज-(सं०पुं०)बिजौरी नीबू, शरीफा

बहुभाषी-(सं०वि०) बहुत बोलने वाला, बकवादी, (पुं०) वह जो अनेक भाषा जानता हो ।

बहुभुजक्षेत्र-(सं०पुं०) रेखा गणित में वह क्षेत्र जो चारों ओर अनेक रेखाओं से घिरा हो ।

बहुभुजा-(सं०स्त्री०) दशभुजा, दुर्गा ।

बहुभोजन-(सं०नपुं०) अतिशय भोजन ।

बहुमञ्जरी-(सं०स्त्री०) तुलसी ।

बहुमत-(सं०पु०) बहुत से मनुष्यों का अलग अलग मत, बहुत से लोगों का मिलकर एक मत ।

बहुमल-(सं०पु०) सीसा नामक धातु ।

बहुमान-(सं०वि०) अधिक माननीय; **बहुमानी**-(सं०वि०) अधिक आदरणीय; **बहुमान्य**-(सं०वि०) जिसका बहुत से लोग आदर करते हों ।

बहुमुख-(सं०पु०) अनेक मुख ।

बहुमूत्र-(सं०पु०) वह रोग जिसमें मूत्र बहुत होता है ।

बहुमूर्ति-(सं०वि०) अनेक रूप धारण करनेवाला, बहुरूपिया ।

बहुमूलक-(सं०नपु०) उशीर, खस ;

बहुमूला-(सं०स्त्री०) सतावर, आमड़े का वृक्ष ।

बहुमूल्य-(सं०वि०) अधिक दाम का ।

बहुयाजी-(सं० वि०) बहुत से यज्ञ करने वाला ।

बहुरंगा-(हिं०वि०) चित्र विचित्र, अनेक रंग का, अस्थिर चित्त का; **बहुरंगी**-(हिं०वि०) अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाला, अनेक रंग दिखलाने वाला, बहुरूपिया ।

बहुरना-(हिं०क्रि०)वापस आना, लौटना, फिर हाथ में आना, फिर मिलना ।

बहुराशिक-(सं०पुं०) गणित में एक त्रैराशिक द्वारा दूसरे त्रैराशिक की निर्दिष्ट राशि जानने की विधि ।

बहुरि-(हिं०क्रि०वि०) इसके उपरान्त, फिर से ।

बहुरिया-(हिं०स्त्री०) नई बहू ।

बहुरी-(हिं०स्त्री०) चवर्ण, चबेना ।

बहुरूप-(सं०पुं०) शिव, विष्णु, कामदेव, ब्रह्मा, गिरगिट, केश, ताण्डव नृत्य का एक भेद, (वि०) नाना रूप युक्त । **बहुरूपा**-(सं०स्त्री०) दुर्गा, अग्नि की सात जिह्वा में से एक; **बहुरूपिया**-(हिं०पुं०) अनेक रूप धारण करने वाला मनुष्य ।

बहुरोमा-(सं०पुं०) मेढा, बन्दर, (वि०) जिसके शरीर में बहुत रोवें हों ।

बहुल-(सं०नपुं०) आकाश, सफ़ेद मिर्च, अग्नि, (वि०) प्रचुर, अधिक ; **बहुल गन्धा**-छोटी इलायची ; **बहुलता**-(सं०स्त्री०) अधिकता ।

बहुला-(सं०स्त्री०) एला, इलायची, नील का पौधा, कृत्तिका नक्षत्र, एक गाय का नाम; **बहुला चौथ**-भादों बदी चौथ जिस दिन स्त्रियाँ व्रत करती है ।

बहुली-(हिं०स्त्री०) एला, इलायची ।

बहुवचन-(सं०पुं०) व्याकरण की एक परिभाषा जिसमें एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है ।

बहुवर्ण-(सं०पुं०)अनेक वर्ण, अनेक जाति

बहुवादी-(सं०वि०) बहुत बोलने वाला ।

बहुवार-(सं०पु०) अनेक बार ।

बहुवारक-(सं०पु०) लिसोड़े का वृक्ष ।

बहुवार्षिक-(सं०वि०) कई वर्षो तक होने वाला ।

बहुविघ्न-(सं०वि०) अनेक प्रकार की बाधायें ।

बहुविद-(सं०वि०) बहुत सी बातें जानने वाला ।

बहुविध-(सं०वि०) नाना प्रकार का ।

बहुविस्तीर्ण-(सं०वि०) बहुत लंबा चौड़ा

बहुव्ययी-(सं०वि०) अतिव्ययी ।

बहुव्रीहि-(सं०पुं०) एक प्रकार का समास जिसमें दो या दो से अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है वह किसी अन्य पद का विशेषण होता है ।

बहुशक्ति-(सं०वि०) बहुत शक्तिशाली ।

बहुशत्रु-(सं०वि०) जिसके अनेक शत्रु हों

बहुशिख-(सं०वि०) अनेक शाखा युक्त ।

बहुश्रृङ्ग-(सं०पुं०) विष्णु ।

बहुश्रुत-(सं०वि०) जिसने अनेक विद्वानों से भिन्न भिन्न शास्त्रों की बातें सुनी हो

बहुसंख्यक-(सं०पु०) गिनती में बहुत ।

बहुसार-(सं०पुं०) खदिर, खैर ।

बहुसुत-(सं०वि०)जिसके बहुत सन्तान हों

बहुस्वन-(सं०पुं०) पेचक, उल्लू पक्षी ।

बहूंटा-(सं०पुं०) बाँह पर पहरने का एक आभूषण ।

बहू-(हिं०स्त्री०) पुत्रवधू, पतोहू, नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन, पत्नी, स्त्री ।

बहूदन-(सं०नपुं०) प्रचुर अन्न ।

बहूपमा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जाते है ।

बहेंगवा-(हिं०पुं०) भुजंगा पक्षी ।

बहेंत-(हिं०स्त्री०) ताल या गड्ढे में बहकर जमी हुई मिट्टी ।

बहेचा-(हिं०पुं०) घड़े का ढाँचा जो चाक पर से गढ़ कर उतारा जाता है

बहेड़ा-(हिं०पु०) अर्जुन की जाति का एक बड़ा तथा ऊँचा वृक्ष, इसके फल औषधि के काम में आते हैं ।

बहेतू-(हिं०वि०) इधर उधर मारा फिरने वाला, व्यर्थ घूमने वाला ।

बहेरा-(हिं०पुं०) देखो बहेड़ा ।

बहेला-(हिं०पुं०)मल्लयुद्ध की एक युक्ति

बहेलिया-(हिं०पुं०) पशु पक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करने वाला, चिड़ीमार, व्याध ।

बहोर-(हिं०पुं०) फेरा, पलटा, (क्रि०वि०) फिर से । **बहोरना**-(हिं०क्रि०) लौटाना ।

बहोरि-(हिं०अव्य०) पुनः, फिर से ।

बह्वक्षर-(सं०वि०)अनेक अक्षरों का पद
बह्वाशी-(सं०वि०) बहुत भोजन करने वाला।
बां-(हिं०पुं०) गाय बैल के बोलने का शब्द, (पुं०) बार, बेर, दफा।
बांक-(हिं०पु०) बांह पर पहरने का एक आभूषण, एक प्रकार का व्यायाम, नदी का मोड़, पैर में पहरने का एक प्रकार का चांदी का गहना, गन्ना छीलने का एक अस्त्र, हाथ में पहरने की चौड़ी चूड़ी, एक प्रकार की छोटी टेढ़ी छूरी, वक्रता, टेढ़ापन, लोहेका शिकंजा, (वि०) टेढ़ा, घुमावदार, तिरछा, बांका।
बाँकड़ा-(हिं० वि०) शूरवीर, साहसी, (पुं०) धुरे के नीचे आड़े बल लगी हुई लकड़ी जो छकड़े में जड़ी होती है
बाँकड़ी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फीता जो बादले और कलावत्तू से बनाया जाता है।
बाँकडोरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का शस्त्र।
बांकनल-(हिं०पुं०) सोनारों की धातु की बनी हुई पतली टेढ़ी फुकनी।
बाँकना-(हिं० क्रि०) टेढ़ा करना या होना।
बांकपन-(हिं०पुं०) तिरछापन, टेढ़ापन, छबि, शोभा, सजावट, बनावट, छैलापन।
बांका-(हिं०वि०) वीर, बहादुर, बनाठना, सुन्दर, छैला, टेढ़ा, तिरछा, (पुं०) लोहे का बना हुआ एक टेढ़ा शस्त्र, वह बालक या युवा पुरुष जो सुन्दर वस्त्र और अलंकारों से सजाकर पालकी या घोड़े पर बैठाकर बारात के साथ निकाला जाता है।
बाँकिया-(हिं० पुं०) नरसिंघा नाम का टेढ़ा बाजा जो फूंककर बजाया जाता है।
बांकुर, बांकुरा-(हिं०वि०) पतली धार का, टेढ़ा, बांका, चतुर।
बांगड़-(हिं०वि०) मूर्ख।
बांगर-(हिं०पुं०) छकड़ा गाड़ी का लंबे बल बंधा हुआ बांस, एक प्रकार का बैल, वह भूमि जो झील, नदी आदि के बढ़ने पर कभी पानी में नहीं डूबती।
बांगा-(हिं०पुं०) बिना ओटी हुई रूई, कपास।
बांगुर-(हिं०पुं०)पशु पक्षियों को फँसाने का जाल, फंदा।
बांचना-(हिं० क्रि०) पढ़ना, बाकी न बचना, छोड़ देना।
बाँछना-(हिं०क्रि०) अभिलाषा करना, चाहना, इच्छा करना, अच्छी बुरी वस्तु को चुनना या छांटना।
बाँछा-(हिं०स्त्री०)देखो वाञ्छा, इच्छा।
बांछित-(हिं०वि०) देखो वाञ्छित, इच्छा किया हुआ। **बांछी**-(हिं०वि०) अभिलाषा या इच्छा करने वाला, चाहने वाला।
बाँझ-(हिं० स्त्री०) वन्ध्या, वह स्त्री जिसको सन्तान न होती हो, एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष। **बाँझपन, बाँझपना**-(हिं० पुं०) बांझ होने का भाव, वन्ध्यात्व।
बांट-(हिं०पुं०) बांटने की क्रिया या भाव, भाग, घास या पुआल का बना हुआ रस्सा; **बांटे पड़ना**-बांट में आना। **बाँटचूट**-(हिं०स्त्री०) भाग देना दिलाना। **बाँटना**-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु के अनेक विभाग करके अलग अलग रखना, वितरण करना, प्रत्येक व्यक्ति को थोड़ा-थोड़ा देना।
बाँटा-(हिं० पुं०) बांटने की क्रिया या भाव, विभाग।
बाँड़-(हिं०पु०) दो नदियों के संगम के बीच की भूमि।
बाँड़ा-(हिं०पुं०) वह पशु जिसकी पूंछ कट गई हो, वह पुरुष जिसके लड़के बाले न हों, (वि०) बिना पूंछ का।
बांड़ी-(हिं०स्त्री०) बिना पूंछ की गाय, कोई मादा पशु जिसकी पूंछ कट गई हो, छोटी लाठी।
बाँड़ीदाज-(हिं० पुं०) लकड़ी लड़ने वाला, उपद्रवी।
बाँदर-(हिं०पुं०) देखो बन्दर।
बाँदा-(हिं०पुं०) किसी वृक्ष के ऊपर उगी हुई दूसरी वनस्पति।
बाँदी-(हिं०स्त्री०) दासी, लौंड़ी।
बाँदू-(हिं०पु०) बंधुवा।
बाँध-(हिं०पुं०) मिट्टी ईंट या पत्थर का बना हुआ धुस जो जलाशय के किनारे पर पानी रोकने के लिये बनाया जाता है।
बाँधना-(हिं०क्रि०) रस्सी तागे आदि से किसी पदार्थ को बंधन में करना, गांठ लगाकर कसना, पकड़ कर बन्द करना, घर आदि बनाना, ठीक करना, किसी चूर्ण को हाथों में दबाकर पिण्ड बनाना, पानी का बहाव रोकने का प्रबंध करना, नियत करना, मन्त्र-तन्त्र द्वारा किसी शक्ति का अवरोध करना, प्रेमपाश में बद्ध करना, रचना के लिये सामग्री इकट्ठा करना, मनमें बैठाना, स्थिर करना।
बाँधनी पौरि-(हिं० पुं०) पशुओं को बांधने का स्थान।
बाँधनू-(हिं०पुं०)उपक्रम, कल्पित वार्ता, मनगढंत, मिथ्या अभिमान, योग, झूठा दोष, किसी होने वाली बात के विषय में पहले ही से तरह तरह के विचार कर लेना, वह बंधन जो रंगरेज लोग चुंदरी या लहरियादार रंगाई के लिये कपड़ेमें बांध देते हैं, कलंक।
बांधव-(हिं० पुं०) देखो बान्धव; भाईबन्द।
बाँबी-(हिं०स्त्री०) दीमक के रहने का भीटा, सर्प की बिल, बंबीठा।
बाँवना-(हिं०क्रि०) रखना।
बावाँरथी-(हिं०पुं०) वामन, बौना।
बाँयाँ-(हिं०वि०) देखो बायाँ।
बाँस-(हिं० पुं०) तृण जाति की एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गांठ होती है और गांठों के बीच का स्थान पोला होता है, भाला, पीठ की रीढ़, नाव खेने की लग्गी, सवा तीन गज या सौ इञ्च की एक नाप, लाठा; **बाँस पर चढ़ना**-अपमानित होना; **बाँस पर चढ़ाना**-कलंकित करना, **बाँसों उछलना**-बहुत प्रसन्न होना।
बाँसपूर-(हि० पुं०) एक प्रकार का बहुत महीन वस्त्र।
बाँसफल-(हिं०पु०)एक प्रकारका धान।
बाँसली-(हिं० स्त्री०) मुरली, बांसुरी, रुपया पैसा रखने की एक प्रकार की पतली जालीदार लंबी थैली जो कमर में बांधी जाती है।
बाँसा-(हिं०पु०) बांस की छोटी नली जो हल के साथ बँधी रहती है जिसमें अन्न भरा रहता है और खेत में गिरता जाता है, नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनों नयनों के बीच में रहती है, एक प्रकार का छोटा पौधा।
बाँसागड़ा-(हिं० पुं०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति।
बाँसी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का कोमल पतला बाँस, एक प्रकार की गेहूँ, एक प्रकार की घास।
बाँसुरी-(हिं० स्त्री०) मुख से फूंककर बजाने का एक बाजा, बांसुली।
बाँसुली-(हिं०स्त्री०) देखो बाँसुरी; एक प्रकार की घास जो उपज को हानि पहुँचाती है; **बाँसुली कन्द**-एक प्रकार का जंगली सूरन।
बाँह-(हिं० स्त्री०) बाहु, भुजा, बल, शक्ति, भुजबल, कुरते, अंगे, कोट आदि का बाहु का भाग, शरण, सहारा, भरोसा, सहायक, एक प्रकार का व्यायाम जो दो आदमी मिलकर करते हैं; **बाँह गहना या पकड़ना**-सहायता करना, विवाह करना; **बाँह देना**-सहायता करना; **बाँह बोल**-सहायता करने के वचन; **बाँह टूटना**-निराश्रय होना, सहायक न रह जाना; **बाँह तोड़**-मल्ल युद्ध की एक युक्ति; **बाँह मरोड़**-मल्ल युद्धकी एक युक्ति।
बाँही-(हिं०स्त्री०) देखो बाँह।
बा-(हि० पुं०) जल, पानी।
बाइ-(हिं०स्त्री०) देखो बाई।
बाइबिरंग-(हिं० स्त्री०) विडंग नामक औषधि।
बाइबिल-ईसाइयों की धर्म पुस्तक।
बाईसवां-(हिं०वि०) देखो बाईसवां।
बाई-(हिं० स्त्री०) त्रिदोष में से बात दोष जिसके प्रकोप से मनुष्य बेसुध हो जाता है; स्त्रियों का आदर सूचक शब्द जो वेश्याओं के नाम के आगे लगाया जाता है; **बाई की झोंक**-वायु का आवेश; **बाई चढ़ना**-गर्व से अधिक बकबक करना; **बाई पचना**-घमंड टूटना।
बाईस-(हिं० वि०) बीस और दो की संख्या का, (पु०) बीस और दो की सख्या २२। **बाईसवां**-(हिं० वि०) जो क्रम से बाईस के स्थान पर हो।
बाईसी-(हिं० स्त्री०) बाईस वस्तुओं का अथवा बाईस पद्यों का समूह।
बाउ-(हिं०पु०) वायु, पवन, हवा।
बाउर-(हिं० वि०) बावला, पागल, भोला-भाला, अज्ञान, मूर्ख, मूक, गूंगा।
बाउरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी घास।
बाउल-(हिं० पुं०) एक वैष्णव संप्रदाय जिसके प्रवर्तक चैतन्य महाप्रभु कहे जाते हैं।
बाऊ-(हिं०पु०)वायु, पवन; **बाएँ**-(हिं० क्रि०वि०) बाईं ओर।
बकचाल-(हिं० वि०) बड़ा बकवादी, अधिक बोलने वाला।
बाकना-(हिं०क्रि०) बकबक करना।
बाकरी-(हिं० स्त्री०) पाँच महीने की ब्याई हुई गाय।
बाकल-(हिं०पु०) देखो वल्कल।
बाकसी-(हिं० क्रि०) जहाज के पाल को एक ओर से दूसरी ओर करना।
बाका-(हिं०पु०) वाक् वाणी।
बाकुंभा-(हि०पु०) जलकुंभीका सुखाया हुआ केसर।
बाकुल-(हिं०पुं०) देखो वल्कल।
बाखरि-(हिं०स्त्री०) देखो बखरी।
बागडोर-(हिं० स्त्री०) घोड़े की लगाम में बांधने की रस्सी, लगाम।
बागना-(हिं० क्रि०) चलना, फिरना, घूमना, टहलना, बोलना।
बांगर-(हिं० पुं०) नदी के किनारे की वह ऊँची भूमि जहां तक नदी का पानी कभी नहीं पहुँचता।
बागल-(हिं० पुं०) बक, बगला।
बागुर-(हिं० पुं०) पशु या पक्षी फँसाने का जाल।
बागेसरी-(हिं० स्त्री०) सरस्वती, संपूर्ण जाति की एक रागिणी।
बाघंबर-(हिं० पुं०) बाघ की खाल जो बबिछाने के काम में आती है, एक प्रकार का रोवेंदार कम्बल।
बाघ-(हि० पुं०) सिंह, शेर।
बाघा-(हिं० पुं०) चौपायों का पेट फूलने का एक रोग। **बाघी**-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की गिलटी जो बहुधा गरमी के रोगियों के जांघ और पैर के जोड़ में हो जाती है।
बाचना-(हिं० क्रि०) सुरक्षित रखना, बचाना।
बाचर-(हिं० वि०) देखो वाच्य।

बाचा-(हिं० स्त्री०) बोलने की शक्ति, वार्तालाप, बातचीत; **बाचाबंध**-जिसने किसी प्रकार की प्रतिज्ञा की हो।

बाछ-हिं० पुं० चन्दा बेहरी।

बाछड़ा-हिं०पुं० देखो बछड़ा। **बाछा**-हिं० पुं० गाय का बच्चा, बछवा, बच्चा लड़का।

बाज-(हिं० पुं०, घोड़ा, बाजा, सितार में का पक्के लोहे का तार, बजाने की रीति या ढंग, ताने के सूत में देने की लकड़ी।

बाजड़ा-(हिं० पुं०) देखो बाजरा।

बाजन-हिं०पुं०) देखो बाजा। **बाजना**-(हिं० क्रि० बाजे आदि का बजना, प्रसिद्ध होना, कहलाना, लड़ना, भिड़ना, सामने पहुँच जाना, चोट लगना।

बाजरा-(हिं० पुं०) एक प्रकार की बड़ी घास जिसकी बालों मे हरे रंग के छोटे-छोटे दाने लगते है, जोंधरी।

बाजहर-(हिं० पुं०) जहरमोहरा।

बाजा-(हिं०पुं०) वाद्य, बजाने का कोई यन्त्र जिसमें से राग रागिणी निकाली जाती है अथवा जो ताल देने के लिये बजाया जाता है; **बाजा गाजा**-अनेक प्रकार के बाजों का समुदाय।

बाजारू-हिं० वि०) हाट संबंधी।

बाजि-(हिं० पुं०) घोड़ा, पक्षी, बाण,

बाजी-(हिं० पुं०) घोड़ा, बजनिया।

बाजूबीर-(हिं० पुं०) बाजू बंद।

बाझ-(हिं० वि०) रहित।

बाझन-(हिं० स्त्री०) बझने या फंसने का भाव, उलझन, फंसावट, बखेड़ा, झंझट। **बाझना**-(हिं० क्रि०) बझना।

बाट-हिं० पुं०) मार्ग, पत्थर आदि का वह टुकड़ा जो तौलने के काम में आता है, बटखरा, पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई वस्तु पीसी जाती है, (स्त्री०) बटन, बल; **बाट करना**-मार्ग बनाना; **बाट देखना (जोहना)**-आसरा देखना; **बाट पड़ना**-कष्ट देना, पीछे पड़ना; डाका पड़ना; **बाट पारना**-डाका डालना।

बाटना-(हिं० क्रि०) चूर्ण करना, सिल पर बट्टे से कोई वस्तु पीसना।

बाटली-(हिं०स्त्री०) जहाज पर का पाल तानने का रास्सा।

बाटिका-(सं० स्त्री०) उपवन, उद्यान, बगीचा, फुलवारी, गद्य काव्य का एक भेद।

बाटी-(हिं० स्त्री०) गोली, पिण्ड, अंगारों या उपलों पर सेकी हुई गोली या पेड़े के आकार की रोटी, लिट्टी, चौड़े मुंह का कटोरा।

बाड़-हिं० स्त्री०) बाढ़, धार।

बाड़व-(सं० स्त्री०) घोड़ियों का समूह, बड़वानल, ब्राह्मण। **बाड़वाग्नि**-(सं० पुं०) बड़वानल।

बाड़व्य-(सं०नपुं०) ब्राह्मणों का समूह।

बाड़स-(सं० पुं०) मत्स्य, मछली।

बाड़ा-(हिं०पुं०) वह खुली हुई भूमि जो चारो ओर से खुली हो, पशुशाला।

बाड़ी-(हिं० स्त्री०) वाटिका, बारी, फुलवारी।

बाढ़-(सं० नपुं०) वृद्धि, अधिकता, प्रतिज्ञा।

बाढ़-(हिं० स्त्री० बढ़ने की क्रिया या भाव, बढ़ती, अधिक वर्षा के कारण नदी आदि के जल का वेग से बढ़ना, बन्दूक तोप आदि का निरन्तर छूटना, व्यापार मे होने वाला लाभ, तलवार छुरी आदि की धार, सान; **बाढ़ दगना**-तोपों का निरन्तर छूटना।

बाढ़कढ़-हिं० स्त्री०) खड्ग, तलवार।

बाढ़ना-(हिं० क्रि०) देखो बढ़ना।

बाढ़ि-(हिं० स्त्री०) देखो बाढ़।

बाढ़ी-(हिं० स्त्री०) बढ़ाव, अधिकता, वृद्धि, लाभ, अन्न उधार देने पर मिलने वाला ब्याज।

बाढ़ीवान-(हिं० पुं०) छुरी कैंची आदि पर सान रखने वाला।

बाण-(सं० पुं०) तीर, सायक, अग्नि, गाय का थन, सिर का अगला भाग, सरपत, लक्ष्य, केवल, पांच की संख्या, राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र का नाम। **बाणधि**-(सं० पुं०) तूण, तरकश। **बाणपति**-(सं० पुं०) शिव, महादेव। **बाणपथ**-(सं० पुं०) उतनी दूरी जहां तक बाण जा सके। **बाणविद्या**-(सं० स्त्री०) बाण चलाने की विद्या। **बाणलिङ्ग**-(सं० पुं०) स्फटिक का शिवलिङ्ग जो नर्मदा नदी में मिलता है।

बाणारि-(सं० पुं०) बाणासुर के शत्रु, विष्णु।

बाणासुर-(सं० पुं०) राजा बलि के सौ पुत्रों में से सबसे बड़े पुत्र का नाम।

बाणिज्य-(सं० पुं०) व्यापार।

बात-(हिं० स्त्री०) वचन, प्रसंग, फैली हुई चर्चा, योग्यता गुण आदि के संबंध में कथन, उपदेश, सीख, मर्म, रहस्य, प्रतिज्ञा, मान मर्यादा विश्वास, कामना, इच्छा, ढंग, रीति, व्यवहार, तत्व, वस्तु, प्रभाव, स्वभाव, गुण, प्रकृति, संबंध, मूल्य, तात्पर्य, अभिप्राय, कर्तव्य, गुप्त बात, प्रश्न, प्रशंसा, का विषय, चमत्कारपूर्ण वार्ता, विशेषता, धोखा देने के लिये कहे हुए शब्द बनावटी कथन, बहाना, सन्देश, व्यवस्था, परस्पर वार्तालाप, घटने वाली स्थिति, सार्थक शब्द या वाक्य, उचित उपाय, कामना, भेद; **बात उठाना**-चर्चा करना; **बात कहते**-तुरत; **बात काटना**-किसी के बोलते रहते बीच में बात बोल उठना; **बात की बात में**-तुरत; **बात खाली जाना**-प्रार्थना निष्फल होना; **बात टलना**-कहना व्यर्थ होना; **बात टालना**-सुनकर अनसुनी करना; **बात न पूछना**-बात न करना; **बात पर जाना**-बातों पर ध्यान न देना; **बात पाना**-छिपा हुआ अर्थ समझ लेना; **बात खोना**-मान मर्यादा नष्ट होना। **बात जाना**-अपमानित होना; **बात बनना**-प्रतिष्ठा पाना; **बात का धनी**-अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला; **बात पक्की करना**-दृढ़ निश्चय करना; **बात रखना**-अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना; **बात जाना**-विश्वासपात्र न रह जाना; **बात खोना**-साख बिगड़ना, **बात बनना**-विश्वास रहना; **बात पूछना**-खोज लेना; **बात बढ़ना**-बातों बात में झगड़ा हो जाना; **बात बढ़ाना**-झगड़ा करना; **बात बनाना**-बहाना करना; **बातों में उड़ाना**-हँसी में किसी बात को टाल देना; **बातों में लगाना**-बातचीत करने में लीन होना; **बात उठाना**-चर्चा चलाना; **बात छिड़ना**-प्रसंग उठाना; **बात निकालना**-बात चलाना; **बात उड़ना**-चर्चा फैलना; **बात का बतंगड़ करना**-बात को व्यर्थ पेचीली करना; **बात न पूछना**-अवस्था पर ध्यान न देना; **बात बढ़ना**-किसी घटना का भयकर रूप धारण करना; **बात बनना**-अर्थ सिद्धि होना; **बात बनाना**-बहाना करना; **बात बात में**-हर विषय में; **बात बिगड़ना**-विषय नष्ट होना; **बातों बातों में**-बातचीत करते हुए; **बात ठहरना**-विवाह संबंध पक्का होना; **बातों में आजाना**-किसी की बात सच्ची जानकर धोखे में आ जाना।

बातकंटक-(हिं०पुं०) वायु का एक रोग।

बातचीत-(हिं० स्त्री०) दो अथवा अनेक मनुष्यों का परस्पर बात करना, वार्तालाप।

बातप-(हिं० पुं०) हिरन।

बातफरोश-(हिं० पुं०) इधर उधर की झूठी गप्प लगाने वाला।

बातिङ्गन-(सं० पुं०) बैंगन।

बाती-(हिं० स्त्री०) देखो बत्ती।

बातुल-(हिं०वि०) पागल, सनकी, बौड़हा।

बतूनिया, बातूनी-(हिं० वि०) बहुत बोलने वाला, बकवादी।

बाथ-(हिं०पुं०) अंक, गोद।

बाथू-(हिं०पुं०) बथुआ का साग।

बाद-(हिं० पुं०) वाद, तर्क वितर्क, प्रतिज्ञा, झगड़ा, विवाद, झंझट, (अव्य०) निरर्थक,

बादकाकुल-(सं०पुं०) संगीत में एक ताल का नाम।

बादना-(हिं०क्रि०) बकवाद करना,

बादर-(सं० पुं०) कपास का पौधा, कपूर, (वि०) आनन्दित, प्रसन्न, (हिं०पुं०) बादल, मेघ।

बादरङ्ग-(सं०पुं०) पीपल का वृक्ष।

बादरा-(सं०स्त्री०) कपास का पौधा, पानी, रेशम।

बदरायण-(सं०पुं०) वेदव्यास का नाम

बादरिया-(हिं०स्त्री०) देखो बदली।

बादल-(हिं०पुं०) वह भाफ जो पृथ्वी पर के जल में से उठकर आकाश में जाती है और फिर पानी के रूप में पृथ्वी पर बूंद बूंद करके गिरती है, मेघ; **बादल उठना**-आकाश में बादलों का इकट्ठा होना; **बादल गरजना**-मेघों का गड़गड़ शब्द करना; **बादल घिरना**-मेघों का चारों ओर छा जाना; **बादल छँटना**-मेघों का टुकड़े टुकड़े होकर अलगाना

बादला-(हिं०पुं०) सोने या चांदी का महीन चिपटा किया हुआ तार जो कलाबत्तू बनाने के काम में तथा गोंटा बुनने के काम में आता है।

बादहवाई-(हिं० क्रि० वि०) व्यर्थ।

बादाम-(हिं०पुं०) जामुन आदि वृक्षों की तरह का एक पेड़ जिसका तना मोटा होता है, इसका फल मेवों में गिना जाता है।

बादामी-(हिं०वि०) बादाम के छिलके के रंग का, कुछ पीलापन लिये लाल रग का, बादाम के आकार का, अण्डाकार, गहना रखने की एक प्रकार की डिबिया, एक प्रकार का धान, (पुं०) बादामी रंग का घोड़ा।

बादि-(हिं०अव्य०) व्यर्थ।

बादिया-(हिं० पुं०) पेंच बनाने का लोहारों का एक अस्त्र।

बादी-(पुं०) किसी के विरुद्ध अभियोग चलाने वाला, शत्रु, प्रतिद्वंद्वी, लोहारों का सिकली करने का एक अस्त्र।

बादुना-(हिं०पुं०) घेवर नाम की मिठाई बनाने का एक अस्त्र।

बादुर-(हिं० पुं०) चमगीदड़।

बाध-(सं० पुं०) प्रतिबन्ध, रुकावट, उत्पात, उपद्रव, कष्ट, पीड़ा, कठिनता, अर्थ की असंगति, वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव सा हो, मूंज की पतली रस्सी। **बाधक**-(सं०वि०) प्रतिबन्धक, बाधा जनक, दुःखदायी, रुकावट करने वाला। **बाधकता**-(सं०स्त्री०) बाधक का भाव या धर्म, बाधा।

बाधन-(सं०नपुं०) कष्ट, पीड़ा, प्रतिबन्धक, बाधा। **बाधना**-(हिं०क्रि०) बाधा डालना, रोकना, विघ्न करना, अड़कल डालना।

बाधा-(सं०स्त्री०) कष्ट, पीड़ा, विघ्न, रुकावट, भय, डर, निषेध, मनाही, संकट, अड़चन।

बाधित-(सं० वि०) रोका हुआ, जिसके करने में रुकावट पड़ती हो, प्रभावहीन, ग्रस्त, असङ्गत, जिसको सिद्ध करने में रुकावट हो।

बाधिर्य-(सं०नपुं०) बहरापन।

बाध्य-(सं०वि०) बाधनीय, रोका जाने

वाला **बाध्यता**-(सं०नपुं०) बाध्यत्व ।

बान-(हिं०पुं०) बाण, तीर, एक प्रकार का वृक्ष, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा जो तीर के आकार की होती है, धुनकी की तांत में मारने का डंडा, समुद्र या नदी की ऊँची लहर, अभ्यास, बनावट,(पु०) कान्ति,रंग ।

बानइत-(हिं०वि०) बाना चलाने या खेलने वाला, बाण चलाने वाला, योद्धा, वीर ।

बानक-(हिं०स्त्री०) वेष,भेस,एक प्रकार का रेशम ।

बानगी-(हि०स्त्री०) किसी माल का वह अंश जो गाहक को दिखलाने लिये दिया जाता है,

बानर-(हि०पुं०) बन्दर ।

बानबे-(हिं०वि०) नब्बे और दो की संख्या का, (पुं०) नब्बे और दो की संख्या ९२ ।

बाना-(हिं०पुं०) वस्त्र, पहिरावा, अंगीकार किया हुआ धर्म, रीति, भाले के आकार का एक शस्त्र, दोनों ओर की धार वाली तलवार के आकार का एक लंबा शस्त्र जिसके दोनों किनारों पर लट्टू लगे रहते हैं, एक प्रकार का सूत जिस पर गुड्डी ऊड़ाई जाती है, खेत की पहली बार की जुताई, कपड़े की बुनावट में वे तागे जो ताने जाते हैं, आड़े बल के तागे, भरना, भेम, स्वभाव, बुनाई, (क्रि०) सिकुड़ने वाले छेद को बढ़ाना या फैलाना ।

बानात-(हिं०स्त्री०) देखो बनात ।

बानावरी-(हिं०स्त्री०) बाण चलाने की विद्या ।

बानि-(हिं०स्त्री०) बुनावट, सजधज, अभ्यास, चमक, कान्ति,वाणी, वचन

बानिक-(हि०स्त्री०)वेश,शृङ्गार,सजधज

बानिन-(हिं०स्त्री०) बनियाइन, बनिये की स्त्री ।

बानिया-(हिं०स्त्री०) बनिया, व्यापारी ।

बानी-(हिं०स्त्री०) मुख से निकाला हुआ शब्द, वचन, प्रतिज्ञा,सरस्वती, आभा, चमक, साधु महात्मा का उपदेश, बाणिज्य, एक प्रकार की पीली मिट्टी, गोला, बाना नामक हथियार, (अ०पुं०) आरंभ करने वाला, चलाने वाला,

बानैत-(हिं०पुं०) बाण चलाने वाला, बाना फेरने वाला, योद्धा, सैनिक ।

बान्धव-(सं०पुं०) भाई बन्धु, नातेदार, मित्र । **बान्धवक**-(सं०वि०) बान्धव संबंधी । **बान्धव्य**-(सं०नपुं०) जाति सम्पर्क ।

बाप-(हिं०पुं०)पिता, जनक;**बापदादा**-पूर्व पुरुष, पुरखा; **बाप मां**-पालन या रक्षा करने वाला ।

बापा-(हिं०पुं०) देखो बाप्पा ।

बापिका-(हिं०स्त्री०) देखो वापिका ।

बापी-(हिं०स्त्री०) देखो वापी, बावली ।

बापुरा-(हिं०वि०) तुच्छ, दीन,बेचारा ।

बापू-(हिं०पुं०) देखो बाबू , बाप ।

बाफ़-(हिं०स्त्री०) देखो भाफ ।

बाबची-(हिं०स्त्री०) देखो बकुची ।

बाबरी-(हिं०स्त्री०) सिर पर के लंबे बाल,

बाबा-(हिं०पु०) पिता, बाप, पितामह, दादा, वृद्ध पुरुष; एक आदर सूचक शब्द जो साधु सन्यासियों के लिये प्रयोग होता है, लड़कों के लिये प्यार का शब्द । **बाबी**-(हिं०स्त्री०) सन्यासिन, कन्या के लिये प्यार का शब्द ।

बाबुना-(हिं०पुं०) पीले रंग की एक चिड़िया ।

बाबुल-(हिं०पु०) देखो बाबू ।

बाबू-(हिं०पुं०) एक आदर सूचक शब्द, भला आदमी पिता के लिये संबोधन, छोटे राजा के बंधु बांधवों के लिये प्रयुक्त शब्द ।

बाबूड़ा-(हिं०पुं०) बाबू के लिये घृणा सूचक शब्द ।

बाभन-(हिं०पुं०) ब्राह्मण, भूमिहार ।

बाम-(हिं० वि०) देखो वाम, (हिं०स्त्री०) स्त्रियों के कान में पहरने का एक गहना ।

बामा-(हिं०स्त्री०) देखो वामा ।

बामी-(हिं०स्त्री०) देखो बांबी ।

बायँ-(हि०वि०) बायाँ, खाली, चूका हुआ, लक्ष्य पर न बैठा हुआ; **बाँय देना**-तरह देला, छोड़ना ।

बाय-(हिं०स्त्री०) वायु, हवा, वात का प्रकोप, बाउली, बेहर ।

बायक-(हि०पुं०) दूत, पढ़ने वाला, बतलाने वाला ।

बायन-(हिं०पुं०)वह मिठाई या पकवान आदि जो उत्सव आदि के उपलक्ष्य में लोग अपने इष्ट मित्रों के घर भेजते हैं, भेंट, उपहार; **बायन करना**-छेड़ छाड़ करना ।

बायबिडंग-(हिं० पुं०) पहाड़ पर होने वाली एक लता जिसमें छोटे छोटे मटर के बराबर गोल फल गुच्छों में लगते हैं जो सूखने पर औषधि के काम में आते हैं ।

बायबिल-देखो बाइबिल ।

बायबी-(हि०वि०) अपरिचित,अजनबी, बाहरी, नया आया हुआ ।

बायव्य-(हिं०वि०) देखो वायव्य ।

बायरा-(हि०पुं०)मल्लयुद्ध की एक युक्ति

बायल-(हिं०वि०) जो दाँव खाली जाय,

बायला-(हिं०वि०) वायु का विकार बढ़ाने वाला ।

बायस-(हिं०पु०) देखो वायस ।

बायाँ-(हिं०वि०) पूर्वाभिमुख खड़े होने पर किसी मनुष्य का उत्तर की ओर का पार्श्व, प्रतिकूल, विरुद्ध, बायें हाथ से बजाने का तबला; **बायाँ देना**-जान बूझकर बचा जाना;

बायें-(हिं०क्रि०वि०) विपरीत, विरुद्ध, बाई ओर; **बायें होना**-खिन्न होना;

बारंबार-(हिं०क्रि०वि०) पुनः पुनः, लगातार ।

बार-(हिं०पु०) द्वार, दरबार, आश्रय, स्थान, (स्त्री०) काल,समय, अतिकाल, देर, दफ़ा, (पुं०) घेरा, रोक, किसी शस्त्र की धार, नाव, थाली आदि का किनारा ; **बारबार**-फिर फिर; (हि०पु०) देखो बाल, वाला ।

बारक-(हिं० स्त्री०) छावनी आदि में सैनिकों के रहने के लिये बना हुआ पक्का घर ।

बारकीर-(सं०पुं०) यूका, जोंक ।

बारगह-(हिं०स्त्री०) डेवढी, डेरा, तंबू ।

बारजा-(हिं०पु०) कोठा, अटारी,बरामदा, द्वार के ऊपर पाटकर बनाया हुआ ओसारा, घर के आगे की दालान ।

बारतीय-(हिं० स्त्री०) देखो बारस्त्री, वेश्या ।

बारतुण्डी-(हिं०स्त्री०) आल का पेड़ ।

बारन-(हिं०पुं०) देखो वारण । **बारना**-(हिं० क्रि०) रोकना, मना करना, प्रज्वलित करना, जलाना, जोंधरी बाजरे आदि के दाने अलगाना ।

बारबध, बाधबधूटी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।

बारमुखी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।

बारवा-(हिं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम ।

बारह-(हिं०वि०)दस और दो की संख्या का;(पुं०)दस और दो की संख्या १२;

बारह बाट करना-तितिर बितर करना, नष्ट करना ।

बारहखड़ी-(हिं० स्त्री०) वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः इन बारह स्वरों को मात्रा के रूप में लगाकर बोलते या लिखते है । **बारहदरी**-(हिं०स्त्री०)चारों ओर से खुला हुआ हवादार बैठक जिसमें बारह द्वार होते है । **बारह पत्थर**-(हिं०पु०)सीमा, सिवान,छावनी;

बारहबान-(हि०पुं०) एक प्रकार का उत्तम सोना । **बारहबाना**-(हि०वि०) चमकता हुआ, खरा,चोखा । **बारहबानी**-(हिं० वि०) सूर्य के समान चमकने वाला, पापरहित, निर्दोष, खरा, चोखा, सच्चा, पक्का; (स्त्री०) सूर्य के समान चमक ।

बारहमासा-(हि०पु०) एक प्रकार का गद्य या गीत जिसमें किसी विरही या विरहिनी के मुख से बारहो महीने की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन कराया जाता है । **बारहमासी**-(हि० वि०) बारहो महीनों में होने वाला, सब ऋतुओं में फलने फूलने वाला ।

बारहवाँ-(हिं०वि०) जो बारहवें स्थान में हो ।

बारहसिंघा-(हिं०पुं०) हरिन की जाति का एक चौपाया जिसकी सींघ में कई एक शाखा निकली रहती हैं ।

बारहाँ-(हिं० वि०) देखो बारहवाँ;

बारहीं-(हिं० स्त्री०) बच्चे के जन्म से बारहवां दिन, जिस दिन उत्सव आदि किये जाते हैं; (हिं०पु०) किसी मनुष्य के मरने से बारहवां दिन ।

बारा-(हिं०वि०) बाल्यावस्था का, जो सयाना न हो,(पुं०) बेलन के सिरे पर लगाई हुई लोहे की कंगनी, महीन तार खींचने की जन्ती, वह मनुष्य जो कुवे पर खड़ा होकर मोट का पानी उलट कर गिराता है ।

बारात-(हिं०स्त्री०)बरयात्रा, वह समाज जो बर के साथ उसको ब्याहने के लिये सजधज कर वधू के घर ले जाता है ।

बारादरी-(हिं०स्त्री०) देखो बारहदरी ।

बारामीटर-(हिं०पुं०) देखो बैरोमीटर ।

बारिगर-(हि०पुं०) हथियारों पर सान रखने वाला ।

बारिधर-(हिं० पुं०) मेघ, बादल, एक वर्णवृत्त का नाम ।

बारिधि-(हिं० पुं०) देखो वारिधि ।

बारिवाह-(हिं० पुं०) बादल ।

बारी-(हिं० स्त्री०) तट, किनारा, धारा, बाढ़, बगीचे खेत आदि के चारो ओर बना हुआ घेरा, किसी पात्र की कोर, नवयौवना, थोड़े वय की स्त्री, कन्या,लड़की, अवसर, पारी, जहाजों के रहने का स्थान, बंदरगाह, घर, क्यारी, खिड़की, झरोखा, वह स्थान जहाँ वृक्ष लगाये गये हों, (पुं०) एक जाति जो पत्तल बनाने का काम करती है ; **बारी बारी से**-क्रम से, एक के पीछे दूसरा; **बारी बँधना**-अलग अलग समय निश्चित होना ।

बारीस-(हिं० पु०) समुद्र ।

बारुणी-(हिं०स्त्री०) देखो वारुणी ।

बारू-(हिं० पुं०) देखो बालू ।

बारूदानी-(हिं०स्त्री०) देखो बालूदानी ।

बारोठा-(हि० पु०) विवाह की एक रीति जो बरके द्वारपर आने पर को जाती है ।

बार्हस्पत-(सं० वि०) बृहस्पति संबंधी ।

बाल-(सं०पुं०) बालक, लड़का, किसी प्राणी का बच्चा, बुद्धिहीन मनुष्य, लोभ, केश, कुन्तल, घोड़े का बच्चा, बछेड़ा, हाथी की पोंछ, नारियल, दुम, (हिं०) मूर्ख, वह जो पूरी बाढ़ पर न पहुँचा हो, जिसको उगे हुए थोड़े दिन हों, (स्त्री०) कुछ अन्न के पौधों के डंठल का अग्र भाग जिसमें दानों के गुच्छे लगे रहते हैं; **बाल बाँका न होना**-किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचना; **बाल पकाना**-वृद्ध होना, अनुभव प्राप्त करना; **बाल बाल बचना**-किसी आपत्ति में पड़ने से थोड़ा ही बच जाना ।

बालक-(सं०पुं०) पुत्र, शिशु, लड़का, थोड़ी वय का बच्चा, अबोध या

अनजान मनुष्य, हाथी या घोड़े, का वच्चा, केश, बाल । **बालकता**-(सं० स्त्री०) लड़कपन । **बालकताई**-(हिं० स्त्री०) बाल्यावस्था लड़कपन ।

बालकपन-(हिं० पुं०) बालक होने का भाव, लड़कपन । **बालकप्रिया**-(सं० स्त्री०) इन्द्रवारुणी, केला । **बालकाण्ड**-(सं० पुं०) रामायण का वह भाग जिसमें रामचन्द्र के जन्म तथा बाल-लीला आदि का वर्णन है । **बालकाल**-(सं० पुं०) बाल्यावस्था । **बालकी**-(हिं० स्त्री०) कन्या, पुत्री । **बालकृष्ण**-(सं० पुं०) बाल्यावस्था के श्री कृष्ण ।

बालकेलि-(सं० स्त्री०) लड़कों का खेल खिलवाड़, अति साधारण या तुच्छ काम । **बालकेशी**-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की घास । **बालक्रीडन**-(सं० नपुं०) लड़कों का खेल । **बालक्रीडा**-(सं० स्त्री०) लड़कों का खेल । **बालखिल्य**-(सं० पुं०) पुराण के अनुसार ब्रह्मा के रोमकूप से उत्पन्न साठ हजार ऋषी जो डील डौल में अंगूठे के बराबर थे । **बालखोरा**-(हिं० पुं०) सिर के बाल झड़ने का रोग ।

बालगर्भिणी-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसने पहले पहल गर्भ धारण किया हो ।

बालगोपाल-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण की बाल्य मूर्ति, परिवार के बच्चे । **बालग्रह**-(सं० पुं०) बालकों की हत्या करने वाले ग्रह विशेष, अनाचार करने पर ये बालकों को सताते हैं । **बालचरित**-(सं० नपुं०) लड़कों का खिलवाड़ ।

बालचर्य-(सं० पुं०) कार्तिकेय, बालकों का चरित्र ।

बालछड़-(हिं० स्त्री०) जटामासी ।

बालजीवन-(सं० नपुं०) दुग्ध, दूध ।

बालटी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की डोलची जिसका नीचे का घेरा सकरा तथा ऊपर का चौड़ा होता है ।

बालतनय-(सं० पुं०) बालक, पुत्र । **बालतन्त्र**-(सं० नपुं०) बालकों के लालन पालन की विद्या, बालभृत्या । **बालतृण**-(सं० नपुं०) नवतृण, हरी घास ।

बालतोड़-(हिं० पुं०) देखो बरतोर ।

बालद-(हिं० पुं०) बैल ।

बालतत्व-(सं० नपुं०) बालकता, लड़कपन ;

बालधि-(हिं० स्त्री०) पूंछ ।

बालना-(हिं० क्रि०) प्रज्वलित करना, जलाना ।

बालपत्र-(सं० पुं०) नया पत्ता, कोपल ।

बालपन-(हिं० पुं०) बाल्यावस्था, लड़कपन;

बालपर्णी-(सं० स्त्री०) मेथिका, मेथी ।

बालपुष्पी-(सं० स्त्री०) यूथिका, जूही ।

बालबच्चे-(हिं० पुं०) सन्तान । **बालबुद्धि**-(सं० स्त्री०) बालकों के समान बुद्धि ।

बालबोध-(सं० स्त्री०) देवनागरी लिपि; **बालबोधक**-(सं० स्त्री०) बहुत सहज ।

बालब्रह्मचारी-(सं० पुं०) वह जिसने बालवस्था से ही ब्रह्मचर्य ब्रत धारण किया हो ।

बालभाव-(सं० पुं०) लड़कपन ।

बालभोग-(सं० पुं०) वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे प्रातःकाल रक्खा जाता है, जलपान, कलेवा ।

बालम-(हिं० पुं०) पति, स्वामी, प्रेमी । **बालम खीरा**-एक प्रकार का बड़ा खीरा ।

बालमकुन्द-(सं० पुं०) बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण जी ।

बालमूलक-(सं० नपुं०) छोटी कच्ची मूली

बालरोग-(सं० पुं०) बालक की व्याधि ।

बाललीला-(सं० स्त्री०) लड़कों का खेल;

बालव-(सं० पुं०) फलित ज्योतिष के अनुसार दसरे कर्ण का नाम ।

बालवत्स्य-(सं० पुं०) कपोत, कबूतर ।

बालविधु-(सं० पुं०) अमावस्या के बाद के दिन का नवीन चन्द्रमा ।

बालव्यंजन-(सं० नपुं०) लड़के का पंखा;

बालसांगड़ा-(हिं० पुं०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति ।

बालसूर्य-(सं० नपुं०) उदय काल का सूर्य, वैदूर्यमणि ।

बालस्थान-(सं० नपुं०) शिशत्व, लड़कपन ।

बालहस्त-(सं० पुं०) केश समूह ।

बाला-(सं० स्त्री०) नारियल, हल्दी, बेले का पौधा, बारह वर्ष से सोलह वर्ष तक की स्त्री, एक बरस की गाय, घीकुआर, खैर, एक प्रकार का आभूषण, एक वर्णवृत्त का नाम, एक प्रकार का गेहूँ की उपज को नष्ट करने वाला कीड़ा, दश महाविद्याओं में से एक, सुगन्धवाला, पत्नी, स्त्री, पुत्री, कन्या, छोटी इलायची; **बोल बाला रहना**-आदर का बढ़ना; **बाला भोला**-बहुत सीधा सादा ।

बालादित्य-(सं० पुं०) तुरत का उगा हुआ सूर्य ।

बालापन-(हिं० पुं०) बचपन, लड़कपन ।

बालारुण-(सं० पुं०) देखो बालादित्य ।

बालार्क-(सं० पुं०) प्रातःकाल का सूर्य ।

बालि-(सं० पुं०) वानरों का अधिपति जो सुग्रीव का बड़ा भाई था ।

बालिका-(सं० स्त्री०) कन्या, छोटी पुत्री, बेटी, इलायची, कान में पहरने की बाली ।

बालिनी-(सं० स्त्री०) अश्विनी नक्षत्र ।

बालिश-(सं० वि०) मूर्ख, अबोध ।

बालिहन्ता-(सं० पुं०) श्रीरामचन्द्र ।

बाली-(हिं० स्त्री०) कान में पहरने का एक प्रसिद्ध आभूषण, पौधों का वह भाग जिसमें दाने लगे रहते हैं ।

बालु-(सं० स्त्री०) बालू कपूर ।

बालुका-(सं० स्त्री०) बालू, ककड़ी, कपूर; **बालुका प्रभा**-एक नरक का नाम; **बालुकामय**-बालू से भरा हुआ; **बालुका यन्त्र**-वह यन्त्र जिसमें औषधि फूंकने के लिये बालू भरी हांडी में रक्खी जाती है ।

बालुङ्की-(सं० स्त्री०) कर्कटी, ककड़ी ।

बालू-(हिं० पुं०) पत्थर का वह महीन चूर्ण या कण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ पर से आता है और नदियों के किनारे पर जम जाता है, रेणुका, रेत; **बालू की भीत**-शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु ।

बालूक-(सं० पुं०) एक प्रकार का विष ।

बालूचरा-(हिं० पुं०) वह भूमि जिसपर छिछला पानी भरा हो ।

बालूदानी-(हिं० स्त्री०) बालू रखने की झंझरीदार छोटी डिबिया जिसमें से बालू गिरा कर मसि (रोशनाई) के आदि सुखाये जाते है ।

बालू बुर्द-(हिं० वि०) जो बालू पड़ कर नष्ट हो गया हुआ, (पुं०) वह उपजाऊ भूमि जो बालू के जम जाने से ऊसर हो गई हो ।

बालूसाही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।

बालेन्दु-(सं० पुं०) नया उदित चन्द्र ।

बालेय-(सं० पुं०) रासभ, गदहा, एक दैत्य का नाम, चावल, (वि०) बालकों के हित का, बलिदान करने योग्य ।

बाल्टी-(हिं० स्त्री०) देखो बालटी ।

बाल्य-(सं० नपुं०) लड़कपन, बालक होने की अवस्था, (वि०) बालक सम्बन्धी, बचपन का ।

बाल्यावस्था-(सं० स्त्री०) प्रायः सोलह वर्ष तक की अवस्था, लड़कपन ।

बाल्हक-(सं० नपुं०) कुकुम, केसर ।

बाल्हीक-(सं० नपुं०) जनमेजय के एक पुत्र का नाम ।

बाव-(सं० पुं०) वायु, हवा, अपान वायु, बाई ।

बावड़ी-(हिं० स्त्री०) वह बड़ा चौड़ा कुवां जिसमें उतरने के लिये सीढ़ियाँ लगी रहती हैं, बावली, छोटा तालाब ।

बावन-(हिं० वि०) पचास और दो की संख्या का, (पुं०) पचास और दो की संख्या ५२; **बावन तोले पाव रत्ती**-बिलकुल ठीक ; **बावन बीर**-बड़ा चतुर और वीर ।

बावना-(हिं० वि०) देखो बौना ।

बावभक-(हिं० स्त्री०) झक, पागलपन ।

बावरा-(हिं० वि०) देखो बावला ।

बावरी-(हिं० स्त्री०) देखो बावली ।

बावल-(हिं० पुं०) अन्धड़, आंधी ।

बावला-(हिं० वि०) विक्षिप्त, पागल, सनकी । **बावलापन**-(हिं० पुं०) झक, पागलपन । **बावली**-(हिं० स्त्री०) सीढ़ियां लगा हुआ छोटा गहरा तालाब या चौड़े मुंह का कुवाँ ।

बावाँ-(हिं० वि०) बाईं ओर का, बायाँ, विरुद्ध ।

बाष्कल-(सं० पुं०) वीर, योद्धा, चाँदी, एक ऋषि का नाम ।

बाष्प-(हिं० पुं०) भाफ, लोहा, आँसू, एक प्रकार की जड़ी, गौतम बुद्ध के एक शिष्य का नाम ।

बास-(हिं० पुं०) निवास, रहने का स्थान, धार की छुरी, एक प्रकार का अस्त्र, अग्नि, आग, इच्छा, वस्त्र, कपड़ा, गन्ध, महँक, (पुं०) एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष, एक छन्द का नाम ।

बासकर्णी-(सं० स्त्री०) यज्ञशाला ।

बासकसज्जा-(सं० स्त्री०) वह नायिका जो अपने पति या प्रियतम के आने के समय केलि क्रीड़ा की सामग्री एकत्रित करती हो ।

बासठ-(हिं० वि०) साठ और दो की संख्या का, (पुं०) साठ और दो की संख्या ६२; **बासठवाँ**-वह जो क्रम से बासठ के स्थान पर हो ।

बासदेव-(हिं० पुं०) अग्नि, आग ; देखो वासुदेव ।

बासन-(हिं० पुं०) पात्र, भांड़ ।

बासना-(हिं० स्त्री०) इच्छा, चाह, गन्ध, (क्रि०) सुवासित करना, महँकाना ।

बासफल-(हिं० पुं०) एक प्रकार का धान

बासमती-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का धान जिसका चावल पकने पर सुगन्धित होता है ।

बासर-(हिं० पुं०) वासर, दिन, प्रातःकाल, सबेरा, प्रातःकाल गाने की गीत ।

बासव-(सं० पुं०) इन्द्र ।

बासवी-(हिं० पुं०) अर्जुन ; **बासवी दिशा**-पूर्व दिशा ।

बाससी-(सं० पुं०) वस्त्र, कपड़ा ।

बासा-(हिं० पुं०) एक प्रकार की चिड़िया, अडूसा, वह स्थान जहाँ पकी हुई रसोई दाम देने पर मिलती है ।

बासित-(हिं० वि०) सुगन्धित किया हुआ

बासिन्दा-(हिं० वि०) निवासी ।

बासी-(हिं० वि०) देर का अथवा एक दिन पहले का बना हुआ, जो हरा भरा न हो, सूखा या कुम्हलाया हुआ, कुछ देर तक का रक्खा हुआ, बसने वाला, रहने वाला ; **बासी कढ़ी में उबाल आना**-वृद्धावस्था में जवानी का उमंग आना ।

बासुकीर-(हिं० पुं०) देखो वासुकी ।

बासौंधी-(हिं० स्त्री०) देखो बसौंधी ।

बाह-(सं० पुं०) बाहु, बाँह, (हिं० पुं०) खेत जोतने की क्रिया, खेत की जोताई ।

बाहकी-(हिं० स्त्री०) कहार की स्त्री, कहारिन ।

बाहड़ी-(हिं० स्त्री०) कुम्हड़ौरी डालकर पकाई हुई खिचड़ी ।

बाहन-(हिं० पुं०) एक प्रकार का ऊंचा लंबा वृक्ष ।

बाहना-(हिं० क्रि०) ढोना, लादना या चढ़ाकर ले जाना, फेंकना, चलाना, पकड़ना, धारण करना, बहना, खेत में हल चलाना, गाड़ी घोड़े आदि का हाँकना, गाय, भैंस आदि को गाभिन कराना ।

बाहनी-(हिं० स्त्री०) सेना ।

बाहबली-(हिं० पुं०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति ।

बाहर-(हिं० क्रि० वि०) किसी निश्चित

या कल्पित सीमा से हटकर, सिवाय, अलग, प्रभाव या अधिकार से पृथक्, किसी दूसरे स्थान पर, दूसरे नगर में; **बाहर होना**-प्रगट होना; **बाहर करना**-हटाना, दूर करना; **बाहर, बाहर**-दूर से बिना किसी को बतलाये हुये; **बाहर का**-वह जो आत्मीय न हो, पराया।

बाहर जामी-(हिं० पुं०) ईश्वर का अवतार, यथा राम कृष्ण आदि।

बाहरी-(हिं०वि०) बाहर वाला, बाहर का, पराया, जो घर का न हो, जो आपस का न हो, ऊपरी, जो केवल बाहर से देखा जावे।

बाहरी टांग-(हिं०स्त्री०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति।

बाहस-(हिं० पुं०) अजगर।

बाहाँजोरी-(हिं० क्रि० वि०) भुजा से भुजा अथवा हाथ से हाथ मिलाकर।

बाहा-(हिं०पुं०) वह रस्सी का टुकड़ा जिससे नावका डाँड़ा बाँधा रहता है।

बाहिज-(हिं०पुं०) ऊपर से, बाहर से।

बाहिनी-(हिं०स्त्री०) सेना, नदी, यान,

बाहिर-(हि०क्रि०वि०) देखो बाहर।

बाहीं-(हि०स्त्री०) देखो बाँह, बाहु।

बाहु-(सं०पु०) भुजा, बाँह।

बाहुक-(सं०पुं०) नकुल का नाम, एक नाग का नाम, राजा नल जब अयोध्या के राजा के सारथी बने थे तब उन्होंने अपना नाम बाहुक रक्खा था।

बाहुकर-(सं० वि०) हाथों से काम करने वाला। **बाहु कुन्थ**-(सं०पुं०) पक्ष, पंख।

बाहुज-(सं० पुं०) क्षत्रिय जिनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के बाहु से मानी जाती है, सुग्गा, (वि०) वह जो बाहु से उत्पन्न हो। **बाहुजन्य**-(सं०वि०) बाहु से उत्पन्न।

बाहुज्या-(सं०पुं०) गणित की भुजज्या।

बाहुत्राण-(सं०नपुं०)चमड़े लोहे आदि का बना हुआ हस्तत्राण जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है।

बाहुदन्तिन्, बाहुदन्तेय-(सं०पुं०) इन्द्र;

बाहु पाश-(सं० पु०) एक युद्धकौशल जो बाहु द्वारा बना होता है। **बाहुबल**-(सं० नपुं०) हाथों की शक्ति, पराक्रम, **बाहुभाष्य**-(सं०नपुं०) बहुत बोलने वाला। **बाहुभूषा**-(सं०नपुं०) बाँह पर पहरने का एक आभूषण केयूर। **बाहुभेदी**-(सं०पुं०) विष्णु।

बाहुमूल-(सं०नपुं०) कन्धे और बाँह का जोड़, कांख। **बाहुयुद्ध**-(सं० नपुं०) मल्लयुद्ध; **बायोध**-(सं०पुं०) पहलवान।

बाहुल-(सं० नपुं०) बहुतायत, अग्नि, कार्तिक मास, हाथ में पहरने का कवच। **बाहुलग्रीव**-(सं०पुं०) मयूर, मोर; **बाहुलेय**-(सं०पुं०) कार्तिकेय।

बाहुल्य-(सं०नपुं०)आधिक्य, अधिकता।

बाहुविस्फोट-(सं०पुं०) ताल ठोंकना।

बाहुवीर्य-(सं०नपुं०)बाहुबल, पराक्रम।

बाहुशालिन्-(सं० पुं०) शिव, भीम, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

बाहुशिखर-(सं०पुं०) स्कन्ध, कन्धा।

बाहुशोष-(सं०पुं०) बांह मे होने वाला एक प्रकार का वायुरोग।

बाहुसम्भव-(सं० पुं०) क्षत्रिय।

बाहुहजार-(हिं० पु०)देखो सहस्रबाहु।

बाह्य-(सं० नपुं०) भार ढोने वाला पशु; (वि०) ढोने वाला, बाहरी, बाहर का। **बाह्यपटी**-(सं० स्त्री०) जवनिका, नाटक का परदा। **बाह्याभ्यन्तर**-(सं० पुं०) प्राणायाम का एक भेद। **बाह्याचरण**-(सं० पुं०) आडंबर, ढकोसला।

बाह्यालय-(सं० पुं०) बाहर का घर।

बाह्लीक-(सं० पुं०) काम्बोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम, यह स्थान काबुल के उत्तर की ओर है।

बिंग-(हिं० पुं०) देखो व्यंग।

बिंजन-(हि० पुं०) देखो व्यंजन।

बिन्द-(हि० पुं०) पानी का बूंद, वीर्य का बूंद, दोनों भौंहों के बीच का स्थान, देखो बिंदी।

बिंदा-(हिं० स्त्री०) एक गोपी का नाम, माथे पर का गोल बड़ा टीका, इस आकार का कोई चिह्न। **बिंदी**-(हिं० स्त्री०) शून्य, सुन्ना, माथे पर लगाने का गोल छोटा टीका, इस आकार का कोई चिह्न। **बिंदुका**-(हिं० पुं०) बिंदी, गोल टीका। **बिंदुरी, बिंदुली**-(हिं० स्त्री०) माथे पर का गोल टीका, टिकुली।

बिंद्राबन-(हि० पुं०) देखो वृन्दावन।

बिंध-(हिं० पुं०) देखो विन्ध्याचल।

बिंधना-(हिं०क्रि०) छेदा जाना, फँसना, उलझना।

बिंधिया-(हिं०पुं०) मोती में छेद करने वाला।

बिंब-(हिं० पुं०) देखो बिम्ब; प्रतिबिम्ब, छाया। **बिंबा**-(हिं०पुं०) देखो बिम्बा, बिम्ब, प्रतिच्छाया।

बि-(हिं० वि०) दो, एक और एक।

बिअहुता-(हिं० वि०) विवाह का, विवाह सम्बन्धी, जिसका विवाह हो गया हो।

बिआधि-(हिं० स्त्री०) देखो व्याधि।

बिआधु-(हिं० पुं०) देखो व्याध।

बिआना-(हिं० क्रि०) पशुओं का बच्चा देना, जनना।

बिआपी-(हिं० वि०) देखो व्यापी।

बिओग, बिओगी-(हिं० वि०) देखो वियोग, वियोगी।

बिकट-(हिं० वि०) देखो विकट।

बिकना-(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ का मूल्य लेकर दिया जाना, बेंचा जाना, बिक्री होना; **किसी के हाथ बिकना**-किसी का दास या सेवक होना।

बिकरम-(हिं०पुं०) देखो विक्रमादित्य।

बिकरार, बिकराल-(हिं० वि०) व्याकुल, डरावना, भयानक; देखो विकराल।

बिकर्म-(हिं० पुं०) दुष्कर्म।

बिकल-(हिं० वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, देखो विकल। **बिकलाई**-(हिं० स्त्री०) व्याकुलता, बेचैनी। **बिकलाना**-(हि० क्रि०) व्याकुल होना घबड़ाना, व्याकुल करना।

बिकवाना-(हि० क्रि०) बेचने का काम दूसरे से कराना, किसी से बिक्री करना।

बिकसना-(हिं० क्रि०) खिलना, फूलना, बहुत प्रसन्न, होना। **बिकसाना**-(हिं०वि०) विकसित कराना, खिलाना, प्रफुल्लित करना, प्रसन्न करना।

बिकाऊ-(हिं० वि०) बिकने योग्य, बिकने वाला।

बिकाना-(हिं० क्रि०) देखो बिकना।

बिकार-(हि० वि०) देखो विकार, देखो विकराल,भयंकर। **बिकारी**-(हिं०वि०) विकृत रूपवाला, हानिकारक, संख्या का मान सूचित करने के लिये अकों के आगे लगाने की टेढ़ी रेखा।

बिकास-(हि० पुं०) देखो विकास।

बिक्री-(हिं० स्त्री०) बेचे जाने की क्रिया या भाव, वह धन जो बेंचने से प्राप्त होता है।

बिकू-(हि०वि०) बिकाऊ, बेचने योग्य।

बिख-(हि० पुं०) विष, गरल।

बिखम-(हि० वि०) देखो विषम।

बिखरना-(हि० क्रि०) खण्डों या कणों का इधर उधर गिरना या फैल जाना, छितराना। **बिखराना**-(हि० क्रि०) बिखेरना।

बिखाद-(हिं० पुं०) देखो विषाद।

बिखान-(हिं० पुं०) देखो विषाण।

बिखेरना-(हिं०क्रि०) इधर उधर फैलाना, तितर बितर करना, छितराना।

बिग-(हिं० पु०) भेड़िया।

बिगड़ना-हि० क्रि०) असली रूप रंग या गुण का नष्ट हो जाना, कुचाल होना, क्रुद्ध होना, अप्रसन्नता प्रगट करना, विरोधी होना, पशु आदि का अपने रक्षक की आज्ञा से बाहर होना, बुरी अवस्था को प्राप्त होना, लड़ाई झगड़ा होना, व्यर्थ व्यय होना, किसी पदार्थ के बनते समय उसका ठीक न उतरना, दुर्दशा को प्राप्त होना।

बिगड़ेदिल-(हिं० पुं०) वह जो बात बात में लड़ने झगड़ने लगे, वह जो बिगड़ा हुआ हो, कुपथ पर चलने वाला।

बिगड़ैल-(हिं० वि०) थोड़ी बात पर क्रुद्ध होने वाला, हठ करने वाला।

बिगर-(हिं० क्रि० वि०) रहित, बिना।

बिगरना-(हिं० क्रि०) देखो बिगड़ना।

बिगराइल-(हिं०वि०) देखो बिगड़ैल।

बिगलित-देखो बिगलित। **बिगसना**-(हिं० क्रि०) देखो विकसना। **बिगहा**-(हिं० पुं०) देखो बीघा।

बिगही-(हि० स्त्री०) क्यारी, बरही।

बिगाड़-(हिं० पुं०) वैमनस्य, लड़ाई झगड़ा दोष, बुराई, बिगड़ने की क्रिया या भाव। **बिगाड़ना**-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु के स्वाभाविक रूप रंग या गुण को नष्ट करना, कुमार्ग में लगाना, बुरी अवस्था में लाना; व्यर्थ व्यय करना, किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करना, बुरा अभ्यास डालना, बहकाना, किसी वस्तु को बनाते समय उसमें ऐसा विकार उत्पन्न कर देना कि वह ठीक न बन सके।

बिगार-(हि० पुं०) देखो बिगाड़।

बिगारी-(हि० स्त्री०) देखो बेगारी।

बिगास-(हि० पुं०) देखो विकास।

बिगासना-हि०क्रि०)विकसितकरना।

बिगिर-(हि०क्रि०वि०) बगैर, सिवाय।

बिगुन-(हिं० वि०) गुण रहित, जिसमें कोई गुण न हो।

बिगुर-(हि० वि०) बिना गुरु का, जिसने किसी गुरु से शिक्षा न प्राप्त किया हो।

बिगुरचिन-(हिं० स्त्री०)-देखो बिगूचन।

बिगुरदा-(हि० स्त्री०) प्राचीन समय का एक प्रकार का शस्त्र।

बिगूचन-(हि० स्त्री०) मनुष्य के चित्त का भ्रम, असमंजस, कठिनता।

बिगूचना, बिगूतना-(हिं०क्रि०) संकोच में पड़ना, अड़चन में पड़ना, दबाया जाना, पकड़ा जाना, दबोचना।

बिगोना-(हि० क्रि०) नष्ट करना, विनाश करना, व्यग्र करना, छिपाना, चुराना, बहकाना, भ्रम में डालना।

बिग्गाहा-(हि० पु०) आर्या छन्द का एक भेद, इसको उद्गीति भी कहते हैं।

बिग्रह-(हिं० पु०) देखो बिग्रह।

बिघटना-(हिं० क्रि०) विनाश करना, बिगाड़ना।

बिघन-(हि० पुं०) देखो विघ्न; **बिघन हरन**-विघ्नोंको हटाने वाले गणेशजी।

बिघार-देखो व्याघ्र।

बिच-(हि० वि०) देखो बीच।

बिचकना-(हिं० क्रि०) भड़कना।

बिचकाना-(हिं० क्रि०) किसी को चिढ़ाने के लिये मुंह टेढ़ा करना, मुंह चिढ़ाना।

बिचच्छन-(हि० वि०) देखो विचक्षण।

बिचरना-(हिं० क्रि०) इधर उधर घूमना, चलना फिरना, पर्यटन करना।

बिचलना-(हि० क्रि०) विचलित होना, इधर उधर हटना, किसी बात को कह कर मुकर जाना, साहस हारना।

बिचला-(हिं०वि०) बीचका,बीच वाला।

बिचलाना-(हिं०क्रि०) विचलित करना, हिलाना, डिगाना, तितर बितर करना।

बिचवान,बिचवानी-(हिं०पुं०) मध्यस्थ,

वह जो झगड़ा निबटाता हो।
बिचहुत-(हिं०पुं०)सन्देह,दुबधा,अन्तर।
बिचारना-(हिं० क्रि०) विचार करना; **बिचारमान**-(हिं० वि०) विचार करने वाला, विचारने योग्य।
बिचारा-(हिं० वि० देखो बेचारा।
बिचारी-(हिं०वि०) विचार करनेवाला।
बिचाल-(हिं० पुं०) अन्तर।
बिचेत-(हिं० वि०) अचेत,मूर्च्छित।
बिचोहा-(हिं० पुं०) मध्यस्थ।
बिच्छित्ति-(सं० स्त्री०) शृंगार रस के ग्यारह भावों में से एक जिसमें किसी पुरुष का थोड़े ही शृंगार से मोहित होना वर्णन किया जाता है
बिच्छी, बिच्छू-(हिं० पुं० एक छोटा बिषैला कीड़ा जिसके पूंछ में डंक होता है जिसमें विष रहता है, एक प्रकार की घास जिसके छू जाने से बिच्छू के काटने के समान जलन और पीड़ा उत्पन्न होती हैं।
बिच्छेप-देखो विक्षेप।
बिछना-(हिं० क्रि०) फैलाया जाना, छितराया जाना, भूमि पर गिराया जाना।
बिछलना-(हिं० क्रि०) देखो फिसलना।
बिछलन-(सं० पुं०) फिसलन।
बिछलाना-(हिं० क्रि०) फिसलाना।
बिछवाना-(हिं० क्रि०) बिछाने का काम दूसरे से करना।
बिछाना-(हिं० क्रि०) भूमि पर पूरे विस्तार से फैलाना गिराना या लिटा देना, बिखेरना, किसी वस्तु को भूमि पर कुछ दूर तक फैला देना।
बिछावन, बिछायत-(हिं०पु०) बिछौना।
बिछिया-(हिं० स्त्री०) पैर की अंगुलियों में पहरने का एक प्रकार का छल्ला।
बिछिप्त-(हिं० वि०) देखो विक्षिप्त।
बिछुआ-(हिं० पुं०) पैर में पहरने का एक प्रकार का गहना, एक प्रकार की छोटी छुरी, अंगिया नामक पौधा।
बिछुड़न-(हिं० स्त्री०) बिछुड़ने या अलग होने का भाव, वियोग। **बिछुड़ना**-(हिं० क्रि०) साथ रहने वाले दो व्यक्तियों का अलग होना, प्रेमियों का परस्पर वियोग होना।
बिछुरना-(हिं० क्रि०) देखो बिछुड़ना।
बिछुरनि-(हिं० स्त्री०) बिछुड़न।
बिछुवा-देखो बिछिया।
बिछुरंता-(हिं० पुं०) बिछुड़ने वाला।
बिछूना-(हिं० पुं०) वह जो बिछुड़ गया हो।
बिछोई-(हिं० पुं०) वियोगी।
बिछोड़ा-(हिं० पु०) बिछोह, बिछुड़ने की क्रिया या भाव।
बिछोय, बिछोह-(हिं० पुं०) वियोग, बिरह।
बिछोयना-(क्रि०) वियोग करना।
बिछौना-(हिं० पुं०) बिछाने का वस्त्र, बिछावन, बिस्तर।
बिजड़-(हिं० स्त्री०) खड्ग, तलवार।
बिजन, **बिजना**-(हिं० पुं०) व्यजन, पंखा, (वि०) एकान्त, जिसके साथ दूसरा कोई न हो।
बिजयघंट-(हिं० पुं०) मन्दिरों में लटकाने का बड़ा घंटा।
बिजयसार-(हिं० पुं०) एक प्रकार का बहुत बड़ा जंगली वृक्ष, इसकी लकड़ी बहुत पुष्ट होती है।
बिजली-(हिं० स्त्री०) वह शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे कभी कभी ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है, विद्युत्, बादलों के टकराने तथा रसायनिक क्रिया से उत्पन्न होने वाला वह प्रकाश जो आकाश में कभी कभी देख पड़ता है, आम की गुठली के भीतर की गिरी, कान में पहरने का एक गहना, गले में पहरने का एक आभूषण, (वि०) अधिक तीव्र या चंचल, चमकीला, **बिजली गिरना**-आकाश से विद्युत का वेग के साथ भूमि पर आना; **बिजली कड़कना**-आकाश में गड़गड़ाहट होना।
बिजहन-(हिं० वि०) वह बीज जिसमें उगने की शक्ति नष्ट हो गई हो।
बिजाती-(हिं० वि०) दूसरी जाति का दूसरी तरह का, जाति से निकाला हुआ, बहिष्कृत।
बिजान-(हिं० वि०) अज्ञान, अनजान।
बिजायठ-(हिं पुं०) बांह पर पहरने का एक आभूषण, बाजूबन्द।
बिजुरी-(हिं० स्त्री०) देखो बिजुली।
बिजूका, बिजूखा-(हिं०पु०) विभीषिका पशु पक्षियों के डराने के लिए खेत में गाड़ा हुआ पुतला।
बिजैसार-(हिं०पु०) देखो विजयसार।
बिजोग-(हिं०पु०) देखो वियोग।
बिजरा-(हिं०वि०) निर्बल, बलहीन, अशक्त।
बिजोहा-(हिं०पुं०)एक छन्द का नाम।
बिजौरा-(हिं० पुं०) नीबू की जाति का एक वृक्ष जिसके फल नारंगी के बराबर होते है।
बिजौरी-(हिं०स्त्री०) कुम्हड़ौरी।
बिज्जु-(हिं०स्त्री०) बिजली, विद्युत्। **बिज्जुपात**-(हिं० पुं०) बिजली का गिरना। **बिज्जुल**-(हिं०स्त्री०)बिजली, (पुं०) त्वचा, छिलका।
बिज्जू-(हिं०पुं०) बिल्ली की तरह का एक जंगली पशु।
बिज्जुहा-(हिं० पुं०) एक वर्णिकवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते है।
बिझंवारी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की भाषा जो छत्तीसगढ में बोली जाती है।
बिझरा-(हिं०पुं०) एक में मिला हुआ मटर, चना, गेहूँ और जव।
बिझुकना-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना भड़कना, टेढ़ा होना। **बिझुकाना**-(हिं०क्रि०) भड़काना, डराना, टेढ़ा करना।
बिट-(हिं०पुं०) देखो विट्, नायक का वह साथी जो सब कलाओं में निपुण हो, पक्षियों की विष्ट, बीट।
बिटप-देखो विटप; **बिटपी**-(हिं०स्त्री०) वृक्ष।
बिटरना-(हिं०क्रि०) घंघोलना, घंघोल कर मलिन करना, मलिन होना घंघोला जाना।
बिटिनियां। टिया-(हिं०स्त्री०)बेटी पुत्री।
बिट्ठल-(हिं०पु०) विष्णु का एक नाम, बंबई प्रांत में शोलापुर के अन्तर्गत पंढरपुर नगर की एक प्रधान देवमूर्ति जो बुद्ध की मूर्ति सी जान पड़ती है।
बिठलाना-(हिं०क्रि०) देखो बैठाना।
बिठाना-(हिं० क्रि०) बैठाना।
बिड़ब-(हिं०पु०) विडम्ब, आडम्बर।
बिडवना-(हिं० क्रि०) रूप बनाना, निन्दा, उपहास, हँसीठठ्ठा।
बिड़-(हिं० पु०) विष्ठा, एक प्रकार का नमक।
बिडर-(हिं० वि०) छितराया हुआ, दूरदूर, (वि०) निर्भय, जिसको डर न लगती हो, धृत, ढीठ। **बिडरना**-(हिं० क्रि०) अस्त व्यस्त होना, तितर बितर होना, पशुओं का भयभीत होना, बिचकना। **बिडराना**-(हिं० क्रि०) तितर बितर करना, भगाना।
बिड़वना-(हिं०क्रि०) तोड़ना।
बिडारना-(हिं०क्रि०) डरा कर भगाना, नष्ट करना।
बिडाल-(सं० पुं०) बिलाव, बिल्ली, बिडालाक्ष नामक दैत्य जिसको दुर्गा ने मारा था, दोहे का एक भेद। **बिड़ालपाद**-एक तौल जो एक कर्ष के बराबर होती है; **बिडालावृत्तिक**-लोभी, कपटी स्वभाव का।
बिडालाक्ष-(सं०वि०)वह जिसकी आंखें बिल्ली की आँखों के सदृश हों।
बिडालिका-(सं०स्त्री०)बिल्ली, हरताल।
बिड़ाली-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का आंख का रोग।
बिड़ौजा-(सं०पुं०)इन्द्र का एक नाम।
बिढतो-(हिं०पु०) लाभ।
बिढ़वना-(हिं०क्रि०) एकत्रित करना, संचित करना, इकट्ठा करना।
बिढाना-(हिं० क्रि०) देखो बिढवना।
बित-(हिं०पु०) देखो चित्त; धन, द्रव्य शक्ति, सामर्थ्य, आकार।
बितताना-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना, घबड़ाना, कष्ट देना।
बितना-(हिं० पुं०) बित्ता; रस्से के फन्दे में लगाने का लकड़ी का का छोटा टुकड़ा।
बितरना-(हिं०क्रि०) बांटना।
बितवना-(हिं०क्रि०) बिताना।
बिता-(हिं०पुं०) देखो वित्ता।
बिताना-(हिं० क्रि०) समय आदि व्यतीत करना।
बिताल-(हिं० पुं०) देखो वैताल।
बितावना-(हिं०क्रि०) देखो बिताना।
बितीतना-(हिं०क्रि०) व्यतीत होना,
बितु-(हिं०पुं०) देखो बित्त।
बित्त-(हिं०पुं०) देखो वित्त, धन।
बित्ता-(हिं०पु०) हाथ की अंगुलियों को फैलाकर अंगूठे के सिरे तक की पूरी नाप।
बिथकना-(हिं० क्रि०) चकित होना, थकना।
बिथरना-(हिं०क्रि०) इधर उधर होना, छितराना, खिल जाना।
बिथा-(हिं०स्त्री०) देखो व्यथा, पीड़ा।
बिथारना-(हिं० क्रि०) छिटकाना, बिखेरना।
बिथित-(हिं० वि०) देखो व्यथित।
बिथोरना-(हिं०क्रि०)देखो बिथरना।
बिदकना (हिं०क्रि०) फटना, चिरना, घायल होना, भड़कना। **बिदकाना**-(हिं० क्रि०) विदीर्ण करना, फाड़ना, घायल करना।
बिदर-(हिं०पुं०) विदर्भ देश (आधुनिक नाम-बरार), जस्ते और तांबे के मेल से बना हुआ एक उपधातु।
बिदरी-(हिं० स्त्री०) बिदुर धातु का बना हुआ सामान। **बिदरीसाज**-(हिं०पुं०) बिदर धातु के पात्र आदि बनाने वाला
बिदरन-(हिं०स्त्री०) दरार, फटन, (वि०) फाड़ने या चीरने वाला; **बिदरना** (क्रि०) फटना।
बिदल-(सं०नपुं०) दाल, अनारदाना, बांस का बना हुआ पात्र, लाल सोना, पीठी; **बिदलना**-(हिं०क्रि०) दलित करना।
बिदला-(सं०स्त्री०)निसोथ, (वि०) जिसमें पत्ते न हों।
बिदा-(अ०स्त्री०) प्रस्थान, जाने की आज्ञा, द्विरागमन, गवन, गौना।
बिदाई-(हिं०स्त्री०) बिदा होने का भाव या क्रिया, बिदा होने की आज्ञा, किसी के बिदा होने के समय दिया जाने वाला धन।
बिदामी-(हिं०वि०) बादामी।
बिदारना-(हिं०क्रि०) चीरना, फाड़ना, नष्ट करना, बिगाड़ना, गाड़ना।
बिदारी कद-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लाल कन्द जो प्राय: बेल की जड़ में होता है।
बिदुराना-(हिं०क्रि०) धीरे धीरे हँसना, मुसकराना। **बिदुरानी**-(हिं०स्त्री०) मुसकुराहट।
बिदूषना-(हिं०क्रि०) कलंक या दोष लगाना।
बिदेस-(हिं०पु०) अपने देश के अतिरिक्त अन्यदेश, परदेश।
बिदोख-(हिं०पुं०) बैमनस्य, वैर, शत्रुता
बिदोरना-(हिं०क्रि०) ओंठ चलाना।

बिधंसना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना,
बिघ-(हिं०पुं०) हाथी का चारा, ब्रह्मा, प्रकार, तरह, आयव्यय का लेखा; **बिघ मिलाना**-आय व्यय की रकमों को देखना कि ठीक लिखी गई है या नहीं।
बिधना-(हिं०पु०) विधि, विधाता,ब्रह्मा
बिघबंदी-(हिं०स्त्री०) भूमिकर की वह रीति जिसमे उत्पत्ति के कूत पर रकम दी जाती है।
बिधवपन-(हिं०पुं०) वैधव्य, रड़ापा।
बिधवा-(हिं०स्त्री०) देखो बिधवा।
बिधवाना-(हिं०क्रि०) देखो विधवाना
बिधांसना-(हिं०क्रि०) विध्वंस करना, नष्ट करना।
बिधाई-(हिं०पुं०) विधायक, विधान करने वाला।
बिधाना-(हिं०क्रि०) देखो विधाना।
बिधानी-(हिं०पुं०)रचने या बनाने वाला
बिधि-देखो विधि।
बिधिना-(हिं०स्त्री०) देखो विधना।
बिधुंतुद-(हिं०पुं०) राहु
बिधुसना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना।
बिधु-देखो विधु
बिन-(हिं०अव्य०) बिना।
बिनई-(हिं०वि०) देखो विनयी। **बिनऊ**-(हिं०स्त्री०) देखो विनय।
बिनता-(हिं०पुं०)एक प्रकार की चिड़िया
बिनति, बिनती-(हिं०स्त्री०) निवेदन, प्रार्थना।
बिनन-(हिं०स्त्री०) बुनने की क्रिया, बुनावट, किसी वस्तु में से चुनकर निकाला हुआ कूड़ा करकट, चुनने।
बिनना-(हिं०क्रि०) छोटे छोटे पदार्थों को एक एक करके अलग करना, चुनना, इच्छानुसार संग्रह करना, छांट कर अलगाना, देखो बुनना।
बिनय-(हिं०पु०) देखो विनय।
बिनवना-(हिं०क्रि०) प्रार्थना करना, विनय करना।
बिनसना-(हिं०क्रि०) नष्ट होना या करना। **बिनसाना**-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, बिगाड़ना, भ्रष्ट होना।
बिना-(हिं०अव्य०) छोड़ कर।
बिनाई-(हिं०स्त्री०) बींनने चुनने की क्रिया या भाव, इस कार्य का शुल्क।
बिनाती-(हिं०स्त्री०) देखो बिनती।
बिनाना-(हिं०क्रि०) देखो बुनना।
बिनानी-(हिं०वि०) अज्ञानी, (स्त्री०) विशेष विचार,
बिनावट-(हिं०स्त्री०) देखो बुनावट।
बिनासना-(हिं०क्रि०) संहार करना, नष्ट करना,
बिनि, बिनु-(हिं०अव्य०) बिना।
बिनै-(हिं०स्त्री०) देखो विनय।
बिनौका-(हिं०पुं०) पहले धान्य का पकवान जो देवता के निमित्त अलग कर दिया जाता है।
बिनौरिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास जो चारे के काम में आती है।
बिनौला-(हिं०पुं०) कपास का बीज।
बिन्दु-(हिं०पु०) देखो विन्दु, बूंद।
बिन्दुक-(सं०पुं०) गोल टीका। **बिन्दुचित्रक**-(सं०पु०) एक प्रकार का गुलदार हिरन। **बिन्दुतन्त्र**-(सं०पुं०) चौपड़ आदि की बिसात। **बिन्दुपत्र**-(सं०पु०) भूर्जपत्र, भोजपत्र। **बिन्दुमाधव**-(सं०पु०) विष्णु का एक नाम। **बिन्दुरेखा**-(सं०स्त्री०) बिन्दुओं से बनी हुई रेखा। **बिन्दु वासर**-(सं०पुं०) वह दिन जब गर्भ का प्रथम संचार होता है। **बिन्दुसार**-(सं०पुं०) चन्द्रगुप्त के एक पुत्र का नाम।
बिपच्छ-(हिं०पुं०) देखो विपक्ष, शत्रु, (वि०) विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध।
बिपच्छी-(हिं०पुं०) शत्रु, विरोधी,
बिपत-(हिं०स्त्री०) देखो विपत्ति।
बिपद, बिपत्ति-(हिं०स्त्री०) देखो विपत्ति
बिपर-(हिं०पुं०) देखो विप्र, ब्राह्मण।
बिपाक-देखो विपाक।
बिफरन-(हिं०वि०) देखो विफल।
बिफरना-(हिं०क्रि०) विद्रोही होना।
बिपरीत-(हिं०वि०) प्रतिकूल।
बिबछना-(हिं०क्रि०) विरोधी होना, उलझना।
बिबर-देखो विवर।
बिवरन-(हिं०वि०) जिसका रंग विगत गया हो, देखो विवरण।
बिबस-(हिं०क्रि०) विवश, पराधीन, परतन्त्र, (क्रि०वि०) विवश होकर।
बिवहार-(हिं०पुं०) देखो व्यवहार।
बिवाई-(हिं०स्त्री०) पैर के तलवे के फटने का रोग।
बिवाक-(हिं०वि०) चुकता।
बिबादना-(हिं०क्रि०) विवाद करना।
बिभचारी-देखो व्यभिचारी।
बिभावरी-(हिं०स्त्री०) रात्रि।
बिवाहना-(हिं०क्रि०) विवाह करना।
बिभाना-(हिं०क्रि०) चमकना
बिभु, बिमान-देखो विभु, विमान।
बिबि-(हिं०वि०) दो।
बिभित्सा-(हिं०स्त्री०) भेद करने की इच्छा।
बिमन-(हिं०वि०) अति दुःखी, चिन्तित, उदास, (क्रि०वि०) बिना चित्त लगाये, अनमना हो कर।
बिमानी-(हिं०वि०) मान रहित।
बिमोहना-(हिं०क्रि०) मोहित करना, लुभाना।
बिमौरा-(हिं०पुं०) वल्मीक, बाँबी।
बिम्ब-(सं०नपुं०) प्रतिबिम्ब, छाया, मूर्ति, कमण्डलु। (नपुं०) सूर्य या चन्द्रमा का मण्डल, सूर्य का आभास, झलक, गिरगिट, एक छन्द का नाम
बिम्बक-(सं०नपुं०) कुंदरू का फल।
बिम्बित-(सं०वि०) प्रतिबिम्ब युक्त।
बिम्बु-(सं०स्त्री०) पूगीफल, सुपारी।
बिय-(हिं०वि०) युग्म, दो, दूसरा।
बियत-(हिं०पुं०) वियुत्, आकाश।
बियरसा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत ऊँचा पहाड़ी वृक्ष।
बिया-(हिं०पुं०) बीज, (वि०) अन्य, दूसरा; **बियाज**-(पुं०) देखो ब्याज।
बियाड़-(हिं०पुं०)वह खेत जिसमें पहले बीज बोये जाते हैं बाद में उखाड़ कर दूसरे खेत में रोपे जाते हैं।
बियाधा-(हिं०पुं०) देखो व्याघा;
बियाधि-(हिं०स्त्री०) देखो व्याधि।
बियान-(हिं०पु०) प्रसव, पशुओं का बच्चा देना।
बियाना-(हिं०क्रि०)पशुओं का बच्चादेना
बियापना-(हिं०क्रि०) देखो व्यापना।
बियारी, बियालू-(हिं०स्त्री०) देखो ब्यालू
बियाह-(हिं०पुं०) बिवाह, व्याह;
बियाहता-(हिं०स्त्री०) जिसके साथ विवाह हुआ हो।
बियो-(हिं०पु०) पौत्र, पोता।
बियोग-देखो वियोग।
बिरकत-देखो विरक्त।
बिरङ्ग-(हिं०वि०)कई रङ्गो का, जिसमें एक से अधिक रङ्ग हो, बिना रङ्गका
बिरचना-(हिं०क्रि०) बनाना।
बिरंचि-(हिं०पुं०) ब्रह्मा।
बिरछ-(हिं०पु०) देखो वृक्ष।
बिरछिक-(हिं०पुं०) देखो वृश्चिक।
बिरज-(हिं०वि०) निर्दोष।
बिरझना-(हिं०क्रि०) झगडा करना।
बिरतंत-(हिं०पुं०) देखो वृत्तान्त।
बिरताना-(हिं०क्रि०) बांटना।
बिरथा-(हिं०वि०) वृथा, व्यर्थ, निरर्थक;
बिरद-(हिं०पुं०) बड़ाई, यश; देखो विरद।
बिरदैत-(हिं०पुं०) बड़ा, प्रसिद्ध, वीर या योद्धा, (वि०) प्रसिद्ध, नामी।
बिरध-(हिं०वि०) देखो बृद्ध।
बिरधाई-(हिं०स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा
बिरधापन-(हिं०पु०)वृद्ध होने का भाव, बुढ़ापा, वृद्धावस्था।
बिरमना-(हिं०क्रि०) विराम करना, सुस्ताना, ठहरना, मोहित होना;
बिरमाना-(हिं०क्रि०) व्यतीत करना, बिताना, ठहराना, रोक रखना, मुग्ध करना, मोहित करना।
बिरला-(हिं०वि०)कोई कोई,इक्का दुक्का
बिरवा-(हिं०पुं०) बृक्ष, पौधा, चना।
बिरवाही-(हिं०स्त्री०) छोटे छोटे पौधों का कुंज।
बिरषभ-(हिं०पुं०) देखो बृषभ।
बिरसन-(हिं०पुं०) विष, गरल।
बिरहिनी-(हिं०पुं०) वह नायिका जो अपने प्रियतम के विरह से दुःखित हो
बिरहा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की गीत।
बिरही-(हिं०पु०) वियोग से पीड़ित पुरुष; **बिराग**-(हिं०पु०) विरक्ति।
बिराजना-(हिं०क्रि०) शोभित होना, शोभा देना, बैठना।
बिरान, बिराना-(हिं०वि०) दूसरा।
बिराना-(हिं०क्रि०) मुंह चिढाना।
बिरिखि-(हिं०पुं०) देखो वृष, वृक्ष।
बिरिछि-(हिं०पुं०) देखो वृक्ष।
बिरियां-(सं०स्त्री०) समय, बार,।
बिरिया-(हिं०स्त्री०) कान में पहरने का कटोरी के आकार का एक गहना।
बिरी-(हिं०स्त्री०) देखो बीड़ी, बीड़ा।
बिरुआ-(हिं०पुं०)एक प्रकार का राजहंस
बिरुझना-(हिं०क्रि०) उलझना झगड़ना
बिरोजा-(हिं०पुं०) देखो गधा बिरोजा।
बिरुद-(हिं०पुं०) प्रशंसा।
बिरुधाई-(हिं०स्त्री०) बुढ़ापा।
बिरूप-(हिं०वि०) कुरूप।
बिरोधना-(हिं०पुं०) विरोध करना, बैर करना।
बिलंगी-(हिं०स्त्री०) अलगनी, अरगनी।
बिलंद-(हिं०वि०) ऊँचा, बड़ा, जो विफल हो गया हो।
बिलंबना-(हिं०वि०) विलंब करना, देर करना, रुकना, ठहरना।
बिल-(सं०नपुं०) छेद, गुहा, कन्दरा, (पु०) घोडा, बेंत, (हिं०पु०) जंगली पशुओं के रहने का स्थान जिसको वे खोद कर बनाते हैं।
बिलखना-(हिं०क्रि०) विलाप करना, रोना, दुःखी होना, सिकुड़ना;
बिलखाना-(हिं०क्रि०) रुलाना, दुःखी करना।
बिलग-(हिं०वि०) पृथक्, अलग, (पुं०) अलग होने का भाव, द्वेष आदि बुरा भाव; **बिलगाना**-(हिं०क्रि०) पृथक होना, अलग करना, अलगाना, चुनना, छाँटना।
बिलगी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का संकर राग।
बिलच्छन-(हिं०वि०) देखो विलक्षण।
बिलच्छना-(हिं०क्रि०) लक्ष करना।
बिलनी-(हिं०स्त्री०) काली भौंरी जो भीत या किवाड़ों पर अपने रहने के लिये मिट्टी की बाँबी बनाती है, आँख की पलक पर होने वाली फुंसी।
बिलपना-(हिं०क्रि०)विलाप करना,रोना
बिलबिलाना-(हिं०क्रि०) छोटे छोटे कीड़ों का इधर उधर रेंगना, असंबद्ध प्रलाप करना, व्याकुल होकर बकना, भूख से व्यग्र होना, कष्ट के कारण व्याकुल होकर रोना और चिल्लाना
बिलम-(हिं०पुं०) देखो विलम्ब, देर।
बिलमना-(हिं०क्रि०) विलम्ब करना, देर करना, ठहरना, रुकना;
बिलमाना-(हिं०क्रि०) अटका रखना, रोक रखना।
बिललाना-(हिं०क्रि०) विलाप करना, बिलख कर रोना, व्याकुल होकर बड़बड़ाना।
बिलवाना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, दूसरे से किसी वस्तु को नष्ट कराना, छिपाना, दूसरे से छिपाने का काम कराना।
बिलवास-(सं०पुं०) बिल में रहने वाला जन्तु; **बिलवासी**-(सं०वि०) बिल में रहने वाला।

बिलशय-(सं०पुं०) सर्प, सांप।
बिलसना-(हिं०क्रि०) भोग करना, अच्छा जान पड़ना, शोभा देना; बिलसाना-(हिं०क्रि०) भोग करना, काम में लाना, दूसरे से भोग कराना
बिलस्त-(हिं०पुं०) बित्ता।
बिलहरा-(हिं०पुं०) बांस की तीलियों का बना हुआ एक प्रकार का चिपटा डब्बा।
बिलाई-(हिं०स्त्री०) बिल्ली, लोहे या लकड़ी की सिटकनी जो किवाड़ों को बन्द करने के लिये लगाई जाती है, अंकुसी या कांटा जिससे कुवें में गिरे हुए गगरे लोटे आदि निकाले जाते है
बिलाईकन्द-(हिं०पुं०) देखो बिदारीकंद
बिलाना-(हिं०क्रि०) नष्ट होना, विलीन होना, अदृश्य होना, छिप जाना।
बिलापना-(हिं०क्रि०) विलाप करना।
बिलार-(हिं०पुं०) मार्जार, बिल्ली; बिलारी-(हिं०स्त्री०) मार्जारी, बिल्ली; बिलारीकन्द-(हिं०पु०) देखो बिदारीकंद; बिलाव-(हि०पुं०) देखो बिलार।
बिलावर-(हिं०पुं०) देखो बिल्लौर।
बिलावल-(सं०पुं०) एक राग का नाम,
बिलास-देखो विलास।
बिलासना-(हिं०क्रि०) भोगना, भोग करना।
बिलिंबी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार के कमरख का फल।
बिलिया-(हिं०स्त्री०) कटोरी, गाय, बैल के गले का एक रोग।
बिलूर-(हिं०पुं०) देखो बिल्लौर।
बिलेशय-(सं०पुं०) सर्प, चूहा, नेवला, खरहा।
बिलैया-(हिं०स्त्री०) बिल्ली, कद्दू, मूली आदि के लच्छे आदि काटने का एक यन्त्र, सिटकिनी, कद्दूकस।
बिलोकना-(हिं०क्रि०) परीक्षा करना, देखना; बिलोकनि-(हिं०स्त्री०) देखने की क्रिया, दृष्टिपात, कटाक्ष।
बिलोड़ना-(हिं० क्रि०) व्यग्र होना, घबड़ाना, दही दूध मथना।
बिलोन-(हिं०वि०) बिना नमक का, कुरूप, भद्दा।
बिलोना-(हिं०क्रि०)मथना, खूब हिलाना, ढालना, गिराना।
बिलोरना-(हिं०क्रि०) देखो बिलोड़ना। बिलोलना-(हिं०क्रि०)हिलना डोलना; बिलोवना-(हिं०क्रि०) देखो बिलोना; बिलौर-(हि०पु०) देखो बिल्लौर।
बिल्कुल-(हिं०क्रि०वि०) देखो बिलकुल।
बिल्म-(सं०नपुं०) चमक, टोपी, पगड़ी।
बिल्ल-(सं०नपुं०) आलवाल, थाला।
बिल्लमूला-(सं०स्त्री०) वाराहीकन्द।
बिल्ला-(हिं०पु०) मार्जार, नर बिल्ली, चपरास की तरह की पतली पट्टी जो बांह पर या गले में पहनी जाती है।
बिल्ली-(हिं०स्त्री०) एक प्रसिद्ध मांसाहारी पशु, किवाड़ आदि में लगाने की सिटकिनी, बिलैया।
बिल्ली लोटन-एक प्रकार की बूटी
बिल्लूर, बिल्लौर-हिं०पुं० एक प्रकार का स्वच्छ पारदर्शक पत्थर, स्फटिक, स्वच्छ शीशा; बिल्लौरी-हिं०वि० बिल्लौर का बना हुआ, बिल्लौर पत्थर का, बिल्लौर के समान स्वच्छ
बिल्व-(सं०पु०) बेल का वृक्ष; बिल्वपत्र-(सं०नपु०) बेल की पत्ती; बिल्ववन-(सं०नपुं०) बेल का जंगल।
बिवरना-(हिं०क्रि०) देखो ब्योरना।
बिवारना-(हिं०क्रि०) सिर के बालों को सुलझवाना, या सुलझाना।
बिषान-(हिं०पुं०) देखो विषाण।
बिसंच-(हिं०पुं०) संचय न होना, कार्य की हानि, बाधा, भय, डर।
बिसंभर-(हिं०पु०) देखो विश्वंभर।
बिसंभार-(हिं०वि०) असावधान।
बिस-(हिं०पुं०) देखो विष।
बिसकरमा-देखो विश्वकर्मा।
बिसखापर, बिसखपरा-(हिं०पुं०) गोह की जाति का एक विषैला जन्तु पुनर्नवा, एक प्रकार की जंगली बूटी
बिसज-(सं०नपुं०) पद्म, कमल।
बिसटी-(हिं०स्त्री०) बेगार।
बिसतरना-(हिं०क्रि०) विस्तार करना, बढाना, फैलाना; बिसतार-देखो विस्तार।
बिसद-(हिं०वि०) देखो विशद।
बिसन-(हिं०पुं०) देखो व्यसन; बिसनी-(हिं०वि०) जिसको किसी बात का व्यसन हो, जिसको सामान्य पदार्थ अच्छी न लगें, छैला, चिकनियां।
बिसमऊ-(हि०पुं०) देखो विस्मय।
बिसमरना-(हिं०क्रि०) विस्मरण होना, भूल जाना।
बिसमव-(हिं०पुं०) देखो विस्मय।
बिसयक-(हिं०पु०) देश, राष्ट्र।
बिसरना-(हिं०क्रि०) विस्मृत होना, भूल जाना।
बिसरात-(हिं०पुं०) खच्चर।
बिसराना-(हिं०क्रि०) ध्यान में न रखना।
बिसराम-(हिं० पुं०) देखो विश्राम।
बिसरावना-हिं०क्रि० देखो बिसराना
बिसल-(सं०नपुं०) पल्लव, कोंपल।
बिसवार-(हि०पुं०) हज्जाम की छूरा चमोटा आदि रखने की पेटी।
बिसवास-(हिं०पुं०) देखो विश्वास। बिसवासिनी-(हिं०वि०) विश्वास करने वाली जिस पर विश्वास हो। बिसवासी-(हि०वि०) जो विश्वास करे, जिस पर विश्वास हो; जिस पर विश्वास किया जा सके।
बिससना-हिं०क्रि०) बध करना, शरीर काटना, चीरना फाड़ना विश्वास करना।
बिसहना-(हिं०क्रि०) मोल लेना।
बिसहर-(हिं०पुं०) सर्प, सांप।
बिसहरू-(हिं०पु०) मोल लेने वाला।
बिसहिनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया।
बिसायंध-(हिं०वि०) सड़ी मछली की गन्ध वाला (स्त्री०) सड़ी मछली के समान गन्ध।
बिसाख-हिं०स्त्री० देखो विशाखा।
बिसाना-हिं०क्रि० बस चलना, वश में होना, विष का प्रभाव करना।
बिसारद-(हिं०पुं०) देखो विशारद।
बिसारना-(हिं०क्रि०) ध्यानमें न रखना भुलाना।
बिसारा-(हिं०वि०) विषाक्त, विष भरा हुआ।
बिसास-(हिं०पु०) विश्वास। बिसासनी, बिसासिनी-(हिं०स्त्री०) जिस पर विश्वास न किया जा सके, विश्वास घातिनी।
बिसासी-(हि०वि०) छली, कपटी, जिस पर विश्वास न किया जा सके।
बिसाह-(हिं०पु०) क्रय।
बिसाहना-(हिं०क्रि०) मोल लेना, अपने साथ करना, (पुं०) मोल लेने की वस्तु, मोल लेनेकी क्रिया। बिसाहनी-(हिं०स्त्री०)जोवस्तुमोल ली जाय, सौदा
बिसाहा-(हिं०पु०) मोली हुई वस्तु सौदा
बिसिख-(हि०पुं०) देखो विशिख।
बिसियर-(हिं०वि०) विषैला।
बिसुनना-(हिं०क्रि०) खाती समय किसी वस्तु का नाक की ओर चढ़ जाना।
बिसुवा-(हि०पुं०) देखो बिस्वा।
बिसूरना-(हिं० क्रि०) चिन्ता करना, सोच करना, (स्त्री०) चिन्ता।
बिसेन-(हि०पुं०) क्षत्रियोंकी एक शाखा
बिसेस-(हिं०वि०) देखो विशेष।
बिसेषना-(हिं०क्रि०) ब्योरेवार वर्णन करना, निश्चित करना, विशेष रूप से होना।
बिसेसर-(हिं०पु०) देखो विश्वेश्वर।
बिस्तर-(हि०पु०) बिछौना, विस्तार, बढ़ाव। बिस्तरना-(हिं०क्रि०)विस्तार पूर्वक वर्णन करना या कहना, अधिक करना, फैलाना, बात को बढ़ा कर कहना, बिस्तारना-(हिं०क्रि०) विस्तार करना, फैलाना। बिस्तुइया-(हिं०स्त्री०) गृहगोधा, छिपकली।
बिस्मय, बिश्राम-देखो विस्मय, विश्राम
बिस्वा-(हि०पुं०) एक बीघे, का बीसवां भाग; बीस बिस्वा-आवश्यक निःसंदेह
बिस्वादार-(हिं०पुं०) पट्टीदार।
बिस्वास-(हिं०पुं०) देखो विश्वास।
बिहंग-(हिं०पुं०) देखो विहंग, पक्षी।
बिहंडना-(हिं०क्रि०) टुकड़े टुकड़े करना, तोड़ना, नष्टकरना, काटना, मारडालना।
बिहँसना-(हिं०क्रि०) मुस्कराना, मन्द हास करना, प्रफुल्लित होना, फूल का खिलना।
बिहँसाना-(हिं०क्रि०) प्रफुल्लित करना, खिलाना।
बिहग-(हिं०पुं०) देखो विहङ्ग, पक्षी।
बिहतर-(हिं०वि०) अधिक अच्छा।
बिहतरी-(हिं०स्त्री०) कुशल, भलाई।
बिहद्द-(हिं०वि०) असीम, परिमाण से अधिक।
बिहवल-(हिं०वि०) विह्वल, व्याकुल।
बिहरना-(हिं०क्रि०) भ्रमण करना घूमना फिरना, सैर करना, विदीर्ण होना, फूटना फटना, टूट कर अलग होना
बिहराना-(हिं०क्रि०) फटना।
बिहरी-(हिं०स्त्री०) अंशदान, चन्दा।
बिहाग-(हि०पुं०) एक राग का नाम।
बिहागड़ा-(हिं०पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
बिहान-(हि०पुं०) प्रातः काल, सबेरा, (क्रि०वि०) कल्ह, कल।
बिहाना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना, बीतना।
बिहारना-(हिं०क्रि०) विहार करना, केलि क्रीड़ा करना।
बिहाल-(हि० वि०) व्याकुल।
बिहि-(हिं०स्त्री०) देखो विधि।
बिहीन, बिहून-(हिं०वि०) विहीन, रहित, बिना।
बिहोरना-(हिं०क्रि०) देखो बिछुड़ना।
बीड़ा-(हिं०पुं०) कच्चे कुवें की भीत न गिरने के लिये लगाया हुआ टहनियों आदि से बना हुआ मेड़रा, घास आदि की बनी हुई गेंडुरी, एक प्रकार का गोल आसन, पिंड, पिंडी, लकड़ी या बांसका बँधा हुआ गट्ठर
बींड़िया-(हिं०पुं०) तीन बैल की गाड़ी में सबसे आगे जोता हुआ बैल।
बींड़ी-(हिं०स्त्री०) सूत की वह पिंडी जो किसी वस्तु पर लपेट कर बनाई जाती है।
बींधना-(हिं०क्रि०) बेधना, छेदना।
बीका-(हि०वि०) वक्र, टेढ़ा।
बीख-(हि०पुं०) पद, कदम, डग।
बीग-(हि०पुं०) भेड़िया।
बीगना-(हिं०क्रि०) फेंकना, छितराना, छांटना, गिराना।
बीगहाटी-(हिं०स्त्री०) बीघे के हिसाब से लगाई जाने वाली लगान।
बीघा-(हिं०पुं०) खेत नापने का वह वर्गमान जो बीस बिस्वे का होता है
बीच-(हि०पुं०) किसी पदार्थ का मध्य भाग, अवकाश, अन्तर, अवसर, भेद, (स्त्री०) तरङ्ग, लहर; बीच खेत-खुले मैदान में, सब के सामने; बीच बीच में-थोड़ी थोड़ी देर बाद; बीच करना-झगड़ा तय करना; बीच पड़ना-झगड़ा निबटाने के लिये मध्यस्त बनना; बीचमेंडालना-उलटफेर करना; बीचमें पड़ना-बिचवई या मध्यस्थ होना, उत्तरदायी होना; बीचमें कूदना-निरर्थक बिघ्न डालना; बीच रखना-पराया समझना; बीचमें रख कर कहना-शपथ खाना।
बीचु-(हि०पु०) अन्तर, अवसर।
बीचोबीच-(हिं०क्रि०वि०) बिलकुल मध्य या बीच में।
बीछना-(हिं०क्रि०) चुनना, छांटना। बीछी, बीछू-(हिं०पुं०) देखो बिच्छू,

बिछुआ।
बीछी; बीछू-(हिं०पुं०) देखो बिच्छू, बिछुआ।
बीज-(सं०नपुं०) प्रधान करण, शुक्र, अंकुर,वृक्ष आदिके अंकुरका आधार, बीजगणित, मूक प्रकृति, मूल, जड़, देवताओं के मूल मन्त्र।
बीजक-(सं०पुं०) वह सूची जिसमे माल का ब्योरा, मूल्य आदि लिखा हो, बीज, गड़े हुए धन की सूची जो उसके साथ रहती हैं, असना का वृक्ष, बिजौरी नीबू, कबीरदास के पदों के तीन संग्रहों मे से एक।
बीजकर्ता-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
बीजक्रिया-(सं०स्त्री०) बीजगणित के किसी प्रश्न की क्रिया। **बीजगणित**-(सं०नपुं०) गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों की संख्याओं का द्योतक मान कर अज्ञात संख्याएं आदि जानी हैं। **बीजगुप्ति**-(सं०स्त्री०) सेम, धान की भूसी। **बीजत्व**-(सं०(नपुं०) बीज का भाव या धर्म, बीजपन। **बीजदर्शक**-(सं०पुं०) वह व्यक्ति जो नाटक के अभिनय की व्यवस्था करता हो।
बीजधान्या-(सं०नपुं०)धान्यक,धनिया
बीजन-(हिं०पुं०) व्यजन, वेना, पंखा
बीजपुर,बीजपूर्ण-(सं०नपुं०) बिजौरा नीबू।
बीजपेशिका-(सं०स्त्री०) अण्डकोष।
बीजबन्द-(हिं०पुं०) बरियारी के बीज।
बीजमन्त्र-(सं०नपुं०) भिन्नभिन्न देवता के उद्देश्य से निर्दिष्ट मूल मन्त्र।
बीजमातृका-(सं०स्त्री०) कमलगट्टा।
बीजरत्न-(सं०पुं०) उड़द की दाल।
बीजरेचन-(सं०नपुं०) जमालगोटा।
बीजरी-(हिं०स्त्री०) देखो बिजली।
बीजल-(सं०वि०) बीजयुक्त,जिसमेंबीज हो; (हिं०स्त्री०) तलवार।
बीजवर-(सं०पुं०) एक प्रकारका उड़द
बीजवाहन-(सं०पु०) शिव, महादेव।
बीजवृक्ष-(सं०पुं०) असना का पेड़।
बीजा-(हिं०वि०) दूसरा।
बीजाक्षर-(सं०नपुं०) किसी बीज मन्त्र का पहला अक्षर,**बीजाङ्कुर**-(सं०पुं०) प्रथम अंकुर, अंखुआ। **बीजाध्यक्ष**-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
बीजित-(सं०वि०) बोया हुआ।
बीजी-(हिं०स्त्री०) गरी, मींगी, गुठली।
बीजु-(हिं०स्त्री०) बिजुली,विद्युत्। **बीजुपात**-(हिं०पुं०)देखो वज्रपात। **बीजुरी**-(हिं०स्त्री०) देखो बीजली।
बीजू-(हिं०वि०) जो (वृक्ष) बीज से उत्पन्न हो।
बीझना-(हिं०क्रि०) लिप्त होना, फँसना
बीझा-(हिं०वि०) निर्जन, एकान्त।
बीट-(हिं०स्त्री०) पक्षियों की विष्ठा, मूल, गू।
बीठक-(हिं०पुं०) देखो विट्ठल।
बीड़-(हिं०स्त्री०) एक के ऊपर एक रक्खे हुए रुपयों की तही या गड्डी।
बीड़ा-(हिं०पुं०) पान की गिलौरी, खोली;**बीड़ाउठाना**-किसी काम करने के लिये उद्यतहोना। **बीड़िया**-बीड़ा उठाने वाला, अगुआ।
बीड़ी-(हिं०स्त्री०) बीड़ा, गड्डी, बीड़, मिस्सी जिसको स्त्रियाँ दांतोंमेंमलती है, शहतूत के सूखे पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूरा जिसको जलाकर सिगरेट की तरह लोग पीते हैं, एक प्रकार की नाव।
बीतना-(हिं०क्रि०) समय का व्यतीत होना, सघटित होना,घटना, दूरहोना, छूट जाना।
बीता-(हिं०पुं०) देखो बित्ता।
बीथी-(हिं०स्त्री०) देखो वीथी।
बीथित-(हिं०वि०) व्यथित, दुःखित।
बीधना-(हिं०क्रि०)फँसना,देखो बींधना
बीन-(हिं०स्त्री०) वीणा, सितारकी तरह का एक बाजा जिसके दोनों ओर बड़े बड़े तुंबे लगे रहते है।
बीनना-(हिं०क्रि०) छोटी छोटी वस्तुओं को उठाना, चुनना, छाँटकर अलगाना
बीफै-(हिं०पुं०) बृहस्पतिवार, गुरुवार
बीभत्स-(सं०पुं०) काव्य के नव रसों में से एक रस जिसमें ऐसी बातों का बर्णन होता है जिससे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है, (वि०) घृणित, जिसको देख कर घृणा उत्पन्न हो, क्रूर, पापी। **बीभत्सिक**-(सं०वि०) घृणित, निन्दित।
बीभत्सु-(सं०पुं०)अर्जुन का एक नाम।
बीय-(हिं०वि०) देखो बीजा, दूसरा।
बीया-(हिं० वि०) द्वितीय, दूसरा, (पुं०) बीज, दाना।
बीर-(हिं०वि० देखो वीर; (पु०) भ्राता, भाई, (स्त्री०) सखी, सहेली, कान में पहरने का एक आभूषण, पशुओं के चरने का स्थान, चारागाह।
बीरउ-(हिं०पु०)देखो बिरवा। **बीरज**-(हिं०पु०) देखो वीर्य।
बीरन-(हिं०पुं०) भ्राता, भाई।
बीरनि-(हिं० स्त्री०) कान में पहरने का एक गहना।
बीरबहूटी-(हिं० स्त्री०) गहरे लाल रंग का एक छोटा कीड़ा जो बरसात के आरंभ में इधर उधर रेंगता देख पड़ता है, इन्द्रगोप।
बीरा-(हिं०पु०) देखो बीड़ा; देवता का प्रसाद जो भक्तों को बाँटा जाता है।
बीरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कान में पहरने का आभूषण, तरना, वह लोहे का छेददार टुकड़ा जिसपर रखकर लोहार किसी लोहे आदि में छेद करते हैं
बीरो-(हिं०पुं०) वृक्ष, पेड़।
बील-(हिं०वि०) पोला, वह नीची भूमि जिसमें पानी भरा रहता है, बेल।
बीस-(हिं०वि०) दस की दूनी संख्याका (पुं०) दस की दूनी संख्या २०। **बीसबीस्वे**-संभावत: (वि०) श्रेष्ठ,उत्तम।
बीसना-(हिं० क्रि०) खेलने के लिये बिसात फैलाना।
बीसवां-(हिं०वि०) बीस के स्थान पर पड़ने वाला।
बिसरना-(हिं०क्रि०) भूलना।
बीसी-(हिं० स्त्री०) बीस वस्तुओं का समूह, कोड़ी, ज्योतिष के अनुसार साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से एक विभाग, (पुं०) तौलने का काटा, (स्त्री०) प्रति बीघे दो बिस्वे की उपज जो भूस्वामी को दी जाती है।
बीहड़-(हिं०वि०) विषम, ऊंचा नीचा, जो समतल न हो, विकट, पृथक्।
बुंद-(हिं०स्त्री०) बूंद, टोप, वीर्य, (पुं०) तीर, (वि०) थोड़ासा। **बुंदकी**-(हिं०स्त्री०) गोल छोटी बिंदी, छोटा गोल चिह्न या धब्बा; **बुंदकीदार**-जिस पर बुंदकिया बनी या पड़ी हों।
बुंदवान-(हिं० पुं०) छोटे छोटे बूदों की वर्षा।
बुंदा-(हिं० पुं०) कान में पहनने का एक गहना जो बुलाक के आकार का होता है, लोलक, माथे पर लगाने की बड़ी टिकली, बड़ी टिकली के आकार का गोदना।
बुंदिया-(हिं०स्त्री०) देखो बूंदी। **बुंदीदार**-(हिं०वि०) जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ बनी या लगी हों।
बुंदेलखंड-देखो बुन्देलखण्ड।
बुंदेला-देखो बुन्देला।
बुंदौरी-(हिं०स्त्री०) बूंदी या बुदिया नाम की मिठाई।
बुआ-(हिं०स्त्री०) देखो बूआ।
बुक-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कपड़ा।
बुकचा-(हिं० पु०) वह गठरी जिसमें कपड़े बंधे हों। **बुकची**-(हिं० स्त्री०) छोटी गठरी, दर्जियों की वह थैली जिसमें वे सीने का सामग्री रखते हैं।
बुकनी-(हिं० स्त्री०) महीन पिसा हुआ चूर्ण, वह महीन चूर्ण जिसको पानी में घोलने से कोई रंग बनता है।
बुकवा-(हिं०पुं०) उबटन, बटना।
बुकस-(हिं०पुं०) भंगी, मेहतर।
बुका-(हिं०पुं०) देखो बुक्का।
बुकुन-(हिं०पुं०) बुकनी, पाचक, चूर्ण।
बुक्क(सं०पु०) छाग, बकरा, हृदय।
बुक्कन-(सं०नपुं०) कुत्ते का भूंकना।
बुक्कस-(सं०पुं०) चाण्डाल।
बुक्का-(हिं० पुं०) कूटे हुए अभ्रक का चूर्ण।
बुक्कार-(सं०पुं०) सिंह का गरजना।
बुग-(हिं०पुं०) मच्छड़।
बुगचा-(हिं०पु०) देखो बुकचा।
बुगदर-(हिं०पुं०) मच्छड़।
बुगिअल-(हिं०पुं०) पशुओं के चरने का स्थान, चरागाह।
बिगुल-(हिं०पुं०) एक प्रकार की तुरही
बुजनी-(हिं०स्त्री०) कान में पहरने का एक गहना।
बुज्जर-(हिं० पु०) एक प्रकार की चिड़िया।
बुज्झा-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया।
बुझना-(हिं० क्रि०) जलने का अन्त होना, चित्त का उत्साह मन्द पड़ना, गरम वस्तु का पानी पड़कर ठंढा होना, पानी का किसी तपी हुई वस्तु पर पड़ कर छौका जाना।
बुझाई-(हिं० स्त्री०) बुझाने की क्रिया या भाव।
बुझाना-(हिं० क्रि०) जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना, तपे हुए पदार्थ को पानी में डालकर ठंढा करना, सन्तोष देना, जी भरना, किसी को बुझाने में लगाना, पानी को छौंकना, चित्त के आवेग को शान्त करना, अधिक जलने से रोकना, समझाना, अग्नि शान्त करना।
बुझारत-(हिं०स्त्री०) गाँव के भूस्वामी के वार्षिक आय व्यय का लेखा।
बुट-(हिं०स्त्री०) देखो बूटी।
बुटना-(हिं०क्रि०) माँगना।
बुड़की-(हिं०स्त्री०) डुबकी, गोता।
बुड़ना-(हिं०क्रि०) देखो बूड़ना।
बुड़बुड़ाना-(हिं०क्रि०) कुड़कर अस्पष्ट रूप से बड़बड़ करना।
बुड़ाना-(हिं०क्रि०) डुबाना, गोता देना।
बुड़ाव-(हिं०पु०) देखो डुबाव।
बुड्ढा-(हिं० वि०) पचास साठ वर्ष की अवस्था का, जिसका वय अधिक हो गया हो।
बुढ़ना-(हिं० पुं०) पत्थर फूल, छड़ीला
बुढ़वा-(हिं०वि०) देखो बुड्ढा। **बुढ़ाई**-(हिं०स्त्री०) वृद्धत्व, बुढ़ापा। **बुढ़ाना**-(हिं०क्रि०) वृद्धावस्था को प्राप्त होना, बुड्ढा होना। **बुढ़ापा**-(हिं० पुं०) बुड्ढे होने की अवस्था, वृद्धावस्था।
बुढ़ौती-(हिं०स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
बुतना-हिं०क्रि०) देखो बुझना।
बुताना-(हिं०क्रि०) देखो बुझाना।
बुत्त-(हिं०वि०) देखो बुत।
बुत्ता-हिं०पुं०) बहाना, धोखा, पट्टी।
बुदबुद-(सं० पुं०) बुलबुला, बुल्ला।
बुदबुदा-(हिं०पुं०) बुलबुला, बुल्ला।
बुद्ध-(सं०पु०) भगवान के एक अवतार का नाम, (वि०) जागरित, जागा हुआ, ज्ञानवान्, ज्ञानी, विद्वान्,पण्डित (पुं०) बौद्ध धर्म के प्रवर्तक शाक्यमुनि जो राजा शुद्धोदन के पुत्र थे।
बुद्धत्व-(सं०नपुं०) बुद्ध का भाव या धर्म।
बुद्धि-(सं० स्त्री०) मन की वह शक्ति जिसके अनुसार मनुष्य किसी उपस्थित विषय के संबंध में ठीक ठीक विचार या निर्णय करता है, ज्ञान, एक प्रकार का छन्द जिसको लक्ष्मी भी कहते हैं, छप्पय का एक भेद, उपजाति वृत्त का एक भेद। **बुद्धिकामा**-(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक

मातृका का नाम। बुद्धिचक्षु-(सं॰पुं॰) धृतराष्ट्र। बुद्धिजीवी-(सं॰ वि॰) वह जो बुद्धि द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो। बुद्धिपर-(सं॰वि॰) बुद्धि से अतीत, जहांतक बुद्धि न पहुंच सके। बुद्धि पूर्ण-(सं॰वि॰) जो जान बूझकर किया गया हो। बुद्धिमत्ता-(सं॰ स्त्री॰) बुद्धिमान होने का भाव। बुद्धिमान्-(सं॰वि॰) वह जो बहुत समझदार हो। बुद्धिमानी-(हिं॰स्त्री॰) देखो बुद्धिमत्ता। बुद्धिवंत-(हिं॰वि॰) बुद्धिमान्; बुद्धिशक्ति-(सं॰स्त्री॰) मेधा शक्ति। बुद्धिशाली, बुद्धिशील-(सं॰ वि॰) बुद्धिमान्। बुद्धिशुद्ध-(सं॰ वि॰) अच्छी बुद्धि वाला। बुद्धिसहाय-(सं॰पुं॰) मन्त्री, वजीर। बुद्धिहत, बुद्धिहीन-(सं॰वि॰) बुद्धिहीन, जिसमें बुद्धि न हो।

बुद्बुद्-(सं॰पुं॰) बुलबुला, बुल्ला।

बुधंगड़-(हिं॰ पुं॰) मूर्ख मनुष्य।

बुध-(सं॰पुं॰) विद्वान्, पण्डित, नवग्रह के अन्तर्गत चौथा ग्रह, जो सूर्य से अति समीप रहता है सूर्यवंशीय एक राजा का नाम। बुधजामी-(हिं॰पुं॰) चन्द्रमा, बुध के पिता। बुधतात-(सं॰पुं॰) चन्द्रमा। बुधरत्न-(सं॰नपुं॰) मरकत मणि। बुधवान-(हिं॰ वि॰) बुद्धिमान, पण्डित। बुधवार-(सं॰पुं॰) बुधग्रह का दिन, सात वारों में से एक वार जो मंगलवार के बाद और गुरुवार के पहले होता है।

बुधा-(सं॰स्त्री॰) जटामासी।

बुधान-(सं॰पुं॰) गुरु, प्रियवादी, कवि।

बुधि-(हिं॰स्त्री॰) देखो बुद्धि। बुधित-(सं॰वि॰) ज्ञात, जाना हुआ। बुधिल-(सं॰वि॰) विद्वान्, पण्डित।

बुनना-(हिं॰क्रि॰) ताने बाने की सहायता से कपड़ा तैयार करने की क्रिया, इस क्रिया के समान अन्य कोई वस्तु तैयार करना। बुनाई-(हिं॰स्त्री॰) बुनने की क्रिया या भाव, बुनने का शुल्क, बुनावट। बुनावट-(हिं॰स्त्री॰) बुनने में सूतों के संयोग का ढंग।

बुनियाद-(फा॰स्त्री॰) जड़, मूल, नीव।

बुन्देला-(हिं॰पुं॰) बुन्देलखण्ड निवासी एक राजपूत जाति।

बुबुकना-(हिं॰क्रि॰) वेग उच्चस्वर से रोना, पुक्का मारना।

बुबुकारी-(हिं॰क्रि॰)उच्च स्वर से रोना

बुबुधान-(सं॰पुं॰) आचार्य, पण्डित।

बुभुक्षा-(सं॰स्त्री॰) क्षुधा, खाने की इच्छा। बुभुक्षित-(सं॰वि॰) क्षुधित, भूखा। बुभुक्षु-(सं॰वि॰) जिसको भोजन करने की इच्छा हो।

बुभूषक-(सं॰वि॰) यश की इच्छा करने वाला। बुभूषा-(सं॰स्त्री॰) यश की इच्छा।

बुरकना-(हिं॰क्रि॰) महीन अथवा पिसा हुई वस्तु को दूसरी वस्तु पर हाथ से धीरे धीरे छिड़कना, भुरभुराना, (पुं॰) लड़कों की दावत जिसमें वे खड़िया मिट्टी घोल कर पटिये पर लिखने के लिये रखते हैं।

बुरकाना-(हिं॰क्रि॰) भुरभुराने या छिड़कने का काम दूसरे से करना।

बुरा-(हिं॰वि॰) निकृष्ट; बुरा मानना-द्वेष रखना; भलाबुरा-हानि लाभ, गाली गलौज। बुराई-(हिं॰ स्त्री॰) बुरापन, नीचता, खोटापन, अवगुण, दोष, निन्दा, किसी से सबध में कही हुई बुरी बात। बुरापन-(हिं॰पुं॰) देखो बुराई।

बुरुल-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का बहुत बड़ा वृक्ष।

बुलवाना-(हिं॰क्रि॰) बुलाने का काम, दूसरे से करवाना।

बुलाक-(हिं॰पुं॰) एक लंबा सुराहीदार मोती जिसको स्त्रियाँ नथ में या दोनों नथनों के बीच के परदे मे पहनती हैं।

बुलाकी-(हिं॰पुं॰) घोड़े की एक जाति

बुलाना-(हिं॰क्रि॰) पुकारना, किसी को अपने पास आने के लिये कहना,

बुलावा-(हिं॰पुं॰) बुलाने की क्रिया या भाव, निमन्त्रण।

बुलाह-(हिं॰ पुं॰) वह घोड़ा जिसकी गरदन पर के और पूंछ के बाल पीले हों।

बुलौवा-(हिं॰पुं॰) देखो बुलावा।

बुल्लन-(हिं॰पुं॰) मुख, चेहरा, बुल्ला।

बुल्ला-(हिं॰पुं॰) बुद्बुद्, बुलबुला।

बुष, बुस-(सं॰नपुं॰) अनाज के ऊपर का छिलका।

बुहरी-(हिं॰स्त्री॰) देखो बहुरी।

बुहारना-(हिं॰क्रि॰) झाड़ू देना, झाड़ू से निर्मल करना।

बुहारी-(हिं॰स्त्री॰)झाड़ू, बढ़नी,सोहनी;

बूंद-(हिं॰स्त्री॰) जल आदि का थोड़ा अंश जो गिरती समय छोटी सी गोली या दाने का रूप धारण करता है, एक प्रकार का रंगीन देशी कपड़ा, वीर्य, शुक्र; बूंदें गिरना-अल्प वृष्टि होना, झींसी पड़ना।

बूंदा-(हिं॰पुं॰)बड़ी टिकली, सुराहीदार लंबोतरा मोती जो कान या नाक में पहरा जाता है। बूंदाबूंदी-(हिं॰स्त्री॰) अल्प वृष्टि, हलकी वर्षा।

बूंदी-(हिं॰स्त्री॰)वर्षा के बूंद, एक प्रकार की मिठाई, बुन्दिया।

बूआ-(हिं॰स्त्री॰) पिता की बहिन,फूफी, बड़ी बहन, (पुं॰) चंगुल।

बूई-(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का पौधा जिसको जलाकर सज्जीखार निकाला जाता है।

बूक-(हिं॰पुं॰) माजूफल की जाति का एक बड़ा वृक्ष।

बूकना-(हिं॰क्रि॰) किसी पदार्थ को पीसकर महीन चूर्ण करना, अपने को अधिक योग्य प्रमाणित करने के लिये गढ़कर बातें करना।

बूका-(हिं॰पुं॰)नदी के हटने से निकली हुई भूमि।

बूगा-(हिं॰पुं॰) भूसा।

बूचा-(हिं॰वि॰) जिसके कान कटे हों, कनकटा, वह जो किसी अंग के कट जाने के कारण भद्दा और कुरूप दिखाई पड़ता हो।

बूची-(हिं॰पुं॰) वह भेंड़ जिसके कान बाहर न निकले हों।

बूजना-(हिं॰क्रि॰) धोखा देना, छिपाना

बूझ बूझन-(हिं॰स्त्री॰) बुद्धि, समझ, ज्ञान, पहेली। बूझना-(हिं॰ क्रि॰) जानना, समझना,प्रश्न करना, पूछना;

बूट-(हिं॰ पुं॰) चने का हरा पौधा, चने का हरा दाना, होरहा, वृक्ष, पेड़।

बूटना-(हिं॰क्रि॰) भागना।

बूटनि-(हिं॰स्त्री॰) बीरबहूटी नाम का कीड़ा।

बूटा-(हिं॰पुं॰) छोटा वृक्ष, पौधा, वृक्ष फल पत्ते आदि का चित्र जो कपड़े भीत आदि पर रंग बिरंगे बनाये जाते हैं, जड़ी बूटी।

बूटी-(हिं॰स्त्री॰)वनस्पति, जड़ीबनौषधि, भांग, ताश में बनी हुई टिक्की, फल फूल के छोटे चिह्न जो वस्त्रादि पर बनाये जाते हैं।

बूड़ना-(हिं॰क्रि॰) डूबना, लीन होना।

बूड़ा-(हिं॰ पुं॰) जल की बाढ़ जो वर्षा के कारण आती है।

बूढ़, बूढ़ा-(हिं॰वि॰) देखो बुड्ढा।

बूता-(हिं॰पुं॰) बल, पराक्रम, शक्ति।

बूना-(हिं॰पुं॰) चनार नामक वृक्ष।

बूरना-(हिं॰क्रि॰) डूबना।

बूरा-(हिं॰ पुं॰) भूरे रंग की कच्ची चीनी, शक्कर, महीन चूर्ण।

बूरी-(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार की बहुत छोटी वनस्पति।

बूला-(हिं॰पुं॰)पायल का बना हुआ जूता

बून्दा, बूक-देखो बून्दा बूक।

बृच्छ-(हिं॰पुं॰)देखो वृक्ष।

बृषण, बृषला, बृहत्-देखो वृषण, बृषल, वृहत्।

बृहण-(सं॰वि॰) पुष्टि कारक।

बृहित-(सं॰नपुं॰) हाथी की चिग्घाड़।

बृष-(सं॰पुं॰) देखो वृष।

बृहच्चञ्चु-(सं॰नपुं॰)लबी चोंच वाला;

बृहज्जाल-(सं॰नपुं॰) बड़ी जाल।

बृहतिका-(सं॰ स्त्री॰) उत्तरीय वस्त्र, उपरना।

बृहती-(सं॰स्त्री॰)बनभटा,उत्तरीय वस्त्र, उपरना, कण्टकारी, भटकटैया,वाक्य, एक वर्णवृत्त का नाम, विश्वावसु गन्धर्व की वीणा का नाम, वैद्यक के अनुसार एक मर्मस्थान जो बीचो-बीच पीठ में रीढ़ के दोनों तरफ है; बृहति कल्प-एक प्रकार का कायाकल्प; बृहतीपति-बृहस्पति।

बृहत्-(सं॰ वि॰) विशाल, बहुत बड़ा, ऊँचा दृढ़, पर्याप्त, बलिष्ठ, दृढ़।

बृहत्कन्द-गाजर; बृहत्कीर्ति-एक असुर का नाम; बृहत्कुक्षि-बड़ी तोंद वाला; बृहत्तृण-बाँस; बृहत्त्वच्-नीम का पेड़; बृहत्पाद-बरगद का पेड़; बृहत्पीलू-जंगली अखरोट; बृहत्पुष्प-केले का पेड़; बृहत्पुष्पी-सन का पौधा; बृहत्फल-कुम्हड़ा, कटहल; बृहत्फली-तितलौकी।

बृहदङ्ग-(सं॰पुं॰) मतङ्गज, हाथी।

बृहदश्व-(सं॰पुं॰)एक ऋषि का नाम।

बृहदारण्य-(सं॰नपुं॰) शतपथ ब्राह्मण का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।

बृहदेला-(सं॰स्त्री॰) बड़ी इलाइची।

बृहद्दली-(सं॰स्त्री॰)लज्जावन्ती,लजालु;

बृहद्धन-(सं॰नपुं॰) महाधन, बड़ी धन दौलत।

बृहद्धल-(सं॰नपुं॰) बड़ा हल।

बृहद्वीज-(सं॰पुं॰) आम्रातक, आमड़ा।

बृहद्भानु-(सं॰पुं॰) सत्यभामा के एक पुत्र का नाम, अग्नि, चित्रक वृक्ष।

बृहद्रथ-(सं॰पुं॰) इन्द्र, यज्ञ पात्र, शतधन्वा के पुत्र का नाम, जरासन्ध के पिता का नाम,देवरात के पुत्र का नाम।

बृहद्वयस्-(सं॰वि॰) अधिक वय वाला।

बृहद्वर्ण-(सं॰पुं॰) सोनामक्खी।

बृहद्वल्ली-(सं॰स्त्री॰) करेला।

बृहन्नल-(सं॰पुं॰) बड़ा नरकट,बाहु, बांह, अर्जुन का एक नाम।

बृहन्नला-(सं॰स्त्री॰)अर्जुन का वह नाम जिसको उन्होंने अज्ञातवास के समय में धारण किया था जब स्त्री के वेश में रहकर राजा विराट् की कन्या को नाचना गाना सिखलाते थे।

बृहन्नारायण-(सं॰पुं॰) एक उपनिषद् का नाम। बृहन्नेत्र-(सं॰वि॰) बड़ी-बड़ी आंख वाला, दूर का।

बृहस्पति-(सं॰ पुं॰) अंगिरा के पुत्र, देवताओं के गुरु, सौर जगत् का एक ग्रह; बृहस्पतिवार-गुरुवार, बीफै।

बेंग-(हिं॰पुं॰) भेक, मेढ़क।

बेंगल-(हिं॰पुं॰) वह बीज जो किसानों को बोने के लिये सवाई पर दिया जाता हैं, बेंगा।

बेंचना-(हिं॰क्रि॰) देखो बेचना।

बेंड़-(हिं॰पुं॰)वह भेड़ा जो छूटा रहता है, पड़ाव (स्त्री॰) चाँड, थोक।

बेंड़ना-(हिं॰क्रि॰) बन्द करना।

बेंड़ा-(हिं॰वि॰)आड़ा, तिरछा, कठिन।

बेंड़ी-(हिं॰ स्त्री॰) बांस की बनी हुई एक प्रकार की टोकरी।

बेंढ़-(हिं॰ पुं॰) हवा की ओर घूमने वाला एक यन्त्र, फरहरा।

बेंत-(हिं॰पुं॰) देखो बेंत। बेंत की तरह कांपना-थरथर कांपना

बेंदली-(हिं॰स्त्री॰) माथे पर लगाने की बिंदी, टिकली।

बेंदा-(हिं॰ पुं॰) माथे पर लगाने का तिलक, टीका, स्त्रियों के माथे पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण, टिकली के आकार की एक गहना।

बेंदी-(हिं०स्त्री०) टिकली, बिंदी, बंदी नामक आभूषण, शून्य, सुन्ना।
बेंवड़ा-(हिं०पुं०) वह लकडी जो बन्द द्वार के पीछे लगाई जाती है, अरगल
बेंवताना-(हिं०क्रि०) सिलाने के लिये किसी से कपड़ा नपवाना।
बेअंत-(हिं०वि०) जिसका अन्त न हो, बेहद।
बेआरा-(हिं० पुं०) एक में मिला जव और चना।
बेओनी-(हिं०स्त्री०) कघी की तरह का तरह का जुलाहों का एक अस्त्र।
बेइलि-(हिं०पुं०) देखो बेला।
बेकनाट-(सं०पुं०)सूद खोर।
बेकरा-(हिं०पुं०)चौपायों का एक रोग;
बेकल-(हिं०वि०) व्याकुल, व्यग्र।
बेकली-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
बेकहा-(हिं०वि०) जो किसी का कहना न मानता हो।
बेकाम-(हिं०वि०) जो किसी काम का न हो, निकम्मा, (क्रि०वि०) निरर्थक, व्यर्थ।
बेकान्यो-(हि०पुं०)पुकारने का संबोधन का शब्द।
बेंकुरा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का बाजा
बेखटक-(हिं०वि०) बिना किसी प्रकार के खटके या रुकावट के, बिना संकोच या असमंजस का, (क्रि०वि०) बिना आगा पिछा किये हुए।
बेखुर-हिं०पु०)एक प्रकार की चिड़िया
बेग-(हिं०पुं०) देखो वेग; चमड़े, कपड़े आदि का बना हुआ थैला।
बेगड़ी-(हिं०पुं०) नगीना बनाने वाला;
बेगना-(हि क्रि०) शीघ्रता करना;
बेगर-(हि० पु०) अचार में मिलाया हुआ मसाला।
बेगवती-(सं० स्त्री०) एक वर्णार्ध वृत्त का नाम।
बेगसर-(हिं०पुं०) खच्चर।
बेगि-(हि०क्रिं०वि०)शीघ्रता से, तूरत।
बेगुन-हिं०पुं०) देखो बैंगन।
बेगुनी-(हि०स्त्री०)एक प्रकार की सुराही
बेचक-हिं०पुं०) बेचने वाला।
बेचना-(हिं०क्रि०)विक्रय करना, मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना। बेचवाना, बेचाना-(हिं०क्रि०) देखो बिकवाना।
बेझना-(हि०क्रि०) देखो बेधना।
बेझरा-(हिं०पुं०)गेंहू, जव, चना, मटर आदि में से दो या तीन मिले हुए अन्न।
बेझा-(हि०पु०) लक्ष्य।
बेटकी-(हिं०स्त्री०) बेटी, पुत्री, लड़की।
बेटला-(हिं०पुं०) बेटा, पुत्र।
बेटा-(हिं०पुं०) पुत्र, लड़का।
बेटौना-(हिं०पुं०)बेटा।
बेठ-(हिं० पुं०) एक प्रकार की ऊसर भूमि।
बेठन-(हि०पुं०) कपड़े का टुकड़ा जो किसी वस्तु के लपेटने के काम में आता है, बेंधना।
बेठिकाने-(हिं०वि०) जो अपने उचित स्थान पर न हो व्यर्थ, निरर्थक बिना सिर पैर का।
बेड़-(हि०पुं०) मेड़, थाला,नगद रुपया;
बेड़ना-(हिं०क्रि०) छोटी भीत खड़ी करना, थाला बांधना।
बेड़ा-(हि०पु०) लट्ठे, बांस, आदि को एक में बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बैठकर नदी पर चलते हैं, तिराना, नाव, बहुत सी नाव या जहाजों का समूह, (वि०) जो आँखों के समानान्तर एक ओर से दूसरी ओर गया हो, कठिन। बेड़ा पार करना-संकट से छुड़ाना।
बेड़िया-(हिं०पुं०) बांस की बनी हुई छिछली टोकरी जो खेत सींचने में पानी उछालने के काम में लाई जाती है।
बेड़िन, बेड़िनी-(हि०स्त्री०) नाचने गाने वाली नट जाति की स्त्री।
बेड़ी-(हिं० स्त्री०) लोहे की कड़ी जो अपराधियों के पैर में डाल दी जाती है जिसमें वे स्वतन्त्रतापूर्वक घूम फिर न सके, निगड, बाँस की बनी हुई टोकरी जो पानी उठाने के काम में लाई जाती है, (स्त्री०) छोटी नाव या बेड़ा।
बेडौल-(हि० वि०) भद्दा, जो उपयुक्त स्थान पर न हो, बेढ़गा।
बेढंग, बेढंगा-(हिं०वि०) बुरे ढंग का, कुरूप, भद्दा। बेढंगापन-(हिं०पुं०) भद्दापन।
बेढ़-(हिं०पु०) नाश, बोया हुआ वह बीज जिसमें अंकुर निकल आया हो
बेढ़ई-(हि०स्त्री०) पीठी आदि भरी हुई कचौड़ी।
बेढ़न-(हि०पुं०) वह जिससे कोई वस्तु घरी हो।
बेढ़ना-(हि०क्रि०) वृक्ष खेत आदि के रक्षा के निमित्त टट्टी बांध आदि से घेरना, चौपायों को घेर कर हांक ले जाना।
बेढब-(हि०वि०) जिसका ढंग अच्छा न हो, जो देखने में ठीक न जान पड़े, भद्दा, (क्रि०वि०) अनुचित रीति से, बुरी तरह से।
बेढ़ा-(हि०पुं०) घर के सामने का तरकारी आदि बोने के लिये घेरा हुआ छोटा स्थान, एक प्रकार का हाथ में पहरने का आभूषण।
बेढाना-(हि०क्रि०) ओढ़ाना, घिरवाना
बेणीफल-(हि० पुं०) फूल के आकार का सिर पर पहरने का एक प्रकार का गहना, सीसफूल।
बेत-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लचीली नरकट, आकाश वियत, रायायण लंकाकाण्ड-फूलैं फलै न बेत।
बेतना-(हि०क्रि०) प्रतीत होना, जान पड़ना।
बेतार-(हिं०वि०) बिना तार का,जिसमें तार न हों;बेतार का तार-एक नया आविष्कार जिसमें समाचार गाने आदि रेडियो के यंत्र से जाते है, इसमें तार एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं लगे रहते।
बेताल-(हिं०पु०) देखो वेताल, भूत योनि विशेष।
बेताल-(हिं०पुं०) भाट, वन्दी।
बेताला-(हि०स्त्री०) वह बाजा या सगीत जो ताल के सहगामी न हो।
बेतुला-(हिं०वि०) बेढंगा,
बेतुका छंद-(हि०पुं०) वह छंद जिसमें अनुप्रास न मिलते हों, अमिताक्षर छन्द।
बेद-(हिं०पुं०) देखो वेद।
बेदक-(हिं०पुं०)हिन्दू, वेद मानने वाला
बेदना-देखो वेदना
बेदमल-(हिं०पु०) लकड़ी की वह पटरी जिसपर तेल लगाकर सिकलीगर अपना मस्किला नाम का अस्त्र रगड़कर चमकाते हैं।
बेदाना-(हिं०पु०)एक प्रकार का बढिया काबुली अनार, बिहीदाना नामक फल के बीज, (वि०) मूर्ख।
बेदाम-(हिं०वि०)बिना दाम का,जिसका कुछ मूल्य न दिया गया हो।
बेध-देखो वेध।
बेधड़क-(हिं०क्रि०वि०) बिना किसी प्रकार के संकोच भय या आशंका के, निडर होकर बिना रुकावट के, बिना आगा पीछा सोचे समझे,(वि०) निर्भय, निठर,
बेधना-(हिं०क्रि०) किसी नुकीली वस्तु से छेद करना, शरीर में घाव करना
बेधर्म-(हिं०क्रि०) जिसको अपने धर्म का ध्यान न हो,धर्म से गिरा हुआ।
बेधिया-(हिं०पुं०) अंकुश।
बेधीर-(हिं०वि०) देखो अधीर।
बेनग-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी बांस।
बेन-(हिं०पुं०) बंसी, मुरली, सँपेरे की तुमड़ी, महुवर, एक प्रकार का वृक्ष, बांस।
बेनट-(हि०स्त्री०) बंदूक के अगले सिरे पर लगी हुई किर्च, संगीन।
बेना-(हि०पुं०) बांस का बना हुआ छोटा पखा, व्यजन, खस, उशीर, बांस, माथे के बीचमें पहरनेका एक प्रकार का गहना।
बेनागा-(हिं०क्रि०वि०) निरन्तर,
बेनी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की चोटी,वेणी, एक प्रकार का धान, गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम, त्रिवेणी, किवाड़ के पल्ले में लगी हुई वह लड़की जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है।
बेनु-(हिं० पुं०) देखो-वेणु,बंसी, मुरली, बाँस।
बेनुली-(हि०स्त्री०) जाँते या चक्की के किल्ले पर रक्खी हुई वह लकड़ी जिसके दोनों सिरों पर जोती रहती है
बेनौटी-(हिं०पु०) कपास के फूल के समान रंग।
बेपर्द-(हिं० वि०) नंगा।
बेपाई-(हिं०वि०) हक्काबक्का, भौचक।
बेपार, बेपारी-देखो व्यापार,व्यापारी
बेपेंदी-(हि०वि०) बिना पेंदी का, इधर उधर लुड़कने वाला; बेपेंदी का लोटा-वह मनुष्य जो बारंबार अपने विचार को बदलता हो।
बेबस-(हिं० वि०) विवश, लाचार, जिसका कुछ वश न चले, परवश, पराधीन।
बेबसी-(हिं०स्त्री०) विवशता,पराधीनता
बेबहा-(हि०वि०) अमूल्य
बेब्याहा-(हिं०वि०) अविवाहित,कुँआरा
बेम-(हिं०स्त्री०) जुलाहों की कंघी।
बेमन-(हिं०क्रि०वि०) बिना मन लगाये, (वि०) जिसका मन न लगता हो।
बेमारी-(हिं०स्त्री०) देखो बीमारी।
बेमालूम-(हिं०क्रि० वि०) बिना किसी को पता दिये हुए, (वि०) जो मालूम न पड़ता हो,जिसका पता न लगता हो
बेयरा-(हिं०पुं०) देखो बेरा।
बेर-(हिं०पुं०) एक कंटीला वृक्ष जिसके फल मीठे होते हैं, बेर का फल, (स्त्री०) वार, विलम्ब, देर।
बेरजरी-(हिं०स्त्री०) जंगली बेर,झरबेरी
बेरजा-(हिं०पुं०) देखो बिरोजा।
बेरवा-(हिं० पुं०) कलाई में पहरने का एक गहना, कड़ा।
बेरा-(हि०पुं०) बेला, समय,प्रातःकाल, तड़का, एक में मिला हुआ चना और जव।
बेरादरी-(हिं०पुं०) देखो बिरादरी।
बेराम-(हि०वि०) देखो बीमार।
बेरामी-(हिं०स्त्री०) देखो बीमारी।
बेरिआ-(हि०स्त्री०) समय, बेला।
बेरिज-(हिं० स्त्री०) किसी ज़िले की कुल जमा।
बेरिया-(हिं०स्त्री०) समय, काल।
बेरी-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी लता, एक में मिली हुई सरसों और तीसी, बेर, उतना अनाज जितना चक्की में एक बार डाला जाता है, मुट्ठी भर अन्न।
बेरुआ-(हिं०पुं०) वह बांस का टुकड़ा जो नाव खींचने के गून में बंधा होता है।
बेरुइ-(हि०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बेरुकी-(हिं०स्त्री०) बैलों की जीभ में होने वाला एक रोग।
बेरूप-(हिं०वि०) कुरूप,
बेर्रा-(हि०पुं०) मिले हुए जव चने का आंटा।
बेलंब-(हिं०पुं०) देखो विलम्ब।
बेल-(हिं०पुं०) मझोले आकार का एक प्रसिद्ध कंटीला वृक्ष जिसके फल का मोटा कड़ा छिलका होता है, बिल्व, श्रीफल; (स्त्री०) वे छोटे कोमल पौधे

जो अपने बल पर ऊपर नहीं उठ सकते, लता, वल्ली, सन्तान वंश, नाव, खेने का डांड़ा, घोड़े के पैर का एक रोग, फ़ीते पर बना हुआ जरदोज़ी या रेशम का काम, विवाह आदि अवसरों पर नेगियों को देने का धन, कपड़े भीत आदि पर बनी हुई फूल पत्तियां, (फ़ा०पुं०) एक प्रकार की कुदाली, एक प्रकार का लंबा खुरपा,

बेलक-(हिं०पुं०) फरसा, फ़ावड़ा।

बेलकी-(हिं०पु०) चरवाहा।

बेलखजी-(हिं०पु०) एक प्रकार का ऊंचा पहाड़ी वृक्ष।

बेलगिरी-(हिं०स्त्री०) बेल के फल का गूदा।

बेलड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटी बेल या लता।

बेलन-(हिं०पुं०) लोहे लकड़ी पत्थर आदि का गोल भारी टुकड़ा जो अपने अक्ष पर घूमता है और इसको लुड़का कर पीसने तथा सड़क आदि को समतल करने के काम में लाते हैं, कोल्हू का जाठ, किसी यन्त्र में लगा हुआ इस आकार का भाग, एक प्रकार का जड़हन धान, रूई धूनने की मुठिया का हत्था, कोई लंबा गोल लुड़कने वाला पदार्थ।

बेलना-(हिं०पुं०) काठ का गोल लंबा टुकड़ा जो बीच में मोटा और दोनों ओर पतला होता है, यह पूरी रोटी आदि को बेलने के काम में आता है; (हिं०क्रि०) चकले पर लोई रखकर बेलना से बढ़ाकर गोल करना, तथा पतला करना, नष्ट करना, पानी के छींटे उड़ाना; **पापड़ बेलना**-काम बिगाड़ना।

बेलपत्ती, बेलपत्र-(हिं० पुं०) बेल के वृक्ष की पत्ती जो शिवजी को चढ़ाई जाती है।

बेलपाता-(हिं०पुं०) देखो बेलपत्र।

बेलसना-(हिं०क्रि०) भोगविलास करना, सुख लूटना।

बेलवागुरा-(हिं०पुं०) हरनों को पकड़ने का जाल।

बेलबूटेदार-(हिं०वि०) जिसमें बेल बूटे बने हों।

बेलहरा-(हिं०पुं०) बांस या धातु की बनी हुई लंबोतरी पिटारी जिसमें पान के बीड़े रक्खे जाते हैं।

बेलहरी-(हिं०पुं०) सांची पान।

बेलहाजी-(हिं०स्त्री०) धोती डुपट्टे आदि पर किनारा छापने का ठप्पा।

बेला-(हिं०पुं०) एक छोटा पौधा जिसमें सफेद सुगन्धित फूल लगते हैं, मल्लिका, लहर, कटोरा, वायोलिन् नाम का बाजा, चमड़े की बनी हुई छोटी कुल्हिया, समुद्र का किनारा, बेला, समय।

बेलाग-(हिं०पुं०) जिसमें किसी प्रकार की लगावट न हो।

बेलि-(हिं०स्त्री०) देखो बेल; **बेलिया**-(हिं०स्त्री०) छोटी कटोरी।

बेली-(हिं०पुं०) संगी साथी।

बेलौस-(हिं०वि०) सच्चा, खरा।

बेवपार-(हिं०पु०) देखो व्यापार।

बेवर-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास।

बेवरा-(हिं०पु०) विवरण, ब्योरा।

बेवरेवाजी-(हिं०स्त्री०) धूर्तता।

बेवरेवार-(हिं०वि०) विवरण सहित।

बेवसाय-(हिं०पु०) देखो व्यवसाय;

बेवस्था-(हिं०स्त्री०) देखो व्यवस्था।

बेवहरना-(हिं०क्रि०) व्यवहार करना; **बेवहरिया**-(हिं०पुं०) लेन देन का व्यवहार करने वाला, महाजन; **बेवहार**-(हिं०पुं०) देखो व्यवहार।

बेवाई-(हिं०स्त्री०) देखो बेवाई; **बेवान**-(हिं०पुं०) देखो विमान; **बेश**-(हिं०पुं०) देखो वेश।

बेश्म-(हिं०पुं०) देखो वेश्म, गृह, घर।

बेसंदर-(हिं०पुं०) देखो वैश्वानर, अग्नि

बेसँभर-(हिं०वि०) बेसुध।

बेसन-(हिं०पुं०) चनेका महीन आटा।

बेसनी-(हिं०वि०) बेसन का बना हुआ, (स्त्री०) बेसन भरी हुई पूरी।

बेसर-(हिं०पु०) नाक में पहरने का नथ, खच्चर।

बेसवा-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।

बेसवार-(हिं०पुं०) वह सड़ा हुआ मसाला जिससे मद्य बनाई जाती है।

बेसा-(हिं०पु०) देखो वेश; (स्त्री०) वेश्या, रंडी।

बेसारा-(हिं०वि०) बैठने या ठहरने वाला

बेसाहना-(हिं०क्रि०) मोल लेना, झगड़ा आदि अपने ऊपर लेना।

बेसाह, बेसाहा-(हिं०पुं०) माल, सौदा।

बेसिलसिले-(हिं०क्रि०वि०) अव्यवस्थित रूप में।

बेसी-(हिं०क्रि०वि०) अधिक।

बेसुध-(हिं० वि०) अचेत; **बेसुधी**-(हिं०स्त्री०) अचेत अवस्था।

बेसुर-(हिं०वि०) जिसका स्वर (संगीत में) ठीक न हो, बेमेल स्वर का; **बेसुरा**-(हिं०वि०) जो नियमित स्वर में न हो।

बेस्वाद-(हिं०वि०) स्वाद रहित, जिसमें अच्छा स्वाद न हो।

बेहंगम-(हिं०वि०) बेढंगा, विकट, बेढब, **बेहंगमपन**-(हिं०पुं०) बेढंगापन, भद्दापन

बेहंसना-(हिं०क्रि०) वेग से हंसना, ठट्ठा मार कर हंसना।

बेह-(हिं०पुं०) बेध, छिद्र, छेद।

बेहड़-(हिं०वि०) देखो बीहड़।

बेहन-(हिं० पुं०) अन्न आदि का बीज जो खेत में बोया जाता है, बीज; (वि०) पीला।

बेहना-(हिं०पुं०) जुलाहों की एक जाति जो प्रायः धुनने का काम करती है, धुनियां।

बेहर-(हिं०वि०) स्थावर; अचर, पृथक्, अलग, (पुं०) वावली।

बेहरा-(हिं० क्रि०) तड़क जाना, दरार पड़ना।

बेहरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास, मूंज की बनी हुई चिपटी पेटारी, (वि०) पृथक्, अलग। **बेहराना**-(हिं०क्रि०) दरार होना, फटना,

बेहरी-(हिं० स्त्री०) किसी विशेष कार्य के लिये बहुत से मनुष्यों से अंशदान के रूप में इकट्ठा किया हुआ धन;

बेहला-(हिं०पुं०) सारंगी की तरह का एक प्रकार का अंग्रेजी बाजा।

बेहुनरा-(हिं०वि०) जो कोई कार्य कौशल न जानता हो, मूर्ख, तमाशा दिखलाने वाला भालू या बन्दर।

बेहून-(हिं०क्रि०वि०) सिवाय, बिना।

बैंगन-(हिं०पुं०) एक वार्षिक पौधा जिसके फल तरकारी बनाने के काम में आते है, भंटा; **बैंगनी**-(हिं०वि०) ललाई लिये नीले रंग का; **बैंजनी**-(हिं०वि०) देखो बैंगनी।

बैंडा-(हिं० वि०) देखो बेंड़ा।

बै-(हिं०स्त्री०) बैसर, जुलाहे की कंघी, देखो वय; (हिं०स्त्री०) बिक्री, बेंचना।

बैकल-(हिं०वि०) उन्मत्त, पागल।

बैकुंठ-(हिं०पुं०) देखो बैकुण्ठ; **बैखरी**-(हिं०स्त्री०) देखो वैखरी; **बैखानस**-(हिं०वि०) देखो वैखानस।

बैगन-(हिं०पुं०) देखो बैंगन, भंटा।

बैगना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पकवान

बैगनी-(हिं०वि०) देखो बैंगनी।

बैजंती-(हिं०स्त्री०) देखो बैजयन्ती, विष्णु की माला, फूल के एक पौधे का नाम।

बैजई-(हिं०पुं०) एक प्रकार का हलका नीला रंग।

बैजनाथ-(हिं०पुं०) देखो वैद्यनाथ; **बैजयंती**-(हिं०स्त्री०) देखो वैजयन्ती।

बैजला-(हिं०पु०) कबड्डी का एक खेल

बैजीय-(सं०वि०) बीज संबंधी; **बैजेय**-(सं०वि०) बीज से उत्पन्न।

बैटा-(हिं०स्त्री०) रूई ओटने की चर्खी।

बैठ-(हिं०पु०) राजकीय कर।

बैठक-(हिं०स्त्री०) बैठने का स्थान, आसन, पीठ, बैठने का ढंग, संग, मेल, एक प्रकार का व्यायाम, वह स्थान जहां बहुत से लोग आकर बैठते हों, सभासदों का एकत्रित होना, अधिवेशन, बैठने का व्यापार, कांच धातु आदि की दीवट, साथ उठना, बैठना, बैठने का आसन, किसी मूर्ति या खंभे की नीचे की चौकी

बैठका-(हिं०पुं०) वह चौपाल या दालान जहां पर बैठकर लोग बातचीत करते है।

बैठकी-(हिं०स्त्री०) बारंबार उठने बैठने का व्यायाम, आसन, आधार।

बैठन-(हिं०स्त्री०) बैठने की क्रिया या भाव, बैठने का ढंग, बैठक, आसन।

बैठना-(हिं०क्रि०) स्थित होना, आसन जमाना, तौल में ठहरना, बिगड़ना, निरुद्योग रहना, जोड़ खाना, पिघल कर जम जाना, पक्षियों का अण्डा सेना, अँटना, समाना, रखनी बनकर रहना, पौधे का भूमि में लगना, घोड़े आदि पर सवारी करना, निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचना, अभ्यस्त होना, ठीक होना, धँसना, घुली हुई वस्तु का तल में जमना, अस्त होना, व्यय होना, लागत लगाना, व्यवसाय हीन होना, लक्ष्य पर पड़ना, पचक जाना दबना; **बैठते उठते**-हर अवस्था में; **बैठे बैठाये**-अकारण; **बैठे बैठे**-अचानक।

बैठनी-(हिं०स्त्री०) करगह का वह स्थान जिसपर बैठकर जुलाहे कपड़ा बुनते हैं।

बैठवाई-(हिं०स्त्री०) बैठानी का शुल्क।

बैठवाना-(हिं० क्रि०) बैठाने का काम दूसरे से कराना, पेड़ पौधे लगवाना।

बैठा-(हिं०पु०) चमचा या बड़ी करछी।

बैठाना-(हिं० क्रि०) दबाकर बराबर करना, पचकाना या धँसाना, लक्ष्य पर जमाना, घोड़े आदि पर सवार कराना, पौधे को लगाना, किसी स्त्री को रखनी की तरह रख लेना, घुली हुई वस्तु को तल में जमाना, अभ्यस्त करना, नीचे की ओर ले जाना, पद पर स्थापित करना, उपविष्ट करना, ठिकाना, बिगाड़ना, ठीक स्थान पर पहुँचाना। **बैठारना, बैठालना**-(हिं० क्रि०) देखो बैठाना।

बैठना-(हिं०क्रि०) बेढ़ना, बन्द करना।

बैड़ाल-(सं० वि०) बिल्ली सम्बन्धी।

बैतरनी-(हिं० स्त्री०) देखो वैतरणी, एक प्रकार का अगहनियां धान।

बैताल-(हिं० पुं०) देखो बेताल। **बैतालिका**-(हिं० वि०) देखो वैतालिक।

बैद-(हिं० पु०) देखो वैद्य चिकित्सक।

बैदगी-(हिं० स्त्री०) वैद्य की विद्या या व्यवसाय।

बैदल-(सं० नपु०) दाल की पीठी।

बैदूर्य-(हिं० पुं०) देखो वैदूर्य।

बैदेही-(हिं० स्त्री०) देखो वैदेही।

बैन-(हिं०पुं०) वार्ता, बात; **बैनझरना**-मुख से बात निकालना।

बैनतेय-(हिं० पुं०) देखो वैनतेय।

बैना-(हिं० पुं०) वह मिठाई पकवान आदि जो विवाहादि उत्सवों के उपलक्ष में इष्ट-मित्रों के यहां भेजा जाता है।

बैपार-(हिं० पुं०) देखो व्यापार।

बैपारी-(हिं०पुं०) व्यापार करनेवाला।

बैयन-(हिं० पु०) बाना बैठाने का लकड़ी का एक अस्त्र।

बैयर-(हिं० स्त्री०) स्त्री।

बैया-(हिं० पुं०) बै, बैसर।

बैर-(हिं० पुं०) देखो वैर, शत्रुता, द्रोह, विरोध, बेर का वृक्ष या फल, हल में लगा हुआ चोंगा जिसमें भरा हुआ बीज हल चलने में बराबर

कूड़ में गिरता जाता है। **बैर निकालना**-शत्रुता का बदला लेना। **बैर ठानना**-शत्रुता मान लेना द्रोह आरम्भ करना; **बैर पड़ना**-शत्रु बन कर कष्ट देना; **बैर मोल लेना**-शत्रुता उत्पन्न करना; **बैर लेना**-वदला लेना।

बैरख-(हिं० पुं०) ध्वजा, पताका।

बैरा-(हिं० पु०) बीज गिराने के लिये हल में लगा हुआ चोंगा; (स० पु०) सेवक, चाकर।

बैराखी-(हिं० स्त्री०) भुजा पर पहरने का एक गहना, बैरखी।

बैराग-(हिं०पुं०) देखो बैराग्य। **बैरागी**-(हिं० पुं०) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद। **बैराग्य**-(हिं० पुं०) देखो वैराग्य।

बैराना-(हिं० क्रि०) वायु के प्रकोप से बिगड़ना।

बैरी-(हिं०वि०) देखो-वैरी, विरोधी, शत्रु।

बैल-(हिं० पुं०) वृक्ष, एक चौपाया जिसकी मादा गाय कहलाती है, मूर्ख मनुष्य।

बैलर-(हिं० पुं० अं० 'वायलर्' का अपभ्रंश) पीपे के आकार का लोहे का बड़ा पात्र जो भाफ से चलने वाली कलों में रहता है।

बैल्व-(सं० वि०) बेल संबंधी, बेल का।

बैवानस-(सं० पुं०) देखो वैखानस।

बैसंदर-(हिं०पुं०) देखो वैश्वानर अग्नि।

बैस-(हिं० स्त्री०) आयु, युवावस्था, क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

बैसना-(हिं० क्रि०) देखो बैठना।

बैसर-(हिं० स्त्री०) जुलाहों का एक यन्त्र जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने को बैठाते हैं।

बैसवारा-(हिं० पुं०) अवध के पश्चिमी प्रान्त का नाम।

बैसाख-(हिं० पु०) देखो बैशाख, चैत के बाद के महीने का नाम। **बैसाखी**-(हिं०वि०) वैशाख महीने की, (हिं०पुं०) वह लाठी जिसके सिरे पर अर्ध चन्द्राकार आड़ी लकड़ी लगी होती है जिसको बगल में रखकर लंगड़े लोग टेक कर चलते हैं।

बैसाना, **बैसौरना**-(हिं०क्रि०) देखो बैठाना।

बैसिक-(हिं० पुं०) रंडी से प्रेम करने वाला मनुष्य।

बैहर-(हिं० वि०) भयानक, प्रचण्ड, क्रोधी, (स्त्री०) वायु हवा।

बोंक-(हिं० पु०) लोहे का मुड़ा हुआ कीला जो पल्ले के नीचे की कील में लगाया जाता है।

बोंगना-(हिं० पु०) चौड़े मुख का एक प्रकार का पात्र।

बोआई-(हिं० स्त्री०) बोने का काम, बोने का वेतन।

बोक, **बोकरा**-(हिं० पुं०) बकरा।

बोकरी-(हिं० स्त्री०) देखो बकरी।

बोखार-(हिं० पुं०) ज्वर।

बोगुमा-(हिं० पुं०) घोड़े का एक रोग जिसमें उनके पेट में पीड़ा होती है।

बोज-(हिं० पुं०) घोड़े का एक भेद।

बोजा-(फा० स्त्री०) चावल से बनी हुई मदिरा।

बोझ-(हिं० पुं०) ऐसा गठ्ठर, राशि आदि जिसको उठाने मे कठिनता जान पड़े, भार, गुरुत्व, भारीपन, कठिन कार्य, खटका या असमंजस, उतना ढेर जितना बैलगाड़ी आदि पर लादा जा सके, वह व्यक्ति जिसके संबंध मे ऐसी बात करना हो जो कठिन जान पड़े, उतना भार जितना एक बैल की पीठ पर लादा जावे, कठिन कार्य को पूरो करने की चिन्ता। **बोझना**-(हिं० क्रि०) नाव गाड़ी आदि पर माल रखना।

बोझल-(हिं० वि०) भारी। **बोझा**-(हिं० पु०) देखो बोझ। **बोझाई**-(हिं० स्त्री०) बोझने या लादने का काम, इस काम का शुल्क।

बोटा-(हिं० पुं०) लकड़ी का छोटा मोटा कटा हुआ टुकड़ा। **बोटी**-(हिं० स्त्री०) माँस का छोटा टुकड़ा, **बोटीबोटीकरना**-टुकड़े टुकड़ेकरना।

बोड़-(हिं० स्त्री०) सिर पर पहरने का एक प्रकार का फूल के आकार का गहना, बोर।

बोड़री-(हिं० स्त्री०) नाभि, तोंदी।

बोड़ल-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पहाड़ी पक्षी।

बोड़ा-(हिं० पुं०) अजगर, बड़ा सर्प, एक प्रकार की लंबी पतली फली जिसकी तरकारी खाई जाती है, लोबिया।

बोड़ी-(हिं० स्त्री०) दमड़ी, अति अल्प धन, पौधे वृक्ष आदि की फली, अगस्त की कली।

बोत-(हिं० पुं०) घोड़ों की एक जाति।

बोतक-(हिं० पुं०) पान की पहले वर्ष की खेती।

बोतल-(हिं० स्त्री०) कांच का लंबी गरदन का एक पात्र जो द्रव पदार्थ रखने के काम में आता है। **बोतलिया**-(हिं० वि०) बोतल के रंग का, कालापन लिये हरा।

बोता-(हिं० पुं०) ऊँट का बच्चा जिस पर सवारी न होती हो।

बोदकी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का कुसुम जिसके फूल का रंग बनता है।

बोदर-(हिं० स्त्री०) लचीली छड़ी, ताल के किनारे का सिंचाई का पानी चढ़ाने का स्थान।

बोदा-(हिं० वि०) जिसकी बुद्धि तीव्र न हो, मूर्ख, मट्ठर, जो दृढ़ न हो। **बोदापन**-(हिं० पु०) मूर्खता।

बोध-(सं० पु०) ज्ञान, भ्रम का न होना सन्तोष, धैर्य, धीरज। **बोधक**-(सं०पुं०) ज्ञापक, ज्ञान कराने वाला, शृंगार रस के हावों में से एक जिसमें किसी संकेत या क्रिया द्वारा अपने मन का भाव दूसरे को जताया जाता है, (वि०) ज्ञान कराने वाला। **बोधकर**-(सं० पु०) जो प्रातःकाल किसी को जगाता है। **बोधगम्य**-(सं० वि०) समझ में आने योग्य।

बोधस-(सं० पुं०) अभिप्राय जानने वाला, श्री कृष्ण।

बोधन-(हिं० नपुं०) ज्ञापन, जताना, विज्ञापन, अग्नि को सुलगाना, चैतन्य संपादन। **बोधना**-(हिं० क्रि०) ज्ञान देना समझाना। **बोधनी**-(सं० स्त्री०) बोध, पीपल का पेड़, कार्तिक शुक्ला एकादशी। **बोधनीय**-(सं० वि०) समझाने योग्य।

बोधान-(सं० पुं०) बृहस्पति, विष्णु।

बोधि-(हिं० पुं०) बोध, ज्ञान, पीपल का वृक्ष।

बोधित-(सं०वि०) ज्ञापित, जताया हुआ।

बोधितरु-(सं० पुं०) पीपल का वृक्ष, गया में स्थित वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे गौतम बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया था। **बोधिद्रुम**-(सं०पुं०) बोधितरु।

बोधिसत्व-(सं० नपुं०) वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो।

बोध्य-(सं०वि०) बोधयोग्य, बोधनीय।

बोना-(हिं० क्रि०) किसी दाने या फल के बीज को इसलिये मिट्टी में डालना जिसमें उसमें से अंकुर फूटें और पौधा उत्पन्न हो, बिखराना, इधर उधर डालना।

बोबा-(हिं० पुं०) स्तन, थन, गट्ठर, गठरी, घर की सामग्री।

बोब्बी-(हिं० स्त्री०) पुन्नाग जाति का एक सदाबहार वृक्ष।

बोय-(हिं० स्त्री०) गन्ध, दुर्गन्ध।

बोर-(हिं० पुं०) डुबाने की क्रिया, गोल कंगूरेदार घुंघरू, गुंबज के आकारका एक गहना जो सिर पर पहना जाता है।

बोरका-(हिं० पुं०) दावात, मिट्टी की दावात जिसमें लड़के खड़िया मिट्टी घोलकर रखते हैं।

बोरना-(हिं० क्रि०) किसी द्रव पदार्थ में निमग्न करना, डुबोना, कलंकित करना, योग देना, मिलाना, डुबाकर भिगोना, घुले हुए रंग में डुबाकर रँगना।

बोरसी-(वि०स्त्री०) मिट्टी का वह पात्र जिसमें आग रक्खी जाती है, अंगीठी।

बोरा-(हिं० पु०) अन्न आदि रखने का टाट का बना हुआ थैला, छोटा घुंघरू।

बोरिका-(हिं० पुं०) देखो बोरका।

बोरिया-(हिं० स्त्री०) छोटा थैला; विस्तर, चटाई; **बोरिया बँधना उठाना**-यात्रा की तैयारी करना।

बोरी-(हिं० स्त्री०) टाट की छोटी थैली, छोटा बोरा।

बोरो-(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोट धान।

बोल-(हिं० पुं०) वाणी, वचन, व्यंग, ताना, प्रतिज्ञा, संख्या, गीत का टुकड़ा, अन्तरा, एक प्रकार का सुगन्धित गोंद; **बोलबाला होना**-मान-मर्यादा बनी रहना। **बोलचाल**-(हिं० स्त्री०) वार्तालाप, बातचीत, परस्पर सद्भाव, मेल मिलाप, हस्तक्षेप, प्रति दिन की बातचीत, चलतू भाषा।

बोलता-(हिं०पुं०) आत्मा, जीवन तत्व, अर्थ युक्त शब्द, बोलने वाला प्राणी, मनुष्य, हुक्का, प्राण; (वि०) वाचाल, बकवादी। **बोलती**-(हिं०स्त्री०) वाक्, वाणी। **बोलनहारा**-(हिं० वि०) बोलने वाला; (पुं०) क्षुद्र आत्मा।

बोलना-(हिं०क्रि०) मुख से शब्द निकालना, किसी वस्तु का शब्द उत्पन्न करना, कहना, कहलाना, पुकारना; ठहराना, रोक टोक करना; **बोलना चालना**-वार्तालाप करना; **बोल जाना**-मृत्यु को प्राप्त होना, कुछ शेष न रहना।

बोलवाना-(हिं०क्रि०) उच्चारण कराना, देखो बुलवाना।

बोलसर-(हिं०पुं०) मौलसिरी का पेड़, घोड़े की एक जाति।

बोलाचाली-(हिं०स्त्री०) देखो बोलचाल।

बोलाना-(हिं०क्रि०) देखो बुलाना।

बोलावा-(हिं० पुं०) देखो बुलावा, निमत्रण।

बोली-(हिं० स्त्री०) मुख से निकला हुआ शब्द, वाणी, अर्थ युक्त शब्द या वाक्य, वचन, नीलाम करने वाले और लेने वाले का चिल्ला कर दाम कहना, किसी प्रदेश की हँसी, दिलग्गी; **बोली बोलना**-व्यंग के शब्द बोलना। **बोलीदार**-(हिं० पु०) वह असामी जिसको जोतने बोने के लिये खेत जबानी कह कर दिया गया हो।

बोल्लाह-(हिं० पुं०) घोड़े की एक जाति।

बोवना-(हिं०क्रि०) देखो बेना।

बोवाई-(हिं० स्त्री०) बोने की क्रिया या भाव। **बोवाना**-(हिं०क्रि०) बोने का काम दूसरे से कराना।

बोह-(हिं०स्त्री०) डुबकी, गोता।

बोहनी-(हिं० स्त्री०) किसी दिन की पहली बिक्री।

बोहारना-(हिं० क्रि०) देखो बुहारना।

बोहारी-(हिं०स्त्री०) झाड़ू।

बोहित-(हिं०पुं०) बड़ी नाव।

बोड़-(हिं०स्त्री०) किसी पौधे की डोरी के रूप में दूर तक जाने वाली टहनी, लता, बेल।

बोड़ना-(हिं० क्रि०) लता की तरह बढ़ना, टहनी फेंकना।

बोडर-(हिं०पुं०) चक्र वायु, बवन्डर, वायु का झोंका।

बोड़ी-(हिं० स्त्री०) लता या पौधों के कच्चे फल, फली, छीमी, बोड़ी, ढोंढ़।
बोआना-(हिं० क्रि० स्वप्न की अवस्था में बोलना, बर्राना, अंडबंड बकना।
बोखल-(हिं० वि०)पागल, मनकी झक्की
बोखलाना-(हिं० क्रि०) सनक जाना, थोड़ा पागल हो जाना।
बोखा-(हिं० स्त्री०)हवा का तीव्र झोंका।
बोछाड़-(हिं० स्त्री०) वायु के झोंके से तिरछी आती हुई पानी की बूंदों का समूह, झपास, किसी वस्तु का अधिक संख्या में कहीं पर आकार गिरना, लगातार बात पर बात जो किसी से कही जाय, कोई पदार्थ बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना, व्यंगपूर्ण बात, ताना।
बोछार-(हिं० स्त्री०) देखो बौछाड़।
बोड़हा-(हिं० वि०) पागल, सनकी, बावला।
बोता-(हिं० पुं०) समुद्र में तैरता हुआ पदार्थ।
बोद्ध-(सं० पुं०) गौतम बुद्ध के मत का अनुयायी, (वि०) बुद्ध द्वारा प्रचारित।
बोद्धधर्म-(हिं० पुं०) गौतम बुद्ध का चलाया हुआ मत, भगवान बुद्धद्वारा प्रवर्तित धर्म।
बोधायन-(सं० पुं०)एक ऋषिका नाम।
बोना-(हिं० पुं०)वामन, छोटे डील डौल का मनुष्य, बहुत ठिंगना आदमी।
बोभुक्ष-(सं० वि०) क्षुधित, भूखा।
बोर-(हिं० पुं०) आम के वृक्ष की मंजूरी, मौर।
बोरई-(हिं० स्त्री०) पागलपन, सनक।
बोरना-(हिं० क्रि०) आम के वृक्ष का फूलना, इसमें मंजरी निकलना।
बोरहा-(हिं० वि०) विक्षिप्त, पागल, सनकी। **बोरा**-(हिं० वि०) विक्षिप्त, पागल, अज्ञान, गूंगा, अज्ञान।
बोराई-(हिं० स्त्री०)सनक, पागलपन।
बोराना-(हिं० क्रि०) विक्षिप्त होना, पगला जाना, सनक जाना, विवेक या बुद्धि रहित हो जाना। **बोराहा**-(हिं० वि०) पागल, सनकी, बावला।
बोरी-(हिं० स्त्री०)बावली या पागल स्त्री।
बौलड़ा-(हिं० पु०) सिर पर पहरने का एक प्रकार का गहना।
बौलसिरी-(हिं० स्त्री०)देखो मौलसिरी।
ब्यंग, ब्यंजन-(हिं० पुं०) देखो व्यङ्ग, व्यञ्जन।
ब्यतीतना-(हिं० क्रि०) व्यतीत होना, बीतना।
ब्यक्ति ब्यंजन-(हिं० पुं०)देखो व्यक्ति, व्यञ्जन। **ब्यथा ब्यथित**-(हिं० पुं०) देखो व्यथा, व्यथित।
ब्यवहार-(हिं० पुं०) देखो व्यवहार।
ब्यवहरिया-(हिं० वि०) रुपये का लेन-देन करने वाला महाजन।
ब्य साय-(हिं० पु०) देखो व्यवसाय।
ब्यवस्था-(हिं० स्त्री०) देखो व्यवस्था
ब्यवहार-(हिं० पुं०) व्यवहार, रुपये का लेनदेन, व्यवहारिक सबंध, इष्ट मित्र का संबंध, सुख दुःख में परस्पर सम्मिलित होने की रीति।
ब्यवहारी-(हिं० वि०) लेन देन करने वाला, जिसके साथ लेन देन हो, व्यापारी, कार्यकर्ता, जिसके साथ प्रेम का व्यवहार हो।
ब्यसन, ब्यसनी-(हिं० वि०) देखो व्यसन व्यसनी।
ब्याज-(हिं० पुं०) वृद्धि,सूद,देखो व्याज।
ब्याघ ब्याघा-(हिं० पु०) देखो व्याघ, व्याधा।
ब्याधि-(हिं० स्त्री०) देखो व्याधि रोग।
ब्याना-(हिं० क्रि०) पशुओं का बच्चा पैदा करना, गर्भसे निकलना, उत्पन्न करना।
ब्यापना-(हिं० क्रि०) चारो ओर व्याप्त होना या फैलना, प्रभाव डालना, ग्रसना, घेरना।
ब्यापार-(हिं० पुं०) देखो व्यापार।
ब्यारी-(हिं० पुं०)रातका भोजन, ब्यालू
ब्याल-(हिं० पुं०) देखो व्याल।
ब्याली-(हिं० स्त्री०) सर्पिणी, नागिन, (वि०) सर्प को धारण करने वाला।
ब्यालू-(हिं० पुं०) रात का भोजन।
ब्याह-(हिं० पुं०) देखो विवाह, पाणिग्रहण, **ब्याहता**-(हिं० वि०) जिसके साथ विवाह हुआ हो। **ब्याहना**-(हिं० क्रि०) किसी का किसी के साथ विवाह संबध कर देना। **ब्याहुला**-(हिं० वि०) विवाह संबंधी।
ब्युगा-(हिं० पुं०) चमड़े को रगड़ कर कोमल करने का चमार का एक लकड़ी का अस्त्र।
ब्योंचना-(हिं० क्रि०) किसी अंग का एक बारगी इधर उधर मुड़ कर पीड़ा उत्पन्न होना, मुरक जाना।
ब्योंत-(हिं० पुं०)विवरण, युक्ति, उपाय, साधन या सामग्री आदि की सीमा, काम पूरा होने का हिसाब, किताब, पहरावा बनाने के लिये कपड़े की काट छांट, प्रबंध, अवसर, संयोग, आयोजन, तैयारी, समाई, ढब।
ब्योंतना-(हिं० क्रि०) कोई पहरावा बनाने के लिये कपड़े को नाप कर काटना छांटना। **ब्योंताना**-(हिं० क्रि०) शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटवाना।
ब्योपार, ब्योपारी-(हिं०) देखो व्यापार, व्यापारी।
ब्योरन-(हिं० स्त्री०) सुलझाने या सँवारने की क्रिया या ढंग।
ब्योरना-(हिं० क्रि०) उलझी हुई वस्तु के तार तार अलगाना, उलझे हुये बालों को सँवारना।
ब्योरा-(हिं० पुं०) विवरण, वत्तान्त, समाचार, किसी विषय के भीतर की सारी बात, अन्तर, भेद; **ब्योरेवार**-विस्तार सहित।
ब्योसाय-(हिं० पुं०) देखो व्यवसाय।
ब्योहर-(हिं० पुं०) रुपये का लेन देन, व्यापार। **ब्योहरा**-(हिं० पुं०) सूद पर रुपया देने वाला, हुण्डी चलाने वाला। **ब्योहरिया**-(हिं० पुं०) महाजनी करने वाला, सूद पर रुपया ऋण देने वाला।
ब्योहर-(हिं० पु०) देखो ब्योहर। **ब्यौहरिया**-(हिं० पु०) देखो ब्योहरिया।
ब्यौहार-(हिं० पु०) देखो व्योहार।
ब्रज-(हिं० पुं०) देखो व्रज।
ब्रजना-(हिं० क्रि०) चलना।
ब्रजवादिनी-(हिं० पुं०)एक प्रकारका आम
ब्रध्न-(सं० पुं०)सूर्य, शिव, दिन, घोड़ा
ब्रह्मंड-(हिं० पु०) देखो ब्रह्माण्ड।
ब्रह्म-(सं० नपुं०) वेद, तपस्या, तप, सत्य, तत्व, ज्ञानमय परमात्मा, आनन्द स्वरूप आत्मा, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से पचीसवां योग, आत्मा, चैतन्य, आठ की संख्या, ब्रह्मराक्षस, वह ब्राह्मण जो मरकर प्रेत योनि को प्राप्त हुआ हो, ब्रह्मा, ब्राह्मण; **ब्रह्मकन्यका**-ब्राह्मी बूटी; **ब्रह्मकर**-वह धन जो ब्राह्मण, गुरु या पुरोहित को दिया जावे; **ब्रह्मकर्म**-वेद विहित कार्य; **ब्रह्मकल्प**-उतना समय जितने में एक ब्रह्मा रहते हैं; **ब्रह्मकाष्ठ**-शहतूत; **ब्रह्मकृत**-विष्णु, शिव, इन्द्र, **ब्रह्मकोशी**-अजमोदा।
ब्रह्मगति-(सं० स्त्री०) निर्वाण, मोक्ष। **ब्रह्मगर्भ**-(सं० पुं०) अजमोदा, हुड़हुल का फूल। **ब्रह्मगाँठ**-(हिं० स्त्री०) जनेऊ में की गाँठ। **ब्रह्मगीतिका**-(सं० स्त्री०)ब्रह्माकी स्तुति। **ब्रह्मगोल**-(सं० पुं०) भूमण्डल, पृथ्वी। **ब्रह्मग्रन्थि**-(सं० पुं०) यज्ञोपवीत की मुख्य गाँठ। **ब्रह्मग्रह**-(सं० पुं० ब्रह्मराक्षस। **ब्रह्मघातक**-(सं० पुं०)ब्रह्महत्या कारक। **ब्रह्मघाती**-(सं० वि०)ब्राह्मण की हत्या करने वाला। **ब्रह्मघातिनी**-(सं० स्त्री०) ब्राह्मण की हत्या करने वाली स्त्री। **ब्रह्मघोष**-(सं० पुं०) वेदध्वनि, वेदपाठ। **ब्रह्मघ्न**-(सं० वि०) ब्राह्मण को मारने वाला।
ब्रह्मचर्य-(सं० नपुं०) एक आश्रम का नाम, आठ प्रकार के मैथुन से बचने की साधन यम का एक भेद, वीर्य को सुरक्षित करने का प्रतिबंध, पुरुष की स्त्री संभोग तथा अन्य वासनाओं से अलग रह कर केवल अध्ययन करने में निरन्तर लगे रहना
ब्रह्मचारिणी-(सं० स्त्री०)ब्रह्म चर्य पालन करने वाली स्त्री, दुर्गाकी एक मूर्ति, पार्वती, सरस्वती।
ब्रह्मचारी-(सं० पुं०) उपनयन के बाद नियम पूर्वक वेदादि के अध्ययन के लिये गुरू के घर में रहने वाला, एक गन्धर्व का नाम।
ब्रह्मज-(सं० पुं०) हिरण्यगर्भ।
ब्रह्मजटा-(सं० स्त्री०) दमनक, दौने का पौधा।
ब्रह्मजन्म-(सं० नपुं०) उपनयन संस्कार।
ब्रह्मजीवी-(सं० पु०) श्रौत आदि कर्म करा के जीविका चलाने वाला।
ब्रह्मज्ञ-(सं० पुं०) विष्णु,कार्तिकेय, (वि०) ब्रह्म को जानने वाला। **ब्रह्मज्ञान**-(सं० नपुं०) ब्रह्मविषयक ज्ञान, अपने आत्मा का यथार्थ अनुभव, अद्वैत सिद्धान्त का पूर्ण बोध। **ब्रह्मज्ञानी**-(सं० वि०) परमार्थ तत्व का ज्ञान रखने वाला।
ब्रह्मज्य-(सं० वि०) ब्राह्मण के ऊपर अत्याचार करने वाला।
ब्रह्मण्य-(सं० पु०) विष्णु शनैश्चर, कार्तिकेय (वि०) ब्रह्म संबंधी, **ब्रह्मण्यदेव**-श्रीकृष्ण। **ब्रह्मण्यता**-(सं० पुं०) ब्राह्मण का धर्म या भाव।
ब्रह्मताल-(सं० स्त्री०) चतुर्मुख ताल का नाम।
ब्रह्मत्व-(सं० नपुं०)ब्राह्मणत्व, ब्रह्मा होने भाव या धर्म। **ब्रह्मदण्ड**-(सं० पुं०) ब्राह्मण का शाप रूप दण्ड ब्रह्म शाप **ब्रह्मदर्भा**-(सं० स्त्री०) यमानिका, अजवाइन; **ब्रह्मदान**-(सं० नपुं०) वेद का अध्ययन। **ब्रह्मदारु**-(सं० नपुं०)शहतूत का पेड़। **ब्रह्मदिन**-(सं० पुं०) ब्रह्मा का एक दिन। **ब्रह्मदैत्य**-(सं० पु०) वह ब्राह्मण जिसने मरने पर प्रेतयोनि पाई हो, ब्रह्मराक्षस, **ब्रह्मदोष**-(सं० पुं०) ब्रह्महत्या, ब्राह्मण की हत्या करने का पाप। **ब्रह्मदोषी**-(सं० वि०) जिसको ब्रह्महत्या लगी हो।
ब्रह्मद्रोही-(सं० वि०) ब्राह्मणों से द्रोह करने वाला। **ब्रह्मद्वार**-(सं० नपुं०) खोपड़ी के बीच का छिद्र,ब्रह्मरन्ध्र।
ब्रह्मधातु-(सं० पुं०) ब्रह्मरूप धातु, रुद्र। **ब्रह्मनाभ**-(सं० पु०) विष्णु।
ब्रह्मनिष्ठ-(सं० वि०) ब्रह्म ज्ञान संपन्न, ब्राह्मणों का भक्त। **ब्रह्मपति**-(सं० पुं०) बृहस्पति। **ब्रह्मपत्र**-(सं० नपुं०) परास का पत्ता। **ब्रह्मपद**-(सं० पु०) ब्रह्मत्व, मोक्ष, मुक्ति, ब्राह्मणत्व।
ब्रह्मपर्णी-(सं० स्त्री०) पिठवन नाम की लता; **ब्रह्मपादप**-(सं० पुं०) पलास का वृक्ष। **ब्रह्मपाश**-(सं० पुं०) ब्रह्मा का दिया हुआ पाश नामक अस्त्र।
ब्रह्मपिशाच-(सं० पु०) ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मपुत्र-(सं० पुं०) एक बड़ी नदी जो मानसरोवर से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरती है; ब्रह्मा का पुत्र, वसिष्ठ, नारद, मारीचि।
ब्रह्मपुत्री-(सं० स्त्री०) सरस्वती नदी।
ब्रह्मपुर-(सं० नपुं०) हृदय, ब्रह्मलोक।
ब्रह्मपुराण-(सं० नपुं० वेदव्यास प्रणीत एक पुराण जिसको लोग आदि पुराण भी कहते हैं। **ब्रह्मपुरी**-(सं० स्त्री०) काशी धाम। **ब्रह्मपुरोहित**-(सं० पुं०) देवताओं के पुरोहित, बृहस्पति।
ब्रह्मफांस-(हिं० स्त्री०) देखो ब्रह्मपाश।
ब्रह्मबल-(सं० पुं०) वह तेज या शक्ति जो ब्राह्मण को तप करने से प्राप्त

हो। ब्रह्मबीज-(सं०नपुं०) प्रणव, ओंकार। ब्रह्मभवन-(सं०नपुं०) ब्रह्मलोक। ब्रह्मभाव-(सं०पुं०) ब्रह्म का स्वरूप। ब्रह्मभूय-(सं०नपुं०) ब्रह्मत्व, मोक्ष। ब्रह्मभोज-(सं०पुं०) ब्राह्मणों को भोजन कराना। ब्रह्ममय-(सं०वि०) ब्रह्म स्वरूप। ब्रह्ममुहूर्त-(सं०पुं०) सूर्योदय के तीन चार घड़ी पहले का समय, प्रभात, ब्रह्ममेखल-(सं०पुं०) मुञ्जतृण, मूंज। ब्रह्मयज्ञ-(सं०पुं०) शिष्यों का विधिपूर्वक वेदाभ्यास, वेदाध्ययन। ब्रह्मयोग-(सं० पुं०) समाधि का एक भेद, अठारह मात्राओं का एक ताल। ब्रह्मयोनि-(सं०वि०) जिसका उत्पत्ति कारण ब्रह्म हो। ब्रह्मरथ-(सं०पुं०) ब्रह्मा का वाहन, हंस। ब्रह्मरन्ध्र-(सं० नपुं०) ब्रह्मतालु,मस्तक के मध्य का वह गुप्त छिद्र जिसमें से होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। ब्रह्मराक्षस-(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जो मर कर प्रेत योनि को प्राप्त हुआ हो। ब्रह्मरात-(सं० नपुं०) याज्ञवल्क्य मुनि का एक नाम। ब्रह्मरात्र-(सं० पुं०) देखो ब्रह्ममुहूर्त। ब्रह्मरात्रि-(सं०पुं०) ब्रह्मा की एक रात जो कल्प के बराबर होती है। ब्रह्मराशि-सं०पुं०) पवित्र ग्रन्थ समूह। ब्रह्मरीति-(सं०स्त्री०) ब्रह्मा या ब्राह्मण की रीति। ब्रह्मरूपक-(सं०पुं०) एक प्रकार का छन्द जिसमें सोलह अक्षर होते हैं, इसको चित्रा या चंचला भी कहते हैं। ब्रह्मरेखा-(सं०स्त्री०)भाग्य या अभाग्य का लेख, ब्रह्मलेख। ब्रह्मर्षिदेश-(सं०पुं०) कुरुक्षेत्रादि चार देश का नाम। ब्रह्मलेख-(सं०पुं०) भाग्य या अभाग्य का लेख जिसके विषय में कहा जाता है कि ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ मे आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं। ब्रह्मर्षि-(सं०पुं०) ब्राह्मण ऋषि। ब्रह्मलोक-(सं०पुं०) वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते है, सत्यलोक। ब्रह्मवक्ता-(सं०पुं०) परब्रह्म रूप सत्य का प्रचारक। ब्रह्मवध-(सं०पुं०) ब्राह्मण की हत्या। ब्रह्मवर्चस-(सं०नपुं०) वह शक्ति जिसको ब्राह्मण तप करने से प्राप्त करता है। ब्रह्मवाद-(सं०पुं०) वेदपाठ, वेद का पढ़ना पढ़ाना। ब्रह्मवादी-(सं०पुं०) वेदान्ती, वेदों को पढ़ाने वाला। ब्रह्मवादिनी-(सं० स्त्री०) गायत्री। ब्रह्मवास-(सं०पुं०) ब्रह्मलोक। ब्रह्मविद्-(सं०पुं०) विष्णु, शिव, (वि०) ब्रह्म का जानने वाला, वेद का अर्थ समझने वाला। ब्रह्मविद्या-(सं०स्त्री०) ब्रह्मज्ञान, दुर्गा, उपनिषद् का एक भेद, वह विद्या जिसके द्वारा ब्रह्म का ज्ञान हो सके। ब्रह्मविवर्धन-(सं०पुं०) विष्णु (नपुं०) तप आदि का विशेष रूप से बढ़ना। ब्रह्मवृक्ष-(सं०पुं०) पलास का वृक्ष, गूलर का पेड़। ब्रह्मवृत्ति-(सं०स्त्री०) ब्राह्मण की जीविका। ब्रह्मवृद्ध-(सं०वि०) जिसकी शक्ति तप करने से बढ़ गई हो। ब्रह्मवृन्द-(सं०नपुं०) ब्राह्मण सभा। ब्रह्म वेद-(सं०पुं०) वेदान्त। ब्रह्मवैवर्त-(सं० नपुं०) वह प्रतीति मात्र जो ब्रह्म का कारण हो, ब्रह्म के कारण प्रतीत होने वाला जगत्, अठारह पुराण का नाम, श्रीकृष्ण। ब्रह्मव्रत-(सं०नपुं०) वह व्रत जो ब्रह्मलोक की प्राप्ति के लिये किया जाता है। ब्रह्मशाला-(सं०नपुं०) वेदाध्ययन का स्थान। ब्रह्म शासन-(सं०नपुं०) वेद या स्मृति की आज्ञा। ब्रह्मसूत्र-(सं०नपुं०) ब्रह्मयज्ञ। ब्रह्म समाज-(सं०पुं०) राजा राममोहन राय का प्रचार किया हुआ एक संप्रदाय। ब्रह्म सर्प-(सं०पुं०) हलाहल विष। ब्रह्म सुता-(सं० स्त्री०) सरस्वती। ब्रह्म सू-(सं०पुं०) प्रद्युम्न, अनिरुद्ध। ब्रह्मसूत्र-(सं०नपुं०) यज्ञोपवीत,जनेऊ, व्यास मुनि का बनाया हुआ शारीरिक सूत्र जिसमें ब्रह्म का प्रतिपादन है। ब्रह्मस्तम्ब-(सं०पुं०) ब्रह्माण्ड। ब्रह्मस्वरूप-(सं०पुं०) जगत् प्रकृति का प्रतिरूप। ब्रह्महत्या-(सं०स्त्री०) ब्राह्मण का वध, ब्राह्मण को मार डालना। ब्रह्महन्-(सं०पुं०) ब्रह्महत्या करने वाला; ब्रह्महुत-(सं०नपुं०) अतिथि पूजन रूप यज्ञ।

ब्रह्मा-(सं०पुं०) ब्रह्म के सगुण रूपों में से वह जो सृष्टि की रचना करता है, विधाता, यज्ञ के एक ऋत्विक् का नाम ब्रह्माक्षर-(सं० नपुं०) प्रणव, ओंकार। ब्रह्माणी-(सं०स्त्री०) ब्रह्मा की स्त्री, शक्ति, सावित्री, गायत्री, दुर्गा। ब्रह्माण्ड-(सं०नपुं०) चौदहो भुवनों का समूह, विश्वगोलक, सम्पूर्ण विश्व, कपाल, खोपड़ी। ब्रह्मादि जाता-(सं०स्त्री०) गोदावरी। ब्रह्मानन्द-(सं०पुं०) ब्रह्म स्वरूप आनन्द, ब्रह्मज्ञान होने पर जो आनन्द प्राप्त होता है। ब्रह्माभ्यास-(सं०पुं०) वेदाभ्यास। ब्रह्मायतन-(सं०नपुं०) ब्रह्ममन्दिर। ब्रह्मासन-(सं०नपुं०) ध्यानासन, योगासन; ब्रह्मावर्त-(सं०पुं०) सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच का प्रदेश। ब्रह्मास्त्र-(सं०नपुं०) वह सबसे श्रेष्ठ अस्त्र जो मन्त्रों से चलाया जाता था। ब्रह्मास्य-(सं०नपुं०) ब्राह्मण का मुख।

ब्रह्मिष्ठा-(सं०स्त्री०) दुर्गा।

ब्रात-(हिं०पुं०) देखो व्रात्य।

ब्राह्म-(सं०वि०)ब्राह्मण का किया हुआ;

ब्राह्मण-(सं०पुं०) अग्रजन्मा, भूदेव, विप्र, ब्राह्मण जाति, शिव, विष्णु, मंत्र से भिन्न वेद का अंश, अग्नि, एक नक्षत्र का नाम। ब्राह्मणता-(सं०स्त्री०) ब्राह्मणत्व, (सं० नपुं०) ब्राह्मण का भाव या धर्म। ब्राह्मण प्रिय-(सं०पुं०) विष्णु। ब्राह्मण भोजन-(सं० पुं०) ब्राह्मणों को खिलाना। ब्राह्मण वध-(सं०पुं०) ब्राह्मण की हत्या। ब्राह्मणी-(सं० स्त्री०) ब्राह्मण की स्त्री। ब्राह्मण्य-(सं०नपुं०) ब्राह्मण का धर्म, विप्रत्व। ब्राह्म मुहूर्त-(सं०पुं०) अरुणोदय काल के प्रथम दो दण्ड।

ब्राह्म समाज-(सं०पुं०) एक धर्म समाज जिसमें एक मात्र परब्रह्म की उपासना की जाती है।

ब्राह्मय-(सं०वि०) ब्रह्म सबंधी।

ब्राह्मी-(सं० स्त्री०) दुर्गा, सरस्वती, रोहिणी नक्षत्र, एक बूटी का नाम, भारतवर्ष की एक प्राचीन लिपि जिससे नागरी बँगला, आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं।

ब्राह्मी कन्द-(सं० पुं०) बाराही कन्द।

भ

भ-हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ तथा पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है—इसके उच्चारण में ओष्ठ के साथ जिह्वा का अग्रभाग स्पर्श होता है इससे यह स्पर्श वर्ण कहलाता है।

भ-(सं०नपुं०) नक्षत्र, ग्रह, राशि, भौंरा, पर्वत, भ्रांति, छन्दशास्त्र के अनुसार वह गण जिसका आदि का वर्ण गुरु तथा शेष दो वर्ण लघु होते हैं।

भकार-(हिं०पुं०)भयंकर ध्वनि या शब्द

भँकारी-(हिं०स्त्री०) भुनगा, एक प्रकार का छोटा मच्छड़।

भंग-(हिं० पुं०) देखो भङ्ग, खण्ड, टुकड़ा, भाँग।

भंगड़-(हिं०वि०)बहुत भाँग पीने वाला, वह जो प्रतिदिन बहुत भाँग पीता हो, भँगेड़ी।

भंगना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, दबाना, टूटना, दबना।

भंगरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो भाँग के रेशे से बुना जाता है, वर्षाकाल में होने वाली एक प्रकार वनस्पति, भँगरैया।

भंगराज-(हिं०पुं०) कोयल के तरह की एक चिड़िया, देखो भंगरा।

भंगरैया-(हिं०स्त्री०) देखो भंगरा।

भँगार-(हिं०पुं०) वह गड्ढा जो कूप खनते समय पहले खोदा जाता है, वह गड्ढा जो बरसात के दिनों में भूमि के दब जाने से बन जाता है, कूड़ा करकट, घासफूस।

भंगिरा-(हिं०पुं०) देखो भंगरा।

भंगी-(हिं०वि०) नष्ट होने वाला, भंग करने वाला, रेखाओं के झुकाव से खींचा हुआ चित्र, एक अस्पृश्य जाति जिसका काम मल मूत्र आदि उठाना है, (वि०) भांग पीने वाला, भँगेड़ी।

भंगुर-(हिं०वि०)देखो भङ्गुर,नाशवान्, टेढ़ा।

भंगेड़ी-(हिं० पुं०) अधिक भाँग पीने वाला।

भंगेरा-(हिं० पुं०) भांग की छाल का बना हुआ कपड़ा, भंगरैया।

भंगेला-(हिं०पुं०) देखो भगेरा।

भंजक-(हिं०वि०) देखो भञ्जक, तोड़ने वाला।

भंजन-(हिं०पुं०) देखो भञ्जन, तोड़ने का काम।

भँजना-(हिं०क्रि०) विभक्त होना, टुकड़े टुकड़े होना, किसी बड़ी मुद्रा का छोटे मुद्रा में बदला जाना, भुनना, बटा जाना,मोड़ा जाना,मांजा जाना

भंजनी-(हिं०स्त्री०) करघे का एक अग जो ताने के लिये उसके किनारे पर लगा रहता है।

भँजाना-(हिं० क्रि०) तोड़वाना, बड़ी मुद्रा के बदले में छोटे मुद्रा देना, भुनाना,रस्सी कागज आदि को भांजने में दूसरे को नियुक्त करना।

भंझा-(हिं०पुं०)कुवे के किनारे के खंभे पर आड़े बल रक्खी हुई लकड़ी।

भंटकटैया-(हिं०पुं०) देखो भटकटैया।

भंटा-(हिं० पुं०) बैगन।

भंड-(हिं०पुं०) देखो भाँड़; (वि०) गाली बकने वाला, धूर्त। भंडताल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का नाच और गाना जिसमें एक मनुष्य गाता है और शेष लोग उसके पीछे तालियाँ पीटते हैं।

भंडतिल्ला-(हिं०पुं०) देखो भड-ताल

भंडना-(हिं०क्रि०) भग करना, तोड़ना, नष्ट भ्रष्ट करना, अपकीर्ति फैलाना, हानि पहुँचाना, बिगाड़ना।

भंडफोड़-(हिं०पुं०) मिट्टी के पात्रों को गिराना या तोड़ना फोड़ना, मिट्टी के पात्रों का टूटना फूटना, भेद खोलने का काम, भंडाफोड़।

भँड़भाँड़-(हिं०पुं०) एक कँटीला पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ औषधि के काम में आती हैं।

भंड़रिया-(हिं०पुं०)एक जाति का नाम, इस जाति के लोग शनैश्चर आदि ग्रहों का दान लेते हैं तथा लोगों का हाथ देखकर भविष्य फल बतलाते हैं, पाखंडी, ढोंगी, धूर्त, (स्त्री०) भीत का ताखा जिसमें पल्ले लगे हों।

भंड़सार, भंडसाल-(हिं०स्त्री०)वह गोदाम जहाँ सस्ता अन्न मोल लेकर महंगा बेंचने के लिये इकट्ठा किया जाता है;

भंडा-(हिं०पुं०) पात्र, भाँडा, भंडार, रहस्य, भेद। भंडा फूटना-भेद खुल जाना।

भंडाना-(हिं०क्रि०)नष्ट करना, तोड़ना, फोड़ना, उपद्रव करना, उछल कूद करना।
भंडार-(हिं०पुं०) कोष, अन्न रखने का स्थान, कोठार, पाकशाला, भंडारा, उदर, पेट, अग्निकोण। **भंडारा**-(हिं०पुं०) देखो भंडार, झुंड, समूह, उदर, पेट, साधुओं का भोज।
भंडारी-(हिं० स्त्री०) कोष, खजाना, छोटी कोठरी (पुं०) कोषाध्यक्ष, रसोइयादार।
भंडेरिया-(हिं०पुं०) देखो भँडरिया।
भंडेरियापन-(हिं०पुं०) पाखड, ढोंग,
भंड़ौआ-(हिं०पुं०) भांड़ों की गाने की गीत, ऐसी गीत जो सभ्य समाज मे गाने योग्य न हो, हास्य रस की निकृष्ट कविता।
भंबूरी-(हिं०स्त्री०) बबूल की जाति का एक वृक्ष।
भंभरना-(हिं० क्रि०) भयभीत होना, डरना।
भंभा-(हिं०पुं०) बिल, छेद। **भंभाका**-(हिं०स्त्री०) कोई बड़ा छिद्र।
भंमाना-(हिं०क्रि०)गौ आदि पशुओं का चिल्लाना, रंभाना।
भभीरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का बरसाती फतिंगा, जुलाहा।
भभेरि-(हिं०स्त्री०) भय डर।
भंमर-(हिं०पुं०) बड़ी मधुमक्खी, बरैं, भिड़।
भँवन-(हिं०स्त्री०) देखो भ्रमण, घूमना फिरना।
भँवना-(हिं० क्रि०) घूमना फिरना, चक्कर लगाना।
भँवर-(हिं० पुं०) देखो भ्रमर, भौंरा, गड्ढा, जल के बहाव में वह स्थान जहां पानी की लहर एक केन्द्र पर चक्कर खाती हुई घूमती है।
भँवरकली-(हिं०स्त्री०) लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि चारो ओर घूम सके। **भँवरगीत**-(हिं० पुं०) देखो भ्रमर गीत। **भँवरजाल**-(हिं०पुं०) संसार के झगड़े, भ्रमजाल। **भँवरभीख**(हिं०स्त्री०)वह भीख जो घर घर घूम-घूम कर मांगी जाय।
भँवरा-(हिं०पुं०) देखो भौंरा, भ्रमर।
भँवरी-(हिं० स्त्री०) भँवर, पानी का चक्कर, जन्तुओं के शरीर पर का वह स्थान जहां पर रोवें या बाल एक केन्द्र पर घूमे रहते हैं, घूम-घूम कर सौदा बेंचना, चक्कर लगाना परिक्रमा।
भँवाना-(हिं० क्रि०) भ्रम में डालना, चक्कर देना, घुमाना।
भँवारा-(हिं०वि०) भ्रमणशील, घुमाने वाला।
भँसना-(हिं०वि०)पानी के ऊपर तैरना, पानी में डाला या फेंका जाना।
भँसरा-(हिं०पुं०) देखो भंजनी।
भइया-(हिं० पुं०) भ्राता, भाई, एक आदर सूचक शब्द जो बराबर वालों के लिये प्रयोग होता है।
भक-(हिं०वि०)आग के एकाएक जलने या धुवें के निकलने मे उत्पन्न शब्द इसका प्रयोग, 'से' विभक्त के साथ होता है; **भकभकाना**-(क्रि०) प्रदीप्त होना।
भकक्षा-(सं०स्त्री०) नक्षत्र की कक्षा।
भकराँध-(हिं०स्त्री०) अन्न के सड़ने की गन्ध।
भकराँधा-(हिं०वि०) सड़ा हुआ।
भकसा-(हिं०वि०)जो अधिक समय तक पड़ा रहने के कारण दुर्गन्धयुक्त हो गया हो। **भकसाना**-(हिं० क्रि०) किसी खाद्य पदार्थ का दुर्गन्धी और कसैला हो जाना।
भकाऊं-(हिं०पुं०) बच्चों को डराने का शब्द, हौवा।
भकार-(सं०पुं०) 'भ' स्वरूप वर्ण।
भकुआ-(हिं०वि०)मूढ़, मूर्ख। **भकुआना**-(हिं०क्रि०) व्यग्र होना, घबड़ा जाना, चकपकाना, मूर्ख बनाना, चकपका देना।
भकुड़ा-(हिं०पुं०) तोप में बत्ती आदि ठूंसने का मोटा गज। **भकुड़ाना**-(हिं०क्रि०) तोप का मुँह लोहे के गज से स्वच्छ करना।
भकुवा-(हिं०वि०) देखो भकुआ।
भकूट-(सं०स्त्री०)ज्योतिष में एक प्रकार का राशियों का समूह।
भकोसना-(हिं०क्रि०) बिना अच्छी तरह से कुचले खा जाना, निगलना, खाना;
भक्किका-(सं०स्त्री०) झिल्ली, झींगुर।
भक्त-(सं०नपुं०)भात, धन; (वि०)तत्पर भक्तियुक्त, सेवा करने वाला, बांट कर दिया हुआ, अलग किया हुआ। **भक्तकंस**-(सं० पुं०) कांसे का पात्र जिसमें भात खाया जाता है। **भक्तकार**-(सं०पुं०)रसोइयादार। **भक्तजा**-(सं०स्त्री०) अमृत। **भक्तता**-(सं०स्त्री०) भक्तत्व, भक्ति। **भक्तदास**-(सं०पुं०) वह दास जो केवल भोजन लेकर ही काम करता हो। **भक्तपन**-(हिं०पुं०) भक्ति। **भक्तरुचि**-(सं०स्त्री०) भोजन करने की प्रबल इच्छा। **भक्तवत्सल**-(सं०वि०)भक्तों पर स्नेह करने वाला; (पुं०) विष्णु। **भक्तशाला**-(सं०स्त्री०) रसोइया घर। **भक्ताई**-(हिं०स्त्री०) देखो भक्ति। **भक्ति**-(सं० स्त्री०) विभाग, सेवा, शुश्रूषा, बांटने की क्रिया, खण्ड, अवयव, रेखा से किया हुआ विभाग, श्रद्धा, विश्वास, रचना पूजा, अर्चन, स्नेह, अनुराग, उपचार, एक वृत्त का नाम, भगवत् पूजा में अनुराग; **भक्तिकर**-भक्ति योग्य।
भक्तियोग-(सं०पुं०)भक्ति का साधन, सर्वदा भगवान में श्रद्धा पूर्वक मन लगाकर उनकी उपासना करना।
भक्तिरस-(सं०पुं०) वह रस जिसका स्थायीभाव भक्ति है। **भक्तिराग**-(सं० पुं०) भक्ति का पूर्वानुराग। **भक्तिवाद**-(सं०पुं०) भक्ति विषयक कथा। **भक्तिसूत्र**-(सं०नपुं०) वैष्णव सम्प्रदाय का एक सूत्र ग्रन्थ जिसमें भक्ति का वर्णन है।
भक्ष-(सं०पुं०) अशन, खाने का काम, खाने का पदार्थ। **भक्षक**-(सं०वि०) खादक, खाने वाला। **भक्षकार**-(सं०पुं०)हलवाई। **भक्षना**-(सं०नपुं०) किसी वस्तु को दांतों से काट कर खाना, भोजन करना। **भक्षना**-(हिं० क्रि०) भोजन करना, खाना।
भक्षणीय-(सं० वि०) भक्षण योग्य, खाने योग्य। **भक्षयितृ**-(सं०वि०) खाने वाला। **भक्षित**-(सं० वि०) खाया हुआ।
भक्षी-(सं०वि०) भक्षक, खाने वाला।
भक्ष्य-(सं०वि०) खाने योग्य, (पुं०) अन्न, आहार; **भक्ष्यकार**-हलवाई। **भक्ष्याभक्ष्य**-(सं०नपुं०) खाने तथा न खाने योग्य पदार्थ।
भख-(हिं०पुं०)आहार,भोजन। **भखना**-(हिं० क्रि०) भोजन करना, खाना, निगलना।
भखी-(हिं०स्त्री०) दलदल में होने वाली एक प्रकार की घास।
भगंदर-(हिं०पुं०) देखो भगन्दर।
भग-(सं० पुं०) स्त्री की योनि, लिंग, गुदा, रवि, सूर्य, बारह आदित्यों में से एक, छ प्रकार की विभूतियां, इच्छा, माहात्म्य, यत्न, धर्म, मोक्ष, सौभाग्य, कान्ति, चन्द्रमा, धन, पद, एक देवता का नाम, ऐश्वर्य।
भगण-(सं०पुं०) वह समय जो किसी ग्रह के मेषादि बारहो राशियों के अतिक्रम में लगता है, छन्द शास्त्र के अनुसार वह गण जिसके आदि का एक वर्ण गुरु और अन्त के दो वर्ण लघु होते हैं।
भगत-(हिं० पुं०) देखो भक्त, सेवक, उपासक, साधु, वह जो मांस न खाता हो, विचारवान्, ओझा, होली में स्वांग बनाने वाला, भूत प्रेत उतारने वाला।
भगतिया-(हिं०पुं०) राजपूताने की एक वैष्णव जाति।
भगदड़, भगदर-(हिं०स्त्री०)किसी कारण से त्रस्त होकर बहुत से लोगों का एकाएक भागना।
भगतबछल-(हिं०वि०) देखो भक्तबत्सल
भगति-(हिं०स्त्री०) देखो भक्ति।
भगती-(हिं०स्त्री०)देखो भक्ति। **भगन**-(हिं०वि०) देखो भग्न।
भगना-(हिं०पुं०) बहिन का पुत्र, भांजा, भागना।
भगनी-(हिं०स्त्री०) देखो भगिनी।
भगन्दर-(सं० पुं०) गुदा में व्रण होने का रोग।
भगर-(हिं०पुं०) सड़ा हुआ अन्न, छल, कपट।
भगरना-(हिं०क्रि०) खत्ते में अन्न का सड़ने लगना।
भगल-(हिं० पुं०) जादू, छल, कपट, हस्तकौशल, इन्द्रजाल।
भगली-(हिं०पुं०)ढोंगी,छली, बाजीगर;
भगवंत-(हिं०पुं०) देखो भगवत्।
भगवती-(सं०स्त्री०)देवी,गौरी,सरस्वती, दुर्गा।
भगवत्-(सं०पुं०)परमेश्वर, बुद्ध, शिव, विष्णु, सूर्य, कार्तिकेय, वेदव्यास, पूजनीय गुरु, (वि०) पूजनीय।
भगवत्पदी-(सं० स्त्री०) गंगा का एक नाम।
भगवद्गीता-(सं०स्त्री०) महाभारत के भीष्म पर्वके अन्तर्गत अठारह अध्याय का वह ग्रंथ जिसमें कर्मयोग,ज्ञानयोग और भक्तियोग का उपदेश है जिसको श्रीकृष्ण ने अर्जुन का मोह छुड़ाने के लिये प्रश्नोत्तर रूप में युद्धस्थल में किया था।
भगवद्भक्त-(सं०पुं०) ईश्वर का भक्त।
भगवा-(हिं०पुं०) लँगोटा।
भगवान्, भगवान-(हिं०पुं०) परमेश्वर, विष्णु, कोई आदरणीय व्यक्ति;(वि०) पूज्य, ऐश्वर्ययुक्त।
भगहारी-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
भगांकुर-(सं०पुं०) अर्शरोग, बवासीर।
भगाना-(हिं०क्रि०) किसी को भागने में प्रवृत्त करना, दौड़ाना, हटाना, खदेरना, दूर करना।
भगास्त्र-(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक अस्त्र।
भगिनी-(सं०स्त्री०) सहोदरा, बहिन; **भगिनीपति**-बहनोई।
भगीरथ-(सं०पुं०) यह सूर्य वंशीय राजा अंशुमान् के पुत्र दिलीप के लड़के थे, घोर तपस्या करके यह गंगा को पृथ्वी पर लाये थे; (वि०) भगीरथ की तपस्या के समान कठिन, बहुत बड़ा।
भगेड़-(हिं०वि०) वह जो कहीं से छिपकर भागा हो, वह जो काम पड़ने पर भाग जाता हो,कायर। **भगोड़ा**-(हिं०वि०) भागने वाला, कायर।
भगोल-(सं०पुं०) नक्षत्रचक्र, खगोल।
भगौती-(हिं०स्त्री०) देखो भगवती।
भगौहाँ-(हिं०वि०) वह जो भागने को तैयारहो,कायर,गेरूसेरँगाहुआ, गेरुआ
भग्गुल, भग्गू-(हिं०वि०) जो विपत्ति देख कर भागता हो, युद्ध क्षेत्र से भगा हुआ, कायर।
भग्न-(सं०वि०) पराजित, हारा हुआ, टूटाहुआ। **भग्नदूत**-(सं०पुं०) रणक्षेत्र से भाग कर आई हुई सेना जो राजा को हार का समाचार देने आती है।
भग्नपृष्ठ-(सं०वि०) जिसकी पीठ टूट गई हो। **भग्नांश**-(सं०पुं०) मूल द्रव्य का विभाग या खण्ड।
भग्नावशेष-(सं०पुं०) किसी टूटे हुए

पदार्थ के टुकड़े, किसी टूटे फूटे घर का अंश, खंडहर। भग्नांश-(सं०वि०) जिसकी आशा भंग हो गई हो,हताश
भङ्ग-(सं०पुं०) तरंग, लहर, खण्ड, पराजय, हार, कुटिलता, भय, डर, रोग, बाधा, विनाश, टेढे होने या झुकने का भाव लकवा, गमन, एक नोग का नाम; भङ्गवास-हल्दी।
भङ्गा-(सं०स्त्री०) भांग।
भङ्गी-(सं०पुं०) भंग करने वाला, नष्ट करने वाला।
भङ्गुर-(सं०वि०) नाश होने वाला,टेढ़ा, (पुं०) नदी का घुमाव। भङ्गुरता-(सं०स्त्री०) कुटिलता, टेढ़ापन।
भचक-(हिं०स्त्री०) भचक कर चलने का भाव,लंगड़ापन। भचकना-(हि०क्रि०) आश्चर्य मे निमग्न होकर रह जाना, चलती समय पैर का टेढ़ामेढ़ा पड़ना
भचक्र-(सं०नपु०)नक्षत्रसमूह,राशिचक्र।
भच्छ-(हिं०पुं०) देखो भक्ष्य। भच्छना-(हिं०क्रि०) भक्षण करना खाना।
भजक-(सं०वि०) विभाजक, भाग करने वाला।
भजन(सं०नपुं०) भाग खण्ड, सेवा,पूजा, वार बार किसी देवता या पूज्य का नाम लेना, स्मरण, देवता के उद्देश्य से गाई जाने वाली गीत, स्तोत्र,गुण-कीर्तन। भजना-(हिं०क्रि०)सेवा करना, आश्रय लेना, आश्रित होना, देवता आदि का नाम बार बार लेना, भाग जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, देवता का नाम जपना।
भजनानन्द-(सं०पुं०) वह आनन्द जो परमेश्वर का नाम लेने से प्राप्त होता है। भजनानन्दी-(सं०पु०) जो दिन रात भजनकरनेमें मस्त रहताहै
भजनी-(हिं०वि०) भजन गाने वाला।
भजनीय-(सं०वि०) विभाग करनेयोग्य, सेवा करनेयोग्य, आश्रय लेने योग्य।
भजमान-(सं०वि०) विभाग करने वाला, सेवा करने वाला।
भजाना-(हिं०क्रि०) दौड़ाना, भगाना, दूर करना।
भजियाउर-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का भोजन जो दही चावल तथा घी आदि को एक साथ पका कर बनाया जाता है।
भज्य-(सं०वि०) सेवा करने योग्य, भजने योग्य।
भञ्ज-(सं०वि०) तोड़ने वाला। भञ्जन-(सं०नपुं०) भंग करना, नाश, ध्वंस, भाग। भञ्जनक-(सं०पुं०) एक प्रकार का लकवा जिसमें मुख टेढ़ाहोजाता है
भञ्जा-(सं०स्त्री०) अन्नपूर्णाका एक नाम
भट-(सं०पुं०) युद्धकरने या लड़नेवाला योद्धा,वीर,सैनिक,एक वर्णसकर जाति
भटकटाई, भटकटैया-(हिं०स्त्री०) एक छोटा काँटेदार पौधा जिसके पत्तों पर भी काँटे होते हैं।
भटकना-(हिं०क्रि०) भ्रम में पड़ना,मार्ग भूल जाना, इधरउधर घूमते फिरना;
भटका-(हिं०पुं०) चक्कर, व्यर्थ घूमना;
भटकाना-(हिं०क्रि०) भ्रम में डालना, धोखा देना।
भटकैया-(हिं०वि०)भटकने या भटकाने वाला। भटकौंहां-(हिं०वि०) भ्रम में डालने वाला।
भटतीतर-(हिं०पुं०) एक प्रकार की चिड़िया।
भटधर्मा-(हिं०वि०) वीर धर्म का पालन करने वाला, सच्चा वीर।
भटनास-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी लता जिसकी फलियों के दानों की दाल बनाई जाती है।
भटनेरा-(हिं०पुं०) वैश्योंकी एक उपाधि
भटभेरा-(हिं०पु०) दो वीरोंका सामना, आकस्मिक मिलन,अनायास होनेवाली भेंट, टक्कर धक्का।
भटा-(हिं०पुं०) भंटा, बैगन।
भटियारा-(हिं०पुं०) देखो भठियारा।
भठियारिन-(हिं०स्त्री०)भठियारे कीस्त्री।
भटियारी-(सं०स्त्री०)एक रागिणी कानाम
भटियाल-(हिं०क्रि०वि०) नदी की धारा की ओर।
भटू-(हि०स्त्री०) प्रिय व्यक्ति, सखी,एक आदर सूचक शब्द जो स्त्रियों के लिये व्यवहार किया जाता है।
भटेरा-(हिं०पुं०)वैश्यों की एक जाति।
भटया-(हिं०स्त्री०) देखो भटकटैया।
भटोट-(हिं०पुं०) यात्रियों के गले में फाँसी लगाने वाला ठग।
भटोला-(हिं०वि०) भाट के योग्य, (पुं०) वह भूमि जो भाट को दी गई हो।
भट्ट-(सं०पुं०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों की एक उपाधि, पण्डित, योद्धा, भाट, सूर
भट्ट प्रयाग-(सं०पु०)गंगा और यमुना का सगम स्थान।
भट्टारक-(सं०पुं०) नाटकों में राजा इस नाम से पुकारा जाता है, सूर्य, देव, पूज्य व्यक्ति।
भट्टारकवार-(सं० पुं०) आदित्यवार, रविवार।
भट्टिनी-(सं०स्त्री०) ब्राह्मण की भार्या, नाटक की भाषा में राजा की वह पत्नी जिसका अभिषेक न हुआ हो।
भट्टी-(हिं०स्त्री०) देखो भट्ठी।
भट्ठी-(हिं०पुं०) बड़ी भट्ठी, ईंट खपड़े आदि के पकाने का पजावा, हलवाई का बड़ा चूल्हा, देशी मद्य बनाने का कार्यालय।
भठियाना-(हिं०क्रि०) समुद्र में भाटा आना,समुद्रके पानीका नीचे उतरना
भठियारपन-(हिं०पुं०) भठियारों की तरह लड़ना और गाली बकना।
भठियारा-हिं०पुं०) सराय का प्रबंध करने वाला।
भठियाल-(हिं०पुं०) देखो भाटा।
भठुली-(हिं०स्त्री०) ठठेरोंकी छोटीभट्टी
भठुवा-हिं०पुं०) आडंबर,दिखौवा शान
भभड़-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी हलकी नाव, वीर, योद्धा।
भड़क-(हिं०स्त्री०)दिखौवा चमक दमक, चमकीलापन, भड़कने का भाव।
भड़कदार-(हिं०वि०)चमकीला,भड़कीला
भड़कना-(हिं०क्रि०) प्रज्वलित होना, वेगसे जल उठना,क्रुद्धहोना, चौंकना, घोड़े आदि का डरकर पीछे हटना।
भड़काना-(हिं०क्रि०) प्रज्वलित करना, जलाना, चमकाना, बढावा देना, उत्तेजित करना, उभाड़ना, भयभीत करना।
भड़कीला-(हिं०वि०)भड़कदार,चमकीला, डरकर उत्तेजित होने वाला, चौकन्ना होने वाला। भड़कीलापन-(हि०पु०) भड़कीला होने का भाव।
भड़भड़-(हिं०स्त्री०) आघात से उत्पन्न शब्द, जनसमूह, भीड़भाड़, व्यर्थ की अधिक वार्ता। भड़भड़ाना-(हिं०क्रि०) भड़भड़ शब्द करना, व्यर्थ की बकवाद करना। भड़भड़िया-(हिं०वि०) व्यर्थ की बात करने वाला,बकवादी, गप्पी।
भड़भांड़-(हिं०पुं०) एक कटीला पौधा, घमोय।
भड़भूंजा-(हि०पुं०) हिन्दुओं की एक छोटी जाति जो भाड़ में अन्न भूनने का काम करती है।
भड़वा-(हिं०पुं०) देखो भड़ुआ।
भड़साईं-(हिं०स्त्री०) भड़भूंजे की भाँड़।
भड़सार-(हिं०स्त्री०) देखो भंडरिया।
भड़हर-(हिं०स्त्री०)देखो भड़ेहर। भड़ार-(हिं०पुं०) देखो भंडार।
भड़ाल-(हिं०पुं०)वीर, योद्धा, लड़ाका।
भड़िहा-(हिं०पुं०) तस्कर, चोर, ठग।
भड़िहाई-(हिं०क्रि०वि०) चोरों की तरह लुक छिप कर।
भड़ी-(हिं०स्त्री०) वह उत्तेजना जो किसी को मूर्ख बनाने या उत्तेजित करने के लिये दी जाय, झूठा बढावा।
भड़ुआ-(हिं०पुं०) वह जो रंडियों की दलाली करता हो, रंडियों के साथ तबला या सारंगी बजाने वाला।
भड्डर, भड्डर-(हिं०पुं०) ब्राह्मणों में निम्न श्रेणीकी एक जाति,इस जाति के लोग ग्रहों का दान लेते हैं और तीर्थों में यात्रियों को दर्शन आदि कराते हैं, भंडार।
भणन-(सं०नपुं०)कथन,उक्ति; भणना-(हिं०क्रि०) कहना। भणित-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ, (स्त्री०) कही हुईबात
भण्टा-(सं०स्त्री०) बार्ताकी, बैगन।
भण्ड-(सं०पुं०) भांड़, (वि०) धर्म का झूठा अभिमान करने वाला धूर्त।
भण्डक-(सं०पुं०) खञ्जन पक्षी।
भण्डन-(सं०नपुं०) क्षति, हानि।
भण्डहासिनी-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
भण्डी-(सं०स्त्री०) सिरिस का पेड़।
भतवान-(हिं०पुं०) विवाहकी एक रीति जिसमें कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष केलोगों को कच्ची रसोई खिलाते हैं।
भतार-(हिं०पुं०) देखो भर्ता, पति।
भतीजा-(हिं०पुं०) भाई का पुत्र।
भतुआ-(हि०पुं०) सफ़ेद कुम्हड़ा, पेठा।
भत्ता-(हि०पु०) किसी कर्मचारी को यात्रा के समय दिया जाने वाला दैनिक व्यय।
भदंत-(हिं०पुं०) बौद्ध सन्यासी।
भदई-(हि०वि०) भादों महीनेका,(स्त्री०) भादो के महीने मे तैयार होने वाली उपज।
भदमद-(हिं०वि०) बहुत मोटा, भद्दा।
भदयल-(हिं०पुं०) मेढक।
भदावर-(हिं०पु०) ग्वालियर राज्य का एक प्रान्त जहां के बैल बड़े प्रसिद्ध होतेहै। भदेसा-(हि०वि०) कुरूप,भद्दा
भदेरु-(हिं०वि०) कुरूप, भद्दा।
भदैल-(हिं०पुं०) मेढक।
भदैला-(हिं०वि०) भादों महीने का।
भदैसिल-(हिं०वि०) भद्दा, कुरूप।
भदौंह-(हि०वि०)भादोंमहीनेमें होनेवाला
भद्दा-(हि०वि०) जो देखने मे सुन्दर न हो, कुरूप, बेढंगा; भद्दापन-कुरूपता, बेढंगापन।
भद्र-(सं० पुं०) क्षेम कुशल, ज्योतिष में एक करण का नाम, महादेव, खंजन पक्षी, बैल, कदंब, ब्रज के एक वन का नाम, स्वरसाधन की एक प्रणाली, रामजी के एक सहोदर भाई, विष्णु का एक द्वारपाल,कदंब, सुमेरु पर्वत, चन्दन, सोना, उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम, (वि०) सभ्य, श्रेष्ठ, कल्याणकारो, (हिं०पुं०) सिर, दाढी तथा मूंछों के सब बालों का मुंडन।
भद्रक-(सं०न पुं०) देवदारु, बाइस अक्षरों का एक छन्द। भद्रकपिल-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
भद्रका-(सं०स्त्री०) इन्द्रजव।
भद्रकाय-(सं० पु०) श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम। भद्रकार, भद्रकारक-(सं०वि०) कल्याण करने वाला। भद्रकाली-(सं० स्त्री०) कात्यायनी, दुर्गा की एक मूर्ति। भद्रगणित-(सं०नपुं०) बीज गणित के अन्तर्गत एक गणित जो चक्रविन्यास की सहायता से की जाती है।
भद्रता-(सं०स्त्री०) सभ्यता, शिष्टता, भलमनसी।
भद्रघन-(सं० पुं०) नागरमोथा।
भद्रचारु-(सं०पुं०) वासुदेव के पुत्र का नाम। भद्रनामन्-(सं०पुं०) कठफोड़वा नामक पक्षी। भद्रपदा-(सं० स्त्री०) पूर्वभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र।
भद्रपीठ-(सं०पुं०) वह सिंहासन जिसपर राजाओं या देवताओं का अभिषेक किया जाता है। भद्रबला-(सं०स्त्री०) माधवी लता। भद्ररूपा-(सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री। भद्रवती-(सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम।
भद्रवसन-(सं०नपु०) सुन्दर पहरावा।

भद्रविराट-(सं०पुं०) एक वर्णार्ध सम वृत्त का नाम।

भद्रशील-(सं०वि०) सच्चरित्र, जिसका आचरण अच्छा हो।

भद्रषष्ठी-सं०स्त्री० दुर्गा देवी।

भद्रसोमा-सं०स्त्री० गंगा नदी।

भद्रा-सं०स्त्री० आकाश गंगा, फलित ज्योतिष में द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियों का नाम, शमी, हल्दी, गाय केकय राज की कन्या जो कृष्ण को व्याही थी, सुभद्रा का एक नाम, पिंगल में उपजाति का एक भेद, बाधा, अड़चन, पृथ्वी, फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग का का नाम। **भद्राकरण**-(सं० नपुं०) मुड़न, सिर का बाल मुड़वाना।

भद्रानन्द-(सं०पुं०) स्वर साधना की एक प्रणाली। **भद्रावती**-(सं० स्त्री०) कटहल का वृक्ष। **भद्राश्रय**-(सं०पुं०) चन्दन। **भद्रासन**-(सं०नपुं०) देखो भद्रपीठ।

भद्रिका-(सं० स्त्री०) भद्रा तिथि, एक वर्णवृत्त का नाम।

भद्री-(हिं०वि०) भाग्यवान्।

भद्रला-(सं०स्त्री०) बड़ी इलायची।

भनक-(हिं०स्त्री०) धीमा शब्द, ध्वनि, जनश्रुति। **भनकना**-(हिं०क्रि०) धीरे से बोलना या कहना।

भनना-(हिं०क्रि०) कहना।

भनभनाना-(हिं० क्रि०) भनभन शब्द करना; गुंजारना। **भनभनाहट**-(हिं० स्त्री०) भनभनाने का शब्द, गुंजार।

भनित-(हिं०वि०) देखो भणित।

भपति-(सं०पु०) चन्द्रमा।

भबका-(हिं०पु०) अर्क उतारने या मद्य चुआने का यन्त्र।

भभक-(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु का एकाएक गरम होकर ऊपर को उबलना, उबाल। **भभकना**-(हिं० क्रि०) गरमी पाकर किसी वस्तु का फटना, उबलना, प्रज्वलित होना, भड़कना, जोर से जल उठना।

भभका-(हिं०पुं०) देखो भबका।

भभकी-(हिं०स्त्री०) झूठी धमकी, घुड़की।

भभूका-(हिं०पुं०) ज्वाला, लपट।

भभूत-(हिं०स्त्री०) वह भस्म जिसको शैव लोग माथे तथा भुजा पर लगाते हैं।

भभ्भड़-(हिं० स्त्री०) जन समुदाय, भीड़भाड़।

भम्भ-(सं०पुं०) मक्खी, मच्छड़, धुवाँ।

भभरना-(हिं०क्रि०) डरना, घबड़ाना, भयभीत होना, भ्रम में पड़ना।

भंभीरा-(हिं०स्त्री०) झींगुर।

भय-(सं०नपुं०) भय हेतु, वह मनोविकार जो किसी आने वाली आपत्ति या आशंका से उत्पन्न होता है; **भय खाना**-डरना। **भयकर**-(सं०वि०) भयकारक, जिसको देखकर डर लगे। **भयकर्ता**-(सं० वि०) भयानक, भय उत्पन्न करने वाला।

भङ्कर-(सं०वि०) भयजनक, जिसको देखने से भय लगे। **भयंकरता**-(हिं०स्त्री०) भयंकर होने का भाव, भीषणता।

भयजात-(सं०वि०) भय से उत्पन्न।

भयद-(सं० वि०) भय उत्पन्न करने वाला। **भयदायी**-(सं०वि०) डरावना।

भयनाशन-(सं०पुं०) विष्णु।

भयप्रद-(सं० वि०) भयानक, जिसको देखकर भय उत्पन्न हो।

भयभीत-(सं० वि०) जिसके मन में भय उत्पन्न हुआ हो, डरा हुआ।

भयभ्रष्ट-(सं० वि०) जो डर के मारे भागा हो। **भयमोचन**-(सं० वि०) भय छुड़ाने वाला।

भयवाद-(हिं० पुं०) एक ही गोत्र या वंश के लोग, भाईबंद, सजातीय।

भयहरण-(सं० वि०) भय का नाश करने वाला। **भयहारी**-(हिं० वि०) डर दूर करने वाला।

भया-(हिं०वि०) हुआ।

भयाकुल-(सं०वि०) डरसे घबड़ाया हुआ।

भयातिसार-(सं०पु०) डरके मारे बहुत से शौच होना।

भयातुर-(सं० वि०) डर से घबड़ाया हुआ।

भयान-(हिं०वि०) देखो भयानक।

भयानक-(सं०वि०) भयंकर, डरावना, जिसको देखने से भय लगता हो, (पु०) व्याघ्र, राहु, साहित्य में वह रस जिसमें भीषण दृश्यों का वर्णन रहता है।

भयाना-(हिं०क्रि०) डरना, डराना।

भयावह-(सं०वि०) भय नाशक।

भयारा-(हिं० वि०) भयानक, डरावना।

भयावन-(हिं०वि०) डरावना। **भयावह**-(सं०वि०) भयंकर, डरावना।

भयावहा-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।

भय्या-(हिं०पुं०) भैया, भाई।

भरंत-(हिं०स्त्री०) भ्रान्ति, सन्देह।

भर-(सं०वि०) अतिशय, बहुत, पूरा, कुल, भरण करने वाला, (पुं०) भोर बोझ, संग्राम, दो सौ पल का एक परिमाण, (हिं० पुं०) पुष्टि, मोटाई, (क्रि०वि०) द्वारा, बलसे, (हिं०पुं०) एक अस्पृश्य जाति।

भरक-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी; देखो भड़क। **भरकना**-(हिं० क्रि०) देखो भड़कना।

भरका-(हिं० पुं०) वह भूमि जिसकी मिट्टी काली और चिकनी हो।

भरकट-(हिं०पु०) मस्तक, मोथा।

भरचिटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास।

भरट-(सं०पुं०) कुम्हार, सेवक।

भरण-(सं०नपुं०) पालन पोषण, भरणी नक्षत्र, जिसके बदले में कुछ दिया जाय, भरती।

भरणी-(सं०स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में से दूसरा नक्षत्र, इसकी आकृति त्रिकोण सी है। **भरणीभू**-(सं०पुं०) राहु ग्रह। **भरणीय**-(सं०वि०) पालने पोसने योग्य।

भरण्ड-(सं०पुं०) स्वामी, मालिक, राजा, बैल, पृथ्वी, कृमि, कीड़ा।

भरण्य-(सं०नपुं०) मूल्य, वेतन।

भरण्यु-(सं०पुं०) मेघ, अग्नि, ईश्वर, बैल।

भरत-(सं०पुं०) एक मुनि जो नाट्य शास्त्र के सृष्टिकर्ता थे, नट, रामचन्द्र के छोटे भाई, जुलाहा, खेत, कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र, शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यन्त के पुत्र जिनका जन्म कण्व ऋषि के आश्रम में हुआ था, उत्तर भारत का प्राचीन नाम, संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम, लवा पक्षी, काँसा, कसकुट। **भरतखण्ड**-(सं० नपुं०) राजा भरत के किये हुए पृथ्वी के नवखण्डों में से एक, भारतवर्ष। **भरतप्रसू**-(सं०स्त्री०) भरत की माता कैकेयी।

भरतरी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी।

भरतवर्ष-(हिं०पुं०) देखो भारतवर्ष।

भरता-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सालन जो भंटा, अरुई, आलू आदि को भून कर बनाया जाता है।

भरताग्रज-(सं०पु०) श्रीरामचन्द्र।

भरतार-(हिं०पुं०) पति, स्वामी।

भरताश्रम-(सं० पुं०) भरत मुनि का आश्रम।

भरतिया-(हिं०वि०) कसकुट या काँसे का बना हुआ, (पुं०) कसकुट के पात्र बनाने वाला ठठेरा।

भरती-(हिं०स्त्री०) भरे जाने का भाव, भरा जाना, प्रवेश होना, वह नाव जिसमें माल लादा जाता हो, नक्काशी या चित्रकारी के बीच का खाली स्थान, समुद्र का ज्वार, पानी की बाढ़, साँवा नमक अन्न; **भरती करना**-बीच बीच में रखना।

भरथ-(सं०पुं०) लोकपाल; (हिं० पुं०) देखो भरत।

भरथरी-(हिं०पुं०) देखो भर्तृहरि।

भरदूल-(हिं०पु०) देखो भरत पक्षी।

भरद्वाज-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम, इनके वंशज, एक गोत्र का नाम, एक प्रकार का पक्षी।

भरना-(हिं० क्रि०) पूर्ण करना, रिक्त स्थान को पूरा करने के लिये कोई वस्तु डालना, उलटना, ऋण चुकाना शरीर का हृष्ट पुष्ट होना, शरीर के किसी अंग में पीड़ा होना, घाव के गड्ढे का बराबर होना, अवकाश या छिद्र का बन्द होना, तोप या बन्दूक में गोली बारूद आदि का होना, पशुओं पर बोझ लादना, पद पर नियुक्त करना, निर्वाह करना, काटना, खेत में पानी देना, किसी की गुप्त रूप से निन्दा करना, कठिनता से समय बिताना, काटना, डंसना सहना, झेलना; **घर भरना**-अधिक धन देना।

भरना-हिं० पु०) भरने की क्रिया या भाव, उत्कोच, घूस।

भरनि-(हिं०स्त्री०) पहरावा।

भरनी-(हिं०स्त्री०) करघे में की ढरकी, नार, छछूंदर, मोरनी, एक प्रकार की जंगली बूटी।

भरपाई-(हिं०क्रि०वि०) भली भांति, पूर्ण रूप से, (स्त्री०) जो कुछ बाकी हो वह पूरा पूरा पा जाना, वह रसीद जो चुकान हो जाने पर दी जाय।

भरपूर-(हिं० वि०) जो पूरी तरह से भरा हुआ हो, परिपूर्ण; (क्रि०वि०) पूर्ण रूप से, भली भांति, अच्छी तरह पूरा करके, (पु०) समुद्र की ज्वार।

भरभराना-(हिं०क्रि०) रोवाँ खड़ा होना घबड़ाना।

भरभराहट-(हिं०स्त्री०) घबड़ाहट।

भरभूंजा-(हिं०पुं०) देखो भड़भूंजा।

भरभेंटा-(हिं०पुं०) सामना।

भरम-(हिं०पुं०) भ्रम, भ्रान्ति, संशय, सन्देह, धोखा, भेद, रहस्य; **भरम गँवाना**-भेद खोलना।

भरमना-(हिं० क्रि०) भटकना, धोखे में पड़ना, मारा मारा फिरना, चलना, घूमना; (स्त्री०) भ्रम, भ्रान्ति, भूल;

भरमाना-(हिं०क्रि०) भ्रम या चक्करमें डालना, बहकाना, चकित होना, हैरान होना।

भरमार-(हिं०स्त्री०) अत्यन्त अधिकता,

भरराना-(हिं० क्रि०) भर भर शब्द करते हुए गिरना, अरराना, टूट पड़ना, दूसरे को टूट पड़ने में प्रवृत्त करना।

भरल-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की जंगली भेड़।

भरवाई-(हिं०स्त्री०) भरवाने की क्रिया या भाव, भरवाने का वेतन; **भरवाना**-(हिं० क्रि०) भरने का काम दूसरे से कराना।

भरसक-(हिं०क्रि०वि०) यथाशक्ति, जहाँ तक हो सके।

भरसन-(हिं०स्त्री०) भर्त्सना, डाँट फटकार

भरसाईं-(हिं०पुं०) देखो भाड़।

भरहरना-(हिं०क्रि०) देखो भरभराना;

भरहराना-(हिं०क्रि०) देखो भहराना।

भराँति-(हिं०स्त्री०) देखो भ्रांति।

भराई-(हिं०स्त्री०) भरने की क्रिया या भाव, भरने का शुल्क।

भरापूर-(हिं०वि०) जिसमें किसी बात की न्यूनता न हो।

भराव-(हिं०पुं०) भरने का भाव, भरने का काम, कसीदा काढ़ने में पत्तियों के बीच के स्थान को तागों से भरना

भरित-(हिं० वि०) भरा हुआ, पीला, जिसका पालन पोषण किया गया हो

भरिया-(हिं० वि०) भरने वाला, पूर्ण

करने वाला, ऋण चुकाने वाला; (पुं०) ढलाई करने वाला मनुष्य।
भरी-(हिं० स्त्री०) दस मासे या एक रुपये के बराबर की तौल।
भरु-(सं० पुं०) विष्णु, शिव, समुद्र, स्वामी, सुवर्ण; (हिं०पुं०) बोझ।
भरुआ-(हिं०पुं०) देखो भडुआ, टसर।
भरुकच्छ-(सं० पुं०) भरोच का प्राचीन नाम।
भरुज- सं०पुं०) छोटा सियार।
भरुहाना-(हिं०क्रि०) गर्व करना, घमंड करना, धोखा देना, बहकाना, उत्तेजित करना, बढ़ावा देना।
भरुही-(हिं० स्त्री०) लेखनी बनाने की एक प्रकार की कच्ची किलक।
भरेठ-(हिं०पुं०) द्वार के ऊपर लगाई हुई लकड़ी जिसपर भीत उठाई जाती है।
भरैया-(हिं०वि०) पालन करने वाला, जो भरता हो।
भरोसा-(हिं० पुं०) अवलम्ब, आश्रय, आसरा,सहारा,आशा, दृढ़ विश्वास।
भरोसी-(हिं०वि०) भरोसा या आसरा करने वाला, आश्रित, विश्वसनीय, जिस पर भरोसा किया जावे।
भरौती-(हिं०स्त्री०) वह रसीद जिसमें भरपाई की गई हो।
भरौना-(हिं०वि०) बोझल, भारी।
भर्ग-(सं० पुं०) शिव, महादेव, भूना हुआ अन्न; भर्जन-(सं० नपुं०) भूना हुआ अन्न।
भर्तव्य-(सं० वि०) भरण पोषण करने योग्य।
भर्ता-(हिं० पुं०) अधिपति, विष्णु, मालिक, स्वामी, पति।
भर्तार-(हिं०पु०) पति, स्वामी।
भर्तृघ्नी-(सं० स्त्री०) पति घातिनी; भर्तृत्व-(सं०नपुं०) पति का भाव या धर्म; भर्तृमती-(सं०स्त्री०)सधवा स्त्री
भर्तृहरि-(सं० पुं०) एक प्रसिद्ध कवि जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के भाई थे।
भर्त्सक-(सं० वि०) तिरस्कार करने वाला; भर्त्सन-(सं० नपुं०) निन्दा, डाँट-डपट; भर्त्सना-(सं०स्त्री०)निन्दा डाँट-डपट, फटकार।
भर्म-(हिं०पुं०) देखो भ्रम।
भर्मन-(हिं०पुं०) देखो भ्रमण।
भर्रा-(हिं० पुं०) पक्षियों की उड़ान, एक प्रकार की चिड़िया।
भर्राना-(हिं०क्रि०)भर्र भर्र शब्द होना
भर्सन-(हिं०स्त्री०) निन्दा, अपवाद, डाँट फटकार।
भल-(सं०पुं०)मार डालने की क्रिया,वध
भलका-(हिं०पुं०)एक प्रकार का बाँस।
भलटी-(हिं० स्त्री०) लोहा काटने का एक अस्त्र, हँसिया।
भलपति-(हिं०पुं०) भाला रखने वाला।
भलमनसत, भलमनसाहत, भलमनसी-(हिं० स्त्री०) सज्जनता।
भला-(हिं०वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया, (पुं०) लाभ, कल्याण।
भला-(हिं० अव्य०) अस्तु; भला बुरा-उचित अनुचित, डांट फटकार; हानि लाभ; भलेही-इसमें कोई हानि नहीं है।
भलाई-(हिं०स्त्री०) अच्छापन, भलापन, सौभाग्य, उपकार, नेकी; भलापन-(हिं०पुं०) देखो भलाई।
भले-(हिं०क्रि०वि०) भलीभाँति, अच्छी तरह से, (अव्य०) वाह।
भलेरा-(हिं०पुं०) देखो भला।
भल्ल-(सं०पु०) मल्लूक, भालू, एक प्रकार का बाण, वध, हत्या, भिलावें का वृक्ष।
भल्लक-(सं०पुं०) भल्लूक, भालू।
भल्लाक्ष-(सं० वि०) जिसको कम देख पड़ता हो, मन्ददृष्टि।
भल्लातक-(सं०पुं०) भिलावें का वृक्ष।
भल्लुक, भल्लूक-(सं० पुं०) भालू।
भवँ-(हिं० स्त्री०) देखो भौंह।
भवंग-(हिं० पुं०) भजग, सर्प।
भवंत-(हिं०वि०)आपका,आपलोगोंका।
भवँरकली-(हिं०स्त्री०) देखो भँवरकली।
भवँरी-(हिं० स्त्री०) देखो भँवरी।
भवँलिया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की नाव, भौलिया।
भव-(सं० पुं०) जन्म, उत्पत्ति, शिव, महादेव, संसार, क्षेम कुशल, प्राप्ति, कारण, हेतु, मेघ, बादल, कामदेव, संसार का दुःख, जन्म मरण का दुःख, (हिंपु०) भय, डर, (वि०) कल्याण कारक, शुभ, उत्पन्न, जनमा हुआ। भवकेतु-(सं०पुं०) एक प्रकार का पुच्छल तारा। भवक्षिति-(सं० स्त्री०) जन्मभूमि। भवचाप-(सं० पुं०) शिवजी के धनुष का नाम।
भवत्-(सं० वि०) मान्य, पूज्य, तुम, (पुं०) विष्णु, भूमि।
भवतव्यता-(हि० स्त्री०) देखो भवितव्यता।
भवदा-(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
भवदीय-(सं० वि०) आपका, तुम्हारा।
भवधरण-(सं० पुं०) संसार को धारण करने वाला, परमेश्वर।
भवन-(सं० नपुं०) प्रासाद, हर्म्य, गृह, छप्पय का एक भेद, (हिं०पुं०) जगत् ससार; भवनपति-घर का स्वामी।
भवना-(हिं० क्रि०) घूमना।
भवनी-(हिं०स्त्री०) गृहिणी, भार्या, स्त्री।
भवपाली-(सं० स्त्री०) संसार की रक्षा करने वाली शक्ति।
भवबन्धन-(सं०पुं०) संसार की झंझट।
भवभञ्जन-(सं० पुं०) संसार का नाश करने वाला, काल, परमेश्वर।
भवभय-(सं० पुं०) संसार में बारबार जन्म लेने और मरने का भय।
भवभामिनी-(सं०स्त्री०)पार्वती,भवानी।
भवभावन-(सं० पुं०) विष्णु।
भवभूति-(हिं० स्त्री०) सृष्टि।
भवभूष-(सं० पुं०) संसार के भूषण।
भवमोचन-(सं० वि०) संसार के बन्धनों से छुड़ाने वाला, भगवान्।
भवर्ग-(सं० पुं०) नक्षत्र वर्ग।
भववामा-(सं० स्त्री०) शिवजी की स्त्री, पार्वती। भवविलास-(सं०पुं०) माया, ज्ञान के अन्धकार से उत्पन्न होने वाला संसार का सुख। भवशूल-(सं०पुं०) संसारिक दुःख और क्लेश। भवसंभव-(सं० वि०) संसार में होने वाला।
भवाँ-(हिं० स्त्री०) चक्कर, भौरी।
भवाँना-(हिं०क्रि०) घुमाना फिराना।
भवा-(सं० स्त्री०) दुर्गा, पार्वती।
भवानी-(हिं० स्त्री०) भवपत्नी, दुर्गा।
भवानीवल्लभ-(सं०पुं०) शिव, महादेव
भवितव्य-(सं० वि०) भवनीय, अवश्य होने हाली। भवितव्यता-(सं० स्त्री०) भाग्य, अदृष्ट, भावी।
भविपुला-(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम।
भविष्णु-(स० वि०) भवनशील।
भविष्य-(स० वि०) आने वाला काल, भविष्यत् काल संबंधी। भविष्यगुप्ता-(स० स्त्री०) गुप्ता नायिका का एक भेद; वह नायिका जो रति की अभिलाषा रखती हो परन्तु पहले इसको छिपाने का उद्योग करे।
भविष्यत्-(सं० वि०) वर्तमान काल के उपरान्त का काल, आगामी काल।
भविष्यद्वक्ता-(सं० पु०) वह जो होने वाली बात को पहले ही से कह दे।
भविष्यद्वाणी-(सं० स्त्री०) भविष्यवाणी, भविष्य की बात जो पहले ही से कही गई हो।
भवीला-(हिं० वि०) भावयुक्त, भाव पूर्ण, तिरछा बाँका।
भवेश-(सं० पुं०) संसार का स्वामी, शिव का एक नाम।
भव्य-(सं० वि०) शुभ, मंगल सूचक, जो देखने में भारी और सुन्दर जान पड़े, सत्य, सच्चा, योग्य, श्रेष्ठ, बड़ा, प्रसन्न, भविष्य में होने वाला।
भव्यता-(सं० स्त्री०) भव्य होने का भाव या धर्म।
भव्या-(सं० स्त्री०) उमा, पार्वती।
भष-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता, (हिं० पुं०) भोजन।
भषण-(सं० नपुं०) कुत्ते का भूंकना।
भषना-(हिं० स्त्री०) भोजन करना, खाना।
भषी-(सं० स्त्री०) कुतिया।
भसन-(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा।
भसना-(हि० क्रि०) पानी के तल पर तैरना, पानी में डूबना।
भसमंत-(हिं० वि०) जाना हुआ।
भसम-(हिं० पुं०) देखो भस्म।
भसमा-(हिं० पुं०) पीसा हुआ आटा, नील की पत्ती की बुकनी, बाल काला करने का एक प्रकार का द्रव्य।
भसान-(बंगला पुं०) काली या सरस्वती आदि की मूर्ति को पूजा के उपरान्त नदी में प्रवाह करना।
भसाना-(बं० क्रि०) पानी में डुबाना, पानी मे किसी वस्तु को तैरने के लिये छोड़ना। भसिंड, भसींड़-(हिं० स्त्री०) कमलनाल, मुरार।
भसुंड-(हि० पु०) हाथी, गज।
भसुर-(हिं० पुं०) पति का बड़ा भाई, जेठ।
भसूंड़-(हिं० पुं०) हाथी का सूंड़।
भसूचक-(सं० पुं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।
भस्त्रका, भस्त्रा-(सं० स्त्री०) आग सुलगाने की भाथी।
भस्म-(सं०पुं०) लकड़ी आदि के जलने पर बची हुई राख, चिता की राख, अग्निहोत्र की राख,(वि०) जो जलाकर राख हो गया हो। भस्मक-(सं० नपुं०) भस्म कीट नामक रोग।
भस्मकारी-(हिं०वि०) जलाने वाला।
भस्मता-(सं० स्त्री०) भस्म का भाव या धर्म। भस्मप्रिय-(सं० पुं०) शिव का एक नाम। भस्मवेधक-(सं० पुं०) कर्पूर, कपूर। भस्मस्नान-(सं० पुं०) सारे शरीर में भस्म पोतना।
भस्माकार-(सं०पुं०) रजक, धोबी।
भस्माङ्ग-(सं० पुं०) कपोत, कबूतर।
भस्मासुर-(सं० पु०) एक दैत्य का नाम जिसकी तपस्या से सन्तुष्ट होकर शिवजी ने उसको यह बरदान दिया था कि जिसके सिर पर तुम हाथ रक्खोगे वह भस्म हो जायगा।
भस्मित-(सं० वि०) जलाया हुआ।
भस्मीभूत-(सं० वि०) जो जल कर राख हो गया हो, जिसका नाश किया गया हो।
भहराना-(हि० क्रि०) झोंके से गिर पड़ना, टूट पड़ना, फिसल पड़ना।
भहूं-(हिं०स्त्री०) देखो भौंह।
भाईं-(हिं०पुं०) खरादने वाला कर्मकार
भाँउँ-(हिं०पुं०) भाव, अभिप्राय,आशय
भाँउर-(हिं०स्त्री०) देखो भाँवर।
भांकड़ी-(हिं०पुं०) गोखरू की तरह का एक जंगली पौधा।
भाँग-(हिं०स्त्री०) सन की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियां मादक होती हैं, विजया, बूटी; भाँग खा जाना-पागलपन की बातें करना; घर में भूँजी भाँग न होना-अति निर्धन होना।
भाँगरा-(हिं०स्त्री०)किसी धातु के महीन कण।
भाँज-(हिं०स्त्री०) किसी पदार्थ को मोड़ने या तह करने की क्रिया, भांजने का काम, वह धन जो नोट, रुपये आदि को बदलने में दिया जाय, भुनाई। भाँजना-(हिं०क्रि०) तह करना, मोड़ना, मुद्गर आदि को घुमाना, दो या अनेक लड़ियों

को एक में मिला कर बटना।
भाँजा-(हिं०पुं०) देखो भानजा। **भाँजी**-(हिं०स्त्री०) बहिन की पुत्री, किसी होते हुए काम में बाधा डालने वाली बात।
भाँट-(हिं०पुं०) देखो भाट।
भाँटा-(हिं०पुं०) बैंगन।
भाँड़-(हिं०पुं०) मसखरा, ठिठोलिया, विदूषक, बेहया, नंगा; (पुं०) पात्र, उपद्रव, उत्पात।
भाँड़ना-(हिं०क्रि०) मारे मारे फिरना, व्यर्थ इधर उधर घूमना, भ्रष्ट करना, बिगाड़ना, अपमानित करना।
भाँडा-(हिं०पुं०) पात्र, बड़ा पात्र।
भाँडागार-(हिं०पुं०) देखो भाण्डागार; कोष। **भाँडागारिक**-(हिं०पुं०) भंडारी, कोषाध्यक्ष।
भाँडार-(हिं०पुं०) देखो भाण्डार।
भाँति-(हिं०स्त्री०) तरह, प्रकार।
भाँपना-(हिं०क्रि०) पहचानना, देखना, अनुमान कर लेना, ताड़ना।
भाँभी-(हिं०पुं०) जूते की मरम्मत करने वाला चमार।
भायँ भायँ-(हिं०पुं०) निर्जन स्थान का शब्द।
भाँरी-(हिं०स्त्री०) देखो भांवर।
भाँवना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ को खराद पर घुमाना, खरादना।
भाँवर-(हिं०स्त्री०) चारों ओर घूमना या चक्कर काटना, परिक्रमा करना, अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय वर और वधू मिल कर करते हैं, हल जोतती समय एक बार खेत के चारों ओर घूम आना, (पुं०) देखो भौंरा।
भा-(सं०स्त्री०) प्रभा, चमक, प्रकाश, कान्ति, शोभा, किरण, बिजली, (हिं०अव्य०) यदि इच्छा हो।
भाइ-(हिं०पुं०) भाव, विचार, प्रीति, प्रेम, स्वभाव, (स्त्री०) प्रकार, चाल ढाल
भाइप-(हिं०पुं०) भाई चारा, आत्मीयता
भाई-(हिं०पुं०) भ्राता, सहोदर, भैया, अपनी जाति या समाज का कोई व्यक्ति, संबोधन का एक शब्द, किसी वंश या परिवार की किसी एक पीढ़ी के व्यक्ति के लिये उसी पीढ़ी का दूसरा मनुष्य यथा-ममेरा या चचेरा भाई। **भाईचारा**-(हिं० पुं०) भाई के समान होने का भाव, परम मित्र या बन्धु होने का भाव।
भाईदूज-(हिं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ला द्वितीया, यम द्वितीया, जिस दिन बहिन भाई को टीका लगाती और भोजन कराती हैं। **भाईपन**-(हिं०पुं०) भ्रातृत्व, परम मित्र या बन्धु होने का भाव। **भाईबन्द**-(हिं०पुं०) भाई और मित्र बन्धु, अपनी जाति के लोग; **भाई बिरादरी**-(हिं०स्त्री०) जाति या समाज के लोग।
भाउ-(हिं०पुं०) भाव, चित्तवृत्ति, विचार, जन्म, उत्पत्ति।
भाऊ-(हिं०पुं०) भाव, भावना, स्वभाव, चित्तवृत्ति, विचार, प्रेम, स्नेह, महत्व, महिमा, स्वरूप, सत्ता, अवस्था।
भाएँ-(हिं०क्रि०वि०) बुद्धि के अनुसार।
भाकर-(सं०पुं०) भास्कर, सूर्य।
भाकसी-(हिं०स्त्री०) भट्ठी, भरसाईं।
भाकोष-(सं०पुं०) सूर्य।
भाक्त-(सं०वि०) भक्त सम्बन्धी।
भाक्ष-(सं०वि०) खाने योग्य, भक्षणशील
भाख-(हिं०पुं०) देखो भाषण। **भाखना**-(हिं०क्रि०) बोलना, कहना।
भाखर-(हिं०पुं०) पर्वत, पहाड़।
भाखा-(हिं०स्त्री०) देखो भाषा।
भाग-(सं०पुं०) अंश, भाग्य, प्रारब्ध, गणित में किसी राशि को अनेक अंशों या भागों में बांटने की क्रिया, प्रातःकाल का समय, वैभव, ऐश्वर्य, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, ललाट, पार्श्व, सौभाग्य। **भागक**-(सं०वि०) देखो भाजक। **भागकर**-(सं०पुं०) विभाग करने वाला, बाँटने वाला।
भागड़-(हिं०स्त्री०) बहुत से लोगों का घबड़ाकर एकाएक भागना, भगदड़।
भागण-(सं०पुं०) सूर्य आदि की प्रभा।
भागत्याग-(हिं०पुं०) वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाक्यार्थ को बिलकुल छोड़े हुए हो।
भागदा-(सं०स्त्री०) भाग देने वाला।
भागधेय-(सं०नपुं०) भाग्य, प्रारब्ध, (पुं०) वह कर जो राजा को दिया जाता है, दायाद, सपिण्ड।
भागना-(हिं०क्रि०) चटपट दूर हो जाना, कोई काम करनेसे बचना, पिंड छुड़ाना, टल जाना, हट जाना।
भागनेय-(सं०पुं०) देखो भागिनेय, भानजा।
भागफल-(सं०पुं०) गणित में वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो, लब्धि।
भागरा-(हिं०पुं०) एक संकर राग का नाम।
भागवंत-(हिं०वि०) भाग्यवान्, भाग्यशील
भागवत-(सं०नपुं०) अठारह पुराणों के अन्तर्गत एक महापुराण; (सं०वि०) भगवद्भक्त, जो भगवान् का भक्त हो; (पुं०) तेरह मात्राओं का एक छन्द।
भागवती-(सं०स्त्री०) वैष्णवों की कंठी जिसको वे गले में पहनते हैं।
भागवान-(हिं०वि०) देखो भाग्यवान्।
भागसिद्ध-(सं०पुं०) एक प्रकार का हेत्वाभास
भागहर-(सं०वि०) भाग या अंश लेने वाला। **भागहार**-(सं०पुं०) गणित में किसी राशि को कुछ निश्चित अंशों में विभक्त करने की क्रिया।
भागार्ह-(सं०वि०) जो विभक्त करने योग्य हो।
भागासुर-(सं०पुं०) एक असुर का नाम
भागिक-(सं०वि०) वह ऋण जो व्याज पर दिया गया हो।
भागिनेय-(सं०पुं०, भगिनीपुत्र, भानजा; **भागिनेयी**-(सं०स्त्री०) भानजी, बहिन की लड़की।
भागी-(हिं०पुं०, अधिकारी, अंशधारी
भागीरथ-(हिं०पुं०) देखो भगीरथ।
भागीरथी-(सं०स्त्री०) जाह्नवी गंगा; राजा भगीरथ गंगा को इस लोक में लाये थे।
भाग्य-(सं०नपुं०) शुभाशुभ कर्म, प्रारब्ध, अदृष्ट, उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र; (वि०) जो विभाग करने के योग्य हो।
भाग्यवत्-(सं०वि०) भाग्ययुक्त, भाग्यवान्।
भाँगक-(सं०नपुं०) फटा हुआ वस्त्र।
भाचक्र-(सं०पुं०) क्रांति वृत्त।
भाजक-(सं०वि०) विभाग करने वाला; (पुं०) गणित में वह अंक जिससे कोई संख्या भाग दी जावे; **भाजकांश**-(सं०पुं०) वह संख्या जिससे किसी राशि को भाग देने पर कुछ शेष न बचे।
भाजन-(सं०नपुं०) आधार, पात्र, बरतन, योग्य, एक परिमाण का नाम।
भाजनता-(सं०स्त्री०) भाजनत्व, योग्यता
भाजना-(हिं०क्रि०) भाग देना।
भाजित-(सं०वि०) पृथक् या अलग किया हुआ।
भाजी-(सं०स्त्री०) माड़, पीच; (हिं०स्त्री०) साग, तरकारी, मिठाई, पकवान आदि जो तेहवारों पर इष्ट मित्र या सम्बन्धियों के घर भेजा जाता है।
भाज्य-(सं०वि०) विभाग करने योग्य; (पुं०) वह संख्या जो भाजक से भाग दी जाती है।
भाट-(हिं०पुं०) स्तुतिपाठक, राजाओं का यश वर्णन करने वाला, बन्दी, चारण, राजदूत; (हिं०स्त्री०) नदी के दो करारों के बीच की भूमि, नदी का किनारा, नदी का बहाव, नदी के बहाव की मिट्टी।
भाटक-(सं०पुं०) भाड़ा, किराया।
भाटा-(हिं०पुं०) पानी का चढ़ाव की ओर से उतार की ओर जाना, समुद्र के चढ़ाव का उतरना, पथरीली भूमि।
भाटिया-(हिं०पुं०) राजपूत जाति की एक शाखा।
भाटचौ-(हिं०पुं०) भाट या बन्दी का काम, राजाओं का यश कीर्तन।
भाठ-(हिं०स्त्री०) वह मिट्टी जिसको नदी बाढ़ में लाती है और उतार के समय कछार में जमाती है, (हिं०पुं०) गड्ढा।
भाठी-(हिं०स्त्री०) पानी का उतार, देखो भट्ठी।
भाड़-(हिं०पुं०) भड़भूजों की भट्ठी जिसमें वे अन्न भूनते हैं; **भाड़ झोंकना**-तुच्छ कार्य करना; **भाड़ में फेंकना या झोंकना**-नष्ट करना।
भाड़ा-(हिं०पुं०) किराया, एक प्रकार की ऊंची घास, वह दिशा जिस ओर वायु बहती हो; **भाड़े का टट्टू**-वह जो क्षण भर के लिये सहायता देता हो।
भाण-(सं०पुं०) नाटकादि दशरूपक के अन्तर्गत एक रूपक विशेष जो एक अंक का होता है और इसमें हास्यरस की प्रधानता रहती है, व्याज, मिस, बहाना, ज्ञान, बोध।
भाण्ड-(सं०नपुं०) पात्र, बनिये का मूलधन, पूंजी; **भाण्डक**-छोटा पात्र; **भाण्डपति**-बनियां, व्यवसायी; **भाण्डपुट**-नाई; **भाण्डशाला**-भंडारघर; **भाण्डागारिक**-भंडारी।
भाण्डार-(सं० नपुं०) भंडारघर। **भाण्डारिक**-(सं०पुं०) भंडारघर का अध्यक्ष, भण्डारी।
भाण्डिनी-(सं०स्त्री०) मंजूषा, छोटी पेटी
भात-(सं०नपुं०) प्रभात, सबेरा, प्रकाश
भात-(हिं०पुं०) पानी में उबाला हुआ चावल, विवाह की एक रीति जिसमें समधी को भात खिलाने के लिये कन्या के घर बुलाया जाता है।
भाता-(हिं०पुं०) खेत की उपज का वह अंश जो हलवाहे को खलिहान में से किसी को दिया जाता है।
भाति-(सं०स्त्री०) कान्ति, शोभा; (हिं० स्त्री०) देखो भांति।
भाथा-(हिं०पुं०) तीर रखने की चमड़े की थैली, तरकश, तूणीर, बड़ी भाथी
भाथी-(हिं०स्त्री०) चमड़े की बनी हुई धौंकनी जिसमें से हवा फ़ूंक कर भट्ठी की आग सुलगाई जाती है।
भादों-(हिं०पुं०) सावन के बाद के तथा कुआर के पहिले के महीने का नाम, भाद्रपद।
भाद्र, भाद्रपद-(सं०पुं०) भादों का महीना; **भाद्रपदा**-(सं० स्त्री०) पूर्वा भाद्रपदा तथा उत्तरा भाद्र पदा नक्षत्र।
भाद्रमातुर-(सं०पुं०) जिसकी माता सती हो।
भान-(सं०नपुं०) प्रकाश, दीप्ति, चमक, आभास, प्रतीति, ज्ञान।
भानजा-(हिं०पुं०) बहिन का लड़का।
भानना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, भंग करना, तोड़ना, काटना, मिटाना, दूर करना, समझना।
भानमती-(हिं० स्त्री०) वह नटी जो जादू का खेल करती हो, जादूगरनी; **भानमती का पेटारा**-विभिन्न वस्तुओं का संग्रह।
भानवी-(हिं०स्त्री०) यमुना नदी।
भानवीय-(सं०वि०) सूर्य सम्बन्धी।
भाना-(हिं०क्रि०) जान पड़ना, रुचना, अच्छा लगना, शोभा देना, चमकना,
भानु-(सं०पुं०) सूर्य, विष्णु, किरण, मदार, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, प्रभु, मालिक, (स्त्री०) कृष्ण की एक कन्या का नाम, धर्म की एक पत्नी का नाम। **भानुकम्प**-ग्रहण आदि के समय सूर्य के बिम्ब का कांपना।

भानुज-(सं०पुं०) शनैश्चर, यम, कर्ण भानुजा भानुतनया-(सं०स्त्री०) यमुना नदी। भानुदिन-(सं०नपुं०) सूर्य का दिन, रविवार। भानुपाक-(सं०पुं०) औषध आदि को सूर्य की गरमी से पकाने की विधि। भानुफला-(सं०स्त्री०) कदली, केला। भानुमत्-(सं०पुं०) सूर्य, (वि०) दीप्तिमान्, प्रकाशमान्।

भानुमती-(सं०स्त्री०) विक्रमादित्य की रानी का नाम जो इन्द्रजाल विद्या जानती थी, दुर्योधन की पत्नी, गंगा, जादूगरनी।

भानुमान्-(हिं०पुं०) दशरथ के ससुर का नाम।

भानुवार-(सं०पुं०)रविवार,आदित्यवार

भानुसुत-(सं०पुं०) यम, मनु, कर्ण, शनैश्चर। भानुसुता-(सं० स्त्री०) यमुना नदी।

भान्त-(सं०पुं०) नक्षत्र और राशि का अन्त।

भाप-(हिं०स्त्री०) बाष्प, पानी के सूक्ष्म कण जो उसके खौलने पर उपर उठते देख पड़ते हैं, ठंढक पाकर ये कुहरे आदि का रूप धारण करते हैं

भापना-(हिं०क्रि०) देखो भाँपना।

भाबर-(हिं०पुं०) एक प्रकार की पहाड़ी घास जिसकी रस्सी बनाई जाती है। भाभर-(हिं०पुं०) पहाड़ों के नीचे तराई के बीच का जंगल, एक प्रकार की पहाड़ी घास।

भाभरा-(हिं०वि०) लाल रंग का।

भाभरी-(हिं०स्त्री०) गरम राख।

भाभी-(हिं०स्त्री०) बड़े भाई की स्त्री।

भाम-(सं०पुं०) क्रोध, सूर्य, बहनोई, एक वर्णवृत्त का नाम, (हिं० स्त्री०) भामा, स्त्री।

भामक-(सं०पुं०) भगिनी पति, बहनोई

भामण्डल-(सं०नपुं०)किरणों की मेखला

भामा-(सं०स्त्री०) क्रुद्ध स्त्री, स्त्री।

भामिनी-(सं०स्त्री०) क्रोध करने वाली स्त्री,स्त्री।

भाय-(हिं०पुं०) भाई, अन्तः करण की प्रवृत्ति, भाव, ढंग, परिमाण, दर, भाँति, भाव।

भायप-(हिं०पु०) भ्रातृभाव, भाईचारा।

भाया-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा।

भार-(सं०पुं०) गुरुत्व, बोझ, विष्णु, बीस पसेरी का परिमाण, (हिं०पुं०) वह बोझ जो बहँगी के दोनों पलरों में रखकर कन्धे पर उठा कर ले जाते हैं, आश्रय सहारा, रक्षा, उत्तरदायित्व; भार उठाना-किसी कामका भार अपने ऊपर लेना; भार उतारना-ऋण आदि से मुक्त होना।

भारकी-(सं०स्त्री०) पालन पोषण करने वाली स्त्री, दाई।

भारङ्गी-(सं०स्त्री०) एक पौधा जिसकी जड़, डाल और पत्ते औषधियों में प्रयोग होते हैं, भँगरैया।

भारण्ड-(सं० पुं०) एक प्रकार का शकुन पक्षी।

भारत--(सं०पु०) महाभारत का पूर्व रूप जिसका मूल चौबीस हजार श्लोकों का है. इसको वेदव्यास ने बनाया था, (पुं०) नट, अग्नि, भरत के गोत्रमें उत्पन्न पुरुष, कथा, लम्बा चौड़ा विवरण, घोर युद्ध, बड़ा संग्राम। भारत खण्ड-(सं०पुं०) देखो भारत वर्ष। भारतवर्ष-(सं०पुं०) वह देश जो उत्तर में हिमालय पर्वत तक, दक्षिण में कन्याकुमारी तक पश्चिम में सिन्धु नदी तक तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक विस्तृत है हिन्दुस्तान।

भारती-(सं०स्त्री०) वचन, वाक्य, सरस्वती, ब्राह्मी, सन्यासियों के दस नामों में से एक, एक वृत्ति का नाम जिसके द्वारा रौद्र और वीभत्स-रस का वर्णन किया जाता है। भारतीय-(सं०वि०) भारत सम्बन्धी, भारत का

भारतुला-(सं०स्त्री०)खम्भे का मध्य भाग

भारतेश्वर-(सं०पुं०) राजा भरत।

भारथ-(सं०पु०) भारद्वाज पक्षी, (हिं०पु०); देखो भारत, युद्ध, संग्राम भारथी-(हिं०पुं०) योद्धा, सिपाही।

भारदण्ड-(हिं०पुं०) एक प्रकार का व्यायाम।

भारद्वाज-(सं० पुं०) एक ऋषि का नाम, द्रोणाचार्य, अगस्त्य मुनि, मंगल ग्रह, बृहस्पति पुत्र, अस्थि, हड्डी, (वि०) भारद्वाज के कुल में उत्पन्न।

भारना-(हिं०क्रि०) भार लादना।

भारभारी, भारभृत्-(सं० वि०) बोझ उठाने वाला, (पुं०) विष्णु।

भारयष्टि(सं०स्त्री०) भारवहन दण्ड, बँहगी।

भारव-(सं०नपुं०) धनुष की रस्सी।

भारवाह, भारवाहक-(सं०वि०) बोझ ढोने वाला। भारवाही-(सं० वि०) देखो भारवाह।

भारवि-(सं०पुं०) एक प्राचीन कवि जिन्होंने किरातार्जुनीय नामक महाकाव्य रचा था।

भारवी-(सं०पु०) तुलसी का पेड़।

भारा-(हिं०वि०) देखो भारी; (पुं०) देखो भाड़ा।

भाराक्रान्ता-(सं० स्त्री०) एक वर्णित वृत्त का नाम।

भारावलम्बकत्व-(सं०पुं०) पदार्थो के परमाणुओं का परस्पर आकर्षण, अनेक पदार्थों में ऐसा गुण होने के कारण वे टूट नहीं सकते।

भारिक-(सं०पुं०) बोझ ढोने वाला।

भारी-(हिं०वि०) गुरु, अधिक भार का, कठिन, विशाल, अधिक, अत्यन्त, असह्य, फूला हुआ, गम्भीर, प्रबल, शांत। भारीपन-(हिं०पुं०) भारी होने का भाव, गुरुत्व।

भारूप-(सं०नपु०) चिदात्मक आत्मा।

भार्गवी-(सं०स्त्री०) पार्वती, लक्ष्मी, भार्गवेश-(सं०पुं०) परशुराम।

भार्या-(सं०स्त्री०) शास्त्र विधि से विवाहित पत्नी, जाया, दारा, कलत्र; भार्यात्व-भार्या का भाव या धर्म।

भाल-(सं०नपुं०) ललाट. मस्तक,कपाल, (हिं०पुं०) माला, बरछा, तीर की नोक, भालू, रीछ। भालचन्द्र-(सं०पुं०) शिव, महादेव, गणेश। भालदर्शन-(सं०नपुं०) सिन्दूर सेंदुर।

भालना-(हिं०क्रि०) ध्यान पूर्वक देखना, अच्छी तरह देखना अन्वेषण करना,

भालनेत्र भाललोचन-(सं०पुं०)भालनेत्र, शिव।

भालवी-(हिं०पुं०) रीछ, भालू।

भाला-(हिं०पु०) बरछा, साँग। भाला बरदार-(हिं०पुं०) बरछा चलाने वाला।

भालाङ्क-(सं०पुं०) कच्छप, कछुआ, शिव, ललाट पर का चिह्न।

भालि-(हिं०स्त्री०) बरछी, शूल, काँटा। भाली-(हिं०स्त्री०) भाले की नोक, काँटा।

भालुक-(सं०पुं०) भल्लक, भालू, रीछ।

भालुनाथ-(हिं०पु०) जामवन्त।

भालू-(हिं०पु०) एक स्तनपायी भयंकर चौपाया जो जंगलों और पहाड़ों में पाया जाता है।

भावंता-(हिं०पुं०) भावी, होने वाला।

भावँर-(हिं०पु०) एक प्रकार की घास।

भाव-(सं०पुं०) मन का विकार, सत्ता, अभिप्राय, स्वभाव, जन्म, चित्त, आत्मा, चेष्टा, संसार, उपदेश,योनि, प्रेम, बुध, जन्तु विभूति, विषय, क्रिया, लीला, पदार्थ, चोचला, मुख की आकृति या चेष्टा, आदर, प्रतिष्ठा, देवता के प्रति श्रद्धा भक्ति, कल्पना, ढंग, अवस्था, विश्वास, भावना, नायक या नायिका के मनमें उत्पन्न होने वाला विकार, शरीर या अंगों का संचालन, (हिं०पुं०) दर; भाव गिरना-किसी वस्तु का दाम घटना; भाव देना-आकृति द्वारा मन का भाव प्रगट करना।

भावइ-(हिं०अव्य०) जो इच्छा हो, जो जी चाहे।

भावक-(सं०पुं०) मन का विकार,भाव, भक्त, प्रेमी, (वि०) भाव पूर्ण, भाव से भरा हुआ, भाव करने वाला, उत्पन्न करने वाला, (क्रि०वि०) किंचित्, थोड़ा।

भावगति-(हिं०स्त्री०) विचार, इच्छा; भाव गम्भीर-(सं०वि०) जिसका भाव या तात्पर्य कठिन हो। भावगम्य-(सं०वि०) भक्तिभावसे जानने योग्य।

भावग्राह्य-(सं०वि०) भक्ति से ग्रहण करने योग्य।

भावज-(सं०वि०) भाव से उत्पन्न (हिं० स्त्री०) भाई की स्त्री, भौजाई।

भावता-(हिं०वि०)प्रिय,जो अच्छा जान पड़े, (पुं०) प्रियतम।

भावताव-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का मूल्य या भाव।

भावदया-(सं०स्त्री०) किसी जीव को दुःखित देख कर मन में दया उत्पन्न होना।

भावन-(हिं०वि०) जो प्रिय या अच्छा जान पड़े।

भावना-(सं०स्त्री०) अनुभव तथा स्मृति से उत्पन्न होने वाला चित्त का एक संस्कार, अधिवासन, साधारण विचार या कल्पना, ध्यान, इच्छा, वैद्यक के अनुसार किसी चूर्ण आदि को किसी रस या तरल पदार्थ में बार बार मिला कर घोटना तथा सुखाना, अच्छा लगना, (वि०) प्रिय, प्यारा।

भावनाश्रय-(सं०पुं०) शिवका एक नाम

भाविन-(हिं०स्त्री०) मनकी बात, जो चित्त में आवे। भावनीय-(सं०वि०) चिन्ता या विचार योग्य।

भावप्रकाश-(सं०पुं०) वैद्यक का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ। भावबन्धन-(सं०पुं०) प्रेम पाश से जोड़ना। भावबोधक-(सं०वि०) वह जिसके द्वारा भाव का बोध हो। भावभक्ति-(हिं०स्त्री०) आदर सत्कार। भावयितव्य-(सं०वि०)चिन्ता के योग्य। भावयिता-(सं०वि०)पालने पोसने वाला।

भावरूप(सं०वि०) प्रकृत, यथार्थ।

भावली-(हिं०स्त्री०) खेत के उपज की बँटाई जो भूस्वामि और कृषक के बीच होती है।

भाववाचक-(सं०पु०) व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव, गुण अथवा धर्म सूचित होता है-यथा सरलता, मनुष्यत्व इत्यादि। भाववाच्य-(सं०पुं०) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह विदित होता है कि वाक्य का उद्देश उस क्रिया का कर्ता और कार्य नहीं है परन्तु केवल कोई भाव है, इसमें कर्ता के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है यथा-रोगी से खाया नहीं जाता।

भाववृत्त-(सं० स्त्री०) ब्रह्मा, (वि०) सृष्टि संबधी।

भावशबलता-(सं०स्त्री०) वह अलंकार जिसमें कई भावों की सन्धि रहती है। भावसन्धि-(सं० स्त्री०) वह अलंकार जिसे विरुद्ध भावों की सन्धि का वर्णन रहता है।

भावसत्य-(सं० वि०) ऐसा सत्य जो ध्रुव न हो परन्तु भाव दृष्टि से सच्चा जान पड़े। भावशबलता-(हिं० स्त्री०) वह अलंकार जिसमें कई एक भावों का अलंकार एक साथ वर्णन किया जाता है।

भावात्मक-(सं०वि०) किसी विषय की प्रकृत अवस्था का सूचक।

भावाभाव-(सं० पुं०) एक अलंकार का नाम।
भावार्थ-(सं० पुं०) वह अर्थ या टीका जिसमें मूल का केवल भाव आजावे अक्षरक्षः अनुवाद न हो, अभिप्राय, तात्पर्य।
भावालङ्कार-(सं० पुं०) एक प्रकार का अलंकार।
भाविक-(सं० पुं०) वह अलंकार जिसमें भूत और भावी बातें वर्तमान की तरह वर्णन की गई हों, (वि०) मर्म जानने वाला।
भावित-(सं० वि०) सुगन्धित किया हुआ, मिला हुआ, सोचा हुआ, मिलाया हुआ, शुद्ध किया हुआ, भेंट किया हुआ, जिसमें रस आदि की भावना दी गई हो।
भावी-(हिं० स्त्री०) भविष्य काल, आने वाला समय, भाग्य, प्रारब्ध, भवितव्यता, अवश्य होने वाली बात।
भावुक-(सं० नपुं०) मंगल, आनन्द, (पुं०) सज्जन, भला आदमी, (वि०) भावना करने वाला, सोचने वाला, अच्छी भावना करने वाला, जिस पर अच्छे भावों का तुरंत प्रभाव पड़ता है।
भावे-(हिं० अव्य०) चाहे।
भावोत्सर्ग-(सं०पुं०)बुरे भावों का त्याग
भावोदय-(सं० पुं०) वह अलंकार जिसमे किसी भाव के उदय होने की अवस्था का वर्णन किया जाता है।
भाव्य-(सं०वि०) अवश्य होने वाला, भावना करने योग्य।
भाष-(हिं० पुं०) भाषा।
भाषक-(सं० वि०) वक्ता, बोलने वाला। **भाषज्ञ**-(सं० पुं०) भाषा जानने वाला।
भाषण-(सं० नपुं०) वक्तृता, व्याख्यान, कथन, बातचीत। **भाषना**-(हिं० क्रि०) भोजन करना, खाना, बात चीत करना।
भाषा-(सं० स्त्री०) वाक्य, बोली, किसी विशेष जन समूह में प्रचलित बातचीत करने का ढंग, वह अव्यक्त शब्द जिससे पशु पक्षी अपने मन के भाव को प्रकट करते हैं, वाणी, आधुनिक हिन्दी भाषा, अभियोग पत्र। **भाषातत्व**-(सं०नपुं०) शब्दतत्व का विज्ञान। **भाषान्तर**-(सं०पुं०) अनुवाद, उल्था; **भाषाबद्ध**-(सं० वि०) साधारण देशभाषा से बना हुआ। **भाषासम**-(सं० पुं०) शब्दालंकार का वह भेद जिसमें केवल ऐसे शब्दों की योजना की जाती है जो अनेक भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं।
भाषित-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।
भाषी-(हिं०वि०)कहने या बोलने वाला।
भाष्य-(सं० नपुं०) सूत्रों की व्याख्या या टीका, सूत्रग्रन्थों का विस्तृत वर्णन, किसी गूढ़ वाक्य की व्याख्या। **भाष्यकार**-(सं०पुं०)सूत्रों की व्याख्या या टीका करने वाला।
भास-(सं०पुं०) दीप्ति, प्रकाश, चमक, मुर्गा, गिद्ध, मयूख, किरण, इच्छा, स्वाद, मिथ्या ज्ञान, एक संस्कृत के कवि का नाम। **भासक**-(सं० वि०) प्रकाशक,द्योतक। **भासकर्ण**-(सं०पुं०) रावण की सेना का एक मुख्य नायक जिसको हनुमान ने मारा था।
भासन- सं० नपुं०)दीपन, प्रकाशन।
भासना-(हिं०क्रि०)प्रकाशित होना, चमकना, कहना, लिप्त होना, देख पड़ना, फँसना।
भासन्त-(सं०पुं०)सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र।
भासमान-(सं० वि०) दिखाई पड़ता हुआ; (हिं०पुं०) सूर्य।
भासित-(सं० वि०) दिखाई पड़ने वाला, तेजोमय, चमकीला।
भासुर-(सं० पुं०) स्फटिक, बिल्लौर, वीर योद्धा।
भास्कर-(सं० पुं०) सूर्य, अग्नि, सुवर्ण, सोना, मदार का वृक्ष, शिव, महादेव, वीर, संयुक्त प्रदेश की एक जाति जो पत्थर पर नक्काशी करते हैं। **भास्कर विद्या**-(सं०स्त्री०) पत्थर पर नक्काशी करने की कला;
भास्कराचार्य-(सं०पुं०) भारतवर्ष के एक प्रधान ज्योतिर्विद का नाम।
भास्वर-(सं० पुं०) सूर्य, दिन; (वि०) चमकीला।
भिंग-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, बिलनी, भौंरा।
भिंगाना-(हिं०क्रि०) देखो भिगोना।
भिंजाना-(हिं०क्रि०) देखो भिगोना।
भिंडा-(हिं० पुं०) बड़ी सड़क।
भिंडी-(हिं०पुं०) ढेलवांस।
भिंडीपाल, भिंदिपाल-(हिं० पुं०) छोटा डंडा।
भिंडी-(हिं०स्त्री०) एक पौधे की फली जिसकी तरकारी बनती है।
भिक्षण-(सं०नपुं०) भिक्षा मांगनेकी क्रिया
भिक्षा-(सं०स्त्री०)याचन मांगना, सेवा, भीख, मांगी हुई वस्तु; **भिक्षाकरण**-भीख मांगने का काम; **भिक्षाचर**-भीख मांगने वाला; **भिक्षाटन**-भीख मांगने के लिये इधर उधर घूमना। **भिक्षापात्र**-सं०नपुं०) भीख मांगने का पात्र। **भिक्षार्थी**-(सं०वि०)भिक्षुक, भिखमंगा। **भिक्षावृत्ति**-(सं०वि०) भीख मांगकर जीविका निर्वाह करने वाला।
भिक्षु-(सं० पुं०) भीख मांगने वाला, भिक्षुक, भिखारी, परिव्राजक, सन्यासी, बौद्ध सन्यासी। **भिक्षुक**-(सं०पुं०) भिक्षोपजीवी, भिखारी।
भिक्षुणी-(सं० स्त्री०) बौद्ध सन्यासिनी;
भिक्षुरूप-(सं० पुं०) शिव, महादेव।
भिखमंगा-(हिं०पुं०)भिक्षुक; भिखारी।
भिखार-(हिं०पुं०)भिखमंगा, भिखारी।
भिखारिन, भिखारिणी- हिं० स्त्री०, भीख मांगने वाली स्त्री
भिखारी-(हिं० पुं० भिक्षुक, भीख मांगने वाला।
भिखिया-(हिं०स्त्री०) देखो भिक्षा।
भिगाना, भिगोना- हिं० क्रि० किसी पदार्थ को पानी से तर करना, गीला करना।
भिच्छा-(हिं० स्त्री०) देखो भिक्षा।
भिच्छु-(हिं० पुं०) देखो भिक्षु।
भिजवाना-(हिं०क्रि०) भेजने का काम दूसरे से कराना।
भिजवाना-(हिं०क्रि०) भिगोने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
भिजाना-(हिं० क्रि०) भिगोना, तर करना, गीला करना।
भिजोना-(हिं०क्रि०) देखो भिगोना।
भिज्ञ-(सं० वि०) जानकार।
भिटना-(हिं०पुं०) छोटा गोल फल।
भिटनी-(हिं०स्त्री०) स्तन के आगे का भाग।
भिड़-(सं० स्त्री०)बर्रें, ततैया।
भिड़ना-(हिं०क्रि०) लड़ना, झगड़ना, टक्कर खाना, लड़ाई करना, मैथुन करना, सटना।
भिडज-(हिं०पुं०) शूर वीर मनुष्य।
भिण्डक-(सं०पुं०) भिंडी नामक पौधा।
भितल्ला-(हिं० पुं०) दोहरे कपड़े का भीतरी पल्ला, (वि०) भीतर का।
भितल्ली-(हिं० स्त्री०) चक्की के नीचे का पाट।
भिताना-(हिं० क्रि०) भयभीत करना, डराना।
भित्ती-(सं० स्त्री०) भीत, भय, डर, खंड, टुकड़ा, प्रवेश, अवकाश, अन्तर, चित्र बनाने का आधार, नींव; **भित्तिचौर**-सेंध लगाने वाला चोर।
भिद्-(सं०स्त्री०) अन्तर, प्रभेद; (वि०) भेदकर्ता, छेद करने वाला।
भिदक-(सं०पुं०) वज्र, खड्ग, तलवार
भिदना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना,घुसना, छेदा जाना, चोट खाना।
भिदा-(सं०स्त्री०) धन्याक, धनियां।
भिदिर, भिदुर-(सं०नपुं०) वज्र।
भिद्र-(सं०पुं०) वज्र।
भिनकना-(हिं० क्रि०) भिन्न भिन्न शब्द करना, घृणा उत्पन्न होना, किसी काम का अपूर्ण रह जाना। **भिन-भिनाना**-(हिं० क्रि०) भिन भिन शब्द करना।
भिनसहरा, भिनसार-(हिं० पुं०) प्रातःकाल, सबेरा। **भिनहीं**-(हिं०क्रि०वि०) प्रातःकाल, सबेरे।
भिन्न-(सं०वि०) कटा हुआ भेदित, अन्य, दूसरा, प्रफुल्ल, खिला हुआ, पृथक्, (पुं०) गणित में वह संख्या जो एकाई से कम हो; **भिन्नकर्ण**-जिसके कान कट गये हों; **भिन्न-जातीय**-भिन्न भिन्न संप्रदाय का।
भिन्नता-(सं० स्त्री०) भिन्न होने का भाव, भेद, अलगाव। **भिन्नत्व**-सं० नपुं०, भिन्नता।
भिन्नलिंग-सं० नपुं०, एक अलंकार जिसमें भिन्न वचन और भिन्न लिंग द्वारा उपमा दी जाती है, पृथक या चिह्न।
भिन्नवर्ण-(सं०नपुं०) पृथक् वर्ण।
भिन्नार्थक-सं० वि०) दूसरे अर्थ का।
भियना-हिं०क्रि०) डरना।
भिया-हिं०पुं०) भ्राता, भाई।
भिरना-(हिं०क्रि०) देखो भिड़ना।
भिंरिंग-(हिं०पुं०) देखो भृंग।
भिलनी-(हिं०स्त्री०) भील जाति की स्त्री एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।
भिलावां-(हिं० पुं०) एक जंगली वृक्ष जिसके फल औषधियों में प्रयोग होते हैं, भल्लातक।
भिल्ल-(सं०पुं०) भील जाति।
भिषक्-(सं० पुं०) चिकित्सक, वैद्य; **भिषक्प्रिया**-गुरुच; **भिषग्वरा**-हरीतकी, हर्रे।
भिषज-(हिं०पुं०)चिकित्सक,वैद्य, औषध
भिष्टा-(हिं०पुं०)देखो विष्टा, मल, गू।
भिसज-(हिं०पुं०) वैद्य।
भिसटा-(हिं०पुं०) विष्टा मल, गू।
भिसर-(हिं०पुं०) ब्राह्मण।
भिसिणी-(हिं०पुं०) व्यसनी।
भिस्स-(हिं०स्त्री०) कमल की जड़, भसींड़
भिस्सा-(सं०स्त्री०) अन्न, अनाज।
भींगना-(हिं०क्रि०) देखो भिगना।
भींगी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का फतिंगा
भींचना-(हिं० क्रि०) खींचना, कसना, मूंदना, बन्द करना।
भींजना-(हिं० क्रि०) आर्द्र होना, गीला होना, प्रेम से मग्न होना, स्नान करना, नहाना, समा जाना, घुस जाना, हेल मेल बढ़ाना।
भींट, भींत-(हिं०) देखो भीट, भीत।
भी-(हिं०स्त्री०) भय, डर, (अव्य०)अवश्य, निश्चय करके, अवश्य, तक,।
भीउँ-(हिं०पुं०) भीम, भीमसेन।
भीक-(हिं०वि०) भीत, डरा हुआ।
भीकर-(सं०वि०) भयंकर, डरावना।
भीख-(हिं०स्त्री०) भिक्षा में दी हुई वस्तु,
भीखन-(हिं० वि०) विकराल, भीषण;
भीखम-(हिं० पुं०) देखो भीष्म; (वि०) भयानक, डरावना।
भीगना-(हिं०क्रि०) आर्द्र होना।
भीचर-(हिं०पुं०) वीर।
भीजना-(हिं०क्रि०) देखो भींगना।
भीट-(हिं०पुं०) उभरी हुई भूमि, टीला
भीटा-(हिं०पुं०) टीलेदार या ऊंची भूमि, पान की खेती की ढालुआ भूमि जो चारो ओर से लता या छाजन से ढपी रहती है।
भीड़-(हिं०स्त्री०) बहुत से मनुष्यों का जमाव, जमघट, जनसमूह, संकट, आपत्ति; **भीड़ छटना**-जन समूह

का तितर बितर होना ; भीड़ भड़क्का-बहुत से मनुष्यों का समूह; भीड़ भाड़-जमघट।
भीड़ना-(हिं०क्री०) मिलने या भरने की क्रिया।
भीड़ा-(हिं०वि०) संकुचित, सकरा, तंग
भीड़ी-(हिं०स्त्री०) भिंडी, रामतरोई।
भीत-(सं०नपुं०) भय, डर, (वि०) भय युक्त, डरावना, (हिं०स्त्री०) भित्तिका, विभाग करने का परदा, छत, चटाई, खण्ड, टुकड़ा, स्थान, छिद्र, दरार, त्रुटि, अवसर, (हि०वि०) डरा हुआ; भीत में दौड़ना-असंभव काम करने का प्रयत्न करना; भीत के बिना चित्र बनाना-बिना सिर पैर की बातें करना।
भीतर-(हिं०क्रि०) में, (पुं०) अन्तःकरण, हृदय, अन्तःपुर; भीतरा-(हिं०वि०) अन्तःपुर में आने जाने वाला मनुष्य; भीतरिया-(हिं०पुं०) वल्लभ संप्रदाय के वे प्रधान पुजारी जो मन्दिर के भीतर मूर्ति के पास रहते हैं; भीतरी-(हिं०वि०) भीतर वाला, भीतर का; भीतरी टांग-मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
भीति-(सं०स्त्री०) भय, डर, (हिं०स्त्री०) दीवार; भीतिकर-(सं०वि०) भयंकर, डरावना; भीतिकारी-(सं० वि०) डरावना।
भीती-(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृकाम का नाम।
भीन-(हिं०पुं०) प्रातः काल, सबेरा।
भीनना-(हिं०क्रि०)समा जाना, भर जाना
भीनी-(हिं०वि०) मीठी।
भीम-(सं०वि०) भीषण, घोर, भयंकर, (पुं०) शिव, महादेव, विष्णु, महादेव की आठ मूर्तियों में से आकाशमूर्ति, भयानक रस, एक गन्धर्व का नाम, एक राक्षस का नाम, अङ्गिरस नाम की अग्नि, अठारह अक्षर का एक मन्त्र, पांचो पाण्डवों में से एक जो कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न थे, वृकोदर, विदर्भ के राजा का नाम, कुम्भकर्ण का एक पुत्र जो रावण का सेनापति था; भीमचण्डी-(सं०स्त्री०) एक देवी का नाम; भीमता-(सं०स्त्री०) भयंकरता; भीमतिथि-(सं०पुं०) माघ सुदी एकादशी; भीमनाद-(सं०पुं०) सिंह, भयंकर शब्द; भीमपलाशी-(सं०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिणी; भीमबल-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; भीममुख-(सं०वि०) डरावने मुख वाला; (पुं०) एक प्रकार का बाण।
भीमर-(सं०नपुं०) युद्ध, लड़ाई।
भीमरथ-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम; भीमराज-(हिं०पुं०) काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया, भृङ्गराज।
भीम रात्रि-(सं०स्त्री०) भयंकर रात।
भीमल-(सं०वि०) भयंकर, डरावना।
भीम विक्रम-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; भीम शासन-(सं०पु०) कठोर शासन।
भीमसेन-(सं०पुं०) मध्यम पाण्डव, भीम, एक प्रकार का कपूर; भीमसेनी-(हिं०वि०) भीमसेन संबंधी; भीमसेनी एकादशी-ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, निर्जला एकादशी, माघ शुक्ला एकादशी; भीमसेनी कपूर-एक प्रकार का उत्तम कपूर, बरास।
भीमहास-(सं०नपुं०) इन्द्रतूल, गुड्डी की डोरी।
भीमा-(सं०स्त्री०) रोचन नामक गन्ध-द्रव्य, चाबुक, दुर्गा देवी।
भीमोत्तर-(सं०पुं०) कुष्माण्ड, कुम्हड़ा।
भीमोदरी-(सं०स्त्री०) उमा, दुर्गा का एक नाम।
भीम्राथली-(हिं०पुं०)घोड़े की एक जाति
भीर-(सं०पुं०) देखो आभीर, अहीर।
भीर-(हिं०स्त्री०) देखो भीड़; संकट, विपत्ति, दुःख, कष्ट, (वि०) भयभीत, डरा हुआ; भीरना-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना।
भीरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष।
भीरी-(हिं०स्त्री०) अरहर की दाल।
भीरु-(सं०वि०) भयभीत, डरपोक, कायर, (पुं०) सियार, बेले का फूल, ईख की एक जाति।
भीरुक-(सं०नपुं०) वन, जंगल, उल्लू, चांदी।
भीरुता-(सं०स्त्री०) भीरुत्व, कायरता, भय, डर; भीरुताई-(हिं०स्त्री०) भीरुता
भीरुहृदय-(सं०पु०) हिरन।
भीरे-(हिं०क्रि०वि०) समीप में, पास।
भील-(हि०पुं०) एक प्रसिद्ध जंगली जाति, (हिं०स्त्री०)ताल की सूखी मिट्टी जो पपड़ी के समान हो जाती है;
भीलभूषण-गुंजा, घुमची।
भीष-(हिं०स्त्री०) देखो भिक्षा, भीख।
भीषक-(सं०वि०) भयकारक, भयंकर।
भीषज-(सं०पुं०) भिषक्, वैद्य।
भीषण-(सं०पुं०) साहित्य में भयानक रस, कुंदरू, कबूतर, शिव, ब्रह्मा, (वि०) भयानक, डरावना, जो बड़ा उग्र या दुष्ट हो; भीषणक-(सं०वि०) डरावना; भीषणता-(हिं० स्त्री०) डरावनापन, भयंकरता।
भीषणी-(सं०स्त्री०) सीता की एक सखी का नाम।
भीषन-(हिं०वि०) देखो भीषण, भयंकर
भीषम-(हि०पुं०) देखो भीष्म।
भीष्म-(सं०वि०) भयानक, भयंकर (पुं०) शिव, महादेव, राक्षस, साहित्य में भयानक रस, शान्तनु राजा के पुत्र, गाङ्गेय; भीष्मक-(सं०पुं०) विदर्भ देश के राजा जो श्रीकृष्ण की महिषी रुक्मिणी के पिता थे; भीष्मसुता-(सं०स्त्री०) श्रीकृष्ण की स्त्री रुक्मिणी;
भीष्मगन्धक-(सं०पुं०) माधवी लता;
भीष्मपञ्चक-(सं०नपुं०) कार्तिक शुक्ला एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक की पांच तिथियां; भीष्मपितामह-(सं०पुं०) देखो भीष्म।
भीष्मसू-(सं०स्त्री०) गंगा।
भीष्माष्टमी-(सं० स्त्री०) माघ शुक्ल अष्टमी-इसी दिन भीष्म ने प्राण त्याग किया था।
भीसम-(हिं०पु०) देखो भीष्म।
भुंइ-(हिं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
भुंइधरा-(हिं०पु०) देखो भुंइहरा।
भुंइफोर-(हिं०पुं०) वर्षा ऋतु में तालाबों के आस पास मिलने वाली एक प्रकार की खुंभी।
भुंइहरा-(हिं०पुं०) भूमि खोद कर बनाया हुआ स्थान, भूमि के नीचे बना हुआ घर।
भुंगाल-(हिं०पुं०) तुरही, भोंपा।
भुंजना-(हिं०क्रि०) भून जाना, झुलसना,
भुंजन-(हि०पुं०) देखो भोजन।
भुंजना-(हिं०क्रि०) भूनना।
भुंडली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा, पिल्लू।
भुंडा-(हिं०वि०) बिना सींघ का।
भुअंग, भुअंगम-(हिं०पुं०) देखो भुजङ्ग, सर्प, सांप।
भुअ-(हिं०स्त्री०) भ्रू, भौंह।
भुअन-(हिं०पुं०) देखो भुवन।
भुआर, भुआल-(हि०पु०)भूपाल, राजा
भुईं-(हिं० स्त्री०) भूमि, पृथ्वी; भुईं आँवला-एक प्रकार की घास जो औषधियों में प्रयोग की जाती है
भुईंकंप, भुईंडोल-(हिं०पुं०) भूकम्प, भूचाल।
भुईंधरा-(हिं०पु०) समतल भूमि पर आवाँ लगाने की एक विधि।
भुइनास-(हिं०पुं०) किसी वस्तु के एक किनारे को भूमि में इस प्रकार गाड़ना कि उसका कुछ अंश भूमि के भीतर गड़ जावें, बिना जड़ का एक छोटा पौधा।
भुइंहार-(हिं०पुं०) देखो भूमिहार।
भुई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा, पिल्लू।
भुक-(हिं०पुं०) भोजन, खाद्य पदार्थ, आहार।
भुकड़ी-(हिं०स्त्री०) सड़े पदार्थ पर फलने वाली पपड़ी।
भुकराँध-(हिं०स्त्री०) सड़ने की दुर्गन्ध।
भुकाना-(हिं०क्रि०) बकाना।
भुक्खड़-(हिं०वि०) जिसको भूख लगी हो, भूखा, कंगाल, दरिद्र, वह जो बहुत खाता हो, पेटू।
भुक्त-(सं०वि०) भक्षित, जो खाया गया हो, उपभुक्त, भोगा हुआ, वह जिसका भोग हो चुका हो; भुक्तशेष-(सं०नपुं०) उच्छिष्ट, जूठा।
भुक्ति-(सं० स्त्री०) भोजन, आहार, लौकिक सुख, ग्रहों का किसी राशि में एक एककर के जाना, अधिकार;
भुक्तिपात्र-भोजन करने का पात्र;
भुक्तिप्रद-भोग देने वाला।
भुखमरा-(हिं०वि०) वह जो भूखों मरता हो, भुक्खड़, जो खाने के लिये मरा जाता हो, पेटू।
भुखाना-(हिं०क्रि०) भूख से पीडित होना; भुखालू-(हिं०वि०) जिसको भूख लगी हो, भूखा।
भुगत-(हिं०स्त्री०) देखो भुक्ति।
भुगतना-(हिं०क्रि०) भोगना, सहना, बीतना, चुकाना, निवटाना, दूर होना
भुगतान-(हिं०पुं०) निवटारा, मूल्य या देन का चुकाना, देना, देन;
भुगताना-(हिं०क्रि०) संपादन करना, पूरा करना, बिताना, लगाना, दुःख सहने के लिये बाध्य करना, दूसरे को भुगताने के लिये प्रवृत्त करना, भोग कराना।
भुगाना-(हिं०क्रि०) भोग कराना।
भुग्न-(सं०वि०) वक्र, टेढ़ा, रोगी।
भुगुति-(हिं०स्त्री०) देखो भुक्ति।
भुच्चड़-(हि०वि०) मूर्ख।
भुजंग-(हिं०पुं०) देखो भुजङ्ग, सर्प।
भुज-(सं०स्त्री०) भुजा, बाहु, बाँह, कर, हाथ, दो की संख्या, भोजपत्र, छाया का आधार, लपेट, समकोणों का पूरक कोण, किसी क्षेत्र के किनारे की रेखा, प्रान्त, किनारा, शाखा, डाली, त्रिभुज का आधार; भुजकोटर-कक्ष, कांख।
भुजग-(सं०पुं०) सांप, आश्लेषा नक्षत्र; भुजगदारण-(सं०पुं०)गरुड़; भुजगनिसृता-(सं०स्त्री०) एक वर्णिकवृत्त का नाम; भुजगपति-(सं०पुं०) वासुकि, अनन्त; भुजगशिशुवृत्ता-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में नव अक्षर होते हैं।
भुजगाशन-(सं०पुं०) गरुड़।
भुजगी-(सं०स्त्री०) सर्पिणी, साँपिन।
भुजगेन्द्र-(सं०पुं०) सर्पराज, वासुकि।
भुजङ्ग-(सं०पुं०) सर्प, स्त्री का यार, सीसा नामक धातु; भुजङ्गप्रयात-(सं०नपु०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं; भुजङ्गभोजी-(सं०पु०) गरुड़, मयूर, मोर; भुजङ्गम-(सं०पु०) सर्प, सांप; भुजङ्गलता-(सं०स्त्री०) नागवल्ली, पान; भुजङ्गविजृम्भित-(सं०नपु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में छब्बीस वर्ण होते हैं।
भुजङ्गसंगता-(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में नव वर्ण होते हैं।
भुजङ्गा-(हिं०पुं०) काले रंग का मधुर स्वर बोलने वाला एक प्रसिद्ध पक्षी।
भुजङ्गान्तक-(सं०पुं०) मोर, गिद्ध।
भुजङ्गिनी-(सं० स्त्री०) गोपाल नामक छन्द का दूसरा नाम, सर्पिणी, नागिन; भुजङ्गी-(सं०स्त्री०) सर्पिणी,

एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं।
भुजङ्गेरित-(सं०नपुं०) एक छन्द का नाम।
भुजङ्गेश-(सं०पुं०) वासुकि, शेषनाग।
भुजज्या-(सं०स्त्री०) त्रिकोण क्षेत्र की भुजग्रीवा।
भुजदण्ड-(सं०पुं०) बाहुदण्ड। भुजदल-(सं०पुं०) हस्त, हथेली। भुजपाश-(सं०पुं०) गले में हाथ डालना, गलबाँही। भुजप्रतिभुज-(सं०पुं०) सरल क्षेत्र की समानान्तर या आमने सामने की भुजाएँ।
भुजबंद-(हिं०पुं०) बाह में पहिरने का एक आभूषण, बाजूबन्द। भुजबन्ध-(सं०पुं०) बाजूबन्द, अंगद।
भुजबल-(सं०पुं०) बाहुबल, (हिं० पुं०) शालिहोत्र के अनुसार एक भौंरी जो घोड़े के अगले पैर के ऊपर होती है।
भुजबाथ-(हिं०पुं०) अँकवार।
भुजमूल-(सं०नपुं०) बाहुमूल, काँख, मोढ़ा, पक्खा।
भुजवा-(हिं०पुं०) भड़भूँजा।
भुजशिखर, भुजशिर-(सं०) स्कन्ध, कन्धा
भुजा-(सं०स्त्री०) बाँह, हाथ; भुजा उठाना-प्रतिज्ञा करना।
भुजागम-(सं०पुं०) वृक्ष, पेड़।
भुजाग्र-(सं०पुं०) कर, हाथ।
भुजान्तर-(सं०नपुं०) क्रोड़, गोद।
भुजाना-(हिं०क्रि०) देखो भुनाना।
भुजामध्य-(सं०नपुं०) बाहु का मध्य भाग, केहुनी। भुजामूल-(सं०नपुं०) कांख,
भुजाली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की टेढ़ी बड़ी छूरी, खुखरी, छोटी बरछी,
भुजिया-(हिं०पुं०) उबाला हुआ धान, उबाले हुए धान का चावल।
भुजिष्या-(सं०स्त्री०) गणिका, वेश्या, दासी
भुजैल-(हिं०पुं०) भुजंगा नामक पक्षी।
भुजौना-(हिं०पुं०) भाड़ में भूजा हुआ अन्न, चबैना, भुनने या भुनाने का शुल्क।
भुट्टा-(हिं०पुं०) जुआर या बाजरे की बाल, मक्के की हरी बाल।
भुठार-(हिं०पुं०) रेतीली भूमि में उत्पन्न घोड़ा।
भुठौर-(हिं०स्त्री०) घोड़े की एक जाति
भुड़ली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का फूल
भुड़ारी-(हिं०पुं०) बाल के डंठल के साथ लगा हुआ अन्न का दाना।
भुन-(हिं०पुं०) अव्यक्त गुंजार का शब्द, मक्खी आदि का शब्द।
भुनगा-(हिं०पुं०) छोटा उड़ने वाला एक कीड़ा, फतिंगा, अति दुर्बल मनुष्य। भुनगी-(हिं०स्त्री०) ईख के पौधे को हानि पहुँचाने वाला एक छोटा कीड़ा।
भुनना-(हिं०क्रि०) भूना जाना, आग की गरमी से पक कर लाल होना, नोट रुपये आदि के बदले में छोटी मुद्रा का मिलना।
भुनभुनाना-(हिं०क्रि०) भुनभुन शब्द करना, मन ही मन में कुढ़ कर धीरे धीरे कुछ बड़बड़ाना।
भुनाना-(हिं०क्रि०) भूनने का काम कराना, नोट रुपये आदि को छोटी मुद्रा में बदलना।
भुनुगा-(हिं०स्त्री०) देखो भुनगा।
भुवि-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
भुरकना-(हिं०क्रि०) सूख कर भुरभुरा हो जाना, भूलना, किसी बुकनी को किसी पदार्थ के ऊपर छिड़कना, भुरभुराना।
भुरका-(हिं०पुं०) बुकनी, अबीर, मिट्टी का बड़ा कसोरा; देखो बोरकना।
भुरकाना-(हिं०क्रि०) भुरभुरा करना, छिड़कना, भुलावा देना, बहकाना।
भुरकी-(हिं०स्त्री०) अन्न रखने का छोटा कोठिला, छोटा कुल्हड़, पानी का छोटा गड्ढा।
भुरकुटा-(हिं०पुं०) छोटा कीड़ा मकोड़ा
भुरकुन-(हिं०पुं०) चूर्ण, चूरा।
भुरकुस-(हिं०पुं०) चूर्ण, चूरा; भुरकुस निकलना-हड्डी पसली का चूरचूर होना
भुरत-(हिं०पुं०) एक प्रकार की बरसाती घास।
भुरता-(हिं०वि०) दब कर या कुचला जाकर पिस जाना; चोखा या भरता नाम का सालन।
भुरभुर-(हिं०स्त्री०) ऊसर या रेतीली भूमि में होने वाली एक प्रकार की घास।
भुरभुरा-(हिं०वि०) वह जो थोड़े आघात से चूर चूर हो जावे, कुड़कीला।
भुरभुराना-(हिं०क्रि०) चूर्ण आदि को छिड़कना।
भुरवना-(हिं०क्रि०) भ्रम में डालना, भुलवाना, फुसलाना।
भुरली-(हिं०स्त्री०) खेत की उपज को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
भुराई-(हिं०स्त्री०) भोलापन, भूरापन।
भुराना-(हिं०क्रि०) भूलना भुलाना।
भुलक्कड़-(हिं०वि०) भूलने के स्वभाव वाला जो बात को सर्वदा भूल जाता हो। भुलना-(हिं०पुं०) देखो भुलक्कड़, एक प्रकार की घास।
भुलभुला-(हिं०पुं०) गरम राख।
भुलवाना-(हिं०क्रि०) भूलने के लिये प्रेरणा करना, भ्रम में डालना, विस्मृत करना; देखो भुलाना।
भुलसना-(हिं०क्रि०) गरम राख में झुलसना।
भुलाना-(हिं०क्रि०) भ्रम में डालना, धोखा देना, विस्मृत करना, भूलना, भटकना, भ्रम में पड़ना।
भुलावा-(हिं०पुं०) छल, कपट, धोखा।
भुवंग-(हिं०पुं०) देखो भुजंग, सर्प, सांप भुवंगम-(हिं०पुं०) सर्प, सांप।
भुवः-(सं०पुं०) सात लोकों के अन्तर्गत दूसरा लोक जो सूर्य और भूमि के बीच में है, अन्तरिक्ष लोक।
भुव-(सं०पुं०) अग्नि, आग, भुवोलोक, (स्त्री०) संसार, पृथ्वी।
भुवन-(सं०नपुं०) जगत्, संसार, जल, आकाश, जन, चौदह की संख्या, पुराणानुसार-भूः, भुवः, स्वः महः, जनः, तपः और सत्य ये सात स्वर्गलोक तथा-अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत्, महातल, रसातल और पाताल ये सात पाताल हैं, भूतजात, सृष्टि, एक मुनि का नाम। भुवनकोश-(सं०पुं०) भूगोल, भूमण्डल।
भुवनपति-(सं०पुं०) संसार का स्वामी
भुवनपाल-(हिं०पुं०) देखो भूपाल
भुवनपावन-(सं० वि०) भुवन को पवित्र करने वाली गङ्गा। भुवनाधीश-(सं०पुं०) त्रिभुवन के अधिपति। भुवपाल-(सं०पुं०) देखो भूपाल
भुवर्लोक-(सं०पुं०) अन्तरिक्ष लोक।
भुवनपति-(सं०पुं०) भूपति, नृप, राजा।
भुवा-(हिं०पुं०) रूई, घूवा।
भुवार-(हिं०पुं०) देखो भुवाल।
भुवाल-(हिं०पुं०) राजा।
भुवि-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
भुशुण्डी-(हिं०पुं०) काकभुशुण्डी, इनके विषय में यह प्रसिद्ध है कि ये अमर और त्रिकालज्ञ थे, एक अस्त्र का नाम,
भुस-(हिं०पुं०) भूसा।
भुसी-(हिं०स्त्री०) देखो भूसी।
भुसौठा-(हिं०पुं०) भूसा रखने का स्थान
भूंकना-(हिं०क्रि०) कुत्ते का भों भों करना, व्यर्थ बक बक करना, (पुं०) कुत्ते का शब्द।
भूंख, भूंखा-(हिं०) देखो भूख, भूखा।
भूंचाल-(हिं०पुं०) भूकम्प।
भूंजना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को आग में डालकर अथवा अन्य प्रकार से गरमी पहुँचा कर पकाना, तलना, पकाना, कष्ट देना, सताना।
भूंजा-(हिं०पुं०) भूना हुआ अन्न, चबैना, भड़भूजा।
भूंडरी-(हिं०स्त्री०) कर रहित भूमि जो नाऊ, बारी आदि को दी गई हो।
भूंड़िया-(हिं वि०) मंगनी के हल बैल से खेती करने वाला।
भूंडोल-(हिं०पुं०) देखो भूकम्प।
भूंरो-(हिं०पुं०) भ्रमर, भौंरा।
भू-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, स्थान, सीता की सखी का नाम, (हिं०स्त्री०) भौंह।
भूआ-(हिं०पुं०) रूई के समान हलकी तथा कोमल वस्तु का छोटा टुकड़ा।
भक-(हिं०पुं०) देखो भूख।
भूकदम्बा-(सं०स्त्री०) गोरखमुण्डी।
भूकन्द-(सं०पुं०) सूरण, ओल।
भूकम्प-(सं०पुं०) कुछ प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के ऊपरी भाग का एकाएक हिल उठना, भूचाल, भूंडोल।
भूकर्ण-(सं०पुं०) ज्योतिष शास्त्र में निरक्ष मण्डल का व्यासार्ध।
भूकाक-(सं०पुं०) छोटा बाज पक्षी।
भूकेश-(सं०पुं०) सेवार, वट वृक्ष की जटाएँ जो भूमि पर लटकती हैं।
भूकेशा-(सं०स्त्री०) राक्षसी।
भूख-(हिं०स्त्री०) शरीर का वह वेग जिसमें भोजन की इच्छा हो, क्षुधा, अभिलाषा, कामना, आवश्यकता,
भूखन-(हिं०पुं०) देखो भूषण। भूखना-(हिं०क्रि०) सजाना।
भूखर-(हिं०स्त्री०) क्षुधा, भूख, इच्छा।
भूखा-(हिं०वि०) क्षुधित, जिसको भोजन की प्रबल इच्छा हो, दरिद्र, जिसके पास खाने तक को न हो, इच्छुक,
भूगर-(सं०नपुं०) विष गरल।
भूगर्भ-(सं०पुं०) विष्णु, पृथ्वी का भीतरी भाग; भूगर्भ गृह-भूमि के भीतर का घर। भूगर्भ शास्त्र-(सं०पुं०) वह शास्त्र जिसके द्वारा हमको यह ज्ञान होता है कि पृथ्वी का संघटन किस प्रकार हुआ है, उसकी ऊपरी तल तथा मध्य का भाग किन किन तत्त्वों से बना है, उसका आदि रूप क्या था तथा किन कारणों से वर्तमान रूप इसको प्राप्त हुआ है।
भूगोल-(सं०पुं०) भुवन कोष, भूमण्डल, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी भाग का स्वरूप तथा उसके प्राकृतिक विभागों का ज्ञान हमको होता है; भूगोल विद्या-(सं०पुं०) वह विद्या जिसके द्वारा पृथ्वी की आकृति, धर्म, विभाग गति तथा सम्बन्ध आदि जाना जाता है।
भूघन-(सं०पुं०) प्राणियों का शरीर।
भूचक्र-(सं०नपुं०) पृथ्वी की परिधि, विषुवत् रेखा, अयन वृत, क्रान्ति वृत्त
भूचणक-(सं०पुं०) मूंगफली, चिनिया बादाम।
भूचर-(सं०पुं०) भूमि पर रहने वाला प्राणी, शिव, महादेव, दीमक, एक प्रकार की तान्त्रिक सिद्धि। भूचरी-(सं०स्त्री०) योग शास्त्र के अनुसार समाधि अङ्ग की एक मुद्रा, इसका निवास नाक में है और इसके द्वारा प्राण और अपान वायु दोनों एकत्र हो जाते हैं।
भूचाल-(हिं०पुं०) भूकम्प, भूडोल,
भूचित्र-(सं०नपुं०) पृथ्वी का मानचित्र,
भूजात-(हिं०पुं०) वृक्ष।
भूटान-(हिं०पुं०) एक स्वाधीन पहाड़ी देश जो नेपाल के पूरब में है। भूटानी-(हिं०वि०) भूटान सम्बन्धी, भूटान देश का, (पुं०) भूटान देश का घोड़ा, (स्त्री०) भूटान देश की भाषा
भूटिया बादाम-(हिं०पुं०) एक मझोले आकार का पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट होती है, इस वृक्ष का फल खाया जाता है।
भूड़-(हिं०स्त्री०) बालू मिली हुई भूमि,

कुएं का सोता।
भडोल-(हिं०पुं०) भूकम्प।
भूण-(हिं०पुं०)जल भ्रमण,जल विहार, समुद्री यात्रा।
भूत-(सं०नपुं०) न्याय के अनुसार वे मूल द्रव्य जो सृष्टि के मुख्य उपकरण हैं जिनकी सहायता से सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई है, मृत शरीर, शव, पिशाच आदि, वस्तु तत्त्व, सत्य, कुमार कार्तिकेय, लोध, कृष्ण पत्र, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जो यह सूचित करता है कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका, वे कल्पित आत्माएँ जिनके विषय में यह माना जाता है कि वे अनेक प्रकार की उपद्रव करती हैं और कष्ट पहुँचाती हैं, वासुदेव के सबसे बड़े पुत्र का नाम, कृष्ण पक्ष, वृत्त, देव योनि विशेष, अतीत काल, प्राणी, जन्तु, सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, चर अथवा अचर पदार्थ या प्राणी; (वि०) युक्त, मिला हुआ, बीता हुआ, सदृश, समान, वह जो हो चुका हो; भूत-दया-प्राणि मात्र पर दया करना; भूत चढ़ना या सवार होना-अधिक क्रोध होना, बहुत ठह करना; भूत का पकवान-भ्रम में डालने वाली असत्य वस्तु। भूतकर्ता-(सं० पुं०) ब्रह्मा। भूतकला-(सं० स्त्री०) पंच भूतों को उत्पन्न करने वाली एक शक्ति। भूतकाल-(सं०पु०) अतीत काल, बीता हुआ समय। भूतकालिक (सं०वि०) अतीत काल संबंधी।
भूतकृत-(सं०पु०) देवता, विष्ण।
भूतखाना-(हिं०पुं०)बहुत मैलाकुचैला तथा अंधेरा घर। भूतघ्न-(सं०वि०) भूत का नाश करने वाला।भूतचारी-(सं०पु०) शिव, महादेव। भूतजटा-(सं० स्त्री०) जटामासी। भूततत्त्व-(सं० नपुं०) पञ्चभूत का भाव या धर्म।
भूतत्व-(सं० नपुं०) भूत का भाव या धर्म, भू विषयक तत्त्व। भूतत्वविद्या-(सं०स्त्री०) भूगर्भ शास्त्र, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के भीतर के पदार्थों के विषय में ज्ञान होता है।
भूतद्रावी-(सं०पु०) लाल कनेर।
भूतधात्री-(सं०स्त्री०)पृथ्वी। भूतनाथ-(सं० पुं०)शिव,महादेव। भूतपक्ष-कृष्ण पक्ष। भूतपति-(सं०पुं०) कृष्ण, शिव, महादेव। भूतपाल-(सं०पु०) विष्णु। भूतपूर्णिमा-(सं० स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णिमा। भूतपूर्व-(सं०वि०) वर्तमान काल के पहले का, इस समय से पहले का। भूतभर्ता-(सं०पु०) भूतपति, शिव, महादेव। भूतभाव्य-(सं०पु०)विष्णु। भूतभावन-(सं०पुं०) विष्णु, महादेव, (वि०) भूत-पालक। भूतभाषा-(सं०स्त्री०) पैशाचिक भाषा। भूतभृत्-(सं० पुं०) विष्णु। भूतभैरव-(सं०पु०) भैरव की एक मूर्ति का नाम। भूतमहेश्वर (सं०पु०) विष्णु। भूतयज्ञ-(सं०पु०) गृहस्थों के पञ्च यज्ञों में से एक, बलिवैश्वा, भूत बलि।
भूतल-(सं०नपुं०) पृथ्वी, संसार, पृथ्वी का ऊपरी तल, धरातल, पृथ्वी के नीचे का भाग, पाताल।
भूतवत्-(सं० वि०) पूर्ववत्, पहले के समान।
भूतवादी-(सं०वि०) ठीक-ठीक बोलने वाला।
भूतवाहन-(सं०पुं०)शिव का एक नाम।
भूतविद्-(सं० वि०) सर्वज्ञ, बीती हुई बातों को जानने वाला।
भूतशुद्धि-(सं०स्त्री०) तन्त्र के अनुसार शरीर के चौबीस तत्त्वों की भावना करते हुए बीज विशेष द्वारा शरीर का शोधन।
भूतसंसार-(सं० पुं०) जगत्, विश्व, ब्रह्माण्ड।
भूतसञ्चार-(सं० पुं०)भूतोन्माद नामक रोग।
भूतसंप्लव-(सं०पु०) प्रलय।
भूतहत्या-(सं०स्त्री०) जीवहत्या।
भूताङ्कुश-(सं०नपु०) गावजुबान।
भूतात्मा-(सं०पुं०)परमेश्वर, जीवात्मा, शिव, विष्णु, युद्ध, देह, शरीर।
भूताधिपति-(सं०पुं०) भूतनाथ, शिव।
भूतान्तक-(सं० पुं०) यम, रुद्र।
भूतार्त-(सं०वि०) भूतग्रस्त।
भूतावास-(सं०पुं०)शरीर,विष्णु, संसार;
भूति-(सं० स्त्री०) शिव की अणिमा आदि आठ सिद्धियां, भस्म, राख, वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, सत्ता, उत्पत्ति, विष्णु, लक्ष्मी, जाति, वृद्धि, अधिकता; भूतिकर्म-(सं०नपु०)गार्हस्थ संस्कार। भूतिकाम-(सं०वि०)जिसको ऐश्वर्य की कामना हो। भूतिद-भूतिदा-(सं०स्त्री०) गंगा। भूतिनिधान-(सं०नपु०) धनिष्ठा नक्षत्र। भूतिनी-(हिं० स्त्री०) जिस स्त्री ने भूतयोनि प्राप्त की हो, डाकिनी, शाकिनी आदि। भूतिवाहन-(सं० पुं०) शिव का एक नाम।
भूतिबानी-(हिं० स्त्री०) भस्म, राख।
भूतृण-(सं०नपुं०) रोहिस घास।
भूतेश, भूतेश्वर-(सं० पुं०) परमेश्वर, शिव, महादेव।
भूतेष्टा-(सं०स्त्री०)काली तुलसी,आश्विन कृष्ण चतुर्दशी।
भूतोन्माद-(सं० पुं०) भूत पिशाच के आक्रमण होने वाला उन्माद रोग।
भूतोपदेश-(सं०पुं०) यथार्थ विषय में शिक्षा।
भूत्तम-(सं०पुं०) सुवर्ण, सोना।
भूदार-(सं०पुं०) शूकर, सुअर।
भूदेव-(सं०पु०) ब्राह्मण।
भूधन-(सं०पुं०) राजा, नृप।
भूधर-(सं०पुं०)शेष नाग, विष्णु, राजा, एक प्रकार का औषधि बनाने का बालुका यन्त्र। भूधरता-(सं० स्त्री०) भूधर का भाव या धर्म। भूधरेश्वर-(सं०पु०) पर्वतों का राजा हिमालय;
भून-(हिं०पु०) देखो भ्रूण।
भूनना-(हिं०क्रि०)आग पर रख कर पकाना, गरम घी या तेल में डालकर पकाना, तलना गरम बालू में डालकर पकाना, अधिक कष्ट देना।
भूनेता-(सं०पुं०) भूपति, राजा।
भूप-(सं०पुं०) नृपति, राजा। भूपति-(सं०पु०) राजा, नृप, बटुक भैरव।
भूपद-(सं० पुं०) वृक्ष, पेड़। भूपदी-(सं०स्त्री०) मल्लिका, चमेली।
भूपरा-(हिं०पु०) सूर्य।
भूपरिधि-(सं०पुं०) पृथ्वी की परिधि, व्यास।
भूपाल-(सं०पु०) नृप, राजा।
भूपाली-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
भूपुत्र-(सं०पु०) मङ्गल, नरकासुर।
भूप्रकम्प-(सं०पुं०) भूकम्प।
भूबिम्ब-(सं०नपु०) पृथ्वी की छाया।
भूभल-(हिं०स्त्री०) गरम राख या धूल, गरम रेत।
भूभुज-(सं०पु०) नृप, राजा।
भूभुरि-(हिं०स्त्री०) देखो भभल।
भूभृत्-(सं०पुं०) पर्वत, राजा।
भूमण्डल-(सं०नपु०) मण्डलाकार भूमि-भाग, पृथ्वी।
भूमय-(सं०वि०) सूर्य पत्नी, छाया।
भूमि-(सं०स्त्री०) वसुधा, पृथ्वी, स्थान, क्षेत्र, आधार, वास स्थान, योगियों की एक अवस्था, प्रदेश, प्रान्त, जड़ नीव।
भूमिकम्प-धरती का डोलना, भूडोल।
भूमिका-(सं० स्त्री०) रचना, बनावट, दूसरा भेष धारण करना, वेदान्त मत से चित्त की एकअवस्था, वक्तव्य विषय की सूचना, ग्रन्थ का आभास, मुखबन्ध, दीबाचा।
भूमिखण्ड-(सं०नपु०) भूमि का भाग।
भूमिगम-(सं०पुं०) उष्ट्र, ऊंट।
भूमिगर्त-(सं०पुं०) भूमि में का विवर, छिद्र, छेद। भूमिगुहा-(सं० स्त्री०) भूमि गह्वर, सुरंग। भूमिगृह-(सं० नपुं०) तहखाना।
भूमिचल-(सं०पुं०) भूकम्प, भूडोल।
भूमिज-(सं०वि०) जो भूमि से उत्पन्न हुआ हो, (नपुं०) सुवर्ण, सोना, गुग्गुल, सीसा, एक अनार्य जाति का नाम।
भूमिजा-(सं०स्त्री०) सीता, जानकी।
भूमिजीवी-(सं०पुं०) वैश्य, खेतिहर, किसान। भूमितल-(सं०नपुं०) भूतल, पृथ्वी का ऊपरी भाग। भूमित्व-(सं०नपुं०) भूमि का भाव या धर्म।
भूमिदण्ड-(हिं०पुं०) एक प्रकार का व्यायाम। भूमिदेव-(सं०पुं०) ब्राह्मण, राजा। भूमिधर-(सं० पुं०) पर्वत, पहाड़। भूमिप, भूमिपति, भूमिपाल-(सं०पुं०)भूपति, राजा। भूमिपिशाच-(सं०पुं०) ताड़ का वृक्ष। भूमिपुत्र-(सं० पु०) मंगल ग्रह, नरकासुर।
भूमिपुत्री-(सं०स्त्री०)सीता, जानकी।
भूमिभाग-(सं० पुं०) स्थान।
भूमिभुज-(सं०पुं०) राजा, भूपति।
भूमिभृत्-(सं०पुं०)राजा, पर्वत,पहाड़;
भूमिया-(हिं०पुं०)भूमि का अधिकारी, ग्रामदेवता। भूमिरुह-(सं०पुं०) वृक्ष, पेड़। भूमिलोक-(सं०पुं०)पृथ्वीलोक।
भूमिष्ठ-(सं० वि०) भूमि पर गिरा हुआ,उत्पन्न। भूमिसम्भवा-(सं०स्त्री०) सीता, जानकी।
भूमिसुत-(सं०पुं०)मंगल ग्रह, नरकासुर, वृक्ष। भूमिसुता-(सं० स्त्री०) सीता, जानकी।
भूमिसुर-(सं०पु०)ब्राह्मण। भूमिहार-(हिं० पु०) विहार प्रदेश वासी एक श्रेणी के ब्राह्मण।
भूमीन्द्र-(सं०पु०) भूपति, राजा।
भूम्य-(सं०वि०) भूमि पर होने योग्य।
भूय-(सं०अव्य०)बहुत, अधिक, फिर से।
भूयण-(हिं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
भूयिष्ठ-(सं०वि०) बहुतर, प्रचुर।
भूर-(हिं०वि०)बहुत, अधिक, (पु०)बालू।
भूरज, भूरजपत्र-(हिं० पुं०) भोज पत्र का पेड़, धूलि, गर्दा।
भूरपूर-(हिं०क्रि०वि०) देखो भरपूर।
भूरला-(हिं०पुं०)वैश्यों की एक जाति।
भूरसी दक्षिणा-(हिं०स्त्री०) वह थोड़ी-थोड़ी दक्षिणा जो किसी बड़े यज्ञ, दान अथवा धर्मकृत्य के अन्त में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।
भूरा-(हिं०पु०) धूमिल रंग, युरोप देश का निवासी, कच्ची चीनी, खांड़ वह चीनी जो कच्ची चीनी को स्वच्छ करके और पका कर बनाई जाती है, (वि०) मिट्टी के रंग का।
भूरि-(सं० नपु०)सुवर्ण, सोना, (पुं०) शिव, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, (वि०) प्रचुर, अधिक, बड़ा भारी।
भूरिगम-(सं०पुं०)गर्दभ, गदहा।
भूरिज-(सं०वि०)जो एक समय में बहुत सा उत्पन्न हो। भूरिता-(सं०स्त्री०) भूरित्व, अधिकता।
भूरितेज-(सं०वि०)अतिशयतेजस्वी, (पुं०) सुवर्ण, सोना, अग्नि, आग।
भूरिद, भूरिदा-(सं०वि०) बहुत दान देने वाला।
भूरिधामन्-(सं०वि०)अति प्रभावशाली;
भूरिबला-(सं०स्त्री०) अतिबला, ककही।
भूरुह-(सं०पु०) वृक्ष, पेड़।
भूरोह-(सं०पु०) केंचुआ।
भूर्जपत्र-(सं०वि०) भोजपत्र।
भूर्णि-(सं०स्त्री०) मरु भूमि।
भूर्लोक-(सं०पुं०) मर्त्य लोक।
भूल-(हिं०स्त्री०) भूलने का भाव, चूक, दोष, अपराध, अशुद्धि। भूलक-(हिं०पुं०) जो भूल करता हो।भूलना

वाला।
भूलता-(सं०स्त्री०) केंचुआ नामक कीड़ा;
भूलना-(हिं० क्रि०) विस्मरण होना, याद न रहना, धोखे में आना, आसक्त होना, अनुरक्त होना, घमंड करना, खो जाना, (वि०)भूलने वाला;
भूलभूलैया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घुमावदार और चक्कर में डालने वाला गृह जिसमें एक ही तरह के बहुत से मार्ग और द्वार रहते हैं जिसके भीतर जाकर बाहर निकलना कठिन होता है, बहुत घुमाव फिराव की बात या घटना, पेचीली बात।
भूलोक-(सं०पुं०) पृथ्वीलोक, संसार।
भूलोटन-(हिं०वि०) पृथ्वी पर लोटने वाला।
भूवलय-(सं०नपुं०) भूमिकी परिधि।
भूवल्लभ(सं०पुं०) राजा।
भूवा-(हिं०पुं०) रुई (वि०)रुई, के समान सफेद।
भूविद्या-(सं०स्त्री०) वह शास्त्र जिसके अध्ययन करने से भूमि के तत्वों का ज्ञान होता है।
भूशक्र-(सं०पुं०)नृपति, भूपति, राजा।
भूशय्या-(सं० स्त्री०) भूमि पर सोना, शयन करने की भूमि।
भूशायी-(हिं० वि०)पृथ्वी पर सोने वाला, पृथ्वी पर गिरा हुआ, मृतक,
भूषण-(सं०नपुं०) अलंकार, आभरण, गहना, शोभा बढ़ाने वाली वस्तु, (पुं०) विष्णु। भूषणता-(सं०स्त्री०) भूषण का भाव या धर्म।
भूषन-(हिं०पुं०) देखो भूषण। भूषना-(हिं०क्रि०) अलंकृत करना, सजाना।
भूषा-(सं० स्त्री०) अलंकृत करने या सजाने की क्रिया, आभूषण, गहना।
भूषित-(सं०वि०) अलंकृत, गहना पहरे हुए, सज्जित, सजाया हुआ।
भूष्य-(सं०वि०) सजाने योग्य।
भूसंस्कार-(सं०पुं०) यज्ञ करने से पहले भूमि को स्वच्छ करने, नापने, रेखा खींचने आदि की क्रिया।
भूसन-(हिं०पुं०) देखो भूषण।
भूसना-(हिं०क्रि०) कुत्तों का भूंकना।
भूसा-(हिं०पुं०)तुष, भूसी। भूसी-(हिं० स्त्री०) किसी प्रकार के अन्न या दाने के ऊपर का छिलका।
भूसीकर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान
भूसुत-(सं०पुं०) मंगल ग्रह, वृक्ष, पेड़, नरकासुर। भूसुता-(सं०स्त्री०) सीता, जानकी। भूसुर-(सं०पुं०) ब्राह्मण।
भूस्वर्ग-(सं०पुं०) सुमेरु पर्वत।
भृकुटी-(सं० स्त्री०) भ्रकुटी, भौंह।
भृगु-(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध ऋषि, शुक्राचार्य, परशुराम, शिव, भृगुवार, शुक्रवार। भृगुकच्छ-(सं० नपुं०) नर्मदा नदी के उत्तर तटपर स्थित एक तीर्थ का नाम। भृगुतनय-(सं० पुं०) शुक्राचार्य। भृगुनन्दन, भृगुनायक-(सं०पुं०)परशुराम। भृगुनाथ-परशुराम। भृगुमुख्य-(सं०पुं०) परशुराम। भृगु रेखा-(सं०स्त्री०) विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु मुनिके लात मारनेसे हुआ था।
भृगुलता-(सं०स्त्री०) देखो भृगुरेखा।
भृङ्ग-(सं० नपुं०) दारचीनी, अभ्रक, (पुं०) भ्रमर, भौंरा, भृङ्गराज, भंगरैया, एक प्रकार का कीड़ा, काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी; भृङ्गप्रिया-माधवी लता, भृङ्गबन्धु-कदम्ब वृक्ष, भृङ्गमोही-कनक चम्पा।
भृङ्गराज-(सं०पुं०) काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।
भृङ्गि-(सं०पुं०)शिवजी का एक द्वारपाल
भृङ्गी-(सं० स्त्री०) अतिविषा, अतीस, भौंरी, भाँग, बीरबहूटी नाम का कीड़ा,(पुं०)शिवजीका एक द्वारपाल।
भृङ्गीश-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
भृत-(सं०वि०) पुष्ट, पाला हुआ, भरा हुआ, (पु०) भृत्य, दास।
भृतक-(सं०पुं०) वह जो वेतन लेकर काम करता हो।
भृति-(सं०स्त्री०) वेतन, मूल्य, पालन, पोषण, नौकरी।
भृतिका-(सं०स्त्री०) वेतन।
भृत्य-(सं० पुं०) दास। भृत्यता-(सं० स्त्री०)भृत्य का भाव या कर्म। भृत्या-(सं०स्त्री०) दासी, चाकरनी।
भृमि-(सं०पुं०) पानी में का भँवर या चक्कर।
भृश-(सं०नपुं०)बहुत अधिक, ज्यादा।
भृष्ट-(सं०वि०) आँच से पकाया हुआ, भूना हुआ; भृष्टकार-भड़भूंजा।
भेंगा-(हिं० वि०) जिसकी आँख की पुतली टेढ़ी रहती हो।
भेंट-(हिं० स्त्री०) मिलना, उपहार।
भेंटना-(हिं० क्रि०) मिलना, आलिंगन करना, गले लगाना।
भेंटाना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ तक हाथ पहुँचाना, हाथ से छूआ जाना, मिलना।
भेंड़-(हिं०स्त्री०) देखो भेड़।
भेंवना-(हिं०क्रि०)भिगोना, तर करना।
भेउ-(हिं० पुं०) देखो भेद, रहस्य, गुप्त बात।
भेक-(सं०पुं०) मेढक, काला अबरख, बादल। भेकभुज-सर्प, सांप; भेकी मेढकी। भेख-(हिं०पुं०) देखो वेष।
भेखज-(हिं०पुं०) देखो भेषज।
भेज-(हिं०स्त्री०) जो कुछ भेजा जाय, लगान। भेजना-(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान को रवाना करना। भेजवाना-(हिं० क्रि०)भेजने का काम दूसरे से कराना
भेजा-(हिं०पुं०) खोपड़ी के भीतर का गूदा, चन्दा, बेहरी।
भेट-(हिं०स्त्री०) देखो भेंट।
भेटना-(हिं०पुं०)कपास के पौधे का फूल
भेड़-(हिं०स्त्री०) बकरी की जाति का एक चौपाया जिसके रोवें के कम्बल आदि बनते हैं, गाडर; भेड़ियाधसान-बिना सोचे विचारे किसी का अनुसरण।
भेड़ा-(हिं०पुं०)भेड़ जाति का नर, मेढा।
भेड़िया-(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध मांसहारी जंगली पशु।
भेड़ी-(सं०स्त्री०) मादा भेड़, नीची भूमि के चारों ओर का बांध।
भेतव्य-(सं०वि०) भय के योग्य।
भेद-(सं० पुं०) प्राचीन राजनीति के अनुसार शत्रु को वश में करने का तीसरा उपाय, शत्रु को बहका कर अपनी ओर मिलाना अथवा शत्रुओं में द्वेष उत्पन्न करना, मर्म, तात्पर्य, अन्तर, प्रकार, छिपी हुई बात, भेदने या छेदने की क्रिया।
भेदक-(सं०वि०)विदारक, छेदने वाला, वैद्यक में रेचक (औषधि)। भेदकर-(सं०वि०) भेद करने वाला।
भेदकातिशयोक्ति-(सं०स्त्री०)एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु का अतिशय वर्णन किया जाता है।
भेदड़ी-(हिं० स्त्री०) रबड़ी।
भेदन-(सं० नपुं०) विदारण, छेदना, वेधना, अमलवेंत, हींग, सुअर, (वि०) विरेचन, शौच लाने वाला।
भेदना-(हिं०क्रि०) छेदना। भेदनीय-(सं०वि०) भेद करने योग्य।
भेदबुद्धि-(सं०स्त्री०) एकता का अभाव, फूट। भेद भाव-(सं०पुं०) अन्तर।
भेद वादी-(सं० वि०) भिन्न मतावलम्बी।
भेदित-(सं०वि०) भिन्न, विदारित।
भेदित्व-(सं०नपुं०)भेदका भाव या धर्म;
भेदिनी-(सं० स्त्री०) तन्त्र के अनुसार षट्चक्र को भेदने की शक्ति।
भेदिया-(हिं० पु०) भेद लेने वाला, गुप्त रहस्यको जानने वाला,गुप्तचर।
भेदी भेदू-(हिं० पुं०) गुप्त वार्ता को जानने वाला (वि०)भेद करने वाला
भेदी सार-(सं०पुं०)बढ़इयों का लकड़ी छेदने का बरमा।
भेद्य-(सं० वि०) भेद करने योग्य, छेदने योग्य।
भेन-(हिं०स्त्री०) भगिनी, बहिन।
भेना-(हिं०क्रि०) भिगोना, तर करना।
भेभम-(हिं०पु०)एक प्रकारका पतलाबाँस
भेर-(सं०पुं०)भेरी,पटह, दुन्दुभी,नगाड़ा
भेरवा-(हिं०पुं०)एक प्रकार का खजूर
भेरा-(हिं०पुं०) देखो बेड़ा, एक प्रकार का वृक्ष।
भेरी-(सं०स्त्री०) बड़ा ढोल या नगाड़ा, पटह।
भेरीकार-(हिं०पुं०)नगाड़ा बजानेवाला
भेरुण्ड-(सं०वि०) भयानक, भयंकर।
भेल-(सं० पुं०) भेलक, बेड़ा, (वि०) मूर्ख, चंचल।
भेलक-(सं०पुं०) नदी आदि पार करने का बेड़ा, प्लव, तारण।
भेला-(हिं०पुं०) भेंट, बड़ा गोला या पिण्ड।
भेली-(हिं०स्त्री०) गुड़ आदि की बट्टी या पिण्डी।
भेव-(हिं०पुं०) रहस्य, भेद, गुप्तवार्ता, बारी।
भेवना-(हिं०क्रि०) भिगोना, तर करना
भेश-(हिं० पु०) देखो वेश।
भेष-(हिं०पुं०) देखो वेश।
भेषज-(सं०नपुं०) औषधि, दवा, जल, सुख। भेषजागर-(सं०नपुं०) औषध बनानेका घर। भेषजाङ्ग-(सं०नपुं०) औषधि का अनुपान। भेषना-(हिं० क्रि०) स्वांग बनाना।
भेस-(हिं०पु०) वह बनावटी रूप रंग तथा पहरावा जो वास्तविक रूप को छिपाने के लिये धारण किया जाता है, वेष।
भेसज-(हिं०स्त्री०) औषधि, दवा।
भेसना-(हिं०क्रि०) वेश धारण करना, वस्त्र आदि पहरना।
भैंस-(हिं० स्त्री०) गाय की जात का परन्तु उससे बड़ा काले रंग का एक चौपाया जिसको लोग दूध के लिये पालते हैं, एक प्रकार की मीठे जल की मछली। भैंसा-(हिं०पुं०) भैंस का नर, पुराण के अनुसार यह यम का बाहन माना जाता है। भैंसाव-(हिं०पुं०) भैंस और भैंसे का जोड़ा खाना। भैंसासुर-(हिं०पुं०)देखो महिषासुर। भैंसोरी-(हिं० स्त्री०) भैंस का चमड़ा।
भै-(हिं०पु०) देखो भय, डर।
भैक्ष-(सं०नपुं०)भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव, भिक्षा, भीख; भैक्षचर्या-भीख मांगने का काम; भैक्षजीविका-भीख मांग कर जीविका का निर्वाह, भैक्षवृत्ति-भिक्षा द्वारा जीवनोपाय।
भैक्षाकुल-(सं०नपुं०) अति विशाल; वह स्थान जहां पर बहुत से लोगों को भिक्षा मिलती हो।
भैचक-(हिं० वि०) विस्मित चकित, घबड़ाया हुआ, भौचक।
भैजन-(हिं०वि०)भय उत्पन्न करनेवाला
भैदा-(हिं०वि०) भयप्रद, डरावना।
भैन-(हिं०स्त्री०) भगिनी, बहिन। भैना, भैनी-(हिं०स्त्री०) देखो भैन, बहिन।
भैने-(हिं०पुं०)बहिन का पुत्र, भानजा।
भैम-(सं०वि०) भीम सबंधी,(पुं०) राजा उग्रसेन। भैमी-(सं०स्त्री०)दमयन्ती।
भैयंस-(हिं०पुं०) पैत्रिक सम्पित्ति में भाइयों का अंश।
भैया-(हिं० पुं०) भ्राता, भाई, एक संबोधन का शब्द जो बराबरी वाले तथा छोटों के लिये व्यवहार किया जाता है, नाव की पट्टी। भैयाचार, भैयाचारी-(हिं०पुं०) भ्रातृभाव भाईचारा। भैयादोज-(हिं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ला द्वितीया, भाईदूज, जिस दिन बहिन भाई को टीका लगाती हैं।
भैरव-(सं० वि०) भयंकर, डरावना

पुं०) शंकर महादेव, साहित्य में भयानक रस, भयानक शब्द, शिव के गण, एक राग का नाम; **भैरव मस्तक**-ताल का एक भेद।

भैरवी-(सं०स्त्री०) महाविद्या की मूर्ति का एक भेद, चामुण्डा, सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी का नाम, शरद ऋतु के प्रभात में यह गाई जाती है। **भैरवी चक्र**-(सं०नपुं०)तान्त्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट तिथियों में भैरवी का पूजन करनेके लिये इकट्ठा होते हैं। **भैरवी यातना**-(सं० स्त्री०) पुराण के अनुसार वह यातना जो प्राणियों को भैरव देते हैं।

भैरवेश-(सं०पुं०) शंकर, महादेव।

भैरू-(हिं० पुं०) देखो भैरव।

भैरो-(हिं० पुं०) देखो भैरव।

भैरिक-(सं०पुं०) दुन्दुभी बजानेवाला।

भैरी-(हिं०स्त्री०) देखो बहरी।

भैवाद-(हिं०पुं०) भाईचारा।

भैषज, भैषज्य-(सं०नपुं०) औषध।

भैहा-(हिं०पुं०) डरा हुआ, भयभीत, प्रेत ग्रस्त।

भों-(हिं०स्त्री०) भों भों का शब्द।

भोंकना-(हिं०क्रि०) धंसाना, घुसेड़ना।

भोंगरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लता।

भोंगाल-(हिं० पुं०) बड़ा भोंपा।

भोंचाल-(हिं० पुं०) देखो भूकम्प।

भोंडा-(हिं० वि०) कुरूप, भद्दा, (पुं०) जुआर की जाति की एक प्रकार की घास; **भोंडापन**-कुरूपता, भद्दापन।

भोंडी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की भेंड़ जिसके पेट पर के रोंवें सफेद होते हैं।

भोंतरा-(हिं०वि०)जिसकीधारपैनीनहो।

भोंदू-(हिं० वि०) मूर्ख, भोला, सीधा।

भोंपा, भोंपू-(हिं०पुं०) तुरही की तरह का मुंह से फूंककर बजाने का बाजा।

भोंसले-महाराष्ट्र राजन्य गण की एक उपाधि।

भो-(हिं० क्रि० वि०) भया हुआ।

भोकस-(हिं०पुं०) एक प्रकार के राक्षस, (वि०) भुक्खड़।

भोकार-(हिं०स्त्री०) वेग से रोनेकाशब्द।

भोक्ता-(सं०वि०) भोजन करने वाला, सुख दुःख का उपभोग करने वाला, भोगने वाला, (पुं०) भर्ता, पति।

भोग-(सं० पुं०) सुख या दुःख, सुखदुःख का अनुभव, भोजन, शरीर, मान, पुण्य पाप का फल, पालन पोषण, धन सांप का फन, किराया, भाड़ा, रखेली स्त्री को दिया जाने वाला वेतन, स्त्री संभोग, प्रारब्ध, खाद्य पदार्थ जो देवी देवता के आगे रक्खा जाता है, सूर्य आदि ग्रहों का राशि स्थिति का काल। **भोगगृह**-(सं०पु०) वासगृह, रहने का घर। **भोगत्व**-(सं० नपुं०) भोग का भाव या धर्म।

भोगदेह-(सं० पुं०) स्वर्ग या नरक भोगने के लिये सूक्ष्म देह।

भोगना-(हिं० क्रि०) शुभाशुभ कर्मों के फलों का अथवा सुख दुःख का अनुभव करना, भुगतना, सहन करना, स्त्री प्रसंग करना।

भोगपति-(सं० पुं०) किसी नगर या प्रान्त का अधिकारी।

भोगपात्र-(सं० नपुं०) वह पात्र जिसमें नैवेद्य रख कर देवता को अर्पण होता है।

भोगबन्धक-(सं० पुं०) बंधक रखने की वह रीति जिसमें उधार लिये हुए रुपये का सूद नहीं देना होता परन्तु कुछ काल के लिये महाजन को सम्पत्ति का भोग करने का अधिकार होता है।

भोगभूमि-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ केवल भोग ही होता है कर्म नहीं होता है। **भोगलाभ**-(सं० पुं०) सुख भोग आदि की प्राप्ति। **भोगलिप्सा**-(सं० स्त्री०) व्यसन, लत।

भोगली-(हिं० स्त्री०) छोटी नली, पुपली, नाक में पहरने की नथ, कान में पहरने का एक आभूषण, चिपटे तार या बादले का बना हुआ एक प्रकार का सलमा।

भोगवती-(सं० स्त्री०) नागों की स्त्री, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

भोगवस्तु-(सं० नपुं०) उपभोग्य द्रव्य।

भोगवाना-(हिं० क्रि०) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना, भोग कराना।

भोगविलास-(सं०पुं०) आमोद प्रमोद।

भोगस्थान-(सं० नपुं०) भोगभूमि, रमणी गृह।

भोगाना-(हिं० क्रि०) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना, भोग कराना।

भोगावली-(सं०स्त्री०) स्तुति, भोगश्रेणी।

भोगिनी-(सं०स्त्री०)राजाकीरखेलीस्त्री।

भोगिभुज-(सं० पुं०) मयूर, मोर।

भोगी-(सं० पुं०) सर्प, राजा, नापित, अश्लेषा नक्षत्र, शेषनाग, वह जो भोगता हो, (वि०) इन्द्रियों का सुख चाहने वाला, विषयासक्त, भुगतने वाला, सुखी, विषयी, व्यसनी, विलासी, आनन्द लेने वाला, खाने वाला।

भोग्य-(सं० वि०) भोगने योग्य, काम में लाने योग्य, जिसका उपभोग किया जावे, (नपुं०) धनधान्य। **भोग्यत्व**-(सं० नपुं०) भोगने का धर्म या भाव। **भोग्यभूमि**-(सं० स्त्री०) मर्त्य लोक। **भोग्यमान**-(सं० वि०) जो अभी भोगा न गया हो।

भोग्या-(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।

भोज-(सं० पुं०) चन्द्रवंशी एक राजा का नाम, श्रीकृष्ण के एक ग्वाल सखा का नाम, कच्छ के अन्तर्गत एक स्थान जो आजकल भुज कहलाता है, (हिं० पुं०) बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना, जेवनार, खाने की वस्तु, परमार वंशी एक प्रसिद्ध राजा का नाम जो बड़े विद्वान् थे। **भोजक**-(सं० नपुं०) भोजन करने वाला, भोग विलास करने वाला, भोगी।

भोजदेव-(सं० पुं०) भोजराज जो कान्यकुब्ज देश के राजा थे।

भोजन-(सं० नपुं०) भक्षण, कड़े पदार्थों को दाँतों से कुचल कर निगलना, भोजन की सामग्री; **भोजन काल**-भोजन करने का समय; **भोजन त्याग**-भोजन छोड़कर उठ जाना, **भोजन पात्र**-जिस पात्र में भोजन किया जाता है; **भोजन वेला**-खाने का समय।

भोजन भट्ट, भोजन व्यग्र-पेटू; **भोजनशाला**-रसोइया घर। **भोजनालय**-(सं० पुं०) पाकशाला, रसोइया घर।

भोजनीय-(सं०वि०)भोजनकरनेयोग्य।

भोजपत्र-(हिं० पुं०) मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी छाल प्राचीन समय में पुस्तकादि लिखने के काम में आती थी।

भोज परीक्षक-(सं० पुं०) रसोई की परीक्षा करने वाला।

भोजपुरिया-(हिं० पुं०) भोजपुर का निवासी, भोजपुर संबंधी। **भोजपुरी**-(सं०स्त्री०) राजा भोज की राजधानी भोजपुर की भाषा; (पुं०) भोजपुर निवासी, (वि०) भोजपुर संबंधी।

भोजयिता-(हिं० वि०) भोजन करने वाला। **भोजयितव्य**-(सं० वि०) भोजन करने योग्य।

भोजराज-कान्यकुब्ज—(कन्नौज) के एक प्रसिद्ध राजा जो रामभद्र देव के पुत्र थे।

भोजवाजी-(सं० स्त्री०) ऐन्द्रजालिक क्रीड़ा, जादूगरी।

भोजविद्या-(सं० स्त्री०) ऐन्द्रजालिक विद्या, बाजीगरी।

भोजी-(हिं०वि०) भोजन करने वाला।

भोजू-(हिं० पुं०) भोजन।

भोजेश-(सं० पुं०) भोजराज, कंस।

भोज्य-(सं० वि०) भोजन करने योग्य, (पुं०) खाद्य पदार्थ।

भोट-(हिं० पुं०) भूटान देश, एक प्रकार का बड़ा पत्थर। **भोटिया**-(हिं० पुं०) भूटान देश की भाषा, (वि०) भूटान देश सम्बन्धी; **भोटिया बादाम**-आलूबुखारा, मुंगफली।

भोडर, भोडल-(हिं०पुं०) अभ्रक, अबरख, अबरख का चूर, बुक्का, एक प्रकार का गन्धबिडाल।

भोडागार-(हिं० पुं०) भण्डार घर।

भोण-(हिं० पुं०) गृह, घर।

भोथरा-(हिं० वि०) देखो भुथरा।

भोना-(हिं०क्रि०) लिप्त होना, भीनना, अनुरक्त होना।

भोपा-(हिं० पुं०) एक प्रकार की तुरही, मूर्ख।

भोबरा-(हिं०पुं०) एक प्रकारकी घास।

भोभो-(सं० अव्य०) सम्बोधन का शब्द; अरे! हो!

भोम, भोमी-(हिं० स्त्री०) पृथ्वी।

भोर-(हिं० पुं०) प्रातःकाल, तड़का, सबेरा, एक प्रकार का बड़ा पक्षी, धोखा, भूल, (वि०) चकित, घबड़ाया हुआ।

भोरा-(हिं० पुं०) देखो भोर; (वि०) सीधा, भोला भाला। **भोराई**-(हिं० स्त्री०) भोलापन, सिधाई।

भोराना-(हिं० क्रि०) भ्रम में डालना, बहकाना, भ्रम में पड़ना, धोखे में आना।

भोरानाथ-(हिं० पुं०) देखो भोलानाथ, शिव।

भोरु-(हिं० पुं०) देखो भोर।

भोला-(हिं० वि०) सरल, सीधा सादा, मूर्ख। **भोलानाथ**-(सं० पुं०) शिव, महादेव। **भोलापन**-(हिं० पुं०) सरलता, सिधाई, मूर्खता। **भोलाभाला**-(हिं० वि०) सरल चित्त का, सीधा सादा।

भोलि-(सं० पुं०) उष्ट्र, ऊँट।

भोसर-(हिं० वि०) मूर्ख।

भौं-(हिं० स्त्री०) आँख के ऊपर के बालों की श्रेणी, भौंह।

भौंकना-(हिं० क्रि०) भौं भौं शब्द करना, कुत्तों का बोलना, निरर्थक बोलना।

भौंगर-(हिं०पुं०) छत्रियों की एकजाति।

भौंचाल-(हिं० पुं०) देखो भूकम्प।

भौंड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटा पहाड़, पहाड़ी।

भौंतुवा-(हिं० पुं०) काले रंग का खटमल के आकार का एक कीड़ा जो वर्षा ऋतु में पानी के ऊपर चक्कर खाता फिरता है; एक प्रकार का रोग जिसमें गिल्टी निकल आती है, तेली का बैल जो दिन भर कोल्हू में जुता रहता है।

भौंर-(हिं० पुं०) भौंरा, जल का आवर्त, भँवरकली। **भौंरकली**-(हिं० स्त्री०) भँवर कली।

भौंरा-(हिं० पुं०) काले रंग का उड़ने वाला एक फतिंगा, बड़ी मधुमक्खी, हिंडोले की लकड़ी, भूमि के नीचे का घर, अन्न रखने का गड्ढा, ज्वार आदि की उपज को हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा, गड़ेरिये का भेड़ों की रखवाली करने वाला कुत्ता, पशुओं का एक रोग, गाड़ी के पहियें का मध्य भाग, रहट की खड़े बल की चरखी, काला या लाल भड़, लट्टू के आकार का एक खिलौना, सारङ्ग, डंगर।

भौंराना-(हिं० क्रि०) परिक्रमा करना, घुमाना, चक्कर काटना, फेरी लगाना, विवाह की भँवर दिलाना, ब्याह करना।

भौंरी-(हिं० स्त्री०) पशुओं के शरीर में का रोवें का चक्र जिसके स्थान

आदि के विचार से उनके गुण दोष का निर्णय होता है, पानी का चक्कर, आवर्त, भङ्गाकड़ी, बाटी, विवाह के समय वर ओर वधू का अग्नि का परिक्रमा करना।

भौंह-(हिं० स्त्री०) आँख के ऊपर की हड्डी पर के बाल, भृकुटी, भौं; **भौंह चढ़ाना**-त्योरी चढ़ाना। **भौंह जोहना**-शुश्रूषा करना।

भौंहरा-(हिं० पुं०) भूमिगृह।

भौ-(हिं० पुं०) भव, संसार, जगत्, भय, डर।

भौका-(हिं० पुं०) बड़ी दौरी, टोकरा।

भौगिया-(सं० वि०) संसार के सुखों को भोगने वाला।

भौगोलिक-(सं० वि०) भूगोल संबंधी।

भौचक-(हिं० वि०) स्तम्भित, घबड़ाया हुआ, हक्का बक्का।

भौचाल-(हिं० पुं०) देखो भूकम्प।

भौज, भौजाई-(हिं० स्त्री०) भाई की स्त्री, भावज।

भौजाई-(हिं० पुं०) भवजाई।

भौज्य-(सं० पुं०) वह राज्य प्रबन्ध जिसमें राजा प्रजा से लाभ उठाता हो परन्तु वह प्रजा के सत्वों का कुछ विचार न करता हो।

भौठा-(हिं० पुं०) छोटा पहाड़, टीला।

भौत-(सं० पुं०) वह बलि जो भोजन के पहले प्राणियों के उद्देश्य से दी जाती है, (वि०) भूत सम्बन्धी।

भौतिक-(सं० वि०) पंचभूत या सृष्टि सम्बन्धी, पंच तत्वों से बना हुआ, पार्थिव, शरीर सम्बन्धी, शरीर का भूत योनि का, (पुं०) महादेव, शिव, शरीर की इन्द्रियाँ; **भौतिक विद्या**-(सं० स्त्री०) भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी आदि को बुलाने तथा इनसे ग्रस्त मनुष्यों पर से इनको हटाने की विद्या। **भौतिकसृष्टि**-(सं०स्त्री०) आठ प्रकार की देव योनि, पांच प्रकार की तिर्यक् योनि तथा मनुष्य योनि इन तीनों का समुच्चय।

भौन-(हिं०पुं०) देखो भवन, घर।

भौना-(हिं०क्रि०) भ्रमण करना, घूमना।

भौम-(सं०पुं०) मंगल ग्रह, नरकराज, एक प्रकार का पुच्छल तारा, (वि०) भूमि संबंधी, भूमि से उत्पन्न; **भौम चार**-ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह का संचार; **भौमजल**-भूमि संबंधी जल।

भौमन-(सं०पुं०) विश्वकर्मा।

भौम प्रदोष-(सं० पुं०) मंगलवार को पड़ने वाला प्रदोष। **भौम रत्न**-(सं०नपुं०) प्रवाल, मूंगा। **भौम वार**-(सं०स्त्री०) मंगलवार।

भौमासुर-(सं०पुं०) नरकासुर नामक दैत्य

भौमिक-(सं०वि०) भूमि संबंधी, (पुं०) भूमि का अधिकारी।

भौमी-(सं०स्त्री०) सीता, जानकी।

भौर-(हिं० पुं०) घोड़े का एक भेद, देखो भँवर, भौंरा।

भौलिया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की नाव जो ऊपर से ढपी रहती है।

भौवन-(सं०वि०) भुवन संबंधी।

भौसा-(हिं०पुं०) जन समूह, भीड़ भाड़,

भ्रंगारी-(हिं०पुं०) झींगुर।

भ्रंगी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का भन-भनाने वाला फतिगा।

भ्रंश-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश, अधःपतन, भागना; (वि०) भ्रष्ट, **भ्रंशन**-अधःपतन।

भ्रंकुश-(सं०पुं०) स्त्री वेश में नाचने वाला पुरुष।

भ्रकुटि-(सं०स्त्री०) भृकुटी, भौंह।

भ्रत-(हिं०पुं०) दास, सेवक।

भ्रद-(हिं०पुं०) हाथी।

भ्रम-(सं०पुं०) मिथ्या ज्ञान, भ्रान्ति, धोखा, सन्देह, संशय, मूर्छा, भ्रमण, जल निकलने की मोरी, कुम्हार का चाक, खोदने का अस्त्र, **भ्रमकारी**-भ्रम में डालने वाला।

भ्रमण-(सं० नपुं०) घूमना फिरना, यात्रा, मण्डल, फेरी, चक्कर।

भ्रमणीय-(सं०वि०) घूमने फिरनेवाला।

भ्रमत्व-(सं० नपुं०) भ्रम का भाव या धर्म।

भ्रमना-(हिं०क्रि०) धोखा खाना, भूल करना, भटकना, भूलना।

भ्रम मूलक-(सं० वि०) जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो।

भ्रमर-(सं०पुं०) मधुकर, भौंरा।

भ्रमरक-(सं०पुं०) माथे पर के लटकने वाले बाल।

भ्रमर कण्टक-(सं०पुं०) एक प्रकार के फतिंगे जो दीपक को बुता देते हैं।

भ्रमरगीत-(हिं० स्त्री०) दोहे का एक भेद, एक प्रकार का छप्पय। **भ्रमर पदक**-(सं०नपुं०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक पाद में बारह अक्षर होते हैं। **भ्रमर माली**-(सं० स्त्री०) एक सुन्दर सुगन्ध का पौधा। **भ्रमर विलासिता**-(सं० स्त्री०) एक वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं।

भ्रमरानन्द-(सं०पुं०) बकुल, मौलसिरी।

भ्रमरावली-(सं० स्त्री०) एक वृत्त का नाम जिसको नलिनी या मनहरण भी कहते हैं, भौंरों की पंक्ति।

भ्रमरी-(सं०स्त्री०) मिरगी रोग, भौंरे की मादा।

भ्रम वात-(सं०पुं०) आकाश में वह वायुमण्डल जो सर्वदा चक्कर खाता रहता है।

भ्रमरात्मक-(सं०वि०) संदिग्ध, जिसके विषय में भ्रम हो।

भ्रमाना-(हिं०क्रि०) घुमाना फिराना, बहकाना।

भ्रमी, भ्रमीत-(हिं०वि०) चकित, जिसको भ्रम हो, भौंचक।

भ्रमित-(सं०वि०) शंकित, घूमता हुआ।

भ्रष्ट-(सं० वि०) पतित, दूषित, दुराचारी।

भ्रष्टा-(सं० स्त्री०) दुश्चरित्रा स्त्री, छिनाल औरत।

भ्राजन-(सं०नपुं०) चमक दमक, दीपन; **भ्राजना**-(हिं० क्रि०) शोभायमान होना; **भ्राजमान**-शोभायमान।

भ्रात, भ्राता-(हिं० पुं०) सगा भाई, सहोदर भ्राता। **भ्रातृत्व**-(सं०नपुं०) भ्राता का भाव या धर्म। **भ्रातृ द्वितीया**-(सं०स्त्री०) देखो भाईदूज। **भ्रातृ पुत्र**-(सं० पुं०) भाई का पुत्र, भतीजा। **भ्रातृ वधू**-(सं०स्त्री०) भाई की स्त्री, भौजाई। **भ्रातृ भाव**-(सं०पुं०) भाई के समान प्रेम या संबंध, भाईचारा, ज्योतिष में लग्न से तृतीय स्थान।

भ्रान्त-(सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, उन्मत्त, भूला हुआ, तलवार के हर हाथों में से एक।

भ्रान्तापह्नुति-(सं० स्त्री०) एक काव्यालंकार जिसमें भ्रम दूर करने के लिये सच्ची बात का वर्णन रहता है।

भ्रान्ति-(सं०स्त्री०) भ्रम, धोखा, संशय, भ्रमण, भँवरी, मोह, प्रमाद, एक प्रकार का काव्यलंकार जिसमें किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ उसकी समानता देखकर भ्रम से उसको दूसरी ही वस्तु समझ लेना वर्णन किया जाता है।

भ्रान्तिमत्-(सं०वि०) भ्रमज्ञान युक्त, (पुं०) वह अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का अन्य वस्तु में ज्ञान होना दिखलाया जाता है। **भ्रान्तिहर**-(सं०वि०) भ्रम का नाश करने वाला, (पुं०) मन्त्रणा द्वारा भ्रान्ति दूर करने वाला मन्त्री।

भ्राम-(सं०वि०) भ्रम युक्त, संशय युक्त।

भ्रामक-(सं० पुं०) शृगाल, सियार, चुंबक पत्थर, कान्ति लोहा, (वि०) भ्रम में डालने वाला, सन्देह उत्पन्न करने वाला, धूर्त, चक्कर में डालने वाला।

भ्रामर-(सं०नपुं०) मधु, शहद, अपस्मार रोग, दोहे का एक भेद, (वि०) भ्रमर संबंधी।

भ्रामरी-(सं०स्त्री०) पार्वती का एक नाम।

भ्रश्य-(सं०नपुं०) आयुध, शस्त्र।

भ्राष्ट्र-(सं०नपुं०) आकाश, वह पात्र जिसमें भड़भूजे अन्न को भूंजते हैं।

भ्रुकुंश-(सं०पुं०) वह मनुष्य जो स्त्री का वेश धारण करके नाचता हो।

भ्रुकुटी-(सं० स्त्री०) क्रोध आदि द्वारा भौंह चढ़ाना, भृकुटी, भौंह। **भ्रुकुटीमुख**-(सं०नपुं०) एक प्रकार का सर्प।

भ्रू-(सं० स्त्री०) भौंह, भौं। **भ्रूभङ्ग**-(सं०पुं०) भौंह चढ़ाना।

भ्रूकुंस-(सं०पुं०) देखो भ्रुकुंस।

भ्रूकुटी-(सं०स्त्री०) क्रोधादि द्वारा भौंहों को तिरछी करना।

भ्रूक्षेप-(सं०पुं०) संकेत जताने के लिये भौंहों को तिरछी करना, भ्रूविलास।

भ्रूण-(सं०पुं०) स्त्री का गर्भ, बालक की गर्भ में रहने की अवस्था।

भ्रूणघ्न-(सं०वि०) भ्रूण हत्याकारी, बालक को गर्भ में रहते हत्या करने वाला।

भ्रूणहति भ्रूणहत्या-(सं०स्त्री०) गर्भस्थ बालक को जान से मार डालना।

भ्रूणहन्-(सं०स्त्री०) भ्रूणहत्या करने वाला।

भ्रूप्रकाश-(सं० पुं०) एक प्रकार का काला रंग जिससे शृंगार आदि के लिये भौंहें बनाते है।

भ्रूभङ्ग, भ्रूभेद-(सं० पुं०) क्रोध आदि प्रकट करने के लिये भौंह चढ़ाना।

भ्रूभेदी-(सं० वि०) भौंहें चढ़ाये हुए।

भ्रूविकार-(सं० पुं०) भ्रूभङ्ग, भौंहें चढ़ाना।

भ्रूविक्षेप-(सं०पुं०) भौंहों को चढ़ाकर अप्रसन्नता दिखलाना।

भ्रूविचेष्टित-(सं० पुं०) भ्रूविक्षेप, त्योरी चढ़ाना।

भ्रूविलास-(सं० पुं०) भ्रूभंग, त्योरी चढ़ाना।

भ्रेष-(सं०पुं०) भय, डर, गमन, चलना, नाश, हानि।

भ्वहरना-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना।

भ्वासर-(हिं०वि०) मूर्ख।

म

म-हिन्दी वर्णमाला का पचीसवां व्यञ्जन तथा पवर्ग का अन्तिम वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ और नासिका है, जीभ के अगले भाग का दोनों ओठों से स्पर्श होने पर इसका उच्चारण होता है।

म-(सं०पुं०) शिव, चन्द्रमा, ब्रह्मा, यम, विष, समय।

मई-(हिं०स्त्री०) मय जाति की स्त्री, उटनी।

मउर-(हिं०पुं०) विवाह के समय दुलहे के सिर पर पहराने का फूलों का बना हुआ मुकुट या सेहरा, मौर; **मउर छोड़ाई**-विवाह के बाद मौर को खोलने की रीत। **मउरी**-(हिं०स्त्री०) छोटा मौर जो विवाह के समय कन्या के सिर पर बाँधा जाता है।

मउलसिरी-(हिं०स्त्री०) देखो मौलसिरी।

मउसी-(हिं०स्त्री०) देखो मौसी।

मंकुर-(हिं०पुं०) देखो मुकुर।

मंखी(हिं०स्त्री०) बच्चों के गले में पहरने का एक प्रकार का गहना।

मंग-(हिं०स्त्री०) देखो माँग।

मँगता, मंगन-(हिं०पुं०) भिक्षुक, भिखमंगा।

मँगनी-(हिं०स्त्री०) मांगने की क्रिया या भाव, वह पदार्थ जो किसी व्यक्ति को इस बात पर दिया जाय

कि मांगने पर कुछ काल के बाद वह इसको लौटा कर दे, विवाह के पहले की वह रीति जिसमें वर और कन्या का संबंध निश्चय किया जाता है।
मंगलामुखी–(हिं॰स्त्री॰) वेश्या, रंडी।
मंगल–देखो मङ्गल; **मंजरी**–देखो मंजरी।
मंगली–(हिं॰ वि॰) जिस जन्म कुण्डली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो।
मँगवाना–(हिं॰ क्रि॰) मांगने काम दूसरे से कराना, किसी दूसरे को मांगने में प्रवृत्त करना। **मँगाना**–(हिं॰ क्रि॰) देखो मंगवाना, विवाह संबंधकी बातचीत पक्की करना।
मँगेतर–(हिं॰वि॰) किसी के साथ जिसके विवाह की बातचीत पक्की हो गई हो।
मंगोल–वह जाति जो मध्यम एशिया तथा उसके पूरब के भाग में बसी है।
मंजना–(हिं॰क्रि॰) माँजा जाना, अभ्यस्त होना। **मंजाना**–(हिं॰क्रि॰) माँजने का काम दूसरे से कराना, माँजना, मँजवाना।
मंजार–(हिं॰पुं॰) देखो मार्जार, बिल्ली।
मंजीर–(हिं॰पुं॰) नूपुर, घुंघरू।
मंजीरा–(हिं॰पुं॰) करताल नामकबाजा।
मंजु, मंजुल–(हिं॰ वि॰) देखो मञ्जुल, मनोहर, सुन्दर।
मंजूषा–(हिं॰ स्त्री॰) देखो मञ्जूषा, छोटा पेटारा।
मंझा–(हिं॰ पुं॰) सूत कातने के चरखे का मध्य भाग, अटेरन के बीच की फकड़ी, चौकी, पलंग, खाट, वह पदार्थ जिससे पतंग की डोरी मांजी जाती है, (स्त्री॰) सामान्य उपज का खेत जो गोइड़ से निकृष्ट और पालो से अच्छा होता है।
मंझार–(हिं॰क्रि॰वि॰) मध्य भाग में, बीच में। **मंझियार**–(हिं॰ वि॰) मध्य या बीच का।
मंड, मंडन–देखो मण्ड, मण्डन।
मंडप–देखो मंडप।
मंडना–(हिं॰क्रि॰) मर्दित करना, दलित करना, भरना, शृंगार करना, सजाना।
मंडल–(हिं॰पुं॰) देखो मण्डल।
मंडरना–(हिं॰ क्रि॰) चारो ओर से घेर लेना, मंडल बाँध कर छा जाना। **मंडराना**–(हिं॰क्रि॰) मंडल बांधकर या चक्कर देते हुए उड़ना, किसी के पास ही घूम फिर कर रहना, परिक्रमण करना, किसी के चारो ओर घूमना।
मंडरी–(हिं॰ स्त्री॰) पुआल की बनी हुई गोंदरी या चटाई।
मंडल–देखो मण्डल।
मंत्रणा–देखो मन्त्रणा।
मंडलाना–(हिं॰क्रि॰) देखो मंडराना।
मंडलीक–(हिं॰पुं॰) देखो माण्डलीक; बारह राजाओं की अधिपति।
मंड़वा–(हिं॰पुं॰) देखो मण्डप।
मंडा–(हिं॰ पुं॰) दो बिस्वे की नाप की भूमि, एक प्रकार की बंगला मिठाई।
मंडार–(हिं॰पुं॰)गड्ढा,डालिया, झाबा।
मंडियार–(हिं॰ पुं॰) झरबेरी नाम की कंटीली झाड़ी।
मंडी–(हिं॰ स्त्री॰) थोक बिक्री का स्थान, हाट, दो बिस्वे के बराबर भूमि।
मंडुआ–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का क्षुद्र अन्न।
मंडूक–(हिं॰पुं॰) देखो मण्डूक; मेढक।
मंडूर–(हिं॰ पु॰) देखो मण्डूर; लोह-कीट।
मंठा–(हिं॰पुं॰) किमखाब बुनने वाले का लकड़ी का एक अस्त्र।
मंत–(हिं॰ पुं॰) देखो मंत्र, सलाह।
मंत्रिता–(हिं॰स्त्री॰) देखो मन्त्रित्व।
मंत्री–(हिं॰ पुं॰) देखो मन्त्री; परामर्श देने वाला।
मंथ–देखो मंथ, **मंद**–देखो मन्द, **मंद्र**–देखो मन्द्र।
मंदऊ–(हिं॰पुं॰) घोड़े का एक रोग।
मंदधूप–(हिं॰पुं॰) काली धूप।
मंदरा–(हिं॰ वि॰) नाटा, ठिंगना, (हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का बाजा।
मंदरी–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का वृक्ष, गेंड़ली।
मंदा–(हिं॰वि॰) धीमा, मन्द, ढीला, कम दाम का,सस्ता,शिथिल,निकृष्ट,
मंदान–(हिं॰ पु॰) जहाज का अगला भाग।
मंदिल–(हिं॰पुं॰) देखो मन्दिर।
मंदी–(हिं॰स्त्री॰) किसी वस्तु के भाव का कम होना।
मंदील–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का सिर पर पहरने का आभूषण।
मंसना–(हिं॰क्रि॰) मन में संकल्प करना, इच्छा करना, मनसना।
मंसा–(हिं॰ स्त्री॰) संकल्प, अभिरुचि, अभिप्राय, इच्छा, आशय।
मंसूबा–(हिं॰पुं॰) देखो मनसूबा।
मइका–(हिं॰पुं॰) नैहर।
मउनी–(हिं॰स्त्री॰) छोटी डलिया।
मकई–(हिं॰स्त्री॰) ज्वार नामक अन्न।
मकड़ा–(हिं॰ पुं॰) बड़ी मकड़ी।
मकड़ी–(हिं॰ स्त्री॰) आठ पैर वाला एक प्रसिद्ध कीड़ा, लूता।
मकता–(हिं॰ पुं॰) मगध देश का एक मुसलमानी नाम।
मकर–(सं॰ पु॰) एक प्रकार का जल जन्तु, मगर, मेषादि बारह राशियों में से दसवीं राशि, मछली, माघ महीना, छप्पय का एक भेद।
मकर कुण्डल–(सं॰ नपुं॰) गले में पहरने का एक प्रकार का गहना।
मकरकेतन–(सं॰पुं॰) कन्दर्प,कामदेव।
मकरतार–(हिं॰पुं॰)बादले का तार।
मकरध्वज–(सं॰पु॰) कन्दर्प, कामदेव, रससिन्दूर, चन्द्रोदय रस।
मकरन्द–(सं॰ पु॰) फूलों का रस जिसको मधुमक्खियां और भौंरे आदि चूसते हैं, पुष्प केसर, कुन्द का फूल, एक वृत्त का नाम जिसको माधवी या मञ्जरी भी कहते हैं।
मकरन्दिका–(सं॰स्त्री॰) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।
मकरपति–(सं॰ पु॰) कामदेव, ग्राह।
मकरव्यूह–(सं॰पुं॰) एक प्रकार की सेना की रचना जिसमें सैनिक मकर के आकार में खड़े किये जाते हैं।
मकर संक्रान्ति–(सं॰ स्त्री॰) वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, हिन्दू लोग इसको पुण्य दिन मानते हैं, खिचड़वार। **मकर-सप्तमी**–(सं॰ स्त्री॰) माघ मास की शुक्ला सप्तमी।
मकरा–(हिं॰ पुं॰) भूरे रंग का एक कीड़ा, मडुवा नामक अन्न, हलवाई की सेव बनाने की चौघड़िया।
मकराकार–(सं॰वि॰) मगर या मछली के आकार का।
मकराकृत–(सं॰वि॰) देखो मकराकार।
मकराक्ष–(सं॰ पुं॰) खर का पुत्र, रावण का भतीजा।
मकराङ्क–(सं॰ पु॰)कामदेव, समुद्र।
मकरानन–(सं॰पुं॰) शिव के एक अनुचर का नाम।
मकराना–(हिं॰ पुं॰) राजपूताने का एक प्रदेश जहां का संगमरमर बहुत प्रसिद्ध है।
मकराटाई–(हिं॰स्त्री॰) काली राई।
मकरालय, मकरावास–(सं॰पुं॰)समुद्र।
मकरासन–(सं॰नपुं॰) तान्त्रिकों का एक आसन जिसमें हाथ और पैर पीठ की ओर लिये जाते हैं।
मकरी–(सं॰ स्त्री॰) मगर की मादा, मगरनी, चक्की में की वह लकड़ी जो जुए से बंधी रहती है।
मकरेड़ा–(हिं॰ पुं॰) ज्वार या मक्के का डंठल।
मकरौरा–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो प्रायः आम के वृक्षों पर चिपका रहता है।
मकलई–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार की गोंद।
मकाई–(हिं॰स्त्री॰) बड़ी जुन्धरी,ज्वार।
मकार–(सं॰पुं॰)म स्वरूप वर्ण; तन्त्रोक्त पाँच पदार्थ-यथा-मद्य, मांस, मत्स्य मैथुन, और मुद्रा।
मकुंद–(हिं॰पुं॰) देखो मुकुन्द।
मकु–(हिं॰ अव्य॰) कदाचित्, चाहे, वरन, बल्कि, क्या जाने।
मकुआ–(हिं॰पुं॰) बाजरे के पत्तों का एक रोग।
मकुट–(हिं॰पुं॰) देखो मुकुट।
मकुना–(हिं॰ पुं॰) वह नर हाथी जिसके बहुत छोटे दांत हों, बिना मूंछ का मनुष्य।
मकुनी–(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार की कचौड़ी जो आंटे के भीतर बेसन या चने की पीठी भरकर बनाई जाती है, एक प्रकार की बाटी या लिट्टी।
मकुर–(सं॰ पुं॰) कुम्हार का डंडा जिससे वह चाक को चलाता है, दर्पण, मुकुल, कली, बकुल, वृक्ष, मौलसिरी।
मकुल–(सं॰पुं॰) बकुल, मौलसिरी।
मकूनी–(हिं॰स्त्री॰) देखो मकुनी।
मकेरा–(हिं॰पुं॰) जिस खेत में ज्वार या बाजरा बोया जाता है।
मको–(हिं॰स्त्री॰) देखो मकोय। **मकोइचा**–(हिं॰वि॰) मकोय के रंग का, ललाई लिये पीला। **मकोई**–(हिं॰स्त्री॰) जंगली मकोय जिसमें कांटे होते हैं।
मकोड़ा–(हिं॰पुं॰) कोई छोटा कीड़ा।
मकोय–(हिं॰ स्त्री॰) एक छोटा पौधा जिसमें छोटे गोल फल लगते हैं, इसके दो भेद होते हैं, एक में पीले सुपारी के बराबर खटमीठे फल लगते हैं, इसके फल को रसभरी भी कहते हैं, दूसरी जाति में फालसे के बराबर के हरे या लाल छोटे फल लगते हैं जो औषधियों में उपयोग किये जाते हैं।
मकोरना–(हिं॰क्रि॰) देखो मरोड़ना।
मकोसल–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसकी लकड़ी कड़ी होती है।
मकोहा–(हिं॰पुं॰) लाल रंग का एक प्रकार का कीड़ा जो कृषि को बहुत हानि पहुंचाता है।
मक्कर–(हिं॰पुं॰) छल, कपट।
मक्का–(हिं॰पुं॰) ज्वार, मकई।
मक्कुल–(सं॰नपुं॰)शिलाजतु, शिलाजीत
मक्कोल–(सं॰नपुं॰) खटिका, खड़िया।
मक्खन–(हिं॰पुं॰) गाय या भैंस के दूध का वह सार भाग जो दूध या दही को मथने से प्राप्त होता है, जिसको तपाने से घी बनता है; **कलेजे पर मक्खन मला जाना**–शत्रु की हानि देख कर प्रसन्न होना।
मक्खा–(हिं॰पुं॰) बड़ी जाति की मक्खी, नर मक्खी। **मक्खी**–(हिं॰स्त्री॰) एक प्रसिद्ध उड़ने वाला छोटा कीड़ा जिसके छः पैर होते हैं, यह संसार भर में सर्वत्र पाया जाता है मक्षिका मधुमक्खी; **जीती मक्खी निगलना**–जान बूझ कर ऐसा काम करना जिससे बाद में पछताना पड़े; **मक्खी की तरह फेंक देना**–अनावश्यक समझ कर हटा देना; **मक्खी मारना**–वृथा का कार्य करना।
मक्खी चूस–(हिं॰वि॰)बहुत बड़ा कृपण, बड़ा कंजूस। **मक्खी मार**–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का जन्तु जो मक्खियों को खा जाता है,एक प्रकार की छड़ी

मक्खीलेट–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की जाली जिस पर छोटी छोटी बूटियाँ बनी रहती है।
मक्सी–हिं०पुं०) बिलकुल काले रंग का घोड़ा।
मक्ष–सं०पु०, ओघ, समूह, ढेर।
मक्षिका–(सं०स्त्री०) मक्खी, शहद की मक्खी; मक्षिका मल–सिक्थ, मोम; मक्षिका सन–मधु मक्खी का छत्ता।
मख–(सं० पु०) याग, यज्ञ; मखघ्न–यज्ञ नाशक।
मखजन–(अ०पुं०) भण्डार, कोष।
मखतल–(हिं०पुं०) काला रेशम।
मखतूली–(हिं वि०) काले रेशम का बना हुआ।
मखद्विष, मखद्वेषी–(सं०पुं०) राक्षस।
मखधारी–(हिं०पुं०) यज्ञ करने वाला।
मखन–हिं०पुं०) देखो मक्खन।
मखना–(हिं०पुं०) देखो मकुना।
मखनाथ–(सं०पुं०) यज्ञके स्वामी विष्णु
मखनिया–(हिं०पु०) मक्खन बनाने या बेचने वाला, (वि०) जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।
मखमित्र–(स० पुं०) विष्णु; मखराज–(सं०पुं०) यज्ञों में श्रेष्ठ; राजसूय यज्ञ
मखशाला–(सं० स्त्री०) यज्ञशाला, यज्ञ करने का स्थान।
मखस्वामी–(सं० पुं०) यज्ञ के स्वामी, विष्णु।
मखाना–(हिं० पुं०) देखो ताल मखाना
मखान्न–(सं०नपुं०) यज्ञीय अन्न।
मखालय–(सं०पुं०) यज्ञशाला।
मखी–(हिं०स्त्री०) देखो मक्खी।
मखोना–(हिं० पुं०) एक प्रकार का कपड़ा।
मखौल–(हिं०पु०) हँसी दिल्लगी।
मग–(हिं०पुं०) मार्ग, मगधदेश, मगह, एक प्रकार के शाक ब्राह्मण, मगध देश का निवासी।
मगजी–(हिं० स्त्री०) पतली गोट या पट्टी जो कपड़े के किनारे पर लगाई जाती है।
मगण–(सं०पुं०) कविता के आठ गणों मे से एक गण जिसमें तीनों वर्ण गुरू होते हैं।
मगद–(हिं०पुं०) एक प्रकार की मिठाई जो मूँग के आटे और घी से बनाई जाती है; मगदर, मगदल–(हिं०पुं०) एक प्रकार का लड्डू जो मूंग या उड़द के आटे में घी और चीनी मिलाकर मथ कर बनाया जाता है।
मगदा–(हिं०पुं०) मार्ग दिखलाने वाला।
मगदूर–(हि० पुं०) सामर्थ्य।
मगध–(सं० पुं०) दक्षिणी विहार का प्राचीन नाम, मगधजा फल(सं०त्रि०) पिप्पली, पीपल; मगधीय–(सं०वि०) मगध देश सम्बन्धी; मगधेश–(सं०पुं०) मगध देश का राजा, जरासन्ध।
मगन–(हिं० वि०) मग्न, डूबा हुआ, प्रसन्न, लीन।
मगना–हिं०क्रि०) लीन या तन्मय होना।
मगर–(हिं० पुं०) इस नाम का एक प्रसिद्ध जल जन्तु, मीन, मछली, कान में पहरने का मछली के आकार का एक गहना।
मगरमच्छ–(हिं० पुं०) बड़ी मछली, मगर नामक जल जन्तु।
मगेरा–(हिं०पुं०) नदी का ऐसा किनारा जो जोतने बोने योग्य हो।
मगरोसन–(अ०स्त्री०) नस्य, सुंघनी।
मगल–(हि० पु०) ऊख की सीठी, खोई
मगसिर–(हिं०पुं०) अगहन का महीना।
मगह–(हिं०पुं०) मगध देश।
मगहपति–(हिं० पु०) मगध देश का राजा, जरासन्ध।
मगही–(हिं०वि०) मगध सम्बन्धी, मगध देश का, मगह में उत्पन्न (पु०) एक प्रकार का पान।
मगु–(सं० पुं०) शाकद्वीपी ब्राह्मण, देखो मग।
मग्न–(सं० वि०) तन्मय, लीन, प्रसन्न, स्नात, डूबा हुआ, नशे में चूर, नीचे की ओर गिरा हुआ, (पुं०) एक पर्वत का नाम।
मघ–(सं०पु०) धन, सम्पत्ति, पुरस्कार।
मघई–(हिं० वि०) देखो मगही।
मघवती–(सं०स्त्री०) इन्द्राणी।
मघवा–(सं०पुं०) इन्द्र; मघवाप्रस्थ–इन्द्रप्रस्थ नाम का नगर; मघवारिपु–मेघनाद।
मघा–(सं०स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र, इसमें पाँच तारे है।
मघाना–(हिं० पु०) एक प्रकार की बरसाती घास।
मघारना–(हिं० क्रि०) माघ महीने में हल चलाना।
मघी–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का धान।
मघोनी–(सं०स्त्री०) इन्द्राणी।
मघौना–(हिं०पुं०) नीले रंग का वस्त्र।
मङ्ग–(सं०पुं०) नाव का अगला भाग।
मङ्गल–(सं०नपु०) अभीष्ट विषय की सिद्धि, कल्याण, कुशल, शुभ, क्षेम, (पुं०) मंगल ग्रह, भौम, कुज; मङ्गलचण्डिका–दुर्गा; मङ्गलच्छाय–बर का पेड़; मङ्गल पाठक–बन्दीजन, स्तुति पाठक; मङ्गलप्रद–मंगलदाता; मङ्गलप्रदा–शमी वृक्ष; मङ्गलवाद–आशीर्वाद; मङ्गलवाद्य–वह बाजा जो शुभ अवसर पर बजाया जाता है; मङ्गलवार–सोमवार के बाद का वार; मङ्गलशब्द–मगल ध्वनि; मङ्गलसूत्र–वह तागा जो किसी देवता के प्रसाद रूप में कलाई पर बांधा जाता है।
मङ्गला–(सं०स्त्री०) पार्वती, सफ़ेद दूब, पतिव्रता स्त्री, हरिद्रा, हल्दी;
मङ्गलाचरण–(सं०नपुं०) शुभ कार्य के पहले मगल जनक कार्य का आचरण;
मङ्गलामुखी–(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
मङ्गलारम्भ–(सं० पुं०) मंगल जनक कार्य का आरम्भ।
मङ्गल्य–सं०वि० मंगल जनक, सुन्दर, (पु०) पीपल, बेल का वृक्ष, नारियल, कैथ, चन्दन, सोना, सिन्दूर।
माङ्गल्या–(सं०स्त्री०) दुर्गा हल्दी, ऋद्धि, वनी, जटामासी।
मचक–(हिं०स्त्री०) दबाव, बोझ; मचकना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ को इस प्रकार से दबाना कि मचमच शब्द निकले, झटके से किसी पदार्थ को हिलाना।
मचका–(हिं०पुं०) झोंका, धक्का, झूले की पेंग।
मचना–(हिं क्रि०) फैलना, छा जाना, किसी ऐसे कार्य का प्रचलित होना जिसमें कुछ कोलाहल हो।
मचमचाना–(हिं क्रि०) शब्द सहित हिलना।
मचरंग–(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी
मचल–(हिं० स्त्री०) मचलने की क्रिया या भाव; मचलना–(हिं०क्रि०) हठ करना, अड़ना।
मचला–(हि०वि०) मचलने वाला, अनजान बनने वाला, जो बोलने के अवसर पर चुप रहे; मचलाई–हठ
मचलाना–(हिं०क्रि०) किसी को मचलने में प्रवृत्त करना, वमन की इच्छा होना, ओकाई आना।
मचवा–(हिं०पुं०) खाट, पलंग, खटिया या चौकी का पावा, नाव।
मचान–(हि० स्त्री०) चार खम्भों पर बांस का टट्टर बांधकर बनाया हुआ स्थान जिसपर बैठकर लोग शेर आदि का शिकार करते हैं, या किसान खेत की रखवाली करते हैं, दिया रखने की दीवट।
मचाना–(हिं० क्रि०) ऐसा कार्य आरंभ करना जिसमें शब्द हो।
मचिया–(हिं०स्त्री०) ऊँचे पायों की एक आदमी के बैठने योग्य छोटी चारपाई।
मचिलई–(हिं०स्त्री०) मचलने का भाव, मचलाहट।
मचेरी–(हिं० स्त्री०) बैलों के जुए के नीचे लगी हुई लकड़ी।
मच्छ–(हिं०पुं०) बड़ी मछली, दोहे का एक भेद; मच्छ असवारी–मदन, कामदेव; मच्छ घातिनी–मछली फँसाने का लंबा कांटा।
मच्छड़, मच्छर–(हिं० पुं०) एक प्रसिद्ध छोटा फतिंगा जो वर्षा तथा ग्रीष्म ऋतु में गरम देशों में पाया जाता है
मच्छरता–(हिं०स्त्री०) द्वेष, ईर्ष्या, डाह।
मच्छरिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बुलबुल।
मच्छी–(हिं०स्त्री०) देखो मछली; मच्छी कांटा–एक प्रकार की सिलई।
मच्छीमार–धीवर, मल्लाह।
मच्छोदरी–(हिं०स्त्री०) देखो मत्स्योदरी।
मछरंगा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का जलपक्षी, राम चिड़िया।
मछली–(हिं० स्त्री०) सदा जल में रहने वाला एक प्रसिद्ध जीव, मत्स्य, मीन, मछली के आकार का लटकन जो गहनों में लगाया जाता है; मछली–गोता–मल्लयुद्ध की एक युक्ति पेंच; मछली डंड–एक प्रकार की व्यायाम; मछलीदार–दरी की एक प्रकार की बुनावट; मछलीमार–धीवर, मछुवा।
मछुआ, मछुवा–(हिं०पुं०) मछली मारने वाला, धीवर, मल्लाह।
मछेह–(हिं०पुं०) मधुमक्खी का छत्ता।
मजारी–(हिं०स्त्री०) मार्जार, बिल्ली।
मजिल–(हिं० स्त्री०) पड़ाव, स्थान, घर का खंड।
मजिष्टर–(हिं० पु०) देखो मजिस्ट्रेट।
मजीठ–(हिं०स्त्री०) पहाड़ों में होने वाली एक प्रकार की लता जिसकी जड़ और डंठल में से लाल रंग निकाला जाता है। मजीठी–(हिं०वि०) लाल रंग का, (स्त्री०) जोत, रूई ओटने की चरखी में की बीच की लकड़ी।
मजीर (हिं०स्त्री०) केले आदि की घौद।
मजीरा–(हिं० पुं०) कांसे की बनी हुई छोटी छोटी कटोरियों की जोड़ी जिनके बीच में छेद होता है जिनमें से डोरा पिरो कर एक दूसरे से टकराई जाती हैं, इनको बजाकर संगीत के साथ साथ ताल दिया जाता है।
मजूर–(मजूरा), मजूरी–(हिं०पुं०, स्त्री०) कूली, पारिश्रमिक।
मजेज–(हिं०पुं०) अहंकार।
मज्ज–(हिं०स्त्री०) देखो मज्जा।
मज्जन–(सं०नपुं०) स्नान, नहाना, मज्जा।
मज्जना–(हिं०क्रि०) नहाना, गोता लगाना
मज्जफल–(सं०नपुं०) माजूफल।
मज्जर–(सं०पुं०) एक प्रकार की घास।
मज्जा–(सं०स्त्री०) अस्थिसार, हड्डी के भीतर का गूदा; मज्जारस–शुक्र, वीर्य; मज्जासार–जायफल।
मज्जूक–(सं०पुं०) मण्डूक, मेढ़क।
मज्झ, मझ–(हिं०क्रि०वि०) बीच में।
मझधार–(हिं० स्त्री०) नदी की मध्य धारा, बीच धारा, किसी कार्य का मध्य।
मझला–(हिं०वि०) मध्य का, बीच का।
मझाना–(हिं० क्रि०) प्रतिष्ठा होना या करना, बीच में धँसना या धँसाना, पैठना।
मझार–(हिं०क्रि०वि०) बीच में
मझावना–(हिं०क्रि०) देखो मझाना।
मझिया–(हिं० स्त्री०) गाड़ी की पेंदी में लगी हुई लकड़ी। मझियाना–(हिं०क्रि०) मध्य में होकर आना या निकालना, नाव खेना। मझियारा–(हिं० वि०) बीच का, मध्य का।
मझुआ–(हि० पुं०) हाथ में पहरने की एक प्रकार की चड़ी।
मझेला–(हिं०पुं०) जूते का तल्ला सीने

का चमार का एक अस्त्र ।
मझोला–(हिं० वि०) मझला, बीच का, मध्यम आकार का, जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा हो ।
मझोली–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की बैल गाड़ी, जूता सीने की एक प्रकार की टेकुरी ।
मञ्च–(सं० पुं०) पीढा, मचिया, ऊँचा बना हुआ मण्डप ; **मञ्चकाश्रय**–खटमल; **मञ्चमण्डप**–खेत में बनी हुई मचान ।
मञ्जर–(सं०नपुं०) मुक्ता, मोती ।
मञ्जरि–(सं० स्त्री०) छोटे पौधे, लता आदि का नया कल्ला, कोंपल, फल या फूलों का गुच्छा । **मञ्जरित**–(सं० वि०) अंकुरित, मुकुलित ।
मञ्जरी–(सं०स्त्री०)मुक्ता, मोती, लता, तुलसी, एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में चौदह अक्षर होते हैं । **मञ्जरीक**–(सं० पुं०) मीती, तिल का पौधा, तुलसी, बेंत, अशोक का वृक्ष ।
मञ्जिका–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
मञ्जिफला–(सं०स्त्री०) कदली, केला ।
मञ्जिष्ठा–(सं०स्त्री०) मजीठ ।
मञ्जीर–(सं० पुं०) नूपुर, घुंघरू, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं । **मञ्जीरक**–(सं०पुं०) जिसमें से घुंघरू के समान शब्द निकलते हों ।
मञ्जु–(सं०वि०)मनोहर, सुन्दर: **मञ्जुकेशी**–श्रीकृष्ण ; **मञ्जुगमना**–हँसी; **मञ्जुघोष**–एक बौद्धाचार्य का नाम, **मञ्जुनाशी**–दुर्गा का एक नाम ।
मञ्जुपाठक–(सं०पु०) शुक पक्षी,तोता, (वि०) अच्छी तरह पढ़ने वाला ।
मञ्जुप्राण–(सं०पुं०) ब्रह्मा । **मञ्जुभाषी**–(सं०वि०) सुन्दर बोलने वाला; एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं ।
मञ्जुल–(सं०वि०)मनोहर, सुन्दर,(नपुं०) नदी या ताल का किनारा, एक प्रकार का पक्षी, अंजीर का पेड़ । **मञ्जुवादी**–(सं० वि०) मीठे वचन बोलने वाला । **मञ्जुहासिनी**–(सं०स्त्री०)एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं ।
मञ्जुषा–(सं०स्त्री०) मंजूषा, पिटारी ।
मञ्जुसौरम–(सं०नपुं०) एक प्रकार का छन्द ।
मञ्जुषा–०(सं०स्त्री०) पिटारी ।
मञ्जूसौरभ–(सं० नपुं०) एक प्रकार का छन्द ।
मञ्जूषा–(सं०स्त्री०)पिटक, पिटारी ।
मट–(हिं०पुं०) मिट्टी का बड़ा पात्र, मटका ।
मटक–(हिं० स्त्री०) मटकने की क्रिया या भाव, चाल, गति, हाव भाव ।
मटकना–(हिं०क्रि०) अंगों को हिलाते हुए चलना, लचक कर या चोचला दिखाते हुए चलना, लौटना, फिरना, नेत्र, भृकुटी, अँगुली आदि का इस प्रकार चलाना जिसमें कुछ लचक या चोचला देख पड़े । **मटकान**–(हिं० स्त्री०)नृत्य, नाचना, मटक, चोचला ।
मटका–(हिं०पुं०) मिट्टी का बड़ा घड़ा जिसका मुख चौड़ा होता है ।
मटकाना–(हिं०क्रि०)अङ्गों को नखरे के साथ हिलाना डुलाना, चमकाना, मटकने में दूसरे को लगाना ।
मटकी–(हिं०स्त्री०)छोटा मटका, कमोरी, मटकाने का भाव, मटक ।
मटकीला–(हिं० वि०) लटकने वाला, चोचला के साथ अङ्गों को हिलाने वाला । **मटकौअल**–(हिं०स्त्री०) मटकने की क्रिया या भाव, मटक ।
मटना–(हिं०पु०) एक प्रकार का गन्ना,
मटमंगरा–(हिं० पुं०) विवाह के पहले की एक रीति जिसमें किसी शुभ दिन वर या वधू के घर की स्त्री गाती बजाती गाँव के बाहर जाती है ।
मटमैला–(हिं० वि०) मिट्टी के रंग का, धूमिल ।
मटर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा अन्न, इसकी फलियों को छीमी कहते हैं जो मीठी होती हैं और कच्ची भी खाई जाती है ।
मटरगश्त–(हिं० पुं०) टहलना, इधर उधर घूमना टहलना, सैर सपाटा ।
मटरगश्ती–(हिं०स्त्री०)सैरसपाटा ।
मटरबोर–(हिं०पुं०)मटर के बराबर के घुंघरू ।
मटराला–(हिं०पुं०) जव के साथ मिला हुआ मटर ।
मटलनी–(हिं०स्त्री०)मिट्टी का कच्चा पात्र
मटा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का लाल चींटा जो छत्ता बना कर आम के पेड़ों पर रहता है ।
मटिआना–(हिं० क्रि०) अशुद्ध पात्र को मिट्टी आदि लगाकर स्वच्छ करना, मिट्टी से ढाँपना; सुनकर अनसुनी करना; देखो महटियाना ।
मटिया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी, मृत शरीर, शव, (वि०) मिट्टी के समान,मटमैला एक प्रकार का पक्षी । **मटियामसान**, **मटियामेट**–(हिं० वि०) नष्ट, भ्रष्ट ।
मटियार–(हिं० पुं०) वह खेत जिसमें चिकनी मिट्टी अधिक हो ।
मटियाला, मटीला–(हिं०वि०)मटमैला ।
मटुका–(हिं०पुं०) देखो मटका ।
मटुकी–(हिं०स्त्री०) देखो मटकी ।
मट्टक–(सं०पुं०)एक प्रकार की मछली ।
मट्टी–(हिं०स्त्री०) देखो मिट्टी ।
मट्ठर–(हिं०वि०) आलसी,
मट्ठा–(हिं०पुं०)मथा हुआ दही जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो, तक्र, छाछ ।
मट्ठी–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का पकवान
मठ–(सं०पुं०) रहने का स्थान, निवासस्थान, छात्रावास, देवगृह, मन्दिर, वह घर जिसमें एक महन्तकी अधीनता में बहुत से साधु रहते हैं ।
मठधारी–(हिं० पुं०) मठाधीश, अनेक मठों का अधिकारी ।
मठर–(सं० पुं०) वह जो मद्य पीकर मतवाला हुआ हो ।
मठरना–(हिं०पुं०) सोनारों या कसेरों की एक प्रकार की छोटी हथौड़ी ।
मठरी–(हिं०स्त्री०) देखो मट्ठी, टिकिया ।
मठाधिपति, मठाधीश–(सं०पुं०) मठ का महन्त ।
मठान–(हिं० पु०) देखो मठरना ।
मठिया–(हिं०स्त्री०) फूल धातु की बनी हुई हाथ की चूड़ियाँ, छोटी कुटी ।
मठी–(हिं० स्त्री०) छोटा मठ, मठ का अधिकारी या महन्त ।
मठुलिया–(हिं०स्त्री०) टिकिया, या मठरी नाम का पकवान ।
मठोर–(हिं० स्त्री०) दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी ।
मठोरना–(हिं०क्रि०) छोटी हथौड़ी से धीरे धीरे ठोंकना ।
मठौरा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बढई का रन्दा ।
मड़ई–(हिं० स्त्री०) पर्णशाला, छोटी कुटी या झोपड़ी ।
मड़क–(हिं० स्त्री०) गुप्त बात, रहस्य ।
मड़मड़ाना–(हिं०क्रि०)देखो मरमराना ।
मडराना–(हिं० क्रि०)देखो मंडराना ।
मड़ला–(हिं० पुं०) अनाज रखने की छोटी कोठरी ।
मड़वा–(हिं०पु०) देखो मण्डप ।
मड़वारी–(हिं०पु०) देखो मारवाड़ी ।
मड़हट–(हिं०पुं०) मरघट ।
मड़हा–(हिं० पुं०) मिट्टी का बना हुआ छोटा घर, भूना हुआ चना ।
मड़ा–(हिं० पुं०) कोठी ।
मड़ाड़–(हिं० पुं०) कच्चा तालाब, कुवें आदि में का गड्ढा जो भीत के गिरने से बन गया हो ।
मड़ुआ–(हिं० पुं०) बाजरे की जाति का एक क्षुद्र अन्न, एक प्रकार का पक्षी ।
मड़ैया–(हिं० स्त्री०) पर्णशाला, कुटी, मिट्टी का बना हुआ छोटा घर,मड़ई
मड़ोड़, मड़ोर–(हिं०स्त्री०) देखो मरोड़ ।
मड़ोड़ी–(हिं०स्त्री०) लोहे की छोटी पेंचदार कँटिया ।
मढ़–(हिं०पु०) दांत के ऊपर की मैल, (वि०)अड़कर बैठने वाला, जो हटाने पर भी जल्दी न हटे । **मढना**–(हिं० क्रि०) चारो ओर से घेर लेना, चौफेर से लपेटना, ढोल, मृदंग आदि बाजों पर चमड़ा लपेटना; बल पूर्वक किसी पर आरोपित करना, किसीके गले लगाना;आरंभ होना, शुरूहोना ।
मढ़वाना–(हिं० क्रि०) मढ़ने का काम दूसरे से कराना ।
मढ़ा–(हिं० पुं०) मिट्टी का बना हुआ छोटा घर ।
मढ़ाई–(हिं० स्त्री०) मढ़ने का काम या शुल्क ।
मढ़ाना–(हिं०क्रि०) मढ़ने का काम दूसरे से कराना ।
मढ़ी–(हिं०स्त्री०)छोटा मठ, छोटा देवालय, छोटा घर, छोटा मण्डप, पर्णशाला, झोपड़ी ।
मढ़ैया–हिं० वि०) मढने वाला ।
मणि–(सं०पुं०) बहुमूल्य पत्थर, रत्न, बकरे के गले की थैली, लिंग का अग्रभाग, एक नाग का नाम, मणिबन्ध, सर्वश्रेष्ट व्यक्ति ।
मणिक–(सं०नपुं०) मिट्टी का घड़ा ।
मणिकण्ठ–(सं०पुं०) चास नामक पक्षी।
मणिकर्णिका–(सं०स्त्री०) काशी का एक तीर्थ बिशेष, रत्न जड़ा हुआ कान का एक आभूषण ।
मणिकानन–(सं० पुं०) कण्ठ, गला, रत्नवन ; **मणिकार**–(सं० पुं०) रत्नों को जड़कर गहने बनाने वाला ; **मणिकूट**–(सं०पु०) कामरूप के एक पर्वत का नाम; **मणिकेतु**–(सं०पुं०) एक बहुत छोटा पुच्छल तारा ; **मणिगुण**–(सं०पुं०) एक वर्णिक वृत्त जिसको शशिकला या शरभ भी कहते हैं ; **मणिगुणनिकर**–एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं ; **मणिग्रीव**–(सं०पु०) कुबेर के एक पुत्र का नाम; **मणिचूड़**–(सं०पुं०) एक विद्याधर का नाम ।
मणित–(सं०नपुं०) मैथुन के समय किया जानेवाला वार्तालाप ।
मणितारक–(सं०पु०) सारस पक्षी ; **मणिदोष**–(सं०पुं०) रत्नादि के दोष ; **मणिधर**–(सं० पुं०) सर्प, साँप ; **मणिपुर**–(सं० पु०) तन्त्र के अनुसार षट्चक्रों में से एक जो नाभि देश में अवस्थित है ; **मणिप्रभा**–(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम ; **मणिबन्ध**–(सं०पु०) करग्रन्थि, कलाई, गट्टा, नव अक्षर के एक वृत्त का नाम ; **मणिबीज**–(सं०पुं०) अनार का वृक्ष; **मणिभद्र**–(सं०पुं०) शिवजी के एक प्रधान गण का नाम; **मणिभावर**–(सं०पुं०) सारस पक्षी ; **मणिभू**–(सं०स्त्री०) वह खान जिसमें से रत्न निकलते हों ; **मणिभूमि**–(सं०स्त्री०) रत्नों की खान ; **मणिमञ्जरी**–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं ; **मणिमण्डप**–(सं०पुं०) रत्नमय गृह; **मणिमध्य**–(सं०नपुं०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रति चरणमें नवअक्षर होते हैं ; **मणिमन्थ**–(सं०नपुं०) सेंधा नमक; **मणिमाला**–(सं०स्त्री०) मणियों की माला, हार, चमक, दीप्ति, लक्ष्मी, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं ; **मणिरत्न**–(सं०नपुं०)हीरा; **मणिराग**–(सं०नपुं०) हिंगुल, सिंगरिफ़; **मणि-**

राज–(सं०पुं०) श्रेष्ठ मणि, उत्तम रत्न; **मणिबीज**–(सं०पुं०) अनार का पेड़; **मणिश्याम**–(सं०पुं०) इन्द्रनील मणि, नीलम; **मणिसर, मणिसूत्र**–(सं०पु०) मोतियों की माला।

मणी–(हिं०पुं०, सर्प साप, (सं०स्त्री०)मणि

मणीवक–(सं०नपुं०) पुष्प, फूल।

मण्ड–(सं०पुं०) अन्न आदि का रस, सार, रेंडी का वृक्ष, दही का पानी, सजावट, मेढ़क, मांड़।

मण्डक–(सं०पु०) मैदे की एक प्रकार की रोटी, माधवी लता, गीत का एक अङ्ग।

मण्डन–(सं०नपुं०) आभूषण, गहना, श्रृंगार करना, सजाना, प्रमाण आदि द्वारा किसी मत को सिद्ध या पुष्ट करना।

मण्डप–(सं०पुं०नपुं०) मनुष्यों के विश्राम करने का स्थान जो चारो ओर से खुला रहता है, देवालय के ऊपर का गोल भाग, चंदवा, देवगृह; **मण्डप क्षेत्र**–पवित्र स्थान; **मण्डपिका**–(सं०स्त्री०) छोटा मंडप, मढी।

मण्डल–(सं०नपुं०) चन्द्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़ने वाला घेरा, वृत्ताकार घेरा, समाज, समूह, शरीर की आठ सन्धियों में से एक, ग्रह घूमने की कक्षा, गेंद, गोल चिह्न, चक्र, पहिया, बिम्ब, छाया; **मण्डलक**–(सं०नपु०) बिम्ब, छाया, दर्पण, मण्डलाकार व्यूह; **मण्डलाकार**–(सं०वि०) गोल; **मण्डलायित**–(सं० नपुं०) वर्तुल, गोलाकार;

मण्डलित–(सं०वि०) गोल किया हुआ।

मण्डली–(सं०स्त्री०) गोष्ठी, समूह, मनुष्यों का संघ, जमघट।

मण्डलीक, मण्डलेश, मण्डलेश्वर–(सं०पुं०) बारह राजाओं का अधिपति

मण्डा–(सं०स्त्री०) सुरा, मदिरा।

मण्डित–(सं०वि०) भूषित, सजाया हुआ, पूरित, भरा हुआ।

मण्डूक–(सं०पुं०) भेक, मेढक, प्राचीन काल का एक बाजा एक प्रकार का नाच, घोड़े की एक जाति, दोहे का एक भेद, रुद्र ताल का एक भेद।

मण्डूकी–(सं० स्त्री०) ब्राह्मी बूटी, निर्लज्ज स्त्री।

मण्डूर–(सं०पुं०) गलाये हुए लोहे का मल।

मतंग–(हिं०पुं०) देखो मतङ्ग, हाथी, मेघ, बादल।

मतंगा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बांस।

मतंगी–(हिं०स्त्री०) हाथी का सवार।

मत–(सं०नपुं०) सम्मति, राय, आशय, धर्म, पन्थ, ज्ञान, सम्प्रदाय, (हिं०क्रि० वि०) निषेध वाचक शब्द, नहीं।

मतङ्ग–(सं०पुं०) मेघ, बादल, एक ऋषि का नाम जो शबरी के पुत्र थे, एक दानव का नाम।

मतंगज–(सं०पुं०) हस्ती, हाथी।

मतना–(हिं०क्रि०) आशय स्थिर करना, उन्मत्त होना।

मतरिया–(हिं०स्त्री०) देखो माता, (वि०) मत देने वाला।

मतवार, मतवारा–(हिं० वि०) देखो मतवाला।

मतवाला–(हिं०वि०) उन्मत्त, पागल, व्यर्थ का गर्व करने वाला, (पुं०) शत्रु को मारने के लिये पहाड़ या गढ़ पर से फेंका हुआ पत्थर, एक प्रकार का कागज का बना हुआ खिलौना जिसकी पेंदी भारी होती है इसलिये फेंकने पर यह खड़ा हो जाता है।

मता–(हिं०पुं०) देखो मत, (स्त्री०) देखो मति; **मताधिकार**–(सं०पुं०) मत देने का अधिकार; **मतानुयायी**–(सं०पुं०) किसी के मत के अनुसार आचरण करने वाला, किसी के मत को मानने वाला।

मतारी–(हिं०स्त्री०) महतारी, माता।

मतावलम्बी–(सं०पुं०) किसी एक मत सिद्धान्त या सम्प्रदाय का अवलंबन करने वाला।

मति–(सं०स्त्री०) बुद्धि, इच्छा, स्मृति, सम्मति, (हिं०क्रि०वि०) देखो मत, (हिं०अव्य०) सदृश, समान; **मतिगर्भ**–बुद्धिमान्, चतुर; **मतिदर्शन**–(सं०नपुं०) वह शक्ति जिससे दूसरे के मन का भाव जाना जाता है; **मतिपूर्व**–(सं०अव्य०) बुद्धिपूर्वक, सोच विचार कर; **मतिभेद**–(सं०पुं०) बुद्धि की भिन्नता; **मतिभ्रंश**–(सं०पुं०) बुद्धिनाश, पागलपन; **मतिभ्रम**–(सं०पुं०) बुद्धिभ्रंश, बुद्धिनाश; **मतिभ्रान्ति**–(सं०स्त्री०) मतिभ्रम।

मतिमत, मतिमन्त–(सं०वि०) बुद्धिवान्, विचारवान्; (पुं०) शिव।

मतिमान–(सं०वि०) बुद्धिमान्, विचारवान्

मतिमाह–(हिं०वि०) मतिमान।

मतिविभ्रम–(सं०पुं०) उन्माद रोग, बुद्धिनाश।

मतिशाली–(हिं०वि०) मेधावी, बुद्धिमान्

मती–(हिं०स्त्री०) देखो मति, (क्रि०वि०) मत

मतीरा–(सं०पुं०) कलिन्दा, तरबूज।

मतीश्वर–(सं०पुं०) विश्वकर्मा का एक नाम।

मतौस–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाजा

मत्कुण–(सं०पुं०) खटमल, बिना मोछ का आदमी, नारिकेल, नारियल।

मत्कुणिका–(सं०स्त्री०) कुमार की एक मातृका का नाम।

मत्त–(सं०पुं०) धतूरा, कोयल, भैंस; (वि०) मतवाला, उन्मत्त, पागल, प्रसन्न, (हिं०स्त्री०) मात्रा; **मत्तकाशिनी**–(सं०स्त्री०) उत्तम नारी; **मत्तकोश**–(सं०पु०) हस्ती, हाथी; **मत्तगामिनी**–(सं०स्त्री०) उन्मत्त की तरह चलने वाली स्त्री; **मत्तता**–(सं०स्त्री०) मतवालापन; **मत्तताई**–(हिं०स्त्री०) मतवालापन।

मत्तनाग–(सं०पुं०) मतवाला हाथी।

मत्तमयूर–(सं०पु०, मेघ, बादल, पंद्रह अक्षरों का एक वृत्त।

मत्तमातंग लीलाकर–(सं०पुं०) दण्डक वृत्त का एक भेद।

मत्त वारण–(सं०नपुं०) मकान के आगे की दालान, आंगन के ऊपर की छत, सुपारी का चूरा, मतवाला हाथी।

मत्तविलासिनी–(सं०स्त्री०) एक छन्द का नाम।

मत्तसमक–(सं०पुं०) चौपाई छन्द का एक भेद।

मत्ता–(सं०स्त्री०) मदिरा, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं, एक भाववाचक प्रत्यय जो "पन" के अर्थ का होता है यथा–बुद्धिमत्ता।

मत्ताक्रीड़ा–(सं०स्त्री०) तेईस अक्षरों का एक छन्द।

मत्तेभगमना–(सं०स्त्री०) मतवाले हाथी के समान गति वाली स्त्री।

मत्तेभ विक्रीड़ित–(सं०नपुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में २१ अक्षर होते हैं।

मत्था–(हिं०पुं०) ललाट, माथा, सिर, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग

मत्सर–(सं०पुं०) किसी का विभव या सुख न देख सकना, ईर्षा, डाह, जलन, क्रोध, (वि०) कृपण, कंजूस, डाह करने वाला; **मत्सरता**–(सं०स्त्री०) डाह, जलन; **मत्सरी**–(सं०वि०) दूसरे से डाह रखने वाला।

मत्स्य–(सं०पुं०) मीन, मछली, विराट् देश, नारायण, बारहवीं राशि, छप्पय छंद का एक भेद; **मत्स्यगन्धा**–(सं०स्त्री०) जलपीपल, व्यास की माता सत्यवती का एक नाम, सोमलता; **मत्स्यधानी**–(सं०स्त्री०) मछली रखने का पात्र; **मत्स्यनारी**–(सं०स्त्री०) देखो मत्स्याङ्गना; **मत्स्यपुराण**–(सं०नपुं०) अठारह महापुराणों में से एक पुराण का नाम; **मत्स्यबन्ध**–(सं०पु०) मछली पकड़ने वाला, धीवर; **मत्स्यबन्धन**–(सं०पुं०) मछली पकड़ने की बंसी;

मत्स्यमुद्रा–(सं०स्त्री०) सभी पूजाओं में की जाने वाली एक तान्त्रिक मुद्रा;

मत्स्यरंग–(सं०पुं०) एक प्रकार की चिड़िया; **मत्स्यराज**–(सं०पुं०) विराट देश का राजा, रोहू मछली।

मत्स्याक्षक–(सं०पु०) सोमलता।

मत्स्यांगना–(सं०स्त्री०) मत्स्यनारी, वह प्राणी जिसका मुख स्त्री के समान तथा बाकी शरीर का भाग मछली के समान होता है।

मत्स्यावतार–(सं०पुं०) भगवान् का मत्स्यरूपी अवतार।

मत्स्याशन–(सं०पु०) मत्स्यभक्षक, मछली खाने वाला।

मत्स्यासन–(सं०नपुं०) तान्त्रिकों के अनुसार योग का एक आसन।

मत्स्येन्द्रनाथ–(हिं०पुं०) एक हठ योगी साधु जो गोरखनाथ के गुरु थे।

मत्स्योदरी–(सं०स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती, काशी के एक तीर्थ का नाम, मछोदरी।

मत्स्योपजीवी–(सं०पुं०) धीवर, मल्लाह

मथन–(सं०पुं०) मथने की क्रिया या भाव, विलोना, गनियारी नामक वृक्ष, एक अस्त्र का नाम, (वि०) मथने वाला।

मथना–(हिं०क्रि०) किसी तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से वेग पूर्वक हिलाना या चलाना, रगड़ना, चला कर मिलाना, ध्वंस करना, नष्ट करना, घूम घूम कर पता लगाना, किसी काम को बारंबार करना, (पुं०) मथानी, रई।

मथनियां–(हिं०स्त्री०) मथनी, (पुं०) दूध को मथ कर मक्खन निकालने वाला

मथनी–(हिं०स्त्री०) मथने की क्रिया; वह मटका जिसमें दही मथा जाता है

मथवाह–(हिं०पुं०) पीलवान्, महावत।

मथनी–(हिं०स्त्री०) काठ का डंडा जिसके सिरे पर एक खोरिया लगी रहती है इससे दही में मथ कर मक्खन निकाला जाता है।

मथित–(सं०वि०) मथा हुआ, घोलकर भली भांति निकाला हुआ।

मथुरा–(सं०स्त्री०) यमुना नदी के किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर जो पुराणों के अनुसार सात पुरियों में से एक है; **मथुरानाथ**–श्रीकृष्ण।

मथुरिया–(हिं०वि०) मथुरा से संबंध रखने वाला, मथुरा का। **मथुरेश**–(सं०पु०) श्रीकृष्ण।

मथौरा–(हिं०पु०) बढ़इयों का एक प्रकार का रन्दा

मथौरी–(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के सिर पर पहरने का एक गहना।

मथ्य–(सं०वि०) मथने योग्य, (हिं०पु०) माथा।

मदंध–(हिं०वि०) देखो मदान्ध।

मद–(सं०पुं०) एक गन्धयुक्त द्राव जो मतवाले हाथी की कनपटियों में से बहता है, आनन्द, हर्ष, वीर्य, एक दानव का नाम, कामदेव, उन्मत्तता, पागलपन, गर्व, अहंकार, मद्य, उन्माद, रोग, मतवालापन, कस्तूरी, (वि०) मत्त, मतवाला।

मदक–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत्व से बनाया जाता है, तमाखू की तरह इसको लोग चिलम पर रख कर पीते हैं।

मदकची–(हिं०वि०) मदक पीने वाला

मदकद्रुम–(सं०पुं०) ताड़ का पेड़।

मदकर–(सं०पु०) धतूरे का पेड़, सुरा (वि०) मदसे उन्मत्त करने वाला।

मदकल–(सं०पुं०) मस्त हाथी, मतवाला, (वि०) उन्मत्त, बावला।

मदकारी–(हिं०वि०) जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई हो।
मदकी–(हिं०वि०) मदक पीने वाला, मदकची।
मदखूला–(अ०स्त्री०) रखेली औरत।
मदगन्धा–(सं०स्त्री०) मदिरा,
मदगल–(हिं०वि०) मत्त, बावला।
मदजल–(सं०नपुं०)मत्त हाथी के मस्तक का स्राव।
मदन–(सं०पुं०) कामदेव,वसन्त,मत्तता, धतूरा, मैनफल, भौंरा, उड़द, खैर का वृक्ष, बकुल वृक्ष, मौलसिरी, कामशास्त्रके अनुसार एक प्रकार का आलिंगन, मैना, अखरोट का वृक्ष, भोग, ज्योतिष में लग्न से सातवें स्थान का नाम, प्रेम, एक प्रकार की गीत, रूपमाला छन्द का दूसरा नाम,छप्पय का एक भेद,खंजन पक्षी
मदनक–(सं०पुं०) दमनक, दौना, मोम, खैर, धतूरा, मैनफल, मौलसिरी।
मदनकदन–(सं०पु०) शिव, महादेव।
मदनगृह–(सं०नपु०) स्त्री की योनि।
मदनगोपाल–(स० पुं०) श्रीकृष्ण।
मदनचतुर्दशी–(सं०स्त्री०) चैत्र शुक्ला चतुर्दशी। मदनचोर–(स०पुं०) एक प्रकार का छोटा पक्षी। मदनताल–(सं०पुं०) संगीत में एक प्रकार का ताल। मदनदमन, मदनदहन–(स० पुं०) शिव, महादेव। मदन दोला–(सं०स्त्री०) इन्द्र ताल का एक भेद। मदननालिका–(सं०स्त्री०) दुश्चरित्रा स्त्री। मदनपक्षी–(सं०पुं०) खंजन पक्षी। मदनपति–(स०पुं०) इन्द्र, विष्णु। मदनपाठक–(सं०पुं०)कोकिल, कोयल। मदनपाल–(सं०पु०)रतिपति, कामदेव। मदनफल–(सं०पुं०) मैनफल। मदन बान–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत अच्छी तीव्र गन्धका बेले का फूल। मदनभवन–(सं०नपुं०) मदनगृह। मदनमञ्जरी–(सं०स्त्री०) यक्षराज दुंदुभि की कन्या, नायिका का एक भेद। मदनमनोरमा–(सं० स्त्री०) सवैया छन्द का एक भेद, इसका दूसरा नाम दुर्मिल है। मदनमनोहर–(सं०पुं०) दण्डक का एक भेद, मनोहर छन्द। मदन-मल्लिका–(सं०स्त्री०) मल्लिका वृत्ति का एक नाम। मदनमस्त–(हिं०पु०) चंपे की जाति का उग्र तथा सुन्दर गन्ध का एक फूल। मदनमहोत्सव–(सं०पुं०) चैत्र शुक्ला एकादशी से लेकर इसी पक्षकी चतुर्दशी तक होने वाला प्राचीन काल का एक उत्सव, नायिका एक भेद। मदनमोदक, मदनमालिनी–(सं० पु०) (सं०स्त्री०) सवैया छन्द का एक भेद। मदनमोहन–(सं० पु०) श्रीकृष्ण। मदनरिपु–(सं०पुं०) शिव, महादेव। मदनरेखा–(सं०स्त्री०) विक्रमादित्य की माता का नाम। मदनललिता–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह वर्ण होते हैं। मदनलेखा–(सं०पुं०) नायक नायिका के परस्पर प्रेम का पत्र। मदनशलाका–(सं० स्त्री०) सारिका, मैना, कोयल।
मदनसदन–(सं०स्त्री०) स्त्री की योनि।
मदनसारिका–(सं०स्त्री०) मैना पक्षी।
मदनहर–(सं०पुं०) देखो मदनहरा।
मदनहरा–(सं०स्त्री०) चालीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
मदना–(सं०पुं०) सारिका पक्षी, मैना।
मदनांकुश–(सं०पुं०) पुरुष चिह्न,लिंग।
मदनान्तक–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
मदनान्ध–(सं०वि०) कामान्ध।
मदनायुध–(सं०पुं०) कामदेव का अस्त्र
मदनारि–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
मदनालय–(सं०पुं०) स्त्री चिह्न, भग।
मदनावस्था–(सं०स्त्री०) कामुकों की विरहावस्था।
मदनास्त्र–(सं०पुं०) देखो मदनायुध।
मदनी–(सं०स्त्री०) सुरा,मदिरा,कस्तूरी, मेथी।
मदनीया–(सं०स्त्री०) मल्लिका वृक्ष,बेला
मदनोत्सव–(सं०पु०) एक प्रकार का उत्सव; देखो मदन महोत्सव।
मदनोत्सवा–(सं०स्त्री०)स्वर्गवेश्या, अप्सरा
मदनोद्यान–(सं०नपुं०) सुन्दर बगीचा।
मदमत्त–(सं०वि०) मद में चूर, एक छन्द का नाम।
मदराग–(सं०पुं०) मद में चूर मनुष्य, पागल मुर्गा।
मदलेखा–(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं, मतवाले हाथियों की श्रेणी।
मदवारि–(सं०नपुं०) हाथी का मदजल
मदसार–(सं०पुं०) ताल वृक्ष, शहतूत का वृक्ष।
मदस्थल–(सं०नपुं०) मदिरा पीने का स्थान।
मदाढ्य–(सं०वि०) मदयुक्त, मदान्ध।
मदान्ध–(सं०वि०) मदमत्त,मद में चूर।
मदाम्बर–(सं०पुं०) पागल हाथी।
मदार–(सं०पुं०) हाथी, सुअर, कामुक, (हिं०पुं०) आक का वृक्ष, अकवन; मदारगदा–धूप में सुखाया हुआ मदार का दूध।
मदारिय, मदारी–(हिं०पुं०) मुसलमान फ़कीर संप्रदाय का एक व्यक्ति, ये लोग शाह मदार के अनुयायी हैं, बन्दर भालू आदि का तमाशा दिखलाने वाला, क़लन्दर, बाजीगर।
मदालस–(सं० नपुं०) मदके कारण आलस्य।
मदालसा–(सं०स्त्री०) गन्धर्वराज विश्वकेतु की कन्या जिसको पातालकेतु राक्षस उठाले गया था ओर उसने इसको पाताल में रक्खा था।
मदावस्था–(सं०स्त्री०) पागलपन की अवस्था।
मदिया–(हिं०स्त्री०) मादा प्राणी।
मदिरा–(सं०स्त्री०) मद्य, वासुदेव की पत्नी का नाम, बाईस अक्षरों का एक वर्णिक छन्द। मदिराक्ष–(सं० वि०) जिसकी आंखें मदसे भरी हों।
मदिराक्षी–(सं०स्त्री०) उन्मत्त आंखों वाली; मदिरागृह–(सं०नपुं०)मद्यशाला,
मदिष्णु–(सं०वि०) मद में आनन्द लेने वाला।
मदीय–(सं०वि०) मेरा।
मदीला–(हिं०वि०) मद में भरा हुआ,
मदुकल–(हिं०पुं०) दोहे का एक भेद, जिसका दूसरा नाम गयन्द है।
मदोत्कट–(सं०पुं०) कपोत, कबूतर, (वि०) मन्दोन्मत्त।
मदोद्धत–(सं०वि०) मत्त, अभिमानी, घमंडी।
मदोन्मत–(सं०वि०) उन्मत्त,
मदोल्लापी–(सं०पुं०) कोकिल,कोयल।
मदोवै–(हिं०स्त्री०) देखो मन्दोदरी।
मद्दूसाही–(हिं०पु०) एक प्रकार का पुराना तांबे का चौकोर पैसा।
मद्धिम–(हिं०वि०) मध्यम, मन्दा, किसी की अपेक्षा कम अच्छा।
मद्धे–(हिं०अव्य०) संबंध में, विषय में, बीच मे, लेखे में।
मद्य–(सं०नपुं०) सुरा, मदिरा; मद्यप–(सं० वि०) मदिरा पीने वाला; मद्यपान–(सं०नपुं०) मदिरा पीना।
मद्यबीज–(सं०नपु०) खमीर जो मद्य बनाने के लिये उठाया जाता है।
मद्यवासिनी–(सं०स्त्री०) धव का पेड़।
मद्यमोद–(सं०पुं०)बकुल वृक्ष,मौलसिरी
मद्र–(स०पुं०) एक प्राचीन जनपद जो वर्तमान रावी और झेलम नदी के बीच में था, हर्ष, आनन्द; मद्र-कार–मंगल कारक; मद्रसुता–नकुल तथा सहदेव की माता का नाम।
मध–(हिं०पुं०) देखो मध्य; (अव्य०) में
मधन–(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम
मधिम–हिं०वि०) देखो मध्यम;मद्धिम।
मधु–(सं०नपु०) मद्य, जल, पानी, दूध, मकरन्द, महुवे का वृक्ष, अमृत, सुधा, घी, मुलेठी, मक्खन, शिव, महादेव, घी, मिश्री, अशोक वृक्ष, एक दैत्य जिसको विष्णु ने मारा था, मीठा रस, चैत का महीना, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दो लघु वर्ण होते हैं, एक राग का नाम, (वि०) मीठा, स्वादिष्ट।
मधुक–(सं०नपुं०) जेठीमद, त्रिपु, सीसा, महुवे का पेड़ या फूल।
मधुकण्ठ–(सं०पुं०) कोकिल, कोयल।
मधुकर–(सं०पुं०)भ्रमर, भौंरा, कामी पुरुष। मधुकरी–(सं०स्त्री०) भ्रमरी, भौंरी, वह भिक्षा जिसमें पका हुआ अन्न दिया जाता है। मधुलोचन–(सं०पुं०) शिव, महादेव। मधुका–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की लता।
मधुकुम्भा–(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मात्रिका का नाम। मधुकृत्–(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा। मधुकैटभ–(सं०पुं०) मधु और कैटभ नाम के दो, असुर जिनको विष्णु ने मारा था।
मधुकोष–(सं०पुं०)मधुमक्खी का छत्ता
मधुगन्ध–(सं०पुं०)मीठी महक, अर्जुन वृक्ष, मौलसिरी का पेड़। मधुगायन, मधुघोष–(सं०पुं०) कोकिल, कोयल, मधुचक्र–(सं०नपुं०) मधुमक्खीं का का छत्ता। मधुच्छदा–(सं० स्त्री०) मोरशिखा नाम की बूटी। मधुज–(सं०नपुं०) सिक्थ, मोम। मधुजा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, सीता, शक्कर।
मधुजित्–(सं०पुं०)विष्णु। मधुजीरक–(सं०पुं०) सौंफ। मधुतृण–(स०पुं०) ईक्षु ईख। मधुत्व–(सं०नपुं०) मधुरत्व, मीठापन। मधुदीप–(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव। मधुदोह–(स०पुं०) मधु निकालनें की क्रिया। मधुद्रुम–(स०पुं०) महुवे का वृक्ष। मधुद्विष्–(सं०पुं०) विष्णु। मधुधारा–(सं०स्त्री०) मधु की वृष्टि। मधुनी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा। मधुप–(सं०पु०) भ्रमर, भौंरा, मधु की मक्खी। मधुपटल–(सं०पुं०) मधुमक्खी का छत्ता।
मधुपति–(सं०पुं०)श्रीकृष्ण। मधुपर्क–(स० पुं०) पूजन का एक उपचार जिसमें दही, घी, जल, मधु और चीनी मिलाकर देवताओं को चढ़ाया जाता है। मधुपाका–(सं०स्त्री०) षड् भुजा, खर्बूजा। मधुपायी–(स०पु०) भ्रमर, भौंरा, मधु पीने वाला।
मधुपीलु–(स०पुं०)अखरोट का वृक्ष।
मधुपुरी–(सं०स्त्री०) मथुरा नगरी।
मधुपुष्प–(सं०पुं०) सरिस का पेड़।
मधुष्पा–(सं० स्त्री०) धव का वृक्ष।
मधुप्रमेह–(सं०पुं०) वह रोग जिसमें मूत्र के साथ शक्कर आती है। मधुप्रिय–(सं०पु०) बलराम। मधुफल–(सं० पु०) मीठा नारियल, दाख।
मधुवन–(सं०पुं०) व्रज भमि के एक वन का नाम। मधुबहुल–(सं०स्त्री०) वासन्ती लता, सफ़ेद जूही। मधुबीज–(स०पुं०) दाडिम, अनार। मधुभार–(सं० पुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ मात्रायें होती हैं।
मधुभिद्–(सं०पुं०)विष्णु। मधुमक्खी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मक्खी जो फूलों का रस चूसकर मधु इकट्ठा करती है। मधुमक्षिका–(सं०स्त्री०) मधुमक्खी। मधुमज्जन–(सं० पुं०) अखरोट का पेड़। मधुमती–(सं०स्त्री०) गंगा, एक छन्द का नाम, समाधि सिद्धि का एक भेद। मधुमत्त–(सं०वि०) वसन्त ऋतु में प्रसन्न होने वाला।
मधुमल्ली–(सं०स्त्री०) मालती तला।
मधुमाखी–(हिं० स्त्री०) मधुमक्खी।
मधुमात–(सं०पुं०)एक राग का नाम;
मधुमातसारंग–(सं०पुं०) सारंग राग का एक भेद। मधुमाधव–(सं०पुं०) बसन्तकाल। मधुमाधवी–(सं०स्त्री०)

एक रागिणी का नाम, एक छन्द का नाम। **मधुमालती**–(सं० स्त्री०) मालती लता। **मधुमेह**–(सं० पुं०) प्रमेह रोग जिसमें मधु के समान मूत्र निकलता है; **मधुयष्टि**–(सं० स्त्री०) इक्षु, ईख **मधुयष्टिका**–(सं० स्त्री०) जेठीमद नामक औषधि।

मधुर–(सं० पुं०) मीठा रस, महुए का पेड़, बादाम का पेड़, बिरौना, नीबू, वंग, रांगा, एक प्रकार का आम, एक प्रकार की घास, (वि०) जिसका स्वाद मीठा हो, मनोरञ्जक, सुन्दर, जो सुनने में अच्छा जान पड़े धीरे चलने वाला। **मधुरई**–(हिं० स्त्री०) सुकुमारता, मधुरता, कोमलता, मीठापन। **मधुरता**–(सं० स्त्री०) मधुर होने का भाव, सौन्दर्य, सुन्दरता, मिठास, कोमलता, मृदुता; **मधुरत्व**–(सं० नपुं०) माधुर्य, साधुरता। **मधुरफल**–(सं० पुं०) तरम्बूज, तरबूज। **मधुरलता**–(सं० स्त्री०) जेठीमद। **मधुरसिक**–(सं० पुं०) भ्रमर, भौरा। **मधुरस्वर**–(सं० त्रि०) गन्धर्व।

मधुरा–(सं० स्त्री०) मीठा नीबू, सतावर, पालक का साग, मसूर केले का पौधा, जेठीमद सौंफ। **मधुराई**–(हिं० स्त्री०) मधुरता कोमलता, सुन्दरता।

मधुराक्षर–(सं० त्रि०) सुन्दर अक्षर।

मधुराज–(सं० पुं०) भ्रमर, भौरा।

मधुरान्न–(सं० पुं०) मिठाई।

मधुराना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु में मीठा रस आ जाना, मीठा होना, सुन्दर हो जाना। **मधुरालापा**–(सं० स्त्री०) सारिका, मैना पक्षी। **मधुरासव**–(सं० पुं०) आम्र, आम।

मधुरिका–(सं० स्त्री०) सौंफ।

मधुरिपु–(सं० पुं०) विष्णु।

मधुरिमा–(हिं० स्त्री०) मीठापन, मिठास, सौन्दर्य, सुन्दरता।

मधुरी–(हिं० स्त्री०) मुख से फूंककर बजाने का एक प्रकार का बाजा, आम का पेड़, सुन्दरता।

मधुल–(सं० नपुं०) मद्य, मदिरा। **मधुलिका**–(सं० स्त्री०) राजिका, राई, एक प्रकार की मद्य, मंग मसूर।

मधुलिह, मधुलोलुप–(सं० पुं०) भ्रमर, भौरा।

मधुवन–(सं० पुं०) यमुना नदी के किनारे मथुरा के पास का एक बन, किष्किन्धा के पास का सुग्रीव का एक बन।

मधुवर्ण–(सं० वि०) सुन्दर स्वरूप वाला।

मधुवल, मधुवामन–(सं० पुं०) भ्रमर, भौरा। **मधुवासिनी**–(सं० स्त्री०) छोटे बव का वृक्ष।

मधुविद्या–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की गुप्त विद्या। **मधुवीज**–(सं० पुं०) दाडिम, अनार। **मधुवृक्ष**–(सं० पुं०) महुए का पेड़।

मधुशर्करा–(सं० स्त्री०) मधु से बनाई हुई शक्कर। **मधुशिता**–(सं० स्त्री०) सफ़ेद सेम। **मधुश्री**–(सं० स्त्री०) वसन्त की शोभा। **मधुसंकाश**–(सं० त्रि०) देखने में सुंदर। **मधुसख**–(सं० पुं०) कन्दर्प, कामदेव। **मधुसम्भव**–(सं० पुं०) सिक्थ, मोम। **मधुसहाय, मधुसुहृद**–(सं० पुं०) कंदर्प कामदेव। **मधुसूदन**–(सं० पुं०) भ्रमर भौंरा, श्रीकृष्ण। **मधुसूदनी**–(सं० स्त्री०) पालक का साग; **मधुस्थान**–(सं० नपुं०) मधुमक्खी का छत्ता। **मधुस्नेह**–(सं० पुं०) मोम। **मधुस्यन्दन**–(सं० पुं०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। **मधुस्रवा**–(सं० स्त्री०) जेठीमद, लजालू नामक पौधा। **मधुस्वर**–(सं० पुं०) कोकिल, कोयल। **मधुहन्**–(सं० पुं०) विष्णु। **मधूक**–(सं० पुं०) महुए का पेड़, मुलेठी। **मधूकरी**–(सं० स्त्री०) मधुकरी, भ्रमरी; **मधूत्सव**–(सं० पुं०) वसन्तोत्सव। **मधूलिका**–(सं० स्त्री०) मुलेठी, एक प्रकार का मोटा धान, छोटे दाने की गेहूँ, एक प्रकार की मक्खी।

मध्य–(सं० नपुं०) अवसान, विश्राम, किसी वस्तु के बीच का अंश, कटि, कमर, मध्यमावृत्ति, सङ्गीत के एक सप्तक का नाम, वैद्यक के अनुसार सोलह वर्ष से सत्तर वर्ष की अवस्था, अन्तर भेद, (वि०) मध्यम, बीच का। **मध्यक्षामा**–(सं० स्त्री०) एक छंद का नाम।

मध्यखण्ड–(सं० नपुं०) ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी का वह भाग जो उत्तर क्रान्ति और दक्षिण क्रान्ति के बीच में पड़ता है। **मध्यगत**–(सं० वि०) मध्य स्थित, बीच का। **मध्यचारी**–(सं० वि०) बीच में चलने वाला।

मध्यतः–(सं० अव्य०) मध्य में, बीच में।

मध्यता–(सं० स्त्री०) मध्य का भाव या धर्म। **मध्यतापिनी**–(सं० स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम। **मध्यदिन**–(सं० नपुं०) मध्याह्न, दोपहर। **मध्यदेश**–(सं० पुं०) भारतवर्ष का वह प्रदेश जिसके उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्य पर्वत पश्चिम में कुरुक्षेत्र और पूर्व में प्रयाग है। **मध्यदेह**–(सं० पुं०) उदर, पेट।

मध्यन्दिनीय–(सं० वि०) मध्यान्ह संबंधी।

मध्यप्रदेश–(सं० पुं०) मध्य भारत के अन्तर्गत एक भूमि भाग।

मध्यभाव–(सं० पुं०) मध्यम अवस्था।

मध्यम–(सं० पुं०) संगीत के अनुसार चतुर्थ स्वर, इस नाम का राग, मध्यदेश, वह नायक जो नायिका के क्रोध दिखलाने पर अपना प्रेम प्रकट न करे तथा उसकी चेष्टाओं से उस के मनका भाव जानले; **मध्यमखण्ड**–बिचला भाग; **मध्यम जात**–मंझला; **मध्यमता**–(सं० स्त्री०) मध्यम होने का भाव, बिचलापन।

मध्यमपदलोपी–(हिं० पुं०) लुप्त पद समास जिसमें पहिले पद का आगामी पद से संबंध बतलाने वाला शब्द लुप्त रहता है।

मध्यमपुरुष–(सं० पुं०) व्याकरण के अनुसार वह व्यक्ति जिससे कुछ कहा जाय।

मध्यमरात्र–(सं० पुं०) मध्यरात्रि, आधी-रात।

मध्यमलोक–(सं० पुं०) पृथ्वी। **मध्यमवयस**–(सं० पुं०) सोलह वर्ष से सत्तर वर्ष तक की अवस्था। **मध्यमवाह**–(सं० त्रि०) मन्द गति से चलने वाला।

मध्यमस्थ–(सं० वि०) मध्यस्थित बीचका

मध्यमा–(सं० स्त्री०) बीच की अंगुली, तीन अक्षर का छन्द, छोटे जामुन का वृक्ष, रजस्वला स्त्री, वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम अथवा दोष के अनुसार उसका सत्कार या अपमान करे।

मध्यमादि–(सं० पुं०) संगीत में एक प्रकार का ताल।

मध्यमाहरण–(सं० नपुं०) बीजगणित की वह क्रिया जिसके अनुसार कोई अव्यक्त मान निकाल लिया जाता है।

मध्यमिक–(सं० वि०) बीच का।

मध्यमिका–(सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

मध्यरात्र–(सं० पुं०) निशीथ आधी रात।

मध्यरेखा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी के मध्य भाग की कल्पित रेखा जो उत्तर दक्षिण मानी जाती है।

मध्यलोक–(सं० पुं०) पृथ्वी।

मध्यवर्ती–(सं० वि०) मध्य का, बिचला।

मध्यवय–(हिं० पुं०) जीवन का मध्य भाग।

मध्यवृत्त–(सं० पुं०) नाभि।

मध्यशरीर–(सं० वि०) पेट, उदर।

मध्यशायी–(सं० वि०) मध्यवर्ती, बीचका;

मध्यस्थ–(सं० पुं०) पंच, वह व्यक्ति जो बीच में पड़कर दो मनुष्यों के झगड़े को निबटाता है। **मध्यस्थता**–(सं० स्त्री०) मध्यस्थ होने का भाव या धर्म। **मध्यस्थल**–(सं० नपुं०) कटि देश, कमर, **मध्यस्थित**–(सं० वि०) मध्यवर्ती, बीच का।

मध्या–(सं० स्त्री०) काव्य शास्त्र के अनुसार वह नायिका जिसमें काम और लज्जा समान हों, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन अक्षर होते हैं।

मध्यान्ह–(हिं० पुं०) देखो मध्याह्न।

मध्यायु–(सं० नपुं०) तेंतीस वर्ष से पैंसठ वर्ष की आयु।

मध्याह्न–(सं० पुं०) दिन का मध्य भाग, ठीक दोपहर का समय; **मध्याह्नोत्तर**–तीसरा प्रहर।

मध्ये–(सं० क्रि० वि०) विषय में, बारे में।

मध्व–(सं० पुं०) माध्व सम्प्रदाय के प्रवर्तक। **मध्वक**–(सं० पुं०) शहद की मक्खी। **मध्वक्ष**–(सं० वि०) जिसके नेत्र मधु के समान हों।

मध्वाचार्य–(सं० पुं०) एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जो मध्वाचारि सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे।

मध्वाधार–(सं० पुं०) मधुमक्खी का छत्ता।

मध्वालु–(सं० नपुं०) एक प्रकार के पौधे की जड़ जो खाने में मीठी होती है।

मध्वाहुति–(सं० स्त्री०) मधु की आहुति।

मनःक्षेप–(सं० पुं०) मन का उद्वेग।

मनःपति–(सं० पुं०) विष्णु। **मनःप्रसाद**–(सं० पुं०) मन की प्रसन्नता।

मनःशास्त्र–(सं० पुं०) मनो विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें मन तथा मन के विकारों का वर्णन हो। **मनःशिल**–(सं० पुं०) मनःशिला, मैनसिल।

मनःशिला–(सं० स्त्री०) मैनसिल।

मनःस्थैर्य–(सं० नपुं०) मनकी स्थिरता।

मन–(सं० पुं०) अन्तःकरण, प्राणियों में वह शक्ति जिससे वेदना, इच्छा, संकल्प, प्रयत्न, बोध, विचार आदि उत्पन्न होते हैं, इच्छा, अन्तःकरण की चार वृत्तियों में से वह वृत्ति जिससे संकल्प विकल्प होता है; **मन से मन अटकना**–प्रेम होना; **मन टूट जाना**–हताश होना; **मन बढ़ना**–उत्साह की वृद्धि होना; **मन बूझना**–चित्त का अभिप्राय जानना; **मन हरा होना**–चित्त प्रसन्न होना; **मन के लड्डू खाना**–अनिश्चित आशा पर प्रफुल्लित होना; **मन चलना**–अभिलाषा होना; **किसी का मन टटोलना**–किसी के मन की बात जानने का उद्योग करना; **मन डोलना**–लोभ उत्पन्न होना; **मन देना**–चित्त लगाना; **मन तोड़ना**–साहस त्यागना; **मन फेरना**–चित्त हटा लेना; **मन बढ़ाना**–उत्साह बढ़ाना; **मन में बसना**–अच्छा जान पड़ना; **मन बहलाना**–चित्त प्रसन्न करना; **मन भरना**–विश्वास होना; **मन भर जाना**–तृप्ति या सन्तोष होना; **मन भाना**–अच्छा लगना; **मन मानना**–तृप्ति होना; निश्चय होना; **मन में रखना**–गुप्त रखना, **मन में लाना**–विचारना; **मन मिलना**–दो व्यक्तियों की समान प्रकृति होना; **मन मारना**–उदासीनता धारण करना **मन मैला करना**–सन्तुष्ट न होना; **मन मोटा होना**–चित्त हट जाना; **मन मोड़ना**–चित्तवृत्ति को दूसरी ओर लगाना; **किसी का मन रखना**–अभिलाषा पूर्ण करना; **मन लाना**–चित्त लगाना, **मन से उतर जाना**; **मनही मन**–चुपचाप, हृदय में; **मनमाना**–अपनी इच्छानुसार।

मन–(हिं० पुं०) चालीस सेर की तौल, मणि, बहुमूल्य पत्थर।

मनई–(हिं० पुं०) मनुष्य।

मनकना–(हिं० क्रि०) चेष्टा करना, हिलना डोलना, तर्क वितर्क करना।

मनकरा–(हिं० वि०) प्रकाशमान, चमकदार।

मनका–(हिं० पुं०) बिल्लौर, लकड़ी आदि का छेदा हुआ गोल दाना जिसको पिरोकर माला या सुमिरनी बनाई जाती है, गुरिया, रीढ़ के ठीक ऊपर की गरदन के पीछे की हड्डी।
मनकामना–(हिं० स्त्री०) मनोरथ, अभिलाषा, इच्छा।
मनगढंत–(हिं० वि०) कपोल कल्पित, जिसकी केवल कल्पना मात्र कर ली गई हो, जिसकी वास्तव में सत्ता न हो।
मनचला–(हिं० वि०) साहसी, निडर, रसिक। **मन चाहता**–(हिं० वि०) मन के अनुकूल, यथेच्छ। **मनचाहा**–(हिं० वि०) अभिलषित, इच्छा किया हुआ। **मनचीता**–(हिं० वि०) मनचाहा, मन में सोचा हुआ।
मनजात–(हिं० पुं०) कामदेव।
मनन–(सं० नपुं०) अनुचिन्तन, वारंवार विचार करना, सोचना, अच्छी तरह से अध्ययन करना।
मननशील–(सं० वि०) किसी विषय पर अच्छी तरह विचार करने वाला।
मननाना–(हिं० क्रि०) गूंजना।
मनभाया–(हिं० वि०) जो मन को अच्छा लगे। **मनभावता**–(हिं० वि०) प्रिय, प्यारा, जो अच्छा लगता हो।
मनभावन–(हिं० वि०) मन को अच्छा लगने वाला।
मनमंत–(हिं० वि०) देखो मैमंत।
मनमति–(हिं० वि०) स्वेच्छाचारी, अपने मन का काम करने वाला।
मनमथ–(हिं० पुं०) देखो मन्मथ; कामदेव।
मनमानता–(हिं० वि०) मनोवांछित, मनमाना। **मनमाना**–(हिं० वि०) मनोनीत, मनके अनुकूल, जो मन को अच्छा लगे, इच्छानुकूल, यथेच्छ।
मनमुखी–(हिं० वि०) स्वेच्छाचारी, अपने मन का काम करने वाला।
मनमुटाव–(हिं० स्त्री०) वैमनस्य होना, मन फिर जाना।
मनमोदक–(हिं० पुं०) मन का लड्डू, वह कल्पित या असंभव बात जो अपनी प्रसन्नता के लिये मन में बनाई गई हो। **मनमोहन**–(हिं० वि०) मन को लुभाने वाला, प्रिय, प्यारा, (पुं०) श्रीकृष्ण; एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्रायें होती हैं। **मनमोहनी**–(हिं० वि०) मन को लुभाने वाली।
मनमौजी–(हिं० वि०) मनमाना काम करने वाला।
मनरंज मनरंजन–(हिं० वि०) मनोरंजक, चित्त को प्रसन्न करने वाला।
मनलाडू–(हिं० पुं०) देखो मनमोदक।
मनवां–(हिं० पुं०) नरमा, राम कपास।
मनवांछित–(हिं० वि०) देखो मनोवाञ्छित।
मनवाना–(हिं० क्रि०) किसी को मानने में प्रवृत्त करना।
मनसना–(हिं० क्रि०) संकल्प करना, इच्छा करना, दृढ़ निश्चय करना, हाथ में जल लेकर संकल्प का मन्त्र पढ़कर कोई वस्तु दान करना।
मनसा–(सं० स्त्री०) एक देवी जिसकी पूजा ज्येष्ठ में गंगादशहरा के दिन बंगाल में घर घर होती हैं, (हिं० स्त्री०) अभिलाषा, मनोरथ, संकल्प, कामना, इच्छा, अभिप्राय, मन, बुद्धि, (वि०) मन से उत्पन्न; (क्रि० वि०) मन के द्वारा, मन से। **मनसाकर**–(हिं० वि०) मनोरथ पूर्ण करने वाला। **मनसाना**–(हिं० क्रि०) उमंग या तरंग में आना, संकल्प का मन्त्र पढ़कर या पढ़ाकर दूसरे से दान आदि कराना। **मनसापञ्चमी**–(सं० स्त्री०) आषाढ़ कृष्ण पञ्चमी का दिन।
मनसायन–(हिं० वि०) वह स्थान जहाँ मन बहलाने के लिये कुछ लोग इकट्ठे हों, मनोरम स्थान।
मनसिकार–(सं० पुं०) मनोयोग, ध्यान
मनसिज, मनसिशय–(सं० पु०) कन्दर्प, कामदेव।
मनसेधू–(हिं० पु०) मनुष्य, मनई।
मनस्क–(सं० नपुं०) मनोयोग, 'मन' शब्द का अल्पार्थ रूप जिसका प्रयोग समस्त पदों में होता है यथा-तन्मनस्क। **मनस्कान्त**–(सं० वि०) मन के अनुकूल, प्रिय। **मनस्काम**–(सं० पुं०) मनोरथ, अभिलाषा। **मनस्ताप**–(सं० पु०) आन्तरिक दुःख, पछतावा।
मनस्ताल–(सं० पुं०) दुर्गा देवी के सिंह का नाम, (नपु०) हरताल।
मनस्थ–(सं० वि०) अन्तःकरण में स्थित।
मनस्विन्–(सं० पुं०) उच्च विचार वाला, स्वेच्छाचारी। **मनस्विनी**–(सं० स्त्री०) श्रेष्ठ विचार की स्त्री, प्रजापति की एक स्त्री का नाम।
मनस्वी–(हिं० वि०) देखो मनस्विन्।
मनहंस–(सं० पुं०) पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मनहर–(हिं० वि०) मनको हरने वाला, मनोहर, घनाक्षरी छन्द का एक नाम। **मनहरण**–(हिं० पुं०) मन को हरने की क्रिया या भाव, पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसको नलिनी या भ्रमरावली भी कहते हैं, (वि०) मनोहर, सुन्दर। **मनहरन**–(हिं० वि०) मनको हरने वाला।
मनहार मनहारि–(हिं० वि०) देखो मनोहार।
मनहुं–(हिं० अव्य०) मानो, जैसे, यथा।
मनाई–(हिं० स्त्री०) देखो मनाही।
मनाक्–(सं० अव्य०) अल्प, थोड़ा, मन्द।
मनाक–(हिं० वि०) अल्प, थोड़ा।
मनाका–(सं० स्त्री०) हस्तिनी, हथिनी।
मनादी–(हिं० स्त्री०) देखो मुनादी।
मनाना–(हिं० क्रि०) दूसरे को मनाने पर उद्यत करना, स्वीकार कराना, जो अप्रसन्न हो उसको प्रसन्न करने का प्रयत्न करना, स्तुति करना, प्रार्थना करना, सकरवाना, अप्रसन्न को प्रसन्न करने के लिये विनय करना, किसी मनोकामना के पूर्ण होने के लिये देवी देवता से प्रार्थना करना।
मनावन–(हिं० पुं०) अप्रसन्न व्यक्ति को प्रसन्न करने का काम, मनाने की क्रिया।
मनावी–(सं० स्त्री०) मनु की पत्नी का नाम।
मनाही–(हिं० स्त्री०) निषेध, रोक।
मनि–(हिं० स्त्री०) देखो मणि।
मनिका–(हिं० स्त्री०) माला में पिरोया हुआ दाना, गुरिया।
मनित–(सं० वि०) ज्ञात।
मनिया–(हिं० स्त्री०) मनका, कंठी, गुरिया, माला में पिरोया हुआ दाना।
मनियार–(हिं० वि०) देदीप्यमान, चमकीला, दर्शनीय, शोभा युक्त, (हिं० पुं०) चूड़ी बनाने वाला, चुड़िहारा।
मनी–हिं० स्त्री०) देखो मणि; वीर्य, गर्व, अहंकार।
मनीर–(हिं० स्त्री०) मोरनी।
मनीषा–(सं० स्त्री०) बुद्धि, स्तुति, प्रशंसा।
मनीषित–(सं० वि०) अभिलषित, वांछित।
मनीषिता–(सं० स्त्री०) बुद्धिमत्ता, बुद्धिमानी
मनीषिन्–(सं० पुं०) पण्डित, ज्ञानी, बुद्धिमान्; **मनीषी**–(हिं० पु०) पण्डित।
मनु–(सं० पु०) मनुष्य, मन्त्र, ब्रह्मा के पुत्र जो मानव जाति के आदि पुरुष ये संख्या में चौदह हैं, इनके नाम-स्वयंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, रुद्र सावर्णि, देव सावर्णि, धर्म सावर्णि और इन्द्र सावर्णि हैं, मन, अन्तःकरण विष्णु, अग्नि, ब्रह्मा, विद्वान् चौदह की संख्या।
मनु–(हिं० अव्य०) मानो, जैसे।
मनुआँ–(हिं० पु०) मन, मनुष्य, नरमा, देव कपास।
मनुज–(सं० पुं०) मनुष्य, आदमी; **मनुजपति**–राजा; **मनुजलोक**–मृत्यु लोक;
मनुजात–(सं० वि०) मनु या मनुष्य से उत्पन्न; **मनुजाद**–(सं० पुं०) मनुष्य को खाने वाला, राक्षस; **मनुजाधिप**–(सं० पुं०) मनुष्यों का अधिपति, राजा; **मनुजा**–(सं० स्त्री०) स्त्री, नारी;
मनुजेन्द्र–(सं० पुं०) देखो मनुजाधिप।
मनुयुग–(सं० नपुं०) मन्वन्तर।
मनुराज–(सं० पुं०) कुवेर।
मनुश्रेष्ठ–(सं० पुं०) विष्णु।
मनुष–(सं० पुं०) मनुष्य, आदमी, पति।
मनुषेन्द्र–(सं० पुं०) मनुजेन्द्र।
मनुष्य–(सं० पुं०) मनुज, मानव, पुरुष, आदमी, नर; **मनुष्यकार**–पुरुषों की की हुई चेष्टा; **मनुष्य गन्धर्व**–मानव रूपी गन्धर्व; **मनुष्यता**–(सं० स्त्री०) मनुष्य का भाव या धर्म, सभ्यता, शिष्टता, दया, भाव, चित्त की कोमलता; **मनुष्यत्व**–(सं० नपुं०) मनुष्य का भाव या धर्म; **मनुष्ययज्ञ**–(सं० पुं०) अतिथि सत्कार; **मनुष्यरथ**–(सं० पुं०) वह रथ जिसको मनुष्य खींचते हैं।
मनुष्यलोक–(सं० पु०) नृलोक, पृथ्वी;
मनुष्यसव–(सं० पुं०) मनुष्य द्वारा किया हुआ यज्ञ; **मनुसंहिता**–(सं० स्त्री०) मानव धर्मशास्त्र।
मनुसाई–(हिं० स्त्री०) पुरुषार्थ, पराक्रम, मनुष्यता।
मनुस्मृति–(सं० स्त्री०) मनु प्रणीत एक धर्म ग्रन्थ, मानव धर्मशास्त्र।
मनुहार–(हिं० स्त्री०) मनौआ, वह विनती जो किसी को प्रसन्न करने या क्रोध शान्त करने के लिये की जाती है, विनय, प्रार्थना आदर, सत्कार।
मनुहारना–(हिं० क्रि०) मनाना, आदर सत्कार करना, विनय करना प्रार्थना करना।
मनूरी–(अ० स्त्री०) मुरादाबादी कलई करने की बुकनी।
मनो–(हिं० अव्य०) मानो।
मनोकामना–(हिं० स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा
मनोगत–(सं० वि०) मनःस्थिति, जो मन में हो, (पुं०) कन्दर्प, कामदेव;
मनोगति–(सं० स्त्री०) मन की गति, चित्त वृत्ति, अभीष्ट, इच्छा।
मनोगवी–(सं० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा
मनोज–(सं० पुं०) कन्दर्प, कामदेव, मदन;
मनोजव–(सं० पुं०) विष्णु, मन का वेग, वायु के एक पुत्र का नाम, रुद्र के एक पुत्र का नाम, (वि०) पितृतुल्य, अधिक वेगवान्; **मनोजात**–(सं० वि०) जो मन से उत्पन्न हो; **मनोज्ञ**–(सं० वि०) रुचिर, सुन्दर, मनोहर; **मनोज्ञता**–(सं० स्त्री०) सुन्दरता,
मनोज्ञा–(सं० स्त्री०) मनोहरा, सुन्दरी, मैनसिल, मदिरा, मंगरैला, जावित्री का फूल।
मनोदाही–(हिं० वि०) मनको जलाने वाला
मनोदुष्ट–(सं० वि०) दुष्ट या कुत्सित हृदय वाला।
मनोदेवता–(सं० पुं०) अन्तरात्मा, विवेक।
मनोधृत–(सं० वि०) जितेन्द्रिय।
मनोनिग्रह–(सं० पुं०) चित्त की वृत्तियों का निरोध, मनको वश में रखना।
मनोनीत–(सं० वि०) जो मन के अनुकूल हो।
मनोहारी–(हिं० वि०) मनको हरने वाला
मनोभव–(सं० पुं०) कन्दर्प, कामदेव; (वि०) मन से उत्पन्न।
मनोभिराम–(सं० वि०) मनोज्ञ, सुन्दर।
मनोभृत–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
मनोमथन–(सं० पु०) मदन, कामदेव।
मनोमय–(सं० वि०) मनोरूप, मानसिक।
मनोमय कोश–(सं० पु०) वेदान्त शास्त्र के अनुसार पांच कोशों में से वह कोश जिसके अन्तर्गत मन, अहंकार और कामेन्द्रियां मानी जाती हैं।
मनोयायी–(हिं० वि०) इच्छानुसार गमन करने वाला।
मनोयोग–(सं० पुं०) चित्तवृत्ति का निरोध करके एकाग्र करना और किसी एक

पदार्थ पर लगाना।
मनोयोनि–(सं०पु०) कन्दर्प, कामदेव।
मनोरञ्जक–(सं०वि०) चित्त को प्रसन्न करने वाला; **मनोरञ्जन**–(सं०नपु०) चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव, एक बंगला मिठाई का नाम।
मनोरथ–(सं० पु०) अभिलाषा, वाँछा, इच्छा; **मनोरथ तृतीया**–चैत्र शुक्ला तृतीया जिस दिन व्रत करने से मनोरथ सिद्ध होता है; **मनोरथ दायक**–अभीष्ट फल देने वाला, कल्पवृक्ष; **मनोरथ द्वादशी**–चैत्र शुक्ल द्वादशी; **मनोरथ सिद्धि**–अभिलाषा का पूर्ण होना।
मनोरम–(सं० वि०) सुन्दर, मनोहर, सखी छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्रायें होती हैं।
मनोरमा–(सं०स्त्री०) गोरोचन, बुद्ध की एक शक्ति का नाम, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दस वर्ण होते हैं, दोधक छन्द का एक नाम, आर्या छन्द का एक भेद, चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त, दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त, सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम—इन सातों के नाम—सुप्रभा, काँचनाक्षी, विशाला, मनोरमा, सरस्वती, सुरेणु और विमलोदका हैं।
मनोरा–(हिं० पु०) भीत पर गोबर से बनाये हुए चित्र जो दीवाली के बाद बनाये जाये हैं तथा रंग बिरंगे फूल पत्तों से सजाकर प्रति दिन सन्ध्या को दीपक जलाकर पूजे जाते हैं तथा झूमक गीत गाई जाती है।
मनोराज–(हिं० पुं०) मन की कल्पना, मनगढन्त।
मनोरिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सिकड़ियों की शृंखला जिसको स्त्रियाँ ओढ़नी या साड़ी के किनारे पर टाँक देती हैं जो ओढने पर सिर पर लटकती है।
मनोलय–(सं०पुं०) मन का नाश, प्रकृति पुरुष को मिल जाने पर मन अहंकार में लुप्त हो जाता है।
मनोलौल्य–(सं०नपुं०) चित्त की चंचलता
मनोवती–(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम
मनोवाञ्छा–(सं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा;
मनोवाञ्छित–(सं०वि०) इच्छित, चाहाहुआ
मनोविकार–(सं० पुं०) मन की वह अवस्था जिसमें किसी प्रकारका सुखद या दुःखद, भाव, विचार या विकार उत्पन्न हो।
मनोविज्ञान–(सं०पुं०) वह शास्त्र जिसमें मन की वृत्तियों का अनुशीलन होता है।
मनोविद्–(सं० वि०) मन के भावों को जानने वाला।
मनोवृत्ति–(सं० स्त्री०) मन का व्यापार या कार्य।
मनोवेग–(सं०पुं०) मनोविकार।
मनोव्यापार–(सं०पुं०) मन की क्रिया, विचार।
मनोसर–(हिं०पुं०) मन की वृत्ति।
मनोहत–(सं०वि०) प्रतिहत, निराश।
मनोहर–(सं० वि०) सुन्दर, चित्त को आकर्षण करने वाला; (पु०) सोना, छप्पय का एक भेद, एक संकर राग का नाम; **मनोहरता, मनोहरताई**–(सं०स्त्री०) सुन्दरता।
मनोहरा–(सं०स्त्री०) मनोहारिणी, सोनजुही का फूल, एक अप्सरा का नाम
मनोहरी–(हिं० स्त्री०) कान में पहरने की छोटी बाली।
मनोहारी–(सं०वि०) मनोहर, चित्ताकर्षक;
मनोह्लाद–(सं०पुं०) चित्त की प्रसन्नता।
मनौती–(हिं० स्त्री०) असन्तुष्ट को सन्तुष्ट करना, किसी देवी देवता की विशिष्ट रूप से पूजा करने का संकल्प।
मन्तव्य–(सं०पुं०) मन, विचार, (वि०) मानने योग्य।
मन्त्र–(सं०पुं०) वेद का वह भाग जिसमें मन्त्रों का संग्रह है–यह ब्राह्मण से पृथक् है, रहस्यपूर्ण बात, परामर्श, देवता के साधन के निमित्त वैदिक वाक्य जिनको पढकर यज्ञादि क्रिया की जाती है; **मन्त्रकार**–मन्त्र रचने वाला ऋषि; **मन्त्रकुशल**–मन्त्र जानने वाला; **मन्त्रकृत**–परामर्श देने वाला, मन्त्री; **मन्त्रगृह**–वह स्थान जहाँ मन्त्र या मंत्रणा दी जाती हो; **मन्त्रजल**–अभिमन्त्रित किया हुआ जल; **मन्त्रजिह्व**–अग्नि; **मन्त्रज्ञ**–मन्त्र जानने वाला, भेद जानने वाला
मन्त्रण–(सं० नपुं०) मन्त्रणा, परामर्श;
मन्त्रणा–(सं० स्त्री०) परामर्श।
मन्त्रद–(सं०पुं०) मन्त्रदाता, (सं० वि०) मन्त्र देने वाला गुरु। **मन्त्रमूर्ति**–(सं० पुं०) शिव, महादेव। **मन्त्रवादी**–(सं०वि०) मन्त्र जानने वाला। **मन्त्रविद्या**–(सं० स्त्री०) मन्त्रशास्त्र। **मन्त्रसंहिता**–(सं० स्त्री०) वैदिक मन्त्रों का संग्रह। **मन्त्रसाधन**–(सं०नपुं०) अभिलषित विषय की सिद्धि। **मन्त्रसिद्धि**–(सं० स्त्री०) मन्त्र की सफलता।
मन्त्रिता–(सं० स्त्री०) मन्त्री का काम।
मन्त्रित्व–(सं० पुं०) देखो मन्त्रिता।
मन्त्री–(सं० पुं०) वह पुरुष जिसके परामर्श से राज्य के कामकाज होते हों, अमात्य, सचिव, शतरंज की एक गोंटी का नाम।
मन्त्रोदक–(सं०नपु०) मन्त्र पढ़ाहुआ जल।
मन्थ–(सं० पु०) मन्थ दण्डक, मथानी, औषधि को खल में पकाने की एक विधि, हिलाने या नष्ट करने की क्रिया, सूर्य का किरण; **मन्थक**–मथने वाला; **मन्थज**–मक्खन; **मन्थन**–मथना, डूबकर पता लगाना; **मन्थोद्भव**–नवनीत, मक्खन।
मन्थर–(सं० नपुं०) कोप, मथानी, गुप्तचर, क्रोध, वैशाख मास, मक्खन, फल, (वि०) मन्द, भारी, वक्र, टेढ़ा निश्चल, नीच, अधम।
मन्थरा–(सं० स्त्री०) कैकयी की दासी जिसने राम को वनवास देने के लिये उनको उभाड़ा था।
मन्था–(सं० स्त्री०) मेथिका, मेथी।
मन्थान–(सं० पुं०) मन्थनदण्ड, मथानी, शिव, महादेव, एक छन्द का नाम, भैरव का एक भेद।
मन्थिनी–(सं०स्त्री०) दहीमथने का यन्त्र।
मन्द–(सं० पुं०) शनि ग्रह, यम, जठरानल, प्रलय, अभाग्य, (वि०) शिथिल, धीमा, आलसी, दुष्ट, खल, मूर्ख; **मन्दकर्म**–कार्यहीन; **मन्दकारी**–हानि करने वाला; **मन्दगति**–धीमी चाल चलने वाला; **मन्दजात**–धीरे धीरे उत्पन्न।
मन्दता–(सं० स्त्री०) आलस्य, धीमापन, क्षीणता।
मन्दधी, मन्दबुद्धि–(सं०वि०) अल्पबुद्धि।
मन्दभागी–(सं०वि०) हतभाग्य, अभागा।
मन्दभाग्य–(सं०वि०) हतभाग्य, दुर्भाग्य।
मन्दभाषिणी–(सं०स्त्री०) मृदु भाषिणी।
मन्दयन्ती–(सं० स्त्री०) दुर्गा देवी।
मन्दा–(सं०वि०) मन्द, धीमा, शिथिल, नष्ट भ्रष्ट, बिगड़ा हुआ, सस्ता।
मन्दाकिनी–(सं०स्त्री०) स्वर्ग गंगा, गंगा की वह प्रधान धारा जो स्वर्ग को चली गई है, संक्रान्ति विशेष, बारह अक्षरों की एक वर्गवृत्ति।
मन्दाक्रान्ता–(सं० स्त्री०) सत्रह अक्षरों के एक वर्णवृत्त का नाम, (वि०) थोड़ा जीता हुआ।
मन्दाक्ष–(सं० नपु०) लज्जा।
मन्दाग्नि–(सं० पुं०) अग्नि मन्द होने का रोग।
मन्दान–(हिं० पुं०) जहाज का अगला भाग।
मन्दानिल–(सं० पुं०) मलय पर्वत की मन्द वायु।
मन्दार–(सं० पुं०) अर्कवृक्ष, हाथी, स्वर्ग, हाथ, एक विद्याधर का नाम, मन्दराचल पर्वत, हिरण्यकश्यप के एक पुत्र का नाम। **मन्दार माला**–(सं० स्त्री०) बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति का नाम। **मन्दार सप्तमी**–(सं० स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी।
मन्दारी–(सं०स्त्री०) लाल अकवन।
मन्दिर–(सं० नपुं०) गृह, घर, जिस घर में देवी या देवता का स्थापन किया हो, वासस्थान, नगर, समुद्र, एक गन्धर्व का नाम; **मन्दिर पशु**–बिल्ली; **मन्दिर मणि**–शिव महादेव।
मन्दिरा–(सं० स्त्री०) मजीरा नामक बाजा।
मन्दिल–(हिं० पुं०) देवालय, घर, वह अल्प धन जिसको दूकानदार दाम देते समय धार्मिक कृत्य के लिये काट लेता है।
मन्दी–(सं० स्त्री०) भाव का कम होना, सस्ती।
मन्दील–(हिं० पु०) एक प्रकार का सिर पर पहरने का आभूषण।
मन्दुरा–(सं० स्त्री०) घुड़साल, बिछाने की चटाई।
मन्दुरिक–(सं०पु०) घोड़े का साईस।
मन्दोदरी–(सं०स्त्री०) रावण की पटरानी का नाम; **मन्दोदरी सुत**–मेघनाद।
मन्दोष्ण–(सं०वि०) थोड़ा गरम, गुनगुना
मन्द्र–(सं० पुं०) मृदंग, हाथी की एक जाति, (वि०) प्रसन्न, सुन्दर, मनोहर, धीमा, संगीत में स्वरों के तीन भेदों में से एक।
मन्द्राज–(सं० पुं०) भारतवर्ष के दक्षिण का एक प्रधान नगर, **मन्द्राजी**–मन्द्राज संबंधी, मन्द्राज में रहने वाला।
मन्नत–(हिं० स्त्री०) किसी विशेष कामना की पूर्ति के लिये किसी देवी देवता की पूजा आदि करने की प्रतिज्ञा, मानता, मनौती; **मन्नत उतारना**–ऐसी प्रतिज्ञा को पूरी करना। **मन्नत मानना**–किसी मनोरथ को पूरा होने के लिये देवी देवता की विशेष पूजा करने की प्रतिज्ञा करना।
मन्ना–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मीठा निर्यास जो अनेक वृक्षों में से निकलता है, यह औषधियों में प्रयोग होता है।
मन्मथ–(सं० पुं०) कामदेव, कैथ का वृक्ष, काम चिन्ता। **मन्मथालय**–(सं०पुं०) प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का स्थान।
मन्मन–(सं०पुं०) गद्‌गद वाणी, कान में गुप्त बात कहना।
मन्य–(सं० वि०) माननीय, मानने योग्य।
मन्या–(सं० स्त्री०) गरदन के पिछले भाग की एक शिरा का नाम।
मन्यु–(सं० पुं०) कार्य, स्तोत्र, शोक, यज्ञ, क्रोध, दीनता, शिव, अहंकार, अग्नि; **मन्युमय**–क्रोधमय, अति भयंकर।
मन्वन्तर–(सं० नपुं०) युग, दैवयुग का एक सहस्र युग ब्रह्मा का एक दिन होता है इसी एक दिन का नाम मन्वन्तर है जो गणना करने से तीस करोड़, सड़सठ लाख बीस हजार वर्ष होता है।
मन्वाद्य–(सं०पुं०) धान्य, धन।
मम–(सं०सर्व०) मेरा या मेरी; **ममकार**–अपनी कमाई हुई सम्पत्ति। **ममता**–(सं० स्त्री०) 'यह मेरा है' इस प्रकार का भाव, ममत्व, अपनापन, लोभ, मोह, अभिमान, गर्व, स्नेह, प्रेम, माता का अपनी सन्तान

पर स्नेह । **ममतायुक्त**–कृपण, कंजूस, अभिमानी; **ममत्व**–(सं०नपुं०) ममता, स्नेह, अभिमान, गर्व ।
ममरखी–(हिं०स्त्री०) वधावा ।
ममाखी–(हिं०स्त्री०) मधुमक्खी ।
ममरी–(हिं०स्त्री०) वनतुलसी, दौना ।
ममिया–(हिं० वि०) जो सम्बन्ध में मामा के स्थान पर पड़ता हो, यथा ममिया ससुर, सास आदि । **ममियाउर ,ममियौरा**–(हिं० पुं०) मामा का घर ।
मम्मी–मिश्र देश की प्रसिद्ध मृत मनुष्य की रक्षित शरीर ।
मयंक–हिं०पुं०)देखो मृगांक, चन्द्रमा ।
मयंद–हिं०पुं०)देखो मृगेन्द्र, शेर ।
मयन्दी–(हिं०स्त्री०) गाड़ी की पहिये के चक्के पर लगाने की सामी ।
मय–(सं०पुं०) दिति के पुत्र का नाम, एक प्रसिद्ध दानव, एक देश का नाम, अश्व, घोड़ा, खच्चर, चिकित्सक, वैद्य, (हिं० अव्य०) तद्धित का एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार तथा प्राचुर्य अर्थ में शब्दों के अन्त में लगाया जाता है, यथा–आनन्दमय ।
मयगल–(हिं०पुं०) मस्त हाथी ।
मयंक–(स० पुं०) चन्द्रमा ।
मयट–(सं०पुं०) पर्णशाला, झोपड़ी ।
मयन–(सं० नपुं०) मधुप, मक्खी का छत्ता, (हिं०पुं०) देखो मदन,कामदेव ।
मयमंत, मयमत्त– (हिं० वि०) मदोन्मत्त, मस्त ।
मयसुता–(सं०स्त्री०) मन्दोदरी ।
मया–हिं०स्त्री०) देखो माया ।
मयार–(हिं०वि०) कृपालु, दयावान् ।
मयारी–(हिं०स्त्री०) वह धरन जिस पर हिंडोले की रस्सी लटकाई जाती है, छाजन की धरन जिस पर बड़ेर रक्खे जाते हैं ।
मयु–(सं०पु०) किन्नर, मृग; **मयुराज**–कुबेर ।
मयूक–(सं० पुं०) मयूर, मोर ।
मयूख–(सं०पुं०) रश्मि, किरण, प्रकाश, ज्वाला, पर्वत ।
मयूखी–(सं० स्त्री०)भारत के प्राचीन आर्यों का एक प्रकार का अस्त्र ।
मयूर–(सं०पुं०) शिखी, बर्हि, मोर ।
मयूरगति–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस अक्षर होते हैं । **मयूर ग्रीवक**–(सं० नपुं०) तुत्थ, तूतिआ । **मयूरध्वज**–पुराण वर्णित एक प्राचीन राजा जिसकी राजधानी रत्नपुरी थी । **मयूरपुच्छ**–(सं० पु०) मोर की पूंछ चन्द्रिका । **मयूररथ, मयूरवाहन**–(सं० पुं०) स्कन्ध, कार्तिकेय । **मयूरशिखा**–(सं० स्त्री०) शिखालू नामक पौधा । **मयूरसारिणी**–(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तेरह वर्ण होते हैं ।

मयूरा–(सं०स्त्री०)काली तुलसी,अजमोदा
मयूरासन–(स० पु०) शाहजहां का बनाया हुआ मयूर के आकार का प्रसिद्ध सिंहासन ।
मयूरिका–(स० स्त्री०) एक प्रकार का विषैला कीड़ा ।
मयूरी–(सं० स्त्री०) मोरनी ।
मयोभव–(स० पुं०) शिव, महादेव ।
मरंद–हिं०पुं०) देखो मकरन्द ।
मरक–(हिं० स्त्री०) दबाकर संकेत करना; देखो मड़क, मृत्यु, मरण ।
मरकट–हि० पुं०) देखो मर्कट ।
मरकत–(सं०पु०) पन्ना नाम का रत्न ।
मरकना–(हि०क्रि०) दबाव पड़कर टूट जाना, देखो मुड़कना ।
मरकहा–(हिं०वि०) जो पशु सीध से मारता हो, सींघ से मारने वाला ।
मरकाना–(हिं०क्रि०) दबाकर चूरचूर करना, देखो मुड़काना ।
मरकोटी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।
मरखन्ना–(हिं०वि०) देखो मरकहा ।
मरखम–(हि० पु०) देखो मलखंभ ।
मरगजा–(हिं० वि०) मसला हुआ, गींजा हुआ ।
मरघट–(हिं० पुं०) शव को जलाने का स्थान, श्मशान; (वि०) कुरूप और विकराल आकृति का, जो सदा उदास रहता है, मनहूस ।
मरचोवा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की तरकारी ।
मरजाद, मरजादा–(हिं०स्त्री०) मर्यादा रीति, परिपाटी, सीमा, हद्द, आदर, सत्कार, प्रतिष्ठा ।
मरजिया–(हि० वि०) मर कर जीने वाला, जो प्राण देने को उद्यत हो, मरने वाला, मृतप्राय, अधमरा ।
मरजीवा–(हिं०पुं०) देखो मरजिया ।
मरण–(सं०नपुं०) मृत्यु, पञ्चतत्व । **मरणान्त**–(सं० वि०) मरण पर्यन्त, मृत्यु तक, **मरणोत्तर**–(सं०वि०) मृत्यु के बाद का ।
मरत–(हिं०नपुं०) मरण, मृत्यु ।
मरतबान– (हिं०पुं० देखो अमृतबान ।
मरद–(हिं० पुं०) देखो मर्द । **मरदई**–(हिं०स्त्री०) साहस, वीरता, पराक्रम ।
मरदन–(हिं० क्रि०) मर्दन करना, मसलना, तर करना, गूंथना, माड़ना ।
मरदना–(हिं०पुं०) शरीर में तेल लगाने वाला सेवक ।
मरन–(हिं०पुं०) देखो मरण ।
मरना–(हिं०क्रि०) मृत्यु को प्राप्त होना, बहुत दुःख सहना, कुम्हलाना, मुरझाना, सूख जाना, लज्जा आदि के कारण मस्तक न उठा सकना, वेग का कम होना, रोना, पछतावा करना, डाह करना, जलना, वशीभूत होना, हारना; **किसी पर मरना**–आसक्त होना; **मर मिटना**–परिश्रम करते करते नष्ट हो जाना; **मरा जाना**–व्याकुल होना, बढ़ाना; **पानी मरना**–नींव या भीतर में पानी धँसना, दुर्नाम होना ।
मरनी–(हिं०स्त्री०) मृत्यु, दुःख, कष्ट, वह शोक जो किसी के मरने पर उसके संबंधियों को होता है, मृत्यु संबंधी कृत्य ।
मरन्द,मरन्दक–(सं०पुं०) देखो मकरन्द
मरभुक्खा–(हिं०वि०) भूख का मारा, भुक्खड़, दरिद्र ।
मरम–हि० पु०) देखो मर्म ।
मरकरा–(हिं० पु०) एक प्रकार का दानेदार चिकना पत्थर ।
मरमरा–(हिं०पु०) एक पक्षी का नाम, थोड़ा खारा पानी, (वि०) सहज में टूटने वाला, कुड़कीला ।
मरमराना–(हिं०क्रि०) वृक्ष की शाखा का दबाव पाकर मरमर शब्द करना
मरवट–(हिं०स्त्री०) वह निःशुल्क भूमि जो किसी के मारे जाने पर उसके लड़केबालों को दी जाती है ।
मरवा–(हिं०पु०) देखो मरुआ ।
मरवाना–(हिं०स्त्री०)बध कराना, मारने के लिये दूसरे को प्रवृत्त करना ।
मरसा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का साग ।
मरहट–(हिं० पुं०) मरघट, श्मशान, मसान ।
मरहटा–(हिं० पुं०) महाराष्ट्र देश का निवासी, उनतीस मात्राओं के एक छन्द का नाम ।
मरहठा–(हिं०पुं०) महाराष्ट्र देश वासी, महाराष्ट्र । **मरहठी**–(हिं०वि०) महाराष्ट्र संबंधी, (स्त्री०) वह भाषा जो महाराष्ट्र देश में बोली जाती है ।
मराना–(हि०क्रि०)मारनेके लिये प्रेरणा करना, मरवाना ।
मरायल–(हिं०वि०) जिसने कई बार मार खाई हो, निर्जीव, निर्बल निःसत्व, (पुं०) घाटा ।
मरायु–(सं०वि०)मरणशील,मरनेवाला ।
मराल–(स०पुं०)राजहंस,काजल,बादल, घोड़ा, हाथी, एक प्रकार का बत्तक, खल, दुष्ट, (वि०) चिकना ।
मरिंद–(हिं०पुं०)देखो मलिन्द, मरन्द ।
मरिच–(सं०नपुं०) गोलमिर्च, मिरिच ।
मरिचा–(हि०पुं०)लाल बड़ा मिरच ।
मरियल–(हिं० वि०) देखो मड़ियाल, बहुत दुबला पतला ।
मरिया–(हिं० स्त्री०) खाट के पायताने में कसने की रस्सी ।
मरी–(हिं०स्त्री०) देखो महामारी, एक संक्रामक रोग जिससे अनेक मनुष्यों की एक साथ मृत्यु होती है ।
मरीचि–(सं०पुं०)एक ऋषि जो पुराणों में ब्रह्मा के मानसिक पुत्र तथा एक प्रजापति लिखे गये हैं, यह सप्तर्षियों में से एक कहे गये हैं, मनु के एक पुत्र का नाम, एक मरुत का नाम जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे, (स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, किरण, कान्ति, ज्योति; **मरीचगर्भ**–सूर्य; **मरीचि जल**–मृग तृष्णा ।
मरीचिका–(सं० स्त्री०) मृगतृष्णा, मरुभूमि में जल का आभास, सिरोह, किरण ।
मराची–(हिं० पुं०) सूर्य और चन्द्रमा, (वि०) किरण युक्त; **मरीचिमाली**–सूर्य और चन्द्रमा ।
मरीना–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत कोमल ऊनी पतला वस्त्र जो मरीनो नामक भेंड़ के ऊनसे तैयार किया जाता है ।
मरु–(सं०पुं०) मरु भूमि, निर्जल प्रदेश, मारवाड़ और उसके आसपास के देश का नाम, एक दैत्य का नाम ।
मरुआ–(हिं०पुं०)वनतुलसी या ममरी की जाति का एक पौधा जो बागों में बोया जाता है, इसमें सफेद फूल लगते हैं, पत्थर या लकड़ी का छोटा खंभा, बंडेर, हिंडोला लटकाने की लकड़ी ।
मरुकान्तर–(स०पुं०) बालू का मैदान,
मरुज–(सं०वि०)मरुभूमि में होनेवाला ।
मरुजाता–(सं०पु०) केवांच, कोंछ ।
मरुटा–(सं०स्त्री०)ऊँचे ललाट की स्त्री ।
मरुत्–(सं०पुं०) वायु, हवा एक देवगण का नाम, प्राण, सुवर्ण सोना, एक देवता विशेष; **मरुत् कर्म**–पेट फूलना, हवा निकलना; **मरुत क्रिया**–अधोवायु का निकलना, पादना ।
मरुतवान–(हिं०पुं०) देखो मरुत्वान ।
मरुत्पति–(सं०पु०) इन्द्र, **मरुत्पथ**–(सं० पु०) आकाश । **मरुत्पाल**–(स०पुं०) इन्द्र । **मरुत्पुत्र**–(सं०पुं०) भीमसेन ।
मरुत्सहाय–(सं०पुं०) अग्नि, आग ।
मरुत्सुत–(सं० पुं०) हनुमान, भीम ।
मरुत्वान्–(सं० पु०) इन्द्र, हनुमान, देवताओं का एक गण ।
मरुथल–(स०पुं०) देखो मरुस्थल ।
मरुदेश–(सं०पुं०)मरुभूमि,मारवाड़ देश
मरुद्रुम–(सं०पुं०) बबूल का वृक्ष ।
मरुद्वाह–(सं०पुं०)धूम्र,धुआँ,अग्नि,आग
मरुद्वीप–(सं०पुं०) मरुस्थल में का उपजाऊ हराभरा मैदान ।
मरुद्वेग–(सं० पुं०) वायु का वेग, एक दैत्य का नाम ।
मरुधर–(सं०पुं०) मारवाड़ देश ।
मरुप्रिय–(सं०पुं०) उष्ट्र, ऊंट ।
मरुभूमि–(सं०स्त्री०) पेड़ पौधे तथा जल रहित बालूमय विस्तृत भूमि भाग ।
मरुवक–(सं०पुं०)तुलसी का छोटा पत्ता मरुए का फूल, व्याघ्र, (वि०) भयंकर, डरावना ।
मरुरना–(हिं०क्रि०) ऐंठना, मरोड़ना ।
मरुसा–(हिं० पुं०) देखो मरसा ।
मरुस्थल–(सं० नपुं०) मरुभूमि, निर्जल बालू का मैदान । **मरुस्थली**–(सं० स्त्री०) वर्तमान मारवाड़ प्रदेश का प्राचीन नाम ।
मरू–(हिं०वि०)कठिन, कड़ा; **मरूकरि**–

किसी न किसी रीति से।
मरुक–सं० पुं०) मयूर, मोर।
मरुद्भवा–सं० स्त्री०) जवासा, धमासा।
मरुरा–हिं०पुं०) देखो मरोड़।
मरोड़–हिं०पुं०) मरोड़ने की क्रिया या भाव, वह पीड़ा जो उद्वेग आदि के कारण उत्पन्न होती है, ऐंठन, घुमाव, पेट की ऐंठन, गर्व अहंकार, घमंड, क्रोध, रोष; **मरोड़ खाना**–चक्कर खाना; **मरोड़ की बात**–फेरवट की बातचीत; **मरोड़खाना**–कष्ट में पड़ जाना। **मरोड़ना**–(हिं०क्रि०) ऐंठना बल डालना ऐंठकर नष्ट करना, पीड़ा उत्पन्न करना, मलना, मसलना, ऐंठकर मार डालना; **भौंह मरोड़ना**–भौंह चढ़ाना, सैन करना, नाक भौंह सिकोड़ना; **हाथ मरोड़ना**–पछताना।
मरोड़फली–हिं०स्त्री०) मुर्री नामक फली
मरोड़ा–हिं०पुं०) ऐंठन, उमेठ, पेट की पीडा जिसमें ऐंठन जान पड़ती है।
मरोड़ी–हिं०स्त्री०) ऐंठन, घुमाव, गांठ, गुत्थी; **मरोड़ी करना**–खींचा खीची करना; **मरोर**–(हिं०स्त्री०) पछतावा।
मरोलि–सं०पुं०) मगर की जाति का एक समुद्री जन्तु।
मर्क–सं०पुं०) शरीर, देह वायु, हवा, बन्दर, शुक्राचार्यके एक पुत्र का नाम
मर्कक–(सं० पुं०) मकड़ा, हरगीला नामक पक्षी।
मर्कट–(स०पुं०) बन्दर, मकड़ा, अजमोदा, एक प्रकार का पक्षी, दोहे का एक भेद, छप्पय छन्द का एक भेद, **मर्कटक**–मकड़ा, एक दैत्य का नाम, **मर्कटपाल**–बन्दरों का राजा सुग्रीव; **मर्कट पिप्पली**–अपामार्ग, चिचिड़ा; **मर्कटप्रिय**–खिरनी का पेड़, **मर्कटवास**–मकड़ी का जाला
मर्कटी–(सं०स्त्री०) भूरी केंवाच, अपामार्ग, चिचिड़ा, अजमोदा, एक प्रकार का करंज, मकड़ी, बंदरिया, छन्द के नव प्रत्ययों में से अन्तिम प्रत्यय जिसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छन्द के लघु गुरु आदि का तथा वर्णों की संख्या का ज्ञान होता है।
मर्कत–(सं०पुं०) देखो मरकत।
मर्कर–(सं०पुं०) भृङ्गराज, भंगरैया।
मर्करा–(सं० स्त्री०) भमिगृह, सुरंग, माण्ड, बरतन, बाँझ स्त्री।
मर्जी–(हिं०स्त्री०) इच्छा।
मर्तबान–(हिं० पुं०) रंग चढ़ाया हुआ मिट्टी का पात्र जिसमें अचार, मुरब्बा आदि रक्खा जाता है, अमृतबान।
मर्त्य–(सं० पुं०) भूलोक, मनुष्य, शरीर देह। **मर्त्यता**–(सं० स्त्री०) मनुष्य का भाव या धर्म। **मर्त्यत्व**–(सं०नपुं०) मर्त्यता। **मर्त्यधर्म**–(सं० पुं०) मनुष्य का धर्म। **मर्त्यभाव**–(सं०पुं०) मनुष्य का स्वभाव, मनुष्यत्व। **मर्त्यभुवन**–(सं०नपुं०) मनुष्यलोक। **मर्त्यलोक**–(सं०पुं०) मनुष्य लोक, पृथ्वी।
मर्द–(स०पुं०) मर्दन, कुचलना, वह जो कूँचा जावे।
मर्दना–(हिं०क्रि०) मलना, रौंदना, कुचलना, नष्ट करना उबटन तेल आदि शरीर में मलना।
मर्दानगी–हिं०स्त्री०) वीरता।
मर्दन–सं०नपुं० शरीर में तेल उबटन आदि मलना, कुचलना, रौंदना, चूर्णन, ध्वंस घोटना, पीसना, मल्लयुद्ध में एक पहलवान का दूसरे पहलवानकी गरदन पर हाथों से घस्सा देना, (वि०) नाश वा संहार करने वाला।
मर्दल–(सं० पुं०) प्राचीन काल का मृदंग की तरह का एक बाजा।
मर्दित–(सं०वि०) नष्ट किया हुआ, चूर्ण किया हुआ, मला हुआ, मसला हुआ।
मर्म–(सं०नपुं०) स्वरूप, रहस्य, तत्व, शरीर का सन्धि स्थान, शरीर में का वह स्थान जहां पर आघात पड़ने पर बड़ी पीड़ा होती है और कभी कभी मृत्यु भी हो जाती है।
मर्मघ्न–(सं०वि०) मर्म घातक। **मर्मच्छिद**–(सं०वि०) मर्म भेदने वाला
मर्मज्ञ–(स०वि०) किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जानने वाला, तत्वज्ञ, भेद की बातों को जानने वाला।
मर्मपारग–(सं० वि०) देखो मर्मज्ञ।
मर्मभेदक–(स०वि०) हृदय को अधिक कष्ट पहुँचाने वाला।
मर्मभेदन–(सं०पुं०) मर्म भेदक अस्त्र,
मर्मभेदी–(हिं०वि०) हृदय पर आघात पहुँचाने वाला, हार्दिक कष्ट देने वाला। **मर्ममय**–(सं०वि०) रहस्यपूर्ण
मर्मर–(सं०पुं०) कपड़े पत्ते इत्यादि का मरमर शब्द।
मर्मरीक–(स०वि०) दीन, दुखिया।
मर्मवचन–(सं० पुं०) मर्मभेदी बात, वह बात जिसको सुनने से आन्तरिक कष्ट हो।
मर्मवाक्य–(सं०पु०) रहस्य की बात, भेद की अथवा गुप्त बात।
मर्मविद्–(सं० वि०) मर्मज्ञ, मर्म जानने वाला।
मर्मस्थान–(सं०पुं०) देखो मर्म।
मर्मान्तिक–(सं०पुं०) मर्म को स्पर्श करने वाला, क्लेश, हृदय में चुभने वाला दुःख।
मर्मान्वेषी–(हिं०वि०) गूढ़ रहस्य जानने वाला।
मर्मी–(सं०वि०) मर्मविद्, मर्मज्ञ।
मर्या–(स०स्त्री०) सीमा, हद।
मर्याद–(हिं०स्त्री०) देखो मर्यादा, रीति, प्रथा, चाल, विवाह में दिया जाने वाला एक भोज, विवाह में बढार की रीत।
मर्यादक–(सं०वि०) माननीय।
मर्यादा–(सं० स्त्री०) न्याय पथ की स्थिति, धर्म, दो या अधिक मनुष्यों बीच की प्रतिज्ञा, मान, गौरव, सदाचार, नियम, सीमा, नदी का किनारा; **मर्यादा बन्ध**–अधिकार की रक्षा; **मर्यादित** वि०) मर्यादा पूर्ण।
मर्षण–(सं०नपुं०) क्षमा, घर्षण, रगड़।
मर्षणीय–सं०वि०) क्षमा करने योग्य।
मर्षीका–सं०स्त्री० एक प्रकार का छन्द।
मल–सं०नपुं० पाप, विष्टा, पुरीष, कीट मैल, बात पित्त कफ, कपूर, प्रकृति का दोष, दूषण, विकार, शरीरके अंगों से निकलने वाला मैल।
मलकना–(हिं०क्रि०) हिलना, डोलना, इतराना।
मलकरन–(हिं०पुं०) नक्काशी करने का एक अस्त्र।
मलका–हिं०स्त्री०) सम्राट् की पटरानी।
मलकाना–(हिं०क्रि०) हिलाना, डोलाना, बना बना कर बातें करना।
मलखंभ–(हिं०पुं०) देखो मलखंम।
मलखंम–(हिं० पुं०) चार पांच हाथ लंबा लकड़ी का मोटा डंडा जो भूमि में गाड़ा रहता है अथवा छत में से लटकाया रहता है जिस पर अनेक प्रकार का व्यायाम किया जाता है, इस पर का व्यायाम, लकड़ी का खूंटा जो पत्थर के कोल्हू में लगा होता है।
मलखाना–हिं० पुं०) संयुक्त प्रान्त के पश्चिम में रहने वाली एक राजपूत जाति जो मुसलमानी राज्य में मुसलमान थे परन्तु अब हिन्दू हो गये हैं, (वि०) मल खाने वाला।
मलग–(स०पुं०) रजक, धोबी।
मलगजा–(हिं०पुं०) बेसन में लपेट कर तेल या घी में लपेटे हुए बैंगन के पलले टुकड़े।
मलगिरी–(हिं० पुं०) एक प्रकार का हलका कत्थई रंग।
मलघन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का कचनार।
मलघ्न–(सं० पुं०) सेमल का मूसरा, (वि०) मल नाशक। **मलघ्नी**–(सं०स्त्री०) नागदौना।
मलज–(सं० वि०) मल से उत्पन्न; (नपुं०) पीब।
मलझन–(हिं०पु०) एक प्रकारकी लता।
मलत्व–(सं० नपुं०) मलता, मल का भाव या धर्म।
मलदूषित–(सं०वि०) मलिन, मैला।
मलद्वार–(सं०पुं०) शरीर की वे इन्द्रियां जिसमें से मल निकलते हैं, गुदा।
मलधात्री–(सं०स्त्री०) बच्चों का मलमूत्र धोने वाली धाय।
मलन–(सं०नपुं०) पोतना, लगाना, तंबू।
मलना–(हिं०क्रि०) हाथ या अन्य वस्तु से किसी वस्तु को रगड़ना, ऐंठना, मरोड़ना रगड़ना, दबाना, मसलना, मीजना, हाथसे बारंबार दबाना; **हाथ मलना**–पछताना।
मलनी–(हिं०स्त्री०) कुम्हार का पात्र चिकनाने का एक अस्त्र।
मलवा–(हिं०पुं०) कतवार, कूड़ा कर्कट, गिरी या गिराई हुई घरों की ईंट, पत्थर, चूना आदि।
मलभुज–सं०पुं० मल खाने वाला जन्तु
मलमल–(हिं०स्त्री०) महीन सूत से बुना हुआ एक प्रकार का पतला कपड़ा।
मलमला–(हिं०पुं०) कुलफ़े का साग।
मलमलाना–(हिं०क्रि०) बारंबार स्पर्श करना, खोलना मूंदना, बारंबार आलिंगन करना पछतावा करना।
मलमा–(हिं०पुं०) देखो मलबा।
मलमास–(स० पुं०) अधिक मास जो प्रति तीसरे वर्ष होता है, पुरुषोत्तम मास।
मलय–(सं०पुं०) मलाबार प्रदेश, सफ़ेद चन्दन, छप्पय का एक भेद, नन्दनवन, गरुड़ के एक पुत्र का नाम, मलय देश का रहने वाला मनुष्य। **मलयगन्धिनी**–(सं० स्त्री०) उमा की एक सखी का नाम। **मलयगिरि**–(सं०पुं०) मलयाचल पर्वत जो भारत के दक्षिण में है, मलयगिरि में उत्पन्न चन्दन, हिमालय पर्वत के पूर्व का भाग जहां आसाम है। **मलयज**–(सं०पुं०) चन्दन, राहु, (वि०) वह जो मलयगिरि पर होता हो।
मलयागिरि–(सं० पुं०) देखो मलयगिरि। **मलयाचल**–(सं० पुं०) मलयपर्वत। **मलयानिल**–(सं० पु०) मलय पर्वत से आनेवाली वायु, वसन्त काल की हवा।
मलयाली–(हिं० वि०) मलाबार देश संबंधी, मलाबार देश में उत्पन्न, (स्त्री०) मलाबार देश की भाषा।
मलयुग–(सं०पुं०) कलियुग।
मलरुचि–(सं० वि०) पापमय चित्त का, पापी।
मलरोधक–(सं० वि०) मलमे रुकावट करने वाला।
मलवा–(हिं० पुं०) बरमा देश में होने वाला एक वृक्ष।
मलवाना–(हिं० स्त्री०) मलने का काम दूसरे से कराना।
मलवेग–(स०पुं०) अतीसार रोग।
मलशुद्धि–(सं०स्त्री०) पेट की शुद्धि।
मलसा–(हिं० पुं०) घी रखने का चमड़े का कुप्पा।
मलसी–(हिं० स्त्री०) मुसलमानो का खाना पकाने का मिट्टी का पात्र।
मलहारक–(स०वि०) पाप हरने वाला।
मला–(सं०स्त्री०) भुईं आमला, आमाहल्दी, चमड़ा, कसकुट, बिच्छूका डंक।
मलाई–(हिं०स्त्री०) दूध की साढ़ी, सार, तत्व, रस, हलका बादामी रंग, मलने को क्रिया या भाव, मलने का वेतन।
मलाका–(सं०स्त्री०) कामिनी स्त्री, वेश्या।
मलाट–(हिं०पुं०) एक प्रकार का भूरे

रंग का घटिया मोटा कागज़ जो बांधने के काम में आता है।
मलान–(हिं०वि०)देखो म्लान। मलानि–(हिं०स्त्री०) देखो म्लानि।
मलापह–(सं० वि०) मल को दूर करने वाला।
मलायन–(सं०नपुं०) मलद्वार, गुदा।
मल्लार–(हिं०पुं०) एक राग जो बरसात में गाया जाता है; मलार गाना–प्रसन्न होकर कुछ कहना। मलारी–(हिं० स्त्री०) वसन्त राग की एक रागिणी।
मलायश–(सं०पुं०) मलस्थान, उदर।
मलाह–(हिं०पुं०) देखो मल्लाह।
मलिंद–(हिं०पुं०) देखो मलिन्द, भौंरा।
मलिक्ष,मलिच्छ–(हिं०वि०)देखो म्लेच्छ।
मलित–(हिं० पुं०) सोनार की गहना स्वच्छ करने की कूंची।
मलिन–(सं० नपु०) मैली वस्तु, एक प्रकार के साधु जो मैला कुचैला वस्त्र पहनते हैं दोष, पाप, मट्ठा, सोहागा, काला अगर, रत्नों की चमक या रंग का फीका होना; (वि०) मैला, मटमैला, धीमा, फीका, उदासीन। मलिनता–(सं०स्त्री०) मैलापन;
मलिनत्व–(सं०नपुं०) मलिनता। मलिनमुख–(सं०पुं०) अग्नि, प्रेत, बैल की पूंछ,(वि०)क्रूर, जिसका मुख उदास हो।
मलिना–(सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री, लाल खांड।
मलिनाई–(हिं०स्त्री०) मलिनता,मैलापन;
मलिनाना–(हिं०क्रि०) मैला होना।
मलिनाम्बु–(सं०नपुं०) गंदला पानी।
मलिनीकरण–(सं० नपुं०) निर्मल वस्तु को मैला करना।
मलिया–(हिं०स्त्री०) छोटे मुख का मिट्टी का पात्र, चक्कर, घेरा।
मलियामेंट–(हिं०पुं०) सत्यानाश।
मलिस–(हिं०स्त्री०) सोनारों का छेनी की तरह का एक अस्त्र।
मलीन–(हिं०वि०)मैला कुचैला, उदास;
मलीनता–(हिं०स्त्री०) देखो मलिनता।
मलीमस–(सं०नपुं०) पाप, दोष;(वि०) पापयुक्त, मलिन।
मलुक–(हिं० स्त्री०) उदर, पेट, एक प्रकार का पशु।
मलू–(हिं०स्त्री०) मलधन नामक वृक्ष।
मलूक–(सं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, एक प्रकार का पक्षी; (हिं० वि०) मनोहर, सुन्दर।
मलेक्ष, मलेच्छ–(हिं०वि०)देखो म्लेच्छ।
मल्ल–(सं०पुं०) एक प्राचीन जाति का नाम, इस जाति के लोग मल्लयुद्ध में बड़े कुशल होते थे, इसी कारण से कुश्ती को 'मल्ल युद्ध कहते हैं, पहलवान, पात्र दीपक, एक वर्णसंकर जाति।
मल्लक–(सं०पुं०) दन्त, दांत।
मल्लक्रीडा–(सं०स्त्री०) मल्लयुद्ध।
मल्लखम्भ–हिं०पुं०) देखो मलखंभ।
मल्लतरु–(सं०पुं०)पियाल वृक्ष,चिरौंजी का पेड़। मल्लताल–(सं०पुं०) संगीत में एक ताल का नाम। मल्लभू, मल्लभूमि–(सं० स्त्री०) मल्लयुद्ध का स्थान,अखाड़ा। मल्लयूद्ध–(सं०नपुं०) का आपस में युद्ध।
मल्लवाह–(सं०पुं०) लालरंगकीएकघास
मल्लविद्या–(सं० स्त्री०) मल्लयुद्ध की विद्या; मल्लशाला–(सं०स्त्री०) मल्लभूमि, अखाड़ा।
मल्ला–(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री, चमेली, (हिं०पुं०) जुलाहों का एक अस्त्र।
मल्लार–(सं० पुं०) संगीत शास्त्र के अनुसार एक राग का नाम, मल्लारी–(सं०स्त्री०) वसन्त रागकी एक रागिणी
मल्लासुर–(सं०पुं०) एक असुर जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
मल्लिक–(सं०पु०) भूस्वामी की एक उपाधि, माघ का महीना, जुलाहों की ढरकी।
मल्लिका–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का बेला, जिसको मोतिया भी कहते हैं, एक प्रकार का मिट्टी का पात्र, आठ अक्षरों का एक वर्णिक छन्द, सुमुखी वृत्ति का एक नाम, यूथिका, जूही।
मल्लिकाक्ष–(सं०पुं०) एक प्रकार का हंस; मल्लिकामोद–(सं० पुं०) संगीत में एक ताल का नाम।
मल्लिगन्धि–(सं०नपुं०) अगुरु, अगर।
मल्लिनी–(सं०स्त्री०) माधवी लता।
मल्ली–(सं०स्त्री०) सुन्दरी वृत्ति का एक नाम। मल्लीकर–(सं०त्रि०) चोरी करने वाला, चोर।
मल्लु–(सं०पुं०) भालू, बन्दर। मल्लू–(हिं०पुं०) बन्दर।
मल्व–(सं०पुं०) शत्रु।
मल्हनी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी नाव जिसका अगला भाग अधिक चौड़ा होता है।
मल्हराना, मल्हाना–(हिं०क्रि०) चुमकारना, पुचकारना।
मल्हार–(हिं०पुं०) देखो मल्लार।
मवास–(हिं०पुं०) आश्रय, शरण, रक्षा स्थान, दुर्ग; मवास करना–रहना।
मवासी–(हिं०स्त्री०) गढ़ी, (पुं०) गढ़पति, प्रधान पुरुष, मुखिया।
मश–(सं०पुं०) क्रोध, मच्छड़।
मशक–(सं०पु०) मच्छड़, मसा नाम का चर्म रोग।
मशकहरी–(सं०स्त्री०) मसहरी।
मष–(हिं०पुं०) देखो मख।
मषि–(सं०स्त्री०) काजल, सुरमा,स्याही
मष्ट–(हिं० वि०) जो भूल गया हो, उदासीन,मौन, चुप रहने वाला; मष्ट रहना–मौन धारण करना।
मस–(हिं०स्त्री०) देखो मसि, रोशनाई, मोछ निकलनेके पहिले ओंठ पर का कालापन; मस भींजना–मोंछ निकलना आरंभ होना।
मसक–(सं०पुं०) मसा, मच्छड़, (हिं० पुं०) मसकने की क्रिया।
मसकत–(हिं०स्त्री०) परिश्रम।
मसकना–(हिं०क्रि०) खिचाव या दबाव पड़ कर कपड़े का इस प्रकार फटना कि उसके बुनावट के सूत टूट कर अलग हो जावें,किसी पदार्थ में दरार पड़ जाना, बल पूर्वक दबाना या मलना, चिन्तित होना, दुःखके कारण मन धँसना।
मसकरा–(हिं०पुं०) देखो मसखरा।
मसकली–(हिं०स्त्री०)सिकली करनेका यन्त्र
मसखवा–(हिं०पुं०) मांसाहारी, मास खाने वाला।
मसड़ी–(हिं०स्त्री०) एकप्रकारकीचिड़िया
मसनद–(हिं०स्त्री०) बड़ी तकिया।
मसन–(हिं०पुं०) ऊन बटने का टेकुआ।
मसना–(हिं०क्रि०) मसलना, गूंधना।
मसयारा–(हिं०पुं०) मशालची।
मसलना–(हिं०क्रि०) हाथ से दबाते हुए रगड़ना, मलना, आटा गूंधना, बल पूर्वक दबाना।
मसवई–(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी बबूल की गोंद।
मसवारा–(हिं०पुं०) प्रसूता स्त्रीका प्रसव के एक महीने का बाद का स्नान।
मसवासी–(हिं०पुं०) वह साधू वैरागी जो एक महीने से अधिक एक स्थान में न रहे, वह स्त्री जो एक महीने से अधिक किसी पुरुष के पास न रहे, गणिका, वेश्या।
मसहरी–(हिं०स्त्री०) वह जालीदार कपड़े का बना हुआ परदा जो मच्छड़ों से बचने के लिये पलंग के चारों ओर लटकाया जाता है,ऐसा पलंग जिसमें ऐसा जालीदार परदा लटकाने के लिये ऊंचे छड़ लगे हों।
मसहार–(हिं०पुं०) मांसाहारी, मास खाने वाला।
मसा–(हिं०पुं०) शरीर के किसी भाग में काले रंग का उभड़ा हुआ मांस का छोटा दाना, बवासीर रोग में गुदा के भीतर या मुंह पर का मांस का दाना, (हिं०पु०) मच्छड़, मस।
मसान–(हिं०पुं०) शव को जलाने का स्थान, मरघट, रणभूमि, भूत प्रेत पिशाच आदि;मसान जगाना–तन्त्रोक्त विधि से मरघट में बैठ कर मंत्र सिद्ध करना। मसानिया–(हिं०पुं०) मसान का डोम। मसानी–(हिं०स्त्री०) मरघट में रहने वाली डाकिनी पिशाचिनी आदि।
मसार–(सं०पुं०) नीलमणि,नीलम, (हिं० वि०) स्निग्ध, गीला।
मसाल, मसालची–(हिं०) देखो मशाल, मशालची।
मसाला–(हिं०पुं०) किसी पदार्थ को तैयार करने के लिये आवश्यक सामग्री, तेल, साधन, औषधियों का अथवा रसायनिक द्रव्यों का समूह।
मसि–(सं०पुं०) लिखने की रोशनाई, काजल, कालिख।
मसिक–(सं०पुं०) सर्प की बिल।
मसिदानी, मसिधानी–हिं०स्त्री०) दावात
मसिपात्र–(सं०पुं०) देखो मसिदानी।
मसिबन्दा–हिं०पुं०) रोशनाई का बूंद।
मसिमुख–(सं०वि०) जिसके मुंह में स्याही लगी हो, पापी, कुकर्मी।
मसियाना–(हिं०क्रि०) पूरा हो जाना।
मसियर–(हिं०पुं०) मशाल।
मसियारा–(हिं०पु०) मशालची।
मसिबिन्दु–(हिं०पुं०) काजल का बुन्दा जो कुदृष्टि से बचने के लिये बच्चों के माथे में लगाया जाता है;दिठौना
मसिल–(हिं०पु०) देखो मैनसिल।
मसी–(सं०स्त्री०) काली स्याही।
मसीका–(हिं०पु०) एक माशे का मान
मसीत, मसीद–हिं०पुं०) मसजिद।
मसीना–(सं०स्त्री०) तीसी।
मसुर–(सं०पु०) मसूर, मसुरी।
मसू–(हिं०स्त्री०) कठिनता, कठिनाई।
मसूढ़ा–(हिं०पु०) मुख के भीतर का वह मांस जिसमें से दाँत निकले रहते हैं
मसूर–(सं०पुं०) एक प्रकार का चिपटा अन्न जिसकी दाल गुलाबी रंग की होती है।
मसूरा–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी, मसूर की बनी हुई बरी, देखो मसूढ़ा।
मसूरिका–(सं०स्त्री०) कुटनी, शीतला रोग, चेचक।
मसूरी–(स०स्त्री०) मसूरिका, चेचक।
मसूल–हिं०पुं०) देखोमहसूल।
मसूला(हिं०पु०) एक प्रकार की पतली लंबी नाव।
मसूसना–(हिं०क्रि०) निचोड़ना, ऐंठना, बल देना, चित्त के किसी उद्वेग को रोकना, मन ही मन कुढ़ना।
मसृण–सं०क्रि०)चिकना और कोमल।
मसेवरा–(हिं०वि०) मांस का बना हुआ खाने का पदार्थ।
मसोढा–(हिं०पुं०) सोना चांदी आदि गलाने की घरिया।
मसोसना–(हिं०क्रि०) मन में कष्ट होना
मस्करा–(हिं०पुं०) ठिठोलिया। मस्करी–(हिं०स्त्री०) ठिटोलियापन। मस्खरा–(हिं०पुं०) देखो मस्करा।
मस्जिद–(हिं०स्त्री०) देखो मसजिद।
मस्तक–(सं०पुं०) मुण्ड, शिर, सिर।
मस्तरी–(हिं०स्त्री०) धातु गलानेकी भट्ठी
मस्तिष्क–(सं०नपुं०) मस्तक के भीतर का गूदा, भेजा।
मस्तूरी–(हिं०स्त्री०)धातु गलाने की भट्ठी
मस्सा–(हिं०पुं०) देखो मसा।
महँ–(हिं०अव्य०) में।
महँई–(हिं०वि०) देखो महान्, भारी; (अव्य०) देखो महँ।
महँक, महँकना–देखो महक, महकना।
महंगा–(हिं०वि०) अधिक मूल्य पर बिकने वाला, जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो। महंगाई–(हिं०स्त्री०) देखो महँगी

महँगी—(हि०स्त्री०) महँगा होने का भाव, महँगापन, महँगा होने की अवस्था, अकाल, दुर्भिक्ष।
महँड़ा—हिं०स्त्री०) भूने हुए चने।
महन्त—हिं०पु०) किसी मठ का अधिष्ठाता, साधुओं का मुखिया, (वि०) श्रेष्ठ, प्रधान। महन्ती—(हिं०स्त्री०) महन्त का भाव या पद।
महँदी—(हिं०स्त्री०) देखो मेंहदी।
मह—(हिं०अव्य०) देखो महँ, (स०पुं०) उत्सव, यज्ञ, भैंस, (वि०) महत्, बड़ा अधिक।
महक—(हिं०स्त्री०)गन्ध, वास; महकदार—जिसमें महक हो, महकने वाला। महकना—(हिं०क्रि०) गन्ध निकालना,
महकान—(हिं०स्त्री०) देखो महक।
महकाली—(हिं०स्त्री०) पार्वती।
महकोला—(हिं०वि०) सुगन्धित, महकदार
महचक्र—(हिं०पुं०) सूर्य।
महजित—(हिं०स्त्री०) देखो मसजिद।
महण—(हिं०पुं०) समुद्र।
महत्—(सं०वि०) वृहत्, विपुल,विस्तीर्ण, सर्वश्रेष्ठ, (पुं०) दर्शन के अनुसार प्रकृति का पहला विकार जिससे जगत् की उत्पत्ति हुई है, राज्य, ब्रह्म, जल।
महत—(हिं०पु०) देखो महत्व।
महतवान—(हिं०पु०) करगह के पीछे की ओर लगी हुई खूंटी।
महता—(हिं०पुं०) सरदार, गांव का मुखिया, लेखक, (स्त्री०)गर्व, अभिमान।
महतारी—(हिं०पुं०) माता, मा।
महती—(सं०स्त्री०) एक प्रकार की बीन, नारद की वीणा का नाम, महत्व, महिमा, योनि का एक रोग, वैश्यों की एक जाति: महती द्वादशी—भाद्रपद शुक्ला द्वादशी यदि उस दिन श्रवण नक्षत्र पड़ता हो।
महतु—(हिं०पुं०) देखो महत्व।
महतो—(हिं०स्त्री०) गयावाल पंडों की एक उपाधि, सरदार, चौधरी।
महत्कथ—(सं०वि०) चापलूस।
महत्तत्त्व—(सं०नपुं०) सांख्य के अनुसार चौबीस तत्वों में से दूसरा तत्व, बुद्धि तत्व, जीवात्मा।
महत्तम—(सं०वि०) सबसे बड़ा या श्रेष्ठ, महत्तर—(सं०वि०) दो पदार्थों में बड़ा या श्रेष्ठ। महत्व—(सं०नपुं०) श्रेष्ठता, उत्तमता, अधिकता, बड़प्पन।
महदाशा—(सं०स्त्री०) ऊंची आकांक्षा।
महद्गत—(सं०वि०) जिसने श्रेष्ठ पुरुष का आश्रय लिया हो।
महद्भय—(सं०नपुं०) अधिक भय, बड़ी डर।
महन—(हिं०पु०) देखो मथन।
महना—(हिं०क्रि०) दही दूध आदि को मथना, (पुं०) मथानी, रई।
महनिया—(हिं०पुं०) मथने वाला।
महनु—(हिं०पुं०) नाश करने वाला, मथन करने वाला।
महमदी—(हिं०वि०) मुहम्मद के मत का अनुयायी, मुसलमान।
महमंत—(हिं०वि०) मदोन्मत्त, मस्त।
महमह—हिं०क्रि०वि०) सुगन्ध के साथ।
महमहण—(हिं०पुं०) विष्णु।
महमहा—हिं०वि०) सुगन्धित।
महमहाना—हिं०क्रि०, सुगन्ध देना, महँकना।
महमा—हिं०स्त्री०) देखो महिमा।
महमानी—हिं०स्त्री०) पहुनई।
महमाय—(हिं०स्त्री०) पार्वती।
महम्मद—देखो मुहम्मद।
महर—(हिं०पु०) एक आदर सूचक शब्द जो व्रज में बोला जाता है, इसका व्यवहार विशेष करके भूस्वामी और वैश्यों के लिये किया जाता है, एक प्रकार की चिड़िया, (वि०) सुगन्धित; देखो महरा।
महरबान—(हिं०पुं०) कृपा करनेवाला।
महरा—(हिं०पुं०) कहार सरदार, श्वसुर के लिये आदर सूचक शब्द; (वि०) श्रेष्ठ बड़ा। महराई—(हिं०स्त्री०) श्रेष्ठता,प्रधानता। महराज—(हिं०पुं०) देखो महाराज। महराजा—(हिं०पुं०) देखो महाराज।
महराना—(हिं०पुं०) महरों के रहने का स्थान।
महराब—(हिं०स्त्री०) घरों में की वृत्ताकार रचना।
महरि—(हिं०स्त्री०) व्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिये व्यवहार किया जाने का आदर सूचक शब्द, घर की मालकिन, एक प्रकार का पक्षी।
महरी—(हिं० स्त्री०) ग्वालिन नामक चिड़िया।
महरू—(हिं०पु०) चंडू पीने की नली, एक प्रकार का वृक्ष।
महरेटा—(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण, महर का बेटा। महरेटी—(हिं०स्त्री०) राधिका, महरकी लड़की।
महर्घता—सं०स्त्री०) मँहगा होने का भाव, मँहगी।
महर्लोक—(सं०पुं०) पुराण के अनुसार चौदह लोकों में से एक लोक।
महर्षभ—(सं० पुं०) बड़ा सांड़, (वि०) अति श्रेष्ठ।
महर्षि—(स०पुं०) अति श्रेष्ठ ऋषि,ऋषीश्वर, सगीत में एक राग का नाम।
महल्ल—(स०पुं०) वृद्ध मनुष्य, खोजा।
महल्लक—(सं०पुं०) अन्तःपुर का रक्षक।
महस—(सं०नपुं०) यज्ञ, आनन्द, जल, (वि०) पूज्यमान, बड़ा, महत्।
महाँ—(हिं०अव्य०) देखो महँ।
महा—(स०वि०) अत्यन्त, बहुत, अधिक, सर्वश्रेष्ठ, सबसे बढ़कर, बहुत बड़ा, भारी, (हिं०पुं०) मठा, छाछ।
महा अरंभ—(हिं०पुं०) बहुत कोलाहल।
महाई—(हिं०स्त्री०) मथने का काम, मथने का भाव, मथने का शुल्क।
महाउत—(हिं०पुं०) देखो महावत।
महाउर—(हिं०स्त्री०) देखो महावर।
महाकच्छ—(सं०पुं०) समुद्र, वरुण, पर्वत
महाकपाल—(सं०पुं०) शिव के एक अनुचर का नाम। महाकपोल—सं०पुं० शिव का एक अनुचर।
महाकम्बु—सं०पुं० शिव, महादेव।
महाकर—सं०पुं० लंबा हाथ, अधिक लगान, (वि०) बड़े हाथ वाला, महा दानि।
महाकरुण—सं०वि० अति दयालु।
महाकर्ण—(सं०पु०) शिव, महादेव, वि० जिसके बड़े बड़े कान हों। महाकर्णा—(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
महाकल्प—(सं०पुं०) शिव, महादेव, उतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयुष्य पूरी होती है।
महाकान्त—(स०वि०) बहुत सुन्दर।
महाकान्ता—(स०स्त्री०) पृथ्वी।
महाकाय—(सं०पुं०) शिव का द्वारपाल, नन्दी, हाथी, बड़ा शरीर, (वि०) बड़े शरीर वाला।
महाकारण—(सं०पु०) सब कर्मोंका कारण, परमेश्वर।
महाकाल—(सं०पुं०) शिव, महादेव। महाकाली—(सं०स्त्री०) महाकाल की पत्नी, दुर्गा की एक मूर्ति का नाम, शक्ति की एक अनुचरी।
महाकाव्य—(सं०नपुं०) सर्गबद्ध वह बड़ा काव्य जिसमें आठ से अधिक सर्ग हों, जिसमें श्रृंगार, वीर अथवा शान्त रस प्रधान हों तथा हास्य करुण, बीभत्स आदि रसों का अंगभूत से वर्णन हो तथा इसमें ऐतिहासिक घटना अथवा किसी महात्मा का चरित्र तथा सामाजिक कृत्यों का और प्राकृतिक सौन्दर्य और ऋतुओं का वर्णन हो।
महाकुमार—(सं०पु०) युवराज।
महाकृच्छ्र—(सं०पुं०) विष्णु का एक नाम
महाकेतु, महाकेश—(स० पुं०) शिव, महादेव।
महाक्रतु—(सं०पु०) राजसूय, अश्वमेध आदि बड़ा यज्ञ।
महाक्ष—(सं०पुं०) विष्णु, महादेव।
महाखर्व—(सं०पुं०) सौ खर्व की संख्या
महाखात—(सं०नपुं०) लंबा चौड़ा गड्ढा
महाख्यात—(स०वि०) अति प्रसिद्ध।
महागद—(सं०पुं०) कोई बड़ा रोग।
महागन्ध—(सं०पुं०) बोल, हरिचन्दन, (वि०) सुगन्धी।
महागर्भ—(सं०पुं०) शिव, एक दानव का नाम।
महागव—(सं०पु०) गवय, गाय के समान एक पशु जिसके गले में झालर न हो।
महागुनी—(हिं०पुं०) देखो महोगनी।
महागौरी—(सं०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम।
महाग्रीव—(सं०पुं०) ऊंट, शिव,महादेव।
महाघोर—(सं०वि०) अति भयानक।
महाचक्र—(सं०नपुं०) बड़ा चक्र, भवचक्र
महाचण्ड—(सं०पुं०) शिव के एक अनुचर का नाम।
महाचपला—(सं०स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद।
महाचित्ता—(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
महाजन—(सं०पुं०) साधु, श्रेष्ठ पुरुष, धनी, रुपये पैसे का लेन देन करने वाला, भद्र पुरुष भला आदमी, वनियां, कोठीवाल; महाजनी—(हिं०स्त्री०) रुपये के लेन देन का व्यवसाय, हुंडी पुरजे का काम, महाजनों के यहां बहीखाता लिखने की एक लिपि जिसमें मात्रायें आदि नहीं लगाये जाते, मुड़िया अक्षर।
महाजम्भ—(सं०पुं०) शिव के एक अनुचर का नाम।
महाजल—सं०पुं०) समुद्र; महाजाति—(सं०स्त्री०) श्रेष्ठ वर्ण; महाजानु—(सं०पुं०) शिव का एक अनुचर; महाजिह्व—(सं० पुं०) एक असुर का नाम, शिव; महाज्ञान—(स०नपुं०) परम ज्ञान; महाज्वाला—(सं०स्त्री०) महती ज्वाला, जिस अग्नि में बड़ी ज्वाला हो।
महाढ्य—(सं०वि०) अति धनवान्, बड़ा धनी।
महातङ्क—(सं०पुं०) बड़ी व्याधि।
महातत्व—(सं०नपुं०) ज्ञान तत्व; महातत्वा—(सं०स्त्री०) दुर्गा की एक अनुचरी।
महातप—(हिं०पुं०) कठिन तपस्या, (पु०) विष्णु।
महातपन—(सं०पुं०) एक नरक का नाम
महातम—(हिं०पुं०) देखो माहात्म्य।
महातल—(सं०नपुं०) चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का भुवन या तल।
महातिक्त—(सं०पुं०) बकाइन का वृक्ष, चिरायता।
महातीक्ष्ण—(सं०वि०) बहुत तीखा या कड़वा।
महातेजस्—(स०पुं०) पारा, (पुं०) अग्नि, शिव, कार्तिकेय, (वि०) बड़ा प्रतापवान्
महात्मा—(हिं०पु०) वह जिसकी आत्मा का आशय बहुत ऊंचा हो, महानुभाव, परमात्मा, शिव, महादेव, बहुत बड़ा साधु, सन्यासी या विरक्त।
महात्यय—(सं० पुं०) घोर विपत्ति, बड़ा नाश।
महात्यागी—(हिं०वि०) जिसने संसार से माया मोह आदि बिलकुल छोड़ दिया है।
महादण्ड—(सं०पुं०) यम के हाथ का बड़ा दण्ड, महा दण्डधारी—यमराज।
महादन्त—(हिं०वि०) हाथी का दांत, शिव, महादेव।
महादान—(सं०नपुं०) वे बड़े दान जिनके करने में अनन्त स्वर्ग की प्राप्ति

होती है, प्रधान महादान-सोना, सोने का घोड़ा, तिल, गाय, दासी, रथ, पृथ्वी, घर, कन्या और कपिला गाय हैं।
महादूत–(सं॰पुं॰) यमदूत।
महादेव–(सं॰पुं॰) शिव, अष्टमूर्ति के अन्तर्गत यह सोम मूर्ति है तथा ब्रह्म स्वरूप हैं; **महादेवी**–(सं॰स्त्री॰) दुर्गा का एक नाम, राजा की प्रधान रानी या पटरानी।
महाद्युति–(सं॰स्त्री॰) चमकीला प्रकाश।
महाद्रुम–(सं॰पुं॰) तालवृक्ष, ताड़ का पेड़; **महाद्रोण**–(सं॰ पुं॰) शिव, महादेव, सुमेरु पर्वत; **महाद्रोणा**–(सं॰स्त्री॰) द्रोणपुष्पी।
महाद्वीप–(सं॰पुं॰) पृथ्वी का वह बड़ा भाग जो चारो ओर प्राकृतिक सीमाओं से घिरा हो, जिसमें अनेक देश हों और अनेक जातियां जिसमे वास करती हों।
महाधन–(सं॰वि॰) बहुमूल्य, बहुत धनी; (पुं॰)सुवर्ण, सोना, खेती, सुगन्ध, धूप।
महाध्वनि–(सं॰पुं॰) बड़े वेग का शब्द
महान्–(सं॰वि॰) विशाल, बहुत बड़ा।
महानग्न–(सं॰वि॰) जिसके शरीर पर वस्त्र न हो; **महानट**–(सं॰पुं॰) शिव, महादेव; **महानन्द**–(सं॰पुं॰) मुक्ति, मोक्ष, अति प्रसन्नता, मगध देश के एक प्रतापी राजा का नाम, दस अंगुल की बांसुरी।
महानन्दा–(सं॰स्त्री॰) सुरा, माघ शुक्ला नवमी।
महानरक–(सं॰नपुं॰) अत्यन्त कष्ट देने वाला नरक।
महानल–(सं॰नपुं॰) भयंकर आग।
महानवमी–(सं॰स्त्री॰) आश्विन शुक्ला नवमी।
महानस–(सं॰पुं॰) पाकशाला; **महानाटक**–(सं॰ नपुं॰) दस अंक का नाटक; **महानाडी**–(सं॰स्त्री॰)मोटी नस
महानाद–(सं॰ पुं॰) गज, हाथी, सिंह, ऊंट, शंख, बड़ा ढोल, शिव, महादेव, बरसने वाला बादल, शब्द; **महानाभ**–(सं॰ पुं॰) हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम, एक प्रकार का मन्त्र जिससे शत्रु के फेंके हुए अस्त्र व्यर्थ हो जाते हैं
महानारायण–(सं॰पुं॰) विष्णु।
महानास–(सं॰पुं॰) शिव, महादेव, (वि॰) बड़ी नाक वाला।
महानिद्रा–(सं॰स्त्री॰) मृत्यु, मरण।
महा निधान–(सं॰पुं॰) बुभुक्षित धातु, भेदी पारा जिसको "बावन तोला पाव रत्ती" भी कहते है।
महानिम्ब–(सं॰पुं॰) बकायन का वृक्ष।
महानियम–(सं॰पुं॰) विष्णु।
महानिरय–(सं॰पुं॰) एक नरक का नाम
महानिर्वाण–(सं॰नपुं॰) परि निर्वाण जिसके अधिकारी केवल अर्हत या बुद्ध गण माने जाते हैं।
महानिशा–(सं॰स्त्री॰) रात्रि का मध्य भाग, आधी रात, प्रलय की रात्रि।
महानील–(सं॰पुं॰) भृङ्गराज पक्षी, एक प्रकार का नीलम, एक प्रकार का सर्प, सबसे बड़ी संख्या।
महानुभाव–(सं॰वि॰) महाशय, कोई बड़ा आदरणीय व्यक्ति, बड़ा आदमी; **महानुभावता**–(सं॰स्त्री॰) महनुभाव होने का भाव, बड़प्पन।
महानुराग–(सं॰वि॰) ऐकान्तिक प्रेम।
महानेत्र–(सं॰पुं॰) शिव, महादेव।
महानेमि–(सं॰पुं॰) काक, कौवा।
महान्तक–(सं॰पुं॰) मृत्यु, महादेव, शिव;
महान्वय–(सं॰वि॰) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो।
महापक्षी–(सं॰स्त्री॰) उल्लू, गरुड़।
महापत्र–(सं॰पुं॰) सागवान का वृक्ष।
महापथ–(सं॰पुं॰) प्रधान पथ, राजपथ, बड़ा लंबा चौड़ा मार्ग, मृत्युपथ, परलोक मार्ग, शिव, महादेव, सुषुम्ना नाड़ी, एक नरक का नाम।
महापद्म–(सं॰पुं॰) एक नाग का नाम, कुबेर की नव निधियों में से एक, सौ पद्म की संख्या, सफ़ेद कमल, दक्षिण दिशा का दिग्गज, एक नरक का नाम नन्द राजा के एक पुत्र का नाम।
महापद्य–(सं॰पुं॰) महाकव्य।
महापवित्र–(सं॰वि॰) अति पवित्र।
महापात–(सं॰पुं॰)तीर का दूर में गिरना
महापातक–(सं॰नपुं॰) पांच सबसे बड़े पाप यथा-ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेय (चोरी), गुरुपत्नी के साथ व्यभिचार करना तथा इन पापचारियों के साथ संसर्ग; **महापातकी**–(हिं॰पुं॰) महापातक करने वाला।
महापात्र–(सं॰पुं॰) प्रधान मन्त्री कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक कर्म का दान लेता है।
महापाद–(सं॰पुं॰) शिव, महादेव।
महापाश–(सं॰पुं॰) यमदूत विशेष।
महापुत्र–(सं॰पुं॰) पौत्र, पोता।
महापुरी–(सं॰स्त्री॰) राजधानी।
महापुरुष–(सं॰पुं॰) नारायण, भगवान्, महात्मा, महानुभाव, श्रेष्ठ मनुष्य।
महापुष्प–(सं॰पुं॰) लाल कनेर, काला मूंग; **महापूजा**–(सं॰स्त्री॰) दुर्गा की नवरात्र की पूजा; **महापूत**–(सं॰वि॰) अति पवित्र; **महापृष्ठ**–(सं॰पुं॰) उष्ट्र, ऊंट, (वि॰)चौड़ी पीठ का; **महाप्रकाश**–(सं॰पुं॰) अवतार आदि का अविर्भाव
महाप्रजापति–(सं॰पुं॰) विष्णु।
महाप्रताप–(सं॰वि॰)अत्यन्त प्रभावशाली
महाप्रभ–(सं॰ वि॰) जिसमें बहुत चमक हो; **महाप्रभाव**–(सं॰ पुं॰) अति बलवान्; **महाप्रभु**–(सं॰ पुं॰) परमेश्वर, चैतन्य, बल्लभाचार्य की पदवी, राजा, इन्द्र, शिव, विष्णु, सन्यासी या साधु, वैष्णव आचार्य चैतन्य की एक आदर सूचक पदवी;
महाप्रलय–(सं॰पुं॰) त्रैलोक्य का नाश या संहार, जो ब्रह्मा के एक दिन बीतने पर होता है; **महा प्रसाद**–(सं॰पुं॰) विष्णु का नैवेद्य, जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ भात, मांस, अखाद्य पदार्थ, अधिक प्रसन्नता; **महा प्रसूत**–(सं॰पुं॰) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम; **महा प्रस्थान**–(सं॰नपुं॰) शरीर त्यागने की इच्छा से हिमालय की ओर जाना, मृत्यु, मरण; **महाप्राज्ञ**–(सं॰पुं॰) बड़ा ज्ञानी।
महाप्राण–(सं॰ पुं॰) काला कौवा, व्याकरण में—ख, घ, छ, झ, ठ ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, और ह इन वर्णों का नाम, (वि॰) बड़ा बलवान्।
महाफल–(सं॰पुं॰) बेल का वृक्ष, नारियल का पेड़; (नपुं॰) बड़ा फल;
महाफला–(सं॰स्त्री॰) इन्द्र वारुणी, बड़ा जामुन, नील का पौधा।
महाबन्ध–(सं॰पुं॰) योग की एक क्रिया
महाबल–(सं॰नपुं॰) सीसा धातु, (पुं॰) पितरों के एक गण का नाम, वायु, शिव के एक अनुचर का नाम, (वि॰) अत्यन्त बलवान्।
महाबला–(सं॰स्त्री॰) पीली सहदेइया, पीपल, नील का पौधा, धव का पेड़, कार्तिकेय की एक मात्रिका का नाम
महाबली–(हिं॰वि॰)बहुत बड़ा बलवान्
महाबाहु–(सं॰वि॰) लंबी भुजा वाला, बलवान्, (पुं॰) बिष्णु, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **महाबुद्धि**–(सं॰वि॰) तीव्र बुद्धि वाला।
महा बोधि–(सं॰पुं॰) बुद्ध देव।
महा ब्राह्मण–(सं॰पुं॰) देखो महापात्र, वह ब्राह्मण जो मृतक कृत्य का दान लेता हो।
महाभट–(सं॰पुं॰) बहुत बड़ा योद्धा।
महा भाग–(सं॰वि॰) बड़ा भाग्यवान्, सौभाग्यशाली, महात्मा; **महा भागवत**–(सं॰पुं॰) परम वैष्णव, एक उपपुराण का नाम, छब्बीस मात्रा का एक छन्द; बारह महा भक्त यथा-मनु, सनकादि, नारद, जनक, कपिल, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज और शंभु।
महाभागी–(हिं॰ वि॰) भाग्यवान्।
महा भार–(सं॰पुं॰) भारी बोझा।
महाभारत–(सं॰नपुं॰) व्यास प्रणीत अठारह पर्वों का एक प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें कौरवों के युद्ध का वर्णन है; कौरव पाण्डवों का युद्ध, कोई बड़ा युद्ध; **महाभाष्य**–(सं॰नपुं॰) पाणिनि व्याकरण के सूत्रों का विस्तृत भाष्य जिसको पतंजलि ने लिखा है।
महाभासुर–(सं॰पुं॰) विष्णु, (वि॰) अति चमकने वाला।
महाभिमान–(सं॰पुं॰) बहुत बड़ा घमंड
महाभीत–(सं॰वि॰) बड़ा डरपोक; **महाभीम**–(सं॰पुं॰) राजा शान्तनु का एक नाम; **महाभीरु**–(सं॰ वि॰) अत्यन्त डरपोक; **महाभुज**–(सं॰वि॰) जिसकी बांह लंबी हों।
महाभूत–(सं॰नपुं॰) पञ्चतत्व-यथा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश
महाभूषण–(सं॰नपुं॰)मूल्यवान अलंकार
महाभैरव–(सं॰पुं॰) शरभ रूपी शिव।
महाभैरवी–(सं॰स्त्री॰) तान्त्रिकों के अनुसार एक विद्या का नाम।
महाभोग–(सं॰स्त्री॰) दुर्गा का एक नाम;
महाभोगी–(सं॰पुं॰)बड़े फन वाला सर्प
महाभ्र–(सं॰नपुं॰) घनमेघ, गहरी घटा। **महामख**–(सं॰पुं॰) कोई बड़ा यज्ञ। **महामणि**–(सं॰पुं॰) मूल्यवान् रत्न। **महामति**–(सं॰वि॰) अति बुद्धिमान्, चतुर; (पुं॰) गणेश, बृहस्पति, यक्षराज।
महामद–(सं॰पुं॰) मस्त हाथी, (वि॰) महुत प्रसन्न। **महामन्त्र**–(सं॰पुं॰) बड़ा मन्त्र, इष्ट मन्त्र, बड़ा प्रभावशाली मन्त्र। **महामन्त्री**–(सं॰पुं॰) राजा का प्रधान मन्त्री। **महामति**–(हिं॰वि॰) बड़ा बुद्धिमान्। **महामह**–(सं॰पुं॰) बड़ा उत्सव। **महामहोपाध्याय**–(सं॰ पुं॰) श्रेष्ठ पण्डित, गुरुओं का गुरु, एक उपाधि जो भारत सरकार की ओर से पण्डितों को दी जाती थी।
महामांस–(सं॰ नपुं॰) मनुष्य के शरीर का मांस; गाय, हाथी, घोड़े, भैंस, बराह, ऊंट तथा उरग का मांस।
महामासी–(सं॰स्त्री॰) संजीवनी नाम का पौधा।
महामाई–(हिं॰स्त्री॰) दुर्गा, काली।
महामात्य–(सं॰पुं॰) राजा का प्रधान या सबसे बड़ा मन्त्री। **महामात्र**–(सं॰वि॰) प्रधान, श्रेष्ठ, सम्पन्न, धनवान्, (पुं॰) प्रधान मन्त्री।
महामानी–(हिं॰वि॰) बहुत बड़ा घमंडी
महामाया–(सं॰ पुं॰) शिव, विष्णु, विद्याधर का एक भेद, (स्त्री॰) गंगा, बुद्धदेव की माता का नाम, दुर्गा, आर्या छन्द का एक भेद। **महामायाधर**–(सं॰ पुं॰) विष्णु।
महामारी–(सं॰स्त्री॰) महाकाली, वह संक्रामक और भीषण रोग जिससे एक साथ बहुत से मनुष्यों की मृत्यु होती है।
महामाल–(सं॰पुं॰) शिव, महादेव।
महामालिका–(सं॰ स्त्री॰) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं। **महामालिनी**–(सं॰स्त्री॰) नाराच छन्द का एक नाम।
महामाष–(सं॰पुं॰) राजमाष, बड़ा उड़द। **महामुख**–(सं॰पुं॰) महादेव, नदी का मुहाना, (वि॰) बड़े मुख वाला। **महामुनि**–(सं॰पुं॰) अगस्त्य मुनि कृपाचार्य, बुद्ध, वेदव्यास।
महामूढ, महामूर्ख–(सं॰वि॰)बड़ा मूर्ख
महामूर्ति–(सं॰पुं॰) विष्णु।
महामृग–(सं॰पुं॰) हाथी, बड़ा शेर।
महामृत्यु–(सं॰पुं॰) यम, शिव। **महा-**

मृत्युञ्जय–(सं०पुं०) शिव का एक मन्त्र विशेष।
महामेघ–(सं०पुं०) शिव, काली घटा।
महामेद–(सं०पुं०) अष्टवर्ग में से एक प्रसिद्ध औषधि। महामेदा–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का कन्द।
महामैत्री–(सं०स्त्री०) गाढ़ी मित्रता।
महामोदकारी–(सं०पुं०) एक वर्णिक वृत्त इसको क्रीडाचक्र भी कहते है।
महामोह–(सं० पुं०) सांसारिक सुखों का भोग। महामोहा–(सं०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम। महाम्बुद–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
महाय–(हिं०वि०) देखो महान्; बहुत।
महायक्ष–(सं०पुं०) यक्षपति, एक प्रकार के बौद्ध देवता।
महायज्ञ–(सं०पुं०) विष्णु,वेदपाठ, हवन, अतिथि पूजा, तर्पण और बलि ये पांच महायज्ञ कहलाते हैं।
महायमक–(सं०नपुं०) श्लोक का एक भेद जिसके प्रत्येक पाद में शब्दात्मक वर्णमाला दी जाती है परन्तु अर्थ में भेद रहता है।
महायशस्क–(सं०वि०) बड़ा यशस्वी।
महायात्रा–(सं०वि०) महातीर्थ यात्रा, मृत्यु।
महायान–(सं०नपुं०) एक विद्याधर का नाम, बड़ी बैलगाड़ी। महायान–(सं० पु०) बौद्धों का एक विशेष सम्प्रदाय।
महायुग–(सं०नपुं०) सत्य, त्रेता, द्वापर तथा कलि इन चारो युगों का समूह। महायुत–सं०पुं०) सौ अयुत की एक संख्या का नाम। महायुध–(सं०पुं०) शिव, महादेव। महायोगिन्–(सं०पुं०) श्रेष्ठ योगी,विष्णु, शिव।
महायौगिक–(सं०पुं०) उनतीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महार्य्य–(सं०वि०) पूजने योग्य
महारक्त–(सं०नपुं०) प्रवाल, मूंगा।
महारजत–(सं० नपुं०) सुवर्ण, सोना, धतूरा।
महारण–(सं०पुं०) महायुद्ध, बड़ी लड़ाई
महारण्य–(सं०नपुं०) बड़ा जंगल।
महारथ–(सं०पुं०) शिव, बड़ा योद्धा।
महारथी–(सं०पुं०) देखो महारथ।
महारव–(सं०पुं०) भेक, मेढक।
महारस–(सं०पुं०) पारा,हिंगुल, अभ्रक, (वि०) जिसमें बहुत रस हो।
महाराज–(सं०पुं०) राजाओं में श्रेष्ठ, बहुत बड़ा राजा,ब्राह्मण,गुरु,आचार्य या किसी पूज्य के लिये सबोधन।
महाराजाधिराज–(सं०पुं०) बहुत बड़ा राजा, अनेक राजाओं में श्रेष्ठ।
महाराज्ञी–(सं०स्त्री०) दुर्गा,महारानी;
महाराज्य–(सं०नपुं०) बहुत बड़ा राज्य
महाराणा–सं०पुं०)उदयपुर या चित्तौड़ के राजवश की एक उपाधि।
महारात्रि–(सं० स्त्री०) महाप्रलय की रात्रि, जब ब्रह्मा का लय हो जाता है और दूसरा महाकल्प होता है, दुर्गा, तान्त्रिकों के अनुसार ठीक आधी रात बीतने पर दो मुहूर्तो का समय, आश्विन कृष्ण अष्टमी।
महारावण–(सं०पुं०) पुराण के अनुसार वह रावण जिमके हजार मुख और दो हजार भुजायें थी।
महारावल–(हिं० पुं०) राजपुताना, जैसलपूर, और डूंगरपूर वश की उपाधि।
महाराष्ट्र–(सं०पुं०)भारतवर्ष के दक्षिण का एक विस्तीर्ण जनपद, इस देश में रहने वाले,बड़ा राष्ट्र या राज्य।
महाराष्ट्री–(सं०स्त्री०) जलपिप्पली, एक प्रकार का शाक,अठारह प्रकार की प्राकृत भाषा में से एक, आधुनिक महाराष्ट्र देश की भाषा।
महारुज–(सं०स्त्री०) बड़ी पीड़ा या दुःख
महारुद्र–(सं०पुं०) महादेव। महारूप–(सं०पुं०) महादेव,(वि०) बड़ा रूपवान्
महारोग–(सं०पुं०)बड़ी व्याधि या रोग
महारौद्र–(सं०पुं०) शिव, महादेव,बाइस मात्राओं का एक छन्द।
महारौद्री–(सं०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम
महारौरव–(सं०पुं०)एक नरक का नाम
महार्घ–(सं०वि०) बहुमूल्य; महार्घता–(सं०स्त्री०)महा मूल्य का भाव या धर्म
महार्णव–(सं०पुं०) बड़ा समुद्र, शिव, महादेव, एक दैत्य का नाम।
महार्थक–(सं०वि०) अधिक मुल्य का।
महार्बुद–(सं०नपुं०) सौ करोड़ या दस अर्बुद की संख्या।
महार्ह–(सं०वि०) महा पूज्य, योग्य।
महालक्ष्मी–(सं०स्त्री०) नारायण की शक्ति,राधा,एक वर्णित वृत्त का नाम
महालय–(सं०पुं०) पितृपक्ष, आश्विन का कृष्ण पक्ष जिसमें पितरों के लिये तर्पण, श्राद्ध आदि किये जाते हैं,बड़ा मकान। महालया–(सं०स्त्री०) आश्विन कृष्ण अमावस्या–जिस दिन पितरों के लिये पार्वण श्राद्ध किये जाते हैं।
महालस–(सं०पुं०) बड़ा आलसी।
महालिंग–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
महालोभ–(सं०पुं०) काक, कौवा, (वि०) बड़ा लालची। महालोल–(सं०वि०) अत्यन्त चंचल।
महावट–(हिं०स्त्री०) माघ पूस की वर्षा
महावत–(हिं०पुं०) हाथी हाँकने वाला,
महावतारी–(सं०पुं०) पचीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महावन–(सं०नपुं०) घोर जंगल।
महावर–(हिं०पुं०) लाख से बना हुआ एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियां अपने पैर को रंगती हैं।
महावरा–(हिं०पुं०) शब्द योजना।
महावरेदार–(हिं०वि०)शब्द योजना युक्त
महावल्क–(सं०पुं०) जायफल का पेड़।
महावल्ली–(सं०स्त्री०) माधवी लता।
महावसु–सं०वि०) बड़ा धनी।
महावात,महावायु–(सं०पुं०) प्रचण्डवायु
महावारुणी–(सं०स्त्री०) गंगा स्नान का एक योग, चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन जब शनिवार और शतभिषा नक्षत्र रहता है तब यह योग होता है
महावाहन–(सं०नपुं०) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।
महाविक्रम–(सं०वि०)बड़ा प्रतापवान्।
महाविज्ञ–(सं०वि०) बड़ा ज्ञानवान्।
महाविद्या–(सं०स्त्री०) तन्त्र में मानी हुई दस देवियां जिनके नाम–काली, तारा, षोड़शी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला,मातंगी और कमलात्मिका हैं; ये सिद्ध विद्या भी कहलाती हैं।
महाविपुला–(सं०स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद।
महाविभूत–(सं०पुं०) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।
महाविराज–(सं०पुं०) महाविष्णु।
महाविशिष्ट–(सं०वि०) अति प्रसिद्ध।
महाविहंग–(सं०पुं०) गरुड़।
महावीचि–(सं०पुं०) एक नरक का नाम
महाबीज–(सं०पुं०) चिरौंजी का वृक्ष।
महावीर–(सं०पुं०) गरुड़, सिंह, गौतम-बुद्ध का एक नाम, वज्र, कोकिल, कनेर का वृक्ष, हनुमानजी।
महावीर्य–(सं०पुं०) ब्रह्मा,बुद्धदेव, (वि०) बड़ा बलवान्।
महावृक्ष–(सं० पुं०) ताड़ का पेड़, करंज वृक्ष।
महावेग–(सं०पुं०) शिव, महादेव,गरुड़, बंदर।
महावैर–(सं०नपुं०) बड़ी शत्रुता।
महाव्याहृति–(सं० स्त्री०) प्रणव और स्वाहा युक्त तीन व्याहृतियां यथा–"ओं भूः स्वाहा, ओं भुवः स्वाहा, ओं स्वः स्वाहा।
महाव्रत–(सं०नपुं०) बारह वर्ष तक चलने वाला व्रत, आश्विन की दुर्गा पूजा। महाव्रीहि–(सं०पुं०)साठी धान;
महाशक्ति–(सं०पुं०) कार्तिकेय, शिव, महादेव, बड़ी शक्ति, (वि०) बड़ा बलवान्।
महाशंख–(सं०पुं०) एक बहुत बड़ी संख्या जो दस शंख की होती है; कुबेर की नव निधियों में से एक।
महाशठ–(सं०वि०) बड़ा दुष्ट, बड़ा धूर्त
महाशब्द–(सं०पुं०) भयानक शब्द।
महाशय–(सं० वि०) महानुभाव, उच्च आशय वाला, महात्मा, सज्जन; (पुं०) समुद्र।
महाशय्या–(सं०स्त्री०) राजाओं की शय्या या सिंहासन।
महाशान्ति–(सं०स्त्री०) विघ्न बाधाओं को दूर करने के लिये मन्त्र का अनुष्ठान।
महाशालि–(सं०पुं०) मोटा धान।
महाशालीन–(सं०वि०) अति विनीत, बड़ा नम्र।
महाशिला–(सं०स्त्री०) एक शस्त्र का नाम
महाशीर्ष–(सं०पुं०)शिवका एक अनुचर
महाशुक्ति–(सं० स्त्री०) बड़ी सीप, वह सीप जिसमें से मोती निकलता है।
महाशुक्ला–(सं०स्त्री०) सरस्वती।
महाशून्य–(सं०नपुं०) आकाश।
महाश्रय–(सं० पुं०) अखरोट का पेड़।
महाश्व–(सं०पुं०)बड़ा तथा सुन्दर घोड़ा
महाश्वेता–(सं०स्त्री०) सरस्वती, दुर्गा।
महाषष्ठी–(सं० स्त्री०) दुर्गा जो बालक की रक्षा करती है।
महाष्टमी(सं०स्त्री०)आश्विनशुक्ला अष्टमी
महासंस्कारी–(सं०स्त्री०)सोलह मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महासतोमुखा–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
महासत्व–(सं० पुं०) एक बोधिसत्व का नाम,शाक्य मुनि। महासत्य–(सं०पुं०) यमराज।
महासम्मत–(सं०वि०)अति आदरणीय।
महासर्ग–(सं० पु०) महा प्रलय के बाद की संसार की रचना। महासर्ज–(सं०पुं०) कटहल का पेड़। महासहा–(सं०स्त्री०) इमली का वृक्ष। महासिद्ध–(सं०वि०) जिन्होंने योग द्वारा सिद्धि प्राप्त की है। माहसिद्धि–(सं०स्त्री०) आठ सिद्धियों में से एक।
महासुख–(सं०नपुं०) अति आनन्द।
महासुर–सं०पुं०) एक दानव का नाम
महासूत–(सं० पु०) युद्ध क्षेत्र में बजाने का एक प्रकार का बाजा।
महासेन–(सं०पु०)शिव, महादेव,कार्तिकेय
महास्कन्धा–(सं० स्त्री०) जामुन का वृक्ष
महास्थली–(सं० स्त्री०) बहुत सुन्दर स्थान, पृथ्वी।
महास्पद–(सं०वि०) बड़ा प्रभावशाली।
महास्वन–(सं० पुं०) लड़ाई का डंका, एक प्रकार के असुर।
महास्वर–(सं०पु०) उच्च स्वर।
महाहनु–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
महाहव–(सं०पुं०) घमासान युद्ध।
महाहस्त–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
महाहास–(सं०पुं०) ठहाके की हँसी।
महाहि–(सं०पुं०) वासुकि नाग।
महि–(हिं०अव्य०) देखो महँ।
महि–(सं०पुं०) पृथ्वी।
महिका–(सं०स्त्री०) हिम।
महिख–हिं०पु०) देखो महिष।
महिखरी–(हिं०स्त्री०) अट्ठाईस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महित–(सं० वि०) पूजित, पूजा किया हुआ; महिता–(सं०स्त्री०)महत्व महिमा
महित्व–(सं०नपुं०) महत्व, प्रभुता।
महिदेव–सं० पुं०) ब्राह्मण
महिधरा–(सं०पुं०) देखो महीधर।
महिन्धक–(सं०पुं०) चूहा, नेवला।
महिपाल–(सं०पुं०) देखो महीपाल।
महिमा–(सं०स्त्री०) महत्व, आठ प्रकार

के ऐश्वर्यों में से एक, प्रभाव, प्रताप
महिम्न–(सं० पुं०) शिव के एक प्रसिद्ध स्तोत्र का नाम।
महियां–(हिं०अव्य०) में।
महिया–(हिं० पुं०) ईख के रस का फेन जो इसके उबलने पर निकलता है।
महियाउर–(हिं०पुं०) मठे में पका हुआ चावल।
महिरावण–(सं० पुं०) एक राक्षस का नाम जो रावण का पुत्र था और पाताल में रहता था।
महिला–(सं०स्त्री०) स्त्री, प्रियंगु लता।
महिष–(सं०पुं०) भैंस, एक प्राचीन देश का नाम, एक असुर जिसको दुर्गा देवी ने मारा था, एक अग्निका नाम, वह राजा जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार किया गया हो; महिषघ्नी–दुर्गा देवी; महिषध्वज–यमराज; महिषमर्दिनी–दुर्गा देवी; महिषवाहन–यमराज।
महिषासुर–(सं० पुं०) रंभासुर का पुत्र जिसको दुर्गा देवी ने मारा था।
महिषी–(सं०स्त्री०) भैंस, पटरानी, जिस पत्नी के साथ राजा का अभिषेक हुआ हो।
महिषेश–(सं०पुं०)महिषासुर, यमराज।
महिष्ठ–(सं०वि०)विशाल, बहुत बड़ा।
महिसुर–(हिं०पुं०)देखो महीसुर,मैसूर।
मही–(सं०स्त्री०)पृथ्वी, गाय,लोक,मिट्टी, स्थान, समूह, सेना, झुण्ड, एक की संख्या, एक छन्द का नाम, (हिं०पुं०) मठा, छाछ। **महीकम्प**–(सं० पु०) भूडोल। **मही खड़ी**–(हिं०स्त्री०) सिकलीगरों का एक शस्त्र।
महीचर–(सं० वि०) पृथ्वी पर घूमने वाला; **महीचारी**–(सं० पुं०) महादेव, (वि०) पथ्वी पर चलने वाला।
महीज–(सं०पुं०)अदरक, मंगल ग्रह;
महीतल–(सं० नपुं०) भूतल, पथ्वी।
महीदेव–(सं०पुं०) देखो भूदेव, ब्राह्मण।
महीधर–(सं०पुं०) विष्णु, पर्वत, शेष नाग, एक वर्णिक वृत्त का नाम।
महीन–(हिं०वि०) जिसकी मोटाई या घेरा बहुत कम हो, बारीक, कोमल, पतला, धीमा, जो बहुत कम ऊंचा या तेज हो, मन्द स्वर।
महीना–(हिं०पुं०)काल का वह परिमाण जो वर्ष के बारहवें अंश के बराबर होता है, मासिक वेतन, स्त्रियों का मासिक धर्म, ऋतुकाल।
महीनाथ, महीप–(सं०पुं०) पथ्वीपति, राजा।
महीपतन–(सं० नपुं०) साष्टाङ्ग प्रणाम करना।
महीपति, महीपाल–(सं०पुं०) पथ्वीपति, राजा। **महीपुत्र**–(सं०पुं०) मंगल ग्रह; **महीप्रकम्प**–(सं०पुं०)भूमिकम्प,भूडोल
महीभुज्–(सं० पुं०) राजा। **महीभृत्**–(सं०पुं०) पर्वत, राजा। **महीमण्डल**–(सं०पुं०) भूमण्डल।
महीम–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा गन्ना।
महीमय–(सं०वि०) मिट्टी का बना हुआ
महीयत्व–(सं०नपुं०) प्रभुता, श्रेष्ठता।
महीर–(हिं०स्त्री०)वह तलछट जो मक्खन को तपाने से नीचे बैठ जाता है।
महीरुह–(सं०पुं०) वृक्ष, पादप, पेड़;
महीलता–(सं०स्त्री०) केंचुआ।
महीशासक–(सं०पुं०) भूपाल, राजा।
महीसुत–(सं०पुं०) पृथ्वी का पुत्र, मंगल ग्रह। **महीसुर**–(सं०पुं०) ब्राह्मण।
महुं–(हिं०अव्य०) देखो महँ।
महुअर–(हिं० स्त्री०) महुआ मिला कर पकाई हुई रोटी, एक प्रकार का बाजा जिसको सपेरे बजाते हैं, तुमड़ी तुम्बी, महुअर बजाकर खेला जाने वाला एक इन्द्रजाल का खेल।
महुअरी–(हिं० स्त्री०) आंटे में महुआ मिलाकर बनाई हुई रोटी।
महुआ–(हिं०पुं०)एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जिसके छोटे मीठे फलों से एक प्रकार की मदिरा बनती है। **महुआरी**–(हिं० स्त्री०) महुए का जंगल।
महुर्छा–(हिं०पुं०)महोत्सव,बड़ा उत्सव।
महुला–(हिं०वि०) महुए के रंग का।
महुवरि–(हिं० स्त्री०) महुअर नाम का बाजा, तुंबड़ी।
महुवा–(हिं०पुं०) देखो महुआ।
महुख–(हिं०पुं०)महुआ,जेठीमद,मुलेठी।
महूम–(हिं०स्त्री०) चढ़ाई।
महूरत–(हिं० स्त्री०) देखो मुहूर्त।
महेन्द्र–(सं०पुं०)विष्णु, इन्द्र, भारतवर्ष के एक पर्वत का नाम, बौद्ध साम्राट् अशोक के पुत्र का नाम; महेन्द्रचाप–इन्द्रधनुष; महेन्द्रनगरी–अमरावती; महेन्द्रमन्त्री–बृहस्पति; महेन्द्रवारुणी–बड़ा इन्द्रायण।
महेर–(हिं०पुं०) झगड़ा, देखो महेरा।
महेरा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का व्यंजन जो दही में चावल पका कर बनाया जाता है। **महेरी**–(हिं० स्त्री०) जल में उबाली हुई ज्वार जो नमक मिर्च मिला कर खाई जाती है,(वि०)बखेड़ा करने वाला।
महेला–(हिं०स्त्री०) देखो महिला, स्त्री, पशुओं को खिलाने का एक पौष्टिक पदार्थ।
महेलिका–(सं० स्त्री०) महिला, नारी, बड़ी इलायची।
महेश–(सं०पुं०)शिव, महादेव, ईश्वर।
महेशबन्धु–(सं०पुं०) श्रीफल, बेल का फल; **महेशानी**–(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।
महेश्वर–(सं० पुं०) शिव, महादेव, परमेश्वर। **महेश्वरी**–(हिं०पुं०)पश्चिम भारत के बनियों की एक शाखा।
महेषु–(सं०पुं०) बड़ा तीर या बाण।
महेस–(हिं०पुं०) देखो महेश।
महेंसिया–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बढ़िया धान।
महेला–(सं०स्त्री०) बड़ी इलायची।
महैश्वर्य–(सं०नपुं०)महाशक्ति,बड़ा बल
महोक,महोख–(हिं०पुं०) देखो महोखा।
महोखा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का भूरे रंग का कौवेके आकार का पक्षी जो वेग से दौड़ सकता है पर दूर तक उड़ नहीं सकता।
महोगनी–(अं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष, इसकी लकड़ी बहुत पुष्ट टिकाऊ और बहुमूल्य होती है।
महोच्छव,महोछा–(हिं०पु०) महोत्सव।
महोती–(हिं०स्त्री०) महुवे का फल।
महोत्पल–(सं० नपुं०) पद्म, सारस पक्षी।
महोत्सव–(सं०पुं०) कोई बड़ा उत्सव।
महोत्साह–(सं०पुं०)विष्णु,कठिन उद्यम।
महोदधि–(सं०पुं०) सागर, समुद्र।
महोदय–(सं० पुं०) कान्यकुब्ज देश, आधिपत्य, स्वामी, महाशय, बड़ों के लिये आदर सूचक शब्द। **महोदया**–(सं०स्त्री०) महाशया, नागबला।
महोदर–(सं०वि०) जिसका पेट बड़ा हो शिव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम
महोद्यम, महोद्योग–(सं० पु०) बड़ा उद्योग या यत्न।
महोना–(हिं०पुं०)पशुओं का एक रोग।
महोन्नत–(सं०वि०)जिसकी बड़ी उन्नति हुई हो, (पुं०) ताल वृक्ष, नारियल का पेड़।
महोन्नति–(सं०स्त्री०) बड़ी उन्नति।
महोन्मद–(सं०वि०) अति उन्मत्त।
महोबा–(हिं०पुं०)संयुक्त प्रदेश के हमीरपुर जिले का एक विभाग।
महोबिया,महोबिहा–(हिं०वि०)महोबे का
महोष्ठ–(सं० वि०) जिसका ओठ लंबा और मोटा हो।
महौघ–(सं०पुं०) समुद्र की बाढ़।
महौजस्–(सं०वि०) बड़ा तेजस्वी।
महौषध–(सं० नपुं०) लहसुन, सोंठ, बाराही कन्द,अतीस, बछनाग,पीपल; **महौषधि**–(सं० स्त्री०) श्रेष्ठ औषधि, देवी को स्नान कराने में सर्वोषधि और महौषधि का उपयोग होता है; बहेड़ा, व्याघ्री, बला, अतिबला, शंखपुष्पी, बृहती, क्षीरकंकोली और सुवर्चला का चूर्ण।
मां–(हिं०स्त्री०) जन्म देने वाली माता, (अव्य०) में। **माजाया**–सहोदर भ्राता, सगा भाई।
मांकड़ी–(हिं०स्त्री०)देखो मकड़ी, कमखाब बुनने वालों का एक अस्त्र।
मांखन–(हिं० पुं०) मक्खन, नवनीत।
मांखना–(हिं० क्रि०) क्रुद्ध होना, क्रोध करना।
मांखी–(हिं० स्त्री०) मक्खी।
मांग–(हिं० स्त्री०) मांगने की क्रिया या भाव, आवश्यकता, सिरके बाल के बीच में की रेखा जो बालों को विभक्त करने के लिये बनाई जाती है, नाव का नुकीला भाग, सिल के ऊपर का भाग जो कूटा नहीं रहता, किसी वस्तु का ऊपरी भाग, सिरा; मांग, कोख से सुखी रहना–स्त्रियों का सौभाग्यवती तथा सन्तान युक्त होना; मांग टीका–स्त्रियों का वह गहना जिसको वे माँगपर पहनतीहैं।
माँगन–(हिं० पुं०) माँगने की क्रिया या भाव, याचक; भिखमंगा। **माँगना**–(हिं०क्रि०) कुछ प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करना, आकांक्षा पूर्ति के लिये कहना।
माँगफूल–(हिं०पुं०) देखो माँग, टीका।
माँगल गीत–(हिं० पुं०) विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाई जाने वाली गीत।
माँगी–(हिं०स्त्री०) धनुकी पर की वह लकड़ी जिस पर तांत कसी रहती है
माँच–(हिं०पुं०) पाल के कोने पर बँधा हुआ रस्सा जिससे पाल आगे या पीछे हटाई जाती है।
मोंचना–(हिं०क्रि०)आरंभ होना, प्रसिद्ध होना।
मोंचा–(हिं०पुं०) मचान, खाट, पलंग, मंझा,छोटी पीढ़ी। **माँचो**–(हिं०स्त्री०) बैलगाड़ी आदि में गाड़ीवान के बैठने की जगह लगी हुई जालीदार झोली।
माँछ–(हिं०पुं०) मछली।
माँछना–(हिं०क्रि०) घुसना, बैठना।
माँछर, माँछली–(हिं० स्त्री०) मछली।
माँछी–(हिं०स्त्री०) देखो मछली।
माँजना–(हिं० क्रि०) मलकर स्वच्छ करना, किसी वस्तु को रगड़ कर मैला छुड़ाना, पतंग की डोर पर मांझा देना, तानी के सूत को रंगना, अभ्यास करना, कण्ठस्थ करना।
माँजर–(हिं०स्त्री०) अस्थिपंजर, ठठरी।
माँजा–(हिं०पुं०) पहली वर्षा का फेन।
माँझ–(हिं० अव्य०) में, बीचमें, (पुं०) अन्तर, नदी के बीच में पड़ी हुई रेतीली भूमि।
माँझा–(हिं०पुं०)नदी के बीच का टापू, पगड़ी पर पहरने का एक आभूषण, वृक्ष का तना, पीले वस्त्र जो विवाह के समय वर और कन्या को पहराये जाते हैं, पतंग के डोरे पर सरेस और कांच की बुकनी का कलफ़, मंझा।
माँझिल–(हिं०वि०) बीच का।
माँझी–(हिं०पुं०)नाव खेने वाला मल्लाह केवट, झगड़ा तय करने वाला पंच।
माँट–(हिं०पुं०) मिट्टी का बड़ा पात्र, मटका, घर का ऊपरी भाग,अटारी;
माँठ–(हिं०पुं०) मटका कुंडा। **माँठी**–(हिं०स्त्री०) देखो मठिया, मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान।
माँड–(हिं०पुं०) पकाये हुए चावल से निकाला हुआ पानी, भात का पसेव; एक प्रकार का राग।
माँड़ना–(हिं०क्रि०) मसलना, सानना, लगाना, पोतना, गूंथना, रचना, बनाना, किसी अन्न की बाल में से

दाने झड़ना, मचाना, ठानना ।

माँड़नी–(हिं०स्त्री०) गोंठ ।

माँड़्यो–(हिं०पु०) पाहुन के ठहरने का स्थान, अतिथि शाला, विवाह मण्डप, मड़वा ।

माँड़व–(हिं०पुं०) विवाह आदि अथवा दूसरे शुभ कृत्यों के लिये छाया हुआ मण्डप ।

माँड़ा–(हिं०पुं०) घी में पकाई हुई मैदे की पतली रोटी, लूची, पराँठा उलटा, आँख का एक रोग जिसमें आँख के भीतर एक पतली झिल्ली पड़ जाती है, मँड़वा, देखो मण्डप ।

माँड़ी–(हिं०स्त्री०) भात का पसेव, मांड, आंटे, मैदे, चावल के पसेव आदि से तैयार की हुई लेई जिससे कपड़ों में कलफ़ दी जाती है,

माँड़ौ–(हिं०पुं०) विवाह का मण्डप ।

माँढा–(हिं०पु०) देखो माँढ़व ।

मांत–(हिं०वि०) उन्मत्त, बेसुध, पागल, बावला, उदास, हारा हुआ,पराजित;

मातना–(हिं०क्रि०)उन्मत्त होना, पागल होना।

माँता–(हिं०वि०) उन्मत्त, मतवाला ।

माँथबंधन–(हिं०पुं०) सूत वा ऊन की डोरी जिससे स्त्रियां सिर के बाल बाँधती हैं, परान्दा, सिर में लपेटने का कपड़ा, मुरैठा ।

माँथा–(हिं०पु०) मस्तक, सिर ।

मांद–(हिं० स्त्री०) हिंसक पशुओं के रहने का विवर, खोह, गोबर का वह ढेर जो पड़े पड़े सूख जाता है, (वि०) पराजित. हारा हुआ, हलका, उदास

माँदर–(हिं०पु०)एक प्रकार का मृदंग ।

माँपना–(हिं०क्रि०) उन्मत्त होना ।

मांयं–(हिं०अव्य०) में, बीच, मध्य में ।

मांस–(सं०नपु०) शरीर का रक्तजात धातु विशेष, कुछ पशुओं के शरीर का वह अंश जो खाया जाता है,

मांसकच्छप–(सं०पुं०) तालु में होने वाला एक रोग । मांसकीलक–(सं० पुं०)बवासीर का मसा । मांसखण्ड–(सं०नपुं०) मांस का टुकड़ा । मांसज–(सं० नपुं०) मांस से उत्पन्न शरीर की चर्बी ।

मांसजाल–(सं०नपुं०)मांस की झिल्ली ।

मांसपिण्ड–(सं०नपुं०) शरीर, देह ।

मांसपित्त–(सं०नपुं०) अस्थि, हड्डी ।

मांसपेशी–(सं०स्त्री०) शरीर के भीतर का मांस पिंड का पट्ठा । मांसफल–(सं०पुं०)तरबूज । मांसभक्षी, मांसभोजी (सं०पुं०)मांस खाने वाला । मांसमण्ड–(सं०पुं०) मांस का झोल । मांसरस–(सं०स्त्री०) देखो मांसमण्ड ।

मांसल–(सं० नपुं०) उड़द, काव्य में गौड़ी रीति का एक गुण, (वि०) मांस युक्त, मांस से भरा हुआ, स्थूल, मोटा, पुष्ट, बलवान् । मांसलता–(सं०स्त्री०) स्थूलता, पुष्टि । मांसलफला (सं०स्त्री०)तरबूज,भिंडी । मांसवारुणी–(सं० स्त्री०) हरिन आदि के मांस से बनाई हुई एक प्रकार की मदिरा ।

मांसवृद्धि–(सं०स्त्री०) गलगण्ड, घेघा, श्लीपद, अण्ड वृद्धि का रोग ।

मांससमुद्भवा–(सं०स्त्री०) वसा, चर्बी ।

मांसस्नेह–(सं० पुं०) वसा ।

मांसाशन–(सं० नपुं०) मांस भक्षण, मांस खाना । मांसाशी–(सं० पुं०) राक्षस । मांसाहारी–(सं०पु०) मांस भक्षी मांस खाने वाला ।

मांसिनी–(सं०स्त्री०) जटामासी ।

मांसी–(सं० स्त्री०) अडूसा, इलायची, संजीवनी ।

मांसु–(हिं०पु०) देखो मांस ।

मांसोपजीवी–(सं०पुं०)मास वेचने वाला

मांह–(हिं०अव्य०) बीच में ।

माइ, माई–(हिं० स्त्री०) पुत्री, लड़की, मामा की स्त्री, मामी, एक प्रकार का छोटा पूजा जिससे विवाह में मातृ पूजा की जाती है ।

माइ–(हिं०स्त्री०) देखो भाई । माइका–(हिं० पुं०) स्त्री के माता पिता का घर ।

माई–(हिं०स्त्री०) माता, मां, बड़ी बूढी स्त्री के लिये संबोधन का शब्द; माई का लाल–शूर वीर व्यक्ति, अधिक चतुर मनुष्य ।

माकन्द–(सं०पुं०) आमका वृक्ष ।

माक्ष–(सं०पुं०) स्पृहा, देखो माख ।

माक्षिक–(सं०नपुं०) मधु, सोनामक्खी नामक धातु ।

माख–(हिं०पुं०) अभिमान, घमंड, अप्रसन्नता, पश्चात्ताप, अपने दोष को ढांपना ।

माखन–(हिं०पुं०) मक्खन, नवनीत ।

माखना–(हिं० क्रि०) अप्रसन्न होना, क्रुद्ध होना ।

माखी–(हिं०स्त्री०) मक्खी, सोनामक्खी नामक धातु ।

मागध–(सं०पुं०) वंश परंपरा क्रम से राजाओं की स्तुति करनेवाला,स्तुति-पाठक, वन्दी, भाट, जरासन्ध का एक नाम, सफ़ेद जीरा, (वि०) मगध देश का । मागधिक–(सं०वि०) मगध देश का । मागधी–(सं०स्त्री०) जूही, छोटी पीपल, छोटी इलायची, साठी धान, जीरा, मगध देश की प्राचीन भाषा; मागधी जटा–पिपलामूल;

माघ–(सं०पुं०) भारत के एक प्राचीन कवि जिन्होंने शिशु-पाल वध नामक काव्य लिखा है, इस काव्य का नाम, पौष के बाद तथा फाल्गुन के पहिले का चान्द्रमास; माघवती–पूर्व दिशा ।

माघवन–(सं०वि०) इन्द्र सबंधी ।

माघी–(सं०स्त्री०)माघ मास की पूर्णिमा जिस दिन मघा नक्षत्र का योग होता है

माघोनी–(सं०स्त्री०) पूर्व दिशा जिसके अधिपति इन्द्र है ।

माङ्गलिक–(सं०पु०)नाटक का वह पात्र जो मङ्गल पाठ करता है,(वि०)मंगल प्रकट करने वाला । माङ्गल्य–(सं०वि०) शुभजनक, मंगलकारी (पुं०) मंगल का भाव; माङ्गल्यागीत–वह गीत जो विवाहादि शुभ अवसर पर गाई जाती है ।

माङ्गल्या–(सं०स्त्री०) शमी का वृक्ष ।

माच–(सं०पुं०) पथ, मार्ग, (हिं० पुं०) मचान । माचना–(हिं० क्रि०) देखो मचना ।

माचल–(सं० पुं०) ग्रह, रोग, वन्दी, चोर, (हिं०वि०) हठी,मचलने वाला ।

माचा–(हिं०पुं०) खाट की तरह बीनी हुई बैठने की पीढी, मचिया ।

माची–(सं०स्त्री०) काकमाची, मकोय ।

माचीं–(हिं०स्त्री०) वह जुआ जो हल जोतने के समय बैलों के कन्धे पर रक्खा जाता है; देखो मचिया ।

माछ–(हिं०पुं०) बड़ी मछली, मछली ।

माछर–(हिं०पुं०) मछली, मच्छड़ ।

माछी–(हिं०स्त्री०) मक्खी, मछली ।

माजल–(सं०पुं०) चातक पक्षी, चकवा;

माझा–(हिं०पुं०) कमर ।

माट–(हिं० पुं०) मिट्टी का बड़ा पात्र जिसमें रंगरेज रंग बनाते हैं, बड़ी मटकी जिसमें दही रक्खा जाता है ।

माटा–(हिं० पुं०) लाल रंग का च्यूंटा जिसके झुंड के झुंड आम के पेड़ पर रहते हैं ।

माटी–(हिं० स्त्री०) मृत शरीर, पृथ्वी नामक तत्व, शरीर, मिट्टी, धूल,रज, किसी खेत की साल भर की जोताई;

माठ–(हिं०पुं०) एक प्रकार की मिठाई, मठरी,टिकिया, मिट्टी का पात्र,मटकी

माठा–(हिं० पुं०) देखो मठा, मट्ठा, कृपण, कंजूस ।

माठी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कपास;

माड़–(हिं०पुं०) देखो माँड़ ।

माड़ना–(हिं० क्रि०) ठानना, करना, विभषित करना, आदर करना,धारण करना,पहनना, हाथ या पैर से मसलना, घुमना फिरना ।

माड़व–(हिं०पुं०)देखो माड़ी; मण्डप ।

माढा–(हिं०पुं०)अटारी पर का चौबारा

माढ़ी–(सं०स्त्री०) पत्तों का नस, दाँतों का जड़ ।

माढ़ी–(हिं०स्त्री०) देखो मढी ।

माण, माणक–(सं०पुं०) एक प्रकार का कन्द ।

माणवक–(सं०पुं०) सोलह वर्ष तक की आयु का मनुष्य,बालक,बटु,विद्यार्थी, नीच मनुष्य । माणवकक्रीड़ा–(सं०नपुं०) एक वर्णवृत्त का नाम ।

माणव्य–(सं०नपुं०)बालकों का समुदाय

माणिक–(हिं०पुं०) मानिक ।

माणिक्य–(सं०नपुं०) लाल रंग का एक रत्न, मानिक, लाल, पद्मराग, (वि०) आदरणीय, शिरोमणि, अति श्रेष्ठ ।

माण्डप–(सं०वि०) मण्डप सम्बन्धी ।

माण्डलिक–(सं० पुं०) किसी प्रान्त का शासक, वह छोटा राजा जो किसी सार्वभौम राजा के अधीन हो ।

माण्डवी–(सं०स्त्री०) राजा जनक की भतीजी जो भरत से ब्याही थी ।

माण्डूक्य–(सं० वि०) मण्डूक सम्बन्धी ।

मात–(हिं०स्त्री०) माता ।

मात–(अ० स्त्री०) पराजय, हार, (वि०) हारा हुवा, मतवाला ।

मातङ्ग–(सं०पुं०) हस्ती, हाथी, पीपल का वृक्ष, ऋष्यमूक पर्वत पर रहने वाले एक मुनि का नाम, एक नाग का नाम, ज्योतिष के अनुसार एक योग संवर्तक मेघ का एक नाम, किरात जाति, चाण्डाल; मातङ्गज–हाथी का बच्चा; मातङ्ग मकर–एक प्रकार की बड़ी मछली ।

मातङ्गी–(सं०स्त्री०) दश महाविद्या के अन्तर्गत एक महाविद्या ।

मातना–(हिं०क्रि०) मस्त होना ।

मातमुख–(हिं०वि०) मूर्ख ।

मातलि–(सं० पुं०) इन्द्र के सारथी का नाम ; मातलिसूत–इन्द्र।

माता–(हिं०स्त्री०) जन्म देने वाली स्त्री, जननी, किसी आदरणीय स्त्री के लिये सम्बोधन का शब्द, गाय, भूमि, लक्ष्मी, शीतला रोग; मातामह–(सं०पुं०) माता का पिता, नाना ; मातामही–(सं०स्त्री०) माता की माता, नानी ।

मातु–(हिं०स्त्री०) माता, माँ ।

मातुल, मातुलक–(सं० पुं०) माता का भाई, मामा, एक प्रकार का धान, मदन वृक्ष, धतूरा, मटर ।

मातुला–(सं० स्त्री०) मातुल की पत्नी, मामी, भाँग, मटर, सन, प्रियंगु का वृक्ष; मातुलानी–(सं०स्त्री०) मामी;

मातुली–(सं० स्त्री०) मामी ; मातुलेय–(सं० पुं०) मातुलपुत्र, ममेरा भाई; मातुलेयी–(सं०स्त्री०) ममेरी बहिन ; मातुल्य–(सं०नपुं०) मामा का घर ।

मातृ–(सं०स्त्री०) जननी, माता, गाय, भूमि, ऐश्वर्य, लक्ष्मी, (वि०) बनाने वाला ।

मातृक–(सं०वि०) माता सम्बन्धी ।

मातृका–(सं०स्त्री०) दूध पीलाने वाली धाय, जननी,माता, उपमाता, सौतेली मां, कारण, वर्णमाला की बारहखड़ी, काम क्रोध आदि आठ विकारों की आठ अधिष्ठात्री देवी यथा–काम की योगेश्वरी, क्रोध की माहेश्वरी, लोभ की वैष्णवी, मद की ब्रह्माणी, मोह की कौमारी, मात्सर्य की ऐन्द्राणी, पशुन्य की दण्डधारिणी तथा असूया की बाराही–ये अष्ट मातृका कहलाती हैं ।

मातृगण–(सं०पुं०) शिव के परिवार ।

मातृ घाती–(हिं०वि०) माता की हत्या करने वाला ; मातृ तीर्थ–(सं० नपुं०) कानी अंगुली का सबसे नीचे का स्थान ; मातृ नन्दन–(सं०पुं०) कार्तिकेय; मातृ निन्दक–(सं० वि०) माता

की निन्दा करने वाला; मातृपूजन—(सं० नपुं०) माता की पूजा; मातृपूजा—(सं० स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें विवाह के दिन पहले पितरों का पूजन किया जाता है; मातृ भाषा—(सं० स्त्री०) वह भाषा जिसका बोलना माता की गोद में रहते हुए बालक सीखता है; मातृवत्—(सं० वि०) माता के समान; मातृ वत्सल—(सं०वि०) माता के प्रति भक्ति करने वाला, (पुं०) कार्तिकेय; मातृष्वसा—(सं०स्त्री०) माता की बहन, मौसी; मातृष्वसेय—(सं०पु०) मौसेरा भाई; मातृसपत्नी—(सं०स्त्री०) विमाता, सौतेली माता।

मात्र—(सं०अव्य०) केवल, निश्चय।

मात्रा—(सं० स्त्री०) परिमाण, एक बार खाने योग्य औषधि, किसी वस्तु का नियमित अल्प भाग, अवयव, शक्ति, रूप, इन्द्रिय, वित्त, सम्पत्ति, स्वर सूचक रेखा जो अक्षर में लगाई जाती है, एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में जितना समय लगता है, छन्द का ह्रस्व, दीर्घ आदि भेद; मात्रा पताका—(सं० स्त्री०) छन्द ग्रन्थ के अनुसार मात्रा का लघु गुरु ज्ञान करने का पताका यन्त्र; मात्रा वृत्त—(सं० नपुं०) आर्या आदि छन्दों का भेद; मात्रा समक—(सं० नपुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती है तथा अन्त में एक गुरु वर्ण होता है।

मात्रिक—(सं० वि०) मात्रा सम्बन्धी, मात्राओं के हिसाब वाला, जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।

मात्सर्य—(सं०पुं०) ईर्ष्या, डाह।

माथ—(हिं०पुं०) माथा।

माथना—(हिं०क्रि०) मथन करना।

माथा—(हिं० पुं०) सिर का ऊपरी भाग, मस्तक, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; माथा ठनकना—किसी दुर्घटना की पहिले से आशंका होना; माथे चढाना—शिरोधार्य करना; माथापच्ची—अधिक मस्तिष्क लगाना

माथुर—(सं०पुं०) वह जो मथुरा से आया हो, मथुरा निवासी, कायस्थ तथा वैश्यों की एक जाति; ब्राह्मणों की चौबे जाति।

माथुरक—(सं०पुं०) मथुरा में रहने वाला

माथे—(हिं०क्रि०वि०) माथे पर, सिरपर, सहारे, भरोसे, पर।

माद—(सं०पु०) हर्ष, प्रसन्नता।

मादक—(सं० वि०) नशा उत्पन्न करने वाला, नशीला, (पुं०) एक प्रकार का हरिण, एक प्रकार का अस्त्र; मादकता—(सं०स्त्री०) मादक होने का भाव

मादल—(सं०पुं०) लवंग, कामदेव, धतूरे का वृक्ष, (वि०) हर्षोत्पादक; मादनी—(सं०स्त्री०) विजया, भांग।

मादयिष्णु—(सं०वि०) आनन्द बढ़ाने वाला

मादिनी—(सं०स्त्री०) विजया, भाँग।

माद्रवती—(सं०स्त्री०) राजा परीक्षित की स्त्री का नाम।

माद्री—(सं० स्त्री०) भद्रराज की कन्या जो पाण्डु राजा को व्याही थी, इनके पुत्र नकुल और सहदेव थे; माद्रीपति—(सं०पुं०) राजा पाण्डु।

माद्रेय—(सं०पुं०) नकुल और सहदेव।

माधव—(सं० पुं०) विष्णु, नारायण, वसन्त ऋतु, महुवे का पेड़, काला उड़द, एक प्रकार का संकर राग, एक वृक्ष का नाम जिसको मुक्तहरा भी कहते हैं; माधवक—(सं० पु०) महुवे की मदिरा; माधवद्रुम—(सं०पुं०) आम का वृक्ष; माधवप्रिय—(सं०नपु०) पीला चन्दन; माधवश्री—(सं०स्त्री०) वसन्त ऋतु की शोभा।

माधवी—(सं०स्त्री०) इस नाम की लता जिसमें चमेली के समान सुगन्धित फूल लगते हैं, मदिरा, मधु से बनाई हुई चीनी, तुलसी, दुर्गा, सवैया छन्द का एक भेद, एक रागिणी का नाम; माधवीय—(सं०वि०) वसन्त सम्बन्धी; माधवोद्भव—(सं०पुं०) खिरनी का पेड़।

माधी—(हिं०पु०) एक राग का नाम।

माधुकर—(सं०पुं०) महुवे का मद्य।

माधुर—(सं०वि०) मीठा, (नपुं०) चमेली का फूल; माधुरई, माधुरता—(हिं० स्त्री०) मधुरता, मिठास।

माधुरिया, माधुरी—(सं० स्त्री०) मद्य, शराब, सौन्दर्य, शोभा, मधुरता, मिठास

माधुर्य—(सं०नपुं०) मधुर होने का भाव, मधुरता, सुन्दरता, मिठास, साहित्य में वह रचना जिससे चित्त द्रवीभूत होता है और अत्यन्त प्रसन्नता आती है, वाक्य का श्लेष अर्थात् किसी वाक्य में एक से अधिक अर्थ का होना

माधैया—(हिं०पुं०) देखो माधव।

माधो—(हिं० पुं०) माधव, श्रीकृष्ण, श्री रामचन्द्र।

माधौं—(हिं०पुं०) देखो माधव।

माध्यन्दिन—(सं० स्त्री०) दिन का मध्य भाग, दोपहर; माध्यन्दिनी—(सं०स्त्री०) शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम

माध्यम—(सं०वि०) मध्य का, बीच का।

माध्यमिक—(सं० पुं०) मध्यदेश का निवासी, बौद्धों का एक दार्शनिक मतभेद।

माध्यस्थ—(सं० पुं०) झगड़ा निबटाने वाला पंच, विवाह कराने वाला ब्राह्मण, कुटना, दलाल।

माध्याकर्षण—(सं०नपुं०) पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सर्वदा सब पदार्थों को खींचता रहता है।

माध्याह्निक—(सं० वि०) मध्याह्न के समय किया जाने वाला कार्य।

माध्व—(सं०पुं०) मध्वाचार्य का चलाया हुआ वैष्णव धर्म का एक सम्प्रदाय।

माध्वक—(सं०नपुं०) महुवे की मदिरा।

माध्विक—(सं०पुं०) मधु इकट्ठा करने वाला मनुष्य।

माध्वी—(सं०स्त्री०) मद्य, महुवे की बनी हुई मदिरा।

मान—(सं० नपुं०) परिमाण, तौल, संगीत शास्त्र के अनुसार वह स्थान जहां ताल का विराम होता है, धन, अभिमान आदि के कारण मन में यह विचार होना कि मेरे सदृश दूसरा कोई नहीं है, सामर्थ्य, शक्ति, प्रतिष्ठा, अनुरक्त दम्पति का भाव विशेष, ग्रह, मन्त्र, सम्मान; मान मथना—अभिमान नष्ट करना; मान रखना—प्रतिष्ठा करना; मान मताना—जो रूठ गया हो उसको प्रसन्न करना, मान मोड़ना—अभिमान त्याग देना।

मानकच्चू, मानककन्द—(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा कन्द, सालब मिश्री।

मानकलह—(सं०पुं०) ईर्ष्या, डाह।

मानक्रीडा—(सं०स्त्री०) एक छन्द का नाम

मानक्षति—(सं०स्त्री०) मानहानि।

मानगृह—(सं०पुं०) कोपभवन।

मानचित्र—(सं० पुं०) किसी स्थान या देश का चित्र।

मानज—(सं०पु०) क्रोध।

मानता—(हिं०स्त्री०) मनौती, मन्नत।

मानद—(सं० वि०) बड़ाई करने वाला, (पु०) विष्णु।

मानदण्ड—(सं०पुं०) वह डंडा या लकड़ी जिससे कोई वस्तु नापी जावे।

मानधन—(सं०वि०) बड़ा प्रतिष्ठित।

मानना—(हिं० क्रि०) स्वीकार करना, कल्पना करना, मान लेना, ध्यान में लाना, स्वीकार करके अनुकूल कार्य करना, किसी से बहुत प्रेम करना, धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना, चतुर जानना, मन्नत करना, आदर करना ठीक मार्ग पर आना।

माननीय—(सं०वि०) आदर करने योग्य, पूजनीय।

मानपरेखा—(हिं०पुं०) आशा।

मानभंग—(सं०पुं०) मानहानि।

मानभाव—(सं०पुं०) चोचला।

मानमनौती (हिं० स्त्री०) मानता, रुठने और मान जाने की क्रिया, परस्पर का प्रेम।

मानमन्दिर—(सं० पुं०) ग्रहों की गति आदि देखने के लिये वैज्ञानिक यन्त्रों से सुसज्जित स्थान, वेध शाला, वह एकान्त स्थान जहां पर स्त्रियाँ रूठकर बैठती हैं।

मानमय—(सं०वि०) गर्व युक्त, घमंडी।

मानमरोर—(हिं०स्त्री०) मन मुटाव।

मानमान्यता—(सं०स्त्री०) प्रतिष्ठा।

मानमोचन—(सं०पुं०) साहित्य के अनुसार रूठे हुए प्रिय को मनाना।

मानमितव्य—(सं०वि०) सम्मान करने योग्य।

मानव—(सं० पुं०) मनु की सन्तान, मनुष्य।

मानवक—(सं०पुं०) नाटा मनुष्य, बौना, तुच्छ नर। मानवतत्व—(सं० नपु०) मानव जाति का प्राकृतिक इतिहास

मानवपति—(सं०पु०) राजा।

मानवर्जित—(सं० वि०) मानरहित, मानहीन।

मानवशास्त्र—(सं०पुं०) मानव जाति की उत्पत्ति तथा विकास का शास्त्र जिसके अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि संसार के भिन्न भिन्न भागों में मनुष्य की कितनी जातियां हैं, सृष्टि के अन्यान्य जीवों में मनुष्य का क्या स्थान है, मनुष्यों की सृष्टि कब और कैसे हुई और इनकी सभ्यता का विकास कैसे हुआ।

मानवास्त्र—(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक अस्त्र।

मानवी—(सं० स्त्री०) नारी, स्त्री, (वि०) मनुष्य संबधी। मानवीय—(सं०वि०) मनुष्य संबन्धी।

मानवेन्द्र—(सं०पु०) राजा।

मानस—(सं०नपुं०) मन हृदय, मनुष्य, संकल्प विकल्प, पुष्कर द्वीप के एक पर्वत का नाम, एक नाग का नाम, कामदेव, दूत, मानसरोवर, (वि०) मन से उत्पन्न मनोभाव, मन में विचारा हुआ, (क्रि०वि०) मन के द्वारा।

मानसजप—(सं०पुं०) मन में ही (बिना उच्चारण किये) जप करने की विधि। मानसपुत्र—(सं०पुं०) पुराण के अनुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छामात्र से हुई हो। मानसपूजा—(सं०स्त्री०) किसी देवता की मन में पूजा करना जिसमें बाह्य द्रव्यों की आवश्यकता नहीं होती।

मानसर—(सं०पुं०) देखो मानसरोवर।

मानसरुज—(सं०स्त्री०) चित्त में व्यथा होना।

मानसरोवर—(हिं० पुं०) एक प्रसिद्ध बड़ी झील जो हिमालय पर्वत के उत्तर में है।

मानसवेग—(सं०पुं०) मन का वेग, चिन्ता।

मानसशास्त्र—(सं०पुं०) मनोविज्ञान, वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि मन किस प्रकार कार्य करता है और उसकी वृत्तियाँ किस प्रकार उत्पन्न होती हैं। मानससन्ताप—(सं० पुं०) आन्तरिक दुःख; मानससर—(सं० पुं०) मानसरोवर। मानसहंस—(सं०पुं०) एक वृत्त का नाम जिसको रणहंस भी कहते हैं।

मानसांक—(सं० नपुं०) केवल मन में बिना लिखे पढ़े गणित करने की विधि।

मानसिक—(सं० वि०) वह जो मन की कल्पना से उत्पन्न हो, मन सम्बन्धी—(पुं०) विष्णु।

मानसी—(सं० स्त्री०) पुराण के अनुसार एक विद्या देवी का नाम, वह पूजा जो मन में ही की जावे, (वि०) मन से उत्पन्न; मानसी गंगा—गोवर्धन

पर्वत के पास के एक सरोवर का नाम; मानसी व्यथा–मानसिक कष्ट; मानसूत्र–कटिसूत्र, करधनी।
मानहंस–(सं० पुं०) एक वृत्त का नाम जिसको मनहंस रणहंस या मानसहंस कहते हैं।
मानहन्–सं०वि० अप्रतिष्ठा करनेवाला।
मानहानि–(सं०स्त्री०) अप्रतिष्ठा; मानहीन–(सं० वि०) जिसकी अप्रतिष्ठा हुई हो।
मानहुं–(हिं०अव्य०) मानों।
माना–(हिं०पुं०) अन्न आदि नापने का एक पात्र. (क्रि०) नापना, तौलना, जांच करना, परीक्षा करना, (क्रि०वि०) मानलो कि।
मानिक–(हिं०पुं०) माणिक्य, पद्मराग। मानिक खम्भ–(हिं० पुं०) मालखंभ, मलखंभ, विवाह में मण्डप के बीच में गाड़ने का खंभा। मानिकचंदी–(हिं०स्त्री०) साधारण छोटी सुपारी। मानिकजोड़–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा बगला। मानिरेत–(हिं० स्त्री०) मानिक का चूरा जिससे सोनार गहना साफ़ करते हैं।
मानित–(सं०वि०) सम्मानित, पूजित।
मानिनी–(सं० स्त्री०) अभिमान युक्त स्त्री, गर्ववती स्त्री, रुष्टा स्त्री, साहित्य में वह नायिका जो अपने प्रेमी के दोष को देखकर रूठ जाती हो।
मानी–(सं० वि०) अभिमानी, गर्वी, घमंडी, अहंकारी, (पुं०) सिंह, साहित्य में वह नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो, (स्त्री०) घड़ा, प्राचीन काल का एक मानपात्र, कुदाल, बसूला आदि का वह छेद जिसमें बेंट लगाई जाती है, चक्की के ऊपर के पाट में लगाई हुई एक लकड़ी, जिसके बीच के छेद में कीली रहती है।
मानुख–(हिं०पुं०) देखो मनुष्य। मानुष–(सं०पुं०) मनुष्य, मानव, (वि०) मनुष्य का। मानुषता–(सं०स्त्री०) मनुष्य का भाव या धर्म। मानुषराक्षस–(सं०पुं०) राक्षस प्रकृति वाला मनुष्य, मनुष्य का शत्रु। मानुषिक–(सं०वि०) मनुष्य संबंधी, मनुष्य का। मानुषी–(सं०वि०) मनुष्य संबन्धी। मानुष्य–(सं०नपुं०) मनुष्यत्व; मानुस–(हिं० पुं०) मनुष्य, आदमी।
मानो–(हिं०अव्य०) जैसे।
मान्थर्य(सं०नपुं०) दुर्बलता।
मान्द्य–(सं०नपुं०) मन्दता, आलस्य, रोग
मान्य–(सं०वि०) पूजनीय, सन्मान के योग्य, प्रार्थना करने योग्य, (पुं०) विष्णु शिव, महादेव; मान्यत्व–सम्मान या पूजा। मान्यमान–अधिक सम्मान योग्य। मान्यवती–(सं०स्त्री०) माननीया, वह स्त्री जो समझाने के योग्य हो। मान्या–(सं०स्त्री०) पूजनीया, आदर करने योग्य।

माप–(हिं० स्त्री०) मापने की क्रिया या भाव, परिमाण, वह माप जिसके कोई पदार्थ मापा जावे, मान।
मापक–(सं० पुं०) मान, माप, वह जो मापता हो, वह जिससे कोई पदार्थ मापा जाय। मापन–(सं०पुं०) परिमाण, तौलना, नाप। मापना–(हिं०क्रि०) किसी नियत माप से किसी पदार्थ के विस्तार, घनत्व आदि को नापना, किसी पदार्थ के परिमाण को जानने के लिये कोई क्रिया करना, नापना, मतवाला होना।
माफल–(हिं० पुं०) एक प्रकार का खट्टा नीबू।
माम–(सं० पुं०) मातुल, मामा, कृपण, कंजूस, (वि०) मेरा। माम–(हिं०पु०) अहंकार, ममता, अधिकार, शक्ति। मामक–(सं०वि०) ममता युक्त, मेरा, (पुं०) मामा। मामकीन–(सं० वि०) मेरा। ममता–(हिं०स्त्री०) आत्मीयता, अपनापन, प्रेम।
मामरी–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का वृक्ष।
मामा–(हिं०पुं०) माता का भाई।
मामिला–(हिं०पुं०) देखो मामला।
मामी–(हिं०स्त्री०) मामी की स्त्री, मां की भौजाई, (सं० स्त्री०) अपने दोष पर ध्यान न देना।
मामूं–(हिं०पुं०) माता का भाई मामा।
माय–(हिं० स्त्री०) जननी, माता, मां, किसी वृद्ध स्त्री के लिये संबोधन का शब्द; माया–(अव्य०) देखो मांहि।
मायक–(सं०पुं०) माया करने वाला, मायावी।
मायका–(हिं०पुं०) नैहर, पीहर।
मायन–(हिं०पुं०) वह दिन या तिथि जिसमें मातृकापूजन और पितृनिमन्त्रण होता है, इस दिन का कृत्य, मातृका पूजन आदि।
माया–(सं० स्त्री०) छल पूर्ण रचना, इन्द्रजाल आदि, जादू, दया, कृपा, धूर्तता, शठता, बदमाशी, प्रज्ञा, ज्ञान, लक्ष्मी, धन, सम्पत्ति, प्रकृति, अज्ञान, अविद्या, भ्रम, गौतम बुद्ध की माता का नाम, मय दानव की कन्या का नाम जिसके गर्भ से त्रिशिरा, सूर्पनख, खर और दूषण उत्पन्न हुए थे, इन्द्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक भेद, कोई आदरणीय स्त्री, ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जो उनकी आज्ञा से सब कार्य करती है, किसी देवता की लीला शक्ति, इच्छा या प्रेरणा, (हिं०स्त्री) ममता, दया, कृपा; मायाकार–(सं० पुं०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर; मायाचार–(सं० वि०) मायावी; मायाजीवी–(सं० पुं०) जादूगरी से जीविका निर्वाह करने वाला; मायाद–(सं०पुं०) कुम्भीर, मगर; मायादेवी–(सं०स्त्री०) बुद्धदेव की माता का नाम; मायाधर–(सं० स्त्री०) मायावी, ऐन्द्रजालिक, जादूगर, भ्रान्तिजनक, राक्षस; मायापटु–(सं०पुं०) मायावी मनुष्य; मायायन्त्र–(सं० नपुं०) किसी को मोहने की विद्या; मायारवि–(सं० पुं०) संपूर्ण जाति का एक राग; मायावति–(सं०स्त्री०) कामदेव की स्त्री, रति; मायावाद–(सं० पुं०) वेदान्त का वह सिद्धान्त जो ईश्वर के सिवाय संपूर्ण संसार को असत्य और अनित्य तथा असार मानता है; मायावादी–(सं० पुं०) ईश्वर के सिवाय प्रत्येक वस्तु को अनित्य मानने वाला, वह जो सम्पूर्ण सृष्टि को माया या भ्रम समझता है; मायाविनी–(सं० स्त्री०) छल कपट करने वाली स्त्री, रागिनी; मायावी–(सं० त्रि०) बड़ा छली या ऐन्द्रजालिक, (पुं०) बिल्ली, एक दानव का नाम जिसका पुत्र मय था, जादूगर, परमात्मा; मायावीज–(सं०पुं०) ह्रीं नामक तान्त्रिक मन्त्र; मायास्त्र–(सं० पुं०) एक प्रकार का कल्पित अस्त्र।
मायिक–(सं०नपुं०) मयाफल, माजफल (पुं०) ऐन्द्रजालिक, (वि०) माया से बना हुआ, जाली, मायावी, बनावटी।
मायी–(हिं०स्त्री०) देखो माई।
मायुराज–(सं० वि०) कुबेर के एक पुत्र का नाम।
मायूर–(सं०वि०) मयूर संबंधी, मोर का; मायूरिक–(सं० पुं०) मोर पकड़ कर बेचने वाला; मार–(सं० पु०) मरण, कामदेव, मारने की क्रिया या भाव, मारण, विघ्न, धतूरा, आघात, मारपीट, (हिं०अव्य०) अत्यन्त, बहुत, (हिं०स्त्री०) देखो माला।
मारकंडे–(हिं०पु०) देखो मारकण्डेय।
मारक–(सं०वि०) संहारक, हत्या करने वाला, किसी वस्तु के प्रभाव को नष्ट करने वाला, (पु०) बाज़ पक्षी।
मारकाट–(हिं० स्त्री०) मारने काटने का भाव या कार्य, युद्ध, लड़ाई।
मारकीन–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा।
मारग–(हिं० पु०) देखो मार्ग; मारग मारना–मार्ग में यात्री को लूट लेना; मारग लगना–मार्ग में जाना।
मारगन–(हिं०पुं०) देखो मार्गण, बाण, तीर, भिखमंगा।
मारजन–(हिं०पु०) देखो मार्जन; मारजनी–(हिं० स्त्री०) देखो मार्जनी।
मारजातक–(सं०पुं०) मार्जार, बिल्ली। मारजार–(हिं०पुं०) बिल्ली।
मारजित्–(सं०पुं०) वह जिसने कामदेव को जीत लिया हो, बुद्धदेव का एक नाम।
मारट–(सं०नपु०) ऊख की जड़।
मारण–(सं०नपुं०) वध, हत्या, जान से मार डालना, वह तान्त्रिक क्रिया जिसके द्वारा मृत्यु व्याधि आदि अनिष्ट उत्पन्न होता है, आयुर्वेद में किसी धातु या रत्न को भस्म करने की क्रिया।
मारतंड–(हिं०पुं०) देखो मार्तण्ड।
मारतौल–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।
मारना–(हिं० क्रि०) वध करना, प्राण लेना, आघात पहुँचाना, दुःख देना, शस्त्र आदि फेंकना, धातु आदि को जलाकर भस्म करना, अनुचित रीति से किसी की वस्तु को ले लेना, बल या प्रभाव कम करना, निर्जीव कर देना, विजय प्राप्त करना, लगाना, देना, संभोग करना, डँसना, काटना, बिना परिश्रम के प्राप्त करना, छिपाना, किसी आवेग को रोकना, नष्ट करना, अन्त करना, आखेट करना, बन्द करना, मल्लयुद्ध में विपक्षी को हराना, ठोंकना, पीटना, टकराना; गोली मारना–बंदूक से गोली चलाकर किसी जीव को मारना; जादू मारना–जादू का प्रयोग करना; मारपीट–मारने की क्रिया।
मारपेच–(हिं०पुं०) वह युक्ति जो किसी को धोखे में रखकर उसकी हानि की जावे।
मारवा–(हिं०पुं०) एक संकर राग का नाम।
मारवाड़–(हिं० पु०) राजपूताने का सबसे बड़ा सामन्त राज्य, मेवाड़; मारवाड़ी–(हिं० पुं०) मारवाड़ देश में रहने वाला, (वि०) मारवाड़ देश संबंधी, (स्त्री०) इस देश की भाषा।
मारवी–(सं०स्त्री०)संगीत की एक मात्रा।
मारवीज–(सं०नपुं०) एक प्रकार का मन्त्र।
मारात्मक–(सं० वि०) संघाती, प्राणनाशक।
मारा–(हिं० वि०) निहत, मारा हुआ। मारा फिरना–बिना काम के इधर उधर भटकते रहना; मारामार–(हिं०क्रि०वि०) बड़े तेज़ी से, बड़ी शीघ्रता से, (पुं०) देखो मारपीट।
मारिच–(हिं०पुं०) देखो मारीच।
मारित–(सं०वि०)जो मार डाला गया हो
मारिष–(सं०पुं०) नाटक का सूत्रधार।
मारिषा–(सं०स्त्री०)दक्षकी माता का नाम
मारी–(सं० स्त्री०) चण्डी, माहेश्वरी शक्ति, ऐसा संक्रामक रोग जिसके कारण से बहुत से लोग एक साथ मरें, मरी रोग।
मारीच–(सं०पुं०) रामायण के अनुसार रावण का भेजा हुआ वह राक्षस जिसने सोने का मृग बनकर श्रीरामचन्द्रको छला था, कश्यप, याजक ब्राह्मण; मारीची–(सं० स्त्री०) माया देवी का एक नाम।
मारीमृत–(सं० वि०) जिसकी मृत्यु महामारी हुई हो।
मारीष–(सं०पुं०) मरसे का साग।

मारुण्ड–(सं०पुं०) सर्प का अंडा, गोवर का घेरा।
मारुत–(सं० पुं०) वायु, हवा, वायु का अधिपति देवता; मारुतसुत–हनुमान, भीम।
मारुताशन–(सं०पुं०) सर्प, कार्तिकेय; (वि०) केवल हवा पीकर रहनेवाला।
मारुताश्व–(सं० पुं०) हवा के समान वेग से चलने वाला घोड़ा।
मारुति–(सं० पुं०) हनुमान्, भीम।
मारू–(हिं० पुं०) वह राग जो युद्ध के समय गाया बजाया जाता है, बड़ा नगाड़ा, जंगी धौंसा, (वि०) हृदय विदारक, कष्ट देने वाला, मारने वाला,(हिं०पुं०) मरुदेशका रहने वाला
मारूत–(सं० पुं०) हनुमान्, (हिं०स्त्री०) घोड़े के पिछले पैर की एक भौरी।
मारे–(हिं०अव्य०) कारण से।
मार्कट–(सं०वि०) मर्कट सम्बन्धी।
मार्कण्डेय–(सं० पुं०) मृकण्डु ऋषि के पुत्र जो अपने तपोबल से मृत्यु को परास्त करके चिरजीवी हुए हैं; जन्मतिथि तथा संस्कारादि कार्य में इनकी पूजा की जाती है।
मार्का–(हिं०पुं०) संकेत, कोई अंक या चिह्न जो किसी विशेष बात का सूचक हो।
मार्ग–(सं० पुं०) पथ, मृगमद, कस्तूरी, अगहन का महीना,मृगशिरा नक्षत्र, अन्वेषण, खोज, विष्णु।
मार्गक–(सं०पुं०) अगहन का महीना।
मार्गण–(सं० नपुं०) अन्वेषण, ढूंढ़ना, परीक्षा करना, प्रार्थना, (पुं०) भिखमंगा, शर, बाण;मार्गणता–(सं०स्त्री०) याचकता।
मार्गतोरण–(सं० नपुं०) बाहरी फाटक;
मार्गधेनु–(सं० पुं०) एक योजन का परिमाण।
मार्गन–(हिं०पुं०) देखो मार्गण।
मार्गपाली–(सं०स्त्री०) स्तम्भ, खंभा।
मार्गबन्धन–(सं०नपुं०) मार्ग रोकना;
मार्गरक्षक–(सं०पुं०) पथरक्षक, पहरेदार; मार्गशाखी–(सं० पुं०) मार्ग पर लगाये हुए वृक्ष।
मार्गशीर्ष–(सं०पुं०) अगहन का महीना।
मार्गिक–(सं०पुं०) पथिक, यात्री।
मार्गित–(सं० वि०) अन्वेषित, खोजा हुआ; मार्गितव्य–(सं० वि०) अन्वेषण करने के योग्य।
मार्गिन्–(सं०पुं०) मार्ग पर चलनेवाला, यात्री।
मार्गी–(सं०पुं०) संगीत में एक मूर्छना का नाम।
मार्गेश–(सं०पुं०) मार्गपति।
मार्ग्य–(सं० वि०) मार्जनीय, मार्जन करने योग्य।
मार्जक–(सं०वि०) निर्मल करने वाला, (पुं०) रजक, धोबी।
मार्जन–(सं० नपुं०) स्वच्छ करने का काम, वैदिक सन्ध्या करती समय मन्त्र पढकर जल छिड़कना।
मार्जना–(सं०स्त्री०) मार्जन, स्वच्छता, मृदंग की बोल, क्षमा।
मार्जनी–(सं० स्त्री०) झाड़ू; मार्जनीय–(सं० वि०) परिष्कार करने योग्य।
मार्जार–(सं० पुं०) बिडाल, बिल्ली; अहंकार के लिये जप करने वालेको मार्जार तपस्वी कहते है; मार्जारक–(सं० पुं०) मयूर, मोर, बिल्ली;
मार्जारी टोड़ी–(हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।
मार्जित–(सं० वि०) मार्जन किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।
मार्तण्ड–(सं०पुं०) शूकर, सुवर्णमाक्षिक, सूर्य; मार्तण्डमूल–अकवन की जड़।
मार्त्य–(सं०वि०) शरीर का मैल।
मार्दव–(सं० नपुं०) दूसरे को दुःखी देखकर स्वयं दुःखी होना, अहंकाररहित होना, सरलता; मार्दवीकृत–(सं०वि०) कोमल किया हुआ।
मार्मिक–(सं०वि०) विशेष प्रभावशाली, मर्म स्थान पर प्रभाव डालने वाला;
मार्मिकता–(सं०स्त्री०) मार्मिक होने का भाव, किसी वस्तु को मर्म तक पहुँचाने का भाव।
माल–(सं० नपुं०) वन, जंगल, क्षेत्र, कपट, हरताल, जनलोक, विष्णु;
माल–(हिं०स्त्री०) माला, हार, पंक्ति, चरखे के टेकुए को घुमानेकी रस्सी, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बनी हो, युवती स्त्री, गणित में वर्ग का घात, स्वादिष्ट भोजन, खेत की उपज, कर, धन, संपत्ति, सामग्री, क्रय विक्रय पदार्थ, (हिं०पुं०) मल्ल; माल चीरना–दूसरे का धन हरण करना; माल टाल–धन सम्पत्ति।
मालकगनी–(हिं०स्त्री०) वृक्षोंपर फैलने वाली एक पहाड़ी लता जिसके बीजों का तेल निकाला जाता है।
मालका–(सं०स्त्री०) माला।
मालकुण्डा–(हिं० पुं०) नील रखने का मटका।
मालकोश–(सं०पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग, जिसको कौशिक राग भी कहते है। मालमोस–(हिं०पुं०) देखो मालकोश।
मालगाड़ी–(हिं०पुं०) रेल की वह गाड़ी जिसमें केवल माल भर कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता है।
मालगुर्जरी–(सं०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।
मालगोदाम–(हिं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर व्यापार का माल जमा रहता है, रेल के स्टेशनों पर वह स्थान जहाँ मालगाड़ी से भेजा जाने वाला अथवा आया हुआ माल रहता है।
मालतिका–(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक अनचरी।
मालती–(सं० स्त्री०) वृक्षों पर घनी फैलने वाली एक लता जिसमें सुगंधित सफ़ेद फूल होते हैं, युवती, बारह अक्षरों के एक वर्णिक वृत्त का नाम, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छ अक्षर होते हैं, रात्रि, चांदनी, पाठा, जायफल का वृक्ष।
मालतीटोड़ी–(हिं०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी। मालतीपत्रिका–(सं०स्त्री०) जावित्री। मालतीफल–(सं०नपुं०) जातीफल, जायफल।
मालदह–(हिं०पुं०) एक प्रकार का आम जो बिहार प्रान्त में विशेष करके होता है।
मालदही–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का रेशमी डोरिये का कपड़ा, एक प्रकार की छप्पर लगी हुई नाव।
मालद्वीप–(हिं० पुं०) भारत सागर के अन्तर्गत सिंहल के समीप एक द्वीपपुंज।
मालपूआ, मालपूवा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मीठा पकवान जो पूरी की तरह का होता है।
मालबीर–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की ईख।
मालभंडारी–(हिं०पुं०) जहाज़।
मालय–(सं०पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम, व्यपारियों का झुड, वह स्थान जहां कोई प्रेमी अपनी नायिका से मिलता है, पद्मकाष्ठ, श्रीखंड,चंदन; (वि०) मलयगिरि सम्बन्धी।
मालव–(सं०पुं०) अवन्ति देश, मालवा देश, एक राग का नाम जिसको भैरव भी कहते हैं, मालवा देश निवासी।
मालवक–(सं०वि०) मालवा का रहने वाला। मालवगौड़–(सं०पुं०) एक संकर राग का नाम। मालवश्री–(सं०स्त्री०) श्रीराग की एक रागिणी का नाम।
मालवा–(हिं० पुं०) मध्य भारत का एक प्रदेश।
मालवी–(सं० स्त्री०) श्रीराग की एक रागिणी।
मालवीय–(सं०वि०)मालवा देश सम्बन्धी, मालवा देश का रहने वाला।
मालसी–(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
माला–(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, अवलि, गले में पहरने का फूलों का हार, गजरा, जप करने की माला, एक प्रकार को दूब, भुईं आमला, उपजाति छन्द का एक भेद; माला फेरना–जप करना; उलटी माला फेरना–किसी का अहित चाहना।
मालाकार–(सं०पुं०) माला बनाने वाला, माली। मालागुण–(सं०पुं०) माला गूथने का सूत, गले में पहरने का गहना। मालादीपक–(सं०नपुं०) एक अर्थालंकार जिसमें पूर्व कथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है। मालाधार–(सं०वि०) माला धारण करने वाला, (पुं०) सत्रह अक्षरों के एक वर्णिक वृत्त का नाम। मालाफल, मालामणि–(सं०पुं०) रुद्राक्ष।
मालावती–(सं०स्त्री०) एक संकर रागिणी का नाम।
मालिका–(सं० स्त्री०) पंक्ति, माला, चमेली, अंगूर का मद्य, मालिन।
मालिनी–(सं०स्त्री०) मालिन, गौरी, गंगा, चम्पा नगरी का एक नाम, एक मातृका का नाम, जवासा का पौधा, स्कन्द की सात माताओं में से एक, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं, द्रौपदी का एक नाम, मदिर नाम की वृत्ति।
मालिन्य–(सं०नपुं०) मलिनता, अन्धकार, अंधेरा, पाप, बुरी वृत्ति।
मालिया–(हिं० पुं०) मोटे रस्सों में दी जाने वाली एक प्रकार की गांठ।
मलिवान–(हिं०पुं०) देखो माल्यवान्।
माली–(हिं०पुं०) फूल बेंचने वाली जाति विशेष, वह पुरुष जो बगीचों में पेड़ पौधे लगाने और सींचने का काम करता है, (वि०) माला पहिरे हुए, बाल्मीकीय रामायण के अनुसार सुकेश राक्षस के पुत्र का नाम, एक छन्द जिसका दूसरा नाम राजीवगण है, (फ़ा०वि०) आर्थिक, धन सबंधी।
मालीय–(सं० वि०) माली संबंधी, माली का।
मालु–(सं०पुं०) वृक्ष में लपेटने वाली एक लता का नाम।
मालूक–(सं०पुं०) श्यामा तुलसी।
मालूर–(सं०पुं०) कैथ का वृक्ष, बेल का पेड़।
मालैया–(सं०स्त्री०) बड़ी इलायची।
मालोपमा–(सं०स्त्री०) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें एक उपमेय के अनेक उपमान होते हैं तथा प्रत्येक उपमान के धर्म भिन्न होते हैं।
माल्य–(सं० नपुं०) पुष्प, फूल, सिर पर धारण करने की माला। माल्यजीवक–(सं०पुं०) मालाकार, माली।
माल्यवती–(सं०वि०) माला पहिरे हुए। माल्यवन्त, माल्यवान्–(सं०पुं०) पुराणों के अनुसार एक पर्वत का नाम, सुकेश के पुत्र का नाम जो एक राक्षस था, यह माली और सुमाली का भाई था।
माल्ला–(सं० पुं०) देखो मल्लाह, धीवर जाति।
मावत–(हिं०पुं०) देखो महावत।
मावली–(हिं० पुं०) दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति, शिवाजी की सेना में इस जाति के अधिक सिपाही थे। मावस–देखो अमावस्या
मावा–(हिं०पुं०) पीच, माड़, सत्व, प्रकृति, खोवा, अंडे के भीतर का रस, मसाला, सामान।
माश–(हिं०पुं०) देखो माष।
माशा–(हिं० पुं०) एक तोले का बार-

हवां भाग, आठ रत्ती का एक मान या बांट ।
माशी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का रंग जो कालापन लिये हरा होता है ।
माष–(सं०पुं०) उड़द, परिमाण विशेष, माशा, शरीर पर का मसा जो काले रंग का होता है । माषक–(सं०पुं०) पांच रत्ती का परिमाण, उड़द । माषपर्णी–(सं०स्त्री०) जंगली उड़द । माषवटी–(सं०स्त्री०) उड़द की बड़ी ।
माषोद–(सं०पुं०) कच्छप, कछुआ ।
मास–(सं०पुं०) वर्ष का बारहवां भाग, महीना, जितने दिनों तक सूर्य एक राशि में रहते हैं वह सौरमास कहलाता है, तिथि घटित मास को चान्द्रमास कहते हैं, मासजात–जिसको उत्पन्न हुए केवल एक महीना हुआ हो; मासताला–करताल; मासपूर्व–एक महीना पहले; मासप्रवेश–महीने का आरंभ होना ।
मासना–(हिं०क्रि०) मिलना, मिलाना ।
मासवृद्धि–(सं०स्त्री०) अण्ड बृद्धि का रोग, गलगण्ड, घेघा ।
मासल–(सं०वि०) देखो मांसल, हृष्ट-पुष्ट ।
मासा–(हिं०पुं०) देखो माशा ।
मासान्त–(सं०पुं०) एक महीने का अन्त, अमावस्या, संक्रान्ति दिन ।
मासिक–(सं०वि०) मास संबंधी, महीने का, महीने में एक बार होने वाला; (पुं०) मासिक वेतन ।
मासी–(हिं०स्त्री०) मां की बहन, मौसी। मासुरी–(सं०स्त्री०) मासी, मौसी । चीरफाड़ का एक प्राचीन अस्त्र ।
मासोपवास–(सं०पुं०) एक महीने तक अनशन व्रत ।
माह–(सं०पुं०) माष, उड़द; (फ़ा०पुं०) महीना ।
माहत–(सं०नपुं०) महत्व, बड़ाई ।
माहन–(सं०पुं०) ब्राह्मण ।
माहना–(हिं०क्रि०) देखो उमाहना ।
माहनीय–(सं०वि०) पूजनीय, श्रेष्ठ ।
माहर–(हिं० वि०) देखो माहिर ।
माहली–(हिं०पुं०) वह पुरुष जो अन्तः-पुर में आता जाता हो, सेवक, दास।
माहां–(हिं०अव्य०) देखो महं ।
माहाकुल–(सं०वि०) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो ।
माहात्मिक–(सं०वि०)माहात्म्य संबंधी ।
माहात्म्य–(सं० नपुं०) महिमा, बड़ाई, महत्व, गौरव, आदर, सम्मान ।
माहाराज्य–(सं०नपुं०) महाराज का पद या मर्यादा ।
माहाराष्ट्र–(सं०वि०) महाराष्ट्र संबंधी ।
माहिं–(हिं०अव्य०) भीतर, में, पर ।
माहिन–(सं०वि०) पूजनीय, बढ़ा हुआ ।
माहिला–(हिं०पुं०) मल्लाह, मांझी ।
माहिष–(सं०वि०) भैंस संबंधी ।
माहिषिक–(सं०पुं०) व्यभिचारिणी स्त्री का पति ।

माहिष्मती–(सं०स्त्री०)भारतवर्ष की एक अति प्राचीन नगरी का नाम जो दक्षिण देश में थी ।
माहीं–हिं०अव्य०) देखो मांहि ।
माहुर–(हिं०पुं०) विष, गरल ।
माहेन्द्र–(सं०वि०) जिसका देवता इन्द्र हो, इन्द्र संबन्धी,एक अस्त्रका नाम । महेन्द्री–(सं०स्त्री०) इन्द्राणी, इन्द्र की शक्ति, गाय, सात मातृकाओंमेंसे एक
माहेय–(सं०वि०) मिट्टी का बना हुआ (पुं०) मंगल ग्रह, विद्रुम, मूंगा ।
माहेश–(सं० वि०) महेश सम्बन्धी । माहेशी–(सं०स्त्री०) दुर्गा ।
माहेश्वर–(सं०वि०) महेश्वर सम्बन्धी, (पुं०)एक यज्ञ का नाम,एक उपपुराणका नाम, शैव संप्रदाय का एक भेद,एक अस्त्र का नाम, पाणिनि के अइउण् , ऋलृक् आदि चौदह सूत्र जिनमेंस्वर और व्यजन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है ।
माहेश्वरी–(सं०स्त्री०) दुर्गा,'एक मातृका का नाम, वैश्यों की एक जाति ।
मिं–चीन देश की एक जाति का नाम
मिंगनी–(हिं०स्त्री०) देखो मेंगनी ।
मिंगी–(हिं०स्त्री०) देखो मींगी ।
मिंड़ाई–(हिं०स्त्री०) मीड़ने या मींजने की क्रिया या भाव, मींड़ने का शुल्क देशी छींट की छपाई में एक क्रिया जो कपड़े को छापने के बाद और धोने के पहले की जाती है ।
मिहदी–(हिं०स्त्री०) देखो मेंहदी ।
मिआदी–(हिं० वि०) नियत काल पर होने वाला।
मिचकना–(हिं०क्रि०)पलकों का झपकना या बन्दहोना । मिचकाना–(हिं०क्रि०) बार बार आँखें खोलना या बन्द करना, आँखें मिचकाना ।
मिचकी–(हिं०स्त्री०) छलांग । मिना, मिचना–(हिं०क्रि०) आँखोंका बन्दहोना
मिचलाना–(हिं०क्रि०) उबकाई आना, मतली आना ।
मिचवाना–(हिं०क्रि०) दूसरे से आंख बंद कराना । मिचौनी–(स्त्री०) बन्द करने की क्रिया ।
मिचौलना–(हिं०क्रि०) देखो मीचना ।
मिछा–हिं०वि०) देखो मिथ्या ।
मिजाजपीटा–(हिं०वि०) बड़ा अभिमानी
मिझोना–(हिं०पुं०) हल में खड़े बल में लगी हुई लकड़ी ।
मिटका–(हिं०पुं०) देखो मटका ।
मिटना–(हिं०क्रि०) किसी अंकित चिह्न आदिका लुप्त हो जाना. नष्ट होना, न रह जाना । मिटाना–(हिं०क्रि०) रेखा, चिह्न आदि को पोंछ देना या हटाना, नष्ट कर देना, रहने न देना
मिटिया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का छोटा बरतन, मटकी, (वि०) मिट्टी का बना हुआ । मिटियाना–(हिं०क्रि०) मिट्टी लगा कर स्वच्छ करना, रगड़ना या चिकनाना ।

मिटियाफूस–(हिं०वि०) जो दृढ़ न हो ।
मिटियामहल–(हिं०पुं०) मिट्टी का घर झोपड़ी ।
मिट्टी–(हिं०स्त्री०) पृथ्वी,भूमि, जमीन, राख, भस्म, धूल, शरीर, देह, शव, शरीर की बनावट, चन्दन का तेल या इत्र जिस पर दूसरे इत्र बनाये जाते हैं; मिट्टी करना–नष्ट करना, मिट्टी के मोल–बहुत सस्ते दाम पर; मिट्टी डालना–किसी दोष को छिपा देना; मिट्टी देना–कब्र में मुरदा रखने के बाद उसमें लोगों का तीन तीन मुट्ठी मिट्टी डालना; कब्र में गाड़ना; मिट्टी में मिलजाना–अच्छी तरह से नष्ट भ्रष्ट होजाना; मिट्टी का पुतला–मनुष्य का शरीर; मिट्टी की खराबी–दुर्दशा; नाश; मिट्टी पलीद करना–दुर्दशा करना । मिट्टी का तेल–(हिं०पुं०) एक तरल खनिज पदार्थ जो दीपक जलाने आदि के काम में आता है । मिट्टी का फूल–(हिं०पुं०) भूमि पर जमने वाला एक प्रकार का क्षार, रेह । मिट्टीखरिया–(हिं०स्त्री०) देखो खड़िया ।
मिट्ठा–(हिं०वि०) देखो मीठा ।
मिट्ठी–(हिं०स्त्री०) चुम्बन, चूमा।
मिट्ठू–(हिं०वि०) मीठा बोलने वाला, (वि०) चुप रहनेवाला,न बोलनेवाला, मधुरभाषी; (पुं०) तोता ।
मिठ–(हिं०वि०) "मीठा"शब्दका संक्षिप्त रूप, इसका व्यवहार प्रायः यौगिक शब्द बनाने के लिये होता हैं और यह किसी शब्दके पहले जोड़ा जाता है । मिठबोलना, मिठबोला–(हिं०वि०) मधुरभाषी, मीठा बोलने वाला ।
मिठलोना–(हिं०वि०) थोड़े नमकवाला
मिठाई–(हिं०स्त्री०) मीठा होने का भाव, मिठास, कोई मीठी खाने की वस्तु, कोई अच्छा पदार्थ । मिठास–(हिं०स्त्री०) मीठा होनेका भाव, माधुर्य मीठापन । मिठौरी–(हिं०स्त्री०) पीसे हुए उड़द या चने की बनी हुई बरी ।
मिड़ाई–(हिं०स्त्री०) देखो मिंड़ाई ।
मितंग–(हिं०पुं०) हस्ती, हाथी ।
मित–(सं०वि०) परिमित, जो सीमा के भीतर हो, कम, थोड़ा, क्षिप्त, फेंका हुआ,(हिं०पुं०)मित्र । मितभाषी–(सं०वि०) स्वल्पभाषी, थोड़ा बोलनेवाला
मितभुक्त–(सं०वि०) थोड़ा खानेवाला । मितमति–(सं०वि०) अल्पमति, थोड़ी बुद्धि वाला । मितव्यय–(सं०पुं०) कम व्यय करना । मितव्ययता–(सं०स्त्री०) कम व्यय । मितव्ययी–(सं०वि०)परिमित व्यय करने वाला । मितशायी–सं०वि०) बहुत कम सोने वाला ।
मिताई–(हिं०स्त्री०) मित्रता, दोस्ती ।
मिताक्षरा–(सं०स्त्री०) याज्ञवल्क्य स्मृति की टीका जिसको ज्ञानेश्वर ने बनाया था ।
मिताचार–सं०पुं०) परिमित आचार ।

मितार्थ–(सं०पुं०) परिमित अर्थ, वह दूत जो थोड़ी बातें कह कर अपना कार्य सम्पन्न करता है;मितार्थक–कम अर्थ का
मिताशन–(सं०वि०) कम भोजन करने वाला; मिताशी–अल्पभोजी ।
मिताहार–(सं०पुं०) थोड़ा भोजन ।
मिति–(सं०स्त्री०) मान, परिमाण,सीमा, विभाग ।
मिती–(हिं०स्त्री०) महीने की तिथि जब तक व्याज देना हो; मिती पूजना–हुंडी देने का नियत काल बीतना ।
मित्र–(सं०पुं०) पुराणके अनुसार बारह आदित्यों में से एक, आर्य जाति के एक प्राचीन देवता, मरुद्गण में से एक सखा, मित्रकरण–मित्रता करना; मित्रघ्न–मित्र की हत्या करने वाला, विश्वास घातक । मित्रता–(सं०स्त्री०) मित्र होने का भाव । मित्रत्व–(सं० नपुं०) सौहार्द । मित्रद्रोह–(सं०पुं०) बन्धु से शत्रुता करना । मित्रपति–(सं०पुं०) वह जो मित्र की पालन पोषण करता हो । मित्रबाहु–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण के पुत्र का नाम । मित्रभाव–(सं०पुं०) मित्रकाधर्म,मित्रता मित्रभेद–(सं०पुं०) वह जो मित्रों में वैमनस्य उत्पन्न कराता हो । मित्रलाभ–(सं०पुं०) मित्रों का मिलना । मित्रवती–(सं०स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम । मित्रबाहु–(सं०पुं०) बारहवें मनुके एक पुत्र का नाम । मित्रसप्तमी–(सं० स्त्री०) मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी । मित्रसेन–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । मित्रहिंसक–(सं०वि०) मित्र की हत्या करने वाला।
मित्रा–(सं०स्त्री०) मित्रदेव की स्त्री का नाम, शत्रुघ्न की माता सुमित्रा, एक अप्सरा का नाम ।
मित्राई–(हिं० स्त्री०) देखो मित्रता । मित्राक्षर–(सं०नपुं०) छन्द के रूप में बना हुआ पद । मित्राभिद्रोह–(सं०पुं०) मित्र से बैर करने वाला । मित्रावरण–(सं०पुं०)मित्र और वरुण नाम के देवता ।
मित्री–(सं०स्त्री०)दशरथकीपत्नी सुमित्रा जो लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता थीं
मिथनी, मिथिनी–(सं० स्त्री०) राजर्षि जनक का एक नाम ।
मिथिला–(सं०स्त्री०) राजर्षि जनक की नगरी जिसका वर्तमान नाम तिरहुतहै
मिथुन–(सं०नपुं०) स्त्री और पुरुष का युग्म या जोड़ा, द्वन्द्व, युगल, संयोग, समागम, मेषादि बारह राशियों में से तीसरी राशि ।
मिथुनत्व–(सं०नपुं०) मिथुन का भाव ।
मिथोयोध–(सं०पुं०) आपसमें लड़नेवाला
मिथ्या–(सं०वि०) असत्य, अनृत, झूठ; मिथ्याचर्या–कपट व्यवहार ; मिथ्याचारी–दाम्भिक, कपटी; मिथ्याज्ञान–

भ्रान्ति; **मिथ्यात्व**–(सं०नपुं०) मिथ्या होने का भाव, माया। **मिथ्यादर्शन**–(सं०नपु०) वह दर्शन जिसमें झूठी बातें लिखीगई हों। **मिथ्याध्यवसिति**–(सं०स्त्री०) झूठा उत्साह, एक अर्थालंकार जिसमें किसी झूठी बात को स्थिर करने के लिये दूसरी बात कही जाती है।

मिथ्यानिरसन–(सं० नपुं०) शपथ खाकर किसी सच्ची बात को अस्वीकार करना; **मिथ्या पण्डित**–(सं०पुं०) वह जो झूठमूठ का पंडित बना हो; **मिथ्यापुरुष**–(स० पुं०) छाया पुरुष; **मिथ्या प्रतिज्ञ**–(सं० वि०) झूठी शपथ खाने वाला; **मिथ्याभिधान**–(स० नपुं०) झूठ कहना; **मिथ्याभियोग**–(सं० नपुं०) किसी पर झूठा दोष लगाना; **मिथ्याभिशाप**–(सं० पुं०) झूठा कलंक; **मिथ्यामति**–(सं० स्त्री०) भ्रान्ति भूल; **मिथ्यायोग**–(स० पु०) आयुर्वेद के अनुसार वह कार्य जो रूप, रस प्रकृति आदि के विरुद्ध हो जैसे मलमूत्र आदि का वेग रोकना, शरीर का मिथ्या योग है; **मिथ्यावाद**–(स०पुं०) झूठीबात; **मिथ्यावादी**–(हिं० वि०) झूठ बोलने वाला, झूठा; **मिथ्या विहार**–(सं० नपुं०) झूठ मूठ इधर घूमना; **मिथ्या बिहार**–(हिं० पुं०) किसी विषय को न जानते हुए उसमें दखल देना; **मिथ्या साक्षी**–(सं० वि०) झूठी साक्षी देनेवाला; **मिथ्याहार**–(स०पुं०) प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।

मिद्ध–(स० नपुं०) जड़ता, मूर्खता, निद्रालुता; **मिनती**–(हिं०स्त्री०) देखो विनति, (हिं० पुं०) नाक से निकला हुआ मन्द शब्द; **मिनमिन**–(हिं० स्त्री०) मक्खी के भनभनाने के समान मन्द शब्द; **मिनमिना**–(हिं०वि०) नाकसे बोलने वाला, थोड़ी सी बात पर कुढ़ने वाला; **मिनमिनाना**–(हिं०क्रि०) नाकसे बोलना, कोई काम बड़ी सुस्ती से करना।

मिमिक्ष–(सं०वि०) पानी से सींचा हुआ

मिमियाई–(हिं०स्त्री०) देखो मोमियाई।

मिमियाना–(हिं० क्रि०) बकरी या भेंड़ का बोलना।

मियांमिट्ठू–(हिं० पुं०) मधुरभाषी, मीठी बोली बोलने वाला, मूर्ख, तोता; **अपने मुंह मियां मिट्ठू होना**–अपनी प्रशंसा अपने मुंह से करना।

मियार–(हिं० पु०) कुएं के खंभों पर रक्खी हुई लकड़ी।

मियाल–(हि०पुं०) देखो मियार।

मिरकी–(हिं० स्त्री०) चौपायों के मुख का एक रोग।

मिरखम–(हिं० पुं०) कोल्हू की वह लकड़ी जिस पर हांकने वाला बैठता है

मिरग–(हिं०पुं०) देखो मृग।

मिरगया–(हिं०पुं०) वह जिसको मिरगी का रोग हो।

मिरगी–(हिं०स्त्री०) देखो मृगी; अपस्मार रोग जिसमें रोगी मूर्छित होकर गिर पड़ता है।

मिरचा–(हिं०पु०) लाल मिर्च।

मिरचाई–(हिं०स्त्री०) देखो मिरच।

मिरदंग–(हिं०पुं०) देखो मृदङ्ग।

मिरदंगी–(हिं०पुं०) मदङ्ग बजाने वाला, पखावजी।

मिरिका–(स०स्त्री०) एक प्रकार की लता

मिरिग–देखो मृग।

मिरिच–(हिं०स्त्री०) देखो मरिच।

मिर्च–(हिं० स्त्री०) कुछ तीते फलों और फलियों का वर्ग जिसके अन्तर्गत लाल तथा काली मिर्च है।

मिर्चिया–(हिं० स्त्री०) रोहिस घास।

मिलकना–(हिं०क्रि०) जलना।

मिलकी–(हिं० स्त्री०) जिसके पास भूसम्पत्ति हो, जमीदार, जिसके पास धन सम्पत्ति हो।

मिलन–(सं० नपुं०) समागम, भेंट, मिश्रण, मिलावट; **मिलनसार**–(हिं० वि०) जो सबने प्रेम पूर्वक मिलता हो, सबसे हेलमेल रखने वाला;

मिलनसारी–(हिं०स्त्री०) सुशीलता. सबसे प्रेम पूर्वक मिलने का गुण; **मिलनस्थान**–(स०स्त्री०) मिलने की स्थान।

मिलना–(हिं० क्रि०) दो भिन्न भिन्न पदार्थो का एक होना, सम्मिलित होना, आलिंगन करना, छाती से लगाना, किसी पक्ष में होना, संभोग करना, बाजों का बजने के पहले सुर ठीक होना मेल मिलाप होना, गुण आकृति आदि के समान होना, सटना, चिपकना, लाभ होना, सामने आना, भेंट होना, प्राप्त होना; **मिला-जुला**–मिश्रित।

मिलनी–(हिं० स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगों से गले गले मिलते हैं और उनको कुछ नगद रुपये देते हैं।

मिलवाई–(हिं० स्त्री०) मिलवाने की क्रिया या भाव।

मिलवाना–(हिं० क्रि०) मिलने या मिलाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को मिलने में प्रवृत्त करना, भेंट या परिचय कराना, मेल कराना, सम्भोग कराना।

मिलाई–(हिं०स्त्री०)मिलने की क्रिया या भाव, जाति से बहिष्कृत व्यक्ति को जातिमें मिलानेका काम,देखोमिलनी।

मिलान–(हिं० पुं०) मिलने की क्रिया या भाव, ठीक होनेकी जांच, तुलना।

मिलाना–(हिं०क्रि०) मिश्रण करना, एक पदार्थ में दूमरा पदार्थ डालना, भिन्न भिन्न पदार्थों को एक में करना, सन्धि करना, किसी को अपने पक्ष में करना, परिचय या भेंट करना, सम्भोग करना, बजने के पहले बाजों का सुर ठीक करना, सटाना, चिपकाना, एक करना, तुलाना, बराबर करना, यह देखना कि प्रतिलिपि मूल के अनुसार है या नहीं, अपना साथी या भेदिया बनाना।

मिलाप–(हिं०पुं०) मिलने की क्रिया या भाव, मित्रता, सम्भोग, भेंट, मिलाई।

मिलाव–(हिं०पुं०) मिलाने की क्रिया या भाव, मिलाप मिलावट; **मिलावट**–(हिं० स्त्री०) मिलाये जाने का भाव, किसी अच्छी वस्तु में घटिया वस्तु का मेल।

मिलित–(सं०वि०)सटा हुआ, मिला हुआ

मिलिन्दक–(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प

मिलेठी–(हिं०स्त्री०) देखो मुलेठी।

मिलोना–(हिं०क्रि०) देखो मिलाना, गाय का दूध दुहना; (पु०) बालू मिली हुई एक प्रकार की अच्छी भूमि।

मिलौनी–(हिं० स्त्री०) मुसलमानों में विवाह की एक प्रथा, मिलाने की क्रिया या भाव, मिलावट।

मिशि–(सं०स्त्री०) मधुरिका, सौंफ, मेथी, जटामासी, बालछड़।

मिश्र–(स०पु०) रक्त, लोहू, सन्निपात, ज्योतिष के अनुसार एक गण का नाम, ब्राह्मणों के वर्गकी उपाधि जो कान्यकुब्ज, सरयूपारी तथा सारस्वत ब्राह्मणों में होती है, (वि०) मिश्रित, मिला हुआ, श्रेष्ठ, बड़ा, गणित में भिन्न प्रकारकी सख्या संबंधी; **मिश्रक**–(स०नपु०) जसद, जस्ता, खारी नमक, मूली; **मिश्रकेशी**–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा जो मेनका की सखी थी; **मिश्रज**–(सं०पुं०) वह जो भिन्न जाति के मिश्रण से उत्पन्न हो, खच्चर; **मिश्रजाति**–(सं०स्त्री०)वर्णसंकर, दोगला; **मिश्रण**–(सं०नपु०) दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया, जोड़ करने की क्रिया, मिलावट, सयोजन; **मिश्रणीय**–(सं० वि०) मिलाने योग्य; **मिश्रव्यवहार**(सं०पुं०) गणित की एक क्रिया; **मिश्रित**–(सं०वि०) सम्मिलित, मिलाया हुआ।

मिश्री–(हिं०स्त्री०) देखो मिसरी; **मिश्रीकरण**–(स०नपुं०) मिलाने की क्रिया; **मिश्रीभूत**–(सं० वि०) एक में एक मिलाया हुआ।

मिश्रोदन–(सं०नपुं०) खेचरिका, खिचड़ी

मिष–(सं० नपु०) छल, कपट, बहाना, हीला, ईर्षा, डाह, स्पर्धा, होड़।

मिषिका–(स० स्त्री०) मधुरिका, सौंफ।

मिष्ट–(सं०नपुं०) मीठा रस. (वि०) मधुर, मीठा; **मिष्ट पाक**–मिष्टान्न, मुरब्बा; **मिष्ट पाचक**–अच्छा भोजन बनाने वाला; **मिष्ट भाषी**–मधुर बोलने वाला।

मिष्टान्न–(स०पुं०) मिष्ट द्रव्य, मिठाई।

मिस–(हिं०पुं०) बहाना, हीला, पाखड।

मिसन–(हिं०स्त्री०) बालू मिली हुई मिट्टी

मिसनी–(हिं०क्रि०) मिश्रित होना, मला जाना, मींजा जाना; देखो मिलना।

मिसरी–(हिं०स्त्री०) मिस्र देश का निवासी, मिश्र देश की भाषा, स्वच्छ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार सफेद चीनी।

मिसि–(सं०स्त्री०) सौंफ़, जटामासी, खस

मिसिरी–(हिं०स्त्री०) देखो मिसरी।

मिसिली–(हिं०वि०) जिसके विषय में न्यायालय में कोई मिसिल बनचुकी हो, जिसको न्यायलय से दण्ड मिल चुका हो।

मिस्तर–(हिं०पुं०)लकड़ी का वह अस्त्र जिससे राज लोग पलस्तर करते हैं।

मिस्ता–(हिं०पुं०) बंजर, भूमि, अन्न को दाबने के लिये बनाई हुई भूमि।

मिस्र–(हिं० पुं०) अफ्रीका के पूर्वोत्तर भाग का एक प्रसिद्ध देश।

मिस्री–(हिं०स्त्री०)देखो मिसरी।

मिस्सा–(हिं०पुं०) मूंग मोठ आदि का भूसा, कई तरह की दालों को पीस कर बनाया हुआ आंटा।

मिहर–(स०पुं०) विक्रमादित्य के नवरत्नों मे से एक, सूर्य, चन्द्रमा वायु, मेघ, बादल, तांबा, अर्क, वृक्ष।

मिहिरकुल–(सं० पुं०) शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध राजा तोरमाण के पुत्र का नाम

मिहरारू, मिहरी–(हिं०स्त्री०) स्त्री।

मिहठी–(हिं०स्त्री०) मध्य प्रदेश में होने वाली एक प्रकार छोटी अरहर।

मींगी–(हिं० स्त्री०) गूदा, गिरी।

मींजना–(हिं० क्रि०) हाथों से मलना, मसलना।

मींड़–(हिं०स्त्री०) संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस चातुरीसे बजाना या गाना जिसमें दोनों स्वरों के बीच का सबंध स्पष्ट हो जाय और यह न जान पड़े कि गाने वाला एक स्वर से कूदकर दूसरे स्वर पर चला गया है, गमक।

मीड़क–(हि०पुं०) मेढ़क।

मीड़ना–(हि० क्रि०) हाथों से मलना, मसलना।

मीआदी–(हिं०वि०) जिसके लिये कोई समय या अवधि निर्धारित हो।

मिआदी हुंडी–(हिं०स्त्री०) वह हुन्डी जिसका रुपया निर्धारित अवधि पर देना पड़े।

मीच, मीचु–(हिं०स्त्री०) मृत्यु; **मीचना**–(हिं० क्रि०) आंख बन्द करना या मूंदना।

मीचु–(हिं०स्त्री०) मृत्यु।

मौजा–(हिं०स्त्री०) अनुकूलता, स्वभाव, सम्मति।

मीटना–(हिं०क्रि०) देखो मीचना।

मीठा–(हिं० वि०) जो स्वाद में मधुर और प्रिय हो, मध्यम श्रेणी का, हलका, धीमा, सुस्त, बहुत सीधा, किसी का अनिष्ट न करने वाला, प्रिय, रुचिकर, स्वादिष्ट, नपुंसक, (पुं०) मीठा खाद्य, मिठाई, गुड़, हलुआ, मीठा नीबू, मुसलमानों के

के पहरने का एक प्रकार का कपड़ा;

मीठाआलु–शक्करकन्द; **मीठाकद्दू**–कुम्हड़ा; **मीठा चावल**–मीठा भात; **मीठा जीरा**–सौंफ़; **मीठा ठग**–झूठा और कपटी मित्र; **मीठा तेल**–तिल या पोस्ते के दाने का तेल; **मीठापानी**–शक्कर तथा नीबू का सत्त मिला हुआ पानी; **मीठा प्रमेह**–मधुमेह; **मीठी छुरी**–कपटी मित्र; **मीठी मार**–भीतरी मार जिसमें बाहर से चोट के चिह्न न देख पड़े। **मीठी लकड़ी**–मुलेठी।

मीड़म–(सं०नपुं०) विवाद, झगड़ा।

मीत–(हिं०पुं०) मित्र।

मीन–(सं०पुं०) मत्स्य, मछली, मेषादि राशियों में बारहवीं या अन्तिम राशि; **मीनकाक्ष**–सफेद कनेर; **मीनकेतन**–कन्दर्प, कामदेव, **मीनखाती**–बगुला, मछली खानेवाला।

मीमर–(सं०पुं०) सिरोहा नामक वृक्ष।

मीनरंक–(सं०पुं०) जल कौवा, मुरगाबी

मीना–(सं०स्त्री०) ऊषा की कन्या का नाम जिसका विवाह कश्यप से हुआ था, (पुं०) राजपूताना की एक वीर जाति का नाम।

मीनाक्ष–(सं० वि०) मछली के समान सुन्दर आंखों वाली, (स्त्री०) कुबेर की एक कन्या का नाम, ब्राह्मी बूटी।

मीनाण्ड–(सं०नपुं०) मछली का अंडा।

मीनालय–(सं०पुं०) सागर समुद्र।

मीमांसक–(सं०पु०) मीमाँसा शास्त्र को जानने वाला, किसी प्रश्न की मीमांसा या निर्णय करने वाला मनुष्य। **मीमांसा**–(सं०स्त्री०) विचार पूर्वक तत्व निर्णय, पट् दर्शन में से एक जिसके दो विभाग हैं, जैमिनि ऋषिकृत पूर्व मीमांसा तथा उत्तर त्रिमांसा जो वेदान्त के नाम से प्रसिद्ध है। **मीमांसित**–(सं० वि०) विचार पूर्वक स्थिर किया हुआ। **मीमांस्य**–(सं०वि०) जिसकी मीमांसा करना हो।

मीराबाई–(हिं० स्त्री०) मेवाड़ के एक अधिपति महाराणा कुम्भ की स्त्री का नाम जो विष्णु की बड़ी उपासिका थी।

मीलन–(सं० नपुं०) आँख बंद करना, संकुचित करना, सिकोड़ना।

मीलित–(सं०वि०) बन्द किया हुआ, सिकोड़ा हुआ, (पुं०) वह अलंकार जिसमें एक न होने के कारण दो वस्तुओं में भेद नहीं जान पड़ता, वे एक में एक मिली जान पड़ती हैं।

मीवर–(सं०वि०) पूज्य, माननीय।

मुंगना–(हिं० पुं०) सहिजन का वृक्ष।

मुंगरा–(हिं०पुं०) काठ का बड़ा हथौड़ा, नमकीन बुंदिया।

मुंगिया–(हिं० पुं०) एक प्रकार का धारीदार या चारखाने का कपड़ा।

मुंगौरी–(हिं०पुं०) मूंग की बनी हुई बरी।

मुंचना–(हिं०क्रि०) मुक्त करना।

मुंज–(हिं०पुं०) देखो मूंज।

मुंड–(हिं०पु०) देखो मुण्ड; सिर।

मुंडकरी–(हिं०स्त्री०) घुटने में सिर धर कर बैठना।

मुंडकिरा–(हिं० पु० एक प्रकार के फकीर जो अपना सिर, आँख, कान नाक, आदि किसी नुकीले हथियार से घायल करके भीख मागते है और जब कोई जल्दी से भीख नहीं देता तो वे अड़ जाते हैं और अपने अंगों को और भी घायल करते हैं।

मुंडचिरायन–(हिं० पु०) लेन देन में बड़ी हुज्जत और हठ।

मुंडन–(हिं०सं०) देखो मुण्डन, सिर के बालों का मुड़ा जाना। **मुंडना**–(हिं० क्रि० सिर के बालों का मूड़ा जाना, लुटना, ठगा जाना, धोखे में आना, हानि उठाना।

मुंडमाला, मुण्डमालिनी–(हिं०) देखो मुण्डमाला, मुण्डमालिनी।

मुंडा–(हिं०पुं०) वह जिनके सरपर बाल न हों या मुड़े हुये हों, वह जो सिरके बाल मुड़वा कर किसी साधु या योगी का चेला बन गया हो, वह पशु जिसको सींघ न हो, बिना मात्रा की एक प्रकार की लिपि जिसका महाजन लोग व्यवहार करते हैं, मुड़िया अक्षर, बिना नोक का जूता, वह जिसके ऊपरी या इधर उधर फ़ैलने वाले अंग न हों, छोटानागपुर में रहने वाली एक असभ्य जाति का नाम।

मुंड़ाई–(हिं०स्त्री०) मूंडने या मुड़ाने की क्रिया या भाव, मुंडने या मुंडाने का शुल्क। **मुंड़ासा**–(हिं०पुं०) सिर पर बाँधने का मुरेठा; **मुड़ासाबन्द**–पगड़ी बाँधने वाला।

मुंडिया–(हिं०वि०) वह जो सिर मुड़ाकर किसी साधु सन्यासी का चेला बन गया हो, सन्यासी।

मुंडी–(हिं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका सिर मूड़ा गया हो, विधवा, रांड़, बिना नोक की एक प्रकार की जूती,

मुंडेर–(हिं०स्त्री०) देखो मुंडेरा, खेत की सीमा पर बँधा हुआ मेंड़।

मुंडेरा–(हिं० पुं०) सबसे ऊपर की छत पर चारों ओर बना हुआ भीत का उभड़ा हुआ भाग।

मुंडेरी–(हिं०स्त्री०) देखो मुंडेर।

मुंडो–(हिं०स्त्री०) सिर मुंडी हुई स्त्री, विधवा, रांड।

मुंदना–(हिं०क्रि०) खुली हुई वस्तु का ढप जाना या बन्द होना, छेद बिल आदि का बन्द होना, लुप्त होना, छिपना।

मुंदरा–(हिं०पु०) योगियों का कान में पहरने का एक प्रकार कुंडल, कान में पहरने का एक प्रकार का आभूषण

मुंदरी–(हिं०स्त्री०) अंगुलियों में पहरने का सादा (बिना नग का) छल्ला, अंगठी।

मुंह–(हिं०पुं० किसी प्राणी का वह अंग जिससे वह भोजन करता या बोलता है, मुख, मनुष्य या अन्य प्राणी के सिर का अगला भाग जिसमें आँख, नाक, कान, आदि अंग होते है, चेहरा, सामर्थ्य, योग्यता, साहस, छिद्र, किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का छिद्र, ऊपरी भाग या किनारा; **अपना सा मुंह लेकर रह जाना**–बहुत लजा जाना; **अपना मुंह काला करना**–अपना अपमान कर लेना, व्यभिचार करना; **किसी का मुंह काला करना**–किसी की उपेक्षा करना; **मुंह की खाना**–अपमानित होना; **मुंह के बल गिरना**–ठोकर खाकर इस प्रकार गिरना कि मुँह में चोट लगजावे; **मुंह छिपाना**–लज्जावश सिर नीचा कर लेना; **मुंह ताकना**–किसी के मुख की ओर देखना, स्तब्ध होकर मुंह निहारना, चुपचाप बैठ रहना; **मुंह दिखाना**–सामने आ जाना; **मुंह देख कर बात कहना**–प्रसंसा करते हुए कुछ कहना; **किसीका मुंह देखना**–सामने आ जाना; **मुंह पर**–प्रत्यक्ष में; **मुंह पर बरसना**–आकृति से मन का भाव प्रकट होना; **मुंह फुलाना**–असन्तोष दिखलाना; **मुंह फूकना**–मुंह झुलसाना; **किसी के मुंह लगना**–किसी से उद्दण्डता दिखलाते हुए वादाविवाद करना; **मुंह लगाना**–सिर चढ़ाना; **मुंह सूखना**–डर या लज्जा से मुख की आकृति बिगड़ जाना, चेहरा उतर जाना; **मुंह देखे का**–दिखौवा, बनावटी; **मुंह रखना**–संकोच करना; **मुंह तक आना**–किसी पात्र का ऊपर तक भर जाना

मुँहअखरी–(हिं०वि०) मौखिक।

मुंह काला–(हिं०पु०) अप्रतिष्ठा, एक प्रकार की गाली। **मुँह चटौवल**–(हिं०स्त्री०) चुम्बन, बकवाद।

मुंह चोर–(हिं०पुं०) वह जो लोगों के सामने जाने में संकोच करता हो।

मुँह छुआई–(हिं० स्त्री०) केवल ऊपरी मन से कुछ कहना। **मुँह छुट**–(हिं०वि०) जिसका मुंह तुच्छ बातें कहने में या गाली देने में खुला रहे, मुँहफट।

मुँह जोर–(हिं० वि०) अधिक बोलने वाला, बड़बड़िया, उद्दण्ड। **मुँह जोरी**–(हिं० स्त्री०) उद्दण्डता तेजी। **मुँह दिखलाई, मुँह देखाई**–(हिं० स्त्री०) नई वधू का मुख देखने की रीत, मुंह देखनी, वह धन, आभूषण आदि जो मुंह देखने पर वधू को दिया जाता है। **मुँह देखा**–(हिं०वि०) जो हार्दिक या आन्तरिक न हो, जो किसी को प्रसन्न करने के लिये ही, सर्वदा आज्ञा की प्रतीक्षा में रहने वाला।

मुँहनाल–(हिं० स्त्री०) धातु की बनी हुई वह छोटी नली जो हुक्के की सटक के अगले भाग में लगी रहती है जिसको मुंह में रख कर धुवाँ खींचा जाता है, तलवार की म्यान के सिरे पर लगी हुई धातु की सामी।

मुँहपड़ा–(हिं०वि०) प्रसिद्ध, आख्यात।

मुँहफट–(हिं० वि०) जिसकी वाणी संयत न हो। **मुँहबन्द**–(हिं० वि०), जिसका मुँह बन्द हो, खुला न हो।

मुँहबंधा–(हिं० पुं०) जैन साधु जो मुख पर कपड़ा बाँधे रहते हैं। **मुँह बोला**–(हिं०वि०) जो वास्तव में न हो, केवल मुख से कहकर बनाया गया हो

मुँह भराई–(हिं०स्त्री०) मुंह भरने की क्रिया या भाव, वह धन जो किसी का मुँह बन्द करने के लिये उसको कुछ कहने या करने से रोकने के लिये दिया जावे, उत्कोच, घूस। **मुँह माँगा**–(हिं०वि०) मनोनुकूल, अपनी माँग के अनुसार।

मुँहामुँह–(हिं०क्रि०वि०) मुँह तक, भरपूर

मुँहासा–(हिं०पु०) युवावस्था में मुख पर निकने वाले दाने या फुंसियाँ जो बीस पचीस वर्ष तक की अवस्था तक निकलती हैं।

मुकन्द–(सं० पुं०) कुंदरू, प्याज, साठी धान।

मुकट–(हिं०पुं०) देखो मुकुट।

मुकटा–(हिं०पु०) एक प्रकार की रेशमी धोती जो पूजन, भोजन आदि के समय पहरी जाती है।

मुकता–(हिं०पुं०) देखो मुक्ता, मोती, (वि०) यथेष्ट, पर्याप्त, बहुत अधिक।

मुकना–(हिं०पुं०) देखो मकुना; (हिं०क्रि०) मुक्त होना, छुटकारा पाना, समाप्त होना।

मुकरना–(हिं०क्रि०) कोई बात कहकर उससे फिर जाना, नटना, (पुं०) वह जो बात कहकर मुकर जाता हो।

मुकरनी–(हिं० स्त्री०) कहमुकरी नामक कविता। **मुकराना**–(हिं०क्रि०) दूसरे को झूठा बनाना।

मुकरी–(हिं०स्त्री०) चार चरणों की एक कविता-इसके प्रथम तीन चरण ऐसे होते हैं जिसका आशय दो जगह घट सकता है तथा चौथे चरण में किसी पदार्थ का नाम लेकर उससे अस्वीकार किया जाता है।

मुकल–(सं०पु०) अमलतास, गुग्गुल।

मुकियल–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बाँस।

मुकियाना–(हिं०क्रि०) किसी के शरीर में मुक्कियों से बार बार आघात करना, आटा गूधने के बाद उसको कोमल करने के लिये उसको बार बार मुक्कियों से दबाना, घूसे लगाना, मुक्का मारना।

मुकुट–(सं०नपुं०) एक प्रकार का शिर का आभूषण, किरीट, अवतंस; प्राचीन काल के राजा मुकुट धारण करते थे

मुकुठी–(सं०स्त्री०) अंगुली मटकाना।
मुकुन्द–(सं०पुं०) विष्णु, एक प्रकार का रत्न, पारा, सफ़ेद कनेर, पोई का साग।
मुकुर–(सं०पुं०) दर्पण, मौलसिरी का वृक्ष, कुम्हार का डंडा जिससे वह चाक चलता है, बेर का पेड़, एक प्रकार का केला, कोरक, कली।
मुकुरित–(सं०वि०) खिला हुआ।
मुकुल–(सं० पुं०) शरीर, आत्मा, भूमि, पृथ्वी, गुग्गुल, जमाल गोटा, एक प्रकार का छन्द।
मुकुलाग्र–(सं०नपुं०) प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।
मुकुलित–(सं० वि०) जिसमें कलियां आगई हों, कुछ खिली हुई (कली), आधा खुला और आधा बन्द,
मुकुली–(सं०पुं०) वह जिसमें कलियां आगई हों।
मुकुष्ठ–(सं०पुं०) बनमूग, मोट।
मुक्का–(हिं०पुं०) बंधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय। मुक्की–(हिं०स्त्री०) मुक्का, घूंसा, मुक्कों की मार, आंटा, गूंधने के बाद उसको मृदु करने के लिये मुट्ठी से बार बार दबाना, किसी के शरीर पर मुट्ठी बाँध कर धीरे धीरे आघात पहुंचाना जिससे शरीर की पीड़ा दूर हो। मुक्केबाजी–(हिं०स्त्री०) मुक्कों की लड़ाई।
मुक्खी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का कबूतर।
मुक्त–(सं०वि०) जिसको मोक्ष प्राप्त हो गया हो, बंधन से छूटा हुआ, जो दबाव से अलग हुआ हो, फेंका हुआ। मुक्तक–(सं०नपुं०) प्राचीन काल का एक प्रकार का फेंक कर मारने का, अस्त्र फुटकर कविता।
मुक्तकुञ्चुक–(सं० पुं०) जिस सर्प ने हाल में केंचुली छोड़ी हो। मुक्तकण्ठ–(सं०वि०) चिल्ला कर बोलने वाला, बेधड़क बोलने वाला।
मुक्तकेश–(सं० वि०) जिसका जूड़ा खुला हो। मुक्तकेशी–(सं०स्त्री०) काली देवी का एक नाम। मुक्तचक्षु–(सं०पुं०) सिंह, (वि०) जिसकी आखें खुली हों। मुक्तचेता–(सं०पुं०) जिसमें मोक्ष पाने की बुद्धि आगई हो।
मुक्तता–(सं० स्त्री०) मुक्त होने का भाव, मुक्तत्व, छुटकारा। मुक्तनिद्र–(सं० वि०) जागृत, जगा हुआ।
मुक्तमातृ–(सं०स्त्री०) शुक्ति, सीप।
मुक्तरस–(सं०वि०) जिसका रस बह गया हो। मुक्तरोष–(सं० वि०) जिसको क्रोध न हो। मुक्तलज्ज–(सं०वि०) निर्लज्ज, मुक्तवसन–(सं० वि०) जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, नग्न, नंगा। मुक्तवास–(सं०पुं०) शुक्ति, सीप। मुक्तवेणी–(सं०स्त्री०) द्रौपदी का एक नाम;
मुक्तव्यापार–(सं०वि०) जिसने कार-बार छोड़ दिया हो, संसार त्यागी।
मुक्तसंशय–(सं०वि०) जिसका सन्देह दूर हो गया हो। मुक्तसार–(सं०पुं०) केले का पेड़। मुक्तहस्त–(सं०वि०) वह जो बड़ा दानी हो।
मुक्ता–(सं०स्त्री०) मौक्तिक, मोती;
मुक्ताकलाप–मोती की माला,
मुक्तागार–मोती की सीप।
मुक्तात्मा–(सं०पुं०) मुक्त पुरुष जो माया के बंधनों से छूट कर मुक्त हुआ हो। मुक्तापत–(हिं०पुं०) एक प्रकार की झाड़ी जिसके डंठलों से चटाई बनती है। मुक्तापुष्प–(सं०पुं०) कुन्द का पौधा या फूल। मुक्ताफल–(सं० नपुं०) मोती, कपूर, हरफ़ा रेवड़ी, एक प्रकार का छोटा लिसोड़ा। मुक्तमोदक–(सं० पुं०) मोतीचूर का लड्डू। मुक्ताम्बर–(सं०वि०) नग्न, नंगा। मुक्तासन–(सं०नपुं०) योग प्रक्रिया का एक आसन, सिद्धासन।
मुक्ति–(सं०स्त्री०) मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण।
मुक्तिका–(सं०स्त्री०) एक उपनिषद् जिसमें मुक्ति के विषय में मीमांसा की गई है।
मुक्तिक्षेत्र–(सं०नपुं०) मुक्तिप्रद स्थान, काशी।
मुख–(सं०नपुं०) मुंह, आनन, घर का द्वार, नाटक में एक प्रकार की सन्धि, शब्द, नाटक, वेद, पक्षी की चोंच, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग, नाटक का पहला शब्द, आरम्भ, जीरा, किसी से पहिले आने की की वस्तु, (वि०) मुख्य, प्रधान।
मुखक्षर–(सं० पुं०) दाँत। मुखचन्द्र–(सं०पुं०) चन्द्रमा के समान मुख की शोभा।
मुखचपल–(सं०वि०) जो बढ़ बढ़ कर बोलता हो। मुखचपलता–(सं०स्त्री०) बहुत अधिक बढ़ बढ़ कर बोलना।
मुखचपला–(सं०स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद। मुखचपेटिका–(सं०स्त्री०) गाल पर तमाचा मारना।
मुखज–(सं०पुं०) ब्राह्मण, (वि०) मुख से उत्पन्न।
मुखड़ा–(हिं०पुं०) मुख, चेहरा; इस शब्द का प्रयोग सुन्दर मुख के लिये होता है।
मुखताल–(हिं०पुं०) किसी गीत का पहला पद, टेक।
मुखदूषण–(सं०पुं०) पलाण्डु, प्याज।
मुखदूषिका–(सं०स्त्री०) मुहासा रोग।
मुखधावन–(सं०नपुं०) दतवन करना।
मुखपट–(सं० पुं०) मुख ढापने का कपड़ा, नकाब, घूंघट। मुखपाक–(सं०पुं०) मनुष्यों के मुख का एक रोग। मुखपान–(हिं०पुं०) पान के आकार का किसी धातु का कटा हुआ टुकड़ा। मुखपूरण–(सं०नपुं०) मुंह में कुल्ली करने के लिये लिया हुआ पानी। मुखप्रक्षालन–(सं०नपुं०) मुखधावन, मुंह धोना। मुखप्रिय–(सं०पुं०) नारंगी, ककड़ी। मुखबन्ध–(सं०पुं०) अनुक्रमणिका, प्रस्तावना।
मुखभूषण–(सं०नपुं०) ताम्बूल, पान।
मुखमण्डल–(सं०नपुं०) चेहरा। मुखर–(सं०वि०) अप्रियवादी, कड़ुवा बोलने वाला, बकवादी, प्रधान, (पुं०) कौवा;
मुखवल्लभ–(सं०पुं०) अनार का पेड़, (वि०) जो खाने में अच्छा लगे।
मुखवाद्य–(सं०नपुं०) मुंह से फूंक कर बजाने का बाजा। मुखवासिनी–(सं०स्त्री०) सरस्वती देवी मुखविपुला–(सं०स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद।
मुखशफ–(सं०पुं०) दुर्मुख, वह जो कटु वचन बोलता हो। मुखशुद्धि–(सं०स्त्री०) मंजन या दतुअन आदि की सहायता से मुंह स्वच्छ करना, भोजन के उपरान्त पान सुपारी आदि खाकर मुख को शुद्ध करना।
मुखशोष–(सं०पुं०) प्यास या गरमी के कारण मुंह सूखना। मुखसम्भव–(सं० पुं०) ब्राह्मण, पुष्करमूल।
मुखस्थ–(सं०वि०) कण्ठस्थ, मुंह में का।
मुखस्राव–(सं०पुं०) थूक, लार।
मुखाकार–(सं०पुं०) मुख के सदृश।
मुखाग्र–(सं०नपुं०) किसी पदार्थ का अगला भाग, ओंठ, (वि०) कण्ठस्थ;
मुखापेक्षक–(सं०वि०) दूसरे का मुंह ताकने वाला। मुखापेक्षा–(सं०स्त्री०) दूसरे के आश्रित रहना, दूसरे का मुंह ताकना। मुखापेक्षी–(सं०पुं०) वह जो दूसरे की कृपादृष्टि के भरोसे रहता हो। मुखामृत–(सं० नपुं०) मुख की शोभा, छोटे बच्चों के मुंह की लार।
मुखास्त्र–(सं०पुं०) कर्कट, केकड़ा।
मुखिया–(हिं०पुं०) नेता, सरदार, किसी काम को सबसे पहले करने वाला, अग्रसर, अगुआ, वल्लभ सम्प्रदाय के मन्दिरों का प्रधान कर्मचारी जो मूर्ति की पूजा करता और नैवेद्य लगाता है।
मुख्य–(सं०वि०) प्रधान, सबसे बड़ा, श्रेष्ठ। मुख्यतः–(सं०अव्य०) श्रेष्ठ रूप से, अच्छी तरह से। मुख्यता–(सं० स्त्री०) मुख्य होने का भाव, श्रेष्ठता।
मुगदर–(हिं० पुं०) एक प्रकार की गावदुम लकड़ी की मुगरी जो व्यायाम में उपयोग की जाती है, जोड़ी।
मुंगरेला–(हिं०पुं०) कलौंजी या मँगरैला नाम का दाना।
मुगल–मध्य एशिया के तातार नाम के देश का निवासी, मुसलमानों को चार प्रधान वर्गों में से एक वर्ग।
मुगवन–(हिं०पुं०) बनमूंग, मोठ।
मुग्घम–हिं० वि०) खोलकर न कही हुई, संकेत में कही हुई।
मुग्ध–(सं० वि०) मोह या भ्रम में पड़ा हुआ, सुन्दर, मनोहर, मूढ़, आसक्त, मोहित, नवीन, नया। मुग्धता–(सं० स्त्री०) मुग्धत्व, मूढ़ता, सुन्दरता, मोहित होने का भाव। मुग्धबुद्धि–(सं० वि०) भ्रान्तबुद्धि। मुग्धभाव–(सं० पुं०) बुद्धिहीनता, सरलता।
मुग्धा–(सं० स्त्री०) साहित्य के अनुसार वह नायिका जो युवावस्था को प्राप्त हुई हो परन्तु उसमें काम की चेष्टा न हो।
मुचंगड़–हिं० वि०) मोटा और भद्दा।
मुचक–(सं० पुं०) लाक्षा, लाह।
मुचकुन्द–(सं० पुं०) इस नाम का एक फूल का वृक्ष।
मुचिर–(सं० वि०) उदार, दाता।
मुचुक–(सं० पुं०) मैनफल।
मुचुकुन्द–(सं० पुं०) देखो मुचकुन्द।
मुचुटी–(सं० स्त्री०) उँगली मटकाना।
मुछंदर–(हिं० पुं०) जिसकी दाढ़ी मूँछ बड़ी बड़ी हों, भद्दा, मूर्ख मनुष्य, चूहा। मुछियल–(हिं०पुं०) बड़ी बड़ी मूंछ वाला।
मुजराई–(हिं० स्त्री०) काटने या घटाने की क्रिया, बट्टा, वह जो धनी को अभिवादन करता हो।
मुझ–(हिं० सर्व०) "मैं" का वह रूप जो उसको कर्ता और सम्बन्ध कारक को छोड़कर अन्य कारकों में विभक्ति लगाने से पहले प्राप्त होता है यथा, मुझको, मुझसे, मुझपर। मुझे–(हिं० सर्व०) एक पुरुष वाचक सर्वनाम, वह उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है जो पुल्लिंग और स्त्री लिंग दोनों में व्यवहार किया जाता है।
मुञ्चन–(सं०नपुं०) मोचन, परित्याग।
मुञ्ज–(सं० पुं०) मूज नामक घास;
मुञ्जकेश–शिव, महादेव, विष्णु;
मुञ्जमणि–पुखराज।
मुञ्जर–(सं०नपुं०) मृणाल, कमलकीजड़।
मुटकना–(हिं० वि०) जो आकार में छोटा परन्तु सुन्दर हो।
मुटका–(हिं०पुं०) एक प्रकार की रेशमी धोती; देखो मुकटा।
मुटमुरी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका धान।
मुटाई–(हिं० स्त्री०) स्थूलता, मोटापन, पुष्टि, अभिमान, घमंड। मुटाना–(हिं० क्रि०) मोटा हो जाना, अभिमानी होना। मुटासा–(हिं० वि०) वह जो कुछ धन कमा लेने से असावधान और घमंडी हो गया हो।
मुटिया–(हिं० पुं०) वह श्रमी जो बोझ ढोता हो।
मुट्ठा–(हिं० पुं०) चंगुल भर वस्तु, घास फूस तृण आदि का उतना पूला जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके, यन्त्र आदि की मूंठ, पुलिन्दा बँधा हुआ, समूह जो मुट्ठी में आ सके, मूठ, धुनियें का तांत पर चोट लगाने का बेलन।
मुट्ठी–(हिं० स्त्री०) बंधी हुई हथली

हाथ की वह मुद्रा जो अंगुलियों को मोड़कर हथेली को दबा लेने से बनती है, उतनी वस्तु जितनी इस मुद्रा में अट सके, बँधी हथेली के बराबर का विस्तार अंगों का मर्दन; मुट्ठी में—अधिकार में; मुट्ठी गरम करना—घूस देना।
मुठभेड़—(हिं० स्त्री०) लड़ाई, टक्कर, सामना, भेंट।
मुठिका—(हिं०स्त्री०)मुट्ठी घूंसा, मुक्का।
मुठिया—(हिं० स्त्री०) किसी अस्त्र की बेंट, धुनियों का वह डंडा जिससे वे ताँत पर चोट लगाते है, किसी वस्तु का वह भाग जो हाथ में पकड़ा जाता है।
मुठी—(हिं० स्त्री०) देखो मुट्ठी।
मुड़क—(हिं० स्त्री०) देखो मुरक। मुड़कना—(हिं० क्रि०) देखो मुरकना।
मुड़ना—(हिं० क्रि०) दबाव या आघात से झुक जाना, टेढ़ा होकर भिन्न दिशा में प्रवृत्त होना, सीधा जाकर किसी ओर झुकना, किसी धारदार किनारे या नोंक का एक ओर झुक जाना, घूमकर पीछे की ओर मुड़ पड़ना, लौटना, पलटना, चलते चलते किसी ओर फिर जाना।
मुड़ला—(हिं० वि०) मुंडा, विना बाल का। मुड़वाना—(हिं० क्रि०) किसी को मुड़ने के काम में प्रवृत्त करना, घूमने या मुड़ने में प्रवृत्त करना।
मुड़वारी—(हिं० स्त्री०) अटारी की भीत का शिखर, मुँडेरा, जिस ओर किसी पदार्थ का सिरा या ऊपरी भाग हो,-चारपाई का सिरहाना।
मुड़हर—(हिं० पुं०) स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है। मुड़ाना—(हिं० क्रि०) मुंडन कराना, मुंड़ाना। मुड़िया—(हिं०पुं०) वह जिसका मस्तक मूंड़ा गया हो।
मुड़ेरा—(हिं० पुं०) देखो मुड़ेरा।
मुण्ड—(सं० पुं०) शुम्भ का सेनापति एक दैत्य जिसको भगवती दुर्गा ने मारा था, वृक्ष का ठूंठ, गरदन के ऊपर का अंग जिसमें आँख, नाक मुँह आदि रहते हैं, मस्तक, सिर, कटा हुआ सिर, एक उपनिषद् का नाम, (वि०) मुड़ा हुआ, अधम नीच।
मुण्डन—(स० नपुं०) सिर को उस्तरे से मूंड़ने की क्रिया, द्विजातियों के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें बालक का सिर मूड़ा जाता है।
मुण्डफल—(सं०पुं०)नारियल का फल।
मुण्डमण्डली—(सं० पुं०) अशिक्षित सेना। मुण्डमाला—(सं० स्त्री०) कटे हुए सिरों की माला जो शिव या काली के गले में सुशोभित है।
मुण्डमालिनी—(सं०स्त्री०) दुर्गा, काली।
मुण्डमाली—(सं०पुं०) शिव, महादेव।
मुण्डशालि—(सं० पुं०) बोरो धान।
मुण्डा—(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके सिर पर के बाल मूड़ दिये गये हों।
मुण्डासन—(सं० नपुं०) योग का एक आसन।
मुण्डित—(सं० वि०) मुड़ा हुआ।
मुण्डिनी—(सं० स्त्री०) कस्तूरी मृग।
मुण्डी—(सं० स्त्री०) गोरख मुण्डी।
मुतक्का—(हिं०पुं०) वह पटिया या नीची भीत जो छज्जे या चौक के ऊपर पाटन के किनारे पर खड़ी की जाती है, खम्भा, लाट।
मुतसिरी—(हिं० स्त्री०) गले मे पहरने की मोती की कंठी।
मुताह—(हिं० पुं०) मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी रूप का विवाह।
मुतिलाडू—(हिं०पुं०) मोतीचूर का लड्डू।
मुतेहरा—(हिं० पुं०) कंकड़ की आकृति का एक प्रकार का आभूषण।
मुद—(सं० स्त्री०) हर्ष, आनन्द।
मुदकारी—(हिं० वि०) सुख कारक।
मुदगर—(हिं० पुं०) देखो मुगदर।
मुदरा—(हिं० पुं०) एक प्रकार का मादक पदार्थ।
मुदित—(सं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न।
मुदिता—(सं०स्त्री०) हर्ष,आनन्द, साहित्य में वह परकीया नायिका जो पर पुरुष की प्रीति सम्बन्धी कामना की आकस्मिक प्राप्ति से प्रसन्न होती है।
मुदिर—(स० पु०) मेघ, बादल, कामुक, जिसकी कामवासना बहुतहो, मेढक।
मुद्ग—(स०पुं०) जलवायस, मूंग नामक अन्न। मुद्गपर्णी—(सं०स्त्री०) बनमूंग, मोठ।
मुद्गर—(सं० नपुं०) काठ का बना हुआ एक प्रकार का गावदुम दण्ड जिसकी पेंदी भारी पोती है इसको हाथ में लेकर हिलाते हुए मल्ल कई प्रकार का व्यायाम करते है, एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।
मुद्गल—(स० नपुं०) रोहित नाम की घास, गोत्र कारक एक ऋषि का नाम।
मुद्गवटक—(सं० पुं०) मुंग का बड़ा।
मुद्ध—(हिं० वि०) देखो मुग्ध।
मुद्धी—(हि० स्त्री०) सरकने वाली गाँठ।
मुद्रक—(सं० पुं०) छापने वाला।
मुद्रण—(स० पुं०) किसी वस्तु पर अक्षरआदिछापना,छपाईकाकाम,ठीक तरह से काम चलाने के नियम आदि बनाना, ठप्पे आदि की सहायता से छापकर मुद्रा तैयार करना।
मुद्रणा—(सं०स्त्री०) अंगूठी। मुद्रणालय—(सं०पुं०) मुद्रण करने का स्थान, छापाखाना।
मुद्रा—(सं०स्त्री०) किसी नाम की छाप, मुहर, अंगूठी, सोने चाँदी का सिक्का, चिह्न, पाँच प्रकार की लिपियों में से एक, टाइप से छपे हुये अक्षर, तान्त्रिकों के अनुसार अंग की विशिष्ट स्थिति,कान का एक आभूषण जिसको गोरखपंथी साधु पहनते हैं, अगस्त्य ऋषि की पत्नी का नाम, वह अलंकार जिसमें प्रकृति अर्थ के सिवाय पद्य में और भी साभिप्राय अर्थ निकलते हों, विष्णु के आयुधों के चित्र जिसको वैष्णव लोग अपने शरीर पर अंकित करते है अथवा गरम लोहे से दगवा लेते हैं, किसी देवता को प्रसन्न करने के लिये हाथ, पाँव, अंगुली आदि की विशिष्ट स्थिति, मुख की आकृति, खड़े होने बैठने या लेटने का कोई ढंग, हठयोग मे विशेष अंग विन्यास जो पाँच प्रकार का होता है यथा-खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी।
मुद्राकर—(सं०पुं०) राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके अधिकार में राजा की मुद्रा रहती है, वह जो किसी प्रकार की मुद्रा तैयार करता हो। मुद्राकान्हाड़ा—(सं०पुं०) एक प्रकार का राग। मुद्राक्षर—(सं०नपुं०) सीसे के ढले हुये अक्षर जो छापने के काम में आते हैं,टाइप। मुद्राङ्कण—(सं०नपुं०) मुद्रा की सहायता से छापने का काम, छपाई। मुद्राङ्कित—(सं०वि०) मोहर किया हुआ, जिसके शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न गरम लोहे से दाग कर बनाये गये हों। मुद्राटोरी—(सं०स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी। मुद्रातत्व, मुद्राविद्या—(सं०) वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश की पुरानी मुद्रा आदि की सहायता से उपदेश की ऐतिहासिक बातों का अन्वेषण किया जाता है।
मुद्रामार्ग—(सं०पुं०) ब्रह्मरन्ध्र, मस्तक के भीतर का वह स्थान जहाँ प्राण वायु चढ़ती है। मुद्रायन्त्र—(सं०नपुं०) वह यन्त्र जिसके द्वारा कागज आदि पर लकड़ी या सीसे के ढले हुए टाइप से छापा जाता है, छापे आदि की कल। मुद्राविज्ञान, मुद्राशास्त्र—(सं०) देखो मुद्रातत्व। मुद्रिक, मुद्रिका—(सं०स्त्री०) सोने चाँदी की मुद्रा, रुपया, अंगूठी, कुश की बनो हुई वह अंगूठी जो पितृकार्य में अनामिका में पहरी जाती है,पवित्री।
मुद्रित—(सं०वि०) मुद्रण किया हुआ, छपा हुआ, मुंदा हुआ, छोड़ा हुआ।
मुधा—(सं०अव्य०) व्यर्थ, वृथा, निष्फल, निरर्थक, (वि०) निष्प्रयोजन, मिथ्या।
मुनमुना—(हिं०पुं०) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान।
मुनरा—(हिं०पुं०) कान में पहरने का एक प्रकार का गहना।
मुनारा—(हि०पुं०) देखो मीनार।
मुनि—(सं०पु०) मौनव्रती, महात्मा, व्रती, तपस्वी, त्यागी; भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने मुनि की परिभाषा अर्जुन से इस प्रकार कहा है—जो दुःख में नहीं घबड़ाते,सुख में जिनको स्पृहा नहीं रहती, तथा जिनको अनुराग, भय अथवा क्रोध का लेशमात्र नहीं रहता; दमनक, दौना, सात की संख्या, कुरु के एक पुत्र का नाम। मुनिधान्य—(सं०नपुं०) तिन्नी का चावल। मुनिपुङ्गव—(सं० पु० मुनिश्रेष्ठ। मुनिपुष्प—(सं०नपुं०) विजयसार का फूल। मुनिप्रिया—(सं०स्त्री०) एक प्रकार का सुगन्धित धान। मुनिभक्त, मुनिभोजन—(सं० नपुं०) तिन्नी का चावल।
मुनियां—(हिं०स्त्री०) लाल नामक पक्षी की मादा, (पुं०) एक प्रकार का अगहनियां धान।
मुनीन्द्र—(सं०पुं०) ऋषिश्रेष्ठ, बुद्धदेव।
मुनीम, मुनीब—(अ०पु०) सहायक, वह जो साहूकारों का हिसाब किताब लिखता हो।
मुनीश—(सं०पु०) मुनिश्रेष्ठ, वाल्मीकि, बुद्धदेव। मुनीश्वर—(सं०पुं०) मुनियों में श्रेष्ठ, विष्णु बुद्धदेव।
मुन्ना—(हिं०पुं०) छोटे बच्चे के लिये प्रेमसूचक शब्द, प्यारा, तारकशी के कार्यालय में वे दोनों खूंटे जिनमें जन्ता लगा रहता है।
मुन्नू—(हिं०पुं०) देखो मुन्ना।
मुमुक्षा—(सं०स्त्री०)मुक्ति की अभिलाषा।
मुमुक्षु—(सं०पुं०) वह जो मुक्ति की कामना करता हो। मुमुक्षता—(सं० स्त्री०) मुमुक्ष का भाव या धर्म।
मुमूर्षा—(सं०स्त्री०) मरने की अभिलाषा
मुमूर्षु—(सं०वि०) जो मर रहा हो, मरणासन्न।
मुरंडा—(हिं०पुं०) वह लड्डू जो भूने हुए गरम गरम गेहूँ में गुड़ मिला कर बनाया जाता है, गुड़धानी, (वि०) शुष्क, सूखा हुआ।
मुर—(सं०पु०) एक दैत्य जिसको विष्णु ने मारा था, (नपुं०) वेष्ठन, बेठन, (हिं०अव्य०) दुबारा, फिर से।
मुरई—(हिं०स्त्री०) देखो मूली।
मरक—(हिं०स्त्री०) मुड़नेकी क्रिया या भाव। मुरकना—(हिं०क्रि०) लचक कर एक ओर मुड़ना या झुकना, फिरना, घूम जाना, हिचकना रुकना, लौटाना, नष्ट होना, किसी अंग का ऐसा मुड़ जाना कि जल्दी से सीधा न हो सके, मोच खाना।
मुरका—(हिं०पुं०) बडे बड़े दाँतों का सुन्दर हाथी। मुरकाना—(हिं०क्रि०) घुमाना, फेरना, लौटाना, शरीर के किसी अंग में मोच आना, नष्ट करना।
मुरकी—(हिं०स्त्री०) कान में पहरने की छोटी बाली।
मुरकुल—(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी लता।
मुरगण्ड—(सं०पुं०) मुहांसा नामक रोग।
मुरखाई—(हिं०स्त्री०) देखो मूर्खता।
मुरंगी—(सं०स्त्री०)लाल फूल का सहिजन।

मुरचंग–(हिं०पुं०) लोहे का बना हुआ एक बाजा जो मुंह से बजाया जाता है
मुरचा–(हिं०पुं०) देखो मोरचा।
मुरछना–(हिं०क्रि०) शिथिल होना, अचेत होना।
मुरछल–(हिं०पुं०) देखो मोरछल।
मुरछा–(हिं० स्त्री०) देखो मूर्छा।
मुरछावंत–(हिं०वि०) देखो मूर्छित।
मुरछित–(हिं०वि०) देखो मूर्छित।
मुरज–(सं०पुं०) मृदङ्ग, पखावज।
मुरझफल–(सं०पुं०) कटहल का पेड़।
मुरझाना–(हिं०क्रि०) फूल पत्ती आदि का कुम्हलाना, उदास होना।
मुरड़–(हिं०पुं०) अभिमान, अहंकार।
मुरतंगा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का ऊंचा वृक्ष।
मुरदर–(सं०पुं०) मुरारि, श्रीकृष्ण।
मुरदासन–(हिं०पुं०) देखो मुरदासंख।
मुरधर–(हिं०पुं०) मारवाड़ देश का प्राचीन नाम।
मुरना–(हिं०क्रि०) देखो मुड़ना।
मुरपरैना–(हिं०पुं०) वह बगुचा जिसमें सौदा रख कर फेरी करने वाला बेंचते हैं।
मुरमर्दन–(सं०पुं०) मुरारि, विष्णु।
मुरमुराना–(हिं०क्रि०) चूरचूर होना।
मुररिपु–(सं०पुं०) मुरारि, विष्णु।
मुरल–(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।
मुरला–(सं०स्त्री०) नर्मदा नदी।
मुरलिका–(सं०स्त्री०) मुरली, बांसुरी।
मुरलिया–(हिं०स्त्री०) मुरली, बांसुरी।
मुरली–(सं०स्त्री०) मुंह से बजाने का बाँसुरी नामक बाजा, बंसी, एक प्रकार का आसामी चावल।
मुरलीधर–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
मुरलीमनोहर–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
मुरलीवाला–(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण।
मुरवा–(हिं०पुं०) पैर का गट्टा, एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारो ओर का घेरा, एक प्रकार की कपास।
मुरवी–(हिं०स्त्री०) मौर्वी, धनुष की डोरी, चिल्ला।
मुरवैरी–(सं०पुं०) मुरारि, श्रीकृष्ण।
मुरसुत–(सं० पुं०) मुर दैत्य का पुत्र वत्सासुर।
मुरहा–(सं०पुं०) विष्णु, कृष्ण, (हिं०पुं०) वह बालक जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो, अनाथ बालक, (वि०) उपद्रवी, नटखट।
मुरहारी–(सं०पुं०) मुर दैत्य को मारने वाले विष्णु।
मुरा–(सं०स्त्री०) एक प्रसिद्ध गन्धद्रव्य जिसको मुरामासी भी कहते हैं; उस नाइन का नाम जिसके गर्भ से महानन्द के पुत्र चन्द्रगुप्त उत्पन्न हुए थे।
मुराड़ा–(हिं०पुं०) जलती हुई लकड़ी, लुआठी।
मुराना–(हिं०क्रि०) मुंह में डाल कर किसी वस्तु को मृदु करना, चुभलाना देखो मोड़ना।
मुरार–(हिं०पुं०) कमल की जड़, भसीड़, देखो मुरारि।
मुरारि–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण; मुरारी–(हिं०पुं०) देखो मुरारि; मुरारे–(सं०पुं०) हे मुरारि-संबोधन का रूप
मुरासा–(हिं०पुं०) कर्णफूल, तरकी।
मुरु–(हिं०पुं०) देखो मुर, (सं०पुं०) एक प्रकार की झाड़ी।
मुरुआ–(हिं०पुं०) एँड़ी के ऊपर का घेरा, पैर का गट्टा।
मुरुकुटिया–(हिं०वि०) देखो मरकट।
मुरुख–(हिं०वि०) देखो मूर्ख।
मुरुछना–(हिं०क्रि०) देखो मुरझना, (स्त्री०) देखो मूर्छना।
मुरुझना–(हिं०क्रि०) देखो मुरझाना।
मुरेठा–(हिं०पुं०) पगड़ी।
मुरेर–(हिं०स्त्री०) देखो मरोड़; मुरेरना–(हिं०क्रि०) देखो मरोड़ना।
मुरेरा–(हिं०पुं०) मुंडेरा, देखो मरोड़।
मुर्मुर–(सं०पुं०) मन्मथ, कामदेव, सूर्य के रथ के घोड़ा।
मुर्रा–(हिं०पुं०) मरोड़फली नाम की औषधि, (स्त्री०) एक प्रकार की भैंस जिसकी सींघ भीतर की ओर मुड़ी रहती है; (पुं०) पेट में मरोड़ होकर बारंबार शौच होना।
मुर्री–(हिं०स्त्री०) डोरी या रस्सी के दो सिरों को आपस में जोड़ने की क्रिया जिसमें गांठ नहीं दी जाती, कपड़े आदि में ऐंठन या मरोड़, कपड़े आदि को मरोड़ कर बनी हुई बत्ती, चिकन या कसीदे की कढ़ाई की एक विधि; मुर्रीदार–ऐंठनदार।
मुर्वा–(सं०पुं०) एक प्रकार का जंगली पौधा।
मुलकना–(हिं०क्रि०) पुलकित होना, आंखों पर हँसी देख पड़ना; मुलकित–(हिं०वि०) मन्दहास युक्त, मुस्कराता हुआ।
मुलतानी–(हिं०वि०) मुलतान सन्बन्धी; (स्त्री०) एक रागिणी का नाम, एक प्रकार की बहुत कोमल चिकनी मिट्टी
मुलमची–(हिं०पुं०) सोने चाँदी के पत्रों पर मुलम्मा करने वाला, गिलट करने वाला।
मुलहठी–(हिं०स्त्री०) देखो मुलेठी।
मुलहा–(हिं०वि०) मूल नक्षत्र में उत्पन्न, उपद्रवी।
मुलायमी–(हिं०स्त्री०) कोमल।
मुलुक–(हिं०पुं०) देखो मुल्क।
मुलेठी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लता जिसकी जड़ औषधि में प्रयोग होती है, जेठीमद।
मुवना–(हिं०क्रि०) मरना।
मुवाना–(हिं०क्रि०) हत्या करना, मार डालना।
मुशल–(सं०पुं०) मूसल।
मुशलिका–(सं०स्त्री०) दालमूली।
मुशली–(सं०पुं०) बलदेव का एक नाम
मुषक–(सं०पुं०) मूसा, चूहा।
मुषल–(सं०पुं०) मूषल, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
मुषली–(सं०स्त्री०) छिपकली, बिसतुइयाँ
मुषा–(सं०स्त्री०) सोना चांदी गलाने की घरिया।
मुषित–(सं०वि०) चुराया हुआ, ठगा हुआ
मुष्क–(सं०पुं०) अण्डकोष, तस्कर, चोर, ढेर, (वि०) मांसल, मांस से भरा हुआ।
मुष्कशून्य–(सं०वि०) बधिया किया हुआ।
मुष्ट–(सं०वि०) नष्ट किया हुआ, मसला हुआ।
मुष्टि–(सं०पुं०) एक प्रकार का प्राचीन परिमाण, मुट्ठी, मुक्का, घूंसा, चोरी, दुर्भिक्ष, कंस की सभा का एक मल्ल, छूरे तलवार आदि की मूठ, मोखा नामक वृक्ष, ऋद्धि नामक औषधि, चार अंगुल की नाप, सोनार; मुष्टिका–(सं०स्त्री०) मुक्का, घूसा, मुट्ठी; मुष्टि कान्तक–(सं०पुं०) मुष्टिक नाम के मल्ल को मारने वाले बलदेव; मुष्टिवेश–(सं०पुं०) धनुष का वह भाग जो मुट्ठी से पकड़ा जाता है; मुष्टि मेय–(सं०वि०) मुट्ठी भर, बहुत थोड़ा सा; मुष्टि युद्ध–(सं०नपुं०) घूंसेबाजी, मुक्कों की लड़ाई; मुष्टि योग–(सं०पुं०) कुछ हठयोग की क्रियायें जिनके करने से रोग हटता है, तथा शरीर में बल आता है, किसी बात का कोई सरल उपाय।
मुसक–(हिं०पुं०) देखो मुश्क।
मुसकनि–(हिं० स्त्री०) मुसकराहट; मुसकनिया–(हिं०स्त्री०) मुसकान।
मुसकराना–(हिं०क्रि०) मृदु हास, बहुत मन्द रूप से हंसना; मुसकराहट–(हिं०स्त्री०) मुसकराने की क्रिया या भाव, थोड़ी हँसी।
मुसका–(हिं०पुं०) रस्सी की बनी हुई जाली जो बैलों के मुंह पर बांधी जाती है।
मुसकान–(हिं०पुं०) देखो मुसकराहट; मुसकाना–(हिं०क्रि०) देखो मुसकराना, मुसकानि–(हिं०स्त्री०) मुसकराहट; मुसकिराना–(हिं०क्रि०) देखो मुसकराना; मुसकिराहट–(हिं०स्त्री०) देखो मुसकराहट; मुसकुराना–(हिं०क्रि०) देखो मुसकराना; मुसकुराहट–(हिं०स्त्री०) देखो मुसकराहट; मुसक्यान–(हिं०पुं०) देखो मुसकान।
मुसखोरी–(हिं०स्त्री०) खेत में चूहों की अधिकता।
मुसटी–(हिं०स्त्री०) चुहिया, एक प्रकार का धान।
मुसदी–(हिं०स्त्री०) मिठाई बनाने का सांचा
मुसना–(हिं०क्रि०) अपहृत, लूटा जाना, धन आदि का चुराया जाना।
मुसमर, मुसमरवा–(हिं०पुं०) चूहा खाने वाला एक पक्षी।
मुसमुद, मुसमुध–(हिं०पुं०) नाश किया हुआ; (पुं०) नाश।
मुसम्मी–(हिं०पुं०) मीठा नीबू।
मुसरा–(हिं० पुं०) पेड़ की वह जड़ जिसमें एक ही मोटा पिण्ड धरती के भीतर दूर तक चला गया हो, उसमें शाखायें न हों।
मुसरिया–कांच की चूड़ी बनाने का सांचा, चूहे का बच्चा, मुसरी।
मुसल–(सं० पुं०) धान कूटने का एक अस्त्र मूसल।
मुसलधार–(हिं०क्रि०वि०) देखो मूसलधार
मुसली–(हिं०पुं०) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ औषधियों में प्रयोग होती है।
मुसल्लम–(अ०वि०) समूचा।
मुसवाना–(हिं०क्रि०) लुटवाना, चोरी कराना।
मुसहर–(हिं०पुं०) एक अन्त्यज जंगली जाति जो जंगल से जड़ी बूटी लाकर बेचते हैं।
मुसक्यान–(हिं०स्त्री०) देखो मुसकराहट।
मुस्किल–(हिं०स्त्री०) देखो मुश्किल।
मुस्की–(हिं०स्त्री०) देखो मुसकराहट।
मुस्टंडा–(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट, गुंडा, दुष्ट;
मुस्त, मुस्तक–(सं०पुं०) मुस्तक, नागर मोथा।
मुस्ता–(सं०स्त्री०) मुस्तक, मोथा।
मुसाद–(सं०पुं०) जंगली सुअर।
मुहब्बी–(हिं०स्त्री०) नारंगी की तरह का एक प्रकार का फल।
मुहरा–(हिं०पुं०) सामने का भाग, मुख की आकृति, लक्ष्य, शतरंज आदि की कोई गोंटी, पन्नी घोटने का शीशा, घोड़े का वह साज जो उसके मुख पर पहराया जाता है; मुहरा लेना सामना करना। मुहरी–(हिं०स्त्री०) देखो मोरी, मोहरी।
मुहलैठी–(हिं०स्त्री०) देखो मुलेठी।
मुहाला–(हिं०पुं०) पीतल की चूड़ी जो शोभा के लिये हाथी के दाँत पर चढ़ाई रहती है।
मुहिं–(हिं०सर्व०) देखो मोंहि।
मुहिम–(हिं०स्त्री०) देखो मुहिम।
मुहुः–(सं०अव्य०) बार बार, फिर फिर।
मुहुक–(सं०नपुं०) मोहक, मोहने वाला।
मुहुपुची–(हिं० पुं०) एक प्रकार का कीड़ा।
मुहुर्भुज–(सं०पुं०) अश्व, घोड़ा।
मुहुर्मुहः–(सं०अव्य०) बारंबार, फिरफिर;
मुहुल्मना–(हिं०स्त्री०) गड़ना, मुह्यमान–बेसुध।
मुहूर्त–(सं०पुं०) दिन रात का तीसवां भाग, कला का दसवां भाग, निर्दिष्ट क्षण या काल, फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ वह काल जिसमें शुभ कार्य आदि किया जाय, ज्योतिर्विद ज्योतिषी: मुहूर्तक–एक मुहूर्त।
मुहूर्ता–(सं० स्त्री०) दक्षकी एक कन्या

का नाम।

मूंग–(हिं०पुं०) एक अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है। **मूंगफली**–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा जिसमें अरहर के समान फूल लगते हैं जो झुककर भूमि में घुस जाते हैं वहीं पर फल लगते हैं, चिनिया बादाम।

मूंगा–(हिं० पुं०) समुद्र में रहने वाले एक प्रकार के कीड़ों की लाल ठठरी जिसकी गुरिया बना कर पहनी जाती हैं, इसकी गणना रत्न में है, विद्रुम, प्रवाल, एक प्रकार का रेशम का कीड़ा, एक प्रकार का गन्ना।

मूंगिया–(हिं०वि०) हरे रंग का, (पुं०) एक प्रकार का हरा रंग, एक प्रकार का धारीदार चारखाना।

मूंछ–(हिं०स्त्री०) ऊपर के ओंठ पर के कड़े बाल जो केवल मनुष्यों को होते हैं; **मूंछ उखाड़ना**–किसी का अभिमान नष्ट करना; **मूंछपर ताव देना**–गर्व से मूंछ के बालों में ऐंठन देना; **मूंछें नीची होना**–अभिमान हट जाना।

मूंछी–(हिं० स्त्री०) वेसन की बनी हुई एक प्रकार की कढ़ी।

मूंज–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का तृण जिसमें पतली लम्बी पत्तियाँ होती हैं टहनियां नहीं होतीं।

मूंड–(हिं०पुं०)कपाल, सिर; **मूंड मारना** कठिन परिश्रम करना; **मूंड मुड़ाना**–साधु वैरागी बन जाना; **मूंड कटा**–दूसरे को हानि पहुँचाने वाला।

मूंड़न–(हिं० पुं०) मुन्डन, चूड़ा करण संस्कार। **मूंड़ना**–(हिं०क्रि०) सिर के बाल बनाना, हजामत करना, धोखा देकर किसी का धन हर लेना, ठगना चेला बनाना, भेंड़ का ऊन कतरना।

मूंड़ी–(हिं०स्त्री०) मस्तक, सिर, किसी पदार्थ का शिर का भाग; **मूंड़ीबंध**–मलयुद्ध की एक युक्ति।

मूँदना–(हिं०क्रि०) ऊपर से कोई वस्तु को छिपाना, छिद्र, द्वार, मुख आदि पर कोई वस्तु फैलाकर या रखकर उसको बन्द करना।

मूक–(सं० वि०) वाक्य रहित, गूंगा, हीन, विवश। **मूकता**–(सं० स्त्री०) मूकत्व, गूंगापन।

मूंका–(हिं०पुं०) किसी भीत के आर-पार बना हुआ छेद, छोटा गोल झरोखा, मोखा, बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार, घूंसा।

मूखना–(हिं०क्रि०)देखो मूसना। **मूचना**–(हिं०क्रि०)देखो मोचना।

मूंठ–(हिं०स्त्री०) मुष्टि, मुट्ठी, उतनी वस्तु जितना मुट्ठी में आ सके, किसी, हथीयार की मूठ, मंत्र तंत्र का प्रयोग, जादू टोना, कौड़ी से खेलने का एक प्रकार का जूआ; **मूठ मारना**–जादू टोना करना; **मूठ लगना**–जादू का प्रभाव होना। **मूठना**–(हिं० क्रि०) नष्ट होना, मर मिटना।

मूठा–(हिं०पुं०) रस्सी के बँधे हुए घास फूस के पूले जो खपरैल के नीचे छाजन में लगाये जाते हैं, मूट्ठा।

मूठाली–(हिं०स्त्री०) तलवार।

मूठी–(हिं० स्त्री०) देखो मुट्ठी। **मूड़**–(हिं०पुं०) देखो मूड़।

मूढ–(सं०वि०) मूर्ख, निश्चेष्ट, स्तब्ध, जिसको आगा पीछा न सूझता हो, (नपुं०) मूर्छा; **मूढ गर्भ**–गर्भस्राव आदि रोग। **मूढ चेतन**–(सं०वि०) निर्बोध, व्याकुल चित्त, सरल। **मूढता**–(सं० स्त्री०), मूढत्व। **मूढधी**–(सं० वि०) मन्दबुद्धि, जड़। **मूढमति**–(सं०स्त्री०) मन्दबुद्धि, मूर्ख। **मूढात्मा**–(सं०वि०) देखो मूढधी।

मूत–(हिं०पुं०) प्राणियों के उपस्थ मार्ग से निकलने वाला जल, मूत।

मूतना–(हिं० क्रि०) मूत्र निकालना।

मूतरी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली कौवा।

मूत्र–(सं०नपुं०) वह जल जो शरीर के विषैले पदार्थों को लेकर उपस्थ मार्ग से निकालता है, मूत; **मूत्रकृच्छ्र**–(सं० नपुं०) मूत्र का वह रोग जिसमें बड़े कष्टसे रुकरुक कर मूत्र निकलता है; **मूत्रकोश**–(सं०पुं०) मूत्राशय; **मूत्रदोष**–(सं०पुं०) मूत्रकृच्छ्र रोग; **मूत्रनिरोध**–(सं०पुं०) मूत्र का रुक जाना; **मूत्र विज्ञान**–(सं०नपुं०) मूत्र के भेद तथा दोषादोष जानने की विद्या; **मूत्रवृद्धि**–(सं० स्त्री०) अधिक मूत्र निकलना; **मूत्रशूल**–(सं०पुं०) मूत्र निकलती समय पीड़ा होना; **मूत्राघात**–(सं०पुं०) मूत्र बन्द होनेकारोग। **मूत्राशय**–(सं०पुं०) नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित होता है, मसाना।

मूना–(हिं० पुं०) पीतल या लोहे की अँकुसी जो टेकुवे पर जड़ी रहती है

मूर–(सं०पुं०) मूर्ख मनुष्य, (वि०) मारक

मूर–(हिं०पुं०) मूल, जड़, मूल धन, मूल नक्षत्र।

मूरचा–(हिं०पुं०) देखो मोरचा। **मूरख**–(हिं०वि०) देखोमूर्ख। **मूरखताई**–(हिं० स्त्री०) देखो मूर्खता।

मूरछना–(हिं०स्त्री०) देखो मूर्छना, (क्रि०) मूर्छित होना।

मूरछा–(हिं०स्त्री०) देखो मूर्छा। **मूरत**–(हिं०स्त्री०) देखो मूर्ति।

मूरतिवंत–(हिं०वि०)मूर्तिमान्, शरीरधारी

मूरध–(हिं०पुं०) देखो मूर्धा।

मूरि, मूरी–(हिं०वि०)मूल, जड़, जड़ी, बूटी

मूरुख–(हिं०वि०) देखो मूर्ख।

मूर्ख–(सं०वि०)मूढ़, अज्ञ, वह जो गायत्री नहीं जानता। **मूर्खता**–(सं० स्त्री०) मूढ़ता। **मूर्खत्व**–(सं०पुं०) अज्ञता।

मूर्खिनी–(हिं०स्त्री०) मूर्ख स्त्री।

मूर्खिमा–(सं०स्त्री०) मूर्खता।

मूर्छन–(सं०पुं०) संज्ञा नष्ट होना या करना, मूर्छित करने का मन्त्र, कामदेव के एक बाण का नाम।

मूर्छना–(सं०स्त्री०) संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक आरोह-आवरोह, ग्राम के सातवें भाग का नाम।

मूर्छा–(सं०स्त्री०) किसी प्राणिका निश्चेष्ट पड़े रहने की अवस्था अचेत स्थिति, अचेत; देखो मूर्छना; **मूर्छागत**-अचेत.

मूर्छित–(सं०वि०) मूर्छायुक्त, मारा हुआ (पारा) वृद्ध, बूढ़ा, मूढ़, व्याप्त, फैला हुआ।

मूर्त–(सं०वि०) मूर्छित, अचेत, जिसका कोई रूप या आकार हो, साकार, नैयायिकों के मत से पञ्चतत्व, ठोस।

मूर्तता–(सं० स्त्री०) मूर्त होने का भाव या धर्म।

मूर्ति–(सं० स्त्री०) काठिन्य, कठिनता, शरीर, देह, प्रतिमा, किसी के रूप या आकृति के समान बनाई हुई वस्तु, आकृति, स्वरूप, रंग या रेखा द्वारा बनाई हुई आकृति, चित्र, प्रतिमा। **मूर्तिकार**–(सं०पुं०) मूर्ति बनाने वाला चित्रकार। **मूर्तित्व**–(सं०नपुं०) मूर्ति का भाव या धर्म, **मूर्तिधर**–(सं०पुं०)मूर्तिधारणकरनेवाला **मूर्तिपूजक**–(सं०पुं०) मूर्ति या प्रतिमा की पूजा करने वाला। **मूर्तिपूजा**–(सं०स्त्री०) किसी देवीदेवताकी भावना करके उसकी मूर्ति या प्रतिमाको पूजना। **मूर्तिमत्**–(सं०नपुं०) शरीर, देह, (वि०) जो शरीर धारण किये हो, साक्षात्, गोचर, प्रत्यक्ष, सशरीर। **मूर्तिमय**–(सं० वि०) मूर्तिस्वरूप। **मूर्तिमान्**–(सं० वि०) मूर्तिस्वरूप।

मूर्तिविद्या–(सं० स्त्री०) मूर्ति गढ़ने की विद्या, चित्रकारी।

मूर्ध–(हिं०पुं०) मस्तक, शिर। **मूर्धक**–(सं०पुं०)क्षत्रिय। **मूर्धकर्णी**–(सं०स्त्री०) वह वस्तु जो आतप तथा वर्षा से बचने के लिये सिर पर रक्खी जावे, छाता। **मूर्धकर्परी**–(सं०स्त्री०) टोकरा

मूर्धज–(सं०पुं०) केश बाल, (वि०) शिर से उत्पन्न होने वाला।

मूर्धज्योतिस–(सं०नपुं०) ब्रह्मरन्ध्र।

मूर्धन्य–(सं०वि०) मूर्धा संबंधी, मस्तक या सिर में स्थित; **मूर्धन्य वर्ण**–वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्धासे होता है यथा–ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्धन्वान्–(सं०पुं०) एक गन्धर्व का नाम

मूर्धपुष्प–(सं०पुं०) शिरीष पुष्प।

मूर्धरस–(सं०पुं०) भात का फेन।

मूर्धवेष्टन–(सं०नपुं०) उष्णीश, पगड़ी।

मूर्धा–(हिं०पुं०) सिर; **मूर्धाभिषेक**–शिर पर अभिषेक या जलसिंचनहोना

मूर्वा–(सं०स्त्री०)मरोड़फली नामक लता

मूल–(सं०नपुं०) वृक्ष का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है, जड़, आदि, आरंभ, पास, समीप, धन या पूंजी जो किसी व्यापार में लगाया जाती है, आदि कारण, नीव, वह ग्रन्थ जिस पर टीका की जाती है, खाने योग्य जड़, कन्द, सूरन, पिपलीमूल, अश्विनी आदि नक्षत्रों में से उन्नीसवां नक्षत्र, देवताओंका आदि मन्त्र या बीज, (वि०) मुख्य, प्रधान।

मूलक–(सं०पुं०) मूली, मुरई मूल स्वरूप एक स्थावर विष, (वि०) उत्पन्न करने वाला, जनक। **मूलकर्म**–(सं०नपुं०) प्रधान कर्म। **मूलकारण**–(सं०नपुं०) प्रधान हेतु। **मूलकारिका**–(सं०स्त्री०) चण्डी। **मूल ग्रन्थ**–(सं०पुं०) वह ग्रन्थ जिसका अनुवाद टीका आदि की गई हो। **मूलच्छेद**–(सं०पुं०) किसी पदार्थ का जड़से नाश। **मूल जाति**–(सं०स्त्री०) प्रधान वंश। **मूलत्व**–(सं० नपुं०) मूल का भाव या धर्म; **मूलद्रव्य**–(सं०पुं०)मूल धन पूंजी। **मूलद्वार**–(सं०नपुं०) प्रधान द्वार। **मूलधन**–(सं०नपुं०) मूल द्रव्य, पूंजी। **मूल पुरुष**–(सं०पुं०) बीज पुरुष, किसी वंश का आदि पुरुष या पुरखा। **मूलपोती**–(सं०स्त्री०) छोटी पोय का साग। **मूलप्रकृति**–(सं०स्त्री०) आद्या शक्ति। **मूल बन्ध**–(सं०पुं०) हठ योग की एक क्रिया। **मूलभद्र**–(सं०पुं०) कंसराज। **मूलभव**–(सं०वि०) जो मूल से उत्पन्न हो। **मूलमन्त्र**–(सं०पुं०) बीज मन्त्र। **मूलवित्त**–(सं०नपुं०) मूलधन, पूंजी। **मूलविद्या**–(सं०स्त्री०) बारह अक्षर का एक मन्त्र। **मूलस्थली**–(सं०स्त्री०) आलवाल, थाला। **मूलस्थान**-(सं०नपुं०) प्रधान स्थान, बाप दादा की जगह। **मूलस्थायी**–(सं०पुं०) शिव, महादेव। **मूलहर**–(सं०वि०) मूलनाशक।

मूला–(सं०स्त्री०) शतावर मूल नक्षत्र।

मूलाधार–(सं०पुं०) योग के अनुसार मनुष्य के शरीर के भीतर का वह स्थान जो गुदा और लिंग के बीच में स्थित है।

मूलाशी–(सं० वि०) कन्द मूल खाकर रहने वाला।

मूलिका-(सं०स्त्री०)औषधियों की जड़, जड़ी

मूली–(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसकी जड़ खाने में तीक्ष्ण तथा मोठी होती है, मुरई; **किसीको गाजर मूली समझना**–अति तुच्छ जानना।

मूलोच्छेद–(सं०पुं०) जड़ से नाश।

मूलोत्पादन–(सं०नपुं०) जड़से उखाड़ना

मूल्य–(सं०नपुं०) किसी वस्तु के बदले में मिलने वाला धन, दाम; **मूल्यकरण**–मूल्य निरूपण, दाम ठीक करना;

मूल्यवान्–अधिक दाम का।

मूष–(सं०पुं०) मूसा, चूहा, सोना चांदी गलानेकी घरिया। **मूषक**–(सं० पुं०) इन्दुर, चूहा।

मूषा–(सं० स्त्री०) गवाक्ष, झरोखा, गोखरू का पौधा।

मूषीकरण–(सं०नपुं०) घरिये में धातु गलाने की क्रिया।

मूस–(हिं०पुं०) चूहा; मूसदानी–चूहा फँसाने का पिंजड़ा।
मूसना–(हिं०क्रि०)चुराकर उठा ले जाना
मूसर–(हिं०पुं०) धान कूटने का लकड़ी का मोटा डंडा, मूसल, असभ्य पुरुष।
मूसरचंद–(हिं० पुं०) अपढ़, गँवार, हट्टाकट्टा परन्तु निकम्मा।
मूसल–(हिं०पु०) धान कूटने का लंबा मोटा डंडा, एक अस्त्र जिसको बलराम धारण करते थे।
मसलधार–(हिं०क्रि०वि०) वृष्टि जो मूसल के समान मोटी धार में हो।
मसला–(हिं०पुं०) देखो मुसना।
मूसली–(हिं०पुं०) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ औषधियों में काम आती है।
मूसा–(हिं० पुं०) चूहा, यहूदियों के एक पैगम्बर का नाम।
मूसाकानी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लता जिसके पत्ते चूहे के कान के आकार के होते हैं, यह औषधियों में प्रयोग होती है।
मृकण्डु–(सं०पुं०)मार्कण्डेय ऋषि के पिता
मृग–(सं०पुं०) पशु मात्र विशेष कर जंगली पशु, हाथी की एक जाति, मृगशिरा नक्षत्र, अन्वेषण, खोज, प्रार्थना, अगहन का महीना, मकर राशि, मृगनाभि, हरिन, कामशास्त्र के अनुसार पुरुषों के चार भेदों में से एक, अन्वेषण करने वाला, वैष्णवों के तिलक का एक भेद; मृगकानन–मृगया का उपयुक्त वन; मृगक्षीर–हरनी का दूध। मृगगामिनी–(सं०स्त्री०) मृग के समान चलने वाली, मृगचर्म–(सं०पुं०) हरिन का चमड़ा जो बहुत पवित्र माना जाता है। मृगछाला–(हिं०स्त्री०) हरिन का चमड़ा। मृगजल–(सं०पुं०) मृगतृष्णा की लहरें। मृगजहु–(सं०पुं०) हरिन का बच्चा। मृगजीवन–(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया। मृगणा–(सं०स्त्री०) खोई हुई वस्तु की खोज, मृगतृषा, मृगतृष्णा–(सं०स्त्री०) जल की लहरों का आभास जो मरुभूमि में कड़ी धूप के कारण देख पड़ता है, मृगजल, मरीचिका। मृगत्व–(सं०नपुं०) मृग का भाव या धर्म, मृगदंश, मृगदंशक–(सं०पुं०) कुत्ता। मृगदाव–(सं०पुं०) मृगकानन, काशी के पास का सारनाथ नामक एक स्थान। मृगदृश–(सं०वि०) मृगलोचन, हरिन के समान आंख वाला। मृगधर–(सं०पुं०) चन्द्रमा। मृगधूर्त–(सं०पुं०) शृगाल, सियार। मृगनाथ–(सं०पुं०) सिंह, मृगनाभि–(सं०पुं०)कस्तूरी। मृगनेत्रा–(सं०वि०) मृग तुल्य नेत्र वाली। मृगपति, मृगप्रभु–(सं० पुं०) सिंह, मृगमद्र–(सं०पुं०) हाथियों की एक जाति, मृगमद–(सं०पुं०) कस्तूरी। मृगमरीचिका–(सं०स्त्री०) देखो मृगतृष्णा। मृगमित्र–(सं०पुं०) चन्द्रमा। मृगमेद–(सं०पुं०) कस्तूरी। मृगया–(सं०स्त्री०) शिकार, आखेट; मृगया वन–आखेट करने का जंगल।
मृगराज–(सं०पुं०) सिंह, व्याघ्र।
मृगरोग–(सं० पुं०) घोड़े का एक घातक रोग।
मृगरोचन–(सं०पु०) कस्तूरी, मुश्क।
मृगलाञ्छन–(सं०पुं०) चन्द्रमा। मृग लेखा–(सं०स्त्री०)चन्द्रमा में का कलङ्क
मृगलोचना, मृगलोचनी–(सं०स्त्री०) हरिण के समान नेत्र वाली स्त्री, (वि०)हरिण के समान नेत्र वाली।
मृगवन–(सं०नपुं०) आखेट का जंगल।
मृगवारि–(सं०पुं०) मृगतृष्णा का जल।
मृगव्याध–(सं०पुं०) मृगों को खोजने वाला बहेलिया, एक नक्षत्र, शिव, महादेव।
मृगशाव–(सं०पुं०) हरिण का बच्चा।
मृगशिरा–(सं० स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से पांचवां नक्षत्र;
मृगशीर्ष–(सं०पुं०) मृगशिरा नक्षत्र।
मृगश्रेष्ठ–(सं० नपुं०) व्याघ्र, बाघ;
मृगहन्–(सं०स्त्री०) व्याध, बहेलिया;
मृगाक्षी–(सं० स्त्री०) देखो मृगनयना।
मृगाङ्क–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर, वायु, वैद्यक के एक रस का नाम।
मृगाङ्गना–(सं० स्त्री०) हरिणी, हरनी;
मृगाङ्गजा–(सं०स्त्री०) कस्तूरी।
मृगाधिप, मृगाधिराज–(सं०पुं०)सिंह, शेर
मृगारि–(सं०पुं०) सिंह, व्याघ्र, बाघ।
मृगाश, मृगाशन–(सं०पुं०) सिंह, शेर।
मृगित–(सं०वि०)अन्वेषित, खोजा हुआ।
मृगिनी–(हिं०स्त्री०) हरनी।
मृगी–(सं० स्त्री०) हरनी, कश्यप ऋषि की एक कन्या का नाम, तीन अक्षर का एक छन्द, पीले रंग की एक प्रकार की कौड़ी, कस्तूरी, अपस्मार रोग।
मृगीपति–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
मृगीलोचना–(सं०स्त्री०) देखो मृगनयना
मृगेक्षण–(सं०वि०) मृग के समान आंख वाला; मृगेक्षणा–(सं०स्त्री०) मृगनयनी।
मृगेन्द्र–(सं० पुं०) सिंह, एक छन्द का नाम; मृगेन्द्र चटक–बाज पक्षी;
मृगेन्द्रमुख–(सं०नपुं०)एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं;
मृगेश, मृगेश्वर–(सं०पुं०) सिंह।
मृग्य–(सं०वि०) खोजने योग्य।
मृज–(सं०पुं०) मुरज नाम का बाजा।
मृज्य–(सं०वि०) मार्जन योग्य।
मृड–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
मृडन–(सं०नपुं०) आनन्दित करना।
मृडा, मृडानी–(सं० स्त्री०) दुर्गा का एक नाम।
मृणाल–(सं० पुं०) कमल की डंडी, कमलनाल, उशीर, खस, कमल की जड़, मुरार, भसींड़; मृणालक–(सं०पुं०) कमल नाल।
मृणालिनी–(सं०स्त्री०)पद्मिनी, कमलिनी, पद्मसमूह, वह स्थान जहां कमल हों; मृणाली–(सं०स्त्री०) देखो मृणाल।
मृत–(सं० वि०) गतप्राण, मरा हुआ;
मृतक–(सं० नपुं०) शव; मृतककर्म–(सं०पुं०) वह कृत्य जो मृतक पुरुष की शुद्ध गति के लिये किया जाता है, प्रेतकर्म; मृतकधूम–(सं०पुं०)भस्म, राख; मृतकल्प–(सं० वि०) मृतप्राय, मरे के समान; मृतगृह–(सं० नपुं०) समाधि स्थान; मृतजीव–(सं० पु०) मरा हुआ प्राणी; मृतजीवनी–(सं० स्त्री०) मृतक को जिलाने का विद्या।
मृतप–(सं० पुं०) शव की रक्षा करने वाला।
मृतमत्त–(सं०पु०) शृगाल, सियार।
मृतवत्सा–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसकी सन्तति मर मर जाती हो।
मृतसंस्कार–(सं०पुं०) अन्त्येष्टि क्रिया।
मृतसञ्जीवनी–(सं० स्त्री०) मृतक को जिलाने की बूटी, दुधिया घास।
मृतसूत–(सं०नपुं०) रससिन्दूर।
मृतस्नान–(सं०नपुं०) सजाति या बन्धु के मरने पर उसके उद्देश्य से किया जाने वाला स्नान।
मृतहार–(सं०पुं०) शव ढोने वाला।
मृतांग–(सं० पुं०) शव; मृतांगार–(सं० पुं०) शव की भस्म।
मृतालक–(सं०नपुं०)अरहर, गोपीचंदन
मृताशन–(सं०वि०) शव खाने वाला।
मृताशौच–(सं० नपुं०) वह अशौच जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है
मृति–(सं०स्त्री०) मरण, मृत्यु।
मृतोद्भव–(सं०पुं०) समुद्र, महासागर।
मृत्कपाल–(सं०नपुं०)खपड़ा, जली मिट्टी
मृत्कर–(सं०पुं०) कुम्भकार, कोंहार।
मृत्किरा–(सं०स्त्री०) घुंघरू।
मृत्तिका–(सं० स्त्री०) मिट्टी; मृत्तिका लवण–मिट्टी का नोना।
मृत्पाण्डु–(सं० नपुं०) पाण्डु रोग जो मिट्टी खाने से उत्पन्न होता है
मृत्पात्र–(सं०नपुं०) मिट्टी का पात्र।
मृत्यु–(सं०पुं०) यम, कंस, मौत, निधन, प्राण छूटना, शरीर में से प्राणों का अलग होना; मृत्युकन्या–यम की लड़की।
मृत्युञ्जय–(सं० पुं०) शिव, महादेव, (वि०) जिसने मृत्यु को जीत लिया हो।
मृत्युदूत–(सं०पुं०) यम के दूत।
मृत्युद्वार–(सं०नपुं०) शरीर के नव छिद्र जिसमें से होकर प्राण वायु निकलती है; मृत्युपाश–(सं०पुं०)यम का बधन; मृत्युबीज–(सं०पुं०) मृत्यु का कारण, जन्म; मृत्युभय–(सं०पु०) मरने का डर; मृत्युराज–(सं०पुं०) यमराज;
मृत्युरूपी–(सं० वि०) मृत्यु के समान आकार वाला; मृत्युलोक–(सं० पुं०) मर्त्यलोक, यमलोक; मृत्युसुत–(सं०पुं०) केतु ग्रह।
मृत्स–(सं०वि०) चिपचिपा।
मृत्स्ना–(सं०स्त्री०) पवित्र मिट्टी, गोपीचन्दन।
मृथा–(हिं०क्रि०वि०) मृषा, वृथा।
मृदङ्ग–(सं०पुं०) ढोलक के आकार का उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का बाजा; मृदङ्गक–(सं०पुं०) एक प्रकार छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं; मृदङ्गफल–(सं०पु०) पनसफल, कटहल।
मृदङ्गी–(सं० स्त्री०) कपोतकी, तरोई।
मृदर–(सं०पुं०) व्याधि, रोग।
मृदा–(सं०स्त्री०) मृत्तिका, मिट्टी; मृदकर–वज्र।
मृदित–(सं०वि०) चूर्ण किया हुआ।
मृदु–(सं०वि०) कोमल, सुकुमार, जो सुनने में कर्कश न हो, मन्द, धीमा (स्त्री०) घतकुमारी, घिकुआर; मृदुकर्म–कोमल करने का काम; मृदुगमना–धीमी चाल से चलने वाली; मृदुच्छद–भोजपत्र का वृक्ष; मृदुता–(सं०स्त्री०) कोमलता, मन्दता, धीमापन; मृदुपर्ण–(सं०पुं०) कोमल पत्ता, नरकट, भोजपत्र का वृक्ष; मृदुपूर्व–(सं० क्रि०वि०) विनय पूर्वक।
मृदुल–(सं०नपुं०) जल, पानी, (वि०) कोमल, सुकुमार, दयालु हृदय का;
मृदुलता–(सं० स्त्री०) सुकुमारता, कोमलता।
मृदुलोमक–(सं० पुं०) शशक, खरहा।
मृदुवात–(सं० पुं०) मन्द मन्द चलने वाला पवन।
मृदुहृदय–(सं०वि०) दयालु, कृपालु।
मृद्वङ्ग–(सं०नपुं०) कोमल शरीर।
मृध–(सं०नपुं०) युद्ध, लड़ाई।
मृधा–(सं०अव्य०) मृषा, झूठ मूठ।
मृनाल–(हिं०पु०) देखो मृणाल।
मृन्मय–(सं०वि०)मिट्टी का बना हुआ।
मृषा–(सं०अव्य०) मिथ्या, झूठमूठ, (वि०) असत्य, झूठ; मृषाज्ञान–झूठी समझ;
मृषात्व–(सं०नपुं०) असत्यता; मृषादृष्टि–(सं०स्त्री०) भूल देखना; मृषाभाषी–(सं० वि०)असत्य वक्ता, झूठ बोलने वाला; मृषावाद–(सं० पु०) मिथ्या वाक्य, असत्य वचन; मृषावादी–(सं०वि०) झूठ बोलने वाला।
मृष्ट–(सं०वि०)शोधित, स्वच्छ किया हुआ
मृष्टि–(सं०स्त्री०) परिशुद्धि, शोधन।
में–(हिं० अव्य०) अधिकरण कारक का चिह्न जिसको किसी शब्द के आगे लगाने से 'भीतर, बीच का, या चारो ओर होना' बतलाया जाता है, यह आधार या अवस्थान सूचित करता है।
मेंगनी–(हिं०स्त्री०) पशुओं की गोलियों के रूप में विष्टा, यथा ऊंट या बकरी की विष्टा, लेंड़ी।
मेक–(सं०पुं०) छाग, बकरी।
मेकल–(सं० पुं०) विन्ध्य पर्वत का एक भाग जो रीवां राज्य के अन्तर्गत है;

मेकलसुता–नर्मदा नदी।
मेक्षण–(सं० नपुं०) चम्मच के आकार का एक यज्ञ पात्र।
मेख–(हिं० पुं०) देखो मेष; (स्त्री०) भूमि में गाड़ने के लिए नुकीली गढी हुई लकड़ी, खूंटा, कील, कांटा, लकड़ी का पच्चड़।
मखड़ा–(हिं० स्त्री०) बांस की फट्टी का घेरा।
मेखल–(हिं०स्त्री०) किंकणी, करधनी।
मेखला–(सं० स्त्री०) करधनी, कमरबंद जिसमें तलवार लटकाई जाती है, मण्डलाकार वस्तु, गोल घेरा, पर्वत का मध्य भाग, वन्द, सामी, मिट्टी का घेरा हुआ जो होमकुण्ड के चारो ओर बना रहता हैं, साधु की कफनी
मेखलाल–(सं० पुं०) शिव, महादेव।
मेखली–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पहनावा जिसको गले में डालने से पेट और पीठ ढकी रहती है तथा दोनों हाथ खुले रहते हैं, कटिबन्ध, करधनी।
मेघ–(सं० पुं०) मोथा, राक्षस, आकाश में एकत्रित घनीभूत जल वाष्प जिससे वर्षा होती है, पयोधर, पर्जन्य, बादल, संगीत के प्रधान छः रागों में से एक; मेघकाल–वर्षाकाल; मेघगर्जन–बादलों की गड़गड़ाहट; मेघचिन्तक–मेघ को चाहने वाला, चातक, चकवा; मेघजाल–बिजली, मेघजीवन–चकवा पक्षी; मेघडम्बर–मेघ की गर्जना;
मेघतिमिर–बदली का दिन; मेघ दीप–बिजली; मेघदुन्दुभि–बादल की गरज
मेघदूत–(सं०पुं०) महाकवि कालिदास प्रणीत एक खण्ड काव्य।
मेघनाथ–(सं०पुं०) एक राग का नाम।
मेघनाथ–(सं०पुं०) इन्द्र।
मेघनाद–(सं० पुं०) रावण के पुत्र का नाम, बादल की गरज, मोर, बिल्ली, बकरा, वरुण बृक्ष; मेघनिर्घोष–(सं० पुं०) बादल की गरज।
मेघपुष्प–(सं० पुं०) इन्द्र का घोड़ा, श्रीकृष्ण के रथ के चार घोड़ों में से एक, जल, पानी, मोथा, नदी का पानी, बकरे की सींग; मेघभूति–(सं० पुं०) वज्र, बिजली; मेघमण्डल–(सं० नपुं०) आकाश; मेघमल्लार–(सं०पुं०) संपूर्ण जाति का एक राग; मेघमाला–(सं० स्त्री०) बादलों की घटा, स्कन्द की एक अनुचरी का नाम; मेघमाली–(सं०पुं०) एक असुर का नाम, स्कन्द के एक अनुचर का का नाम; मेघयोनि–(सं० पुं०) धूर्वा, कुहरा; मेघरवा–(सं० स्त्री०) स्कन्द की एक मातृका का नाम; मेघराग–(सं०पुं०) संगीत में छ प्रकार के रागों में से एक; मेघराज–(सं०पुं०) इन्द्र।
मेघराजि, मेघलेखा–(सं० स्त्री०) बादलों की घटा।
मेघवर्णा–(सं० स्त्री०) नील का पौधा;

मेघवर्त–(सं०पुं०) प्रलय काल के मेघों में से एक का नाम; मेघवर्त्म–(सं०नपुं०) आकाश।
मेघवह्नि–(सं० पुं०) वज्र, बिजली।
मेघवाई–(हिं०स्त्री०) मेघों की घटा।
मेघवाहन–(सं०पुं०) इन्द्र।
मेघवितान–(सं० नपुं०) एक छन्द का नाम, मेघ समूह।
मेघविस्फूर्जिता–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम।
मेघवेश्म–(सं०नपुं०) आकाश।
मेघश्याम–(सं० वि०) मेघ के समान काला, (पुं०) श्रीकृष्ण।
मेघसार–(सं० पुं०) चीनिया कपूर।
मेघसुहृद–(सं०पुं०) मयूर, मोर।
मेघस्वन, मेघह्लाद–(सं०पुं०) मेघ की गर्जना।
मेघा–(हिं०पुं०) मण्डूक, मेढक।
मेघागम–(सं०पुं०) वर्षाकाल।
मेघाच्छन्न मेघाच्छादित–(सं० वि०) बादलों से ढपा हुआ।
मेघाडम्बर–(सं०पुं०) मेघों का विस्तार।
मेघानन्द–(सं०पुं०) मयूर, मोर।
मेघान्त–(सं० पुं०) शरत् काल।
मेघाभा–(सं०पुं०) बन जामुन।
मेघारि–(सं०पुं०) वायु, हवा।
मेघावरि–(हिं० पुं०) मेघावलि, बादलों की घटा।
मेच–(हिं०स्त्री०) पलंग, बेंत की बीनी हुई खाट।
मेचक–(सं०नपुं०) अन्धकार, अंधेरा, धुवां, बादल, एक प्रकार का छोटा बिच्छू, (वि०) श्यामल, काला।
मेचकता–(सं०स्त्री०) श्यामता, कालापन। मेचकताई–(हिं० स्त्री०) देखो मेचकता।
मेजा–(हिं०पुं०) मण्डूक, मेढक।
मेटक–(हिं० वि०) नाश करने वाला, मिटाने वाला। मेटनहार–(हिं०पुं०) मिटाने या दूर करने वाला।
मेटना–(हिं० क्रि०) घिसकर निर्मल करना, मिटाना, नष्ट करना, दूर करना।
मेटिया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का घड़े से छोटा पात्र। मेटी, मेटुवा–(हिं०स्त्री०) देखो मेटिया।
मेटुवा–(हिं० वि०) उपकार न मानने वाला, कृतघ्न।
मेड़–(हिं०पुं०) खेत या भूमि का मिट्टी डाल कर बनाया हुआ घेरा, दो खेतों के बीच की सीमा, ऊँची लहर; मेडबंदी–मेड़ बनाने की क्रिया।
मेड़क–(हिं०पुं०) मण्डूक, मेढक
मेड़रा–(हिं० पुं०) किसी वस्तु का मण्डलाकार ढांचा, उभड़ा हुआ गोल किनारा।
मेडराना–(हिं० क्रि०) देखो मँड़राना।
मेड़िया–(हिं०स्त्री०) मढी।
मेढक–(हिं०पुं०) एक जल स्थल चारी जन्तु, मण्डूक, दुर्दुर, मेघा।

मेढा–(हिं०पुं०) सींग वाला एक चौपाया जिसके शरीर पर घने रोवें होते हैं, इसको लोग लड़ाने के लिये पालते है। मेढासिंगी–हिं०स्त्री०) एक झाड़ीदार लता जिसकी जड़ औषध के काम में आती है। मेढी–(हिं०स्त्री०) तीन लड़ियों में गूथी हुई चोटी।
मेढ्र–(सं०पुं०) शिश्न, लिङ्ग।
मेथि–(सं० पुं०) पशुओं को बांधने का खूटा।
मेथी–(सं० स्त्री०) एक पौधा जिसकी फलियां मसाले और औषधियों में प्रयोग की जाती है।
मेथौरी–हिं० स्त्री०) उर्द की बरी जो मेथी का साग मिलाकर बनाई जाती है।
मेद–(सं०पुं०) वसा, चरबी, शररी में वसा बढ़ने का रोग, कस्तूरी, एक अन्त्यज जाति; मेदज–वसा से उत्पन्न; मेदपुच्छ–एड़क दुबा, मेढा; मदस्वी–वसा के कारण जिसका शरीर मोटा हो गया हो।
मेदा–(सं० स्त्री०) अष्टवर्ग में से एक प्रसिद्ध औषधि, (अ०पुं०) पक्वाशय, पेट
मेदिनी–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, धरती, मेदा।
मेदिनीज–(सं० पुं०) मंगल ग्रह।
मेदनीपति–(सं०पुं०) पृथिवी पति।
मेदुर–(सं०वि०) स्निग्ध, चिकना।
मेदोज–(सं०पुं०) अस्थि, हड्डी।
मेध–(सं०पुं०) यज्ञ, यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु; मेदज–विष्णु।
मेधा–(सं०स्त्री०) धारणवती बुद्धि, मन की स्मरण रखने की शक्ति, धन, सम्पत्ति, सोलह मात्रिकाओं में से एक, छप्पय छन्द का एक भेद, दक्ष प्रजापति की एक कन्या। मेधातिथि–(सं० पुं०) कण्व मुनि के पिता; मेधावती–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसकी धारणा शक्ति तीव्र हो। मेधाविनी–(सं०स्त्री०) ब्रह्मा की पत्नी।
मेधावी–(सं० वि०) जिसकी धारणा शक्ति तीव्र हो, पंडित, विद्वान, चतुर, (पुं०) तोता, मदिरा।
मेध्य–(सं० वि०) पवित्र, बुद्धि बढ़ाने वाला, छाग, बकरा।
मेध्या–(सं०स्त्री०) लाल कमल, गोरोचन, ब्राह्मी बूटी, ईख।
मेनका–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, पार्वती की माता का नाम।
मेनकात्मजा–(सं०स्त्री०) दुर्गा, शकुन्तला
मेना–(सं०स्त्री०) देखो मेनका, (हिं०क्रि०) किसी पकवान में मोयन डालना।
मेन्धिका–(अ०स्त्री०) मेंहदी।
मेम–(हिं० स्त्री०) युरोप या अमेरिका आदि देश की स्त्री, ताश का एक पत्ता, बीबी, रानी।
मेमना–(हिं०पुं०) भेड़ी का बच्चा, घोड़े की एक जाति।
मेमिष–(सं० वि०) जिसकी आंखों पर पलक न हों।

मेय–(सं०वि०) जो नापा जा सके।
मेर–(हिं०पुं०) देखो मेल।
मेरक–(सं० पुं०) एक असुर जिसको विष्णु ने मारा था।
मेरवना–(हिं० क्रि०) संयोग करना, मिलाना।
मेरा–(हिं०सर्व०) 'मैं' शब्द का सबंध कारक का रूप, मुझसे संबन्ध रखने वाला।
मेराउ, मेराव–(हिं०पुं०) मिलाप, समागम, (स्त्री०) गर्व, घमंड।
मेरी–हिं०सर्व०) 'मेरा' का स्त्रीलिंग का रूप।
मेरु–(सं०पुं०) एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है, सुमेरु, जपमाला के बीच का सबसे बड़ा दाना जो सब दानों के ऊपर होता है, वीणा का एक अंग, एक विशेष बनावट का देवमन्दिर, पिंगल शास्त्र की एक गणना जिससे यह पता लगता है कि कितने लघु गुरु वर्ण से कितने छन्द हो सकते हैं।
मेरुक–(सं०पुं०) घूना।
मेरुग्रन्थि–(सं० पुं०) वृक्क, गुरदा।
मेरुदण्ड–(सं०पुं०) पीठ के बीच की हडडी, रीढ, वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच में गई है। मेरुधामा–(सं०पुं०) शिव, महादेव। मेरुपृष्ठ–(सं०नपुं०) आकाश, स्वर्ग। मेरुमूल–(सं०नपुं०) पहाड़ का निचला भाग। मेरुयन्त्र–(सं०नपुं०) बीजगणित में एक प्रकार का चक्र, चरखा। मेरुशिखर–(सं०पुं०) हठयोग के अनुसार मस्तक के छ चक्रों में से सबसे ऊपर का चक्र।
मेरे–(हिंसर्व०) 'मेरा' का बहुवचन; 'मेरा' का वह रूप जो सम्बन्धवान् शब्द के आगे विभक्ति लगाने पर प्राप्त होता है।
मेल–(सं०पुं०) मिलाने की क्रिया या भाव, संयोग, परस्पर का घनिष्ट व्यवहार, मित्रता, अनुकूलता, अनुरूपता, ढंग, प्रकार, मिश्रण, मिलावट, समता, एक साथ प्रीति पूर्वक रहने का भाव, सङ्गति, एकता; मेल रखना–ठीक होना, अनुकूल होना;
मेलक–(सं० पुं०) समागम, मिलन, मेला, सहवास।
मेलन–(सं०नपुं०) मिलने की क्रिया या भाव, एक साथ होना, इकट्ठा होना।
मेलना–(हिं० क्रि०) मिलाना, इकट्ठा होना।
मेलमल्लार–(सं० पुं०) एक रागिणी का नाम।
मेला–(हिं०पुं०) बहुत से लोगों का जमावड़ा, भीड़भाड़, उत्सव, खेल, कौतुक देखने के लिये बहुत से लोगों का इकट्ठा होना। मेलाठेला–भीड़भाड़, जमावड़ा; मेलाना–(हिं०क्रि०) देखो मिलाना।

मेलानी–(हिं०क्रि०) बंधक रक्खी हुई वस्तु को रुपया देकर छुड़ाना।
मेली–(हिं०पुं०) संगी, हेलमेल रखनेवाला।
मेल्हना–(हिं०क्रि०) बेचैन होना, छटपटाना, टाल मटोल करना।
मेव–(हिं० पुं०) राजपूताने की एक लटेरी जाति।
मेवड़ी–(हिं०स्त्री०) निर्गुण्डी, संभालू।
मेवाड़–(हिं०पुं०) दक्षिण राजपूताना के अन्तर्गत एक विस्तीर्ण प्रदेश। मेवाड़ी–(हिं० पुं०) मेवाड़ प्रदेश निवासी।
मेवात–(हिं०पुं०) दिल्ली राजधानी का दक्षिण विभाग। मेवाती–(हिं०पुं०) मेवात प्रदेश में रहनेवाली एक जाति।
मेवास–(हिं० पुं०) दुर्ग, गढ़, सुरक्षित स्थान। मेवासी–(हिं० पुं०) गढ़ मे रहने वाला, घर का मालिक, सुरक्षित तथा प्रबल।
मेशिका–(सं० स्त्री०) मजीठ नामक औषधि।
मेष–(सं०पुं०) भेड़ा, प्रथम राशि का नाम, वैशाख मास में सूर्य इस राशि में उगते हैं; मेषपाल–गंड़ेरिया; मेषपुष्पा–मेढ़ासिघी; मेषवृषण–इन्द्र। मेषसंक्रान्ति–(स० स्त्री०) मेषराशि में सूर्य के आने का योग, इस दिन सतुआ दान करने का माहात्म्य है, सतुआ संक्रान्ति। मेषहृत्–(सं० पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।
मेषा–(सं० स्त्री०) गुजराती इलायची।
मेषी–(सं०स्त्री०) भेड़ी, शीशम की जाति का एक वृक्ष, जटामासी।
मेहँदी–(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसकी पत्तियों को पीस कर स्त्रिया हाथ पैर में लगाती हैं जिससे लाल रंग हो जाता है।
मेह–(सं०पुं०) प्रमेह रोग, मेष, भेड़ा, मूत्र, (हिं०पुं०) मेष, बादल, वर्षा।
मेहन–(सं०नपुं०) शिश्न, लिंग, मूत्र।
मेहना–(हिं०पुं०) उलहना, दोष कथन।
मेहर–(हिं०स्त्री०) देखो मेहरी, पत्नी, जोरू।
मेहरा–(हिं०पुं०) स्त्रियों के समान चेष्टा या प्रकृति वाला, मनुष्य, जुलाहों की परखीका घेरा, खत्रियोंकी एक शाखा।
मेहरारू–(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत।
मेहरी–(हिं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
मैं–(हिं०सर्व०) स्वयं खुद, सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्ता के एक वचन का रूप (अव्य०), में
मैं–(हिं०अव्य०) देखो मय, साथ, मिलकर।
मका–(हिं०पुं०) देखो मायका।
मगल–(सं० पुं०) मस्त हाथी, (वि०) मत्त, मस्त।
मत्र–(सं०नपुं०) अनुराधा नक्षत्र, सूर्य लोक, (वि०) मित्र संबंधी, दयालू।
मैत्रता–(सं०पुं०) बन्धुत्व, मित्रता।
मत्राक्ष–(सं०पुं०) एक प्रकार का प्रेत।
मत्रायणि–(सं० स्त्री०) एक उपनिषद का नाम।

मैत्रिक–(सं०वि०) मित्र संबंधी।
मैत्री–(सं०स्त्री०) मित्र का भाव, मित्रता,
मैत्रेय–(सं० पु०) पाराशर मुनि के एक शिष्य जिन्होंने विष्णु पुराण कहा था, सूर्य।
मैत्रेयी–(सं० स्त्री०) योगिराज याज्ञवल्क्य की स्त्री का नाम।
मैथिल–(स० पुं०) मिथिला देशवासी, (वि०) मिथिला संबंधी। मैथिली–(सं०स्त्री०) मिथिला देश के राजा की कन्या, सीता।
मैथुन–(सं०नपुं०) स्त्री के साथ पुरुष का समागम, रति क्रीड़ा।
मैदानी–(हिं०वि०) मैदे का बना हुआ।
मैन–(हिं० पुं०) मोम, कामदेव, राल में मिलाया हुआ मोम जो मूर्ति आदि का ढांचा बनाने के काम में आता है।
मैनफल–(हिं० पुं०) मंझोले आकार का एक कांटेदार वृक्ष जिसके गोल फल औषधियों में प्रयोग होते हैं।
मैनसिल–(हिं० पुं०) मनःशिला, एक प्रकार की धातु जो मिट्टी की तरह पीली होती है।
मैना–(हिं०स्त्री०) काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखलाने पर मनुष्य की तरह बोली बोल सकता है; राजपूताने की मीना नामक जाति।
मैनाक–(स०पुं०) पुराणके अनुसार एक पर्वत का नाम जो हिमालय का पुत्र माना जाता है, हिमालय की एक ऊंची चोटी का नाम।
मैनाल–(सं० पुं०) धीवर, मछुवा।
मैनावली–(सं०स्त्री०) एक वर्णवृत्तका नाम
मैन्द–(सं० पुं०) एक असुर जो कंस का अनुचर था।
मैमंत–(हिं०वि०) मदोन्मत्त, मतवाला, अभिमानी।
मैया–(हिं०स्त्री०) माता, माँ।
मैर–(हिं०पुं०) सुनारों की एक जाति, (स्त्री०) साँप के बिष की लहर।
मैरा–(हिं०पुं०) वह मचान जिस पर बैठकर किसान अपने खेत की रखवाली करते हैं।
मैल–(हिं०वि०) मलिन, मैला, (स्त्री०) धूल, किट्ट आदि जिसके पड़ने या जमने से किसी वस्तु की चमक नष्ट हो जाती है, मैली करने की वस्तु, दोष, विकार; हाथ पर की मैल–अति तुच्छ वस्तु।
मैलखोरा–(हिं०वि०) मैलको छिपानेवाला, जिस पर पड़ी हुई मैल जल्दी देख न पड़े(पुं०) काठी के नीचे का नमदा साबुन।
मैलन्द–(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा।
मैला–(हिं०पु०) विष्टा, कूड़ा, करकट (वि०) दूषित, विकार युक्त, दुर्गन्धी, जिस पर मैल जमी हो, जिस पर धूल कीट आदि जमी हो। मैलाकुचैला–हिं०वि०) बहुत मैला, वह जो बहुत मैले कपडे पहनता हो। मैलापन–(हिं०पुं०) मैला होने का भाव।
मैहिक–(सं०वि०) जिसको प्रमेह रोग हुआ हो।
मों–(हिं०अव्य०) मे, (सर्व०) मों।
मोंगरा–(हिं० पुं०) मेख ठोंकने का हथौड़ा, एक प्रकार की केशर।
मोंछ–(हिं०स्त्री०) देखो मूंछ।
मोंढा–(हिं० पुं०) बांस, सरकडे या बेंत का बना हुआ एक प्रकार का गोल ऊंचा आसन, कन्धा।
मो–(हिं० सर्व०) मेरा, "मैं" का वह रूप जो बृज भाषा में कर्ता कारक के सिवाय अन्य कारकों में इसके चिह्न लगाने के पूर्व व्यवहार किया जाता है।
मोई–(हिं०स्त्री०) घी में सना हुआ आटा
मोक–(सं०नपुं०) किसी पशु का चमड़ा
मोकना–(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
मोकल–(हिं०वि०) मुक्त, छोड़ा हुआ; स्वतन्त्र।
मोकला–(हिं०वि०) अधिक चौड़ा।
मोका–(हिं० पुं०) एक प्रकार का जंगली वक्ष।
मोक्ष–(सं०पुं०) मुक्ति, किसी प्रकार के बधन से छूट जाना, छुटकारा, मृत्यु, पतन, शास्त्रों तथा पुराणों के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूटना। मोक्षक–(सं०वि०) मोक्ष देने वाला। मोक्षण–(सं०पुं०) मोक्ष देनेकी क्रिया। मोक्षद–(स०वि०) मोक्षदाता, मोक्ष देने वाला; मोक्षदा–(सं०स्त्री०) अगहन सुदी एकादशी का नाम। मोक्षद्वार–(सं०पु०) मोक्ष का उपाय, सूर्य। मोक्षपति–(सं०पुं०) ताल के मुख्य आठ भेदों में से एक। मोक्षपुरी–(स०स्त्री०) काशी आदि सात पुरी। मोक्षविद्या–(सं० स्त्री०) वेदान्त शास्त्र।
मोख–(हिं०पुं०) देखो मोक्ष।
मोखा–(हिं० पुं०) भीत आदि में बना हुआ छिद्र, झरोखा।
मोग–(सं०पुं०) चेचक रोग।
मोगरा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा बेले का फूल।
मोगल–(हिं० पु०) देखो मुगल।
मोगली–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
मोघ–(सं० वि०) निरर्थक, निष्फल, हीन। मोघता–(सं०स्त्री०) निष्फलता;
मोघिया–(हिं०स्त्री०) चौड़ी मोटी नरिया जो खपरैल की छाजन में लगाई जाती है।
मोच–(सं०नपुं०) केला, सेमल का वृक्ष, (स्त्री०) अंग के किसी जोड़ पर की नस का अपने स्थान से हट जाना जो बहुत पीड़ाकर होता है।
मोचक–(सं०वि०) मुक्ति कारक छुड़ाने वाला। मोचन–(सं०नपु०) मोक्ष, मुक्ति करना कांपना, शठता, बंधन आदि खोलना, दूर करना, हटाना, ले लेना, (वि०) छुड़ाने वाला। मोचना (हिं०क्रि०) छुड़ाना, गिराना, बहाना, मुक्त करना, (पुं०) हज्जामों की बाल उखाड़ने की चिमटी।
मोचनी–(सं०स्त्री०) भटकटैया।
मोचनीय–(सं०वि०) मुक्त करने योग्य।
मोचरस–(सं०पुं०) सेमर की गोंद।
मोचसार–(सं०पुं०) देखो मोचरस।
मोचा–(सं०स्त्री०) सेमर का वक्ष, केले का वृक्ष, सलई का वृक्ष, नील का पौधा।
मोचिनी–(सं०स्त्री०) पोई का सीग।
मोची–(हिं० पुं०) चर्मकार श्रेणी की एक जाति, ये लोग जूता बनाते और इनकी मरम्मत करते हैं, (वि०) हटाने या दूर करने वाला।
मोच्य–(स०वि०) छोड़ देने योग्य।
मोच्छ–(हिं०पुं०) देखो मोक्ष।
मोछ–(हिं०स्त्री०) देखो मूंछ; देखो मोक्ष
मोजरा–(हिं०पुं०) देखो मुजरा।
मोट–(हिं० स्त्री०) गठरी मोटरी, चमड़े का बड़ा थैला जिसके द्वारा खेत सींचने के लिये कुवेंसे पानी निकाला जाता है, चरसा, (वि०) मोटा, साधारण, कम मूल्य का।
मोटक–(सं०नपुं०) श्राद्धादि कार्य में इसका प्रयोग किया जाता है यह तीन कुश में गांठ देकर बनाया जाता है।
मोटकी–(सं०स्त्री०) एक रागिणीका नाम
मोटन–(सं० नपुं०) पीसना, आक्षेप, वायु।
मोटनक–(स० नपुं०) एक वर्णवृत्त का नाम।
मोटरी–(हिं०स्त्री०) गठरी।
मोटा–(हिं० वि०) जिसकी शरीर में आवश्यकता से अधिक माँस हो, जिसका घेरा साधारण से अधिक हो, जो अच्छी तरह से पीसा न हो, दरदरा, बेडौल, भद्दा, अहंकारी, घमंडी, कठिन, भारी, घटिया, स्थूल शरीर का मनुष्य; मोटा असामी–धनवान्, मनष्य; मोटा भाग्य–सौभाग्यवान्; मोटी बात–सामान्य वार्ता; मोटा दिखाई देना–कम सूझना।
मोटाई–(हिं० स्त्री०) मोटा होने का भाव, स्थूलता, दृढ़ता। मोटाना–(हिं०क्रि०) स्थूलकाय होना, मोटा होना अमीर होना, अभिमानी होना, अहंकारी, होना, मोटा करना। मोटाई–(हिं०पु०) स्थूलता, मोटापन। मोटापा–(हिं० पुं०) मोटा होने का भाव, स्थूलता।
मोटिया–(हिं० पुं०) रूक्ष मोटा देशी कपड़ा, खद्दड़, बोझ ढोने वाला कुली,
मोट्टायित–(सं०नपुं०) स्त्रियों के स्वाभाविक दस प्रकार के अलंकारों में से एक अलंकार में वह भाव जिसमें नायिका अपने आन्तरिक

प्रेम को छिपाने का प्रयत्न करने पर भी छिपा नहीं सकती।

मोठ–(हिं०स्त्री०) मूंग की तरह का एक प्रकार का मोटा अन्न।

मोठस–(हिं०वि०) मौन, चुप।

मोड़–(हिं०स्त्री०) मार्ग में वह स्थान जहाँ से मुड़ा जाता है, घुमाव या मुड़ने का भाव, घुमाना। **मोड़ना**–(हिं०क्रि०) फेरना, लौटाना, किसी काम के करने में आगा-पीछा करना, विमुख होना, किसी फैली वस्तु की तह करना, धार भुथरी करना; **मुंह मोड़ना**–पराङ्मुख हो जाना।

मोड़ा–(हिं०पुं०) बालक, लड़का।

मोड़ी–(हिं०स्त्री०) घसीट लिखने की एक प्रकार की लिपि जिसमें प्रायः मराठी भाषा लिखी जाती है।

मोतियदाम–(हिं०पुं०) एक प्रकार का वर्णवृत्त।

मोतिया–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बेला (फूल) जिसकी कली मोती के समान गोल होती है, एक प्रकार का सलमा, (वि०) मोती संबधी, गोल छोटे दाने का।

मोतियाबिन्द–(हिं० पु०) आंख का एक रोग जिसमें उसके परदे में गोल झिल्ली सी पड़ जाती हैं जिसके कारण आँख से देख नहीं पड़ता।

मोती–(हिं० पुं०) एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में अथवा रेतीले तटों के पास सीपमें निकलता है मुक्ता, कसेरों का नक्काशी करने का एक अस्त्र, वह बाली जिसमें बड़े बड़े मोती पड़े रहते हैं; **मोती गरजना**–मोती का चिटक जाना; **मोतियों से मुंह भरना**–बहुत अधिक धन देना।

मोतीचूर–(हिं०पुं०) छोटी बूंदियों का लड्डू; एक प्रकार का धान, मल्ल-युद्ध की एक युक्ति। **मोतीझिरा**–(हिं० स्त्री०) छोटी शीतला का रोग, मोतिया माता। **मोतीबेल**–(हिं०स्त्री०) मोतियाबेल का फूल। **मोती भात**–(हिं०पुं०)एक विशेष प्रकार का भात **मोती सिरी**–(हिं०स्त्री०) मोतियों की कंठी या माला।

मोथा–(सं०पुं०) नागरमोथा नामक घास, इसकी जड़ औषधियों में प्रयोग होती है।

मोद–(सं० पुं०) हर्ष, आनन्द, सुगन्ध, एक वर्णवृत्त का नाम।

मोदक–(सं० पुं०) एक खाद्य पदार्थ, लड्डू, औषध आदि का बना हुआ लड्डू, एक वर्णवृत्त का नाम, (वि०) आनन्द देने वाला। **मोदकर**–(सं०वि०) आनन्द देने वाला। **मोदकार**–(सं०पुं०) मिठाई बनाने वाला, हलवाई।

मोदकी–सं० स्त्री०) चमेली के फूल का पौधा, (वि०) आनन्द देने वाली।

मोदन–(सं०नपुं०) हर्ष, आनन्द,सुगन्ध।

मोदना–(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, सुगन्ध फैलाना। **मोदनी**–(सं०स्त्री०) सफ़ेद जूही।

मोदनीय–(सं०वि०)आनन्द करने योग्य।

मोदाढ्या–(सं० स्त्री०) प्रसन्न रहने वाली स्त्री।

मोदित–(सं०वि०) आनन्दित, हर्ष युक्त, **मोदिनी**–(सं० स्त्री०) अजमोदा, जूही, कस्तूरी।

मोदी–(हिं० पुं०) आटा, चावल, दाल बेचने वाला बनिया; **मोदीखाना**–अन्नादि रखने का स्थान, गोदाम।

मोधुक–(सं० पुं०) मछली पकड़ने वाला धीवर।

मोघू–(हिं० वि०) मूर्ख, हतबुद्धि।

मोन–(हिं० पुं०) देखो मोना। **मोना**–(हिं०क्रि०) तर करना, भिगाना, (पुं०) बाँस मूंज आदि का ढपनेदार पिटारा **मोनिया**–(हिं० स्त्री०) छोटा मोना।

मोपला–(हिं०पुं०) मुसलमानों की एक जाति जो मद्रास प्रान्त में पाई जाती है।

मोमना–(हिं०वि०) बहुत कोमल।

मोमबत्ती–(हिं० स्त्री०) मोम या चरबी को सांचे में ढालकर बनाई हुई बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।

मोमी–(हिं०वि०) मोम के समान, मोम का बना हुआ।

मोयन–हिं० पुं०) माड़े हुए आटे में घी मिलाना, ऐसा करने से पकवान कोमल बनते हैं।

मोरंग–(हिं०पुं०) नेपाल का पूर्वी भाग।

मोर–(हिं० पुं०) एक सुन्दर बड़ा पक्षी, नीलम की आभा जो मोर के पर के समान होती है, सेना की अगली पंक्ति; (सर्व०) मेरा।

मोरचंग–देखो मुरचंग।

मोरचन्द–(हिं०पुं०) देखो मोरचन्द्रिका,

मोरचा–(फ़ा० पुं०) लोहे के ऊपरी तल पर चढ़ जाने वाली लाल तह जो वायु और तरी से उत्पन्न होती है, दर्पण पर जमी हुई मैल, वह गड्ढा जो गढ़ के चारो ओर रक्षा के लिये खोदकर बनाया जाता है, वह स्थान जहाँ से सेना, गढ़ या नगर की रक्षा करती है, वह स्थान जहाँ से शत्रु की सेना से लड़ाई की जाती है, वह सेना जो गढ़ में रहकर शत्रु से लड़ती है; **मोरचाबन्दी करना**–गढ़ के चारो ओर सेना नियुक्त करना; **मोरचा मारना**–शत्रु के गढ़ आदि पर अधिकार कर लेना; **मोरचा बाँधना**–मोरचा बन्दी करना; **मोरचा लेना**–युद्ध करना।

मोरछल–(हिं० पुं०) मोर की पूँछ के परों को इकट्ठा बाँध कर बना हुआ चँवर जो देवताओं तथा राजाओं के मस्तक पर डुलाया जाता है।

मोरछली–(हिं० पुं०) देखो मौलसिरी, (वि०) मोरछल हिलाने वाला।

मोरछांह–(हिं० पुं०) देखो मोरछल।

मोरझटका–(हिं० पुं०) एक प्रकार का सुवर्ण का आभूषण जिसमें रत्न जड़े होते हैं।

मोरट–(सं०नपुं०) ऊख की जड़, एक प्रकार की लता।

मोरन–(हिं०स्त्री० मोड़ने की क्रिया या भाव, श्रीखण्ड (सिखरन) नामक दही का बना हुआ खाद्य पदार्थ।

मोरना–हिं० क्रि०) देखो मोड़ना, दही को मथकर मक्खन निकालना।

मोरनी–(हिं०स्त्री०) मोर पक्षी की मादा, छोटा टिकड़ा जो नथ में पिरोया जाता है।

मोरपंख–(हिं०पुं०) मोर का पर।

मोरपंखी–(हिं०स्त्री०) वह नाव जिसका अगला भाग मोर की तरह बना और रँगा रहता है, मलखंम का एक व्यायाम,(पुं०)एक प्रकार का चमकीला गहरा नीला रंग,(वि०) गहरा चमकीला नीला। **मोरपंखा**–(हिं०पुं०) मोर का पर, मोर के पंख की बनी हुई कलंगी।

मोरमुकुट–(हिं०पुं०) मोर के पंख का बना हुआ मुकुट; **मोरवा**–(हिं०पुं०) देखो मोर, नाव की किलवारी में बांधने की रस्सी; **मोरशिखा**–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जड़ी जिसकी पत्तियां मोर की कलंगी के आकार की होती हैं।

मोरा–(हिं०सर्व०) मेरा, (पुं०) अकीक नामक रत्न का एक भेद।

मोराना–(हिं०क्रि०) चारो ओर घुमाना फिराना, ईख पेरने में ऊख की अंगारी को कोल्हू में दबाना।

मोरिया–(हिं०स्त्री०) कोल्हू की कतरी की बांस की शाखा।

मोरी–(हिं०स्त्री०) मैला पानी बहने की नाली, परनाली, मोहरी; क्षत्रियों की एक जाति।

मोर्चा–(हिं०पुं०) देखो मोरचा।

मोल–(हिं०पुं०) मूल्य, दाम; **मोल करना**–व्यापारी का किसी वस्तु का दाम बढा कर कहना; **मोलचाल**–किसी वस्तु का दाम घटा बढा कर सौदा तय करना।

मोलना–(हिं०पुं०) मौलाना, मौलवी।

मोलाना–(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का दाम पूछना अथवा मूल्य स्थिर करना

मोवना–(हिं०क्रि०) देखो मोना।

मोष–(सं०पुं०) चोरी, लूट, ठगी; (हिं०पुं०) देखो मोक्ष; **मोषक**–(सं०पुं०) तस्कर, चोर; **मोषण**–(सं०नपुं०) लूटना, चोरी करना, वध करना।

मोह–(सं०पुं०) अविद्या, मूर्छा, अज्ञान, दुःख, कष्ट, भ्रान्ति, प्रेम, साहित्य के ३३ संचारी भावों में से एक भाव, चित्त की वह विकलता जो भय, दुःख, चिन्ता आदि से उत्पन्न होती है; **मोहक**–(सं०वि०) मोह उत्पन्न करने वाला, मनको आकर्षण करने या लुभाने वाला।

मोहकर–(हिं०पुं०) घड़े का मोहड़ा।

मोहटा–(सं०पुं०) दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

मोहड़ा–(हिं०पुं०) किसी पात्र का मुख या खुला भाग, किसी वस्तु का अगला या ऊपरी भाग, मुंह, मुख।

मोहजनक–(सं० वि०) मोह उत्पन्न करने वाला।

मोहताजी–(हिं०स्त्री०) धनहीनता।

मोहन–(सं०पुं०) धतूरे का पौधा, मोह लेने वाला व्यक्ति, जिसको देखकर मन लुभा जावे श्री कृष्ण, एक प्रकार का वर्णवृत्त, एक प्रकार का तान्त्रिक प्रयोग जिससे किसी को मूर्छित करते हैं, शत्रु को मूर्छित करने का एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, कोल्हू में का वह स्थान जहां पर दबाने के लिये ऊख लगाई जाती है, बारह मात्राओं का एक ताल, कामदेव के पांच बाणों में से एक, (हिं०वि०) मोह उत्पन्न करने वाला;

मोहनभोग–(सं०पुं०) एक प्रकार का हलुआ, एक प्रकार का केला, एक प्रकार का आम; **मोहनमाला**–(सं०स्त्री०) सोने के दानों की बनी हुई माला।

मोहना–(सं०स्त्री०) एक प्रकार की चमेली, (हिं०क्रि०) किसी पर अनुरक्त होना या रीझना, मूर्छित होना, मोहित करना, लुभाना, धोखा देना, भ्रम में डालना।

मोहनास्त्री–(सं०पुं०) प्राचीन काल का शत्रु को मूर्छित करने का एक अस्त्र।

मोहनिद्रा–(सं०स्त्री०) मोह रूपी निद्रा।

मोहनी–(सं० स्त्री०) पोई का साग, वट पत्री, पथरफोड़, माया, वैशाख सुदी एकादशी, एक प्रकार का लंबा कीड़ा, वह स्त्री का रूप जो भगवान् ने समुद्र मथन के बाद अमृत बाँटते समय धारण किया था, एक वर्णवृत्त का नाम, वशीकरण का मंत्र, (वि०) चित्त को लुभाने वाली; **मोहनी डालना**–अपने वश में कर लेना; **मोहनी लगाना**–वश में करना;

मोहनीय–(सं०वि०)मोहित करने योग्य

मोहफिल–(हिं०स्त्री०) देखो महफ़िल।

मोहब्बत–(हिं०स्त्री०) प्रेम।

मोहमन्द–(सं०पुं०) मोह उत्पन्न करने का मन्त्र।

मोहयिता–(सं०वि०) मोहकारक।

मोहरा–(हिं०पुं०) किसी पात्र का मुख या खुला हुआ भाग, सेना की अगली पंक्ति जो चढाई करती है, सेना की गति, किसी पदार्थ का उपरी या अगला भाग, एक प्रकार की जाली जो बैल के मुंह में बाँधी जाती है, चोली आदि का बन्द, कोई छेद जिसमें से कोई वस्तु निकले।

मोहरात्रि–(सं०स्त्री०) वह प्रलय जो

ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है, जन्माष्टमी की रात्रि।
मोहरी–(हिं०स्त्री०) किसी पात्र का छोटा मुख अथवा खुला भाग, पायजामे का वह भाग जिसमें टांगें रहती हैं, एक प्रकार की मधुमक्खी; देखो मोरी।
मोहल्ला–(हिं० पुं०) देखो महल्ला।
मोहशास्त्र–(सं०नपुं०) अविद्याजनकग्रन्थ।
मोहार–(हिं०पुं०) द्वार, मोहड़ा, अगला भाग, मधुमक्खी का छत्ता, भौंरा।
मोहारनी–(हिं० स्त्री०) पाठशाले में बालकों का एक साथ खड़े होकर पहाड़े पढ़ना।
मोंहि–(हिं० सर्व०) मुझे, मुझको।
मोहित–(सं० वि०) मुग्ध, भ्रम में पड़ा हुआ, आसक्त, मोहा हुआ।
मोहिनी–(सं०वि०) मोहने वाली, (स्त्री०) बेले का फूल, पत्थरफोड़, विष्णु के एक अवतार का नाम, जादू, माया, वैशाख शुक्ल एकादशी का नाम, एक अर्धसम वृत्ति का नाम, पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मोही–(हिं० वि०) मोहित करने वाला, प्रेम करने वाला, अज्ञानी, भ्रम या अविद्या में पड़ा हुआ, लोभी, लालची।
मोहक–(सं० वि०) मोह करने वाला।
मोहेला–(हिं० पुं०) एक प्रकार का चलता गाना।
मोहेली–(हिं०स्त्री०) एकप्रकारकीमछली।
मोहोपमा–(सं० स्त्री०) उपमा अलंकार का एक भेद।
मौंग्री–(हिं० स्त्री०) मौन, चुप।
मौक्तिक–(सं० नपुं०) मुक्ता, मोती। **मौक्तिकतण्डुल**–(सं०पुं०) बड़ी ज्वार।
मौक्तिकदाम–(सं० पुं०) एक वर्णिक वृत्त का नाम। **मौक्तिकमाला**–(सं० स्त्री०) एक वर्णिकवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं। **मौक्तिकशुक्ति**–(सं० स्त्री०) मोती की सीप। **मौक्तिकवलि**–(सं०पुं०) मोती की माला।
मौख–(सं०नपुं०) वह पाप जो अभक्ष्य भक्षण से होता है, एक प्रकार का मसाला, (वि०) मुख सम्बन्धी।
मौखर–(सं० नपुं०) बहुत बढ़ बढ़कर बातें करना।
मौखरी–(सं० पु०) उत्तर भारत का प्राचीन राजवंश।
मौखर्य–(सं० नपुं०) बहुत अधिक बढ़ बढ़ कर बोलना।
मौखिक–(सं०वि०) मुखसम्बन्धी, मुखका।
मौख्य–(सं० नपुं०) प्रधानता।
मौगा–(हिं०) निर्बुद्धि, हिजड़ा।
मौगी–(हिं० स्त्री०) स्त्री।
मौजी–(हिं० वि०) मनमाना काम करने वाला, आनन्दी, सर्वदा प्रसन्न रहने वाला, जो जी में आवे वही करनेवाला।
मौजू–(फ़ा०वि०) उपयुक्त।
मौञ्ज–(सं०वि०) मूंज का बना हुआ।
मौञ्जी–(हिं० वि०) मूंज की बनी हुई मेखला। **मौञ्जिबन्धन**–(सं० पुं०) यज्ञोपवीत संस्कार।
मौड़ा–(हिं० पुं०) देखो मौंड़ा।
मौदक–(सं० वि०) मोदक सम्बन्धी।
मौद्गल–(सं० पुं०) मुद्गल ऋषि के गोत्र में उत्पन्न।
मौद्गलि–(स० पुं०) काक, कौवा।
मौन–(सं० नपुं०) न बोलने की क्रिया या भाव चुप्पी, मुनियों का एक व्रत, फाल्गुन महीने का पहला पक्ष, (वि०) चुप, जो न बोले, (हिं० पुं०) मूंज का बना पिटारा, डब्बा, पात्र; **मौन ग्रहण करना**–चुप रहना, न बोलना; **मौन तजना**–बोलने लगना, मृत्यु त्यागना; **मौन साधना**–गूंगा बन जाना;
मौनव्रत–चुप रहने का व्रत।
मौनता–(सं० स्त्री०) चुप रहने का व्रत।
मौना–(हिं० पुं०) घी या तेल रखने का पात्र, मूंज की बनी हुई पिटारी।
मौनी–(हिं० वि०) मौन व्रत धारण करने वाला, चुप रहने वाला।
मौनित्व–(सं० नपुं०) मौनी का भाव, मौन।
मौर–(हिं० पु०) ताड़पत्र या खुखड़ी का बना हुआ एक प्रकार का शिरोभूषण जो विवाह के समय पहराया जाता है, शिरोमणि, प्रधान, सरदार, गरदन का पिछला भाग, मंजरी बौर।
मौरना–(हिं० क्रि०) वृक्षों पर मंजरी लगना, देखो बौरना।
मौरसिरी–(हिं०स्त्री०) देखो मौलसिरी।
मौरी–(हिं० स्त्री०) वधू के सिर पर रखने का छोटा मोर।
मौर्ख्य–(सं० नपुं०) मूर्खता का भाव, बेवकूफी।
मौर्य–(स० पुं०) मुरा का अपत्य. चन्द्रगुप्त; भारत का एक क्षत्रिय प्राचीन राजवंश।
मौलेसिरी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसमें छोटे छोटे सुगन्धित फूल होते हैं।
मौलि–(सं०पुं०) मस्तक, सिर, किरीट, जूड़ा, प्रधान व्यक्ति, सरदार, भूमि, अशोक वृक्ष; **मौलिक**–मूल सम्बन्धी; **मौलिमण्डन**–एक प्रकार का शिरोभूषण।
मौल्य–(सं० वि०) मूल्य सम्बन्धी।
मौसा–(हिं० पुं०) माता की बहिन का पति।
मौसियाउत, मौसियायत–(हिं० वि०) मौसेरा।
मौसी–(हिं०स्त्री०) माताकी बहिन, मौसी।
मौसेरा–(हिं०वि०) मौसीके सम्बन्ध का।
मौहूर्त–(सं० वि०) मुहूर्त सम्बन्धी।
म्यांव–(हिं० स्त्री०) बिल्ली की बोली। **म्यांव म्यांव करना**–डरकर धीमी बोली बोलना।
म्यान–(हिं०पुं०) तलवार कटार आदि के फल को सुरक्षित रखने का खोली।
म्याना–(हिं० क्रि०) म्यान में रखना।
म्यों–(हिं० स्त्री०) बिल्ली की बोली।
म्योंड़ी–(हिं० स्त्री०) एक सदाबहार वृक्ष, निर्गुण्डी।
म्रजाद–(हिं० स्त्री०) मर्यादा।
म्त्रा मंत्रण, म्त्री–देखो मन्त्र, मन्त्रणा, यन्त्री।
म्रियमाण–(सं०वि०) मृतकल्प, मृतप्राय।
म्लान–(सं० वि०) कुम्हलाया हुआ, मलिन, दुर्बल, (पुं०) ग्लानि, शोक।
म्लानता–मलिनता।
म्लिष्ट–(सं०वि०) जोस्पष्टनबोलताहो।
म्लेच्छ–(सं०पुं०) वर्णाश्रम हीन जाति, (वि०) पामर, नीच, सर्वदा पाप करनेवाला; **म्लेच्छकन्द**–लहसुन।
म्हा–(हिं० सर्व०) देखो मुझ।
म्हारा–(हिं० सर्व०) हमारा।

य

य–हिन्दी वर्णमाला का छब्बीसवां अक्षर इसका उच्चारण स्थान तालू है, यह स्पर्श वर्ण और ऊष्म वर्ण के बीच का वर्ण है इसलिये इसको अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं।
य–(सं० पुं०) यश, योग, यान, सवारी, संयम, सारथी, प्रकाश, त्याग, जव; छन्द शास्त्र में यगण का संक्षिप्तरूप।
यकअंगी–(हिं० वि०) एक अंग वाला, एक ही के आश्रित; देखो एकाङ्गी।
यकन्–(सं० पुं०) देखो यकृत्।
यकार–(सं० नपुं०) 'य' स्वरूप वर्ण।
यकृत्–(सं० स्त्री०) पेट की दाहिनी ओर की एक थैली जिसमें पाचन रस रहता है और जिसकी क्रिया से भोजन पचता है, जिगर, वह रोग जिसमें यकृत फूल जाता है तथा बढ़ जाता है।
यकृदात्मिका–(सं० स्त्री०) झींगुर।
यकोला–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मझोले आकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और पुष्ट होती है।
यक्ष–(सं० पुं०) देवयोनि विशेष, कुबेर का अनुचर, धनरक्षक। **यक्षकर्दम**–(सं० पुं०) एक प्रकार का अंग लेप। **यक्षण**–(सं० नपुं०) भोजन करना, पूजन करना। **यक्षतरु**–(सं० नपुं०) बर का पेड़। **यक्षता**–(सं० स्त्री०) यक्ष का भाव या धर्म। **यक्षत्व**–(सं० पुं०) यक्ष का भाव या धर्म। **यक्षनायक**–(सं० पु०) यक्षों के स्वामी, कुबेर। **यक्षप**–(सं० पुं०) देखो यक्षपति। **यक्षपति**–(स० पुं०) कुबेर। **यक्षपुर**–(सं० पुं०) अलकापुरी। **यक्षभृत्**–(सं० वि०) जिसकी पूजा की गई हो। **यक्षरस**–(सं० पुं०) फूलों से बनाई हुई मदिरा। **यक्षराज**–सं० पुं०) यक्षों के राजा कुबेर। **यक्षरात्रि**–(सं० स्त्री०) कार्तिक की पूर्णिमा। **यक्षलोक**–(सं० पुं०) वह लोक जिसमें यक्षों का वास माना जाता है। **यक्षवित्त**–(सं० वि०) जो धन का व्यय न करे, कृपण, कंजूस, (नपुं०) यक्ष का धन। **यक्षसाधन**–(सं० नपुं०) यक्ष की उपासना। **यक्षाधिप, यक्षाधिपति**–(सं० पुं०) यज्ञपति, कुबेर। **यक्षामलक**–(सं० नपुं०) पिण्डखजूर। **यक्षावास**–(सं०पुं०) बरगद का वृक्ष। **यक्षिणी**–(सं० स्त्री०) यक्ष की पत्नी कुबेर की स्त्री, दुर्गाकीएक अनुचरी। **यक्षी**–(सं०स्त्री०) यक्षकीपत्नी, (पुं०) वह जो यक्ष की उपासना करता हो या उसको साधता हो। **यक्षेन्द्र, यक्षेश्वर**–(स० पुं०) यक्षों के स्वामी. कुबेर।
यक्ष्म–सं०पु०) क्षय नामक रोग।
यक्ष्मा–(सं०पु०) क्षय नामक रोग।
यगण–(सं०पुं०) छन्द शास्त्र के आठ गणों में से एक जिसमें पहिला वर्ण लघु तथा बाद के दो वर्ण गुरु होते है।
यगूर–(हिं०पुं०) एक प्रकारका बहुत ऊंचा पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी काले रंग की होती है।
यग्य–(हिं०पुं०) देखो यज्ञ। **यच्छ**–(हिं० पुं०) देखो यक्ष।
यच्छत्–(सं०वि०) दान देने वाला, चित्त हटाने वाला।
यच्छिनी–(हिं०स्त्री०) देखो यक्षिणी।
यज–(सं०पुं०) यज्ञ, अग्नि।
यजत–(सं०पुं०) ऋत्विक्
यजति–(सं० पुं०) यज्ञ, याग।
यजत्र–(सं० पु०) यज्ञ करने वाला, अग्निहोत्री।
यजन–स०नपुं०) यज्ञ करना। **यजनकर्ता**–(सं० पुं०) हवन अथवा यज्ञ करने वाला। **यजनीय**–(स० वि०) यजन करने योग्य।
यजमान–(स०पु०) वह जो यज्ञ करता हो, ब्राह्मणों को दान देने वाला, शिव की आठ मूर्तियों में से एक मूर्ति। **यजमानत्व**–(सं०नपुं०) यजमान का भाव या धर्म। **यजमानी**–(हिं० स्त्री०) यजमान का भाव या धर्म,

पुरोहित की वृत्ति, वह स्थान जहाँ किसी विशेष पुरोहित के यजमान रहते हों ।
यजाक–स०वि०) दान देने वाला ।
यजिष्णु–(सं०वि०) यज्ञ करने वाला ।
यजु–(हिं०पुं०) देखो यजुस्, यजुर्वेद ।
यजुर्वेद–(सं०पुं०) चार प्रसिद्ध वेदों में से एक जिसमें विशेष करके यज्ञ कर्म का विस्तृत वर्णन है । यजुर्वेदी–(हिं०वि०) यजुर्वेद का जानने वाला, यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करने वाला । यजुश्रुति–(सं०पुं०) यजुर्वेद । यजुष्पति–(सं०पुं०) विष्णु । यजुष्य–(सं०त्रि०)यज्ञ संबंधी । यजुस्–(सं०नपुं०) यजुर्वेद ।
यज्ञ–(सं० पुं०) याग इष्टि, मख, वह वैदिक कार्य जिसमें सभी देवताओं का पूजन तथा घृतादि द्वारा हवन होता है । यज्ञक, यज्ञकर्ता–(सं०पुं०) यज्ञ करने वाला । यज्ञकल्प–(सं०पुं०) विष्णु । यज्ञकाम–(सं०वि०) यज्ञ की इच्छा करने वाला । यज्ञकाल–(सं० पुं०) पौर्णमासी, पूर्णिमा । यज्ञकीलक–(सं०पुं०) लकड़ी का वह खूंटा जिसमें यज्ञ के लिये बलि दिया जाने वाला पशु बांधा जाता है । यज्ञकुण्ड–(सं० नपुं०)वह कुण्ड या वेदी जिसमें हवन किया जाता है । यज्ञकृत्–(सं०त्रि०) यज्ञ करने वाला । यज्ञकेतु–(सं०पुं०) एक राक्षस का नाम । यज्ञक्रतु–(सं० पुं०) संपूर्ण याग, विष्णु । यज्ञक्रिया–(सं०स्त्री०) यज्ञ के काम, कर्मकाण्ड । यज्ञगिरि–(सं०पुं०) पुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम । यज्ञगुप्त–(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध जैन का नाम । यज्ञघ्न–(सं०त्रि०) यज्ञ का नाश करने वाला, राक्षस । यज्ञछाग–(सं०पुं०)यज्ञ में बलि देने का बकरा । यज्ञत्राता–(सं०पुं०)यज्ञ की रक्षा करने वाले विष्णु । यज्ञदक्षिणा–(सं०स्त्री०) वह दक्षिणा जो यज्ञ समाप्त हो जाने पर यज्ञ कराने वाले पुरोहित को दी जाती है । यज्ञदीक्षा–(सं० स्त्री०) यज्ञ विषयक दीक्षा । यज्ञधर–(सं०पुं०) विष्णु । यज्ञधूप–(सं० पुं०) धूना का वृक्ष । यज्ञनेमि–(सं०पुं०)श्रीकृष्ण । यज्ञपति–(सं०पुं०)यज्ञमान, वह जो यज्ञ करता हो, विष्णु । यज्ञपत्नी–(सं०स्त्री०) यज्ञ की पत्नी, दक्षिणा । यज्ञपथ–(सं०पुं०) यज्ञ की प्रणाली । यज्ञपशु–सं०पुं०) वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय, बकरा, घोड़ा । यज्ञपात्र–(सं०नपुं०) काठ के बने हुए पात्र जो यज्ञ में काम आते हैं । यज्ञपादप–(सं०पुं०)कंटकी नामक वृक्ष । यज्ञपाल–(सं०पुं०)यज्ञ का संरक्षक । यज्ञपुच्छ–(सं०नपुं०) यज्ञ का शेष । यज्ञपुरुष–(सं० पुं०) यज्ञरूपी पुरुष, विष्णु । यज्ञफलद–(सं०पुं०) विष्णु । यज्ञबन्धु–(सं० पुं०) यज्ञ कर्म के सहकारी ।

यज्ञबाहु–(सं०पुं०)अग्नि का एक नाम; यज्ञभाग–(सं० पुं०) यज्ञ का अंश जो देवताओं को दिया जाता है, देवता जिनको यज्ञ का भाग मिलता है । यज्ञभाजन, यज्ञभाण्ड–(सं०नपुं०) यज्ञपात्र । यज्ञभावन–सं०पुं०) विष्णु । यज्ञभूमि–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर यज्ञ होता है, यज्ञ स्थान । यज्ञभूषण–(सं० पुं०) कुश । यज्ञभृत, यज्ञभोक्ता–(सं०पुं०) विष्णु । यज्ञमण्डप (सं० पुं०) यज्ञ करने के लिये जो मण्डप बनाया गया हो, यज्ञवेदी । यज्ञमण्डल–(सं०नपुं०) वह स्थान जो यज्ञ करने के लिये घेरा गया हो । यज्ञमन्दिर–(सं० पुं०) यज्ञशाला । यज्ञमय–(सं०पुं०) यज्ञस्वरूप, विष्णु । यज्ञमहोत्सव–(सं०पुं०) यज्ञ के निमित्त कोई बड़ा उत्सव । यज्ञमित्र–(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध जैन साधु का नाम । यज्ञमुख–(सं०नपुं०) यज्ञ का आरम्भ । यज्ञमेनि–(सं०नपुं०) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र । यज्ञयूप–(सं०पुं०) वह खंभा जिसमें यज्ञ का बलि पशु बांधा जाता है । यज्ञयोग–(सं०पुं०) गूलर का पेड़ । यज्ञरस–(सं०पुं०) सोम । यज्ञराज–(सं०पुं०)चन्द्रमा । यज्ञलिंग–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण का एक नाम । यज्ञवर्धन–(सं० वि०) यज्ञ को बढ़ाने वाला । यज्ञवराह–(सं०पुं०)विष्णु । यज्ञवल्क–(सं०पुं०) याज्ञवल्क्य के पिता । यज्ञवल्ली–(सं०स्त्री०)सोमलता । यज्ञवाट–(सं०पुं०) यज्ञशाला । यज्ञवाहन–(सं० पुं०)शिव, विष्णु, ब्राह्मण । यज्ञवाही–(सं०वि०) यज्ञ का काम करने वाला; यज्ञवीर्य–(सं०पुं०) विष्णु । यज्ञवृक्ष–(सं०पुं०) कण्टकी का पेड़ । यज्ञव्रत–(सं०स्त्री०)यज्ञ करने वाला । यज्ञशत्रु–(सं०पुं०)राक्षस । यज्ञशाला–(सं०स्त्री०) यज्ञगृह, यज्ञ करने का स्थान । यज्ञशास्त्र–(सं०नपुं०) वह शास्त्र जिसमें यज्ञों और उनके कृत्यों का विवेचन रहता है । यज्ञशील–(सं० वि०) यज्ञ करने वाला । यज्ञशेष–(सं० पुं०) यज्ञ का अवशिष्ट या शेष भाग । यज्ञश्री–(सं०स्त्री०) यज्ञ का धन । यज्ञश्रेष्ठा–(सं०स्त्री०) सोमलता । यज्ञसंस्तर–(सं०पुं०) यज्ञभूमि, सफेद कुशा । यज्ञसंस्था–(सं०स्त्री०)यज्ञ का आकार । यज्ञसदन–(सं०नपुं०) यज्ञ स्थान । यज्ञसाधन–(सं०वि०) यज्ञ की रक्षा करने वाला (पुं०) विष्णु । यज्ञसाधनी–(सं० स्त्री०) सोमलता । यज्ञसार–(सं०पुं०) गूलर का पेड़ । यज्ञसिद्धि–(सं०स्त्री०) यज्ञ की समाप्ति । यज्ञसूत्र–(सं०नपुं०) यज्ञोपवीत, जनेऊ । यज्ञसेन–(सं०पुं०) विदर्भ के एक राजा का नाम । यज्ञस्तम्भ, यज्ञस्थाणु–(सं०पुं०) देखो यज्ञ यूप । यज्ञस्थाणु–(सं०पुं०) वह खंभा जिसमें यज्ञ में बलि देने का पशु बांधा जाता है । यज्ञस्थान–(सं०नपुं०) वह स्थान जहां पर यज्ञ किया जाता है । यज्ञहन्–(सं०वि०) यज्ञ में विघ्न करने वाला राक्षस । यज्ञहृदय–(सं० पुं०) विष्णु । यज्ञहोता–(सं०पुं०) यज्ञ में देवताओं का आवाहन करने वाला ।
यज्ञांश–(सं०पुं०)यज्ञ का अंश या भाग; यज्ञांशभुज्–(सं०पुं०) देवता गण ।
यज्ञागार–(सं०पुं०) यज्ञशाला ।
यज्ञाङ्ग–(सं० पुं०) खैर का वृक्ष, गूलर का पेड़, यज्ञ का अवयव या अंग ।
यज्ञाङ्गा–(सं०स्त्री०)सोमलता। यज्ञात्मा–(सं०पुं०)विष्णु । यज्ञाधिपति–(सं०पुं०) यज्ञ के स्वामि विष्णु ।
यज्ञारि–(सं०पुं०)शिव, राक्षस । यज्ञार्थ–(सं०अव्य०)यज्ञ के निमित्त । यज्ञाशन–(सं०पुं०) देवता । यज्ञेश्वर–(सं०पुं०) यज्ञेश, विष्णु । यज्ञोपकरण–(सं०नपुं०) वह वस्तु जो यज्ञके काम में आती है;
यज्ञोपवीत–(सं०नपुं०)ब्रह्मसूत्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य का एक संस्करण, उपनयन,व्रतबन्ध, जनेउ । यज्ञोपासक (सं०पुं०) वह जो यज्ञ करता हो ।
यज्य–(सं०वि०) यजन करने योग्य ।
यज्वा–(सं०पुं०) यज्ञ करने वाला ।
यडर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी ।
यत–(सं० वि०) शासित दमन किया हुआ । यतन–(हिं०पुं०) देखो यत्न ।
यतनीय–(सं०वि०) यत्न करने योग्य ।
यतमान–(सं०वि०)यत्न करता हुआ ।
यतव्य–(सं०वि०)प्रयत्न करने वाला ।
यतव्रत–(सं०त्रि०) बड़े संयम से रहने वाला । यतात्मन्–संयमी ।
यति–(सं० पुं०) भिक्षुक, सन्यासी, योगी, ब्रह्मचारी, त्यागी; जिसने कर्म का त्याग किया है, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, छप्पय छन्द का एक भेद, (स्त्री०) पढ़ते पढ़ते जहाँ पर विश्राम किया जाता है, विरति, विराम, यमन, प्रतिबन्ध । यतित्व–(सं०नपुं०) यति का कर्म या भाव ।
यतिधर्म–(सं०पुं०) सन्यास । यतिनी–(सं०स्त्री०) सन्यासिनी, विधवा ।
यतिभंग–(सं०पुं०) काव्य का वह दोष जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर आगे पीछे पड़ती है जिसमें पढ़ने से छन्द का लय बिगड़ जाता हैं । यतिभ्रष्ट–(सं० पुं०) यतिभङ्ग दोष से युक्त छन्द ।
यतिसन्तापन–(सं०नपुं०) एक प्रकार का चान्द्रायण व्रत ।
यती–(सं०स्त्री०)देखो यति; जितेन्द्रिय ।
यतुका–(सं०स्त्री०) चकवड़ का पौधा ।
यतोद्भव–(सं० वि०) जिससे उत्पन्न ।
यत्किञ्चित्–(सं० वि०) थोड़ा सा, बहुत कम ।
यत्न–(सं०पुं०) रूप आदि चौबीस गुणों के अन्तर्गत एक गुण, उद्योग, उपाय, उपचार, रोग शान्ति का उपाय ।
यत्नवान्–(सं०वि०)यत्न करने वाला;
यत्नाक्षेप–(सं०पुं०) अलंकार शास्त्रोक्त आक्षेप का एक भेद ।
यत्र–(सं० क्रि० वि०) जहां, जिस जगह ।
यत्रतत्र–(सं०अव्य०) जहाँ तहाँ, किसी स्थानों मे । यत्रस्थ–(सं०वि०) जहाँ तहाँ रहने वाला । यथर्थ–(सं०अव्य०) यथा समय । यथा–(सं० अव्य०) जैसे ज्यों । यथाकर्तव्य–(सं०वि०) कर्तव्य के अनुरूप, जैसा करना चाहिये ।
यथाकर्म–(सं०अव्य०)कर्म के अनुसार ।
यथाकल्प–(सं०अव्य०)शास्त्र के अनुसार
यथाकाम–(सं०त्रि०) इच्छानुसार ।
यथाकामी–(सं०वि०) स्वेच्छाचारी ।
यथाकाम्य–(सं० नपुं०) यथेष्ट ।
यथाकार–(सं० अव्य०) जिस प्रकार से । यथाकाय–(सं०अव्य०)आकृति के समान । यथाकार्य–(सं०त्रि०) जैसा करने योग्य । यथाकाल–(सं० पुं०) उपयुक्त समय में । यथाकुल–(सं०अव्य०) कुलधर्म के अनुसार ।
यथाकुलधर्म–(सं०अव्य०) जिस कुल का जैसा नियम हो उसी के अनुसार ।
यथा कृत–(सं०अव्य०) रीति के अनुसार । यथाक्रम–(सं०अव्य०) क्रमानुसार, क्रमशः । यथाक्षम–(सं०अव्य०) यथाशक्ति । यथाख्यान–(सं०अव्य०) आख्यान या कथा के अनुसार ।
यथागत–(सं०त्रि०) जैसा आया है वैसा । यथागम–(सं०अव्य०) शास्त्र के अनुरूप । यथागात्र–(सं०अव्य०) देह देह में, प्रत्येक शरीर में ।
यथागुण–(सं०अव्य०) गुण के अनुरूप । यथागृह–(सं०अव्य०) घर के समान । यथाग्नि–(सं०अव्य०) अग्नि के सदृश्य । यथाचर–(सं०अव्य०) रीति के अनुसार । यथाचारी–(सं० त्रि०) पूर्व आचार के अनुसार चलने वाला । यथाचिन्तित–(सं०वि०) चिन्तानुसार । यथाजात–(सं०वि०) मूर्ख, नीच । यथाजाति–(सं०अव्य०) जाति के अनुसार ।
यथाज्ञप्त–(सं०वि०) जैसी आज्ञा दिया गया हो । यथाज्ञान–(सं०अव्य०) ज्ञान के अनुसार । यथातत्व–(सं०अव्य०) यथार्थ । यथातथ–(सं०अव्य०) यथार्थ, उचित । यथातथ्य–(सं० अव्य०) जैसे का तैसा, ज्यों का त्यों ।
यथात्मक–(सं०वि०) प्रकृति के अनुसार;
यथादत्त–(सं०वि०) जैसा दिया गया हो । यथादर्शन–(सं०अव्य) देखने के के अनुसार । यथादिष्ट–(सं० वि०) जैसा कहा गया हो । यथादीक्षा–(सं०अव्य०) दीक्षा के अनुसार ।
यथादृष्ट–(सं०अव्य) जैसा देखा गया हो । यथाधर्म–(सं० अव्य०) धर्म के अनुसार । यथानियम–(सं०अव्य०) नियमानुसार । यथान्याय–(सं०अव्य०) यथोचित, न्याय के अनुसार;

यथापराध–(सं०अव्य०) अपराध के अनुसार। **यथाप्रतिष्ट**–(सं०वि०) जैसी आज्ञा दी गई हो। **यथाप्रदेश**–(सं० अव्य०) उपदेश, के अनुसार, ठीक ठीक तरह से। **यथापूर्व**–(सं० अव्य०) पहिले के समान, ज्यों का त्यों। **यथाप्राण**–सं०अव्य०) शक्ति के अनुसार। **यथाप्रार्थित**–(सं०अव्य०)जैसी प्रार्थना की गई हो। **यथाप्रीति**–(सं०अव्य०) प्रेम के अनुसार। **यथाबल**–(सं०अव्य०)यथाशक्ति, बल के अनुसार।
यथाबुद्धि–(सं०अव्य०)बुद्धि के अनुसार।
यथाभक्ति–(सं० अव्य०) भक्ति के अनुसार। **यथाभक्षित**–(स० वि०) जिस तरह खाया गया हो। **यथाभाग**–(सं०अव्य०) यथोचित। **यथाभाजन**–(सं०अव्य०)पात्र के समान यथाभिकाम–(सं०अव्य०) रुचि के अनुसार।
यथाभिरुचि–(सं०अव्य०) इच्छानुसार।
यथाभिलिखित–(सं०अव्य०) लिखे के अनुसार। **यथाभिलषित**–(सं०वि०) इच्छानुसार। **यथामति**–(स०अव्य०) बुद्धि के अनुसार। **यथामुख्य**–(सं० अव्य०) प्रधानता से। **यथाम्नाय**–(सं०अव्य०) वेदों के अनुसार। **यथायथ**–(सं०अव्य०) तुल्य, समान। **यथायुक्ति**–(सं० अव्य०) युक्ति के अनुसार।
यथायुक्त–(सं०अव्य०) यथोचित।
यथायोग्य–(सं०अव्य०) योग्यतानुसार।
यथारम्भ–(सं०अव्य) जिस प्रकार आरंभ किया गया हो। **यथारुचि**–(सं०अव्य०) रुचि के अनुसार।
यथारूप–(सं०अव्य) रूप के समान।
यथार्थ–(सं०अव्य०) यथारूप, ठीक जैसा होना चाहिये वैसा, जैसा का तैसा, ठीक। **यथार्थता**–(सं० स्त्री०) यथार्थ होने का भाव, सत्यता।
यथार्हण–(सं०अव्य०) योग्यतानुसार।
यथालब्ध–(सं०वि०) जितना प्राप्त हो सके उसके अनुसार। **यथालाभ**–(सं०वि०)जो कुछ मिले उसके अनुसार।
यथावकाश–(सं०अव्य०) अवकाश के अनुसार। **यथावत्**–(सं०अव्य०)पूर्ववत्, जैसे का तैसा, जैसा चाहिये वैसा, अच्छी तरह से। **यथावस्थित**–(सं०अव्य०) सत्य, ठीक, स्थिर। **यथाविध**–(सं० अव्य०) जिस प्रकार से। **यथाविधि**–(सं०अव्य०) विधिपूर्वक। **यथाविहित**–(सं०अव्य०) विधि के अनुसार।
यथाशक्य–(स०अव्य०) सामर्थ्य भर।
यथाशक्ति–(सं०अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार, जितना हो सके।
यथाशास्त्र,यथाश्रुत–(सं० अव्य०) शास्त्र के अनुसार। **यथाश्रय**–(सं० अव्य०) आश्रय स्थान के अनुरूप।
यथाश्रुत–(सं०वि०) शास्त्र के अनुकूल।
यथाश्रुति–(सं०अव्य०) श्रुति के अनकूल।
यथासंदिष्ट–(सं०अव्य०) जैसा कहा गया हो। **यथासंपद**–(सं० अव्य०) शक्ति के अनुसार, **यथासंहित**–(सं० अव्य०) संहिता के अनुसार।
यथासंकल्पित–(सं० वि०) जैसा मन में दृढ़ किया गया हो। **यथासंख्य**–(सं०अव्य०) मित्रता भाव से।
यथासन्धि–(सं०अव्य०) ठीक स्थान पर। **यथासमय**–(स०अव्य०) समय के अनुसार, जैसा समय हो वैसा। **यथासम्भव**–(स० अव्य०) जहां तक हो सके। **यथासाध्य**–(स०अव्य०) यथाशक्ति, **यथास्तुत**–(सं०अव्य) जैसी स्तुति की गई हो।
यथास्थान–(सं०अव्य०)ठीक स्थान पर।
यथास्थित–(सं०अव्य०) सत्य।
यथास्मृति–(सं०अव्य०)स्मृति के प्रमाण के अनुसार। **यथास्व**–(स० अव्य०) इच्छानुसार। **यथास्वैर**–(सं० अव्य०) चित्त के अनुसार। **यथाहार**–(सं० अव्य०) भोजन के अनुसार।
यथेच्छ–(स०अव्य) इच्छानुसार, मनमाना। **यथेच्छक**–(सं०वि०) मनमाना काम करने वाला। **यथेच्छाचार**–(सं०पुं०) उचित अनुचित का ध्यान न करके इच्छानुसार करना।
यथेच्छा–(स० स्त्री०) इच्छानुसार, मनमाना। **यथेच्छाचार**–(सं०पुं०) जो मन में आवे सो करना।
यथेच्छाचारी–(स०वि०) मनमौजी।
यथेप्सित–(सं०अव्य)जैसी इच्छा हो वैसा।
यथेष्ट–(सं० अव्य०) जितना चाहिये उतना। **यथेष्टकारी**–(सं०वि०)इच्छानुसार घूमने वाला।
यथोक्त–(स०वि०) जैसा कहा गया हो।
यथोक्तकारी–(सं०वि०) आज्ञाकारी।
यथोक्तवादी–(सं०वि०) उचित बोलने वाला।
यथोचित–(सं०अव्य०) यथा योग्य, जैसा चाहिये वैसा, ठीक।
यथोत्तर–(स०अव्य०)उत्तर के अनुसार।
यथोत्साह–(सं० अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार।
यथोदित–(सं०अव्य०) कहने के अनुसार
यथोद्दिष्ट–(सं०वि०)जैसा कहा गया हो।
यथोद्देश–(सं० अव्य०) अभिप्राय के अनुसार।
यथोपदिष्ट–(स० वि०) जैसा उपदेश दिया गया हो। **यथोपदेश**–(सं०अव्य०) उपदेश के अनुसार।
यथोपपन्न–(सं०अव्य०) जिस प्रकार प्राप्त हुआ हो।
यथोपपाद–(सं०अव्य०) यथासम्भव।
यथोपयोग–(सं०अव्य०)उपयुक्त प्रयोग।
यथोपाधि–(सं० अव्य०) उपाधि के अनुसार।
यदपि–(हिं०अव्य०) देखो यद्यपि।
यदर्थ–(सं०वि०) जिस कारण से।
यदा–(सं० अव्य०) जिस समय, जब, जहां। **यदाकदा**–(सं०अव्य०)जब तक, कभी कभी।
यदि–(सं०अव्य०) यद्यपि, संशय या अपेक्षा सूचित करने के लिये वाक्य के आरभ मे प्रयोग होता है।
यदिच, यदिचेत्–(स०अव्य०) यद्यपि।
यदिच्छा–(सं०स्त्री०) जैसी इच्छा।
यदु–(सं०पु०) ययाति के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न थे, इन्हो ने अपना अलग वंश चलाया था। **यदुनन्दन**–(स०पुं०) श्रीकृष्ण; यदुनाथ, (सं०पुं०) यदुवंश के स्वामी श्रीकृष्ण। **यदुपति**–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण, **यदुभूप**। **यदुराई**–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण। **यदुराज**–(सं०पु०) यदुकुल के राजा श्री कृष्ण।
यदुवंश–(सं०पु०) राजा यदु का कुल; यादव, ग्वाल, आभीर, गोप।
यदुवंशमणि–(स०पु०) श्रीकृष्ण।
यदु वंशी–(सं० वि०) यदुकुल में उत्पन्न,यादव,अहिर। **यदुवर,यदुवीर यदूत्तम**–(सं०पु०) श्रीकृष्ण।
यद्यपि–(सं०अव्य०) यदि।
यदृच्छया–(सं०क्रि०वि०) अकस्मात्, अचानक, देवयोग से, बिना किसी नियम या कारण से। **यदृच्छा**–(सं०स्त्री०) केवल इच्छा के अनुसार व्यवहार, आकस्मिक संयोग।
यद्भविष्य–(सं०पुं०) अदृष्टवादी।
यद्वातद्वा–(सं०अव्य०) कभी कभी।
यन्त–(सं०पु०)सारथी, हाथी महावत।
यन्तव्य–(सं०वि०) दमन करने योग्य।
यन्ता–(सं०पुं०) सारथी।
यन्त्र–(सं०नपुं०)नियन्त्रण, किसी विशेष कार्य के लिये बनाया हुआ उपकरण, अग्नियन्त्र, तोप या बदूक, कोई कल या शास्त्र, वाद्य, बाजा, ताला, तन्त्र के अनुसार विशिष्ट प्रकार से बने हुए कोष्ठक आदि, जतर।
यन्त्रगृह–(सं० नपुं०) वेधशाला।
यन्त्रण–(सं०नपुं०) रक्षण, रक्षा करना, बन्धन, बाँधना, नियम। **यन्त्रणा**–(सं० स्त्री०) वेदना, यातना, कष्ट।
यन्त्रनाल–(स० नपुं०) कुएं में से पानी निकालने की कल। **यन्त्रपेषिणी**–(सं० स्त्री०) पीसने की चक्की। **यन्त्रप्रवाह**–(सं० पुं०) पानी फेंकने का यन्त्र, दमकल। **यन्त्रमन्त्र**–(सं० पुं०) जादू टोना। **यन्त्रराज**–(सं० पुं०) ग्रहों तथा तारों की गति जानने का यन्त्र। **यन्त्रविद्या**–(सं० स्त्री०) कलों के बनाने और चलाने की विद्या।
यन्त्रशाला–(सं० स्त्री०) वेधशाला।
यन्त्रसूत्र–(सं० पुं०) वह सूत जिसकी सहायता से कठपुतली नचाई जाती है। **यन्त्रालय**–(सं० पुं०) मुद्रालय, छापाखाना।
यन्त्राश–(सं० पुं०) एक राग का नाम।
यन्त्रिका–(स० स्त्री०) छोटी ताली, छोटा यन्त्र।
यन्त्रित–(सं० वि०) जो यन्त्र द्वारा बंद किया या रोका गया हो, ताला लगा हुआ।
यन्त्री–(हिं० पुं०) यन्त्र मन्त्र करने वाला, तान्त्रिक, बाजा बजाने वाला।
यन्त्रोपल–(स०पुं०) चक्की का पत्थर।
यन्द–(हि० पुं०) स्वामी, मालिक।
यन्निमित्त–(सं०अव्य०) जिस कारण से।
यम–(सं० पुं०) दक्षिण दिशा के दिक्पाल, मृत्यु के देवता, यमराज, संयम, मन तथा इन्द्रियों को वश में करना, विष्णु, शनि, कौवा, वायु, दो की संख्या, यमज, जोड़ा।
यमक–(सं० नपुं०) एक शब्दालंकार जिसमें किसी कविता में एक ही शब्द भिन्न अर्थों में कई बार प्रयोग किया जाता है।
यमकात, यमकातर–(हिं० पुं०) यम का छुरा, एक प्रकार की तलवार।
यमकिङ्कर–(सं० पु०) यमदूत।
यमकीट–(स० पु०) केंचुवा।
यमकील–(स०पुं०) विष्णु।
यमक्षय–(सं०पु०) मृत्यु।
यमघण्ट–(सं०पुं०) फलित ज्योतिष के अनुसार एक दुष्ट योग जिसमें शुभ कार्य करना मना है, कार्तिक शुक्ला प्रतिपद, दीपावली के बाद का दिन।
यमचक्र–(सं०पुं०) यम का शास्त्र।
यमज–(सं०वि०) एक गर्भ से एक साथ उत्पन्न होने वाली दो सन्तान, जुटुवां, अश्विनीकुमार।
यमजातना–(हिं०स्त्री०) देखो यमयातना।
यमजित्–(सं०पुं०) मृत्युञ्जय।
यमदंष्ट्र–(सं०स्त्री०) वैद्यक के अनुसार आश्विन, कार्तिक और अगहन के लगभग का कुछ विशिष्ट काल जिसमें रोग तथा मृत्यु का अधिक भय होता है।
यमदग्नि–(सं०पुं०) परशुराम के पिता।
यमदण्ड–(सं०पु०) यमराज का डंडा, कालदण्ड।
यमदुतिया–(हिं०स्त्री०) देखो यमद्वितीया
यमदूत–(सं०पुं०) यम के दूत, कौवा, नव समाधियों में से एक।
यमदूतिका–(सं०स्त्री०) भरणी नक्षत्र।
यमदेवता–(सं०स्त्री०) भरणी नक्षत्र।
यमद्रुम–(सं०पुं०) सेमर का पेड़।
यमद्वितीया–(सं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ला द्वितीया, भाईदूज।
यमन–(सं०नपुं०) रोकना, बन्द करना, बांधना, ठहराना, (पुं०) यम।
यमनगर–(सं०नपुं०) यमपुरी। **यमनाह**–(हिं०पुं०) धर्मराज।
यमनिका–(सं०स्त्री०) यवनिका, नाटक का परदा।
यमनी–(अ०स्त्री०) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।
यमपुर–(स०स्त्री०) यमलोक। **यमपुरी**–(स०स्त्री०) यमपुर, यमलोक। **यमभगिनी**–(सं०स्त्री०) यमुना नदी।
यममार्ग–(सं०पुं०) मृत्युपथ। **यमयातना**–(सं०स्त्री०) यम के दूतों की दी हुई पीड़ा, मृत्यु समय का कष्ट।
यमरथ–(सं०पुं०) यम का वाहन, भैंसा।

यमराज–(सं०पुं०) यमों के राजा धर्मराज जो मृत्यु के बाद प्राणी के कर्मों का विचार करते हैं। **यमराष्ट्र**–(सं०नपुं०) यमलोक।
यमल–(सं०नपुं०) युग्म, जोड़ा, यमज। **यमलपत्रक, यमलच्छद**–(सं० पुं०) कचनार का वृक्ष।
यमला–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का हिचकी का रोग।
यमलार्जुन–(सं०पुं०) नलकूबर और मणिग्रीव नाम के कुबेर के दो पुत्र जो नारद के शाप से अर्जुन वृक्ष हो गये थे, श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।
यमली–(सं०स्त्री०) स्त्रियों का घाघरा और चोली।
यमलोक–(सं०पुं०) वह लोक जहां पर मृत्यु के बाद मनुष्य जाते हैं, यमपुरी। **यमवाहन**–(सं०पुं०) यम का वाहन, भैंसा। **यमवृक्ष**–(सं०पुं०) सेमल का पेड़। **यमव्रत**–(सं०नपुं०) राजा का निष्पक्षपात शासन। **यमसदन**–(सं०नपुं०) यमलोक।
यमस्तोम–(सं०पुं०) एक दिन में होने वाला एक यज्ञ।
यमस्वसा–(सं०स्त्री०) यमुना, दुर्गा।
यमहन्ता–(सं०पुं०) काल का नाश करने वाला।
यमानिका, यमानी–(सं०स्त्री०) अजवाइन।
यमानुग–(सं०पुं०) यम का अनुचर। **यमानुजा**–(सं०स्त्री०) यमुना नदी।
यमान्तक–(सं०पुं०) शिव।
यमारि–(सं०पुं०) विष्णु।
यमालय–(सं०पुं०) यमपुर।
यमी–(सं०स्त्री०) यमुना, (पुं०) संयमी।
यमुना–(सं०स्त्री०) भारत के उत्तर पश्चिम भाग में बहने वाली एक नदी, यम की बहिन, कालिन्दी, दुर्गा।
यमेश–(सं० नपुं०) भरणी नक्षत्र। **यमेश्वर**–(सं०पुं०) शिव।
ययाति–(सं०पुं०) नहुष राजा के एक पुत्र का नाम जिनका विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानिके साथ हुआ था। **ययातीश्वर**–(सं०पुं०) शिव।
ययी–(सं०पुं०) शिव, महादेव, मार्ग, घोड़ा।
यव–(सं०पुं०) जव नामका अन्न, चार धान या छ सरसों की तौल का मान, इन्द्रजव, सामुद्रिक के अनुसार अंगुली में की जव को आकृति की रेखा जो शुभ मानी जाती है। **यवकण्टक**–(सं० पुं०) खेतपापड़ा। **यवक्षार**–(सं०पुं०) जव के पौधों को जलाकर निकाला हुआ क्षार, जवाखार; **यवतिक्ता**–(सं०स्त्री०) शंखिनी नाम की लता, चौलाई या मरसे का साग। **यवद्वीप**–(सं० पुं०) जावा नामक टापू का प्राचीन नाम।
यवन–(सं०पुं०) यूनान देश का निवासी, मुसलमान, कालयवन नामक असुर, तीव्र घोड़ा, (वि०) वेगवान्। **यवनप्रिय**–(सं०नपुं०) मिरचा। **यवनानी**–(सं०स्त्री०) यूनान की लिपि, यूनान की भाषा, (वि०) यवन संबन्धी।
यवनाल–(सं०पुं०) जुआर का पौधा, जव की डांठ। **यवनाजल**–(सं०पुं०) यवक्षार, जवाखार।
यवनिका–(सं०स्त्री०) नाटक का परदा।
यवनी–(सं०स्त्री०) यवन जाति की स्त्री
यवनेष्ट–(सं०नपुं०) लहसुन, प्याज, शलगम।
यवपल्ल–(सं०पुं०) जौ का सूखा डंठल।
यवपिष्ट–(सं०नपुं०) जवका आंटा।
यवफल–(सं०पुं०) बांस, जटामासी, प्याज, इन्द्रजव, पाकड़ का पेड़।
यवबुस–(सं०पुं०) जवका भूसा।
यवमती–(सं०स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम
यवमद्य–(सं०नपुं०) जव की मदिरा।
यवमध्य–(सं०नपुं०) एक प्रकार का चांद्रायण व्रत।
यवमन्थ–(सं०पुं०) जवका सत्त। **यवलास**–(सं०पुं०) यवक्षार, जवाखार। **यवशक्तु**–(सं०पुं०) जवका सत्तू। **यवशूक**–(सं०पुं०) यवक्षार, जवाखार। **यवासुर**–(सं०नपुं०) जौकी मदिरा। **यवसौवीर**–(सं०नपुं०) जौ का मांड़। **यवागू**–(सं०स्त्री०) जव या चावल का मांड़ जो सड़ाकर खट्टा कर दिया गया हो।
यवानी–(सं०स्त्री०) अजवायन।
यवास–(सं०पुं०) जवासा नामक कांटेदार पौधा।
यविष्ठ–(सं० वि०) बड़ा जवान, (पुं०) छोटा भाई, अग्नि।
यवीयुध–(सं०वि०) रणप्रिय।
यवोदर–(सं०नपुं०) जौ का मध्य भाग।
यवोद्भव–(सं०पुं०) जवाखार।
यश–(हिं०पुं०) प्रशंसा, ख्याति, कीर्ति, सुनाम, बड़ाई; **यश गाना**–प्रशंसा करना; **यश मानना**–कृतज्ञ होना।
यशद–(सं०नपुं०) एक धातु विशेष, जस्ता।
यशःशेष–(सं० पुं०) मृत्यु, (वि०) मृत, मरा हुआ।
यशस्कर–(सं०वि०) कीर्ति कारक। **यशस्करी**–(सं०स्त्री०) यश बढ़ाने वाली विद्या। **यशस्काम**–(सं०वि०) यश की कामना करने वाला।
यशस्कृत्, यशस्य–(सं०वि०) यश चाहने वाला।
यशस्वत्–(सं०वि०) यशस्वी। **यशस्वी**–(हिं०वि०) कीर्तिमान्, जिसका बहुत यश हो। **यशस्विनी**–(सं० स्त्री०) कीर्तिमती, सत्यव्रत को पत्नी।
यशी–(सं०वि०) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशील–(हिं०वि०) देखो यशी।
यशुमति–(हिं०स्त्री०) देखो यशोदा।
यशोघ्न–(सं०वि०) यश का नाश करने वाला।
यशोद–(सं०वि०) यश देने वाला, (पुं०) पारा। **यशोद**–(सं०वि०) यश देने वाला।
यशोदा–(सं० स्त्री०) नन्द की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था, दिलीप की माता का काम, एक वर्णवृत्त का नाम।
यशोधन–(सं०वि०) यशही जिसका एक मात्र धन है।
यशोधर–(सं०वि०) यशस्वी कीर्तिमान्।
यशोधरा–(सं०स्त्री०) बुद्ध देव की पत्नी और राहुल की माता।
यशोधा–(सं०वि०) कीर्तिमान्, यशस्वी
यशोधारा–(सं०स्त्री०) सहिष्णु की स्त्री और कामदेव की माता।
यशोभाग्य–(सं०वि०) यशोभागी, कीर्तिमान्। **यशोभृत्**–(सं०वि०) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशोमती–(सं०स्त्री०) यशस्विनी, यशोदा
यशोवर–(सं०पुं०) रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
यष्टव्य–(सं०वि०) यज्ञ के योग्य।
यष्टि–(सं०पुं०) ध्वजदण्ड, लाठी, छड़ी, (स्त्री०) शाखा, टहनी, मोतियों का हार, मलेठी, बाहु, बांह। **यष्टिक**–(सं०पुं०) तीतर पक्षी, दण्ड, डंडा, मजीठ। **यष्टिका**–(सं०स्त्री०) गले में पहरने का हार, हाथमें रखने की छड़ी या लाठी, बावली। **यष्टिमधु**–(सं० नपुं०) मुलेठी। **यष्टियन्त्र**–(सं०नपुं०) एक प्रकार की धूपघड़ी।
यष्टीकर्ण–(सं०पुं०) कान में पहरने का एक प्रकार का आभूषण।
यह–(हिं०सर्व०) निकट की वस्तु का निर्देश करने वाला एक सर्वनाम जो वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त जीवों या पदार्थों के लिये प्रयोग किया जाता है।
यहां–(हिं०क्रि०वि०) इस स्थान में।
यहि–(हिं०वि०सर्व०) "यह" का वह रूप जो प्राचीन हिन्दी में किसी विभक्ति लगाने के पूर्व प्रयोग होता था, 'ए' का विभक्ति युक्त रूप, इसको।
यहीं–(हिं०अव्य०) निश्चित रूप से, यह, यह ही।
यहूद–(हिं०पुं०) वह देश जहां हजरत ईसा उत्पन्न हुए थे। **यहूदी**–(हिं०पुं०) पश्चिम एशिया वासी एक प्राचीन जाति, इस जाति की भाषा हीब्रू थी।
यां–(हिं०क्रि०वि०) यहां।
यांचना–(हिं०क्रि०) देखो याचना।
यांत्रिक–(हिं० वि०) मन्त्र संबंधी।
या–(सर्व०) ब्रजभाषा में कारकका चिह्न लगाने के पहले का 'यह' का रूप।
याक–(हिं०पुं०) हिमालय पर्वत का एक जंगली बैल, जिसकी पूंछ का चमर बनता है, (हिं० वि०) एक।
याग–(सं०पुं०) यज्ञ। **यागकर्म**–(सं०नपुं०) यज्ञ का कार्य। **यागकाल**–(सं०पुं०) यज्ञ करने का उपयुक्त समय।
यागमण्डप–(सं० नपुं०) यज्ञशाला।
यागसन्तान–(सं०पुं०) इन्द्र के पुत्र जयन्त का नाम। **यागसिद्ध**–(सं०वि०) यज्ञ द्वारा सिद्धि प्राप्त। **यागसूत्र**–(सं०नपुं०) यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत।
याचक–(सं०वि०) मांगने वाला, भिक्षुक, भिखमंगा।
याचन–(सं० नपुं०) याञ्चा, प्रार्थना।
याचनक–(सं०वि०) विवाह के लिये कन्या की प्रार्थना करने वाला।
याचना–(सं०स्त्री०) प्रार्थना, (हिं०क्रि०) मांगना। **याचनीय**–(सं०वि०) मांगने योग्य। **याचमान**–(सं०वि०) मांगने वाला। **याचित**–(सं०वि०) मांगी हुई वस्तु। **याचितक**–(सं०नपुं०) मांगी हुई वस्तु। **याचितव्य**–(सं० वि०) मांगने योग्य।
याची–(सं०वि०) भिक्षुक, भिखमंगा।
याचिष्णु–(सं०वि०) मांगने वाला।
याच्य–(सं०वि०) याचना करने योग्य।
याजक–(सं० पुं०) याज्ञिक, यज्ञ करने वाला, मस्त हाथी।
याजन–(सं० नपुं०) यज्ञ की किया।
याजनीय–(सं०वि०) यज्ञ करने योग्य।
याजमान–(सं०नपुं०) यज्ञ में यजमान का किया हुआ काम। **याजयिता**–(सं०वि०) यज्ञ कराने वाला, पुरोहित।
याजिका–(सं०स्त्री०) पूजा के समय दिया जाने वाला उपहार। **याजी**–(हिं०वि०) यज्ञ करने वाला।
याजुष–(सं०वि०) यजुर्वेद सम्बन्धी।
याज्य–(सं०वि०) यज्ञ करने योग्य।
याज्ञ–(सं० वि०) यज्ञ सम्बन्धी।
याज्ञवल्क्य–(सं०पुं०) धर्मशास्त्र प्रयोजक एक प्रसिद्ध ऋषि, यह वैशम्पायन के शिष्य थे, वाजसनेयी संहिता के आचार्य, राजा जनक के दरबार के एक ऋषि।
याज्ञसेनी–(सं०स्त्री०) द्रौपदी।
याज्ञिक–(सं०पुं०) यज्ञ करने या कराने वाला। **याज्ञिय**–(सं०वि०) यज्ञ संबंधी
याज्य–(सं०वि०) यज्ञ करने योग्य।
याज्या–(सं०स्त्री०) गंगा।
यात–(सं० वि०) लब्ध, पाया हुआ, ज्ञात, जाना हुआ।
यातन–(सं०नपुं०) पारितोषिक।
यातना–(सं०स्त्री०) बहुत अधिक कष्ट या वेदना, वह पीड़ा जो यमलोक में भोगना पड़ता है।
यातयाम–(सं० वि०) जीर्ण, पुराना, जिसका उपभोग किया जा चुका हो, परित्यक्त, उच्छिष्ट।
यातव्य–(सं०वि०) आक्रमण करने योग्य
याता–(हिं०स्त्री०) पति के भाई की स्त्री, जेठानी या देवरानी।
यातायात–(सं०नपुं०) आना जाना।
यातिक–(सं०पुं०) पथिक, यात्री।
यातु–(सं० पुं०) मार्ग चलने वाला, (पुं०) राक्षस।

यातुधान–(सं०पुं०) राक्षस।
यातुमंत्–(सं० वि०) हिंसायुक्त।
यातुविद्–(सं०स्त्री०) ऐंद्रजालिक, जादूगर।
यातुहन्–(सं० वि०) इन्द्रजाल को नष्ट करने वाला।
यातृक–(सं०पुं०) पथिक, बटोही।
यातोपयात–(सं० नपुं०) आना जाना।
यात्रा–(सं० स्त्री०) एक स्थान से दूसरे स्थान को गमन करने की क्रिया, प्रस्थान को गमन करने की क्रिया, प्रस्थान, प्रयाण, तीर्थाटन, देवस्थान के दर्शन को जाना। यात्राकार–(सं० पु०) यात्रा करने वाला।
यात्रावाल–(हि०पुं०) यात्रियों को दर्शन आदि कराने वाला पंडा।
यात्रिक–(सं० वि०) यात्रा सम्बन्धी, रीत्यनुसार जीवन धारण करने के उपयुक्त, (पुं०) यात्री, पथिक, यात्री की सामग्री।
यात्री–(सं०वि०) यात्रा करने वाला, तीर्थाटन के लिये जाने वाला।
याथाकामी–(सं० स्त्री०) इच्छानुसार काम करने वाला। याथाकाम्य–(सं०नपुं०) इच्छानुसार।
याथातथ्य–(सं०पुं०) यथार्थता।
याथात्म्य–(सं० नपुं०) आत्मानुरूपता।
याथार्थ्य–(सं०नपुं०) यथार्थता।
यादईश–(हिं०पुं०) समुद्र, वरुण।
यादःपति–(सं०पुं०) समुद्र।
यादव–(सं०पुं०) यदु के वंशज, श्रीकृष्ण; (वि०) यदुसबन्धी। यादवक–(सं० पुं०) यदु के वंशज। यादवी–(सं०स्त्री०) यदुकुल की स्त्री, दुर्गा। यादवेन्द्र–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
यादुविद्या–(सं०स्त्री०) भौतिक विद्या।
यादुर–(सं०वि०) वीर्यवान्।
यादृश–(सं०वि०) जिस प्रकार का, जैसा।
यादृशी–(सं०वि०स्त्री०) जिस प्रकार की,
यान–(सं०नपुं०) घोड़ा हाथी रथ आदि सँवारी, विमान, वाहन, राजाओं के सन्धि आदि छ गुणों में से एक, शत्रु पर आक्रमण करना, गति। यानपात्र–(सं०नपुं०) जहाज। यानभंग–(सं०पुं०) जहाज का नष्ट होना। यानवाह–(सं०पुं०) रथ हाँकने वाला। यानशाला–रथ गाड़ी आदि रखने का घर।
यापक–(सं० वि०) प्राप्त करने वाला।
यापन–(सं०नपुं०) चलाना, समय बिताना, छोड़ना, मिटाना, निबटाना, बिताना। यापना–(सं०स्त्री०) कालक्षेप, व्यवहार; यापनीय–(सं०वि०) प्राप्त करने योग्य
याप्य–(सं० वि०) निन्दनीय, रक्षणीय, छिपाने योग्य। याप्ययान–(सं०नपुं०) पालकी।
याबू–(फ़ा०पुं०) छोटा घोडा, टट्टू।
याभ–(सं०पुं०) स्त्रीप्रसंग, मैथुन।
याम–(सं०पुं०) तीन घंटे का समय, प्रहर, काल, समय, गमन, जाना, एक प्रकार के देवगण, (हिं० स्त्री०) रात्रि, रात। यामक–(सं०पुं०) पुनर्वसु नक्षत्र।
यामकिनी–(सं०स्त्री०) पुत्रवधू, बहिन।
यामघोष–(सं० स्त्री०) कुक्कुट, मुर्गा।
यामघोषा–(सं०स्त्री०) समय की सूचना देने के लिये बजाने की घटी।
यामतूर्य,–(सं०नपुं०) समय बतलाने के लिये बजाने वाली तुरही।
यामदुन्दुभि–(सं० पुं०) नगाड़ा।
यामन–(सं०वि०) गति, गमन।
यामनाली–(सं०स्त्री०) समय बतलाने वाली घड़ी।
यामनेमि–(सं० पु०) इन्द्र।
यामल–(सं०नपुं०) यमज सन्तान, जड़वाँ लड़के, एक तन्त्र ग्रन्थ।
यामवती–(सं० स्त्री०) निशा, रात्रि।
यामश्रुत–(सं० वि०) जो शीघ्रता सुना गया हो।
यामार्ध–(सं०नपुं०) आधा पहर।
यामिक–(सं० पुं०) पहरा देने वाला, चौकीदार। यामिका, यामिनी–(सं०स्त्री०) रात, यामिनीचर–(सं०पुं०) उल्लू पक्षी।
यामिनीपति–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
याम्य–(सं० पुं०) शिव, विष्णु, (वि०) यम संबंधी, दक्षिण का। याम्यद्रुम–(सं०पुं०) सेमल का वृक्ष।
याम्या–(सं० स्त्री०) भरणी नक्षत्र, दक्षिण दिशा।
याम्योत्तरदिगंश–(सं०पुं०) भूगोल में लम्बांश या दिगंश। याम्योत्तर रेखा–(सं० स्त्री०) वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर जाती है।
यायावर–(सं०पुं०) अश्वमेध का घोड़ा।
यायी–(सं०वि०) गमनशील, जाने वाला (पुं०) अभियोग चलाने वाला।
याव–(सं०वि०) जौ का बना हुआ।
यावक–(सं० पुं०) बोरो धान, कुलथी, उड़द, जव।
यावच्छक्य–(सं०अव्य०) यथाशक्ति।
यावच्छस्त्र–(सं० अव्य०) जहां तक शस्त्र जा सके। यावच्छेष–(सं० अव्य०) जितना बच गया हो। यावच्छ्रेष्ठ–(सं०वि०) बहुत बढ़िया। यावज्जन्म–(सं०अव्य०) जन्म भर।
यावत्–(सं०अव्य०) जब तक, अवधि या मर्यादा, तक। यावत्काम–(सं० अव्य०) इच्छा के अनुसार। यावत्सत्त्व–(सं० अव्य०) यथाबल। यावत्प्रमाण–(सं० अव्य०) जहाँ तक। यावदन्त–(सं०वि०) शेष तक। यावदर्थ–(सं०वि०) आवश्यकता के अनुसार। यावदायुस–सं० अव्य०) आजीवन। यावदीप्सित–(सं०अव्य०) जितनी इच्छा हो। यावदुक्त, यावद्भाषित–(सं०अव्य०) कहे के अनुसार। यावदुत्तम–(सं० अव्य०) शेष सीमा तक। यावद्गम–(सं०अव्य) जितना शीघ्र जाना संभव हो। यावद्बल–(सं० अव्य०) शक्ति के अनुसार। यावद्भाषित–(सं० वि०) जितना कहा गया हो। यावद्वेद–(सं० अव्य०) जहाँ तक जाना गया हो। यावद्व्याप्ति–(सं०अव्य०) अन्त तक।
यावन, यावनी–(सं०वि०) यवन संबंधी।
यावनाल–(सं०पुं०) जुआर।
यावनाली–(सं०स्त्री०) ज्वार की शक्कर।
यावनी–(सं० स्त्री०) ईख–(वि०) यवन संबधी। यावन्मात्र–(सं०अव्य०) थोड़ा थोड़ा।
यावस–सं०त्रि०) जवासे की मदिरा।
याविक–(सं० पु०) मक्का नामक अन्न।
याव्य–(सं०पुं०) जवाखार।
याष्टीक–(सं० पु०) लाठी बांधने वाला योद्धा।
यासा–(सं०स्त्री०) कोकिल, कोयल।
यासु–(हिं०सर्व०) देखो जासु।
यास्क–(सं०पुं०) वेद के निरुक्त ग्रन्थ के रचयिता।
याहि–(हिं०सर्व०) इसको, इसे।
यियक्षु–(सं०वि०) यज्ञ करने का इच्छुक।
यियासु–(सं० वि०) जाने की इच्छा करने वाला।
युक्त–(सं० वि०) न्याय्य, उचित, ठीक, सम्मिलित, मिला हुआ, जुटा हुआ, अवशिष्ट, (पुं०) योग का अभ्यास किया हुआ योगी; युक्तकारी–(सं०वि०) ठीक काम करनेवाला। युक्तदण्ड–(सं०पुं०) ठीक दण्ड। युक्तरूप–(सं०अव्य०) ठीक।
युक्ता–(सं० स्त्री०) एक वृत्त का नाम।
युक्ति–(सं०स्त्री०) न्याय, नीति, उपाय, ढंग, चातुरी, तर्क, अनुमान, रीति, प्रथा, कारण, हेतु, नाटक का एक अलंकार जिसमें अर्थयुक्त वाक्य का निश्चय होता है, केशव के अनुसार स्वभावोक्ति। युक्तिकर–(सं०पुं०) वह जो तर्क के अनुसार ठीक हो।
युक्तिज्ञ–(सं०अव्य०) ठीक तर्क करने वाला। युक्तियुक्त–(सं०अव्य०) उपयुक्त तर्क के अनुसार। युक्तिशास्त्र–(सं० नपुं०) प्रमाण शास्त्र।
युग–(सं०नपुं०) युग्म, जोड़ा, जूआ, ऋद्धि और सिद्धि नामक दो औषधियाँ, समय, काल, चार, हाथ का मान, पासे के खेल की गोटियाँ, पुरुष, पीढ़ी, पासे के खेल में दो गोटियों का एक घर में बैठना, पुराण के अनुसार काल का वह दीर्घ परिमाण जो संख्या में चार माना गया है यथा-सत्य, द्वापर, त्रेता और कलियुग। युगयुग–(सं० अव्य०) अनन्त काल तक। युगकीलक–(सं० पुं०) बम या जुए के छेद में डालने का डंडा। युगन्धर–(सं०पुं०) गाड़ी का बम युगक्षय–(सं० पुं०) युग का नाश।
युगति–(हिं०स्त्री०) देखो युक्ति।
युगप–(सं०पुं०) गन्धर्व।
युगपत्–(सं०अव्य०) एक ही समय में।
युगबाहु–(सं० वि०) जिसके हाथ बहुत लम्बे हों। युगति–(हिं० पुं०) प्रलय।
युगल–(हिं० पुं०) देखो युग्म।
युगल–(सं० पुं०) युग्म, जोड़ा।
युगादि–(सं०पुं०) सृष्टि का आरम्भ।
युगाद्या–(सं० स्त्री०) वह तिथि जिसमें कोई युग आरंभ हुआ था, यथा-वैशाख शुक्ला तृतीया में सतयुग, कार्तिक शुक्ला नवमी को त्रेता, भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी को द्वापर तथा पौष मास की पूर्णिमा को कलियुग का आरंभ माना जाता है।
युगाध्यक्ष–(सं०पुं०) प्रजापति, शिव।
युगान्त–(सं०पुं०) युग का अन्तिम समय, प्रलय। युगान्तक–(सं०पुं०) प्रलयकाल। युगान्तर–(सं० नपुं०) दूसरा युग।
युग्म–(सं०पु०) युगल, द्वन्द्व, जोड़ा, युग, मिथुन राशि। युग्मक–(सं० वि०) युग्म, जोड़ा। युग्मकण्टक–(सं०स्त्री०) बेर का वृक्ष। युग्मज–(सं०पु०) जुड़वा लड़के। युग्मधर्म–(सं०पुं०) मिलनशीलता, मैथुन। युग्मपत्र–(सं०नपुं०) भोजपत्र का वृक्ष। युग्मपत्रिका–(सं० स्त्री०) शीशम का पेड़। युग्मपत्र–(सं० पुं०) कचनार का वृक्ष। युग्मविपुला–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
युग्मवाह–(सं०पु०) गाड़ीहाँकनेवाला।
युज्य–(सं० वि०) संयुक्त, मिला हुआ।
युञ्जान–(सं० पुं०) सारथी, विप्र।
युत–(सं०पुं०) चार हाथ की नाप, (वि०) युक्त, सहित, मिलित, मिला हुआ।
युतक–(सं० नपुं०) संशय, सन्देह, अंचल, मैत्रीकरण।
युति–(सं० स्त्री०) योग, मिलन।
युत्कार–(सं०वि०) लड़ाई करने वाला।
युद्ध–(सं० नपुं०) रण, समर, सग्राम, लड़ाई। युद्धक–(सं०नपु०) युद्ध संग्राम।
युद्धकारी–(सं०वि०) समर करनेवाला।
युद्धकीर्ति–(सं० पु०) शंकराचार्य के एक शिष्य का नाम। युद्धप्राप्त–(सं० पुं०) लड़ाई में पकड़ा हुआ।
युद्धभू–(सं० स्त्री०) संग्राम के योग्य भूमि। युद्धमय–(सं० वि०) रण संबंधी।
युद्धमेदिनी–(सं० स्त्री०) रणभूमि।
युद्धरंग–(सं० पुं०) लड़ाई का मैदान।
युद्धविद्या–(सं०स्त्री०) लड़ाई की विद्या।
युद्धवीर–(सं०पुं०) रणकरनेमेंनिपुण।
युद्धशाली–(सं० वि०) साहसी, वीर।
युद्धसार–(सं० पुं०) घोड़ा।
युद्धस्थल–(सं० नपुं०) रणभूमि।
युद्धाध्वन–(सं० पुं०) युद्ध का मार्ग।
युद्धावसान–(सं०नपुं०) युद्ध का शेष।
युद्धोन्मत्त–(सं० वि०) युद्ध करने के लिये उतावला। युद्धोपकरण–(सं० नपु०) युद्ध की सामग्री। (सं० स्त्री०) लड़ाई का मैदान। युद्धजित्–(सं०पुं०) केकय राजा का पुत्र जो भरत का मामा था।
युधिष्ठिर–(सं० पुं०) पांचों पाण्डवों में से सबसे बड़े भाई का नाम।
युध्म–(सं० पुं०) संग्राम युद्ध।
युयुक्षमान–(सं० वि०) ईश्वर में लीन होने का कार्मुक।

युयुत्सा–(सं० स्त्री०) युद्ध करने की लालसा, विरोध, शत्रुता। युयुत्सु–(सं० वि०) लड़ने की इच्छा करने वाला, (पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
युयुधान–(सं० पुं०) इन्द्र, क्षत्रिय (वि०) योद्धा।
युवक–सं० पुं०) सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष के वय का मनुष्य।
युवगण्ड–(सं० पुं०) मुहासा।
युवति, युवती–(सं०स्त्री०) प्राप्त यौवना, जवान स्त्री।
युवनाश्व–सं०पुं०) सूर्यवंशी एक राजा जो प्रसेनजित् के औरत गौरी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
युवपलित–(सं० वि०) युवावस्था में जिसके बाल पक गये हों।
युवराई–हिं० स्त्री०) युवराज का पद।
युवराज–(सं० पुं०) राजा का वह राजकुमार जो राज्य का उत्तराधिकारी होता है। युवराजत्व–(सं० नपुं०) युवराज का भाव या धर्म। युवराजी–(हिं० स्त्री०) युवराज का पद।
युवा–(हिं० वि०) युवक।
युवान पिड़िका–(सं० स्त्री०) मुहाँसा।
यूं–हिं० अव्य०) यों, इस प्रकार से।
यूक, यका–(सं० पुं० स्त्री०) बालों में पड़ने वाला कीड़ा, जवां, ढील।
यूकाण्ड–(सं० पुं०) चीलर, लीख।
यूत–सं० पुं०) मिश्रण, मिलावट।
यूथ–(सं० नपुं०) एक ही जाति के अनेक जीवों का समूह, झुण्ड, दल, सेना। यूथनाथ–(सं० पुं०) सेनापति, सरदार। यूथपति–(सं०पुं०) सेनानायक। यूथहत–(सं० वि०) अपने दल से अलग।
यूथिका–(सं० स्त्री०) पाठा, जूही, नामक पुष्प। यूथिकापत्र–(सं० पु०) तालीश पत्र।
यून–(सं० नपुं०) रस्सी, डोरी।
यूनान–(हिं० पुं०) एशिया के सबसे पास का यूरोप का प्रदेश जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, शिल्पकला, साहित्य और दर्शन के लिये प्रसिद्ध था। यूनानी–(हिं० वि०) यूनान देशका, (स्त्री०) यूनान देश की भाषा, यूनान देश का निवासी, यूनान देश की चिकित्सा प्रणाली, हकीमी।
यूप–(सं० पुं०) यज्ञ में वह खम्भा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है। यूपक–(सं० पुं०) पाकर का वृक्ष। यूपदारु–(सं० नपुं०) गूलर की लकड़ी। यूपद्रु–(सं० पुं०) खैर का वृक्ष। यूपध्वज–(सं० पु०) यज्ञ। यूपवाह–(सं०पुं०) यूप को ढोने वाला।
यूपा–हिं० पुं०) द्यूत, जूआ।
यूराल–हिं० पुं०) युरोप तथा एशिया के बीच का एक बड़ा पर्वत।
यूरोपीय–(हिं० वि०) यूरोप सम्बन्धी।
यूष–(सं० पुं०) मूंग आदि का जूस।
यूह–(हिं० पुं०) यूथ, झुण्ड, समूह।

ये–(हिं० सर्व०) 'यह' का बहुवचन का रूप, यह सब।
येई–(हिं० सर्व०) देखो यही। येऊ–(हिं०सर्व०) यह भी। येतो–(हिं०वि०) देखो एतो। येह–(हिं०अव्य०) यह भी।
यों–हिं०अव्य०) इसतरह, इसप्रकारसे।
योंहीं–(हिं० अव्य०) ऐसे ही, इसी प्रकार से, व्यर्थ ही, बिना काम के, बिना किसी विशेष प्रयोजन के, केवल मन की प्रवृत्ति से।
योग–(सं० पुं०) संयोग, मेल, उपाय, युक्ति, प्रेम, संगति, ध्यान, गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़, एक प्रकार का छन्द, तप और ध्यान, वैराग्य, मेलमिलाप, सम्बन्ध, सद्भाव, साम, दाम, दण्ड, भेद ये चार उपाय, धन प्राप्त करना और बढ़ाना, औषधि, छल, धोखा, विश्वासघाती, शुभ अवसर, दूत, चतुराई, परिणाम, बैलगाड़ी, नाम, मुक्ति या मोक्ष का उपाय, प्रयोग, नियम, चित्त की चंचलता को रोकना, षड् दर्शनों में से एक, फलित ज्योतिष के अनुसार वह विशिष्ट काल जो सूर्य और चन्द्रमा के कुछ विशिष्ट स्थानों में आने के कारण होते हैं, ये संख्या में सत्ताईस हैं।
योगकन्या–(सं० स्त्री०) यशोदा के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या जिसको कंस ने मार डाला था। योगक्षेम–(सं०नपुं०) जो वस्तु अपने पास न हो उसको प्राप्त करना और जो मिल चुकी हो उसकी रक्षा करना, जीवन निर्वाह, कुशल मंगल, लाभ, राष्ट्र का अच्छा प्रबन्ध। योगचर–(सं०पुं०) हनुमान। योगजफल–(सं० पुं०) दो या अधिक अंकों का जोड़। योगतत्व–(सं० नपुं०) एक उपनिषद् का नाम। योगतल्प–(सं० पुं०) योगनिद्रा। योगतारा–(सं० स्त्री०) एक दूसरे में मिले हुए तारे। योगदर्शन–(सं० पुं०) महर्षि पातञ्जलि कृत योगसूत्र।
योगदा–आसाम की एक नदी। योगदान–(सं० नपुं०) योग की दीक्षा। योगनाथ–(सं० पुं०) शिव, महादेव। योगनिद्रा–(सं० स्त्री०) विष्णु की युग के अन्त की निद्रा, योगरूप निद्रा, निद्रारूपी दुर्गा। योगनिलय–(सं० पुं०) शिव, महादेव। योगपति–(सं० पुं०) शिव, महादेव, विष्णु। योगपथ–(सं० नपुं०) योगमार्ग। योगपारंग–(सं० पुं०) पूर्ण योगी। योगपीठ–(सं० नपुं०) देवताओं का योगासन। योगप्राप्त–(सं० वि०) योग से पाया हुआ। योगफल–(सं० पु०) दो या अधिक संख्याओं का जोड़। योगबल–(सं० पुं०) योग की साधना से प्राप्त बल, तपोबल। योगभावना–(सं० स्त्री०) योग की चिन्ता, बीज गणित के अनुसार अंक प्रकरण का भेद। योगभ्रष्ट–(सं० वि०) जिसकी योग की साधना पूरी न हुई हो। योगमय–(सं० वि०) योगस्वरूप, (पुं०) विष्णु। योगमाता–(सं०स्त्री०) दुर्गा। योगमाया–(सं०स्त्री०) विष्णुमाया, भगवती, वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी जिसको कंस ने मार डाला था।
योगमूर्तिधर–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
योगयात्रा–(सं० स्त्री०) यात्रा के लिये शुभ मुहूर्त। योगयुक्त–(सं० वि०) योग से युक्त। योगयोगी–(सं० वि०) योग के आसन पर बैठा हुआ योगी।
योगरंग–(सं०पु०) नारंगी। योगरत्न–(सं० नपुं०) जादूगरी से तैयार किया हुआ रत्न। योगरथ–(सं० पुं०) योग की प्राप्ति का साधन। योगरूढि–(सं० स्त्री०) दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जिसका विशेष अर्थ होता है, यथा 'मण्डप' शब्द का अर्थ "माड़ पीने वाला" नहीं होता, परन्तु 'गृह' का बोधक है। योगवह–(सं० वि०) मिलावट से तैयार किया हुआ। योगवासिष्ठ–(सं० पु०) देवर्षि वसिष्ठ का बनाया हुआ एक ग्रन्थ जिसमें वेदान्त तत्व का वर्णन है। योगवाही–(सं० स्त्री०) पारद, पारा, सज्जीखार। योगविद्–(सं० पु०) महादेव, बाजीगर। योगशक्ति–(सं० स्त्री०) तपोबल। योगशब्द–(सं० पुं०) वह यौगिक शब्द जो योगरूढि न हो परन्तु धातु के अर्थ का बोधक हो। योग शास्त्र–(सं० नपुं०) पातञ्जलि शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें चित्तवृत्ति के रोकने के उपाय बतलाये गये हैं। योग शिक्षा–(सं०स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम, योगाभ्यास। योग सार–(सं० पुं०) वह उपाय जिससे मनुष्य सदा के लिये रोग मुक्त हो जाय। योग सिद्ध–(सं०पुं०) वह जिसने योग की सिद्धि प्राप्त कर ली हो। योग सूत्र–(सं० नपुं०) महर्षि पातञ्जलि के बनाये योग सम्बन्धी सूत्रों का संग्रह।
योगाकर्षण–(सं० नपुं०) वह आकर्षण शक्ति जिसके कारण परमाणु आपस में मिले रहते हैं अलग नहीं होते।
योगागम–(सं० पुं०) योगशास्त्र।
योगाङ्ग–(सं० नपुं०) पातञ्जलि के अनुसार योग के आठ अङ्ग यथा-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।
योगाचार–(सं०पुं०) योग का आचरण। योगाचार्य–सं०पु०) इन्द्रजाल शिक्षक, योगाञ्जन–(सं०नपुं०) सिद्धाञ्जन, वह अंजन जिसके लगाने से पृथ्वी के भीतर की वस्तु देख पड़ती है।
योगात्मा–(सं०पु०) योगी। योगानन्द–(सं०पुं०) वह जिसको योगावलंबन से आनन्द हो। योगानुशासन–(सं० नपुं०) योगशास्त्र। योगान्तर–(सं० नपुं०) भिन्न भिन्न वस्तुओं का संयोग। योगान्तराय–(सं० नपुं०) योग में विघ्न डालने वाली बातें।
योगाभ्यास–(सं०पुं०) योग का साधन
योगाभ्यासी–(सं० पुं०) योग की साधना करने वाला; योग सन–(सं०नपुं०) जिस आसन पर बैठकर योगाभ्यास किया जाता है, योग के बत्तीस प्रकार के आसन।
योगित–(सं०वि०) जो मन्त्र आदि की सहायता से वश में कर लिया गया हो
योगित्व–(सं० पुं०) योगी का भाव या धर्म।
योगिनी–(सं०स्त्री०) योगाभ्यासिनी, रणपिशाचिनी, योगमाया, देवी काली की एक सहचरी का नाम, आषाढ़ कृष्ण एकादशी, आवरण देवता, कालिका पुराण में चौंसठ योगिनी का नाम लिखा है; योगिनी चक्र–(सं०नपुं०) तान्त्रिकों का वह चक्र जिससे वे योगिनियों का साधन करते हैं।
योगिया–(हिं०पुं०) संपूर्ण जाति का एक राग।
योगिराज–(सं०पुं०) बहुत बड़ा योगी।
योगी–(सं०पुं०) शिव, महादेव, आत्मज्ञानी; योगीन्द्र–(सं०पुं०) योगीश्वर, बहुत बड़ा योगी; योगीनाथ–(सं०पु०) शिव, महादेव; योगीश–(सं०पुं०) याज्ञवल्क्य ऋषि का एक नाम, योगीन्द्र; योगीश्वर–(सं०पुं०) देखो योगीश; योगीश्वरी–(सं०स्त्री०) दुर्गा।
योगेन्द्र–(सं०पुं०) योगियों में श्रेष्ठ।
योगेश–(सं०पुं०) याज्ञवल्क्य मुनि; योगेश्वर–(सं०पुं०) शिव, श्रीकृष्ण, बहुत बड़ा योगी; योगेश्वरी–(सं०स्त्री०) दुर्गा, नागदौना।
योगैश्वर्य–(सं०नपुं०) योग का ऐश्वर्य।
योग्य–(सं० वि०) प्रवीण, चतुर श्रेष्ठ, उपयुक्त, आदरणीय, उचित, सुन्दर, उपाय लगाने वाला, ठीक; योग्यता–सं०स्त्री०) सामर्थ्य, बड़ाई, अनुकूलता, गुण, बुद्धिमानी, उपयुक्तता; योगत्व–(सं०नपुं०) योग्यता, प्रवीणता।
योग्या–(सं०स्त्री०) सुश्रुत के अनुसार चीरफाड़ का अभ्यास युवती स्त्री।
योजक–(सं०वि०) संयोजकारक, मिलाने वाला; (पुं०) भूडमरुमध्य।
योजन–(सं०नपुं०) एक में मिलाने की क्रिया या भाव, योग, परमात्मा, संयोग, मिलान, चार कोस की दूरी, लीलावती के अनुसार बत्तीस हजार हाथ की दूरी; योजनगन्धा–(सं०स्त्री०) व्यास की माता का नाम, सीता, कस्तूरी; योजनवल्ली–(सं०स्त्री०) मजीठ;
योजना–(सं०स्त्री०) किसी काम में लगाने की क्रिया या भाव, जोड़, मिलान, स्थिति, घटना, प्रयोग, व्यवस्था,

रचना, आयोजन, नियुक्ति, व्यवहार
योजित–(सं॰वि॰) रचा हुआ, बनाया हुआ, नियमबद्ध, मिलाया हुआ।
योज्य–(सं॰वि॰) व्यवहार करने योग्य; (पुं॰) जोड़ी जाने वाली संख्यायें।
योत्र–(सं॰नपुं॰) वह बंधन जो जुए को बैलों की गरदन में जोड़ता है, जोत।
योद्धा–(हिं॰पुं॰) युद्ध करने वाला सिपाही
योधन–(सं॰नपुं॰) युद्ध की सामग्री।
योधा–(हिं॰पुं॰) देखो योद्धा।
योध्य–(सं॰वि॰) युद्ध करने योग्य।
योनि–(सं॰पुं॰स्त्री॰) आकर, खान, जल, उत्पादक, कारण, प्राणियों का उत्पत्ति स्थान, स्त्रियों की जननेंद्रिय, भग, शरीर, देह; पुराण के अनुसार चौरासी लाख योनि हैं जिसके अण्डज, स्वेदज, उद्भिज और जरायुज ये चार भेद हैं; **योनिज**–(सं॰पुं॰) जरायुज, जिसकी उत्पत्ति योनि से हो; **योनिदेवता**–(सं॰ स्त्री॰) पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र; **योनियुक्त**–(सं॰वि॰) मोक्ष प्राप्त; **योनिसंकर**–(सं॰पुं॰) वर्णसंकर, दोगला।
योरोप, योरोपियन – देखो यूरोप, यूरोपियन।
योषणा–(सं॰स्त्री॰) असती स्त्री।
योषा–(सं॰स्त्री॰) नारी, स्त्री।
योषित्प्रिया–(सं॰स्त्री॰) हरिद्रा, हल्दी।
योषिता–(सं॰स्त्री॰) नारी, स्त्री।
यों–(हिं॰अव्य॰) देखो यों।
यौं–(हिं॰सर्व॰) यह।
यौक्तिक–(सं॰वि॰) जो युक्ति के अनुसार ठीक हो।
यौगपद, यौगपद्य–(सं॰ नपुं॰) समकालीन।
यौगिक–(सं॰वि॰) मिश्रित, मिला हुआ, प्रकृति प्रत्ययादि से बना हुआ शब्द, वह शब्द जो दो शब्दों से मिलकर बना हो, अट्ठाईस मात्राओं का एक छन्द।
यौतक–(सं॰स्त्री॰) यौतुक, दहेज; **यौतुक**–(सं॰नपुं॰) विवाह काल में वर और कन्या को दिया हुआ धन।
यौध–(सं॰त्रि॰) युद्धप्रिय, योद्धा।
यौधेय–(सं॰पुं॰) योद्धा, युधिष्ठिर का पुत्र
यौन–(सं॰वि॰) योनि सम्बन्धी।
यौवत–(सं॰नपुं॰) वह नाच जिसमें बहुत सी नटियां मिलकर नाचती हैं।
यौवन–(सं॰नपुं॰) युवा होने का भाव, युवावस्था; **यौवनकण्टक**–(सं॰पुं॰) मुहासा; **यौवनमत्ता**–(सं॰स्त्री॰) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।
यौवराज्य–(सं॰नपुं॰) युवराज का पद।
यौवराज्याभिषेक–(सं॰पुं॰) युवराज बनाये जाने के समय का अभिषेक और उत्सव।

र

र–हिन्दी वर्णमाला का सत्ताइसवां व्यंजन वर्ण इसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्धा के साथ कुछ स्पर्श करने से होता है यह स्पर्श वर्ण और उष्म वर्ण के मध्य का वर्ण है।
र–(सं॰पुं॰) अग्नि, आँच, ताप, कामाग्नि, जलना, झुलसना, सितार का एक बोल, (वि॰) तीक्ष्ण, तीखा।
रंक–(हिं॰वि॰) देखो रङ्क; धनहीन।
रंग–(हिं॰पुं॰) देखो रङ्ग; रांगा, नृत्य, रणक्षेत्र।
रंग–(हिं॰पुं॰) दृश्य पदार्थ का वह गुण जो केवल आँखों से जाना जाता है यथा, लाल, काला, पीला; रंगने के लिये व्यवहार में आने वाला पदार्थ, वर्ण; मुख की आकृति, मन की तरंग, आनंद, भांति, प्रकार, तरह, चालढाल, प्रेम, प्रसन्नता, दया, कृपा, अनुराग, कोई विचित्र व्यापार, दृश्य, युवावस्था, प्रभाव, शोभा, सुन्दरता, महत्व का प्रभाव, आनन्द का उत्सव, क्रीड़ा, कौतुक, युद्ध, लड़ाई; **चेहरे का रंग उतर जाना**–चेहरे में कान्ति न रह जाना; **रंग निखरना**–चेहरा चमकीला हो जाना; **रंग बदलना**–क्रुद्ध होना; **रंग टपकना**–जवानी उमड़ना; **रंग जमना**–प्रभाव पड़ना; **रंग लाना**–प्रभाव दिखलाना; **रंग में भंग होना**–आनन्द में विघ्न पड़ना; **रंग मचाना**–युद्ध करना; **रंग जमना**–आनन्द आना; **रंग मचाना**–धूमधाम मचाना; **रंग रचना**–उत्सव होना; **रंगढंग**–स्थिति, अवस्था; **रंग मारना**–बाजी जीतना।
रंगई–(हिं॰पु॰) कपड़ा छापने वालों की एक जाति।
रंगक्षेत्र–(सं॰पुं॰) देखो रङ्गभूमि।
रंगत–(हिं॰स्त्री॰) आनन्द, दशा।
रंगतरा–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार की बड़ी मीठी नारंगी, संगतरा।
रंगन–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट होती है।
रंगना–(हिं॰क्रि॰) किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना, किसी को अपने अनुकूल करना, किसी पर अपना प्रभाव डालना, अपने प्रेम में किसी को फँसाना, किसी के प्रेम में लिप्त होना
रंग बदल–(हिं॰पुं॰) हल्दी।
रंगबिरंग, रंगबिरंगा–(हिं॰वि॰) कई रंगों का, तरह तरह का, अनेक प्रकार का
रंगभरिया–(हिं॰वि॰) रंगसाज, चित्रकार
रंगभवन–(हिं॰पु॰) देखो रंगमहल।
रंगभूमि–(हिं॰स्त्री॰) देखो रङ्गभूमि।
रंगमहल–(हिं॰पुं॰) भोग विलास का स्थान।
रंगमार–(हिं॰पुं॰) ताश का एक खेल।
रंगरली–(हिं॰स्त्री॰) आमोद प्रमोद, आनन्द।
रंगरस–(हिं॰पुं॰) आनन्द मंगल।
रंगरसिया–(हिं॰पु॰) भोग विलास करने वाला मनुष्य, विलासी मनुष्य।
रंगराता–(हिं॰वि॰) अनुराग पूर्ण।
रंगरूट–(हिं॰पु॰) वह सिपाही जो पुलीस या सेना में नया भरती हुआ हो, वह मनुष्य जो किसी काम के सीखने में लगा हो।
रंगरेज–(हिं॰पु॰) कपड़ा रंगने का काम करने वाला।
रंगरेली–(हिं॰स्त्री॰) देखो रंगरली।
रंगवाई–(हिं॰स्त्री॰) रंगने का काम।
रंगवाना–(हिं॰क्रि॰) दूसरे से रंगने का काम करना।
रंगशाला–(हिं॰स्त्री॰) देखो रङ्गशाला; नाटक घर।
रंगाई–(हिं॰स्त्री॰) रंगने का काम, रंगने की क्रिया या वेतन, रंगने का भाव।
रंगाना–(हिं॰क्रि॰) रंगने का काम दूसरे से कराना; **रंगावट**–(हिं॰स्त्री॰) रंगाई
रंगिया–(हिं॰पुं॰) रंगरेज, रंगसाज।
रंगी–(हिं॰वि॰) आनन्दी।
रंगीकेटा–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
रंगीला–(हिं॰वि॰) आनन्दी, प्रेमी, अनुरागी, सुन्दर, मनोहर।
रंगीलीटोड़ी–(हिं॰स्त्री॰) संपूर्ण जाति की एक रागिणी।
रंगैया–(हिं॰पुं॰) रंगने वाला।
रंच–(हिं॰वि॰) अल्प, थोड़ा।
रंजक–(हिं॰वि॰) देखो रञ्जक; प्रसन्न करने वाला।
रंजक–(हिं॰स्त्री॰) बत्ती लगाने के लिये बंदूक की प्याली में रक्खी जाने वाली थोड़ी सी बारूद; किसी को उत्तेजित करने के लिये कही हुई बात।
रंजन–(हिं॰पु॰) देखो रञ्जन।
रंजना–(हिं॰क्रि॰) आनन्दित करना, प्रसन्न करना, रंगना, स्मरण करना, भजना।
रंजित–(हिं॰वि॰) देखो रंजित।
रंडापा–(हिं॰पुं॰) वैधव्य, विधवा होने की दशा।
रंडुआ, रंडुवा–(हिं॰ पुं॰) वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गई हो।
रंत–(हिं॰वि॰) रत, अनुरक्त।
रंद–(हिं॰पुं॰) घर की भीतों में का वह छिद्र जो प्रकाश और वायु आने के लिये रक्खा जाता है, गढ़ की भीतों में का वह मोखा जिसमें से बाहर की ओर तोप या बंदूक चलाई जाती है।
रंदना–(हिं॰क्रि॰) लकड़ी की सतह को रंदे से छील कर चिकना करना।
रंदा–(हिं॰ पु॰) बढई का वह अस्त्र जिससे वह लकड़ी के तल को छील कर चिकनी करता है।
रंधन–(हिं॰पुं॰) देखो रन्धन, रसोई बनाना
रंध्र–(हिं॰ पुं॰) देखो रन्ध्र, छिद्र।
रंबा–(हिं॰ पुं॰) देखो रम्भा, जुलाहों का एक अस्त्र।
रंभ–(हिं॰पुं॰) देखो रम्भ, बांस।
रंभा–(हिं॰पुं॰) देखो रम्भा; केला।
रंभाना–(हिं॰क्रि॰) गाय का शब्द करना, गाय का बोलना।
रंहचटा–(हिं॰पुं॰) किसी मनोरथ की सिद्धि के लिये लालसा, लालच।
रंहस्–(सं॰नपुं॰) वेग, गति, विष्णु, शिव।
रइअत–(हिं॰स्त्री॰) देखो रैयत।
रइकौ–(हिं॰क्रि॰वि॰) कुछ भी, थोड़ा भी, ज़रा भी।
रइनि–(हिं॰स्त्री॰) रजनी, रात्रि, रात।
रई–(हिं॰ स्त्री॰) दही मथने की लकड़ी, मथानी, गेहूं का मोटा दरदरा आंटा, सूजी, चूर्णमात्र, (वि॰) युक्त, मिली हुई, डूबी हुई, अनुरक्त।
रउताई–(हिं॰स्त्री॰) स्वामी या मालिक होने का भाव, स्वामित्व।
रउरे–(हिं॰सर्व॰) मध्यम पुरुष का आदर सूचक शब्द, आप।
रकछ–(हिं॰पुं॰) पत्तों की बनी हुई पकौड़ी।
रकत–(हिं॰पुं॰) देखो रक्त, रुधिर, लोहू, (वि॰) लाल रंग का; **रकतकन्द**–(हिं॰ पुं॰) देखो रक्तकन्द।
रकतांक–(हिं॰पुं॰) देखो रक्ताङ्क।
रकतांक–(हिं॰पुं॰) कुंकुम, केसर, लाल चन्दन।
रकबाहा–(हिं॰पुं॰) घोड़ों का एक भेद।
रकमंजनी–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का पौधा।
रकार–(सं॰पुं॰) "र" वर्ण का बोधक वर्ण
रक्खना–(हिं॰क्रि॰) देखो रखना।
रक्त–(सं॰नपुं॰) कुंकुम, केसर, तांबा, लाल कमल, सिन्दूर, सिंगारिफ़, शरीर के सात धातुओं में से एक जो लाल रंग का होता है और शरीर की नसों में से चलता रहता है, रुधिर, (वि॰) लाल रंग का, अनुरक्त, रंजित, रंगा हुआ; **रक्तक**–(सं॰पुं॰) गुलदुपहरिया का पौधा, लाल कपड़ा, लाल रंग का घोड़ा, केसर, कुंकुम; **रक्तकण्ठ**–(सं॰ पुं॰) कोकिल, कोयल, (वि॰) मीठे स्वर का, (पुं॰) बैगन, भंटा; **रक्तकदली**–(सं॰स्त्री॰) चम्पा, केला; **रक्तकन्द**–(सं॰ पुं॰) प्याज, रतालू; विद्रुम, मूंगा; **रक्तकमल**–(सं॰ नपुं॰) लाल रंग का कमल। **रक्तकम्बल**–(सं॰ नपुं॰) लाल कमल, कुईं; **रक्तकाञ्चन**–(सं॰पुं॰) कचनार का वृक्ष; **रक्तकान्ता**–(सं॰स्त्री॰) लाल गदहपूरना; **रक्तकास**–(सं॰ पुं॰) एक रोग जिसमें श्वास नाली और फुप्फुस में से सफ़ेद स्राव निकलता है; **रक्तकाष्ठ**–(सं॰नपु॰) लाल रंग की लकड़ी, पतंग की लकड़ी; **रक्तकुमुद**–(सं॰नपुं॰) लाल कोईं का फूल; **रक्तकुरण्टक**–(सं॰पुं॰) लाल कटसरैया; **रक्तकुष्ठ**–(सं॰ पुं॰) विसर्प नामक रोग; **रक्तकुसुम**–(सं॰पुं॰) कचनार, मदार, रक्त-

कुसुमा—(सं०स्त्री०) अनार का वृक्ष; रक्तकृमिजा—(सं०स्त्री०) लाक्षा, लाह; रक्तकेशर—(सं०पु०) फरहद का पेड़; रक्तकेशा—(सं० वि०) जिसके बाल लाल रंग के हों; रक्तकैरव—(सं०नपुं०) लाल कुमुद; रक्तकोप—(सं०पु०) रुधिर का विकार; रक्तक्षय—(सं०पुं०) रुधिर का स्राव; रक्तगन्धक—(सं०नपुं०) वाल नामक गन्धद्रव्य; रक्तगन्धा—(सं०स्त्री०) अश्वगन्धा, असगन्ध; रक्तगर्भा—(सं०स्त्री०) मेंहदी का पेड़; रक्तग्रीव—(सं०पुं०) राक्षस; रक्तचञ्चु—(सं० पुं०) शुक तोता; रक्तचन्दन—(सं० पु०) लाल चन्दन; रक्तपूर्ण—(सं० नपुं०) सिन्दूर, सेंदुर; रक्तज—(सं०वि०) रक्त से उत्पन्न होने वाला; रक्तजिह्व—(सं०पुं०) सिंह, (वि०) लाल जीभ वाला; रक्तता—(सं० स्त्री०) लालिमा, ललाई; रक्ततुण्ड—(सं० पुं०) शुक, तोता, (वि०) लाल मुख वाला; रक्ततुण्डक—(सं०पुं०) सीसा नामक धातु; रक्तदन्तिका—(सं०स्त्री०) चण्डिका देवी; रक्तदला—(सं०स्त्री०) नलिका नाम का गन्ध द्रव्य; रक्तदूषण—(सं०वि०) रुधिर को दूषित करने वाला; रक्तदृश्—(सं०पुं०) कपोत, कबूतर; रक्तधरा—(सं०स्त्री०) माँस के भीतर की झिल्ली जिसमें रुधिर रहता है; रक्तधातु—(सं० पुं०) गैरिक गेरू; रक्तनयन—(सं०पुं०,नपुं०) कबूतर, चकोर; रक्तनासिक—(सं०पुं०) उल्लू पक्षी; रक्तनील—(सं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा विषैला बिच्छू; रक्तनेत्र—(सं०पुं०) सारस, कबूतर, (वि०) लाल आँखों वाला; रक्तप—(सं०पुं०) राक्षस, (वि०) रुधिर पीने वाला; रक्तपक्ष—(सं०पुं०) गरुड़; रक्तपट—(सं०वि०) लाल रंगके वस्त्र पहिरने वाला; रक्तपत्र—(सं० पु०) पिन्डालू; रक्तपत्रिका—(सं०स्त्री०) लाल पत्ता; रक्तपद्म—(सं० पुं०) लाल कमल; रक्तपर्ण, रक्तपल्लव—(सं० पुं०) लाल पत्ता; रक्तपा—(सं०स्त्री०) जोंक, डाइन, (वि०) रुधिर पीने वाली; रक्तपात—(सं० पुं०) रक्तस्राव, रुधिर का बहना; रक्तपाता—(सं०स्त्री०) जोंक; रक्तपायी—(सं० पुं०) मत्कुण, खटमल, (वि०) रुधिर पीने वाला; रक्तपाषाण—(सं० पुं०) गेरू, लाल पत्थर; रक्तपिण्डक—(सं०पुं०) रतालू, अड़हुल का वृक्ष; रक्तपिटिका—(सं० स्त्री०) लाल फोड़ा; रक्तपित्त—(सं०नपुं०) वह रोग जिसमें मुँह नाक आदि से रुधिर निकलता है; रक्तपुष्प—(सं० पुं०) करवीर, कनेर, अनार का वृक्ष, गुलदुपहरिया, (नपुं०) लाल फूल; रक्तपुष्पक—(सं०पुं०) परास का पेड़; रक्तपुष्पा—(सं०पु०) सेमर का वृक्ष, नागदौना; रक्तपूय—(सं०नपुं०) रुधिर और पीब; रक्तपूरक—(सं०नपुं०) इमली; रक्तपोस्त—(सं० पु०) लाल पोस्ता;

रक्तप्रदर—(सं०पुं०) स्त्रियों की योनि से रुधिर बहने का प्रदर रोग; रक्तबीज—(सं०पुं०) दाडिम, अनार, शुम्भ और निशुम्भ का एक सेनापति जिसको दुर्गाने मारा था; रक्तबीजा—(सं०पु०) सिन्दूर पुष्पी; रक्तभव—(सं० नपुं०) मांस; रक्तमञ्जरी—(सं० स्त्री०) लाल कनैर; रक्तमण्डल—(सं० पुं०) लाल कमल; रक्तमस्तक—(सं० पु०) लाल सिर वाला सारस पक्षी; रक्तमुख—(सं० पुं०) साठी धान; रक्तमूला—(सं०पुं०) लज्जालू; रक्तमेह—(सं०पुं०) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें रुधिर के रंग का मूत्र निकलता है; रक्तमोक्षण—(सं० नपुं०) रुधिर का स्राव; रक्तमोचन—शरीर में से रुधिर निकलना; रक्तयष्टि—(सं० स्त्री०) मजीठ; रक्तरंगा—(सं० स्त्री०) मेंहदी; रक्तला—(सं०स्त्री०) गुंजा, कौवाठोंठी; रक्तलोचन—(सं०पुं०) कपोत, कबूतर, (वि०) लाल नेत्र वाला; रक्तवटी—(सं० स्त्री०) मसूरिका, शीतला रोग; रक्तवर्ण—(सं०पु०) प्रवाल, मूंगा, बीरबहुटी, (वि०) लाल रंग का; रक्तवर्तक—(सं०पुं०) लाल बटेर; रक्तवर्त्म—(सं० पुं०) कुक्कुर, मुरगा; रक्तवर्धन—(सं० पुं०) बैगन, (वि०) रुधिर बढ़ाने वाला; रक्तवल्ली—(सं० स्त्री०) मजीठ; रक्तवसन—(सं० पुं०) सन्यासी, लाल कपड़ा; रक्तवारिज—(सं० नपुं०) लाल कमल; रक्तवासस—(सं०स्त्री०) लाल कपड़ा पहरने वाला; रक्तवृष्टि—(सं० स्त्री०) आकाश से लाल रंग के जल की वृष्टि; रक्तशाली—(सं० पुं०) एक प्रकार का लाल रंग का धान; रक्तशालुक—(सं०पुं०) कमल की जड़; रक्तशासन—(सं०नपु०) सिन्दूर; रक्तशिम्बी—(सं० स्त्री०) लाल सेम; रक्तशीर्षक—(सं०पु०) सारस पक्षी; रक्तशेखर—(सं०पुं०) पुन्नाग; रक्तश्याम—(सं०वि०) गहरे लाल रंग का; रक्तसरोरुह—(सं० नपुं०) लाल कमल; रक्तसार—(सं० नपुं०) लाल चन्दन, अमलबेंत; रक्तस्राव—(सं०पु०) शरीर के किसी अंग से रुधिर का बहना। रक्तहंसा—(सं०स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी। रक्तहर—(सं०पुं०) भल्लातक, भिलावाँ।

रक्ता—(सं०स्त्री०) लाक्षा, घुमची, बच।
रक्ताकर—(सं०पुं०) प्रवाल, मूंगा।
रक्ताक्त—(सं०नपुं०) लाल चन्दन।
रक्ताक्ष—(सं०पुं०) भैंस, कबूतर, चकोर,
रक्ताङ्ग—(सं०पु०) मंगल ग्रह, प्रवाल, मूंगा, खटमल, कुंकुम, केसर।
रक्तातिसार—(सं०पुं०) एक प्रकार का रोग जिसमें शौच के साथ रुधिर निकलता है। रक्ताधरा—(सं०स्त्री०) किन्नरी। रक्ताधार—(सं०पुं०) चर्म, चमड़ा। रक्ताब्ज—(सं०नपुं०) लाल कमल। रक्ताभ—(सं०नपुं०) इन्द्रगोप, वीरबहूटी। रक्ताम्बर—(सं०नपुं०) लाल वस्त्र, (पु०) गेरुआ वस्त्र पहने हुआ, सन्यासी। रक्तारुण—(सं०पुं०) रुधिर के समान लाल। रक्तार्क—(सं०पुं०) लाल चन्दन। रक्तालता—(सं०स्त्री०) मजीठ। रक्तालु—(सं०पुं०) रतालू नामक कन्द। रक्तावारि—(सं०पुं०) लाल कनेर का फूल। रक्तस्राव—(सं०पु०) नाक से लाल रुधिर बहना।
रक्तार्श—(सं०नपुं०) आर्श रोग जिसमें रुधिर निकलता है।
रक्ति—(सं०स्त्री०) अनुराग, प्रेम, एक रत्ती का परिमाण।
रक्तिका—(सं०स्त्री०) गुंजा, घुंघची, रत्ती
रक्तिमा—(सं०स्त्री०) ललाई,
रक्तोत्पल—(सं०नपुं०) लाल कमल।
रक्तोत्पलाभ—(सं०पुं०) लाल रंग।
रक्तोदर—(सं०पुं०) रोहू मछली, एक प्रकार का बहुत विषैला बिच्छू।
रक्तोपल—(सं०नपुं०) लाल मिट्टी, गेरू
रक्तौदन—(सं० नपुं०) लाल चावल का भात।
रक्ष—(सं०त्रि०) रक्षा करने वाला, रक्षा, लाह, राक्षस, छप्पय का एक भेद।
रक्षईश—(सं०पुं०) रावण।
रक्षक—(सं०पुं०) रक्षा करने वाला, बचाने वाला, पहरेदार। रक्षण—(सं०नपुं०) रक्षा करना, पालन पोषण करना। रक्षणकर्ता—(सं०पुं०) रक्षा करने वाला। रक्षणीय—(सं०वि०) रक्षा करने योग्य।
रक्षन—(हिं०पुं०) देखो रक्षण। रक्षना—(हिं०क्रि०) रक्षा करना।
रक्षपाल—(सं०पुं०) रक्षा करने वाला।
रक्षमाण—(सं०वि०) देखो रक्ष्यमाण।
रक्षस—(हिं०पुं०) राक्षस, दानव।
रक्षा—(सं०स्त्री०) कष्ट नाश या आपत्ति से बचाना, गोंद, राख, भस्म, अनिष्ट निवारण के लिये हाथ में बांधा हुआ सूत्र। रक्षागृह—(सं०नपुं०) सूतिकागृह, रक्षातिक्रम—(सं०पुं०) नियमभंग, रक्षापति—(सं०पुं०) रक्षापुरुष, नगर वासियों की रक्षा करने वाला, रक्षापत्र—(सं०पुं०) भोजपत्र, सफ़ेद सरसों; रक्षापुरुष—(सं०पुं०) पहरेदार।
रक्षापेक्षक—(सं० पुं०) अन्तःपुर का पहरा देने वाला, नट। रक्षाप्रदीप—(सं०पु०) भूत प्रेत आदि की बाधा से रक्षा करने के लिये जलाया हुआ दीपक। रक्षाबन्धन—(सं०पुं०) श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होने वाला हिन्दुओं का एक त्योहार जिसमें हाथ की कलाई पर रक्षासूत्र बांधा जाता है। रक्षाभूषण—(सं०नपुं०) कवचादि युक्त अलकार। रक्षामंगल—(सं०नपुं०) वह अनुष्ठान या धार्मिक क्रिया जो भूत प्रेत की बाधा से रक्षित होने के लिये की जाय।
रक्षामणि—(सं० पुं०) वह रत्न जो किसी ग्रह के प्रकोप से बचने के लिये पहना जाय।
रक्षिक—(सं०पुं०) रक्षक, पहरेदार।
रक्षित—(सं०वि०) रक्षा किया हुआ, पाला पोसा हुआ, रक्खा हुआ।
रक्षितव्य—(सं०वि०) रक्षा करने योग्य।
रक्षिता—(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम
रक्षी—(हिं०पुं०) राक्षसपूजक देखो रक्षक,
रक्षोगण—(सं०पुं०) राक्षसों का समूह।
रक्षोघ्न—(सं०नपुं०) हींग, सफ़ेद सरसों, भिलावें का वृक्ष।
रक्षोजननी—(सं०स्त्री०) राक्षस की माता, रात्रि, रात।
रक्षोहन्—(सं०वि०) राक्षस को मारने वाला
रक्ष्य—(सं०वि०) रक्षणीय, रक्षा करने योग्य
रख—(हिं०स्त्री०) पशुओं के चरने की भूमि
रखटी—(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की ईख।
रखना—(हिं० क्रि०) ठहराना, रक्षा करना, निर्वाह करना, सौंपना, बंधक संग्रह करना, नियुक्त करना, अपने अधिकार में लेना, रोक लेना, आश्रित रखना, डेरा डालना, गर्भ धारण करना, पक्षियों का अण्डा देना, बचाना, सम्भोग करना, उपपत्नी बनाना, मन में धारण करना, चोट पहुँचाना, व्यवहार करना, स्थगित करना,
रखनी—(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिससे विवाह न हुआ हो और योंही घर में रख ली गई हो, रखेली, सुरैतिन।
रखया—(हिं०वि०) रक्षा करने वाली।
रखवाई—(हिं०स्त्री०) खेतों की रखवाली, रखने की क्रिया या ढंग, रखवाई का शुल्क मजूरी, चौकीदारी। रखवाना—(हिं०क्रि०) रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखवार—(हिं०पुं०) रखवाला, चौकीदार। रखवारी—(हिं०स्त्री०) रखवाली। रखवाला—(हिं०पुं०) चौकीदार, पहरेदार।
रखवाली—(हिं०स्त्री०) रक्षा करने की क्रिया या भाव, रखाई—(हिं०स्त्री०) देखो रखवाली।
रखान—(हिं०स्त्री०) चराई की भूमि।
रखाना—(हिं०क्रि०) रखने का काम दूसरे से कराना, रखवाली करना, नष्ट होने से बचाना। रखिया—(हिं०पुं०) रखने वाला, गांव के पास का वह वृक्ष जो पूजा के लिये सुरक्षित रहता है। रखियाना—(हिं०क्रि०) पात्रों को राख से माँजना
रखी—(हिं०पुं०) देखो ऋषि, मुनि।
रखीसर—(हिं०पुं०) ऋषीश्वर।
रखेली—(हिं०स्त्री०) रखनी, सुरैतिन।
रखैया—(हिं०पुं०) देखो रक्षक।
रखौंत—(हिं०पुं०) पशुओं के चरने के लिये छोड़ी हुई भूमि।
रगंड—(हिं०पु०) हाथी का कपोल।
रगड़—(हिं०स्त्री०) घर्षण, रगड़ने से उत्पन्न चिह्न, बड़ा परिश्रम, झगड़ा;
रगड़ना—(हिं०क्रि०) घसना, पीसना, शीघ्रता से कोई काम करना, अभ्यास

करने के लिये कोई काम बारम्बार करना, स्त्री प्रसङ्ग करना, कष्ट देना; रगड़वाना–(हिं०क्रि०) दूसरे को रगड़ने में प्रवृत्त करना; रगड़ा–(हिं० पु०) घर्षण, रगड़, अत्यन्त परिश्रम, वह झगड़ा जो शीघ्र समाप्त न हो; रगड़ान–(हिं०स्त्री०) रगड़ने की क्रिया या भाव।

रगण–(सं०पुं०) छन्द शास्त्र में तीन वर्णों का समूह जिसमें विचला वर्ण लघु तथा आदि अन्त के वर्ण गुरु होते हैं।

रगत–(हिं० पुं०) देखो रक्त, रुधिर।

रगपट्ठा–(हिं० पुं०) शरीर के भीतर के भिन्न भिन्न अश, किसी विषय की सूक्ष्म बातें।

रगर–(हिं० पुं०) देखो रगड़; रगरा–देखो रगड़ा।

रगवाना–(हिं० क्रि०) शान्त कराना, चुप कराना।

रगा–(हिं० पुं०) मोर।

रगाना–(हिं० क्रि०) शांत होना या करना।

रगी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटा अन्न, देखो रग्गी।

रगीला–(हिं०पुं०) हठी, दुष्ट।

रगेद–(हिं० स्त्री०) दौड़ने या भागने की क्रिया; रगेदना–(हिं०क्रि०) भगा देना।

रग्घी–(हिं० स्त्री०) अधिक वर्षा के बाद होने वाली धूप।

रघु–(सं०पुं०)सूर्य वंशीय राजा दिलीप के पुत्र जो श्रीरामचन्द्र के प्रपितामह थे; रघुकुल–(सं० पुं०) राजा रघु का वंश; रघुनन्दन–(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र; रघुनाथ–(सं० पुं०) श्रीरामचन्द्र; रघुनायक–(सं०पुं०)श्रीरामचन्द्र; रघुपति–(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र; रघुराई–(हिं० पुं०) श्रीरामचन्द्र; रघुराज–श्रीराम; रघुवंश–(सं०पुं०) महाराज रघु का वंश जिसमें श्रीरामचन्द्र उत्पन्न हुए थे, कालिदास कविके एक महाकाव्य का नाम; रघुवंश कुमार–(सं० पुं०) रघुवंश तिलक–(सं०पुं०)श्रीरामचन्द्र; रघुवंशी–(सं०वि०) जिसका जन्म रघु के वंश में हुआ हो, उत्तर भारत-वासी क्षत्रियोंके अन्तर्गत एक जाति; रघुवर–(सं० पुं०) श्रीरामचन्द्र; रघुवीर–(सं०पुं०)श्रीरामचन्द्र;रघूत्तम–(सं०पुं०)रघुकुल में श्रेष्ठ,श्रीरामचन्द्र।

रघूद्वह–(सं०पुं०) देखो रघूत्तम।

रङ्क–(सं०पुं०) कृपण, कंजूस, मन्द, धनहीन, गरीब।

रङ्कुमाली–(सं० पु०) एक प्रकार के विद्याधर।

रङ्ग–(सं०नपुं०) धातु विशेष, रांगा, नृत्य,नाच, रंगने की वस्तु,नाटकघर, सुहागा, वर्ण, रंगने की वस्तु,प्रभाव, प्रेम, ढंग, अद्भुत व्यापार, शोभा, सौन्दर्य, दशा, स्थिति, आनन्द, मन की तरंग, युवावस्था, प्रभाव, रंगत, उमंग; रङ्गकार–(सं०पुं०) चित्रकार; रङ्ग क्षेत्र–(सं०नपुं०) नाटकागार;रङ्ग गृह–(सं०नपुं०) रङ्ग भूमि; रङ्ग चर–(सं०पुं०) पहलवान;रङ्गज–(सं०नपुं०) रङ्ग जीवक–(सं०पुं०) नाटयकार, चित्रकार;रङ्गण–(सं० नपुं०) नृत्य, नाच;रङ्गज–(सं०पुं०) सोहागा; रङ्ग दलिका–(सं०स्त्री०) नागबेल; रङ्गदा–(सं० स्त्री०) फिटकरी; रङ्ग देवता–(सं० स्त्री०) एक कल्पित देवता जो रंगभूमि के अधिष्ठाता माने जाते है; रङ्ग द्वार–(सं० पुं०) प्रवेश द्वार; रङ्ग प्रवेश–(सं०पु०)अभिनय के लिये किसी पात्र का रंगभूमि में प्रवेश करना; रङ्ग भवन–(सं० नपुं०) रंग महल;रङ्ग भूमि–(सं० स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णिमा;रङ्ग भूमि–(सं०स्त्री०) अखाड़ा;रङ्ग मङ्गल–(सं०नपुं०) रंगमंच पर मिलकर उत्सव करना; रङ्ग मण्डप–(सं०नपुं०) देखो रंगभूमि; रङ्ग मध्य–(सं०पु०) रङ्ग स्थल; रङ्ग मल्ली–(सं०स्त्री०) वीणा, बीन; रङ्ग महल–(हिं०पुं०) दिल्ली का प्रसिद्ध महल जहां मुगल बादशाह आमोद प्रमोद किया करते थे, भोग विलास का स्थान।

रङ्ग माणिक्य–(सं० नपुं०) मानिक रत्न

रङ्गमाता–(सं०स्त्री०) लाक्षा, कुटनी।

रङ्गराज–(सं०पुं०) ताल का एक भेद।

रङ्ग वाराङ्गना–(सं०स्त्री०) नाच गाना करने वाली वेश्या। रङ्ग विद्याधर–(सं० पुं०) संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक,(वि०) नाचने में निपुण। रङ्गबीज–(सं०पुं०) रुपा, चाँदी। रङ्गशाला–(सं०स्त्री०) नाट्य गृह। रङ्गांगण–(सं०पुं०)नाट्य शाला।

रङ्गारि–(सं०पु०) करवीर, कनेर।

रङ्गा भरण–(सं०पुं०) संगीत में ताल का एक भेद। रङ्गालय–(सं० पुं०) रंगक्षेत्र, नाटक घर। रङ्गावतरण–(सं०नपुं०) अभिनय करने वाला नट।

रङ्गी–(सं०स्त्री०) रंगा हुआ।

रचक–(सं० पुं०) रचना करने वाला, रचयिता। रचन–(सं०नपुं०) निर्माण, रचना। रचना–(सं० स्त्री०) फूलों से गुच्छे या माला बनाना, बाल गूथना, यथा क्रम रखना, स्थापित करना, वाक्य विन्यास, चमत्कार युक्त गद्य या पद्य, विश्वकर्मा की स्त्री का नाम

रचना–(हिं० क्रि०) हाथों से बनाकर प्रस्तुत करना, ग्रन्थ आदि लिखना, रंगा जाना, सजाना, अनुरक्त होना, उत्पन्न करना, कल्पना करना, ठानना, निश्चित करना, क्रम में रखना।

रचनीय–(सं०वि०)रचना करने योग्य।

रचयिता–(सं० वि०) निर्माता, रचने वाला। रचवाना–(हिं० क्रि०) रचने का काम दूसरे से कराना, मेंहदी या महावर लगवाना। रचाना–(हिं० क्रि०) बनाना, रचवाना। रचित (सं० वि०) रचा हुआ, गूंथा हुआ, शोभित, परिष्कार किया हुआ।

रचितव्य–(सं०वि०)रचना करने योग्य

रचिपचि–(हिं०क्रि०वि०) परिश्रम से।

रच्छस–(हिं०पुं०) देखो राक्षस।

रच्छा–(हिं०स्त्री०) देखो रक्षा।

रज–(सं०स्त्री०) स्त्री का आर्तव, स्त्री का कुसुम, (पुं०) पराग, रजोगुण, स्कन्द की सेना का नाम, वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम, जल, पानी, धूल, (हिं०पुं०) चाँदी, रात्रि, ज्योति, प्रकाश, भुवन, लोक।

रजःसार–(सं०नपुं०) कर्पूर, कपूर।

रजक–(सं०पुं०) धावक, धोबी।

रजगुण–हिं०पुं०) देखो रजोगुण।

रजतंत–(हिं०स्त्री०) शूरता, वीरता।

रजत–(सं० नपुं०) चांदी, हाथीदांत, रुधर, हृद, तालाब,(वि०) सफेद रंग का, शुक्ल, लाल। रजत कुम्भ–(सं० पु०) सोने या चाँदी का कलश।

रजतगिरि–(सं०पु०) कैलाश पर्वत।

रजतद्युति–(सं०पुं०) हनुमान। रजत पात्र–(सं० नपु०) चाँदी का पात्र।

रजत प्रतिमा–(सं० स्त्री०) सोने या चांदी की बनी हुई प्रतिमा। रजत भाजन–(सं० नपु०) चाँदी का बना हुआ पात्र। रजतमय–(सं०वि०)चाँदी का बना हुआ। रजताई–(हिं०स्त्री०) सफेदी। रजताकर–(सं०नपुं०) चाँदी की खान। रजताचल–(सं०पुं०)चाँदी का पहाड़। रजताद्रि–(सं०पुं०)कैलाश पर्वत। रजतोपमा–(सं०वि०) चाँदी के सदृश। रजन्–(सं०स्त्री०) राल।

रजनि–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात, हल्दी।

रजधानी–(हिं०स्त्री०) देखो राजधानी।

रजना–(हिं०क्रि०) रंगना, रंगा जाना।

रजनी–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात, हल्दी, वैवस्वत की पत्नी का नाम। रजनीकर–(सं०पुं०)चन्द्रमा। रजनी गन्धा–(सं०स्त्री०)गुलचेरी का फल। रजनीचर–(सं०पुं०) चन्द्रमा राक्षस, चोर, (वि०)रात में चलने वाला। रजनीजल–(सं०नपुं०) कुहिरा। रजनीपति–(सं० पुं०) चन्द्रमा। रजनीमुख–(सं०नपु०) सन्ध्या। रजनीरमण–(सं०पुं०)चन्द्रमा, रजनीश–(सं०पु०) चन्द्रमा।

रजपूत–(हिं०पुं०) देखो राजपूत। रजपूती–(हिं० स्त्री०) क्षत्रिय होने का भाव, शूरता, वीरता।

रजबली–(हिं० पुं०) भूपति, राजा।

रजबाही–(हिं०पुं०) नदी या नहर से निकाला हुआ वह बड़ा नल जिसमें से और भी अनेक छोटे छोटे नल निकलते हैं।

रजबलाह–(हिं०पुं०) मेघ, बादल।

रजवंती–(हिं०वि०) रजस्वला स्त्री।

रजवट–(हिं०स्त्री०) क्षत्रियत्व, वीरता।

रजवाड़ा–(हिं० पुं०) देशी राज्य।

रजदार–(हिं०पुं०) राजा की सभा।

रजस–(सं०वि०) अपवित्र, मैला।

रजस्तोक–(सं०पुं०) लोभ, लालच।

रजस्वला–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसको मासिक धर्म होता हो, ऋतुमती।

रजाई–(हिं० स्त्री०) जाड़े में ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसमें रूई भरी होती है, राजा होने का भाव, राजापन।

रजाना–(हिं०क्रि०) राज्य सुख का भोग करना, बहुत अधिक सुख देना, अच्छी तरह से रखना।

रजायस–(हिं०स्त्री०) आज्ञा, इच्छा।

रजिया–(हिं० स्त्री०) अन्न नापने का प्रायः डेढ सेर का मान।

रजीडंट–(हिं०पुं०) देखो रेज़िडेन्ट्।

रजोकुल–(हिं०पुं०) देखो राजकुल।

रजोगुण–(सं० नपुं०) जीवधारियों की प्रकृति का वह स्वभाव जिससे उनमें भोग विलास तथा दिखावटी बातों में रुचि उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन–(सं०नपु०) स्त्रियों का रजस्वला होना।

रजोधर्म–(सं०पुं०) स्त्रियों का मासिक धर्म।

रजोबल–(सं०नपुं०) अन्धकार। रजोमेघ–(सं०पुं०) धूलि का मेघ। रजोरस–(सं०नपुं०) अन्धकार, अन्धेरा।

रजोहर–(सं०पुं०) रजक, धोबी।

रज्जु–(सं०स्त्री०)रस्सी, घोड़े की लगाम, बागडोर, स्त्रियों के सिर की चोटी।

रञ्जक–(सं०नपु०) हिंगुल, ईङ्गुर,(पुं०) रंगरेज़।

रञ्जन–(सं०नपुं०)लाल चंदन, हिंगुल; प्रसन्न करने की क्रिया, (पुं०) मूंग, सोना रंगने की क्रिया, छप्पय का एक भेद।

रञ्जनक–(सं०पु०) कटहल का फल।

रञ्जनी–(सं०स्त्री०) मजीठ, निर्गुण्डी, हरिद्रा, हलदी। रञ्जनीय–(सं०वि०) आनन्ददायक, चित्त को प्रसन्न करने वाला।

रञ्जित–(सं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न, रंगा हुआ।

रट–(हिं०स्त्री०) बारंबार किसी शब्द को उच्चारण करनेकी क्रिया। रटन–(सं०नपुं०) कथन, कहना (हिं०स्त्री०) रटने की क्रिया या भाव।

रटना–(हिं०क्रि०) किसी शब्द को बारंबार कहना, कण्ठस्थ करने के लिये बारंबार दोहराना। रटन्त–(हिं० स्त्री०) रटने की क्रिया या भाव।

रटित–(सं०वि०) कथित; कहा हुआ।

रठ–(हिं०वि०) शुष्क, सूखा।

रढ़ना–(हिं०क्रि०) देखो रटना।

रण–(सं० पुं०) युद्ध, लड़ाई, (पुं०) शब्द, गति। रणकुशल–(सं०वि०) बड़ा योद्धा। रणकारी–(सं० वि०) युद्ध करने वाला। रणकृत्–(सं० वि०) लड़ाई करने वाला। रणक्षिति–(सं० स्त्री०) युद्धभूमि। रणक्षेत्र–(सं० पुं०) लड़ाई का मैदान। रणछोड़–

(हिं० पुं०) श्रीकृष्ण का एक नाम।
रणञ्जय–(सं० पुं०) युद्ध में जीतने वाला। रणतूर्य–सं० नपुं०) लड़ाई का डंका। रणत्कार–(सं० पुं०) झन् झन् शब्द करना। रणदुन्दुभि–(सं० पुं०) युद्ध का नगाड़ा। रणन–(सं० नपुं०) कोलाहल शब्द। रणप्रिय–(सं० नपुं०) उशीर, खस, (पुं०) विष्णु, बाज़ पक्षी। रणभूमि–(सं० स्त्री०) लड़ाई का मैदान। रणमंडा–(हिं०स्त्री०) पृथ्वी। रणमत्त–(सं० पुं०) हाथी, युद्ध में मत्त। रणमुख–(सं० नपुं०) सेना का अग्र भाग। रणमुष्टि–(सं० पुं०) कुक्रिया। रणमूर्धजा–(सं० स्त्री०) काकड़ासिंघी। रणरंक–(सं० पुं०) हाथी के दोनों दाँतों के बीच का स्थान। रणरंग–सं० पुं०) युद्ध का उत्साह, युद्ध क्षेत्र। रणरण–(सं० नपुं०) व्यग्रता, घबड़ाहट। रणरणक–(सं०पुं०) कामदेव, व्यग्रता, घबड़ाहट, उत्कण्ठा। रणलक्ष्मी–(सं० स्त्री०) विजय लक्ष्मी, युद्ध की देवी जो विजय करने वाली मानी जाती है। रणवृत्ति–(सं०पुं०) सैनिक, सिपाही। रणशिक्षा–(सं स्त्री०) युद्धाभ्यास। रणशूर–सं० पुं०) वह जो युद्ध में वीरता दिखलाता हो। रणसिंघा, रणसिंहा–हिं० पुं०) नरसिंघा, तुरही। रणस्तम्भ–(सं० पुं०) वह स्तम्भ जो युद्ध में विजय प्राप्त करने पर स्मारक रूप में बनवाया जाता हैं, विजय का स्मारक। रणस्थल–(सं० पुं०) रणभूमि, लड़ाई का मैदान। रणस्थान–(सं० नपुं०) लड़ाई का मैदान। रणस्वामी–(सं० पुं०) शिव, महादेव। रणहंस–(सं० पुं०) एक वर्णवृत्त का नाम। रणाग्र–(सं० नपुं०) युद्ध का आरम्भ। रणाङ्गण–(सं०नपुं०) लड़ाई का मैदान। रणाजिर–(सं० नपुं०) युद्ध क्षेत्र। रणातोद्य–(सं०नपुं०) लड़ाई का डंका। रणान्तकृत्–(सं०पुं०) विष्णु। रणायेत–(सं० वि०) रणक्षेत्र से भागने वाला। रणाभियोग–(सं० पुं०) युद्ध करना, लड़ना। रणावनि–(सं०स्त्री०) रणभूमि।
रणेचर–(सं०वि०) युद्ध क्षेत्र में विचरने वाला, (पुं०) विष्णु।
रणेश–(सं०पुं०) विष्णु, शिव, महादेव।
रण्ड–(सं० वि०) धूर्त, चालाक।
रण्डा–(सं० स्त्री०) विधवा, रांड़।
रण्य–(सं० वि०) रमणीय।
रण्वित–(सं० वि०) शब्द किया हुआ।
रत–(सं० नपुं०) मैथुन, स्त्री प्रसंग, योनि, लिङ्ग, प्रेम, प्रीति, (वि०) अनुरक्त, प्रेम में पड़ा हुआ, कार्य, में लगा हुआ, लिप्त, (हिं०पुं०) देखो रक्त, रुधिर।
रतकील–(सं० पुं०) कुत्ता।
रतगुरु–(सं० पुं०) पति, स्वामी।
रतजगा–(हिं० पुं०) किसी उत्सव या विहार आदि के उपलक्ष में सारी रात जाग कर विताना, रात भर होने वाला आनन्दोत्सव।
रतज्वर–(सं० पुं०) काक, कौवा।
रतताली–(सं० स्त्री०) कुटनी।
रतन–(सं० पुं०) देखो रत्न।
रतनजोत–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का रत्न, एक प्रकार का पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ में से लाल रंग निकलता है।
रतनाकर–(हिं० पुं०) देखो रत्नाकर।
रतनागर–(हिं० पुं०) समुद्र।
रतनागरभ–(हिं० स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
रतनार, रतनारा–(हिं०वि०) कुछ लाल, इस शब्द का प्रयोग आंखों के लिये किया जाता है। रतनारी–(हिं०स्त्री०) लाली, लालिमा, (पुं०) कए प्रकार का धान।
रतनारीच–(सं० पुं०) कुत्ता, लम्पट, व्यसनी पुरुष।
रतनिधि–(सं० पुं०) खंजन पक्षी।
रतनालिया–(हिं०वि०) देखो रतनार।
रतनावली–(हिं०स्त्री०) देखो रत्नावली।
रतमुहाँ–(हिं० वि०) लाल मुख वाला।
रताञ्जली–(सं० पुं०) लाल चन्दन।
रतायनी–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
रताना–(हिं० क्रि०) रत होना, लीला करना।
रतालू–(हिं०पुं०) पिण्डालू, वाराही कन्द।
रति–(सं० स्त्री०) कामदेव की स्त्री, अनुराग, प्रेम, काम क्रीड़ा, संभोग, सौभाग्य, छबि शोभा, साहित्य में शृंगार रसका स्थायी भाव, नायक नायिका के मनमें एक दूसरे के प्रति आकर्षण, (हिं० स्त्री०) रात्रि, रात, रैन। रतिकार–(सं० वि०) आनन्द दायक। रतिकर्म–(सं०नपुं०) मैथुन। रतिकलह–(सं० पुं०) संभोग, मैथुन। रतिकान्त–(सं० पुं०) कामदेव। रतिकुहर–(सं०नपुं०) योनि, भग। रतिकेलि–(सं० स्त्री०) भोग विलास। रतिक्रिया–(सं०स्त्री०) मैथुन, संभोग। रतिगृह–(सं० नपुं०) रमण मन्दिर, योनि। रतिजनक–(सं० वि०) प्रीति उत्पन्न करने वाला। रतिज्ञ–(सं०त्रि०) जो रति क्रिया में चतुर हो। रतितस्कर–(सं०पुं०) वह जो स्त्रियों को संभोग करने के लिये प्रवृत्त करता हो। रतिताल–(सं०पुं०) ताल का एक भेद; रतिदान–(सं०पुं०) मैथुन, संभोग। रतिदेव–(सं० पुं०) विष्णु कुत्ता। रतिघन–(सं० पुं०) दूसरे के अस्त्रों को नाश करने वाला अस्त्र। रतिनाथ–(सं० पुं०) कामदेव। रतिनायक–(सं०पुं०) कामदेव। रतिपति–(सं०पुं०) कामदेव। रतिनाह–(हिं०पुं०) कामदेव। रतिपद–(सं० पुं०) एक वर्णवृत्त का नाम। रतिप्रिय–(सं०पुं०) सुरत प्रिय, कामदेव। रतिप्रिया–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसको मैथुन बहुत प्रिय हो। रतिबन्ध–(सं० पुं०) मैथुन या संभोग करने का प्रकार। रतिभवन–(सं०नपुं०) वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका रति क्रीड़ा करते हों। रतिभाव–(सं० पुं०) प्रीति भाव। रतिभौन–(हिं० पुं०) रति भवन। रतिमदा–(सं०स्त्री०) अप्सरा। रतिमन्दिर–(सं० नपुं०) योनि, भग, मैथुन गृह। रतियाना–(हिं० क्रि०) प्रेम करना। रतिरमण–(सं० पुं०) कामदेव, मैथुन। रतिरस–(सं० पुं०) सहवास का सुख। रतिराज–(सं०पुं०) कामदेव। रतिलम्पट–(सं०वि०) संभोग प्रिय। रतिवंत–(हिं० वि०) सुन्दर। रतिवर्धन–(सं०पुं०) कामदेव। रतिवाही–(सं०पुं०) एक प्रकार का राग। रतिशक्ति–(सं० स्त्री०) रमण करने का बल। रतिशास्त्र–(सं० पुं०) कोकशास्त्र, वह शास्त्र जिसमें रति की क्रियाओं का वर्णन हो। रतिसंयोग–(सं० पुं०) स्त्री प्रसंग, मैथुन। रतिसंहति–(सं०स्त्री०) रमण करने की योग्यता। रतिसमर–(सं०पुं०) संभोग, मैथुन। रतिसाधन–(सं०नपुं०) शिश्न लिङ्ग। रतिसुन्दर–(सं० पुं०) काम शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिबन्ध।
रती–(सं०स्त्री०) लाल घुँमची, (हिं०स्त्री०) आठ चावल का मान, रत्ती देखो रति, (वि०) थोड़ा, कम, (क्रि०वि०) जरासा, रत्ती भर।
रतुआ–(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास।
रतोद्वह–(सं०पुं०) कोकिल, कोयल।
रतोपल–(हिं०पुं०) लाल सुरमा, लाल खड़िया गेरू।
रतौंधी–(हिं० स्त्री०) आँख का वह रोग जिसमें रोगी को रातके समय कुछ देख नहीं पड़ता।
रत्त–(हिं०वि०पुं०) देखो रक्त।
रत्ती–(हिं०स्त्री०) आठ चावल का मान या बांट, गुंजा, घुँमची का दाना, (वि०) बहुत थोड़ा, (हिं० स्त्री०) देखो रति; शोभा।
रत्थी–(हिं०स्त्री०) लकड़ी या बाँस का ढांचा, अथवा संदूक जिसमें शवको रखकर अन्तिम संस्कार के लिये ले जाते है, टिकठी।
रत्न–(सं० नपुं०) कुछ विशिष्ट छोटे चमकीले बहुमूल्य पदार्थ विशेषतः खनिज पदार्थ या पत्थर जो आभूषणों में जड़े जाते है, मणि, नगीना, वह जो अपने वर्ग या जाति में श्रेष्ठ हो। रत्नकर–(सं०पुं०) कुबेर। रत्नकन्दल–(सं० पुं०) प्रवाल, मूंगा। रत्नकर्णिका–(सं० स्त्री०) करनफूल। रत्नकलश–(सं० पुं०) रत्न का बना हुआ कलश। रत्नकीर्ति–(सं० पुं०) एक बुद्ध का नाम। रत्नकूट–(सं०पुं०) एक पर्वत का नाम। रत्नकोटि–(सं०पुं०) असंख्य रत्न। रत्नखानि–(सं०स्त्री०) रत्न की खान, समुद्र। रत्नगर्भ–(सं० पुं०) कुबेर, समुद्र। रत्नगर्भा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि। रत्नदाम–(सं०स्त्री०) रत्नों की माला। रत्नदीप–(सं०पुं०) रत्न का दीपक। रत्नद्रुम–(सं० पुं०) प्रवाल, मूंगा। रत्नधर–(सं०पुं०) धनवान्। रत्ननाभ–(सं०पुं०) विष्णु। रत्ननिधि–(सं०पुं०) समुद्र। रत्नपरीक्षक–(सं०पुं०) रत्नों की परीक्षा करनेवाला, जौहरी। रत्नपारखी–(सं०पुं०) जौहरी। रत्नप्रभा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी। रत्नबाहु–विष्णु। रत्नमञ्जरी–(सं०स्त्री०) विद्याधरी का एक भेद। रत्नमाला–(सं० स्त्री०) मणियों की माला या हार। रत्नमालिका–(सं० स्त्री०) मणि की छोटी माला। रत्नमाली–(सं०वि०) रत्नों की माला पहरने वाला। रत्नमुख्य–(सं० नपुं०) हीरा। रत्नराजि–(सं० स्त्री०) रत्नों का समूह। रत्नराशि–(सं० पुं०) समुद्र। रत्नवली–(सं०स्त्री०) पृथ्वी। रत्नवृक्ष–(सं०पुं०) मूंगा। रत्नशाला–(सं०स्त्री०) जड़ाऊ महल। रत्नशिला–सं०स्त्री०) वह शिला जिस में अनेक रत्न जड़े हों। रत्नसंग्रह–(सं० पुं०) रत्नों का समुदाय। रत्नसंभव–(सं० पुं०) एक बोधिसत्व का नाम। रत्नसानु–(सं० पुं०) सुमेरु पर्वत का नाम। रत्नसू–(सं०स्त्री०) पृथ्वी। रत्नसूति–(सं०स्त्री०) पृथ्वी। रत्नाकर–(सं०पुं०) रत्नों का समूह, समुद्र, बुद्धदेव, वाल्मीकि मुनि का पहला नाम। रत्नांक–(सं० पुं०) विष्णु का रथ। रत्नाधिपति–(सं०पुं०) कुबेर। रत्नाभरण–(सं०नपुं०) रत्न का गहना। रत्नाभूषण–(सं०नपुं०) जड़ाऊ गहना। रत्नालोक–(सं०पुं०) रत्न की ज्योति। रत्नालंकार–(सं० नपुं०) रत्न का गहना। रत्नावली–(सं० स्त्री०) मोती की माला, मणियों की माला, एक रागिणी का नाम, एक अर्थालंकार जिसमे प्रस्तुत अर्थ निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम से पढने पर वस्तु समूह के नाम भी निकलते है। रत्नासन–(सं० नपुं०) रत्न का आसन।
रत्नेन्द्र–(सं०नपुं०) श्रेष्ठ रत्न।
रत्नोत्तमा–(सं०स्त्री०) तान्त्रिकों की एक देवी का नाम।
रथ–(सं०पुं०) काय, शरीर, चरण, पैर, बेत, प्राचीन काल की एक प्रकारका यान जिसमें दो या अधिक पहिया होते थीं, गाड़ी, क्रीड़ा स्थान, शतरज एक मोहरा ऊंट। रथकर–(सं०पुं०) रथ बनाने वाला बढ़ई,
रथकार–(सं०पुं०) रथ बनानेवाला।
रथकारक–(सं०पुं०) बढ़ई। रथकारत्व–(सं० नपुं०) बढ़ई का काम।

रथकुटुम्बिक–(सं० पुं०) रथ हांकने वाला। रथकेतु–(सं० पुं०) रथ में लगी हुई ध्वजा। रथक्षोभ–(सं० पुं०) रथ का हिलना डोलना। रथगर्भक–(सं० पुं०) शिविर, पालकी आदि सवारी जो कन्धों पर उठाकर ले चलते हैं। रथघोष–(सं०पुं०) रथ का शब्द। रथचक्र–(सं० नपुं०) रथ का पहिया। रथचरण–चकवा पक्षी।

रथचर्या–(सं०स्त्री०) रथ का चलना।

रथजङ्घा–(सं०स्त्री०) रथ का पिछला भाग। रथज्ञान–(सं०नपुं०) रथ हांकने की निपुणता। रथदारु–(सं० नपुं०) वह लकड़ी जिससे रथ बनाया जाता है। रथधूर–(सं० स्त्री०) रथ की पहिया। रथपति(सं० पुं०) रथ का सारथी। रथपथ–(सं०पुं०) जिस मार्ग पर रथ चल सके। रथबन्ध–(सं०पु०) रथ बाधने की रस्सी। रथयात्रा–(सं०स्त्री०) देव देवी को रथ पर बिठा कर रथ खींचने का उत्सव, एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है।। रथयुद्ध–(सं० नपुं०) रथ पर चढ़कर युद्ध करना। रथयूथ–(सं०पुं०) रथों का ढेर। रथयाजक–(स० पुं०) सारथी। रथवर–(सं० पुं०) उत्तम रथ। रथवान्–(सं० पुं०) रथ हांकने वाला। रथवाह–(सं० वि०) सारथी, घोड़ा। रथवाहक–(सं० पुं०) रथ हांकने वाला। रथविद्या–(सं० स्त्री०) रथ हांकने की विद्या।

रथवीथि–(सं०स्त्री०) तपस्या करनेवाला।

रथवेग–(सं०पुं०) रथ चलने की गति।

रथव्रज–(सं० पुं०) रथों का समूह।

रथशाला–(सं० स्त्री०) रथों के रखने का स्थान। रथशिक्षा–(सं०स्त्री०) रथ चलाने का कौशल। रथसप्तमी–(सं० स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी।

रथसूत्र–(सं० नपुं०) रथ बनाने के नियम। रथस्थ–(सं०वि०)रथ पर बैठा हुआ। रथस्वन–(सं० पुं०) रथ का शब्द। रथाग्र–(सं०पुं०) श्रेष्ठ योद्धा।

रथाङ्गधर–(स० पुं०) श्रीकृष्ण विष्णु।

रथाङ्गपाणि–(सं०पुं०) विष्णु।

रथाभ्र–(सं०पुं०) वेतस, बेंत।

रथारथि–(सं० अव्य०) परस्पर, रथ द्वारा युद्ध करना।

रथारूढ–स०वि०) रथ पर बैठा हुआ।

रथारोह–(सं० वि०) रथपर बैठ कर युद्ध करने वाला। रथारोही–(सं०वि०) देखो रथारोह।

रथार्भक–(सं०पु०) छोटा रथ।

रथाश्व–(सं०पुं०) रथ में जोतने का घोड़ा।

रथिक–(सं०पु०) रथ पर सवार होनेवाला

रथी–(स०वि०) रथ पर चढ़कर लड़ने वाला योद्धा, रथ पर चढ़ा हुआ, (हिं०स्त्री०) अरथी, शव को ले जाने का ढांचा।

रथोत्सव–(सं० पुं०) रथ यात्रा नामक उत्सव।

रथोद्धता–(सं०स्त्री०) ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

रथौध–(सं०पुं०) रथ का वेग।

रथ्या–(सं० स्त्री०) रथ का मार्ग या लकीर, नाली, आँगन।

रद–(सं० पुं०) दन्त, दाँत, (अ०वि०) नष्ट, तुच्छ, निरर्थक। रदच्छद–(सं०पुं०) ओष्ठ, ओंठ, (हिं०पुं०) रति के समय दांतों के लगने का चिह्न।

रददान–(सं०पुं०) रति के समय दांतों को ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय।

रदन–(सं०पुं०) दन्त, दाँत। रदनच्छद–(सं०पुं०) ओंठ।

रदनी–(हिं०वि०) दांत वाला।

रदपट–(सं०पुं०) ओष्ठ, ओंठ।

रद्दा–(हिं०पुं०) भीत की पूरी लंबाई में एक बार रक्खी हुई ईंटों की जोड़ाई, मिट्टी की भीत उठाने में उतना अंश जितना चारों ओर एक बार में उठाया जाता है, चमड़े की मोहरी जो भालू के मुंह पर बांधी जाती है, थाली में मिठाइयों की एक पर एक रक्खी हुई तह, वस्तुओं की एक के ऊपर एक रक्खी हुई तह; रदनसाजी–(हिं० स्त्री०) लड़ाई छेड़ना। मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

रद्दी–(हिं०वि०) वह पदार्थ जो काम में न आवे, (स्त्री०) कागज़ आदि जो काम में न आने के कारण फेंक दिये गये हों।

रधार–(हिं० स्त्री०) ओढ़ने का वस्त्र, दोपहर।

रन–(हिं०पु०) रण, युद्ध, लड़ाई, वन, जंगल, समुद्र का छोटा अंश, ताल, झील।

रनकना–(हिं०क्रि०) घुंघरू आदि का धीमा शब्द होना।

रनना–(हिं० क्रि०) बजना।

रनछोर–(हिं० पुं०) देखो रणछोर।

रनना–(हिं०क्रि०)बजना,झनकार होना।

रनबरिया–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी भेंड़।

रनबंका, रनबांकुरा–(हिं०पुं०) योद्धा, शूरवीर।

रनलंपिका–(हिं० स्त्री०) गौ, गाय।

रनवादी–(हिं०वि०) शूर, योद्धा।

रनवास–(हिं०पुं०) महल में रानियों के रहने का स्थान, अन्तःपुर। रनित–(हिं०वि०) रणित, झन् झन् शब्द करता हुआ।

रनिवास–(हिं० पुं०) देखो रनिवास।

रनी–(हिं० पुं०) योद्धा, लड़ने वाला।

रनेत–(हिं०पुं०) भाला, बरछा।

रन्तव्य–(सं०वि०) रमण करने योग्य।

रन्ति–(सं०स्त्री०) केलि, क्रीड़ा। रन्तिदेव–(सं०पुं०) विष्णु। रन्धक–(सं०पुं०) रसोई बनाने वाला, (वि०) नष्ट करने वाला।

रन्धन–(सं०नपुं०)रसोई बनाने की क्रिया

रन्ध्र–(सं०नपुं०) दूषण, छिद्र। रन्ध्रपत्र–(सं०पुं०) नरकट।

रपट–(हिं०स्त्री०) अभ्यास, रपटने की क्रिया या भाव, फिसलाहट, उतार, दौड़, सूचना। रपटना–(हिं०क्रि०) जम न सकने के कारण किसी की ओर सरकना, वेग से चलना, झपटना, किसी काम को झटपट पूरा करना, मैथुन करना। रपटाना–(हिं०क्रि०) सरकाना, फिसलाना।

रपट्टा–(हिं०पुं०) फिसलने की क्रिया या भाव, फिसलाव, झपट्टा, चपेट, दौड़धूप।

रपाती–(हिं०स्त्री०) तलवार।

रपुर–(हिं० स्त्री०) स्वर्ग।

रफल–(हिं०स्त्री०) अंग्रेजी राईफ़ल् का अपभ्रंश, एक प्रकार की बदूक; (हिं०पुं०) ऊनी चादर जो जाड़ों में ओढ़ी जाती है।

रफूचक्कर–(हिं०वि०) गायब, चम्पत।

रबड़ना–(हिं० क्रि०) घुमाना, चलाना, फेरना।

रबड़ी–(हिं०स्त्री०) औंटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिलाई रहती है, बसौंधी।

रबदा–(हिं०पुं०) पैदल चलने से होने वाली थकावट, कीचड़।

रबरी–(हिं० स्त्री०) देखो रबड़ी।

रबाना–(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा डफ जिसमें मजीरे लगे होते हैं।

रबाबिया–(हिं०पुं०)रवाब बजाने वाला,

रबी–(हिं०स्त्री०) वसन्त ऋतु, वसन्त ऋतु में काटी जाने वाली फ़स्ल।

रबील–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया।

रब्ध–(सं० वि०) ग्रहण किया हुआ, आरंभ किया हुआ।

रभस–(सं०पुं०) वेग, हर्ष, उत्सुकता।

रभसान–(सं०वि०)शीघ्रता करने वाला; रभस्वत्–(सं०वि०) वेगयुक्त। रभीयस्–(सं०वि०) बड़े वेग वाला।

रभोदा–(सं०वि०) बल देने वाला।

रम–(सं०पुं०) कामदेव, प्रेमी, (वि०) प्रिय, सुन्दर, आनन्ददायक।

रमक–(स०पुं०)उपपति, जार, (हिं०स्त्री०) झूले की पेंग, तरंग, झकोरा।

रमकजरा–(हिं०पुं०)एक प्रकार का धान

रमकना–(हिं०क्रि०) हिंडोले पर पेंग मारना, इतराते हुए चलना।

रमचकरा–(हिं०पुं०)बेसन की मोटी रोटी

रमझोला–(हिं०पुं०) पैर में पहरने का घुंघरू, नूपुर।

रमठ–(सं०नपुं०) हींग।

रमण–(सं०नपुं०) रति, सुरत, मैथुन, क्रीड़ा, विलास, कामदेव, पति, अण्डकोष, सूर्य का सारथी, घूमना फिरना; एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तीन अक्षर होते हैं (वि०) सुन्दर, मनोहर, रमने वाला, आनन्द देने वाला। रमणगमना–(सं०स्त्री०) वह नायिका जो यह समझ कर दुःखी होती है कि संकेत स्थान पर नायक आया होगा परन्तु मैं उस स्थान पर उपस्थित न थी।

रमणा, रमणी–(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री, सुन्दर स्त्री, सुगन्धवाला नामक गन्ध द्रव्य।

रमणीक–(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर।

रमणीय–(स०वि०) रमणीक, सुन्दर।

रमणीयता–(सं० स्त्री०) सुन्दरता, साहित्य दर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं में बना रहे अथवा क्षण क्षण मे नया नया रूप धारण करे।

रमता–(हिं०वि०) एक ही स्थान पर जमकर रहने वाला, घूमता फ़िरता।

रमदी–(हिं० पुं०) एक प्रकार का अगहनियां धान।

रमन–(हिं०पुं०) देखो रमण। रमनक–(हिं०पुं०) देखो रमणक।

रमना–(हिं०क्रि०) सुख प्राप्ति या भोग विलास के निमित्त कहीं पर ठहरना, व्याप्त होना, इधर उधर घूमना, अनुरक्त होना, चैन करना। आनन्द करना (पुं०) वह सुरक्षित स्थान जहां पशु मृगया के लिये छोड़े जाते हैं, कोई सुन्दर या रमणीक स्थान चरागाह।

रमनी–(हिं० स्त्री०) देखो रमणी।

रमनीक–(हि०वि०) देखो रमणीक।

रमा–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी। रमाकान्त–(स०पुं०) विष्णु। रमाधव–(स०पुं०) विष्णु। रमाधिप–(सं०पुं०) रमापति, विष्णु। रमानरेश–(सं०पुं०) विष्णु।

रमाना–(हिं०क्रि०) अनुरंजित करना, मोहित करना, संयुक्त करना, जोड़ना, रोक रखना, ठहराना, अपने अनुकूल बनाना।

रमानाथ–(सं०पुं०) विष्णु। रमानिवास–(सं०पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु। रमापति–(सं० पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण।

रमाप्रिय–(सं०पुं०) पद्म, कमल, विष्णु,

रमारमण–(सं०पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु

रमाली–(हिं० पुं०) एक प्रकार का महीन धान।

रमाश्रय–(सं०पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।

रमित–(हिं०वि०) मुग्ध, लुभाया हुआ।

रमी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास।

रमेश, रमेश्वर–(सं०पुं०) विष्णु।

रमैती–(हिं०स्त्री०) आवश्यकता पड़ने पर दूसरे के खेत में काम करने वाला किसान जिसके बदले में वह किसान भी उसके खेत में काम कर देता है, पैठी।

रमैनी–(हिं०स्त्री०) कबीरदास के बीजक का एक भाग जिसमें दोहे और चौपाइयाँ हैं।

रमैया–(हिं० पुं०) राम, ईश्वर।

रम्भा–(सं०स्त्री०) कदली, केला, एक अप्सरा का नाम, गौरी, वेश्या, उत्तर दिशा, (हिं०पुं०) पेशराज का लोहे

का छोटा डंडा ।
रम्भाना–(हिं०क्रि०) गाय का शब्द करना
रम्भापति–(सं०पुं०) इन्द्र ।
रम्भाफल–(सं०पुं०) कदलीफल, केला ।
रम्भित–(सं०वि०) शब्द किया हुआ, बजाया हुआ ।
रम्भिनी–(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम ।
रम्भोरू–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसकी जांघ केले के खंभे के समान हों ।
रम्य–(सं० वि०)सुन्दर,मनोहर, रमणीय, (पुं०)चम्पक वृक्ष, वायु का एक भेद; रम्यता–(सं०स्त्री०) सौन्दर्य ।
रम्यश्री–(सं०पु०) विष्णु ।
रम्या–(सं०स्त्री०) स्थलपद्मिनी, रात्रि, एक रागिणी का नाम ।
रम्हाना–(हिं० क्रि०) गाय का बोलना ।
रय–(सं०पु०) प्रवाह, धूल ।
रयणपत–(हिं०पुं०) चन्द्रमा ।
रयन–(हिं०स्त्री०) रात्रि, रात ।
रयना–(हिं०क्रि०) उच्चरित करना, बोलना, संयुक्त करना, मिलाना ; रंगना ।
रयासत–(हिं०स्त्री०) देखो रियासत ।
रयि–(सं०पुं०)धन, ऐश्वर्य । रयिन्दम–(सं०पु०) बड़ा धनी ।
–रयिपति–(सं०पुं०) कुबेर; रयिमत्–(सं०वि०) धनवान् ; रयियन्–(सं०वि०) धन की इच्छा करने वाला; रयिवृध्–(सं०वि०) बड़ा धनी; रयिष्ठ–(सं०नपुं०) कुबेर, अग्नि ।
रय्यत–(हिं० स्त्री०) रैयत, प्रजा ।
ररंकार–(हिं०पु०) रकार की ध्वनि ।
रर–(हिं० स्त्री०) वह भीत जो बड़े बड़े पत्थरों के ढोंको को एक के ऊपर एक रख कर बनाई गई हो, चूने गारे आदि से जोड़ी न गई हो, रट, रटन ।
ररकना–(हिं० क्रि०) कष्ट देना, पीड़ा देना, कसकना ।
ररना–(हिं०वि०) बारंबार एक ही बात को रटना ।
रराट–(सं०नपुं०) देखो ललाट ।
ररिहा–(हिं०पुं०)रटने वाला, भिखमंगा, ररुआ नामक पक्षी ।
ररी–(हिं० विं०) झगड़ालू, अधम, नीच, बहुत गिड़गिड़ा कर मांगने वाला ;
रलना–(हिं०क्रि०)एक में एक मिल जाना
रलाना–(हिं०क्रि०)एक में एक मिलाना,
रली–(हिं० स्त्री०) आनन्द, प्रसन्नता, क्रीड़ा, विहार, चेना नामक अन्न ।
रल्ल–(हिं०पुं०) कोलाहल, हल्ला ।
रव–(सं० पुं०) शब्द, ध्वनि, गुंजार, कोलाहल, (हिं०पुं०) देखो रवि, सूर्य, जहाज़ की चाल ।
रवक–(हिं०पुं०) रेंड़ का पेड़ ।
रवकना–(हिं० क्रि०) जल्दी से आगे बढ़ना, लपकना, उछलना ।
रवण–(सं० नपु०) कांसा नामक धातु, कोयल,शब्द,भांड़,(वि०)चंचल, गरम ।
रवताई–(हिं० स्त्री०) राजा होने का भाव, प्रभुत्व ।
रवन–(हिं० पुं०) स्वामी, पति, क्रीड़ा करने वाला ।
रवना–(हिं० क्रि०) क्रीड़ा करना, शब्द करना, (हिं०पुं०) देखो रावण ।
रवनि,रवनी–(हिं०स्त्री०) रमणी, सुन्दरी भार्या ।
रवन्ना–(हिं०पुं०) स्त्रियों का काम काज करने वाला भृत्य, चुंगी आदि की वह रसीद जो किसी भेजी जाने वाली वस्तु के साथ रहती है, जिस पर भेजे हुए माल का ब्योरा रहता है ।
रवा–(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का बहुत छोटा टुकड़ा, कण, सूजी, बारूद का दाना, वे छर्रे जो घुंघरू के भीतर भरे रहते हैं ।
रवादक, रवाविया–(हिं० पुं०) लाल ढलुआ पत्थर ।
रवि–(सं० पुं०) सूर्य, मदार का पेड़, नायक, सरदार, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, अग्नि; रविकर–(सं०पुं०) सूर्य की किरण; रविकान्त–(सं०पुं०) सूर्यकान्तमणि; रविकीर्ण–(सं०पुं०) आक का वृक्ष; रविकुल–(सं०पुं०) सूर्य वंश ; रविज–(सं०पुं०) शनैश्चर; रविजा–(सं०स्त्री०)कालिन्दी यमुना ; रवितनय–(सं०पुं०) यमराज, शनैश्चर, सुग्रीव,कर्ण,अश्विनीकुमार; रवितनया–(सं०स्त्री०) यमुना ; रवितनुजा–(सं० स्त्री०) यमुना नदी ; रवितेजस्–(सं०नपुं०) सूर्य की किरण; रविदिन–(सं०नपुं०) अतवार ; रविदुग्ध–(सं० नपुं०) आक के पौधे का दूध ; रविद्रुम–(सं० पुं०) देखो रविकीर्ण ; रविनन्दन–(सं० पुं०) शनि, यम, कर्ण, सुग्रीव, अश्विनीकुमार ; रविनन्दिनी–(सं० स्त्री०) यमुना ; रविनाथ–(सं० पु०) पद्म, कमल ; रविनामक–(सं०नपु०) ताम्र, तांबा ; रविन्द–(सं०नपुं०) पद्म,कमल; रविपत्र–(सं०पुं०) मदार का पौधा ; रविपुत्र–(सं० पुं०) रविनन्दन; रविप्रिय–(सं० पुं०) लाल कमल, तांबा, लाल कनेर ; रविबिम्ब–(सं०नपुं०) सूर्य का मडल, मानिक ; रविमण्डल–(सं०नपुं०) वह लाल मण्डल जो सूर्य के चारों ओर देख पड़ता है ; रविमणि–(सं० नपु०) सूर्यकान्त मणि ; रविरत्न–(सं०नपुं०) सूर्यकान्त मणि; रविरत्नक–(सं०नपुं०) मानिक मणि ; रविमूल–(सं० नपुं०) आक की जड़ ; रविलोचन–(सं० पुं०) विष्णु ; रविवंश–(सं० पुं०) सूर्यकुल; रविबाण–(सं०पुं०) वह बाण जिसके चलाने से सूर्य के समान प्रकाश होता है ; रविवार, रविवासर–(सं०पुं०) आदित्यवार, ऐतवार ; रविसंक्रान्ति–(सं० स्त्री०) सूर्य का एक राशि में से दूसरी राशि में जाना ; रविसारथि–(सं०पुं०) अरुण ; रविसुअन–(हिं०पुं०) सूर्य के पुत्र अश्विनीकुमार ; रविसुत–(सं०पुं०) देखो रविनन्दन ।
रवीन्द–(सं०नपुं०) पद्म, कमल ।
रवैया–(हिं०पुं०) चालचलन ढंग ।
रशना–(सं० स्त्री०) करधनी, जीभ, रस्सी, अँगुली ।
रशनोपमा–(हिं०स्त्री०) देखो रसनोपमा
रश्मि–(सं० पु०) किरण, घोड़े की लगाम, पलक के रोवें; रश्मिकलाप–(सं० पुं०) एक प्रकार का मोतियों का हार; रश्मिकेतु–(सं० पुं०) एक राक्षस का नाम, एक प्रकार का पुच्छल तारा; रश्मिपति–(सं० पु०) रविपुत्र, मदार का पौधा; रश्मिपवित्र–(सं०वि०) सूर्य की किरण द्वारा पवित्र किया हुआ; रश्मिमण्डल–(सं० पु०) किरणमाला ; रश्मिमान्–(सं०पुं०) सूर्य ।
रस–(सं०पु०) किसी वस्तु के खाने का स्वाद जो छः प्रकार का होता है यथा-मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ; शरीरस्थ धातु विशेष, हिंगुल, पारद, पारा, कोई तरल पदार्थ, जल, वीर्य, गुण, राग, परब्रह्म, साहित्य में नव प्रकार का स्थायी भाव यथा-शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र वीर, भयानक, अद्भुत, बीभत्स और शान्त ; किसी पदार्थ का सार, विहार, आनन्द, प्रेम, गुण, उमंग, वनस्पति फल आदि का जलीय अंश, लासा, धातुओं को फूंककर बनाया हुआ भस्म, मन की तरंग, नव की अथवा छ की संख्या, वह आनन्द जो काव्य पढ़ने या नाटक देखने से होता है, प्रीति, प्रेम, भाँति, तरह, प्रकार ; रसभीनना–युवावस्था का आरंभ होना, रसरंग–बिहार ।
रसकपूर–(सं०नपुं०) एक सफ़ेद उपधातु जिसका प्रयोग औषधियों में होता है ।
रसकेलि–(सं० स्त्री०) क्रीड़ा, विहार, हँसी, ठट्ठा ; रसकेशर–(सं० नपुं०) कपूर ; रसकोरा–(हिं०पुं०) रसगुल्ला नाम की मिठाई ; रसखीर–(हिं०स्त्री०) ऊख के रस में पकाया हुआ चावल, मीठा भात ; रसगन्ध–(सं०पुं०) रसांजन ; रसगर्भ–(सं० नपुं०) रसवत, हिंगुल ; रसगुनी–(हिं०पुं०) काव्य या सङ्गीत शास्त्र का जानने वाला ; रसगुल्ला–(हिं० पुं०) एक प्रकार की छेने की मिठाई ; रसग्रह–(सं० स्त्री०) जिह्वा, जीभ ; रसघन–(सं० वि०) अधिक स्वादिष्ट ; रसघ्न–(सं०पुं०) सोहागा; रसछन्ना–(हिं० पुं०) ऊख का रस छानने की चलनी ।
रसज–(सं० पुं०) मदिरा की तलछट, (वि०) रस से उत्पन्न ।
रसज्ञ–(सं०वि०)काव्य के रस को जानने जानने वाला, निपुण, कुशल, रसायनी ; रसज्ञता–(सं० स्त्री०) रसज्ञ का भाव या धर्म; रसज्ञा–(सं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ, गंगा; रसज्ञान–(सं० नपुं०) रस का बोध ।
रसडली–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का गन्ना।
रसतम–(सं० पुं०) उत्कृष्ट रस ।
रसता–(सं० स्त्री०) रस का भाव या धर्म ; रसत्व–(सं० नपुं०) देखो रसता
रसद–(सं० वि०) स्वादिष्ट, सुखद ।
रसदार–(हिं० वि०) जिसमें किसी प्रकार का रस हो, स्वादिष्ट ; रसधातु–(सं०पुं०) पारद, पारा, शरीर का रस नामक धातु ।
रसन–(सं० नपुं०) स्वाद लेना, जीभ, ध्वनि, (वि०) पसीना लाने वाला ।
रसना–(सं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ, वह स्वाद जिसका अनुभव जीभ से होता है, मेखला, करधनी, लगाम, रस्सी, चन्द्रहार ।
रसना–(हिं० क्रि०) धीरे धीरे बहना, टपकना,धीरे धीरे द्रव पदार्थ छोड़ना रस में मग्न होना, रस से पूर्ण होना, स्वाद लेना, प्रेम में अनुरक्त होना, तन्मय होना, परिपूर्ण होना ।
रसनाथ–(सं० पुं०) पारद, पारा ; रसनायक–(सं०पुं०) महादेव व पारद, पारा ।
रसनारव–(सं०पुं०) पक्षी जिनको बोलने के लिये केवल जीभ होती है, दाँत नहीं रहते ।
रसनालिह–(सं०पुं०) कुत्ता ।
रसनिर्यात–(सं० पुं०) शालवृक्ष ; रसनिवृत्ति–(सं० स्त्री०) स्वाद लेने की शक्ति का अभाव ।
रसनीय–(सं०वि०) स्वादिष्ट ।
रसनेन्द्रिय–(सं० स्त्री०) रसना, जिह्वा, जीभ ।
रसनोपमा–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की उपमा जिसमें उपमाओं की एक शृंखला बँधी होती है और पहले कहा हुआ उपमेय आगे चलकर उपमान हो जाता है, इसको गमनोपमा भी कहते हैं ।
रसपति–(सं० पुं०) चन्द्रमा, पारद, पारा, पृथ्वीपति,राजा, शृंगार रस ।
रसपाकज–(सं०पुं०)शक्कर, चीनी,गुड़; रसपाचक–(सं०पुं०) भोजन बनानेवाला
रसपूतिका–(सं०स्त्री०) शतावर ।
रसप्रबन्ध–(सं०पुं०) वह कविता जिसमें एक ही विषय अनेक परस्पर संबद्ध पद्यों में कहा गया हो ।
रसफल–(सं०पुं०) आमले का बृक्ष ।
रसबत्ती–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पलीता जिसका व्यवहार पुराने ढंग की तोपों और बन्दूकों में किया जाता था ।
रसभरी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का वसंत ऋतु में होने वाला मीठा फल
रसभव–(सं०नपुं०) रक्त, रुधिर ।
रसभस्म–(सं०नपुं०) पारे का भस्म ।

रसभीना–(हिं०वि०) आर्द्र, तर, आनंद में मग्न।
रसभोजन–(सं०पुं०) तरल द्रव्य पीना।
रसम–(हिं०स्त्री०) प्रथा, चाल।
रसमसा–(हिं०वि०) आनन्द में मग्न, रंग में मस्त, तर, गीला, श्रान्त, पसीने में भरा हुआ।
रसमातृका–(सं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ।
रसमि–(हिं०स्त्री०) देखो रश्मि; किरण, प्रकाश।
रसमुंडी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बंगला मिठाई।
रसमूर्छन–(सं०नपुं०) पारे को मूर्छित करने की विधि; रसमूला–(सं०स्त्री०) प्राकृत छंद का एक भेद। रसमैत्री–(सं०स्त्री०) दो रसों का इस प्रकार मिलना जिसमें स्वाद बढ़ जावे।
रसयति–(सं०स्त्री०) आस्वादन, चखना; रसयिता–(सं०वि०) चखने वाला।
रसराज–(सं० पुं०) पारद, पारा, रसाञ्जन, रसौत, श्रृंगार रस।
रसलेह–(स०पु०) पारद, पारा।
रहराय–(हिं०पुं०) देखो रसराज।
रसरी–(हिं०स्त्री०) देखो रस्सी।
रसल–(हिं०वि०) रसयुक्त, रसीला; रसवंत–(हिं०वि०) रसीला, (पुं०) रसिक, प्रेमी; रसवंती–(हिं०स्त्री०) रसाञ्जन, रसवत।
रसवट–(हिं०पुं०) नाव के छेदों में भरने का मसाला।
रसवत्–(सं०वि०) जिसमें रस हो, (पुं०) वह अलंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस या भाव का अंग होकर वर्णित हो।
रसवत–(हिं०स्त्री०) रसौत, दारुहल्दी।
रसवती–सं०स्त्री०) संपूर्ण जाति की एक रागिणी।
रसवत्ता–(सं०स्त्री०) सुन्दरता, मधुरता।
रसवन्त–(सं०वि०) जिसमें रस भरा हुआ हो।
रसवली–(हिं० स्त्री०) देखो रसउली।
रसवाद–(सं०पुं०) प्रेम या आनन्द की वार्ता, वह कहासुनी जो मनोरंजन के लिये की गई हो, छेड़छाड़, बकवाद;
रसविक्रय–(सं०पुं०) मद्य बेचना।
रसवास–(स०पुं०) ढगण के पहले भेद का नाम।
रसविरोध–(सं०पुं०) साहित्य में एक ही पद्य में दो प्रतिकूल रसों का होना
रसशास्त्र–(सं०नपुं०) रसायन शास्त्र।
रससम्भव–(सं०पुं०) रुधिर; रससार–(सं०पुं०) मधु, विष।
रसा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, रसना, जीभ, द्राक्षा, रसातल, आम, शिलारस, लोहबान, (हिं०पुं०) रसदार तरकारी।
रसाइन–(हिं०पुं०) देखो रसायन।
रसाइनी–(हिं०पुं०) रसायन विद्या जानने वाला, रसायन बनाने वाला,
रसाखन–(सं०नपुं०) कुक्कुट, मुर्गा।
रसाग्रज, रसाञ्जन–(सं०नपुं०) रसौत।

रसातल–(सं०नपुं०) पुराण के अनुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से छठाँ लोक; रसातल में पहुँचाना–पूरी तरह से नष्ट करना।
रसादार–(हिं०वि०) रसदार।
रसाधार–(सं०पुं०) सूर्य।
रसाधिक–(सं०पु०) अधिक रस।
रसाधिका–(सं०स्त्री०) किशमिश।
रसान–(हिं०क्रि०) आनन्द लूटना।
रसान्तर–(सं०नपुं०) भिन्न रस।
रसापति–(सं०पुं०) नृप, राजा।
रसापायी–(हिं०पुं०) वह जन्तु जो जीभ से पानी पीता है, कुत्ता।
रसाभास–(सं०पुं०) साहित्य में किसी रस का अनुपयुक्त स्थान में प्रयोग, वह अलंकार जहाँ पर ऐसा प्रयोग देख पड़ता है।
रसाम्ल–(सं०पु०) अमलबेत।
रसायन–(सं०नपुं०) तक्र, मठा, वह औषध जिसके सेवन से सब रोग हट जाते हैं और बुढ़ापा दूर होती है, शुक्र की वृद्धि होती है और शरीर पुष्ट होता है, गरुड़, विष, हरताल, पदार्थों के तत्वों का ज्ञान, धातु विद्या जिसमें धातुओं को भस्म करने या एक धातु को दूसरे में बदलने आदि की क्रिया का वर्णन रहता है;
रसायनज्ञ–(सं०वि०) रसायन विद्या जाननेवाला; रसायनफला–(सं०स्त्री०) हरीतकी, हर्रे; रसायनवर–(सं०पुं०) लहसुन; रसायनवरा–(सं० स्त्री०) काकजंघा; रसायनविज्ञान–(सं०पुं०) वैज्ञानिक उपाय से तत्वों का ज्ञान; रसायनशास्त्र–(सं०नपुं०)देखो रसायन विज्ञान; रसायनिक–(सं०वि०) देखो रसायनिक; रसायनी–(सं०स्त्री०) वह औषधि जो बुढ़ापे को रोकती या दूर करती है।
रसार्णव–(सं०त्रि०) रस का सागर।
रसाल–(सं०नपुं०) बोल नामक गन्ध द्रव्य, (पुं०) ऊख, आम, कटहल, गेंहू, अमलबेत, (वि०) रसीला, मीठा, स्वादिष्ट, सुन्दर, मनोहर, शुद्ध, (अ०पुं०) राजस्व।
रसालय–(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार के रस बनाये जाते हों, आमोद प्रमोद का स्थान।
रसालस–(सं०पुं०) कौतुक, लीला।
रसालसा–(सं०स्त्री०) गन्ना, गेहूँ।
रसाला–(सं०स्त्री०) रसना, जीभ, दाख,
रसालिका–(स०स्त्री०) मधुर, सरस, छोटा आम।
रसालेक्षु–(सं०पु०) गन्ना, पौंढा।
रसाव–(हिं०पुं०) रसने की क्रिया या भाव।
रसावर, रसावल–(हिं०पुं०) देखो रसौर
रसावा–(हिं०पुं०) ऊख के रस को रखने का मिट्टी का पात्र।
रसाश–(सं०पुं०) मद्यपान
रसिआउर–(हिं०पुं०) ऊख के रस या गुड़ के शर्बत में पका हुआ चावल, एक प्रकार की गीत जो विवाह की एक रीति में गाई जाती है।

रसिक–(सं०पुं०) सारस पक्षी, घोड़ा, हाथी, एक प्रकार का छन्द,(वि०) जो रस का स्वाद लेता हो, जिसको रस संबंधी बातों में विशेष आनन्द आता हो, काव्यमर्मज्ञ, आनन्दी, प्रेमी, रसिया, सहृदय, भक्त, भावुक;
रसिकता–(सं०स्त्री०) रसिक होने का भाव या धर्म, परिहास, हंसी ठट्ठा; रसिक बिहारी–(सं०पु०) श्रीकृष्ण का एक नाम।
रसिका–सं०स्त्री०) ईख का रस, जीभ, मैना पक्षी, दही का सिखरन; रसिकाई–(हिं०स्त्री०) देखो रसिकता।
रसिकेश्वर–(स०पु०) श्रीकृष्ण।
रसित–(स०वि०) ध्वनि करता हुआ, रस युक्त, टपकता हुआ, मुलम्मा चढ़ा हुआ; (पुं०) ध्वनि, शब्द, अंगूर की मदिरा।
रसिया–(हिं०पु०) रस लेने वाला, रसिक, एक प्रकार का गाना।
रसियाव–(हिं०पु०) ऊख के रस में पका हुआ चावल।
रसी–(हिं०पुं०) देखो रसिक।
रसील, रसीला–(हिं० वि०) रसयुक्त, रस भरा हुआ, भोग विलास का प्रेमी, व्यसनी, स्वादिष्ट, आनन्द लेने वाला, बांका, छबीला; रसीलापन–(हिं०पुं०) रसीला होने का भाव या धर्म।
रसेन्द्र–(स०पु०) पारद, पारा; रसेन्द्र-बेधक–(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना।
रसेस–(हिं०पु०) पारद, पारा, श्रीकृष्ण।
रसेश्वर दर्शन–(स०नपु०) एक दर्शन शास्त्र जो प्रसिद्ध षड्दर्शन के अन्तर्गत नहीं है।
रसोइया–(हिं०पुं०)रसोई बनाने वाला;
रसोई, रसोँई–(हिं०पुं०) पकाया हुआ खाद्य पदार्थ, पाकशाला; रसोईखाना, रसोईघर–(हिं०पुं०) वह स्थान जहां भोजन पकाया जाता है, पाकशाला; रसोईदार–(हिं०पुं०) रसोई बनाने वाला; रसोईदारी–(हिं०स्त्री०) भोजन बनाने का काम।
रसोत–(हिं०स्त्री०) देखो रसौत।
रसोत्तम–(सं०पुं०) श्रेष्ठ रस, पारा, (नपुं०) घी।
रसोत्पत्ति–(स०पुं०) शरीर में रसों की वृद्धि।
रसोदर–(सं०नपुं०) हिंगुल।
रसोद्भव–(सं०नपुं०) सिंगरिफ़, रसौत; (वि०) रस से उत्पन्न।
रसोन–(सं०पु०) लशुन, लहसुन।
रसोपल–(सं०नपुं०) मौक्तिक, मोती।
रसोय–(हिं०स्त्री०) देखो रसोई।
रसोल्लास–(सं०पुं०) कामोद्दीपन, आठ सिद्धियों में से एक।
रसौत–(हिं०स्त्री०) एक औषधि जो दारुहल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में औटा कर तथा इसमें से निकले हुए रस को गाढा करके बनती है।

रसौती–(हिं०स्त्री०) एक विशेष प्रकार की धान की बोवाई।
रसौर–(हिं०पुं०) ऊख के रस में पकाया हुआ चावल।
रसौल–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कंटी लीलता।
रसौली–(हिं०स्त्री०) वह रोग जिसमें आंखों के ऊपर भौं के पास गिल्टी निकल आती है।
रस्ता–(हिं०पु०) मार्ग।
रस्तावगी, रस्तोगी–(हिं०पुं०) भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में रहने वाली बनिया जाति की एक शाखा।
रस्मि–(हिं०स्त्री०) देखो रश्मि, किरण।
रस्सा–(हिं०पुं०) कई एक रस्सियों को एक में बटकर बनी हुई मोटी रस्सी;
रस्सी–(हिं०स्त्री०) रज्जु, डोरी; रस्सीबाट–(हिं०पुं०)रस्सी बनानेवाला
रहँकला–(हिं०पुं०) एक प्रकार की हलकी गाड़ी, तोप लादने की गाड़ी, इस गाड़ी पर लदी हुई तोप।
रहँचटा–(हिं०पुं०) मनोरथ सिद्धि की अभिलाषा, चसका।
रहँट–(हिं०पु०) कुएं से पानी निकालने का एक प्रकार का यन्त्र।
रहँटा–(हिं०स्त्री०)सूत कातने का चरखा; रहँटी–(हिं०स्त्री०) कपास ओटने की चरखी।
रहचह–(हिं०स्त्री०) चिड़ियों का बोलना
रहठा–(हिं०पुं०) रहर के पौधे का सूखा डंठल।
रहण–(सं०नपुं०)फेंकना,साथ छोड़ना।
रहन–(हिं०स्त्री०) रहने की क्रिया या भाव, रहने का ढंग, व्यवहार; रहन सहन–(हिं०स्त्री०) जीवन निर्वाह का एक ढंग, चालचलन; रहना–(हिं०क्रि०) स्थित होना, ठहरना, प्रस्थान न करना, रुकना, स्थापित होना, जीवित रहना, बचना, छूट जाना, निवास करना, बसना, कामकाज करना, मैथुन करना, नौकरी करना, चुपचाप समय बिताना, अस्थायी रूप मे रहना, टिकना, कोई काम करना बन्द करना, उपस्थित होना, थमना, छूट जाना; रह जाना–रुक जाना; सफल न होना; रहा सहा–अवशिष्ट, बचा हुआ; रहजाना–पीछे छूट जाना।
रहनि–(हिं०स्त्री०) आचरण, चाल ढाल, प्रेम; देखो रहन।
रहर–(हिं०स्त्री०) देखो अरहर।
रहरू–(हिं०स्त्री०) खाद ढोने की देहाती गाड़ी।
रहरेठा–(हिं०पुं०)देखो रहठा, कड़िया।
रहलू–(हिं०स्त्री०) देखो रहरू।
रहस–(हिं०पुं०)निर्जन स्थान, गुप्त भेद, छिपी बात, आनन्द, सुख, गूढ़ तत्व,

योग,तन्त्र आदि की गुप्त बात,(सं०पुं०) समुद्र, स्वर्ग । रहसना–(हिं० क्रि०) आनन्दित होना, प्रसन्न होना ।
रसबधावा–(हिं०पुं०) विवाह की एक रीति जिसमें नवविवाहिता वधू के वर के साथ घर आने पर गुरुजन उसका मुख देखते हैं और वस्त्र आभूषण आदि उपहार देते हैं ।
रहंसि–(हिं०स्त्री०) एकान्त स्थान, गुप्त स्थान ।
रहसू–(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री ।
रहस्य–(सं०नपुं०) गूढ़ तत्व, गुप्त भेद, मर्म की बात, भीतर की छिपी बात, हँसी ठठ्ठा ।
रहाई–(हिं०स्त्री०) रहने की क्रिया या भाव ।
रहाऊ–(हिं०स्त्री०) गीत में का टेक ।
रहाना–(हिं०क्रि०) रहना, होना ।
रहावन–(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर गाँव भर के पशु इकट्ठा खड़े हों ।
रहासहा–(हिं०वि०) बचा हुआ ।
रहित–(सं०वि०)वर्जित, विना, ।
रहिला–(हिं०पुं०) चना ।
रहोगत–(सं० वि०) निर्जन स्थान में स्थित ।
राँक–(हिं०वि०) देखो रङ्क ।
राँकड़–(हिं० स्त्री०) कंकरीली भूमि जिसमें बहुत कम अन्न उत्पन्न होता है ।
राँगड़ी–(हिं०पुं०)एक प्रकार का चावल;
राँगा–(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम होता है, इसका रंग सफेद होता है ।
राँच–(हिं०अव्य०)देखो रञ्च । राँचना–(हिं०स्त्री०) चाहना, प्रेम करना, रंग चढ़ाना ।
राँजना–(हिं०क्रि०) आँखों में काजल लगाना, रंगना ।
राँटा–(हिं०पुं०)टिटिहरी नामक पक्षी ।
राँड़–(हिं०वि०स्त्री०)विधवा स्त्री, वेश्या, रंडी ।
राँढ–(हिं०पुं०)एक प्रकार का चावल ।
राँढना–(हिं०क्रि०) रोना ।
राँता–(वि०हिं०) राँगे का बना हुआ ।
राँध–(हिं०पुं०) निकट, पास, पड़ोस ।
राँधना–(हिं०क्रि०)भोजन आदि पकाना;
राँधी–(हिं० स्त्री०)मोचियों का एक अस्त्र जो पतली खुरपी के आकार का होता है ।
राँभना–(हिं०क्रि०) गाय का बोलना, रंभाना ।
रा–(सं० स्त्री०) विभ्रम, दान, (पुं०) शब्द, धन ।
राआ–(हिं० पुं०) राजा ।
राइ–(हिं०पुं०) छोटा राजा राय,सरदार;
राइता–(हिं०पुं०) देखो रायता ।
राई–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों, बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण, (पुं०) सर्वश्रेष्ठ, राजा । राई नोन उतारना–जिस बच्चे को कुछ दृष्टि न(जर) लगी हो उसके ऊपर से राई नमक उतार कर अग्नि में डालना; राई से पर्वत करना–थोड़ी सी बात को बहुत बढ़ा देना ।
राउ–(हिं० पुं०) राजा नृप । राउत–(हिं० पुं०) राजवंश का कोई पुरुष, क्षत्रिय ।
राउर–(हिं०पुं०)अन्तःपुर, (वि०)आपका, श्रीमान् का ।
राउल–(हिं०पुं०) देखो राउत; राजा ।
राकस–(हिं०पुं०) देखो राक्षस । राकसिनी (हिं०स्त्री०) राक्षसी, निशाचरी ।
राका–(सं०स्त्री०)वह स्त्री जिसको पहले पहल रजोदर्शन हुआ हो, पूर्णिमा की रात, चन्द्रमा, सूर्पणखा की माता जो राक्षसी थी । राकाचन्द्र–(सं०पुं०) पूर्णिमा का चन्द्रमा । राकारमण–(सं० पु०) पूर्ण चन्द्रमा । राकिणी–(सं० स्त्री०) देवी की एक शक्ति जो चौसठ योगिनी के अन्तर्गत है ।
राकेश–(सं०पुं०) पूर्ण चन्द्रमा ।
राक्षस–(सं०पुं०) दैत्य, असुर, निशाचर; (नपुं०) साठ संवत्सरों में उनचासवाँ सवत्, कुवेर के कोप के रक्षक, कोई दुष्ट प्राणी, वह विवाह जिसमें युद्ध करके कन्या हरण की जाती है ।
राक्षसग्रह–(सं०पुं०) उन्माद रोग ।
राक्षसता–(सं०स्त्री०) राक्षस का भाव या धर्म । राक्षसी–(सं०स्त्री०) असुर की स्त्री, सन्ध्याकाल । राक्षसेन्द्र–(सं०पुं०) रावण ।
राक्षा–(हिं०स्त्री०) लाक्षा, लाह ।
राख–(हिं०स्त्री०) भस्म, राख ।
राखना–(हिं०क्रि०)रक्षा करना, बचाना, रखवाली करना, जाने न देना, रोक रखना,कपट करना, छिपाना, आरोप करना, बताना; देखो रखना ।
राखी–(हिं०स्त्री०) हाथ की कलाई पर बाँधने का मगल सूत्र,रक्षाबन्धन का डोरा; देखो राख ।
राग–(सं०पुं०) अनुराग, मोह, चन्द्रमा, सूर्य, नाच, मात्सर्य, प्रीति, प्रेम, अभिमत विषय की अभिलाषा, सांसारिक सुखों की अभिलाषा, ईर्ष्या, द्वेष, कष्ट, पीड़ा, अनुराग, सिन्दूर, आलता, संगीत शास्त्र का राग, सुगन्धित लेप जो शरीर में लगाया जाता है, रंग-विशेष कर लाल रंग, एक वर्णवृत्त का नाम; अपना राग अलापना–अपने ही विषय की बातें करना ।
रागद–(सं०वि०) राग देने वाला, क्रोध दिलाने वाला ।
रागदालि–(सं०पुं०) मसूर ।
रागना–(हिं०क्रि०)अलापना,गाना गाना, रंग जाना, अनुरक्त होना, प्रेम करना;
रागिनी–(हिं० स्त्री०) संगीत में किसी राग की पत्नी ।
रागपट्ट–(सं० नपुं०) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर ।
रागपुष्प,रागप्रसव–(सं०पुं०)गुलदुपहरिया,
रागबन्ध–(सं०पुं०) अनुराग का चिह्न ।
रागभञ्जन–(सं० पुं०) एक विद्याधर का नाम । रागमाला–(सं०स्त्री०) रागों का समूह । रागयुज–(सं०पुं०)माणिक्य, मानिक । रागलता–(सं०स्त्री०) कामदेव की स्त्री रति । रागलेखा–(सं०स्त्री०) चन्दन आदि का चिह्न ।
रागविवाद–(सं०पुं०) गाली गलौज ।
रागवृन्त–(सं०पुं०)कामदेव । रागसारा (सं०स्त्री०) मैनसिल ।
रागाङ्गी–(सं०स्त्री०) मजीठ ।
रागान्ध–(सं०वि०) अति क्रोधी ।
रागान्वित–(सं०वि०) क्रोधी, जिसको राग या प्रेम हो ।
रागी–(हिं०स्त्री० अनुरक्त, विषय वासना में फँसा हुआ, अनुरागी, प्रेमी, एक छन्द का नाम, (वि०) रंगने वाला, रंगा हुआ, (पुं०)मडुवा नामक कदन्न, (स्त्री०) देखो रानी ।
रागिणी–(सं०स्त्री०) संगीत में किसी राग की पत्नी, विदग्धा स्त्री, जयश्री, मेनका की बड़ी कन्या का नाम ।
राघव–(सं०पुं०) रघु के वंश में उत्पन्न कोई व्यक्ति, श्रीरामचन्द्र, अज, दशरथ, समुद्र में रहने वाली एक बहुत बड़ी मछली ।
राँकल–(सं० पुं०) वृक्ष या पौधे का काँटा ।
राचना–(हिं०क्रि०) रचना, बनाना, रचा जाना, बनना, रंगा जाना, लीन या मग्न होना, शोभा देना, अच्छा जान पड़ना, प्रसन्न होना, सोच में पड़ना, अनुरक्त होना,रंजित होना, डूबना ।
राछ–(हिं० पुं०) जुलाहे के करघे का वह अस्त्र जो ताने के तागे को उठाता और गिराता है, बरात, लोहार का बड़ा हथौड़ा, चक्की के बीच का खूँटा, लकड़ी के भीतर की हीर ।
राछ बँधिया–(हिं० पुं०) राछ बाँधने वाला मनुष्य ।
राछस–(हिं०पु०) देखो राक्षस ।
राज–(हिं०पुं०) देश का अधिकार या प्रबन्ध, प्रजा पालन की व्यवस्था, शासन, पूर्ण अधिकार, अधिकार का काल, देश,जनपद, उतना भूमि भाग जितना एक राजा द्वारा शासित हो, राजा, घर आदि बनाने वाला राजगीर, थवई; राज काज–राज्य का प्रबन्ध; राज पर बैठना–राज सिंहासन पर बैठना; राज रजना–बड़े आनन्द से रहना; राजपाट–शासन व्यवस्था;
राजक–(सं०पुं०) राजा, (वि०) चमकाने वाला ।
राज कथा–(सं० स्त्री०) राजाओं का इतिहास । राजकन्या–(सं०स्त्री०)राजा की पुत्री । राजकर–(सं०पुं०) वह कर जो प्रजा से राजा को मिलता है ।
राज करण–(सं० पुं०) न्यायालय, राजनीति ।
राजकर्ण–(सं०पुं०) हाथी की सूँड़ ।
राजकर्ता–(सं०पुं०) वह पुरुष जो दूसरे को राजसिंहासन पर बैठाता है । राजकर्म–(सं०पुं०)राजा का कार्य । राजकला–(सं०स्त्री० चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक । राजकसेरु–(सं०पुं०) नागरमोथा । राजकार्य–(सं०नपुं०)राजा का काम । राज काष्ठ–(सं०नपुं०) शाल वृक्ष । राज काष्ठ–(सं०नपुं०) बक्कम की लकड़ी (सं०वि०) राजकीय–राजा संबंधी,राज्य संबंधी ।
राजकुँअर–(हिं०पुं०)राजकुमार । राजकुमार–(सं० पुं०) राजा का पुत्र ।
राज कुमारिका–(सं०स्त्री०)राजा की पुत्री
राजकुल–(सं०स्त्री०) राजवंश । राजकुलक–(सं० पुं०) परवल की लता का नाम ।
राजकृत–(सं०वि०) राजा द्वारा किया हुआ ।
राज कृत्य–(सं०नपुं०) राजा का काम ।
राज कोलाहल–(सं०पुं०) संगीत में एक ताल का नाम ।
राजक्रिया–(सं०स्त्री०) राज कार्य ।
राजगद्दी–(हिं०स्त्री०) राजा के बैठने का आसन, राजसिंहासन, राज्याभिषेक;
राज गवी–(सं०स्त्री०) गाय की जाति का एक पशु ।
राजगिरि–(सं०पुं०) मगध देश के एक पर्वत का नाम, देखो राजगृह ।
राजगीर–(हिं०पुं०) घर बनाने वाला, राज, थवई; राजगीरी–राजगीर का कार्य या पद ।
राजगुरु–(सं० पुं०) राजा का गुरु या उपदेशक ।
राज गृह–(सं०पुं०) राज भवन, बिहार प्रान्त के एक प्राचीन नगर का नाम, गिरि ब्रज की प्राचीन राजधानी ।
राज गेह–(सं०नपुं०) देखो राज भवन ।
राज चूड़ामणि–(सं०पुं०) संगीत में एक ताल का नाम ।
राजतनय–(सं०पुं०) राजपुत्र ।
राजतरंगिणी–(सं०स्त्री०) कल्हण कवि कृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध इतिहास जो संस्कृत में लिखा हुआ है । राजतरु–(सं० पुं०) अमलतास । राजतरुणी–एक प्रकार का सफ़ेद गुलाब । राजता–(सं० स्त्री०) राजा होने का पद ।
राजताल–(सं०पुं०) सुपारी का पेड़ ।
राजतिमिश–(सं० पु०) तरबूज ।
राजतिलक–(हिं० पुं०) किसी नये राजा के राजसिंहासन पर बैठने का संस्कार, राज्याभिषेक । राजत्व–(सं० नपुं०) राजता, राजा का पद, राजा का भाव या कर्म । राजदण्ड–(सं०पुं०) राजशासन, वह दण्ड जो राजा की आज्ञा के अनुसार दिया जाय । राजदन्त–(सं० पुं०) दाँतों की पंक्ति के बीच का वह दाँत जो औरों से चौड़ा होता है । राजदर्शन–(सं० नपुं०)राजा का दर्शन । राजदुहिता–

(स०स्त्री०) राजा की कन्या। राजदूत-(सं०पुं०) वह पुरुष जो एक राज्य की ओर से अन्य राज्य में किसी प्रकार का सन्देश लेकर भेजा जाता है। राजद्रुम-(सं०पुं०) अमलतास। राजद्रोह-(सं०नपुं०) राजा अथवा राज्य के प्रति किया हुआ द्रोह। राजद्रोही-(सं०वि०) राजा या राज्य दोही। राजद्वार-(सं० नपुं०) राजा का द्वार, राजा की डचोढी, विचारालय, न्यायालय; राजधर्म-(स०पुं०) राजा का कर्तव्य या धर्म; राजधानी-(सं० स्त्री०) वह प्रधान नगर जहां किसी देश का राजा या शासक रहता है, शासनकेन्द्र; राजधुर-(स० पुं०) शासन भार; राजनय-(सं०पुं०) राजनीति।

राजना-(हिं० क्रि०) विराजना, उपस्थित होना, शोभित होना, सोहना।

राजनीति-(सं०स्त्री०) वह नीति जिसके अनुसार राजा अपने राज्य का शासन तथा प्रजा की रक्षा करता है। राजनीतिक-(सं० वि०) राजनीति सम्बन्धी; राजनील-(सं०नपुं०) मरतकमणि, पन्ना।

राजन्य-(सं० पुं०) क्षत्रिय, राजपुत्र, अग्नि, खिरनी का वक्ष; राजन्यक-(सं०नपुं०) क्षत्रियों का समूह; राजन्यत्व-(स० नपुं०) क्षत्रिय का भाव या धर्म। राजन्यबन्धु-(सं०पुं०)क्षत्रिय।

राजपंखी-(हिं०पुं०) राजहंस।

राजपंथ-(हिं०पुं०) देखो राजपथ।

राजपट्ट-(स०पुं०) चुम्बक पत्थर।

राजपति-(स०पुं०)राजाधिराज,सम्राट्; राजपत्नी-(सं०स्त्री०) राजा की पत्नी;

राजपथ-(सं०पुं०) वह चौड़ा मार्ग जिस पर हाथी घोड़े रथ आदि सुगमता से चल सकते हों,राजमार्ग; राजपद्धति-(सं० स्त्री०) राजनीति।

राजपाल-(सं०पुं०) वह जिससे राजा या राज्य की रक्षा होती हो; राजपुत्र-(सं०पुं०) राजा का पुत्र, युवराज, एक वर्णसंकर जाति का नाम, बुध ग्रह, बड़े आम का एक भेद, खिरनी का पेड़; राजपुत्रा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पुत्र राजा हो। राजपुत्री-(सं०स्त्री०) राजकन्या, जूही का फूल, मालती। राजपुरुष-(सं०पुं०) राज्य का कोई अधिकारी। राजपुष्प-(स०पुं०)कनकचम्पा। राजपुष्पी-(सं०स्त्री०) वनमल्लिका, जातीपुष्प।

राजपूजित-(सं०पुं०) राजा की ओर से जिसका सत्कार होता हो। राजपूज्य-(सं०वि०) राजा का पूजनीय। राजपूत-(हिं०पुं०) राजपुताना निवासी क्षत्रिय वर्णात्मिक जाति विशेष। राजप्रकृति-(सं०स्त्री०) राजा का स्वभाव। राजप्रिय-(सं०पुं०) राजा का प्रिय पात्र। राजप्रिया-(सं०स्त्री०) लाल रंग का एक प्रकार का धान। राजफल-(सं०नपुं०) एक प्रकार का बड़ा आम। राजफला-(सं०स्त्री०) जंबू, जामुन। राजबदर-(सं०नपुं०) लाल आमला। राजबाड़ी-(हिं०स्त्री०) राजमहल।

राजबाहा-(हिं०पुं०) प्रधान या बड़ी नहर जिससे अनेक छोटी छोटी नहरें खेतों को सीचने के लिये निकाली जाती है।

राजभक्त-(सं०वि०) राजा का भक्त, राजभक्ति-(स०स्त्री०) राजा या राज्य के प्रति भक्ति।

राजभट-(सं०पुं०) राजसैनिक।

राजभद्रक-(सं०पुं०) फ़रहदक का वृक्ष, कुंदरू, नीम। राजभय-(सं०पुं०) राजा का भय या डर। राजभवन-(सं० नपुं०) राजा का प्रासाद।

राजभाण्डार-(सं०पुं०)राजा का कोष।

राजभूय-(सं०नपुं०) राजत्व, राज्य।

राजभृत-(सं०पुं०) राजा का वेतन भोगी भृत्य। राजभृत्य-(सं०पुं०) राजा का सेवक। राजभोग-(सं०पुं०) एक प्रकार का महीन धान, जिन उत्तम वस्तुओं का उपभोग राजा करते हैं। राजभोगी-(सं०वि०) उत्तम भोजन करने वाला। राजभोग्य-(सं०वि०) राजा के भोजन योग्य, (पुं०) एक प्रकार का धान, चिरौंजी। राजभोजन-(स० नपुं०) राजा का भोजन।

राजभ्रातृ-(सं०पुं०) राजा का भाई। राजमण्डल-(स०पुं०) किसी बड़े राज्य के आसपास का राज्य। राजमण्डूक-(सं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा मेढक।

राजमणि-(सं० पुं०) बहुमूल्य रत्न। राजमन्दिर-(सं०नपुं०) राजभवन। राजमराल-(स० पुं०) राजहंस। राजमहल-(हिं०पुं०)राजा का प्रासाद। राजमाता-(स०स्त्री०)राजा की माता। राजमानुष-(सं०पुं०) वह मनुष्य जो राजा के अधीन हो। राजमार्ग-(सं०पुं०) राजपथ, चौड़ी सड़क। राजमाष-(सं० पुं०) बड़ा उड़द। राजमुनि-(स०पुं०) राजर्षि। राजयक्ष्मा-(हिं०पुं०) क्षयरोग। राजयज्ञ-(सं०पुं०) राजा का किया हुआ यज्ञ, राजयान-(सं० नपुं०) वह यान या सवारी जो राजा के लिये हो। राजयोग-(सं०पुं०) ज्योतिष के अनुसार वह योग जिसके रहने से मनुष्य राजा के समान धनवान् और प्रतापी होता है," योग शास्त्र में बतलाया हुआ योग के विषय का उपदेश। राजयोग्य-(सं०वि०) राजा के योग्य। राजरंग-(सं०नपुं०) रजत, चाँदी। राजरथ-(सं०पुं०) राजा का रथ। राजराज, राजराजेश्वर-(सं०पुं०) अधिराज, राजाओं का राजा, चन्द्रमा, कुबेर। राजराजश्वरी-(सं०स्त्री०)महाराज्ञी, दश महाविद्याओं में से एक का नाम, भुवनेश्वरी। राजराजता-(सं०स्त्री०) राजा का पद, साम्राज्य। राजरानी-(हिं० स्त्री०) राजमहिषी, राज्ञी। राजरोग-(हिं० पुं०) राजयक्ष्मा, क्षयरोग। राजर्षि-(स०पुं०) वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुल का हो।

राजल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का अगहनियाँ धान।

राजलक्षण-(सं० नपुं०) सामुद्रिक के अनुसार वे लक्षण जो मनुष्य का राजा होना सूचित करते हैं।

राजलक्ष्म-(सं०पुं०) राजचिह्न, युधिष्ठिर। राजलक्ष्मी-(सं०स्त्री०)राजश्री, राज वैभव, राजा की शोभा। राजलिंग-(सं० नपुं०) राजचिह्न। राजवंत-(हिं०वि०) राजा के कर्म से संयुक्त। राजवंश-(सं० पुं०) राजा का कुल; राजवंश्य-(सं० वि०) राजा के वंश में उत्पन्न। राजवत्-(स० अव्य०) राजा के समान। राजवर्त्म-(सं०नपुं०) राजपथ, चौड़ी सड़क। राजवल्लभ-(सं० वि०) राजप्रिय। राजवल्ली-(सं०स्त्री०)करैले की लता। राजवसति-(सं० स्त्री०) राजभवन। राजवार-(हिं०पुं०) राजद्वार। राजवारुणी-(स०स्त्री०) एक प्रकार की मदिरा। राजवाह-(सं०पुं०) घोड़ा। राजवाहन-(सं०पुं०) राजा की सवारी का हाथी। राजविजय-(सं० पुं०) संपूर्ण जाति का एक राग। राजविद्या-(सं०स्त्री०) राजनीति। राजविद्रोह-(सं० पु०) राजविप्लव। राजविद्रोही-(सं०पु०) राजा से विद्रोह करने वाला। राजविनोद-(सं०पुं०) संगीत के अनुसार एक ताल का नाम। राजवीथी-(सं०स्त्री०) चौड़ी सड़क। राजवृक्ष-(सं०पुं०) पियाल का पेड़। राजवृत्त-(सं०नपुं०) राजा का चरित्र। राजवेश्म-(सं०नपुं०) राजा का भवन। राजवेष-(सं०पु०) राजा का पहिरावा।

राजशाक-(सं०पु०) बथुआ का साग। राजशालि-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का धान। राजशासन-(सं०नपुं०) राजा का शासन। राजशास्त्र-(सं०नपुं०) नीतिशास्त्र। राजशुक-(सं०पुं०) लाल रंग का बड़ा तोता, नूरी। राजश्री-(सं०स्त्री०) राजा का ऐश्वर्य, राजलक्ष्मी, राजा की शोभा।

राजस-(सं०वि०) वह शक्ति जो गुण से उत्पन्न हो, आवेश, क्रोध; राजसत्ता-(सं०स्त्री०)राजशक्ति, राज्य की सत्ता। राजसत्व-(सं०नपु०) राजसत्ता, राजशक्ति। राजसदन, राजसद्म-(सं० नपुं०) राजा का घर। राजसभा-(सं० स्त्री०) वह सभा जिसमें अनेक राजे बैठे हों। राजसमाज-(सं०पुं०) राजमण्डली; राजसर्प-(सं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा सर्प। राजसात्-(सं०अव्य०) राजा के अधिकार में। राजसारस-(स० पुं०) मयूर, मोर। राजसिंहासन-(सं० पुं०) राजा के बैठने का सिंहासन; राजसिक-(सं० वि०) रजोगुण से उत्पन्न, राजस; राजसिरी-(हिं०स्त्री०) देखो राजश्री; राजसी-(सं० स्त्री०) दुर्गा; (वि०) राजा के योग्य, ठाटदार, भड़कीला, जिसमें रजोगुण की अधिकता हो। राजसुत-(सं०पुं०) राजा का लड़का, राजपुत्र। राजसुता-(सं०स्त्री०) राजकन्या, राजा की लड़की। राजसूनु-(सं०पुं०) देखो राजपुत्र। राजसूय-(सं०पुं०) वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल सम्राट् को होता है। राजसेवक-(सं०पुं०) राजा की सेवा करने वाला भृत्य। राजसेवा-(सं० स्त्री०) राजा की सेवा। राजस्कन्ध-(सं०पुं०) घोड़ा। राजस्त्री-(सं०स्त्री०) राजमहिषी, रानी। राजस्थान-(सं०पुं०) राजपूताना। राजस्व-(सं० पुं०) भूमि आदि का वह कर जो राजाको दिया जाता है। राजस्वामिन्-(सं०पुं०) विष्णु। राजहंस-(सं०नपुं०) एक प्रकार का हंस जिसको सोनापक्षी भी कहते हैं। राजहर्म्य-(सं०पुं०) राजा का महल।

राजा-(स० पुं०) नरपति, अधिपति, स्वामी, प्रेमपात्र, प्रिय व्यक्ति, एक उपाधि जो अंग्रेजी राज्य की ओर से धनिकों को दी जाती थी। रजाग्नि-(सं०पुं०) राजा का कोप। राजांगन-(सं० नपुं०) राजमहल का आँगन। राजाज्ञा-(सं०स्त्री०) राजा की आज्ञा।

राजादनी-(सं०स्त्री०) खिरनी का पेड़।

राजाद्रि-(सं० पुं०) एक प्रकार का अदरख।

राजाधिकारी-(सं० पुं०) न्यायालय में बैठकर विचार करने वाला। राजाधिकृत-(सं० वि०) राजाधिकारी। राजाधिष्ठान-(सं० पुं०) अधिराज, राजाओं का राजा।

राजाधिष्ठान-(स० पुं०) किसी राजा की राजधानी। राजाध्वन्-(सं० पुं०) राजमार्ग, चौड़ी सड़क। राजानक-(सं०पुं०) छोटा राजा। राजाजीवन्-(सं० वि०) राजकार्य कर के अपनी जीविका चलाने वाला। राजाभियोग-(सं० पुं०) राजा का प्रजा से हठ पूर्वक कोई काम करना। राजाभिषेक-(स० पुं०) राजा का अभिषेक जिसके होने पर वह राजदण्ड ग्रहण करता है।

राजाम्र-(सं०पुं०)उत्तम जातिका आम।

राजाम्ल-(सं० पुं०) अमलबेत।

राजार्ह-(सं० पुं०) अगर, कपूर, जामुन का वृक्ष। राजार्हण-(सं०नपुं०) राजा का दान।

राजालुक-(सं० पुं०) मूली, मुरई।

राजावर्त-(सं०पुं०)लाजवर्तनामकरत्न।

राजासन–(सं० नपुं०) राजाओं के बैठने का आसन।
राजि–(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, लकीर, सर्षप, राई। राजिका–(सं० स्त्री०) पंक्ति, लकीर, राई, क्यारी, रेखा, लकीर। राजिकाफल–(सं०पुं०) लाल सरसों।
राजित–(सं० वि०) शोभा देता हुआ, विराजमान।
राजिव–(हि०पुं०)देखो राजीव, कमल।
राजी–(सं०स्त्री०) निश्छिद्र पंक्ति, राई।
राजीफल–(सं० पुं०) परवल।
राजीव–(सं०-नपुं०) पद्म, कमल, नील कमल, हाथी। राजीवगण–(सं० पुं०) एक प्रकार का मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह मात्रायें होती हैं इसका दूसरा नाम माला है। राजीवलोचन–(सं० वि०) कमल की तरह आँखों वाला।
राजीविनी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का कमल।
राजुक–(सं० पुं०) मौर्य काल का एक कर्मचारी कायस्थ।
राजेन्द्र–(सं० पुं०) राजश्रेष्ठ, राजाओं का राजा, सामन्त।
राजेय–(सं० पुं०) परवल।
राजेश्वर–(सं०पु०) राजाओं में श्रेष्ठ।
राजेष्ट–(सं०पुं०) लाल रंग का प्याज। राजेष्टा–(सं० स्त्री०) पिंडखजूर।
राजोपकरण–(सं० नपुं०) राजाओं के लक्षण।
राजोपजीवी–(सं० पुं०) राजकर्मचारी, जिसकी जीविका राजा की सेवा से चलती हो। राजोपसेवी–(सं० पुं०) राजा का सेवक। राजोपसेवा–(सं० स्त्री०) राजा की सेवा।
राज्ञी–(सं० स्त्री०) राजपत्नी, रानी, कांसा, नील का पेड़।
राज्य–(सं० नपुं०) राजत्व, राजा का काम, राष्ट्र, जनपद। राज्यकर–(सं०पुं०) राज्य शासन। राज्यकर्ता–(सं० पुं०) राज्य के शासन विभाग का कर्मचारी। राज्यकृत्–(सं० पुं०) राज्य का शासक। राज्यच्युत–(सं० वि०) राजसिंहासन से उतारा हुआ। राज्यच्युति–(सं० स्त्री०) राजा को राजगद्दी से उतार दिया जाना। राज्यतन्त्र–(सं० नपुं०) राज्य की शासन प्रणाली। राज्यदेवी–(सं०स्त्री०) राजकुल देवी। राज्यद्रव्य–(सं०नपुं०) राजतिलक की सामग्री। राज्यधर–(सं० पुं०) राज्यपालक। राज्यपरिभ्रष्ट–(सं० वि०) राज्यच्युत। राज्यपाल–(सं० पुं०) राजा। राज्यप्रद–(सं० वि०) राज्य देने वाला। राज्यभंग–(सं० पुं०) राज्य का नाश। राज्यभार–(सं०पुं०) राज्य के शासन का भार। राज्यभेदकर–(सं० वि०) राज्य का नाश करने वाला। राज्यभोग–(सं० पुं०) राज्य शासन। राज्यभ्रंश–(सं०पुं०) राज्य का नाश। राज्यभ्रष्ट–(सं० पुं०) देखो राज्यच्युत। राज्यरक्षा–(सं० स्त्री०) राज्य की रक्षा का कार्य। राज्यलक्ष्मी–(सं० स्त्री०) विजय, कीर्ति। राज्यलीला–(सं० स्त्री०) राजा का खेल। राज्यलोभ–(सं० पुं०) राज्य प्राप्त करने की आकांक्षा। राज्यवर्धन–(सं० पुं०) राज्य की वृद्धि करने वाला राजा। राज्यव्यवस्था–(सं० स्त्री०) राज्य का शासन करने का नियम। राज्यव्यवहार–(सं० पुं०) राजकार्य। राज्यश्री–(सं० स्त्री०) राजलक्ष्मी। राज्यसभा–(सं० स्त्री०) राज्य की व्यवस्थापक सभा। राज्यसुख–(सं०नपुं०) राजत्व का आनन्द।
राज्यस्थ–(सं० वि०) राज्य में स्थित। राज्यस्थायी–(सं० वि०) शासन करने वाला। राज्यस्थिति–(सं० स्त्री०) राज्य का शासन हाथ में लेना। राज्यहर–(सं० वि०) राज्य का नाश करने वाला।
राज्याङ्ग–(सं० नपु०)राज्य के साधक आठ अङ्ग यथा-स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, बल और सुहृद।
राज्याधिकार–(सं० पुं०) राज्य का अधिकार। राज्याधिपति–(सं० पुं०) राज्य का अधिपति, राजा। राज्याभिषिक्त–(सं० वि०) जिसका राज्याभिषेक हुआ हो। राज्याभिषेक–(सं०पु०) किसी नये राजा का राजसिंहासन पर बैठाया जाना राजगद्दी।
राज्येश्वर–(सं० पु०) राज्याधिपति।
राज्यैश्वर्य–(सं०नपुं०)राज्य रूप ऐश्वर्य।
राज्योपकरण–(सं० नपुं०) राजचिह्न।
राट्–(सं०पु०)राजा,सरदार,श्रेष्ठपुरुष।
राटुल–(हिं० पुं०) लोहा लकड़ी आदि तौलने का बड़ा तराजू।
राठ–(सं० पुं०) मदन वृक्ष, (हिं० पुं०) राज्य, राजा।
राठवर, राठोर–(हिं० पुं०) मारवाड़ वासी राजपूतों की एक शाखा।
राड़–(हिं० वि०) नीच, निकम्मा।
राढ़–(हिं० स्त्री०) झगडा, (वि०) नीच।
राढ़ा–(सं० स्त्री०) शोभा, कान्ति, (हिं० पुं०) बंग देश के उत्तरी भाग का पुराना नाम।
राढ़ीय–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मोटी घास।
राणा–(हिं० पुं०) राजा, इस शब्द का प्रयोग राजपूताना के कुछ राज्यों तथा नैपाल के सरदारों के लिये होता है।
राणिका–(सं० स्त्री०) घोड़े की लगाम।
रातंग–(हि० पुं०) गृध्र, गीध।
रात–(हिं० स्त्री०) रात्रि, रजनी, निशा, सन्ध्या से प्रातःकाल का समय। रातदिन–सर्वदा।
रातना–(हिं० क्रि०) अनुरक्त होना, रंगा जाना।
राता–(हिं० वि०) रगा हुआ, लाल रंग का।
रातिचर–(हिं०पुं०) निशाचर, राक्षस।
रातुल–(सं० पुं०) शुद्धोदन के एक पुत्र का नाम।
रांगा–(हिं० वि०) लाल रङ्ग का।
रातैल–(हिं० पुं०) लाल रंग का एक छोटा कीड़ा।
रात्र–(सं०नपु०) रात्रि,रात,निशा,रजनी।
रात्रि–(सं० पुं०) हल्दी, रजनी, रात। रात्रिक–(सं० पु०) एक प्रकार का बिच्छू। रात्रिकर–(सं० पु०) चन्द्रमा, कपूर। रात्रिकाल–(सं० पु०) रजनी, रात। रात्रिकृत्य–(सं० वि०) रात में किया जाने वाला कार्य। रात्रिचर–(सं० पुं०) राक्षस। रात्रिचर्या–(सं० स्त्री०) रात में करने का कर्तव्य। रात्रिचारी–(सं० पु०) रात को विचरने वाला। रात्रिज–(सं० नपुं०) नक्षत्र, तारे आदि। रात्रिजल–(सं० नपुं०) कुहरा। रात्रि जागरण–(सं० पुं०) रतजगा। रात्रिजागरद–(सं० पुं०) मशक; मच्छड़। रात्रिञ्चर–(सं० पु०) निशाचर, राक्षस। रात्रिञ्चरी–(सं०स्त्री०) राक्षसी। रात्रितरा–(सं० स्त्री०) गहरी रात। रात्रितिथि–(सं० स्त्री०) शुक्ल पक्ष की रात। रात्रिदोष–(सं० पुं०) रात मे होने वाला अपराध। रात्रिनाशन–(सं० पुं०) सूर्य। रात्रिन्दिव–(सं० नपुं०) दिन और रात। रात्रिपुष्प–(सं०नपुं०) कमल। रात्रिपूजा–(सं० स्त्री०) रात में करने का पूजन। रात्रिबल–(सं० पुं०) राक्षस, (वि०) रात में बलवान्। रात्रिभोजन–(सं०पुं०) रात में खाना। रात्रिभट–(सं० पुं०) राक्षस, (वि०) रात में विचरने वाला। रात्रिमणि–(सं०पु०) चन्द्रमा, निशाकर। रात्रिम्मन्य–(सं० वि०) रात्रि का ज्ञान। रात्रियोग–(सं० पु०) रात्रि का आगमन। रात्रिरक्षक–(सं०पुं०) रात का पहरा। रात्रिराग–(सं० पुं०) अन्धकार, अन्धेरा। रात्रिवासस्–(सं०नपुं०) देखो रात्रिराग। रात्रिविगम–(सं० पुं०) प्रभात, सबेरा। रात्रिवेद–(सं० पुं०) कुक्कुट, मुर्गा। रात्रिहास–(सं० पु०) कुमुदिनी, कोई। रात्रिहिण्डक–(सं०पु०) राजाओं के अन्तःपुर का रक्षक, (पहरेदार)।
रात्री–(सं० स्त्री०) रात, हलदी।
रात्र्यट–(सं० पुं०) राक्षस, (वि०) रात में घूमने वाला।
रात्र्यन्ध–(सं० वि०) जिसको रात में देख न पड़ता हो रात्रिरक्षक–रात का पहरा। रात्र्यन्धता–(सं०स्त्री०) रतौंधी का रोग।
राद्ध–(सं० वि०) पकाया हुआ, ठीक किया हुआ।
राध–(हिं० क्रि०) पीब, मवाद।
राधन–(सं० नपुं०) साधने की क्रिया, सन्तोष, तुष्टि, प्राप्ति, साधन।
राधना–(हि० क्रि०) सिद्ध करना, पूरा करना, साधना, काम निकालना, आराधना करना, पूजा करना।
राधरङ्क–(सं०पु०) थोड़ी वृष्टि होना, पाला गिरना।
राधा–(सं० स्त्री०) विशाखा नक्षत्र, बिजली, बैशाख की पूर्णिमा, प्रीति, श्रीराधिका, वृषभानु गोप की कन्या, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते है। राधाकान्त–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण। राधाकृष्ण–(सं० पुं०) राधा और कृष्ण। राधातनय–(सं०पु०) कर्ण। राधामोहन–(सं०पु०) श्रीकृष्ण; राधारमण–(सं०पु०)श्रीकृष्ण। राधावल्लभ–(सं०पु०)श्रीकृष्ण; राधावल्लभी–(सं० पु०) वैष्णवों का एक सम्प्रदाय; राधा विनोद–(सं० पु०) श्रीकृष्ण; राधासुत–(सं० पुं०) कर्ण; राधिक–(सं० पुं०) राजा जयसेन का पुत्र; राधिका–(सं०स्त्री०) श्रीकृष्ण की प्रेमिका, वृषभानु गोप की कन्या, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बाईस मात्राएँ होती है; राधिकारमण–(पुं०) श्रीकृष्ण।
राधेय–(सं०पुं०) कर्ण।
राधेश, राधेश्वर–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
राध्य–(सं०वि०) स्तुति करने योग्य।
रानतुरई–(हिं०स्त्री०) कड़ुई तरोई।
राना–(हिं० पुं०) देखो राणा (क्रि०) अनुरक्त होना; रानापति–(हिं० पुं०) सूर्य; रानी–(हिं०स्त्री०)राजा की पत्नी, राजा की स्त्री, स्वामिनी, मालकिन, स्त्रियों के लिये आदर सूचक शब्द;
रानीकाजर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का धान।
रापी–(हिं० स्त्री०) चमारों का चमड़ा स्वच्छ करने का एक औजार।
राब–(हिं०स्त्री०) आंच पर औटा कर गाढा किया हुआ गन्ने का रस।
राबड़ी–(हिं० स्त्री०) औटा कर तथा चीनी मिला कर गाढा किया हुआ दूध, बसौंधी।
राबना–(हिं०क्रि०) खेत में खाद देने की एक विशेष विधि।
राभस्य–(सं०नपुं०) आग्रह,हठ, आनन्द।
राम–(सं०वि०) सुन्दर, सफ़ेद, (पु०) परशुराम, सूर्यवंशीय राजा दशरथ के पुत्र जो अवतार माने जाते हैं, कृष्ण के बड़े भाई बलराम, अशोक वृक्ष, वरुण, घोड़ा, तीन की संख्या, एक मात्रिक छन्द; राम राम करना–अभिवादन या प्रणाम करना, राम नाम जपना; राम राम करके–किसी न किसी प्रकार से, बड़ी कठिनाई से; रामराम होना–मर जाना।
रामकजरा–(हिं०पु०) एक प्रकार का धान; रामकली–(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम; रामकोटा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बबूल; रामकिरि–

(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम; **रामकुमार**–(सं०पुं०) लव और कुश; **रामकृष्ण**–(सं०पुं०) बलराम और श्रीकृष्ण; **रामकेला**–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बढिया केला, एक प्रकार का बढिया आम; **रामगीती**–(सं०पुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में छत्तीस मात्राएँ होती हैं; **रामचक्र**–(सं०नपुं०) पीठी का बरा, लिट्टी; **रामचन्द्र**–(सं०पुं०) अयोध्या के राजा इक्ष्वाकुवंशीय महाराज दशरथ के पुत्र जो विष्णु के एक अवतार माने जाते हैं; **रामचर**–(सं०पुं०) बलराम; **रामचरित**–(सं०नपुं०) दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र की जीवनी; **रामचिड़िया**–(सं०स्त्री०) मछरंगा नामकपक्षी

रामज–(सं०पुं०) राम के पुत्र।

रामजननी–(सं० स्त्री०) बलदेव जी की माता, रामचन्द्रकी माता कौशल्या।

रामजना–(हिं०पुं०) एक संकर जाति जिसकी कन्यायें वेश्या वृत्ति करती हैं; **रामजनी**–(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी; **रामजमानी**–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत महीन चावल।

रामजौ–(हिं०पुं०) एक प्रकार की जई;

रामझोल–(हिं०स्त्री०) पैर में पहरने की पाजेब; **रामटोड़ी**–(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।

रामठ–(सं०नपुं०) अखरोट का वृक्ष; **रामठी**–(सं०स्त्री०) हींग।

रामण–(सं०पुं०) तेंदु का वृक्ष।

रामणीयक–(सं० नपुं०) रमणीयता, मनोहरता, (वि०) सुन्दर, रमणीक।

रामतरुणी–(सं०स्त्री०) रामकी पत्नी सीता

रामतरोई–(हिं० स्त्री०) भिंडी नाम की तरकारी।

रामता–(सं०स्त्री०) राम का गुण; **रामतारक**–सं० पुं०) "रां रामाय नमः" मंत्र जिसको राम के उपासक जपते हैं; **रामत्व**–(सं०नपुं०) देखो रामता।

रामति–(हिं० स्त्री०) भिक्षार्थ।

रामदल–(सं० पुं०) श्रीरामचन्द्र की बन्दरों की सेना, ऐसी प्रबल सेना जिसको हराना कठिन हो।

रामदाना–(हिं० पुं०) मरसे या चौराई की जातिका एक पौधा जिसमे बहुत छोटे सफ़ेद दाने लगते हैं।

रामदास–(सं०पुं०) हनुमान्, एक प्रकार का धान, शिवाजी के गुरु जो एक बड़े महात्मा थे।

रामदूत–(सं०पुं०) हनुमान जी; **रामदूती**–(सं०स्त्री०) एक प्रकार की तुलसी; **रामदेव**–(सं०पुं०) रामचन्द्र।

रामद्वादशी–(सं०स्त्री०) जेठसुदी द्वादशी।

रामधनुष–(हिं०पुं०) इन्द्रधनुष।

रामधाम–(सं० पुं०) साकेत लोक जहाँ भगवान् नित्य रामरूप में विराजमान माने जाते हैं।

रामननुआ–(हिं०पुं०) घीया, कद्दू।

रामनवमी–(सं०स्त्री०) चैत्र शुक्ला नवमी जिस दिन रामचन्द्रका जन्म हुआ था।

रामना–(हिं०क्रि०) देखो रमना।

रामनामी–(हिं० पुं०) वह चादर या दुपट्टा जिस पर 'राम राम' छपा रहता है, एक प्रकार का गलेका हार जिसके बीच के पानमें 'राम' अंकित रहता है।

रामनौमी–(हिं०स्त्री०) देखो रामनवमी।

रामपात–(हिं०पुं०) नील की जाति का एक पौधा।

रामफल–(हिं०पुं०) सीताफल, शरीफ़ा।

रामबँटाई–(हिं० स्त्री०) आधे आध का विभाग।

रामबान–(हिं०वि०) तुरत प्रभाव दिखाने वाला।

रामबांस–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा बांस जो पालकीके डंडे बनाने के काम में आता है, केवड़े की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियों के रेशे से रस्से बनाये जाते हैं।

रामबिलास–(हिं०पुं०) एक प्रकारका धान

रामभक्त–(सं०पुं०) रामचन्द्रका उपासक, हनुमान; **रामभद्र**–(सं० पुं०) श्रीरामचन्द्र; **रामभोग**–(हिं०पुं०) एक प्रकार का चावल, एक प्रकार का आम।

रामरक्षा–(सं०पुं०) रामजीका एक स्तोत्र

रामरज–(सं०स्त्री०) एक प्रकारकी पीली मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं।

रामरतन–(हिं०पुं०) चन्द्रमा।

रामरस–(हिं०नपुं०) नमक, पीसी हुई भांग

रामराज्य–(सं०पुं०) रामचन्द्र का शासन जो प्रजाके लिये अत्यन्त सुखदायक था

रामराम–(हिं०पुं०) प्रणाम, नमस्कार, भेंट।

रामरौला–(हिं०पुं०) कोलाहल।

रामल–(सं०वि०) रमल सम्बन्धी।

रामलक्ख–(सं०नपुं०) साम्हर नोन।

रामलीला–(सं०स्त्री०) रामजी के जीवन काल के किसी कृत्य का अभिनय या नाटक, एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस मात्रायें होती हैं।

रामबाण–(हिं०पुं०) एक प्रकार की ऊख, (वि०) जो तुरंत उपयोगी सिद्ध हो तुरत प्रभाव दिखलानेवाली (औषधि)

रामशर–(सं० पुं०) एक प्रकार का सरकंडा जो ऊख के खेत में आप से आप उगता है।

रामशिला–(सं० स्त्री०) गया की एक पहाड़ी जिसको लोग तीर्थ मानते हैं।

रामश्री–(सं०पुं०) एक राग का नाम।

रामसंडा–(हिं०पुं०) एक प्रकारकी घास।

रामसखा–(सं०पुं०) सुग्रीव।

रामसनेही–(हिं० पुं०) एक वैष्णव सम्प्रदाय, रामभ।

रामसुंदर–(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी नाव

रामसेतु–(सं० पुं०) दक्षिण भारत की अन्तिम सीमा पर रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र मे पड़ी हुई चट्टानों का समूह।

रामसेनक–(सं०पुं०) कटहल।

रामसेवक–(सं० पुं०) कटहल।

रामा–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री, अच्छा गाना गाने वाली स्त्री, हींग, ईंगुर, सफ़ेद भटकटैया, आर्या छन्द का एक भेद, कातिक बदी एकादशी, उपजाति वृत्त का एक भेद, शीतला, गोरोचन, घीकुआर, अशोक, गेरू, तमाखू, सीता, रुक्मिणी, लक्ष्मी, राधा, आठ अक्षरों का वृत्त; **रामातुलसी**–(सं०स्त्री०) एक प्रकार की तुलसी; **रामानन्द**–(सं०पुं०) एक वैष्णव धर्म प्रचारक साधु; **रामानन्दी**–इस सम्प्रदायका अनुयायी।

रामानुज–(सं०पुं०) रामचन्द्रजीके छोटे भाई लक्ष्मण, वैष्णव सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध आचार्य, इनका सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत वेदान्त कहलाता है।

रामायण–(सं०नपुं०) वाल्मीकि ऋषिका संस्कृत में रचा हुआ भारतवर्ष का आदि काव्य; **रामायणीय**–(सं० वि०) रामायण की कथा कहने वाला।

रामायन–(हिं० पुं०) देखो रामायण।

रामावत–(सं०पुं०) रामानन्दका चलाया हुआ एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय।

रामिल–(सं०पुं०) रमण, कामदेव, पति।

रामेश्वर–(सं०पुं०) दक्षिण भारत के समुद्र तट पर का एक स्थान जहां पर श्रीरामचन्द्र का स्थापित एक शिवलिङ्ग है।

राय–(सं०पुं०) छोटा राजा या सरदार, वन्दीजन, भाट, गन्धर्वों की एक उपाधि,

रायज–(अ०वि०) जो व्यवहार में आ रहा हो, प्रचलित, चलनसार।

रायण–(सं०नपुं०) क्रन्दन, रोना, चीत्कार।

रायता–(हिं०पुं०) दहीमें मिलाया हुआ साग, कुम्हड़ा, लौवा, बुंदिया आदि जिसमें नमक मिर्च आदि मिलाया रहता है।

रायबेल–(हिं०स्त्री०) सुगन्धित फूलों की एक प्रकारकी लता; **रायभोग**–(हिं०पुं०) देखो राजभोग, एक प्रकार धान।

रायमुनी–(हिं०स्त्री०) लाल नामक पक्षी की मादा, सदिया।

रायरासि–(हिं०स्त्री०) राजा का कोष।

रायबाघिनी–(सं०स्त्री०) प्रचण्डा, कलहप्रिया रमणी।

रायसा–(हिं० पुं०) वह काव्य जिसमें किसी राजाका जीवन चरित्र वर्णित हो, रासो।

रायस्काम–(सं० वि०) धन की इच्छा करने वाला।

रायस्पोष–(सं०वि०) धनवान्।

रार–(हिं० पुं०) झगड़ा।

रारा–(सं०पुं०) ज्योति, प्रकाश।

राल–(सं०पुं०) धूना का वृक्ष, वह तरल गोंद जो इस वृक्ष से निकाला जाता है, (हिं० पुं०) एक प्रकार का कम्बल, (स्त्री०) पतला लसदार थूक, लार।

राली–(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका बाजरा।

राव–(सं० पुं०) ध्वनि, शब्द, (हिं०पुं०) राजा, सरदार, श्रीमान्, धनिक, भाट, राजपूताना के कुछ राजाओं की पदवी।

रावचाव–नाच गीतका उत्सव, रागरंग।

रावट–(हिं०पुं०) राजभवन।

रावटी–(हिं०स्त्री०) कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का घर, छोलदारी, ओसारी।

रावण–(सं०पुं०) लंकाधिपति, दशकन्धर, लंकेश, दशानन। **रावणारि**–(सं०पुं०) रावण को मारने वाले श्रीरामचन्द्र।

रावत–(हिं०पुं०) छोटा राजा, सरदार, शूरवीर, सेनापति, बड़ा योद्धा।

रावन–(हिं० पुं०) देखो रावण; रावन गढ़-लंका।

रावना–(हिं०क्रि०) रुलाना।

रावर–(हिं०वि०) भवदीय, आपका, (पुं०) अन्तःपुर, रनिवास।

रावरखा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी ऊँचा वृक्ष।

रावल–(हिं० पुं०) अन्तःपुर, राजा, प्रधान, सरदार, एक प्रकार का आदर सूचक संबोधन का शब्द, राजपूत सामन्तों को एक उपाधि।

राशि–(सं०पुं०) धान्य आदि का समूह, पुंज, समुच्चय, ढेर, राशिचक्र का बारहवाँ भाग, ये बारह राशि-मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ और मीन हैं। **राशिचक्र**–(सं० नपुं०) ग्रहों के चलने का मार्ग या वृत्त, भचक्र, ज्योतिषचक्र। **राशिनाम**–(सं० नपुं०) किसी बालक का वह नाम जो नामकरण के समय राशि के अनुसार रक्खा जाता है। **राशिभोग**–(सं०पुं०) उतना समय जितना किसी ग्रहों का किसी राशि में रहने में लगता है।

राशी–(अ०वि०) उत्कोच लेने वाला,

राशीकरण–(सं० नपुं०) इकट्ठा करना,

राशीकृत–(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ

राष्ट्र–(सं०पुं०) राज्य, देश, प्रजा, वह बाधा जो सपूर्ण देश में उपस्थित हो, वह जनसमूह जो एक देश या राज्य में बसता हो। **राष्ट्रक**–(सं०पुं०) राज्य, देश। **राष्ट्रकर्षण**–(सं०नपुं०) राजा का प्रजा पर अत्याचार करना

राष्ट्रकाम–(सं०वि०) राज्य पाने की इच्छा करने वाला। **राष्ट्रकूट**–(सं०नपुं०) दाक्षिणात्य का क्षत्रिय राजवंश। **राष्ट्रगुप्ति**–(सं० पुं०) राज्य की रक्षा। **राष्ट्रगोप**–(सं०पुं०) राजा का रक्षा करने वाला।

राष्ट्रतन्त्र–(सं०नपुं०) राज्य का शासन करने की प्रणाली। **राष्ट्रदा**–(सं०स्त्री०) राज्य देने वाली। **राष्ट्रदिप्सु**–(सं०वि०) राज्य का नाश करने वाला।

राष्ट्रनिवास–(सं० पुं०) जनपद, देश।

राष्ट्रपति–(सं०पुं०) किसी राष्ट्र का स्वामी; आधुनिक प्रजातन्त्र शासन

प्रणाली में बहुमत से चुना हुआ शासक ।

राष्ट्रपाल–(सं०पुं०) राष्ट्रपति । **राष्ट्र-भङ्ग**–(सं०पुं०) राज्य का नाश ।

राष्ट्रभय–(सं०नपुं०) राज्य के ऊपर शत्रु के आक्रमण का भय । **राष्ट्रभृत्**–(सं०पुं०) राजा, शासक । **राष्ट्रभृति**–(सं०स्त्री०) राज्य का पालन करने की विधि । **राष्ट्रभृत्य**–(सं०पु०) राज्य का शासन करने वाला । **राष्ट्रभेद**–(सं०पुं०) राज्य का विभाग । **राष्ट्र-वर्धन**–(सं०पुं०) राज्य की वृद्धि ।

राष्ट्रवासी–(सं०पुं०) राष्ट्र में रहने वाला । **राष्ट्रविप्लव**–(सं० पुं०) विद्रोह, बलवा; **राष्ट्रान्तपाल**–(सं०पु०) सीमान्त राज्य; **राष्ट्रान्त-पालक**–(सं०वि०) राज्य की सीमा का रक्षक ।

राष्ट्रि–(सं०स्त्री०) राजेश्वरी, रानी; **राष्ट्रिक**–(सं०वि०) राष्ट्र संबंधी । **राष्ट्रीय**–(सं०वि०) राष्ट्र संबंधी, राष्ट्र का ।

रास–(सं०पुं०) कोलाहल, ध्वनि, गूंज, गोपियों की एक क्रीडा जिसमें वे श्रीकृष्ण के साथ घेरा बाँधकर नाचती थीं, वह नाटक जिसमें श्रीकृष्ण की इस लीला का अभिनय होता है, (हिं०स्त्री०) ढेर, समूह, जोड़, चौपायों का झुंड, सूद, व्याज, ज्योतिष की राशि, गोद, एक प्रकार का अगहनियाँ धान, एक प्रकार का छन्द, (अ०स्त्री०) घोड़े की लगाम, बागडोर, (वि०) अनुकूल ।

रासक–(सं०पुं०) हास्य रस प्रधान एक नाटक जिसमें केवल एक अङ्क होता है

रासचक्र–(हिं०पु०) देखो राशिचक्र ।

रासताल–(सं०पु०) तेरह मात्राओं के एक ताल का नाम ।

रासधारी–(सं०पुं०) वह मण्डली या व्यक्ति जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है ।

रासन–(सं०पुं०) स्वाद लेना ।

रासना–(हिं०पुं०) देखो रास्ना ।

रासनृत्य–(सं०पुं०) गति के अनुसार नाच का एक भेद ।

रासभ–(सं०पुं०) गर्दभ, वैशाखनन्दन, गदहा, अश्वतर, खच्चर; **रासभी**–(सं०स्त्री०) गदही ।

रासभूमि–(सं०स्त्री०) रासक्रीड़ा का स्थान

रासमण्डल–(सं०नपुं०) रासक्रीडा करने का स्थान, रासलीला करने वालों का समूह, वह अभिनय जो रासधारी करते हैं । **रासमण्डली**–(सं० स्त्री०) रासधारियों का समाज ।

रासयात्रा–(सं०स्त्री०) कार्तिकी पूर्णिमा को होने वाला एक उत्सव ।

रासलीला–(सं० स्त्री०) वह क्रीड़ा या नृत्य जो कृष्णने गोपियों के साथ शरदपूर्णिमा को आधीरात के समय किया था ।

रासबिहारी–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण ।

रासायनिक–(सं० वि०) रसायन शास्त्र संबंधी, रसायन शास्त्र का जानकार

रासि–(हिं०स्त्री०) देखो राशि ।

रासी–(हिं०स्त्री०) सज्जी, (वि०) कृत्रिम, बुरा, छोटे नाप की ।

रासेरस–(सं०पुं०) शृंगार, रासलीला, उत्सव, हँसी दिल्लगी ।

रासु–(हिं०वि०) सरल, सीधा ।

रासेश्वरी–(सं०स्त्री०) राधा ।

रासो–(हिं० पुं०) किसी राजा का पद्यमय जीवन चरित्र जिसमें विशेष करके उसके युद्धों और वीरता के कार्यों का वर्णन होता है ।

रास्ना–(सं० स्त्री०) सर्पगन्धा नामक औषधि ।

रास्य–(सं०वि०) रास के योग्य, (पु०) श्रीकृष्ण ।

राह–(सं०पुं०) देखो राहु;

राह चलता–(हिं०पुं०) रास्ता चलने वाला, पथिक, बटोही, अपरिचित व्यक्ति, **राह चौरंगी**–(हिं०पुं०) चौरहा;

राहड़ी–(हिं०पु०) एक प्रकार का घटिया कम्बल ।

राहरीति–(हिं० स्त्री०) जान पहचान, परिचय ।

राहना–(हिं०क्रि०) देखो रहना, मोटी रेती से रगड़ कर चिकना करना ।

राहा–(हिं०पु०) चक्की के नीचे का मिट्टी का चबूतरा ।

राहु–(सं० पुं०) पुराणों के अनुसार नवग्रहों में से एक ग्रह, (हिं० पुं०) रोहू मछली ; **राहुग्रहण**–(सं०नपुं०) राहु द्वारा ग्रस्त । **राहुभेदी**–(सं०पुं०) विष्णु; **राहुरत्न**–(सं०नपुं०) गोमेदक मणि ।

राहुल–(हिं०पुं०) गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम ।

राहुसंस्पर्श–(सं० पु०) सूर्य या चन्द्र ग्रहण । **राहुसूतक**–(सं०नपुं०) ग्रहण । **राहुस्पर्श**–(सं०पु०) सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण; **राहुहन्**–(सं०पुं०) विष्णु ।

राहूच्छिष्ट–(सं०पुं०) लहसुन ।

राहेल–(सं० पुं०) यहूदियों की एक उपजाति का नाम ।

रिंगन–(हिं०स्त्री०) घुटनों के बल चलना

रिंगना–(हिं० क्रि०) रेंगना, घुमाना फिराना, दौड़ना, धीरे धीरे चलना ।

रिंगल–(हिं० पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी बाँस ।

रिकवंछ–(हिं० स्त्री०) उड़द की पीठी तथा अरुई के पत्तों से बना हुआ एक खाद्य पदार्थ ।

रिकाब–(हिं०स्त्री०) देखो रेकाब ।

रिकाबी–(हिं०स्त्री०) कटोरी ।

रिक्त–(सं०नपुं०) बन, जंगल, (वि०) शून्य, खाली, निर्धन, गरीब; **रिक्तक**–(सं०वि०) खाली ; **रिक्तकुंभ**–(सं० नपुं०) ऐसी बोली जो समझ मे न आवे ; **रिक्तकृत**–सं०वि०) खाली किया हुआ ; **रिक्तता**–(सं०स्त्री०) शून्यता; **रिक्तपाणि**–सं०वि०) खाली हाथ ; **रिक्तभाण्ड**–(सं०नपुं०) बुद्धिहीन; **रिक्तमति**–सं०वि०) शून्यचित्त; **रिक्तहस्त**–सं० वि०) जिसके पास एक पैसा भी न हो ।

रिक्ता–(सं०स्त्री०) चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथि ।

रिक्तार्क–सं०पुं०) रविवार को पड़ने वाली रिक्ता तिथि ।

रिक्थ–(सं० नपुं०) वंशपरंपरा में मिला हुआ धन या सम्पत्ति; **रिक्थ-ग्राह**–(सं० वि०) धन लेने वाला; **रिक्थजात**–(सं० नपुं०) मृत व्यक्ति की सब सम्पत्ति ; **रिक्थभागी**–(सं० वि०) धनभागी; **रिक्थहर**–(सं०पुं०) धनभागी ; **रिक्थहार**–(सं०पुं०) वह जो धन का अधिकारी हो ।

रिक्थहारी, रिक्थी–सं० वि०) जिसको उत्तराधिकार में धन या सम्पत्ति मिले ।

रिक्ष–(हिं०पुं०) देखो ऋक्ष; रीछ, भालू

रिक्षा–(सं०स्त्री०) लीख ।

रिगण–(सं०नपुं०) रेंगना, फिसलना ।

रिचा–(हिं०स्त्री०) देखा ऋचा ।

रिच्छ–(हिं०पुं०) भालू ।

रिजु–हिं०वि०) देखो ऋजु ।

रिझकवार, रिझवार–(हि० पुं०) किसी बात पर प्रसन्न होने वाला, अनुराग करने वाला, प्रेमी, गुण ग्राहक ।

रिझाना–(हिं०क्रि०) अपने ऊपर किसी को प्रसन्न कर लेना, लुभाना, किसी को अपना प्रेमी बना लेना । **रिझा-यल**–(हिं० वि०) रीझने वाला । **रिझाव**–(हिं० पुं०) किसी को अपने ऊपर प्रसन्न होने का भाव । **रिझा-वना**–(हिं०क्रि०) देखो रिझाना ।

रित, रितु–(हिं०स्त्री०) देखो ऋतु ।

रितवना–(हिं०क्रि०) खाली करना ।

रितुवंती–(हिं०स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

रिद्ध–(सं०वि०) पका या रींधा हुआ ।

रिद्धि–(हिं०स्त्री०) देखो ऋद्धि ।

रिधम–(सं०पुं०) कामदेव, वसन्त ।

रिन–(हिं०पुं०) देखो ऋण ।

रिनबंधी–(हिं०पुं०) ऋणी ।

रिनिआं–(हिं०वि०) ऋणी ।

रिनी–(हिं०वि०) देखो ऋणी ।

रिपु–(हिं०पुं०) शत्रु, वैरी; **रिपुघाती**–(सं० वि०) शत्रुओं का नाश करने वाला । **रिपुता**–(सं० स्त्री०) शत्रुता, वैमनस्य ।

रिम–(हिं० पुं०) रिपु, शत्रु ।

रिमझिम–(हिं०स्त्री०) छोटी छोटी जल की बूंदों का निरन्तर गिरना, फूही पड़ना ।

रिमहर–(हिं०पुं०) शत्रु ।

रिमिका–(हिं० स्त्री०) काली मिर्च की लता ।

रियासत–(अ०स्त्री०) राज्य, रईस, होने का भाव, अमीरी, विभव ।

रिरंसा–(सं० स्त्री०) रमण करने की इच्छा । **रिरंसु**–(सं०वि०) रमण की इच्छा करने वाला ।

रिरक्षा–सं०स्त्री०) रक्षा करने की इच्छा ।

रिर–(हिं०पुं०) हठ ।

रिरना–(हिं०क्रि०) हठ करना ।

रिरहा–दीनता पूर्वक भिक्षा मांगनेवाला ।

रिरी–(सं०स्त्री०) पित्तल, पीतल ।

रिषभ–(हिं०पुं०) देखो ऋषभ ।

रिषीक–(सं०वि०) हानि पहुंचाने वाला, (पुं०) शिव, महादेव ।

रिषीकार–(सं०नपुं०) क्षेम, कल्याण ।

रिष्ट–(सं०वि०) प्रसन्न, हृष्ट, पुष्ट ।

रिष्टि–(सं०पुं०) खड्ग, तलवार, (स्त्री०) अशुभ, अमगल ।

रिष्यमूक–(हिं०पुं०) देखो ऋष्यमूक ।

रिस–(हिं०स्त्री०) क्रोध, रोष; **रिस मारना**–क्रोध रोकना ।

रिसना–(हिं०क्रि०) देखो रसना; छनकर बाहर टपकना । **रिसवाना**–(हिं०क्रि०) क्रोध दिलाना ।

रिसहा–(हिं०वि०) क्रोधी ।

रिसहाया–(हिं०वि०) क्रुद्ध ।

रिसना–(हिं० पुं०) ताने के सूतों को फैलाकर स्वच्छ करने का काम ।

रिसाना–(हिं०क्रि०) किसी पर क्रुद्ध होना ।

रिसि–(हिं० स्त्री०) देखो रिस; क्रोध । **रिसिआना, रिसियाना**–(हिं० क्रि०) कुपित होना, क्रोध करना ।

रिसिक–(हिं०स्त्री०) खड्ग, तलवार ।

रिसौंहां–(हिं० वि०) क्रोध से भरा हुआ ।

रिहाण–(सं०पुं०) सेवा करना ।

रिहायस–(सं० पुं०) चोर, ठग ।

रींधना–(हिं० क्रि०) खाद्य पदार्थ को उबालना, तलना या पकाना ।

री–(सं०स्त्री०) गति, शब्द, वध, हत्या; (हिं०अव्य०) सखियों के लिये संबोधन का शब्द, अरी ।

रीगन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का धान जो कुआर में तैयार होता हैं ।

रीछ–(हिं० पुं०) भालू । **रीछराज**–(हिं०पुं०) जामवन्त ।

रीझ–(हिं० स्त्री०) रीझने की क्रिया या भाव, किसी बात पर प्रसन्न होना, किसी के गुण रूप आदि पर मोहित होने का भाव । **रीझना**–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना, मोहित या मुग्ध होना ।

रीठ–(हिं० स्त्री०) खड्ग, तलवार, युद्ध, (वि०) अशुभ ।

रीठा–(हिं०पुं०) एक बड़ा वृक्ष जिसका बेर के बराबर फल सुखा लिया जाता है, बाद में पानी में भिगोकर मलने से इसमें से फेन निकलता है, जिससे कपड़े स्वच्छ किये जाते हैं । **रीठी**–(हिं०स्त्री०) छोटा रीठा ।

रीढ–(हिं०स्त्री०) पीठ के बीचोबीच की लंबी हड्डी जो गरदन से कमर तक जाती है जिसमें पसलियां मिली होती है, मेरुदण्ड, पृष्ठवंश ।

रीढा–(सं०स्त्री०) अवज्ञा, अवमान ।

रीत–(हिं०स्त्री०) देखो रीति।

रीतना–(हिं०क्रि०) रिक्त होना, खाली होना, रिक्त करना।

रीता–(हिं०वि०) जिसके भीतर कुछ न हो, खाली।

रीति–(सं०स्त्री०) कोई काम करने का ढंग, परिपाटी, नियम, प्रकार, तरह, ढब, गति, स्वभाव, प्रकृति, स्तुति, प्रशंसा, काव्य की आत्मा अर्थात् वाक्य की ऐसी रचना जिससे ओज, प्रसाद तथा माधुर्य गुण आ जावे।

रीतिका–(सं०स्त्री०) जस्ते का भस्म।

रीति पुष्प–(सं०नपुं०) जस्ते का भस्म।

रीस–(हिं०स्त्री०) स्पर्धा, डाह, ईर्ष्या।

रीसना–(हिं० क्रि०) क्रुद्ध होना।

रीसा–(हिं०स्त्री०) बनटोरा नामकी झाड़ी।

रुंज–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बाजा।

रुंड–(हिं०पुं०) देखो रुण्ड।

रुंदवाना–(हिं०क्रि०) पैर से कुचलवाना।

रुंधती–(हिं०स्त्री०) देखो अरुन्धती।

रुंधना–(हिं० क्रि०) मार्ग न मिलने के कारण अटकना, उलझना, रुकना, फँस जाना, किसी, कार्य में लीन हो जाना।

रु–(हिं०अव्य०) देखो अरु, और।

रुआंली–(हिं०स्त्री०) रूई की पौनी।

रुआ–(हिं० पुं०) देखो रोआं, रोम।

रुआ घास–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की सुगन्धित घास।

रुईदार–(हिं०वि०) रूई भरा हुआ।

रुकना–(हिं०क्रि०) आगे न बढ़ सकना, ठहर जाना, किसी कार्य का बीच में ही बन्द हो जाना, आगा पीछा करना, अटकना, किसी क्रम का आगे को न चलना।

रुक भंजनी–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का पौधा जो बगीचों में सजावट के लिये लगाया जाता है।

रुकमंगद–(हिं०पुं०) देखो रुक्माङ्गद।

रुकमिनी–(हिं०स्त्री०) देखो रुक्मिणी।

रुकवाना–(हिं० क्रि०) दूसरे को रोकने में प्रवृत्त करना।

रुकाव, रुकावट–(हिं० पुं०) रुकने का भाव, रुकावट।

रुकुम–(हिं० पुं०) देखो रुक्म। **रुकुमी**–(हिं०पुं०) देखो रुक्मी।

रुक्ख–(हिं०पुं०) देखो वक्ष, पेड़।

रुक्म–(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना, धतूरा, लोहा, नागकेसर, रुक्मिणी के एक भाई का नाम, (वि०) दीप्तिमान्।

रुक्म कारक–(सं० पुं०) स्वर्णकार, सोनार; **रुक्म मय**–(सं०वि०) सोने का बना हुआ; **रुक्म माली**–(सं०पुं०) भीष्म के एक पुत्र का नाम। **रुक्मरथ**–(सं०पुं०) सोने का बना हुआ रथ।

रुक्मवत्–(सं० वि०) सुवर्ण युक्त।

रुक्मवती–(सं०स्त्री०) एक वर्णवत्त का नाम जिसको रूपवती या चंपकमाला भी कहते हैं। **रुक्मवाहन**–(सं०पुं०) द्रोणाचार्य। **रुक्मसेन**–(सं० पुं०) रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मस्तेय–(सं०नपुं०)सोना चुरानेवाला

रुक्मिणी–(सं०स्त्री०) श्रीकृष्ण की बड़ी पटरानी जो विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री थीं।

रुक्मिन्–(सं०पुं०) विदर्भ देश के राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र।

रुक्ष–(सं०वि०) बिना प्रेम का, जिसमें चिकनाहट न हो, रूखा, नीरस, सूखा, (पुं०) नरकट, वृक्ष; **रुक्षता**–(सं०स्त्री०) रुखाई, रूखापन।

रुखाई–(हिं०स्त्री०) रूखा होने का भाव, रूखापन, शुष्कता, व्यवहार की कठोरता, शील का परित्याग;

रुखाना–(हिं०क्रि०)रूखा होना, सूखना

रुखानी–(हिं०स्त्री०) बढ़इयों का लकड़ी का मूठ लगा हुआ एक धारदार अस्त्र

रुखावट, रुखाहट–(हिं०स्त्री०) रूखापन, रुखाई।

रुखिता–(हिं०स्त्री०) वह नायिका जो रोष या क्रोध कर रही हो।

रुखुरी–(हिं०स्त्री०) बहुत छोटा पौधा।

रुखौंहां–(हिं०वि०) रुखाई लिये हुए।

रुगन्वित–(सं०वि०) पीड़ा युक्त।

रुग्भेषज–(सं०नपुं०) रोग की औषधि।

रुग्न–(हिं०वि०) रुग्ण, रोगग्रस्त, झुका हुआ, बिगड़ा हुआ; **रुग्नता**–(सं०स्त्री०) रोगी होने का भाव।

रुच–(सं०वि०) उज्वल, (हिं०स्त्री०) देखो रुचि।

रुचक–(सं०नपुं०) सज्जीखार, घोड़े का साज, लवण, नमक, (पुं०) दाँत, कबूतर, बिजौरा नीबू।

रुचना–(हिं०क्रि०) अनुकूल होना।

रुचा–(सं०स्त्री०) दीप्ति, प्रकाश, शोभा, इच्छा, पक्षियों का बोलना।

रुचि–(सं०स्त्री०)अनुराग,प्रेम, आसक्ति, प्रवृत्ति, किरण, शोभा, छवि, खाने की इच्छा, सुन्दरता, भूख, स्वाद, एक अप्सरा का नाम, (वि०) शोभा के अनुकूल, योग्य; **रुचिकर**–(सं०वि०) अच्छा लगाने वाला; **रुचिकारक**–(सं०वि०) अच्छे स्वाद वाला, स्वादिष्ट; **रुचिकारी**–(सं०वि०) मनोहर; **रुचित**–(सं०वि०) अभिलषित, जिसको जी चाहता हो; **रुचिता**–(सं० स्त्री०) अनुराग, प्रेम, सुन्दरता, अतिजगती वृत्त का एक भेद।

रुचिधामन्–(सं०पुं०) सूर्य।

रुचिप्रदा–(सं०स्त्री०) कुंदरू।

रुचिदन्त–(सं०वि०) सुन्दर दांतों वाला।

रुचिफल–(सं०नपुं०) नाशपाती।

रुचिमती–(सं०स्त्री०) उग्रसेन की रानी का नाम, रुचिभाव, (वि०) शोभापूर्ण।

रुचिर–(सं०नपुं०) कुंकुम, केशर, लवंग, चांदी, (स्त्री०) सुन्दर, अच्छा, मीठा।

रुचिर वदन–(सं० वि०) सुन्दर मुख वाला; **रुचिरवृत्ति**–(सं०पुं०) अस्त्र के प्रहार का संहार।

रुचिरा–(सं०स्त्री०) एक वृत्त का नाम, कुंकुम, केसर, लवंग, मूली; **रुचिराई**–(हिं०स्त्री०) मनोहरता, सुन्दरता; **रुचिरापांगी**–(सं०स्त्री०) जिसकी आंखें बड़ी सुन्दर हों।

रुचिराश्व–(सं०पुं०) सुन्दर घोड़ा।

रुचिवर्धक–(सं०वि०) रुचि उत्पन्न करने वाला, भूख बढ़ाने वाला।

रुचिष्य–(सं०वि०) चाहा हुआ, इच्छा किया हुआ।

रुची–(हिं०स्त्री०) देखो रुचि।

रुच्छ–(हिं०वि०) देखो रूक्ष, रूखा।

रुच्यकन्द–(सं०पुं०) सूरण; **रुच्यवाहन**–(सं०पुं०) अग्नि; **रुच्य**–(सं०वि०) रुचिकर, सुन्दर।

रुज–(सं०नपुं०) क्षत, घाव, वेदना, भंग, कष्ट, (नपुं०) ढोलक के समान एक प्रकार का प्राचीन बाजा; **रुजग्रस्त**–(सं०वि०) रोगग्रस्त; **रुजस्कर**–(सं०वि०) पीड़ा देने वाला।

रुजा–(सं०स्त्री०) रोग, पीड़ा; **रुजाकर**–(सं०स्त्री०) रोग उत्पन्न करने वाला; **रुजापह**–(सं०वि०) पीड़ा या रोग को दूर करने वाला; **रुजाली**–(सं०स्त्री०) रोगों या कष्टों का समूह; **रुजावी**–(सं०वि०) पीडायुक्त, पीड़ित; **रुजासह**–(सं०पुं०) धामिन का वृक्ष।

रुजी–(हिं०वि०) अस्वस्थ, रोगी।

रुझना–(हिं० क्रि०) घाव आदि का पूजना; देखो उलझना।

रुझनी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

रुठ–(हिं०पुं०) क्रोध, रोष।

रुठना–(हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना।

रुठाना–(हिं०क्रि०) रूठने में प्रवृत्त करना।

रुणित–(सं०वि०) शब्द करता हुआ, झनकारता हुआ।

रुण्ड–(सं०पुं०) कबन्ध, जिसका हाथ पैर छिन्न हो।

रुण्डिका–(सं०स्त्री०) युद्धभूमि, ड्योढ़ी, बहुतायत।

रुत–(सं०नपुं०) पक्षियों का कलरव, शब्द, ध्वनि; (हिं०स्त्री०) देखो ऋतु।

रुदन–(सं०नपुं०) क्रन्दन, रोने की क्रिया

रुदराछ–(हिं०पुं०) देखो रुद्राक्ष।

रुदित–(सं०वि०) रोता हुआ; **रुदिन**–(हिं०वि०) रोता हुआ।

रुद्ध–(सं०वि०) आवृत्त, वेष्टित, घिरा हुआ, फँसा हुआ, मूंदा हुआ, जिसकी गति रोकी गई हो; **रुद्धकण्ठ**–(सं०वि०) जिसका गला भर आया हो, जो बोल न सकता हो।

रुद्र–(सं०पुं०) एक प्रकार के गण देवता जो संख्या में ग्यारह हैं यथा-अज, एकपात, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, अपराजित, त्र्यम्बक, महेश्वर, वृषाकपि, शंभु, हरण और ईश्वर; रौद्ररस, शिव का एक रूप, (वि०) भयंकर, डरावना; **रुद्रक**–(सं०पुं०) बड़ा अगस्त का वृक्ष; **रुद्रकमल**–(सं०पुं०) रुद्राक्ष।

रुद्रकाली–(सं०स्त्री०) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम; **रुद्रकाली**–उमा का नामान्तर,

रुद्रकोटि–(सं०स्त्री०) एक प्राचीन तीर्थ का नाम; **रुद्रगण**–(सं०पुं०) पुराण के अनुसार शिव के परिषद्; **रुद्रगर्भ**–(सं०पुं०) अग्नि।

रुद्रज–(सं०पुं०) पारद, पारा।

रुद्रजटा–(सं०स्त्री०) तीन चार हाथ ऊंचा एक पौधा।

रुद्रट–(सं०पुं०) साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य का नाम।

रुद्रताल–(सं०पुं०) मृदंग का एक ताल।

रुद्रतेज–(सं०पुं०) स्वामि कार्तिकेय।

रुद्रपति–(सं०पुं०) शिव, महादेव;

रुद्रपत्नी–(सं०स्त्री०) दुर्गा; **रुद्रप्रिया**–(सं०स्त्री०) पार्वती।

रुद्रभू–(सं०स्त्री०) श्मशान, मरघट;

रुद्रभूमि–(सं०स्त्री०) मरघट; **रुद्रभैरवी**–(सं०स्त्री०) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम; **रुद्रमाल्य**–(सं०पुं०) बेल का पेड़;

रुद्रयामल–(सं०नपुं०) तान्त्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ; **रुद्ररेता**–(सं०पुं०) पारद, पारा; **रुद्ररोदन**–(सं०नपुं०) सोना; **रुद्ररोमा**–(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; **रुद्रलता**–(सं०स्त्री०) रुद्रजटा; **रुद्रलोक**–(सं०पुं०) शिवलोक; **रुद्रवदन**–(सं०पुं०) महादेव के पाँच मुख, पाँच की संख्या।

रुद्रवन्ती–(सं०स्त्री०)एक प्रसिद्ध बनौषधि

रुद्रविंशति–(सं०स्त्री०) प्रभव आदि साठ संवत्सरों में से अन्तिम बीस वर्षों का समूह; **रुद्रवीणा**–(सं० स्त्री०) प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा; **रुद्रसुन्दरी**–(हिं०स्त्री०) देवी की एक मूर्ति; **रुद्रहृदय**–(सं०पुं०) एक प्रचीन उपनिषद्।

रुद्रा–(सं०स्त्री०) रुद्रजटा नामक पौधा;

रुद्राक्रीड़ा–(सं०पुं०) श्मशान, मरघट;

रुद्राक्ष–(सं०नपुं०) एक बड़ा वृक्ष, इसका गोल फल, जिसकी माला बनाकर शैव लोग पहनते और जप के व्यवहार में लाते हैं।

रुद्राणी–(सं०स्त्री०) रुद्रकी पत्नी, पार्वती, रुद्रजटा नाम की लता।

रुद्रारि–(सं०पुं०) कामदेव।

रुद्रिय–(सं०वि०) आनन्द दायक, बड़ाई करने वाला।

रुद्री–(सं०स्त्री०) वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षण सूक्त की बारह आवृत्तियां

रुधिर–(सं०नपुं०) रक्त, शोणित; **रुधिर पायी**–(हिं०पुं०) लोहू पीने वाला राक्षस; **रुधिर पित्त**–(सं० नपुं०) नकसीर रोग; **रुधिर प्रदिग्ध**–(सं०वि०) रक्त लगा हुआ; **रुधिर प्लावित**–(सं०वि०) रुधिर लगा हुआ; **रुधिर रूषित**–(सं०वि०)रुधिर से भरा हुआ; **रुधिर लेश**–(सं०पुं०) लोहू का चिह्न; **रुधिर विन्दु**–(सं०पुं०) लोहू का बूंद।

रुधिराक्त–(सं०वि०)रुधिर से भीगा हुआ

रुधिरान्ध–(सं०पुं०) एक नरक का नाम
रुधिराशन–(सं०वि०) रक्त पान करके जीने वाला, (पुं०) खर का सेनापति जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा था, राक्षस ; रुधिराशी–(सं०वि०) रक्त पीने वाला ।
रुनझुन–हिं०स्त्री० नूपुर, मंजीर, झनकार
रुनाई–(हिं०स्त्री०) लालिमा ।
रुनित–हिं०वि०) बजता हुआ ।
रुनी–(हिं०पुं०) घोड़े की एक जाति ।
रुनुक झुनुक–(हिं०स्त्री०) नूपुर आदि का शब्द, रुमझुन ।
रुमुल–(हिं०पुं०)एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष
रुपना–(हिं०क्रि०) रोपा जाना, भूमि में गाड़ा जाना, अड़ना ।
रुपया–(हिं०पुं०) चांदी का सबसे बड़ी मुद्रा जो भारतवर्ष में प्रचलित है, यह तौल में दस माशे होता है, धन, सम्पत्ति ।
रुपहला–(हिं०वि०) चांदी के रंग का ।
रुपिका–(सं०स्त्री०) आक, मदार ।
रुमंच–(हिं०पु०) देखो रोमांच ।
रुमन्वत्–(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम ।
रुमावली–(हिं०स्त्री०) देखो रोमावली ।
रुराई–(हिं०स्त्री०) सुन्दरता ।
रुरु–(सं०पुं०) काला मृग, कस्तूरी मृग, एक दैत्य जिसको दुर्गा ने मारा था, एक भैरव का नाम ।
रुरुआ–(हिं०पुं०) एक बड़ी जाति का उल्लू जिसकी बोली बड़ी कर्कश होती है ।
रुरुक्षु–(सं०वि०) रूक्ष, रूखा ।
रुरुत्सु–(सं०वि०) विघ्न करने वाला ।
रुरुभैरव–(सं०पु०) तान्त्रिकों के अनुसार एक भैरव का नाम ।
रुलना–(हिं०क्रि०) व्यर्थ मारे फिरना ।
रुलाई–(हिं० स्त्री०) रोने की क्रिया या भाव । रुलाना–(हिं० क्रि०) रोने में दूसरे को प्रवृत्त कराना, ।
रुल्ला–(हिं०स्त्री०) वह भूमि जिसकी उपजाऊ शक्ति कम हो गई हो ।
रुवा–(हिं०पु०) सेमल के फूल का घूहा
रुवाई–(हिं०स्त्री०) देखो रुलाइ ।
रुबु–(सं०पुं०) लाल रेंडी ।
रुष–(सं०पुं०)क्रोध, रोष, देखो रुख, रुषा–(सं०स्त्री०) कोष, क्रोध ।
रुषित रुष्ट–(सं०वि०) रोषयुक्त, क्रुद्ध । रुष्टता–(सं०स्त्री०) रुष्ट होने का भाव, अप्रसन्नता ।
रुष्टपुष्ट–(हिं० वि०) देखो हृष्ट पुष्ट ।
रुष्टि–(सं०स्त्री०) क्रोध, रोष ।
रूसना–देखो रूठना ।
रुसवाई–(हिं० स्त्री०) अपमान और दुर्गति ।
रुसित–(हिं०वि०) रुष्ट, अप्रसन्न ।
रुसा–(हिं०स्त्री०) देखो अड़ूसा ।
रुसूम–(हिं० पुं०) देखो रसूम ।
रुह–(सं०वि०) आरूढ़, चढा हुआ ।
रुहक–(सं० नपुं०) छिद्र, छेद ।
रुहा–(सं०स्त्री०) दूब, लजालु ।
रुहठि–हिं०स्त्री०) रूठने का भाव ।
रुहिर–(हिं०पुं०) देखो रुधिर
रुहेलखंड–(हिं० पु०) अवध के पश्चिमोत्तर भाग का एक प्रदेश । रुहेला–(हिं०पुं०) रोहिलखण्ड में बसने वाली पठानों की एक जाति ।
रूंख–(हिं०पुं०) देखो रुख ।
रूंखड़–हिं०पुं० एकप्रकार के भिक्षुक।
रूंगटा–(हिं०पु०, देखो रोंदना ।
रूंदना–हिं०क्रि० देखो रौंदना ।
रूंध–हिं० वि०) अवरुद्ध, रुका हुआ ।
रूंधना–(हिं० क्रि०) किसी स्थान या वस्तु को कंटीले झाड़ आदि से घेरना, आने जाने का मार्ग बन्द करना, रोकना, छेंकना ।
रूई–(हिं० स्त्री०) कपास के कोष या डोडे के भीतर का घूआ जिसको कात कर सूत बनता है जिससे कपड़े बुने जाते हैं, किसी बीज के ऊपर का रोवां । रूईदार–(हिं०वि०) वस्त्र जिसके भीतर रूई भरी हो ।
रूक–(हिं०स्त्री०) तलवार,(पुं०) घलुआ ।
रूक्ष–(सं० वि०) जो चिकना और कोमल न हो, रूखा, (पु०) वृक्ष, पेड़, घास । रूक्षगन्धक–(सं० पुं०) गुग्गुल । रूक्षण–(सं०वि०) शुष्क करना सुखाना ।
रूक्षता–(सं०वि०) रूखापन ।
रूख–(हिं०पुं०) वृक्ष, पेड़ वि०) रूखा ।
रूखरा–(हिं०पुं०) देखो रूखड़ा ।
रूखना–हिं० क्रि०) रुठना ।
रूखा–(हिं० वि०) परुष, कठोर, स्नेह रहित, जिसमें प्रेम न हो, विरक्त, उदासीन, खुदबुदा, जो समतल न हो, जो खाने में स्वादिष्ट न हो नीरस, उदासीन, सूखा अस्निग्ध, जो चिकना न हो; रूखा होना– उदासीनता प्रगट करना,क्रुद्ध होना; रूखापन–(हिं०पु०) रूखा होने का भाव रुखाई, कठोरता, उदासीनता, नीरसता ।
रूचना–(हिं० क्रि०) रुचना, अच्छा लगना ।
रूझना–(हिं०क्रि०) देखो उझलना ।
रूठ,रूठन–(हिं०स्त्री०) रूठने की क्रिया या भाव ।
रूठना–(हिं० क्रि०) अप्रसन्न होना ।
रूठनि–(हिं०स्त्री०) देखो रूठन ।
रूड़,रूड़ा–(हिं०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम ।
रूढ–(सं०वि०) जात, उत्पन्न, प्रचलित, प्रसिद्ध, आरूढ, चढा हुआ, जिसका विभाग न किया गया हो, कठोर, कठिन, गँवार, उजड्ड, (पुं०) वह शब्द जो प्रकृति और प्रत्यय की किसी प्रकार की अपेक्षा न करके अर्थ का बोध करता हो । रूढप्रणय–(सं०वि०) अतिशय प्रेम । रूढयौवन–(सं०स्त्री०) देखो आरूढ यौवन ।
रूढवंश–(सं०वि०) प्रसिद्ध वंश ।
रूढा–(सं० स्त्री०) वह लक्षणा जो प्रचलित हो, जिसका व्यवहार किसी भिन्न अभिप्राय को सूचित करता हो ।
रूढि–(सं० स्त्री०) जन्म, उत्पत्ति, वृद्धि, प्रसिद्धि, चढाई, प्रथा, विचार, निश्चय, उभाड़, प्रादुर्भाव, रूढ शब्द की वह शक्ति जो यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ को बतलाती है;
रूप–(सं०नपुं०) स्वभाव, प्रकृति, सुन्दरता, दशा, चांदी, दशा, अवस्था, वेष,भेस, शरीर, देह तुल्य समान भेद चिह्न रूपक, शब्द या वर्ण का वह रूपान्तर जो उसमें विभक्ति प्रत्ययआदि लगानेसे बनता है, रूपरेखा–आकृति, रूप हरना–लजाना; रूप लेना–आकृति धारण करना; रूप भरना–बेष बनाना
रूपक–(सं०पु०) वह काव्य जो पात्रों द्वारा खेला जाता है, मूर्ति, प्रतिकृति, वह अलंकार जिसमें प्रकृत विषयको न छिपाकर उपमेय में उपमान का आरोप होता है, एक परिमाण का नाम, उपमान, चाँदी, रुपया, मुद्रा, संगीत में दोताला ताल । रूपक ताल–(सं०पु०) संगीत में एक तालकानाम।
रूपकरण–(सं० पुं०) एक प्रकार का घोड़ा । रूपकर्ता–(सं०पुं०) विश्वकर्मा।
रूपकातिशयोक्ति–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेयों का अर्थ समझाया जाता है।
रूपकार–(सं०पुं०) मूर्ति बनाने वाला ।
रूपकृत्–(सं०वि०) रूप बनाने वाला, (पुं०)विश्वकर्मा। रूपक्रान्ता–(सं०स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं । रूपगर्विता–(हिं० स्त्री०) वह नायिका जिसको अपनी सुन्दरता का बड़ा अभिमान हो । रूपग्रह–(सं० वि०) जिसका रूप रंग सुन्दर हो । रूप घनाक्षरी–(सं० स्त्री०) दण्डक छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस अक्षर होते हैं । रूपघात–(सं० पुं०) आकृति बिगाड़ने का अपराध । रूप चतुर्दशी–(सं०स्त्री०) कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी । रूपज–(सं०वि०) रूप से उत्पन्न । रूपजीवनी–(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
रूपण–(सं० नपुं०) आरोग्य, परीक्षा, प्रमाण ।
रूपतत्व–(सं०नपुं०) शील, स्वभाव ।
रूपतम–(सं०वि०) बड़ा सुन्दर । रूपता–(सं० स्त्री०) सुन्दरता ।
रूपदर्शक–(सं०वि०) प्राचीन काल का मुद्राओं की परीक्षा करने वाला ।
रूपधर–(सं०वि०) सुन्दर । रूपधारी–(हिं०वि०) बहुरूपिया, रूप धारण करने वाला ।
रूपनाशन–(सं०पुं०) पेचक, उल्लू ।
रूपपति–(सं०वि०) विश्वकर्मा। रूपभेद–(सं०पुं०) भिन्न रूप ।
रूपमञ्जरी–(सं०स्त्री०) राधिका की एक सखी का नाम, एक प्रकार का फूल ।
रूपमनी–(हिं०वि०) रूपवती, सुन्दर ।
रूपमय–(हिं०वि०) बहुत सुन्दर ।
रूपमान्–(हिं०वि०) देखो रूपवान् ।
रूपमाला–(सं०स्त्री०) एक मात्रिक छन्द का नाम, इसका दूसरा नाम मदन है । रूपमाली–(सं०स्त्री०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तीन मगण और नव दीर्घ वर्ण होते हैं ।
रूपया–(हिं०पुं०) देखो रुपया ।
रूपयौवन–(सं०नपुं०) रूप और युवावस्था
रूपरूपक–(सं० पुं०) रूपक अलंकार का एक भेद । रूपवती–(सं०स्त्री०) एक छन्द का नाम जिसको गौरी भी कहते हैं, चम्पकमाला वृत्त का नाम, रुक्मवती (वि०) सुन्दरी स्त्री ।
रूपवन्त–रूपवान्–(सं०वि०) रूपवान्, सुन्दर ।
रूपविपर्यय–(सं०पुं०) रूप के विपरीत ।
रूपश्री–(सं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिणी ।
रूपसंपद–(सं०स्त्री०) उत्तम रूप, सुन्दरता
रूपसमृद्ध–(सं०वि०) रूपशाली, रूपवान्।
रूपसमृद्धि–(सं० स्त्री०) जो देखने में बड़ा सुन्दर हो । रूपसम्पत्ति–(सं०स्त्री०) रूप और सम्पत्ति ।
रूपसी–(सं० वि०) सुन्दर, मनोहर ।
रूपस्य–(सं०वि०) रूपवान्, सुन्दर ।
रूपहानि–(सं०स्त्री०) रूप का नाश ।
रूपा–(हिं०पुं०) चांदी, घटिया चांदी जिसमें कुछ मिलावट हो, सफ़ेद रंग का घोड़ा, सफेद रंग का बैल ।
रूपाजीवा–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
रूपाधिबोध–(सं० पु०) इन्द्रियों द्वारा बाह्य वस्तु का ज्ञान ।
रूपावली–(सं० स्त्री०) शब्द की विभक्तियों का वर्णन ।
रूपाश्रय–(सं०पुं०) सुन्दर मनुष्य ।
रूपास्त्र–(सं० पुं०) कन्दर्प, कामदेव ।
रूपित–(सं० पुं०) एक प्रकार का उपन्यास जिसमें ज्ञान, वैराग्य आदि पात्र बनाये जाते हैं ।
रूपी–(हिं०वि०) रूपयुक्त, रूपवाला, तुल्य सदृश, सुन्दर ।
रूपोपजीवी–(हिं०वि०) बहुरूपिया ।
रूपोपजीविनी–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
रूप्य–(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर ।
रूप्यक–(सं०पुं०) रुपया, रूप्याध्यक्ष. टकसाल का प्रधान अधिकारी ।
रूमना–(हिं०क्रि०) झुलना, झूमना ।
रूमाली–(हिं० स्त्री०) देखो रुमाली ।
रूर–(सं०वि०) उत्तम, जला हुआ ।
रूरना–(हिं० क्रि०) चिल्लाना, कोलाहल करना ।
रूरा–(हिं० वि०) श्रेष्ठ, बड़ा सुन्दर, मनोहर ।
रूलना–(हिं० क्रि०) दबादेना ।
रूष–(हिं० पुं०) देखो रूप ।
रूषित–(सं०वि०) टूटा हुआ ।

रूसना–(हिं०क्रि०) रूठना, क्रुद्ध होना।
रूसा–(हिं० पुं०) अरूसा, अडूसा, (पुं०) एक सुगन्धित घास का नाम।
रूसी–(हिं० वि०) रूस देस का रहने वाला, रूस संबंधी, (स्त्री०) रूस देश की भाषा; सिर पर जमने वाला भूसी के समान छिलका।
रूहड़–(हिं०स्त्री०) पुरानी रूई जो एक बार कपड़े आदि में भरी जा चुकी हो।
रूहना–(हिं०क्रि) आवेष्टित करना, घेरना।
रूही–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का वृक्ष।
रेंकना–(हिं०क्रि०) गदहे का बोलना, बुरी तरह से गाना।
रेंगटा–(हिं०पुं०) गदहे का बच्चा।
रेंगना–(हिं०क्रि०) कीड़े या चींटी का चलना, धीरे धीरे चलना।
रेंगनी–(हिं०स्त्री०) भटकटैया।
रेंट–(हिं०पुं०) नाक का मल, नकटी।
रेंटा–(हिं०पुं०) लिसोड़े का फल।
रेंड़–(हिं०पुं०) एक पौधा जिसके बीज का तेल गाढ़ा और रेचक होता।
रेंड़मेवा–(हिं०पुं०) पपीता।
रेंड़ा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान।
रेंड़ी–(हिं०स्त्री०) अरंडी या रेंड़ के बीज
रेंदी–(हिं०स्त्री०) ककड़ी या खरबूजे का छोटा फल।
रेंरें–(हिं०पुं०) बच्चों के रोने का शब्द।
रे–(सं०अव्य०) एक संबोधन जिससे आदर का अभाव सूचित होता है, तू, (पुं०) संगीत में ऋषभ स्वर।
रेउता–(हिं०पुं०) व्यजन, बेना, पंखा।
रेउती–(हिं०स्त्री०) देखो रेवती।
रेक–(सं०पु०) भेक, मेढ़क।
रेका–(सं०स्त्री०) शंका, सन्देह।
रेकान–(हिं०पुं०) वह भूमि जो नदी के पानी की पहुँच के बराबर हो।
रेख–(हिं०स्त्री०) रेखा लकीर, चिह्न गिनती, हिसाब, नई निकलती हुई मूंछें; **रेख काढना**–लकीर खींचना; रूपरेखा–आकृति; **रेखा भींगना**–मूंछ निकलती हुई देख पड़ना।
रेखना–(हिं०क्रि०) लकीर खींचना, खरोचना, छेदना।
रेखांश–(सं०पुं०) याम्योत्तर वृत्त का एक अंश।
रेखा–(सं०स्त्री०) छद्म, कपट, उल्लेख, लकीर गणना, गिनती, आकृति, आकार; **रेखाकार**–(सं०वि०) डंडी की तरह के आकार वाला।
रेखागणित–(सं०पुं०) गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धान्त निर्धारित किये गये हैं।
रेखाभूमि–(सं०स्त्री०) लंका और सुमेरु के बीच का देश।
रेखित–(सं०वि०) जिस पर रेखा पड़ी हो, लकीर पड़ा हुआ, फटा हुआ।
रेच–(हिं०पुं०) ऐंठन, दोष।
रेचक–(सं०पुं०) प्राणायाम में खींची हुई सांस को पुनः विधि पूर्वक बाहर निकालने का काम, (वि०) कोष्ठ शुद्धि करने वाला, जिसके खाने से शौच आवे।
रेचन–(सं०नपुं०) मलभेदन, कोष्ठ शुद्धि।
रेचना–(हिं०क्रि०) अधोवायु या मल को बाहर निकालना।
रेचनीय–(सं०वि०) शौच लाने वाला।
रेचित–(सं०वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
रेजू–(फा०पु०) एक प्रकार का रेशा जो कूंची बनाने के काम में लाया जाता है।
रेणु–(सं०पुं०) धूल, बालू, कणिका, अत्यन्त लघु परिमाण, (स्त्री०) विश्वामित्र की एक पत्नी का नाम, पृथ्वी, संभालू का बीज।
रेणुका–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, रज, धूल, बालू, परशुराम की माता का नाम जो विदर्भराज की कन्या और जमदग्नि की स्त्री थी। **रेणुकासुत**–(सं०पुं०) परशुराम।
रेणुगर्भ–(सं०पुं०) ज्योतिषोक्त होरा निर्णायक यन्त्र।
रेणुत्व–(सं०नपुं०) रेणु का भाव या धर्म। **रेणुपदवी**–(सं०स्त्री०) धूलि से भरा हुवा मार्ग। **रेणुमत्**–(सं०पुं०) रेणुका के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। **रेणुरूषित**–(सं०पुं०) गर्दभ, गदहा। **रेणुवास**–(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा। **रेणुसार**–(सं०पुं०) कर्पूर, कपूर।
रेत–(हिं०पुं०) शुक्र, वीर्य, जल, पारा, लोहा, रेतने का एक अस्त्र (स्त्री०) बालू, मरुस्थल।
रेतज–(सं०पुं०) पुत्र, लड़का।
रेतन–(सं०नपुं०) शुक्र, वीर्य।
रेतना–(हिं०क्रि०) रेती के द्वारा किसी वस्तु को रगड़ कर उसमें से महीन कण गिराना, किसी अस्त्र की धार रगड़ना।
रेतल–(हिं०पुं०) भूरे रंग का एक पक्षी
रेतला–(हिं०वि०) रेतीला।
रेतस्–(सं०पुं०) शुक्र, वीर्य।
रेतिया–(हिं०पुं०) रेतने वाला।
रेता–(हिं०स्त्री०) बालू।
रेती–(हिं०स्त्री०) लोहा लकड़ी आदि रेतने का लोहे का एक अस्त्र, नदी या समुद्र के किनारे की बलुई भूमि;
रेतीला–(हिं०वि०) वालुकायम, बलुआ
रेतोधा–(सं०वि०) गर्भिणी, गर्भवती।
रेतोमार्ग–(सं०पुं०) शुक्र निकलने का छिद्र।
रेजी–(हिं०स्त्री०) वह वस्तु जिसमें से रंग निकलता हो।
रेनु–(हिं०पुं०) देखो रेणु।
रेप–(सं०वि०) कृपण, क्रूर, निन्दित।
रेफ–(सं०पुं०) रकार, रवर्ग, रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहले आने से उस अक्षर में माथे पर रक्खा जाता है "ˆ", राग, शब्द।
रेफविपुला–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
रेभ–(सं०वि०) कठोर वचन बोलनेवाला
रेभण–(सं०नपुं०) गाय का बोलना।
रेमि–(सं०वि०) रमण करने वाला।
रेरिह–(सं०वि०) जीभ से बारंबार चाटना।
रेरिहाण–(सं०पु०) शिव, महादेव।
रेरुआ–(हिं०पुं०) बड़ा उल्लू पक्षी।
रेल–(हिं०स्त्री०) बहाव, धारा, अधिकता,
रेलहेल रेलमेल–(हिं०स्त्री०) भीड़ भाड़।
रेलना–(हिं०क्रि०) आगे की ओर झोकना या ढकेलना, अधिक भरा होना, ठूंस ठूंसकर भोजन करना।
रेलपेल–(हिं०स्त्री०) वह भीड़ जिसमें लोग एक दूसरे को धक्का देते हैं।
रेला–(हिं०पुं०) तबले पर महीन और सुन्दर बोलों को बजाने की गति, पंक्ति, समूह धक्का मुक्का, अधिकायत, जल का प्रवाह, बहाव, समूह में चढ़ाई, धावा, आक्रमण।
रेवंछा–(हिं०पु०) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल खाई जाती।
रेवड़–(हिं०पुं०) भेड़ बकरी का झुंड।
रेवड़ी–(हिं०स्त्री०) पगी हुई चीनी का टुकड़ा जिसपर सफ़ेद तिल चपकाई होती है।
रेवत–(सं०पुं०) जंभीरी नीबू, बलराम के श्वशुर का नाम।
रेवतक–(सं०नपुं०) कबूतर।
रेवती–(सं०स्त्री०) अश्विनी आदि नक्षत्रों में से सत्ताईसवां नक्षत्र जो बत्तीस तारों का समुदाय है, बलराम की पत्नी का नाम, दुर्गा, गाय।
रेवतीभव–(सं०पुं०) शनि।
रेवतीरमण–(सं०पु०) बलराम, विष्णु।
रेवतीश–(सं०पुं०) बलराम।
रेवन्त–(सं०पुं०) सूर्य के पुत्र।
रेवा–(सं०स्त्री०) नर्मदा नदी, कामदेव की पत्नी, रति, दुर्गा, नील का पौधा, दीपक राग की एक रागिणी।
रेष–(सं०पु०) क्षति, हानि।
रेषण–(सं०नपुं०) घोड़े का हिनहिनाना।
रेषा–(सं०स्त्री०) देखो रेषण।
रेष्मन्–(सं०पु०) प्रलय काल।
रेह–(हिं०स्त्री०) खार मिली हुई मिट्टी जो ऊसर में पाई जाती।
रेहुआ–(हिं०वि०) जिसमें रेह बहुत हो।
रैअति–(हिं०पुं०) प्रजा।
रैतुआ–(हिं०पुं०) देखो रायता।
रैदास–(हिं०पु०) एक प्रसिद्ध भक्त जो जाति का चमार था, यह रामानन्द शिष्य था, चमार।
रैदासी–(हिं०पुं०) रैदास भक्तके सम्प्रदायका, एक प्रकार का मोटा धान।
रैन, रैनि–(हिं० स्त्री०) रात्रि, रात; **रैनिचर**–(हिं०पुं०) राक्षस।
रैनी–(हिं० स्त्री०) चांदी या सोने की वह गुल्ली जो तार खींचने के लिये बनाई जाती है।
रैमुनिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की अरहर।
रैयाराव–(हिं०पुं०) छोटा राजा, सरदार
रैल–(हिं० स्त्री०) समूह।
रैवता–(हिं०पुं०) घोड़ा।
रैवत–(सं०वि०) शंकर, महादेव।
रैवतक–(सं० पु०) गुजरात का एक पर्वत जो जूनागढ़ के पास है, इसको आज कल गिरनार कहते हैं।
रैहर–(हिं०पुं०) झगड़ा, लड़ाई।
रोंग–(हिं०पुं०) लोम, रोवाँ।
रोंगटा–(हिं० पुं०) संपूर्ण शरीर पर के रोवें; **रोंगटे खड़े होना**–रोमांचित होना
रोंगटी–(हिं०स्त्री०) खेलमें छल करना।
रोंठा–(हिं०पुं०) कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।
रोंव–(हिं०पुं०) रोआँ, लोम।
रोंआ–(हिं०पुं०) रोवाँ, लाभ।
रोंआब–(हिं०पु०) प्रभाव।
रोइसा–(हिं०पुं०) रूसा घास।
रोइया–(हिं०पुं०) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिस पर रखकर ऊख के टुकड़े काटे जाते हैं।
रोउं–(हिं०पुं०) देखो रोवाँ।
रोक–(सं०पु०) नकद रुपया, रोकड़, नकद व्यवहारका सौदा, (नपुं०) छेद, नाव (हिं०स्त्री०) किसी काममें बाधा, रोकने वाली वस्तु, बाधा, अटकाव, निषेध, मनाही, रोकझोंक; **रोकटोक**–(हिं० स्त्री०) प्रतिबन्ध, बाधा, निषेध।
रोकड़–(हिं०स्त्री०) नकद रुपया पैसा, मूल धन, पूंजी, जमा; **रोकड़बही**–(हिं० स्त्री०) वह किताब या बही जिसमें नकद रुपये के लेन देन का हिसाब लिखा जाता है; **रोकड़बिक्री**–(हिं०स्त्री०) नकद दाम पर बिक्री।
रोकड़िया–(हिं० पुं०) रोकड़ रखने वाला, कोषाध्यक्ष।
रोकना–(हिं०क्रि०) गति का अवरोध करना, बाधा डालना, मना करना, वशमें लाना, ऊपर लेना, स्थगित करना, अड़चन या बाधा डालना, जाने न देना।
रोख–(हिं०पुं०) देखो रोष।
रोग–(सं०पुं०) व्याधि; **रोगकारक**–(सं० वि०) रोग उत्पन्न करनेवाला; **रोगग्रस्त**–(सं०वि०) रोग से पीड़ित;
रोगघ्न–(सं०नपुं०) औषधि, (वि०) रोग को हटाने वाला; **रोगज्ञ**–(सं०पु०) वैद्य; **रोगद**–दुःख देनेवाला; **रोगद**–(सं०वि०) दुःख देने वाला।
रोगदई, रोगदैया–(हिं०स्त्री०) खेल में कपट व्यवहार।
रोगनाशक–(हिं०वि०) रोग दूर करने वाला; **रोगनिदान**–(सं० नपुं०) रोग के लक्षण और उत्पत्ति के कारण आदि की पहचान।
रोगपति–(सं० पुं०) ज्वर; **रोगप्रद**–(सं०वि०) रोग उत्पन्न करने वाला।
रोगभाज–(सं० वि०) रोगयुक्त, रोगी; **रोगभू**–(सं०स्त्री०) शरीर, देह; **रोग-**

मुक्त–(सं० वि०) रोग से छुटकारा पाया हुआ; **रोगराज**–(सं०पुं०, राजयक्ष्मा रोग; **रोगलक्ष्मण**–सं०नपुं०, रोग का निदान ; **रोगविज्ञान**–सं० नपुं० रोग पहचानने के नियम आदि; **रोगविनिश्चय**–(सं० पुं०) रोग का निर्णय करना ; **रोगशान्ति**–(सं० स्त्री०) रोग मुक्ति ; **रोगशिला**–(सं० स्त्री०) मनः शिला, मैनसिल; **रोगह**–सं०नपुं०) औषधि, दवा ; **रोगहारी**–(सं०पुं०) चिकित्सक, वैद्य; **रोगहृत्**–(सं०वि०) रोग नाशक; **रोगहेतु**–(सं० पुं०) रोगका कारण ; **रोगाक्रान्त**–(सं०वि०) व्याधि ग्रस्त ; **रोगातुर**–(सं०वि०) व्याधित, पीड़ित; **रोगिणी**–(सं०वि०स्त्री०) रोगी स्त्री; **रोगित**–(सं०वि०) रोग से पीड़ित **रोगिया**–(हिं० पुं०) रोगी; **रोगी**–(हिं० वि०) व्याधि ग्रस्त, रुग्ण ।

रोचक–(सं०पुं०) कदली, केला (वि०) रुचि कारक, मनोरंजक; **रोचकता**–(सं०स्त्री०) मनोहरता ।

रोचकी–(सं०वि०) इच्छा करने वाला ।

रोचन–(सं० पुं०) अमलतास, सफ़ेद सहजन, प्याज़, अनार, काला सेंम्हर, कामदेव के पांच बाणों मे से एक, रोली, गोरोचन; (वि०) रुचने वाला, शोभा देनेवाला, प्रिय लगने वाला ।

रोचनक–(सं० पुं०) बंशलोचन; **रोचनफला**–(सं० स्त्री०) ककड़ी ।

रोचना–(सं०स्त्री०) लाल कमल,आकाश, स्वर्ग, बंशलोचन, वासुदेव की स्त्री का नाम ।

रोचनी–(सं०स्त्री०) गोरोचन,मैनसिल ।

रोचि–(सं०स्त्री०) प्रभा, दीप्ति,किरण ।

रोचित–(सं०वि०) सुशोभित ।

रोचिष्णु–(सं०वि०) रोचक, चमकदार ।

रोचिस्–(सं०नपुं०) प्रभा, कान्ति ।

रोझ–(हिं०स्त्री०) नीलगाय ।

रोट–(हिं० पुं०) गेंहू के आटे की बहुत मोटी रोटी, लिट्टी ।

रोटका–(हिं०पुं०) बाजरा ।

रोटा–(हिं०वि०) पिसा हुआ ।

रोटिहा–(हिं०पुं०) वह सेवक जो केवल भोजन पर काम करता है ।

रोटी–(हिं० स्त्री०) गुंधे हुए आंटे की टिकिया जो आँच पर सेकी गई हो, फुलका, रसोई; **रोटी कपड़ा**–भोजन और वस्त्र;**किसी बातकी रोटी खाना**–जीविका निर्वाह करना ; **किसी की रोटी तोड़ना**–किसी के अश्रित रहना; **रोटी दाल**–जीविका निर्बाह करना ।

रोटीफल–(हिं० पुं०) एक प्रकार का फल जो खाने में स्वादिष्ट होता ।

रोठा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाजरा ।

रोड़ा–(हिं० पुं०) बड़ा कंकड़, ईंट या पत्थर का ढेला, एक प्रकार का मोटा धान ।

रोद–(सं० पुं०) क्रन्दन, रोना, दुःख प्रकट करना ; **रोदन**–(सं० नपुं०) क्रन्दन, रोना ; **रोदस**–(सं० नपुं० स्वर्ग, भूमि ।

रोदसी–(हिं०स्त्री०) पृथ्वी ।

रोदा–(हिं०पुं०) कमानकी डोरी, पतली तांत जिससे सितार के परदे बांधे जाते हैं ।

रोध–(सं०पुं०) किनारा, तट, रुकावट ।

रोधक–(सं०वि०) रोकने वाला ; **रोधन**–(सं० वि०) रोकने वाला, (नपुं०) अवरोध, रुकावट; **रोधना**–(हिं०क्रि०) रुकावट करना, रोकना ।

रोधस्वती–(सं० स्त्री०) नदी ।

रोधित–(हिं०वि०) रोका हुआ ।

रोधी–(सं०वि०) रोकने वाला ।

रोध्य–(सं०वि०) रोकने योग्य ।

रोध्र–(सं०नपुं०) लोध्र, लोध ।

रोना–(हिं०क्रि०) पीड़ा, दुःख आदि से व्याकुल होकर मुँह से विशेष प्रकार का स्वर निकलना तथा नेत्रों से जल छोड़ना; दुःख करना, पछताना, बुरा मानना, चिढना, (पुं०) दुःख, (वि०) रोने वाला, थोड़ी सी बात पर दुःख मानने वाला, बात बात पर बुरा मानने वाला, चिड़चिड़ा; **रोना पीटना**–अति विलाप करना; **रोकर**–बड़ी कठिनाई और परिश्रम से; **रोना गाना**–विनती करना; **रोनी-धोनी** शोक वृत्ति ।

रोप–(हिं०पुं०) हल में की वह लकड़ी जो हरिस के छोर पर जड़ी रहती है ।

रोपक–(सं०वि०) वृक्ष लगाने वाला, स्थापित करने वाला, उठाने वाला ।

रोपण–(सं० नपुं०) प्रादुर्भाव, मोहित करना,स्थापित करना,ऊपर रखना, खड़ा करना, (पुं०) पारद, पारा, घाव पर लेप लगाना; **रोपणीय**–(सं०वि०) रोपने योग्य ।

रोपना–(हिं० क्रि०) जमाना, लगाना, ठहराना, अड़ाना, किसी वस्तु को लेने के लिये हथेली या कोई पात्र आगे करना, पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में लगाना, बीज बोना, रोकना ।

रोपनी–(हिं०स्त्री०) धान आदि के पौधों को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में लगाना, रोपाई का काम ।

रोपित–(सं०वि०) जमाया हुआ, लगाया हुआ, स्थापित, रक्खा हुआ, मोहित किया हुआ ।

रोप्य–(सं० वि०) रोपने योग्य ।

रोम–(सं०नपुं०) लोम, शरीर के बाल, रोवाँ, छिद्र, जल, पानी, भेड़ आदि का ऊन; **रोम रोम में**–सम्पूर्ण शरीर में; **रोमरोमसे**–सहृदय ।

रोमक–(सं०नपुं०) चुम्बक ।

रोमकूप–(सं०पुं०) शरीर के वे महीन छिद्र जिनमें रोवें निकले होते हैं ।

रोमकेशर–(सं०पुं०) चामर, चँवर ।

रोमगर्त–(सं० पुं०) देखो रोमकूप ।

रोमगुच्छ–(सं०पुं०) चामर, चंवर ।

रोमतक्षरी–सं०स्त्री०) बिना रोवें की स्त्री

रोमद्वार–सं०पुं०) देखो रोमकूप ।

रोमन्थ–सं०पुं०) पागुर करना ।

रोमपट–सं०पुं० ऊनी वस्त्र, दुशाला ।

रोमपाद–सं० पुं० अंग देश के एक प्राचीन राजा का नाम ।

रोम पुलक–सं०पुं०, रोमाञ्च । **रोमफला**–सं० स्त्री०) तिंतिंग, डेंड्सी ।

रोमबद्ध–सं०वि० रोवें से बँधा हुआ ।

रोमभूमि–सं० स्त्री०, चर्म, चमड़ा ।

रोमरन्ध्र–(सं० पुं० , देखो रोमकूप ।

रोमराजि–(सं० स्त्री०) रोमावलि, रोमों की पंक्ति ।

रोमलता–(सं०स्त्री०) देखो रोमराजि ।

रोमवल्ली–(सं० स्त्री०) कपिकच्छु, केवांच;**रोमविकार**–(सं०पुं०)रोमाञ्च;

रोमश–(सं० पुं०) मेष, भेड़ा, सुअर, एक ऋषि का नाम ।

रोमशमूलिका–(सं०स्त्री०) हरिद्रा,हल्दी ।

रोमला–(सं०स्त्री०) वृहस्पति की कन्या का नाम ।

रोमशातन–(सं०नपुं०)बालों को काटना;

रोमहरण–(सं०नपुं०) हरताल ।

रोमहर्ष,रोमहर्षण–(सं०पुं०,नपुं०)रोमांच; रोवाँ खड़ा होना, (वि०) भयंकर ।

रोमहर्षित–(सं०वि०) पुलकित ।

रोमाञ्च–(सं०पुं०) रोमहर्षण, आनन्द या भय से रोंगटे खड़े होना, पुलक ।

रोमाञ्चित–(सं०वि०) जिसके रोंगटे खड़े हों ।

रोमाग्र–(सं०पुं०) रोवें की नोक ।

रोमाली–(सं०स्त्री०) देखो रोमावली ।

रोमावलि,रोमावली–(सं० स्त्री०) रोमों की पंक्ति जो पेट के बीच में नाभि के ऊपर होती है । **रोमिल**–(वि०) रोमयुक्त; **रोमोद्गति**–(सं० स्त्री०) रोमाञ्च, पुलक ।

रोमोद्गम–(सं० पुं०) रोवें का खड़ा होना ।

रोयां–(हिं०पुं०) शरीर पर के लोम, शरीर पर के बाल; **रोयां खड़ा होना**–रोमाञ्चित होना; **रोयां पसीजना**–दया उत्पन्न होना ।

रोर–(सं० स्त्री०) कलकल, कोलाहल, घमासान; चिल्लाहट का शब्द,(वि०) प्रचण्ड, उपद्रवी, अत्याचारी ।

रोरा–(हिं०पुं०) चूर गांजा ।

रोरी–(हिं०स्त्री०) हलदी चूने से बनी हुई लाल रंग की बुकनी जिसका तिलक लगाया जाता है, धूमधाम, (वि०) सुन्दर, (पुं०) लहसुनिया नामक रत्न ।

रोल–(हिं०पुं०) पानी का तोड़, बहाव, नक्काशी करने का एक अस्त्र, (स्त्री०) कोलाहल, शब्द, ध्वनि ।

रोलम्ब–(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा ।

रोला–(सं० पुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस मात्रायें होती हैं, (हिं०पुं०)कोलाहल,घमासान युद्ध, चौका बरतन करने का काम ।

रोली–(हिं०स्त्री०) देखो रोरी ।

रोवनहार–(हिं०पुं०) रोने वाला, वह कुटुंबी जो किसी के मर जाने पर विलाप करता है ।

रोवना–(हिं०वि०) देखो रोना, (वि०) बहुत जल्दी बुरा मानने वाला, हँसी या खेल में बुरा मानने वाला, चिढ़ने वाला ।

रोवनिहारा–(हिं०वि०)देखो रोवनहारा;

रोवनी धोवनी–(हिं०स्त्री०) रोने धोने का काम ।

रोवासा–(हिं०वि०) जो रोने पर तैयार हो, जो रो देना चाहता हो ।

रोष–(सं० पुं०) क्रोध, उमंग, कुढ़न, विरोध, बैर ।

रोषण–(सं०वि०) क्रोध करने वाला

रोषणता–(सं० स्त्री०) क्रोध, रोष ।

रोषित,रोषी–(सं०वि०) क्रोधी ।

रोस–(हिं०पुं०) देखो रोष, क्रोध ।

रोसनाई–(हिं०स्त्री०) देखो रोशनाई ।

रोसनी–(हिं०स्त्री०) प्रकाश ।

रोह–(सं०वि०) चढ़ने योग्य, (हिं०पुं०) नील गाय ।

रोहण–(सं०नपुं०) चढ़ना, चढ़ाई, अंकुरित होना, ऊपर को बढ़ना ।

रोहज–(हिं०पुं०) नेत्र, आंख ।

रोहना–(हिं०क्रि०) चढ़ना, ऊपर करना या जाना, अपने ऊपर रखना, धारण करना, चढ़ाना, सवार कराना ।

रोहा–(हिं० पुं०) आँख के पलक की भीतर के दाने पड़ जाने का रोग ।

रोहिणिका–(सं०स्त्री०)क्रोध से लाल स्त्री

रोहिणी–(सं०स्त्री०)स्त्री, गाय, बिजली, सफेद कौवाठोंठी, मजीठ, वासुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थीं, पांच वर्ष की कुमारी, अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र ।

रोहिणीकान्त–(सं० पुं०) चन्द्रमा ।

रोहिणीपति–(सं० पुं०) वासुदेव ।

रोहित–(सं०पुं०) सूर्य, रोहू मछली, (स्त्री०) लाल रंग की घोड़ी, (वि०) लाल रंग, (सं०नपुं०) कुंकुम, केसर, रुधिर, इन्द्र धनुष; (पुं०) राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम, एक प्रकार का मृग । **रोहितवाह**–(सं०पुं०)अग्नि;

रोहिताक्ष–(सं० पुं०) लाल आँख ।

रोहिताश्व–(सं०पुं०)अग्नि, राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम ।

रोही–(हिं० वि०) चढ़ने वाला, (पुं०) पीपल का पेड़, एक प्रकार का मृग, रोहिष घास,एक प्रकार का अस्त्र ।

रोहन–(हिं०पुं०) रोहन नाम का वृक्ष ।

रोहू–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी मछली ।

रौंद–(हिं०स्त्री०) रौंदने की क्रिया या भाव, चक्कर । **रौंदन**–(हिं० पुं०) रौंदने की क्रिया, मर्दन । **रौंदना**–(हिं०क्रि०) पैरों से कुचलना, लातों से मारना, खूब पीटना ।

रौंसा–(हिं०पुं०)केंवाच का बीज ।

रौ-(हिं० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष ।
रौक्ष्य-(सं०नपुं०) रूक्षता, रुखापन ।
रौताइन-(हिं०स्त्री०) राव या रावत की स्त्री, ठकुराइन, स्त्रियों के लिये आदर सूचक शब्द ।
रौताई-(हिं०स्त्री०) राव या रावत होने का भाव, ठकुराई, सरदारी ।
रौद्र-(सं०नपुं०) शृङ्गारादि रस के अन्तर्गत एक रस, जिसको उग्र भी कहते हैं, इसमें क्रोध सूचक शब्दों और चेष्टाओं का वर्णन रहता है, आर्द्रा नक्षत्र, यम, कार्तिकेय, हेमन्त ऋतु, एक प्रकार का अस्त्र, ग्यारह मात्राओं का एक छन्द, (वि०) रुद्र सम्बन्धी, तीव्र, भयानक, भयंकर ।
रौद्रकर्म-(सं०पुं०) भयंकर काम ।
रौद्रता-(सं०स्त्री०) प्रचण्डता, डरावनापन
रौद्रार्क-(सं०पुं०) तेईस मात्राओं का एक छन्द ।
रौद्री-(सं०स्त्री०) रुद्र की पत्नी, चण्डी ।
रौन-(हिं०पुं०) देखो रमण ।
रौना-(हिं०) देखो रोना । रौनी-(हिं०स्त्री०) देखो रमणी ।
रौप्य-(सं०नपुं०) चांदी, रूपा । रौप्यमुद्रा (सं०स्त्री०) चांदी की मुद्रा ।
रौरव-(सं०पुं०) एक नरक का नाम; (वि०) चंचल, धूर्त, घोर, भयंकर ।
रौरा-(हिं०पुं०) हल्ला कोलाहल, उधम, (सर्व०) आपका ।
रौराना-(हिं०क्रि०) बकबक करना ।
रोरी-(हिं०स्त्री०) कोलाहल ।
रौरे-(हिं०सर्व०) आप, संबोधन का शब्द
रौला-(हिं०पुं०) हल्ला, उधम ।
रौलि-(हिं०स्त्री०) चपत, धौल ।
रौहल-(हिं०स्त्री०) घोड़े की एक जाति, घोड़े की एक चाल ।
रौहित-(सं०पुं०) रोहित मनु के पुत्र का नाम, कृष्ण के एक पुत्र का नाम ।
रौहिष-(सं०नपुं०) रोहिष नामक घास;
रौही-(सं०स्त्री०) मृगी, हरनी ।

ल

ल-व्यंजन वर्ण का अट्ठाईसवां अक्षर, इसका उच्चारण स्थान-दन्त है ।
ल-(सं० नपुं०) पृथ्वी का बीज, पृथ्वी, इन्द्र, छन्द शास्त्र में लघु नामक गण या वर्ण । लंक, लङ्का-देखो, लङ्का, लंकेश-देखो लङ्केश ।
लंकाल-(हिं० पुं०) सिंह, शेर ।
लंगड़-(हिं०वि०) देखो लंगर, लगड़ा ।
लंगड़ा-(हिं० वि) जिसका पैर टूटा या बेकाम हो, जिसका एक पाया टूट गया हो, (पुं०) एक प्रकार का बहुत बढ़िया कलमी आम, लंगड़ाना-(हिं० क्रि०) लंगड़ाते हुए या भचक कर चलना ।
लंगड़ी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द, (वि०) वह स्त्री जिसके पैर टूट गये हों ।
लँगरई, लँगराई-(हिं०स्त्री०) उपद्रव, ढिठाई
लँगूर-(हिं० पुं०) बन्दर, एक विशेष प्रकार का बन्दर जिसका मुँह काला तथा पूंछ लंबी होती । लंगूरफल-(हिं० पुं०) नारियल ।
लंगूरी-(हिं०स्त्री०) घोड़ों की एक चाल ।
लंगूल-(हिं०पुं०) देखो लङ्गूल, पूंछ, दुम ।
लंगोट-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जो कमर में लपेटा जाता है जिससे केवल उपस्थ ढप जाता है, रुमाली; लंगोटबन्द-वह जो ब्रह्मचर्य से रहता हो । लंगोटी-(हिं०पुं०) देखो लंगोट । लंगोटी-(हिं० स्त्री०) कौपीन, कछनी; लंगोटिया यार-बाल्यावस्था का मित्र; लंगोटी पर फाग खेलना-धनकी कमी रहते हुए अधिक व्यय करना ।
लंघन, लंघनीय-देखो लङ्घन, लङ्घनीय।
लंघना-(हिं०क्रि०) देखो लांघना ।
लंज-(हिं०पुं०) दुम, लंजिका-(हिं०स्त्री०) वेश्या ।
लंठ-(हिं० वि०) मूर्ख, उद्दण्ड ।
लंड-(हिं०पुं०) पुरुषकी मूत्रेन्द्रिय, शिश्न।
लंडूरा-(हिं० वि०) बिना पूंछ का, वह पक्षी जिसकी सारी पूँछ कट गई हो ।
लंब-देखो लम्ब ।
लंबतड़ंग-(हिं०वि०) लंबे आकार का, बहुत लंबा ।
लंबर-(हिं०पुं०) देखो नंबर । लंबरदार-(हिं०पुं०) देखो नंबरदार ।
लंबा-(हिं० वि०) जिसके दोनो छोर एक दूसरे से बहुत दूरी पर हों, जिसकी ऊंचाई अधिक हो, ऊपर की ओर दूर तक उठा हुआ, विशाल, बड़ा दीर्घ; लंबा करना-प्रस्थान कराना, चलता करना, पटककर भूमि पर लेटादेना।
लंबाई-(हिं०स्त्री०) लंबापन, लंबा होने का भाव । लंबान-(हिं०स्त्री०) लंबाई ।
लंबित-(हिं० वि०) देखो लम्बित ।
लंबी-(हिं० वि०स्त्री०) 'लंबा' शब्द का स्त्रीलिंग का रूप; लंबी तानना-लेट कर सो जाना ।
लंबोतरा-(हिं०वि०) लंबे आकार का, जो थोड़ा लंबा हो । लंपट-देखो लम्पट
लंबोदर - देखो लम्बोदर- लउ-(हिं० स्त्री०) लगन ।
लउटी-(हिं० स्त्री०) देखो लकुटी ।
लकच-(सं० पुं०) बड़हर का पेड़ ।
लकड़बग्घा-(हिं०पुं०) एक जंगली मांसाहारी पशु जो भेड़िये से कुछ बड़ा होता है, लग्घड़ ।
लकड़हारा-(हिं० पुं०) वह जो जंगल से लकड़ी लाकर नगर में बेचता हो ।
लकड़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी का मोटा कुन्दा, जुआर बाजरे आदि का सूखा डंठल।
लकड़ी-(हिं० स्त्री०) वृक्ष का कोई मोटा भाग जो काट कर उससे अलग किया गया हो, काठ, इन्धन, छड़ी, लाठी; लकड़ी होना-सूख कर कड़ाहो जाना, अति दुर्बल होना ।
लकसी-(हिं०स्त्री०) फल आदि तोड़ने की लग्गी जिसके सिरे पर लोहे का चन्द्राकार फल लगा होता है ।
लकार-(सं०पुं०) 'ल' स्वरुप वर्ण ।
लकीर-(हिं० स्त्री०) एक सीध में गई हुई आकृति, रेखा, धारी, पंक्ति, रेखा के समान दूर तक का चिह्न; लकीर का फकीर-पुराने ढग पर चलने वाला; लकीर पीटना-पुरानी प्रथा पर चलना ।
लकुच-(सं०पुं०) बड़हर का वृक्ष ।
लकुट-(हिं० पु०) लगुड़, लाठी, (हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसका जामुन के आकार का फल वर्षा ऋतु में पकता है ।
लकुटी-(हिं०स्त्री०) छोटी लाठी, छड़ी ।
लकोड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकारका पहाड़ी बकरा जिसके रोवे के दुशाले बनते हैं।
लक्कड़-(हिं०पुं०) काठ का बड़ा कुन्दा।
लक्का-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कबूतर जो छाती उभाड़कर चलता है, इसकी पूछ फैली हुई रहती है । लक्का कबूतर-(हिं०पुं०) नाच की एक गत।
लक्खी-(हिं० वि०) लाख के रंग का, (पु०) घोड़े की एक जाति; लखपति, बड़ा धनी ।
लक्त-(सं०त्रि०) लाल रंग ।
लक्तक-(सं०पुं०) अलक्तक, अलता, फटा पुराना कपडा चिथड़ा ।
लक्ष-(सं०नपुं०) व्याज, बहाना, चिह्न पैर, (वि०) एक लाख, सौ हजार, (नपुं० अस्त्र का एक प्रकार का प्रहार ।
लक्षण-(सं० वि०) वह जो लक्ष करता हो, जता देने वाला ।
लक्षक-(सं०नपुं०) चिह्न, नाम, जिससे जाना या पहचाना जाय, शरीर में देख पड़ने वाले रोगके चिह्न, बच्चों के शरीर में होने वाला एक प्रकार का विशेष चिह्न सारस पक्षी, दर्शन, शरीर के कुछ चिह्न जो सामुद्रिक के अनुसार अशुभ माने जाते हैं, तरीका, चालढाल; लक्षणज्ञ- वह जो लक्षण को जाता हो । लक्षणत्व - (सं०नपुं०) लक्षण का भाव या धर्म ।
लक्षणलक्षणा-(सं० स्त्री०)लक्षणा का एक भेद । लक्षणवत्-(सं० त्रि०) लक्षणयुक्त ।
लक्षणा-(सं० स्त्री०) हंसी, सारसी, एक अप्सरा का नाम, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसके अभिप्राय का बोध होता है ।
लक्षणी-(सं० वि०) जिसमें कोई लक्षण या चिह्न हो, लक्षण जानने वाला ।
लक्षणीय-(सं० वि०) लक्षण द्वारा जाना हुआ ।
लक्षणना-(हिं० क्रि०) देखो लखना ।
लक्षा-(सं०स्त्री०) एक लाख की संख्या
लक्षि-(सं०स्त्री०) देखो लक्ष्मी ।
लक्षित-(सं०वि०) आलोचित, विचारा हुआ; देखा हुआ, बतलाया हुआ, जिस पर कोई चिह्न बना हो, अनुमान से जाना हुआ, (पुं०) शब्द का वह अर्थ जो लक्षणा शक्ति द्वारा जाना जाता है । लक्षितव्य-(सं०वि०) बतलायाहुआ । लक्षित लक्षणा-(सं०स्त्री०) वह अलंकार जहाँ लक्षित अर्थ में लक्षण देख पड़ता हो ।
लक्षिता-(सं०स्त्री०) वह परकीया नायिका जिसका गुप्त प्रेम उसकी सखियों को मालूम हो जाय ।
लक्षी-(सं० स्त्री०)एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौबिस अक्षर होते हैं, इस वृत्त को गंगोदक, गंगाधर या खंजन भी कहते हैं ।
लक्ष्म-(सं०नपुं०) चिह्न ।
लक्ष्मण-(सं०नपुं०) चिह्न, लक्षण, सारस (पुं०) दुर्योधन के एक पुत्र का नाम, दशरथ के द्वितीय पुत्र जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, (वि०) शोभा और कान्ति युक्त ।
लक्ष्मणा-(सं० स्त्री०) सफेद कण्टकारी का पौधा, दुर्योधन की बेटी का नाम, मुचुकुन्द का पेड़ ।
लक्ष्मी-(सं०स्त्री०) विष्णु की पत्नी, पद्मा, कमला, धन की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा शोभा, सौन्दर्य, सम्पत्ति सीता जी का एक नाम, स्थल कमल, हल्दी, मोती, पद्म, कमल सफेद तुलसी, आर्या छन्द का एक भेद एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते है ।
लक्ष्मीक-(सं०पुं०) भाग्यवान । लक्ष्मीकान्त-(सं०पुं०) नारायण । लक्ष्मीगृह-(सं०नपुं०) लक्ष्मी का घर, लाल कमल।
लक्ष्मीरोड-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की संकर रागिणी । लक्ष्मी-ताल-(सं०पुं०) संगीत में आठ मात्राओं का एक ताल
लक्ष्मीत्व-(सं०नपुं०) लक्ष्मी का भाव या धर्म, ऐश्वर्य । लक्ष्मीधर-(सं०पुं०) विष्णु स्रग्विणी छन्द का दूसरा नाम।
लक्ष्मीनाथ-(सं०पु०) विष्णु । लक्ष्मीनारायण-(सं० पुं०) लक्ष्मी और नारायण, वह शालग्राम शिला जिस पर चक्र बना रहता है । लक्ष्मीनिधि-(सं०पुं०) राजा जनक के पुत्र का नाम।
लक्ष्मी निवास-(सं०पु०) लक्ष्मी का निवास स्थान । लक्ष्मीपति-(सं०पुं०) विष्णु, वासुदेव, राजा, सुपारी ।
लक्ष्मीपुत्र-(सं०पु०) कामदेव, धनवान् पुरुष । लक्ष्मीपुष्प-(सं०पुं०) पद्मराग मणि । लक्ष्मीफल-(सं०पु०) बेल ।
लक्ष्मीरमण-(सं० पुं०) नारायण, विष्णु । लक्ष्मीवत्-(सं०पुं०) कटहल का पेड़, (वि०) धनवान्, धनी ।
लक्ष्मीवसति-(सं०स्त्री०) कमल का फूल ।
लक्ष्मीबहिष्कृत-(सं० वि०) धनहीन, दरिद्र; लक्ष्मीश-(सं० पुं०) विष्णु आम का वृक्ष । लक्ष्मीश्रेष्ठा-(सं० स्त्री०) स्थल पद्मिनी ।

लक्ष्मीसख–(सं० पु०) राजा या धनवान् मनुष्य। लक्ष्मीसनाथ–(सं०त्री०) रूप और ऐश्वर्य युक्त; लक्ष्मीसहज–(सं०पुं०) चन्द्रमा; लक्ष्मी-वल्लभ–(सं०पुं०) विष्णु।

लक्ष्य–(सं०नपुं०) निशाना लगाने का स्थान, जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय, अस्त्रों का एक प्रकार का संहार, उद्देश्य, वह अर्थ जो वाच्य, लक्ष्य और व्यंग इन तीनों शब्दों की लक्षण शक्ति से निकलता है। लक्ष्यक्रम–(सं० वि०) जिस अज्ञात विधि से उद्दिष्ट वस्तु का आकार और चेष्टा जानी जाय।

लक्ष्यज्ञत्व–(सं० नपुं०) वह ज्ञान जो चिह्न अथवा दृष्टान्त द्वारा उत्पन्न हो।

लक्ष्यता–(सं० स्त्री०) लक्ष्य का भाव या धर्म।

लक्ष्यभेद–(सं०पुं०) वह निशाना जिससे चलते या उड़ते हुए लक्ष्य को भेदा जाता है।

लक्ष्यवीथी–(सं० स्त्री०) ब्रह्मलोक का मार्ग, वह विधि जिससे जीवन का उद्देश्य सिद्ध हो; लक्ष्यवेधी–(सं०वि०) लक्ष्य वेध करने वाला; लक्ष्यसुप्त–(सं०वि०) नींद तोड़ने वाला; लक्ष्यहन्–(सं०वि०) लक्ष्य वेध करने वाला, ठीक निशाना लगाने वाला; लक्ष्यार्थ–(सं०पुं०) लक्षणासे निकलने वाला अर्थ।

लखघर–(हिं०पुं०) देखो लाक्षागृह।

लखन–(हिं० पुं०) लक्ष्मण, (हिं० स्त्री०) लखने या देखने की क्रिया या भाव।

लखना–(हिं० क्रि०) लक्षण देखकर अनुमान कर लेना देखना।

लखपती–(हिं०पुं०) जिसके पास लाखों रुपये की सम्पत्ति हो।

लखमीतात–(हिं०पुं०) समुद्र। लखमीवर–(हिं०पुं०) विष्णु।

लखर–(हिं०पुं०) काकड़सिंघी का पेड़ जिसको सुंघा कर मूर्छित आदमी सचेत हो जाते हैं।

लखरावँड–(हिं०पुं०) आमकी वाटिका।

लखलुट–(हिं०वि०) धन लुटाने वाला, अपव्ययी।

ललखाउ–(हिं० पुं०) चिह्न, लक्षण, स्मारक रूप में दिया हुआ कोई पदार्थ।

लखाना–(हिं०क्रि०) दिखलाना, समझा देना, अनुमान करा देना।

लखाव–(हिं०पुं०) देखो लखाउ।

लखिमी–(हिं०स्त्री०) देखो लक्ष्मी।

लखिया–(हिं०वि०) लखने वाला, अनुमान करने वाला।

लखी–(हिं०पुं०) लाख के रङ्ग का घोड़ा।

लखेदना–(हिं० क्रि०) भगाना।

लखेरा–(हिं० पुं०) लाख की चूड़ी खिलौने आदि बनाने वाली एक जाति।

लखोट–(हिं०पुं०) देखो लकुट।

लखौटा–(हिं० पुं०) स्त्रियों के हाथ में पहरने की लाख की चौड़ी चूड़ी।

लखौरी–(हिं०स्त्री०) भारतवर्ष की पुराने ढङ्ग की छोटी पतली ईंट, भौंरी का घर जो वे मिट्टी का बनाते हैं, किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल चढ़ाना।

लगंत–(हिं०स्त्री०) लगने या स्त्री प्रसंग करने की क्रिया या भाव, लगन होने की क्रिया।

लग–हिं०क्रि०वि०) पास, पर्यन्त, तक, (स्त्री०) लगन, प्रेम (अव्य०) लिये साथ, संग।

लगढग–हिं०क्रि०वि०, देखो लगभग।

लगदी–(हिं० स्त्री०) बच्चों के नीचे बिछाने का पोतरा।

लगन–(हिं०स्त्री०) लगने की क्रिया या भाव, लगाव, प्रवृत्ति का किसी ओर लगना, प्रेम, लौ, संबंध,(पु०) विवाह आदि के लिये स्थिर किया हुआ शुभ मूहूर्त, देखो लग्न।

लगनपत्री–(हिं० स्त्री०) विवाह के मूहूर्त का पत्र जो कन्या का पिता वर के पिता के पास भेजता है।

लगनवट–लगन, प्रेम।

लगना–(हिं०क्रि०) दो पदार्थों के तल का परस्पर मिलना, सटना, सिल जाना, जड़ा या चिपकाया जाना; जमना, उगना, स्थापित होना, चोट पहुंचना, सबंध मे कोई होना, किनारे पर ठहरना, व्यय होना, क्रम या में, रक्खा जाना, जान पड़ना, आरंभ होना, गड़ना चुभना, पास पहुँचना, किसी कार्य में तत्पर होना, निश्चय होना, साथ होना, चिह्नित होना, गाय भैंस आदिका दुहा जाना, ठीक बैठना, छेड़छाड़ करना, आरोप होना, जलना, हिसाब होना, जहाज़ या नाव का छिछले पानी में धँस जाना, इकट्ठा होना, मल्य निर्धारित होना, पाल को खींचकर चढ़ाना, बिछाना, फैलाना, किसी शस्त्र की धार को पैनी करना, परचना, सधना, ताक या घात में रहना, संभोग करना, निश्चित स्थान पर पहुंचना, जान पड़ना, आरंभ होना, आवश्यक होना, प्रभाव पड़ना, सड़ना, गलना, टकराना, किसी वस्तु का शरीर पर जलन उत्पन्न करना, किसी पदार्थ का तल में बैठना, मला जाना, रगड़ खाना दाँव पर रक्खा जाना, समीप पहुंचना; लगती बात–मर्मवेधी वार्ता (पुं०) एक प्रकार का जंगली हरना।

लगनि–(हिं०स्त्री०) देखो लगन।

लगनी–(हिं०स्त्री०) छोटी थाली।

लगभग–(हिं०क्रि०वि०) प्रायः।

लगमात–(हिं० स्त्री०) स्वरों के चिह्न जो उच्चारण के लिये व्यंजनों में जोड़े जाते हैं।

लगर–(हिं०पुं०) लग्घड़ नामका पक्षी।

लगव–(हिं०वि०) मिथ्या, झूठ, असत्य।

लगवाना–(हिं० क्रि०) लगाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को लगाने में प्रवृत्त करना।

लगवार–(हिं०पु०) उपपति, यार।

लगातार–हिं०क्रि०वि० एक के बाद एक, क्रम से।

लगान–हिं०पुं० लाने या लगाने की क्रिया या भाव, वह स्थान जहां पर श्रमिक लोग अपने सिर पर का बोझ उतार कर सुस्ताते हैं, भूमिकर जो किसान भूस्वामी को देता है, राजस्व, पोत।

लगाना–(हिं०क्रि०) एक पदार्थ के तल पर दूसरे पदार्थ का तल मिलाना, रगड़ना, चिपकाना जोड़ना, आरोपित करना, अभियोग चलाना, नियुक्त करना, प्रवृत्त करना, सम्मिलित करना, संभोग करना, बिछाना, फैलाना, नाव या जहाज को छिछले किनारे पर चढ़ाना; चिह्नित करना, सान धरना, बदले में देना, पास लाना, किसी के प्रति दुर्भाव उत्पन्न करना, छुआना, तत्पर करना, दाम आंकना, अपने साथ ले चलना, गाड़ना, धँसाना, पहिरना, ओढ़ना, परचाना, गाय भैंस को दूहना, निश्चित स्थान पर पहुंचाना, जलाना, क्रम में रखना, अनुभव करना, व्यय करना, चोट पहुँचाना, पोतना स्थापित करना, सड़ाना, अभिमान करना, चुनना, वृक्ष जमाना, काम में लाना, दाँव पर रखना।

लगाम–(फ़ा०स्त्री०) घोड़े के मुँह में रखने का लोहे का ढांचा जिसके दोनों ओर चमड़े का तस्मा या रस्सा बँधा रहता है जिसको सवार या हांकने वाला हाथमें थामता है, बाग, रास।

लगाय–(हिं०स्त्री०) प्रेम।

लगार–(हिं०स्त्री०) बंधेज, लगाव, जिससे घनिष्ठता का व्यवहार हो, मेली, लगने की क्रिया या भाव, लगन, प्रीति, क्रम, टिकान, भेद लेने के लिये भेजा हुआ मनुष्य, किसी घर के ऊपरी भाग से मिला हुआ कोई ऐसा स्थान जहां से वहाँ कोई आ जा सकता है।

लगालगी–(हिं०स्त्री०) लाग, संबंध, मेल जोल, प्रेम, स्नेह।

लगालिका–(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार अक्षर होते हैं।

लगाव–(हिं०पुं०) लगे रहने का भाव, संबंध; लगावट–(हिं० स्त्री०) प्रीति, प्रेम संबंध।

लगावन–(हिं०पुं०) देखो लगाव; लगावना–(हिं०क्रि०) देखो लगाना।

लगि–(हिं०अव्य०) देखो लग; (स्त्री०) लग्गी।

लगित–(सं०वि०) संयुक्त, मिला हुआ।

लगी–(हिं०स्त्री०) देखो लग्गी।

लगु–(हिं०अव्य०) लग।

लगुड़–(सं०पुं०) दण्ड, डंडा, लाठी।

लगुल–हिं०पुं०) शिश्न, लिंग।

लगूर–(हिं० स्त्री०) लाङ्गूल, पोंछ।

लगे–(हिं०अव्य०) देखो लग।

लगौंहां–(हिं०वि०) जिसको लगन लगाने की अभिलाषा हो, रिझावना।

लग्गा–(हिं०पुं०) लंबा बांस, वह लंबा बांस जिसके आगे एक अँकुसी लगी रहती है जिससे वृक्षों के फ़ल तोड़े जाते है, कार्य आरंभ करना।

लग्गी–(हिं०स्त्री०) लंबा बांस।

लग्घड़–(हिं०पुं०) श्येन पक्षी, बाज़, एक प्रकार का चीता, लकड़बग्घा।

लग्घा, लग्घी–(हिं०) देखो लग्गा, लग्गी

लग्न–(सं०नपुं०) ज्योतिष के अनुसार दिन का उतना अंश जितने में एक राशि का उदय होता है, वह शुभ मूहूर्त जिसमें कोई शुभ कार्य किया जाता है, विवाह का समय, ब्याह, (वि०) लगा हुआ, मिला हुआ, आसक्त, लज्जित।

लग्नक–(सं० पुं०) प्रतिभू, संगीत में एक राग का नाम।

लग्नसङ्कण–(सं० पुं०) वह मंगल सूत्र या कंकण जो विवाह के पहिले वर और कन्या के हाथ में बाँधा जाता है। लग्नकाल–(सं०पु०) लग्न का समय। लग्नकुण्डली–(सं० स्त्री०) वह चक्र या कुण्डली जिससे यह पता चलता है कि जन्म के समय कौन कौन से ग्रह किस किस राशि में थे; लग्नग्रह–(सं० पु०) लग्न मे स्थित ग्रह, लग्नदण्ड–(सं०पुं०) संगीत मे स्वरों का परस्पर मिलाप; लग्न-दिन–(सं०नपुं०) विवाह का निश्चित दिन; लग्नपत्र–(सं०पुं०); लग्नपत्रिका–(सं०स्त्री०) वह पत्र जिसमें विवाह तथा इससे सम्बन्ध रखने वाले अन्य कृत्यों का विवरण लिखा रहता है; लग्नवेला–(सं०स्त्री०) लग्न का समय; लग्नायु–(सं०स्त्री०) लग्न के अनुसार स्थिर की हुई आयुष्य।

लग्नका–(सं०स्त्री०) नंगी स्त्री।

लग्नेश–(सं०पुं०) फलित ज्योतिष में वह ग्रह जो लग्न का स्वामी हो;

लग्नोदय–(सं०पुं०) किसी लग्न के उदय होने का समय।

लघमीपुष्प–(हिं० पुं०) पद्मराग मणि, मानिक।

लघित्र–(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक प्रकार का धारदार अस्त्र।

लघिमा–(सं० स्त्री०) लघुत्व, छोटापन योग से प्राप्त वह शक्ति जिससे योगी बहुत छोटा तथा हलका बन सकता है। लघीयस्–(सं० वि०) बहुत छोटा या हलका।

लघु–(सं० नपुं०) उशीर, खस, पन्द्रह क्षण का परिमाण, व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है यथा अ, इ, उ, ए, ओ, आदि, चांदी,

(वि०) हलका, छोटा, सुन्दर, बढ़िया, थोड़ा, कम, दुर्बल, निःसार। लघुकरण–(सं० पुं०) सफेद जीरा।
लघुकाय–(सं०पुं०) नाटे शरीर का।
लघुक्रम–(सं० पुं०) जल्दी जल्दी चलने की क्रिया। लघुक्रिया–(सं०स्त्री०) तुच्छ कार्य। लघुगण–(सं० पुं०) अश्विनी, पुष्य, और हस्त नक्षत्रों का समूह। लघुचन्दन–(सं० नपुं०) अगर नामक सुगन्धित लकड़ी।
लघुचित्त–(सं० वि०) क्षुद्रचित्त।
लघुचित्तता–(सं० स्त्री०) चित्त का अति चंचल होना। लघुचेतस्–(सं० वि०) क्षुद्र या नीच विचार वाला।
लघुजल–(सं०पुं०) लवा नामक पक्षी।
लघुजांगल–(सं०पुं०)लवानामकपक्षी।
लघुतर–(सं० वि०) बहुत छोटा।
लघुता–(सं० स्त्री०) तुच्छता, हलकापन; लघुतुपक–(सं०स्त्री०) तमंचा, पिस्तौल। लघुतमापवर्तक–(सं० पुं०) वह सबसे छोटी संख्या जो दो या अधिक संख्याओं से बिना शेष के विभाजित हो सके। लघुत्व–(सं०पुं०) तुच्छता, छोटापन, हलकापन। लघुदुन्दुभि–(सं० पुं०) डुगडुग्गी। लघुद्राक्षा–(सं० स्त्री०) किशमिश। लघुपत्रफला–(सं० स्त्री०) छोटा गूलर।
लघुपत्री–(सं० स्त्री०) पीपल का वृक्ष।
लघुपर्णी–(सं० स्त्री०) सतावर। लघुपाक–(सं० पुं०) सहज में पचने वाला खाद्य। लघुपाती–(सं० वि०) शीघ्र गिरने वाला। लघुपिच्छिल–(सं० पुं०) लिसोड़ा। लघुप्रयत्न–(सं०वि०) आलसी। लघुफल–(सं०पुं०) छोटा गूलर। लघुबदर–(सं० पुं०) छोटा बेर। लघुभव–(सं० पुं०) निकृष्ट जन्म। लघुभाव–(सं० पुं०) सहज में होने वाला कार्य। लघुभोजन–(सं० नपुं०) हलका भोजन।
लघुमति–(सं०वि०) छोटी बुद्धि वाला, मूर्ख। लघुमांस–(सं० पुं०) तीतर नामक पक्षी। लघुमांसी–(सं० स्त्री०) छोटी जटामासी। लघुमान–(सं०पुं०) नायिका का वह मान या अल्प रोष जो नायक को किसी अन्य स्त्री के साथ बात करते देखकर उत्पन्न होता है। लघुराशि–(सं०स्त्री०) छोटी संख्या। लघुलता–(सं० स्त्री०) अनन्त मूल, करेले की लता। लघुलय–(सं०नपुं०) उशीर, खस। लघुवासस्–(सं० वि०) हलका पतला वस्त्र पहरने वाला। लघुवृत्ति–(सं० वि०) छोटा काम करने वाला। लघुवेधी–(सं०वि०) शीघ्र बेधने वाला। लघुशंका–(सं० स्त्री०) मूत्रोत्सर्ग। लघुशंख–(सं० पुं०) घोंघा। लघुशिखर–(सं० पुं०) संगीत में एक प्रकार का ताल। लघुशीत–(सं० पुं०) लिसोड़ा। लघुसत्व–(सं० वि०) क्षुद्र प्रकृति का। लघुसार–(सं० वि०) जिसमें थोड़ा सार हो।
लघुस्थानता–(सं० स्त्री०) चंचलता।
लघुहस्त–(सं० पुं०) वह जो शीघ्र बाण चलाता हो। लघुहस्तता–(सं० स्त्री०) शीघ्रता से बाण फेंकना।
लघुहृदय–(सं०वि०)चंचलचित्तवाला।
लघूकरण–(सं०नपुं०) काटना, छाँटना।
लघूक्ति–(सं० स्त्री०) कम बोलना।
लघ्वानन्द–(सं० वि०) कम आनन्द का।
लघ्वाशी–(सं० वि०) कम खाने वाला।
लघ्वाहार–(सं० पुं०) हलका भोजन।
लङ्क–(सं०स्त्री०)कटि, कमर। लङ्कनाथ–(सं० पुं०) रावण, विभीषण।
लङ्का–(सं०स्त्री०) रावण का राज्य, कुलटा, व्यभिचारिणी, चुड़ैल। लङ्कादाही–(सं० पुं०) हनुमान्। लङ्काधिपति–(सं० पु०) रावण। लङ्कानाथ–(सं० वि०) लंका द्वीप का राजा, रावण। लङ्कापति–(सं०पुं०) रावण, विभीषण। लङ्कारि–(सं० पुं०) श्रीरामचन्द्र। लङ्किनी–(सं० स्त्री०) एक राक्षसी का नाम।
लङ्केश, लङ्केश्वर–(सं० पुं०) रावण, विभीषण।
लङ्गनी–(सं०स्त्री०) घोड़े की लगाम।
लङ्ग–(सं० पुं०) संग, साथ, उपपति।
लङ्गक–(सं० पुं०) उपपति, जार।
लङ्गल–(सं० नपुं०) लाङ्गल, हल।
लङ्गूल–(सं० नपुं०) लांगूल, पूंछ।
लङ्घक–(सं० वि०)लांघने वाला, सीमा के बाहर जाने वाला।
लङ्घन–(सं०नपुं०) अनाहार, उपवास।
लङ्घना–(सं०स्त्री०) उपेक्षा।
लङ्घनीय–(सं०वि०) लांघने योग्य।
लङ्घनीयता–(सं० स्त्री०) लांघने का भाव या धर्म।
लङ्घित–(सं०वि०) जो लाँघा गया हो।
लचक–(हिं० स्त्री०) लचकने की क्रिया या भाव, झुकाव, किसी वस्तु का वह गुण जिससे वह दबती या झुकती है। लचकना–(हिं० क्रि०) दबाव पड़ने पर किसी लंबे पदार्थ का झुकना, लचना, स्त्रियों का चलती समय रह रहकर झुकना।
लचकनि–(सं०स्त्री०)लचक, लचीलापन।
लचका–(हिं०पुं०)एक प्रकार का गोटा।
लचकाना–(हिं० क्रि०) झुकाना।
लचकीला–(हिं० वि०) लचकने योग्य।
लचन–(हिं०स्त्री०) देखो लचक। लचना–(हिं०क्रि०) लचकना। लचनि–(हिं०स्त्री०) लचक। लचलचा–(हिं०वि०) लचीला।
लचलचापन–(हिं० पुं०) लचीला होने का भाव।
लचादेवार–(हिं० वि०) स्वादिष्ट।
लचाना–(हिं०क्रि०) लचकाना, झुकाना।
लचार–(हिं० वि०) देखो लाचार।
लचारी–(हिं० स्त्री०) देखो लाचारी, भेंट, एक प्रकार की गीत।
लच्छ–(हिं० पुं०) लक्ष्य, बहाना, सौ हजार की संख्या, लाख; (स्त्री०)लक्ष्मी।
लच्छण–(हिं० पुं०) स्वभाव; लच्छन–(हिं० पुं०) देखो लक्षण।
लच्छना–(हिं० क्रि०) देखो लखना।
लच्छमण–(हिं० वि०) धनवान्।
लच्छमी–(हिं० स्त्री०) देखो लक्ष्मी।
लच्छा–(हिं० पुं०) बहुत से तारों या डोरों का समूह, झुप्पा, गुच्छा, एक प्रकार की मैदे की बनी हुई मिठाई, एक प्रकार का घटिया केसर, सूत की तरह लंबे पतले कटे हुए किसी पदार्थ के टुकड़े, तारों की सिकड़ी का बना हुआ एक प्रकार का गहना।
लच्छा साख–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की संकर रागिणी।
लच्छि–(हिं०पुं०) एक लाख की संख्या, (स्त्री०) लक्ष्मी; लच्छिनाथ–(हिं० पुं०) लक्ष्मी पति, विष्णु; लच्छित–लक्ष्य किया हुआ, देखा हुआ; लच्छिनिवास–(हिं० पुं०) विष्णु।
लच्छी–(हिं०पु०) एक प्रकार का घोड़ा, (स्त्री०) लक्ष्मी, कलाबत्तू सूत, रेशम आदि की लपेटी हुई गुच्छी, अटी।
लछन–(हिं०पुं०) लक्ष्मण, देखो लक्षण।
लछना–(हिं० क्रि०) देखो लखना।
लछमन–(हिं० पुं०) देखो लक्ष्मण।
लछमन झूला–(हिं०पुं०) बदरी नारायण के मार्ग में हृषीकेश के पास बना हुआ लोहे के रस्सों पर लटका हुआ पुल।
लछमना–(हिं० स्त्री०) देखो लक्ष्मणा।
लछमी–(हिं० स्त्री०) देखो लक्ष्मी।
लछारा–(हिं० वि०) लंबा।
लज–(हिं० स्त्री०) देखो लाज, लज्जा।
लजना–(हिं०क्रि०) लजाना; लजवाना–(हिं०क्रि०) दूसरे को लज्जित करना।
लजाधुर–(हिं० पुं०) लजालू नाम का पौधा, (वि०) लज्जावान्; लजाना–(हिं०क्रि०) लज्जित होना या करना।
लजारू, लजालू–(हिं० पुं०) लजाधुर नाम का पौधा, जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ जाती और बन्द हो जाती हैं।
लजावन–(हिं० क्रि०) लजाना।
लजियाना–(हिं० क्रि०) लजाना।
लजीला–(हिं० वि) लज्जायुक्त।
लजुरी–(हिं० स्त्री०) कुवें से पानी निकालने की रस्सी, लेजुर।
लजोर–(हिं० वि०) लज्जावान्।
लजोहां, लजौहां, लजौना–(हिं० वि०) लज्जावान्, लजीला।
लज्जका–(सं० स्त्री०) बनकपास।
लज्जा–(सं० स्त्री०) अंतःकरण की वह स्थिति जिसके कारण दूसरे के सामने वृत्तियाँ संकुचित हो जाती हैं, लाज, मान, मर्यादा; लज्जाकर–(सं० वि०) लज्जा उत्पन्न करने वाला; लज्जान्वित–(सं०वि०) लज्जा युक्त; लज्जाप्रद–(सं० वि०) लज्जा उत्पन्न करने वाला; लज्जाप्राया–(सं०स्त्री०) मुग्धा नायिका का एक भेद।
लज्जालु–(हिं० वि०) लज्जाशील।
लज्जावत्, लज्जावान्–(सं० वि०) लज्जावान।
लज्जावती–(सं० वि०) लजीली।
लज्जाशील–(सं० वि०) जो बात बात में लज्जा करता हो; लज्जाशून्य–(सं० वि०) निर्लज्ज; लज्जाहीन–(सं० वि०) निर्लज्ज; लज्जित–(सं० वि०) लजाया हुआ।
लञ्चा–(सं० स्त्री०) उत्कोच, घूस।
लञ्छन–(हिं० पुं०) देखो लक्षण।
लञ्जिका–(सं० स्त्री०) वेश्या, रण्डी।
लटंग–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बांस।
लट–(सं० पुं०) पागल, चोर, (हिं०स्त्री०) सिर के बालों का समूह जो नीचे तक लटका रहता है, बालों का गुच्छा, महीन कीड़े जो मनुष्य की आँतों में पड़ जाते हैं, एक प्रकार की बेत, लपट।
लटक–(हिं० स्त्री०) लटकने की क्रिया या भाव, झुकाव, लचक, ढालू भूमि।
लटकन–(हिं० पुं०) नीचे की ओर लटकने की क्रिया या भाव, लुभाने वाली चाल, कलँगी में लगे हुए रत्नों का गुच्छा, मलखम्भ का एक व्यायाम, लटकने वाली वस्तु, नाक में पहरने का झुमका, एक वृक्ष जिसके फूलों से लाल रंग निकलता है।
लटकना–(हिं० क्रि०) ऊँचे स्थान से किसी आधार पर नीचे की ओर झुका रहना, झूलना, टंगना, लचकना, किसी वस्तु का किसी ओर झुकना, दुबधा में पड़े रहना, किसी काम को बिना पूरा हुए पड़ा रहना, नम्र होना। लटकवाना–(हिं० क्रि०) लटकाने का काम दूसरे से कराना।
लटका–(हिं० पु०) गति, चाल, किसी शब्द या वाक्य का बारम्बार प्रयोग करना, बनावटी चेष्टा, हाव भाव, मन्त्र तन्त्र की छोटी युक्ति, टोटका, एक प्रकार का चलता गाना, किसी रोग की शान्ति का छोटा प्रयोग, बात चीत करने का बनावटी ढंग।
लटकाना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु का एक छोर किसी ऊँचे स्थान में बांध कर नीचे का छोर निराधार रहने देना, आसरे में रखना, किसी काम को पूरा न करके डाल रखना, किसी वस्तु को लचकाना या झुकाना, लटकने का काम दूसरे से कराना।
लटकीला–(हिं० वि०) झूमता हुआ, बल खाता हुआ, लचकदार।
लटकू–(हिं०पु०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी जड़ से रंग निकाला जाता है।
लटकौवा–(हिं०वि०) लटकने वाला।
लटजीरा–(हिं०पुं०) अपामार्ग, चिचिड़ा, एक प्रकार का महीन धान।
लटना–(हिं० क्रि०) थक कर गिर जाना, लड़खड़ाना, ढीला पड़ना, शिथिल होना, व्याकुल होना, दुर्बल होना, ललचाना, लुभाना, अनुरक्त

होना, लीन होना ।
लटपटा–(हिं॰वि॰) गिरता पड़ता, लड़खड़ाता हुआ, जो क्रम में न हो, टूटा फूटा, थककर गिरा हुआ, जिसमें परत पड़ी हो, लेई की तरह का, ढीलाढाला, अशक्त, अव्यवस्थित; लटपटान–(हिं॰ स्त्री॰) लड़खड़ाहट, मनोहर गति, लचक;
लटपटाना–(हिं॰क्रि॰) सीधे न चलकर इधर उधर झुक पड़ना, लड़खड़ाना, अनुरक्त होना, लीन होना, लुभाना, मोहित करना, स्थिर न रहना, डिगना ।
लटा–(हिं॰वि॰) लोलुप, लंपट, बुरा, पतित, गिरा हुआ, नीच, हीन तुच्छ,
लटापटी–(हिं॰ स्त्री॰) लटपटाने की क्रिया या भाव, लड़ाई, झगड़ा ।
लटापोट–(हिं॰वि॰) मुग्ध, मोहित ।
लटिया–(हिं॰ स्त्री॰) सूत आदि का लच्छा, आंटी ।
लटी–(हिं॰ स्त्री॰) बुरी बात, असत्य वार्ता, वेश्या, रंडी, भक्तिन ।
लटुआ–(हिं॰पुं॰) देखो लट्टू ।
लटुक–(हिं॰ पुं॰) लकूट का वृक्ष और फल
लटूरी–(हिं॰स्त्री॰) देखो लटूरी; लटू–(हिं॰पुं॰) देखो लट्टू ।
लटूरी–(हिं॰ स्त्री॰) सिर के बालों का लटकता हुआ गुच्छा, अलक, केश ।
लटोरा–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसके फलों में लसदार गूदा होता है ।
लट्ट–(सं॰पुं॰) दुष्ट मनुष्य; लट्टपट्ट–देखो लथपथ ।
लट्टू–(हिं॰पुं॰) गोल बट्टे के आकार का एक खिलौना जिसमें सूत लपेट कर तथा फेंक कर पृथ्वी पर नचाया जाता है, लट्टू के आकार की कोई वस्तु; किसी पर लट्टू होना–मुग्ध होना आसक्त होना ।
लट्ठ–(हिं॰ पुं॰) बड़ी लाठी, सोटा, बड़ा डंडा; लट्ठबाज–(हिं॰ वि॰) लाठी लड़ने वाला, बड़ी लाठी बाँधने वाला; लट्ठबाजी–(हिं॰ स्त्री॰) लाठियों की लड़ाई;
लट्ठमार–(हिं॰वि॰)लट्ठ मारने वाला, अप्रिय, कठोर, कर्कश ।
लट्ठा–(हिं॰ पुं॰) लकड़ी का मोटा लंबा टुकड़ा, खेत नापने का बांस जो साढ़े पांच गज़ लम्बा होता है, लकड़ी का बल्ला, धरन, लकड़ी का खम्भा, मोटी मारकीन ।
लट्ठबंदी–(हिं॰स्त्री॰) खेत की सामान्य नाप जो लट्ठे से की जाय ।
लठ–(हिं॰पुं॰) देखो लट्ठ ।
लठियल–(हिं॰वि॰) लाठी बाँधने वाला:
लठैत–(हिं॰पुं॰) लाठी लड़ने वाला ।
लड़ंत–(हिं॰स्त्री॰) लड़ाई, सामना ।
लड़–(हिं॰ स्त्री॰) पंक्ति, माला, रस्सी का एक तार, फूलों या मंजरियों का गुच्छा ।
लड़कई–(हिं॰स्त्री॰) बाल्यावस्था, लड़कपन; लड़कखल–(हिं॰पुं॰) बालकों का खेल, अति सहज कार्य; लड़कपन–(हिं॰ पुं॰, बाल्यावस्था, लड़कों की चंचलता चपलता; लड़कबुद्धि–(हिं॰स्त्री॰) बालकों के समान बुद्धि ।
लड़का–(हिं॰ पुं॰) अल्प अवस्था का मनुष्य, बालक, पुत्र, बेटा । लड़का वाला–(हिं॰ पुं॰) परिवार, पुत्र कलत्र आदि, सन्तति ।
लड़की–(हिं॰ स्त्री॰) छोटी अवस्था की स्त्री, कन्या, बालिका, बेटी; लड़कीवाला–(हिं॰पुं॰) कन्या का पिता या सम्बन्धी ।
लड़कोरी–(हिं॰वि॰स्त्री॰) जिस स्त्री के गोद में लड़का हो ।
लड़खड़ाना–(हिं॰क्रि॰) हिलडोल जाना, डगमगा कर गिरना, झोंका खाकर नीचे आ जाना ।
लड़खड़ी–(हिं॰स्त्री॰) डगमगाहट ।
लड़न–(सं॰नपुं॰) हिलना डोलना ।
लड़ना–(हिं॰ क्रि॰) मारने वाले शत्रु पर आघात पहुँचाना, झगड़ा करना, भिड़ना, मल्लयुद्ध करना, एक दूसरे को कठोर शब्द कहना, दो वस्तुओं का परस्पर टक्कर खाना, वादाविवाद करना, लक्ष्य पर पहुँचना, टकराना, एक दूसरे को गिराने का प्रयत्न करना, बिच्छू, भिड़ आदि का डंक मारना ।
लड़बड़ाना–(हिं॰क्रि॰)देखो लड़खड़ाना।
लड़बावरा–(हिं॰ वि॰) मूर्खता से पूर्ण, गंवार, अल्हड़, अनाड़ी ।
लड़ाई–(हिं॰स्त्री॰) एक दूसरे पर चोट पहुँचाने की क्रिया या भाव, वादा विवाद, मल्लयुद्ध, संग्राम, युद्ध, परस्पर कठोर शब्दों का व्यवहार, कलह, झगड़ा, विरोध, अनबन, वैर, व्यवहार में सफलता प्राप्त करने के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न ।
लड़ाका, लड़ाकू–(हिं॰वि॰)लड़ने वाला, योद्धा, सिपाही, झगड़ालू ।
लड़ाना–(हिं॰क्रि॰) दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना, लड़ने का काम दूसरे से कराना, कलह के लिये उद्यत करना, लक्ष्य पर पहुँचाना, किसी स्थान पर फेंकना, भिड़ाना, सफलता प्राप्त करने के लिये व्यवहार में लाना, लाड़ प्यार करना ।
लड़ायता–(हिं॰वि॰)लड़ाई करने वाला।
लड़ी–(हिं॰स्त्री॰) देखो लड़; पंक्ति ।
लड़ीला–देखो लाड़ला ।
लड़ुआ,लड़ुवा–(हिं॰पुं॰) मोदक, लड्डू ।
लड़ैता–(हिं॰वि॰)प्रिय, प्यारा, लाड़ला दुलारा, धृष्ट, लड़ने वाला, योद्धा ।
लड्डू–(हिं॰ पुं॰) गेंद के आकार की मिठाई, मोदक; मनके लड्डू खाना–वृथा की कल्पना करना ।
लड़्याना–(हिं॰क्रि॰) प्रेम करना ।
लढंत–(हिं॰पुं॰)मल्ल युद्ध की एक युक्ति
लढ़िया–(हिं॰स्त्री॰) बैलगाड़ी ।
लण्ड–(सं॰नपुं॰,पुरीष,विष्टा, (हिं॰ पुं॰) शिश्न ।
लत–(हिं॰ स्त्री॰) किसी बुरी बात का अभ्यास, दुर्व्यसन, बुरी टेव ।
लतखोर, लतखोरा–(हिं॰ वि॰) वह जो सर्वदा लात खाता हो, सर्वदा ऐसा काम करने वाला जिसके कारण मार खानी पड़े या गाली सुनना पड़े, नीच, दुष्ट, दास, द्वार पर पड़ा हुआ पैर पोछने का टाट ।
लतड़ी–(हिं॰स्त्री॰) केसारी नामक अन्न, एक प्रकार की जूती जिसमें केवल तल्ला ही होता है ।
लतपत–(हिं॰वि॰) देखो लथपथ ।
लतमर्दन–(हिं॰स्त्री॰) पैरों से रौंदने की क्रिया, लातों की मार ।
लतर–(हिं॰स्त्री॰) बेल, वल्ली, लता ।
लतरा–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का मोटा अन्न ।
लतरी–(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार की घास या पौधा, इसकी फली, मोट, खेसारी, एक प्रकार की जूती ।
लता–(सं॰स्त्री॰) वह पौधा जो सूत या डोरे के रूप में पृथ्वी पर फैलता है अथवा किसी वस्तु के साथ लिपट कर ऊपर को चढ़ता है, वल्ली बेल, कोमल शाखा, माधवी, सुन्दर स्त्री, एक अप्सरा का नाम, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं ।
लताकर–(सं॰ पुं॰) नाचने में हाथ हिलाने का एक ढंग ।
लताकुञ्ज–(सं॰ पुं॰) लताओं से छाया हुआ स्थान; लतागृह–(सं॰नपुं॰)लतामण्डप; लताजिह्व–(सं॰ पुं॰) सर्प, साँप ।
लताड़ना–(हिं॰क्रि॰) पैरों से कुचलना; लात मारना,थकाना, व्यग्र करना।
लतान्त–(सं॰नपुं॰) लता की फुनगी ।
लतापत्ता–(हिं॰पुं॰)पेड़ पौधों का समूह, जड़ी बूटी ।
लतापर्ण–(सं॰ पुं॰) विष्णु; लतापर्णी–(सं॰स्त्री॰) सौंफ़; लताफल–(सं॰नपुं॰) पटोल, परवल; लताभवन–(सं॰नपुं॰) लताओं का कुंज; लतामणि–(सं॰पुं॰) प्रवाल, मूंगा; लतामण्डप–(सं॰ पुं॰) लताओं से बना हुआ घर; लतामण्डल–(सं॰ पुं॰) लताओं से घिरा हुआ स्थान; लतामृग–(सं॰पुं॰) शाखा मृग, बन्दर; लताम्बुज–(सं॰नपुं॰) खीरा; लतायावक–(सं॰पुं॰) प्रवाल, मूंगा; लतारसन–(सं॰ पुं॰) सर्प, साँप ।
लतार्क–(सं॰पुं॰) प्याज का पौधा ।
लतालक–(सं॰पुं॰) हस्ती, हाथी ।
लतालय–(सं॰ पुं॰) देखो लतागृह; लतावलय–(सं॰ पुं॰) देखो लतालय;
लतावृक्ष–(सं॰ पुं॰) सलई का वृक्ष;
लतावेष्टन–(सं॰पुं॰) एक प्रकार का आलिंगन; लतावेष्टित–(सं॰ पुं॰) एक प्रकार का आलिंगन, (वि॰) लता से घिरा हुआ ।
लतिका–(सं॰स्त्री॰) छोटी लता, बेल ।
लतियर, लतियल–(हिं॰वि॰) जो सर्वदा लात खाता हो, लतखोर ।
लतियाना–(हिं॰ क्रि॰) पैरों से रौंदना, लात मारना ।
लतिहर, लतिहल–(हिं॰ वि॰) लतखोर।
लत्ता–(हिं॰ पुं॰) फटा पुराना वस्त्र, चिथड़ा, कपड़े का टुकड़ा; कपड़ा लत्ता–पहिरने का वस्त्र ।
लत्ती–(हिं॰ स्त्री॰) पशुओं का लात मारने की क्रिया, कपड़े की लंबी धज्जी, पतंग का पुछिल्ला ।
लथपथ–(हिं॰ वि॰) जो भीगकर भारी हो गया हो ।
लथाड़–(हिं॰स्त्री॰) भूमि पर पटक कर घसीटने की क्रिया, चपेट, हानि,
लथाड़ना, लथेड़ना–(हिं॰क्रि॰) कीचड़ आदि लपेट कर भारी करना, भूमि पर पटक कर घसीटना, मिट्टी कीचड़ आदि लपेट कर मलना, गंदा करना, हराना, मल्लयुद्ध में पछाड़ना, शिथिल करना, थकाना, झिड़कियाँ सुनाना, डांटना ।
लदन–(हिं॰ स्त्री॰) लदाव; लदना–(हिं॰क्रि॰) बोझ से भरना, परिपूर्ण होना, ऊपर तक भर जाना, सामान ढोने वाली गाड़ी का वस्तुओं से भरा जाना, बोझ रक्खा जाना, बंदी होना, परलोक सिधारना, मरजाना।
लदलद–(हिं॰ क्रि॰ वि॰) किसी गीली वस्तु के गिरने के शब्द का अनुकरण
लदवाना–(हिं॰ क्रि॰) लादने का काम दूसरे से कराना ।
लदाऊ–(हिं॰वि॰)देखो लदाव; लदाना–(हिं॰ क्रि॰) लादने का काम दूसरे से कराना ।
लदाफंदा–(हिं॰वि॰) बोझ से भरा हुआ
लदाव–(हिं॰पुं॰) लादने की क्रिया या भाव, भार, बोझ, वह छत या जिसमें ईंटों की जोड़ाई बिना धरन या कड़ी के आधार पर हो ।
लदुवा, लदू–(हिं॰ वि॰) बोझ ढोने वाला, जिस पर भार रक्खा जावे ।
लद्धड़–(हिं॰ वि॰) सुस्त, आलसी; लद्धड़पन–(हिं॰पुं॰) सुस्ती,
लद्धना–(हिं॰क्रि॰) प्राप्त करना, पाना
लना–(हिं॰पुं॰) एक वृक्ष जिसमें से सज्जी निकाली जाती है ।
लनी–(हिं॰स्त्री॰) पान की क्यारी ।
लप–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार की घास, अञ्जली, अञ्जली भर वस्तु, (स्त्री॰) लचीली वस्तु को पकड़ कर हिलाने से उत्पन्न शब्द, तलवार छूरे आदि की चमक की गति ।
लपक–(हिं॰स्त्री॰) ज्वाला, लपट, लपट

की तरह निकलने वाली चमक, कान्ति चलने का वेग ; लपकना–(हिं०क्रि०) वेग से चलना,दौड़ पड़ना, झपटना, किसी वस्तु को लेने के लिये झट से हाथ फैलाना;लपककर–(क्रि० वि०) बड़े वेग के साथ ।
लपकी–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की सीधी सिलाई ।
लपझप–(हिं०वि०) चंचल,चपल,अधीर
लपट–(हिं०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला, वायु मे फैली हुई गरमी, गन्ध, किसी प्रकार की गन्ध से भरा हुआ हवा का झोंका; लपटना–(हिं०क्रि०) अंगों से घेरना, आलिंगन करना, उलझना, फँसना, घिरा जाना, लगा रहना ।
लपटा–(हिं०पुं०) कोई गाढी गीली वस्तु, कढी, लेई, लपसी ।
लपटाना–(हिं० क्रि०) गले लगाना, आलिंगन करना, घेरना, लपेटना, सटना, उलझना ।
लपटौवा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की घास जिसकी बाल कपड़ों में लिपट जाती है और कठिनाई से छूटती है, (वि०) चिपटने वाला ।
लपन–(सं०नपुं०) मुख, भाषण, कथन ।
लपना–(हिं०क्रि०) लचीली वस्तु का झुकना, लचना, लपकना, ललचना ।
लपलपाना–(हिं०क्रि०) झोक के साथ इधर उधर लचना, किसी कोमल वस्तु का हिलना,तलवार छुरी आदि का चमिकना, झोंक के साथ इधर उधर लचाना, तलवार आदि को चमकाना; लपलपाहट–(हिं०स्त्री०) प्रकाश की चमक, झलक ।
लपसी–(हिं०स्त्री०) थोड़ा घी डाल कर बनाया हुआ हलवा, पानी में औटाया हुआ आटा, कोई गीली गाढी वस्तु ।
लपहा–(हिं० पुं०) पान की लता में होने वाला एक रोग ।
लपाना–(हिं०क्रि०) लचीली वस्तु को झोंक से इधर उधर फ़टकारना, आगे बढ़ाना, कोमल लंबी वस्तु को हिलाना ।
लपित–(सं०वि०) कँपा हुआ, कथित ।
लपेट–(हिं०स्त्री०) लपेटने की क्रिया या भाव, बँधी हुई गठरी में कपड़े की तह की मोड़, बांधने में डोरी आदि का फेरा, ऐंठन, मरोड़, उलझन, फँसाव, पकड़, बंधन, मल्लयुद्ध की एक युक्ति जाल, चक्कर ।
लपेटन–(हिं०स्त्री०) लपेटने की क्रिया या भाव, लपेट,ऐंठन,मरोड़,उलझन फँसाव, बांधने का कपड़ा, बेठन, जुलाहे का कपड़ा, लपेटने का बेलन, पैरों में उलझने वाली वस्तु ;
लपेटना–(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के चारो ओर घुमाकर बांधना, घुमाव या फेर के साथ चारो ओर फँसाना, फैली हुई वस्तु को गट्ठर के रूप में करना,परिवेष्टित करना, पकड़ में कर लेना, कपड़े आदि के भीतर बाँधना, उलझन में डालना, फँसाना, लेप करना, पोतना, गति बन्द करना ।
लपेटनी–(हिं०स्त्री०) जुलाहे की तूर ।
लपेटवाँ–(हिं० वि०) लपेटा हुआ, जो लपेटा जा सके, जिसमें सोने चाँदी के तार लपेटे हों, लपेट कर बनाया हुआ, घुमाव फिराव का,गूढ़ अर्थ का
लप्पा–(हिं०पुं०) छत की धरन में लगाई हुई लकड़ी ।
लप्सिका–(सं०स्त्री०) लपसी ।
लफना–(हिं०क्रि०) देखो लपना ।
लफलफा–(हिं०वि०) देखो लपलपा ।
लफाना–(हिं०क्रि०) देखो लपाना ।
लबझना–(हिं०क्रि०) उलझना ।
लबड़धोंधों–(हिं० स्त्री०) झूठमठ का कोलाहल, क्रम और व्यवस्था का अभाव, गड़बड़ी, अन्याय, अनीति,
लबड़ना–(हिं०क्रि०) झूठ बोलना, गप हाँकना ।
लबदा–(हिं०पुं०) मोटा बेडौल डंडा ।
लबदी–(हिं०स्त्री०) छोटी पतली छड़ी ।
लबनी–(हिं०स्त्री०) मिट्टी की लंबी हाँडी जो ताड़ी निकालने के लिये ताड़ के पेड़ में बाँधी जाती है ।
लबरा–(हिं०वि०) झूठ बोलने वाला, गप हांकने वाला ।
लबरी–(हिं०वि०स्त्री०) झूठ बोलने वाली ।
लबार–(हिं०वि०) मिथ्यावादी, झूठ बोलने वाला, गप्पी ; लबारी–(हिं०स्त्री०) झूठ बोलने का काम, (वि०) झूठा, चुगलखोर ।
लबी–(हिं०स्त्री०) ऊख का पका हुआ गाढ़ा रस, राब ।
लबेद–(हिं०पुं०) वेद के विरुद्ध वचन, दन्तकथा, लोकाचार ।
लबेदा–(हिं० पुं०) मोटा बड़ा डंडा । लबेदी–(हिं०स्त्री०) मोटा छोटा डंडा, लाठी ।
लब्ध–(सं० वि०) प्राप्त, पाया हुआ, उपार्जित, कमाया हुआ, गणित में भाग करने से आया हुआ फल ; लब्धकाम–(सं०वि०) जिसकी मनोकामना पूरी हो गई हो; लब्धकीर्ति–(सं०वि०) विख्यात,प्रसिद्ध; लब्धचेतन–(सं०वि०) जिसने पुनः ज्ञान प्राप्त किया हो; लब्धजन्म–(सं० वि०) जिसने जन्म लिया हो ; लब्धधन–(सं० वि०) धनवान्; लब्धनाम–(सं० वि०) प्रसिद्ध; लब्धनाश–(सं०पुं०) पूर्व धन का नाश; लब्धप्रतिष्ठ–(सं० वि०) प्रतिष्ठित ; लब्धलक्ष–(सं०वि०) जिसका निशाना ठीक लगे; लब्धवर–(सं०वि०) जिसने वर प्राप्त किया हो ; लब्धवर्ण–(सं०त्रि०) विद्वान्, पण्डित; लब्धविद्य–(सं०त्रि०) पण्डित ; लब्धव्य–(सं०वि०) प्राप्त करने योग्य ; लब्धशब्द–(सं०वि०) प्रसिद्ध, प्रख्यात;लब्धसिद्धि–(सं०वि०) जिसने सिद्धि पाई हो ।
लब्धा–(सं०स्त्री०) विप्रलब्धा नायिका ।
लब्धांक–(सं० पुं०) गणित करने पर जो अंक प्राप्त हो ।
लब्धावकाश लब्धावसर–(सं० वि०) जिसने अवकाश या छुट्टी पाई हो ।
लब्धि–(सं०स्त्री०) लाभ, प्राप्ति, प्राप्त संख्या ।
लब्धोदय–(सं० वि०) उत्पन्न, सौभाग्य प्राप्त ।
लभन–(सं०नपुं०) प्राप्ति ।
लभस–(सं०पुं०)घोड़ा बाँधने की रस्सी;
लभ्य–(सं०वि०) न्याययुक्त, उचित, पाने योग्य ।
लमक–(सं०पुं०) उपपति, जार, लम्पट;
लमकना–(हिं० क्रि०) उत्कठित होना, लपकना ।
लमगजा–(हिं०पुं०) इकतारा ।
लमघिचा–(हिं०वि०)लंबी गरदन वाला
लमचा–(हिं०पुं०) एक प्रकार की बरसाती घास ।
लमछड़–(हिं०वि०) लंबा और पतला, (पुं०) पुरानी चाल की लंबी बंदूक; लमछुआ–(हिं०वि०) वह जो आकार में कुछ लंबा हो ; लमजक–(हिं०पुं०) ज्वरांकुश नाम की घास ; लमटंगा–(हिं०वि०) लंबी टांगों वाला, (पुं०) सारस पक्षी ; लमतड़ंग–(हिं०वि०) बहुत लंबा तथा ऊंचा ।
लमधी–(हिं०पुं०) समधी का पिता ।
लमाना–(हिं०क्रि०)दूर चले जाना, लंबा होना, आगे दूर तक बढ जाना ।
लम्पट–(सं०वि०) व्यभिचारी, कामुक, (पुं०) उपपति, जार; लम्पटता–(सं०स्त्री०) लम्पट होने का भाव ।
लंम्पाक–(सं०पुं०) लंपट ।
लमाटह–(सं०पु०) नगाड़ा ।
लम्फ–(सं० पुं०) उछाल ; लम्फन–(सं०नपुं०) उछाल ।
लम्ब–(सं०पु०) नर्तक, नाचने वाला, पति, उत्कोच, घूस, शुद्ध राग का एक भेद, एक असुर का नाम, विषुव रेखा के समानान्तर रेखा, (वि०) दीर्घ, लंबा ; लम्बकर्ण–(सं० पु०) जिसके कान लंबे हों, राक्षस, हाथी, खरहा, बकरा; लम्बग्रीव–(सं० पुं०) ऊंट ; लम्बजठर–(स०वि०) लंबे पेट वाला, लम्बजिह्व–(स० पुं०) एक राक्षस का नाम; लम्बज्या–(सं०स्त्री०) ज्योतिष में ज्या रेखा का एक भेद ; लम्बदतड़ंग–(हिं०वि०) ताड़ के समान लंबा ; लम्बदन्ता–(सं० वि०) लंबे दांत वाला ।
लम्बन–(सं० नपुं०) आश्रय, झूलने की क्रिया ।
लम्बपयोधरा–(सं०स्त्री०) जिस स्त्री के स्तन लंबे हो ।
लम्बमान–(सं०वि०)लंबायमान (पदार्थ)।
लम्बा–(सं०स्त्री०) दक्ष की कन्या का नाम
लम्बिका–(सं०स्त्री०)गले के भीतर की घंटी
लम्बित–(सं०वि०) लंबा ।
लम्बोदर–(सं०पु०) गणेश जी ।
लम्बोष्ठ–(सं०पुं०) ऊंट. (वि०) लंबे ओष्ठ वाला ।
लम्भ–(सं०पु०) लाभ, लम्भक–(सं०वि०) लाभ करने वाला; लम्भन–(सं०नपुं०) प्रतिलम्भ, लाभ ;
लय–(सं० पुं०) विनाश, लोप, प्रलय, सन्तोष संश्लेष, एक वस्तु का दूसरे में मिल जाना, संगीत में नाच गाने, और बजाने का मेल, एक पदार्थ का दूसरे में घुसना या मिलना, गाने का ढंग, वह स्वर जो किसी स्वर के निकलने में लगता है, विश्राम, स्थिरता, मूर्छा, गूढ अनुराग, लगन, चित्तकी वृत्तियों का सब ओर से हट कर एक ओर लगना, तद्रूप होना ।
लयन–(सं०नपुं०) विश्राम, शान्ति ।
लर–(हिं०स्त्री०) देखो लड़ा ।
लरकई–(हिं०स्त्री०) लड़कपन ।
लरकना–(हिं०क्रि०) देखो लटकना ।
लरकिनी–(हिं०स्त्री०) देखो लड़की ।
लरखराना–(हिं०स्त्री०) लड़खड़ाना ।
लरजना–(हिं०क्रि०) हिलना, काँपना, भयभीत होना,
लरझर–(हिं०वि०) प्रचुर,बहुत अधिक ।
लरना–(हिं० क्रि०) देखो लड़ना; लरनि–(हिं०स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा ; लराई–(हि०स्त्री०) लड़ाई ।
लरिकई–(हिं०स्त्री०) लड़कपन ।
लरिक सलोरी–(हिं०स्त्री०) लड़कपन।
लरिका–(हिं० पुं०) देखो लड़का ; लरिकाई–(हिं०स्त्री०) लड़कपन ।
लरी–(हिं०स्त्री०) देखो लड़ी ।
लर्ज–(हिं०पुं०) सितार में के पीतल के तार का नाम ।
ललक–(हिं० स्त्री०) प्रबल इच्छा, गहरी चाह;ललकना–(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को प्राप्त करने की गहरी इच्छा होना, ललचना, उमंग से भरना ।
ललकार–(हिं०स्त्री०) युद्ध के लिये उच्च स्वर से पुकारना, लड़ने के लिये बढ़ावा; ललकारना–(हिं० क्रि०) युद्ध के लिये प्रतिद्वन्दी को उच्च स्वर से आह्वान करना, हाँक लगाना, लड़ने के लिये बढ़ावा देना, उत्साहित करना ।
ललचना–(हिं० क्रि०) लालच करना, किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिये प्रबल इच्छा करना, लालसा करना, लुब्ध या मोहित होना, लालच से अधीर होना; ललचाना–(हिं० क्रि०) किसी के मन मे लालसा उत्पन्न करना, किसी वस्तु को दिखाकर उसके पाने के लिये अधीर करना ;
ललचौंहां–(हिं० वि०) लालच से भरा हुआ ।

ललजिह्व–(सं० पुं०) ऊंट, कुत्ता (वि०) जीभ लपलपाता हुआ, भयंकर।
ललदेया–(हिं०पुं०) एक प्रकारका धान।
ललन–(सं०नपुं०) केलि, क्रीड़ा, चलाने की क्रिया, (पुं०)प्यारा लड़का,दुलारा लड़का, बालक, नायकके लिये प्यार का शब्द।
ललना–(सं०स्त्री०) कामिनी, स्त्री,जीभ, एक वर्णवृत्त का नाम; ललनाप्रिय–(सं० पुं०) स्त्रियों का प्रिय।
ललनिका–(सं०स्त्री०) ललना, स्त्री।
लला–(हिं० पुं०) प्यारा पुत्र, दुलारा लड़का, बच्चों के लिये प्यार का शब्द, नायक या पति के लिये प्यार का शब्द।
ललाई–(हिं०स्त्री०) लालिमा, लाली।
ललाक–(हिं०पुं०) शिश्न, लिंगेन्द्रिय।
ललाट–(स०नपुं०) मस्तक, माथा,भाग्य का लेख; ललाटक–(सं० नपुं०) चौड़ा माथा; ललाटपटल–(सं०नपुं०) मस्तक का तल;ललाटरेखा–(सं०स्त्री०) कपाल का लेख, भाग्य लेख;ललाटाक्ष–(सं० पुं०) शिव,महादेव; ललाटाक्षी–(सं० स्त्री०) दुर्गा;ललाटिका–(स० स्त्री०) मस्तक पर का टीक,माथे पर बाँधने का एक आभूषण।
ललाटूल–(सं० वि०) जिसका ललाट ऊँचा हो।
ललाना–(हिं०क्रि०) ललचाना।
ललाम–(सं०वि०)सुन्दर मनोहर, लाल, प्रधान, श्रेष्ठ, (सं०नपुं०) चिह्न, सींग, अलंकार, गहना, घोड़े या शेर के गरदन पर के बाल,घोड़ा,प्रभाव,रत्न।
ललामक–(सं० नपुं०) मस्तक में लपेटने की माला।
ललामगु–(सं०पुं०) शिश्न, लिंगेन्द्रिय।
ललामन्–(सं०पुं०) ललाम, पुरुष।
ललामी–(सं०स्त्री०) कान में पहरने का एक आभूषण सुंदरता,शोभा,लालिमा
ललित–(सं० नपुं०) शृंगार रस में एक अंग चेष्टा जिसमें सुकुमारताके साथ हाथ,पैर,भौं,आंख आदि अंग हिलाये जाते हैं,एक विषम वर्णवृत्त का नाम, (वि०) मनोहर, सुन्दर, मनचाहा, चलित, चलता हुआ; ललितकला–(सं० स्त्री०) वे कला या विद्या जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौन्दर्य की अपेक्षा होती है; ललितकान्ता–(सं० स्त्री०) मंगल चंडिका, दुर्गा;ललितचैत्य–(सं०पुं०) एक प्रकार का सुन्दर मन्दिर; ललित ताल–(सं० पुं०) संगीत में एक प्रकार का ताल; ललितपद–(सं०पुं०)एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाईस मात्रायें होती हैं; ललितप्रहार–(सं० पुं०) अल्प प्रहार; ललितललित–(सं० वि०) अति मनोहर; ललितलोचन–(सं० त्रि०) सुन्दर नेत्र; ललितवनिता–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
ललिता–(सं०स्त्री०) कस्तूरी,राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक, एक रागिणीका नाम,एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते है; ललिता पञ्चमी–(सं० स्त्री०) आश्विन शुक्ला पंचमी जिस दिन ललिता देवी (पार्वती) का पूजन होता है।
ललितोपमा–(सं०स्त्री०) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान की समता जताने के लिये, सम, समान, तुल्य आदि शब्दों का व्यवहार न करके ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जिनसे बराबरी, मित्रता निरादर आदि का भाव प्रगट हो।
लली–(हिं०स्त्री०) लड़की या नायिकाके लिये प्रेम का शब्द,प्रेमिका, दुलारी, लड़की।
ललौहां–(हिं०वि०) ललाई लिये हुए।
लल्ला–(हिं०पुं०) देखो लला।
लल्लो–(हिं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ।
लल्लोचप्पो, लल्लोपत्तो–(हिं० स्त्री०) चिकनी चुपड़ी बातें जो केवल किसी को प्रसन्न करने के लिये कही जाय, ठकुरसुहाती।
लव–(सं०पुं०)लवङ्ग,बहुत छोटा मात्रा, (पुं०) लेश, विनाश, कटाई, छत्तीस निमेष का अल्प समय, पशु के शरीर पर के रोवें, सुरागायके पूंछ पर का बाल,(पुं०) श्री रामचन्द्र के दो यमज पुत्रों में से एक का नाम, (दूसरा कुश था)।
लवंग–(स०नपुं०)एक वृक्ष जिसकी कली लौंग कहलाती है; लवंग लता–(सं० स्त्री०)राधिकाकी एक सखी का नाम, समोसे के आकार की एक बंगला मिठाई।
लवण–(सं०नपुं०) नमक, नोन, देखो लवणासुर;लवणक्षार–(सं०पुं०) खारी नमक; लवणखनि–(सं०स्त्री०) नमक की खान;लवण जल–(सं०नपुं०) खारा पानी, वह जल जिसमें नमक मिला हो; लवण जलधि–(स० पुं०) लवण समुद्र; लवणता–(स० स्त्री०) नमकपन, लवण का भाव या धर्म; लवण तृण–(सं० नपुं०) लोनिया साग; लवण तोय–(सं०पुं०)लवण समुद्र; लवणत्व–(सं० नपुं०) देखो लवणता; लवण मद–(सं० पुं०) खारी नमक; लवण समुद्र–(सं०पुं०) खारे पानी का समुद्र जो पुराणों के अनुसार सात समुद्रों में से एक एक था।
लवणा–(सं०स्त्री०) दीप्ति, आभा।
लवणाकर–(सं० पुं०) नमक की खान;
लवणाब्धि–(सं० पुं०) खारे पानी का समुद्र; लवणाम्भस्–(सं० पुं०) समुद्र;
लवणारज–(सं० पुं०) खारी नमक;
लवणार्णव–(सं० पुं०) खारे पानी का समुद्र;लवणासुर–(सं०पुं०)मधु नामक दैत्य का पुत्र जिसको शत्रुघ्न ने मारा था।
लवन–(सं०नपुं०) छेदन, काटन, खेत के उपज की कटाई, अन्न जो खेत की कटाईके लिये दिया जाय,लुनाई, लोनी; लवना–(हिं० क्रि०) पके हुए अन्न के पोधों को खेत में से काटकर इकट्ठा करना, लुनना; लवनी–(हिं० स्त्री०) लुनाई, अन्न काटने का शुल्क, (हिं०स्त्री०) मक्खन।
लवर–(हिं० स्त्री०) अग्नि की लपट, या ज्वाला।
लवलासी–(हिं०स्त्री०) प्रेम का लगाव।
लवली–(सं० स्त्री०) हरफारेवड़ी नामक वृक्ष और उसके फल, एक विषम वर्णवृत्त का नाम।
लवलीन–(हिं०वि०) तन्मय, निमग्न।
लवलेश–(हिं०पुं०)अत्यन्त थोड़ा मात्रा, थोड़ा संसर्ग।
लवा–(हिं०पुं०) तीतरकी जाति का एक पक्षी।
लवाई–(हिं० वि०) वह गाय जिसका बछवा अभी बहुत छोटा हो, (स्त्री०) खेत की उपज की कटाई, लवने का शुल्क।
लवारा–(हिं०पुं०) गाय का बछवा।
लवासी–(हिं० वि०) बकवादी, गप्प हांकने वाला।
लवित्र–(सं०नपुं०) हँसिया, हँसुआ।
लव्य–(सं०वि०) काटने योग्य।
लशकारना–(हिं० क्रि०) शिकारी कुत्तो को ललकारना।
लशुन–(सं०नपुं०) लहसुन।
लषण–(सं०नपुं०) वाञ्छा, चाह।
लषना–(हिं०क्रि०) देखो लखना।
लस–(सं०पुं०) चिपकने या चिपकानेका गुण, चिपकाने वाली वस्तु, लासा, चित्ताकर्षण।
लसक–(सं०पुं०) नर्तक, नाचने वाला।
लसना–(हिं० क्रि०) चिपकाना, सटाना, शोभित होना, छाजना।
लसनि–(हिं० स्त्री०) स्थिति, शोभा, छटा, सुन्दरता।
लसम–(हिं०वि०) जो खरा न हो,दूषित।
लसलसा–(हिं०वि०)लसदार, चिपचिपा;
लसलसाना–(हिं०क्रि०) चिपकना, चिपचिपाना; लसलसाहट–(हिं० स्त्री०) लसदार होने का भाव।
लसा–(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।
लसिका–(सं०स्त्री०) लार, थूक।
लसित–(हिं०वि०) शोभित।
लसी–(हिं०स्त्री०) लस,लसाहट,आकर्षण, संबंध, लगाव, लाभ,दही और पानी मिला हुआ पेय।
लसीका–(सं०स्त्री०) ईख का रस, मांस और चमड़े के बीच का रस या पानी।
लसीला–(हिं०वि०) लसदार, चिपचिपा, सुन्दर।
लसुन–(हिं०पुं०)देखो लशुन; लसुनिया–(हिं०पुं०) देखो लहसुनिया।
लसोड़ा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसमें बेर के समान गोल फल होते हैं, जो औषधियों मे प्रयोग होते हैं।
लसौटा–(हिं० पुं०) बहेलिया का लासा रखने का बांस का चोंगा।
लस्टम् पस्टम्–(हिं०क्रि०वि०) किसी न किसी प्रकार से।
लस्त–(सं० वि०) क्रीड़ा किया हुआ, सजावट से भरा हुआ, (हिं० वि०) अशक्त,शिथिल,थका हुआ,साहसहीन।
लस्सी–(हिं०स्त्री०) लस, चिपचिपाहट, छाछ, मठा।
लहँगा–(हिं० पुं०) स्त्रियों का कमर के नीचे का भाग ढांपने का घेरेदार पहरावा।
लहक–(हिं०स्त्री०) लहकने की क्रिया या भाव, चमक, आग की लपट, छवि, शोभा; लहकना–(हिं० क्रि०) आग का दहकना, झोंके से लहराना, वायु का बहना, उत्कंठित होना, चाह से आगे को बढ़ना;लहकाना–(हिं० क्रि०) हवामे इधर उधर हिलाना डोलाना, झोंका देना, उत्साह दिलाकर आगे बढ़ाना, भड़काना, ताव दिलाना, लपकाना।
लहकारना–(हिं०क्रि०) किसी के विरुद्ध कुछ करने के लिये ताव दिलाना, ललकारना।
लहकौर,लहकौरि–(हिं०स्त्री०) विवाह की वह रीति जिसमें दुलहा दुलहिन एक दूसरे के मुंह में कौर डालते हैं।
लहन–(हिं०पुं०) कंजा नाम की झाड़ी।
लहना(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, पाना, (पुं०) उधार दिया हुआ धन, किसी कारण मिलने वाला धन, भाग्य।
लहनी–(हिं०स्त्री०) प्राप्ति, फल भोग, ठठेरों का पात्र छीलने का यंत्र।
लहबर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत लंबा ढीला ढाला पहरावा, चोगा, झंडा, लंबी गरदन का एक प्रकार का तोता।
लहर–(हिं०स्त्री०) हवा के झोंक से उठने वाली जल की बड़ी राशि, बड़ा हिलोरा, उमंग, टेढ़ी मेढ़ी रेखा,गन्ध युक्त वायु, वायु में उत्पन्न होनेवाली शब्द की गूंज, वक्रगति, मन की मौज, शरीर में रहरहकर उठने वाली पीड़ा, आनन्द की उमंग;–सांप के काटने की लहर–अचेत होने पर बीच बीच में जान जाने की अवस्था।
लहरना–(हिं०क्रि०) देखो लहराना।
लहर पटोर–(हिं०पुं०) पुरानी चाल का एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा;
लहरा–(हिं०पुं०) लहर, तरंग, मौज, गाने के पहले ताल और स्वरों का मिलाना। लहराना–(हिं०क्रि०) वायु के वेग से इधर उधर हिलाना, डुलाना वक्रगति से ले जाना, झोंका खाते चलना, विराजना, शोभित होना, उत्कंठित होना, लहरें खाना, मन में उमंग होना, आग का लपकना, भड़कना।

लहरिया–(हिं०वि०) ऐसी समानान्तर रेखाओं का समूह जो सीधी न जाकर कम से मुड़ती हुई जाती हैं, एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंग बिरंगी टेढ़ीमेढ़ी रेखाएँ बनी रहती है, ऐसे वस्त्र की बनी हुई साड़ी, देखो लहर; लहरियादार–(फा०वि०) जिसमें बहुत सी टेढ़ी मेढ़ी रेखा बनी हो।

लहरी–(सं०स्त्री०) लहर, तरंग, (वि०) तरंगी, मनमौजी।

लहल–(हिं०पुं०) एक प्रकार का राग।

लहलह–(हिं० वि०) लहलहाता हुआ, आनन्द से फूला हुआ। लहलहा–(हिं०वि०) लहलहाता हुआ, आनन्दी, हृष्टपुष्ट। लहलहाना–(हिं० क्रि०) लहराने वाली पत्तियों से भरा होना, दुर्बल शरीर का फिर से पनपना, प्रफुल्ल होना, सूखे पेड़ पौधों में नई पत्तियां निकलना।

लहसुन–(हिं०पुं०) एक पौधा जिसकी जड़ में गोल गाँठ होती है।

लहसुनिया–(हिं०पुं०) धूमिल रंग का एक बहुमूल्य रत्न,रुद्राक्षक। लहसुनिया हींग–एक प्रकार की बनावटी हींग।

लहा–(हिं०पुं०) देखो लाह।

लहाछेह–(हिं०पुं०) नाच की एक गति,

लहालह–(हिं०वि०) देखो लहलहा।

लहालोट–(हिं०वि०) हंसी से लोटता हुआ, हंसी में मग्न, प्रेम में मग्न, मोहित, आनन्दके मारेउछलता हुआ।

लहास–(हिं० पुं०) शव।

लहासी–(हिं०स्त्री०) नाव या जहाज बांधने की मोटी रस्सी, मार्गमें निकली हुई जड़।

लहि–(हिं० अव्य०) पर्यन्त, तक।

लहु–(हिं०अव्य०) देखो लौ।

लहुरा–(हिं०वि०) वय में छोटा।

लहू–(हिं०पुं०) रक्त, रुधिर; लहूलुहान-होना–रुधिर से भर जाना।

लहेरा–(हिं०पुं०)छोटे आकार का एक सदाबहार वृक्ष, लाह की चूड़ी बनाकर बेंचने वाला।

लांक–(हिं०पुं०) कटि, कमर।

लांग–(हिं०स्त्री०)धोती का वह भाग जो कमर में पीछे की ओर खोंसा जाता है, कांछ।

लांगल–(हिं०पुं०) खेत जोतने का हल, पूंछ; देखो लाङ्गल। लांगुली–देखो लङ्गूल; लांगूली–(हिं० पुं०) सर्प, नारियल; लंगूली–(हिं०पुं०) बन्दर।

लाँघना–(हिं०क्रि०)किसी वस्तुके इस पार से उस पार जाना, किसी वस्तु को उछल कर पार करना, डांकना।

लाँघनी उड़ी–(हिं०स्त्री०) मलखंभ का एक व्यायाम।

लांच–(हिं० स्त्री०) उत्कोच, घूस।

लांछन–(हिं०पुं०)देखो लाञ्छन, चिह्न; लांछनित–(हिं०वि०) देखो लाञ्छित।

लांबा–(हिं०वि०) देखो लंबा।

लाइ–(हिं०पुं०) लूक, अग्नि।

लाइक–(हिं०वि०) योग्य।

लाइची–(हिं०स्त्री०) देखो इलाइची।

लाई–(हिं०स्त्री०)धान का लावा, लाजा, चुगली; लाई लुतरी–चुगली, ऊनी चद्दर, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा,

लाऊ–(हिं०पुं०) लौकी, घिया।

लाकड़ी–(हिं०स्त्री०)देखो लकड़ी।

लाकिनी–(सं०स्त्री०) तन्त्र के अनुसार एक योगिनी का नाम।

लाक्षकी–(सं०स्त्री०)सीता का एक नाम।

लाक्षण–(सं०वि०) लक्षण जानने वाला; लाक्षणिक–(सं०पुं०) वह जो लक्षणों को जानता हो, वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस मात्राएँ होती हैं, (वि०) लक्षण संबंधी।

लाक्षण्य–(सं०वि०) लक्षण जानने वाला।

लाक्षा–(सं०स्त्री०) लाख, लाह। लाक्षागृह–(सं०पुं०)लाख का वह घर जिसको दुर्योधन ने पाण्डवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था। लाक्षातरु–(सं०पुं०)पलास का वृक्ष। लाक्षारस–(सं०पुं०)महावर; लाक्षावृक्ष–(सं०पुं०) पलास का वृक्ष।

लाक्षिक–(सं०पुं०)लाख का बना हुआ।

लाक्ष्मण–(सं० पुं०) लक्ष्मण के गोत्र का सन्तान।

लाख–(हिं०वि०)सौ हजार, बहुत अधिक, (पुं०) सौ हजार की संख्या, देखो लाक्षा।

लाखना–(हिं०क्रि०)लाह लगाकर किसी वस्तु का छेद बन्द करना।

लाखपति–(हिं० पुं०) देखो लखपति।

लाखा–(हिं०पुं०) लाख का बना हुआ रंग, गेहू के पौधों में लगने वाला एक रोग। लाखागृह–(हिं० पुं०) देखो लक्षागृह।

लाखी–(हिं०वि०)लाह के रंग का, मटमैला लाल, (पुं०) लाख के रंग का घोड़ा।

लाग–(हिं०स्त्री०)सम्पर्क, लगाव, युक्ति, उपाय, प्रेम, उपराचढ़ी, जादू, टोना, विशेष कौशल की स्वांग जिसकी रचना जल्दी समझमें न आवे, ब्राह्मण, भाट, नाई आदि को शुभ अवसर पर देने का नियत धन, जिस चेप से चेचक आदि का टीका लगाया जाता है, भूमिकर, एक प्रकार का नाच, धातु को फूंककर बनाया हुआ भस्म, बैर, (क्रि० वि०) पर्यन्त, तक;

लागडांट–(हिं०स्त्री०)प्रतिस्पर्धा, शत्रुता, नाचने की एक क्रिया।

लागत–(हिं०स्त्री०) वह व्यय जो किसी वस्तु के तैयार करने में लगे।

लागना–(हिं०क्रि०) देखो लगना।

लागि–(हिं०अव्य०) निमित्त, लिये, हेतु, से, (क्रि०वि०) पर्यन्त, तक।

लागुडिक–(सं० वि०) जिसके हाथ में लाठी हो, पहरा देने वाला।

लागू–(हिं० वि०) लगने या प्रयोग में आने योग्य।

लागे–(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये।

लाघव–(सं०नपुं०) लघु होने का भाव, अल्पत्व, कमी, लघुता, अल्पता, हाथ की चातुरी, आरोग्यता, (अव्य०)सहज में जल्दी से।

लाघविक–(सं०वि०)संक्षिप्त, थोड़ा।

लाघवी–(हिं०स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी।

लाङ्ग–(सं०स्त्री०) लांग, काछ।

लाङ्गल–(सं०पुं०) खेत जोतने का हल, शिश्न, ताल का वृक्ष, एक प्रकार का फूल। लाङ्गलकी–(सं०स्त्री०)कलियारी नामक विषैला पौधा। लाङ्गलग्रह–(सं० पुं०) किसान, खेतिहर। लाङ्गलग्रहण–(सं०नपुं०)हल पकड़ना। लाङ्गलचक्र–(सं०नपुं०)फलित ज्योतिष का एक प्रकार का चक्र। लाङ्गलदण्ड (सं०पुं०)हरीस। लाङ्गलध्वज–(सं०पुं०) बलराम। लाङ्गलपद्धति–(सं० स्त्री०) सीता। लाङ्गलि–(सं०पुं०) मजीठ, गजपीपल, कंवाच, चव्य, चाव। लाङ्गलिक–(सं०पुं०) एक प्रकार का स्थावर विष। लाङ्गलिकी–(सं०स्त्री०) कलियारी नामक पौधा।

लाङ्गली–(सं० पुं०) बलराम, नारियल (स्त्री०) मजीठ, गजपीपल। लाङ्गुल, लाङ्गूल–(सं०नपुं०) पूंछ, शिश्न।

लाङ्गूली–(सं०पुं०)बन्दर, केंवाच।

लाची–(हिं०स्त्री०) इलायची। लाचीदाना (हिं०पुं०) इलायची दाना।

लाछन–(हिं०पुं०) देखो लाञ्छन।

लाछी–(हिं०स्त्री०) लक्ष्मी।

लाज–(हिं०स्त्री०) लज्जा, शर्म, हया।

लाजक–(सं०पुं०) धान का लावा।

लाजना–(हिं० क्रि०) लज्जित होना, शरमाना।

लाजपेया–(सं०स्त्री०) लावे का माड़।

लाजभक्त–(सं०पुं०) लावे का भात।

लाजमण्ड–(सं०पुं०) लावा पका कर इसमें से निकाला हुआ मांड़।

लाजवंत–(हिं०वि०)जिसको लज्जा हो।

लाजवती–(हिं०स्त्री०) लाजालू नाम का पौधा।

लाजवर्णा–(सं० स्त्री०) वह फुंसी जो मकड़ी के मूतने से निकल आती है।

लाजशक्तु–(सं०पुं०) लावे का सत्तू।

लाजा–(सं० स्त्री०) भूना हुआ धान, लावा, चावल, (पुं०) भूमि।

लाञ्छन–(सं० नपुं०) चिह्न, धब्बा, दोष, कलंक।

लाञ्छनी–(सं०स्त्री०) देखो लाञ्छन।

लाट–(हिं०स्त्री०) मोटा ऊंचा खंभा, वर्तमान गुजरात प्रदेश का प्रान्त भाग, इस स्थान के अधिवासी, (पुं०) अंग्रेजी 'लॉर्ड' शब्द का अपभ्रंश।

लाटपत्र, लाटपर्ण–(सं०पुं०) दारचीनी।

लाटानुप्रास–(सं०पुं०) वह शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है, परन्तु अन्वय के उलट फेर से भिन्न अर्थ निकलता है।

लाटिका–(सं०स्त्री०) रचनापद्धति की वह रीति जिसमें मृदु पदविन्यास होता है और अधिक संयुक्त पद और बड़े बड़े समाज नहीं होते।

लाटी–(हिं०स्त्री०) ओठों तथा मुख का सूख जाना।

लाठ–(हिं०पुं०) देखो लाट।

लाठी–(हिं०स्त्री०) लकड़ी, डंडा; लाठी चलाना–लाठी से मारपीट करना।

लाड़–(हिं०पुं०)बच्चों का प्यार या दुलार

लाड़लड़ा–(हिं०पुं०) वृक्षों पर रहने वाला एक प्रकार का सर्प।

लाड़लड़ैता–(हिं०वि०) अधिक प्यारा,

लाड़ला–(हिं०वि०) जिसका लाड़ किया जाय, दुलारा; लाड़ली–(हिं०वि०स्त्री०) दुलारी।

लाड़ू–(हिं०पुं०) लड्डू, मोदक।

लाढ़िया–(हिं०वि०) वह दलाल जो दुकानदारों से मिला रहता है और गाहकों को धोखा देकर उस दुकानदार का माल बिकवाता है; लाढ़ियापन–(हिं०पुं०)धूर्तता, चालाकी

लाण्ठणी–(सं०स्त्री०)व्यभिचारिणी स्त्री;

लात–(हिं०स्त्री०) पैर, पांव, पैर का आघात; लात मारना–तुच्छ जानकर छोड़ देना।

लाथ–(हिं०पुं०) बहाना।

लाद–(हिं०स्त्री०) लादने की क्रिया, ढेंकुल के दूसरे छोर पर रक्खा हुआ बोझ, पेट, उदर, आँत, अँतड़ी।

लादना–(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ पर बहुत सी वस्तुओं को रखना, गाड़ी या पशु के पीठपर भार रखना, पीठपर उठा लेना, किसी पर किसी बात का भार रखना।

लादिया–(हिं०पुं०) बोझ लादने वाला।

लादी–(हिं०स्त्री०) कपड़ों की गठरी जो पशु की पीठपर लादी जाती है।

लाधना–(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, पाना

लानंग–(हिं०पुं०) एक प्रकार का अंगूर

लानती–(हिं० पुं०) वह जो सर्वदा फटकार सुनता है।

लाना–(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को उठाकर अपने साथ लेकर आना, प्रत्यक्ष करना, सामने रखना, उत्पन्न करना, जलाना, आग लगाना।

लाने–(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये।

लाप–(सं०पुं०) कथन, वार्ता।

लापता–(हिं०वि०) जिसका पता न हो, खोया हुआ, गुप्त।

लापसी–(हिं०स्त्री०) देखो लपसी।

लापी–(सं०वि०) कहने वाला।

लाप्य–(सं०वि०) कहने योग्य।

लाबर–(हिं०वि०) देखो लबार।

लाभ–(सं० पुं०) प्राप्ति, मिलना, उपकार, भलाई; लाभकारक–(सं०वि०) लाभदायक; लाभकारी–(सं० वि०) लाभ करने वाला; लाभदायक–(सं०वि०) गुणकारी; लाभमद–(सं०पुं०) वह मद जिससे मनुष्य अपने को श्रेष्ठ और दूसरों

को हीन समझता है ; लाभलिप्सा–(सं०स्त्री०) प्राप्त करने की इच्छा ; लाभलिप्सु–(सं०वि०) पाने की इच्छा करने वाला ।
लाभ्य–(सं०नपुं०) लाभ ।
लाम–(हिं०पुं०) सेना, बहुत से मनुष्यों का समूह ।
लामज–(हिं०पुं०) खस की तरह की एक घास ।
लामन–(हिं०पुं०) लटकना ।
लामय–(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास ।
लामा–(हिं०पुं०) तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य, (हिं०पुं०) ऊंट की तरह का एक पशु, (वि०) लम्बा ।
लामी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का लम्बा फल जिसकी तरकारी बनती है ।
लामे–(हिं०क्रि०वि०) दूर पर ।
लाय–(हिं०स्त्री०) आग की ज्वाला या लपट ।
लायची–(हिं०स्त्री०) देखो इलायची ।
लार–(हिं०स्त्री०) वह पतला लसदार थूक जो मुंह में से तार के रूप में निकलता है, पंक्ति, लासा, (क्रि०वि०) पीछे, साथ; लार लगाना–फँसाना ;
लारू–(हिं०पुं०) लड्डू ।
लाल–(हिं०पुं०) छोटा प्रिय बालक, प्यारा बच्चा, पुत्र, बेटा, श्रीकृष्ण का एक नाम, दुलार, प्यार, लार, लाल रङ्ग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया, मानिक नाम का रत्न, (वि०) लाल रङ्ग का, अतिक्रुद्ध, वह जो खेल में सबसे पहले जीत गया हो ; लाल पड़ना या होना–अति क्रुद्ध होना; लाल पीले होना–क्रोध करना ।
लाल अम्बारी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पटुवा ; लाल अगिन–(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी; लाल आलू–(हिं०पुं०) रतालू, अरुई ; लालक–(सं०वि०) प्यार करने वाला ; लाल चन्दन–(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी कुछ कालापन लिये लाल होती है, देवीचन्दन ।
लालच–(हिं०पुं०) किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र लालसा, लोलुपता, लोभ;
लाल चोंच–(हिं०पुं०) शुक, तोता ।
लालची–(हिं०वि०) अति लोभी, जिसको बहुत लालच हो ।
लालचीनी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का कबूतर ।
लालटेन–(हिं०स्त्री०) प्रकाश करने का एक यन्त्र जिसमें तेल भरने के लिये एक डब्बा होता है तथा जलाने के लिये बत्ती लगी रहती है जो ऊपर नीचे हो सकती है, हवा से न बुझने के लिये इसमें कांच का पारदर्शक कुब्बा लगा रहता है, कन्दील ।
लालड़ी–(हिं०पुं०) लाल रंग का एक प्रकार का नगीना ।
लालन–(सं०नपुं०) प्रेम पूर्वक बालकों का आदर, लाड़, प्यार, (हिं०पुं०) प्रिय बालक, कुमार, बालक, प्यारा बच्चा, (स्त्री०) चिरौंजी; लालन पालन–(सं०नपुं०) भरण पोषण ; लालना–(हिं०क्रि०) लाड़ करना; लालनीय–(सं०वि०) दुलार या प्यार करने योग्य
लालपानी–(हिं०पुं०) मद्य ।
लाल बुझक्कड़–(हिं०पुं०) वह जो कोई बात जानता न हो केवल अटकल पच्चू आशय लगाता हो ।
लालबेग–(हिं०पुं०) लाल रंग का एक प्रकार का परदार कीड़ा ।
लालमन–(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण, एक प्रकार का लाल तोता जिसका शरीर लाल, डैने हरे, चोंच गुलाबी और दुम काली होती है ।
लालमिर्च–(हिं०स्त्री०) मिरचा, मरचा ।
लालमी–(हिं०पुं०) खरबूजा ।
लालमुंहा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का लाल निनावां जो मुख के भीतर हो जाता है ।
लालमूली–(हिं०स्त्री०) शलजम ।
लालयितव्य–(सं०वि०) लालन पालन करने योग्य ।
लालरी–(हिं०स्त्री०) देखो लालड़ी ।
लालस–(सं०पुं०) लालसा, चाह ।
लालसफरी–(हिं०पुं०) अमरूद ।
लालसमुद्र–(हिं०पुं०) लाल सागर ।
लालसर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी ।
लालसा–(सं०स्त्री०) किसी पदार्थ को प्राप्त करने की अधिक अभिलाषा, उत्सुकता, गर्भावस्था में उत्पन्न होने वाली अभिलाषा, दोहद ।
लाल सागर–(हिं०पुं०) भारतीय महासागर का वह अंश जो अरब और अफ्रीका के मध्य में पड़ता है और स्वेज की नहर तक फैला है ।
लालसिखी–(हिं०पुं०) मुरगा ।
लालसिरा–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बत्तक जिसका सिर लाल होता है ।
लालसी–(हिं०वि०) अभिलाषी, उत्सुक ।
लाला–(सं०स्त्री०) मुख से निकलने वाली लार, थूक ; (हिं०पुं०) आदर सूचक एक सम्बोधन का शब्द, महाशय, इस शब्द का व्यवहार पंजाब में अधिकतर होता है, कायस्थ जाति सूचक शब्द, छोटे प्रिय बच्चे के लिये संबोधन ।
लालाट–(सं०वि०) ललाट संबंधी ।
लालामिक–(सं०वि०) सौन्दर्य लेने वाला,
लालायित–(सं०वि०) जिसके मुख में लालच के कारण पानी भर आया हो, ललचाया हुआ ।
लालास्रव–(हिं०पुं०) लूता, मकड़ी ।
लालित–(सं०वि०) पाला पोसा हुआ, प्यारा, दुलारा ।
लालित्य–(सं०नपुं०) ललित होने का भाव, मनोहरता, सुन्दरता ।
लालिमा–(सं०स्त्री०) अरुणता, ललाई ।
लाली–(सं०स्त्री०) लाल होने का भाव, ललाई, प्रतिष्ठा ।
लालुक–(सं०स्त्री०) गले में पहरने का एक प्रकार का हार ।
लाले–(हिं०पुं०) लालसा, अभिलाषा; किसी वस्तु के लिये लाले पड़ना–किसी वस्तु के लिये बड़ी आकांक्षा होना ।
लाल्य–(सं०वि०) लालन करने योग्य ।
लाल्हा–(हिं०पुं०) मरसे का साग ।
लाव–(सं०पुं०) लवा नामक पक्षी, (हिं०स्त्री०) मोटी डोरी, रस्सा, उतनी भूमि जितनी एक दिनमें सींची जा सके, (पुं०) वह ऋण जो किसी की वस्तु को अपने पास रखकर दिया जावे ।
लावक–(हिं०पुं०) ढोल के आकार का एक प्राचीन बाजा ।
लावण–(सं०वि०) लवण संबंधी, नमकीन
लावणिक–(हिं०पुं०) नोन बेंचने वाला
लावण्य–(सं०नपुं०) लवणत्व, लवण का भाव, अत्यन्त सुन्दरता, शील की उत्तमता ।
लावण्या–(सं०स्त्री०) ब्राह्मी बूटी ।
लावनता–(हिं०स्त्री०) देखो लावण्य ।
लावना–(हिं०क्रि०) लगाना, स्पर्श करना । जलाना, आग जलाना, देखो लाना ।
लावनि–(सं०स्त्री०) सौन्दर्य, लावण्य ।
लावनी–(हिं०स्त्री०) गाने का एक प्रकार का छन्द, इसको ख्याल भी कहते हैं ।
लावा–(सं०पुं०) लवा नामक पक्षी, (हिं०पुं०) भूना हुआ धान, ज्वार, बाजरा, रामदाना आदि, खील, लाई ।
लावापरछन–(हिं०पुं०) विवाह के समय की एक रीति ।
लाविका–(सं०स्त्री०) लवा नामक पक्षी ।
लाष–(हिं०पुं०) देखो लाख ।
लषना–(हिं०स्त्री०) देखो लखना ।
लास–(सं०पुं०) एक प्रकार का नाच, मटक, जूस ।
लासक–(सं०पुं०) नाचने वाला, मोर ।
लासकी–(सं०स्त्री०) नाचने वाली स्त्री;
लासन–(हिं० पुं०) जहाज बांधने का मोटा रस्सा ।
लासा–(हिं० पुं०) कोई लसदार या चिपचिपी वस्तु, वह चिपचिपा पदार्थ जिससे बहेलिये चिड़ियों को फँसाते हैं ।
लासि–(हिं०पुं०) देखो लास्य ।
लासिका–(सं० स्त्री०) नर्तकी, नाचने वाली स्त्री । लासिनी–(सं० स्त्री०) नाचने वाली स्त्री ।
लासी–(हिं०स्त्री०) गेहूँ की उत्पत्ति को हानि पहुँचाने वाला एक महीन कीड़ा
लास्य–(सं०नपुं०) भाव और ताल सहित नाच जिसमें श्रृङ्गार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता है, स्त्रियों का नाच । लास्यक–(सं०नपुं०) नृत्य, नाच; लास्या–(सं० स्त्री०) नाचने वाली स्त्री ।
लाह–(हिं० स्त्री०) लाख, चपड़ा, चमक, आभा (पुं०) लाभ ।
लाहन–(हिं०पुं०) वह महुआ जो मद्य खींचने के बाद बच जाता है जो पशुओं को खिलाया जाता है, खमीर जिससे मद्य बनता है ।
लाहल–(हिं०पुं०) देखो लाहौल ।
लाही–(हिं० स्त्री०) लाल रंग का वह छोटा कीड़ा जो वृक्षों पर लाह उत्पन्न करता है, इसी प्रकार का कीड़ा जो उपज को बहुत हानि पहुँचाता है, लावा, सरसों, (वि०) लाहे के रंग का, मटमैले लाल रंग का ।
लाहु–(हिं०पुं०) लाभ ।
लिंग–(हिं०पुं०) देखो लिङ्ग ।
लि–(सं०पुं०) शान्ति, नाश, शेष, अन्त, हाथ में पहरने का एक आभूषण ।
लिए–(हिं०) हिन्दी के कारक का एक चिह्न जो सम्प्रदान में प्रयोग किया जाता है, जिस शब्द के साथ यह लगाया जाता है उसके अर्थ या निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित होता है, यथा–मैं तुम्हारे लिए पुस्तक लाया हूँ ।
लिकिन–(हिं०पुं०) मटमैले रंग की एक बड़ी चिड़िया ।
लिकुच–(सं०नपुं०) बड़हर का वृक्ष ।
लिक्का–(सं०स्त्री०) जूं का अंडा, लीख ।
लिक्खाड़–(हिं०पुं०) बहुत लिखने वाला, बड़ा भारी लेखक ।
लिक्षा–(सं०स्त्री०) जूं का अंडा, लीख, एक सूक्ष्म परिमाण ।
लिखत–(हिं०स्त्री०) लिखी हुई बात, लिखधार (पुं०) लेखन ।
लिखन–(सं०नपुं०) लिपि, लिखावट ।
लिखना–(हिं० क्रि०) किसी नुकीली वस्तु से रेखा रूप में चिह्नित करना, अंकित करना, स्याही में डुबा कर लेखनी से आकृति बनाना, लेख आदि की रचना करना । लिखनी–देखो लेखनी । लिखवाई–(हिं०स्त्री०) देखो लिखाई । लिखवाना–(हिं०क्रि०) लिखने का काम दूसरे से कराना ।
लिखाई–(हिं०स्त्री०) लिखने का कार्य, लेख, लिपि, लिखने का ढंग, लिखावट, लिखने का शुल्क । लिखाना–(हिं०क्रि०) अंकित कराना, दूसरे से लिखने का काम कराना । लिखापढ़ी–(हिं०स्त्री०) चिट्ठियों का आना जाना, पत्र व्यवहार, किसी विषय को कागज पर लिखकर पक्का करना ।
लिखावट–(हिं०स्त्री०) लिखे हुए अक्षर आदि, लिखने का ढंग, लेख प्रणाली, लेख । लिखित–(सं० वि०) अंकित, लिखा हुआ; (पुं०) लिपि, लेख, प्रमाणपत्र ।
लिखितक–(हिं० पुं०) एक प्रकार के प्राचीन चौखूटे अक्षर जो मध्य एशिया के शिलालेखों में पाये गये हैं ।
लिखेरा–(हिं०पुं०) लिखने वाला, लेखक ।
लिख्या–(सं० स्त्री०) लीख, एक परिमाण

लिच्छवि–(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश।

लिङ्ग–(सं०नपुं०) चिह्न, लक्षण, साधक, हेतु, सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति, व्याकरण में वह भेद जिससे स्त्री पुरुष का पता लगता है, मीमांसा के छ लक्षण, सामर्थ्य, पुरुष की गुप्त इन्द्रिय; शिश्न। लि क–(सं०पुं०) कैथ का पेड़। लिङ्गदेह–(सं० पुं०) वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी अपने किये हुए कर्मों का फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है। लिङ्गधारण–(सं०नपुं०) वंश या संप्रदाय के चिह्न धारण करना। लिङ्गधारी–(सं०वि०) शिव का लिङ्ग धारण करने वाला, चिह्नधारी। लिङ्गपीठ–(सं०नपुं०) मन्दिर की वह चौकी जिस पर देव लिंग स्थापित रहता है; लिङ्गमूर्ति–(सं०पुं०) शिव। लिङ्गशरीर–(सं० पुं०) सूक्ष्म शरीर। लिङ्गरोग–(सं०पुं०) शिश्न का एक रोग; लिङ्गवत्–(सं०वि०) चिह्न युक्त; लिङ्गवर्ध–(सं०पुं०) कैथ का पेड़। लिङ्गवर्धन–(सं०पुं०) शिश्न की वृद्धि; लिङ्गवर्धी–(सं०वि०) शिश्न की वृद्धि करने वाला। लिङ्गवर्धिनी–(सं०स्त्री०) अपामार्ग चिचिड़ा। लिङ्गविपर्यय–(सं० पु०) व्याकरण में लिङ्ग का परिवर्तन। लिङ्गवेदी–(सं० स्त्री०) वह चौकी जिस पर कोई देवमूर्ति स्थापित की जाती है। लिङ्गस्थ–(सं०पुं०) ब्रह्मचारी।

लिङ्गाग्र–(सं०पुं०) शिश्न का अग्र भाग।

लिङ्गानुशासन–(सं०नपुं०) व्याकरण में शब्दों के लिंग निरूपण करने के नियम।

लिङ्गार्चन–(सं०नपुं०) शिव लिंग का पूजन। लिङ्गालिका–(सं०स्त्री०) छोटी चुहिया, मुसरी।

लिङ्गी–(सं०पुं०) हाथी, (वि०) चिह्न या वाला।

लिचेन–(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास।

लिच्छवि–(सं०पुं०) भारत का एक प्राचीन राजवंश।

लिटाना–(हिं०क्रि०) लेटने की क्रिया कराना।

लिट्ट–(हिं०पुं०) रोटी जो बिना तवे के आग पर ही सेंकी जावे, बाटी।

लिठोर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का नमकीन पकवान।

लिडार–(हिं०वि०) डरपोक, कायर।

लिपटना–(हिं० क्रि०) चिपटना, सट जाना, तन्मय होकर किसी कार्य में प्रवृत्त होना, गले लगाना, आलिंगन करना। लिपटाना–(हिं०क्रि०) एक वस्तु को दूसरी वस्तु से सटाना, चिमटाना, गले लगाना, आलिंगन करना।

लिपड़ा–(हिं०पुं०) लुगड़ा, कपड़ा, (वि०) लेई की तरह गीला और चिपचिपा।

लिपना–(हिं०क्रि०) किसी रंग या गीली वस्तु से पोता जाना, किसी गीली वस्तु का फैल जाना। लिपवाना–(हिं०क्रि०) लीपने पोतने का काम दूसरे से कराना। लिपाई–(हिं०स्त्री०) लीपने पोतने की क्रिया या भाव, लीपने की मजदूरी। लिपाना–(हिं० क्रि०) रंग अथवा किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना, पुताना, घुली हुई मिट्टी गोबर आदि का लेप कराना।

लिपि–(सं०स्त्री०) वर्ण या अक्षर के अंकित चिह्न, लिखावट, वर्ण अंकित करने की पद्धति, लिखे हुए अक्षर। लिपिकर–(सं०पुं०) लेखक, लिखने वाला; लिपिकार–(सं०पुं०) लेखक। लिपिज्ञ–(सं० वि०) सुन्दर लिखने वाला। लिपिन्यास–(सं० पुं०) पत्र आदि की लिखावट। लिपिफलक–(सं०पुं०) पत्थर धातु आदि की पटिया जिस पर अक्षर खोदे जाते हैं। लिपिबद्ध–(सं० वि०) लिखित, लिखा हुआ; लिपिशाला–(सं०स्त्री०) पाठशाला।

लिप्त–(सं०वि०) भक्षित, खाया हुआ, पोता हुआ, मिला हुआ, अनुरक्त, तत्पर, संलग्न, पतली तह चढ़ाया हुआ; लिप्तहस्त–(सं०वि०) जिसका हाथ रुधिर से लथपथ हो।

लिप्ता–(सं०स्त्री०) काल का एक परिमाण जो प्रायः एक मिनट के बराबर माना जाता है; लिप्ताङ्ग–(सं० वि०) जिसका शरीर सुगन्धित द्रव्यों से लिपा गया हो।

लिप्सा–(सं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा, लालच। लिप्सु–(सं०वि०) लाभ की इच्छा करने वाला। लिप्सुता–(सं०स्त्री०) पाने की इच्छा।

लिबड़ी–(हिं०स्त्री०) कपड़ा लत्ता।

लिबि, लिबिकर–(सं०) देखो लिपि लिपिकर; लिबी–(सं०स्त्री०) लिपि, लिखावट।

लिम्पट–(सं०नपुं०) लम्पट।

लिलाट, लिलार–(हिं०पुं०) देखो ललाट

लिलाही–(हिं०पुं०) हाथ का बटा हुआ देशी सूत।

लिव–(हिं०स्त्री०) लौ, लगन।

लिवाना–(हिं०क्रि०) लेनेका काम दूसरे से कराना, थमाना।

लिवाल–(हिं० पु०) मोल लेने वाला।

लिवैया–(हिं० पुं०) लेने वाला।

लिसोड़ा–(हिं०पुं०) एक मझोले आकार का वृक्ष, बेर के बराबर इसके फल गुच्छों में लगते हैं।

लिहाड़ा–(हिं०वि०) नीच, निकम्मा।

लिहाड़ी–(हिं०स्त्री०) उपहास, निन्दा।

लिहित–(हिं०वि०) चाटता हुआ।

लीक–(हिं० स्त्री०) चिह्न, लकीर, रेखा, गाड़ी के पहिये से पड़ी हुई लकीर, ढुर्री, गिनती के लिए लगाया हुआ चिह्न, बँधी हुई मर्यादा, यश, प्रतिष्ठा, हद, प्रतिबन्ध, भूरे रंग की एक चिड़िया; रीति, प्रथा, चाल; लीक करके–लकीर खींचकर; लीक खींचना–किसी विषय में दृढ़ होना; लीक पीटना–प्रचलित प्रथा के अनुसार चलना।

लीक्षा–(सं०स्त्री०) लिक्षा, लीख।

लीख–(हिं० स्त्री०) जूं का अण्डा, एक छोटा परिमाण।

लीचड़–(हिं० वि०) जल्दी से न छोड़ने वाला, सिमटने वाला, सुस्त।

लीची–(हिं० स्त्री०) एक सदाबहार वृक्ष जिसका फल खानेमें मीठा होता है।

लीझी–(हिं०स्त्री०) देह में मले हुए उबटन के साथ छूटी हुई मैल की बत्ती, सीठी जो रस चूस लेने पर बची हो, (वि०) नीरस, निःसार।

लीद–(हिं०स्त्री०) घोड़े, गधे, ऊंट, हाथी आदि पशुओं का मल।

लीन–(सं० वि०) तन्मय, मग्न, विचार में डूबा हुआ, तत्पर।

लीनता–(सं०स्त्री०) तत्परता।

लीपना–(हिं०क्रि०) मिट्टी गोबर आदि की पतली तह चढ़ाना, पोतना; लीप पोतकर बराबर करना–पूर्णरूप से नष्ट करना।

लीम–(हिं०पुं०) एक प्रकार का चीड़ का पेड़ लीमू, नीबू।

लील–(हिं० वि०) नीला, नीले रंग का, (पुं०) नील।

लीलना–(हिं०क्रि०) पेट में उतारना, निगलना।

लीलया–(सं०क्रि०वि०) खेल में, सहज में, बिना परिश्रम के।

लीला–(सं०स्त्री०) क्रीड़ा, खेल, विचित्र कार्य, प्रेम विनोद, नायिका का एक भाव, केवल मनोरंजनके लिये किया हुआ कार्य, कोई विचित्र कार्य, अवतारों का अभिनय, चौबीस मात्राओं का एक छन्द, बारह मात्राओं का एक छन्द, (हिं०पुं०) काले रंग का घोड़ा; लीला कमल–(सं०नपुं०) क्रीड़ा के लिये हाथ में लिया हुआ कमल।

लीलाकर–(सं० पुं०) एक प्रकार का छन्द; लीला कलह–(सं०पुं०) लीला का भाव; लीलाखेल–(सं० वि०) खेलने वाला; लीलाखेली–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते हैं; लीलागार–(सं०नपुं०) खेल का घर; लीलागृह–(सं० नपुं०) खेल का घर; लीलागेह–(सं०नपुं०) क्रीड़ागार।

लीलाङ्ग–(सं०वि०) अति चंचल, सर्वदा खेलने वाला।

लीलातनु–(सं०स्त्री०) वह स्वांग जो खेल दिखलाने के लिये धारण की जाती है

लीला तामरस–(सं० नपुं०) देखो लीला कमल; लीलादग्ध–(सं०वि०) जो अपनी इच्छासे भस्म होगया हो; लीलाद्रि–(सं०पुं०) लीलाचल; लील नटन–(सं० नपुं०) कौतुक का नाच; लीलापद्म–(सं०नपुं०) क्रीड़ा कमल; लीलापर्वत–(सं०पुं०) लीलाचल; लीला पुरुषोत्तम–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।

लीलाब्ज–(सं०नपुं०) लीला कमल।

लीलावधूत–(सं०वि०) स्वच्छन्द विचरने वाला; लीलावापी–(सं०स्त्री०) वह बावली जिसमें क्रीड़ा की जाय;

लीला भरण–(सं०नपुं०) पद्म की माला से बना हुआ गहना; लीलामय–(सं०वि०) क्रीड़ाके भावोंसे परिपूर्ण। लीलामात्र–(सं०अव्य०) खेलते खेलते;

लीलाम्बुज–(सं० नपुं०) लाल कमल;

लीलारविन्द–(सं० नपुं०) क्रीड़ा, खेल, लाल कमल; लीलावज्र–(सं०नपुं०) एक प्रकारका प्राचीन अस्त्र; लीलावतार–(सं०पुं०) वह अवतार जिसमें विष्णुने लीला दिखलाई थी; लीला मनुष्य–(सं०पुं०) छद्मवेशी मनुष्य;

लीलावती–(सं०स्त्री०) विलासवती, (स्त्री०) प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी का नाम जिन्होंने गणित की एक पुस्तक लिखी थी; लीलावेश्म–(सं०नपुं०) लीलागृह; लीलासाध्य–(सं०वि०) सहजमें होने वाला; लीला स्थल–(सं० पुं०) क्रीड़ा करने का स्थान।

लीली–(हिं०वि०) देखो नीली।

लीलोद्यान–(सं०नपुं०) देववन।

लीलोपवती–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह गुरु वर्ण होते हैं।

लुंगाड़ा–(हिं०पुं०) नीच, लुच्चा।

लुंगी–(हिं० स्त्री०) कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा, (स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।

लुंचन–देखो लुञ्चन।

लुंज–(हिं०वि०) बिना हाथ पैर का, लंगड़ा लूला, बिना पत्ते का वृक्ष, ठूंठ; लुंठन–देखो लुण्ठना, लुंड; लुंडमुंड–(हिं० पुं०) बिना सिर का धड़, कबंध।

लुंडा–(हिं०वि०) जिसकी पूंछ और पर झड़ गये हों या उखाड़ लिये गये हैं, जिसकी पूंछ पर बाल न हों, (पुं०) लपेटे हुए सूत की पिंडी।

लुआठा–(हिं०पुं०) वह लकड़ी जिसका एक छोर जलता हो; लुआठी–(हिं०स्त्री०) सुलगती हुई लकड़ी।

लुआर–(हिं०स्त्री०) लू।

लुकंजन–(हिं० पुं०) देखो लोपाञ्जन।

लुक–(हिं० पुं०) कोई चमकदार लेप, आग की लपट, लौ।

लुकठी–(हिं०स्त्री०) देखो लुआठी।

लुकना–(हिं०क्रि०) आड़में छिप जाना।

लुकाट–(हिं० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके आमड़े के बराबर फल खटमीठे होते हैं।

लुकाना, लुकोना–(हिं०क्रि०) आड़ में

रखना-, छिपाना।
लुकविद्या–(सं०स्त्री०) गुप्त विद्या।
लुक्कायित–(सं०वि०) लुकाया हुआ, छिपाया हुआ।
लुकेठा–(हिं०पुं०) देखो लुआठा।
लुख–(हिं० स्त्री०) सरपत की तरह की एक प्रकार की घास।
लुखिया–(हिं०स्त्री०) धूर्त स्त्री, वेश्या, रंडी
लुगड़ा–(हिं०पुं०) देखो लूगड़ा; लुगड़ी–(हिं०स्त्री०) देखो लूगड़ी।
लुगदा–(हिं० पु०) किसी गिली वस्तु का लोंदा; लुगदी–(हिं०स्त्री०) गीली वस्तु का छींटा गोला।
लुगरा–(हिं०पुं०) वस्त्र, कपड़ा, फटा पुराना वस्त्र, लत्ता; लुगरी–(हिं०स्त्री०) फटी पुरानी धोती।
लुगाई–(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत।
लुगी–(हिं०स्त्री०) पुराना वस्त्र।
लुग्गा–(हिं०पुं०) देखो लूगा, वस्त्र।
लुंग–(सं०पुं०) बिजौरा नीबू का पेड़।
लुचकना–(हिं०क्रि०) झटके से खींचना; लुचवाना–(हिं० क्रि०) नोचवाना, उखड़वाना।
लुचुई–(हिं० स्त्री०) मैदे की पतली पूरी, लूची।
लुच्चा–(हिं०वि०) दुराचारी, कुचाली खोटा, चाई, नीच।
लुच्ची–(हिं०वि०स्त्री०) खोटी, नीच।
लुञ्चन–(सं० पुं०) उखाड़ना, नोचना, काटना, तराशना, चुटकी से पकड़ कर खींचना; लुञ्चित–(सं० वि०) नोचा हुआ।
लुटंत–(हिं०स्त्री०) लूट।
लुटकना–(हिं० क्रि०) देखो लटकना।
लुटना–(हिं०क्रि०) दूसरे से लूटा जाना, डाकुओं के हाथ धन खोना, सर्वस्व नाश होना; लुटरी–(हिं० वि०) घुंघराली; लुटाना–(हिं० क्रि०) दूसरे को लूटने देना, डाकुओं को छीनने देना, बिना मूल्य के देना, नष्ट करना, व्यर्थ फेंकना या व्यय करना, बहुतायत से बांटना, अति दान करना; लुटावना–(हिं० क्रि०) देखो लुटाना।
लुटिया–(हिं० स्त्री०) धातु का छोटा छोटा लोटा।
लुटेरा–(हिं० पुं०) डाकू।
लुट्टुर–(हिं०स्त्री०) कान कटी हुई भेंड़।
लुठन–(सं० नपुं०) घोड़े का भूमि पर लोटना; लुठना–(हिं० क्रि०) भूमिपर लोटना, लुड़कना; लुठाना–(हिं०क्रि०) भूमि पर लोटना; लुठित–(सं० वि०) भूमि पर बारंबार लेटता हुआ; लुड़कना–(हिं० क्रि) देखो लुढ़कना; लुड़काना–(हिं० क्रि०) देखो लुटकाना; लुड़की–(हिं०स्त्री०) देखो लुढ़की; लुड़खुड़ाना–(हिं० क्रि०) देखो लड़खड़ाना।
लुढ़कना–(हिं०क्रि०) गेंदकी तरह भूमि पर चक्कर खाना, ढुलकना, गिरकर नीचे ऊपर होते हुए गमन करना; लुढ़काना–(हिं०क्रि०) भूमि पर इस प्रकार चलाना कि नीचे ऊपर होता हुआ कुछ दूर तक बढ़ता जाय।
लुढ़ना–(हिं० क्रि०) देखो लुड़कना।
लुढ़ाना–(हिं०क्रि०) देखो लुड़काना;
लुढ़ियाना–(हिं०क्रि०) गोल बत्ती की तरह की सिलाई करना।
लुण्टक–(सं०पुं०) एक प्रकार का साग।
लुण्टा–(सं० स्त्री०) लूटना, चुराना; लुण्ठाक–(सं० पुं०) तस्कर, चोर; लुण्टाकी–(सं० स्त्री०) चोर स्त्री; लुण्टक–(सं०स्त्री०) लुटेरा। लुण्ठन–(सं०नपुं०) लूटना, चुराना। लुण्डा–(सं०स्त्री०) लूटना। लुण्ठाक–(सं०पुं०) चोर, ठग, कौवा। लुण्ठि–(सं०स्त्री०) लूटपाट, चोरी। लुण्ड–(सं० पुं०) चोर, लुण्ड मुण्ड–(सं० वि०) बिना हाथ पैर का लंगडा। लुण्डिका–(सं० स्त्री०) लपेटे हुए सूत की पिंडी या गोली। लुण्डी–(सं०स्त्री०) लपेटे हुए सूत की गोली
लुतरा–(हिं० वि०) पिशुन, नटखट, लुतरी–(हिं० वि० स्त्री०) पिशुन स्त्री।
लुत्थ–(हिं०स्त्री०) देखो लोथ।
लुदरा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान।
लुनना–(हिं०क्रि०) खेत की तैयार उपज को काटना, हटाना, दूर करना।
लुनाई–(हिं०स्त्री०) लावण्य।
लुनेरा–(हिं० पुं०) खेत की उपज काटने वाला।
लुपना–(हिं०क्रि०) छिपाना।
लुप्त–(सं०वि०) अन्तर्हित, छिपा हुआ, अदृश्य, गायब, नष्ट। लुप्तोपम–(सं०वि०) उपमाशून्य, जिसमें उपमा न हो। लुप्तोपमा–(सं० स्त्री०) वह उपमा अलंकार जिसमें कोई अंग लुप्त हो।
लुबरी–(हिं०स्त्री०) किसी तरल पदार्थके नीचे की बैठी हुई मैल, तलछट।
लुबुध–(हिं०वि०) देखो लुब्ध; लुबुधना–(हिं० क्रि०) लुब्ध होना या करना; लुबुधा–(हिं० वि०) लोभी, लालची।
लुब्ध–(सं० वि०) आकांक्षा युक्त, लोभयुक्त, मोहित, तन मनकी सुध भूला हुआ (पु०) व्याध, बहेलिया। लुब्धक–(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया, लम्पट, उत्तरी गोलार्ध का एक बहुत चमकीला तारा। लुब्धता–(सं० स्त्री०) लुब्ध का भाव या धर्म, लोभ; लुब्धना–(हिं०क्रि०) देखो लुबुधना।
लुब्धापति–(सं०स्त्री०) वह प्रौढा नायिका जो पति तथा कुल के बड़े लोगों से लज्जा करती हो।
लुभाना–(हिं०क्रि०) लुब्ध होना, मोह में पड़ना, तन मन की सुध भूलना, लालच में पड़ना, मोहित करना, मोह में डालना, ललचाना, रिझाना।
लुभित–(सं०वि०) विमोहित, लुभाया हुआ
लुम्बिका–(सं०स्त्री०) एकप्रकार का बाजा
लुम्बिनी–(सं०स्त्री०) कपिलवस्तु के पास का एक उपवन जहां पर गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे
लुरकी, लुरकी–(हिं०स्त्री०) कान में पहरने की छोटी बाली, मुरकी।
लुरना–(हिं० क्रि०) लहराना, झूलना, झुक पड़ना, प्रवृत्त होना।
लुरियाना–(हिं०क्रि०) सहसा आजाना।
लुरी–(हिं०स्त्री०) हाल की ब्याई हुई गाय
लुलन–(सं०पुं०) आन्दोलित होना झूलना
लुलना–(हिं० क्रि०) देखो लूरना।
लुलाप–(सं० पुं०) महिष, भैंसा।
लुलित–(सं०वि०) लटकता या झूलता हुआ
लुवार–(हिं०पुं०) वेगकी गरम हवा, लू।
लुशाई–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चाय
लुहना–(हिं०क्रि०) देखो लुभाना।
लुहार–(हिं०पुं०) लोहे का काम करने वाला, लोहे की वस्तु बनाने वाला, वह जाति जो लोहेकी वस्तु बनाती है
लुहारिन्–(हिं० स्त्री०) लुहार की स्त्री, लोहाइन; लुहारी–(हिं० स्त्री०) लुहार जाति की स्त्री, लोहे की वस्तु बनाने का काम।
लूंबरी–(हिं०स्त्री०) लोमड़ी
लू–(हिं०स्त्री०) ग्रीष्म ऋतुकी गरम हवा, गरम हवा का झोंका; लू लगना या मारना–ऐसी गरम हवा लगने से ज्वर उत्पन्न होना।
लूक–(हिं०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला, आग की लपट, लुआठी, लूत्ती, ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा, उल्का, टूटता तारा, लुक लगाना–आग लगाना।
लुकट–(हिं०पुं०) लुआठी।
लूकना–(हिं० क्रि०) आग लगाना, जलाना।
लूका–(हिं०पुं०) अग्नि की ज्वाला या लपेट, लुआठी, मछली फसाने की एक प्रकार की जाल।
लूकी–(हिं०स्त्री०) स्फुलिंग, चिनगारी।
लक्ष–(सं०वि०) रूक्ष, रूखा; लूखा–(हिं०वि०) रुखा, रूक्ष।
लूगा–(हिं०पुं०) वस्त्र, कपड़ा, धोती।
लूट–(हिं० स्त्री०) किसी का धन बलपूर्वक छिना जाना, डकैती, लूटने से मिला हुआ माल; लूटक–(हिं०पुं०) लूटने वाला, डाकू, लुटेरा, शोभा में बढ़ जाने वाला; लटखंद–(हिं०स्त्री०) डाका लूटमार; लूटना–(हिं०क्रि०) छीनना, बलपूर्वक नष्ट करना, धोखे से या अन्याय पूर्वक किसी का धन हर लेना, बहुत अधिक मूल्य लेना, ठगना, मोहित करना।
लूटमार, लूटपाट–(हिं० पुं०) मारपीट कर किसी का धन छीन लेना।
लूटि–(हिं०स्त्री०) देखो लूट।
लूता–(सं० स्त्री०) मकड़ी (हिं०पुं०) लुआठा; लूतातन्तु–(हिं०पुं०) मकड़े का जाला; लूतामर्कट–(सं०पुं०) एक प्रकार का बन्दर।
लूतिका–(सं० स्त्री०) मकड़ी।
लूती–(सं० स्त्री०) लुआठी।
लूनना–(हिं० क्रि०) देखो लुनना
लूम–(हिं०पुं०) संपूर्ण, जातिका एक राग
लूमना–(हिं० क्रि०) लटकना।
लूमर–(हिं०वि०) युवा, सयाना
लूमविष–(सं० पुं०) बिच्छू।
लूरना–(हिं०क्रि०) देखो लुरना।
लूला–(हिं०वि०) जिसका हाथ कटगया हो या बेकाम हो गया हो; लुंजा।
लूलू–(हिं०वि०) मूर्ख।
लूसन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का फलदार वृक्ष।
लेंड़–(हिं०पुं०) बंधी हुई मल की बत्ती, बंधा हुआ मल।
लेंड़ी–(हिं० स्त्री०) बकरी, ऊंट आदिकी मेंगनी।
लेंडौरी–(हिं०स्त्री०) चौपायों का दाना खिलाने का पात्र।
लेंहड़, लेंहड़ा–(हिं०पुं०) भेंड आदि का झुंड ले–(हिं०अव्य०) आरंभ होकर, शुरू होकर, तक, पर्यन्त।
लेई–(हिं० स्त्री०) अवलेह, गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ, लपसी, पानी में घोलकर औटाया हुआ मैदा जो कागज आदि को चिपकाने के काम में आता है, सुरखी चूना मिला कर गाढ़ा साना हुआ मसाला जिससे ईट जोड़ी जाती हैं।
लेख–(सं०पुं०) लिपि, लिखे हुए अक्षर लिखी हुई बात, लिखाई, लिखावट, लेखा, हिसाब किताब, (पुं०) देवता। (हिं०स्त्री०) पक्की बात, लकीर; लेखक–(सं० पुं०) लेखनकर्ता, लिखने वाला, ग्रन्थकार, किसी विषय पर अपना विचार प्रकट करने वाला; लेखन–(सं०नपुं०) लिखने का कार्य, लिखने की कला या विद्या, चित्र बनाना, हिसाब करना (पुं०) काश, खांसी; लेखना–(हिं०क्रि०) लिखना, गिनना, चित्र बनाना, विचार करना, लेखना जोखना–ठीक अनुमान लगाना।
लेखनी–(सं०स्त्री०) लिखने का साधन, कलम।
लेखनीय–(सं० वि०) लिखने योग्य; लेखनपत्र–(सं० नपुं०) लिखा हुआ कागज; लेखपत्रिका–(सं०स्त्री०) लिखे हुए आवश्यक पत्र; लेखप्रणाली–(सं० स्त्री०) लिखने का ढंग; लेखर्षण–(सं० पुं०) देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र; लेखशैली–(सं०स्त्री०) देखो लेखप्रणाली
लेखहार–(सं० पुं०) पत्रवाहक, चिट्ठी पत्री ले जाने वाला; लेखहारक, लेखहारी–(सं० पुं०) चिट्ठी ले जाने वाला।
लेखा–(पुं०स्त्री०) लिखावट, रेखा, लकीर (हिं० पुं०) गडना, हिसाब, किताब, गिनती, कूत, अनुमान, विचार, आय व्यय आदि का विवरण; लेखा डेवढ करना–हिसाब बन्द करना या चुकती लिखना।

लेखा बही-(हिं० स्त्री०) वह बही जिसमें रोकड़ के लेन देन का हिसाब लिखा जाता है।
लेखिका-(सं०स्त्री०) पुस्तक लिखने वाली
लेखित-(सं० वि०) लिखा या लिखवाया हुआ।
लेख्य-(सं० वि०) लेखनीय, लिखने लायक, लिखा जाने योग्य, (पुं०) लेख
लेख्यगत-(सं० वि०) लिखा हुआ, चिन्ह किया हुआ, चित्र खींचा हुआ।
लेख्यपत्र-(सं० पुं०) ताल वृक्ष, ताड़ का पेड़ (न० पुं०) लेखनीय पत्र।
लेख्यमय-(सं० वि०) लिखा हुआ।
लेख्यस्थान-(सं० पुं०) वह स्थान जहाँ पर लिखने पढ़ने का काम होता है;
लेख्यारूढ़-(सं० वि०) जिसके विषय में लिखा पढी होती हो।
लेजुर, लेजुरी-(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी, कुँवें से पानी खींचने की रस्सी।
लेट-(हिं० स्त्री०) सुरखी, चूना और कंकड़ पीटी हुई छत।
लेटना-(हिं० क्रि०) हाथ पैर तथा संपूर्ण शरीर भूमि या विस्तर पर पड़ा रखना, पौढ़ना, किसी वस्तु का एक की ओर झुक कर भूमि पर गिर जाना, मर जाना।
लेटा-(हिं० पुं०) गल्ले की मंडी
लेटाना-(हिं० क्रि०) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।
लेथो-(हिं पुं०) देखो लीथो।
लेद-(हिं०पुं०) फागुन में गाये जाने की एक प्रकार की गीत; (पुं० अ०) लोहा खरादने या पेंच आदि बनाने का यन्त्र
लेदी-(हिं०स्त्री०) जलशय के किनारे रहने वाली एक प्रकार की चिड़िया।
लेन-(हिं०पुं०) लेने की क्रिया या भाव, लहना।
लेनदेन-(हिं०पुं०) लेने और देने का व्यवहार, महाजनी। लेनहार-(हिं०वि०) लेने वाला, लहनेदार।
लेना-(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, थामना, काट कर अलगाना, स्वीकार करना, संभोग करना, संचय करना, सेवन करना, लज्जित करना, किसी कार्य का भार ग्रहण करना, पहुँचना, अगवानी करना, ऋण लेना, जीतना, भागते हुए को पकडना, मोल लेना, कार्य समाप्त करना, अपने अधिकार में करना; आड़े हाथ लेना-मर्मबेधी बात कह कर लज्जित करना; लेने के देने पड़ना-लाभ के बदले हानि होना; ले डालना-हराना; ले दे करना-कलह करना ; लेना एक न देना दो-किसी प्रकार का संसर्ग न रखना; ले मरना-अपने साथ दूसरे को नाश करना।
लेप-(सं०पुं०) लेई के समान कोई गाढ़ी वस्तु जो किसी वस्तु के ऊपर फैला कर चढ़ाई जाती है, उबटन।
लेपक-(सं०वि०) लीपने पोतने वाला।
लेपना-(हिं०क्रि०) किसी गाढ़ी गीली वस्तु की तरह चढ़ाना, फैलाकर पोतना।
लेपालक-(हिं०पुं०) दत्तक पुत्र, गोद लिया हुआ पुत्र।
लेपी-(सं०पुं०) देखो लेपक।
लेप्य-(सं०वि०) लेपनीय, लीपने पोतने योग्य। लेप्यनारी-(सं०स्त्री०) पत्थर का मिट्टी की बनी हुई स्त्री की मूर्ति। लेप्यमयी-(सं०स्त्री०) कठपुतली लेप्य स्त्री-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके अंग पर चन्दन आदि का लेप लगा हो।
लेबरना-(हिं० क्रि०) ताने में माड़ी लगाना।
लेर-(हिं०स्त्री०) लहर।
लेरुवा-(हिं० पुं०) गाय का बछड़ा।
लेलिहान-(सं०पुं०) शिव, महादेव, सर्प, (वि०) बारंबार चाटने वाला।
लेव-(हिं०पुं०) लेप, कहगिल, आंच पर चढ़ाने के पहले पात्रों की पेंदी मे मिट्टी का लेप करना, लेवा।
लेवा-(हिं०पुं०) मिट्टी का गिलावा, कहगिल, लेप, गाय भैस का थन (वि०) लेने वाला।
लेवार-(हिं०पु०) लेव, गिलावा।
लेवाल-(हिं०पुं०) लेने वाला।
लेश-(सं० पुं०) कण, अणु, सूक्ष्मता, छोटाई, चिन्ह, संसर्ग, लगाव, वह अलंकार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन में एक ही अंश में रोचकता आती है, एक प्रकार का गाना (वि०) अल्प, थोड़ा।
लेश्या-(सं०स्त्री०) अलोक, दीप्ति, जैन धर्म के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण से कर्म जीव को बांधता है।
लेषना-(हिं०क्रि०) देखो लखना, लिखना
लेसना-(हिं०क्रि०) जलाना, भीग पर मिट्टी का गिलावा पोतना, चिपकाना, सटाना, लेप फलाना, पोतना, चुगली खाना, विवाद उत्पन्न करने के लिये किसी को उत्तेजित करना।
लेह-(सं०पुं०) आहर, भोजन, रस, अवलेह।
लेहन-(सं०पुं०) जिन्हा से स्वाद लेना, चाटना।
लेहना-(हिं० पुं०) खेत में कटी हुई उपज का वह अंश जो काम करने वालों को दिया जाता है, देखो लहना।
लेहसुर-(हिं०पुं०) कुम्हारों का मिट्टी मलने का यन्त्र।
लेहाड़ा-(हिं०वि०) देखो लिहाड़ा।
लेहाड़ापन-(हिं०पुं०) देखो लिहाड़ापन
लेहाड़ी-(हिं०स्त्री०) अप्रतिष्ठा, अपमान
लेह्य-(सं०नपुं०) अमृत, चाटने का पदार्थ (वि०) चाटने के योग्य।
लै-(हिं०अव्य०) पर्यन्त, तक।
लैंगिक-(सं०वि०) लिंग या प्रतिमूर्ति बनाने वाला (पुं०) वैशेषिक दर्शन के अनुसार अनुमान प्रमाण।
लैया-(हिं पुं०) एक प्रकार का अगहनिया धान।
लों-(हिं०अव्य०) तक।
लोंड़ी-(हिं०स्त्री०) कान का लोलक।
लोंदा-(हिं०पुं०) किसी गोले पदार्थ का बँधा हुआ गोला।
लो-(हिं०अव्य०) इसका प्रयोग श्रोता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने लिये होता है।
लोइ-(हिं०पुं०) लोग, जन, दीप्ति, प्रभा
लोई-(हिं०स्त्री०) गूंधे हुए आंटे की गोली जिसको बेल कर रोटी बनाई जाती है, एक प्रकार का कम्बल।
लोइन-(हिं०पुं०) लावण्य।
लोकंजन-(हिं०पुं०) लोपाञ्जन।
लोकंदा-(हिं०पुं०) विवाह के बाद कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना। लोकंदी-(हिं०स्त्री०) कन्या के पहले पहल ससुराल जाते समय भेजी हुई दासी।
लोक-(सं० पुं०) भुवन, पुराण के अनुसार लोक सात हैं यथा-सत्लोक, भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, और सत्य लोक; वैद्यक के अनुसार लोक के दो भेद हैं-स्थावर और जंगम, वृक्ष, लता तृण आदी स्थावर तथा पशु, पक्षी, कीट तथा मनुष्य आदि जंगम हैं, प्राणी, जन, मनुष्य प्रदेश, दिशा, यश, कीर्ति, निवास स्थान, संसार; लोक कण्टक-(सं०पुं०) दुष्टमनुष्य; लोक कथा-(सं०स्त्री०) जनश्रुति; लोक कर्ता-(सं०पुं०) शिव, विष्णु; लोक कम्प-(सं०त्रि०) मनुष्यों को डराने वाला; लोक कल्प-(सं०वि०) संसार की स्थिति के सदृश; लोक कान्त-(सं०वि०) लोक प्रिय; लोककार-(सं० पुं०) लोक कर्ता; लोककृत्-(सं० वि०) सृष्टिकारी; लोककृत्नु-(सं०वि०) लोक कृत्; लोकक्षित्-(सं०वि०) आकाश गामी; लोक गति-(सं०स्त्री०) जीवन यात्रा; लोक गाथा-(सं०स्त्री०) जनश्रुति; लोक गुरु-(सं०पुं०) जगद्गुरु; लोक चक्षु-(सं०नपुं०) लोगों के चक्षु, सूर्य; लोक चर-(सं०वि०) संसार में घूमने वाला; लोक चरित्र-(सं०नपुं०) मनुष्य के जीवन का इतिहास; लोक जननी-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी; लोक जित्-(सं० वि०) संसार को जीतने वाले; लोकज्ञ-(सं०वि०) मानव तत्वदर्शी; लोक ज्येष्ठ-(सं०पुं०) बुद्ध देव; लोकष्टी-(हिं०स्त्री०) लोमड़ी; लोक तत्व-(सं० नपुं०) मानव तत्व; लोक तन्त्र-(सं० नपुं०) संसार का इतिहास।
लोकतः-(सं०अव्य०) पहले के समान।
लोक तुषार-(सं०पुं०) कर्पूर, कपूर; लोकत्रय-(सं०नपुं०) तीनों लोक यथा-स्वर्ग मर्त्य और रसातल; लोक दम्भक-(सं० पुं०) ठग, वञ्चक; लोक द्वार-(सं० नपुं०) स्वर्ग का द्वार; लोक धाता-(सं०पुं०) शिव, महादेव; लोक धारिणी-(सं० स्त्री०) पृथ्वी; लोक धुनि-(सं० स्त्री०) जनश्रुति।
लोकना-(हिं० क्रि०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथ से पकड़ लेना, रास्ते में ही ले लेना।
लोक नाथ-(सं०पुं०) विष्णु; शिव, पारा; लोक नेता-(सं०पु०) समाज पति, शिव।
लोकप-(सं०पुं०) देखो लोकपति; लोकप-(सं०पुं०) लोकपाल, ब्रह्मा, राजा; लोकपति-(सं०पुं०) विष्णु, लोकपाल; लोक पथ-(सं०पुं०) साधारण पथ या उपाय; लोक पद्धति-(सं०स्त्री०) सामान्य रीति; लोकपाल-(सं० पुं०) दिक्पाल, पुराण के अनुसार आठ दिशाओं के आठ लोकपाल हैं यथा पूर्व दिशाका इन्द्र, दक्षिण पूर्व का अग्नि, दक्षिण का यम, दक्षिण पश्चिम का सूर्य, पश्चिम का वरुण, उत्तर पश्चिम का वायु, उत्तर का कुबेर तथा उत्तरपूर्वका सोम है, शिव, विष्णु, राजा; लोकपालता-(सं०स्त्री०) लोकपाल का धर्म; लोकपितामह-(सं०पुं०) ब्रह्मा; लोकपूजित-(सं० वि०) जन समाज में मान्य; लोकप्रकाशन, लोकप्रकाशक-(सं० पु०) सूर्य; लोकप्रत्यय-(सं० पुं०) जो संसार में सर्वत्र मिलता हो; लोकप्रसिद्ध-(सं० स्त्री०) यश, ख्याति; लोकप्रवाद-(सं० पुं०) जनप्रवाद, जनश्रुति; लोकबन्धु-(सं० स्त्री०) शिव, सूर्य; लोकबान्धव-(सं० पु०) सबका मित्र सूर्य; लोकभर्ता-(सं० पुं०) जन साधारण का अन्नदाता; लोकभाज्-(सं०वि०) स्थानाधिकारी; लोकभवन-(सं०वि०) संसार का कल्याण करने वाला; लोकमय-(सं० वि०) जगदाधार; लोकमर्यादा-(सं०स्त्री०) किसी व्यक्ति का विशेष सम्मान; लोकमाता-(सं०स्त्री०) लोक की जननी, लक्ष्मी; लोकमार्ग-(सं० पुं०) प्रचलित रीति, साधारण पन्थ; लोकयात्रा-(सं० स्त्री०) संसारयात्रा, व्यापार; लोकरक्षक-(सं० पुं०) नृप, राजा; लोकरञ्जन-(सं०नपुं०) जनता को प्रसन्न करने वाला; लोकरव-(सं०पुं०) जनश्रुति; लोकरा-(हिं०पु०) चिथड़ा।
लोकलीक-(हिं०स्त्री०) लोक मर्यादा।
लोकलोचन-(सं०पुं०) सूर्य; लोकवचन-(सं० नपुं०) जनप्रवाद, अफ़वाह; लोकवत्-(सं० वि०) लोक सदृश।
लोकवर्तन-(सं०नपुं०) मनुष्य चरित्र। लोकवाद-(सं०पुं०) जनश्रुति। लोकवार्ता-(सं०स्त्री०) जनरव। लोकवाह्य-(सं०वि०) लोकनिन्दित, आचार भ्रष्ट लोकविकृष्ट-(सं०वि०) लोक निन्दित। लोकविज्ञात-(सं०वि०) प्रसिद्ध, विख्यात लोकविधि-(सं० पुं०) सृष्टिकर्ता।

लोकविन्दु–(सं०वि०) मुक्ति या स्वाधीनता प्राप्त। लोकविश्रुत–(सं०वि०) संसार भरमें विख्यात। लोकविश्रुति–(सं०स्त्री०) जनश्रुति, । लोकविसर्ग–(सं०पुं०) जगत् सृष्टि लोकविस्तार–(सं०पुं०) संसार में प्रसिद्ध। लोकवृत्त–(सं० नपुं०) लौकिक आचार, थोड़ी बात चीत। लोकवृत्तान्त–(सं०पुं०) मनुष्य चरित्र, इतिहास। लोकव्यवहार–(सं० पुं०) सर्व, साधारण में प्रचलित रीति। लोकव्रत–(सं०नपुं०) मनुष्य समाज की प्रचलित रीति।

लोकश्रुति–(सं० स्त्री०) जनश्रुति।

लोकसंक्षय–(सं०पुं०) संसार का नाश

लोकसंसृति–(सं० स्त्री०) अभाग्य।

लोकसंकर–(सं० पु०) समाज में झूठा व्यवहार करने वाला। लोकसंग्रह–(सं० पुं०) मनुष्यों की भीड़, सम्पूर्ण संसार। लोकसत्तात्मक–(हिं०वि०) ऐसी व्यवस्था जिसमें शासन जनता के अधिकार में हो।

लोकसाक्षी–(सं०पुं०) ब्रह्मा, अग्नि, सूर्य।

लोकसात्–(सं०अव्य०) सर्व सामान्य की भलाई के वास्ते। लोकसातत–(सं०वि०) जनता के कल्याण के लिए किया हुआ। लोकसाधक–(सं०वि०) संसार की सृष्टि करने वाला।

लोकसिद्ध–(सं०वि०) प्रचलित, प्रसिद्ध।

लोकसुन्दर–(सं०वि०) जिसको सामान्य लोग अच्छा कहते हों। लोकस्कन्द–(सं० पुं०) तमालवृक्ष। लोकस्थल–(सं०नपुं०) दैनिक घटना। लोकस्थिति–(सं०स्त्री०) प्रचलित नियम। लोकहांदी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की हल्दी।

लोकहार–(हिं०वि०) संसार को नष्ट करने वाला। लोकहित–(सं० नपुं०) संसार की भलाई। लोकहिता–(सं० स्त्री०) कुलथी।

लोकाकाश–(सं०पुं०) शून्य स्थान, आकाश

लोकाचार–(सं०पुं०) लोक व्यवहार, जन समूह का आचार।

लोकाट–(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके बेर के बराबर मीठे फल होते हैं।

लोकातिग–(सं०वि०) अद्भुत, असामान्य।

लोकातिशय–(सं०पुं०) दैनिक प्रथा के बाहर।

लोकात्मा–(सं० पुं०) जगत् के आत्मा विष्णु।

लोकादि–(सं० पुं०) संसार के आदि कर्ता ब्रह्मा।

लोकाधिप–(सं०पुं०) लोकपाल, नरपति

लोकाधिपति–(सं० पुं०) लोकपाल, देवता।

लोकान्त–(हि०क्रि०) फेंकना, उछलना।

लोकानुग्रह–(सं०पुं०) संसार की भलाई

लोकानुराग–(सं०पुं०) संसार का प्रेम।

लोकान्तर–(सं०नपुं०) परलोक।

लोकापवाद–(सं० पुं०) लोक निन्दा, जनापवाद।

लोकाभ्युदय–(सं०पुं०) जनता की उन्नति

लोकायत–(सं० नपुं०) चार्वाक शास्त्र, वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो, एक छन्द का नाम जिसको दुर्मिल भी कहते हैं।

लोकावेक्षण–(सं० नपुं०) संसार की भलाई चाहना।

लोकेश–(सं०पुं०) ब्रह्मा, लोकपाल, इन्द्र, पारा। लोकेश्वर–सं०पुं०) लोकपाल लोकैषणा–(सं०स्त्री०) स्वर्ग प्राप्त करने की इच्छा।

लोकोक्ति–(सं० स्त्री०) कहावत, वह अलंकार जिसमें किसी लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ चमत्कार दिखलाया जाता है।

लोकोत्तर–सं०वि०) अद्भुत, विलक्षण

लोखर–(हिं०पु०) नाई, बढ़ई, लोहार, आदि के अस्त्र।

लोग–(हिं०पुं०) जन, मनुष्य।

लोगाई–(हिं०स्त्री०) देखो लुगाई, स्त्री।

लोच–(सं०नपुं०) अश्रु, आँसू, (हिं०पुं०) लचक, कोमलता, अभिलाषा, अच्छा ढंग। लोचक(सं०पुं०) माँसपिण्ड आँख की पुतली, कागज, केला, माथे पर पहरने का एक आभूषण, निर्मोक केंचुली।

लोचन–(सं० नपु०) आँख, नेत्र, जीरा, झरोखा। लोचन पथ–(स०पु०) दृष्टि मार्ग। लोचनहित–(सं०वि०) नेत्रों के लिये लाभदायक। लोचनहिता–(सं०स्त्री०) तूतिया। लोचना–(हिं०क्रि० प्रकाशित करना, अभिलाषा करना, शोभित होना, रुचि उत्पन्न करना, ललचाना। लोचशिर–(सं० नपुं०) अजमोदा।

लोचून–(हिं०पुं०) लोहे का चूर।

लोजंग–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की नाव

लोट–(हिं० स्त्री०) लोटने की क्रिया या भाव, (पुं०) उतार, घाट, देखो नोट।

लोटन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का हल, एक प्रकार का लोटने वाला कबूतर छोटी छोटी कंकड़ियाँ जो हवा के चलने से इधर उधर लुड़कती हैं।

लोटना–(हिं० क्रि०) लुड़कन, विश्राम करना, लेटना, चकित होना, कष्ट से करवट बदलना, तड़पना; लोट जाना–मूर्छित होना।

लोटपटा–हिं० पु०, विवाह में वर और बधू के पीढा या स्थान बदलने की रीति, उलट फेर दाँव का इधर से उधर हो जाना।

लोटा(हिं० पुं०) पानी आदि रखने का धातु का बना हुआ छोटा पात्र।

लोटिया–(हिं० स्त्री०) छोटा लोटा।

लोटी–(हिं०स्त्री०) छोटा लोटा।

लोड़न–(सं० पुं०) इधर उधर चलना, लुड़कना।

लोड़ना–हिं०क्रि०) आवश्यकता होना।

लोढा–(हिं०पुं०) सिल पर किसी वस्तु को पीसने का पत्थर का गोल लंबोतरा, टुकड़ा, बट्टा; लोढा डालना–बराबर करना। लोढ़िया–(हिं०स्त्री०) छोटा लोढ़ा, बट्टा।

लोत–(स०पुं०) चोरी का धन, चिह्न, अश्रु, आंसू।

लोत्र–(सं०नपुं०) नेत्रजल, आँसू।

लोथ–हिं० स्त्री०) मृत शरीर, शव; लोथ गिरना–मारा जाना; लोथ डालना–हत्या करना

लोथड़ा–(हिं०पुं०) मांस का बड़ा पिण्ड जिसमें हड्डी न हो।

लोदी–दिल्ली के एक मुसलमान राजवंश का नाम।

लोध–(सं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल और लकड़ी औषधियों में प्रयोग होती है

लोधरा–(हिं०पु०) एक प्रकार का तांबा जो जापान से आता था।

लोध्र–(सं०पुं०) देखो लोध। लोध्रतिलक–(सं०पुं०) एक अलंकार जो उपमा का एक भेद है। लोध्रपुष्प–(सं०पु०) महुए का वृक्ष। लोध्रपुष्पिणी–सं०स्त्री०) छोटे धव का फूल।

लोन–(हिं०पुं०) लवण, नमक, लावण्य सुन्दरता; किसी का लोन खाना–किसी के दिये हुए अन्न पर निर्वाह करना; किसी का लोन निकलना–विश्वासघात का फल भोगना; लोन न मानना–उपकार न मानना, जले या कटे पर लेना लगाना–कष्ट पर कष्ट देना; लोन सलगना–अप्रिय मालूम होना।

लोना–(हिं०वि०) नमकीन, सुन्दर, सलोना (पुं०) एक प्रकार का रोग जो ईंट, पत्थर तथा मिट्टी की भीतों में लग जाता है जिसमें इनका ऊपरी तल झड़ने लगता है, नमकीन मिट्टी जिससे शोरा बनाया जाता है, वह धूल या मिट्टी जो लोना लगने पर भीत से गिरती हैं घोंघे की जाति एक कीड़ा, जादू टोना करने वाली एक चमाइन का नाम (क्रि०) लवना।

लोनाई–(हिं०स्त्री०) लावण्य, सुन्दरता।

लोनार–(हिं०स्त्री०) नमक बनाने का स्थान

लोनिका–(हिं०स्त्री०) लोनी नामक साग

लोनिया–(हिं०पुं०) एक जाति का नाम इन लोगों का व्यवसाय नमक बनाने का है, लोनी नामक साग।

लोनी–(हिं०स्त्री०) कुलफे की जाति का एक प्रकार का साग; एक प्रकार की क्षार युक्त मिट्टी, वह क्षार जो चने आदि की पत्तियों पर बैठता है।

लोप–(सं०पुं०) विच्छेद, क्षय, नाश, अभाव, अदर्शन, अन्तर्धान होना, छिपना, व्याकरण का वह नियम जिसके अनुसार शब्द साधन में कोई वर्ण हटा दिया जाता है। लोपक–(सं० वि०) विघ्न या बाधा डालने वाला। लोपन–(सं०नपुं०) नाश करना लुप्त करना हटाना।

लोपना–(हिं०क्रि०) लुप्त होना, छिनना, मिटाना।

लोपाञ्जन–(सं०पुं०) वह कल्पित अंजन जिसके लगाने में मनुष्य अदृश्य हो जाता है। लोपापाक–(सं०पुं०) शृगाल, सियार। लोपापिका–(सं०स्त्री०) सियारिन। लोपामुद्रा–(सं०स्त्री०) अगस्त्य मुनि की पत्नी।

लोपायक–सं०पुं०) शृगार, सियार।

लोपाश, लोपाशक–सं० पु०) शृगाल।

लोपाशिका–(सं०स्त्री०) सियारिन।

लोपी–सं०वि०) क्षति पहुँचाने वाला।

लोप्ता–(सं०वि०) नियम भंग करने वाला, हानि पहुँचाने वाला।

लोप्त्र–(स०नपुं०) चोरी का माल।

लोप्य–(सं०वि०) नाश करने योग्य।

लोबा–(हिं०स्त्री०) लोमड़ी।

लोबिया–(हिं० पुं०) एक प्रकार का सफेद बड़े आकार का घोड़ा।

लोभ–(सं० पुं०) दूसरे के पदार्थ को लेने की वासना, लालच, आकांक्षा, लिप्सा, वांछा, कृपणता, कंजसी।

लोभन–(सं० पुं०) लोभ, लालच।

लोभना–(हिं०क्रि०) मुग्ध करना लभाना

लोभनीय–(सं० वि०) लोभ के योग्य।

लोभयान–(सं० वि०) लालच बढाने वाला।

लोभविजयी–(सं० पुं०) वह राजा जो धन चाहता हो युद्ध न करना चाहता हो। लोभाना–(हिं०क्रि०) मुग्ध होना, मोहित होना। लोभित–(सं० वि०)

लोभी–(सं०वि०) अधिक लोभ करने वाला, लालची, लुब्ध, लिप्सु, लुभाया हुआ।

लोभ्य–(सं०वि०) लालच करने योग्य।

लोम–(सं०नपुं०) शरीर के रोवे, रोवाँ, बाल, (हिं०पुं०) लोमड़ी। लोमक–स०वि० रोमयुक्त। लोमकर्ण–(सं०पुं०) खरगोश, खरहा। लोमकीट–(सं०पुं०) जूं। लोमकूप–(सं०पुं०) शरीर में के रोम के जड़ में का छिद्र, देखो रोमकूप। लोमगर्त–(सं०पुं०) देखो लोमकूप

लोमघ्न–(सं०वि) लोमनाशक।

लोमड़ी–(हिं०स्त्री०) कुत्ते या गीदड़ की जाति का एक वन्य पशु।

लोमपाद्–(सं० पुं०) अङ्ग देशीय एक राजा जो राजा दशरथ के पुत्र थे।

लोमप्रवाही–(सं०वि०) लोममुक्त।

लोममणि–(सं०पु०) लोम निमित कवच

लोमयुक–(सं० पुं०) ऊनी वस्त्र काटने वाला कीड़ा।

लोमवत्–(सं० वि०) लोम के सदृश।

लोमवाहन–(सं० वि०) लोम युक्त।

लोमविवर–(सं० नपुं०) रोमकूप।

लोमफुल–(सं० नपुं०) कमरख।

लोमश–(सं० पुं०) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जिनको पुराणों ने अमर माना है (वि०) बड़े बड़े रोवें वाला। लोमशकर्ण–(सं० पुं०) खरगोश, खरहा।

लोमशा–(सं० स्त्री०) केवांच, सौंफ,

काकजंघा। लोमशी-(सं० स्त्री०) ककड़ी।
लोमश्य-(सं०नपुं०) रोवें की अधिकता।
लोमसंहर्षण-(सं० नपुं०) रोमांच।
लोमसार-(सं० पुं०) मरतक मणि।
लोमसिक-(सं० स्त्री०) सियारिन।
लोमहर्ष-(सं० पुं०) रोमांच, पुलक, एक राक्षस का नाम। **लोमहर्षण**-(सं० नपुं०) अति भयंकर, ऐसा भयंकर जिसको देखकर रोंगटे खड़े हो जावें।
लोमहृत्-(सं० पुं०) हरताल।
लोमाश-(सं० पुं०) श्रृगाल, गीदड़।
लोय-(हिं० पुं०) लोग, नयन, आँख, (स्त्री०) आग की लौ, लपट (अव्य०) देखो लौं।
लोयन-(हिं० पुं०) नयन, नेत्र।
लोर-(हिं० पुं०) कान का कुण्डल, लटकन, आँसू,(वि०) उत्सुक, चंचल। **लोरना**-(हिं० क्रि०) चंचल होना, लोटना, झुकना, लिपटना। **लोरी**-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की गीत, बच्चों का सुलाने के लिये स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं।
लोल-(सं० वि०) चंचल, कम्पायमान, हिलता डोलता, हुआ, क्षण में नष्ट होने वाला, अति उत्सुक, क्षणिक, (पुं०) लिङ्गेन्द्रिय।
लोलक-(सं० नपुं०) बाली में पहरने का लटकन, कान की लब, घंटी में का लटकन। **लोलकी**-(हिं० स्त्री०) कान का नीचे का लटकता हुआ भाग।
लोलदिनेश-(सं०पुं०) लोलार्क नामक सूर्य।
लोलना-(हिं० क्रि०) हिलना।
लोला-(सं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ, लक्ष्मी, चंचला स्त्री, एक योगिनी का नाम, मधु नामक दैत्य की माता, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं, (हिं०पुं०) लड़कों का एक प्रकार का खिलौना।
लोलाक्षिका-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसकी आँखें नाचती हों।
लोलार्क-(सं० पुं०) सूर्य, काशी के एक तीर्थ का नाम।
लोलित-(सं० वि०) शिथिल, ढीला।
लोलिनी-(सं० स्त्री०) चंचल प्रकृति की स्त्री।
लोलुप-(सं०वि०) बड़ा लोभी, लालची, चटोर, परम उत्सुक। **लोलुपता**-(सं०स्त्री०) लालच। **ललुभ**-(सं०वि०) देखो लोलप, लालची।
लोलुव-(सं०वि०) बारंबारकाटनेवाला।
लोलोर-(सं० नपुं०) एक नरकका नाम।
लोवा-(हिं० स्त्री०) लोमड़ी (पुं०) तीतर जाति का एक पक्षी, लवा।
लोष्ट्र-(सं० पुं०) ढेला, लोष्ट।
लोष्ट-(सं० पुं०) ईट या पत्थर का टुकड़ा; ढेला। **लोष्टघ्न**-(सं० पुं०) किसान का खेत में के ढेले तोड़ने का अस्त्र। **लोष्टमय**-(सं० वि०) ढेले के समान।
लोहँड़ा-(हिं० पुं०) लोहे की छोटी कड़ाही, तसला।
लोह-(सं० पु०) लोहा नामक धातु। **लोहकान्त**-(सं० नपुं०) चुंबक। **लोहकार**-(सं० पुं०) लोहार। **लोहकिट्ट**-(सं० नपुं०) लोहे की मैल। **लोहगिरि**-(सं० पुं०) एक पर्वत का नाम। **लोहघातक**-(सं०पुं०) लोहार।
लोहचोलिका-(सं० स्त्री०) लोहे का बख्तर। **लोहचूर्ण**-(सं० नपुं०) लोहे का बुरादा।
लोहज-(सं० नपुं०) मण्डूर, काँसा। **लोहजाल**-(सं० नपुं०) वर्म, बख्तर। **लोहजित्**-(सं० पुं०) हीरक, हीरा। **लोहदारक**-(सं० पुं०) एक नरक का नाम। **लोहनाल**-(सं० पु०) नाराच नाम का अस्त्र। **लोहपञ्चक**-(सं० नपुं०) वैद्यक के अनुसार सोना, चांदी, तांबा रांगा और सीसा ये पांच धातु। **लोहपाश**-(सं० पु०) लोहे की जंजीर। **लोहप्रतिमा**-(सं० स्त्री०) लोहे की बनी हुई मूर्ति। **लोहमय**-(सं० वि०) लोहे का बना हुआ। **लोहमुक्तिका**-(सं० स्त्री०) लाल रंग का मोती। **लोहमेखल**-(सं०वि०) लोहे की मेखला पहने हुए। **लोहलंगर**-(हिं०पुं०) जहाज का लंगर। **लोहल**-(सं०वि०) अव्यक्त बातचीत। **लोहवत्**-(सं० वि०) लोहे के सामान। **लोहवर**-(सं० नपुं०) सुवर्ण, सोना। **लोहवर्म**-(सं०नपुं०) लोहे का कवच। **लोहशंकु**-(सं० पुं०) लोहे का खूंटा। **लोहश्लेषण**-(सं० पुं०) सोहागा। **लोहसार**-(सं० पुं०) पक्का लोहा।
लोहाँगी-(हिं० स्त्री०) वह छड़ी जिसके किनारे पर लोहा लगा रहता है।
लोहा-(हिं० पुं०) इस नाम का प्रसिद्ध धातु, अस्त्र, लोहे की बनी वस्तु, लाल रंग का बैल,(वि०) लाल, बहुत कड़ा; **लोहे के चने चबाना**-बड़ा कठिन कार्य करना; **लोहा गहना**-युद्ध करने के लिये शस्त्र उठाना; **लोहा बजना**-युद्ध होना; **किसी का लोहा मानना**-आधिपत्य स्वीकार करना, हार जाना; **लोहा लेना**-युद्ध करना, लड़ना। **लोहाकर**-(सं०नपुं०) लोहे की खान। **लोहाकर्ण**-(सं० वि०) लाल कान वाला। **लोहाना**-(हिं०स्त्री०) लोहे की वस्तु में खाद्य पदार्थ रखने से लोहे का रंग या स्वाद आ जाना। **लोहार**-(हिं० पुं०) एक जाति जो लोहे की चीजें बनाती है। **लोहारी**-(हिं०स्त्री०) लोहार का काम।
लोहिका-(सं०स्त्री०) लोहे का पात्र।
लोहित-(सं०नपुं०) कुंकुम, केशर, लाल चन्दन, पीतल, रुधिर, युद्ध, (पुं०) एक प्रकार की मछली, मसुरी, (वि०) लाल रंग का; **लोहितक**-(सं० नपुं०) काँस्य, कांसा, (पुं०) एक प्रकार का धान; **लोहित कल्माष**-(सं०वि०) चितकबरा; **लोहित कृष्ण**-(सं०वि०) गाढ़ा लाल; **लोहितक्षय**-(सं०पुं०) रुधिर का नाश; **लोहितग्रीव**-(सं०पुं०) अग्नि; **लोहितचन्दन**-(सं० नपुं०) लाल रंग; **लोहितत्व**-(सं०नपुं०) लाल रंग; **लोहितपुष्पक**-(सं०पुं०) अनार का वृक्ष; **लोहित मृत्तिका**-(सं०स्त्री०) लाल मिट्टी, गैरिक, गेरू; **लोहितराग**-(सं०पु०) लाल रंग; **लोहितवासस्**-(सं०वि०) लाल वस्त्र धारण किये हुए; **लोहित शतपत्र**-(सं०नपुं०) लाल कमल; **लोहितशवल**-(सं०वि०) चितकबरा।
लोहिता-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो क्रोध से लाल हो गई हो; **लोहिताक्ष**-(सं० पुं०) विष्णु, कोकिल, कोयल, (वि०) जिसकी आखें लाल हों; **लोहिताक्षी**-(सं०स्त्री०) रक्त लोचन, वह स्त्री जिसकी आखें लाल हों; **लोहिताङ्ग**-(सं०पुं०) मंगल ग्रह; **लोहितानन**-(सं०पुं०) लाल मुख वाला, नेवला; **लोहितायस**-(सं०नपुं०) तांबा; **लोहितार्ण**-(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **लोहितार्द्र**-(सं० वि०) रुधिर से भीगा हुआ; **लोहितास्य**-(सं०वि०) लाल मुंह वाला, मुख में रुधिर लगा हुआ; **लोहिताहि**-(सं०पुं०) लाल रंग का सर्प।
लोहितिका-(सं०स्त्री०) रक्तवाहिनी नाड़ी
लोहितीभूत-(सं०वि०) जो लाल हो गया हो।
लोहितेक्षण-(सं०स्त्री०) लाल आखें।
लोहितोत्पल-(सं०नपुं०) लाल कमल।
लोहितोद-(सं०पुं०) एक नरक का नाम
लोहितोर्ण-(सं०वि०) जिसके ऊन लाल रंग के हों।
लोहित्य-(सं०पुं०) एक प्रकार का धान; ब्रह्मपुत्र नदी, एक समुद्र का नाम; **लोहित्या**-(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
लोहिनिका-(सं०स्त्री०) लाल रंगकी स्त्री
लोहिया-(हिं०पुं०) लोहे का व्यापार करने वाला बनियों तथा मारवाड़ियों की एक जाति, लाल रंग का बैल, लोहे की बनी हुई गोली।
लोहू-(हिं०पुं०) रक्त, रुधिर।
लौं-(हिं०अव्य०) पर्यन्त, तक, तुल्य, समान
लौंकना-(हिं०क्रि०) चमकना, देख पड़ना
लौंग-(हिं०पुं०) एक वृक्ष की कली जो खिलने के पहले ही तोड़ ली जाती है, लौंग के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं; **लौंगचिड़ा**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कबाब; **लौंगमुश्क**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का फूल; **लौंगिया मिर्च**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बहुत कड़वी मिर्च।
लौंडा-(हिं०पुं०) छोकड़ा, बालक, सुन्दर लड़का, (वि०) अबोध, छिछोरा; **लौंडापन**-(हिं० पुं०) लड़कपन, छिछोरापन।
लौंडी-(हिं०स्त्री०) दासी।
लौंडेबाज-(हिं०वि०) वह जो सुन्दर बालक से प्रेम रखता हो और उसके साथ गुदा मैथुन करता हो।
लौंद-(हिं०पुं०) अधिमास, मलमास।
लौंदरा-(हिं०पुं०) वर्षा ऋतु के आरंभ होने से पहले जो पानी बरसता है, दौंगारा।
लौंदा-(हिं०पुं०) देखो लौंदा; **लौंदी**-(हिं०स्त्री०) पाक चलाने की करछी।
लौंन-(हिं०पुं०) देखो लवन।
लौ-(हिं०स्त्री०) आग की लपट, ज्वाला, दीपक की टेम, दीपशिखा, चित्त की वृत्ति, आशा, कामना; **लौलीन**-ध्यान में मग्न।
लौआ-(हिं०पुं०) कद्दू, घीआ; **लौका**-(हिं०पुं०) कददू।
लौकना-(हिं०क्रि०) दूर से देख पड़ना।
लौकिक-(सं०वि०) व्यवहारिक, सांसारिक, लोक संबंधी, सात मात्राओं के एक छन्द का नाम; **लौकिक ज्ञान**-(सं०नपुं०) शास्त्रादि का ज्ञान; **लौकिकता**-(सं०स्त्री०) लोक व्यवहार, शिष्टता; **लौकिकत्व**-(सं० नपुं०) देखो लौकिकता; **लौकिक न्याय**-(सं०पुं०) साधारण नियम; **लौकिकाचार**-(सं०नपुं०) लोकाचार, कुलाचार
लौकिकी-(सं०स्त्री०) ख्याति, प्रसिद्धि; **लौकिकी यात्रा**-(सं०स्त्री०) लोकव्यवहार
लौकी-(हिं०स्त्री०) कद्दू, घीया, भभके में लगाने की काठ या बांस की नली
लौक्य-(सं०वि०) लोक संबंधी, साधारण, सामान्य।
लौज-(अ०पुं०) बादाम, एक प्रकार की तिकोनी मिठाई जिसमें बादाम पीस कर पड़ता है।
लौजोरा-(हिं०पुं०) धातु गलाने वाला कर्मकार।
लौट-(हिं०स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव; **लौटना**-(हिं०क्रि०) कहीं पर जाकर फिर से वापस आना, पलटना, पीछे की ओर मुड़ना, उलटना, पुलटना; **लौटपौट**-(हिं०स्त्री०) उलटने पुलटने की क्रिया; **लौटफेर**-(हिं०पुं०) इधर उधर हो जाना, उलट फेर, बड़ा परिवर्तन; **लौटान**-(हिं०स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव; **लौटाना**-(हिं०क्रि०) फेरना, पलटाना, वापस करना, ऊपर नीचे करना।
लौटानी-(हिं०क्रिवि०) लौटती समय।
लौड़ा-(हिं० पुं०) शिश्न, लिङ्ग, पुरुष की मूत्रेन्द्रिय।
लौनहार-(हिं० पुं०) खेत की लवन करने वाला, खेत काटने वाला।
लौद-(हिं०पुं०) अरहर की नरम डाली।
लौन-(हिं०पुं०) लवण, नमक; **लौनहार**-(हिं०पुं०) लवन करने वाला, कृषिफल काटने वाला।

लौना—(हिं०पुं०) वह रस्सी जिसके पशु के पिछले पैर बाँध दिये जाते हैं, खेत काटने का काम, इन्धन ।

लौनी—(हिं०स्त्री०) कृपिकाल की कटाई, लहना ।

लौम—(सं०वि०) लोम संबंधी ।

लौरी—(हिं०स्त्री०) वछिया ।

लौल्य—(सं०नपुं०) चंचलता, अस्थिरता; **लौल्यता**—(सं०स्त्री०) चंचलता, अधिक या उत्कट इच्छा ।

लौल्यवत्—(सं०वि०) इच्छुक, अर्थलोलुप ।

लौह—(सं०पुं०) लोहा नामक धातु; **लौहकान्तक**—(सं०नपु०) कान्त लोहा; **लौहकार**—(सं०पु०) लोहार । **लौहकिट्ट**—(सं० नपुं०) मण्डूर; **लौहज**—(सं० नपुं०) लोहे की मैल, मंडूर; **लौहबन्ध**—(सं०पुं०) लोहे की सिकड़ी; **लौहभाण्ड**—(सं० पुं०) लोहे का पात्र; **लौहमय**—(सं० वि०) लोहे का बना हुआ; **लौहमल**—(सं० नपुं०) मण्डूर; **लौहयन्त्र**—(सं० पुं०) लोहे की कल; **लौहशंकु**—(सं० पुं०) एक प्रकार का नमक जो लोहे से बनाया जाता है ।

लौहा—(सं०स्त्री०) लोहे का बना हुआ कड़ाहा; **लौहात्मा**—(सं० स्त्री०) देखो लौहा ।

लौहित—(सं० पुं०) शिव का त्रिशूल ।

लौहित्य—(सं०पुं०) एक सागर का नाम, लाल सागर, ब्रह्मपुत्र नदी ।

लौहेष—(सं० पुं०) लोहे का बना हुआ हल ।

ल्याना—(हिं०क्रि०) देखो लाना ।

ल्यारी—(हिं०पुं०) भेड़िया ।

ल्याव—(हिं०पुं०) देखो लुआब ।

ल्यावना—(हिं०क्रि०) देखो लाना ।

ल्वारि—(हिं०स्त्री०) देखो लू, ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा ।

व

व—हिन्दी या संस्कृत वर्णमाला का उनतीसवां व्यञ्जन वर्ण, यह वर्ण उकार का विकार तथा अन्तस्थ अर्ध व्यञ्जन माना जाता है, इसका उच्चारण स्थान दन्त्य अथवा दन्त्योष्ठ माना जाता है ।

व—(सं०पुं०) वायु, वरुण, बाहु, अस्त्र, समुद्र, बस्ती, बाण, अस्त्र, मद्य, वृक्ष कलश से उत्पन्न ध्वनि (वि०) बलवान् (अव्य०) ऐसा, (सं०नपुं०) वरुणवीज

वंक, वंकट—(हिं० वि०) वक्र, टेढ़ा, कुटिल, दुर्गत ।

वंकनाली—(हिं०स्त्री०) सुषुम्ना नामक नाडी

वंकिम—(हिं०वि०) झुका हुआ, टेढा ।

वंक्षु—(सं०स्त्री) मध्य एशिया की सबसे बड़ी नदी जो अक्खस् नाम से प्रसिद्ध है ।

वंग—(हिं०पु०) देखो वङ्ग; रांगा ।

वंचक, वंचकता, वंचित—देखो वञ्चक, वञ्चकता, वञ्चित; **वंदन, वंदित, वंदी**—देखो वन्दन, वन्दित वन्दी ।

वंश—(सं० पुं०) सन्तति, गोत्र, कुल, सन्तान, जाति पीठ की रीढ़, वर्ग, बांसुरी तलवार के बीच का भाग, जन संख्या, अतिथि, हाथ या पैर की बड़ी हड्डी, नाक के ऊपर की हड्डी, वंशलोचन, बांस ।

वंशक—(सं०नपुं०) छोटी जाति का बांस,

वंशकठिन—(सं० पुं०) बाँस का जंगल,

वंशकर—(सं० पुं०) वह पुरुष जिससे किसी वंश का आरंभ होता है ।

वंशकर्पूर—(सं०पुं०) बंशलोचन ।

वंशकीर्ति—(सं०स्त्री०) वंश का गौरव ।

वंशक्षय—(सं०पुं०) वंश का नाश ।

वंशचरित्र—(सं०नपुं०) वंश का इतिहास ।

वंशचिन्तक—(सं०पुं०) वह जो कपने वंश का परिचय देने मे असमर्थ हो ।

वंशछेत्ता—(सं०पुं०) बड़ई, (वि०) जिसके बंश का गौरव नष्ट हो गया हो ।

वंशज—(सं० पुं०) जिसका जन्म उच्च कुल मे हुआ हो, अगर, पुत्र, बांस का चावल, बंशलोचन ।

वंशजा—(सं०स्त्री०) कन्या, बंशलोचन ।

वंशतण्डुल—(सं०पुं०) बाँस मे का चावल ।

वंशतिलक—(सं०पुं०) एक छन्द का नाम ।

वंशदा—(सं०स्त्री०) राजा पुरु की एक पत्नी का नाम ।

वंशधर—(सं० स्त्री०) वंश की मर्यादा रखने वाला, सन्तति, सन्तान ।

वंशधान्य—(सं०नपुं०) बांस मे का चावल ।

वंशधारा—(सं०स्त्री०) कुलपद्धति ।

वंशधारी—(सं० स्त्री०) वंश की रक्षा करने वाला ।

वंशनर्तिन्—(सं०पुं०) भांड़ ।

वंशनाडिका—(सं०स्त्री०) बांसुरी ।

वंशनाश—(सं०नपुं०) वंश का लोप ।

वंशनेत्र—(सं० नपुं०) गन्ने की आँख जिसको भूमि मे गाड़ने से पौधा उत्पन्न होता है ।

वंशपत्र—(सं०पु०) एक छन्द का नाम,

वंशपत्रक—(सं०नपु०) हरताल । **वंशपत्रपातित**—(सं०नपुं०) एक छब्द का नाम ।

वंशपत्री—(सं०स्त्री०) एक प्रकारकी हींग ।

वंशपरंपरा—(सं०स्त्री०) सन्तति क्रम ।

वंशपुष्पा—(सं०स्त्री०) सहदेवी लता ।

वंशपोत—(सं०पुं०) गुग्गुल ।

वंशपूरक—(सं०नपुं०) ईख की आँख ।

वंशबीज—(सं०पुं०) बाँस का चावल ।

वंशभृत्—(सं०पुं०) वह जो बंश का पालन करता हो ।

वंशमय—(सं०वि०) बांस का बना हुआ ।

वंशमर्यादा—(सं०स्त्री०) वंश परंपरा से प्राप्त गौरव ।

वंशयव—(सं०पु०) बाँस का चावल ।

वंशराज—(सं०पुं०) सबसे बड़ा बांस ।

वंशलोचल—(सं० पुं०) बंसलोचन

वंशवर्धन—(सं०वि०) कुल का गौरव बढाने वाला ।

वंशवितति—(सं०स्त्री०) बांस का जंगल ।

वंशविदल—(सं० पुं०) बांस की बनी हुई चिमटी ।

वंशविस्तार—(सं० पुं०) वंश परंपरा ।

वंशवृद्धि—(सं०स्त्री०) वंश का विस्तार

वंशशर्करा—(सं० स्त्री०) वंसलोचन

वंशशलाका—(सं०स्त्री०) बीन सितार आदि बाजों का डंडा ।

वंशस्थ—(सं०पुं०) बारह वर्णों का एक वर्णवृत्त ।

वंशस्थिति—(हिं०स्त्री०) वंश की मर्यादा ।

वंशागत—(सं० वि०) वंश परंपरा से आया हुआ ।

वंशहीन—(सं०वि०) निः सन्तान ।

वंशाग्र—(सं०नपुं०) बांस का कोपल ।

वंशानुक्रम—(सं० पु०) वंश परम्परा ।

वंशावली—(सं० स्त्री०) पूर्व पुरुषों की नामावली ।

वंशिका—(सं० स्त्री०) बंश, बांसुरी, पिप्पली ।

वंशी—(सं०स्त्री०) मुरली, बांसुरी; **वंशीधर**—(सं०पुं०) बांसुरी बजाने वाला, श्रीकृष्ण । **वंशीवट**—(सं०नपुं०) वृन्दावन में वह बरगद का वृक्ष जिसके नीचे श्रीकृष्ण बंशी बजाया करते थे ।

वंशोद्भव—(सं०वि०) कुल में उत्पन्न ।

वक—(सं०पुं०) बगला नामक पंक्षी, एक दैत्य का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था में मारा था, अगस्त का वृक्ष या फल, कुबेर ।

वकत्व—(सं० नपुं०) कुटिलता ।

वकपंचक—(सं०नपुं०) कार्तिक शुक्ला एकादशी से पुणिमा तक की पांच तिथियां ।

वकयन्त्र—(सं०नपुं०) अर्क उतारने का भभका ।

वकवृत्ति—(सं० पुं०) अपना काम निकालने के लिये घात में रहना ।

वकव्रत—(सं०नपुं०) कपटी मनुष्य ।

वकासुर—(सं०पुं०) एक दैत्य जो पूतना का भाई और कंस का अनुचर था ।

वकुल—(सं०पुं०) अगस्त का वृक्ष या फूल, मौलसिरी । **वकुली**—(सं०स्त्री०) मौलसिरी ।

वक्तव्य—(सं०वि०) वाच्य, कहने योग्य, कुत्सित, कुछ कहने सुनने योग्य; (नपु०) वचन, कथन, निन्दा; **वक्तव्यता**—(सं०स्त्री०) कथन, योग्यता ।

वक्ता—(सं०वि०) बोलने वाला, बोलने में निपुण, वाग्मी, बहुभाषी, पण्डित; (पुं०) कथा कहने वाला व्यास ।

वक्तुकाम—(सं० वि०) बोलने का अभिलाषी ।

वक्तृक—(सं० वि०) सच बोलने वाला ।

वक्तृता—(सं०स्त्री०) व्याख्यान, कथन ।

वक्तृत्व—(सं०नपुं०) व्याख्यान, कथन ।

वक्त्र—(सं० नपु०) मुख, आनन, काम का आरंभ, बीजगणित में प्रथम गृहीत संख्या, अनुष्टुप् के अनुरूप एक प्रकार का छन्द । **वक्त्रज**—(सं० पु०) मुखसे उत्पन्न, ब्राह्मण । **वक्त्रतुण्ड**—(सं०पुं०) गणेश । **वक्त्रदंष्ट्र**—(सं० त्रि०) शूकर, सुअर । **वक्त्रदल**—(सं०नपुं०) तालू । **वक्त्रद्वार**—(सं०नपुं०) मुख विवर । **वक्त्रपट्ट**—(सं० पुं०) वह पात्र जिसमें घोड़ा चना खाता है, तोबड़ा । **वक्त्रबाहु**—(सं०पुं०) बाराही कन्द । **वक्त्रभेदी**—(सं०त्रि० तीता, मुख फाड़ने वाला । **वक्त्ररन्ध्र**—(सं०नपुं०) देखो वक्त्रद्वार; **वक्त्ररुह**—(सं०त्रि०) मुख से उत्पन्न होने वाला । **वक्त्ररोग**—(सं०पुं० मुंह की बीमारी; **वक्त्रवास**—(सं०पुं०) नारंगी । **वक्त्रशल्या**—(सं०स्त्री०) गुंजा, घुमची । **वक्त्रशोधन**—(सं० नपुं०) नीबू, कमरख; **वक्त्राधिवास**—(सं०पुं०) नारंगीका वृक्ष; **वक्त्रासव**—(सं०पु०) लाला, थूक ।

वक्त्री—(सं० स्त्री०) स्त्री वक्ता ।

वक्र—(सं०नपुं०) नदी का मोड़, वङ्क, (पुं०) मंगल ग्रह, शनैश्चर, (वि०) टेढ़ा, बांका, तिरछा; (पुं०) एक राक्षस जिसको भीम ने मारा था; **वक्रकण्टक**—(सं०पुं०) बेर का पेड़; **वक्रगति**—(सं०स्त्री०) टेढ़ी चाल; **वक्रगामी**—(सं० त्रि०) कुटिल । **वक्रगुल्फ**, **वक्रग्रीव**—(सं०पुं०) ऊंट; **वक्रचञ्चु**—(सं० पुं०) सुग्गा, तोता; **वक्रता**—(सं०स्त्री०) क्रूरता; **वक्रतुण्ड**—(सं०पुं०) गणेश, जिसके ओंठ टेढ़े हों; **वक्रदंष्ट्र**—(सं०पु०) शूकर, सुअर; **वक्रदृष्टि**—(सं०स्त्री०) क्रोध की दृष्टि; **वक्रधर**—(सं०पुं०) शिव; **वक्रनाल**—(सं०नपुं०) मुख से बजाने का एक प्रकार का बाजा; **वक्रनास**—(सं०वि०) जिसकी नाक टेढ़ी हो; **वक्रनासिक**—(सं०पुं०) पेचक, उल्लू पक्षी; **वक्रपाद**—(सं०वि०) लंगड़ा; **वक्रपुच्छ**—(सं०पुं०) कुत्ता; **वक्रपुष्प**—(सं०पुं०) परास का पेड़; **वक्रभाव**—(सं०पुं०) कुटिलता ।

वक्रय—(सं०पुं०) मूल्य, दाम ।

वक्ररेखा—(सं०स्त्री०) टेढ़ी रेखा; **वक्रलंगल**—(सं०पु०) कुत्ता, (वि०) जिसकी पूंछ टेढ़ी हो; **वक्रवक्त्र**—(सं०पुं०) शूकर, सुअर; **वक्रश्रृंग**—(सं०वि०) जिसकी सींग टेढ़ी हो ।

वक्रांग—(सं०नपुं०) हंस, सर्प, टेढ़ा अंग, (वि०) जिसका अंग टेढ़ा हो ।

वक्रित—(सं०वि०) जो टेढ़ा हो गया हो;

वक्री—(हिं०पुं०) वह जिसके अंग जन्म से ही टेढ़े हों, (वि०) अपने मार्ग को छोड़ कर पीछे हटने वाला; **वक्रीकृत**—(सं० वि०) टेढ़ा किया हुआ; **वक्रीभाव**—(सं०पुं०) टेढ़ापन, कपट ।

वक्रोक्ति—(सं०स्त्री०) काकूक्ति, व्यंग बचन; काव्य का वह शब्दालंकार जिसमें श्लेष वाक्य के प्रयोग रहते हैं

वक्ष—(हिं०पुं०) वक्षःस्थल, हृदय, छाती, बैल; **वक्षःस्थल**—(सं०पुं०) देखो वक्षः

वक्षोज, वक्षोरुह—(सं०नपु०) स्तन, कुच

वक्ष्यमाण—(सं०वि०) वाच्य, वक्तव्य, कहने योग्य ।

वगलामुखी–(सं० स्त्री०) दश महाविद्या के अन्तर्गत एक देवी विशेष।
वगाह–(सं०पु०) जल में हल कर स्नान
वङ्क–(सं०पुं०) नदी का मोड़।
वङ्किम–(सं०वि०) कुछ टेढ़ा, झुका हुआ
वङ्ग–(सं० नपुं०) रांगा नामक धातु।
वङ्गज–(सं०नपुं०) सिन्दूर,पीतल; (वि०) वंग देश में उत्पन्न।
वङ्गन–(सं०पुं०) बैंगन।
वङ्गसेन(सं० पु०) लाल फूल का अगस्त
वङ्गीय–(सं०वि०) वंग देश का।
वङ्गुला–(सं०स्त्री०)एक रागिणी का नाम
वङ्गद–(सं०पुं०) एक असुर का नाम जिसको इन्द्र ने मारा था।
वच–(सं०पुं०) शुक, तोता, सूर्य, वचन
वचन–(सं०नपुं०) मुख से निकला हुआ सार्थक शब्द, वाक्य, वाणी, भाषा, भाषित, उक्ति, व्याकरण में शब्द का वह विधान जिससे एक या अनेक अर्थ का बोध होता है, हिन्दी में एक वचन तथा बहु वचन होते हैं परन्तु संस्कृत मे द्विवचन का भी रूप होता है।
वचनकर–(सं० वि०) वह जो अपने वचन पर दृढ़ रहे; वचनकारी–(सं०त्रि०) आज्ञाकारी। वचनगोचर–(सं०वि०) जो बचन से प्रत्यक्ष हुआ हो; वचनग्राही–(सं०वि०) वचन के अनुसार काम करने वाला; वचनपटु–(सं०वि०) बोलने में प्रवीण; वचनलक्षिता–(सं० स्त्री०) वह परकीया नायिका किसकी बातचीत से उसके उपपति को उसका प्रेम प्रकट होता है; वचनविदग्धा–(सं०स्त्री०) वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से अपने उपपति का प्रेम साध लेती है; वचनविरुद्ध–(सं०वि०) शास्त्रविरुद्ध; वचनविरोध–(सं०त्रि०) शास्त्र वाक्य जो प्रमाण के विरुद्ध हो; वचनव्यक्ति–सं०त्रि०) मौलिक कथा। वचनशत–(सं०त्रि०) बहु वाक्य। वचनसहाय–(सं० पुं०) बातचीत करने वाला साथी।
वचनानुग–(सं०वि०) वचन के अनुसार चलने वाला।
वचनीकृत–(सं०वि०) तिरस्कार किया हुआ।
वचनीयता–(सं०स्त्री०) लोकापवाद।
वचनेस्थित–(सं०वि०) जो अपने वचन पर दृढ़ हो।
वचनोपक्रम–(सं०पुं०) वाक्यारम्भ।
वचर–(सं०पुं०) कुक्कुट, मुरगा।
वचाकर–(सं०वि०) वचन के अनुसार काम करने वाला।
वचस्य–(सं०वि०) प्रख्यात,
वचा–(सं०स्त्री०) बच नाम की औषधि
वचि–(सं०पुं०) वचन, नाम।
वच्छ–(हिं०पुं०) देखो वक्ष, छाती।
वज्र–(सं०पुं०नपुं०) इन्द्र का अस्त्र विशेष, हीरा, बिजली, पक्का लोहा, बरछा, भाषा, थूहर का पेड़, विष्णु के चरण का चिह्न, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से पंद्रहवां योग, (वि०) बहुत कड़ा या पुष्ट, घोर, भयकर; वज्रकण्टक–(सं० पुं०) हनुमान् का एक नाम। वज्रकन्द–(सं०पुं०) सकरकन्द। वज्रगोप–(सं० पु०) बीरबहूटी। वज्रघोष–(सं०त्रि०) बिजली की कड़क; वज्रचर्मा–(सं०पुं०) गैडा। वज्रचञ्चु–(सं०पु०) गीध। वज्रजित्–(सं०पुं०) गरुड़ का एक नाम। वज्रज्वलन–(सं०पुं०) विद्युत्, बिजली। वज्रतुण्ड–(सं०पुं०) गरुड़, गणेश। वज्रदंष्ट्र–(सं०पुं०) एक राक्षस का नाम। वज्रदण्ड–(सं०पुं०) एक अस्त्र जिसको इन्द्र ने अर्जुन को दिया था। वज्रदन्त–(सं०पुं०) शूकर, चूहा। वज्रदन्ती–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा। वज्रदेह–(सं०पुं०) बलराम। वज्रधर–(सं०पुं०) इन्द्र। वज्रनख–(सं०पुं०) नृसिह। वज्रपाणि–(सं०पुं०) इन्द्र। वज्रमणि–(सं०पुं०) हीरक, हीरा। वज्रमय–(सं०वि०) वज्र के समान। वज्रमुष्टि–(सं०पुं०) इन्द्र, एक राक्षस का नाम। वज्रमूली–(सं०स्त्री०) जंगली उड़द। वज्रयोगिनी–(सं०स्त्री०) तन्त्रोक्त एक देवी का नाम। वज्ररथ–(पुं०पुं०) क्षत्रिय। वज्ररद–(सं०पुं०) शूकर, सुअर। वज्ररूप–(सं०वि०) वज्र के समान आकृति का। वज्रलेप–(सं० पुं०) वह मसाला या पलस्तर जिसका लेप करने से भीत, मूर्ति आदि बहुत दृढ़ हो जाती है। वज्रलौह–(सं०पुं०) चुंबक। वज्रवीर–(सं०पुं०) महाकाल रुद्र का नाम। वज्रवृक्ष–(सं०पुं०) थूहर। वज्रसार–(सं०पुं०) हीरा। वज्रहस्त–(सं०पुं०) शिव।
वज्रा–(सं०स्त्री०) थूहर, गुरुच, दुर्गा।
वज्राकर–(सं०पुं०) हीरे की खान।
वज्राघात–(सं०पुं०)आकस्मिक दुर्घटना
वज्रांग–(सं०पुं०) सर्प, सांप, हनुमान्।
वज्राभ–(सं०वि०) हीरे के समान चमक वाला। वज्राभ्यास–(सं०पुं०) गणित में गुणा करने की एक विधि।
वज्रायुध–(सं०पुं०) इन्द्र। वज्रासन–(सं०नपुं०) हठ योग का एक आसन।
वज्री–(सं०पुं०) वज्रधारी इन्द्र, थूहड़ का वृक्ष।
वज्रोदरी–(सं० स्त्री०) एक राक्षसी का नाम।
वज्रोली–(हिं० स्त्री०) हठ योग की एक मुद्रा।
वञ्चक–(सं०पुं०) सियार, चोर, ठग, धूर्त। वञ्चन–(सं०नपुं०) धोखा देना या खाना; वञ्चना–(सं० स्त्री०) धोखा, छल; वञ्चनीय–(सं० वि०) ठगने योग्य। वञ्चित–(सं०त्रि०) धोखे में आया हुआ, विमुख।
वञ्चुक–(सं०पुं०) ठग, धूर्त।
वट–(सं०पुं०) बरगद का पेड़।
वटक–(सं०पुं०) बड़ा, पकौड़ा, बड़ी टिकिया या गोला।
वटर–(सं०पुं०) मथानी, पगड़ी।
वटवासी–(सं०वि०) वरगद के वृक्ष पर रहनेवाला, (पु०) यक्ष।
वटसावित्री–(सं०स्त्री०) एक व्रत जिसमें स्त्रियां वट का पूजन करती हैं।
वटिका, वटी–(सं०स्त्री०) वटी, गोली, टिकिया।
वटु–(सं०पु०) ब्रह्मचारी बालक।
वटुक–(सं० पु०) बालक, ब्रह्मचारी, बटुक भैरव।
वड़भी–(सं०स्त्री०) धौरहरा।
बड़व–(सं०पुं०) घोटक, घोड़ा।
वड़वा–(सं० स्त्री०) घोड़ी, अश्विनी नक्षत्र, वडवाग्नि, दासी। वड़वाग्नि–(सं० पुं०) बड़वानल। बड़वानल–(सं०पुं०) बड़वानल। वड़वामुख–(सं०पुं०) शिव का एक नाम, शिव का मुख; वड़वावक्त्र–(सं० नपुं०) बडवानल; वड़वासुत–(सं० पुं०) अश्विनी कुमार।
वड़ा–(सं०स्त्री०) वटक, बड़ा।
वणिक–(सं०पुं०)व्यवसायी,बनियां,वैश्य
वणिक्पथ–(सं०पुं०) वाणिज्य,व्यवसाय
वणिक्जन–(सं०पु०) बनियां; वणिग्बन्धु–(सं०पु०) नील का पौधा; वणिग्वह–(सं०पुं०) उष्ट्र, ऊँट।
वणिज–(सं० पु०) ज्योतिष में एक करण का नाम।
वण्ट–(सं०पुं०) भाग, बाँट।
वण्ठ–(सं०पुं०) वामन, बौना।
वण्डा–(सं०स्त्री०) पुंश्चली, छिनाल।
वत्–(सं०अव्य०) यथा, तथा।
वतंस–(हिं०पुं०) देखो अवतंस,शिरोभूषण
वतायन–(सं०पुं०) वातायन, झरोखा।
वत्–(सं०पुं०) समान, तुल्य।
वत्स–(सं० पुं०) वत्सर, शिशु, बालक; कंस का एक अनुचर जिसको कृष्ण ने मारा था,(नपु०) वक्ष,छाती
वत्सकामा–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसको पुत्र की कामना हो।
वत्सतन्त्री–(सं०स्त्री०) बछवा बांधनें की रस्सी। वत्सतरी–(सं० स्त्री०) तीन साल की बछिया, कलोर।
वत्सनाभ–(सं० पुं०) बछनाग विष।
वत्सपाल–(सं० पु०) बच्चा पालने वाला, श्रीकृष्ण।
वत्सर–(सं०पु०) वर्ष, साल, ध्रुव के एक पुत्र का नाम।
वत्सल–(सं०वि०) सन्तान के लिये प्रेम पूर्ण; छोटे के लिये स्नेहवान् या कृपालु; साहित्य में वह रस जिसमें माता पिता अपनी सन्तति के लिये प्रेम दिखलाता है।
वत्सा–(सं०स्त्री०) बछिया।
वत्सादन–(सं०पुं०) वृक, भेड़िया।
वत्सादनी–(सं०स्त्री०) गुडुच, गिलोय।
वत्सासुर–(सं० पुं०) एक असुर जो कंस का अनुचर था जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
वदतोव्याघात–(सं०पुं०) कथन का वह दोष जिसमें एक बात कहकर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।
वदन–(सं० नपुं०) मुख, अगला भाग, कथन, बात कहना।
वदनरोग–(सं०पुं०) मुख का रोग।
वदन्य–(सं०वि०) देखो वदान्य, उदार।
वदान्य–(सं० वि०) उदार, मधुर बोलने वाला।
वदाम–(सं०नपु०) बादाम का फल।
वदि–(हिं० पु०) कृष्ण पक्ष।
वदितव्य–(सं०वि०) कहने योग्य।
वध–(सं०पुं०) हत्या, उत्पात, मारण, हनन। वधक–(सं०वि०) हिंसक, वध करने वाला,मृत्यु, मरण। वधदण्ड–(सं०पु०) प्राणदण्ड।
वधस्न–(सं०नपुं०) इन्द्र का वज्र।
वधार्ह–(सं०वि०) वध करने योग्य।
वधुका–(सं०स्त्री०) पुत्र की स्त्री, पतोहू, दुलहिन।
वधुटी–(सं०स्त्री०) अविवाहिता कन्या।
वधू–(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री, पुत्रवधू, पतोहू, नवविवाहिता स्त्री, भार्या पत्नी। वधूटी–(सं० स्त्री०) पुत्रवधू, पतोहू, दुलहिन, भार्या।
वधूवस्त्र–(सं० नपुं०) वह वस्त्र जो कन्या को विवाह के समय पहराया जाता है।
वध्य–(सं० स्त्री०) वध करने योग्य।
वध्यता–(सं०स्त्री०) मारने का भाव।
वध्र–वध्रक–(सं०पुं०) सीसक, सीसा।
वन–(सं० नपुं०) जंगल, राशि, किरण, फूलों का गुच्छा, कुसुम, फूल, जल, पानी, आलय, घर. शंकराचार्य के एक विशेष शिष्यों की उपाधि। वनकन्द–(सं० पुं०) जंगली सूरन।
वनकर्णिका–(सं० स्त्री०) सलाई का पेड़। वनकाम–(सं० वि०) जंगल में घूमने वाला वनकुक्कुट–(सं०पुं०) जंगली मुर्गा। वनकुञ्जर–(सं० पुं०) जंगली हाथी। वनकुण्डली–(सं०पुं०) जंगली सूरन। वनकोकिलक–(सं० नपु०) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं। वनक्रीड़ा–(सं० स्त्री०) वह खेल जो जंगल में किया जाता है।
वनग–सं०वि०) जंगल में जाने वाला।
वनगज–(सं० पुं०) जंगली हाथी।
वनगव–(सं०पुं०) जंगली गाय; वनगहन–(सं० नपुं०) घना जंगल; वनगुप्त–(सं०पुं०) गुप्तचर, भेदिया; वनगुल्म–(सं०पुं०) जंगली लता।
वनगो–(सं०स्त्री०) नील गाय।
वनगोचर–(सं०पुं०) व्याध।
वनचर–(सं०वि०) जंगल में घूमने वाला।
वनज–(सं०वि०)जो वन में उत्पन्न हो, (नपुं०) अम्बुज, कमल।

वनजीवी–(सं०पुं०) लकड़हारा।
वनद–(सं०पुं०) मेघ, बादल।
वनदमन–(सं०पुं०) जंगली दौना।
वनदाह–(सं०पुं०, अग्निसे जंगल जलना।
वनदुर्गा–(सं०स्त्री०)तन्त्रोक्त देवी मूर्ति।
वनदेव–(सं० पुं०) वन का अधिष्ठाता, देवता; वनद्विप–(सं०पुं०) जंगली हाथी; वनाधिपति–(सं० स्त्री०) मेघमाला। वनधेनु–(सं०पुं०) नील गाय।
वननीय–(सं०वि०) अभिलपित, इच्छा के योग्य।
वनप–(सं०पुं०) वनवासी, लकड़हारा।
वनपन्नग–(सं० पुं०) जंगली सर्प।
वनपांशुल–(सं०पुं०) व्याध, शिकारी।
वनपादप–(सं० पुं०) जंगली वृक्ष।
वनपार्श्व–(सं०पुं०) जंगल के आस पास का स्थान; वनपाल–(सं० वि०) जंगल का रक्षक; वनप्रिय–(सं०नपुं०)कोकिल, कोयल।
वनबर्हिण–(सं०पुं०) जंगली मोर।
वनमल्लिका–(सं०स्त्री०) सेवती का फूल।
वनमानुष–(हिं०पुं०) बिना पूंछ का बड़ा बन्दर जिसका आकार मनुष्य से बहुत मिलता है।
वनमाला–(सं०स्त्री०) जंगली फूलों की माला, सब ऋतुओं में होने वाले अनेक प्रकार के फूलों से बनी हुई माला जो श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय है, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं। वनमालिका–(सं० स्त्री०) चमेली का फूल; वनमाली–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
वनराज–(सं० पुं०) सिंह; –वनराजी–(सं०स्त्री०) वनसमूह; वनरुह–(सं०नपुं०) पद्म, कमल; वनलक्ष्मी–(सं० स्त्री०) जंगल की शोभा; वनवह्नि–(सं०पुं०) दावानल।
वनवास–(सं०पुं०) जंगल में निवास।
वनवासी–(सं०वि०) बस्ती छोड़कर बन में रहने वाला।
वनस्थ–(सं०वि०) वनवासी; वनस्थली–(सं०स्त्री०) वनभूमि, जंगली प्रदेश।
वनस्पति–(सं० पुं०) वह वृक्ष जिसमें फूल न हों केवल फल ही हों, वृक्ष मात्र पेड़ पौधे; वनस्पतिशास्त्र–(सं० पुं०) वह शास्त्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि पौधों तथा वृक्षों आदि के क्या क्या रूप और कौन कौन सी जातियाँ हैं।
वनहरि–(सं०पुं०) सिंह।
वनहास–(सं०पुं०) कुन्द का फूल।
वनहुताशन–(सं०पुं०) वनाग्नि।
वनाखु–(सं०पुं०) शशक, खरहा।
वनाटन–(सं०नपुं०) जंगल में घूमना।
वनान्त–(सं०पुं०) जंगल में का मैदान।
वनान्तर–(सं०नपुं०) दूसरा जंगल।
वनाब्जिनी–(सं०स्त्री०) जलपद्म।
वनालक्त–(सं०नपुं०) गैरिक, गेरू।
वनालय–(सं० पुं०) जंगल में का रहने का घर।
वनाश्रमी–(सं० वि०) वानप्रस्थ धर्मावलम्बी। वनाश्रित–सं०वि०) जिसने वानप्रस्थ आश्रम धारण किया हो।
वनित–(सं०वि०) याचित, मांगा हुआ।
वनिता–(सं०स्त्री०) प्रियतमा, अनुरक्त स्त्री, औरत, छ वर्णों की एक वृत्ति जिसको तिलका या डिल्ला भी कहते है। वनिताद्विष्–(सं० पुं०) स्त्रियों से ईर्ष्या करने वाला मनुष्य। वनिताभोजी–(सं० स्त्री०) नागकन्या। वनितामुख–(सं०पुं०) स्त्री का मुख मण्डल। वनिताविलास–(सं० पुं०) स्त्री संभोग की इच्छा।
वनिन–(सं०वि०) वनवासी, जंगल में रहने वाला।
वनी–(सं०स्त्री०) वनस्थली, छोटा वन।
वनीयक–(सं०वि०)भिक्षुक,मांगनेवाला।
वनेचर–(सं० वि०) वनमें घूमने वाला।
वनोद्देश–(सं० पुं०) वन के बीच का स्थान।
वनोद्भव–(सं० वि०) वन में उत्पन्न।
वनोद्भवा–(सं०स्त्री०) जंगली कपास।
वनौकस्–(सं० पुं०) वन्दर, केवांच।
वनौघ–(सं०पुं०) वन समूह।
वनौषध–(सं०स्त्री०) जंगली जड़ी बूटी।
वन्दक–(सं०वि०) स्तुति करने वाला।
वन्दन–(सं० नपुं०) प्रणाम, स्तुति। वन्दनमाला–(सं० स्त्री०) तोरण, बन्दनवार। वन्दनमालिका–(सं०स्त्री०) वह माला जो सजावट के लिये घरों के द्वार पर या मण्डप के चारो ओर बांधी जाती है। वन्दनवार–(हिं०स्त्री०) देखो बन्दन मालिका।
वन्दना–(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रणाम
वन्दनीय–(सं०वि०)आदर करने योग्य।
वन्दी–(हिं० पुं०) स्तुति पाठक, मागध, भाट। वन्दीपाल–(सं०पुं०) कारागृह का रक्षक।
वन्द्य–(सं०वि०) वन्दना करने योग्य।
वन्य–(सं० वि०) जंगल में उत्पन्न होने वाला, जंगली। वन्यदमन–(सं० पुं०) जंगली दौने का फूल। वन्यद्वीप–(सं०पुं०) जंगली हाथी। वन्यधान्य–(सं० नपुं०) तिन्नी का चावल। वन्यपक्षी–(सं०पुं०) जंगली चिड़िया। वन्यवृक्ष–(सं०पुं०) पीपल का पेड़।
वन्याशन–(सं० वि०) जंगली फल खाने वाला।
वन्याश्रम–(सं०पुं०) देखो वनाश्रम।
वपन–(सं०नपुं०) सिर मूड़ना, बीजबोना
वपनी–(सं०स्त्री०)वह स्थान जहां जुलाहे कपड़ा बुनते हैं।
वपनीय–(सं०वि०) बोने योग्य।
वपा–(सं०स्त्री०) छिद्र, छेद,बसा,बांबी।
वपु–(हिं० पुं०) शरीर, देह।
वपुमान–(हिं०वि०) शरीर धारी।
वपुष्टमा–(सं० स्त्री०) काशी राज की कन्या, जिसका विवाह परीक्षित के पुत्र जनमेजय से हुआ था।
वपोदर–(सं०वि०) पीवरोदर, तोंद।
वप्तव्य–(सं०वि०) वपनीय, बोने योग्य
वप्ता–(सं० वि०) बीज बोने वाला।
वब–(सं०पुं०) ज्योतिष में ग्यारह करण के अन्तर्गत प्रथम करण।
वभ्रु–(सं०पुं०) एक यदुवंशीय योद्धा का नाम।
वम,वमन–(सं० पुं०) उल्टी, कै।
वमनी–(सं०स्त्री०) जलौका, जोंक।
वमि–(सं०स्त्री०) वमन का रोग; वमित–जिसको वमन कराया गया हो।
वयःक्रम–(सं०पुं०) आयुष्य, उम्र।
वयःसन्धि–(सं०स्त्री०) बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का काल।
वयःसम–(सं०वि०) समान वय का।
वय–(सं० पुं०) तन्तुवाय, जुलाहा, (हिं०पुं०) आयु।
वयन–(सं० नपुं०) बुनने की क्रिया या भाव।
वयस–(सं०पुं०) जीवन काल,अवस्था।
वयस्क–(सं० वि०) अवस्था वाला, पूरी अवस्था को पहुंचा हुआ।
वयस्य–(सं० पुं०) समान वय का, हमजोली, मित्र। वयस्यक–(सं०पुं०) मित्र, बन्धु। वयस्यत्व–(सं० नपुं०) वयस्य का भाव या धर्म। वयस्यभाव–(सं० पुं०) बन्धुता, सख्यभाव। वयस्या–(सं० स्त्री०) सखी।
वयःसन्धि–(सं०पुं०) चढ़ती जवानी।
वयःसम–(सं०वि०) समान वय वाला
वयोगत–(सं०नपुं०) बुढ़ापा।
वयोधा–(सं० हिं०) शक्ति, युवा, अन्नदाता।
वयोवस्था–(सं०स्त्री०) जीवन काल।
वयोवृद्ध–(सं० वि०) जो अवस्था में बड़ा हो।
वरंडा–(हिं० पुं०) देखो वरामदा।
वरंच–(हिं०अव्य०) परन्तु, वल्कि।
वर–(सं०नपुं०) कुंकुम, केसर, बालक, पति, जामाता, (पुं०) किसी देवी देवता से मांगा हुआ मनोरथ, फल या सिद्धि; (वि०) श्रेष्ठ।
वरकन्दा–(सं०स्त्री०) खिरनी का वृक्ष।
वरज–(सं०वि०) ज्येष्ठ, बड़ा।
वरट–(सं०पुं०) हंस, भिड़, वर्रे।
वरण–(सं०नपुं०) किसी काम के लिये किसी व्यक्ति को नियुक्त करना; मंगल कार्य के विधान में होता आदि कार्य कर्ताओं को नियुक्त करके उनका सत्कार करना, विवाह में वर को अंगीकार करने की विधि, पूजा, अर्चना, सत्कार।
वरणी–(हिं०स्त्री०) देखो वरुण।
वरणक–(सं०वि०) वरण करने वाला।
वरणमाल–(सं०स्त्री०) विवाह के समय पहराने की माला।
वरणीय–(सं०वि०)प्रार्थनीय, श्रेष्ठ,बड़ा
वरण्ड–(सं० पुं०) आंसारा, मुंहासा, धार का बट्टर; वरण्डक–(सं० पुं०) हाथी की पीठ पर कसने का हौदा।
वरतनु–(सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं।
वरद–(सं०वि०) वर देने वाला, प्रसन्न।
वरदक्षिणा–(सं० स्त्री०) वह धन जो विवाह के समय वर को कन्या के पिता से मिलता है, दहेज।
वरदा–(सं० स्त्री०) कन्या (वि०) वर देने वाली; वरदा चतुर्थी–(सं० स्त्री०) माघ शुक्ला चतुर्थी; वरदाता–(हिं० वि०) वर देने वाला, अभीष्ट देने वाला; वरदान–(सं०नपुं०) किसी देवता आदि का प्रसन्न होकर मांगी हुई वस्तु का देना, फलप्राप्ति। वरदानिक–(सं०वि०) वरदान संबंधी वरदानी–(सं०पुं०)मनोरथ पूर्ण करने वाला।
वरधर्म–(सं०पुं०) श्रेष्ठ कर्म, बड़ा काम
वरन्–(हिं०अव्य०) ऐसा न हो कि।
वरनारी–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वरनिश्चय–(सं०पुं०) पति चुनना।
वरपक्ष–(सं०पुं०) वरयात्रा, बारात। वरपक्षीय–(सं०वि०) वर सम्बन्धी; वरपीत–(सं०पुं०) हरताल; वरप्रद–(सं०वि०) वर देने वाला; वरप्रदान–(सं०नपुं०) मनोरथ सिद्ध करना।
वरप्रभ–(सं०वि०) बहुत चमकता हुआ
वरप्रस्थान–(सं०नपुं०)वरयात्रा,बारात।
वरफल–(सं०नपुं०) श्रेष्ठ फल, नारियल
वरम–(हिं०पुं०) देखो वर्म।
वरयात्रा–(सं० स्त्री०) विवाह करने के लिये वर का गाजे बाजे के साथ कन्या के घर जाना, बारात; वरयोग्य–(सं०वि०) आशीर्वाद दिया या उपहार पाने योग्य; वररुचि–(सं०पुं०) एक प्राचीन वैयाकरण और प्रसिद्ध कवि; वरवत्सला–(सं० स्त्री०) सास; वरवर्ण–(सं०पुं०) सुवर्ण, सोना, श्रेष्ठ वर्ण, बढ़िया रंग।
वरवर्णिनी–(सं० स्त्री०) अत्युत्तमा स्त्री, लाक्षा, लाख, हल्दी, गौरी, लक्ष्मी।
वरवारण–(सं०पुं०) सुन्दर हाथी।
वरसुन्दरी–(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं
वरही–(हिं० पुं०) सोने की एक लंबी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहनाई जाती है।
वरा–(सं०स्त्री०)श्रेष्ठा,हरिद्रा,हल्दी, मद्य
वराक–(सं०वि०) शोचनीय, नीच।
वरांगना–(सं०स्त्री०) सर्वाङ्ग सुन्दर स्त्री
वराटक–(सं०पुं०) कपर्दक, कौड़ी, रस्सी, पद्मबीज; वराटिका–(सं० स्त्री०) कपर्दक, कौड़ी, तुच्छ वस्तु।
वराड़ी–(सं०स्त्री०)एक रागिणी का नाम
वरानना–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वराम्ल–(सं०पुं०) करमर्द, करोंदा।
वरारक–(सं०पुं०) हीरक, हीरा।
वरारोह–(सं०पुं०) विष्णु।
वरासन–(सं० नपुं०) श्रेष्ठ आसन, सिंहासन।
वरासी–(सं०स्त्री०) मैला वस्त्र।

वराह–(सं० पुं०) विष्णु, एक पर्वत का नाम, शिशुमार, सूँस, अठारह द्वीपों में से एक; **वराहकन्द**–(सं० पुं०) वाराही कन्द; **वाराहकर्ण**–(सं० पुं०) एक यक्ष का नाम; **वराहकर्णी**–(सं० स्त्री०) असगन्ध; **वराहकाली**–(सं० स्त्री०) हुरहुर का वृक्ष; **वराहक्रान्ता**–(सं०स्त्री०) लज्जालु, शूकरी; **वराहमिहिर**–(सं० पुं०) ज्योतिष के प्रधान आचार्य, लोगों का विश्वास है कि यह राजा विक्रमादित्य के नव रत्न में से एक थे; **वराह व्यूह**–(सं० पुं०) प्राचीन काल की एक प्रकार की सेना की रचना; **वराह शृंग**–(सं० पुं०) शिव, महादेव; **वराहिका**–(सं०स्त्री०) केंवाच।

वराही–(सं०स्त्री०)वाराहीकन्द, शूकरी।

वरिशी–(सं०स्त्री०) कँटिया।

वरिष–(सं०नपुं०) वत्सर, वर्ष।

वरिषा–(सं०स्त्री०) वर्षा।

वरिषा प्रिय–(सं०पुं०) चातक पक्षी।

वरिष्ठ–(सं०वि०)श्रेष्ठ, उत्तम, विस्तीर्ण

वरीधरा–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके पहले दूसरे तथा चौथे चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।

वरीषु–(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव।

वरुण–(सं०पुं०) एक देवता जो कश्यप के पुत्र थे यह अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, यह देवताओं के रक्षक तथा जल के अधिपति माने जाते हैं, जल, पानी, सूर्य, एक ग्रह का नाम; **वरुण ग्रस्त**–(सं० वि०) जल में डूबा हुआ; **वरुण ग्रह**–(सं०पु०) घोड़ों का एक रोग; **वरुण देव**–(सं० पुं०) शतभिषा नक्षत्र; **वरुण पाश**–(सं० पु०) वरुण का अस्त्र, पाश का फन्दा; **वरुण मण्डल**–(सं० पुं०) नक्षत्रों का मण्डल जिसमें रेवती, पूर्वाषाढा, आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, उत्तरा भाद्रपद और शतभिषा हैं।

वरुणात्मजा–(सं०स्त्री०) वारुणी, मदिरा

वरुणानी–(सं०स्त्री०) वरुण की पत्नी।

वरुणालय, वरुणावास–(सं०पु०) समुद्र।

वरुणोद–(सं०नपुं०) सागर, समुद्र।

वरुणर्क्ष–(सं०पुं०) शतभिषा नक्षत्र।

वरुथ–(सं०नपुं०) तनुत्राण, कवच, चर्म, ढाल, सेना; **वरूथाधिप, वरूथाधिपति**–(सं०पुं०) सेनापति; **वरूथिनी**–(सं०स्त्री०) सेना।

वरेण्य–(सं०पुं०) शिव, महादेव, (वि०) मुख्य, प्रधान, पूजनीय।

वरेन्द्र–(सं०पुं०) इन्द्र, राजा।

वरेय–(सं०पुं०) सूर्य।

वरेयु–(सं०वि०) विवाह के लिये कन्या माँगने वाला।

वरेश–(सं०पुं०) सर्वेश्वर, भगवान्।

वरेश्वर–(सं०पुं०) शिव।

वरोट–(सं०नपुं०) महुवा।

वरोरु–(सं० वि०)सुन्दर जांघवाली स्त्री

वरोहशाखी–(सं०पुं०) पाकर का वृक्ष।

वर्कट–(सं०पुं०) कील, काँटा, अर्गला।

वर्कर–(सं०पुं०)भेड़ का बच्चा, मेमना।

वर्करीट–(सं०पुं०) कटाक्ष, दो पहर की गरमी।

वर्ग–(सं० पुं०) एक तरह के अनेक पदार्थो का समूह, समान धर्म वाले पदार्थो का समूह, व्याकरण में एक ही स्थान से उच्चारण होने वाले व्यञ्जन वर्णो का समूह प्रकरण, अध्याय परिच्छेद, जाति, श्रेणी, दो समान अंक या राशिमों का गणन फल, रेखागणित में वह क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर हो तथा जिसके चारो कोण समकोण हों:

वर्गघन–(सं० नपुं०) किसी वर्ग राशि का घन फल; **वर्गण**–(सं०स्त्री०)गुणन;

वर्गपद–(सं०नपुं०) वर्ग मूल; **वर्गफल**–(सं०नपुं०) वह अंक जो किसी अंक के साथ गुणा करने से प्राप्त हो;

वर्गमूल–(सं०नपुं०) किसी वर्गाङ्क का वह अंक जिसको यदि उसीसे गुणा करें तो गुणन फल वही वर्गाङ्क हो।

वर्ग वर्ग–(सं०पुं०) वर्ग का वर्गफल।

वर्गीय–(सं०वि०) वर्ग संबंधी।

वर्चटी–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।

वर्चस्–(सं०नपुं०) तेज, अन्न।

वर्चस्क–(सं०नपुं०) दीप्ति, तेज।

वर्चस्वी–(सं० पुं०) चन्द्रमा, (वि०) दीप्तियुक्त।

वर्जक–(सं०वि०) त्याग करने वाला।

वर्जन–(सं० नपुं०) त्याग, छोड़ना, मारण, मनाही; **वर्जनीय**–(सं० वि०) त्याज्य, छोड़ने योग्य, निषिद्ध, मना किया हुआ; **वर्जित**–(सं० वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ; **वर्ज्य**–(सं० वि०) छोड़ने योग्य।

वर्ण–(सं० पुं०) जाति, यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, पदार्थो के लाल, काले, पीले आदि का भेद, प्रकार, यश, कीर्ति, गुण, स्तुति, गीतक्रम, चित्र, तलवार, रूप,अक्षर, व्याकरण के अनुसार आकारादि शब्दों के चिह्न या संकेत; **वर्णकण्ट**–(सं० नपुं०) तुत्थ, तूतिया; **वर्णक दण्डक**–(सं०पुं०)चित्रकार की कूंची, एक प्रकार का छन्द; **वर्णक्रम**–(सं०पुं०) जाति परंपरा, अक्षर श्रेणी; **वर्णखण्डमेरु**–(सं० पुं०)छन्द शास्त्र की वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि इतने वर्णों से कितने वृत्त हो सकते हैं और प्रत्येक वृत्त में कितने गुरु और कितने लघु वर्ण होंगे; **वर्णगत**–(सं० वि०) वर्ण सम्बन्धी; **वर्णचारक**–(सं०त्रि०)चित्रकार; **वर्णज**–(सं०वि०)वर्णोद्भव, जाति; **वर्णज्येष्ठ**–(सं०पुं०) ब्राह्मण; **वर्णता**–(सं० स्त्री०) वर्ण का भाव या धर्म; **वर्णतूलि**–(सं० स्त्री०) चित्रकार की कूंची; **वर्णत्व**–(सं० नपुं०) वर्ण का भाव या धर्म; **वर्णद**–(सं०वि०)रंग देने वाला; **वर्णदाता**–(सं०वि०) वर्णदायक; **वर्णदात्री**–(सं० स्त्री०) हरिद्रा, हलदी; **वर्णदूषक**–(सं० वि०) जाति का नष्ट करने वाला; **वर्णधर्म**–(सं० पुं०) वर्णाश्रम धर्म।

वर्णन–(सं०नपुं०) गुणकीर्तन, चित्रण, रंगना, विस्तार सहित किसी बात को कहना।

वर्णनष्ट–(सं० पुं०) पिंगल शास्त्र के अनुसार वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि प्रस्ताव के अनुसार इतने वर्णों के अमुक संख्यक भेद का रूप लघु गुरु वर्ण के अनुसार किस प्रकार का होगा।

वर्णना–(सं० स्त्री०) गुणकथन, स्तुति, प्रशंसा।

वर्णनीय (सं०वि०) वर्णन करने योग्य।

वर्णपताका–(सं०स्त्री०) पिंगल शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों में से कौन सा ऐसा भेद है जिसमें इतने गुरु तथा इतने लघुवर्ण होंगे।

वर्णपाताल–(सं०पुं०) पिंगल शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक संख्या के वर्णों के कुल कितने वृत्त हो सकते हैं और उसमें से कितने लघ्वादि कितने लघ्वान्त, कितने गुर्वादि, कितने गुर्वान्त तथा कितने सर्वगुरु और कितने सर्वलघु होंगें।

वर्णपात्र–(सं० नपुं०) चित्रकार का रंग रखने का पात्र।

वर्णप्रत्यय–(सं०पुं०) पिंगल शास्त्र की वह क्रियायें जिनके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक संख्या के वर्णवृत्तों के कितने भेद हो सकते हैं, उनके स्वरूप क्या होंगे आदि।

वर्णप्रस्तार–(सं०पुं०) पिंगल शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्ण के वृत्तों के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगें।

वर्णभेद–(सं०पुं०) रंग का भेद।

वर्णमात्रिका–(सं० स्त्री०) सरस्वती।

वर्णमाला–(सं०स्त्री०) वर्ण, श्रेणी, किसी भाषा के क्रम से लिखे हुए अक्षर।

वर्णयितव्य–(सं०वि०)वर्णन करने योग्य;

वर्णराशि–(सं०पु०)वर्णसमूह।

वर्णरेखा–(सं०स्त्री०) खड़िया।

वर्णलिपि–(सं० स्त्री०) अक्षर प्रकाशक लेखन प्रणाली।

वर्णवती–(सं० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।

वर्णवर्ति–(सं० स्त्री०) लेखनी।

वर्णवादी–(सं०वि०) प्रशंसा करने वाला

वर्णविकार(सं०पुं०) निरुक्त के अनुसार शब्दों में एक वर्ण का बिगड़ कर दूसरा वर्ण हो जाना।

वर्णविचार–(सं०पुं०) नवीन व्याकरण का वह विभाग जिसमें वर्णोंके आकार उच्चारण और सन्धि आदिके नियमों का वर्णन रहता है, प्राचीन वेदाङ्ग में यह विषय "शिक्षा" कहलाता था, और व्याकरण से स्वतन्त्र माना जाता था।

वर्णविपर्यय–(सं०पुं०) निरुक्त के अनुसार शब्दों के वर्णों का उलट फेर होना।

वर्णविलोडक–(सं०पुं०) वह जो दूसरे के लिखे हुए लेख को अपना बतलाता हो।

वर्णवृत्त–(सं० नपुं०) वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या तथा लघु-गुरु के क्रमों में समानता हो।

वर्णश्रेष्ठ–(सं०पु०) चारो वर्णों में श्रेष्ठ ब्राह्मण। **वर्णसंघाट**–(सं०पुं०) वर्णमाला। **वर्णसंघात**–(सं०पुं०) वर्णसमूह। **वर्णसंयोग**–(सं०पुं०) सवर्ण विवाह। **वर्णसंसर्ग**–(सं०पुं०) असवर्ण विवाह।

वर्णसंकर–(सं० पुं०) ब्राह्मणादि वर्ण के अनुलोम या प्रतिलोम से उत्पन्न जाति, व्यभिचार से उत्पन्न जाति, दोगला।

वर्णसूची(सं०स्त्री०) छन्द शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तों की संख्या की शुद्धता तथा उनके भेदों में आदि अन्त लघु, और आदि अन्त गुरु की संख्या जानी जाती है।

वर्णस्थान–(सं० नपुं०) वर्ण या शब्द आदि का उच्चारण स्थान।

वर्णा–(सं०स्त्री०)आढ़की, अरहर।

वर्णांका–(सं०स्त्री०) लेखनी।

वर्णाट–(सं० पुं०) चित्रकार, गवैया।

वर्णाश्रम–(सं०पुं०)चारो वर्ण का आश्रम **वर्णाश्रमधर्म**–(सं०पुं०)ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चारों वर्ण आश्रम में रहकर जिस कर्म द्वारा ऐहिक और पारलौकिक कल्याण प्राप्त करते हैं।

वर्णिक–(सं०पुं०) छेखक।

वर्णिक वृत्त–(सं०पु०) वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या तथा गुरु लघु के स्थान समान हों।

वर्णित–(सं० वि०) वर्णन किया हुआ, कहा हुआ।

वर्णी–(हिं०पुं०)लेखक, चित्रकार, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण।

वर्ण्य–(सं०वि०) वर्णन करने योग्य,(पुं०) प्रस्तुत विषय।

वर्तक–(सं०नपुं०) बटुआ।

वर्तका–(सं०स्त्री०) वर्तक पक्षी, बटेर।

वर्तन–(सं०नपुं०)व्यवसाय,जीवनवृत्ति, परिवर्तन, उलटफेर,स्थिति, ठहराव, स्थापन, रखना, व्यवहार, बरताव, पात्र, सिल बट्टे पर पीसना।

वर्तना–(हिं०क्रि०) देखो बरतना।

वर्तनि–(सं०पुं०)शुद्ध राग का एक भेद;

वर्तनी–(सं० स्त्री०) बटने की क्रिया; पिसाई।

वर्तमान–(सं०पुं०) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता

है कि क्रिया अभी चली जाती है समाप्त नहीं हुई है, वृत्तान्त, समाचार चलता व्यवहार, (वि॰) जो चल रहा हो, आधुनिक, विद्यमान, उपस्थित, साक्षात्।
वर्तमानता–(सं॰ स्त्री॰) उपस्थिति।
वर्ति–(सं॰ स्त्री॰) दीपशिखा, बत्ती, अंजन, उबटन, गोली, दीप, दीया, वटी।
वर्तिक–(सं॰पुं॰) बटेर पक्षी। **वर्तिका**–(सं॰ स्त्री॰) बटेर, बत्ती, शलाका, सलाई।
वर्तित–(सं॰ वि॰) सम्पादित, चलाया हुआ, किया हुआ, जारी किया हुआ, प्रस्तुत, ठीक किया हुआ
वर्तितव्य–(सं॰वि॰) स्थित के योग्य।
वर्ती–(हिं॰ वि॰) बरतने योग्य, स्थिर रहने वाला।
वर्तिष्णु–(सं॰वि॰) बरतने योग्य।
वर्तुल–(सं॰वि॰)वृत्ताकार,गोल, (नपुं॰) मटर, गाजर, सोहागा।
वर्त्म–(सं॰पुं॰) मार्ग, पथ, गाड़ी के पहिये की लकीर, आधार, आँख की पलक, किनारा, वारी।
वर्दी–(हिं॰स्त्री॰) देखो वरदी।
वर्धक–(सं॰ वि॰) पूरक, बढ़ाने वाला, काटने वाला।
वर्धकि,वर्धकी–(सं॰वि॰)त्वष्टा, रथकार, बढ़ई।
वर्धन–(सं॰वि॰) बढ़ाने वाला (नपुं॰) वृद्धि, उन्नति,(पुं॰) बढ़ाना, छीलना, पूर्ति।
वर्धनी–(सं॰ स्त्री॰) सम्मार्जनी,झाड़ू, कमण्डलु।
वर्धनीय–(सं॰वि॰) बढ़ाने योग्य।
वर्धापक–(सं॰वि॰) कर्णवेध की क्रिया करने वाला।
वर्धापन–(सं॰नपुं॰) कर्णवेध,कनछेदन।
वर्धमान–(सं॰वि॰) बढ़ने वाला, बढ़ता हुआ, (पुं॰) विष्णु, रेड़ी का पेड़; एक वर्णवृत्त का नाम।
वर्धित–(सं॰वि॰)वृद्धिप्राप्त, बढ़ा हुआ, पूर्ण;प्रसूत,उत्पादक; **वर्धिष्णु**–(सं॰वि॰) बढ़ने वाला।
वर्ध्री–(सं॰स्त्री॰) चमड़े की रस्सी, बध्रि नामक आभूषण।
वर्ध्म–(सं॰पुं॰) आंत उनरने का रोग।
वर्म–(सं॰पुं॰) तनुत्राण, कवच। **वर्मकण्टक**–(सं॰पुं॰)पित्त पापड़ा। **वर्मवत्**–(सं॰वि॰) कवच पहरे हुए। **वर्मधर**–(सं॰वि॰)कवचधारी। **वर्मा**–(सं॰पुं॰) क्षत्रियों की उपाधि जो नाम के अन्त में लगाई जाती हैं।
वर्मिक, वर्मित–(सं॰वि॰) कवचधारी।
वर्य–(सं॰वि॰) प्रधान, श्रेष्ठ।
वर्या–(सं॰स्त्री॰) कन्या।
वर्वर–(सं॰ नपुं॰) पीत चन्दन, बोल, घूंघराले बाल, एक देश का नाम, (वि॰) दुष्ट, नीच।
वर्वरा–(सं॰स्त्री॰)एक प्रकार की मक्खी;

वर्ष–(सं॰पुं॰) किसी द्वीप का प्रधान भाग, वृष्टि, वर्षा, मेघ, बादल संवत्सर, बारह महीने का काल। **वर्षकर**–(सं॰पुं॰) मेघ, बादल। **वर्षकरी**–(सं॰ स्त्री॰) झींगुर। **वर्षकाम**–(सं॰ पुं॰) वृष्टि की कामना करने वाला।
वर्षकामेष्टि–(सं॰पुं॰) वर्षा होने के लिये किया जाने वाला यज्ञ। **वर्षकाली**–(सं॰स्त्री॰) जीरक, जीरा। **वर्षकेतु**–(सं॰पुं॰) लाल पुनर्नवा। **वर्षकोष**–(सं॰पुं॰) देवज्ञ, ज्योतिषी। **वर्षगांठ**–(हिं॰पुं॰)जन्म दिन का उत्सव, **वर्षघ्न**–(सं॰पुं॰) पवन। **वर्षज**–(सं॰ वि॰) वृष्टि से उत्पन्न। **वर्षण**–(सं॰नपुं॰) वृष्टि, पानी का बरसना। **वर्षधर**–(सं॰पुं॰) मेघ, बादल। **वर्षपति**–(सं॰ पुं॰)संवत्सर का अधिपति। **वर्षप्रिय**–(सं॰पुं॰)चातक पक्षी, पपीहा। **वर्षफल**–(सं॰नपुं॰) फलित ज्योतिष में जातक के अनुसार वह कुण्डली जिसमें किसी वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण रहता है। **वर्षवृद्ध**–(सं॰वि॰)जो वय में बड़ा हो। **वर्षवृद्धि**–(सं॰स्त्री॰) वय की वृद्धि। **वर्षशत**–(सं॰नपुं॰) सौ वर्ष। **वर्षसहस्र**–(सं॰ वि॰) हजार वर्ष।
वर्षा–(सं॰स्त्री॰) पानी बरसने का ऋतु। पानी बरसने की क्रिया, **वर्षा होना**–किसी वस्तु का अधिक परिमाण से प्राप्त होना। **वर्षाकाल**–(सं॰ पुं॰) बरसात। **वर्षाकालीन**–(सं॰ वि॰) बरसाती। **वर्षागम**–(सं॰पुं॰) वर्षा ऋतु का आगमन। **वर्षाङ्ग**–(सं॰ पुं॰) मास, महीना। **वर्षाचर**–(सं॰वि॰) वर्षा में घूमने वाला। **वर्षाप्त**–(सं॰वि॰) वर्षा काल में प्राप्त।
वर्षाप्रिय–(सं॰ पुं॰) पपीहा। **वर्षाबीज**–(सं॰नपुं॰) मेघ, बादल। **वर्षाभव**–(सं॰वि॰) वर्षा में उत्पन्न। **वर्षाभू**–(सं॰पुं॰) इन्द्रगोप नामक कीड़ा,(वि॰) वर्षा में उत्पन्न होने वाला। **वर्षामद**–(सं॰पुं॰) मयूर, मोर। **वर्षाम्बु**–(सं॰ नपुं॰) वर्षा का जल। **वर्षायस**–(सं॰ वि॰) अति वृद्ध। **वर्षारात्र**–(सं॰पुं॰) बर्षाकाल की रात; **वर्षार्चि**–(सं॰पुं॰) मंगल ग्रह; **वर्षाल**–(सं॰पुं॰) फतिंगा; **वर्षावत्**–(सं॰ वि॰) वर्षा के समान। **वर्षावसान**–(सं॰ पुं॰) शरद ऋतु; **वर्षासमय**–(सं॰पुं॰)वर्षाकाल; **वर्षाहिक**–(सं॰पुं॰) बरसाती सांप।
वर्षिक–(सं॰वि॰) वर्षा सबंधी।
वर्षिता–(सं॰स्त्री॰)बरसने वाला।
वर्षिष्ठ–(सं॰वि॰) बड़ा बूढ़ा, अत्यन्त बलवान्।
वर्षीका–(सं॰स्त्री॰)एक प्रकार का छन्द;
वर्षीय–(सं॰वि॰) वर्ष संबंधी।
वर्षुक–(सं॰वि॰) बरसने वाला।
वर्षेश–(सं॰पुं॰) वर्ष का स्वामी।
वर्ष्म–(सं॰ नपुं॰) शरीर प्रमाण।
वर्ष्मवत्–(सं॰वि॰) शरीर के समान।

वर्ष्मवीर्य–(सं॰नपुं॰) शारीरिक बल;
वर्ह–(सं॰नपुं॰) मोर का पंख, मोर।
वर्हण–(सं॰नपुं॰) पत्ता।
वर्हिण–(सं॰पुं॰) मयूर, मोर; **वर्हिणवाहन**–(सं॰पुं॰) कार्तिकेय। **वर्ही**–(हिं॰स्त्री॰) मयूर, मोर।
वल–(सं॰पुं॰) मेघ, एक असुर का नाम जो बृहस्पति के हाथ से मारा गया था। **वलती**–(सं॰स्त्री॰) वह मण्डप जो घरके शिखर पर बना हो, रावटी।
वलद्विष्–(सं॰पुं॰) इन्द्र।
वलन–(सं॰ नपुं॰) ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, नक्षत्र आदि का अयनांश से हटकर चलना या विचलन।
वलनांश–(सं॰नपुं॰) ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह का अयनांश से हट कर चलने की अथवा वक्र गति की दूरी का अंश।
वलनाशन,वलनिसूदन–(सं॰पुं॰) इन्द्र।
वलन्तिका–(सं॰स्त्री॰) संगीत शास्त्रोक्त स्वर क्रम का भेद।
वलभी–(सं॰ स्त्री॰) घर की चोटी, घर के शिखर पर का मण्डप; एक प्राचीन राजवंश का नाम।
वलम्ब–(सं॰ पुं॰) सीधी रेखा के ऊपर खड़ी हुई लंब रेख।
वलय–(सं॰पुं॰नपुं॰) मण्डल, वेष्टन, कंकण, चूड़ी।
वलयित–(सं॰वि॰) घिरा हुआ।
वलसूदन–(सं॰पुं॰) इन्द्र।
वलाट–(सं॰पुं॰) मुद्ग, मूंग।
वलाहक–(सं॰पुं॰) मेघ, बादल, पर्वत, एक दैत्य का नाम।
वलि–(सं॰पुं॰) रेखा, लकीर, पेट में पड़ी हुई सिकुड़न, देवी देवता को अर्पण करने की वस्तु एक प्रकार का बाजा, श्रेणी, पंक्ति राजकर, छाजन की ओलती, एक दैत्य जो प्रह्लाद का पौत्र था जिसको विष्णुने वामन का अवतार लेकर छला था।
वलिक–(सं॰पुं॰) ओरी, ओलती।
वलित–(सं॰ वि॰) बल खाया हुआ, लचका हुआ, झुकाया या मोड़ा हुआ, आवेष्टित, लिपटा हुआ, सिकुड़ा हुआ, ढपा हुआ, युक्त।
वलिमुख–(सं॰पुं॰) बानर, बन्दर।
वली–(सं॰स्त्री॰) श्रेणी, पंक्ति, रेखा लकीर, झुर्री।
वलीमुख–(सं॰पुं॰) बन्दर।
वल्क–(सं॰ पुं॰) वल्कल, छाल; **वल्कतरु**–(सं॰ पुं॰) सुपारी का वृक्ष;
वल्कद्रुम–(सं॰पुं॰)भोजपत्र का पेड़।
वल्कल–(सं॰ नपुं॰) वृक्ष की छाल, इसका बना हुआ वस्त्र।
वल्कली–(सं॰वि॰) वल्कलधारी, छाल का वस्त्र पहरने वाला।
वल्गन–(सं॰नपुं॰)घोड़ेकी दुलकी चाल।
वल्गु, वल्गुज–(सं॰ पुं॰) छाग, बकरी;
वल्गुपत्र–(सं॰पुं॰) बनमूंग।
वल्गुल–(सं॰पुं॰) शृगाल, सियार;

वल्गुली–(सं॰स्त्री॰)चमगादड़, पिटारा।
वल्मीक–(सं॰पुं॰) दीमक का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर, बांबी (पुं॰) वल्मीकि ऋषि।
वल्मीकि–(सं॰पुं॰) देखो बल्मीक।
वल्लक–(सं॰ पुं॰) एक प्रकार का समुद्री जन्तु।
वल्लकी–(सं॰स्त्री॰) वीणा, बीन।
वल्लभ–(सं॰ वि॰) प्रिय, प्यारा, (पुं॰) अध्यक्ष, अति प्रिय व्यक्ति, प्यारा मित्र, नायक, पति, वल्लभ संप्रदाय के प्रसिद्ध अध्यक्ष।
वल्लभा–(सं॰स्त्री॰) प्यारी स्त्री, (वि॰) प्रियतमा, प्यारी।
वल्लभाचार्य–(सं॰पुं॰) वल्लभाचारी वैष्णव सम्प्रदाय के प्रतिष्ठाता एक आचार्य।
वल्लभी–(सं॰पुं॰) देखो वलभी।
वल्लर–(सं॰नपुं॰) मंजरी, कुंज।
वल्लरि, वल्लरी–(सं॰ स्त्री॰) वल्ली, मंजरी,लता,एक प्रकार का बाजा।
वल्लव–(सं॰ पुं॰) अज्ञातवास के समय भीमसेनने यह नाम अपना रक्खा था
वल्लि–(सं॰स्त्री॰) लता, पृथ्वी।
वल्लिका–(सं॰स्त्री॰) पोई का साग।
वल्ली–(सं॰स्त्री॰) लता, अजमोदा।
वल्लुर–(सं॰ नपुं॰) निर्जन या दुर्गम स्थान।
वल्लूर–(सं॰नपुं॰) सूखा मांस, सुअर का मांस, ऊसर भूमि, उजाड़ स्थान, जंगल।
वल्वज–(सं॰ पुं॰) उलूखल, ओखुली।
वल्वल–(सं॰ पुं॰) एक दैत्य जिसको बलरामजी ने मारा था।
वव–(सं॰ पुं॰) फलित ज्योतिष के अनुसार ग्यारह करणों में से एक।
वव्र–(सं॰ वि॰) वेष्टित, घेरा हुआ।
वशंवद–(सं॰वि॰) वशीभूत, (पुं॰) दास, आज्ञाकारी।
वश–(सं॰ पुं॰) इच्छा, एक व्यक्ति का दूसरे पर प्रभाव, अधिकारी शक्ति की पहुँच, वेश्याओं के रहने का स्थान; **वशकर**–(सं॰ वि॰) वशीभूत;
वशका–(सं॰स्त्री॰) वश में लाई हुई स्त्री; **वशक्रिया**–(सं॰ स्त्री॰) वशीकरण
वशग–(सं॰वि॰) वशीभूत; **वशगत्व**–(सं॰नपुं॰) देखो वशता; **वशगमन**–(सं॰नपुं॰) वशीभूत होना।
वशगा–(सं॰ स्त्री॰) वशीभूत स्त्री।
वशगामी–(सं॰वि॰)वश में लाया हुआ;
वशता–(सं॰स्त्री॰) वशका भाव या धर्म;
वशनीय–(सं॰ वि॰) वशमें करने योग्य;
वशवर्ती–(सं॰वि॰) वशीभूत, जो दूसरे के वश में हो।
वशा–(सं॰स्त्री॰) बांझ स्त्री, पत्नी, पति की बहन, ननद, वशीभूता स्त्री।
वशानुग–(सं॰वि॰)वशीभूत, आज्ञाकारी।
वशिता–(सं॰स्त्री॰) अधीनता, मोहने की क्रिया या भाव, मोहन।
वशित्व–(सं॰नपुं॰) योगके आठ ऐश्वर्यों

में से एक जिससे सिद्ध होने पर साधक सबको अपने वशमें कर लेता है
वशिनी–(सं०स्त्री०) शमी का वृक्ष।
वशिमा–(सं० स्त्री०) योग की आठ सिद्धियों में से एक।
वशिष्ठ–(सं०पुं०) देखो वसिष्ठ।
वशी–(सं० वि०) जितेन्द्रिय, अपने को वश में करने वाला, अधीन, वश में लाया हुआ; वशीकरण–(सं० नपुं०) मणि, मन्त्र या औषध द्वारा किसी को अपने वश में करने का प्रयोग।
वशीकृत–(सं०वि०) मोहित, मुग्ध।
वशीभूत–(स०वि०) वश में लाया हुआ, अधीन।
वश्य–(सं०वि०) किसी की इच्छा के अधीन, (पुं०) दास, सेवक; वश्यता–(सं०स्त्री०) वश में होने की अवस्था;
वश्यत्व–(सं० नपुं०) देखो वश्यता।
वश्या–(स० स्त्री०) वशीभूत स्त्री, गोरोचना।
वषट्–(सं० अव्य०) इस शब्द का उच्चारण अग्निमें आहुति देते समय होता है; वषट्कार(सं०पुं०) देवताओं के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ।
वष्कयणी–(सं० स्त्री०) बकेना गाय।
वसंत–देखो वसन्त।
वसंता–(हिं० पुं०) हरे रंग की एक चिड़िया।
वसंती–(हिं०पुं०) सरसोंके फूलका रंग।
वसती–(सं० स्त्री०) निकेतन, घर, वासस्थान।
वसन–(सं०नपुं०) वस्त्र, आवरण, ढापने की वस्तु, निवास, स्त्रियों की कमर का एक आभूषण।
वसनार्णवा–(सं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
वसन्त–(सं०पुं०) चैत्र और वैशाख का महीना; एक राग का नाम, एक ताल का नाम, फूलों का गुच्छा, मसूरिका रोग, चेचक; वसन्तजा–(सं०स्त्री०) सफ़ेद जूही; वसन्ततिलक–(सं०नपुं०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं;
वसन्ततिलका–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम; वसन्तमात–सं० पुं०) चैत्र मास, कोयल, आमका वृक्ष; वसन्तदूती–(स्त्री०सं०) पाटली वृक्ष, माधवी लता, कोयल; वसन्त पञ्चमी–(सं०स्त्री०) माघ शुक्ला पंचमी, श्री पंचमी; वसन्तबन्धु–(सं०पुं०) कामदेव;
वसन्तभैरवी–(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम; वसन्तभारू–(सं०पुं०) संपूर्ण जातिका एक राग; वसन्तमालिका–(सं०स्त्री०) एक छन्द का नाम; वसन्तरोग–(सं० पुं०) मसूरिका, चेचक;
वसन्तललना–(सं० स्त्री०) सफ़ेद जूही;
वसन्तवाक्–(संपुं०) चौदह तालों में से एक ताल का नाम; वसन्तवितन–(सं०पुं०) विष्णु की एक मूर्ति।
वसन्तव्रण–(सं० नपुं०) मसूरिका रोग।
वसन्तव्रत–(सं०पुं०) कोकिल, कोयल।
वसन्तशेखर–(सं०पुं०) किन्नर का एक भेद; वसन्तसख–(सं० पुं०) कामदेव;
वसन्तोत्सव–(सं० नपुं०) फाल्गुन का उत्सव, होलीका उत्सव, एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसन्त पंचमी के दूसरे दिन होता था।
वसा–(सं०स्त्री०) मेदा धातु।
वसह–(हिं०पुं०) वृषभ, बैल।
वसादनी–पीला शीशम।
वसामेह–(सं० पुं०) एक प्रकार का मूत्र रोग जिसमें मूत्र के साथ वसा गिरती है।
वसारोह–(सं०पुं०) छत्रक, कुकुरमुत्ता।
वसि–(सं०पुं०) वसन, वस्त्र।
वसिक–(सं०वि०) शून्य।
वसितव्य–(सं०वि०) पहरने योग्य।
वसिष्ठ–(स० पुं०) एक प्रसिद्ध मन्त्र द्रष्टा ऋषि, सप्तर्षि मण्डल का एक तारा; वसिष्ठपुराण–(सं०पुं०) एक उपपुराण का नाम; वसिष्ठसंहिता–(सं०स्त्री०) एक स्मृति का नाम।
वसुंधरा–(हिं० स्त्री०) देखो वसुन्धरा, पृथ्वी।
वसु–(सं०पुं०) अगस्त्यका वृक्ष, अग्नि, किरण, देवताओंका एक गण जिसके अन्तर्गत आठ देवता हैं यथा–धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास; कुबेर, शिव, सूर्य, वृक्ष, साधुपुरुष, सज्जन; कुलीन कायस्थकी एक पद्धति विशेष; छप्पय का एक भेद, रत्न, धन, सुवर्ण, जल, (स्त्री०) दक्षप्रजापति की एक कन्या का नाम, (वि०) मधुर, (पुं०) आठ की संख्या।
वसुक–(सं०नपुं०) वास्तूक, बथुआ, बड़ी मौलसिरी।
वसुचरण–(सं०पुं०) डगण के चौथे भेद का नाम जिसके आदि में गुरु तथा बाद में दो लघु वर्ण होते हैं।
वसुचारुक–(सं० नपु०) सुवर्ण, सोना।
वसुत्व–(सं०नपुं०) वसु का भाव या धर्म।
वसुद–(सं०पुं०) कुबेर।
वसुदा–(सं० स्त्री०) माली राक्षस की पत्नी का नाम, पृथ्वी; वसुदान–(सं०नपुं०) धनदान।
वसुदेव–(स० पुं०) श्रीकृष्ण के पिता का नाम; वसुदेवता–(सं०स्त्री०) धनिष्ठा नक्षत्र; वसुदेवात्मज–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण;
वसुधर्मिका–(सं०स्त्री०) स्फटिक, बिल्लौर;
वसुधा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, (वि०) धनदाता; वसुधाधर–(सं० पुं०) पर्वत, विष्णु; वसुधाधिप–(सं०पुं०) राजा, पृथ्वीपति।
वसुधान–(सं०पुं०) पृथ्वी; वसुधारा–(सं०स्त्री०) कुबेर की पुरी, अलका, जैन शक्ति भेद; वसुधारी–(सं० वि०) सम्पत्तिशाली; वसुधासुत–(सं० पुं०) नरकासुर।
वसुनीति–(सं० पुं०) ब्रह्मा; वसुनीथ–(सं०पुं०) अग्नि; वसुन्धरा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी; वसुन्धराधर–(सं० पुं०) पर्वत;
वसुन्धरेश–(सं०पुं०) पृथ्वीपति; वसुन्धरेशा–(सं०स्त्री०) श्रीराधा।
वसुपति–(सं० पुं०) धन पालक; वसुपाल–(सं०पुं०) पृथ्वीपति, राजा।
वसुप्रद–(सं०पुं०) कुबेर, शिव, स्कन्द के एक अनुचर का नाम।
वसुप्रभा–(सं० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम; वसुप्राण–(सं०पु०) अग्नि।
वसुभ–(सं० नपुं०) धनिष्ठा नक्षत्र।
वसुभरित–(सं० वि०) धनपूर्ण।
वसुमती–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ वर्ण होते हैं।
वसुरुचि–(सं०पुं०) एक गन्धर्व का नाम।
वसुरूप–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
वसुरेता–(हिं०पुं०) शिव, महादेव, अग्नि,
वसुवाह–(सं० पुं०) धनी।
वसुश्री–(सं०स्त्री०) स्कन्द की एक मातृका का नाम, वसुसारा।
वसुस्थली–(सं० स्त्री) कुबेर की नगरी, अलका पुरी।
वसुहंस–(सं० पुं०) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।
वसूक–(सं० पुं०) अगस्त्य का वृक्ष।
वसूत्तम–(सं० स्त्री०) बहुत बड़ा धनी।
वसूमती–(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
वसूया–(स० स्त्री०) धन की कामना।
वस्त–(हिं० पुं०) वस्तु।
वस्तव्य–(सं० वि०) वास के योग्य।
वस्तव्यता–(सं० स्त्री०) वस्तव्य का भाव या धर्म।
वस्ति–(सं०स्त्री०) पेट का नाभी के नीचे का भाग, पेड़, मूत्राशय, पिचकारी।
वस्तिकर्म–(सं०पुं०) गुदा, योनि अथवा लिंगेंद्रिय के मार्गों से पिचकारी द्वारा औषधि का जल चढाने की क्रिया।
वस्तुवात–(सं०पुं०) एक मूत्र रोग।
वस्तु–(सं०नपुं०) वह जिसकी सत्ता या अस्तित्व हो, जो सचमुच हो, गोचर पदार्थ, वृत्तान्त, कथा वस्तु, नाटक का आख्यान।
वस्तुकी–(सं०पुं०) बथुआ का साग।
वस्तुज्ञान–किसी वस्तु का ज्ञान, तत्वज्ञान
वस्तुतः–(स० अव्य०) यथार्थ में सचमुच
वस्तुनिर्देश–(सं०पु०) नाटक के मंगलाचरण का एक भेद जिसमे उसकी कथा की कुछ झलक दिखलाई जाती है।
वस्तुबल–(सं० नपुं०) किसी पदार्थ का गुण।
वस्तुभाव–(सं०पुं०) वस्तु का धर्म या गुण
वस्तुभेद–(सं० पुं०) वस्तु का प्रकार।
वस्तुवाद–(सं० पुं०) वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार संसार की सत्ता उसी रूप मे मानी जाती है जैसी सामान्य मनुष्य को दृष्टिगोचर हो, यह सिद्धान्त अद्वैतवाद से विपरीत है।
वस्तुविचार–(सं०पुं०) वस्तु का गुण, निर्धारण।
वस्तुव्यासन–(सं नपु०) वस्तुनिर्णय।
वस्तुशून्य–(सं० वि०) द्रव्यहीन।
वस्तूपमा–(सं० स्त्री०) उपमा अलंकार का एक भेद।
वस्त्र–(स० नपुं०) कपड़ा।
वस्त्रकुट्टिम–(सं० नपुं०) खेमा।
वस्त्रगृह–(सं० नपुं०) छोलदारी।
वस्त्रग्रन्थि–(सं० पुं०) इजारबन्द।
वस्त्रघर्घरी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का बाजा।
वस्त्रद–(सं० वि०) वस्त्र देने वाला।
वस्त्रपरिधान–(स०नपुं०) कपड़ा पहनना
वस्त्रपुत्रिका–(सं०स्त्री०) कपड़े की गुड़िया
वस्त्रभूषण–(सं० स्त्री०) मजीठ।
वस्त्रयुग्म–(सं०नपुं०) कपड़े का जोड़ा।
वस्त्ररञ्जक–(सं०पुं०) कुसुंभ का वृक्ष।
वस्त्रविलास–सं० पुं०) अच्छा कपड़ा पहन कर गर्व करना।
वस्त्रवेश–(सं०पुं०) कपड़े का बना हुआ घर, खेमा।
वस्त्रवेष्टित–(सं०वि०) कपड़ा लपेटा हुआ
वस्त्रागार–(सं०पुं०) कपड़े की दूकान।
वस्त्राञ्चल–(सं०पु०) कपड़े का छोर।
वस्त्रापहारक–(सं०पुं०) कपड़ा बुननेवाला
वस्त्री–(स०त्रि०) कपड़ा पहने हुए।
वस्त्रपूत–सं०वि०) कपड़े से छाना हुआ।
वस्त्रभवन–(सं०पुं०) रावटी।
वस्न–(सं०पुं०) वल्कल छाल, द्रव्य।
वह–(हिं० सर्व०) इस शब्द से किसी तीसरे मनुष्य का संकेत होता है, कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम का एक वचन (बहुवचन-'वे') इस शब्द से दूर या परोक्ष की वस्तु का निर्देश होता है; (सं० वि०) वाहक, ले जाने वाला, (स० पुं०) घोड़ा, वायु, मार्ग।
वहन–(सं० नपुं०) बेड़ा, भार ले जाने का कार्य अपने ऊपर लेना, उठाना, किसी वस्तु को सिर कन्धे आदि पर लाद कर कहीं ले जाना। वहनीय–(सं० वि०) ले जाने योग्य।
वहन्त–(सं० पुं०) वायु, वाहक।
वहल–(सं० पुं०) नौका, नाव, (वि०) पुष्ट, दृढ़।
वहला–(सं० स्त्री०) बड़ी इलायची, एक रागिणी का नाम।
वहां–(हिं० अव्य०) उस स्थान या जगह पर।
वहिः–(सं० अव्य०) बाहर, जो भीतर न हो
वहित–(सं०वि०) प्रसिद्ध, प्रख्यात प्राप्त।
वहित्र–(सं० नपुं०) नौका, नाव।
वहिनी–(सं० स्त्री०) नौका, नाव।
वहिरंग–(सं० नपुं०) शरीर का बाहरी भाग, बाहरी मनुष्य, वह मनुष्य जो अपने मण्डल का न हो, यज्ञ आदि में पहले किया जाने वाला कृत्य, (वि०) ऊपरी, बाहरी।
वहिरिन्द्रिय–(सं० स्त्री०) कर्मेन्द्रिय।
वहिर्गत–(सं०वि०) बाहर किया हुआ, निकाला हुआ।
वहिर्गमन–(सं० नपुं०) किसी काम से घर के बाहर जाना।

वहिर्जगत–(हिं० पुं०) दृश्यमान जगत। वहिर्देश–(सं० पुं०) विदेश, परदेश। वहिर्द्वार–(सं० नपुं०) घर का बाहरी फाटक, तोरण। वहिर्ध्वजा–(सं० स्त्री०) दुर्गा देवी। वहिर्भव–(सं० वि०) बाह्य प्रकृति का। वहिर्भवन–(सं० नपुं०) बाहर का घर। वहिर्भाव–(सं० पुं०) बाह्य भाव। वहिर्भूत–(सं० वि०) वहिर्गत, बाहर किया हुआ। वहिर्मनस–(सं० वि०) मन के बाहर। वहिर्मुख–(सं० वि०) बाहरी, विमुख; वहिर्योग–(सं० पुं०) हठ योग; वहिर्लम्ब–(सं० पुं०) रेखागणित में वह लम्ब जो किसी क्षेत्र के बाहर गिरता हो; वहिर्लापिका–(सं०स्त्री०) प्रहेलिका, पहेली जिसके उत्तर का पूरा शब्द पहेली में नहीं होता।

वहिश्चर–(सं०पुं०) कर्कट, केकड़ा। वहिष्करण–(सं०नपुं०) पांच वाह्येन्द्रियाँ वहिष्कार–सं०पुं०) दूर करना। वहिष्कार्य–(सं० वि०) छोड़ने योग्य। वहिष्कृत–(सं०वि०) बाहर किया हुआ, त्यागा हुआ, निकाला हुआ; वहिष्कृति–(सं०स्त्री०) बहिष्कार। वहिष्ठ–(सं०वि०) अधिक भार उठाने वाला। वहिष्प्राण–(सं०पुं०) श्वास वायु, प्राण तुल्य प्रिय वस्तु।

वहीं–(हिं० अव्य०) उसी स्थान पर। वहीं–(हिं०सर्व०) पूर्वोक्त व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो, निर्दिष्ट व्यक्ति। वहेलिया–(हिं०पुं०) एक व्याध जाति। वह्नि–(सं०पुं०) अग्नि, आग, मित्रविन्दा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, तीन की संख्या, रामजी की सेना का एक सेनापति जो बानर था, भिलावा; वह्निकर–(सं० नपुं०) बिजली, जठराग्नि; वह्निकरी–(सं० स्त्री०) धव का फल; वह्निकुण्ड–(सं० पुं०) अग्नि कुण्ड; वह्निकोण–(सं०पुं०) दक्षिण पूर्व का कोना; वह्निगर्भ–(सं० पुं०) बांस; वह्निगृह–(सं०नपुं०) अग्निशाला; वह्निचूड़–(सं०नपुं०) आग की लपट; वह्निजाया–(सं०स्त्री०) स्वाहा देवी; वह्नितम–(सं० वि०) अधिक सफेद; वह्निद–(सं०वि०) अग्निदायक; वह्निदग्ध–(सं० वि०) आग से जला हुआ; वह्निनाम–(सं०पुं०) चीते का वृक्ष, भिलावां; वह्निनाशक–(सं०वि०) अग्नि का प्रकोप दूर करने वाला; वह्निनेत्र–(सं० पु०) क्रोध से आँखें लाल होना; वह्निपुराण–(सं०नपुं०) अग्नि पुराण; वह्निपुष्पा–(सं०स्त्री०) धव का फूल; वह्निबीज–(सं० स्त्री०) सुवर्ण, सोना; वह्निभोग्य–(सं० नपुं०) घृत, घी; वह्निमित्र–(सं०पुं०) वायु, हवा; वह्निमय–(सं० त्रि०) अग्नि स्वरूप; वह्निरस–(सं० पुं०) अग्नि की ज्वाला; वह्निलोह–(सं० नपुं०) कांस्य, कांसा; वह्निवर्ण–(सं० वि०) लाल रंग का; वह्निशाला–(सं०स्त्री०) अग्निशाला; वह्निशिखा–(सं० स्त्री०) धव का वृक्ष, गजपीपल; वह्निशुद्ध–(सं० वि०) अग्नि द्वारा शुद्ध किया हुआ; वह्निस्वरी–(सं० स्त्री०) स्वाहा, लक्ष्मी; वह्निसंस्कार–(सं० पुं०) अग्नि संस्कार; वह्निमुख–(सं० पुं०) देवता। वह्य–(सं० पुं०) वाहन, यान, गाड़ी। वह्यक–(सं०वि०) वाहक, ढोने वाला। वाँ–(हिं० अव्य०) वहाँ, उस जगह। वांछा–, वांछित–देखो वाञ्छा, वाञ्छित वा–(सं० अव्य०) या, अथवा, (हिं०सर्व०) व्रज भाषा में प्रथम पुरुष के एक वचन का वह रूप जिसमें कारक के चिह्न लगाये जाते हैं। वाइ–(हिं० सर्व०) देखो वाहि। वाक्–(सं०पुं०) वाणी, वाक्य, बोलने की इन्द्रिय, सरस्वती। वाकिनी–(सं०स्त्री०) एक तान्त्रिक देवी का नाम। वाकोवाक्–(सं०नपुं०) बातचीत। वाकोवाक्य–(सं०नपुं०) परस्पर वार्त्तालाप वाक्कलह–(सं०पुं०) बातों का झगड़ा। वाक्केलि–(सं०स्त्री०) वात की क्रीड़ा। वाक्चपल–(सं०नपुं०) वाचाल, बकवादी, वाक्छल–(सं०नपुं०) न्याय शास्त्र के अनुसार वह कथन जिसका भिन्न अर्थ सुनने वाले को चक्कर में डालने के लिये किया जावे; वाक्पटु–(सं०वि०) बोल चाल में चतुर; वाक्पटुता–(सं० स्त्री०) बात करने में चातुरी; वाक्पति–(सं०पुं०) विष्णु, वृहस्पति, चतुर वाक्य। वाक्य–(सं० नपुं०) पदों का वह समूह जिससे श्रोता को वक्ता का अभिप्राय जाना जाता है जिसमे उद्देश का होना आवश्यक होता है; वाक्यकर–(सं०पुं०) बातें बनाने वाला; वाक्याकार–(सं०पुं०) रचनाकार। वाक्य गर्भित–(सं०वि०) सुन्दर पदों से युक्त। वाक्यता–(सं०स्त्री०) वाक्य का भाव या धर्म। वाक्य पूरण–(सं० नपुं०) वाक्य की समाप्ति। वाक्य प्रलाप–(सं० पुं०) असंबद्ध वार्ता। वाक्य प्रसारी–(सं०वि०) बात बढ़ाने वाला। वाक्य माला–(सं० स्त्री०) वाक्य समूह। वाक्य शेष–(सं० पुं०) वाक्य का अन्त। वाक्य संयोग–(सं०पुं०) बातों की मिलान; वाक्य स्वर–(सं० पुं०) बोलने का शब्द। वाक्यालंकार–(सं० पुं०) वाक्य की शोभा; वाक्सिद्धि–(सं०पुं०) वाणी की सिद्धि, ऐसी सिद्धि या शक्ति आ जाना कि जो बात मुख से निकले वह सच्ची घट जावे। वागतीत–(सं० पुं०) वीती हुई बात। वागन्त–(सं०पुं०) वाक्य का शेष। वागर–(सं०पुं०) पंडित, निर्भीक, निर्णय। वागा–(सं०स्त्री०) लगाम। वागारु–(सं०पुं०) आशा देकर निराश करने वाला। वागीश–(सं०पुं०) वृहस्पति, ब्रह्मा, कवि, (वि०) अच्छा बोलने वाला। वागीशा–(सं० स्त्री०) सरस्वती; वागीश्वर–(सं०पुं०) देखो वागीश; वागीश्वरी–(सं०स्त्री०) सरस्वती देवी। वागुण–(सं०पुं०) कमरख, भंटा, बैगन। वागुरा–(सं० स्त्री०) हरिन फँसाने की जाल। वागुलि–(सं०पुं०) डिब्बा। वागुलिक–(सं०पुं०) राजा का खवास। वाग्जाल–(सं०नपुं०) बातों की फेरवट, लपेट की बात, बातों का आडंबर; वाग्डम्बर–(सं०पुं०) बातों की लपेट। वाग्दण्ड–(सं०नपुं०) झटकार, डांट डपट। वाग्दत्त–(सं० वि०) किसी वस्तु को देने के लिये वचन दिया हुआ या कहा हुआ; वाग्दत्ता–(सं० स्त्री०) वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी से निश्चित हो चुकी हो परन्तु विवाह संस्कार होना बाकी हो। वाग् दरिद्र–(सं०वि०) मितभाषी, कम बोलने वाला। वाग्दान–(सं०नपुं०) कन्या के पिता का किसी से यह कहना कि मैं तुम्हें अपनी कन्या ब्याह दूंगा। वाग्देवता, वाग्देवी–(सं०स्त्री०) वाणी, सरस्वती। वाग्दोष–(सं० पुं०) व्याकरण संबंधी दोष या त्रुटि, निन्दा। वाग्भट्ट–(सं०पुं०) सिंहगुप्त के पुत्र जिन्होंने वैद्यक के निघंटु, अष्टाङ्गहृदय, भावप्रकाश आदि अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं। वाग्मी–(सं० पुं०) वाचाल, अच्छा बोलने वाला, पण्डित, वृहस्पति। वाग्वज्र–(सं०पुं०) कठोर वाक्य, शाप। वाग्वादिनी–(सं०स्त्री०) सरस्वती। वाग्वाविदग्ध–(सं०वि०) बोल चाल में प्रवीण। वाग्विदग्धा–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो बात चीत करने में बड़ी चतुर हो। वाग्विलास–(सं० पुं०) आनन्द पूर्वक आपस में वार्तालाप। वाग्विसर्ग–(सं०पुं०) बात बन्द करना। वाग्वैदग्ध्य–(सं०नपुं०) बात करने में निपुणता। वाङ्मय–(सं० वि०) वचन सम्बन्धी, बचन से किया हुआ, पढ़ने लिखने के विषय का, (पुं०) साहित्य। वाङ्मयी–(सं० स्त्री०) सरस्वती। वाङ्मुख–(सं०पुं०) उपन्यास। वाचमय–(सं० वि०) मौन व्रत धारण करने वाला। वाच्–(सं०स्त्री०) वाणी, वाक्य। वाचक–(सं०वि०) सूचक, द्योतक, बोधक, बतलाने वाला; वाचकता–(सं०स्त्री०) वाचक का भाव वा धर्म। वाचकत्व–(सं०नपुं०) वाचकता; वाचकधर्मलुप्ता–(सं०स्त्री०) वह उपमा जिसमें वाचक शब्द का प्रयोग न हुआ हो; वाचकलुप्ता–(सं०स्त्री०) वह उपमा जिसमें उपमान वाचक शब्द का प्रयोग नहीं होता; वाचकोपमानधर्मलुप्ता–(सं०स्त्री०) वह उपमा अलंकार जिसमें वाचक शब्द, उपमान तथा धर्म तीनों ही प्रगट नहीं किये होते; वाचकोपमानलुप्ता–(सं० स्त्री०) वह उपमा अलंकार जिसमें वाचक तथा उपमान का लोप रहता है। वाचकोपमेयलुप्ता–(सं० स्त्री०) वह उपमा अलंकार जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है। वाचक्नवी–(सं०स्त्री०) गार्गी। वाचन–(सं०नपुं०) उच्चारण करना, पढ़ना, बांचना, कहना, बतलाना। वाचनक–(सं०नपुं०) पहेली। वाचनालय–(सं०पुं०) पुस्तक, समाचारपत्र आदि पढ़ने का स्थान। वाचसाम्पति, वाचस्पति–(सं०पुं०) वृहस्पति। वाचा–(सं०स्त्री०) वाणी, वचन, शब्द। वाचाट–(सं०वि०) वक्की, बकवादी। वाचापत्र–(सं०नपुं०) प्रतिज्ञा पत्र। वाचाबन्धन–(सं०पुं०) प्रतिज्ञा बद्ध होना। वाचाबद्ध–(सं०वि०) वचन देनेसे विवश। वाचाल–(सं०वि०) बोलने में चतुर; वाचालता–(सं०स्त्री०) वाक् पटुता, बात करने में निपुणता; वाचावृद्ध–(सं०वि०) बातचीत करने में निपुण। वाचास्तेन–(सं०वि०) झूठ बोलने वाला। वाचिक–(सं०वि०) वाणी संबंधी, संकेत द्वारा सूचित, (पुं०) एक प्रकार का अभिनय जिसमें केवल वाक्य द्वारा ही अभिनय दिखलाया जाता है। वाची–(हिं०वि०) बोध करने वाला, सूचक; यह शब्द समस्तपद के अन्त में प्रयोग होता है। वाच्य–(सं०वि०) कहने योग्य, जिसका बोध संकेत से हो, अभिधेय, कुत्सित; वाच्यता–(सं०स्त्री०) वाच्य का भाव या धर्म। वाच्यार्थ–(सं०पुं०) वह तात्पर्य जो शब्दों के स्थिर या नियत अर्थ से सूचित हो, मूल शब्दार्थ। वाच्यावाच्य–(सं०पुं०) भली बुरी बात। वाजपेई–(हिं०पुं०) देखो बाजपेयी। वाजपेय–(सं०पुं०) एक श्रौत यज्ञ का नाम; वाजपेयी–(सं०पुं०) वह जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो, कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि, अत्यन्त कुलीन ब्राह्मण। वाजवी–(हिं०वि०) देखो बाजबी। वाजसनि–(सं०पुं०) सूर्य। वाजसनेय–(सं०पुं०) शुक्ल यजुर्वेद की संहिताका नाम, याज्ञवल्क्य ऋषि। वाजि–(हिं०पुं०) घोड़ा; वाजिगन्धा–(सं० स्त्री०) असगन्ध; वाजिदन्त–(सं०पुं०) अड़ूसा।

वाजिभोजन–(सं०पुं०) चना, मूंग।
वाजिमंत्–(सं०पुं०) पटोल, परवल।
वाजिमेध–(सं०पुं०) अश्वमेध।
वाजिराज–(सं०पुं०) उच्चैः श्रवा।
वाजिवाहन–(सं०नपुं०)एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेइस अक्षर होते हैं।
वाजिशत्रु–(सं०पुं०) कनेर का वृक्ष।
वाजिशाला–(सं०त्रि०) अश्वशाला।
वाजी–(हिं०पुं०) घोड़ा, अडूसा, हवि, फटे दूध का पानी; **वाजीकरण**–(सं० नपुं०) मनुष्य का वीर्य और पुंसत्व बढ़ाने की आयुर्वेदोक्त औषधि।
वाञ्छनीय–(सं० वि०) चाहने योग्य, जिस वस्तु की इच्छा हो। **वाञ्छा**–(सं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा चाह; **वाञ्छित**–(सं० वि०) अभिलषित, चाहा हुआ।
वाट–(सं०पुं०) मार्ग, मण्डप।
वाटधान–(सं० पुं०) एक वर्णसकर जाति का नाम।
वाटिका–(सं०स्त्री०) बाग, बगीचा।
वाटी–(सं०स्त्री०) घर।
वाटुक–(सं० नपुं०) भूना हुआ जव, बहुरी।
वाड़वाग्नि–(सं०पुं०) समुद्र के भीतर की अग्नि, बड़वानल।
वाढम्–(सं०अव्य०) पर्याप्त, बस।
वाण–(सं०पुं०) धनुष पर छोड़ने की तीर।
वाणवली–(सं०स्त्री०) तीरों की पंक्ति, तीरों की लगातार वर्षा, श्लोकों का पंचक; **वाणजित्**–(सं०पुं०) विष्णु; **वाणतूण**–(सं० पुं०) तरकश; **वाणयोजन**–(सं० नपुं०) धनुष पर तीर रख कर चलना; **वाणलिंग**–(सं०नपुं०) शिवलिङ्ग जो नर्मदा नदी में पाये जाते हैं; **वाणहन्**–(सं०पुं०) विष्णु।
वाणावली–(सं०स्त्री०) तीरों की वर्षा, एक साथ बने हुए पाँच श्लोक।
वाणिज्य–(सं०नपुं०) देखो बाणिज्य।
वाणिनी–(सं० स्त्री०) नर्तकी, नाचने वाली स्त्री, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं;
वाणी–(सं० स्त्री०) वचन, सरस्वती, जीभ, स्वर, वाक्शक्ति; **वाणी फुरना**–मुखसे शब्द निकलना।
वात–(सं०पुं०) वायु, हवा, वैद्यक के अनुसार शरीर के भीतर पक्वाशय में रहने वाली वह वायु जो शरीर के सब धातुओं को गति युक्त करती है जिसके कुपित होने पर शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं; **वातकेतु**–(सं०पुं०) धूल; **वातगाती**–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, **वातघ्नी**–(सं०वि०) असगन्ध; **वातचक्र**–(सं० नपुं०) एक प्रकार का वायु का रोग;
वातचटक–(सं०पुं०) तीतर पक्षी;
वातज–(सं०वि०) वायु से उत्पन्न;
वातजात–(सं०पुं०)हनुमान्;**वातध्वज**–(सं० पुं०) मेघ; **वातपुत्र**–(सं०पुं०) हनुमान, भीम; **वातप्रकृति**–(सं०वि०) वायु प्रधान प्रकृति; **वायुप्रकोप**–(सं०पुं०) शरीर में वायु का अधिक हो जाना; **वातमृग**–(सं० पुं०) हवा की ओर दौड़ने वाला मृग; **वातरथ**–(सं० पुं०) मेघ; **वातरुष**–(सं० पुं०) इन्द्रधनुष; **वातल**–(सं०पुं०) चणक, चना; **वातव्याधि**–सं० पुं०) गठिया रोग; **वातसख**–(सं० पुं०) अग्नि; **वातसारि**–(सं०पुं०) बेल; **वातसारथि**–(सं०पुं०) अग्नि; **वातस्कन्ध**–(सं०पुं०) आकाश का वह भाग जहाँ वायु चलती है; **वातस्वन**–(सं०त्रि०)अग्नि।
वाताट–(सं०पुं०) सूर्य का घोड़ा,हरिण।
वाताद–(सं०पुं०) बादाम का फल।
वातापि–(सं० पुं०) एक असुर जो अगस्त ऋषि से मारा गया था।
वाताम–सं०नपुं०) बादाम।
वातायन– सं० पुं०) गवाक्ष, झरोखा, छोटी खिड़की, घोड़ा, एक प्राचीन जनपद का नाम।
वातावरण–(हिं०पुं०) सामान्य परिस्थित चारो ओर की व्यवस्था।
वातारि–(सं० पुं०) रेंड़, अजवाइन, थूहर, सूरन, मिलावा सतावर।
वातुल–सं० वि०) वायु प्रधान, उन्मत्त, पागल।
वातोर्मी–सं०पुं) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं
वात्या–(हिं० स्त्री०) आँधी, वात्याचक्र बवंडर।
वात्सरिक–(सं०पुं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।
वात्सल्य–सं०नपुं०) प्रेम, स्नेह, माता पिता का अपनी सन्तति पर प्रेम।
वात्सायन–सं०पुं० एक ऋषि का नाम, न्याय शास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार, कामसूत्र के प्रणेता एक ऋषिका नाम
वाद–(सं०पुं०) तत्व के निर्णय के लिये बातचीत, तर्क, शास्त्रार्थ, झगड़ा, निश्चित सिद्धान्त, **वादक**–(सं०पुं०) बाजा बजाने वाला, वक्ता, शास्त्रार्थ करने वाला।
वाददण्ड–(सं० पुं०) सारंगी बजाने की कमानी।
वादन–(सं०नपुं०) बाजा, बाजा बजाना
वादप्रतिवाद–(सं०पुं०) शास्त्रीय विषयों में वार्तालाप।
वादयुद्ध–(सं० पुं०) शास्त्रीय झगड़ा।
वादर–(सं०पुं०) सूती कपड़ा, बेर का पेड़
वादरायण–(सं० पुं०) वेदव्यास।
वादरायणि–(सं० पुं०) व्यास के पुत्र शुकदेव।
वादविवाद–(सं०पुं०) झगड़ा।
वादानुवाद–(सं० पुं०) तर्क, वितर्क, शास्त्रार्थ।
वादिक–(सं० पुं०) तार्किक, शास्त्रार्थ करने वाला।
वादित–(सं०वि०)बजाया हुआ।**वादित्र**–(सं०नपुं०) वाद्य, बाजा।
वादी–(सं०पुं०) वक्ता, बोलने वाला, अभियोग चलाने वाला।
वाद्गलि–(सं०पुं०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
वाद्य–(सं०पुं०) बाजा। **वाद्यक**–(सं०पुं०) बाजा बजाने वाला।
वान–(हिं०पुं०) देखो वाण।
वानप्रस्थ–(सं० नपुं०) महुए का वृक्ष, पलाश वृक्ष, आर्यो की प्राचीन पद्धति के अनुसार मनुष्य के जीवन का तीसरा आश्रम।
वानर–(सं० पुं०) बन्दर,दोहे का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में दस गुरु और अट्ठाईस लघु वर्ण होते हैं।
वानरकेतन, वानरकेतु–(सं० पुं०) अर्जुन। **वानरप्रिय**–(सं०पुं०) खिरनी;
वानरी–(सं० स्त्री०) बँदरिया, केवाँच बीज।
वानरेन्द्र–(सं०पुं०) सुग्रीव।
वानरीबीज–(सं०नपुं०) केवाँच का बिया
वानल–(सं०पुं०) काली तुलसी।
वानवासिका–(सं०स्त्री०) सोलह मात्राओं के छन्दों का एक भेद, चौपाई का एक भेद जिसमें नवीं और बारहवीं मात्राएँ लघु होती हैं।
वानस्पत्य–(सं०वि०) वनस्पति संबंधी।
वानीर–(सं०नपुं०)बेंत, पाकड़ का वृक्ष।
वानीरक–(सं०पुं०) मूंज।
वान्त–(सं० पुं०) वमन, कय, उलटी।
वान्ताद–(सं० पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।
वान्ति–(सं०स्त्री०) वमन, उलटी।
वाप–(सं०पुं०) वपन, बोना, मुंडन, क्षेत्र;
वापक–(सं० वि०) बीज बोने वाला।
वापन–(सं० पुं०) बीज बोना।
वापिका–(सं०स्त्री०) वापी, बावली।
वापित–(सं०वि०)मूड़ा हुआ, बोया हुआ
वापी–(सं०स्त्री०)छोटा जलाशय, बावली;
वाम–(सं०वि०)वायाँ, प्रतिकूल, विरुद्ध, खोटा, दुष्ट, नीच, टेढा, कुटिल,बुरा, (पुं०) कामदेव, वरुण, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, धन, कुच, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस अक्षर होते हैं जिसको मकरन्द, माधवी या मंजरी भी कहते हैं एक रुद्र का नाम।
वामदेव–(सं०पुं०) शिव, महादेव, राजा दशरथ के एक मन्त्री का नाम।
वामदेवी–(सं०स्त्री०) दुर्गा, सावित्री।
वामन–(सं० वि०) छोटे डील डौल का, नाटा, बौना, (पुं०) विष्णु का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिये अदिति के गर्भ से हुआ था, एक पुराण का नाम, विष्णु, शिव, एक दिग्गज का नाम। **वामनद्वादशी**–(सं०स्त्री०) श्रावण शुक्ल द्वादशी।
वामना–(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम
वामनिका–(सं०स्त्री०) बौनी स्त्री, स्कन्द की एक मातृका का नाम। **वामनी**–(सं०स्त्री०) बौनी स्त्री, घोड़ी। **वामनीकृत**–(सं० वि०) मल कर छोटा किया हुआ।
वामनेत्र–(सं०नपुं०) बाईं आँख। **वामनेत्रा**–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वाममार्ग–(सं० पुं०) एक तान्त्रिक मत जिसमें मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा देवी की पूजा की जाती है
वामलोचना–(सं० स्त्री०) सुन्दरी स्त्री।
वामा–(सं०स्त्री०) दुर्गा,स्त्री, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
वामाक्षी–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वामावर्त–(सं०पुं०) किसी देव प्रतिमा को बाईं ओर से आरंभ करके प्रदक्षिणा। **वामल**–(सं०वि०) पाखंडी, दंभी।
वामी–(सं०स्त्री०) शृगाली, घोड़ी।
वामेतर–(सं० वि०) बायें का उलटा, दहिना।
वामोरु–(सं०वि०)सुन्दर जाँघ। **वामोरू**–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वायक–(सं०पुं०)जुलाहा, बुनने वाला;
वायदण्ड–(सं०पुं०) जुलाहे की ढरकी।
वायन–(सं० स्त्री०) विवाहादि के लिये बनाया हुआ पकवान।
वायवी–(सं०स्त्री०)उत्तरपश्चिमका कोण
वायव्य–(सं० वि०) वायु सम्बन्धी,(पुं०) पश्चिमोत्तर दिशा जिसका अधिपति वायु है, वायु पुराण, एक अस्त्र का नाम। **वायस**–(सं० पुं०) अगर का वृक्ष, काक, कौवा। **वायसी**–(सं०स्त्री०) सफेद घुमची, कोंवाठोंठी,छोटी मकोय;
वायससन्तु–(सं०पुं०) कौवाठोंठी।
वायसान्तक–(सं०पुं०) पेचक, उल्लू।
वायु–(सं०पुं०) हवा, वात। **वायुकोण**–(सं०पुं०) पश्चिमोत्तर दिशा। **वायुगुल्म**–(सं० पुं०) चक्रवात, बवंडर।
वायुपुत्र–(सं० पुं०) भीम, हनुमान।
वायुमण्डल–(सं० पुं०) आकाश।
वायुलोक–(सं०पुं०) पुराण के अनुसार एक लोक का नाम, आकाश।
वायुवाह–(सं०पुं०) धुवाँ। **वायुसख**–(सं०पुं०) अग्नि। **वायुसखि**–(सं०पुं०) अग्नि, आग। **वायुसूनु**–(सं० पुं०) हनुमान।
वारंवार–(हिं०अव्य०) देखो बारबार।
वार–(सं०पुं०) द्वार, अवरोध, रुकावट, आवरण, ढांपने की वस्तु, क्षण, अवसर, सप्ताह का कोई दिन, बाण, समुद्र या नदी का तट, मद्य पीने का पात्र, दांव, बारी,(हिं० पुं०) आक्रमण, आघात,चोट, प्रहार;**वार खाली जाना**–युक्ति विफल होना।
वारक–(सं०वि०) निषेध करने वाला।
वारकन्या–(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारङ्क–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया।
वारङ्ग–अंकुरे के आकार का एक शस्त्र।
वारटा–(सं०स्त्री०) हंसी।
वारण–(सं० नपुं०) निषेध, रुकावट, बाधा, हाथी, अंकुश, कवच, हरताल, छप्पय छन्द का एक भेद।
वारणवत–(सं०पुं०) गंगा के किनारे का

एक प्राचीन जनपद जहाँ पर पांडवों को जलाने के लिये दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाया था।
वारणीय–(सं०वि०) निषेध करने योग्य
वारणेन्द्र–(सं०पुं०) सुन्दर हाथी।
वारतिय–(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारद–(हिं० पुं०) मेघ, बादल।
वारन–(हिं०स्त्री०) निछावर, बलि,(पुं०) वन्दनवार; तोरण।
वारना–(हिं० क्रि०) उत्सर्ग करना, निछावर करना; **वारने जाना**–निछावर होना।
वारनारी–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारपार–(हिं०पुं०) नदी झील आदि के दोनों किनारे; पूरा विस्तार, इधर उधर का छोर; (अव्य०) इस किनारे से उस किनारे तक, पूरी चौड़ाई या मोटाई तक।
वाराफेर–(हिं०स्त्री०) निछावर,बलि, वह रुपया पैसा जो वर तथा वधू के सिर पर से घुमाकर परजुनियों को बाँटा जाता है।
वारमुखी–(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारमुख्या–(सं०स्त्री०) श्रेष्ठ वाराङ्गना
वारम्वार–(सं०अव्य०) फिर फिर।
वारयितव्य–(सं० वि०) निवारण करने योग्य।
वारयिता–(सं०पुं०) पति, स्वामी।
वारयुवती–(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारवधू–(सं०पुं०) वेश्या, रंडी।
वारवाणि–(सं०पुं०) बंसी बजाने वाला, न्यायाधीश।
वारविलासिनी, वार सुन्दरी, वारस्त्री–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारनिधि–(सं०पुं०) समुद्र।
वारा–(हिं०पुं०) लाभ, व्यय की बचत; (वि०) उत्सर्ग या निछावर किया हुआ, सस्ता।
वाराङ्गना–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारांनिधि–(सं० पुं०) समुद्र।
वाराणसी–(सं०स्त्री०) काशी का प्राचीन नाम।
वारान्यारा–(हिं० पुं०) निर्णय, किसी झगड़े का निबटारा।
वारालिका–(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।
वाराह–(सं०पुं०) शूकर, सुअर, देखो वराह। **वाराहपत्री**–(सं०स्त्री०)असगन्ध
वाराही–(सं० स्त्री०) एक मातृका का नाम, एक योगिनी, बाराहीकन्द, कँगनी। **वाराहीकन्द**–(सं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा कन्द, गेंठी।
वारि–(सं०पुं०) जल, पानी, कोई तरल पदार्थ, (स्त्री०) वाणी, सरस्वती, छोटी गगरी। **वारिकुब्ज**–(सं०पुं०) सिंघाड़ा **वारिकोल**–(सं०पुं०) कछुआ। **वारिगर्भोदर**–(सं०पुं०) मेघ, बादल।
वारिचत्वर–(सं०पुं०) कुम्भिका, सिंघाड़ा
वारिचार–(सं०नपुं०) शैवाल, सेवार।
वारिजात–(सं०वि०) जल में उत्पन्न।
वारिज–(सं० नपुं०) कमल, मछली, शंख, कौड़ी;
वारित–(सं०वि०)निवारित, रोका हुआ।
वारितस्कर–(सं०पुं०) मेघ, बादल।
वारिद–(सं०पुं०)मेघ,बादल,नागरमोथा;
वारिद्र–(सं०पुं०) चातक, पपीहा।
वारिधर–(सं०पुं०) देखो वारिद;
वारिधार–(सं०पुं०) मेघ, बादल;
वारिधारा–(सं०स्त्री०) जल की धारा;
वारिधि, वारिनाथ, वारिनिधि–(सं०) समुद्र; **वारियन्त्र**–(सं०नपुं०) जलयन्त्र
वारियां–(हिं०स्त्री०) निछावर, बलि; **वारियां जाऊं**–तेरे ऊपर निछावर हूँ;
वारिराशि–(सं०पुं०) समुद्र; **वारिरुह**–(सं०पुं०) कमल; **वारिवर्त**–(हिं०पुं०) एक मेघ का नाम।
वारिवाह–(सं०पुं०) मेघ, मोथा।
वारिश–(सं०पुं०) विष्णु।
वारी–(सं०स्त्री०) हाथी बांधने की सिकड़ी, छोटा गगरा।
वारीट–(सं०पुं०) हस्ती, हाथी।
वारीन्द्र–(सं०पुं०) समुद्र।
वारीफेरी–(हिं०स्त्री०) देखो वारफेर, निछावर।
वारीश–(सं०पुं०) समुद्र।
वारुण–(सं०पुं०) शतभिषा नक्षत्र, जल, हरताल, एक अस्त्र का नाम; **वारुणकर्म**–(सं०नपुं०) जलाशय बनाने का काम।
वारुणी–(सं०स्त्री०) मदिरा, वरुण की स्त्री, कदंब के फलों से बनाया हुआ मद्य, एक पर्व का नाम, भूमि आमला, शतभिषा नक्षत्र, उपनिषद विद्या, पश्चिम दिशा।
वारुण्य–(सं०वि०) वरुण संबंधी।
वार्क्ष्य–(सं०वि०) वृक्ष संबंधी।
वार्णक–(सं०पुं०) लेखक।
वार्तक–(सं०पुं०) बटेर नामक पक्षी।
वार्ता–(सं०स्त्री०) किंवदन्ती, वृत्तान्त, समाचार, प्रसंग, विषय, बात।
वार्तायन–(सं०पुं०) दूत।
वार्तालाप–(सं०पुं०) बातचीत।
वार्तावह–(सं०पुं०) समाचार ले जाने वाला दूत।
वार्तिक–(सं०पुं०) दूत, चर, वृत्ति का अध्ययन करने वाला, किसी ग्रन्थ के अर्थों को स्पष्ट करने वाले वाक्य।
वार्दर–(सं०पुं०) रेशम, जल, आम की गुठली।
वार्धक्य–(सं०नपुं०) वृद्धि, बढ़ती,बुढ़ापा;
वार्भट–(सं०पुं०) घड़ियाल।
वार्वट–(सं०नपुं०) नौका, नाव का बेड़ा;
वार्षभ–(सं०वि०) वृषभ संबंधी।
वार्षिक–(सं० वि०) वर्ष संबंधी, प्रति वर्ष होने वाला, वर्षा ऋतु का।
वार्षिकी–(सं०स्त्री०) बेले का फूल।
वार्ष्ण, वार्ष्णेय–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
वाल–(सं०पुं०) केश, बालक।
वालक–(सं०पुं०) कङ्कण, अंगूठी, शिशु, बालक, केश, बाल।
वालव–(सं०पुं०) ज्योतिष में एक करण का नाम।
वाला–(सं०स्त्री०) इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बने हुए उपजाति छन्द का एक भेद।
वालिका–(सं०स्त्री०) कान में पहरने का एक गहना, बाली।
वाली–(सं०पुं०) बन्दरों का राजा जो सुग्रीव का बड़ा भाई था।
वालुका–(सं०स्त्री०) रेती, बालू, कपूर;
वालुकाप्रभा–(सं०स्त्री०) एक नरक का नाम; **वालुकायन्त्र**–(सं०पुं०) औषधि बनाने का एक यन्त्र।
वालेय–(सं०पुं०) गर्दभ, गदहा, पुत्र।
वाल्कली–(सं०स्त्री०) मदिरा।
वाल्मीकि–(सं०पुं०) संस्कृत के आदि कवि जिनकी बनाई हुई रामायण अति प्रसिद्ध है; **वाल्मीकीय**–(सं०वि०) वाल्मीकि संबंधी।
वावदूक–(सं०वि०) वाग्मी, अच्छा बोलने वाला।
वाशन–(सं०नपुं०) पक्षियों का बोलना, (वि०) चहचहाने वाला।
वाशिता–(सं० स्त्री०) हथिनी, मादा हाथी
वाशिष्ठ–(सं०वि०) वशिष्ट संबंधी,(पुं०) एक उपपुराण का नाम।
वाशिष्ठी–(सं०स्त्री०) गोमती नदी।
वाश्र–(सं०पुं०) मन्दिर, चौरहा।
वाष्प–(सं०पुं०) अश्रु,आंसू, लोहा, भाफ,
वास–(सं०पुं०) अवस्थान, गृह, घर।
वासक–(सं०नपुं०) वासर, दिन, शालक राग का एक भेद, अडूसा; **वासकसज्जा**–(सं०स्त्री०) वह नायिका जो अपने प्रियतम से मिलने के लिये शृंगार करके उसकी बाट देखती हो।
वासगृह–(सं०नपुं०) शयनागार, सोने का कमरा, अन्तःपुर; **वासगेह**–(सं०नपुं०) देखो वासगृह।
वासतेय–(सं०वि०) बसने योग्य।
वासन–(सं०नपुं०) धूप आदि से सुगन्धित करना, वस्त्र, ज्ञान।
वासना–(सं०स्त्री०) ज्ञान, संस्कार, कामना, इच्छा, अर्क की पत्नी का नाम, दुर्गा, (हिं०क्रि०) देखो वासना।
वासन्त–(सं०पुं०) ऊँट, कोयल, मूंग।
वासन्तक–(सं०वि०) वसन्त ऋतु संबंधी
वासन्तिक–(सं०पुं०) भांड़, विदूषक, नाचने वाला।
वासन्ती–(सं०स्त्री०) माधवी लता, जूही, मदनोत्सव, दुर्गा, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण होते हैं।
वासप्रासाद–(सं०पुं०) रहने योग्य महल,
वासभवन–(सं० नपुं०) वासगृह;
वासभूमि–(सं०स्त्री०) वासस्थान;
वासर–(सं०नपुं०) दिवस, दिन;
वासरकन्यका–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात;
वासरकृत, वासरमणि–(सं०पुं०) सूर्य;
वासरसंग–(सं० पुं०) प्रातःकाल;
वासराधीश, वासरेश–(सं०पुं०) सूर्य;
वासव–(सं०पुं०) घनिष्ठा नक्षत्र, इन्द्र।
वासवज–(सं०पुं०) वासवपुत्र, अर्जुन।
वासवि–(सं०पुं०) इन्द्र का पुत्र अर्जुन।
वासवी–(सं०स्त्री०) इन्द्र की माता सत्यवती।
वासवेश्म–(सं०नपुं०) रहने का घर।
वासा–(सं०स्त्री०) माधवी लता, अडूसा;
वासि–(सं०पुं०) कुठार, बसूला।
वासित–(सं०वि०) सुगन्धित किया हुआ, वस्त्र से ढपा हुआ, बासी।
वासिता–(सं०स्त्री०) हाथिनी, स्त्री, आर्या छन्द का एक भेद।
वासिष्ठ–(सं०वि०) वसिष्ठ संबंधी, (पुं०) रुधिर।
वासी–(हिं०वि०) बसने वाला, रहने वाला; (स्त्री०) बढ़ई का बसूला।
वासु–(सं०पुं०) विष्णु, पुनर्वसु नक्षत्र।
वासुकी–(सं०पुं०) एक नागराज का नाम।
वासुदेव–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण, अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष; **वासुभद्र**–(सं०पुं०) वासुदेव।
वासुरा–(सं०स्त्री०) हाथी, रात्रि, भूमि।
वास्तव–(सं०वि०) सत्य, यथार्थ; **वास्तव में**–सचमुच; **वास्तविक**–(सं०वि०) प्राकृत, यथार्थ, सत्य, ठीक।
वास्तव्य–(सं०वि०) बसने या रहने योग्य; बसने वाला, (पुं०) बस्ती।
वास्तु–(सं०पुं०) वह स्थान जिस पर घर बनाया जाता है, घर; **वास्तुपरीक्षा**–(सं०स्त्री०) वस्तु का शुभाशुभ विचार; **वास्तुपति**–(सं०पुं०) वास्तु का अधिष्ठाता देवता; **वास्तुपूजा**–(सं०स्त्री०) वस्तु पुरुष की पूजा जो नये बने हुए घर में प्रवेश करने पर की जाती है; **वास्तुयाग**–(सं०पुं०) गृह प्रवेश के समय किया जाने वाला याग; **वास्तुविद्या**–(सं० स्त्री०) गृह निर्माण की कला; **वास्तुशान्ति**–(सं०स्त्री०) गृह प्रवेश के समय किया जाने वाला शान्तिकर्म; **वास्तुशास्त्र**–(सं०नपुं०) गृहनिर्माण विद्या।
वास्तूक–(सं०नपुं०) बथुआ का साग।
वास्प–(सं०पुं०) गरमी, भाफ।
वाह–(सं०पुं०) वाहन, सवारी, बैल, भैंसा, वायु।
वाहक–(सं०पुं०) बोझ ढोने या ले जाने वाला, सारथी।
वाहन–(सं० नपुं०) यान; **वाहनता**–(सं०स्त्री०) वाहन का कार्य या धर्म।
वाहनप–(सं०पुं०) वाहनपति।
वाहनिक–(सं० त्रि०) बोझ ढोकर जीविका निर्वाह करने वाला;
वाहनीय–(सं०वि०) वहन करने योग्य
वाहरिपु–(सं०पुं०) महिष, भैंसा।
वाहवाही–(हिं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा; **वाहवाही लेना**–लोगों की प्रशंसा प्राप्त करना।
वाहिक–(सं०पुं०) गाड़ी, छकड़ा।
वाहित–(सं०वि०) चलाया हुआ।
वाहिनी–(सं०स्त्री०) सेना, सेना का एक भेद जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ,

२४३ अश्व, तथा ४०५ पैदल सिपाही होते थे।

वाहिनीपति–(सं०पुं०) सेनापति।

बाहु–(सं०स्त्री०) भुजदण्ड, रेखागणित में क्षेत्र के किनारे की रेखा, भुजा; वाहुमूल–कांख।

वाहुल–(सं०नपुं०) कार्तिक मास।

बाहुल्य–(सं०नपुं०)अधिकता,आधिक्य।

वाह्य–(सं० पुं०) सारथी, (क्रि०वि०) बाहर, अलग, पृथक्; वाह्यक–(सं०नपुं०) वाहक, गाड़ी, छकड़ा; वाह्यत्व–(सं०नपुं०) वाह्य का भाव या धर्म।

वाह्यान्तर–(सं० वि०) भीतर और बाहर का।

वाह्येन्द्रिय–(सं०नपुं०) शरीर की पांचो इन्द्रियाँ यथा–आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।

वाह्लीक–(सं०पुं०)भारत के पश्चिमोत्तर सीमा पर का एक प्राचीन जनपद; इस देश का घोड़ा, कुंकुम, केसर, एक गन्धर्व का नाम।

विंदु–देखो विन्दु; विंध्य देखो विन्ध्य।

विंदुर–(हिं०पुं०) छोटे चिह्न, बुंदकी।

विंश–(सं०वि०) बीसवां; विंशत्–बीस।

विंशति–(सं०स्त्री०) बीस की संख्या। विंशतिबाहु–(सं० पुं०) रावण; विंशतीश–(सं०पुं०) बीस गाँवों का स्वामी; विंशोत्तरी–(सं०स्त्री०) फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के शुभाशुभ जानने की एक रीति।

विःकृन्धिका–(सं० स्त्री०) मेढक की टर टर बोली।

वि–(सं०उप०) यह शब्द विशेष, निषेध तथा वैरूप्य अर्थ में शब्दों में लगाया जाता है, (पुं०) आकाश, नेत्र, अन्न।

विकङ्कत–(सं० पुं०) एक जंगली वृक्ष, कंटकारी।

विक–(सं० नपुं०) तुरत की ब्याई हुई गाय का दूध, पीयूष, फेंवस।

विकच–(हिं० वि०) केश रहित।

विकट–(सं० वि०) विकराल, भयंकर, विशाल, टेढ़ा, दुर्गम, दुःसाध्य, वक्र, टेढ़ा, कठिन; विकटत्व–(सं० नपुं०) विकटता; विकटमूर्ति–(सं० वि०) भयंकर आकृति वाला; विकटवदन–(सं०पुं०) भयंकर मुख; विकटविषाण–(सं० पुं०) सम्बर मृग; विकटाक्ष–(सं०पुं०) विकराल मूर्ति; विकटानन–(सं० पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

विकत्थन–(सं० नपुं०) झूठी प्रशंसा। विकत्थना–(सं० स्त्री०) आत्मश्लाघा; विकत्था–(सं० स्त्री०) आत्मप्रशंसा।

विकथा–(सं० स्त्री०) बुरी कथा।

विकम्पन–(सं० पुं०) बड़ी कँपकपी। विकम्पित–(सं० वि०) अति चंचल।

विकर–(सं० पुं०) व्याधि, रोग, तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।

विकरार–(हिं०वि०) विकराल, भयंकर, भीषण, डरावना व्याकुल, विकराल–(सं०वि०) भयंकर, डरावना; विकरालता–(सं०स्त्री०) भयंकरता।

विकर्म–(हिं० पुं०) दुराचार।

विकर्ण–(सं० पुं०) दुर्योधन के एक भाई का नाम।

विकीर्णक–(सं० पुं०) शिव के एक गण का नाम।

विकर्तन–(सं०पुं०) सूर्य, मदार कावृक्ष।

विकर्म–(सं०नपुं०)निषिद्धकर्म,दुराचरण।

विकर्षण–(सं०नपुं०) आकर्षण, खींचना, भाग, वह शास्त्र जिसमें आकर्षण की विधि का वर्णन है।

विकल–(सं० वि०) व्याकुल, बेचैन, असमर्थ, खण्डित, टूटा फूटा; विकलता–(सं० वि०) व्याकुलता।

विकलाङ्ग–(सं०वि०) जिसका कोई अङ्ग टूटा फूटा हो।

विकला–(सं० स्त्री०) कला का साठवां भाग, अति सूक्ष्म काल, वह स्त्री जिसका ऋतुमती होना बन्द हो गया हो।

विकलाना–(हिं० क्रि०) व्याकुल होना;

विकलास–(सं० पु०) एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

विकलित–(सं० वि०) व्यग्र, व्याकुल।

विकली–(सं० स्त्री०) ऋतुहीना स्त्री।

विकलेन्द्रिय–(सं०वि०) जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में न हों।

विकल्प–(सं० पुं०) भ्रान्ति, धोखा, भ्रम, चित्त में किसी बात को स्थिर करके उसके विरुद्ध सोचना, विरुद्ध कल्पना, अनेक विधियों का सम्मिलित होना; योग के अनुसार एक प्रकार की चित्तवृत्ति; वह काव्यालंकार जिसमें दो विरुद्ध बातों में से एक का होना कहा जाता है, विचित्रता, व्याकरण में किसी नियम के दो या अधिक भेदों में से इच्छानुसार किसी एक का ग्रहण; विकल्पित–(सं०वि०) अनियमित, सन्दिग्ध; विकल्पी–(सं० वि०) विकल्प युक्त।

विकल्मष–(सं० वि०) पाप रहित।

विकवच–(सं० वि०) कवच रहित।

विकश्वर–(सं० वि०) खिलने वाला।

विकस–(सं० पुं०) चन्द्रमा।

विकसन–(सं० नपुं०) फूटना, खिलना। विकसना–(हिं० क्रि०) बिकसना। विकसित–(सं०वि०) फुल्ल, खिलाहुआ।

विकस्वर–(सं० वि०) विकास होने या खिलने वाला, (पुं०) वह काव्यालंकार जिसमे पहले कोई बात कही जाती है, बाद में किसी सामान्य बात से उसकी पुष्टि की जाती है।

विकार–(सं० पुं०) किसी वस्तु के रूप, रंग आदि में परिवर्तन, दोष की प्राप्ति, बुराई, दोष, चित्त की प्रवृत्ति, वासना, परिणाम, अवगुण; विकारी–(हिं० वि०) विकार युक्त, बुरी वासना वाला, जिसमें उलट फेर हुआ हो, एक संवत्सर का नाम।

विकाल–(सं० नपुं०) अतिकाल, देर।

विकाश–(सं० पुं०) विस्तार, बढ़ती, प्रकाश, फैलाव, आकाश, खिलना, किसी वस्तु की वृद्धि के लिये उसके रूप आकार आदि में धीरे धीरे परिवर्तन होना, (वि०) निर्जन। विकाशक–(सं०वि०) देखो प्रकाशक। विकाशन–(सं० नपुं०) प्रकाश,खिलना। विकाशी–(सं० पुं०) खिलने वाला। विकास–(सं० नपुं०) विस्तार, फैलाव, पुष्प आदि का खिलना, क्रम से उन्नति को प्राप्त करना, (स्त्री०) एक प्रकार की घास। विकासन–(सं० नपुं०) प्रकाशन। विकासना–(हिं० क्रि०) प्रकट करना, विकसित करना, निकालना, खिलना।

विकिर–(सं०नपुं०)पक्षी,चिड़िया,कुवाँ।

विकीर्ण–(सं० वि०) प्रसिद्ध, चारो ओर फैला हुआ, (पुं०) स्वर के उच्चारण का एक दोष।

विकुक्षि–(हिं० वि०) बड़ी दाँत वाला।

विकुण्ठ–(हिं०पुं०) देखो बैकुण्ठ, स्वर्ग। विकुण्ठन–(सं० नपुं०) दुर्बलता।

विकुण्डल–(सं० वि०) कुण्डल रहित।

विकुत्सा–(सं० स्त्री०) विशेष निन्दा।

विकुर्वित–(सं०वि०)विस्मयजनकव्यापार।

विकूजन–(सं०नपुं०) वेगसे शब्दकरना।

विकूबर–(सं० वि०) सुन्दर, मनोहर।

विकृत–(सं० वि०) बिगड़ा हुआ, कुरूप, भद्दा, जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो, अपूर्ण, अधूरा, असाधारण, विचित्र, रोगी, विद्रोही, (पुं०) एक संवत्सर का नाम; विकृतदृष्टि–(सं० पुं०) तिरछी दृष्टि का, ऐंचा; विकृतस्वर–(सं० पुं०) संगीत में वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हट कर दूसरी जगह पड़ता हो। विकृति–(सं० पुं०) विकार, बिगाड़, मन का क्षोभ, शत्रुता, परिवर्तन, उन्नति, तेईस वर्ण के एक वृत्त का नाम।

विकृष्ट–(सं०वि०) आकृष्ट, खिचाहुआ।

विकेशी–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, पूतना नामक राक्षसी।

विक्रम–(सं० पुं०) विष्णु, बल या शक्ति की अधिकता, पराक्रम, गति, ढंग, एक संवत्सर का नाम, राजा विक्रमादित्य।

विक्रमण–(सं०पुं०) पादविक्षेप, चलना।

विक्रमाजीत–(हिं० पुं०) विक्रमादित्य। विक्रमादित्य–(सं० पुं०) उज्जयिनी के एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा का नाम, ये बड़े विद्याप्रेमी, उदार और गुण ग्राहक थे, कहा जाता है कि विक्रम संवत् इनकी ही चलाई हुई है।

विक्रमाब्द–(सं० पुं०) विक्रमादित्य का चलाया हुआ सम्वत्।

विक्रमी–(हिं० वि०) बड़ा पराक्रमी, (पुं०) विष्णु, सिंह।

विक्रय–(सं० पुं०) बेंचने का कार्य, विक्री; विक्रयक–(सं० पुं०) बिक्रेता, बेंचने वाला; विक्रयण–(सं० नपुं०) बिक्री; विक्रयपत्र–(सं० नपुं०) बिक्री का परचा; विक्रयी–(सं० पुं०) बेंचने वाला।

विक्रान्त–(सं० वि०) शूर वीर, (पुं०) चलने का ढङ्ग, साहस, एक प्रजापति का नाम, हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम, (वि०) तेजस्वी, प्रतापी, जिसकी कान्ति नष्ट हो गई हो। विक्रान्ता–(हिं० स्त्री०) हंसपदी लता, अडहुल; विक्रान्ति–(सं०पुं०) शूरता, वीरता, घोड़े की एक चाल।

विक्रायक–(सं०वि०)बेंचनेवाला,बिक्रेता।

विक्रियोपमा–(सं० स्त्री०) वह उपमालंकार जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया का वर्णन होता है।

विक्री–(हिं० स्त्री०) बेंचने की क्रिया या भाव; विक्रीत–(सं० वि०) बेंचा हुआ; विक्रेता–(सं० पुं०) बेंचने या बिक्री करने वाला; विक्रेय–(सं०वि०) बिकने वाला।

विक्लिष्ट–(सं०वि०) बहुत थका हुआ।

विक्लेद–(सं० पुं०) आर्द्रता, गोलापन।

विक्लेश–(सं० पुं०) बड़ा कष्ट।

विक्षत–(सं०वि०) बुरी तरह से घायल।

विक्षाव–(सं० पुं०) शब्द, ध्वनि।

विक्षिप्त–(सं० वि०) फेंका हुआ, छितराया हुआ, व्याकुल, पागल; विक्षिप्तता–(सं० स्त्री०) पागलपन।

विक्षुब्ध–(सं०वि०)जिसकामनचंचलहो।

विक्षेप–(सं० पुं०) इधर उधर फेंकना या छितराना, चित्त को इधर उधर भटकाना, एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, बाधा, विघ्न, एक प्रकार का रोग, धनुष की डोरी चढ़ाना। विक्षेपण–(सं० नपुं०) इधर उधर फेंकने का काम।

विक्षोभ–(सं०पुं०) चित्तकी उद्विग्नता।

विक्षोभण–(सं०नपुं०) विदारण, फाड़ना

विक्षोभी–(सं० वि०) दुःख उत्पन्न करने वाला।

विख–(हिं० पुं०) देखो विष।

विखण्डी–(सं०वि०)दो टुकड़ेकरनेवाला।

विखनन–(सं० नपुं०) खोदने का काम।

विखनस्–(सं० पुं०) ब्रह्मा।

विखहा–(सं० पुं०) गरुड़।

विखादित–(सं० वि०) पशुओं से खाया हुआ (शव)।

विखान–(हिं०पुं०) देखो विषाण, सींग।

विखाना–(सं० स्त्री०) जिह्वा, जीभ।

विखानस–(हिं० पुं०) देखो वैखानस

विखायँध–(हिं० स्त्री०) कड़वी गन्ध।

विख्यात–(सं०वि०) प्रसिद्ध; विख्याति–(सं० स्त्री०) विख्यात होने का भाव, प्रसिद्धि।

विगणन–(सं० नपुं०) हिसाब करना, लेखा करना।

विगत–(सं० वि०) जो बीत गया हो

पहले का, जो चला गया हो, विना प्रभा का, रहित; **विगतश्रीक**–(सं० वि०) श्रीरहित; **विगतभय**–(सं० वि०) निर्भीक, निडर; **विगतशोक**–(सं० वि० शोक रहित; **विगतस्पृह**–(सं० वि०, देखो निःस्पृह; **विगता**–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो पर पुरुष से प्रेम करती हो।

विगति–(सं० पु०) दुर्गति, दुर्दशा।

विगन्ध–(सं० वि०) दुर्गन्धी, गन्धहीन।

विगम–(सं० पुं०) अन्त, क्षान्ति।

विगर्भा–(सं० स्त्री०) जिसका गर्भपात हुआ हो।

विगर्ह–(सं० पुं०) निन्दा; **विगर्हणा**–(सं० नपुं०) डाँट डपट, धिक्कार। **विगर्हित**–(सं० वि०) निन्दनीय, जिसको डाँट फटकार वतलाई गई हो; **विगर्ही**–(सं०वि०) निन्दा कारक।

विगलन–(हिं० पुं०) नाश।

विगलित–(सं० वि०) जो गिर गया हो, जो ढीला पड़ गया हो, बिगड़ा हुआ, शिथिल।

विगाथा–(सं०स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद, इसका दूसरा नाम उद्गीति है।

विगाहा–(हिं० स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद।

विगन्ध–(सं०वि०) जिसमें किसी प्रकार की गन्ध न हो।

विगाह–(सं०नपुं०) अवगाहन, स्नान। **विगाहन**–(सं० पुं०) देखो विगाह। **विगाहमान**–(सं० वि०) स्नान करने वाला।

विगीत–(सं० वि०) गर्हित, निन्दित।

विगीत्ति–(सं०स्त्री०) एकप्रकारका छन्द।

विगुण–(सं० वि०) विकृत, गुणहीन। **विगुणता**–(हिं० स्त्री०) गुणहीनता।

विगूढ–(सं० वि०) निन्दित, गुप्त।

विगृह्य–(सं०वि०) अलग किया हुआ।

विग्रह–(सं० पुं०) विभाग, दूर करना, व्याकरण में यौगिक शब्दों अथवा ससस्त पदों को अलग करना, युद्ध, कलह, झगड़ा, आकृति, मूर्ति, शरीर, शृंगार, सजावट।

विग्रहण–(सं०नपुं०)रूप धारण करना।

विग्रही–(हिं० वि०) युद्ध करने वाला, लड़ाई झगड़ा करने वाला।

विघटन–(सं०नपुं०) तोड़ना, फोड़ना, अलगाना; **विघटित**–(सं० वि०) तोड़ा फोड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ।

विघन–(हिं०पुं०) देखो विघ्न, (सं०पुं०) एक प्रकार बड़ा हथौड़ा।

विघहन–(सं० नपुं०) रगड़ान, हिलाना, डुलाना।

विघात–(सं०पुं०)आघात, प्रहार, चोट, नाश; **विघातक**–(सं०वि०) नाश करने वाला; **विघातन**–(सं० नपुं०) हत्या; **विघाती**–(हिं०वि०)हत्या करने वाला, हत्यारा।

विघर्णन–(सं०नपुं०)चारो ओर घुमाना, चक्कर देना।

विघ्न–(सं०पुं०) बाधा, रुकावट, अड़चन, अन्तराय; **विघ्नक, विघ्नकर**–सं०वि०) बाधा डालने वाला; **विघ्नकारी**–सं० वि०)विघ्न करने वाला; **विघ्ननायक**–(सं०पुं०)गणेश; **विघ्ननाशक**–सं०पुं० गणेशजी; **विघ्नेश**–सं० पुं०) गणेश; **विघ्नेशवाहन**–(सं०पुं०) मूषक, चूहा; **विघ्नेश्वर**–सं०पु०) गणेश।

विचकित–(सं०वि०) घबड़ाया हुआ।

विचकिल–(सं० पुं०) दौने का पौधा, एक प्रकार की चमेली।

विचक्षण–(हिं० वि०) चमकता हुआ, निपुण, चतुर, बुद्धिमान्, पंडित, जो स्पष्ट देख पड़ता हो।

विचच्छन–(हिं० पु०) देखो विचक्षण।

विचक्षु–(सं० वि०) जिसकी आँख नष्ट हो गई हो।

विचन्द्र–(सं०वि०) चन्द्र रहित।

विचन्द्रा–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।

विचय–(सं०पुं०) एकत्र करना, परीक्षा करना; **विचयन**–(सं०नपुं०)इकट्ठा करना

विचरण–(सं०पु०)घूमना फिरना, चलना; **विचरन**–(हिं०पुं०)विचरण; **विचरना**–(हिं०क्रि०) घुमना, चलना फिरना।

विचरनि–(हिं० स्त्री०) चलने फिरने की क्रिया।

विचल–(सं० वि०) अस्थिर, हिलता डोलता हुआ, डिगा हुआ, हटा हुआ; **विचलता**–(सं० स्त्री०) अस्थिरता, चंचलता।

विचलना–हिं० क्रि०) अपने स्थानसे हट जाना, अधीर होना, प्रतिज्ञा पर अधीर रहना; **विचलाना**–(हिं० क्रि०) इधर उधर हटाना; **विचलित**–(सं० वि०) अस्थिर, चंचल, डिगा हुआ, अपनी प्रतिज्ञा छोड़ा हुआ।

विचार–(सं० पुं०) मनमें उत्पन्न होने वाली बात, भावना, न्यायालय का वादी प्रतिवादी के विषयमें निश्चय; **विचारक**–सं०पुं०)विचार करनेवाला, न्यायाधीश, नेता, जासूस; **विचारज्ञ**–(सं०पुं०)निर्णय करनेवाला; **विचारण**–(सं०नपुं०)विचार, मीमांसा; **विचारणा**–(सं०स्त्री०) विचार करने की क्रिया या भाव; **विचारणीय**–(सं०वि०)विचार करने योग्य; **विचारना**–(हिं० क्रि०) सोचना, समझना, ढूंढना, पता लगाना; **विचारपति**–(सं०पुं०) न्यायाधीश।

विचारवान्–(सं० पुं०) वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो; **विचारशक्ति**–(सं० स्त्री०) भला बुरा पहिचानने की शक्ति; **विचारशास्त्र**–(सं०)मीमांसा शास्त्र; **विचारशील**–(सं०वि०) देखो विचारवान्; **विचारशीलता**–(सं०स्त्री०) बुद्धिमानी, **विचारस्थल**–(सं० नपुं०) न्यायालय, न्यायस्थल; **विचाराध्यक्ष**–(सं० पुं०) न्यायाधीश; **विचारालय**–(सं० पुं०) देखो विचारस्थल; **विचारित**–(सं० वि०) सोचा विचारा हुआ।

विचारी–हिं०पुं०) विचरण करनेवाला, इधर उधर घूमने वाला, विचार करनेवाला, कवष्यके एक पुत्र का नाम

विचार्य–सं०वि०, विचारणीय, विचारणीय, विचार करने योग्य; **विचार्यमाण**–सं०वि०) विचार करने योग्य।

विचालन–(सं० नपुं०) अच्छी तरह हटाना या चलाना।

विचित–(सं०वि० निश्चय किया हुआ।

विचिति–(सं०स्त्री०) अनुसन्धान

विचिन्तन–(सं०नपुं०) चिन्ता करना, सोचना; **विचिन्तनीय**–सोचने योग्य।

विचिकित्सा–(सं० स्त्री०) अनिश्चय, सन्देह।

विचित्ति–(सं० पुं०) चित्त ठिकाने न रहने की अवस्था।

विचित्र–(सं०वि०) अनेक रंग का, विलक्षण, असाधारण, चकित करने वाला, रमणीय, सुन्दर, वह अलंकार जिसमें किसी फल की सिद्धि के लिये किसी विपरीत प्रयत्न का वर्णन रहता है; **विचित्रता**–(सं० स्त्री०) विलक्षणता, अद्भुत होने का भाव; **विचित्रदेह**–(सं०पुं०) मेघ, बादल; **विचित्रवीर्य**–(सं० पुं०) चन्द्रवंशी राजा शान्तनु के पुत्र का नाम; **विचित्रशाला**–(सं०स्त्री०) अजायब घर; **विचित्रा**–(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम; **विचित्रित**–(सं० वि०) रंग बिरंगा।

विचिन्ता–(सं० स्त्री०) सोच विचार; **विचिन्तित**–(सं० वि०) सोचा बिचारा हुआ; **विचिन्त्य**–(सं०वि०)जिसमें किसी प्रकार का सन्देह न हो; **विचिन्त्यमान**–(सं०वि०) विचार किया हुआ।

विचूर्णन–(सं० नपुं०) बुकनी करना; **विचूर्णित**–(सं० वि०) अच्छी तरह से चूर्ण किया हुआ।

विचेतन–(सं०वि०) अचेत।

विचेता–(सं०वि०)व्यग्र, घबड़ाया हुआ।

विचेष्टन–(सं०नपुं०)इधर उधर लोटना, तड़पना।

विचेष्टा–(सं० स्त्री०) मुँह बनाना; **विचेष्टित**–(सं० वि०) विशेष चेष्टा युक्त, (नपुं०) क्रिया, व्यापार।

विच्छन्द–(सं० पुं०) देवालय, मन्दिर।

विच्छिति–(सं०स्त्री०) काट कर टुकड़े अलगाना, त्रुटि, कमी, अलगाव, एक प्रकार का हार, साहित्यमें वह हाव जिसमें नायिका थोड़े ही शृंगार से पुरुष को मोहित करने का प्रयत्न करती है।

विच्छिन्न–(सं०वि०) विभक्त, काट कर अलगाया हुआ, पृथक्, अलग, जिसका अन्त हुआ हो।

विच्छेद–(सं०पुं०) विरह, वियोग, नाश, काटने या अलगाने की क्रिया, क्रम का बीच में खण्डित होना, टुकड़े टुकड़े करना, बीच में पड़ने वाला खाली स्थान, कविता में यति; **विच्छेदक**–(सं० पुं०) काट कर अलग करने वाला, विभाजक; **विच्छेदन**–(सं० नपुं०) अलग करने की क्रिया, नाश; **विच्छेदनीय**–(सं०वि०)काटकर अलगाने योग्य; **विच्छेदी**–(सं० वि०) काटने वाला।

विच्युत–(सं० वि०) अपने स्थान से गिरा या हटा हुआ।

विछलना–(हिं० क्रि०) विचलित होना, फिसलना।

विछेद–(हिं० पुं०) वियोग, बिछोह, प्रिय से अलग होना।

विछोई–(हिं०पुं०) जिसका अपने प्रियसे वियोग हुआ हो, वियोगी।

विछोह–(हिं०पु०) वियोग, प्रिय से अलग होना।

विजंघ–(हिं० वि०) विना जांघ का।

विजई–(हिं० पुं०) देखो विजयी।

विजन–(सं०वि०) जनशून्य, एकान्त, वीजन, पंखा, बेना; **विजनता**–(सं० स्त्री०) एकान्तता।

विजनन–(सं० नपुं०) जनम करने की क्रिया, प्रसव।

विजना–(हिं०पुं०) पंखा, बेना।

विजन्मा–(हि०पुं०)किसी स्त्रीका उसके उपपति से जन्मा हुआ पुत्र, जारज, दोगला।

विजय–(सं०पुं०) जय, जीत, सवैया छन्दका एक भेद; **विजयक**–(सं०वि०) सर्वदा जीतने वाला; **विजयकण्टक**–(सं० पुं०) विजय में विघ्न डालने वाला; **विजयकुञ्जर**–(सं०पुं०) राजा के सवारीकी हाथी; **विजयकेतु**–(सं०पुं०) विजयपताका; **विजयडिंडिम**–(सं०पुं०) लड़ाई में बजाने का नगाड़ा; **विजयन्तिका**–(सं०स्त्री०) एक योगिनी का नाम; **विजयन्ती**–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम; **विजयपताका**–(सं० स्त्री०) वह झंडा जो सेना के विजय प्राप्त करने पर फहराया जाता है; **विजयपूर्णिमा**–(सं०स्त्री०) आश्विन की पूर्णिमा; **विजययात्रा**–(सं० स्त्री०) वह यात्रा जो विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जावे; **विजयलक्ष्मी**–(सं० स्त्री०) विजय की अधिष्ठात्री देवी; **विजयश्री**–(सं०स्त्री०) विजयलक्ष्मी।

विजयसार–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी अनेक कामों में लाई जाती है।

विजया–(सं०स्त्री०)दुर्गा, यम की भार्या का नाम, भांग, वच, मँजीठ, श्रीकृष्ण की माला का नाम, एक योगिनी का नाम, एक मातृक छन्द का नाम; **विजया एकादशी**–(सं० स्त्री०) आश्विन शुक्ल एकादशी; **विजया दशमी**–(सं० स्त्री०) आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिन्दुओं का बहुत बड़ा त्योहार होता है; **विजयानन्द**–(सं०पुं०) संगीतके एक तालका नाम।

विजयी–(हिं०पुं०) वह जिसने विजय

प्राप्त की हो, जीतने वाली, अर्जुन का एक नाम।
विजयेश–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
विजयोत्सव–(सं०पुं०) विजया दशमी को होने वाला उत्सव।
विजर–(सं०वि०) जरा रहित, जिसको बुढ़ापा न हो।
विजर्जर–(सं०वि०) अत्यन्त जर्जर।
विजल–(सं०नपुं०) वर्षा न होना, सूखा पड़ना।
विजल्प–(सं० पुं०) व्यर्थ की बहुत सी बकवाद।
विजाग–(हिं०पुं०) देखो वियोग, विमोह; विजागी–(हिं०पुं०) वियोगी।
विजात–(सं०वि०) वर्णसंकर, दोगला।
विजाता–(सं०स्त्री०) जिस स्त्री को हाल में बच्चा हुआ हो।
विजाति–(सं० वि०) भिन्न जाति का; विजातीय–(सं०वि०) जो अपनी जाति से भिन्न हो।
विजानु–(सं०पुं०) तलवार चलाने के बत्तीस हाथों में से एक।
विजार–(हिं० पुं०) एक प्रकार की मटिया भूमि।
विजिगीषा–(सं०पुं०)विजय प्राप्त करने की अभिलाषा, उत्कर्ष, उन्नति।
विजित–(सं० वि०) जीता हुआ, (पुं०) जीता हुआ प्रदेश; विजितात्मा–(सं० पुं०)शिव, महादेव; विजिताश्व–(सं०पुं०) राजा पृथु के एक पुत्र का नाम।
विजिति–(सं० स्त्री०) विजय, जीत।
विजित्वर–(सं०पुं०) जीतने वाला।
विजिहीर्षा–(सं०स्त्री०) विहार करने की इच्छा।
विजिह्म–(सं० वि०) वक्र, कुटिल।
विजीष–(सं० वि०) जिसको विजय प्राप्त करने की अभिलाषा हो।
विजृम्भण–(सं० नपुं०) जंभाई लेना, भौंह सिकोड़ना; विजृम्भा–(सं० स्त्री०) जंभाई; विजृम्भित–(सं०वि०) व्याप्त विकसित।
विजेतव्य–(सं०वि०)जो जीतने योग्य हो;
विजेता–(हिं० पुं०) विजय करने वाला, जीतने वाला; विजेय–(सं०वि०) जीता जाने योग्य; विजै–(हिं० पुं०) देखो विजय।
विजैलता–विजैसार–(हिं० पुं०) देखो विजयलता विजयसार।
विजोग–देखो वियोग
विजोर–(हिं० वि०) निर्बल,
विजोहा–(हिं० पुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते है, इसको जो हो या विमोहा भी कहते।
विज्जु–(हिं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
विज्जुल–(हिं० पुं०) त्वचा, छिलका।
विज्जुलता–(हिं०स्त्री०) विद्युलता, बिजली
विज्जोहा–(हिं०पुं०) देखो विजोहा।
विज्ञ–(सं० पुं०) बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान; विज्ञता–(सं०स्त्री०)पाण्डित्य, बुद्धिमानी।
विज्ञप्त–(सं० वि०) सूचित किया हुआ, बतलाया हुआ; विज्ञप्ति–(सं० स्त्री०) विज्ञापन।
विज्ञात–(सं०वि०) प्रसिद्ध; विज्ञातव्य–(सं० वि०) जानने योग्य; विज्ञाता–(हिं० पुं०) जानने वाला।
विज्ञान–(सं०नपुं०) ज्ञान, किसी विषय के सिद्धान्तों का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह किया गया हो, किसी विषय का अच्छा ज्ञान, कार्य की कुशलता, माया या अविद्या नाम की वृत्ति, ब्रह्म, आत्मा, आकाश, मोक्ष, निश्चयात्मक बुद्धि; विज्ञान कोश–(सं०पुं०) वेदान्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रियां और बुद्धि; विज्ञानता–(सं० स्त्री०) विज्ञान का भाव या धर्म; विज्ञानपति–(सं०पुं०) परम ज्ञानी। विज्ञानपाद–(सं० पुं०) वेदव्यास का एक नाम; विज्ञानमय कोष–(सं०पुं०)बुद्धि तथा ज्ञानेन्द्रियों का समूह; विज्ञानवाद–(सं० पुं०) वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता दिखलाई जाती है; विज्ञानवादी–(सं० पु०) योगमार्ग का अनुयायी; विज्ञानिक–(सं०पु०) देखो वैज्ञानिक;विज्ञानी–(हिं०पुं०) वह जिसको किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक।
विज्ञापक–(सं० पुं०) समझाने या बतलाने वाला; विज्ञापन–(सं० नपुं०) किसी बात को जताने की क्रिया, सूचना देना, वह पत्र जिसके द्वारा कोई बात बतलाई जाती है;विज्ञापित; (सं० वि०) दिया हुआ; विज्ञेय–(सं०वि०) जानने या समझने योग्य।
विट–(सं० पुं०) लम्पट, कामुक, धूर्त, चतुर, वह व्यक्ति जो अपनी संपूर्ण सम्पत्ति भोग विलास में नष्ट कर चुका हो, जो बड़ा धूर्त हो और बात बनाने में बड़ा निपुण हो, चूहा, नारंगी का वृक्ष, सोंचर लवण, मल, विष्टा।
विटङ्क–(सं०पुं०)कबूतर का दरबा(वि०) सुन्दर।
विटप–(सं०पुं०) वृक्ष या लता की नई शाखा,झाड़ी, कोंपल वृक्ष,पादप, पेड़;
विटपी–(हिं०पुं०) वृक्ष,पेड़;विटपीमृग–(सं० पुं०) बंदर।
विटलवण–(सं०नपुं०) सोंचर नमक।
विट्ठल–(हिं०पुं०) दक्षिण भारत की विष्णु की एक मूर्ति का नाम।
विडम्बक–(सं०पुं०)ठीक ठीक अनुकरण करने वाला,चिढ़ानेवाला; विडम्बन–(सं०नपुं०) निन्दा या उपहास करना; विडम्बना–(सं०स्त्री०)अनुकरण करना, हँसी उड़ाना, डाँट डपट करना; विडम्बनीय–(सं०वि०) अनुकरण करने योग्य, चिढाने लायक; विडम्बित–(सं०वि०) उपहास किया हुआ, ठगा हुआ; विडम्बी–(सं० नपुं०) अनुकरण करने वाला।
विड़रना–(हिं० क्रि०) इधर उधर या तितर बितर होना,दौड़ना, भागना।
विडारना–विड़राना–(हिं०क्रि०) छितराना, इधर उधर करना,नष्ट करना दौड़ना, भागना।
विडाल–(सं० पु०) आँख का पिण्ड, मार्जार, बिल्ली, हरताल।
विडौजा–(सं०पु०) इन्द्र का एक नाम।
विड्ग्रह,विड्बन्ध–(सं०) मल का अवरोध।
विड्ज–(सं० त्रि०) विष्टा आदि मेंसे उत्पन्न होने वाले कीड़े।
विड्बन्ध–(सं० पुं०) मल का अवरोध,
विड्भंग–(सं०पुं०) बहुत शौच होना।
विड्भेदी–(सं० त्रिं०) विरेचक औषधि,
वितण्ड–(सं०पुं०) गज, हाथी।
वितण्डा–(सं०स्त्री०) दूसरेके पक्षको दबा कर अपने पक्ष का स्थापन, व्यर्थ का लड़ाई झगड़ा।
वितंत–(हिं०पु०)एक प्रकार का तारका बाजा; विसंस-चिड़ीमारका जाल
वित–(हिं० पुं०) चतुर, ज्ञाता,निपुण,
वितत–(सं०वि) विस्तृत, फैला हुआ।
विततना–(हिं०क्रि०) व्याकुल होना।
वितति–(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव।
वितथ–(सं०वि०) मिथ्या, झूठ, निरर्थक
वितद्रु–(सं०पुं०) पंजाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।
वितनु–(सं०वि०) अति सूक्ष्म।
वितपन्न–(हिं० वि०) व्युत्पन्न, दक्ष, प्रवीण।
वितरक–(हिं०वि०)बांटनेवाला;वितरण–(सं०नपुं०) अर्पण करना,देना,बांटना,
वितरन–(हिं०पुं०)वितरण; वितरना–(हि-क्रि०) वितरण करना,
वितरिक्त–(हिं०अव्य०)व्यतिरिक्त,अतिरिक्त, सिवाय।
वितरित–(सं० वि०) बाँटा हुआ।
वितरेक–(हिं०क्रि० वि०) व्यतिरिक्त, छोड़कर, सिवाय।
वितर्क–(सं० पुं०) एक तर्क के बाद दूसरा तर्क,सन्देह, अनुमान, वह अर्थालंकार जिसमें किसी प्रकार के सन्देह का उल्लेख रहता है जिसका निर्णय कुछ नहीं होता।
वितर्क्य–(सं०वि०) अति विलक्षण।
वितल–(सं०वि०) सात पातालों मे से तीसरा पाताल।
वितस्ता–(सं०स्त्री०) पंजाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।
वितस्ति–(सं०पुं०) बित्ता, बारह अंगुल का परिमाण।
वितान–(सं०नपुं०) विस्तार, फैलाव, बड़ा चंदवा समूह, अवकाश, घृणा, एक प्रकार का छन्द, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं।
वितानक–(सं०पुं०) बड़ा चंदवा, समूह, जमघट।
वितानना–(हिं० क्रि०) चँदवा आदि तानना।
वितामस–(सं०पुं०) प्रकाश, उजाला।
वितिक्रम–(हिं०पुं०) देखो व्यतिक्रम।
वितिमिर–(सं०वि०) अन्धकार शून्य।
वितीत–(हिं०वि०) देखो व्यतीत, बीता हुआ।
वितीपात–(हिं०पुं०) देखो व्यतीपात;
वितीपाती–(हिं०वि०) उपद्रवी।
वितुंड–(हिं०पुं०) गज, हाथी।
वितु–(हिं० पुं०) वित्त, धन, सम्पत्ति।
वितुष्ट–(सं०वि०) असन्तुष्ट।
वितृण–(सं० वि०) तृणहीन।
वितृप्त–(सं० वि०) जो तृप्त न हो।
वितृष्ण–वितृष–(सं० वि०) तृष्णा से रहित।
वितृष्णता–(सं०स्त्री०) निस्पृहता।
वितृष्णा–(सं०स्त्री०)तृष्णा का अभाव
वितोय–(सं० वि०) जल हीन।
वित्त–(सं०नपु०) सम्पत्ति, धन, (वि०) जाना हुआ, समझा हुआ, विख्यात, प्रसिद्ध; वित्तकोश–(सं०नपुं०) रुपया पैसा रखने की थैली; वित्तदा–(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम; वित्तपति–(सं०पुं०) कुबेर; वित्तपुरी–(सं०स्त्री०)कुबेर की नगरी; वित्तहीन–(सं० त्रि०) धनहीन, दरिद्र; वित्तेश,वित्तेश्वर–(सं० पुं०) कुबेर।
वित्रप–(सं०वि) निर्लज्ज।
वित्रस्त–(सं०वि) बहुत डरा हुआ।
वित्रास–(सं० पुं०) भय, डर।
विथकना–(हिं०क्रि०) शिथिल होना, मोहित होकर चुप हो जाना।
विथकित–(हिं० वि०) शिथिल, थका हुआ, जो आश्चर्य या मोहवश चुप हो गया हो।
विथराना–(हिं० क्रि०) इधर उधर छितराना।
विथा–(हिं०स्त्री०) व्यथा, पीडा, रोग।
विथारना–(हि०क्रि०)छितराना,फैलाना,
विथित–(हिं०वि०) व्यथित, पीडा युक्त, दुखी।
विथुरा–(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका उसके स्वामी से वियोग हुआ हो।
विथ्या–(सं० स्त्री) गोभी।
विदक्षिण–(सं० वि०) दक्षिणा रहित।
विदग्ध–(सं०पुं०)रसिक मनुष्य, विद्वान्, पण्डित, चतुर, (वि०) जला हुआ।
विदग्धता–(सं०स्त्री०)पाण्डित्य,चतुराई
विदग्धा–(सं०स्त्री०)वहपरकीया नायिका जो बड़ी चतुराई से परपुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करती है।
विदमान–(हिं०अव्य०)विद्यमान सम्मुख;
विदरण–(सं० नपुं०) विदारण करना, फाड़ना। विदरना–(हिं०क्रि०)विदीर्ण होना, फटना।
विदर्भ–(सं०पुं०)बरार देश का प्राचीन नाम, एक प्राचीन राजा का नाम

जिसके नाम पर इस देश का नाम पड़ा था, मसूढ़ा फूलने का रोग।
विदर्भजा–(सं०स्त्री०) दमयन्ती। विदर्भराज–(सं० पुं०) दमयन्ती के पिता भीष्म जो विदर्भ के राजा थे।
विदल–(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना, अनार का दाना, बांस का बना हुआ कोई पात्र, (वि०) जिसमें दल न हों, बिना दल का।
विदलन–(सं०नपुं०) मलने दलने की क्रिया, टुकड़े करना, फाड़ना। विदलना–(हिं०क्रि०)नष्ट करना, फाड़ना।
विदलित–(सं० वि०) फाड़ा हुआ, टुकड़े किया हुआ, रौंदा हुआ, मला हुआ।
विदा–(हिं० पुं०) प्रस्थान, कहीं जाने की आज्ञा। विदाई–(हिं०स्त्री०)प्रस्थान, विदा होने की अनुमति। विदाय–(हिं०पुं०) विसर्जन, प्रस्थान।
विदार–(सं०पुं०) समर, युद्ध।
विदारक–(सं०पुं०) जल के बीच का वृक्ष या पर्वत, (वि०) फाड़ डालने वाला। विदारण–(सं०नपुं०) मार डालना, हत्या करना, समर, युद्ध, लड़ाई; विदारना–(हिं०क्रि०) फाड़ना, अलग अलग टुकड़े करना; विदारित–(सं०वि०) विदीर्ण, फाड़ा हुआ।
विदारी–(हिं०वि०)विदीर्ण करने वाला, फाड़ने वाला।
विदारीकन्द–(सं०पु०) भूमि कुम्हड़ा।
विदारु–(सं०पुं०) कृकलास, गिरगिट।
विदाह–(सं०पुं०)हाथ पैर में होने वाली जलन।
विदाही–(हिं० पुं०) दाह उत्पन्न करने वाला पदार्थ।
विदित–(सं०वि०) ज्ञात, जाना हुआ।
विदिथ–(हिं०पुं०) पण्डित,विद्वान्, योगी;
विदिशा–(सं० स्त्री०) वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम।
विदिश्–(सं०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच का कोण।
विदीधिति–(सं०वि०) किरण हीन।
विदीर्ण–(सं०वि०) बीच से फाड़ा हुआ, टूटा फूटा।
विदुर–(सं०पुं०)पण्डित,ज्ञानी,जानकार, कौरवों के प्रसिद्ध मन्त्री जो नीति में बड़े चतुर थे।
विदुल–(सं०नपुं०) जलबेंत, बोल नामक गन्ध द्रव्य।
विदुष–(सं०पुं०)विद्वान्,पण्डित;विदुषी–(सं०स्त्री०) विद्या पढ़ी हुई स्त्री, विद्वान् स्त्री।
विदूर–(सं०वि०) जो बहुत दूर हो,देखो वैदूर्य मणि।
विदूरत्व–(सं०नपुं०) बहुत दूर होना।
विदूषक–(सं०पुं०) कामुक, लम्पट, बातचीत करके दूसरों को हँसाने वाला, भाँड़, दूसरों की निन्दा करने वाला, खल, दुष्ट, वह नायक जो अपने परिहास तथा कौतुक आदि के कारण कामकेलि में सहायक होता है।
विदूषण–(सं०नपुं०)दोष लगाने का कार्य
विदूषना–(हिं०क्रि०) कष्ट देना, दोषी ठहराना, दुःखी होना।
विदेव–(सं०पुं०) राक्षस, यक्ष।
विदेश–(सं०पुं०) अपने देश से अतिरिक्त दूसरा देश, परदेश; विदेशी–(हिं०वि०) परदेशी।
विदेह–(सं०पुं०) वह जो शरीर रहित हो, राजा जनक का एक नाम; विदेहत्व–शरीर का नाश, मृत्यु। विदेहपुर–(सं०नपु०) राजा जनक की राजधानी, जनकपुर।
विदोष–(सं०वि०) दोष रहित,
विद्र–(सं०पु०) विद्वान्, पण्डित,जानकार
विद्ध–(सं०वि०) छेदा हुआ, फेंका हुआ, बाधा पड़ा हुआ, तुल्य, समान, वक्र, टेढ़ा, मिला हुआ।
विद्यमान–(सं०वि०) वर्तमान, उपस्थित; विद्यमानता–(सं०स्त्री०) उपस्थिति,
विद्या–(सं०स्त्री०) शिक्षा आदि द्वारा उपार्जित ज्ञान, किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान, दुर्गा, सीता की एक सखी का नाम, आर्या छन्द का एक भेद। विद्यागम–(सं०पु०) विद्यालाभ; विद्यागुरु–(सं० पुं०) पढ़ाने वाला, शिक्षक;विद्यागृह–(सं०पुं०) विद्यालय, पाठशाला। विद्यादाता–(सं०वि०) विद्या पढ़ाने वाला गुरु। विद्यादान–(सं० नपु०) विद्या पढ़ाना, शिक्षा देना। विद्यादेवी–(सं०स्त्री०) सरस्वती; विद्याधन–(सं०नपुं०) विद्यारूपी धन।
विद्याधर–(सं० पुं०) एक प्रकार की देवयोनि जिसके अन्तर्गत गन्धर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं, वैद्यक का एक प्रकार का यन्त्र; विद्याधरी–(सं०स्त्री०) विद्याधर की स्त्री,किन्नरी।
विद्याधार–(सं०पुं०) विद्वान्, पण्डित।
विद्याधारी–(हिं०स्त्री०) एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं विद्याधिप–(सं० पुं०) गुरु, शिक्षक, विद्वान्; विद्यारम्भ–(सं०पु०) बालकों को विद्या पढ़ाना प्रारम्भ करने का संस्कार। विद्याभृत्–(सं०पुं०) विद्वान् विद्यामणि–(सं०पु०)विद्या रूपी रत्न; विद्यामार्ग–(सं० पुं०) श्रेष्ठ मार्ग; विद्याराशि–(सं०पुं०) शिव, महादेव; विद्यार्थी–(हिं०पुं०) विद्या पढ़ने वाला, छात्र, शिष्य; विद्यालय–(सं०पु०) वह स्थान जहां पर विद्या पढ़ाई जाती है, पाठशाला; विद्यावान्–(सं०पुं०) विद्वान्, पण्डित; विद्याविद्–(सं०पुं०) विद्वान्, पण्डित; विद्या-विरुद्ध–(सं०वि०) ज्ञान के विपरीत। विद्यावेश्म–(सं० नपुं०) विद्यालय। विद्यासागर–(सं० वि०) सब शास्त्रों को जानने वाला।
विद्युता–(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली, एक अप्सरा का नाम; विद्युताक्ष–(सं०पु०) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
विद्युत–(सं०स्त्री०) सन्ध्या, बिजली। विद्युत्केश–(सं०पुं०) हेति नामक राक्षस का पुत्र। विद्युत्पात–(सं० पुं०) वज्रपात, बिजली का गिरना; विद्युत्पुञ्ज–(सं० पुं०, विद्युन्माला। विद्युत्प्रभ–(सं०वि०) बिजली के समान चमक वाला। विद्युत्प्रिय–(सं०वि०) काँसे का पात्र। विद्युत्गौरी–(सं०स्त्री०) शक्ति की एक मूर्ति का नाम। विद्युत्मापक–(सं० पु०) वह यन्त्र जिसके द्वारा बिजली के बल, प्रवाह आदि के विषय में जाना जाता है। विद्युन्माला–(सं०स्त्री०), बिजली का समूह, एक यक्षिणी का नाम, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ गुरु वर्ण होते है; विद्युन्माली–(हिं०पुं०) पुराणानुसार एक राक्षस का नाम।
विद्युल्लता–(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली। विद्युल्लेखा–(सं०स्त्री०)एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं इसका दूसरा नाम शेषराज है।
विद्येश–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
विद्योत्–(सं०स्त्री०) बिजली।
विद्योतन–(सं० वि०) दीप्ति युक्त। विद्योती–सं० वि०) प्रभावशाली।
विद्रघ–(सं० वि०) स्थूल, मोटा,पक्का;
विद्रथ–(सं०वि०) मोटा, पुष्ट।
विद्रधि–(सं०पुं०) एक प्रकार का पेट के भीतर का फोड़ा।
विद्राव–(सं०नपुं०) बहना, पिघलना; विद्रावण–(सं०पुं०) पिघलना, भीगना, गलना, उड़ना, एक दानव का नाम;
विद्रावणी–(सं० स्त्री०) कौवाठोंठी।
विद्रावित–(सं० वि०) भीगा हुआ, पिघला हुआ।
विद्रावी–(सं०वि०) भागने वाला, गलने वाला।
विद्रुत–(सं०वि०) गला हुआ,भागा हुआ
विद्रुम–(सं०नपुं०) प्रवाल, मूंगा।
विद्रोह–(सं०पुं०) द्वेष, राज्य को हानि पहुंचाने वाला, उपद्रव; विद्रोही–(सं०वि०) द्वेष करने वाला, राज्य को हानि पहुंचाने वाला।
विद्वत्तम–(सं०वि०) विद्वानों में श्रेष्ठ। विद्वत्ता–(सं०स्त्री०) पाण्डित्य,पंडिताई
विद्वत्व–(सं० नपुं०) देखो विद्वत्ता; पाण्डित्य।
विद्वान्–(सं०पुं०) वह जो आत्मा के स्वरूप को समझता हो, वह जिसने बहुत विद्या पढ़ी हो,पण्डित, सर्वज्ञ।
विद्विष–(सं०पुं०) शत्रु, वैरी।
विद्विष्ट(सं०वि०) जिसके साथ शत्रुता की जावे; विद्वेष–(सं० वि०) शत्रु, विद्वेषण–(सं० नपुं०) शत्रुता, वैर; विद्वेषिता–(सं०स्त्री०) शत्रुता; विद्वेषी–(हिं०पुं०) शत्रुता करने वाला, वैरी।
विधंस–(हिं० पुं०) विध्वंस, नाश; विध्वंसना–नाश करना।
विध–(हिं०पुं०) विधि, ब्रह्मा।
विधत्री–(सं०स्त्री०) ब्रह्मा की शक्ति।
विधन–(सं०वि०) निर्धनता; विधनता–(सं०स्त्री०) निर्धनता, विधना–(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, अपने ऊपर लेना; (हिं० स्त्री०) भवितव्यता, होने वाली बात, (हिं०पुं०) विधि, ब्रह्मा।
विधर–(हिं० क्रि० वि०) देखो उधर, उस ओर।
विधरण–(सं०नपुं०) रोकना, पकड़ना।
विधर्म–(सं० पुं०) वह धर्म जो अपना न हो,पराये का धर्म, (वि०) गुणहीन, विधर्मिक.विधर्मी–(हिं०पुं०) वह जो किसी दूसरे के धर्म का अनुयायी है।
विधवा–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, रांड़, बेवा;
विधवापन–(हिं०पुं०) रडांपा,वैधव्य।
विधवाश्रम–(सं०पुं०) वह स्थान जहां निराश्रय विधवाओं के पालन पोषण आदि का प्रबन्ध रहता है।
विधासना–(हिं०क्रि) नष्ट करना, इधर उधर करना।
विधातव्य–(सं०वि०) कर्तव्य,करने योग्य
विधाता–(हिं०पुं०) रचने वाला, बनाने वाला, व्यवस्था करने वाला, प्रबन्ध करने वाला, जगत् की रचना करने वाला।
विधात्री–(सं०स्त्री०)विधान करने वाली
विधान–(सं०नपुं०) किसी कार्य का आयोजन, अनुष्ठान, विन्यास,प्रबन्ध, विधि, पद्धति, प्रणाली, ढंग, उपाय, पूजा, प्रेरणा, व्यवस्था, रचना.नाटक में वह स्थान जहां पर किसी वाक्य से सुख दुःख दोनों दरसाया जाता है; विधानक–(सं० वि०) विधि या रीति जानने वाला; विधानसप्तमी–(सं०स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी।
विधानी–(हिं०पुं०) विधि पूर्वक कार्य करने वाला।
विधायक–(सं०पुं०) बनाने या रचने वाला. प्रबन्ध करने वाला।
विधारण–(सं०नपुं०) विशेष रूप से धारण करना।
विधारा–(सं०स्त्री०) एक लता जो औषधियों में प्रयोग होती है।
विधि–(सं०स्त्री०) कार्यक्रम, काम करने की रीति, ढङ्ग, नियम, व्यवस्था, योजना, प्रकार, चालढाल, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे कोई आज्ञा दी जाती है, वह अर्थालंकार जिसमें किसी विषय का दुबारा विधान किया जाता है; विधि बैठना–मेल होना, अनुकूलता होना।
विधिज्ञ–(सं०वि०) शास्त्रोक्त विधान को जानने वाला; विधित्व–(सं० नपुं०) विधि का भाव या धर्म।
विधित्सा–(सं०स्त्री०) विधान करने की इच्छा; विधित्सु–(सं०वि०) इच्छा करने वाला।

विधिदृष्ट–(सं०वि०) शास्त्रविहित।
विधिना–(हि०पुं०) विधि,ब्रह्मा; विधिपुत्र–(सं०पुं०) नारद। विधिपुर–(सं०पुं०) ब्रह्मलोक। विधिपूर्वक–(सं०वि०) नियम के अनुसार; विधिबोधित–(सं०वि०) शास्त्र सम्मत।
विधिरानी–(हिं०स्त्री०) सरस्वती।
विधिलोक–(सं० पुं०) ब्रह्मलोक।
विधिवत्–(सं०अव्य०) विधि पूर्वक, पद्धति के अनुसार। विधिबद्ध–(सं०वि०) नियमबद्ध।
विधिवधू–(सं०स्त्री०) सरस्वती। विधिवाहन–(सं०पुं०) हंस।
विधिशास्त्र–(सं०नपुं०) व्यवहारशास्त्र, स्मृतिशास्त्र।
विधुन्तुद–(हिं० पुं०) चन्द्रमा को कष्ट देने वाला राहु।
विधु–(सं०पुं०) चन्द्रमा, वायु, कपूर, विष्णु, ब्रह्मा, आयुध। विधुकान्त–(सं०पुं०) संगीत का एक ताल; विधुदार–(सं० पुं०) चन्द्रमा की स्त्री रोहिणी; विधुप्रिया–(सं० स्त्री०) कुमुदिनी; विधुबन्धु–(सं० पुं०) कुमुद का फूल।
विधुमणि–(हिं० स्त्री०) चन्द्रकान्तमणि।
विधुवैनी–(हिं० स्त्री०) चन्द्रमुखी, सुन्दर स्त्री।
विधुर–(सं० वि०) व्यग्र, व्याकुल, दुःखी, असमर्थ, परित्यक्त, छोड़ा हुआ, (पुं०) वियोग, मोक्ष।
विधुवदनी–(सं० स्त्री०) चन्द्रमा के समान मुख वाली स्त्री, सुन्दर स्त्री।
विधूत–(सं० वि०) काँपता हुआ, हटाया हुआ, दूर किया हुआ।
विधूम–(सं० वि०) धूम्र रहित, बिना धुवें का।
विधेय–(सं० वि०) कर्तव्य, जिस कार्य का करना उचित हो, होने वाला, अधीन, वशीभूत, व्याकरण मे वह वाक्य जिसके द्वारा किसी के विषय में कुछ कहा जाय, नियम या विधि द्वारा जानने योग्य, जिसका विधान होने वाला हो।
विधेयता–(सं० स्त्री०) अधीनता।
विधेयात्मा–(पुं० सं०) विष्णु।
विधेयाविमर्श–(सं०पुं०) साहित्य में वह वाक्यदोष जो विधेय अंश को वाक्य में अप्रधान स्थान में रखने पर होता है।
विध्यपाश्रय–(सं०पुं०) विधि का आश्रय करने वाला मनुष्य।
विध्याभास–(सं० पुं०) वह अर्थालंकार जिसमें किसी अनिष्ट या आपत्ति की सम्भावना होते हुए विवश होकर किसी बात की सम्मति दी जाती है।
विध्वंस–(सं० पुं०) नाश, अनादर, बैर; विध्वंसक–(सं० त्रि०) नाश करने वाला; विध्वंसित–(सं०वि०) नाश किया हुआ; विध्वंसी–(हिं०वि०) नाश करनेवाला; विध्वस्त–(सं०वि०) नाश किया हुआ।
वन–(हिं० सर्व०) उस; (अव्य०) बिना।

विनत–(सं० वि०) विनीत, नम्र, शिष्ट, झुका हुआ, सिकुड़ा हुआ; (पुं०) शिव, महादेव, सुग्रीव की सेना के एक बन्दर का नाम।
विनतड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो विनति।
विनता–(सं० स्त्री०) दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो गरुड़ की माता थी;
विनतासूनु–(सं० पुं०) गरुड़।
विनति–(सं० स्त्री०) विनती, नम्रता, शिष्टता, सुशीलता, प्रार्थना, झुकाव, शासन, दण्ड, निवारण, रोक।
विनती–(हिं० स्त्री०) देखो विनति।
विनमन–(सं० नपुं०) झुकाना, नवाना।
विनम्र–(सं०वि०) अति विनीत, सुशील।
विनय–(सं० स्त्री०) नम्रता, प्रार्थना, विनती, नीति, शासन; (पुं०) जितेन्द्रिय, संयमी; विनयकर्म–(सं०नपुं०) विनयविद्या, शिक्षा ज्ञान; विनयग्राही–(सं० त्रि०) वश्य; विनयता–(सं०स्त्री०) विनय का भाव या धर्म; विनयधर–(सं० पुं०) पुरोहित; विनयपत्र–(सं० नपुं०) प्रार्थना पत्र; विनयपिटक–बौद्धों का एक आदि ग्रन्थ जो पाली भाषा में लिखा है; विनयवान्–(सं० वि०) नम्र, शिष्ट; विनयशील–(सं० वि०) विनय युक्त, सुशील; विनयस्थ–(सं० वि०) आज्ञाकारी; विनयिता–(सं० पुं०) विष्णु।
विनयी–(हिं०वि०) विनय युक्त, विनीत, नम्र।
विनशन–(सं० नपुं०) नाश; विनशना, विनशाना–(हिं० क्रि०) देखो विनसना, विनसाना।
विनश्वर–(सं० वि०) अनित्य, नष्ट होने वाला; विनश्वरता–(सं० स्त्री०) अनित्यता।
विनष्ट–(सं० वि०) जो नष्ट हो गया हो, ध्वस्त, मरा हुआ, बुरे आचरण का, पतित।
विनस–(सं० वि०) विना नाक का; विनसना–(हिं० क्रि०) लुप्त होना, नष्ट होना; विनसाना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना, बिगाड़ना।
विना–(सं० अव्य०) अभाव में।
विनती–(सं० स्त्री०) विनय, प्रार्थना।
विनाथ–(सं० वि०) विना रक्षक का, अनाथ।
विनाम–(सं० पुं०) झुकाव, टेढ़ापन।
विनायक–(सं० पुं०) गणनायक, गणेश, गरुड़, विघ्न, बाधा; विनायककेतु–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण; विनायक चतुर्थी–(सं० स्त्री०) माघ सुदी चौथ।
विनाश–(सं० पुं०) ध्वंस, नाश, लोप, हानि; विनाशक–(सं० वि०) नाश करने वाला; विनाशन–(सं० पुं०) संहार, नाश; विनाशित–(सं० वि०) नाश किया हुआ, बिगाड़ा हुआ;
विनास–(हिं०पुं०) विनाश; विनासक–(सं० वि०) बिना नाक का, नकटा;
विनासन–(हिं० पुं०) देखो विनाशन;

विनासना–(हिं० क्रि०) संहार करना, नष्ट करना, बिगाड़ना।
विनाह–(सं० पुं०) कुँवें पर का ढपना।
विनिःसृत–(सं० वि०) बाहर निकाला हुआ।
विनिकार–(सं० पुं०) अपराध, क्षति।
विनिक्षिप्त–(सं० वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
विनिग्रह–(सं० पुं०) प्रतिबंध, बंधेज।
विनिघ्न–(सं० वि०) गुणा किया हुआ।
विनिद्र–(सं०वि०) निद्रा रहित; विनिद्रक–(सं० वि०) नींद खुली हुई; विनिद्रत्व–(सं० नपुं०) जागरण।
विनिध्वस्त–(सं० वि०) ध्वंस प्राप्त, नष्ट।
विनिन्दक–(सं० पुं०) अत्यन्त निन्दा करने वाला; विनिन्दित–(सं० वि०) बहुत निन्दा किया हुआ।
विनिपात–(सं० पुं०) ध्वंस, वध, हत्या, अपमान; विनिपातक–(सं० वि०) संहार या अपमान करने वाला।
विनिमय–(सं० पुं०) परिवर्तन, अदल बदल, बंधक, गिरवीं।
विनिपातित–(सं० वि०) फेंका हुआ।
विनियुक्त–(सं० वि०) नियोजित, किसी काम में लगाया हुआ।
विनिमय–(हिं० पुं०) परिवर्तन।
विनियोग–(सं० पुं०) किसी फल की आकांक्षा से किसी वस्तु का उपयोग, प्रयोग, वैदिक कृत्य में किसी मन्त्र का प्रयोग, प्रवेश; विनियोजित–(सं० वि०) प्रेरित, नियुक्त, लगाया हुआ, अर्पित।
विनिर्गत–(सं० वि०) निकाला हुआ, बीता हुआ।
विनिर्गम–(सं० पुं०) बाहर होना, निकालना, प्रस्थान।
विनिर्घोष–(सं० पुं०) घोर शब्द; विनिर्जय–(सं० पुं०) पूर्ण रूप से विजय; विनिर्जित–(सं० वि०) पराभूत, पराजित; विनिर्भय–(सं० वि०) भय रहित; विनिर्मल–(सं० वि०) अति निर्मल।
विनिर्माण–(सं० नपुं०) अच्छी तरह बनाना; विनिर्मित–(सं० वि०) अच्छी तरह से बनाया हुआ।
विनिर्मुक्त–(सं० वि०) बंधन से रहित, छुटकारा पाया हुआ।
विनिर्मुक्ति–(सं० स्त्री०) मोक्ष, उद्धार।
विनिर्मोक–(सं० वि०) वस्त्र रहित।
विनिर्यान–(सं० नपुं०) गमन, जाना।
विनिर्वृत्त–(सं० वि०) सम्पन्न, समाप्त।
विनिवर्तन–(सं० नपुं०) लौटना।
विनिवर्तित–(सं० वि०) लौटा हुआ।
विनिवारण–(सं० नपुं०) विशेष प्रकार से निषेध।
विनिवृत्त–(सं० वि०) लौटा हुआ।
विनिवेदन–(सं० नपुं०) विशेष रूप से निवेदन।
विनिवेश–(सं० पुं०) प्रवेश, घुसना;

विनिवेशन–(सं० नपुं०) स्थिति, वास;
विनिवेशित–(सं० वि०) स्थापित, ठहरा हुआ, बसा हुआ; विनिवेशी–(सं० वि०) प्रवेश करने वाला।
विनिश्चय–(सं० पुं०) विशेष प्रकार से निर्णय करना।
विनिश्चल–(सं० वि०) विशेष रूप से स्थिर।
विनिष्कम्प–(सं० वि०) कम्प रहित।
विनिष्पात–(सं० पुं०) आघात, चोट।
विनिष्पेष–(सं० पुं०) पीसना, घिसना।
विनिहत–(सं० वि०) आहत, चोट खाया हुआ।
विनीत–(सं०वि०) सुशील, शिष्ट, नम्र, सयमी, सिखलाया हुआ, शासित, धार्मिक, (पुं०) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम; विनीतता–(सं० स्त्री०) नम्रता; विनीति–(सं० स्त्री०) सुशीलता, सम्मान।
विनु–(हिं० अव्य०) देखो बिना।
विनूठा–(हिं० वि०) अपूर्व, अनूठा, सुन्दर।
विनेता–(सं० पुं०) शिक्षक, शासनकर्ता;
विनेत्र–(सं० पुं०) शिक्षक।
विनेयकार्य–(सं० नपुं०) दण्डकार्य।
विनोक्ति–(सं० स्त्री०) वह अलंकार जिसमें किसी वस्तु की श्रेष्ठता या हीनता का वर्णन रहता है।
विनोद–(सं० पुं०) मनोरंजक व्यापार, कौतूहल, खेलकूद, क्रीड़ा, प्रसन्नता, आनन्द; विनोदन–(सं० नपुं०) खेलकूद, परिहास; विनोदित–(सं० वि०) हर्षित, प्रसन्न; विनोदी–(हिं० वि०) क्रीड़ा करने वाला, खेल कूद करने वाला, हँसी करने वाला, आनन्दी।
विन्द–(सं० पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, प्राप्ति, लाभ, (हिं० पुं०) देखो बिन्दु।
विन्दक–(सं० पुं०) ज्ञाता, जानकार, प्राप्त करने वाला।
विन्दु–(सं० पुं०) जलकण, बूंद, बुंदकी, अनुस्वार, शून्य, कण, कनी, छोटा टुकड़ा; विन्दुचित्रक–(सं०पुं०) सफ़ेद चित्तियों का हरिन। विन्दुतन्त्र–(सं०पुं०) चौपड़ आदि की बिसात।
विन्दुपत्र–(सं०पुं०) भोजपत्र।
विन्दुमाधव–(सं०पुं०) काशी के एक प्रसिद्ध विष्णु मूर्ति का नाम।
विन्दुर–(हिं०पुं०) छोटी बिन्दी, बुनकी।
विन्दुल–(सं०पुं०) एक कीड़ा जिसके स्पर्श से शरीर पर फफोले पड़ जाते हैं, अगिया।
विन्दुसार–(सं०पुं०) चन्द्रगुप्त के एक पुत्र का नाम, सम्राट् अशोक इन्हीं के पुत्र थे।
विन्ध–(हिं०पुं०) देखो विन्ध्य।
विन्ध्य–(सं० नपुं०) भारत मे आर्यावर्त की दक्षिण दिशा की सीमा पर का एक प्रसिद्ध पर्वत। विन्ध्यकूट–(सं०पुं०) अगस्त्य मुनि का एक नाम;

विन्ध्यवासिनी–(सं०स्त्री०) देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो मिर्जापुर के पास अवस्थित है। विन्ध्याचल–(हिं० पु०) विन्ध्य पर्वत। विन्ध्यावली–(सं०स्त्री०) राजा बलि की स्त्री का नाम।
विन्यस्त–(सं०वि०) स्थापित, रक्खा हुआ।
विन्यास–(सं०पुं०) ठीक स्थान पर रखना या बैठाना, जड़ना।
विपंची–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की वीणा।
विपक्व–(सं०वि०) अच्छी तरह पका हुआ।
विपक्ष–(सं०पुं०) विरुद्ध पक्ष, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु, विरोध, खण्डन, व्याकरण में बाधक नियम या अपवाद, (वि०) विरुद्ध, प्रतिकूल, बिना पक्ष या डैने का। विपक्षता–(सं०स्त्री०) विपक्ष होने की क्रिया या भाव। विपक्षी–(सं०वि०) विरुद्ध पक्ष का, शत्रु प्रतिवादी, बिना पर का। विपक्षीय–(सं०वि०) शत्रु के पक्ष का।
विपञ्चिका–(सं०स्त्री०) वीणा, बीन। विपञ्ची–(सं०स्त्री०) एक प्रकार की बीन, क्रीड़ा, खेल।
विपणी–(सं०स्त्री०) हाट।
विपताक–(सं०वि०) पताका रहित, बिना झंडे का।
विपत्ति–(सं०पुं०) आपत्ति, क्लेश, संकट की अवस्था, कठिनाई; विपत्ति झेलना–कष्ट सहना; विपत्ति भुगतना–दुख सहना; विपत्ति मोल लेना–झंझट में पड़ना।
विपथ–(सं०पुं०) कुमार्ग, बुरा मार्ग।
विपद्–(सं०स्त्री०) आपत्ति, सकट।
विपदा–(हिं०स्त्री०) विपत्ति, सकट, दुःख।
विपन्न–(सं०वि०) आपत्ति में पड़ा हुआ, दुःखी, भ्रम में बड़ा हुआ; विपन्नता–(सं०स्त्री०) विपत्ति।
विपराक्रम–(सं०वि०) पराक्रम रहित।
विपरिणाम–(सं०पुं०) विशेष रूप का परिणाम।
विपरिधान–(सं० नपुं०) परिधान का अभाव।
विपरिभ्रंश–(सं०पुं०) विनाश।
विपरिवर्तन–(सं०नपुं०) घुमाना फिराना।
विपरीत–(सं०वि०) विरुद्ध, रुष्ट, दुःखद, अनुपयुक्त, वह अर्थालंकार जिसमें स्वयं साधक ही किसी कार्य की सिद्धि का बाधक दिखलाया जाता है; विपरीतता–(सं०स्त्री०) विपरीत होनेका भाव।
विपरीतार्थ–(सं० वि०) जिसका अर्थ उलटा हो।
विपरीतोपमा–(सं० स्त्री०) वह उपमा जिसमें किसी भाग्यशाली व्यक्ति की हीनता का वर्णन किया गया हो।
विपर्णक–(सं०वि०) बिना पत्ते का।
विपर्यय–सं० पुं०) व्यक्तिक्रम, मिथ्या ज्ञान, उलटफेर, अव्यवस्था, भ्रम, नाश; विपर्यस्त–(सं०वि०) उलटा-पुलटा हुआ।
विपर्यास–(सं०पुं०) व्यक्तिक्रम, मिथ्या-ज्ञान।
विपल–(सं०नपुं०) समय का अति सूक्ष्म विभाग जो पल का साठवां भाग होता है।
विपलायिन्–(सं०वि०) भागने वाला।
विपलाश–(सं०वि०) बिना पत्ते का।
विपवन–(सं०पुं०) शुद्ध हवा।
विपशु–(सं०वि०) पशु रहित।
विपश्चित्–(सं०पुं०) सूक्ष्मदर्शी, विद्वान्, पण्डित।
विपाक–(सं०पुं०) पूर्ण दशा को पहुँचना, कर्म का फल, परिणाम, खाये हुए भोजन का पेट में पचना, स्वाद, दुर्दशा, दुर्गति।
विपाटन–(सं०नपुं०) उखाड़ना, खोदना।
विपाटल–(सं०वि०) जिसका रंग थोड़ा लाल हो।
विपाटित–(सं०वि०) उखाड़ा हुआ।
विपाण्डु–(सं०पुं०) जंगल की लकड़ी।
विपात–(सं० नपुं०) नाश; विपातक–(सं०वि०) नाश करनेवाला; विपादन–(सं०नपुं०) वध, हत्या।
विपादिका–(सं०स्त्री०) प्रहेलिका, पहेली।
विपादित–(सं०वि०) नष्ट किया हुआ।
विपाप–(सं०वि०) पाप रहित।
विपाल–(सं०वि०) जिसका पालने वाला कोई न हो।
विपाश–(सं०वि०) पाश रहित।
विपासा–(सं० स्त्री०) पंजाब की व्यास नदी का प्राचीन नाम।
विपिन–(सं० नपुं०) उपवन, वाटिका, जंगल; विपिनचर–(सं० वि०) वन में रहनेवाला मनुष्य या पशु; विपिन-तिलका–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें पन्द्रह अक्षर होते हैं; विपिनपति–(सं० पुं०) सिंह; विपिनविहारी–(सं० वि०) जंगल में विहार करनेवाला, श्रीकृष्ण का एक नाम।
विपुंसक–(सं० वि०) पुरुषत्व से हीन; विपुंसी–(सं०स्त्री०) पुरुष के समान चेष्टा और प्रकृति वाली स्त्री।
विपुत्र–(सं०वि०) पुत्रहीन, पुत्ररहित; विपुत्रा–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसको कोई पुत्र न हो।
विपुरुष–(सं०वि०) पुरुषहीन।
विपुल–(सं०वि०) वृहत्, अगाध, संख्या या परिमाण में अधिक; (पुं०) वसुदेव के एक पुत्र का नाम; विपुलता–(सं० स्त्री०) अधिकता, बहुतायता;
विपुलमति–(सं०पुं०) बहुत बुद्धिमान्।
विपुलस्कन्ध–(सं०पुं०) अर्जुन का एक नाम।
विपुला–(सं० स्त्री०) वसुन्धरा, पृथ्वी, आर्या छन्द का एक भेद, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं; विपुलाई–(हिं० स्त्री०) विपुलता, अधिकता।
विपुष्ट–(सं०वि०) बड़ा पुष्ट या दृढ़।
विपुष्प–(सं०वि०) बिना फूल का।
विपुष्पित–(सं०वि०) प्रफुल्लित।
विपोतना–(हिं०क्रि०) लीपना, पोतना, नाश करना।
विप्र–(सं०पुं०) ब्राह्मण, पुरोहित।
विप्रकर्ष–(सं०पुं०) दूर से खींच लेना; विप्रकर्षण–(सं०नपुं०) दूर से खींचने की क्रिया; विप्रकर्षणशक्ति–(सं०स्त्री०) वह शक्ति जिससे परिमाणु सटे रहते हैं।
विप्रकार–(सं०पुं०) तिरस्कार, अपमान।
विप्रकीर्ण–(सं०वि०) अव्यवस्थित, छितराया हुआ, बिखरा हुआ।
विप्रकृत–(सं०वि०) तिरस्कार कियाहुआ;
विप्रकृष्ट–(सं० वि०) खींचकर दूर किया हुआ।
विप्रचरण–(सं० पुं०) विष्णु के हृदय पर का भृगु मुनि के लात का चिह्न।
विप्रचित्ति–(सं०स्त्री०) एक दानव जिसके पुत्र का नाम रहु था।
विप्रजन–(सं०पुं०) ब्राह्मण, पुरोहित।
विप्रतारक–(सं०वि०) धोखा देने वाला।
विप्रतिपत्ति–(सं०पुं०) मेल का न होना, विरोध।
विप्रतिसार–(सं०पुं०) प्रसिद्ध।
विप्रतीप–(सं०वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध।
विप्रथित–(सं०पुं०) प्रसिद्ध।
विप्रदुष्ट–(सं०वि०) कामुक, लम्पट।
विप्रदेव–(सं०पुं०) ब्राह्मण।
विप्रधावन–(सं०नपुं०) इधर उधर वेग से भागे फिरना।
विप्रनष्ट–(सं०वि०) विशेष रूप से नष्ट।
विप्रपद–(सं०पुं०) भृगु मुनि के लात का चिह्न जो विष्णु की छाती पर माना जाता है।
विप्रपात–(सं० पुं०) विशेष रूप से गिरना, ऊंचा ढालुवां टीला।
विप्रबुद्ध–(सं०वि०) जागा हुआ।
विप्रबोधित–(सं०पुं०) अच्छी तरह से समझाया हुआ।
विप्रमत्त–(सं०वि०) अति प्रमत्त।
विप्रमाथी–(सं० वि०) अच्छी तरह से मथने वाला।
विप्रमादी–(सं०वि०) देखो विप्रमत्त।
विप्रमोक्ष–(सं०पुं०) विमोचन, मुक्ति।
विप्रमोह–(सं०पुं०) चमत्कार।
विप्रयाण–(सं०नपुं०) पलायन, भागना।
विप्रबन्धु–(सं०पुं०) नीच ब्राह्मण।
विप्रयुक्त–(सं० वि०) अलग, बिछुड़ा हुआ।
विप्रयोग–(सं०पुं०) वियोग।
विप्रराम–(सं०पुं०) परशुराम।
विप्रलब्ध–(सं०वि०) प्रतारित, धोखा दिया हुआ, वंचित।
विप्रलब्धा–(सं०स्त्री०) वह नायिका जो संकेत स्थान में प्रिय को न पाकर निराश होती है।
विप्रलम्भ–(सं०पुं०) प्रिय वस्तु का न मिलाना, विरह, शृंगार रस का वह भेद जिसमें नायक नायिका के विरहजन्य सन्ताप का वर्णन कहता है; विप्रलम्भक–(सं०वि०) छली, धूर्त।
विप्रलाप–(सं०पुं०) व्यर्थ की बकवाद।
विप्रलीन–(सं०वि०) चारो ओर बिखरा हुआ।
विप्रलुप्त–(सं०वि०) चुराया हुआ, लूटा हुआ, उड़ा दिया गया हुआ।
विप्रलुम्पक–(सं०वि०) बड़ा लालची।
विप्रलोप–(सं०पुं०) पूर्ण लोप, नाश।
विप्रलोभी–(सं०वि०) बड़ा लालची, ठग।
विप्रवसित–(सं०वि०) परदेश गया हुआ।
विप्रवाद–(सं०पुं०) लड़ाई झगड़ा, कलह।
विप्रवास–(सं०पुं०) परदेश में रहना।
विप्रवीर–(सं०वि०) बड़ा पराक्रमी।
विप्रव्रजनी–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो दो पुरुषों से संबंध रखती हो।
विप्रश्न–(सं०पुं०) वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष से मिले; विप्रश्निक–(सं०पुं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।
विप्रसारण–(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव।
विप्रेक्षण–(सं०नपुं०) अच्छी तरह देखना।
विप्रेक्षित–(सं०वि०) देखा हुआ।
विप्रेत–(सं०वि०) जो बीत गया हो।
विप्रेषित–(सं०वि०) बाहर भेजा हुआ।
विप्लव–(सं० पुं०) उपद्रव, हलचल, विपत्ति, अव्यवस्था, विनाश, डांट डपट, जल की बाढ़, नाव का डूबना घोड़े की सरपट चाल।
विप्लाव–(सं०पुं०) जल की बाढ।
विप्लावक–(सं०पुं०) राज्यद्रोही।
विप्लावी–(हिं०वि०) उपद्रव करनेवाला।
विप्लुत–(सं० वि०) आकुल, घबड़ाया हुआ, छितराया हुआ, बिखरा हुआ।
विप्लुति–(सं० स्त्री०) उपद्रव, विप्लव।
विफल–(सं०वि०) फल रहित, परिणाम हीन, व्यर्थ, निष्फल, हताश, निराश।
विफाण्ट–(हिं०वि०) काढ़ा बनाया हुआ।
बिबन्ध–(सं०पुं०) आलिंगन।
बिबन्धु–(हिं०वि०) बन्धु रहित।
बिबल–(सं०वि०) दुर्बल, अशक्त।
बिबुद्ध–(सं०वि०) जागृत, जागता हुआ, विकसित, खिला हुआ।
बिबुध–(सं० पुं०) बुद्धिमान, पण्डित, चन्द्रमा, देवता, शिव, महादेव।
बिबुधतटिनी–(हिं० स्त्री०) आकाश गंगा; बिबुधतरु–(सं०पुं०) कल्पवृक्ष; बिबुधधेनु–(सं०स्त्री०) कामधेनु बबुधपति–(सं० पुं०) इन्द्र; बिबुध बिलासिनी–(सं०पुं०) देवता की स्त्री, अप्सरा; बिबुधवेलि–(सं० स्त्री०) कल्प लता; बिबुधवैद्य–(सं०पुं०) अश्विनीकुमार; बिबुधवन–(सं०नपुं०) नन्दन वन।
बिबुधाधिप, बिबुधाधिपति–(हिं० पुं०) इन्द्र।
बिबुधान–(सं० पुं०) आचार्य, देवता।
बिबुधानगा–(सं०स्त्री०) आकाश गंगा।
बिबुधावास–(सं०पुं०) देव मन्दिर, स्वर्ग
बिबुधेतर–(सं०पुं०) असुर, दैत्य।

विबोध–(सं०पुं०) जागरण, अच्छा ज्ञान, सचेत होना; **विबोधन**–(सं०पुं०) समझाना, बुझाना, ढाढ़स देना; **विबोधित**–(स० वि०) जताया या बतलाया हुआ।
विभंग–(सं०पुं०) विभाग, क्रम का न टूटना, मुख का भाव, भ्रूभङ्ग।
विभज्ज–(हिं०पुं०) टूटना, नाश, ध्वंस।
विभक्त–(सं०वि०) अलग किया हुआ, बांटा हुआ।
विभक्ति–(सं० स्त्री०) अलग होने की क्रिया या भाव, विभाग, बाँट, व्याकरण में शब्दमें लगाया हुआ वह प्रत्यय जिससे उस पद का क्रियापद से संबंध सूचित होता है।
विभग्न–(सं०वि०) टूटा फूटा हुआ।
विभव–(सं०पुं०) ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति, मोक्ष बहुतायत, साठ संवत्सरों मे से एक का नाम। **विभवमद**–(सं०पुं०) धन का अहंकार; **विभववान्**–(स०वि०) शक्तिशाली; **विभवशाली**–(सं०वि०) ऐश्वर्य युक्त।
विभाण्डक–(सं० पुं०) एक मुनि जो ऋष्यश्रृंग के पिता थे।
विभांति–(हिं०स्त्री०) प्रकार, भेद।
विभा–(सं०स्त्री०) प्रभा, क्रान्ति शोभा; **विभाकर**–(सं०पुं०) सूर्य अग्नि, राजा, अर्क वृक्ष।
विभाग–(सं०पुं०) बांटनें की क्रिया या भाव, बँटवारा, बखरा, अध्याय, प्रकरण; **विभागक**–(स० वि०) बांटने वाला; **विभाग भिन्न**–(सं०नपुं०) तक्र, मठा; **विभागवत्**–(सं० वि०) विभाग के तुल्य।
विभागी–(हिं०पुं०) विभाग करनेवाला।
विभाजक–(सं०पुं०) विभाग करनेवाला, बाँटने वाला, गणित में वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्या भाग दी जाती है, भाजक।
विभाजन–(सं० नपुं०) भाग करने या बांटने की क्रिया, पात्र, बरतन।
विभाजित–(सं० वि०) भाग किया हुआ, बांटा हुआ, खण्ड किया हुआ;
विभाज्य–(सं० वि०) विभाग करने योग्य।
विभात–(सं०नपुं०) प्रभात, सवेरा।
विभाति–(हिं०पुं०) शोभा, सुन्दरता।
विभाना–(हिं०क्रि०) चमकना, सुशोभित होना।
विभारना–(हिं०क्रि०) चमकना।
विभाव–(सं० पुं०) अलकार शास्त्र में वह वस्तु जो रति आदि भावों को आश्रय में उत्पन्न करती या उत्तेजित करने वाली होती है।
विभावन–(स० नपुं०) विशेष रूप से चिन्तन।
विभावना–(सं० स्त्री०) वह अर्थालंकार जिसमें कारण के बिना कार्य का होना, अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति, अवराध होते हुए भी कार्य की सिद्धि अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य की सिद्धि दिखलाई जाती है।
विभावनीय–(सं० वि०) चिन्तन करने योग्य।
विभावरी–(सं०स्त्री०) रात्रि, वह रात जिसमें तारे चमकते हो हल्दी, धूर्त स्त्री, कुटनी, बहुत बकवाद करने वाली स्त्री।
विभावरीश–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
विभावसु–(सं० वि०) अधिक प्रभाव वाला, (पु०) एक वसु का नाम, सूर्य, अग्नि, मदार का वृक्ष, एक प्रकार का हार, चन्द्रमा, एक ऋषि का नाम।
विभावित–(सं०वि०) चिन्तित, सोचा हुआ;
विभास–(सं० पुं०) चमक, एक राग का नाम; **विभासक**–(सं० पुं०) चमकाने वाला; **विभासना**–(हिं० क्रि०) चमकना; **विभासित**–(सं०वि०) प्रकाशित, प्रकट।
विभिन्न–(स०वि०) काटकर अलग किया हुआ, पृथक्, अलग अलग, अनेक प्रकार का, उलटा; **विभिन्नता**–(सं०स्त्री०) भेद
विभीत–(सं० वि०) डरा हुआ।
विभीतक–(सं०पुं०) बहेड़े का वृक्ष।
विभीति–(स०स्त्री०) भय, डर, शंका, सन्देह।
विभीषक–(सं०वि०) डराने वाला।
विभीषण–(सं० वि०) बड़ा भयंकर या डरावना, (पुं०) रावण का भाई जो राक्षस था।
विभीषिका–(सं० स्त्री०) भय प्रदर्शन, डर दिखलाना।
विभु–(सं० पुं०) वह जो सर्वत्र वर्तमान हो, जो सर्वव्यापक हो, सर्वत्र पहुँचने वाला, महान्, बहुत बड़ा, नित्य, अचल, दृढ़, शक्तिमान, (पुं०) ब्रह्म आत्मा, ईश्वर, स्वामी, शिव, विष्णु।
विभुक्ततु–(सं०क्रि०) शत्रु को हराने वाला
विभुग्न–(सं० वि०) कुछ टूटा हुआ।
विभुता–(स०पुं०) ऐश्वर्य, प्रभुता, शक्ति।
विभूति–(सं०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, ऐश्वर्य, विभव, धन, सम्पत्ति, अलौकिक शक्ति, शिवजी के अंग में लगाने की राख, प्रभुत्व, बड़ाई सृष्टि, लक्ष्मी, एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था, विष्णु का नित्य और स्थायी ऐश्वर्य, वह अलौकिक शक्ति जिसके अन्तर्गत आठ सिद्धियां हैं। यथा–अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।
विभूतिमत्–(सं०वि०) धनवान्।
विभूहन्–(सं० स्त्री०) शक्तिशाली, ऐश्वर्यवान्।
विभूतिमान्–(सं० पुं०) ऐश्वर्यशाली, धनवान्।
विभूषण–(सं०नपुं०) अलंकार, गहना; **विभूषणा**–(सं०स्त्री०) शोभा; **विभूषना**–(हिं० क्रि०) अलंकृत, सजाया हुआ; **विभूषित**–(सं०वि०) सुशोभित, अलंकारों से सजाया हुआ, गुणों से युक्त।
विभूष्णु–(स०पुं०) शिव, महादेव।
विभूषा–(सं०स्त्री०) अलंकार, गहना।
विभेंटन–(हिं० पु०) गले लगाना, भेंट करना।
विभेतव्य–(सं०वि०) डरने योग्य।
विभेत्ता–(सं०वि०) डराने वाला।
विभेद–(सं०पु०) विभाग, विभिन्नता, अनेक भेद, कई प्रकार, अन्तर, धँसना, प्रवेश करना, कटाव; **विभेदक**–(सं० वि०) काटने वाला, धँसने वाला; **विभेदकारी**–(सं० वि०) दो व्यक्तियों में फूट उत्पन्न करने वाला,
विभेदन–(सं० पुं०) छेदना, तोड़ना; **विभेदना**–(हिं०क्रि०) छेदना काटना, प्रवेश करना; **विभेदी**–(हिं० वि०) छेद कर घुसने वाला, काटने वाला।
विभो–(हिं०पुं०) हे प्रभु!
विभोर–हिं०वि०) डूबा हुआ।
विभौ–(हिं०पुं०) देखो विभव।
विभ्रंश–(सं०पुं०) पतन, नाश, अवनति,
विभ्रंशित(सं०वि०) पतित, विलुप्त।
विभ्रंशित ज्ञान–(सं०वि०) ज्ञानशून्य।
विभ्रम–(सं०पु०) भ्रमण, चक्कर, भ्रम, संशय, सन्देह, भूल, व्यग्रता, स्त्रियों का वह भाव जिसमें वे भ्रममें पड़कर अनेक भाव प्रकट करती हैं।
विभ्रमा–(सं०स्त्री०) वार्धक्य, बुढ़ापा।
विभ्रमी–(सं०वि०) विभ्रम युक्त।
विभ्रान्त–(सं०वि०) भ्रम में पड़ा हुआ, चक्कर खाता हुआ।
विभ्रान्ति–(सं०स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट
विभ्राट्–(सं० पुं०) विपत्ति, उपद्रव, सकट।
विमण्डन–(सं०नपुं०) शृंगार करना, सजाना, आभूषण, गहना।
विमण्डित–(सं०वि०) सुशोभित, सजा हुआ
विमत–(सं० नपु०) विरुद्ध मत या सिद्धान्त।
वमति–(सं०पुं०) दुर्बुद्धि, बुरा विचार, कुमति।
विमत्सर–(सं० पुं०) अधिक अहंकार, बड़ा घमंड।
विमद–(सं० वि०) मद रहित।
विमन, विमनस्क–(सं०वि०) उदास, खिन्न।
विमन्यु–(सं०वि०) क्रोध रहित।
विमर्द–(सं० पु०) पीसना, मथना लड़ाई झगड़ा, विनाश, युद्ध; **विमर्दक**–(सं० वि०) नाश करने वाला, चूर चूर करने वाला, पीसने वाला।
विमर्दन–(सं०नपुं०) कुचलना, पीसना, नष्ट करना, मार डालना; **विमर्दित**–(सं०वि०) कुचला हुआ, नष्ट किया हुआ; **विमर्दी**–(हिं०पुं०) नष्ट करने वाला, वध करने वाला।
विमर्श–(सं०पुं०) समालोचना, परामर्श, परीक्षा, किसी बात का अच्छी तरह विचार, असन्तोष।
विमर्ष–(सं० पुं०) देखो विमर्श; नाटक का एक अंग जिसके अन्तर्गत अपवाद, खेद, संकट, व्यवसाय, विरोध आदि का वर्णन रहता है।
विमल–(सं०वि०) निर्मल, स्वच्छ, निर्दोष, शुद्ध, सुन्दर, मनोहर, (नपु०) चादी,
विमलक–(सं० पुं०) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर; **विमलता**–(स०स्त्री०) अशुद्धता, पवित्रता, मनोहरता; **विमलत्व**–(सं० स्त्री०) मनोहरता, स्वच्छता, पवित्रता, निर्मलता।
विमलदान–(सं०पुं०) केवल ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये दिया हुआ दान।
विमलध्वनि–(स० पुं०) ६ चरणों का एक छन्द जो दोहा और सवैया से मिलाकर बनता है।
विमला–(सं० वि०) निर्मल, स्वच्छ, (सं०स्त्री०) सरस्वती देवी।
विमलात्मा–(स०वि०) शुद्ध अन्तःकरण वाला; **विमलापति**–(स०पु०) विष्णु;
विमलादित्य–(सं० पु०) सूर्य; **विमलाथक**–(सं०वि०) स्वच्छ।
विमलीकरण–(सं०पुं०) विमल या शुद्ध करने की क्रिया।
विमाता–(सं०स्त्री०) सौतेली माँ।
विमातृज–(सं० पुं०) सोतेला भाई।
विमान–(सं० नपुं०) वायुयान, हवाई जहाज, आकाश मार्ग, सजधज कर निकाली हुई वृद्ध पुरुष की अरथी, रथ, सात खंड का घर, अनादर।
विमानना–(हिं०स्त्री०) अपमान, तिरस्कार
विमानपोत–(स०नपुं०) हवाई जहाज।
विमानयितव्य–(सं० वि०) तिरस्कार करने योग्य।
विमाय–(सं०वि०) मायाहीन।
विमार्ग–(सं०पुं०) बुरा मार्ग, कुचाल।
विमिश्र, विमिश्रित–(सं०वि०) मिश्रित, मिला हुआ।
विमुक्त–(सं० वि०) भली भाँति मुक्त, वह जो बन्धन से अलग हुआ हो, स्वतन्त्र, फेंका हुआ, छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ; **विमुक्तता**–(सं० स्त्री०) विमोचन; **विमुक्ति**–(सं०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा।
विमुख–(सं०वि०) मुख रहित, निवृत्त, उदासीन, विरुद्ध, निराश; **विमुखता**–(सं०स्त्री०) विरोध, अप्रसन्नता।
विमुग्ध–(सं०वि०) मोहित, भ्रान्त, भ्रम मे पड़ा हुआ, व्यग्र, घबड़ाया हुआ, उन्मत्त, पागल, भूला हुआ; **विमुग्धकारी**–(सं०पुं०) मोहित करने वाला, भ्रम में डालने वाला।
विमुद–(सं०वि०) आनन्द रहित, उदास, खिन्न।
विमूर्छ–(हिं० वि०) जिसकी मूर्छा हट गई हो।
विमूढ–(सं० वि०) मोह प्राप्त, भ्रम में पड़ा हुआ, बेसुध, अचेत, ज्ञान-

रहित जड़बुद्धि, अत्यन्त विमोहित; **विमूढ गर्भ**–(संपुं०) वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या चेतनाशून्य हो।

विमूल–(सं०वि०) निर्मूल, बिना जड़ का।

विमूलन–(सं०नपुं०) नाश, ध्वंस।

विमृग्य–(सं०वि०) अन्वेषण के योग्य।

विमृत्यु–(सं०वि०) मृत्यु रहित, अमर।

विमृश–(सं०पुं०) आलोचना।

विमृष्ट–(सं०वि०) जिसपर तर्क वितर्क किया गया हो।

विमोक–(सं० पुं०) मुक्ति, छुटकारा; **विमोक्ता**–(सं०पुं०) मुक्त करने वाला; **विमोक्ष**–(सं०पुं०) मुक्ति, छुटकारा; **विमोक्षक**–(सं०पुं०) मुक्ति देने वाला; **विमोक्षण**–(सं०नपुं०) विमोचन, मुक्ति; **विमोक्ता**–(हिं०पुं०) मुक्त करने वाला; **विमोघ**–(हिं०वि०) अमोघ; **विमोचक**–(सं० वि०) बन्धन खोलने वाला; **विमोचन**–(सं०नपुं०) बन्धन खोलना, मुक्त करना, बाहर करना, निकालना, फेंकना, गिराना; **विमोचना**–(हिं० क्रि०) मुक्त करना, छुटकारा देना; गिराना, टपकाना; **विमोचित**–(सं० वि०) मुक्त किया हुआ, खुला हुआ; **विमोह**–(सं०पुं०) भ्रम, अज्ञान, अचेत या बेसुध होना, एक नरक का नाम; **विमोहक**–(सं० पुं०) चित्त को लुभाने वाला; **विमोहन**–(सं० नपुं०) मुग्ध करना, चित्त लुभाना, कामदेव के एक बाण का नाम; **विमोहना**–(हिं०क्रि०) मोहित होना या करना, बेसुध होना या करना, धोखे में डालना।

विमोहा–(हिं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं, इसका दूसरा नाम जोहा या विजोहा है।

विमोहित–(सं०वि०) मुग्ध, लुभाया हुआ, मूर्छित, भ्रम में डाला हुआ; **विमोही**–(सं० स्त्री०) मोहित करने वाला, लुभाने वाला।

विमौट–(हिं० पुं०) दीमक का उठाया हुआ मिट्टी का ढेर, बांबी।

विमौन–(सं०वि०) मौन रहित।

विमौली–(सं०वि०) शिरोभूषा रहित।

विम्बक–(सं०नपुं०) सूर्य चन्द्र मण्डल।

विम्बित–(सं० वि०) प्रतिबिम्बित।

वियंग–(हिं० पुं०) दो अंग वाले, अर्धनारीश्वर शिव, महादेव।

विय–(हिं०वि०) दो, जोड़ा।

वियत्–(सं०पुं०) आकाश, वायुमण्डल। **वियत् पताक**–(हिं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली **वियद्ग**–(सं०वि०) आकाश गामी। **वियद्गङ्गा**–(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी। **वियद्भूति**–(सं० स्त्री०) अन्धकार। **वियन्मणि**–(सं०पुं०) सूर्य।

वियम–(सं०पुं०) संयम, दुःख, क्लेश।

वियुत–(सं०वि०) रहित, अलग, हीन; **वियुक्त**–(सं०वि०) वियोग प्राप्त, बिछुड़ा हुआ, रहित, हीन।

वियो–(हिं०वि०) अन्य, दूसरा।

वियोग–(सं०पुं०) अलग होने का भाव, विच्छेद, विरह, अलगाव।

वियोगान्त–(सं०वि०) ऐसे नाटक या उपन्यास संबंधी जिसकी कथा का अन्त दुःख पूर्ण हो। **वियोगिन, वियोगिनी**–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतम से बिछड़ी हो।

वियोगी–(हिं०पुं०वि०) विरही पुरुष, वह जो अपनी प्रियतमा से बिछुड़ा हो

वियोजक–(सं०पुं०) पृथक् करने वाला, गणित में वह संख्या जो किसी बड़ी संख्या में से घटाई जाने वाली हो।

वियोजन–(सं० नपुं०) पृथक् करना, बाकी निकालना। **वियोजनीय**–(सं० वि०) विश्लिष्ट, अलग किया हुआ।

वियोजित–(सं०वि०) अलगाया हुआ।

विरंग–(हिं०वि०) बुरे रंग का, अनेक रंग का।

विरंचि–(सं० पुं०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा, विधाता। **विरंचि सुत**–(सं० पुं०) नारद ऋषि।

विरक्त–(सं० वि०) विमुख, अप्रसन्न, उदासीन। **विरक्ति**–(सं० स्त्री०) उदासीनता। **विरक्तता**–(सं० स्त्री०) विमुखता, अप्रसन्नता।

विरचन–(सं०नपुं०) निर्माण, बनाना। **विरचना**–(हिं०क्रि०) निर्माण करना, बनाना, सजाना, जी उचटना। **विरचयिता**–(सं०पुं०) निर्माण करने वाला, बनाने वाला। **विरचित**–(सं०वि०) निर्मित, बनाया हुआ, लिखित, लिखा हुआ।

विरज–(हिं०वि०) स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष;

विरजस्क–(सं० वि०) जिस स्त्री का रजोधर्म बन्द हो गया हो।

विरजा–(सं०स्त्री०) कैथ का पेड़।

विरञ्च–(सं०पुं०) ब्रह्मा। **विरञ्चि**–(सं०पुं०) सृष्टि रचने वाले ब्रह्मा। **विरञ्चिसुत**–(सं०पुं०) ब्रह्मा के पुत्र, नारद।

विरत–(सं०वि०) विमुख, जो तत्पर न हो, विरक्त, वैरागी, अति लीन।

विरति–(सं०पुं०) उदासीनता, वैराग्य।

विरथ–(सं०वि०) बिना रथ का, पैदल, रथ से गिरा हुआ।

विरद–(हिं०पुं०) प्रसिद्धि, यश, कीर्ति, (वि०) बिना दांत का।

विरदावली–(सं०स्त्री०) यश की कथा।

विरदैत–(हिं०वि०) यशस्वी।

विरम–देखो विराम।

विरमण–(सं०नपुं०) संभोग, विलास, त्याग।

विरमना–(हिं० क्रि०) विराम करना, ठहरना, रम जाना, वेग का काम होना। **विरमाना**–(हिं०क्रि०) अनुरक्त करना, फँसाना किसी कार्य में व्यापृत करना, भुलावे में रखना।

विरल–(सं०वि०) जो घना न हो, जो दूर दूर पर हो, पतला, दुर्लभ, अल्प, थोड़ा। **विरलता**–(हिं० स्त्री०) पतलापन।

विरव–(सं०वि०) शब्द रहित।

विरश्मि–(सं०वि०) बिना कारण का।

विरस–(सं०वि०) नीरस, फीका, बिना स्वाद का, अरुचिकर, अप्रिय, रसहीन, (काव्य)। **विरसता**–(सं०स्त्री०) फीकापन, नीरसता।

विरह–(सं०पुं०) किसी वस्तु से रहित होने का भाव, किसी वस्तु का अभाव, वियोग, (वि०) रहित, बिना।

विरहा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की गीत जिसको अहीर गड़ेरिये गाते हैं।

विरहिणी–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति या प्रियतम से वियोग हुआ हो, जो विरह के कारण दुःखी हो।

विरहित–(सं०वि०) रहित, शून्य, बिना;

विरही–(हिं०पुं०) जिसका प्रियतमा से वियोग हुआ हो, वह जो इस वियोग से दुःखी हो।

विरहोत्कण्ठिता–(सं०स्त्री०) वह नायिका जिसको दृढ विश्वास हो कि उसका पति या प्रियतम अमुक समय में आवेगा परन्तु कारण वश वह न आवे।

विराग–(सं०पुं०) लगन या इच्छा का न होना, उदासीन भाव, वैराग्य, संगीत में एक मिले हुए दो राग।

विरागित–(सं०वि०) विराग युक्त।

विरागी–(हिं०वि०) विरक्त, संसारत्यागी, उदासीन।

विराजना–(हिं०क्रि०) उपस्थित रहना, शोभित होना, बैठना।

विराजमान–(हिं०वि०) सुशोभित, बैठा हुआ।

विराजित–(सं०वि०) बैठा हुआ, विद्यमान, उपस्थित, चमकाता हुआ।

विराजिन्–(सं०वि०) सुशोभित, उपस्थित; **विराट्**–(सं०पुं०) ब्रह्म का स्थूल रूप जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व है, कान्ति, दीप्ति, (वि०) बहुत बड़ा या भारी।

विराट–(सं०पुं०) मत्स्य देश, इस देश के राजा जिनके यहां अज्ञात वास के समय पाण्डव लोग सेवा करते थे; संगीत में एक ताल का नाम।

विरातक–(सं०पुं०) अर्जुन वृक्ष।

विराध–(सं० पुं०) क्लेश, पीड़ा, कष्ट देने वाला, एक राक्षस जिसको लक्ष्मण ने दण्डकारण्य में मारा था। **विराधन**–(सं०नपुं०) पीड़ा देना।

विराम–(सं० नपुं०) रुकना, ठहराव, विश्राम, बोलते समय वाक्य में वह स्थान जहां ठहर न पड़ता हो, छन्द के चरण में पढ़ते समय ठहरने का स्थान यति।

विरामब्रह्म–(सं० पुं०) संगीत में एक ताल का नाम।

विराल–(सं०पुं०) बिडाल, बिल्ली।

विराव–(सं०पुं०) शब्द, बोली।

विरावी–(हिं०वि०) कोलाहल करने वाला, चिल्लाने वाला।

विरास, विरासी–(हिं०) देखो विलास, विलासी।

विरिंच–(हिं०पुं०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु।

विरुज–(सं०वि०) रोग रहित, नीरोग।

विरुझना–(हिं०क्रि०) उलझना।

विरुत–(सं०वि०) कूंजित, गूंजता हुआ।

विरुद–(सं०पुं०) यश, कीर्ति, गुण, प्रताप आदि का वर्णन।

विरुदावली–(सं०स्त्री०) किसी के प्रताप पराक्रम आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन।

विरुद्ध–(सं०वि०) प्रतिकूल, विपरीत, अप्रसन्न, अनुचित।

विरुद्धकर्मा–(सं०पुं०) विपरीत आचरण वाला मनुष्य, साहित्य में श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें किसी एक भेद जिसमें किसी एक क्रिया के अनेक विरुद्ध फल दिखलाये जाते हैं;

विरुद्धता–(सं०स्त्री०) प्रतिकूलता, उलटापन

विरुद्धरूपक–(सं०पुं०) रूपक अलंकार का वह भेद जिसमें कही हुई कोई बात देखने में असम्बद्ध जान पड़ती है परन्तु विचार करने पर संगत ठहरती है।

विरुद्धार्थदीपक–(सं०नपुं०) दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें किसी एक कथन से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखलाया जाता है;

विरुधिर–(सं०वि०) रक्तहीन, जिसमें रुधिर न हो।

विरूक्ष–(सं०वि०) जो रूखा न हो।

विरूढ–(सं०वि०) आरूढ़, चढ़ा हुआ, उत्पन्न।

विरूथिनी–(सं० स्त्री०) वैशाख कृष्ण एकादशी।

विरूप–(सं०वि०) कुरूप, भद्दा, अनेक रूपरंग का, शोभा रहित, बदला हुआ, विरुद्ध, भिन्न, उलटा। **विरूपता**–(सं०स्त्री०) कुरूपता, भद्दापन।

विरूपा–(सं०स्त्री०) यम की पत्नी का नाम, (त्रि०) कुरूप, भद्दा।

विरूपाक्ष–(सं०त्रि०) डरावने नेत्र वाला; (सं०पुं०) शिव, महादेव, एक दिग्गज का नाम, रावण के एक सेनापति का नाम।

विरूपिका–(सं०स्त्री०) कुरूपा स्त्री।

विरूपी–(हिं०वि०) कुरूप।

विरेचक–(सं०वि०) शौच लाने वाला। **विरेचन**–(सं०नपुं०) शौच लाने वाली औषधि।

विरेफ–(सं०वि०) रेफ शून्य।

विरोक–(सं०पुं०) सूर्य, किरण, दीप्ति, चमक।

विरोचन–(सं०नपुं०) प्रकाशमान सूर्य की किरण, चन्द्रमा, विष्णु, मदार, पौधा। **विरोचनसुत**–(सं०पुं०) राजा बलि।

विरोध–(सं०पुं०) विपरीत भाव, बैर,

शत्रुता, अनबन, उलटी स्थिति, व्याघात, नाश, मेल का न होना, वह अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया अथवा द्रव्य में से किसी एक का दूसरे जाति, गुण, क्रिया या द्रव्य में से किसी एक के साथ विपरीत भाव देख पड़ता हो, नाटक का एक अंग जिसमें कोई वर्णन करती समय कोई आपत्ति का आभास दिखलाया जाता है।
विरोधक–(सं० वि०) विरोध करने वाला;
विरोधन–(सं० नपुं०) नाश, नाटक में विमर्श का एक अंग जो उस समय होता है जब किसी कारण से कोई कार्य नाश होता हुआ दिखलाया जाता है।
विरोधना–(हिं० क्रि०) विरोध करना, शत्रुता करना।
विरोधाचरण–(सं० नपुं०) शत्रुता का व्यवहार। **विरोधाभास**–(सं० पुं०) वह अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया अथवा द्रव्य का विरोध देख पड़ता है।
विरोधित–(सं० वि०) जिसका विरोध किया हुआ हो।
विरोधिता–(सं० स्त्री०) शत्रुता, वैर।
विरोधिनी–(सं० स्त्री०) विरोध करने वाली
विरोधी–(हिं० वि०) विरोध करने वाला, प्रतिद्वन्द्वी, विपक्षी, शत्रु, साठ संवत्सरों में से पचीसवां संवत्सर।
विरोधीश्लेष–(सं० पुं०) श्लेष अलंकार का वह भेद जिसमें श्लिष्ट शब्दों के द्वारा दो पदार्थों में भेद, न्यूनाधिक या विरोध दिखलाया जाता है।
विरोधोक्ति–(सं० स्त्री०) परस्पर विरोधी वचन।
विरोधोपमा–(सं० स्त्री०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें दो विरोधी पदार्थों से किसी वस्तुकी उपमा दी जाती है;
विरोध्य–(सं० वि०) विरोध के योग्य।
विरोपण–(सं० नपुं०) लीपना, पोतना, भूमि में पौधा लगाना।
विरोम–(सं० वि०) रोम रहित, बिना रोयें का।
विरोष–(सं० वि०) क्रोध रहित, बिना क्रोध का।
विरोहण–(सं० नपुं०) एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में लगाना।
विरोही–(हिं० पुं०) पौधा लगाने वाला।
विर्त्ति–(हिं० पुं०) देखो वृत्ति।
विलंघनीय–(सं० वि०) लांघने योग्य।
विलंब, विलंबित–देखो बिलम्ब, विलम्बित
विल–(सं० नपुं०) छिद्र, कन्दरा।
विलक्ष–(सं० वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ, आश्चर्य में पड़ा हुआ।
विलक्षण–(सं० नपुं०) अपूर्व, अद्भुत; **विलक्षणता**–(सं० स्त्री०) अनोखापन।
विलखना–(हिं० क्रि०) दुःखी होना; **विलखाना**–(हिं० क्रि०) विकल करना, घबड़ाना।

विलग–(सं० वि०) अलग, पृथक् (पुं०) भेद; **विलगाना**–(हिं० क्रि०) अलग होना या करना, अलग देख पड़ना।
विलग्न–(सं० वि०) संलग्न, लगा हुआ।
विलंघन–(सं० नपुं०) लंघन करना, उपवास करना, कूद या लांघ कर पार करना; **विलंघना**–(सं० स्त्री०) बाधा दूर करना; **विलंघनीय**–(सं० वि०) पार करने योग्य; **विलंघित**–(सं० वि०) विफल, पराजय किया हुआ।
विलंघी–(सं० वि०) नियम का उल्लंघन करने वाला।
विलच्छन–(हिं० वि०) देखो विलक्षण।
विलज्ज–(सं० वि०) लज्जा रहित।
विलपन–(सं० नपुं०) विलाप, वार्तालाप; **विलपना**–(हिं० क्रि०) विलाप करना, रोना; **विलपाना**–(हिं० क्रि०) रुलाना, किसी को विलाप करने में प्रवृत्त करना।
विलब्ध–(सं० वि०) अलग किया हुआ।
विलम्ब–(सं० पुं०) अति काल, देर;
विलम्बन–(सं० पुं०) देर करना, विलंब करना, सहारा लेना; **विलम्बना**–(हिं० क्रि०) देर करना, सहारा लेना, मनमें बसना; **विलम्बित**–(सं० वि०) लटकता हुआ, जिसको देर हुई हो।
विलम्बितगति–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं।
विलम्बिता–(सं० वि०) देर करनेवाला;
विलम्बी–(सं० वि०) देर करने वाला।
विलम्भ–(सं० पुं०) उदारता, उपहार।
विलय–(सं० पुं०) प्रलय, लोप, नाश, मृत्यु
विलयन–(सं० नपुं०) अलग करनेका कार्य;
विलसन–(सं० नपुं०) चमकनेकी क्रिया, आमोद प्रमोद, क्रीड़ा; **विलसना**–(हिं० क्रि०) विलास करना, क्रीड़ा करना, शोभा प्राप्त करना; **विलसाना**–(हिं० क्रि०) देखो बिलसाना।
विलाप–(सं० पुं०) क्रन्दन, विकल होकर रोने की क्रिया; **विलापना**–(हिं० क्रि०) विलाप करना, रोना, भूमि में पौधा रोपना।
विलायन–(सं० नपुं०) प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।
विलावली–(हिं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
विलास–(सं० पुं०) हर्ष, आनन्द, सुख भोग, मनोरंजन, हाव भाव, किसी अंग की मनोहर चेष्टा, किसी वस्तु का हिलना डोलना, अति सुख;
विलासभवन, **विलासमन्दिर**–(सं० नपुं०) क्रीड़ागृह, नाचघर।
विलासविपिन–**विलासवेश्म**–(सं० नपुं०) क्रीड़ावन; **विलासशील**–(सं० वि०) विलास करने वाला।
विलासिका–(सं० स्त्री०) अलंकार में एक प्रकार का रूपक।
विलासिनी–(सं० स्त्री०) सुन्दर युवा स्त्री, वेश्या, रंडी, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं।
विलासी–(हिं० पुं०) कामी पुरुष, आनन्द शील।
विलिखित–(सं० वि०) लिखा हुआ, खुदा हुआ।
विलिप्त–(सं० वि०) लिपा पुता हुआ।
विलीक–(सं० वि०) अनुचित, अयोग्य।
विलीन–(सं० वि०) लिप्त, छिपा हुआ, नष्ट।
विलुप्त–(सं० वि०) जो देख न पड़ता हो।
विलुभित–(सं० वि०) चंचल।
विलुम्पक–(सं० पुं०) चोर, ठग।
विलुलित–(हिं० वि०) लहराता हुआ।
विलून–(सं० वि०) कटा हुआ, अलग किया हुआ।
विलेप–(सं० पुं०) लेप; **विलेपन**–(सं० नपुं०) लेप करने की क्रिया, लगाने का पदार्थ।
विलेशय(सं० पुं०) बिल में रहने वाला जीव, सर्प, साँप।
विलोक–(सं० पुं०) दृष्टि; **विलोकना**–(हिं० क्रि०) अवलोकन करना, देखना;
विलोकनीय–(सं० वि०) देखने योग्य।
विलोकित–(सं० वि०) देखा हुआ।
विलोचन–(सं० नपुं०) नयन, नेत्र, आँख, एक नरक का नाम, आंख फोड़ने की क्रिया।
विलोड़ना–(हिं० क्रि०) देखो बिलोडना।
विलोप–(सं० पुं०) नाश, हानि, विघ्न, बाधा; **विलोपक**–(सं० वि०) नाश करने वाला; **विलोपना**–(हिं० क्रि०) लोप करना, बाधा डालना;
विलोपी–(सं० वि०) नाश करने वाला।
विलोभ–(सं० पुं०) मोह, भ्रम, माया;
विलोभन–(सं० नपुं०) मोहित करने का व्यापार।
विलोम–(सं० वि०) प्रतिकूल, विपरीत, उलटा, संगीत में स्वरका अवरोह या उतार, (पुं०) सर्प, कुत्ता; **विलोम क्रिया**–(सं० स्त्री०) अन्त से आदि की ओर जाने वाली क्रिया; **विलोमज**–(सं० वि०) विपरीत वर्ण से उत्पन्न, यथा शूद्र के औरस से ब्राह्मणी की सन्तति; **विलोमजिह्व**–(सं० पुं०) हस्ती, हाथी; **विलोमवर्ण**–वर्णसंकर जाति।
विलोल–(सं० वि०) चंचल, चपल; **विलोलन**–(सं० नपुं०) कम्पन, काँपना।
विल्व–(सं० पुं०) बेल का पेड़; **विल्वपत्र**–(सं० नपुं०) बेलका पत्ता; **विल्वमंगल**–(सं० पुं०) सूरदास का अन्धे होने के पहले का नाम।
विवंश–(सं० वि०) वंश रहित।
विव–(हिं० वि०) दो, दूसरा।
विवक्त–(सं० वि०) बहुत बोलने वाला
विवचन–(सं० नपुं०) कथन।
विवदमान–(सं० वि०) झगडालू।
विवन्धन–(सं० नपुं०) रुकावट, बन्धन।
विवक्ता–(हिं० पुं०) कहनेवाला, संशोधक।
विवक्षा–(सं० स्त्री०) बोलने की इच्छा, आशय, तात्पर्य, अर्थ; **विवक्षित**–(सं० वि०) अभिलषित, इच्छा किया हुआ।
विवदना–(हिं० क्रि०) शास्त्रार्थ करना, झगड़ा, विवाद करना।
विवर–(सं० नपुं०) बिल, छेद, गड्ढा, कन्दरा, गुहा।
विवरण–(सं० नपुं०) सविस्तार वर्णन, व्याख्या, भाष्य, टीका, वृत्तान्त।
विवर्जक–(सं० वि०) त्यागकरने वाला।
विवर्जन–(सं० नपुं०) परित्याग, उपेक्षा;
विवर्जनीय–(सं० वि०) त्याग करने योग्य;
विवर्जित–(सं० वि०) निषिद्ध, उपेक्षित, रहित।
विवर्ण–(सं० वि०) रंग बदलने वाला, नीच, कान्ति हीन, साहित्य में भय, लज्जा मोह आदि के कारण नायक या नायिका के मुख का रंग फीका पड़ जाने का भाव।
विवर्त–(सं० पुं०) समूह, नृत्य, आकाश, रूपान्तर, भ्रम, भ्रान्ति।
विवर्तन–(सं० नपुं०) परिभ्रमण, घूमना फिरना।
विवर्तवाद–(सं० पुं०) वेदान्त का वह सिद्धान्त जिसके द्वारा संसार को माया तथा ब्रह्माको सृष्टिका उत्पत्ति स्थान मानते हैं।
विवर्तित–(सं० वि०) परिवर्तित, बदला हुआ, उखड़ा हुआ।
विवर्धन–(सं० नपुं०) वृद्धि, बढ़ती, उन्नति; **विवर्धित**–(सं० वि०) बढ़ा हुआ
विवश–(सं० वि०) पराधीन, परवश;
विवशता–(सं० स्त्री०) पराधीनता;
विवशीकृत–(सं० वि०) विवश कियाहुआ;
विवस–(हिं० वि०) देखो विवश।
विवस्त्र–(सं० वि०) वस्त्र हीन, नंगा।
विवस्वत्–(सं० पुं०) सूर्य, अरुण, पंद्रहवें प्रजापति का नाम।
विवाक्य–(सं० वि०) वाक्य हीन।
विवाद–(सं० पुं०) वाक् युद्ध, झगडा, कलह, मतभेद; **विवाद उठाना**–मतभेद प्रकट करना, झगड़ा आरंभ करना; **विवादक**–(सं० पुं०) झगड़ालू, विवाद करनेवाला; **विवादास्पद**–(सं० वि०) जिसपर विवाद या झगड़ा हो, विवाद योग्य।
विवादी–(हिं० पुं०) झगड़ा करने वाला, एक संगीत में वह स्वर जिसका व्यवहार किसी राग में बहुत कम होता है।
विवाधिक–(सं० पुं०) फेरीवाला, घूमघामकर पदार्थ बेचने वाला।
विवास–(सं० पुं०) प्रवास, वास।
विवासन–(सं० नपुं०) वास करना।
विवाह–(सं० पुं०) वह संस्कार जिसमें पुरुष और स्त्री परस्पर सम्बद्ध किये जाते हैं, पाणिग्रहण, परिणय, व्याह, दारकर्म; **विवाहना**–व्याह करना;
विवाहित–(सं० वि०) जिसका विवाह हो चुका हो; **विवाहिता**–(सं० वि० स्त्री०) व्याही हुई स्त्री, **विवाही**–(हिं० वि०) जिसका विवाह हो चुका हो; **विवाह्य**

(सं०वि०) पाणिग्रहण करने योग्य ।
विवि–(हिं०वि०) दो, दूसरा ।
विविक्त–(सं० वि०) पृथक् किया हुआ, बिखरा हुआ, पवित्र, निर्जन ।
विविक्त चरित–(सं०वि०) शुद्ध आचरण वाला ।
विविक्षु–(सं०वि०) आश्रय चाहनेवाला
विविचार–(हिं०वि०) विवेक या विचार रहित; विविचारी–(हिं०पुं०) दुराचारी दुश्चरित्र ।
विवित्सा–(सं०स्त्री०) जानने की इच्छा ।
विवित्सु–(सं० वि०) जानने के लिये उत्सुक ।
विविदिशा–(सं०स्त्री०) जानने की इच्छा
विविध–(सं०वि०) अनेक प्रकार का ।
विविर–(सं०नपुं०) खोह, गुहा, बिल ।
विबुध–(सं०पुं०) देवता, ज्ञानी, पण्डित; विबुधपुर–(सं० पुं०) स्वर्ग; विबुधप्रिया–(सं० स्त्री०) एक वर्ण वृत्त का नाम; विबुधवन–(सं० पुं०) नन्दन वन; विबुधवैद्य–(सं० पुं०) अश्विनीकुमार; विबुधेश–(सं० पुं०) देवताओं के राजा इन्द्र ।
विवृत–(सं०वि०) बिस्तृत, फैला हुआ,
विवृत्त–(सं० वि०) घूमा हुआ ।
विवृत्ति–(सं० स्त्री०) परिभ्रमण, भाष्य, टीका: विवृत्तोक्ति–(सं० स्त्री०) वह अलंकार जिसमें श्लेष का अर्थ कवि स्वयं प्रकट कर देता है ।
विवेक–(सं०पुं०) भली बुरी वस्तु का ज्ञान, अच्छा बुरा जानने की शक्ति, बुद्धि, विचार; सत्य ज्ञान; विवेकज्ञ–(सं०पुं०) वह जिसको भले बुरे का पूरा ज्ञान हो; विवेकज्ञान–(सं०नपुं०) तत्वज्ञान, सच्चा ज्ञान ; विवेकता–(सं०स्त्री०) ज्ञान; विवेकवान्–(सं०पुं०) बुद्धिमान्; विवेकी–(हिं० पुं०) भले बुरे का ज्ञान रखने वाला, बुद्धिमान, ज्ञानी, न्यायाधीश ।
विवेचन–(सं० नपुं०) परीक्षा, जाँच, निर्णय, अनुसन्धान, मीमांसा, व्याख्या; विवेचना–(हिं०स्त्री०) देखो विवेचन: विवेचनीय–(सं० वि०) मीमांसा करने योग्य ।
विवेचित–(सं० वि०) निश्चित, निर्णय किया हुआ ।
विब्बोक–(सं० पुं०) साहित्य के अनुसार वह हाव भाव जिससे स्त्रियां संयोग के समय नायक का अनादर करती हैं ।
विश्–(सं० पुं०) वैश्य ।
विशंक–(सं० वि०) निर्भय, निडर । विशंकनीय–(सं० वि०) शंका युक्त, डरपोक ।
विशंका–(सं०स्त्री०) अविश्वास ।
विशंकी–(सं० वि०) जिसको किसी का भय हो
विश–(सं०पुं०) मृणाल, कमल की डंडी, मनुष्य ।
विशद–(सं०वि०) स्पष्ट, स्वच्छ, सफेद, सुन्दर, अनुकूल, प्रसन्न ; (पुं०) सफेद रंग ।
विशब्द–(सं०वि०) शब्द रहित ।
विशय–(सं० पुं०) संशय, सन्देह । विशयी–सं०वि०) संशय युक्त ।
विशर, विशरण–(सं०) वध करना, मार डालना।
विशल्य–(सं० वि०) शल्य रहित, चिन्ता शून्य ।
विशस–(सं०पुं०) बध, हत्या, तलवार।
विशस्ति–(सं०स्त्री०) वध, हत्या ।
विशस्पति, विशाम्पति–(सं०पुं०) राजा।
विशाख–(सं० पुं०) शिव, कार्तिकेय के छोटे भाई का नाम, (वि०) याचक, माँगने वाला । विशाखग्रह–(सं०पुं०) बेल का वृक्ष ।
विशाखा–(सं० स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवां नक्षत्र ।
विशाय–(सं०पुं०) पहरेदारों का पारीपारी से सोना ।
विशारद–(सं० पुं०) किसी विषय का अच्छा विद्वान्, दक्ष, कुशल ; (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रसिद्ध, अभिमानी ।
विशारदा–(सं०स्त्री०) केंवाच, धमासा।
विशाल–(सं०वि०) अति विस्तृत और बड़ा, लम्बा चौड़ा भव्य, प्रसिद्ध ।
विशालक–(सं०पुं०) एक यक्ष का नाम, गरुड़, कपित्थ, कैथ । विशालता–(सं०स्त्री०) विशाल होने का भाव ।
विशाला–(सं०स्त्री०) दक्ष की एक कन्या का नाम, इद्रवारुणी लता ।
विशालाक्ष–(सं० पु०) विष्णु, शिव, महादेव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
विशालाक्षी–(सं०स्त्री०) चौसठ योगिनियों में से एक का नाम, बड़ी बड़ी आँख वाली स्त्री, पार्वती ।
विशिका–(सं०स्त्री०) बालू, रेत ।
विशिख–(सं० पुं०) बाण, एक प्रकार की घास ।
विशिष्ट–(सं०वि०) विलक्षण अद्भुत, अधिक शिष्ट, यशस्वी, कीर्तिवान विशेषता युक्त, मिला हुआ, प्रसिद्ध, विशिष्टता–(सं० स्त्री०) विशेषता ।
विशिष्टाद्वैत–(सं०नपुं०) वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार जीवात्मा और संसार का ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वस्तुत: अभिन्न होना माना जाता है ।
विशीर्ण–(सं०वि०) जीर्ण, बहुत पुराना, सूखा हुआ ।
विशीर्णपर्ण–(सं०पुं०) नीम का वृक्ष ।
विशीर्ष–(सं०वि०) बिना सिर का ।
विशील–(सं०वि०) बुरे चरित्र का, दुष्ट ।
विशुण्डि–(सं० पुं०) कश्यप के एक पुत्र का नाम ।
विशुद्ध–(सं०वि०) अति शुद्ध, जिसमें किसी प्रकार की मिलावट न हो, सच्चा । विशुद्ध-गणित–(सं० नपुं०) वह गणित जिसमें पदार्थ का कोई सम्बन्ध रखते हुए केवल राशि का विचार किया जाता है । विशुद्ध चरित्र–(सं०पुं०) शुद्ध आचरण का ।
विशुद्धता–(सं० स्त्री०) पवित्रता ।
विशुद्धि–(सं०स्त्री०) पवित्रता ।
विशूचिका–(सं०स्त्री०) देखो विसूचिका।
विशृंखल–(सं० वि०) शृंखला रहित, जिसमें किसी प्रकार की रुकावट न हो ।
विशृंग–(सं० वि०) शृंग रहित, बिना सींग का ।
विशेष–(सं०पुं०) अन्तर; भेद, प्रकार, तारतम्य, समानता, विचित्रता, नियम, सार, तत्व, अधिकता, वस्तु, पदार्थ, अवयव, अङ्ग, वैशेषिक दर्शन के अनुसार सात प्रकार के पदार्थों में से एक, साहित्य में वह अलंकार जिसमें बिना किसी आधार के आधेय का वर्णन होता है या थोड़ा कार्य करने पर बहुत बड़ा लाभ होता है अथवा किसी एक वस्तु का अनेक स्थानों में होना वर्णन किया जाता है ।
विशेषक–(सं० वि०) विशेषता उत्पन्न करने वाला, (पुं०) तिलक, साहित्य में वह पद्य जिसमें तीन श्लोकों या पदों की एक ही क्रिया होती है ।
विशेषज्ञ–(सं० पुं०) किसी विषय का अच्छा जानकार ।
विशेषण–(सं० नपुं०) वह जो किसी प्रकार की विशेषता दिखलाता हो, व्याकरण में वह शब्द जो किसी संज्ञा या क्रिया की विशेषता सूचित करता है, संज्ञा से सम्बन्ध रहने पर "विशेष्य विशेषण" तथा क्रिया से सम्बन्ध रहने पर "विधेय विशेषण" कहलाता है, विशेषण तीन प्रकार के होते है-गुणवाचक, संख्या वाचक तथा सार्वनामिक ।
विशेषता–(सं०स्त्री०) विशेष का भाव या धर्म । विशेषना–(हिं०क्रि०) निश्चय करना, निर्णय करना । विशेषित–(सं० वि०) जो विशेष रूप से अलग किया हो ।
विशेषोक्ति–(सं० स्त्री०) साहित्य में वह अलंकार जिसमें पूर्ण कारक न रहने पर भी कार्य की सिद्धि का वर्णन किया जाता है ।
विशेष्य–(सं०पुं०) व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा रहता है ।
विशोक–(सं०वि०) शोक रहित, (पु०) युधिष्ठिर के एक अनुचर का नाम
विशोकषष्ठी–(सं०स्त्री०) चैत्रशुक्लाषष्ठी
विशोध–(सं० वि०) विशुद्ध करने योग्य । विशोधी–(सं०वि०) अच्छी तरह से शुद्ध करने वाला; विशोधिनी–(सं०स्त्री०) नागवन्ती लता ।
विशोध्य–(सं०वि०) शोधन करने योग्य।
विशोष–(सं०नपुं०) शुष्कता, रूखापन ।
विशोषण–(सं० नपुं०) अच्छी तरह सोखना ।
विश्–(सं०स्त्री०) कन्या, लड़की ।
विशपति–(सं० पु०) राजा, मुखिया।
विश्रम्भ–(सं० पु०) विश्वास, प्रेम, हत्या, इधर उधर आनन्द में घूमना, प्रेमी और प्रेमिका का रति समय का झगड़ा ।
विश्रब्ध–(सं०वि०) विश्वसनीय, शान्त, निर्भय, निडर । विश्रब्ध नवोढा–(सं० स्त्री०) वह नवोढा नायिका जिसका अपने पति पर थोड़ा थोड़ा प्रेम और विश्वास होने लगा हो ।
विश्रम–(हिं०पु०) देखो विश्राम ।
विश्रयी–(सं० वि०) विशेष प्रकार से सेवा करने वाला ।
विश्रवा–(हिं०पुं०) एक प्राचीन ऋषि जो पुलस्त्य मुनि के पुत्र थे ।
विश्रान्त–(सं०वि०) जिसकी थकावट दूर हो गई हो। विश्रान्ति–(सं०पुं०) विश्राम, आराम ।
विश्राम–(सं०पु०) थकावट दूर करना श्रम मिटाना, आराम करना, सुख, ठहरने का स्थान ।
विश्राव–(सं० पुं०) अधिक प्रसिद्धि ।
विश्री–(सं०वि०) शोभाहीन, कुरूप, भद्दा
विश्रुत–(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध ।
विश्रुतात्मा–(सं०पुं०) विष्णु ।
विश्रुप्ति–(सं०स्त्री०) प्रसिद्धि ।
विश्लिष्ट–(सं०वि०) अलग किया हुआ प्रकाशित, विकसित, शिथिल, थका हुआ, मुक्त ।
विश्लेष–(सं० नपुं०) पृथक् होना, शिथिलता, विकास, वियोग, बिछोह ।
विश्लेषण–(सं०नपुं०) किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को पृथक् करना ।
विश्व–(सं० पुं०) समस्त ब्रह्माण्ड, चौदहो भुवनों का समूह, संसार, शिव, विष्णु, देह, शरीर, जीवात्मा, बोल नामक गन्ध द्रव्य, देवताओं का एक गण जिसके अन्तर्गत दस देवता हैं यथा—वसु, सत्य, ऋतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा और माद्रवा; (वि०) समस्त, अधिक
विश्वकथा–(सं० स्त्री०) संसार संबंधी कथा । विश्वकद्रु–(सं० पुं०) शिकारी कुत्ता, शब्द । विश्वकर्ता–(सं० पुं०) परमेश्वर । विश्वकर्मजा–(सं० स्त्री०) सूर्य की पत्नी का नाम । विश्वकर्मा–(सं० पुं०) संपूर्ण संसार की रचना करने वाला ईश्वर, ब्रह्मा, सूर्य, शिव, वढ़ई, घवई, लोहार, एक देवता जो सब प्रकार के शिल्प शास्त्र के आविष्कर्ता माने जाते हैं ।
विश्वकाय–(सं०पुं०) विष्णु । विश्वकाया–(सं० स्त्री०) दुर्गा ।
विश्वकारक–(सं० पुं०) विश्व के कर्ता, शिव ।
विश्वकारु–(सं०पुं०) विश्व कर्ता ।
विश्वकूट–(सं० पुं०) हिमालय की एक चोटी का नाम । विश्वकृत्–(सं०पुं०)

देखो विश्वकर्मा।
विश्वकोश–(सं०पुं०) वह ग्रंथ जिसमे संसार के सब विषयों का विस्तृत वर्णन रहता है।
विश्वक्षय–(सं०पुं०) प्रलय। विश्वग–(सं०पुं०) ब्रह्मा। विश्वगत–(सं० वि०) विश्व, व्याप्त। विश्वगर्भ–(सं० पुं०) शिव, विष्णु। विश्वगुरु–(सं० पुं०) विष्णु। विश्वचक्षु–(सं०पुं०) ईश्वर।
विश्वजन्य–(सं० वि०) विश्व का हित करने वाला। विश्वजयी–(सं० वि०) विश्व को जीतने वाला। विश्वजित्–(सं० पुं०) वह जिसने संपूर्ण विश्व पर विजय प्राप्त किया हो।
विश्वतनु–(सं०पुं०) विष्णु। विश्वतः–(सं०अव्य०) चारो ओर।
विश्वतृप्त–(सं०वि०) परमेश्वर, विष्णु।
विश्वतोबाहु–(सं०पुं०) देखो विश्वतृप्त।
विश्वतोमुख–(सं०पुं०) परमेश्वर।
विश्वदासा–(सं०स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम।
विश्वदृष्ट–(सं० वि०) जिसने संपूर्ण विश्व का दर्शन किया हो।
विश्वदेव–(सं० पुं०) वह देवता जिनकी पूजा नान्दी मुख श्राद्ध में होती हैं।
विश्वधर–(सं०पुं०) विष्णु; विश्वनाथ–(सं०पुं०) शिव महादेव, काशी के एक प्रसिद्ध शिवलिंग का नाम; विश्वनाभ–(सं०पुं०) विष्णु; विश्वबाहु–(सं०पुं०) शिव, महादेव; विश्वमाता–(सं०स्त्री०) दुर्गा; विश्वमुखी–(सं०स्त्री०) पार्वती; विश्वमोहन–(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वम्भर–(सं०पुं०) परमेश्वर; विश्वम्भरा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी; विश्वयोनि–(सं० पुं०) ब्रह्मा।
विश्वरुचि–(सं० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
विश्वयोनि–(सं०पुं०) विश्व का कारण ब्रह्मा।
विश्वरुची–(सं० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम।
विश्वरूप–(सं० नपुं०) शिव, विष्णु; श्रीकृष्ण का वह रूप जो उन्होंने अर्जुन को गीता का उपदेश करती समय दिखलाया था; विश्वरूपी–(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वलोचन–(सं०नपुं०) सूर्य और चन्द्रमा
विश्ववास–(सं०पुं०) संसार, दुनिया।
विश्वविद्–(सं०वि०) बहुत बड़ा पंडित।
विश्वविद्यालय–(सं० पुं०) वह संस्था जिसमें सब प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती है।
विश्वविधाता–(सं०पुं०) सृष्टि कर्ता।
विश्वविभावन–(सं० पुं०) संसार का प्रतिपालन।
विश्वविश्रुत–(सं० वि०) संसार भर में प्रसिद्ध।
विश्ववीश–(सं०नपुं०) ईश्वर।
विश्ववृक्ष–(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वव्यापी–(सं०वि०) जो सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो।
विश्वश्रवा–(सं०पुं०) एक ऋषि जो कुबेर रावण आदि के पिता थे।
विश्वसरन–(सं०वि०) जगत का हितकारी
विश्वसत्तम–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
विश्वसन–(सं०नपुं०) विश्वास। विश्वसनीय–(सं०पुं०) विश्वास करने योग्य;
विश्वसृ–(सं०त्रि०) ईश्वर। विश्वसृज्–(सं० पुं०) ब्रह्मा, जगदीश्वर।
विश्वसृष्टि–(सं०स्त्री०) संसार की सृष्टि।
विश्वसित–(सं०वि०) विश्वास करने योग्य
विश्वस्त–(सं०वि०) विश्वसनीय।
विश्वहेतु–(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वा–(हिं०पुं०) बीस पल का एक मान
विश्वात्मा–(हिं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव।
विश्वाधार, विश्वाधिप–(सं०पुं०) परमेश्वर
विश्वामित्र–(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो बड़े क्रोधी थे, इनका नाम गाधिज, गाधेय और कौशिक भी था
विश्वमित्र–(सं०त्रि०) विश्व का जीवनदाता।
विश्वायन–(सं०त्रि०) विश्वात्मा, ब्रह्मा।
विश्वावसु–(सं० पुं०) एक गन्धर्व का नाम, विष्णु, एक संवत्सर का नाम, (स्त्री०) रात।
विश्वास–(सं०पुं०) मन का दृढ़ निश्चय।
विश्वासकारक–(सं० वि०) मन में विश्वास उत्पन्न करने वाला।
विश्वासघात–(सं० पुं०) अपने ऊपर विश्वास करने वाले के साथ छल करना।
विश्वासन–(सं०नपुं०) विश्वास।
विश्वासपात्र–(सं०पुं०) जिस पर भरोसा किया जावे। विश्वासस्थाल–(सं०नपुं०) विश्वासपात्र। विश्वासिक–(सं०वि०) विश्वास का पात्र। विश्वासी–(हिं०वि०) विश्वास करने वाला, वह जिसपर विश्वास किया जाय।
विश्वेदेव–(सं० पुं०) अग्नि, देवताओं का एक गण जिसमें इन्द्रादि नव देवता माने जाते हैं।
विश्वेश–(सं०पुं०) शिव, विष्णु, उत्तराषाढा नक्षत्र।
विश्वेश्वर–(सं०पुं०) शिव की एक मूर्ति का नाम।
विषण्ड–(सं०पुं०) मृडाल कमल की नाल
विष–(सं० नपुं०) वह पदार्थ जो प्राणीके शरीरमें प्रवेश होने पर प्राणले लेता है अथवा स्वास्थ्य नष्ट कर देता है गरल, बछनाग, कलिहारी, विष की गांठ–अनेक प्रकार के उपद्रव खड़ा करने वाला। विषकण्ठ–(सं० पुं०) महादेव। विषकन्या–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके साथ संभोग करने पर मनुष्य मर जाता है।
विषकृत–(सं०वि०) विष मिला हुआ।
विषक्त–(सं०वि०) संलग्न आसक्त।
विषघ्न–(सं० वि०) विष-नाश करने वाला। विषघ्नी–(सं०स्त्री०) वनतुलसी, भूमि आमला, हल्दी, अपामार्ग।
विषचक्र–(सं० पुं०) चकोर पक्षी।
विषजल–(सं० नपुं०) विषैला पानी।
विषजुष्ट–(सं०वि०) विष मिला हुआ।
विषण्ण–(सं० वि०) चिन्तित, दुःखी।
विषण्णता–(सं०स्त्री०) मूर्खता।
विषतन्त्र–(सं० नपुं०) सर्पादि का विष दूर करने की प्रक्रिया। विषदन्त–(सं०पुं०) बिल्ली। विषदन्तक–(सं०पुं०) सर्प।
विषद–(सं०वि०) निर्मल, स्वच्छ।
विषदुष्ट–(सं०वि०) विष मिश्रित।
विषद्रुम–(सं० पुं०) कुचले का वृक्ष।
विषधर–(सं०पुं०) सर्प, सांप। विषनाशक–(सं.वि.) विषको दूर करने वाला
विषपन्नग–(सं०पुं०) विषैला साँप।
विषपुच्छ–(सं०पुं०) विच्छू।
विषपुष्प–(सं०नपुं०) विषैला फूल।
विषपुष्पक–(सं०पुं०) मैनफल।
विषभिषज्–(सं० पुं०) विषवैद्य, विष उतारने वाला चिकित्सक।
विषभुजंग–(सं०पुं०) विषैला साँप।
विषमन्त्र–(सं०पुं०) वह जो विष उतारने का मन्त्र जानता हो।
विषम–(सं०वि०) जो समान या बराबर न हो, वह संख्या जो २ से बराबर विभाग न हो, ताख, बहुत तीव्र, अति कठिन भयंकर, (पुं०) संगीत में एक प्रकार का ताल, संकट, विपत्ति, यह वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बराबर बराबर अक्षर न हों; वह अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का सबंध वर्णन किया जाता है।
विषमक–(सं०वि०) असमान, जो बराबर न हो।
विषमकर्ण–(सं०पुं०) समकोण चतुर्भुज में किसी दो बराबर के कोणों के सामने की रेखा। विषमकर्म–(सं०नपुं०) असदृश कार्य। विषमकोण–सं०नपुं०) समकोण से भिन्न कोण। विषमखात–(सं० नपुं०) वह गड्ढा जिसका चारो का किनारा बराबर न हो।
विषमचतुरस्त्र–(सं०पुं०) वह असमान बाहु का चतुष्कोण क्षेत्र जिसके आमने सामने की भुजा समानान्तर हों।
विषम चतुष्कोण–(सं०पुं०) विषमकोण वाला चतुष्कोण क्षेत्र। विषम ज्वर–(सं०पुं०) वह ज्वर जो प्रतिदिन आता है परन्तु इसके आने का कोई नियत समय नहीं होता तथा तापमान भी प्रति दिन समान नहीं होता।
विषमता–(सं० स्त्री०) असमानता, द्रोह, वैर। विषम त्रिभुज–(सं० पुं०) वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजा समान न हों। विषम दलक–(सं०पुं०) वह सीप जिसके दोनों दल समान न हों
विषम नयन, विषम नेत्र–(सं० पुं०) शिव, महादेव।
विषमय–(सं०वि०) जहरीला।
विषम राशि–(सं० स्त्री०) अयुग्म राशि यथा-मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ। विषमरूप–(सं० वि०) जो समरूप का न हो। विषम वल्कल–(सं०पुं०) नरंगी, नीबू। विषम भाग–(सं०पुं०) आसमान अंश। विषमबाण–(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव। विषमवृत्त–(सं० पुं०) वह छन्द जिसके चरण समान नहीं। विषमवेग–(सं० पुं०) वेग जो न्यूनाधिक हो।
विषमशील–(सं०वि०) उद्धत, उद्दण्ड।
विषम साहस–(सं० वि०) बहुत साहस।
विषमाक्ष–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
विषमायुध–(हिं० पुं०) कामदेव।
विषमेक्षण–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
विषमेषु–(सं०पुं०) पचबाण, कामदेव।
विषय–(सं० पुं०) वह जिसपर कुछ विचार किया जाय, सम्पत्ति, बड़ा प्रदेश या राज्य, स्त्री सम्भोग, मैथुन।
विषयक–(सं०वि०) विषय संबंधी।
विषय कर्म–(सं०नपुं०) सांसारिक कार्य
विषयता–(सं० स्त्री०) विषय का भाव या धर्म। विषयपति–(सं०पुं०) राजा या शासक। विषयत्व–(सं० नपुं०) विषय का भाव या धर्म।
विषयवासी–(सं० वि०) जनपद वासी।
विषयात्मक–(सं०वि०) विषय स्वरूप।
विषयाधिप–(सं०पुं०) शासन करनेवाला
विषयान्त–(सं०पुं०) प्रान्त की सीमा।
विषयी–(हिं० पुं०) कामदेव विलासी, कामी, धनवान्।
विषयेन्द्रिय–(सं० नपुं०) शब्दादि ग्राहक इन्द्रियाँ।
विषविद्या–(सं०स्त्री०) मन्त्र आदि की सहायता से विष उतारने की विद्या।
विषवैद्य–(सं०पुं०) वह जो मन्त्र तन्त्र की सहायता से विष उतारता हो।
विषहा–(सं०स्त्री०) देवदाली, बन्दाल।
विषाग्रज–(सं०पुं०) तलवार।
विषाङ्कुर (सं० पुं०) शल्य, तीर।
विषाङ्गना–(सं०स्त्री०) विष कन्या।
विषान्तक–(सं० पुं०) शिव, महादेव।
विषा–(सं०स्त्री०) कलिहारी, कड़वी तरोई।
विषाक्त–(सं०वि०) विष युक्त।
विषाण–(सं०नपुं०) हाथी का दाँत, पशु की सींग, सुअर का दाँत, इमली।
विषाद–(सं० पुं०) दुःख खेद, निश्चेष्ट होने का भाव, मूर्खता।
विषादी–(हिं०पुं०) वह जिसको विषाद हो
विषान्न–(सं० नपुं०) विष मिला हुआ भोजन।
विषापवादी–सं०वि०) निन्दा वाक्य का प्रयोग करने वाला।
विषापह–(सं०वि०) विष नाशक।
विषायुध–(सं०पुं०) विष में बुझाया हुआ अस्त्र, सर्प, साँप।
विषास्त्र–(सं०नपुं०) देखो विषायुध।
विषुव–(सं० पुं०) ज्योतिष के अनुसार वह काल जब सूर्य विषुव रेखा पर पहुँचता है और दिन रात बराबर होते हैं, ऐसा समय वर्ष में दो बार

आता हैं, २१ मार्च तथा २२ सितंबर को दिन रात बराबर होते हैं।

विषुवरेखा–(सं०स्त्री०) वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम में चारो ओर जाती हुई मानी जाती है।

विषूचिका–(सं० स्त्री०) देखो विसूचिका

विष्कम्भ–(सं० पुं०) फलित ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगों में से पहला योग, विस्तार, विघ्न, नाटक का वह अंक जिसमें मध्यम पात्रों द्वारा पहिले की अथवा आने वाली कथा की सूचना दी जाती है, वृक्ष, अर्गला, ब्योंड़ा। **विष्कम्भक**–(सं०नपुं०) देखो विष्कम्भ।

विष्कम्भी–(सं० पुं०) शिव, महादेव।

विष्कर–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, अर्गला

विष्कलन–(सं०नपुं०) भोजन, आहार।

विष्टप्–(सं० नपुं०) स्वर्गलोक।

विष्टम्भ–(सं० पुं०) बाधा, रुकावट, आक्रमण, चढ़ाई। **विष्टम्भन**–(सं०नपुं०) रोकने या संकुचित करने की क्रिया

विष्टर–(सं० पुं०) कुशा का बना हुआ आसन।

विष्टि–(सं० स्त्री०) बिना पुरस्कार का काम, वेतन।

विष्ठा–(सं०स्त्री०) मल, गुह।

विष्ठाभुक्–(सं०पुं०) शूकर, सुअर।

विष्णु–(सं०पुं०) हिन्दुओं के एक बहुत बड़े प्रधान देवता जो सृष्टि के पालन पोषण करने वाले माने जाते हैं, अग्नि, बारह आदित्यों में से पहले आदित्य। **विष्णुकाञ्ची**–(सं० स्त्री०) दक्षिण का एक प्राचीन तीर्थ।

विष्णकान्ता–(सं०स्त्री०) नीली अपराजिता लता। **विष्णुकान्त**–(सं०पुं०) संगीत में एक प्रकार का ताल।

विष्णुगुप्त–(सं०पुं०) प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का नाम, बड़ी मूली।

विष्णुचक्र–(सं०नपुं०) सुदर्शन चक्र।

विष्णुतिथि–(सं०पुं०) एकादशी और द्वादशी तिथियाँ। **विष्णुपत्नी**–सं०स्त्री० लक्ष्मी। **विष्णुपदी**–(सं०स्त्री०) गंगा नदी जो विष्णु के पैरों से निकली हुई मानी जाती हैं। **विष्णुपुरी**–वैकुण्ठ। **विष्णुप्रिया**–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, तुलसी। **विष्णुमाया**–(सं०स्त्री०) दुर्गा।

विष्णुलोक–(सं०पुं०) वैकुण्ठ।

विष्णुवाहन–(सं०नपुं०) गरुड़।

विष्वक्–(सं० पुं०) वह जो सर्वदा इधर उधर घूमता हो।

विष्वक् सेन–(सं०पुं०) विष्णु का एक नाम।

विश्वमञ्जन–(सं० नपुं०) इधर उधर घूमने की क्रिया। **विश्वगवात**–(सं० पुं०) सर्वगामी वायु।

विसंज्ञ–(सं०वि०) संज्ञा शून्य।

विसंवाद–(सं०पुं०) विरोध, डांट डपट।

विसंशय–(सं० वि०) संशय रहित।

विसंस्थित–(सं०वि०) असमाप्त, अपूर्ण।

विसज–(सं०नपुं०) पद्म, कमल।

विसञ्चारी–(सं०वि०) विषय भोगी।

विसदृश–(सं०वि०) विपरीत, विरुद्ध, अद्भुत।

विसम–(हिं०वि०) देखो विषम; **विसमता**–(हिं०स्त्री०) देखो विषमता।

विसयना–(हिं०क्रि०) अस्त होना।

विसरण–(सं०नपुं०) विस्तार, फैलाव।

विसर्ग–(सं०पुं०) त्याग, दान, शौच, मोक्ष, दीप्ति, चमक, वियोग, व्याकरण में वह वर्ण (:) जिसका उच्चारण आधे "ह" के समान होता है, प्रलय।

विसर्गिक–(सं०वि०) आकर्षण करने वाला, खींचने वाला; **विसर्गी**–(सं० वि०) खींचने वाला, दान देने वाला।

विसर्जन–(सं०नपुं०) परित्याग, विदा होना, चले जाना, पूजन आदि में अन्तिम उपचार, समाप्ति।

विसर्प–(सं०पुं०) एक रोग जिसमें ज्वर के साथ सारे शरीर में फुंसियाँ निकल आती हैं।

विसर्पण–(सं०नपुं०) फैलना, फेंकना।

विसर्पी–(सं०वि०) फैलने वाला।

विसल–(सं०नपुं०) वृक्ष का नया पत्ता।

विसवासह–(सं० पुं०) जावित्री; **विसवासा**–(सं०स्त्री०) जावित्री।

विसार–(सं० पुं०) विस्तार, फैलाव, प्रवाह; **विसारित**–(सं०वि०) फैलाया हुआ।

विसाल–देखो विशाल।

विसूचिका–(सं०स्त्री०) हैज़ा नामक रोग।

विसूरण–(सं०नपुं०) दुःख, चिन्ता।

विसूर्य–(सं०वि०) सूर्य रहित।

विसृत–(सं०वि०) विस्तृत, चौड़ा, निर्गत, निकाला हुआ, कहा हुआ

विसृष्ट–(सं०वि०) त्यागा हुआ, फेंका हुआ,

विसोंटा–(हिं०पुं०) अडूसा।

विसोम–(सं०वि०) चन्द्र शून्य।

विसौरभ–(सं०वि०) दुर्गन्ध, गन्ध रहित।

विस्तर–(हिं० पुं०) देखो विस्तार, आधार, समूह, आसन; **विस्तरता**–(सं०स्त्री०) अधिक होने का भाव।

विस्तार–(सं० नपुं०) लंबे चौड़े होने का भाव, फैलाव, पेड़ की शाखा, गुच्छा; **विस्तारता**–(सं०स्त्री०) फैलाव;

विस्तारित–(सं०वि०) फैलाया हुआ।

विस्तारी–(हिं०पुं०) बरगद का वृक्ष।

विस्तीर्ण–(सं०वि०) विस्तृत, विशाल, विपुल, बहुत बड़ा; **विस्तीर्णता**–(सं०स्त्री०) विपुलता, फैलाव।

विस्तृत–(सं०वि०) लंबा चौड़ा, विशाल, विस्तार वाला।

विस्तृति–(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव।

विस्फार–(सं०पुं०) धनुष की टंकार, कम्प, विस्तार, फैलाव, स्फूर्ति;

विस्फुरित–(सं०वि०) अस्थिर, चंचल;

विस्फूर्जन–(सं०पुं०) किसी पदार्थ का फैलना या बढ़ना।

विस्फुलिंग–(सं०नपुं०) आग की चिनगारी।

विस्फोट–(सं० पुं०) किसी पदार्थ का वेग से फूट पड़ना, विषैला फोड़ा;

विस्फोटक–सं०पुं० शीतला रोग, चेचक; **विस्फोटन**–(सं०नपुं०) धड़ाके का शब्द।

विस्मय–(सं० पुं०) आश्चर्य, अभिमान, गर्व, साहित्य में अद्भुत रस का स्थायी भाव जो विलक्षण पदार्थ के वर्णन से चित्त में उत्पन्न होता है;

विस्मयनीय–(सं०वि०) विस्मय के योग्य;

विस्मयान्वित–(सं०वि०) आश्चर्य युक्त;

विस्मरण–(सं०नपुं०) स्मरण न रखना, भूल जाना।

विस्मारक–(सं०वि०) भुलाने वाला।

विस्मित–(सं० वि०) आश्चर्ययुक्त, चकित।

विस्मृत–(सं०वि०) जो याद न हो, भूला हुआ।

विस्मृति–(सं०पुं०) विस्मरण, भूल जाना

विस्रम्भ–(सं०पुं०) विश्वास।

विस्रवण–(सं०नपुं०) क्षरण, बहना, झरना

विश्राव्य–(सं०वि०) गिराने योग्य।

विस्रुत–(सं०वि०) विस्मृत, भूला हुआ।

विस्वन–(सं० पुं०) शब्द, ध्वनि।

विस्राम–(सं०पुं०) देखो विश्राम।

विहत–(सं०वि०) विफल, टूटा हुआ।

विहति–(सं० स्त्री०) नाश, ध्वंस।

विहनन–(सं०नपुं०) हिंसा, हत्या।

विहन्ता–(सं०वि०) नाश करने वाला।

विहंग–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, बाण, तीर, मेघ, बादल, चन्द्रमा, सूर्य।

विहङ्गम–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, सूर्य

विहंगमा–(सं०स्त्री०) सूर्य की एक किरण, बँहगी की लकड़ी।

विहंगराज–(सं०पुं०) गरुड़।

विहंगिका–(सं०स्त्री०) बँहगी।

विहग–(सं०पुं०) देखो विहङ्ग।

विहँसना–(हिं०क्रि०) मुसकाना।

विहर–(हिं०पुं०) देखो विहार, विछोह।

विहरण–(सं० नपुं०) घूमना फिरना, फैलना।

विहसित–(सं० नपुं०) मन्द हास, मुसकुराहट।

विहस्त–सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ बिना हाथ का।

विहायस–(सं० पुं०) आकाश, पक्षी, चिड़िया।

विहाग–(हिं० पुं०) एक राग।

विहार–(सं०पुं०) रति, क्रीड़ा, संभोग, सभोग करने का स्थान, बौद्धों का मठ, मनोरंजन के लिये इधर उधर घूमना।

विहारक–(सं०वि०) विहार करने वाला

विहारण–(सं०नपुं०) विहार, क्रीड़ा।

विहार स्थान–(सं० नपुं०) क्रीड़ाभूमि।

विहारी–(हिं०पुं०) बिहार करने वाला, श्रीकृष्ण का एक नाम।

विहास–(सं०वि०) हास्य रहित।

विहित–(सं०वि०) किया हुआ, दिया हुआ।

विहिंसक–सं०वि०) नाश करने वाला।

विहीन–सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, रहित, बिना।

विहीनता–सं० स्त्री०) विहीन होने का भाव।

विहृति–सं०स्त्री०) विहार, क्रीड़ा।

विह्वल–सं० वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ; **विह्वलता**–सं० स्त्री०) व्याकुलता; **विह्वली**–(हिं० पुं०) वह जो बहुत घबड़ा गया हो।

वीक्षण–(सं० नपुं०) निरीक्षण, देखने की क्रिया; **वीक्षणीय**–(सं० वि०) दर्शनीय, देखने योग्य; **वीक्षा**–सं० स्त्री०) देखने की क्रिया; **वीक्षित**–सं०वि०) अच्छी तरह देखा हुआ।

वीचि–सं०स्त्री०) तरंग, लहर, दीप्ति, चमक।

वीचिमाली–सं०पुं०) सूर्य।

वीची–सं०स्त्री०) तरंग, लहर।

वीज–सं०पुं०) शुक्र, वीर्य, मूल कारण, तत्व, मूल, मज्जा, बिया, अंकुर, तेज, निधि, फल, तन्त्र के अनुसार किसी मन्त्र का मूल तत्व।

वीजक–(हिं०पुं०) देखो बीजक।

वीजका–(सं०स्त्री०) मुनक्का।

वीजकोश–(सं०पुं०) कमलगट्टा, सिंघाड़ा, वह फल जिसमें बीज रहते हैं।

वीजगणित–(सं० नपुं०) वह गणित जिसमें अज्ञात राशियों के लिये अक्षरों का प्रयोग होता है।

वीजगर्भ–सं०पुं०) परवल; **वीजधान्य**–(सं०नपुं०) धनियाँ।

वीजन–सं०नपुं०) व्यजन, पंखा।

वीजपुरुष–सं०पुं०) आदि पुरुष।

वीजवर–(सं०नपुं०) उड़द, माष।

वीजवाहन–सं०) शिव, महादेव।

वीजोदक–सं०नपुं०) आकाश से गिरने वाला ओला, बिनौरी।

वीटिका, वीटी–(सं० स्त्री०) लगाया हुआ पान का बीड़ा।

वीणा–(सं०स्त्री०) प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा, बीन; **वीणापाणि**–(सं०स्त्री०) सरस्वती; **वीणावती**–(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, सरस्वती; **वीणाहस्त**–(सं० पुं०) शिव, महादेव।

वीत–(सं० वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ, मुक्त, समाप्त, निवृत्त, सुन्दर, जो बीत गया हो; **वीतदम्भ**–(सं० वि०) जिसने अहंकार त्याग दिया हो; **वीतभय**–(सं० वि०) जिसका भय छूट गया हो; **वीतमल**–(सं० वि०) पाप रहित, कलंक रहित, विमल; **वीतराग**–(सं०वि०) निस्पृह, बुद्ध का एक नाम; **वीतशोक**–(सं० वि०) जिसने शोक आदि का त्याग किया हो; **वीतसूत्र**–(सं० नपुं०) यज्ञोपवीत।

वीति–(सं०स्त्री०) गति, चाल, दीप्ति,

व्यसन–(सं० नपुं०) आपत्ति, दुःख, कष्ट, पतन, विनाश, पाप, अमंगल, निष्फल प्रयत्न, विषयवासना में अनुराग, दुर्भाग्य, अयोग्यता, काम और क्रोध-जनित दोष, किसी बात का प्रेम। व्यसनी–(हिं० वि०) जिसको किसी प्रकार का व्यसन हो, वेश्यागामी,
व्यस्त–(सं० वि०) व्याप्त, फैला हुआ, व्याकुल, घबड़ाया हुआ, किसी काम में व्यग्र।
व्याकरण–(सं० नपुं०) वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शब्दरूप तथा वाक्यों में इनके शुद्ध व्यवहार आदि के नियमों का वर्णन रहता है
व्याकर्ता–(सं० पुं०) सृष्टिकर्ता।
व्याकीर्ण–(सं० वि०) चारो ओर फैलाया हुआ।
व्याकुल–(सं० वि०) व्यग्र, विकल, घबड़ाया हुआ, कातर, उत्कण्ठित। व्याकुलता–(सं० स्त्री०) विकलता, घबड़ाहट।
व्याकृति–(सं० स्त्री०) प्रकाशन, व्याख्यान;
व्याक्रोश–(सं० पुं०) तिरस्कार करते हुए कटूक्ति कहना, चिल्लाना। व्याक्रोशक–(सं० वि०) चिल्लाने वाला।
व्याक्षेप–(सं० पुं०) विलम्ब, देर, व्याकुलता।
व्याख्या–(सं० स्त्री०) वह वाक्य जो कठिन शब्दों के अर्थ सरल भाषा में स्पष्ट करता हो, व्याख्यान, टीका, वर्णन।
व्याख्यात–(सं० वि०) जिसकी व्याख्या की गई हो। व्याख्याता–(सं० त्रि०) व्याख्या करने वाला, व्याख्यान देने वाला। व्याख्यान–(सं० नपुं०) किसी विषय की व्याख्या या टीका करने का काम, भाषण, वक्तृता। व्याख्यान-शाला–(सं० स्त्री०) वह स्थान जहां पर व्याख्यान दिया जाता हो।
व्याख्येय–(सं० वि०) व्याख्यान देने या समझाने योग्य।
व्याघट्टन–(सं० नपुं०) अच्छी तरह रगड़ने का काम, मन्थन।
व्याघात–(सं० पुं०) ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से तेरहवां योग जो अशुभ माना जाता है, अन्तराय, विघ्न, बाधा, प्रहार, मार, वह अलंकार जिसमें एक ही साधन या उपाय से दो विरोधी कार्यों का होना कहा जाता है।
व्याघ्र–(सं० पुं०) चित्रक, चीता, बाघ। व्याघ्र घण्टा–(सं० स्त्री०) किंकिणी नाम की लता। व्याघ्रचर्म–(सं० नपुं०) बाघ या सिंह की खाल। व्याघ्र-नख–(सं० नपुं०) शेर का नख, नख नामक गन्धद्रव्य। व्याघ्रनायक–(सं० पुं०) शृगाल, सियार। व्याघ्र-मुख–(सं० पुं०) बिल्ली। व्याघ्रवक्त्र–(सं० पुं०) शिव, बिल्ली।
व्याज–(सं० पुं०) कपट, छल, विघ्न, बाधा, विलम्ब, देर। व्याजनिन्दा–(सं० स्त्री०) छल से या कपट से की हुई निन्दा, वह शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार की निन्दा की जाती है। व्याजमय–(सं० वि०) कपट से भरा हुआ; व्याजस्तुति–(सं० स्त्री०) वह स्तुति जो किसी बहाने से की जाय, प्रत्यक्ष में स्तुति न जान पड़े, वह शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार की स्तुति की जाती है।
व्याजी–(सं० स्त्री०) घलुवा।
व्याजोक्ति–(सं० स्त्री०) वह उक्ति जिसमें किसी प्रकार का कपट हो, वह अलंकार जिसमें किसी बात को छिपाने के लिये कोई बहाना किया जाता है।
व्याडि–(सं० पुं०) एक ऋषि जिन्होंने व्याकरण और कोष बनाया था।
व्यात्त–(सं० वि०) विस्तृत, लंबा चौड़ा।
व्यादान–(सं० नपुं०) विस्तार, फैलाव।
व्यादीर्घ–(सं० वि०) अतिदीर्घ, बहुत लंबा।
व्याध–(सं० पुं०) जंगली पशुओं को मार कर निर्वाह करने वाला, शिकारी, लुब्ध, प्राचीन काल की शबर नाम की जाति, (वि०) दुष्ट।
व्याधि–(सं० स्त्री०) रोग, पीड़ा, आपत्ति, विरह आदिके कारण शरीरमें किसी प्रकार का रोग उत्पन्न होना।
व्याधित–(सं० वि०) रोगी।
व्याधूत–(सं० वि०) कम्पित, कँपा हुआ।
व्यान–(सं० पुं०) शरीर में रहने वाली पांच वायु में से एक जो सम्पूर्ण शरीर में संचार करने वाली मानी जाती है।
व्यापक–(सं० वि०) चारो ओर फैला हुआ, आच्छादक, जो ऊपर से अथवा चारो ओर से घेरे हो; व्यापकन्यास–(सं० पुं०) किसी देवता के मूलमन्त्र से सिर से पैर तक सर्वाङ्ग न्यास करने का कार्य।
व्यापत्ति–(सं० स्त्री०) मृत्यु।
व्यापना–(हिं० क्रि०) व्याप्त होना, किसी वस्तु के भीतर फैलना।
व्यापादित–(सं० वि०) मारा हुआ।
व्यापार–(सं० पुं०) कर्म, कार्य, काम, व्यवसाय, बेचा बिक्री, नैयायिक मत से वह पदार्थ जो करणजन्य क्रियाको करता है।
व्यापारी–(हिं० पुं०) व्यवसाय करनेवाला, व्यवसायी।
व्यापित्व–(सं० नपुं०) व्यापक का भाव या धर्म।
व्यापी–(हिं० वि०) जो व्याप्त हो, व्यापक।
व्यापृत–(सं० वि०) किसी कार्यमें लीन।
व्याप्त–(सं० वि०) समाक्रान्त, सम्पूर्ण, परिपूरित, विस्तारित।
व्याप्ति–(सं० स्त्री०) रम्भन, सर्वत्र फैला होना, आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक, न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूपसे सदा मिला होना; व्याप्तित्व–(सं० नपुं०) व्याप्ति; व्याप्तिमत–(सं० वि०) व्याप्ति युक्त।
व्याप्य–(सं० नपुं०) साधन, हेतु, व्याप्त करने योग्य।
व्यामिश्र–(सं० वि०) सम्मिलित, मिला हुआ।
व्यामोह–(सं० पु०) मोह, अज्ञान।
व्यायत–(सं० वि०) अतिशय, दीर्घ।
व्यायाम–(सं० वि०) शरीर पुष्ट करने के लिये किया हुआ शारीरिक श्रम, युद्ध की तैयारी; व्यायामी–(हिं० वि०) व्यायाम करने वाला।
व्यायुध–(सं० वि०) निःशस्त्र।
व्यायोग–(सं० पुं०) साहित्यमें दश प्रकार के रूपक या दृश्य काव्योंमें से एक।
व्यारोष–(सं० पुं०) आक्रोष, क्रोध।
व्याल–(सं० पुं०) सर्प, साँप, व्याघ्र, दुष्ट हाथी, राजा, विष्णु, कोई हिंसक पशु, दण्डक छन्दका एक भेद; व्यालग्राह–(सं० पुं०) सँपेरा; व्याल-मृग–(सं० पुं०) शेर।
व्यालि–(सं० पुं०) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
व्यालिक–(सं० पुं०) सँपेरा।
व्यालू–(हिं० पुं०) रात्रि का भोजन।
व्यालोल–(सं० वि०) थोड़ा हिलता हुआ।
व्यावर्तक–(सं० वि०) पीछे की ओर लौटने वाला।
व्यावर्त्य–(सं० वि०) त्यागने योग्य।
व्यावहारिक–(सं० वि०) व्यवहार शास्त्र संबंधी, व्यवहार सम्बन्धी।
व्यावृत्त–(सं० वि०) निषिद्ध, खण्डित, बाँटा हुआ।
व्यावृत्ति–(सं० स्त्री०) खण्डन, निषेध, निवृत्ति।
व्यास–(सं० पुं०) विस्तार, फैलाव, गोल वस्तु की मध्य रेखा, पुराणादि का पाठ करने वाला ब्राह्मण, देखो वेदव्यास।
व्यासंग–(सं० नपुं०) बहुत अधिक आसक्ति
व्यासार्ध–(सं० पुं०) किसी वृत्त के व्यास का आधा भाग।
व्याहत–(सं० वि०) विशेष रूप से आहत, निषिद्ध।
व्याहरण–(सं० नपुं०) कथन, उक्ति।
व्याहार–(सं० पुं०) वाक्य।
व्याहृत–(सं० वि०) कथित, कहा हुआ।
व्याहृति–(सं० स्त्री०) कथन, उक्ति, मन्त्र विशेष "ॐ भूः ॐभुवः ॐ स्वः"।
व्युत्क्रम–(सं० पुं०) क्रम मे उलटफेर होना।
व्युत्पत्ति–(सं० स्त्री०) किसी पदार्थ की विशिष्ट उत्पत्ति, ज्ञान विशेष, किसी शब्द का वह मूल रूप जिससे वह निकला हो।
व्युत्पन्न–(सं० वि०) जिसका संस्कार हो चुका हो, किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता।
व्युत्पादक–(सं० वि०) उत्पन्न करनेवाला;
व्युत्पादन–(सं० नपुं०) व्युत्पत्ति;
व्युत्पादित–(सं० वि०) उत्पन्न किया हुआ
व्युदस्त–(सं० वि०) परित्यक्त, निवारित, फेंका हुआ।
व्युपदेश–(सं० पुं०) छल, वंचना।
व्युपशम–(सं० पु०) अशान्ति।
व्युष–(सं० स्त्री०) प्रातःकाल, सबेरा।
व्यूढ–(सं० वि०) स्थूल, मोटा, तुल्य, समान, दृढ़।
व्यूह–(सं० पुं०) समूह, निर्माण, रचना, शरीर, देह, सेना, परिणाम, शिश्न, लिंग, युद्ध करती समय सेना का विभाग करके दुर्लंघ भाव में स्थापित किया जाना; व्यूहपृष्ठ–व्यूह का पिछला भाग।
व्योम–(हिं० पुं०) आकाश, बादल, जल; व्योमकेश–(सं० पुं०) शिव, महादेव; व्योमगंगा–(सं० स्त्री०) मन्दाकिनी; व्योम गमनी–(सं० स्त्री०) आकाश में उड़ने की विद्या; व्योमचर–(सं० वि०) आकाश में भ्रमण करने वाला;
व्योमचारी–(सं० पुं०) देवता, पक्षी; व्योमधूम–(सं० पु०) मेघ, बादल;
व्योमपाद–(सं० पु०) विष्णु; व्योममण्डल–(सं० नपु०) आकाश; व्योमयान–हवाई जहाज; व्योमवल्लिका–(सं० स्त्री०) अमरबेल; व्योमसद्–(सं० पु०) देवता, गन्धर्व; व्योमसरित्–(सं० स्त्री०) आकाश गंगा; व्योमस्थली–(सं० स्त्री०) पृथ्वी; व्योमस्पृश्–(सं० वि०) बहुत ऊँचा; व्योमोदक–(सं० नपु०) बरसातीपानी।
व्र–(सं० पु०) आपस का प्रेम।
व्रज–(सं० नपुं०) व्रजन, गमन, जाना, चलना, समूह, झुंड, गोष्ठ, मथुरा और वृन्दावन के आसपास का प्रान्त जो श्रीकृष्ण का लीला क्षेत्र था, इसी से वह अति पवित्र माना जाता है।
व्रजक–(सं० पुं०) तपस्वी।
व्रजकिशोर–(सं० पु०) श्रीकृष्ण।
व्रजन–(सं० नपुं०) गमन, चलना, जाना।
व्रजनाथ–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण, व्रजभूमि के अधिपति।
व्रजभाषा–(सं० स्त्री०) मथुरा आगरा तथा इसके आसपास के प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा; भारत के अधिकांश कवियोंने यथा-सूर, तुलसी, विहारी आदि ने व्रज भाषामें काव्य रचे हैं; किसी समय दिल्ली और आगरे के मध्यवर्ती सभी प्रदेश व्रज-भूमि कहलाते थे; इस राज्य की राजधानी मथुरा थी।
व्रजभू–(सं० पुं०) केलिकदम्ब; (वि०) व्रज में उत्पन्न।
व्रजमण्डल–(सं० पुं०) व्रजभूमि, व्रज और इसके आसपास के प्रदेश।
व्रजमोहन–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण; व्रजराज–(सं० पुं०) व्रजमोहन। व्रजलाल–(हिं० पुं०) नन्दलाल, श्रीकृष्ण।
व्रजवर, व्रजवल्लभ–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
व्रजाङ्गना–(हिं० स्त्री०) व्रजकी स्त्री, गोपी।
व्रजिन–(सं० नपुं०) कलमष, पाप।
व्रजेन्द्र, व्रजेश्वर–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
व्रज्या–(सं० स्त्री०) पर्यटन, घूमनाफिरना

आक्रमण, चढाई, गमन, दल, नाट्य शाला।
व्रण–(सं०पुं०नपुं०) क्षत फोड़ा।
व्रणजिता–(सं०स्त्री०) गोरखमुन्डी।
व्रणस्राव–(सं०पुं०) घाव या फोड़े में से पीव निकलना।
व्रणहा–(सं०स्त्री०) गुरुच।
व्रणीय–(सं०वि०) व्रण सम्बन्धी।
व्रत–(सं०पुं०नपुं०)भक्षण, भोजन, किसी पुण्य तिथि में पुण्य प्राप्त करने के निमित्त उपवास करना, सङ्कल्प।
व्रतचर्या–(सं०स्त्री०) व्रत का अनुष्ठान।
व्रतचारी–(सं० वि०) व्रत करने वाला।
व्रतधर–(सं०वि०) व्रतधारी।
व्रतपक्ष–(सं०नपुं०) भाद्रपद मास का शुक्ल पक्ष।
व्रतपारण–(सं० नपुं०) व्रत के अन्त में किया जाने वाला पारण।
व्रतभिक्षा–(सं० स्त्री०) उपनयन संस्कार के बाद की भिक्षा।
व्रतस्थ–(सं०वि०) व्रतधारी।
व्रतादेश–(सं० पुं०) उपनयन संस्कार।
व्रती–(हिं०पुं०) यजमान, जिसने किसी प्रकार का व्रत किया हो, ब्रह्मचारी।
व्रतेश–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
व्रश्चन–(सं०पुं०)कुठार,कुल्हाड़ी, छेनी। [व्रा]–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
व्राचड़–(सं० स्त्री०) अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिसका प्रचार प्राचीन समय में सिन्ध देश में था, पैशाची भाषा का एक भेद।
व्राज–(सं०पुं०) दल, समूह।
व्राजपति–(सं०पुं०) दल या समूह का नायक।
व्रात–(सं०नपुं०) जीविकाके लिये किया जाने वाला परिश्रम।
व्रात्य–(सं० वि०) व्रत सम्बन्धी, दश संस्कार रहित,उपनयन संस्कार रहित, वर्णसङ्कर, दोगला।
व्रीड–(सं०पुं०) व्रीडन,(सं०नपुं०) लज्जा, शर्म।
व्रीडा–(सं०स्त्री०) लज्जा, शर्म।
व्रीहि–(सं० पुं०) धान का साधारण नाम।
व्रीहिकाञ्चन–(सं०पुं०) मसूर।
व्रीहिमुख–(सं०नपुं०) एक प्रकार का शस्त्र।
व्रीहिवेला–(सं०स्त्री०) शरत्काल।

श

श हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है—इसी से यह "तालव्य श" कहलाता है, यह महाप्राण है और इसके उच्चारण में एक प्रकार का घर्षण होता है इसलिये यह उष्मवर्ण भी कहलाता है।
श–(सं०पुं०) शिव, महादेव, शास्त्र, शस्त्र, (नपुं०) शुभ, कल्याण।
शं–(सं०पुं०) मंगल, कल्याण, शास्त्र, सुख, शान्ति।
शंकना–(हिं०क्रि०) शंका करना सन्देह करना, डरना।
शंकर, शंका ,शंकित, शंकु, शंख–देखो शङ्कर, शङ्का, शङ्किमा, शङ्कु, शङ्ख शङ्ख शंडा, शंबा, शंबु–देखो शण्ड, शम्ब, शम्बु।
शंगर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष।
शंजरफ–(हिं०पुं०) देखो शिगरिफ।
शंतनु–(हिं०पुं०) देखो शान्तनु। **शंतनुसुत**–(हिं०पुं०) भीष्म पितामह।
शंबर–(सं० नपुं०) जल, पानी।
शंबूक–(सं०पुं०) देखो शम्बूक, घोंघा।
शंसन–(सं० नपुं०) कथन, प्रार्थना, हिंसन। **शंसनीय**–(सं० वि०) हिंसनीय, प्रार्थनीय।
शंसित–(सं० वि०) निश्चित, सूचित, वांछित।
शंस्य–(सं० वि०) स्तुति करने योग्य।
शक–(सं० पुं०) एक प्राचीन जाति का नाम जिसकी गणना म्लेच्छों में होती है, वह राजा जिसके नाम से कोई संवत् चले, शालिवाहन राजा का चलाया हुआ संवत् जो ईसवी सन् से १८ वर्ष बाद आरंभ हुआ था।
शक कारक–(सं० पुं०) कोई संवत् चलाने वाला।
शकट–(सं० नपुं०) बैलगाड़ी, छकड़ा, दो हजार पल का मान, धव का पेड़, रोहिणी नक्षत्र, एक असुर जिसको श्रीकृष्ण ने वध किया था।
शकटधूम–(सं०पुं०)एक नक्षत्र का नाम।
शकट व्यूह–(सं० पुं०) सेना को इस प्रकार रखना कि आगे का भाग पतला तथा पीछे का चौड़ा हो।
शकटाक्ष–(सं० पुं०) गाड़ी का धुरा।
शकटार–(सं०पुं०) राजा महानन्द का प्रधान मन्त्री जिसने चाणक्य से मिल कर षड्यन्त्र रचा था और नन्दवश का नाश किया था।
शकटारि–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
शकटासुर–(सं०पुं०) एक दैत्य जिसको कंस ने कृष्ण को मारने के लिये भेजा था परन्तु वह स्वयं मारा गया था।
शकटि–(सं०स्त्री०) छोटी गाड़ी। **शकटिक**–(सं०वि०) शकट संबंधी। **शकटिका**–(सं० स्त्री०) बच्चों के खेलने की गाड़ी। **शकटी**–(सं०स्त्री०) छोटी गाड़ी।
शकठ–(सं०पुं०) मचान।
शकर–(हिं०नपुं०)शक्कर,कच्ची चीनी।
शकरकन्द–(हिं०पुं०) एक प्रकार का मीठा कन्द।
शकरपाला–(फा०पुं०) एक प्रकार का पकवान।
शकरपीटन–(हिं०पुं०) एक प्रकार की पहाड़ी कँटीली झाड़ी।
शकल–(सं०नपुं० खण्ड, टुकड़ा, छाल, चमड़ा,शक्कर, कमलदण्ड,दालचीनी।
शकलेन्दु–(सं०पुं० अपूर्ण चन्द्रमा।
शकलोष्ठ–(सं०पुं० गोबर का पिण्ड।
शकव–(सं०पुं०) राजहंस।
शकादित्य–(सं०पुं० शालिवाहन राजा।
शकान्तक–(सं०पुं० विक्रमादित्य।
शकाब्द–(सं० पुं०) शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्।
शकार–(सं०पुं० श स्वरूप वर्ण; संस्कृत के नाटकों में राजा के साले के लिये महाशब्द प्रयोग होता है।
शकारि–(सं०पुं०) विक्रमादित्य।
शकील–(फ़ा०वि०) सुन्दर।
शकुन–(सं० नपुं०) शुभाशुभ सूचक लक्षण; वह चिह्न जो देखने में शुभ या अशुभ जान पड़े, (पुं०) पक्षी, चिड़िया, गृध्र, मंगल गीत; **शकुन विचारना**–किसी कार्य के रोकने के शुभाशुभ लक्षण देख कर यह स्थिर करना कि कार्य होगा या नहीं।
शकुनज्ञ–(सं०वि०) शकुन का शुभाशुभ फल जानने वाला। **शकुन शास्त्र**–(सं०नपुं०) वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभाशुभ फलों का विवेचन रहता है।
शकुनि–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, गिद्ध, दुर्योधन के मामा का नाम जो इनका मंत्री था, यही कौरवों के नाश का प्रधान कारण था।
शकुनिवाद–(सं० पुं०) प्रातःकाल के समय पक्षियों का शब्द करना।
शकुनी–(सं०स्त्री०) श्यामा पक्षी, मादा गौरैया, एक पूतना का नाम।
शकुनी–(हिं०पुं०) शकुनों का शुभाशुभ फल जानने वाला।
शकुनीश्वर–(सं० पुं०) गरुड़।
शकुनोपदेश–(सं०पुं०) शकुन शास्त्र।
शकुन्त–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, एक प्रकार का कौवा, विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।
शकुन्तला–(सं०स्त्री०) मेनका नाम की अप्सरा के गर्भ से तथा विश्वमित्र के औरस से उत्पन्न कन्या जो निर्जन वन में गृध्र द्वारा रक्षित हुई थी, इसका विवाह राजा दुष्यन्त से हुआ था, इनके गर्भ से भरत का जन्म हुआ था।
शकुन्तलात्मज–(सं०पुं०) राजा भरत।
शकुन्तिका–(सं०स्त्री०) छोटी चिड़िया।
शकुन्द–(सं०पुं०) सफेद कनेर।
शकृत्–(सं०नपुं०) विष्टा, गोबर।
शकृत द्वार–(सं० नपुं०) गुदा।
शक्कर–(सं०पुं०)वृष, बैल; (फा०स्त्री०) चीनी, खाँड़।
शक्करी–(सं० स्त्री०) वर्णवृत्त के अन्तर्गत चौदह अक्षर वाले छन्दों का नाम।
शक्त–(सं०वि०) समर्थ।
शक्तव–(सं० पुं०) भूने हुए अन्न का आटा, सत्तू।
शक्ति–(सं०स्त्री०) सामर्थ्य, बल, शौर्य, पराक्रम, वह कार्य जिसके द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त हो,देवमूर्ति, लक्ष्मी, गौरी, प्रधान अष्टशक्ति, इन्द्राणी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, माहेश्वरी और भैरवी है; प्रकृति, माया, दुर्गा, तलवार, वह राज्य जिसमें अमोघ धन और सेना हो, दूसरे पर प्रभाव डालने वाला, बल, न्याय के अनुसार वह सबंध जो किसी पदार्थ तथा उसका बोध कराने वाले शब्द में होता है। **शक्तिकर**–(सं० वि०) बल देने वाला। **शक्तिग्रह**–(सं०पुं०) शिव, महादेव, कार्तिकेय। **शक्तिज्ञ**–(सं० वि०) शक्ति को जानने वाला।
शक्तितः–(सं०अव्य०) शक्ति के अनुसार। **शक्तिता**–(सं० स्त्री०) शक्ति का भाव या धर्म। **शक्तिधर**–(सं० पुं०) शक्तिधारक, कार्तिकेय। **शक्तिपाणि**–(सं०पुं०) स्कन्द, कार्तिकेय।
शक्तिपूजक–(सं०पुं०) तान्त्रिक, वाममार्गी। **शक्तिपूर्व**–(सं०पुं०) पराशर।
शक्तिभृत्–(सं०पुं०)कार्तिकेय। **शक्तिमत्**–(सं० वि०) पुष्ट। **शक्तिमत्ता**–(सं०स्त्री०) शक्तिमान् होने का भाव या धर्म। **शक्तिमत्व**–(सं० नपुं०) शक्तिमत्ता। **शक्तिमन्त्र**–(सं०नपुं०) शक्ति के उपासकों का मन्त्र। **शक्तिमय**–(सं०वि०) शक्ति पूर्ण। **शक्तिवादी**–(सं०पुं०) शक्ति की उपासना करने वाला। **शक्तिवीर**–(सं० पुं०) वाम मार्गी। **शक्तिवकल्य**–(सं०नपुं०) असमर्थता, **शक्तिहर**–(सं०वि०) बलनाशक। **शक्तिहीन**–(सं०वि०) निर्बल, नपुंसक। **शक्ती**–(सं०पुं०)एक प्रकार का मातृक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह मात्रायें होती हैं।
शक्तु–(सं०पुं०नपुं०) भुने हुए अन्न का आटा, सत्तू।
शक्त्रि–(सं०पुं०)वशिष्ठ मुनि के ज्येष्ठ पुत्र का नाम।
शक्न, शक्नु–(सं०वि०) प्रियवादी।
शक्य–(सं०वि०)समर्थनीय, क्रियात्मक, किया जाने योग्य; शक्ति युक्त, सम्भव, वह जो आश्रय हो, (पुं०) वह अर्थ जो शब्द की शक्ति द्वारा प्रकट हो। **शक्यता**–(सं०स्त्री०) शक्य होने का भाव या धर्म।
शक्र–(सं०पुं०)दैत्य के नाश करने वाले इन्द्र, अर्जुन वृक्ष, ज्येष्ठा नक्षत्र, गण का चौथा भेद जिसमें ६ मात्रायें होती हैं। **शक्रकार्मुक**–(सं० नपुं०) इन्द्र धनुष। **शक्रकेतु**–(सं० पुं०) इन्द्रध्वज। **शक्रगोप**–(सं०पुं०) बीरबहूटी। **शक्रचाप**–(सं०नपुं०) इन्द्र धनुष। **शक्रजानु**–(सं०पुं०) रामायणके अनुसार एक वानरका नाम।

वेश्य–(सं०वि०) प्रवेश करने योग्य ।
वेश्या–(सं०स्त्री०) गणिका, रंडी ।
वेश्यागना–(सं०स्त्री०) कुलटा स्त्री ।
वेष–(सं०पुं०) नेपथ्य, रंगमंच के पीछे का वह स्थान जहाँ पर नट लोग वस्त्र पहरते हैं, रंडी का घर ।
वेषकार–(सं०पुं०) वेष्टन, बेठन ।
वेष्टक–(सं०पु०) प्राचीर, (वि०) घेरने वाला ।
वेष्टन–(सं०नपुं०) वलयन, घेरने या लपेटने की क्रिया, मुकुट, उष्णीश, पगड़ी, कान का छेद, गुग्गुल; वेष्टित–(सं० वि०) लपेटा हुआ, घिरा हुआ ।
वेसन–(सं०नपुं०) देखो बेसन ।
वैकक्ष–(सं०नपुं०) जनेऊ की तरह पहरने का एक प्रकार का हार ।
वैकटिक–(सं०पुं०)रत्न परीक्षक, जौहरी ।
वैकट्य–(सं०नपुं०) विकटता ।
वैकतिक–(सं०पु०) रत्न परीक्षक,जौहरी
वैकल्प–(सं०पुं०) विकल्प का भाव ।
वैकल्पिक–(सं०वि०) सन्दिग्ध, जिसमें किसी प्रकार का सन्देह हो, एकांगी, जो चुना न जा सके ।
वैकल्य–(सं०नपुं०) विकलता, घबड़ाहट, अंगहीनता, न्यूनता, कमी, टेढापन ।
वैकारिक–(सं०वि०) बिगड़ा हुआ ।
वैकाल–(सं०पुं०) अपराहण, तीसरा पहर ।
वैकालिक–(सं०वि०) उपयुक्त समय पर न होने वाला ।
वैकुण्ठ–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण, विष्णु, स्वर्ग,
वैकृत–(सं०नपुं०) विकार, दुर्लक्षण, वीभत्स रस का आलाम्बन, (वि०) दुःसाध्य, जो सहज में ठीक न हो,
वैकृत्य–(सं०नपुं०) बीभत्स रस, इस रस का अवलम्बन ।
वैक्रमीय–(सं० वि०) विक्रम संबन्धी ।
वैक्रान्त–(सं०नपुं०) माणि विशेष, चुन्नी,
वैक्लव–सं०वि०) विक्लव संबधी ।
वैक्लव्यता–(सं०स्त्री०) जड़ता ।
वैखरी–सं०स्त्री०) कण्ठ से उत्पन्न होने वाले स्वर का एक विशिष्ट प्रकार, ऐसा स्वर ऊंचा और गंभीर सुन पड़ता है ।
वैखानस–(सं०पुं०) वानप्रस्थ, वनचारा, ब्रह्मचारी ।
वैगुण्य–(सं०नपुं०) दोष, अपराध ।
वैघात्य–(सं०पुं०) मार डालने योग्य ।
वैचित्र, वैचित्र्य–(सं०नपुं०) विचित्रता, विलक्षणता ।
वैजयन्त–(सं०पुं०) इन्द्रपुरी, इन्द्रगृह, अरणी ।
वैजयन्तिक–(सं०वि०) झंडा उठाने वाला,
वैजयन्तिका–(सं०स्त्री०) झंडा, पताका ।
वैजयन्ती–(सं०स्त्री०) पताका, झंडा, पांच रंगों के फूलों की लंबी माला जो श्रीकृष्ण पहनते थे ।
वैजयिक–(सं०वि०) विजय संबंधी ।
वैजन्य–(हिं०पुं०) कामुकता, विचित्रता ।
वैजिक–(सं०वि०) बीज संबंधी, बीर्य संबंधी ।
वैज्ञानिक–(सं०वि०) विज्ञान संबंधी, निपुण, दक्ष, (पुं०) वह जो विज्ञान अच्छा जानता हो ।
वैडालव्रत–(सं०नपुं०) पाप और कुकर्म करते हुए भी ऊपर से साधू बने रहना
वैडूर्य–(सं०नपुं०) वैदुर्य मणि ।
वैणिक–(सं०पुं०) बीन बजाने वाला ।
वैतंसिक–(सं०पुं०) मांस बेचने वाला, कसाई ।
वैतण्डिक–(सं० पुं०) व्यर्थ का झगड़ा करने वाला ।
वैतथ्य–(सं० नपुं०) विफलता ।
वैतनिक–(सं० पुं०) वेतन लेकर काम करने वाला ।
वैतरणी–(सं० स्त्री०) यमद्वार पर की एक नदी का नाम ।
वैतानिक–(सं० पुं०) वह अग्नि जिससे अग्निहोत्र आदि कृत्य किये जाते हैं।
वैताल–(सं०पुं०)स्तुतिपाठक; वैतालिक–(सं०पुं०) प्राचीन काल का वह स्तुति पाठक जो राजाओंको प्रातःकाल स्तुति गाकरजगाताथा; वैतालीय–(सं०वि०) वेताल संबंधी, (पु०) एक वृत्त जिसके पहले और तीसरे पाद में चौदह तथा दूसरे और चौथे पाद मे सोलह मात्रा रहते हैं ।
वैतृष्ण्य–(सं०नपुं०) लोभ से रहित होने का भाव ।
वैदक–(हिं०पुं०) देखो वैद्यक ।
वैदग्ध–(सं०नपुं०) पाण्डित्य, चतुराई, रसिकता, शोभा ।
वैदम्भ–(सं० पुं०) शिव का एक नाम ।
वैदर्भ–(सं०पुं०) विदर्भ देश के राजा, दमयन्ती के पिता भीमसेन, बातचीत करने मे चतुराई, (वि०) विदर्भ देश सम्बन्धी; वैदर्भी–(सं० स्त्री०) अगस्त्य ऋषि की स्त्री, दमयन्ती, रुक्मिणी, बाक्य की वह शैली जिसमें मधुर वर्णों द्वारा मधुर रचना की जाती है ।
वैदर्य–(सं०नपुं०) बालकों का खेल ।
वैदल–(सं० नपुं०) मिट्टी का पात्र जिसमे भिखमंगे भीख मांगते है ।
वैदिक–(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जो वेद जानता हो, (वि०) वेद सम्बन्धी, वेदोक्त क्रियाकांड का करने वाला ।
वैदिश–(सं०पुं०) विदेश का निवासी ।
वैदुष्य–(सं०नपुं०) विद्वत्ता, पाण्डित्य ।
वैदूर्य–(सं० नपुं०) लहसुनियाँ नाम का रत्न ।
वैदेशिक–(सं०वि०) विदेश सम्बन्धी, परदेश से आया हुआ ।
वैदेह–(सं० पुं०) राजा निधि के पुत्र का नाम ।
वैदेहिक–(सं०पुं०) वणिक्, व्यापारी ।
वैदेही–(सं०स्त्री०) विदेह के राजा जनक की कन्या, सीता ।
वैद्य–(सं० पुं०) आयुर्वेद के अनुसार चिकित्सा करने वाला, आयुर्वेदी, विद्वान्, चिकित्सक, पण्डित; वैद्यक–(सं० पुं०) चिकित्सा शास्त्र, आयुर्वेद ।
वैद्यनाथ–(सं०पुं०) सन्थाल परगने का प्रसिद्ध शैवतीर्थ ।
वैद्यबन्धु–(सं०पुं०) अमलतास का वृक्ष ।
वैद्युत–(सं०वि०)विद्युतसंबन्धी, बिजलीका
वैद्रुम–(सं०वि०) विद्रुम संबंधी, मूंगेका
वैध–(सं०वि०) विधि के अनुसार,
वैधर्म्य–(सं० नपुं०) विधर्मी होने का भाव, नास्तिकता ।
वैधव–(सं०पुं०) चन्द्रमा के पुत्र बुध ।
वैधवेय–(सं०पुं०) विधवा का पुत्र ।
वैधव्य–(सं० नपुं०) विधवा होने का भाव, रँड़ापा ।
वैधात्र–(सं० पुं०) विधाता के पुत्र सनत्कुमार ।
वैधृत–(सं०पुं०) ग्यारहवें मन्वन्तर के एक इन्द्र का नाम ।
वैधृति–(सं०पुं०) ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगों में से एक ।
वैधेय–(सं०त्रि०) विधि सम्बन्धी, मूर्ख ।
वैनतेय–(सं०पुं०) विनता की सन्तान, गरुड़, अरुण ।
वैनायक–(सं०वि०) विनायक या गणेश सम्बन्धी ।
वैपरीत्य–(सं० नपुं०) प्रतिकूलता, विपरीतता ।
वैपार,वैपारी–(हिं०) देखो व्यापार, व्यापारी ।
वैपित्र–(सं०पुं०) वे भाई बहन जिनकी माता एक होकर पिता भिन्न हों ।
वैपुल्य–(सं०नपुं०) विपुलता, अधिकता ।
वैफल्य–(सं०नपुं०)विफलहोनेका भाव ।
वैभव–(सं०नपुं०) विभव, धन, महिमा, महत्व, विभुता, सामर्थ्य ।
वैभवशाली–(सं० वि०) जिसके पास बहुत धन हो ।
वैभाषिक–(सं०वि०) विभाषा सम्बन्धी, वैकल्पिक ।
वैभ्राज्य–(सं०नपुं०)देवताओंका बगीचा
वैमनस्य–(सं०नपुं०) द्वेष,शत्रुता ।
वैमल्य–(सं०नपुं०) विमलता, स्वच्छता।
वैमात्र–(सं०वि०) विमाता से उत्पन्न, सौतेला; वैमात्री–(सं०स्त्री०) विमातृ कन्या, सौतेली; वैमानिक–(सं०वि०) आकाश में उड़ने वाला, (पुं०) देवयोनि विशेष ।
वैमुख्य–(सं०नपुं०)विमुखता, विपरीतता;
वैयग्र्य–(सं०नपु०) मानसिक चंचलता ।
वैयाकरण–(सं०पुं०) वह जो व्याकरण शास्त्र अच्छी तरह से जानता हो ।
वैयाघ्र–(सं०वि०) व्याघ्र संबंधी ।
वैयास–(सं०वि०)व्यास संबंधी,व्यासका;
वैयासिक–(सं०वि०)व्यासकाबनायाहुआ;
वैर–(सं०पुं०) विरोध, द्वेष, शत्रुता; वैरकर–शत्रुता करने वाला ; वैरकारिता–(सं०स्त्री०)शत्रुता ; वैरता–(सं०स्त्री०) शत्रुता, वैरभाव–(सं०नपुं०) शत्रुता ।
वैरल्य–(सं०नपुं०)विरलकाभाव,विरलता
वैरशुद्धि–(सं०पुं०)वैरका बदलाचुकाना
वैराग–(हिं०पुं०) देखो वैराग्य ।
वैरागी–(हिं०पु०)जिसके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ हो, विरक्त, उदासीन, वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद ।
वैराग्य–(सं०नपुं०) विरक्ति, चित्त की वह वृत्ति जिसके अनुसार संसार की विषयवासना तुच्छ जान पड़ती है और लोग संसार के प्रपंच को त्याग कर एकान्त में जाकर ईश्वर का भजन करते हैं ।
वैराज–(सं०नपुं०) एक मनु का नाम, सत्ताईसवें कल्प का नाम ।
वैराज्य–(सं०पुं०) प्राचीन कालकी एक प्रकार की शासन प्रणाली जिसमें दो राजा एक ही देश में राज्य करते थे ।
वैराट–(सं०वि०) विस्तृत, लंबा चौड़ा, विराट देश का ।
वैरिता–(सं०स्त्री०) शत्रुता,।
वैरित्व–(सं०नपुं०)शत्रुता, वैर ।
वैरूप्य–(सं०नपुं०) विरूपता, कदर्यता ।
वैलक्षण्य–(सं० नपुं०) विलक्षणता, विभिन्नता ।
वैलक्ष्य–(सं० पुं०) लज्जा, विस्मय, आश्चर्य ।
वैवर्ण–(सं०नपुं०) मलिनता ।
वैवर्त–(सं०नपुं०)किसी पदार्थ का चक्कर खाते हुए घूमना ।
वैवश्य–(सं०नपुं०) विवशता ।
वैवस्वत–(सं०पुं०) सूर्य के पुत्र, शनि, सातवें मनु का नाम, एक रुद्र का नाम आजकल का मन्वन्तर वैवस्वत मनु का है ।
वैवाहिक–(सं०वि०)विवाह संबंधी,(पुं०) कन्या अथवा पुत्र का ससुर, समधी।
वैवाहिक–(सं०वि०) विवाह सम्वन्धी ।
वैशद्य–(सं०नपुं०) निर्मलता,स्वच्छता ।
वैशम्पायन–(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे ।
वैशाख–(सं०नपुं०)चैत्रकेवाद का महीना जो जेठ के पहले होता है, बैसाख ।
वैशाखी–(हिं०स्त्री०) बैसाख की पूर्णिमा;
वैशाली–(सं० वि०) विशाल देश संबंधी;
वैशिक–(सं० पुं०) अनेक वेश्याओं के साथ रमण करने वाला नायक ।
वैशिष्ट–(सं०नपुं०)विशिष्टता ।
वैशेषिक–(सं० पुं०) कणाद मुनि कृत दर्शन शास्त्र को जानने वाला, औलूक्य, पदार्थ विद्या,(वि०)असाधारण ।
वैश्मीय–(सं०वि०)वेश्म या गृह सम्बन्धी ।
वैश्य–(सं०पुं०) भारतवर्ष की चार जातियों का वर्गों में से तृतीय वर्ण, वणिक्, बनिया । वैश्यता,वैश्यत्व–(सं०)वैश्य का भाव या धर्म ।वैश्या–(सं० स्त्री०) वैश्य जाति की स्त्री, बनियाइन । वैश्रवण–(सं०पुं०) शिव, कुबेर ।
वैश्य–(सं०पुं०) उत्तराषाढा नक्षत्र ।

वैश्वजनीय–(सं० वि०) विश्व भर के लोगों से सम्बन्ध रखने वाला, संपूर्ण संसार के लोगों का।
वैश्वदेव–(सं० पुं०) विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाने वाला होम या यज्ञ।
वैश्वदेवत–सं०पुं० उत्तराषाढा नक्षत्र।
वैश्वरूप–(सं०वि०) विश्वरूप सम्बन्धी।
वैश्वानर–(सं०पुं०) परमात्मा, अग्नि, पित्त, चेतन, चीता नाम का वृक्ष।
वैश्वासिक–(सं०पुं०) जिस पर विश्वास किया गया हो, विश्वस्त।
वैषम, वैषम्य–(सं० नपुं०) विषमता, विषम होने का भाव।
वैषयिक–(सं०पुं०) वह जो सर्वदा विषय वासना में रहता हो, विषयी, लम्पट, (वि०) विषय सम्बन्धी।
वैष्टुत–(सं०पुं०) होम की भस्म।
वैष्णव–(सं० नपुं०) यज्ञकुण्ड की भस्म, (वि०) विष्णु सम्बन्धी, (पुं०) विष्णु भक्त, विष्णु की पूजा करने वाला, एक प्रसिद्ध धार्मिक सम्प्रदाय, इस सम्प्रदायके लोग बड़े आचार विचार से रहते हैं।
वैष्णवी–(सं०स्त्री०) विष्णु की शक्ति, दुर्गा गंगा, तुलसी, पृथ्वी, श्रवण नक्षत्र।
वैसर्गिक–(सं० वि०) त्याज्य, विसर्जन करने योग्य।
वैसा–(हिं०क्रि०वि०) उस प्रकार या तरह का। **वैसे**–उसी प्रकार से।
वैसूचन–(सं०नपुं०) नाटक में पुरुषों का स्त्री वेश धारण करना।
वैस्तारिक–(सं०वि०) विस्तार सम्बन्धी।
वैहंग–सं०वि०) पक्षी सम्बन्धी।
वैहायस–(सं०वि०) आकाश सम्बन्धी।
वैहासिक–सं० पुं०) विदूषक, भाँड़।
वोक–(हिं०अव्य०) ओर।
वोछा–(हिं०वि०) देखो ओछा।
वोढव्य–(सं०वि०) वाह्य, ढोन लायक।
वोल–(सं०नपुं०) एक सुगन्धित गोंद।
वोल्लाह–(सं० पुं०) वह घोड़ा जिसकी दुम और कन्धे पर के बाल (अयाल) पीले हों।
वोहित्य–(सं०नपुं०) पोत, जहाज।
वौषट्–(सं०अव्य०) देवताओं के उद्देश्य से अग्निमुख में घृतादि की आहुति देने का मन्त्र।
व्यंग, व्यंजन–देखो व्यङ्ग, व्यञ्जन।
व्यंस–(सं०वि०) स्कन्धहीन, छिन्नबाहु।
व्यंसक–(सं०पुं०) धूर्त।
व्यसित–(सं०वि०) धोखा दिया हुआ।
व्यक्त–सं० वि०) स्पष्ट, प्रकट, स्थूल, बड़ा, प्रकाशित, देखा हुआ, अनुमान किया हुआ, सांख्य मत से प्रकृति का स्थूल, परिमाण। **व्यक्तगणित**–(सं०नपुं०) अंकविद्या। **व्यक्तगन्धा**–(सं० स्त्री०) नीली अपराजिता, सोनजही। **व्यक्तता**–(सं०स्त्री०) व्यक्त होने का भाव। **व्यक्तदृष्टार्थ**–(सं० पुं०) प्रत्यक्षदर्शी, देखी हुई बात को कहने वाला।
व्यक्तराशि–(सं० स्त्री०) गणित में ज्ञात राशि। **व्यक्तरूप**–(सं०पुं०) विष्णु।
व्यक्ति–(सं०स्त्री०) किसी शरीरधारी का सम्पूर्ण शरीर जिसकी सत्ता अलग मानी जातीहै और जो किसी समाज का अंग समझा जाता है, स्पष्टता, मनुष्य, जीव, शरीर, वस्तु, पदार्थ। **व्यक्तीकृत, व्यक्तिभूत**–सं०वि० प्रकाशित, प्रकट किया हुआ। **व्यक्तिगत**–निजी। **व्यक्तिभाव**–सं०पुं० प्रकाशीभाव, जो पहिले स्पष्ट न हुआ हो उसका व्यक्त होना।
व्यक्तीभूत–(सं०वि०) प्रकट किया हुआ
व्यक्तोदित–(सं०वि०) स्पष्ट कहा हुआ
व्यग्र–(सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, त्रस्त, डरा हुआ, उद्योगी, उत्साही, आसक्त, काम में लगा हुआ; **व्यग्रता**–(सं० स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट।
व्यङ्ग–(सं०पुं०) मेढक, वह जिसका कोई अंग टूटा फूटा हो, शब्द का वह गूढ अर्थ जो उसकी व्यंजना वृत्ति के द्वारा प्रकट होता है, ताना।
व्यङ्गित–(सं०वि०) विकल, घबड़ाया हुआ। **व्यङ्गीकृत**–(सं० वि०) खण्ड किया हुआ। **व्यङ्ग्य**–(सं० पुं०) वह लगती हुई बात जिसका कुछ गूढ अर्थ हो।
व्यजन–(सं० नपुं०) हवा करने का पंखा, बेना।
व्यञ्जक–(सं०वि०) प्रकाशक, (पुं०) हृदय के भावों को दिखलाने वाला अभिनय;
व्यञ्जन–(सं० नपुं०) तरकारी शाक आदि जो रोटी दाल चावल के साथ खाई जाती है, अवयव, शरीर, दिन, चिह्न, मूंछ, पकाया हुआ भोजन, वर्णमाला के वे अक्षर जो बिना स्वर की सहायता से उच्चारण नहीं किये जा सकते।
व्यञ्जना–सं०स्त्री०) प्रकट करने की क्रिया, शब्द की वह वृत्ति या शक्ति जिसके द्वारा सामान्य अर्थ को छोड़ कर किसी विशेष अर्थ का बोध होता है।
व्यतिकर–(सं०पुं०) विनाश, व्याप्ति, समूह, व्यसन, सम्बन्ध, मिलावट।
व्यतिक्रम–(सं० पुं०) विपर्यय, उलटफेर, विघ्न, बाधा। **व्यतिक्रमण**–(सं०नपुं०) क्रम में उलट फेर होना।
व्यतिचार–(सं० पुं०) पापाचरण।
व्यतिपात–(सं०पुं०) बड़ा उपद्रव, अपमान
व्यतिरिक्त–(सं०वि०) विभिन्न, अलग, पृथक् किया हुआ, (क्रि०वि०) अतिरिक्त, **व्यतिरिक्तता**–(सं० स्त्री०) विभिन्नता। **व्यतिरेक**–(सं० पुं०) अभाव, भिन्नता, वृद्धि, बढती, अतिक्रमण, वह अर्थालंकार जिसमें उपमान से उपमेय की अधिकता या न्यूनता वर्णन की जाती है। **व्यतिरेकव्याप्ति**–(सं० स्त्री०) जिसमें जो गुण नहीं है उसमें उसी को दिखलाना। **व्यतिरेकी**–(हिं०पुं०) वह जो किसी पदार्थ में विभिन्नता उत्पन्न करता हो।
व्यतिषक्त–(सं०वि०) आसक्त, मिला हुआ।
व्यतिहार–सं०पुं० गाली गलौज, मारपीट
व्यतीकार–(सं० पुं०) विनाश,
व्यतीत–सं०वि० बीता हुआ।
व्यतीपात–सं०पुं० कोई अमंगल सूचक उत्पात, अपमान, ज्योतिष के सत्ताईस योगों के अन्तर्गत सत्रहवाँ योग।
व्यत्यय–(सं०पुं०) व्यतिक्रम, विपर्यय।
व्यथक–(सं०वि०) पीड़ा देने वाला।
व्यथन–सं०नपुं०) व्यथा, पीड़ा।
व्यथा–(सं०स्त्री०) दुःख, पीड़ा, भय, क्लेश;
व्यथित–(सं० वि०) दुःखित, पीड़ित, जिसको किसी प्रकार का कष्ट हो।
व्यधिक्षेप–(सं० पुं०) निन्दा।
व्यन्तर–(सं०पुं०) जैनों के अनुसार एक प्रकार के पिशाच और यक्ष।
व्यपदेश–(सं०पुं०) कपट, छल, नाम, कुल, वंश, मुख्य, व्यवहार, निन्दा।
व्यपनीत–(सं०वि०) दूर किया हुआ।
व्यपेक्षा–(सं०स्त्री०) देखो अपेक्षा।
व्यपोह–(सं०पुं०) विनाश।
व्यभिचार–(सं० पुं०) भ्रष्ट आचरण, कुक्रिया, पुरुष का परस्त्री से अथवा स्त्री का पर पुरुष से अनुचित संबन्ध, छिनारा, न्याय में हेतुदोष। **व्यभिचारिता**–(सं० स्त्री०) व्यभिचारी का भाव या धर्म। **व्यभिचारिणी**–(सं० स्त्री०) परपुरुष गामिनी स्त्री। **व्यभिचारी**–(हिं०पुं०) व्यभिचार करने वाला, वह जो अपने मार्ग से भ्रष्ट हुआ हो, पर स्त्री गामी, साहित्य में चौंतीस प्रकार के शृङ्गार भावों में से एक।
व्यय–(सं०पुं०) खर्च, परित्याग, नाश, दान, ज्योतिष में लग्न से बारहवें स्थान का नाम। **व्ययकर**–(सं०वि०) व्यय करने वाला। **व्ययशील**–(सं०वि०) बहुत व्यय करने वाला,
व्यर्थ–(सं०वि०) निरर्थक, बिना आशय का, लाभशून्य, (क्रि०वि०) निष्फल; **व्यर्थता**–(सं० स्त्री०) विफलता, निष्फलता।
व्यलीक–(सं० नपुं०) काम के आवेग के कारण किया जाने वाला अपराध, विलक्षणता, दुःख, कष्ट, डांट डपट, (वि०) अद्भुत, कष्टकारक, अप्रिय, बिना काम का।
व्यवकलन–(सं०नपुं०) गणित में किसी संख्या में दूसरी संख्या को घटाने का कार्य। **व्यवकलित**–(सं० वि०) घटाया हुआ,
व्यवकीर्ण–(सं०वि०) मिश्रित, मिलाया हुआ।
व्यवच्छिन्न–(सं०वि०) विभक्त, विभाग करके अलगाया हुआ।
व्यवच्छेद–(सं०नपुं०) पृथक्त्व, अलगाव, विभाग, खण्ड, निवृत्ति, छुटकारा, विराम। **व्यवच्छेदक**–(सं०वि०) अलगाने वाला।
व्यवधान–(सं० नपुं०) विभाग, खण्ड, भेद, समाप्ति, आच्छादन, आड़ करने वाली वस्तु। **व्यवधायक**–(सं०वि०) छिपाने वाला, आड़ करने या छिपाने वाला।
व्यवसाय–(सं०पुं०) उपजीविका, कार्य, यत्न, उद्यम, व्यापार, अभिप्राय।
व्यवसायी–(हिं० पुं०) व्यवसाय करने वाला, किसी कार्य का अनुष्ठान करने वाला।
व्यवसित–(सं०वि०) उद्यत, तत्पर।
व्यवस्था–(सं० स्त्री०) प्रबन्ध, नियम, स्थिति, शास्त्र निरूपित विधि, पदार्थों को सजाकर यथास्थान रखना; **व्यवस्था देना**–शास्त्र के अनुसार पण्डितों का किसी विषय में विधान बतलाना। **व्यवस्थाता**–(सं० स्त्री०) शास्त्रीय व्यवस्था देने वाला।
व्यवस्थापक–(सं०वि०) नियम पूर्वक किसी कार्य को चलाने वाला, प्रबन्ध करने वाला; **व्यवस्था पत्र**–(सं०नपुं०) वह पत्र जिसमें किसी शास्त्रीय व्यवस्था का विधान लिखा हो।
व्यवस्थापन–(सं०नपुं०) निर्धारण, निरूपण। **व्यवस्थापिका सभा**–(सं० स्त्री०) नियम बनाने वाली सभा।
व्यवस्थापित–(सं०वि०) निर्धारित, नियमित।
व्यवस्थित–(सं० वि०) व्यवस्था या नियम के अनुसार। **व्यवस्थिति**–(सं०स्त्री०) व्यवस्था, प्रबन्ध; **व्यवहरण**–(सं०नपुं०) विवाद विषय को न्याय के लिये रखना।
व्यवहर्ता–(सं०पुं०) न्यायकर्ता,
व्यवहार–(सं०पुं०) विवाद, न्याय, स्थिति, क्रिया, कार्य, झगड़ा, व्यापार, लेन देन का काम। **व्यवहारक**–(सं० पुं०) वकील, मुख्तार। **व्यवहार विधि**–(सं० स्त्री०) वह शास्त्र जिसमें व्यवहार संबंधी बातों का उल्लेख हो।
व्यवहार शास्त्र–(सं०नपुं०) धर्म शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें यह बतलाया गया है, विवाद विषय में किस प्रकार विषय में किस प्रकार न्याय करना चाहिये तथा अपराधी को कितना दण्ड देना चाहिये।
व्यवहारस्पद–(सं०पुं०) अभियोग।
व्यवहारिक–(सं०पुं०) जो व्यवहार के लिये उपयुक्त हो।
व्यवहारी–(हिं०वि०) व्यवहार करनेवाला;
व्यवहृत–(सं०वि०) जो काम में लाया गया हो, आचरित, विचारित।
व्यवहृति–(सं०स्त्री०) व्यापार में होने वाला लाभ।
व्यष्टका–(सं०स्त्री०) कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा;
व्यष्टि–(सं० स्त्री०) समाज से अलग किया हुआ प्रत्येक व्यक्ति।

चमक, गर्भ धारण करने की क्रिया; **वीतिहोत्र**–(सं॰पुं॰) अग्नि, सूर्य, यज्ञ करने वाला।

वीथिका, वीथी–(सं॰स्त्री॰) मार्ग, सड़क, रविमार्ग, जिस मार्ग से सूर्य आकाश में चलता हैं, आकाश में नक्षत्रों का स्थान, दृश्यकाव्य अथवा रूपक का एक भेद जिसमें एक ही नायक होता है और जो एक ही अंक का होता है।

वीथ्यंग–(सं॰नपुं॰) रूपक में वीथी का एक अंग।

वीनाह–(सं॰ पुं॰) कुएं के ऊपर का ढपना।

वीप्सा–(हिं॰स्त्री॰) व्याप्ति, एक काव्यालङ्कार।

वीर–(सं॰वि॰) साहसी और बलवान्, शूर, सैनिक, चतुर, यज्ञ की अग्नि, उशीर, खस, कांजी, कुशा, अर्जुन वृक्ष, कनेर, आलूबोखारा; तान्त्रिकों के अनुसार साधना के तीन भावों में से एक, पति, पुत्र, भाई, विष्णु एक दैत्य का नाम, साहित्य में एक रस जिससे वीरता उत्साह आदि की पुष्टि होती है; **वीरकर्मा**–(सं॰पुं॰) वीरोचित कार्य करनेवाला; **वीरकाम**–(सं॰वि॰) पुत्र की कामना करने वाला; **वीरकुक्षि**–(सं॰स्त्री॰) वह स्त्री जो वीर पुत्र जनती है; **वीरकेशरी**–(सं॰ पुं॰) वीरों में अति श्रेष्ठ; **वीरगति**–(सं॰ स्त्री॰) वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने पर प्राप्त होती हैं; **वीरतरु**–(सं॰ पुं॰) अर्जुन वृक्ष; **वीरता**–(सं॰स्त्री॰) शूरता; **वीरधन्वा**–(सं॰ पुं॰) कन्दर्प, कामदेव; **वीरप्रसु**–(सं॰स्त्री॰) वह स्त्री जो वीर सन्तान उत्पन्न करती है; **वीरबाहु**–(सं॰ पुं॰) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; **वीरभद्र**–(सं॰स्त्री॰) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा, शिव के एक प्रसिद्ध गण, उशीर, खस; **वीरभुक्ति**–(सं॰स्त्री॰) वीरभूम का प्राचीन नाम; **वीरमर्दल**–(सं॰नपुं॰) प्राचीन काल का एक ढोल जो युद्ध में बजाया जाता था; **वीरमाता**–(सं॰स्त्री॰) वह स्त्री जो वीर पुत्र जनमाती है; **वीरमार्ग**–(सं॰पुं॰) स्वर्ग। वीर राघव, श्रीरामचन्द्र; **वीररेणु**–(सं॰ पुं॰) भीमसेन; **वीरललित**–(सं॰ नपुं॰) वीर तथा कोमल स्वभाव का; **वीरलोक**–(सं॰पुं॰) स्वर्ग; **वीरवर**–(सं॰ वि॰) अति वीर; **वीरवृक्ष**–(सं॰ पुं॰) भिलावाँ, अर्जुन वृक्ष; **वीरव्रत**–(सं॰ वि॰) दृढ़ संकल्प; **वीरशय्या**–(सं॰ स्त्री॰) रणभूमि; **वीरशैव**–(सं॰पुं॰) शिव के उपासकों का एक भेद; **वीरस्थान**–(सं॰ नपुं॰) स्वर्गलोक।

वीरा–(सं॰ स्त्री॰) सुरा, विदारीकन्द, वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों।

वीराचारी–(सं॰ पुं॰) एक प्रकार के वाममार्गी जो वीर भाव से उपासना करते हैं।

वीरान्तक–(सं॰ वि॰) वीरों का नाश करने वाला।

वीराष्टक–(सं॰ पुं॰) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

वीरासन–(सं॰ नपुं॰) साधकों का एक विशिष्ट प्रकार का आसन।

वीरेश, वीरेश्वर–(सं॰ पुं॰) महादेव, वीरेश्वर।

वीर्य–(सं॰ नपुं॰) शुक्र, बीज, रेत, इन्द्रिय, पराक्रम, बल, शक्ति; **वीर्यज**–(सं॰ पुं॰) पुत्र; **वीर्यतम**–(सं॰ वि॰) अति पराक्रमी; **वीर्यहारी**–(सं॰ पुं॰) एक यक्ष का नाम।

वीहार–(सं॰ पुं॰) देखो विहार।

वृंहण–(सं॰ वि॰) पुष्टि कारक, (स्त्री॰) मुनक्का।

वृंहित–(सं॰नपुं॰) हाथी का चिग्घाड़।

वृक–(सं॰पुं॰) भेड़िया, हुंड़ार, सियार, चोर, वज्र, अगस्त का वृक्ष; **वृकदीप्ति**–(सं॰ पुं॰) कृष्ण के एक पुत्र का नाम; **वृकधूर्त**–(सं॰पुं॰) शृंगाल, सियार; **वृकरथ**–(सं॰ पुं॰) कर्ण के एक भाई का नाम।

वृकोदर–(सं॰ पुं॰) भीमसेन।

वृक्क–(सं॰ पुं॰) गुरदा, आगामी महीना; **वृक्कक**–(सं॰ पुं॰) मूत्राशय; **वृक्का**–(सं॰ स्त्री॰) हृदय।

वृक्ष–(सं॰पुं॰) पेड़, वह पादप जिसका एक ही मोटा भारी तना हो तथा जो भूमि से प्रायः सीधा ऊपर जाता हो; **वृक्षक**–(सं॰ पुं॰) छोटा पेड़; **वृक्षचर**–(सं॰ पुं॰) बन्दर; **वृक्षतक्षक**, गिलहरी; **वृक्षनाथ**–(सं॰ पुं॰) वरगद का पेड़; **वृक्षराज**–(सं॰ पुं॰) पीपल का पेड़, परजाता; **वृक्षस्नेह**–(सं॰पुं॰) गोंद, लासा।

वृक्षायुर्वेद–(सं॰पुं॰) वृक्षों का चिकित्सा शास्त्र।

वृज–(हिं॰ पुं॰) देखो व्रज।

वृजन–(सं॰ नपुं॰) आकाश, संग्राम, पाप, बल, शक्ति (पुं॰) बाल।

वृजिन–(सं॰ नपुं॰) पाप, दुःख, कष्ट, (वि॰) कुटिल, टेढ़ा।

वृत–(सं॰ वि॰) नियुक्त, आच्छादित, स्वीकृत।

वृत्त–(सं॰ नपुं॰) चरित्र, वार्ता, स्तन के आगे का भाग, (पुं॰) समाचार, वृत्तान्त, कछुआ, अंजीर, प्रवृत्ति, एक वार्णिक छन्द जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या तथा गुरु लघु वर्णों के क्रम का नियम रहता है, गोल परिधि का क्षेत्र, मण्डल, (वि॰) बीता हुआ, दृढ़, पुष्ट, गोल, वर्तुल, मरा हुआ, ढँपा हुआ; **वृत्तकर्कटी**–(सं॰स्त्री॰) खरबूजा; **वृत्तखण्ड**–(सं॰पुं॰) वृत्त का कोई खण्ड, कमान; **वृत्तचेष्टा**–(सं॰ नपुं॰) स्वभाव, प्रकृति; **वृत्तपुष्पमल्लिका** (सं॰स्त्री॰) मोतिया; **वृत्तफल**–(सं॰ नपुं॰) कैथ; **वृत्तश्लाघी**–(सं॰वि॰) जिसको अपने काम का गर्व हो; **वृत्तसादी**–(सं॰ वि॰) कुलनाशक।

वृत्तस्थ–(सं॰ वि॰) सदाचारी।

वृत्तानुवर्ती–(सं॰ पुं॰) सदाचारी।

वृत्तान्त–(सं॰ पुं॰) समाचार, प्रस्ताव, किसी बीती हुई घटना का विवरण।

वृत्ति–(सं॰ स्त्री॰) जीविका, व्यवहार, चित्त की विशेष अवस्था, व्यापार, संहार करने का एक प्रकार का शास्त्र, कार्य, किसी दीन को या विद्यार्थी को उसकी सहायता के निमित्त दिया जाने वाला धन, अल्पाक्षरी सूत्रों की व्याख्या; **वृत्तिकार**–(सं॰पुं॰) वह जिसने किसी सूत्र ग्रंथ पर वृत्ति लिखी हो।

वृत्यनुप्रास–(सं॰ पुं॰) शब्दालंकार का एक भेद जिसमें एक अथवा अनेक व्यंजन वर्ण किसी न किसी रूप में बारंबार प्रयोग किये जाते हैं।

वृत्युपाय–(सं॰ पुं॰) अपनी शरीर अथवा कुटुम्ब के भरण पोषण का उपाय।

वृत्र–(सं॰ पुं॰) अन्धकार, शत्रु, एक दानव जिसको इन्द्र ने मारा था, इसी को मारने के लिये दधीचि ऋषि की हड्डियों का वज्र बनाया गया था, मेघ, बादल।

वृत्रघ्ना, वृत्रारि–(सं॰ पुं॰) इन्द्र।

वृत्रघ्नी–(सं॰ स्त्री॰) सरस्वती नदी।

वृत्रत्व–(सं॰ नपुं॰) शत्रुता।

वृत्रनाशन–(सं॰ पुं॰) इन्द्र।

वृत्रासुर–(सं॰ पुं॰) देखो वृत्र।

वृथा–(सं॰ अव्य॰) व्यर्थ, निरर्थक, निष्फल।

वृद्ध–(सं॰ वि॰) जीर्ण, जर्जर, बुड्ढा, विद्वान्, पण्डित; **वृद्धकाल**–(सं॰ पुं॰) बुढ़ापा; **वृद्धता**–(सं॰ स्त्री॰) बुढ़ापा; **वृद्धत्व**–(सं॰नपुं॰) बुढ़ापा; **वृद्धनाभि**–(सं॰ वि॰) तोंदीला; **वृद्धयुवती**–(सं॰ स्त्री॰) कुटनी, धाय; **वृद्धश्रवा**–(सं॰पुं॰) इन्द्र; **वृद्धसूचक**–(सं॰ पुं॰) कपास।

वृद्धा–(सं॰ स्त्री॰) बुड्ढी स्त्री, ५५ वर्ष के बाद की स्त्रियाँ वृद्धा कहलाती हैं।

वृद्धि–(सं॰ स्त्री॰) अष्ट वर्ग के अन्तर्गत एक औषधि, अधिकता, बढ़ती, सूद, समृद्धि, परिवार में सन्तान उत्पत्ति होने पर अशौच; **वृद्धि जीवक**–(सं॰ वि॰) सूदखोर।

वृद्धिमत्–(सं॰वि॰) अंकुरित, बढ़ाहुआ।

वृद्धियोग–(सं॰ पुं॰) फलित ज्योतिष का एक योग।

वृन्त–(सं॰ नपुं॰) वह पेड़ जिसमें पत्ते तथा फल फूल हों।

वृन्द–(सं॰ नपुं॰) समूह, (पुं॰) सौ करोड़ की संख्या।

वृन्दा–(सं॰ स्त्री॰) तुलसी, राधा का एक नाम।

वृन्दार–(सं॰ वि॰) सुन्दर, मनोहर।

वृन्दावन–(सं॰नपुं॰) श्रीकृष्ण की क्रीड़ा भूमि का नाम।

वृश्चिक–(सं॰ पुं॰) शूक कीट, बिच्छू, मेषादि बारह राशियों में से आठवीं राशि का नाम।

वृश्चिकाली–(सं॰ स्त्री॰) एक लता जिस पर महीन रोवें होते हैं, जिसके शरीर पर स्पर्श होने से बड़ी वेदना होती है।

वृष–(सं॰ पुं॰) बैल, साँड़, मेषादि राशियों में से दूसरी राशि, श्रीकृष्ण, काम शास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक, पति, गेहूँ, मोर का पंख; **वृषकेतन**–(सं॰पुं॰) वृषध्वज, शिव, गणेश; **वृषकेतु**–(सं॰ स्त्री॰) शिव, कर्ण के एक पुत्र का नाम।

वृषक्रतु–(सं॰ पुं॰) इन्द्र।

वृषण–(सं॰ पुं॰) अण्डकोष, इन्द्र, कर्ण, साँड़।

वृषदर्भ–(सं॰पुं॰) श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृषध्वज–(सं॰पुं॰) शिव, महादेव, गणेश।

वृषन्–(सं॰ पुं॰) इन्द्र, कर्ण, विष्णु।

वृषभ–(सं॰ पुं॰) बलीवर्द, बैल, साँड़, वीर, श्रेष्ठ, कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक, कान का छेद, विष्णु, साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद; **वृषभकेतु**–(सं॰ पुं॰) शिव; **विषभध्वज**–(सं॰पुं॰) शिव; महादेव; **वृषभ पल्लव**–(सं॰पुं॰) अडूसे का वृक्ष।

वृषभानु–(सं॰ पुं॰) सुरभानु के पुत्र जो श्रीराधिका के पिता थे।

वृषभेक्षण–(सं॰ पुं॰) विष्णु।

वृषल–(सं॰ पुं॰) शूद्र, घोड़ा, सम्राट् चन्द्रगुप्त का नाम, पाप कर्म करने वाला।

वृषली–(सं॰ स्त्री॰) अविवाहिता कन्या जो रजस्वला हो गई हो, वह स्त्री जो अपने पति को त्याग कर पर पुरुष से प्रेम करती हो, शूद्रा, पापिष्ठा, नीच की स्त्री, ऋतुमती स्त्री।

वृषवासी, वृषवाहन–(सं॰ पुं॰) शिव, महादेव।

वृषा–(सं॰ स्त्री॰) मूसाकानी नाम की लता, गाय।

वृषाणक–(सं॰ पुं॰) शिव के एक अनुचर का नाम।

वृषायण–(सं॰ पुं॰) गोरैया चिड़िया।

वृषोत्सर्ग–(सं॰ पुं॰) शास्त्रोक्त विधिपूर्वक साँड़ को दाग कर छोड़ना।

वृष्टि–(सं॰ स्त्री॰) मेघों से जल का टपकना, वर्षण, वर्षा, बहुत सी वस्तुओं का ऊपर से गिराया जाना, किसी कार्य का निरन्तर कुछ समय तक होना; **वृष्टिजीवन**–(सं॰ पुं॰) चातक पक्षी; **वृष्टिभू**–(सं॰ पुं॰) मण्डूक, मेढक; **वृष्टिमत्**–वृष्टियुक्त।

वृष्टिमानयन्त्र–(सं॰ नपुं॰) वह यन्त्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि

कितनी वृष्टि हुई।
वृष्णि–(सं० पुं०) मेघ, यादव, यदुवंश, श्रीकृष्ण, वायु, अग्नि, इन्द्र, गाय, (वि०) उग्र, प्रचण्ड; वृष्णिगर्भ–(सं०पु०) श्रीकृष्ण।
वृष्य–(सं०नपुं०) वे सब पदार्थ जिनके सेवन से वीर्य की वृद्धि होती है, चित्त को प्रसन्न करने वाली वस्तु।
वृष्या–(सं० स्त्री०) सतावर, केंवाच, बिदारी कन्द।
वृंक्ष–(सं०पुं०) ध्वनि, हाथी की चिग्घाड़
वृहच्छद–(सं० पुं०) अखरोट।
वृहत्–(सं०वि०) विपुल, बड़ा, महान् भारी
वृहती–(सं०स्त्री०) उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, वनभंटा, वाक्य, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में नव मात्रायें होती हैं, महती; वृहतीपति–(सं०पुं०) वृहस्पति।
वृहत्पाद–(सं०पु०) वरगद का वृक्ष; वृहत्फल–(सं०नपुं०) जामुन, कटहल; वृहद्भानु–(सं०पुं०) सूर्य, अग्नि, सत्यभामा के एक पुत्र का नाम; वृहद्रथ–(सं०पुं०) इन्द्र, यज्ञपात्र, मौर्य राज्यवंश के अन्तिम राजा का नाम।
वृहद्राव–(सं०पुं०) उलूक, उल्लू।
वृहन्नल–(सं०पु०) बाहु, बांह, अर्जुन।
वृहन्नला–(सं० स्त्री०) अर्जुन का उस समय का नाम जब वह बनवास के बाद अज्ञात वास के समय स्त्री वेश में रह कर राजा विराट् की कन्या को नाच गाना सिखाते थे।
वृहस्पति–(सं०पु०) अंगिरा के पुत्र जो देवताओं के गुरु हैं।
वे–(हिं०सर्व०) "वह" शब्द का बहुवचन,
वेक्षण–(सं० नपु०) अच्छी तरह से खोजना या ढूँढ़ना।
वेग–(सं०पुं०) प्रवाह, धारा, शुक्र, बहाव मूत्र विष्ठा आदि के निर्गम की प्रवृत्ति, त्वरा, शीघ्रता, वृद्धि, उद्यम, प्रवृत्ति, प्रसन्नता, आनन्द।
वेगग–(सं०वि०) वेग से चलने वाला। वेगम–(हिं०स्त्री०) धनिक की महिला
वेगवान्–(सं०वि०) वेग से चलने वाला।
वेगवाहिनी–(सं०स्त्री०) गंगा।
वेगसार–(सं०पुं०) वेग से चलने वाला घोड़ा।
वेगानिल–(सं०पुं०) प्रबल वायु।
वेगी–(हिं०वि०) वेगवान्, जिसमें बहुत वेग हो।
वेङ्कट–(सं० पुं०) द्रविड़ देश के एक पर्वत का नाम।
वेड़–(सं०नपुं०) वृत्ति की परिधि।
वेड़ा–(सं०स्त्री०) नौका, नाव; देखो बेड़ा
वेण–(सं० पुं०) गति, ज्ञान, चिन्ता, राजा पृथु के एक पुत्र का नाम।
वेणा–(सं०स्त्री०) उशीर, खस।
वेणि–(सं०स्त्री०) स्त्रियों के बालों की गुथी हुई चोटी, जन समूह, भीड़भाड़, वेणिमाधव–(सं० पुं०) प्रयाग की एक चतुर्भुज देवमूर्ति का नाम।
वेणी–सं० स्त्री०) बालों की गथी हुई चोटी, कवरी।
वेणीर–(सं०पु०) नीम का वृक्ष, रीठा।
वेणु–(सं०पुं०) वंश, बांस, बांस की बांसुरी; वेणुकार–सं०पुं० बंसी बनाने वाला; वेणुहोत्र–सं०पुं० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
वेतण्ड–सं०पुं० हस्ती, हाथी।
वेतन–सं०नपुं०) वह धन जो किसी को काम करने के लिये दिया जाता है, जीवन का आश्रय, महीना; वेतनभोगी–(सं०वि०) वेतन पर काम करने वाला।
वेतस्–(सं०पुं०) बेंत।
वेताल–(सं०पुं०) द्वारपाल, सन्तरी, वह शव जिसपर भूतों ने अधिकार कर लिया हो, शिव के एक गण, छप्पय का एक भेद।
वेत्ता–(हिं०वि०) ज्ञाता, जानने वाला।
वेत्र–(सं०पुं०) बेंत; वेत्रक–(सं०पुं०) सरपत; वेत्रकार–सं०पु०) बेंत के पात्र आदि बनाने वाला; वेत्रधर–(सं०पुं०) द्वारपाल, सन्तरी; वेत्रवती–(सं०स्त्री०) बेटवा नदी।
वेत्रासन–(सं०नपुं०) बेंत का बना हुआ आसन।
वेत्रासुर–(सं०पुं०) एक दानव का नाम जो इन्द्र से मारा गया था।
वेद–(सं०पुं०) विष्णु, वित्त, श्रुति, निगम, धर्म ज्ञापक शास्त्र, ब्रह्म प्रातपदिक वाक्य, यज्ञांग, अम्नाय, वेदत्रय कहने से ऋक, यजुस् और साम का बोध होता है, अथर्व की गणना भी वेद में है; कुछ लोगों का कहना है कि वेद में गान, गद्य तथा पद्य हैं इसीसे ये "त्रयी" कहलाते हैं
वेदक–(सं०त्रि०) परिचय कराने वाला; वेदकर्ता–(सं०पुं०) विष्णु शिव, सूर्य; वेदगर्भा–(सं०पुं०) सरस्वती नदी; वेदगुह्य–(सं०पुं०) विष्णु; वेदघोष–(सं०नपु०) वेदध्वनि; वेदचक्षु–(सं०नपुं०) ज्ञाननक्षु; वेद जननी–(सं०स्त्री०) सावित्री; वेदज्ञ–(सं०त्रि०) ब्रह्मज्ञानी; वेदतत्व–(सं०नपुं०) वेद का तत्व।
वेदता–(सं०त्रि०) स्तुति कारक।
वेदत्व–सं०नपुं०) वेद का भाव या धर्म;
वेददर्शी–(सं०वि०) वेदों को जानने वाला
वेद दान–(सं०नपु०) वेद विषयक उपदेश;
वेद धर्म–(सं०पुं०) वेदोक्त धर्म।
वेदध्वनि–(सं०पुं०) देखो वेदघोष।
वेदना–(सं०स्त्री०) व्यथा, पीड़ा।
वेद निन्दक–(सं०पुं०) वेदों की निन्दा करने वाला, नास्तिक।
वेदनीय–(सं०वि०) ज्ञातव्य, जानने योग्य,
वेदपाठ–(सं०पुं०) वेदाध्ययन।
वेदपारग–(सं०पुं०) वेदों का ज्ञाता।
वेद पुण्य–(सं०नपुं०) वेद पढ़ने से होने वाला पुण्य।
वेद पुरुष–(सं०पुं०) वेद रूप पुरुष।
वेद फल–(सं०नपुं०) वह फल जो यज्ञ याग आदि करने से प्राप्त होता है।
वेदबाहु–सं०पुं०) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम, श्री कृष्ण।
वेदमन्त्र–सं०पुं० वेदों से आए हुए मन्त्र;
वेदमाता–(सं०स्त्री०, गायत्री, सावित्री, दुर्गा, सरस्वती।
वेदमूर्ति–सं०पुं०) सूर्य नारायण।
वेदवती–(सं०स्त्री०) कुशध्वज राजा की कन्या।
वेदरहस्य–(सं०नपुं०) उपनिषद्।
वेदवाक्य–(सं०पु०) वेद का कोई वाक्य, वह बात जो सब तरह से प्रमाणित हो।
वेदवाहन–(सं०पुं०) सूर्य देव।
वेदविद्–सं०पु०) देखो वेदज्ञ।
वेदव्यास–(सं०पुं०) कृष्णद्वैपायन नामक मुनि।
वेदश्रुत–(सं०पुं०) वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम।
वेदसम्मत–(सं०वि०) वेदोक्त मत के अनुसार।
वेद सम्मित–(सं०पु०) विष्णु।
वेदस्तुति–सं०स्त्री०) ब्रह्म स्तुति।
वेदहीन–(सं० वि०) जिसको वेद मे अधिकार नहीं है।
वेदाग्रणी–(सं०स्त्री०) सरस्वती।
वेदाङ्ग–(सं०पुं०) वेद के अंग या शास्त्र जो ६ हैं यथा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, विरक्त, ज्योतिष और छन्द, बारह आदित्यों में से एक।
वेदात्मा–(सं०पुं०) विष्णु, सूर्य नारायण।
वेदाधिप–(सं०पु०) चारों वेदों के अधिपति ग्रह, यथा–ऋग्वेद के वृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मगल तथा अथर्व वेद के अधिपति बुध हैं।
वेदाध्यक्ष–(सं० पुं०) श्री कृष्ण।
वेदान्त–(सं० नपुं०) वेद का अवशिष्ट अंश अर्थात् उपनिषद् और आरण्यक आदि जिनमें आत्मा, परमात्मा संसार आदि का निरूपण है, ब्रह्मविद्या, अध्यात्मविद्या, षट्दर्शनों में से एक दर्शन जिसमें ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता स्वीकार की गई है, उत्तर मीमांसा, अद्वैतवाद।
वेदान्तसूत्र–(सं०पुं०) महर्षि वादरायण के बनाये हुए सूत्र जो वेदान्त शास्त्र के मूल माने जाते हैं।
वेदान्ती–(सं०पु०) वेदान्त शास्त्र को अच्छी तरह जानने वाला, ब्रह्मवादी
वेदार–(सं०पुं०) कृकलास, गिरगिट।
वेदि–(सं०स्त्री०) यज्ञ कार्य के लिये स्वच्छ करके तैयार की हुई भूमि, नामांकित अंगूठी।
वेदिजा–(सं०स्त्री०) द्रौपदी।
वेदित–(सं०वि०) ज्ञापित, जाना हुआ।
वेदितव्य–(सं०वि०) ज्ञातव्य, जानने योग्य।
वेदी–(सं०स्त्री०) किसी शुभ कार्य के लिये तैयार की हुई भूमि।
वेदीश–(सं०पुं०) ब्रह्मा।
वेदेश, वेदेश्वर–(सं०पुं०) वेदधर, ब्रह्मा।
वेदोक्त वेदोदित–(सं० वि०) वेदे में कहा हुआ।
वेद्य–(सं०वि०) वेदितव्य, जानने योग्य।
वेध–सं०पुं०) छेदने की क्रिया, विरुद्ध करना, वेधना, यन्त्रादि की सहायता से ग्रह, नक्षत्र तथा तारों को देखना, ग्रहों को किसी ऐसे स्थान में पहुँचाना जहां से उनका किसी दूसरे ग्रह से सामना होता हो।
वेधक–(सं०वि०) वेध करने वाला।
वेधनी–(सं०स्त्री०) अंकुश।
वेधमुख्या–(सं०स्त्री०) कस्तूरी।
वेधशाला–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर नक्षत्रों और तारों आदि को देखने और उनकी दूरी गति आदि जानने के यन्त्र हों।
वेधा–(हिं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य।
वेधालय–(सं० पुं०) देखो वेधशाला।
वेधित–(सं०वि०) छिद्रित, छेदा हुआ।
वेधी–(हिं०वि०) वेधने वाला, छेदने वाला।
वेध्य–(सं०वि०) वेधनीय, छेदने योग्य।
वेन्य–(सं०वि०) कमनीय, सुन्दर।
वेपथु–(सं०पुं०) कम्प, कँपकपी।
वेपन–(सं०नपुं०) कम्पन, कांपना; वेपमान–(सं०वि०) कम्पमान, कांपता हुआ।
वेर–(सं०पुं०) मिश्रित मिला हुआ, नीच।
वेल–(सं०नपुं०) उपवन।
वेलदार–(हिं०पुं०) भूमि खोदने वाला।
वेला–(सं०स्त्री०) समय, क्षण, काल, अवसर, मर्यादा, समुद्र का किनारा, समुद्र की लहर, रोम, दिन रात का चौबीसवां भाग, वाणी, भोजन।
वेलावलि–(सं० पुं०) एक रागिणी का नाम।
वेल्लज–(सं०नपुं०) मिर्च, मरिच।
वेल्लि–(सं०स्त्री०) लता, बेल; वेल्लित–(सं०वि०) कँपा हुआ, लूटा हुआ।
वेल्ली–(सं०स्त्री०) वेल, लता।
वेश–(सं०पुं०) वस्त्र आभूषण आदि से अपने को सजाना, वस्त्र आदि पहरने का ढंग, पहरने के वस्त्र, वस्त्रगृह, वेश्या का घर, तंबू; वेश धारण करना–भेस बनाना; वेशकुल–(सं०नपुं०) वेश्या, रंडी; वेशधर–(सं०पुं०) वह जो भेष बदले हुए हो।
वेषधारी–(सं०त्रि०) वेश (भेस) धारण करने वाला।
वेशभाव–(सं०पुं०) वेशसज्जा की परिपाटी
वेषभूषा–(सं०स्त्री०) पहरावा।
वेषयुवती, वेषवनिता–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वेषर–(सं०पु०) खच्चर, वेषवधू।
वेशवास–(सं०पुं०) रंडी का घर।
वेशस्त्री–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वेशी–(हिं०वि०) वेश धारण करने वाला
वेश्म–सं०नपुं०) गृह, घर।
वेश्मवास–(सं०पुं०) रहने का घर।
वेश्मस्त्री–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।

शक्रजाल–(हिं० पुं०) इन्द्रजाल । शक्रजिति–(सं० पुं०) मेघनाद । शक्रतरु–(सं०पुं०)भाँग का पौधा । शक्रदिश–(सं०स्त्री०) पूर्व दिशा । शक्रद्रुम–(सं० पुं०) बकुल, मौलसिरी का पेड़ । शक्रधनु–(सं०पुं०) इन्द्र धनुष । शक्रनन्दन–(सं०पुं०) अर्जुन । शक्रनेमी–(सं०पुं०)देवदार का वृक्ष । शक्रपादप–(सं० पुं०) शक्रनेमी । शक्रपुष्पिका–(सं०स्त्री०) नागदौना । शक्रपुर–(सं० नपुं०) अमरावती । शक्रप्रस्थ–(सं० नपुं०) इन्द्रप्रस्थ जिसको पाण्डवों ने खाण्डव वन जलाकर बसाया था । शक्रबीज–(सं०नपुं०) इन्द्रजव । शक्रभवन–(सं०नपुं०)स्वर्ग।शक्रमाता–(सं० स्त्री०) दुर्गा । शक्रवाहन–(सं० पुं०) मेघ, बादल । शक्रबाणासन–(सं० नपुं०) इन्द्रधनुष । शक्रशरासन–(सं० नपुं०) इन्द्रधनुष । शक्रशाला–(सं० स्त्री०) यज्ञ भूमि में वह स्थान जहां इन्द्र के उद्देश्य से बलि दी जाती है । शक्रसारथि–(सं०पुं०) मातलि । शक्रसुत–(सं०पुं०)इन्द्र का पुत्र बालि । शक्राख्य–(सं०पुं०) पेचक, उल्लू ।

शक्राग्नी–(सं०पुं०) विशाखा नक्षत्र ।

शक्राणी–(सं०स्त्री०)इन्द्रकी पत्नी, शची । शक्रात्मज–(सं०पुं०)अर्जुन । शक्रायुध–(सं०नपुं०) इन्द्रधनुष । शक्रारि–(सं० पुं०) इन्द्र का शत्रु । शक्राशन–(सं० पुं०) विजया, भाँग । शक्रासन–(सं० नपुं०) इन्द्र का आसन ।

शक्रेन्द्र–(सं०पुं०) इन्द्रगोप, बीरबहूटी ।

शल्क–(हिं०स्त्री०) आकृति ।

शक्करी–(सं० स्त्री०) अंगुलि, मेखला, छन्द का एक भेद ।

शगुन–(हिं०पुं०) देखो शकुन, भेट, एक प्रकार की रीत, जो विवाह की बातचीत पक्की होने पर की जाती है, टीका, तिलक ।

शगुनियां–(हिं० पुं०) शुभाशुभ शगुनों का विचार करने वाला व्यक्ति ।

शगन, शगुनियां–(हिं०पुं०) देखो शगुन, शगुनियां ।

शंक–(सं० पुं०) आशंका, भय, डर; शंकनीय–(सं०वि०) शंका करनेयोग्य ।

शंकर–(सं०पुं०) शिव, महादेव, शंकराचार्य, कबूतर, भीमसेनी कपूर, एक छन्द का नाम, एक सम्पूर्ण जाति का राग, (वि०) शुभ, कल्याण करनेवाला, लाभदायक; शंकरजटा–(सं० स्त्री०) जटाधारी; शंकरताल–(सं० पुं०) संगीत में एक प्रकार का ताल जिसमें ग्यारह मात्रायें होती हैं; शंकरप्रिय–(सं० पुं०) तीतर पक्षी, धतूरा; शंकरवाणी–(सं० स्त्री०) ब्रह्मवाक्य; शंकरशुक्र–(सं० नपुं०) पारद, पारा; शंकरशैल–(सं० पुं०) कैलास ।

शंकरा–(सं० स्त्री०) शिव की भार्या, भवानी, एक राग का नाम ।

शङ्कराचारी–(सं० पुं०) शंकराचार्य के मत का अनुयायी ।

शङ्कराचार्य–भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध अद्वैतवाद के प्रवर्तक ।

शङ्कराभरण–(सं० पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक प्रकार का राग ।

शङ्करालय–(सं० पुं०) कैलाश ।

शङ्करावास–(सं० पुं०) कैलास, भीमसेनी कपूर ।

शङ्करी–(सं०स्त्री०) शिव की पत्नी, पार्वती, एक रागिणी का नाम ।

शङ्करीय–(सं०वि०) शंकर सम्बन्धी ।

शङ्कर्षण–(सं० पुं०) विष्णु ।

शङ्का–(सं०स्त्री०) मन में होने वाला अनिष्ट का भय, डर, संशय, आशंका, साहित्य में वह संचारी भाव जो अपने किये हुए किसी अनुचित व्यवहार पर अथवा किसी प्रकार से होनेवाली इष्ट हानि पर उत्पन्न होता है; शङ्कामय–(सं०वि०) शंकायुक्त; शङ्कित–(सं०वि०)अनिश्चित, सन्देहयुक्त, डरा हुआ; शङ्कितव्य–(सं० वि०) शंका के योग्य ।

शङ्कु–(सं० पुं०) कोई नुकीली वस्तु, बरछा, भाला, खूंटा, मेख, कील, शिव, कामदेव, राक्षस, विष, दश लाख की संख्या, प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा, पाप, उग्रसेन के एक पुत्र का नाम, पत्ते की नस, सखी नामक गन्धद्रव्य; शङ्कुकर्ण–(सं०पुं०) गर्दभ, गदहा; शङ्कुकर्णी–(सं०पुं०) शिव, महादेव; शङ्कुजिह्व–(सं० स्त्री०) ज्योतिष में एक गणित विधि; शङ्कुपुच्छ–(सं० वि०) जिसकी पूँछ में डंक न हो; शङ्कुमुखी–(सं० स्त्री०) जोंक ।

शङ्कुला–(सं० स्त्री०) सुपारी काटने का सरौता ।

शङ्ख–(सं० पुं०, नपुं०) एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है, कपाल की हड्डी, कुबेर की एक निधि; शङ्खकन्द–(सं०पुं०) शंखालु; शङ्खचरी–(सं० स्त्री०) मस्तक पर चन्दन का तिलक;शङ्खचूड–(सं०पुं०) एक दैत्य का नाम; शङ्खज–(सं०पुं०) मोती; शङ्खजीरा–(सं०पुं०) संगराहत पत्थर; शङ्खधर–(सं०पुं०) विष्णु; शङ्खधरा–(सं०स्त्री०) हुरहुर का साग; शङ्खधवला–(सं० स्त्री०) सफेद जूही, (वि०) शंख के समान सफेद; शङ्खनारी–(सं०स्त्री०) एक वृत्त का नाम; शङ्खपलीता–एक प्रकार का रेशेदार खनिज पदार्थ; शङ्खपाणि–(सं० पुं०) विष्णु; शङ्खपाषाण–(सं०पुं०) संखिया; शङ्खपुष्पिका–(सं० स्त्री०) सफेद जूही; शङ्खपुष्पी–(सं० स्त्री०) शंखाहुली; शङ्खप्रणाद–(सं०नपुं०) शंख का शब्द; शङ्खप्रवर–(सं० त्रि०) बड़ा शंख; शङ्खप्रस्थ–(सं० पुं०) चन्द्रमा में का कलंक; शङ्खभस्म–(सं० पुं०) एक प्रकार का चूना; शङ्खभृत–(सं० पुं०) शंख धारण करने वाले विष्णु; शङ्खमालिनी–(सं० स्त्री०) शंखपुष्पी; शङ्खमुख–(सं०पुं०) घड़ियाल; शङ्खमुद्रा–(सं० स्त्री०) अंगुलियों को मोड़कर शंख की आकृत बनाने की मुद्रा; शङ्खमूल–(सं० नपुं०) शंख का अग्र भाग; शङ्खयूथिका–(सं० स्त्री०) सफेद जूही; शङ्खलिखित–(सं०वि०) निर्दोष; शङ्खवात–(सं० पुं०) सिर की पीड़ा ।

शङ्खालु–(सं० पुं०) देखो शंखारु ।

शङ्खाखलुक–(सं०पुं०)सफेद शकरकंद ।

शङ्खास्थि–(सं० स्त्री०) सिर की हड्डी ।

शङ्खाहुलि–(सं० स्त्री०) शंखपुष्पी; शङ्खाहोली–(हिं० स्त्री०) शंखपुष्पी ।

शङ्खिनी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की वनौषधि, एक देवी का नाम, सीप, चार प्रकार की स्त्री जाति में से एक

शचि, शची–(सं०स्त्री०) इन्द्र की पत्नी; शचीपति–(सं० पुं०) इन्द्र ।

शचीश–(सं० पुं०) इन्द्र ।

शठ–(सं० पुं०) धतूरे का पेड़, (वि०) धूर्त, दुष्ट, वंचक, बदमाश, मूर्ख, पाँच प्रकार के नायकों में से एक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर हो; शठता–(सं० स्त्री०) धूर्तता; शठत्व–(सं० नपुं०) शठता ।

शठी–(सं० स्त्री०) कपूर कचरी ।

शठोदर–(सं० वि०) धूर्त ।

शण–(सं० नपुं०) सन नाम का पौधा ।

शणई–(हिं० स्त्री०) देखो सनई ।

शणालुक–(सं०पुं०)अमलताश का वृक्ष ।

शण्ड–(सं०पुं०) नपूंसक, हिजड़ा, पागल, साँड़; शण्डता–(सं० स्त्री०) हिजड़ापन

शण्डा–(सं० पुं०) फटा हुआ दूध ।

शत–(सं० वि०) दस का दस गुना, सौ, (नपुं०) सौ की संख्या; शतक–(सं०पुं०) एक ही प्रकार की सौ वस्तुओं का संग्रह, सौ वर्षों का समूह, शताब्दी; शतकिरण–(सं० पुं०) एक प्रकार की समाधि; शतकुन्द–(सं० पुं०) सफेद कनेर; शतकुसुमा–(सं०स्त्री०) शतपुष्पा, सौंफ; शतकोटि–(सं० पुं०) सौ करोड़ की संख्या; शतक्रतु–(सं० पुं०) इन्द्र; शतखण्ड–(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना ।

शतगु–(सं० पुं०) सौ गौवों का स्वामी ।

शतगुण–(सं० वि०) सौ गुना ।

शतघ्नी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का प्राचीन शास्त्र ।

शतचण्डी–(सं० स्त्री०) सौ बार चण्डी पाठ ।

शतच्छद–(सं० पुं०) सौ पंखड़ियों का कमल; शतजटा–(सं०स्त्री०) शतमूली, सतावर; शतजिह्व–(सं० पुं०) शिव, महादेव; शततारा–(सं० स्त्री०) शतभिषा नक्षत्र; शतदल–(सं० नपुं०) पद्म, कमल; शतदला–(सं० स्त्री०) सेवती, गुलाब ।

शतदा–(सं० वि०) सौ का दान करने वाला ।

शतद्रु–(सं० स्त्री०) सतलज नदी का प्रचीन नाम ।

शतधन्वा–(सं०पुं०) एक योद्धा जिसको कृष्ण ने मारा था ।

शतधा–(सं० अव्य०) सौ प्रकार से ।

शतधाम–(सं०पुं०) विष्णु ।

शतधृति–(सं०पुं०) इन्द्र, ब्रह्मा, स्वर्ग ।

शतधौत–(सं० वि०) सौ बार धोया हुआ ।

शतपत्र–(सं०नपुं०) कमल, पद्म, मयूर, मोर, कठफोड़वा पक्षी, (वि०) सौ पत्तों वाला, सौ पंख वाला; शतपत्र–(सं० स्त्री०) दूर्वा, दूब; शतपत्री–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का गुलाब ।

शतपथ–(सं० वि०) सैकड़ों मार्ग या शाखा वाला ।

शतपथब्राह्मण–(सं० पुं०) यजुर्वेद का एक ब्राह्मण जिसमें कर्मकाण्ड का विस्तृत वर्णन है; शतपथीय–(सं०वि०) शतपथ ब्राह्मण सम्बन्धी ।

शतपद–(सं० नपुं०) कनखजूरा, गोजर, च्यूँटी; शतपदी–(सं० स्त्री०) कनखजूरा, गोजर, सतावर; शतपाल–(सं० पुं०) वह जो सौ मनुष्यों का पालन करता हो; शतपुत्री–(सं० स्त्री०) सतपुतिया, तरोई ।

शतपुष्प–(सं० पुं०) साठीधान; शतपुष्पा–(सं० स्त्री०) सोवे का साग ।

शतपोर–(सं० पुं०) पौढ़ा, गन्ना ।

शतबलि–(सं० पुं०) रामायण के अनुसार एक बन्दर का नाम; शतबाहु–(सं० पुं०) एक असुर का नाम, (वि०) जिसको सौ भुजा हों; शतबुद्धि–(सं० वि०) बड़ा बुद्धिमान् ।

शतभिषा–(सं० स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से चौबीसवां नक्षत्र ।

शतभीरु–(सं०स्त्री०) चमेली का पौधा; शतमुख–(सं० पुं०) शतक्रतु, इन्द्र । शतमन्यु–(सं० पुं०) उलूक, उल्लू; शतमयूख–(सं० पुं०) चन्द्रमा; शतमल्ल–(सं० पुं०) संखिया नामक विष; शतमुख–(सं० पुं०) एक असुर का नाम; शतमुखी–(सं० स्त्री०) दुर्गा; शतमूला–(सं० स्त्री०) बड़ी सतावर ।

शतरुद्र–(सं० पुं०) रुद्र का एक रूप जिसके सौ मुख माने जाते हैं ।

शतरूपा–(सं० स्त्री०) ब्रह्मा की मानसी कन्या और पत्नी, इन्हीं के गर्भ से स्वयम्भुव मनु की उत्पत्ति हुई थी ।

शतलक्ष–(सं० नपुं०) सौ लाख, करोड़ ।

शतवार्षिक–(सं०वि०) प्रति सौ वर्ष पर होने वाला ।

शतवाही–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पिता के घर से ससुराल में बहुत सा धन लाई हो ।

शतवीर–(सं० पुं०) विष्णु का एक नाम ।

शतवीर्या–(सं० स्त्री०) शतावर, सफेद मूसली।
शतशः–(सं० अव्य०) सौ बार।
शतशीर्ष–(सं०पु०) विष्णु का एक नाम।
शत संवत्सर–(सं० पुं०) सौ वर्ष।
शतसहस्र–(सं० नपुं०) एक लाख; शतसहस्रांशु–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
शतांश–(सं० पु०) सवाँ भाग।
शताक्षी–(सं० स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, रात्रि, सौंफ।
शतानन–(सं० पु०) विल्व, बेल।
शतानन्द–(सं० पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, देवकीनन्दन।
शतानीक–(सं० पुं०) वृद्ध पुरुष, एक मुनि जो व्यास के शिष्य थे, जनमेजय के पुत्र का नाम, नकुल का एक पुत्र जो द्रौपदी से उत्पन्न हुआ था, एक असुर का नाम, सौ सिपाहियों का नायक।
शताब्दी–(सं०स्त्री०) सौ वर्ष का समय
शतायु–(सं०पुं०) वह जिसकी आयुष्य सौ वर्ष की हो।
शतायुध–(सं०वि०) जो सौ अस्त्र धारण करता हो।
शतायुधा–(सं० स्त्री०) एक किन्नरी का नाम।
शतार–(सं०नपुं०) वज्र, सुदर्शन चक्र।
शतार्घ–(सं०वि०) बहुमूल्य।
शतार्ध–(सं०पुं०) पचास।
शतावधान–(सं०पुं०) वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातों को सुनकर उनको क्रम से याद रखता हो, वह जो एक साथ अनेक काम करता हो; शतावधानी–(सं० पुं०) शतावधान का काम करनेवाला।
शतावर–(सं० पुं०) सफेद मूसली।
शतावरी–(सं०स्त्री०) इन्द्र की भार्या।
शतावर्त–(सं०पुं०) विष्णु, महादेव।
शतश्रि–(सं०पुं०) वज्र।
शताष्टक–(सं०नपुं०) एक सौ आठ।
शताह्वा–(सं०स्त्री०) सतावार।
शती–(हिं० वि०) सौ की संख्या का।
शतेश–(सं०पुं०) सौ गांव का अधिपति।
शतोदर–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
शत्रि–(सं०पुं०) हस्ती, हाथी।
शत्रु–(सं० पुं०) रिपु, बैरी, अरि, द्वेषी, शत्रुकण्टका–(सं०स्त्री०)सुपारी; शत्रुघ–(सं०वि०) शत्रु का नाश करने वाला; शत्रुघाती–(सं०पुं०) शत्रुघ्न के एक पुत्र का नाम;शत्रुघ्न–(सं०पु०) रामचन्द्र के एक भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे; शत्रुजित्–(सं० पुं०) शत्रु को जीतने वाला; शत्रुता–(सं०स्त्री०) वैरभाव; शत्रुत्व–(सं०नपुं०) शत्रुता; शत्रुताई–(हिं०स्त्री०) शत्रुता; शत्रुनिबर्हण–(सं० नपुं०) शत्रु का नाश; शत्रुनिलय–(सं० पुं०) शत्रु के रहने का स्थान; –शत्रुन्तप–(सं० वि०) शत्रु को जीतने वाला; शत्रुन्दम–(सं० पुं०) शिव, महादेव; (वि०) शत्रु को दमन करने वाला; शत्रुदमन–(सं०नपु०) शत्रुघ्न का एक नाम; शत्रुबाधक–(सं०वि० शत्रु को पीड़ा देने वाला; शत्रुमर्दन–(सं०पुं०) शत्रुओं का नाश करने वाला, शत्रुघ्न; शत्रुवत्–(सं० अव्य०) शत्रु के समान; शत्रुबल–(सं० नपु०) शत्रु की सेना; शत्रु विनाशन–(सं०पु०) शिव, महादेव; शत्रुसाल–(हिं० वि०) शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करने वाला; शत्रुहन्ता–(सं० वि०) शत्रु का नाश करने वाला।
शत्वरी–(सं० स्त्री०) रात्रि, रात।
शदक–(सं० पु०) वह अन्न जिसकी भूसी न निकाली गई हो।
शनु–(हिं० अव्य०) थोड़ा थोड़ा,धीरे धीरे।
शनि–(सं०पुं०) शनैश्चर ग्रह, यह सूर्य से अधिक दूरी पर है, सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इसको उनतीस वर्ष एक सौ सड़सठ दिन लगते है इसका व्यास प्रायः सत्तर हजार मील है यह पृथ्वी से सात गुना बड़ा तथा नब्बे गुना भारी है, दुरबीन मे देखने पर यह ज्योतिर्मय वलय से घिरा हुआ देख पड़ता है।
शनिप्रदोष–(सं०पुं०) शनिवार के दिन होने वाला प्रदोष व्रत; शनि प्रिय–(सं०नपुं०)नीलमणि, नीलम;शनिरुह–(सं०पुं०) भैंसा; शनिवार–(सं०पुं०) वह बार जो शुक्रवार के बाद तथा रविवार के पहले पड़ता है।
शनैः–(सं०अव्य०) धीरे धीरे।
शनैश्चर–(सं० पुं०) शनि ग्रह।
शन्तनु–(सं०वि०) सुन्दर शरीर वाला, (पुं०) भीष्म के पिता का नाम।
शन्ताति–(सं०वि०) सुख करने वाला।
शन्तातीय–(सं०वि०) स्तोत्र संबंधी।
शन्ध–(सं०पुं०) षण्ड, हिजड़ा।
शपथ–(सं०पुं०) सौगन्ध।
शपथपत्र–(सं० नपुं०) सौगन्ध खाकर लिखित पत्र।
शप्त–(सं०पु०) वह मनुष्य जिसको शाप दिया गया हो; शप्ता–(हिं०वि०) शाप देने वाला।
शफ–(सं०नपुं०) पशु का खुर, वृक्ष की जड़।
शफरुक–(सं०पुं०) सन्दूक, पेटी।
शबरु–(सं०वि०) चितकबरा।
शबलक–(सं० वि०) रंगाबिरंगा, चितकबरा।
शबलता–(सं० स्त्री०) चितकबरापन।
शबला–(सं० स्त्री०) चितकबरी गाय, कामधेनु।
शबलित–(सं०वि०) चितकबरा।
शब्द–(सं० पुं०) निःस्वन, ध्वनि, नाद, वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव का बोध होता है;शब्दकार–(सं० वि०) ध्वनिकारक; शब्दकारी–(सं०वि०) शब्द करने वाला; शब्दग–(सं०वि०) वायु; शब्दग्रह–(सं० पुं०) कर्ण, कान; शब्दचातुर्य–(सं० पुं०) बोल चाल की प्रवीणता; शब्दचित्र–(सं०पुं०) अनुप्रास नामक अलंकार; शब्दत्व–(सं०नपुं०) शब्द का धर्म या भाव; शब्दनिर्णय–(सं० पु० शब्द निर्धारण; शब्दनृत्य–(सं० पुं०) एक प्रकार का नाच; शब्दपति–(सं०पुं०) नाम मात्र का नेता; शब्दप्रभेद–शब्द की विभिन्नता, शब्दप्रमाण–वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के आधार पर हो; शब्दप्रास–(सं०पु० शब्द के अर्थों का अनुसन्धान; शब्दविरोध–(सं०पुं०) वह विरोध जो केवल शब्दों में जान पड़ता हो; शब्दविशेषण–(सं० नपुं०) विशेषण शब्द; शब्द बोध–(सं०पुं०) वह ज्ञान जो मौखिक साक्षी से प्राप्त हो; शब्दब्रह्म–(सं०नपु०) शब्दात्मक ब्रह्म, ॐकार, वेद, श्रुति; शब्दभेदी–(सं०पुं०) शब्दवेधी बाण; शब्दमय–(सं०वि०) शब्द युक्त; शब्दमहेश्वर–(सं० पुं०) महादेव; शब्दमात्र–(सं० नपुं०) केवल शब्द; शब्दमाल–(सं० पुं०) पोला बांस; शब्दमाला–(सं०स्त्री०) शब्दसमूह; शब्दयोनि–(सं०स्त्री०) शब्द की उत्पत्ति; शब्दरहित (सं० वि०) शब्द से रहित; शब्दवत्–(सं० अव्य०) शब्द के समान; शब्दवारिधि–(सं० पुं०) शब्दों का समूह; शब्दविद्या–(सं० स्त्री०) व्याकरण; शब्दविज्ञान–(सं०नपु०) वह वैज्ञानिक प्रक्रिया जिसके द्वारा शब्द विषयक तत्वज्ञान जाना जाता है। शब्दविरोध–(सं० पुं०) विरुद्ध शब्द का व्यवहार। शब्दवेधी–(सं० पुं०) वह मनुष्य जो आँखों से बिना देखे हुए केवल शब्दसे दिशा का ज्ञान करके किसी व्यक्ति या वस्तु को बाणसे मारता है, अर्जुन, दशरथ; शब्द शक्ति–शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है; शब्दशासन–(सं०नपुं०) व्याकरण के नियम; शब्दशास्त्र–(सं० नपुं०) व्याकरण; शब्दश्लेष–(सं०पुं०) वह अलंकार जिसमें एक शब्द द्वारा शेषोक्ति प्रकाशित की जाती है; शब्दसम्भव–(सं० पु०) वायु। शब्दसाधन–(सं० पुं०) व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदि का विवेचन होता है; शब्दसिद्धि–(सं० स्त्री०) शब्द का पूर्ण व्यवहार; शब्दसौन्दर्य–(सं०पुं०) शब्दों के उच्चारण की सुगमता। शब्द सौष्ठव–(सं० पु०) लेखमें शब्दों की कोमलता। शब्दस्मृति–(सं० स्त्री०) शब्द का स्मरण। शब्दहीन–(सं०वि०) शब्द रहित। शब्दाकर–(सं०पुं०)शब्दों का उत्पत्ति स्थान। शब्दाक्षर–(सं० नपुं०) शब्द ज्ञापक अक्षर, ॐ। शब्दाडम्बर–(सं०पु०) बड़े बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे भाव कम निकलें, शब्दजाल। शब्दातिग–(सं०पुं०) विष्णु। शब्दातीत–(सं०पुं०) वह जो शब्द से परे हो, ईश्वर। शब्दाधिष्ठान–(सं० नपुं०) शब्द का आश्रय स्थान, कान। शब्दाध्याहार–(सं०नपुं०) वाक्य को पूर्ण करने के लिये अपने मनका शब्द जोड़ना; शब्दानुकरण–(सं० नपुं०) शब्द का अनुकरण; शब्दानुशासन–(सं० नपुं०) व्याकरण; –शब्दायमान–(सं० वि०) शब्द करता हुआ; शब्दार्थ–(सं०पुं०) किसी शब्द का अर्थ; शब्दालंकार–(सं० पुं०) साहित्य में वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से भाषा में लालित्य उत्पन्न किया जाता है; शब्दित–(सं० वि०) ध्वनित, शब्द किया हुआ;शब्देन्द्रिय–(सं०नपुं०) कर्ण, कान।
शम–(सं०पुं०) शान्ति, मोक्ष, निवृत्ति, क्षमा, उपचार, अन्तःकरण अथवा बाह्य इन्द्रियों का निग्रह, साहित्य में शान्त रस का स्थायी भाव, संयम तिरस्कार; शमक–(सं० वि०) शान्ति कारक; शमगिरा–(सं० स्त्री०) शान्ति कथा; शमता–(सं०स्त्री०) शान्ति, उपशमन।
शमन–(सं०नपुं०) यज्ञ के लिये पशुओं का बलिदान, निवृत्ति, चित्तकी स्थिरता, शान्ति, हिंसा, प्रतिसंहार, आघात, तिरस्कार; शमनस्वसा–(सं०स्त्री०) यम की बहिन, यमुना।
शमनी–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात;शमनीय–(सं०वि०) शान्त करने योग्य।
शमल–(सं०नपुं०) पाप, विष्टा।
शमि–(सं०स्त्री०) शमी वृक्ष।
शमिक–(सं०पुं०) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
शमित–(सं०वि०) शान्त किया हुआ।
शमिता–(हिं० पुं०) शान्तिकारक, यज्ञमें पशु का बलिदान करनेवाला।
शमिष्ठ–(सं०वि०) अतिशान्त।
शमी–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष, सरकण्ड वृक्ष, छिकुर, (वि०) शान्त।
शमीक–(सं० पुं०) एक प्रसिद्ध क्षमाशील ऋषि; राजा परीक्षित ने इनके गले में एक बार मरा हुआ साँप डाल दिया गया परन्तु इन्होंने कुछ न कहा। शमीगर्भ–(सं०पुं०) ब्राह्मण, अग्नि।
शमीर–(सं०पुं०) शमी वृक्ष। शमीरकन्द–(सं० पुं०) बराही कन्द।
शम्पा–(सं० स्त्री०) विद्युत् बिजली।
शम्ब–(सं०पुं०) इन्द्र का वज्र।
शम्बर–(सं०नपुं०) जल, पानी, चित्र, बादल। शम्बरकन्द–(सं०पुं०) वाराही कन्द। शम्बरमाया–(सं०स्त्री०), इन्द्रजाल। शम्बर सूदन–(सं० पुं०)

कामदेव।
शम्बल–(सं० पुं०) तट, किनारा, ईर्ष्या, द्वेष।
शम्बली–(सं० स्त्री०) कुटनी।
शम्बसादन–(सं० पुं०) एक दैत्यका नाम
शम्बु–(सं० पुं०) घोंघा, सीप।
शम्बुक–(सं०पुं०) हाथी के सूंड़ का अगला भाग, शंख, एक दैत्यका नाम।
शम्भु–(सं०पुं०) शिव, महादेव, ग्यारह रुद्रों में से एक, ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, पारद, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस वर्ण होते हैं, (वि०) सुख तथा वृद्धि करने वाले।
शम्भुकान्त–(सं०स्त्री०) पार्वती।
शम्भुतनय, शम्भुनन्दन–(सं०पु०) गणेश, कार्तिकेय शम्भुनाथ–(सं०पुं०) शिव, महादेव। शम्भुवीज–(सं०पुं०) पारद, पारा। शम्भुभूषण–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
शम्भुलोक–(सं०पुं०) कैलास।
शम्भुवल्लभ–(स०नपुं०) सफ़ेद कमल।
शम्भूनाथ–(हिं०पुं०) देखो शम्भुनाथ।
शय–(स०वि०) हाथ, शय्या, साँप, नींद
शयत–(सं०पुं०) निद्रालु, जिसको नींद आई हो।
शयथ–(सं० पुं०) अजगर, शूकर, मृत्यु, सर्प।
शयन–(सं०नपुं०) निद्रा, शय्या, स्त्री प्रसंग, मैथुन। शयन आरती–(सं०स्त्री०) देवता की वह आरती जो रात्रि के समय की जाती है। शयनकक्ष–(सं०पु०) सोने का कमरा। शयनगृह–(सं०नपुं०) सोने का कमरा या घर। शयनप्रकोष्ठ–(सं०पुं०) शयनगृह। शयनबोधनी–(सं०स्त्री०) अगहन मास के कृष्णपक्ष की एादशी। शयनभूमि–(सं०स्त्री०) सोने का स्थान। शयन मन्दिर–(सं० नपुं०) शयनागार, सोने का कमरा। शयनमहल–(हिं०पुं०) शयन का कमरा। शयनस्थान–(सं०नपुं०) सोने का स्थान। शयनागार–(सं०पुं०) शयन गृह।
शयनास्पद–(स०नपुं०) बिछौना।
शयनीय–(सं० वि०) शयन के योग्य, सोने लायक। शयनीय गृह–(सं०नपुं०) शयनागार। शयनीयसवास–(स०पुं०) जो वस्त्र सोती समय पहरे जाते हैं।
शयनैकादशी–(सं० स्त्री०) आषाढ़ शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णु के शयन का आरंभ माना जाता है।
शयाण्डक–(सं० पुं०) गिरगिट।
शयान–(सं० पुं० नपुं०) निद्रित, जो सोया हो। शयालु–(सं०वि०) जिसको नींद आती हो; शयितु–(सं०वि०) निद्रालु, सोया हुआ। शयितव्य–(सं०वि०) सोने योग्य।
शय्या–(सं०स्त्री०) खटिया, पलंग, खाट; शय्यागत–(सं० वि०) बिछौने पर सोने वाला। शय्यादान–(सं० पुं०) मृतक के उद्देश्य से चारपाई बिछावन आदि का दान। शय्यापाल–(सं०पुं०) राजाओं के शयनागार का प्रबन्ध करने वाला। शय्यावेश्म–(सं०नपुं०) सोने का घर।
शर–(सं० पुं०) बाण, तीर, सरकंडा, नरकट, जल, पाँच की संख्या, दूध की मलाई, उशीर, खस, भाले का फल। शरकाण्ड–(स० पुं०) शरकंडा, सरपत। शरकार–(सं० पुं०) तीर बनाने वाला। शरगुल्म–(सं० पुं०) सरकंडा। शरघात–(सं०पुं०) तीर की चोट।
शरच्चन्द्र शरच्छशी–(सं० पुं०) शरद काल का चन्द्रमा।
शराच्छखी–(सं०पुं०) मयूर, मोर।
शरज–(सं०वि०) सरकंडे का बना हुआ
शरज्योत्स्ना–(सं०स्त्री०) शरद काल की चन्द्रिका।
शरट–(सं० पुं०) कृकलास, गिरगिट।
शरण–(सं०स्त्री०) आश्रय; रक्षा घर, आश्रय स्थान, (वि०) आधीन, आश्रित
शरणागत, शरणापन्न–(स०वि०) शरण में आया हुआ। शरणार्थी–(सं०वि०) आश्रय चाहने वाला। शरणालय–(सं० पु०) आश्रय स्थान।
शरणी–(सं०स्त्री) मार्ग, (वि०) शरण देने वाली।
शरण्ड–(सं०पुं०) पक्षी, कामुक, धूर्त, गिरगिट, छिपकिली।
शरण्य–(सं० वि०) शरणागत की रक्षा करने वाला। शरण्यता–(सं०स्त्री०) शरणागत की रक्षा करने वाली, दुर्गा।
शरत–(हिं०पुं०) होड़।
शरत्–(स०स्त्री०) वर्ष, शरद ऋतु जो कुंवार और कातिक महीने में मानी जाती है। शरत्काल–(स०पुं०) शरद ऋतु। शरत्पर्व–(सं०नपुं०) आश्विन मास की पूर्णिमा। शरत्समय–(सं० पुं०) शरद काल।
शरद–(स०स्त्री०) शरत् ऋतु।
शरदई–(हिं०स्त्री०) देखो सरदई।
शरदण्ड–(सं०पु०) सरकंडा, चाबुक।
शरदन्त–(सं०पुं०) हेमन्त ऋतु।
शरद पूर्णिमा–(सं०स्त्री०) आश्विन मास की पुनवासी।
शरदिज–(सं० वि०) शरत् ऋतु में उत्पन्न होने वाला।
शरदिन्दु–(सं० पुं०) शरत् ऋतु का चन्द्रमा।
शरद्वत्–(सं०पुं०) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
शरधि–(सं० पुं०) तूण, तरकश।
शरपट्टी–(हिं० पुं०) एक प्रकार का शस्त्र।
शरपुङ्ख–(सं० पुं०) बाण लगा हुआ पर, सरफोंका नामक क्षुप।
शरबत पिलाई–(हिं० स्त्री०) वह धन जो कन्या पक्ष के लोग दर पक्षको शरबत पिला कर देते हैं।
शरबती–(हिं०पुं०) एक प्रकार पीला रंग, एक प्रकार का अच्छा कपड़ा, मीठा नीबू या फालसा; (वि०) सरदार
शरभ–(स०पुं०) सिंह, हाथी का बच्चा, टिड्डी, राम की सेना का एक यूथपति बन्दर का नाम, ऊंट, विष्णु एक प्रकार का पक्षी, एक वृत जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं इसको शशिकला या मणिगुण भी कहते हैं, दोहे का एक भेद, आठ पैर वाला एक बलिष्ठ मृग।
शरभंग–(सं०पुं०) एक महर्षि का नाम, जिनका दर्शन करने के लिये रामचन्द्र वनवास के समय में गये थे।
शरभा–(स०स्त्री०) शुष्क अवयवों वाली विवाह के अयोग्य कन्या।
शरभू–(सं०पु०) कार्तिकेय।
शरमुख–(सं० नपुं०) बाण का अग्र भाग
शरयु–(सं०स्त्री०) सरयू नदी।
शरल–(सं०वि०) सरल, स्वच्छ हृदय।
शरवत्–(सं०वि०) बाण के तुल्य।
शरवाणि–(सं०स्त्री०) तीर का फल।
शरवारण–(सं०नपुं०) ढाल।
शरवृष्टि–(सं०स्त्री०) बाणों की वर्षा।
शरशय्या–(सं०स्त्री०) बाण की बनी हुई शय्या।
शरस–(सं०नपुं०) शर, बाण, बाण।
शरह लगान–(हिं०स्त्री०) भूमिकर की दर।
शराघात–(स०पु०) बाण का आघात।
शराटि–(सं०पुं०) टिटिहरी नामक पक्षी।
शरापना–(हि०क्रि०) शाप देना।
शराभ्यास–(स०पुं०) बाणशिक्षा।
शरारोप–(सं०पुं०) धनुष, कमान।
शराव–(सं०पुं०नपुं०) मिट्टी का पात्र, पुरवा, एक सेर का परिमाण।
शरावर–(सं०नपुं०) ढाल, कवच।
शरावरण–(सं०नपु०) तीर का वार रोकने की ढाल।
शरावाप–(सं० पुं०) धनुष, कमान।
शराविका–(स०स्त्री०) एक प्रकार का कुष्ट रोग।
शराश्रय–(सं० पुं०) तूण, तरकश।
शरासन–(स०पुं०) धनुष, कमान, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
शरिष्ठ–(हि०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
शरीफा–(हिं०पुं०) मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जिसका फल बहुत मीठा होता है और क्वातिक में पकता है, सीताफल, श्रीफल।
शरीर–(सं० नपुं०) गात्र, कलेवर, देह, शरीरकर्ता–(सं० वि०) सृष्टिकर्ता; शरीरज–(सं० पुं०) रोग, कामदेव; शरीरत्याग–(सं०पुं०) मृत्यु; शरीरत्व–(सं०स्त्री०) शरीर का भाव या धर्म; शरीरधातु–(स०पुं०) रस, रक्त और मांस; शरीरपतन–(सं० नपुं०) मृत्यु; शरीरपात–(सं०पुं०) शरीर का नाश; शरीरप्रभ–(सं०पुं०) शरीर से उत्पन्न; शरीरबन्धक–(सं० पुं०) जामिन; शरीरभाज्–(सं० वि०) शरीरधारी; शरीरभृत्–(सं०वि०) देहधारी; शरीररक्षक–(सं०पुं०) वह मनुष्य जो राजा आदि की शरीररक्षा के लिये सर्वदा उनके साथ रहता है। शरीरवृत्ति–(सं०स्त्री०) जीविका; शरीर शास्त्र–(सं०पु०) शरीर विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें शरीर के सब अवयवों की रचना और इनके कार्य का विवेचन होता है; शरीरशुश्रूषा–(सं० स्त्री०) देह की सेवा; शरीरशोषण–(सं० नपु०) देह का क्षय; शरीर संस्कार–(सं०पु०) गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के मनुष्य के सोलह संस्कार; शरीरस्थ–(सं०वि०) जीवित, जीता हुआ; शरीरान्त–(सं० पुं०) मृत्यु, मौत; शरीरार्पण–(सं० पु०) किसी कार्य में अपनी शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना; शरीरावरण–(सं०नपुं०) चर्म, चमड़ा, खाल; शरीरी–(हिं०पुं०) शरीरवान्, प्राणी, जन्तु, चेतन, जीवधारी।
शरेज–(सं० पुं०) कार्तिकेय।
शर्कर–(सं०पुं०) कंकड़, बालू का कण;
शर्करक–(सं० पुं०) शरबती नीबू;
शर्करजा–(सं०स्त्री०) चीनी; शर्करा–(स० स्त्री०) शक्कर, खांड़, चीनी, उपला, कंडा, ठीकरा, बालू का कण; शर्करी–(सं०स्त्री०) वर्णवृत्त के अन्तर्गत चौदह अक्षरों की एक वृत्ति लेखनी, मेखला, नदी; शर्करीय–(स० वि०) चीनी का; शर्कोट–(सं० पुं०) सर्प, सांप।
शर्मकृत्–(सं० वि०) मंगलकारी।
शर्मण्य–(सं०वि०) सुख के योग्य।
शर्मद–(सं०वि०) आनन्द देने वाला।
शर्मन्–(स० नपुं०) सुख, आनन्द, (पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शर्मरी–(सं० स्त्री०) दारुहल्दी।
शर्मा–(सं० पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शर्मिष्ठा–(सं० स्त्री०) वृषपर्वा नामक असुरराज की कन्या जो देवयानी की सहेली थी।
शर्या–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
शर्व–(सं० पुं०) शिव, महादेव, विष्णु;
शर्वपत्नी–(स०स्त्री०) पार्वती, लक्ष्मी;
शर्वपर्वत–(स० पुं०) कैलास।
शर्वर–(सं० नपु०) अन्धकार, अँधेरा, कामदेव; शर्वरी–(सं० स्त्री०) निशा, रात्रि, रात, हल्दी, सन्ध्या, शाम; शर्वरीकर–(सं०पुं०) विष्णु; शर्वरीदीपक–(सं०पुं०) चन्द्रमा; शर्वरीश–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
शर्वाक्ष–(सं० पुं०) रुद्राक्ष।
शर्वाचल–(सं० पुं०) कैलास।
शर्वाणी–(सं०स्त्री०) पार्वती।
शर्शरीक–(सं०पुं०) घोड़ा, अग्नि।
शर्षिका–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
शल–(सं०नपुं०) ताड़ का वृक्ष, ब्रह्मा, कंस का मंत्री, धृतराष्ट्र का पुत्र।
शलक–(सं० पुं०) साही का कांटा।

शलभ–(सं०पु०) शरभ, टिड्डी, छप्पय छन्द का एक भेद।

शलल–(सं०नपुं०) साही का कांटा; **शललित**–(सं०वि०) काँटेदार; **शलली**–(सं० स्त्री० शलाका।

शलाक–सं०पु० देखो सलाक, सलाई, **शलाकधूर्त**–सं०पुं० चिड़ीमार, बहेलिया

शलाका–(सं० स्त्री०) लोहे लकड़ी आदि की लंबी सलाई, सींक, सलई; मैना पक्षी, छाते की कमानी, शर, वाण, चित्रकार की कूची, जुआ खेलने का पासा, सुरमा लगाने की सलाई।

शलातुर–(सं०पुं०) प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि की वास भूमि।

शलिता–हिं०पुं० देखो सलीता।

शली–(हिं०स्त्री०) साही नामक पशु।

शल्क–(सं०नपुं०) वक्लल, छिलका।

शल्प–हिं०पु०) बाढ, बौछार, धड़ाका।

शल्मलि–(सं०पु०) सेमल का वृक्ष।

शल्य–(सं०नपुं०)बाण, भाले के आकार का एक अस्त्र, पाप, दुर्वाक्य, अस्थि, हड्डी, छप्पय छन्द का एक भेद, अस्त्र चिकित्सा।

शल्यकण्ठ(सं०पुं०) साही नामक पशु; **शल्यकी**–(सं०स्त्री०) सही नामक पशु; **शल्यक्रिया**–(सं०स्त्री०) शस्त्रचिकित्सा, चीर फाड़ करने की विधि; **शल्यशास्त्र**–(सं० पुं०) चिकित्साशास्त्र का वह अंग जिसमें शरीर में गड़े हुए कांटे आदि के निकालने का विधान रहता हैं।

शल्यारि–(सं० पुं०) शल्य को मारने वाले युधिष्ठिर; **शल्योद्धार**–(सं०पुं०) शरीर में धँसे हुए बाण या काँटे आदि को निकालने की क्रिया।

शल्ल–(सं०नपुं०) त्वचा, चमड़ा, वृक्ष की छाल, **शल्लकी**–(सं० स्त्री०) साही नामक पशु, **शल्लिका**–(सं० स्त्री०) नौका, नाव।

शल्व–(सं०पुं०) देखो शाल्व।

शव–(सं०नपुं०) मृत शरीर, लाश, **शवदाह**–(सं०पुं०)मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया; **शवभस्म**–(सं०पुं०) चिता की भस्म, मरघट की राख; **शवमन्दिर**–(सं० नपुं०) मरघट;- **शवयान**–(सं० नपुं०) शव ले जाने की अरथी; **शवरथ**–(सं० पुं०) शवयान, अरथी।

शवरी–(सं०स्त्री०)शवर जाति की स्त्री।

शवल–(सं०वि०) चितकबरा। **शवला**–(सं०स्त्री०) चितकबरी गाय; **शवलित**–(सं०वि०) मिश्रित, मिलाया हुआ।

शववाह–(सं०पुं०) शव को ढोने वाला, **शवशयन**–(सं० नपुं०) श्मशान, मरघट; **शवसाधन**–(सं० नपुं०) शव के ऊपर बैठ कर तन्त्रोक्त मन्त्र को सिद्ध करना; **शवसान**–(सं० पुं०) पथिक, यात्री; **शवाग्नि**–(सं०पुं०) शवदाह की अग्नि; **शवोद्वह**–सं०पु० शव ढोने वाला।

शश–(सं० पु०) खरहा, चन्द्रमा का लाँछन या कलंक, कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदोंमे से एक; **शशक**–(सं०पुं०) खरहा; **शशकविषाण**–सं० नपुं० असंभव बात।

शशघातक–(सं०पुं०) बाज पक्षी; **शशधर**–(सं० पु०) चन्द्रमा, कपूर; **शशविन्दु**–(सं०पुं० विष्णु, चित्ररथ के एक पुत्र का नाम; **शशभृत्**–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपुर **शशमौलि**–(सं० पुं०) शिव, महादेव; **शशलक्षण शशलाञ्छन**–(सं० पु०) चन्द्रमा। **शशशृङ्ग**–(सं० नपु०) कोई अनहोनी या असम्भव बात, **शशस्थली**–(सं०स्त्री०) गंगा और यमुना के मध्य का प्रदेश।

शशाङ्क–(सं० पुं०) चन्द्रमा, कपूर, **शशाङ्कज**–(सं०पुं०) बुध ग्रह।

शशाद–(सं०पुं०) श्येन पक्षी, बाज़।

शशि–हिं० पुं०) चन्द्रमा, छप्पय छन्द का एक भेद। **शशिकर**–(सं०पुं०) चन्द्रमा की किरण। **शशिकला**–(सं० स्त्री०) चन्द्रमा की कला, एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह मात्राएँ होंती हैं; **शशिकान्त**–(सं० नपुं०) कुमुदिनी; **शशिकुल**–(सं० पुं०) चन्द्रवंश; **शशिखंड**–(सं० पुं०) चन्द्रमा की कला। **शशिज**–(सं० पुं०) बुध ग्रह। **शशितनय**–(सं० पुं०) चन्द्रमा के पुत्र, बुध ग्रह। **शशितिथि**–(सं० स्त्री०) पूर्णमासी; **शशिधर**–(सं०पुं०) महादेव। **शशिपर्ण**–सं०पुं०) परवल। **शशिपुत्र**–(सं० पुं०) बुध ग्रह; **शशिपुष्प**–(सं० पुं०) पद्म, कमल। **शशिपोषक**–(सं०पुं०) शुक्ल पक्ष; **शशिप्रभ**–(सं० नपुं०) कुमुद, कोई, मोती; (वि०) चन्द्रमा के समान प्रभा वाला। **शशिप्रभा**–(सं० स्त्री०) ज्योत्स्ना, चन्द्रिका। **शशिप्रिय**–(सं०पुं०) मुक्ता, मोती। **शशिप्रिया**–(सं०स्त्री०);सत्ताईस नक्षत्र जो चन्द्रमा की पत्नियाँ मानी जाती हैं। **शशिभाल**–(सं० पुं०) शिव, महादेव; **शशिभूषण**–(सं० पुं०) महादेव; **शशिमणि**–(सं० पुं०) चन्द्रकान्त मणि; **शशिमंडल**–(सं०पुं०) चन्द्रमण्डल; **शशिमुख**–(सं० वि०) अति मनोहर; **शशिमौलि**–(सं०पुं०) शिव, **शशिरस**–(सं०पुं०) अमृत; **शशिरेखा**–(सं० स्त्री०) चन्द्रमा की एक कला; **शशिलेखा**–(सं० स्त्री०) चन्द्रमा की कला, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं; **शशिवदन**–(सं० वि०) सुन्दर मुख वाला। **शशिवदना**–(सं० स्त्री०) चन्द्रमुखी, एक वृत्त जिसके प्रयेक चरण में ६ अक्षर होते हैं; **शशिविमल**–(सं०वि०) चन्द्रमा के समान स्वच्छ; **शशिशाला**–(सं०स्त्री०) शीश महल; **शशिशिखामणि**–सं०पुं०) शिव, महादेव; **शशिशेखर**–(सं०पु०) शिव, महादेव; **शशिशोषक**–सं०पु० कृष्ण पक्ष; **शशिसुत**–सं० पु० बुध ग्रह; **शशिहीरा**–हिं० पु० चन्द्रकान्त मणि।

शशीकर–सं०पु० चन्द्रमा की किरण।

शशीश–(सं० पुं० शिव, महादेव।

शश्वत्–सं० वि०) बहुत अधिक अव्य० बारंबार।

शष्कुल–(सं०पुं०, करंज।

शष्कुली–सं० स्त्री०) कर्णरन्ध्र, कान का छेद।

शष्प–(सं०नपुं०) नई घास, बाल तृण।

शस्त–(सं० नपुं०) कल्याण, भलाई, (वि०) प्रशंसा किया हुआ, प्रशस्त, उत्तम।

शस्तक–(सं० नपुं०) हाथ में पहरने का चमड़े का पहिरावा।

शस्तता–(सं०स्त्री०) प्रस्तार, फैलाव।

शस्ति–(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।

शस्त्र–(सं० नपुं०) लोहा, अस्त्र, खड्ग तलवार। **शस्त्रकर्म**–(सं०नपुं०) घाव या फोड़े में चीरा लगाना। **शस्त्रक्रिया**–(सं०स्त्री०) चीरा लगाने का काम। **शस्त्रगृह**–(सं० पुं०) शस्त्र रखने का घर। **शस्त्रजीवी**–(सं०वि०) सैनिक; **शस्त्रपाणि**–सं०पु०) जिसके हाथ में शस्त्र हो; **शस्त्रप्रहार**–सं०पुं०) शस्त्र का आघात; **शस्त्रबन्ध**–(सं०पुं०) शस्त्र द्वारा बन्धन; **शस्त्रभृत्**–(सं०वि०) शस्त्र धारी; **शस्त्रवत्**–(सं०वि०) शस्त्र के समान; **शस्त्रविद्या**–(सं०स्त्री०)शस्त्र चलाने की विद्या, धनुर्वेद; **शस्त्रवृत्ति**–(सं०वि०) शस्त्र ही जिसकी जीविका हो; **शस्त्रशाला**–(सं०स्त्री०) शस्त्रगृह; **शस्त्रशास्त्र**–(सं०पुं०)धनुर्वेद; **शस्त्रशिक्षा**–(सं० स्त्री०) शस्त्र चलाने की विद्या; **शस्त्रहत**–(सं०वि०) शस्त्र के आघात से मृत्यु प्राप्त; **शस्त्रहस्त**–(सं०पुं०) अस्त्रधारी मनुष्य।

शस्त्रागार–(सं० पुं०) शस्त्रशाला; **शस्त्राभ्यास**–(सं०पुं०) शस्त्रशिक्षा; **शस्त्रायुध**–(सं० वि०) शस्त्रधारी।

शस्त्री–हिं०वि०) शस्त्र चलाने वाला।

शस्त्रोपजीवी–(सं० त्रि०) शस्त्र द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला।

शस्य–(सं०नपु०) वृक्ष लता आदि का फल।

शहाना–(हिं० पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग, (वि०) उत्तम, बढ़िया।

शहाबा–(हिं०पु०) देखो अगिया बैताल; **शहाबी**–(हिं०वि०) गहरे लाल रंग का; **शांत, शांति, शांवरी**–देखो शान्त शान्ति, शाम्वरी।

शाक–(सं०पुं०)(नपु०) भाजी, तरकारी, साग; शक्ति, (वि०) समर्थ, शक जाति संबंधी।

शाकट–(सं०वि०) शकट संबंधी, (पुं०) गाड़ी का बैल, गाड़ी का बोझ।

शाकटायन–(सं०पुं०) एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।

शाकटिक–(सं०पुं०) गाड़ीवान।

शाकद्वीप–सं०पुं०) पुराण के अनुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप। **शाकद्वीपीय**–सं० वि०) शाकद्वीप का रहने वाला, ब्राह्मणों का भेद।

शाकभक्ष–(सं० वि०) शाकाहारी।

शाकम्भरी–(सं०स्त्री०) शक जाति की इष्ट देवी, भगवती दुर्गा।

शाकम्भरीय–(सं०वि०) साँभर नमक।

शाकल–सं०वि०) खण्ड संबंधी; (पुं०) खण्ड टुकड़ा, हवन की सामग्री जिसमें जव, तिल, घृत, मधु, आदि मिला रहता है।

शाकल्य–(सं० पुं०) एक अति प्राचीन ऋषि का नाम।

शाकश्रेष्ठ–(सं०पुं०) बथुआ का शाक।

शाकाद–(सं०पुं०) शाकभोजी।

शाकान्न–(सं०नपु०) साग मिला हुआ भात।

शाकाम्ल–(सं०नपुं०) इमली।

शाकारी–(सं० स्त्री०) प्राकृत का एक भेद।

शाकाहार–(सं०पुं०) अन्न, फल, फूल, पत्तों आदि का भोजन।

शाकाहारी–(सं०वि०) फल फूल तथा शाक खाने वाला।

शाकिनी–(सं०स्त्री०) एक पिशाची जो दुर्गा के गणों में समझी जाती है, डाइन, चुड़ैल।

शाकुन–(सं०पुं०) शकुन द्वारा मनुष्य का शुभाशुभ कहने वाला।

शाकुनि–(सं०पुं०) व्याघ, बहेलिया।

शाकुन्तल–(सं०पुं०) शकुन्तला का पुत्र, भरत।

शाकेक्षु–(सं०पुं०) गैन्ने का एक भेद।

शाकेश्वर–(सं०पु०) वह राजा जिसके नाम पर संवत् चले।

शाकोल–(सं०पु०) एक प्रकार की लता;

शाक्कर–(सं०पु०) वृषभ, बैल।

शाक्त–(सं०पुं०) शक्ति का उपासक, वह जो दुर्गा, काली, तारा आदि शक्तियों की उपासना करता हो।

शाक्य–(सं०पुं०) बुद्धदेव; एक प्राचीन क्षत्रिय जाति का नाम।

शाक्यपुङ्गव, शाक्यमुनि शाक्यसिंह–(सं०पुं०) शाक्यमुनि।

शाक्र–(सं०पुं०) ज्येष्ठा नक्षत्र।

शाक्रीय–(सं०वि०) शक्र संबंधी।

शाक्कर–(सं०पुं०) इन्द्र का वज्र, बैल, साँड़।

शाख–(सं०पुं०) कार्तिकेय, कृत्तिका का पुत्र।

शाखा–(सं०स्त्री०) डाल, टहनी, शरीर का अवयव, हाथ पैर, बाहु, अवयव, अंगुली, किसी मूल वस्तु से निकले हुए भेद, विभाग, किसी शास्त्र या विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद।

शाखाकण्ट–(सं०पुं०)थूहर। **शाखा**-

कण्टक–(सं०पुं०) थूहर।
शाखाङ्ग–(सं०नपुं०) शरीर का अवयव, हाथ पैर।
शाखाग्र–(सं०नपुं०) शाखा का अगला भाग, अंगुली। शाखाचङ्क्रमण–(सं० पुं०) एक डाल परसे दूसरी डाल पर कूदकर जाना। शाखाचन्द्रन्याय–(सं०पुं०) वह कहावत जो ऐसे विषय में कही जाती है जो केवल देखने में जान पड़ती है वस्तुतः नहीं रहती;
शाखाद–(सं०पुं०) पेड़ों की डाल खाने वाला पशु।
शाखानगर–(सं०नपुं०) किसी नगर का प्रान्त भाग।
शाखामृग–(सं०पुं०)बन्दर, गिलहरी।
शाखापशु–(सं०पुं०)खूटे में बँधा हुआ पशु।
शाखात्मा–(सं०स्त्री०) इमली का पेड़।
शाखाशिफा–(सं०स्त्री०) वह शाखा जो नीचे की ओर झुककर भूमि में जड़ पकड़ ले। शाखास्थि–(सं० नपुं०) हाथ की हड्डी।
शाखी–(सं०पुं०) वेद की किसी शाखा का अनुयायी।
शाखीय–(सं०वि०) शाखासंबंधी।
शाखोच्चार–(सं०पुं०) विवाह के समय वंशावली का वर्णन।
शाखोट–(सं०पुं०) सिहोर का वृक्ष।
शाङ्कर–(सं० पुं०) आर्द्रा नक्षत्र, एक छन्द का नाम, शंकराचार्य का अनुयायि, (वि०) शंकर संबंधी।
शाङ्करभाष्य–(सं० नपुं०) एक प्रसिद्ध वेदान्त, दर्शन।
शाङ्करी–(सं०स्त्री०) शिवसूत्र।
शाङ्ख–(सं०पुं०)शंख की ध्वनि। शांखिक (सं०नपुं०) शंख बजाने वाला।
शाट, शाटक–(सं०पुं०) पट, वस्त्र, कपड़े का टुकड़ा।
शाटिका,शाटी–(सं०स्त्री०) धोती, साड़ी;
शाठ्य–(सं०नपुं०) शठता, दुष्टता।
शाड्वल–(सं०पुं०) देखो शाद्वल।
शाण–(सं०नपुं०) सन के रेशे का बना हुआ कपड़ा, हथियार पैना करने का पत्थर, सात। शाणित–(सं०वि०) सान पर रक्खा हुआ।
शाण्डिल्य–(सं०पुं०) शाण्डिल्य मुनि के कुल में उत्पन्न।
शातकुम्भ–(सं०पुं०)धतूरे का पेड़ (पुं०) सुवर्ण, सोना।
शातन–(सं०नपुं०) काटना,चोखा करना, नष्ट करना।
शातपत्र–(सं०नपुं०) शतपत्र के तुल्य, कमल के समान।
शातपत्रक–(सं०पुं०) चन्द्रिका, चांदनी।
शातवाहन–(सं०पुं०) देखो शालिवाहन;
शांतोदार–(सं०वि०)क्षीण, दुबला पतला।
शात्रव–(सं०नपुं०) शत्रुता।
शाद्व–(सं०पुं०) कर्दम, कीचड़, दूब;
शाद्वल–(सं० पुं०) दूब, हरी घास।
शाद्वली–(हिं०वि०) हरामरा।
शानैश्चर–(सं०वि०) शनि ग्रह संबंधी।
शान्त–(सं०वि०) सौम्य, गंभीर, मौन, चुप जितेन्द्रिय,उत्साह रहित,शिथिल, श्रान्त, थका हुआ,स्थिर, मरा हुआ, विघ्न, या बाधा रहित, दुर्बल; मनोविकार रहित, जो उद्दीप्त न हो (पुं०) काव्य के नव रसों में से एक।
शान्तता,सं० स्त्री०) रागादि का भाव, विराग।
शान्तनु–(सं०पुं०) द्वापर युग के इक्कीसवें चन्द्रवंशी राजा का नाम।
शान्तप्रकृति–(सं०वि०) शान्त स्वभाव का
शान्तरूप–(सं०वि०) सरल स्वभाव का।
शान्ता–(सं० स्त्री०) राजा दशरथ की कन्या जो ऋष्यशृंग ऋषि को ब्याही थी, रेणुका, शमी, आंवला, दूब।
शान्तात्मा–(सं०वि०) शान्त स्वभाव का, साधु प्रकृति का।
शान्ति–(सं०स्त्री०) चित्त का उपशमन, शमन, स्तब्धता, स्वस्थता,गम्भीरता, अमंगल दूर करने का उपचार, दुर्गा का एक नाम षोडष मातृकाओं में से एक; शान्तिकर–(सं० वि०) शान्ति करने वाला; शान्तिकर्म–(सं० नपुं०) बाधा, पाप आदि के निवारण का उपाय; शान्तिकाम–(सं० वि०) शान्ति की कामना करने वाला; शान्तिघट–(सं०पुं०) वह जलपूर्ण घट जो देवादि की प्रतिमा के सामने रक्खा जाता है।
शान्तिद–(सं०पुं०) विष्णु, (वि०) शान्ति देने वाला; शान्तिदाता, शान्तिदायक–(सं०वि०) शान्ति देने वाला; शान्तिप्रद–(सं० वि०) शान्ति देने वाला; शान्तिवाचन–(सं० नपुं०) सब प्रकार की बाधा को दूर करने के लिये मन्त्र पाठ; शान्तिहोम–(सं०पुं०)शांति के लिये किया जाने वाला हवन।
शाप–(सं०पुं०) अक्रोश,धिक्कार,भर्त्सना फटकार; शापग्रस्त–(सं० वि०) जिसको शाप दिया गया हो; शापमुक्त–(सं०वि०) जिसके ऊपर से शाप का प्रभाव हट गया हो; शापाम्बु–(सं०पुं०) वह जल जिसको हाथ में लेकर शाप दिया जाय; शापास्त्र–(सं० पुं०) वह जिसका अस्त्र शाप ही हो; शापित–(सं० वि०) जिसको शाप दिया गया हो; शापोद्धार–(सं०पुं०) शाप के प्रभाव से छुटकारा;
शाफरिक–(सं०पुं०) मछुआ, धीवर।
शाबर–(सं०पुं०) शिवकृत तन्त्रविशेष, पाप, अधिकार, दुःख, बुराई, शबर स्वामि कृत भाष्य।
शाबरी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की प्राकृत भाषा।
शाबल–(सं०नपुं०) शङ्कर।
शाब्द–(सं० वि०) शब्द सम्बन्धी।
शाब्दिक–(सं० पुं०) शब्दशास्त्रवेत्ता, वैयाकिरण; शाब्दी–(सं० वि०) शब्द सम्बन्धी; (स्त्री०) सरस्वती; शाब्दी व्यञ्जना–(सं० स्त्री०) साहित्य में वह व्यञ्जना जो शब्द विशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो।
शामकरण–(हिं०पुं०) वह घोड़ा जिसके कान काले हों।
शामनी–(सं०स्त्री०) दक्षिण दिशा,शांति।
शामी–(हिं०स्त्री०)लोहे पीतल आदि का छल्ला जो छड़ी छाते आदि के छोर पर लगाया जाता है।
शामूल–(सं०नपुं०) ऊनी वस्त्र।
शाम्ब–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण के पौत्र का नाम।
शाम्बरिक–(सं०पुं०)जादूगर; शाम्बरी–(सं० स्त्री०) इन्द्रजाल; शाम्बुक, शाम्बूक–(सं०पुं०) घोंघा।
शाम्भव–(सं० वि०) शिव सम्बन्धी; शाम्भवी–(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।
शायक–(सं०पुं०) बाण, तीर, खड्ग।
शायित–(सं०वि०)पतित, लिटाया हुआ;
शायी–(हिं०वि०) शयनकारी,सोनेवाला,
शार–(सं०वि०) चितकबरा, पीला।
शारङ्ग–(सं०पुं०)चातक, हरिण, हाथी, मोर, (वि०) चितकबरा; शारङ्गक–(सं० पुं०) एक प्रकार का पक्षी;
शारङ्गधनुष–(सं०पुं०)विष्णु,श्रीकृष्ण;
शारङ्गपाणि–(सं० पुं०) कृष्ण, राम;
शारङ्गपानि–(हिं०पुं०)शारङ्गपाणि।
शारङ्गभृत–(सं०पुं०) विष्णु, कृष्ण।
शारङ्गी–(सं०स्त्री०)सारंगी नाम का बाजा
शारद–(सं० नपुं०) सफ़ेद कमल, (पुं०) मौलसिरी का वृक्ष, वर्ष, साल, मेघ, बादल; (वि०) शरत् काल का, नूतन, नया।
शारदा–(सं०स्त्री०) सरस्वती, दुर्गा।
शारदाम्बा–(सं० स्त्री०) सरस्वती।
शारदिक–(पुं०) शरद ऋतु में होने वाला ज्वर।
शारदी–(सं० स्त्री०) जलपीपल, शरद पूर्णिमा, (वि०) शरत् काल का;
शारदीय, महापूजा–(सं० स्त्री०) शरत् काल के नवरात्र में दुर्गापूजा।
शारि–(सं०पुं०)पासा खेलने की गोटी।
शारिका–(सं०स्त्री०) मैना नामक पक्षी।
शारिका कवच–(सं० पुं०) दुर्गा का एक कवच।
शारित–(सं०वि०) रंगबिरंगा।
शारिपट्ट–(सं० पुं०) चौसर खेलने की बिसात।
शारिप्रस्तर–(सं०पुं०)खेलने का पत्थर।
शारिफल–(सं० पुं०), (नपुं०) चौसर या शतरंज खेलने की बिसात।
शारिवा–(सं०स्त्री०) अनन्तमूल, सालसा
शारिभृंग–(सं० पुं०) जुआ खेलने की गोटी।
शारी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का पक्षी, मूंज।
शारीर–(सं० नपुं०) वृष, बैल, (वि०) शरीर से उत्पन्न, शरीर संबंधी।
शारीरक–(सं०वि०) शरीर से उत्पन्न;
शारीरक भाष्य–(सं०पुं०) शंकराचार्य कृत ब्रह्मसूत्र का भाष्य; शारीरक मीमांसा–(सं० स्त्री०) वेदान्त सूत्र।
शारीरक सूत्र–(सं० पुं०) वेदान्तसूत्र।
शारीर विधान–(सं०नपुं०) वह शास्त्र जिसमें जीव के उत्पन्न होने और बढ़ने का विवेचन होता है। शारीरिक–(सं०वि०) शरीर सम्बन्धी।
शार्कर–(सं० पुं०) वह देश जहाँ चीनी बहुत होती है।
शार्ङ्ग–(सं० नपुं०) धनुष विष्णु का धनुष। शार्ङ्गक–(सं०पुं०)पक्षी,चिड़िया
शार्ङ्गधर–(सं० पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण;
शार्ङ्गेष्टा–(सं०स्त्री०)घुमची। शार्ङ्गयुध–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण। शार्ङ्गी–(सं०पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण, धनुर्धारी। शार्दूल–(सं० पुं०) व्याघ्र, बाघ, राक्षस, चीते का वृक्ष, दोहे का एक भेद, (वि०) सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ। शार्दूलकन्द–(सं०पुं०)जंगली प्याज। शार्दूलललित (सं०स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं।
शार्दूलविक्रीड़ित–(सं० नपुं०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।
शार्वरी–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
शालक–(सं०नपुं०) ठिठोलिया।
शालग्राम–(सं० पुं०) गण्डकी नदी में उत्पन्न एक प्रकार की विष्णु की मूर्ति।
शालङ्की–(सं०पुं०) गुड़िया,कठपुतली।
शालन–(पुं०नपुं०) साग।
शालपर्णी–(सं०स्त्री०)सरवन नामक वृक्ष
शालभ–(सं०नपुं०) फतिंगों के समान।
शालभञ्जिका, शालभञ्जी–(सं० स्त्री०) कठपुतली।
शालमर्कट–(सं०पुं०) अनार का पेड़।
शालरस–(सं०पुं०) राल, धूना।
शालसार–(सं०पुं०) हींग, राल, धूना।
शाला–(सं० स्त्री०) स्थान, गृह, घर, इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के योग, से बनने वाला एक प्रकार का वृत्त।
शालाक्य–(सं० पुं०) वह चिकित्सक जो आंख नाक, कान, मुख आदि के रोगों की चिकित्सा करता हो।
शालातुरीय–(सं०पुं०) पाणिनि मुनि का एक नाम।
शालाद्वार–(सं० नपुं०) घर का द्वार;
शालापति–(सं०पुं०) घर का मालिक;
शालामुख–(सं०पुं०)घर अगला भाग;
शालामृग–(सं०पुं०) सियार, कुत्ता;
शालावृक–(सं० पुं०) बन्दर, कुत्ता, सियार।
शालार–(सं०नपुं०) सोपान, सीढ़ी।
शालि–(सं० पुं०) धान्य, धान, काला जीरा, पक्षी, एक यज्ञ का नाम।
शालिका–(सं०स्त्री०) देखो शारिका,मैना
शालिगोप–(सं० पुं०) धान के खेत की रखवाली करने वाला; शालिधान–(हिं०पुं०) बासमती चावल।
शालिनी–(सं०स्त्री०) ग्यारह अक्षरों का

एक वृत्त; शालिनीकरण–(सं० नपुं०) तिरस्कार।

शालपर्णी–(सं०स्त्री०) सरिवन नामक वृक्ष

शालिवाह–(सं०पुं०) अन्न ढोने वाला बैल; शालिवाहन–(सं० पुं०) शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा जिसने शक संवत् चलाया था; शालिहोत्र–(सं०पुं०) घोड़ा, नकुल का बनाया हुआ पशुओं के चिकित्सा का शास्त्र;

शालिहोत्री–(सं०पुं०) पशुओं की चिकित्सा करने वाला वैद्य।

शाली–(सं०स्त्री०) काला जीरा, मेथी।

शालीन–(सं०वि०) विनीत, सदृश, समान लज्जायुक्त, अच्छे आचार विचार का; शालीनता–(सं० स्त्री०) विनय, नम्रता; शालीनत्व–(सं०नपुं०) शालीन होने का भाव या धर्म, अधष्टता।

शालीना–(सं०स्त्री०) सौंफ़ का पौधा।

शालीय–(सं०वि०) शाल वृक्ष सम्बन्धी।

शालूक–(सं०नपुं०) कमल की जड़, भसींड।

शरालू–(सं०पुं०) भेक, मेढक।

शालेममिश्री–देखो शालममिश्री।

शालेय–(सं०पुं०) मधुरिका, सौंफ़।

शाल्मक–(सं० पुं०) सेमल का वृक्ष।

शाल्मलि–(सं०पुं०स्त्री०) सेमल का वृक्ष पुराण के अनुसार एक द्वीप का नाम

शाल्व–(सं०पुं०) सौभ राज्य के अधिपति का नाम।

शाल्वण–(सं० पुं०) फोड़ा पकाने का लेप, भुरता।

शाव, शावक–(सं० पुं०) शिशु, बच्चा, पशु आदि का बच्चा। शावता–(सं० स्त्री०) बचपन।

शावर–(सं० पुं०) मीमांसा भाष्य का नाम।

शावरी–(सं० स्त्री०) केवाँच।

शाशक–(सं० वि०) शशक सम्बन्धी, खरहे का।

शश्वत्–(सं० पुं०) नित्य, स्थायी।

शाश्वती–(सं० स्त्री०) पृथ्वी।

शासक–(सं० पुं०) शासन करने वाला, अधिकारी।

शासन–(सं० नपुं०) आज्ञा, आदेश, शास्त्र, लिखित प्रतिज्ञा, दण्ड, इन्द्रियों का निग्रह; शासनधर–(सं० पुं०) राजदूत, शासक; शासनपत्र–(सं० नपुं०) वह शिला या ताम्रपत्र जिस पर किसी राजा की आज्ञा लिखी या खोदी हुई हो; शासनवाहक–(सं० पुं०) आज्ञावाहक, राजदूत; शासनशिला–(सं० स्त्री०) वह शिला जिस पर राजा की कोई आज्ञा खोदी गई हो; शासनहर–(सं० पुं०) राजदूत; शासनहारक–(सं० पुं०) देखो शासनहर; शासनी–(सं० स्त्री०) धैर्य का उपदेश करने वाली स्त्री; शासनीय–(सं० वि०) शासन करने योग्य; शासित–(सं० वि०) शासन किया हुआ, दण्ड दिया हुआ; शासिता, शास्ता–(सं० पुं०) शासन करने वाला, राजा।

शास्त्र–(सं० नपुं०) हिन्दुओं के ऋषि मुनियों के बनाये हुए वे प्राचीन ग्रंथ जिनमें मुनियों के हित के लिये अनेक प्रकार के कर्तव्य बतलाये गये हैं, धर्म ग्रन्थों की संख्या अठारह है यथा–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद और अर्थशास्त्र, किसी विशिष्ट विषय का क्रमबद्ध ज्ञान, विज्ञान; शास्त्रकार–(सं०पुं०) शास्त्र बनाने वाला; शास्त्रचक्षु–(सं० पुं०) व्याकरण, ज्ञानी, पण्डित; शास्त्रज्ञ–(सं० पुं०) शास्त्र को जाननेवाला;

शास्त्रत्व–(सं० नपुं०) शास्त्र का भाव या धर्म; शास्त्रदर्शी–(सं० त्रि०) शास्त्रज्ञ; शास्त्रवक्ता–(सं० वि०) शास्त्र का उपदेश देने वाला; शास्त्रबुद्धि–(सं० त्रि०) शास्त्र समझने की बुद्धि; शास्त्रवत्–(सं० अव्य०) शास्त्र के अनुसार।

शास्त्री–(सं० पुं०) एक उपाधि जो इस नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय से दी जाती है, शास्त्रज्ञ, पण्डित; शास्त्रीय–(सं० वि०) शास्त्र सम्बन्धी।

शास्त्रोक्त–(सं० वि०) शास्त्रों में कहा हुआ।

शिञ्जन, शिञ्जित–देखो शिञ्जन, शिञ्जित।

शिंशपा–(सं० स्त्री०) शीशम का वृक्ष, अशोक वृक्ष।

शिशुमार–(सं० पुं०) सूंस नामक जल जन्तु।

शिहान–(सं० पुं०) कांच का पात्र।

शि–(सं० पुं०) सौभाग्य, शान्ति, महादेव।

शिकार गड़हा–(हिं० पुं०) जंगली जानवरों को फँसाने के लिये खोदा हुआ गड्ढा।

शिक्य–(सं० नपुं०) छत में लटकाने का छीका, सिगहर; शिक्याकृत–(सं०वि०) छीके की तरह बना हुआ।

शिक्वन्–(सं० पुं०) रज्जु, रस्सी।

शिक्षक–(सं० पुं०) शिक्षा देने वाला, गुरु; शिक्षण–(सं० नपुं०) शिक्षा, पढ़ाने का काम; शिक्षणीय–(सं०वि०) शिक्षा के उपयुक्त, सिखाने लायक।

शिक्षा–(सं० स्त्री०) पढ़ने पढ़ाने की क्रिया, छः वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के स्वर, वर्ण, मात्रा आदि का निरूपण रहता है, विद्या का अभ्यास, दक्षता, निपुणता, उपदेश, दण्ड, शासन; शिक्षाकर–(सं० पुं०) सिखलाने वाला; शिक्षाक्षेप–(सं० पुं०) काव्य में वह अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमन स्वरूप कार्य रोका जाता है; शिक्षागुरु–(सं० पुं०) दीक्षा गुरु, विद्या पढ़ाने वाला गुरु; शिक्षाग्राहक–(सं० पुं०) विद्यार्थी; शिक्षादण्ड–(सं० पुं०) किसी चाल को छुड़ाने के लिये दिया जाने वाला दण्ड; शिक्षानर–(सं० पुं०) इन्द्र; शिक्षापत्र–(सं० नपुं०) वह पुस्तक जिससे विद्यालाभ होता है; शिक्षापद–(सं० पुं०) उपदेश; शिक्षापरिषद्–(सं० स्त्री०) शिक्षा प्रबन्ध करनेवाली सभा; शिक्षार्थी–(सं० पुं०) विद्यार्थी; शिक्षालय–(सं० पुं०) पाठशाला।

शिक्षा विभाग–(सं० पुं०) वह राजकीय विभाग जिसके द्वारा सार्वजनिक शिक्षा का प्रबन्ध होता है; शिक्षाहीन–(सं० वि०) अशिक्षित, बेपढ़ा; शिक्षित–(सं० वि०) जिसने शिक्षा पाई हो, पढ़ा लिखा; शिक्षितव्य–(सं० वि०) शिक्षा के योग्य; शिक्षिताक्षर–(सं०पुं०) वह जिसने शिक्षा पढ़ी हो।

शिख–(हिं०पुं०) देखो सिख; शिखण्ड–लेखक।

शिखण्ड–(सं० पुं०) मोर की पूंछ, शिखा, चोटी, काकपक्ष, काकुल।

शिखण्डिक–(सं० पुं०) कुक्कुट, मुरगा, एक प्रकार का मानिक।

शिखण्डिनी–(सं० स्त्री०) मयूरी, मोरनी, द्रुपदराज की कन्या जो कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी थी।

शिखण्डी–(हिं० पुं०) मयूर, मोर, कुक्कुट, मुर्गा, बाण, तीर, घुमची, विष्णु, मोर की पूँछ, शिव, श्रीकृष्ण, बालों की चोटी।

शिखर–(सं० पुं० नपुं०) सिरा, ऊपरी भाग, पहाड़ की चोटी, लवँग, एक तान्त्रिक विद्या, एक अस्त्र का नाम, अग्र भाग, कंगूरा, मण्डप, गुम्मद, कांख, एक प्रकार का लाल रत्न।

शिखरन–(हिं० पुं०) दही और चीनी से बनाया हुआ एक पेय जिसमें केशर, इलायची मेवे आदि डाले जाते हैं।

शिखरवासिनी–(सं० स्त्री०) शिखर पर बसने वाली, दुर्गा।

शिखरिणी–(सं० स्त्री०) दही का पानी, स्त्रियों में श्रेष्ठ, बेले का फूल, रोमावली, किशमिश, सत्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

शिखरी–(हिं० पुं०) वृक्ष, पहाड़ी, दुर्ग, कोट, एक प्रकार का मृग, वह गदा जो विश्वामित्रने रामचन्द्र को दी थी।

शिखा–(सं० स्त्री०) आग की लपट, चोटी, चुटैया, शाखा, डाली, पक्षियों के सिर पैर की कलँगी, दिये की टेम, नोक, सिरा, ऊपर को उभड़ा हुआ भाग, स्तन का अग्र भाग, पेड़ की जड़, तुलसी, प्रकाश की किरण, एक वर्णवृत्त का नाम; शिखाकन्द–(सं० नपुं०) शलजम; शिखाचल–(सं० पुं०) मयूर, मोर; शिखातरु–(सं० पुं०) दीवट; शिखाधर–(सं०पुं०) मोर; शिखाभरण–(सं०नपुं०) शिर का आभूषण; शिखामणि–(सं०पुं०) श्रेष्ठ व्यक्ति; शिखामूल–(सं०नपुं०) वह कन्द जिसके ऊपर पत्तियों का गुच्छा हो।

शिखाल–(सं० पुं०) मयूर, मोर।

शिखालु–(सं० पुं०) मयूर, शिखा।

शिखावत्–(सं०वि०) शिखायुक्त (पुं०) अग्नि, आग, मोर। शिखावर–(सं०पुं०) कटहल का वृक्ष। शिखावल–(सं०पुं०) मयूर, मोर। शिखावृक्ष–(सं० पुं०) दीपवृक्ष, दीयट।

शिखावृद्धि–(सं०स्त्री०) सूद दर सूद।

शिखि–(सं०पुं०) मयूर, मोर, कामदेव, अग्नि, तीन की संख्या। शिखिकण्ठ–(सं०नपुं०) तुत्थ, तूतिया, (वि०) मोर के कंठ के समान। शिखिकन्द–(सं०पुं०) कुन्दरू। शिखिग्रीव–(सं० नपुं०) एक प्रकार का नीला पत्थर।

शिखिध्वज–(सं० पुं०) कार्तिकेय, धूम्र, धुवाँ।

शिखी–(सं० पुं०) मोर, अग्नि, इन्द्र, बगला पक्षी, एक नाग का नाम, एक प्रकार का विष, केवाँच, पर्वत, मेथी, सतावर, घोड़ा, केतु ग्रह, वृक्ष, कुक्कुट, मुर्गा, बाण, तीर, सांड़, पुच्छल तारा, तीन की संख्या।

शिखिनी–(सं० स्त्री०) मोरनी, मुर्गी, जटाधारी।

शिखिवाहन–(सं०पुं०) कार्तिकेय।

शिङ्कित–(सं०वि०) आघात, सूंघा हुआ।

शिंघाण–(सं० नपुं०) कांच का पात्र, नाक के भीतर का मल।

शिङ्घाणक–(सं०नपुं०) कफ,

शिङ्घित–(सं०वि०) सूंघा हुआ।

शिञ्जित–(सं०वि०) बजता हुआ।

शिञ्जिनी–(सं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला, करधनी के घुंघरू।

शित–(सं०वि०) कृश, दुर्बल, नुकीला, चोखा; शितकर–(सं० पुं०) कपूर। शितकर्णी–(सं०स्त्री०) बासक, अडूसा; शितछत्रा–(सं०स्त्री०) सौंफ; शितता–(सं०स्त्री०) तीक्ष्णता, तीखापन; शितपर्ण–(सं०पुं०) पुस्तक, मोथा। शितशिव–(सं०नपुं०) सेंधा नमक। शितशूक–(सं० पुं०) जव, गेंहू। शिताफल–(सं०पुं०) सीताफल, शरीफ़ा

शितावर–(सं०पुं०) देखो सतावर।

शिति–(सं०वि०) शुक्ल, सफ़ेद, काला, (पुं०) भोजपत्र का वृक्ष; शितिकण्ठ–(सं०पुं०) शिव, महादेव, मोर, चातक, पपीहा। शितिकुम्भ–(सं०पुं०) कनेर का वृक्ष। शितिप्रभ–(सं०पुं०) विष्णु। शितिरत्न–(सं०पुं०) नीलम। शितिवापस–(सं० पुं०) नीलाम्बर, बलदेव।

शिथिल–(सं०वि०) ढीला, श्रान्त, थका हुआ, मन्द, सुस्त, धीमा, आलस्य युक्त, अदृढ़, अस्पष्ट।

शिथिलता–(सं०स्त्री०) ढिलाई, थकावट,

आलस्य, शक्ति की कमी, वाक्यों में अर्थ संबंध न होना। शिथिलाई–(हिं०स्त्री०) शिथिलता। शिथिलाना–(हिं०क्रि०) थकना। शिथिलित–(सं०वि०) वह जो ढीला हो गया हो। शिथिलीकरण–(सं० नपुं०) ढीला करना। शिथिलीभूत–(सं०वि०) ढीला पड़ा हुआ।

शिपि–(सं०पुं०)किरण (स्त्री०)चमड़ा,खाल

शिप्रा–(सं०स्त्री०) उज्जैन के पास बहने वाली एक नदी का नाम।

शिकर–(हिं०पुं०) ढाल।

शिफा–(सं०स्त्री०) कोड़े की फटकार।

शिफारुह–(सं०पुं०) बरगद का वृक्ष।

शिमाल–(अ० स्त्री०) उत्तर दिशा।

शिमी–(सं०स्त्री०) शिम्बी, सेम।

शिम्बा–(सं०स्त्री०) छीमी, फली।

शिरःकम्प–(सं०पुं०) सिर का काँपना।

शिरःखण्ड–(सं० नपुं०)माथे की हड्डी

शिरःशूक–(सं० नपुं०) सिर की पीड़ा।

शिर–(सं०पुं०) मस्तक, माथा, सिर, खोपड़ी, शिखर, सबसे ऊँचा भाग, प्रधान, अगुआ, चोटी, सिरा। शिरत्रान–(हिं०पुं०) देखो शिरस्त्राण। शिरनेत–(हिं०पुं०) गढ़वाल के आस-पास का एक प्रदेश। शिरपेंच–(हिं०पुं०) देखो सिरपेंच। शिरफूल–(हिं०पुं०) स्त्रियों का सिर पर पहरने का एक आभूषण। शिरमौर–(हिं०पुं०) शिरोभूषण, मुकुट प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति। शिरच्चन्द्र–(सं०पुं०) शिव, महादेव। शिरसिज, शिरसिरुह–(सं०पुं०) केश, बाल।

शिरस्क–(सं०वि०) मस्तक संबंधी।

शिरस्त्र, शिरस्त्राण–(सं०नपुं०) युद्ध के समय सिर पर पहरने की लोहे की टोपी

शिरहन–(हिं०पुं०) सिरहाना, तकिया।

शिरा–(सं० स्त्री०) शरीर में की रुधिर-वाहिनी नाड़ी, नस, जल की धारा या सोता।

शिराफल–(सं०पुं०) नारियल, अंजीर। शिरामूल–(सं०पुं०) नाभि, ढोंढी। शिराहर्ष–(सं०पुं०)नसों का झनझनाना

शिरीष–(सं०पुं०) सिरिस का पेड़।

शिरोगृह–(सं०नपुं०) अट्टालिका, कोठा।

शिरोज–(सं०नपुं०) केश, बाल।

शिरोधरा–(सं०स्त्री०) गरदन, ग्रीवा।

शिरोधाम–(सं०पुं०) चारपाई का सिरहाना।

शिरोधार्य–(सं०वि०)आदर पूर्वक मानने योग्य, सिरपर धरने योग्य।

शिरोधि–(सं०पुं०) गरदन।

शिरोभाग–(सं०पुं०) अग्र भाग, मस्तक का भाग। शिरोभूषण–(सं०नपुं०) सिर पर पहरने का गहना, मुकुट, चूड़ामणि। शिरोमणि–(सं०पुं०,स्त्री०) चूड़ामणि, शिरोरत्न, श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोवाली–(हिं०पुं०) शिव, महादेव।

शिरोमौलि–(सं०पुं०) सिर का रत्न।

शिरोरुजा–(सं०स्त्री०) सिर की वेदना।

शिरोरुह–(सं०पुं०) सिर के ऊपर के बाल।

शिरोवेष्टन–(सं०नपुं०) पगड़ी, मुरेठा।

शिल–(हिं०पुं०) उञ्छ, देखो शिली।

शिला–(सं०स्त्री०) पाषाण, पत्थर, पत्थर का बड़ा टुकड़ा, चट्टान, मैनसिल, कपूर, शिलाजीत, गेरू, गोरोचन, पत्थर की कंकड़ी, हरीतकी, हर्रे। शिलाकुसुम–(सं० नपुं०) शिलाजीत। शिलाक्षर–(सं०नपुं०) शिला पर खुदा हुआ अक्षर। शिलाक्षार–(सं०नपुं०) चूना। शिलागृह–(सं०नपुं०) पत्थर का बना हुआ घर। शिलाचक्र–(सं०नपुं०) शालग्राम की मूर्ति।

शिलाज, शिलाजतु–(सं०नपुं०) शिलाजीत–(हिं०स्त्री०) काले रंग की एक प्रसिद्ध औषधि जो शिला का रस है।

शिलाटक–(सं०पुं०) चौबारा।

शिलादित्य–(सं०पुं०) मालव देश के राजा हर्षवर्धन।

शिलाधातु–(सं०पुं०) एक प्रकार का गेरू, खड़िया मिट्टी। शिलानिचय–(सं०पुं०) पत्थर के ढोंकों का ढेर। शिलानिर्यास–(सं०पुं०) शिलाजीत। शिलानीड–(सं०पुं०) गरुड़। शिलान्यास–(हिं०पुं०) किसी भवन की नींव देने का कार्य।

शिलापद–(सं०पुं०) पत्थर की चट्टान, मसाला पीसने की सिल। शिलापुष्प शिलाप्रसून–(सं०नपुं०) छरीला नामक गन्ध द्रव्य। शिलाबन्ध–(सं०पुं०) पत्थर के एक टुकड़े का बना हुआ प्राचीर। शिलाभाव–(सं० पुं०) पाषाणत्व। शिलाभेद–(सं०नपुं०) पत्थर तोड़ने की छेनी। शिलामय–(सं०वि०) पत्थर का बना हुआ। शिलामल–(सं०पुं०) शिलाजीत। शिलारस–(सं०पुं०) एक प्रकार का लोहबान की तरह का सुगन्धित गोंद

शिलालेख–(सं०पुं०) पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख। शिलावृष्टि–(सं०स्त्री०) आकाश से ओले या पत्थर गिरना। शिलावेश्म–(सं०नपुं०) पत्थर का बना हुआ मकान। शिलाशस्त्र–(सं०नपुं०) पत्थर का बना हुआ अस्त्र। शिलास्थि–(सं०स्त्री०) गरदन में की वह हड्डी जिस पर कपाल स्थिर रहता है। शिलास्तम्भ–(सं०पुं०) पत्थर का खंभा शिलाहरि–(सं०पुं०)शालिग्राम की मूर्ति

शिलि–(सं०पुं०) भोजपत्र; (स्त्री०) चौखट के नीचे की लकड़ी।

शिली–(सं०स्त्री०) चौखट के नीचे की लकड़ी, डेहरी, भाला, बाण। शिलीन्ध्र–(सं०नपुं०) केले का फूल। शिलीन्ध्रक–(सं०नपुं०) कुकुरमुत्ता। शिलीपद–(सं०पुं०) फ़ीलपाँव नामक रोग। शिलीपृष्ठ–(सं०नपुं०) तलवार शिलीमुख–(सं०पुं०) भ्रमर, भौरा, युद्ध, लड़ाई।

शिलेय–(सं०पुं०) शिलाजीत (वि०) शिला संबंधी।

शिल्प–(सं०नपुं०) हस्तकौशल, कला संबंधी व्यवसाय। शिल्पकला–(सं०स्त्री०) हस्तकौशल। शिल्पकार–(सं०पुं०) शिल्पी। शिल्पकारी–(सं०पुं०) वह जो शिल्प का कार्य करता हो। शिल्पगृह–(सं० नपुं०) शिल्पशाला, वह स्थान जहां पर बहुत से शिल्पी मिलकर चीजें बनाते हों। शिल्पजीवी–(सं०पुं०) शिल्पी; शिल्पता–(सं०स्त्री०) शिल्प कौशल; शिल्प प्रजापति–(सं० पुं०) विश्वकर्मा; शिल्प विद्या–(सं०स्त्री०) शिल्प विषयक विद्या। शिल्प शाला–(सं०स्त्री०) शिल्पगृह। शिल्प शास्त्र–(सं०नपुं०) वह शास्त्र जिसमें हाथ से पदार्थों के बनाने का वर्णन लिखा होता है, गृह निर्माण शास्त्र। शिल्पिक, शिल्पी–(सं०पुं०) शिल्पकार, राज, थवई।

शिव–(सं०नपुं०) मंगल, सुख, कल्याण, जल, पानी, सेंधा नमक, फिटकरी, सोहागा, चांदी, चन्दन, लोहा, मिर्च, (पुं०) महादेव, ईश्वर, महेश्वर, मोक्ष, पारा, वेद, वसु ग्यारह मात्राओं का एक छन्द। शिवक–(सं०नपुं०) कांटा, खूंटा। शिवकर्णी–(सं०नपुं०) कार्तिकेय की एक मात्रिका का नाम। शिवकान्ता–(सं० स्त्री०) दुर्गा। शिवकारी–(सं०वि०) कल्याण करने वाला। शिवकारिणी–(सं०स्त्री०) शिवा, दुर्गा, (वि०) मंगल करने वाली। शिवकिंकर–(सं०पुं०) शिव का गण या दूत। शिवकीर्तन–(सं०त्रि०) शिव का कीर्तन करने वाला, शैव। शिवक्षेत्र–(सं०नपुं०) कैलास। शिवगण–(सं०पुं०) शिव का अनुचर। शिवंकर–(सं०वि०) कल्याण करने वाला। शिवता–(सं०स्त्री०) शिव का भाव या धर्म, मोक्ष। शिवतेज–(सं०नपुं०) पारद, पारा। शिवदत्त–(सं०नपुं०) सुदर्शन चक्र। शिवदूती–(सं०स्त्री०) दुर्गा। शिवद्रुम–(सं०पुं०) बेल का पेड़। शिवद्विष्टा–(सं०स्त्री०) केतकी, केवड़ा शिवधातु–(सं०पुं०) पारद, पारा। शिव बीज–(सं०नपुं०) पारद, पारा। शिवनंदन–(सं०पुं०) गणेशजी। शिव निर्माल्य–(सं०पुं०) शिव को अर्पित की हुई वस्तु, परम त्याज्य वस्तु। शिवनाथ–(सं०पुं०) महादेव। शिव पुराण–(सं०नपुं०) अठारह पुराणों में से एक। शिवपुरी–(सं०स्त्री०) काशी। शिवप्रिया–(सं०स्त्री०) दुर्गा।

शिवभक्त–(सं०पुं०) शिव का भक्त, शैव। शिवभक्ति–(सं०पुं०) शिव की भक्ति। शिव भागवत–(सं० पुं०) शिवभक्त। शिवमय–(सं०वि०) शिव के समान। शिवयोषित–(सं० स्त्री०) शिव की पत्नी, दुर्गा। शिवमल्ली–(सं०स्त्री०) मौलसिरी। शिवरात्रि–(सं०स्त्री०) फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी। शिवरानी–(हिं० स्त्री०) पार्वती। शिवलिंग–(सं०पुं०) महादेव जी का लिंग या पिण्ड जिसका पूजन होता है। शिवलिंगी–(सं०स्त्री०) एक प्रकार की प्रसिद्ध लता। शिवलोक–(सं०पुं०) कैलास। शिववल्लभा–(सं० स्त्री०) पार्वती। शिववाहन–(सं०पुं०) वृषभ, बैल। शिव शक्ति–(सं०स्त्री०) पार्वती शिव सायुज्य–(सं०नपुं०) वह मोक्ष जिसमें मनुष्य शिव रूप हो जाता है शिव सुन्दरी–(सं०स्त्री०) दुर्गा।

शिवा–(सं०स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, मुक्ति, मोक्ष, अनन्तमूल, मेथी, दूब, गोरोचन, शमी वृक्ष, शृगाली, सियारिन। शिवाक्ष–(सं०नपुं०) रुद्राक्ष; शिवानी–(सं०स्त्री०) दुर्गा, जयन्ती वृक्ष; शिवारुत–(सं०नपुं०) सियार के बोलने का शब्द; शिवालय–(सं०पुं०) वह मन्दिर जिसमें शिव की मूर्ति या लिङ्ग स्थापित हो, कोई देव मन्दिर; शिवाला–(हिं०पुं०) शिवालय, शिव का मन्दिर; शिवालु–(सं० पुं०) शृगाल,सियार; शिवाह्लाद–(सं०पुं०) शिवका आनन्द; शिवाह्वय–(सं०पुं०) पारा, सफ़ेद मदार।

शिवि–(सं०पुं०) भूजपत्रका वृक्ष, राजा उशीनर के पुत्र जो बड़े धर्मात्मा और दानी थे।

शिविका–(सं०स्त्री०) पालकी, डोली।

शिविर–(सं० नपुं०) डेरा, गढ़, पड़ाव छावनी, वस्त्र मण्डप।

शिशन–(हिं०पुं०) देखो शिश्न।

शिशिर–(सं०पुं०नपुं०) शीतकाल, हिम, विष्णु, (वि०) शीतल, ठंढा; शिशिरकर–(सं० पुं०) चन्द्रमा; शिशिरिशिरण–(सं०पुं०) चन्द्रमा; शिशिरता–(सं० स्त्री०) शैत्य, ठढापन; शिशिर दीधिति–(सं०पुं०) चन्द्रमा; शिशिर मयूख–(सं०पुं०) चन्द्रमा; शिशिरांशु–(सं०पुं०) चन्द्रमा।

शिशु–(सं०पुं०) बालक, छोटा लड़का, विशेष करके आठ वर्ष तक का बालक; शिशुकाल–(सं०पुं०) बचपन; शिशुता–(सं० स्त्री०) बचन; शिशुताई–(हिं० स्त्री०) शिशुता; शिशुत्व–(सं०नपुं०) शैशव, बचपन; शिशुनाग–(सं० पुं०) एक राक्षस का नाम; शिशुपन–(हिं० पुं०) बालकपन; शिशुपाल–(सं० पुं०) चेदि वंश का एक राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था; शिशुभाव–(सं०पुं०)लड़कपन; शिशुमार–(सं०पुं०) नक्षत्र मंडल, सूंस नामक जलजन्तु, विष्णु कृष्ण; शिशुमारचक्र–(सं०पुं०) सौर जगत् सब ग्रहों सहित सूर्य; शिशुमारमुखी–(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मात्रिका का नाम; शिशुवाहक–(सं० पुं०) जंगली बकरा।

शिश्न–(सं०पुं०) उपस्थ, मेढ़, लिङ्ग।

शिष–(सं०) वध, हिंसा, (हिं० स्त्री०) शिखा, चोटी, सीख, देखो शिष्य।
शिषरी– हिं०वि०, शिखर वाला।
शिष्ट–(सं०वि०, शान्त, सुशील, अच्छे स्वभावका, विनीत, शिक्षित, सज्जन, बुद्धिमान, प्रधान, प्रसिद्ध, (पुं०) मन्त्री, सभासद; **शिष्टता**–(सं०स्त्री०) सज्जनता, उत्तमता, भलमंसी; **शिष्ट-सभा**–(सं० स्त्री०) राजसभा; **शिष्ट-समाज**–(सं०पुं०) शिष्ट जनोंका समाज
शिष्टाचार–(सं०पुं०) भले आदमियों की तरह व्यवहार, विनय, आदर, नम्रता, सभ्य व्यवहार, शिष्टाचार के आठ लक्षण हैं यथा दान, सत्य, तपस्या, अलोभ, विद्या, इज्या, पूजा और दम।
शिष्टि–(सं०स्त्री०) आज्ञा, शासन, दण्ड।
शिष्य–(सं०पुं०) शिक्षा या उपदेश देने योग्य व्यक्ति, विद्यार्थी, चेला; **शिष्यता**–(सं० स्त्री०) शिष्य होने का भाव या धर्म; **शिष्यत्व**–(सं०नपुं०) शिष्यता।
शिष्या–(सं०स्त्री०) एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सात गुरु अक्षर होते है, इसका दूसरा नाम शीर्षरूपक है।
शीकर–(सं०नपुं०) तुषार, शीत, जाड़ा, पानीका बूंद, वर्षाकी छोटी छोटी बूंद
शीघ्र–(वि० क्रि०) तुरत, चटपट, (पुं०) वायु, हवा; **शीघ्रकारी**–(सं० वि०) शीघ्रतासे काम करने वाला; **शीघ्र-कोपी**–(सं०वि०) जिसको शीघ्र क्रोध आता हो; **शीघ्रग**–(सं० पुं०) सूर्य, वायु, खरहा; **शीघ्रगामी**–(सं०वि०) शीघ्रचलनेवाला; **शीघ्रता**–(सं०स्त्री०) त्वरा; **शीघ्रत्व**–(सं० नपुं०) त्वरा।
शीघ्रपतन–(सं० पुं०) मैथुन काल में वीर्यका शीघ्र स्खलित होना; **शीघ्र-पाणि**–(सं० पुं०) वायु; **शीघ्रपुष्प**–अगस्त्यका वृक्ष; **शीघ्रयान**–(सं०वि०) वेग से जाने वाला; **शीघ्रवह**–(सं० वि०) शीघ्रता से ढोने वाला; **शीघ्र-वाही**–(सं०वि०) शीघ्र ले जानेवाला;
शीघ्रवेधी–(सं०पुं०) शीघ्रता से बाण चलानेवाला; **शीघ्रसंचारी**–(हिं०वि०) देखो शीघ्रगामी।
शीत–(सं० नपुं०) जाड़ा, तुषार, ओस, जाड़े का हिम ऋतु (वि०) शीतल, ठंढा; **शीतक**–(सं०वि०) दीर्घसूत्री, काम करने में विलम्ब करने वाला; **शीत कटिबन्ध**–(सं०पुं०) पृथ्वी के उत्तर तथा दक्षिणके भूमिखण्डके वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३॥ अंश दक्षिण पर माने जाते हैं-इन भागोंमें जाड़ा बहुत पड़ता है; **शीत-कर**–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर।
शीतकाल–(सं०पुं०) हिम ऋतु, अगहन पूसका महीना; **शीतक्षार**–(सं०नपुं०) शुद्ध सोहागा; **शीतगन्ध**–(सं० नपुं०) सफेद चन्दन; **शीतगात्र**–(सं० पुं०) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर; **शीतगु**–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर; **शीत-च्छाय**–(सं० पुं०) बरगद का वृक्ष;
शीतता–(सं०पुं०) ठंढक; **शीतदीधिति**–(सं०पुं०) चन्द्रमा; **शीतदीप्य**–सं० नपुं०) सफ़ेद जीरा; **शीतपूर्वा**–(सं० स्त्री०) सफेद दूब; **शीतद्युति**–(सं०पुं०) चन्द्रमा; **शीतपुष्प**–सं० नपुं०) छड़ीला, सिरिस; **शीतप्रभ**–सं० पुं०) कर्पूर, कपूर; **शीतफल**–सं०पुं०) गूलर, आमला; **शीतभानु**–सं०पुं०) चन्द्रमा; **शीतभीरु**–सं०वि०) ठंढक से डरने वाला; **शीतमयूख**–**शीतमरीचि**–(सं० पुं०) चन्द्रमा, कपूर; **शीतमूलक**–(सं०नपुं०) उशीर, खस; **शीतरम्य**–(सं०वि०) जो शीत काल मे रमणीय हो; **शीतरश्मि**–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर।
शीतल–(सं० वि०) ठंढा, शान्त, उद्वेग रहित (नपुं०) ठंढक, खस, हिम, चम्पा; **शीतलचीनी**–(हिं० स्त्री०) देखो कबाब चीनी; **शीतलता**–(सं०स्त्री०) ठंढापन, सरदी, जड़ता; **शीतलताई**–(हिं०स्त्री०) ठंढापन।
शीतला–(सं०स्त्री०) वसन्त रोग, चेचक, इस रोगकी अधिठात्री देवी; **शीतला अष्टमी**–(सं०स्त्री०) चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि।
शीतवासा–(सं०स्त्री०) यूथिका, जूही; **शीतशैल**–(सं० पुं०) हिमालय पर्वत;
शीतांशु–(सं० पुं०) कपूर, चन्द्रमा।
शीता–(सं०स्त्री०) क्षीरिणी, खिरनी;
शीताद्रि–(सं०पुं०) हिमालय पर्वत;
शीताभ–(सं०पुं०नपुं०) कपूर, चन्द्रमा;
शीताम्बु–(सं० पुं०) ठंढा जल;
शीताश्म–(सं०पुं०) चन्दकान्त मणि;
शीतेतर–(सं०वि०) उष्ण, गरम।
शीतोदक–(सं०पुं०) एक नरकका नाम।
शीतोष्ण–(सं०वि०) शीत और उष्ण, गुनगुना।
शीत्कार–(सं० पुं०) स्त्रियों की रति काल की ध्वनि।
शीफर–(सं०वि०) सुन्दर, रम्य।
शीभव–(सं०पुं०) शीकर, जलप्रवाह।
शीभ्य–(सं० पुं०) शिव, महादेव वृषभ, बैल।
शीमूल–(सं०पुं०) सेमल का वृक्ष।
शीर्ण–(सं० वि०) दुबला पतला, टूटा फूटा हुआ, मुरझाया हुआ, गिरा हुआ, फटा पुराना, सिकुड़ा हुआ; **शीर्णत्व**–(सं० नपुं०) कृशता; **शीर्ण-बल**–(सं० पुं०) नीमका पेड़।
शीर्ति–(सं० स्त्री०) तोड़ने या फोड़ने की क्रियां।
शीर्य–(सं०वि०) भंगुर, टूटने फूटने योग्य
शीर्ष–(सं०नपुं०) मस्तक, माथा, कपाल, शिर, अग्र भाग, चोटी; **शीर्षक**–(सं० नपुं०) शिरा, चोटी, निर्णय, वह वाक्य जो विषय परिचय के लिये किसी लेखके ऊपर लिखा जाता है; **शीर्षघाती**–सं० वि०) सिर काटने वाला; **शीर्षच्छेद**–(सं० पुं०) सिर काटना; **शीर्षच्छेदिक**–सं०वि०, वध करने योग्य।
शीर्षतः–सं०अव्य० मस्तक पर।
शीर्षपट्टक–(सं०पुं० मस्तक पर बाँधने की पट्टी; **शीर्षबिन्दु**–सं० पुं०, सिर के ऊपर की ओर ऊँचाई में सबसे ऊपरका स्थान; **शीर्षभार**–सं०पुं० माथे पर का बोझ; **शीर्षरक्ष**–सं० नपुं०) शिरस्त्राण, टोप; **शीर्षरक्षण**–(सं०नपुं०) पगड़ी।
शील–(सं० नपुं०) चरित्र, आचरण, चाल, व्यवहार, स्वभाव, प्रवृत्ति, उत्तम आचरण; **शीलता**–(सं० स्त्री०) शीलत्व, साधुता; **शीलत्याग**–(सं० पुं०) शीलता छोड़ना; **शीलधर**–(सं०वि०) सच्चरित्र; **शीलन**–(सं० नपुं०) अभ्यास; **शीलभ्रंश**–(सं० पुं०) शीलता का परित्याग; **शीलवान्**–(हिं०वि०) कोमल स्वभाव का; **शील-विप्लव**–(सं०पुं०) शीलता का त्याग; **शीलवृत्त**–(सं० वि०) सुशील; **शील-शाली**–(सं०वि०) अच्छे स्वभाव का; **शीली**–(सं०वि०) शीलयुक्त।
शीलव–(सं०नपुं०) शैवाल सेवार।
शीश–(हिं०पुं०) देखो शीर्ष।
शुडं, शुभ–देखो शुण्ड, शुम्भ।
शुक–(सं०नपुं०) वस्त्र, कपड़ा, कपड़े का अंचल, पगड़ी, साफा, सिरिस का पेड़ (पुं०) सुग्गा, तोता, व्यास के पुत्र शुकदेव; **शुककीट**–(सं० पुं०) हरे रंग का एक प्रकार का कीड़ा; **शुकतरु**–(सं०पुं०) सिरिस का पेड़; **शुकतुण्ड**–(सं०पुं०) तोते की चोंच; **शुकदेव**–(सं०पुं०) वेदव्यास के पुत्र का नाम; **शुकनास**–(सं०पुं०) केंवाच; **शुकप्रिय**–(सं०पुं०) कमरख; **शुकरूप**–(सं० वि०) जिसका रंग शुक के समान हो; **शुकवल्लभ**–(सं० पुं०) दाड़िम, अनार; **शुकवाह**–(सं० पुं०) कामदेव; **शुकवृक्ष**–(सं०पुं०) सिरिस का पेड़; **शुकशिम्बा**–(सं०स्त्री०) केवांच; **शुकादन**–(सं० पुं०) दाड़िम, अनार; **शुकानन**–(सं० वि०) जिसका मुख सुग्गे के समान हो।
शुकी–(सं०स्त्री०) कश्यप की स्त्री, सुग्गी।
शुक्त–(सं०वि०) निष्ठुर, कठोर, अम्ल, खट्टा, निर्जन, सूनसान, **शुक्ताम्ल**–(सं०नपुं०) चुक का साग।
शुक्ति–(सं०स्त्री०) सीप, सुतुही, शंख, हड्डी, बवासीर का राग; **शुक्तिज**–(सं० नपुं०) मोती; **शुक्तिपुटोपम**–(सं० नपुं०) बदाम; **शुक्तिबीज**–(सं०नपुं०) मुक्ता, मोती; **शुक्तिमणी**(सं०पुं०) देखो शुक्तिबीज; **शुक्तिवधू**–(सं०स्त्री०) सीपी।
शुक्र–(सं० नपुं०) रेत, वीर्य, अग्नि, शक्ति बल, सामर्थ्य, एक ग्रह का नाम बृहस्पतिवार के बाद का वार; **शुक्रकर**–(सं० पुं०) वीर्यकारक; **शुक्र-दोष**–सं०पुं० नपुंसकता; **शुक्रमेह**–सं० पुं०) प्रमेह रोग; **शुक्रवार**–सं०पुं०, सप्ताह का छठां दिन; **शुक्रशिष्य**–सं० पुं०) असुर, दैत्य; **शुक्रसुत**–(सं०पुं०) केतु।
शुक्रा–(सं०स्त्री०) वंशलोचन।
शुक्रांग–सं०पुं०) मयूर, मोर।
शुक्राचार्य–सं०पुं०, दैत्यों के गुरु जो महर्षि भृगु के पुत्र थे।
शुक्ल–(सं० पुं०) श्वेत वर्ण, सफेद (नपुं०) चांदी, नवनीत, मक्खन, विष्णु का एक नाम, ब्राह्मणों की एक पदवी; **शुक्लता**–सं०स्त्री० श्वेतता, सफेदी; (सं०नपुं०) सपेदी; **शुक्लत्व**–(सं०नपुं०) सितपक्ष, वह पक्ष जिसमें पन्द्रह दिन तक चन्द्रमा की वृद्धि होती है; **शुक्लपुष्प**–(सं०पुं०) मैनफल।
शुक्ला–सं० स्त्री०) सरस्वती, चीनी, विदारीकन्द; **शुक्लाङ्गी**–(०स्त्री०) शेफालिका, निर्गुण्डी; **शुक्लफल**–(०पुं०) आक, मदार; **शुक्लफला**–(०स्त्री०) शमी वृक्ष; **शुक्लफेन**–(०पुं०) समुद्रफेन; **शुक्लभण्डी**–(०स्त्री०) सफेद सरसों; **शुक्लमण्डल**–(०नपुं०) आँखों में का पुतली के चारो ओर का सफेद भाग; **शुक्ल-वंश**–(०पुं०) सफेद बांस; **शुक्लवृक्ष**–(०पुं०) धव का पेड़; **शुक्लसारग**–(०पुं०) सफेद रग का पपीहा;
शुक्लापांग–(०पुं०) मयूर, मोर;
शुक्लाम्ल–(०नपुं०) चूक नाम का साग; **शुक्लार्क**–(०पुं०) सफेद मदार
शुक्लिमन्–(०पुं०) शुक्लता, सफेदी।
शुक्लोपल–(सं०पुं०) सफ़ेद पत्थर।
शुक्लौदन–(सं०नपुं०) अरवा चावल।
शुंग–(सं०पुं०) बरगद, पाकर का पेड़।
शुंगवंश–एक प्राचीन क्षत्रिय राजवंश जो मौर्यों के बाद राजसिंहासन पर बैठा था।
शुचि–(सं० पुं०) अग्नि, ज्येष्ठ मास, शृंगार रस, चन्द्रमा, शुक्र, ब्राह्मण, कार्तिकेय, पवित्रता, (वि०) स्वच्छ, निर्दोष, पापरहित; **शुचिकर्म**–(सं०त्रि०) पवित्र करने वाला; **शुचिता**–(सं०स्त्री०) पवित्रता; **शुचिद्रुम**–(सं०पुं०) अश्वत्थ, पीपल का बृक्ष।
शुण्ठी–(सं०स्त्री०) सोठ।
शुण्ड–(सं०पुं०) हाथी का सूड़; **शुण्डक**–(सं० पुं०) एक प्रकार का नगाड़ा; **शुण्डादण्ड**–(सं०पुं०) हाथी का सूंड़; **शुण्डापान**–(सं० नपुं०) कलवरिया; **शुण्डार**–(सं० पुं०) मद्य बनाने या बेंचने वाला; **शुण्डाल**–(सं०पुं०) हस्ती, हाथी।
शुण्डा–(सं०स्त्री०) वेश्या रंडी, मद्य, हाथी का सूंड।
शुण्डिक–(सं०पुं०) मद्य बिकने का स्थान, कलवरिया।
शुण्डिक–(सं० स्त्री०) गले के भीतर

की घंटी ।
शुण्डिनी–(सं०स्त्री०) छछूंदरी ।
शुद्ध–(सं०वि०) दोष -रहित, पवित्र, उज्वल, सफेद, ठीक, बिना मिलावट का; **शुद्धता**–(सं० स्त्री०) निर्दोषता; **शुद्ध पक्ष**–(सं०पुं०) शुक्ल पक्ष; **शुद्ध-पक्ष**–(सं०पुं०) शुक्ल पक्ष; **शुद्ध बुद्धि**–(सं०वि०) विलक्षण बुद्धि वाला; **शुद्ध-बोध**–(सं०वि०) ज्ञानयुक्त; **शुद्धभाव**–(सं०पुं०) स्वच्छ भावना; **शुद्धमति**–(सं० वि०) विलक्षण बुद्धि वाला; **शुद्धरूपी**–(सं०वि०) उज्वल रूप वाला; **शुद्धवंश्य**–(सं०वि०) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो; **शुद्धविराज**–(०स्त्री०) छन्द का एक भेद **शुद्ध-साध्य वासना**–(०स्त्री०) शब्द की एक लक्षणा शक्ति **शुद्धात्मा**–(हिं० वि०) पवित्र स्वभाव का ।
शुद्धान्त–(सं०पुं०) अन्तःपुर ।
शुद्धापहणुति–(सं०स्त्री०) वह अलंकार जिसमें उपमेय को असत्य ठहरा कर अथवा उसका निषेध करके उपमान की सत्यता स्थापित की जाती है ।
शुद्धावास–(सं०पुं०) स्वर्ग ।
शुद्धि–(सं०स्त्री०) स्वच्छता, दुर्गा **शुद्धिकृत्**–(सं०वि०) शुद्धिकारक; **शुद्धिपत्र**–(सं०पुं०) वह पत्र जिसमें छापे की अशुद्धियां बतलाई जाती हैं ।
शुद्धोदन–(सं०पुं०) एक शाक्य राजा जो बुद्धदेव के पिता थे ।
शुद्धोदनि–(सं०पुं०) विष्णु ।
शुनःफेन–(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम ।
शुन–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता, वायु ।
शुनाशीर–(सं०पुं०) इन्द्र और वायु ।
शुनि–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता । **शुनी**–(सं०स्त्री०) कुक्कुरी, कुतिया ।
शुभ–(सं० नपुं०) मंगल, भलाई, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक; (वि०) कल्याणकारी, सुन्दर, उत्तम, सुखी ।
शुभकर–(सं० वि०) मंगल जनक ।
शुभकर्म–(सं०नपुं०) मंगलजनक कार्य ।
शुभकृत–(सं० वि०) शुभजनक ।
शुभकरी–(सं० स्त्री०) पावती । **शुभ-क्षण**–(सं०नपुं०) शुभ मुहूर्त । **शुभंकर**–(सं०वि०) शुभ या मंगल करनेवाला ।
शुभंकरी–(सं०स्त्री०) पार्वती, दुर्गा ।
शुभचिन्तक–(सं०वि०) हितैषी ।
शुभद–(सं० वि०) शुभदायक । **शुभ-दर्शन**–(सं०वि०) सुन्दर । **शुभदायी**–(सं०वि०) शुभ करने वाला । **शुभ-पत्रिका**–(सं०स्त्री०) मंगल पत्रिका ।
शुभप्रद–(सं०वि०) मंगल करने वाला
शुभभावना–(सं० स्त्री०) मंगल जनक भावना । **शुभमय**–(सं० वि०) मंगल-मय । **शुभवक्त्रा**–(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।
शुभस्थली–(सं०स्त्री०) यज्ञभूमि, पवित्र स्थान ।
शुभा–(सं०स्त्री०) कान्ति, शोभा, इच्छा
शुभांगी–(सं०स्त्री०) कामदेव की पत्नी रति । **शुभाचार**–(सं०स्त्री०) जिसका आचार बहुत अच्छा हो । **शुभाचारा**–(सं०स्त्री०) पार्वती की एक सखी का नाम । **शुभान्वित** (सं०वि०) मंगलयुक्त **शुभार्थी**–(सं०वि०) शुभ कामना करने वाला । **शुभावह**–(सं० वि०) मंगल-जनक । **शुभाशय**–(सं०वि०) धार्मिक ।
शुभाशुभ–(सं०वि०) शुभ और अशुभ ।
शुभ्र–(सं०वि०) उद्दीप्त, सफेद (नपुं०) अभ्रक, चाँदी, सेंधा नमक, खस ।
शुभ्रता–(सं०स्त्री०) शुक्लता, सफेदी ।
शुभ्ररश्मि–(सं०स्त्री०) चन्द्रमा ।
शुभ्रांशु–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर ।
शुभ्रा–(सं०स्त्री०) फिटकरी, चीनी ।
शुभ्रिका–(सं० स्त्री०) मधू से बनाई हुई चीनी ।
शुम्बल–(सं० पुं०) जलती हुई लकडी, मसाल ।
शुम्भ–(सं०पुं०) एक दानव जिसको दुर्गा ने मारा था । **शुम्भघातिनी**–(सं०स्त्री०) दुर्गा ।
शुल्क–(सं०पुं०) घाट का कर, राजकर, वह धन जो कन्या का विवाह करने के बदले में दिया जावे, दहेज, मूल, होड, किसी कार्य के बदले में दिया जाने वाला धन । **शुल्कता**–(सं०स्त्री०) शुभ्रता, सफेदी । **शुल्कत्व**–(सं०पुं०) शुल्कता । **शुल्कशाला**–(सं०स्त्री०) वह वह स्थान जहां पर कर या चुंगी चुकाई जाती है ।
शुल्ल–(सं०नपुं०) रज्जु, रस्सी ।
शुश्रूषक–(सं०वि०) सेवा शुश्रूषा करनें वाला । **शुश्रूषा**–(सं०स्त्री०) उपासना, सेवा, परिचर्या, टहल । **शुश्रूषु**–(सं०वि०) सेवा करने में अभिलाषी ।
शुष्क–(सं०वि०) निस्नेह, सूखा, नीरस, रसहीन, स्नेह रहित, निर्मोही, निरर्थक, व्यर्थ । **शुष्ककण्ठ**–(सं०वि०) प्यासा । **शुष्कता**–(सं०स्त्री०) सूखापन
शुष्कपत्र–(सं० नपुं०) सूखा पत्ता ।
शुष्कमुख–(सं०वि०) कृपण, कंजूस ।
शुष्कली–(सं०वि०) मांस खानेवाला ।
शुष्कार्द्र–(सं०नपुं०) शुण्ठी, सोंठ ।
शुष्ण–(सं०पुं०) सूर्य, अग्नि ।
शुष्म–(सं०नपुं०) तेज, पराक्रम ।
शूडल–(हिं० पुं०) मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष ।
शूक–(सं०पुं०) अन्न की बाल, एक प्रकार का कीड़ा । **शूककीट**–(सं०पुं०) एक प्रकार का रोवेंदार कीड़ा ।
शूकपिण्डी–(सं०स्त्री०) केंवाच ।
शूकर–(सं०पुं०) वराह, सुअर । **शूकर-क्षेत्र**–(सं०पुं०) नैमिषारण्य के पास के एक ती॰ का नाम । **शूकरशिम्बी**–(सं०स्त्री०) सेमकी फली ।
शूकल–(सं०पुं०) भड़कने वाला घोड़ा ।
शूका–(सं०स्त्री०) कपिकच्छु, केंवाच ।
क्ष्मशू–(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म ।
शूची–(सं०स्त्री०) सूई ।
शूद्र–(सं०पुं०) आर्यों के चार वर्णों में से अन्तिम वर्ण ब्रह्मा के पैर से इस वर्ण की उत्पत्ति मानी जाती है, अन्त्य वर्ण, शूद्र जाति का पुरुष ।
शूद्रक–(सं०पुं०) शूद्र, विदिशा नगरी का एक राजा जिसका लिखा हुआ 'मृच्छकटिक' नाटक बहुत प्रसिद्ध है ।
शूद्रता–(सं०स्त्री०) शूद्र का भाव या धर्म । **शूद्रत्व**–(सं० नपुं०) शूद्रता ।
शूद्रद्युति–(सं०पुं०) नीला रग । **शूद्र-प्रिय**–(सं०पुं०) प्याज ।
शूद्रा, शूद्री–(सं०स्त्री०) शूद्र की स्त्री ।
शूना–(सं०स्त्री०) गृहस्थ के घर में के मे स्थान जहाँ पर अनाज में अनेक जीवों की हत्या होती है यथा–चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल, और जल रखने का स्थान ।
शूनावत्–(सं०पुं०) कसाई ।
शून्य–(सं०नपुं०) रिक्तस्थान आकाश, विन्दु, निर्जन स्थान, अभाव, स्वर्ग, (पुं०) विष्णु (वि०) बहुत थोड़ा, असम्पूर्ण, खाली । **शून्यगर्भ**–(सं०वि०) मूर्ख; **शून्यता**–(सं०स्त्री०) शून्य भाव ।
शून्यपाल–(सं० पुं०) स्थानापन्न ।
शून्यवाद–(सं०पुं०) बौद्धों का वह सिद्धान्त जिसमें वे जीव तथा ईश्वर को कुछ नहीं मानते । **शून्यवादी**–(सं०पुं०) बौद्ध, नास्तिक ।
शून्या–(सं० स्त्री०) वन्ध्या स्त्री, बाँझ औरत ।
शून्यालय–(सं०पुं०) एकान्त स्थान ।
शूप–(हिं०पुं०) शूर्प, सूप ।
शूपकार–(सं०पुं०) देखो सूपकार ।
शूर–(सं०पुं०) वीर, योद्धा, सूर्य, सिंह, बड़हर, मसूर, विष्णु, चीते का ।
शूरता–(सं०स्त्री०) वीरता, **शूरताई**–(हिं०स्त्री०) वीरता ।
शूरण–(सं०पुं०) ज़मीकन्द, ओल ।
शूरन–(हिं०पुं०) देखो सूरन ।
शूरभूमि–(सं० स्त्री०) उग्रसेन की एक कन्या का नाम । **शूरविद्या**–(सं०स्त्री०) युद्ध करने की विद्या । **शूरवीर**–(सं० पुं०) अतिशय योद्धा । **शूर-वीरता**–(हिं०स्त्री०) शौर्य,
शूरसेन–(सं०पुं०) मथुरा के एक राजा, श्री कृष्ण के दादा (पितामह) थे
शूरा–(हिं०पुं०) सूर ।
शूर्प–(सं० नपुं०) गेंहू चावल आदि पछोड़ने का पात्र, सूप, बत्तीस सेर का एक प्राचीन परिमाण । **शूर्पकर्ण**–(सं०पुं०) गणेश । **शूर्पणखा**–(सं०स्त्री०) रावण की बहिन एक राक्षसी ।
शूर्पा–(हिं०पुं०) बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना ।
शूर्मि–(सं०पुं०) लोहे की बनी हुई मर्ति
शूल–(सं०पुं०नपुं०) प्राचीन समय का बरछा, मृत्यु, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से नवां योग, (वि०) तीक्ष्ण, (नपुं०) लोहे की कील, शूली जिस पर चढ़ा कर प्राचीन काल में प्राणदण्ड दिया जाता था, त्रिशूल, व्यथा, एक प्रकार की तीव्र वेदना जो वायु के प्रकोप से उत्पन्न होती है, टीस, पीड़ा, झंडा, पताका ।
शूलग्रह–(सं० पुं०) शिव । **शूलघ्न**–(सं०वि०) शूल को हटाने वाला ।
शूलधन्वा–(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
शूलधर, शूलधारी–(सं० पुं०) शिव ।
शूलधरा–(सं०स्त्री०)दुर्गा । **शूलधारी**–(सं०पुं०) महादेव । **शूलना**–(हिं०पुं०) शूल के समान कष्ट देना । **शूलपाणि**–(सं०पुं०) शिव, महादेव । **शूलप्रोत**–(सं० पुं०) नरक के एक भाग का नाम । **शूलहस्त, शूलपानि**–(हिं०पुं०) महादेव । **शूलयोग**–(सं०पुं०) फलित ज्योतिष में एक योग का नाम ।
शूला–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी लोहे की छड़
शूला–(सं०नपुं०) शूल का अग्र भाग ।
शूलांग–(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
शूलि–(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
शूलिक–(सं०नपुं०) शशक, खरहा ।
शूलिका–(सं०स्त्री०) सीकचे में गोद कर भूना हुआ मांस, कबाब ।
शूलिनी–(सं०स्त्री०)दुर्गा का एक नाम ।
शूलिमुख–(सं०पुं०) एक नरक का नाम
शूली–(सं०स्त्री०) देखो शूल ।
शृगाल–(सं०पुं०) गीदड़, सियार, खल, भीरु, डरपोक; **शृगालघण्डी**–(सं०स्त्री०) तालमखाना । **शृगाल जम्बु**–(सं०पुं०) तरबूज़ । **शृगालिका, शृगाली**–(सं० स्त्री०) सियारिन ।
शृङ्खल–(सं०पुं०) कमर में पहरने की मेखला, करधनी, हथकड़ी, बेड़ी, नियम, रीति । **शृङ्खलता**–(सं०स्त्री०) क्रम बद्ध होने का भाव । **शृङ्खला**–(सं०स्त्री०) क्रम, मेखला, करधनी, तागड़ी, श्रेणी, नियम । **शृङ्खलाबद्ध**–(सं० वि०) क्रमिक, सिकड़ी में बंधा हुआ । **शृङ्खलित**–(सं०वि०) क्रमबद्ध, सिकड़ी में बंधा दुआ ।
शृङ्ग–(सं०स्त्री०) पर्वत का शिखर, चोटी, गौ भैंस आदि पशुओं की सींग, चिह्न, पानी का फौवारा, प्रभुत्व, कमल, सोंठ, अदरख, स्तन, छाती (वि०) तीव्र, **शृङ्गकन्द**–(सं०पुं०) सिघाड़ा । **शृङ्गकट**–(सं०पुं०) एक पर्वत का नाम । **शृङ्गपुर**–(सं०नपुं०) एक पर्वत का नाम । **शृङ्गरुह**–(सं०पुं०)सिघाड़ा । **शृङ्ग-वेर**–(सं०नपुं०) सोंठ, अदरख ।
शृङ्गवेरपुर–(सं०नपुं०) गुहक चाण्डाल की पुरी का नाम ।
शृङ्गाट, शृङ्गाटक–(सं०नपुं०)चतुष्पथ, चौरहा, चौमुहानी, सिंघाड़ा, गोखरू
शृंगार–(सं०नपुं०) सिन्दूर, लवंग (पुं०) रति, मैथुन, नाटक आदि का प्रधान रस जिसका आविर्भाव स्त्री पुरुष के संभोग करने की कामना पर होता है, इसमें नायक नायिका परस्पर मिलने पर होने वाले सुख का निदर्शन रहता है; इसके संयोग

और वियोग दो प्रधान भेद हैं, स्त्रियो का आभूषण, वस्त्र आदि से शरीर को सुशोभित करना,सजावट, शोभा देनेवाली वस्तु, भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने इष्ट देवता को पति और अपने को पत्नी मानता है। शृङ्गारक–(सं० नपुं०) सिन्दूर, सेंदुर। शृङ्गारजन्म–(सं० पुं०) कामदेव। शृङ्गारना–(हिं०क्रि०) शृंगार करना, सजाना। शृङ्गार भूषण–(सं०नपुं०) सिन्दूर, हरताल। शृङ्गार मण्डप–(सं०नपुं०) वह स्थान जहां पर नायक और नायिका क्रीड़ा करते हैं। शृङ्गार योनि–(सं०पुं०) मदन,कामदेव। शृङ्गारवेश–(सं०पुं०) सिंगार के लिये सजावट। शृङ्गार-हाट–(हिं०स्त्री०) वेश्याओं के रहने का स्थान। शृङ्गारिक–(सं० वि०) शृङ्गार सम्बन्धी।

शृङ्गारिणी–(सं०स्त्री०) शृङ्गार करने वाली स्त्री, एक वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं-इसका दूसरा नाम स्रग्विणी, मोहन या लक्ष्मी धरा है। शृङ्गारित–(सं०वि०) शृङ्गार किया हुआ, संवारा हुआ। शृङ्गारिया–(हिं०पुं०)देवी देवता का शृङ्गार करने वाला, बहुरूपिया।

शृङ्गारुहा–(सं०स्त्री०) सिघाड़ा।

शृङ्गालिका–(सं०स्त्री०) बिदारी कन्द।

शृङ्गि–(सं० पुं०) सिंगी मछली।

शृङ्गिका–(सं०स्त्री०)मेढ़ासिंघी, पीपल, अतीस।

शृङ्गी–(सं०स्त्री०) काकड़ासिंघी, अतीस, बरगद, मजीठ, आमला, शिव, महादेव, सींघ का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, पर्वत, वृक्ष, एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। शृङ्गीगिरि–(सं० पुं०) एक पर्वत का नाम। शृङ्गेरि मठ–(सं०पुं०) शंकराचार्य के एक प्रसिद्ध मठ का नाम।

शृत–(सं०पुं०) क्वाथ, काढ़ा।

शृधू–(सं०पुं०) मलद्वार,गुदा,(वि०) भ्रष्ट

शृष्टि–(सं०पुं०) कंस के आठ भाइयों में से एक।

शेखर–(सं० पुं०) शिरोभूषण, किरीट, मुकुट, चोटी, माथा, श्रेष्ठता वाचक शब्द, पिंगल में टगण का एक भेद।

शेखरित–(सं०वि०) मुकुट युक्त।

शेखरी–(सं०स्त्री०) लवंग, सहिजन की जड़।

शेखावत–(हिं०पुं०) राजपूत क्षत्रियों का एक भेद।

शेफ–(सं०सं०नपुं०) शिश्न, लिङ्ग।

शेरपंजा–(हिं०पुं०)बघनखा नामक अस्त्र

शेरबच्चा–(हिं० पुं०) पराक्रमी पुरुष; एक प्रकार की छोटी बंदूक।

शेलक–(सं०पुं०) लिसोड़ा।

शेव–(सं०पुं०) मेढ़ू, लिंग, सर्प, उन्नति, उंचाई,(नपुं०) सुख (सं०पुं०) हजामत बनाने का काम।

शेष–(सं०पुं०) अनन्त, सर्पराज, अवशिष्टता, छप्पय, छन्द का एक भेद, समाप्ति, अन्त, परिणाम, अवशिष्ट, स्मारक वस्तु, वध, नाश, लक्ष्मण, दिग्गज, बलराम, परमेश्वर, घटाने से बची हुई संख्या; शेषता–(सं०स्त्री०) शेषत्व, उपकारित्व। शेषधर–(सं० पुं०) शिव, महादेव। शेषनाग–(सं०पुं०) अनन्त। शेषभाग–(सं०पुं०) बचा हुआ भाग। शेषभूषण–(सं०पुं०) विष्णु। शेषराज–(सं० पुं०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो यगण होते हैं। शेषरात्रि–(सं०स्त्री०) रात का पिछला पहर। शेषवत्–(सं० अव्य०) कार्य देखकर कारण का अनुमान। शेषशायी–(सं० पुं०) शेष नाग पर शयन करने वाले विष्णु। शेषांश–(सं०पुं०) बचा हुआ अंश या भाग।

शेषा–(सं०स्त्री०) देवता को चढ़ा हुआ नैवेद्य जो प्रसाद रूपमें बांटा जाता है।

शेषोक्त–(सं०वि०)अन्त में कहा हुआ।

शेक्या–(सं० नपुं०) सिकहर, छीका (वि०) दृढ़।

शैखरेय–(सं०पुं०) अपामार्ग, चिचिड़ा।

शैघ्रय–(सं० नपुं०) सीघ्रता,

शैत्य–(सं०नपुं०) शीत, ठंढक।

शैथिल्य–(सं०नपुं०) शिथिलता,ढिलाई,

शैमेय–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण के एक सारथी का नाम।

शैल–(सं०नपुं०) चट्टान, रसवत,शिलाजीत (पुं०) पर्वत, पहाड़ (वि०) पथरीला, कठोर। शैलकन्या–(सं०स्त्री०) पार्वती। शैलकुमारी–पार्वती। शैलगंगा–(सं०स्त्री०) गोवर्धन पर्वत की एक नदी जिसमें श्रीकृष्ण ने सब तीर्थों का आवाहन किया था। शैलगुरु–(सं० पुं०) हिमालय पर्वत। शैलजा–(सं० स्त्री०) पार्वती, गजपिप्पली, दुर्गा। शैलवटी–(सं०स्त्री०) पहाड़ की तराई। शैलतनया, शैलदुहिता–(सं० स्त्री०) पार्वती। शैलधर–(सं०पुं०) श्री कृष्ण। शैलनन्दिनी–(सं०स्त्री०) पार्वती। शैलपति–(सं०पुं०)हिमालय। शैलपथ–(सं०पुं०) पहाड़ का मार्ग। शैलपुत्री–(सं० स्त्री०) पार्वती, गंगा, नव दुर्गा में से एक। –शैलबीज–(सं० पुं०) भिलावां; शैलरन्ध्र–(सं०नपुं०)पहाड़ी गुफा। शैलराज–(सं० पुं०) हिमालय पर्वत। शैलशिखा–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं। शैलशृंग–(सं०पुं०) पर्वत का शिखर। शैलसम्भव–(सं०पुं०)शिलाजीत। शैलसुता–(सं०स्त्री०) पार्वती, दुर्गा। शैलसेतु–(सं०पुं०) पत्थर का पुल। शैलाग्र–(सं०नपुं०) पर्वत का शिखर। शैलाट–(सं०पुं०) पहाड़ी आदमी। शैलादि–(सं०पुं०) शिव के गण। शैलाधिराज–(सं०पुं०) हिमालय पर्वत। शैलाभा–(सं०स्त्री०) पार्वती। शैलाह्व–(सं०नपुं०) शिलाजीत। शैली–(सं० स्त्री०) चाल ढाल,ढंग, रीति, प्रथा, प्रणाली, परिपाटी, वाक्य रचना का प्रकार, कढ़ाई, पत्थर की मूर्ति।

शैलू–(हिं०पुं०) लिसोड़ा, एक प्रकार की चटाई।

शैलूक–(सं०पुं०) कमलदण्ड, भसींड।

शैलूष–(सं० पुं०) अभिनय करने वाला नट, बेल का वृक्ष,धूर्त मनुष्य,गंधर्वों के स्वामी।

शैलूषिकी–(सं०स्त्री०) नट जाति की स्त्री

शैलेन्द्र–(सं०पुं०) शैलराज,हिमालय।

शैलेय–(सं० नपुं०) तालपर्णी, मुसली, सेंधा नमक, (पुं०) सिंह,भौंरा,(वि०) पहाड़ी, पथरीला, पत्थर के समान।

शैलेयी–(सं०स्त्री०) पार्वती। शैलेश–(सं०पुं०) हिमालय पर्वत। शैलेश्वर–(सं०पुं०) शिव, महादेव।

शैल्य–(सं०वि०) पथरीला,कड़ा कठोर।

शैव–(सं०नपुं०) धतूरा (वि०) शिव संबंधी, शिव का, (पुं०) शिव का उपासक, पाशुपत अस्त्र। शैवपत्र–(सं०नपुं०) बिल्वपत्र।

शैवल–(सं०नपुं०)पदमाख (पुं०) सेवार, एक देश का नाम।

शैवालिनी–(सं०स्त्री०) नदी।

शैवाल–(सं० नपुं०) जलनील, सेवार।

शैवी–(सं० स्त्री०) पार्वती, मनसा नाम की देवी, मंगल, कल्याण।

शैव्य–(सं०वि०) शिव संबधी, शिव का

शैव्या–(सं०स्त्री०) राजा हरिश्चन्द्र की रानी का नाम।

शैशव–(सं० नपुं०) बाल्यावस्था, बचपन, लड़कपन (वि०) बचपन का।

शैशिर–(सं०वि०)शिशिर संबंधी,शिशिर में उत्पन्न।

शोक–(सं० पुं०) वह मनोविकार जो अनिष्ट प्राप्ति से अथवा इष्ट नाश से उत्पन्न होता है, शोच, खेद। शोककर, शोककारक–(सं० वि०) शोक जनक। शोकनाश–(सं० पुं०) शोक का नाश। शोकमय–(सं० वि०) शक स्वरूप। शोकवत्–(सं० वि०) शोकयुक्त, शोक उत्पन्न करने वाला। शोकहर–(सं०पुं०) एक छन्द का नाम।

शोकहारी–(सं०वि०)शोक को दूर करने वाला। शोकाकुल–(सं०वि०) शोक से व्याकुल। शोकातुर–(सं० वि०) दुःख या शोक से व्याकुल। शोकार्त–(सं०) शोकाकुल।

शोच–(हिं०पुं०)चिन्ता, दुःख; शोचनीय–(सं० वि०) शोक करने योग्य, बहुत दीन। शोचितव्य–(सं०वि०) शोक करने योग्य। शोच्य–(सं०वि०) चिन्ता करने योग्य।

शोण–(सं०नपुं०) सिन्दूर, रुधिर, अग्नि, लाल रंग, ललाई, सोना, एक नदी का नाम, मंगल ग्रह। शोणता–(सं० स्त्री०) रक्तता, ललाई। शोणपुष्पक–(सं०पुं०) कचनार। शोणभद्र–(सं०पुं०) सोन नदी। शोणमणि–(सं०स्त्री०) पद्मराग मणि, मानिक।

शोणित–(सं० नपुं०) रक्त, कुंकुम,केसर ईंगुर (वि०) लाल रंग का, लाल।

शोणितोत्पल–(सं०नपुं०) लाल कमल।

शोणितोद–(सं०पुं०)एक यक्ष का नाम।

शोथ–(सं० पुं०) किसी अंग में सूजन होना, सूजन।

शोथक–(सं०पुं०) शोथ रोग, मुरदासंख

शोध–(सं०पुं०) निर्मलता, परीक्षा जांच, अनुसन्धान, खोज, ढूंढ़। शोधक–(सं०वि०)खोजने या ढूंढ़ने वाला, सुधारक–(पुं०) वह संख्या जिसके घटाने से वर्गमूल ठीक ठीक निकले

शोधन–(सं० नपुं०) शौच, शुद्धता, पवित्रता, प्रायश्चित्त, धातुओं का औषधि बनाने के लिये शुद्ध करना; घाव धोना, लिखे हुये कागजों को प्रमाणित करना, हटा कर स्वच्छ करना, आचरण सुधारने के लिये दण्ड देना, खोजना, ढूंढ़ना, शुद्ध करना, छान-बीन, जाँच, शरीर की धातुओं को वमन, विरेचन आदि से शुद्ध करना। शोधना–(हिं०क्रि०) शुद्ध करना, औषधि बनाने के लिये धातु आदि का संस्कार करना, खोजना, ढूंढ़ना सुधारना, ठीक करना।

शोधनी–(सं०स्त्री०) सम्मार्जिनी- झाड़ू, बोहारू। शोधनीय–(सं० वि०) शुद्ध करने के योग्य। शोधवाना–(हिं०क्रि०) शोधने का काम दूसरे से कराना, ढुंढवाना। शोधित–(सं०वि०)परिष्कृत, स्वच्छ किया हुआ। शोधैया–शोधने वाला, सुधारक।

शोफ–(सं०पुं०) शोथ रोग, सूजन।

शोभ–(सं० पुं०) शोभन, शोभा, (वि०) शोभा युक्त, सुन्दर। शोभन–(सं० नपुं०) शुभ, कल्याण, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक, धर्म, पुण्य सौन्दर्य, एक मातृक छन्द का नाम, मालकेश राग का एक भेद; आभूषण, शिव का एक नाम। (वि०) उत्तम, रमणीय, उचित, सुहावना। शोभना–(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी, गोरोचन, सुन्दर स्त्री, (हिं० क्रि०) सुशोभित

शोभनीय–(सं०वि०) शोभा के योग्य।

शोभा–(सं०स्त्री०) दीप्ति, चमक, कान्ति द्युति, छबि, सुन्दरता, छटा, सजावट बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त, हल्दी, गोरोचन, चमेली। शोभाकर–(सं०वि०) शोभा करने वाला। शोभाञ्जन–(सं०पुं०) सहजन का वृक्ष। शोभान्वित (सं०वि०) शोभा युक्त। शोभायमान–(सं० वि०) सुन्दर, सोहाता हुआ।

शोभावती–(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं। शोभित–(सं०वि०) शोभा युक्त

विभूषित।
शोला–(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा वृक्ष, (अ०पुं०) आग की लपट, ज्वाला
शोष–(सं०पुं०) सूखने का भाव, शोषण, यक्ष्मा रोग, बच्चों का सुखण्डी का रोग। **शोषक**–(सं०वि०) सोखने वाला घुलने वाला, नाश करने वाला।
शोषण–(सं०नपुं०) सोखना, सुखाना, घुमाना, क्षीण करना, नाश करना।
शोषणीय–(सं० वि०) सुखाने योग्य।
शोषित–(सं० वि०) सोखा हुआ, सुखाया हुआ।
शौक्तिक–(सं० नपुं०) मुक्ता, मोती।
शौक्तिका–(सं०स्त्री०) सीप।
शौक्तेय–(सं० वि०) शुक्ति सबंधी।
शौङ्गेय–(सं० पुं०) गरुड़ पक्षी, श्येन पक्षी, बाज़।
शौच–(सं० नपुं०) शुचिता, पवित्रता, शास्त्र में जिन सब वस्तुओं का भोजन निषिद्ध बतलाया है उनका परित्याग, वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सब से पहले किये जाते हैं,
शौचत्व–(सं०नपुं०) शौच कार्य।
शौचविधि–(सं० स्त्री०) मलमूत्र आदि का त्याग करना। **शौचाचार**–(सं०पुं०) शुद्धिकर्म।
शौचेय–(सं०पुं०) रजक, धोबी।
शौटीर–(सं०पुं०) त्यागी, वीर।
शौण्ड–(सं०वि०) मद्य पीकर मतवाला, प्रगल्भ। **शौण्डता**–(सं०स्त्री०)मत्तता।
शौण्डी–(सं०स्त्री०) पिप्पली,मिर्च।
शौण्डीर–(सं० वि०) अहंकारी घमंडी।
शौत–(हिं०स्त्री०) देखो सौत।
शौन–(सं०नपुं०) वह मास जो बिक्री के लिये रक्खा हो।
शौनक–(सं० पु०) एक वैदिक आचार्य का नाम। **शौनिक**–(सं०पुं०) आखेट, मृगया।
शौरसेन–(सं० वि०) शूरसेन सम्बन्धी।
शौरसेनी–(सं०स्त्री०) प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा।
शौरि–(सं०पुं०) विष्णु, शनि ग्रह,कृष्ण
शौरिप्रिय–(सं०पु०) हीरक, हीरा।
शौरिरत्न–(सं० पुं०) नीलम।
शौर्य–(सं०नपुं०) शूरता, वीरता।
शौल–(सं०पुं०) लाङ्गल, हल की फार।
शौल्किक–(सं० पुं०) शुल्क, कर आदि उगाहने वाला अधिकारी।
शौल्फ–(सं०नपुं०) सौंफ़ सुलफे का साग
श्मन–(सं०नपुं०) मुख, शव।
श्मशान–(सं० पुं०) शव जलाने का स्थान, मरघट। **श्मशानपति**–(सं०पुं) शिव, महादेव। **श्मशानभैरवी**–(सं०स्त्री०) दुर्गा। **श्मशानवासी**–(सं०पुं०) शिव, चाण्डाल। **श्मशानवासिनी**–(सं०स्त्री०) काली।
श्मश्रु–(सं० नपु०) मुख पर के बाल, दाढ़ी मूंछ। **श्मश्रुकर**–सं०पुं०)हज्जाम
श्मश्रुल–(सं०वि०) दाढ़ी मूंछ वाला।
श्मश्रुशेखर–(सं०पुं०) नारियल का पेड़
श्याम–(सं०वि०)काला, सांवले रंग का; (पुं०) मेघ, बादल, कोयल, धतूरा, दौना, एक राग का नाम, श्रीकृष्ण का एक नाम। **श्यामक**–(सं०वि०) काले रंग का। **श्यामकण्ठ**–(सं०पुं०) नीलकण्ठ पक्षी, मोर, शिव, महादेव। **श्यामकर्ण**–(सं०पुं०) वह सफ़ेद घोड़ा जिसके कान काले होते हैं। **श्यामजीरा**–(हिं०पु०) काला जीरा, एक प्रकार का महीन धान। **श्यामटीका**–(हिं०पु०) काला टीका जो बच्चों को कुदृष्टि बचाने के लिये लगाया जाता है। **श्यामता**–(सं० स्त्री०) कृष्णता, कालापन, मलिनता, उदासी। **श्यामपर्ण**–(सं०पु०) सिरिस का पेड़। **श्यामपूरबी**–(हिं० पु०) एक प्रकार का संकर राग। **श्याममञ्जरी**–(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं। **श्याममृग**–(सं०पुं०)काला हरिन।
श्यामल–(सं०पुं०)काले रंग का, साँवला (पुं०) एक प्रकार का बहुत विषैला बिच्छू। **श्यामलता**–(सं०स्त्री०) काला पन, सांवलापन। **श्यामला**–(सं० स्त्री०) पार्वती, जामुन, कस्तूरी।
श्यामसुन्दर–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
श्यामा–(सं०स्त्री०) बांझ स्त्री, राधा का एक नाम, एक गोपी का नाम, सोलह वर्ष की तरुणी,कालिका देवी, रात, छाया, यमुना, रात्रि, कोयल, सावाँ नामक अन्न, तुलसी, कमलगट्टा, कस्तूरी, हल्दी,हरीतकी, हर्रे।
श्यामाङ्ग–(सं०पुं०) साँवले रंग का।
श्याल,श्यालक–(सं०पुं०)पत्नी का भाई, साला, भगिनीपति, बहनोई, सियार, गीदड़। **श्यालिका**–(सं०स्त्री०) पत्नी की बहिन, शाली। **श्येन**–(सं०पुं०) बाज नामक पक्षी। **श्येनगामी**–(सं०वि०) वेग से जाने वाला।
श्येनिका–(सं० स्त्री०) बाज पक्षी की मादा; एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
श्येनी–(सं०स्त्री०) मादा बाज, कश्यप की एक कन्या का नाम।
श्योणाक,श्योनाक–(सं० पुं०) सोनापाठा नामक क्षुप, लोध।
श्रंग–(हिं०पुं०) देखो शृङ्ग।
शृंग–(सं०पुं०) गमन, जाना।
श्रद्धान–(सं०वि०)श्रद्धायुक्त, श्रद्धालु।
श्रद्धा–(सं०स्त्री०) बड़ों के प्रति पूज्य-भाव, स्पृहा, आदर, आप्त पुरुषों तथा शास्त्रादि में दृढ़ निश्चय, बड़ों के वचनों में विश्वास, आस्था, चित्त की प्रसन्नता, भक्ति, कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि को ब्याही थी। **श्रद्धातव्य**–सं० वि०) श्रद्धा करने योग्य। **श्रद्धादेय**–(सं० वि०) श्रद्धा पूर्वक दिया जाने वाला।
श्रद्धामय–(सं०स्त्री०) श्रद्धा स्वरूप।
श्रद्धालु–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके मन में गर्भावस्था के कारण अनेक प्रकार की अभिलाषायें हों (वि०) श्रद्धायुक्त, श्रद्धावान्। **श्रद्धावान्**–(हिं०पु०) श्रद्धायुक्त जिनके मन में श्रद्धा हो। **श्रद्धास्पद**–(सं०वि०) श्रद्धापात्र, पूजनीय। **श्रद्धेय**–(सं० वि०) श्रद्धा के योग्य।
श्रम–(सं०पुं०) प्रयास, अभ्यास, परिश्रम, थकावट, शास्त्रों का अभ्यास, तपस्या, चिकित्सा, व्यायाम, स्वेद, पसीना, साहित्य के संचारी भावों में से एक। **श्रमकण**–(सं०पुं०)पसीने का बूंद। **श्रमकर**–(सं०वि०) परिश्रम करने वाला। **श्रमघ्न**–(सं० वि०) श्रम को हटाने वाला। **श्रमच्छिद्**–(सं०वि०)श्रम को दूर करने वाला। **श्रमजल**–(सं०नपुं०) पसीना। **श्रमजित्**–(सं०वि०) परिश्रम करने पर न थकने वाला। **श्रमजीवी**–(सं० वि०)परिश्रम करके पेट पालने वाला, **श्रमण**–(सं०पुं०) बौद्ध सन्यासी, नीच कर्म करने वाला, नीच कर्म जीवी (वि०) घृणित। **श्रमविन्दु**–(सं०पुं०) पसीनो के बूंद। **श्रमवारि**–(सं०नपुं०) स्वेद जल, पसीना। **श्रमविनोद**–(सं० पुं०) परिश्रम से होने वाला सुख। **श्रमविभाग**–(सं०पुं०) परिश्रम या कार्य का विभाग। **श्रमशीकर**–(सं० पुं०) श्रमकण पसीना। **श्रमसाध्य**–(सं० वि०) परिश्रम से करने योग्य। **श्रमसिद्ध**–(सं०वि०) परिश्रम द्वारा प्राप्त, **श्रमसीकर**–(सं०पुं०) श्रमबिन्दु, पसीना। **श्रमस्थान**–(सं० नपुं०) कार्यालय, परिश्रम करने का स्थान। **श्रमाम्बु**–(सं०नपुं०) श्रमवारि पसीना। **श्रमिक**–(हिं० पुं०) नौकर, मजदूर।
श्रमित–(सं०वि०) श्रान्त, शिथिल, थका हुआ।
श्रमी–(हिं०वि०) परिश्रमी, श्रमजीवी।
श्रयण–(सं०नपु०) आश्रय।
श्रवण–(सं०नपुं०) श्रवणेन्द्रिय, कान।
श्रवणगोचर–(सं०पुं०) कर्णगोचर।
श्रवणपथ–(सं० पुं०) कान। **श्रवणविद्या**–(सं०स्त्री०) संगीत शास्त्र।
श्रवणविभ्रम–(सं०पुं०)सुननेकी भूल।
श्रवणविषय–(सं०पुं०) श्रवणगोचर।
श्रवणव्याधि–(सं०स्त्री०)कान का रोग,
श्रवणहारी–(सं०वि०) जो सुनने में अच्छा जान पड़े।
श्रवणा–(सं०स्त्री०)अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से बाईसवां नक्षत्र।
श्रवणीय–(सं०वि०) सुनने योग्य।
श्रवन्–(हिं०पु०) श्रवन, कान।
श्रवना–(हिं०क्रि०) गिराना, बहाना।
श्रविष्ठा–(सं०स्त्री०) धनिष्ठा नक्षत्र।
श्रविष्ठारमण–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
श्रव्य–(सं०वि०) श्रोतव्य, जो सुना जा सके।
श्राद्ध–(सं०नपुं०) श्रद्धा पूर्वक किया हुआ कार्य, वह कर्म जो शास्त्र विधि के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। **श्राद्धकर्ता**–(सं० वि०) श्राद्ध करने का अधिकारी।
श्राद्धकर्म–(सं०नपुं०) श्राद्ध कार्य।
श्राद्धकाल–(सं०पु०) अशौच के अन्त का दूसरा दिन। **श्राद्धत्व**–(सं० नपुं०) श्राद्ध का भाव या धर्म।
श्राद्धपक्ष–(सं०पुं०)पितृपक्ष। **श्राद्धभोक्ता**–(सं० पुं०) श्राद्ध में भोजन करने वाला ब्राह्मण। **श्राद्धिक**–(सं०पुं०) श्राद्ध संबंधी द्रव्यादि।
श्रान्त–(सं०पुं०) जितेन्द्रिय (वि०) खिन्न दुःखी थका हुआ, निवृत्त, श्रमयुक्त, क्लान्त।
श्रान्ति–(सं०स्त्री०) श्रम, खेद दुःख।
श्राप–(हिं०पुं०) देखो शाप।
श्राम–(सं० पुं०) मण्डप, घर, काल, समय।
श्राव–(सं० पुं०) श्रवण, कान।
श्रावक–(सं०पु०)बौद्ध या जैन सन्यासी, नास्तिक, कौवा, शिष्य, दूर का शब्द।
श्रावग–(हिं०पुं०) देखो श्रावक।
श्रावगी–(हिं०पु०)जैनमतानुयायी, जैनी
श्रावण–(सं०पुं०) कान से सुना हुआ शब्द; वर्ष का चौथा महीना जिसकी पूर्णिमा तिथिको श्रवण नक्षत्र रहता है।
श्रावणा–(सं० स्त्री०) सुदर्शना नामक वृक्ष, भूकदम्ब।
श्रावणी–(सं०स्त्री०) श्रवण नक्षत्र युक्त पौर्णमासी, श्रावण मासकी पूर्णिमा, इस दिन ब्राह्मणों का 'रक्षाबन्धन' या 'सलीनो'नामक त्योहार होता है।
श्रावयितव्य–(सं०वि०) सुनाने योग्य।
श्रावस्ती–(सं०स्त्री०) एक प्राचीन जनपद और उसकी राजधानी, इसको आज कल सहेत महेत कहते हैं।
श्राविता–(हिं०वि०)श्रोता, सुनने वाला
श्राव्य–(सं०वि०)श्रोतव्य, सुनने लायक
श्रित–(सं० वि०) सेवित, आश्रित, पका हुआ।
श्रियंमन्या–(सं०स्त्री०) अपने को लक्ष्मी समझने वाली।
श्रिय–(सं०स्त्री०)मंगल, कल्याण,शोभा।
श्रिया–(सं०स्त्री०)विष्णु की पत्नी,लक्ष्मी
श्री–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, कमला, कीर्ति, यश, पद्म, कमल, वृद्धि; सिद्धि, बेल का वृक्ष, मति, ऐश्वर्य, अधिकार, उपकरण, धर्म अर्थ और काम, सरस्वती, प्रभा, शोभा ऋद्धि और सिद्धि नामक औषधि,कान्ति, चमक, सफेद चन्दन, विन्दी नामक स्त्रियों का आभूषण; एक आदर सूचक शब्द जो नाम के आगे लिखा जाता है, वैष्णवों का एक सम्प्रदाय, एक एक प्रकार का पद, चिह्न; (पु०)

ब्रह्मा, विष्णु, कुबेर, एकाक्षर छन्द विशेष,एक राग का नाम। श्रीकण्ठ–(सं०पुं०) शिव, महादेव, एक पक्षी का नाम। श्रीकर–सं०नपुं०) लाल कमल, विष्ण। श्रीकरण–(सं०नपुं०) लेखनी, कायस्थों की एक शाखा।

श्रीकान्त–(सं०पु०) लक्ष्मीपति, विष्णु। श्रीकाम–(सं० वि०) धनधान्य की कामना करने वाला। श्रीकीर्ति–(सं०पुं०)ताल का एक भेद। श्रीकृष्ण–(सं०पु०)द्वारकानाथ,वासुदेव, कृष्ण। श्रीक्षेत्र–(सं०पु०) जगन्नाथ पुरी तथा उसके आस पास के प्रदेश। श्रीखण्ड–(सं०नपु०) हरिचन्दन। श्रीखण्डशैल–(सं०पुं०) मलय पर्वत।

श्रीगदित–(स० नपुं०) साहित्य में उपरूपक का एक भेद, इसका दूसरा नाम श्रीरसिका है। श्रीगन्ध–(सं० नपुं०) सफेद चन्दन। श्रीगर्भ–(सं० पुं०) विष्णु, खड्ग, तलवार। श्रीगेह–(सं०पु०) पद्म, कमल। श्रीचक्र–(सं०नपु०) त्रिपुरा सुन्दरी का पूजा यन्त्र विशेष, इन्द्र का रथ, चक्र। श्रीटंक–(सं०पुं०) संगीतमें एक प्रकार का राग; श्रीतरु–(स०पुं०) साल का पेड़; श्रीताल–एक प्रकार का ताल वृक्ष; श्रीदयित–(सं० पुं०) विष्णु; श्रीदाल–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण के एक ग्वाल सखा का नाम; श्रीधर–(सं० पुं०) शालग्राम चक्र, विष्णु (वि०) तेजस्वी, तेजवान्; श्रीनाथ–(सं०पुं०) विष्णु; श्रीनिकेत–(सं० पुं०) लाल कमल,सुवर्ण,सोना,वैकुण्ठ; श्रीनिधि–(सं०पुं०) विष्णु; श्रीनिकेतन–(सं०पु०) विष्णु, वैकुण्ठ; श्रीनिवास–(सं०पुं०) लक्ष्मीका निवास,विष्णु; श्रीपञ्चमी–(सं० स्त्री०) माघ शुक्ला पञ्चमी, वसन्तपंचमी।

श्रीपति–(सं०पुं०) विष्ण, कृष्ण, कुबेर, राजा, नारायण। श्रीपथ–(सं०पुं०) राजमार्ग, बड़ी और चौड़ी सड़क। श्रीपर्ण–(सं० नपुं०) पद्म; कमल। श्रीपाद–(सं० पुं०) पूज्यपाद, वह जो चरण पूजने योग्य हो। श्रीपुट–(सं० पुं०)एक प्रकार का छन्द। श्रीपुत्र–(सं०पुं०) कामदेव, घोड़ा। श्रीप्रद–(सं०वि०) ऐश्वर्य देनें वाला। श्रीप्रदा–(सं०स्त्री०) राधा। श्रीप्रसून–(सं० नपुं०) लवंग, लौंग। श्रीप्रिय–(सं० नपुं०) हरताल। श्रीफल–(सं० पुं०) बेल का वृक्ष; आँवला। श्रीफला–(सं०स्त्री०) करेली, आंमला। श्रीबन्धु–(सं०पुं०) अमृत। श्रीबीज–(सं० पुं०) ताड़ का वृक्ष। श्रीभक्ष–(सं० पुं०) देवता के सामने रखने का मधुपर्क। श्रीभानु–(स० पुं०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। श्री मञ्जरी–(सं०स्त्री०) तुलसी, सुरसा।

श्रीमत्–(सं०वि०)ऐश्वर्यशाली,धनवान्, श्रीयुक्त, सुन्दर,(पु०)तिल का पौधा, विष्णु, पीपल का पेड़, शिव कुबेर। श्रीमती–(सं०स्त्री०) स्त्रियों के लिये आदरसूचक शब्द, राधा, लक्ष्मी। श्रीमन्त–(सं० पुं०) एक प्रकार का आभूषण, स्त्रियों के सिर के बीच की मांग, (वि०) धनवान्, धनाढ्य। श्रीमय–(सं० पु०) श्रीयुक्त, विष्णु। श्रीमलापहा–(सं०स्त्री०) तमाखू। श्रीमहिमन्–(सं०पुं०) शिव, महादेव। श्रीमान्–(हिं०वि०) देखो श्रीयुत,धनवान श्रीमाल–(सं० पुं०) पश्चिम भारत के वैश्यों की एक जाति। श्रीमाला–(सं० स्त्री०) गले में पहरने का एक आभूषण।

श्रीमुख–(सं० पु०) एक संवत्सर का नाम, (नपु०) सुन्दर, सुन्दर मुख। श्रीमूर्ति–(सं०स्त्री०) विष्णु की प्रतिमा। श्रीयुक्त–(सं० वि०) श्रीमान्, शोभा सम्पन्न, एक आदर सूचक विशेषण जो बड़े आदमियों के नाम के पहले लगाता जाता है। श्रीयुत–(सं०वि०) श्रीयुक्त।

श्रीरंग–(सं०नपुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु, ताल का एक भेद। श्रीरमण–(स०पुं०) विष्णु, संगीत में एक संकर राग का नाम। श्रीराग–(सं०पुं०) संगीत के मुख्य ६ रागों में से एक राग। श्रीरूपा–(सं०स्त्री०) राधा। श्रीलाभ–(सं०पुं०) लक्ष्मीलाभ, सौभाग्यवृद्धि। श्रीवत्स–(सं०पुं०) विष्णु के वक्षस्थल पर का अंगुष्ठ प्रमाण चिह्न जो भृगु के चरण प्रहार का चिह्न माना जाता है। श्रीवद–(सं०वि०)भावी शुभ कहने वाला श्रीवन्त–(सं०वि०)सम्पत्तिशाली,धनाढय श्रीवर्धन–(स०पुं०) शिव, एक राग का नाम। श्रीवल्ली–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की लता जिसका व्यवहार औषधियों में होता है। श्रीवास,श्रीवासक–(सं०पुं०) तारपीन का तेल, पद्म, कमल, विष्णु, शिव, देवदारु, चन्दन, गुग्गुल, धूप। श्रीविद्या–(स०स्त्री०) त्रिपुरसुन्दरी नाम की एक महाविद्या। श्रीवृक्ष–(सं० पुं०) अश्वत्थ, पीपल, विल्ववृक्ष। श्रीवृद्धि–(सं० स्त्री०) भाग्य की वृद्धी। श्रीसहोदर–(सं०पुं०) चन्द्रमा। श्रीस्वरूपिणी–(सं०स्त्री०) राधा। श्रीहत–(सं०वि०) निस्तेज, शोभारहित। श्रीहरा–(सं०स्त्री०) राधा। श्रीहर्ष–(सं०पुं०) विष्णु, नारायण, संस्कृत के नैषध चरित्र महाकाव्य के प्रणेता।

श्रुत–(सं०पुं०) कालिन्दी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम (वि०) सुना हुआ, ज्ञात, प्रसिद्ध। श्रुतकीर्ति–(सं०स्त्री०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम जो द्रौपदी से उत्पन्न थे, कीर्तियुक्त। श्रुतदेव–(स०पुं०)श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। श्रुतदेवी–(सं०स्त्री०) वासुकी की बहिनका नाम। श्रुतपूर्व–सं०वि०) जो पहले सुना गया हो। श्रुतशील–(सं०वि०) पण्डित और सदाचारी। श्रुतसेन–(सं०पुं०) जनमेजय के पिता का नाम। श्रुतसेना–(सं०स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

श्रुतार्थ–(स०पुं०) वह अर्थ जो सुनने के साथ ही समझ में आजावे।

श्रुति–(सं०स्त्री०) वेद, कर्ण, कान, सुनी हुई बात, वार्ता, श्रवण नक्षत्र, जनश्रुति, ध्वनि, शब्द, अनुप्रास का एक भेद, त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा अभिधान, नाम, विद्या, विद्वत्ता। श्रुतिकट–(सं०पुं०) प्रायश्चित्त। श्रुतिकटु–(सं० पुं०) कठोर या कर्कश शब्द, काव्य में ऐसे शब्दों का व्यवहार। श्रुतिकथित–(सं० वि०) वेदोक्त। श्रुतितत्पर–(सं०वि०)वेदाभ्यास में लीन। श्रुतिधर–(स०वि०) जिस मनुष्य को श्लोकादि सुनते ही स्मरण हो जाता हो। श्रुतिपथ–(सं०पुं०) श्रवणेन्द्रिय, वेद रूप पथ। श्रुतिमार्ग, श्रुतिमण्डल–(सं०नपुं०) कर्ण, कान। श्रुतिमाला–(सं०पुं०) ब्रह्मा। श्रुतिमुख (सं०पुं०) ब्रह्मा। श्रुतिवर्जित–(स०वि०) बधिर, बहिरा। श्रुतिवेध–(सं०पुं०) कर्णविध, कनछेदन। श्रुतिसागर–(सं० पुं०) विष्णु। श्रुत्यनुप्रास–(स०पुं०) अलकार का वह भेद जहां एक ही स्थान पर उच्चारण होने वाले व्यंजन अक्षर अनेक बार प्रयोग किये जावें श्रूयमाण–(सं०वि०) जो सुना जावे। श्रुवा–(सं०स्त्री०) देखो स्रुवा।

श्रेढी–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का पहाड़ा जिसका वर्णन लीलावती में लिखा है।

श्रेणि–(सं० स्त्री०) पंक्ति, आवली, परम्परा, शृंखला, मण्डली, समूह, दल, सेना, सिकड़ी, पानी भरने का डोल, सीढी, किसी वस्तु का ऊपरी भाग। श्रेणिका–(स०वि०) तम्बू, खेमा। श्रेणिबद्ध–(सं०पुं०) क्रम बांधे हुए। श्रेणिमत्–(सं०पु०) सेनापति। श्रेणी–(सं०स्त्री०) देखो श्रेणि। श्रेणीकृत–सं०वि०) क्रम में सजा हुआ श्रेणीधर्म–(स० पुं०) पंचायत की रीति, श्रेणीवद्ध–(सं०वि० क्रम बांधे हुए।

श्रेय–(स०नपुं०) सामवेद; (हिं०वि०) धर्म, पुण्य, सदाचार, मुक्ति, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, कल्याण, (वि०) अधिक अच्छा, यश तथा कल्याण देने वाला, श्रेष्ठ, उत्तम।

श्रेयस–(सं०नपुं०) अतिशय मङ्गल। श्रेयस्कर–(सं०वि०) मंगलकारी, शुभ करने वाला। श्रेयस्करी–(सं०स्त्री०) हरीतकी, हर्रे। श्रेयस्काम–(सं० पुं०) मंगल चाहने वाला। श्रेयोमय–(सं०वि०) मंगलमय, शुभमय।

श्रेष्ठ–(स०नपुं०) गाय का दूध (पुं०) कुबेर, राजा,ब्राह्मण, विष्णु, महादेव, (वि०) प्रशस्त, उत्तम, ज्येष्ठ, बड़ा, वृद्ध, वूढ़ा कल्याणपात्र, पूज्य,उत्कृष्ट, मुख्य। श्रेष्ठतम–(स० वि०) सबमें श्रेष्ठ। श्रेष्ठतर–(सं०वि०) वह जो दो व्यक्ति या पदार्थों में प्रधान हो। श्रेष्ठतः–(सं०अव्य०) विशेष करके। श्रेष्ठता–(सं० स्त्री०) विशिष्ठता, प्रधानता, उत्तमता, बड़ाई। श्रेष्ठलवण–(सं०नपुं०) सेंधा नमक। श्रेष्ठवृक्ष–(स०पुं०) अरुण वृक्ष।

श्रेष्ठा–(सं०स्त्री०) स्थलपद्मिनी, त्रिफला श्रेष्ठी–(सं०पुं०) प्रतिष्ठित व्यवसायी, सेठ, साहूकार।

श्रोण–(सं०पुं०) पंगु, खञ्ज।

श्रोणि–(सं०स्त्री०) कटिदेश, कमर, नितम्ब, चूतड़, मार्ग, पथ। श्रोणिकपाल–(सं०नपुं०) जड़घास्थि। श्रोणिबिम्ब–(सं०स्त्री०) करधनी। श्रोणिसूत्र–(सं०नपुं०) तलवार लटकाने का परतला, कमर की करधनी। श्रोणी–(सं०स्त्री०) कटि, कमर, नितम्ब, चूतड़।

श्रोत–(हिं०पुं०) श्रवणेन्द्रिय, कान। श्रोतक–(स०वि०) सुनने योग्य। श्रोता–(हिं०पु०) सुनने वाला, कथा आदि सुनने वाला।

श्रोत्र–(सं०नपुं०) कर्ण, कान, वेदज्ञान। श्रोत्रज्ञ–(स०वि०)श्रवण पटु। श्रोत्रमूल–(सं० नपुं०) कर्णमूल। श्रोत्रहीन–(सं०वि०) बहिरा।

श्रोत्रिय–(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जिसने वेद का अध्यन किया हो। श्रोत्री–(हिं०पुं०) श्रोत्रिय।

श्रोन–(हिं०पुं०) देखो शोण।

श्रोनित–(हिं०वि०) देखो शोनित।

श्रौत–(सं०नपुं०) श्रुति संबंधी, श्रवण सबंधी, वह जो वेद के अनुसार हो, यज्ञ संबंधी, तीन प्रकार की अग्नि यथा गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण; वेद विहित धर्म यथा-दान, अग्निहोत्र और यज्ञ।

श्रौतश्रव–(सं० पुं०) शिशुपाल का एक नाम। श्रौतसूत्र–(सं०नपुं०)वे सूत्र जिनका विधान यज्ञादि में होता है। श्रौत्रजन्म–(सं० पु०) द्विजों का उपनयन संस्कार।

श्लक्ष्ण–(सं०वि०) अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म, चिकना,मनोहर। श्लक्ष्णता–(सं०स्त्री०) सूक्ष्मता, चिकनापन, सुन्दरता।

श्लथ–(सं०वि०) शिथिल, ढीला, दुर्बल, अशक्त, मन्द, धीमा, जो बंधा न हो श्लाघन–(सं०वि०) अपनी प्रशंसा करने वाला (नपुं०) डींग हांकना। श्लाघनीय–(सं० वि०) प्रशंसनीय, श्रेष्ठ,) उत्तम। श्लाघनीयता–(सं० स्त्री०) श्लाघा, खुशामद। श्लाघा–(सं०स्त्री०)

प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई, श्लाघित–(सं०वि०) प्रशंसित ।
श्लाघ्य–(सं०वि०) श्लाघनीय, सराहने योग्य, श्रेष्ठ, उत्तम । श्लाघ्यता–(सं०स्त्री०) श्लाघा ।
श्लिष्ठ–(सं०वि०)वह जिसका एक स्पष्ट तथा दूसरा अतिस्पष्ट अर्थ हो,मिला हुआ, जुटा हुआ, चिपका हुआ, आलिंगित । श्लिष्टरूपक–(सं०नपुं०) वह अलंकार जिसमें श्लिष्ट शब्द द्वारा रूपकालंकार होता है ।
श्लिष्टाक्षेप–(सं० पुं०) वह अलंकार जिसमें श्लिष्ट पद के प्रयोग से आक्षेप रहता है ।
श्लिष्टि–(स० स्त्री०) जोड़, मिलान, आलिंगन ।
श्लिष्टोक्ति–(सं०स्त्री०) श्लेषयुक्त वाक्य या कथन ।
श्लीपद–(सं०नपुं०)फीलपाँव नामक रोग
श्लील–(सं०वि०) शुभ, मंगलदायक, उत्तम ।
श्लेष–(सं०पुं०) संयोग, मिलान, जोड़, आलिंगन, वह अलंकार जिसमें दो या अनेक अर्थ घटित पद हों अथवा अनेक अर्थों में प्रयुक्त हो सकते हों। श्लेषक–(सं० वि०) जोड़ने वाला, मिलाने वाला । श्लेषण–(सं०नपुं०) संयुक्त करना,मिलाना, आलिंगन ।
श्लेषा–(सं०स्त्री०) आलिंगन, भेंट ।
श्लेषोपमा–(सं० स्त्री०) वह अलंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमान और उपमेय दोनों में लग सकते हैं ।
श्लेष्मा–(सं० पुं०) कफ,
श्लेष्मात–(सं०पुं०) लिसोड़ा ।
श्लैष्मिक–(सं०वि०) कफ सम्बन्धी ।
श्लोक–(सं०पुं०) पद्य, कविता, अनुष्टुप् छन्द, यश, प्रसिद्धि, कीर्ति, शब्द, ध्वनि, स्तुति,प्रशंसा,पुकार, आह्वान; श्लोककृत्–(स० वि०) श्लोक बनाने वाला, श्लोकत्व–(सं०नपुं०) श्लोक का भाव ।
श्वक–(स०पुं०) वृक, भेड़िया ।
श्वक्रीडिन्–(सं० वि०) कुत्तों के साथ खेलने वाला ।
श्वजीविका–(सं०स्त्री०) दासत्व वृत्ति ।
श्वन–(सं० पुं०) कुक्कुर, कुत्ता ।
श्वपच्–(सं०पुं०) चाण्डाल, डोम, कुत्ते का माँस पकाकर खाने वाला ।
श्वपति–(स०पुं०) किरात वेषधारी रुद्र का अनुचर ।
श्वाक–(स०पुं०) चाण्डाल, व्याध ।
श्वफल–(सं०पुं०) बिजौरा नीबू, चूना
श्वफल्क–(सं०पुं०) विष्णुपुत्र, अक्रूर के पिता ।
श्वभीरु–(स०पुं०) शृगाल, सियार ।
श्वभ्र–(सं०नपुं०) एक नरक का नाम, दरार, छेद ।
श्वशुर–(सं०पुं०) पति या पत्नी का पिता, ससुर, पूज्य व्यक्ति ।

श्वश्रू–(सं०स्त्री०)पति या पत्नीकी माता, सास ।
श्वसन–(सं०नपुं०) साँस लेना, हाँफना, आह भरना,(पुं०) मैनफल, एक वस्तु का नाम ।
श्वसनाशन–(सं०पुं०) सर्प, साँप ।
श्वस्तनी–(सं०स्त्री०) आनें वाला दूसरा दिन ।
श्वान–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता, छप्पय छन्द का एक भेद ।
श्वास–(सं०पुं०) प्राणवायु साँस, दम, दमे का रोग, जल्दी जल्दी साँस लेना, हाफना, श्वासकास– दमा, खाँसी, श्वासरोध–दम घुटना । श्वासा–(हिं०स्त्री०) साँस, दम, प्राण ।
श्वासोच्छ्वास–(सं० पुं०) वेग से साँस खींचना और बाहर निकालना ।
श्वेत–(सं० नपुं०) चाँदी, सफेद रंग, कौड़ी, शख, सफेद जीरा, सफेद घोड़ा, सफेद, वराह, सफेद बादल (वि०) सफेद धौला, (पुं०) एक द्वीप का नाम; श्वेतकन्द–(सं०पुं०) प्याज । श्वेतकुञ्जर–(सं०पुं०) सफेद हाथी, ऐरावत; श्वेतकुष्ट–(सं०नपुं०) सफेद दाग वाला कोढ़ । श्वेतकृष्ण–(स० वि०) सफेद और काला, एक बात और दूसरी बात । श्वेतकेतु–(सं०पुं०) उद्दालक ऋषि के पुत्र का नाम । श्वेतकेश–(स० पुं०) सफेद बाल ।
श्वेत गज–(सं० पुं०) ऐरावत हाथी ।
श्वेतगरुत्–(सं० पुं०) राजहंस ।
श्वेतछद–(सं०पुं०) वनतुलसी । श्वेतता–(सं०स्त्री०) सफेदी । श्वेतद्युति–(सं०पुं०) चन्द्रमा । श्वेतद्वीप–(सं०पुं०) पुराणानुसार एक द्वीप का नाम । श्वेतधातु–(सं०पुं०) खड़िया । श्वेतधामन्–(सं० पुं०) चन्द्रमा, कपूर । श्वेतनील–(सं०पुं०) बादल । श्वेतपक्ष–(सं०पुं०) हँस । श्वेतप्रदर–(सं०पुं०) वह रोग जिसमें स्त्रियों की योनि में से सफेद धातु गिरती है । श्वेतफला–(सं०स्त्री०) सफेद भंटा; श्वेतभानु–(सं० पुं०) चन्द्रमा । श्वेतमयूख–(सं०पुं०) चन्द्रमा श्वेतरत्न–(सं०नपुं०)स्फटिक;श्वेतराशि–(सं०पुं०) चन्द्रमा । श्वेतरस–(सं०नपुं०) मक्खन । श्वेतवाराह–(सं०पुं०) ब्रह्मा की सृष्टि के आदि युग का प्रथम कल्प; श्वेतवाहन–(सं०पुं०) चन्द्रमा, अर्जुन ।
श्वेता–(सं० स्त्री०) कौड़ी, वंशलोचन, फिटकिरी, चीनी, शक्कर, मिश्री, सफेद घुमची ।
श्वेताद्रि–(सं०पुं०) कैलाश पर्वत ।
श्वेताम्बर–(सं०पु०) सफेद वस्त्र, जैनों के एक सम्प्रदाय का नाम ।
श्वेताश्वतर–(सं०पुं०) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा ।

ष

ष–संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला के व्यजन वर्णों में से इकतीसवां अक्षर; इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है इसीसे यह मूर्धन्य कहलाता है ।
ष–(सं०पुं०) केश, ध्वंस, नाश, अवशेष, निर्वाण, मुक्ति, स्वर्ग; (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर ।
षंड–देखो षण्ड;
षञ्जन–(सं०पुं०) आलिंगन, समागम ।
षक्–(सं०वि०) गिनती में ६ (पुं०) ६ की सख्या, षाडव जाति का एक राग ।
षट्–(सं०वि०) गिनती में छः (पुं०) ६ की संख्या ।
षट्क–छः वस्तुओं का समूह ।
षट्कर्म–(सं०नपुं०) ६ प्रकार के कर्म यथा-यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन दान और प्रतिग्रह ।
षट्कला–(सं०स्त्री०) संगीत में ब्रह्मताल के चार भेदो में से एक ।
षट्कार–(सं० पुं०) षट् शब्द का उच्चारण ।
षट्कोण–(सं०नपुं०)छः कोने की आकृति वज्र, हीरा, (वि०)छपहल का ।
षट्चक्र–(सं०नपुं०)हठ योग के अनसार कुण्डलिनी के ऊपर ६ चक्र, षड्यन्त्र;
षट्चरण–(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा, खटमल, (वि०) छ पैर वाला ।
षट्ताल–(सं०पुं०) मृदंग का एक ताल जो आठ मात्राओं का होता है ।
षट्तिला–(स० स्त्री०) माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम ।
षट्पद्–(सं०वि०) छ पैर वाला । षट्पदप्रिय–(सं०पुं०) पद्म, कमल ।
षट्पदा–(सं० स्त्री०) भ्रामरी, भौंरी, खटमल ।
षट्पदी–(स०वि०) छ पैर वाली; (स्त्री०) भ्रामरी, भौंरी, छप्पय नामक छन्द ।
षट्पाद–(सं०पुं०)छः पैर का एक प्रकार का कीड़ा ।
षट्प्रज्ञ–(सं०पुं०) व्यभिचारी, लम्पट ।
षट्मुख–(सं०पुं०) कार्तिकेय ।
षट्रस–(सं०पुं०) छ प्रकार का रस या स्वाद, देखो षड्रस ।
षट्राग–(सं० पुं०) संगीत के छ राग यथा भैरव, मल्लार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक ।
षट्रिपु–(सं०पुं०) देखो षड्रिपु ।
षट्शास्त्र–(सं०पुं०)हिन्दुओं के छ दर्शन, देखो षड्दर्शन ।
षट्शास्त्री–(सं०पुं०) छहों दर्शनों का ज्ञाता ।
षट्वांग–(सं० पुं०) खट्वाङ्ग नामक राजर्षि जिनको दो घड़ी की साधना से मुक्ति मिली थी । षडश–(सं०पुं०). छ भागों में से एक भाग ।
षडक्ष–(सं०वि०) छ आँख वाला ।
षडक्षर–(सं०वि०)छ अक्षरों से युक्त ।
षडंग–(सं०नपुं०) शरीर के छ अवयव यथा-दो जांघ, दो बाहु, मस्तक और छाती, वेद के अङ्ग भूत छ शास्त्र यथा-शिक्षा, कल्प व्याकरण, निरुक्त ज्योतिष और छन्द; तन्त्रानुसार हृदयादि षडवयव यथा-हृदय,मस्तक, शिखा, कवच, नेत्रत्रय और करतल पृष्ठ; छ प्रकार के योगाङ्ग यथा-प्रत्याहार, ध्यान,प्राणायाम, धारणा, तर्क और समाधि ।
षडंगी–(हिं० वि०) छ अंग वाला ।
षडग्नि–(सं० स्त्री०) कर्मकाण्ड के अनुसार छ प्रकार की अग्नि यथा-गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि ।
षडश्व–(सं०वि०) छ घोड़े की गाड़ी या रथ ।
षडस्र–(सं०वि०) जिसमें छ कोने हों ।
षडात्मन्–(सं०त्रि०) अग्नि ।
षडानन–(सं०वि०) छ मुखवाला, (पुं०) कार्तिकेय ।
षड्ग–(सं०पुं०) देखो षड्ज ।
षड्गुण–(सं०पुं०) छ गुणों का समूह यथा-ऐश्वर्य,ज्ञान, यश, श्री, वैराग्य और धर्म, (वि०) जिसमें छ गुण हों ।
षड्ज–(सं०पुं०) संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर जो मयूर के स्वर से मिलता जुलता माना जाता है ।
षड्दर्शन–(सं०नपुं०)हिन्दुओं के छ दर्शन शास्त्र यथा-न्याय,वैशेषिक, साङ्ख्य, वेदान्त, मीमांसा और योग ।
षड्दर्शनी–(हिं०पुं०) दर्शनों को जानने वाला, ज्ञानी ।
षड्भाव–(सं०पुं०) दर्शन के अनुसार छ पदार्थ यथा-द्रव्य,गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय; ज्योतिष मत से छ भाव यथा-लज्जित, गर्वित, क्षुधित,तृषित, मुदित और शोभित ।
षड्भुजा–(सं०स्त्री०) खरबूजा, दुर्गा की मूर्ति का भेद ।
षड्यन्त्र–(सं० पुं०) किसी मनुष्य के विरुद्ध गुप्त रीति से कोई कार्य, भीतरी, चाल कपट पूर्ण आयोजन।
षड्रस–(सं०पुं०) छ प्रकार का स्वाद या रस यथा-मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ।
षड्रिपु–(सं०पुं०) काम क्रोध आदि मनुष्य के छ विकार ।
षड्वक्त्र–(सं०पुं०) षडानन, कार्तिकेय ।
षड्वर्ग–(सं०पुं०) छ वस्तुओं का समूह;
षड्विकार–(सं०पुं०)प्राणी के छ विकार यथा-उत्पत्ति,शरीर वृद्धि बाल्यावस्था, प्रौढ़ता, वृद्धता और मृत्यु ।
षड्विन्दु–(सं०पुं०)एक प्रकार का कीड़ा जिसकी पीठ पर छ विन्दु होते हैं ।
षण्ड–(सं० पु०) वृषभ, साँड़, क्लीब, नपुंसक, हिजड़ा; धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
षण्डत्व–(सं०नपुं०) हिजड़ापन ।
षण्डयोनि–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो पुरुष समागम के अयोग्य हो ।

(षण्डता–(सं०स्त्री०)नपुंसकता,क्लीवता;
षण्मास–(सं०नपुं०) छ महीना, आधा वर्ष।
षण्मासिक–(सं०वि०) छ मास में होने वाला।
षण्मुख–(सं०पुं०) षडानन, कार्तिकेय।
षत्व–(सं०नपुं०)मूर्धन्य षकार का भाव, 'ष' होना।
षष्ट–(सं०वि०) साठ संख्या का।
षष्टि–(सं०स्त्री०) साठ की संख्या।
षष्टिक–(सं० पुं०) साठी धान।
षष्टिका–(सं०स्त्री०) साठी धान।
षष्टितन्त्र–(सं०नपुं०) साङ्ख्य शास्त्र जिसमें साठ पदार्थों का विचार किया गया है।
षष्टिविद्या–(सं०स्त्री०) सांख्य विद्या।
षष्ठ–(सं०वि०) जिसका स्थान पांच के उपरान्त हो, छठां।
षष्ठक–(सं०वि०) छठां।
षष्ठांश–(सं०पुं०) छठां भाग।
षष्ठिका–(सं०स्त्री०) षष्ठी देवी।
षष्ठी–(सं०स्त्री०) किसी मास की शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि, कात्यायनी, सोलह मातृकाओं में से एक, जो छोटे छोटे बालको का प्रतिपालन करती हैं, दुर्गा, व्याकरण में संबंधी कारक, षष्ठी विभक्ति।
षष्ठीप्रिय–(सं०पुं०) स्कन्द, कार्तिकेय।
षाडव–(सं०पुं०) एक राग का नाम।
षाण्मातुर–(सं०पुं०) कार्तिकेय जिन्होंने कृत्तिकादि छ स्त्रियों का स्तनपान करके जीवन धारण किया था।
षाण्मासिक–(सं०वि०) छ छ महीने पर होने वाला।
षादतर–(सं०पुं०)संगीत में वह बनावटी सप्तक जो मन्द से भी कम होता है;
षाष्ठिक–(सं०वि०) षष्ठि संबंधी।
षाष्ठ–(सं०वि०) षष्ठ, छठां।
षुष्ठषु–(सं०) गर्भ विमोचन।
षोडश–(सं०वि०) सोलहवां, सोलह की संख्या।
षोडशकला–(सं०वि०) जिसमें सोलह अंश या कला हों(पुं०)चन्द्रमा, विष्णु की एक विराट मूर्ति।
षोडश गण–(सं०पुं०) पांच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, पञ्चभूत तथा मन का समूह।
षोडश दान–(सं० नपुं०) श्राद्धादि के समय किये जाने वाले सोलह प्रकारके दान यथा-भूमि, आसन, जल, वस्त्र, दीप, अन्न, ताम्बूल, छत्र, गन्ध, माला, फल, शय्या, खड़ाऊं, गाय, सोना और चाँदी।
षोडशपूजन–(सं०पुं०) सोलहो सामग्री से पूजन।
षोडशभुजा–(सं० स्त्री०) सोलह हाथ वाली दुर्गा।
षोडशमातृका–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की देवियाँ जो संख्या मे सोलह मानी गई हैं यथा-गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया; देवसेना, स्वधा, स्वाहा, लक्ष्मी, शान्ति, पुष्टि, धृति,तुष्टि और आत्म देवता।
षोडशविध–(सं०वि०) सोलह प्रकार का
षोडशश्रृंगार–(सं०पुं०) पूर्ण श्रृंगार जो सोलह प्रकार का है; देखो श्रृङ्गार।
षोडशसंस्कार–(सं० पुं०) गर्भाधान से मृत कर्म तक के सोलह संस्कार जो द्विजातियों के लिये शास्त्र में कहे गये हैं।
षोड़शांशु–(सं०पुं०) शुक्र ग्रह।
शोडशार–(सं० नपुं०) वेदी के ऊपर बनाने का चक्र विशेष।
षोडशिका–(सं० स्त्री०) एक प्राचीन परिमाण जो प्रायः सोलह माशे का होता था।
षोड़शी–(सं०वि०स्त्री०) सोलहवीं, सोलह वर्ष की स्त्री, नवयौवना स्त्री, दशमहाविद्याओं में से एक।
षोडशोपाचार–(सं०पुं०) पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह हैं यथा-आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, पुनराचमनीय, स्नान, वसन, आभरण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, चन्दन और नैवेद्य।
ष्ठीवन–(सं०नपुं०) थूकना।
ष्ठीवी–(सं०वि०) थूक से भरा हुआ।
ष्ट्यूत–(सं०वि०) थूका हुआ।

स

स–हिन्दी वर्णमाला का बत्तीसवां व्यंजन वर्ण, इसका उच्चारण स्थान दन्त है।
स–(सं०पुं०) ईश्वर, शिव, विष्णु, सर्प, पक्षी, चन्द्रमा, वायु, जीवात्मा, कान्ति, (नपुं०) ज्ञान, चिन्ता, संगीत में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर, कुछ विशिष्ट अर्थ में उपसर्ग की तरह भी यह प्रयोग होता है।
सं–(सं० अव्य०) एक अव्यय जिसका व्यवहार, संगति, समानता, शोभा आदि सूचित करने के लिये होता है यथा-संताप, संयोग आदि।
सँइतना–(हिं० क्रि०) लीपना पोतना, संचय करना, सहेजना।
सँउपना–(हिं०क्रि०) देखो सौंपना।
संक–(हिं०स्त्री०) देखो शंका।
संकट–(हिं०वि०) सँकरा; देखो संकट
संकट चौथ–(हिं० स्त्री०) माघकृष्णा चतुर्थी।
संकत–(हिं०पुं०) देखो संकेत।
संकना–(हिं०क्रि०) शंका करना, सन्देह करना।
संकर–(हिं०पुं०) देखो शङ्कर, शिव।
संकर घरनी–(हिं०स्त्री०) पार्वती।
संकरा–(हिं०वि०) जो अधिक विस्तृत न हो, पतला, (पुं०) कष्ट, आपत्ति।
संकराना–(हिं०क्रि०) संकुचित करना, कष्ट देना।
संकल–(हिं०स्त्री०) सिकड़ी।
संकलन–(हिं०पुं०) संग्रह।
संकल्प–देखो सङ्कल्प।
संकल्पना–(हिं०क्रि०) किसी बात का दृढ़ निश्चय करना, धार्मिक उद्देश्य से कुछ दान देना, विचार करना।
संकल्पना–(हिं०क्रि०) देखो संकुलपना।
संकष्ट–(हिं०पुं०) सङ्कट।
संकाना–(हिं०क्रि०) शंका करना, डरना
संकार–(हिं०पुं०) संकेत।
संकारना–(हिं०क्रि०) संकेत करना।
संकुल, संकेत–देखो सङ्कुलक, सङ्केत।
संकेतना–(हिं०क्रि०) संकट में डालना।
संकोचना–(हिं०क्रि०) संकुचित करना।
संकोची–(हिं० पुं०) संकोच या लज्जा करने वाला, सिकुड़ने वाला।
संकोपना–(हिं०क्रि०) क्रोध करना।
संक्रन्दन–(सं०पुं०) शक्र, इन्द्र।
संक्रम–(सं० पुं०) प्राप्ति, संक्रान्ति, कठिनता से आगे बढ़ने की क्रिया, सेतु, पुल, उपाय।
संक्रमण–अतिक्रमण, गमन, घूमना, फिरना, सूर्यका एक राशि से निकल कर दूसरी राशि में प्रवेश करना।
संक्रमणिका–(सं०स्त्री०) सीढ़ियों की पंक्ति
संक्रमित–(सं०वि०) स्थापित, प्रतिबिंबित
संक्रान्त–(सं० वि०) युक्त, प्रविष्ट, संचारित, व्याप्त, प्रतिबिम्बित, सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।
संक्रान्ति–(सं०स्त्री०) संचार, गमन, सूर्य का एक राशिमें से दूसरे में जाना, व्याप्ति।
संक्रामक–(सं०वि०) संसर्ग या छूत से फ़ैलने वाला (रोग तथा-प्लेग, महामारी आदि)।
संक्रोन–(हिं०स्त्री०) देखो संक्रान्ति।
संक्षिप्त–(सं०वि०) अल्प, थोड़ा।
संक्षिप्त लिपि–(हिं०स्त्री०) वह सांकेतिक लेखन प्रणाली जिसमें थोड़े स्थान में बहुत सी बातें लिखी जाती हैं।
संक्षेप–(सं० पुं०) थोड़े में कोई बात कहना, कम करना, घटाना।
संक्षेपतः–(सं०अव्य०) सक्षेप में, थोड़ेमें।
संख–(हिं०पुं०) देखो शंख।
संखनारी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका छन्द
संखा–(हिं०पुं०) चक्की के ऊपरी पाट में लगी हुई लकड़ी।
संखार–(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्षी।
संखिया–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बहुत विषैला उपधातु या पत्थर, इससे बनाया हुआ भस्म जो औषधियों में प्रयोग होता है।
संगठन–(हिं०पुं०)अलग अलग शक्तियों, लोगों या अंगों आदि को इस प्रकार एक में मिलाना कि उनमें नई शक्ति आ जावे, इस व्यवस्था से प्रस्तुत संस्था या संघ।
संगठित–(हिं०वि०) भलीभाँति व्यवस्थ करके मिलाया हुआ।
संगत–(हिं०स्त्री०) देखो सङ्गत।
संगतरा–(हिं०पुं०) एक प्रकार की मीठी नारगी, सन्तरा।
संगति–(हिं०स्त्री०) देखो सङ्गति।
संगतिया–(हिं० पुं०) वह जो नाचने या गाने वाले के साथ रह कर तबला, सारंगी आदि बजाता हो।
संगती–(हिं०पुं०) देखो संगतिया।
संगल–(हिं०पुं०) एक प्रकार का रेशम।
संगसी–(हिं०स्त्री०) देखो सँड़सी।
संगाती–(हिं०पुं०) साथी, सगी, मित्र, दोस्त।
संगी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।
संगृहीत–(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ।
संगोतरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की नारंगी, सन्तरा।
संगोपन–(सं०नपुं०) गुप्त रखना, छिपाना
संगोपित–(सं०वि०) छिपाया हुआ।
संग्रह–देखो सङ्ग्रह; संघ–देखो सङ्घ।
संघरना–(हिं० क्रि०) गाय को परचाना
संघाती–(हिं०पुं०) साथी, मित्र (वि०) प्राण नाशक।
संघेरना–(हिं०क्रि०) दो गौओं के पैर आपस में बाध देना जिसमें वे दूर न भाग जावें।
संजमनी–(हिं०स्त्री०) यमराज की नगरी
संजमनीपति–(हिं०पुं०) यमराज।
संजमी–(हिं० पुं०) देखो संयमी, नियम से रहने वाला।
संजुता–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छंद
संजोग–(हिं०पुं०) देखो संयोग।
संजोगी–(हिं० वि०) मिले हुए, भार्या सहित।
संजोना–(हिं०क्रि०) सुसज्जित करना, सजाना।
संजोह–(हिं०पुं०)लकड़ी का वह चौखटा जिसको जुलाहे बुनते समय छत पर से लटका देते हैं।
संज्ञ–(सं०वि०) वह जो सब विषयों को अच्छी तरह से जानता हो।
संज्ञा–(सं०स्त्री०) चेतना, ज्ञान, बुद्धि, संकेत, गायत्री, व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी वस्तु का बोध होता है, सूर्य की पत्नी का नाम।
संज्ञान–(सं०नपुं०) संकेत।
संज्ञापन–(सं०नपुं०) विज्ञापन, कथन।
संज्ञापुत्री–(सं०स्त्री०) यमुना नदी।
संज्ञाहीन–(सं०वि०) अचेत, बेसुध।
संज्वर–(सं०पुं०) अधिक ताप।
संझवाती–(हिं०स्त्री०) संध्या की समय जलाने का दीपक, संध्या के समय गाने की गीत, (वि०) संध्या सम्बन्धी।
संझा–(हिं०स्त्री०) सन्ध्या, सूर्यास्त का समय।
संझिया–(हिं०पुं०) राजा का भोजन।
संठ–(हिं०पुं०)शान्ति, शठ, धूर्त, नीच
संड–(हिं० पुं०) साँड़; संडमुसंड–

(हिं०वि०) हूटा कट्टा।
संडसा–(हिं०पुं०) गरम लोहे को पकड़ने का लोहार का एक अस्त्र।
संडसी–(हिं०स्त्री०) छोटा सड़सा, जंबूरी।
संडा–(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट।
संडास–(हिं० पुं०) कुँए की तरह का गहरा गड्ढा शौचकूप।
संतरा–(हिं०पुं०) बड़ी नारंगी।
संतरी–(हिं० पुं०) पहरा देने वाला सिपाही, द्वारपाल, पहरेदार।
संतोष–(हिं० क्रि०) देखो सन्तोष।
संतोषना–(हिं० क्रि०) सन्तोष दिलाना सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना।
संथा–(हिं०पुं०) पाठ।
संद–(हिं०पुं०) दरार, छेद, दबाव।
संदि–(हिं०स्त्री०) सन्धि, सेल।
संदूख–(हिं० पुं०) देखो सन्दूक।
संदूर–(हिं०पु०) देखो सिंदूर।
संदेसा–(हिं०पुं०) सन्देश, समाचार।
संनिधानी–(हिं०वि०) अधिकार में रखने वाला।
संयात–(सं०वि०) प्राप्त, पहुँचा हुआ।
संयान–(सं०नपुं०) यात्रा, प्रस्थान।
संयुक्त–(सं०वि०) लगा हुआ, मिला हुआ, सम्बन्ध।
संयुक्ता–(सं०स्त्री०) आवर्तकी लता, एक प्रकार का छन्द।
संयुग–(सं०पुं०) युद्ध, लड़ाई, संयोग, भिड़न्त।
संयुत–(सं०वि०) संयुक्त, जड़ा हुआ, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरणमें दश अक्षर होते हैं।
संयोग–(सं०पुं०) दो वस्तुओं को एक में मिलना, मिलान, मिलाप, समागम, श्रृङ्गार रस का एक भेद, सम्बन्ध, स्त्री पुरुषका सहवास, विवाह सम्बन्ध, मत का एक होना, दो या अधिक व्यजज वर्णों का मेल, जोड़; संयोगमन्त्र–(सं० नपुं०) विवाह के समय पढ़ा जाने वाला वेद मन्त्र।
संयोगित–(सं० वि०) मेल किया हुआ।
संयोगी–(हिं०वि०) संयोग करने वाला, मिलानेवाला, विवाह किया हुआ, वह जो अपनी प्रिया के साथ हो।
संयोगी–(हिं०पुं०) वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद।
संयोजक–(सं० वि०) मिलाने वाला, जोड़ने वाला, (पुं०) व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ता है।
संयोजन–(सं० नपुं०) स्त्रीप्रसंग, मैथुन, जोड़ने या मिलाने की क्रिया।
संयोजना–(सं०स्त्री०) प्रबन्ध, व्यवस्था, प्रसंग सहवास, भवबन्धन का कारण।
संयोजित–(सं०वि०) मिलाया हुआ।
संरक्त–(सं०वि०) अनुरक्त, आसक्त, कुपित।
संरक्षक–(सं० वि०) रक्षा करनेवाला, पालन पोषण करने वाला, सहायक, आश्रय देने वाला।
संरक्षण–(सं० नपुं०) देखरेख, प्रतिबन्ध, रोक। संरक्षणीय–(सं० वि०) रक्षा करने योग्य। संरक्षित–(सं०वि०) भली भांति रक्षा किया हुआ।
संरब्ध–(सं० वि०) खूब मिला हुआ, उत्तेजित, उद्विग्न, क्रुद्ध, फूला या सूजा हुआ।
संरम्भ–(सं०पु०) क्रोध, उत्साह, उत्कण्ठा, आडम्बर, गर्व, आरम्भ, युद्ध, लड़ाई।
सँपेरा–(हिं० पुं०) सपेरा, मदारी;
सँपोलिया–(हिं०पुं०) सांप पकड़ने वाला।
सँभलना–(हिं०क्रि०) थांभा जाना, प्राप्त करना, गिरने पड़ने से रुकना, सचेत होना, बुरी अवस्था को सुधारना, चंगा होना, स्वस्थता।
सँभाल–(हिं० स्त्री०) रक्षा, प्रबन्ध, चेतना, पोषण का भार; सँभालना–(हिं०क्रि०) रक्षा करना, गिरनेसे बचाना, रोकना, थांभना, सहेजना, निर्वाह करना, दशा बिगडने से बचना, प्रबन्ध करना, पालन पोषण करना।
संमत, संमित–(हिं०) देखो सन्मत, सम्मित; संमान, संमित–(हिं०) देखो सम्मत, सम्मित। संमेलन–(हिं० पु०) देखो सम्मेलन।
संयत्–(सं०वि०) संबद्ध, लगा हुआ।
संयत–(सं० वि०) बंधा हुआ, जकड़ा हुआ, बन्द किया हुआ, व्यवस्थित, जिसने इन्द्रियों और मन को वश में किया हो, उद्यत, (पुं०) कृतसंयम, सन्यासी।
संयताहार–(सं०वि०) थोड़ा खाने वाला।
संयति–(सं०स्त्री०) निरोध, वश में रखना।
संयन्त्रित–(सं०वि०) बँधा हुआ, जकड़ा हुआ।
संयम–(सं० पुं०) बन्धन, वश में करने की क्रिया या भाव, हानिकारक वस्तुओं से बचना, उद्योग, प्रयत्न।
संयमन–(सं०नपुं०) आत्मनिग्रह, मनको वश में रखना, इन्द्रियों का दमन।
संयमनी–(सं०स्त्री०) यम की नगरी।
संयमित–(सं० वि०) दमन किया हुआ, बांधा हुआ, वश में लाया हुआ, इन्द्रियनिग्रही।
संयमी–(हिं०पुं०) आत्म निग्रही, योगी।
संयुक्त–(सं० वि०) जुटा हुआ, सम्बद्ध,
संयुक्ता–(सं०स्त्री०) एक छन्द का नाम।
संरुद्ध–(सं०वि०) अच्छी तरह भरा हुआ, आच्छादित, ढपा हुआ।
संरूढ–(सं०वि०) अच्छी तरह लगा हुआ।
संरोध–(सं० पुं०) अवरोध, बाधा।
संरोधन–(सं० नपुं०) रुकावट डालना, हद बांधना, बंद करना।
संरोपित–(सं०वि०) जमाया या लगाया हुआ।
संलक्षित–(सं०वि०) लक्षणों से जाना हुआ, पहचाना हुआ।
संलक्ष्य–(सं०वि०) वह जो देखने में आ सके; संलक्ष्यक्रमव्यंग–(सं० पुं०) वह व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ की प्राप्ति का क्रम जाना जाता है।
संलग्न–(सं० वि०) संयुक्त, मिला हुआ, जुड़ा हुआ।
संलपन–(सं०नपुं०) संलाप, बातचीत।
संलयन–(सं०नपुं०) लीन होना, नष्ट होना
संलाप–(सं० पु०) आपस की बातचीत, नाटकमें एक प्रकारका संवाद जिसमें धीरता रहती है। संलापक–(सं०वि०) संलाप करने वाला।
संलिप्त–(सं० वि०) अच्छी तरह लिपटा हुआ।
संलीन–(सं०वि०) खूब लीन, आच्छादित, सिकुड़ा हुआ।
संवत्–(सं०पुं०) संवत्सर, वर्ष, वर्षविशेष जो किसी संख्या द्वारा सूचित किया जाता है, आज कल संवत् कहनेसे विक्रम संवत् का बोध होता है।
संवदना–(सं०स्त्री०) मन्त्र औषधि आदि से किसीको वशमें करने की क्रिया।
सँवर–(हिं० स्त्री०) स्मृति, स्मरण, याद, समाचार।
संवरण–(सं०नपुं०) छिपाव, ढपना, परदा, घेरा, सेतु, पुल, चुनाव, (पुं०) कुरु के पिता का नाम।
संवरणीय–(सं० वि०) निवारण करने योग्य, छिपाने योग्य, विवाह करने योग्य
संवरना–(हिं०क्रि०) अलंकृत होना, सजना
संवरित–(सं०वि०) गोपित, छिपाया हुआ।
सँवरिया–(हिं०वि०) देखो साँवला।
संवर्ग–(सं० पुं०) एक वस्तु का दूसरे में लीन होना, खपत, गुणनफल।
संवर्जन–(सं०नपुं०) छीनना, खसोटना।
संवर्त–(सं०पुं०) लपेटने की क्रिया या भाव, घुमाव, चक्कर, एक कल्प का नाम, घन राशि, ग्रहों का योग, वहेड़े का वृक्ष; संवर्तक–लपेटने वाला, नाश करनेवाला।
संवर्तन–(सं० नपुं०) फेरा या चक्कर देना, लपेटना।
संवर्तनी–(सं०स्त्री०) प्रलय।
संवर्तिका–(सं० स्त्री०) लपेटी हुई वस्तु, बलराम का अस्त्र।
संवर्धक–(सं० वि०) बढ़ाने वाला।
संवर्धन–(सं०नपुं०) बढ़ाना, पालना पोसना, उन्नत करना, खेलना।
संवर्धनीय–(सं०वि०) बढ़ाने या पालने पोसने योग्य। संवर्धित–(सं०वि०) बढ़ाया हुआ, पाला पोसा हुआ।
संवलन–(सं० नपुं०) संयोग, मेल मिलावट। संवलित–(सं०वि०) मिलाया हुआ, घिरा हुआ।
संवहन–(सं० नपुं०) वहन करना, ले जाना।
संवाद–(सं० पुं०) सन्देश, समाचार, बातचीत, वृत्तान्त, प्रसंग, चर्चा, सहमति, नियुक्ति, व्यवहार। संवादक–(सं०त्रि०) भाषण करने वाला।
संवादन–(सं०नपुं०) भाषण, बातचीत।
संवादिका–(सं०स्त्री०) कीड़ा, च्यूंटी।
संवादित–(सं० वि०) बोलने में प्रवृत्त किया हुआ, मनाया हुआ। संवादिता(सं०स्त्री०) सादृश्य, समानता।
संवादी–(सं० वि०) संवाद करने वाला, सहमत होने वाला, अनुकूल होने वाला, (पुं०) संगीत में वह स्वर जो बजाने वालेके साथ मिल जाता और सहायक होता है।
संवार–(सं० पु०) आच्छादन; ढांपना, छिपाना, बाधा, अड़चन।
संवारण–(सं०नपुं०) निषेध; संवारणीय–(सं०वि०) छिपाने योग्य।
संवारना–(हिं०क्रि०) अलङ्कृत करना, सजाना, क्रम से रखना, ठीक ठीक काम करना।
संवारित–(सं०वि०) रोका हुआ, मना किया हुआ।
संवार्य–(सं०वि०) रोकने योग्य, छिपाने योग्य।
संवास–(सं०पुं०) सभा, समाज, परस्पर सम्बन्ध, सहवास, मैथुन, सार्वजनिक स्थान।
संवाह–(सं० पु०) ले जाना, ढोना, पैर दबाना। संवाहक–(सं०वि०) ढोने वाला, बदन मलने वाला। संवाहन–(सं०नपुं०) अंगमर्दन, हाथ पैर दबाना, ले जाना, पहुँचाना, ढोना।
संवाहित–(सं०वि०) पहुँचाया हुआ, ढोया हुआ।
संवाही–(हिं०वि०) हाथ पैर दबाने वाला, ढोने वाला, पहुँचानेवाला।
संविग्न–(सं०वि०) घबड़ाया हुआ, डरा हुआ।
संवित्–(सं०स्त्री०) अंगीकार, युद्ध, लड़ाई, संकेत, बुद्धि, नियम, प्राप्ति।
संविद्–(सं० वि०) चेतनायुक्त, (पुं०) समझौता।
संविदित–(सं० वि०) जाना बूझा, ढूंढा हुआ, वादा किया हुआ, समझाया बुझाया हुआ।
संविधा–(सं०स्त्री०) व्यवस्था, व्यवहार, विचित्रता, घटना, रहन सहन।
संविधान–(सं० नपुं०) व्यवस्था, रीति, अनुठापन।
संविभन–(सं०नपुं०) बाँट, बंटाई, साझा।
संविभाग–(सं०पुं०) बाँट, बटाई भाग।
संविष्ट–(सं० वि०) निविष्ट, बैठा हुआ, आगत, पहुँचा हुआ।
संवीक्षण–(सं० नपुं०) अन्वेषण, खोज।
संवीत–(सं०वि०) आवृत, ढपा हुआ, (पुं०) पहरावा, वस्त्र।
संवृत–(सं०वि०) आच्छादित, ढपा हुआ, रक्षित, लपेटा हुआ रूंधा हुआ; संवृतकोष्ठ–(सं०पुं०) बद्ध कोष्ठ; संवृत मन्त्र–(सं०पुं०) गुप्त मन्त्रणा; संवृत्त–(सं०वि०) उपस्थित, समागत, पहुंचा हुआ, उत्पन्न।
संवृद्ध–(सं०वि०) बढ़ा हुआ, उन्नत।
संवेग–(सं०पुं०) आवेग, घबड़ाहट भय।
संवेजन–(सं०नपुं०) उद्विग्नता, घबड़ाहट
संवेद–(सं०पुं०) अनुभव, वेदना, ज्ञान,

बोध; **संवेदन**–(सं० पुं०) अनुभव करना, प्रकट करना, जताना; **संवेदनीय**–(सं० वि०) अनुभव योग्य, जताने योग्य; **संवेदित**–(सं० वि०) अनुभव किया हुआ, प्रतीत किया हुआ, जताया हुआ।
संवेद्य–(सं० वि०) अनुभव करने योग्य, प्रतीत करने योग्य, जताने योग्य।
संवेश–(सं० पुं०) निद्रा, नींद, उपवेशन, आसन, शैय्या, प्रवेश, घुसना, उपभोग स्थान; **संवेशक**–(सं० वि०) उपाय लगाने वाला; **संवेशन**–(सं० पुं०) प्रवेश करना, घुसना, सोना।
संवेष्ट–(सं० वि०) वेष्टित, घिरा हुआ।
संशप्त–(सं० वि०) वाग्बद्ध; जिसने शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा की हो।
संशब्द–(सं० पुं०) प्रशंसा, स्तुति, अलंकार
संशमन–(सं० नपुं०) शान्त करना, निवृत्ति करना, नष्ट करना, न रहने देना।
संशय–(सं० पुं०) सन्देह, आशंका, सन्देह नामक काव्यालंकार; **संशयस्थ**–(सं० वि०) सन्देह युक्त; **संशयाक्षेप**–(सं० पुं०) सन्देह का दूर होना; **संशयात्मक**–(सं० वि०) सन्देहजनक, **संशयान**–(हिं० वि०) संशय युक्त; **संशयालु**–(सं० वि०) बात बात में सन्देह करने वाला; **संशयित**–(सं० वि०) सन्दिग्ध, दुबधा में पड़ा हुआ, अनिश्चित; **संशयी**–(हिं० वि०) सन्देह करने वाला, शक्की।
संशयोपमा–(सं० स्त्री०) वह उपमालंकार जिसमें कई वस्तुओं के समानता संशय रूप में कही जाती है।
संशयोपेत–(सं० वि०) सन्दिग्ध, अनिश्चित।
संशरण–(सं० नपुं०) शरण में जाना,
संशासन–(सं० नपुं०) उत्तम राज्यप्रबन्ध।
संशित–(सं० वि०) निर्णीत, स्थिर किया हुआ, दक्ष, निपुण, सम्पूर्ण, पूरा।
संशिष्ट–(सं० वि०) बचा हुआ, बाकी का।
संशीत–(सं० वि०) ठंढ से जमा हुआ।
संशुद्ध–(सं० वि०) विशुद्ध, परीक्षित, अपराध से मुक्त किया हुआ।
संशुद्धि–(सं० वि०) पूरी शुद्धि।
संशोधक–(सं० वि०) शोधन करने वाला, संस्कार करने वाला, चुकाने वाला; **संशोधन**–(सं० नपुं०) शुद्ध करना, त्रुटि या दोष दूर करना, ऋण आदि की मुक्ति करना; **संशोधनीय**–(सं० वि०) सुधारने योग्य; **संशोधित**–(सं० वि०) परिष्कृत, निर्मल किया हुआ, सुधारा या ठीक किया हुआ।
संशोषण–(सं० नपुं०) सोखना, सुखाना।
संशोषित–(सं० वि०) सोखा हुआ।
संश्रय–(सं० पुं०) आश्रय शरण, सयोग, समागम, अवलम्बन, सहारा, उद्देश्य, लक्ष्य, ठहरने का स्थान।
संश्रयण–(सं० नपुं०) अवलम्ब, पनाह;
संश्रयणीय–(सं० वि०) सहारा लेने योग्य;
संश्रयी–(सं० वि०) सहारा लेने वाला, नौकर।
संश्रव–(सं० पुं०) अङ्गीकार, स्वीकार, प्रतिज्ञा।
संश्रवण–(सं० नपुं०) खूब कान लगाकर सुनना, अङ्गीकार।
संश्रान्त–(सं० वि०) बिलकुल थका हुआ।
संश्रावक–(सं० पुं०) श्रोता सुनने वाला, शिष्य।
संश्रित–(सं० वि०) संयुक्त, जुटा हुआ, आलिंगन किया हुआ, टँगा हुआ, ठहरा हुआ।
संश्रुत–(सं० वि०) स्वीकृत, अंगीकार किया हुआ, अच्छी तरह से सुना हुआ।
संश्रुत्य–(सं० पुं०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
संश्लेष्ट–(सं० वि०) आलिंगित, सम्मिलित, मिश्रित, मिला हुआ, (पुं०) राशि, ढेर; एक प्रकार का मण्डप।
संश्लेष–(सं० पुं०) आलिंगन, परिरम्भण, मेल मिलाप; **संश्लेषण**–(सं० नपुं०) जुटना, सटना, मिलना; **संश्लेषित**–(सं० वि०) आलिंगन किया हुआ, सटाया हुआ, **संश्लेषी**–(सं० पुं०) आलिंगन करने वाला।
संस, संसई–(हिं० पुं०) देखो संशय।
संसक्त–(सं० वि०) संबद्ध, लगा हुआ, जड़ा हुआ, आसक्त, प्रेम में फँसा हुआ, प्रवृत्त, लगा हुआ; **संसक्ति**–(सं० स्त्री०) आसक्ति, प्रवृत्ति, लगाव, परमाणुओं की परस्पर मिलने की शक्ति।
संसनाना–(हिं० क्रि०) देखो सनसनाना।
संसय–(हिं० पुं०) देखो संशय।
संसरण–(सं० नपुं०) गमन, चलना, राजपथ, चौड़ी सड़क, लड़ाई छिड़ना, संसार, जगत्, यात्रियों के ठहरने का स्थान।
संसर्ग–(सं० पुं०) सम्बन्ध, संपर्क, लगाव, न्याय के अनुसार समवायि संबंध, सहवास, समागम, परिचय, घनिष्टता; **संसर्गदोष**–(सं० पुं०) बुरी संगत से आया हुआ दोष; **संसर्गविद्या**–(सं० स्त्री०) व्यवहार कुशलता; **संसर्गभाव**–(सं० पुं०) संबंध का न होना
संसर्गी–(सं० त्रि०) सहचर, मित्र, शुद्धि,
संसर्जन–(सं० नपुं०) संयोग होना, मिलना, जुटना, त्याग करना, छोड़ना, हटाना।
संसर्पण–(सं० नपुं०) धीरे धीरे चलना, खिसकना, सरकना, एकाएक आक्रमण करना; **संसर्पी**–(हिं० त्रि०) सरकने वाला, रेंगने वाला।
संसाद–(सं० पुं०) सभा, समाज।
संसादित–(सं० वि०) एकत्र किया हुआ, सजाया हुआ।
संसाधक–(सं० वि०) वश में करने वाला, सम्पादन करने वाला;
संसाधन–(सं० नपुं०) आयोजन।
संसार–(सं० पुं०) मर्त्यलोक, जगत्, सृष्टि, गृहस्थी, आवागमन, बारंबार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना; **संसारगुरु**–(सं० पुं०) जगद्गुरु, कामदेव; **संसारचक्र**–(सं० पुं०) नाना योनि में भ्रमण, मायाजाल, प्रपंच, संसार का उलट फेर; **संसारतिलक**–(सं० पुं०) एक प्रकार का उत्तम चावल; **संसारभवन**–(सं० पुं०) संसार को दुःखमय जानना; **संसारमण्डल**–(सं० नपुं०) भूमण्डल; **संसारमार्ग**–(सं० पुं०) स्त्रियों की जनेन्द्रिय; **संसारसागर**–(सं० पुं०) संसाररूपी समुद्र; **संसारसारथि**–(सं० पुं०) शिव, महादेव।
संसारी–(हिं० वि०) संसार संबंधी, लौकिक, संसार में रहने वाला, बारंबार जन्म लेने वाला।
संसिक्त–(सं० वि०) अच्छी तरह से सींचा हुआ।
संसिद्ध–(सं० वि०) प्रस्तुत, उद्यत, प्राप्त, अच्छी तरह से पका हुआ, निपुण, कुशल; **संसिद्धि**–(सं० स्त्री०) किसी कार्य का पूरी तरह से होना, परिणाम, पूर्णता, प्रकृति।
संसी–(हिं० स्त्री०) देखो संड़सी।
संसुप्त–(सं० वि०) अच्छी तरह से सोया हुआ।
संसूचक–(सं० वि०) प्रकट करने वाला, जताने वाला, भेद खोलने वाला;
संसूचित–(सं० वि०) प्रकट किया हुआ, जताया हुआ।
संसृज–(सं० स्त्री०) मिश्रण, संसर्ग।
संसृति–(सं० स्त्री०) वारंबार जन्म लेने की परंपरा, आवागमन, भवचक्र, संसार।
संसृष्ट–(सं० वि०) एक साथ उत्पन्न, परस्पर मिला हुआ, अन्तर्गत, संगृहीत, जुटाया हुआ, सम्पन्न किया हुआ, हिलामिला; **संसृष्टहोम**–(सं० पुं०) सूर्य और अग्नि की एक ही में मिली हुई आहुति; **संसृष्टि**–(सं० स्त्री०) एक साथ उत्पत्ति, परस्पर संबन्ध, लगाव, मिलावट, घनिष्टता, हेलमेल, दो या अधिक अलंकारों का एक में मिलना, एक ही श्लोक में दो या तीन अलंकारों का रहना।
संसेक–(सं० पुं०) अच्छी तरह पानी का छिड़काव।
संसेवन–(सं० नपुं०) उपयोग में लाना, व्यवहार करना, सेवा।
संसेविता, संसेवी–(सं० वि०) अच्छी तरह सेवा करने वाला।
संस्करण–(सं० नपुं०) शुद्ध करना, सुधारना, सुन्दर रूप में लाना, पुस्तकों की एक बार की छपाई, आवृत्ति, द्विजातियों का विवाह संस्कार।
संस्कर्ता–(सं० वि०) संस्कार करने वाला
संस्कार–(सं० पुं०) सुधार, अनुभव, मनोवृत्ति या स्वभाव का शोधन, न्यायमत के गुणविशेष, वे कृत्य जो जन्म से मरण पर्यन्त द्विजातियों के लिये आवश्यक होते हैं, ये दश हैं यथा-विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूणाकरण, उपनयन, त्रुटि का निकल जाना, शुद्धि, पवित्र करना, धारणा, विश्वास, मन द्वारा कल्पित विषय, इन्द्रियों पर वाह्य विषयों से पड़ा हुआ प्रभाव, वैशेषिक मत से एक गुण, पूर्वजन्म की वासना, शिक्षा उपदेश संगत आदि से चित्त पर पड़ा हुआ प्रभाव, शौच, भूषित करना, सजाना, जीर्णोद्धार;
संस्कारक–(सं० वि०) संस्कार करने वाला, शुद्ध करने वाला; **संस्कारज**–(सं० वि०) संस्कार से निष्पन्न;
संस्कार वर्जित–(सं० वि०) उपनयन संस्कार न होना; **संस्कारहीन**–(सं० त्रि०) जिसका संस्कार न हुआ हो, व्रात्य;
संस्कारी–(हिं० वि०) संस्कार करने वाला; (पुं०) सोलह मात्राओं का एक छन्द।
संस्कृत–(सं० नपुं०) भारतवर्ष की प्राचीन पवित्र भाषा, देववाणी (वि०) संस्कार किया हुआ, जिसका उपनयन हुआ हो, मंत्र से पवित्र किया हुआ, अभिषिक्त, सजाया हुआ, पकाया हुआ शुद्ध किया हुआ।
संस्कृति–(सं० स्त्री०) संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट, सभ्यता, चौबीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।
संस्क्रिया–(सं० स्त्री०) संस्कार, शोधन।
संस्खलन–(सं० नपुं०) भूल करना, चूकना
संस्खलीय–(सं० वि०) गिरा हुआ, भूला हुआ।
संस्तम्भ–(सं० पुं०) शरीर की गति का एकाएक रुक जाना, लकवा।
संस्तर–(सं० पुं०) शय्या, बिस्तर, तह पहल।
संस्तव–(सं० पुं०) प्रशंसा, स्तुति।
संस्तीर्ण–(सं० वि०) छितराया या फैलाया हुआ।
संस्तुत–(सं० वि०) प्रशंसा किया हुआ।
संस्था–(सं० स्त्री०) व्यवस्था, नियम, आकृति, गुण, अन्त, समाप्ति, मृत्यु, नाश, प्रलय, हिंसा, वध, मर्यादा, व्यवसाय, जत्था, मण्डल, समाज, सभा, समुदाय।
संस्थान–(सं० नपुं०) स्थिति, ठहराव, प्रबन्ध, आयोजन, ढाँचा, चिह्न, निकटता, चौरहा, रचना, निर्माण, जीवन, पूरा अनुसरण, जनपद, बस्ती, सार्वजनिक स्थान, आकृति, रूप, प्रकृति, स्वभाव, रोग का लक्षण, नाश, मृत्यु, सर्वसाधारण के एकत्रित होने का स्थान।
संस्थापक–(सं० वि०) प्रवर्तक, स्थापित

करने वाला, किसी सभा समाज आदि का खोलने वाला, चित्र खिलौना आदि बनाने वाला; संस्थापन–(सं० नपुं०) स्थिर करना, जमाना, बैठाना, कोई नई बात चलाना, रूप या आकार देना; संस्थापित–(सं० वि०) निर्मित, बैठाया हुआ, संचित।

संस्थित–(सं० वि०) ठहराया हुआ, जमामा हुआ, बटोरा हुआ, ढेर लगाया हुआ।

संस्थिति–(सं० स्त्री०) खड़े होने की क्रिया या भाव, अस्तित्व, प्रकृति, स्वभाव।

संस्पर्धा–(सं० स्त्री०) ईर्ष्या, डाह।

संस्पृष्ट–(स० वि०) जुटा हुआ, सटा हुआ, छआ हुआ, परस्पर संबद्ध।

संस्मरण–(सं० नपुं०) पूर्ण स्मरण, अच्छी तरह नाम लेना।

संस्मरणीय–(स०वि०) नाम जपने योग्य।

संस्मरित–(स०वि०) याददिलाया हुआ।

संस्रव–(सं० पुं०) एक साथ बहना, बहता हुआ जल, किसी वस्तु का नोचा हुआ अंश; संस्रावित–(सं०वि०) बहा हुआ, टपका हुआ।

संहत–(सं० वि०) संयुक्त, एक में मिला हुआ, घना, गठा हुआ, दृढ़, एकत्र, इकट्ठा, मिश्रित, चोट खाया हुआ।

संहताञ्जलि–(सं० वि०) करबद्ध, हाथ जोड़े हुए।

संहति–(सं० स्त्री०) समूह, झुण्ड, मेल, जुटाव, ढेर, राशि, घनत्व, ठोसपन, सन्धि,जोड़,परमाणुओंकापरस्परमेल।

संहनन–(सं० नपुं०) शरीर का मर्दन, वध, मार डालना, संयोग, मेल, दृढ़ता; संहरण–(सं० नपुं०) बल पूर्वक छीन लेना।

संहरना–(हिं० क्रि०) संहार करना, नष्ट होना।

संहर्षण–(सं० नपुं०) पुलक, रोवें का खड़ा होना।

संहात–(सं० पुं०) समूह, जमावड़ा।

संहार–(सं० पुं०) इकट्ठा करना, बटोरना, समेटना, संग्रह, संचय, सक्षेप कथन, संकोच, सिकुड़ना, ध्वंस, नाश, निवारण, रोक, कौशल, निपुणता, समाप्ति, अन्त, प्रलय, संग्रह, संचय; संहारक–(सं०वि०) नाश करने वाला।

संहार काल–(सं० पुं०) विश्व के नाश का समय, प्रलय; संहारना–(हिं०क्रि०) ध्वंस करना, नाश करना, मार डालना; संहारभैरव–(सं० पुं०) काल भैरव।

संहित–(सं० वि०) एकत्र किया हुआ, बटोरा हुआ, मिलाया हुआ, संयुक्त, लगा हुआ।

संहिता–(सं० स्त्री०) वह ग्रन्थ जिसमें पद पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो, संभोग, मेल, मिलावट, व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का परस्पर मिलकर एक होना, सन्धि, वेदों का मुख्य भाग।

संहृत–(सं० वि०) समेटा हुआ, जुटाया हुआ, नष्ट, संक्षिप्त।

संहृति–(सं०स्त्री०) संग्रह, जुटाव, नाश।

सइ–(हिं० अव्य०) से, साथ, विभक्ति का एक चिह्न जो करण और अपादान कारक में प्रयोग होता है।

सइयो–(हिं० स्त्री०) देखो सखी।

सइल–(हिं० स्त्री०) वह लकड़ी की खूटी जो गाड़ी के कंधावर में लगाई जाती है, सैला।

सई–(हिं० स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती।

सईस–(हिं० पुं०) देखो साईस; सऊर–(हिं० पुं०) देखो शऊर।

सउँ–(हिं० अव्य०) सो।

सऋक्ष–(सं० वि०) नक्षत्र सहित।

सक–(हिं० स्त्री०) शक्ति, (पुं०) साका।

सकट–(सं० पुं०) शाखोट का वृक्ष, (हिं० पुं०) शकट, गाड़ी, सग्गड़; सकटी–(हिं० स्त्री०) छोटा सग्गड़ या गाड़ी।

सकड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो सिकड़ी।

सकण्टक–(सं० वि०) कण्टक युक्त, रोमांचित।

सकत–(हिं०स्त्री०) शक्ति, बल, सामर्थ्य।

सकति–(हिं० क्रि० वि०) यथासंभव, भरसक।

सकती–(हिं० स्त्री०) शक्ति, शक्ति नामक अस्त्र।

सकना–(हिं० क्रि०) किसी काम करने के योग्य होना, इस क्रिया या व्यवहार सर्वदा किसी दूसरी क्रिया के साथ ही किया जाता है।

सकपकाना–(हिं०क्रि०) चपकाना, हिचकिचाना, आगा पीछा करना, लज्जित होना, प्रेम लज्जा या शंका के कारण व्यग्रता दिखलाना।

सकम्प–(सं०वि०) कम्पायमान, काँपता हुआ।

सकरना–(हिं० क्रि०) सकरा जाना, स्वीकृत होना, मान जाना।

सकरा–(हिं० वि०) देखो सँकरा।

सकरिया–(फा० स्त्री०) लाल सकरकन्द, रतालू।

सकरुण–(सं०वि०) दयाशील, दयायुक्त।

सकर्तृक–(सं० वि०) जिसमें कर्ता हो।

सकर्मक–(सं० पुं०) जिस धातु के कर्म हो, कर्मयुक्त धातु, (वि०) कर्मयुक्त।

सकर्मक क्रिया–(सं० स्त्री०) वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त होता हो।

सकल–(सं०वि०) समस्त, अखिल, कुल, (पुं०) दर्शन शास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के जीवों में से एक, पशु, निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति; सकलकल–(सं०वि०) सोलहो कलाओं से युक्त; सकलजननी–(सं० स्त्री०) प्रकृति; सकलप्रिय–सबको अच्छा लगने वाला; सकलसिद्धि–(सं०वि०) अणिमादि सकल सिद्धि युक्त।

सकलाधार–(सं० पुं०) शिव, महादेव।

सकलेन्द्र–(सं० पुं०) पूर्णचन्द्र, पूर्णिमा का चन्द्रमा; सकलेश्वर–(सं० पुं०) विष्णु।

सकसकाना–(हिं०क्रि०) अत्यन्त भयभीत होना, डर के मारे काँपना; सकसाना–(हिं० क्रि०) भयभीत होना, डर मानना।

सकाना–(हिं० क्रि०) शंका करना, सन्देह करना, दुःखी होना, 'सकना' का प्रेरणार्थक रूप।

सकाम–(सं० वि०) लब्धकाम, जिसकी कामना पूरी हो गई हो, प्रेम करने वाला, कामी, फल की कमना से कोई काम करने वाला।

सकामा–(सं० स्त्री०) मैथुन की इच्छा रखने वाली स्त्री, कामवती; सकामी–(हिं०वि०) कामनायुक्त, कामी, विषयी।

सकार–(सं० पुं०) "स" अक्षर।

सकारण–(सं०वि०) हेतुयुक्त, हेतुसहित।

सकारना–(हिं० स्त्री०) स्वीकार करना, महाजनों को हुडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुण्डी देखकर उस पर हस्ताक्षर करना।

सकार विपुला–(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम।

सकाश–(सं० पुं०) समीप, निकट।

सकिलना–(हिं०क्रि०) सरकना, फिसलना।

सकुच–(हिं० पुं० स्त्री०) संकोच लज्जा; सकुचना–(हिं० क्रि०) संकोच करना, लज्जा करना, फूलों का सम्पुटित होना; सकुचाई–(हिं० स्त्री०) संकोच, लज्जा; सकुचाना–(हिं०क्रि०) संकोच करना, सिकोड़ना, लज्जित करना।

सकुची–(हिं० स्त्री०) कछुवे के आकार की एक प्रकार की मछली, यह मछली जल तथा थल पर रह सकती है; सकुचीला–(हिं० वि०) संकोच करने वाला; सकुचौहां–(हिं० वि०) संकोच करने वाला।

सकुड़ना–(हिं० क्रि०) देखो सिकुड़ना।

सकुतूहल–(स० वि०) कौतुक सहित।

सकुन–(हिं०पुं०) शकुन, पक्षी, चिड़िया।

सकुनी–(हिं०स्त्री०) पखेरू, चिड़िया।

सकुल्य–(सं० वि०) सगोत्र, एक ही कुल का।

सकृत्–(सं०अव्य०) एकबार, साथ, सदा।

सकृत्प्रजा–(सं०स्त्री०) बाँझपन, शेरनी।

सकेत–(हिं० पुं०) संकेत, निर्दिष्ट स्थान, विपत्ति, कष्ट, दुःख, (वि०) संकीर्ण, संकुचित।

सकेतना–(हिं०क्रि०) सिकुड़ना, संकुचित होना।

सकेलना–(हिं० वि०) इकट्ठा करना, जमा करना।

सकोच–(हिं० पुं०) देखो सङ्कोच। सकोचना, सकोड़ना–(हिं० क्रि०) देखो सिकोड़ना।

सकोप, सकोपित–(सं०वि०) क्रोधयुक्त; सकोपना–(हिं०क्रि०) क्रोध करना।

सकोरा–(हिं० पुं०) मिट्टी का छोटा पात्र, कसोरा।

सकौतुक–(स० वि०) कौतुक युक्त।

सकरी–(हिं०स्त्री०) एकप्रकारकाछन्द।

सक्ति–(स०स्त्री०) सङ्ग, संयोग (हिं० स्त्री०) देखो शक्ति।

सक्तु–(सं० पुं०) भूने हुए अन्न को पीसकर तैयार किया हुआ आँटा, सत्तू।

सक्र–(हिं०पुं०) शक्र, इन्द्र; सक्रपति–(हिं०पुं०) विष्णु; सक्रारि–(हिं०पुं०) मेघनाद।

सक्रोध–(सं०पुं०) सकोप, क्रोधयुक्त।

सक्षण–(सं०वि०) पराभूत, हारा हुआ।

सक्षम–(सं० वि०) समर्थ, काम करने योग्य।

सक्षार–(सं०वि०) क्षारयुक्त, नमकीन।

सख–(हिं० पुं०) सखा, मित्र, साथी; सखत्व–(स० नपुं०) मित्रता।

सखरस–(हिं० पुं०) मक्खन।

सखरा–(हि० वि०) खारा, जल में पकाया हुआ भोजन, कच्ची रसोई।

सखरी–(हिं०स्त्री०) कच्चीरसोई, पहाड़ी।

सखा–(हिं० पुं०) साथी, संगी, सहचर, साहित्य में वह व्यक्ति जो नायक के साथ सर्वदा रहता है।

सखित्व–(सं०नपुं०) बन्धुता, मित्रता।

सखी–(सं० स्त्री०) सहचरी, सहेली, साहित्य में वह स्त्रौ जो नायिका के साथ सर्वदा रहती है, एक प्रकार का छन्द (वि०) सुन्दर, मनोरम।

सखीभाव–(हिं०पुं०) वैष्णवों का भगवद् भजन का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने आप को इष्टदेवता की पत्नी या सखी मानकर उपासना करता है

सखुआ–(हिं० पुं०) शालवृक्ष साखू।

सख्य–(सं० नपुं०) सखापन, सखा का भाव, मित्रता, वैष्णवों के मत के अनुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमें भक्त इष्ट देवता को अपना सखा मानता है। सख्यता–(सं०स्त्री०) मैत्री। सग–(हिं० पुं०) कुत्ता (वि०) सगा। सगड़ी–(हिं०स्त्री०)छोटासग्गड़

सगण–(सं० पुं०) छन्द शास्त्र मे एक गण जिसमे दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं।

सगद्गद्–(सं०वि०) गद्गद् वाक्य युक्त।

सगन–(हिं०पुं०) देखो सगण।

सगन्ध–(सं० वि०) गन्धयुक्त।

सगपन–(हिं०पु०) देखो सगापन।

सगपहती–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।

सगबग–(हि०वि०) तराबोर, लथपथ, परिपूर्ण, (क्रि० वि०) झटपट।

सगबगाना–(हिं०क्रि०) लथपथ होना, तराबोर होना, भयभीत होना।

सगभत्ता–(हिं० पुं०) साग मिला हुआ भात।

सगर–(सं०पुं०) एक सूर्यवंशी राजा जो बड़े धर्मात्मा थे, इनके साठ हजार

पुत्र थे; राजा भागीरथ इन्ही के वंशज थे (हिं॰पुं॰) तालाब, झील।
सगरा–(हिं॰वि॰) संपूर्ण, कुल।
सगल–(हिं॰ वि॰) देखो सकल।
सगर्व–सं॰वि॰) अभिमानी, अहंकारी।
सगा–(हिं॰वि॰) एकही माता से उत्पन्न, सहोदर; निकट के संबन्ध का।
सगाई–(हिं॰स्त्री॰) विवाह से संबंध का निश्चय, मंगनी, शूद्रों में स्त्री पुरुष का वह संबंध जो विवाह के तुल्य माना जाता है संबन्ध, नाता।
सगापन–(हिं॰पुं॰) सगा होने का भाव, आत्मीयता।
सगुण–(सं॰ वि॰) गुणयुक्त गुणवान, साकार ब्रह्म, वह संप्रदाय जिसमें ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारों की पूजा होती है।
सगुणता–(सं॰स्त्री॰) सगुण होने का भाव
सगुन–(हिं॰ पुं॰) देखो शकुन; सगुन।
सगुनाना–हिं॰क्रि॰) शकुन बतलाना। सगुनिया–(हिं॰ पुं॰) शकुन विचारने या बतलाने वाला। सगुनौती–(हिं॰स्त्री॰) शकुन विचारनेकी क्रिया।
सगृह–(सं॰वि॰) गृहयुक्त, घरवाला।
सगोती–(हिं॰ पुं॰) सगोत्र, एक वंश का, नाते के लोग, भाई बन्धु।
सगौती–(हिं॰क्रि॰) खाने का मांस।
सघन–(सं॰ वि॰) अविरल, घना, ठोस। सघनता–(सं॰स्त्री॰) सघन होने का भाव, ठोसपन।
सघृण–(सं॰ त्रि॰) घृणायुक्त।
संकट–(सं॰ त्रि॰) संकीर्ण, घनीभूत, एकत्रित, अभेद्य, (नपुं॰) विपत्ति, दुःख, कष्ट। संकट चतुर्थी–(सं॰स्त्री॰) श्रावण कृष्णा चतुर्थी।
संकटा–(सं॰ स्त्री॰) एक देवी का नाम, ज्योतिष के अनुसार एक योगिनी का नाम।
संकर–(सं॰पुं॰) मिश्रित तत्व, मिश्रण, वर्णसंकर जाति। संकरता–(सं॰स्त्री॰) मिलावट।
संकर्षण–(सं॰ पुं॰) आकर्षण, खिंचाव।
संगलित–(सं॰नपुं॰) सग्रह, ढेर, एकत्रीकरण, जोड़।
संगलित–(सं॰ वि॰) एकत्रित किया हुआ, जोड़ लगाया हुआ।
संकल्प–(सं॰ पुं॰) विचार, दानपुण्य अथवा देवकार्य आरंभ करने से पहिले दृढ निश्चय या विचार का प्रगट करना, ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम।
संगल्पना–(सं॰ स्त्री॰) इच्छा, अभिलाषा
संकार–(सं॰पुं॰) धूल आदि जो झाड़ू देने से उड़ती हैं, आग जलने का शब्द।
संकाश–(सं॰अव्य॰) सदृश, समीप, निकट
संकीर्ण–(सं॰ पुं॰) भोड़भाड़, संकट, विपत्ति, वह राग या रागिणी जो दो दूसरे राग या रागिणियों को मिलाकर बने (वि॰) अपवित्र, संकुचित, संकरा, तुच्छ, नीच, क्षुद्र।
संकीर्णता–(सं॰स्त्री॰) क्षुद्रता, ओछापन।
संकीर्तन–(सं॰ नपुं॰) गाते हुए भगवद् भजन।
संकुचन–(सं॰नपुं॰) सिकुड़ना; संकुचित–(सं॰वि॰) सिकुड़ा या सिमटा हुआ।
संकुल–(सं॰ नपुं॰) युद्ध, लड़ाई, समूह, झुंड।
संकुलित–(सं॰ वि॰) एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ।
संकेत–(सं॰ पुं॰) इङ्गित, शृंगार, चेष्टा, चिह्न।
संकोच–(सं॰ पुं॰) खिंचाव, तनाव, लज्जा, हिचकिचाहट, कमी। संकोचन–(सं॰ नपुं॰) सिकुड़ने की क्रिया। संकोचित–सं॰पुं॰) लज्जित।
संक्रमण–(सं॰ पुं॰) गमन, चलना, सूर्य का एक राशि से निकल कर दूसरे में प्रवेश करना।
सङ्क्रान्ति–(सं॰ स्त्री॰) जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में जाते हैं तब उसको रवि की संक्रान्ति कहते हैं।
सङ्क्रामक–(सं॰वि॰) संसर्ग या छूत से फैलने वाला; सङ्क्रमकरोग–वह रोग जो छूत आदि के कारण एक से औरों में फैलता है।
संक्षय–(सं॰पुं॰) नाश, ध्वंस, प्रलय।
संक्षिप्त–(सं॰वि॰) संचित किया हुआ, छोड़ा हुआ, जो संक्षेप में कहा गया हो; सङ्क्षिप्त लिपि–एक लेखन प्रणाली जिसमें संक्षिप्त चिह्नों का प्रयोग होता है जिसके द्वारा थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं।
सङ्क्षुब्ध–(सं॰वि॰) व्याकुल, घबड़ाया हुआ।
संक्षेप–(सं॰ पुं॰) थोड़े में कोई बात कहना। संक्षेपण–(सं॰नपुं॰) काट छांट करने की क्रिया। संक्षेपतः–(सं॰अव्य॰) संक्षेप में थोड़े में।
संक्षोभ–(सं॰पुं॰) चंचलता, गर्व, घमंड, कम्पन, कांपना।
संघनारी–(सं॰स्त्री॰) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते है।
सङ्ख्या–(सं॰स्त्री॰) गणना, गिनती। सङ्ख्या लिपि–(सं॰स्त्री॰) एक प्रकार की लेखनप्रणाली जिसमें वर्णों के स्थान में अंकों का प्रयोग होता है। सङ्ख्या विधान–(सं॰नपुं॰) गणना का नियम।
संग–(सं॰पुं॰) मिलने की क्रिया, संसर्ग, सहवास, सम्बन्ध, वासना, बन्धुत्व।
संगत–(सं॰नपुं॰) संगति, मैथुन, संसर्ग, वह मठ जहां उदासी या निर्मले साधु रहते हैं। संगति–(सं॰स्त्री॰) संगम, मेल, सम्बन्ध।
संगम–(सं॰पुं॰) दो नदियों के मिलने का स्थान, मिलाप, सम्मेलन।
संगिनी–(सं॰ स्त्री॰) भार्या, पत्नी।
संगीत–(सं॰नपुं॰) वह कार्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हो संगीतवेश्म–(सं॰स्त्री॰) संगीतशाला। संगीतशास्त्र–(सं॰ नपुं॰) वह शास्त्र जिसमें गाने, बजाने, नाचने आदि की कला का विवेचन हो।
संगृहीत–(सं॰वि॰ संग्रह किया हुआ, जमा किया हुआ।
सङ्ग्रह–(सं॰पुं॰) एकत्र करने की क्रिया, वह ग्रन्थ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों, संयम, जमघट, जमाव, सभा, स्वीकार, स्त्री-प्रसंग, सूची।
सङ्ग्रहणी–(सं॰ स्त्री॰) ग्रहणी रोग जिसमें भोजन किया हुआ पदार्थ पाचन नहीं होता मल द्वारा निकल जाता है।
सङ्गृहीत–(सं॰वि॰) इकट्ठा किया हुआ
सङ्ग्राम–(सं॰पुं॰) युद्ध, लड़ाई।
सङ्ग्राही–सं॰ पुं॰) मलका अवरोध करने वाला पदार्थ।
सङ्घ–(सं॰पुं॰) समुदाय, दल, सभा, समाज।
सङ्घटन–(सं॰ नपुं॰) संयोग, मेल, निर्माण, रचना। सङ्घटित–(सं॰वि॰) एकत्र किया हुआ, बनाया हुआ।
सङ्घर्ष–(सं॰पु॰) रगड़, घिस्सा, मर्दन, स्पर्धा।
सङ्घात–(सं॰ पुं॰) समूह, जमाव, आघात, चोट, एक नरक का नाम। सङ्घातक–(सं॰त्रि॰) प्राण लेने वाला; सङ्घाती–(सं॰पुं॰) प्राणनाशक।
सच–(हिं॰वि॰) यथार्थ, वास्तविक, सत्य।
सचन–(सं॰नपुं॰) सेवा करने की क्रिया या भाव।
सचना–(हिं॰ क्रि॰) एकत्रित करना, इकट्ठा करना, देखो सजना।
सचमुच–(हिं॰अव्य॰) यथार्थ में, वास्तव में, निःसन्देह, निश्चय करके।
सचरना–(हिं॰ क्रि॰) प्रचलित होना, फैलना, संचार करना।
सचराचर–(सं॰ पु॰) सब चर और अचर प्राणी।
सचल–(सं॰ वि॰) चर, चलायमान, चलने वाला।
सचाई–(हिं॰स्त्री॰) सत्यता, सच्चापन
सचान–(सं॰पुं॰) श्येन पक्षी, बाज।
सचारना–(हिं॰क्रि॰) फैलाना।
सचिन्त–(सं॰ वि॰) चिन्तायुक्त, चिन्तित
सचिक्कण–(सं॰वि॰) बहुत चिकना।
सचित्–(सं॰वि॰) जिसको ज्ञान या चेतना हो।
सचित्त–(सं॰वि॰) जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।
सचित्र–(सं॰वि॰) चित्रयुक्त, चित्रसहित
सचिव–(सं॰पुं॰) मन्त्री, सहायक, मित्र
सची–(सं॰स्त्री॰) शची, इन्द्राणी। सचीसुत–(हिं॰पुं॰) जयन्त।
सचु–(हिं॰पुं॰) सुख आनन्द, प्रसन्नता
सचेत–(हिं॰वि॰) चेतना युक्त, समझदार, सावधान। सचेतन–सं॰त्रि॰) चैतन्य, चतुर, सावधान, चेतन प्राणी।
सचेती–(हिं॰स्त्री॰) सावधानी।
सचेष्ट–(सं॰वि॰) जिसकी चाल चलन अच्छी हो।
सच्चरित–(सं॰ वि॰) जिसकी चाल चलन अच्छी हो।
सच्चा–(हिं॰वि॰) सत्यवादी, सच बोलने वाला, यथार्थ, वास्तविक, विशुद्ध, ठीक। सच्चाई–(हिं॰स्त्री॰) सत्यता, सच्चापन। सच्चापन–(हिं॰ पुं॰) सत्यता, सचाई।
सच्चाहट–(हिं॰पुं॰) सत्यता, सच्चापन
सच्चित–(सं॰नपुं॰) सत् और चित् से युक्त ब्रह्म। सच्चिदानन्द–(सं॰ पुं॰) नित्य ज्ञान सुख स्वरूप ब्रह्म।
सच्छत–(हिं॰पुं॰) देखो अक्षत, चावल।
सच्छन्द–(हिं॰वि॰) देखो स्वच्छन्द।
सच्छाय–(हिं॰वि॰) छायायुक्त।
सच्छात्र–(सं॰ नपुं॰) उत्तम विद्यार्थी।
सच्छी–(हिं॰पुं॰) साक्षी।
सज–(हिं॰ स्त्री॰) सजने की क्रिया या भाव, रूप, शकल, शोभा, सौन्दर्य।
सजग–(हिं॰वि॰) सतर्क, सावधान।
सजदार–(हिं॰ वि॰) अच्छी आकृति का, सुन्दर।
सजधज–(सं॰स्त्री॰) शृंगार, सजावट।
सजन–(सं॰वि॰) जनयुक्त, (पुं॰) भला आदमी, पति, प्रियतम, यार आशिक।
सजना–(हिं॰क्रि॰) शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना, सुशोभित होना, (पुं॰) एक प्रकार का वृक्ष।
सजनी–(हिं॰स्त्री॰) सखी।
सजन्य–(सं॰वि॰) सजातीय।
सजल–(सं॰वि॰) जल से युक्त, अश्रुपूर्ण
सजवल–(हिं॰पुं॰) तैयारी।
सजवाई–(हिं॰ स्त्री॰) सजने या सजाने की क्रिया, सजाने का शुल्क; सजवाना–(हिं॰क्रि॰) सजाने का काम दूसरे से कराना।
सजाई–(हिं॰स्त्री॰) सजाने की क्रिया या भाव, सजाने का शुल्क।
सजागर–(सं॰वि॰) जागृत, जागता हुआ
सजाति–(सं॰ पु॰) समान श्रेणी, एक जाति का। सजातीय–(सं॰वि॰) एक जाति या गोत्र का।
सजान–(हिं॰पु॰) सज्ञान, चतुर।
सजाना–(हिं॰क्रि॰) शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना, भला जान पड़ना, उचित स्थान में वस्तुओं को रखना जिसमें सुन्दर जान पड़े।
सजबज–(हिं॰स्त्री॰) देखो सजधज।
सजाव–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का सुन्दर दही। सजावट–(हिं॰ स्त्री॰) शोभा, तैयारी। सजावन–(हिं॰ पु॰) सजाने का भाव या क्रिया।
सजीउ–(हिं॰वि॰) देखो सजीव।
सजीला–(हिं॰ वि॰) सजधज के साथ

रहने वाला, मनोहर, सुन्दर, छैला, सुडौल।
सजीव–(सं०वि०) जीवित, जिसमें प्राण हो, ओजस्वी,(पुं०) जीवधारी।
सजीवन–(हिं० पुं०) संजीवनी नामक बूटी। **सजीवन बूटी**–(हिं० स्त्री०) रुद्रदन्ती, रुदन्ती। **सजीवनी मन्त्र**–(सं०पुं०) वह मन्त्र जिसके विषय में यह कहा जाता है कि यह मृत प्राणी को जिला देता है।
सजुग–(हिं०वि०) सचेत, चैतन्य।
सजुता–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं।
सजूरी–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।
सजोना–(हिं० क्रि०) देखो सजाना।
सज्ज–(स०वि०) सज्जित, सजा हुआ, कवचधारी; **सज्जता**–(सं०स्त्री०) सजावट
सज्जन–(सं०पु०) सत्पुरुष, भला आदमी, सभ्य पुरुष, अच्छे कुल का मनुष्य, प्रियतम, सजाने की क्रिया या भाव; **सज्जनता**–(सं० स्त्री०) भलमनसी; **सज्जनताई**–(हिं० स्त्री०) भलमनसी;
सज्जा–(सं०स्त्री०) वेसभूषा, सजावट; (हिं०स्त्री०) चारपाई, शय्या।
सज्जित–(सं०वि०) विभूषित, सजा हुआ
सज्जी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का क्षार जो भूरापन लिये सफ़ेद होता है, इसको सज्जीखार भी कहते हैं; **सज्जी बूटी**–(हि० स्त्री०) एक वनस्पति जिसमें से सज्जी निकाली जाती है।
सज्जुता–(हिं०स्त्री०) संयुता नामक छन्द
सज्जुष्ट–(सं०वि०) सुखदायक, आनन्द देने वाला।
सज्ञान–(सं० वि०) ज्ञानयुक्त, चतुर, बुद्धिमान्।
सज्ञ–(हिं०स्त्री०) सजावट, तैयारी।
सज्ञनी–(हि० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पक्षी।
सञ्चय–(सं० पुं०) संग्रह, समूह, ढेर, बहुतायत; **सञ्चयी**–(हिं०वि०) संचय करने वाला, कृपण, कंजूस।
सञ्चर, सञ्चरण–(सं०) गमन, चलना, कम्पन; **सञ्चरित**–(सं०वि०) प्रस्थित, प्रचलित।
सञ्चल–(सं०नपुं०) साँभर नमक।
सञ्चलन–(सं० नपुं०) हिलना डोलना, चलना फिरना।
सञ्चार–(सं०पुं०) गमन,चलना,विस्तार, फैलने की क्रिया या भाव, उत्तेजन, कष्ट; विपत्ति, ग्रहों या नक्षत्रों का एक राशि से दूसरी राशि में जाना;
सञ्चारक–(सं० पुं०) चलाने वाला;
सञ्चारण–(सं०नपुं०) प्रसारण, फैलाव
सञ्चारणीय–(सं०वि०) फैलाने योग्य; **सञ्चारिका**–(सं०स्त्री०) कुटनी, दूती; **सञ्चारित**–(सं० वि०) चलाया या फैलाया हुआ।
सञ्चारी–(हिं० पुं०) संगीत शास्त्र के अनुसार गीत के चार चरणों में से तीसरा चरण, वायु, हवा, साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं।
सञ्चाल–(सं० पुं०) चलन, चलना; **सञ्चालक**–(सं० पुं०) गति देने या चलाने वाला; **सञ्चालन**–(सं०नपुं०) प्रतिपादन।
सञ्चित–(सं०वि०) संचय किया हुआ, ढेर लगाया हुआ।
सञ्जय–(सं० पुं०) धृतराष्ट्र के एक मन्त्री का नाम।
सञ्जन–(सं० नपुं०) बन्धन, संघटन।
सञ्जय–(सं०वि०)अच्छी तरह जीतनेवाला
सञ्जल्प–(सं०पुं०) कथावार्ता, बातचीत
सञ्जात–(सं०वि०) प्राप्त, उत्पन्न।
सञ्जीव–(सं०वि०) मरे हुए को जिलाने वाला; **सञ्जीवनी**–(सं०स्त्री०) जीवन दायिनी औषधि, मरे हुए लोगों को जिलाने की विद्या।
सटक–(हिं० स्त्री०) सटकने की क्रिया, खिसकने का व्यापार, तमाखू पीने का लंबा नैचा, पतली लचकने वाली छड़ी; **सटकना**–(हि० क्रि०) धीरे से भाग जाना, चंपत होना, बालों में से अन्न के दाने निकालने के लिये उसको पीटने की क्रिया; **सटकाना**–(हिं०क्रि०) किसी को कोड़े छड़ी आदि से मारना, सट्सट् शब्द करते हुए हुक्का पीना; **सटकार**–(हिं० स्त्री०) सटकाने की क्रिया या भाव; **सटकारना**–(हिं०क्रि०) किसी लचीली वस्तु से किसी को मारना।
सटकारा–(हिं०वि०) चिकना और लंबा; **सटकारी**–(हि० स्त्री०) लचकने वाली पतली छड़ी।
सटक्का–(हिं०पुं०)देखो सटका,दौड़,झपट
सटना–(हिं० क्रि०) दो वस्तुओं का एक में एक मिलना, चिपकना, साथ होना, मिलना, लाठी सोंटे की मार-पीट होना।
सटपट–(हिं०स्त्री०)सिटपिटाने की क्रिया, चकपकाहट, असमंजस, संकट, दुविधा **सटपटाना**–(हिं० क्रि०) सटपट की ध्वनि होना।
सटरपटर–(हिं०वि०) अत्यन्त साधारण, तुच्छ; (स्त्री०) तुच्छ कार्य, उलझन का काम।
सटसट–(हिं०क्रि०वि०) सटसट शब्द के साथ, सटासट, अति शीघ्र, तुरत।
सटा–(सं०स्त्री०) जटा, शिखा, केशर।
सटाक–(हिं०पुं०) सट शब्द।
सटाकी–(हिं०स्त्री०) छड़ी में लगी हुई चमड़े की पट्टी।
सटान–(हि० स्त्री०) सटने की क्रिया या भाव, मिलान; **सटाना**–(हिं० क्रि०) मिलाना, जोड़ना, मारपीट करना, स्त्री पुरुष का संयोग होना।
सटिया–(हिं० स्त्री०) सोने या चाँदी की एक प्रकार की चूड़ी।
सटीक–(सं० वि०) टीका या व्याख्या सहित, (हिं० वि०) ठीक ठीक जैसा चाहिये वैसा।
सट्टक–(सं०नपुं०) नाटक का एक भेद जिसमें प्रायः अद्भुत रस का वर्णन रहता है।
सट्टा–(हिं०पुं०)किसी काम को निश्चित करने के लिये लिखा हुआ प्रतिज्ञापत्र हाट; **सट्टाबट्टा**–(हिं०पुं०) हेलमेल, मेलमिलाप।
सट्टी–(हिं०स्त्री०) वह हाट जिसमें फल तरकारी आदि बिकती हैं।
सठ–(हिं०पुं०) देखो शठ, दुष्ट, पाजी;
सठता–(हि०स्त्री०) शठता, दुष्टता।
सठियाना–(हि०क्रि०)साठ वर्ष का होना, बुड्ढा होना, वृद्धावस्था के कारण विवेक तथा बुद्धि का कम होना।
सठेरा–(हिं०पुं०) संठा, सरई।
सड़क–(हिं०स्त्री०) राजमार्ग, मार्ग।
सड़न–(हिं० स्त्री०) सड़ने का भाव या क्रिया; **सड़ना**–(हिं०क्रि०)किसी पदार्थ में खमीर उठना या लाना, दुर्दशा में पड़ना, बुरी अवस्था में पहुँचना, किसी काम का न रह जाना।
सड़सठ–(हिं०वि०) साठ और सात की संख्या का, (पुं०) जो गिनती में साठ और सात हो ६७; **सड़सठवां**–(हिं०वि०) गिनती में सड़सठ के स्थान पर रहने वाला।
सड़सी–(हि०स्त्री०) देखो सँड़सी।
सड़ा–(हि०वि०) सड़ी हुई वस्तु संबंधी।
सड़ाइंध–(हिं० स्त्री०) सड़ाहट की दुर्गन्ध वाला।
सड़ाक–(हि० पुं०) कोड़े आदि के फटकार का शब्द, शीघ्रता।
सड़ान–(हिं०स्त्री०) सड़ने की क्रिया।
सड़ाना–(हिं०क्रि०)किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।
सड़ायँध–(हिं० स्त्री०) सड़ी हुई वस्तु की गन्ध।
सड़ाव–(हिं० पुं०) सड़ने की क्रिया या भाव।
सड़ासड़–(हिं०अव्य०)सड़ शब्द के साथ।
सड़ियल–(हि० वि०) सड़ा गला हुआ, तुच्छ, नीच,
सण्ड–(हिं०पुं०) षण्ड, सांड़।
सत्–(सं०नपुं०)ब्रह्म, (वि०) सत्य, सज्जन, विद्यमान, शुद्ध, पवित्र, श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य, विद्वान्, नित्य, चिरस्थायी।
सत–(हिं०पुं०) सत्व, किसी पदार्थ का मूल तत्व, सार भाग, शक्ति (वि०) सात का संक्षिप्त रूप।
सतकार–(हिं० पुं०) देखो सत्कार; **सतकारना**–(हिं०क्रि०) सम्मान करना
सतगी या–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती है।
सतगुरु–(हिं०पुं०)अच्छा गुरु, परमात्मा। **सतजुग**–(हिं०पुं०) देखो सत्ययुग।
सतत–(सं० अव्य०) सर्वदा, निरन्तर, **सततगति**–(सं०पुं०) वायु, हवा।
सतदल–(हिं० पुं०) कमल।
सतनजा–(हिं० पुं०) सात प्रकार के अन्नों का मेल।
सतनी–(हिं० स्त्री०) सप्तपर्णा वृक्ष, सतिवन।
सतनु–(सं०वि०) शरीर वाला।
सतपतिया–(हि० स्त्री०) वह स्त्री जिसने सात पति किये हों, व्यभिचारिणी, छिनाल।
सतपदी–(हिं०स्त्री०) देखो सप्तपदी।
सतपुतिया–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की तरोई जो वर्षाऋतु में होती है।
सतपुरिया–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जंगली मधुमक्खी।
सतफेरा–(हिं०पुं०) विवाह के समय होने वाला सप्तपदी नामक कर्म।
सतभइया–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मैना।
सतभाव–(हिं०पुं०) सद्भाव, सज्जनता, सचाई।
सतभौंरी–(हिं०स्त्री) विवाह के समय वर और कन्या का सात बार अग्नि की प्रदक्षिणा करना।
सतमासा–(हिं०पुं०) सात महीने पर उत्पन्न होने वाला बच्चा, वह रीति जो शिशु के गर्भ आने पर सातवें महीने पर की जाती है।
सतमूली–(हिं०स्त्री०)शतावरी, सतावर।
सतयुग–(हिं०पुं) देखो सत्ययुग।
सतरंगा–(हिं०वि०) जिसमें सात रंग हों।
सतरंजी–(हिं० स्त्री०) देखो शतरंज। **सतरंज**–(हिं०स्त्री० देखो शतरंजी।
सतरह–(हिं०पुं०) देखो सत्तरह।
सतराना–(हिं०क्रि०) क्रोध करना, कुढ़ना।
सतरौंहां–(हि०वि०) कुपित, क्रोधयुक्त।
सतर्क–(सं०वि०) तर्कयुक्त, सावधान, **सतर्कता**–(सं०स्त्री०) सावधानी।
सतर्पना–(हिं० क्रि०) भली भांति सन्तुष्ट करना।
सतल–(सं०वि०) तलयुक्त।
सतलज–(हिं०स्त्री०) पंजाब की पांच प्रसिद्ध नदियों में से एक, शतद्रु नदी।
सतलड़ा–(हिं० वि०) सात लड़ियों का हार।
सतवंती–(हिं०स्त्री०)सती, पतिव्रता स्त्री
सतसंग–(हिं०पुं०) देखो सत्सङ्ग। **सतसंगी**–(हिं०वि०) देखो सत्संगी।
सतसई–(हिं०स्त्री०) सात सौ पद्यों का समूह, वह ग्रन्थ जिसमें सात सौ पद्य हों।
सतहत्तर–(हिं०वि०) सत्तर और सात की संख्या का (पुं०) सत्तर और सात की संख्या ७७; **सतहत्तरवां**–(हिं०वि०) वह जो क्रम से सत्तहत्तर के स्थान पर हो।
सतांग–(हिं०पुं०) रथ, यान।
सतानन्द–(सं० पुं०) गौतम ऋषि के पुत्र जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सतार–(सं० वि) तार के सहित ।
सतालू–(हिं० पुं०) एक छोटा वृक्ष जिसके गोल फल खाये जाते हैं, शफ़ताल, आड़ू ।
सतावर–(हिं०स्त्री०) एक झाड़दार वेल जिसकी जड़ औषधियों के काम में आती है ।
सतासी–(हिं० वि०) अस्सी और सात की सख्या ८७; सतासीवां–(हिं०वि०) जिसका स्थान अस्सी और सात पर पड़ता हो ।
सति–(सं०स्त्री०) दान ।
सतिवन–(हिं०पुं०) एक बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसकी छाल दवाओं के काम में आती है ।
सतिमिर–(सं०वि०) अन्धकार युक्त ।
सतिल–(सं० वि०) तिलयुक्त, तिल के साथ ।
सती–(सं०स्त्री०) साध्वी स्त्री, पतिव्रता स्त्री, वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले, दक्ष की कन्या का नाम जो शिव को व्याही थी, वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार अक्षर होते हैं; विश्वामित्र की पत्नी का नाम;सती चौरा–(हिं० पुं०) वह वेदी या चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर उसके स्मारक में बनाया जाता है ।
सतीत्व–(सं०नपुं०)सती होने का भाव । सतीत्व हरण–(सं० नपुं०) परस्त्री के साथ बालात्कार; सतीपन–(हिं०पुं०) सती रहने का भाव ।
सतुआ–(हिं० पुं०) भूने हुए जव चने आदि का महीन आंटा, सत्तू; सतुआ संक्रान्ति–(हिं०पुं०) मेष संक्रान्ति जिस दिन सत्तू दान किया जाता है । सतुष–(सं०वि०) भूसा सहित (अन्न)
सतृण–(सं०वि०) तृण युक्त ।
सतृष्ण–(सं० वि०) पिपासित, प्यासा, अभिलाषी ।
सतेज–(हिं० वि०) तेजस्वी बलवान् ।
सतैरी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मधुमक्खी ।
सतोगुण–(हिं० पुं०) देखो सत्वगुण; सतोगणी–(हिं० पुं०) सात्विकः उत्तम प्रकृति का ।
सतौला–(हिं० पुं०) प्रसूता स्त्री का विधि पूर्वक सातवें दिन का स्नान ।
सत्कथा–(सं०स्त्री०) विष्णु संबंधी कथा।
सत्करण–(सं० नपुं०) सत्कार करना, आदर करना ।
सत्कर्म–(सं०नपुं०) अच्छा कार्य, पुण्य ।
सत्कवि–(सं०पुं०) श्रेष्ठ कवि, उत्तमकवि
सत्कार–(सं०पुं०)आदर, सम्मान, पूजा, आतिथ्य ।
सत्कार्य–(सं० नपुं०) सत्कर्म, अच्छा काम (वि०) सत्कार करने योग्य ।
सत्कीर्ति–(सं० स्त्री०) उत्तम कीर्ति,
सत्कुल–(सं०नपुं०) उत्तम कुल, अच्छा कुल (वि०) अच्छे कुल का ।

सत्कृत–(सं० वि०) जिसका सत्कार किया गया हो; सत्कृति–(सं० स्त्री०) सत्कार (पुं०) विष्णु ।
सत्क्रिया–(सं० स्त्री०) शव की दाह-क्रिया, अच्छा व्यवहार, पुरस्कार ।
सत्त–(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का सार-भाग, तत्व ।
सत्तर–(हिं० वि०) साठ और दस की संख्या का (पुं०) साठ और दस की संख्या ७०; सत्तरहवां–(हिं०वि०) जो क्रम से सत्तर के स्थान पर हो ।
सत्तर्क–सं०पुं०) उत्तम तर्क ।
सत्ता–(सं०स्त्री०) विद्यमानता, अस्तित्व, उत्कर्ष, उत्पत्ति, प्रभुत्व शक्ति, गुण, द्रव्य तथा कर्म विशिष्ट जाति ।
सत्ता–(हिं० स्त्री०) ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियां हों ।
सत्ताईस–(हिं०वि०) वीस और सात की संख्या का (पुं०) बीस और सात की संख्या २७; सत्ताइसवां–(हिं० वि०) जो क्रम से सत्ताईस के स्थान पर पड़ता हो ।
सत्ताधारी–(सं०पुं०) अधिकारी ।
सत्तानबे–(हिं० वि०) नब्बे और सात की संख्या का (पुं०) नब्बे और सात की संख्या ९७; सत्तानबेवां–(हिं० वि०) जो क्रम से सत्तानबे स्थान पर पड़ता हो ।
सत्तावन–(हिं० वि०) पचास और सात की संख्या का, (पुं०) पचास और सात की संख्या ५७; सत्तावनवां–(हिं०वि०)जो क्रम से सत्तावन के स्थान पर पड़ता हो ।
सत्ताशास्त्र–(सं० पुं०) पाश्चात्य दर्शन की वह शाखा जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो ।
सत्तासी–(हिं०वि०) अस्सी और सात की संख्या का (पुं०) अस्सी और सात की संख्या ८७; सत्तासीवां–(हिं०वि०) जो क्रम से सत्तासी के स्थान पर हो ।
सत्तू–(हिं० पुं०) जव चने आदि को भूनकर पीसा हुआ आंटा, सतुआ ।
सत्पति–(सं०पुं०) साधुओं का पालन करने वाला ।
सत्पत्र–(सं०पुं०) नये कमल का पत्ता ।
सत्पथ–(सं०पुं०) उत्तम मार्ग, संप्रदाय या सिद्धान्त ।
सत्पशु–(सं०पुं०) उत्तम पशु ।
सत्पात्र–(सं० नपुं०) दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति, श्रेष्ठ, सदाचारी मनुष्य, अच्छा वर, उपयुक्त उपहार ।
सत्पुत्र–(सं०पु०) सुपुत्र, उत्तम सन्तान।
सत्पुरुष–(सं० पुं०) पूज्य पुरुष, भला आदमी ।
सत्पुष्प–(सं० नपुं०) बढ़िया फूल ।
सत्फल–(सं०पुं०) नारियल, अनार ।
सत्य–(सं० नपुं०) सतयुग, कृतयुग, यथार्थ, ठीक बात, प्रतिज्ञा, शपथ, पातञ्जल दर्शन के अनुसार यथार्थ बात और मन, ब्रह्म, (पुं०) विष्णु पीपल का वृक्ष, नवें कल्प का नाम, उचित पक्ष, परमार्थिक सत्ता, ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं (वि०) वास्तविक, सच्चा, ठीक, सही; सत्यकर्मा–(सं० पुं०) सत्कार्य करने वाला; सत्यकाम–(सं० पुं०) सत्य का प्रेमी ।
सत्यनिष्ठ–देखो सत्यनारायण; सत्यघ्न–(सं०वि०) सत्य का पालन न करने वाला; सत्यजित्–(सं०वि०) कृष्ण के एक पुत्र का नाम; सत्यज्ञ–(सं०त्रि०) सत्य को जानने वाला; सत्यतः–(सं० अव्य०) वास्तव में, यथार्थ में, सचमुच; सत्यता–(सं० स्त्री०) नित्यता, सचाई; सत्यधृति–(सं०पुं०) सत्यशील; सत्यनारायण–(सं० पुं०) सत्यदेव, विष्णु ।
सत्यपर–(सं०वि०) सच्चा; सत्यपुरुष–(सं० पुं०) परमात्मा; सत्यप्रतिज्ञ–(सं० वि०) सत्यवादी, वचन का सच्चा; सत्यफल–(सं० पुं०) बेल का वृक्ष; सत्यभामा–श्रीकृष्ण की एक प्रधान महिषी का नाम; सत्यभारत–(सं० पुं०) वेदव्यास; सत्यभाषण–(सं० नपुं०) सच बात कहना ।
सत्ययुग–(सं० नपुं०) चार युगों में से पहिले युग का नाम; सत्ययुगी–(सं०वि०) सच्चरित्र, अति प्राचीन ।
सत्यरूप–(सं०पुं०) विष्णु; सत्यलोक–(सं० पुं०) ब्रह्मलोक; सत्यवती–(सं० स्त्री०) वेदव्यास की माता का नाम; सत्यवाचक–(सं० वि०) सच बोलने वाला; सत्यवादी–(सं० वि०) यथार्थ वक्ता, प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला; सत्यवान्–(सं० पुं०) सावित्री के पति का नाम; सत्यवाहन–(सं० वि०) धर्म पर दृढ़ रहने वाला; सत्यविक्रम–(सं० त्रि०) सत्यवादी; सत्यव्रत–(सं०पुं०) सच बोलने वाला, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम; सत्यशील–(सं० वि०) सच्चा; सत्यसंकल्प–(सं० वि०) बिचारे हुए काम को पूरा करने वाला ।
सत्यसन्ध–(सं० त्रि०) सत्यवादी, विष्णु, रामचन्द्र ।
सत्या–(सं० स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती, कृष्ण की पत्नी, सत्यभामा, दुर्गा ।
सत्याग्रह–(सं०पुं०) किसी न्यायपूर्ण पक्ष के लिये निरन्तर शान्ति पूर्वक हठ करना ।
सत्यानास–(हिं०पुं०) सर्वनाश, ध्वंस; सत्यानासी–(हिं० वि०) नाश करने वाला, अभागा, एक कँटीला पौधा।
सत्यायु–(सं० पुं०) उर्वशी के एक पुत्र का नाम ।

सत्येतर–(सं० वि०) सत्य से भिन्न, झूठा
सत्र–(सं० नपुं०) यज्ञ, धन, घर, वह स्थान जहाँ पर अनाथों को भोजन दिया जाता है; सत्रहन्–(सं० पुं०) शत्रुघ्न ।
सत्रि, सत्री–(हिं० पुं०) यज्ञकर्ता ।
सत्व–सं०पु०) अस्तित्व, सत्ता, चित्त की प्रवृत्ति, तत्व, चैतन्य, प्राण, जीव, सत्वगुण, अच्छे काम करने का गुण ।
सत्वधाम–(सं० पुं०) विष्णु का एक नाम ।
सत्वर–(सं० अव्य०) शीघ्र, तुरत,झटपट
सत्संग–(सं० पुं०) साधु सज्जन के साथ उठना बैठना; सत्संगति–(सं० स्त्री०) देखो सत्संग; सत्संगी–(सं० वि०) सत्संग करने वाला; सत्समागम–(सं० पुं०) भले आदमियों का ससर्ग।
सथर–(हिं० पुं०) स्थल, स्थान, भूमि ।
सथिया–(हिं० पुं०) स्वस्तिक, एक मंगल सूचक चिह्न जो समकोण पर काटती हुई दो रेखाओं के रूप में बनता है, ‰ चोर फाड़ करनेवाला
सद–(हिं० अव्य० स्त्री०) तुरत (वि०) नवीन, (स्त्री०) प्रकृति, अभ्यास ।
सदई–(हिं० अव्य०) सर्वदा ।
सदक्ष–(सं० वि०) ज्ञानयुक्त ।
सदण्ड–(सं० वि०) दण्ड युक्त ।
सदन–(सं० नपुं०) घर, जल, पानी, स्थिरता, विराम, थकावट ।
सदना–(हिं० क्रि०) छेद में से रसना, चूना ।
सदवर्ग–(सं०पुं०) हजारा गेंदा ।
सदय–(सं० वि०) दयालु, दया युक्त ।
सदर्थ–(सं० पुं०) मुख्य विषय ।
सदर्थना–(हिं० क्रि०) पुष्टि या समर्थन करना ।
सदर्प–(सं० वि०) अभिमानी, घमंडी ।
सदसत्–(सं० वि०) सच और झूठ, अच्छा और बुरा; सदसत् फल–(सं० नपुं०) भला और बुरा फल; सदसत् विवेक–(सं० पुं०) अच्छे और बुरे की पहचान, भले बुरे की का ज्ञान
सदस्य–(सं० पु०) याजक, यज्ञ करने वाला, किसी सभा या समाज का सभासद ।
सदहा–(हिं० पुं०) अनाज लादने की बड़ी बैलगाड़ी (हिं० वि०) सैकड़ों ।
सदा–(सं० अव्य०) सर्वदा, निरन्तर ।
सदागति–(सं० पुं०) वायु, हवा, सूर्य, विष्णु, (वि०) सर्वदा चलने वाला ।
सदागम–(सं० पुं०) अच्छा सिद्धान्त ।
सदाचरण–(सं० नपुं०) अच्छी चाल चलन ।
सदाचार–(सं० पुं०) सात्विक व्यवहार, साधुओं का आचरण, भलमनसी,रीति; सदाचारी–(सं०पुं०) धर्मात्मा, पुण्यात्मा, अच्छे आचरण वाला, सर्वदा घूमने वाला ।
सदातन–(सं० पुं०) विष्णु (वि०) नित्य ।

सदानन्द–(सं० वि०) सर्वदा प्रसन्न रहने वाला (पुं०) शिव।
सदाफल–(सं० पुं०) नारियल, गूलर, बेल; कटहल, एक प्रकार का नीबू।
सदाबरत–(हिं०पुं०) देखो सदावर्त।
सदाबहार–(हिं० वि०) जो सर्वदा हरा बना रहे, वह वृक्ष जो सदा फूलता रहे।
सदाभव–(सं० वि०) चिरन्तन, सदा रहने वाला।
सदावर्त–(सं० पुं०) नित्य दीन दुखियों को अन्न बाँटना, वह भोजन जो दीन दुखियों को प्रतिदिन बाँटा जाय।
सदाशय–(सं० वि०) उच्च विचार का, भलमानुस।
सदाशिव–(सं० वि०) सर्वदा कल्याण करने वाला, सदा दयालु, (पुं०) शिव, महादेव।
सदासुख–(सं० वि०) सर्वदा सुखी।
सदा सुहागिन–(हिं० वि०) जो सर्वदा सुहागिन बनी रहे, कभी पतिहीन न हो, (स्त्री०) वेश्या, रंडी।
सदुक्ति–(सं० स्त्री०) साधु कथन।
सदुपदेश–(सं० पुं०) उत्तम शिक्षा, अच्छा उपदेश, अच्छी सलाह।
सदृश–(सं०वि०) तुल्य, बराबर, उचित, अनुरूप, समान; सदृशता–(सं० स्त्री०) समानता, तुल्यता।
सदेश–(सं०क्रि०वि०) निकट, पास।
सदेह–(सं०क्रि०वि०) बिना शरीर त्यागे हुए, इसी शरीर से।
सदैव–(सं० अव्य०) सर्वदा।
सदोष–(सं०वि०) दोष सहित, अपराधी, दोषी।
सद्गति–(सं०स्त्री०) उत्तम गति, मुक्ति, निर्वाण, सच्चरित्र, अच्छा व्यवहार।
सद्गुण–(सं० नपुं०) उत्तम गुण, दया आदि गुण; सद्गुणी–(हिं० वि०) अच्छे गुण वाला।
सद्गुरु–(सं० पुं०) अच्छा गुरु, अच्छा शिक्षक, परमेश्वर।
सद्ग्रन्थ–(सं०पुं०) अच्छा ग्रन्थ, सन्मार्ग बतलाने वाला ग्रन्थ।
सद्ग्रह–(सं० पुं०) शुभ ग्रह, वृहस्पति और शुक्र ग्रह।
सद्द–(हिं० पुं०) देखो शब्द, (अव्य०) सद्यः, तुरत।
सद्धर्म–(सं० पुं०) उत्तम धर्म।
सद्धेतु–(सं० पुं०) दोष रहित हेतु।
सद्भाव–(सं० पुं०) अच्छा भाव, मैत्री, मेल जोल।
सतद्भू–(सं०वि०) सत्य, यथार्थ।
सद्म–(सं० नपुं०) घर, जल, पानी पृथ्वी और आकाश।
सद्मिनी–(सं० स्त्री०) बड़ा घर।
सद्य–(सं० नपुं०) इसी क्षण, इसी समय, अभी, तुरत, शीघ्र, (पुं०) शिव का एक नाम।
सद्यः–(सं० अव्य०) अभी, तुरत।
सद्यःक्षत–(सं० वि०) जो अभी घायल हुआ हो; सद्यःप्रसूता–(सं० स्त्री०) जिसको अभी बच्चा पैदा हुआ हो;
सद्यःफल–(सं० वि०) जिसका फल तुरत मिल जावे।
सद्योजात–(सं० पुं०) शिव का एक रूप।
सद्रत्न–(सं० नपुं०) उत्तम रत्न।
सद्वंश–(सं० पुं०) उत्तम वंश।
सद्विद्या–(सं० स्त्री०) ब्रह्मविद्या, ब्रह्मज्ञान
सधना–(हिं० क्रि०) सिद्ध होना, पूरा होना, अभ्यस्त होना, लक्ष्य ठीक होना, गौं पर चढ़ना, ठीक नापा जाना।
सधर्म–(सं० वि०) तुल्य, समान; सधर्मचारिणी–(सं० स्त्री०) भार्या; सधर्मा, सधर्मी–(सं० वि०) समान, तुल्य।
सधवा–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सुहागिन।
सधना–(हिं० क्रि०) साधने का काम दूसरे से कराना।
सधावर–(हिं० पुं०) वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने में दिया जाता है।
सधूम्र–(सं० वि०) धुवें के साथ।
सन–(हिं० पुं०) बोया जाने वाला एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से दृढ़ रस्सियां बनाई जाती हैं;
सनई–(हिं०स्त्री०) छोटी जाति का सन।
सनक–(सं० पुं०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक; (हिं० स्त्री०) किसी बात की धुन, चित्त की प्रवृत्ति, उन्माद; सनक सवार होना–किसी बात की धुन लगना; सनकाना–(हिं० क्रि०) किसी को सनकने में प्रवृत्त करना; सनकारना, सनकियाना–(हिं० क्रि०) संकेत करना।
सनत्–(सं० पुं०) ब्रह्मा, सब समय।
सनत्कुमार–(सं० पुं०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
सनता–(हिं० पुं०) वह वृक्ष जिस पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं।
सनना–(हिं० क्रि०) जल के योग से किसी वस्तु के चूर्ण के कणों का परस्पर मिलना, लेई बन जाना।
सननी–(हिं०स्त्री०) देखो सानी।
सनन्द–(सं० पुं०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
सनमान–(हिं०पुं०) सम्मान, प्रतिष्ठा;
सनमानना–(हिं०क्रि०) संस्कार करना
सनमुख–(हिं० क्रि० वि०) देखो सन्मुख।
सनसनाना–(हिं० क्रि०) हवा के वेग से शब्द होना, खौलते हुए पानी का शब्द होना; सनसनाहट–(हिं० पुं०) वायु का शब्द; सनसनी–(हिं० स्त्री०) उद्वेग, घबड़ाहट, खलबली, झुनझुनी
सनसय–(हिं०पुं०) देखो संशय, सन्देह।
सनाढ्य–(हिं० पुं०) गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा।
सनातन–(सं० पुं०) विष्णु, शिव, ब्रह्मा, प्राचीन काल से आता हुआ क्रम, (वि०) बहुत पुराना, नित्य, परम्परागत
सनातन धर्म–(सं० पुं०) परम्परागत धर्म, वर्तमान हिन्दू धर्म का वह स्वरूप जो परम्परा से माना जाता है, इस धर्म में पुराण, तन्त्र, बहुत से देवताओं की उपासना, प्रतिमा पूजन तथा तीर्थ माहात्म्य सभी समान रूप से माननीय हैं।
सनातन पुरुष–(सं० पुं०) विष्णु भगवान्
सनातनी–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, सनातन धर्म का अनुयायी, जिसकी परम्परा बहुत पुरानी हो।
सनाथ–(सं० वि०) जिसकी रक्षा करने वाला कोई स्वामी हो, (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।
सनाभ–(सं० पुं०) सहोदर भाई।
सनाम–(सं० वि०) एक नाम का।
सनाह–(हिं०पुं०) कवच।
सनित–(हिं० वि०) सना हुआ।
सनिद्र–(सं० वि०) निद्रा युक्त।
सनीचर–(हिं० पुं०) देखो शनैश्चर।
सनीचरी–(हिं० पुं०) शनी की दशा जिसमें दुःख व्याधि आदि की अधिकता रहती है।
सनीड़–(सं० अव्य०) निकट, पास, पड़ोस में।
सनेह–(हिं०पुं०) देखो स्नेह, प्रेम; सनेही–(हिं० वि०) प्रेमी, प्रेम करने वाला। (पुं०) प्रियतम।
सन्त–(सं० पुं०) साधु, संन्यासी, महात्मा एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सत्ताईस मात्रा होती हैं।
सन्तत–(सं०नपुं०) सतत, अनादि, अनन्त
सन्तति–(सं०स्त्री०) सन्तान, बाल बच्चे, विस्तार, फैलाव, दक्ष की कन्या का नाम।
सन्तनि–(सं०वि०) सर्वदा चलने वाला,
सन्तप्त–(सं० वि०) श्रान्त, थका हुआ, जला हुआ, दुःखी, पीड़ित।
सन्तरण–(सं० नपुं०) अच्छी तरह पार होने वाला, तारक, नष्ट करनेवाला
सन्तर्जन–(सं० पुं०) डराना, धमकाना, भगाना।
सन्तर्पण–(सं० वि०) तृप्त करनेवाला।
सन्तान–(सं०पुं०) कल्प वृक्ष, बाल बच्चे, वंश, कुल, विस्तार, प्रबन्ध, व्याप्ति
सन्तानिका–(सं० स्त्री०) छुरी या चाकू का फल, मलाई, साढी, क्षीरसागर।
सन्ताप–(सं० पुं०) अग्नि या धूप का ताप, जलन, कष्ट, दुःख, दाहरोग, ज्वर, शत्रु। सन्तापन–(सं० पुं०) कामदेव के पाँच बाणों में से एक, अधिक कष्ट देना।
सन्तापी–(सं० पुं०) दुःख या सन्ताप देने वाला।
सन्तारक–(सं०पुं०) तैरने वाला।
सन्तुष्ट–(सं०वि०) जिसकी तृप्ति होगई हो
सन्तोष–(सं० पुं०) चित्त की वह वृत्ति जिसमें मनुष्य अपनी वर्तमान दशा में ही पूर्ण सुख का अनुभव करता है, शान्ति, तृप्ति, प्रसन्नता, हर्ष।
सन्तोषण–(सं० नपुं०) सन्तोष, तृप्ति।
सन्तोषणीय–(सं० वि०) सन्तोष करने योग्य। सन्तोषी–(सं०वि०) सन्तुष्ट।
सन्दंश–(सं० पुं०) कङ्क मुख, सडसी।
सन्दर्प–(सं०पुं०) अत्यन्त अभिमान।
सन्दर्भ–(सं०पुं०) रचना, प्रबन्ध, संग्रह, विस्तार, परम्परान्वित रचना, ग्रन्थ विशेष।
सन्दर्शन–(सं० पुं०) अच्छी तरह देखने की क्रिया।
सन्दान–(सं० नपुं०) शृङ्खला, सिकड़ी, रस्सी।
सन्दिग्ध–(सं० वि०) सन्देह युक्त, एक प्रकार का व्यङ्ग। सन्दिग्धत्व–(सं० पुं०) सन्देह अलंकार का वह दोष जिसमें किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट नहीं होता। सन्दिग्धमति–(सं०वि०) सन्देह करने वाला। सन्दिग्धार्थ–(सं० पुं०) वह अर्थ जिसमें सन्देह हो।
सन्दिष्ट–(सं०नपुं०) वार्तालाप, समाचार, (वि०) कथित, कहा हुआ।
सन्दीपक–(सं० वि०) उद्दीपक, उद्दीपन करने वाला। सन्दीपन–(सं० नपुं०) उद्दीप्त करने की क्रिया। सन्दीपनी–(सं०स्त्री०) संगीत में पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से तीसरी श्रुति।
सन्दीपित–(वि०सं०) प्रज्वलित, जलाया हुआ।
सन्देश–(सं० पुं०) सम्वाद, समाचार। एक प्रकार की बंगला मिठाई।
सन्देशहर–(सं० पुं०) समाचार ले जाने वाला।
सन्देसा–(हिं०पु०) समाचार।
सन्देह–(सं० पुं०) संशय, द्विधाभाव, द्वैधज्ञान।
सन्दोल–(सं० त्रि०) सुन्दर हिंडोला, कर्णफूल नामक आभूषण।
सन्दोह–(सं०पुं०) समूह, झुण्ड।
सन्धा–(सं० स्त्री०) स्थित, प्रतिज्ञा, अनुसन्धान, मिलन।
सन्धान–(सं० नपुं०) संघटन, योजन, अन्वेषण, खोज, सन्धि, मेल।
सन्धानिका–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का आम का अचार।
सन्धानी–(सं०स्त्री०) मदिरा बनाने का स्थान, संयोजन, बन्धन, प्राप्ति, पालन
सन्धि–(सं० पुं०) आपस का मिलना, एक राजा का दूसरे विपक्ष राजा के साथ विशेष नियम से आबद्ध होकर मिलना, शरीर की हड्डियों का जोड़, संयोग, संघटन, भेद साधन, व्याकरण में दो वर्णों का मिलान।
सन्धिचौर–(सं० पुं०) सेंघ लगाकर चोरी करने वाला। सन्धिबीजक–(सं० पुं०) कुटना। सन्धितस्कर–(सं० पुं०) सेंघ लगाकर चोरी करने वाला
सन्धिनी–(सं० स्त्री०) गाभिन गाय, वह गाय जो बिना बछवे के दूध देती हो
सन्धिपूजा–(सं० स्त्री०) देवी की वह पूजा जो महाष्टमी और महानवमी

के सन्धि क्षण में होती है। सन्धि-बन्धन–(सं०नपुं०) शिरा, नस।
शन्धिभंग–(सं० पुं०) शरीर के किसी जोड़ का टूटना।
सन्धिराग–स०पुं०, सिन्दूर।
सन्धिवेला–(सं०स्त्री०) सन्ध्या का समय
सन्ध्या–(सं० स्त्री०) दिन और रात के टिकने का समय, संज्ञा, उपासना जो दिन के तीनों सन्धि काल में की जाती है। सन्ध्याकाल–(सं० पुं०) सन्ध्योपासन करने का समय।
सन्न–(स०वि०) स्तम्भित, भौचक, हीन, रहित, स्तब्ध, डर से चुप, (पुं०) चिरौंजी का वृक्ष।
सन्नत–(सं० वि०) झुका हुआ, नीचे गया हुआ।
सन्नद्ध–(सं० वि०) कवच आदि बांधकर तैयार, उपद्रवी, बँधा हुआ, कसा हुआ, समीप का।
सन्नाटा–(हिं०पुं०)निःशब्दता, नीरवता, ठक रह जाने का भाव, उदासी,वायु का तीव्र शब्द, निःस्तब्धता, एकान्तता, निरालापन; सन्नाटे में आना–एकदम स्तब्ध होना; सन्नाटा खींचना–एकदम चुप हो जाना।
सन्नाह–(सं० पुं०) भीषण शब्द।
सन्नाह–(सं०पुं०) उद्योग, प्रयत्न, अङ्ग, त्राण, कवच, पहरावा।
सन्निकट–(स०अव्य०) समीप, पास।
सन्निकर्ष–(सं० पुं०) समीपता, सामने की स्थिति।
सन्निधान–(सं०त्रि०) निकटता, समीपता, आश्रय, ईन्द्रिय विषय, समागम।
सन्निधि–(सं०स्त्री०) समीपता, निकटता, आमने सामने की स्थिति, पड़ोस, इन्द्रियगोचर।
सन्निनाद–(सं०पुं०) वेग का शब्द।
सन्निपात–(सं०पुं०) ताल का एक भेद, समूह, संयोग, संग्राम, युद्ध, नाश, जुटना भिड़ना, इकट्ठा होना, बात, पित्त, कफ का एक साथ बिगड़ना।
सन्निबद्ध–(सं० वि०) जकड़ा हुआ, लगा हुआ।
सन्निमग्न–(सं० वि०) खूब डूबा हुआ, सोया हुआ।
सन्निरुद्ध–(सं०वि०) रोका हुआ, ठहराया हुआ, दलन किया हुआ।
सन्निरोध–(सं०पुं) रुकावट, बाधा।
सन्निवार्य–(सं०वि०) अच्छी तरह रोकने लायक।
सन्निविष्ट–(सं०वि०) एक साथ बैठा हुआ, निकट, पास, उपस्थित, पास का, लगा हुआ, निकट, पास, उपस्थित पास का, लगा हुआ, रक्खा हुआ, आया हुआ।
सन्निवेश–(सं० पुं०) आकृति, रचना, व्यवस्था,योजना,समाज समूह, एकत्र, होना, जुटना, स्थिति, आधार, लगाना, बैठाना, रखना, अंटना, ठहराना, एक साथ बैठना, गाँव के लोगों का इकट्ठा होने का स्थान।
सन्निवेशित–(सं०वि०) बैठाया हुआ, जमाया हुआ, ठहराया हुआ, स्थापित, अंटाया हुआ।
सन्निहित–(सं०वि०) समीप का, निकट का, एक साथ या पास रक्खा हुआ, उद्यत, तैयार।
सन्मान–(हिं०पुं०) देखो सम्मान।
सन्मुख–(हिं०अव्य०) देखो सम्मुख।
सन्यसन–(सं० नपुं०) फेंकना, छोड़ना; स्थापित करना।
सन्यस्त–(सं० वि०) समर्पित, जिसने सन्यास लिया हो।
सन्यास–(सं० पुं०)काम्य कर्मों का त्याग चतुर्थ आश्रम, एक रोग विशेष, संसार के प्रपंच से अलग होने की अवस्था, त्याग।
सन्यासी–(हिं० पुं०) चतुर्थ आश्रमी, जिसने सन्यास ग्रहण किया हो, वैरागी, त्यागी।
सपई–(हिं०स्त्री०) पेट का केंचुआ।
सपक्ष–(सं०वि०) तुल्य, समान, समर्थक, अनुकूल, (पुं०) मित्र, सहायक, अनुकूल पक्ष, न्याय में वह बात या दृष्टान्त जिसमें साध्य अवश्य हो।
सपक्षता–(सं० स्त्री०) पक्षावलम्बन, अनुकूलता।
सपटा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का टाट।
सपत्र–(सं० पुं०) बाण, तीर (वि०) पत्ते सहित।
सपत्न–(सं०पुं०) शत्रु, वैरी, विरोधी।
सपत्नी–(सं० स्त्री०) एक ही पति की दूसरी स्त्री, सौत। सपत्नीक–(सं०वि०) स्त्री के सहित सपथ–(हिं० स्त्री०) सौगन्ध।
सपदि–(सं०अव्य०) तुरत, शीघ्र।
सपना–(हिं० पुं०) स्वप्न, निन्द्रा की अवस्था में देख पड़ने वाला दृश्य।
सपरदाई–(हिं०पुं०) गाने वाली रंडी के साथ तबला सरंगी आदि बजाने वाला, भडवा, समाजी।
सपरना–(हिं०क्रि०)किसी कार्य का पूरा या समाप्त होना, निबटना, काम किया जा सकना, तैयार होना।
सपराना–(हिं०क्री०) काम पूरा करना, निबटाना।
सपरिकर–(सं० वि०) अनुचर वर्ग के साथ, ठाटवाट के साथ।
सपरिच्छद–(सं०वि०) देखो सपरिकर।
सपर्या–(सं०स्त्री०) आराधना, उपासना
सपाट–(हिं० वि०) समतल, बराबर, चिकना, जिसका तल चौरस हो।
सपाटा–(हिं०पुं०) दौड़ने या चलने का वेग, झोंक, झपट; सैर सपाटा–घूमना फिरना।
सपाद–(सं०वि०) पादयुक्त, जिसमें एक का चौथाई मिला हो।
सपाल–(सं० वि०) लोक का पालन करने वाला।
सपिण्ड–(सं० पुं०) सात पुरुष तक की ज्ञाति; एक ही वंश के वे पुरुष जो एक ही पितरों को पिण्ड दान देते हों, सपिण्ड को जनन और मरण में पूर्ण अशौच होता है।
सपिण्डी, सपिण्डीकरण–(स०नपुं०) मृतक के निमित्त वह कार्य जिसमें वह पितरों के साथ मिलाया जाता है।
सपीतक–(स०पुं०) घीयातरोई,नेनुआ।
सपुत्र–(सं०वि०, पुत्र, सहित।
सपुष्प–(सं०वि०) पुष्प युक्त, जिसमें फूल हो।
सपूत–(हिं० पुं०) अच्छा पुत्र, वह पुत्र, जो अपने कर्तव्य का पालन करता हो
सपूती–हिं०स्त्री०) सपूत होने का भाव, योग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली माता
सपेद–(हिं०वि०) श्वेत।
सपेरा–(हिं०पु०) देखो सँपेरा।
सपोला–(हिं०पुं०)साँप का छोटा बच्चा
सप्त–(सं० वि०) वह जो गिनती में सात हो। सप्तऋषि–(सं०पुं०) देखो सप्तर्षि। सप्तक–(सं० वि०) सातवाँ, जिसमें सात की संख्या हो, (नपुं०) सात वस्तुओं का समूह,संगीत में सात स्वरों का समूह। सप्तकी–(सं०स्त्री०) चन्द्रहार,स्त्रियों के कमर की करधनी;
सप्तग्रही–(सं०स्त्री०) एक ही राशि में सात ग्रहों का एकत्रित होना। सप्तच्छद–(स०पुं०) छतिवन नामक वृक्ष।
सप्तजिह्व–(सं० पुं०) अग्नि, जिसकी सात जिह्वाओं के नाम–काली, कराली मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, उग्रा, और प्रदीप्ता हैं। सप्तज्वाल–(हिं०पुं०) अग्नि;सप्तदीधिति–(सं०पुं०) अग्नि। सप्तद्वीप–(सं०पुं०) पुराण के अनुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य भाग इनके नाम जम्बू-द्वीप, कुशद्वीप, प्लक्ष द्वीप, शाल्मलि द्वीप, क्रौञ्चद्वीप और पुष्कर द्वीप हैं। सप्त धातु–(सं०पुं०) शरीर के सात धातु यथा रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र। सप्त धान्य–(सं०पु०) जव, धान, उड़द आदि सात अन्न जो पूजा में उपयोग किये जाते हैं। सप्त नाड़ीचक्र–(सं०नपुं०) फलित ज्योतिष के एक चक्र का नाम;सप्तपत्र (सं० पुं०) सप्तपर्ण वृक्ष, छतिवन।
सप्तपदी–(सं० स्त्री०) विवाह की वह रीति जिसमें वर और वधू अग्नि की सात परिक्रमा करते हैं। सप्त पदार्थ–(सं० पुं०) द्रव्य, गुण, कर्म, समान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ। सप्तपर्ण–(सं०नपुं०) छितवन का वृक्ष, एक प्रकार की मिठाई।
सप्तपर्णी–(सं०स्त्री०) लज्जालु नाम की लता। सप्त पाताल–(सं०नपुं०) पृथ्वी के नीचे के सात लोक जिनके नाम अतल, वितल, सुतल, रसातल महातल और पाताल हैं। सप्तपुत्री–(सं स्त्री०) सतपुतिया नामक तरकारी।
सप्तपुरी–(सं०स्त्री०) सात पवित्र तीर्थ यथा–काशी, काँची, उज्जयिनी, हरिद्वार, अयोध्या, मथुरा और द्वारका।
सप्तभूम–(सं०पुं०) घर के सात खण्ड
सप्तम–(सं०वि०)सातवां; सप्त मातृका–(सं०स्त्री०) सात शक्तियाँ जिन का पूजन शुभ कार्यों के अवसर पर होता है, इनके नाम–ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री और चामुण्डा हैं। सप्तमी–(सं०स्त्री०) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की सातवीं तिथि; सप्तरुचि–(सं० पुं०) अग्नि का एक नाम।
सप्तर्षि–(सं०पु०) ब्रह्मा के सात मानस पुत्र जो ऋषि थे–इनके नाम–मरीच, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, ऋतु, अंगिरा और वसिष्ठ हैं–ये सब सप्तर्षि स्वायम्भुव मन्वन्तर में थे,चौदहो मन्वन्तर के भिन्न भिन्न सप्तर्षि हैं।
सप्तला–(सं०स्त्री०)नवमल्लिका,चमेली;
सप्तशती–(सं०स्त्री०) सात सौ श्लोकों का देवी महात्म्य, सात सौ का समूह, बंगाल के ब्राह्मणों की एक श्रेणी।
सप्तशीर्ष–(सं०पुं०) विष्णु का एक नाम
सप्तस्वर–(सं० पुं०) संगीत के सात स्वर।
सप्तश्व वाहन–(सं०पुं०) सूर्य।
सप्ताह–(सं०पुं०)सात दिनों का काल।
सप्रभाव–(सं०वि०) तेजस्वी, पराक्रमी।
सप्रमाण–(सं०वि०) प्रामाणिक।
सफरदाई–(हिं०पुं०) साज-बजाने वाला;
सफल–(सं०वि०) फल युक्त, अमोघ, सार्थक, जिसका कुछ परिमाण हो, कृतकार्य, पूरा होना। सफलता–(सं०स्त्री०) पूर्णता, सिद्धि।
सफला–(सं०स्त्री०)पौष कृष्ण एकादशी;
सफलीभूत–(सं०वि०) जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।
सफाचट–(हिं० वि०) एकदम स्वच्छ, उखाड़ कर अलग किया हुआ, जो बिलकुल चिकना हो। सफ्तालू–(हिं० पुं०) देखो सफ़तालू।
सब–(हिं०वि०) समस्त, जितने हों वे कुल, पूरा।
सबद–(हिं०पुं०) देखो शब्द।
सबल–(स०वि०) बलवान्, सैन्य युक्त।
सबार–(हिं०क्रि०वि०) शीघ्र, तुरत।
सबीज–(सं०वि०) बीज सहित।
सबेरा–(हिं०पुं०) प्रातःकाल,सबेरे; (हिं० क्रि०वि०) प्रातःकाल।
सभर्तृका–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा।
सभव–(सं०वि०) शिव के सहित।
सभा–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहां पर बहुत से लोग बैठकर किसी बात पर परामर्श करते है, परिषद्, समिति, समूह झुंड, प्रजापति की कन्या का नाम।
सभागा–(हिं०वि०)भाग्यवान्, मनोहर।
सभा गृह–(सं०नपुं०) वह स्थान जहां किसी सभा या समितिका अधिवेशन

होता है। सभाजन-(सं०वि०) प्रीती दायक। सभापति-(सं०पुं०) सभा या समाज के नेता।

सभावी-(सं०पुं०)द्यूतशाला का मालिक;

सभासद-(सं०पुं०) वह जो किसी सभा से सम्मिलित हो।

सभोचित-(सं०पुं०) पण्डित (वि०) सभा के योग्य।

सभ्य-(सं०पुं०) सभासद, सदस्य, वह जिसका आचरण अच्छा हो, (वि०) सभा संबंधी।

सभ्यता(सं०स्त्री०)भलमनसी, सज्जनता;

सम्-(सं०अव्य०) तुल्यार्थ, प्रकृष्टार्थ।

सम-(सं०वि०)कुल, समान, तुल्य, बराबर, समतल, जूस संख्या,(पुं०) संगीत में वह स्थान जहाँ पर गाने बजाने वाले का सिर या हाथ आपसे आप हिल जाता है, यह स्थान ताल के अनुसार निश्चित होता है, गणित में वह सीधी रेखा जो उस अंक पर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है, वह अर्थालङ्कार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंध का वर्णन रहता है, (अ०पुं०) विष, जहर। समकक्ष-(सं० वि०) तुल्य, समान; समकन्या-(सं०स्त्री०) विवाह के योग्य कन्या। समकर्म-(सं०वि०) जिसके काम समान हों। समकालीन-(सं०वि०) एक ही समय में होने वाला, वह जो एक ही समय में हो। समकोण-(सं०वि०) रेखा गणित में वह आकृति जिसके आमने सामने के कोण बराबर हों।

समक्ष-(सं० अव्य०) सम्मुख, आँख के सामने।

समखात-(सं०नपुं०) कूप के आकार का गड्ढा।

समग्र-(सं०वि०) सम्पूर्ण, पूरा।

समङ्गा-(सं०स्त्री०) मजिष्ठा, मजीठ।

सम चतुष्कोण-(सं०पुं०) वह चतुर्भुज जिसके चारो भुज समान हों।

समचर-(सं०वि०)समान आचरण वाला

समचित्त-(सं०नपुं०) वह जिसका चित्त सब अवस्था में समान रहता हो।

समजातीय-(सं०वि०)एक ही जाति का;

समज्ञा-(सं०स्त्री०) कीर्ति, यश।

समञ्जस-(सं० वि०) उचित, ठीक, अभ्यस्त।

समझ-(हिं०पुं०) ज्ञान, बुद्धि।

समझदार-(हिं०वि०) बुद्धिमान।

समझना-(हिं० क्रि०) किसी बात को अच्छी तरह ध्यान में लाना। समझाना-(हिं०क्रि०) दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना। समझौता-(हिं०पुं०) आपस का निबटारा।

समतल-(सं० वि०) जिसका तल या सतह बराबर हो। समता-(सं०स्त्री०) समान होने का भाव, बराबरी।

समभुज-(हिं०वि०)समान,समतल बराबर

सम त्रिभुज-(सं०पुं०)वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज बराबर हों।

समत्सर-(सं०वि०) डाह करने वाला।

समद-(सं०वि०) मदयुक्त, अभिमानी।

समदन-(सं०नपुं०) संग्राम, युद्ध।

समदना-(हिं०स्त्री०)प्रेम पूर्वक मिलना।

समदर्शन-(सं०वि०)वह जो सब मनुष्यों, स्थानों और पदार्थों को समान दृष्टि से देखता हो। समदर्शी,समदृष्टि-(सं०पुं०) देखो समदर्शन।

सम द्विभुज-(सं०वि०) दो समान भुज वाला।

समधिगम-(सं०पुं०)भलीभांति प्राप्ति।

समधियाना-(हिं०पुं०) समधी का घर।

समधी-(हिं० पुं०) पुत्र या कन्या का ससुर।

समन-देखो शमन।

समनुज्ञा-(सं०स्त्री०) अनुज्ञा, अनुमति।

समन्त-(सं०पुं०) सीमा प्रान्त, किनारा (वि०) सब, कुल।

समन्तिक-(सं० अव्य०) सीमा के पास।

समन्वय-(सं० पुं०) संयोग, मिलाप, अवरोध,कार्य कारण का निर्वाह।

समन्वित-(सं० वि०) संयुक्त, मिला हुआ, बिना रुकावट का।

सम पाद-(सं०नपुं०)वह कविता जिसके चारो चरण समान हों।

सम भाग-(सं० पुं०) समान भाग।

समय-(सं० पुं०) काल, योग्य काल, अवसर, अवकाश, संवत्, अन्तिम काल, वाक्य, उपदेश, धर्म, आचार, निर्देश; समयज्ञ-(सं० वि०) समय के अनुसार चलने वाला।

समया-(सं०स्त्री०) निकट,समीप,पास।

समर-(सं०पुं०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

समरजित्-(सं०वि०)युद्धमें जीतने वाला

समरथ-(हिं०वि०) देखो समर्थ।

समरपोत-(सं०नपुं०) लड़ाई का जहाज

समरभू, समरभूमि-(सं०स्त्री०) लड़ाई का मैदान।

समरांगण-(सं०नपुं०) युद्ध स्थल, समर भूमि।

समर्घ-(सं०वि०) कम मूल्य का,सस्ता।

समर्चन-(सं०पुं०) अर्चन, पूजन।

समर्थ-(सं०वि०) बलवान्, लंबा चौड़ा, योग्य, अभिलषित,अनुकूल; समर्थक-(सं० पुं०) समर्थन करनेवाला; समर्थता-(सं० स्त्री०) शक्ति; समर्थन-(सं० नपुं०) किसी मत का पोषण, सामर्थ्य, शक्ति, संभावना, उत्साह, विवेचन; समर्थनीय-(सं०वि०) समर्थन करने योग्य; समर्थित-(सं० वि०) दृढ़ किया हुआ, स्थिर किया हुआ, सम्भावित।

समर्पक-(सं०वि०)समर्पण करनेवाला;

समर्पण-(सं०नपुं०) किसी को कोई वस्तु आदर पूर्वक भेंट करना, दान देना, स्थापित करना। समर्पित-(सं० वि०) समर्पण किया हुआ, स्थापित, जिसकी स्थापना की गई हो।

समर्याद-(सं०वि०) सीमायुक्त,सच्चरित्र।

समल-(सं०वि०) मलिन, मैला।

समवकार-(सं० पुं०) एक प्रकार का वीररस प्रधान नाटक जिसमें देवता और असुरोंके युद्धका वर्णन रहता है।

समवतार-(सं० पुं०) अवतरण, उतरने की क्रिया, उतरने का स्थान।

समवर्ती-(सं०पुं०) यम का एक नाम, (वि०) समान रूप से स्थित।

समवलम्ब-(सं०वि०) जिस चतुर्भुज की दोनों लम्ब रेखा समान हों।

समवस्था-(सं० स्त्री०) तुल्य अवस्था या दशा।

समवाय-(सं०पुं०) समूह,नित्य सम्बन्ध, न्याय के अनुसार अवयव और अवयवी का सम्बन्ध; समवायी-(सं०वि०) जिसमें समवाय अथवा नित्य संबंध हो

समवृत्त-(सं०वि०) समान, गोल,समान गोलाई का, (नपुं०) वह छन्द जिसके चारो चरण बराबर हों।

समवेक्षण-(सं०नपुं०)भली भांति देखना

समवेत-(सं० त्रि०) एक में एक मिला हुआ, संचित, (पुं०) सम्बन्ध।

समवेदना-(हिं०स्त्री०) सहानुभूति।

समशंकु-(सं० पुं०) वह समय जब सूर्य सिर से ठीक ऊपर आते हैं, दोपहर का समय।

समशीतोष्ण कटिबन्ध-(सं० पुं०) पृथ्वी के ये भाग जो उष्ण कटिबन्ध के उत्तर में कर्कट रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण मकर रेखासे दक्षिण वृत्त तक पड़ते हैं-इन स्थानों मे न तो बहुत सरदी पड़ती है और न बहुत गरमी।

समष्टि-(सं०स्त्री०) समस्त, मिलित,सब का समूह।

समसंख्यात-(सं०वि०) समान अंक वाला

समसुप्ति-(सं०पुं०)कल्पान्त, महाप्रलय।

समसौरभ-(सं० वि०) जिसमें समान गन्ध हो।

समस्त-(सं० वि०) समग्र, कुल, संयुक्त, एक में मिलाया हुआ, संक्षिप्त।

समस्थली-(सं० स्त्री०) गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश।

समस्या-(सं० स्त्री०) किसी श्लोक या छन्द आदि का वह अन्तिम पद जो श्लोक या छन्द बनानेके किये किसी को दिया जाता है जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छन्द बनाया जाता है, संघटन, मिश्रण, कठिन प्रसंग; समस्या पूर्ति-(सं०स्त्री०) किसी समस्याके आधार पर कोई छन्द या श्लोक बनाना।

समां-(हिं०पुं०) समय, काल।

समांश-(सं०पुं०) तुल्य अंश, बराबर टुकड़ा।

समांस-(सं०वि०) मांस युक्त, मांसल।

समा-(सं०स्त्री०) वर्ष, साल।

समाई-(हिं० स्त्री०) शक्ति।

समाकुल-(सं० वि०) संशयित, संदिग्ध, बहुत घबड़ाया हुआ।

समाक्रान्त-(सं०वि०)व्याप्त,फैला हुआ।

समाख्या-(सं०स्त्री०) कीर्ति, यश, संज्ञा, नाम। समाख्यान-(सं०नपुं०) भली-भाँति कहना।

समागत-(सं० वि०) उपस्थित, मिलित, आया हुआ।

समागम-(सं० पुं०) आगमन, आना, मिलना, भेंट; समागमन-(सं० नपुं०) आना, पहुँचना।

समाघात-(अ० पुं०) युद्ध, लड़ाई, बध, हत्या।

समाचार-(सं० पुं०) उत्तम व्यवहार, सवाद।

समाचार पत्र-(सं०पुं०)समाचारका पत्र।

समाच्छन्न-(सं० वि०) आच्छादित,ढपा हुआ।

समाज-(सं०पुं०) समूह, संघ, सभा, समुदाय, ब्राह्मणादि वर्णं की सभा।

समाजवाद-साम्यवाद।

समातृ-(सं० स्त्री०) वह जो माता के समान हो।

समादर-(सं० पुं०) सम्मान, आदर; समादरणीय-(सं०वि०)आदर सत्कार के योग्य।

समादृत-(हिं० वि०) सम्मानित।

समादेय-(सं०वि०) आदर सत्कार के करने योग्य।

समादेश-(सं० पुं०) आदेश, आज्ञा।

समाधान-(सं० नपुं०) चित्त को एकाग्र करके ब्रह्म की ओर लगाना,समाधि, किसी प्रश्न का सन्तोषकारक उत्तर, नियम, निष्पत्ति,निबटारा, अन्वेषण, अनुसन्धान, ध्यान, समर्थन, नाटक का एक अङ्ग।

समाधि-(सं०पुं०)समर्थन,नियम, ध्यान, अंगीकार, काव्य का वह गुण जहां दो घटनायें दैवयोग से एक ही समय में होती हैं और एक क्रिया के साथ दो कर्ताका अन्वय होकर इस घटना द्वारा प्रकाशित होता है,वह अलंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से किसी कार्य का सहज में होना वर्णन किया जाता है,योग,ध्यान, एकाग्रता, मौनभाव, निद्रा, कारण, सामग्री, प्रतिज्ञा, योग का चरम फल, पहले एकाग्र चित्त से धारणा, इसके बाद ध्यान तदुपरान्त समाधि होती है-- साधक सब प्रकार के क्लेशों से निर्मुक्त होकर एक विशेष प्रकार के आनन्द में मग्न हो जाता है, मृत शव देह या अस्थियों को मिट्टी में गाड़ना।

समाधिक्षेत्र-(सं०नपुं०) कब्रिस्तान।

समाधित-(सं० वि०) समाधि युक्त, जिसके साथ मित्रता की गई हो; समाधित्व-(सं० नपुं०) समाधि का भाव या धर्म; समाधिस्थ-(सं० वि०) समाधि लगाये हुए।

समाधेय-(सं० वि०) समाधान करने योग्य।

समान–(सं० वि०) सम, तुल्य, बराबर, गर्व सहित, शरीरस्थ वायु विशेष, एक स्थान से उच्चारण होने वाले वर्ण; समानकरण–(सं० क्रि०) दो वस्तुओं को समान आकार में लाना; समानतः–(सं०अव्य०) समान भावमें। समानता–(सं० स्त्री०) समान का भाव या धर्म, तुल्यत्व; समान रूप–(सं० वि०) समान आकार वाला; समान वय–(सं० वि०) बराबर के वय का; समानबल–(सं०वि०) तुल्यशक्ति का; समान शय्य–(सं०वि०) एक ही चारपाई पर सोनेवाला; समानशील–(सं० वि०) तुल्य स्वभाव वाला।

समाना–(हिं०क्रि०) भरना, अँटना।

समानक्षर–(सं० नपु०) स्वर वर्ण।

समानाधिकरण–(सं०नपुं०) व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करनेके लिये आता है।

समानार्थ–(सं०वि०) तुल्य अर्थ वाला।

समानिका–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं।

समानीत–(सं० वि०) आदर या यत्न पूर्वक लाया हुआ।

समानुपात–(सं० पुं०) दो अथवा अनेक अनुपात का समानत्व सम्बन्ध।

समानोदक–(सं०पुं०) जिसकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढी तकके पूर्वज एक हों।

समानोपमा–(सं०स्त्री०) उपमा अलंकार का एक भेद।

समान्तक–(सं० पुं०) दो सरल रेखा जो बहुत दूर तक जाकर भी एक दूसरे से न मिलें।

समापक–(सं०वि०)समाप्त करने वाला।

समापत्ति–(सं० स्त्री०) एक ही समय में एक ही स्थान पर उपस्थित होना।

समापन–(सं०पुं०) परिच्छेद, समाप्ति, वध, समाधान, (वि०) पाया हुआ।

समापनीय–(सं०वि०) वध करने योग्य।

समापन्न–(सं०वि०)समाप्त किया हुआ, कठिन।

समापिका–(सं०स्त्री०) व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्यका समाप्त होना सूचित होता है।

समापित–(सं०वि०)समाप्त किया हुआ।

समाप्त–(सं०वि०)जिसका अन्त हो गया हो, जो खतम हो गया हो; समाप्ति–(सं०स्त्री०) अवसान, अन्त, प्राप्त होने का भाव।

समाभाषण–(सं०नपुं०) अच्छी तरह से भाषण।

समाम्नाय–(सं०पुं०) समष्टि, समूह, शास्त्र।

समायोग–(सं० पुं०) संयोग, अनेक मनुष्यों का एकत्रित होना, प्रयोजन।

समारम्भ–(सं० पुं०) आरम्भ।

समारम्भण–(सं०नपुं०) आलिंगन।

समाराधन–(हिं०नपुं०) आराधना, सेवा

समारोह–(सं०पुं०) धमधाम, तड़कभड़क, आडम्बर, आरोहण, चढ़ना, सम्मत होना

समार्थ–(सं० वि०) समान अर्थ युक्त, पर्याय शब्द।

समालम्भ–(सं० पुं०) शरीर पर केशर आदि का लेप करना, मारण, वध।

समालाप–(सं० पुं०) अच्छी तरह से बातचीत करना।

समालोच–(सं० पुं०) अच्छी प्रकार से आलोचन।

समालोचक–(सं०वि०) किसी वस्तु के गुण दोष को देखकर बतलाने वाला, समालोचना करनेवाला; समालोचन–(सं०नपुं०) गुण दोष की अच्छी तरह से आलोचना; समालोचना–(सं०स्त्री०) अच्छी तरह से देखना भालना, गुण दोषों की विवेचना, आलोचना; समालोची–(सं० वि०) समालोचना करनेवाला।

समावर्त–(सं०पुं०)वापस आना, लौटना।

समावर्तन–(सं० नपुं०) वेदाध्ययन के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का कार्य, इस समय का स्नान और यज्ञ; समावर्तनीय–(सं०वि०) वह जो समावर्तन नामक संस्कार करने के योग्य हो गया।

समाविष्ट–(सं० वि०) प्रविष्ट, जिसका समावेश हुआ हो, जिसका मन एक ओर लगा हो।

समावृत–(सं० वि०) अच्छी तरह से ढपा या छाया हुआ।

समावृत्त–(सं०वि०)विद्याध्ययन के बाद समावर्तन संस्कार कर के घर लौटा हुआ।

समावेश–(सं०पुं०) एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अन्तर्गत होना, चित्त को एक ओर लगाना, एक साथ रखना।

समाश्रय–(सं०पुं०) अवलम्बन, रक्षा, सहाय। समाश्रित–(सं०वि०) जिसने कहीं पर अच्छी तरह से आश्रय ग्रहण किया हो।

समाश्लेष–(सं०पुं०) आलिंगन।

समाश्वास–(सं० पुं०) आश्वासन, धीरज। समाश्वासन–(सं० नपुं०) धीरज देने वाला। समास–(सं०पुं०) संग्रह, समाहार, संक्षेप, समर्थन; व्याकरण में दो या अधिक, पदों को मिलाकर एक पद बनाना, समास छ प्रकार के होते हैं यथा–द्वन्द्व, बहुब्रीहि, कर्मधारय, तत्पुरुष, द्विगु और अव्ययीभाव।

समासक्त–(सं०वि०)संयुक्त, मिलाहुआ।

समासन्न–(सं०वि०) निकटस्थ, पासका।

समासादित–(सं०वि०) प्राप्त, पाया हुआ, लाया हुआ, आक्रान्त, आक्रमण किया हुआ, आहृत, चुराया हुआ, उद्धृत, लिखा हुआ।

समासीन–(हिं०वि०) प्रतिष्ठित।

समवेश–(हिं० पुं०) संग्रह;

समासोक्त–(सं० वि०) संक्षेप रूप से कहा हुआ। समासोक्ति–(सं०स्त्री०) वह अर्थालंकार जिसमें समान लिंग समान विशेषण, समान कार्य आदि द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत ज्ञान होता है।

समाहत–(सं०वि०) आहत।

समाहरण–(सं०नपुं०) देखो समाहार।

समाहर्ता–(सं० पुं०) मिलाने वाला, संक्षेप करने वाला।

समाहार–(सं० पुं०) संग्रह मिलान, राशि, समूह, संक्षेप, समास का एक भेद। समाहार द्वन्द्व–(सं० पुं०) द्वन्द्व समास का वह भेद जिसमें उसके पदों के अर्थ के सिवाय कोई विशेष अर्थ भी सूचित यिता है जैसे दाल रोटी, हाथ पांव इत्यादि।

समाहित–(सं० वि०) स्वीकार किया हुआ स्थापित, निष्पन्न।

समाहृत–(सं० वि०) संग्रह किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ, संगृहीत।

समाह्वान–(हिं० पुं०) प्रकार ललकार।

समिता–(सं० स्त्री०) गेहूं का महीन चूर्ण, मैदा।

समिति–(सं०स्त्री०) सभा, समाज, युद्ध, संग साथ, सन्निपात नामक रोग।

समिद्ध–(सं०वि०) प्रदीप्त, जलताहुआ।

समिध–(सं०पुं०) अग्नि, आग।

समिधा–(हिं०स्त्री०) अग्नि जलाने का काठ, इन्धन, यज्ञमें जलानेकीलकड़ी।

समीकरण–(सं० नपुं०) तुल्य या बराबर करने की क्रिया, गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से किसी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

समीकृत–(सं०वि०)बराबर किया हुआ।

समीक्ष, समीक्षण–(सं० नपुं०) अच्छी तरह देखने की क्रिया, अन्वेषण, विवेचन।

समीक्षा–(सं० स्त्री०) सांख्य मे बतलाये हुए प्रकृति पुरुष, बुद्धि, अहंकार आदि तत्त्व, बुद्धि, मीमांसा शास्त्र, आत्मविद्या, यत्न, अच्छी तरह देखने की क्रिया। समीक्षित–(सं० वि०) आलोचित, अन्वेषित।

समीच–(सं० पुं०) समुद्र, सागर।

समीचक–(सं०पुं०) मैथुन।

समीचीन–(सं० वि०) यथार्थ, ठीक, उचित न्याय, संगत।

समीप–(सं० वि०) निकट, पास।

समीपग–(सं० वि०) जो समीप हो गया हो।

समीपता–(सं०स्त्री०) निकटता।

समीपनयन–(सं०नपुं०) पास में लाना।

समीपवर्ती–(सं० त्रि०) निकटगामी, पासका। समीपस्थ–(सं०वि०)पास का।

समीर–(सं० पुं०) वायु, हवा, शमी वृक्ष। समीरण–(सं० पुं०) वायु, हवा, पथिक, गन्ध तुलसी।

समीहन–(सं० पुं०) विष्णु।

समीहा–(सं०स्त्री०)उद्योग, प्रयत्न, अनुसन्धान। समीहित–(सं०क्रि०)चेष्टित, अभीष्ट।

समुंदर–(हिं०पुं०) समुद्र। समुंदर फूल–(हिं०पुं०) एक प्रकार की विधारा नामक औषधि। समुंदर सोख–(हिं० पुं०) एक प्रकार का क्षुप जिसके बीज औषधियों में प्रयोग होते हैं।

समुचित–(सं०वि०) उचित, योग्य, ठीक, उपयुक्त।

समुच्चय–(सं० पुं०)समाहार, समूह, राशि, दो अथवा दो से अधिक राशियोंका परस्पर मिलना; साहित्य में वह अलंकार जिसमें हर्ष विषाद आश्चर्य आदि अनेक भावों का एक साथ उदित होना वर्णन किया जाता है अथवा जहां पर एक ही कार्य के लिये अनेक कारणों का वर्णन रहता है।

समुच्चित–(सं० वि०) ढेर लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ।

समुच्छेद–(सं० पुं०) ध्वंस, विनाश।

समुज्ज्वल–(सं०वि०)बड़ा सफेद, चमकता हुआ।

समुझ–(हिं०स्त्री०) बुद्धि।

समुत्कण्ठ–(सं०वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ।

समुत्कीर्ण–(सं०वि०)विदीर्ण, टूटा हुआ

समुत्तर–(सं०नपुं०) ठीक, उत्तर।

समुत्थान–(सं० पुं०) आरंभ, उठने की क्रिया, उदय, उत्पत्ति, उठाना, रोग की शान्ति। समुत्थित–(सं० वि०) अच्छी तरह उठा हुआ।

समुत्पन्न–(सं० वि०) उद्गत, घटित, उत्पन्न।

समुत्पाटित–(सं०वि०) जड़ से उखाड़ा हुआ।

समुत्सर्ग–(सं० पुं०) उत्सर्ग, त्याग।

समुदय–(सं०पुं०) उठने या उदित होने की क्रिया, युद्ध, लड़ाई।

समुदाय–(सं०पुं०) समूह, ढेर, झुंड, युद्ध, उन्नति।

समुदाव–(हिं०पुं०) समुदाय।

समुदित–(सं०वि०)उठा हुआ, उन्नत, उत्पन्न।

समुदीरित–(सं०वि०) उच्चारण किया हुआ।

समुद्धत–(हिं०वि०) चंचल।

समुद्भाव–(हिं०पुं०) उत्पत्ति।

समुद्भास–(हिं०वि०) प्रकाश, वायु।

समुद्यत–(हिं०वि०) प्रस्तुत।

समुद्रक–(सं०पुं०) एक छन्द का नाम।

समुद्गत–(सं०वि०) उत्पन्न, उदित।

समुद्गीत–(सं०वि०)तीव्र स्वर से गाया हुआ।

समुद्धरण–(सं०नपुं०) उन्मूलन, उखाड़ने की क्रिया, उद्धार।

समुद्र–(सं०पुं०) जल का बड़ा समूह, अम्बुधि, सागर, जहां का जल चन्द्रोदय से बढ़ता है, किसी विषय या गुण आदि का बहुत बड़ा आगार।

समुद्र कल्लोल–(सं० पुं०) सागर की गरजें। समुद्रकान्ता–(सं०स्त्री०)नदी। समुद्रगुप्त–(सं०पुं०) गुप्तराज वंशीय एक बड़े पराक्रमी राजा का नाम। समुद्रज–(सं०त्रि०)मुक्ता, मोती, (वि०) समुद्र में उत्पन्न। समुद्रतता–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं। समुद्रतीर–(सं०नपुं०)समुद्र का किनारा। समुद्र दयिता–(सं०स्त्री०) नदी। समुद्र नवनीत–(सं०नपुं०) अमृत, चन्द्रमा। समुद्रनेमि–(सं० स्त्री०) पृथ्वी। समुद्रपत्नी–(सं०स्त्री०) नदी। समुद्र पर्यन्त–(सं० त्रि०) समुद्र तक। समुद्रपात–(सं०पुं०) घावपत्ते की लता। समुद्रफल–(सं०नपुं०)एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसके फल औषधियों में प्रयोग होते हैं। समुद्रफेन–(सं० पुं०) समुद्र का ठोस झाग। समुद्रमंडकी–(सं० स्त्री०) शुक्ति, सीप। समुद्रमथन–(सं०पुं०)समुद्रको मथना। समुद्रमालिनी–(सं० स्त्री०) पृथ्वी। समुद्र यात्रा–(सं० स्त्री०) समुद्र द्वारा दूर देश की यात्रा। समुद्रयान–(सं० नपुं०) जहाज। समुद्रयायी–(सं०वि०) समुद्र यात्रा करने वाला। समुद्ररसना–(सं०स्त्री०)पृथ्वी। समुद्रलवण–(सं०नपुं०) समुद्र के जल से निकाला हुआ नमक। समुद्रवह्नि–(सं० पुं०) बड़वानल। समुद्रवास–(सं० त्रि०) अग्नि, आग। समुद्रवासी–(सं० त्रि०) समुद्र के किनारे पर बसने वाला। समुद्रसार–(सं०पुं०)सीप, मोती। समुद्रसुभगा–(सं० स्त्री०) गंगा नदी। समुद्रान्त–(सं० नपुं०) समुद्र का किनारा। समुद्राम्बरा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी। समुद्रायणा–(सं० स्त्री०) नदी। समुद्रावरणा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी। समुद्वेग–(सं० पुं०) बड़ी उत्कण्ठा।

समुन्नत–(सं० वि०) अति उन्नत, बहुत ऊँचा। समुन्नति–(सं० स्त्री०) महत्व, बड़ाई, उच्चता, ऊँचाई।

समुन्नद्ध–(सं०वि०) गर्वित, अभिमानी, ऊपर को उठा हुआ।

समुन्नयन–(सं० नपुं०) ऊपर को उठाने या लेजाने की क्रिया, लाभ, प्राप्ति।

समुन्नाद–(सं०पुं०) समूह का शब्द।

समुन्नाह–(सं०पुं०) ऊँचाई।

समुन्नेय–(सं० वि०) अधिकार में करने योग्य।

समुन्मुख–(सं०क्रि०वि०) सामने।

समुन्मिश्र–(सं०वि०) मिलाया हुआ।

समुन्मूलन–(सं०नपुं०)पूर्ण रूप से नाश।

समुपचित–(सं०वि०)बढ़ाया हुआ,लिथा हुआ।

समुपवेश–(सं० पुं०) आदर, सत्कार, बैठने की क्रिया।

समुपेत–(सं०वि०) समागत, आया हुआ

समुपस्तम्भ–(सं०पुं०) संक्षेप करने की क्रिया।

समुपस्था–(सं०स्त्री०) समीपता।

समुपार्जन–(सं० नपुं०) अच्छी तरह से उपार्जन।

समुपालम्भ–(सं०पुं०)क्रोध युक्त वाक्य तिरस्कार।

समुपेक्षक–(सं०वि०) उपेक्षा करनेवाला।

समुपेत–(सं०वि०) आया हुआ।

समुपेप्सु–(सं० वि०) अच्छी तरह पाने की इच्छा करने वाला।

समुल्लसित–(सं०वि०) आनन्दित, समुल्लास–(सं० पुं०) आनन्द, प्रसन्नता, ग्रन्थ का प्रकरण या परिच्छेद।

समुल्लेखन–(सं०नपुं०) खनन, खोदना, छिलना।

समुहा–(हिं०वि०) सन्मुखका, सामनेका

समुहाना–(हिं०क्रि०)सामने आजाना।

समूढ–(सं०वि०) संचित, ढेर किया हुआ, संशोधित, मूढ़, संगत, ठीक, दमन किया हुआ।

समूल–(सं०पुं०)मल युक्त, जड़ वाला, जिसका कोई हेतु हो (क्रि० वि०) मूल सहित। समूलक–(सं०वि०) समूल, मल सहित।

समूह–(सं०पुं०) समुदाय, झुण्ड, राशि, ढेर।

सम्मह गन्ध–(सं०पुं०)मोतिया नामक पुष्प।

समृद्ध–(सं०वि०)जिसके पास अधिक सम्पत्ति हो, धनवान्।

समृद्धि–(सं०स्त्री०) ऐश्वर्य, उन्नति, सफलता प्रभाव, सम्पत्ति।

समेटना–(हिं०क्रि०) बिखरी हुई वस्तुको इकट्ठा करना, अपने ऊपर ले लेना।

समेत–(सं० वि०) संयुक्त, मिला हुआ (अव्य०) सहित, साथ; समो–देखो समय; समोधित–(सं०वि०) वर्धित, बढ़ा हुआ।

समोह–(सं०पुं०) संग्राम, युद्ध (वि०) मोह युक्त।

समौरिया–(हिं० नि०) समवस्यक, बराबर के वय का।

सम्पत्ति–(सं०स्त्री०) ऐश्वर्य, धन,शोभा, गौरव, अधिकता, लाभ, प्राप्ति, सफलता।

सम्पद्–(सं० स्त्री०) सम्पत्ति, ऐश्वर्य, विभव, सौभाग्य, गौरव, अधिकता।

सम्पदा–(हिं०स्त्री०) धन, ऐश्वर्य।

सम्पन्न–(सं० वि०) साधित, पूरा किया हुआ, सम्पत्ति युक्त; सम्पन्नता–(हिं०स्त्री०) सम्पूर्णता।

सम्पर्क–(सं० पुं०) मिश्रण, मिलावट, संयोग, मिलाप, संसर्ग, लगाव,स्पर्श, योग, जोड़।

सम्पाक–(सं०पुं०) अच्छी तरह पकना।

सम्पाचन–(सं०नपुं०) देखो सम्पाक।

सम्पाट–(सं० पुं०) किसी त्रिभुज की बढ़ाई हुई भुजा पर गिरने वाला लंब

सम्पाठ्य–(सं० वि०) अच्छी तरह पढ़ने योग्य।

सम्पात–(सं०पुं०) एक साथ गिरना, प्रवेश, संगम, मिलने का स्थान, घटित होना।

सम्पाति–(सं०पुं०) जटायु के बड़े भाई का नाम।

सम्पादक–(सं० पुं०) सम्पन्न करने या किसी काम को पूरा करने वाला, तैयार करने वाला, किसी समाचार पत्र या पुस्तक को क्रम से लिखने वाला। सम्पादकीय–(सं०वि०) संपादक संबंधी।

सम्पादन–(सं० नपुं०) प्रस्तुत करना, बनाना, ठीक करना, पुस्तक आदि को प्रकाशित करना। सम्पादनीय–(सं० वि०) सम्पादन करने योग्य।

सम्पादित–(सं०वि०) प्रस्तुत, क्रम पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ।

सम्पाद्य–(सं० क्रि०) सम्पादन करने योग्य, ज्यामिति शास्त्र की उद्देश साधक प्रतिज्ञा।

सम्पारण–(सं०वि०) पूरा करने वाला।

सम्पावन–(सं०वि०) अधिक पवित्र।

सम्पित–(हिं० पु०) एक प्रकार का पहाड़ी बांस।

सम्पिधान–(सं० नपुं०) आच्छादन।

सम्मीडन–(सं०नपुं०) खूब पीड़ा देना, खूब दबाना या निचोड़ना।

सम्पुट–(सं०पुं०) पात्र के आकार की वह वस्तु जिसमें कुछ भरने के लिये स्थान हो, ठीकरा, दोना, डिब्बा, अंजली।

सम्पुटी–(सं०स्त्री०) छोटी कटोरी।

सम्पूजन–(सं०नपुं०) भलीभांति पूजन। सम्पूजित–(सं० वि०) अधिक सम्मान किया हुआ।

सम्पूर्ण–(सं०वि०) खूब भरा हुआ, पूर्ण रूप मे युक्त, (पुं०) वह राग जिसमें सातो स्वर लगते हों। सम्पूर्ण कालीन–(सं०वि०) पूरे समय तक रहने वाला। सम्पूर्णता–(सं० स्त्री०) समाप्ति।

सम्प्रकाशक–(सं० वि०) अच्छी तरह प्रकाशित करने वाला।

सम्प्रक्षालन–(सं०नपुं०)पूरी तरह से धोना

सम्पृक्त–(सं०वि०) मिश्रित, मिला हुआ

सम्प्रति–(सं०अव्य०) इस समय, अभी, ठीक तरह से।

सम्प्रतिपत्ति–(सं० स्त्री०) अभियुक्त का न्यायालय में सच्ची बात स्वीकार करना, पहुंच, प्राप्ति।

सम्प्रतिपन्न–(सं०वि०) स्वीकृत, मंजूर।

सम्प्रतिपादन–(सं०नपुं०) पूरा करना।

सम्प्रतिरोधक–(सं०वि०) प्रतिबन्धक।

सम्प्रतीक्ष्य–(सं० त्रि०) भली भाँति देखने योग्य।

सम्प्रतीति–(सं०स्त्री०) प्रसिद्धि।

सम्प्रदान–(सं०नपुं०) अच्छी तरह दान देने की क्रिया या भाव, जो दान किया जाता है,दीक्षा, भेंट, व्याकरण में चतुर्थी विभक्ति जिसका हिन्दी में चिह्न "को", "के लिये" होता है।

सम्प्रदाय–(सं० पुं०) गुरु परंपरागत उपदेश, गुरुमन्त्र, कोई विशेष धर्म संबन्धी मत, मार्ग, पंथ, रीति।

सम्प्रदायी–(हिं० वि०) मतावलम्बी, दाता, सिद्ध करने वाला।

सम्प्रधारण–(सं०नपुं०) उचित अनुचित का विचार।

सम्प्रमाद–(सं०पुं०) मोह, भ्रान्ति।

सम्प्रमुक्ति–(सं०स्त्री०) मोक्ष,छुटकारा।

सम्प्रयास–(सं०पुं०) अति प्रयास,

सम्प्रयुक्त–(सं०वि०) एक साथ किया हुआ, जोड़ा हुआ, सबद्ध,मिला हुआ

सम्प्रयोग–(सं०पुं०) मेल, मिलाप,मैथुन, वशीकरण आदि कार्य। सम्प्रयोगी–(सं०पुं०) कामुक, लम्पट (वि०) प्रयोग करने वाला।

सम्प्रवृत्त–(सं०वि०) आरंभ किया हुआ,

सम्प्रसाद–(सं० पुं०) योगशास्त्र के अनुसार चित्त का निर्मलता साधक यत्न।

सम्प्रस्थित–(सं०वि०) जो प्रस्थान कर चुका हो।

सम्प्रहर्ष–(सं० पुं०) बड़ी प्रसन्नता।

सम्प्रहार–(सं०पुं०) युद्ध,लड़ाई, गमन।

सम्प्राप्त–(सं०वि०) प्राप्त, पाया हुआ, उपस्थित, पहुंचा हुआ, कहा हुआ।

सम्प्रिय–(सं०वि०) अधिक प्यारा।

सम्प्रीति–(सं०स्त्री०) सन्तोष, हर्ष।

सम्प्रेक्षण–(सं०पुं०) अच्छी तरह देखना।

सम्प्रेषण–(सं०पुं०) अच्छी तरह भेजना

सम्प्रोक्षण–(सं० नपुं०) अच्छी तरह पानी छिड़कना।

सम्प्लुत–(सं०वि०) जल में डूबा हुआ।

सम्बद्ध–(सं०वि०) बंधा हुआ,जुटा हुआ

सम्बन्ध–(सं० पुं०) समृद्धि, उन्नति, गहरी मित्रता, ससर्ग,सम्पर्क,लगाव, एक साथ मिलना या जुटना, नाता, संयोग, मेल, विवाह, योग्यता, उपयुक्ता, व्याकरण में वह कारक जिसके चिह्न "का, के, की" हैं।

सम्बन्धातिशयोक्ति–(सं०स्त्री०) अतिशयोक्ति अलंकार का वह भेद जिसमें असंबंध में संबंध दिखलाया जाता है

सम्बन्धी–(सं० पुं०) नातेदार, जिसके पुत्र या पुत्री का विवाह हुआ हो, समधी।

सम्बल–(सं०नपुं०) सेमल का वृक्ष, रास्ते का भोजन, संखिया, सोमलक्षार।

सम्बाध–(सं०पुं०) संकट, बाधा, अड़चन, (वि०) संकुल, पूर्ण, भीड़ से भरा हुआ। सम्बाधक–(सं० वि०) बाधा पहुंचाने वाला।

सम्बुद्ध–(सं०वि०) ज्ञान प्राप्त, पूर्ण रूप से जाना हुआ।

सम्बोध–(सं० पुं०) ज्ञान, पूरा बोध, धैर्य, ढाड़स, सान्त्वना।

सम्बोधन–(सं० पुं०) पुकारना, नींद से उठाना,जगाना,जताना, समझाना,

व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने के लिये प्रयोग किया जाता है।
सम्भक्ष-(सं०पुं०) अच्छी तरह भोजन करना।
सम्भग्न-(सं०वि०) पूरी तरह से टूटा हुआ।
सम्भय-(सं०पुं०) बहुत डर।
सम्भरण-(सं०पुं०) पालन पोषण, विधान, तैयारी।
सम्भल-(सं०पुं०) चेटक, दलाल।
सम्भव-(सं० पुं०) हेतु, कारण, जन्म, उत्पत्ति, परिमाण का एक होना, घटित होना, प्रसंग, समाई,समागम, मेल, उपयुक्तता, युक्ति, संभावना, संकेत।
सम्भावतः-(सं०अव्य०) हो सकता है।
सम्भवनीय-(सं०वि०) जो हो सकता हो। सम्भावन-(सं० नपुं०) पूजा, सत्कार, आदर, चिन्ता, योग्यता, कल्पना, सम्पादन, मान प्रतिष्ठा,
सम्भावना-(सं०स्त्री०) देखो सम्भावन।
सम्भावनीय-(सं० वि०) कल्पना के योग्य, सत्कार करने के योग्य।
सम्भावित-(सं०वि०) विख्यात,प्रसिद्ध, मन में लाया या उपस्थित किया हुआ।
सम्भाषण-(सं० नपुं०) कथोपकथन, बातचीत। सम्भाषणीय-(सं०वि०) संभाषण करने योग्य।
सम्भु-(हिं०पुं०) देखो शम्भु।
सम्भूत-(सं० वि०) उत्पन्न, उपयक्त।
सम्भूति-(सं०स्त्री०) क्षमता, शक्ति,
सम्भृत-(सं०वि०)हृष्ट पुष्ट,पाया हुआ, दिया हुआ, भरा हुआ,बनाया हुआ, उत्पन्न किया हुआ, युक्त, सहित।
सम्भृतश्री-(सं०त्रि०) मेघ, बादल।
सम्भृतांग-(सं०वि०) हृष्ट पुष्ट,
सम्भृति-(सं०स्त्री०) अच्छी तरह पालन पोषण, सामग्री, अधिकता।
सम्भेद-(सं० पुं०) वियोग,
सम्भोग-(सं० पुं०) किसी वस्तु का भली भाँति उपयोग, सुरत, मैथुन, रति क्रीड़ा, हर्ष, वह शृंगार जिसमें विलासी और विलासिनी परस्पर दर्शन और स्पर्शादि द्वारा अनुरक्त होकर एक दूसरे को प्रेम करते हैं।
सम्भोगी-(सं०वि०) संयोग करने वाला
सम्भोजन-(सं० नपुं०) एक साथ बैठ कर भोजन।
सम्भ्रम-(सं० पुं०) डर से उत्पन्न व्याकुलता, आवेग, भ्रान्ति, भूल, चक्कर, आतुरता, उतावलापन, उत्कण्ठा।
सम्भ्रान्त-(सं०वि०) उद्विग्न, घबड़ाया हुआ, घुमाया या चक्कर दिया हुआ
सम्भ्रान्ति-(सं०स्त्री०) उद्वेग, घबड़ाहट, चकपकाहट, हड़बड़ी।
सम्मत-(सं० वि०) अभिमत, जिसकी राय मिली हो (पुं०) अनुमति, आज्ञा सम्मति।
सम्मति-(सं० स्त्री०) इच्छा, एकमत्य, प्रतिष्ठा, अभिप्राय, मत, अनुमति, आज्ञा, आदेश।
सम्मद-(सं०पुं०) आमोद, हर्ष।
सम्मन-(हिं०पुं०) अदालत, किसी को न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा।
सम्मन्तव्य-(सं० वि०) अच्छी तरह से विचारने योग्य।
सम्मर्द-(सं०पुं०) युद्ध, लड़ाई,आपस का विवाद।
सम्मर्दन-(सं०पुं०) वासुदेव के एक पुत्र का नाम, अच्छी तरह मलने का कार्य।
सम्महा-(हिं०पुं०) अग्नि, आग।
सम्मा-(सं०वि०) तुल्य, समान।
सम्माद-(सं०पुं०) उन्माद, पागलपन।
सम्मान-(सं०पुं०) प्रतिष्ठा,मान, (नपुं०) परिमाण, ठीक मान वाला। सम्मानना-(हिं०क्रि०) आदर सत्कार करना
सम्माननीय-(सं०वि०)आदर के योग्य।
सम्मानित-(सं० वि०) आदर किया हुआ। सम्मान्य-(सं० वि०) आदर करने योग्य।
सम्मार्ग-(सं० पुं०) श्रेष्ठ पद, मोक्ष।
सम्मार्जन-(सं० नपुं०) संशोधन,
सम्मार्जनी-(सं०स्त्री०) झाड़ू, बुहारी
सम्मिलन-(सं०नपुं०) मिलन, मिलाप, मेल।
सम्मिलित-(सं०वि०) युक्त, मिला हुआ
सम्मिश्रण-(सं०पुं०) मिलने की क्रिया, मिलावट।
सम्मुख-(सं० वि०) अभिमुख, आगे, सामने।
सम्मूढ-(सं०वि०) मुग्ध, निर्बोध,अज्ञान,
सम्मृष्ट-(सं०वि०) अच्छी तरह स्वच्छ किया हुआ।
सम्मेघ-(सं०पुं०) मेघ युक्त आकाश।
सम्मेलन-(सं० नपुं०) मनुष्यों का एकत्रित समाज, जमावड़ा, जमघट, संगम, मेल।
सम्मोह-(सं०पुं०) भ्रम, सन्देह, मूर्छा, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक गुरु वर्ण होता है।
सम्मोहक-(सं०त्रि०) लुभाने वाला।
सम्मोहन-(सं०नपुं०) मोहित करने की क्रिया, मोह कारक, शत्रु को मोहित करने वाला एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, कामदेव के पांच बाणों में से एक बाण का नाम।
सम्यक्-(सं० पुं०) समुदाय, समूह, (वि०) पूरा।
सब-(हिं० वि०) सब प्रकार से, भली भाँति।
सम्यक्ज्ञान-(सं० नपुं०) पूरा ज्ञान।
सम्यक्योग-(सं० पुं०) संपूर्ण योग, समाधि।
सम्राज्ञी-(सं० स्त्री०) सम्राट् की पत्नी, राजमहिषी।
सम्राट्-(सं०पुं०) राजाधिराज।
सयत्न-(सं० वि०) यत्न सहित।
सयन-(सं० नपुं०) बन्धन (पुं०) विश्वामित्र के पुत्र का नाम (हिं०पुं०) देखो शयन।
सयानपन-(हिं०पुं०) चतुराई, दक्षता।
सयाना-(हिं० वि०) अधिक वय का, बुद्धिमान्, धूर्त।
सर-(सं०नपुं०) सरोवर, तालाव, जल, वाण, गति, (पुं०) पानी का झरना।
सरई-(हिं०स्त्री०) सरहरी।
सरकंडा-(हिं०पुं०) सरपत की जाति का एक पौधा जिसमें गाँठ वाली छड़ होती हैं।
सरक-(सं० नपुं०) सरोवर, तालाव, आकाश, (नपुं०) मद्यपान, (हिं० पुं०) सरकने की क्रिया, यात्रियों का दल (वि०) गति युक्त; सरकना-(हिं०क्रि०) किसी ओर हटना, टलना, काम चलना,खिसकना,निर्वाह होना किसी ओर बढ़ना।
सरक्त-(सं०वि०) रक्त से भीगा।
सरग-(हिं०पुं०) देखो स्वर्ग।
सरगना-(हिं० क्रि०) डींग हांकना अभिमाना दिखाना।
सरगम-(हिं०पुं०) स्वर ग्राम, संगीत के सातों स्वरोंके उतार चढ़ाव का क्रम।
सरधर-(हिं०पुं०) तरकश, तूणीर।
सरघा-(सं०स्त्री०) मधुमक्खी।
सरंग-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया।
सरज-(सं०नपुं०) नवनीत,मक्खन (वि०) मलिन, मैला।
सरजना-(हिं०क्रि०)सृष्टि करना,बनाना
सरजीवन-(हिं०वि०) जिलाने वाला, उपजाऊ, हरा भरा।
सरट, सरटक-(सं० पुं०) कृकलास, गिरगिट।
सरण-(सं०नपुं०) गमन, आगे बढ़ना (वि०) जाने वाला।
सरणि,सरणी-(सं० स्त्री०) पंक्ति, पगडंडी, लकीर।
सरण्ड-(सं० पुं०) धूर्त, सरट, छिपकली, पक्षी।
सरताज-(हिं०पुं०) श्रेष्ठ व्यक्ति।
सरतारा-(हिं०वि०) निश्चित।
सरता बरता-(हिं० पुं०) बांट, बंटाई।
सरदल-(हिं०पुं०) द्वार की साह।
सरन-(हिं० स्त्री०) देखो शरण।
सरनदीप-(हिं०पुं०) देखो सिंहलद्वीप।
सरना-(हिं०क्रि०) काम चलाना, सम्पादित होना, हिलना डोलना, घिसकना, पूरा पड़ना, किया जाना।
सरनी-(हिं० स्त्री०) मार्ग।
सरन्ध्र-(सं०वि०) छिद्र सहित, छेददार
सरपट-(हिं० वि०) घोड़े की बहुत वेग से चलने की चाल या दौड़।
सरपत-(हिं० पुं०) कुश की तरह की एक घास जिसमें बहुत लंबी पंत्तियां होती हैं, छप्पर आदि बनाने के काम में यह घास आती है।
सरपि-देखो सर्पिषा, घी।
सरफोका-(हिं०पुं०) देखो सरकंडा।
सरबंधी-(हिं० पुं०) धनुर्धारी, देखो सम्बन्धी।
सरब-(हिं० वि०) देखो सर्व।
सरबबियापी-देखो सर्वव्यापी।
सरबदा-देखो सर्वदा।
सरबत्तर-देखो सर्वत्र।
सरबस-(हिं०पुं०) देखो सर्वस्व।
सरम-(हिं० स्त्री०) लज्जा।
सरमा-(सं० स्त्री०) विभीषण की स्त्री का नाम, देवताओं की एक कुतिया;
सरमात्मज-(सं० पुं०) तरणीसेन, कुत्ते का बच्चा पिल्ला।
सरया-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा धान जिसका चावल लाल होता है।
सरयू-(हिं०स्त्री०) उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी का नाम।
सरर-(हिं०पुं०) बांस या सरकंडे की पतली छड़ी।
सरराना-(हिं०क्रि०) हवा बहने या हवा में किसी वस्तुके वेगसे चलनेका शब्द।
सरल-(सं०पुं०) चीड़का वृक्ष, देवदार, अग्नि, पक्षी, गंधाबिरोजा, (वि०) जो टेढा न हो, सीधा, भोला भाला, सहज, कपट रहित।
सरलकद्रु-(सं०पुं०) चिरौंजी का पेड़;
सरलकाष्ठ-(सं०पुं०) चीड़की लकड़ी;
सरलता-(सं०स्त्री०) सिधाई, सीधापन, सुगमता, सादापन, सचाई; सरलद्रव्य-(सं०पुं०) ताड़पीन का तेल;
सरलनिर्यास-(सं०पुं०) गंधाबिरोजा;
सरलरस-(सं०पुं०) तारपीनका तेल।
सरला-(सं० स्त्री०) मोतिया, सफ़ेद निसोथ, काली तुलसी, चीड़का पेड़;
सरलित-(सं०वि०) सीधा किया हुआ;
सरवन-(सं०पुं०) अन्धक मुनि के पुत्र जो अपने पिता को बहँगी में बैठा कर ढोया करते थे।
सरवर-(हिं०पुं०) देखो सरोवर, तालाब
सरवरि-(हिं० स्त्री०) बराबरी, सादृश्य, तुलना।
सरवाक-(हिं०पुं०) सम्पुट,दीया,कसोरा
सरिवान-(हिं० पुं०) तंबू।
सरस-(सं० वि०) रस युक्त, रसीला, स्वादिष्ट, मधुर, मीठा, हरा, गीला, नया, मनोहर, सुन्दर, भावपूर्ण, (नपुं०) सरोवर, तालाब, सेहृदय, रसिक, छप्पय का एक भेद।
सरसई-(हिं०स्त्री०) सरस्वती नदी, सरस्वती देवी, हरापन, सरसता, फलों के महीन अंकुर या दाने।
सरसठ-(हिं० पुं०) देखो सड़सठ।
सरसता-(सं०स्त्री०) रसयुक्तता।
सरसना-(हिं० क्रि०) बढ़ना, पनपना, शोभित होना, रस पूर्ण होना, हरा होना, उमंग में भरना।

सलखपात–(हिं०पुं०) कच्छप, कछुआ।
सलज–(हिं०वि०) समूचा, पूरा।
सलज–(हिं०पुं०) पहाड़ी बरफ़ का पानी।
सलज्ज–(सं०वि०) जिसको लज्जा हो।
सलना–(हिं०क्रि०) छिदना, साला जाना, किसी छेद में चूल आदि का पहराया जाना, (पुं०) लकड़ी छेदने का बरमा।
सलव–(सं०वि०) नष्ट भ्रष्ट।
सलवट–(हिं०स्त्री०) देखो सिलवट।
सलसलाना–(हिं०क्रि०) सरसराना, खुजलाना, गुदगुदी होना, तर होना। सलसलाहट–(हिं० स्त्री०) खुजली, गुदगुदी।
सलज–(हिं०स्त्री०) साले की स्त्री, सरहज।
सलाई–(हिं०स्त्री०) धातु की बनी हुई कोई पतली छोटी छड़ी, दियासलाई, सलाने की क्रिया या भाव, सलाने का शुल्क चीड़ की लकड़ी; सलाई लगाना–आंख में सूरमा लगाना।
सलाजीत–(हिं०स्त्री०) देखो शिलाजीत।
सलाद–(हिं०पुं०) अं०–सीलेड् का अपभ्रंश गाजर मूली आदि का सिरके में बना हुआ अचार।
सलामकराई–(हिं०स्त्री०) वह धन जो कन्या पक्षवाले वरपक्ष को विवाह में मिलनी के समय देते हैं।
सलार–(हिं० पुं०) एक प्रकार की चिड़िया।
सलिल–(सं०नपुं०) जल, पानी। सलिलकुन्तल–(सं० पु०) सेवार। सलिलक्रिया–(सं०स्त्री०) जलांजलि, तर्पण। सलिलचर–(सं०त्रि०) जलचर। सलिलज–(सं०स्त्री०) पद्म, कमल। सलिलद–(सं०त्रि०) मेघ, बादल। सलिलनिधि–(सं०पुं०) समुद्र, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में इक्कीस अक्षर होते हैं, इसका दूसरा नाम सरसी है। सलिलपति–(सं० पु०) वरुण, समुद्र, सागर। सलिलप्रिय–(सं०पुं०) शूकर, सुअर। सलिलमय–(सं० वि०) जलपूर्ण। सलिलमुच्–(सं० पुं०) मेघ, बादल; सलिलयोनि–(सं०पु०) ब्रह्मा। सलिलराज–(सं०पुं०) सागर, समुद्र। सलिलाकर–(सं० पुं०) समुद्र। सलिलाधिप–(सं०पुं०) वरुण; सलिलार्णव–(सं०पुं०) समुद्र; सलिलाशय–(सं० पुं०) तालाब; सलिलेन्द्र–(सं०पुं०) वरुण; सलिलौदन–(सं०पुं०) पकाया हुआ अन्न।
सलीता–(हिं०पुं०) गज्जी की तरह का मोटा कपड़ा।
सलीपर–(हिं० पुं०) अं० स्लीपर् का अपभ्रंश; बिना एंडी की जूती, रेल की पटरियों के नीचे बिछाने की लकड़ी का पटरा, पहिये पर चढ़ाने की हाल।
सलील–(सं०वि०) लीला युक्त।
सलूक–(हिं० पुं०) एक प्रकार की जनानी साड़ी।
सलूना–(हिं०पुं०) पकी हुई तरकारी या भाजी।
सलोतर, सलोतरी–(हिं०पुं०) घोड़ों की चिकित्सा करने वाला, शालिहोत्र।
सलोना–(हिं०वि०) नमक मिला हुआ, नमकीन, रसीला, सुन्दर; सलोनापन–(हिं०पुं०) सलोना होने का भाव।
सलोनो–(हिं० पुं०) हिन्दुओं का वह त्योहार जो श्रावण मास की पूर्णिमा को पड़ता है, रक्षाबन्धन।
सल्लकी–(सं०स्त्री०) सलाई का वृक्ष।
सल्लक्ष्य–(सं०नपुं०) उत्तम लक्षण।
सल्लभ–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा, गज्जी, गाढा।
सल्लू–(हिं०पुं०) चमड़े की डोरी।
सव–(सं० पु०) यज्ञ, सन्तान, सूर्य, चन्द्रमा।
सवत–(हिं०स्त्री०) देखो सौत।
सवत्स–(सं०वि०) जिसके साथ बच्चा हो।
सवन–(सं०नपुं०) यज्ञ स्थान, प्रसव, चन्द्रमा, अग्नि, भृगु के एक पुत्र का नाम; सवनमुख–(सं०नपुं०) यज्ञ का आरम्भ।
सवय, सवयस्क–(हिं० वि०) समान वयका।
सवर्ण–(सं०वि०) सदृश, समान, समान वर्ण या जाति का। सवर्णा–(सं०स्त्री०) सूर्य की पत्नी छाया।
सवा–(हिं०स्त्री०वि०) सम्पूर्ण और एक का चतुर्थांश, चौथाई सहित। सवाई–(हिं०स्त्री०) एक और चौथाई, सवा; जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि।
सवांग–(हिं० पुं०) देखो स्वांग।
सवाद–(हिं०पुं०) देखो स्वाद।
सवादिक–(हिं०वि०) स्वाद लेने वाला।
सवाब–(अ०पुं०) स्वर्ग में मिलने वाला शुभ कर्म का फल पुण्य भलाई।
सवारना–(हिं०क्रि०) देखो सँवारना।
सविकल्प–(सं० वि०) सन्देह युक्त, सन्दिग्ध, किसी अवलम्बन की सहायता से कीजाने वाली समाधि।
सविकार–(सं० वि०) वह जिसमें विकार हो।
सविकास–(सं०वि०) फैला हुआ, खिला हुआ।
सविचार–(सं०वि०) विचार पूर्वक।
सविता–(सं०पु०) दिवाकर, सूर्य, मदार का पेड़। सवितापुत्र–(सं०पु०, हिरण्यपाणि; सवितासुत–(सं०पुं०) शनैश्चर।
सवित्री–(सं०स्त्री०) प्रसव करने वाली माता, गौ।
सविनय–(सं० वि०) विनय सहित, विनीत; सविनय अवज्ञा–राज्य की किसी आज्ञा को न मानना तथा शान्ति रखना।
सविलास–(सं०वि०) भोग विलास करने वाला।
सवेरा–हिं०पुं०) सूर्योदय का समय, प्रातःकाल।
सवैया–(हिं०पुं०) सवा सेर का बाँट, वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या का सवाया रहता है, वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु वर्ण रहता है।
सव्य–(सं०वि०) वाम, बांया, प्रतिकूल, विरुद्ध, (पुं०) विष्णु, यज्ञोपवीत, अंगिर के एक पुत्र का नाम।
सव्यचारी–(सं०पुं०) अर्जुन वृक्ष।
सव्यभिचार–(सं० वि०) नैयायिक मत से हेत्वाभास का एक भेद।
सव्यसाची–(सं० पुं०) अर्जुन का एक नाम।
सव्याधि–(सं०वि०) व्याधि युक्त, पीड़ित।
सव्रत–(सं०वि०) नियम युक्त।
सशंक–(सं०वि०) शंका युक्त, भयभीत, डरा हुआ, भयानक, शंका उत्पन्न करने वाला।
सशब्द–(सं०वि०) शब्द युक्त; सशरीर–(सं०वि०) शरीर धारी; सशिरस्क–(सं० वि०) मस्तक युक्त; सशोक–(सं० वि०) जिसको शोक या दुःख हो; सश्रीक–(सं० वि०) लक्ष्मी युक्त, धनवान्। सशंकना–(हिं० क्रि०) शंका, करना, डरना।
ससक–(हिं०पुं०) शशि, चन्द्रमा, शशक खरहा। ससक–(हिं० पुं०) शशक, खहरा। ससक–(हिं० पुं०) शशक, खरहा।
ससंग–(सं०वि०) साथ वाला।
ससत्वा–(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री।
ससरना–(हिं०क्रि०) सरकना, घिसकना।
ससि–(हिं०पुं०) शशि, चन्द्रमा। ससिधर–(हिं०पुं०) शिव।
ससी–(हिं०स्त्री०) देखो शची।
ससुर–(हिं०पुं०) पति या पत्नी का पिता, श्वसुर। ससुरा–(हिं० पुं०) श्वसुर, एक प्रकार की गाली।
ससुराल–(हिं०स्त्री०) पति या पत्नी के पिता का घर, बन्दीगृह, जेलखाना।
सस्ता–(हिं०वि०) कम मूल्य का, जो मंहगा न हो, साधारण, घटिया; सहज में मिलने वाला, जिसका विशेष आदर न हो; सस्ते छूटना–किसी काम का कम परिश्रम या व्यय में पूरा हो जाना। सस्ताना–(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का दाम कम होना, कम दाम पर बेंचना। सस्ती–(हिं० स्त्री०) सस्ता होने का भाव, सस्तापन।
सस्त्रीक–(सं० वि०) सपत्नीक, जिसके स्त्री हो। सस्नेह–(सं० वि०) स्नेह युक्त, प्रीति युक्त। सस्मित–(सं०वि०) हास्य सहित।
सस्य–(सं०नपुं०) धान्य, वृक्षों का फल।
सस्यहन्–(सं० पुं०) मेघ, बादल, (वि०) अन्न नाश करने वाला।
सस्वर–(सं०वि०) स्वरसहित, स्वरयुक्त।
सह–(सं० अव्य०) सहित, समेत, (वि०) विद्यमान, उपस्थित, सहनशील, समर्थ, योग्य, (नपुं०) समानता, बराबरी, (पुं०) महादेव, अगहन का महीना;
सहकार–(सं० पुं०) साथ मिल कर काम करने वाला, सहायक, आम का वृक्ष; सहकारता–(सं० स्त्री०) सहायता; सहकारिता–(सं० स्त्री०) सहायता; सहकारी–(सं० पुं०) सहयोगी, एक साथ काम करने वाला, सहायक।
सहगमन–(सं० नपुं०) साथ जाने की क्रिया, सती होना; सहगामी–(सं० पुं०) साथी, अनुयायी; सहगामिनी–(सं० स्त्री०) सहचरी, पत्नी, पति की मृत्यु पर उसके साथ मर जाने वाली स्त्री।
सहचर–(सं० पुं०) भृत्य, दास, मित्र, सखा; सहचरी–(सं० स्त्री०) पत्नी, भार्या, सखी।
सहचार–(सं० पु०) साथ, संग; सहचारिणी–(सं० स्त्री०) साथ में रहने वाली, सहचरी, पत्नी; सहचारिता–(सं० स्त्री०) सहचरी होने का भाव; सहचारी–(सं० पुं०) साथी, सेवक।
सहज–(सं० पुं०) सगा भाई, स्वभाव, (वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, साधारण, सरल, सुगम, साथ उत्पन्न होने वाला; सहजकृति–(सं० पुं०) सुवर्ण, सोना; सहजता–(सं० स्त्री०) सरलता; सहजन्म–(सं० त्रि०) एक ही गर्भ से उत्पन्न, सहोदर, सगा, जुड़वाँ।
सहजपंथ–(हिं० पु०) गौड़ वैष्णव सम्प्रदाय का एक वर्ग।
सहजात–(सं० वि०) सहोदर, यमज; सहजिया–(हिं० पुं०) सहज पंथ का अनुयायी; सहजीवी–(हिं० वि०) एक साथ जीवन धारण करने वाले, साथ रहने वाले।
सहत–(हिं० पुं०) देखो सहद; सहत महत–(हिं० पुं०) श्रीवस्ति।
सहतरा–(फ़ा०पु०) पर्पटक, पित्तपापड़ा।
सहतूत–(हिं० पुं०) देखो शहतूत।
सहताना–(हिं० क्रि०) सुस्ताना।
सहत्व–(सं० नपुं०) एक होने का भाव, एकता, मेल जोल।
सहदइया–(हिं० स्त्री०) देखो सहदेई।
सहदान–(सं० नपुं०) बहुत से देवताओं के उद्देश्य से एक में किया जाने वाला दान; सहदानी–(हिं० स्त्री०) संज्ञान पहचान।
सहदूल–(हिं० पु०) व्याघ्र।
सहदेई–(हिं० स्त्री०) एक वनौषधि।
सहदेव–(सं० पुं०) पाण्डु के सबसे छोटे पुत्र का नाम, माद्री के गर्भ से इनका जन्म हुआ था; सहदेवा–(हिं० स्त्री०) देखो सहदेई; सहधर्म–(सं० पुं०) समान धर्म; सहधर्मचरी–(सं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी; सहधर्मचारी–(सं० वि०) एक साथ धर्म करने वाला; सहधर्मचारिणी–(सं० स्त्री०) पत्नी, जोरू; सहधर्मिनी–(हिं०स्त्री०) पत्नी, जोरू।
सहन–(सं० नपुं०) क्षान्ति, क्षमा, सहन

करने की क्रिया: सहन भण्डार–(सं० पुं०) कोष, खजाना, धन दौलत; सहनशील–(सं० वि०) सन्तोषी, सहन करने वाला; सहनशीलता–(सं०स्त्री०) सन्तोष।
सहना–(हिं० क्रि०) झेलना, भोगना, फल भोगना, भार वहन करना।
सहनायन–(हिं० पुं०) शहनाई बजाने वाली स्त्री।
सहनीय–(सं०वि०) सहन करने योग्य।
सहपति–(सं० पुं०) ब्रह्मा, (वि०) पति के सहित।
सहपाठ–(सं० स्त्री०) एक साथ पढ़ना; सहपाठी–(सं० वि०) जो साथ में पढ़ा हो; सहपान–(सं० नपुं०) एक साथ मदिरा पीना; सहभक्ष–(सं० नपुं०) साथ भोजन करना; सहभावी–(सं० पुं०) सहायक, सहोदर; सहभुज–(सं० वि०) एक साथ खाने वाला; सहभोज, सहभोजन–(हिं० पुं०) एक साथ बैठकर भोजन करना, साथ बैठकर खाना; सहभोजी–(हिं० वि०) साथ बैठकर भोजन करने वाले;
सहमत–सं० वि०) जिसका मत दूसरे से मिलता हो; सहमना–(हिं० क्रि०) भयभीत होना, डरना; सहमरण–(सं० नपुं०) मृत पति के शव के साथ जलती हुई चिता में बैठ कर अपनी शरीर को भस्म करना, सती होना।
सहमान–(सं० वि०) मर्यादा या मान के साथ।
सहमूल–(सं० वि०) समूल, मूलयुक्त।
सहमृता–(सं० स्त्री०) सहमरण करने वाली स्त्री, सती।
सहयोग–(सं० पुं०) साथ मिलकर काम करने का भाव, साथ, संग, सहायता, आधुनिक भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में सरकार से मिलकर काम करने का सिद्धान्त; सहयोगी–(सं० पुं०) सहायक, वह जो किसी के साथ मिलकर कोई काम करता हो, साथ में काम करने वाला, समकालीन, समवयस्क, आधुनिक भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में सरकार से मिलकर काम करने वाला व्यक्ति।
सहर–(सं० पुं०) एक दानव का नाम, (हिं० पुं०) जादू, टोना, देखो शहर।
सहरना–(हिं० क्रि०) देखो सिहरना।
सहराना–(हिं०क्रि०) डरके मारे काँपना, सहलाना।
सहरिया–(हिं०पुं०) इक प्रकारका गेहूँ।
सहर्ष–(सं०वि०) हर्षयुक्त, हर्ष सहित।
सहलाना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु पर धीरे धीरे हाथ फेरना, सुहराना, मलना, गुदगुदाना।
सहवन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का अन्न जिसमें से तेल निकाला जाता है।
सहवाद–(सं०पुं०) आपस में तर्क वितर्क।
सहवास–सं० पुं०) एक साथ रहने का व्यापार, रति, संभोग, मैथुन। सहवासी–(सं०वि०)एकसाथ रहनेवाला।
सहव्रत–(सं० वि०) एक साथ व्रत करने वाला।
सहस–(हिं० वि०) सहस्र।
सहसंवाद–(सं० वि०) संवाद युक्त। सहसंवास–(सं० पुं०) साथ रहना; सहसंसर्ग–(सं०पुं०) परस्पर सहवास।
सहस किरन–(हिं०पुं०) सूर्य; सहसजीभ–(हिं० पुं०) शेष नाग; सहस नयन–इन्द्र; सहस फण–(हिं०पुं०) शेष नाग; सहस बाहु–(हिं०पुं०)देखो सहस्र बाहु। सहस मुख–(हिं० पुं०) शेष नाग; सह सम्भव–(सं० वि०) जो एक साथ उत्पन्न हो; सहसवदन–(हिं० पुं०) शेष नाग।
सहससीस–(हिं० पुं०) शेष नाग।
सहसा–(सं० अव्य०) एकाएक, अचानक, अकस्मात्; सहसादृष्ट–(सं० वि०) एकाएक देखा हुआ; सहसाक्षि–(हिं० पुं०) सहस्राक्ष, इन्द्र।
सहसाखी–(हिं० पुं०) इन्द्र।
सहसादृष्ट–(सं०वि०)अचानक देखा हुआ।
सहसान–(सं० पुं०) मयूर, मोर।
सहसिद्ध–(सं० वि०) जन्म से सिद्ध।
सहसावत्–(सं०वि०)तेजयुक्त,बलयुक्त।
सहसासन–(हिं०पुं०) शेषनाग।
सहसेवी–(हिं०वि०) साथ सेवा करने वाला।
सहस्त–(सं०वि०) हाथ वाला।
सहस्य–(सं०पुं०) पूस का महीना।
सहस्र–(सं० नपुं०) दस सौ अथवा एक हज़ारकी संख्या; सहस्रकर–(सं०पुं०) सहस्र किरण, सूर्य; सहस्र काण्डा–(सं०स्त्री०) सफ़ेद दूब; सहस्र किरण–(सं०पुं०) सूर्य; सहस्र गुणित–(सं०वि०) हज़ारसे गुणा किया हुआ; सहस्रचक्षु–(सं०पुं०) इन्द्र; सहस्रचरण–(सं०पुं०) विष्णु; सहस्र जित्–(सं० पुं०) कृष्ण की पटरानी जाम्बवंती के दश पुत्रों में से एक; सहस्रदल–(सं०नपुं०) पद्म, कमल; सहस्रदृश–इन्द्र; सहस्रधा–(सं० अव्य०) हज़ारों प्रकार से; सहस्र धरा–(सं०स्त्री०) हज़ारों छेद का एक पात्र; सहस्रधी–(सं०वि०) बड़ा चतुर; सहस्र नयन–(सं०पुं०)इन्द्र; सहस्र नाम–(सं० नपुं०) वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के एक हज़ार नाम हों; सहस्र नेत्र–(सं०पुं०) इन्द्र; सहस्रपत्र–(सं० नपुं०) कमलपत्र; सहस्रपाद–(सं०पुं०) सूर्य, विष्णु सारस पक्षी; सहस्रबाहु–(सं०पुं०)राजा कृतवीर्य के पुत्र हैहय। सहस्र भुजा–(सं० स्त्री०) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम; सहस्र मूली–सं०स्त्री०) बड़ी शतावर; सहस्रमौलि–(सं० पुं०) विष्णु; सहस्ररश्मि–(सं० पुं०) सूर्य; सहस्रलोचन–(सं० पुं०) इन्द्र; सहस्र वक्त्र–(सं०पुं०) इन्द्र; सहस्र वीर्य–बड़ा पुष्ट।
सहस्रशः–(सं०अव्य०) हज़ार बार।
सहस्र शीर्ष–(सं० पुं०) विष्णु।
सहस्रा–(सं० स्त्री०) मयूर शिखा, मोरशिखा।
सहस्रांशु–(सं०पुं०) सूर्य; सहस्रांशुज–(सं० पुं०) शनि ग्रह।
सहस्राक्ष–(सं०पुं०) इन्द्र, विष्णु; सहस्रानन–(सं०पुं०)विष्णु।
सहा–(सं०पुं०) ग्वारपाठा, घीकुआर, ककही नामक वृक्ष, सेवती, मेंहदी, अगहन का महीना।
सहाइ,सहाई–(हिं०वि०) सहायक, (स्त्री०) सहायता, मदद।
सहाउ–(हिं० पुं०) देखो सहाय।
सहादर–(सं०अव्य०) आदर के साथ।
सहाध्ययन–(सं०नपुं०) एक साथ पढ़ना
सहाध्यायी–(सं० पुं०) सहपाठी, एक साथ पढ़ने वाला।
सहाना–(हिं०पुं०) एक प्रकारका राग।
सहानुभूति–(सं०स्त्री०) किसी के कष्ट को देखकर स्वयं दुःखी होना।
सहापवाद–(सं०वि०) निन्दायुक्त।
सहाय–(सं० पुं०) सहायता, आश्रय, भरोसा, सहायक; सहायक–(सं०वि०) सहायता करनेवाला; सहायता–(सं०स्त्री०) आर्थिक अथवा शारीरिक साहाय्य।
सहायी–(सं०वि०) सहायता देनेवाला
सहायिनी–(सं०स्त्री०) मदद करनेवाली
सहार–(हिं०पुं०) सहन करनेकी क्रिया, सहनशीलता।
सहारना–(हिं०क्रि०) सहन करना।
सहारा–(हिं० पुं०) सहायता, मदद, आश्रय, आसरा, भरोसा।
सहार्द–(सं०वि०) प्रेमयुक्त, स्नेह सहित
सहालग–(हिं० पुं०) हिन्दू ज्योतिषियों के अनुसार वह वर्ष या वे महीने या दिन जिनमें विवाह के मुहूर्त हों।
सहिजन–(हिं० पुं०) शोभांजन, एक बड़ा वृक्ष जिसके फलियों की तरकारी बनती है।
सहिजानी–(हिं०स्त्री०) चिह्न।
सहित–(सं०वि०) संयुक्त, साथ, समेत, मिलित,हितकर, भलाई चाहने वाला
सहितव्य–(सं०त्रि०) सहन करने योग्य।
सहियी–(हिं० स्त्री०) बरछी; सहिदान सहिदानी–(हिं०) पहिचान की वस्तु।
सहिष्णु–(सं० वि०) सहनशील, जो सहन कर सके। सहिष्णुता–(स्त्री०सं०) सहनशीलता।
सहुं–(हिं०अव्य०) सन्मुख, सामने।
सहृदय–(सं०वि०) दयावान्, दयालु, प्रसन्नचित्त, सुस्वभाव, सज्जन, रसिक। सहृदयता–(सं०स्त्री०)सौजन्य, रसिकता।
सहेजना–(हिं०क्रि०)अच्छी तरह जाँचना, सँभालना, समझाकर देना। सहेजवाना–(हिं० क्रि०) सहेजने का काम दूसरे से कराना।
सहेत–(हिं० पुं०) नायक नायिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान।
सहेतु,सहेतुक–(सं० वि०) हेतुयुक्त, जिसमें कोई हेतु या कारण हो।
सहेरवा–(हिं०पुं०) हरसिंगार का वृक्ष
सहेल–(हिं०पुं०) वह सहायता जो कृषक अपने भूस्वामी को खेत जोतने बोने में देता है।
सहेली–(हिं०स्त्री०) साथ में रहने वाली स्त्री, अनुचरी, संगनी, दासी।
सहैया–(हिं०वि०) सहन करने वाला।
सहोक्ति–(सं०स्त्री०) वह काव्यालंकार जिसमें 'सह, संग, साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है, तथा अनेक कार्य एक साथ होते हुए वर्णन किये जाते हैं, ऐसे अलंकारों में क्रिया प्रायः एक ही रहती है।
सहोढ–(सं०पुं०) गर्भवती अवस्था में व्याही हुई कन्या का पुत्र।
सहोदर–(सं०पुं०) एक ही उदर से उत्पन्न सन्तान, एकही माता के पुत्र (वि०) सगा।
सहोर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
सह्य–(सं०वि) सहने योग्य। सह्यता–(सं०स्त्री०) सहन।
सह्यादि–(सं०पुं०) बंबई प्रदेश की एक पर्वत माला।
साईं–(हिं० पुं०) परमेश्वर, स्वामी, पति, फकीरों की एक उपाधि।
सांकड़–(हिं० पुं०) शृंखला, सीकड़।
सांकड़ा–(हिं० पुं०) पैर में पहरने का चांदी का एक प्रकार का आभूषण
सांकर–(हिं०स्त्री०) शृंखला, (वि०) तंग, संकरा, दुःखमय।
सांकरा–(हिं०वि०) देखो संकरा, सांकड़ा
सांक्रामिक–(सं०वि०) छूत से उत्पन्न होने वाला।
सांख्य–(सं०पुं०) महर्षि कपिल प्रणीत दर्शन शास्त्र।
सांग–(हिं०स्त्री०) भाले के आकार की एक प्रकार की बरछी (वि०) सम्पूर्ण, पूरा।
सांगरी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का रंग जिससे कपड़े रंगे जाते हैं।
सांगी–(हिं०स्त्री०) बरछी, बैलगाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान, इक्के या गाड़ी के नीचे लगी हुई जाली।
सांग्रामिक–(सं०वि०) युद्ध संबधी।
सांघातिक–(सं०वि०) हनन करने वाला, मारक।
सांच–(हिं०वि०) सत्य, यथार्थ, ठीक।
सांचला–(हिं०वि०) सत्यवादी, सच्चा।
सांचा–(हिं०पुं) वह उपकरण जिसमें कोई तरल पदार्थ या गीला पदार्थ रखकर कोई विशेष आकार की कोई वस्तु बनाई जाती है,बेलबूटा छापने का ठप्पा, छापा, किसी वस्तु की छोटी आकृति जो पर आदर्शरूप पर बताई जाती है; सांचेमें ढला हुआ–बड़ी सुन्दर बनावट का।
सांचिया–(हिं० पुं०) किसी पदार्थ का सांचा बनाने वाला।

सांची–(हिं०पुं०) एक प्रकार का पान जो खाने में ठंढा होता है, पुस्तकों की छपाई का वह प्रकार जिसमें पंक्तियां बेंड़े बलमे होती हैं तथा पृष्ठ कम चौड़ा और अधिक लंबा होता है तथा पन्ने अलग अलग रहते हैं।
सांझ–(हिं०स्त्री०) सन्ध्या, शाम।
सांझा–(हिं० पुं०) व्यवसाय का हिस्सा, पत्ती, साझा।
सांझी–(हिं०स्त्री०) देव मन्दिरों में देवता के आगे भूमि पर फूल पत्तियों की सजावट।
सांट–(हिं०स्त्री०) पतली खमाची, कोड़ा, शरीर पर का चाबुक, कोड़े आदि की मार का चिह्न।
सांटा–(हिं० पुं०) ईख, गन्ना, कोड़ा, करगह का वह डंडा जिसकी सहायता से ताने के सूत नीचे उपर होते हैं।
सांटिया–(हिं०पुं०) डुगडुग्गी पीटने वाला।
सांटी–(हिं०स्त्री०) पतली छोटी छड़ी, बाँसकी खमाची, शाखा, मेलमिलाप, बदला, प्रतीकार, टूटे हुए रस्से को बिना गांठ दिये हुए साटकर जोड़ने की विधि।
सांठ–(हिं०पुं०) देखो साँकड़ा, सरकंडा, वह लंबा डंडा जिससे पीटकर अन्न के दाने अलगाये जाते हैं. ईख, गन्ना; सांठगांठ–मेल मिलाप, मित्रता, दोस्ती।
सांठना–(हिं०क्रि०) पकड़े रहना।
सांठी–(हिं० स्त्री०) पूंजी, मूल धन, गदहपूरना।
सांड़–(हिं०पुं०) वह घोड़ा या बैल जो बधिया नहीं किया जाता और जोड़ा खिलाने के लिये पाला जाता है, वृषोत्सर्ग में छोड़ा हुआ वृषभ (वि०) बलिष्ठ, कुकर्मी।
सांड़नी–(हिं०स्त्री०) ऊंटनी जो वेग से चलती है और सवारी के काम में आती है।
सांड़ा–(हिं०पुं०) छिपकली की जाति का एक प्रकार का कीड़ा।
सांड़िया–(हिं०पुं०) वेगसे चलने वाला ऊंट, ऊंट पर सवारी करने वाला।
सांथड़ा–(हिं०पुं०) बादिया का भाग जो पेंच बनाने के लिये घुमाया जाता है।
सांथरी–(हिं०स्त्री०) चटाई, बिछौना।
सांथा–(हिं०पुं०) चमड़ा कूटने का लोहे का एक अस्त्र।
सांथी–(हिं०स्त्री०) ताने के सूतों की नीचे उपर होने की क्रिया।
सांद–(हिं०पुं०) लंगर, ढेका।
सांध–(हिं०पुं०) लक्ष्य।
सांधना–(हिं०क्रि०) निशाना लगाना, रस्सियों आदि में जोड़ लगाना, मिश्रित करना, मिलाना, साधना, पूरा करना।
सांधा–(हिं० पुं०) दो रस्यिों मे दी हुई गांठ। सांति–देखो शान्ति।
सांप–(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध रेंगने वाला लंबा कीड़ा जो पेट के बल भूमि पर रेंगता है भुजंग, सर्प; बड़ा दुष्ट मनुष्य। कलेजे पर सांप लोटना–ईर्ष्या आदि के कारण चित्त में बड़ा दुःख होना; सांप छछूंदर की दशा–बड़े असमञ्जस की अवस्था।
सांपधरन–(हिं०पुं०) शिव, महादेव।
सांपा–(हिं०पुं०)देखो सियापा।
सांपिन–(हिं०स्त्री०) सांप की मादा, सर्पिणी।
सांभर–(हिं०पुं०) राजपूताने की एक झील जिसके खारे पानी से सांभर नमक निकाला जाता है।
सांबक–(हिं०पुं०) वह ऋण जो हरवाहों को दिया जाता हैं जिसके सूदके बदले में वे काम करते हैं, सावां नामक अन्न
सांबत–(हिं०पुं०) एक प्रकार का राग।
सांबती–(हिं०स्त्री०) बैलगाड़ी या घोड़ा गाड़ी इक्के आदि के नीचे लगाई हुई जाली जिसमें घास रक्खी जाती हैं।
सांवत्सर,सांवत्सरक–(सं० पुं०) गणक, ज्योतिषी। सांवत्सरिक–(सं० वि०) संवत्सर संबंधी, वार्षिक, गणक, दैवज्ञ।
सावलताई–(हिं०स्त्री०) श्यामता।
सांवला–(हिं०वि०) श्यामवर्ण का, पति या प्रेमी आदि बोधक एक नाम, श्रीकृष्ण का एक नाम।सांवलापन–(हिं०पुं०) सावला होने का भाव।
सांवा–(हिं०पुं०) कंगनी या चेना जाति का एक अन्न।
सांवादिक–(सं०पुं०) नैयायिक, (वि०) संवाद देने वाला।
सांशयिक–(सं०वि०) सन्देह युक्त।
सांस–(हिं०स्त्री०) नाक या मुख के द्वारा हवा खींचकर फेकड़ों में पहुँचाना तथा फिर बाहर फेंकने की क्रिया श्वास, दम, अवकाश, छुट्टी, वह दरार जिसमें से हवा आ जा सकती है, श्वास का रोग; सांस उड़ना–मरण के समय बड़ी कठिनता से सांस लेना; सांस चढना–कठिनता से सांस आना जाना;सांसटूटना–बड़ी कठिनाई से साँस लेना; सांस तक न लेना–बिलकुल मौन रहना; सांस फूलना–तुरत तुरत सांस खींचना और छोड़ना; सांस रहते–जीवित रहते हुए; उलटी सांस लेना–मरण के समय बड़ी कठिनता से सांस का भीतर जाना, लंबी सांस लेना–देर तक सांस लेना, सांसभरना–हवा भरना।
सांसत–(हिं०स्त्री०)अधिक कष्ट या पीड़ा, दम घुटने का शब्द, झंझट?
सांसतघर–(हिं०पुं०) कारागार में बहुत छोटी अंधेरी कोठरी।
सांसना–(हिं०क्रि०) शासन करना, दण्ड देना, कष्ट देना, दुःख पहुँचाना, डांटना, डपटना।
सांसर्गिक–(सं०वि०) संसर्ग संबंधी।
सांसल–(हिं०पुं०) एक प्रकार का कम्बल
सांसा–(हिं०पुं०) श्वास, सांस, प्राण, जीवन, बड़ा कष्ट, चिन्ता, सन्देह, भय।
सांसारिक–(सं०वि०) संसार संबंधी, लौकिक।
सांस्कारिक–(सं० वि०) संस्कार के उपयोगी।
सांस्थानिक–(सं०वि०) एक देश का।
सा–(सं०स्त्री०) गौरी, लक्ष्मी (हिं०अव्य०) तुल्य, समान, सदृश, एक प्रकार का मान सूचक शब्द।
साइत–(अ०स्त्री०) शुभ लग्न, मुहूर्त, एक घंटे या अढाई घड़ी का समय, क्षण।
साइयां–(हिं०पुं०) देखो साईं।
साइर–(हिं०पुं०) देखो शायर, कवि।
साईं–(हिं०पुं०) ईश्वर, मालिक, पति, स्वामी।
साई–(हिं०स्त्री०) वह धन जो गाने बजाने वाले या इसीप्रकारके दूसरे व्यवसायिकों को किसी अबसर के लिये उनकी नियुक्ति निश्चित करने के लिये अग्रिम दिया जाता है, बयाना।
साईकांटा–(हि० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल चमड़ा सिझाने में काम आती है।
साईस–(हिं०पुं०) घोड़े की सेवा करने वाला नौकर; साइसी–(हिं० स्त्री०) साईस का काम या पद।
साउज–(हिं०पुं०) आखेट के पशु।
साकंभरी–(हिं० पुं०) साभर झील के आस पास का प्रान्त।
साकचेरि–(हिं०स्त्री०) मेंहदी।
साक–(सं०अव्य०) सहित, साथ।
साक–(हिं०पुं०) शाक, तरकारी भाजी।
साकट–(हिं० पुं०) देखो शक्ति, शाक्त मत का अनुयायी जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो, दुष्ट, पाजी।
साकर–(हिं०स्त्री०) देखो साँकल।
साकल्य–(सं०नपुं०) समुदाय।
साका–(हिं०पुं०) संवत्, शाखा, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति का स्मारक, धाक, अवसर, वह बड़ा काम जो कर्ता का यश दिखलाता हो; साका चलाना–धाक जमना।
साकाङ्क्ष–(सं०वि०) लोभी, इच्छुक।
साकार–(सं० वि०) मूर्तिमान्, साक्षात्, स्थूल, (पुं०) ईश्वर का आकार सहित रूप।
साकारोपासना–(सं० स्त्री०) ईश्वर की मूर्ति बनाकर उसकी उपासना करना
साकी–(हिं०पुं०) कपूरकचरी।
साकत–(सं०वि०) अभिप्राय सहित।
साकेत–(सं० नपुं०) अयोध्या नगरी।
साकेतक–अयोध्या में रहने वाला,
साकेतन–अयोध्या नगरी।
साक्षत–(सं०वि०) अक्षत सहित।
साक्षर–(सं०पुं०) विद्वान्, जो लिखना पढ़ना जानता हो।
साक्षात्–(सं०अव्य०) प्रत्यक्ष, सन्मूल, स्वयं, तुल्य, सदृश, (पुं०) भेंट; साक्षात्करण–(सं०नपुं०)प्रत्यक्ष करना; साक्षात्कार–(सं०पुं०) भेंट, पदार्थों का वह ज्ञान जो इन्द्रियों द्वारा होता है; साक्षात्कारी–(सं०वि०) भेंट करने वाला।
साक्षिता–(सं०स्त्री०) साक्षित्व।
साक्षी–(सं० पुं०) वह जिसने किसी घटना को अपनी आंखों से देखा हो, दर्शक, देखने वाला, (स्त्री०) साखी; साक्ष्य–(सं०नपुं०) साक्षी का काम।
साख–(हिं०पुं०) गवाह, गवाही, प्रमाण, मर्यादा, धाक, प्रामाणिकता, लेनदेन का खरापन; साखना–(हिं० क्रि०) गवाही देना।
साखर–(हिं०वि०) देखो साक्षर।
साखा–(हिं०स्त्री०) देखो शाखा।
साखी–(हिं०पुं०) साक्षी, गवाह, (स्त्री०) गवाही, ज्ञान सम्बन्धी कविता या पद; (पुं०) वृक्ष, पेड़; साखी पुकारना–गवाही देना।
साखू–(हिं०पुं०) शालवृक्ष, सखुआ।
साखोचारन–(हिं०पुं०) विवाह के समय वर तथा वधू के वंश गोत्र आदि का उच्चारण करना, गोत्रोच्चारण।
साखोट–(हिं०पुं०) सिहोर वृक्ष।
साख्य–(सं०नपुं०) सखित्व, बन्धुत्व।
साग–(हिं०पुं०) शाक, भाजी, तरकारी; सागपात–सूखा भोजन।
सागर–(सं० पुं०) उदधि, समुद्र, बड़ा तालाब, जलाशय, सगर के एक पुत्र का नाम; सागरगामिनी–(सं० स्त्री०) नदी; सागरधरा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी; सागरवासी–(सं०वि०) समुद्र में रहने वाला; सागरनेमि–(सं०स्त्री०) पृथ्वी। सागरपर्यन्त–(सं० त्रि०) समुद्र तक; सागरमेखला–(सं०स्त्री०) पृथ्वी; सागराम्बरा–(सं०स्त्री०)पृथ्वी; सागरोदक–(सं०नपुं०) समुद्र का जल; सागरालय–(सं०पुं०) वरुण।
सागू–(हिं०पुं०) ताड़ की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।
सागदाना–(हिं० पुं०) सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा।
सागौन–(हिं० पुं०) देखो शाल।
साग्नि–(सं० वि०) अग्नि के सहित, अग्नि युक्त; साग्निक–(सं० वि०) सर्वदा अग्निहोत्र करने वाला।
साग्र–(सं०त्रि०) अग्र युक्त, समस्त,कुल।
साग्रह–(सं०वि०) आग्रह सहित।
सांकर्य–(सं०नपुं०) मिश्रण, मिलावट।
सांकल्पिक–(सं० वि०) संकल्प संबंधी।
सांकेतिक–(सं०वि०) संकेत संबंधी।
सांक्रामिक–(सं०वि०)जो शीघ्र संक्रम करे
साङ्क्षेपिक–(सं०वि०) संक्षिप्त।

साङ्ख्य–(सं० नपुं० पुं०) महर्षि कपिल कृत दर्शन जो प्रकृति को ही संसार का मूल मानता है और जिसका मत है कि सत्व, रज अर तम के योग से सृष्टि का विकास हुआ है ; साङ्ख्य-योग–सं०पुं०) ज्ञान योग, ब्रह्मविद्या।
साङ्ग–(सं०वि०) अंग युक्त, सम्पूर्ण।
साङ्गोपांग–(सं०अव्य०)अंगों और उपाङ्गों सहित।
साङ्घाटिका–(स० स्त्री०) स्त्री प्रसंग, मैथुन, कुटनी, दूती।
साङ्घात–(स०नपुं०) समूह, दल।
साचार–(सं०वि०) आचार युक्त।
साचरी–(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
साचितव्य–(सं० नपुं०) सहायता।
साचीकुम्हड़ा–(हिं०पु०)सफ़ेद कोहड़ा,पेठा
साचीकृत–(सं०वि०)इकट्ठा किया हुआ
साज–स०पु०) पूर्वाभाद्र पद नक्षत्र।
साजगिरी–(हिं०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
साजन–(हिं० पुं०) स्वामी, पति, प्रेमी, ईश्वर, भद्र पुरुष, सज्जन।
साजना–(हिं०क्रि०) सजावट करना।
साजबाज–(हिं०पुं०)घनिष्टता,मेल जोल
साजर–(हिं०पुं०) गूलू नामक वृक्ष।
साजुज्य–(हिं०पुं०) देखो सायुज्य।
साझी–(हिं० पु०) हिस्सा, बाँट, हिस्सेदारी ; साझा–(हिं० पुं०) हिस्सेदार, साझेदार–(हिं०पुं०) हिस्सेदार, साझी; साझेदारी–(हिं०स्त्री०) हिस्सेदारी।
साञ्जन–(सं०पुं०) कृकलास, गिरगिट।
साटक–(हिं०पु०) छिलका, भूसी, तुच्छ पदार्थ, एक प्रकार का छन्द।
साटन–(हिं०पु०) एक प्रकार का वढ़िया एकरुखा रेशमी कपड़ा जो कई रंगों का होता है।
साटना–(हिं०क्रि०) दो वस्तुओं का परस्पर मिलना, जोड़ना, सटाना।
साठ–(हिं०वि०) पचास और दस संख्या का (पुं०) पचास और दस की संख्या ६० ; साठनाठ–(हिं० वि०) जिसकी सम्पत्ति नष्ट हो गई हो, निर्धन, दरिद्र, तितर बितर ; साठासाती–(हिं०स्त्री०) देखो साढ़ेसाती।
साठा–(हिं०पुं०) ईख, गन्ना, एक प्रकार की मधुमक्खी; (वि०) साठ वर्ष के वय का।
साठी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान।
साड़ा–(हिं०पुं०) घोड़ों का एक प्राणघातक रोग।
साड़ी–(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पहरने की किनारदार धोती।
साढसाती–(हिं०स्त्री०) देखो साढ़ेसाती।
साढी–(हिं० स्त्री०) देखो असाढ़ी ; दूध के ऊपर जमने वाली मलाई, साल वृक्ष की गोंद।
साढू–(हिं०पुं०) साली का पति।
साढ़ेसाती–(हिं० स्त्री०) शनि गृह की साढ़ेसात वर्ष, साढ़ेसात महीने या साढ़ेसात दिन की दशा जो अशुभ मानी जाती है।
साण्ड–(सं०वि०) अण्ड सहित।
सात–(हिं०वि०) पांच और दो की संख्या का, (पुं०) पांच और दो की संख्या ७ ; सात पांच–धूर्तता; सात समुद्र पार–बहुत दूर ; सातपूती–(सं०स्त्री०, सतपुतिया नामक तरकारी; सात फेरी–हिं०स्त्री०) विवाह के समय वर वधू का अग्नि का फेरा करना।
सातला–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का थूहर जिसका द्रव पीले रंग का होता है।
सातवाहन–(सं०पु०) राजा शालिवाहन
सातिशय–(स०वि०) अतिशय युक्त।
साती–सं० स्त्री०) साँप काटने की एक प्रकार की चिकित्सा।
सात्मक–(सं०वि०) आत्मा के सहित।
सात्म्य–(सं०पुं०) सरूपता, सारूप्य।
सात्यकि–(सं० पुं०) महाभारत के युद्ध में पाण्डवों का पक्ष लेने वाले एक यादव जो श्रीकृष्ण के सारथी थे।
सात्वत–(सं० पुं०) बलराम, श्रीकृष्ण, विष्णु, यदुवंशी, एक वर्णसंकर जाति।
सात्वती–(सं०स्त्री०) शिशुपाल की माता, सुभद्रा; सात्वती वृत्ति–साहित्य के अनुसार वह वृत्ति जिसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शान्त रसों में होता है।
सात्विक–(सं० पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, वह भाव जिसमें सत्व गुण प्रवल हो, इस भाव के उपस्थित होने पर स्वेद, स्तम्भ, रोमांच, स्वरभंगवेपथु वैवर्ण, अश्रुपात और मूर्छा के लक्षण देख पड़ते हैं (वि०) सत्वगुण युक्त;
सात्विकी–(सं० स्त्री०) दुर्गाजप यज्ञ तथा निरामिष नैवेद्य द्वारा जो पूजा की जाती है।
साथ–(हिं० पुं०) मिल कर या संग रहने का भाव, सहचार घनिष्टता, मेलमिलाप,(अव्य०) सहित, प्रति, से, विरुद्ध भाव से, (पु०) सहचर, साथी, सर्वदा पास रहने वाला; साथही–अतिरिक्त, सिवाय ; साथसाथ–एक साथ, एकसाथ–(हिं० पुं०) एक क्रम या सिलसिले में।
सायरा–(हिं० पुं०) बिस्तर, बिछौना, चटाई।
साथी–(सं०पुं०) साथ रहने वाला, मित्र।
साद–(सं० पुं०) स्मरण, गति, विषाद, क्षीणता, नाश, हिंसा, अभिलाषा, इच्छा
सादन–(सं०नपुं०) उच्छेदन, विनाश।
सादर–(सं० वि०) आदर सहित।
सादित–(स०वि०)विध्वस्त, छिन्न भिन्न।
सादी–(हिं०स्त्री०) विवाह।
सादूर–(हिं०स्त्री०) शार्दूल, सिंह।
सादृश्य–(सं०नपुं०)एकरूपता, समानता, सामान धर्म, बराबरी।
साध–(हिं० स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा, कामना, गर्भ के सातवें महीने में होने वाला एक उत्सव जिसमें गर्भिणी को उसके संबंधी फल मिठाई आदि देते हैं, (पुं०) उत्तर पश्चिम भारत का एक धर्म, सम्प्रदाय, सज्जन, साधु, महात्मा, (वि०) उत्तम, अच्छा।
साधक–सं०पुं०) योगी, तपस्वी, साधन करने वाला, कारण, दूसरे के स्वार्थ साधन में सहायक।
साधन–सं०नपुं०) कार्य को संपादित करने की क्रिया, हेतु, कारण, विधान, मृत संस्कार, गति, धन, उपकरण सामग्री, अनुगमन, सैन्य, उपाय, सिद्धि प्रमाण, युक्ति, उपामना, युक्ति, साधना, मन्त्र सिद्धि करण;
साधनता–(सं०स्त्री०) साधन करने की क्रिया; साधनवत्–(सं० वि०) साधन युक्त; साधनहार–(स० वि०) साधने वाला; साधना–(हिं०क्रि०) कोई कार्य सिद्ध करना, पूरा करना, सच्चा प्रमाणित करना, पक्का करना, ठहरना, नापना, मन्त्र सिद्धि के लिये उपासना करना, शुद्ध करना वश में करना।
साधनाई–(सं० वि०) साधना करने योग्य।
साधनी–(हिं०स्त्री०) राजगीर का भूमि चौरस करने का एक अस्त्र; साधनीय–(सं०वि०) साधना करने योग्य जो साधा जा सके।
साधन्त–(सं०पुं०) भिक्षुक, भिखमंगा।
साधयितव्य–(सं० वि०) साधने योग्य।
साधयिता–(सं०स्त्री०) साधने वाला।
साधर्म्य–(स० नपुं०) समान धर्मता, एक धर्मता।
साधर–(सं०वि०) आधार युक्त।
साधरण–(सं० वि०) समान, तुल्य, सामान्य, सदृश, जिसमें कोई विशेषता न हो, सहज, सार्वजनिक;
साधारणतः–(सं०अव्य०) सामान्य रूप से, बहुधा, प्रायः ; साधारण धर्म–(सं०पुं०) सामान्य धर्म यथा–आहार, निद्रा, भय और मैथुन; साधारण स्त्री–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
साधिका–(सं०स्त्री०) साधन करनेवाली गहरी नींद।
साधित–(सं० वि०) सिद्ध किया हुआ, साधा हुआ, शोधित, शुद्ध किया हुआ, दण्ड दिया हुआ, नाश किया हुआ।
साधिमन्–(सं०पुं०) अति सज्जन।
साधु–(सं० पु०) उत्तम कुल में उत्पन्न मुनि, सज्जन, धार्मिक; (वि०) समर्थ, योग्य, निपुण, उचित, उत्तम, अच्छा, प्रशंसनीय, सच्चा; साधु साधु कहना–प्रशंसा करना।
साधुक–(सं० पुं०) कदम्ब का वृक्ष।
साधुकर्म–(सं० नपुं०) अच्छा काम; साधुजात–(सं०वि०) उज्वल; साधुता–(सं० स्त्री०) सज्जनता, भलमनसी, भलाई, सीधापन ; साधुदर्शी–(सं०वि०) अच्छी तरह से देखने वाली; साधुदायी–(सं० वि०) उत्तम वस्तु का दान करने वाला; साधुधी–(सं०स्त्री०) अच्छी बुद्धि।
साधुपुष्प–(सं० नपुं०) उत्तम फूल; साधुवन–(सं०पुं०) साधुओं के रहने की कुटी; साधुभाव–(सं० पु०) साधुता, सज्जनता; साधुमती–(सं० स्त्री०, तान्त्रिकों की एक देवी का नाम; साधुमात्रा–(सं०स्त्री०) उपयुक्त परिमाण; साधुवाद–(स० पु०) प्रशसावाद; साधुवादी–(सं० वि०) सच बोलने वाला;साधुवृत्त–(सं०वि०) अच्छे चरित्र वाला; साधुवृत्ति–(सं०स्त्री०) उत्तम जीविका; साधुसाधु–(सं०अव्य०) धन्य धन्य, वाह वाह।
साधू–(हिं०पुं०) धार्मिक पुरुष, सन्त, सज्जन, भद्र पुरुष, सीधा आदमी।
साधो–(हिं०पुं०) सन्त, साधू।
साध्य–(सं० पुं०) गण देवता जो संख्या में बारह हैं इनके नाम–मनः, मन्ता, प्राण, नर, अपान, वीर्यमान् विनिर्भय, नय, दंस, नारायण, वृष और प्रभुञ्च हैं, ज्योतिष के अनुसार एक योग का नाम; (वि०) साधन करने योग्य, सरल, सहज, प्रतिपाद्य, जिसकी अनुमति हो (पुं०) न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय, सामर्थ्य, शक्ति, साध्यता–(सं० स्त्री०) साध्य का भाव या धर्म; साध्यवसानिका–(सं० स्त्री०) साहित्य में लक्षणा का एक भेद, साध्यसम–(सं० पुं०) न्याय मे वह हेतु जो साध्य की तरह साधनीय होता है।
साध्वस–(सं० नपुं०) भय, त्रास, व्याकुलता।
साध्वी–(सं० स्त्री०) पतिव्रता स्त्री, शुद्ध चरित्र वाली स्त्री, सच्चरित्रा।
सान–(हिं० पुं०) अस्त्रादि की धार पैनी करने का पत्थर का चाक, शाण, कुरण्ड; सान धरना–सान पर शस्त्र पैनी करना।
सानना–(हिं० क्रि०) सम्मिलित करना, मिलना, मिलाना, लपेटना, गूधना, दो वस्तुओं को परस्पर मिलाना।
सानन्द–(सं० वि०) आनन्द सहित, आह्लाद युक्त।
सानी–(हिं०स्त्री०) वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाया जाता है, एक में एक मिले हुए खाद्य पदार्थ।
सानु–(सं०पुं०) सूर्य, पत्ता, समतल भूमि, पर्वत का शिखर, वन, जंगल, गिरितट, मार्ग।
सानेयी–(स०स्त्री०) वंशी, मुरली।
सान्तर–(सं० वि०) विरल, सछिद्र, गर्तयुक्त।
सान्तनिक–(सं०वि०) सन्तान संबंधी।
सान्त्वन–(सं०नपुं०) आश्वासन, ढाढस,

प्रणय, प्रेम, सन्धि, मेल, सान्त्वना–(सं०स्त्री०) सान्त्वन।
सान्द्र–(सं० वि०) स्निग्ध, चिकना, सुन्दर।
सान्द्रपद–(सं० नपुं०) एक छन्द जिनके प्रति चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं,
सान्द्रपुष्प–(सं०.पु०) बहेड़ा।
सान्ध्य–(स० वि०) सन्ध्या काल में करने योग्य।
सान्निध्य–(सं०नपुं०) सामीप्य,समीपता।
सान्वय–(सं० वि०) अन्वय सहित।
साप–(हिं०पुं०) शाप।
सापत्न्य–(सं०नपुं०) सपत्नीभाव, सौतपन, (पुं०) शत्रु, सौत का लड़का।
सापत्य–(स०वि०) सन्तान युक्त।
सापदश–(स०वि०) अपमान सहित।
सापना–(हिं०क्रि०)शाप देना,गाली देना।
सापराध–(सं०वि०) अपराध सहित।
सापेक्ष–(हिं० वि०) परस्पर निर्भर रहने वाला।
साफल्य–(सं० नपुं०) सिद्धि, लाभ, सफलता।
सावन–(हिं० पुं०) देखो साबुन/
साबर–(हिं० पुं०) साभर मृग का चमड़ा जो बहुत कोमल होता है, थूहर का पौधा, मिट्टी खोदने का एक अस्त्र।
साबल–(हिं० पुं०) बरछी, भाला।
साबस–(हिं०पुं०) देखो शाबास, वाहवाही देने की क्रिया, (अव्य०)धन्य, वाहवाह।
साबूदाना–(हिं० पुं०) देखो सागूदाना।
साभ्रांगिका–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
साम–(सं०नपुं०) वेदों के मन्त्र जो यज्ञ में गाकर पढ़े जाते हैं, सामवेद, मधुर भाषण, शत्रु को मीठी मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने की विधि, (हिं०पुं०) देखो श्याम, शाम।
सामग–(सं० पुं०) सामवेदी ब्राह्मण विष्णु।
सामग्री–(सं० स्त्री०) किसी विशेष कार्य में उपयोग आने वाले पदार्थ, सामग्री, साधन।
सामग्र्य–(सं०नपुं०) अस्त्र शस्त्र, भण्डार
सामञ्जस्य–(सं० नपुं०) अनुकूलता, उपयुक्ता।
सामना–(हिं० पुं०) भेंट, किसी वस्तु का अगला भाग, विरोध, सामने होना, स्त्रियों का परदा न करना, सामना करना–भिड़ना,धृष्टता पूर्वक उत्तर देना।
सामनी–(सं०स्त्री०) पशुओं को बांधने की रस्सी।
सामने–(हिं० क्रि० वि०) सन्मुख, आगे, उपस्थित में, सीधे, विरुद्ध।
सामन्त–(सं० पुं०) किसी राज्य का कोई बड़ा सरदार, श्रेष्ठ राजा, वीर, योद्धा, समीपता। सामन्त सारंगी–(सं० पुं०) एक प्रकार का सौरङ्ग राग।
सामन्ती–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी।
सामयिक–(सं०वि०) समयोचित, समय के अनुसार, समय सम्बन्धी, वर्तमान समय का।
सामरथ–(हिं०स्त्री०) देखो सामर्थ्य।
सामराधिप–(सं०पुं०) सेनापति।
सामरिक–(सं०वि०) समर सम्बन्धी।
सामरिक पोत–(सं० पुं०) युद्ध का जहाज।
सामर्थी–(हिं०पुं०) सामर्थ्य रखने वाला, बलवान्, पराक्रमी।
सामर्थ्य–(सं० नपु०) शक्ति, बल, योग्यता, किसी कार्य के सम्पादन करने की शक्ति, शब्द की व्यंजना शक्ति अर्थात् वह शक्ति जिससे वह भाव प्रगट करता है, व्याकरण में शब्दों का परस्पर सम्बन्ध।
सामवाद–(सं० पुं०) प्रिय वचन, मीठी बोली।
सामवायिक–(सं० पुं०) मन्त्री, (वि०) जिसमें नित्य सम्बन्ध हो, समूह संबन्धी।
सामवेद–(सं०पुं०) भारतीय आर्यों के चार वेदों में से तीसरा वेद। सामवेदिक–(सं०पु०) सामवेदी ब्राह्मण।
सामसाली–(हिं० पुं०) राजनीति के साम, दाम, दण्ड और भेद को जानने वाला, राजनीतिज्ञ।
सामहि– (हिं०अव्य०) सन्मुख,सामने।
सामां–(हिं०पु०) देखो सावाँ, श्यामा।
सामाजिक–(सं० वि०) समाज से संबंध रखने वाला, सभा से सम्बन्ध रखने वाला, रसज्ञ। सामाजिक तन्त्र–(सं० नपुं०) समाज सम्बन्धी नियम। सामाजिकता–(सं० स्त्री०) लौकिकता।
सामाधान–(सं० पुं०) शमन करने की क्रिया, शान्ति।
सामान–(सं० पुं०) उपकरण, सामग्री, अस्त्र, प्रबंध।
सामान्य–(सं०नपुं०) समानता, सादृश्य, साधारण का कार्य, वह काव्यालङ्कार जिसमें साधारण धर्मबल से अनेक वस्तुओं का एकत्र संबन्ध वर्णन किया जाता है, वह गुण जो सामान्य रूप से किसी जाति की सब वस्तुओं में पाया जावे (वि०) जिसमें कोई विशेषता न हो, साधारण।
सामान्यतः–(सं०अव्य०) साधारण रीति से; सामान्यतोदृष्ट–(सं०पुं०) तर्क और न्याय शास्त्र के अनुसार अनुमान संबंधी एक प्रकार की भूल, ऐसी भूल तब होती है जब ऐसे पदार्थों द्वारा अनुमान किया जाता है जो न कार्य हो और न करण। सामान्यभविष्यंत्–(सं०पुं०)व्याकरण मे भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूपसे बतलाया जाता है। सामान्यभूत–(सं० पु०) भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती जैसे, गया, उठा, आदि।
सामान्य लक्षण–(सं०स्त्री०) वह गुण जिसके अनुसार किसी एक सामान्य को देखकर तदनुसार उस जाति के सब पदार्थों का ज्ञान होता है। सामान्य वचन–(सं०नपुं०)साधारण वाक्य;
सामान्य वर्तमान–(स०पु०) वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना वर्णन किया जाता है। सामान्य विधि–(सं०स्त्री०) साधारण आज्ञा यथा–चोरी मत करो, किसी को कष्ट मत दो आदि।
सामान्या–(सं०स्त्री०) साधारण नायिका, वेश्या।
सामासिक–(सं०वि०) समास से संबंध रखने वाला।
सामि–(सं०स्त्री०) निन्दा।
सामिग्री–(हिं०स्त्री०) देखो सामग्री।
सामियाना–(हिं०पुं०) देखो शामियाना;
सामिल–(हिं०वि०)देखो शामिल।
सामिष–(सं०वि०) मछली मांस आदि के साथ।
सामी–(हिं०पुं०) देखो स्वामी; शामी।
सामीची–(सं०स्त्री०) प्रार्थना, स्तुति।
सामीप्य–(सं० नपु०) समीप होने का भाव, निकटता, समीपता।
सामीर–(हिं०पुं०) समीर, पवन।
सामुझि–(हिं०स्त्री०) देखो समझ।
सामुदायिक–(सं०वि०)समुदाय सम्बन्धी;
सामुद्र–(सं० नपुं०)समुद्र से निकाला हुआ नमक, समुद्र फेन, शरीर के चिह्न, समुद्रगामी बनिया, (वि०) समुद्र सम्बन्धी।
सामुद्रिक–(सं०वि०) समुद्र सम्बन्धी।
सामुद्रिक–(सं० वि०) समुद्र सम्बन्धी, (पुं०)फलित ज्योतिष का वह विभाग जिसमें हाथ पैर ललाट आदि स्थानों पर की रेखाओं से तथा शरीर के अन्य चिन्ह देखकर मनुष्य का भूत भविष्य वर्तमान शुभाशुभ फल जाना जाता है।
सामुहां–(हिं०पुं०)आगे का भाग, सामन्त
सामुहें–(हिं०क्रि०वि०) सामने।
सामूहिक–(सं०वि०) समूह सम्बन्धी।
सामोद–(सं०वि०) आनन्द युक्त।
सामोद्भव–(सं०पुं०) हस्ती, हाथी।
साम्प्रत–(सं०अव्य०) इस समय, अभी।
साम्प्रतिक–(सं० वि०) वर्तमान काल का।
साम्प्रदायिक–(सं०वि०)संप्रदाय संबंधी;
साम्ब–(सं०पुं०) जाम्बवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम;
साम्बरी–(सं०स्त्री०) माया, जादूगरी।
साम्य–(स० नपुं०) समता, तुल्यता, बराबरी।
साम्यता–(सं०स्त्री०) तुल्यता।
साम्यवाद–(सं० पुं०) एक पाश्चात्य सामाजिक सिद्धान्त जिसके प्रचारक यह चाहते है कि सब लोगों के पास बराबर धन हो जावे, धनवान् और दरिद्र का भेद न रह जावे।
साम्यावस्था–(सं०स्त्री०) समान अवस्था, वह अवस्था जिसमें सत्व रज और तम तीनों गुण बराबर हों।
साम्राज्य–(सं०नपुं०) वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें एक साम्राट् का शासन हो, अधिपत्य, पूर्ण अधिकार। साम्राज्यवाद–(सं० पुं०) साम्राज्य को दिनदिन बढ़ाते रहने का सिद्धान्त।
सायं–(सं० वि०) सन्ध्या संबधी (पुं०) दिन का अन्तिम भाग। सायंकाल–(सं०पुं०)सन्ध्या समय। सायंकालीन–(सं०वि०) सन्ध्य समय का।
सायंगृह–(सं०पुं०) वह जो संध्या समय जहां पहुँचता हो वहीं अपना घर बना लेता हो।
सायंतन–(सं०वि०)संध्या के समय का।
सायं सन्ध्या–(स०स्त्री०) वह उपासना जो सायंकालके समय की जाती है।
सायक–(सं०पु०) बाण, तीर, तलवार, एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं।
सायण–(सं०पुं०)ऋग्वेद के एक सुप्रसिद्ध भाष्यकार।
सायन–(स०स्त्री०) सूर्य की एक गति, जिसमें अयन (ग्रह आदि) हों।
सायम्–(सं०अव्य०) सन्ध्या।
सायंप्रातर्–(स०अव्य०) सबेरे तथा संध्या को।
सायर–(हिं०पुं०) सागर, समुद्र, ऊपरी भाग (अ०पुं०)वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं देना पड़ता, फुटकर। (हिं० पुं०) एक प्रकार का धान।
सायास–(सं०वि०) कष्ट सहित।
सायाह्न–(सं० पु०) दिन के अन्तिम तीन मूहूर्त।
सायुज्य–(सं० नपुं०) सादृश्य, अभेद, एकत्व, पांच प्रकार की मुक्तियो में से एक जिसमें मुक्त पुरुष ब्रह्म में लीन हो जाता है।
सारंगिया–(हिं० पुं०) सारंगी बजाने वाला।
सारंगी–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा।
सार–(सं०नपुं०)जल, पानी धन,मक्खन, अमृत, जंगल (पुं०) बल, अभिप्राय, निष्कर्ष, मज्जा, वायु, द्रव्य, अस्थि, कपूर, तलवार, क्वाथ, काढ़ा, मूंग, अनार का पेड़, चिरौंजी का वृक्ष, परिणाम, फल, लकड़ी की हीर, जुआ खेलने का पासा, दूध की साढ़ी, मलाई, वह अर्थालंकार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णन किया रहता है, एक प्रकार का मातृक छन्द, स्वाद, गोशाला,

बाड़ा, (वि०) उत्तम, दृढ़ ।
सार–(हिं० पुं०) पालन पोषण, रक्षा शय्या, पत्नी का भाई, साला, लोहा ।
सारखा–(हिं०वि०) समान, सदृश ।
सारगन्ध–(सं०पुं०) चन्दन ।
सारङ्ग–(सं०पुं०) चातक पक्षी, हरिण, हाथी, कोयल, बाज पक्षी, छाता, राजहंस, शंभु, शिव, दीपक, बाण, तीर, जल, समुद्र, श्रीकृष्ण का एक नाम, लवा पक्षी, विष्णु का धनुष, सूर्य, भौंरा, घोड़ा, रात्रि, मेघ, ज्योति, पृथ्वी, फूल, कपूर, चन्दन, शख, पद्म, चन्द्रमा, सुवर्ण, आभरण, कामदेव, महीन वस्त्र, केश, मोर, चितकबरा मृग, बिजली, सम्पूर्ण जाति का एक राग, पक्षी, हल, मेढ़क, आकाश, खंजन पक्षी, मोती, नक्षत्र, हाथ, स्तन, कौवा, छप्पय छन्द का एक भेद, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बाईस अक्षर होते हैं, एक सुगन्धित द्रव्य शोभा, भूमि, सर्प, स्त्री, नारी, दिन, खड्ग, कबूतर एक प्रकार की मधुमक्खी, सारंगी नामक वाद्य यन्त्र, (वि०) सुन्दर, सुहावना, रंगा हुआ। सारंगचर–(सं०पुं०) कांच, शीशा
सारंगपाणि–(सं० पुं०) विष्णु ।
सारंगलोचना–(सं०स्त्री०) मृगनयनी ।
सारंगा–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी नाव जो एक ही लकड़ी की बनी होती है, एक रागिणी का नाम ।
सारंगिक–(सं०पुं०) व्याध, चिड़ीमार, एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नव अक्षर होते हैं ।
सारंगी–(सं०स्त्री०) एक प्रसिद्ध बाजा ।
सारण–(सं० नपुं०) अतीसार रोग, आंवला ।
सारणिक–(सं०पुं०) पथिक, बटोही ।
सारणी–(सं०स्त्री०) प्रसारणी, छोटी नदी;
सारण्ड–(सं० पुं०) सांप का अंडा ।
सारतण्डुल–(सं०पुं०) चावल । सारतरु–(सं०पुं०) केले का पौधा, खैर का वृक्ष ।
सारता–(सं०स्त्री०) सार का भाव या धर्म ।
सारथि–(सं० पुं०) रथ हांकने वाला,
सारद–(हिं०स्त्री०) शारदा, सरस्वती, (वि०) शरद सम्बन्धी ।
सारदा–(हिं०स्त्री०) देखो शारदा ।
सारदा सुन्दरी–(सं०स्त्री०) दुर्गा ।
सारदी–(हिं०वि०) देखो शारदीय ।
सारद्रुम–(सं०पुं०) खैर का पेड़ ।
सारदूल–(हिं०पुं०) देखो शार्दूल ।
सारना–(हिं०क्रि०) पूर्ण करना, समाप्त करना, साधना, बनाना, देख रेख करना, संभालना, सुशोभित करना, सुन्दर बनाना, रक्षा करना, आंखों में अंजन आदि लगाना ।
सारनाथ–(हिं० पुं०) बनारस से चार मील उत्तर पश्चिम में एक स्थान जहां पर शिव का एक मन्दिर है तथा एक बड़ा बौद्ध स्तूप है ।
सारभाटा–(हिं०पुं०) समुद्र की वह बाढ़ जिसमें पानी पहले बढ़ कर समुद्र के किनारे से आगे चला जाता है और कुछ देर बाद पीछे लौटता है ।
सारभाण्ड–(सं०नपुं०) व्यापार की बहुमूल्य वस्तु, कोष ।
सारभूत–(सं०वि०) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ।
सारमेय–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता, सरमा की सन्तान ।
साररूप–(सं०वि०) उत्तम रूप वाला ।
सारल्य–(सं० नपुं०) सरल होने का भाव, सरलता ।
सारवती–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसमें तीन भगण और एक गुरु वर्ण होता है ।
सारवर्जित–(सं०वि०) जिसमें कोई सार या तत्व न हो ।
सारवस्तु–(सं०नपुं०) श्रेष्ठ वस्तु ।
सारवाला–(हिं०पुं०) एक प्रकार की जंगली घास ।
सारस–(सं०नपुं०) पद्म, कमल, झील का पानी, स्त्रियों का कटिभूषण, चन्द्रमा, हंस, छप्पय का एक भेद, एक प्रसिद्ध सुन्दर बड़ा पक्षी ।
सारसन–(सं०नपुं०) तलवार की पेटी, कटिबन्ध ।
सारसी–(सं०स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद जिसमें पांच गुरु और अड़तालीस लघु मात्रायें होती हैं, मादा सारस पक्षी ।
सारसुता–(हिं०स्त्री०) यमुना; सारसुती–(हिं० स्त्री०) देखो सरस्वती ।
सारसैन्धव–(सं० पुं०) सेंधा नमक ।
सारस्वत–(सं० पुं०) दिल्ली के उत्तर पश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है, इस देश के निवासी ब्राह्मण, एक प्रसिद्ध व्याकरण (वि०) सरस्वती सम्बन्धी ।
सारांश–(सं०पुं०) संक्षेप, सार, तात्पर्य, परिणाम, उपसंहार, परिशिष्ट ।
सारा–(सं० स्त्री०) थूहर, केला, दूब, (पुं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरे से बढ़कर कही जाती है (हिं०पुं०) साला (हिं० वि०) सम्पूर्ण, समूचा, पूरा ; सारावती–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसको साराकली भी कहते हैं ।
सारि–(सं० पुं० स्त्री०) पासा या चौपड़ खेलने वाला, जुआ खेलने का पासा, गोटी ।
सारिउं, सारिका–(हिं० स्त्री०) मैना पक्षी
सारिक–(सं० पुं०) सारिका (स्त्री०) मैना पक्षी ।
सारिखा–(हिं० वि०) सरीखा, तुल्य, समान ।
सारिणी–(सं० स्त्री०) सहदेवी, महाबला, दुरालभा, धमासा, लाल पुनर्नवा ।
सारिवा–(सं० स्त्री०) अनन्तमूल नामक लता ।
सारिष्ट–(सं० वि०) सबसे सुन्दर, सबसे श्रेष्ठ ।
सारी–(सं०स्त्री०) सारिका पक्षी, मैना ।
सारु–(हिं० पुं०) देखो सार ।
सारूप्य–(सं० नपुं०) एक प्रकार की मुक्ति जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता का रूप प्राप्त कर लेता है, समान रूप होने का भाव, एकरूपता;
सारूप्यता–(सं० स्त्री०) सारूप्य का भाव या धर्म ।
सारो–(हिं० पुं०) एक प्रकार का अगहनियां धान ।
सारोपा–(सं० स्त्री०) साहित्य में वह लक्षण जो उस स्थान पर होता है जहां एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने पर विशिष्ट अर्थ निकलता है ।
सार्थ–(सं० पुं०) बनियों का समूह, (वि०) अर्थ सहित ।
सार्थक–(सं० वि०) अर्थ युक्त, सफल, सिद्ध, उपकारी, गुणकारी ; सार्थकता–(सं०स्त्री०) सफलता; सार्थपति–(सं०त्रि०) व्यापार करने वाला; सार्थभृत् (सं०पुं०) वणिक्, बनियां ; सार्थवत्–(सं० वि०) अर्थ सहित, ठीक, ठीक ; सार्थवाह–(सं० पुं०) बणिक्, बनियां ; सार्थिक–(सं० वि०) सफल ।
सार्थी–(हिं० पुं०) देखो सारथी ।
सार्द्र–(सं० वि०) आर्द्र, भींगा, गीला ।
सार्दूल–(हिं० पुं०) देखो शार्दूल, सिंह ।
सार्ध–(सं० वि०) अर्ध युक्त, जिसमें पूरे के अतिरिक्त आधा भी मिला हो ।
सार्व–(वि०) सबसे सम्बन्ध रखने वाला;
सार्वकर्मिक–(सं० वि०) कुल काम करने वाला ; सार्वकाल–(सं० वि०) सब समय में होने वाला; सार्व कालिक–(सं० वि०) जो सब कालों में होता हो;
सार्वगुणिक–(सं० वि०) सकल गुण सम्बन्धी; सार्वजनिक–(सं० वि०) सर्व साधारणसम्बन्धी; सार्वजनीन–(सं०वि०) सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला ;
सार्वजन्य–(सं० वि०) जिससे सब लोगों का हित हो ; सार्वत्रिक–(सं० वि०) सब स्थानों में होने वाला;
सार्वदेशिक–(सं०वि०) सम्पूर्ण देशों का;
सार्वभौतिक–(सं० वि०) सब भूतों से सम्बन्ध रखने वाला; सार्वभौम–(सं० पुं०) समस्त भूमि का राजा, चक्रवर्ती राजा ; सार्वराष्ट्रीय–(सं०वि०) अनेक राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला;
सार्वलौकिक–(सं० वि०) सर्वत्र प्रसिद्ध, सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला ;
सार्ववर्णिक्–(सं० वि०) सब वर्णों से सम्बन्ध रखने वाला; सार्वविद्य–(सं० वि०) सर्व विद्या युक्त ; सार्ववैदिक–(सं० वि०) सब वेदों से सम्बन्ध रखने वाला; सार्वसेनी–(सं० स्त्री०) भरत की कन्या का नाम ।
साल–(सं० पुं०) एक प्रकार की मछली, प्राकार, परकोटा, राल, धूना, एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, प्राचीर, भीत, गढ़, (हिं० पुं०) शाल, छेद, वह छेद जिसमें चूल बैठाई जाती है, घाव, दुःख, कष्ट ।
सालई–(हिं० स्त्री०) देखो सलई ।
सालक–(हिं० वि०) सालने वाला, दुःख देने वाला ।
सालग्राम–(हिं० पुं०) देखो शालग्राम ।
सालग्रामी–(हिं० स्त्री०) गण्डक नदी ।
सालङ्क–(सं०पुं०) संगीत के तीन प्रकार के रागों में से एक जो बिलकुल शुद्ध हो परन्तु जिसमें किसी राग का आभास जान पड़ता हो ।
सालन–(हिं० पुं०) मांस मछली या शाक भांजी की मसालेदार तरकारी ।
सालना–(हिं० क्रि०) चुभाना, गड़ाना, छेद में बैठाना, पीड़ा देना, दुःख पहुँचाना ।
सालनिर्यास–(सं० पुं०) राल, धूना ।
सालपर्णी–(हिं० स्त्री०) शालपर्णी, सरिवन
सालभाञ्जिका–(सं०स्त्री०) गुड़िया, पुतली
सालममिश्री–(हिं० स्त्री०) सुधामूली, एक पौधा जिसका कन्द कसेरू के समान होता है, इसका प्रयोग पुष्टिकर औषधियों में होता है ।
साजरस–(सं० पुं०) राल, धूना ।
सालस–(अ० पुं०) दो पक्षों के झगड़े निबटाने वाला, पच ।
साला–(हिं०स्त्री०) शाला, गृह, घर, (हिं०पुं०) पत्नी का भाई, एक प्रकार की गाली, मैना ।
सालिग्राम–(हिं०पुं०) देखो शालिग्राम ।
साली–(हिं०स्त्री०) पत्नी की बहिन ।
सालु–(हिं०पुं०) ईर्षा, डाह, कष्ट ।
सालू–(हिं०पुं०) एक प्रकार की लाल रंग की साड़ी जो मांगलिक कार्यों में पहरी जाती है ।
सालेय–(सं०पुं०) मधुरिका, सौंफ ।
सालोक्य–(सं०नपुं०) एक लोक में वास, पांच प्रकार की मुक्ति में से एक, इसके मुक्त भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है ।
साल्मली–(हिं०पुं०) देखो शाल्मली ।
सावंकरन–(हिं०पुं०) सफ़ेद रंग का घोड़ा जिसके दोनो कान काले होते हैं
सावंत–(हिं०पुं०) देखो सामन्त, योद्धा, वीर ।
साव–(हिं०पुं०) देखो साहु, बालक, पुत्र
सावक–(हिं०पुं०) शावक, शिशु, बच्चा
सावकाश–(सं०नपुं०) अवकाश, छुट्टी, अवसर; (क्रि०वि०) सुविधे से ।
सावचेत–(हिं०वि०) सावधान, सचेत ।
सावचेती–(हिं०स्त्री०) सावधानी ।
सावज–(हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली पशु जिसका आखेट किया जाता है
सावत–(हिं० पुं०) सौतों का परस्पर द्वेष, डाह ।
सावधान–(सं०वि०) सचेत, सतर्क ।
सावधानता–(सं० स्त्री०) सावधानी ।
सावधानी–(हिं० स्त्री०) सचेतता ।
सावधि–(सं०वि०) अवधि युक्त ।

सावन–(हिं॰पुं॰) श्रावण मास, आसाढ़ और भादों के बीच का महीना, इस महीने में गाये जाने की एक प्रकार की गीत, एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय का समय।

सावनी–(हिं॰स्त्री॰) देखो श्रावणी (वि॰) सावन महीने का।

सावयव–(स॰वि॰) अवयव युक्त।

सावर–(सं॰पुं॰) लोध, पाप, अपराध, (हिं॰पुं॰) शिव कृत एक तन्त्र का नाम, एक प्रकार का लोहे का लंबा अस्त्र जिसका एक सिरा नुकीला और गुलमेख की तरह का होता है, एक प्रकार का हिरन।

सावर्ण–(सं॰पुं॰) आठवें मनु, सावर्णि मनु, (वि॰) समान वर्ण का; सावर्णि–(सं॰पुं॰) अष्टम मनु जो सूर्य के एक पुत्र थे, एक मन्वन्तर का नाम।

सावशेष–(सं॰वि॰) अवशेष युक्त।

सावष्टम्भ–(सं॰पुं॰) वह घर जिसके उत्तर तथा दक्षिण भाग में सड़क हो (वि॰) दृढ़, स्वावलम्बी।

सावित्र–(सं॰पु॰) ब्राह्मण, शंकर, वसु, सूर्य, गर्भ, सूर्य के पुत्र, एक प्रकार का अस्त्र (नपुं॰) सूर्य वंशीय।

सावित्री–(सं॰स्त्री॰) वेदमाता, गायत्री, उपनयन संस्कार, सोहागिन स्त्री, यमुना नदी, सरस्वती नदी, ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती, दक्ष की कन्या का नाम, राजा अश्वपति की कन्या जो सत्यवान् को ब्याही थी। सावित्रीसूत्र–(सं॰नपुं॰) यज्ञोपवीत;

साशंक–(हिं॰वि॰) आशङ्का युक्त।

साष्टांग–(सं॰वि॰) आठो अंग सहित।

साष्टाग योग–(सं॰पुं॰) वह योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधि ये आठो अंग हों।

साष्टांग प्रणाम–(स॰नपुं॰) माथा, हाथ, पैर, आँख, हृदय, जांघ, वचन और मन से पृथ्वी पर लेट कर प्रणाम करना।

सास–(हिं॰स्त्री॰) पति या पत्नी की माता

सासण–(हिं॰पुं॰) देखो शासन।

सासति–देखो शासन्।

सासनलेट–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का जालीदार सफ़ेद कपड़ा।

सासना–(हिं॰स्त्री॰) देखो शासन।

सासव–(सं॰वि॰) मद्य युक्त।

सासरा–(हिं॰पुं॰) देखो ससुराल।

सासा–(हिं॰पु॰) श्वास, साँस सन्देह।

सासुर–(हिं॰पुं॰) ससुर, ससुराल।

सास्ना–(सं॰स्त्री॰) गौ का गलकम्बल।

साह–(हिं॰पुं॰) साधु, सज्जन, भला आदमी, व्यापारी, साहूकार, धनी, महाजन सेठ, लकड़ी या पत्थर का लंबा टुकड़ा जो द्वार के चौखट में दोनों ओर लगा रहता है; देखो शाह

साहचर्य–(सं॰नपुं॰) सहचर होने का भाव, सहगमन, संग, साथ।

साहनी–(हिं॰स्त्री॰) सेना, साथी, संगी।

साहस–(सं॰नपुं॰) बल पूर्वक कार्य करने की क्रिया, द्वेष, अत्याचार, दण्ड, क्रूरता, कोई बुरा कार्य, बलपूर्वक किसी का धन छीनना। साहसिक–(सं॰ पु॰) साहस करने वाला, झूठ बोलने वाला, चोर, ठग, रूक्ष वचन बोलने वाला, निडर, हठी, परस्त्रीगामी; साहसिकता–(सं॰स्त्री॰) निर्भीकता।

साहसी–(स॰पु॰) जो साहस करता हो, हिम्मती।

साहस्र–(सं॰वि॰) सहस्र संबंधी, हजार का

साहस्रक–(सं॰वि॰) सहस्र संख्या युक्त।

साहा–(हिं॰पुं॰) विवाह आदि के लिये शुभ लग्न, (हिं॰पुं॰) साधु, राजा, अधिपति।

साहाय्य–(स॰पुं॰) सहायता।

साहि–(हिं॰ पु॰) राजा।

साहित्य–(सं॰नपुं॰) एकत्र होना, मिलना वाक्य में पदों का एक प्रकार का सम्बन्ध जिसमें वे परस्पर अपेक्षित होते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया से होता है, लिपिबद्ध विचार या ज्ञान, गद्यपद्य के उन ग्रन्थों का समूह जिनमें लोकहित संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं, वे सब पुस्तकें जिनमें नैतिक सत्य तथा मानव भाव, व्यापकता तथा बुद्धिमानी से प्रकट किये रहते हैं। साहित्यिक–(सं॰वि॰) साहित्य सम्बन्धी (पुं॰) साहित्य सेवी मनुष्य।

साहिब, साहिबी–(हिं॰) देखो साहब, साहबी।

साहियां–(हिं॰पुं॰) देखो साईं।

साही–(हिं॰स्त्री॰) एक प्रसिद्ध चौपाया, जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं,

साहु–(हिं॰पुं॰) सज्जन, महाजन, धनी, साहूकार, भद्र पुरुष।

साहू–(हिं॰पुं॰) देखो साहु। साहूकार–(हिं॰पुं॰) बड़ा महाजन, कोठीवाल। साहूकारी–(हिं॰स्त्री॰) रुपये का लेनदेन, महाजनी (वि॰) साहूकार सम्बन्धी, (स्त्री॰) साहूकारपन।

साहौं–(हिं॰ स्त्री॰) बांह, भुजा (अव्य॰) सम्मुख, सामने।

सिंकना–(हिं॰ क्रि॰) आंच पर पकना, सेंका जाना।

सिंगल–(हिं॰पुं॰) देखो सिगनल्।

सिंगा–(हिं॰पुं॰) फूंक कर बजाये जाने वाला एक प्रकार का बाजा, तुरही।

सिंगार–(हिं॰ पुं॰) शृङ्गार, सजावट, शोभा, शृङ्गार रस। सिंगारदान–(हिं॰पुं॰) वह छोटी पेटी जिसमें दर्पण कंघी आदि शृङ्गार की सामग्री रक्खी जाती है। सिंगारना–(हिं॰क्रि॰) सँवारना सजाना। सिंगारहाट–(हिं॰पुं॰) वेश्याओं के रहने की बाजार, सिंगारहार–(हिं॰पुं॰) हर्रासिंगार, परजाते का फूल। सिंगारिया–(हिं॰पुं॰) किसी देवमूर्ति का शृङ्गार करने वाला पुजारी। सिंगारी–(हिं॰ पु॰) शृङ्गार करने वाला, सजाने वाला।

सिंगाल–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का पहाड़ी बकरा।

सिंगासन–(हिं॰पु॰) देखो सिंहासन।

सिंगिया–(हिं॰पु॰) हल्दी के प्रकार का एक पौधा जिसकी जड़ बड़ी विषैली होती है।

सिंगी–(हिं॰पु॰) सींग का बना हुआ फूंक कर बजाने का बाजा, एक प्रकार की मछली, सींघ की नली जिससे देहाती शल्य चिकित्सक शरीर का रक्त चूस कर निकालते हैं।

सिंगौटी–(हिं॰ स्त्री॰) बैल की सींग पर पहराने का आभूषण, सींग का बना हुआ घोटना, वह छोटी पिटारी जिसमें स्त्रियाँ शृङ्गार की सामग्री रखती हैं।

सिंघ–(हिं॰पुं॰) सिंह।

सिंघल, सिंघली–(हिं॰) देखो सिंहल, सिंहली।

सिंघाड़ा–(हिं॰पुं॰) पानी में फैलने वाली एक लता जिसका तिकोना फल मीठा होता है, सिंघाड़े के आकार का बेल बूटा, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा, समोसा नामक नमकीन पकवान।

सिंघासन–(हिं॰पुं॰) देखो सिंहासन।

सिंघिनी–(हिं॰ स्त्री॰) देखो सिंहिनी।

सिंघिया–(हिं॰ पुं॰) देखो सिंगिया।

सिंघी–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार की छोटी मछली, सोंठ।

सिंघला–(हिं॰ पुं॰) सिंह का बच्चा।

सिंचना–(हिं॰ क्रि॰) सींचा जाना।

सिंचाई–(हिं॰स्त्री॰) पानी छिड़कने का काम, भूमि को जल से तर करने की क्रिया, सींचने का कर।

सिंचाना–(हिं॰क्रि॰) पानी छिड़काना, सींचने का काम कराना।

सिंजित–(हिं॰स्त्री॰) ध्वनि, शब्द, झनकार।

सिंदन–(हिं॰पुं॰) देखो स्यन्दन।

सिंदुरी, सिंदुवार–(हिं॰स्त्री॰) बलूत जाति का एक वृक्ष। सिंदूरादान–(हिं॰पुं॰) सिन्दूर रखने की लकड़ी की लबोतरी डिबिया। सिंदूरिया–(हिं॰ वि॰) सिंदूर के रंग का, बहुत लाल, (स्त्री॰) सिंदूरपुष्पी नाम का पौधा।

सिंदूरी–(हिं॰वि॰) सिंदूर के रंग का।

सिंदोरा–(हिं॰ पुं॰) लकड़ी की एक डिबिया जिसमें स्त्रियाँ सिंदूर रखती है

सिंधु, सिंधुर–देखो सिन्धु, सिन्धुर।

सिंह–(सं॰ पुं॰) मृगेंद्र, पशुराज, ज्योतिष में मेषादि बारह राशियों में से पाँचवीं राशि; वीरता वाचक शब्द, छप्पय का एक भेद। सिंहकेलि–(सं॰ पुं॰) सिंह का खेल। सिंहकेशर–(सं॰पुं॰) सिंह के गरदन पर के बाल।

सिंहतुण्ड–(स॰ पुं॰) सेंहुड़ का पेड़।

सिंहद्वार–(सं॰ नपुं॰) भवन आदि का प्रधान द्वार जहां पर सिंह की मूर्ति बनी हो। सिंहध्वनि–(सं॰पुं॰) सिंहनाद

सिंहनन्दन–(स॰ पुं॰) संगीत में एक ताल का नाम। सिंहनाद–(सं॰स॰) सिंह की गरज, वीरों की ललकार, शिव, महादेव, संगीत में एक ताल का नाम, एक वर्णवृत्त का नाम, जिसको नन्दिनी या कलहस भी कहते हैं। सिंहनी–(सं॰ स्त्री॰) शेरनी एक छन्द जिसके चारो पदों में क्रम से बारह, अठारह, बीस और बाईस मात्रायें होती हैं। सिंहपुच्छ–(सं॰पु॰) पिठवन। सिंहपौर–(हिं॰पुं॰) प्रधान द्वार जिस पर सिंह की मूर्ति बनी हो

सिंहमुख–(स॰ पुं॰) सिंह के समान मुख वाला। सिंहमुखी–(सं॰स्त्री॰) बाँस, अड़ूसा। सिंहयाना, सिंहरथा–(स॰स्त्री॰) दुर्गा। सिंहरव–(सं॰ पुं॰) सिंह की गरज।

सिंहल–(सं॰ पु॰) भारत महासागर के एक छोटे द्वीप का प्राचीन नाम। सिंहलक–(सं॰ पुं॰) बढ़िया पीपल, रांगा। सिंहलद्वीप–(सं॰ पुं॰) सिंहल नामक टापू जो भारत के दक्षिण में है। सिंहलद्वीपी–(सं॰ पुं॰) सिंहल द्वीप का निवासी। सिंहली–(हिं॰वि॰) सिंहल द्वीप का।

सिंहलील–(सं॰पु॰) संगीत में एक ताल।

सिंहवाहना, सिंहवाहिनी–(स॰स्त्री॰) दुर्गा देवी। सिंहविक्रम–(सं॰ पुं॰) एक प्रकार का छन्द जिसमें पैंतालीस अक्षर होते हैं। सिंहविक्रीडित–(सं॰नपुं॰) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं, संगीत में एक प्रकार का ताल, एक प्रकार की समाधि। सिंहविस्फूर्जित–(सं॰नपुं) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं।

सिंहस्थ–(सं॰वि॰) एक पर्व जो वृहस्पति के सिंह राशि में होने पर होता है। सिंहस्था–(सं॰ स्त्री॰) दुर्गा।

सिंहाक्ष–(सं॰ वि॰) सिंह के समान आँख वाला।

सिंहाण–(सं॰ नपुं॰) नाक का मल, लोहे का मुरचा।

सिंहावलोकन–(स॰पुं॰) सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना, आगे बढ़ने के पहिले पिछली बातों को संक्षेप में कहना, पद्य रचना की एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अन्त के कुछ शब्द या वाक्य को लेकर आगे का चरण आरंभ होता है। सिंहावलोकित–(सं॰ नपुं॰) न्याय का वह भेद जिसमें पास का विषय न देख कर दूर का विषय देखा जाता है।

सिंहासन–(सं॰ स्त्री॰) स्वर्णमय राजासन, राजाओं का श्रेष्ठ आसन, देवता को बैठाने की चौकी आदि।

सिंहिका–(सं॰ स्त्री॰) एक राक्षसी जो राहु की माता थी, यह राक्षसी दक्षिण समुद्र में रहती थी और उड़ने वाले जीवों की परछाहीं देखकर ही

उनको खींचकर खा जाती थी।
सिंहिकासूनु–(सं०पुं०) राहु।
सिंहिनी–(सं०स्त्री०)मादा सिंह, शेरनी।
सिंही–(सं०स्त्री०) शेरनी, वैगन, अडूसा, सिंघा नाम का बाजा, आर्या छन्द का एक भेद
सिंहेश्वरी–(सं०स्त्री०) दुर्गा।
सिंहोड़–(हिं०पुं०) सेहुंड, थूहर।
सिंहोदरी–(सं० वि०) सिंह के समान पतली कमर वाली।
सिंहोद्धता–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं
सिंहोन्नता(सं०स्त्री०) एक छन्द का नाम
सिअँरा–(हिं०पुं०) छाया, परछाहीं।
सिआना–(हिं०क्रि०) देखो सिलाना।
सिआमंग–(हिं० पुं०) सुमात्रा द्वीप में पाया जाने वाला एक प्रकार का बंदर।
सिआर–(हिं० पु०) शृगाल, सियार, गीदड़।
सिंगंजा–(हिं०पुं०) देखो शिकंजा।
सिकटा–(हिं० पु०) खपड़े या मिट्टी के टूटे हुए पात्रों का छोटा टुकड़ा।
सिकड़ी–(हिं० स्त्री०) किवाड़ की कुंडी या सांकल, शृंखला के आकार का गले मे पहरने का सोने का गहना; करधनी, तगड़ी।
सिकता–(सं०स्त्री०)बलुई भूमि, बालू, रेत, पथरी, चीनी।
सिकत्तर–(हिं० पुं०) किसी संस्था या सभा का मन्त्री।
सिकरवार–(हिं० पुं०) क्षत्रियों की एक शाखा।
सिकरी–(हिं० स्त्री०) देखो सिकड़ी।
सिकली–हिं०स्त्री०) धारदार हथियारों को मांजने और उनपर सान चढाने की क्रिया। सिकलीगर–(हिं० पुं०) सिकली करने वाला कर्मकार।
सिकहर–(हिं०पुं०) छीका।
सिकहुली–(हिं०स्त्री०) कास या मूंज की बनी हुई छोटी डलिया।
सिकार–(हिं० पुं०) देखो शिकार।
सिकारी–(हिं०वि०) देखो शिकारी।
सिकुड़न–(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु का सिमट कर थोड़े स्थान मे होना, संकोच। सिकुड़ना–(हिं०क्रि०) सिमट कर थोड़े स्थान में होना, आकुंचित होना, सकीर्ण होना।
सिकुरना–हिं० क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सिकोड़ना–(हिं० क्रि०) संकुचित करना, सकीर्ण करना, बटोरना, समेटना।
सिकोरना–(हिं० क्रि०) देखो सिकोड़ना
सिकोरा–(हिं०क्रि०) देखो कसोरा।
सिकोली–(हिं० स्त्री०) कास, मूंज, बेंत आदि की बनी हुई छोटी डलिया।
सिकोही–(हिं० वि०) गर्वीला, घमंडी, वीर।
सिक्कक–(सं०नपुं०) बांसुरी मे लगाने की जीभी।
सिक्कड़–(हिं० पुं०) देखो सीकड़।
सिक्कर–(हिं०पुं०) देखो सिक्कड़।
सिक्का–(अ०पुं०) मुद्रा, छाप, मुहर, रुपये पैसे आदि पर की राजकीय छाप, मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा, पदक, टकसाल में ढला हुआ धातु का टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है, माल का वह दाम जिसमें दलाली संमिलित हो; सिक्का जमना–प्रभुत्व स्थापित होना।
सिक्की–(हिं० स्त्री०) छोटा सिक्का।
सिक्ख–(हिं०पुं०) देखो सिख।
सिक्त–(सं०वि०) सिंचित, सींचा हुआ, भीगा हुआ।
सिक्ता–(सं०स्त्री०) सिकता बालुका।
सिक्थ–(सं० पु०) उबाले हुए चावल का दाना, भात का ग्रास।
सिखंड–(हिं०पुं०) देखो शिखण्ड।
सिख–(हिं०स्त्री०) शिक्षा, उपदेश, सीख, (पुं०) शिष्य, चेला, नानक पंथी संप्रदाय। सिख इमली–(हिं० पुं०) भालूको नाचना सिखलाने की विधि।
सिखना–(हिं० क्रि०) देखो सीखना।
सिखर–(हिं०पुं०) देखो शिखर।
सिखरन–(हिं० स्त्री०) दही में चीनी मिलाकर बनाया हुआ शर्बत जिसमें केशर, इलायची मेवे आदि पड़े हों।
सिखलाना–(हिं०क्रि०) देखो सिखाना।
सिखा–(हिं०स्त्री०) देखो शिखा, चुटिया, चुंदी। सिखाना–(हिं०क्रि०) उपदेश देना, शिक्षा देना, पढाना, बतलाना, धमकाना, दण्ड देना; सिखाना पढाना–चतुर बनाने की शिक्षा देना। सिखपन–(हिं० पुं०) उपदेश, शिक्षा, सीखने का काम। सिखावन–(हिं० पुं०) उपदेश, शिक्षा। सिखवना–(हिं०क्रि०) देखो सिखलाना।
सिखिर–(हिं०पुं०) देखो शिखर।
सिखी–(हिं०पुं०) देखो शिखी।
सिगरा–(हिं०वि०) सम्पूर्ण, समग्र, सब।
सिगोन–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की रेतीली मिट्टी।
सिङ्घण–(सं० नपुं०) नाक का मल, नकटी।
सिचय–(सं०पुं०) वस्त्र, कपडा, जीर्ण वस्त्र
सिचान–(हिं०पुं०) श्येन, बाज पक्षी।
सिच्छक–देखो शिक्षक।
सिच्छा–(हिं०स्त्री०) देखो शिक्षा।
सिजल–(हिं०पुं०)जो देखने में सुन्दर हो
सिजादर–(हिं०पुं०) नाव आदि में पाल चढाने का रस्सा।
सिझना–(हिं०क्रि०) आंच पर पकना, सिझाया जाना। सिझाना–(हिं०क्रि०) आंच पर पकाकर गलाना, रींधना, उबालना, तपस्या करना।
सिञ्चन–(सं०नपुं०) सींचना, पानी से से तर करना। सिञ्चित–(सं०वि०) सींचा हुआ, जल से तर किया हुआ।
सिञ्जितिका–(सं० स्त्री०) सेब नामक प्रसिद्ध फल।
सिटकिनी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पतली छड़ जो किवाड़ बन्द करने के लिये लगाई जाती है, चटखनी।
सिटपिटाना–(हिं० क्रि०) दब जाना, मन्द पड़ना, स्तब्ध होना सकुचाना।
सिट्टी–(हिं०स्त्री०) बहुत बढ़ बढ़ कर बोलना; सिट्टी भूलना–सिट पिटा जाना।
सिठना–(हिं० पुं०) सिठनी–(हिं० स्त्री०) विवाह के समय गाई जाने वाली गाली।
सिठाई–(हिं०स्त्री०) फीकापन, नीरसता, मन्दता।
सिड़–(हिं० स्त्री०) उन्माद, पागलपन, सनक। सिड़पन–(हिं०पुं०) पागलपन, सिड़बिल्ला–(हिं०पुं०) पागल, झक्की। सिड़ी–(हिं० वि०) पागल, सनकी, उन्मत्त।
सित–(सं०नपुं०) चांदी, मूली, चन्दन, शुक्राचार्य, शुक्ल पक्ष, शक्कर, चीनी, तिल, भोजपत्र, (वि०) श्वेत, उजला, चमकीला, स्वच्छ; सितकण्ठ–(सं०पुं०) महादेव, (वि०) सफ़ेद गरदन वाला।
सितकमल–(सं०नपुं०) सफ़ेद कमल।
सितकर–(सं०पुं०) भीमसेनी कपूर।
सितकर्णी–(सं०स्त्री०) अड़ूसा। सितकाच–(सं०पुं०) बिल्लौर। सितकुञ्जर–(सं० पुं०) इन्द्र का हाथी, ऐरावत। सितक्षार–(सं०पुं०) सफ़ेद सोहागा। सितगुञ्जा–(सं० स्त्री०) सफ़ेद घुमची। सितचन्दन–(सं० नपुं०) श्रीखण्ड, चन्दन। सितछत्रा–(सं०स्त्री०) सौंफ। सितज–(सं० पुं०) मधु से निकाली हुई शक्कर।
सितजा–(सं०स्त्री०) मधु खण्ड। सितजीरक–(सं० नपुं०) सफ़ेद जीरा।
सितता–(सं०स्त्री०)सफ़ेदी। सिततुरग–(सं०पुं०) अर्जुन। सितदीधिति–(सं० पुं०) चन्द्रमा। सितध्वज–(सं०पुं०) हंस। सितधातु–(सं० पु०) खड़िया मिट्टी। सित पक्ष–(सं०पु०) शुक्ल पक्ष, हंस। सितपुष्प–(सं० नपु०) सिरिस का वृक्ष। सितपुष्पा–(सं०स्त्री०) चमेली का फूल। सितप्रभ–(सं०पुं०) चांदी। सितभानु–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
सितमणि–(सं०पुं०) स्फटिक, बिल्लौर;
सितमाष–(सं०पुं०) बोड़ा, लोबिया;
सितमेघ–(सं० पुं०) सफ़ेद बादल।
सितरञ्ज–(सं०नपुं०) कर्पूर, कपूर।
सितरश्मि, सितरुचि–(सं०पुं०) चन्द्रमा;
सितराग–(सं०पुं०) चांदी। सितरुचि–(सं०पुं०) चन्द्रमा। सितली–(सं०स्त्री०) शिथिलता के समय होने वाला पसीना। सितवराह–(सं०पुं०) श्वेत वराह। सितवराहपत्नी–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती; सितवाजी–(सं०पुं०) अर्जुन; सितवारण–(सं० पुं०) सफ़ेद हाथी; सितशिव–(सं० नपुं०) सेंधा नमक, शमी का वृक्ष। सितसागर–(सं० पुं०) क्षीर सागर। सितसिन्धु–(सं०स्त्री०) क्षीर समुद्र, गंगा; सितांशु–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कर्पूर, कपूर; सिता–(सं० स्त्री०) शर्करा, चीनी, चांदी, गोरोचन, मल्लिका पुष्प, सफ़ेद भटकटैया, सफ़ेद दूब, शुक्ल पक्ष, चन्द्रिका, चांदनी; सिताखण्ड–(सं०पुं०) मिश्री। सिताङ्ग–(सं०पुं०) बेले का पौधा, एक प्रकार की मछली; सिताब्ज–(सं० पुं०) सफ़ेद कमल; सितानन–(सं० पुं०) गरुड़, बिल्व वृक्ष (वि०) सफ़ेद मुंह वाला।
सितापाङ्ग–(सं०पुं०) मयूर, मोर।
सिताभ–(सं०पुं०) कर्पूर कपूर; सिताभ्र–(सं०पुं०) सफ़ेद मेघ, सफ़ेद बादल; सिताम्बर–(सं० पुं०) वह जो सफ़ेद वस्त्र पहरता हो; सिताम्भोज–(सं० नपुं०) सफ़ेद कमल।
सितार–(हिं० पुं०) एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जो इसमें लगे हुए तारों को उँगली से झनकारने से बजता है।
सितालर्क–(सं०पुं०) सफ़ेद मदार।
सितालिका–(सं०स्त्री०) ताल की सीप, सुतुही।
सितावर–(सं०पुं०) सुसना का साग।
सिताश्व–(सं० पुं०) चन्द्रमा, (वि०) सफ़ेद घोड़े वाला।
सितासित–(सं०पुं०) सफ़ेद और काला, बलदेव।
सिताह्वय–(सं०पुं०) काले रंग का धान
सिति–(सं०वि०) शुक्ल, उजला, कृष्ण, काला; सितिकण्ठ–(सं० पुं०) नीलकण्ठ, शिव, महादेव।
सितुई, सितुही–(हिं०स्त्री०) सुतुही।
सितेक्षु–(सं०पु०) सफ़ेद ईख।
सितेतर–(सं० वि०) काला या नीला;
सितेतरगति–(सं० पुं०) अग्नि, आग।
सितोत्पल–(सं०नपुं०) सफ़ेद कमल।
सितोदर–(सं०पुं०) कुबेर (वि०) सफ़ेद पेट वाला; सितोद्भव–(सं० नपुं०) सफ़ेद चन्दन; सितोपल–(सं० नपुं०) स्फटिक, बिल्लौर; सितोपला–(सं०स्त्री०) शर्करा, चीनी, मिश्री।
सिथिल–(हिं०वि०) देखो शिथिल।
सिदामा–(हिं०पुं०) देखो श्रीदामा।
सिदिका–(अ०वि०) सत्य, सच्चा।
सिद्ध–(सं०पुं०) एक प्रकार के देवता, जो भुवर्लोक में रहते हैं, अर्हत्, जिसने योग या तपोबल से सिद्धि पाई हो, महात्मा, ज्ञानी, ज्योतिष में एक योग का नाम, व्यवहार काला धतूरा, सफ़ेद सरसों, (नपुं० सेंधा नमक, (वि०) प्रसिद्ध, सम्पन्न जिसका साधन हो गया हो, प्राप्त सफल, अनुकूल किया हुआ, लक्ष पर पहुँचाया हुआ, निर्णीत, प्रस्तुत जिसका तप या योग साधन पूरा हो चुका हो, मोक्ष का अधिकारी जिसका अर्थ पूरा हो, जो ठीक घ

हो, जो प्रमाण द्वारा निश्चित हो, शोधा हुआ. आंच पर पकाया हुआ,
सिद्धक–(सं०वि०) सिद्ध करने वाला, काम पूरा करने वाला; सिद्ध-कज्जल–(सं०वि०) वह काजल जिसके लगाने से लोग वशीभूत होते हैं
सिद्धकारी–(सं०वि०) धर्मशास्त्र के अनुसार आचरण करने वाला; सिद्धकार्य–(सं०वि०) जो कार्य सिद्ध किया गया हो; सिद्धकाम–(सं०वि०) कृतार्थ, सफल; सिद्धक्षेत्र–(सं०नपुं०) सिद्धाश्रम; सिद्धगंगा–(सं० स्त्री०) मन्दाकिनी, आकाश गङ्गा; सिद्ध-गति–(सं०स्त्री०) जिन कर्मों के करने से मनुष्य सिद्ध होता हो; सिद्ध-गुटिका–(सं० स्त्री०) वह मन्त्रसिद्ध गोली जिसको मुख में रख लेने से अद्भुत शक्ति आ जाती है;
सिद्धगुरु–(सं०पुं०) वह गुरु जिसको मन्त्र सिद्धि हुई हो; सिद्धजन–(सं०पुं०) सिद्ध मनुष्य; सिद्धजल–(सं०नपुं०) पकाया हुआ जल।
सिद्धता–(सं० स्त्री०) सिद्धि, पूर्णता, प्रमाणिकता।
सिद्धतापस–(सं० पुं०) वह तपस्वी जिसने सिद्धि प्राप्त किया हो।
सिद्धत्व–(सं०नपुं०) देखो सिद्धता।
सिद्धदर्शन–(सं० नपुं०) सिद्ध पुरुष का साक्षात्कार। सिद्धदेव–(सं०पु०) महादेव। सिद्धद्रव्य–(सं०नपुं०) पका हुआ द्रव्य। सिद्धधातु–(सं०पुं०)पारद, पारा। सिद्धधाम–(सं० नपुं०) सिद्ध स्थान। सिद्धनाथ–(सं०पुं०)महादेव।
सिद्धपक्ष–(सं०पुं०) प्रमाणित बात।
सिद्धपथ–(सं०पुं०) आकाश, प्रसिद्ध मार्ग। सिद्धपात्र–(सं०पुं०) स्कन्द के एक अनुचर का नाम। सिद्धपीठ–(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर प्रयाण करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।
सिद्धपुष्प–(सं०पुं०) कनेर का फूल।
सिद्धप्रयोजन–(सं०पुं०)सफ़ेद सरसों।
सिद्धभूमि–(सं० स्त्री०) सिद्ध स्थान।
सिद्धमत–(सं०नपुं०) सिद्धों का मत।
सिद्धमन्त्र–(सं०पुं०)वह मन्त्र जो सिद्ध हो चुका हो। सिद्धमातृका–(सं०स्त्री०) देवी का नाम सिद्धमानस–(सं० वि०) जिसकी अभिलाषा सिद्ध हुई हो।
सिद्धयोगी–(सं०स्त्री०) शिव, महादेव।
सिद्धरस–(सं० पुं०) पारद, पारा।
सिद्धरसायन–(सं० पुं०) दीर्घ जीवन और प्रसूत शक्ति देनेवाली औषधि।
सिद्धलक्ष–(सं० त्रि०) जिसका लक्ष्य कभी न चूकता हो। सिद्धविद्या–(सं०स्त्री०) दश महाविद्या। सिद्ध-संकल्प–(सं०वि०) जिसकी सब कामनायें पूर्ण हों। सिद्धसंबंध–(सं० वि०) किसकी कामना सिद्ध हुई हों।
सिद्धसरित्–(सं०स्त्री०) आकाश गंगा।
सिद्धसाधन–(सं० स्त्री०) प्रमाणित बात को फिर से प्रमाणित करना। सिद्ध-सिन्धु–(सं०पुं०) गङ्गा। सिद्धसेवित–(सं०पुं०) बटुक भैरव।
सिद्धहस्त–(सं०वि०) जिसका हाथ कोई काम करने में मँजा हो।
सिद्धा–(सं०स्त्री०) आठ योगिनियों में से एक, देवांगना, आर्या छन्दका एक भेद, सिद्ध की स्त्री।
सिद्धाई–(हि०स्त्री०)सिद्ध होनेकी अवस्था
सिद्धाञ्जन–(सं०नपु०)वह अंजन जिसके आंख में लगाने से भूमि के नीचे की वस्तु देख पड़ती है।
सिद्धादेश–(सं०पुं०) सफल वाक्य।
सिद्धान्त–(सं०पुं०)वह बात जो विद्वानों से अथवा किसी सम्प्रदाय से सत्य मानी गई हो, वह मत जो भली भांति सोच विचार कर स्थिर किया गया हो, मुख्य अभिप्राय. तत्व की बात, निर्णीत विषय, किसी शास्त्र पर लिखी हुई कोई विशेष पुस्तक, वह मत जो पूर्वपक्ष के बाद स्थिर किया गया हो। सिद्धान्तज्ञ–(सं०पुं०) तत्वज्ञ, सिद्धान्त को जानने वाला।
सिद्धान्ति–(सं०वि०) प्रमाणित, निर्णय किया हुआ। सिद्धान्ती–(हिं० पुं०) तार्किक, मीमांसक, शास्त्र के तत्व को जानने वाला।
सिद्धान्न–(सं०नपुं०)पका हुआ अन्न, भात।
सिद्धाम्बा–(सं०स्त्री०) दुर्गा।
सिद्धार्थ–(सं० वि०) जिसकी सब कामनायें पूर्ण हो गई हों, गौतम बुद्ध, राजा दशरथ के एक मन्त्री का नाम, जैनी के चौबीसवें अर्हत्।
सिद्धासन–(सं० नपुं०) हठ योग के चौरासी आसनों में से एक प्रधान आसन।
सिद्धि–(सं० स्त्री०) निबटारा, योग विशेष, दुर्गा, खड़ाऊँ, भाग्योदय, मोक्ष, मुक्ति, सफलता, धन, प्रवीणता, कौशल, प्रभाव, भांग, पूर्णता, निश्चय होना, प्रमाणित होना, कौशल, निर्णय, नाटक का वह लक्षण जिसमें अभिमत की सिद्धिके लिये अनेक वस्तुओं का कथन होता है, दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम, गणेश की दो स्त्रियों में से एक, छप्पय का एक भेद, संगीत में एक श्रुति, राजा जनक की पुत्रवधू, तपोयोग से पूरे होनेका अलौकिक फल; योग की आठ सिद्धियाँ-अणिमा, महिमा लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व और कामवसायित्व है। सिद्धिप्रद–(सं० वि०) सिद्धि देने वाला। सिद्धि-बीज–(सं०नपुं०) सिद्धि का कारण।
सिद्धिभूमि–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहां पर तप आदि की शीघ्र सिद्धि होती है। सिद्धद, सिद्धिदाता–(सं० त्रि०) सिद्धि देनेवाला। सिद्धिमार्ग–(सं०पुं०) मोक्षपथ। सिद्धियोग–(सं० पुं०) ज्योतिषमें एक प्रकारका शुभ योग। सिद्धिवाद–(सं० पुं०) ज्ञान विषयक वार्ता। सिद्धिविनायक–(सं० पुं०) सिद्धिदाता गणेशजी। सिद्धिसाधक–(सं०वि०) मनोरथ सिद्ध करने वाला।
सिद्धिस्थान–(सं०नपुं०) वह स्थान जहाँ पर पुरश्चरण करने से शीघ्र सिद्धि होती है। सिद्धेश्वर–(सं०पु०) बड़ा मित्र, महायोगी, शिव, महादेव।
सिद्धेश्वरी–(सं०स्त्री०) तान्त्रिकों की एक देवी का नाम। सिद्धोदक–(सं० नपुं०) पकाया हुआ जल, काँजी।
सिद्धौषध–(सं०नपुं०)वह औषधि जिसके सेवन करनेसे रोग निवृत्त होता है।
सिधरी–(हि०स्त्री०)एक प्रकारकी मछली
सिधाई–(हिं०स्त्री०) सरलता, सीधापन।
सिधाना, सिधारना–(हि० क्रि०) जाना, प्रस्थान करना, स्वर्गवास होना, मरना।
सिधि–(हिं०स्त्री०) देखो सिद्धि।
सिध्म–(सं०वि०) श्वेत कुष्ठ वाला।
सिनक–(हिं०स्त्री०) नाककी मैल, नेटा।
सिनकना–(हिं०क्रि०)नाक का मल वेग से हवा निकाल कर बाहर फेंकना।
सिनि–(हि०पुं०)एक यादव जो सात्यकी का पिता था, क्षत्रियोंकी एक शाखा।
सिनी–(हिं०पुं०) देखो शिनि।
सिनीत–(हिं० स्त्री०) सात रस्सियों को बटकर बना हुआ चिपटा रस्सा।
सिनीवाली–(सं० स्त्री०) अङ्गिरा की पुत्री का नाम, दुर्गा।
सिनो–(हि०पुं०)खेतकी पहिली जोताई।
सिन्दुवार–(सं०पुं०)निर्गुण्डी का वृक्ष।
सिन्दूर–(सं० नपुं०) सीसा नामक धातु से बनाया हुआ एक प्रकार का लाल चूर्ण जिसको सोहागिन स्त्रियाँ मस्तकमें लगाती हैं। सिन्दूरतिलका–(सं०स्त्री०) सधवा स्त्री। सिन्दूरदान–(हिं०पुं०) सिन्दूर रखनेकी एक प्रकार की लकड़ी की डिबिया। सिन्दूरी–(सं०स्त्री०) लाल वस्त्र, कबीला।
सिन्ध–(सं०पुं०)भारत के पश्चिम प्रान्त का एक प्रदेश, पंजाब की एक प्रधान नदी, एक रागिणी का नाम।
सिन्धवी–(हिं०स्त्री०) एक रागिणी।
सिन्धी–(हिं०स्त्री०)सिन्ध देश की भाषा
सिन्धु–(सं० पुं०) समुद्र, सागर, वरुण देवता, चार की संख्या, सात की संख्या, सिन्ध प्रदेश, इस देश का निवासी, निर्गुण्डी का पौधा, ओठों का गीलापन, सम्पूर्ण जाति का एक राग। सिन्धुकन्या–(सं०स्त्री०)लक्ष्मी।
सिन्धुकफ–(सं०पुं०)समुद्रफेन। सिन्धु-कर–(सं० नपुं०) सोहागा। सिन्धुज–सेंधा नमक, पारा, सोहागा, (वि०) समुद्र में से उत्पन्न। सिन्धुजन्म–सेंधा नमक। सिन्धुजा–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी, जिस सीप में से मोती निकलता है। सिन्धुजात–(सं०पुं०)मुक्ता, मोती।
सिन्धुड़ा–(हिं० स्त्री०) एक रागिणी।
सिन्धुनन्दन–(सं०पुं०) चन्द्रमा। सिन्धु-नाथ, सिन्धुपति–(सं०पुं०) समुद्र।
सिन्धुपत्नी–(सं० स्त्री०) नदी।
सिन्धुपिब–(सं०पुं०) अगस्त्य ऋषि।
सिन्धुपुत्र–(सं० पुं०) चन्द्रमा। सिन्धु-पुरुष–(सं० पुं०) शंख, कदम्ब, मौलसिरी। सिन्धुमथ्य–(सं०पुं०) अमृत।
सिन्धुमाता–(सं०स्त्री०) सरस्वती।
सिन्धुर–(सं० पुं०) हाथी, आठ की संख्या। सिन्धुरद्वेषी–(सं० पुं०) सिंह, शेर। सिन्धुरमणि–(सं०पु०)गजमुक्ता।
सिन्धुरवदन–(सं० पुं०) गणेश जी।
सिन्धुवार–(सं० पुं०) निर्गुण्डी।
सिन्धुवासिनी–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी।
सिन्धुविष–(सं० पुं०) हलाहल विष।
सिन्धुशयन–(सं०पुं०) विष्णु। सिन्धु-सुत–(सं०पुं०) जलन्धर नामक राक्षस जिसको शिव ने मारा था। सिन्धु-सुता–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी।
सिन्धूद्भव–(सं०नपुं०) सेंधा नमक।
सिन्धूरा–(हिं० पुं०) सम्पूर्ण जातिका एक राग।
सिन्धोरा–(हिं० पु०) सिन्दूर रखने का लकड़ी का पात्र।
सिन्नी–(हिं०स्त्री०)मिठाई जो किसी पीर को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बांटी जाती है।
सिपाका भाथी–(हिं०स्त्री०) लोहारों या सोनारोंकी हाथसे चलानेकी भाथी।
सिपुर्द–(हिं०पुं०) देखो सपुर्द।
सिप्पा–(हिं०पुं०) लक्ष्यवेध, युक्ति, ढंग, प्रारम्भिक कार्य, प्रभाव, धाक; सिप्पा जमाना–किसी कार्य को पूरा करने के लिये उपाय लगाना।
सिप्रा–(सं० स्त्री०) उज्जयनी की एक प्रसिद्ध नदी।
सिबिका–(हिं०स्त्री०) देखो शिबिका।
सिमंत–(हिं०पुं०) देखो सीमान्त।
सिमई–(हिं० स्त्री०) देखो सिंवई।
सिमट–(हि० स्त्री०) सिमटने की क्रिया या भाव। सिमटना–(हिं० क्रि०) सिकुड़ना, संकुचित होना, सिट पिटाना, बटुरना बटोरा जाना, निबटना, व्यवस्थित होना।
सिमटी–(हिं०स्त्री०)एक प्रकारका कपड़ा जिसकी बुनावट खेसके के समान होती है। सिमरगोला–(हिं०पुं०) एक प्रकार की वर्तुल रचना।
सिमरना–(हिं० क्रि०) देखो सुमिरना।
सिमरिख–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया।
सिमल–(हिं०पुं०) जुए में पड़ी हुई खूंटी।
सिमाना–(हिं०पुं०) सिवाना, हद।
सिमिटना–(हिं०क्रि०) देखो सिमटना।
सिमृती–(हिं० स्त्री०) देखो स्मृति।
सिमेटना–(हिं०क्रि०) लपेटना;
सिम्ब–(हिं०पुं०) देखो शिम्ब।
सिम्बा–(सं०स्त्री०) सोंठ।
सिम्बी–(सं०स्त्री०) फली, छीमी, बनमूंग।
सिम्भाल–(सं०नपुं०)सिन्दुवार, निर्गुण्डी।
सिय–(हिं०स्त्री०) सीता. जानकी।

सियना–(हिं॰क्रि॰) उपजाना, रचना।
सियरा–(हिं॰वि॰) शीतल,ठंढा, कच्चा।
सियराई–(हिं॰स्त्री॰) शीतलता, ठंढापन; सियराना–(हिं॰क्रि॰) ठंढा करना, शीतल होना।
सिया–(हिं॰स्त्री॰) जानकी, सीता।
सियाना–(हिं॰ क्रि॰) देखो सिलवाना।
सियापा–(हिं॰पुं॰) मृत व्यक्ति के शोक में कुछ काल तक बहुत सी स्त्रियों का प्रतिदिन इकट्ठा होकर रोने की चाल।
सियार–(हिं॰ पुं॰) शृगाल, गीदड़।
सियार लाठी–(हिं॰पुं॰) अमलतास।
सियारा–(हिं॰पुं॰) वह फवड़ा जिससे जुती हुई भूमि बराबर की जाती है।
सियाल–(हिं॰ पुं॰) देखो सियार, शृगाल, गीदड़।
सियाला–(हिं॰पुं॰) शीत काल, जाड़े का ऋतु।
सियाली–हिं॰ स्त्री॰) जाड़े के ऋतु की उपज।
सियाबड़ी–(हिं॰स्त्री॰) वह काली हांडी जो चिड़ियों को डराने के लिये खेत रक्खी जाती है।
सियाह–(हिं॰वि॰) काला।
सिर–(हिं॰पुं॰) शिर, कपाल, खोपड़ी, सिरा, चोटी, ऊपरी छोर; सिर आंखों पर होना–माननीय होना; सिर आंखों पर बैठना–अति सत्कार किया जाना; सिर पर आना–भूत प्रेत का प्रभाव होना; सिर उठाना–उपद्रव मचाना, सम्मान पूर्वक खड़े होना; सिर ऊंचा करना–अभिमान के साथ लोगों के बीच में खड़े होना; सिर खाली करना–व्यर्थ की बकवाद करना; सिर खाना–बकवाद से व्यग्र करना; सिर खपाना–अधिक सोच विचार करना; सिर चकराना–सिर में चक्कर जान पड़ना; सिर चढाना–आदर दिखलाना, बढावा देना; सिर घूमना–मस्तक में पीड़ा होना; सिर झुकाना–लज्जा से गरदन नीची करना, प्रणाम करना; सिर देना–जान देना; सिर धरना–स्वीकार करना सिर धुनना–पछतावा करना; सिर नीचा करना–लज्जा वश सिर झुकाना; सिर पटकना–अति परिश्रम करना, दुःखी होना; सिर पर पांव रखना–जल्दी से भाग जाना; सिर पर पड़ना–अधिकार से होना; सिर पर खून सवार होना–हत्या करने पर उतारू होना; सिर पर होना–पास पास पहुँच जाना; सिर फिरना–सिर चकराना; सिर मारना–सोचते सोचते व्यग्र होना; सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना–किसी कार्य के आरंभ होते ही विघ्न पड़ना; सिर से पैर तक–आद्योपान्त, पूर्ण रूप से; सिर से पैर तक आग लगना–अति क्रुद्ध होना; सिर से खेल जाना–प्राण देदेना; सर पर सींघ निकलना–कोई अनहोनी बात होना; सिर होना–पीछा न छोड़ना।
सिरई–(हिं॰ स्त्री॰) चारपाई में सिरहोने की पट्टी।
सिरकटा–(हिं॰वि॰) जिसका सिर कट गया हो, दूसरे को हानि पहुंचाने वाला।
सिरकी–(हिं॰ स्त्री॰) सरकंडा, सरई, सरहरी, सरई की तीलियों की बनी हुई टट्टी जो भीत या गाड़ियों पर धूप और पानी से बचने के लिये डाल जाती हैं।
सिरखप–(हिं॰ वि॰) परिश्रमी, सिर खपाने वाला।
सिरखपी–(हिं॰स्त्री॰) परिश्रम, व्यग्रता,
सिरखिली–(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार की चिड़िया।
सिरगा–(हिं॰स्त्री॰) घोड़े की एक जाति।
सिरगिरी–(हिं॰ स्त्री॰) चिड़ियोंके सिर पर की कलंगी।
सिरचन्द–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का अर्धचन्द्राकार गहना जो हाथी के मस्तक पर पहराया जाता है।
सिरजक–(हिं॰ पु॰) सृष्टिकर्ता, रचना करने वाला।
सिरजनहार–(हिं॰ पुं॰) सृष्टिकर्ता, परमेश्वर।
सिरजना–(हिं॰ क्रि॰) सृष्टि करना, निर्माण करना, संचय करना, बनाना
सिरजित–(हिं॰वि॰) निर्मित, रचा हुआ।
सिरताज–(हिं॰ पुं॰) सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु, मुकुट, शिरोमणि सरदार।
सिरतान–(हिं॰पुं॰) कृषक,असामी।
सिरत्राण–(हिं॰ पुं॰)देखो शिरस्त्राण।
सिरदार–(हिं॰पुं॰) देखो सरदार।
सिरदुआली–(हिं॰स्त्री॰) घोड़े की लगाम में लगी हुई डोरी या चमड़े का तस्मा।
सिरनेत–(हिं॰पुं॰) पगड़ी, पटका, चीरा, क्षत्रियों की एक शाखा।
सिरपाव–(हिं॰ पुं॰) देखो सिरोपाव।
सिरफूल–(हिं॰ पु॰) स्त्रियों का एक आभूषण जिसको वे सिर पर पहरती हैं।
सिरफेंटा, सिरबंद–(हिं॰ पुं॰) पगड़ी, मुरेठा।
सिरबंदी–(हिं॰स्त्री॰) मस्तक पर पहरने की स्त्रियों का एक आभूषण, एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।
सिरमगजनी–(हिं॰पुं॰) माथापिच्ची।
सिरनि–(हिं॰पुं॰) देखो शिरोमणि।
सिरमौर–(हिं॰ पुं॰) शिरोमणि, सिर पर का मुकुट।
सिररुह–(हिं॰पु॰) देखो शिरोरुह।
सिरवा–(हिं॰पुं॰) ओसने में हवा करने का कपड़ा।
सिरवार–(हिं॰पुं॰) भूस्वामी का वह भृत्य जो उसके खेती का प्रबन्ध करता है।
सिरस–(हिं॰पुं॰) शीशम की तरह का एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष।
सिरसी–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का तीतर।
सिरहाना–(हिं॰ पुं॰) चारपाई में सिर की ओर का भाग।
सिरा–(हिं॰ स्त्री॰) रक्तवाहिनी नाड़ी, शिरा; सिंचाई की नाली, पानी की पतली धारा, कलश, गगरा; (हिं॰स्त्री॰) लंबाई का अन्त, छोर, टोका, अन्तिम भाग, आरंभ का भाग, अग्र भाग; सिरे का–अत्युत्तम।
सिराजी–(हिं॰पुं॰) शीराज का घोड़ा या कबूतर।
सिराना–(हिं॰क्रि॰) शीतल होना, ठंढा होना, उत्साह हीन होना, समाप्त होना, दूर होना, मिटना, अवकाश मिलना, समाप्त होना, शीतल करना।
सिरामोक्ष–(सं॰पुं॰)दूषित रक्त निकालने के लिये फस्त खुलवाना।
सिराला–(सं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का पौधा, कमरख।
सिराली–(हिं॰ स्त्री॰) मोर के सिर पर की कलँगी।
सिरावन–(हिं॰पुं॰) खेत चौरस करने का हेंगा।
सिरावना–(हिं॰क्रि॰) देखो सिराना।
सिरावृत्त–(सं॰नपुं॰) सीसक, सीसा।
सिराहर्ष–(सं॰ पुं॰) आंख के डोरों की लाली।
सिरियारा–(हिं॰स्त्री॰) सुसना का साग।
सिरिस–(हिं॰ पुं॰) देखो सिरस।
सिरी–(हिं॰स्त्री॰) श्री, लक्ष्मी, शोभा, रीली, माथे पर का एक आभूषण।
सिरी पञ्चमी–(हिं॰स्त्री॰) श्रीपंचमी, वसन्तपंचमी।
सिरोना–(हिं॰पुं॰) घड़ा रखने का रस्सी का बना हुआ भेंड़रा, इंडुरी, बिड़वा।
सिरोपाल–(हिं॰ पुं॰) सिरसे पैर तक का पहरावा जो राज राजसभा में सम्मान के रूप में दिया जाता है।
सिरोमनि–(हिं॰पुं॰) देखो शिरोमणि।
सिरोरुह–(हिं॰पुं॰) देखो शिरोरुह।
सिरोही–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार की काली चिड़िया, राजपूताना का एक देशी राज्य।
सिका–(हिं॰पु॰) देखो सिरका।
सिल–(हिं॰स्त्री॰) शिला, पत्थर, चट्टान, पत्थर की पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसा जाता है, पत्थर की चिकनी की हुई चौकौर पटिया; वलूत की जाति का एक वृक्ष।
सिलक–(हिं॰ स्त्री॰) लड़ी, हार, पंक्ति, धागा।
सिलकी–(हिं॰पुं॰) बेल।
सिलखड़ी–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का चिकना कोमल पत्थर जिसके पात्र बनाये जाते हैं।
सिलगना–(हिं॰ क्रि॰) देखो सुलगना।
सिलप–(हिं॰पुं॰)देखो शिल्प।
सिलपट–(हिं॰ वि॰) चौरस, बराबर, घिसा हुआ, नष्ट, चौपट, बिना एँड़ी की जूती।
सिलपोहनी–(हिं॰स्त्री॰) विवाह की एक रीति।
सिलफोड़ा–(हिं॰पुं॰) पत्थरचूर।
सिलमाकुर–(हिं॰पुं॰) पाल बनाने वाला।
सिलवट–(हिं॰ स्त्री॰) लकीर।
सिलवाना–(हिं॰क्रि॰) सिलने का काम दूसरे से कराना।
सिलहट–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का अगहनिया धान।
सिलहटिया–(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार की नाव।
सिलहार, सिलहारा–(हिं॰ पुं॰) खेत में गिरे हुए अन्न के दानों को बीनने वाला।
सिलहिला–(हिं॰ वि॰) फिसलने योग्य।
सिलही–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार की चिड़िया।
सिला–(हिं॰स्त्री॰) शिला, खेत में गिरे हुए अन्न के दानों को बटोरने की क्रिया, पछोड़ते फटकने के लिये रक्खा हुआ अन्न का ढेर, (अ॰ पुं॰) बदला।
सिलाई–(हिं॰स्त्री॰) सीने का काम या ढंग, टाँका, सीवन, सीने का शुल्क।
सिलाजीत–(हिं॰पुं॰) शिलाजीत, पत्थर की चट्टानों में निकलने वाला एक प्रकार का लसदार पसेव।
सिलाना–(हिं॰ क्रि॰) सिलने का काम दूसरे से कराना।
सिलाबाक–(हिं॰पुं॰) पत्थरफूल।
सिलारस–(हिं॰ पुं॰) सिल्हक नामक वृक्ष का गोंद जो बहुत सुगन्धित होता है।
सिलावट–(हिं॰पुं॰) पत्थर गढ़ने वाला, संगतराश।
सिलासार–(हिं॰पुं॰) लोहा।
सिलाहर–खेत में से अन्न के दाने बीन कर निर्वाह करने वाला।
सिलाही–(अ॰पुं॰) सैनिक।
सिलिया–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का पत्थर जो घर बनाने के काम में आता है।
सिलिप–(हिं॰ पुं॰) देखो शिल्प।
सिलीमुख–(हिं॰ पुं॰) देखो शिलीमुख।
सिलेट–(हिं॰ स्त्री॰) काले पत्थर की पतली पट्टी जिसपर लड़के लिखते हैं।
सिलोच्च–(हिं॰पुं॰) एक प्राचीन पर्वत का नाम।
सिलौआ–(हिं॰ पुं॰) सन के मोटे रेशे जिनसे टोकरियाँ बनाई जाती हैं।
सिलौट, सिलौटा–(हिं॰ पुं॰) पत्थर का चिकना टुकड़ा, सिल और बट्टा;
सिलौटी–(हिं॰ स्त्री॰) भाँग मसाला आदि पीसने की छोटी सिल।
सिल्प–(हिं॰पुं॰) देखो शिल्प।

सिल्लकी–(सं०स्त्री०) सलई का पेड़ ।
सिल्ला–(हिं०पुं०) अन्न के दाने जो खेत कट जाने पर पड़े रह जाते हैं, खलिहान में गिरे हुए अन्न ।
सिल्ली–(हिं० स्त्री०) पत्थर की छोटी पतली पटिया, हथियार पैना करने का पत्थर का छोटा टुकड़ा, फलक, पटरी ।
सिह्ल, सिह्लक–(सं० पुं०) सिलारस नामक गन्ध द्रव्य ।
सिव–(हिं०पुं०) देखो शिव ।
सिवई–(हिं०स्त्री०) गुंधे हुए मैदे के सूत के समान सूखे हुए महीन लच्छे जो दूध में पका कर खाये जाते हैं ।
सिवक–(सं०पुं०) सीने वाला दरजी ।
सिवलिंगी–(हिं०स्त्री०) देखो शिवलिङ्गी
सिवा–(हिं०स्त्री०) देखो शिवा ।
सिवाई–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की मिट्टी
सिवान–(हिं० पुं०) सरहद, गाँव के अन्तर्गत भूमि, गाँव के छोर पर की भूमि ।
सिवार, सिवाल–(हिं०पुं०) शैवाल,जल में फैलने वाली एक घास ।
सिवाली–(हिं० पुं०) एक प्रकार का हलके रंग का पन्ना ।
सिवि, सिविर–(हिं०पुं०) देखो शिबि, शिबिर ।
सिष्ट–(हिं०स्त्री०) बंसी की डोरी ।
सिस–देखो शिशु ।
सिसकना–(हिं०क्रि०) रोक रोक कर लंबी सांस लेते हुए भीतर ही भीतर रोना, उलटी सांस लेना,जी धड़कना, व्याकुल होना; सिसकारना–(हिं०क्रि०) मुख से सीटी के समान शब्द निकालना, लहकाना, सी सी शब्द करना, अत्यन्त पीड़ा या आनन्द के कारण मुख से साँस खींचना; सिसकारी–(हिं० स्त्री०) सीटी के समान शब्द, सिसकारने का शब्द; जीभ दबाते हुए मुख से साँस खींचने का शब्द ।
सिसकी–(हिं० स्त्री०) भीतर ही भीतर रोने में रुक रुक कर निकलती हुई साँस का शब्द, सिसकारी ।
सिसिर–(हिं०पुं०) देखो शिशिर ।
सिसु–(हिं०पुं०) देखो शिशु; बालक ।
सिसुमार–(हिं० पुं०) सुइंस ।
सिसोदिया–(हिं० पु०) राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा ।
सिस्टि, सिस्न–देखो सृष्टि, शिश्न ।
सिहपर्णी–(सं० नपुं०) बासक वृक्ष, अड़ूसा ।
सिहरना–(हिं०क्रि०) ठंढक से काँपना, भयभीत होना, रोंगटे खड़े होना ।
सिहरा–(हि०पुं०) देखो सेहरा ।
सिहराना–(हिं० क्रि०) ठंढ से कँपाना, डरना ।
सिहरी–(हिं० स्त्री०) ठंढ से कारण झँपकपी, भय, जुड़ी ।
सिहान–(हिं०क्रि०) ईर्ष्या की दृष्टि से देखना, डाह करना, ललचना ।
सिहाना–(हिं०क्रि०) ईर्षा करना ।
सिहारना–(हिं०क्रि०) ढूंढ़ना, अन्वेषण करना ।
सिहिकना–(हिं०क्रि०) सूखना ।
सिहिटि–देखो सृष्टि ।
सिहुण्ड–(सं० पुं०) सेंहुड़ का पेड़ ।
सिहोड़–(हिं०पुं०) सेंहुड़, थूहर ।
सींक–(हिं०पुं०) मूंज, सरपत आदि की पतली तीली जिसमें फल लगता है, किसी तृण का महीन काण्ड, तिनका, नाक का एक गहना, लौंग, कील, शंकु, तीली, खड़ी महीन धारी ।
सींकर–(हिं०नपुं०) सींक में लगा हुआ फूल या धूआ ।
सींका–(हिं०पुं०) पेड़ पौधों की महीन टहनी ।
सींकिया–(हिं० पुं०) एक प्रकार का महीन कपड़ा जिसमें सींक के समान महीन धारियां रहती हैं ।
सींग–(हि०पु०) शृङ्ग, खुर वाले कुछ पशुओं के सिरके दोनों ओर शाखा के समान निकले हुए नुकीले अवयव, विषाण, पुरुष की इन्द्रिय; किसी के सिरपर सींग जमना–कोई विशिष्टता होना;सींग समाना–ठिकाना मिलना ।
सींगड़ा–(हिं० पुं०) बारूद रखने का सींगका चोंगा, मुख से बजाने का एक प्रकार का बाजा ।
सींगना–(हिं०क्रि०) चोरी किये हुए पशु सींघसे पहचानना ।
सींगरी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का फल जिसकी तरकारी बनती है, मोगरे की फली ।
सींगी–(हि०स्त्री०) हरिन के सींग का बना हुआ बाजा जो मुँह से बजाया जाता है, एक प्रकार की मछली, वह पोली सींग जिसके द्वारा दूषित रक्तको चूसकर निकाला जाता है ।
सींच–(हिं० स्त्री०) सींचने की क्रिया, सिंचाई; सींचना–(हिं० क्रि०) पानी भरना, पानी देना, पाटना, पानी छिड़क कर तर करना, भिगोना ।
सींवं–(हिं०पुं०) सीमा, सरहद ।
सी–(हिं०वि०स्त्री०)समान,तुल्य, सीत्कार, बीज की बोआई; अपनी सी–जहां तक स्वयं कर सके ।
सीउ–(हिं०पुं०) शीत, ठंढक ।
सीकचा–(हिं०पुं०) छड़ ।
सीकर–(सं०पुं०) पानी का बूंद, छींटा, पसीना, कण ।
सीकल–(हिं०पुं०) डाल का पका हुआ आम, शस्त्रों का मुरचा छुड़ाने की क्रिया ।
सीकस, सीकसी–(हिं०पुं०) ऊसर ।
सीका–(हि०पुं०) सिरपर पहरने का एक प्रकार का आभूषण;देखो छीका ।
सीकाकाई–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके फलियाँ रीठे की भाँति काम में आती हैं ।
सीकी–(हिं०स्त्री०) छोटा सिकहर (पुं०) छिद्र छेद ।
सीकुर–(हिं०पुं०) जव, गेहूँ आदि के बालों पर के निकले हुए बालों के कड़े सूत ।
सीख–(हि०स्त्री०) शिक्षा, सिखलाने की बात, परामर्श ।
सीखन–(हिं० स्त्री०) शिक्षा, सीखना; सीखना–(हिं० क्रि०) ज्ञान प्राप्त करना, किसी से कोई बात जानना, किसी से किसी कार्य करने की विधि जानना ।
सीखा–(हिं०स्त्री०) शिखा, चोटी ।
सीगारा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा ।
सीजना–(हिं०क्रि०) देखो सीझना ।
सीझ–(हिं०स्त्री०) सीझने की क्रिया या भाव; सीझना–(हिं० क्रि०) आंच या गरमी से पकाना, आँच या गरमी पाकर मृदु होना, कष्ट सहना, दुःख झेलना, सूखे चमड़े का मसाला लगाने पर मृदु होना, मिलने योग्य होना, ऋण का निबटारा होना ।
सीट–(हिं०स्त्री०) अभिमान करने के शब्द, डींग; सीटना–(हिं० क्रि०) डींग मारना; सीटपटांग–(हिं०स्त्री०) बढ़बढ़ कर बोली जाने वाली बातें, घमंड भरी हुई बात ।
सीटी–(हिं०स्त्री०) वह महीन शब्द जो ओठों को गोल सिकोड़ कर नीचे को वेग से वायु निकालने पर उत्पन्न होता है, बाजे आदि का इसी प्रकार का शब्द, वह बाजा या खिलौना जिसको फूंकने से इसी प्रकार का शब्द निकलता है ।
सीठना–(हिं०पुं०) अश्लील, गीत जो स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं; सीठनी–(हिं०स्त्री०) देखो सीठना ।
सीठा–(हिं० वि०) नीरस, फीका । सीठापन–(हिं०पुं०) फीकापन ।
सीठी–(हिं०स्त्री०) किसी फल, फूल, पत्ते आदि का रस निकाल लेने पर बचा हुआ अंश, खूद निःसार पदार्थ ।
सीड़–(हिं०स्त्री०) सील, तरी, नमी ।
सीढ़ी–(हिं०स्त्री०) निसेनी, ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिये दो बांसों का बना हुआ लंबा ढाँचा जिसमें पैर रखने के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर बेड़े बल में डंडे लगे होते हैं, आगे बढ़ने की परंपरा, घुड़िया के आकार की लकड़ी ।
सीत–(हिं० पुं०) देखो शीत, ठंढक ।
सीतल–(हिं०वि०) देखो शीतल, ठंढा; सीतलचीनी–(हिं० स्त्री०) देखो शीतल चीनी ; सीतलपाटी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी चिकनी चटाई, एक प्रकार का धारी दार कपड़ा; सीतल बुकनी–(हिं०स्त्री०) सत्तू ।
सीतला–(हिं०स्त्री०) देखो शीतला ।
सीता–(सं० स्त्री०) मिथिला के राजा जनक की कन्या जो श्रीरामचन्द्र को व्याही थी, उमा, लक्ष्मी, मदिरा, वैदेही, जानकी, भूमि में हल की फाल से पड़ी हुई रेखा, एक वर्णवृत्तकानाम; सीताद्रव्य–(सं० नपुं०) खेती के उपादान; सीताधर–(सं० पुं०) बलरामजी; सीताध्यक्ष–(सं० पुं०) वह राजकर्मचारी जो राजा की निजकी भूमि में खेतीबारी का काम देखता है ; सीतानाथ, सीतापति–(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र; सीताफल–(सं०नपुं०) शरीफ़ा, कुम्हड़ा;सीतारमण–(सं०पुं०)श्रीरामचन्द्र; सीताहार–(सं०नपुं०)एक प्रकारका पौधा ।
सीतिनक–(सं०पुं०) मटर, दाल ।
सीत्कार–(सं०पुं०) अत्यन्त पीड़ा या आनन्द के समय मुख से साँस खींचने का शब्द, सीसी शब्द, सिसकारी ।
सीथ–(हिं०पुं०) पके हुए अन्नका दाना, भात का दाना ।
सीद–(सं०नपुं०) व्याज पर रुपया देना
सीदना–(हिं०क्रि०)दुःखपाना, कष्टदेना
सीद्य–(सं०नपुं०) आलस्य, सुस्ती ।
सीध–(हिं०स्त्री०) ठीक सामने की स्थिति, सन्मख विस्तार या लम्बाई, लक्ष्य ।
सीधा–(हिं०वि०) जो टेढ़ा न हो,बिना इधर उधर मुड़े किसी ओर जाने वाला, वह जो ठीक लक्ष्य की ओर हो, जो कपटी न हो, शान्त, शिष्ट, सहज, दहिना, (वि०क्रि०) सम्मुख, ठीक सामने की ओर; (पुं०) बिना पका हुआ अन्न; सीधी तरह–शिष्टता से; सीधा सादा–सज्जन, भोला भाला; किसी को सीधा करना–दण्ड देकर ठीक करना ; सीधापन–(हिं० पुं०) भोलापन ।
सीधु–(सं०पुं०) गुड़की बनी हुई मदिरा, सीधुगन्ध, बकुल, मौलसिरी; सीधुपुष्पी–(सं०स्त्री०) धवका वृक्ष; सीधुरस–(सं०पुं०) आमका रस; सीधुवृक्ष–(सं० पुं०) थूहर ।
सीधे–(हिं०क्रि०वि०) सम्मुख,बराबर, सामने की ओर, बिना मुड़े हुए, शिष्टता से ।
सीना–(हिं०क्रि०) कपड़े चमड़े आदि के टुकड़ों को डोरे से जोड़ना, टांका मारना, एक प्रकारका रेशमका कीड़ा
सीनातोड़–(हिं० पुं०) मल्ल युद्ध की एक युक्ति ।
सीनाबांह–(हिं० पुं०) एक प्रकार का व्यायाम ।
सीप–(हिं० पुं०) शंख घोंघे आदि के जाति का एक जलजन्तु जो ताल, झील आदि में पाया जाता है सीपी, सुतुही ।
सीपति–(हिं०पुं०) देखो श्रीपति,विष्णु ।
सीपर–(हिं०पुं०) ढाल ।
सीपसुत–(हिं०पुं०) मुक्ता, मोती ।
सीपज–(हिं० पुं०) मोती ।
सीपर–(हिं० स्त्री०) ढाल ।

सीपी–(हिं०स्त्री०) देखो सीप ।
सीबी–(हिं० स्त्री०) सी सी का शब्द, सिसकारी ।
सीझा–(हिं०पुं०) दहेज ।
सीमन्त–(सं० पुं०) स्त्रियों की माँग, हिन्दुओं में एक संस्कार जो गर्भ स्थिति के चौथे, छठें या आठवें महीने में किया जाता है; वैद्यक के अनुसार अस्थियों का सन्धि स्थान ;
सीमन्तक–(सं०नपुं०) सिन्दूर,एक प्रकार का मानिक रत्न; सीमन्तिनी–(सं० स्त्री०) नारी, स्त्री; सीमन्तोन्नयन–(सं०नपुं०) हिन्दुओंके दस संस्कारोंमें से तीसरा संस्कार ।
सीमलिंग–(सं०नपुं०) सीमाका चिह्न ।
सीमा–(सं०स्त्री०) किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तारका अन्तिम स्थान,स्थिति, क्षेत्र,तीर, अण्डकोष; सीमा बांधना–स्थिर करना; सीमा के बाहर जाना–अधिक होना, अतिक्रमण, करना ;
सीमाकृषाण–(सं०त्रि०) किसान, खेत जोतने वाला; सीमागिरि–(सं०पुं०) वह पर्वत जो सीमा प्रांत पर हो ;
सीमातिक्रम–(सं० पुं०) सीवान को डांकना; सीमाधिप–(सं०पुं०) सीमा का अध्यक्ष; सीमान्त–(सं० पुं०) गांव की सीमा, सिमान्त; सीमातिबंध–(सं०पुं०) नियम या मर्यादा; सीमान्तर–(सं०नपुं०) दूसरी सीमा; सीमापाल–(सं०पुं०) सीमा रक्षक; सीमाबद्ध–(सं०वि०) रेखा से घिरा हुआ, सीमा के भीतर किया हुआ । सीमालिंग–(सं०नपुं०) सीमास्थल, (सरदह) घर का चिह्न ।
सीमाविवाद–(सं०पुं०) सिवान का झगड़ा; सीमावृक्ष–(सं०पुं०) सिवान पर का वृक्ष; सीमासन्धि–(सं० स्त्री०) दो सिवान का किसी स्थान पर मिलना; सीमासेतु–(सं०पुं०) हदबंदी ।
सीमिक–(सं०पुं०) एक प्रकारका छोटा कीड़ा, दीमक ।
सीमोलंघन–(सं०पुं०) सीमाको लांघना, मर्यादा के विरुद्ध काम करना ।
सीय–(हिं०स्त्री०) सीता, जानकी ।
सीयन–(हिं०स्त्री०) देखो सीवन ।
सीर–(सं० पुं०) सूर्य, अर्क वृक्ष, हल, जोतने वाला बैल, (हिं०स्त्री०) वह भूमि जिसको भूस्वामी स्वयं बहुत दिनों से स्वयं जोतता चला आता हो, वह भूमि जिसकी उपज कई अंशधारियोंमें बाँटी जाती हो, साझ ।
सीरक–(सं० पुं०) शिशुमार, सूस, सूर्य, हल ।
सीरख–(हिं०पुं०) देखो शोर्ष ।
सीरधर–(सं०पुं०) बलराम; हल धारण करने वाला; सीरध्वज–(सं० पुं०) चन्द्र वंशीय राजा जनक ।
सीरन–(हिं०पुं०) बच्चों का पहरावा ।
सीरनी–(हिं०स्त्री०) मिठाई ।
सीरपति–(सं० पुं०) कृषक; सीरपाणि–(सं०पुं०) हलधर, बलदेव ।
सीरवाह,सीरवाहक–(सं०पुं०) हरवाहा, किसान ।
सीरष–(हिं०पुं०) देखो शीर्ष ।
सीरा–(हिं०पुं०) पकाकर मधुके सामान गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस, चाशनी, हलवा, चारपाई का सिरहाना (वि०) देखो शीत, ठंढा ।
सीरोसा–(हिं०पुं०) एक प्रकार की मिठाई ।
सील–(हिं० स्त्री०) आर्द्रता, सीड़, तरी, (हिं० पुं०) देखो शील ।
सीला–(हिं०पुं०) अन्न के दाने जो खेत काट लेने पर भूमि में पड़े रह जाते हैं, सिल्ला, खेत में गिरे हुए दानों को चुनकर निर्वाह करने वाले (वि०) तर, गीला ।
सीवड़ी–(हिं० पुं०) गाँव की सीमा, सिवान ।
सीवन–(सं० नपुं०) सीने का काम, सिलाई, सन्धि, दरार, वह रेखा जो अण्डकोश से बीचो बीच से मलद्वार तक जाती है ।
सीवना–(हिं०पुं०) देखो सिवाना,सीना ।
सीस–(हिं० पुं०) मस्तक, माथा, सिर, कन्धा ।
सीसक–(सं०पुं०) सीसा नामक धातु ।
सीसताज–(हिं०पुं०) आखेट करने वाले पशुओं के सिर पर पहराने की टोपी;
सीसत्रान(हिं०पुं०) शिरस्त्राण, टोप ।
सीसपत्र, सीसपत्रक–(सं० नपुं०) सीसा धातु ।
सीसफूल–(हिं०पुं०) फूल के आकार का एक आभूषण जो सिरपर पहना जाता है ।
सीसम–(हिं० पुं०) देखो शीशम ।
सीसल–(हिं० पुं०) केवड़े के आकार का एक वृक्ष ।
सीसा–(हिं० पुं०) एक मूल धातु जो बहुत भारी होता है, जिसका रंग नीलापन लिये काला होता है ।
सीसी–(हिं०स्त्री०) सीत्कार, सिसकारी, शीत के कष्ट के कारण निकला हुआ शब्द ।
सीसौदिया–(हिं०पुं०) देखो सीसोदिया
सीह–(हिं० स्त्री०) गन्ध, साही नामक जन्तु; सीहगोस–एक प्रकार का जन्तु जिसके कान काले होते हैं ।
सुं–(हिं०प्रत्य०) देखो सों ।
सुंखड़–(हिं० पुं०) साधुओं का एक सम्प्रदाय ।
सुंघनी–(हिं० स्त्री०) तमाखू के पत्ते की महीन बुकनी जो सूँघी जाती है, नस्य, हुलास ।
सुंघाना–(हिं० क्रि०) सूँघने की क्रिया कराना ।
सुंड भुसुंड–(हिं० पुं०) देखो शुण्ड-भुशुण्डि, हाथी ।
सुंडा–(हिं० पुं०) शुण्ड, सूँड़ ।
सुंडाल–(हिं० पुं०) हाथी ।
सुंद, सुंदर–देखो सुन्द, सुन्दर ।
सुंधावट–(हिं०स्त्री०) सोंधापन, सोंधी महँक ।
सुंबा–(हिं०पुं०) इस्पंज, दागी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये उस पर डाला हुआ गीला कपड़ा, पुचारा, तोप की नली स्वच्छ करने का गज, लोहार का गरम लोहे में छेद करने का अस्त्र ।
सुंबी, सुंभी–(हिं०स्त्री०) छेनी जिससे लोहे में छेद किया जाता है ।
सुंसारी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का लंबा कीड़ा जो अन्न के दाने खा जाता है ।
सु–(सं० उप०) वह उपसर्ग जिसको संज्ञा में जोड़ने से उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर आदि अर्थ को सूचित करता है (वि०) अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, (सर्व०) वह, सो ।
सुअटा–(हिं०पुं०) शुक सुग्गा, ।
सुअन–(हिं०पुं०) पुत्र, बेटा; देखो सुमन; सुअनजर्द–(हिं० पुं०) देखो सोनजर्द ; सुअना–(हिं० क्रि०) उत्पन्न होना ; सुगना, (पुं०) सुग्गा, तोता ।
सुअर–(हिं०पुं०) शूकर, सुअर ।
सुअवसर–(सं०पुं०) अच्छा अवसर । (सं०पुं०) अच्छा अवसर ।
सुआ–(हिं०पुं०) देखो सूआ ।
सुआउ–(हिं०वि०) दीर्घायु, दीर्घजीवी ।
सुआद–(हिं० पुं०) स्मरण, ।
सुआना–(हिं०क्रि०) उत्पन्न करना ।
सुआमी–(हिं०पुं०) देखो स्वामी ।
सुआर–(हिं०पुं०) सूपकार, रसोइयादार
सुआरव–(सं० वि०) मीठे स्वर से बोलने वाला ।
सुआसन–(सं० पुं०) बैठने का सुन्दर आसन ।
सुआसिनी–(हिं० स्त्री०) देखो सुवासिनी
सुआहित–(हिं०पुं०) तलवार चलाने के बत्तीस हाथों में से एक हाथ ।
सुई–(हिं०स्त्री०) देखो सूई; सुकंठ–देखो सुकण्ठ । सुक–(हिं०पुं०) शुक, सुग्गा, कीर, सिरिस का वृक्ष ।
सुकचरण–(हिं०पुं०) संकोच, लज्जा ।
सुकटि–(सं०वि०) सुन्दर कमर वाली ।
सुगटु–(सं०वि०) बहुत कड़ुवा ।
सुकचाना–(हिं० क्रि०) देखो सकुचाना ।
सुकड़ना–(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना ।
सुकण्टका–(सं० स्त्री०) घीकुआर, पिण्डखजूर ।
सुकण्ठ–(सं०वि०) जिसका कण्ठ सुन्दर हो, सुरिला, सुग्रीव का एक नाम ।
सुकण्ठी–(सं०स्त्री०) गन्धर्व की स्त्री ।
सुकथा–(सं०स्त्री०) उत्तम कथा,सुवाक्य ।
सुकनासा–(हिं० विं०) जिसकी नाक सुग्गे के ठोर के समान हो ।
सुकन्द–(सं० पुं०) कसेरू ।
सुकन्यक–(सं० वि०) जिसको सुन्दर कन्या हो ।
सुकर–(सं० विं०) सुसाध्य, सहज ।
सुकरता–(सं०स्त्री०) सौकर्य, सुन्दरता ।
सुकन्या–(सं०स्त्री०) सुन्दर कन्या ।
सुकपिच्छक–(हिं० पुं०) गन्धक ।
सुकपोल–(सं०वि०)जिसकेगालसुन्दरहों ।
सुकमल–(सं० नपुं०) सुन्दर कमल ।
सुकर–(सं० विं०) सुसाध्य, जो सहज में किया जा सके । सुकरता–(सं०स्त्री०) सौकर्य, सुन्दरता ।
सुकरा–(सं०स्त्री०) अच्छी गाय ।
सुकराना–(हिं०पुं०) देखो शुकराना ।
सुकरित–(हिं०वि०) शुभ, अच्छा ।
सुकरोहार–(हिं० पुं०) गले में पहरने का एक प्रकार का हार ।
सुकर्ण–(सं०वि०) जिसके सुन्दर कान हो
सुकर्म–(सं० पुं०) सत्कर्म, अच्छा काम, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक; सुकर्मी–(सं० वि०) अच्छा काम करने वाला, सदाचारी, पुण्यवान् ।
सुकल–(हिं० पुं०) देखो शुक्ल, एक प्रकार का आम जो सावन में पकता
सुकल्प–(सं०वि०) अति निपुण; सुकल्पित–(सं० वि०) अच्छी तरह से बनाया हुआ ।
सुकवाना–(हिं०क्रि०) अचंभे में आ जान
सुकवि–(सं० पुं०) अच्छा कवि ।
सुकष्ट–(सं० पुं०) बड़ी भारी आपत्ति ।
सुकाज–(हिं० पुं०) उत्तम कार्य, अच्छा काम ।
सुकातिज–(हिं० पुं०) मुक्ता, मोती ।
सुकाण्डी–(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा ।
सुकान्त–(हिं० क्रि०) देखो सुखान्त ।
सुकान्ति–(सं०वि०) सुन्दर कान्तिवाला
सुकार–(सं० विं०) सहज में वश मे आने वाला ।
सुकाल–(सं० पुं०) सुसमय, उत्तम समय वह समय जो अन्न आदि की उपज के लिये अच्छा हो ।
सुकाशन–(सं० वि०) बहुत चमकीला
सुकावना–(हिं० क्रि०) देखो सुखाला ।
सुकिज–(हिं० पुं०) सुकृत, शुभ कार्य
सुकीया–(हिं० स्त्री०) देखो स्वकीया
सुकी–(हिं०स्त्री०) सुग्गी, सारिका ।
सुकीउ–(हिं०स्त्री०) स्वकीया नायिका
सुकीर्ति–(सं०स्त्री०) अच्छी स्तुति (वि० अच्छे यश वाला ।
सुकुआर–(हिं०वि०) देखो सुकुमार ।
सुकुचा–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके स्तन सुन्दर हों ।
सुकुड़ना–(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना
सुकुन्तल–(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
सुकुति–(हिं०स्त्री०) शुक्ति, सीप ।
सुकुमार–(सं०वि०) जिसके अंग कोम हों, (पुं०) उत्तम बालक, बनचम्प (नपुं०) तमाखू का पत्ता, वह काव जो कोमल अक्षरों या शब्दों से युव हो; सुकुमारता–(सं० स्त्री०) कोमर
सुकुमारा–(सं० स्त्री०) चमेली, जूहै मालती ।
सुकुमारिका–(सं०स्त्री०) केले का वृक्ष

सुकुमारी–(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी (वि०) कोमलाङ्गी, कोमल अंग वाली।
सुकुरना–(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सुकुल–(सं०नपुं०) उत्तम वंश या कुल (वि०) जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो (हिं०पुं०) देखो शुक्ल; सुकुलता–(सं०स्त्री०) कुलीनता।
सुकुंवार–(हिं०वि०) देखो सुकुमार।
सुकुसुमा–(हिं०स्त्री०) स्कन्द की एक मातृका का नाम।
सुकृत–(सं० नपुं०) सत्कार्य, पुण्य, दान, पुरस्कार, दया (वि०) धार्मिक, पुण्यवान्
सुकृतात्मा–(सं०वि०) पुण्यात्मा, धर्मात्मा
सुकृति–(सं० स्त्री०) शुभ कार्य, अच्छा काम।
सुकृती–(सं० वि०) धार्मिक, पुण्यवान्, सत्कर्म करने वाला, भाग्यवान्, बुद्धिमान्।
सुकृत्य–(सं० नपुं०) धर्म कार्य, पुण्य।
सुकृष्ट–(सं० वि०) अच्छी तरह जोता हुआ।
सुकृष्ण–(सं० वि०) बहुत काला।
सुकेत–(सं० पुं०) आदित्य, सूर्य।
सुकेश–(सं० वि०) जिसके बाल सुंदर हों
सुकेशा–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके बाल सुन्दर हों।
सुकेशि–(सं० पुं०) सुमाली और माली नामक राक्षसों के पिता का नाम।
सुकेशी–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम (वि०) वह स्त्री जिसके बाल सुन्दर हों।
सुकेसर–(सं० पुं०) सिंह, शेर।
सुकोमल–(सं० वि०) बहुत कोमल।
सुक्कान–(हिं० पुं०) तलवार।
सुक्कानी–(हिं० पुं०) मल्लाह।
सुक्ख–(हिं० पुं०) देखो सुख।
सुक्ता–(सं० स्त्री०) सुक्ति, इमली।
सुक्ति–(सं० स्त्री०) शुक्ति, सिप्पी।
सुक्र–(हिं०पुं०) देखो शुक्र; सुक्रित–(हिं०वि०) देखो सुकृत; सुक्षम–(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म।
सुक्षेत्र–(सं० पुं०) दसवें मनु के पुत्र का नाम।
सुखंडी–(हिं० स्त्री०) बच्चों का एक रोग जिसमें उनका संपूर्ण शरीर सूख जाता है (वि०) बहुत दुबला पतला।
सुखंद–(हिं० वि०) आनन्द देने वाला, सुखदायी।
सुख–(सं० नपुं०) आत्मा या मनोवृत्ति का वह गुण जिसकी सबको अभिलाषा रहती है, आरोग्य, स्वर्ग, जल, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छब्बीस छक्षर होते हैं (क्रि०वि०) आनन्द पूर्वक; सुख की नींद सोना–निश्चन्त होकर रहना; सुख आसन–(हिं० पुं०) पालकी, डोली; सुखकन्द–(सं०वि०) सुख देने वाला; सुखकन्दर–(सं० त्रि०) सुख का घर; सुखकर–(सं०वि०) सुख देनेवाला; सुखकरण–(सं० त्रि०) आनन्द उत्पन्न करनेवाला; सुखकारक–(सं० त्रि०) सुखदायक, सुख देनेवाला; सुखकारी–(सं० वि०) सुख देने वाला; सुखकृत–(सं० वि०) सहज में किया जाने वाला; सुखक्रिया–(सं० स्त्री०) सहज काम; सुखग–(सं० वि०) सुख से जाने वाला; सुखगन्ध–(सं० वि०) सुन्दर गन्धवाला; सुखगम–(सं०त्रि०) सहज; सुखग्राह्य–(सं० त्रि०) जो सहज में लिया जा सके; सुखचर–(सं० वि०) सुख से चलने वाला; सुखजनक–(सं० वि०) आनन्ददायक; सुखजननी–(सं० स्त्री०) सुख देने वाली; सुखजात–(सं०वि०) प्रसन्न; सुखज्ञ–(सं० त्रि०) सुख को जानने वाला; सुखढरन–(हिं०वि०) सुखदायक; सुखद–(सं० नपुं०) विष्णु का आसन, ध्रुव ताल; (वि०) सुख देने वाला; सुखदा–(सं० स्त्री०) सुख देने वाली, स्वर्ग की वेश्या, एक प्रकार का छन्द; सुखदाता–(सं०वि०) आनन्द देने वाला; सुखदान–(सं०त्रि०) सुख देने वाला; सुखदानी–(सं०वि०) स्त्री०) आनन्द देने वाली, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पचीस अक्षर होते हैं; सुखदायक–(सं०वि०) आनन्द देने वाला; सुखदायी–(सं०त्रि०) सुखद, सुख देने वाला; सुखदास–(हिं०पु०) एक प्रकार का अगहनियाँ धान; सुखदेनी–(सं० वि०) सुखदायिनी; सुखदैनी–(सं०वि०) आनन्द देनेवाली; सुखधाम–(सं०पुं०) आनन्द का घर, स्वर्ग। सुखपाल–(सं०पुं०) एक प्रकार की पालकी। सुखपूर्वक–(सं०क्रि०वि०) आनन्द से, सुख से। सुखप्रद–(सं० वि०) सुख देने वाला। सुखप्रबोधक–(सं०वि०) सुख से जगाने वाला। सुखप्रश्न–(सं०पुं०) आनन्द की बात पूछना। सुखप्रसव–(सं०पुं०) बिना अधिक कष्ट के बच्चा जनना। सुखप्रसवा–(सं० स्त्री०) सुख से सन्तान जनने वाली स्त्री। सुखप्रसुप्त–(सं० वि०) आनन्द से सोया हुआ। सुखबद्ध–(सं० वि०) आनन्द दायक। सुखबोध–सुख से जागरण। सुखभागी–(सं०वि०) सुखभोगी। सुखभेद्य–(सं०वि०) शीघ्र टूटने वाला। सुखभोग–(सं० पुं०) सुख का भोग या लाभ। सुखभोजन–(सं० नपुं०) सुख से भोजन करना। सुखमा–(हिं०स्त्री०) शोभा, छबि, एक प्रकार का वृत्त जिसको वामा भी कहते हैं। सुखरात्रि–(सं० स्त्री०) कार्तिक मास की अमावस्या।
सुखलाना–(हिं० क्रि०) देखो सुखाना।
सुखवंत–(हिं० वि०) प्रसन्न, आनन्ददायक।
सुखवन–(हिं०पुं०) वह न्यूनता या कमी जो किसी वस्तु के सूखने पर होती है, बालू जिसको लिखे हुए गीले अक्षर पर डालकर स्याही सुखाते हैं।
सुखवह–(सं० वि०) आनन्द देने वाला।
सुखवादी–(सं०पुं०) भोग विलास को सर्वस्व मानने वाला, विलासी।
सुखवार–(हिं०वि०) प्रसन्न, सुखी।
सुखवास–(सं० पु०) आनन्द का स्थान।
सुखशायी–(हिं०वि०) सुख से सोने वाला। सुखसञ्चार–(हिं०वि०) सुख से घूमने वाला। सुखसाध्य–(सं०वि०) जिसके साधन करने में कोई कष्ट न हो, सहज। सुखसार–(हिं०पु०) मोक्ष
सुखसुप्त–(सं०वि०) सुख से सोया हुआ।
सुखसुप्ति–(सं० स्त्री०) सुख की नींद।
सुखसेव्य–(सं०वि०) सुख से सेवन करने योग्य। सुखस्पर्श–(सं० पुं०) सुखजनक स्पर्श। सुखागत–(सं०नपु०) सुख से आगमन। सुखादित–(सं०वि०) सुख से खाया हुआ। सुखाधार–(सं०पुं०) स्वर्ग।
सुखाना–(हिं०क्रि०) अग्नि या धूप से किसी वस्तु का गीलापन दूर करना, गीलापन दूर करने की कोई क्रिया करना।
सुखानी–(हिं०पुं०) मल्लाह, माँझी।
सुखान्त–(सं०पुं०) वह जिसका अन्त सुखमय हो, वह नाटक जिसके अन्त में संयोग, अभीष्ट सिद्धि, राज्य प्राप्ति आदि का वर्णन हो।
सुखारा, सुखारी–(हिं० वि०) सुख देने वाला, सुखी, प्रसन्न।
सुखारोहण–(सं०नपुं०) सोपान, सीढ़ी।
सुखार्थी–(हिं०वि०) सुख चाहने वाला।
सुखाराध्य–(सं०वि०) सुख से आराधनीय
सुखाला–(हिं०वि०) आनन्ददायक।
सुखावती–(सं०स्त्री०) बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग।
सुखावबोध–(सं० पुं०) सुख ज्ञान।
सुखावह–(सं० वि०) सुख देने वाला।
सुखाश–(सं० पुं०) वरुण, तरबूज, वह जो खाने में अच्छा जान पड़े।
सुखाशा–(सं० स्त्री०) सुख की आशा।
सुखासन–(सं० नपुं०) वह आसन जिस पर बैठने से सुख मिलता हो, पालकी, डोली; सुखासीन–(सं०वि०) सुख से बैठा हुआ।
सुखिआ–(हिं०वि०) देखो सुखिया।
सुखित–(हिं० वि०) देखो सुखी; शुष्क, सूखा हुआ।
सुखिता–(सं०स्त्री०) सुखी होने का भाव आनन्द।
सुखिया–(हिं०वि०) सुखी, प्रसन्न।
सुखिर–(हिं० पुं०) साँप के रहने की बिल, बांबी।
सुखी–(हिं०वि०) आनन्दित।
सुखीन–(हिं० पुं०) एक प्रकार की चिड़िया।
सुखेन–(हिं०पुं० देखो सुषेण।
सुखेलक–(सं०पुं०) एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते हैं, इसको प्रभद्रिका या प्रभद्रक भी कहते हैं।
सुखेष्ट–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
सुखोत्सव–(सं०पुं०) आनन्द का उत्सव।
सुखोद्य–(सं०वि०) जिसका उच्चारण करने में कोई कठिनाई न हो।
सुखना–(हिं०वि०) आनन्द देने वाला।
सुख्याति–(सं०स्त्री०) प्रशंसा, यश, प्रसिद्धि
सुगणक–(सं०पुं०) अच्छी गणना करनेवाला
सुगत–(सं० वि०) अच्छी तरह जाने वाला (पु०) बुद्ध भगवान्।
सुगति–(सं०स्त्री०) उत्तम गति, मोक्ष। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात मात्रायें और अन्त में एक गुरु वर्ण होता है।
सुगना–(हिं०पुं०) देखो सहिजन।
सुगन्ध–(सं०नपुं०) छोटा जीरा, नीलोत्पल, चन्दन, गन्धराज, गठिवन, (पुं०) चना, गन्धक, धूना, कुन्दरू, वासमती चावल, केवड़ा, कसेरु, सुगन्ध, (वि०) सुवासित।
सुगन्धगन्धा–(सं० स्त्री०) दारुहल्दी; सुगन्धपत्रा–(सं०स्त्री०) सतावर, विधारा; सुगन्धपत्री–(सं०स्त्री०) जावित्री; सुगन्धवाला–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सुगन्धित वनौषधि।
सुगन्धमय–(सं० वि०) सुगन्ध पूर्ण; सुगन्धमुख्या–(सं० स्त्री०) कस्तूरी; सुगन्धमूल–(सं०नपुं०) हरफारेवड़ी; सुगन्धमूला–(सं०स्त्री०) स्थल कमल, हरफारेवड़ी; सुगन्धमूषिका–(सं०स्त्री०) छछूंदर; सुगन्धरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का फूल; सुगन्धवल्कल–(सं० नपुं०) दालचीनी; सुगन्धशालि–(सं०पुं०) बासमती चावल।
सुगन्धा–(सं० स्त्री०) असबरग, कपूर कचरी, सोंठ, सलई, सौंफ़, सेवती, माधवी लता, बगुची।
सुगन्धि–(सं०पुं०) सुगन्ध, अच्छी महक, मोथा, कसेरू, धनिया, पिपलामूल, तुम्बुरू; सुगन्धिका–(सं० स्त्री०) मृगनाभि, कस्तूरी, केवड़ा; सुगंधित–(सं०वि०) सुगन्धमय।
सुगंधिमूल–(सं०नपुं०) खस।
सुगंधी–(हिं०स्त्री०) अच्छी महक।
सुगना–(हिं०पुं०) सुग्गा।
सुगम–(सं०वि०) सरलता, सहज, जिसमें कठिनता न हो; सुगमता–(सं० स्त्री०) सरलता; सुगम्य–(सं० वि०) सरलता से जानने योग्य।
सुगल–(हिं०पुं०) बालि का भाई सुग्रीव
सुगहन–(सं०वि०) अति घना, निबिड़।
सुगात्र–(सं०वि०) सुन्दर शरीर वाला।
सुगाना–(हिं०क्रि०) सन्देह करना।
सुगीति–(सं०स्त्री०) सुन्दर गान; सुगीतिका–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पचीस मात्रायें तथा आदि में लघु और अन्त में गुरु अक्षर होते हैं।
सुगुप्त–(सं०वि०) अच्छी तरह से रक्खा हुआ।
सुगुरु–(सं० वि०) जिसने अच्छे गुरु से

मन्त्र लिया हो।
सुगूढ–(सं०वि०) अच्छी तरह से गुप्त।
सुगृहीत–(सं० वि०) अच्छी तरह से ग्रहण किया हुआ।
सुगोप–(सं० वि०) अच्छी तरह रक्षा करने वाला।
सुग्गा–(हिं० पुं०) शुक, तोता; सुग्गा-पंखी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का अगहनियां धान।
सुग्रीव–(सं०पुं०) विष्णु का घोड़ा, शंख, इन्द्र, रामजी का सखा, बाली का छोटा भाई वानरपति, राजहंस, एक असुर का नाम, (वि०) सुन्दर गरदन वाला।
सुग्रीवा–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
सुघट–(सं०वि०)जो सहज में बन सकता हो, अच्छा बना हुआ, सुडौल,सुन्दर।
सुघटित–(सं० वि०) अच्छी तरह से बना हुआ।
सुघड़–(हिं०वि०) प्रवीण, निपुण, कुशल, सुंदर; सुघड़ई–(हिं०स्त्री०) निपुणता, सुडौलपन; सुघड़ता–(हिं०स्त्री०) सुंदरपन; सुघड़पन–(हिं० पुं०) कुशलता, दक्षता; सुघड़ाई, सुखड़ापा–(हिं०) सुंदरता, सुडौलपन, निपुणता, कुशलता
सुघर–(हिं०वि०) देखो सुघड़; सुघरता–(हिं० स्त्री०) सुघड़ होने का भाव; सुघरपन–(हिं०पुं०) कुशलता, दक्षता;
सुघराई–(हिं० स्त्री०) सुघड़ाई, सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी; सुघराई-कान्हड़ा–(हिं०पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग; सुघराई टोपी–(हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।
सुघरी–(हिं० स्त्री०) शुभ समय, अच्छा मूहूर्त, (वि०) सुदर, सुडौल।
सुघोर–(सं० वि०) अतिशय घोर, बहुत गाढ़ा।
सुघोष–(सं०पुं०)नकुल के शंख का नाम
सुचंग–(हिं०पुं०) घोड़ा।
सुचक्र–(सं० वि०) उत्तम चक्रयुक्त।
सुच–(हिं०वि०) देखो शुचि, शुद्धता।
सुचक्षु–(सं०पुं०) शिव, महादेव, पंडित, (नपुं०) सुंदर आंख, (वि०) सुंदर आंख वाला।
सुचतुर–(सं०वि०) अति चतुर।
सुचना–(हिं०क्रि०)संचय करना, इकट्ठा करना।
सुचरित–(सं० नपुं०) सच्चरित्र; सुचरित्र–(सं०नपुं०) सुचरित; सुचरित्रा–(सं०स्त्री०) पतिपरायणा स्त्री, सती।
सुचर्म–(सं०पुं०) भोजपत्र।
सुचा–(हिं० वि०) देखो शुचि, (स्त्री०) चेतना, ज्ञान; सुचाना–(हिं० क्रि०) किसी को सोचने समझने में प्रवृत्त करना, दिखलाना।
सुचार–(हिं०वि०) सुंदर, मनोहर, सुचाल
सुचारु–(सं०वि०) अति मनोहर, बहुत सुंदर, (पुं०) रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम,
सुचाल–(हिं० स्त्री०) अच्छी चाल, सदाचार; सुचाली–(हिं० वि०) अच्छी चालचलन का, जिसका आचरण सुंदर हो।
सुचि–(हिं०वि०) शुचि, (स्त्री०) सूई।
सुचित–(हिं०वि०)किसी कार्य से निवृत्त, निश्चित, सावधान, स्थिर, पवित्र, शुद्ध; सुचिताई–(हिं० स्त्री०) निश्चिन्तता एकाग्रता, स्थिरता; सुचिती–(हिं०वि०) स्थिरचित्त, जो दुविधा में न हो, निश्चिन्त।
सुचित्त–(सं० वि०) स्थिरचित्त, शान्त, जो किसी काम से निवृत्त हो गया हो
सुचित्र–(सं०नपुं०) सुन्दर चित्र।
सुचित्रक–(सं० पुं०) चितला साँप।
सुचित्रबीजा–(सं०स्त्री०) बायविडंग।
सुचित्रा–(सं०वि०)अच्छी तरह से सोचा विचारा हुआ।
सुचिमंत–(हिं० पुं०) सदाचारी, शुद्ध आचरण वाला।
सुचिन्तित–(सं०वि०) भलीभांति सोचा विचारा हुआ।
सुचिन्तितार्थ–(सं० वि०) जिसने अच्छी तरह से अर्थ समझ लिया हो।
सुचिर–(सं० वि०) बहुत दिनों तक रहने वाला।
सुची–(हिं०स्त्री०) देखो शुची।
सुचुटी–(सं० स्त्री०) चिमटा, संड़सी।
सुचेतन–(सं०वि०) अच्छी समज वाला।
सुचेलक–(सं०पुं०)सुंदर और महीन वस्त्र
सुच्छंद–(हिं०वि०) देखो स्वच्छन्द।
सुच्छम–(हिं०वि०) सूक्ष्म, थोड़ा।
सुजड़–(हिंपुं०) खडग, तलवार।
सुजड़ी–(हिं०स्त्री०) कटारी।
सुजन–(सं०पुं०) साधु, सज्जन, भद्रपुरुष, परिवार के लोग; सुजनता–(सं०स्त्री०) सौजन्य, भलमनसी।
सुजन्मा–(सं०वि०)अच्छे कुल में उत्पन्न।
सुजय–(सं०पुं०) उत्तम रूप से विजय;
सुजल–(सं० वि०) सुन्दर जलयुक्त।
सुजल्प–(सं०पुं०)उत्तम भाषण; सुजस–(हिं० पुं०) देखो सुयश।
सुजागर–(हिं० वि०) देखने में सुन्दर, सुशोभित, प्रकाशमान।
सुजात–(सं०वि०)उत्तम कुल में उत्पन्न, सुंदर, विवाहित स्त्री पुरुष से उत्पन्न (पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, सांड़।
सुजातरिपु–(सं०पुं०) धृतराष्ट्र।
सुजाति–(सं० स्त्री०) उत्तम जाति या (वि०) अच्छे कुल का।
सुजातिया–(हिं० वि०) अच्छे कुल का, अपनी जाति का।
सुजान–(हिं०वि०)चतुर, निपुण, सज्जन, प्रवीण, पंडित, (पुं०) पति या प्रेमी, परमात्मा, ईश्वर; सुजानता–(सं० स्त्री०) सुजान होने का भाव या धर्म।
सुजानी–(हिं०वि०) ज्ञानी, पण्डित।
सुजावा–(हिं०पु०) बैलगाड़ी में की वह लकड़ी जो पैजनी और फड़ में रहती है।
सुजिह्व–(सं०वि०) मधुरभाषी।
सुजीर्ण–(सं०वि०)अच्छी तरह पचा हुआ
सुजीवित(सं०नपुं०) सफल जन्म।
सुजोग–हिं०पुं०)सुअवसर, अच्छा अवसर
सुजोधन–(हिं०पुं०) देखो सुयोधन।
सुजोर–(हिं०वि०) दृढ।
सुज्ञ–(हिं०वि०) पण्डित।
सुज्ञान–(पुं० नसं०) उत्तम ज्ञान, अच्छी जानकारी।
सुझाना–(हिं०क्रि०) ऐसा उपाय करना जिसमें दूसरे को सूझे, दिखलाना।
सुटुकना–(हिं० क्रि०) सिकुड़ना, सुटका मारना, चाबुक लगाना।
सुठ–(हिं०वि०) देखो सुठि।
सुठहर–(हिं०पुं०) अच्छा स्थान।
सुठार–(हिं०वि०)सुडौल, सुंदर आकृतिका
सुठि, सुठोना–(हिं० वि०) सुंदर, बढ़िया (अव्य०) पूरा पूरा
सुड़सुड़ाना–(हिं० क्रि०) सुड़ सुड़ शब्द उत्पन्न करना।
सुडौल–(हिं०वि०) सुन्दर आकृति का।
सुढंग–(हिं० पुं०) अच्छी रीति या ढंग, (वि०) अच्छी चाल का, अच्छे रंग का।
सुढर–(हिं० वि०) प्रसन्न और दयालु, सुडौल, जिसकी कृपा हो।
सुढार–(हिं०वि०) सुढौल, सुन्दर।
सुतंत, सुतंत्र–(हिं०वि०) स्वतन्त्र।
सुत–(सं० पुं०) आत्मज, पुत्र, बेटा, (वि०) जात, उत्पन्न, पार्थिव। सुतकरी–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों की पहरने की जूती; सुतत्व–(सं० पु०) सुत का भाव या धर्म; सुतदा–(सं०वि०) पुत्र देने वाली; सुतनय–(सं०पुं०)अच्छा पुत्र,
सुतना–(हिं०पुं०) देखो सुथना।
सुतनु–(हिं० स्त्री०) सुंदर शरीर वाली स्त्री, कृशाङ्गी, उग्रसेन की कन्या का नाम।
सुतनुता–(सं०स्त्री०)शरीर की सुन्दरता।
सुतन्तु–(सं०पुं०) विष्णु, शिव, महादेव एक दानव का नाम।
सुतन्त्रि–(सं० पु०) बीन आदि तार के बाजे अच्छी तरह से बजाने वाला।
सुतप–(सं० पुं०) सूर्य, विष्णु।
सुतपस्वी–(सं० पु०) बड़ी तपस्या करने वाला।
सुतप्त–(सं० वि०) अत्यन्त गरम।
सुतर–(सं० वि०) सुख से पार किया जाने योग्य।
सुतरण–(सं० वि०) सुख से तैरने या पार करने योग्य।
सुतरां–(हिं० अव्य०) अतः निदान, अत्यन्त, और भी।
सुतरी–(हिं० स्त्री०) देखो सुतली।
सुतल–(सं० पुं०) पुराण के अनुसार छठां पाताल।
सुतली–(हिं०स्त्री०)डोरी, रस्सी, सुतरी।
सुतवाना–(हिं० क्रि०) देखो सुलवाना।
सुतहर–(हिं० पुं०) देखो सुतार।
सुतहा–(हिं० पुं०) सूत बेंचने वाला व्यापारी।
सुतहार–(हिं० पुं०) देखो सुतार।
सुतही–(हिं० स्त्री०) देखो सुतुही।
सुता–(सं०स्त्री०) कन्या, पुत्री, लड़की।
सुतात्मज–(सं० पु०) नीती, पोता।
सुतापति–(सं०पुं०) दामाद, जमाता।
सुतार–(सं० वि०) अत्यन्त उज्वल, उत्तम, अच्छा, (पुं०) साङ्ख्य दर्शन के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि।
सुतार–(हिं० पुं०) शिल्पकार, बढ़ई, सुविधा।
सुतारी–(हिं० स्त्री०) मोचियों का सूजा जिससे वे जूता सीते हैं, बढ़ई का काम (पु०) शिल्पकार।
सुतार्थी–(सं० वि०) पुत्र की कामना करने वाला।
सुताल–(सं० वि०) सुन्दर ताल वाला।
सुताली–(हिं० स्त्री०) देखो सुतारी।
सुतासुत–(सं० पुं०) दौहित्र, नाती।
सुतिक्त–(सं० वि०) बहुत तीता।
सुतिन–(हिं० स्त्री०) रूपवती स्त्री।
सुतिनी–(सं० स्त्री०) पुत्रवती स्त्री।
सुतिया–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के गले में पहरने की हँसुली।
सुतीक्ष्ण(सं० वि०) अति तीक्ष्ण।
सुतीच्छन–(हिं० वि०) देखो सुतीक्ष्ण।
सुतुंग–(सं० पुं०) नारियल का वृक्ष।
सुतुही–(हिं० स्त्री०) शुक्ति, सीपी।
सुत्रामा–(हिं० पुं०) इन्द्र।
सुतेजन–(सं० वि०) नुकीला, धारदार।
सुतेजित–(सं० वि०) सुतीक्ष्ण।
सुतोष–(सं० पुं०) सन्तोष, धैर्य।
सुथना–(हिं० पुं०) देखो सूथन; सुथनी–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों को पहरने का एक प्रकार का ढीला पायजामा, पिण्डालू, रतालू।
सुथरा–(हिं० वि०) स्वच्छ, निर्मल; सुथराई–(हिं० स्त्री०) स्वच्छता; सुथरापन–(हिं० पुं०) स्वच्छता।
सुथरेशाही–(हिं० पुं०) गुरु नान्हक के शिष्य सुथरा शाह का चलाया हुआ सम्प्रदाय, इस सम्प्रदाय का अनुयायी
सुदंष्ट्रा–(सं०स्त्री०) एककिन्नरी का नाम
सुदक्ष–(सं० पुं०) बड़ा निपुण।
सुदक्षिणा–(सं० स्त्री०) अच्छी दक्षिणा
सुदच्छिन–(हिं० वि०) देखो सुदक्षिण
सुदंती–(सं० स्त्री०) सुन्दर दाँतों वाली
सुदत्त–(सं० वि०)अच्छी तरह दिया हुआ
सुदन्त–(सं० पुं०) अभिनय करने वाला नट।
सुदन्ती–(सं० स्त्री०) हस्तिनी, हथनी
सुदरसन–(हिं० पुं०) देखो सुदर्शन।
सुदरिद्र–(सं० वि०) बड़ा दरिद्र।
सुदर्शन–(सं० पुं०) विष्णु के चक्र का नाम, शिव, (वि०) देखने में सुन्दर मनोहर; सुदर्शना–(सं० स्त्री०) शुक्ल पक्ष की रात्रि, इन्द्रपुरी।
सुदल–(सं० वि०) अच्छे दल या पत्ते वाला।
सुदामा–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण का

सखा, समुद्र, सागर, इन्द्र का हाथी, ऐरावत, (सं० स्त्री०) स्कन्ध की एक मातृ का नाम।

सुदारुण–(सं० वि०) अत्यन्त भयंकर।

सुदावन–(सं० पुं०) देखो सुदामा।

सुदास–(सं० पुं०) ईश्वर की अच्छी तरह से उपासना करने वाला, द्विवोपास का पुत्र तथा त्रित्सुका राजा, एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुदि–(सं० स्त्री०) देखो सुदी।

सुदिन–(सं०नपुं०)शुभदिन,अच्छादिन।

सुदिनाह–(सं०नपुं०)पुण्य दिवस,शुभदिन।

सुदिव–(सं०वि०)दीप्तिमान,चमकीला।

सुदिवस–(सं० नपुं०) देखो सुदिन।

सुदी–(हिं० स्त्री०) शुक्ल पक्ष, किसी महीने का उजाला पक्ष।

सुदीपति–(हिं० स्त्री०) सुदीप्ति।

सुदीधिति–(सं०वि०) बहुत चमकीला।

सुदीप्ति–(सं०स्त्री०) अधिक प्रकाश।

सुदीर्घ–(सं० वि०) अति दीर्घ, बहुत लंबा; सुदीर्घफला–(सं०स्त्री०) ककड़ी; सुदीर्घा–(सं०वि०) बहुत लम्बी।

सुदुःखित–(सं० वि०) बहुत दुःखी।

सुदुर्भगा–(सं०स्त्री०) बड़ी मन्द भाग्या नारी।

सुदूर–(सं० वि०) बहुत दूर।

सुदृढ–(सं० वि०) बहुत दृढ़।

सुदृश्य–(सं० वि०) देखने में सुन्दर।

सुदृष्ट–(सं०वि०)अच्छी तरह देखा हुआ

सुदेव–(सं० पुं०) उत्तम देवता।

सुदेश–(सं० पुं०) उत्तम देश, सुन्दर देश, उपयुक्त स्थान।

सुदेष्णा–(सं० स्त्री०) विराट की पत्नी, कीचक की बहन।

सुदेस–(हिं० पुं०) देखो सुदेश, स्वदेश।

सुदेह–(सं०पुं०)सुन्दर शरीर(वि०)सुन्दर।

सुदैव–(सं०पुं०) सौभाग्य,अच्छाभाग्य।

सुदोध–(सं० वि०) उदार, दानशील।

सुद्ध–(हिं० वि०) देखो शुद्ध।

सुद्धां–(हिं० अव्य०) समेत, सहित।

सुद्धि–(सं० स्त्री०) देखो शुद्धि।

सुद्यत–(सं० वि०) अति प्रकाशमान।

सुद्विज–(सं० पुं०) उत्तम ब्राह्मण।

सुधंग–(हिं० पुं०) अच्छा ढंग।

सुध–(हिं०स्त्री०) स्मरण, स्मृति, चेतना, पता; सुध दिलाना–स्मरण कराना; सुध न रहना–भूल जाना; सुध बिसरना–याद न रहना; सुध बिसारना–किसी को भूल जाना; सुध बिसारना–अचेत करना (हिं० वि०) शुद्ध।

सुधन–(सं० नपुं०) प्रचुर धन।

सुधन्वा–(सं० वि०) उत्तम धनुष धारण करने वाला, (पुं०) विश्वकर्मा, विष्णु, कुरु का एक पुत्र।

सुधबुध–(हिं० स्त्री०) चेतना, ज्ञान।

सुधर–(हिं० पुं०) बया नामक पक्षी।

सुधरना–(हिं० क्रि०) सशोधन होना, बिगड़े हुए का बनाना; सुधराई–(हिं० स्त्री०) सुधरने की क्रिया, सुधारने का काम, सुधार।

सुधर्म–(सं० पुं०) उत्तम धर्म, पुष्प, किन्नरों के एक राजा का नाम (वि०) धर्मपरायण।

सुधर्मा–(सं० स्त्री०) देव सभा।

सुधर्मी–(हिं०वि०)धर्मपरायण,धर्मनिष्ठ।

सुधवाना–(हिं० क्रि०) शोधन करना।

सुधांग–(हिं० पुं०) चन्द्रमा।

सुधांशु–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर; सुधांशुरत्न–(सं० नपुं०) मोती।

सुधा–(सं०स्त्री०) अमृत, मकरन्द, थूहड़, गंगा, ईंट, बिजली, दूध, जल, हरीतकी, हर्रें, पृथ्वी, मधु, थर, चूना, अर्क, रस, विष, एक प्रकार का वृत्त; सुधाई–(हिं० स्त्री०) सिधाई, सीधापन; सुधाकण्ठ–(सं०पुं०) कोकिल, कोयल; सुधाकर, सुधागेह–(सं० पुं०) चन्द्रमा; सुधाकार–(सं० पुं०) घरों में चूना छूहने वाला; सुधाक्षार–(सं० पुं०) चूने का खार; सुधाक्षालित–(सं० वि०) चूना पोता हुआ; सुधांग–(सं० पुं०) चन्द्रमा; सुधाघट–(सं० पुं०) देखो सुधाकर, चन्द्रमा; सुधात–(सं० वि०) अच्छी तरह धुला हुआ।

सुधातु–(सं० पुं०) सुवर्ण, सोना।

सुधादीधिति–(सं०पुं०) सुधांशु, चन्द्रमा

सुधाधर–(सं०पुं०)चन्द्रमा (वि०) जिसके अधर में अमृत हो; सुधाधरण–(सं० पुं०) चन्द्रमा; सुधाधवल–(सं० त्रि०) चूने के समान सफ़ेद; सुधाधाम–(सं०पुं०)चन्द्रमा; सुधाधार–(सं० पुं०) चन्द्रमा, अमृत पात्र; सुधाधारा–(सं०स्त्री०) अमृत की धारा; सुधाधी–(सं०वि०) अमृत के समान।

सुधाधौत–(सं०वि०) सफेद किया हुआ।

सुधानजर–(हिं०वि०) दयावान्।

सुधाना–(हिं०क्रि०) सोधने का काम दूसरे से कराना, ठीक कराना।

सुधानिधि–(सं० पुं०) चन्द्रमा, समुद्र, दण्डक वृत्त का एक भेद। सुधापाणि–(सं० पुं०) पीयूषपाणि, धन्वन्तरि; सुधाभुज्, –सुधाभोजी–(सं० पुं०) अमृत भोजन करने वाले देवता; सुधाभृति–(सं०पुं०) चन्द्रमा। सुधामय–(सं० वि०) अमृत से भरा हुआ; सुधामयूख–(सं०पुं०) चन्द्रमा; सुधामूली–(सं० स्त्री०) सालवमिस्री; सुधायोनि–(सं०पुं०) चन्द्रमा।

सुधार–(सं०पुं०) सुधारने या दोष दूर करने की क्रिया, संस्कार। सुधारक–(हिं०पुं०) त्रुटियों का संशोधन करने वाला,संशोधक। सुधारना–(हिं०क्रि०) संशोधन करना, बिगड़े को बनाना, सँवारना।

सुधारश्मि–(सं०पुं०) सुधांशु, चन्द्रमा।

सुधारा–(हिं०वि०) सरल, सीधा।

सुधाव–(हिं०पुं०) संशोधन, सुधार।

सुधावास–(सं०पुं०) चन्द्रमा, खीरा।

सुधाश्रवा–(सं०पुं०) अमृत बरसाने वाला

सुधासदनी–(सं० पुं०) चन्द्रमा।

सुधासित–(सं०वि०) चूना पोता हुआ।

सुधासिन्धु–(सं०पुं०) अमृत, समुद्र।

सुधासू–(सं०पुं०) अमृत उत्पन्न करने वाला, चन्द्रमा।

सुधाहर–(सं०पुं०) गरुड़।

सुधि–(हिं०स्त्री०) देखो सुध।

सुधिति–(सं० स्त्री०) कुठार, कुल्हाड़ी।

सुधी–(सं०पुं०) पण्डित, विद्वान्, (वि०) चतुर, धार्मिक, अच्छी बुद्धि वाला, (स्त्री०) सुन्दर बुद्धि।

सुधीर–(सं०वि०) जिसमें बहुत धैर्य हो।

सुधृत–(सं०वि०) दृढ़ता से पकड़ा हुआ।

सुधोद्भव–(सं०पुं०) धन्वन्तरि।

सुधोद्भवा–(सं०स्त्री०) हरीतकी, हर्रें।

सुधौत–(सं० वि०) अच्छी तरह से धोया हुआ।

सुन–(हिं०वि०) देखो सुन्न।

सुनकिरवा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का हरे रंग का फतिंगा।

सुनक्षत्र–(सं०पुं०) शुभ नक्षत्र।

सुनक्षत्रा–(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सुनखर्चा–(हिं०पुं०)एक प्रकार का धान

सुनगुन–(हिं०स्त्री०) किसी बात का भेद, टोह, कानाफुसकी।

सुनजर–(हिं०वि०) कृपालु, दयावान्।

सुनना–(हिं०क्रि०) कानों के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना, भली बुरी या उलटी सीधी बातें श्रवण करना; सुनी अनसुनी करना–किसी बात को सुन कर उस पर ध्यान न देना।

सुनन्द–(सं०नपुं०) बलभद्र का मूसल; सुनन्दन–(सं० पुं०) कृष्ण के एक पुत्र का नाम; सुनन्दा–(सं० स्त्री०) उमा, गौरी, भरत की पत्नी, गाय, गोरोचन, नारी, स्त्री, कृष्ण की एक पत्नी का नाम, एक तिथि का नाम। सुनन्दनी–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम, इसको प्रबोधिता या मंजुभाषिणी भी कहते हैं।

सुनबहरी–(हिं०स्त्री०)श्लीपद, फीलपा का रोग।

सुनय–(सं०पुं०) उत्तम नीति।

सुनयन–(सं० वि०) सुन्दर आँखों वाला सुनयना–(सं० स्त्री०) राजा जनक की पत्नी का नाम।

सुनवाई–(हिं०स्त्री०) सुनने की क्रिया या भाव। सुनवैया–(हिं०वि०) सुनने या सुनाने वाला।

सुनसर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का गहना।

सुनसान–(हिं० वि०) निर्जन, उजाड़, (पुं०) सन्नाटा।

सुनहरा, सुनहला–(हिं०वि०) सोने के रंग का।

सुनहर–(हिं०पुं०) श्वान, कुत्ता।

सुनाई–(हिं०स्त्री०) देखो सुनवाई।

सुनाद–(सं०पुं०)शंख (वि०) उत्तम शब्द युक्त।

सुनाना–(हिं०क्रि०) दूसरे को सुनने में प्रवृत्त करना, कर्णगोचर कराना।

सुनाभ–(सं०पुं०) मैनाक पर्वत, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुनाम–(सं० नपुं०) यश, कीर्ति। सुनामा–(हिं०वि०)यशस्वी,कीर्तिशाली

सुनायक–(सं० पुं०) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

सुनार–(सं० पुं०) चटक, गौरैया सांप का अण्डा (हिं० पुं०) सोने चाँदी का गहना बनाने वाला। सुनारी–(हिं०स्त्री०) सुनार का काम, सुनार की स्त्री।

सुनाल–(सं० पुं०) लाल कमल।

सुनावनी–(हिं० स्त्री०) परदेश से किसी सम्बन्धी आदि का मृत्यु समाचार आना, ऐसा समाचार पाकर स्नान करना।

सुनासा–(सं० स्त्री०) कौवाठोंठी का फूल।

सुनासिक–(सं०वि०)सुन्दर नाक वाला। सुनासिका–(सं०स्त्री०) सुन्दर नाक।

सुनासीर–(सं० पुं०) इन्द्र।

सुनिकृष्ट–(सं०वि०) अति निकृष्ट।

सुनिखात–(सं० वि०) अच्छी तरह से खोदा हुआ।

सुनितम्बिनी–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसकी कमर बड़ी सुन्दर हो।

सुनिद्र–(सं०वि०) अच्छी तरह सोया हुआ। सुनिद्रा–(सं० स्त्री०) गहरी नींद।

सुनिरज–(सं०वि०)सहज में प्राप्त करने योग्य।

सुनिरूपित–(सं० वि०) अच्छी तरह निर्णय किया हुआ।

सुनिर्मल–(सं०वि०) अति स्वच्छ।

सुनिर्मित–(सं० वि०) अच्छी तरह से बना हुआ।

सुनिश्चय–(सं० पुं०) दृढ़, निश्चय। सुनिश्चल–(सं० वि०) अति स्थिर, दृढ़। सुनिश्चित–(सं० वि०) अच्छी तरह निश्चित किया हुआ।

सुनिषण्ण–(सं० वि०) अच्छी तरह से बैठा हुआ।

सुनिष्ठुर–(सं०वि०) अति निर्दय।

सुनीति–(सं०स्त्री०) अच्छी नीति, राजा उत्तानपाद की पत्नी जो ध्रुव की माता थी।

सुनील–(सं०नपुं०) लाल कमल (पुं०) अनार का वृक्ष।

सुनेत्र–(सं०पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुनैया–(हिं०वि०) सुनने वाला।

सुनोची–(हिं०पुं०)एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्द–(सं०पुं०) एक राक्षस का नाम।

सुन्दर–(सं०वि०) मनोहर अच्छा श्रेष्ठ बढ़िया (पुं०) कामदेव, एक नाग का नाम। सुन्दरता–(सं० स्त्री०) मनोहरता। सुन्दरत्व–(सं०नपुं०) सुन्दरता। सुन्दराया–(हिं० पुं०)सुन्दरता।

सुन्दरी–(सं०स्त्री०) रूप लावण्य सम्पन्न

सुन्न–(हिं०वि०) निर्जीव, निःस्तब्ध (पुं०) शून्य ।

सुन्नसान–(हिं०वि०) देखो सूनसान ।

सुन्ना–(हिं०पु०) शून्य, बिन्दु ।

सुपक–(सं०वि०)अच्छी तरह पका हुआ सुपक्क–(सं०वि०) सुपक ।

सुपक्ष–(सं०वि०) सुन्दर पंखों वाला ।

सुपच–(हिं०पुं०) श्वपच, चाण्डाल,डोम ।

सुपट–(सं० पुं०)सुन्दर वस्त्र ।

सुपड़ा–(हिं०पुं०) लंगर का अंकुड़ा जो जमीन में धँसाया जाता है ।

सुपत–(हिं० विं०) मान युक्त, प्रतिष्ठा युक्त ।

सुपतिक–(हिं० पुं०) रात को पड़ने वाला डांका ।

सुपत्थ–(सं०पुं०) देखो सुपथ ।

सुपत्र–(सं०पुं०) इंगुदी वक्ष, हिंगोट, (नपु०) तेजपत्र, (वि०) सुन्दर पंख वाला । सुपत्रा–(सं०स्त्री०) सतावर, पालक का साग, शालपर्णी ।

सुपथ–(सं०पुं०) सन्मार्ग, अच्छा मार्ग, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होतेहैं, (विं०)समतल

सुपथ्य–(सं०नपुं०)वह आहार या भोजन जो रोगी के लिए हितकर हो ।

सुपद–(सं०वि०) सुन्दर पैरों वाला ।

सुपद्म–(सं०नपुं०) सुन्दर कमल ।

सुपन–(हिं०पुं०) स्वप्न, सपना । सुपनक–(हिं०वि०) अच्छा सपना देखने वाला ।

सुपना–(हिं०पुं०) स्वप्न सपना । सुपनाना–(हिं०क्रि०) स्वप्न दिखलाना ।

सुपरकास–(हिं०पुं०) ताप, गरमी ।

सुपरडंट–(हिं०पुं०) निरीक्षक ।

सुपरस–(हिं०पुं०) देखो स्पर्श ।

सुपरन–(हिं० पुं०) देखो सुपर्ण ।

सुपर्ण–(सं० पु०)गरुड़, मुरगा, पक्षी, चिड़िया, विष्णु, अमलतास, नाग, केशर, गन्धर्व, किरण, घोड़ा, सेना के व्यूह की एक प्रकार की रचना, सुन्दर पत्ता, (विं०) सुन्दर पत्तों वाला, सुन्दर परों वाला । सुपर्णकेतु–(स०पुं०) विष्णु । सुपर्णराज–(सं० पुं०) पक्षिराज, गरुड़ । सुपर्णसद्–(सं०पुं०) विष्णु ।

सुपर्णा–(सं०स्त्री०) गरुड़ की माता का नाम, पद्मिनी, कमलिनी ।

सुपर्णिका–(सं०स्त्री०)शालपर्णी,बागुची ।

सुपर्णी–(सं० स्त्री०) देखो सुपर्ण, अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

सुपर्णीतनय–(सं०पुं०) गरुड़ ।

सुपलायित–(स० विं०) गुप्त रूप से भागा हुआ ।

सुपवित्र–(सं० नपुं०) अति पवित्र, एक छंद जिसके पहले बारह अक्षर गुरु और बाकी लघु होते हैं ।

सुपह–(हिं०पुं०) राजा ।

सुपात्र–(सं०नपुं०)अच्छा पात्र, वह जो किसी कार्य के लिये उपयुक्त हो, विद्या आदि गुण युक्त ।

सुपार–(सं०वि०) जिसके पार करने में कोई कठिनाई न हो ।

सुपारी–(हिं०स्त्री०) नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसके फल टुकड़े टुकड़े काट कर पान के साथ खाये जाते हैं, पूगीफल,

सुपार्श्व–(सं०पुं०) जैनियों के चौबीस तीर्थङ्करों में से सातवें तीर्थङ्कर का नाम ।

सुपास–(हिं०पुं०) सुख, सुविधा ।

सुपासी–(हिं० विं०) आनंददायक, सुख देने वाला ।

सुपिष्ट–(स०वि०) अच्छी तरह पीसा हुआ ।

सुपीत–(सं०वि०) गहरे पीले रंग का

सुपुत्र–(सं०पुं०)उत्तम पुत्र, अच्छा बेटा

सुपुरुष–(सं० पुं०) सत्पुरुष, सज्जन, भला आदमी ।

सुपुर्द–(हिं०पु०) देखो सुपुर्द ।

सुपुष्ट–(स०वि०) जो बहुत दृढ़ हो ।

सुपुष्प–(सं०वि०) जिसमें सुन्दर फूल लगे हों ।

सुपुष्पा–(स०स्त्री०) सौंफ, सतावर ।

सुपूत–(स०वि०) अत्यन्त पवित्र ।

सुपूत–(हिं०पुं०) अच्छा पुत्र । सुपूती–(हिं० स्त्री०) सुपूत होने का भाव, अच्छे पुत्र वाली स्त्री ।

सुपूर–(सं०वि०) सहज में पूर्ण होने योग्य ।

सुपूर्ण–(सं०वि०) एक दम पूरा ।

सुपेती–(हिं० स्त्री०) देखो सफेदी । सुपेद–(हिं०वि०) श्वेत । सुपदी–(हिं०स्त्री०) सपेदी ।

सुपेली–(हिं०स्त्री०) छोटा ।

सुपैदा–(हिं०पुं०) देखो सफेदा ।

सुप्त–(सं०वि०) निद्रित, सोया हुआ, ठिठुरा हुआ, मरा हुआ । सुप्तक–(सं०नपुं०)निद्रा, नीद । सुप्तघातक–(सं०वि०) निद्रित अवस्था में बध करने वाला । सुप्तच्युत–(सं०वि) जिसकी नींद खुल गई हो । सुप्तज्ञान–(सं० नपुं०) स्वप्न, सपना । सुप्तता–(सं० स्त्री०) निद्रा, नींद । सुप्तप्रबुद्ध–(सं० वि०) जो सोकर उठा हो । सुप्तवाक्य–(सं०नपुं०) निद्रा की अवस्था में कहे हुए शब्द ।

सुप्तस्थ–(सं० वि०) सोया हुआ ।

सुप्तांग–(सं०पुं०)चेष्टा शून्य अंग ।

सुप्तांगता–(सं०स्त्री०) निश्चेष्टता ।

सुप्ति–(सं०स्त्री०)निद्रा, नींद, उंघाई

सुप्रकाश–(सं०वि०)उत्तम प्रकाश युक्त

सुप्रगुप्त–(सं०वि०)अच्छी तरह छिपा हुआ ।

सुप्रजा–(सं० स्त्री०) अच्छी सन्तान, उत्तम प्रजा । सुप्रजात–(सं०वि०) जिसके बहुत से बालबच्चे हों ।

सुप्रज्ञ–(सं०वि०) बहुत बुद्धिमान ।

सुप्रतिज्ञ–(सं०वि०) जो अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे । सुप्रतिज्ञा–(सं० स्त्री०) दृढ़ प्रतिज्ञा ।

सुप्रतिष्ठ–(सं०वि०) जिसका सब लोग आदर सम्मान करते हों, बहुत प्रसिद्ध

सुप्रतिष्ठा–(सं०स्त्री०) प्रसिद्ध, सुनाम, स्कन्द की एक मातृका का नाम, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पांच वर्ण होते हैं ।

सुप्रतिष्ठान–(सं०त्रि०)अच्छी प्रतिष्ठा ।

सुप्रतिष्ठित–(सं० वि०) उत्तम रूप से प्रतिष्ठित, (सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम ।

सुप्रतीक–(सं०पुं०)शिव, कामदेव (वि०) सज्जन, सुरूप, सुन्दर ।

सुप्रबुद्ध–(सं०वि०) जिसको अच्छा बोध या ज्ञान हो ।

सुप्रभ–(सं०वि०) सुन्दर ।

सुप्रभा–(सं० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक स्कन्द की एक माता का नाम, सुन्दर प्रकाश, सात सरस्वतियों में से एक ।

सुप्रभात–(सं०नपुं०) मंगल सूचक प्रातःकाल ।

सुप्रभाव–(सं०पुं०) सर्व शक्तिमान् ।

सुप्रयुक्त–(सं०वि०) अच्छी तरह प्रयोग में लाया हुआ ।

सुप्रलम्भ–(सं० वि०) सहज में मिलने योग्य ।

सुप्रलाप–(सं०पुं०) सुन्दर भाषण ।

सुप्रसन्न–(सं०पुं०) कुबेर (वि०) अत्यन्त निर्मल, बहुत प्रसन्न ।

सुप्रसाद–(सं० पुं०) शिव, विष्णु, एक असुर का नाम ।

सुप्रसिद्ध–(सं० वि०) अति विख्यात,

सुप्राप्य–(सं० वि०) सुगमता से प्राप्त होने योग्य ।

सुप्रिय–(सं० वि०) बहुत प्यारा, एक गन्धर्व का नाम ।

सुप्रिया–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, सोलह मात्राओं का वृत्त जिसमें अन्तिम वर्ण के अतिरिक्त सब वर्ण लघु होते हैं, एक प्रकार की चौपाई ।

सुप्रौढ–(सं० वि०)अति बृद्ध,बहुत बूढा ।

सुफल–(सं०पुं०) कैथ, बादाम, अनार, मूंग; (नपुं०) सुन्दर फल, अच्छा परिणाम (वि०) सुन्दर फल वाला, कृतार्थ ।

सुफला–(सं०स्त्री०)इन्द्रवारुणी, कुम्हड़ा, मुनक्का (वि०) सुन्दर फल देनेवाली ।

सुफेद–(हिं०पुं०) देखो सफेद ।

सुबड़ी–(हिं० पुं०) टलही चांदी ।

सुबन्ध–(सं०वि०)अच्छी तरह बंधा हुआ ।

सुबन्धु–(सं०पुं०) अच्छा मित्र ।

सुबस–देखो सुवर्ण ।

सुबरनी–(हिं० स्त्री०) छड़ी ।

सुबल–(सं०पुं०)गान्धार का एक राजा जो शकुनि का पिता और धृतराष्ट्र का ससुर था ।

सुबहुश्रुत–(सं०त्रि०) सर्व शास्त्रज्ञ ।

सुबाल–(सं० पुं०) अच्छा बालक ।

सुवास–हिं०स्त्री०)सुगन्ध, सुन्दर निवास स्थान, एक प्रकार का धान ।

सुवासना–(हिं०स्त्री०) सुगन्ध (हिं० क्रि०) सुगन्धित करना, महकाना ।

सुबासित–(हिं०वि०) देखो सुवासित ।

सुबाहु–(सं० वि०) दृढ या सुन्दर बाहु वाला, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, एक दानव का नाम, शत्रुघ्न का एक पुत्र ; सुबाहुशत्रु–(सं० पु०) श्रीरामचन्द्र ।

सुबिस्ता,सुबीता–(हिं०पुं०) देखो सुभीता

सुबुद्धि–(सं० वि०) बुद्धिमान्, उत्तम बुद्धि वाला, (स्त्री०) उत्तम बुद्धि ।

सुबुध–(सं०वि०) सावधान, बुद्धिमान ।

सुबू–(हिं०पुं०) प्रातःकाल ।

सुबूत–(हिं०पुं०) प्रमाण ।

सुबोध–(स० वि०) उत्तम ज्ञानयुक्त, अच्छी बुद्धि वाला, जो किसी बात को सहज में समझ सके ।

सुबोधन–(सं० नपुं०) अच्छी तरह जानना,(विं०)अच्छी तरह जाना हुआ ।

सुबोधिनी–(सं०स्त्री०) अच्छी ज्ञान वाली

सुब्रह्मण्य–(सं० पुं०) शिव, विष्णु, कार्तिकेय, दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रान्त ।

सुभ–(हिं०वि०) देखो शुभ ।

सुभक्ष्य–(सं०नपुं०)उत्तम भोजन द्रव्य ।

सुभग–(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर,भाग्यवान्, आनन्द दायक, प्रिय, सुखद (पुं०) गन्धक, सोहागा, चम्पा शिव, अशोक; सुभगता–(सं०स्त्री०) सौन्दर्य, प्रेम । सुभगा–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो पति की प्यारी हो, हल्दी, तुलसी, कस्तूरी, बेला, मोतिया, चमेली, स्कन्द की एक मातृका का नाम, पाँच वर्ष की कुमारी, एक प्रकार की रागिणी ।

सुभग्ग–(हिं०पुं०) देखो सुभग ।

सुभंग–(सं०पुं०) नारियल का वृक्ष ।

सुभट–(सं० पुं०) बड़ा योद्धा, अच्छा सैनिक ।

सुभट्ट–(सं०पुं०) बहुत बड़ा पण्डित ।

सुभड़–(हिं० पुं०) सुभठ, शूर, वीर ।

सुभद्र–(सं० पुं०) मगल, कल्याण, सौभाग्य, श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, विष्णु, सनत्कुमार (वि०) भाग्यवान्, सज्जन । सुभद्रक–(सं०पुं०) बेला का वृक्ष ।

सुभद्रा–(स० स्त्री०) दुर्गा का एक रूप, संगीत में एक श्रुति का नाम, श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी, अनिरुद्ध की पत्नी का नाम ।

सुभद्रिका–(सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की छोटी बहन, एक वृत्त का नाम ।

सुभद्रेश–(सं०पुं०) अर्जुन ।

सुभर–(सं०वि०) सम्पूर्ण, भरा हुआ ।

सुभव–(सं०पुं०) साठ संवत्सरों में से अन्तिम संवत्सर का नाम ।

सुभा–(सं०स्त्री०) शोभा, पर नारी, हरें

सुभाइ, सुभाउ–(हिं०पुं०),देखो स्वभाव (क्रि०वि०) स्वभावतः, सहजभाव से

सुभाग–(हिं०पुं०) सौभाग्य, भाग्यवान्।
सुभागी–(हिं०वि०)भाग्यवान,भाग्यशाली
सुभागीन–(हि०पुं०) सुभग्, भाग्यवान्।
सुभाग्य–(हिं०वि०) बड़ा भाग्यवान्
सुभाञ्जन–(सं०पुं०) सहिजन का वृक्ष।
सुभाना–(हिं०क्रि०) शोभित होना।
सुभानु–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सुभाय–(हिं० पुं०) स्वभाव।
सुभायक–(हिं०वि०) स्वभाविक।
सुभाव–(हिं०पुं०) स्वभाव।
सुभाषण–(सं० नपुं०) सुन्दर भाषण।
सुभाषित–(सं०वि०) अच्छी तरह कहा हुआ (नपुं०) सुवाक्य; सुभाषी–(हिं०वि०) मधूर बोलने वाला।
सुभिक्ष–(सं०पुं०) ऐसा समय जिसमें भोजन प्रचुर मिले और अन्न प्रचुर हो, सुकाल।
सुभिषज्–(सं० वि०) अच्छी चिकित्सा करने वाला।
सुभी–(हिं०वि०)सुभकारक, मंगलकारक।
सुभीत–(सं० वि०) अच्छी तरह डरा हुआ।
सुभीता–(हिं०पुं०) सुगमता, सुयोग।
सुभीम–(सं०वि०) बहुत डरावना।
सुभीमा–(सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।
सुभीरक–(सं०पुं०) पलास का वृक्ष।
सुभीरु–(सं० वि०) बड़ा डरपोक।
सुभुक्त–(सं० वि०) अच्छी तरह खाया हुआ।
सुभुज–(सं०वि०)सुन्दर भुजाओं वाला।
सुभुजा–(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम
सुभूति–(सं०स्त्री०) उन्नति।
सुभूमि–(सं०स्त्री०) अच्छी भूमि।
सुभूषण–(सं०नपुं०) उत्तम अलकार।
सुभूषित–(सं०वि०) भली भाँति अलंकृत।
सुभेषज–(सं० नपुं०) उत्तम औषधि।
सुभोग्य–(सं० वि०) अच्छी तरह भोगने योग्य।
सुभोज–(सं०नपुं०) उत्तम भोजन।
सुभौटी–(हिं०स्त्री०) शोभा।
सुभ्र–(सं० पुं०) देखो शुभ्र।
सुभ्रू–(सं० स्त्री०) उत्तम भ्रू, सुन्दर भौंह, स्कन्द की एक माता का नाम।
सुम–(सं० नपुं०) पुष्प, चन्द्रमा आकाश।
सुम–(हिं० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष;
सुमङ्गल–(सं०वि०)शुभ, कल्याणकारी।
सुमङ्गला–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, स्कन्द की एक मातृका का नाम; सुमङ्गली–(हिं०स्त्री०) विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा।
सुमत–(सं० वि०) ज्ञानवान्, बुद्धिमान्।
सुमति–(सं० पुं०) भरत के एक पुत्र का नाम, (वि०)सुबुद्धि, अच्छी मति, भक्ति, प्रार्थना, सारिका, मैना, मेल जोल (वि०) अत्यन्त बुद्धिमान्
सुमद–(सं० वि०) मन्दोन्मत्त, मतवाला (पुं०) श्री रामचन्द्र की सेना का एक वानर सेनापति।
सुमद्दुम–(हिं० वि०) स्थूल, मोटा।
सुमधुर–(सं०वि०) रस युक्त, बहुतमीठा
सुमध्यमा–(सं०स्त्री०) सुन्दर कमर वाली।
सुमन–(सं०पुं०) गेंहू, धतूरा, (वि०) सुन्दर, मनोहर; सुमनचाप–(सं०पुं०) कामदेव।
सुमनस–(सं० पुं०) देवता, पण्डित, एक दानव का नाम, पुष्प, फूल, (वि) सुन्दर, मनोहर।
सुमनस्क–(सं०वि०) प्रसन्न, सुखी।
सुमना–(सं० स्त्री०) चमेली, सेवती, कैकेयी।
सुमनामुख–(सं०वि०) सुन्दर मुखवाला।
सुमनिक–(हिं० वि०) सुन्दर रत्न जड़ा हुआ।
सुमनोहर–(सं० वि०) बड़ा सुन्दर।
सुमनौकस्–(सं० पुं०) स्वर्ग।
सुमन्त्र–(सं० पुं०) राजा दशरथ का मन्त्री और सारथि।
सुमन्त्रित–(सं० वि०) अच्छी तरह से मन्त्रणा किया हुआ।
सुमन्त्री–(सं० पुं०) कुशल मन्त्री।
सुमन्द्र–(सं० पुं०) मधुर ध्वनि, एक वृत्त जिसको सरसो भी कहते हैं।
सुमरन–(हिं० पुं०) देखो सुमरनी;
सुमरना–(हिं० क्रि०) स्मरण करना, ध्यान करना, बारंबार नाम लेना;
सुमरनी–(हिं० स्त्री०) नाम जपने की छोटी माला जिसमें सत्ताइस दाने होते हैं।
सुमरीचिका–(सं०स्त्री०) सांख्य के अनुसार पांच बाह्य तुष्टियों में से एक।
सुमसुखड़ा–(हिं० वि०) जिसका मुख सूख कर सिकुड़ गया हो।
सुमहत्–(सं०वि०) बहुत, अनेक।
सुमहाबल–(सं० वि०)बड़ा बलवान;
सुमहाबाहु–(सं० वि०) जिसकी भुजा बहुत लंबी हो; सुमहारथ–(सं० पुं०) बड़ा वीर पुरुष।
सुमाता–(सं० स्त्री०) सुन्दर माता, उत्तम माता।
सुमानिका–(सं० स्त्री०) सात अक्षरों का एक वृत्त।
सुमानस–(सं० वि०) सहृदय, अच्छे मन का।
सुमार्ग–(सं० पुं०) उत्तम मार्ग।
सुमालती,सुमालिनी–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं।
सुमाली–(सं०पुं०) एक राक्षस जिसकी कन्या कैकयी के गर्भ से रावण कुम्भकर्ण- शूर्पणखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे।
सुमित्र–(सं० पुं०) कृष्ण के एक पुत्र का नाम, अभिमन्यु के सारथी का नाम।
सुमित्रा–(सं०स्त्री०) राजा दशरथ की पत्नी, लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता।
सुमित्रानन्दन–(सं० पु०) लक्ष्मण और शत्रुघ्न।
सुमिरनी–(हिं०स्त्री०) देखो सुमरनी।
सुमिरण–(हिं० पुं०) देखो स्मरण।
सुमिरना–(हिं०क्रि०) नाम जपना।
सुमुख–(सं० पुं०) गणेश, गरुड़ के पुत्र का नाम, शिव, किन्नरों का राजा, पण्डित, आचार्य, सफेद तुलसी, एक, प्रकार का जलपक्षी, सुन्दर मुख (वि०) सुन्दर, मनोहर, प्रसन्न, कृपालु।
सुमुखा–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री, दर्पण।
सुमुखी–(सं० स्त्री०) सुन्दर मुख वाली स्त्री, एक अप्सरा का नाम, संगीत में एक प्रकार की मूर्छना, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते है।
सुमुहूर्त–(सं०पुं०) (नपुं०) शुभ समय।
सुमूलक–(सं०नपुं०) गाजर।
सुमूषित–(सं० वि०) वचित,ठगा हुआ।
सुमृग–(सं०नपुं०) वह भूमि जहांपर बहुत से जंगली पशु हों।
सुमृति–(हिं०स्त्री०) देखो स्मृति।
सुमृत्यु–(सं०पुं०) अच्छी मृत्यु।
सुमेध, सुमेधा–(सं०स्त्री०) मालकंगनी (वि०) उत्तम बुद्धि वाला, बुद्धिमान्।
सुमेर–(हिं०पुं०) देखो सुमेरु।
सुमेरु–(सं० पुं०) पुराण के अनुसार पृथ्वी का मध्यस्थ पर्वत, जपमालाके बीचका दाना,शिव,उत्तरी ध्रुव(वि०) अति सुन्दर, बहुत ऊंचा (पुं०) एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह मात्रायें होती हैं। सुमेरुवृत्त–(सं०पुं०) वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३।। अक्षांश पर स्थिष है। सुमेरुसमुद्र–(सं०पुं०) उत्तर महासागर।
सुम्मा–(हिं०पुं०) बकरा।
सुम्मी–(हिं०स्त्री०) धातु में ठोक कर छिद्र करने का अस्त्र।
सुम्हार–(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान।
सुयज्ञ–(सं०पुं०) अच्छा यज्ञ।
सुयत–(सं०वि०) जितेन्द्रिय।
सुयश–(सं०वि०) अति यशस्वी, उत्तम यश वाला(पुं०)सुकीर्ति, अच्छा यश।
सुयशा–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, परीक्षित की एक पत्नी का नाम।
सुयुक्त–(सं०वि०) अच्छी तरह से मिला हुआ। सुयुक्ति–(सं० स्त्री०) अच्छी सलाह।
सुयुद्ध–(सं०नपुं०) न्याय संगत युद्ध, धर्मयुद्ध।
सुयोग–(सं०पुं०) संयोग, अच्छा अवसर
सुयोग्य–(सं०वि०) बहुत योग्य।
सुयोग्य–(सं० पुं०) धृतराष्ट्र के ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन।
सुरंग–(हिं०स्त्री०) देखो सुरङ्ग।
सुर–(सं०पुं०) देवता, सूर्य, पण्डित, स्वर, ध्वनि, ऋषि, मुनि; सुर में सुर मिलाना–हाँ में हां करना, शुश्रूषा करना। सुरक–(सं०पुं०) नाक पर भाल की आकृति का तिलक,(हिं०स्त्री०) सुरकने की क्रिया या भाव। सुरकना–(हिं०क्रि०) वायु के साथ धीरे धीरे ऊपर की ओर खिचना। सुरकरी–(सं०पुं०) देवताओं का हाथी, दिग्गज
सुरकानन–(सं०पुं०)देवताओं के विहार करने का वन। सुरकामिनी–(सं० स्त्री०) अप्सरा। सुरकार्मुक–(सं० नपुं०) इन्द्रधनुष। सुरकार्य–(सं०नपुं०) देवताओं का काम,सुरकाष्ठ–(सं०नपुं०) देवदारु। सुरकुल–(सं०पुं०) देवताओं का निवास स्थान, सुरकृत–(सं०पुं०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, (वि०) देवताओं से किया हुआ।
सुरकुदाव–(हिं०पुं०) धोखा देने के लिये बोली बदल कर बोलना।
सुरकेतु–(सं०पुं०) इन्द्र, इन्द्र की ध्वजा
सुरक्त–(सं०वि०) अति अनुरक्त।
सुरक्ष–(सं०वि०) अच्छी तरह रक्षा किया हुआ। सुरक्षण–(सं०पुं०) रखवाली; सुरक्षित–(सं०वि०)अच्छी तरह से रक्षा किया हुआ।
सुरख–(हिं०वि०) लाल।
सुरग–(हिं० पु०) स्वर्ग। सुरगज–(हिं०पुं०) इन्द्र का हाथी। सुरगण–(सं० पुं०) देवताओं का समूह।
सुरगति–(सं०स्त्री०) देवगति।
सुरगवेसा–(हिं०स्त्री०)अप्सरा। सुरगर्भ–(सं० पु०) देवसन्तान। सुरगाय–(हिं०स्त्री०) कामधेनु। सुरगायक–(सं०पुं०) गन्धर्व। सुरगिरि–(सं०पुं०) सुमेरु पर्वत।
सुरगी–(हिं०पु०) देखा स्वर्गीय, देवता।
सुरगी नदी–(हिं०स्त्री०) गंगा।
सुरगुरु–(सं०पु०) देवताओं के गुरु, वृहस्पति। सुरगैया–(हिं० स्त्री०) कामधेनु।
सुरंग–(सं०नपुं०) हिंगुल, सिंगरिफ़, नारंगी, (वि०) अच्छे रंग का, सुन्दर, रसपूर्ण, (हिं०स्त्री०) भूमि या पहाड़ खोद कर बनाया हुआ मार्ग, वह छिद्र जो चोर लोग बनाते हैं, सेंध।
सुरंग धातु–(सं०पुं०) गेरू।
सुरंगी–(सं०स्त्री०) कौंवाठोंटी।
सुरचाप–(सं०पुं०) इन्द्रधनुष।
सुरज–(हिं०पु०) देखो सूर्य।
सुरजन–(सं०पुं०) देवताओं का समूह, सज्जन, चतुर। सुरजनपन–(हिं० पुं०) चतुराई।
सुरंजनी–(सं०स्त्री०) चाँदनी रात।
सुरज्येष्ठ–(सं०पुं०) देवताओं में श्रेष्ठ, ब्रह्मा।
सुरझन–(हिं०स्त्री०) देखो सुलझन।
सुरझना–(हिं०क्रि०) देखो सुलझना।
सुरझाना–(हिं०क्रि०) देखो सुलझाना।
सुरटीप–(हिं०स्त्री०) सुर की तान।
सुरत–(सं०नपुं०) कामकेलि, रतिक्रीड़ा, मैथुन।
सुरत–(हिं०स्त्री०) ध्यान, याद; सुरत

बिसारना–भूल जाना।
सुरतरंगिणी–(सं०स्त्री०) गंगा।
सुरतरु–(सं०पु०) देवतरु, कल्पवृक्ष।
सुरता–(सं०स्त्री०) देवता का भाव, धर्म या कार्य, देवसमूह, संभोग का आनन्द, एक अप्सरा का नाम। सुरता–(हिं०पुं०) वह बाँस की नली जिसमें अन्न के दाने डाल कर बोया जाता है (हिं०स्त्री०) चिन्ता, ध्यान, चेत, सुध।
सुरतात–(सं०पुं०) देवताओं के पिता, कश्यप।
सुरतान–(हिं०स्त्री०) स्वर का अलाप।
सुरति–(हिं०स्त्री०)भोग विलास, विहार, संभोग, स्मरण सुध, चेत; देखो सूरत। सुरतिगोपना–(सं०स्त्री०) वह नायिका जो रतिक्रीड़ा करके आई हो और अपनी सखियों से छिपाती हो। सुरतिवन्त–(हिं०वि०) कामातुर; सुरतिविचित्रा–(सं०स्त्री०) वह मध्या नायिका जिसकी रति क्रिया विचित्र हो।
सुरती–(हिं०स्त्री०) तमाखू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ खाया जाता है।
सुरत्न–(सं०नपुं०) सोना, मानिक (वि०) उत्तम रत्नों से युक्त, सर्वश्रेष्ठ।
सुरत्राण,सुरत्राता–(हिं०पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण, इन्द्र।
सुरथ–(सं०पु०) एक चन्द्रवंशीय राजा जिन्होंने पृथ्वी पर पहले पहल दुर्गा की पूजा किया था और देवी के वरदान से सावर्णि नामक मनु हुए थे, एक पर्वत का नाम।
सुरथान–(हिं०पुं०) स्वर्ग।
सुरदार–(हिं०वि०) जिसके गले का स्वर सुन्दर हो, सुरीला।
सुरदास–(सं०नपुं०) देवदार का वृक्ष।
सुरदीर्घिका–(सं०स्त्री०) आकाशगंगा, मन्दाकिनी। सुरदुन्दुभि–(सं०स्त्री०) देवताओं का नगाड़ा। सुरदेवी–(सं०स्त्री०) योगमाया जिसने यशोदा के गर्भ से जन्म लिया था।
सुरदेश–(हिं०पु०) देवलोक, स्वर्ग।
सुरद्रुम–(सं०पु०) कल्पवृक्ष। सुरद्विप–(सं०पुं०) ऐरावत हाथी। सुरद्विष्–(सं०पुं०) असुर, राक्षस। सुरधाम–(हिं०पुं०) देवलोक, स्वर्ग। सुरधुनी–(हिं०स्त्री०) मन्दाकिनी गंगा। सुरधेनु–(सं०स्त्री०) कामधेनु। सुरनगर–(सं०पुं०) स्वर्ग। सुरनदी–(सं०स्त्री०) आकाशगंगा, गंगा; सुरनाथ सुरनायक–(सं०पु०) इन्द्र। सुरनारी–(सं०स्त्री०) देवाङ्गना। सुरनाह–(सं०पु०) देवराज, इन्द्र। सुरनिम्नगा–(सं०स्त्री०) गंगा।
सुरनिलय–(सं०पुं०) सुमेरु पर्वत।
सुरपति–(सं०पुं०) देवराज इंद्र।
सुरपतिगुरु–(सं०पुं०) बृहस्पति।
सुरपतिचाप–(सं०पुं०) इंद्रधनुष।
सुरपतितनय–(सं०पुं०) अर्जुन।

सुरपथ–(सं०नपु०) आकाश। सुरपर्वत–(सं०पुं०) सुमेरु पर्वत। सुरपाल–(सं०पुं०) इंद्र। सुरपुर–(सं०नपु०) अमरावती। सुरप्रिय–(सं० पुं०) अगस्त्य, इन्द्र, बृहस्पति। सुरप्रिया–(सं०स्त्री०) जाती पुष्प, चमेली।
सुरफांक ताल–(हिं० पुं०) मृदंग का एक ताल।
सुरबुली–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा जिनको चिरवल भी कहते हैं।
सुरवृच्छ–(हिं०पु०) देखो सुरवृक्ष।
सुरबेल–(हिं०स्त्री०) कल्पलता।
सुरभंग–(हिं०पु०) स्वर का विपर्यास जो प्रेम आनन्द भय आदि के कारण उत्पन्न होता है।
सुरभवन–(सं०पुं०)देवताओं का निवास स्थान, मन्दिर, सुरपुरी, अमरावती।
सुरभान–(हिं०पुं०) इन्द्र, सूर्य।
सुरभि–(सं० नपुं०) सोना, सुगन्ध, चम्पा, जायफल, वसन्त ऋतु, कदम्ब वृक्ष, मौलसिरी, चैत का महीना, (स्त्री०) सलई, गाय, पृथ्वी, तुलसी, सुरा, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम, (वि०) सुगंधित, सुन्दर, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध।
सुरभिगन्ध–(सं०नपु०) तेजपत्ता।
सुरभिगन्धा–(सं० स्त्री०) चमेली।
सुरभिच्छद–(सं०पुं०) कपित्थ, कैथ।
सुरभित–(सं०पुं०) सुगंधित।
सुरभिता–(सं०स्त्री०) सुगन्ध।
सुरभिपुत्र–(सं०पुं०) सांड़, बैल।
सुरभिमास–(सं०पुं०) चैत का महीना; सुरभिमुख–(सं०पुं०) वसंत ऋतु का आरम्भ। सुरभिवल्कल–(सं०नपुं०) दालचीनी। सुरभिवाण–(सं० पुं०) कामदेव। सुरभिषक्–(सं० पुं०) अश्विनौकुमार। सुरभिसमय–(सं०पुं०) वसन्त।
सुरभी–(सं०स्त्री०) सुगन्ध, केवाँच, रुद्रजटा, चन्दन, गाय। सुरभीगोत्र–(सं०नपुं०) बैल। सुरभीपुर–(सं०नपुं०) गोलोक।
सुरभूप–(सं०पुं०) इन्द्र, विष्णु।
सुरभोग–(सं०पु०) अमृत।
सुरभौन–(हिं०पुं०) देखो सुरभवन।
सुरमणि–(सं०पु०) चिन्तामणि।
सुरमणीय–(सं०वि०) अति सुन्दर।
सुरमण्डल–(सं० पु०) देवताओं का मण्डल, एक प्रकार का बाजा।
सुरमै–(हिं०वि०) देखो सुरमई।
सुरमैर–(हिं०पुं०) देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु।
सुरम्य–(सं०वि०) बहुत सुन्दर।
सुरयान–(सं०पुं०) देवताओं का रथ।
सुरयुवती–(सं०स्त्री०) अप्सरा।
सुरराज–(सं०पुं०) सुरपति, इन्द्र।
सुरराजगुरु–(सं०पुं०) बृहस्पति।
सुरराजा–(हिं०पुं०) इन्द्र।
सुररिपु–(सं०पुं०) देवताओं के शत्रु, राक्षस।
सुररुख–(हिं०पुं०) कल्पवृक्ष।

सुरलासिका–(सं०स्त्री०) बंसी की ध्वनि; बाँसुरी।
सुरली–(हिं०स्त्री०) सुन्दर कीड़ा।
सुरलोक–(सं०पु०) स्वर्ग।
सुरलोकसुन्दरी–(सं०स्त्री०) अप्सरा।
सुरबधू–(सं०स्त्री०) देवताओं की पत्नी।
सुरवर–(सं०पु०) इन्द्र। सुरवर्त्म–(सं०पुं०) आकाश। सुरवल्ली(सं०स्त्री०) तुलसी।
सुरवस–(हिं०पुं०) जुलाहों की पतली छड़ी जिसका व्यवहार वे ताना तैयार करने में करते हैं।
सुरवा–(हिं०पुं०) देखो सुवा।
सुरवाणी–(सं०स्त्री०) संस्कृत भाषा।
सुरवास–(सं०पुं०) देवस्थान, स्वर्ग।
सुरवाहिनी–(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
सुरविटप–(सं०पु०) कल्पवृक्ष।
सुरवीथी–(सं०स्त्री०) नक्षत्रों का मार्ग।
सुरवीर–(सं०पु०) इन्द्र। सुरवेश्म–(सं०पुं०)स्वर्ग। सुरवृक्ष–(सं०पुं०)कल्पतरु। सुरवैरी, सुरशत्रु–(सं०पुं०) देवताओं के शत्रु, असुर। सुरशत्रुहन्–(सं०पु०) शिव, महादेव। सुरशयनी–(सं०स्त्री०) आषाढ़ शुक्ला एकादशी। सुरशाखी–(सं०पु०)कल्पवृक्ष। सुरशिल्पी–(सं०पुं०) विश्वकर्मा। सुरश्रेष्ठ–(सं०पुं०) विष्णु, शिव, इन्द्र, गणेश।
सुरस–(सं०वि०)स्वादिष्ट,सुन्दर,रसीला
सुरसती–(हिं०स्त्री०) देखो सरस्वती।
सुरसख–(सं०पु०) देवताओं के सखा,इन्द्र
सुरसत्तम–(सं०पुं०) देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु। सुरसदन, सुरसद्म–(सं०पुं०) अमरपुरी, स्वर्ग। सुरसर–(हिं०पुं०) मानसरोवर। सुरसरसुता–(सं०स्त्री०) सरयू नदी। सुरसरि, सुरसरिता–(सं०स्त्री०) गंगा नदी, कावेरी।
सुरसा–(सं०स्त्री०) तुलसी, सौंफ,ब्राह्मी, सतावर, पुनर्नवा, सर्पगन्धा, वनभंटा, एक प्रकार की रागिणी, एक प्रकार का वृत्त, एक प्रसिद्ध नागमाता जो समुद्र में रहती थी जिसने हनुमान्‌को समुद्र पार करती समय रोका था, दुर्गा का एक नाम, एक अप्सरा का नाम।
सुरसाईं–(हिं०पु०) इन्द्र, शिव।
सुरसारी–(हिं०स्त्री०) देखो सुरसरी।
सुरसालु–(हिं०पुं०) दानव, असुर,राक्षस
सुरसाहब–(हिं०पुं०) देवताओं के स्वामी,
सुरसिन्धु–(सं०पुं०) गंगा।
सुरसुत–(सं०पु०) देवपुत्र।
सुरसुन्दर–(सं०वि०) अत्यन्त सुन्दर।
सुरसुन्दरी–(सं०स्त्री०) अप्सरा, दुर्गा, योगिनी विशेष।
सुरसुरभी–(सं०स्त्री०) कामधेनु।
सुरसुराना–(हिं०क्रि०) खुजली होना, कीड़ों का रेंगना।
सुरसुराहट–सुरसुरी–(हिं०स्त्री०) खुजली, गुदगुदी।
सुरसेना–(सं०स्त्री०) देवताओं की सेना।
सुरसनी–हिं०स्त्री०) देखो सुरशयनी।

सुरस्कंद–(सं०पुं०) असुर।
सुरस्त्री–(सं०स्त्री०) अप्सरा।
सुरस्थान–(सं०नपुं०) देवलोक, स्वर्ग।
सुरस्वामी–(सं०पुं०) देवताओं के स्वामी इन्द्र।
सुरहरा–(हिं०वि०)सुरसुर शब्दसे युक्त
सुरहित, सुरही–(हिं०स्त्री०) सुरभि, गाय
सुरही–(हिं०स्त्री०)सोलह चित्ती कौड़ियां जिससे जुआ खेला जाता है,चमरीगाय
सुरा–(सं०स्त्री०) मद्य, जल, पानी।
सुराई–(हिं०स्त्री०) शूरता, वीरता।
सुराकर–(सं०पुं०) नारियल का पेड़।
सुराकार–(सं०पुं०) मद्य बनाने वाला।
सुराग–(हिं०पु०) सुन्दर राग, अत्यंतप्रेम
सुरगाय–(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकीजंगली गाय जिसकी पूंछ का चमर बनताहै; सुरागार, सुरागृह–(सं०नपुं०) मद्यगृह।
सुराङ्गना–(सं०स्त्री०) देवपत्नी, अप्सरा।
सुराचार्य–(सं०पुं०) बृहस्पति।
सुराज–(हिं०पुं०) देखो स्वराज्य।
सुराजिका–(सं०स्त्री०) छिपकली।
सुराजीव–(सं०पुं०) विष्णु।
सुराज्य–(सं०पुं०) वह राज्य या शासन जिसमें प्रजाको सुख और शांति मिले
सुराथी–(हिं०स्त्री०)वह लकड़ी का डंडा जिससे पीटकर अन्नके दाने अलगाये जाते हैं।
सुराधिप, सुराधीश–(सं०पुं०) देवताओं के अधिपति, इन्द्र।
सुराध्यक्ष–(सं०पु०) ब्रह्मा, कृष्ण,शिव।
सुरानीक–(सं०पुं०) देवताओंकी सेना।
सुरापगा–(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
सुरापान–(सं०पुं०) मद्य पीना। सुरापात्र–(सं०पुं०) मदिरा रखने का पात्र।
सुरामत्त–(सं०वि०) मद्य पीकर उन्मत्त।
सुरायुध–(सं०नपुं०) देवताओं का अस्त्र
सुरारि–(सं०पु०) असुर, राक्षस। सुरारिहन्ता–(सं०पुं०) विष्णु।
सुरालय–(सं०पुं०) देवताओंका वासस्थान
सुरावती, सुरावनि–(सं०स्त्री०) कश्यप की पत्नी और देवताओंकी माता,पृथ्वी
सुरावास, सुराश्रय–(सं०पु०) सुमेरुपर्वत
सुराष्ट्र–(सं० पुं०) एक प्राचीन देश का नाम जो भारत के पश्चिम में था।
सुराष्ट्रजा–(सं०स्त्री०) गोपीचन्दन।
सुरासार–(सं०पुं०) मद्यसार।
सुरासुर–(सं०पुं०) देवता और दानव। सुरासुरगुरु–(सं०पुं०) शिव, कश्यप।
सुरी–(सं०स्त्री०) देवपत्नी, देवाङ्गना।
सुरीला–(हिं०वि०) मीठे सुर वाला।
सुरुका–(सं०वि०) प्रकाशित, प्रदीप्त।
सुरुख–(हिं०वि०) सदय, अनुकूल।
सुरुचि–(सं०पुं०) उत्तम रुचि, अत्यन्त प्रसन्नता, एक गन्धर्व राजा का नाम, एक दक्ष का नाम, (वि०) स्वाधीन, राजा उत्तानपाद की एक स्त्री का नाम
सुरुचिर–(सं०वि०) अतिमनोहर,उज्वल।
सुरुज–(सं०वि०) अस्वस्थ, रोगी।
सुरुजमुखी–(हिं०पुं०) देखो सूर्यमुखी।
सुरुवा–(हिं०पुं०) देखो शोरवा।

सुरूप–(सं०त्रि०) सुन्दर, विद्वान्, बुद्धिमान् (पुं०) शिव, एक असुर का नाम
सुरूपता–(सं०स्त्री०) सुन्दरता। सुरूपा–(सं०वि०) सुन्दर रूप वाली, (स्त्री०) सेवती, वेला।
सुरूहक–(सं०पुं०) खच्चर।
सुरेखा–(सं०स्त्री०) शुभ रेखा।
सुरेतना–(हिं० क्रि०) बुरे अनाज में से अच्छे अनाज को अलगाना।
सुरेतर–(सं०पुं०) असुर।
सुरेन्द्र–(सं० पुं०) सुरपति, इन्द्र।
सुरेन्द्रगोप–(सं० पुं०) बीरबहूटी।
सुरेन्द्रचाप–(सं० नपुं०) इन्द्रधनुष।
सुरेन्द्रजित्–(सं०पुं०) इन्द्रजित्, गरुड़।
सुरेन्द्रपूज्य–(सं०पुं०) वृहस्पति।
सुरेन्द्रलोक–(सं० पुं०) इन्द्रलोक।
सुरेन्द्रवज्रा–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम। सुरेन्द्रवती–(सं० स्त्री०) इन्द्राणी, शची। सुरेश–(सं० पुं०) इन्द्र, शिव, विष्णु, कृष्ण। सुरेशलोक–(सं०पुं०) ब्रह्मा, शिव, इन्द्र। सुरस्वर–(सं०स्त्री०) दुर्गा, लक्ष्मी।
सुरैत–(हिं०स्त्री०)रखनी रखेली,उपपत्नी, सुरैत का पुत्र। सुरैतवाल–(हिं०पुं०) सुरैत का पुत्र। सुरैतिन–(हिं०स्त्री०) रखनी, रखेली। सुरोचना–(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
सुरोचि–(हिं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
सुरोत्तम–(सं०पुं०) सूर्य, विष्णु।
सुरौकस–(सं०पुं०) सुरालय, स्वर्ग।
सुर्ती, सुर्मा–देखो सुरती, सुरमा।
सुलक्षण–(सं०वि०) शुभ लक्षणों से युक्त, भाग्यवान्, (पुं०) शुभ लक्षण या चिह्न एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्रायें होती है। सुलक्षणा–(सं० स्त्री०) पार्वती की एक सखी का नाम (वि०) शुभ लक्षणों से युक्त; सुलक्षणी–(हिं० वि०) अच्छे लक्षणों वाली।
सुलगना–(हिं० क्रि०) प्रज्वलित होना, दहकना। सुलगाना–(हिं०क्रि०) प्रज्वलित करना, जलाना, दुःखी करना।
सुलग्न–(सं० नपुं०) शुभ मुहूर्त, अच्छी सायत। सुलच्छ–(हिं०वि०) सुन्दर।
सुलच्छन–(हिं०वि०) देखो सुलक्षण।
सुलच्छनी–(हिं०वि०) देखो सुलक्षणा।
सुलझन–(हिं०स्त्री०) सुलझाने की क्रिया या भाव। सुलझाना–(हिं०क्रि०) उलझन दूर होना, गांठ आदि का खुलना सुलझाना–(हिं०क्रि०) उलझन को दूर करना। सुलझाव–(हिं० पुं०) सुलझने की क्रिया।
सुलटा–(हिं०वि० जो उलटा न हो,सीधा
सुलताना चंपा–(हिं० पुं०) पुन्नाग नाम का वृक्ष।
सुलफ–(हिं०वि०) लचीला, कोमल, मृदु।
सुलभ–(सं० वि०) सहज में मिलने वाला, सुगम, उपयोगी,साधारण(पुं०) अग्निहोत्र की अग्नि। सुलभता–(सं० स्त्री०) सुगमता। सुलभत्व–(सं०पुं०) सुगमता।
सुलभा–(सं०स्त्री०)जगली उड़द, तमाखू
सुलभेतर–(सं० वि०) दुर्लभ, कठिन; मँहगा।
सुलभ्य–(सं०वि०) सहज मे मिलने वाला
सुललित–(सं०वि०) अत्यन्त सुन्दर।
सुलाक–(फ०पुं०) छिद्र।
सुलाखना–(हिं० क्रि०) सोने चांदी को तपाकर परखना।
सुलाना–(हिं०क्रि०)सोने में प्रवृत्त करना; लिटाना।
सुलिखित–(सं० वि०) अच्छी तरह लिखा हुआ।
सुलेख–(सं०पुं०) सुन्दर लिखावट। सुलेखक–(सं० पुं०) अच्छा लेख या निबन्ध लिखने वाला।
सुलोक–(सं०पुं०) स्वर्ग।
सुलोचन–(सं०वि०)सुन्दर आंखों वाला (पुं०) चकोर, रुक्मिणी के पिता का नाम, हरिण, दुर्योधन।
सुसुलोचना–(सं०स्त्री०) माधव राजा की पत्नी का नाम। सुलोचनी–(हिं०वि०) सुन्दर नेत्र वाली।
सुलोभ–(सं०वि०)जिसके रोवें सुन्दर हों
सुलोह–(सं०नपुं०) एक प्रकार का उत्तम लोहा।
सुलोहित–(सं०वि०)सुन्दर लाल रंग का
सुलोहिता–(सं० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
सुवक्ता–(सं० पुं०) शिव,(वि०) सुन्दर मुख वाला।
सुवक्त्र–(सं०वि०) जिसकी छाती सुन्दर और चौड़ी हो।
सुवचन–(सं० वि०) सुवक्ता, मीठा, बोलने वाला।
सुवज्र–(सं०पुं०) इन्द्र का एक नाम।
सुवटा–(हिं०पुं०) देखो सुअटा।
सुवदन–(सं० वि०) सुन्दर मुख वाला; सुवदना–(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बीस अक्षर होते हैं।
सुवन–(सं०पुं०) सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा;
सुवना–(हिं०पुं०) सुग्गा।
सुवचल–(सं० पुं०) काला नमक।
सुवर्ण–(सं० नपुं०) एक धातु विशेष, सोना, कांचन; सुवर्णकमल–(सं०नपुं०) लाल कमल; सुवर्णकरणी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जड़ी; सुवर्णकर्ता–(सं०पुं०) सोनार; सुवर्णकार–(सं०पुं०) सोनार; सुवर्णगिरि–(सं०पुं०) राजगृह के एक पर्वत का नाम; सुवर्णतिलका–(सं० स्त्री०) ज्योतिष्मती लता; सुवर्णदाधी–(सं०स्त्री०) भटकटैया; सुवर्णपक्ष–(सं०पुं०) गरुड़; सुवर्णपद्म–(सं०नपुं०) लाल कमल; सुवर्णफला–(सं० स्त्री०) चंपा, केला; सुवर्णमाक्षिक–(सं०नपुं०) सोनामक्खी; सुवर्णमित्र–(सं०नपुं०) सुहागा; सुवर्णरेखा–(सं० स्त्री०) रांची के पास बहने वाली एक नदी का नाम; सुवर्णवर्ण–(सं०पुं०) विष्णु; सुवर्णवर्णा–(सं०स्त्री०) हल्दी; सुवर्णसूत्र–(सं०नपुं०) सोने का तार।
सुवर्णा–(सं० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक; सुवर्णाकर–(सं० पुं०) सोना निकलने की खान।
सुवर्तुल–(सं० वि०) एकदम गोल।
सुवर्मा–(सं०नपुं०) धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम, (वि०) उत्तम कवच से युक्त।
सुवर्ष–(सं० पुं०) धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम, उत्तम बर्षा।
सुवर्त्म–(सं० नपुं०) सीधा पथ।
सुवसन–(सं० नपुं०) उत्तम वस्त्र।
सुवा–(हिं० पुं०) सुग्गा।
सुवाक्य–(सं० वि०) मधुर भाषा, (पुं०) मीठे वचन।
सुवार्ता–(सं० स्त्री०) कृष्ण की एक स्त्री का नाम, उत्तम वार्ता।
सुवार–(हिं० पुं०) रसोइयादार।
सुवास–(सं०पुं०) अच्छी गन्ध,सुन्दर घर; सुवासक–(सं०पुं०) तरबूज;सुवासिका–(हि० वि०) सुगन्ध करने वाली। सुवासित–(सं० वि०) सुगन्ध युक्त, खुशबूदार।
सुवासिनी–(सं०स्त्री०) युवावस्था में भी पिता के घर रहनेवाली स्त्री, सधवा स्त्री।
सुविक्रम–(सं०वि०) अत्यन्त साहसी।
सुविक्रान्त–(सं० वि०) बड़ा पराक्रमी, (पुं०) शूरवीर।
सुविक्लव–(सं०वि०) अत्यन्त व्यग्र।
सुविख्यात–(सं०वि०) बहुत प्रसिद्ध।
सुविचक्षण–(सं०वि०) बहुत बुद्धिमान्।
सुविचार–(सं० पुं०) उत्तम विचार, सुन्दर न्याय, कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सुविज्ञ–(सं०वि०) अतिशय चतुर।
सुविज्ञेय–(सं० वि०) सहज में जानने योग्य।
सुवितत–(सं०वि०) अच्छी तरह फैला हुआ।
सुवित्त–(सं०नपुं०) उत्तम धन।
सुविदग्ध–(सं०वि०) बहुत चतुर।
सुविदित–(सं०वि०) अच्छी तरह जाना हुआ।
सुविधा–(हिं० स्त्री०) देखो सुभीता।
सुविद्य–(सं० वि०) अच्छा विद्वान या पंडित।
सुविद्या–(सं०स्त्री०) उत्तम विद्या।
सुविधान–(सं०नपुं०) अच्छा नियम।
सुविनीत–(सं० वि०) अत्यन्त नम्र।
सुविभक्त–(सं० वि०) अच्छी तरह से बाँटा हुआ।
सुविशाला–(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
सुवीज–(सं० पुं०) सुन्दर बीज, शिव।
सुवीर–(सं० पुं०) बड़ा योद्धा।
सुवृक्ष–(सं० पुं०) फल फूलों से लदा हुआ वृक्ष।
सुवृत्त–(सं० पुं०) सुवित्ता–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।
सुवृत्ति–(सं०स्त्री०) उत्तम जीविका।
सुवेल–(सं०पुं०) समुद्र के किनारे का एक पर्वत जहां श्रीरामचन्द्र सेना सहित ठहरे थे (वि०) बहुत झुका हुआ
सुवेश–(सं०वि०) सुन्दर वेशसे सुसज्जित
सुवेष–(हिं०वि०) देखो सुवेश।
सुवेसल–(हिं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
सुवैया–(हिं० वि०) सोने वाला।
सुवो–(हिं० पुं०) शुक, सुग्गा।
सुव्यक्त–(सं० वि०) बहुत स्पष्ट।
सुव्यवस्थित–(सं०वि०) जिसकी व्यवस्था अच्छी तरह से की गई हो।
सुव्याहृत–(सं० वि०) अच्छी तरह से कहा हुआ।
सुव्रत–(सं०पुं०) एक प्रजापति का नाम, स्कन्द के एक अनुचर का नाम, (वि०) धर्मनिष्ठ, विनीत।
सुशरीर–(सं०वि०) सुडौल, सुदेह।
सुशक्त–(सं०वि०) शक्तिशाली।
सुशक्ति–(सं०स्त्री०) अच्छा बल।
सुशब्द–(सं०त्रि०) अच्छा शब्द या ध्वनि
सुशरण्य–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
सुशरीर–(सं०वि०) सुडौल शरीर वाला
सुशल्य–(सं० पुं०) खादिर, खैर।
सुशासित–(सं० वि०) अच्छी तरह से शासित।
सुशिक्षित–(सं० वि०) उत्तम रूप से शिक्षित।
सुशिख–(सं०पुं०) अग्नि।
सुशिष्ट–(सं०वि०) बहुत शिष्ट या नम्र।
सुशीतला–(सं०स्त्री०) खीरा,ककड़ी।
सुशील–(सं०वि०) उत्तम स्वभाव वाला, विनीत, नम्र, सरल, सीधा। सुशीलता–(सं० स्त्री०) नम्रता।
सुशीला–(सं० स्त्री०) राधा की एक अनुचरी का नाम।
सुशृङ्ग–(सं० वि०) सुन्दर सींग वाला, (पुं०) शृंगी ऋषि।
सुशृत–(सं०वि०) बहुत गरम।
सुशेव–(सं०वि०) अत्यन्त सुखकर।
सुशोण–(सं०वि०) बहुत लाल।
सुशोभन–(सं० वि०) अत्यन्त शोभा युक्त, दिव्य; सुशोभित–(सं० वि०) अत्यन्त शोभायमान।
सुश्राव्य–(सं०वि०) जो सुनने में अच्छा जान पड़े।
सुश्री–(सं०वि०) बहुत सुन्दर,बहुत धनी; सुश्रुत–(सं०वि०) प्रसिद्ध; अच्छी तरह सुना हुआ (पुं०) आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य।
सुश्रूखा–(हिं०स्त्री०) देखो शुश्रूषा।
सुश्लिष्ट–(सं०वि०) अति दृढ़, अतिशय श्लेष युक्त।
सुष–(हिं०पुं०) देखो सुख।
सुषमा–(सं०स्त्री०) परम शोभा, अत्यन्त सुन्दरता, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
सुषमाशाली–(सं०वि०) जिसमें अधिक शोभा हो।
सुषिक्त–(सं०वि०) अच्छी तरह से

सींचा हुआ।
सुषिर-(सं०नपुं०) बाँस, बेंत, अग्नि, आग, वायु से बजने वाला यन्त्र, छिद्र, छेद, दायु मण्डल, लवंग, (वि०) छिद्र युक्त।
सुषुप्त-(सं०वि०) गहरी नीदमें सोता हुआ; सुषुप्ति-(सं० स्त्री०) सुनिद्रा, गहरी नींद, वेदान्त के अनसार अज्ञान; चित्त की एक वृत्ति जिसमें जीव ब्रह्म की प्राप्ति करता है परन्तु उसको उसका ज्ञान प्राप्त नहीं होता।
सुषुप्सा-(सं०स्त्री०) सोने की इच्छा।
सुषुम्ना-(सं०स्त्री०)हठयोग के अनुसार शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो मेरु के बाह्य देश में तथा इड़ा और पिंगला नाड़ी के मध्य देश में अवस्थित है।
सुषेण-(सं०पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, परीक्षित के एक पुत्र का नाम।
सुषोपति-(हिं०स्त्री०) देखो सुषुप्ति।
सुष्ट-(सं०वि०) अच्छा, भला।
सुष्टुत-(सं०वि०) भलीभाँति स्तुति किया हुआ।
सुष्ठ-(हिं०क्रि०वि०) अच्छी तरह से (वि०) सुन्दर। सुष्ठता-(सं० स्त्री०) सुन्दरता।
सुष्ठु-(सं०अव्य०) अत्यन्त, भलीभांति, अच्छी तरह से (पुं०) प्रशंसा।
सुष्ठुता-(सं०स्त्री०) सौभाग्य, मंगल, कल्याण, सुन्दरता।
सुष्म-(सं०नपुं०) रज्जु, रस्सी।
सुष्मता-(हिं०स्त्री०) देखो सुषुम्ना।
सुसंग-(हिं०पुं०) देखो सुसंगति; सुसंगति-(हिं०स्त्री०) सत्संग, अच्छी संगत।
सुसंस्कृत-(सं०वि०) उत्तम संस्कार युक्त
सुस-(हिं०स्त्री०) देखो सुसा।
सुसकना-(हिं०क्रि०) देखो सुसकना।
सुसका-(हिं०पुं०) हुक्का।
सुसंकल-(सं०वि०) अति संकीर्ण।
सुसंग-(सं०पुं०) उत्तम संगति, सुसंगत-(सं०त्रि०) अच्छी तरह मिला हुआ, अति सौहार्द। सुसंगति-(सं० वि०) सत्संग, अच्छी संगत, साधु संग।
सुसङ्गृहीत-(सं०वि०) अच्छी तरह से संग्रह किया हुआ।
सुसज्जित-(सं० वि०) शोभायमान, अच्छी तरह से सजाया हुआ।
सुसताना-(हिं०क्रि०) श्रम मिटाना, थकावट दूर करना।
सुसती-(हिं०स्त्री०) थकावट।
सुसत्या-(सं०स्त्री०) राजा जनक की की पत्नी का नाम।
सुसनि-(सं०वि०) दयालु।
सुसन्त्रस्त-(सं०वि०) बहुत डरा हुआ।
सुसन्ध-(सं०वि०) सत्य प्रतिज्ञ।
सुसन्नत-(सं०वि०) बहुत झुका हुआ,
सुसवय-(सं०पुं०) सुभिक्ष, सुकाल, अच्छा समय।
सुसमिद्ध-(सं०वि०) अति प्रज्वलित।
सुसमृद्ध-(सं०वि०) अति समृद्ध शाली।
सुसम्पिष्ट-(सं० वि०) अच्छी तरह चूर्ण किया हुआ।
सुसम्पूर्ण-(सं० वि०) अच्छी तरह से समाप्त किया हुआ।
सुसमा-(हिं०स्त्री०) देखो सुषमा।
सुसर, सुसुर,-(हिं०पुं०) देखो ससुर।
सुसरार, सुसरारि-(हिं०स्त्री०) देखो सुसराल। सुसराल-(हिं०स्त्री०) ससुर का घर, ससुराल। सुसरित्-(हिं० पुं०) मन्दाकिनी; गंगा।
सुसरी-(हिं०स्त्री०) देखो ससुरी, सुरसुरी।
सुसह-(सं०वि०) सहजमें कियेजानेयोग्य।
सुसा-(हिं० स्त्री०) स्वसा, बहन।
सुसाइटी-(हिं० स्त्री०) सभा।
सुसाध्य-(सं० वि०) जिसका साधन सहज में किया जा सके।
सुसाना-(हिं०क्रि०) सिसकना।
सुसार-(सं०पुं०) लाल खैर का पेड़, नीलम मणि।
सुसारवत्-(सं०पुं०) स्फटिक, बिल्लौर।
सुसिकता-(सं०स्त्री०) उत्तम बालू।
सुसिद्ध-(सं०वि०) उत्तम रूपसे सिद्ध।
सुसिक्त-(सं० वि०) अच्छी तरह से सींचा हुआ।
सुसिद्धि-(सं०स्त्री०) साहित्य में एक प्रकार का अलंकार, वह ऐसे स्थान में होता है जहाँ पर एक मनुष्य परिश्रम करता है परन्तु इसका फल दूसरा भोगता है।
सुसीतलाई-(हिं०स्त्री०) देखोसुशीतलता
सुसीभ-(हिं० वि०) शीतल, ठंढा।
सुसुकना-(हिं०क्रि०) देखो सिसकना।
सुसुड़ी-(हिं० स्त्री०) जव में होने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
सुसूक्ष्म-(सं० वि०) अति सूक्ष्म।
सुसेन-(हिं० पुं०) देखो सुषेण।
सुसेवित-(सं०वि०) उत्तमरूपसेपूजित।
सुसी-(हिं० पुं०) खरहा।
सुस्तना-(सं० स्त्री०) सुन्दर छाती वाली स्त्री, वह स्त्री जो पहली बार रजस्वला हुई हो।
सुस्ताई-(हिं०स्त्री०) देखो सुस्ती।
सुस्ताना-(हिं०क्रि०) देखो सुसताना।
सुस्तैत-(हिं०पुं०) देखो स्वस्तयन।
सुस्थ-(हिं०वि०) नीरोग, स्वस्थ, सुस्थित, भलीभाँति स्थित, सुदर, प्रसन्न, सुखी;
सुस्थचित्त-(सं०वि०) जिसका चित्त प्रसन्न हो। सुस्थता-(सं०स्त्री०) आरोग्य, आनन्द, प्रसन्नता। सुस्थावती-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
सुस्थित-(सं०वि०) अविचल, दृढ़, स्वस्थ, नीरोग, भाग्यवान्। सुस्थिति-(सं० स्त्री०) प्रसन्नता, आनन्द, कुशल क्षेम।
सुस्थिर-(सं० वि०) अविचल, दृढ़, स्वस्थ, नीरोग।
सुस्नात-(सं०वि०) अच्छी तरह स्नान किया हुआ।
सुस्मित-(सं०वि०) हँसमुख, हँसोड़।
सुस्मिता-(सं०स्त्री०) हँसमुख स्त्री।
सुस्वन-(वि०सं०) उत्तम शब्द या ध्वनि युक्त।
सुस्वप्न-(सं०पुं०) शुभ स्वप्न।
सुस्वर-(सं०पुं०) उत्तम स्वर, शख, (वि०) सुकंठ, सुरीला। सुस्वरता-(सं०स्त्री०) सुस्वर होने का भाव या धर्म।
सुस्वादु-(सं०वि०) बहुत स्वादिष्ट, स्वाद युक्त। सुस्वाप-(सं०पुं०) गहरी नींद।
सुहँगा-(हिं० वि०) जो मंहगा न हो, सस्ता।
सुहंगम-(हिं०वि०) सहज, सरल।
सुहटा-(हिं०वि०) सुन्दर, सुहावना।
सुहड़-(हिं०पुं०) सुभट, शूर, वीर।
सुहनी-(हिं०स्त्री०) देखो सोहनी।
सुहबत-(हिं०स्त्री०) मैत्री।
सुहराना-(हिं०क्रि०) देखो सुहलाना।
सुहव-(सं०वि०) उत्तम स्वर युक्त।
सुहवी-(हिं०स्त्री०) एक राग का नाम।
सुहा-(हिं०पुं०) लाल नामक पक्षी।
सुहाग-(हिं० पुं०) स्त्री की सधवा रहने की अवस्था, सौभाग्य, वह वस्त्र जो वर को विवाह के समय पहराया जाता है, मांगलिक गीत। सुहागन-(हिं०स्त्री०) सोहागिन। सुहागा-(हिं० पुं०) गन्धक के सोते में से निकलने वाला एक प्रकार का क्षार। सुहागिन (हिं० स्त्री०) सधवा स्त्री, वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सुहागिनी, सुहागिन-(हिं०स्त्री०) सुहागिन।
सुहाता-(हिं०वि०) जो सहा जा सके।
सुहाना-(हिं०क्रि०) शोभा देना, अच्छा लगना, भला मालूम होना। सुहाया-(हिं०वि०) देखो सुहावना।
सुहारी-(हिं०स्त्री०) सादी पूरी जिसमें पीठी आदि न भरी हो।
सुहाल-(हिं० पुं०) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव-(हिं०वि०) सुदर, सुहावना।
सुहावता-(हिं०वि०) सुहावना, भला।
सुहावन, सुहावना-(हिं०वि०) जो देखने में भला मालूम हो, सुन्दर, रमणीक;
सुहावनापन-(हिं०पुं०) सुन्दरता।
सुहावला-(हिं०वि०) सुहावना, सुन्दर।
सुहास, सुहासी-(हिं०वि०) सुन्दर मुसकान वाली, चारुहासी।
सुहित-(सं०वि०) विहित किया हुआ।
सुहू-(सं० पुं०) उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।
सुहृत, सुहृद्-(सं०पुं०) मित्र, बन्धु, सखा (वि०) अच्छे हृदय वाला।
सुहृदय-(सं०वि०) सहृदय, स्नेहशील।
सुहला-(हिं०वि०) सुखदायक, सुन्दर, (पुं०) मंगल गीत, स्तुति।
सुहोत्र-(सं०पुं०) सहदेव के एक पुत्र का नाम, एक दैत्य का नाम। सूँ-(हिं० अव्य०) तृतिया और पंचमी विभक्ति का चिह्न; सों, से।
सूँइस-(हिं०स्त्री०) देखो सूंस।
सूँघना-(हिं०क्रि०) मँहक लेना, बहुत कम भोजन करना; सर्प का काटना; सिर, सूंघना-कल्याण कामना से बच्चों का मस्तक सूंघना।
सूँघा-(हिं०पुं०) भेदिया, सूंघ कर आखटे तक पहुँचाने वाला कुत्ता; वह जो सुघकर बतला देता है कि अमुक स्थान में भूमि के भीतर जल या धन है।
सूँड-(हिं०पुं०) हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती है और भूमि तक लटकती रहती है, शुण्डादण्ड, शुण्ड।
सूंडहल-(हिं०पुं०) हाथी।
सूंडा-(हिं०पुं०) हाथी का सूँड।
सूंडी-(हिं० स्त्री०) कपास अन्न, ऊख आदि के पौधों के हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
सूंघी-(हिं०स्त्री०) सज्जी मिट्टी।
सूंस-(हिं०स्त्री०) एक प्रसिद्ध बड़ा जल जन्तु, शिशुमार।
सूंह-(हिं०अव्य०) सन्मुख, सामने।
सूअर-(हिं०पु०) एक स्तनपायी वन्य जन्तु, शूकर, एक प्रकार की गोली।
सूअरबियान-(हिं०स्त्री०) वह स्त्री जो प्रति वर्ष बच्चा जनती है।
सूआ-(हिं०पुं०) बड़ी सूई, सूजा, सुग्गा, तोता।
सूई-(हिं०स्त्री०) पक्के लोहे का पतला तार जिसका एक छोर नुकीला होता है, तथा दूसरे छोर पर एक छेद होता है जिसमें तागा पिरो कर कपड़ा सिलने का काम किया जाता है, महीन कांटा, कपास अनाज आदि का अँखुआ, सूई के आकार की कोई वस्तु। सूईडोरा-(हिं०पुं०) मालखंभ का एक व्यायाम।
सूक-(हिं०पुं०) देखो शुक, शुक्र।
सूकना-(हिं०क्रि०) सूखना।
सूकर-(सं०पुं०) शूकर, सूअर, एक नरक का नाम। सूकरकन्द-(सं०पुं०) वाराही कन्द। सूकरक्षेत्र-(सं० पुं०) एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो मथुरा प्रान्त में है, अब यह 'सोरों' नाम से प्रसिद्ध है।
सूकरी-(सं०स्त्री०) शूकरी, सुअरी।
सूका-(हिं०पुं०) चार आने के मूल्य की मुद्रा, चवन्नी।
सूक्त-(सं०वि०) अच्छी तरह कहा हुआ (पुं०) उत्तम कथन, उत्तम भाषण, वेद मन्त्रों या ऋचाओं का समूह, वैदिक स्तुति। सूक्तवाक्य-(सं०नपुं०) यथोचित वाक्य।
सूक्ति-(सं०स्त्री०) युक्ति युक्त वाक्य, सुन्दर पद वाक्य आदि।
सूक्तिक-एक प्रकार का करताल।
सूक्षम-(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म।
सूक्ष्म-(सं०वि०) बहुत महीन (पुं०) परिमाण, लिंग शरीर, शिव का एक नाम, जीरा, निर्मली, रीठा, सुपारी (सं०नपुं०) छल, कपट, एक काव्यालंकार जिसमे चितवृत्तिको सूक्ष्म चेष्टा

से लक्षित करके वर्णन किया जाता है। सूक्ष्मकोण-(सं० पुं०) सम कोण से छोटा कोण। सूक्ष्म तण्डुल-(सं० पुं०) पोस्ते का दाना। सूक्ष्मता-(सं० स्त्री०) बारीकी; सूक्ष्मदर्शक यन्त्र-(सं० नपुं०) अणु-वीक्षण यन्त्र, वह यन्त्र जिससे सूक्ष्म पदार्थ बड़े देख पड़ते हैं; सूक्ष्मदर्शिता-(सं०स्त्री०) सूक्ष्म बातों को सोचने समझने का गुण; सूक्ष्मदर्शी-(सं०वि०) कुशाग्र बुद्धि सूक्ष्म बातों को समझने वाला। सूक्ष्मदृष्टि-(सं० स्त्री०) वह जो सूक्ष्मता समझता हो; सूक्ष्मदेही-(सं०पुं०) सूक्ष्म शरीर वाला; सूक्ष्मनाम-(सं०पुं०) विष्णु का एक नाम; सूक्ष्मपत्र-(सं०पुं०) धनियां, कुकुरौंधा; सूक्ष्मपत्रक-(सं० पुं०) वनतुलसी; सूक्ष्मपत्रिका-(सं०स्त्री०) सौंफ सतावर; सूक्ष्मपर्णी-(सं०स्त्री०) रामतुलसी। सूक्ष्मपाद-(सं० वि०) जिसके पैर छोटे हों।

सूक्ष्मफल-(सं०पुं०) लिसोड़ा; सूक्ष्मबीज (सं०पुं०) खसखस; सांख्य के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ये पांचों तन्मात्र; सूक्ष्ममति-(सं०वि०) तीक्ष्ण बुद्धि; सूक्ष्मवस्त्र-(सं०नपुं०) महीन कपड़ा; सूक्ष्मशरीर-(सं०नपुं०) दर्शन के अनुसार पांचों प्राण, पांचो ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि-इन सत्रहों तत्वों का समूह।

सूक्ष्माक्ष-(सं०पुं०) तीव्र दृष्टि।

सूक्ष्मात्मा-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

सूख-(हिं०वि०) देखो सूखा।

सूखना-(हिं०क्रि०) गीलापन हट जाना, रसहीन होना, नष्ट होना, दुर्बल होना, सुन्न होना, उदास होना, डरना, तेज नष्ट होना, जलते रहना या कम होना।

सूखा-(हिं०वि०) जिसमें जल का अंश न रह गया हो, तेज रहित, कठोर, केवल, (पुं०) पानी का न बरसना, दुर्बलता, जलहीन स्थान, नदी का किनारा, बच्चों की एक प्रकार की खासी, सुखडी, सूखा हुआ तमाखू का पत्ता जो चूना मिलाकर खाया जाता है; सूखा जवाब देना-स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना।

सूघर-(हिं०वि०) देखो सुघड़।

सूच-(हिं०वि०) पवित्र, निर्मल।

सूचक-(सं० वि०) सूचना देने वाला, ज्ञापक, बोधक (पुं०) सूई, दरजी, सूत्रकार, गुप्तचर, भेदिया, पिशुन, कौवा, बिल्ली, सियार, एक प्रकार का महीन चावल।

सूचना-(सं०स्त्री०) वेधना, भेद लेना, विज्ञप्ति, ज्ञापन, वह बात जो बतलाने के लिये कही जावे; विज्ञापन (हिं०क्रि०) बतलाना। सूचनापत्र-(सं०पुं०) विज्ञापन, विज्ञप्ति; सूचनीय-(सं०वि०) सूचना करने योग्य।

सूचा-(हिं० स्त्री०) सूचना, (वि०) सावधान।

सूचि-(हिं०वि०) पवित्र, शुद्ध। सूचिक-(सं०पुं०) दरजी; सूचिका-(सं०स्त्री०) सूई, हाथी का सूंड़, केवड़ा, एक अप्सरा का नाम; सूचिकाभरण-(सं०नपुं०) सन्निपात ज्वर की अन्तिम औषधि।

सूचिकामुख-(सं०पुं०) हाथी।

सूचित-(सं० वि०) ज्ञापित, बतलाया हुआ, बहुत उपयुक्त या योग्य।

सूचिभेद्य-(सं०वि०) बहुत घना। सूचिमल्लिका-(सं०स्त्री०) नेवारी का फूल

सूचिरदन-(सं०पुं०) नकुल, नेवला।

सूचिभेद्य-(सं०वि०) बहुत घना। सूचिरोमा-(सं०पुं०) बराह, शूकर। सूचिवत्-(सं०पुं०) गरुड़। सूचिवदन-(सं० पुं०) नेवला, मच्छड़। सूचिशालि-(सं० पुं०) एक प्रकार का महीन चावल। सूचिशिखा-(सं०स्त्री०) सूई की नोक। सूचिसूत्र-(सं०नपुं०) सूई में परोने का धागा।

सूची-(सं०स्त्री०) कपड़ा बीनने की सूई, दृष्टि, दुष्ट, भेदिया सफेद कुश, केतकी, केवड़ा, सेना का एक प्रकार का व्यूह, वह साक्षी जो बिना बुलाये स्वयं आकार किसी विषय की साक्षी देता हो, पिंगल के अनुसार एक रीति जिससे मात्रिक छन्दों की सख्या आदि जानी जाति है। सूचीकर्म-(सं०पुं०) सिलाई का काम; सूचीपत्र-(सं०पुं०) तालिका।

सूचीपद्म-(सं० पुं०) सेना का एक प्रकार का व्यूह। सूचीपाश-(सं०पुं०) सूई का छेद। सुचीमुख-(सं०नपुं०) हीरा, एक नरक का नाम।

सूच्छम, सूच्छिम-(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म

सूच्यग्र स्तम्भ-(सं०पुं०) धौरहरा।

सूच्याकार-(सं०वि०) सूई के आकार का लंबा और नुकीला।

सूच्यार्थ-(सं० पु०) साहित्य में किसी पद आदि का वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना शक्ति से जाना जाता है।

सूच्याहव-(सं०पुं०) चूहा।

सूछम-(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म।

सूजन-(हिं०स्त्री०) सूजने की क्रिया या अवस्था, शोथ, फुलाव।

सूजना-(हिं०क्रि०) शरीर के किसी अंग का फूलना, शोथ होना।

सूजनी-(हिं०स्त्री०) देखो सुजनी।

सूजा-(हिं०पु०) मोटी बड़ी सूई, सूआ, छकड़ा गाड़ी के पीछे की ओर उसको टिकाने के लिये लगाया हुआ डंडा।

सूजी-(हिं०स्त्री०) गेहूँ का दरदरा आंटा जो अनेक प्रकार के पकवान बनाने में प्रयोग किया जाता है, सूजा, (पुं०) दरजी।

सूझ-(सं०स्त्री०) दृष्टि, अनूठी बात, उद्भावना; सूझबूझ-(हिं०स्त्री०) बुद्धि

सूझना-(हिं०क्रि०) देख पड़ना, ध्यान में आना, छुट्टी पाना।

सूटा-(हिं०पुं०) तमाखू या गांजे का धुवां ज़ोर से खींचना।

सूत-(सं० पु०) रथ हांकने वाला, सारथि, बढ़ई, सूत्रकार पौराणिक, एक वर्णसंकर जाति, सूर्य, पारा, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम (वि०) प्रसूत, प्रेरणा किया हुआ।

सूत-(हिं०पुं०) कपड़ा बुनने का धागा, रेशम आदि का महीन तार, तन्तु, तागा, करधनी, नापने का एक मान, डोरा, पत्थर या लकड़ी पर चिह्न डालने की सूत की डोरी, थोड़े अक्षरों या शब्दों में ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकाशित करता हो, (वि०) भला, अच्छा।

सूतक-(सं० नपु०) जन्म, वह अशौच जो सन्तान होने पर परिवार वालों को होता है, मरणा शौच जो परिवार में किसी के मरने पर होता है, सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण; सूतकगेह-(सं० पु०) सूतिकागृह; सूतकान्न-(सं०पुं०) सूतकी के घरका अन्न, सूतकाशौच-(सं० नपुं०) जनना शौच; सूतकी-(सं० स्त्री०) जिसको सूतक लगा हो।

सूतज, सूततनय-(सं०पुं०) कर्ण का नाम।

सूतधार-(हिं०पुं०) बढ़ई।

सूतनन्दन-(सं०पु०) कर्ण।

सूतना-(हिं०क्रि०) निद्रा लेना, सोना।

सूतपुत्र-(सं०पुं०) कर्ण, कीचक, सारथि।

सूतफूल-(हिं०पुं०) महीन आटा, मैदा।

सूतलड़-(हिं०पुं०) रहट।

सूतवशा-(सं० स्त्री०) गाय।

सूता-(हिं०पुं०) तन्तु, सूत, (स्त्री०) वह स्त्री जिसने बच्चा जना हो।

सूति-(सं०स्त्री०) जनन, प्रसव, जन्म, सीवन, अन्न की उत्पत्ति, (पु०) हंस।

सूतिका-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसने हाल में बच्चा जना हो; सूतिकागार, सूतिकागृह-(सं०नपु०) प्रसवगृह, सौरी।

सूतिगृह-(सं०नपुं०) देखो सूतिकागार।

सूतिमारुत-(सं०पुं०) प्रसव पीड़ा; सूतिमास-(सं०पुं०) वह महीना जिसमें स्त्री को प्रसव हो।

सूती-(हिं०वि०) सूत का बना हुआ (स्त्री०) सीपी; सूतीघर-(हिं० पुं०) सूतिकागार।

सूत्र-(सं० नपु०) तन्तु, सूत, तागा, डोरा, यज्ञोपवीत, जनेऊ, व्यवस्था, नियम, रेखा, निमित्त, कारण, मूल, पता, थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो। सूत्रक-(सं०नपुं०) सेमई; सूत्रकण्ठ-(सं०पुं०) खंजन पक्षी, कबूतर; सूत्रकर्म-बढई का काम; सूत्रकार-(सं०पु०) सूत्रों की रचना करने वाला, बढई, जुलाहा; सूत्रकोश-(सं०पुं०) सूत की अंटी; सूत्रग्रन्थ-(सं०पुं०) मूल सूत्र में रचित ग्रन्थ; सूत्रतर्कुटी-(सं०स्त्री०) तकला, टेकुआ; सूत्रधार-(सं०पुं०) नाटयशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट; सूत्रधारी-(सं०स्त्री०) सूत्रधार की पत्नी; सूत्रपात-(सं० पुं०) आरंभ, शुरु; सूत्रपुष्प-(सं० पुं०) कपास का पौधा; सूत्रयन्त्र-(सं०नपुं०) करघा, ढरकी; सूत्रला-(सं० स्त्री०) तकली, टेकुआ; सूत्रवाप-(सं० पु०) कपड़ा बुनने की क्रिया; सूत्रक्रयी-(सं०त्रि०) सूत बेंचने वाला; सूत्रविद्-(सं०पुं०) सूत्रों को जानने वाला; सूत्रवेष्टन-(सं०नपु०) करगह; सूत्रशाख-(सं०पुं०) शरीर; सूत्रात्मा-(सं०पुं०) जीवात्मा।

सूत्राली-(सं०स्त्री०) माला, हार।

सूत्री-(सं०वि०) सूत्र युक्त।

सूत्रीय-(सं०वि०) सूत्र सबंधी।

सूथन-(हिं०स्त्री०) पायजामा, सुथना।

सूथनी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पहरने का पायजामा, सुथना।

सुथार-(हिं० पुं०) बढ़ई, सुनार।

सूद-(सं० पुं०) सूपकार, रसोइयादार।

सूदक-(सं० वि०) नाश करने वाला; सूदकर्म-(सं० नपुं०) भोजन पकाना; सूदकशाला-(हिं०स्त्री०) रसोई घर।

सूदन-(सं०नपुं०) अंगीकार करने की क्रिया, वध, नाश, फेंकने की क्रिया;

सूदना-(हिं०क्रि०) नाश करना।

सूदशाला-(सं०स्त्री०) पाकशाला; सूदशास्त्र-(सं०नपु०) पाकशास्त्र।

सूदा-(हिं०पु०) ठगों की मण्डली का वह मनुष्य जो यात्रियों को बहका कर अपनी मण्डली में लाता है।

सूदित-(सं०वि०) आहत, चोटइल।

सूदी-(हिं०वि०) व्याज पर लिया हुआ,

सूध-(हिं० वि०) देखो शुद्ध, सोधा; सूधना-(हिं०क्रि०) सच होना, ठीक होना; सूधा-(हिं०वि०) सीधा, सरल, जो धक्र न हो; सूधे-(हिं०क्रि०वि०) सीघे से।

सून-(सं०नपुं०) प्रसव, फल, पुत्र (वि०) फूला हुआ, विकसित, उत्पन्न।

सून-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार वृक्ष।

सूनसान-(हिं०वि०) निर्जन।

सूना-(हिं०वि०) जनहीन, (पुं०) निर्जन स्थान; सूनापन-(हिं० पुं०) एकान्त, सन्नाटा।

सूनिक-(सं०पुं०) मांस बेचने वाला।

सूनु-(सं०पुं०) सूर्य, पुत्र, बेटा, छोटा भाई, नाती।

सूनृत-(सं०वि०) सत्य और प्रिय, दयालु, सूनृता-(सं० स्त्री०) सत्य और प्रिय भाषण, सत्य।

सूप-(सं०पुं०) मूंग, अरहर, मसूर आदि की पकी हुई दाल, रसदार तरकारी, बाण, तीर; सूप-(हिं० पुं०) अनाज

फटकने का सींक का डगरा ।
सूपक–(हिं॰पुं॰) रसोइयादार;सूपकार–(स॰पु॰) पाककर्ता संकेत से समझने वाला ।
सूपनखा–(हिं॰स्त्री॰) देखो शूर्पणखा ।
सूपशास्त्र–(सं॰पुं॰) पाकशास्त्र ; सूपस्थान– सं॰नपुं॰) पाकशाला ।
सूपांग–(सं॰न॰) हींग ।
सूपा–(हिं॰पुं॰) शूर्प, सूप ।
सूपाय–(सं॰त्रि॰) सदुपाय,उत्तम उपाय;
सूब–(हिं॰पुं॰) तांबा ।
सूबड़ा–(हिं॰पु॰) वह चांदी जिसमें चांदी और जस्ते का मेल हो ।
सूभर–(हिं॰वि॰) शुभ्र, सुन्दर, सफ़ेद ।
सूम–(सं॰नपुं॰) दूध, जल, आकाश ।
सूमलू–(हिं॰पुं॰) चित्रक, चीता नामक पौधा ।
सूर–(सं॰पुं॰) सूर्य, अर्कवृक्ष, मदार, आचार्य, पण्डित, अन्धा, छप्पय का एक भेद,सूरदास, (हिं॰वि॰) सूरवीर, (हिं॰पुं॰) पठानों की एक जाति
सूरकन्द–सं॰पुं॰) ज़मीकन्द, सूरन; सूर कुमार–सं॰पुं॰) वसुदेव ; सूरकान्त–(सं॰पुं॰) सूर्यकान्त ।
सूरज–(हिं॰ पुं॰) सूर्य, शनि, सुग्रीव, शूर का पुत्र; सूरज पर थूकना–किसी निर्दोष व्यक्ति पर लांछन लगाना; सूरज को दीपक दिखाना–जो स्वयं पण्डित हैं उसको शिक्षा देना
सूरज भगत–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार की गिलहरी ।
सूरजमुखी–(हिं॰पुं॰)एक पौधा जिसमें पीले रंग के बड़े फूल लगते हैं, सूर्यास्त के समय यह फूल नीचे को झुक जाता है और सूर्योदय होने पर फिर से उठने लगता है ।
सूरज सुत–(हिं॰पुं॰) सुग्रीव ।
सूरजा–(सं॰स्त्री॰) यमुना नदी ।
सूरण– सं॰पुं॰) ज़मीकन्द, ओल ।
सूरता, सूरताई–(हिं॰स्त्री॰) देखो शूरता
सूरति–(हिं॰स्त्री॰) स्मरण, सुध, सूरत
सूरदास–(हिं॰पुं॰) एक प्रसिद्ध हिन्दी के कवि का नाम जो कृष्ण भक्त थे, यह अन्धे भी थे ।
सूरन–(हिं॰पुं॰) ज़मीकन्द, ओल ।
सूपनखा–(हिं॰स्त्री॰) देखो शूर्पनखा ।
सूर पुत्र–(सं॰पुं॰) सूर्य के पुत्र सुग्रीव
सूरबार–(हिं॰पुं॰) पायजामा, सूथन ।
सूरमा–(हिं॰ पुं॰) वीर, योद्धा, बहादुर ।
सूरमापन–(हिं॰पुं॰) शूरता,
सूर सागर–(हिं॰ पुं॰) हिन्दी के महाकवि सूरदास कृत एक ग्रन्थ जिसमें कृष्ण लीला का वर्णन है ।
सूर सावंत–(सं॰ पुं॰) नायक,सरदार युद्ध मन्त्री ।
सूर सुत–(सं॰ पुं॰) सुग्रीव, शनि ग्रह ।
सूर सुता–(सं॰स्त्री॰) सूर्य की पत्नी,
सूर सूत–(सं॰पुं॰) सूर्य के सारथि,अरुण
सूरसेन–(हिं॰ पुं॰) देखो शूरसेन;
सूर सेनपुर–(सं॰पुं॰) मथुरा नगरी;
सूरि–(सं॰पुं॰) पण्डित, विद्वान्, सूर्य, वृहस्पति, कृष्ण, ऋत्विज्, यज्ञ करने वाला ।
सूरी–(सं॰स्त्री॰) पंडिता, विदुषी, सूर्य की पत्नी कुन्ती ।
सूरुज–(हिं॰पुं॰) देखो सूर्य ।
सूरेठ–(हिं॰पुं॰) बहेलियों की लासा लगाने की लकड़ी ।
सूर्प–(सं॰ पुं॰) शूर्प, सूप; सूर्पनखा–(हिं॰स्त्री॰) शूर्पणखा ।
सूर्य–(सं॰पुं॰) रवि ग्रह, सूरज,सोना, तांबा, बालि के एक पुत्र का नाम, अर्क वृक्ष, बारह की संख्या; सूर्यकमल–(स॰पुं॰) सूरजमुखी का फूल;
सूर्यकान्त–(सं॰ पु॰) सूर्यमणि;
सूर्यकाल–दिवस, दिन । सूर्यग्रहण–(सं॰ नपुं॰) सूर्य का ग्रहण । सूर्यज–(सं॰पुं॰) मनु, यम,शनि ग्रह, सुग्रीव, कर्ण,रेवन्त । सूर्यजा–(सं॰स्त्री॰)यमुना नदी । सूर्यतनय–(स॰पु॰) सूर्य के पुत्र, मनु, यम आदि । सूर्य तनया–(सं॰स्त्री॰)यमुना नदी । सूर्य तापिनी–(सं॰ स्त्री॰) एक उपनिषद् का नाम ।
सूर्यनक्षत्र–(स॰ नपुं॰) सूर्य के साथ नक्षत्र का योग । सूर्यनाभ– (सं॰पुं॰) एक दानव का नाम । सूर्यनेत्र–(सं॰ पुं॰) गरुड़ के एक पुत्र का नाम ।
सूर्यपत्नी–(सं॰स्त्री॰) छाया । सूर्यपुत्र–(सं॰पुं॰) मदार का पौधा । सूर्यपर्व–(सं॰ नपुं॰) वह समय जब सूर्य किसी नई राशि में प्रवेश करता है । सूर्यपाद–(सं॰ पुं॰) सूर्य की किरण ।
सूर्यपुत्र–(सं॰पुं॰) वरुण, शनि, यम, अश्विनी कुमार, सुग्रीव और कर्ण ।
सूर्यपुत्री–(सं॰स्त्री॰) यमुना, बिजली ।
सूर्यपूजा–(सं॰स्त्री॰)सूर्य की उपासना ।
सूर्यप्रभ–(सं॰ पुं॰) एक प्रकार की समाधि, सूर्य के समान दीप्तिमान् ।
सूर्यबिम्ब–(सं॰पुं॰) सूर्य का मण्डल ।
सूर्यभक्त–(सं॰पुं॰) सूर्यका उपासक ।
सूर्यभ्राता–(सं॰ पुं॰) ऐरावत हाथी ।
सूर्यमणि–(स॰ पुं॰) सूर्यकान्त मणि ।
सूर्यमण्डल–(सं॰नपुं॰) सूर्य का घेरा ।
सूर्यमुखी–(सं॰पुं॰) सूरजमुखी । सूर्यरश्मि–(सं॰ पुं॰) सूर्य की किरण ।
सूर्यलोक–(सं॰पुं॰) सौर भुवन । सूर्यवंश–(सं॰ पुं॰) सूर्य की सन्तति ।
सूर्यवल्लभा–(सं॰ स्त्री॰) कमलिनी ।
सूर्यवार–(स॰पुं॰) रविवार । सूर्यविलोकन–(सं॰ पुं॰) एक मांगलिक कृत्य जिसमें नवजात शिशु को सूर्य का दर्शन कराया जाता है । सूर्यवृक्ष–(स॰पुं॰)मदार का पौधा । सूर्यवेश्म–सूर्य मण्डल । सूर्यव्रत–(सं॰ नपुं॰) रविवारको किया जाने वाला व्रत ।
सूर्यशोभा–(सं॰स्त्री॰) सूर्य का प्रकाश, धूप । सूर्य संक्रम–(सं॰पुं॰) सूर्य का एक राशि से दूसरे राशि में प्रवेश ।
सूर्यसारथि–(सं॰पुं॰)अरुण । सूर्यसुत–(सं॰पुं॰) शनि, कर्ण, सुग्रीव ।
सूर्यांशु–(सं॰ पुं॰) सूर्य की किरण ।
सूर्या–(सं॰स्त्री॰) सूर्यकी पत्नी, सन्ध्या ।
सूर्यातप–(सं॰ पुं॰) धूप । सूर्यात्मज–कर्ण, शनि, सुग्रीव । सूर्यायाम–(सं॰ पुं॰) सूर्यास्त का समय । सूर्यालोक–(सं॰पुं॰) सूर्य का प्रकाश । सूर्यावर्त–(सं॰ पुं॰) हुड़हुड़, गज पीपल, एक प्रकार का जल पात्र । सूर्याश्म–(सं॰ पुं॰) सूर्यकांत मणि । सूर्यास्त–(सं॰ नपुं॰) सूर्य के डूबने का समय ।
सूर्योदय–(सं॰ नपुं॰) सूर्य के निकलने का सम्य, प्रातःकाल ।
सूर्योपस्थान–(सं॰ नपुं॰)वैदिक सन्ध्योपासन में सूर्य की एक प्रकार की उपासना । सूर्योपासक–(सं॰पुं॰) सूर्य की उपासना या पूजा करने वाला ।
सूर्योपासना–(सं॰ स्त्री॰) सूर्य की पूजा या उपासना ।
सूल–(हिं॰ पु॰) बरछा, भाला, कोई चुभनेवाली नुकीली वस्तु, भाला चुभने के समान पीड़ा, माला के ऊपर का फुलरा । सूलधर, सूरधारी–(हिं॰ पुं॰) देखो शूलधर, शूलधारी । सूलना–(हिं॰क्रि॰) भालेसे छेदना या छिदना, व्यथित होना, पीड़ित होना । सूलपानि–(हिं॰ पुं॰) देखो शूलपाणि ।
सूली–(हिं॰स्त्री॰)प्राण दण्ड देने की एक प्राचीन रीति जिसमें अपराधी नुकीले डंडे के ऊपर बैठा दिया जाता था और उसके मस्तक पर चोट दी जाती थी, फाँसी ।
सूवना–(हिं॰क्रि॰) बहना ।
सूवा–(हिं॰पुं॰) शुक, सुग्गा ।
सूस, सूसमार–(हिं॰पुं॰) मगर की तरह का एक जल जन्तु, शिशुमार ।
सूसी–(हिं॰स्त्री॰) एक प्रकार का धारीदार या चारखाने का कपड़ा ।
सूहा–(हिं॰पुं॰) एक प्रकार का लाल रंग, सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग, (वि॰) लाल रंग का । सूहाकान्हड़ा–(हिं॰स्त्री॰) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी । सूहाटोडी–(हिं॰स्त्री॰) सम्पूर्ण जातिकी एक संकर रागिणी ।
सूही–(हिं॰स्त्री॰) देखो सूहा ।
सृंखला–हिं॰स्त्री॰) देखो शृंखला ।
सृंग–(हिं॰पुं॰) देखो शृंग । सृंगबेरपुर–(हिं॰पुं॰) देखो शृंगबेरपुर । सृंगी–(हिं॰पुं॰) देखो शृंगी ।
सृक–(सं॰पुं॰) बाण, कमल, वायु, वज्र, माला ।
सृकंडु–(सं॰ पुं॰) खुजली का रोग ।
सृकाल–(सं॰ पुं॰) शृगाल, सियार ।
सृक्थ–(सं॰स्त्री॰) जोंक ।
सृग–(हिं॰पुं॰) माला, गजरा, हार ।
सृगाल–(सं॰पुं॰) सियार, गीदड़, भीरु, डरपोक, धूर्त । सृगालवदन–(सं॰पुं॰) एक असुर का नाम । सृगालिनी, सृगाली–(सं॰स्त्री॰) सियारिन, लोमड़ी
सृज्–(सं॰पुं॰) सृष्टिकर्ता ।
सृग्विनी–(सं॰स्त्री॰) देखो सृग्विणी ।
सृजक–(हिं॰ पुं॰) सृष्टि करने वाला, उत्पन्न करने वाला ।
सृजन–(हिं॰पुं॰)सृष्टि करनेकी क्रिया ।
सृजनहार–(हिं॰ पुं॰) सृष्टिकर्ता ।
सृजना–हिं॰क्रि॰)सृष्टि करना,उत्पन्न करना ।
सृज्य–(स॰वि॰) उत्पन्न किया जाने वाला ।
सृञ्जय–(सं॰ पुं॰) मनु के एक पुत्र का नाम, वह वंश जिसमें धृष्टद्युम्न उत्पन्न हुए थे ।
सृणीका–(स॰वि॰) थूक लार ।
सृत–(सं॰ वि॰) घिसका हुआ,
सृष्ट–(सं॰ वि॰) रचित, निश्चित, संकल्प में दृढ़, अलंकृत,युक्त, उत्पन्न
सृष्टि–(स॰ स्त्री॰) निर्माण, रचना, उत्पत्ति, जगत की उत्पत्ति, प्रकृति, संसार, उदारता । सृष्टिकर्ता–(सं॰ पुं॰) संसार की रचना करनेवाले ब्रह्मा, ईश्वर । सृष्टि-विज्ञान–(सं॰ पुं॰) वह शास्त्र जिसमे सृष्टि रचना आदि का विचार हो ।
सेंक–(हिं॰स्त्री॰)भूनने या सेंकने की क्रिया या भाव । सेंकना–(हिं॰ क्रि॰) आंच के समीप अथवा आग पर रख कर भूनना, गरम करना; आंख सेंकना–सुन्दर व्यक्ति को देखना,धूप सेंकना–धूप में रह कर शरीर को गरम करना ।
सेंगर–(हिं॰पुं॰) एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है,बबूल का फल, एक प्रकार का अगहनियां धान, क्षत्रियों की एक शाखा ।
सेंगरा–(हिं॰पु॰)वह मोटा डंडा जिसपर लटका कर भारी पत्थर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते है ।
सेंठा–(हिं॰पुं॰) मूंज का सरकंडे का निचला पुष्ट भाग ।
सेंढ–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का खनिज पदार्थ ।
सेंत–(हिं॰स्त्री॰) कुछ व्यय न होना, पास का कुछ न लगना; सेंतका–बिना दाम का, संख्या या परिमाण में अधिक; सेंत में–बिना कुछ दाम लगे, व्यर्थ;सेंतमेंत–बिना दाम दिये, वृथा ।
सेंति,सेंती–(हिं॰स्त्री॰) देखो सेंत ।
सेंथी–(हिं॰पु॰) बरछी, भाला ।
सेंदुर–(हिं॰ पुं॰) देखो सिन्दूर, ईंगुर की बुकनी; सेंदुर चढना–किसी कन्या का विवाह होना; सेंदुर देना–विवाह के समय वर का कन्या की माँग में सेंदुर भरना । सेंदुरा–(हिं॰वि॰)सेंदुर के रंग का (पु॰) सेंदुर रखने का डिब्बा । सेंदुरिया–(हिं॰ पुं॰) एक सदावहार पौधा जिसमें सिन्दूर के समान लाल फूल लगते हैं । सेंदुरी–(हिं॰ स्त्री॰) लाल रंग की गाय ।

सेंध–(हिं०स्त्री०)चोरी करनेके लिये भीत तोड़कर बनाया हुआ छेद जिसमें से होकर चोर घरके भीतर घुसता है, सुरंग। सेंधना–(हिं०क्रि०) सेंध या सुरंग लगाना।
सेंधा–(हिं० पु०) एक प्रकार का नमक जो खान में से निकलता है, सैन्धव, लाहौरी नमक।
सेंधिया–(हिं० वि०) भीतमें सेंध लगाने वाला (पुं०) ककड़ी की जाति की एक लता, फूट, एक प्रकार का विष, ग्वालियरका प्रसिद्ध मराठा राजवंश।
सेंधी–(हिं०स्त्री०) खजूर, मीठी मदिरा।
सेंधुर–(हिं०पुं०) देखो सेंदुर, सिन्दूर।
सेंवई–(हिं०स्त्री०) मैदे के सुखाये हुए सूतके समान महीन लच्छे जो घी मे तल कर तथा दूध में खीर बनाकर खाये जाते हैं। सेंवर–(हिं०पुं०) देखो सेमल।
सेंहा–(हिं पुं०) कुवां खोदने वाला श्रमिक।
सेंहुड़–(हिं०पुं०) थूहर।
से–(हिं०)करण और अपादान कारक का चिह्न, तृतीया और पंचमी की विभक्ति, (हिं० वि०) समान, सदृश, (सर्व०) वे, (स्त्री०) सेवा।
सेउ–(हिं०पुं०) देखो सेब।
सेक–(सं० पुं०) जल सिञ्चन, सिंचाव, छिड़काव, छींटा अभिषेक।
सेकड़ा–(हिं०पुं०) हलवाहे की बैल हांकने की छड़ी।
सेकतव्य–(सं०वि०) सींचने योग्य।
सेक पात्र, सेक भाजन–(सं०नपुं०)सींचने का पात्र।
सेकिम–(सं०वि०)खूब सींचा हुआ,ढाला हुआ।
सकुवा–(हिं०पुं०) लंबे डंडेका बरछा।
सेकुरी–(हिं०पुं०) धान।
सेक्ता–(सं०नपुं०) सींचने वाला।
सेखर–(हिं०पुं०) देखो शेखर।
सेगोन–(हिं०पुं०)मटमैले रंगकी लाल मिट्टी जो नलोंके पास पाई जातीहै।
सेचक–(सं० वि०) सींचने वाला, (पुं०) मेघ,बादल। सेचन–(सं०नपुं०) सिंचाई, छिड़काव, मार्जन, अभिषेक। सेचनीय–(सं० वि०) सींचने योग्य।
सेचित–(स० वि०) सींचा हुआ।
सेज–(सं० स्त्री०)शय्या,पलंग,बिछौना।
सेजपाल–(हिं०पुं०)राजा की शय्या। पर पहरा देने वाला। सेजरिया–(हिं० स्त्री०) छोटी पलंग। सेज्वा–(हिं०स्त्री०) देखो शय्या, सेज।
सेझना–(हिं०क्रि०)दूर होना, हटना।
सेटना–(हिं० क्रि०) समझना बूझना, मानना।
सेठ–(हिं० पुं०) महाजन, साहूकार, कोठीवाल,बड़ा व्यापारी,धनी मनुष्य, सुनार,खत्रियोंकी एक जाति,दलाल।
सेठन–(हिं०पुं०) झाड़ू बोहारू।
सेड़ी–(हिं०स्त्री०) सखी, सहेली।
सेढ–(हिं० पु०) पाल। सेढखाना–(हिं०पुं०) जहाज में की पाल रखने की कोठरी।
सेत–(हिं०पुं०) देखो सेतु, श्वेत। सेतकुली–(हिं० पुं०) सफेद जाति का नाग। सेतद्युति–(हिं०पुं०) चन्द्रमा। सेतवाह–(हिं० पुं०) चन्द्रमा, अर्जुन। सेत वाल–(हिं०पुं०) वैश्यों की एक जाति।
सेतिका–(सं० स्त्री०) अयोध्या नगरी।
सेतु–(स० पुं०) जलबन्ध, बाँध, मेड़, पुल, सीमा, मर्यादा, व्यवस्था, टीका व्याख्या, प्रणव, ओंकार। सेतुक–(सं० पुं०) पुल, बाँध। सेतुकर–(स० त्रि०) पुल बनाने वाला।
सेतुप्रद–(सं०पुं०) कृष्ण का एक नाम
सेतुबन्ध–(सं० पुं०) वह पुल जो लंका पर आक्रमण करने के लिये श्री रामचन्द्र ने समुद्र पर बँधवाया था, खेत में पुल की बँधाई। सेतुभेद–(स० पुं०) पुल का टूटना। सेतुशैल–(सं०पुं०) सरहद का पहाड़।
सेथुवा–(हिं०पुं०) देखो सूस।
सेथिया–(हिं०पुं०) नेत्रों की चिकित्सा करने वाला।
सेद–(हिं०पुं०) देखो स्वेद, पसीना। सेदज–(हिं०वि०) देखो स्वेदज।
सेदरा–(फ़ा०पुं०) वह घर जो तीन ओर से खुला हो।
सेध–(सं०पुं०) निषेध, निवारण।
सेधक–(सं०वि०) हटाने या रोकने वाला।
सेन–(सं० नपुं०) सेना, शरीर, जीवन, बंगाल के वैद्य जाति की उपाधि, (वि०) सनाथ, आश्रित, अधीन (हिं० पुं०) बाज पक्षी।
सेनाजित्–(सं० वि०) सेना को जीतने वाला, (पुं०) कृष्ण के एकपुत्र का नाम,
सेनप–(सं० पुं०) सेनापति।
सेना–(सं०स्त्री०) युद्ध की शिक्षा पाये हुए अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित मनुष्यों का समूह, पलटन, सिपाहियों का जत्था, भाला, बरछी, इन्द्र का वज्र, (हिं०क्रि०) सेवा टहल करना, आराधना करना, व्यवहार करना, लिये बैठे रहना, पड़ा रहना, चिड़ियों का अंडे पर बैठना। सेनाकर्म–(सं०नपुं०) सेना का काम। सेनाग्र–(सं० नपुं०) सेना की अगला भाग।
सेनाजीवी–(सं० पुं०) सैनिक, योद्धा,
सेनादार–(हिं० पुं०) सेना नायक।
सेनाधिप–(सं० पुं०) सेनापति।
सेनाध्यक्ष–(सं०पुं०) सेना का अध्यक्ष।
सेनानायक–(सं० पुं०) सेनापति।
सेनानी–(सं०पुं०) सेनापति, कार्तिकेय का एक नाम, एक रुद्र का नाम।
सेनापति–(सं० पुं०) सेना नायक, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
सेनापत्य–(सं०नपुं०) सेनापति का कार्य या पद: सेनापाल–(सं० पुं०) सेनापति। सेनामुख–(सं०नपुं०) सेना का अगला भाग। सेनावास–(सं० पुं०) वह स्थान जहां सेना रहती हो, छावनी, शिविर, डेरा। सेनावाह–(स० पुं०) सेनानायक। सेनाव्यूह–(सं० पुं०) सैन्यविन्यास, सेना की भिन्न स्थानों में विशेष प्रकार से नियुक्ति। सेनास्थान–(सं० नपुं०) शिबिर।
सेनि–(हिं० स्त्री०) देखो श्रेणी।
सेनिका–(हिं०स्त्री०) बाज पक्षी की मादा एक छन्द का नाम।
सेनीय–(सं०वि०) सेना संबन्धी।
सेन्द्रिय–(सं० वि०) जिसमें इन्द्रियां हों, सजीव।
सेम–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।
सेमई–(हिं०वि०) हलका रंग (वि०) हलके हरे रंग का।
सेमन्ती–(सं० स्त्री०) सफेद गुलाब।
सेमर–(हिं०पुं०) दलदल भूमि।
सेमल–(हिं०पुं०) एक बहुत बड़ा वृक्ष जिसमें लाल फूल होते हैं, इन फलों या डोडों में गूदा नहीं होता केवल रूई होती है।
सेमा–(हिं०पुं०) बड़ी सेम।
सेर–(हिं०पुं०) सोलह छटाँक या अस्सी तोले की तौल, मन का चालीसवां भाग, एक प्रकार का धान, सिंह, (वि०) तृप्त।
सेरवा–(हिं०पुं०) वह कपड़ा जो अन्न को ओसाने में हवा करने के लिये प्रयोग में लाया जाता है।
सोरही–(हिं०स्त्री०) वे सोलह कौड़ियाँ जिनसे जुआ खेला जाता है।
सेरा–(हिं०पुं०) चारपाई की पटिया जो सिरहाने की ओर रहती है।
सेराना–(हिं०क्रि०) शीतल होना, ठंढा होना, तृप्त होना, समाप्त होना, जीवित न रहना, ठंढा करना, मूर्ति आदि का जल में प्रवाह करना।
सेरल–(सं०पुं०) हलका पीलापन।
सेरीना–(हिं०स्त्री०) अन्न या चारे का वह अंश जो कृषक भूस्वामी को देता है।
सेरुआ–(हिं०पुं०) वैश्य, बनिया।
सेरुवा–(हिं०पुं०) वेश्यागामी।
सेल–(हिं० पुं०) भाला, बरछा, एक प्रकार का सन का रस्सा।
सेलखड़ी–(हिं० स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
सेलना–(हिं०क्रि०) मर जाना।
सेला–(हिं० पुं०) रेशमी चादर या दुपट्टा, साफा, भुँजिया धान।
सेलिया–(हिं०पुं०) घोड़े की एक जाति।
सेलिस–(स०पुं०) एक प्रकार का सफेद हिरन।
सेली–(हिं० स्त्री०) छोटा भाला, बरछी, छोटा दुपट्टा, एक प्रकार की मछली, गाँती, बद्धी या माला जिसको यती लोग गले में डाले रहते हैं अथवा माथे में लपेटते हैं, एक प्रकार का स्त्रियों का गहना।
सेल्ला–(हिं०पुं०) एक प्रकार का अस्त्र, भाला।
सेल्ह–(हिं० पुं०) देखो सेल।
सेल्हा–(हिं०पुं०) देखो सेला; एक प्रकार का अगहनियां धान।
सेल्ही–(हिं०स्त्री०) छोटा दुपट्टा, गांती।
सेवई–(हिं०स्त्री०) गुँथे हुए मैदे के सूत के समान लच्छे जो घी में भून कर तथा दूध में खीर की तरह पका कर खाये जाते हे।
सेवढी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका धान।
सेवंत–(हिं०पुं०) एक प्रकार का राग।
सेव–(हिं०पुं०) सूत के रूप का बेसन का बना हुआ एक पक्वान्न।
सेवक–(सं०पुं०) सेवा करने वाला, भृत्य, भक्त, उपासक, व्यवहार करने वाला, छोड़कर कहीं न जाने वाला, सीने वाला दरजी।
सेवकाई–(हिं०स्त्री०) सेवा टहल।
सेवड़ा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा मोटा सेव, जैन साधुओं का एक भेद।
सेवति–(हिं०स्त्री०) देखो स्वाती।
सेवती–(सं०स्त्री०) गुलाब का एक भेद जो सफेद होता है।
सेवन(सं०नपुं०) सीना, गूंथना, आराधना, पूजन, निरन्तर निवास, सम्भोग उपभोग, प्रयोग, सेवा परिचर्या (हिं० पुं०) सावाँ की तरह की एक प्रकार की घास।
सेवना–(हिं०पुं०) देखो सेना।
सेवनी–(सं० स्त्री०) सूची, सूई, जोड़, टांका, दासी; सेवनी–(सं०वि०) सेवा करने योग्य, पूजा के योग्य, सीने योग्य।
सेवर–(हिं०पुं०) देखो शेबर।
सेवल–(हिं०पुं०) विवाह की एक रीत।
सेवा–(सं०स्त्री०) दूसरे को सुख पहुंचाने का काम, टहल, चाकरी, आराधना, पूजा, आश्रय, शरण, रक्षा, संभोग, मैथुन; सेवा में–सन्मुख, सामने, सेवाजन–भृत्य; सेवाटहल–(हिं० पु०) परिचर्या, शुश्रूषा।
सेवाती–(विं०स्त्री०) देखो स्वाती।
सेवाधारी–(हिं०पुं०) पुजारी।
सेवापन–(हिं०पुं०) दासत्व, टहल।
सेवाबन्दगी–(हिं०स्त्री०) आराधना, पूजा
सेवार, सेवाल–(हिं०स्त्री०) बालों की लच्छों की तरह पानी में फैलने वाली एक प्रकार की घास, शैवाल।
सेवावृत्ति–(सं०स्त्री०) दासत्व।
सेवि–(सं०नपुं०) बेर का फल, सेव।
सेविक–(सं०स्त्री०) सेवई नामक पकवान, परिचारिका, दासी।
सेवित–(सं०वि०) परिचर्या या सेवा किया हुआ, आराधित, उपभोग किया हुआ, आश्रित, व्यवहार में लाया हुआ। सेवितव्य–(स० त्रि०) सेवा के योग्य, आश्रयणीय। सेविता–(सं०स्त्री०) सेवा, दासवृत्ति; उपासना,

आश्रय, उपभोग करने वाला।
सेवी–(सं० वि०) सेवा या आराधना करने वाला, संभोग करने वाला।
सेव्य–(सं०पुं०) पीपल का वृक्ष, गौरैया पक्षी, जल, एक प्रकार का मद्य, स्वामी, मालिक, (वि०) आराधना करने योग्य, रक्षा करने योग्य। सेव्यसेवक–(सं० पुं०) स्वामी और सेवक। सेव्या–(सं० स्त्री०) वह पौधा जो दूसरे पेड़ों पर उगता है बड़ा।
सेश्वर–(सं० वि०) ईश्वरयुक्त, जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो। सेश्वर साङ्ख्य–(सं०नपुं०) पातञ्जल दर्शन।
सेष–(हिं० पुं०) देखो शेष, शेख।
सेस–(हिं०वि०) देखो शेष।
सेसनाग–(हिं०पुं०) देखो शेषनाग।
सेसरंग–(हिं०वि०) श्वेत रंग।
सेसर–(हिं० पुं०) ताश का एक रंग, छल कपट।
सेसरिया–(हिं०पुं०) छल से दूसरे का धन अपहरण करने वाला।
सेसी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत ऊंचा वृक्ष।
सेहथना–(हिं०क्रि०) झाड़ना, बुहारना।
सेहरा–(हिं०पुं०) विवाह का मुकुट, मौर, विवाह के अवसर पर वर के घर पर गाई जानेवाली गीत; किसी के सिर पर सेहरा बांधना–अनुग्रहीत होना।
सेहरी–(हिं०स्त्री०) छोटी मछली, सहरी
सेहा–(हिं०पुं०) कुवां खोदने वाला।
सेहियान–(हिं०पुं०) खलिहान स्वच्छ करने का कूंचा।
सेही–(हिं०स्त्री०) साही नामक जन्तु, जिसकी शरीर पर बड़े बड़े कांटे होते हैं।
सेहुंआं–(हिं०पुं०) एक प्रकार का चर्म रोग जिसमें शरीर पर भूरे चिह्न पड़ जाते हैं।
सेहुंड़–(हिं०पुं०) थूहर।
सैंगर–(हिं०पुं०) देखो सेंगर।
सैंतना–(हिं०क्रि०) संचित करना, बटोरना, हाथों से समेटना, सँभालना, सावधानी से अपनी रक्षा में रखना।
सैंतालिस, सैंतालीस–(हिं० वि०) जो संख्या में चालीस और सात हो (पुं०) चालीस और सात की संख्या ४७।
सैंतालीसवां–(हिं०वि०) जिसका स्थान सैंतालीस पर हो।
सैंतिस, सैंतीस–(हिं०वि०) जो संख्या में तीस और सात हो (पुं०) तीस और सात की संख्या ३७; सैंतीसवां–(हिं०वि०) जिसका स्थान सैंतीस पर हो
सैंथी–(हिं०स्त्री०) भाला।
सैंहल–(सं०वि०) सिंहलद्वीप संबंधी।
सै–(हिं०स्त्री०) तत्व, सार, शक्ति, लाभ, वृद्धि, बढ़ती, (पुं०) शत, सौ।
सैकड़ा–(हिं०पुं०) सौ का समूह; सैकड़े–(हिं०क्रि०वि०) प्रतिशत; सैकड़ों–(हिं०वि०) कई सौ, गिनती में बहुत।
सैकत–(सं०नपुं०) बलुआ किनारा, रेतीली मिट्टी, (वि०) रेतीला, बलुआ
सैकतिल–(सं०वि०) रेतीला, बलुआ।
सका–(हिं०पुं०) घड़े के आकार का मिट्टी का बड़ा पात्र।
सैजन–(हिं०पुं०) देखो सहिजन।
सैतव–(सं०वि०) सेतु (पुल) सबंधी।
सैथी–(हिं०स्त्री०) बरछी भाला।
सैद्धान्तिक–(सं०वि०) सिद्धान्त या तत्व सम्बन्धी (वि०) सिद्धान्त को जानने वाला तान्त्रिक।
सैन–(हिं०स्त्री०) संकेत, इंगित लक्षण, चिह्न, देखो शयन, श्येन।
सैनपति–(हिं०पुं०) सेनापति।
सैनभोग–(हिं०पुं०) वह नैवेद्य जो रात्रि के समय मन्दिरों में चढ़ाया जाता है
सैना–(हिं०स्त्री०) सेना; सैनानीक–(हिं०पुं०) सेना का अग्र भाग; सैनापत्य–सेनापति का पद या कार्य, सेनापति संबंधी; सैनिक–(सं०पुं०) सेना का सिपाही, तिलंगा, संतरी, (वि०) सेना संबंधी; सैनिकता–(सं०स्त्री०) युद्ध, लड़ाई, सैनिक का कार्य।
सैनिका–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द
सैनी–(हिं०पुं०) नापित।
सैनू–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा।
सैनेय–(हिं०वि०) सेना के योग्य।
सैनेश–(हिं०पुं०) सेनापति; सैनेस–(हिं०पुं०) देखो सैनेश।
सैन्दूर–(हिं०वि०) सिन्दूर के रंग का।
सैन्धव–(सं०पुं०) सेंधा नमक, सिन्ध देश का घोड़ा, सिन्धु देश का राजा जयद्रथ, (वि०) सिन्धु देश में उत्पन्न, समुद्र सम्बन्धी; सैन्धवी–(सं०स्त्री०) संपूर्ण जाति की एक रागिणी।
सैन्य–(सं०नपुं०) सेना, शिबिर, छावनी (वि०) सेना संबंधी; सैन्यनायक–(सं०पुं०) सेनापति; सैन्यपृष्ठ–(सं०पुं०) सेना का पिछला भाग; सैन्यवास–(सं०पुं०) छावनी, पड़ाव।
सैमन्तिक–(सं०पुं०) सिन्दूर, सेंदुर।
सैयां–(हिं०पुं०) स्वामी, पति।
सैयां–(हिं०स्त्री०) देखो शैय्या।
सैरन्ध्र–(सं०पुं०) गृहदास, घर का भृत्य; सैरन्ध्रिका–(सं०स्त्री०) दासी, टहलनी; सैरन्ध्री–(सं०स्त्री०)अन्तःपुर में रहने वाली दासी; द्रौपदी का एक नाम।
सैरिभ–(सं०पुं०) स्वर्ग, आकाश।
सैल–(हिं०पुं०) देखो शैल, जल की बाढ़, स्रोत, बहाव; सैलकुमारी–(हिं०स्त्री०) देखो शैलकुमारी; सैलजा–सैलसुता–(हिं० स्त्री०) देखो शैलजा;
सैला–(हिं०पुं०) लकड़ी का छोटा डंडा, मेख, गुल्ली, मुंगरी, चैला, वह छोटा डंडा जो जुवे के छेद में पहराया रहता है।
सैलात्मजा–(हिं०स्त्री०)शैलात्मजा,पार्वती
सैलानी–(हिं०वि०) मनमाना घूमाने वाला, आनन्दी, मनमौजी।
सैली–(हिं०स्त्री०) छोटा सैला, टोकरी।
सैव–(हिं०वि०) देखो, शैव।
सैवल, सैवाली–(हिं०पुं०) देखो शैवाल
सैस–(सं० वि०) सीसे का बना हुआ।
सैसव–(हिं०पुं०) देखो शैशव।
सैहथी–(हिं०स्त्री०) शक्ति, बरछी।
सों–(हिं०अव्य०) देखो सौंह, (क्रि०वि०) संग, साथ, (सर्व०) सो; (प्रत्य०) द्वारा, से।
सोंच–(हिं०पुं०) देखो सोच।
सोंचर नमक–(हिं०पुं०) काला नमक।
सोंटा–(हिं०पुं०) मोटी सीधी लंबी लकड़ी, मोटा डंडा, लाठी, भंग-घोटना, मस्तूल बनाने की लकड़ी।
सोंटाबरदार–(हिं०पुं०) बल्लमदार;
सोंठ–(हिं०स्त्री०) सुखाया हुआ अदरख, शुंठी; सोंठूराय–(हिं०पुं०) बड़ा कृपण मनुष्य, कंजूस; सोंठौरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का सूजी का लड्डू जिसमे सोंठ पड़ी रहती है, यह प्रसूता स्त्री को खिलाया जाता है।
सोंधा–(सं०वि०) सुगन्धित, सूखी भूमि या नये मिट्टी के पात्र पर पानी पड़ने से अथवा चना आदि के भूनने से निकलने वाली सुगन्ध के समान, (पुं०) स्त्रियों के सिर धोने का एक प्रकार का सुगंधित मसाला, नारियल के तेल में मिलाने का सुगन्धित मसाला (पुं०) सुगन्ध।
सोंधिया–(हिं०पुं०) रोहिष घास।
सोंधी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बढ़िया धान।
सोंधु–(हिं०वि०) देखो सोंधा।
सोंपना–(हिं०क्रि०) देखो सौंपना।
सोंवनिया–(हिं०पुं०) स्त्रियों के नाक में पहरने का एक प्रकार का गहना।
सोंह–(हिं०अव्य०) देखो सौंह।
सो–(हिं०सर्व०) वह (अव्य०) अतएव, इस लिये।
सोऽहम्–(सं०) संस्कृत का एक वाक्य जिसका अर्थ "वही मैं हूँ", वेदान्ती लोग कहा करते हैं कि मैं वही हूँ अर्थात् ब्रह्म हूँ, इनके सिद्धान्त के अनुसार जीव और ब्रह्म में कोई अन्तर नहीं है; सऽहमस्मि–(सं०) मैं वही हूँ, मैं ही ब्रह्म हूँ।
सोअना–(हिं०क्रि०) देखो सोना; निद्रा लेना।
सोआ–(हिं०पुं०) एक प्रकार का सुगन्धित शाक।
सोई–(हिं०स्त्री०) वह गड्ढा जहां पर बरसात या बाढ़ का पानी रुक जाता है, डाबर (सर्व०) वही, (अव्य०) देखो सो।
सोक–(हिं०पुं०) देखो शोक; सोकन–(हिं०पुं०) देखो सोखन; सोकना–(हिं०क्रि०) देखो सोखना; शोक करना
सोक्कन–(हिं०पुं०) देखो सोखन;
सोकता–(हिं०पुं०) देखो सोख्ता।
सोखन–(हिं०वि०) सोखने वाला (पुं०) एक प्रकार का जंगली धान; सोखना–(हिं०क्रि०) रस खींच लेना, चूस लेना, पीना; सोखाई–(हिं०स्त्री०) सोखने की क्रिया या भाव, सोखाने का शुल्क, जादू टोना।
सोगन–(सं०स्त्री०) सौगंद, शपथ।
सोगनी–(हिं०स्त्री०) शोक करने वाली, दुःखिता।
सोगी–(हिं०वि०) शोकाकुल, दुःखित।
सोच–(हिं०पुं०) सोचने की क्रिया या भाव, चिन्ता, दुःख, पश्चात्ताप; सोचना–(हिं०क्रि०) चिन्ता करना, विचार करना, दुःख करना; सोच-विचार–(हिं०पुं०) समझ बूझ, ध्यान; सोचाना–(हिं०क्रि०) विचार कराना, सुचाना; सोचु–(हिं०पुं०) देखो सोच।
सोज–(हिं०स्त्री०) सूजने की अवस्था, सूजन, शोथ।
सोजनी, सोजाक–(हिं०) देखो सुजनी, सुजाक।
सोझ, सोझा–(हिं०वि०) सरल, सीधा।
सोटा–(हिं०पुं०) देखो सोंटा।
सोठ–(हिं०स्त्री०) देखो सोंठ।
सोढ–(सं०वि०) सहिष्णु, सहनशील।
सोढर–(हिं०पुं०) मूर्ख।
सोढव्य–(सं०वि०) सहन करने योग्य।
सोढा–(सं०वि०) जिसने सहन किया हो
सोणत–(हिं०पुं०) रुधिर।
सोत–(हिं०पुं०) देखो स्रोत, सोता।
सोता–(हिं०पुं०) जल की निरन्तर बहने वाली छोटी धारा, झरना, नदी की शाखा, नहर, सोति।
सोतिया–(हिं०स्त्री०) देखो सोता।
सोती–(हिं० स्त्री०) सोता, धारा; देखो श्रोत्रिय।
सोत्कण्ठ–(सं०वि०) उत्कण्ठा सहित, उनमना; सोत्कर्ष–(सं०वि०) उत्तम, दिव्य; सोत्सव–(सं०वि०) उत्सव सहित, प्रफुल्ल, प्रसन्न।
सोथ–(हिं०पुं०) देखो शोथ।
सोदन–(हिं०पुं०) कागज का वह टुकड़ा जिसपर सूई से छेद करके बेल बूटे बनाये होते हैं यह कसीदा काढ़ने के काम में आता है।
सोदर–(सं० पुं०) सहोदर, सगाभाई; सोदरा, सोदरी–(सं०स्त्री०) सगी बहिन
सोद्वेग–(सं० वि०) विचलित, चिन्तित।
सोध–(सं०पुं०) प्रासाद, (हिं०पुं०) खोज; टोह, पता ठिकाना, संशोधन; सोधक–(हिं० पुं०) शोधने वाला; सोधन–(हिं०पुं०) ढूंढ़; सोधना–(हिं० क्रि०) शुद्ध करना, निर्णय करना, दोष हटाना, ठीक करना; सोधाना–(हिं०क्रि०) शुद्ध कराना।
सोन–(हिं०पुं०) भारत की एक प्रसिद्ध नदी का नाम, एक प्रकार का जल-

पक्षी, लहसुन; सोनकीकर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी गोंद औषधियों में प्रयोग की जाती है; सोनकेला–(हिं०पुं०) चंपा केला।
सोनगढी–(हिं० पुं०) एक प्रकार का गन्ना; सोनचम्पा–(हिं०पुं०) पीले रंग का चंपा; सोनचिरी–(हिं० स्त्री०) नदी; सोनजूही–(हिं० स्त्री०) पीली जूही; सोनभद्र–(सं०पुं०) सोन नदी।
सोनहला–हिं०पुं०) भटकटैये का कांटा, देखो सुनहला।
सोनहा–(हिं०पुं०) कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली पशु, इसको कोभी भी कहते हैं।
सोना–(हिं० पुं०) पीले रंग का एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु, सुवर्ण, अत्यन्त बहुमूल्य वस्तु, बहुत मँहगी अति सुन्दर वस्तु एक प्रकार का राजहंस, मझोले कद का एक पहाड़ी वृक्ष (स्त्री०) एक प्रकार की मछली, (हिं० क्रि०) नींद लेना, शरीर के किसी अंग का सुन्न हो जाना; सोने का घर मिट्टी होना–धन वैभव का नाश होना; सोने में घुन लगना–कोई असंभव घटना होना; सोना सुगन्ध होना–किसी उत्तम वस्तु में अधिक विशेषता होना; सोनागेरू–(हिं०पुं०) अधिक लाल तथा कोमल गेरू; सोना पाठा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसके फल, बीज तथा छाल औषधियों में प्रयोग होते हैं; सोना पेट–(हिं० पुं०) सोने की खाद; सोना मक्खी, सोनामाखी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का खनिज पदार्थ।
सोनार–(हिं०पुं०) देखो सुनार।
सोनित–(हिं०पुं०) देखो शोणित, रुधिर
सोनी–(हिं०पुं०) तुन की जाति का एक वृक्ष।
सोनेइंया–(हिं० पुं०) वैश्यों की एक जाति।
सोन्माद–(हिं०वि०) उन्माद युक्त।
सोप–हिं० पुं०) एक प्रकार की छपी हुई चादर; सोपकरण–(सं० वि०) उपकरण युक्त; सोपक्रम–(सं० वि०) उपक्रम युक्त।
सोपत–(हिं० पुं०) सुविधा, सुख का प्रबंध।
सोपप्लव–(सं०पुं०) राहु ग्रस्त सूर्य और चन्द्रमा।
सोपम–(सं०वि०) उपमा युक्त।
सोपवास–(सं०वि०) उपवासी।
सोपहास–(सं०वि०) उपहास युक्त।
सोपाक–(सं० पुं०) चांडाल, बनौषधि बेचने वाला।
सोपाधि, सोपाधिक–(सं०वि०) उपाधि युक्त।
सोपान–(सं०नपुं०) सीढ़ी; सोपानित–(सं०वि०) सीढ़ियों से युक्त।
सोपाश्रय–(सं०वि०) उपाश्रय युक्त।
सोपि–(सं० अव्य०) वही, वह भी।
सोफता–(हिं०पुं०) एकान्त या निर्जन स्थान, रोग में कमी होना।
सोभ–(हिं० पुं०) देखो शोभा; सोभन–(हिं० पुं०) देखो शोभन; सोभना–(हिं०क्रि०) शोभित होना।
सोभर–(हिं०पुं०) सूतिकागृह, सौरी।
सोभा–(हिं०स्त्री०) देखो शोभा; सोभाकारी–(हिं० वि०) सुन्दर, मनोहर; सोभायमान–(हिं०वि०) देखो शोभायमान; सोभित–(हिं० वि०) देखो शोभित
सोम–(सं०नपुं०) स्वर्ग, आकाश, (पुं०) सोमवार, चन्द्रमा, अमृत, यम, वायु, कुबेर, जल, सोम यज्ञ, आठ वसुओं में से एक, एक वानर का नाम, सोमलता का रस, यज्ञ की सामग्री, स्त्रियों का एक रोग, वैदिक काल के एक देवता; सोमक–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम;
सोमकर–(सं०पुं०) चन्द्रमा की किरण;
सोमकान्त–(सं० पुं०) चन्द्रकात मणि; सोमक्रतु–(सं०पुं०) सोम यज्ञ; सोमक्षय–(सं०पुं०) अमावास्या; सोमगर्भ–(सं० पुं०) विष्णु; सोमज–(सं० नपुं०) बुध ग्रह; सोमजाजी–(हिं०पुं०) सोम यज्ञ करने वाला; सोमदिन–(सं० पुं०) चन्द्रवार; सोमदैवत–(सं० पुं०) मृगशिरा राशि; सोमधारा–(सं० स्त्री०) स्वर्ग; सोमन–(हिं०पुं०) एक प्रकार का अस्त्र; सोमनाथ–(सं० पुं०) जूनागढ़ राज्य का एक प्राचीन नगर; सोमपति–(सं० पुं०) इन्द्र; सोमपा–(सं० वि०) सोमपान करने वाला; सोमपान–(सं० नपुं०) सोम पीने की क्रिया; सोमपायी–(सं०त्रि०) सोम पान करने वाला; सोमपुत्र–(सं० पुं०) चन्द्रमा के पुत्र बुध; सोम प्रदोष–(सं०पुं०) सोमवार को पड़ने वाला प्रदोष व्रत; सोमबन्धु–(सं० पुं०) कुमुद, सूर्य, बुध; सोमबेल–(हिं०स्त्री०) गुलचांदनी का पौधा; सोमभवा–(सं० स्त्री०) नर्मदा नदी; सोमभू–(सं० पुं०) चन्द्रवंशीय; सोममख–(सं० पुं०) सोमयज्ञ; सोमयाग–एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पिया जाता था; सोमयाजी–(सं०पुं०) सोम यज्ञ करने वाला; सोमयोनि–(सं० नपुं०) हरिचन्दन, पीला चंदन; सोमरस–(सं० पुं०) सोम लता का रस।
सोमराज–(सं०पुं०) चन्द्रमा; सोमराजसुत–(सं०पुं०) चन्द्रमा का पुत्र बुध; सोमराजी–(सं० पुं०) बकुची, काली जीरी, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में छ वर्ण होते हैं; सोमराज्य–(सं०नपुं०) चन्द्रलोक।
सोमरोग–(सं०पुं०) स्त्रियों का बहुमूत्र रोग।
सोमल–(हिं०पुं०) संखिया विष का एक भेद।
सोमलोक–(सं०पुं०) चन्द्रलोक; सोमवंश–(सं० पुं०) चन्द्रवंश; सोमवंशीय–(सं०वि०) चन्द्रवंश का।
सोमवती अमावस्या–(सं०स्त्री०) सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या जो पुण्य तिथि मानी जाती है।
सोमवल्लरि–(सं० स्त्री०) सोम लता; सोमवल्ली–(सं० स्त्री०) सोम लता, गुड़ुच, ब्राह्मी, गजपीतल।
सोमवार–(सं० पुं०) चन्द्रमा का वार, चन्द्रवार।
सोमवारी–(हिं०स्त्री०) सोमवार संबंधी; सोमवीथी–(सं० स्त्री०) चन्द्रमण्डल; सोमव्रत–(सं०नपुं०) सोमवार का व्रत; सोमसंज्ञ–(सं०नपुं०) कपूर; सोमसार–(सं० पुं०) सफेद खैर; सोमसिन्धु–(सं०पुं०) विष्णु; सोमसुत–(सं०पुं०) चन्द्रमा के पुत्र बुध; सोमसुता–(सं०स्त्री०) नर्मदा नदी।
सोमा–(सं०स्त्री०) सोमलता, एक अप्सरा का नाम; सोमाधार–(सं० पुं०) सोम रखने का पात्र; सोमाभा–(सं०स्त्री०) चन्द्रमा की किरणें; सोमालक–(सं० पुं०) पुखराज नामक मणि; सोमावती–(सं० स्त्री०) चन्द्रमा की माता का नाम; सोमाष्टमी–(सं०स्त्री०) सोमवार को पड़ने वाली अष्टमी; सोमास्त्र–(सं०पुं०) चन्द्रमा का अस्त्र।
सोमित्रि–(सं०पुं०) लक्ष्मण।
सोमीय–(सं०वि०) सोम संबंधी।
सोमेश्वर–(सं०पुं०) काशी में सोम द्वारा प्रतिष्ठित शिव, संगीत शास्त्र के प्रणेता एक प्राचीन कवि का नाम।
सोमोद्भव–(सं० वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न।
सोय–(हिं०सर्व०) सो, वही।
सोया–(हिं०पुं०) देखो सोआ।
सोर–(हिं०स्त्री०) मूल, जड़, (पुं०) कोलाहल
सोरठ–(हिं०पुं०) गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम; इस प्रदेश की राजधानी सूरत; एक राग का नाम; सोरठ मल्लार–(हिं० पुं०) संपूर्ण जाति का एक राग।
सोरठा–(हिं० पुं०) अड़तालीस मात्राओं का एक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह तथा दूसरे और चौथे चरण में तेरह मात्रायें होती हैं।
सोरठी–(हिं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम
सोरन–(हिं०पुं०) सूरन।
सोरनी–(हिं०स्त्री०) झाड़ू, कूचा, बुहारी
सोरह–हिं०वि०) देखो सोलह।
सोरही–(हिं०स्त्री०) सोलह चित्ती कौड़ियां जिससे लोग जुआ खेलते हैं, सोलह कौड़ियों से खेला जाने वाला जुआ।
सोरा–(हिं० पुं०) शोरा, मिट्टी में से निकलने वाला एक प्रकार का नमक
सोरी–(हिं०स्त्री०) पात्र में के महीन छेद जिसमें से होकर पानी टपक कर बह जाता है।
सोलंगी–(हिं० पुं०) क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश।
सोलपंगो–(हिं०पुं०) केकड़ा।
सोलपोल–(हिं०पुं०) व्यर्थ का, निष्फल।
सोलह–(हिं० वि०) दस और छ की संख्या का (पुं०) दस और छ की संख्या १६; सोलहवां–जिसका स्थान पन्द्रह के बाद हो।
सोलह सिंगार–(हिं० पुं०) स्त्रियों का पूरा सिंगार जिसके अन्तर्गत–शरीर में उबटन लगाना, स्नान करना, सुन्दर वस्त्र पहरना, बाल संवारना, काजल लगाना, मांग में सेंधुर भरना, महावर लगाना, मस्तक पर तिलक लगाना, चिबुक पर टीका लगाना, मेंहदी लगाना, सुगन्ध लगाना, गहना पहरना, मिस्सी लगाना, पान खाना, होठों को लाल करना तथा माला पहरना है।
सोलही–(हिं०स्त्री०) देखो सोरही।
सोलाना–(हिं०क्रि०) देखो सुलाना।
सोल्लास–(सं०वि०) आनन्द पूर्वक।
सोवज–(हिं०पुं०) देखो सावज।
सोवड़–(हिं०पुं०) देखो सौरी।
सोवणी–(हिं०स्त्री०) बुहारी, झाड़ू।
सोवना–(हिं०स्त्री०) निद्रा लेना।
सोवा–(हिं०पुं०) देखो सोआ।
सोवाना–(हिं०क्रि०) देखो सुलाना।
सोवैया–(हिं०पुं०) सोने वाला।
सोषण–(हिं०पुं०) देखो शोषण।
सोषना–(हिं० क्रि०) देखो सोखना।
सोषु–(हिं०वि०) सोखने वाला।
सोस्मि–(सं०वाक्य०) देखो सोऽहम्।
सोहगी–(हिं० स्त्री०) विवाह संबंध में तिलक चढ़ाने के बाद की एक रीत जिसमें वरके घर से कन्या के गहना वस्त्र आदि भेजा जाता है, सोहाग की वस्तु।
सोहन–(हिं० वि०) शोभन, अच्छा लगने वाला।
सुहावना–(पुं०) सुन्दर पुरुष, (स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी चिड़िया जो भारत में सर्वत्र पाई जाती है, एक प्रकार की बढइयों की रेती।
सोहन पपड़ी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरे के रूप में बनाई जाती है; सोहन हलवा–(हिं०पुं०) एक प्रकार की मेवा आदि पड़ी हुई कतरे के रूप में बनी हुई मिठाई।
सोहना–(हिं० क्रि०) शोभित होना, सजना, अच्छा लगना, उपयुक्त होना, खेत में उगी हुई घास को काट कर अलग करना, निराना, कसेरों का एक नुकीला अस्त्र।
सोहनी–(हिं०स्त्री०) झाड़ू, बुहारी, एक रागिणी का नाम, खेत में की घास निकालने की क्रिया।
सोहर–(हिं० पुं०) एक प्रकार की गीत जिसको स्त्रियां घर में बच्चा पैदा

होने पर गाती हैं, मांगलिक गीत, (स्त्री०) सूतिकागृह, सौरी, नाव की पाल खींचने की रस्सी।

सोहराना–(हिं०क्रि०) शरीर पर हाथ फेरना।

सोहला–(हिं० पु०) मांगलिक गीत, सोहर।

सोहाइन–(हिं०वि०) सुहावना, सुन्दर।

सोहाई–(हिं० स्त्री०) खेत में उगी हुई घास निकालने का काम, निराई, निराने का वेतन।

सोहाग–(हिं० पुं०) सुहाग, सौभाग्य।

सोहागा–(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध क्षार द्रव्य, टंकण क्षार;

सोहागिनी, सोहागिन–(हिं०स्त्री०) देखो सुहागिन।

सोहाता–(हिं०वि०) सुहावना, अच्छा;

सोहाना–(हिं० क्रि०) शोभित होना, सजना, अच्छा लगना, रुचना;

सोहाया–(हिं०वि०) शोभायमान, सुंदर,

सोहारद–(हिं०पुं०) देखो सौहार्द्र।

सोहाल–(हिं०पुं०) देखो सुहाल।

सोहवना–(हिं०वि०) सुहावना, (हिं०क्रि०) देखो सुहाना।

सोहासित–(हिं०वि०) रुचिर, प्रिय।

सोहिँ–(हिं०क्रिवि०) देखो सौंह।

सोहिनी–(सं०स्त्री०) शोभायमान, सुन्दर, (स्त्री०) एक राग का नाम।

सोहिल–(हिं०पुं०) अगस्त्य नामक तारा जो चन्द्रमा के पास देख पड़ता है।

सोहिला–(हिं० पु०) देखो सोहला।

सोहीं, सोहैं–(हिं० क्रि०) सन्मुख, सामने

सौं–(हिं०स्त्री०) सौंह, (प्रत्य०) सौ, सा।

सौंधा–(हिं०वि०) अच्छा, उत्तम, उचित;

सौंधाई–(हिं०स्त्री०) अधिकता; सौंधी–(हिं०वि०) देखो सौंधा।

सौंचना–(हिं०क्रि०) मल, त्याग करना, हाथ पैर धोना।

सौंचर–(हिं० पुं०) सोंचकर नमक।

सौंज–(हिं०स्त्री०) देखो साज।

सौंड़–(हिं०पुं०) ओढ़ने का वस्त्र।

सौंतुख–(हिं० पुं०) प्रत्यक्ष, सन्मुख, (क्रिवि०) आंख के सामने।

सौंदना–(हिं०स्त्री०) कपड़ों को रेह के पानी में भिगोना, सानना, मिलाना।

सौंन्दर्ज–(हिं०पु०) देखो सौन्दर्य।

सौंदर्य–(हिं०पुं०) सुन्दरता; सौंदर्यता–(हिं०स्त्री०) सौंदर्य।

सौंध–(हिं०स्त्री०) सुगन्ध।

सौंधना–(हिं०क्रि०) सुगन्धित करना, बासना।

सौंधा–(हिं०वि०) सौंधा, रुचिकर।

सौंनमक्खी–(हिं०स्त्री०) देखो सोनामक्खी।

सौंपना–(हिं०क्रि०) सहेजना।

सौंफ–(हिं०स्त्री०) इस नाम का पौधा जिसके बीज औषधियोंमें तथा मसालों में व्यवहार किये जाते हैं।

सौंफिया, सौंफी–(हिं०स्त्री०) सौंफ की बनी हुई मदिरा।

सौंर–(हिं०पुं०) देखो सौरी।

सौंरई–(हिं०स्त्री०) सांवलापन।

सौंराना–(हिं०क्रि०) संवारना, याद करना।

सौंह–(हिं० पु०) शपथ, सौगन्ध, (क्रिवि०) सन्मुख, सामने।

सौंहन–(हिं०पुं०) देखो सोहन।

सौंही–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का शस्त्र

सौ–(हिं० वि०) नब्बे और दस की संख्या का (पुं०) नब्बे और दस की संख्या; सौ बातकी एक बात–साराश, तत्व।

सौक–(हिं०स्त्री०) सपत्नी, सौत, (वि०) एकसौ।

सौकन–(हिं०स्त्री०) देखो सौत।

सौकरायण–(सं० पुं०) व्याध।

सौकर्य–(सं० नपुं०) सुविधा, सुबीता, सूकरता, शूकरता, सुअरपन।

सौकीन–(हिं० पुं०) देखो शौकीन;

सौकीनी–(हिं०स्त्री०) देखो शौकीनी

सौकुमार्य–(सं० नपुं०) सुकुमारता, कोमलता, यौवन, काव्य का वह गुण जिसमें ग्राम्य तथा उन शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता जो सुननें में कटु हों।

सौकृत्य–(सं० नपुं०) यज्ञ, योग आदि का अनुष्ठान।

सौक्ष्म–(सं०नपुं०) सूक्ष्मका धर्म या भाव

सौख–(हिं०पुं०) सुखका भाव या धर्म।

सौख्य–(सं० नपुं०) सुख, सुखता।

सौख्यदायी–(सं०वि०) सुख देनेवाला

सौगत–(सं०वि०) सुगत संबंधी (पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सौगन्द–(हिं०स्त्री०) शपथ।

सौगन्ध–(सं० नपुं०) सुगन्ध (पुं०) सुगन्धित तैल इत्र आदिका व्यापारी।

सौगन्धक–(सं०नपुं०) नीला कमल।

सौगम्य–(सं०नपुं०) सुगमता।

सौगरिया–(हिं०पुं०) क्षत्रियो की एक जाति का नाम।

सौगात–(सं० स्त्री०) इष्ट मित्रों को देने के लिये परदेश से लाई हुई वस्तु, भेंट; सौगाती–(हिं०वि०) उपहार देने के योग्य, उत्तम, बढ़िया।

सौघा–(हिं०वि०) कम मूल्य का।

सौच–(हिं०पु०) देखो शौच।

सौचिक–(सं० पुं०) दरजी, एक वर्णसंकर जाति।

सौज–(हिं०स्त्री०) उपकरण, सामग्री, (वि०) बलवान।

सौजना–(हिं०क्रि०) देखो सजना।

सौजन्य–(सं०नपुं०) सुजनता, भलमनसी।

सौजन्यता–(हिं० पुं०) देखो सौजन्य।

सौजा–(हिं० पुं०) वह पशु या पक्षी जिसका आखेट किया जावे।

सौत–(हिं० स्त्री०) किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका;

सौतिया डाह–वह ईर्ष्या जो सपत्नियों में रहती है; सौतन, सौतनि, सौतिन–(हिं० स्त्री०) देखो सौत।

सौतुक–(हिं० पुं०) सन्मुख, सामने।

सौतेला–(हिं० वि०) सौत से उत्पन्न, जिसका सम्बन्ध सौत से हो।

सौत्र–(सं०वि०) सूत्र संबंधी।

सौत्रामणि–(सं०स्त्री०) एक यज्ञ जो इन्द्र के प्रीत्यर्थ किया जाता है; सौत्रिक–(सं०पुं०) जुलाहा।

सौदर्य–(सं०पुं०) भ्रातृत्व, भाईपन (वि०) सगे भाई का।

सौदामनी–(सं० स्त्री०) विद्युत्, बिजली, एक रागिणी का नाम, एक अप्सरा का नाम।

सौदामिनी–(सं०स्त्री०) देखो सौदामनी।

सौदायिक–(सं० पुं०) वह धन जो स्त्री को उसके विवाह के समय उसके माता पिता या पति के यहां से मिलता है, स्त्री धन।

सौध–(सं० पुं०) भवन, चांदी, दूधिया पत्थर (वि०) पोता हुआ, सौधकार–(सं० पुं०) घर बनाने वाला राज;

सौधना–(हिं० क्रि०) बनाना।

सौधार–(सं० पुं०) नाटक के चौदह भागों में से एक भाग।

सौधाल–(सं०नपुं०) शिवालय।

सौन–(सं० नपुं०) कसाई।

सौनक–(हिं०पुं०) देखो शौनक; सौनन–(हिं०स्त्री०) देखो सौंदन।

सौनन्द–(सं०नपुं०) बलदेव का मूसल।

सौनिक–(सं०पुं०) मास बेंचने वाला, बहेलिया।

सौन्दर्य–(सं० नपुं०) सुन्दरता।

सौपना–(हिं०क्रि०) देखो सौंपना।

सौपर्ण–(सं०नपुं०) मरकत मणि, पन्ना।

सौफियाना–(हिं० वि०) सुन्दर।

सौबल–(सं० पुं०) राजा सुबल के पुत्र शकुनि; सौबली–(सं०स्त्री०) सौबल की पुत्री, गान्धारी।

सौबिका–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बुलबुल।

सौभ–(सं०नपुं०) राजा हरिश्चन्द्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश में थी, एक प्राचीन जनपद का नाम।

सौभग–(सं० नपुं०) सुख, सुन्दरता, आनन्द।

सौभद्र–(सं०पुं०) सुभद्राके पुत्र अभिमन्यु

सौभरि–(सं० पुं०) एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मान्धाताकी पचास कन्याओं से विवाह किया था।

सौभागिनी–(हिं० स्त्री०) सधवा स्त्री, सोहागिन।

सौभाग्य–(सं०नपुं०) अच्छा भाग्य, सुख, आनन्द, कुशल क्षेम, अनुराग, सिन्दूर सोहागा, स्त्री का सधवा होना, सुन्दरता, ऐश्वर्य, शुभ कामना, मनोहरता, सफलता; सौभाग्य तृतीया–(सं०स्त्री०) भाद्रपद मास की शुक्ला तृतीया; सौभाग्यव्रत–(सं० नपुं०) फाल्गुन शुक्ला तृतीया तिथिका व्रत;

सौभाग्यवती–(सं०वि०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, अच्छे भाग्य वाली;

सौभाग्यवान्–(सं०वि०) अच्छे भाग्य वाला; सुखी।

सौभिक्ष्य–(सं० पुं०) खाद्य पदार्थ की प्रचुरता का समय।

सौम–(सं०वि०) चन्द्रमा संबंधी।

सौमन–(सं० पुं०) एक प्रकार का अस्त्र, फूल।

सौमनस–(सं०वि०) पुष्प संबंधी, मनोहर (पुं०) प्रफुल्लता, अनुग्रह, कृपा, अस्त्रों का संहार।

सौमनसा–(सं० स्त्री०) जावित्री।

सौमनस्य–(सं०नपुं०) श्राद्ध में ब्राह्मण के हाथ में फूल देना, आनन्द।

सौमित्र–(सं०पुं०) सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण

सौमित्रा–(हिं०पु०) देखो सुमित्रा।

सौमुख्य–(सं०पुं०) प्रसन्नता।

सौम्य–(सं०पुं०) बुध ग्रह, विप्र, ब्राह्मण, सोम यज्ञ, पित्त, अगहन का महीना, साठ संवत्सरों में से एक, सुशीलता, मृगशिरा नक्षत्र, हथेली का मध्य भाग, (वि०) उज्वल सुन्दर, प्रसन्न शुभ, उत्तर की ओर का, शान्त, चन्द्रमा संबंधी। सौम्यगन्धा–(सं०स्त्री०) सेवती। सौम्यता–(सं० स्त्री०) शीतलता, ठंढक, उत्तरता, सुन्दरता।

सौम्यदर्शन–(सं० वि०) जो देखने में सुन्दर हो। सौम्यवार–(सं० पु०) बुधवार। सौम्यशिखा–(सं० स्त्री०) मुक्तम विषय वृत्त के दो भेदों में से एक।

सौम्या–(सं०स्त्री०) दुर्गा, रुद्रजटा, बड़ी मालकँगनी, घुमची, ब्राह्मी, मोती, मृगशिरा नक्षत्र, आर्या छन्द का एक भेद।

सौर–(सं०पुं०) सूर्य के पुत्र शनि, बीसवें कल्प का नाम, धूनिया, सूर्योपासक, सूर्य का भक्त. (वि०) सूर्य संबंधी, सूर्य से उत्पन्न; सौरज–(सं०वि०) सौर जात (पुं०) धनियां।

सौरठवाल–(हिं० पुं०) वैश्यों की एक जाति।

सौरत–(सं०वि०) सुरत या रति कीड़ा सम्बन्धी।

सौरदिवस–(सं० पुं०) एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय का समय, साठ दण्ड का काल।

सौरंध्री–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का सितार।

सौरभ–(सं०नपुं०) केशर सुगन्ध, धनिया एक प्रकार का मसाला, आम, (वि०) सुगन्ध युक्त, खशबूदार।

सौरभक–(सं०पुं०) एक प्रकार का छन्द;

सौरभित–(सं०वि०) महकने वाला।

सौरभेय–(सं०पुं०) वृष साड़। सौरभेयी (सं०स्त्री०) गाय, एक अप्सरा का नाम;

सौरभ्य–(सं०नपुं०) सुगन्ध, कीर्ति, प्रसिद्धि (पुं०) कुबेर।

सौर मास–(सं० पुं०) वह महीना जो सूर्य के किसी राशि में रहने तक माना जाता है, एक संक्रान्ति

से दूसरी संक्रान्ति तक का समय।
सौरवर्ष, सौरसंवत्सर–(सं०पु०) उतना काल जितना सूर्य की मेषादि बारह राशियों पर घूम आने मे लगता है।
सौरसेन–(हिं० पुं०) देखो शौरसेन।
सौरसेय–(सं०पुं०) स्कन्द, कार्तिकेय।
सौराटी–(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
सौराष्ट्र–(सं० पुं०) काठियावाड़ का प्राचीन नाम, काँसा, एक वर्णवृत्त का नाम;सौराष्ट्रक–(सं०नपुं०)सौराष्ट्र का रहने वाला। सौराष्ट्रमृत्तिका–(सं०स्त्री०) गोपीचन्दन।
सौराष्ट्रिक–(विं०) सौराष्ट्र संबंधी।
सौरास्त्र–(सं० पुं०) एक प्रकार का दिव्यास्त्र।
सौरि–(सं०पुं०) शनि, हुड़हुड़ का पौधा;
सौरिक–(सं०विं०)स्वर्गीय, मद्य संबंधी।
सौरिरत्न–(सं०नपुं०) नीलम।
सौरी–(हिं०स्त्री०)वह कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जनती है, प्रसूति का गृह (सं० स्त्री०) सूर्य की पत्नी, गाय।
सौरेय–(सं०पुं०) सफेद कटसरैया।
सौर्य–(सं०वि०) सूर्य संबंधी (पुं०) सूर्य के पुत्र।
सौलभ्य–(सं०पुं०) सुलभता।
सौला–(हिं०पुं०) राजगीरों का साहुल।
सौवर्कल–(सं०नपुं०)सोंचर नमक, सज्जी मिट्टी।
सौवर्ण–(सं०वि०) सुवर्ण संबंधी (पुं०) सोने का अलंकार।
सौविद–(सं०पु०) अन्तःपुर का रक्षक, कंचुकी।
सौवीर–(सं०पुं०) सिन्धुनद के पास का एक प्राचीन देश, बेर का फल, रसाञ्जन, सुरमा। सौवीराञ्जन–(सं० नपुं०) सुरमा।
सौवारी–(सं०स्त्री०)संगीत में एक प्रकार की मूर्छना।
सौशील्य–(सं० नपुं०) शुद्ध स्वभाव, साधुता।
सौश्रय–(सं० पुं०) ऐश्वर्य, विभव।
सौष्ठव–(सं०नपुं०) उपयुक्तता,सुन्दरता, शरीर की एक मुद्रा, नाटक का एक अंग।
सौसन–(फ़ा०पुं०) देखो सोसन।
सौसनी–(फ़ा०पुं०) देखो सोसनी।
सौस्वर्य–(सं०नपुं०)सुस्वरता,सुरीलापन;
सौहं–(हिं०स्त्री०)शपथ, (क्रि०वि०)सन्मुख, सामने, आगे।
सौहन–(हिं० पुं०) पैसे का चौथाई भाग, छदाम।
सौहर–(हिं०पुं०) पति। सौहरा–(हिं०पुं०) ससुर।
सौहार्द्र–(सं०नपुं०) मित्रता, मैत्री।
सौहार्द–(सं०नपुं०) देखो सौहार्द्र।
सौहित्य–(सं० नपुं०) तृप्ति, सन्तोष, पूर्णता।
सौहीं–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार की रेती (त्रि०वि०) सामने, आगे।

सौहृद–(सं०नपुं०) मित्रता, मित्र, (वि०) मित्र संबंधी।
स्कन्द–(सं०पु०) कार्तिकेय, कुमार, शरीर राजा, पारद, नदी तट,महादेव पण्डित, बालग्रह, विनाश, ध्वंस।
स्कन्दक–(सं०पु०) सैनिक, एक प्रकार का छन्द। स्कन्दगुप्त–(सं०पुं०) गुप्त वंश के एक प्रसिद्ध प्राचीन सम्राट, इनका समय ४५० से ४६७ ईस्वी तक माना जाता है। स्कन्दजननी–(सं०स्त्री०)पार्वती; स्कन्दजित्–(सं०पुं०) विष्णु का एक नाम;स्कन्दन–(सं०नपुं०) कोठा स्वच्छ होना, रेचन, गमन, शोषण; स्कन्दपुराण–(सं०नपु०)अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण का नाम।
स्कन्दफला–(सं०स्त्री०) खजूर; स्कन्दमाता–(सं०स्त्री०) दुर्गा; स्कन्दषष्ठी–(सं०स्त्री०) चैत्र शुक्ला षष्ठी; स्कन्दित–(सं०वि०) पतित, गिरा हुआ; स्कन्दी–(सं०वि०) उछलने कूदने वाला।
स्कन्ध–(सं०पुं०) कन्धा, वृक्ष का तना, मोढा, शाखा, समूह, राजा, सेना का अंग, ग्रन्थ का कोई खण्ड, मार्ग, पथ, शरीर, युद्ध आचार्य सन्धि, आर्या छन्द का एक भेद, दर्शन शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप रस और गन्ध ये पांच विषय। स्कन्धपथ–(हिं०पुं०) पगडंडी; स्कन्धचाप–(सं०पुं०) बहंगी जिस पर कहार बोझ ढोते हैं;
स्कन्धतरु–(सं०पुं०)नारियल का वृक्ष;
स्कन्धदेश–(सं०पुं०) हाथी की गरदन, मोढा; स्कन्धफल–(सं०स्त्री०) खजूर;
स्कन्धरुह–(सं०पुं०) वट वृक्ष; स्कन्धवाह (सं०पुं०) वह पशु जो कन्धे के बल बोझ ढोता हो; स्कन्धशृंग–भैंस।
स्कन्धावार–(सं०पु०) सेना, छावनी, शिबिर।
स्कम्भ–(सं०पुं०) स्तम्भ, खंभा।
स्कूली–(हिं०वि०) स्कूल संबन्धी।
स्क्रू–(अं०पुं०) वह पेंच जो घुमाकर लोहे लकड़ी आदि में जड़ी जाती है।
स्वलन–(सं०नपु०) पतन, गिरना।
स्खलित–(सं०वि०) गिरा हुआ, विचलित, फिसला हुआ, सरका हुआ, लड़खड़ाया हुआ।
स्तन–(सं०पु०) स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिस में दूध रहता है,कुच;
स्तनदात्री–(सं०स्त्री०) छाती का दूध पिलाने वाली; स्तनय–(सं०पुं०) दूध पीता बच्चा स्तनपान–(सं०नपुं०)स्तन मे का दूध पीना; स्तनपायी–(सं०वि०) जो माता के स्तन से दूध पीता हो;
स्तनभव–(सं०वि०) स्तन से उत्पन्न;
स्तनमुख–(सं०पुं०)स्तन का अग्र भाग, चूंची।
स्तनित–(सं०वि०) ध्वनित, गर्जन किया हुआ।
स्तन्यप–(सं०पुं०) दूध पीता बच्चा।
स्तब्ध–(सं०वि०) स्तम्भित, स्थिर, दृढ़, मन्द, धीमा अभिमानी, हठी, मूर्छित, बहरा। स्तब्धकर्ण–(सं०त्रि०) बहरा; स्तब्धता–(सं०स्त्री०) स्थिरता, दृढता, बहरापन; स्तब्धपाद–(सं० त्रि०) जिसके पैर जकड़ गये हों; स्तब्धमति (सं०वि०) मन्दबुद्धि।
स्तम्ब–(सं०पुं०) गुल्म, घास की आँटी।
स्तम्बक–(सं०पु०) गुच्छा; स्तम्बकार–(सं०पुं०) गुच्छा बनाने वाला।
स्तम्बहनन–(सं०स्त्री०) घास खोदने की खुरपी; स्तम्बी–(सं०स्त्री०)घास खोदने की खुरपी। स्तम्भ–(सं०पुं०) खंभा, थूनी, प्रतिबन्ध, रुकावट, जड़ता, पेड़ का तना, अभिमान, काव्यके सात्विक भावों में से एक; स्तम्भक–(सं०त्रि०) रोकने वाला, खंभा, थूनी; स्तम्भकर–(सं०पुं०) खंभा गाड़ने वाला; स्तम्भता–(सं०स्त्री०) जड़ता; स्तम्भन–(सं०नपुं०) अवरोध, रुकावट, स्थिरी करण, वीर्य आदि के स्खलन में बिलंब, वीर्यपात रोकने की औषधि जड़ी करण, किसी की चेष्टा या शक्ति रोकने की तान्त्रिक विधि, मल का अवरोध, कामदेव के पाँच वाणों में से एक।
स्तम्भनी–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का इन्द्रजाल; स्तम्भनीय–(सं०वि०)स्तम्भन करने योग्य; स्तम्भनवृत्ति–(सं०स्त्री०) प्राणायाम में सांस रोकने का कार्य।
स्तम्भिका–(सं० स्त्री०) छोटा खंभा खभिया।
स्तम्भित–(सं०वि०) जड़ीभूत, निश्चल, स्थिर, निवारित, रोका हुआ;
स्तम्भिनी–(सं० स्त्री०) योग के अनुसार धारणाओं में से एक; स्तम्भी–(सं०वि०) रोकने वाला।
स्तर–(सं०पु०) थर, तह, तबक, परत, शय्या, सेज, भूगर्भ शास्त्र के अनुसार भूमि का वह विभाग जो भिन्न भिन्न कालों में बनी हुई तहों के आधार पर होता है; स्तरण–(सं० नपुं०) फैलाने की क्रिया, बिछौना; स्तरणीय–(सं० वि०) फैलाने योग्य।
स्तरु–(सं०पुं०) वैरी, शत्रु।
स्तर्य–(संवि०) फैलाने या विखेरने योग्य।
स्तव–(सं० पुं०) स्तोत्र, स्तुति, गान।
स्तवक–(सं० पुं०) फूलों का गुच्छा, स्तोत्र, ढेर, समूह, पुस्तक का अध्याय, परिच्छेद।
स्तवन–(सं०नपुं०) स्तुति। स्तवनीय–(सं०वि०) स्तुति करने योग्य।
स्तवरक–(सं० पुं०) वेष्टन, घेरा।
स्तवितव्य–(सं०वि०) प्रशंसा के योग्य।
स्तविता–(सं०वि०) स्तुति करने वाला।
स्तवेरय–(सं० पुं०) इन्द्र।
स्तव्य–(सं० वि०) स्तुति करने के योग्य
स्ताव–(सं० पुं०) गुणगान; स्तावक–(सं०वि०) गुण गान करने वाला।
स्तावा–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।

स्ताव्य–(सं०वि०) प्रशंसा के योग्य।
स्तिमित–(सं० वि०) निश्चल, स्थिर, सन्तुष्ट, प्रसन्न, भीगा, (नपुं०) आर्द्रता।
स्तीर्ण–(सं०वि०)विस्तीर्ण, फैलाया हुआ
स्तुटि–(सं०पुं०) भारद्वा पक्ष।
स्तुत–(सं०वि०) प्रशंसित, स्तुति किया हुआ, कीर्तित (पुं०) स्तुति, प्रशंसा;
स्तुति–(सं०स्त्री०) गुणकीर्तन, प्रशंसा,
स्तुतिपाठक–(सं०पु०) चारण, भाट;
स्तुतिवाद–(सं० पुं०) गुणगान;
स्तुतिवादक–(सं० वि०) प्रशंसा करने वाला, प्रशंसक, खुशामदी; स्तुतिव्रत–(सं० पुं०) स्तुति पाठक।
स्तुत्य–(सं० वि०) प्रशंसनीय, स्तुति के योग्य।
स्तुत्या–(सं० स्त्री०) गोपीचन्दन।
स्तुनक–(सं०पुं०) छाग, बकरा।
स्तूप–(सं०पुं०) मिट्टी आदि का ढेर, ऊँचा दूहा या टीला, घर में लगी हुई सबसे बड़ी धरन, जोता, वालों की लट, ईंटे पत्थर आदि का बना हुआ वह ऊंचा टीला जिसके नीचे बुद्ध या अन्य महात्मा की हड्डी आदि गड़ी हो।
स्तेन–(सं० पु०) चोर, एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।
स्तेम–(सं० पुं०) गीलापन।
स्तेय(सं०पुं०) चौर्य, चोरी।
स्तेयी–(सं० पुं०)सुनार, चूहा, मूसा।
स्तोक–(सं० पुं०) चातक, पपीहा, बूंद (वि०) थोड़ा, कम।
स्तोतव्य–(सं०वि०) स्तुति के योग्य।
स्तोता–(सं०वि०) स्तुति करने वाला।
स्तोत्र–(सं० नपु०) कविता रूप से किसी देवता का वर्णन, स्तुति;
स्तोत्रीय–(सं०वि०) स्तोत्र संबंधी।
स्तोभ–(सं० पुं०) सामवेद का एकअंग।
स्तोम्य–(सं० नपुं०) मस्तक, धन, अन्न, लोहे का नुकीला डंडा, (वि०) टेढ़ा (पुं०) समूह, राशि, स्तुति, प्रार्थना, यज्ञ करने वाला, एक प्रकार की ईंट।
स्तोम्य–(सं०वि०)प्रार्थना करने योग्य।
स्त्यन–(सं० नपु०) घनत्व, घनापन (वि०) कड़ा, घना, चिकना।
स्त्यैन–(सं० पुं०) चौर (वि०) अल्प, थोड़ा।
स्त्री–(सं० स्त्री०) नारी, पत्नी, प्रियंगु लता, एक वृत्त का नाम; स्त्रीकरण–(सं०नपुं०) संभोग, मैथुन; स्त्रीकाम–(सं० स्त्री०) स्त्री की कामना करने वाला; स्त्रीकोश–(सं० पुं०) खड्ग तलवार; स्त्रीक्षीर–(सं०नपुं०) स्त्री के स्तन का दूध; स्त्रीगमन–(सं० नपुं० संभोग, मैथुन; स्त्रीगवी–(सं० स्त्री० धेनु, गाय; स्त्रीगुरु–(सं०पुं०) दीक्षा देने वाली स्त्री; स्त्रीघातक–(सं० त्रि०) स्त्री की हत्या करने वाला;
स्त्रीचञ्चल–(सं०वि०) कामी, लंपट;

स्त्रीचौर–(सं०पुं०)स्त्री को चुराने वाला स्त्रीजननी–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो जो केवल कन्या उत्पन्न करती है ; स्त्रीजित–(सं०वि०) स्त्री के वशीभूत, स्त्रीत्व–(सं०नपुं०) स्त्रीपन; स्त्रीधन–(सं० नपुं०) वह सम्पत्ति या धन जिस पर स्त्री का पूर्ण अधिकार हो ; स्त्रीधर्म–(सं० पुं०) आर्तव, स्त्री का रजस्वला होना, मैथुन, स्त्रियों के शुभ कर्म; स्त्रीधर्मिणी–(सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री; स्त्रीधूर्त–(सं० पुं०) स्त्रियों को छलने वाला पुरुष ; स्त्रीध्वज–(सं०स्त्री०) जिसमें स्त्रियों के चिह्न हों। स्त्रीनिबन्धन–(सं० पुं०) गृहस्थी का कार्य जो स्त्रियाँ करती हैं ; स्त्रीपर–(सं०पुं०) कामी, लम्पट; स्त्रीपुर–(सं०पुं०) अन्तःपुर; स्त्रीपुष्प–(सं०नपुं०) आर्तव; स्त्रीप्रसंग–(सं०पुं०) संभोग, मैथुन; स्त्रीप्रिय–(सं०पुं०) आम का पेड़, अशोक; स्त्रीभूषण–(सं०पुं०)केतकी, केवड़ा; स्त्रीमन्त्र–(सं०पुं०) वह मन्त्र जिसके अन्त मे स्वाहा शब्द हो; स्त्रीरञ्जन–(सं० नपुं०) ताम्बूल; स्त्रीरत्न–(सं० नपुं०) श्रेष्ठनारी, लक्ष्मी; स्त्रीराज्य–(सं० पुं०) वह देश जहां स्त्रियों का राज्य हो ; स्त्रीरोग–(सं० पुं०) स्त्रियों का योनि संबंधी रोग ; स्त्रीलम्पट–(सं० वि०) विषयी, कामी; स्त्रीलिंग–(सं०नपुं०) व्याकरण में स्त्री वाचक शब्द, भग, योनि; स्त्रीगौण्ड–(सं०नपुं०) लम्पट, कामी; स्त्रीसंग्रहण–(सं० पुं०) व्यभिचार; स्त्रीसंसर्ग–(सं०पुं०) मैथुन; स्त्रीसंग–(सं०पुं०) स्त्री समागम; स्त्रीसंभोग–(सं०पुं०) मैथुन; स्त्रीसेवा–(सं०स्त्री०) मैथुन ; स्त्रीस्वभाव–(सं० पुं०) अन्तःपुर का रक्षक; स्त्रीहत्या–(सं०स्त्री०) स्त्री का वध; स्त्रीव्रत–अपनी पत्नी के अतिरिक्त दूसरी स्त्री से कामना न करना।

स्त्रैण–(सं० वि०) स्त्री संबधी, स्त्री के योग्य।

स्थ–(सं० प्रत्यय०) उपस्थित, स्थित, निवास तथा लीन अर्थ में शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता हैं।

स्थकित–(सं०वि०) शिथिल,थका हुआ।

स्थग–(सं०त्रि०) धूर्त, छली।

स्थगन–(सं०नपुं०) आच्छादन, छिपाव, गोपन ; स्थगित–(सं० वि०) गुप्त, छिपा हुआ; रोका हुआ, मुलतवी।

स्थगु–(सं०नपुं०) पीठ पर का कूबड़। स्थाण्डिल–(सं० नपुं०) यज्ञ के लिये स्वच्छ की हुई भूमि,मिट्टी का ढेर, सिवान।

स्थपति–(सं०पुं०)राजा, शासक, अन्तःपुर का रक्षक, भवन निर्माण कला में निपुण, रथ हांकने वाला।

स्थपनी–(सं० स्त्री०) दोनों भौंवों के बीच का स्थान।

स्थपुट–(सं०वि०) कुब्ज, कुबड़ा (पुं०) कूबड़।

स्थल–(सं०नपुं०) भूभाग, भूमि, स्थान, जगह, अवसर, पुस्तक का अंश या परिच्छेद; स्थलकन्द–(सं० पुं०) जमीकन्द; स्थलकमल–(सं० नपुं०) कमल की आकार का एक फूल जो भूमि पर होता है; स्थलकाली–(सं० स्त्री०) दुर्गा की एक सहचरी का नाम ; स्थलकुमुद–(सं० पुं०) कनेर ; स्थलग–(सं०त्रि०) भूमि पर रहने वाला; स्थलचर–(सं० वि०) स्थल पर रहने या विचारने वाला।

स्थलचारी–(सं०वि०)स्थलचर; स्थलज–(सं०वि०) भूमि में से उत्पन्न; स्थलनीरज–(सं० पुं०) स्थल कमल; स्थलपथ–(सं० पुं०) स्थलरूप मार्ग; स्थलपद्म–(सं० नपुं०) शतपत्र, तमालक, स्थलकमल; स्थलपिण्डा–(सं०स्त्री०) पिंडखजूर; स्थलपुष्पा–(सं०स्त्री०)गुलमखमली; स्थलमञ्जरी–(सं०स्त्री०)अपामार्ग लटजीरा; स्थलकर्मट–(सं०पुं०) करौंदा; स्थलयुद्ध–(सं०नपुं०) भूमि पर होने वाली लड़ाई ; स्थलविहंग–(सं० पुं०) भमि पर विचरने वाला पक्षी ; स्थलशृंगार–(सं०पुं०)गोखरू;स्थलारविन्द–(सं०नपुं०) स्थलकमल।

स्थली–(सं० स्त्री०) जलशून्य भूमि, ऊंची नीची भूमि, स्थान; स्थलीय–(सं० वि०) स्थानीय, स्थल संबंधी।

स्थलेरुहा–(सं० स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुआर।

स्थलेशय–(सं०पुं०) कुरङ्ग, हरिन।

स्थवि–(सं० पुं०) तन्तुवाह, जुलाहा, स्वर्ग, अग्नि।

स्थविर–(सं०पुं०) ब्रह्मा, वृद्ध, बुड्ढा, भिक्षुक, अचल, कदम्ब।

स्थविरा–(सं०स्त्री०) बुड्ढी स्त्री।

स्थविष्ठ–(सं०वि०)बहुत स्थूल या मोटा।

स्थाई–(हिं० वि०) देखो स्थायी।

स्थाणु–(सं०पुं०) शिव, महादेव, ब्रह्मा, एक प्रकार का अस्त्र, वृक्ष का तना, खंभा, थूनी; स्थाणुतीर्थ–थानेश्वर नामक तीर्थ; स्थाणुरोग–(सं० पुं०) घोड़ों का एक प्रकार का रोग।

स्थातव्य–(सं०वि०)स्थानीय, रहने योग्य।

स्थान–(सं० नपुं०) स्थिति, ठहराव, टिकाव, भूमिभाग, मैदान, ठौर, वेदी, डेरा, पद,राज्य, देश, देवालय, गढ़, अवसर, अवस्था, कारण, काम करने का स्थान, किसी ग्रन्थ का परिच्छेद; स्थानक–(सं० नपुं०) नगर पेड़ का थाला, नाचने में एक प्रकार की मुद्रा ; स्थानचञ्चला–(सं०स्त्री०) वनतुलसी; स्थानचिन्तक–(सं०पुं०) सेना के पड़ाव का प्रबन्ध करने वाला; स्थानच्युत–(सं० वि०) अपने स्थान से गिरा हुआ, अपने पद से हटाया हुआ; स्थानत्याग–(सं०पुं०) स्थान का छोड़ देना ; स्थानपाल–(सं०पुं०) देश का रक्षक। स्थानभंग–(सं०वि०)देखो स्थानच्युत। स्थानभूमि–(सं० स्त्री०) रहने का ठौर; स्थानभ्रष्ट–(सं० वि०) स्थानच्युत; स्थानमृग–(सं० पुं०) मगर, कछुआ। स्थानविद्–(सं०वि०) जानकार। स्थानस्थ–(सं०वि०) जो अपने स्थान पर स्थिर हो। स्थानाध्यक्ष–(सं०पुं०) किसी स्थान का रक्षक।

स्थानान्तर–(सं० पुं०) दूसरा स्थान। स्थानान्तरित–(सं० वि०) एक स्थान से हट कर दूसरे स्थान को जानेवाला

स्थानापन्न–(सं० वि०) दूसरे के स्थान पर स्थायी रूप से काम करने वाला।

स्थानिक–(सं०वि०) उल्लेखित (पुं०) स्थान का रक्षक, मन्दिर का प्रबंधक।

स्थानी–(हिं० वि०) उपयुक्त, उचित, स्थायी, ठहरने वाला।

स्थानीय–(सं०वि०) स्थान स्थित, स्थान संबंधी, स्थिति योग्य।

स्थानेश्वर–(सं० पुं०) कुरुक्षेत्र का थानेश्वर नामक स्थान।

स्थापक–(सं० वि०) रखने या खड़ा करने वाला, देवमूर्ति बनाने वाला, गिरवी रखने वाला, संस्थापक, सूत्रधार का सहकारी।

स्थापत्य–(सं०पुं०) अन्तःपुर का रक्षक (नपुं०) भवननिर्माण, भेमारी की कला। स्थापत्यवेद–(सं० पुं०) चार उपवेदों में से एक।

स्थापन–(सं० नपुं०) प्रतिपादन, निरूपण, रक्षा का उपाय, रोकने की विधि, नया काम आरंभ करना, खड़ा करना, बैठाना, जमाना, जकड़ना, पकड़ना, सिद्ध करना, समाधि। स्थापना–(हिं०स्त्री०) स्थापन, प्रतिष्ठित करना, बैठाना, सिद्ध करना; स्थापनिक–(सं०वि०) स्थापित किया हुआ; स्थापनीय–(सं०वि०) स्थापित करने योग्य ; स्थापित–(सं० वि०) निर्दिष्ट, व्यवस्थित, निश्चित, प्रतिष्ठित, रक्षित।

स्थाय–(सं० पुं०) आधार, पात्र।

स्थायित्व–(सं०नपुं०) स्थिरता, दृढ़ता, स्थायी होने का भाव, टिकाव, ठहराव।

स्थायी–(सं०वि०) स्थिर रहने वाला, ठहरने वाला,टिकने वाला, विश्वस्त, (पुं०) साहित्य में वह भाव जिसकी स्थिति सर्वदा रस में रहती है; स्थायीभाव–(सं०पुं०) साहित्य के भाव जो संख्या में नव है यथा-रति,हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निन्दा, विस्मय, और निर्वेद; स्थायी समिति–(हिं०पुं०) किसी सभा का संचालन करने वाली दो अधिवेशनों के बीच में होने वाली कार्य कारिणी सभा।

स्थाल–(सं०नपुं०) थाल, परात, थाली।

स्थालक–(सं०नपुं०) पीठ की रीढ।

स्थाली–(सं० स्त्री०) मिट्टी की कटोरी हँड़िया; स्थालीपाक–(सं०पुं०)आहुति के लिये दूध में पकाया हुआ चावल या जव;स्थाली पुलक न्याय–(सं०पुं०) समान स्थितिमें रहने वाली वस्तुओं में से जो दो एक परिवर्तन होगा वह सभी में होगा–इस प्रकार का निर्णय; स्थालीवृक्ष–(सं०पुं०) अश्वत्थ, पीपल।

स्थावर–(सं० नपुं०) पर्वत, धनुष की डोरी, अचल सम्पत्ति, (वि०) एक ही स्थान में रहने वाला, स्थायी। स्थावरराज–(सं० पुं०) हिमालय; स्थावर विष–(सं०पुं०)स्थावर पदार्थों में होने वाला विष।

स्थाविर–(सं०नपुं०)वृद्धावस्था,बुढ़ौती। स्थित–(सं० वि०) ठहरा हुआ टिका हुआ, रहने वाला, विद्यमान, बसा हुआ, लगा हुआ, निश्चल, स्थिर, खड़ाहुआ, अपनी प्रतिज्ञा पर अटल स्थितधी–(सं० त्रि०) जिसका चित्त सर्वदा स्थिर रहे।

स्थितप्रज्ञ–(सं० त्रि०) समस्त विकारों से रहित, आत्मसन्तोषी। स्थितता–(हिं०स्त्री०) ठहराव।

स्थिति–(सं०स्त्री०) ढंग, पद, अस्तित्व आकृति, स्थिरता, संयोग, ठहरने का स्थान, अवस्था, निवृत्त, नियम, पालन, सीमा, मर्यादा, निवास, अवस्था, दशा। स्थिति स्थापक–(सं०पुं०) किसी वस्तु का अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त होना, लचीला, सहज में झुकने वाला; स्थिति स्थापकता–(सं०स्त्री०)लचीलापन; स्थिर–(सं०पुं०) वृक्ष, पर्वत, मोक्ष, ज्योतिष में एक योग का नाम, साँड़, स्कन्द का एक अनुचर, एक प्रकार का छन्द (वि०) निश्चल, ठहरा हुआ, दृढ, अचल, शान्त, स्थायी; स्थिरकर्म–(सं० त्रि०) दृढ़ता से काम करने वाला; स्थिरकुसुम–(सं० पुं०) मौलसिरी; स्थिरगन्ध–(सं०पुं०)चम्पा; स्थिरचित्त–(सं० त्रि०) जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो; स्थिरच्छद–(सं० पुं०) भोजपत्र; स्थिरच्छाय–(सं०वि०) निश्चल, छाया युक्त; स्थिरजिह्व–मछली; स्थिरजीविता-(सं०स्त्री०)सेमल का वृक्ष; स्थिरजीवी–(सं०पुं०)काक, कौवा; स्थिरतर–(सं० वि०) अति स्थिर; स्थिरता–(सं० स्त्री०) दृढ़ता, धैर्य; स्थिरदंष्ट्र–(सं०पुं०) सर्प; स्थिरधन्वा–(सं० पुं०) दृढ़ चित्त मनुष्य; स्थिरपत्र–(सं० पुं०) महाताल वृक्ष; स्थिरपुष्प–(सं०पुं०) चम्पा का वृक्ष; स्थिरफला–(सं० स्त्री०) कूष्माण्ड की लता; स्थिरबुद्धि–(सं० त्रि०)दृढ़चित्त, जिसका मन स्थिर हो; स्थिरमति–(सं० स्त्री०) स्थिर बुद्धि; स्थिरमद–(सं०पुं०) मयूर, मोर; स्थिरयौवन–(सं० पुं०)विद्याधर; स्थिरराग–(सं०

त्रि०) निश्चल प्रेम; स्थिर वाच्–(सं० त्रि०) सत्यप्रतिज्ञ; स्थिरश्री–(सं०वि०)जिसकी सम्पत्ति स्थायी हो।

स्थिरा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, दृढ़ चित्त वाली स्त्री।

स्थिरायु–(सं०पुं०) चिरंजीवी।

स्थूण–(सं० पुं०) एक यक्ष का नाम।

स्थूणा–(सं० स्त्री०) खंभा, थूनी, वृक्ष-स्तम्भ, निहाई।

स्थूल–(सं० वि०) पीवर, मोटा, मूर्ख, जिसका तल समान हो, (पुं०)कटहल, शिव के एक गण का नाम, इन्द्रियों द्वारा सामान्य रूपसे ग्राह्य; स्थूलकणा–(सं०नपुं०) मंगरैला; स्थूलकन्द–(सं०पुं०) सूरण, ओल; स्थूलकुमुद–(सं०पुं०) सफेद कनेर; स्थूलचाप–(सं०पुं०)रूई धुनने की धुनकी; स्थूलता–(सं०स्त्री०) मोटापन, भारीपन; स्थूलताल–(सं० पु०) हिन्ताल, श्रीताल; स्थूलदर्भा–(सं०स्त्री०) मूंज नामक घास; स्थूलदर्शक,सूक्ष्मदर्शक–(सं०पुं०) जिस यन्त्र की सहायता से सूक्ष्म वस्तु बड़ी देख पड़े; स्थूलदला–(सं०स्त्री०)घीकुआर; स्थूलनाल–(सं०पुं०) बड़ी नरकट; स्थूलनास–शूकर, सुअर; स्थूलनासिक–(स०वि०) जिसकी नाक बड़ी और मोटी हो; स्थूलपट–(सं०पुं०,नपुं०)मोटा कपड़ा; स्थलपत्र–(सं० पुं०) दमनक, दौना; स्थूलपाद–(सं० पुं०) फ़ीलपाव रोग वाला; स्थूलपुष्प–(सं० पुं०) अगस्त्य का वृक्ष; स्थूलफला–(सं० स्त्री०) शाल्मली; स्थूलभाव–(सं०पुं०)स्थूल विषय; स्थूलमञ्जरी–(सं०स्त्री०)अपमार्ग, चिचिड़ा; स्थूलमरिच–(सं० नपुं०) शीतल चीनी। स्थूलमुख–(सं०वि०)चौड़े मुख वाला। स्थूलमूल–(सं०नपुं०) बड़ी मूली। स्थूलरोग–(सं० पुं०) मोटा होने का रोग।

स्थूललक्ष–(सं०वि०)बड़ा दानी, (पुं०) विद्वान, पण्डित। स्थूललक्षिता–(सं० स्त्री०)दानशीलता, पाण्डित्य। स्थूलवृक्ष–(स०पुं०) मौलसिरी का पेड़।

स्थूलशाटक–(सं०पुं०) मोटा कपड़ा, स्थूलशालि–(सं० पुं०) एक प्रकार का मोटा चावल। स्थूलशिम्बी–(स० स्त्री०) सफेद सेम। स्थूलशिर–(स० वि०)बड़े मस्तक वाला। स्थूलस्कन्ध–(सं०पुं०) बड़हर। स्थूलहस्त–(सं० पुं०)हाथीका सूंड़। स्थूला–(सं०स्त्री०) गजपीपल, बड़ी इलायची। स्थूलांग–(सं०वि०) मोटे शरीर वाला। स्थूलाक्ष–(सं० पुं०) खर की साथी एक राक्षस। स्थूलान्त्र–(सं० नपुं०) बड़ी आँत। स्थूलास्य–(सं०पुं०) सर्प, साँप (वि०) बड़े मुंह वाला।

स्थैर्य–(सं०नपुं०)स्थिर होने का भाव स्थिरता।

स्थौल्य–(सं०पुं०) स्थूलत्व, स्थूलता।

स्नपन–(सं०नपुं०) नहाने की क्रिया।

स्नपित–(सं०वि०)नहाया हुआ।

स्ना–(सं०स्त्री०) गाय या बैल के गले का नीचे लटकने वाला चमड़ा।

स्नात–(सं०वि०) जिसने स्नान क्रिया हो, नहाया हुआ। स्नातक–(सं० पुं०) वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत के समाप्त होने पर स्नान करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो; स्नातव्य–(सं०वि०) नहाने योग्य।

स्नान–(सं० नपुं०) शरीर को स्वच्छ करने के लिये तथा शिथिलता दूर करने के लिये जल से धोना अथवा जल की बहती हुई धारा में प्रवेश करना। स्नानकलश–(सं० पुं०) वह घड़ा जिसमें पानी रक्खा हो; स्नानगृह–(सं०नपुं०)जिस कोठरी में स्नान किया जाता है; स्नानविधि–(सं० स्त्री०)स्नान का विधान; स्नानवेश्म–(स० नपुं०) स्नानगृह; स्नानसाटी–शरीर पोंछने की तौलिया; स्नानशाला–(सं०स्त्री०)स्नानगृह; स्नानाम्बु–(स० नपुं०) स्नान करने का जल; स्नानीय–(सं० वि०) नहाने योग्य; स्नानोदक–(सं०नपुं०) स्नान करने का जल।

स्नायविक–(सं० वि०) स्नायुसंबंधी।

स्नायी–(स०वि०) स्नान करने वाला।

स्नायु–(सं०स्त्री०) शरीर में की वायु वाहिनी महीन महीन शिरा, नाड़ी।

स्नायुरोग–(सं०पुं०) नहरुआ नामक रोग।

स्निग्ध–(सं० पु०) सिक्थक, मोम, गन्धा, बिरोजा, दूध पर की मलाई, (वि०) चिकना, तैलयुक्त; स्निग्धकन्दा–(सं० स्त्री०) कन्दली; स्निग्धच्छद–(सं०पुं०) बरगद का वृक्ष; स्निग्धजीरक–(सं० पुं०) ईसबगोल; स्निग्धतण्डुल–(सं०पुं०)साठी धान; स्निग्धता–(सं० स्त्री०) चिकनापन; स्निग्धपर्णिका–(सं० नपुं०) पिठवन; स्निग्धबीज–(सं० स्त्री०) ईसबगोल; स्निग्धमज्जक–(सं० पुं०) बादाम।

स्निग्धा–(सं०स्त्री०)मज्जा, अस्थिसार।

स्नुषा–(सं० स्त्री०) पुत्रवधू, लड़के की स्त्री।

स्नुही–(सं०स्त्री०) थूहड़ का पौधा।

स्नेह–(सं०पुं०)प्रेम,प्यार चिकना पदार्थ नैयायिकों के मत से गुण विशेष, कोमलता, एक राग का नाम; स्नेहकुम्भ–(सं० पुं०) तेल का घड़ा।

स्नेहन–(सं०नपुं०)शरीरमें तेल लगाना कफ़, मक्खन।

स्नेहपात्र–(सं०पुं०) प्रेम पात्र, जिससे प्रेम किया जाय। स्नेहपान–(सं० नपुं०) कुछ विशिष्ट रोगों में घी, तेल आदि पीने की विधि; स्नेहफला–(सं०स्त्री०) तिल; स्नेहबीज–(सं०पुं०) चिरौंजी; स्नेहवृक्ष–(सं०पुं०) देवदार

स्नेहित–(सं०वि०) चिकना।

स्नेही–(हिं०पु०)मित्र, बन्धु, चित्रकार, (वि०) स्नेहयुक्त।

स्पन्द–(सं० पुं०) किसी वस्तु का धीरे धीरे हिलना या काँपना, शरीर का फड़कना; स्पन्दन–(सं० नपुं०) देखो स्पन्द; स्पन्दी–(हिं०वि०) काँपने या फड़कने वाला।

स्पन्दिनी–(सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

स्पर्धा–(स०स्त्री०) संघर्ष, रगड़, साहस, ईर्ष्या, साम्य, बराबरी; स्पर्धी–(सं० वि०) स्पर्धा करने वाला।

स्पर्श–(सं०पुं०) पीड़ा, कष्ट, आपत्ति, वायु, एक प्रकार का रतिबन्ध, वर्गाक्षर, छूना, व्याकरण में उच्चारण भेद से 'क' से लेकर ''म'' तक के पचीस व्यंजन वर्ण, नैयायिकों के मत से त्वगिन्द्रिय ग्राह्य गुण विशेष स्पर्शकोण–(सं० पुं०) रेखागणित में वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखा के बीच में बनता है; स्पर्शजन्य–(सं० पुं०) स्पर्श से उत्पन्न, सक्रामक, छुतहा; स्पर्शदिशा–(सं० स्त्री०) वह दिशा जिधर से सूर्य या चन्द्रमा में ग्रहण लगा हो; स्पर्शन–(सं० नपुं०) छूने की क्रिया; स्पर्शनेंद्रिय–(सं०नपुं०) छूने की इन्द्रिय, त्वचा; स्पर्शमणि–(स०पुं०) पारस पत्थर; स्पर्शरसिक–(सं०पुं०)कामुक, लम्पट; स्पर्शरेखा–(सं०स्त्री०) गणित में वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त की परिधि के किसी एक बिन्दु को स्पर्श करती हुई खींची जाय। स्पर्शलज्जा–(सं० स्त्री०) लजालू नामक लता; स्पर्शकन्द–(सं०पुं०) मेढक।

स्पर्शा–(स०स्त्री०)कुलटा, छिनाल स्त्री। स्पर्शाक्रामक–(स० त्रि०) स्पर्श या संसर्ग से उत्पन्न होने वाला,संक्रामक। स्पर्शानन्दा–(सं० स्त्री०) अप्सरा। स्पार्शस्पर्श–छूने या न छूने का विचार छूतछात।

स्पर्शी–(हिं०वि०) छूने वाला।

स्पर्शेन्द्रिय–(सं०नपु०)वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है, त्वचा।

स्पर्शोपल–(सं० पु०) पारस पत्थर।

स्पष्ट–(स० वि०) जिसके समझने या देखने में कोई कठिनता न हो। स्पष्ट कथन–(सं०पुं०)वह कथन जिसमें किसी दूसरे की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हो। स्पष्टतया–(सं०क्रि०वि०)स्पष्ट रूपसे स्पष्टता–(सं०स्त्री०) स्पष्ट होने का भाव; स्पष्टवक्ता–(सं०पुं०)ठीक ठीक बात कहने वाला। स्पष्टवादी–(स०पुं०) बिना सकोच के बोलने वाला। स्पष्टीकरण–(स०नपु०) स्पष्ट करने की क्रिया।

स्पृक्का–(सं०स्त्री०) लजाधुर की लता, ब्राह्मी।

स्पृश–(सं०वि०) स्पर्श करने वाला।

स्पृश्य–(सं० वि०) स्पर्श करने या छूने योग्य।

स्पृष्ट–(सं०वि०) स्पर्श किया हुआ।

स्पृहणीय–(स० वि०) वांछनीय, जिसके लिये अभिलाषा की जावे।

स्पृहा–(सं० स्त्री०)वांछा, कामना।

स्पृही–(सं०वि०)अभिलाषा करने वाला

स्फटिक–(सं०पु०) एक प्रकार का कांच के समान पारदर्शक पत्थर, बिल्लौर, सूर्यकान्त मणि। स्फटिक विष–(सं० पुं०) दारुमाच नामक विष।

स्फटिका–(सं०स्त्री०) फिटकरी।

स्फटिकाभ्र–(स०पुं०) कर्पूर, कपूर।

स्फटिकारि–(सं०स्त्री०)फिटकिरी।

स्फटिकपस–(स०पुं०) कपूर, चन्द्रकान्त मणि। स्फटिकोपल–(स०पुं०)बिल्लौर

स्फटी–(सं०स्त्री०) फिटकिरी। स्फाटिक–(सं०वि०) बिल्लौर सम्बन्धी।

स्फार–(स० वि०) विपुल, बहुत, विकट, प्रचुर।

स्फाल–(सं०पुं०) स्फूर्ति, तीव्रता।

स्फिक्, स्फिच्–(सं०पुं०) चूतर।

स्फीत–(स० वि०) समृद्ध, फूला हुआ, बढ़ा हुआ।

स्फीति–स०स्त्री०) वृद्धि, बढती।

स्फुट–(सं० वि०) प्रकाशित, विकसित, स्पष्ट, शुक्ल, अलग अलग, फुटकर, सामने देख पड़ने वाला। स्फुटन–(स०नपुं०) विकसित होना, खिलना। स्फुटबन्धनी–(स०स्त्री०) मालकंगनी।

स्फुटा–(सं०स्त्री०) सांप का फन।

स्फुटार्थ–(सं० वि०) प्रकाशित।

स्फटिका–(स०स्त्री०) फिटकरी।

स्फुटित–(सं० वि०) विकसित, खिला हुआ, प्रकट किया हुआ, हँसता हुआ

स्फुटी–(सं० स्त्री०) पैर में बवाई फटना, ककड़ी, फूट। स्फुटीकरण–(सं०पुं०) प्रकाशन।

स्फुट,स्फुरण–(सं०पुं०)किसी पदार्थ का थोड़ा, थोड़ा हिलना,अंग का फरकना

स्फुरति–(हिं०स्त्री०) देखो स्फूर्ति।

स्फुरित–(स०वि०)हिलने या फड़कने वाला।

स्फुल–(सं०नपु०)तंबू; स्फुलन–स्फुरण।

स्फुलिंग–(सं०नपुं०) आग की चिनगारी।

स्फुलिंगिनी–(सं०स्त्री०)अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

स्फूर्जन–(सं०पुं०)तेंदू नामक वृक्ष।

स्फूर्ति–(स०स्त्री०) स्फुरण, धीरे धीरे हिलना; किसी काम करने के लिये उत्पन्न थोड़ी सी उत्तेजना।

स्फोट–(स०पुं०)फोड़ा, फुन्सी, विदारण, किसी वस्तु का फूटना, मुक्ता, मोती, शब्द का नित्यत्व। स्फोटक–(सं०पुं०) फोड़ा फुन्सी, भिलावां। स्फोटन–(सं०नपुं०)विदारण, फाड़ना, शब्द, ध्वनि।

स्फोटा–(सं० स्त्री०) सांप का फन।

स्फोटिनी–(सं०स्त्री०)कर्कटिका, ककड़ी।

स्फोलन–(सं०पुं०) स्फाल, स्फूर्ति ।
स्मय–(सं० पुं०) गर्व, अभिमान ।
स्मर–सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव, मदन, स्मरण, शुद्ध राग का एक भेद ।
स्मर कथा–(सं० स्त्री०) काम को उत्तेजित करने वाली कथा । **स्मरकूपक**–(सं०पुं०) योनि, भग । **स्मरगुरु**–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण । **स्मरगृह**–(सं०नपुं०) भग, योनि । **स्मरछत्र**–(सं० नपुं०) भग, योनि ।
स्मरण–(सं० नपु०) स्मृति, किसी बात की याद, चर्चा; नव प्रकार की भक्तियों में से एक जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता की बारम्बार याद करता रहता है, साहित्य में वह अलंकार जिसमें समान वस्तु को देख कर पूर्वानुभूत वस्तु का स्मरण होता है । **स्मरणपत्र**–(सं०पुं०) वह पत्र जो किसी को कोई बात याद दिलाने के लिये लिखी जावे । **स्मरणशक्ति**–(सं०स्त्री०) स्मरण करने की शक्ति । **स्मरणीय**–(सं०वि०) याद करने योग्य । **स्मरदशा**–(सं०स्त्री०) प्रेमी या प्रेमिका के न मिलने पर उसके विरह की अवस्था ।
स्मरदहन–(सं०पुं) शिव, महादेव ।
स्मरध्वज–(सं०पुं०) पुरुष का लिंग ।
स्मरध्वजा–(सं०स्त्री०) चांदनी रात ।
स्मरप्रिया–(सं० स्त्री०) कामदेव की पत्नी, रति । **स्मरमन्दिर**–(सं०नपुं०) योनि, भग । **स्मरलेखनी**–(सं० स्त्री०) मैना पक्षी ।
स्मरना–(हिं०क्रि०) याद करना ।
स्मरवधू–(सं०स्त्री०) कामदेव की पत्नी, रति । **स्मरवीथिका**–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी । **स्मरशत्रु**–(सं०पुं०) कामदेव के शत्रु, शिव । **स्मरसख**–(सं० पुं०) चन्द्रमा ।
स्मर्ण–(हिं०पुं०) देखो स्मरण ।
स्मरागार–(सं०नपुं०) भग, योनि ।
स्मरारि–(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
स्मरासव–(सं०पुं०) ताड़ी ।
स्मरोद्दीपन–(सं०वि०) कामोद्दीपन ।
स्मर्तव्य–(सं०वि०) स्मरण करने योग्य ।
स्मशान–(सं०पुं०) देखो श्मशान ।
स्मारक–(सं०वि०) स्मरण कराने वाला, याद दिलाने वाला, (पुं०) वह पदार्थ या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाय रखने के लिये बनाया जावे ।
स्मारणी–(सं० स्त्री०) ब्राह्मी बूटी ।
स्मार्त–(सं०नपुं०) स्मृति शास्त्र के अनुसार कर्म, (पुं०) स्मृति शास्त्र का अच्छा ज्ञाता (वि०) स्मृति सम्बन्धी ।
स्मित–(सं०नपुं०) मन्दहास, धीमी हँसी, (वि०) विकसित, खिला हुआ ।
स्मृत–(सं० वि०) याद किया हुआ ।
स्मृति–(सं०स्त्री०) अनुभव, संस्कारजन्य ज्ञान, चिन्तित ध्यान, स्मरण और चर्चा, मुनि प्रणीत शास्त्र विशेष, धर्मशास्त्र, संहिता, अठारह की संख्या, एक छन्द का नाम । **स्मृतिकार**–(सं०पुं०) धर्मशास्त्र बनाने वाला **स्मृतिकारक**–(सं० पुं०) धर्मशास्त्र के प्रणेता मन्वादि ऋषि । **स्मृतिपाठक**–(सं०वि०) स्मृति पढ़ने वाला । **स्मृतिभ्रंश**–(सं०पुं०) स्मरण शक्ति का नाश **स्मृतिबोधिनी**–(सं०स्त्री०) ब्राह्मी बूटी **स्मृतिविभ्रम**–(सं०पुं०) स्मरण शक्ति का नाश । **स्मृतिविरुद्ध**–(सं०वि०) धर्मशास्त्र के विपरीत **स्मृतिशास्त्र**–(सं०नपुं०) धर्मशास्त्र । **स्मृतिसम्मत**–(सं०वि०) धर्मशास्त्र से अनुमोदित । **स्मृतिहर**–(सं०वि०) स्मृति नाशक ।
स्मृतिहेतु–(सं० पुं०) भावना, वासना ।
स्मेर–(सं०वि०) विकसित, खिला हुआ ।
स्पन्द, स्पन्दन–(सं० पुं० नपुं०) टपकना, चूना, गलना, पसीजना, निकलना ।
स्पन्दनिका–(सं०स्त्री०) छोटी नदी, नहर
स्यमन्तक–(सं० पु०) श्रीकृष्ण का हस्त स्थित मणि, पुराण के अनुसार इसकी चोरीका कलंक श्रीकृष्ण को लगा था
स्यमिक–(सं० पुं०) वाल्मीक, बाँबी ।
स्यात्–(सं०अव्य०) कदाचित् ।
स्याद्वाद–(सं०पु०) जैन दर्शन ।
स्यान–(हिं०वि) देखो स्याना ।
स्यानप–(हिं०पुं०) देखो स्यानपन ।
स्यानपत–(हिं०स्त्री) चतुराई, धूर्तता,
स्यानपन–(हिं०पुं०) चतुरता ।
स्याना–(हिं०वि०) चतुर, धूर्त, वयस्क, जो बालक न हो (पुं०) वृद्ध, गाँव का मुखिया, हकीम, ओझा, **स्यानापन**–(हिं० पु०) प्राप्त वयस्क, चतुराई, धूर्तता ।
स्याबाद–(हिं०अव्य०) देखो शाबास ।
स्यामक–(हिं०पुं०) देखो श्यामक ।
स्यामकरन–(हिं०पुं०) देखो श्यामकर्ण ।
स्यामता–(हिं०स्त्री०) देखो श्यामता ।
स्यामर–(हिं०वि०) देखो श्यामल ।
स्यामलिया–(हिं०वि०) साँवले रंग का ।
स्यामा–(हिं०स्त्री०) देखो श्यामा ।
स्यार–हिं०पुं०) शृगाल, गीदड़, सियार; **स्यारपन**–(हिं० पुं०) शृगाल के सदृश प्रकृति, भीरुता, चालाकी । **स्यारलाठी**–(हिं०स्त्री०) अमलतास ।
स्यारी–(हिं०स्त्री०) शृगाली, सियारिन
स्याल–(सं पुं०) श्यालक, साला । **स्यालक**–(सं० पुं०) पत्नी का भाई, साला ।
स्याला–(हिं०पुं०) अधिकता, बहुतायत
स्यालिका, स्याली–(सं० स्त्री०) पत्नी की बहन, साली ।
स्याह जीरा–हिं०पुं०) काला जीरा ।
स्यूत–सं०वि०) सिला हुआ ।
स्यूति–(सं०स्त्री०) सियन, सन्तति ।
स्यून–(सं०पुं०) रश्मि, किरण, सूर्य ।
स्यों, स्यो–(हिं०अव्य०) सहित, समीप, पास
स्योत–सं०पुं०) सूर्य; किरण ।
स्योनवृत्त–(सं० वि०) पाहुनों को सुख देने वाला ।
स्रंग–(हिं०पुं०) देखो शृङ्ग, सींग ।
स्रंस–(सं०पुं०) भ्रंश, नाश ।
स्रंसन–(सं०नपुं०) गर्भपात, अधःपतन, नाश
स्रक्–(सं० पुं० स्त्री०) फूलों की माला, ज्योतिष में एक प्रकार का योग; एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह वर्ण होते हैं ।
स्रग्गणु–(सं०पुं०) माला, मन्त्र ।
स्रग्जिह्व–(सं०पुं०) अग्नि ।
स्रग्धर–(सं० वि०) माला पहरने वाला ।
स्रग्धरा–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में एक्कीस अक्षर होते हैं; (वि०) माला पहरने वाला ।
स्रग्विनी–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं (वि०) माला पहरने वाली ।
स्रज–(हिं० स्त्री०) माला; स्रजना (हिं० क्रि०) देखो सृजना ।
स्रज्वा–(सं० पु०) माला बनाने वाला, माली ।
स्रद्दा–(हिं० स्त्री०) देखो श्रद्धा । **स्रम**–(हिं० पु०) देखो श्रम । **स्रमित**–(सं० वि०) देखो श्रमित ।
स्रव–(सं० पुं०) मूत्र, झरना, बहाव ।
स्रवण–(सं० नपुं०) पसीना, मूत्र, गर्भपात । **स्रवन**–(हिं० पुं०) देखो श्रवण; **स्रवना**–(हिं० क्रि०) बहना, टपकना, गिरना ।
स्रवन्ती–(सं० स्त्री०) नदी ।
स्रष्टा–(सं० पुं०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु, सृष्टि करने वाला ।
स्रापित–(हिं०वि०) देखो शापित ।
स्राव–(सं०पुं०) क्षरण, झरना । **स्रावक**–(सं० नपुं०) चूने या टपकने वाला ।
स्रावित–(सं० वि०) टपक कर या चुआ कर निकाला हुआ । **स्रावी**–(सं० वि०) रसने वाला, बहने वाला ।
स्राव्य–(सं०वि०) बहने योग्य ।
स्रिंग–(हिं०पुं०) देखो शृङ्ग ।
स्रिय–(हिं० स्त्री०) देखो श्रिय ।
स्रुघ्नी–(सं० स्त्री०) सज्जी मिट्टी ।
स्रुत–(हिं० वि०) देखो श्रुत, बहता हुआ; क्षरण, बहाव ।
स्रुति–(सं० स्त्री०) देखो श्रुति ।
स्रुवा–(सं० स्त्री०) हवन करने की एक प्रकार की लकड़ी की बनी हुई छोटी करछी ।
स्रेनी–(हिं०स्त्री०) देखो श्रेणी ।
स्रोत–(सं० पुं०) पानी का झरना या सोता; **स्रोतपति**–(सं० पुं०) समुद्र । **स्रोतस्विनी**–(सं० स्त्री०) नदी । **स्रोतोवह**–(सं० स्त्री०) नदी ।
स्रोन–(हिं० पुं०) देखो श्रवण ।
स्रोनित–(हिं० पुं०) देखो शोणित ।
स्वः–(सं० पु०) स्वर्ग । **स्वःसरिता**–(सं० स्त्री०) गंगा । **स्वःसुन्दरी**–(सं० स्त्री०) अप्सरा ।
स्व–(सं०पुं०) धन, (पुं०) आप, निज, विष्णु, जाति, बन्धु । **स्वक**–(सं० वि०) निजी ।
स्वकम्पन–(सं० पुं०) वायु, हवा ।
स्वकरण–स्वीकार ।
स्वकर्म–(सं० नपुं०) अपना काम । **स्वकर्मी**–(सं०वि०) स्वार्थी । **स्वकामी**–(सं० वि०) केवल अपने लिये काम करने वाला ।
स्वकाल–(सं० पुं०) किसी कार्य का निर्दिष्ट काल ।
स्वकीया–(सं० स्त्री०) अपने ही पति में अनुराग करने वाली नायिका ।
स्वकुल–(सं० नपुं०) अपना वंश । **स्वकुलक्षय**–(सं० वि०) अपने कुल का नाश करने वाला । **स्वकुल्य**–(सं०वि०) अपने कुल का । **स्वकृत्**–(सं० वि०) अपना काम करने वाला । **स्वगत**–(सं० नपुं०) आपही आप, अपने आप से । **स्वगत कथन**–(सं० पुं०) नाटक में किसी पात्र का आप ही आप बोलना । **स्वगृह**–(सं०पुं०) निज का घर ।
स्वगोप–(सं० वि०) अपने शरीर को बचाने वाला ।
स्वङ्ग–(सं० नपुं०) सुन्दर शरीर ।
स्वच्छ–(सं० वि०) शुक्ल, उज्वल, निर्मल, पवित्र, (पुं०) स्फटिक, अभ्रक, मोती । **स्वच्छता**–(सं०स्त्री०) निर्मलता
स्वच्छन्द–(सं०वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, मनमाना, बेधड़क । **स्वच्छन्दचारिणी**–(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी । **स्वच्छन्दचारी**–(सं० वि०) मनमौजी । **स्वच्छन्दता**–(सं०स्त्री०) स्वतन्त्रता । **स्वच्छन्दपत्र**–(सं० नपुं०) अभ्रक । **स्वच्छन्दमणि**–(सं० पुं०) स्फटिक ।
स्वच्छना–(हिं० क्रि०) निर्मल करना ।
स्वच्छी–(हिं०वि०) स्वच्छ ।
स्वज–(सं० नपुं०) रुधिर, (पुं०) पुत्र, बेटा, पसीना, (वि०) आप से आप उत्पन्न, स्वाभाविक ।
स्वजन–(सं० पुं०) सम्बन्धी, आत्मीय जन । **स्वजनता**–(सं० स्त्री०) जाति सम्बन्ध । **स्वजन्मा**–(सं०वि०) अपने आप से उत्पन्न । **स्वजात**–(सं० वि०) पुत्र, बेटा । **स्वजाति**–(सं० स्त्री०) अपनी जाति । **स्वजातीय**–(सं० वि०) अपनी जाति का, एक ही जाति का; **स्वजात्य**–(सं० वि०) स्वजातीय ।
स्वजित–(सं० वि०) अपने से जय करने वाला ।
स्वजन्य–(सं०वि०) अपने से उत्पन्न ।
स्वतन्त्र–(सं० वि०) स्वेच्छाचारी, मनमानी करने वाला, भिन्न, पृथक्; **स्वतन्त्रता**–(सं० स्त्री०) स्वाधीनता; **स्वतन्त्री**–(सं०त्रि०) स्वाधीन ।
स्वतः–(सं० अव्य०) अपने आप, आप ही
स्वतुल्य–(सं०वि०) अपने तुल्य, अपने समान ।
स्वतोविरोधी–(सं० पुं०) अपना ही खण्डन या विरोध करने वाला ।
स्वत्व–(सं० नपुं०) अधिकार ।

स्वत्वाधिकारी–(सं० पुं०) स्वामी, अधिकारी।
स्वदन–(सं० नपुं०) स्वाद लेना, चखना
स्वदृष्ट–(सं० वि०) अपने से देखा हुआ
स्वदेश–(सं० पुं०) वह देश जिसमें किसी का जन्म और पालन पोषण हुआ हो, मातृभूमि ; **स्वदेशी**–(सं०वि०) अपने देश का, अपने देश सम्बन्धी, अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।
स्वदोषज–(सं०वि०) जो अपने दोष से उत्पन्न हो।
स्वधर्म–(सं० पुं०) अपना धर्म।
स्वधा–(सं० अव्य०) देवता तथा पितरों की हवि और दान देने का मन्त्र, पितरों के निमित्त देने का अन्न, (सं० स्त्री०) दक्ष की कन्या का नाम ;
स्वधाकर–(सं०त्रि०) श्राद्ध करनेवाला; **स्वधाधिप**–(सं० पुं०) अग्नि; **स्वधाभोजी**–(सं०पुं०) पितृगण।
स्वधिति–(सं० स्त्री०) वज्र, कुठार, कुल्हाड़ी।
स्वधीत–(सं० वि०) अच्छी तरह पढ़ा हुआ।
स्वन–(सं० पुं०) ध्वनि, शब्द।
स्वनामधन्य–(सं० वि०) अपने नाम के कारण धन्य होने वाला।
स्वनाम–(सं० नपुं०) अपना नाम; **स्वनामा**–(सं० पुं०) जो अपने नाम से प्रसिद्ध हो।
स्वनित–(सं० नपुं०) शब्द, मेघ की गड़गड़ाहट।
स्वनिष्ठ–(सं० वि०) अपना काम स्वयं करने वाका।
स्वनिष्ठित–(सं०वि०) उत्तम रूप से किया हुआ।
स्वन्त–(सं० वि०) जिसका अन्त लच्छा हो।
स्वन्न–(सं० नपुं०) उत्तम अन्न।
स्वपक्ष–(सं० पुं०) अपना पक्ष।
स्वपति–(सं० पुं०) अपना पति।
स्वपतित–(सं० वि०) आप से आप गिरा हुआ।
स्वपन–(हिं० नपुं०) निद्रा, नींद, सपना।
स्वपनीय–(सं०वि०) निद्रा के योग्य।
स्वपूर्ण–(सं० वि०) जो आप ही पूर्ण हो
स्वप्न–(सं० पुं०) निद्रा, निद्रावस्था में वस्तु दर्शन, नींद; **स्वप्नकृत्**–(सं०वि०) नीद लगाने वाला; **स्वप्नगृह**–(सं० नपुं०) सोने का घर; **स्वप्नज**–(सं० वि०) नींद लाने वाला ; **स्वप्नज्ञान**–(सं० नपुं०) स्वप्न का ज्ञान; **स्वप्नदर्शन**–(सं० त्रि०) बड़ी बड़ी कल्पना करने वाला; **स्वप्नदोष**–(सं० पुं०) निद्रावस्था में वीर्यपात; **स्वप्ननिकेतन**–(सं० नपुं०) शयनागार ; **स्वप्नस्थान**–(सं० नपुं०) निद्रागृह; **स्वप्नान्त**–(सं० पुं०) जागरण ; **स्वप्नाना**–(हिं० क्रि०) स्वप्न दिखाना ; **स्वप्नालु**–(सं० वि०) निद्रालु, सोने बाला।
स्वप्रकाश–(सं० वि०) जो स्वयं ही प्रकाशमान हो।
स्वप्रकृतिक–(सं० वि०) प्रकृति से ही उत्पन्न होने वाला।
स्वप्रधान–(सं० वि०) अपने पर भरोसा रखने वाला।
स्वबीज–(सं० पुं०) आत्मा (नपुं०) निज वीर्य।
स्वबरन–(हिं० पुं०) देखो सुवर्ण।
स्वभाऊ–(हिं० पुं०) देखो स्वभाव।
स्वभाव–(सं० पुं०) मन की प्रवृत्ति, स्वाभाविक अवस्था, प्रकृति, बान ; **स्वभावत्व**–(सं० नपुं०) प्रकृतिगत भाव ; **स्वभावज**–(सं० वि०) प्रकृति से उत्पन्न, सहज; **स्वभावतः**–(सं० अव्य०) स्वभाव से, जो सहज हो; **स्वभावसिद्ध**–(सं०त्रि०) स्वाभाविक, सहज, स्वभाव से होने वाला;
स्वभाविक–(सं० वि०) देखो स्वाभाविक ; **स्वभावोक्ति**–(सं० स्त्री०) वह अलंकार जिसमें किसी का जाति या अवस्था आदि के अनुसार यथावत् और प्राकृतिक रूप से वर्णन किया जाता है।
स्वभू–(सं० पुं०) विष्णु, ब्रह्मा, शिव, (वि०) जो अपने आप से उत्पन्न हुआ हो।
स्वभूति–(सं० पुं०) वायु, हवा।
स्वभूमि–(सं० स्त्री०) अपनी भूमि।
स्वयं–(सं० अव्य०) आप से आप, आप ही। **स्वयंदत्त**–(सं० पुं०) वह बालक जो स्वयं किसी का पुत्र बन जावे। **स्वयंदान**–(सं० नपुं०) अपने हाथ से कन्यादान करना। **स्वयंदूत**–(सं० पुं०) वह नायक जो अपनी काम वासना नायिका पर स्वयं प्रकट करता हो ; **स्वयंदूती**–(सं० स्त्री०) वह नायिका जो नायक पर काम वासना स्वयं प्रकट करती हो ; **स्वयंदृश**–(सं०वि०) स्वयं देखने वाला; **स्वयंपतित**–(सं० वि०) अपने आप गिरा हुआ ; **स्वयंप्रकाश**–(सं० पुं०) जो स्वयं प्रकाशित हो, परमेश्वर, परमात्मा। **स्वयंप्रभा**–(सं० स्त्री०) इन्द्र की एक अप्सरा का नाम। **स्वयंप्रमाण**–(सं०त्रि०) जिसके लिये दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो। **स्वयंफल**–(सं०त्रि०) जो आप ही अपना फल हो, किसी दूसरे कारण से न उत्पन्न हुआ हो ; **स्वयंभू**–(सं० पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव, काल, (वि०) जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो। **स्वयंवर**–(सं० पुं०) भारतवर्ष की एक प्राचीन रीति जिसमें विवाह योग्य कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से अपना वर चन लेती थी। **स्वयंवरण**–(सं० नपुं०) अपना वर स्वयं चुन लेना। **स्वयंवरा**–(सं० स्त्री०) अपने लिये स्वयं वर चुनने वाली स्त्री। **स्वयंवह**–(सं०नपुं०) स्वयं अपने आप को धारण करने वाला। **स्वयंसिद्ध**–(सं० वि०) जिसकी सिद्धि के लिये दूसरे तर्क प्रमाण आदि की आवश्यकता न हो, जिसने आप ही सिद्धि प्राप्त कर ली हो। **स्वयंसेवक**–(सं० पुं०) वह जो बिना किसी पुरस्कार या वेतन के कोई कार्य करता हो।
स्वयम्–(सं०अव्य०) आप, आपही आप।
स्वयमधिगत–(सं०वि०) स्वयं प्राप्त।
स्वयमनुष्ठान–(सं०नपुं०) जिसका अनुष्ठान आप ही किया जावे।
स्वयमर्जित–(सं०वि०) स्वयंकमायाहुआ
स्वयमीश्वर–(सं०पुं०) परमात्मा, परमेश्वर
स्वयमुज्वल–(सं०वि०) जो स्वयं ही सफेद हो।
स्वयमुदित–(सं०वि०) स्वभावतःप्रकाशित
स्वयम्भु, स्वयम्भुव–(सं० पुं०) ब्रह्मा, शिव, वेद, आदि मनु। **स्वयम्भू**–(सं०पुं०) विष्णु, शिव, कामदेव, काल।
स्वयम्भूत–आपसेआप उत्पन्नहोनेवाला
स्वयम्मथित–(सं०वि०) स्वयं मथा हुआ
स्वयश–(सं०नपुं०) अपनी कीर्ति।
स्वयुक्त–(सं०वि०) परस्पर संयुक्त।
स्वयुक्ति–(सं०स्त्री०) अपनी युक्ति।
स्वयोनि–(सं०त्रि०) जो आप ही अपनी उत्पत्ति का स्थान हो।
स्वयमेव–(सं०क्रि०वि०) आप ही आप।
स्वयुक्ति–(सं०स्त्री०) अपनी युक्ति।
स्वर्–(सं०पुं०) स्वर्ग, आकाश, परलोक
स्वर–(सं०पुं०) वह ध्वनि जो किसी प्राणीके मुख से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने से उत्पन्न हो–यह उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीन प्रकार की होती है; व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आप से आप स्वतन्त्रता पूर्वक होता है यह ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीन प्रकार से उच्चारित होता है, नासा वायु जिसके द्वारा अजपा मन्त्र का जप होता है; संगीत में निश्चित रूप की ध्वनि जिसकी कोमलता या तीव्रता का अनुभव सुननेसे होता है, संगीत में सा, रे, ग, म, प, ध, नि–ये सात स्वर होते हैं। **स्वर उतरना**–स्वर का धीमा होना, **स्वर चढना**–स्वर का तीव्र होना।
स्वरकर–(सं०पुं०) वह औषधि जिसके सेवन से गला सुरीला होता है। **स्वरक्षय**–(सं०पुं०) गला बैठनेकारोग **स्वरता**–(सं०स्त्री०) स्वर का भाव या धर्म। **स्वरनादी**–(सं०पुं०) मुख से फूंक कर बजानेका बाजा। **स्वरभंग**–(सं०पु०) गला बैठने और स्पष्ट स्वर न निकलने का रोग। **स्वरभंगी**–(सं०पुं०) जिसका गला बैठ गया हो
स्वरभानु–(सं०पु०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। **स्वरभाव**–(सं०पुं०) स्वर से ही भावों को प्रकट करना। **स्वरभेद**–(सं०पुं०) कण्ठ बैठ जाना; **स्वरमण्डल**–(सं०पुं०) एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते हैं।
स्वरलासिका–(सं०स्त्री०) मुरली, बंसी
स्वरशास्त्र–(सं०नपुं०) वह शास्त्र जिसमें स्वर संबंधी बातों का विवेचन हो। **स्वरसंक्रम**–(सं०पुं०) संगीत में स्वरों का उतार चढ़ाव।
स्वरस–(सं०पुं०) फल फूल पत्ती आदि को कूट पीस कर निकाला हुआ रस
स्वरसाद–(सं०पुं०) गला बैठ जाना।
स्वरसादि–(सं०पु०) क्वाथ, काढ़ा।
स्वरांश–(सं०पुं०) संगीत में स्वर का आधा पाद।
स्वराज्य–(सं०नपुं०) वह राज्य जिसमें उसी देशके निवासी स्वयं अपने देश का सब प्रबन्ध करते हैं।
स्वराट्–(सं०पुं०) ईश्वर, ब्रह्मा,
स्वरान्त–(सं०वि०) जिसके अन्तमें कोई स्वर हो।
स्वरापगा–(सं० स्त्री०) मन्दाकिनी, गंगा।
स्वराष्ट्र–(सं०नपुं०) अपना राज्य।
स्वरित–(सं०पुं०) स्वर का वह उच्चारण जो न बहुत तीव्र हो और न बहुत धीमा।
स्वरुचि–(सं०पुं०) स्वेच्छा, अपनी इच्छा
स्वरूप–(सं०नपुं०) आकृति, आकार, मूर्ति या चित्र, स्वभाव, देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप, (पुं०) वह जो किसी देवता आदिका रूप धारण किये हो, विद्वान्, पण्डित, (वि०) सुन्दर, तुल्य। **स्वरूपज्ञ**–(सं० पुं०) परमात्माका रूप पहचाननेवाला **स्वरूपप्रतिष्ठा**–(सं०स्त्री०) जीव का अपनी स्वाभाविक शक्तियों और गुणों से युक्त होना। **स्वरूपयोग्य**–(सं०वि०) कार्य साधन योग्य। **स्वरूपवान्**–(सं०वि०) सुन्दर। **स्वरूपसम्बन्ध**–(सं०पु०) अभिन्न सम्बन्ध। **स्वरूपाभास**–(सं०पुं०) वास्तविक स्वरूप न होने पर भी उसका आभास देख पड़ना।
स्वरूपी–(हिं०वि०) स्वरूप युक्त, स्वरूप वाला, जिसने किसी का स्वरूप धारण किया हो।
स्वरूपोत्प्रेक्षा–(सं०स्त्री०) उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद।
स्वरोचिस्–(सं०नपुं०) स्वप्रकाश, (पु०) स्वरोचिष् मनु के पिता का नाम।
स्वरोद–(सं०पु०) एक प्रकार का बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे रहते हैं।
स्वरोदय–(सं०पुं०) वह शास्त्र जिसमें स्वर द्वारा शुभाशुभ फल बतलाया जाता है।
स्वर्ग–(सं०पुं०) देवलोक, सुरलोक, वह स्थान जहाँ दुःख का लेश भी न हो, ईश्वर, आकाश, सुख। **स्वर्ग सिधारना**–मृत्यु को प्राप्त होना; **स्वर्गसुख**–परम सुख: **स्वर्ग की धार**–आकाश गंगा।

स्वर्गकाम–(सं०त्रि०) स्वर्ग की कामना करने वाला। स्वर्गगति–(सं०स्त्री०), स्वर्ग गमन–(सं०नपुं०) मरण। स्वर्गगामी–(सं०वि०) स्वर्गीय, स्वर्ग में जाने वाला, मृत, मरा हुआ।
स्वर्गंगा–(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी।
स्वर्गतरु–(सं०पुं०) परिजात, परजाता।
स्वर्गद–(सं०वि०) स्वर्ग देने वाला।
स्वर्गधेनु–(सं०स्त्री०) कामधेनु। स्वर्गनदी–(सं० स्त्री०) आकाश गंगा।
स्वर्गपति–(सं०पुं०) इन्द्र। स्वर्गपुरी–(सं०स्त्री०) इन्द्र की पुरी, अमरावती।
स्वर्गपुष्प–(सं०पुं०) लवंग। स्वर्गलाभ–(सं०पु०) स्वर्ग में पहुँचना, मरना। स्वर्गलोक–(सं०पु०) स्वर्ग। स्वर्गलोकेश–(सं०पु०) इन्द्र। स्वर्गवधू–(सं०स्त्री०) अप्सरा। स्वर्गवाणी–(सं०स्त्री०) आकाशवाणी। स्वर्गवास–(सं०पुं०) स्वर्ग में रहना, मरना। स्वर्गवासी–(सं० त्रि०) मृत, जो मर गया हो। स्वर्गसार–(सं०पु०) एक ताल का नाम। स्वर्ग स्त्री–(सं०स्त्री०) अप्सरा। स्वर्गस्थ–(सं०वि०) स्वर्गवासी। स्वर्गारोहण–(सं०नपुं०) स्वर्ग सिधारना, मारना
स्वर्गापगा–(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी। स्वर्गामी–(सं०वि०) जो स्वर्ग चला गया हो। स्वर्गारूढ–(सं०वि०) स्वर्ग-सिधारा हुआ।
स्वर्गी–(सं०पु०) देवता (वि०) स्वर्गगामी
स्वर्गीय–(सं०वि०) स्वर्ग सम्बन्धी, स्वर्ग का, मृत, मरा हुआ।
सर्जि, सर्जिक–(सं०) यवक्षार, शीरा
स्वर्ण–(सं० पुं०) सुवर्ण, सोना, धतूरा, नाग केशर; स्वर्ण कदली–सोनाकेला स्वर्ण कमल–(सं०नपुं०) लाल कमल। स्वर्णकाय–(सं०पुं०) गरुड़। स्वर्णकार–(सं०पुं०) सुनार। स्वर्णकूट–(सं०नपुं०) हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम। स्वर्णक्षीरी–(सं०स्त्री०) भड़भांड़
स्वर्णगिरि–(सं० पुं०) सुमेरु पर्वत। स्वर्णचूड़–(सं०पुं०) नीलकण्ठ पक्षी। स्वर्णज–(सं०नपुं०) सोनामक्खी नामक धातु। स्वर्णजातिका–(सं०स्त्री०) पीली चमेली। स्वर्णजीवी–(सं०पुं०) सोनार
स्वर्णजूही–(हिं०स्त्री०) पीली जूही। स्वर्णद–(सं०वि०) सोना दान करने वाला; स्वर्णदी–(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी
स्वर्णदीधिति–(सं०पु०) अग्नि।
स्वर्णद्रु–(सं०पुं०) अमलतास।
स्वर्णनिभ–(सं०वि०) सोने के समान।
स्वर्णपक्ष–(सं०पुं०) गरुड़। स्वर्णपत्र–(सं०नपुं०) सोने का तबक। स्वर्णपर्पटी–(सं०स्त्री०) संग्रहणी रोग की एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक औषधि। स्वर्णपुष्प–(सं० पु०) अमलतास, चम्पा; स्वर्णफल–(सं०नपुं०) धतूरा। स्वर्णभाज्–(सं०पुं०) सूर्य; स्वर्णभूमि–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर सब प्रकार का सुख हो; स्वर्णभूषण–(सं०पुं०) सोने का अलंकार; स्वर्णमाक्षिक–(सं०पुं०) सोनामक्खी नामक उपधातु; स्वर्णमुद्रा–(सं०स्त्री०) सोने की मुद्रा; स्वर्णयूथिका–(सं०स्त्री०) पीली जूही; स्वर्णरेखा–(सं० स्त्री०) एक विद्याधरी का नाम; स्वर्णलता–(सं०स्त्री०) ज्योतिष्मती लता, मालकंगनी; स्वर्णवर्णा–(सं०स्त्री०) हल्दी, दारुहल्दी; स्वर्णविद्या–(सं०स्त्री०) सोना बनाने की विद्या; स्वर्णबिन्दु–(सं०पुं०) विष्णु; स्वर्णाकर–(सं०पुं०) सोने की खान; स्वर्णाभ–(सं०नपुं०) हरताल; स्वर्णाभा–(सं० स्त्री०) पीली जूही।
स्वर्णारि–(सं०पुं०) गन्धक, सीसा।
स्वर्णिका–(सं०स्त्री०) धनियां।
स्वर्धुनी–(सं०स्त्री०) गङ्गा।
स्वर्नगरी–(सं०स्त्री०) अमरावती नगरी।
स्वर्नदी–(सं०स्त्री०) स्वर्गङ्गा।
स्वर्पति–(सं०पुं०) स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र
स्वर्भानु–(सं० पु०) राहु, सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
स्वर्लोक–(सं०पुं०) स्वर्ग।
स्वर्बधू, स्वर्वेश्या–(सं०स्त्री०) अप्सरा।
स्वर्वैद्य–(सं०पुं०) स्वर्ग के वैद्य अश्विनी कुमार।
स्वल्प–(सं०वि०) अत्यल्प, बहुत थोड़ा; स्वल्पकेशर–(सं० पुं०) कचनार; स्वल्पकेशी–(सं०पुं०) जिसको बहुत कम बाल हो; स्वल्पजम्बूक–(सं०पुं०) लोमड़ी; स्वल्पदृश–(सं०वि०) बहुत कम देखने वाला; स्वल्पफला–(सं०स्त्री०) हाऊबेरा; स्वल्पशरीर–(सं०त्रि०) छोटा शरीर।
स्ववरन–(हिं०पु०) देखो सुवर्ण।
स्ववश–(सं०पुं०) जो अपने वश में हो, जितेन्द्रिय।
स्ववासिनी–(सं०स्त्री०) अपने पिता के घर रहने वाली स्त्री।
स्वश्लाघा–(सं०स्त्री०) आत्माभिमान।
स्वसवदन–(सं०नपुं०) अपना अनुभव।
स्वसंवेद्य–(सं०वि०) केवल अपने ही अनुभव के योग्य।
स्वसमुत्थ–(सं०वि०) स्वाभाविक।
स्वसम्भव–(सं०वि०) जो अपने से उत्पन्न हो।
स्वसम्भूत–(सं०वि०) जो आपसे आप उत्पन्न हो।
स्वसा–(सं०स्त्री०) भगिनी, बहिन।
स्वसिद्ध–(सं०वि०) स्वयं सिद्ध।
स्वसुर, स्वसुराल–(हिं०) देखो ससुर, ससुराल।
स्वस्ति–(सं०अव्य०) एक आशीर्वाद का शब्द, कल्याण हो, मगल हो (स्त्री०) कल्याण, मंगल, सुख।
स्वस्तिक–(सं०पुं०) सुनसा नामक शाक, लहसुन, हठयोग का एक आसन, एक प्रकार का मंगल द्रव्य जो चावल पीसकर बनाया जाता है, चतुष्पथ, रतालू, मूली, सर्प के फन पर की रेखा, एक प्रकार का माङ्गलिक चिह्न; शरीर के विशिष्ट अंगों में होने वाला इस प्रकार का चिह्न।
स्वस्तिकर्म–(सं०नपुं०) मंगल जनक कर्म
स्वस्तिका–(सं०स्त्री०) चमेली।
स्वस्तिकृत्–(सं०पुं०) शिव, (वि०) मंगल करने वाला; स्वस्तिग–(सं०त्रि०) सुख से गमन करने वाला;
स्वस्तिद–(सं०पु०) शिव, (वि०) मंगल करने वाला; स्वस्तिमत्–(सं०वि०) अविनाशी; स्वस्तिमती–(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
स्वस्तिमुख–(सं०पुं०) स्तुति पाठक, ब्राह्मण; स्वस्तिवाचन–(सं० वि०) मांगलिक कार्यो के आरंभ में किया जाने वाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य; स्वस्तिवाद–(सं० त्रि०) आशीर्वाद।
स्वस्त्ययन–(सं०नपुं०) मंगल जनक दैवकर्म, जिस कर्म के करने से अशुभ का नाश हो और शुभ प्राप्त हो।
स्वस्थ–(सं०वि०) जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो, रोग विमुक्त, सावधान। स्वस्थचित्त–(सं०वि०) शान्त चित्त।
स्वस्थान–(सं०नपुं०) अपना स्थान।
स्वस्त्रीय–(सं०पुं०) बहन का लड़का भानजा; स्वस्त्रीया–(सं०स्त्री०) बहिन की लड़की भानजी।
स्वांग–(हिं०पुं०) देखो स्वाङ्ग; स्वास–(हिं०स्त्री०) देखो साँस।
स्वासा–(हिं०पुं०) तांबे का मेल किया हुआ सोमा।
स्वःसरित्–(सं०स्त्री०) गंगा; स्वःसुन्दरी–(सं०स्त्री०) अप्सरा; स्वःस्पन्दन–(सं०पुं०) इन्द्र का रथ।
स्वहोता–(सं०पुं०) स्वयं यज्ञ करनेवाला
स्वाकार–(सं०पुं०) अपना आकार।
स्वाक्षर–(सं०पुं०) अपना हस्ताक्षर।
स्वाक्षरित–(सं०वि०) अपना हस्ताक्षर किया हुआ।
स्वाख्यात–(सं०वि०) अच्छी तरह कहा हुआ।
स्वागत–(सं०नपुं०) पाहुन आदि के पधारने पर उसका आदर सहित अभिनन्दन करना, अगवानी; स्वागत कारिणी सभा–(सं०स्त्री०) स्थानीय जनों की वह सभा जो किसी बड़ी सभा या सम्मेलन में आने वाले प्रतिनिधियों का स्वागत, ठहरने तथा भोजन आदि का प्रबन्ध करने के लिये संघटित होती है; स्वागतकारी–(सं०वि०) अगवानी करने वाला; स्वागतपतिका–(सं०स्त्री०) वह नायिका जो अपने पतिके परदेश से लौटने पर प्रसन्न होती है; स्वागतप्रिया–(सं०पुं०) वह नायक जो अपनी प्रेमिका के परदेश से लौटने पर प्रसन्न होता है।
स्वागता–(सं०स्त्री०) वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं
स्वागतिक–(सं०वि०) अभ्यागत का सत्कार करने वाला।
स्वागत–(सं०पु०) अभिनन्दन।
स्वाङ्गिक–(सं०पुं०) ढोल या मृदंग बजाने वाला।
स्वाङ्ग–(सं०नपुं०) अनुकरण लीला; स्वाङ्गी–अनुकरण करने वाला, बहुरूपिया।
स्वाच्छन्द्य–(सं०नपुं०) स्वच्छन्दता।
स्वातन्त्र्य–(सं०नपुं०) स्वतन्त्रता।
स्वाति–(सं०स्त्री०) सूर्य की पत्नी, अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से पंद्रहवां नक्षत्र; स्वातिपन्थ–(सं०पुं०) आकाशगंगा; स्वातिसुत–(सं०पुं०) मुक्ता, मोती; स्वातिसुवन–(हिं०पुं०) मुक्ता, मोती।
स्वात्मवध–(सं०पुं०) आत्महत्या।
स्वाद–(सं०पुं०) रसानुभूति, इच्छा, कामना, मीठा रस, आनन्द; स्वाद चखना–किए हुए अपराध का दण्ड भोगना।
स्वादक–(सं०पुं०) स्वादु, विवेकी, वह जो भोज पदार्थों के तैयार हो जाने पर चखता है; स्वादन–(सं०नपुं०) स्वाद लेना, चखना, आनन्द लेना; स्वादित–(सं०वि०) चखा हुआ।
स्वादिष्ट–(सं०वि०) जो खाने में अच्छा जान पड़े।
स्वादी–(सं०वि०) स्वाद चखने वाला, रसिक।
स्वादु–(सं०पुं०) मीठा रस, गुड़, महुआ, चिरौंजी, अनार, बेर, (नपुं०) सेंधा नमक, दूध, (स्त्री०) द्राक्षा, दाख, (वि०) मीठा, मधुर, सुन्दर; स्वादुकन्द–(सं०पुं०) पिण्डाल; स्वादुखण्ड–(सं०पुं०) मधुर भाग; स्वादुतिक्त–(सं०नपुं०) अखरोट; स्वादुधन्वा–(सं०पुं०) कामदेव; स्वादुपत्र–(सं०पुं०) परवल की लता; स्वादुफला–(सं०स्त्री०) केला; स्वादुमूल–(सं०नपुं०) गाजर; स्वादुरसा–(सं० स्त्री०) सतावर, दाख; स्वादुलता–(सं०स्त्री०) विदारीकन्द।
स्वाद्य–(सं०वि०) स्वाद लेने या चखने योग्य।
स्वाधिष्ठान–(सं०नपुं०) हठ योग के अनुसार शरीर के भीतर के एक चक्र का नाम जिसका स्थान शिश्न के मूल में है।
स्वाधीन–(सं०वि०) स्वतन्त्र, किसी का बन्धन न मानने वाला, अपने इच्छानुसार चलने वाला; स्वाधीनता–(सं०स्त्री०) स्वतन्त्रता; स्वाधीनपतिका–(सं०स्त्री०) पति को वशीभूत करने वाली नायिका; स्वाधीनभर्तृका–(सं०स्त्री०) स्वाधीनपतिका नायिका
स्वाधीनी–(हिं०स्त्री०) स्वाधीनता।
स्वाध्याय–(सं०पुं०) वेदों का नियम पूर्वक अध्ययन, किसी विषय का अनुशीलन, अध्ययन, वेद।

स्वाध्यायी–(सं०पुं०) वेदपाठक।
स्वान–(सं०पुं०) शब्द, घड़घड़ाहट।
स्वाना–(हिं०क्रि०) सुलाना।
स्वानुभव–(सं०पुं०) अपना अनुभव।
स्वानुरूप–(सं०वि०) अपने समान।
स्वान्तज–(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव, प्रेम।
स्वाप–(सं०पुं०) निद्रा, नींद, स्वप्न;
स्वापक–(सं०वि०) नींद लेने वाला।
स्वापतन–(सं०पुं०) नींद लाने की औषधि (वि०) नींद लाने वाला (पुं०) प्राचीन काल एक प्रकार का अस्त्र जिसके द्वारा शत्रु सुला दिये जाते थे
स्वाब–(अ०पुं०) कपड़े या सन की बनी हुई झाड़ू।
स्वाभाविक–(सं०वि०)नैसर्गिक,प्राकृतिक, जो आप ही आप उत्पन्न हो।
स्वाभाविकी–(सं०वि०)प्राकृतिक, नैसर्गिक
स्वाभाव्य–(सं०वि०) अपने आप होने वाला।
स्वामि–(हिं०पुं०) देखो स्वामी।
स्वामिकार्तिक–(सं०पुं०) शिव के पुत्र कार्तिकेय, स्कन्द।
स्वामि कुमार–(सं०पुं०) स्वामिकार्तिक।
स्वामिता, स्वामित्व–(सं०) प्रभुत्व।
स्वामिन,स्वामिनी–(हिं०स्त्री०)मालकिन, राधिका।
स्वामी–(हिं०पुं०) मालिक, प्रभु, पति, ईश्वर, राजा, शिव कार्तिकेय,विष्णु, साधु सन्यासियों की उपाधि, सेनानायक, गरुड़।
स्वाम्य–(सं०नपुं०)स्वामित्व, मालिकपन
स्वाम्युक रक–(सं०वि०) अपने मालिक का हित करने वाला।
स्वायत्त–(सं०वि०) जो अपने अधीन हो, जिस पर अपना अधिकार हो; स्वायत्तशासन–(सं०पुं०) स्थानिक स्वराज्य।
स्वायम्भुव–(सं०पुं०) प्रथम मनु का नाम
स्वायम्भू–(सं०पुं०) देखो स्वायम्भुव।
स्वार–(सं०पुं०) बादल की गड़गड़ाहट
स्वारथ, स्वारथी–देखो स्वार्थ, स्वार्थी
स्वारब्ध–(सं०वि०) स्वयं किया हुआ।
स्वारम्भक–(सं०वि०)अपने से किया हुआ
स्वाराज्य–(सं०नपुं०) वह शासन प्रबन्ध जिसका संचालन अपने ही देश के लोगों के हाथ में हो, स्वर्ग का राज्य, स्वर्गलोक।
स्वारी–(हिं०स्त्री०) देखो सवारी।
स्वारोचिष–(सं०पुं०) स्वरोचिष के पुत्र दूसरे मनु।
स्वार्जित–(सं०वि०) अपना कमाया हुआ
स्वार्थ–(सं०पुं०) अपना उद्देश्य, अपना लाभ, अपना धन या वस्तु; (वि०) स्वार्थक, सफल; स्वार्थता–(सं०स्त्री०) स्वार्थ का भाव या धर्म; स्वार्थत्याग–(सं०पुं०) किसी अच्छे काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ देना; स्वार्थत्यागी–(सं० वि०) दूसरे के भले के लिये जो अपने हित को निछावर कर देने वाला; स्वार्थपण्डित–(सं०त्रि०) अपना अभिप्राय साधने में चतुर; स्वार्थपर–(सं०वि०) जो केवल अपना ही स्वार्थ देखता हो स्वार्थपरता–(सं०स्त्री०) स्वार्थपन।
स्वार्थपरायण–(सं०वि०) स्वार्थपर।
स्वार्थपरायणता–(सं०स्त्री०) स्वार्थपन।
स्वार्थसाधक–(सं०वि०) अपना अर्थ साधने वाला।
स्वार्थ साधन–(सं०नपुं०) अपना अर्थ साधना।
स्वार्थान्ध–(सं०वि०) वह जो अपने हित या लाभ के सामने और किसी की बात पर विचार नहीं करता।
स्वार्थिक–(सं०वि०) अपने स्वार्थ द्वारा सम्पादित, स्वार्थपर।
स्वार्थी–(सं०वि०) अपना ही अर्थ देखने वाला।
स्वालक्षण–(सं०नपुं०) अपना अमंगल।
स्वावश्य–(सं०नपुं०) आत्मवशता।
स्वाल–(हिं०पुं०) देखो सवाल।
स्वाशित–(सं०वि०) अच्छी तरह से भोजन किये हुए।
स्वाश्रय–(सं०पुं०) अपना आश्रय।
स्वाश्रित–(सं० वि०) स्वावलंबी।
स्वास–(हिं०पुं०) देखो श्वास, साँस।
स्वासा–(हिं०स्त्री०) श्वास, साँस।
स्वासीन–(सं०वि०) सुख से बैठा हुआ।
स्वास्थ्य–(सं०नपुं०) नीरोगता, आरोग्य, सन्तोष।
स्वास्थ्यकर–(सं०वि०) आरोग्यवर्धक।
स्वाहा–(सं०अव्य०) एक शब्द या मन्त्र जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने में प्रयोग किया जाता है; स्वाह करना–नष्ट करना, (सं०स्त्री०) अग्नि की पत्नी का नाम; स्वाहाकृत–(सं०वि०) यज्ञ करने वाला; स्वाहापति–(सं०पुं०) अग्नि; स्वाहाभुज–(सं०पुं०) देवता।
स्वाहार–(सं०पुं०) अपना आहार।
स्वाहाई–(हिं०वि०) हवि पाने योग्य।
स्वाहावल्लभ–(सं०पुं०) अग्नि।
स्वाहेय–(सं०पुं०) कार्तिकेय।
स्विन्न–(सं०वि०)सीझा हुआ, उबाला हुआ
स्वीकरण–(सं०नपुं०) अंगीकार करना, अपनाना, विवाह करना, मानना।
स्वीकरणीय–(सं०वि०) मानने योग्य।
स्वीकार–(सं०पुं०) अंगीकार, प्रतिज्ञा-वचन, प्रतिग्रह, वशीकरण।
स्वीकार्य–(सं०वि०) मानने योग्य।
स्वीकृत–(सं०वि०) अंगीकृत, स्वीकार किया हुआ, परिगृहीत।
स्वीकृति–(सं०स्त्री०) सम्मति।
स्वीय–(सं०वि०) स्वकीय, अपना, निजी (पुं०) आत्मीय।
स्वीया–(सं०स्त्री०) वह नायिका जो स्वामी में अनुरक्त तथा प्रतिव्रता रहने की चेष्टा करती है।
स्वेच्छा–(सं० स्त्री०) अपनी इच्छा, स्वेच्छाचार–(सं० पुं०) मनमाना काम करना, जो जी में आवे वही करना; स्वेच्छाचारिता–(सं० स्त्री०) निरंकुशता; स्वेच्छाचारी–(सं० वि०) अपनी इच्छानुसार चलने वाला, मनमाना काम करने वाला; स्वेच्छामृत्यु–(सं०पुं०) अपनी इच्छानुसार मरने वाला; स्वेच्छासेवक–(सं०पुं०) बिना किसी पुरस्कार या वेतन के अपनी इच्छा से कोई काम करने वाला।
स्वेतरंगी–(हिं०स्त्री०) कीर्ति, यश।
स्वेद–(सं० पुं०) घर्म, पसीना, ताप, गरमी; स्वेदक–(सं०पुं०) पसीना लाने वाली औषधि; स्वेदज–(सं० वि०) पसीने से उत्पन्न होने वाला जीव; स्वेदजल–(सं०नपुं०) पसीना; स्वेदन–(सं०नपुं०) स्वेद या पसीना निकलना; स्वेदनाश–(सं०पुं०) वायु।
स्वेदनिका–(सं०स्त्री०) पाकशाला, रसोइयाँ घर।
स्वेदनी–(सं०स्त्री०) लोहे का पात्र, तवा।
स्वेदमाता–(सं०स्त्री०) शरीर में का रस।
स्वेदस्राव–(सं०पुं०) पसीना निकलना।
स्वेदाम्बु–(सं०नपुं०) स्वेदजल, पसीना।
स्वेदायन–(सं०पुं०) रोमकूप।
स्वेदित–(सं० वि०) पसीने से युक्त, सेंका हुआ।
स्वेदी–(सं०वि०) पसीना लाने वाला।
स्वेद्य–(सं०वि०) पसीने के योग्य।
स्वै–(हिं०वि०) अपना,निजी,(सर्व०) सो।
स्वैर–(सं०वि०) मनमाना करने वाला, ऐच्छिक, पथेच्छ, मनमाना (नपुं०) स्वेच्छाधीनता; स्वैरगति–(सं० त्रि०) स्वाधीन गति;स्वैरचारिणी–(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री; स्वैरचारी–(सं० वि०) मनमाना काम करने वाला, व्यभिचारी; स्वैरता–(सं० स्त्री०) स्वच्छन्दता; स्वैरवर्ती–(सं० वि०) स्वेच्छाचारी; स्वैरवृत्त–(सं० वि०) स्वेच्छाचारी; स्वैरवृत्ति–(सं० स्त्री०) स्वाधीन वृत्ति; स्वैराचार–(सं० पुं०) मनमाना काम करना।
स्वैरिणी–(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री।
स्वैरता–(सं०स्त्री०) स्वच्छन्दता।
स्वैरी–(सं०वि०) स्वतन्त्र, स्वाधीन।
स्वोत्थ–(सं०वि०) आप से आप निकला हुआ।
स्वोपार्जित–(सं०वि०) अपना उपार्जित किया हुआ, अपना कमाया हुआ।
स्वौजस्–(सं० नपुं०) अपना ओज या तेज।

ह

ह–संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का तेइसवां व्यञ्जन, उच्चारण विभाग के अनुसार यह ऊष्म वर्ण कहलाता है, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।
ह–(सं०पुं०) शिव, जल, हँसी, शून्य, मंगल शुभ, आकाश, योग का एक आसन, घोड़ा, रुधिर, स्वर्ग, विष्णु युद्ध, भग, चन्द्रमा, ज्ञान, ध्यान, गर्व, कारण।
हं–(सं०अव्य०) क्रोध का शब्द।
हँक–(हिं०स्त्री०) देखो हाँक, पुकार।
हँकड़ना–(हिं० क्रि०) झिड़कते हुए वेग से चिल्लाना, ललकारना।
हँकरना–(हिं० क्रि०) हर्ष के साथ बोलना।
हँकरावा–(हिं०पुं०) सिंह के आखेट का एक ढंग जिसमें बहुत से लोग ढोल आदि बजाकर तथा कोलाहल करते हुए सिंह को मचान की ओर लेजाते हैं।
हँकवाना–(हिं० क्रि०) हांक लगवाना, बुलवाना।
हँकवैया–(हिं०पुं०) हांकने वाला।
हँका–(हिं०स्त्री०) ललकार, डपट।
हँकाई–(हिं०स्त्री०) हांकने की क्रिया या भाव, हांकने का शुल्क।
हँकना–(हिं०क्रि०) चौपायों या पशुओं को चिल्लाकर हटाना या एक ओर लेजाना, हाँकना, पुकरना, हाँकने का काम दूसरे से कराना।
हँकार–(हिं० स्त्री०) पुकारकर बुलाने की क्रिया, पुकारने के लिये सम्बोधन किया हुआ शब्द, (पुं०) ललकार; हँकार पड़ना–बुलाने के लिये शब्द करना।
हँकाराना–(हिं०क्रि०) पुकारना, बुलवाना, डपटना।
हँकारा–(हिं० पु०) पुकार, बुलाहट, निमन्त्रण, बुलौवा।
हँकारी(हिं० पुं०) बुलाकर लाने वाला, दूत।
हँगामा–(फ़ा०पुं०) उपद्रव, दगा हल्ला, कोलाहल।
हँगोरी–(हिं०पुं०)एक बहुत बड़ा पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी बड़ी पुष्ट होती है।
हँड़ना–(हिं०क्रि०) घूमना, फिरना, व्यर्थ मारे फिरना, छानबीन करना, इधर उधर ढूंढना।
हँड–(हिं० पुं०) पानी रखने का गगरे का आकार का धातु का बड़ा पात्र।
हँडाना–(हिं०क्रि०) घुमाना फिराना।
हँडा–(हिं०पुं०) पानी रखने का धातु का बड़ा पात्र।
हँडिक–(हिं०पुं०) तौलने की बांट।
हँडिया–(हिं०स्त्री०) मिट्टी का लोटे के आकार का चौड़े मुँह का पात्र, हाँड़ी, इस आकार का कांच का पात्र जिसमें मोसबत्ती जलाई जाती हैं।
हँडी–(हिं०स्त्री०) देखो हंड़िया, हंडी।
हँत,हँता–देखो हन्त, हन्ता।
हँथोरा–(हिं०स्त्री०) देखो हथोरी, हथोली
हँथौरा–(हिं०पुं०) देखो हथौड़ा।
हँडा–(हिं०पुं०) पुरोहित या ब्राह्मण के लिये निकाला हुआ भोजन।
हँफनि–(हिं०स्त्री०) हाँफने की क्रिया;

हंफनि मिटाना–सुस्ताना।
हंबा–(हिं० अव्य०) स्वीकृति सूचक अव्यय, हां।
हंस–(सं० पुं० एक प्रकार का यति जो ब्रह्मचर्य से रहता है और प्रतिग्रह को स्वीकार नहीं करता; एक प्रकार का जलचर पक्षी, बत्तक, सारस, गाय का एक भेद, एक प्रकार का घोड़ा, प्राणवायु, एक प्रकार का योग, सूर्य, शुद्ध आत्मा, परब्रह्म, द्वेष, शिव, विष्णु, पर्वत, कामदेव, भैंसा, सन्यासियों का एक भेद, एक वर्णवृत्त का नाम जिसको पंक्ति भी कहते हैं, एक प्रकार का नाच, अजपा मन्त्र (वि०) श्रेष्ठ विशुद्ध।
हंसक–(सं०पुं०) हंसपक्षी, पैरमे पहरने का बिछुआ, संगीत में एक प्रकार का ताल; हंसकूट–(सं०पुं०) बैल का कूबड़ या डिल्ला।
हंसग–(सं०पुं०) ब्रह्मा।
हंसगति–(सं० स्त्री०) हंस के समान सुन्दर धीमी चाल, बीस मात्राओं के एक छन्द नाम; हंसगदा–(सं०स्त्री०) प्रिय भाषिणी स्त्री; हंसगर्भ–(सं०पुं०) एक प्रकार का रत्न; हंसगामिनी–(सं० स्त्री०) हंस के समान मन्दगति से चलने वाली स्त्री; हंस चौपड़–(हिं०पुं०) एक प्रकार का प्राचीन चौपड़ का खेल; हंसजा–(सं० स्त्री०) सूर्य की कन्या, यमुना; हंसमुखी–(हिं०स्त्री०) हँसमुख चेहरे वाली स्त्री।
हंसदाहन–(सं०नपुं०) गुग्गुल, धूप।
हंसन–(हिं०स्त्री०) हँसने की क्रिया या भाव; हँसना–(हिं० क्रि०) आनन्द से कण्ठ के वेग से एक विशेष प्रकार का शब्द निकालना, खिलखिलाना, मनोहर जान पड़ना, आनन्द मानना ठिठोली करना, किसी का अनादर करना; हँसना बोलना–हँसी की बात करना; –हँसते हँसते–प्रसन्नता पूर्वक; हँसकर–बात उड़ाना–ठिठोली में बात टाल देना।
हंसनादिनी (सं०स्त्री०) मधुर भाषिणी।
हँसनि, हँसनी–(हिं० स्त्री०) देखो हँसी।
हंसपादिका–(सं० स्त्री०) राजा दुष्यन्त की एक रानी का नाम।
हंसपदी–(सं० स्त्री०) गोधापदी नाम की लता; हँसपाद, हंसपादी–(सं०नपुं०) हिंगुल, सिंगारिफ; हंसमंगला–(सं० स्त्री०) एक संकर रागिणी का नाम।
हंसमाला–(सं०स्त्री०) हंसों की पंक्ति।
हँसमुख–(हिं०वि०) प्रसन्न वदन, जिसके मुख से प्रसन्ता झलकती हो, विनोद-प्रिय, ठिठोलिया।
हंसयान–(सं०वि०) हंसवाहन, ब्रह्मा।
हंसयाना–(सं० स्त्री०) सरस्वती; हंसरथ–(सं० पुं०) ब्रह्मा; हंसराज–(सं० पुं०) श्रेष्ठहंस, एक बूटी जो पहाड़ों की चट्टानों में लगी रहती है, समलपत्ती; हंसरुत–(सं० नपुं०) हंस का शब्द, एक प्रकार का छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में आठ शब्द होते हैं।
हँसली–(हिं०स्त्री०) गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकर हड्डी, गले में पहरने का एक मण्डलाकार गहना; हंसलोमश–(सं०नपुं०) कसीस।
हंसवंश–(सं० नपुं०) सूर्य का वंश; हंसवती–(सं०स्त्री०) राजा दुष्यन्त की पत्नी; हंसवाह, हंसवाहन–(सं० पुं०) ब्रह्मा; हंसवाहिनी–(सं० स्त्री०) सरस्वती; हंससुता–(सं० स्त्री०) सूर्य की कन्या, यमुना नदी।
हँसाई–(हिं०स्त्री०) हँसने की क्रिया या भाव, उपहास, लोकनिन्दा।
हंसाधिरूढ–(सं०पुं०) ब्रह्मा; हंसाधिरूढा–(सं०स्त्री०) सरस्वती।
हँसाना–(हिं०क्रि०) दूसरों को हँसने में प्रवृत्त करना।
हँसाय–(हिं०स्त्री०) देखो हँसाई। हंसारूढ–(सं०पुं०) ब्रह्मा। हंसालि–(सं०स्त्री०) सरस्वती।
हंसिका–(सं०स्त्री०) सैंतीस मात्राओं का एक छन्द जिसमें बीसवीं मात्रा पर यति होती है।
हंसिका हंसिनी–(सं०स्त्री०) हंसकी स्त्री, हंसी।
हँसिया–(हिं० पुं०) एक धारदार अर्ध चन्द्राकार लोहे का अस्त्र जिससे खेत की उपज काटी जाती है, चमड़ा छीलकर चिकना करने का एक अस्त्र, गरदन के नीचे की हड्डी।
हंसी–(सं०स्त्री०) हंस की मादा, एक जाति की दुधार गाय, बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत।
हँसी–(हिं० स्त्री०) हँसने की क्रिया या भाव, ठिठोली, विनोद पूर्ण उक्ति, निन्दा; हँसी उड़ाना–निन्दा करना, हंसी खुशी–आनन्द पूर्वक; हंसीठट्ठा–ठिठोली; हँसी छूटना–हँसना; हंसी खेल–मनोविनोद; हंसी समझना–सहज जानना; हंसी में उड़ाना–किसी बात को ठिठोली में टाल देना; हँसी में लाना–ठिठोली समझना।
हँसुआ, हँसुवा–(हिं०पुं०) देखो हँसिया।
हँसीय–(सं०वि०) हंस संबंधी।
हँसोड़–(हिं०वि०) ठिठोलिया।
हँस्रोदक–(सं०नपुं०) किसी नये मिट्टी के पात्रमें भरकर धूपमेंरखा हुआजल।
हँसौहाँ–(हिं० वि०) थोड़ा हँसता हुआ, हँसी से भरा हुआ।
हँहों–(सं०अव्य०) सम्बोधन दर्प, घमड।
हई–(हिं०स्त्री०) आश्चर्य, अचरज।
हऊँ–(हिं०सर्व०) देखो हौं।
हकबकाना–(हिं० क्रि०) स्तम्भित होना, घबड़ाना, ठक रह जाना।
हकला–(हिं० वि०) रुकरुक कर बोलने वाला। हकलाना–(हिं० क्रि०) बोलने में अटकना, रुक रुक कर बोलना।
हकार–(सं०पुं०) 'ह्' अक्षर या वर्ण।
हकारना–(हिं० क्रि०) पाल तानना, झंडा उठाना।
हक्काबक्का–(हिं०क्रि०) घबड़ाया हुआ, भौचक।
हक्कार–(सं० पुं०) चिल्लाकर बुलाने का शब्द, पुकार।
हगना–(हिं० क्रि०) मलोत्सर्ग करना, मल त्याग करना, दबाव के कारण कोई वस्तु दे देना। हगाना–(हिं०क्रि०) हगने की क्रिया में सहायता देना।
हगास–(हिं०स्त्री०) मल त्याग करने की इच्छा। हगोड़ा–(हिं०वि०) बहुत हगने वाला।
हचकना–(हिं०क्रि०) धक्के से हिलना डोलना।
हचका–(हिं० पुं०) धक्का, झोंका।
हचकाना–(हिं० क्रि०) झोंका देकर हिलाना। हचकोला–(हिं० पुं०) वह धक्का जो गाड़ी चारपाई आदि के हिलने डोलने से लगे।
हचना–(हिं०क्रि०) देखो हिचकना।
हजाम–(हिं०पुं०) देखो हज्जाम।
हज्जाम–(हिं०पुं०) हजामत बनाने वाला नाई, नाऊ।
हट–(हिं०स्त्री०) देखो हठ।
हटकन–(हिं०स्त्री०) वर्जन, गायों तथा अन्य चौपायों के हांकने की छड़ी।
हटकना–(हिं०क्रि०) निषेध करना, मना करना, चौपायों को किसी और जाने से रोक कर दूसरी ओर हाँकना।
हटका–हिं०(हिं०पुं०) किवाड़ों को खुलने से रोकने के लिये लगाया हुआ काठ।
हटकि–(हिं०क्रि०वि०) अकारण।
हटतार–(हिं०स्त्री०) माला का सूत।
हटताल–(हिं०स्त्री०) देखो हड़ताल।
हटना–(हिं०क्रि०) एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान में जाना, सरकना, घिसकना, पीछे की ओर जाना, प्रतिज्ञा पर दृढ न रहना, दूर होना, किसी बात का नियत समय के बाद होना, सामने से दूर होना, विमुख होना, जी चुराना।
हटना उड़ी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मलखंभ का व्यायाम।
हटपर्णि–(सं०नपुं०) शैवाल, सेवार।
हटवया, हटवा–(हिं० वि०) हाट में बैठ कर सौदा बेचने वाला, दूकानदार।
हटवाई–(हिं० स्त्री०) क्रय विक्रय, सौदा मोल लेना या बेंचना।
हटवाना–(हिं० क्रि०) हटाने का काम दूसरे से कराना।
हटाना–(हिं० क्रि०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना, खिसकाना, स्थान छोड़ने के लिये विवश करना, किसी स्थान से दूर करना, प्रतिज्ञा से विचलित होना, डिगना, किसी विषय का प्रसंग छेड़ना।
हटुआ–(हिं० पुं०) दूकानदार, अन्न तौलने वाला, बया।
हटौती–(हिं०स्त्री०) शरीर की गठन।
हट्ट–(सं०पुं०) हाट, दूकान। चौहट्ट–बाजार का चौक
हट्टविलासिनी–(सं०स्त्री०) वेश्या; रंडी।
हट्टा कट्टा–(हिं० वि०) हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा।
हट्टाध्यक्ष–(सं०पुं०) हाट का अध्यक्ष।
हट्टी–(हिं० स्त्री०) दूकान।
हठ–(सं०पुं०) दुराग्रह, टेक, दृढ़ प्रतिज्ञा; हठ पकड़ना–दुराग्रह करना, हठ रखना–किसी बात के लिये अड़े रहना; हठधर्म–(सं० पुं०) दुराग्रह, कट्टरपन। हठधर्मी–(सं०स्त्री०) अपनी बात पर अड़ने वाला, अपने मत या सम्प्रदाय पर अड़ने की प्रकृत्ति। हठना–(हिं०क्रि०) दुराग्रह करना। हठकर–(हिं०क्रि०वि०) दुराग्रह से।
हठयोग–(सं०पुं०) वह योग जिसमें आसन सिद्धि, प्राणायाम, नेति, धौति आदि क्रियाओं से शरीर की शुद्धि की जाती है तथा चित्त एकाग्र करके परमात्म तत्व प्राप्त होता हैं।
हठशील–(सं० वि०) हठी।
हठात्–(सं०अव्य०) हठ पूर्वक, दुराग्रह से, अवश्य। हठात्कार–(सं० पुं०) बलात्कार।
हठिका–(सं० स्त्री०) कोलाहल।
हठी–(हिं० वि०) हठ करने वाला)
हठीला–(हिं०वि०) अपनी प्रतिज्ञा का पक्का, युद्ध में स्थिर रहने वाला।
हड़–(सं०स्त्री०) एक बड़ा वृक्ष जिसके फल औषधियों में प्रयोग होते हैं, एक प्रकार का आभूषण जो नाक में पहना जाता है।
हड़क–(हिं०स्त्री०) पागल कुत्ते के काट लेने पर जल के लिये बड़ी व्याकुलता, किसी वस्तु को प्राप्त करने की झक, उत्कट अभिलाषा। हड़कना–(हिं०क्रि०) व्याकुल होना।
हड़काया–(हिं० क्रि०) किसी के पीछे लगाना, लहकाना, टालना।
हड़गीला–(हिं० वि०) पागल, बावला, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
हड़जोड़–(हिं०वि०) एक प्रकार की लता जो भीतरी चोर के स्थान पर लगाई जाती है।
हड़ताल–(हिं० स्त्री०) किसी बात पर असन्तोष प्रकट करने के लिये दूकान बंद करना अथवा काम करने वालों का काम बन्द करना।
हड़ना–(हिं०क्रि०) तौल में जाँचा जाना।
हड़प–(हिं० वि०) निगला हुआ, पेट में डाला हुआ, अनुचित रीति से लिया हुआ; हड़पना–(हिं० क्रि०) खाजाना, दूसरे की वस्तु को अनुचित रूप से ले लेना।
हड़फूटन–(हिं०स्त्री०) शरीर का भीतरी व्यथा, हड्डियों में पीड़ा।
हड़फूटनी–(हिं० स्त्री०) चमगादड़।

हड़फोड़—(हिं० पुं०) एक प्रकार की चिड़िया।

हड़बड़—(हिं०स्त्री०) उतावलापन, असुरता दिखलाने की मुद्रा। **हड़बड़ाना**—(हिं०क्रि०) शीघ्रता के कारण घबड़ाहट से कोई काम करना, आतुर होना।

हड़बड़िया—(हिं०वि०) उतावला।

हड़बड़ी—(हिं० स्त्री०) उतावलापन, आतुरता के कारण घबड़ाहट।

हड़हड़ाना—(हिं० क्रि०) उतावलेपन से दूसरे को व्यग्र करना।

हड़हा—(हिं० पुं०) जंगली बैल (वि०) अति दुर्बल, जिसके शरीर में केवल हड्डी रह गई हो।

हड़ी—(हिं० पुं०) पक्षियों को उड़ाने का शब्द जो खेत के रखवाले करते हैं।

हड़ावल—(हिं०स्त्री०) हड्डियों का समूह, हड्डी का ढाँचा, ठटरी, हड्डी की माला।

हड़ि—(सं० पुं०) प्राचीन काल की काठ की बेड़ी।

हड़ीला—(हिं० वि०) जिसमें हड्डी हो।

हड्डज—(सं० वि०) हड्डी से उत्पन्न।

हड्डा—(हिं० पुं०) मधुमक्खी की तरह का एक कीड़ा, भिड़, बर्रे।

हड्डी—(हिं०स्त्री०) अस्थि, वंश,। **हड्डी तोड़ना**—बहुत मारना पीटना; **हड्डियां निकल आना**—अति दुर्बल हो जाना; **पुरानी हड्डी**—वृद्ध मनुष्य, जिसको भीतरी बल हो।

हण्डा—(हिं० स्त्री०) जल आदि रखने का बड़ा पात्र।

हण्डी—(सं०स्त्री०) हाँडी।

हत—(सं० वि०) बध किया हुआ, मारा हुआ, खोया हुआ, लगाया हुआ, पीड़ित, ग्रस्त, लगा हुआ, निकृष्ट, गुणा किया हुआ, बिगाड़ा हुआ, आशाहीन।

हतज्ञान—(सं०वि०) ज्ञान शून्य, अचेत

हतदैव—(सं०वि०) भाग्यहीन, अभागा।

हतना—(हिं० क्रि०) वध करना, मार डालना, आज्ञा पालन करना।

हतप्रभ—(सं०वि०) प्रभा रहित; **हतपुत्र**—(सं०वि०) जिसका पुत्र मर गया हो; **हतप्रभाव**—(सं० वि०) जिसका प्रभाव न रह गया हो; **हतबुद्धि**—(सं० वि०) बुद्धि हीन, मूर्ख; **हतभाग्य**—(सं०वि०) अभागा; **हतमूर्ख**—(सं० वि०) बहुत बड़ा मूर्ख; **हतवाना**—(हिं० क्रि०) वध कराना, मरवाना; **हतवीर्य**—(सं०वि०) शक्तिहीन, बलहीन; **हतस्वर**—(सं० वि०) स्वरभंग, जिसकी बोली बैठ गई हो।

हता—(सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री, (हिं०क्रि०) था।

हतादर—(सं०वि०) जिसका आदर घट गया हो।

हताध्वर(सं०पुं०) शिव, महादेव।

हतवाना—(हिं०क्रि०) देखो हतवाना।

हताश—(सं०वि०) आशा रहित, निराश, निर्दय, कठोर, दुर्जन।

हताहत—(सं०वि०) मारे गये और चोटैल।

हति—(सं०स्त्री०) व्याघात, हत्या।

हतोत्साह—(सं०वि०) जिसको कुछ करने का उत्साह न रह गया हो, जिसको किसी बात का उमंग न हो।

हतौजस—(सं० वि०) तेजहीन, दुर्बल।

हत्था—(हिं०पुं०) किसी यन्त्र का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता हो, मूठ, तीन हाथ लंबा लकड़ी का बल्ला जिससे खेत की नालियों का पानी चारो ओर फैलाया जाता है, नेवार बुनने का एक यन्त्र, केले के फ़लों का गुच्छा, हाथ का छापा।

हत्थाजड़ी—(हिं०स्त्री०) एक प्रकार या सुगन्धित पत्तियों का पौधा; **हत्थी**—(हिं० स्त्री०) शस्त्र की मूठ, ईंट का पत्थर का टुकड़ा जिस पर हाथ रख कर दंड किया जाता है।

हत्थे—(हिं० क्रि० वि०) हाथ में; **हत्थे चढ़ना**—वश में होना।

हत्या—(सं०स्त्री०) वध, झंझट, बखेड़ा; **हत्या लगना**—मार डालने का पाप लगना; **हत्यारा**—(हिं० पुं०) हत्या करने वाला।

हत्यारी—(हिं०स्त्री०) हत्या करने वाली, हत्या करने का पाप।

हथ—(हिं०पुं०) "हाथ" शब्द का संक्षिप्त रूप, समस्त पदों में इसका व्यवहार होता है; **हथ उधार**—(हिं०पुं०) वह ऋण जो थोड़े दिनों के लिये बिना किसी प्रकार की लिखा पढ़ी के लिया जाय, हथफेर; **हथकंडा**—(हिं० पुं०) हस्तलाघव, गुप्त चाल; **हथकड़ी**—(हिं० स्त्री०) कैदियों के हाथों में पहराने का लोहे का कड़ा; **हथकरा**—(हिं० पुं०) कपड़े या रस्सी का टुकड़ा जो धुनकी में बंधा रहता है; **हथकरी**—(हिं० स्त्री०) दूकान के किवाड़ों में बन्द करने का एक प्रकार का बड़ा ताला; **हथकल**—(हिं० पुं०) पेंच ढीली करने या कसने का एक अस्त्र; **हथकोड़ा**—(हिं०पुं०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति **हथछुट**—(हिं० वि०) जिसको तुरत किसी को मार देने का अभ्यास हो; **हथधरी**—(हिं० स्त्री०) सहारा लेने की लकड़ी; **हथनाल**—(हिं० पुं०) वह तोप जो हाथी की पीठ पर रखकर चलती है, गजनाल।

हथनी—(हिं०स्त्री०) मदा हाथी-हथिनी।

हथफूल—(हिं०पुं०) एक प्रकार की अग्नि-क्रीड़ा, हथेली के दूसरे ओर पहरने का एक प्रकार का गहना; **हथफेर**—(हिं० पुं०) प्रेम से शरीर पर हाथ फेरना, चतुराई के साथ किसी का धन उड़ा लेना, चुपचाप किसी का माल हरण करना; देखो हथउधार; **हथबेंटा**—(हिं० पुं०) गन्ना काटने की कुदाली।

हथरकी—(हिं० स्त्री०) चमड़े की थैली।

हथली—(हिं० स्त्री०) चरखा चलाने की मुठिया।

हठलेवाँ—(हिं० पुं०) विवाह संस्कार में वर तथा कन्या का हाथ अपने हाथ में लेना, पाणिग्रहण।

हथवाँस—(हिं० पुं०) नाव चलाने की सामग्री; **हथवाँसना**—(हिं० क्रि०) व्यवहार में लाना; **हथसाँकर**—(हिं० पुं०) देखो हथफूक।

हथसार—(हिं० स्त्री०) हाथी रखनेका स्थान, फ़ीलखाना।

हथा—(हिं०स्त्री०) हाथ का छापा।

हथाहथी—(हिं०अव्य०) हाथोहाथ, झटपट

हथिनी—(हिं०स्त्री०) मादा हाथी, हथनी।

हथिया—(हिं०पुं०) हस्त नक्षत्र।

हथियाना—(हिं० क्रि०) अधिकार में करना, हाथ में लेना या पकड़ना, धोखा देकर दूसरे की वस्तु ले लेना, हाथ में पकड़ कर काम में लाना।

हथियार—(हिं० पुं०) कोई काम करने की वस्तु, अस्त्र शस्त्र, लिङ्गेन्द्रिय; **हथियारबन्द**—(हिं० वि०) शास्त्रधारी, जो हथियार धारण किये हो।

हथुई रोटी—(हिं० स्त्री०) गीले आँटे की लोई को हथेलियों से दबाकर बनाई हुई रोटी।

हथेरा—(हिं० पुं०) पानी उलचने का बल्ला; देखो हाथा।

हथेरी—(हिं०स्त्री०) देखो हथेली।

हथेल—(हिं० स्त्री०) बुना हुआ कपड़ा तान कर रखने की लकड़ी।

हथेली—(हिं० स्त्री०) हाथ की कलाई का वह चौड़ा भाग जिसमें उँगलियाँ होती हैं, करतल; **हथेली में आना**—प्राप्त होना, वश में होना; **हथेली पर जान होना**—प्राण जाने का भय होना।

हथेव—(हिं० पुं०) हथौड़ी।

हथोरी—(हिं०स्त्री०) देखो हथेली।

हथौटी—(हिं० स्त्री०) हस्त कौशल, किसी कार्य में लगने का ढग।

हथौड़ा—(हिं०पुं०) ठोंकने या गढ़ने का लोहे का एक अस्त्र, मारतौल; **हथौड़ी**—(हिं०स्त्री०) छोटा हथौड़ा।

हथौना—(हिं० पुं०) वर और कन्या के हाथ में मिठाई रखने की रीति।

हथ्यार—(हिं०पुं०) देखो हथियार।

हदन—(सं० नपुं०) वध, मारण, आघात गुणा करने की क्रिया।

हनना—(हिं० क्रि०) बध करना, मार डालना, प्रहार करना, पीटना; **हनवाना**—(हिं० क्रि०) हनने का कार्य दूसरे से कराना। **हननीय**—(सं०वि०) वध करने योग्य।

हनिवंत, हनुंव—(हिं०पुं०) हनुमान्।

हनील—(सं०पुं०) केतकी, केवड़ा।

हनु—(सं० पुं०) ठुड्ढी, चिबुक।

हनुका—(सं०स्त्री०) दाढ़ की हड्डी।

हनुग्रह—(सं० पुं०) चिबुक बैठ जाने का रोग।

हनुमंत—(हिं०पुं०) हनुमान्।

हनुमंती—(हिं० स्त्री०) मालखंभ का एक व्यायाम।

हनुमान्—(हिं० वि०) दाढ़ वाला, बड़े दाढ़ वाला, (पुं०) एक वीर बन्दर जो रामचन्द्र का बड़ा सहायक था।

हनुमान बैठक—(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बैठक।

हनुल—(सं०वि०) पुष्ट दाढ़ वाला।

हनुस्तम्भ—(सं०पुं०) हनुग्रह रोग।

हनू—(सं०स्त्री०) हनु, ठुड्ढी। **हनूफल**—एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्रायें होती हैं।

हनूमत्—(सं०पुं०) हनुमान्।

हनूष—(सं०पुं०) राक्षस।

हनोद—(हिं० पुं०) हिंडोल राग का एक भेद।

हन्त—(सं०अव्य०) संभ्रम, विषाद, हर्ष आदि सूचक शब्द।

हन्तकार—(सं० पुं०) अतिथि सन्यासी आदि के लिये निकाला हुआ भोजन।

हन्तव्य—(सं०वि०) मारने योग्य।

हन्ता—(हिं०पुं०) मारने वाला, हत्यारा।

हप—(हिं० पुं०) मुँह में झट से लेकर ओठों को बन्द करने का शब्द। **हप कर जाना**—मुँह में डाल कर झट से खा जाना।

हपटाना—(हिं०क्रि०) हाँफना।

हबकाना—(हिं०क्रि०) मुँह बाना, खाने या काटने के लिये झट से मुख खोलना।

हबर हबर—(हिं०क्रि०वि०) हड़बड़ी से, उतावलेपन से।

हबराना—(हिं०क्रि०) देखो हबड़ाना।

हब्बा डब्बा—(हिं०पुं०) बच्चों की पसली चलने का रोग।

हम—(हिं०सर्व०) उत्तम पुरुष बहु वचन सर्वनाम, "मैं" का बहुवचन का रूप, अहंकार, अभिमान, "हम" का भाव।

हमता—(हिं०पुं०) अहंकार।

हमरा—(हिं०सर्व०) देखो हमारा।

हमहमी—(हिं०स्त्री०) देखो हमाहमी।

हमारा—(हिं० सर्व०) 'हम' का सम्बन्ध कारक का रूप।

हमाहमी—(हिं०स्त्री०) स्वार्थपरता, अहंकार, अपने ऊपर भार लेने का प्रयत्न।

हमे—(हिं०सर्व०) "हम" का कर्म और सम्प्रदान कारक का रूप, हमको।

हमेव—(हिं०पुं०) अभिमान, अहंकार।

हमेस—(हिं०अव्य०) सर्वदा।

हमै—(हिं०सर्व०) देखो हमे।

हम्बा, हम्मा—(सं० स्त्री०) गाय बैल के रंभने का शब्द।

हम्मीर—(हिं०पुं०) संपूर्ण जातिका एक संकर राग; **हम्मीर नट**—(सं० पुं०) एक राग का नाम।

हयंद—(हिं०पुं०) अच्छा सुन्दर घोड़ा।

हय—(सं० पुं०) अश्व, घोड़ा, चार मात्राओं का एक छन्द, इन्द्र का एक

नाम, धनु राशि, कविता में सात की मात्रा सूचित करने का शब्द; हयकातरा–(सं० स्त्री०) घोड़काथरा नामक वृक्ष; हयगन्ध–(सं० नपुं०) काला नमक; हयगन्धा–(सं०स्त्री०) असगन्ध; हयगृह–(सं० पुं०) अश्वशाला।

हयग्रीव–(सं०पुं०) एक असुर का नाम, विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक।

हयग्रीवा–(सं०स्त्री०) दुर्गा।

हयघ्न–(सं०पुं०) करवीर वृक्ष।

हयकष–(सं० पुं०) इन्द्र का सारथी मातली।

हयद्विष–(सं०पुं०) भैंसा।

हयन–(सं० नपुं०) खेलने की गाड़ी।

हयना–(हिं०क्रि०) हत्या करना, मार डालना, वध करना, नष्ट करना।

हयनाल–(हिं० स्त्री०) घोड़ों से खींची जाने वाली तोप; हयप्रिय–(सं०पुं०) यव, जौ; हयप्रिय–असगन्ध; हयमारक–(सं०पुं०) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष; हयमुख–(सं० पुं०) एक राक्षस का नाम; हयमेघ–(सं०पुं०) अश्वमेध यज्ञ; हयवाहन–(सं० पुं०) कुबेर; हयविद्या–(सं० स्त्री०) अश्व विद्या; हयवैरी–(सं० पुं०) भैंसा; हयशाला–(सं० स्त्री०) अश्वशाला, घुड़साल; हयशास्त्र–(सं० नपुं०) अश्वशास्त्र; हयशिक्षा–(सं० स्त्री०) अश्वों की शिक्षा; हयशिरा–(सं० स्त्री०) नैश्वातर की कन्या; हया–(सं०स्त्री०) असगन्ध।

हयागार–(सं०पुं०) अश्वशाला।

हयानन–(सं०पुं०) देखो हयग्रीव।

हयारोह–(सं०पुं०) अश्वारोही, घुड़सवार

हयालय–(सं०पुं०) अश्वशाला।

हयोत्तम–(सं०पुं०) उत्तम घोड़ा।

हर–(सं०पुं०) शिव, महादेव, अग्नि, गदहा, हरण, भाग, गणित में किसी संख्या का भाजक, भिन्न में नीचे की संख्या, छप्पय का एक भेद, रगण का पहला भेद, (वि०) छीनने या लूटने वाला, मिटाने वाला, नाश करने वाला, दूर करने वाला, वाहक, ले जाने वाला।

हरएँ–(हिं०अव्य०) धीरे धीरे।

हरक–(सं०पुं०) शिव, महादेव, (वि०) हरण करने वाला।

हरकना–(हिं०क्रि०) देखो हटकना।

हरकारा–(हिं०पुं०) सन्देश अथवा चिट्ठी पत्री ले जाने वाला,

हरकेस–(हिं०पुं०) एक प्रकार का अगहनियाँ धान।

हरख–(हिं०पुं०) देखो हर्ष; हरखना–(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना; हरखाना–प्रसन्न करना।

हरगौरी–(सं०स्त्री०) अर्धनारीश्वर मूर्ति

हरचूड़ामणि–(सं० पुं०) चन्द्रमा।

हरज–(सं०पुं०) पारद, पारा,

हरजा–(हिं०पुं०) हानि।

हरट्ट–(हिं०वि०) हृष्ट, पुष्ट।

हरण–(सं०नपुं०) संहार, नाश, दूर करना, हटाना, लूटना, छीनना, गरम जल, कौड़ी, भुज, बाहु, शुक्र, ग्रहण करना, भाग देना, विभाग करना, ले जाना; हरणीय–(सं०वि०) हरण करने योग्य, छीनने लायक।

हरता–(हिं०वि०) देखो हर्ता।

हरता धरता–(हिं०पुं०) जिसको रक्षा और नाश दोनों करने का अधिकार हो, स्वामी, पूर्ण अधिकारी।

हरतार, हरताल–(हिं०स्त्री०) पीले रंग का खनिज पदार्थ; हरताल लगाना–नष्ट करना, मिटा देना।

हरताली–(हिं० वि०) हरताल के रंग का, उपद्रव करने वाली, हड़ताली।

हरतेज–(सं०नपुं०) पारद, पारा।

हरद–(हिं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।

हरदा–(हिं० पुं०) कीटाणुओं का समूह जो खेत की पत्तियों पर जम जाता है और इसको हानि पहुँचाता है।

हरदिया–(हिं०वि०) हल्दी के रंग का, पीला।

हरदी–(हिं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।

हरदू–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

हरद्वार–(हिं०पुं०) देखो हरिद्वार।

हरनर्तक–(सं०नपुं०) एक प्रकार का छन्द

हरना–(हिं०क्रि०) किसी की वस्तु को उसकी इच्छा के विरुद्ध ले लेना, छीनना, लूटाना, हटाना, दूर करना, नाश करना, ले जाना, पराजित होना, शिथिल होना; मन हरना–लुभाना। प्राण हरना–मार डालना।

हरना–(हिं०पुं०) देखो हिरन।

हरनाकस–(हिं० पुं०) देखो हिरण्यकश्यपु; हरनाच्छ–(हिं० पुं०) देखो हिरण्याक्ष।

हरनी–(हिं०स्त्री०) मादा हरिण, मृगी।

हरनेत्र–(सं०नपुं०) शिव के नेत्र, तीन की संख्या।

हरनौटा–(हिं०पुं०) हरिण का बच्चा।

हरपा–(हिं० पुं०) सुनारों का तराजू रखने का डब्बा।

हरपुजी–(हिं०स्त्री०) कार्तिक में किसानों का हल का पूजन।

हरपुर–(सं० नपुं०) शिवलोक, शिव की पुरी।

हरप्रिय–(सं०पुं०) धतूरा (वि०) शिव को प्रिय।

हरफा–(हिं० पुं०) कटा हुआ, चारा रखने का घर; हरफ़ा रेवड़ी (हिं० स्त्री०) कमरख की जाति का एक वृक्ष जिसके सिंघाडे के समान खटमीठे फल होते हैं।

हरफारेवड़ी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा खट्टा, फल।

हरबर–(हिं०क्रि०वि०) शीघ्र।

हरबराना–(हिं०क्रि०) देखो हड़बड़ाना।

हरबीज–(सं०नपुं०) पारद, पारा।

हरबोंग–(हिं०वि०) गँवार, अक्खड़, मूर्ख

हरमूली–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का धतूरा।

हररूप–(सं०पुं०) शिव, महादेव।

हरवल–(हिं०स्त्री०) हलवाहों को बिना व्याज के दिया हुआ धन।

हरबली–(हिं०स्त्री०) सेना की अध्यक्षता;

हरवल्लभ–(सं०पुं०) ताल के मुख्य साठ भेदों में से एक भेद।

हरवा–(हिं० पुं०) देखो हार, (वि०) हरुवा; हरवाना–(हिं०क्रि०) शीघ्रता करना, हराना।

हरवाल–(हिं०पुं०) सुरारी नाम की घास।

हरवाहन–(सं०पुं०) शिव की सवारी, बैल।

हरवाहा–(हिं०पुं०) हल चलाने वाला श्रमिक; हरवाही–(हिं०स्त्री०) हलवाहे का काम या वेतन।

हरशंकरी–(हिं० स्त्री०) पीपल और पाकड़ के एक साथ लगे हुए वृक्ष।

हरशेखरा–(सं०स्त्री०) गंगाजी।

हरष–(हिं०पुं०) देखो हर्ष, प्रसन्नता; हरषना–(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना; हरषाना–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना, हर्षित करना, प्रसन्न करना; हरषित–(हिं०वि०) हर्षित, प्रसन्न।

हरसना–(हिं०क्रि०) हरखना, प्रसन्न होना।

हरसिंगार–(हिं०पुं०) पारिजात, पारजाता।

हरसूनु–(सं० पुं०) कार्तिकेय।

हरहा–(हिं०पुं०) वृक, भेड़िया; हरहाई–वह नटखट गाय जो इधर उधर भागती फिरती है।

हरहार–(सं०पुं०) शिव का हार, सर्प,

हरहूरा–(सं०स्त्री०) हुरहुर, दाक्षा, दाख।

हरहोरवा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की चिड़िया।

हरांस–(हिं०पुं०) मन्द ज्वर।

हरा–(हिं०वि०) हरित, घास या पत्ती के रंग का, प्रसन्न, प्रफुल्ल, सजीव, जो सूखा या मरा न हो, फल फूल जो पका न हो, (पुं०) हरित वर्ण, चौपायों को खिलाने का हरा चारा।

हरा–(स्त्री०) पार्वती।

हराबाग–(हिं०पुं०) मृगतृष्णा, वृथा की आशा।

हराभरा–(हिं० वि०) प्रफुल्ल, नवीन।

हराई–(हिं०स्त्री०) हारने की स्थिति, हार।

हराद्रि–(सं०पुं०) कैलाश पर्वत।

हराना–(हिं० क्रि०) शत्रु को विफल मनोरथ करना, पराजित करना, शत्रु को पीछे हटाना, उद्योग शिथिल करना, थकाना।

हरापन–(हिं०पुं०) हरे होने का भाव।

हरावरि, हरावर–(सं० पुं०) सेना का अगला भाग, ठगों का सरदार जो आगे आगे चलता है।

हरावास–(सं० पुं०) शिव का आवास, कैलाश।

हराहर–(हिं०पुं०) देखो हलाहल।

हरि–(सं० पुं०) विष्णु, सिंह, सुग्गा, सर्प, बाँस, मूंग, श्रीरामचन्द्र, अठारह वर्णों का एक छन्द, गरुड़ का एक पुत्र, शृगाल, सिंह राशि, हंस, अग्नि, कोयल, मोर, बन्दर, मेढक, चन्द्रमा, घोड़ा, वायु सूर्य, ब्रह्मा, शिव, यमराज, किरण, एक संवत्सर का नाम, (वि०) पीला, हरा, भूरा।

हरिअर–(हिं० वि०) हरित, हरा।

हरिअरी–(हिं०स्त्री०) हरापन, हरियाली।

हरिआली–(हिं०स्त्री०) घास, पेड़ पौधों आदि का विस्तार। हरिकथा–(सं० स्त्री०) भगवान् या उनके अवतारों के चरित्र का वर्णन।

हरिकर्म–(सं०पुं०) यज्ञ। हरिकीर्तन–(सं० नपुं०) भगवान् के अवतारों का स्तुतिगान, भगवद्भजन। हरिकोश–सं०पुं०) शिव, विष्णु। हरिकान्त–(सं० पुं०) घोड़ा। हरिकान्ता–(सं० स्त्री०) अकाली, पराजिता। हरिक्षेत्र–(सं०नपुं०) हिमालय का एक प्राचीन पुण्यस्थान। हरिगन्ध–(सं०पुं०) पीला चन्दन। हरिगीतिका–(सं० स्त्री०) अट्ठाईस मात्राओं का एक छन्द। हरिचन्दन–(सं०नपुं०) एक प्रकार का चन्दन, पीला चन्दन, चाँदनी, कमल केशर। हरिचर्म–(सं०पुं०) व्याघ्र चर्म। हरिचाप–(सं०पुं०) इन्द्र धनुष। हरिजटा–(सं०स्त्री०) रावण की एक राक्षसी का नाम। हरिजन–(सं० पुं०) ईश्वर का भक्त, अछूत। हरिजात–(सं० वि०) हरे रंग का।

हरिजीवक–(सं०पुं०) चने का पौधा।

हरिण–(सं०पुं०) मृग, कुरङ्ग, हरना, शिव, विष्णु, सूर्य, हंस, भूरा रंग (वि०) भूरे रंग का। हरिणक–(सं० पुं०) हरिन का बच्चा। हरिणकलंक–(सं०पुं०) चन्द्रमा। हरिणनयना–(सं० स्त्री०) हरिण के समान सुन्दर आँखों वाली स्त्री। हरिणनर्तक–(सं०पुं०) किन्नर। हरिणप्लुता–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं। हरिणलक्षण–(सं०पुं०) चन्द्रमा। हरिणलाञ्छन–(सं० पुं०) चन्द्रमा। हरिणहृदय–(सं०वि०) भीरु, डरपोक।

हरिणाक्ष–(सं०वि०) हरिण के समान आँखों वाला। हरिणाक्षी–(सं०वि०) हरिण के समान नेत्र वाली स्त्री।

हरिणी–(सं० स्त्री०) मृगी, मादा हरिन, सुवर्ण की प्रतिमा, दूर्वा, दूब, कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों से एक, सत्रह वर्ण के एक वर्णवृत्त का नाम, पीली चमेली, मजीठ, विजया, भांग, तरुणी।

हरित्–(सं०वि०) कपिश, भूरे या बदामी रंग का, (पुं०) सूर्य के घोड़े का नाम, विष्णु, सूर्य, सिंह, हल्दी, पन्ना, एक प्रकार का तृण।

हरित–(सं० वि०) भूरे या हरे रंग का, बदामी, (पुं०) सेना, हरियाली, शाक

भाजी, कश्यप के एक पुत्र का नाम; **हरितनेत्र**–(सं०पुं०) उल्लू। **हरितमणि**–(सं०पुं०) मरकतमणि, पन्ना।
हरिता–(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी, दूब, भूरे रंग का शाक, भूरे रंग का अंगूर। **हरिताल**–(सं० नपुं०) पीतवर्ण, एक उपधातु। **हरितालिका**–(सं० स्त्री०) भाद्रपद शुक्ला तृतीया, स्त्रियोंका तीज का व्रत। **हरिताली**–(सं० स्त्री०) आकाश रेखा, तलवार की धार का भाग। **हरिताश्म**–(सं० पुं०) तुत्थ, तूतिया। **हरितोत्पल**–(सं० पु०) सूर्य, अर्क वृक्ष।
हरिदश्व–(सं०पुं०) सूर्य, अर्क वृक्ष।
हरिदिन–(सं० स्त्री०) श्रीहरि का दिन, एकादशी। **हरिदिश्**–(सं० स्त्री०) पूर्व दिशा। **हरिदेव**–(सं०पुं०) श्रवण नक्षत्र
हरिद्र–(सं०पुं०) पीला चन्दन। **हरिद्रक**–(सं० पुं०) हल्दी का पौधा। **हरिद्रा**–(सं०स्त्री०) हल्दी, मंगल, सीसा धातु, बन, जंगल; **हरिद्राङ्ग**–एक प्रकार का कबूतर। **हरिद्रभ**–(सं०पुं०) पीला रंग, कपूर। **हरिद्राराग**–(सं०पुं०) साहित्य में पूर्व राग का एक भेद, वह प्रेम जो हल्दीके रंगके समान कच्चा हो।
हरिद्वार–(सं० पुं०) सहारनपुर प्रान्त के अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ स्थान यहां पर पहाड़ों से निकल कर गंगा जी समतल भूमि में आई हैं।
हरिधनुष–(सं०पुं०) इन्द्र धनुष। **हरिधाम**–(सं०पुं०) विष्णु लोक, बैकुण्ठ।
हरिन–(हिं० पुं०) खुर और सींघ वाला एक प्रसिद्ध चौपाया हरिण, मृग।
हरिनक्षत्र–(सं० पुं०) श्रवण नक्षत्र।
हरिनख–(सं०पुं०) सिंह या बाघ का नँह। **हरिनग**–(सं०पुं०) सर्प का मणि।
हरिनाकुश–(हिं० पुं०) देखो हिरण्य कश्यपु–।
हरिनाक्ष–(हिं०पुं०) देखो हिरण्याक्ष।
हरिनाथ–(सं०पुं०) बन्दरों में श्रेष्ठ, हनमान्।
हरिनाम–(सं०नपुं०) भगवान का नाम।
हरिनी–(सं०स्त्री०) मादा हरिन, जूही का फूल।
हरिन्मणि–(सं०पुं०) मरकतमणि, पन्ना।
हरिपद–(सं० पुं०) विष्णु लोक, वैकुण्ठ, एक छन्द जिसके पहले तथा तीसरे चरणमें सोलह तथा दूसरे और चौथे चरणों में ग्यारह मात्रायें होती हैं।
हरिपर्ण–(सं० नपुं०) कृष्ण चन्दन।
हरिपुर–(सं० पुं०) विष्णु लोक, वैकुण्ठ।
हरिपैड़ी–(हिं०स्त्री०) हरिद्वार तीर्थ में गंगा का एक विशेष घाट।
हरिप्रबोध–(सं० पुं०) कार्तिक शुक्ला एकादशी।
हरिप्रिय–(सं० पुं०) कदम्ब वृक्ष, कनैर, काला धान। **हरिप्रिया**–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, तुलसी, द्वादशी तिथि, मधु, पृथ्वी, लाल चन्दन, एक सात्विक छन्द का नाम। **हरिप्रीता**–(सं० स्त्री०) ज्योतिष में एक मुहूर्त का नाम। **हरिबीज**–(सं० नपुं०) हरताल। **हरिबोधिनी**–(सं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ला एकादशी। **हरिभक्त**–(सं०पुं०) विष्णु का भक्त, ईश्वर का प्रेमी।
हरिभक्ति–(सं०स्त्री०) ईश्वर में प्रेम।
हरिभुज–(सं०पुं०) सर्प, साँप। **हरिमन्थ**–(सं० पुं०) गनिबारी का वृक्ष जिसकी लकड़ी को रगड़ कर आग निकाली जाती है। **हरिमन्दिर**–(सं०नपुं०) विष्णु मन्दिर। **हरिमेध**–(सं० पुं०) अश्वमेध यज्ञ।
हरियर–(हिं०वि०) हरे रंग का, हरा।
हरियाई–(हिं० स्त्री०) हरियाली।
हरियान–(सं०पुं०) गरुड़।
हरियाना–(हिं० क्रि०) देखो हरिआना, हरा होना।
हरियाली–(हिं०स्त्री०) हरे हरे पेड़ पौधों का समूह या विस्तार, हरेपन का विस्तार, हरा चारा जो चौपायों को खिलाया जाता है; **हरियाली सूझना**–सर्वत्र आनन्द ही आनन्द देख पड़ना।
हरियाली तीज–(हिं०स्त्री०) सावन बदी तीज।
हरियावँ–(हिं०पुं०) खेत के उपज का वह बँटाई जिसमें सात भाग भूस्वामी और नव भाग कृषक लेता है।
हरियोजन्–(सं० नपुं०) रथ में घोड़ा जोड़ना।
हरियोनि–(सं०पुं०) ब्रह्मा।
हरिलीला–(सं०पुं०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें चौदह अक्षर होते हैं।
हरिलोक–(सं०पुं०) विष्णु लोक, वैकुण्ठ।
हरिलोचन–(सं०पु०) वह ग्रन्थ जिसमें श्रीकृष्ण और उनके वंश का विस्तृत वर्णन लिखा है।
हरिवल्लभ–(सं०पुं०) मुचकुन का वृक्ष।
हरिवल्लभा–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, तुलसी।
हरिवास–(सं०पुं०) अश्वत्थ, पीपलका वृक्ष
हरिवासर–(सं०नपुं०) रविवार, एकादशी और द्वादशी ये दोनों तिथियाँ।
हरिवाहन–(सं०पुं०) गरुड़, इन्द्र, सूर्य।
हरिवीज–(सं०पुं०) हरिताल, हरताल।
हरिव्रत–(सं०नपुं०) भगवान् श्रीहरि के निमित्त किया जाने वाला व्रत।
हरि शयनी–(सं०स्त्री०) आषाढ़ शुक्ला एकादशी।
हरिशर–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
हरिश्चन्द्र–(सं०पुं०) त्रेता, युग के अट्ठाइसवें राजा जो त्रिशंकु के पुत्र थे, ये बड़े सत्यव्रत और दानी थे।
हरिस–(हिं०स्त्री०) हल की वह लंबी लकड़ी जिसके एक सिरे पर फाल वाली लकड़ी जड़ी होती है तथा दूसरे सिरे पर जुवा लगाया जाता है, ईर्षा।
हरिसङ्कीर्तन–(सं०नपुं०) श्रीहरि का नामोच्चारण।
हरिसिंगार–(हिं०पुं०) देखो हरसिंगार।
हरिसुत–(सं० पुं०) प्रद्युम्न, अर्जुन।
हरिहय–(सं०पुं०) इन्द्र, गणेश, कार्तिकेय सूर्य। **हरिहरक्षेत्र**–(सं०नपुं०) बिहार प्रान्त का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।
हरिहाई–(हिं० स्त्री०) देखो हरहाई।
हरिहित–(सं०पुं०) इन्द्रगोप, बीरबहूटी
हरी–(सं०स्त्री०) चौदह वर्णों का एक वृत्त, इसको आनन्द भी कहते हैं।
हरीचाह–(हिं०पुं०) एकप्रकार की घास जिसकी जड़ मे नीबूके समान सुगंध होती है।
हरीतकी–(सं०स्त्री०) हड़, हर्रै।
हरीरा–(अ० पुं०) दूध में सूजी, चीनी, इलायची आदि डाल कर पकाया हुआ एक पेय पदार्थ जो विशेष कर प्रसूता स्त्री को पिलाता जाता हैं।
हरीश–(सं०पुं०) बन्दरोंके राजा सुग्रीव।
हरीस–(हिं०स्त्री०) देखो हरिस।
हरुअ हरुआ–(हिं० वि०) देखो हलका।
हरुआई–(हिं० स्त्री०) हलकापन।
हरुआना–(हिं०क्रि०) हलका होना, शीघ्रता करना।
हरुए–(हिं०क्रि०वि०) धीरे से, चुपचाप।
हरे–(सं०पुं०) 'हरि' शब्द का संबोधन, का रूप, जो कठोर या तीव्र न हो, हलका (क्रि०वि०) धीरे से।
हरेणु–(सं०स्त्री०) रेणुका नामक गन्ध द्रव्य।
हरेवा–(हिं०पुं०) हरे रंगकी एक चिड़िया।
हरैना–(हिं० पुं०) हल में लगी हुई वह छोटी गावदुम लकड़ी जिसमें लोहेकी कील ठोंकी रहती है।
हरैया–(हिं० वि०) हरने वाला।
हरोल–(हिं०पुं०) देखो हरावल।
हर्तव्य–(सं०वि०) हरण करने योग्य।
हर्ता–(हिं०पुं०) नाश करने वाला, संहारक
हर्तार–(हिं०पुं०) देखो हर्ता।
हर्फ–(हिं०पुं०) अक्षर।
हर्बा–(हिं०पुं०) अस्त्र शस्त्र।
हर्मुट–(सं०पुं०) सूर्य, कछुआ।
हर्म्य–(सं०नपुं०) राजभवन, हवेली।
हर्म्य पृष्ठ–(सं०पुं०) घरकी छत या पाटन
हर्यश्व–(सं० पुं०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
हर्यश्वचाप–(सं०पुं०) इन्द्र धनुष।
हर्र–(हिं०स्त्री०) हड़, हर्रै।
हर्रा–(हिं०पु०) बड़ी जाति की हड़।
हर्रै–(हिं०स्त्री०) देखो हड़।
हर्रैया–(हिं० स्त्री०) हाथ में पहरने का एक प्रकार का गहना।
हर्ष–(सं० पुं०) आनन्द, प्रफुल्लता, कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
हर्षक–(सं० वि०) आनन्द देने वाला;
हर्षकर–(सं०वि०) प्रसन्न करने वाला।
हर्षण–(सं० नपुं०) आनन्द से रोंगटे खड़े होना, प्रफुल्लित करना, कामदेव के पाँच बाणों में से एक, सत्ताईस योगों में से चौदहवाँ योग, अस्त्र का संहार; **हर्षणी**–(सं० स्त्री०) केवाँच भाँग; **हर्षपरिका**–(सं० स्त्री०) चौदह प्रकार के तालों में से एक; **हर्षनाद**–(सं० पुं०) आनन्द ध्वनि, आनन्द सूचक शब्द; **हर्षवर्धन**–(सं० पु०) भारत के एक प्रसिद्ध वैश्य सम्राट् का नाम; **हर्षाना**–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना, आनन्दित करना, प्रफुल्ल होना; **हर्षित**–(सं० वि०) आनन्दित, प्रसन्न।
हर्षुल–(सं० पुं०) एक बुद्ध का नाम, (वि०) हर्षित करने वाला।
हल्–(सं० पुं०) शुद्ध व्यञ्जन जिसमें स्वर न मिला हो।
हल–(सं० पुं०) भूमि जोतने का यन्त्र, सीर, लाङ्गल; **हल जोतना**–खेत में हल चलना, खेती करना, (सं० पु०) एक अस्त्र का नाम, पैर का चिह्न।
हलककुद–(सं० पु०) देखो हरैना।
हलकम्प–(हिं० पुं०) बहुत बड़ा हल्ला या उथल पुथल, चारो और फैली हुई घबड़ाहट।
हलकई–(हिं० स्त्री०) हलकापन, ओछापन, तुच्छता।
हलकना–(हिं० क्रि०) हिलना डोलना, लहराना।
हलका–(हिं० वि०) जो तौल में भारी न हो, जो गाढ़ा न हो, पतला, जो गहरा न हो, सहज, जो कठिन न हो, ओछा, थोड़ा, जो चटकीला न हो, प्रफुल्ल, जो बहुत उपजाऊ न हो, महीन, छूंछा, घटिया, मन्द, जिसमें गम्भीरता न हो; **हलका करना**–ओछा सिद्ध करना, अपमानित करना; **हलके हलके**–धीरे धीरे (हिं० पुं०) तरंग, लहर।
हलकाई–(हिं०स्त्री०) हलकापन, ओछापन।
हलकान–(हिं० वि०) देखो हैरान; **हलकाना**–(हिं० क्रि०) हिलोरा देना, हिलाना, बोझ कम करना।
हलकापन–(हिं० पुं०) हलके होने का भाव, तुच्छ बुद्धि, ओछापन, अप्रतिष्ठा, नीचता।
हलकारा–(हिं० पुं०) देखो हरकारा।
हलकारी–(हिं० स्त्री०) कपड़े पर रंग पक्का करने के लिये पहिले उसमें फिटकरी आदि का पुट देना।
हलकोरा–(हिं० पुं०) तरंग, पानी की लहर।
हलग्राही–(सं० पुं०) हल का मूठ पकड़ कर खेत जोतने वाला।
हलचल–(हिं० स्त्री०) अधीरता, व्यग्रता, घबड़ाहट, उपद्रव, खलबली, हिलना डोलना, कम्प (वि०) डगमगाता हुआ, डोलता हुआ।
हलंगी–(सं० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।
हलजीवी–(सं०वि०) हल चलाकर खेती करने वाला किसान।
हलजुता–(हिं० स्त्री०) सामान्य किसान, गँवार।
हलड़ा–(हिं० पुं०) देखो हलरा।

हलदण्ड–(सं० पुं०) हल का लम्बा डण्डा, हरिस।
हलदहात–(हिं० स्त्री०) विवाह के तीन या पाँच दिन पहले वर और कन्या के शरीर में तेल और हल्दी लगाने की रीति।
हलदी–(हिं० स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसकी ग्रन्थिमय जड़ मसालों में व्यवहार की जाती है; हलदी चढाना–वर और कन्या के शरीर में हल्दी और तेल पोतना; हलदी लगना–विवाह होना; हलदी लगे न फिटकरी रंग आवे चोखा–बिना परिश्रम के कार्य की सिद्धि होना।
हलदू–(हिं० पुं०) एक बहुत ऊँचा वृक्ष जिसकी पीली लकड़ी बहुत पुष्ट होती है।
हलधर–(सं० पुं०) हल धारण करने वाले बलरामजी।
हलन्त–(सं० पुं०) वह शुद्ध व्यञ्जन जिसके उच्चारण मे स्वर न मिला हो।
हलपाणि–(सं० पुं०) बलरामजी।
हलना–(हिं० क्रि०) हिलना डोलना, घसना।
हलफा–(हिं० पुं०) हिलोरा, तरंग, लहर।
हलब–(हिं० पुं०) फारस की ओर का एक देश जहाँ का काँच प्रसिद्ध था।
हलबल–(हिं० पु०) देखो हलचल।
हलबी, हलब्बी–(हिं० वि०) हलब देश का (काँच), बढ़िया (काँच)।
हलभली–(हिं० स्त्री०) देखो हड़बड़ी, शीघ्रता।
हलभृत्–(सं० पुं०) बलदेव जी।
हलभृत–(सं० पुं०) कृषिकर्म, किसानी।
हलमरिया–(हिं०स्त्री०) जहाज का पेंदा।
हलमुख–(सं० पुं०) हल का फार।
हलमुखी–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण नव अक्षर होते हैं
हलराना–(हिं० क्रि०) हाथ पर लेकर इधर उधर हिलाना डुलाना, प्यार से हाथ पर झुलाना।
हलवत–(हिं०स्त्री०) वर्ष में पहिले पहल खेत में हल ले जाने की रीति।
हलवाइन–(हिं०स्त्री०) हलवाई की स्त्री।
हलवाई–(हिं० पुं०) मिठाई बनाने और बेंचने वाला।
हलवाह, हलवाहा–(हिं० पुं०) हल चलाने का काम करने वाला मजदूर या नौकर।
हलहल–(हिं० पुं०) किसी वस्तु में भरे हुए जल को हिलाने पर उत्पन्न शब्द।
हलहलाना–(हिं०क्रि०) कँपाना, हिलाना डुलाना।
हला–(सं०स्त्री०) सखी, पृथ्वी, जल।
हलाक–(सं० वि०) वध किया हुआ, मारा हुआ।
हलाकू–(हिं० वि०) वध करने वाला।
हलाभला–(हिं०पु०) निर्णय, निबटारा।
हलाभियोग–(सं० पुं०) हलवत।
हलायुध–(सं० पुं०) बलदेव, बलराम।
हलालकरना–(हिं० क्रि०) पशु को धीरे धीरे गला घोंटकर मारना।
हलाहल–(सं० पुं०) वह प्रचण्ड विष जो समुद्र-मन्थन के समय निकला था, इसको शिवजी ने धारण किया था, बहुत तीव्र विष।
हलिन्–(सं० पुं०) बलदेव, कृषक, किसान।
हलीशा–(सं० स्त्री०) नाव चलाने का छोटा डंडा।
हलुक–(हिं० वि०) देखो हलका।
हलुवा–(सं० पुं०) देखो हलवा।
हलूक–(हिं० पुं०) वमन, वान्ति।
हलेरा–(हिं० पुं०) देखो हिलोरा।
हलेरना–(हिं० क्रि०) जल में हाथ डाल कर हिलाना डुलाना, मथना, अन्न को फटकना, अधिक मात्रा में किसी पदार्थ को हाथों से लेना।
हलोरा–(हिं०पुं०) देखो हिलोरा; हल्का–(हिं० वि०) देखो हलका; हल्दी–(हिं० स्त्री) देखो हलदी।
हल्य–(सं० वि०) हल सम्बन्धी, हलसे जोता हुआ; हल्या–(सं० स्त्री०) हलों का समुदाय।
हल्लक–(सं० नपुं०) लाल कमल।
हल्लन–(सं० पुं०) करवट बदलना, इधर उधर डोलना।
हल्ला–(हिं०पुं०) कोलाहल, चिल्लाहट, हाँक, लड़ाई के समय की ललकार, धावा
हल्लीष–(सं० नपुं०) मण्डल बाँधकर नाचने की एक विधि (पु०) नाट्य शास्त्र में अठारह उपरूपकों में से एक जिसमें एक ही अङ्क होता है और नृत्य की प्रधानता रहती है।
हवन–(सं० नपुं०) होम, किसी देवता के निमित्त अग्नि में घृत, तिल, जव आदि डालने की क्रिया, अग्नि, अग्निकुण्ड।
हवनी–(सं० स्त्री०) होमकुण्ड; हवनीय–(सं० वि०) हवन के योग्य (पु०) वह पदार्थ जो हवन करने में अग्नि में डाला जावे।
हवाचक्की–(हिं० स्त्री०) आटा पीसने की हवा की शक्ति से चलाने वाली चक्की।
हवाना–(हिं०पु०) अमेरिका के हवाना नामक स्थान की तमाखू।
हवि–(सं०पु०) वह द्रव्य जिसकी आहुति अग्नि में दी जावे। हवित्री–(सं०स्त्री०) अग्निकुण्ड। हविर्गृह–(सं० नपुं०) हवन करने का घर।
हविर्दान–(सं०नपुं०) यज्ञ में घृत आदि की आहुति।
हविर्भुज्–(सं०त्रि०) अग्नि देवता।
हविर्भू–(सं०स्त्री०) हवन की भूमि।
हविर्यज्ञ–(सं० पु०) हवि द्वारा किया हुआ यज्ञ। हविर्हुति–(सं० स्त्री०) घृत की आहुति।
हविष्कृत–(सं०त्रि०) यज्ञ।
हविष्पति–(सं० पुं०) यजमान।
हविष्मत्–(सं०त्रि०) एक करने वाला।
हविष्य–(सं०वि०) हवन करने योग्य, जिसकी आहुति दी जाने वाली हो।
हविष्यान्न–(सं०नपुं०) वह अन्न या आहार जो यज्ञ के समय प्रयोग किया जाय, खाने की पवित्र वस्तु।
हवीत–(हिं०वि०) वह गड़ारी जिसमें लंगर की रस्सी लपेटी जाती है।
हव्य–(सं०नपु०) वह वस्तु जिसकी आहुति किसी देवता के निमित्त अग्नि में दी जावे; हव्यपाक–(सं०पुं०) चरु। हव्यभुज्–(सं०पुं०) अग्नि।
हव्ययोनि–(सं०पुं०) देवता।
हव्यवाह–(सं०पुं०) अग्नि, पीपल का वृक्ष।
हव्याश, हव्याशन–(सं० पुं०) अग्नी।
हसन–(सं० नपुं०) परिहास, विनोद।
हसन्तिका–(सं०स्त्री०) अँगीठी।
हसन्ती–(सं०स्त्री०) अग्नि रखने का पात्र,
हसावर–(हिं०पुं०) भूमि के रंग की एक बड़ी चिड़िया।
हसिक–(सं०वि०) हंसी ठिठोली करने वाला।
हसिका–(सं०स्त्री०) हँसी ठट्ठा।
हसित–(सं०नपुं०) उपहास, हँसी, ठट्टा, कामदेव का धनुष (वि०) विकसित, खिला हुआ, जो हंसा गया हो।
हस्त–(सं०पुं०) हाथ, हाथी का सूंड, चौबिस अंगुल की नाप, संगीत या नृत्य मे हाथ हिलाकार भाव दिखलाना, हाथ की लिखावट, वसुदेव के एक पुत्र का नाम, गुच्छा, समूह, एक नक्षत्र जिसमें पांच तारे होते हैं।
हस्तक–(सं०पुं०) संगीत का एक ताल, ताली बजाना। हस्तकार्य–(सं०पुं०) हाथ का काम, हस्तकोहली–(सं०स्त्री०) वर और कन्या की कलाई में मंगल सूत्र बांधने की क्रिया। हस्तकौशल–(सं०पुं०) काम करने में हाथ की कुशलता। हस्तक्रिया–(सं०स्त्री०) हस्तकौशल, हाथ से लिङ्गेन्द्रिय का संचालन। हस्तक्षेप–(सं०वि०) किसी काम में हाथ डालना। हस्तगत–(सं०पुं०) हाथ में आया हुआ, प्राप्त।
हस्तग्रह–(सं०पुं०) हाथ पकड़ना, विवाह। हस्तग्राह–(सं० पुं०) हाथ पकड़ने वाला, विवाह। हस्तग्राहक–(सं०त्रि०) हाथ पकड़ने वाला।
हस्तचापल्य–(सं०पुं०) हाथकी चतुराई,
हस्ततल–(सं०पु०) हथेली। हस्तताल–(सं०पुं०) हाथ से ताल देना।
हस्तत्राण–(सं०नपुं०) अस्त्रों के अघात से रक्षा के लिये हाथ में पहरने का कवच। हस्तधारण–(सं०नपुं०) हाथ पकड़ना, हाथ का सहारा देना।
हस्तपृष्ठ–(सं०नपुं०) हथेली के पीछे का भाग। हस्तमणि–(सं०पु०) हाथ मे पहरने का रत्न। हस्तमैथुन–(सं०पुं०) हाथ से लिंगेन्द्रिय का संचालन, कूटनी। हस्तयोग–(सं० पुं०) हाथ जोड़ना। हस्तरेखा–(सं०स्त्री०) हथेली में पड़ी हुई लकीर। हस्तलाघव–(सं०पुं०) हाथ की चतुराई। हस्तलिखित–(सं०वि०) हाथ का लिखा हुआ। हस्तलिपि–(सं०स्त्री०) हाथ की लिखावट। हस्तवारण–(सं०नपुं०) आघात को हाथ पर रोकना।
हस्तविन्यास–(सं०पुं०) कर स्थापन।
हस्तसिद्धि–(सं०स्त्री०) वेतन।
हस्तसूत्र–(सं०नपुं०) हाथ में बाँधने का मंगल सूत्र।
हस्ता–(हिं०पुं०) हथिया नक्षत्र।
हस्तामलक–(सं० नपुं०) हाथ मे लिया हुआ आंवला, वह वस्तु या विषय जो अच्छी तरह समझ में आ गया हो।
हस्तालिगन–(सं०नपुं०) हाथ मिलना।
हस्ति–(सं०पुं०) गज, हाथी।
हस्तिक–(सं०नपुं०) हाथियों का समूह
हस्तिकक्ष–(सं० पुं०) व्याघ्र, सिंह,
हस्तिकन्द–(सं०पुं०) एक पौधा जिसका कन्द खाया जाता है, हाथी कन्द।
हस्तिकर्ण–(सं०पुं०) पलास का वृक्ष।
हस्तिकर्णिका–(सं० स्त्री०) हठ योग का एक आसन। हस्तिका–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का प्राचीन तार का बाजा
हस्तिकोल–(सं०पुं०) बड़ा बेर।
हस्तिघ्न–(सं० वि०) हाथी को मारने वाला। हस्तिदन्त–(सं०नपुं०) हाथी दाँत, मूली।
हस्तिनापुर–(सं०नपुं०) कौरवों की राजधानी का नाम।
हस्तिनासा–(सं०स्त्री०) हाथी का सूंड़।
हस्तिनी–(सं०स्त्री०) मादा हाथी, हथिनी, काम शास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक, एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य। हस्तिप–(सं० पुं०) महावत। हस्तिपद–(सं०नपुं०) हाथी के पांव का चिह्न। हस्तिपर्णी–(सं०स्त्री०) ककड़ी। हस्तिपिप्पली–गजपीपल। हस्तिमद–(सं०पुं०) मद जल जो हाथी के गन्ड से निकलता है। हस्तिमल्ल–(सं०पुं०) गणेश, ऐरावत। हस्तिवाह–(सं०पुं०) महावत; हस्तिविषाण–(सं०पुं०) केले का वृक्ष, हस्तिशाला–(सं०स्त्री०) फीलखाना।
हस्तिसूत्र–(सं०नपुं०) हाथी चलाने की विद्या।
हस्ते–(हिं०अव्य०) हाथ से।
हस्तोदक–(सं०नपुं०) हस्त गत जल।
हहर–(हिं०स्त्री०) कँपकँपी, थरथराहट, डर। हहरना–(हिं०क्रि०) काँपना, थरथराना, थर्राना, ठक रह जाना, दहलना। हहराना–(हिं०क्रि०) कंपाना, थरथराना, डरना, भयभीत होना।
हहलना, हहलाना–(हिं०) देखो हहरना, हहराना।
हहा–(हिं०स्त्री०) हँसने का शब्द, ठट्ठा, गिड़गिड़ाने का शब्द, विनती।

हां–(हिं०अव्य०) स्वीकृति अथवा सम्मति सूचक शब्द; हां करना–स्वीकार कर लेना; हांजी हांजी करना–शुश्रूषा करना।

हांक–(हिं०स्त्री०) चिल्ला कर पुकारने का शब्द; लड़ाई में बाधा करती समय की चिल्लाहट; ललकार, दुहाई, बढावे का शब्द।

हांकना–(हिं०क्रि०) चिल्लाकर पुकारना, ललकारना, घोड़े बैल ऊंट आदि से गाड़ी चलवाना, गाड़ी में जुते हुए जानवरों को आगे बढ़ाना, चौपायों को किसी स्थान से हटाना, पंखे से हवा करना, पंखा झलना।

हांगर–(हिं०पुं०) एक प्रकार की बड़ी मछली।

हांगा–(हिं०पुं०) शरीर का बल।

हांगी–(हिं०स्त्री०) स्वीकृति, हामी।

हांड़ना–हिं०वि०) व्यर्थ इधर उधर घूमने वाला, अवारा।

हांडी–(हिं०स्त्री०) बटलोही के आकार का मिट्टी का पात्र, इस आकार का मोमबत्ती जलाने का कांच का पात्र; हांडी पकना–कोई षड्यन्त्र रचा जाना।

हाता–(हिं०वि०) हटाया हुआ, छोड़ा हुआ।

हांपना, हांफना–(हिं० क्रि०) दौड़ने, कठिन परिश्रम करने या रोग के कारण सास का वेग से चलना।

हांफा–(हिं० पुं०) हांफने की क्रिया या भाव।

हांसना–(हिं०क्रि०) हँसना।

हांसला–(हिं० पुं०) एक प्रकार का घोड़ा।

हांसिल–(हिं०स्त्री०) रस्सा लपेटने की गड़ारी।

हांसी–(हिं०स्त्री०) हँसने की क्रिया या भाव, उपहास, निन्दा।

हांहां–(हिं०अव्य०) वह शब्द जिसको बोल कर किसी काम करने से तुरत रोकते हैं।

हा–(सं० अव्य०) शोक या दुःख सूचक शब्द; (पुं०) वध करने वाला, मारने वाला।

हाइ–(हिं०अव्य०) हाय।

हाई–(हिं० स्त्री०) अवस्था, दशा, ढंग, तरीका।

हाऊ–(हि०पुं०) बच्चों को डराने का शब्द, हौवा, भकाऊ।

हाकल–(सं० पुं०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह मात्रायें होती हैं तथा अन्त में एक गुरु वर्ण होता है।

हाकलिका–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं।

हाकली–(सं० स्त्री०) दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

हाट–(हिं०स्त्री०) दूकान, बाज़ार, बाज़ार लगने का दिन; हाट करना–दूकान लगाना।

हाटक–(सं०पुं०) सुवर्ण, सोना, धतूरा;

हाटकपुर–(सं० पुं०) लंका; हाटकीय–(सं० वि०) सोने का बना हुआ;

हाटकलोचन–(सं० पुं०) हिरण्याक्ष।

हाड़–(हिं०पुं०) अस्थि, हड्डी, कुलीनता।

हाड़ा–(हिं० पुं०) लाल रंग की बड़ी भीड़।

हाड़ी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बंगला, कौवा।

हाथ–(हिं० पुं०) मनुष्य, बन्दर आदि प्राणियों का किसी पदार्थ को पकड़ने या छूने का अवयव, हस्त, बाहु से लेकर पंजे तक का अंग, चौबीस अंगुल की नाप, ताश, जूवे आदि के खेल में एक आदमी के खेलने की बारी, किसी हथियार की मुठिया, किसी कार्यालय में काम करने वाले मनुष्य; हाथ आना–प्राप्त होना; हाथ उठाना–नमस्कार करना; किसी पर हाथ उठाना–किसीको मारने के लिये हाथ तानना; हाथ ऊँचा होना–दान देने में उद्यत होना; हाथ कट जाना–किसी योग्य न रह जाना; हाथ की मैल–कोई तुच्छ वस्तु; हाथ खाली होना–पास में धन न रह जाना; हाथ खुलजाना–मारने पीठने की इच्छा होना, कोई वस्तु पाने के लक्षण देख पड़ना; हाथ खींच लेना–किसी कार्य से अलग हो जाना; हाथ चलाना–मारना पीटना; हाथ चूमना–किसीके हस्त कौशल पर प्रसन्नता दिखलाना; हाथ छोड़ना–प्रहार करना; हाथ जोड़ना–प्रणाम करना, विनती करना; दूर से हाथ जोड़ना–संसर्ग से दूर रहना; हाथ डालना–कोई काम आरंभ करना; हाथ तंग होना–पास में धन की कमी होना; हाथ धोना–खो देना; हाथ धोकर पीछे पड़ना–जीजान से संलग्न होना; हाथ पकड़ना–सहारा देना, विवाह करना; पत्थर तले हाथ दबना–आपत्ति में पड़ना, विवश होना; हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना–कोई व्यवसाय न करना; हाथ पसारना–हाथ फैलाकर कुछ माँगना; हाथ पांव ठंढे होना–मरणासन्न अवस्था; हाथ पांव फूलना–व्यग्र होना; हाथ पांव पटकना–छटपटाना; हाथ पांव हिलाना–किसी प्रकार का उद्योग करना; हाथ पैर जोड़ना–बड़ी बिनती करना; किसी वस्तु पर हाथ फेरना–चुरा लेना; हाथ मलना–पछताना; हाथ मारना–किसी वस्तु को चुरा लेना; हाथ में करना–अपने वश में लाना; हाथ में होना–अधीन होना; हाथ रंगना–उत्कोच लेना, घूस लेना; हाथ रोपना–हाथ फैलाना; हाथ लगना–प्राप्त होना, पाना; किसी काम में हाथ लगाना–कोई कार्य आरंभ करना; हाथ लगे–कार्य के आरंभ होनेपर; हाथोहाथ–साथसाथ; हाथोहाथ लेना–आदर किया जाना।

हाथकण्डा–(हिं० पुं०) देखो–हथकण्डा।

हाथ तोड़–(हिं०पुं०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

हाथपान, हाथफूल–(हिं०पुं०) हथेली के पीछे की ओर पहरने का एक आभूषण

हाथबांह–(हिं० पु०) बाँह करने का एक ढंग।

हाथा–(हिं० पुं०) किसी हथियार की मूंठ, पंजे की छाप का चिह्न; हाथा-छांटी–(हिं०स्त्री०) व्यवहार में कपट;

हाथाजोड़ी–(हिं० स्त्री०) एक पौधा जो औषधियों में प्रयोग होता है; हाथापाई, हाथाबांही–(हिं०स्त्री०) मुठ भेड़, धौलधप्पड़।

हाथी–(हिं० पुं०) एक बड़ा प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया, हस्ती; हाथी पर चढ़ना–बड़ा धनी होना; हाथीखाना–हाथी बाँधने का स्थान;

हाथीचक–(हिं० पुं०) एक प्रकार का पौधा जो औषधियों में प्रयोग होता है; हाथीदांत–(हिं०पुं०) हाथी के मुंह के दोनों छोरों पर निकले हुए सफ़ेद दाँत; हाथीनाल–(हिं० स्त्री०) हाथी की पीठ पर लादकर ले जाने की पुराने चाल की तोप; हाथीपांव–(हिं० पुं०) फ़ीलपाव नामक रोग;

हाथीवान–(हिं०पुं०) महावत।

हान–(हिं०स्त्री०) देखो हानि, (सं०नपुं०) त्याग।

हानि–(सं० स्त्री०) नाश, क्षय, अभाव, अनिष्ट, बुराई, क्षति, घाटा, स्वास्थ्य में बाधा; हानिकर–(सं०वि०) अनिष्ट करने वाला, स्वास्थ्य बिगाड़ने वाला;

हानिकारक, हानिकारी–(सं० वि०) बुरा परिणाम उपस्थित करने वाला

हानुक–(सं०वि०) घातुक, हत्याकारी।

हाफु–(हिं०पुं०) अहिफेन, अफीम।

हाबिस–(हिं० पुं०) जहाज़ का लंगर उठाने की क्रिया।

हामी–(हिं० पुं०) स्वीकृति, स्वीकार; हामी भरना–स्वीकार करना।

हाम्बीरी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी।

हाय–(हिं० प्र०) पीड़ा अथवा दुःख सूचित करने का शब्द, आह; (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, कष्ट; किसी की हाय पड़ना–किसी को कष्ट देने पर बुरा फल मिलना।

हायन–(सं० पुं०) वत्सर, साल, एक प्रकार का लाल धान।

हायल–(हिं० वि०) घायल, शिथिल, मूर्छित, रोकने वाला।

हायहाय–(हिं०अव्य०) शोक, दुःख या शारीरिक कष्ट सूचक शब्द, झंझट,

हार–(सं०वि०) चुराने वाला, ले जाने वाला, नाश करने वाला, सुन्दर, मनोहर (पुं०) सोने चांदी या मोतियों की माला, अंक गणित में भाजक, छन्द शास्त्र में गुरु मात्रा, युद्ध, लड़ाई (हिं०स्त्री०) पराजय, शिथिलता, वियोग, विरह, हानि, क्षति।

हारक–(सं०पुं०) धूर्त, चोर, गणित में भाजक, हार, माला हरण करने वाला, ले जाने वाला।

हारगुटिका–(सं०स्त्री०) माले का दाना।

हारना–(हिं० क्रि०) पराभूत होना, शिथिल होना, थक जाना, असमर्थ होना, निराश होना, लड़ाई जुए आदि को न जीतना, गँवाना, नष्ट करना, छोड़ देना; हारे दरजे-विवश होकर।

हारबन्ध–(सं० पुं०) एक चित्रकाव्य जिसमें पद्य हार के आकार में लिखे जाते हैं।

हारभूर–(सं०स्त्री०) द्राक्षा, दाख।

हारल–(हिं० पुं०) एक प्रकार की चिड़िया।

हारव–(सं०पु०) एक नरक का नाम।

हारसिंगार–(हिं०पुं०) देखो हरसिंगार, परजाता।

हारहूर–(सं०पुं०) द्राक्षा; दाख।

हारा–(सं० स्त्री०) मद्य, (पुं०) चौहान राजपूतों की एक शाखा, (हिं०प्र०) प्राचीन हिन्दी का एक प्रत्यय जो "वाला" अर्थ में शब्दों में प्रयोग होता था।

हारावली–(सं० स्त्री०) मोतियों की माला।

हारि–(सं० स्त्री०) पथिक, समूह, हार, पराभव; हारिकण्ठ–(सं०पुं०) कोकिल, कोयल, (वि०) जिसके गले में हार हो।

हारित–(सं० पुं०) सुग्गा, एक वर्ण-वृत्त का नाम (वि०) हरण किया हुआ, लाया हुआ, खोया हुआ।

हारिद्र–(सं० वि०) हल्दी में रंगा हुआ, (पुं०) पीला रंग।

हारिनाश्वा–(सं०स्त्री०) संगीत में एक मूर्छना का नाम।

हारिल–(हिं०पुं०) एक प्रकार की हरे रंग की चिड़िया जो प्रायः अपने पंजे में लकड़ी का टुकड़ा या तिनका लिये रहती है।

हारी–(सं० वि०) हरण करने वाला, छीनने वाला, चुराने वाला, लूटने वाला, नाश करने वाला, जीतने वाला, मोहित करने वाला, हार पहनने वाला (पुं०) एक वर्ण वृत्त का नाम।

हारीत–(सं०पुं०) एक प्रकार का कबूतर, चोर, लुटेरा, लुटेरापन, चोरी;

हारीतक–(सं० पुं०) परेवा पक्षी;

हारीतबन्ध–(सं० पुं०) एक प्रकार का छन्द।

हारुक–(सं० पुं०) हरण करने वाला, छीनने वाला।

हार्द–(स० नपुं०) अभिप्राय, स्नेह (वि०) हृदय का।
हार्दिक–(सं०वि०) हृदय सम्बन्धी, हृदय का हृदय से निकला हुआ, सच्चा।
हार्दिक्य–(सं०पु०) मित्रभाव, मित्रता।
हार्य–सं०वि०, छीनने योग्य, स्वीकार करने योग्य, छोडने योग्य, रोकने योग्य, ले जाने योग्य।
हाल–सं० पुं०) बलराम, हल, लागल, अवस्था।
हाल–(हिं०स्त्री०) लोहे का वह बन्द जो पहिये के घेरे पर चढाया जाता है। हालगोला–(हिं०पुं०) गेंद; हालडाल–(हिं०पुं०) कम्प, हलचल।
हालना–(हिं०क्रि०) हिलाना, डुलाना, झूमना।
हालरा–(हिं०पुं०) बच्चे को हाथ मे लेकर हिलाने डुलाने का कार्य,लहर, हिलोरा, झोका।
हालहाल–(हिं०पु०) देखो हलाहल।
हालहूल–(हिं०स्त्री०) हल्लागुल्ला, हलचल
हाला–(स०स्त्री०) मद्य, मदिरा।
हालाहल–(सं०पु०) देखो हलाहल।
हालाहली–(सं०स्त्री०) मदिरा।
हालिनी–(स० स्त्री०) एक प्रकार की छिपकली।
हाली–(हि०अव्य०) शीघ्र, जल्दी से।
हाव–(स०पु०)पास बुलाने की क्रिया या भाव,सयोग के समय मे नायिका की पुरुष को आकर्षण करने वाली चेष्टाये, साहित्य मे ये ग्यारह है।
हावनीय–(सं०वि०) हवन करने योग्य।
हावभाव–(सं० पुं०) पुरुषो का चित्त अकर्षण करने वाली स्त्रियोकी चेष्टा,
हावर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकडी पुष्ट होती है।
हावल 'बावला–(हि० वि०) सनकी, झक्की।
हास–(स पु०) हँसने की क्रिया या भाव, हँसी, उपहास, निन्दा,हासक–(सं०पु०) हँसने वाला, हासकर–(स० वि०) हँसाने वाला; हासन–(स०पु०) हँसने वाला,हासनिक–(स० पुं०) क्रीडा का साथी।
हासशील–(सं०वि०)हँसने वाला।
हासिन–(स०वि०) हँसाने वाला।
हासिनी–(स० स्त्री०) अप्सरा।
हासी–(हिं०वि०) हँसने वाला।
हास्त–(सं०वि०) हस्त सबधी।
हास्तिक–(स० नपु०) हाथी का सूंड।
हास्य–(सं०नपुं०) हँसने की क्रिया या भाव हँसी, साहित्य के नव स्थायी भावो से एक, हँसी ठठ्ठा, उपहास (वि०) उपहास के योग्य; हास्यकर–(स०वि०) हँसाने वाला, हास्यरस–(स० पुं०) काव्य का हास्यात्मक रस, हास्यास्पद–(स०पु०)हास्य का विषय, जिसको देखकर लोग हँस पडे,हास्योत्पा क–(सं०वि०) उपहास के योग्य।
हाहन्त–(सं० अव्य०)अत्यन्त शोक सूचक शब्द।
हाहा–(स० पु०) देव गन्धर्व विशेष (हिं०पुं०) हँसने का शब्द, गिडगिडाने का शब्द।
हाहाकार–(हि० पुं०) घबडाहट की चिल्लाहट, युद्ध मे का कोलाहल।
हाहाठीठी–(हिं०स्त्री०) हँसी ठठ्ठा।
हाहाल–(स० नपु०) विष, गरल।
हाही–(हि०स्त्री०) कुछ पाने की उत्कट इच्छा।
हाहू–(हि० पुं०) कोलाहल, हलचल।
हाहूबेर–(हि०पु०) जगली बेर, झरबेरी,
हि–(स०अव्य०) हेतु, कारण, निश्चय तथा सभ्रम अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग होता है, हिन्दी की एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले सभी कारको मे होता था परन्तु बाद मे इसका प्रयोग ("को"अर्थ मे) कर्म और सम्प्रदान मे हो होने लगा।
हिंकटना, हिकरना–(हि०क्रि०) घोडो का हिनहिनाना।
हिंकार–(हि०पुं०) गाय के रभाने का शब्द।
हिंगनबेर–(हि०पुं०) इङ्गुदी वृक्ष, हिंगोट;
हिंगली–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की तमाखू।
हिंगोट–(हिं० पु०)इगुदी वृक्ष।
हिंडोरा–(हिं० पुं०) देखो हिंडोला।
हिंडोरा–(हि० स्त्री०) छोटा हिंडोला
हिडोल–(हि०पु०)हिडोला, एक प्रकार का राग;हिंडोलना, हिंडोला–(हि०पु०) पालना,झूला।
हिंदी–(स्त्री०) भारत वर्ष की बोली, हिन्दुस्तान की भाषा।
हिंदुस्थान–(हि०पुं०) देखो भारतवर्ष।
हिंदोरना–(हि०क्रि०)तरल वस्तु मे हाथ डालकर इधर उधर घुसाना।
हिंदोस्तान–(हि०पु०) भारतवर्ष।
हिंया–(हि०अव्य०) यहा।
हिंव,हिंवार–(हिं०पुं०) हिम, पाला।
हिंस–(हि०स्त्री०) घोडे का हिनहिनाना;
हिंसक–(स०वि०) घातक, हत्यारा, हानि पहुँचाने वाला, (पुं०) हिंस्र पशु,हिंसन (स०पुं०)जीवो का व्रध, जान मारना, जीवो को कष्ट देना, द्वेष करना, अनिष्ट करना। हिंसनीय–(स०वि०) हिंसा करने योग्य। हिंसा–(सं०स्त्री०) व्रध, हत्या, हानि पहुँचाना, कष्ट देना, ईर्षा, द्वेष। हिंसाकर्म–(स०नपुं०) किसी को मारने या कष्ट देने का काम।
हिंसात्मक–(स० वि०) जिसमे हिंसा हो, हिंसा से युक्त।
हिंसारु–हिंस्र पशु, व्याघ्र। हिंसालु–(स० वि०) वधशील, मारने वाला, घातक। हिंसालुक–(स०पुं०) घातक, हिंसाशील, हिंसित–(स०वि०) हिंसा प्राप्त, मारा हुआ, हिंसितव्य–(स० वि०) हिंसा करने योग्य।
हिंस्य–(स० पु०) जिसकी हिंसा की जाने को हो।
हिंस्र–(स०वि०)हिंसाशील, घातक (पुं०) हिंसाकारक जन्तु; हिंस्रक–(स० पु०) हिंसा करने वाला।
हिंस्रा–(सं०स्त्री०) जटामासी, भटकटैया,
हिअ,हिआ–(हि०पुं०) हृदय, छाती।
हिआव–(हि०पु०) साहस।
हिकलाना–(हि०क्रि०) देखो हकलाना।
हिक्कल–(हि०पु०) बौद्ध सन्यासियो का दण्ड।
हिक्का–(स०स्त्री०) हिचकी, हिचकी का रोग।
हिंकार–(स०पु०) गाय के रभाने का शब्द।
हिंग–(स० पुं०)हिंगु हीग,हिंगु–(सं०नपुं०) हीग, हिंगुपत्र–(सं०पुं०)इगुदी,हिंगोट, हिंगुलिका–(स० स्त्री०) भटकटैया।
हिंगुली–(सं०स्त्री०) भटा, हिंगुल–(स० स्त्री०) ईंगुर सिंगरफ।
हिंगोट–(स०पुं०) एक झाड, करकँटीला वृक्ष, इसके फल की गुठलियो मे से तेल निकाला जाता है।
हिचक–(हिं० स्त्री०) किसी काम करते समय चित्त में अटक आना, आगा पीछा; हिचकना–(हिं०क्रि०) हिचकी लेना, किसी काम करने मे आगा पीछा करना, हिचकिचाना–(हिं०क्रि०) देखो हिचकना, हिचकिचाहट–(हि० स्त्री०) देखो हिचक, हिचकिची–(हि० स्त्री०) देखो हिचक, हिचकी–(हिं०स्त्री०) पेट की वायु का कण्ठ मे से झटका देते हुए निकलना, रह रह कर सिसकने का शब्द।
हिचर मिचर–(हि०पु०) आगा पीछा, टाल मटूल।
हिजड़ा–(हि०पु०) देखो हीजडा।
हिज्जल–(स०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष, समुद्रफल।
हिञ्जीर–(स० पु०) हाथी के पैर मे बाधने की सिकडी।
हिडिम्ब–(सं०पु०) एक राक्षस जिसको बनवास के समय भीम ने मार डाला था।
हिडिम्बा–(स० स्त्री०) हिडिम्ब राक्षस की बहिन, घटोत्कच की माता।
हिडोर, हिडोल–(हि०पु०) देखो हिडोला
हिण्डन–(स० नपुं०) घूमना, फिरना, क्रीडा, खेल, रति, मैथुन।
हिण्डोली–(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
हित–(स० वि०) उपकारी, लाभदायक, अनुकूल,प्रिय, अच्छा व्यवहार करने वाला, पथ्य (पु०) लाभ, कल्याण, मङ्गल, मित्र, सबधी, प्रेम, स्नेह, अनुकूलता स्वास्थ्य के लिये लाभ (अव्य०) निमित्त, वास्ते, लिये प्रसन्नता के लिये, हितक–(सं०पु०)शिशु, बच्चा, हितकर–(सं०वि०)लाभ पहुँचाने वाला, उपयोगी,स्वास्थ्य कर,
हितकर्ता–(स०पुं०)भलाई करने वाला
हितकर्म–(स० नपुं०) हित कार्य। हित काम–भलाई की इच्छा। हितकारक–(सं०वि०)लाभ पहुँचाने वाला, स्वास्थ्यकर, भलाई करने वाला,
हितकारी–(सं०वि०)उपकार या कल्याण करने वाला। हित चिन्तक–(स०पुं०) भला चाहने वाला। हित चिन्तन–(सं० पु०) उपकार की इच्छा, हित वचन–(सं०पुं०) कल्याण का उपदेश,
हितता–(हिं०स्त्री०) भलाई। हितवादी–(स०वि०) उपकार या लाभ की बात कहने वाला।
हितलोहित–(सं०पु०) जुआर, मक्का।
हिताई–(हि०स्त्री०) सम्बन्ध, नाता।
हिताना–(हि० क्रि०) अनुकूल होना, अच्छा लगना। हितानुबन्धी–(हि० वि०) भलाई चाहने वाला, हितार्थी–(सं०वि०)हित या भलाई चाहने वाला।
हितावह–(सं०वि०) हितकारी जिसमे भलाई हो।
हिताहित–(सं०पु०)भलाई, बुराई, हानि लाभ।
हिती,हितू–(हि०वि०)भलाई चाहने वाला, मित्र, सम्बन्धी, स्नेही।
हितेच्छा–(स०स्त्री०) उपकार का ध्यान;
हितेच्छु–(सं०वि०)कल्याण मनाने वाला
हितैषिता–(सं०स्त्री०) कल्याण चाहने की वृत्ति, हितैषी–(सं० वि०) भला चाहने वाला, कल्याण मनाने वाला, (पुं०) मित्र।
हितोक्ति–(सं०स्त्री०) भलाई का उपदेश;
हितोपदेश–(स०पु०) भलाई के उपदेश;
हिनती–(हि०स्त्री०) देखो हीनता।
हिनहिनाना–(हि०क्रि०)घोड़े का बोलना हिनहिनाहट–(हिं० स्त्री०) घोडे की बोली।
हिन्ताल–(स० पुं०) एक प्रकार का जगली खजूर।
हिन्दी–हिन्दी भाषा।
हिन्दुस्तान–(हि० पुं०) भारतवर्ष।
हिन्दू–(स० पु०) आर्यावर्त वासी, वर्णाश्रम धर्मी।
हिन्दोल–(सं०पु०) एक उत्सव जिसमें देवताओ की मूर्ति झूले पर बैठाकर झुलाई जाती है, एक रागका नाम।
हिमंचल–(हि० पुं०) देखो हिमाचल
हिमत–(हि०पु०) देखो हेमन्त।
हिम–(स० वि०) शीत, शीतल, ठढा, (नपुं०) पाला, चन्द्रमा, चन्दन, मोती, जाडे का ऋतु, कपूर, मक्खन, कमल, खस, हिमालय पर्वत; हिम उपल–(स०पु०) ओला, पत्थर, हिम ऋतु–(सं०स्त्री०) जाड़े का ऋतु, हिम कण–(स० पुं०) पाले के महीन टुकड़े,
हिमकर–(सं० पु०) कपूर, चन्द्रमा;
हिमकर तनय–(सं०पु०) बध, हिमकिरण–(सं०पु०) चन्द्रमा, हिमकूट–(सं० पुं०) शिशिर ऋतु; हिमखण्ड–(स०पु०) हिमालय पर्वत, हिमगिरि–(सं०पु०) हिमालय पर्वत, हिमगृह–

(सं०पुं०) घर मे सबसे ठढी कोठरी ।
हिमज–(सं० पु०) हिमालय पर्वत, मैनाक, हिमजा–(स०स्त्री०) पार्वती ।
हिमज्जोति, हिमदीधिति–(स० पु०) चन्द्रमा ।
हिमदुग्धा–(स०स्त्री०)खिरनी, हिमद्युति–(स० पुं०) चन्द्रमा, हिमद्रुम–(स०पु०) बकायन का वृक्ष, हिमधर–(स०पुं०) हिमालय पर्वत, हिमपात–(स०पु०) पाला पडना, हिमभानु–(स० पु०) चन्द्रमा; हिमभृत्–(स०पु०) हिमालय पर्वत, हिममयूख–(सं० पुं०) चन्द्रमा; हिमरश्मि–(स०पु०) चन्द्रमा,हिमवत्–(सं० पु०) हिमालय पर्वत, हिमबल–(स०पु०) मोती, हिमवान–(हि० पुं०) हिमालय पर्वत,कैलाश पर्वत,चन्द्रमा, हिमवारि–(स० नपुं०)ठंढा पानी, हिमवृष्टि–(स० स्त्री०) पाला गिरना, हिमशैल–(स० पु०) हिमालय पर्वत, हिमशैलजा–(स०स्त्री०) पार्वती, हिमसुत–(स० पु०) चन्द्रमा ।
हिमा–(स० स्त्री०) छोटी इलायची, नागरमोथा, रेणुका, मूली ।
हिमांशु–(स०पुं०)कपूर,चादी, चन्द्रमा।
हिमाचल–(सं० पु०) हिमालय पर्वत,
हिमाद्रि–(सं० पुं०) हिमालय पर्वत,
हिमाद्रिजा–(सं०स्त्री०) पार्वती; हिमाद्रितनया–(स० स्त्री०) दुर्गा।
हिमानी–(स०स्त्री०) बर्फ का ढेर ।
हिमाब्ज–(स०नपुं०) नील कमल ।
हिमाभ्र–(स०पुं०) कर्पूर, कपूर ।
हिमाम्भस्–(स० नपु०) ठढा पानी ।
हिमाराति–(स०पुं०) अग्नि, सूर्य, मदार का वृक्ष ।
हिमालय–(सं० पु०) भारत की उत्तरी सीमा पर का पर्वत जो ससार भर में सबसे ऊँचा है, हिमालयसुता–(स०स्त्री०) पार्वती ।
हिमवती–(सं० स्त्री०) स्वर्णक्षीरी नामक दवा ।
हिमि–(हि० पुं०) हिम, पाला ।
हिमिका–(सं० स्त्री०) घास पर गिरा हुआ पाला, शिशिर बिन्दु ।
हिमोदक–(सं०नपुं०) ठढा पानी ।
हिमोपम–(सं०पुं०) प्रवाल, मूंगा ।
हिय,हियरा–(हि०पुं०) हृदय, मर्म,छाती
हियां–(हि० अव्य०) यहां, इस जगह ।
हिया–(हि०पु०) हृदय, मन, वक्षस्थल, छाती, हियका अन्धा–ज्ञानशून्य; हिया जलना–बहुत क्रोध करना; हिया लगाना–गले से लगाना।
हियाव–(हि० पु०) साहस, दृढता, हियाव खुलना–साहस करना; सकोच का हटना; हियाव पडना–साहस होना।
हिर–(स०पु०) कपड़े लत्ते की पट्टी ।
हिरकना–(हि० क्रि०) पास मे जाना, सटना; हिरकाना–(हि०क्रि०) पास में ले जाना, सटाना ।
हिरगनी–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की बढिया कपास ।
हिरङ्गु–(स०पु०) राहु ग्रह ।
हिरण–(सं०नपुं०) रेत, वीर्य, सोना, कौडी (हि०पु०) हरिन, मृग ।
हिरण्मय–(सं० नपु०) जम्बूद्वीप के नव खडो में से एक ।
हिरण्य–(सं० पु०) सुवर्ण, सोना, धतूरा, वीर्य, कौडी, धन, चादी, अमृत, ज्योति, ज्ञान, तत्व, एक मान या तौल, हिरण्यकर्ण–(स०नपुं०) कान मे सोने का कुण्डल पहिरे हुए; हिरण्यकर्ता–(स०पु०) सुनार, हिरण्यकशिपु–(स० पुं०) एक दैत्य जिसको नृसिहावतार मे विष्णुने मारा था, हिरण्यकार–(स०पु०) सुनार, हिरण्यकेश–(सं०पुं०) विष्णु ; हिरण्यगर्भ–(स०पु०) ब्रह्मा, वह ज्योतिर्मय अण्ड जिसमे से ब्रह्मा तथा सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति हुई थी, सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा, हिरण्यचक्र–(स०पु०) वह रथ जिसकी पहिया सोने की बनी हो, हिरण्यज–(सं० वि०) सोने का बना हुआ, हिरण्यदा–(सं० वि०) पृथ्वी, हिरण्यनाभ–(सं०पु०) मैनाक पर्वत, हिरण्यपति–(स०पु०) शिव महादेव, हिरण्यपुर–(स० नपु०) असुरो के एक नगर का नाम ;
हिरण्यपुष्पी–(स० स्त्री०) करियारी नामक बिषैला पौधा; हिरण्यबाहु–(स०पुं०) शिव, महादेव; एक नाग का नाम; हिरण्यविन्दु–(सं०पुं०) अग्नि,आग, हिरण्यरूप–(स० वि०) सुवर्ण के समान रूप वाला, हिरण्यरेतस्–(सं० पु०) अग्नि, आग, सर्व, शिव; हिरण्यलोमन्–(सं०पुं०) भीष्म का एक नाम, हिरण्यवर्म–(स०पुं०) सोने का कवच, हिरण्यवान्–(सं०वि०) जिसके पास सोना हो, हिरण्यवाह–(स०पु०) शिव, महादेव, हिरण्यशृग–(स०वि०) सोने के शिखर या सीघ वाला ।
हिरण्याक्ष–(स०पुं०) एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था, विष्णु ने वराह अवतार लेकर इसको मारा था
हिरण्याश्व–(स० पु०) सोलह महादानो में से एक ।
हिरदय–(हि०पुं०) देखो हृदय ।
हिरदावल–(हि०पु०) घोडे के छाती पर की एक भौरी जो अशुभ मानी जाती है ।
हिरन–(हि०पु०) हरिण, मृग, हिरन हो जाना–वेगसे भाग जाना, हिरनखुरी–(हि०स्त्री०) एक प्रकार का बरसाती पौधा
हिरनाकुस–(हि० पुं०) देखो हिरण्यकशिपु ।
हिरनौटा–(हि० पुं०) हरिनका बच्चा
हिरस–(हि० पुं०) ईर्षा ।
हिराना–(हि०क्रि०) खो जाना, मिटना, दूर होना, हक्का बक्का होना, ध्यान मे न रहना, भूल जाना, मवेशियो को खाद की गोबर के लियेखेतो मे बाधने की क्रिया ।
हिहरावल(हि०पु०) देखो हरावल ।
हिरौंजी–(हि०स्त्री०) देखो हिरमजी ।
हिरौल–(हि०पु०) देखो हरावल ।
हिलदा–(हि०पु०) मोटा ताजा मनुष्य ।
हिलकी–(हि०स्त्री०) हिचकी, सुसकी ।
हिलगोर, हिलकोरा–(हि०पु०) तरंग, लहर; हिलकोरना–(हि० स्त्री०) पानी को हिलाकर लहरें उटाना ।
हिलग–(हि०स्त्री०) संबध, लगाव, प्रेम, हेलमेल ।
हिलगत–(हि०स्त्री०) आदत, टेव; हिलगना–(हि० क्रि०) अटकना, लगना, हिलमिल जाना, परचना, पास मे आना, सटना, हिलगाना–(हि० क्रि०) अटकना, फँसाना, परचाना ।
हिलना–(हि० क्रि०) अपने स्थान से टलना, चलायमान होना, डोलना, सरकना, ढीला होना, कँपना, थरथराना,प्रवेश करना,घुसना, झूमना, लहराना, स्थिर न रहना, उद्योग करना हिलना मिलना–परचना ।
हिचमुची–(स०स्त्री०) एक प्रकारका साग
हिलसा–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की काँटेदार चिपटी मछली ।
हिलाना–(हि० क्रि०) स्थान से उठाना, टालना, चलायमान करना, डुलाना, झुलाना, कँपाना, अनुरक्त करना, परचाना, प्रवेश कराना, घुसाना, पैठाना ।
हिलाल–(हि०पु०) दुईज का चन्द्रमा ।
हिलोर, हिलोरा–(हि०पुं०) हवा के वेग से जल का उठना और गिरना, तरग, लहर ।
हिलरना–(हि०क्रि०) जलको इस प्रकार हिलाना कि लहरें उठें, इधर उधर हिलाना, डुलाना,लहराना; हिलोल–(हि०पुं०) देखो हिलोर ।
हिल्लोल–(सं० पु०) हिलोरा, लहर, आनन्दकी तरग, एक रागका नाम ।
हिल्लोलन–(स०पुं०) लहराना,झूलना ।
हिवँ–(हि० पु०) हिम, पाला ।
हिवँर, हिवाँर–(हि० पुं०) पाला ।
हिसका–(हि०पु०) ईर्ष्या, डाह, स्पर्धा, देखकर किसी बातकी इच्छा करना ।
हिसाबचोर–(हि० पु०) वह जो हिसाब किताब लिखने मे चोरी करता हो ।
हिसाब बही–(हि० स्त्री०) वह पुस्तक जिसमें लेन देन का ब्योरा लिखा जाता हो ।
हिसिषा–(हि०स्त्री०) ईर्ष्या, स्पर्धा, बराबरी करने का भाव ।
हिहि–(स० अव्य०) हँसने का शब्द ।
हिहिनाना–(हि० क्रि०) घोडे का हिनहिनाना ।
हींग–(हि० स्त्री०) एक छोटे पौधे का जमाया हुआ गोंद या दूध जो मसालों में व्यवहार किया जाता है; इसमें बड़ी तीव्र गन्ध होती है ।
हींगडा–(हि० पुं०) घटिया हीग ।
हींछा–(हि० स्त्री०) इच्छा ।
हींठी–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की जोक
हींडना–(हि० क्रि०) पछताना ।
हींस–(हि० स्त्री०) घोडे या गदहे के बोलने का शब्द, रेकना, हिनहिनाहट, हीसना–(हि० क्रि०) हिनहिनाना, रेकना ।
हींहीं–(सं० स्त्री०) हँसने का शब्द ।
ही–(स० अव्य०) वह शब्द जो प्रभाव डालने के लिये अथवा स्वीकृति, परिमिति, निश्चय, अल्पता, शून्यता आदि सूचित करने के लिए प्रयोग किया जाता है, (पुं०) दुःख, विषाद, शोक, (हि० क्रि०) हो होना ।
हीअ–(हि० पुं०) देखो हिय, हृदय ।
हीक–(हि० स्त्री०) हिचकी, हलकी गन्ध जो अच्छी नही जान पड़ती ।
हीचना–(हि० क्रि०) देखो हिचकना ।
हीछना–(हि०क्रि०) इच्छा करना ।
हीज–(हि० वि०) आलसी, मट्ठर ।
हीठना–(हि० क्रि०) पास मे जाना, समीप होना, पहुँचाना ।
हीन–(स० वि०) त्यक्त, छोडा हुआ, अल्प, तुच्छ, कम, सुख समृद्धि रहित, दीन, नीच, निष्कपट, बुरा, शून्य, वंचित, ओछा, (पुं०) अप्रमाणिक साक्षी या गवाह, अधम नायक;
हीनकर्मा–(सं० त्रि०) बुरा काम करने वाला, अपना निर्दिष्ट कर्म न करने वाला, हीनकुल–(स० वि०) नीच या बुरे कुल का । हीनक्रम–(स० पु०) काव्य का वह दोष जो उस स्थान पर माना जाता है जहाँ पर जिस क्रम से गुण गिनाये हो उसी क्रम से गुणी न गिनाये गये हो । हीनकुष्ठ–(स० नपुं०) खराब कोढ । हीनचरित–(सं० त्रि०) जिसका आचरण बुरा हो । हीनज–(सं०त्रि०) नीच जाति से उत्पन्न । हीनजाति–(सं० त्रि०) नीच जाति या वर्ण ।
हीनता–(सं० स्त्री०) क्षुद्रता, नीचता ।
हीनत्व–(स०नपुं०) तुच्छता। हीनदग्ध–(सं० वि०) थोडा जला हुआ । हीनपक्ष–(सं० पुं०) दुर्बल अभियोग ।
हीनबल–(सं० त्रि०) शक्तिहीन ।
हीनबाहु–(स० पु०) शिव के एक गण का नाम । हीनबुद्धि–(सं० त्रि०) जड, मूर्ख । हीनमति–(स० त्रि०) बुद्धि शून्य । हीनमूल्य–(सं०पु०) कम दाम।
हीनयान–(सं० नपुं०) बौद्धमतावलम्बियो की एक प्राचीन शाखा जिनके धर्मग्रन्थ पाली भाषा मे है ।
हीनयोग–(सं० त्रि०) योगभ्रष्ट । हीनयोनि–(स० त्रि०) नीच जाति का ।
हीनरस–(सं० पुं०) काव्य का वह दोष जिसमें किसी रस का वर्णन करते हुए उस रस के विरुद्ध दूसरा रस प्रयोग किया जाता है । हीनरात्र–(सं० त्रि०) थोडी रात । हीनरोम–

(सं० वि०) रोमहीन अथवा कम रोवें का। **हीनवर्ण**–(सं० पुं०) नीच जाति या वर्ण। **हीनवाद**–(सं० पुं०) मिथ्या तर्क, झूठी बहस। **हीनवादी**–(सं० त्रि०) विपरीत वर्ण करने वाला **हीनवीर्य**–(सं० वि०) हीनबल। **हीनसख्य**–(सं०नपुं०) नीच के साथ मित्रता
हीनांग–(सं० वि०) खण्डित अंग वाला, जो सर्वाङ्ग पूर्ण न हो, अधूरा।
हीनांगी–(सं० स्त्री०) छोटी च्यूंटी, अङ्गहीना स्त्री।
हीनार्थ–(सं० वि०) अर्थहीन, जिसका कोई अर्थ न हो, विकल, जिसका कार्य सिद्ध न हुआ हो।
हीनोपमा–(सं० स्त्री०) काव्य में वह उपमा जिसमें बड़े उपमेय के लिये छोटा उपमान प्रयोग किया जावे, बड़े की छोटे से उपमा।
हीय, हिया–(हिं० पुं०) हृदय, हिया।
हीर–(सं० पुं०) इन्द्र का वज्र, शिव, मोती की माला, हीरा नामक रत्न, सर्प, सिंह, बिजली, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में अठारह वर्ण होते हैं, एक मात्रिक छन्द का नाम (हिं० पुं०) सार, गूदा, शक्ति, बल, वीर्य, लकड़ी के भीतर का भाग।
हीरक–(सं०पुं०नपुं०) हीरा नामक रत्न
हीरा–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी, च्यूंटी (हिं०पुं०) एक रत्न जो कड़ाई और चमक के लिये प्रसिद्ध है, अति उत्तम वस्तु।
हीराकसीस–(हिं० पुं०) लोहे का वह विकार जो गन्धक के रसायनिक योग से बनता है, यह देखने में कुछ हरापन लिये मटमैले रंग का होता है।
हीरांग–(सं० पुं०) इन्द्र का वज्र।
हीराबोधी–(हिं० स्त्री०) विजयसाल की गोंद। **हीरानखी**–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बारीक धान।
हीरामन–(हिं० पुं०) सुग्गे की एक कल्पित जाति जो सोने के रंग का माना जाता है।
हील–(हिं०पुं०) एक सदा बहार वृक्ष।
हीली–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की लता।
हीही–(हिं०स्त्री०) हीही करके हँसने की क्रिया, तुच्छता पूर्वक हँसना; **हीहीकार**–(सं०पु०) ही ही शब्द।
हुं–(सं० अव्य०)एक तन्त्रोक्त बीजमन्त्र।
हुं–(हिं०अव्य०) स्वीकृति सूचक शब्द, हाँ,
हुंकना–(हिं०क्रि०) देखो हुंकारना।
हुंकार–(हिं०पुं०) ललकार, गरज।
हुंकारना–(हिं०क्रि०)ललकारना,गरजना।
हुंकारी–(हिं०स्त्री०) "हुं" करने की क्रिया, मानना, हामी, एक स्वीकृति सूचक शब्द।
हुंडा भाड़ा–(हिं०पुं०) कर आदि देकर कहीं पर माल पहुचाने का ठीका।
हुंडार–(हिं० पुं०) वृक, भेड़िया।
हुंडावन–(हिं०स्त्री०) वह रकम जो हुंडी लिखते समय बट्टे की तरह काट ली जाती है।
हुंडी–(हिं०स्त्री०) रुपया उधार लेने की वह रीति जिसमें लिखने वाले को १६) का साल भर में २०)का २५) देने पड़ते हैं, निधिपत्र; **हुंडी बही**–(हिं०स्त्री०) वह किताब या बही जिस में सब तरह की हुंडियों की प्रतिलिपी रहती हैं; **हुंडी सकारना**–हुंडी के रुपये का देना स्वीकार करना; **दर्शनी हुंडी**–वह हुंडी जिसको दिखलाते ही रुपया चुका देया होता है
हुंत–(हिं० प्रत्य०) प्राचीन हिन्दी की तृतीया और पंचमी विभक्ति, द्वारा वास्ते, लिये।
हुंवा–(हिं०पुं०)समुद्र की चढती लहर।
हुंहुंकार–(सं०पुं०)हुंशब्द करकेचीत्कार,
हु–(वि०अव्य०) अतिरिक्त, और भी।
हुआना–(वि० क्रि०) सियार की तरह हुँआ हुँआ बोलना।
हुकना–(हिं० पुं०) सोहन चिड़िया (हिं०क्रि०) भलना, चकना, विस्मृत होना।
हुकर पुकर–(हिं०स्त्री०)व्यग्रता,अधीरता घबड़ाहट।
हुकरना–(हिं०क्रि०) देखो हुंकारना।
हुकुम–(हिं०पुं०) आज्ञा।
हुकुर हुकुर–(हिं० स्त्री०) शीघ्रता से साँस चलने की धड़कन।
हुक्कापानी–(हिं०पुं०) परस्पर हुक्का तमाखू पीने का व्यवहार, खाने पीने का सामाजिक व्यवहार; **हुक्का पानी बंद करना**–जात से अलग करना।
हुक्कू–(हिं०पुं०) एक जाति का बन्दर।
हुक्मचील–(हिं०स्त्री०) खजूर की गोंद।
हुंकार–(सं० पुं०) ललकार, गरज, चिल्लाहट।
हुचकी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सुन्दर लता।
हुड़–(सं०पुं०) मेष, मेढ़ा, लाठी।
हुड़कना–(हिं०क्रि०)बच्चे का रो रो कर उस व्यक्ति के लिये व्याकुल होना जिससे वह बहुत हिला मिला हो।
हुड़का–(हिं०पुं०) किसी प्रिय व्यक्ति के अचानक वियोग से होने वाली मानसिक व्यथा; **हुड़काना**–(हिं०क्रि०) अधिक भयभीत और दुःखी करना, ललचाना।
हुड़दंगा–(हिं० पुं०) उपद्रव।
हुडुक–(हिं० पुं०) एक प्रकार का छोटा ढोल।
हुड़क्क–(सं० पुं०) मतवाला मनुष्य, अगंला, बैवड़ा, लोहबन्दा।
हुडुम्ब–(सं०पु०) भूना हुआ चिवड़ा।
हुण्ड–(सं०पुं०) व्याघ्र, बाघ, सूअर, राक्षस, जड़ बुद्धि, मूर्ख।
हुण्डन–(सं० नपुं०) शिव के एक गण का नाम।
हुण्डा–(हिं० पुं०) वह धन जो किसी जाति में वर पक्ष वाले कन्या के पिता को व्याह के लिये देते हैं।
हुत–(सं०वि०) हवन किया हुआ, अग्नि में डाला हुआ (पुं०) हवन की सामग्री, शिव; **हुतभक्ष**–(सं० पुं०) अग्नि; **हुतभुक्**–(सं० पुं०) विष्णु, शिव, अग्नि; **हुतभुक्प्रिया**–(सं०स्त्री०) अग्नि की भार्या, स्वाहा; **हुतवह**–(सं० पुं०) अग्नि, आग; **हुतशेष**–(सं०पुं०) हवन करने से बची हुई सामग्री।
हुताग्नि–(सं०पुं०) अग्निहोत्री।
हुता–(हिं०क्रि०) प्राचीन अवधी हिन्दी में "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप।
हुताश–(सं०पुं०) अग्नि, आग, भय, डर, तीन की संख्या, चीता का वृक्ष।
हुताशन–(सं० पुं०) अग्नि, आग;
हुताशपुत्र–(सं०पुं०) अग्निपुत्र,केतु।
हुति–(सं० स्त्री०) हवन; (हिं० अव्य०) ओर से।
हुतियन–(हिं०पु०) सेमल का वृक्ष।
हुते–(हिं०अव्यय०) ओरसे, द्वारा।
हुतो–(हिं० क्रि०) "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप, था।
हुदकाना–(हिं० क्रि०) उभाडना, उसकाना।
हुदना–(हिं०क्रि०) स्तब्ध होना, रुकना।
हुदरना–(हिं०क्रि०) रस्सी पर लटकाना, टांगना।
हुन–(हिं०पुं०) सुवर्ण मुद्रा, सोना; **हुन बरसना**–धन की अधिकता होना।
हुनना–(हिं०क्रि०) हवन करना, आहुति देना।
हुन्न–(हिं०पुं०) देखो हुन।
हुब–(अ०पुं०) अनुराग, टेड, उत्साह
हुमकना–(हिं० क्रि०) उछलना, कूदना, पैरों से बल लगाना या धक्का पहुँचाना, दुमकना, दवाने का प्रयत्न करना।
हुमगना–(हिं०क्रि०) देखो हुमकना।
हुम्मा–(हिं०पुं०) लहरों का उठना।
हुरदंग–(हिं०पुं०) देखो हुरदंगा।
हुरहूर–(हिं०पुं०) देखो हुलहुल।
हुरहुरिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का अंकुश।
हुरुट्टक–(सं०पुं०) हाथी का अंकुश।
हुरुमयी–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का नाच।
हुल–(सं० पुं०) एक प्रकार का दो धारा छुरा।
हुलकना–(हिं०क्रि०) वमन करना।
हुलकी–(हिं०स्त्री०) वमन, हैजे का रोग।
हुलना–(हिं०क्रि०) लाठी से ठेलना।
हुलसना–(हिं०क्रि०) आनन्द से फूलना, उभड़ना, बढ़ना; **हुलसाना**–(हिं०क्रि०) हर्ष की उमंग उत्पन्न करना।
हुलसी–(हिं० स्त्री०) आनन्द, हुलास, कुछ लोगों के अनुसार तुलसीदास की माता का नाम।
हुलहुल–(हिं० सं०) एक प्रकार का बरसाती पौधा।
हुलहुला–(हिं० पुं०) अद्भुत बात, उपद्रव।
हुला–(हिं०पुं०)लाठी की नोंक या छोर
हुलाना–(हिं०क्रि) लाठी से ठेलना।
हुलाल–(हिं०स्त्री०) तरंग, लहर।
हुलास–(हिं० पुं०) आनन्द की उमंग, उत्साह, (स्त्री०) सुंघनी; **हुलासदानी**–(हिं०स्त्री०) सुंघनी रखने की डिबिया।
हुलासी–(हिं०वि) उत्साही, आनन्दी।
हुशु–(सं०पुं०) भेड़ा।
हुलूक–(हिं०पुं०) एक जाति का बन्दर।
हुलया–(हिं० स्त्री०) नाव का डूबने के पहले डगमगाना।
हुल्ल–(सं०पुं०) एक प्रकार का ताल।
हुल्लड़–(हिं०पुं०) उपद्रव, ऊधम, दंगा, हलचल, आन्दोलन।
हुल्लास–(हिं०पुं०) एक प्रकार काछन्द।
हुश–(हिं० अव्य०) अनुचित बात बोलने पर रोकने के लिये यह शब्द कहा जाता है; **हुश्कारना**–(हिं०क्रि०) कुत्ते को हुश् हुश् करके उसकाना।
हुसियार–(हिं०वि०) चतुर।
हुसैनी कान्हड़ा–(हिं०पु०) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
हुस्यार–(हिं०वि०) चतुर।
हुहव–(सं०नपुं०) एक नरक का नाम।
हुहु–(सं०पुं०) एक गन्धर्व का नाम।
हू–(सं०अव्य०)अहंकार, अवज्ञा,शोक।
हूं–(हिं०शव्य०)स्वीकार सूचक शब्द, 'है' का उत्तम पुरुष एक वचन का रूप।
हूंकना–(हिं०क्रि०)गाय का धीरे धीरे बोलना, सिसक कर रोना, किसी बात को याद करके रोना, वीरों का ललकारना।
हूंठा–(हिं०पुं०) साढ़े तीन का पहाड़ा।
हूंड़ा–(हिं०स्त्री०) खेतों की सिचाई में किसानों का परस्पर सहायता देना।
हूंस–(हिं०स्त्री०) ईर्ष्या, डाह, टोक, कोस, फटकार।
हूंसना–(हिं० क्रि०) दृष्टि लगाना, ईर्ष्या से जलना, फटकारना,कोसना।
हूक–(हिं०स्त्री०) हृदय की पीड़ा, दर्द, खटका; **हूकना**–(हिं० क्रि०) पीड़ा होना, पीड़ा से चौंक उठना।
हूचक–(हिं०पुं०) युद्ध, लड़ाई।
हूटना–(हिं० क्रि०) हटना, टलना, पीठ फेरना।
हूठा–(हिं०पुं०) भद्दी या गँवारू चेष्टा, ठेंगा, किसी को चिढ़ाने के लिये अगूंठा दिखलाना।
हूड़–(हिं०वि०) असावधान, उजड्ड, अनाड़ी हठी, जिद्दी।
हूड़ा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बांस।
हूण–(सं० पुं०) एक प्राचीन असभ्य जाति जो चौथी शताब्दि में एशिया तथा युरोप के सभ्य देशों में आक्रमण करके फैली थी।
हूत–(सं०वि०) बुलाया हुआ।
हून–(सं०पुं०) मद्रास प्रान्त में प्रचलित एक सोने की मुद्रा जो तौल

में पचास ग्रेन होती है ।
हूनना–(हिं०क्रि०) आग में डालना ।
हूनिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की तिब्बती भेंड़ ।
हूरना–(हिं०क्रि०) चुभाना, गड़ाना ।
हूरव–(सं० पुं०) शृगाल, सियार ।
हूराहूरी–(हिं० स्त्री०) एक त्योहार जो दीवाली के तीसरे दिन मनाया जाता है ।
हूल–(हिं० स्त्री०) लासा लगा हुआ चिड़िया फँसाने का बाँस, शूल, भाले डंडे छूरे आदि की नोक से भोंकने की क्रिया (स्त्री०) कोलाहल, आनन्द का शब्द, ललकार, आनन्द ।
हूलना–(हिं० क्रि०) लाठी भाले आदि की नोक को ठेलना या धँसाना, गोंदना, शूल उत्पन्न करना ।
हूला–(हिं० पुं०) शस्त्र आदि से हूलने की क्रिया ।
हूश–(हिं०वि०) अशिष्ट, असभ्य, गँवार ।
हूह–(हिं०स्त्री०) युद्धनाद, कोलाहल ।
हूहू–(सं० पुं०) एक प्रकार के गन्धर्व ।
हूहू–(हिं० पुं०) अग्नि के जलने का शब्द धाँय, धाँय ।
हृच्छय–(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव ।
हृच्छूल–(सं० नपुं०) हृदय का शूल रोग; हृच्छोक–(सं०पुं०) हृदय का रोग; हृच्छोष–(सं० पुं०) हृदय के भीतर की सूजन ।
हृत्–(सं०स्त्री०) हृदय, वक्षःस्थल ।
हृत–(सं० वि०) हरण किया हुआ, लिया हुआ ।
हृति–(सं०स्त्री०) हरण, नाश, लूट ।
हृत्कम्प–(सं० पुं०) हृदय का कम्प, अत्यन्त भय, जी दहलना; हृत्ताप–(सं० पुं०) हृदय का उत्ताप; हृत्पिण्ड–(सं०पुं०)हृदय का कोष; हृत्पीडन–(सं० नपुं०) छाती की पीड़ा; हृत्पीडा–(सं० स्त्री०) हृदय की पीड़ा; हृत्पुण्डरीक–(सं० नपुं०) हृदय रूपी कमल; हृत्प्रतिष्ठ–(सं० वि०) हृदय स्थित; हृत्पुष्कर–(सं० नपुं०) हृदय रूपी पद्म; हृत्प्रिय–(सं० पुं०) हृदय का प्रिय ।
हृद्–(सं० नपुं०) हृदय, मन ।
हृदय–(सं० नपुं०) वक्षःस्थल, चेतना स्थान, अन्तःकरण, मन, विवेक, बुद्धि, अन्तरात्मा, किसी वस्तु का सार भाग, सारांश, तत्व, गूढ़ रहस्य, अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, प्राणाधार; हृदयग्रन्थि–(सं०पुं०)हृदय का बन्धन; हृदयग्रह–(सं०पुं०) हृदय फड़कने का रोग; हृदयग्राह–(सं० पुं०) मनोहर, सुन्दर; हृदयग्राही–(सं० वि०) मन को लुभाने वाला, रुचिकर; हृदयंगम–(सं०नपुं०) मन में बैठा हुआ, उपयुक्त, मनोहर, सुन्दर; हृदय चौर–(सं० पुं०) मन को मोहने वाला; हृदजय–(सं० त्रि०) अन्तःकरण से उत्पन्न; हृदयज्ञ–(सं० त्रि०) मन के भाव को जानने वाला; हृदय दाही–(सं० वि०) हृदय पीड़क; हृदय निकेत–(सं० पुं०) मनसिज, कामदेव; हृदय प्रमाथी–(सं० वि०) मन को मोहने वाला; हृदय प्रिय–(सं०वि०) अत्यन्त प्यारा; हृदय वल्लभ–(सं० पुं०) प्रियतम, प्रेमपात्र;
हृदयवान्–(हिं० वि०) प्रेमी, रसिक; हृदय विदारक–(सं० वि०) अत्यन्त शोक करुणा अथवा दया उत्पन्न करने वाला; हृदय वृत्ति–(सं० स्त्री०) अन्तःकरण की वृत्ति; हृदय वेधी–(सं०वि०) मन को अत्यन्त मोहित करने वाला, बहुत बुरा लगने वाला। हृदय व्याधि–(सं०पुं०)हृदय का रोग। हृदय शोक–(सं० नपुं०) हृदय का कष्ट या शोक ।
हृदयस्थ–(सं०वि०) हृदय में रहने वाला हृदयस्थान–(सं० नपुं०) वक्षःस्थल । हृदयस्पर्शी–(सं०वि०) हृदय पर प्रभाव डालने वाला, मन में दया उत्पन्न करने वाला । हृदय हारी–(सं०वि०) मन मोहने वाला, जी को लुभाने वाला
हृदयालु–(सं०वि०) सहृदय, सुशील ।
हृदयेश–(सं०पुं०) भर्ता, स्वामी, प्रेमपात्र
हृदयेश्वर–(सं०पुं०) पति, स्वामी ।
हृदयेशा–(सं०स्त्री०) भार्या, पत्नी ।
हृदयोन्मादिनी–(सं० वि०) हृदय को उन्मत्त करने वाली ।
हृदि–(सं०नपुं०) हृदय (क्रि०वि०) हृदय में; हृदिस्पृश–(सं० वि०) सुन्दर, मनोहर ।
हृद्ग–(सं०वि०)हृदय में जाने वाला । हृद्गत–(सं०वि०) आन्तरिक, मन का, चित्तपर फैला हुआ, रुचिकर, प्रिय । हृद्ग्रह(सं०पुं०) हृदय की पीड़ा ।
हृद्दाह–(सं०पुं०)कलेजे की जलन ।
हृद्य–(सं०पुं०) जीरा, दालचीनी, कैथ, दही, महुवे की शराब (वि०)हृदय का, भीतरी, हृदय को अच्छा लगने वाला, सुन्दर, सुहावना । हृद्य गन्ध–(सं०नपुं०) सफ़ेद जीरा, बेल का पेड़ । हृद्य-गन्धा–(सं०स्त्री०) अजमोदा । हृद्यता–(सं०स्त्री०) सद्भाव, प्रेम ।
हृद्यांशु–(सं०पुं०) चन्द्रमा ।
हृद्या–(सं० स्त्री०) सलई का पेड़, पान की लता, जीरा, एक प्रकार का गुलाब, जटामासी ।
हृद्रुज–(सं०स्त्री०) हृदय की पीड़ा ।
हृद्रोग–(सं०पुं०) हृदय का रोग ।
हृद्बुध–(सं०पुं०)विशेष रूप से जानकार
हृन्मोह–(सं०पुं०) हृदय का मोह ।
हृल्लास–(सं०पुं०)हिक्का, रोग, हिचकी
हृल्लेख–(सं० नपुं०) ज्ञान, तर्क ।
हृल्लेखा–(सं०स्त्री०) उत्सुकता, व्याकुलता
हृषि–(सं०स्त्री०) आनन्द, हर्ष, कान्ति ।
हृषित–(सं० वि०) विस्मृत, पुलकित, प्रणत ।
हृषयीक–(सं०नपुं०) विषय ग्राहक इन्द्रियाँ
हृषीकनाथ–(सं० पुं०) विष्णु ।
हृषीकेश–(सं० पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण, पूस का महीना, हरिद्वार के पास का एक तीर्थ स्थान ।
हृषीवत्–(सं० वि०) हर्षयुक्त, प्रसन्न ।
हृष्ट–(सं०वि०) हर्षित, आनन्द युक्त, पुलकित, विस्मित । हृष्टपुष्ट–(पुं०वि०) मोटा ताजा । हृष्टमानस–(सं०त्रि०) प्रसन्न चित्त । हृष्टरोमन्–(सं०त्रि०) रोमाञ्चित, पुलकित; हृष्टि–(सं०स्त्री०) हर्ष, प्रसन्नता, गर्व से फूलना ।
हृष्यका–(सं०स्त्री०) संगीत में एक प्रकार की मूर्छना ।
हे–(सं० क्रि०) संबोधन का शब्द जो पुकारने में नाम लेने के पहले बोला जाता है ।
हेंहें–(हिं० पुं०) धीरे धीरे हँसने का शब्द, हीनता सूचक शब्द, गिड़गिड़ाने की आवाज ।
हेंगा–(हिं०पुं०) वह चौडा पाटा जिससे जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर की जाती है । हेंगी–(हिं०स्त्री०) छोटा हेंगा
हेकड़–(हिं० वि०) हृष्टपुष्ट, उजड्ड, अक्खड़, प्रचण्ड, प्रबल, तौल में पूरा
हेकड़ी–(हिं० स्त्री०) प्रचण्डता, उग्रता, अक्खड़पन, बलात्कार ।
हेठ–(हिं०पुं०) बाधा, पीड़ा ।
हेठा–(हिं० वि०) तुच्छ, नीचा, घटकर;
हेठापन–तुच्छतापन, नीचता ।
हेठी–(हिं०स्त्री०) मानहानि, अप्रतिष्ठा ।
हेडस–(सं०नपुं०) क्रोध, रोष ।
हेड़ा–(हिं०पुं०) मांस ।
हेड़ी–(हिं०स्त्री०) चौपायों का समूह जिसको बनजारे बेंचने के लिये लेकर चलते हैं (पुं०) आखेटी ।
हेत–(हिं०पुं०) देखो हेतु, कारण ।
हेति–(सं०स्त्री०) अस्त्र, आग की लपट, वज्र, शिखा, धनुष की टँकार, तीव्र, यन्त्र, अंकुर, अँखुवा ।
हेतिमत्–(सं०त्रि०) अस्त्र युक्त ।
हेतु–(सं०पुं०) प्रयोजन, कारण, न्याय के अनुसार व्यापक ज्ञान, उद्देश्य, अभिप्राय, तर्क, उत्पन्न करने वाला व्यक्ति अथवा वस्तु, लगाव, अनुराग, वह अर्थालंकार जिसमे कारण ही कार्य कहा जाता है ।
हेतुक–(सं०पुं०) कारण संबंधी ।
हेतुमान्–(हिं०वि०) जिसका कोई हेतु या कारण हो । हेतुरूपक–(सं०नपुं०) वह अलकार जिसमें हेतु द्वारा गाम्भीर्य आदि दरसाया जाता है ।
हेतुवाद–(सं० पुं०) तर्क, विद्या, नास्तिकता, कुतर्क । हेतुवादी–(सं० त्रि०) तर्क करने वाला, नास्तिक ।
हेतुविद्या, हेतुशास्त्र–(सं०स्त्री०)तर्कशास्त्र
हेतुहेतुमद्भाव–(सं० पुं०) कार्य और कारण का सम्बन्ध । हेतुहेतुमद्भूत-काल–(सं० पुं०) व्याकरण में भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो बातों का होना कहा जाता है जिसमें पहली दूसरे पर निर्भर हो यथा–यदि तुम जल्दी गये होते तो तुमको गाड़ी मिल गई होती ।
हेतूत्प्रेक्षा–(सं० स्त्री०) वह उत्प्रेक्षा अलंकार जहाँ हेतु द्वारा उत्प्रेक्षा होती है; हेतूपमा–(सं० स्त्री०) वह उपमा अलकार जिसमें हेतु द्वारा उपमा दी जाती है ।
हेत्वन्तर–(सं० नपुं०) हेतु कथन ।
हेत्वपह्नुति–(सं० स्त्री०) वह अपह्नुति अलकार जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाता है ।
हेत्वाभास–(सं० पुं०) हेतुदोष, जो यथार्थ में हेतु नहीं हैं परन्तु फिर भी हेतु की तरह प्रतीत होता है, झूठा हेतु या कारण ।
हेम–(सं० नपुं०) सुवर्ण, सोना, एक माशे की तौल, बुद्ध का एक नाम, बदामी रंग का घोड़ा, सोने का टुकड़ा, हिम, पाला; हेमक–(सं० नपुं०) सुवर्ण युक्त; हेमकन्दल–(सं० पुं०) प्रवाल, मूंगा; हेमकर–(सं०नपुं०) शिव, सूर्य; हमकर्ता–(सं० पुं०) सुनार; हेमकान्ति–(सं० स्त्री०) हल्दी, आमाहल्दी; हेमकान्ति–(सं० स्त्री०) सोने के समान कान्ति वाला;-
हेमकार–(सं० पुं०) सुनार; हेमकूट–(सं० पुं०) हिमालय के उत्तर का एक पर्वत; हेमकेली–(सं०पुं०) अग्नि, आग; हेमकेश–(सं०पुं०) शिव महादेव; हेमगर्भ–(सं० वि०) जिसके बीच में सुवर्ण हो, उत्तर दिशा का एक पर्वत; हेमगिरि–(सं०पुं०)सुमेरुपर्वत ।
हेमघ्न–(सं० पुं०) सीसक, सीसा नामक धातु; हेमघ्नी–(सं० स्त्री०) हरिद्रा, हलदी ।
हेमचन्द्र–(सं० पुं०) एक प्रसिद्ध जैन आचार्य का नाम ।
हेम चूर्ण–(सं०नपुं०) सोने की बुकनी ।
हेमज–(सं०पुं०) बङ्ग, रांगा; हेमज्वाल–(सं० पुं०) अग्नि; हेमतरु–(सं० पुं०) धतूरा; हेमतार–(सं० नपुं०) तुत्थ, तूतिया; हेमतुला–(सं० स्त्री०) सुवर्ण का तुला दान; हेमदीन र–(सं० पुं०) सोने की मुद्रा; हेमदुग्ध–गूलर; हेमधन्वा–(सं० पुं०) ग्यारहवें मनु के एक पुत्र का नाम; हेमधान्यक–(सं० पुं०) तिल का पौधा; हेमनाभि–(सं० पुं०) वह रथ जिसका धुरा सोने का हो; हेमनेत्र–(सं०पुं०) यक्ष ।
हेमन्त–(सं० पुं०) अगहन और पूस के महीने ; हेमन्तनाथ–(सं० पुं०) कपित्थ, कैथ ।
हेमपर्वत–(सं० पुं०) सुमेरु, पर्वत ।
हेमपुष्प–(सं० नपुं०) जवापुष्प, नागकेशर, अमलतास, चम्पा का फूल; हेमपुष्पी–(सं० स्त्री०) इन्द्रवारुणी, अमलतास ।
हेमप्रभ–(सं० वि०) सोने के समान, प्रभा युक्त; हेमप्रभा–(सं० स्त्री०) विद्याधरी ।

हेमसय-(सं० त्रि०) सुवर्ण निर्मित, सोने का बना हुआ।
हेममाली-(सं० पुं०) एक राक्षस जो खर का सेनापति था।
हेममित्र-(सं० नपुं०) फिटकिरी।
हेमल-(सं० पुं०) कृकलास, गिरगिट।
हेमलता-(सं० स्त्री०) सोमलता, ब्राह्मी शाक।
हेमबल-(सं० नपुं०) मुक्ता, मोती।
हेमशंख-(सं० पुं०) विष्णु।
हेमसुता-(सं० स्त्री०) पार्वती, दुर्गा।
हेमा-(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, मजीठ।
हेमांग-(सं० पुं०) गरुड़, विष्णु चम्पक, वृक्ष, सुवर्ण मय शरीर; हेमांगद-(सं० पुं०) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।
हेमाचल-(सं० पुं०) सुमेरु पर्वत।
हेमाद्रि-(सं० पुं०) सुमेरु पर्वत।
हेमाम्बुज-(सं० नपुं०) सुवर्ण, पद्म।
हेमाल-(सं० पुं०) एक राग का नाम।
हेम्ना-(सं० स्त्री०) एक संकीर्ण राग का नाम।
हेय-(सं० वि०) त्याज्य, छोड़ने योग्य, निकृष्ट, बुरा।
हेर-(सं० वि०) किरीट, हल्दी (हिं० स्त्री०) ढूढ़; हेरना (हिं० क्रि०) खोजना; जाँच पड़ताल करना, हेरना फेरना-इधर उधर करना, अदल बदल करना; हेरफेर-(हिं० पुं०) चक्कर, घुमाव, बातों का आडम्बर, अन्तर, उलट पुलट, कुटिल युक्ति, दाँव पेंच।
हेरम्ब-(सं० पुं०) गणेश, भैंसा, धीरोद्धत नायक; हेरम्ब जननी-(सं० स्त्री०) पार्वती।
हेरवा-हिं० पुं०) खोज, अन्वेषण।
हेरवाना-(हिं० क्रि०) ढुढ़वाना।
हेराना-(हिं० क्रि०) अभाव होना, खोजाना, नष्ट होना, लुप्त हो जाना, मन्द पड़ना, अपनी सुधबुध खो देना, लीन होना, तन्मय होना, देखो हेरवाना।
हेराफेरी-हिं० स्त्री०) अदल बदल, इधर उधर होना या करना।
हेरिक-(सं० पुं०) भेद लेने वाला दूत।
हेरियाना-(हिं० क्रि०) जहाज के अगले पाखकीरस्सियों को तानकर बाँधना।
हेरी-(हिं० स्त्री०) पुकार; हेरी देना-पुकारना।
हेरुक-(सं० पुं०) बुद्धदेव, गणेश।
हेल-(हिं० पुं०) घनिष्ठता, मेलजोल, कीचड़, मैला, घृणा।
हेलन-(सं० पुं०) अवज्ञा करना, अपराध, क्रीड़ा करना, अवनति नमन।
हेलना-(हिं० क्रि०) क्रीड़ा करना, विनोद करना, हँसी उड़ाना, ध्यान न देना, प्रवेश करना, पैठना, तैरना, तुच्छ समझना, अवज्ञा करना।
हेलमेल-(हिं० पु०) मेलजोल, मित्रता, घनिष्ट सम्बन्ध, परिचय, संगसाथ।
हेलया-(सं० अव्य०) खेलमें, सहज में।
हेला-(सं० स्त्री०) स्त्रियों की मनोहर चेष्टा, अवज्ञा, तिरस्कार, प्रेमकी क्रीड़ा, चाँदनी, क्रीड़ा, खेल। (हिं०पुं०) पुकार, चिल्लाहट, आक्रमण, चढ़ाई, ठेलने का काम, खेप, बारी, मैला उठाने का काम. (हिं० पु०) मेहतर।
हेलन-(हिं०पुं०) डांडे को नाव पर रखना।
हेलि-(सं०पुं०)सूर्य, अवज्ञा, आलिंगन।
हेलितव्य-(सं०वि०)अवज्ञा करने योग्य।
हेलिन-(हिं०स्त्री०) डोमिन।
हेली-(हिं०स्त्री०) सहेली, सखी।
हेलुवा-(हिं०पुं०) पानी में खड़े होकर एक दूसरे पर पानीका छींटा फेकना
हेष-(सं०नपुं०) घोड़े का हिनहिनाना।
हेहे-(सं०अव्य०)सम्बोधन सूचक शब्द।
हैवंत-(हिं०पुं०) देखो हेमन्त।
हैं-(हिं० अव्य०) एक आश्चर्य सूचक शब्द असम्मति सूचक शब्द; (क्रि०) "होना" क्रिया के वर्तमान रूप "है" का बहुबचन।
हैंस-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का छोटा पौधा।
हैं-(हिं०क्रि०) "होना" क्रिया के वर्तमान काल का एक वचन का रूप।
हैकड़-(हिं०वि०) देखो हेकड़।
हैकल-(हिं०स्त्री०) घोड़े के गले में पहरने का एक गहना, गले में पहरने की एक प्रकार की माला, हुमेल।
हैजम-(हिं०स्त्री०) खड्ग,तलवार।
हैटा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का अंगूर।
हैतुक-(सं०वि०) जिसका कोई हेतु हो, निर्भर, अवलम्बित, (पुं०)सन्देहकर्ता, नास्तिक, तार्किक, कुतर्की।
हैन-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास।
हैबर-(हिं० पुं०) अच्छा घोड़ा।
हैम-(सं० नपुं०) प्रातःकाल के ओस का पानी; (पुं०) शिव, हिमालय, ओस, पाला, (वि०) सुवर्णमय, सोने का,सुनहले रंग का,पाले का, जाड़ेका
हैमन-(सं०वि०) हेमन्त ऋतु में होने वाला, सोने का। हैमन्त-(सं० वि०) हेमन्त ऋतु सम्बन्धी।
हैमवत-(सं० नपुं०) हिमालय संबंधी, हिमालय का, हिमालय का निवासी
हैमवती-(सं०स्त्री०)पार्वती, उमा, हर्रे, गंगा, हल्दी, थूहर, खिरनी।
हैमा-(सं०स्त्री०) पीली चमेली।
हैमी-(सं० स्त्री०) केतकी, (वि०) सोने की बनी हुई।
हैरण्य-(सं० वि०) हिरण्य संबंधी, सोने का।
हैरम्ब-(सं०वि०) गणेश संबंधी, (पुं०) गणेश का उपासक।
हैहय-(सं० पुं०) सहस्रार्जुन, पश्चिम, दिशा का एक पर्वत, एक क्षत्रिय वंश का नाम। हैहयराज,हैहयाधिराज-(सं० पुं०) सहस्रार्जुन।
हैहै-(हिं०अव्य०) हाय।
हों-(हिं० क्रि०) 'होना' क्रिया का सम्भाव्य काल का बहुवचन का रूप।
होंठ-(हिं० पुं०) ओष्ठ, ओंठ; होंठ-चबाना-क्रोध दिखलाना। होंठल-(हिं०वि०) मोटे मोटे ओष्ठ वाला।
होंठी-(हिं०स्त्री०) किनारा, धार,छोर टुकड़ा।
हों-(सं० पुं०) पुकारने का शब्द, विस्मय, (हिं०क्रि०) "होना" क्रिया का सम्भाव्य काल का तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप, है, था।
होई-(हिं०स्त्री०) दीवाली के आठ दिन पहले होने वाला एक त्योहार जिसमें स्त्रियां सन्तान के क्षेम कुशल के लिये व्रत करती हैं।
होगल-(सं०पु०) एक प्रकार की नरकट।
होजन-(हिं० पुं०) कपड़ों में बनाया जाने वाला एक प्रकार का किनारा
होड़-(हिं०स्त्री०) स्पर्धा, बराबर होने का प्रयत्न बराबरी, हठ।
होड़ा बादी, होड़ा होड़ी-(हिं० स्त्री०) चढ़ा ऊपरी, दूसरे की बराबरी करने का प्रयत्न, लागडाँट।
होत-(हिं०स्त्री०) सामर्थ्य, सम्पन्नता, वित्त।
होतब-(हिं०पुं०) होनहार, होनेवाला।
होतव्य-हिं०पुं०) भवितव्य, होनहार।
होतव्यता-(हिं० स्त्री०) भवितव्यता, होनहार।
होता-(हिं० पुं०) यज्ञादि में आहुति देने वाला, पुरोहित, यजमान (वि०) यज्ञकर्ता।
होत्र-(सं०नपुं०) हवि, होम। होत्र वहन-(सं०पुं०) अग्नि।
होत्री-(हिं० पुं०) देखो होता।
होनहार-(हिं० वि०) भावी, जो होने वाला हो, अच्छे लक्षणों का, जिसमें उन्नति के लक्षण हों (पुं०) भवितव्यता।
होना-(हिं०क्रि०) अस्तित्व रखना,उपस्थित रहना, एक रूप से दूसरे रूप में आना, भुगतना, घटित किया जाना, बनाया जाना, कोई संयोग आ पड़ना, कोई काम निकलना, हानि पहुंचना; कहीं का हो रहना कही पर जाकर।
टिक जाना; कहीं से होते हुए-किसी मार्ग से जाते हुए; हो आना-किसी से भेंट करके लौट आना; हो जाना-पूर्ण होना।
होनी-(हिं०स्त्री०) उत्पत्ति, होने वाली घटना, वृत्तान्त, हाल, हो सकने वाली बात, भवितव्यता।
होबर-(हिं०पुं०)एक प्रकार की चिड़िया
होम-(सं०पुं०) आहुति देने का कर्म किसी देवता को उद्देश्य से अग्नि में तिल जव आदि डालना, यज्ञ; होम कर देना-भस्म करना, नष्ट कर देना। होमकाष्ठी-(सं०स्त्री०) यज्ञ की अग्नि सुलगाने की धौकनी। होम कुण्ड-(हिं०पुं०) वह कुन्ड या गड्ढा जिससे हवन किया जाता है। होम तुरंग-(सं०पुं०) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। होमदुह-(सं० पुं०) होम के लिये दूध दुहने वाला; होमधेनु-(सं०स्त्री०) वह गाय जिसके घी से हवन होता हैं। होमना-(हिं०क्रि०) हवन करना, छोड़ देना नष्ट करना; होमाग्नि-(सं०पुं०) यज्ञ की अग्नि।
होमीय-(सं०वि०) होम सम्बन्धी।
होर-(हिं०वि०) ठहरा हुआ, रुका हुआ।
होरमा हिं०पुं०) एक प्रकार की घास।
होरसा-(हिं० पुं०) पत्थर की गोल चिकनी चौकी जिसपर चन्दन रगड़ा जाता हैं अथवा रोटी बनाई जाती है चौका।
होरहा-(हिं० पुं०) चनेका हरा दाना।
होरा-(सं०स्त्री०) एक राशि या लग्न का आधा भाग, दिन रात का चौबीसवां भाग, अढाई घड़ी का समय, जन्म कुण्डली, चोटी।
होरिल-(हिं०पुं०) नवजात बालक।
होरिहार-(हिं०पुं०) होली खेलने वाला
होरी-(हिं० स्त्री०) वह बड़ी नाव जो जहाज पर के माल को उतारने चढ़ाने के काम में आती है; देखो होली।
होल-(हिं०,पुं०) एक प्रकार की चरी जो चौपायों और घोड़ों को खिलाई जाती है।
होलक-(हिं०पुं०) आग पर भूनी हुई हरे चने मटर आदि की फलियाँ।
होला-(सं० स्त्री०) होली का त्योहार, (पुं०) सिक्ख लोगों की होली, आग में भूनी हुई हरे चने मटर आदि की फली, चने का हरा दाना।
होलाक-(सं० पुं०) आग की गरमी पहुँचा कर पसीना लाने की विधि।
होलाका-(सं०स्त्री०) बसन्तोत्सव, होली का त्योहार, फाल्गुन मास की पूर्णमासी।
होलाष्टक-(सं०पुं०) होली के त्योहार के पहले के आठ दिन जिनमें विवाहादि कृत्य वर्जित हैं।
होलिका-(सं०स्त्री०) होली का त्योहार, लकड़ी घास फूस आदि का ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है, एक राक्षसी का नाम।
होली-(हिं० स्त्री०) हिन्दुओं का एक त्योहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है इसमें लोग रंग और कुंकुम डालते हैं; होली खेलना-एक दूसरे के ऊपर रंग फेंकना, या अबीर लगाना, होली में गाये. जाने वाली गीत;
होल्दना-(हिं०क्रि०) धान के खेत में से घास पात हटानेके लिये हल चलाना।
होस-(हिं०पुं०) चेतना।

ह्रो ह्रो–(अव्य०,वि०)सम्बोधन का शब्द।
हौं–(हि० सर्व०) बृजभाषा मे "मैं" के लिये प्रयोग होता है, (क्रि०) हूँ।
हौंकना–(हि० क्रि०) आग सुलगाना, धौंकना, हाफना, गरजना।
हौंस–(हि०स्त्री०) देखो हौस, उमग।
हौं–(हि०अव्य०) स्वीकृति सूचक शब्द, हाँ, "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप, था।
हौआ–(हि०पुं०) लडको को डराने के लिये एक भयानक प्राणी का नाम, हौवा।
हौका–(हि०पु०) प्रबल लोभ या तृष्णा भुक्खड़पन, खाने की बड़ी लालच।
हौतभुज–(सं०पु०) नक्षत्र वर्ग।
हौताशन–(स० वि०) अग्नि सम्बन्धी।
हौतुक–(स०वि०) होता सम्बन्धी।
हौत्र–(स० पुं०) होता का भाव या कम।
हौद–(हि०पुं०) कुण्ड, छोटा जलाशय, मिट्टी का चौडे मुह का बडा पात्र, नाँद।
हौरा–(हि०पुं०) हल्ला, कोलाहल
होली–(हिं०स्त्री०) मदिरा उतारने तथा बेचने का स्थान।
हौले–(हिं०क्रि०वि०) मन्द गति से, धीरे धीरे से, हलके से।
हौस–(हि०स्त्री०)चाह,इच्छा,अभिलाषा, कामना, उमग, उत्साह, लालसा प्रबल इच्छा।
ह्यस्–(स०अव्य०) गत दिन, कल।
ह्यस्तन–(सं०वि०) कल का।
ह्या–(हि०अव्य०) यहाँ, इस स्थान पर
ह्यू–(हि०पु०) देखो ह्यियो।
ह्रद–(स०पु०) बडा तालाब या झील, वह स्थान जो चारो ओर भूमि से घिराहो, सरोवर,तालाब,मेढा,किरण।
ह्रदग्रह–(स०पु०)कुम्भीर नामक जलजन्तु
ह्रदनी–(स०स्त्री०) नदी, बिजली।
ह्रसित–(सं० वि०) छोटा किया हुआ, घटा हुआ।
ह्रस्व–(सं०वि०)छोटे परिमाण का, नाटा, छोटे आकार का, कम, थोडा,नीचा, तुच्छ, (स०नपुं०) एक प्रकार का साग, हीराकसीस, व्याकरण मे वे स्वर जो बहुत खीच कर नही बोले जाते, **ह्रस्वक**–(स० पु०) सुपारी का वृक्ष; **ह्रस्वकर्ण**–(स०पुं०) राक्षस, **ह्रस्वता**–(स०स्त्री०) अल्पता, लघुता, छोटाई, **ह्रस्वदा**–(सं० स्त्री०) सलई का पेड़, **ह्रस्व पर्ण**–(स०पु०) पाकर का वृक्ष, **ह्रस्वपर्व**–(सं०पु०) काला गन्ना, **ह्रस्वफल**–(स० पु०) खजूर या छुहारा, **ह्रस्वमूला**–(स० स्त्री०) ऊटकटारा।
ह्रस्वा–(स०स्त्री०) वनमूग, गुलसकरी।
ह्रस्वाग–(स०वि०) नाटा, ठेंगना।
ह्राद–(स०पुं०) शब्द, ध्वनि, मेघ की गर्जना, (वि०) गरजने वाला।
ह्रादिनी–(स०स्त्री०)विद्युत् बिजली,नदी
ह्रास–(सं०पु०) शब्द, क्षीणता, कमी, घटी, शक्ति का कम होना।
ह्रासन–(सं०नपुं०) शब्द, घटी।
ह्री–(सं०स्त्री०) लज्जा, यक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म को व्याही थी।
ह्रीक–(स० पु०) नेवला।
ह्रीका–(स०स्त्री०) त्रास, डर, लज्जा।
ह्रीण–(स०वि०) लज्जित,
ह्रीत–(स०वि०) लजाया हुआ।
ह्रीति–(स०स्त्री०) लज्जा, शर्म।
ह्रीमत्–(सं०वि०) लज्जा युक्त,
ह्रीमान्–(हि०वि०) लज्जाशील,
ह्रीमूढ–(स० वि०) लज्जा से दबा हुआ।
ह्रीवेर–(सं० नपु०) एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य, सुगन्ध वाला।
ह्लु त्–(स०स्त्री०) हिंमा करने वाला।
ह्लेषाण–(स०नपु०) गमन, गति।
ह्लाद–(स० पु०) आनन्द, हिरण्यकश्यपु के एक पुत्र का नाम।
ह्लादक–(सं०वि०) प्रसन्न करने वाला, आनन्द देने वाला।
ह्लादन–(सं०नपुं०) आह्लाद, प्रसन्नता (पु०) महादेव, शिव।
ह्लादिका–(स० स्त्री०) आनन्द देने वाली।
ह्लादिनी–(स० स्त्री०) ईश्वर की एक शक्ति का नाम, बिजली, वज्र, एक नदी का नाम।
ह्लादुक–(सं०वि०) प्रसन्न,
ह्लेषा–(सं०स्त्री०) घोडे की हिनहिनाहट
ह्वलन–(सं०पु०) इधर उधर झुकना, थरथराहट।
ह्वान–(स०नपु०) आह्वान, बुलावा।
ह्वा–(हि० अव्य०) वहा, उस स्थान पर।

अनुक्रमणिका

जिसमे अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की आदि परदेशी भाषा के वे शब्द दिये गये है जो अब हिन्दी के राष्ट्र भाषा हो जाने पर प्रचार से हट गये है, इनके पर्यायवाची हिन्दी और संस्कृत शब्द दिये है।

इसमे सांकेतिक अक्षर जो प्रयुक्त किये है वे निम्नलिखित हैं:-

अं०-अंग्रेजी; अ०-अरबी, तु०-तुर्की, पुर्त०-पुर्तगाल भाषा।

अ

अइना-(फा०पु०) दर्पण।
अगुश्त-(फा०पु०) अंगुली, **अगुश्तनुमाई**-(फा०स्त्री०) अपयश, दुर्नाम, **अगुश्तरी**-(फा० स्त्री०) अगुली मे पहिरने की अगूठी; **अगुश्ताना**-(फा०पु०) अंगुलित्राण।
अजाम-(फा०पु०) परिणाम, पूर्ति।
अजुमन-(फा० पु०) समाज, सभा, मण्डली।
अदर-(फा०क्रि०वि०) भीतर, मे।
अदरूनी-(फा०वि०) अन्त. स्थिति, भीतरी।
अन्दाज-(फा०पु०) अनुमान, अटकल, **अन्दाजन**-(फा०क्रि०वि०) प्राय।
अन्देशा-(फा०पु०) सन्देह, सशय, चिन्ता।
अकद-(फा०पु०) प्रतिज्ञा, **अकदन**-(फा०क्रि०वि०) प्रतिज्ञा करते हुए, **अकदबन्दी**-(अ०स्त्री०) प्रतिज्ञापत्र।
अकबाल-(फा०पु०) पराक्रम, प्रताप।
अकसर-(अ०वि०) प्राय बहुधा।
अकसीर-(अ०स्त्री०) रसायन।
अकाउन्ट-(अ०पु०) हिसाब किताब, **अकान्ट्बुक**-(अ०पु०) हिसाब किताब की बही, **अकाउण्टेन्ट**-(अ० पु०) मुनीब, हिसाब किताब करने वाला।
अकीक-(अ०पु०) एक प्रकार का रगीन कडा बहुमूल्य पत्थर।
अक्टोबर-(अ०पु०) अंग्रेजी वर्ष का दसवा महीना।
अक्ल-(अ०स्त्री०) बुद्धिमानी, **अक्लमन्द**-(वि०) बुद्धिमान, **अक्लमन्दी**-(स्त्री०) बुद्धिमानी, चतुराई।
अक्स-(फा०पु०) प्रतिबिम्ब, परछाई, छाया।
अखनी-(फा०स्त्री०) मानका रस।
अखबार-(फा०पु०) समाचार पत्र।
अखीर-(फा०पु) समाप्ति, अन्त।
अख्तावंर-(फा०पु०) जन्म का नपुसक घोडा।
अख्तियार-(फा० पु०) प्रभुत्व, **अख्तियार**।
अगरच-(फा०अव्य०) यद्यपि।
अगस्त (आगस्ट्)-(अं०पु०) अंग्रेजी वर्ष का आठवा मास।
अजनबी-(फा० वि०) अपरिचित, अज्ञात।
अजब-(फा०वि०) विचित्र, अदभुत।
अजमत-(अ०पु०) चमत्कार, प्रताप।
अजमाइश (आजमाइश)-(फा०स्त्री०) परीक्षा परख, **अजमाना (आजमाना)**- परीक्षा करना, जाच करना।
अजमूदा (आजमूदा)-(फा० वि०) परीक्षित, परखा हुआ।
अजहद-(फा०वि०) अत्यन्त, अपरिमित
अजाब-(अ०पु०) पाप, दण्ड, प्रायश्चित्त
अजायब-(अ० पु०) आश्चर्यजनक पदार्थ, **अजायबखाना, अजायबघर**-(अ०पु०) आश्चर्यजनक पदार्थो का सग्रह भवन।
अजीज-(अ० वि०) प्रिय मित्र या सम्बन्धी।
अजीब-(अ०वि०) विलक्षण, अद्भुत।
अजूबा-(अ०वि०) विलक्षण।
अटरनी-(अ०पु०) विशेष कार्य के लिये नियुक्त प्रतिनिधि।
अटलस-(अ०पु०) भौगोलिक मानचित्र
अड्रेस-(अ०पु०) अभिनन्दन पत्र, पता ठिकाना।
अता-(अ०पु०) अनुग्रह, कृपा।
अताई-(अ०वि०) धूर्त, अशिष्ट, निपुण, मूर्ख।
अतालीक-(अ०पु०) अध्यापक, शिक्षक
अदना-(अ०वि०) क्षुद्र तुच्छ, साधारण
अदब-(अ०पु०) शिष्टाचार, आदर, नियम।
अदमपैरवी-(अ०स्त्री०) न्यायालय मे समयपर की अभियोगी उचित कार्यवाही न होना।
अदमसबूत-(अ०पु०) ऐसी स्थिति मे प्रमाण का अभाव, **अदमहाजरी**-(अ०स्त्री०) न्यायालय मे समय पर अभियोगी की अनुपस्थिति।
अदल-(अ०पु०) न्याय, निर्णय।
अदा-(अ०स्त्री०) हावभाव, प्रकार ढंग
अदालत-(अ० स्त्री०) न्यायालय, -खफीफा जहां पर छोटे धन आदि के अभियोग निर्णय किये जाते हैं; -फौजदारी-जहा दण्डविधान के अभियोगो का निर्णय होता है, -दीवानी-जहाँ सम्पत्ति विषयक अभियोगो का निर्णय होता है, -माल-जहां पर राज्य कर के संबंध के अभियोगो का निर्णय होता है।
अदावत-(अ०स्त्री०) शत्रुता, बैर।
अनकरीब-(अ०क्रि०वि०) प्रायःलगभग
अनार-(फा०पु०) एक वृक्ष और इसका फल दाडिम, एक प्रकार की आतिशबाजी या फुलझरी।
अनारदाना-(फा०पु०) खट्टे अनार (दाडिम) का दाना।
अनीसून-(फा०पु०) सौफ।
अन्दार-(फा० वि०) भितरी ओर, भीतर।
अन्दरसा-(हि०पु०) एक प्रकार की मिठाई
अन्दरी-(फा०वि०) भीतरी, अन्दरूनी
अन्दरूनी-(फा०वि०) भीतरी।
अन्दाज-(फा०पु०) अनुमान, नापजोख, अटकल, चेष्टा, ढग, **अन्दाजन्**-(फा०क्रि०वि०) लगभग, अन्दाज से,
अन्दाजनपट्टी-(फा०स्त्री०) खेत के उपज की कूत; **अन्दाजा**-(फा०पु०) देखो अन्दाज।
अन्देशा-(फा० पु०) सन्देह, चिन्ता, सशय, हानि, भय, आगा पीछा, खटका।
अन्दोह-(फा०पु०) दुख, शोक, व्यग्रता।
अपील-(अ०स्त्री०) प्रार्थना, निवेदन, नीची न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध ऊँची न्यायालय मे दुबारा विचार के लिये निवेदन; **अपीलाण्ट**-(अ०पु०) अपील करनेवाला।
अप्रेन्टिस्-(अ०पु०) काम सीखने वाला मनुष्य।
अप्रेल-(अ०पु०) अंग्रेजी वर्ष का चौथा महीना जिसमे ३० दिन होते है
अप्रैलफूल-अप्रेल मास की पहिली तिथि जिस दिन युरोपीय लोग परस्पर हँसी दिल्लगी करते है।
अफगान-(अ०पु०) अफगानिस्तान देश का निवासी, काबुली।
अफजल-(फा०वि०) अत्युत्तम।
अफजन्-(अं०पु०) बढ़ती, अधिकता
अफताब-देखो आफताब।
अफताबा-देखो आफताबा, **अफताबी**-देखो आफताबी।
अफ्यून्-(फा०पु०) अहिफेन, अफीम, **अफ्यूनी**-(फा०वि०) अफीम खानेवाला, अफीमची।
अफरातफरी-(हि०स्त्री०) व्यतिक्रम, शीघ्रता, घबडाहट, गडबड़ी, जल्दी।
अफ्रीका-भूमण्डल के प्रधान महाद्वीपो मे से एक।
अफरीदी-भारत के उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त के निवासी पठान जाति के लोग।
अफवा-देखो अफवाह।
अफवाह-(फा० स्त्री०) जनश्रुति, असत्यवार्ता, गप, लोगो की कही हुई बात, उडती खबर।
अफशा-(फा०पु०) प्रकाश, रोशनी।
अफसर-(अ०पु०) प्रधान शासक, अधिकारी, बड़ा कर्मचारी, **अफसरी**-(हिं०स्त्री०) अधिकारी का कार्य, शासन, अधिकारी।
अफसाना-(फा०पु०) किस्सा कहानी, प्रबन्ध।
अफसून-(फा०पु०) जादू टोना, मत्रजत्र
अफसोस-(फा०पु०) दुख, पछतावा, शोक, पश्चात्ताप।
अफीडेविट्-(अ०पु०) शपथपत्र।
अबखरा-(अ०पु०) वाष्प, भाफ।
अबखोरा-(हि०) देखो आबखोरा।
अब्जर्वेटरी-(अ०स्त्री०) ज्योतिष सम्बन्धी विषयो को देखने का स्थान वेधगृह।
अबतर-(फा०वि०) अधिक, निकृष्ट, बिगडा हुआ, भ्रष्ट, पतित।
अबतरी-(फा०स्त्री०) बुराई, खराबी, दुर्गति, कमी।
अबरस-(फा०पु०) श्वेत हरित वर्ण, सफेदी लिये हरे रग का, इस रग का घोड़ा।
अबरा-(फा०पु०) दोहरे वस्त्र के ऊपर का भाग या पल्ला, उपल्ला, गाँठ जो न खुले, (वि०) दुर्बल, कमजोर।
अबरी-(फा०स्त्री०) एक प्रकार का बादल के समान धारियो का कागज जो जिल्द पर चढ़ाया जाता है, एक प्रकार का पीले रंग का पत्थर, एक प्रकार का लाह के रंग का काम।
अबरू-(फा०स्त्री०) भ्रू, भौंह।
अबबाब-(फा०पु०) अतिरिक्तकर, ऊपरी लगान जो जमीदारो पर लगाती है।
अबा-(अ० पु०) चोगा, लबादा जिसको लोग वस्त्र के ऊपर पहिरते है।
अबाबील-(फा०स्त्री०) काले रग की एक छोटी चिड़िया।
अबीर-(अ०पु०, गुलाल, लाल रग

की बुकनी जिसको हिन्दू लोग होली में अपने मित्रो पर छिडकते है।

अबीरी—(अ०वि०) अबीर के रग का, कुछ लाल।

अब्धास—(अ०पु०) एक फूलने वाला पौधा, गुलाबबाँस, इसकी मोटी जड़ चोबचीनी कहलाती है।

अब्बासी—(अ०स्त्री०) मिश्र देश का कपास।

अब्र—(फा०पु०) बादल, मेघ।

अमन—(फा०पु०) शान्ति, आनन्द, चैन, बचाव, रक्षा।

अमलदारी—(फा०स्त्री०) अधिकार, शासन रुहेलखण्ड की वह कृषिभूमि जिसमे किसान को उपज के अनुसार कर देना पडता है।

अमला—(अ०पु०) राजकर्मचारी, न्यायालय के कर्मचारी; अमला फैला—न्यायालय मे काम करने वाले लोग।

अमानत—(अ०स्त्री०) न्यास, धरोहर, थाती, जो वस्तु किसी के पास कुछ काल के लिये रख दी जावे, अमानतदार—(अ०पु०) वह व्यक्ति जिसके पास धरोहर रक्खी जावे।

अमारी—(अ०स्त्री०) हाथी का हौदा जिसपर छाया के लिये चंदवा बधा रहता है।

अमाल—(अ०पु०)अधिकारी; अमालनामा—कर्मचारी के भूले बुरे काम लिख लेने की पुस्तक।

अमीन—(अ०पु०) न्यायालय का वह अधिकारी जो न्यायालय बाहर के कार्य मे नियुक्त हो।

अमीर—(अ०पु०)धनवान्, अधिकारी, सरदार, उदार।

अमीराना—(अ०वि०) धनवान् के समान, जिससे धनधानी प्रगट हो।

अमीरी—(अ०स्त्री०) ऐश्वर्य, धनाढ्यता, उदारता, (वि०) धनवान् के सदृश।

अम्मामा—(अ०पु०) साफा, मुरेठा।

अमोनिया—(अ०पु०) नवसादर।

अया—(अ०वि०) प्रकाशित,भ्रम रहित।

अयानत—(अ०स्त्री०) सहाय सहारा।

अयाल—(फ़ा०पु०) घोडे या शेर की गर्दन पर का लंबा बाल।

अरक—(अ०पु०) भभके से उतारा हुआ जलीय रस, स्वेद, पसीना, आसव।

अरकगीर—(फा०पु०) घोडे की काठी के नीचे रखने का नमदा।

अरकनाना—(अ०पु०) पुदीना तथा सिरका मिला कर भभके से खीचा हुआ अरक।

अरक बादियान—(अ०पु०) सौफ का अरक।

अरगन—(अ०पु०) भाथी से बजाने वाला बाजा।

अरगवानी—(फा०पु०)लालरग(वि०) लाल रग का।

अरज—(अ०पु०) विनती विनय।

अरजल—(फा०पु०)वह घोडा जिसके पिछले दोनो पैर तथा अगला दहिना पैर श्वेत अथवा एक रग का होता है,यह अशुभ समझा जाता है, पतित मनुष्य, वर्ण सकर, (वि०) नीच।

अरजी—(अ०स्त्री०) प्रार्थना पत्र।

अरबिस्तान—(फा०पु०) अरब देश।

अरबी—(फा०वि०) अरब देश का, (पु०)अरबी भाषा अरब देश का।

अरमनी—(फा०पु०) अरमीनिया देशवासी।

अरमान—(तु०पु०) लालसा।

अरस—(अ०पु०) प्रसाद, छत।

अरसा—(अ०पु०)समय, विलम्ब,देर।

अराक—(अ०पु०) अरब देश का एक प्रान्त, इस देश का घोडा।

अराबा—(अ०पु०) रथ, गाड़ी, बहली तोप लादने की गाडी।

अरारूट—(अ०पु०) देखो आरारोट।

अर्ज—(अ० स्त्री०) प्रार्थना निवेदन, (वस्त्रादि की) चौडाई, आयतन।

अर्जदाश्त—(अ०स्त्री०) निवेदन पत्र।

अर्जी—(अ० स्त्री०) निवेदन पत्र, प्रार्थनापत्र।

अर्जीदावा—(अ०स्त्री०)वह प्रार्थनापत्र जो अभियोग करने मे दी जाती है।

अलकतरा—(अ०पु०)एक गाढा काला पदार्थ जो पत्थरके कोयले को गला कर तैयार किया जाता है।

अलग़रज—(अ०वि०)निश्चिन्त,जिसको चिन्ता न हो।

अलगरजी—(अ०स्त्री०) निर्द्वन्द्वता।

अलगोजा—(अ०पु०) एक प्रकार की छोटी बाँसुरी।

अलपाका—(अ०पु०)दक्षिण अमेरिका का ऊट को तरह का एक चौपाया जिसके ऊन से एक प्रकारका कपड़ा बनता है।

अलफ—(अ० पु०) घोडे का आगे के पैरो को उठाकर पिछले पैर पर खडे होना।

अलफा—(अ०पु०) एक प्रकार का बिना बाँह का लबा कुरता जिसको मुसलमानी फकीर पहिरते है।

अलबत्ता—(अ० अव्य०) नि सन्देह, अवश्य, सचमुच, हाँ, ठीक परन्तु।

अलबम—(अ०स्त्री०) चित्र रखनेकी पुस्तक।

अलम—(अ० पु०) पश्चात्ताप, दुख, पताका, झण्डा।

अलमस्त—(फ़ा० वि०) मदोन्मत्त, मतवाला।

अलमारी—(पोर्तु० अलमोरिया) खड़े बलकी कई खानेकी पल्लेदार सन्दूक।

अलमास—(फा०पु०) हीरक, हीरा।

अलवान्—(अ०पु०) पशमीने या ऊन की बिना किनारे की चादर।

अलहदा• अलाहदा—(अ० वि०)पृथक्, जुदा, दूर, अलग।

अलहैरी—(अ०पु०)अरबी ऊँट जिसकी पीठ पर एक ही कूबड होता है।

अलामत—(अ०स्त्री०) लक्षण, निशान।

अलावा—(अ०क्रि०वि०) अतिरिक्त, सिवाय।

अलील—(अ०वि०) रुग्ण, रोगी।

अलुमिनियम्—(अ० पु०) एक प्रकार का श्वेत बहुत हलका धातु।

अल्ला—(फा०पु०) परमेश्वर, ब्रह्म।

अल्लामा—(अ०स्त्री०) झगडालू स्त्री, कर्कशा।

अवाज—(अ०स्त्री०) देखो आवाज।

अवारजा—(फा०पु०)वह बही जिसमे असामियो की जोत, कर इ० लिखा जाता है।

अव्वल—(अ०वि०)प्रथम, श्रेष्ठ, बडा, सबसे अच्छा (पु०) प्रारम्भ।

अव्वलन्—(अ०क्रि०वि०)सबसे पहिले।

अशरफी—(फा० स्त्री०) सोने का एक सिक्का मोहर।

अशराफ—(अ०वि०) भद्र, भलामानुस।

असबर्ग—(फा०पु०) एक प्रकार की खुरासानी घास जो रेशम रगने के काम मे आती है।

असबाब—(अ०पु०) वस्तु, सामग्री।

असर—(अ०पु०) प्रभाव, गुण।

असल—(अ०वि०)सत्य, श्रेष्ठ, विशुद्ध, बिना मिलावट का,(पु०) मूलधन।

असलियत—(अ०स्त्री)विशुद्धता,सफाई, मूलतत्व जड़, तत्व, कर, निचोड़।

असालत—(अ०स्त्री०) कुलीनता,तत्व, सचाई।

असालतन्—(अ०क्रि०वि०)स्वय अपने आप।

असासा—(अ०पु०) द्रव्य, वस्तु, माल।

असिस्टेन्ट्—(अ०वि०) सहायक।

असेसर—(अ०पु०) दण्ड अभियोग के न्यायाधीशको सहायता देने के लिये चुना हुआ मनुष्य।

असोसियेशन्—(अ० पु०) सघ, सभा, समाज, परिषद्।

अस्तबल—(अ० पु०) घोडसाल, अश्वशाला।

अस्तर—(फा० पु०) दोहरे वस्त्र के नीचे की तह, चन्दन का तेल जिस पर अतर बनते है,भूमि,पृथ्वी,बारीक साडी के नीचे लगानेका वस्त्र, नीचे का रग जिस पर दूसरी तह रग की चढाई जाती है। अस्तरकारी—(फा० स्त्री०)भीत इत्यादि पर रगड़ रगड़ कर चूना पोताना,पलस्तरका काम।

अस्तुरा—(फा० पु०) बाल बनाने का छुरा।

अहकाम—(अ० पु०) आज्ञा, नियम, कायदा।

अहद, अहदनामा—(अ०पु०) प्रतिज्ञा, वादा, एकरार।

अहमक—(अ०वि०)जड,मूर्ख,नासमझ।

अहलकार—(फा०पु०)कर्मचारी,काम करनेवाला।

अहलमद—(फा० पु०) न्यायालय का वह कर्मचारी जो यहाँ के आज्ञापत्र आदि को क्रम से रखता है।

अहवाल—(अ०पु०) वृत्तान्त।

अहसान—(अ०पु०) उपकार, भलाई, अनुग्रह, कृपा।

अहाता—(अ०पु०)घेरा,बाडा, चहारदीवारी।

आ

आइन्दा—(फा०वि०) भविष्य, आने वाला (पु०) भविष्य, काल, (क्री० वि०) भविष्य मे, आगे।

आईन—(फा०पु०) नियम, व्यवस्था,

आईना—(फा० पु०) दर्पण, शीशा, आरसी। आइना होना—स्पष्ट विदित होना, आइने मे मुह देखो—अपनी योग्यता स्वयं जाच लो।

आइनादार—(फा०पु०)हज्जाम,आइना दिखलाने वाला नौकर।

आइनाबन्दी—(फा०स्त्री०)झाड फानूस की सजावट,पत्थर या ईटकी जोडाई।

आइनासाज—(फा०पु०) दर्पण बनाने वाला।

आइनासाजी—(फा०स्त्री०) काँच पर कलई करने का काम, दर्पण बनाना।

आईनी—(फा० वि०) राजनियम के अनुकूल।

आउट्—(अ०वि०)यह शब्द क्रिकेट के खेल मे प्रयोग होता है इसका अर्थ बाहर निकाला हुआ या हारा हुआ है।

आकबत—(फा० स्त्री०) मरने के बाद जाने का स्थान, परलोक।

आकिल—(अ०वि०)बुद्धिमान,अक्लमद।

आखता—(फा०वि०)जिस पशुके अण्डकोश चीरकर निकाल दिये गये हो।

आखिर—(फा०वि०) अन्त्य, पिछला, (अ०पु०) अन्त, छोर, फल, (क्रि० वि०) अन्त ने सबसे पीछे।

आखिरकार—(फा० क्रि० वि०) सबसे पीछे, अन्त मे।

आखिरी—(फा०वि०) अन्तिम, पिछला

आखोर—(फा०पु०)पशुओ के खानेसे बची हुई घास, मल, कूडा कर्कट, निष्प्रयोजन पदार्थ (वि०) निरर्थक, मलिन, गन्दा।

आग़ा—(फा०पु०) काबुली,अफगान।

आग़ाज—(अ०पु०) आरम्भ, शुरू।

आगाह—(फा० वि०) ज्ञानी, जानने वाला। (हि०पु०) भविष्य विषय, (फ़ा०स्त्री०)विज्ञप्ति, जानकारी।

आजमाइश—(फा०स्त्री०)परीक्षा,जाँच।

आजमाना—(फा०क्रि०) परीक्षा करना, परखना।

आजमूदा—(फा०वि०) परिक्षित, जाँचा हुआ।

आजाद—(फा०वि०) जो बंधा न हो, मुक्त, स्वतन्त्र, निश्चिन्त, निर्भय, उद्धत, अक्खड, सफी सम्प्रदाय के मुसलमानी फकीर।

आजादी–(फ़ा० वि०) स्वतन्त्रता, स्वाधीनता।
आजादाना–(फ़ा० वि०) स्वतन्त्र, स्वाधीन।
आजार–(फ़ा०पु०)रोग, कष्ट,दुःख।
अजिज–(अ०वि०)दीन, विनीत,क्षुब्ध, परेशान।
अजिजी–(अ०स्त्री०) नम्रता, दीनता।
आतश–(फा०स्त्री०) अग्नि, आग।
आतशक–(फ़ा० स्त्री०) उपदंश रोग, गर्मी, फिरंग रोग।
आतशखाना–(फ़ा० पु०)अग्नि रखने का स्थान। आतशखोर–(फ़ा०वि०) अग्निभक्षक, आग खाने वाला।
आतशगाह–(फ़ा०) देखो आतशखाना। आतशजन–(फ़ा० वि०) घर में आग लगाने वाला। आतशदान–(फ़ा० पु०) अग्नि रखने का पात्र, अंगीठी। आतशपरस्त–(फ़ा० वि०) अग्निपूजक, अग्नि की पूजा करने वाला, पारसी। आतजबाज–(फ़ा० स्त्री०) आतशबाजी बनाने वाला, हवाईगढ। आतशबाजी–(फा०स्त्री०) बारूद से भरे खिलौनों के चलाने का दृश्य, बारूद से बना हुआ खिलौना, जिसमें से जलाने पर रंग विरंगी चिनगारियाँ निकलती हैं।
आतशी–(फा०वि०)अग्नि सम्बन्धी, अग्नि उत्पन्न करने वाला,जो अग्नि में पड़ने पर न जलता हो।
आदत–(अ०स्त्री०) प्रकृति, स्वभाव, अभ्यास, टेव, चाल।
आदम–(अ० पु०) यहूदियों तथा मुसलमानों के धर्म के अनुसार आदि पुरुष; आदमजाद–(अ०पु०) आदमी की सन्तति, मनुष्य; आदमियत–(अ०स्त्री०)मनुष्यत्व,सभ्यता; आदमी–(अ०पु०) मनुष्य, इन्सान, भत्य, नौकर, पति, स्वामी, आदमी बनना–सभ्यता सीखना।
आदाब–(अ०पु) संयम,नियम,ध्यान, प्रणाम,सलाम (अदब-का बहुवचन)
आदिल–(फ़ा०वि०) न्यायी,
आदी–(अ०वि०)अभ्यस्त,रखने वाला
आनन फानन–(अ०क्रि०वि०) फ़ौरन, अतिशीघ्र,झटपट, बात की बात में।
ऑनर–(अं०पु०)आदर,प्रतिष्ठा;आनरेबल–(अं०वि०)आदरणीय,प्रतिष्ठित; आनरेरी–(अं०वि०)अवैतनिक,बिना लाभ के काम करने वाला।
आफत–(फ़ा०स्त्री०) आपत्ति,विपत्ति, कष्ट, दुःख, अनिष्ट, बुराई; आफत उठाना–विपत्ति सहना, हलचल करना; आफत का परकाला–बहुत दुष्ट व्यक्ति, अत्यन्त निपुण मनुष्य; आफत मचाना–हलचल करना, बपद्रव आरंभ करना।
अफताब–(फ़ा०पु०) आदित्य, सूर्य; आफताब परस्त–सूर्योपासक;आफताब परस्ती–सूर्योपासना; आफताबा–(फ़ा०पु०) हाथ मुंह धोने का मूठदार गड़वा; आफताबी–(फ़ा० वि०) सूर्य संबंधी, वृत्ताकार, गोल (स्त्री०) एक प्रकार की आतिशबाजी, ओसारी, पान के आकार की पंखी जो बारात में निकलती है (वि०) धूप में पकाई हुई।
आफियत–(अ०स्त्री०) क्षेम कुशल, खैरियत
आफिस–(अं०नपु०) कार्यालय।
आब–(फ़ा०पु०)पानी,रत्न की प्रभा, द्युति, चमक, सम्मान; आबकार–(फ़ा०पु०)मद्य बनने वाला,कलवार; आबकारी(फ़ा०स्त्री०) मद्य बनाने का काम, आसव बनाने का स्थान मद्य पर राजकर; आबकारी–(फ़ा० पु०) पानी रखने का पात्र, प्याला, गिलास; आबखोरे भरना–धर्मार्थ दूध या शर्बत पिलाना; आबगीना–(फ़ा०पु०) दर्पण,शीशा; आबगीर–(फ़ा०पु०) जुलाहे का पानी झाड़ने का कूंचा; आबजारी–(फ़ा०पु०) बहता पानी, आँसू; आबजोश–(फ़ा०पु०) पानी में उबाला हुआ मुनक्का; आबताब–(फ़ा०स्त्री०) प्रभा, चमक दमक; आबताबा–(फ़ा०पु०) देखो आफ़ताबा; आबदस्त–(फ़ा०पु०) मल त्याग करने के बाद गुदा को पानी से धोना, गुदा प्रक्षालन का जल; आबदाना–(फा०पु०) अन्न जल, दाना पानी, व्यापार, भाग्य जीविका; आबदार–(फ़ा०वि०) कान्तिमान, चमकीला, (पु०) पानी भरने वाला कहार; आबदारी–(फ़ा०स्त्री०)कान्ति,चमक; आबदीदा–(फ़ा०वि०) नेत्र में आँसू भरे हुए; आबदीदा होना–आंखें डबडबाना।
आबनाय–(फ़ा०पु०) समुद्र, सङ्कट।
आबनूस-(फ़ा०पु०)कोविदार,तेन्दुआ, एक वृक्ष जिसकी लकड़ी काली तथा भारी होती है; आबनूस का कुन्दा–बहुत काले रंग का मनुष्य, हबशी; आबनूसी–(फ़ा०वि०) आबनूस का बना हुआ, काले रंग का।
आबपाशी–(फ़ा०स्त्री०) खेत की सिंचाई का काम।
आबरवाँ–(फ़ा०पु०) पतला, बहुत महीन मलमल।
आबरू–(फ़ा०स्त्री०) आदर, बड़प्पन, प्रतिष्ठा अभिमान, आभास, घमण्ड, मान।
आबरेजी–(फ़ा०स्त्री०)आदर का नाश।
आबला–(फ़ा०पु०) फफोला, छाला, व्रण। आबला फरंग–उपदंश रोग।
आबशोर–(फ़ा०पु०) समुद्र का जल, खारा पानी।
आबहरम–(फ़ा०पु०) आसव, मद्य।
आबहवा–(फ़ा०स्त्री०) जलवायु,हवा पानी; आबहवा बदलना–स्वास्थ्य के लाभ के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना।
आबाद–(फ़ा०वि०) बसा हुआ,जोता हुआ, प्रसन्न, कुशल पूर्वक; आबादकार–(फ़ा०पु०) वह किसान जो जंगल काट कर खेती करता हो; आबादानी–(हिं० स्त्री०) सभ्यता, ऐश्वर्य, प्रकाश, रोशनी; आबादी–(फ़ा०स्त्री०) लोक संख्या, बस्ती, गाँव की भूमि का बसा हुआ भाग।
आबी–(फ़ा०वि०) जल सम्बन्धी,जल से उत्पन्न, जलचर, सींचा हुआ, फीका, नीलवर्ण का, (पु०) सांभर नमक; आबी घोड़ा–करियाद,दर्यायी घोड़ा। आबी बनाना–चमकाना,रंग चढाना।
आमखास–(अ०पु०) महल के भीतर का राजा के बैठने का स्थान।
आमद–(फ़ा०स्त्री०) आगमन,अवाई, आय, (वि०) प्राकृतिक, साधारण, सादा; आमदनी–(फ़ा० स्त्री०) आय, लाभ, दस्तूरी, कर, देशान्तर से लाया हुआ आयात माल, माल आने का काल। आमदरफ्त–(फ़ा० स्त्री०) आवागमन, मार्ग, आय।
आममुख्तार–(फ़ा०पु०)वह कर्मचारी जो स्वामी का अनेक कार्य करता हो
आमादगी–(फ़ा० स्त्री०) साधन, तत्परता। आमादगी दंगा–शान्ति भंग करने का झगड़ा। आमादगी हमला–आक्रमण करने की तैयारी।
आमादा–(फ़ा०वि०) सन्नद्ध, उद्यत, तत्पर,
आमाल–(अ०पु०) कर्म, अनुष्ठान, प्रबंध, उन्मादक शर्बत इत्यादि।
आमालनामा–(अ०पु०)वह रजिस्टर जिसमे नौकरों के कामकाज, चाल चलन आदि का वर्णन लिखा जाता है।
आमिल–(अ०पु०) सम्पादक, काम करने वाला, अधिकारी, आय संग्रह करने वाला, ऐन्द्रजालिक, ओझा, सिद्ध पुरुष, जादूगर।
आमजिश–(फ़ा०स्त्री०)मिश्रण,मिलौनी
आयत–(अ०स्त्री०) क़ुरान का वाक्य
आयद–(अ०वि०) उतरा हुआ,योग्य, आरोपित।
आयमा–(अ० स्त्री०) विना कर की भूमि।
आया–(फ़ा०अव्य०) कोई, जौनसा (पोर्तु०) धाय, बच्चों को दूध पिलाने वाली और खेलाने वाली स्त्री, धाय।
आयन्दा–(फ़ा०वि०) आगामी, आने वाला (क्रि०वि०) भविष्य में।
आरजा–(अ०पु०)रोग, बीमारी।
आरज–(फ़ा०स्त्री०) आशा, अनुराग, प्रेम, आकांक्षा, विनय, आरजू करना–अभिलाषा करना, चाहना, प्रार्थना करना; आरजूमन्द–विनती करने वाला।
आराइश–(अ०स्त्री०) सजावट।
आराजी–(अ० स्त्री) भूमि, खेत, भूमिभाग।
आराम–(फ़ा०पु०) विश्राम, सुख, चैन, सामर्थ्य, उद्धार, छुटकारा, स्वास्थ्य; आराम करना–विश्राम लेना, निद्रा लेना, खाली बैठना, सुख से निर्वाह करना; आराम कुरसी–एक प्रकार की पैर पसार कर लेटने की लंबी कुर्सी; आरामगृह–विश्राम लेने का स्थान; आराम चाहना–सुस्ताने की अभिलाषा करना; आराम देना–शान्ति देना, सन्तोष करना;आराम पहुंचाना–आराम देना; आराम से–सुख से; आराम होना–स्वास्थ्य प्राप्त करना; आरामतलब–सुख चाहने वाला, आलसी, सुस्त।
आरायश–(फ़ा० स्त्री०) अलङ्कार, सजधज।
आरास्ता–(फ़ा०वि०) तैयार,अलंकृत, सजा हुआ; आरास्ता करना–ठीकठाक करना, तैयार करना।
आरिजा–(अ०पु०) वृत्तान्त, मामला
आर्ट–(अं०नपु०) कला, शिल्प,युक्ति, चालाकी।
आर्टस्कूल–वह पाठशाला जिसमें कला कौशल सिखलाया जाता है।
आर्टिकैल–(अं०नपु०) द्रव्य, पदार्थ, चीज,
आर्डर–(अं०नपु०) आदेश, विधान, आज्ञा, अवस्था, स्थिति, आश्रम, माँग का पत्र।
आर्डिनरी–(अं० वि०) सामान्य, अप्रधान।
आलऔलाद–बाल बच्चे, नाती पोते।
आलम–(अ० पु०) लोक, दुनियां, संसार, प्रजा, लोग, अवस्था; आलमगीर–संसार को जीतने वाला।
आलमगब–परलोक; आलम जानी–यह संसार; आलम बाला–वैकुण्ठ; आलम मस्ती–लंपटता।
आलमारी–(अ०स्त्री०) देखो अलमारी
आलाइश– (फ़ा०स्त्री०) मलिनता।
आलिम–(अ० पु०; ब० व०-उलमा) विद्वान पुरुष, पंडित।
आलिमाना–(अ०वि०) ज्ञानवान्, पढ़ा लिखा।
आली–(अ०वि०) श्रेष्ठ,बड़ा, उच्च।
आलीखान्दान–उच्चकुल, आली दिमाग–विशाल बुद्धिवाला।
आलीशान–(अ०वि०) उत्तम, बड़ा, अतिशोभन, भव्य, विशाल, भड़क ला
आलूचा–(फ़ा० पु०) एक प्रकार का बेर।
आलूदा–(फ़ा० वि०) दूषित, गन्दा, मालिन।
आलूबुखारा–(फा० पु०) आलूचे का सुखाया हुआ फल।

आवर्दा–(फा० वि०) आनीत, लाया हुआ (हि० स्त्री०) आयुष्य।
आवाज–(फा०स्त्री०) शब्द, स्वर, तान आह्वान, पुकार, बोली, वाणी, कोलाहल, **आवाज आना**–कर्णगोचर होना, सुन पडना, **आवाज उठाना**–चिल्लाना, **आवाज करना**– शब्द निकालना, पुकारना ; **आवाज का लौटना**–प्रतिध्वनि, गूंज; **आवाज देना**–पुकारना, **आवाज निकालना**–बोलना
आवाज लगाना–पुकारना, **आवाजबैठना**–मुख से स्पष्ट शब्द न निकालना,
आवाज भरभराना–रूक्ष शब्द निकालना
आवाज मे आवाज मिलाना– एक ताल सुर मे गाना; **आवाजा**–(फा०पु०) कोलाहल, शोर, व्यंगोक्ति, ताना, **आवाजा कसना**–व्यंग के शब्द बोलना, ताना मारना।
आवारगी–(फा० स्त्री०) आवारापन, शठता, नीचता।
अवाराज–(अ० पु०) आय व्यय का लेखा।
आवारा–(फा० वि०) इधर उधर भटकता फिरनेवाला, भ्रष्ट चरित, निकम्मा, **आवारा करना**–दुष्टता सिखलाना ; **आवारा फिरना**–व्यर्थ इधर उधर घूमना, **आवारा होना**–भटकते फिरना।
आवारागर्दी–(फ०)आवारगी, बेहयाई
आवेज़ा–(फा० पु०) कुण्डल, बाली, भमिका।
आशन–(फा० पु०, स्त्री०) मित्र, सुहृद, चाहने वाला, वेश्या, प्रेमी, (वि०) परिचित, प्यार करनेवाला।
आशनाई–(फा०स्त्री०) जान पहचान, मित्रता, स्नेह, प्रेम, अनुचित प्रेम।
आशिक–(अ०पु०) आशक्त, कामुक, प्रेम करनेवाला मनुष्य, **आशिक माशूक**–नायक-नायिका, **आशिक-मिजाज**–(फा०पु०)आसक्त, घोसला
आशियां–(फा०पु०)आशय, घोसला।
आशोब–(फा० पु०)नेत्र पीड़ा, आँख की दर्द।
आसमान–(फा०पु०)आकाश, बैकुण्ठ, स्वर्ग, देवलोक, **आसमान के तारे तोड़ना**–कोई असम्भव कार्य करना, **आसमान टूट पड़ना**–एकाएकी किसी विपत्ति का आना; **आसमान ताकना**–आकाश की ओर देखना, **आसमान पर उड़ना**–अहंकार करना, **मन** बाँधना; **आसमान पर चढना**–आत्मश्लाघा करना, **आसमान पर चढाना**–चापलूसी करना, फुसलाना, **आसमान पर थूकना**–अनुचित कार्य करना, **आसमान पर कदम रखना**–अभिमान दिखलाना, **आसमान पर दिमाग होना**–अभिमान मे चूर होना, **आसमान में छेद होना**–अति वृष्टि होना; **आसमान में थेगली लगाना**–असंभव कार्य करने मे प्रवृत्त होना;
आसमान सिर पर उठाना–उपद्रव मचाना, हलचल करना।
आसमानी–(फा० वि०) आकाशीय, आकाश सबंधी, आकाश के रंग का नीला, आकस्मिक, दैवी (स्त्री०) मिश्र देश की कपास, छानी हुई ताड़ी। **आसमानी गजब**–दैवी अनर्थ।
आसमानी तीर–व्यर्थ का काम।
आसाइश–(फा०स्त्री०) सुख, सुविधा।
आसान–(फा० वि०) सरल, सहज, अबाधित, **आसान करना**–सरल बनाना बोझ उतारना।
आसानी–(फा०स्त्री०)साध्यता, सरलता सुविधा, सुगमता।
आसायश–(फा०स्त्री०)देखो आसाइश।
आसार–(स०पुं०) पानी फिरना।
आसूदगी–(फा० स्त्री०) सुख चैन, शान्ति, तृप्ति।
आसूदा–(फा० वि०) सुखी, तृप्त, सन्तुष्ट, स्वतन्त्र, खुश।
आसेब–(फा०पु०) प्रेतबाधा, हानि, भय। **आसेब उतारना**–प्रेतबाधा दूर करना। **आसेब पहुचाना**–चोट लगना।
आस्तीन–(फा०स्त्री०) बाँह को ढाँपने का कपडे का भाग; **आस्तीन का सांप**–गृहशत्रु, घरका भेदिया; **आस्तीन चढाना**–भय दिखलाना, धमकाना।
आहनी–(फा०वि०) लोहे से बना हुआ
आहसर्द–(फा०स्त्री०) ठढी साँस, दुःख के साथ साँस लेना।
आहिस्तगी–(फा० स्त्री०) मन्दता, धीमापन।
आहिस्ता–(फा० वि०) अलसी, (क्रि०वि०) धीरे धीरे, थोड़ा थोड़ा, सुखपूर्वक, आराम से।
आहू–(फा०पु०)हिरण, मृग।

इ

इंजील–(हि० स्त्री०) ईसाइयो का धर्म ग्रन्थ।
इतकाल–(फा०पु०) अन्त समय, मृत्यु
इतखाब–(फा०पु०) साराश।
इकदाम–(अ०पु) अपराधकरनेकीचेष्टा
इकबाल–(अ०पु०) अगीकार, स्वीकृति, भाग्य।
इकबालदावा–आज्ञाकी स्वीकृति, **इकबालमन्द**–भाग्यशाली; **इकबालमन्दी**–सौभाग्य।
इकराम–(अ०पु०) उपहार, पारितोषिक, भेंट, आदर, सम्मान।
इकरार–(अ०पु०) प्रतिज्ञा, स्वीकृति, **इकरार करना**–वचन देना, स्वीकृत होना, **इकरारनामा**–प्रतिज्ञापत्र।
इकरारी–(अ०वि०)सम्मत, मानलेने वाला।
इखराज–(अ०पु०) अपसरण, निकासी,
इखलास–(अ०पु०) विमलता, अनुराग।
इखलास जोड़ना–मित्रता उत्पन्न करना
इख्तियार–(अ०पु०) अधिकार, नियम, रुचि, इच्छा, **इख्तियार अमलमे लाना**–नियम बनाना, **इख्तियार आम**–साधारण अधिकार, **इख्तियार करना**–अवलब पकड़ना, अपने ऊपर लेना।
इख्तिरा–(अ०पु०) अविष्कार, ईजाद।
इख्तिलात–(अ०पु०) मेलजोल, परिचय
इख्तिलाफ–(अ०पु०) विरोध, बिगाड, **इख्तिलाफ रखना**–असम्मत होना, **इख्तिलाफ राय**–मतिभेद।
इख्तिसार–(अ०पु०) सक्षेप, कमी।
इक–(अ०स्त्री०) मसि, रोशनाई, स्याही, **–टेबुल्**–मुद्रज यन्त्रालय मे रोशनाई फैलाने की लोहे की चौकी, **इङ्कमॉन्**–छापेखाने का रोशनाई लगाने वाला, **इक रोलर**–स्याही लगाने का बेलन।
इगलिश्–(अ०वि०) अग्रेजी भाषा, अंग्रेज सम्बन्धी, सिपाही लोग पेंशन और छुट्टी के लिये इस शब्द का प्रयोग करते है।
इगलिस्तान–(हि०पुं०) इङ्गलॉन्ड्, अंग्रेजो के रहने का देश। **इगलिस्तानी**–(हि०वि०) अंगरेजी।
इजमाल–(अ०पु०, वि०)सयुक्ताधिकार समष्टि, मिला हुआ, सक्षेप वर्णन।
इजमाली–(अ० वि०) सयुक्त, साझे का, परिमित।
इजरा–(हि०स्त्री०) परती भूमि।
इजराय–(अ०पु०) प्रचार, व्यवहार, निर्गम, **इजरायडिगरी**–अदालत की डिगरी का अमल दरामद होना।
इजलाफ्–(अ०पु०)नीचलोग ('जुन्फ' का बहुवचन)।
इजलास–(अ०स्त्री०)बैठक, न्यायालय, न्याय करने का स्थान, **इजलास करना**–न्याय करने के लिये बैठना।
इजहार–(अ०पु०) प्रकाशन, निवेदन, साक्षी, गवाही, **इजहार करना**–निवेदन करना।
इजाजत–(अ०स्त्री०) आज्ञा, अनुमति; **इजाजत नामा**–आज्ञापत्र।
इजाफा–(अ०पु०) वृद्धि, बढती।
इजार–(फा०स्त्री०)पायजामा, सुथना
इजारबन्द–(फा०पु०) पायजामा या लहँगे के नेफे मे डालने की डोरी जिससे यह कमर पर कसा जाता है, **इजारबन्द का ढीला**–कामातुर; **इजारबन्द न खुलना**–ब्रह्मचर्य से रहना।
इजारा–(अ०पु०) स्थिर मूल्य पर बेचा हुआ स्वाधिकार, पट्टा, ठेके पर ली हुई भूमि, **इजारा बनना**–होना, **इजारादार**–पट्टेदार, **इजारा देना**–ठेकेदार बनाना।
इज्जत–(अ०स्त्री०) आदर, प्रतिष्ठा, सत्कार, बड़ाई, **इज्जत उतारना**–अपमानित करना, **इज्जत करना**–सत्कार करना, **इज्जत देना**–आदर खोना। **इज्जतदार**–(अ०वि०)सम्मानित, प्रतिष्ठित
इञ्च–(अ०नपु०) एक फुटका बारहवॉं भाग।
इञ्जन–(अ०नपु०)यन्त्र, कल, उपकरण
इञ्जीनियर–(अ०पु०) यन्त्रकार यन्त्र चलानेवाला, यन्त्रकला मे निपुण, सडक, मकान, पुल इत्यादि बनवाने वाला। **इजीनियरिंग**–(अ०नपु०) यन्त्र का व्यापार।
इञ्जील–(यू०स्त्री०)सुसमाचार, ईसाइयो की धर्म पुस्तक।
इटालिक–(अ०पु०) छापेकेतिरछेअक्षर
इन्ट्रेन्स–(अ०नपु०)प्रवेश, द्वार, अंग्रेजी की प्रवेशिका परीक्षा जिसमे उत्तीर्ण होने पर छात्र विश्वविद्यालय में प्रवेश करता है।
इण्डिया–(अ०स्त्री०)भारतवर्ष, हिंदुस्तान
इतमाम–(अ०पु०) पूर्णता पूरापन, प्रबन्ध।
इतमीनान–(अ०पु०)सन्तोष, विश्वास, ढाढस। **इतमीनान करना**–विश्वास मानना, **इतमीनान न करना**–सन्देह रखना, **इतमीनान होना**–सन्तुष्ट होना, **इतमीनानी**–(अ०वि०)विश्वासी एतबारी।
इतलाक–(अ०पु०) प्रार्थना, अनुसन्धान
इताब–(अ०पु०)क्रोध, गुस्सा, निन्दा।
इतायत–(अ०स्त्री०)आधीनता। **इतायत करना**–आज्ञा मानना।
इत्तिफाक–(अ०पु०)समय, संग साथ, एक दिली, सयोग, मेलमिलाप, सम्मति, अवसर, मैत्री, दशा, अवस्था, कार्य, **इत्तेफाक करना**–सम्मत होना, मैत्री करना, मिलजुल कर चलना, **इत्तिफाक रखना**–शान्ति पूर्वक रहना; **इत्तिफाक पड़ना**–अवसर होना, **इत्तिफाक राय**–सम्मति, **इत्तिफाक होना**–राय पडना, मित्र होना।
इत्तिफाकन्–(अ०क्रि०वि०) दैवयोग से, सयोगवश।
इत्तिफाकिया–(अ०क्रि०वि०)सयोगवश
इत्तिफाकी–(अ०वि०) आकस्मिक्।
इत्तिला–(अ०स्त्री०)विज्ञापन, सूचना, चेतावनी, **इत्तिला करना**–सूचना देना, **इत्तिलानामा**–सूचनापत्र।
इत्र–(अ०पु०) गन्धद्रव्य पुष्पसार; **इत्रदान**–अतरदान, **इत्रफरोश**–अतर बेचने वाला।
इद्दत–(अ०स्त्री०) पति के मरने पर स्त्री का दूसरा विवाह करने के लिये चालीस दिन तक ठहरना।
इनकम्–(अ०स्त्री०) आमद आय। **इनकम टेक्स**–आय पर लगाने वाला कर।
इनकलाब–(फा०पु०)क्रान्ति, विप्लव परिवर्तन।
इनकार–(अ०पु०) निषेध मतिभेद, अस्वीकार।
इन्फिकाक–(अ०पु०), उद्धार, छुटकारा, बन्धन को छुड़ाना।
इन फिसाल–(अ०पु०) निर्णय।
इनफ्लुएन्ज़ा–(अ०पु०)प्रबल श्लेष्मा-

रोग ।

इनशा–(अ०स्त्री०)लिपि, लेख,लिखावट।

इन्स्टिट्यूट–(अं०पुं०)नियम,समाज,

इन्स्ट्रूमेन्ट–(अं०पुं०)यन्त्र, हथियार, लेखपत्र ।

इनसाफ–(अ०पुं०)न्याय,धर्म; **इन्साफ़ से**–न्यायपूर्वक ।

इन्स्पेक्टर–(अं०पुं०) निरीक्षक, देख-भाल करने वाला अधिकारी ।

इनसान–(अ०पुं०) मनुष्य ।

इनसानियत–(अ०स्त्री०) मनुष्यता, बुद्धि, भलमनसी ।

इनाम–(अ०पुं०) पुरस्कार, पारितोषिक, भेंट; **इनाम इकराम**–दान दक्षिणा । **इनामदार**–(अ०पुं०)कर न देने वाला भूमि का मालिक ।

इनायत–(अ०स्त्री०) अनुग्रह, कृपा, दया; **इनायत करना**–कृपा दिखलाना । **इनायती**–(अ०वि०) दिया हुआ ।

इन्तिकाल–(अ०पुं०)उत्सरण, हटाव; समर्पण, पहुंच, मृत्यु ।

इन्तिजाम–(अं०पुं०) रचना,सजावट, उपाय, ढंग, प्रबन्ध, कार्यवाही, राजव्यवस्था, विधि ।

इन्तिजार–(अ०पुं०)अपेक्षा,भरोसा ।

इन्तिहा–(अ०स्त्री०)अत्यन्तता, अधिकता ।

इ साफ–(अ०पुं०) न्याय, निर्णय ।

इफरात–(फा०स्त्री०) अधिकता, बहुतायत ।

इबरानी–(अ०वि०) यहूदी. संबंधी (स्त्री०) यहूदियों की भाषा ।

इबलीस–(अ०पुं०)पिशाच, शैतान ।

इबादत–(अ०स्त्री०) पूजा, अर्चना; **इबादतगाह**–पूजा, करने का स्थान, मन्दिर ।

इबारत–(अ०स्त्री०) वाक्य, रचना, भाषा, लेख; **इबारती**–(अ०वि०) लेख सम्बन्धी, जो प्रश्न लिख कर लगाया जाय ।

इबतिदा–(अ०स्त्री०)आरंभ, उत्पत्ति ।

इबतिदायी–(अ०वि०)आद्य, पहिला ।

इमकान्–(अ०पुं०)संभव, बस ।

इमदाद–(अं०स्त्री०) मदद देने का काम, दान ।

इमदादी–(अ०वि०) सहायता प्राप्त ।

इमाम–(अ०पुं०)मुसलमानों के शिया सम्प्रदाय का स्तुति पाठक, मुहम्मद के जामाता अली की उपाधि ।

इमारत–(अ०स्त्री०) विशाल भवन;

इम्तेहान–(अ०पुं०) परीक्षा, जांच, परख ।

इम्ला–(अ०पुं०) लेखन प्रणाली ।

इरशाद–(अ०पुं०)आदेश,हुक्म,इच्छा

इरसाल–(अ०पुं०) आवश्यक चिट्ठी; मासिक व्यय ।

इराकी–(अ०वि०)इराक देश संबंधी

इरादा–(अ०पुं०) अभिप्राय, इच्छा, विचार, अर्थ,मतलब,ठिकाना ।

इर्दगिर्द–(क्रि०वि०)चारों ओर आस पास ।

इर्शाद–(फ़ा०पुं०) आज्ञा, आदेश ।

इलजाम–(अ०पुं०) अपराध, कलंक, दोष, निन्दा, दोषारोपण ।

इलहाम–(अ०पुं०) आकाशवाणी, परमेश्वर की बात ।

इलाका–(अ०पुं०)संपर्क,संबंध,लगाव उद्देश्य, मद, विभाग, राज्य; **इलाकाबन्दी**–गोटें किनारी का काम ।

इलाज–(अ०पुं०) उपाय, निवृत्ति, छुटकारा, चिकित्सा, औषधि ।

इलाही–(अ०पुं०)परमेश्वर; (वि०) ईश्वर संबंधी; **इलाहीगज**–एक प्रकार का गज जो ४१ अंगुल का होता है और मकान नापने के काम में आता है (यह प्राय: पौने चौतीस इञ्च लंबा होता है)

इलेक्ट्रिक–(अं०वि०) विद्युत् संबंधी ।

इल्जाम–(अ० पुं०) देखो इलजाम ।

इलामास–(अ०पुं०) निवेदन, प्रार्थना

इल्तिजा–(अ०स्त्री०) निवेदन ।

इल्म–(अ०पुं०)विद्या, ज्ञान विज्ञान ।

इल्लत–(अ०स्त्री०) दुर्व्यसन, अपराध, दोष, अभियोग, मल, कूड़ा करकट ।

इल्लती–(अ०वि०) दुर्व्यसनी ।

इशरत–(अ०स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति ।

इशारा–(अ०पुं०) संकेत, चिन्ह, निशान, सूक्ष्म आधार ।

इश्क–(अं०पुं०)अनुराग, प्यार, प्रेम, मोहब्बत; **इश्कबाज**–(अ०पुं०) कामुक रसिया; **इश्कबाजी**–कामुकता

इश्तहार–(अ०पुं०) घोषणा, इत्तला, विज्ञापन; **इश्तहारी**–(अ०पुं०) भागा हुआ मनुष्य ।

इश्तयाक–(अ०पुं०)अभिलाषा,चाह ।

इश्तयालक–(अं०स्त्री०)उत्तेजना,बढाव

इसपञ्ज–(अं०पुं०) समुद्र में रहने वाला एक जीव, इसके भीतर चक्र और ऊपर अनेक छेद होते हैं, इसको पानीसोख या मुर्दा बादल भी कहते हैं ।

इस्पिरिट–(अं०पुं०) सुरा ,आसव ।

इस्पेशल–(अं०वि०) असामान्य,असामान्य रेलगाड़ी जो किसी समय किसी विशेष व्यक्ति के लिये चलती है ।

इसबगोल–(फा ०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसमें महीन बीज होते हैं, जो औषधि में प्रयोग होते हैं ।

इसरार–(अ०पुं०) गोपकार्य, छिपाव, प्रेमबाधा, सितार के तरह का एक बाजा ।

इसलाम–(अ०पुं०) मोहम्मद द्वारा प्रचार किया हुआ धर्म मसलमानी धर्म ।

इसलाह–(अ०स्त्री०)सशाधन, सुधार,

इसारत–(अ०स्त्री०)इशारा, संकेत ।

इस्कात–(अ०पुं०) पतन, गिराव; **इस्कातहमल**–गर्भपात ।

इस्तमरार–(अ०पुं०) एकाधिकार, ठहराव; **इस्तमरार दार**–पट्टेदार ।

इस्तमरारी–(अ०वि०) सनातन, न बदलने वाला, नित्य सर्वदा रहनेवाला

इस्तकबाल–(अ०पुं०) भविष्यकाल ।

इस्तकलाल–(अ०पुं०)दृढ़ता,स्थिरता ।

इस्तिञ्जा–(अ०पुं०)पेशाब करने पर मूत्र के बिन्दु को मिट्टी के ढेले से सुखाना ।

इस्तिरजा–(अ०स्त्री०) स्वीकृत ।

इस्तिसना–(अ०पुं०) वर्जन, छूट, नामंजूरी ।

इस्तीफा–(अ०पुं०)उत्सर्ग, त्यागपत्र, नौकरी छोड़ाने का प्रार्थनापत्र ।

इस्तेमाल–(अ०पुं०) अभ्यास, व्यवहार, उपयोग, चाल, कार्य, काम; **इस्तेमाली**–(अ०वि०)व्यवहार किया हुआ, पुराना, साधारण ।

इस्म–(अ०पुं०)अभिधान नाम,संज्ञा ।

इस्मनवीसी–(अ०स्त्री०)नाम लिखने का काम, नामसूची ।

इहतियात–(अ०स्त्री०) सावधानी, चौकसी ।

ई

ईजा–(अ०स्त्री०) आविष्कार, नये पदार्थ का निर्माण ।

ईजाद–(अ०पुं०) स्वीकृति, मंजूरी ।

ईथर–(अ०पुं०) सम्पूर्ण शून्य स्थान में व्याप्त एक द्रव्य विशेष, एक रसायनिक दाहात्मक द्रव्य जो गन्धक और मद्यसार के योग से बनता है ।

ईद–(अ०स्त्री०) मुसलमानों का एक त्योहार जो रमजान महीने के अन्त में पड़ता है ।

ईदुज्जुहा–(अ०स्त्री०)जिलहिज महीने में होने वाला मुसलमानों का एक त्योहार, बकरीद ।

ईदुलफितर–(अ०स्त्री०)शव्वाल महीने में होने वाला एक मुसलमानी उत्सव

ईदगाह–(अ०स्त्री०)वह चबूतरा जिस पर इकट्ठा होकर मुसलमान लोग नेमाज पढ़ते हैं ।

ईफावादा–(अ०पुं०) प्रतिज्ञा का पूरा करना ।

ईमान–(अ०पुं०)धर्म, विश्वास, सत्य, सचाई । **ईमानदार**–(अं० वि०) विश्वासपात्र, सच्चा जो झूठा न हो; **ईमानदारी**–(अ०स्त्री०)सत्यता सचाई ।

ईरान–(फ़ा०पुं०) फारस देश का एक विभाग ।

ईल–(अ०पुं०)एक प्रकार की मछली

ईसवी–(अं०वि०) ईसा से सम्बन्ध रखने वाला; (पुं०) खृष्टीय सम्भवत् जिसका आरम्भ ईसा के जन्मकाल से है ।

ईसा–(अ०पुं०) ईसामसीह, ईसाई धर्म के प्रवर्तक ।

ईसाई–(फ़ा०वि०)ईसूमसीह के धर्म को माननेवाला, क्रिस्तान ।

उ

उकलैद–(फ़ा०) रेखागणित ।

उकाब–(अ०पुं०)बड़ा गृध,गरुण पक्षी

उजबक–(तु०वि०) मूर्ख, गँवार, (पुं०) तातारियों की एक जाति ।

उजर–(हिं०वि०) देखो ऊजड़ ।

उजरत–(अ०पुं०) पारिश्रमिक, काम का दाम, शुल्क, किराया, भाड़ा ।

उजलत–(अ०स्त्री०) शीघ्रता,जल्दी ।

उज्र–(अ०पुं०) आपत्ति, छल, विरुद्ध वचन, बहाना, प्रार्थना, विनय ।

उज्रदार–(अ०पुं०)बहस करने वाला।

उज्रदारी–(अ०स्त्री०) आपत्ति का उल्लेख; विवाद विषय ।

उदूल–(अ०पुं०) शासन का भङ्ग होना, आज्ञा न मानना, **उदूल हुक्मी**–आज्ञा का उल्लंघन ।

उनका–(अ०पुं०) एक कल्पित पक्षी ।

उन्नाब–(अ०पुं०) एक प्रकार का बेर का फल जो हकीमी दवाओं में प्रयोग होता है; **उन्नाबी**–(अं०वि०) उन्नाब के रंग का, कालापन लिये हुए लाल रंग का ।

उफ़–(अ०अव्य०) आह ! ओह !

उफ़क–(अ०पुं०) क्षितिज ।

उफ़तादा–(फ़ा०वि०) परती ।

उमदगी–(अ०स्त्री०) गुण, भलाई, बड़ाई ।

उमदा–(अ०वि०) बढ़िया, उत्कृष्ट, उत्तम ।

उमरा, उमराव–(अ०पुं०) अमीर का बहुवचन, धनी लोग,प्रतिष्ठित लोग, सरदार ।

उम्मत–(अ०स्त्री०) मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय ।

उम्दगी–(फ़ा०स्त्री०)अच्छापन,भलाई,

उम्मीद, उम्मैद–(फ़ा०स्त्री०) आशा, विश्वास, भरोसा ।

उम्मेदवार–(फ़ा० पुं०) आकांक्षी, अवलंबी, आशा करनेबाला, काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से बिना वेतन के किसी स्थान पर काम करने वाला, किसी पद पर नियुक्त होने की आशा से खड़ा होनेवाला ।

उम्मेदवारी–(फ़ा० स्त्री०) आशा, भरोसा, किसी स्थान पर नियुक्त होने की आशा करनेवाला ।

उम्र–(अ०स्त्री०) अवस्था, आयुष्य ।

उर्फ़–(अ०पुं०) उपनाम, पुकारने का नाम, प्यार का नाम ।

उर्स–(अ०पुं०) मुसलमानी पीरों के मृत्यु दिवस पर होने वाला उत्सव ।

उलफ़त–(अ०स्त्री०) मैत्री, प्यार ।

उशबा–(अ०पुं०) एक वृक्ष जिसकी जड़ रक्तशोधक होती है ।

उस्तरा–(फ़ा०पुं०) छूरा ।

उस्ताद–(फ़ा०पुं०) अध्यापक, शिक्षक, (वि०) धूर्त, चालाक, प्रवीण, निपुण, वेश्या का गुरु, जानकार; उस्तादी–(फ़ा०स्त्री०) कला कौशल, चतुराई, निपुणता, धूर्तता; उस्तानी–(फ़ा० स्त्री०) अध्यापिका, गुरुआइन, धूर्त स्त्री, गुरुपत्नी; ठगिन।
उस्तुरा–(फ़ा०पुं०) बाल मूड़ने का छुरा।

ए

एंजिन–(अं०पुं०) देखो इंजन।
एक्जिक्यूटिव्–(अं०वि०) कार्यनिर्वाहक, कार्यक्षम, शासन करनेवाला।
एक्ट–(अं०पुं०) विधि, व्यवस्था।
एकड़–(अं०पुं०) भूमि की एक नाप जो एक बिगहा बारह बिस्वा के लगभग होती है।
एकतरफ़ा–(फ़ा०वि०) एक ओर का, एक पक्ष का, पक्षपात किया हुआ, बगली।
एकपेचा–(फ़ा०वि०) एक प्रकार की पतली पगड़ी।
एकफ़र्दा–(फ़ा० वि०) एकही बार फलने वाला; एकफ़सला–(फ़ा०वि०) देखो एकफ़र्दा।
एकबारगी–(फ़ा०क्रि०वि०) एक ही बार, बिलकुल, अकस्मात्, सम्पूर्ण रूप से, अचानक।
एकबाल–(अं०पुं०) भाग्य, प्रताप, अंगीकार, स्वीकृति।
एकरार–(अ०पुं०) अंगीकार, मंजूरी, प्रतिज्ञा; एकरारनामा–प्रतिज्ञापत्र।
एकरार–(फ़ा०वि०) पूरा, सम्पूर्ण।
एकसां–(फा०वि०) सम, तुल्य समान, बराबर।
एक्सचेन्ज्–(अं०पुं०) व्यापारियों के लेन देन की हाट, फड़।
एक्सपोज्–(अं०पुं०) सन्मुख या निकट रखने का कार्य।
एखनी–(फा०स्त्री०) माँस का रस, शोरबा।
एगानगी–(फ़ा०स्त्री०) ऐक्य, मैत्री।
एगाना–(फ़ा०वि०) मित्र, मेली।
एजेन्ट–(अं०पुं०) प्रतिनिधि, गमाश्ता, कारिन्दा।
एजेन्सी–(अं०स्त्री०) आढ़त, मुनीबी।
एड़–(हिं०स्त्री०) एड़ी; एड़ लगाना–एंड़ी से मारना, उसकाना।
एडिटर–(अं०पुं०) समाचारपत्र का प्रमुख लेखक; एडिटरी–(हिं०स्त्री०) लेखक का कार्य।
एडीकाङ्–(अं० पुं०) सेनापति का सहायक।
एड्रेस–(अं०पुं०) मानपत्र, सिरनामा, पता, ठिकाना।
एतकाद–(अ० पुं०) दृढ़ निश्चय, विश्वास।
एतबार, एतमाद–(अं०पुं०) विश्वास, भरोसा।
एतराज–(अ०पुं०) विरोध, आपत्ति कहासुनी।
एराक–(अ०पुं०) अरब के अन्तर्गत एक प्रदेश जहाँ का घोड़ा बड़ा प्रसिद्ध है।
एराकी–(अ०वि०) एराक देश संबंधी, इस देश का घोड़ा।
एलची–(तु०पुं०) सरकारी संदेश ले जाने वाला राजदूत।
एलची गीरी–(फ़ा०स्त्री०) दूत का कार्य।
एवज–(अ०पुं०) परिवर्तन, प्रतिफल, बदली, प्रतिकार, स्थानापन्न, काम करने वाला। एवजी–(फ़ा० पुं०) स्थानापन्न, दूसरे के स्थान पर काम करने वाला।
एसिड्–(अपुं०) अम्ल, तेज़ाब।
एह–(हिं०सर्व०) एष, यह।
एहतिमाम–(अ०पुं०) प्रबंध, देखभाल
एहतियात–(अ० स्त्री०) सावधानी, दक्षता, चौकसी।
एहसान–(अ०पुं०) कृतज्ञता, उपकार।
एहसानमन्द–(अ०वि०) कृतज्ञ, उपकार मानने वाला।

ऐ

ऐजन–(अ०अव्य०) तथा, वैसाही।
ऐड्मिरल्–(अं० पुं०) नौसेनाका अध्यक्ष; एड्वोकट्–(अं०पुं०) हाई-कोर्टका वकील।
ऐबी–(अ०वि०) दुष्ट, बुरा, खोटा, अंगहीन, काना।
ऐयाम–(अ०पुं०) समय, अवसर।
ऐयार–(अ०पुं०) धूर्त, छली; ऐयारी–(अ०स्त्री०) धूर्तता, छल कपट।
ऐयाश–(अ०वि०) अत्यन्त सुख करने वाला, विषयासक्त, लम्पट।
ऐयाशी–(अ०स्त्री०) विषयासक्ति, लम्पटता।
ऐश–(अ०पुं०) सुख, चैन, आराम, विलास।

ओ

ओफ्–(अं०अव्य०) अरे, हाय, शोक, दुःख, पीड़ा तथा आश्चर्य सूचक अव्यय।
ओलन्दाज–(वि०) हालेण्ड देश संबंधी (पुं०) इस देश का निवासी।
ओवरकोट्–(अं०पुं०) लबादा, चोगा; ओवरसियर–(अं०पुं०) ऊपरी काम देखने वाला अध्यक्ष।
ओहदा–(अ०पुं०) पद, स्थान, बड़ा पद; ओहदेदार–(अ०वि०) पदाधिकारी, ऊंचे अधिकार वाला; ओहदेदारी–(अ०स्त्री०) पदाधिकारी का काम।

औ

औकात–(अ०पुं०) समय, वक्त शक्ति।
औज–(अ०पुं०) सबसे ऊंचा पद।
औज कमाल–(अ०पुं०) एक प्रकार का गाना।
औजार–(अ०पुं०) लोहार, बढ़ई इत्यादि के काम करने का यन्त्र, हथियार।
औरत–(अं०स्त्री०) स्त्री, जोरू।
औलाद–(अ०स्त्री०) सन्तति, सन्तान, नस्ल, वंशपरम्परा।
औलिया–(अ०पुं०) सिद्धजन, दर्वेश, पहुँचा हुआ फ़क़ीर।
औवल–(अ०वि०) प्रथम, पहिला, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ।

कं

कंकरीट–(अं० पुं०) घर बनाने का मसाला जिसमें पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े और चूना मिला होता है।
कंगारू–(अं० पुं०) एक घास खाने वाला चौपाया जिसके पिछले पैर अगले की अपेक्षा बहुत बड़े होते हैं, इसके पेट में एक थैली होती है जिस में वह अपने बच्चे को रख लेता है।
कंटूनमेन्ट्–(अं० पुं०) छावनी; सेना के रहने का स्थान।
कंट्राक्ट्–(अं० पुं०) नियम, ठीका; कनट्राक्टर–ठेकेदार।
कंपोज–(अं० पुं०) छापने के लिये अक्षरों तथा टाइपों को जमाना।
कंपोजिंग–(अं०पुं०) अक्षर या टाइप जमाने का काम। कंपोजिटर–(अं०पुं०) छापने के अक्षर या टाइप जमाने वाला।
कंजर्वेटिव्–(अं०वि०) संरक्षक, स्थिति पालक, पुराने नियम का पालन करने वाला। कंसर्ट्–(अं०पुं०) संगीत मण्डली।

क

कज–(फ़ा०स्त्री०) टेढ़ापन, दोष।
कजक्–(फ़ा०पुं०) हाथी हांकने का अंकुश।
कजा–(अ०स्त्री०) मृत्यु।
कजिया–(अ०पुं०) विवाद, कलह झगड़ा, तकरार।
कज्जाक–(अ०पुं०) डाकू, लुटेरा।
कज्जाकी–(अं०स्त्री०) लुटेरापन।
कट्पीस–(अं०पुं०) वस्त्रका थान में कटा हुआ कपड़ा।
कटर–(अं०पुं०) छोटी नाव, काटने का यन्त्र।
कत–(अ०पुं०) लेखनी के अग्रभाग का तिरछा कटाव।
कतई–(अ०वि०) बिलकुल नहीं।
कता–(अ०पुं०) बध।
कतरा–(अ०पुं०) बिन्दु, बूंद।
कतल–(अ० पुं०) बध, हत्या।
कतलबाज–(अ०पुं०) वधिक, जल्लाद।
कतलआम–(अ०पुं०) सर्वसंहार, मारकाट सर्वसाधारण की हत्या।
कता–(अ०स्त्री०) रूप, बनावट, आकार, ढंग, प्रकार, काटछाँट।
कतार–(अ०स्त्री०) पंक्ति, पाँति, श्रेणी, समूह, ढेर, झुण्ड।
कद–(अ०पुं०) डील डौल, लंबाई, चौड़ाई।
कदम–(अ०पुं०) पैर, फलांग, डग, घोड़े की एक चाल, धूल या कीचड़ मे पड़ा हुआ पैर का चिह्न; कदम उठाना–उन्नति करना, किसी कार्य का आरंभ करना; कदम चूमना–अत्यन्त आदर दिखलाना; कदम छूना–प्रणाम करना; कदम बढाना–तेज़ चलना; कदम रखना–अनुसरण करना
कदमचा–(फ़ा०पुं०) पैर रखने का स्थान। कदमबाज–(अ०पुं०) कदम चलने वाला घोड़ा।
कदर–(अं०स्त्री०) परिमाण, मान, मात्रा, प्रतिष्ठा, बड़ाई, इज्जत।
कदरदान–(फा०वि०) गुण ग्राहक, प्रतिष्ठा करने वाला, जो बड़ाई समझता हो। कदरदानी–(फा०स्त्री०) गुण ग्राहकता।
कदीम–(अ०वि०) प्राचीन, पुराना (हिं०पुं०) लोहे का डंडा जिससे जहाजों में बोझ उठाया जाता है।
कदीमी–(अ०वि०) पुरातन, पुराना, बहुत दिनों से चला आता हुआ।
कदूरत–(अ०स्त्री०) वैमनस्य, अनबन, मनमोटाव।
कद्दावर–(फा०वि०) प्रशस्त शरीर का, बड़े डील डौल का।
कद्दी–(अ० वि०) हठी।
कद्दू–(फ़ा०पुं०) लौकी, घिया; कद्दूकश–लौकी का लच्छा बनाने का यंत्र; कद्दूदाना–एक प्रकार के महीन कीड़े जो उदर से मल के साथ निकलते हैं।
कनवोकेशन्–(अं०पुं०) विश्वविद्यालय का महोत्सव जिसमें उत्तर्ण विद्यार्थियों को उपाधिपत्र दिया जाता है।
कनस्तर–(अं०पुं०) टीन का पीपा जो तेल घी इ० रखने के काम में आता
कनात–(तु०स्त्री०) मोटे कपड़े का पर्दा जिसको घेर कर आड़ की जाती है
कप्–(अं०पुं०) पात्र, प्याला, कटोरा।
कप्तान–(अं०पुं०) पोताध्यक्ष, नायक, अगुआ।
कफ–(अं०पुं०) कमीज़ या कुरते की अस्तीन का अगला भाग जिसमें दोहरी पट्टी और बटन लगे होते हैं (फ़ा०पुं०) फेन, झाग।
कफगीर–(फ़ा०पुं०) करछुल।
कफन–(अ०पुं०) शव लपेटने का वस्त्र।
कफस–(अ०पुं०) पिंजड़ा बन्दीगह दरबा, कटघरा, संकुचित स्थान जिसमें वायु का आवागमन कम रहता है। कफालत–(अ० पुं०) प्रतिभूपत्र।
कफील–(अं०पुं०) प्रतिभू बनने वाला
कबल–(अ०अव्य०) पहिले।
कबा–(अ०पुं०) एक प्रकार का ढीला लंबा पहिरावा जो घुठने तक पहुँचता है।

कबाव–(अ०पुं०)सीकचों में खोंसकर भुना हुआ मांस।
कबाबी–(अ०वि०)कबाव बेचने वाला मनुष्य।
कबाला–(अ०पुं०)वह लिखित पत्र जिसके द्वारा किसी मनुष्य की सम्पत्ति दूसरे के अधिकार में जाती है। कबाला नवीस–कबाला लिखने वाला मोहर्रिर।
कबाहत–(अ०स्त्री०)अभद्रता, कठिनता, अड़चन, दिक्कत।
कबूतर–(फ़ा०पुं०) कपोत, परेवा;
कबूतरखाना–कबूतर रखने का दरबा;
कबूतरबाजी–कबूतर पालने और उड़ने का कार्य का व्यसन।
कबूतरी–(फ़ा० स्त्री०) मादा कबूतर, गाँव की नाचनेवाली रंडी।
कबूल–(अ०पुं०)स्वीकार, अंगीकार, सम्मति,, प्रतिपत्ति, कबूलना–(हिं०क्रि०) स्वीकार करना, मानना।
कबूलियत–(अ० स्त्री०) स्वीकृति सकार, वह पट्टा लेने वाला, पट्टे की स्वीकृति जो पट्टेदार को लिख दे।
कबूली–(फा० स्त्री०) चने की दाल की खिचड़ी।
कब्ज–(अ० पुं०)मलका अवरोध, अधिकार, नियम, पकड़।
कब्जा–(अ० पुं०)अधिकार दखल, चंगुल, दण्ड, दस्ता बेंट, ग्रहण, किवाड़ सन्दूक इत्यादि खोलने बंद करने के लिये लगे हुए धातु के सलाईदार टुकड़े, भुजदण्ड।
कब्जादार–(फा०वि०) कब्जा लगा हुआ,(पुं०) अधिकारी, स्वत्वयुक्त कृषक।
कब्जियत–(अ०स्त्री०)मलका अवरोध
कब्र–(अ० स्त्री०) शव गाड़ने पर, उस पर बनाई हुई समाधि, चैत्य।
कब्रिस्तान–(फ़ा० पुं०) शव गाड़ने का स्थान।
कम-असल–(फा०वि०)अकुलीन, वर्ण-संकर, दोगला।
कमखाब–(फ़ा०पुं०) मुलायम रेशमी वस्त्र जिसमें कलाबत्तू के रंग बिरंगे चित्र बने होते हैं।
कमजोर–(फा०वि०) निर्बल, अशक्त,
कमजोरी–(फा०स्त्री०)दुर्बलता, असामर्थ्य, अशक्तता।
कमन्द–(फ़ा० स्त्री०) पाश, फन्दा, सरकौवा फन्दा, जंगली पशु को फँसाने का फन्दा रस्सी की बनी हुई सीढ़ी जिसके द्वारा चोर ऊँचे घरों पर चढ़ जाते।
कमन्ध–(हिं०पुं०) लड़ाई झगड़ा।
कम्बख्त–(फा०वि०) देवहत; अभागा,
कम्बख्ती–(फ़ा० स्त्री०) मन्दभाग्यता
कमयाब–(फ़ा० स्त्री०) विरल, कठिनता से मिलनेवाला।
कमर–(फ़ा० स्त्री०) शरीर का मध्यभाग, कटिमध्य, मेखला, किसी वस्तु का मध्यभाग, श्रेणी, कुल्हा, वस्त्र का कमर पर रहने वाला भाग, लपेट; कमर कसना–(बाँधना)-उद्यत होना। कमर टूटना–उत्साह हीन होना।
कमरबन्द–(फ़ा०पुं०) मेखला, घेरा, कमर के चारों ओर लपेटने का वस्त्र; पटका, (वि०) कमर बांधे हुआ, तत्पर; कमरबन्दी–(फा० स्त्री०) युद्ध की तैयारी, लड़ाई का वस्त्र
कमरबस्ता–(फा०वि०) तैयार, कमर कसे हुए; (पुं०) खपड़ैल में लगाने की लम्बी लकड़ी।
कमहिम्मती–(फ़ा० स्त्री०) भीरुता।
कमाण्डर–(अं०पुं०)सेनाध्यक्ष,सरदार;
कमानण्डर इन् चीफ–प्रधान सेनाध्यक्ष, जंगी लाट।
कमान–(फ़ा० स्त्री०) धनुष, कमठा, मेहराब, इन्द्र धनुष, बिनने का एक यन्त्र तोप, बन्दूक (वि०) लचीला, टेढा; कमान चढना– त्योरी चढ़ना, क्रुद्ध होना कमान पर जाना–लड़ाई पर जाना;
कमानगर–(फा०पुं०)हड्डी जोड़ने या बैठाने वाला। कमानगरी–(फ़ा० स्त्री०) कमान बनाने का कार्य, कमानचा–(फ़ा०पुं०) छोटी कमान, सारंगी, कमानी, सरंगी बजाने की कमानी। कमानदार–(फा०वि०) मेहराबदार, धनुर्धर; आज्ञा देनेवाला, सेनापति।
कमाल–(अ० पुं०) सिद्धि कौशल, आश्चर्य, निपुणता, अनोखा कार्य, कबीर दास के पुत्र का नाम;(वि०) पूरा, सम्पूर्ण, अत्यन्त, कमालियत–(अ० स्त्री०)परिपूर्णता, निपुणता।
कमिश्नर–((अं०पुं०)नियोगी, अधिकारी माल तथा पुलीस का बड़ा अधिकारी।
कमी–(फा०स्त्री०) न्यूनता, अप्राप्ति, घाटा, हानि, तंगी।
कमीज–(फा०स्त्री०) एक प्रकार का कुरता जिसमें कली और चौबगला नहीं लगा होता।
कमीना–(फा०वि०) अधम,, दुष्ट, नीच, ओछा।
कमीनापन–(पुं०) क्षुद्रता, नीचता, ओछापन।
कमीशन–(अं०स्त्री०) आचरण, आज्ञा अधिकार, दलाली, नियुक्त जन।
कमन–(अ०पुं०) जीराक, जीरा।
कमूनी–(फा०वि०) जीरासे संबंध रखने वाला।
कमेटी–(अं०स्त्री०) कार्य संपादन करने की सभा, पंचायत।
कम्प–(अं०पुं०)शिबिर,डेरा, छावनी, सेना का रहने का स्थान।
कयाम–(अ०पुं०) स्थिति, ठहराव, स्थिरता, जीवन, विश्राम स्थान, ठौर ठिकाना, प्रार्थना करती समय खड़े होने की स्थिति। कयामत–(अ० स्त्री०) प्रलय, अन्तिम दिन, विपद, संताप, दुख, उत्पात।
कयास–(अ०पुं०)अनुमान, विचार अटकल। कयासन (अ०क्रि०वि०)अटकलसे
कयासी–(अ० वि०) काल्पनिक।
करनैल–(अं०पुं०-कर्नल) सेना का एक अध्यक्ष।
करबला–(अ० स्त्री०) अरब देश की वह समतल भूमि जहाँ हुसैन का बध हुआ था, ताजियों के गाड़ने का स्थान, पानी न मिलने का स्थान।
करश्मा–(फ़ा०पुं०)चमत्कार,अनोखा काम जादू।
करावत–(अ०स्त्री०)समीपता, संबंध,
करावतदारी–(फ़ा०पुं०) संबंध।
कराबा–(अ०स्त्री०) काच का बड़ा पात्र जिसका मुँह छोटा होता है, यह अर्क आदि रखने के काम में आता है।
करामात–(अ०स्त्री०) अद्भुत काम, चमत्कार।
करामाती–(अ० वि०) चमत्कार दिखलाने वाला, सिद्ध।
करार–(अ०पुं०) स्थिरता, ठहराव, धैर्य, धीरज, सन्तोष, सुख, चैन, आराम,
करीना–(अ०पुं०) नियम, ढंग, चाल, क्रम, प्रथा, व्यवहार, नीचे का भाग।
करीब–(अ०क्रि०वि) निकट, समीप, पास, प्रायः, लगभग।
करीम–(अ०पुं०) ईश्वर, (वि०) करुणामय, दयालु।
करेंसी–(अं०स्त्री०) प्रचलित मुद्रा, सरकारी नोट, प्रचार।
करोटन–(अं०पुं०) एक प्रकार के पौधे जिनके पत्ते अनेक अकार के होते हैं, ये सुन्दरता के लिये गमलों में बोकर घरों में रक्के जाते है।
कर्ज–(अ०पुं०) ऋण, उधार; कर्जदार-ऋण या उधार लेनेवाला।
कर्नल–(अं०पुं०) देखो करनैल।
कलई–(अ०स्त्री०) पात्र इत्यादिमें चढाये हुए रांगे इत्यादि का लेप, रंग, चमक, चूने का लेप, देखाव, तड़क भड़क। कलई खोलना–रहस्य का प्रगट होना, कलई न लगना–उपाय न लगना।
कलईगर–(फ़ा०पुं०) कलई चढ़ाने वाला।
कलईदार–(फ़ा०पुं०) कलई किया हुआ।
कलक–(अं०पुं०) दुःख, शोक, व्याकुलता(घबड़ाहट, (हि०पुं०) कल्क, चूर्ण, चूरन।
कलक्टर–(अं०पुं०) संग्रह कर्ता, कर इकट्ठा करनेवाला अधिकारी।
कलंगी–(तु०स्त्री०) राजाओं की पगड़ी में लगाने का बहुमूल्य पर, शुतुरमुर्ग का पर, सिरपर पहिरने का आभूषण, चिड़ियों के सिरपर की चोटी, प्रासाद, ऊंची चोटी, एक प्रकार की लावनी गीत।
कलण्डर–(अं०पुं०) भीत पर लटकी तिथिपत्रिका।
कलन्दर–(अ०पुं०)मुसलमानी फ़कीर, मदारी जो बन्दर और भालू का तमाशा करते हैं।
कलन्दरा–(अ०पुं०) एक प्रकार का वस्त्र, काँटा, खूटी।
कलम–(अं०पुं०) लेखनी, लकड़ी, का वह टुकड़ा जिसको रोशनाई में डुबो कर लिखते हैं, वृक्षकी शाखा जो काट कर दूसरी जगह लगाई जाती है, कलमी पौधा, एक प्रकार का धान, कनपटी के बाल जो मूड़े नहीं जाते, एक प्रकार की बाँसुरी, शीशे का टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है फुलझरी, नक्काशी करने का यन्त्र, शोरे नौसादर आदि का जमा हुआ पतला लंबा टुकड़ा, रवा, बालों की बनी हुई चित्रकार की कूंची, खोदने या नकाशी करने का यन्त्र; कलम चलाना–लिखना; कलम तोड़ना–लिखावट नष्ट करना, अनूठी बात करना; कलम करना–पेड़ या झाड़ों की पतली डालियों को छांटना; कलम कसाई– वह जिसकी लिखावट से जनता को हानि पहुँचती है।
कलमकार–(फ़ा०पुं०) चित्रकार,एक प्रकार का बूटीदार वस्त्र।
कलमकारी–(फ़ा०पुं०)कलम की कारीगरी।
कलमतराश–(फ़ा०पुं०) कलम बनाने का चाकू, पैनी, छूरी।
कलमदान(फ़ा०पुं०) कलम, रोशनाई इत्यादि रखने का छोटा पतला लम्बा बक्स।
कलमा–(अ०पुं०) वाक्य, मुसलमानों के धर्म का मूलमन्त्र; कलमा पढना–मुसलमान होना।
कलमी–(फ़ा०वि०) लिखित, लिखा हुआ कलम लगाने से उपजा हुआ (वृक्ष), रवेदार जिसमें रवे हों।
कलमीशोरा–रवादार शोरा।
कलां–(फा०वि०) दीर्घाकार, बड़ा।
कलाकन्द–(फा०पुं०) खोया और मिश्री मिलाकर बनी हुई मिठाई।
कलाबतून–(तु०पुं०) देखो कलाबत्तू.
कलाबतूनी–(तु०वि०) कलाबत्तूसे बना हुआ।
कलाम–(अ०पुं०) वाक्य, वचन, कथन, प्रतिज्ञा, वक्तव्य, बातचीत।
कलिया–(अ०पुं०) घी में भुना हुआ मांस।
कलील–(अं०वि०) अल्प, कम, थोड़ा।
कल्लादराज–(फ़ा०वि०) कड़ी बात कहने वाला।
कल्लादराजी–(फा० स्त्री०) कठोर

वचन, मुहँजोरी।
कवायद–(अ०पु०) व्यवस्था, रीति, नियम, व्याकरण के नियम, सेनाके युद्ध करनेके नियम, युद्धके नियमो का अभ्यास।
कश–(फा०स्त्री०) खीच, दम, फूक, आकर्षण।
कशमकश–(फा०स्त्री०) आकर्षण, खीचखाच, समारोह, भीड़भाड, असमजस, आगापीछा।
कशिश–(फा०स्त्री०) आकर्षण, खीच
कशीदा–(फा०पु०) कपडे पर सूईसे बेल बूटे बनाने का काम।
कश्ती–देखो किश्ती, नाव, शतरजका एक मोहरा।
कसब–(अ०पु०) वाणिज्य, व्यवसाय, परिश्रम कामकाज, वेश्यावृत्ति।
कसबा–(अ०पु०) बडा गाँव जो नगर से छोटा होता है।
कसम–(अ०स्त्री०) शपथ, सौगन्ध; **कसम उतरना**–सौगन्ध का प्रभाव हटना, **कसम खानेको**–नाम मात्र का, **कसम लेना**–प्रतिज्ञा करना।
कसर–(अ०स्त्री०) त्रुटि, कमी, वैर, दोष हानि, घाटा।
कसरत–(अ० स्त्री०) अधिकता, बढती।
कसीदा–(अ०स्त्री०) उर्दू या फारसी की एक प्रकार की कविता, यह प्राय १७ पक्ति की रहती है और इसमे किसी व्यक्ति की स्तुति या निन्दा रहती है।
कसूर–(अ०पु०) अपराध, चूक।
कसूरमन्द, कसूरसार–(फा० वि०) अपराधी, दोषी।
कसा–(अ०पु०) देखो कस्द।
कस्द–(अ०पु०) सकल्प, प्रतिज्ञा, इरादा।
कस्साव–(अ०पु०) गोघातक, कसाई।
कहकहा–(अ०पु०) अट्टहास, खिलखिलाहट।
कहकहा दीवार–(फा०स्त्री०) चीनकी प्रसिद्ध ऊची दीवार, कठिन अवरोध
कहत–(अ०पु०) दुर्भिक्ष, अकाल; **कहतसाल** दुर्भिक्ष का समय।
कहद–(अ०पु०) आपत्ति, आफत (वि) भयंकर।
कहरुबा–(फा०पु०) एक प्रकार की गोद जो औषधि में व्यवहार की जाती है, धूने का पेड़
कहवा–(अ०पु०) एक वृक्ष का बीज जिसको पीस कर चाह की तरह पकाकर पीते है।
कांग्रेस–(अ०स्त्री०) देश परिषद्, जिसमे विभिन्न प्रदेशो के प्रतिनिधि इकट्ठा होकर राजनैतिक विषयों पर अपना अपना विचार प्रगट करते हैं, संयुक्त अमेरिका की राजसभा।
कांजी हाउस्–(अ०पु०) काइन हाउस पशुशाला, कृषि को हानि पहुँचाने वाले बहेडुवा चौपायो को बन्द का स्थान।
कांस्टेबल्–(अ०पु०) पुलिस का सिपाही।
काकरेजी–(फा०स्त्री०) एक काला और लालरग।
काकुल–(फा०स्त्री०) कानोपर लटकते हुए लम्बे बाल, केशपाश, जुल्फ।
कागज–(अ०पु०) लिखने का महीन जो सन्, रूई, पटुवा इत्यादि को सडा कर बनाया जाता है, कागद प्रमाणपत्र, समाचार पत्र, सर्कारी नोट, **कागज काला करना**–कुछ न कुछ लिख डालना, **कागज की नाव**–सहज मे नष्ट होने वाली वस्तु, **कागजी घोडेदौडाना**–लिखा पढी करना
कागजात–(अ०पु०ब०व०) बहुत से कागद पत्रादि।
कागजी–(अ०वि०) पत्र सम्बन्धी, कागद का बना हुआ, बहुत पतला कोमल कागद बेचनेवाला, लिखा हुआ।
काजाक (कज्जाचक)–मध्य एशिया की एक घूमने वाली जाति।
काजी–(अ०पु०) मुसलमान समाज का विचारपति।
काड्–(अ०पु०) एक प्रकार की मछली जिसके जिगर का तेल पुष्टिकारक होता है।
कातिब–(अ०पु०) लिपिकार लिखने वाला।
कातिल–(अ०पु०) घातक, हत्यारा, मारडालने वाला।
कानफ्रेन्स–(अ०स्त्री०) समाज, मजलिस बैठक, मन्त्रण, सलाह।
कानस्टेबिल्–(अ०पु०) पुलिस का सिपाही।
कानी हाउस्–(हौद) अं० काइन् हाउस् का अपभ्रश, वह घर जिसमे कृषि इत्यादि को हानि पहुँचानेवाले पशु बन्द किये जाते है।
कानून–(अ०पु०) नियम, व्यवस्था, देशमे शान्ति स्थापन करनेके नियम,
कानूनगो–(अ०पु०) माल विभाग का एक कर्मचारी जो पटवारियो के कागजोको देखता भालता है।
कानूनदा–(फा०पु०) व्यवस्था समझने वाला, व्यवस्था जाननेवाला।
कानूनी–(अ०पु०) व्यवस्था जानने वाला, नियमानुकूल, हठी।
कापी–(अ०स्त्री०) प्रतिलेख, लिखने की सादे पन्नो को बही।
कापी राइट्–(अं०पु०) मुद्रण अधिकार, बिना अनुमति के ग्रन्थकारको पुस्तक न छापने का स्वत्व।
काफिया–(अ०पु०) अनुप्रास, तुक; **काफियाबंदी**–अनुप्रास, **काफिया तंग करना**–व्यग्रता मे पड़ना।
काफिर–(फा०वि०) मुसलमानों के अनुसार मूर्तिपूजक, नास्तिक, ईश्वर को न मानने वाला, निर्दय, दुष्ट, (पु०) अफ्रिका का एक देश।
काफिला–(अ०पु०) यात्रियो का समूह, झुड।
काफी–(अ०वि०) पर्याप्त, एकराग विशेष जो जल्दी गाया जाता है (अ०पु०) कहवा।
काफूर–(अ०पु०) कपूर, कपूर; **काफूर होना**–लुप्त होना।
काफूरी–(अ०वि०) कपूर का बना हुआ, का, कपूर के रग का।
काब–(अ०स्त्री०) चीनी मिट्टी की बड़ी रेकाबी।
काब–(अ०स्त्री०) अरब के मक्के नगर का चतुष्कोण भवन जिसको मुसलमान लोग पवित्र तीर्थ मानते है, यहाँ ये लोग हज करने जाते है।
काबिज–(अ०वि०) अधिकार प्राप्त, अधिकार रखने वाला (वि०) मल का अवरोध करने वाला।
काबिल–(अ०वि०) योग्य, विद्वान्
काबलियत–(अ०स्त्री०) योग्यता, विद्वत्ता, पाण्डित्य।
काबुक–(फा०स्त्री०) कबूतर का दरबा।
काबू–(तु०पु०) पकड, पजा, अधिकार, वश।
कामयाब–(फा०वि०) कृतकार्य, सफल
कामयाबी–(फा०स्त्री०) सफलता।
कामिल–(अ०वि०) अभिलषित, चाहा हुवा।
कायजा–(अ०पु०) लगाम की डोरी।
कायदा–(अ०पु०) नियम, रीति, व्यवस्था, ढग विधि, क्रम,
कायम–(अ०वि०) स्थित, स्थापित, ठहरा हुआ, निश्चित, ठहराया हुआ, समान, बराबर।
कायममुकाम–(अ०वि०) स्थानापन्न, किसी जगह रहनेवाला।
कायल–(अ० वि०) यथार्थ स्वीकार करनेवाला।
कारकरदा–(फा०वि०) कार्य करने मे अभ्यस्त।
कारखाना–(फा० पु०) कार्यालय, वह स्थान जहा कोई वस्तु बनाई जाती है व्यवसाय, धन्धा, कारबार, दृश्य, व्यापार काम, क्रिया।
कारगर–(फा०वि०) लाभकारक, उपयोगी प्रभाव डालनेवाला।
कारगुजार–(फा०वि०) अपना कर्तव्य पूरी तरह से करनेवाला; **कारगुजारी**–(फा० स्त्री०) कर्तव्य पालन-आज्ञानुसार पूरी तरह से काम करने वाला, कर्मण्यता, पटुता।
कारचोब–(फा० पु०) जरदोजी का काम बनाने के लिये लकडी का चौखटा जिसपर कपडा ताना जाता है, जरदोजी या कसीदे का काम बनानेवाला, कसीदा गलकारी करने वाला, (वि०) जरदोजी सबधी।
कारचोबी–(फा०स्त्री०) जरदोजी।
कारटून्–(अ०पु०) हँसी उत्पन्न करने वाला चित्र।
कारड्–(अ० पु०) कार्ड, पत्र लिखने का मोटा कागज, क्रोड़पत्र, ताश।
कारपरदाज–(फा०वि०) कर्मचारी, **कारपरदाजी**–(फा० स्त्री०) कार्य की सचालन।
कारबन्–(अ०पु०) अङ्गार, कोयला, जले हुए काष्ठ का शेषभाग।
कारबोलिक्–(अ० वि०) अलकतरे से निकाला हुआ, (पु०) फोडे फुन्सी के कीडे मारने वाली एक औषधि।
काररवाई–(फा० स्त्री०) कार्य, काम, करतूत, कार्य मे तत्परता, प्रयत्न, चाल।
कारवां–(फा०पु०) यात्रियोका समूह।
कारसाज–(फा०वि०) बिगडे हुए काम को सँभालने वाला, बिगडे काम को बनानेवाला, **कारसाजी**–(फा०स्त्री०) कार्य सम्पादन गुप्त कार्यवाही, कूट प्रबध, छल, धोखा।
कारस्तानी–(फा० स्त्री०) प्रयत्न छल धोखा।
कारिक–(अ०पु०) कुरकी करने वाला
कारीगर–(फा०पु०) शिल्पी, दस्तकार, हाथ से काम बनाने वाला, (वि०) निपुण, कुशल, हुनरमन्द।
कारीगरी–(फा० स्त्री०) हाथ का काम, निर्माण, कला, रचना, बनावट, सुन्दर बनावट।
कारून्–(अ०पु०) हजरत मूसा के चचेरे भाई जो बडे धनी परन्तु बडे कृपण थे (वि०) अति कृपण, **कारूं का खजाना**–बहुत बडी सम्पत्ति।
कारूरा–(अ० पु०) फुकनी शीशी जिसमे हकीम को दिखलाने के लिये रोगी का मूत्र रक्खा जाता है, मूत्र, बारूद की कुप्पी।
कारोबार–(फा०पु०) कामकाज, लेनदन
कार्क–(अ०पु०) एक वृक्ष की छाल जिसके डट्टे बोतलो मे लगाये जाते है।
कार्ड–(अ० पु०) मोटे कागज का टुकडा, ताश, पत्ता, डाँक से भेजने का मोटे कागज का टुकडा।
कालम–(अ०पु०) पत्र का भाग, सेना की पक्ति, स्तम्भ, खम्भा।
कालर–(अ० पु०) गले का पट्टा, कुरते या कमीज मे गले के चारो ओर लगाने की पट्टी।
कालिज–(अ० पु०) बडा विद्यालय, पाठशाला जिसमे उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती है।
कालिब–(अ० पु०) एक गोलाकार ढाँचा जिसपर टोपी धोकर चढ़ाई जाती है, शरीर।
कालीन–(अ०पु०) बेलबूटे बना हुआ सन या ऊन का बिना हुआ बिछावन।

कावा–(फ़ा०पुं०) चक्कर, भँवर, घोड़े को गले में रस्सी बांधकर देने की क्रिया; कावा काटना–चक्कर देना, आँख बचाकर निकल भागना।
काश्त–(फ़ा० स्त्री०) कृषि, खेती; करने का अधिकार जो किसान को इसके अनुसार जमीदार को कुछ वार्षिक लगान देने पर प्राप्त होता है
काश्तकार–(फा०पुं०) कृषक, किसान, खेतिहर, वह किसान जिसने ज़मीदार को कुछ वार्षिक कर दे कर यह स्वत्व प्राप्त किया है। काश्तकारी–(फा०स्त्री०) कृषि, खेती, किसानी, काश्तकार का हक़, वह भूमि जिस पर किसान को खेती करने का हक़ होता है।
कासिद–(अ०पुं०) पत्रवाहक, हरकारा
कास्टिक्–(अं०पुं०) जारक, जलाने वाली तेजाब।
काहिल–(अ० वि०) सुस्त, दुर्बल, आलसी।
काहिली–(अ०स्त्री०) आलस्य, सुस्ती।
काहू–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का पौधा जिसका बीज औषधियों में प्रयोग होता है।
किंडर कार्डन्–(अं०पुं०) खेल तमाशे मे शिक्षा प्रदान करने की एक विधि।
किक्–(अं० स्त्री०) पादाघात, पैर की ठोकर।
क़िता–(अ०पुं०) काट छांट, कतर-ब्योंत, संख्या, ढंग, चाल, विस्तार का भाग, समतल का अंश, भूमि का भाग, प्रदेश।
किताब–(अ० स्त्री०) पुस्तक, ग्रन्थ, बहीखाता, रजिस्टर; किताबी–(अ० वि०) पुस्तक के आकार का, किताब के समान; किताबी कीड़ा–सदा पुस्तक पढ़ने वाला; किताबी–मुखड़ा–लम्बा चेहरा।
किनारा–(अ०पुं०) तीर, प्रान्त, भाग, कूल, नट, वस्त्र की लम्बाई बल का छोर, किसी वस्तु का सिरा, पार्श्व भाग, किनारे लगना–किसी कार्य का अन्त करना; किनारा खींचना–किसी मामले से दूर हट जाना; किनारे न जाना–अलग रहना।
किफायत–(अ०स्त्री०) बचत। किफायती–(अं० वि०) मितव्ययी, कम व्यय करनेवाला।
किबलई–(अ०पुं०) पश्चिम दिशा।
किबला–(अ०पुं०) पश्चिम दिशा, उसी ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं, मक्का, पूज्य व्यक्ति। किबला आलम–ईश्वर, राजा किबलागाह–पिता, बाप।
किमाम–(अं०पुं०) किवाम, खमीर, शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शर्बत।
किमारखाना–(अ०पुं०) जुवा खेलने का स्थान। किमारबाज–(फा०वि०) जुवारी, जुवा खेलनेवाला।
किमाश–(अ०पुं०) रीति, ढंग, अंग्रीफ़े का ताज़ा रग।
किराया–(अ० पुं०) भाटक, भाड़ा, दूसरे की वस्तु अपने उपयोग में लाने का शुल्क किरायेदार–(फ़ा० पुं०) किसी वस्तु को भाड़े पर लेने वाला, भड़ैतिया।
किला–(अ०पुं०) दुर्ग, गढ, बचाव का स्थान।
किलाबन्दी–(फा० स्त्री०) दुर्गनिर्माण, व्यूह रचना।
किलिक–(फ़ा०स्त्री०) देखो किलक।
किल्लत–(अ० स्त्री०) कमी, संकोच, अड़चन।
किशमिश–(फ़ा० पुं०) सुखाया हुआ बिना दाने का छोटा अंगूर, सुखी दाख।
किशमिशी–(फा०वि०) जिसमें किशमिश, हो किशमिश के रंगका।
किश्त–(फा० स्त्री०) शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे की वार में जाने की चाल, शह।
किश्तवार–(अ० पुं०) पटवारी का वह खाता जिसमें खेत का नंबर क्षेत्रफल आदि लिखा रहता है।
किश्ती–(फा०स्त्री०) नौका, नाव, एक प्रकार की छिछली थाली, शतरंज का मोहरा–"हाथी"। किश्तीनुमा–(फा० वि०) नाव के आकार का
किसबत–(अ०पुं०) नापित, नाई का थैला जिसमें वह छूरा, चमोढ़ा, कैंची इत्यादि रखता है।
किस्त–(अ०स्त्री०) थोड़ा थोड़ा करके कई बार पूरा ऋण चुकाने की विधि, निश्चित समय पर दिया जाने वाला ऋण का अंश, ऋण अदा करने का निश्चित काल। किस्तबन्दी–(फा० स्त्री०) थोड़ा ऋण चुकाने का नियम। किस्तवार–(फा० वि०) किस्त के नियमानुसार, प्रत्येक किस्त पर।
किस्म–(अ०स्त्री०) प्रकार, तरह, रीति, चाल, ढंग, भांति।
किस्मत–(अ०स्त्री०) भाग्य, प्रारब्ध, किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें अनेक जिले हों, कमिश्नरी। किस्मत चमकना–भाग्योदय होना। किस्मत फूटना–दुर्भाग्य आना, भाग्य का मन्द होना। किस्मतवर–(फा०वि०) भाग्यशाली, भाग्यवान।
किस्सा–(अ० पुं०) कथा, कहानी, समाचार, हाल, वृत्तान्त, झगड़ा, तकरार
कीता–(अ०पुं०) द्वेष, शत्रुता, तह किये हुए वस्त्र में लपेटने का डोरा।
कीमत–(अ०पुं०) मूल्य, दाम। कीमती–(अ०वि०) बहुमूल्य, अधिक दाम का, महँगा।
कीमा–(अ० पुं०) मांस का छोटा महीन टुकड़ा।
कीमियां–(अ०स्त्री०) रसायन, रसायन क्रिया; कीमियागर–(फा०पुं०) रसायन बनानेवाला। कीमियागरी–(फा०स्त्री०) रसायन बनाने की विद्या।
कीमुख्त–(अ०पुं०) घोड़े या गदहे का चमड़ा जो दानेदार तथा हरे रंग का होता है।
कीसा–(फा०पुं०) थैली, जेब।
कुंदुर–(अ० पुं०) एक प्रकार का सुगन्धित पीले रंग का गोंद जो औषधि में प्रयोग होता है।
कुकनू–(यू० पुं०) एक कल्पित पक्षी जिसके विलक्षण गाने से आग निकल पड़ती है जिसमें वह भस्म हो जाता है
कुतुब–(अ०पुं०) ध्रुवतारा, पुस्तक।
कुतुबखाना–(फ़ा०पुं०) पुस्तकालय, पुस्तकों के रखने का घर। कुतुबनुमा–(अ०पुं०) दिग्दर्शन यंत्र, वह अन्त्र जिससे दिशा का बोध होता है।
कुतुब फरोश–(फ़ा०पुं०) पुस्तक विक्रेता, पुस्तकें बेचने वाला।
कुतुबमीनार–(फ़ा०स्त्री०) दिल्ली की एक बड़ी ऊँची मीनार।
कुदरती–(अ०वि०) प्राकृतिक, स्वाभाविक, दैवी, आप से आप होने, वाला, ईश्वरी।
कुनैन–(अं०–'कुनीन्') सिङ्कोना वृक्ष की छाल से निकाला हुआ सत्व जो शीतज्वर की उपकारी औषधि है।
कुफ्र–(अ०पुं०) मुसलमानी धर्म से विरुद्ध मत, अधर्म।
कुमक–(तु०स्त्री०) सहायता, सहारा;
कुमरी–(अ०स्त्री०) पण्डुक जातिका एकपक्षी
कुरता–(तु०पुं०) पहिरने का एक वस्त्र जिसमें सिर प्रवेश करने के लिये स्थान रहता है।
कुरबान–(अ०वि०) बलि चढा हुआ, न्योछावर किया हुआ।
कुरबानी–(अ०स्त्री०) बलिप्रदान।
कुरसी–(अ०स्त्री०) ऊँचे पावे की एक मनुष्य के बैठने की चौकी जिसमें सहारा लेने के लिये पीछे की ओर पटरी लगी होती हैं, ऊँचा चबूतरा जिसपर इमारत बनाई जाती है, पीढ़ी, चतुष्कोण (जन्त्र)। कुरसीनामा–(फ़ा०पुं०) वंशवृक्ष, वंशपरंपरा का लेख।
कुरान–(अं०पुं०) मुसलमानों का धर्म ग्रन्थ जो अरबी भाषामें लिखा हुआ है।
कुर्क–(तु०वि०) सरकार द्वारा ज़ब्त; कुर्क अमीन–(तु०पुं०) न्यायालय की आज्ञा से सम्पत्ति को अधिकार में करने वाला कर्मचारी। कुर्कनामा–(तु०पुं०) अपहरण पत्र, कुर्की–(हिं०स्त्री०) अपहरण,
कुलफत–(अ०स्त्री०) मानसिक चिंता।
कुलाबा–(अ०पुं०) केवाड़ी में लगा हुआ लोहेका पायजा, पानी निकलने की नली, मोरी।
कुलाह–(फा०स्त्री०) एक प्रकार की ऊंची अफ़ग़ानिस्तानी टोपी।
कुशादगी–(फा०स्त्री०) विस्तार, फैलाब, चौड़ाई। कुशादा–(फा०वि०) विस्तृत लंबा चौड़ा, खुला हुआ।
कुश्ता–(फ़ा०पुं०) धातुओं को रसायनिक क्रिया द्वारा फूंक कर बनाया हुआ भस्म।
कुश्ती–(फ़ा०स्त्री०) पहलवानी की लड़न्त, मल्लयुद्ध, पकड़, कुश्ती मारना–मल्ल युद्ध में विजय प्राप्त करना; कुश्ती खाना–कुश्ती में हार जाना। कुश्तीबाज–(फ़ा०वि०) कुश्ती लड़ने वाला, पहलवान।
कूचा–(फ़ा०पुं०) सकरी गली, छोटा रास्ता, कूँचा।
कूज़ा–(फ़ा०पुं०) मिट्टी का गोल प्याला, इस प्याले में जमाई हुई मिश्री।
कूपन–(अं०पुं०) मनिआडर के फ़ार्म का वह भाग जिसमें भेजने वाला कुछ सन्देश लिख सकता है।
कूवत–(अ०स्त्री०) शक्ति ताकत बल
केरोसिन्–(अं०पुं०) मिट्टी का तेल।
केलोमेल्–(अं०पुं०) रसकपूर से मिलता जुलता एक रसायनिक योग जो पारे से बनता है।
केस–(अं०पुं०) अभियोग दुर्घटना, किसी वस्तु के रखने की पेटी
कैंची–(तु०स्त्री०) बाल, कपड़े इत्यादि काटने का अस्त्र, कतरनी, कैंची की की तरह जुटी हुई दो सीधी लकड़ियां
कैंप–(अं०पुं०) पड़ाव, छावनी।
कैतून–(अ०स्त्री०) बारीक गोटा जो वस्त्र के किनारे पर लगाया जाता है।
कैद–(अ०स्त्री०) बन्धन, जकड़, दण्ड, कारावास, प्रतिबन्ध, अटक; कैद काटना–कारागृह में दिन बिताना; कैदखाना–कारागार, कैद तनहाई–बन्दी को अकेला किसी छोटी कोठरी में बन्द करना; कैद सहज–साधारण कारावास जिसमें अपराधी को काम नहीं करना पड़ता, कैदसख्त–कठोर दण्ड जिसमें बन्दी को बड़ा परिश्रम करना पड़ता है।
कैदक–(फ़ा०स्त्री०) कागज रखने की दफ्ती।
कैदखाना–(फा०पुं०) कारागार, बन्दी गृह।
कैदी–(अ०पुं०) दण्ड प्राप्त, बन्दी,
कैफ–(अ०पुं०) मद, नशा, नशीली वस्तु
कैफियत–(फा०स्त्री०) वर्णन, विवरण, ब्योरा, अनोखी घटना, समाचार।
कैफी–(अं०वि०) उन्मत्त, मतवाला,
कैबिनेट्–(अं०पुं०) छोटा कैमरा, लकड़ी की सामग्री।
कैसर–(अ०पुं०) सम्राट्, जर्मनी के सम्राट की उपाधि।

कोका–(अं०पु०) दक्षिण अमेरिका का एक वृक्ष जिसकी सूखी पत्ती चाय या कहवे की भांति उत्तेजक होगी हैं (तु०पु०स्त्री०) धाय का लड़का या लड़की।
कोकीन,कोकेन–(अं०स्त्री०) कोका वृक्ष से तैयार किया हुआ सत्व जो मादक होता है और लगाने से शरीर को सुन्न (चेतना शून्य) कर देता है।
कोच–(अं०पु०) घोड़ागाड़ी, बग्घी, गद्देदार पलंग या आराम कुरसी।
कोचबक्स्–(अं०पु०) बग्घी के हाकने वाले के बैठने का स्थान।
कोट–(अं०पु०) अंगरेजी ढंग का एक वस्त्र जो कमीज या कुरते के ऊपर पहिरा जाता है।
कोटेशन्–(अं०पु०) उद्धरण, नकल, भाव, सीसे का चौकोर पोला टुकड़ा जिसको कम्पीजिटर रिक्त स्थान में भर देते हैं।
कोतल–(फा०पु०) सजा सजाया बिना सवार का घोड़ा जो उत्सव में दिखावे के लिये निकाला जाता है (वि०) बेकाम, निठल्लू, कोतल गारद–(अं०पु०) कार्टर गार्ड्स् का अपभ्रंश; छावनी का एक स्थान जहां दलेल वाले सिफहियों के निरीक्षण के लिये संरक्षक नियुक्त रहते हैं।
कोताही–(फा०स्त्री०)त्रुटि,कमी,घाटा।
कोफ्त–(फा०पु०) लोहे पर सोने या चांदी की पिच्चीकारी (स्त्री०) दुःख, सन्ताप, कोफ्ता–(फा०पु०) कूटे हुए मांस का कबाब।
कोबा–(फा०पु०) कमड़ा कूटने की मुंगरी
कोरट–(अं०पु०–कोर्ट्स आव् वार्ड्स्) किसी राज्य या जमींदारी का सरकार की ओर से प्रबंध जब इसका मालिक अल्पवयस्क रहता है।
कोर्ट–(अं०पु०) न्यायालय, अदालत, ताश के खेल में एक जीत;
कोशिश–(फा० स्त्री०) चेष्टा, प्रयत्न, उद्योग।
कोह–(फा०पु०) पर्वत, पहाड़।
कोहनूर–(फा०पु०) जगद्विख्यात तथा इतिहास प्रसिद्ध एक बहुमूल्य हीरा।
कोहान–(फा०पु०) ऊंट की पीठ पर का कूबड़।
कोहिस्तान–(फा०पु०)पहाड़ी प्रदेश।
कौंसलर–(अं०पु०) मन्त्री, सलाह देने वाला। कौंसिल–(अं०स्त्री०) सभा, परिषद।
कौम–(अ०स्त्री०) वर्ण, जाति।
कौमी–(अ०वि०) जाति या वर्ण सम्बन्धी।
कौल–(अ०पु०)वाक्य, कथन,प्रतिज्ञा,
कौवाली–(अ०स्त्री०) एक गाना जो पीरों की क़ब्रों या सूफ़ियों की मजलिसों में गाया जाता है, इसमें धार्मिक चरचा तथा आध्यात्मिक शिक्षा रहती है;
क्राइस्ट–(अं०पु०) इसुमसीह।
क्राउन–(अं०क्राउन) मुकुट, ताज, अग्र, सिरा, एक अंग्रेजी सिक्का, कागज की एक विशेष नाप।
क्रिकेट–(अं०पु०) गेंद और बल्ले (बॉट्) का एक खेल इसमें ग्यारह ग्यारह खेलाड़ियों के दो दल परस्पर खेलते हैं।
क्रिश्चियन–(अं०पु०)ईसाई,किरानी।
क्रिस्टल–(अं०पु०)स्फटिक,बिल्लौर;
क्लब्–(अं०पु०)समाज, सहभोजियों का संघ।
क्लर्क्–(अं०पु०)लेखक, लिपिकार,
क्लाउन्–(अं०पु०)विदूषक, भाड़।
क्लाक्–(अं० स्त्री०) धरम घड़ी, लंगर के सहारे चलने वाली बड़ी घड़ी।
क्लारियोनेट्–(अं०पु०) अलगोजा, बांसुरी।
क्लास्–(अं०पु०) श्रेणी, कक्षा,
क्लिप्–(अं०पु०) कमानी दार किसी वस्तु को पकड़ रखने की चिमटी।
क्लोरोफार्म–(अं० पु०) बेहोश करने की एक प्रसिद्ध औषधि, यह तरल होती है और इसमें मीठी गन्ध होती है।
क्वारन्टाइन्–(अं०पु०)रोग का संक्रमण बचाने के लिये यात्रियों को कुछ काल के लिये किसी निर्धारित स्थान में ठहरावना।
क्वार्टर मास्टर्–(अं०पु०) रसदका प्रबन्ध करने वाला एक सैनिक अधिकारी;
क्विनाइन–(अं०पु०) देखो कुनैन।
क्विल्–(अं०पु०) परकी कलम;
क्वीन–(अं०स्त्री०) महारानी।

ख

खंजर–(फा०पु०) तलवार, कटार।
खंदक–(अ०पु०)बड़ा गड्ढा, खाई;
खजानची–(अ०पु०) कोषाध्यक्ष,
खजाना–(अ०पु०) धन रखने का स्थान, धनागार, भाण्डारकर;
खत–(अ०पु०) पत्र, चिट्ठी,लिखावट, रेखा, धारी, दाढी के बाल, क्षौर कर्म, हजामत।
खतना–(अ०पु०)शिश्नकी अग्रत्वचा, इसको काटने की मुसलमानी रीति मुसलमानी;
खतम–(अ०वि०)समाप्त, पूर्ण, पूरा।
खतम करना–जान से मार डालना;
खतमी–(अ०स्त्री०) गुलखैरू के जाति का एक पौधा, इसकी पत्ती तथा बीज औषधि में प्रयोग होता है;
खतर, खतरा–(अ०पु०) आशंका, भय, डर,
खता–(अ०स्त्री०)अपराध, भूल चूक, कपट, छल, खतावार–(फा०वि०) अपराधी, दोषी,
खफगी–(फा०स्त्री०) अप्रीति, क्रोध;
खफा–(अ०वि०)अप्रसन्न, रुष्ट क्रुद्ध।
खफीफ–(अ०वि०) अल्प, थोड़ा, हलका, कम, न्यून, क्षुद्र, तुच्छ;
खफीफा–(अ०वि०) थोड़ा;
खबर–(अ०स्त्री०) संवाद, बात, सूचना, सन्देशा, वृत्तान्त, हाल, अनुसन्धान, संज्ञा, होश, चेत, सुध, खोज; खबर उड़ना–समाचार फैलना खबर लेना–सहायता देना, खबरगीरी–(फ़ा० स्त्री०) पूछपाछ, देखभाल, सहानुभूति, । खबरदार–(फ़ा०पु०) सावधान, समझने बूझनेवाला, खबरदारी–(फ़ा० स्त्री०) सावधानी, होशियारी।
खबीस–(अ०पु०) शैतान, भूत, राक्षस, भयंकर आदमी।
खब्त–(अ० पु०) उन्माद, पागलन, झक, सनक। खब्ती–(अं० वि०) उन्मात्त, पागल।
खम–(फ़ा० पु०) वक्रता, टेढ़ापन, झुकाव; खम खाना–झुकना, मुड़ना, पराजित होना।
खमदार–(फ़ा०वि०)टेढ़ा झुका हुआ।
खमदम–(फा० पु०)साहस, पुरुषार्थ।
खमसा–(अ० पु०) पाँचपांच शेरों की गजल।
खमीर–(अ० पु०) आंटे का पतला सड़ाव, कटहल अनन्नास आदि का सड़ाव जो पीने की सम्बाकू में सुगन्ध के लिये डाला जाता है। खमीरा–(अ० वि०) खमीरा से तैयार किया हुआ, (पु०) शक्कर में पकी हुई दवा।
खयानत–(अ० स्त्री०) धरोहर की वस्तु न देना या कम देना, चोरी, बेइमानी।
खरखशा–(फा० पु०) वादा विवाद, झगड़ा, लड़ाई बखेड़ा, आशंका भय, डर,।
खरगोश–(फा० पु०) शशक, खरहा।
खरमस्ती–(फा० स्त्री०) मोटमर्दी, दुष्टता।
खराब–(अ०वि०) निकृष्ट, बुरा पतित, बुरी अवस्था में पड़ा हुआ, कमीना, दुष्ट।
खराबी–(फा० स्त्री०) अवगुण, बुराई, दोष, दुर्दशा, दुरवस्था,।
खराश–(फा० स्त्री०) खरोंच, छीलन, किसी नुकीली पदार्थ का शरीर पर रगड़ लगने पर चिह्न।
खरीता–(अ० पु०) थैली, जेब, बड़ा लिफ़ाफ़ा जिसमें बड़ा अधिकारी अपने आधीन को आज्ञापत्र भेजता है।
खरीद–(फा० स्त्री) क्रय, मोल लेने की क्रिया, खरीदा हुआ माल,
खरीदना–(हिं० क्रि०) लय करना, मोल लेना।
खरीदार–(फा० पु०) क्रेता, मोल लेने वाला ग्राहक अभिलाषी,।
खरीदारी–(फा० स्त्री०) खरीद की स्थिति, हालत।
खरीफ–(अ० स्त्री०) आसाढ़ से अगहन तक काटी जाने वाला कृषिफल।
खलक–(अ० पु०) प्राणिमात्र, जीवधारी सृष्टि, दुनियां ससार।
खलकत–(अ० स्त्री०) सृष्टि, दुनियां, भीड़-भाड़।
खलल–(अ० पु०) अवरोध, बाधा, रुकावट।
खलल दिमाग–पागल।
खलाल–(अं० पु०) धातु की बनी हुई दाँत खोदनी।
खलास–(अ० वि०) मुक्त, समाप्त, गिरा हुआ, खलासी, छुटकारा।
खालिश–(फा० स्त्री०) पीड़ा, कड़क।
खलीफा–(अ० पु०) अधिकारी, वृद्ध पुरुष, दरजी, खानसामा,नाई, मुसलमान राज्य की सबसे बड़ी पदवी।
खवास–(अ० पु०) राजाओं का खास नौकर जो प्रायः हज्जाम होता है।
खवासी–(हिं० स्त्री०) खवास का काम या व्यापार, खास बरदारी, नौकरी चाकरी, गाड़ी, हाथी के हौदे इ० में खवास के बैठने का स्थान।
खस–(फा० स्त्री०) गाडर नामक घास की सुगंधित जड़, उशीर।
खसखस–(फा० स्त्री०) पोस्ते का दाना।
खसखाना–(फ़ा०पु०) खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कमरा।
खसम–(अ० पु०) भर्ता, पति, स्वामी, मालिक,।
खसरा–(अ०पु०) पटवारी का वह कागज जिसमें हरएक खेत का नम्बर, क्षेत्रफल आदि लिखा रहता है,कच्चा चिट्ठा।
खसलत–(अ० स्त्री०) प्रकृति स्वभाव, आदत।
खसीस–(अ० वि०) कृपण, कंजूस।
खसीसी–(फा० स्त्री) कंजूसी,।
खस्ता–(फा०वि०) भुरभुरा, घी डाल कर पकाया हुआ, अति कोमल।
खां–(फ़ा०पु०) कई गांव का मुखिया, एक मुसलमानी उपाधि।
खाक–(फ़ा०स्त्री) भस्म, राख, धूल, मिट्टी। खाक उड़ाना–नष्ट होना, वृथा समय नष्ट करना। खाक में मिलाना–पूरी तरह से नष्ट करना।
खाकरोब–(फ़ा०पु०)झाड़ू लगाने वाला मेहतर।
खाकसीर–(हिं०स्त्री०) खूबकला नामक औषधि।
खाका–(फ़ा०पु०) ढांचा,नकशा,रेखामात्र, डौल, चिट्ठा।
खाकी–(फ़ा०वि०) भूरा, मटमैला, मिट्टी के रंग का, बिना सींची हुई भूमि।

खातमा–(फ़ा०पुं०) अन्त, समाप्ति, मृत्यु, मौत, सिरा।
खातिर–(अ०पुं०) सम्मान, आदर, (अव्य०) अर्थ, निमित्त, वास्ते, लिये।
खातिरखाह–(फा०क्रि०वि०) इच्छानुसार, मर्जी के माफिक।
खातिरजमा–(अ० स्त्री०) विश्वास, सन्तोष, तसल्ली, भरोसा; **खातिरदार**–(फा०वि०) सन्तोष देने वाला।
खातिरदारी–(फा०स्त्री०) आवभगत।
खादिम–(अ०पुं०) सेवक।
खानकाह–(अ० स्त्री०) मुसलमानी फकीरों के रहने का स्थान या मठ।
खानगी–(फा० वि०) निजी, अपना, घरेलू दूसरे संबंध न रखनेवाला (स्त्री०) तुच्छ वेश्या।
खानजादा–(फा०पुं०) धनी का पुत्र, उच्च कुल का व्यक्ति।
खानसामा–(फा० पुं०) भण्डारी, अंग्रेजों और मुसलमानों का रसोइयादार।
खाना–(फ़ा०पुं०) आलय, घर, मकान, कोठा, कोष्टक, सन्दूक; **खाना खराब**–(फा०वि०) घर बिगाड़ने वाला, अवारा; **खाना जंगी**–(फा०स्त्री०) गृह कलह, आपस की लड़ाई; **खानाजाद**–(फा० वि०) घर का (पुं०) उत्पन्न दास गुलाम; **खाना तलाशी**–(फा० स्त्री०) किसी छिपी हुई वस्तु के लिये घर ढूढ़नेके लिये घर के भीतर खोज करना; **खानादारी**–(फा०स्त्री०) गार्हस्थ्य, गृहस्थी
खानाबदोश–(फ़ा० वि०) गृहहीन, जिसके घर बार न हों; **खानाशुमारी**–(फा०स्त्री०) घरों को गिनने का कार्य।
खामख्याली–(फा०स्त्री०) अविचार।
खामी–(फा० स्त्री०) त्रुटि, कमी, कचाई, अनुभव हीनता।
खामोश–(फ़ा०वि०) मौन, चुप, न बोलता हुआ।
खामोशी–(फा०स्त्री०) मौन, चुप्पी।
खाया–(फा०पुं०) अण्डकोष।
खायाबरदार–(फा०वि०) चापलूस।
खायाबरदारी–(फ़ा०वि०) चापलूसी।
खार–(फा० पुं०) कण्टक, काँटा, खांग, विद्वेष, डाह, जलन। **खार खाना**–डाह करना।
खारिज–(अ०वि०) अलग किया हुआ बहिष्कृत, निकाला हुआ, भिन्न, अलग, सुनवाई न होने वाला।
खारिश–(फा० स्त्री०) कण्डू, खुजली, खरखराहट।
खाला–(अ० स्त्री०) माता की बहिन, मौसी।
खालिक–(अ०पुं०) सृष्टिकर्ता, दुनियां को बनाने वाला।
खालिस–(अ० वि०) विशुद्ध, जिसमें मिलावट न हो, खरा।
खाली–(अ०वि०) रिक्त, जो भरा न हो, बेकाम, व्यर्थ, रहित, विहीन, निष्फल; **खाली हाथ होना**–पास में धन न होना; **खाली हाथ**–हाथमें कोई शस्त्र न लिये हुए; **खाली पेट**–विना कुछ भोजन किये हुए; **निशाना खाली जाना**–ठीक लक्ष्य पर निशाना न पहुँचना; **बात खाली पड़ना**–बचन निष्फल होना।
खाविन्द–(फ़ा०पुं०) पति, स्वामी, मालिक।
खास–(अ०वि०) मुख, प्रधान, विशेष, स्वयं अपना, विशुद्ध ठीक, ठेठ, (स्त्री०) मोटे कपड़े की थैली, **खासकर**–विशेष रूपसे; **खासकलम**–अपना लेखक।
खासगी–(हिं०वि०) निज का, निराला, **खास तराश**–(फ़ा०पुं०) राजा का बाल बनाने वाला नाई; **खास तहसील**–(अ०स्त्री०) जिस तहसील में बड़ा अधिकारी रहता हो; **खासदान** (हिं०पुं०) पान रखने का डब्बा; **खासनवीस**–(अं०पुं०) देखो खास कलम; **खासबरदार**–(फ़ा० पुं०) राजा की सवारी के आगे आगे चलने वाला सिपाही; **खास बाजार**–(फ़ा०पुं०) राजा के महल के पास का हाट।
खासा–(अ०पुं०) राजा का भोजन, राजा के चढने का घोड़ा, हाथी इत्यादि, एक प्रकार का सूती वस्त्र।
खासियत–(अ०स्त्री०) स्वभाव, आदत गुण, प्रकृति।
खासी–(अ०स्त्री०) राजा के निज उपयोग की तलवार, बन्दूक इत्यादि
खिंग–(फ़ा०पुं०) सफेद रंग का घोड़ा
खिजाब–(अ०पुं०) केश कल्प, बालों को काला करने की औषधि।
खिताब–(अ० पुं०) उपाधि, पदवी।
खिताबी–(अ०पुं०) उपाधिधारी।
खित्ता–(अ०पुं०) प्रान्त, सूबा।
खिदमत–(फ़ा०स्त्री०) सेवा करनेवाला, सेवा सम्बन्धी, सेवाके बदले में पाई हुई।
खिराज–(अ०पुं०) कर, मालगुजारी
खिलअत–(अ०स्त्री०) राजासे सम्मान, सूचनार्थ दिया हुआ पोशाक।
खिलकत–(अ०स्त्री०) सृष्टि, संसार, जन समूह, भीड़भाड़।
खिलवत–(अ०स्त्री) एकान्त, **खिलवतखाना** (फ़ा०पुं०) एकान्त स्थान।
खिलाफ–(अ०स्त्री०) विपरीत, बिरुद्ध उलटा; **खिलाफत**–(अ०स्त्री०) मोहम्मद के प्रतिनिधि का धार्मिक उत्तराधिकारी।
खिसरा–(फ़ा०पुं०) क्षति, हानि, घाटा।
खुगीर–(फा०पुं०) घोड़े के चारजामे के नीचे का नामदा; **खुगीरकीभरती**–व्यर्थ की वस्तु का जमावड़ा।
खुतबा–(अ० पुं०) प्रशंसा, राजा के यश की घोषणा।
खुद–(फा०अव्य०) स्वयं, अपने आप; **खुद ब खुद**–आपही आप, विना दूसरे की सहायता के; **खुदकाश्त**–(फा० स्त्री०) वह भूमि जिसको उसका मालिक स्वयं जोते बोवे; **खुदकुशी**–(फा० स्त्री०) आत्महत्या, **खुदगरज**–(फा०वि०) स्वार्थी, अपना काम साधने वाला; **खुदगरजी**–(फा०स्त्री०) स्वार्थीपन, स्वार्थपरता।
खुदमुख्तार–(फा० वि०) स्वतन्त्र जो किसी से दबता न हो; **खुदमुख्तारी**; (फा० स्त्री०) स्वतन्त्रता।
खुदराय–(फा०वि०) अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला।
खुदा–(फा०पुं०) परमेश्वर, ईश्वर।
खुदाई–(फा० स्त्री०) ईश्वरता, सृष्टि, दुनियां।
खुदावन्द–(फा०वि०) परमेश्वर, अन्नदाता, मालिक, श्रीमान्, महाशय।
खुदी–(फा० स्त्री०) अभिमान, शेखी, घमण्ड, अपनी धुन।
खुनकी–(फा० स्त्री०) शीतलता, सरदी।
खुफिया–(फा०वि०) गुप्त, छिपा हुआ, **खुफिया पुलीस**–(हिं० स्त्री०) गुप्त पुलिस, जासूस, भेदिया, सी०आइ०डी०
खुमार–(अ० पुं०) खुमारी, नशा, मद।
खुरमा–(अ० पुं०) खारक, छोहारा, एक प्रकार की मिठाई।
खुराक–(फा०स्त्री०) आहार, भोजन, खाना; **खुराकी**–(फा० स्त्री०) खुराक या भोजन के लिये दिया जाने वाला धन (वि०) पेटू, बहुत खाने वाला।
खुराफात–(अ० स्त्री०) अश्लील विषय, निन्दावाद, उपद्रव, गालीगलौज, झगड़ा, बखेड़ा।
खुर्द–(फा०वि०) ह्रस्व, छोटा; **खुर्दबीन**–(फा० स्त्री०) सूक्ष्म दर्शक यन्त्र; **खुर्दबुर्द**–(फा०वि०) नष्टभ्रष्ठ, टूटा फूटा।
खुर्दा–(फा० वि०) सामान्य द्रव्य, छोटी मोटी वस्तु; **खुर्दाफरोश**–छोटी मोटी वस्तु को बेंचनेवाला।
खुलासा–(अं० पुं०) सारांश, निचोड़; (हिं० वि०) खुला हुआ, स्पष्ट, संक्षिप्त।
खुश–(फा०वि०) आनन्दित, प्रसन्न, जो दुखी न हो, अच्छा; **खुशकिस्मत**–(फा०वि०) भाग्यशाली; **खुशकिस्मती**–(फा०स्त्री०) सौभाग्य, भाग्यवानी; **खुखतश**–(फा० वि०) सुन्दर लिखनेवाला; **खुशखबरी**–(फा०स्त्री०) अच्छा समाचार, प्रसन्न करनेवाला; **खुशदिल**–(फा०वि०) प्रसन्न चित्त, सर्वदा प्रसन्न रहनेवाला, **खुशनवीस**–(फा० वि०) देखो खुशखत; **खुशनसीब**–(फा०वि०) भाग्यशाली;
खुशनसीबी–(फा०स्त्री०) भाग्यवानी।
खुशनुमा–(फा० स्त्री०) देखने में सुन्दर; **खुशनुमाई**–(फा० स्त्री०) सजावट, सुन्दरता; **खशबू**–(फा० स्त्री०) सुगन्ध, अच्छी गंध, महक; **खुशबूदार**–(फा० वि०) सुगन्धित; **खुशरंग**–(फा०वि०) अच्छे रंगवाला चटकीला; **खुशहाल**–(फ़ा० वि०) सुखी, सम्पन्न, जिसको किसी बात का कष्ट न हो; –**खुशरंग**–(फा० स्त्री०) सुख, चैन; **खुशामद**–(फा० स्त्री०) झूठी प्रशंसा।
खुशामदी–(फा० स्त्री०) खुशामद करने वाला, चापलूस; **खुशामदी टट्टू** - वह व्यक्ति जो किसी की खुशामद करके अपना काम निकालता है।
खुशी–(फा०स्त्री०) आल्हलाद आनन्द, प्रसन्नता।
खुश्क–(फा० वि०) शुष्क, सूखा, रसिकता रहित, रूखे स्वभाव का, (क्रि०वि०) केवल, मात्र, सिर्फ;
खुश्कसाली–(फा० स्त्री०) अनावृष्टि वृष्टि का अभाव।
खुश्का–(फा० पुं०) पानी का पका चावल, भात।
खुश्की–(फा० स्त्री०) शुष्कता, सूखापन, रुखाई, सुखी भूमि, सूखा आंटा, अनावृष्टि।
खुसिया–(अ० पुं०) अण्डकोश।
खूंखार–(फा० वि०) खून पीनेवाला, क्रूर भयंकर, डरावना, निर्दय, झगड़ालू।
खून–(फा०पुं०) रक्त, लोहू, रुधिर, वध, हत्या; **खून खौलना**–अति क्रुद्ध होना; **खून का प्यासा**–हत्या करने पर उद्यत; **खून सिरपर सवारहोना**, किसी को मार डालने के लिये उद्यत होना; **खून पीना**–वध करना; **खून खराबा**–(हिपुं०) रक्तपात, मारकाट, एक प्रकार का लाल रंग जो वार्निश में पड़ता है।
खूनी–(फा०वि०) हिंसाकारी, निर्दय, क्रूर, अत्याचारी, घातक, लाल, रंग का।
खूब–(फा० वि०) अच्छा, बढिया, उत्तम, (क्रि०वि०) भलीभांति, अच्छी तरह से; **खूबकलां**–(फा० स्त्री०) फारस की एक घास का दाना, खाकसीर।
खूबसूरत–(फा०वि०) सुन्दर, मनोहर, सुहावना; **खूबसूरती**–(फा० स्त्री०), सुन्दरता, सौन्दर्य, रौनक।
खूबानी–(फा० स्त्री०) जरदालू नाम का मेवा।
खूबी–(फा० स्त्री०) गुण, भलाई, उम्दगी।
खेमा–(अ० पुं०) डेरा, तम्बू कनातें।
खैर–(फा०स्त्री०) कुशल, भलाई क्षेम, (अव्य०) अस्तु क्या चिन्ता, अच्छा;

खैरआफियत—(फा० स्त्री०) क्षेम कुशल, राजी खुशी; खैरखाह—(फा० वि०) शुभचिन्तक, भला चाहनेवाला, खैरखाही—(फा०स्त्री०) शुभचिन्तन।
खरात—(अ०पु०)दान पुण्य,निछावर।
खरियत—(फा० स्त्री०) कुशल क्षेम, कल्याण, भलाई।
खोद—(फा०पु०) लड़ाई मे पहिरने का लोहे का टोप।
खोम—(अ० पु०) समूह, ढेर।
खोराक—(फा० स्त्री०) खाने की वस्तु, आहार या औषधि की मात्रा।
खोराकी—(फा० वि०) अधिक मात्रा मे भोजन करनेवाला, पेटू, खाने के लिये दिया जाने वाला पैसा।
खौफ—(अ० पु०) भीति, भय, डर।
खौफनाक—(अ०वि०)भयकर,डरावना
ख्याल—(अ० पु०) ध्यान, अनुमान, मनोवृत्ति, स्मरण विचार, आदर, सम्मति, एक प्रकारकी गीत, ख्याल रखना—ध्यान रखना,ख्याल सेउतरना—भूल जाना।
ख्याली—(फा०वि०) कल्पित, अटकल पच्चू; ख्याली पोलाव पकाना—हवा मे पुल बाधना,असभव बाते सोचना (वि०) पागल, सनकी।
ख्वाजा—(फा० पु०) प्रभु, खाविन्द, सरदार, प्रसिद्ध पुरुष, बड़ा सौदागर मुसलमानि फकीर, अन्त पुरका नपुसक नौकर।
ख्वाब—(फा०पु०) निद्रा,नीद,स्वप्न।
ख्वार—(फा०वि०) भ्रष्ट, अपमानित, तिरस्कृत; ख्वारी—(फा० स्त्री०) भ्रष्टता; ख्वाह—(फा०अव्य०)अथवा याती; ख्वाहमख्वाह—अवश्य,जरूर,चाहे जो हो।
ख्वाहिश—(फा० स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा।

ग

गज—(फा०पु०) एक नाप जो तीन फीट या सोलह गिरह की होती है, लोहे या लकड़ी का सीकचा, एक प्रकार की तीर।
गज इलाही—अकबरी गज, जो एकतालीस अगुल का होता है।
गजक—(फा०पु०)वह खाद्य पदार्थ जो मद्य पीने के बाद मुख की दुर्गन्धि हटाने के लिए खाया जाता है, तिलपपड़ी, जलपान, प्रातराश।
गजट—(अं०पु०)भारतीय शासन द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र जिसमें कर्मचारियों की नियुक्ति आदि के नियम तथा राष्ट्रीय विभागोके जानने योग्य बातें छापी जाती है।
गजनवी—(फा० वि०) गजन नगर का रहने वाला।
गजब—(अ० पु०) क्रोध रोष, अन्याय, आपत्ति, अन्धेर, विलक्षण बात।
गजल—(फा० पु०) उर्दू या फारसी की शृङ्गार रस की कविता।
गजी—(फा०पु०)एक प्रकार का मोटा देशी वस्त्र, गाढा सल्लम।
गञ्जीफा—(फा०पु०)एक प्रकारकाताश
गटा परचा—(अं० पु०)रबर के समान, एक प्रकार को गोंद।
गडक्क—(अ० पु०) गड्वाल, डूबने का शब्द।
गडप—(फा० स्त्री०) पानी या कीचड़ मे किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
गड्डाम—(अं०गॉड्-डाम् का अपभ्रंश) नीच, बदमाश।
गदम—(फा०पु०) थाम, पुस्ता।
गदर—(अ०पु०)हिलचल, उपद्रव,बलवा
गदाई—(फा०स्त्री०)तुच्छ, नीच।
गद्दीनशीन—(फा० वि०)सिंहासनारूढ, उत्तराधिकारी।
गनी—(अ० पु०) धनी, अमीर।
गनीम—(अ०पु०)लुटेरा डाकू वैरी,शत्रु
गनीमत—(अ०पु०)लूट का माल, बिना परिश्रम के मिला हुआ माल, सतोष की बात।
गनोरिया—(अ०स्त्री०) सूजाक नामक रोग।
गफलत—(अ० स्त्री०) असावधानी, प्रमाद, भ्रम, भूल।
गबन—(अ०पु०) किसी की धरोहर को अपना लेना।
गबरू—(फा० वि०) जवानी की वह अवस्था जब रेख निकलती हो, सीधा, भोला भाला, (पु०) दुलहा, पति, स्वामी।
गबरून—(फा०पु०) एक प्रकार का चरखाने का मोटा कपड़ा।
गब्बर—(फा०वि०) अहकारी, घमंडी, आलसी, शीघ्र काम न करने वाला, शीघ्र उत्तर न देने वाला, बहुमूल्य, धनी, मालदार।
गब्भा—(फा०पु०) रूई से भरा हुआ गद्दा
गब्र—(फा०पु०)पारस देश का अग्निपूजक।
गम—(अ०पु०) दुःख,शोक, रंज,चिन्ता गमखाना—क्षमा करना।
गमखोर—(फा०वि०) सहिष्णु सहनशील। गमखोरी—(फा०स्त्री०)सहनशीलता। गमगीन—(फा० वि०) उदास, दुःखी, खिन्न।
गमला—(फा० पु०) फूल इत्यादि के पौधो को लगाने का मिट्टी इत्यादि का पात्र, शौच पात्र।
गमी—(अ० स्त्री०) शोक का समय, किसी मनुष्य के मरने पर किया जाने वाला शोक, मृत्यु, मरण।
गरक—(अ० वि०) निमग्न, डूबा हुआ, नष्ट, किसी कार्य मे लीन। गरकाब—(फा० वि०) पानी में डूबा हुआ निमग्न। गरकी—(अ० स्त्री) डूबने की क्रिया या भाव, अतिवृष्टि, बाढ़, नीची भूमि, वृद्धावस्था।
गरज—(अ०स्त्री०) आशय, प्रयोजन, इच्छा (क्रि० वि०) निदान, साराश यह है कि।
गरजमन्द—(फा०वि०)इच्छुक, चाहने वाला, अभिलाषा करने वाला।
गरजी, गरजू—(फा०वि०) गरजमन्द, इच्छुक।
गरदन—(फा०स्त्री०)धड और सिर को जोडने वाला अग, ग्रीवा, पात्र आदि का ऊपरी पतला भाग, साल, गरदन उठाना—विद्रोह करना, गरदन काटना—धड से सिर अलग करना,मार डालना हानि पहुँचाने का उद्योग करना; गरदन मे हाथ देना—गरदन पकडकर निकाल बाहर करना, गरदनघुमाव—मल्ल युद्ध की एक युक्ति।
गरदा—(फा०पु०)धूल मिट्टी।
गरदान—(फा०क्रि०)घूम फिर कर एक ही स्थान मे आनेवाला, (पु०)शब्दो का रूप साधन, वह कबूतर जो घूम फिर कर अपने स्थान पर आ जाता है। गरदानना—(फा०क्रि०)शब्दो का रूप साधना, बारबार कहना गिनना, समझना, मानना।
गरम—(फा०वि०)जलता हुआ, तप्त, उष्ण, तीक्ष्ण, उग्र, खरा प्रचण्ड,प्रबल, गरम प्रकृति का, उत्साह से भरा हुआ, गरमा गरम—उष्ण, मिजाज गरम होना—क्रोध आना पागल होना; गरम कपड़ा—ऊनी वस्त्र, गरम—मसाला—लबंग, तेजपात, धनियाँ, मिर्च, इलायची आदि।
गरमी—(फा० स्त्री०) उष्णता, ताप, जलन, प्रचण्डता, गरमी का ऋतु, उमंग, क्रोध, आवेश, फिरग या आतशक रोग,गरमी दाना—शरीर मे गरमी के दिनो में पड़ने वाले लाल दाने।
गरहाजरी—(फा०स्त्री०)देखो गैरहाजिरी
गराज—(फा०स्त्री०)गंभीर शब्द,गरज।
गरीब—(अ० वि०)नम्र, दीन, दरिद्र, निर्धन,कगाल;गरीब निवाज—दुखियो का कष्ट दूर करने वाला, दयालु, गरीब परवर—गरीबों का पालन करने वाला, प्रतिपालक।
गरीबाना—(फा० व०) गरीबों की तरह का।
गरीबी—(अ०स्त्री०) दीनता, दरिद्रता, निर्धनता, अधीनता, कगाली।
गरूर—(अ०पु०) अभिमान, घमण्ड।
गरूरी—(अ०वि०) अभिमानी घमण्डी
गरेवान—(फा०पु०) अंगे, कुरते आदि के गले पर की काट, गले की पट्टी।
गरोह—(फा०पु०) झुण्ड, समूह, जत्था
गर्द—(फा० स्त्री०) धूलि, राख, गर्दगुबार धूर, मिट्टी; गर्दखोर—खाकी रंग का, जो धूर पड़ने से खराब न हो; गर्दखोरा—(पु०)पैर पोछने का टाट।
गर्दाबाद—(फा० स्त्री०) धूल या राख से भरा हुआ, उजाड़, अचेत।
गर्दालू—(फा०पु०) आलू बोखारा।
गर्दिश—(फा० स्त्री०) घुमाव, चक्कर विपत्ति।
गलत—(फा० पु०) अशुद्ध, असत्य, मिथ्या झूठ।
गलत फहमी—(स्त्री०)भ्रम,असत्य वार्ता
गलता—(फा०पु०)देखो गलतान।
गलता—(अ० पु०) एक प्रकार का चमकीला वस्त्र, कारनीस का दबा हुआ पोला भाग।
गलती—(फा०स्त्री०)अशुद्धि, भूल चूक, धोखा।
गलीचा—(फा० पु०)एक प्रकार का मोटा बिछौना जिसपर रग बिरंगे बेले बूटे बने होते है कालीन।
गलीज—(अ०वि०)गदा,मैला, अपवित्र, अशुद्ध।
गलीत—(अ०वि०)गदा, मैला, कुचैला।
गल्ला—(फा०पु०)पशुओ का झुण्ड। दल, (अ० वि०)कृषि का अन्न।
गल्लाफरोश—फा० वि०) अन्न बेचने वाला व्यापारी।
गवर्नमेन्ट—(अ०स्त्री०)राज्य, शासनपद्धति।
गवर्नर—(अं० पु०) किसी प्रान्त का शासक। गवर्नर जेनरल—(अ०पु०) देश का सबसे बड़ा अधिकारी।
गवर्नरी—(हिं० स्त्री०) वह प्रान्त जहाँ गवर्नर शासन करता हो, शासन अधिकार।
गवारा—(फा० वि०) अनुकूल, सह्य, अङ्गीकार, मनको भाने वाला।
गवाह—(फा०पु०) वह मनुष्य जिसने किसी घटना को प्रत्यक्ष देखा हो, साक्षी,। गवाही—(फा० स्त्री०) किसी ऐसे मनुष्य का कथन जिसने साक्षात् रूप से घटना को देखा हो, साक्षी का प्रमाण, साक्षात प्रमाण।
गश—(अ०पु०) मूर्छा, गश खाना—मूर्छित होना। गशी—(अ०स्त्री०) मूर्छा।
गश्त—(फा० पु०) टहलना, घूमना, चक्कर, भ्रमण करना, पुलिस का दौरा, एक प्रकार का नाच। गश्तसलामी—(फा०स्त्री०) भेंट, जो अधिकारी को दौरे के समय मिलती है। गश्ती—(फा०वि०)भ्रमण करने वाला,घूमने फिरने वाला।
गहर—(फा०स्त्री०)बिलम्ब, देर।
गांज—(फा०पु०) राशि, लकड़ी। का ढेर, ढेर।
गाइड(अ०वि०)पथदर्शक, मार्ग दिखलाने वाला। गाउन—(अं०पु०) यूरप तथा अमेरिका के स्त्रियों का एक प्रकार का पहिरावा, न्यायाधीश का लबादा, विश्वविद्यालय की उपाधिप्राप्त विद्यार्थियो का विशिष्ट वस्त्र।
गाजा—(फा० पु०) मुँह पर पोतने का रोगन।
गाजी—फा०पु०) मुसलमानी धर्म के

के अनुसार वह वार जा धर्म के लिये युद्ध करे, बहादुर, वीर।
गातलीन–(अ०स्त्री०) जहाज की डोरी जो मस्तूलके चरखें में लतेटी रहती है
गाफिल–(अ०वि०) असावधान, बेसुध।
गम्मचा–(फा०पु०) घोडे के पैर का वह भाग जो सूम और टखने के बीच मे होता है।
गायत–(अ०वि०) बहुत, अधिक।
गायब–(अ०वि०) लुप्त, अन्तर्धान।
गायबाना–(अ०क्रि०वि०) गुप्त रीतिसे।
गार–(अ०पु०) गड्ढा, गुफा, कन्दरा।
गारत–(अ०वि०) नष्ट, बरबाद।
गारद–(अ० 'गाड्ड' का अपभ्रंश) रक्षा के लिये नियुक्त किया हुआ, सिपाहियो का समूह।
गार्ड–(अ०पु०) रक्षक, पहरा देनेवाला मनुष्य।
गार्डन्–(अ०पु०) बाग, बगीचा; गार्डन पार्टी–किसी बगीचे का भोज।
गालिब–(अ०वि०) विजयी, जीतने वाला, श्रेष्ठ।
गालिम–(अ०वि०) प्रबल, प्रचण्ड दृढ।
गाली गुफ्ता–(फा०स्त्री०) गालीगलौज।
गाव–(फा०पु०) गाय, बैल, गावकुशी–गोवध, गोहत्या; गावकुस–(फा०पु०) लगाम, गावजबान–(फा०स्त्री०) एक प्रकार की बूटी जो औषधि में प्रयोग होती है, गावतकिया–(फा०पु०) कमर टेकने की फर्श पर रखने की बड़ी तकिया; गावजोरी–(फा०स्त्री०) बल प्रदर्शन, हाथ बाँही।
गावड–(फा०स्त्री०) गला, गरदन।
गावदुम–(फा०वि०) गाय के दुम की आकृति का, चढाव उतार का, ढालुआं ऊपर मोटा नीचे पतला।
गिजा–(अ०स्त्री०) खाद्यवस्तु, खाने का पदार्थ।
गिनी–(अ०स्त्री०) इङ्गलाण्डके इक्कीस शिलिंग (प्राय: साढे पन्द्रह रुपये के मूल्य) का सोने का सिक्का, एक प्रकार की विलायती घास।
गिब्बन्–(अ०पु०) मनुष्य के आकार का एक प्रकार का सुमात्रा आदि टापुओं का बन्दर।
गिस्ट–(अ०पु०) गोट लगाने का एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, एक प्रकार की सूती मलमल।
गिरदा–(फा०पु०) घेरा, चक्कर, तकिया, हलवाई की मिठाई बनाने की लकड़ी की थाली, ढाल, ढोल का या खजड़ी का भेड़रा।
गिरदानक–(फा०पु०) करघा घुमाने की लकड़ी।
गिरदाली–(फा०स्त्री०) कच्चे लोहे को एक करने की अकुसी।
गिरदावर–(फा०पु०) देखो गिर्दावर; गिरदावरी–(फा०स्त्री०) गिर्दावर का पद या काम।
गिरफ्त–(फा०स्त्री०) ग्रहण की क्रिया या भाव, पकड़; गिरफ्तार–(फा० वि०) जो पकडा किया गया हो, ग्रस्त, ग्रसा हुआ, गिरफ्तारी–(फा० स्त्री०) गिरफ्तार होने की क्रिया या भाव।
गिरमिट–(गिलमिट–अं० 'गिम्लेट्'–का अपभ्रंश) बढई का लकडी छेदने का बडा बरमा।
गिरमिट–(अ० 'अग्रीमेन्ट्' का अपभ्रंश) प्रतिज्ञापत्र, स्वीकृति पत्र।
गिरवान–(फा०पु०) अगे या कुरते का गले पर का गोल भाग, गला, गरदन।
गिरवीं–(फा०वि०) बन्धक, गिरो रक्खा हुआ गिरवीदार–(फा०पु०) बधक करनेवाला मनुष्य, गिरवीनामा–(फा०पु०) रेहननामा।
गिरह–(फा०स्त्री०) ग्रन्थि, गाठ, वह गाठ जहा पर दो पदार्थ जुटे होते है, एक गज का सोलहवा भाग जेब, खरीता कलैया, उलटी मल्लयुद्ध की एक युक्ति, गिरहकट–(फा०वि०) जेब या गांठ का रुपया चोरानेवाला; गिरहदार–(फा०वि०) गाठवाला, गठीला गरहबाज–(फा०पु०) एक प्रकार का कबूतर जो उड़ते उड़ते कलैया खाता जाता है।
गिरा–(फा०वि०) अधिक मूल्य का, महगा, भारी, अप्रिय, भला न लगनेवाली।
गिरानी–(फा०स्त्री०) महँगापन, मँहगी, अकाल, अभाव, कमी, पेट का भारीपन।
गिराव–(फा०पु०) तोप का गोला जिसमें छर्रे भरे होते है।
गिरो–(फा०वि०) बन्धक।
गिर्जा–(फा०पु०) देखो गिरजा।
गिर्द–(फा०अव्य०) आसपास, चारो ओर।
गिर्दावर–(फा०पु०) घूमने वाला, काम की देख भाल करनेवाला।
गिलकार–(फा०पु०) गारे का पलस्तर करने वाला, गिलकारी–(फा० स्त्री०) गारा लगाने का काम।
गिलन–(अ०पु०) "गेलन्" का अपभ्रंश, प्राय पाच सेर की अग्रेजी तरल पदार्थ की नाप।
गिलम–(फा०स्त्री०) नरम तथा चिकनी कालीन, खूब मोटा कोमल बिछौना (वि०) कोमल, नरम।
गलसुर्ख–(फा०स्त्री०) गेरूमिट्टी।
गिला–(फा०पु०) उलहना, निन्दा।
गिलाफ–(अ०पु०) अच्छे कपडे की ढाँपने का खोल, रजाई, म्यान।
गिलाय–(अ०स्त्री०) गिलहरी, चेखुर।
गिलावा–(फा०पु०) ईंट जोडने की गीली मिट्टी, गारा।
गिलिम–(फा०पु०) देखो गिलम।
गिली–(फा०स्त्री०) देखो गुल्ली।
गिलैफ–(अ०पु०) देखो गिलाफ।
गिलोय–(फा०स्त्री०) गुडूची गुरुच।
गिलोला–(फा०पु०) गुलेल से फेंके जाने वाली मिट्टी की गोली।
गिल्टी–(फा०स्त्री०) देखो गिलटी।
गीव–(फा०स्त्री०) ग्रीवा, गला गरदन।
गीड–(फा०पु०) आखमे का कीचड।
गीदी–(फा०वि०) डरपोक, कायर।
गीवत–(अ०स्त्री०) अनुपस्थिति, पिशुनता चुगली।
गुचा–(अ०पु०) कली, कुड्मल, नाचरग, विहार।
गुची–(अ०स्त्री०) घुमची गुञ्जा।
गुजाइश–(फा०पु०) स्थान, समाई, सुविधा, अवकाश।
गुजान–(फा०वि०) अविरल, घन।
गुबज–(फा०पु०) देवालयो की गोल ऊची छत। गुबजदार–जिस पर गुबज हो।
गुजर–(फा०पु०) निकास, गति, प्रवेश पैठ, पहुच, निर्वाह, कालक्षेप, गुजरगाह–नदी पार होने का घाट, गुजरना–(फा०क्रि०) समय बीतना, किसी स्थान से होकर आना जाना, नदी पार होना निर्वाह होना, निपटना, गुजर जाना–मर जाना, गुजरबसर–(फा०पु०) निर्वाह।
गुजरबान–(फा०पु०) घाट की उतराई लेने वाला।
गुजश्ता–(फा०वि०) गत, व्यतीत, बीता हुआ।
गुजारना–(फा०क्रि०) बिताना, काटना पहुँचाना। गुजारा–(फा०पु०) निर्वाह, जीवन निर्वाह की वृत्ति, नाव की उतराई, कर लेने का स्थान।
गुजारिश–(फा०स्त्री०) निवेदन, प्रार्थना।
गुदहना–(फा०क्रि०) त्याग करना, अलग प्रस्तुत करना, अलग करना।
गुर्दारा–(फा०पु०) नाव से नदी पार होने की क्रिया, उतारा, निर्वाह।
गुनहगार–(फा०वि०) अपराधी, पापी, दोषी; गुनहगारी–(फा०स्त्री०) अपराध, पाप, दोष।
गुनाह–(फा०पु०) दोष, पाप, पातक, गुनाहगर–(वि०) पापी, पातकी।
गुफ्तगू–(फा०स्त्री०) वार्तालाप, बातचीत।
गुबार–(अ०पु०) गर्द, धूल, मन में दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष।
गुम–(फा०वि०) गुप्त, छिपा हुआ, अप्रगट, अप्रसिद्ध, खोया हुआ
गुमची–(फा०स्त्री०) गुजा, घुमची।
गुमटी–(फा०स्त्री०) मकान के ऊपर की छत।
गुमनाम–(फा०वि०) अज्ञात, अप्रसिद्ध, जिसको कोई नहीं जानता।
गुमर–(फा०पु०) अभिमान, घमंड, शेखी, मन में छिपाया हुआ क्रोध, धीरे धीरे बातचीत।
गुमराह–(फा०वि०) कुपथगामी, बुरे मार्ग पर चलनेवाला, भूला, भटका हुआ; गुमराही–(फा० स्त्री०) भ्रम, भूल, कुपथ बुरा मार्ग।
गुमान–(फा०पु०) अनुमान, अटकल, घमड, गर्व, अहंकार, बुरी धारणा।
गुमाश्ता–(फा०पु०) मालिक की ओर से काम करनेवाला, कर्मकारक, प्रतिनिधि, एजेन्ट, गुमाश्तागीरी–गुमाश्ते का पद या कार्य।
गुम्बज–(फा०पु०) मकान के ऊपर की गोल छत।
गुम्मट–(फा०पु०) गुंबद, गुमटा।
गुरगाबी–(फा०पु०) मुंडा जूता।
गुरदा–(फा०पु०) रीढवाले प्राणी के कलेजे के निकट का अग जो मूत्र को बाहर निकालता है, साहस, एक प्रकार की छोटी तोप, गुड उबालने का बडा करछा।
गुरुस–(अ०पु०) बारह दर्जन वस्तु का समुदाय।
गुर्ज–(फा०पु०) गदा, सोंटा।
गुर्जमार–(फा० पु०) एक प्रकार का मुसलमानी फकीर।
गुल–(फा० पु०) गुलाब का फूल, पुष्प, हल्ला, पशुओ के शरीर परका गोल धब्बा, गालों पर हँसते समय पड़ने वाला गड्ढा, तपे हुए धातु से छापने का शरीर परका चिह्न छापा, दीपक की बत्तीका वह अश जो जल करे उमड़ आता है; गुल खिलना–कोई अद्भुत घटना का अविर्भाव होना, कोई आपत्ति प्रस्तुत होना, चिराग गुल होना–दीपक बुझ जाना, गुलअजायब–एक प्रकार का पौधा, उसका फूल।
गुलअब्बास–(फा० पु०) पीले फूल का एक बरसाती पौधा, गुलाब बांस; गुलअशर्फी–(पु०) एक प्रकार का पीले रग का फूल; गुलऔरंग–(पु०) एक प्रकार गेंदा; गुलकंद–(पु०) गुलाब के फूलो में चीनी मिलाकर धूपमें पकाई हुई एक रेचक औषधि, गुलकारी–(स्त्री०) कपडे पर बेल बूटे का काम; गुलकेश–(पु०) जटाधारीका पौधा या फूल, गुलखैर–(पु०) नीले रग के फूल का एक पौधा, गुलगपाड़ा–(हिं०पु०) शोरगुल, हल्ला, गुलगल–(फा०वि०) नरम, कोमल, मृदु।
गुलगुलिया–(फा०पु०) बन्दर नचाने वाला मदारी।
गुलचला–(फा०पु०) तोप चलाने वाला
गुलचांदनी–(फा०पु०) रात्रिमें फूलने वाला एक प्रकारका सफेद फूलका पौधा
गुलचा–(फा०पु०) प्रेमपूर्वक हाथ से गालों पर थपथपाना।
गुलचो–(फा० पु०) बढइयों का एक अस्त्र।
गुलचीन–(फा०पु०) एक प्रकार बडा वृक्ष जिसमें तीव्र गन्धका फूल होता है

गुलज़ार–(फा०पु०) उद्यान,वाटिका (वि०) हरा आनन्द और शोभा युक्त
गुलतराश–(फा० पु०) बत्ती काटने की कैंची,पौधोको छाटनेवाला माली
गुलतर्रा–(फ़ा०पुं०) जटाधारी का पौधा या फूल ।
गुलदस्ता–(फा०पु०) फूलोंका गुच्छा, अनेक प्रकारके फूल और पत्तियोका बँधा हुआ गुच्छा; गुलदाउदी–(फ़ा० स्त्री०) एक प्रकार का फूल का पौधा, इसका पुष्प, गुलदान–(फा० पुं०) फूलो का गुच्छा रखने की चीनी मिट्टी या काँचका पात्र; गुलदाना–(फा०पुं०) एक प्रकार की मिठाई, बुँदिया ।
गुलदार–(फा० पुं०) एक प्रकार का सफेद कबूतर जिसके शरीर पर महीन लाल या काले छीटे होते है, एक प्रकार का कसीदा ।
गुलदुपहरिया–(फ़ा० पु०) एक छोटा पौधा जिसमे कटोरी के आकार के गहरे लाल रग के फूल होते है ।
गलदुम–(फा०स्त्री०) बुलबुल पक्षी ।
गुलनार–(फ़ा०पुं०) अनार का फूल, अनार के पुष्प के समान गहरा लाल रंग; गुलपपड़ी–(फा० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई; गुलबकावली–(फा० स्त्री०) एक सुगन्धित सफेद फलो का पौधा जो हल्दी के पौधे के सदृश होता है; गुलबक्सर–(फ़ा० पुं०) ताश के नकस के खेलमे जीत की एक बाज़ी; गुलबदन–(फा० पुं०) एक प्रकार का कीमती धारीदार रेशमी वस्त्र; गुलबूटा–(फा० पु०) बेलबूटा, नकाशी; गुलमेंहदी–(फ़ा०स्त्री०) आश्विन मासमे फूलने वाला एक पौधा जिसके फूल अनेक रंगके होते है; गुलमेख–(फा०पु०) गोल सिरेकी कील,फुलिया; गुलरेज–(फा०पुं०) आतिशबाज़ी की फुलझड़ी; गुललाला–(फ़ा० पु०) एक प्रकारका पोस्ते के आकार का पौधा, इसका फूल;गुलशकरी–(फा०स्त्री०) एक प्रकारकी गुलाबी मिठाई; गुलशन–(फ़ा० पु०) उद्यान, वाटिका, फुलवारी; गुलशब्बो–(फ़ा०पुं०) एक सफेद सुगन्धित फूलका लहसुन के पौधेके आकारका पौधा,सुगधरा, रजनीगन्धा; गुलसुम–(फा०पुं०) सोनारों का नकाशी करने का एक औज़ार; गुलहजारा–(फा०पु०) एक प्रकार का गुलगुला; गुलाब–(फ़ा० पु०)एक कँटीला पौधा जिसमे सुगन्धित लाल फूल लगते हैं, गुलाबजल
गुलाबपाश–(फा० पु०) झारी के आकार का एक पात्र जिसमे गुलाबजल भरकर छिड़का जाताहै; गुलाबबांस–(फा० पु०) एक प्रकार का लाल रंग के फूल का पौधा ।
गुलाम–(अ०पु०) खरीदा हुआ दास, साधारण सेवक, गजीफे का एक रंग, ताश का एक पत्ता जो दहले से बड़ा और बेगम से छोटा माना जाता है; गुलामी–(अ० स्त्री०) दासत्व, सेवा, शुश्रूषा, पराधीनता, परतन्त्रता ।
गुलाल–(फा० पुं०) होली के दिनों मे एक दूसरे के मुख पर लगाने का लाल चूर्ण; गुलाला–(फा०पु०) एक प्रकार का लाल फूल ।
गुलिस्तां–(फा० वि०) उद्यान, वाटिका, बाग ।
गुलूबन्द–(अ०पु०) एक बित्ता चौडी कपडे की पट्टी जो गले और कान मे शरदऋतु मे लोग बाधते है, गले मे पहिरने का एक आभूषण ।
गुलेल–(फा०स्त्री०) पक्षी मारने का धनुष जिसमे मिट्टी की गोलियां चलाई जाती है; गुलेला–(फा०पु०) गुलेल, मिट्टी की गोली जो गुलेल से चलाई जाती है ।
गुल्लाला–(फा०पु०) एक प्रकारका लाल फूल ।
गुस्ताख–(फा०वि०) धृष्ट,ढीठ, बड़ों का सम्मानन करने वाला;गुस्ताखी–(फा०स्त्री०) धृष्टता, अशिष्टता, ढिठाई ।
गुस्ल–(अ०पुं०) स्नान, नहाना ।
गुस्लखाना–(फा० पुं०) स्नानागार, नहाने का घर ।
गुस्सा–(अ०पु०) क्रोध, कोप, रिस; गुस्सा उतरना–क्रोध शान्त होना ; गुस्सा चढना–क्रोधके आवेश मे आना ।
गेटिस–(अ०पु०) मोजा बाधने का रबड़ या चमडे की पट्टी ।
गेर–(फ़ा०पुं०) ग्रन्थि, गाठ, गिरह ।
गेरवां–(फा०पु०) पशुओं के गले मे लपेटने का बन्धन, घेरांव ।
गेली–(अ० स्त्री०) टाइप रखने की छिछली किश्ती ।
गैब–(अ०पुं०) परोक्ष, जो सामने न हो; गैबदां–(अ०वि०) परोक्ष की वार्ता जाननेवाला; गैबी–(अ०वि०) गुप्त, छिपा हुआ, अज्ञात ।
गैयर–(अ०पुं०) गज, हाथी ।
गैर–(अ० वि०) अन्य, दूसरा, अपने कुटुम्ब या समाज के बाहर का, पराया, शब्द जो विरुद्ध अर्थ बोधित करनेके लिये उपसर्ग की तरह प्रयोग होता है यथा गैरमुमकिन, (अ० स्त्री०) अत्याचार, अनुचित कर्म, अन्धेर ।
गैरत–(अ० स्त्री०) लज्जा, शर्म, ग्लानि; गैरमनकूला–(अ०वि०) वह पदार्थ जो एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान तक न लेजा सके, स्थिर, अचल; गैरमामूली–असाधारण,असाधारण, असामान्य ; गैरमुनासिब–अयोग्य, अनुचित ; गैरमुमकिन–असम्भव, न होने योग्य; गैरवाजिब–अयोग्य, अनुचित;बेजा; गैरहाजिर–अनुपस्थित हो; –गैरहाजिरी–(अ० स्त्री०) अनुपस्थिति ।
गैलन्–(अ०पु०) प्रायः अढाई सेर की एक अंग्रेज़ी तौल ।
गैलरी–(अ०स्त्री०) नीचे ऊपर बैठने का सीढी के समान स्थान ।
गैस–(अ० स्त्री०) एक प्रकार का बाष्परूप पदार्थ ।
गोइंदा–(फा०पु०) गुप्तचर, भेदिया
गोज–(फा०पुं०) अपान वायु, पाद ।
गोय–(फा०पु०) गेद ।
गोया–(फा०क्रि०वि०) मानो, जैसे ।
गोर–(फा० स्त्री०) मृत शरीर गाडने का गड्ढा, कब्र ।
गोरखर–(फा० पु०) गदहे की जात का एक जंगली पशु जिसकी शरीर पर काली धारियां होती है ।
गोरिल्ला–(फा० पु०) अफ्रीका मे पाया जाने वाला एक प्रकार का वनमानुष ।
गोलंदाज(फ़ा०पु०) तोप मे गोला रख कर चलाने वाला ।
गोलन्दाज–(फा०पु०) देखो गोलदाज; गोलन्दाजी–(फा० पु०) तोप का गोला चलाने का कार्य या विद्या ।
गोल्ड्–(अ०पु०) सुवर्ण, सोना ।
गोल्डन्–(अ०वि०) सोनेका, सोनहला
गोश–(फा०पु०)सुनने की इन्द्रिय,कान
गोशमाली–(फा०पु०) कान उमेठना, ताड़ना, कड़ी चेतावनी ।
गोशवारा–(फा० पु०) खजन नामक वृक्ष, कुण्डल, कान का बाला, सीप का बड़ा मोती, पगड़ी का किनारा जो कलाबत्तू से बिना होता है, कलँगी, सिरपेच, जोड़, आयव्यय के सक्षिप्त वर्णन का लेखा ।
गोशा–(फ़ा०पु०) कोण,कोना,एकांत स्थान, तरफ, दिशा, ओर, कमान के दोनों छोर, धनुष कोटि ।
गोश्त–(फा०पुं०) आमिष, मांस ।
गौगा–(अ० पु०)हल्ला, जनश्रुति ।
गौर–(अ०पु०)सोच विचार, ध्यान ।
गौहर–(फा०पु०) मुक्ता, मोती ।
ग्रांडील–(अं० वि०) ऊंचे पद का, बड़ा, ऊंचा ।
ग्रामोफोन्–(अ० पु०) एक प्रकार का बाजा जिसमें गीत आदि भरी होती है और जब चाहे सुनी जा सकती हैं ।
ग्रासकट्–(अ०पुं०) घास काटनेवाला घसियारा ।
ग्रीक्–(अ०वि०) यूनान देश सबंधी (स्त्री०) यूनान देश की भाषा ।
ग्रूप–(अ०पु०) झुण्ड, समूह ।
ग्रेट् प्राइमर–(अं०पु०) छापे का एक प्रकार का बड़ा अक्षर ।
ग्रेन्–(अं०पु०) एक जव के बराबर की अंग्रेज़ी तौल ।
ग्रैजुएट्–(अं० पुं०) अंग्रेजी विद्या में बी० ए० की उपाधि प्राप्त विद्यार्थी ।
ग्वारनट्–(अ० स्त्री०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।

घ

घायल–(फा० वि०) चोट लगा हुआ, आहत ।

च

चंद–(फा० वि०) कुछ, थोड़े, कई एक ।
चंदा–(फा०पुं०)किसी कार्य के लिये दिया हुआ अल्प धन, अंशदान, समाचार पत्र का मासिक या वार्षिक मूल्य ।
चंवल–(फा० पुं०) भिक्षा मागने का खप्पर, चिलम का सरपोश ।
चकबन्दी–(फा० स्त्री०) भूमि को विभक्त कर की क्रिया, भूमि की हदबन्दी ।
चकबस्त–(फा० पु०) भूमि की हदबन्दी ।
चकमक–(फा०पु०) एक प्रकार का बहुत कड़ा पत्थर जिसपर चोट पडने से जल्दी से आग निकलती है ।
चकमा–(फा० पु०) छल, धोखा, भुलावा, हानि; चकमा खाना–धोखे मे आ जाना ।
चगताई–(तु ० पु०) तुर्कों का एक प्रसिद्ध वश ।
चपकुलिश–(तु०स्त्री०)कठिन अवस्था, कठिनाई, अडस, झझट, कसमकसी, भीडभाड़ ।
चपदस्त–(फा०पु०)वह घोड़ा जिसका अगला दहिना पैर सफेद हो ।
चमचा–(फा० पु०) डंडी लगी हुई छोटी कटोरी, चम्मच, डोई, चिमटा, एक प्रकार का फोडा ।
चमन–(फा०पुं०) हरी क्यारी, फुलवारी, घर के भीतर का छोटा बगीचा ।
चम्मच–(फ़ा० पुं०) देखो चमचा ।
चरका–(फा० पु०) हलका घाव, धोखा, हानि, धक्का, गरम धातु से दागने का चिह्न ।
चरख–(फा०पु०) घूमने वाला गोल चक्कर, खराद, सूत कातने का चरखा, कुम्हार का चाक, ढेलवांस, वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ी रहती है, एक शिकारी पक्षि, लकड़बग्घा; चरखकश–(फा० वि०) खराद की पहिका चमाने वाला ।
चरग–(फा० पुं०) बाज की जाति की एक शिकारी चिड़िया, लकड़बग्घा ।
चरज–(फ़ा०पु०) चरख नामकपक्षी ।
चरब–(फ़ा० वि०) तीखा, तीक्ष्ण, चरब जबानी–शुश्रूषा ।
चरबा–(फ़ा० पुं०) प्रतिमूर्ति; चरबा उतारना–मान चित्र बनाना ।
चरागाह–(फा० पुं०) वह मैदानजहा

चौपाये चरते हैं, पशुओं के चरने का स्थान।
चरिन्दा–(फ़ा० पुं०) चरने वाला, पशु, चौपाया।
चर्च–(अं० पुं०) ईसाइयों का ईश वन्दना का मन्दिर, गिरजाघर।
चर्बिल–(अं० पुं०) गाजर के तरह की एक विलायती तरकारी।
चश्म–(फ़ा० स्त्री०) नयन, लोचन, नेत्र, आँख ; **चश्मक**–(फ़ा० स्त्री०) चश्मा, आँख का संकेत, द्वेष, इर्ष्या, मनमोटाव ; **चश्मदीद**–(फ़ा०वि०) आँखों से देखा हुआ, **चश्मनुमाई**–आंख गुरेर कर घुडको देना, आंख देखाना ; **चश्मपोशी**–आँख चोराना, सामना न करना।
चश्मा–(फ़ा० पुं०) उपनेत्र, सोत, पानी का सोता, छोटी नदी, जलाशय, **चश्मा लगाना**–उपनेत्र का व्यवहार करना।
चस्पां–(फ़ा० वि०) चिपकाया या साटा हुआ।
चहलकदमी–(फ़ा० स्त्री०) धीरे धीरे टहलान लगाना।
चहारदीवारी–(फ़ा० स्त्री०) किसी स्थान के चारो ओर की भीत,परिखा प्राचीर।
चहारम–(फ़ा०वि०) चतुर्थांश, चौथा भाग।
चांसलर्–(अं० पुं०) उपाधि प्रदान करने वाला विश्वविद्यालय का प्रधान अधिकारी।
चाक–(फ़ा० पुं०) दरार (तु०वि०) दृढ, मजबूत, आरोग्य, (अं० पुं०) खड़िया सिट्टी ; **चाकचरना**–चीरना, फाड़ना ; **चारचौबंद**–हृष्ट-हट्टाकट्टा।
चाकदिल–(अं० पुं०) एक प्रकार का बुलबुल।
चाकर–(फ़ा०पुं०)दास, नौकर, भृत्य।
चाकरी–(फ़ा० स्त्री०) नौकरी- सेवा; **चाकरी बजाना**–सेवा करना।
चाकू–(तु० पुं०) कलम बनाने की तेज छुरी।
चादर–(फ़ा०स्त्री०)ओढने या बिछाने का वस्त्र, चौड़ा दुपट्टा, चद्दर, ऊपर से गिरने वाली पानी की चौड़ी धार, नदी का विस्तार जिसमें भँवर नहीं होता, फूलों की ढेर ; **चादर उतारना**–अपमान करना; **चादर डालना**–किसी विधवा स्त्री को रख लेना; **चादर से बाहर पैर फैलाना**–अपने वित्त से अधिक व्यय करना ; **चादर हिलाना**–लड़ाई बन्द करने के लिये झंडा दिखलाना।
चापलूस–(फ़ा०वि०) चाटुकर।
चापलूसी–(फ़ा० स्त्री०) चाटुकारी।
चाबुक–(फ़ा० पुं०) कोड़ा, छड़ी, उत्तेजना उत्पन्न करने की बात; **चाबुक सवार**–घोड़े को निकालने वाला, घोड़े को अनेक प्रकार की चालें सिखलानें वाला; **चाबुक सवारी**–चाबुक सवार का काम
चार आईना–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार का वस्त्र या कवच।
चारज–(अं०पुं०) कार्यभार, दोषारोपण।
चारज देना–अपना भार दूसरे को सौंपना; **चारज लगाना**–अपराधी पर दोषारोपण होना।
चारजामा–(फ़ा० पुं०)घोड़े की पीठ पर रखने की जीन, पलान, काठी।
चारदीवारी–(फ़ा० स्त्री०) रक्षा के निमित्त चारो ओर बनाई हुई दीवार, प्राचीर, कोट, घेरा।
चारनाचार–(फ़ा०क्रि०वि०) विवश होकर।
चारपाया–(फ़ा० पुं०) चार पैर का पशु, चौपाया।
चारबाग–(फ़ा०पुं०)चौखूटा बगीचा, वह चौखूटा रूमाल जो भिन्न रगों से चार बराबर के खानों में बँटा रहता है।
चारा–(फ़ा०पुं०)उपाय। **चाराजोई**–(फ़ा०स्त्री०) अभियोग।
चालबाज–(फ़ा०वि०) धूर्त, कपटी, छली।
चालबाजी–धूर्तता, धोखेबाजी।
चालाक–(फ़ा०वि०)व्यवहार कुशल, चतुर, धूर्त; **चालाकी**–(फ़ा०स्त्री०) चतुराई, युक्ति, धूर्तता ; **चालाकी खेलना**–धूर्तता करना।
चिंपाञ्जी–(अं० पुं०) शिम्पाञ्जी का अपभ्रंश) अफ्रीका का एक बनमानुस जिसका आकार मनुष्य से बहुत कुछ मिलता है।
चिक–(तु० स्त्री०) बांस की पतली तीलियों का बना हुआ परदा(पुं०) पशुओं की मांस बेंचने वाला,कसाई, (स्त्री०) वायु के विकार से उत्पन्न कमर की पीड़ा, चमक,(अं० चेक्) हुन्डी, चेक, रुपया देने के आदेश का बंक के नाम का रुक्का।
चिकन–(फ़ा०पुं०)महीन सूती कपड़ा जिस पर वेलबूटे बिने होते हैं, कसीदा काढ़ा हुआ वस्त्र, **चिकनकारी**–(फ़ा० स्त्री०) चिकन बनाने का काम; **चिकनगर, चिकनदोज**–(फ़ा०पुं०) चिकन काढ़ने वाला।
चिट्–(अं०स्त्री०) कागज का टुकड़ा, पुरजा, कपड़े का छोटा टुकड़ा, छोटा पत्र।
चिमनी–(अं० स्त्री०) धुवां निकलने की नली, लम्प या लालटेन में लगाने की शीशे की पाइप।
चिरकीन–(फ़ा०वि०) मैला।
चिराग–(फ़ा० पुं०) दीपक, दिया; **चिराग का हंसना**–दीपक की बत्ती जलकर झड़ना; **चिराग को हाथ देना**–दीपक बुझाना; **चिराग गुल पगड़ी गायब**–अवसर पाकर धन चोरा ले जाना; **चिराग गुल करना**–दीपक बुझाना, किसी के वंश का अन्त करना; **चिराग गुल होना**–उदासी छा जाना, वंश का नाश होना; **चिराग जले**–सूर्यास्त के समय; **चिराग ठंढा करना**–दीपक बुझाना; **चिरागतले अंधेरा**–ऐसे स्थान पर अन्याय होना जहाँ पर उसके निवारण का पूरा प्रबन्ध हो; **चिराग दिखाना**–उजाला सामने करना।
चिरागदान–(अं०पुं०)दीवट, शमादान
चिरागी–(अं० स्त्री०) दीपक जलाने का व्यय या वेतन।
चिलगोजा–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार का मेवा।
चिलम–(फ़ा० स्त्री०) मिट्टी का कटोरी के आकार का नालीदार पात्र जिसमें तमाखू और आग रख कर हुक्का पिया जाता है; **चिलम पीना**–हुक्का पीना ; **चिलम चढाना**–चिलम पर तमाखू तथा आग रखकर पीने के लिये तैयार करना ; **चिलम भरना**–चिलम चढाना।
चिलमगर्दा–(फ़ा०स्त्री०)देखो नैचाबन्द
चिलमची–(फ़ा०स्त्री०)देग के आकार का एक पात्र जिसमें लोग हाथ धोते हैं ; **चिलमची बरदार**–हाथ मुह धोलाने वाला।
चिलमन–(फ़ा० स्त्री०) बाँस की पतली तीलियों का बना हुआ परदा, चिक।
चिलमपोश–(फ़ा० पुं०) चिलम पर ढापने का झंझरीदार ढपना।
चिल्ला–(फ़ा०पुं०) चालीस दिन का समय ; **चिल्ले का जाड़ा**–बहुत तीव्र ठण्ढ ; (पुं०) चीला, उलटा, धनुष की डोरी, प्रत्यंचा, पगड़ी का तिल्ला।
चीख–(फ़ा० स्त्री०) चीक, चिल्लाहट।
चीज–(फ़ा० स्त्री०) वस्तु, पदार्थ, द्रव्य, गहना, आभूषण, राग, गीत, कोई अद्भुत या महत्व की वस्तु, गणना करने योग्य पदार्थ।
चीद–(फ़ा०वि०)छटा हुआ,चुना हुआ।
चीफ–(अं० वि०) प्रधान, श्रेष्ठ, बड़ा (पुं०) सरदार या राजा ; **चीफ कमीश्नर**–किसी सूबे का प्रधान अधिकारी ; **चीफ कोर्ट**–किसी प्रान्त का प्रधान न्यायालय ; **चीफ जज्**–चीफ कोर्ट का प्रधान न्यायाधीश ; **चीफ जस्टिस्**–हाईकोर्ट का प्रधान न्यायाधीश।
चुगद–(फ़ा०पुं०) उल्लू पक्षी, मूर्ख।
चुगल–(फ़ा०पुं०) पीठ पीछे निन्दा करने वाला, चिलम के छेद पर रखने की गिट्टी, गिट्टक।
चुगलखोर–(फ़ा० पुं०) पीठ पीछे निन्दा करने वाला, लुतरा ; **चुगलखोरी**–(फ़ा० स्त्री०) पीठ पीछे निन्दा।
चुगली–(फ़ा० स्त्री०) पीठ पीछे निन्दा।
चुनिंदा–(फ़ा० वि०) चुना हुआ, छँटा हुआ।
चुरुट–(अं० पुं०) तमाखू के पत्ते को लपेट कर बनी हुई बत्ती जिसका धुवाँ लोग पीते है, सिगार।
चुस्त–(फ़ा०वि०) कसा हुआ, संकुचित, तंग, जो ढीला न हो, आलस्य रहित, तत्पर, फुरतीला, दृढ़।
चुस्ती–(फ़ा०स्त्री०) कसावट, दृढता,
चुहलबाज–(फ़ा० वि०) ठिठोलिया, ठठठेबाज;**चुहलबाजी**–(फ़ा० स्त्री०) हँसी दिलगी, मसखरापन।
चूंकि–(फ़ा०क्रि०वि०)इस कारण से, क्योंकि, इसलिये कि।
चूजा–(फ़ा०पुं०) मुरगी का बच्चा।
चेंबर–(अं०पुं०)सभागृह;**चेंबर आफ कमर्स**–किसी नगर के प्रधान व्यापारियों का सभा जो वे लोग अपने व्यापारियों के लिये करते हैं।
चेअर्–(अं०स्त्री०)बैठने की कुरसी; **ईजी चेअर्**–आराम कुरसी; **चेअरमैन्**–किसी सभा का सभापति।
चेक्–(अं०पुं०) बंक आदि के नाम रुपया देने के लिये लिखा हुआ पत्र; **चेक् काटना**–चेक् लिख कर किताब (चेक्-बुक) में काटकर किसी को देना।
चेचक–(फ़ा०स्त्री०)शीतला या माता नामक रोग।
चेचकरू–(फ़ा०पुं०)शीतला मुंह दाग मनुष्य।
चेन्–(अं०स्त्री०) छोटी छोटी कड़ियों को गुथकर बनाई हुई शृंखला,सिकड़ी;
चेयर्–(अं०स्त्री०) देखो चेअर्।
चेयरमैन्–(अं०पुं०)देखो चेअरमैन्;
चेस्–(अं०पुं०)लोहे का चौखटा जिसमें कम्पोज किये हुए टाइप कसकर छापे के प्रेस में रक्खे जाते हैं।
चेस्–(अं०पुं०)शतरज का खेल।
चेहरा–(फ़ा०नपुं०) बदन, मुखड़ा, किसी पदार्थ का अगला भाग, देवता दानव आदि की आकृति का ढांचा जो लीला या स्वांग में स्वरूप बनाने के लिये चेहरे के ऊँपरपहिना जाता है;
चेहलुम–(फ़ा०पुं०) मुसलमानों का मुहर्रम के चालीसवें दिन होने वाला उत्सव।
चेंसेलर(अं०पुं०) विश्वविद्यालय का मुख्य अधिकारी।
चैलेन्ज्–(अं०पुं०) लड़ने झगड़ने अथवा वादानुवाद करने के लिये ललकार, चुनौती।
चोगा–(तु०पुं०) पैरों तक लटकता हुआ ढीला अंगा, लबादा।
चोब–(फ़ा०स्त्री०)तंबू या शामियाना खड़ा करने का बड़ा लट्ठा, नगाड़ा बजाने की लकड़ी, सोना या चांदी मढ़ा हुआ डंडा, डंडा,सोंटा; **चोबकारी**

(फा०स्त्री०) एक प्रकार का जरदोजी का काम।
चोबदार–(फा०पु०) वह नौकर जो चोब या आसा लेकर चलता है।
चोला–(फा०पु०) शरीर, वदन; चोला छोडना–प्राण त्यागना, मरना, चोला बदलना–एक शरीर छोड़कर दूसरा धारण करना।
चौगान–(फा०पु०) एक खेल जिसमे लकड़ी के डंडे से गेंद मारा जाता है, इस खेल को खेलने का डंडा, जिस मैदान मे यह खेल खेला जाता है।
चौपानी–(फा०स्त्री०) हुक्के की धुवा खीचने जी सीधी नली, सटक, निगाली
चौगिर्द–(फा०क्रि०वि०) चारो ओर।
चौगोशिया–(फा०वि०) चार कोने वाली (स्त्री०) चार तिकोने टुकड़ो को सिलकर बनी हुई टोपी।

ज

जंग–(फा०स्त्री०) युद्ध, समर लड़ाई।
जग–(फा०पु०) लोहे का मुरचा, मण्डर
जंग अवर–(फा०वि०) योद्धा, लड़ने वाला।
जगजू–(फा०वि०) वीर, योद्धा, लड़ाका
जंगार–(फा०पु०) तांबे का कसाव, तूतिया एक रग।
जंगी–(फा०पु०) सैनिक, लड़ाई से संबध रखने वाला, वीर लड़ाका, बहुत बड़ा; जंगी लाट–प्रधान सेनापति;
जंजीर–(फा०स्त्री०) कड़ियों की लड़ी, सिकड़ी, बेड़ी, किवाड़ की कुन्डी; जंजीर डालना–पैर मे बेड़ी डालना; जंजीर बजाना–किवाड़ की कुंडी खटखटाना; जंजीर लगाना–कुन्डी बन्द करना।
जंट–(अ०पु०) जिला मजिस्ट्रेट के आधीन अधिकारी।
जंटिल मैन–(अ०पु०) सभ्य पुरुष, भला आदमी, अंगरेजी ढंग पर रहने वाला मनुष्य।
जद–(फा०पु०) पारसियों का धर्मग्रन्थ, वह भाषा जिसमे यह ग्रन्थ लिखा हुआ है।
जंबूर–(फा०पु०) जंबूरा, ऊंट पर चलने वाली छोटी तोप।
जंबूरक–(फा०स्त्री०) तोप की चरखी,
जंबूरची–(फा०पु०) तोप चलाने वाला; सिपाही।
जच्चा–(फा०स्त्री०) प्रसूता स्त्री; जच्चाखाना–सतिका गृह सौरी।
जज–(अ०पु०) न्यायाधीश, विचारपति;
जजिया–(अ०पु०) एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य मे अन्य धर्म-वालो पर लगाया जाता था।
जजीरा–(फा०पु०) टापू द्वीप।
जनवरी–(अ०स्त्री०) अंग्रेजी वर्ष का पहिला महीना जिसमे ३१ दिन होते हैं।
जनाजा–(अ०पु०) मृतक शरीर, शव, लाश।
जनानखाना–(फा०पु०) मकान का वह अश जहां स्त्रियां रहती हों; अन्तःपुर।
जनाना–(फा०वि०) स्त्री सबधी, नपुंसक, हिजडा, भीरु, निर्बल डरपोक, (पु०) अन्तःपुर, पत्नी; जनानापन–(पु०) स्त्रीत्व।
जनाब–(अ०पु०) महाशय, महोदय; जनाब आली–मान्यवर महोदय।
जफा–(फा०स्त्री०) अन्याय और अत्याचार पूर्ण व्यवहार, क्रूरता। जफाकश (फा०वि०) सहनशील परिश्रमी।
जफील–(अ०स्त्री०) सीटी का शब्द, सीटी, वह जिससे सीटी बजाई जाय;
जबर–(फा०वि०) शक्तिमान, बली, ताकतवर दृढ पुष्ट। जबरजद–(अ०पु०) पीले रंग का एक प्रकार का पन्ना रत्न; जबरदस्त–(फा०पु०) बली, शक्तिमान्; जबरदस्ती–(स्त्री०) अत्याचार अन्याय, (क्रि०वि०) बलपूर्वक, दबाव डालते हुए। जबरन्–(फा०क्रि०वि०) बलपूर्वक, इच्छा, के विरुद्ध।
जबह–(फा०पु०) हिंसा, गला काट कर प्राण लेने की क्रिया।
जबां, जबान–(फा०स्त्री०) जिह्वा, जीभ, शब्द, बात, बोलचाल, भाषा, प्रतिज्ञा, जबान खींचना–धृष्टता के वचन बोलने के लिये कठोर दण्ड देना; जबान पकड़ना–बोलने से रोकना; जबान पर आना–उच्चारण होना; –जबान से लगाम होना–बिना सोचे विचारे जो कुछ मन मे आवे कह देना; जबान हिलाना–मुख से शब्द निकलना; दबी जबान कहना–स्पष्ट रूप से न कहना, बर जबान–कण्ठस्थ; जबान दराज–(फा०वि०) अभिमान करने वाला, धृष्टता से अनुचित बातें करने वाला, जबानदराजी–(फा०स्त्री०) धृष्टता, ढिठाई। जबान बन्दी–(फा०स्त्री०) लिखी जाने वाली साक्षि। जबानी–(वि०) मौखिक, जो केवल मुख से कहा जाय।
जबून–(अ०वि०) निकृष्ट, बुरा।
जब्त–(अ०पु०) अधिकारी या राज्य द्वारा दण्ड स्वरूप मे अपराधी की सम्पत्ति का हरण; जब्ती–(अ०स्त्री०) जब्त होने की क्रिया।
जब–(अ०पु०) कठोर व्यवहार।
जबन्–(अ०क्रि०वि०) बलपूर्वक से।
जमई–(फा०वि०) जमा सबधी, नगद।
जमा–(अ०वि०) एकत्र, इकट्ठा, (स्त्री०) मूलधन, पूंजी, धन, रुपया पैसा भूमि का कर, संकलन, जोड़, बही का वह भाग जिसमे आये हुए धन आदि का ब्योरा लिखा जाता है; (वि०) सग्रह किया हुआ, सब मिला कर।
जमाखर्च–(फा०पु०) आय और व्यय, आमदनी और खर्च।
जमात–(अ०स्त्री०–जमाअत) श्रेणी, कक्षा, दरजा, मनुष्यों का समूह या जत्था।
जमादार–(फा०पु०) देशी सेना विभाग का एक कर्मचारी जिसका पद सूबेदार से नीचे होता है, पुलीस का कर्मचारी जिसका पद दरोगा से नीचे होता है गृहस्थ के घर का कर्मचारी जो अन्य छोटे नौकरो के काम को देखदेख रखता है, अधिनायक; जमादारी–(अ०स्त्री०) जमादार का काम या पद।
जमानत–(अ०स्त्री०) किसी अपराधी के नियुक्त समय पर न्यायालय मे उपस्थित होने का उत्तरदायित्व, जामिनी; जमानतनामा–जमानत के प्रमाण स्वरूप में लिखा हुआ पत्र।
जमानती–(हि०पु०) जमानत करने वाला।
जमाना–(फा०पु०) समय, काल, अधिक समय, सौभाग्य का समय, ससार; जमानासाज–अपना अर्थ साधने के लिये दूसरे को प्रसन्न करने वाला; जमानासाजी–अपने अर्थ सिद्धि के लिये दूसरो को प्रसन्न करने का काम।
जमाबन्दी–(फा०स्त्री०) पटवारी का वह कागज जिसमे असामियो के नाम और उनका लगान लिखा रहता है।
जमींदार–(फा०पु०) भूमि का स्वामी। भू स्वामी; जमींदारी–(फा०स्त्री०) जमीदार की वह भूमि जिसका वह अधिकारी हो, भूस्वामी का स्वत्व;
जमींदोज–(फा०वि०) जो नष्ट भ्रष्ट हो गया हो; जमीन–(फा०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, धरती, पृथ्वी का ऊपरी ठोस भाग, भूतल आयोजन, भूमिका, वस्त्र आदि की सतह जिसपर बेल बूटे बना हो; जमीन आसमान एक करना–बडे बड़े उपाय काम मे लाना; जमीन आसमान का फर्क–बहुत बडा अन्तर; जमीन देखना–नीचा देखना, गिर पडना।
जमीमा–(अ०पु०) क्रोडपत्र, अतिरक्त पत्र।
जमुरी–(फा०स्त्री०) नालबन्दों की सड़सी।
जमुर्रद जमुर्रुद–(फा०पु०) पन्ना नामक रत्न।
जमूरक, जमूरा–(फा०पु०) एक प्रकार की छोटी तोप, छोटी सडसी।
जम्बूर, जम्बूरक–(फा०पु०) ऊंट पर लादने की छोटी तोप, तोप का चरखा, जंबूरा।
जम्बूरची–(फा०पु०) तोपची, तोप चलाने वाला।
जम्बूरा–(फा०पु०) भौंरकली, सोनार या लोहार की छोटी सँड़सी।
जर–(फा०पु०) सुवर्ण, सोना, धन सम्पत्ति।
जरकस–(फा०पु०) जिस पर सोने के तार लगे हो।
जरखेज–(फा०वि०) उर्वरा, उपजाऊ।
जरद–(फा०वि०) पीत, पीला।
जरदा–(फा०पु०) चावल का बना हुआ एक मुसलमानी व्यञ्जन, पान मे खाने की रगीन सुगन्धित तमाखू पीले रग का घोड़ा।
जरदालू–(फा०पु०) खूबानी नामक मेष।
जरदी–(फा०स्त्री०) पीलापन, पीलाई, अडे के भीतर का पीले रग का चेप।
जरदुश्त–(फा० पु०) पारसियों के धर्मग्रन्थ को बनाने वाले प्राचीन आचार्य।
जरबीज–(फा० पु०) कपड़ो पर कलाबत्तू का काम करने वाला।
जरदोजी–(फा० पु०) कपड़ो पर कलाबत्तू आदि से की जाने वाली हाथ की कारीगरी।
जरनल–(अ० पु०) सामयिक पत्र जिसमे क्रम से घटनाओ का वर्णन रहता है।
जरब–(अ० स्त्री०) आघात, चोट, तबले मृदग आदि पर की थपकी, कपड़े पर काढी हुई बेल, गुणन, गुणा; जरबफ्त–(फा० पु०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जिसकी बिनावट मे कलाबत्तू के बेल बूटे बने होते हैं; जरबाफ–(फा० पु०) जरदोज; जरबाफी–(अ० वि०) जिस पर जरबाफ का काम बना हो, जरदोज; जरबीला–(अ० पु०) भडकीला तथा सुन्दर; जरमन्–(अ० पु०) जरमनी देशवासी, जरमनी देश की भाषा (वि०) जरमनी देश का; जरमन सम्बन्धी; जरमनसिलवर–(अ० पु०) जस्ते, तांबे तथा निकल के योग से बनी हुई एक चमकीली धातु; जरमनी–(अ०पु०) युरोप के मध्य का एक प्रसिद्ध देश।
जरर–(अ० पु०) हानि, नुकसान, क्षति, आघात।
जरा–(अ०वि०) कम, थोड़ा, (क्रि० वि०) थोडा, कम।
जरिया–(अ० पु०) सम्बन्ध, द्वार, हेतु, कारण, सबब।
जरिश्क–(फा० पु०) दारुहल्दी।
जरी–(फा० स्त्री०) बादले से बुना हुआ 'ताश' नाम का वस्त्र।
जरीब–(फा० स्त्री०) भूमि नापने की चैन जो साठ गज लम्बी होती है, लाठी, छडी; जरीबकश–(फा० पु०) भूमि नापते समय जरीब खींचने वाला
जरूर–(अ०क्रि०वि०) अवश्य, निःसन्देह; जरूरत–(अ० स्त्री०) आवश्यकता, प्रयोजन। जरूरी–(फा० वि०) प्रयोजनीय, जिसकी जरूरत हो, आवश्यक, सापेक्ष्य।
जर्कबर्क–(फा० वि०) चमकीला,

भड़कदार ।
ज़र्द–(फ़ा० वि०) पीत, पीला ।
ज़र्दा–(फ़ा० पुं०) देखो जरदा ।
ज़र्दालु– (फ़ा० पुं०) खुबानी नामक मेवा ।
ज़र्दी–(फ़ा० स्त्री०) पीलापन, पीलाई
जर्मनी–(अं० पुं०) मध्य यूरोप का एक प्रसिद्ध देश ।
ज़र्रा(अ० वि०) अण्ड, बहुत छोटा टुकड़ा, छोटे छोटे कण जो सूर्य के प्रकाश में उड़ते हुए देख पड़ते हैं ।
जर्रार–(अ० वि०) बलिष्ट, वीर ।
जर्राह–(फ़ा० पुं०) शस्त्र चिकित्सक, शरीर के फोड़े इत्यादि को चीरकर चिकित्सा करने वाला । **जर्राही**–(अ० स्त्री०) शस्त्र चिकित्सा, चीर फाड़ का काम ।
ज़लज़ला–(फा० पुं०) भूकम्प, भूईडोल
जलसा–(अ० पुं०) आनन्द, उत्सव, किसी उपलक्ष्य में अनेक मनुष्यों का एकत्र होना जिसमें खाना पीना, नाच गाना होता है, किसी सभा का वड़ा अधिवेशन ।
जलाल–(अ० पुं०) प्रकाश, तेज, प्रताप, आतङ्क ।
जलावतनी–(अ० स्त्री०) निर्वासन ।
ज़लील–(अ० वि०) तुच्छ, अपमानित, जिसको नीचा दिखाया गया हो ।
जलूस–(अ० पुं०) किसी उत्सव में बहुत से मनुष्यों का सज धज कर किसी सवारी के साथ यात्रा करना ।
जल्द–(अ० क्रि० वि०) शीघ्र, बिना विलंब के, शीघ्रता से, झटपट ; **जल्दबाज़**–(फ़ा० वि०) शीघ्रता से काम करने वाला ।
जल्लाद–(अ० पुं०) घातक, प्राण दण्ड की आज्ञा पाये हुए अपराधी का वध करनेके लिये नियुक्त पुरुष ।
जवांमर्द–(फ़ा० वि०) शूरवीर, अपनी इच्छा से सेना में भरती होने वाला सिपाही । **जवांमर्दी**–(फ़ा० स्त्री०) वीरता ।
जवान–(फ़ा० वि०) युवा, तरुण, वीर, (पुं०) मनुष्य, सिपाही, वीर पुरुष । **जवानी**–(फ़ा०स्त्री०) तारुण्य, युवावस्था, यौवन; **जवानी उतरना**–बुढ़ापा आना; **जवानी चढना**–यौवन प्राप्त होना ।
जवाब–(अ० पुं०) प्रत्युत्तर, उत्तर, किसी बात को समझाने के लिये कही हुई बात, तुल्य पदार्थ, बदला, जोड़, नौकरी छूटने की आज्ञा; **जवाबदावा**–(अ० पुं०) वह उत्तर जो प्रतिवादी वादी के निवेदन पत्र के उत्तर में लिखकर न्यायालय में देता है ; **जबाबदेह**–(फ़ा० वि०) उत्तरदाता; **जबाबदेही**–(फ़ा०स्त्री०) उत्तर देने की क्रिया, उत्तरदायित्व; **जबाब सवाल**–(अ०पुं०) प्रश्नोत्तर, वादाविवाद; **जबाबी**–(फ़ा०वि०) उत्तर संबंधी, जवाब का; **जवार**–(अ०पुं०) पड़ोस, बुरे दिन, झंझट ।
जवाल–(अं०पुं०) अवनति उतार, घटाव, आपत्ति, बखेड़ा ।
जवाशीर–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का गंधा विरोज़ा ।
जवाहर–(अं० पुं०) रत्न, मणि, जवाहिर; **जवाहिरात**–(अ०पुं०) हीरा, पन्ना, मोती आदि रत्न समूह ।
जशन–(फ़ा० पुं०) धार्मिक उत्सव, आनन्द, हर्ष, वह नाच या गाना जिसमें कई वेश्यायें एक साथ सम्मिलित हों ।
जहन्नुम–(अ०पुं०) नरक । **जहन्नुम में जावें**–(अ०पुं०) हमसे कोई संबंध नहीं; **जहन्नुम रसीद**– जो मर गया हो; **जहन्नुमी**–(फ़ा०वि०) नरक में जाने वाला ।
जहमत–(अ०स्त्री०) आपत्ति, बखेड़ा, झंझट ।
ज़हर–(फ़ा०पुं०) गरल, विष, अप्रिय वार्ता (वि०) प्राणनाशक, हानिकारक; **ज़हर उगलना**–मर्मभेदी बात कहना; **ज़हर का घूंट पीना**–अनुचित बातको देख कर मन मे क्रोध दबा रखना; **ज़हर का बुताया हुआ**–बड़ा उपद्रवी **ज़हरदार**–(फ़ा० वि०) विषाक्त; **ज़हरबाद**–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार का भयंकर विषैला फोड़ा । **ज़हरमोहरा**–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का काला पत्थर जो सर्प के विष को शरीर में के काटे हुए भाग से खींच लेता है, एक प्रकारका हरे रंगका पत्थर
जहां–(फ़ा०) देखो जहान ।
जहांगीरी–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार की जड़ाऊ हाथमें पहिरनें का कड़ा ।
जहांदीद, **जहांदीदा**–(फा०वि०) अनुभवी । **जहांपनाह**–(फ़ा०पुं०) संसार का रक्षक, ससारका मालिक (यह शब्द बड़े राजाओं के लिये प्रयोग किया जाता है)
जहाज़–(अं०पुं०) समुद्र में चलने वाली बड़ी नाव, जलपोत; **जहाज़ी**–(अ०वि०) जहाज से संबंध रखने वाला; **जहाजी कौवा**–वह कौवा जो जहाजपर बैठा रहता है और जहाज़ दूर चले जाने पर जब उसको भूमि भाग नहीं देख पड़ता जब उड़ उड़ कैर मस्तल पर आ बैठतौ है वह मनुष्य जिसको अन्यत्र ठिकाना नहीं होता, जो एक ही स्थान पर ठहरा रहता है ।
जहान–(फ़ा०पुं०) जगत्, संसार, दुनियाँ
जहालत–(अ०स्त्री०) अज्ञान, मूर्खता ।
जहीन–(अ०वि०) बुद्धिमान, समझदार, जिसकी स्मरण शक्ति तीव्र हो
जहूर–(अ०पुं०) चमक, तेज, प्रकाश ।
जहेज–(अं०पुं०) दहेज, वह सम्पत्ति जो विवाह के समय कन्या को दी जाती है ।
जांगलू–(फ़ा०वि०) जंगली, गँवार, उजड्ड
जाकेट–(अं०स्त्री०) फतुही की तरह का एक अंग्रेज़ी पहिरावा ।
जागीर–(फा०स्त्री०) राजा की ओर से पुरस्कार में मिली हुई भूमि या प्रदेश । **जागीरदार**–(फ़ा०पुं०) वह जिसको जागीर मिली हो, जागीर का मालिक, रईस, अमीर ।
जाजम–(तु० स्त्री०) बिछावन पर फैलाने का बेल बूटा बना हुआ चादरा
जाजरूर–(फ़ा०पुं०) शौच, टट्टी ।
जाजिम–(तु०स्त्री०) बिछाने की छपी हुई चादर, देखो जाजम ।
ज़ात–(अ०स्त्री०) शरीर, काया, देह
जाती–अं०वि० व्यक्तिगत, निजी, अपना
जादू–(फ़ा० पुं०) अलौकिक और अमानवी कृत्य, इन्द्रजाल, दर्शकों की दृष्टि और बुद्धि को धोखा देने वाला खेल, टोना, टोटका, मोहिनी शक्ति; **जादूगर**–जादू करने वाला मनुष्य; **जादूगरी**–जादूगर का काम; **जादूनजर**–वह मनुष्य जो दृष्टिमात्र से दूसरे को मोहित कर लेता हो ।
जानदार–(फ़ा०वि०) जिसमें जान हो, सजीव ।
जानबाज़–(फ़ा०पुं०) वल्लमटेर ।
जानमाज़–(फ़ा०पुं०) नमाज़ पढ़ने का फ़र्श ।
जानवर–(फ़ा०पुं०) प्राणी, जीव, पशु, (वि०) मूर्ख, जड़ ।
जानशीन–(फ़ा०पुं०) वह जो दूसरे के अधिकार पर हो, उत्तराधिकारी ।
जानिब–(अ०स्त्री०) ओर, दिशा ।
जानिबदार–(फ़ा० वि०) पक्षपाती, **जानिबदारी**–(फ़ा०स्त्री०) पक्षपात,
जानी–(फ़ा०वि०) जान (प्राण) से संबंध रखने वाला (स्त्री०) प्राणप्यारी; **जानी दुश्मन**–वह शत्रु जो प्राण लेने के लिये तत्पर हो; **जानी दोस्त**–परम मित्र,
ज़ानू–(फ़ा०पुं०) जंघा, जांघ ।
ज़ाफ़–(अ०पुं०) मूर्छा, थकावट ।
ज़ाफ़त–(अ०स्त्री०) भोज, दावत ।
ज़ाफ़रान–(अ०पुं०) कुंकुम, केशर ।
ज़ाफ़रानी–(अ०वि०) केसर के रंग का, केसरिया ।
ज़ाबजा–(फ़ा०क्रि०वि०) जगह जगह, इधर उधर ।
ज़ाब्ता–(अ०पुं०) नियम, व्यवस्था; **ज़ाब्ता दीवानी**–वह नियम या क़ानून जो सर्व सामान्य के लेने देने के विषय में निर्णय करता है; **ज़ाब्ता फौजदारी**–दण्डनीय अपराधों से संबंध रखने वाली व्यवस्था ।
जाबिर–(फ़ा० वि०) अत्याचारी,
ज़ाब्ता–(अ०पुं०) व्यवस्था, नियम,
जाम(फ़ा०पुं०) प्याला, प्याले के आकार का कटोरा ।
जामदानी–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का बेलबूटे काढ़ा हुआ कपड़ा, कपड़े आदि रखने की सन्दूक ।
जामा–(फा०पुं०) वस्त्र, कपड़ा, एक प्रकार का घुटने तक का लंबा पहिरावा; **जामे से बाहर होना**–अति क्रुद्ध होना ।
ज़ामिन–(अ०पुं०) प्रतिभू, ज़िम्मेदार, ज़मानत करने वाला ।
ज़ामिनदार–(फ़ा० पुं०) ज़मानत करने वाला ।
जाय–(फ़ा०अव्य०) वृथा, (वि०) उचित ।
ज़ायका–(फ़ा०पुं०) स्वाद, खाने पीने का आनन्द । **ज़ायकेदार**–(फ़ा०वि०) स्वादिष्ट,
ज़ायजा–(फ़ा० पुं०) जन्मकुण्डली, जन्मपत्री ।
जायज़–(अ०वि०) यथार्थ, उचित ।
जायजरूर–(फ़ा०पुं०) शौच, टट्टी ।
ज़ायज़ा–(अ०पुं०) जांच, पड़ताल, गिनती ।
जायद–(फ़ा०वि०) अधिक ।
जायदाद–(फ़ा०स्त्री०) भूमि, धन आदि सामान, सम्पत्ति । **जायदाद गैरमनकूला**–जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाई जा सके; **जायदाद ज़ौजियत**–स्त्री धन; **जायदाद मनकूला**–जो सम्पत्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाई जा सके; **जायदाद मुतानाजिया**–वह सम्पत्ति जिसके विषय में कोई विवाद हो; **जायदाद शौहरी**–स्त्री को उसके पति से मिली हुई सम्पत्ति ।
जायनमाज़–(फ़ा०स्त्री०) मुसलमानों का नमाज़ पढ़ने का बिछौना, मुसल्ला ।
ज़ायल–(फ़ा०वि०) विनष्ट, जो नष्ट हो गया हो ।
ज़ाया–(फ़ा०वि०) नष्ट, खोया हुआ,
ज़ार–(अ०पुं०) रूस सम्राट की उपाधि
जारी–(अ०वि०) प्रचलित, चलता हुआ, बहता हुआ, परस्त्रीगमन, जार की क्रिया ।
जारोब–(फ़ा०स्त्री०) बुहारी, झाड़ू, कूंचा; **जारोबकश**–झाड़ू देने वाला, चमार ।
जालसाज़–(अ०पुं०) दूसरे को धोखा देने के लिये किसी प्रकार की कार्यवाही करने वाला मनुष्य । **जालसाज़ी**–(फ़ा०स्त्री०) छल, जाल ।
ज़ालिम–(अ०वि०) अत्याचारी, क्रूर ।
जासूस–(अ०पुं०) गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाने वाला, भेदिया,
ज़ाहिर–(अ०पुं०) जो छिपा न हो, प्रगट, प्रकाशित, जाना हुआ, विदित **ज़ाहिरदारी**–(अ०स्त्री०) वह काम जिसमें केवल बाहरी बनावट हो ।
ज़ाहिरा–(अ०क्रि०वि०) प्रत्यक्ष में, देखाव में ।
जाहिल–(अ०वि०) अज्ञान, मूर्ख,

जिक–(अ०स्त्री०) जस्ते का खार, सफेदी ।
जिंद–(अ०पु०) भूत प्रेत, मुसलमानभूत
जिंदगानी–(फा० स्त्री०) जीवन,
जिंदगी–(फा० स्त्री०) जीवन, आयुष्य जीवनकाल; **जिंदगी के दिन पूरे करना**–जीवन बिताना ।
जिंदा–(फ़ा० वि०) जीवित, जीता हुआ । **जिंदा दिल**–(फा० वि०) विनोद प्रिय,
जिंस–(फा०वि०) प्रकार, द्रव्य, वस्तु, सामग्री, सामान, रसद, गल्ला अन्न । **जिंसवार**–(फा०वि०) पटवारियों का वह कागद जिसमे वह प्रत्येक खेत मे बोये हुए अन्न का नाम लिखता है ।
जिक्र–(अ०पु०) प्रसग, चर्चा, बातचीत
जिगर–(फा०पु०) कलेजा, मन, चित्त, जीव, साहस, सत्व, सार, गूदा, मध्य भाग पुत्र ।
जिगरी–(फा०वि०) दिली, भीतरी, अत्यन्त घनिष्ट ।
जिजिया–(फा०पु०) देखो जजिया ।
जिद–(अ०स्त्री०) हठ, बैर, शत्रुता, अड, दुराग्रह ।
जिद्दी–(फा०वि०) हठी, दुराग्रही, दूसरे की बात न मानने वाला ।
जिन–(अ०पु०) मुसलमान भूत ।
जिना–(अ०पु०) व्यभिचार, छिनारा **जिनाकार**–(फ़ा०वि०) व्यभिचारी; **जिनाबिज्जब्र**–(अ०पु०) किसी स्त्री पर बलात्कार करना, बिना इच्छा या सम्मति के किसी स्त्री के साथ मैथुन ।
जिनिस–(अ०स्त्री०) देखो जिस ।
जिनिसवर–(अ०पु०) देखो जिंसवार
जिमनास्टिक–(अ०पु०) एक प्रकार का अग्रेजी व्यायाम ।
जिम्मा–(अ०पु०) उत्तरदायित्व, पूर्ण प्रतिज्ञा, सरक्षा, देख रेख । **जिम्मावार**–(अ०पु०) देखो ज़िम्मावार । **जिम्मादारी**–(अ० स्त्री०) देखो जिम्मावारी । **जिम्मावार**–(फा० पु०) उत्तरदाता, **जिम्मवारी**–(फ़ा०पु०) उत्तरदायित्व, **जिम्मेदार**–(फ़ा० पु०) उत्तरदाता, **जिम्मेदारी**–(फ़ा०पु०) देखो जिम्मावारी । **जिम्मेवार**–(फ़ा०पु०) देखो जिम्मावार । **जिम्मेवारी**–(फा० स्त्री०) देखो जिम्मावारी ।
जियादती–(फा० स्त्री०) अधिकता, वृद्धि ।
जियादा–(फा०वि०) देखो ज्यादा, अधिक ।
जियान–(अ०पु०) क्षति, घाटा, टोटा,
जियाफत–(अ०स्त्री०) आतिथ्य,
जियारत–(अ०स्त्री०) दर्शन, तीर्थ दर्शन; **जियारत लगाना**–भीड़ मचाना ।
जियारतगाह–(फा० पु०) तीर्थ, दरगाह । **जियारती**–(फा० वि०) तीर्थयात्रा करने वाला ।
जिरगा–(फा०पु०) समूह, मडली, झुड, जत्था ।
जिरह–(फा०पु०) हुज्जत, खुचुर, बातो की सचाई जाँचने के लिये पूछताछ ।
जिरह–(फा०स्त्री०) कवच, वर्म, बखतर ।
जिरही–(हि०वि०) कवच पहिरे हुए, कवचधारी ।
जिराअत–(अ०स्त्री०) कृषिकर्म, खेती ।
जिराफा–(हि०पु०) देखो जुराफा ।
जिला–(अ०स्त्री०) चमक, दमक, आब, किसी वस्तु को चमकाने की क्रिया; **जिलाकार**–सिकलीगर ।
जिला–(अ०पु०) प्रान्त, प्रदेश, किसी प्रान्त का भाग जो कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर के आधीन हो, छोटा अश या भाग ।
जिलादार–(फा०पु०) भूस्वामी से कर लेने के लिये नियुक्त पुरुष, किसी प्रान्त मे काम करने वाला छोटा अधिकारी ।
जिलादारी–(फा० स्त्री०) ज़िलेदार का काम ।
जिलासाज–(फा० पु०) शस्त्रों पर पालिश करने वाला, सिकलीगर ।
जिल्द–(अ०स्त्री०) चमड़ा, त्वचा, खाल, ऊपरी चमड़ा, किताब के ऊपर रक्षा के निमित्त चढ़ाई हुई दफ़्ती, पुस्तक की एक प्रति, किसी पुस्तक का पृथक् सिला हुआ खण्ड या भाग, **जिल्दगर, जिल्दबंद**–(फा०पु०) जिल्द बाँधने वाला । **जिल्दबंदी**–(फा०स्त्री०) पुस्तकों की जिल्द बाँधने का काम, जिल्द बधाई, **जिल्दसाज**–(फा०पु०) जिल्द बाँधने वाला; **जिल्दसाजी**–(फा०स्त्री०) देखो जिल्दबदी ।
जिल्दी–(अ०वि०) त्वचा सबंधी ।
जिल्लत–(अ० स्त्री०) तिरस्कार, अनादर, दुर्गति, दुर्दशा, **जिल्लत उठाना**–अपमानित होना ।
जिस्म–(फा०पु०) शरीर, देह ।
जिह–(फा०स्त्री०) ज्या, धनुष की डोरी, रोदा, चिल्ला ।
जिहन–(अ० पु०) बुद्धि, धारणा, **जिहन खुलना**–बुद्धि का विकास होना, **जिहन लगाना**–ध्यान लगाना या सोचना ।
जिहाद–(अ०पु०) धर्मिक युद्ध, वह युद्ध जो मुसलमान लोग दूसरे धर्म वालो से अपने धर्म के प्रचार के निमित्त करते है ।
जिहालत–(अ०स्त्री०) मूर्खता ।
जीगा–(तु०पु०) सरपेंच, कलगी, तुर्रा ।
जीन–(फा०पु०) घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, चारजामा, काठी, पलान, एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा ।
जीनत–(फा०स्त्री०) शृंगार, शोभा ।
जीनपोश–(फा०पु०) वह कपडा जो खोगीर के ऊपर ढपा रहता है, **जीनसवारी**–(हि०स्त्री०) घोडे की पीठ पर जीन रखकर चढने का कार्य ।
जील–(फा०स्त्री०) धीमा शब्द, तबले का बाया ।
जुंबिश–(फा०स्त्री०) हिलना डोलना, गति चाल ।
जुंबिश खाना–हिलना डोलना ।
जुकाम–(फा०पु०) सरदी की बीमारी जिसमे छीक आती है और नाक से पानी जाता है; **मेंढकी को जुकाम होना**–किसी छोटे आदमी का बडे काम के करने मे उद्यत होना ।
जुज–(फा०पु०) कागज के ८ या १६ पृष्ठो का समूह, फारम, अश, खण्ड; **जुजबन्दी**–(फा० स्त्री०) किताब की वह सिलाई जिसमे एक एक जुज अलग अलग सिलकर इकट्ठे सिले जाते है तब जिल्द बाँधी जाती है
जुजबी–(फा०वि०) बहुतो मे से एक, बहुत छोटे अश का ।
जुडीशल–(अ०वि०) न्याय संबधी ।
जुदा–(फा०वि०) भिन्न, अलग, पृथक्, निराला; **जुदाई**–(फा०स्त्री०) वियोग, जुदाई, बिछोह ।
जुनून–(फा०पु०) पागलपन ।
जुबली–(अ०स्त्री०) धार्मिक उत्सव, बड़ा जलसा ।
जुमला–(फ़ा०वि०) कुल, सब, (पु०) पूरा वाक्य ।
जुमा–(अ०पु०) शुक्रवार ।
जुमिल–(फा०पु०) एक प्रकार का घोड़ा ।
जुमिल्ला–(फा०पु०) कपडे बुनने की लपेट का खूटा जो बाईं ओर गड़ा रहता है ।
जुमेरात–(अ०स्त्री०) वृहस्पतिवार, बीफै
जुरअत–(फा०स्त्री०) साहस ।
जुरमाना–(फा०पु०) अर्थदण्ड, धनदण्ड, वह दण्ड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े ।
जुराफा–(अ०पु०) ऊँट की तरह का अफ्रीका का एक बहुत ऊंचा पशु जिसको ज़िराफ या जिराफत भी कहते है ।
जुर्म–(अ०पु०) अपराध, दण्ड पाने योग्य कार्य ।
जुर्रत–(फा०स्त्री०) साहस ।
जुर्रा–(फा०पु०) नरबाज, (श्येन पक्षी)
जुर्राब–(तु०स्त्री०) मोजा पायताबा ।
जुलाई–(अ०पु०) अंग्रेजी बर्ष का सातवा महीना, इसमे एकतीस दिन होते है ।
जुलाव–(फा०पु०) रेचन, दस्त, दस्त लानेवाली औषधि ।
जुल्फ–(फा०स्त्री०) पुरुष के सिर के बाल जो पीछे की ओर गिरे और बराबर कटे होते है, कुल्ले; **जुल्फी**–(फा०स्त्री०) देखो जुल्फ ।
जुल्म–(अ०पु०) अन्याय, अनीति, अत्याचार, **जुल्म टूटना**–आपत्ति आजाना; **जुल्मढाना**–अन्याय करना, कोई विलक्षण कार्य करना ।
जुलूस–(अ०पु०) सिंहासन पर अभिषिक्त, किसी उत्सव का समारोह, उत्सव तथा समारोह की यात्रा, धूमधाम की सवारी ।
जुल्लाब–(अ०पु०) रेचन, दस्त लाने वाली औषधि ।
जुस्तजू–(फा० स्त्री०) अनुसन्धान, खोज ।
जून–(अ०पु०) अंग्रेजी वर्ष का छठा महीना जिसमे तीस दिन होते है ।
जूनियर–(अ०वि०) कालक्रम मे पिछला, छोटा ।
जूरी–(अ०पु०) वह पंच जो न्यायालय मे न्यायाधीश के साथ बैठ कर मोकदमे मे सहायता देते हे ।
जेटी–(अ०स्त्री०) नदी या समुद्र किनारे पर बना हुआ वह चबूतरा जिस पर से जहाजो मे माल चढाया उतारा जाता है ।
जेप्लिन्–(अ०पु०) जर्मनी के एक एक बहुत बडे हवाई जहाजका नाम ।
जेब–(फा०पु०) पहिरने के कपडे मे बगल की ओर या सामने लगी हुई छोटी थैली, खलीता, पाकिट (हि० स्त्री०) शोभा, सौन्दर्य; **जेबकट**–(फा०पु०) दूसरे का जेब काट कर रुपया पैसा चुराने वाला, गिरहकट, जेबकतरा ।
जेबखर्च–(फा०पु०) वह धन जो किसी को निजी व्यय के लिये मिलता हो ।
जेबदार–(फा० वि०) शोभा युक्त, सुन्दर ।
जेबी–(फा०वि०) जो जेब में रक्खा जा सके, बहुत छोटा ।
जेब्रा–अफ्रीका देश का एक प्रकार का गधे के आकार का पशु जिसकी शरीर पर काली धारिया होती है ।
जेर–(फा०वि०) परास्त, पराजित, जिसको बहुत कष्ट दिया गया हो; **जेरपाई**–(फा०स्त्री०) स्त्रियो के पहिरने की जूती, स्लीपर; **जेरबन्द**–(फा०पु०) घोड़े की मोहरी मे लगा हुआ कपड़े या चमड़े का तस्मा ।
जेरबार–(फा०वि०) आपद्ग्रस्त, जो आपत्ति या दुख के कारण बहुत दुःखी हो गया, क्षतिग्रस्त, जिसकी बड़ी हानि हुई हो; **जेरबारी**–(फा०स्त्री०) आपत्ति के कारण बहुत दुखी होने की क्रिया, हैरानी, परेशानी ।
जेल–(अ०पु०) कारागार, बन्दीगृह; **जेलखाना**–(फ़ा० पु०) कारागार, कदखाना; **जेलर**–(अ० पु०) कारागार का अध्यक्ष
जेलाटीन–(अ०स्त्री०) एक प्रकार की

परिष्कृत बढ़िया सरेस।
ज़ेवर–(फा०पुं०) अलकार, आभूषण, गहना
जेह–(फा०स्त्री०) कमान की डोरीका मध्य भाग जो आँख के पास लगाया जाता है जिसकी सीध में निशाना रहता है, चिल्ला, दीवार पर नीचे की ओर दो तीन हाथ की ऊँचाई तक पलस्तर का लेप।
ज़ेहन–(अ०पुं०)बुद्धि, धारणा शक्ति
जैतून–(अ०पुं०) एक ऊँचा सदाबहार वृक्ष जिसको पश्चिम की प्राचीन जातियाँ पवित्र मानती थीं, इसका फल दवा में प्रयोग होता है तथा बीज से तेल निकाला जाता है।
जैयद–(अ०वि०) बहुत बड़ा या भारी, बहुत धनी।
ज़ैल–(अ०पुं०) पहिरावे के नीचे का भाग, दामन पंक्ति, समूह, इलाका, हलका; **जैलदार**–(अ०पुं०) वह सरकारी कर्मचारी जिसके अधिकार में कई गावों का प्रवन्ध हो।
जोफ़–(अ०पुं०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा, निर्बलता।
जोबन–(फा०पुं०) यौवन, युवावस्था सुन्दरता, बहार, स्तन, कुच, छाती।
जोम–(अ०पुं०) उमंग, उत्साह, उद्वेग अहंकार, अभिमान, आवेश, घमंड।
ज़ोर–(फा०पुं०) शक्ति, बल, तेजी, बढ़ती, प्रबलता, अधिकार, वेग, आवेश, भरोसा, परिश्रम; **जोरदेना**–किसी बात के लिये आग्रह करना; जोरलगाना–बल पूर्वक प्रयत्न करना; **जोर जुल्म**–अत्याचार; **जोरोंपर**–वेग के साथ।
जोरशोर–(फा०पुं०)प्रचण्डता,प्रबलता
जोरदार–(फ़ा०वि०) प्रबल।
जोरावर–(फ़ा० वि०) बलवान्।
जोरावरी–(फा०स्त्री०) बलशक्ति।
जोश–(फा०पुं०) उफान, उबाल, मनोवेग आवेश; **जोश खाना**–उबाल आना, **जोश देना**–उत्तेजित करना, किसी वस्तु को पानी के साथ उबालना; **खून का जोश**–अपने किसी आत्मीय के लिये उत्कट प्रेम।
जोशन–(फा०पुं०)भुजाओं पर पहिरने का एक आभूषण, कवच।
जोशांदा–(फा०पुं०) पानी में उबाली हुई औषधि, क्वाथ, फाँट, काढा।
जोशीशा–(फ़ा०वि०) आवेग पूर्ण।
जौजा–(अ०स्त्री०)भार्या, पत्नी, जोरू
जौलाई–(अं०स्त्री०) देखो जुलाई।
जौशन–(फा०पुं०) देखो जोसन।
जौहर–(फा०पुं०) बहुमूल्य पत्थर, रत्न, तत्व, सारांश, सार वस्तु, तलवार आदि हथियार की ओप उत्कर्ष, उत्तमता, विशेषता, आत्महत्या, प्राणत्याग, दुर्ग में राजपूत स्त्रियों के जलने के लिये बनाई हुई चिता, प्रबल शत्रु द्वारा गढ के पराजय की सम्भावना देखकर राजपूत स्त्रियों का जलती चिता में प्रवेश करके प्राण देना।
ज़्यादती–(फा० स्त्री०) अधिकता, अधिकाई, बहुतायत, अत्याचार।
ज़्यादा–(फ़ा०क्रि०वि०)बहुत,अधिक
ज़्याफ़त–(अ०स्त्री०) भोज, आतिथ्य

ट

टंडर–(अं० 'टेन्डर' का अपभ्रंश) किसी से कुछ काम कराने या माल नियत मूल्य पर मोल लेने या बेचने के लिये प्रतिज्ञापत्र, न्यायलय का आज्ञा पत्र जिसके द्वारा कोई मनुष्य अपना देना न्यायालय में जमा करते है।
टन्–(अं०पुं०) एक अंग्रेजी तौल जो प्रायः अट्ठाइस मन के बराबर होती है।
टनेल्–(अं०स्त्री०) पहाड़ आदि के नीचे होकर जाने वाला रास्ता, सुरंग।
टब–(अं०पुं०) नांद के आकार का जल रखने का बड़ा पात्र, छत में लटकाने का लम्प।
टमटम–(अं०स्त्री०) एक घोड़े की गाड़ी जिसको सवारी करने वाला स्वय हाँकता है।
टरकी–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार की मुरगी, पेरू पक्षी।
टाइटिल्–(अं०पुं०)उपाधि,
टाइटिल पेज्–(अं०पुं०) पुस्तक के ऊपर का पृष्ठ।
टाइप–(अं०पुं०) मुद्रालय में छापने का सीसे का अक्षर; **टाइप कास्टिङ्ग मशीन**–टाइप ढालने का यन्त्र; **टाइप मौल्ड**–वह सांचा जिसमे टाइप ढाले जाते है; **टाइप राइटर**–वह यन्त्र जिसमे कागज रखकर टाइप के अक्षर छापे जाते हैं।
टाइफायड्–(अं०पुं०) आन्त्रिक ज्वर का एक भेद।
टाइफोन्–(अं०पुं०) चीन के समुद्र में का अन्धड।
टाइम्–(अं०पुं०) समय काल।
टाइम टेबुल–(अं०पुं०) भिन्न भिन्न कार्यों के लिये निर्धारित समय का ब्योरा या विवरण पत्र वह पुस्तक जिसमें रेल के पहुँचने तथा छूटने का समय छपा होता है।
टाइमपीस्–(अं०स्त्री०) टेबुल आदि पर रखने की छोटी घड़ी जो लंगर पर नहीं चलती।
टाई–(अं०स्त्री०) अंग्रेजी पहरावे में गले पर गाठ देकर पहिरने की कपड़े की पट्टी।
टाउन्–(अं०पुं०) शहर, नगर; **टाउन् ड्यूटी**–नगर में लगाने की चुंगी; **टाउन्हाल्**–किसी नगर का सार्वजनिक भवन।
टाकी–(अं०स्त्री०) चलती फिरती तथा बोलती चित्र का प्रदर्शन।
टाटरिक एसिड्–(अं०पुं०) इमली का सत्त।
टारपीडो–(अं०पुं०) पानी के भीतर चलने वाला जहाज सैनिक।
टिंचर–(अं०पुं०) किसी औषधि का सार जो मद्यसार (स्पिरिट) के योग से बनाया जाता है; **टिंचर आयोडीन**–सूजन पर लगाने की एक प्रसिद्ध औषधि।
टिकट–(अं०पुं०) वह कागज का टुकड़ा जो रुपये के वदले में प्रमाण पत्र के रूप में दिया जाता है, कर फ़ीस आदि चुकाने के लिये दिया हुआ प्रमाण पत्र, किसी कार्य के करने वाले पर लगाया हुआ कर।
टिफिन्–(अं०स्त्री०) अंगरेजों का दोपहर का जलपान।
टी–(अं०स्त्री०) चाय।
टीन–(अं०पुं०) रांगा, लोहे की चद्दर जिस पर रांगा चढ़ा रहता है, लोहे की चद्दर का बना हुआ बरतन।
टीम्–(अं०स्त्री०) क्रिकेट, हाकी आदि खेल में खेलने वालों का दल।
टुइल–(अं०स्त्री० ट्विल् का अपभ्रंश) एक प्रकार का सूती मोलायम कपड़ा
टूरनामेन्ट–(अं०पुं०) वह खेल जिसमे अधिक योग्यता दिखलाने वाले को पारितोषिक दिया जाता है।
टेचिन्–(अ०पुं०) एक प्रकार की ढिवरीदार पेंच।
टेनिस्–(अं०पुं०) रबड़ के गेंद और कजालीदार बेंट से खेलने का एक खेल
टेबुल–(अं० पुं०) चार पायों का मेज़।
टेरा कोटा–(अं०पुं०) पकी हुई मिट्टी के समान रंग जिससे मकानों में बेल बूटे बनाये जाते हैं।
टेलिग्राफ्–(अं०पुं०) वह यन्त्र जिसके द्वारा सांकेतिक ध्वनि द्वारा दूर देश में समाचार भेजा जाता है।
टेलिग्राम–(अं०पुं०) तार द्वारा समाचार भेजना।
टेलिफोन्(अं०पुं०) वह यन्त्र जिसके द्वारा कोई बात दूर से सुनी जावे अथवा बोली जावे।
टैक्स–(अं०पुं०) शुल्क, कर।
टोटल्–(अं०पुं०) जोड़, योग, ठीक।
टोल्–(अं०पुं०) सड़क का महसूल, कर, चुंगी
टौनहाल–(अं०पुं०) देखो टाउनहाल
ट्रंक–(अं०पुं०) लोहे की सफ़री संदूक।
ट्रम्प–(अं०पुं०) ताश के खेल का एक रंग।
ट्राम्–(अं०स्त्री०) बड़े बड़े नगरों में सड़कों पर बिछी हुई बिजली द्वारा लाइनों पर चलने वाली गाड़ी।
ट्रेडमार्क–(अं० पुं०) बने हुए माल पर लगाये जाने का चिन्ह।
ट्रेडल् मेशीन्–(अं०पुं०) पैर से चलाने का कोई यन्त्र।
ट्रेन–(अं०स्त्री०) रेलगाड़ियों की पंक्ति रेलगाड़ी।

ड

डंगूज्वर–(अं०पुं०)एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर पर चिकोते पड़ जाते है, लगड़ा, ज्वर।
डंबेल्–(अं०पुं०) लोहे या लकड़ी की गुल्ली जिसके दोनों ओर लट्टू लगे रहते है, वह व्यायाम करने के लिये प्रयोग किया जाता है, इससे किये जाने वाली व्यायाम।
डक्–(अं०पुं०) एक प्रकार का सफेद पतला टाट, एक प्रकार का मोटा टाट।
डबल–(अं०वि०) दुहरा, दोहरा
डाई–(अं०पुं०) पासा, ठप्पा, साँचा रंग।
डाँक्–(अं०पुं०) समुद्र के किनारे वह वह स्थान जहां पर जहाज़ आकर ठहरते है, नीलाम की बोली।
डाक्टर्–(अं०पुं०)चिकित्सक, अध्यापक विद्वान्।
डायनामो–(अं०पुं०) बिजली की शक्ति उत्पन्न करने का एक प्रकार का यन्त्र।
डायमंड कट्–(अं०पुं०) हीरे की काट (वि०) इस तरह के काट का।
डायरी–(अं०स्त्री०) दिनचर्या, दैनिक पुस्तिका।
डायल्–(अं०पुं०) घड़ी का चेहरा जिसपर अक बने होते हैं (हिं०वि०) तिरछा, टेढा।
डायस–(अं०पुं०) वह ऊंचा स्थान जिसपर सभा आदि में सभापति तथा अन्य माननीय पुरुष बैठते है।
डालफिन्–(अं०पुं०) एक प्रकार की ह्वेल मछली।
डालर–(अं०पुं०) चांदी का एक अमेरिकन सिक्का जो तीन रुपये दो आने मूल्य का होता है।
डिक्टेशन–(अं०पुं०) लिखने के लिये बोला हुआ वाक्य।
डिक्री–(अं०स्त्री०) आज्ञा, हुक्म; देखो डिगरी।
डिक्शनरी–(अं०स्त्री०) शब्दकोश।
डिगरी–(अं०स्त्री०) विश्वविद्यालय की परीक्षा उत्तीर्ण होने की उपाधि समकोण का ९० वां भाग, कला, अंश, अदालत का वह फैसला जिसके द्वारा लड़ने वाले पक्षों में से किसी कोई अधिकार मिलता है।
डिटेक्टिव–(अं०पुं०) गुप्तचर, जासूस भेदिया।
डिपटी–(अं०पुं०) अंग्रेजी डेप्यटी का अपभ्रंश, सहायक, सहकारी,
डिपाजिट्–(अं०पुं०) धरोहर, अमानत।
डिगरीदार–(अं०पुं०)विभाग, मोहकमा

डिपो–(अं०पु०) भण्डार, गुदाम।

डिप्लोमा–(अं०पु०) विश्वविद्यालय का प्रमाण सूचक पत्र, सनद।

डिबेन्चर–(अं०पु०) ऋण स्वीकृत का पत्र, माल भेजने के कर के रवन्ना।

डिमरेज्–(अं०पु०) वह हर्जाना जो बन्दरगाह या स्टेशन पर आये हुए माल के अधिक दिन पड़े रहने के कारण होता है।

डिमाई–(अं०स्त्री०) बाइस इंच लम्बे तथा अठारह इंच चौड़े कागज़ की एक नाप।

डिलिवरी–(अं०स्त्री०) डाकखाने में आई हुई चिठ्ठी, मनिआर्डर, पारसल आदि का विवरण

डिसमिस–(अं०पु०) हटाना।

डीह–(अं०पु०) गाँव, बस्ती, उजड़े हुए गाव का टीला, खण्डहर, ग्राम देवता।

डेप्युटेशन्–(अं०पु०) प्रसिद्ध मनुष्यों की मण्डली जो किसी संस्था या सभा की ओर से राजा महाराजा या सरकार के पास किसी विषय की प्रार्थना के लिये आती है।

डेल्टा–(अं०पु०) वह तिकोनी भूमि जो नदियों के संगम या मुहाने पर इतनी बहाव से लाई हुई मिट्टी या बालू के जमने से बनती है।

डेलिगेट्–(अं०पु०) किसी स्थान से निवासियो की ओर किसी सभा में सभापति देने के लिये भेजा हुआ प्रतिनिधि।

डेली–(अं०स्त्री०) दैनिक समाचार पत्र,

डेस्क्–(अं०पु०) लिखने का छोटा ढालुवां मेज़।

डैना–(अं०पु०) चिड़ियों का पंख, पक्ष, डैना, पर।

डैम्–(अं०पु०) सत्यानाशी, अभागा।

डैश्–(अं०पु०) अंग्रेजी का विराम चिन्ह (–) जिसका आकार छोटी आड़ी रेखा का होता है।

डोज–(अं०स्त्री०) औषधि की मात्रा, खोराक।

डोडो–(अं०स्त्री०) बत्तक के आकार का एक पक्षी।

ड्राइंग्–(अं०पु०) लकीरों से चित्र आदि बनाने की विद्या।

ड्राइवर्–(अं०पु०) गाड़ी, मोटर, आदि चलाने वाला।

ड्राम्–(अं०पु०) तीन माशे की अंग्रेजी तौल।

ड्रिल्–(अं०स्त्री०) क़वायद।

त

तअज्जुब–(अ०पु०) विस्मय, आश्चर्य, अचम्भा।

तअम्मुल–(अ०पु०) चिन्ता, शोच, फ़िक्र, विलम्ब देर, धैर्य, सब्र।

तअल्लुक–(अ०पु०) सम्बन्ध।

तअल्लुका–(अ० पु०) वह जमीन-दारी जिसके अन्तर्गत कई एक गाव हो, बड़ा इलाका। **तअल्लुक:दार**–(अ० पु०) तअल्लुके का मालिक, इलाकेदार। **तअल्लुकादारी**–(अ० स्त्री०) तअल्लुकदार का पद या भाव। **तअल्लुका**–(हिं०पु०) देखो तअल्लुकदार:। **तअलुकादार**–(हिं० पु०) देखो तअल्लुक:दार। **तअल्लुकेदार**–(हिं०क्रि०) देखो तअल्लुक:दारी। **तअल्लुकेदारी**–(हिं० पु०) देखे तअल्लुक:दारी। **तअस्सुब**–(हिं० पु०) पक्षपात, तरफ़दारी।

तंग–(फा०पु०) घोड़े की पेटी, कसन (वि०) दृढ़, दुखी, सकीर्ण, सँकरा, पतला। **तंगदस्त**–(फ़ा०वि०) कृपण, कंजूस, दरिद्र, कंगाल।

तंगदस्ती–(फ़ा०स्त्री०) कृपणता, कंजूसी, दरिद्रता। **तंगहाल**–(फ़ा० वि०) निर्धन, दरिद्र, आपत्ति, पड़ा हुआ, रोगग्रस्त, रुग्ण, बीमार।

तंगी–(फ़ा०स्त्री०) तंग होने का भाव, संकीर्णता, संकोच, क्लेश, दुःख, कष्ट, तकलीफ़, निर्धनता, दरिद्रता, न्यूनता, कमी।

तंजेब–(फा० स्त्री०) एक प्रकार का महीन बढ़िया मलमल।

तंदुरुस्त–(फ़ा०वि०) निरोग, स्वस्थ, जिसको कोई रोग न हो, चंगा।

तंदुरुस्ती–(फ़ा०स्त्री०) आरोग्यता, स्वास्थ्य, चंगा होने का भाव।

तंदूर–(फ़ा०पु०) एक प्रकारका मिट्टी का बहुत बड़ा गोल उँचा भट्ठी के आकार का पात्र जिसनें रोटियाँ पकाई जाती हैं।

तंबीह–(अ० स्त्री०) शिक्षा, नसीहत, दण्ड, सज़ा।

तंबूर–(फ़ा०पु०) एक प्रकार का छोटा ढोल। **तंबूरची**–(फ़ा० पु०) वह जो तंबूरा बजाता हो।

तकदमा–(फा०पु०) अनुमान, तखमीना, अन्दाज़।

तकदीर–(अ०स्त्री०) प्रारब्ध, भाग्य, किस्मत। **तकदीरवर**–(हिं०वि०) भाग्यवान्, जिसकी किस्मत अच्छी हो।

तकमील–(अ०स्त्री०) पूर्णता, पूरा होने की क्रिया।

तकरार–(अं०स्त्री०) विवाद, हुज्जत, झगड़ा, टटा, वह खेत जिसमें कई तरह के अन्न बोये गये हों।

तकरीर–(अ० स्त्री०) वार्तालाप, बातचीत, वक्तृता, भाषण।

तकरीब–(अ०स्त्री०) उत्सव, जलसा, भोज।

तकर्रुरी–(अ०स्त्री०) नियुक्ति।

तकलीफ–(अं०स्त्री०) दुःख, कष्ट, क्लेश, विपत्ति।

तकल्लुफ–(अ० पु०) शिष्टाचार, सम्मान, आदर।

तकसीम–(अ० स्त्री०) विभाग करने की क्रिया, बँटाई, भाग, गणित में किसी संख्या को दूसरी संख्या में भाग देना।

तकसीर–(अ०स्त्री०) दोष अपराध,

तकाज़ा–(अ० पु०) तगादा, माँगना, ऐसा काम करने के लिये किसी से कहना जिसके लिये वचन मिल गया हो, प्रेरणा, उत्तेजना।

तकावी–(अ०स्त्री०) राजा या भूस्वामी की ओर से किसानको बीज खरीदने कुवां आदि बनाने के लिये दिया हुआ ऋण।

तकिया–(फ़ा०पु०) कपड़े का बना हुआ गोल चौकोर थैला जो रूई भर कर सोते समय सिर के नीचे रक्खा जाता है, रोक या सहारे को लिये लगाई जानेवाली पत्थरकी पटिया, मुतक्के में लगानेकी सिल्ली, विश्राम करने का स्थान, आश्रय, सहारा, कब्रिस्तानके पास का स्थान, जहां मुसलमान फकीर रहते हो। **तकिया कलाम**–हिं०पु०) देखो सखुन-तकिया। **तकियादार**–(फ़ा० पु०) वह मुसलमान फ़कीर जो तकिया (मज़ार) पर रहता हो।

तख़फ़ीफ़–(अं०स्त्री०) न्यूनता, कमी।

तखमीनन्–(फ़ा०क्रि०वि०) अनुमान से। **तखमीना**–(अं०पु०) अनुमान, अटकल।

तखलिया–(अ० पु०) निर्जन स्थान, जिस जगह एक आदमी भी न हो।

तखीत–(अं० स्त्री०) अनुसन्धान, अन्वेवण, जांच पड़ताल।

तख्त–(फ़ा०पु०) राजा के बैठने का आसन, सिंहासन, पटरों से बनी हुई चौकी। **तख्तरवां**–(फ़ा० पु०) वह तख्त जिस पर सवार होकर राजा निकलते हैं। **तख्त ताऊस**–(फ़ा० पु०) शाहजहां का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसके ऊपर एक जड़ाऊ मोरकी मूर्ति बनी थी, इसकी लागत छ करोड़ रुपये कही जाती है। **तख्तनशीन**–(फ़ा० वि०) जो राजगद्दी पर बैठा हो, सिंहासनारूढ़। **तख्तपोश**–(फ़ा० पु०) तख्त या चौकी पर बिछाने चादर, चौंकी, तख्त। **तख्तबन्दी**–(फ़ा० स्त्री०) पटरों की बनी हुई भीत, पटरों से भीत बनाने की क्रिया।

तख्ता–(फ़ा०पु०) लकड़ी का चीरा हुआ बड़ा पटरा, लकड़ी की बड़ी चौकी, अरथी, टिखटी, कागज़ का ताव, भूमिका अलग टुकड़ा, कियारी।

तख्ता उलटना–बना काम बिगाड़ना।

तख्ता होना–अकड़ जाना। **तख्ता पुल**–(फ़ा० पु०) गढ़ की खदक पर बनाया हुआ पटरोंका पुल। **तख्ती**–(फा० स्त्री०) लिखने पट्टी छोटी पट्टी।

तगदमा–(अ०पु०) अनुमान

तज़किरा–(अ०पु०) चर्चा।

तजगरी–(फ़ा०स्त्री०) रन्दा चोखा करने की पटरी।

तजरबा–(अ०पु०) परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान अनुभव, ज्ञान प्राप्त करने के लिये की जानेवाली परीक्षा

तजरबाकार–(हिं० पु०) वह मनुष्य जिसने किसी बातका अनुभव किया हो।

तजवीज–(अ०स्त्री०) सम्मति, सलाह, निर्णय, प्रबन्ध। **तजवीजसानी**–(अ० स्त्री०) एक ही न्यायाधीश से पुनर्विचार करने के लिये प्रार्थना-देना।

तदबीर–(अं०स्त्री०) युक्ति, उपाय।

तदारुक–(अ० पु०) किसी खोई हुई वस्तु का अथवा अपराधीका अन्वेषण, किसी दुर्घटना के विषय में जांच पडताल प्रबन्ध, दण्ड।

तनकीह–(अ०स्त्री०) अन्वेषण, खोज जाँच, न्यायालय में उन बातों का अन्वेषण करना, जिन पर न्याय होना आवश्यक हो।

तनखाह–(फ़ा०स्त्री०) मासिक वेतन।

तनखाहदार–(फ़ा० पु०) वेतन पाने वाला नौकर।

तनजेब–(फ़ा०पु०) एक प्रकार का महीन चिकना कपड़ा।

तनज्जुल–(अ०पु०) अवनति, घटी। **तनज्जुली**–(फा०स्त्री०) अवनति, घटी।

तनहा–(फ़ा०वि०) जिसके साथ कोई न हो, एकाकी, अकेला; (क्रि०वि०) बिना किसी की साथ लिये हुए, अकेले। **तनहाई**–(फ़ा० स्त्री०) एकान्तता, अकेलापन, वह स्थान जहां कोई न हो।

तनाजा–(अ० पु०) झगड़ा, टँटा, शत्रुता।

तनाब–(अ० स्त्री०) खेमे को बाधने रस्सी।

तपाक–(फ़ा०पु०) आवेश, वेग।

तपिश–(फा० स्त्री०) तपन, गरमा, आँच।

तपेदिक–(फ़ा०पु०) राजयक्ष्मा रोग।

तफरीक–(अ०स्त्री०) भिन्नता, वियोग, अन्तर, भाग, बांट।

तफरीह–(अ० स्त्री०) प्रसन्नता, हँसी दिल्लगी।

तफ़सील–(अ० स्त्री०) विस्तृत वर्णन, ब्योरा, सूची, विवरण, टीका।

तफ़ावत–(अ०पु०) अन्तर, दूरी।

तबक–(अ० पु०) लोक, तल, परियों का नमाज, घोड़ोंका एक रोग, शरीर में पड़ने वाली चकत्ता, चौड़ी और कम गहरी थाली, कागज से भी महीन पीट कर किये हुए सोने चाँदी के पत्तर। **तबकगर**–(अ०पु०) सोने चाँदीके तबक बनानेवाला, तबकिया।

तबकफाड़–(अ० पु०) मल्ल युद्ध की एक रीति। [illegible]

तबका–(अ०पु०)खण्ड,विभाग,टुकड़ा परत, तह, तल, लोक, पद, स्थान, मनुष्यों का समुदाय ।

तबकिया–(अ०पु०) देखो तबकगर । तबकिया हरताल–एक प्रकार की हरताल जिसके टुकड़ों में परत होती हैं । **तबदील**–(अ०वि०) परिवर्तित, बदला हुआ । **तबदीली**–(अ० स्त्री०)परिवर्तन होनेकी क्रिया, अदल बदल । **तबद्दुल**–(अ० पु०) देखो तबदीली ।

तबर–(फ़ा०पु०) कुल्हाड़ी, टांगी, लड़ाई का एक अस्त्र जो कुल्हाड़ी के समान होता है; मस्तूल के सबसे ऊपरी भाग में लगाने की पाल; **तबरदार**–तबर चलानेवाला; **तबरदारी**–तबर चलाने का काम ।

तबल–(फ़ा०पु०) बड़ा ढोल,नगाड़ा, डंका । **तबलची**–(अ० पु०) तबला बजानेवाला, तबलिया ।

तबला–(अ०पु०) ताल देने का एक बाजा जो लकड़ी का बना होता है, यह पोला होता है और इसपर चमड़ा मढ़ा होता है । **तबलिया**–(अ०पु०) तबला बजानेवाला, तबलची ।

तबाक–(अ०स्त्री०)बड़ा थाल,परात ।

तबाबत–(अ०स्त्री०) चिकित्सा, ।

तबाशीर–(फ़ा०पु०) वंशलोचन ।

तबाह–(फ़ा० वि०) नष्ट, चौपट, जो बिलकुल नष्ट हो गया हो । **तबाही**–(फ़ा० स्त्री०) अधःपतन, नाश ।

तबीअत–(अ०स्त्री०) चित्त, मन, जी, बुद्धि, ज्ञान, बुद्धि, समझ; किसीपर **तबीअत आना**–आसक्त होना, प्रेम होना; **तबीअत फड़क उठना**–मन अति प्रसन्न होना; **तबीअत लगना**–चित्त लगना;**तबीअतदार**–(अ०वि०) समझदार, भावुक,रसिक; **तबीअतदारी**–(अ० स्त्री०) समझदारी, रसिकता ।

तबीब–(अ०पु०)चिकित्सक, हकीम ।

तमंचा–(फ़ा० पु०) छोटी बन्दूक, पिस्तौल, कपाट की दृढ़ता के लिये इसके दोनों ओर की भीतमें लगाया हुआ पत्थर (तमंजा) ।

तमन्ना–(फ़ा०पु०) अभिलाषा ।

तमअ–(अ०स्त्री०) लालच,लोभ,चाह ।

तमगा–(तु०पु०) पदक, तगमा ।

तमस्सुक–(अ०पु०) वह प्रमाणपत्र जो ऋण लेनेवाला महाजनको लिख कर देता है, ऋणपत्र, लेख ।

तमहीद–(अ०स्त्री०)भूमिका;दीबाचा ।

तमाचा–(फ़ा०पु०) थप्पड़, झापड़ ।

तमादी–(अ० स्त्री०) अवधि व्यतीत होना, किसी नियुक्त समय का बीत जाना ।

तमाम–(अ०वि०) सम्पूर्ण, बिलकुल, पूरा, समाप्त ।

तमामी–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिस पर कलाबत्तू की धारियां बनी होती हैं ।

तमाशा–(फ़ा० पु०) चित्त को प्रसन्न करने वाला दृश्य, मनोरंजक दृश्य, अद्भुत व्यापार, अनोखी बात ।

तमाशाई–(अ०पु०)वह जो तमाशा देखता हो ।

तमीज–(अ० स्त्री०) भले बुरे का विचार, ज्ञान,बुद्धि,पहिचान, चिह्न ।

तय–(अ० वि०) समाप्त, पूरा किया हुआ, स्थिर, निश्चित, निबटाया हुआ ठहराया हुआ, निर्णीत ।

तर–(फ़ा० वि०) आर्द्र, भीगा हुआ, शीतल, ठंढा, जो सूखा न हो, भरा पूरा, मालदार, (क्रि० वि०) नीचे की ओर ।

तरकश–(फ़ा० पु०) तीर रखने का चोंगा, तूणीर ।

तरकारी–(फ़ा० स्त्री०) वह पौधा जिसकी पत्ती, जड़, फलफूल आदि पकाकर खाई जाती है, शाकभाजी, खाने योग्य माँस ।

तरकीब–(अ० स्त्री०) संयोग, मेल, मिलान, युक्ति, ढंग,उपाय, बनावट, रचना शैली ।

तरक्की–(अ०स्त्री०) वृद्धि, उन्नति, बढ़ती ।

तरजीह–(अ०पु०) प्रधानता ।

तरजुमा–(अ०पु०)भाषान्तर,अनुवाद, उल्था ।

तरतीब–(अ०स्त्री०) पदार्थों को क्रम से रखना, क्रम, सिलसिला ।

तरदीद–(अ०स्त्री०) रद्द करने की क्रिया, प्रत्युत्तर, खण्डन ।

तरद्दुद–(अ०पु०) चिन्ता, सोच ।

तरफ–(अ०स्त्री०)दिशा, ओर, पार्श्व, किनारा, पक्ष, बगल; **तरफ़दार**–(अ०वि०)समर्थक, पक्षपात । **तरफदारी**–(अ०स्त्री०) पक्षपात ।

तर-बतर–(फ़ा०वि०)आर्द्र,भींगाहुआ, गीला ।

तरबूज–(फ़ा० पु०) एक प्रकार का फल जो कुम्हड़े की तरह का होता है इसके भीतर जल का अंश अधिक होता है ।

तरमीम–(अ० स्त्री०) संशोधन ।

तरह–(अ० स्त्री०) भाँति, प्रकार, किस्म, बनाबट, रचना, ढांचा,रीति, प्रणाली, ढब, उपाय, युक्ति,अवस्था, स्थिति, दशा; **तरह देना** – ध्यान न देना ।

तरहदार–(फ़ा०वि०)अच्छी बनावटका

तराजू–(फ़ा० स्त्री०) तौलनेका यन्त्र, तुला ।

तराना–(फ़ा० पु०) एक प्रकार का गाना ।

तराबोर–(फ़ा०वि०) आर्द्र, अच्छी तरह भीगा हुआ ।

तरावत–(फ़ा० स्त्री०)शीतलता,ठण्ढक, गीलापन, वह आहार जिससे शरीर की गरमी शान्त होती है, स्निग्ध भोजन ।

तराश–(फ़ा० स्त्री०)कटानेकी विधि, काट, रचना,बनावट,ढंग,काटछांट ।

तराशखराश–(फ़ा०स्त्री०) बनावट, काटछांट । **तराशना**–(फ़ा० क्रि०) कतरना, काटना ।

तरी–(अ० स्त्री०) आर्द्रता, गीलापन, शीतलता, ठंढक, नीची भूमि जहाँ पानी ठहरता हो, कछार, तराई, तरहटी, तरकी, करनफूल ।

तरीक़ा–(अ०पु०) रीति, विधि,ढंग, व्यवहार, युक्ति, उपाय ।

तर्कश–(फ़ा० पु०) तीर रखने का चोंगा, तूणीर ।

तर्कसी–(फ़ा० स्त्री०) छोटा तरकश ।

तर्ज–(अ०स्त्री०) प्रकार, रीति, शैली, ढंग, रचना विधि, बनावट, ढब, तरह, किस्म ।

तर्जुमा–(अ०पु०) अनुवाद,भाषान्तर, उल्था ।

तलफ–(अ० वि०) नष्ट किया हुआ ।

तलफी–(फ़ा०स्त्री०) हानि, नाश ।

तलब–(अ०स्त्री०) अन्वेषण खोज, तृष्णा, इच्छा, आवश्यकता, बुलावा वेतन । **तलबगार**–(फ़ा० वि०) चाहने वाला, मांगने वाला ।

तलबाना–(फ़ा०पु०) एक प्रकार का व्यय, वह व्यय जो साक्षी को बुलाने के लिये टिकट के रूप में न्यायालय में जमा किया जाता है । **तलबी**–(अ०स्त्री०) बुलाहट, माँग ।

तलाक़–(अ०पु०) विधान पूर्वक पति पत्नी के सम्बन्ध का त्याग ।

तलाश–(अ०स्त्री०) अन्वेषण, खोज, आवश्यकता,अनुसन्धान, चाह,माँग ।

तलाशी–(फ़ा०स्त्री०) किसी खोई हुई या छिपी हुई वस्तु की खोज, देख भाल ; **तलाशी लेना**–सन्दिग्ध मनुष्य के घरबार की खोज करना ।

तल्ख–(फ़ा० वि०) कटु, कड़ुवा, **तल्खी**–(फ़ा० स्त्री०) कड़ुवाहट, कड़ुवापन ।

तवज्जह–(अ०स्त्री०)ध्यान, कृपादृष्टि

तवाजा–(अ०स्त्री०) आदर, सम्मान, आतिथ्य, आवभगत, सत्कार ।

तवाना–(फ़ा०वि०) बलवान् मोटा ।

तवायफ–(अ०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।

तवारीख–(अ०स्त्री०) इतिहास ।

तवालत–(अ०स्त्री०) दीर्घत्व,लम्बाई, आधिक्य, अधिकाई, झंझट, बखेड़ा ।

तशखीस–(अ०स्त्री०)निश्चय,ठहराव, रोग का निदान, रोगकी पहिचान ।

तशरीफ–(अ०स्त्री०) महत्व; **तशरीफ रखना**–विराजमान होना, बैठना, **तशरीफ लाना**–पदार्पण करना ।

तश्त(फ़ा०पु०) परात, बड़ा थाल ।

तश्तरी–(फ़ा०स्त्री०) छोटी थाली, रिकाबी ।

तसकीन–(अ०स्त्री०) ढाढस, दिलासा

तसदीक–(अ०स्त्री०) सचाई, समर्थन, पुष्टि, सचाई का निश्चय, साक्ष्य, गवाही ।

तसद्दुक–(अ०पु०)बलिदान, निछावर,

तसनीफ–(अ०स्त्री०) ग्रन्थ की रचना ।

तसबीह–(अ०स्त्री०) जप करने की माला, सुमिरनी ।

तसमा–(फ़ा०पु०) चमड़े का बना हुआ लंबा तथा चौड़ा फीता ।

तसला–(फ़ा०पु०) लोहे पीतल ताँबे आदि का कटोरे के आकार का गहरा पात्र ।

तसलीम–(अ०स्त्री०) प्रणाम, सलाम, किसी बात की स्वीकृति ।

तसल्ली–(अ० स्त्री०) आश्वासन, सान्त्वना, ढाढस, धीरज, धैर्य ।

तसवीर–(अ०स्त्री०) चित्र, (वि०) चित्र के समान मनोहर, सुन्दर ।

तहकीक़–(अ०स्त्री०)सत्य, असलियत, अनुसन्धान, खोज, जिज्ञासा, पूछताछ

तहकीक़ात–(अ०स्त्री०) अनुसन्धान, अन्वेषण, जांच ।

तहखाना–(फ़ा०पु०) घर के नीचे की कोठरी, जलगृह, भुईंधरा ।

तहजीब–(अ०स्त्री०) सभ्यता, शिष्टता

तहदरज–(फ़ा०वि०) बिलकुल नया, जिसका व्यवहार न हुआ हो ।

तहनिशाँ–(फ़ा०पु०) लोहे पर सोने चांदी की पिच्चीकारी ।

तहपेंच–(फ़ा०पु०) पगड़ी के नीचे का कपड़ा ।

तहमत–(फ़ा०पु०) कमर में लपेटने का कपड़ा, लुंगी ।

तहरीर–(अ०स्त्री०) लेख, लिखावट, लेखन शैली, लिखा हुआ मजमून, लेखबद्ध प्रमाण, लिखने का शुल्क, लिखाई; **तहरीरी**–(फ़ा० वि०) लेखबद्ध, लिखा हुआ ।

तहलका–(अ०पु०) नाश, विप्लव, हलचल, खलबली, मृत्यु, मौत ।

तहवील–(अ०स्त्री०) सपुर्दगी, धरोहर, अमानत, जमा, कोष । **तहवीलदार**–(अ०पु०) वह मनुष्य जिसके पास जिम्मे रुपये का हिसाब रहता है, कोषाध्यक्ष ।

तहसील–(अ०स्त्री०)तहसीलदार की कचहरी, माल की छोटी कचहरी, चन्दा उगाही, वसूली, जमीन की वार्षिक आय, रुपया वसूल करने की क्रिया, लगान वसूल कर इकट्ठा की हुई रकम; **तहसीलदार**–(पु०) किसी परगने या ताल्लुके का कर उगाहने वाला, वह अधिकारी जो जमीदारों से सरकारी कर इकट्ठा करता है, और छोटे अभियोगों का निर्णय करता हैं ।

तहसीलदारी–(अ०पु०) तहसीलदार का काम, तहसीलदार का पद ।

तहोबाला–(फ़ा०वि०) उलट पुलट किया हुआ ।

ताईद–(अ०स्त्री०) समर्थन, पुष्टि

पक्षपात।
ताऊन–(अ० पुं०) एक प्रकार का संक्रामक रोग, प्लेग।
ताऊस–(अ०पुं०) मयूर, मोर, सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा, **तख्त ताऊस**–शाहजहां का बनवाया हुआ बहुमूल्य राजसिंहासन जो मोर के आकार का था जिसमें बहुमूल्य रत्न जड़े थे। **ताऊसी**–(अ०वि०) मोर के सदश, मोर के रंग का, गहरे बैंगनी रंग का।
ताक–(अ०पुं०) भीत में बना हुआ गड्ढा, ताखा, आला (वि०) विषम संख्या वाला (जो सम न हो यथा पांच, सात, नव,), अद्वितीय, अनुपम, **ताक पर रखना**–काम में न लाना, किसी वस्तु को पड़ी रहने देना।
ताकजुत्फ़–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का जूस ताक का जुआ।
ताकत–(अं०स्त्री०) शक्ति, बल, सामर्थ्य। **ताकतवर**–(फ़ा०वि०) बलिष्ठ, बलवान्।
ताकि–(फ़ा०अव्य) इसलिये कि, जिसमें
ताकीद–(अ०स्त्री०) किसी को सावधान करके दी हुई आज्ञा अथवा अनुरोध, चेतावनी।
ताखी–(अ०वि०) जिसको दोनों आँखें भिन्न भिन्न रंग या आकृति की हों।
ताज–(अ० पुं०) राजमुकुट, तुर्रा, कलँगी, मयूर, कुक्कुट आदि पक्षियों के सिर पर की चोटी, शिखा, भीत में का छज्जा या कँगनी, बुर्जी जो घर के शिखर पर शोभा के लिये बनाई जाती है, गंजीफे का एक रंग, ताजमहल।
ताजक–(फ़ा०पुं०) ईरानों की एक जाति का नाम, यवनाचार्य का बनाया हुआ ज्योतिष का एक ग्रन्थ।
ताज़गी–(फ़ा०स्त्री०) हरापन, नयापन, प्रफुल्लता, स्वस्थता।
ताजदार–(फ़ा०वि०) ताज के आकार का; (पुं०) ताज पहिरने वाला बादशाह।
ताजपोशी–(फ़ा०स्त्री०) वह उत्सव जो राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने के समय किया जाता है। **ताजमहल**–(अ०पुं०) आगरा नगर में का प्रसिद्ध मकबरा (समाधि मन्दिर) जिसको शाहजहाँ ने अपनी प्रियतमा पत्नी मुमताज महल के स्मरणार्थ बनवाया था।
ताजा–(फ़ा०वि०) सद्यः प्रस्तुत, तुरत का बना हुआ जो व्यवहार में लाने के लिये तुरत निकाला गया हो, स्वस्थ, प्रफुल्ल, हराभरा, डाल से तोड़ कर तुरत लाया हुआ, नया, जो बहुत दिनों का न हो; **मोटाताजा**–हृष्टपुष्ट, हट्टाकट्टा।
ताजिया–(अ०पुं०) मरे हुए के लिये विलाप करना तथा शोक प्रकट करना; बाँस की खमाचियों पर रंगबिरंगे कागज पन्नी आदि चिपका कर मकबरे के आकारका बना हुआ मण्डप जिसको मुहर्रमके समय शिया मुसलमान इसकी आराधना करके दफ़न करते हैं।
ताजी–(फ़ा०वि०) अरब देश, अरबी घोड़ा, शिकारी कुत्ता, (स्त्री०) अरबी भाषा।
ताजीम–(अ०स्त्री०) सम्मान प्रदर्शन, बड़ों के सामने आदर्श खड़े होना, तथा झुक कर सलाम करना। **ताजीमी सरदार**–(फ़ा०पुं०) वह बड़ा सरदार जिसके आने पर राजा या अपने स्थान से उठ कर खड़े हो जाते हैं।
ताजीरात–(फ़ा०पुं०) दण्ड विधान।
तातार–(फ़ा० पुं०) मध्य एशिया महाद्वीप के एक देश का नाम।
तातारी–(फ़ा०वि०) तातारदेशसंबंधी, तातारदेशका, तातार देश निवासी।
तातील–(अ०स्त्री०) छुट्टी का दिन।
तादाद–(अ०स्त्री०) संख्या, अदद।
ताना–(अ०पुं०) व्यंग, आक्षेपवाक्य, बोली ठठोली।
ताफ्ता(फ़ा० पुं०) एक प्रकार का चमकदार रेशमी वस्त्र।
ताब–(फ़ा०स्त्री०) गरमी, ताप, आभा, दीप्ति, चमक, धैर्य, साहस, सामर्थ्य, शक्ति, बल।
ताबूत(अ०पुं०) वह सन्दूक जिसमें शव रखकर गाड़ने के लिये कब्रिस्तान में लेजाई जाती है।
ताबे–(अं० वि०) वशीभूत, आधीन, आज्ञानुसार चलने वाला: **ताबेदार**–(अं०वि०) आज्ञाकारी, टहल करने वाला। **ताबेदारी**–(फ़ा०स्त्री०) सेवा, नौकरी, टहल।
तामीर–(फ़ा०पुं०) घर की मरम्मत
तामील–(अ०स्त्री०) आज्ञाका पालन
ताम्मुल–(फ़ा०पुं०) आगा पीछा।
तायफा–(फ़ा०स्त्री०) नाचनेगानेवाली वेश्या की मण्डली, वेश्या, रंडी।
ताराज–(फ़ा०पुं०) लूटपाट, ध्वंस, नाश
तारीक–(फ़ा०वि०) काला, धुंधला, अन्धकारमय, अँधेरा। **तारीकी**–(फ़ा०स्त्री०) काला, धुंधला, अंधेरा
तारीख–(अ०स्त्री०) महीनेका प्रत्येक दिन, वह दिन जिसमें पहिले किसी वर्ष में कोई विशिष्ट घटना हुई हो, किसी कार्य के लिये स्थिर किया हुआ दिन, नियत तिथि, इतिहास। **तारीख डालना**–दिन स्थिर करना।
तारीफ़–(अ०स्त्री०) लक्षण, परिभाषा, विवरण, वर्णन, प्रशंसा, विशेषता, गुण, प्रशंसा की बात, बखान।
तालिब–(अ०पुं०) अन्वेषण करने वाला, ढूंढनेवाला। **तालिब इल्म**–(अ०पुं०) विद्यार्थी, छात्र।
तालका–(अ०पुं०) कुर्क की हुई सामग्री की सूची।
तालीम–(अ०स्त्री०) शिक्षा, उपदेश।
तावान–(फ़ा०पुं०) दण्ड, डाँड़, हरजाना
तावीज–(अ०पुं०) यन्त्र, मन्त्र या कवच, धातु की बनी हुई पोली डिबिया जिसमें भीर संपुट करके कोई मन्त्र आदि लिखकर बन्द कर दिया जाता है और पिरोकर यह गले में पहिरी जाती है, हाथ में पहिरने का एक गहना।
ताशा–(अं० पुं०) चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा जो गले में लटकाकर दो पतली लकड़ियों से बजाया जाता है।
तासीर–(अ०स्त्री०) गुण, प्रभाव।
तासब–(फ़ा० पुं०) पक्षपात।
ताहम–(फ़ा०अव्य०) तिसपर भी, तौभी।
तिजारत–(अ०स्त्री), वाणिज्य, व्यापार
तितिंबा–(अ०पुं०) पुस्तक का परिशिष्ट, उपसंहार, शेष, ढकोसला।
तितिम्मा–(अ०पुं०) बचा हुआ भाग, परिशिष्ट, उपसंहार।
तिरवा–(फ़ा०पुं०) किसी स्थान की उतनी दूरी जहाँ तक तीर जा सके।
तिलस्म–(फा०पुं०) इन्द्रजाल, जादू, चमत्कार।
तिलस्मी–(फ़ा०वि०) इन्द्रजाल सबंधी, जादू का।
तिलाक–(फा०स्त्री०) स्त्री पुरुष (पति पत्नी) के सम्बन्ध का टूटना
तिशना–(फ़ा० पुं०) व्यंग वचन, ताना मेहवा।
तीमारदारी–(फ़ा०स्त्री०) बीमार की सेवा शुश्रूषा का काम।
तीरन्दाज–(फ़ा०पुं०) तीर चलाने की विद्या।
तीरगर–(फ़ा०पुं०) तीर बनानेवाला
तीली(फा०स्त्री०) सींक, बड़ा तिनका, धातु आदि का पतला कड़ा तार, रेशम लपेटने की पतली गड़ारी, सूत स्वच्छ करनेकी जुलाहेकी कूंची।
तुकमा–(फ़ा० पुं०) अचकन आदि पहिरावे की घुंडी फँसाने का फन्दा।
तुका–(फ़ा० पुं०) वह तीर जिसमें गाँसी के स्थान में घुंडी बनी हो।
तुक्कल–(फ़ा०स्त्री०) मोटी डोरी पर उड़ाई जाने वाली बड़ी पतंग।
तुक्का–(फ़ा० पुं०) बिना गाँसी की तीर, छोटी पहाड़ी, टीला।
तुख्म–(अ०पुं०) बीज, बिया।
तुनकी–(फ़ा० स्त्री०) एक प्रकार की कोमल रोटी।
तुरंज–(फ़ा० पुं०) चकोतरा नीबू, बिजौरा नीबू, पान के आकार का बूटा जो वस्त्रों के किनारों पर बनाया जाता है।
तुरंजबीन–(फ़ा०स्त्री०) खुरासान देश में होने वाली एक प्रकार की चीनी जो ऊंटकटारे के पौधों पर ओस के साथ जमती है।
तुरकी–(फ़ा० वि०) तुर्क देश का, तुर्क संबधी (स्त्री०) तुर्किस्तान की भाषा।
तुर्कमान–(फ़ा०पुं०) तुर्क जाति का मनुष्य, तुर्की घोड़ा जो बड़ा पुष्ट और साहसी होता है।
तुर्किन–(फ़ा०स्त्री०) तुर्क जाति की स्त्री
तुर्की–(फ़ा० वि०) तुर्किस्तान का, (स्त्री०) तुर्किस्तान की भाषा, तुर्की घोड़ा तुर्कों की सी अकड़।
तुर्रा–(अ०पुं०) माथे पर की घुघराले बालों की लट, कलंगी, बादले का गुच्छा जो पगड़ी में लगाया जाता है, फूलों की लड़ियों का गुच्छा, फंदना जो टोपी में लगाया जाता है, पक्षियों की शिखा, किनारा, छज्जा, चाबुक, कोड़ी, जटाधारी नामक पुष्प, एक प्रकार की बुलबुल या बटेर (वि०) विलक्षण, अद्भुत, अनोखा **तुर्रा यह है कि**–सर्वोपरि इतनी बात विशिष्ट है
तुर्श–(फ़ा०वि०) अम्ल, खट्टा।
तुर्शरू–(फा०वि०) कठोर स्वभाव का,
तुर्शाना–(फ़ा०क्रि०) खट्टा हो जाना।
तुर्शी–(फ़ा०स्त्री०) अम्लता, खटाई।
तुर्शीदंदा–(फा०स्त्री०) घोड़े के दाँतों में मैल जमने का रोग।
तूत–(फ़ा० पुं०) शहतूत का वृक्ष या फल।
तूती–(फा०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा सुग्गा, कनेरी नामक छोटी पीले रंग की सुन्दर चिड़िया जिसकी बोली बडी मधुर होती है, एक प्रकार का छोटा बाजा; **किसी की तूती बोलना**–अधिक प्रभावशाली होना; **नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुन सकता है**–बड़े लोगों के आगे छोटे लोगों की वार्ता तुच्छ समझी जाती है।
तूदा–(फ़ा०पुं०) राशि, ढेर, सीमा का चिह्न, मिट्टी का टीला जिसपर बन्दूक आदि का लक्ष्य लगाना सीखा जाता है।
तूफ़ान–(अ०पुं०) आपत्ति, प्रलय, कोलाहल, झगड़ा, उपद्रव, डुबाने वाला बाढ़, वायु के वेग का उपद्रव, आँधी का झटका, झूठे दोष लगाना; **तूफानी**–(फ़ा० वि०) उपद्रव करने वाला, बखेड़िया, मिथ्या कलंक लगाने वाला, प्रचण्ड।
तुमतड़ाक–(फ़ा०स्त्री) आडम्बर, तड़क भड़क, बनावट, ठसक।
तूमार–(अ० पुं०) बात का व्यर्थ विस्तार, बात का बतंगड़।
तूरान–(फा०पुं०) मध्य एशिया महाद्वीप का फ़ारस के उत्तर का सम्पूर्ण भाग, यह तुर्क, तातरी, मुगल आदि जातियों का निवास स्थान है।
तूरानी–(फा० वि०) तूरान संबंधी, तूरान देश का।
तेग–(अ०स्त्री०) खड्ग, तलवार, बढ़ई के रन्दे रुखानी आदि का लोहा।
तेगा–(अ०पुं०) खड्ग, खाँड़ा, द्वार की

ईंट मिट्टी आदि से बन्द करना, मल्ल-युद्ध की एक युक्ति।
तेज़–(फ़ा० वि०) तीखी धारका, जो शीघ्र चलता हो, तीखा, चटपटा, उग्र, प्रचण्ड, मँहगा, अति प्रभाव युक्त, तीक्ष्ण बुद्धि वाला, अति चपल, जल्दी से काम करने वाला।
तेजा–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार का लाल रंग।
तेजाब–(फ़ा०पुं०) किसी क्षार पदार्थ का अम्लसार जो द्रावक होता है। **तेजाबी**–(फ़ा०वि०) तेजाब संबंधी।
तेजी–(फ़ा० स्त्री०) तीव्रता, प्रबलता, प्रचण्डता, उग्रता, शीघ्रता, जल्दी, महँगी।
तैयार–(अ० वि०) उपयुक्त, ठीक, तत्पर, उद्यत, प्रस्तुत, हृष्ठ पुष्ट; **हाथ तैयार होना**–हाथ बैठाना, कुशलता प्राप्त करना।
तैश–(अ०पुं०) आवेश, क्रोध।
तोता–(फ़ा०पुं०) एक प्रसिद्ध पक्षी जिसके पर हरे और चोंच लाल लाल होती हैं यह मनुष्य की बोली का अनुकरण अच्छी तरह कर सकता है इसी वास्ते लोग इसको पालते हैं, शुक, सुग्गा, सुआ, बन्दूक का घोड़ा; **हाथ का तोता उड़जाना**–बहुत व्यग्र होना; **तोते की तरह आंखें फेरना**–सौजन्य न दिखलाना; **तोता पालना**–जान बूझ कर कोई रोग या व्यसन को बढ़ने देना; **तोताचश्म**–(फ़ा०पुं०) तोते की तरह आँखों को फेर फेर लेने वाला, उदासी भाव; **तोते चश्मी**–(फ़ा०स्त्री०) उदासी भाव।
तोदरी–(फ़ा० स्त्री०) फ़ारस देश का एक काँटेदार बड़ा बृक्ष जिसके बीज औषधि में प्रयोग होते हैं।
तोप–(तु०स्त्री०) एक प्रकार का बड़ा अग्न्यस्त्र जो पहियों पर रक्खा रहता हैं, इसके ऊपर की ओर चौड़ी नली लगी रहती है जिसमें से बारूद भर कर गोले छोड़े जाते हैं; **तोप कीलना**–तोप के मुँह में लकड़ी का डट्टा लगा देना; **तोप की सलामी उतारना**–किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के आगमन पर तोप में बारूद भर कर तथा इसके मुख को सन के डट्टे से बन्द करके शब्द करना। **तोपखाना**–(फ़ा०पुं०) तोप तथा उसकी सब सामग्री रखने का स्थान, लड़ाई के लिये तैयार की हुई तोपों की रिसाला; **तोपची**–(अ० पुं०) तोप चलाने वाला, गोलन्दाज़।
तोंफगी–(फ़ा० स्त्री०) अच्छापन।
तोबड़ा–(फ़ा०पुं०) चमड़े या टाट का थैला जिसमें दाना भर कर घोड़े के मुँह में बाँध दिया जाता है; **तोबड़ा चड़ाना**–मुंह बन्द करना, बोलने न देना।
तोबा–(अ० स्त्री०) भविष्य में अनुचित कार्य न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा, पश्चाताप; **तोबा तिल्ला करना**–रो रोकर पश्चात्ताप दिखलाना; **तोबा बुलवाना**–भली भाँति पराजय करना।
तोशक–(तु० स्त्री०) दोहरी चादर या खोल में रूई नारियल की जटा आदि भर कर बनाया हुआ बिछौना।
तोशदान–(फ़ा० पुं०) यात्रा में मार्ग के लिये जलपान आदि आवश्यक पदार्थों को रखने की थैली जो सिपाहियों की पेटी में सिली होती है जिसमें कारतूस भरे रहते हैं।
तोशा–(फ़ा० पुं०) मार्ग में खाने पीने की वस्तु, साधारण खाने पीने की वस्तु बाँह पर पहिरने का एक प्रकार का आभूषण; **तोशाखाना**–(फ़ा० पुं०) वह कमरा जिसमें राजाओं के पहिरने के बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण रक्खे जाते हैं।
तोहफगी–(फ़ा० स्त्री०) उत्तमता, अच्छापन।
तोहफ़ा–(अ० पुं०) उपहार, भेंट, (वि०) उत्तम, बढ़िया, अच्छा।
तोहमत–(अ० स्त्री०) मिथ्या अभियोग, झूठा कलंक; **तोहमती**–(अ० वि०) मिथ्या कलंक लगाने वाला।
तौक–(अ० पुं०) एक प्रकार का हँसुली के आकार का गले में पहिरने का आभूषण, वृत्ताकार पटरी या मेड़रा जो पागल या अपराधी के गले में पहिराया जाता है, पक्षियों के गले का मण्डलाकार चिह्न, चपरास, पट्टा, गोल घेरा या पदार्थ।
तौजा–(अ० पुं०) खेतिहरों को विवाहादि के लिये दिया जाने वाला द्रव्य
तौजी–(अ०स्त्री०) वह कागज़ जिसमें असामी का नाम, जोत, कर आदि लिखी रहती है।
तौर–(अ० पुं०) चालचलन, चालढाल, दशा, स्थिति, अवस्था, ढंग, प्रकार, रीति; **तौर तरीका**–चाल चलन।
तौरात, तौरेत–(अ० पुं०) यहूदियों का प्रधान धर्म ग्रन्थ।
तौहीन–(अ० स्त्री०) अप्रतिष्ठा, अपमान।

थ

थर्मामेटर्–(अं० पुं०) गरमी सरदी नापने का यन्त्र।
थियेटर–(अं०पुं०) रंगभूमि, नाटकघर

द

दंग–(फ़ा० वि०) चकित, विस्मित, आश्चर्य युक्त, स्तब्ध (पुं०) भय, डर, घबराहट, दंगा; **दंगई**–(हिं० वि०) झगड़ालू, उपद्रवी, प्रचण्ड, (स्त्री०) उपद्रव झगड़ा; **दंगल**–(फ़ा० पुं०) मल्लयुद्ध जिसमें जीतने वाले को उपहार दिया जाता है- अखाड़ा, समूह, दल, मोटा गद्दा।
दंदाना–(फ़ा०पुं०) दांत के आकार की उभड़ी हुई वस्तुओं की पंक्ति।
दंदानेदार–(फ़ा०वि०) जिसमें दांतों की तरह निकले हुए कंगूरे या पंक्तियां हों।
दकियानुसी–(फ़ा०वि०) युक्ति, उपाय।
दखल–(अ० पुं०) अधिकार, हस्तक्षेप प्रवेश पहुँच; **दखल दिहानी**–(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु पर किसी को अधिकार दिला देना; **दखलनामा**–(अं० पुं०) सरकारी आज्ञा पत्र।
दखील–(अं०वि०) जो अधिकार रखने वाला हो; **दखीलकार**–(फ़ा० पुं०) वह असामी जिसने भूस्वामी से खेत लेकर बारह वर्ष तक अपने अधिकार में रक्खा हो; **दखीलकारी**–(फ़ा० स्त्री०) दखीलकार का पद, वह भूमि जिस पर दखीलकार असामी का अधिकार हो।
दगदगा–(अं० पुं०) भय, डर, सन्देह, एक प्रकार की कंडील।
दग़ा–(अं० स्त्री०) कपट, छल, धोखा दगल, फ़सल (फ़ा०पुं०) छल, कपट।
दगादार, दगाबाज़–(फ़ा०वि०) कपटी छली, विश्वासघाती (पुं०) छली मनुष्य, **दगाबाज़ी**–(फ़ा० स्त्री०) छल, कपट, धोखा।
दज्जाल–(अं० पुं०) झूठ बोलने वाला, धूर्त।
दफ़्ती–(अं० स्त्री०) कागज़ के अनेक परतों को चिपका कर बनाया हुआ गत्ता, कुट, वसली।
दफ़न–(अं० पुं०) भूमि में किसी पदार्थ को गाड़ने की क्रिया, मुरदा गाड़ने की क्रिया; **दफ़नाना**–(हिं०क्रि०) जमीन में दबाना, शव गाड़ना।
दफ़ा–(अं० स्त्री०) बार, बेर, विधान की पुस्तक का वह अंश जिसमें किसी एक अपराध के विषय में व्यवस्था हो, धारा; (वि०) तिरस्कार किया हुआ, हटाया हुआ; **दफ़ा लगाना**–किसी अपराधी पर विधान की किसी धारा को घटाना; **दफ़ादार**–(अ० पुं०) सेना का एक कर्मचारी जिसके आधीन थोड़े सिपाही हों।
दफादारी–(फ़ा०स्त्री०) दफादार का पद या काम।
दफ़ीना(अं० पुं०) गड़ा हुआ धन या खजाना।
दफ्तर–(फ़ा० पुं०) कार्यालय, सविस्तार पत्र, लंबी चौड़ी चिट्ठी चिटा, विस्तृत वृत्तान्त; **दफ्तरी**–(फ़ा० पुं०) किसी दफ्तर का कर्मचारी जो कागज़ आदि को ठीक करता और रजिस्टरों में रूल खींचता हैं, पुस्तकों पर जिल्द बाँधने वाला; **दफ्तरीखाना**–किताबों पर जिल्द बाँधने का स्थान।
दबदबा–(अं० पुं०) प्रताप।
दबीज–(फा० वि०) मोटे दल का, गाढ़ा।
दबीर–(फ़ा० पुं०) लिखने का काम करने वाला, लेखक, महाराष्ट्र ब्राह्मणों की एक उपाधि।
दम–(फ़ा० पुं०) श्वास, साँस, गाँजे चरस आदि का धुवाँ खींचना, प्राण, साँस खींचकर वेग से बाहर फेंकने का काम, एक बार सांस लेने का समय पल तलवार की धार, छल, संगीत में किसी स्वर का देर तक उच्चारण जीवन शक्ति, पकाने की एक क्रिया; दरी बुननेवालों की एक प्रकार की तिकोनी खमाची; **दम अटकना**–साँस का रुकना; **दम खींचना**–साँस का ऊपर चढ़ जाना; **दम घुटाना**–हवा की कमी से साँस लेने में कष्ट होना; **दम घोंटकर मारना**–गला दवाकर मार डालना, अति कष्ट देना; **दम तोड़ना**–अन्तिम सांस लेकर मृत्यु को प्राप्त होना; **दम फूलना**–हाँफना; **दम भरना**–थक जाना, आश्वासन देना; **दम मारना**–दम लेना–विश्राम करना **दम साधना**–साँस रोकना, मौन रहना; **दम मारना**–गाँजे चरस आदि का धुवाँ खींचना; **दम के दम**–अति शीघ्र; **दम पर दम**–थोड़ी थोड़ी देर के बाद; **नाक में दम आना**–बहुत व्यग्र होना; **दम निकलना**–मृत्यु प्राप्त होना; **दम सुखना**–प्राण सूखना, डर के कारण साँस का रुकना; **दम गनीमत होना**–थोड़ी बहुत अच्छी बात होना; **दम दिलासा**–आश्वासन; **दम देना**–धोखा देना।
दमखम–(फ़ा० पुं०) पुष्टता, दृढ़ता, जीवन शक्ति, प्राण, तलवार की धार, तलवार का झुकाव।
दमदमा–(फ़ा० पुं०) मोरचा, धुस, प्रताप।
दमदार–(फ़ा०वि०) जिसमें जीने की शक्ति अधिक हो, पुष्ट, दृढ, जो देर तक श्वास रोक सकता हो, चोखा, पैनी धार वाला।
दमपुख्त–(फ़ा० पुं०) जो दम देकर पकाया गया हो; **दमबाज़**–(फ़ा०वि०) फ़ुसलाने वाला, बहाना करनेवाला; **दमबाज़ी**–(फ़ा०स्त्री०) बहाना करने का काम।
दमसाज़–(फ़ा० पुं०) गवैया के साथ दम भरने वाला मनुष्य।
दमा–(फ़ा० पुं०) श्वास का रोग जिसमें श्वास लेने में कष्ट होता है, खाँसी आती है तथा कफ कठिनता से निकलता है।
दमाम, दमामा–(फ़ा०पुं०) डंका, नगाड़ा
दयानत–(अ० स्त्री०) सत्यनिष्ठा, **दयानतदार**–(अ वि०) सच्चा; **दयानतदारी**–(अ० स्त्री०) सचाई।

दयार–(अ०पु०) प्रान्त, प्रदेश।

दर–(फ़ा०पु०) द्वार, दरवाजा।

दरकार–(फ़ा० वि०) आवश्यक।

दरकिनार–(फ़ा० क्रि० वि०) अलग, एक ओर।

दरकूच–(फ़ा० क्रि० वि०) बराबर यात्रा करता हुआ।

दरख़ास्त–(फ़ा० स्त्री०) निवेदन, प्रार्थना, प्रार्थनापत्र, निवेदनपत्र।

दरख़्त–(फ़ा० पुं०) वृक्ष, पादप, पेड़।

दरगाह–(फ़ा० स्त्री०) चौखट, देहली, दरवा, किसी सिद्ध पुरुष का समाधि-स्थान, मठ, तीर्थस्थान।

दरगुजर–(फ़ा० वि०) वञ्चित, अलग; **दरगुजरना**–(फ़ा०क्रि०) क्षमा करना त्यागना, छोड़ना।

दरदर–(फ़ा० क्रि० वि०) द्वार द्वार, पास के स्थान में।

दरदवंत–(फ़ा०वि०) कृपालु, दयालु, दुखी।

दर दालान–(फ़ा० पुं०) दालान के बाहर की दालान।

दरपरदा–(फ़ा० क्रि० वि०) छिपाकर, आड़ में।

दरपेश–(फ़ा०क्रि०वि०) सन्मुख, सामने

दरबा–(फ़ा०पुं०) काठ के कोष्टकों का संदूक जिसमें मुरगी, कबूतरआदि रक्खे जाते हैं।

दरबान–(फ़ा० पुं०) द्वारपाल, ड्योढीदार।

दरबार–(फ़ा०पुं०) वह स्थान जहाँपर राजा अपने सभासदों के साथ बैठकर राज कार्य करता है, राजसभा, राजा महाराज, अमृतसर में सिक्खों का मन्दिर; **दरबार खुलना**–दरबार में जाने की आज्ञा मिलना; **दरबार बन्द होना**–दरबार में जाने की रुकावट होना; **दरबारदारी**-(फ़ा०स्त्री०) राजसभा में उपस्थिति, दरबार में उपस्थिति किसीके पास जाकर बैठना और उससे विनती करना; **दरबारविलासी**–(फ़ा०पुं०) द्वारपाल, ड्योढीदार। **दरबारी**–(फ़ा०पुं०) राजसभा का सभासद, राजदरवार में बैठने वाला मनुष्य (वि०) दरवार के योग्य; **दरबार कान्हड़ा**–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का राग।

दरपन–(फ़ा०पुं०) औषधि, दवा।

दरमाहा–(फ़ा० पुं०) मासिक वेतन,

दरमियान–(फ़ा० पुं०) मध्य; बीच (क्रि० वि०) मध्य में, बीच में,

दरमियानी–(फ़ा० वि०) मध्य का, बीच का, (पुं०) मध्यस्थ, वह मनुष्य जो दो आदमियों के बीच का झगड़ा तय करता है, दलाल।

दरवाज़ा-(फ़ा०पुं०) कपाट, किवाड़, द्वार

दरवेश–(फ़ा०पुं०) मुसलमानी फ़कीर या साधु।

दराज–(फ़ा०वि०) दीर्घ, लंबा, बड़ा, (क्रि०वि०) अधिक, बहुत दरज, दरार, संदूकनामा घर जो मेज को छत के नीचे लगा होता है।

दरिंदा–(फ़ा०पुं०) मांस खाने वाला जंगली पशु।

दरिया–(फ़ा०पुं०) नदी, समुद्र; **दरियाई**-(फ़ा० वि०) नदी संबंधी, नदी में रहने वाला, नदी के पास का; समुद्र संबंधी (पुं०) एक प्रकार की साटन।

दरियादिल–(फ़ा०वि०) उदार, दानी **दारियादिली**–(फ़ा०स्त्री०) उदारता।

दरियाफ्त–(फ़ा० वि०) जिसका पता लगा हो।

दरियाबरार–(फ़ा०पुं०) वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने पर निकल आती है और जिसमें खेती होती है; **दरियाबुर्द**–(फ़ा० पुं०) वह भूमि जिसको नदी की धारा बहा ले जाती है।

दरीखाना–(फ़ा०पुं०) बहुत से द्वारों का मकान, बारहदरी।

दरीचा, दरीची–(फ़ा०पुं०) खिड़की, झरोखा, छोटा द्वार, खिड़की के पास बैठने का स्थान।

दरेग–(अ०पुं०) कमी, त्रुटि।

दरोग–(अ० पुं०) असत्य, मिथ्या-वार्ता, झूठ; **दरोगहलफी**–(अ० स्त्री०) सत्य बोलने का शपथ खाकर भी झूठ बोलना, झूठी साक्षी देने का अपराध।

दर्जा–(अ०पुं०) श्रेणी, कोटि, वर्ग, चढाई के क्रम में ऊँचा नीचा स्थान, पद, विभाग, खण्ड, (क्रि०वि०) गुणित, गुना।

दर्जिन–(फ़ा०स्त्री०) दर्जी जाति की स्त्री

दर्जी–(फ़ा० पुं०) कपड़ा सीने का व्यवसाय करने वाला मनुष्य।

दर्द–(फ़ा० पुं०) व्यथा, पीड़ा, दुःख, सहानुभूति, करुणा, दया, हानि का दुःख; **दर्द खाना**–दया करना;

दर्दमन्द–(फ़ा० वि०) जिसको पीड़ा हो, सहानुभुति दिखलाने वाला, दयावान्।

दर्रा–(फ़ा० पुं०) पहाड़ी मार्ग, घाटी;

दर्राज–(फ़ा० स्त्री०) लकड़ी का बना हुआ काठ सीधा करने का एक यन्त्र।

दलाल–(अ० पुं०) सौदा मोल लेने या बेंचने में सहायता देने वाला मनुष्य, बिचवई- कुटना, मध्यस्थ, जाटों की एक जाति; **दलाली**–(फ़ा० स्त्री०) दलाल का काम, दलाल को मिलने वाला द्रव्य।

दलील–(अ० स्त्री०) युक्ति, तर्क, वाद विवाद, प्रयोजनीय कागज़ पत्र।

दल्लाला–(अ० स्त्री०) कुटनी।

दवा–(फा० स्त्री०) रोग या व्यथा दूर करने की औषधि, उपचार, चिकित्सा, उपाय दूर करने की युक्ति

दवाखाना–(फ़ा० पुं०) औषधालय।

दवामी–(अ०वि०) सर्वदा रहनेवाली

दवात–(अ०स्त्री०) मसिपात्र; **दवामी**–(अ०लि०) स्थायी; **दवामीबन्दोबस्त**–(फ़ा०पुं०) भूमि का वह प्रबन्ध जिसमें कर सर्वदा के लिये स्थिर कर दिया जाता है।

दस्तदाजी–(फ़ा० स्त्री०) हस्तक्षेप, किसी काम में छेड़ छाड़।

दस्त–(फ़ा० पुं०) शौच, हाथ।

दस्तक–(फा० स्त्री०) खटखटाने की क्रिया, दरवाजे की कुन्डी खटखटाने की क्रिया, वह आज्ञापत्र जो किसी से देन प्राप्त करने के लिये निकाला जाता है, या कर।

दस्तकार–(फ़ा०पुं०) हाथों से कारी-गरी का काम करने वाला; **दस्तकारी** (फ़ा० स्त्री०) शिल्प, हाथ की कारीगरी; **दस्तखत** (फ़ा० पुं०) हस्ताक्षर। **दस्तखती**–(फ़ा०वि०) जिसपर हस्ताक्षर हो; **दस्तगीर**–(फ़ा०पुं०) सहायक, मददगार;

दस्तपनाह–(फ़ा०पुं०) आँच पकड़ने का चिमटा।

दस्तबरदार–(फ़ा०वि०) किसी वस्तु पर से अपना अधिकार हटाने वाला; **दस्तबरदारी**–(फ़ा० स्त्री०) त्याग, त्यागपत्र।

दस्तयाब–(फ़ा०वि०) हस्तगत, प्राप्त।

दस्तरखान–(फ़ा० पुं०) चौकी पर बिछाई हुई वह चादर जिसपर थाली रखकर मुसलमान लोग भोजन करते हैं।

दस्ता–(फ़ा०पुं०) हाथ में रखने की वस्तु, डंडा, सोटा,, मुठिया, किसी वस्तु का पूला या गड्डी जो हाथ में अमा सके, एक ताव कागज, फूलों का गुच्छा सिपाहियों का छोटा दल, चपरास, एक प्रकार का बगुला।

दस्ताना–(फ़ा०पुं०) हाथ में पहिरने का मोजा, एक प्रकार की सीधी तलवार।

दस्तावर–(फ़ा०वि०) विरेचक।

दस्तावेज–(फ़ा० स्त्री०) व्यवहार संबंधी लेख, वह कागज जिसको लिख कर कोई व्यवित कोई प्रतिज्ञा करता हो अथवा लेन देन का मामला स्थिर करता हो; **दस्तावेजी**–(फ़ा०वि०) प्रतीज्ञा, संबन्धी।

दस्ती–(फ़ा०वि०) हाथ का (स्त्री०) छोटी मुठिया, हाथ में ले जाने की छोटी मसाल, मल्लयुद्धकी एकयुक्ति। वह उपहार जो विजया दशमी के दिन राजा लोग अपने सरदारों को बांटते हैं।

दस्तूर–(फ़ा० पुं०) रीति, नियम, विधि, पारसियों का पुरोहित, जहाज़ की छोटी पाल; **दस्तूरी**–(फ़ा०स्त्री०) वह द्रव्य जो नौकर मालिक का सौदा लेने में दुकानदार से पाता है।

दस्पना–(फ़ा०पुं०) चिमटा।

दह–(फ़ा०वि०) दस।

दहपट–(फ़ा०वि०) दलित, ध्वस्त, कुचला हुआ, नष्ट, चौपट।

दहबासी–(फ़ा०पुं०) दस सिपाहियों का सरदार।

दहला–(फ़ा०पुं०) ताश या गंजीफ़े का वह पत्ता जिसमें दस बूटियां हों (पुं०) आलवाल, थाला।

दहलीज–(फ़ा०स्त्री०) चौखट की वह लकड़ी जो इसके नीचे रहती है, देहली।

दहशत–(फ़ा०स्त्री०) भय, डर।

दहसनी–(फ़ा०स्त्री०) चलते सालका खाता।

दहा–(फ़ा०पुं०) मुहर्रम का महीना, ताजिया, मोहर्रम की पहली तारीख से दसवीं तारीख।

दहाई–(फ़ा०स्त्री०) दश का मान, अंकों के स्थानों की गणना करने में दूसरा स्थान जिससे दश गुणित का बोध होता है यथा २३ सख्या में २ की संख्या २० का बोध करती है।

दहाना–(फ़ा०पुं०) चौड़ा मुख, द्वार, मशक का मुंह, नदी का मुहाना, मोरी, नाली, घोड़े की लगाम का अगला चौड़ा भाग।

दहार–(अ०पुं०) प्रान्त, प्रदेश, समीप-वर्ती स्थान।

दहिय–(फ़ा०पुं०) दशमांश, दहिना भाग।

दहेज–(अ०पुं०) वह धन आदि जो विवाह के समय कन्यापक्ष की ओर से वर पक्षको दिया जाता है, यौतुक,

दाऊद खानी–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का चावल, बढ़िया सफ़ेद गेहूं;

दाऊदिया–(अ०पुं०) एक प्रकार की गेहूँ, एक प्रकार की आतिशबाजी।

दां–(फ़ा०पुं०) ज्ञाता, जानने वाला।

दांग–(फ़ा०स्त्री०) दिशा, छठां भाग, छ रत्ती की तौल।

दांज–(हिं०स्त्री०) समता, तुलना, बराबरी।

दाखिल–(फ़ा०वि०) प्रविष्ट, घुसा हुआ, मिला हुआ, पहुँचा हुआ, पैठा हुआ;

दाखिल खारिज–(फ़ा०पुं०) सरकारी कागज़ पर से किसी सम्पत्ति के अधिकारी का नाम काट कर उसके उत्तराधिकारी अथवा किसी दूसरे अधिकारी का नाम लिखा जाना;

दाखिल दफ्तर–(फ़ा०वि०) बिना विचार किये हुए कागज़ात का दफ्तर में डाल रखना; **दाखिला**–(फ़ा०पुं०) किसी वस्तु के दाखिल या जमा करने का कागज़ प्रवेश, वह कार्य जो किसी संस्था, कार्यालय आदि में सम्मिलित किया गया हो।

दाग–(फ़ा० पुं०) धब्बा, चित्ती, चिह्न, अंक, कलंक, दोष, जलने का चिह्न, सड़ने का चिह्न जो फल आदि पर पड़ जाता है; **सफेद दाग**–श्वेत कुष्ट; **दागदार**–(फ़ा०वि०)

जिस पर चिह्न लगा हो, धब्बेदार।
दागबेल–(फ़ा०स्त्री०) वह चिह्न जो नीव डालने या सड़क बनाने के लिये भूमि पर कुदाल से बनाया जाता है।
दागी–(फ़ा०वि०) जिस पर चिह्न लगा हो, जिस पर सड़ने का चिह्न हो, दोषयुक्त, कलंकित, लांछित, जिसको दण्ड मिल चुका हो, दण्डित।
दागोब–(तामिल० पुं०) वह स्तम्भ या स्मृतिचिह्न जो मृत व्यक्ति की भस्म रखकर इसके ऊपर बनाये जाते हैं।
दाद–(फ़ा०स्त्री०) न्याय इनसाफ़; दाद चाहना–किसी से कीअत्याचार किये जाने पर न्याय, प्रार्थना करना।
दादनी–(फ़ा०स्त्री०) चुकाई,वह धन जो किसी काम के। लिये पहले दिया जावे, अंगता द्रव्य
दादि–(फ़ा०स्त्री०) न्याय।
दादी–(फ़ा०पुं०) न्याय की प्रार्थी।
दाना–(फ़ा०पुं०) अन्न का कण, अनाज, चबैना, छोटा बीजजो गुच्छे में लगा हो, छोटा फल य बीज, कोई गोल वस्तु जो डोरीया तांगे से पिरोई हुई हो, माला की गुरिया, छोटा उभड़ा हुआ भाग, शरीर में उभड़ा हुआ छोटा गुल्म, कण, रवा, कोई छोटी गोल वस्तु, संख्या, (वि०) बुद्धिमान, दाने दाने को तरसना–अन्न का अभाव होना, पेट भर भोजन न मिलना; दाने दाने को मुहताज–अति दरिद्र, कंगला;
दानाई–(फ़ा०स्त्री०) बुद्धिमत्ता।
दानाबन्दी–(फ़ा०स्त्री०) खड़ी कृषि के उपज का अटकल।
दानिस्त–(फ़ा०स्त्री०) बुद्धि, समझ।
दानेदार–(फ़ा०वि०) जिसमें दाने या रवे हों।
दाम–(फ़ा०पुं०) जाल, पाश, फन्दा।
दामन–(फ़ा०पुं०) अंगे कुरते आदि का नीचे का भाग, पल्ला, पहाड़ के नीचे की भूमि; चोली दामन का साथ–घनिष्ट प्रेम; दामनगीर–(फ़ा०वि०) पल्ला पकड़ने वाला, दावा करने वाला।
दामनी–(फ़ा०स्त्री०) घोड़े की पीठ पर ओढ़ाने का चौड़ा वस्त्र।
दामाद–(फ़ा०पुं०) कन्या का पति, जामाता।
दायलहब्स–(अं०पुं०) आजन्म कारावास।
दायर–(फ़ा० वि०) चलता हुआ, फिरता हुआ; दायर करना–अभियोग को चलाने के लिये न्यायालय में उपस्थित करना।
दायरा–(अं०पुं०) मण्डल, गोल घेरा, वृत्त, कक्षा, खजड़ी डफ़ली।
[दा]यागरी–(फ़ा०स्त्री०) दाई का काम

दारमदार–(फ़ा०पुं०) आश्रय, अवलंब ठहराव।
दारू–(फ़ा०स्त्री०) औषधि, दवा, मद्य, बारूद; दारूकार–(फ़ा०पुं०) शराब बनाने वाला, कलवार।
दारोगा–(फ़ा०पुं०) प्रबन्ध करने वाला, अधिकारी, पुलीस का वह अधिकारी जो किसी थाने का अधिकारी हो, थानेदार; दारोगाई–(फ़ा० स्त्री०) दारोगा का पद या काम।
दालान–(फ़ा०पुं०) घर का वह भाग जो तीन ओर से खुला हो, ओसारा।
दावत–(अं०स्त्री०) ज्योनार, भोज, निमन्त्रण, भोजन करने का बुलावा।
दावा–(अं०पुं०) किसी वस्तु पर अपने अधिकार को प्रगट करने का काम, धन वा सम्पत्ति के लिये न्यायालय में चलाया हुआ अभियोग, स्वत्व, अधिकार, दृढ़ता पूर्वक कथन, दृढ़ता; दावागीर–(अं०पुं०) वह जो अपना स्वत्व स्थापित करने के लिये अभियोग चलाता है।
दावात–(अं०स्त्री०) मसिपात्र।
दावादार–(अं०पुं०) दावा करने वाला
दाश्त–(फ़ा०स्त्री०) पालनपोषण।
दास्तान–(फ़ा०स्त्री०) वर्णन वृत्तान्त, कथा।
दाहा–(फ़ा०पुं०) मुहर्रम के दश दिन, ताजिया।
दिक–(अ०वि०) विरक्त, अस्वस्थ, (पुं०) क्षय रोग।
दिक्कत–(अ०स्त्री०) कष्ट, कठिनता, तंगी।
दिमाग–(अ०पुं०) मस्तिष्क, भेजा, अभिमान, गर्व, बुद्धि; दिमाग खाना या चाटना–व्यर्थ की बकवाद करना; दिमाग खाली करना–अधिक मानसिक परिश्रम करना; दिमाग चढ़ना या आसमान पर होना–बड़ा अभिमान करना; दिमाग लड़ाना–चित्त लगाना, सोच विचार करना।
दिमागचट–(हिं०वि०) बहुत बकबक करके दूसरे को व्याकुल करने वाला;
दिमागदार–(फ़ा०वि०) तीव्र मानसिक शक्तिवाला, अभिमानी, घमण्ड करनेवाला; दिमागरौशन–(फ़ा० पुं०) नस्य, सुंघनी; दिमागी–(फ़ा०वि०) देखो दिमानदार।
दियारा–(फ़ा०पुं०) वह भूमि जो नदी के हट जाने पर निकल आती है, कछार, प्रान्त, प्रदेश।
दिरम–(अं०पुं०) मिस्र देश का एक चांदी की मुद्रा, साढ़े तीन माशे की तौल।
दिरमान–(फ़ा०पुं०) चिकित्सा।
दिरमानी–(फ़ा०पुं०) चिकित्सक, हकीम, वैद्य।
दिरहम–(फ़ा०पुं०) दिरम नाम की मुद्रा।
दिल–(फ़ा०पुं०) मन, चित्त, हृदय,

कलेजा, प्रवृत्ति, इच्छा, साहस, दम, जी; दिल कड़ा करना–साहस करना; दिल का कंवल खिलना–अति प्रसन्न होना; दिल का गवाही देना–मन में किसी बात का निश्चय करना; दिल का बादशाह–अति उदार; दिल जमना–चित्त स्थिर होना; दिल ठिकाने होना–चित्त में शान्ति होना; दिल देना–प्रेमासक्त होना; दिल बुझना–उत्साह हीन होना; दिल से–मन लगाकर; इच्छा से; दिल से दूर करना–ध्यान से हटाना, भूल जाना; दिल ही दिल में–गुप्त रूप से;
दिलगीर–(फ़ा० वि०) शोकाकुल, उदास, दुःखी; दिलगीरी–(फ़ा०पुं०) उदासी, दुःख; दिलगुरदा–(फ़ा० पुं०) साहस; दिलचला–(फ़ा० वि०) साहसी, शूरवीर, दाता, दानी, पागल।
दिलचस्प–(फ़ा०वि०) चित्ताकर्षक, मनोहर; दिलचस्पी–(फ़ा०स्त्री०) मनोरंजन।
दिलजमई–(अ०स्त्री०) सन्तोष।
दिलदरिया–(फ़ा०पुं०) अति उदार, अति दानी।
दिलदार–(फ़ा०वि०) उदार, दाता, रसिक, प्रेमी; दिलदारी–(फ़ा०स्त्री०) उदारता, रसिकता।
दिलसंपद–(फ़ा०वि०) सुन्दर, मनोहर, (पुं०) फुलवर की तरह का एक प्रकार का कपड़ा।
दिलबर–(फ़ा०वि०) प्रिय, प्यारा; दिलबहार–(फ़ा०वि०) एक प्रकार का सुन्दर रंग; दिलरुबा–(फ़ा०पुं०) जिससे प्रेम किया जावे, प्यारा।
दिलवाला–(फ़ा०वि०) उदार, वीर, साहसी।
दिलावर–(फ़ा० वि०) शूर वीर, उत्साही, साहसी।
दिलेर–(फ़ा०वि०) शूरवीर, साहसी;
दिलेरा–(फ़ा०स्त्री०) वीरता, साहस
दिल्लगी–(फ़ा० स्त्री०) हंसने हँसाने की बात, चित्त विनोद, हँसी ठट्ठा;
दिल्लगीबाज–(फ़ा०पुं०) ठिठोलिय;
दिल्लगीबाजी–(फ़ा०स्त्री०) ठिठोलि।
दिल्लेदार–(फ़ा०वि०) जिसमें दिल्ला (दिलाहा) लगा हो।
दिसंबर–(अं०पुं०) अंगरेजी वर्ष का अन्तिम मास, जिसमें इकतीस दिन होते हैं।
दिहंदा–(फ़ा०वि०)दाता, देने वाला।
दीदा–(फ़ा०स्त्री०) दृष्टि दर्शन, नेत्र, आँख, अनुचित ढाढस; दीदा लगना–ध्यान लगना; दीदेका पानी ढलजाना–निर्लज्ज होना; दीदे निकालना–क्रोध पूर्ण दृष्टि से देखना, आंख फाड़फाड़ कर देखना।
दीदार–(फ़ा०पुं०)साक्षात्कार, दर्शन।
दीन–(अ०पुं०) धर्म में विश्वास, मत, दीनदार–(फ़ा०वि०) जो अपने धर्म

पर विश्वास रखता हो, धार्मिक;
दीनदारी–(फ़ा०स्त्री०) धर्माचरण; दीन दुनियां; दीनदुनी–(अं०स्त्री०) लोक परलोक।
दीमक–(फ़ा०स्त्री०) चींटी की तरह का सफ़ेद कीड़ा जो लकड़ी आदि को काटकर खाता है, वाल्मीक।
दीवान–(अ०पुं०) सम्राट् के बैठने का स्थान राजसभा, मन्त्री, राज्य का प्रबंध करनेवाला, गज़लों के संग्रह की पुस्तक; दीवान आम–(अ०पुं०) आम दरबार जिसमें सब लोग राजा से मिल सकते हैं, आम दरबार लगने का स्थान; दीवान खाना–(फ़ा०पुं०) बड़े आदमियों के बैठने तथा सब लोगों से मिलने का घर का बाहरी कमरा; दीवान खालसा–(अ०पुं०) वह कर्मचारी जिसके पास राजा की मुहर छाप रहती है; दीवान खास–(अं०पुं०) वह दरबार जिसमें सम्राट् अपने मुख्य मन्त्रियों और सरदारों के साथ बैठते हैं, खास दरबार लगाने का स्थान।
दीवाना–(फ़ा०वि०) विक्षिप्त, पागल,
दीवानापन–(फ़ा०पुं०) पागलपन।
दीवानी–(फ़ा०स्त्री०)दीवान का पद, सम्पत्ति अदि संबंधी स्वत्व का निर्णय करने का न्यायालय।
दीवार–(फ़ा०स्त्री०) प्राचीर, भीत किसी वस्तु का ऊपर उठा हुआ घेरा; दीवारगीर–(फ़ा०स्त्री०)दीपक आदि रखने का आधार जो भीत में लगाया होता है; दीवारगी–(फ़ा०स्त्री०) छपा हुआ कपड़ा जो भीत में लगाया जाता है, पिछवई।
दुंबा–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार का पहाड़ी भेड़ जिसकी दुम गोल और भारी होती है, इसका ऊन बहुत अच्छा होता है। दुम्बाल–(फ़ा० पुं०) चौड़ी पोंछ, नाव की पतवार जहाज का पिछला भाग।
दुआ–(फ़ा०स्त्री०)विनती या प्रार्थना, याचना आशीर्वाद, आसीस; दुआ मांगना–प्रार्थना करना, विनती करना; दुआलगना–आशीर्वाद का सफल होना।
दुआब, दुआबा–(फ़ा०पुं०) दो नदियों के बीच का प्रदेश।
दुआल–(फ़ा०स्त्री०) चमड़ा, रिकाब का तस्मा।
दुआली–(फ़ा०स्त्री०) खराद घुमाने का तस्मा।
दुकान–(फ़ा०स्त्री०) वह स्थान जहां बेंचने के लिये तरह तरह की वस्तु रक्खी हों, हाट; दुकान बढाना–दुकान बन्द करना; दुकान लगाना–बिक्री के निमित्त दुकान की सामग्री यथास्थान रखना, अनेक वस्तुओं को ईंधर उधर फैलाकर रखना; दुकानदार–

(फ़ा०पुं०) दुकान का मालिक जो दुकान पर बैठकर सौदा बेंचता हो, वह मनुष्य जो धन कमाने के लिये कोई ढंग रचता हो; **दुकानदारी**–दुकान पर माल बेंचने का काम, धन कमाने के निमित्त किसी न किसी ढंग रचने की विधि ।

दुचंद–(फ़ा०वि०) द्विगुण, दूना, दुगना ।

दुतर्फा–(फ़ा०वि०) दोनों पक्ष का, दोनों ओर का ।

दुनियां–(अ०स्त्री०) संसार, जगत, लोग, जनता, जगत् का प्रपंच या जंजाल, **दीन दुनियां**, लोक परलोक; **दुनियां के परदे पर**–सम्पूर्ण संसार का अनुभव होना; **दुनिया भर का**–अत्यधिक; **दुनियाई**–सांसारिक; **दुनियादार**–(फ़ा०पुं०) वह मनुष्य जो संसारी प्रपंच मे फंसा हो; गृहस्थ; (वि०) व्यवहार कुशल, जो अनेक ढंग करके अपना अर्थ साध लेता है; **दुनियादारी**–(फ़ा०त्री०) गृहस्थी का जंजाल, दुनियाँ का काम, अपना प्रयोजन सिद्ध करने का ढंग, स्वार्थ साधन, देखावटी कार्यवाई; **दुनियां साज**–(फ़ा०वि०) ढंग रचकर अपना प्रयोजन सिद्ध करने वाला, स्वार्थसाधक, **दुनिया साजी**–(फ़ा० स्त्री०) स्वार्थ साधन, अपना प्रयोजन सिद्ध करने का ढंग ।

दुमंजिला–(फ़ा०वि०) दो खण्ड का ।

दुम–(फ़ा०स्त्री०) पूंछ, वह वस्तु जो पूछ की तरह पीछे लगी या बंधी हो, वह मनुष्य जो किसी के पीछे लगा रहता है, किसी काम का शेष भाग; **दुम दबाकर भागना**–डर कर भाग जाना; **दुम हिलाना**–प्रसन्नता प्रगट करना । **दुमची**–(फ़ा०स्त्री०) घोड़े के साज का वह चमड़े का तसमा जो उसकी दुम के नीचे दबा रहता है, पुट्ठे के बीच की हड्डी; **दुमदार**–(फ़ा०वि०) जिसको पूंछ हो जिसके पीछे पोंछ की तरह की कोई वस्तु लटकी हो ।

दुर–(फ़ा०पुं०) मुक्ता, मोती, नाक में पहिरने का मोती का लटकन, छोटी बाली ।

दुरबचा–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का मोती ।

दुरुखा–(फ़ा०वि०) जिसके दोनो ओर मुख या कोई चिह्न हो, जिसके दोनों ओर दो रंग हों

दुरुस्त–(फ़ा०वि०) जोगड़ा या टूटा फूटा न हो, बिना दोष का, जो अच्छी अवस्था में हो, उचित, यथार्थ, वास्तविक; **दुरुस्ती**–(फ़ा०स्त्री०) संशोधन, सुधार ।

दुर्रा–(फ़ा०पुं०) चाबुक, कोड़ा ।

दुर्रानी–(फा०पुं०) अफगानों की एक जाति ।

दुलदुल–(अ०पुं०) वह खच्चर जिसको मिस्र के हाकिम ने मोहम्मद साहब को उपहार में दिया था, साधारण लोगों मे यह घोड़ा समझा जाता है, मुसलमान लोग मोहर्रम को आठवीं को अब्बास के नाम तथा मुहर्रम की नवीं को हुसैन के नामका विनासवार का घोड़ा धूमधाम से निकालते हैं ।

दुवाल–(फ़ा०स्त्री०) चमड़े का तस्मा रिकाब में लगाने का तस्मा; **दुवाल-बन्द**–(फा०पुं०) चमड़े की कमर की पेटी, परतला लगाये हुए सिपाही ।

दुशवार–(अ० वि०) दुस्तर, कठिन दुःसह, जो सहन करने योग्य न हो

दुशवारी–(फ़ा०स्त्री०) कठिनता, कठिनाई ।

दुश्मन–(फ़ा०पुं०) शत्रु, बैरी; **दुश्मनी**–(फ़ा०स्त्री०) शत्रुता, बैर ।

दूदकश–(फ़ा०स्त्री०) धुवां निकालने की नली, धुवांकश ।

दूबदू–(फ़ा०वि०क्रि०) आमने सामने, प्रत्यक्ष में ।

दूरंदेश–(फ़ा०वि०) अग्रशोची, दूरदर्शी आगा पीछा सोचने वाला; **दूरंदेशी**–(फ़ा०स्त्री०) दूरदर्शिता ।

दूरबीन–(फ़ा०स्त्री०) वह यन्त्र जिससे दूरकी वस्तु बड़ी निकट तथा स्पष्ट देख पड़ती है ।

देगच (फ़ा०पुं०) खाना पकाने का एक प्रकार का पात्र जिसकी पेंदीं और मुंह चौड़ा होता है ।

देगचा–(फ़ा०पुं०) छोटा देग ।

देगची–(फ़ा०स्त्री०) छोटा देगचा ।

देर–(फ़ा०क्रि०) विलम्ब, अतिकाल, आवश्यक से अधिक काल, समय ।

देवान–(फ़ा०पुं०) राजसभा, कचहरी, दरबार मन्त्री, प्रबंधकर्ता ।

देहकान–(फ़ा०पुं०) किसान, देहाती, गंवार; **देहकाती**–(फ़ा०वि०) ग्रामीण गँवार ।

दो आतशा–(फ़ा०वि०) भभके से दोबार खींचा या उतारा हुआ ।

दोआब, दोआबा–(फ़ा०पुं०) दो नदियों के बीच का प्रदेश ।

दोगला–(फ़ा०पुं०) वह जीव जिसके माता पिता भिन्न जाति के हों, वह मनुष्य जो अपनी माता के असली पति से न उत्पन्न हुआ हो, जारज, किसानों की पानी उलचने की दौरी ।

दोचंद–(फ़ा०वि०) दुगना ।

दोजख–(फ़ा०पुं०) मुसलमानों का नरक; **दोजखी**–(फ़ा०वि०) दोजख या नरक संबंधी, बड़ा पातकी ।

दोतरफा–(फ़ा०वि०) दोनो ओर का सम्बन्ध रखने वाला । (क्रि०वि०) दोनों ओर ।

दोप्याजा–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का पका हुआ मांस ।

दोफसली–दो फस्लों से संबंध रखने वाला, दोनों ओर काम देने वाला ।

दोबारा–(फ़ा०क्रि०वि०) दूसरी बार, वह वस्तु जो एक बार तैयार करने के बाद दूसरी बार तैयार की गई हो ।

दोबाला–(फ़ा०व०) दूना, द्विगुणित, दूगना ।

दोमंजिला–(फ़ा०वि०) दो खण्ड का (मकान), जिसमें दो खण्ड हों ।

दोयम–(फ़ा०वि०) क्रम से दूसरे स्थान पर का, दूसरा ।

दोरुखा–(फ़ा०वि०) जिसके दोनों ओर समान रंग या बेल बूटे हों, जिसके दोनो ओर एक रंग तथा दूसरी ओर दूसरा रंग हो ।

दोरेजी–(फ़ा०स्त्री०) नील की दूसरी उपज जो उसकी जड़ में से दुबारा उत्पन्न हो जाती है ।

दोशमाल–(फ़ा०पुं०) कसाई का हाथ पोछने का वस्त्र ।

दोशाखा–(फ़ा०पुं०) दो बत्तियों का दीपक, भाँग छानने की लकड़ी ।

दोस्त–(फ़ा०पुं०) मित्र, स्नेही, बन्धु, यार; **दोस्तदार**–(फ़ा०पुं०) बान्धव, सम्बन्धी; (फ़ा०पुं०) मित्रता, दोस्ती, मित्रताका व्यवहार (वि०) मित्रता का, दोस्ती का; **दोस्ती**–(फ़ा०स्त्री०) मित्रता, स्नेह, स्त्री पुरुष का अनुचित सम्बन्ध ।

दोहरफ–(फ़ा०पुं०) धिक्कार ।

दौर–(अ०पुं०) भ्रमण, चक्कर, फेरा, कालचक्र, समय का हेरफेर, अभ्युदय का समय, बढ़ती का काल, बार, प्रभाव, प्रताप, बारी; **दौर दौरा**–प्रधानता ।

दौरा–(अ०पुं०) भ्रमण, चक्कर, चारो ओर घूमने का काम, फेरा, देखरेख के लिये भ्रमण, किसी रोग का बारंबार होना, सामयिक आगमन, फेरा, आवर्तन; **दौरा सुपुर्द करना**, न्याय के लिये सेशन जज के न्यायलय में भेजना ।

दौलत–(अ०पुं०) धन, सम्पत्ति,

दौलतखाना–(फ़ा०पुं०) निवासस्थान घर, **दौलतमन्द**–(फ़ा०वि०) धनी, सम्पन्न; **दौलतमन्दी**–(फा०स्त्री०) सम्पन्नता ।

ध

धोखेबाज–(फ़ा०वि०) धोखा देनेवाला; छली; कपटी, **दोखेबाजी**–धूर्तता, कपट छल ।

न

नकद–(अ०पुं०) वह धन जो सिक्कों के रूप में हो, तैयार रुपया पैसा, (वि०) जो तैयार हो, जो तुरत काम में लाया जा सके, (क्रि०वि०) तुरत दिये हुए रुपये के बदले में ।

नक़दी–(अ०स्त्री०) धन, रोकड़ रुपया पैसा, वह भूमि जिसकी मालगुजारी नगद रुपयों में ली जाति है ।

नकब–(अ०स्त्री०) वह छेद जिसको चोर किसी भीत में प्रवेश करने के लिये करता है, सेंध; **नक़बजन**–(अ०पुं०) चोरी करने के लिये दीवार में सेंध लगाने वाला; **नक़बजनी**–(अ०स्त्री०) सेंध लगाने का काम;

नकल–(अ०स्त्री०) दूसरे के ढग पर उसी तरह से बनाई हुई वस्तु, प्रतिरूप, अनुकृति, लेख आदि की प्रतिलिपि, स्वांग, हाव भाव का अथवा बात चीत का भली भाँति अनुकरण, हास्यजनक आकृति, चुटकुला, हास्य रस पूर्ण छोटी कहानी; **नक़ल नवीस** (फ़ा०पुं०) किसी कार्य भवन या न्यायालय का वह लेखक जो दूसरे लेखों की प्रतिलिपि बनाता हो; **नक़ल नवीसी**–(फ़ा०स्त्री०) नकल नवीस का काम या पद, एक प्रकार की चिड़िया; **नकल परवाना**–(फ़ा०पुं०) स्त्री का भाई, साला; **नकल बही**–(फा०स्त्री०) वह बही जिसमें भेजी जाने वाली चिट्ठियों की नकल रक्खी जाती है ।

नकली–(अ०वि०) कृत्रिम, बनावटी, जो असली न हो, खोटा, जाली, झूठा,

नकश–(अं०पुं०) एक प्रकार का ताश से खेलने का जुआ; **नकशमार**–(अ०पुं०) ताश का नकश का जुआ ।

नकशा नवीस–(फा०पुं०) देखो नक़शा नवीस ।

नक़ाब–(अं०पुं०) मूंह छिपानेका रंगा हुआ महीन कपड़ा जो सिर पर से लेकर गले तक डाल दिया जाता हैं, इसका व्यवहार विशेष कर अरब देश की स्त्रियां करती हैं, साड़ी या चादर का वह भाग जिससे स्त्रियाँ अपना मुख ढांपती हैं, घूंघट; **नकाबपोश** वह मनुष्य जो चेहरे पर नकाब डाले हो ।

नकारा–(फा०पुं०) देखो नक्कारा ।

नकाशीदार–(अ०वि०) जिस पर बेल बूटे बने हों ।

नकीब–(अं०पुं०) बन्दीजन, चारण, भाट, कड़खा गाने वाला, वह जो राजा या नवाब के आगे आगे उनके तथा पूर्वजों के यश का गान करता हुआ चलता है ।

नकुल–(अ०पुं०) वह जलपान जो दोपहर के समय पुरवट आदि चलाने वालों को दिया जाता है ।

नक्कारखाना–(फ़ा०पुं०) वह स्थान जहाँ नगाड़ा बजाया जाता है; **नक्कार खाने में तूती की आवाज**–बड़ों के सामने छोटों की उक्ति; **नक्कारची**–(फा०पुं०) नगाड़ा बजाने वाला; **नक्कारा**–(फ़ा०पुं०) नगाड़ा, दुन्दुभी ।

नक्काल–(अ०पुं०) अनुकरण करने वाला, भांड, बहुरूपिया; **नक्काली**–(अ०स्त्री०) नकल करने की क्रिया या ढंग, भांड का काम या विद्या,

बहुरूपिये का काम।
नक्काश–(अं०पुं०) नक्काशी करने वाला कारीगर, वह जो धातु, पत्थर आदि को खोदकर बेल बूटे बनाता हो; **नक्काशी**–(अं० स्त्री०) धातु, पत्थर आदि पर खोद कर बेल बूटे बनाने की क्रिया, इस प्रकार बनाये हुए बेल बूटे आदि; **नक्काशीदार**–(फ़ा०पुं०)जिस पर खोदकर बेलबूटे बनाये गये हों।
नक्श–(अं०वि०)जो अंकित या चित्रित किया गया हो, खींचा हुआ, बनाया हुआ; (पुं०) चित्र, खोद कर या लेखनी से बनाया हुआ बेल बूटे का काम, छाप, मोहर, जादू टोना, एक प्रकार का गाना, एक प्रकार का यन्त्र जो भोजपत्र पर लिखकर गले या बाँह में रोगनिवृत्ति के लिये पहिराया जाता है, यत्र एक प्रकार का जुआ; **मन में नक्श करना**–मन में स्थिर करना, **नक्श बैठना**–अधिकार जमाना; **नक्शनिगार**–(फ़ा० पुं०)नक्काशी करके बनाये हुए बूटे आदि।
नक्शा–(अ०पुं०) प्रतिमूर्ति, चित्र, तसवीर आकृति, बनावट, ढाँचा, चाल ढाल, किसी वस्तु का रेखाओं से बना हुआ स्वरूप, ठप्पा, स्थिति, अवस्था, दशा किसी धरातल पर बना हुआ चित्र विशेष जिसमें पृथ्वी या खगोल का कोई भाग चित्रित रहता है–इसमें यथा स्थान देश प्रदेश पर्वत नदी झील नगर आदि यथास्थान दिखलाये जाते हैं; **नक्शानवीस**–(फ़ा०पुं०) किसी प्रकार का नक्शा बनाने वाला; **नक्शा निवीसी**–(फ़ा०स्त्री०)नक्शा बनाने का काम;
नक्शी–(फ़ा०वि०) जिस पर नक्काशी की हुई हो, जिस पर बेल बूटे बने हों;
नखरा–(फ़ा०वि०)साधारण चंचलता या चुलबुलापन, बनावटी चेष्टा, चोचला, हाव, भाव, जवानी का उमंग; **नखरातिल्ला**–चोचला।
नखरीला–(फ़ा०वि०)चोचला करने वाला।
नखरेबाज–(फ़ा०वि०) चोचला करने वाला, वह जो बहुत चोचला करता हो; **नखरेबाजी**– (फ़ा०स्त्री०)नखरा करने की क्रिया या भाव।
नग(फ़ा०पुं०) अँगूठी अथवा अन्य आभूषणों में जड़ने का रँगीन शीशे का टुकड़ा या रत्न, नगीना, संख्या।
नगारा–(फ़ा०पुं०)डुगडुगी की तरह का एक बहुत बड़ा बाजा, नगाड़ा, धौंसा।
नगीना–(फ़ा०पुं०) रत्न, मणि, एक प्रकार का देशी चारखाने का कपड़ा, **नगीनासाज**–(फ़ा०पुं०)नगीना बनाने वाला, नगीना जड़ने वाला।
नजदीक–(फ़ा०वि०) समीप, निकट, पास; **नजदीकी**–(फ़ा०वि०) निकट का, समीप का (पुं०) निकट का सम्बन्ध (स्त्री०) समीप होने का भाव।
नजम–(अ०स्त्री०) कविता, पद्य।
नजर–(अ०स्त्री०)उपहार, भेंट, अधीनता सूचित करने की एक प्रथा जिसमें प्रजावर्ग राजाओं को दरबार या उत्सव के अवसर पर हथेली पर रुपया रखकर सामने लाते है, दृष्टि, कृपादृष्टि, देखभाल, परख, पहिचान, ध्यान, दृष्टि का वह कल्पित प्रभाव जिसके विषय में लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि किसी सुन्दर पदार्थ या मनुष्य पर पड़ने से उसको नष्ट कर देता है; **नजर आना**–दृष्टिगोचर होना, देख पड़ना; **नजर पर चढ़ना**–अच्छा लगना, **नजर पड़ना**–देख पड़ना; **नजर बांधना**–बुरी दृष्टि के प्रभाव को हटाने के लिये जादू मंत्र आदि का प्रयोग करना; **नजर उतारना**–बुरी दृष्टि के प्रभाव को दूर करने का प्रयत्न करना।
नजरबन्द–(फ़ा०वि०) वह मनुष्य जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी देखरेख में रक्खा जावे जिसमें वह उस जगह से अन्यत्र न जा सके, (पुं०) इन्द्रजाल का खेल जिसमें लोगों को यह जान पड़ता है मानो उनकी दृष्टि बांध दी गई है; **नजरबन्दी**–(फ़ा०स्त्री०) राज्य की ओर से वह दण्ड जिसमें वह मनुष्य, किसी सुरक्षित स्थान पर रक्खा जाता है और उस पर कड़ा पहरा रहता है जिसमें वह कहीं भाग न जाय, लोगों की दृष्टि में भ्रम उत्पन्न करने की क्रिया, जादूगरी,
नजरबाग–(अ०पुं०) महल के सामने का वह उद्यान जिसके चारो ओर भीत बनी रहती है; **नजरसानी**–(अ०स्त्री०)पुनर्विचार, पुनरावृत्ति।
नजरहाया–(अ०वि०) दृष्टि लगाने वाला
नजराना– (फ़ा०क्रि०) उपहार की तरह देना।
नजला–(अ०पुं०)यूनानी हिकमत के अनुसर एक प्रकार का रोग जिसमें गरमी के कारण सिर में का विकार युक्त पानी ढल कर शरीर के भिन्न भिन्न भागों में जाकर अनिष्ट करता है, सरदी। **नजलाबन्द**–(फ़ा०पुं०) नजला बन्द करने के लिये कनपटी पर लगाई हुई पट्टी।
नजाकत–(फ़ा०स्त्री०) सुकुमारता, कोमलता।
नजात–(फ़ा०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा।
नजामत–(अ०स्त्री०)नाज़िम का कार्य-गृह या पद।
नजारत–(अं०स्त्री०) नाज़िर का पद, नाज़िर का विभाग, नाज़िर का वह स्थान जहां पर बैठकर वह काम करता है।
नजारा–(अ०पुं०)दृश्य, दृष्टि, किसी स्त्री या पुरुष का अन्य पुरुष या स्त्री को प्रेम दृष्टि से देखना; **नजारेबाजी**–(फ़ा०स्त्री०) नजारे से देखने का भाव।
नजीर–(अ०स्त्री०)उदाहरण, दृष्टान्त, किसी अभियोग का वह न्याय जो उसी प्रकार के दूसरे अभियोग में वैसे ही न्याय के लिये उपस्थित किया जाता है।
नजूम–(अ०पुं०)ज्योतिष विद्या।
नजूमी–(अ०पुं०)ज्योतिषी।
नजूल–(अं०पुं०)सरकारी भूमि।
नतीजा–(फ़ा०पुं०) परिणाम, फल, हेतु, कारण, पुरस्कार।
नदारद–(फ़ा०वि०) अप्रस्तुत, लुप्त।
नफ़र–(फ़ा०पुं०)दास, सेवक, व्यक्ति;
नफ़रत–(फ़ा०स्त्री०)घृणा, घिन।
नफ़री–(फ़ा०स्त्री०)एक मजदूर व्यक्ति एक दिन के वेतन का एक दिन का काम।
नफ़सानफ़सी–(अं० स्त्री०) वैमनस्य, लड़ाई झगड़ा।
नफ़ा–(अं०पुं०)लाभ, फायदा।
नफ़ासत–(अं०स्त्री०)सुंदरता।
नफ़ीरी–(फ़ा०स्त्री०)तुरही, शहनाई।
नफ़ीस–(अं०वि०) उत्तम, बढ़िया, सुन्दर, स्वच्छ।
नबी–(अं०पुं०)देवदूत।
नब्दीगर–(फ़ा०पुं०)चारजामा बनाने वाला।
नब्ज–(अं०स्त्री०)हाथ के कलाई पर की रक्तवाहिनी नली जिसकी टपक गति से रोग की पहिचान की जाती है, नाड़ी; **नब्ज चलना**– नाड़ी में गति होना, **नब्ज छूटना**–नाड़ी का चलना बन्द होना।
नम–(फ़ा० वि०) आर्द्र, गीला, तर;
नमक–(फ़ा०पुं०) एक प्रसिद्ध क्षार। पदार्थ जिसका व्यवहार खाने के पदार्थों में किया जाता है, लवण, नोन; सौन्दर्य, लावण्य, सलोनापन; **नमक अदा करना**–किये हुए उपकार का बदला चुकाना; **नमक खाना** किसी से पाला पोसा जाना; **नमक मिर्च मिलाना**–बातों को बढ़ाकर कहना; **नमक फूट कर निकलना**– कृतघ्नता करने पर उसका फल भोगना; **कटे पर नमक छिड़कना**–कष्ट को बढ़ाना; **नमकख्वार**–(फ़ा०वि०) नमक खाने वाला, जिसका पालन पोषण दूसरे से किया जावे; **नमकदान**–(फ़ा० पुं०)पीसे हुए नमक रखने का पात्र; **नमकसार**–(फ़ा०पुं०)जिस स्थान में नमक निकलता हो या बनाया जाता हो; **नमकहराम**–(अ०पुं०) कृतघ्न पुरुष; **नमकहरामी**–(अ०स्त्री०) कृतघ्नता; **नमकहलाल**–(अ०पुं०) स्वामिभक्त, स्वामिनिष्ठ, वह मनुष्य जो सर्वदा अपने मालिक की भलाई करता हो, कृतज्ञ; **नमकहलाली**–(अ०स्त्री०) स्वामिभक्ती कृतज्ञता;
नमकीन–(फ़ा० वि०) जिसमें नमक के समान स्वाद हो जिसमें नमक मिला हो, सुन्दर, लावण्ययुक्त सलोना, (पुं०)वह पक्वान्न जिसमें नमक पड़ा हो।
नमगीरा– (फ़ा०पुं०) ओस से बचने का पलंग के ऊपर ताना हुआ वस्त्र, तिरपाल।
नमदा–(फ़ा०पुं०) ऊन को जमाकर बनाया हुआ कम्बल या कपड़ा।
नमाज–(फा०स्त्री०) मुसलमानों की ईश्वर वन्दना, जो प्रति दिन पांच बार की जाती है; **नमाजगाह**–मसजिद में नमाज पढ़ने का स्थान;
नमाजबन्द–(फ़ा०पुं०)मल्लयुद्ध की एक युक्ति; **नमाजी**–(फ़ा०पुं०) नमाज पढ़ने वाला, वह वस्त्र जिस पर खड़े होकर नमाज पढ़ी जाती है;
नमिस(फ़ा०स्त्री०)दूध का जमा हुआ फेन जो जाड़े के दिनों में विशेष प्रकार से तैयार किया जाता है।
नमी–(फा०स्त्री०)आर्द्रता, गीलापन, तरी।
नमूदार–(फ़ा०वि०) प्रगट, दृग्गोचर, उदित।
नमूना–(फ़ा०पुं०) वह पदार्थ जिसके अनुकरण पर वैसा ही दूसरा पदार्थ बनाया जावे, ढांचा, किसी बड़े या अधिक पदार्थ में से निकाला हुआ टुकड़ा जिसका उपयोग उस मूल पदार्थ के गुण, स्वरूप आदि की जानकारी के लिये होता है, बानगी;
नयाम–(फ़ा०पुं०)तलवार की म्यान या खोल।
नरगिस–(फ़ा०पुं०) प्याज की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के समान सुगन्ध युक्त गोल फूल लगता है जिसमें अच्छी सुगन्धी होती है। **नरगिसी**–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का कपड़ा जिस पर नरगिस के फूल के तरह के बूटे बने होते है।
नरद–(फ़ा०स्त्री०) चौसर खेलने की गोटी, शब्द, ध्वनि, नाद।
नरदवां, नरदा–(फ़ा०स्त्री०) परनाला नल।
नरी–(फ़ा०स्त्री०) बकरी का रँगा हुआ चमड़ा, सिझाया हुआ कोमल चमड़ा, ढरकी के भीतर की नली जिस पर सूत लपेटा जाता है, नार, एक प्रकार की घास।
नर्द–(फ़ा०स्त्री०) चौसर की गोटी।
नलीमोज–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का कबूतर जिसके पँजे तक में पर होते हैं।
नवंबर–(अं०पुं०) अंग्रेजी वर्ष का ग्यारहवां मास जिसमें तीस दिन

होते हैं।
नवाज–(फ़ा०वि०) दया दिखलाने वाला' कृपा करने वाला।
नवाजिस–(फ़ा०स्त्री०) दया, कृपा।
नवाब–(अ०पुं०) सम्राट् का प्रतिनिधि जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त हो, एक उपाधि जो छोटे मुसलमानी राज्यों के मालिक अपने नाम के आगे लगते हैं, अंगरेजी सरकार की ओर से मुसलमानों को दी जाने वाली 'राजा' के समान उपाधि (वि०) जो बड़ी अमीरी ढंग से रहता हो तथा अति व्यय करता हो; **नवाबजादा**–(फ़ा०पुं०) नवाब का बेटा, **नवाबजादी**–(फ़ा०स्त्री०) नवाब की बेटी; **नवाबपसन्द**–(फ़ा०वि०) एक प्रकार का धान; **नवाबी**–नवाब का पद, नबाबों का शासन काल, नवाब का काम नबाबों की शासन अमीरों के पहिरने का एक प्रकार का वस्त्र अधिक अमीरी।
नवासा–(फ़ा०पुं०) बेटी का बेटा, दोहिता।
नवीस–(फ़ा०पुं०) लेखक, लिखने वाला, **नवीसी**–(फ़ा०स्त्री०)लिखाई
नशा–(फ़ा०पुं०) मादक द्रव्य के व्यवहार से उत्पन्न होने वाली दशा मादक द्रव्य अभिमान, गर्व, मद; **नशा किरकिरा होना**–मादकता का आनन्द टूट जाना;**नशा छाना**–मस्ती चढ़ना;**नशा जमना**–भली भाँति नशा होना; **नशा हीन होना**–नशा हट जाना; **नशापानी**–मादक पदार्थ आदि; **नशा उतरना**–गर्व या मद का हट जाना; **नशाखोर**–(फ़ा० पुं०) नशेबाज, किसी प्रकार के मादक द्रव्य का व्यवहार करनेवाला
नशीन–(फ़ा०वि०) बैठाने वाला; **नशीनी**–(फ़ा०स्त्री०) बैठाने की क्रिया या भाव।
नशीला–(फ़ा०वि०)मादक,नशा लाने वाला, जिस पर नशे का प्रभाव हो; **नशीली आंखें**–मन्दोन्मत्त चक्षु।
नशेबाज–(फ़ा०वि०)वह जो किसी न किसी प्रकार का उन्मादक द्रव्य का सेवन करता हो।
नश्तर–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का दोनों ओर धारवाला छोटा बहुत पैनी छुरी जो फोड़े आदि के चीरने में प्रयोग किया जाता है।
नसतालीक–(अ०पुं०) फारसी या लिपि लिखने का वह ढंग जिसमें अक्षर स्पष्ट और सुन्दर देख पड़ते हों
नसर–(अं०स्त्री०) गद्य, प्राचीन अरबियों की देव मूर्ति।
नसल–(अं०स्त्री०) वंश।
नसीब–(अं०पुं०) भाग्य, प्रारब्ध, **नसीब होना**–किसी वस्तुका मिलना; **नसीब जला**–(विं०) जिसका भाग्य बिगड़ गया हो, अभागा; **नसीबवर**–(अं०वि०)सौभाग्यशाली,भाग्यवान्।
नसीम–(अं०पुं०) ठंढी धीमी चलने वाली हवा।
नसीहत–(अं०स्त्री०) उपदेश, शिक्षा, अच्छी सम्मति।
नस्तरन–(फा०पुं०) सफेद, गुलाब, सेवती, एक प्रकार का वस्त्र।
नहर–(फ़ा०स्त्री०) जल बहाने के लिये खोदकर बनाया हुआ मार्ग जो खेतों की सिंचाई या यात्रा के लिये तैयार किया जाता है।
नहरी–(फ़ा०स्त्री०) छोटी नहर।
नहार–(फ़ा०वि०) जिसने प्रातःकाल से कुछ न खाया हो, बासी मुंह; **नहारी**–(फ़ा०स्त्री०) प्रात राश, सबेरे का कलेवा, जलपान, घोड़े के खिलाया जाने का गुड़ मिला हुआ जव का आंटा।
नहूसत–(अं०पुं०)उदासीनता,खिन्नता, अशुभ लक्षण।
नाइत्तिफाकी–(फ़ा०स्त्री०) मेल का न होना, विरोध, फूट, मतभेद।
नाउम्मैद–(फ़ा०वि०) आशारहित, निराश; **नाउम्मैदी**–(फ़ा०स्त्री०) निराशा।
नाकन्द–(फ़ा०वि०) बिना सिखलाया हुआ, अशिक्षित, अल्हड़, निरर्थक।
नाकवार–(फ़ा०वि०) अप्रतिष्ठित।
नाकाबिल–(फ़ा०वि०) अयोग्य।
नाकारा–(फ़ा०वि०) बुरा, निकम्मा,
नाकिस–(अं०वि०) निकम्मा, बुरा।
नाखुना–(फ़ा०पुं०) आंख का एक रोग जिसमें पुतली पर एक सफेद झिल्ली पड़ जाती है।
नाखुश–(फ़ा०वि०)अप्रसन्न, **नाखुशी**–(फ़ा०स्त्री०) अप्रसन्नता।
नाखून–(फ़ा०पुं०)नख, नँह, चौपायों के खुर का बढ़ा हुआ छोर; **नाखूना**–(फ़ा०पुं०) देखो नाखुना; बढ़इयों की एक प्रकार की पतली, रुखानी; एक प्रकार का महीन धारीदार कपड़ा।
नागवार–(फ़ा०वि०) अप्रिय, जो अच्छा न लगे।
नागहां–(फ़ा०क्रि०वि०) अकस्मात् अचानक।
नागहानी–(फ़ा०वि०)अकस्मात् आई हुई।
नागा–(अं०पुं०) नियम से होने वाले किसी काम का किसी दिन निर्दिष्ट समय पर न होना।
नाचीज–(फ़ा०वि०)तुच्छ, निकम्मा।
नाज–(फा०पुं०) हाव, भाव, चोचला अभिमान, मद, गर्व, घमंड; **नाजबरदारी**–चोचला दिखलाना; **नाज न उठाना**–नखरा सहना।
नाजनी–(फ़ा०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
नाजबू–(फा०स्त्री०)मरुवे का पौधा
नाजाँ–(फ़ा०वि०) घमंड करने वाला
नाजायज–(अ०वि०)नियम के विरुद्ध अनुचित।
नाजिम–(अ०पुं०) भारत के मुसलमानी राज्यकाल में वह प्रधान कर्मचारी जिसके ऊपर राज्य के प्रबंध का भार रहता था (वि०) प्रबन्ध करने वाला।
नाजिर–(अ०वि०) निरीक्षक, दर्शक, देखने वाला, देखभाल करने वाला, ख्वाजा, लेखकों का अधिकारी।
नाजुक–(फ़ा०वि०)सुकुमार, कोमल, दुबला पतला, महीन, सूक्ष्म, थोड़े से आघात से टूटने वाला, जिसमें हानि की आशंका हो, गढ़; **नाजुक दिमाग**–(अ०वि०) चिड़चिड़ा, जो अपने प्रतिकूल की थोड़ी सी बात भी न सह सके; **नाजुक बदन**–(फ़ा० वि०) सुकुमार शरीर वाला, एक प्रकार का महीन वस्त्र।
नाजी–(फ़ा०स्त्री०) चोचला, नाज करने वाली स्त्री, लाड़ली, ठसक वाली स्त्री, प्यारी स्त्री।
नादली–(अ०स्त्री०) संगयशब नामक पत्थर का छोटा चौकोर टुकड़ा जो कलेजे की धड़कन दूर करने के लिये यन्त्रकी तरह गले में पहिना जाता है;
नादान–(फ़ा०वि०) अज्ञान, मूर्ख; **नादानी**–(फ़ा०स्त्री०) मूर्खता।
नादार–(फ़ा०वि०) अकिंचन, कंगाल, दरिद्र, गंजीफे के खेल में बिना रंग की बाजी। **नादारी**–(फ़ा०स्त्री०) निर्धनता।
नादिम–(अ०वि०) लज्जित।
नादिर–(फ़ा०वि०) अद्वितीय, विलक्षण, अनोखा; **नादिरशाही**–(फ़ा० स्त्री०) कोई बहुत बड़ा अत्याचार या अन्धेर (वि०) बड़ा उग्र या कठोर।
नादिरी–(फ़ा०स्त्री०) मुसलमानी शासन के पहिरी जाने वाली एक प्रकार की बेंड़ी, गंजीफे का वह पत्ता जो खेलके समय अलग निकाल दिया जाता है।
नादिहंद–(फ़ा०वि०) जिसके ऋण की रकम प्राप्त न हो, न देने वाला; **नादिहंदी**–(फ़ा०स्त्री०)किसी को कुछ न देने की प्रवृत्ति।
नान–(फ़ा०स्त्री०) रोटी, चपाती, तन्दूरमें पकाई जाती हुई खमीरी रोटी
नानकार–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार की निःशुल्क भूमि।
नानखताई–(फ़ा० स्त्री०)एक प्रकार की सोंधी खाल्ता मीठी टिकिया जो केवल अग्नि पर पकाई जाती है।
नानपेरिल–(अं०पुं०) एक प्रकार की छोटा टाइप।
नानबाई–(फ़ा०पुं०) रोटियाँ पका कर देंचने वाला।
नाना–(अं०पुं०) पुदीना।
नापसन्द–(फ़ा०वि०) अप्रिय, जो अच्छा न लगे।
नापाक–(फ़ा०वि०)अपवित्र, अशुद्ध, मैला कुचैला, भ्रष्ट, अशुचि;**नापाकी**–(फ़ा०स्त्री०)अपवित्रता, अशुद्धता।
नापायदार–(फ़ा०वि०) जो दृढ़ न हो, जो टिकाऊ न हो; **नापायदारी**–(फ़ा०स्त्री०)क्षण भंगुरता, अदृढता
नाफरमां–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का गुलेलाला।
नाफा–(फ़ा०पुं०) कस्तूरी मृग की नाभी जिसमेंसे कस्तूरी निकलती है
नाबदान–(फ़ा०पुं०)मैला पानी आदि बहने की नाली, परनाला।
नाबालिग–(फ़ा०वि०)अप्राप्त वयस्क अठारह वर्ष से कम अवस्था का मनुष्य; **नाबिलिगी**–(फ़ा० स्त्री०) नाबालिग होने की अवस्था।
नाबूद–(फ़ा०वि०) नष्टभ्रष्ट, ध्वस्त, जिसका अस्तित्व न रह गया हो।
नामंजूर–(फ़ा०वि०) अस्वीकृति।
नामजद–(फ़ा०वि०) जो किसी काम के लिये चुन लिया गया हो, जिसका नाम किसी बात के लिये निश्चित कर लिया गया हो, प्रसिद्ध।
नामदार–(फ़ा०वि०) प्रसिद्ध नामी।
नामनिशान–(फ़ा०पुं०) चिन्ह, पता ठिकाना।
नामर्द नामर्दी–(फ़ा०वि०)क्लीब, नपुन्सक, डरपोक, कायर; **नामर्दी**–(फ़ा०स्त्री०) नपुंसकता, क्लीबता, भीरुता, साहस का अभाव।
नामवर–(फ़ा०वि०) प्रसिद्ध नामी; **नामवरी**–(फ़ा०स्त्री०)कीर्ति, प्रसिद्धि
नामाकूल–(फ़ा०वि०)अयोग्य,अनुचित
नामालूम–(फ़ा०वि०) अज्ञात।
नामुनासिब–(फ़ा०वि०) अयोग्य, अनुचित।
नामुमकिन–(फ़ा०वि०)असम्भव, जो कभी न हो सके।
नामूसी–(अ०स्त्री०)अप्रतिष्ठा,निन्दा,
नामेहरबान–(फ़ा०वि०) अकृपालु।
नायब–(अं०पुं०) किसी की ओर से काम करने वाला, किसी काम की देख रेख करने वाला, मूनीब, सहकारी, सहायक; **नायबी**–(अ० स्त्री०) नायब का काम या पद।
नारमन्–(अं०पुं०) फ्रांस के नार्मण्डी देश का निवासी, जहाज बांधने का खूंटा।
नारवे–युरोप के एक देश का नाम।
नाराज–(फ़ा०वि०) अप्रसन्न रुष्ट।
नाराजगी–(फ़ा०स्त्री०) अप्रसन्नता, कोप, रोष।
नाल–(अं०पुं०) लोहे का वह अर्ध चन्द्राकार टुकड़ा जो रगड़ बचाने के लिये घोड़े के टाप में या जूते के तल्ले में जड़ा जाता है, तलवार आदि के म्यान की साँमी, कुण्डलाकार पत्थर का गढ़ा हुआ टुकड़ा जिसके बीच में पकड़ने के लिये

दस्ता बना रहता है जिसको उठने का व्यायाम किया जाता है, वह लकड़ी का चक्र जिस पर कुवें की जोड़ाई की जाती है, जुए का अण्डा वह धन जिसको जुआरी लोग जुए का अड्डा रखने वाले को देते हैं
नालबन्द–(फ़ा०पुं०) घोड़े के टाप में या तल्ले में नाल जड़ने वाला मनुष्य।
नालबन्दी–(अ०स्त्री०) नाल जड़ने का काम।
नालशोरी–(फ़ा०पुं०) लकड़ी की एक प्रकार की धन्वाकार रचना, जिसके भीतर बहुत सी छोटी छोटी कमानियाँ कटी होती हैं।
नालायक–(अ०वि०) अयोग्य मूर्ख, निकम्मा; **नालायकी**–(स्त्री०) अयोग्यता।
नालिश–(फ़ा०स्त्री०) किसी के विरुद्ध न्याय के लिये अभियोग, दुःख निवेदन।
नावक–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा बाण, मधुमक्खी का डंक।
नावाकिफ़–(फ़ा०वि०) अनभिज्ञ, अनजान।
नावेल्–(अं०पुं०) उपन्यास।
नाश्ता–(फ़ा०पुं०) प्रातराश, पानपियाव, कलेवा।
नासपाल–(फ़ा०पुं०) अनारका छिलका कच्चा अनार।
नासपाली–(फ़ा०वि०) कच्चे अनार के छिलके के रंग का।
नासूर–(अं०पुं०) नाडीव्रण, घाव अथवा फोड़े के भीतर का नली के आकार का छिद्र जिसमें से बराबर मवाद बहता है जिससे घाव जल्दी नहीं सूखता।
नाहक़–(अ० क्रि० वि०) निष्प्रयोजन, वृथा।
निआमत–(अ०स्त्री०) अलभ्य पदार्थ, बहूमूल्य पदार्थ।
निकल्–(अं० स्त्री०) चांदी की तरह की एक चमकीली धातु जो कड़ी होती है और थोड़ी आँच में नहीं गलती।
निकाई–(फ़ा०स्त्री०) सौन्दर्य, भलाई, अच्छापन;
निकाह्–(अं०पुं०) मुसलमानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह जिसमें पति पत्नी को एकत्र करके काज़ी कलमा पढ़कर दोनोंको मिला देते हैं।
निगरां–(फ़ा०पु०) निरीक्षक, रक्षक।
नगह्–(फ़ा०स्त्री०) दृष्टि;
निगहबान–(फ़ा०पुं०) रक्षा करनेवाला;
निगहबानी–(फ़ा०स्त्री०) रक्षा, रखवाली, चौकसी।
निगार–(फ़ा०पुं०) बेल, बूट, एक प्रकार का फ़ारसी राग।
निगाल–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी बाँस, घोड़े की गरदन।
निगाह्–(फ़ा०स्त्री०) दृष्टि, ध्यान, विचार, समझ, पहिचान, परख, देखने की क्रिया वा ढंग, तकाई, चितवन, कृपादृष्टि।
निगेटिव्–(अं०पुं०) शीशेका मसाला लगा हुआ वह टुकड़ा जिसपर फोटो का चित्र लिया जाता है।
निग्रो–(अं०पुं०) अफ़्रीका महाद्वीप की एक प्राचीन असभ्य जंगली जाति का नाम, ये और भी स्थानों में अब पाये जाते हैं।
निज़ा–(अं०पुं०) विवाद झगड़ा।
निज़ाम–(अं०पुं०) प्रबंध, हैदराबाद राज्यके नवाबोंका पदवी सूचक नाम
निफ़ाक्–(अं०पुं०) द्रोह, वैर, विरोध, बिगाड़, फूट।
निब–(अं०स्त्री०) लोहे पीतल आदि की बनी हुई क़लम की चोंच या जीभी जो कलम में ऊपर से खोंसी जाती है।
निमाज–(अ० पुं०) मुसलमानी धर्म के अनुसार ईश्वरकी प्रार्थना; **निमाज बंद**–(फ़ा० पुं०) मल्ल युद्धकी एक युक्ति; **निमाजी**–(फ़ा०वि०) जो नियमसे निमाज़ पढ़ता हो, धार्मिक।
नियामत–(अ०स्त्री०) अलभ्य पदार्थ, दुर्लभ वस्तु, अति स्वादिष्ट भोजन, धन
निर्ख–(फ़ा०पुं०) भाव, दर; **निर्खनामा**–(फ़ा०पुं०) वह सूची जिसमें बाज़ार की प्रत्येक वस्तु का भाव लिखा हो; **निर्खबन्दी**–(फ़ा० स्त्री०) किसी वस्तु का भाव स्थिर करने की क्रिया।
निवाज़िश–(फ़ा०स्त्री०) कृपा, दया।
निवार–(फ़ा०स्त्री०) तीन चार अंगुल चौड़ी मोटे सूत की बीनी हुई पट्टी जिससे चारपाई बिनी जाती है नेवार।
निवाला–(फ़ा०पुं०) उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय. कौर, ग्रास।
निशाखातिर–(फ़ा०स्त्री०) ढाढस।
निशान–(फ़ा०पुं०) चिन्ह, लक्षण, पूर्व घटना का सूचक चिह्न, किसी पदार्थके परिचय के लिये उस स्थान पर बनाया हुआ चिह्न, पता, ठिकाना मार्ग दिखलाने के लिये समुद्र, पहाड़ आदि पर, बना हुआ चिह्न, ध्वजा, पताका, झंडा, हस्ताक्षर के बदले अंगूठे की छाप, शरीर पर का कोई स्वाभाविक चिह्न, धब्बा; **नाम निशान**–किसी तरह का चिह्न या लक्षण; **निशान देना**–किसी को पहिचनवाना; **निशान खड़ा करना**–किसी कार्यके आरंभ करने में अगुआ बनना
निशानची–(फ़ा०पुं०) राजा, सेना आदि के आगे आगे झंडा लेकर चलने वाला मनुष्य।
निशानदिही, निशानदेही–(फ़ा०स्त्री०) सम्मन आदि की तामीली के लिये पहिचनवानेकी क्रिया; **निशानपट्टी**–(फ़ा० स्त्री०) मुख की बनावट का वर्णन, हुलिया; **निशान बरदार**–(फ़ा०पुं०) देखो निशानची।
निशाना–(अ० स्त्री०) वह जिस पर लक्ष्य करके अस्त्रशस्त्रका वार किया जाय, कोई पदार्थ जिस पर निशाना साधा जाय, जिसको लक्ष्य करके कोई व्यंगकी बात कही जाय, मिट्टी आदि का ढेर अथवा अन्य पदार्थ जिस पर निशाना साधा जावे।
निशानी–(फ़ा० स्त्री०) वह चिह्न जिससे कोई वस्तु पहिचानी जावे, स्मृति चिह्न, यादगार।
निशास्ता–(फ़ा० पुं०) गेंहू का सत्व जो उसको भिगोकर निकाला जाता है, माड़ी।
निसबत–(फ़ा०स्त्री०) संबंध, विवाह संबंधी बात, अपेक्षा, तुलना।
निसत्–(अं०पुं०) निछावर, उतारा, चार आने के मूल्य का मुग़ल शासन काल का चांदी का एक सिक्का।
निस्फ़–(अ० वि०) अर्ध, आधा दो बराबर भागों में से एक; **निस्फ़ी बँटाई**–वह बँटाई जिसमें आधा कृषिफल भूस्वामी को और आधी असामी को मिलती है।
निहायत–(अं०वि०) अधिक, अत्यन्त, बहुत।
निहाल–(फ़ा०वि०) पूर्णकाम, जो सब प्रकार से प्रसन्न और सन्तुष्ट हो;
निहाचला–(फ़ा० पुं०) छोटी गद्दी जिसपर बच्चे सुलाये जाते हैं।
निहाली–(फ़ा० स्त्री०) गद्दी, तोशक, निहाई।
नीपर–(अं० पुं०) लंगर में बँधी हुई रस्सी।
नीम–(फ़ा० वि०) अर्ध, आधा; **नीम हकीम**–कुचिकित्सक।
नीमवर–(फ़ा०पुं०) मल्लयुद्ध की एक युक्ति; **नीमगिर्दा**–(फ़ा०पुं०) खरादने की गोल रुखानी।
नीमचा–(फ़ा०पुं०) खाँड़ा।
नीमजा–(फ़ा०वि०) अर्धमृत, अधमरा;
नीमरजा–(फ़ा० वि०) थोड़ी सी प्रसन्नता।
नीमा–(फ़ा०पुं०) जामेके नीचे पहिरने का आधी बाँहका एक पहिरावा
नीमास्तीन–(फ़ा०स्त्री०) आधे अस्तीन की फ़तुही, या कुरती।
नीयत–(अ०स्त्री०) उद्देश्य, आशय, संकल्प, इच्छा, आन्तरिक लक्ष्य, भाव; **नीयत डिगना**–अपने संकल्प को त्याग देना; **नीयत बदल जाना**–इच्छा बदलना, अनुचित विचार होना; **नीयत बांधना**–दृढ़ संकल्प करना; **नीयत भरना**–अभिलाषा पूर्ण होना; **नीयत में फर्क आना**–मनमें छल कपट लाना; **नीयत लगी रहना**–अभिलाषा बनी रहना, ललचाना।
नीलम–(फ़ा० पुं०) नीलमणि, इन्द्रनील, नीले रंग का एक रत्न।
नीलाम–(फ़ा०पुं०) बोली बोल कर किसी माल को बेचने की विधि जिसमें सब से अधिक दाम लगाने वाले को माल दिया जाता है **नीलमघर**–जिस स्थान में नीलाम किया जाता है; **नीलामी**–(हिं० वि०) नीलाम में मोल लिया हुआ।
नीलोफर–(फ़ा० पुं०) नील कमल, कुमुद, कोई।
नुकता–(अं०पुं०) बिन्दु बिंदी, लगती हुई उक्ति, चुटकला दोष, घोड़े के माथे पर बाँधने का पट्टा या परदा;
नुकताचीन–(फ़ा०वि०) छिन्द्रान्वेषी;
नुकताचीनी–(फ़ा०स्त्री०) दोष निकालने का काम; **नुकती**–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई, महीन बुँदिया।
नुकरा–(अ० पुं०) चाँदी, घोड़े का सफेद रंग (वि०) सफेद रग का।
नुकसान–(अ० पुं०) हानि, घाटा, कमी, क्षति, दोष, विकार, अवगुण;
नुकसान उठाना–घाटा या हानि सहना;
नुकसान पहुंचाना–बुराई करना; **नुकसान भरना**–घाटा पूरा करना; **नुकसान करने वाला**–स्वास्थ्यको हानि पहुँचाने वाला।
नुक्स–(अ०पु०) त्रुटि, दोष, बुराई।
नुत्फ़ा–(अ०पुं०) शुक्र, वीर्य, सन्तति, **नुत्फ़ाहराम**–(अ० वि०) वर्णसंकर, दोगला, दुष्ट, नीच।
नुमाइश–(फ़ा० स्त्री०) प्रदर्शन, ठाटबाट, सजधज, तड़क भड़क, अनेक प्रकार की वस्तुओं का एक स्थान पर रखकर दिखाया जाना, वह मेला जिसमें भिन्न भिन्न स्थानों से इकट्ठा की हुई उत्तम और विलक्षण वस्तुएँ दिखलाई जाती हैं; **नुमाइशगाह**–ऐसी वस्तुओं के प्रदर्शनका स्थान; **नुमाइशी**–(फ़ा० वि०) दिखौवा, जो देखने में भड़कीला हो, परन्तु टिकाऊ या काम का न हो, जिसमें ऊपरी तड़क भड़क हो, भीतर कुछ सार न हो।
नुसखा–(अ०पु०) लिखा हुआ पत्र, कागज़का वह टुकड़ा जिसपर हकीम या वैद्य रोगी के लिये औषधियाँ तथा इनकी सेवन विधि लिखते हैं।
नूर–(अ०पुं०) ज्योति, प्रकाश, आभा, कान्ति शोभा, ईश्वर का एक नाम, संगीत का स्थान; **नूर बरसना**–अधिक चमक होना, शोभा बढ़ना।
नूह–(अ०पुं०) शामी या इबरानी मत के अनुसार एक दिगम्बर का नाम जिसके समय में बहुत बड़ा तूफ़ान आया था जिससे सम्पूर्ण सृष्टि जलमय हो गई थी; केवल नूह का परिवार बच गया था।
नेक–(फ़ा०वि०) उत्तम, अच्छा, भल

शिष्ट,सुज्जन (क्रि०वि०) थोड़ासा, तनिकसा; नेक चलन–(हिं०वि०) सदाचारी; नेक चलनी–(हिं०स्त्री०) सदाचार, भलमनसी ; नेक नाम–(फ़ा० वि०) परिख्यात, जिसका अच्छा नाम हो ; नेकनामी–(फ़ा० स्त्री०) कीर्ति,नेकनीयत–(अ०वि०) जिसका आशय या उद्देश्य अच्छा हो, भलाई का विचार करनेवाला; नेक-नीयती–(फ़ा०स्त्री०) भला विचार, नेकबख्त–(फ़ा०वि०) भाग्यवान्, अच्छे स्वभाव का, सुशील ।

नेकी– (फ़ा० स्त्री०) उत्तम व्यवहार, भलाई, हित, उपकार, भलमनसी, सज्जनता ।

नेजा–(फ़ा० पु०) भाला, बरछा निशान; नेज.बदार–(फ़ा० पु०) राजाओंके आगे निशान ले चलनेवाला

नेपचून्–(अं०पु०) एक उपग्रह जो सूर्य की परिक्रमा करता है ।

नेफ़ा–(फ़ा०पु०) पायजामे या लहँगे के घेर में नाड़ा पिरोने का स्थान ।

नेवता–(फ़ा०पु०) चिलगोजा ।

नेवजी–(फ़ा०स्त्री०)एक प्रकारका फूल

नेस–(फ़ा० पु०) पशुओं के लंबे नुकीले दाँत ।

नेस्त–(फ़ा० वि०) जो न हो, नेस्तै नाबूद–नष्ट भ्रष्ट; नेस्ती–(फ़ा० स्त्री०) न होना, आलस्य, नाश ।

नै–(फ़ा०स्त्री०) बाँस की नली, हुक्के की निगाली, बाँसुरी, देखो नय ।

नैचा–(फ़ा०पु०) हुक्के, दोहरी नली जिसके एक किनारे पर चिलम रक्खी जाती है और दूसरे का छोर मुँह में रखकर धुवाँ खींचा जाता है; नैचाबन्द–(फ़ा० पु०) नैचा बनानेवाला;नैचाबन्दी–(फ़ा०स्त्री०) नैचा बनाने का काम ।

नोक– (फ़ा०स्त्री०) सूक्ष्म अग्र भाग, किसी वस्तु का महीन पतला छोर, कोण बनाने वाली दो रेखाओं का संगम स्थान, निकला हुआ कोना, किसी ओर का बढ़ा हुआ पतला अग्र भाग ।

नोट्–(अं० पु०)टाँगने या लिखने का काम जिसमें भूल न जाय, अर्थ प्रगट करने वाला लेख, टिप्पणी, लिखा हुआ पत्र, चिट्ठी, सरकार की ओर से जारी की हुई कागज की मुद्रा, सरकारी हुडी; नोटपेपर–(अं०पु०) चिट्ठी लिखने का कागज; नोट बुक्–स्मरणार्थ लिख लेनेकी छोटी पुस्तक।

नोटिसस्(अं०स्त्री०) विज्ञप्ति, सूचना, विज्ञापन ।

नौकर–(अ० पु०) चाकर, भृत्य, टहलुआ, वेतन पर नियुक्त कोई कर्मचारी; नौकरशाही–(हिं०स्त्री०) यह आसन जिसमें बड़े बड़े कर्मचारियों के अधिकार में राजसत्ता रहती है, नौकरानी–(स्त्री०) घर का काम धंधा करने वाली स्त्री, दासी, चाकरनी ।

नौकरी–(अ०स्त्री०) सेवा, टहल,भृत्य का कार्य, वह काम जिसको करने के लिये कुछ वेतन मिलता हो ।

नौकरीपेशा–(फ़ा०वि०) वह जिसका जीवन निर्वाह नौकरी से होता है ।

नौजवान–(फ़ा० वि०) नवयुवक; नौजवानी–(फ़ा०स्त्री०) उभड़ती हुई युवावस्था ।

नौजा–(फ़ा०पु०) बादाम,चिलगोजा

नौजी–(फ़ा०स्त्री०)लीची नामक फल।

नौबत–(फ़ा०स्त्री०)वारी, पारी, दशा हालत, उपस्थित दशा, संयोग उत्सव या मंगल सूचक बाजा । जो देवता के मन्दिरों, महलों, या बड़े आदमियों के द्वार पर बजता है, स्थिति में कोई परिवर्तन करनेवाली घटना; नौबत बजना–आनन्द का उत्सव दिखलाया जाना । नौबतखाना–(फ़ा०पु०) वह स्थान जहां बैठकर नौबत बजाई जाती है, नौबती–(फ़ा०पु०) नौबत बजाने वाला, नक्कारची, फाटक पर पहरा देने वाला, पहरेदार, सजा सजाया बगा सवार का घोड़ा, कोतल घोड़ा, बड़ा खेमा या तम्बू; नौवती–(फ़ा० पु०) द्वारपाल, पहरेदार, खेमे पर पहरा देने वाला सन्तरी ।

नौबरार–(फ़ा०पु०) वह ज़मीन जो नदी के हट जाने से निकल आती है, कछार ।

नौरोज–(फ़ा० पु०) पारसियों के नये साल का पहला दिन जब बड़ा उत्सव मनाया जाता है, त्योहार का का दिन, शुभ दिन ।

नौशा–(फ़ा०पु०) दूल्हा,वर; नौसी–(फ़ा० स्त्री०) नववधू, दुलहिन ।

प

पंचनामा–(फ़ा०पु०)वह कागज़ जिसपर वादी प्रतिवादी, हस्ताक्षर करके पंच नियुक्त करते हैं ।

पंचहजारी–(फ़ा० पु०) पांच हज़ार सैनिकों का अधिकारी, बड़े बड़े लोगों को दी जानेवाली एक मुसलमानी पदवी ।

पंजा–(फ़ा०पु०)पाँच का समूह, हाथ या पैर की पाँचो अँगुलियों का समूह जुए का एक दाँव, पांच बूटियों का ताश का पत्ता, पुट्ठे के ऊपरी की मांस, अँगुलियों सहित हथेली का संपुट, जूते का अगला भाग जिसमें अँगुलियाँ रहती हैं ; पंजे झाड़कर पीछे पड़ना–जीजान से लग जाना; पंजे में–अधिकार में, मुट्ठी में; छक्का पंजा–दाँव पेंच ।

पंद–(फ़ा०स्त्री०)शिक्षा,उपदेश,सीख ।

पंप–(अं०पुं०)वह नल या यन्त्र जिसके द्वारा पानी ऊपर चढ़ाया जाता है अथवा दूर पहुँचाया जाता है, पिचकारी, एक प्रकार का हलका अंगरेज़ी जूता ।

पंबा–(अ०पु०)एक प्रकार का पीला रंग जो ऊन रँगने के काम में आता है।

पगाह–(फ़ा० स्त्री०)यात्रा करने का समय, प्रभात, सबेरा ।

पजहर–(फ़ा० पु०) एक प्रकार का पत्थर जिसपर नक्काशी की जाती है

पजावा–(फ़ा० पु०) ईंट पकाने का भट्ठा, आवाँ ।

पनाह–(अ०स्त्री०)कष्ट सकट अथवा शत्रु से रक्षा पाने की क्रिया या भाव, त्राण, बचाव, रक्षा पाने का स्थान, शरण, बचाव का स्थान; पनाह मांगना रक्षा किये जाने के लिये प्रार्थना करना

पनीर–(फ़ा०पु०)फाड़ कर जमाया हुआ दूध,छेना; पानी निकला हुआ दही

पबलिक्–(अं० स्त्री०) सर्व साधारण, जनता, (वि०)सार्वजनिक; पब्लिक् वर्क्स्–वे निर्माण सबंधी कार्य जो सर्व साधारण के हितके लिये सरकार की ओर से बनाये जाते हैं, इन्जिनियरी का कार्यालय ।

पम्प्–(अं०पु०)पानी खींचने का यन्त्र, देखो पंप ।

परकार–(फ़ा० पु०) वृत्त या गोलाई खींचने का एक अस्त्र; (हि०) देखो प्रकार ।

परगना–(फ़ा०पु०)भूमि का वह भाग जिसके अन्तर्गत बहुत से गाँव हों ।

परचा–(फ़ा०पु०)चिट्ठी, पुरजा, प्रश्न पत्र, कागज़ का टुकड़ा, परिचय, प्रमाण, परीक्षा, परख, जांच ।

परदा–(फ़ा०पु०)आड़ करने का कपड़ा टाट, चिक आदि, किसी के सामने न होने की स्थिति, आड़,छिपाव, परत तह, आड़ करने वाली झिल्ली चमड़ा, आदि, विभाग करने की भीत,स्त्रियों को घर के भीतर रखने का नियम, अँगरखे का छाती के ऊपर का भाग सितार, हार्मोनियम आदि बाजे का वह स्थान जहाँ से स्वर निकलता है, दृष्टि या गति रोकने वाली वस्तु, व्यवधान; ओझल, नाव की पतवार; परदा खोलना–गुप्त बात को प्रगट करना; परदा डालना–किसी बात को छिपाना; आंख पर परदा पढ़ना–देख न पड़ना; ढँका परदा–दोष या कलंक को छिपाते हुए, मान मर्यादा बनाये हुए ; परदा रखना–छिपा रखना, सामने न आना;परदा होना–स्त्रियों को किसी के सामने न आने देने का का नियम; परदा में रखना–स्त्रियों को घर के भीतर रखना किसी के सामने न आने देना ।

परदानशीन–(फ़ा० वि०) अन्त:पुर में या परदे में रहने वाली ।

परवरदिगार–(फ़ा०पु०)पालन करने वाला, ईश्वर ।

परवरिश–(फ़ा०स्त्री०)पालन पोषण ।

परवा–(फ़ा० स्त्री०)आशंका, खटका, चिन्ता, व्यग्रता, ध्यान, आसरा, भरोसा ।

परवाज–(फ़ा० स्त्री०)उड़ान ।

परवानगी–(फ़ा०स्त्री०)अनुमति,आज्ञा,

परवाना–(फ़ा०पु०)आज्ञा पत्र,फतिंगा, पक्षी ।

परसाल–(फ़ा०अं०वि०)गतवर्ष,पिछले साल, आगामी वर्ष, अगले साल ।

परहेज–(फ़ा०पु०)बुराई और दोष से दूर रहना, खाने पीने आदि का संयम, रोग उत्पन्न करने वाली या बढ़ाने वाली वस्तुओं का त्याग ।

परहेजगार–(फ़ा० पु०) दोषों से दूर रहने वाला,बुराइयों से बचने वाला संयमी । परहेजगारी–(फ़ा० स्त्री०) सयम ।

परायचा–(फ़ा०पु०)सिले हुए कपड़े बेंचने वाला ।

परिस्तान–(फ़ा०पु०)परियों के रहने का कल्पित स्थान, वह स्थान जहाँ सुन्दर नगर नारियों का जमघट हो

परी–(फ़ा०स्त्री०)फ़ारसी की प्राचीन कथाओं के अनुसार कोहकाफ़ पहाड़ पर बसने वाली कल्पित स्त्रियाँ जिनके कंधों पर उड़ने के लिये डैने रहते थे, अति रूपवती स्त्री, परम सुन्दरी ।

परीजाद–(फ़ा०वि०)अत्यन्त रूपवान् बड़ा सुन्दर ।

परीबन्द–(फ़ा०पु०)मल्लयुद्ध की एक युक्ति, एक प्रकार का कलाई पर पहिरने का आभूषण ।

परीरू–(फ़ा०वि०) अति सुन्दर ।

परीशान–(फ़ा०वि०) व्यग्र ।

परीशानी–(फ़ा० स्त्री०)व्यग्रता ।

परेड–(अं० पु०)मैदान जहाँ सैनिकों को युद्ध शिक्षा दी जाती है, सैनिक शिक्षा ।

परेशान–(फ़ा०वि०)उद्विग्न, व्याकुल, घबड़ाया हुआ ।

परेशानी–(फ़ा० स्त्री०) व्याकुलता, उद्विग्नता ।

परोल–(अं०पु०)वह संकेत का शब्द जिसको सेना का अधिकारी अपने सिपाहियों को बतला देता है, जिसके उच्चारण करने वाले को पहरेदार आने जाने से नहीं रोकते ।

पर्वरिश–(फ़ा० स्त्री०) पालन पोषण,

पर्हेज–(फ़ा०पु०)रोग के समय संयम अथवा अपथ्य वस्तु का त्याग, बचना दूर रहना ; पर्हेजगार–संयम से रहने वाला ।

पलीता(फ़ा० पु०) वह बत्ती जिससे बन्दूक या तोप के रंजक में आग लगाई जाती है, एक प्रकार की कपड़े की बत्ती जो मसाल में लगाई जाती है, बत्ती के आकार में लपेटा हुआ कागज़ जिसपर कोई मन्त्र लिखा

होता है, प्रेत ग्रस्त लोगों को ऐसी बत्ती की धूनीं दी जाती है (वि०) अति क्रुद्ध, आग बबूला, वेग से भागने वाला।
पलीद–(फ़ा०वि०)अपवित्र, घृणापूर्ण, नीच, दुष्ट, (पु०)भूत, प्रेत।
पलेटन्–(अं०पु०) छापे के यन्त्र का वह चिपटा लोहे का भाग जिसके दबाने से अक्षर छपते हैं।
पशमी–(फ़ा०वि०)ऊन का बना हुआ,
पशमीना–(फ़ा०पु०)पशम, शम का बना हुआ वस्त्र, चादर, दुशाला आदि।
पश्त–(फ़ा०पु०)खम्भा।
पश्ता–(फ़ा०पु०) तट, किनारा।
पश्म–(फ़ा०पु०)बकरी, भेंड़ आदि का कोमल रोंवा; पशम।
पसंद–(फ़ा० वि०) रुचि के अनुसार, मनोनीत, (स्त्री०)अभिरुचि, अच्छा लगना।
पस–(फ़ा० वि०)अतः इस कारण।
पसिंजर–(अं०पु०)रेल या जहाज़ का यात्री, यात्रियों को लेकर चलने वाली गाड़ी।
पसोपेश–(फ़ा० पु०)द्विविधा, आगा-पीछा, हिचक।
पस्त–(फ़ा०वि०)हारा हुआ, थका हुआ,
पस्ती–(फ़ा० स्त्री०) निचाई, कमी।
पहन–(फ़ा०पु०)बच्चे के वात्सल्य भाव से अथवा उसको देख कर जो दूध माता के स्तन में उतर जावे अथवा टपकने लगे।
पहलवान–(फ़ा०पु०)मल्ल, युद्ध करने वाला बलवान पुरुष।
पहलवानी–(फ़ा० स्त्री०)मल्लयुद्ध करने का काम या व्यायाम करने का पेशा, बल की अधिकता और दाँव पेंच में प्रवीणता।
पहलवी–(फ़ा०पु०) देखो पह्लवी।
पहलू–(फ़ा० पु०) पक्ष सकेत, सेनाका दहिना, या बाँया भाग, पड़ोस, आस पास, पार्श्व भाग, बगल।
पायचा–(फ़ा ०पु०) पायजामे की मोहरी जिससे जांघ से लेकर टखने तक का अंग ढपा रहता है, शोचगृह में पैर रखने की बैठकी।
पाइका–(अं०पु०)नाप के विचार से छापे के टाइप का एक प्रकार।
पाइप–(अं०पु०)पानी का नल, हुक्के का नल।
पाउन्ड–(अं०पु०)सीने की एक मुद्रा जो बीस शिलिंग का होता है, इसका भाव सोने की दर के हिसाब से घटता, बढ़ता है, एक अगरेजी तौल जो प्रायः आधसेर के बराबर होती है
पाउडर–(अं०पु०)चूर्ण; बुकनी।
पाक–(फ़ा०वि०)पवित्र, शुद्ध, निर्मल निर्दोष, झगडा पाक करना–मामला तय करना, बाधा हटाना।

पाकट पाकिट–(अं०स्त्री०)जेब,खरीता
पाकदामन–(फ़ा०वि०) पतिव्रता स्त्री, सती। पाकदामिनी–(फ़ा० स्त्री०) पातिव्रत्य, सतीत्व।
पाकी–(फ़ा० स्त्री०)निर्मलता, शुद्धता
पाकीज़ा–(फ़ा० वि०) पवित्र, सुन्दर, निर्दोष।
पाकेट–(अं०पु०) जेब खलीता।
पाखाना–(फ़ा० पु०)मल त्याग करने का स्थान पुरीष, मल, गूह।
पाजामा–(फ़ा०पु०)पैर में पहिरने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जिससे सम्पूर्ण पैर ढप जाता है।
पाजेब–(फ़ा० स्त्री०)स्त्रियों के पैर में पहिरने का एक प्रकार का गहना जिसमें घुंघरू लगे होते हैं, नूपुर,मंजीर
पातवा–(फ़ा०पु०)पैर में पहिरने कामोजा
पादशाह–(फ़ा० पु०)देखो बादशाह।
पापोश–(फ़ा०पु०)उपानह, जूता।
पाबन्द–(फ़ा०वि०)अस्वाधीन, सेवक, दास, घोड़े की पिछाड़ी।
पाबन्दी–(फ़ा० स्त्री०)बद्धता,अधीनता
पामाल–(फ़ा० वि०)पादाक्रान्त,पैर से कुचला हुआ सत्यानाश,चौपट।
पामाली–(फ़ा० स्त्री०) नाश।
पामोज–(फ़ा ०पु०) एक प्रकार का कबूतर जिसके पंजे तक पर से ढंपे रहते हैं।
पायंदाज–(फ़ा० पु०) पैर पोछने का टाट आदि।
पायताबा–(फ़ा०पु०)पैर का पहिनावा, जिससे पैर की अंगुलियों से लेकर आधी टांगें ढपी रहती हैं, मोज़ा।
पायदार–(फ़ा०वि०) बहुत दिनों तक टिकने वाला, दृढ़। पायदारी–(फ़ा० स्त्री०) दृढ़ता।
पायमाल–(फ़ा० वि०) पेरों से रौंदा हुआ, नष्ट।
पायमाली–(फ़ा० स्त्री०) दुर्गति।
पारचा–(फ़ा० पु०) खण्ड, टुकड़ा, कपड़ा, पहरावा।
पार्क–(अं०पु०) बड़ा बगीचा, उपवन
पार्टी–(अं० स्त्री०)मण्डली, भोज
पार्लमेन्ट्–(अं० स्त्री०) अंग्रेजी राज्य की शासन व्यवस्था करने वाली महासभा।
पार्सल्–(अं० पु०) बँधी हुई गठरी, पुलिन्दा, डाक से भेजा जाने वाला पुलिन्दा।
पालती–(अं० स्त्री०) जोड़ के पटरे।
पालिश्–(अं० स्त्री०) चिकनाई और चमक,मसाला जिसके पोतने से चमक और चिकनाहट आ जावे।
पासंग–(फ़ा०पु०)तराजू की डाँडी का बराबर न होना, वह बोझ जो तराजू के पल्लों का बोझ बराबर करने के लिये तराजू की जोती में हलके पल्ले की ओर बाँध दिया जाता है।
पास्–(अं० पु०) गमन का अधिकार पत्र, (वि०) पार किया हुआ,

उत्तीर्ण, परीक्षा में सफल, स्वीकृत, प्रचलित।
पासबुक्–(अं०पु०)वह पुस्तक जिसमें बैंक के लेन देन का हिसाब किताब हो।
पिन्–(अं० स्त्री०)कागज़ आदि नत्थी करने की लोहे या पीतलकी छोटी महीन कील।
पिपरमिन्ट्–(अं०पु०)पुदीने की जात का एक पौधा इसमें से निकाला हुआ सत्व है।
पियानो–(अं०पु०)एक प्रकार का बड़ा अंग्रेजी बाजा।
पीर–(फ़ा०वि०) महात्मा, सिद्ध,धूर्त, वृद्ध; बूढ़ा, (फ़ा०पु०) सोमवार का दिन। परिजादा–(फ़ा०पु०)किसी पीर की सन्तान।
पीरी–(फ़ा० स्त्री०) वृद्धावस्था,बुढ़ापा, गुरुवाई।
पील–(फ़ा० पु०) शतरंज का एक मोहरा जिसको ऊँट भी कहते हैं (हि०पु०) कीड़ा।
पुटीन–(अं०पु०)एक प्रकार का मसाला जो छेद दरार आदि के भरने में काम आता है, किवाड़ों के काँच भी इसीसे बैठाये जाते हैं।
पुदीना–(फ़ा० पु०) भूमि पर फैलने वाला एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों में अच्छी सुगन्ध होती है।
पुरजा–(फ़ा० पु०)खण्ड, टुकड़ा,अवयव, अंग,धज्जी,कतरन, पुरजे पुरजे करना–टुकड़े टुकड़े करना; चलता पुरजा–निपुण चतुर।
पुर्तगीज–(अं०वि०)पुर्तगाल देशवासी।
पुल–(फ़ा०पु०) सेतु,मार्ग बातों का पुल बांधना–बहुत बकवाद करना, पुल टूटना–अधिकता होना, टाल लगना
पुलटिस्–(अं० पु०)मोटा ले पजो फोड़े घाव, आदि के पकाने के लिये चढ़ाया जाता है।
पुलिस्–(अं० स्त्री०)प्रजा की रक्षा के लिये तथा शक्ति स्थापन के लिये नियुक्त कर्मचारियों तथा सिपाहियों का वर्ग।
पुली–(अं० स्त्री०) घिरनी, गड़ारी, छोटी पहिया।
पुश्त–(फ़ा० स्त्री०)पृष्ठ, पीठ, पीछा, पीढ़ी। पुश्त दरपुश्त–वंश परंपरा से
पुश्तक–(फ़ा० स्त्री०)दोलत्ती।
पुश्तनामा–(फ़ा०पु०) वंश वृक्ष।
पुश्तवानी–(फ़ा० स्त्री०) वह आड़ी लकड़ी जो किवाड़ के पीछे पल्ले को पुष्ट करने के लिये गड़ी होती है।
पुश्ता–(फ़ा०पु०) पानी की रोग के अथवा दृढ़ता के लिये भीत से लगाकर जमाया हुआ ईंट पत्थर, मिट्टी आदि का ढ़ेर, ढालुवाँ टीला, बाँध पुस्तक की जिल्द के पीछे का चमड़ा, पौने चार मात्राओं का एक ताल जिसमें तीन आघात और एक खाली रहता है।

पुश्ताबंदी–(फ़ा०स्त्री०) पुश्ते की बंधा पुश्ता उठाने का काम।
पुश्ती–(फ़ा०स्त्री०)आश्रय,सहारा,पक्ष
पुश्तैनी–(फ़ा० वि०) कई पुश्तों तक चलने वाला।
पेच–(फ़ा०पु०)घुमाव, चक्कर, लपेट, धूर्तता, पगड़ी की लपेट या फेरा, उलझन, यन्त्र या कल, युक्ति मल्ल युद्ध एक युक्ति, पेंचघुमना–दूसरे के विचार को पलटने का युक्ति करना।
पेचक–(फ़ा०स्त्री०) बटे हुए तागे की लच्छी।
पेचकश–(अं०पु०) वह अस्त्र जिससे वे पेच कसते या खोलते हैं।
पेचदार–(फा० वि०)उलझाने वाला, जिसमें कोई पेंच या कल लगी हो, (पु०)एक प्रकार का कसीदे का काम
पेचवान–(फ़ा०पु०)गुड़गुड़ी में लगाने बड़ी सटक, बड़ा हुक्का।
पेचिश–(फ़ा०स्त्री०)पेट की मरोड़।
पेचीदगी–(फ़ा०स्त्री०)भाव, उलझन।
पेचीदा–(फ़ा० वि०) पेचदार, कठिन, टेढा मेढा, उलझनदार। पेंचीला–(फ़ा०वि०)घुमावफिराव का,कठिन।
पेज–(अं०पु०)पुस्तक का पृष्ठ, पन्ना
पेटेन्ट्–(अं०वि०)किसी आविष्कार के विषय में राज्य द्वारा की हुई रजिस्ट्री जिसके हो जाने से आविष्कार करने वाला स्वयं अधिक लाभ उठा सकता है,तथा अनुकरण करने वाला दण्डनीय होता है।
पेड्–(अं० वि०) जिसका महसूल या किराया दे दिया गया हो, जो चुकता कर दिया हो।
पेन्शन्–(अं० स्त्री०) मासिक अथवा वार्षिक वृत्ति जो किसी व्यक्ति अथवा परिवार के लोगों को उसकी पिछली सेवा के कारण दी जाती है। पेन्शनर–(अं०पु०)पेन्शन पानेवाला व्यक्ति
पेन्सिल–(अं० स्त्री०)लेखनी के आकार की गोल लंबी लकड़ी जिसके भीतर सीसे सुरमें रंगीन खड़िया आदि की सलाई भरी होती है जो कागज पर लिखने के काम में होती है।
पेपर–(अं०पु०) कागज़, प्रतिज्ञापत्र, समाचार पत्र।
पेश–(फ़ा०क्रि०वि०) सन्मुख, सामने आगे, पेश आना–व्यवहार करना, पेश करना–सामने रखना, भेंट करना, दिखलाना, पेश चलना–शक्ति दिखलाना, पेशकश–(फ़ा०पु०) सौगाद, भेंट। पेशकार–(फ़ा०पु०)वह कर्मचारी जो हाकिम के सामने कागज पत्र रखता, है और उसकी आज्ञा लेता है। पेशखेमा–(फ़ा०पु०)सेना का अगला भाग जो आगे चलता है, किसी बात का पूर्व लक्षण सेना की सामग्री जो पहले ही से आगे भेज दी जाती है। पेशगी–(फ़ा० स्त्री०) पुरस्कार, श्रमी आदि का व अंशह

जो काम होने से पहिले दी जाती है अग्रिम, अगौड़ी, अगाऊ। पेशतर–(फ़ा० क्रि० वि०) पूर्व, पहले।
पेशदस्ती–(फ़ा० स्त्री०) अधिकता।
पेशबन्द–(फ़ा०पुं०)चारजामे में लगा हुआ वह दोहरा बन्धन जो घोड़े की गरदन पर से लाकर दूसरी ओर बाँध दिया जाता है। पेशबन्दी–(फा०स्त्री०) पहिले से सोची हुई बचाव की युक्ति, छल, धोखा।
पेशराज–(फ़ा०पुं०) वह श्रमिक जो राज के लिये पत्थर ईंटा आदि ढोकर लाता है।
पेशवा–(फ़ा०पुं०)महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मन्त्रियों की उपाधि,सरदार नेता,अगुआ। पेशवाई–(फ़ा०स्त्री०) अगवानी,
पेशवाज–(फ़ा०स्त्री०)एक प्रकार का घाघरा जिसको रंडियां नाचते समय पहरती है।
पेशा–(फ़ा०पुं०) व्यवसाय, उद्यम।
पेशानी–(फा०स्त्री०) कपाल, ललाट, माथा, भाग्य।
पेशाब–(फ़ा०पुं०) मूत्र, मूत, वीर्य, पेशाब करना–अति तुच्छ समझना, पेशाब से चिराग जलना–बड़ा यशस्वी या प्रतापी होना। पेशाबखाना–(फ़ा०पुं०)पेशाब करने का स्थान।
पेशावार–(फ़ा०पुं०)किसी प्रकार का व्यवसाय करने वाला।
पेशी–(फा०स्त्री०) सामने होने की क्रिया या भाव, किसी अभियोग की सुनवाई।
पेशीनगोई–(फा०स्त्री०)भविष्यवाणी।
पेश्तर–(फ़ा०क्रि०वि०)पूर्व, पहले।
पैकार–(फ़ा०पुं०) छोटा व्यापारी, फुटकर बेंचने वाला, फेरी वाला।
पैगंबर–(फ़ा०पुं०)धर्मप्रवर्तक।
पैगाम–(फ़ा०पुं०)सन्देश, सन्देसा।
पैजार–(फ़ा०पुं०)जूता, पनही,पैजार–जूते से मारपीट।
पैदा–(फ़ा०वि०)प्रगट, उपस्थित,प्रसूत, (स्त्री०)आय।पैदाइश–(फ़ा०स्त्री०) उत्पत्ति, जन्म। पैदाइशी–(फ़ा० वि०) प्रकृतिक, स्वाभाविक।
पैदावार–(फ़ा०स्त्री०) उपज, कृषिफल
पैमाइश–(फ़ा०स्त्री०)नापने की क्रिया या भाव, माप।
पैमाना–(फ़ा०पुं०) मापने का साधन जिससे कोई वस्तु नापी जाय,मानदण्ड
पैरवी–(फ़ा०स्त्री०)आज्ञापालन,किसी बात के अनुकूल प्रयत्न, दौड़ धूप। पैरवीकार–(फ़ा०पुं०) पैरवी करने वाला।
पैरा–(अ०पुं०) लेख का उतना अंश जो एक साथ लिखा जावे।
पैराग्राफ़–(अं०पुं०)देखो पैरा।
पैराशूट–(अं०पुं०) वह बड़ा छाता जिसके सहारे गुब्बारे या वायुयान पर से उतरा जाता है।
पैबंद–(फ़ा०वि०)इष्ट मित्र, संबन्धी कपड़े की चकती या पिगली।
पैबंदी–(फ़ा०वि०)दोगली, वर्णसंकर, कलमी, पैबंद लगाकर उत्पन्न किया हुआ।
पैवस्त–(फ़ा०वि०)समाया हुआ,सोखा हुआ।
पोटास्–(अं०पुं०) शोरा, जवाखार आदि क्षार पदार्थ।
पोर्ट्–(अं०पुं०) अंगूर से बनी हुई एक प्रकार की मदिरा।
पोलिटिकल् एजेन्ट–(अं०पुं०) दूसरे राज्य में नियुक्त किया हुआ राजा का प्रतिनिधि।
पोलो–(अं०पुं०) गेंद का एक अंग्रेजी खेल जो घोड़े पर चढ़कर खेला जाता है।
पोशाक–(फ़ा०स्त्री०)परिधान,पहिरावा
पोशीदगी–(फ़ा०स्त्री०)गुप्ति छिपाव;
पोशीदा–(फ़ा०वि०)गुप्त, छिपा हुआ;
पोस्ट्–(अं०स्त्री०)जगह, स्थान, पद, नौकरी डाकघर; पोस्ट् आफिस–डाकखाना; पोस्ट्कार्ड–डाक द्वारा भेजने का मोटे कागज का टुकड़ा; पोस्ट् मास्टर–डाकघर का बड़ा कर्मचारी;पोस्ट् मैन–चिट्ठी रसां।
पोस्ट मार्टम्–(अं०पुं०)मृत्यु का कारण निश्चित करने के लिये मरने के बाद लाश को चीरफाड़ करके परीक्षा करना।
पोस्टल् गाइड्–(अं०पुं०) डाकघरके नियमों की पुस्तक।
पोस्टेज्–(अं०स्त्री०)डाक द्वारा चिट्ठी पारसल आदि भेजने का कर।
पोस्त–(फ़ा०पुं०) वल्कल छिलका, खाल, चमड़ा, अफीम के पौधे का ढोंढा, पोस्ता। पोस्ता–(फ़ा०पुं०) वह पौधा जिसके ढोंढे, में से अफीम निकाली जाती है। पोस्ती–(फ़ा० पुं०)वह जो नशे के लिये पोस्ते के ढोड़े पीस कर पीता हो, आलसी आदमी, एक प्रकार का कागज का बना हुआ खिलौना जिसकी पेंदी भारी होती है और जो लिटाने पर खड़ा हो जाता है।
पोस्तीन–(फ़ा०पुं०)जानवरों की खाल का बना हुआ कोमल वस्त्र, खाल का बना हुआ कोट जिसके भीतरी ओर रोंवें रहते हैं पुस्तक के जिल्द का भीतरी भाग।
पौडर्–(अं०पुं०) चूर्ण बुकनी, मुख पर लगाने की बुकनी।
प्याज–(फ़ा०पुं०) एक प्रसिद्ध कन्द जो गोल गांठ के आकार का होता है;
प्याजी–(फ़ा०वि०) हलके गुलाबी रंग का।
प्यादा–(फ़ा०पुं०)दूत, हरकारा, शतरंज के खेल में का मोहरा।
प्याला–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का कटोरा भीख माँगने का पात्र।
प्यून–(अं०पुं०)चपरासी हरकारा।
प्रामिसरीनोट–(अं०पुं०) एक प्रकार का सरकारी कागज या ऋणपत्र, हुंडी।
प्रास्पेक्टस्–(अं०पुं०) वह छपा हुआ पत्र जिसमें किसी बड़े कार्य का
प्राइमर–(अं०पुं०) किसी भाषा के वर्णमाला की पुस्तक।
प्राइवेट–(अं०वि०) जो सार्वजनिक न हो, व्यक्तिगत, निजी, गुप्त, छिपा कर रक्खा हुआ; प्राइवेसिकेटरी–किसी बड़े आदमी का निज का मंत्री या सहायक।
प्राक्सी–(अं० स्त्री०) यह व्यक्ति जो किसी दूसरे व्यक्ति के स्थान पर उसका काम करे, प्रतिनिधि।
विस्तृत वर्णत तथा कार्य प्रणाली आदि लिखी होती है।
प्रिन्टर्–(अं०पुं०) किसी मुद्रालय में छापने का काम करने वाला, वह जो छपी हुई पुस्तक आदि की छपाई का उत्तरदायी।
प्रिन्टिङ्–(अं०स्त्री०) छापने काम, प्रिन्टिङ इंक्–टाइप छापने की स्याही,
प्रिन्स्–(अं०पुं०)राजकुमार। प्रिन्स् आव् वेल्स्–इङ्लैंड के सबसे बड़े राजकुमार की पदवी।
प्रिवी कौन्सिल्–(अं०पुं०) इंगलैंड में वहां के राजा को परामर्श देने वाला परिषद् जिसका एक विभाग न्याय विभाग का सर्व प्रधान होता था।
प्रूफ्–(अं०पुं०) प्रमाण, किसी वस्तु का प्रभाव होने से पूरा बचाव, छपने वाली पुस्तक आदि का वह पत्र जो उसके छापने से पहिले अशुद्धता दूर करने के लिए तैयार किया जाता है। प्रेयर–(अं० स्त्री०)स्तुति ईश्वर वन्दना।
प्रेस्–(अं०पुं०) वह यन्त्र जिसमें कोई वस्तु दबाई या किसी जावे, छापने की कल. छापाखाना, प्रेसमैन्–प्रेस पर कागज छापने वाला।
प्रेसिडेन्ट्–(अं०पुं०) सभापति।
प्रेसिडेन्सी–(अं०स्त्री०) सभापति का पद, शासन की सुविधा के लिये ब्रिटिश भारत में प्रदेशों का विभाग,
प्रोग्राम्–(अं०पुं०)कार्यक्रम, कार्यक्रम सूचक पत्र।
प्रोटेस्टेन्ट्–(अं०पुं०)ईसाइयों का एक संप्रदाय।
प्रपोजल्–(अं०पुं०) प्रस्ताव।
प्रोप्राईटर–(अं०पुं०) स्वामी,मालिक।
प्रोफेसर्–(अं०पुं०) विश्वविद्यालय आदि का अध्यापक, किसी विषय का बड़ा पण्डित। प्रोबेशन्–(अं० पुं०) किसी कार्य करने की योग्यता के विषय में जांच। प्रोवेशनरी–(अं० वि०) योग्यता की जांच के संबंध रखने वाला,जो इस होड़ पर नियुक्त किया जावे कि यदि सन्तोषजनक कार्य करेगा तो स्थायी रूप में नियुक्त कर लिया जाय।
प्रोमोशन–(अं०पुं०)किसी पदाधिकारी का अपने पद से ऊंचे पद पर नियुक्त किया जाना।
प्लांचेट्–(अं०पुं०)मेस्मेरिज़िम् की एक प्रकार की पान की आकार की पट्टी जिसके नीचे पहिया होती हैं और इसमे एक पेंसिल लगी होती है।
प्लाट्–(अं०पुं०) ज़मीन का टुकड़ा, षड्यंत्र।
प्लाटफार्म–(हिं०पुं०) चबूतरा।
प्लास्टर्–(अं०पुं०)लेप, पलस्तर।
प्लीडर–(अं०पुं०)वकील, हो।
प्लेग–(अ०पुं०) एक संक्रामक रोग।
प्लेट्–(अं०पुं०)किसी धातु का पत्तर या टुकड़ा।
प्लेटफार्म्–(अं०पुं०)समतल चबूतरा, रेलवे स्टेशन पर बना हुआ ऊंचा चबूतरा, रेलवे स्टेशन पर बना हुआ ऊंचा चबूतरा जिसमे सटकर रेलगाड़ी खड़ी होती है।

फ

फकत–(अं० वि०) बस, केवल,
फकीर–(अं०पुं०) भिक्षुक, भीख मागने वाला, भिखमंगा, निर्धन मनुष्य,ससारत्यागी,साधु, मुसलमान भिक्षुक, सम्प्रदाय।
फखर–(फा०पुं०) गौरव, अभिमान।
फजर–(अं०स्त्री०) प्रातःकाल, सबेरा
फजल–(अं०पुं०) कृपा, अनुग्रह।
फजिर–(हिं०स्त्री०) प्रातःकाल।
फजिल–(हिं०पुं०) देखो फजल।
फजीलत–(अं० स्त्री०) श्रेष्ठता, उत्कृष्टता।
फजीहत–(अ० स्त्री०)दुर्गति, दुर्दशा।
फजूल–(अ०वि०) व्यर्थ, निरर्थक, फजूल खर्च–अपव्यय, निरर्थक व्यय करने वाला, फजूलखर्ची–अपव्यय।
फतवा–(अ०पुं०) वह व्यवस्था जो मुसलमानों के आचार्य या मौलबी मुसलमानी धर्मशास्त्र के अनुसार किसी कर्म के अनुकल होने के विषय में देते हैं।
फतह–(अ०स्त्री०)विजय, जीत, सफलता; फतहमन्द–जिसकी जीत हुई हो। फतहवाह (वि०) विजयी।
फतीलसोज–(फा०पुं०) पीतल या किसी धातु की बनी हुई दीवट।
फतीला–(अ०पुं०)जरदोजी का काम करने वालों की लकड़ी की तीली।
फतूर–(अं०पुं०)दोष, विकार,उपद्रव, हानि, विघ्न, बाधा, फतूरिया–(अ०वि०) उत्पात करने वाला, उपद्रवी।
फतूह–(अ०स्त्री०) विजय, जीत, लूट का माल, वह धन जो लड़ाई जीतने पर प्राप्त हो।

फ़तूही—(अ०स्त्री०) बिना बाँह की कुरती, बंहकटी, सलूका, विजय या लूट का धन।
फ़तेह—(अ०स्त्री०) विजय, जीत।
फ़न—(फ़ा०पुं०) गुण, कला कौशल विद्या, ठगने का ढग।
फना—(अ०स्त्री०) नाश।
फ़रक—(अ०पुं०) दो वस्तुओं के बीच का अन्तर, दूरी, कमी, कसर, पार्थक्य, अलगाव भेद, अन्तर, परायापन।
फ़रजंद,फरजिद—(फ़ा०पुं०)पुत्र, बेटा, लड़का।
फ़रजी—(फ़ा०पुं)शतरंज का एक मोहरा जिसको रानी या बजीर भी कहते हैं (वि०) नकली, बनावटी, कल्पित; फरजीबंद—शतरंज के खेल का वह योग जिसमें फरजी किसी प्यादे के बल पर विपक्ष के बादशाह को हरा देता है।
फ़रद—(अ०स्त्री०) वस्तुओं की सूची आदि जो याद रखने के लिये किसी कागज़ पर अलग लिखी गई हो, एक प्रकार का लक्का कबूतर, एक प्रकार का पहाड़ी पक्षी, वह कविता जिसमें केवल दो पद रहते हैं, रजाई या दुलाई का उपरी पल्ला, एक साथ काम में आने वाले कपड़ों के जोड़ों में से एक कपड़ा। (वि०) अनुपम, बेजोड़।
फ़रमाबरदार—(फ़ा०वि०) आज्ञाकारी,
फ़रमाइश—(फा०स्त्री०)वह आज्ञा जो कोई पदार्थ लाने या बनाने आदि के लिये दी जाय; फरमाइशी—(फा०वि०) अनुशासन पत्र, राजा का आज्ञापत्र।
फ़रमाना—(फ़ा०कि) आज्ञा देना, यह शब्द आदर सूचित करने के लिए प्रयोग किया जाता है।
फ़रयाद—(हिं०स्त्री०)देखो फ़रियाद।
फ़रलांग्—(अं०पुं०)भूमि की लम्बाई की एक अंग्रेजी नाप जो एक मील का आठवां भाग होती है।
फ़रलो—(अं०स्त्री०) एक प्रकार की छुट्टी जो सरकारी नौकरों को आधे वेतन पर मिलती है।
फ़रवरी—(अं०पुं०)अंग्रेजी वर्ष का दूसरा महीना जिसमें तिसरे साल २९ दिन तथा अन्य वर्ष में २८ दिन होते हैं।
फ़रश—(अ०पुं०)बैठने के लिये बिछाने का वस्त्र, बिछावन, समतल भूमि, पत्थर या ईट बिछाकर अथवा गारे चूने से बनाई हुई कोठरी के भीतर की समतल भूमि, छत, गच। फ़रशबंद—(फ़ा०पुं०)वह ऊंचा समतल स्थान जहां फरश बना हो।
फ़रशी—(फा०स्त्री०)पीतल आदि का बना हुआ पात्र जिसपर सटक क़ादि रखकर लोग तमाखू पीते हैं, इस पर रखकर जो हुक्का पिया जाता है।
फ़रहत—(अ०स्त्री०)आनन्द, प्रसन्नता, (हिं०पुं०) समुद्र के किनारे पर होने वाला एक वृक्ष।
फ़राकत—(फ़ा०वि०) विस्तृत, फैला हुआ, लंबा चौड़ा तथा समतल।
फराख—(फ़ा०वि०)विस्तृत, लंबा चौड़ा
फराखी—(फा०स्त्री०)विस्तार, चौड़ाई, संपन्नता।
फरागत—(फ़ा०पु०)मुक्ति, छुटकारा, मल त्याग करना।
फराज—(फ़ा०वि०)ऊंचा।
फरामोश—(फ़ा०वि०) विस्मृत, भूला हुआ, चित्त से गिरा हुआ।
फरार—(अ०वि०)जो भाग गया हो, भागा हुआ।
फरासीस—(फ़ा०पुं०)फ़ान्स देश, इस देश का रहने वाला, एक प्रकार का छींट का कपड़ा।
फरियाद—(फ़ा०पुं०)दु:खित या पीड़ित प्राणियों का परित्राण के लिये चिल्लाना, अभियोग प्रार्थना, विनय, विनती; फरियादी—(फ़ा० वि०) अभियोग करने वाला।
फरिश्ता—(फ़ा०पुं०)मुसलमानी धर्म ग्रन्थों के अनुसार ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञानुसार कोई काम करता है, देवता।
फरीक—(अ०पुं०)प्रतिद्वन्द्वी, पक्षों में से किसी पक्ष का मनुष्य, विरोधी, विपक्षी; फरीकसानी—प्रतिवादी।
फरेब—(फ़ा०पुं०) कपट, धोखा।
फरेंदा—(फ़ा०पुं०)एक प्रकार का तोता
फरेबी—(अं० पु०) कपटी, धोखा देने वाला।
फरो—(फ़ा०वि०)तिरोहित, दबा हुआ
फरोख्त—(फा०स्त्री०)विक्रय, बिक्री।
फ़रोदस्त—(फ़ा०पुं०)एक प्रकार का संकर राग।
फ़र्ज—(फ़ा०पुं०)कर्तव्य कर्म, उत्तर-दायित्व, कल्पना, मान लेना।
फ़र्जी—(फ़ा०वि०)कल्पित, माना हुआ, नाम मात्र का (पुं०) देखो फरजी।
फर्द—(फा०स्त्री०)कागज़,कपड़े आदि का टुकड़ा जो किसी के साथ जुटा लगा हो, शाल आदि का ऊपरी प्याला जो अलग बनता और बिकता है, क़ागज़ का टुकड़ा जिस पर किसी वस्तु का विवरण सूची आदि लिखी जाय, अलग अलग रहने वाला पशु या पक्षी।
फर्माना—(फ़ा०वि०) कहना।
फर्याद—(फा० स्त्री०) अभियोग।
फर्राश—(अं०पुं०)वह भृत्य जो खेमा गाडने, बिछौना बिछाने तथा दीपक जलाने आदि का काम करता है।
फर्राशी—(फ़ा०वि०) फर्श या फ़राश के कामों से संबंध रखने वाला, फ़राश का काम या पद।
फर्लो—(अं०स्त्री०)देखो फरलो।
फर्श—(अ०स्त्री०) बिछावन, बिछौने का कपड़ा।
फर्शी—(अ०स्त्री०) एक प्रकार का बड़ा हुक्का (वि०) फर्श संबधी; फर्शी—सलाम—भूमि पर झुक कर अभिवादन करना।
फलक—(फ़ा०पुं०)अन्तरिक्ष, आकाश; देखो फलाँग।
फ़लक—(अ०पुं०)आकाश, स्वर्ग।
फ़लका—(अं० पु०) छाला • फफोला, जहाज की छत में का द्वार
फलां—(फ़ा०वि०)अमुक, कोई अनिश्चित व्यक्ति।
फलाना—(अ०पुं०)अमुक, कोई अनिश्चित व्यक्ति।
फलीता—(अ०पुं०) वृक्ष की छाल या रेशों को बटकर बनाई हुई रस्सी, बत्ती, पलीता।
फसल—(अ०स्त्री०)ऋतु, समय, काल, खेत की उपज, अन्न की वह उपज जो वर्ष के प्रत्येक अयन में होती है; फसली—(अं० वि०) ऋतु संबंधी, अकबर की चलाई हुई वह संवत् जो ईसवी सन् से ५८३ वर्ष कम है, इसका प्रचार खेती बारी के काम में होता है; हैजा रोग।
फसाद—(फ़ा०पुं०) विद्रोह, बलवा, उपद्रव, उधम, बिगाड़, लड़ाई, झगड़ा, विवाद। फसादी—(फ़ा०वि०) उपद्रवी, लड़का, झगड़ालू, नटखट, पाजी।
फ़स्त,फस्द—(अ०स्त्री०)नस को फाड़ कर शरीर का दूषित रुधिर निकालने की क्रिया; फस्द खुलवाना—नस कटवा कर शरीर का दूषित रुधिर निकलवाना।
फ़स्फोरस—(अं०पुं०)देखो फासफ़रस्।
फ़हम—(अ०स्त्री०)विवेक ज्ञान।
फ़हमाइस—(फ़ा०पुं०)शिक्षा, आज्ञा।
फ़हश—(अ०वि०) अश्लील, फूहड़।
फाइल—(अं०स्त्री०)नत्थी; लोहे का तार जिसमें कागज या चिट्ठियां नत्थी की जाती है, सामयिक पत्रों आदि के कुछ पूरे अंको के समूह।
फ़ाका—(अ०पुं०) उपवास, निराहार रहना; फ़ाकामस्त फाकेमस्त—(फ़ा०वि०)वह जो खाने पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिन्ता न करता हो।
फाखता—(अ० स्त्री०) पंडुक पक्षी।
फाजिल—(अ०वि०) आवश्यकता से अधिक, विद्वान्।
फातिहा—(अ०पुं०)प्रार्थना,वह चढावा जिसको मुसलमान लोग मरे हुए लोगों के नाम पर देते हैं।
फानूस—(फ़ा०पुं०)एक प्रकार की लालटेन, समुद्र के किनारे ऊंचे स्थान पर जो प्रकाश जलाया जाता है, काँच की मुदरी, कमल या गिलास जिसके भीतर मोमबत्तियां जलाई जाती है, भट्ठी।
फायदा—(अ०पुं०)लाभ, अच्छा फल, भला परिमाण, प्रयोजन की सिद्धि, उत्तम प्रभाव;फायदेमंद—(फ़ा०पुं०) उपकारक, लाभदायक।
फायर्—(अं०पुं०) आग बंदूकी गोली का चलना; फायरमैन—अंजन में कोयला झोकने वाला।
फारखती—(अ०स्त्री०)वह कागज़ या लेख जो इस काम का प्रमाण दे कि किसी के पास जो कुछ शेष था वह चुकता हो गया, चुकती।
फारम—(अं०पुं०)रसीद आदि के पत्र जिसमें यह दिखलाया जाता है कि किस स्थान मे कौन सी बात लिखना चाहिये,छापने के बैठाये हुए उतने अक्षर जितने एक टुकड़े कागज पर छापने के लिए पर्याप्त हों, छपाई में एक पूरा कागज का टुकड़ा जो एक बार छापा जाता है।
फारसी—(फा० स्त्री०)फारस देश की भाषा।
फालतू—(फ़०वि०) आवश्यकता से अधिक, जो किसी के काम के लायक न हो, निकम्मा।
फाक्षसई—(फ़ा०वि०) फ़ालसे के रंग का, ललाई लिये हुए हलका ऊदा।
फ़ालसा—(फ़ा०पुं०) एक छोटा वृक्ष, जिसके फल मटर से कुछ बड़े होते हैं और खाने में खटमीसे होते है।
फ़ालिज—(अव्य०पुं०)पक्षाघात रोग, लकवा।
फालदा—(फ़०पुं०)गेहू के निशास्ते से बनाया हुआ एक प्रकार का शर्बत।
फारा—(फ़ा०वि०) प्रकट, ज्ञात।
फास्फरस्—(अं० पुं०) एक अत्यन्त ज्वलन्तशील मूल द्रव्य।
फासला—(फ़ा०पुं०)अन्तर दूरी।
फास्ट—(अ०वि०)शीघ्र चलनेवाला, तेज
फाहिशा—(अ०वि०) पुंश्चली, छिनाल
फिकरा—(अ०पुं०)वाक्य, व्यंगोक्ति।
फिक्र—(अ०स्त्री०) ध्यान, विचार, चिन्ता, सोच, यत्न,उपाय का विचार
फिक्रमन्द—(फ़ा०वि०) चिन्ताग्रस्त।
फिटन्—(अं०स्त्री०)एक प्रकारकी चार पहिये की खुली गाड़ी।
फितना—(अ०पुं०) उपद्रव झगड़ा, एक प्रकार का फूल, एक प्रकार का इत्र।
फितरती—(अ०वि०)चतुर, मायावी,
फितूर—(अ०पुं०) उपद्रव, झगड़ा, न्यूनता, घाटा, विपर्यय, खराबी।
फदवी—(फ़ा०वि०)राज्ञाकारी, स्वामि-भक्त(पुं०) सेवक, दास।
फिरका—(अ०पुं०) जाति, सम्प्रदाय, पंथ, जत्था।
फिरका—(अ० पुं०) जाति, सम्प्रदाय पंथ, जत्था।
फिराक—(अ० पुं०) वियोग, बिछोह, चिन्ता, खटका, खोज, टोह।
फिरार—(अ० पुं०) भागना,चलदेना।

फिरारी–(फ़ा० वि०) भागने वाला, भगेड़ू ।
फिरिश्ता–(फ़ा०पुं०) देवदूत ।
फिहरिस्त–(फ़ा० स्त्री०) तालिका, सूची, बीजक ।
फी–(अ० स्त्री०) प्रत्येक, हर एक ।
फ़ीता–(फ़ा०पुं०) पतला किनारा या कोर, नेवार की पतली धज्जी सूत आदि जो किसी वस्तु को बांधने के काम में आता है ।
फीरनी–(फ़ा० स्त्री०) एक प्रकार की खीर ।
फीरोजा–(फ़ा० पुं०)एक प्रकार का वहुमूल्य पत्थर जो हरापन लिये नीले रंग का होता है ।
फीरोजी–(फ़ा० वि०) हरापन लिये नीले रंग का ।
फील–(फ़ा०पुं०) हाथी; फीलखाना–(फ़ा० पुं०) हस्तिशाला, हाथी बाँधने का स्थान ; फलपा–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार का रोग जिसमे पैर फूल आते हैं ; फीलपाया–(फ़ा० पुं०) ईंटे का बना हुआ मोटा खंभा जिसपर छत ठहराई जाती है ; फीलवान–(फ़ा० पुं०) हाथीवान ।
फील्ड्–(अं० पुं०) खेत, मैदान, गेंद खेलने का मैदान ।
फीस–(अं० स्त्री०) शुल्क, कर ।
फुट्–(अं०पुं०) एक अंग्रेजी मान जो बारह इञ्च या छत्तीस जव के बराबर होता है ।
फुटनोट्–(अं०स्त्री०) वह टिप्पणी जो किसी लेख या पुस्तक के पृष्ठ में नीचे की ओर दी जाती है ।
फुटपाथ–(अं०पुं०)पगडंडी, सड़क के दोनों ओर की पटरी ।
फुटबाल–(अं०पुं०)पैर से ठोकर मार कर खेलने का वड़ा गेंद ।
फुरसत–(अं०स्त्री०)अवकास, कवसर, समय, छुट्टी, बीमारी से छुटकारा ।
फुर्सत–(अं०स्त्री०) देखो फुरसत ।
फुलिसकेप्–(अं०पुं०) एक प्रकार का चिकना कागज जो १८ इच लंबा और १३ इंच चौड़ा होता है ।
फेल्–(अं०पुं०) किसी कार्य में असफलता ।
फेलो–(अं०पुं०) सभासद, सभ्य ।
फेल्ट्–(अं०पुं०) जमाया हुआ ऊन ।
फेस्–(अं०पुं०) चेहरा, मख, घड़ी का सामने का भाग जिस पर अङ्क रहते है, टाइप का ऊपरी भाग जिसमें अक्षर उभड़े हुए ढले होते हैं
फैन्सी–(अं०स्त्री०) देखने में सुन्दर, रूप रंग में मनोहर, निखौवा, तड़क भड़क ।
फैक्टरी–(अं० स्त्री०) कार्यालय ।
फैज–(अ०पुं०) वृद्धि, लाभ, परिमाण फल; फैदम्–(अं०पुं०) गहराई की छ फुट की नाप ।
फ़ैज–(अ०पुं०)वृद्धि,लाभ, परिणाम, फल ।
फ़ैदम–(अं०पुं०) गहराई की छ फुट की नाप ।
फैर–(अं०स्त्री०) बंदूक तोप इत्यादि का दगना ।
फैलसूफ़–(फ़ा०वि०) फ़जूल खर्च, अपव्ययी ।
फलसूफ़ी–(फ़ा० स्त्री०) अपव्यय ।
फैशन–(अं०पुं०)चाल,ढंग, रीति, प्रथा
फैसला–(अ० पुं०) इस बात का निबटारा कि दो पक्षों में से किसीकी बात ठीक है, किसी न्यायालय का निर्णय ।
फोकस्–(अं०पुं०) वह बिन्दु जहाँ पर प्रकाश की छितराई हुई किरणें एकत्रित होती हैं, फोटो लेती समय लेन्स द्वारा आई हुई वह छाया चित्रपट पर पड़ती है ।
फोटो–(अं०पुं०) छायाचित्र; फोटोग्राफ्–फोटो के यन्त्र से उतारा हुआ चित्र । फोटोग्राफर–फोटो के चित्र उतारने वाला । फोटोग्राफी–फोटो के यन्त्र द्वारा चित्र उतारने की कला ।
फोता–(फ़ा०पुं०) पटुका, कमरबन्द, पगड़ी, भूमि की लगान या पोत, कोष, थैली, अण्डकोष ।
फोतेदार–(फा० पुं०) कोषाध्यक्ष, तहसीलदार, रोकड़िया ।
फोनोग्राफ्–(अं०पुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसमें गाये हुए राग, कही हुई बाते बाजे आदि के स्वर चूड़ियों में भरे जाते हैं और ज्यों के त्यों सुनाये जाते हैं ।
फोरमैन्–(अं०पुं०)कार्यालय में काम करने वालों का जमादार ।
फोलियो–(अं०पुं०) कागज के पूरे टुकड़े का आधा भाग ।
फौज–(अ०स्त्री०) सेना,लश्कर, झुण्ड जत्था । फौजदार–(फ़ा०पुं०) सेना का प्रधान सेनापति ।
फौजदारी–(फा० स्त्री०)लड़ाई झगड़ा, मारपीट, दण्ड नियम, वह कार्यालय जहां ऐसे अभियोगों का निर्णय किया जाता है जिनमें अपराध किये हुये व्यक्ति को दण्ड मिलता है ।
फौजी–(फ़ा०वि०) सैनिक ।
फौत–(अं०वि०) नष्ट, मृत, मरा हुआ ।
फौती–(वि०) मृत्यु संबंधी ।
फौरन–(अ०क्रि०वि०)तत्काल,झटपट
फौलाद–(फ़ा०पुं०) शस्त्र बनाने का उत्तम कड़ा लोहा । फौलादी–(फ़ा० वि०) फौलाद का बना हुआ, दृढ़ (स्त्री०) भाले की लकड़ी ।
फ्राक्–(अपुं०) बच्चों के पहरने का एक प्रकार का लंबा कुरता ।
फ्री–(अं०वि०) स्वतन्त्र, बिना कर का; फ्रीट्रेड–वह वाणिज्य जिसमें माल पर किसी प्रकार का कर न लगे ।
फ्रीमेसन्–(अं०पुं०)फ्रीमेसनरी नामक गुप्त संघ, सदस्य ।
फ्रेन्च्–(अं०वि०) फ्रान्स देश का ।
फ्रेम–(अं०पुं०)चित्र आदिका चौखटा
फ्लूट–(अं०पुं०) बंसी की तरह का एक अंग्रेज़ी बाजा ।

ब

बंक–(अं० पुं०) वह कार्यालय या संस्था जो अपने यहां लोगों का रुपया जमा करती और सूद देती है अथवा सूद पर ऋण देती है, लोगों की हुंडियां लेती और भेजतीहै तथा सब प्रकार का महाजनी का काम करती है ।
बंडल्–(अं०पुं०)कागज, कपड़े आदि की बँधो ई छोटी गठरी, पुलिन्दा ।
बंद–(फ़ा०पुं०)किसी वस्तु को बाँधने की पट्टी, पानी रोकने की मेड़, शरीरके अंगों का कोई जोड़,बन्धन, कागज का लंबा सकरा टुकड़ा, कपड़े की महीन चीर जो चोली अंगरखे आदि में सलूके बांधने के लिये सिली होती है, उर्दू की कविता का पद या टुकड़ा (फ़ा०वि०) जमा हुआ, जो विधा हुआ हो, इस प्रकार से घिरा हुआ कि उसके भीतर कोई जा न सके, ढका हुआ, ताला बन्द किया हुआ, जो चारो ओर से घिरा हो, जिसका मुंह या अगला भाग खुला न हो ।
बंदगी–(फ़ा०स्त्री०)ईश्वर की आराधना, ईश्वर की भक्ति पूर्वक बन्दना, सेवा, प्रणाम ।
बंदरगाह–(फ़ा०पुं०) बंदर, समुद्र के किनारे पर का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं ।
बंदा–(फ़ा० पुं०) सेवक दास; शिष्ट और विनीत भाषा में यह शब्द उत्तम पुरुष के लिये प्रयोग होता है ।
बन्दानी–(फ़ा०पुं०) तोप चलानेवाला एक प्रकार का गुलाबी रंग ।
बन्दिश–(फा०स्त्री०)बांधने की क्रिया या भाव, रचना, योजना, संबंध, षडयन्त्र ।
बन्दी(फ़ा०पुं०)क़ैदी;(स्त्री०) दासी, चेरी ।
बंदीखाना–(फ़ा० पुं०) कैदखाना, जेलखाना ।
बंदूक–(फ़ा० स्त्री०) धातु का बना हुआ नली के रूप का एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें सीसे की गोली रख कर बारूद से चलाई जाती है;
बंदूकची–(फ़ा०पुं०) बंदूक चलाने वाला सिपाही ।
बंदेरी–(फा० स्त्री०) दासी, चेरी ।
बंदोबस्त–(फा० स्त्री०) प्रबन्ध, वह विभाग जो खेतों आदि की नाप कर उनका कर निर्धारित करता है, खेती के लिये भूमि की नाप करके उसका कर स्थिर करना ।
बकतर–(फा०पुं०) लोहे की कड़ियों का बना हुआ जाल, लड़ाई में पहरने का एक प्रकार का कवच ।
बकर–कसाब–(फा० पुं०) वह पुरुष जो बकरों का मांस बेचता हो ।
बकलस–(अं०पुं०) लोहे, पीतल आदि का बना हुआ अँकुसीदार छल्ला जो किसी बंधन के दोनों छोरों के मिलाये रखने या कसने के काम में लाया जाता है ।
बकाया–(अ० पुं०) शेष, बचा हुआ
बक्कम–(अ० पुं०) एक पेड़ जो छोटा और नुकीला होता है, इसकी लकड़ी पुष्ट होती है, इसकी लकड़ी, के छिलके और फलों से लाल रंग निकाला जाता है ।
बक्काल–(अ०पुं०) बनियाँ ।
बखील–(अ० वि०) कृपण, कजूस ।
बखूबी–(फा० क्रि०वि०) पूर्ण रूप से भलीभाँति, अच्छी तरह से ।
बख्त–(फ़ा०पुं०) भाग्य ।
बख्तर–(फ़ा० पुं०) बकतर, सन्नाह।
बख्शना–(फ़ा०क्रि०) देना, त्यागना, छोड़ना, क्षमा करना ।
बख्शवाना–(हिं० क्रि०) किसी को बख्शने में प्रवृत्त करना ; बख्शिश, बख्शीश–(फ़ा० स्त्री०) उदारता, दानशीलता, दान क्षमा ।
बगल–(फा० स्त्री०) बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, काँख, समीप का स्थान; अगरखे या कुरते में कंधे के जोड़ के नीचे लगाया हुआ कपड़े का टुकड़ा, इधर उधर का या किनारे का भाग, पार्श्व भाग ; बगल में दबाना–अपने अधिकार में रखना ; बगलें बजाना–बड़ा आनन्द मनाना : बगलें झांकना–भागने का प्रयत्न करना ।
बगावत–(अ० स्त्री०) विद्रोह, बलवा, राजद्रोह ।
बगैर–(अ०अव्य०) विना, सिवाय ।
बच्चा–(फ़ा० पुं०) किसी प्राणी का नवजात शिशु, बालक, लड़का; बच्चों का खेल–सरल कार्य; (वि०) अनभिज्ञ, अनजान ; बच्चाकश–जो बहुत से बच्चे जनती हो ; बच्चादानी–गर्भाशय ।
बजट्–(अं० स्त्री०) आगामी वर्ष या मास के लिये होनेवाले आय व्यय का लेखा, जो पहिले से तैयार किया जाता है ।
बजा–(फ़ा०वि०) उचित, ठीक ; बजालाना–किसी कार्यको पूरा करना।
बजाज–(अं०पुं०)कपड़े का व्यापारी, कपड़ा बेंचने वाला ; बजाजा–(फ़ा०वि०)कपड़ा बिकने का स्थान, बजाजों का बाजार ; बजाजी–(फा० स्त्री०) कपड़ा बेंचने का व्यापार, बजाज का काम, बजाज की दूकान

का सामान ।
बजाय–(फा०अव्य०) सिवाय ।
बजुल्ला–(फ़ा० पु०) बांह पर पहरन का एक गहना, विजायठ ।
बटन–(अं०पु०) धातु आदि की बनी हुई चिपटी गोल घुंडी जो पहरने के वस्त्रों में सिली जाती है ।
बतौर–(अ०क्रि०वि०) रीति से, सदृश, तरह पर ।
बद–(फा०स्त्री०) जांघ पर की गिलटी, बाघी चौपायों की एक छूत की बीमारी, नीच मनुष्य, पलत्ता, (वि०) बुरा, निकृष्ट ; **बदअमली**–(फ़ा० स्त्री०) राज्य में अशान्ति, हलचल, बुरा प्रबन्ध ; **बदइन्तज़ामी**–(फ़ा० स्त्री०) अव्यवस्था, बुरा प्रबंध ; **बदकारी**–(फा० स्त्री०) कुकर्म, व्यभिचार ; **बदकिस्मत**–(फा०वि०) मन्दभाग्य, अभागा ; **बदखत**–(फ़ा० पु०) बुरा अक्षर, बुरा लेख, (वि०) बुरे अक्षर लिखने वाला ; **बदगुमान**–(फ़ा०वि०) सन्देह की दृष्टि से देखने वाला ; **बदगुमानी**–(फा० स्त्री०) मिथ्या सन्देह ; **बदगोई**–(फा०स्त्री०) निन्दा, चुगली ; **बदचलन**–(फ़ा० वि०) बुरे आचरण का, कुकर्मी ; **बदचलनी**–(फा० स्त्री०) बदचलन होने की क्रिया या भाव, व्यभिचार ; **बदजवान**–(फ़ा० वि०) कटुभाषी, गाली गलौज करने वाला; **बदजात**–(फ़ा०वि०) नीच, ओछा, खोटा ; **बदतमीज**–(फ़ा० वि०) अशिष्ट, गँवार ; **बदतर**–(फ़ा० वि०) किसी की अपेक्षा बुरा; **बददियानती**–(फा० स्त्री०) विश्वासघात, **बददुआ**–(फा० स्त्री०) शब्दों से प्रगट की हुई अहित कामना, शाप ;**बदन**–(फ़ा० पु०)शरीर, देह; **बदनतौल**–**बदनिकाल**–(फा०स्त्री०)मलखंभ का एक व्यायाम ; **बदनसीब**–(फ़ा० वि०) बुरे भाग्य का, अभागा; **बदनसीबी**–(फा० स्त्री०) दुर्भाग्य ।
बदनाम–(फ़ा०वि०)कलंकित, जिसकी निन्दा या दुर्नाम होता हो ; **बदनामी**–(फ़ा० स्त्री०) अपकीर्ति, लोकनिन्दा ।
बदनीयत–(फ़ा०वि०) जिसका अभिप्राय बुरा हो, जिसके मन में धोखा देने की इच्छा हो ; **बदनीयती**–(फा० स्त्री०) बेईमानी ।
बदनुमा–(फ़ा० वि०) कुरूप, भद्दा ।
बदपरहेज–(फ़ा०वि०) कुपथ्य करने वाला, जो खाने पीने में संयम न रखता हो ; **बदपरहेजी**–(फ़ा० स्त्री०) कुपथ्य, खाने पीने में असंयम ।
बदबख्त–(फ़ा०वि०) अभागा ।
बदबू–(फ़ा० स्त्री०) बुरी गन्ध, दुर्गन्ध ; **बदबूदार**–दुर्गन्धयुक्त ।
बदमज़ा–(फ़ा०वि०) बुरे स्वाद का, आनन्द रहित ।
बदमस्त–(फ़ा० वि०) कामोन्मत्त; **बदमस्ती**–(फ़ा० स्त्री०) उन्मत्तता, मतवालापन लंपटता ।
बदमाश–(फ़ा० वि०) दुर्वृत्त, दुष्ट, खोटा, दुराचारी, बदचलन ।
बदमाशी–(फ़ा० स्त्री०) नीचता, दुष्टता, खोटाई, बुरी वृत्ति, व्यभिचार, पाजीपन ।
बदमिज़ाज–(फा०वि०) बुरे स्वभाव का, चिड़चिड़ा ; **बदमिज़ाजी**–(फा० स्त्री०) चिड़चिड़ापन ।
बदरंग–(फ़ा० वि०) बुरे रंग का, जिसका रंग अच्छा न हो, जिसका रंग भष्ट हो गया हो, ताश के खेल में रंग दाँव पर दूसरे रंग का ताश फेंकना ; **बदरंगी**–(फा० स्त्री०) रंग का फीकापन या भद्दापन ।
बदर–(फा०वि०) बाहर ।
बदरनबीसी–(फा० स्त्री०) हिसाब किताब की जाँच ।
बदराह–(फ़ा०वि०) कुमार्गी, दुष्ट, बुरे मार्ग पर चलने वाला ।
बदरून–(फ़ा०पु०) पत्थर की जाली पर एक प्रकार की नक्काशी ।
बदल–(अ० पु०) परिवर्तन, हेरफेर, प्रतीकार, पलटा ।
बदलगाम–(फ़ा० वि०) मूंहज़ोर, जिसको भला बुरा कहने में कुछ संकोच नहीं होता ।
बदशकल–(फ़ा० वि०) कुरूप, भद्दा, **बदसलूकी**–(फ़ा० स्त्री०) अशिष्ट व्यवहार, अपकार ।
बदसूरत–(फ़ा० वि०) भद्दी सूरत का, कुरूप ।
बदस्तूर–(फ़ा०क्रि०वि०) ज्यों का त्यों, जैसे का तैसा ।
बदहज़मी–(फा०स्त्री०) अजीर्ण, अपच, अन्न का ठीक पाचन न होना ।
बदहवास–(फ़ा०वि०) अचेत, विकल, व्याकुल, श्रान्त, शिथिल ।
बदी–(फ़ा० स्त्री०) अपकार, बुराई ।
बदौलत–(फ़ा०क्रि० वि०) कृपा से, कारण से, सबब से, ओर से ।
बधना–(फ़ा०पु०) मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा, चूड़ी बनाने वाले का एक अस्त्र ।
बनफ़शई–(फ़ा० वि०) बनफ़शे के रंग का ।
बनफ़शा–(फ़ा०पु०) एक प्रकार का छोटा पहाड़ी पौधा जिसके फूल, पत्तियां और जड़ औषधियों में प्रयोग होती हैं ।
बनाम–(फ़ा०अव्य०) किसी के प्रति, नाम पर या नाम से, वादी के नाम के पीछे और प्रतिवादी के नाम के पहले रक्खा जाता है ।
बनिस्बत–(फ़ा०अव्य०) अपेक्षा में ।
बपतिस्मा–(अं० पु०) ईसाई संप्रदाय का वह संस्कार जो किसी व्यक्ति को ईसाई बनाने के समय किया जाता है ।
बफ़ारा–(अ० पु०) जल में औषधि औटा कर उसके भाफ से शरीर के किसी अंग को सेकने की क्रिया, वह औषधि जिसकी भाफ से ऐसी सेक की जावे ।
बबर–(फा० पु०) बर्बरी देश का शेर, बड़ा सिंह, एक प्रकार का मोटा कम्बल जिस पर धारियां बनी होती हैं ।
बम–(अं० पु०) विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का गोला जो गिरने पर बड़े वेग से फटता है ।
बमुकाबला–(फ़ा०क्रि०वि०) विरुद्ध ।
बमूजिब–(फ़ा० क्रि०वि०) अनुसार ।
बयान–(फा० पु०) वर्णन, चर्चा, विवरण, वृत्तान्त ।
बयाबान–(फ़ा०पु०) जङ्गल, उजाड़ स्थान ।
बर–(फ़ा०अव्य०) ऊपर (फ़ा०वि०) श्रेष्ठ, पूर्ण, पूरा (फ़ा० पु०) एक प्रकार का कीड़ा जिसको खाने से पशु मर जाते हैं ।
बरकंदाज–(फ़ा० पु०) वह सिपाही या चौकीदार जिसके पास बड़ी लाठी रहती हो, रक्षक, तोड़ेदार, बंदुक लेकर चलने वाला सिपाही ।
बरकत–(अ०स्त्री०) अधिकता, बढ़ती, लाभ, समाप्ति, अन्त, एक की संख्या, प्रसाद, कृपा, धन, वह बचा हुआ धन जो इस विचार से छोड़ दिया जाता है कि इसमें कुछ और वृद्धि हो ।
बरकती–(अ० वि०) कृपासंबंधी ।
बरकदम–(फा० स्त्री०) एक प्रकार की चटनी (अव्य०) तुरत ।
बरकरार–(फ़ा० वि०) स्थिर, उपस्थित ।
बरखास्त–(फ़ा० वि०) नौकरी से हटाया हुआ, सभा आदि का विसर्जन होना, जिसकी बैठक समाप्त हो गई हो ।
बरखिलाफ–(फ़ा० क्रि० वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध ।
बरग–(फ़ा० पु०) पत्र, पत्ता ।
बरजबान–(फ़ा० वि०) कण्ठस्थ ।
बरतर–(फा०वि०) श्रेष्ठतर अधिक; अच्छा ।
बरतरफ़–(फ़ा० वि०) ओर, किनारे, अलग, नौकरी से अलग किया हुआ।
बरदाफरोशी–(फा०स्त्री०) दास बेचने का काम ।
बरदार–(फ़ा० वि०) किसी पदार्थ को ढोने वाला, पालन करने वाला, **बरदाश्त**–(फा० स्त्री०) सहन करने की क्रिया या भाव, सहन ।
बरनर–(अं० पु०) लम्प का ऊपरी भाग जिसमें बत्ती लगाई जाती है ।
बरपा–(फ़ा० वि०) खड़ा हुआ, उठा हुआ, इस शब्द का प्रयोग प्रायः झगड़ा, या अशुभ बातों के लिये किया जाता है ।
बरफ़ी–(फा० स्त्री०) जमाकर बनाई हुई कोई चौकोर मिठाई; **बरफीला**–(वि०) हिमयुक्त ।
बरबाद–(फ़ा० वि०) नष्ट, चौपट, व्यर्थ, व्यय किया हुआ ।
बरबादी–(फा० स्त्री०) नाश ।
बरहम–(फ़ा० वि०) उत्तेजित, क्रुद्ध, भड़का हुआ ।
बरांडी–(अं० स्त्री०) एक प्रकार की विलायती मदिरा ।
बराबर–(फ़ा० वि०) मान, संख्या, महत्व, मूल्य आदि के विचार से समान, तुल्य, समान पद का, ठीक, जैसा चाहिये वैसा, समतल, जो ऊँचा नीचा न हो, (क्रि० वि०) सर्वदा, निरन्तर, एक साथ एक पंक्ति में; **बराबर करना**–अन्त करना, समाप्त करना ।
बराबरी–(फ़ा०स्त्री०) समानता, तुल्यता, सादृश्य, सामना ।
बरामद–(फ़ा०वि०) जो बाहर निकल आया हो, बाहर आया हुआ, चोरी गई हुई या खोई हुई वस्तु जो कहीं से खोजकर निकाली जावे (स्त्री०) निकासी, आय, वह भूमि जो नदी के हट जाने से निकल आई हो ।
बरामदा–(फ़ा० पु०) घर की सीमा से कुछ बाहर निकला हुआ तथा ढँपा हुआ लंबा भाग, घर के आगे का छाया हुआ तथा तीन ओर से खुला हुआ स्थान, बारजा, ओसारा,
बराय–(फ़ा०अव्य०) निमित्त, वास्ते, लिये
बराह–(फ़ा० क्रि०वि०) द्वारा, उसी के तौर पर ।
बर्क–(अ०स्त्री०) विद्युत्, बिजली, (वि०) तीव्र, चतुर, अच्छे प्रकार से अभ्यस्त, तुरत उपस्थित होनेवाला
बर्फ–(फ़ा० स्त्री०) हिम, जमा हुआ जल, यन्त्रों की सहायता से अथवा कृत्रिम रीति से जमाया हुआ पानी जिससे गरमी के दिनों में लोग पीने का पानी ठंढा करते हैं, कृत्रिम रीति से जमाया हुआ दूध, फलों का रस आदि जो गरमी के दिनों में खाने के काम में आता है ।
बर्फिस्तान–(फ़ा० पु०) बर्फ का मैदान या पहाड़ ।
बर्राक़–(अ०वि०) धवल, चमकीला, जगमगाता हुआ, तेज़, वेगयुक्त, चतुर, तीव्र, अच्छी तरह से अभ्यास किया हुआ ।
बलंद–(फ़ा० वि०) ऊंचा ।
बलग़म–(फ़ा० पु०) श्लेष्मा, कफ़ ।
बलवा–(फ़ा० पु०) विद्रोह, विप्लव, दंगा; **बलवाई**–(फ़ा०वि०) विद्रोही,

उपद्रवी, कल वाला।
बला-(अ०स्त्री०) दुःख,कष्ट,आपत्ति, व्याधि, रोग, भूत, प्रेत की बाधा।
बलूत-(फ़ा० पुं०) ठंढे देश में होने वाला माजूफल की जाति का एक वृक्ष।
बल्कि-(फा०अव्य०) अन्यथा, इसके विरुद्ध ऐसा न हो कि, अच्छा।
बल्लमटेर-(हि० पुं०) स्वयसेवक, वह मनुष्य जो अपनी इच्छा से सेना में भरती होता है।
बवासीर-(अ० स्त्री०) आर्श रोग, गुदा में मस्सा निकल आने का रोग
बस्-(फ़ा० वि०) पर्याप्त, भरपूर, बहुत, (अव्य०) पर्याप्त, केवल।
बसर-(फ़ा० पुं०) कालक्षेप निर्वाह।
बस्ट्-(अं०पुं०) मूर्ति या चित्र में मुख तथा छाती के ऊपर के भाग का रचना।
बस्ता-(फ़ा० पुं०) कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें कागज, के मुट्ठे, पुस्तक, बही खाते आदि बांधकर रक्ख जाते है।
बस्तार-(फ़ा० पुं०) एक में बंधी हुई अनेक वस्तुओं का समूह, पुलिंदा।
बहरी-(अं० स्त्री०) बाज़ पक्षी के आकार की परन्तु इससे कुछ छोटी एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।
बहस-(अ० स्त्री०) खण्डन मण्डन की विधि, विवाद, झगड़ा,होड़।
बहादुर-(फ़ा० पुं०) उत्साही, वीर, साहसी, शूरवीर, पराक्रमी।
बहादुरी-(फ़ा०स्त्री०) वीरता, शूरता।
बहाना-(फ़ा० पुं०) किसी बात से बचने के लिये अथवा अपना आशय सिद्ध करनेके लिये झूठ कहना, हीला हवाला, प्रसङ्ग, निमित्त, वह बात जिसकी ओट में सच्ची बात छिपाई जाय।
बहार-(फ़ा०स्त्री०) फूलों के खिलाने का काल, वसन्त ऋतु, यौवन का विकास, शोभा, सौन्दर्य, प्रफुल्लता, आनन्द, नारंगी का फूल, एक रागिणी का नाम, कौतुक।
बहारगुजरी-(फ़ा० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।
बहाल-(फ़ा० वि०) पूर्ववत्, ज्यों का त्यों, स्वस्थ, आरोग्य, प्रसन्न।
बहाली-(फ़ा० स्त्री०) पुनर्नियुक्ति, फिर से उसी स्थान पर नियुक्ति, धोखा देने की बात, बहाना।
बांग-(फ़ा०स्त्री०) शब्द, चिल्लाहट, पुकार, वह ऊँचा शब्द जो नमाज का समय सूचित करने के लिये मुल्ला मसजिद में करता है, प्रात: काल का मुरगे का बोलने का शब्द।
बांद-(फ़ा० पुं०) सेवक, दास।
बाइस-(फ़ा० पुं०) कारण।
बाइसिकिल्-(अं०स्त्री०) मनुष्य के पैर से चलाने की एक प्रसिद्ध गाड़ी जिसमें दो पहिया आगे पीछे होती हैं
बाकला-(अ० पुं०) एक प्रकार की बड़ी मटर जिसकी कलियों की तरकारी बनाई जाती है, एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्ते रेशम के कीड़ों को खिलाये जाते हैं।
बाक़ी-(अ० वि०) अवशिष्ट, शेष, बचा हुआ, गणित में एक संख्या में से दूसरी को घटाने की विधि, घटाने के बाद बची हुई संख्या, (अव्य०) परन्तु, लेकिन, (स्त्री०) एक प्रकार का धान।
बाग-(फ़ा० पुं०) वाटिका, उपवन, बगीचा, घोड़े की लगाम; बाग्-मोड़ना-किसी ओर प्रवृत्त करना या घुमाना।
बागवान-(फ़ा० पुं०) बाग की रखवाली तथा प्रबंध करने वाला, माली;
बागवानी-(फा० स्त्री०) माली का पद या काम।
बागा-(फ़ा० पुं०) पुराने समय का अंगे की तरह का घुटने तक लंबा पहरावा, जामा।
बाग़ी-(अ०पुं०) राजद्रोही, बलवाई
बागीचा-(फ़ा० पुं०)उपवन,बगीचा,
बाज-(फ़ा०पुं०)एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी, श्येन पक्षी, एक प्रकार का बगला, तीर में लगा हुआ पर, (फ़ा० प्रत्यय) जो शब्दों के अन्त में लगने से खेलने, करने, शौक रखने वाले आदि का अर्थ बतलाता है यथा-दगाबाज, नशेबाज आदि (फ़ा० वि०) वंचित, रहित (क्रि० वि०) बिना; बाज आना-रहित होना, दूर होना; बाज करना-मना करना, रोकना; बाज रखना-मना करना।
बाज-(अ० वि०) कोई कोई, कुछ।
बाजदावा-(फ़ा० पुं०) अपने अधिकारों का त्याग।
बाजाप्ता-(फ़ा०क्रि०वि०) नियम के अनुसार(वि०)जो नियमानुकूल हो।
बाजार-(फ़ा०पुं०) वह स्थान जहां पर तरह तरह को पदार्थों की दूकान हो, हाठ, पैठ, वह स्थान जहां पर नियत समय पर दूकानें लगती हैं; बाजार करना-बाजार में पदार्थों को मोल लेने के लिये जाना; बाजार गर्म होना-हाट में ग्राहकों की अथवा बिकाऊ पदार्थों का अधिकता होना, अच्छी तरह से काम चलना; बाजार तेज होना-पदार्थों का महंगा होना; बाजार उतरना (मन्दा होना)-पदार्थों का सस्ता होना, दाम घट जाना।
बाजारी-(फ़ा० वि०) हाट संबंधी, सामान्य, अशिष्ट, इधर उधर घूमने वाला, मर्यादा रहित।
बाजी-(फ़ा० स्त्री०) दांव, बदान, खेल में प्रत्येक खिलाड़ी का खेलने का समय जो क्रम मे एक दूसरे के बाद आता है, ऐसी दांव जिसमें हार जीत होने पर कुछ धन का भी लेनदेन होता हो; बाजी मारना-दांव जीतना; बाजी ले जाना-बड़ा या श्रेष्ठ ठहरना।
बाजीगर-(फा० पुं०)एन्द्रजालिक, जादूगर।
बाजु-(फ़ा०अव्य०) बिना, बगैर, अतिरिक्त।
बाजू-(फा०पुं०) भुजा, बाहु, बांह पर का गोदना,वह जो सर्वदा सहायता देता हो, बांह पर पहरने का एक आभूषण, चिड़िया का डैना सेना का किसी ओर का पक्ष।
बाजूबंद-(फ़ा०पुं०) बांह पर पहरने का एक प्रकार का गहना।
बाड्किन्-(अं०पुं०) लकड़ी का मूठ लगा हुआ एक प्रकार का सूजा
वाडी-(अं०स्त्री०) स्त्रियों के पहरने की एक प्रकार की अंगरेजी ढंग की कुरती।
बाडीगाड्-(अं०पुं०) शरीर रक्षक, राजा महाराजों के साथ उनके शरीर की रक्षा के लिये रहने वाला थोड़े से सैनिकों का दल, इस प्रकार के सैनिकों में से एक सिपाही।
बाद-(फ़ा०अव्य०)पश्चात्,पीछे(वि०) अलग किया हुआ, छोड़ा हुआ, (पुं०) दस्तूरी अतिरिक्त, सिवाय, असली दाम से अधिक दाम जो व्यापारी माल पर लिख देते हैं और दाम बताते समय उसको घटा देते हैं।
बादनुमा-(फ़ा०पुं०) वायु की शिक्षा सूचित करने वाला यन्त्र,गवन प्रकाश
बादबान-(फ़ा० पुं०) पाल।
बादशाह-(फ़ा०पुं०) राजा, शासक, श्रेष्ठ पुरुष, मनमाना करने वाला, स्वतन्त्र व्यक्ति, ताश का वह पत्ता जिस पर चित्र बना रहता है, शतरंज का सबसे बड़ा मुहरा। बादशाहजादा-(फ़ा०पुं०) राजकुमार।
बादशाहजादी-(फ़ा०स्त्री०)राजकुमारी
बादशाहत-(फ़ा०स्त्री०)शासन,राज्य
बादी-(फ़ा० वि०) वायु विकार सम्बन्धी, वायु सम्बन्धी, वायु का विकार उत्पन्न करने वाला, (स्त्री०) शरीर में की वायु।
बाफ़्ता-(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसपर कलाबत्तू या रेशम की बूटियाँ बनी रहती हैं।
बाब-(अ० पुं०) पुस्तक का एक विभाग, परिच्छेद, विषय,अभिप्राय, आशय।
बाबत-(अ० स्त्री०) विषय, संबंध।
बाबरची-(पुं०) रसोइयादार।
बाबूना-(फ़ा०पुं०) एक छोटा पौधा जिसके फूलों का तेल औषधि के काम में आता है।
बाम-(फ़ा० पुं०) अटारी, कोठा, मकान के ऊपर की छत, साढ़े तीन हाथ का एक मान, पुरसा, कबूतरों के बैठने का ऊंचा अड्डा।
बायकाट्-(अं० पुं०) सम्बन्ध आदि का त्याग, बहिष्कार, किसी मांगके पूरी होने तक किसी दल का व्यवस्थितरूप से बहिष्कार।
बायलर-(अं०पुं०) इंजन में भाफ उत्पन्न करने का कोठा।
बायस्कोप्-(अं० पुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा परदे पर चलते फिरते चित्र दिखलाये जाते हैं।
बार-(फ़ा०पुं०) भार, बोझा, वह माल जो नाव पर लादा जाय।
बारगीर-(फ़ा० पुं०) साईस का सहायक।
बारदाना-(फ़ा०पुं०)व्यापारी वस्तुओं को रखने का पात्र या बेठन, सेना के खाने पीने का सामान रसद,टूटे फूटे लोहे लकड़ी के सामान।
बारनिश्-(अं० स्त्री०) लकड़ी लोहे आदि पर पोतनेका चमकीला रंग।
बारबलाई-(फ़ा० स्त्री०) कृषि फलके बोझ की बंटाई।
बारबरदार-(फ़ा० पुं०) बोझा ढोनेवाला।बारबरदारी-(फ़ा० स्त्री०) सामग्री आदि ढोने की क्रिया, शुल्क
बारहबफ़ात-(अ० पुं०) मुसलमानों के विश्वास के अनुसार वह तिथि जिस दिन मोहम्मद साहब बीमार होकर मर गये थे।
बारह-(फ़ा० क्रि० वि०) अनेक बार, बारंबार।
बारामीटर-(अं०पुं०)देखो बैरोमीटर।
बारिक-(अं० पुं०) सैनिकों के रहने का स्थान, छावनी।
बारिश-(फ़ा०पुं०) वृष्टि,वर्षा ऋतु।
बारिस्टर-(अं० पुं०) वह वकील जिसने विलायत की कानून परीक्षा पास किया हो।
बारीक-(फ़ा० वि०) छोटा, महीन, पतला, सूक्ष्म, जो बिना सोचे समझे ध्यान में न आ सके, जिसके अणु अति सूक्ष्म हों, जिसकी रचना में कला की निपुणता प्रगट हो।
बारीका-(फ़ा० पुं०) चित्रकार की महीन कलम।
बारीकी-(फ़ा०स्त्री)सूक्ष्मता पतलापन, वह गुण या विशेषता जो साधारण दृष्टि से समझ में न आवे।
बारूद-(तु०स्त्री०)गन्धक, शोरा और कोयलेके योगसे बनाई हुई वह बुकनी जो आग लगनेसे बड़े वेग से भभकती है, बम, तोप, बंदूक आदि के गोले चलाने में इसकी आवश्यकता होती है; गोलीबारूद-लड़ाई की सामग्री; बारूदखाना-गोला बारूद आदि बनाने का स्थान।

बारे–(फ़ा०क्रि०वि०)अन्त को, संबंध में विषय में ।
बाल–(अ०पुं०) अंग्रेजी नाच ।
बाला–(फ़ा०पुं०) ऊंचा, जो ऊपर की ओर हो ।
बालाई–(फ़ा०वि०) ऊपरी, ऊपर का, निश्चित आय के अतिरिक्त ।
बालाख़ाना–(फ़ा०पुं०) घर के ऊपर का कमरा; **बालादस्ती**–(फा०स्त्री०) अनुचित रीति से धन ले लेना ।
बालाबर–(फ़ा०नपुं०) एक प्रकार का अंगरखा जिसमें चार कलियां और छ बन्द होते हैं ।
बालिग़–(फ़ा० पुं०) प्राप्तवयस्क, युवा, वह जो बाल्यावस्था को पार कर चुका हो ।
बालिश्त–(फ़ा०पुं०) बित्ता, प्राय: नव इञ्च की नाप ।
बालिस्ट्रेन–(अं०स्त्री०) वह रेलगाड़ी जिसपर सड़क बनाने के समान लाद कर भेजे जाते हैं ।
बाव–(फ़ा०पुं०) भूस्वामी, का एक अधिकार जो उनको असामी की कन्या के विवाह के समय मिलता है
बावर–(फ़ा०पुं०) विश्वास ।
बावरची–(फा०पुं०) भोजन पकाने वाला, रसोइयादार; **बावरचीखाना**–पाकशाला, रसोइया घर ।
बाशिंदा–(फ़ा०पुं०) निवासी, रहने वाला ।
बाहम-(फ़ा०क्रि०वि०)परस्पर,आपसमें;
बिगाना–(अ०वि०) जो अपना न हो पराया अनजान ।
बिगुल्–(अ०पुं०) एक प्रकार की अंग्रेज़ी ढंग की तुरही जो सैनिकों को इकट्ठा करने के लिये अथवा अन्य संकेत के निमित्त बजाई जाती है ।
बिगुलर्–(अं०पुं०)बिगुल बजाने वाला
बिहृत–(अ०स्त्री०) अत्याचार, दोष, बुराई दुर्दशा, विपत्ति, कष्ट ।
बियर–(अं०स्त्री०) एक प्रकार की अंगरेज़ी मदिरा ।
बियावान–(फ़ा०पुं०) उजाड़ स्थान या जङ्गल ।
बिरञ्ज–(फ़ा०पुं०)पका हुआ चावल, भात ।
बिरञ्जी–(फ़ा०स्त्री०) लोहे की छोटी कील, छोटा कांटा ।
बिरगिड–(अं०स्त्री०) ब्रिग्रेड सेना का एक विभाग जिसमें कई रेजिमेन्ट होते हैं ।
बिरादर–(फ़ा०पुं०) भ्राता, भाई;
बिरादरी–(फा०स्त्री०) बन्धुत्व, भाई-चारा, जातीय समाज ।
बिलकुल–(अ०क्रि०वि०) आदि से अन्त तक, पूरा पूरा, सब, निरा, निपट ।
बिल्टी–(अं०स्त्री० 'वे विल्' का अपभ्रंश) रेल के द्वारा भेजे जानेवाले माल की वह रसीद जो रेलवे कम्पनी से मिलती है ।
बिलफ़ेल–(अ०क्रि०वि०)सम्प्रति,अभी;
बिला–(अ०अव्य०) विना ।
बिलियर्ड्–(अ०पुं०) बड़ी मेज़ पर खेलने का अंटेका एक अंग्रेजी खेल ।
बिल्मुक्ता–(अ०वि०) जो घट बढ़ न सके; (पुं०) वह पट्टा जिसके अनुसार लगान घटाया बढाया न जा सके ।
बिशप्–(अ०पुं०) ईसाई मत का बड़ा पादड़ी ।
बिसमिल–(फ़ा०वि०)आहत, घायल ।
बिसमिल्लाह–(अ०पुं०) श्रीगणेश, आरम्भ ।
बिसात–(अ०स्त्री०) जमा, पूंजी, धनसम्पत्ति का विस्तार, सामर्थ्य, शतरंज या चौपड़ का वह कपड़ा जिसपर खाने बने होते हैं, बिसातबाना (पुं०) बिक्री की सामग्री ।
बिसाती–(अ०पुं०) बिस्तर बिछाकर उस पर सौदा रख कर बेचने वाला, छोटी वस्तुओं का दुकानदार ।
बिस्कुट–(अं०पुं०) खमीरी आंटे की तन्दूर पर पकी हुई एक प्रकार की टिकिया ।
बिहिश्त–(फ़ा०स्त्री०) वैकुंठ, स्वर्ग ।
बिही–(फ़ा०स्त्री०) पंजाब तथा काबुल में होने वालाएक वृक्ष जिसके फल अमरूद के समान होते हैं ।
बिहीदाना–(फ़ा०पुं०) विही नामक फल का बीज जो औषधि के काम में आता है ।
बी–(फा०स्त्री०) बीबी ।
बीबी–(फ़ा०स्त्री०)कुलीन स्त्री,कन्या, बिना ब्याही हुई लड़की, पत्नी, स्त्री, स्त्रियों के लिये आदर सूचक शब्द ।
बीम्–(अं०पुं०) जहाज़ की लंबे बल की लकड़ी, जहाज़ का मस्तूल ।
बीमा–(फ़ा०पुं०) आर्थिक हानि पूरा करने का उत्तरदायित्व जो निश्चित धन लेकर उसके बदले में दी जाती है, वह पत्र या पोटली आदि जिसका उत्तरदायित्व डाक विभाग लेता है ।
बीमार–(फ़ा०पुं०) रोगग्रस्त, रुग्ण, रोगी; **बीमारदार**–रोगियों की सेवा करने वाला; **बीमारदारी**–रोगियों की शुश्रूषा; **बीमारी**–(फ़ा०स्त्री०) व्याधि, रोग, बुरा अभ्यास, झंझट ।
बुक्–(अ०स्त्री०) पुस्तक, किताब ।
बुखार्–(अं०पुं०) ज्वर, ताप, भाफ, क्रोध, शोक दुःख आदि का आवेग ।
बुखारचा–(फ़ा०पुं०)कोठरी के भीतर को पटरों से बनी हुई छोटी कोठरी, खिड़की, आगे का छोटा बरामदा ।
बुगदा–(फ़ा०पुं०) हत्या करने का कसाइयों का छुरा ।
बुजकसाव–(फ़ा०पुं०) पशुओं की हत्या करने वाला तथा उनकी मांस बेचने वाला ।
बुज़दिल–(फ़ा०वि०) डरपोक, कायर
बुजुर्ग–(फ़ा०वि०) वह जो अवस्था में अधिक बड़ा हो, (पुं०) पूर्वज, बाप दादा; **बुजुर्गी**–(फ़ा०) बुजुर्ग होने का भाव, बड़प्पन ।
बुज्जी–(फ़ा०वि०) बकरी ।
बुत–(फ़ा०पुं०) प्रतिमा, मूर्ति, प्रियतम, जिसके साथ प्रेम किया जाय, (वि०) चुपचाप मूर्ति की तरह बैठने वाला ।
बुतपरस्त–(फा०वि०) मूर्ति पूजक, रसिक, सौन्दर्य का उपासक ।
बुतपरस्ती–(फ़ा०स्त्री०) मूर्तिपूजा;
बुत शिकन–(फ़ा०पुं०) मूर्ति को तोड़ने या नष्ट करने वाला ।
बुयाम–(अं०पुं०) चीनी मिट्टी का बना हुआ गोल ऊंचा पात्र जो अचार आदि रखने के काम में लाया जाता है, जार ।
बुरक़ा–(अ०पुं०) मुसलमानी स्त्रियों का सिर से पैर तक सर्वाङ्ग ढापने का पहरावा जिसमें आंख के स्थान पर जाली लगी रहती है, वह झिल्ली जिसमें जन्म के समय बच्चा लिपटा रहता है, खेड़ी ।
बुरदू–(अ०पुं०) जहाज़ का बग़ल का भाग, पार्श्व ।
बुरादा–(फ़ा०पुं०) वह चूर्ण जो लकड़ी को चीरने से निकलता है, चूरा, कुनाई ।
बुर्ज–(अ०पुं०) गढ़ आदि में ऊपर की ओर बना हुआ गोल या पहलदार शिखर जिसमें बैठने के लिये थोड़ा सा स्थान होता है, गुम्बद, मरगज ।
बुर्द–(फा०स्त्री०) अतिरिक्त लाभ, ऊपरी लाभ, शतरंज के खेल में वह अवस्था जब एक पक्ष में केवल बादशाह ही अकेला बच जाता है, यह आधी मात समझी जाती है ।
बुलंद–(फा०वि०) जिसकी ऊंचाई बहुत हो, बहुत ऊंचा, भारी ।
बुलंदी–(फा०स्त्री०) अधिक ऊंचाई ।
बुलडाग्–(अं० पुं०) मझोले आकार का एक प्रकार का विलायती कुत्ता जो बड़ा पुष्ट और देखने में भयंकर होता है ।
बुलबुल–(अ०स्त्री०) (फा० स्त्री०) एक प्रसिद्ध गाने वाली काली छोटी चिड़िया; **बुलबुलबाज**–बुलबुल का खेलाड़ी ।
बुलबुला–(हिं०पुं०) बुदबुद, पानी का बुल्ला ।
बुलिन–(अं०स्त्री०) पाल के लग्घे में बांधने का रस्सा ।
बू–(फा०स्त्री०) बास, गन्ध, दुर्गन्ध ।
बूच–(अं०पुं०) बड़ी मेख, बडा कांटा
बूचड़–(अं०पुं०) पशुओं का मांस आदि बेचने के लिये उनकी हत्या करने वाला, कसाई; **बूचड़ खाना**–कसाई बाड़ा,जहां पशु मारे जाते हैं ।
बूजना–(फ़ा०पुं०) बन्दर ।
बूट–(अं०पुं०) अंग्रेजी ढँग का जूता जिससे पैर के गट्टे तक ढप जाते हैं ।
बूम–(अं० पुं०) वह लट्ठा जो जहाज़ नाव आदि को ठीक मार्ग दिखलाने के लिये गाड़ा जाता है ।
बेंच्–(अं०स्त्री०) लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई लंबी संकरी चौकी, राजकीय न्यायालय के कार्यकर्ता ।
बैट, बैठ–(फ़ा०स्त्री०) काठ की मूठ ।
बे–(फ़ा०अव्य०) बिना, अशिष्टता सूचक एक संबोधन का शब्द ।
बेअक़्ल–(फ़ा०वि०) मूर्ख, नासमझ ।
बेअक़्ली–(फ़ा०स्त्री०) मूर्खता,
बेअदब–(फ़ा०वि०) बड़ों का आदर सम्मान न करने वाला ।
बेअदबी–(फ़ा०स्त्री०)वड़ों का अनादर
बेआब–(फ़ा०वि०)जिसमें चमक न हो, अप्रतिष्ठित, तुच्छ ।
बे आबरू–(फ़ा०वि०) जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो;**बेआबी**–(फ़ा०स्त्री०) मलिनता ।
बेइंसाफ़ी–(फ़ा०स्त्री०) अन्याय ।
बेइज्जत–(फ़ा०वि०) अप्रतिष्ठित, अपमानित; **बेइज्जती**–(फ़ा०स्त्री०) अपमान, अप्रतिष्ठा ।
बे इल्म–(फ़ा०पुं०) जो कोई विद्या न जानता हो,जो कुछ पढ़ा लिखा न हो।
बेईमान–(फ़ा०वि०) अधर्मी, जिसको धर्म का कोई विचार न हो, वह जो अन्याय, कपट आदि से अनाचार करता हो; **बेईमानी**–(फ़ा० स्त्री०) अधर्म, अन्याय ।
बेउज्र–(फ़ा०वि०) जो कोई काम करने में या आज्ञा पालन करने में किसी प्रकार की आपत्ति न करे ।
बेक़दर–(फ़ा० वि०) अप्रतिष्ठित ।
बेक़दरी–(फ़ा०स्त्री०) अप्रतिष्ठा ।
बेकरार–(फ़ा०वि०)व्याकुल, घबराया हुआ ; **बेकरारी**–(फ़ा० स्त्री०) व्याकुलता ।
बेकस–(फ़ा०वि०)निराश्रय, निःसहाय दीन, निर्धन, बिना मा बाप का ।
बेक़सूर–(फ़ा०वि०) निरपराध ।
बेक़ानून–(फ़ा०वि०) नियम विरुद्ध ।
बेक़ाबू–(फ़ा०वि०) विवश, जो किसी के वश में न हो ।
बेकायदा–(फ़ा०वि०) नियम विरुद्ध ।
बेकार–(फ़ा०वि०)निरर्थक, जो किसी काम में न आ सके, निकम्मा ;
बेकारी–(फ़ा०स्त्री०) निरुद्यम ।
बेक़सूर–(फ़ा०वि०) निरपराध ।
बेख–(फ़ा०स्त्री०) मूल, जड़, सर्वांग, भेस ।
बेखता–(फ़ा०वि०) निरपराध ।
बेखबर–(फ़ा०वि०) अनजान, बेसुध;
बेखबरी–(फ़ा०स्त्री०) अज्ञानता ।
बेखौफ़–(फ़ा०वि०) निर्भय, निडर ।
बेगम–(फ़ा०स्त्री०) राजपत्नी, राज्ञी, रानी, ताश का वह पत्ता जिसमें रानी का चित्र बना रहता है ।

बेगरज़—(फ़ा०वि०) जिसको कोई प्रयोजन न हो (क्रि०वि०) निष्प्रयोजन, व्यर्थ ; **बेग़रजी**—(फ़ा०स्त्री०) निष्प्रयोजनता का अभाव।

बेगानगी—(फ़ा०स्त्री०) परायापन।

बेगाना—(फ़ा०वि०) जो अपना न हो, ग़ैर, पराया, अनजान।

बेगार—(फ़ा०स्त्री०) बिना वेतन दिये हुए किसी से बलपूर्वक लिया हुआ काम, बेमन से किया हुआ काम ; **बेगार टालना**—किसी काम को बिना मन लगाये करना ; **बेगारी**—(फा०स्त्री०) बेगार में काम करने वाला आदमी।

बेगुनाह—(फ़ा०वि०) जिसने कोई पाप न किया हो, निरपराध, निर्दोष।

बेचारा—(फ़ा०वि०) जिसका कोई अवलम्ब न हो, दीन, निःसहाय।

बेचिराग़—(फ़ा०वि०) जहां दीपक न जलता हो, उजड़ा हुआ।

बेचैन—(फ़ा०वि०) बिकल, व्याकुल, **बेचैनी**—(फा०स्त्री०) बिकलता, घबड़ाहट

बेजड़—(फ़ा०वि०) बिना जड़ का, जिसके मूल में कोई तत्व या सार न हो।

बेज़बान—(फ़ा०वि०) जिसमें बोलने चालने की शक्ति न हो, मूक, गूंगा, जो दीनता या नम्रता के कारण किसी प्रकार का विरोध न करता हो।

बेजा—(फ़ा०वि०) जो अपने उचित स्थान पर न हो, अनुचित, बुरा।

बेजान—(फ़ा०वि०) जिसमें जीवन शक्ति न हो, जिसमें कुछ भी दम न हो, मृतक, निर्बल, कुम्हलाया या मुरझाया हुआ।

बेजाब्ता—(फ़ा०वि०) नियम के विरुद्ध

बेजार—(फ़ा०वि०) जिसका मन किसी बात से बड़ा दुःखी हो।

बेजू—(अं०पुं०) एक प्रकार का जंगली पशु।

बेजोड़—(फ़ा०वि०) जिसमें जोड़ न हो, जो एक ही टुकड़े का बना हो अद्वितीय, अनुपम।

बेड्—(अं०पुं०) नीचे का भाग, तल, बिस्तर, बिछौना।

बेतकल्लुफ़—(फ़ा०वि०) सीधा सादा व्यवहार करने वाला, जिसको ऊपरी शिष्टाचार का विशेष ध्यान न हो, अपने हृदय की बात स्पष्ट रूप से कहने वाला (क्रि०वि०) बिना संकोच के, बेधड़क।

बेतकल्लुफ़ी—(फा० स्त्री०) सरलता।

बेतकसीर—(फ़ा०वि०) निरपराध।

बेतमीज—(फ़ा०वि०) अशिष्ट, उद्दण्ड,

बेतरह—(फ़ा०क्रि०वि०) अनुचित रूप, से, बुरी तरह से, विलक्षण ढंग से, (वि०) बहुत अधिक।

बेतरीक़ा—(फ़ा० वि०) अनुचित, (क्रि०वि०) अनुचित रूप से।

बेतहाशा—(फ़ा० क्रि० वि०) बड़ी शीघ्रता से, बड़ी घबड़ाहट से, बिना सोचे समझे।

बेताब—(फ़ा०वि०) दुर्बल, व्याकुल, घबड़ाया हुआ; **बेताबी**—(फा०स्त्री०) दुर्बलता, व्याकुलता।

बेतौर—(अ०क्रि०वि०) बुरी तरह से, बेढंगेपन से (वि०) बेढंगा।

बेदख़ल—(फ़ा०वि०) निराधिकार ; **बेदखली**—(फ़ा०स्त्री०) संपत्ति पर से अधिकार हटाया जाना अथवा न होना।

बेदम—(फ़ा०वि०) मृतक, जिसकी जीवन शक्ति कम हो गई हो, अधमरा, जर्जर।

बेदमंजनू—(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी शाखायें बहुत झुकी रहती है।

बेदमुश्क—(फ़ा०पुं०) पंजाब में होने वाला एक वृक्ष जिसमें बड़े कोमल सुगंधित फूल होते हैं इन फूलों का अर्क औषधियों में व्यवहार होता है

बेदर्द—(फ़ा०वि०) कठोर हृदय, निर्दय

बेदर्दी—(फा०स्त्री०) निर्दयता।

बेदलैला—(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का पौधा जिसमें सुन्दर फूल लगते हैं।

बेदाग़—(फ़ा०वि०) जिसमें कोई चिह्न या धब्बा न हो, निर्दोष, शुद्ध, निरपराध

बेन—(अं०पुं०) जहाज के मस्तक पर लगाने को झंडी, हवा की दिशा जानने की चरखी।

बेनजीर—(फ़ा०वि०) अनुपम, जिसकी समता कोई न कर सके।

बेनिमून—(फ़ा०वि०) अनुपम, अद्वितीय

बेपरद—(फ़ा०वि०) अनावृत, बिना परदे का, नग्न, नंगा।

बेपरवा, बेपरवाह—(फ़ा०वि०) जिसको किसी प्रकार की चिन्ता न हो, हानि लाभ का विचार न करके अपनी इच्छानुसार काम करने वाला, मनमौजी, उदार।

बेपीर—(फ़ा०वि०) दूसरे से सहानुभूति न रखने वाला, निर्दय।

बेफायदा—(फ़ा०वि०) निरर्थक, व्यर्थ का (क्रि०वि०) व्यर्थ।

बेफिक्र—(फ़ा०वि०) निश्चिन्त।

बेफिक्री—(फा०स्त्री०) निश्चिन्तता।

बेबाक़—(फ़ा०वि०) चुकता किया हुआ

बेबुनियाद—(फ़ा०वि०) निर्मूल, बेजोड़

बेभाव—(फ़ा०क्रि०वि०) जिसका कोई हिसाब या गिनती न हो।

बेमरम्मत—(फ़ा०वि०) जिसकी मरम्मत न हुई हो।

बेमिलावट (फ़ा०वि०) बिना मिलावट का

बेमुनासिब—(फ़ा०वि०) अनुचित।

बेमुरव्वत—(फ़ा०वि०) जिसमें शील संकोच का अभाव हो।

बेमौक़ा—(फ़ा०वि०) जो उपयुक्त अवसर पर न हो, (पुं०) अवसर का अभाव।

बेरस—(फ़ा०वि०) बिना रस का, रसहीन, जिसका स्वाद अच्छा न हो, फीका।

बेरहम—(फ़ा०वि०) निर्दय, दया रहित, निठुर।

बेरा—(अं०पुं०) साहब लोगों का वह चपरासी जो चिट्ठी पत्री ले जाता और लाता है।

बेरुख़—(फ़ा०वि०) जो समय पड़ने पर मुख फेर ले, क्रुद्ध।

बेरोक—(फ़ा० क्रि० वि०) निर्विघ्न, बेखटके ; **बेरोकटोक**—बिना किसी अड़चन के।

बेरोज़गार—(फ़ा०वि०) जिसके पास करने को कोई काम धंधा न हो।

बेरौनक़—(फ़ा०वि०) जिसपर चमक न हो उदास।

बेलंद—(फ़ा०वि०) ऊंचा, जो बुरी तरह से हारा हो, विफल मनोरथ।

बेल्—(अं०पुं०) कपड़े कागज आदि की बड़ी गठरी जो एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजी जाती है, गांठ

बेलचा—(फ़ा०पुं०) एक प्रकार की छोटी कुदाल, जिससे बाग की क्यारियां बनाई जाती हैं, एक प्रकार लंबी खुरपी।

बेलज्जत—(फ़ा०वि०) स्वाद रहित, जिसमें कोई सुख न हो।

बेलदार—(फ़ा०पुं०) वह मनुष्य जो भूमि खोदने का काम करता हो ; **बेलदारी**—(अं०स्त्री०) फौड़ा चलाने का काम।

बेलाडोना—(अं०पुं०) मकोयका सत्व।

बेवकूफ़—(फ़ा०वि०) मूर्ख; **बेवकूफ़ी**—(फ़ा० स्त्री०) मूर्खता;

बेवक्त—(फ़ा०क्रि०वि०) अनुपयुक्त समय पर, कुसमय में।

बेवतन—(फ़ा०वि०) बिना घर द्वार का, परदेसी।

बेवफा—(फ़ा०वि०) जो मित्रता आदि का निर्वाह न करता है, कृतघ्न, दुःशील, दूसरे के किये हुए उपकार को न मानने वाला।

बेवा—(फा० स्त्री०) विधवा, रांड़।

बेशऊर—(फ़ा० वि०) फूहड़ मूर्ख, उजड्ड; **बेशऊरी**—(फ़ा०स्त्री०) मूर्खता

बेशक—फ़ा०क्रि०वि०) निःसन्देह, अवश्य

बेशकीमत—**बेशकीमती**—(फ़ा०वि०) बहुमूल्य।

बेशरम—(फ़ा०वि०) निर्लज्ज; **बेशरमी**—(फा०स्त्री०) निर्लज्जता।

बेशी—(फा०स्त्री०) अधिकता, लाभ, साधारण से अधिक काम करने का वेतन।

बेशुमार—(फ़ा० वि०) अगणित, अनगिनती असंख्य।

बेसबब—(फ़ा०क्रि०वि०) बिना कारण के, अकारण।

बेसबरा—(फ़ा०वि०) अधीर, जिसको सन्तोष न हो ; **बेसबरी**—(फ़ा० स्त्री०) अधैर्य, असन्तोष।

बेसमझ—(फ़ा०वि०) मूर्ख; **बेसमझी**—(हिं०स्त्री०) मूर्खता।

बेसरा—(फा०वि०) आश्रयहीन, जिसको ठहरने के लिये कोई स्थान न हो ; **बेसरी सामान**—जिसके पास कुछ भी सामग्री न हो, बड़ा दरिद्र।

बेहतर—(फ़ा०वि०) किसी की अपेक्षा अच्छा, किसी से बढ़कर (अव्य०) प्रार्थना या आदेश की उत्तर में स्वीकृति सूचक शब्द; **बेहतरी**—(फा० स्त्री०) अच्छापन, भलाई। **बेहद**—(फ़ा०वि०) जिसकी कोई सीमा न हो, अपार, अपरिमित बहुत अधिक।

बेहया—(फ़ा०वि०) निर्लज्ज।

बेहयाई—(फ़ा०स्त्री०) निर्लज्जता।

बेहाल—(फ़ा०वि०) व्याकुल, विकल; **बेहाली**—(फ़ा०स्त्री०) व्याकुलता।

बेहिसाब—(फ़ा० क्रि० वि०) बहुत अधिक।

बेहुरमत—(फ़ा०वि०) जिसकी कोई प्रतिष्ठा न करता हो।

बेहूदगी—(फ़ा० स्त्री०) अशिष्टता, असभ्यता।

बेहूदा—(फ़ा० वि०) शिष्टता या सभ्यता के विरुद्ध, अशिष्टता पूर्ण, जो सभ्यता या शिष्टता न जानता हो।

बेहूदापन—(फ़ा०पुं०) अशिष्टता।

बेहोफ़—(फ़ा०वि०) चिन्ता रहित।

बेहोश (फ़ा० वि०) अचेत, बेसुध; **बेहोशी**—(फ़ा०स्त्री०) अचेतनामूर्छा,

बैंक—(अं०पुं०) वह संस्था या कोठी जहाँ लोग व्याज पाने की इच्छा से रुपया जमा करते हैं तथा ऋण भी लेते हैं।

बैंड्—(अं० पुं०) बाजा बजाने वालों का झुंड जिसमें सब लोग एक साथ बाजा बजाते हैं झुंड।

बैग—(अं०पुं०) बेग, झोला, थैला।

बैज—(अं०पुं०) चिह्न, चपरास।

बैजा—(अं० पुं०) अण्डा, एक प्रकार फोड़ा जिसके भीतर पानी भरा होता है।

बैटरी—(अं० स्त्री०) तोपखाना, कांच आदिका वह पात्र जिसमें रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली उत्पन्न की जाती है।

बैत—(अ०स्त्री०) पद्य, श्लोक।

बैरिंग—(अं०वि०) वह चिट्ठी या पार्सल जिसका महसूल भेजने वाले ने न दिया हो और जो पाने वाले से वसूल किया जाय।

बैलून—(अं०पुं०) गुब्बारा, वह बड़ा गुब्बारा जिसपर चढ़कर लोग पहिले हवा में उड़ा करते थे।

बोट्—(अं० स्त्री०) नाव, नौका अग्निबोट।

बोर्ड (अं०पुं०) किसी स्थायी कार्य के लिये बनी हुई समिति, मोटे कागज की दफ़्ती, वह समिति, या कमेटी जो माल के अभियोग का निर्णय

करती है ।

बोर्डिङ्‌ हाउस्–(अ०पु०) विद्यार्थियो के रहने का घर, छात्रावास ।

बोलबाला–(अ०पु०) एक बहुत ऊचा सदा बहार वृक्ष ।

ब्रिगेड्–(अ०पु०) सेना का समूह ।

ब्रिटिश्–(अ०वि०) इगलिस्तान का, अग्रजी ।

ब्रीवियर–(अ० पु०) एक प्रकार का छाटा टाइप ।

ब्रुश–(अ०पु०) देखो बुरुस ।

ब्लाक्–(अ०पु०) चित्र छापनेका ठप्पा

भ

भिश्ती–(अ०पु०) मशक द्वारा पानी ढोने वाला मनुष्य, सक्का ।

म

मई–(अ० स्त्री०) अग्रेजी वर्ष का पाचवा महीना, इसमे सर्वदा ३१ दिन होते है, यह प्रायः वैशाख मे पडता है ।

मजिल–(अ०स्त्री०) मकान का खण्ड, मरातिब, यात्रा मे ठहरने का स्थान पड़ाव ।

मजूर–(अ०वि०) स्वीकृत, जो मान लिया गया हो ।

मजूरी–(अ०स्त्री०) मजूर होने का भाव स्वीकृत ।

मसब–(अ०पु०) पदवी, पद, स्थान, अधिकार, कर्तव्य, काम ।

मशा–(स्त्री०) अभिप्राय, आशय ।

मसूख–(अ० वि०) रद्द किया हुआ, काटा हुआ, हटाया हुआ ।

मकतब–(अ०पु०) पाठशाला ।

मकदूर–(अ०पु०) शक्ति, सामर्थ्य ।

मकनातीस–(अ०पु०)चुम्बक पत्थर ।

मकफूल–(अ०वि०)गिरवी रक्खा हुआ।

मकबरा–(अ०पु०) समाधि, वह घर जिसमे किसी का शव गडा हो ।

मकबूजा–(अ०वि०)अधिकृत, मकबूल–प्रिय ।

मकर–(फा०पु०)छल, कपट, धोखा।

मकरूह–(फा०वि०)अपवित्र, घृणित।

मकसद–(अ०पु०) मनोरथ, मनोकामना, तात्पर्य, अभिप्राय ।

मकसूद–(अ० वि०) उद्देश्य, (पु०) मनोरथ, अभिप्राय ।

मका–(फा०पु०) देखो मकान, घर ।

मकान–(फा०पु०) रहने का स्थान, निवास स्थान, घर ।

मकाम–(फा०पु०) देखो मुकाम ।

मकूला–(अ०पु०)कहावत,वचन,कथन।

मक्का–(अ०पु०) मुसलमानो का एक तीर्थ स्थान जो अरब देश मे है ।

मक्कार–(अ०वि०) छली, कपटी ।

मक्कारी–(अ०स्त्री०) छल ।

मक्दूर–(अ० पु०) सामर्थ्य, वश, धन, समाई ।

मखम–(अ० पु०) स्वामी (वि०) पूज्य, सेवा करने के योग्य ।

मखमल–(अ०स्त्री०) एक प्रकार का बढिया रेशमी कपडा जो एक ओर रूखा तथा दूसरी ओर चिकना होता है। **मखमली**–(अ० वि०) मखमल का बना हुआ, मखमल की तरह का ।

मखलूक–(अ०पु०)ईश्वर की सृष्टि ।

मखसूस–(अ०वि०) जो किसी विशेष कार्य के लिये अलग कर दिया गया हो।

मगज–(अ०पु०) मस्तिष्क, दिमाग, गरी गूदा, मगज खाना या चाटना–व्यर्थ की बकवाद करके व्यग्र करना, मगज खाली करना–चित्त लगाना, मगज चट–जो बहुत बक्वाद करता हो, मगज चट्टी–बकवाद,मगजपच्ची–किसी काम मे बहुत मन लडाना ।

मगर–(फा०अव्य०) परन्तु ।

मगरब–(अ०पु०) पश्चिम, पच्छिम ।

मगरूर–(अ०वि०)अभिमानी,घमडी ।

मगलूब–(फा०पु०) पराजित, जीता हुआ ।

मग्ज–(अ० पु०) मस्तिष्क, किसी फल के भीतर का गूदा, मग्जरोशन–(फा०स्त्री०) नस्य, सुँघनी ।

मजकूर–(फा०वि०) जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है, मजकूर एबाला–पूर्वोक्त, ऊपर कहा हुआ ।

मजकूरात–(फा०पु०)खेत की लगान जो गाव के व्यय मे होती है ।

मजकूरी–(फा० पु०) ताल्लुकेदार, बिना वेतन का चपरासी ।

मजदूर–(फा०पु०) बोझ ढोने वाला कुली, मोटिया, कार्यालय मे काम करने वाला मनुष्य ।

मजदूरी–(फा०स्त्री०)जीविका,निर्वाह के लिये किया जाने वाला कोई छोटा परिश्रम का कार्य, बोझ ढोने आदि का पुरस्कार, वह धन जो किसी परिश्रम के बदले मे दिया जाता हो ।

मजनू–(अ० पु०) पागल, दीवाना, प्रेमी, अति दुर्बल मनुष्य, अरब के एक सरदार का पुत्र जिसका असली नाम कायस था वह लैला नाम की कन्या पर आसक्त हो गया और जब उसने सुना कि इसका विवाह दूसरे के साथ हो जायगा तब वह पागल हो गया ।

मजबूत–(अ०वि०) दृढ, पुष्ट, अटल, बलवान ।

मजबूर–(अ०वि०) विवश, मजबूरन्–(फ़ा०क्रि०वि०)विवश होकर, मजबूरी–(अ०स्त्री०) विवशता ।

मजमा–(अ०पु०) बहुत से मनुष्यो का एक स्थान पर इकट्ठा होना भीड, जमघट; –मजमुआ–इकट्ठा किया हुआ, (पु०) बहुत से पदार्थो का समूह, एक प्रकार का इत्र ।

मजमून–(अ०पु०) वह विषय जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय, लेख।

मजरूआ–(फा०वि०)जोता बोआ हुआ

मजरूह–(अ०वि०) घायल ।

मजल–(फा०स्त्री०) मजिल, पडाव ।

मजलिस–(अ०स्त्री०) सभा, समाज, वह स्थान जहा पर बहुत से लोग एकत्रित हो नाच रंग का स्थान, मजलिसी–(अ० पु०) नेवता देकर बुलाया हुआ मनुष्य–(वि०) मजलिस सम्बन्धी सबको प्रसन्न करनेवाला

मजहब–(अ०पु०) धार्मिक सप्रदाय, मत, मजहबी–(अ० वि०) किसी धार्मिकसम्प्रदाय से सम्बन्ध रखनेवाला

मजा–(फा०पु०)स्वाद, आनन्द, सुख, दिल्लगी, मजा चखाना–अपराध करने के लिये किसी को दण्ड देना, मजा आ जाना–उपहास होना ।

मजाक–(अ० पु०) हँसी दिल्लगी, ठट्ठा प्रवृत्ति रुचि ।

मजाकन–(अ०क्रि०वि०) उपहास, की रीति पर ।

मजाकिया–(वि०) उपहास करने वाला, भॉड ।

मजाज–(फा०पु०) गर्व, अभिमान, अधिकार ।

मजाज–(अ०वि०) कृत्रिम, बनावटी, कल्पित ।

मजार–(अ०पु०) समाधि, कब्र ।

मजाल–(अ०स्त्री०) शक्ति, सामर्थ्य ।

मजिस्ट्रट–(अ०पु०)दण्ड विधान का अधिकारी जो भारतवर्ष मे जिले के माल विभाग का भी अधिकारी होता था ।

मजिस्ट्रेटी–(अ०स्त्री०) मजिस्ट्रेट का कार्य या पद, मजिस्ट्रेट का न्यायालय

मजूमदार–(अ०पु०)मुसलमानी राज्य का एक अधिकारी ।

मजेदार–(फा०वि०) स्वादिष्ट, अनद लाने वाला, उत्तम, बढिया, अच्छा ।

मजेदारी–(फा०स्त्री०) स्वाद, आनद

मतलब–(अ० पु०) अर्थ अभिप्राय, तात्पर्य सम्बन्ध, उद्देश्य विचार, अपना हित, स्वार्थ, निज का लाभ।

मतलबी–(अ०वि०) स्वार्थी।

मद–(अ०स्त्री०) खाता बही, कार्य विभाग, अधिकार,ऊची लहर, ज्वार

मदद–(अ० स्त्री) सहायता, सहारा, किसी काम के लिये नियुक्त राज आदि, मदद खर्च–किसी काम के लिये अग्रिम दिया हुआ धन ।

मददगार–(फा०वि०)सहायता देनेवाला

मदरसा (अ०पु०)विद्यालय,पाठशाला

मदाखिलत–(अ०स्त्री०) बाधा, रुकावट, प्रवेश, अधिकार, मदाखिलत बेजा–ऐसा स्थान मे प्रवेश करना जहां जाने का अधिकार न हो, अनुचित तक्षेप ।

मदीना–(अ०पु०)अरब का नगर जहा मुहम्मद साहब की समाधि क़ब्र है ।

मदीयून–(फा०पु०) ऋणी, देनदार ।

मनकूला–(अ०वि०) चर (सम्पत्ति)

मनशा–(अ०स्त्री०) तात्पर्य, इच्छा ।

मनसब–(अ०पु०)अधिकार,पद,स्थान

मनसबदार–(फ़ा०पु०) उच्च पद का कोई पुरुष ।

मनसूख–(अ०वि०) प्रमाणित ठहराया हुआ त्यागा हुआ छोडा हुआ ।

मनसूखी–(अ०स्त्री०) त्याग क्रिया ।

मनसूबा (अ०पु०) आयोजन, युक्ति, विचार ।

मनहूस–(अ०वि०) अप्रिय दर्शन, जो अशुभ बुरा।

मना–(अ०वि०) वर्जित, निषिद्ध, हो, वारण किया हुआ ।

मनी आर्डर्–(अ०पु०) रुपये की हुडी जो किसी को रुपया चुकाने के लिये एक डाकखाने से दूसरे डाकखाने मे भेजी जाती है ।

मनेजर्–(अ० पु०) किसी कार्यालय आदि का प्रबन्धकर्ता ।

ममीरा–(अ०पु०) हल्दी की जाति के एक पौधे की जड जो आखो के रोगो की अपूर्व औषधि मानी जाती है ।

मयस्सर–(अ०वि०) उपलब्ध, प्राप्त ।

मरज–(अ०पु०) रोग, कुटेव ।

मरजी–(अ०स्त्री०) इच्छा, चाह ।

मरतबा–(अ०पु०) पदवी, पद, बार।

मरदानगी–(फा०स्त्री०)शूरता,वीरता, उत्साह, साहस, पराक्रम ।

मरदाना–(फा०वि०) पुरुष सबधी ।

मरदूद–(अ०वि०) तिरस्कृत ।

मरम्मत–(अ०स्त्री०) किसी वस्तु के टूटे फटे अश को ठीक करने का काम ।

मरसिया–(अ०पु०) मरण, शोक, रोना पीटना ।

मरहम–(अ०पु०) औषधियो से बना हुआ घाव पर लगाने का गाढा चिकना लेप ।

मरहला–(अ० पु०) टिकान, पडाव, झोपडी, घर का खड; मरहला तय करना–कठिन कार्य को पूरा करना।

मरहूना–(फा०वि०) गिरो किया हुआ।

मरहूम–(अ०वि०) स्वर्गवासी मृत मरातिब–पद, घर का खण्ड, तल्ला ।

मरीज–(अ० वि०) रोग ग्रस्त, रोगी

मर्ज–(फा०पु०) रोग । **मर्जी**–(फा० वि०) इच्छा ।

मर्तबा–(अ०पु०) पद, पदवी, बार ।

मर्द–(फा०पु०) मनुष्य, पुरुष, साहसी वीर, योद्धा, पति ।

मर्दाना–(फा०वि०) पुरुष के समान, वीर, साहसी ।

मर्दी–(फ़ा०स्त्री०) मनुष्यत्व ।

मर्दुम–(फा०पु०) मनुष्य, आदमी ।

मर्दुमशुमारी–(फ़ा०स्त्री०) किसी देश के रहने वालों की गणना ।

मर्दुमी–(फा० स्त्री०) पौरुष, साहस, वीरता।

मलट्–(अ०पु० 'मैलेट्') क़ाठ का बना हुआ हथौडा ।

मलहम–(अ०पुं०) देखो मरहम।
मलामत–(अ० स्त्री०) दुतकार, डांट फटकार, किसी पदार्थ में का निकृष्ट अंश।
मलामती–(फ़ा०वि०) फटकारने योग्य, घृणित।
मलाल–(अ०पुं०) दुःख, उदासीनता।
मलिक–(अ०पुं०) अधीश्वर, राजा।
मलिका–(अ०स्त्री०) पटरानी, अधीश्वर
मलीदा–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का कोमल ऊनी वस्त्र, चूरमा
मलेरिया–(अं० पुं०) वर्षा ऋतु में फैलने वाला एक प्रकार का ज्वर।
मलोला–(अ०पुं०) मानसिक व्यथा या कष्ट; **मलोला आना**–पश्चात्ताप होना, **मलाले खाना**–मानसिक चिन्ता होना
मल्लाह–(अ०पुं०) धीवर, मांझी।
मल्लाही–(फ़ा०वि०) मल्लाह संबंधी, मल्लाह का काम या पद।
मवक्किल–(अ०पुं०) अभियोग में अपनी ओर से न्यायालय में काम करने के लिये वकील या प्रतिनिधि नियुक्त करने वाला पुरुष, सौंपने वाला, असामी।
मवरिखा–(अ०वि०) लिखित, लिखा हुआ।
मवाजिब–(अ०पुं०) नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ।
मवाजी–(अ०वि०) अनुमान किया हुआ।
मवेशी–(अ० पुं०) चौपाया; **मवेशी खाना**–पशुओं को रखने का स्थान।
मशक–(फ़ा० स्त्री०) चमड़े का बना हुआ थैला जिसमें पानी भरकर ले जाते हैं।
मशक्कत–(अ०स्त्री०) परिश्रम।
मशगूल–(अ०वि०) काम में लगा हुआ,
मशविरा–(अ०वि०) परामर्श।
मशहूर–(अ०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।
मशाल–(अ० पुं०) एक प्रकार की मोटी डाली हुई बत्ती।
मशालची–(फ़ा०पुं०) हाथ में मशाल लेकर प्रकाश दिखलाने वाला।
मशीन–(अं०स्त्री०) कोई यन्त्र।
मश्क–(अ०पुं०) किसी काम को अच्छी तरह करने का अभ्यास,
मश्शाक़–(अ० वि०) काम करने में जिसको अच्छा अच्छा अभ्यास हो।
मसका–(फ़ा०पुं०) मक्खन, दही का पानी, बुताए हुए चूने की बुकनी, मिस्सी
मसखरा–(अ०पुं०) ठटठेबाज, हँसोड़, विदूषक।
मसखरापन–(अ० पुं०) हँसी, ठट्ठा, **मसखरी**–(फ़ा० स्त्री०) हँसी।
मसजिद–(फ़ा० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर मुसलमान लोग इकट्ठा होकर नमाज पढ़ते हैं।
मसनद–(अ० स्त्री०) अमीरों के बैठने की गद्दी।
मसरफ़–(अ०पुं०) व्यवहार या काम में आना।
मसरूफ़–(अ०वि०) काम में लगा हुआ
मसल–(अ०स्त्री०) लोकोक्ति, कहावत
मसलन्–(अ०वि०) उदाहरण के रूप में, यथा।
मसलहत–(अ०स्त्री०) ऐसी छिपी हुई भलाई जो एकाएक न जानी जा सके।
मसला–(अ०पुं०) लोकोक्ति, कहावत।
मसलिन्–(अं०स्त्री०) महीन कोमल।
मसविदा–(अ०पुं०) किसी लेख का ढाचा युक्ति, उपाय।
मसाना–(अ०पुं०) मूत्राशय,।
मसूस, मसूसन–(फ़ा० स्त्री०) आन्तरिक व्यथा।
मसौदा–(अ०पु०) पहिली बार लिखा हुआ लेख जो दोहराने और काट छांट करने के बाद लिखा जाता है; युक्ति उपाय; **मसौदा बांधना**–किसी काम करने के लिये युक्ति निकालना, **मसौदेबाज**–अच्छी युक्ति सोचने वाला, धूर्त।
मस्त–(फ़ा०वि०) मतवाला, मदपूर्ण, अभिमानी, घमंडी।
मस्तगी–(अ०स्त्री०) एक प्रकार की गोंद
मस्ताना–(फ़ा०वि०) मस्तों की तरह का मस्त, (क्रि०) मस्त होना या करना।
मस्ती–(फ़ा० स्त्री०) मस्त होने की क्रिया या भाव जो मस्त होने पर विशिष्ट पशुओं के आंख, कान, मस्तक आदि के पास से निकलता है
मस्तूल–(पुर्त० पुं०) बड़ी नाव या जहाज़ के बीच में खड़ा किया हुआ डंडा जिसमें पाल बाँधी जाती है।
महकमा–(अ०पुं०) किसी विशिष्ठ कार्य के लिये अलग किया हुआ विभाग।
महज–(अ०वि०) विशुद्ध केवल, मात्र
महताब–(फ़ा० स्त्री०) चाँदनी, चंद्रिका, एक प्रकार की अग्नि, क्रीड़ा, (पुं०) चन्द्रमा, एक प्रकार का जंगली कौवा; **महताबी**–(फ़ा०स्त्री०) मोमबत्ती के आकार की बनी हुई एक प्रकार की अग्नि क्रीड़ा।
महदूद–(अ०वि०) सीमाबद्ध।
महफिल–(अ०स्त्री०) नाच गाना होने का स्थान, सभा।
महफूज–(अ०वि०) सुरक्षित।
महबूब–(अ०पु०) जिसमें प्रेम किया जावे।
महबूबा–(अ०स्त्री०) प्रेमिका।
महमूदी–(फ़ा०स्त्री०) सल्लम की तरह की मोटा देशी कपड़ा, मुद्रा।
महमेज–(फ़ा०स्त्री०) जूते के पीछे की ओर जड़ने की एक प्रकार की लोहे की नाल जिससे सवार घोड़े का एंड़ लगाता है।
महरम–(अ०स्त्री०) मुसलमानी धर्म के अंगिया, अंगिया की कटोरी।
महरूम–(अ०वि०) वंचित।
महल–(अ०पुं०) प्रासाद, अन्तःपुर, रनिवास, अवसर; **महलसरा**–अन्तःपुर, रनिवास।
महल्ला–(अ०पुं०) नगर का एक विभाग जिसमें बहुत से घर होते है।
महसूल–(अ०पुं०) वह धन जो कोई राजा का अधिकारी किसी विशेष कार्य के लिये जनता से ले, किराया, भाड़ा, लगान, कर।
महारत–(फ़ा०स्त्री०) अभ्यास।
महाल–(अ०पुं०) वह स्थान जहाँ पर बहुत से बड़े बड़े मकान हों मुहल्ला, भूमि का वह विभाग जिसमें कई गाँव होते हैं, पट्टी, हिस्सा।
महोला–(अ०पुं०) बहाना, धोखा, छल, कपट।
मांदगी–(अ०स्त्री०) रोग, थकावट।
मांदा–(फ़ा०वि०) थका हुआ।
मांसखोर–(फ़ा०वि०) मांसहारी।
माकूल–(अ०वि०) उचित, योग्य, यथेष्ट, जो निरुत्तर हो गया हो।
माजरा–(अ०पुं०) वृत्तान्त, घटना, हाल।
माजून–(अ०स्त्री०) ओषधि मिलाया हुआ कोई मीठा अवलेह, भाँग मिली हुई बरफी।
माजूफल–(फ़ा०पुं०) माजू नामक वृक्ष का फल जिससे रंग बनते हैं।
मात–(अ०स्त्री०) पराजय, हार (वि०) हारा हुआ, मतवाला।
मातदिल–(अ०वि०) मध्यम प्रकृति का, जो गुण में न बहुत ठंढा हो न बहुत गरम हो।
मातबर–(अ० वि०) विश्वसनीय, विश्वास करने योग्य। **मातबरी**–(अ० स्त्री०) विश्वसनीयता।
मातम–(अ०पु०) मृतक का शोक, किसी दुःखदायिनी घटना के कारण उत्पन्न शोक। **मातमपुर्सी**–(फ़ा० स्त्री०) जिसके घर कोई मर गया हो उसके यहाँ जाकर उसको ढाढस देने का काम। **मातमी**–(फ़ा०वि०) शोक सूचक।
मातहत–(अ०पुं०) अधीनस्थ कर्मचारी, किसी की अधीनता में काम करने वाला, **मातहती**–(अ०स्त्री०) अधीनता में।
मादर–(फा०स्त्री०) मां, माता।
मादरजाद–(फ़ा०वि०) जन्म का, एक माता से उत्पन्न, सगा भाई, जैसा माता के पेट से निकला हो, पूर्ण रूपसे नगा।
मादा–(फा०स्त्री०) स्त्री जाति का प्राणी, इस शब्द का व्यवहार जीव जन्तु के लिये किया जाता है।
माद्दा–(अ०पुं०) मूल तत्व, योग्यता,
मानसून–(अ०पु०) भारतीय महासागर में बहने वाली एक वायु जिसके बहन पर भारतवर्ष में वर्षा होती है।
माना–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का मीठा रस जो कई जाति के वृक्षों के रससे बनाया जाता है और औषधियों में प्रयोग होता है।
मानिंद–(फ़ा०वि०) तुल्य, समान।
मानिटर–(अं०पुं०) पाठशाला की कक्षा का एक प्रधान छात्र जिसको अन्य छात्रों पर कुछ विशिष्ट अधिकार रहता है।
मानी–(अ०पुं०स्त्री०) अर्थ, तात्पर्य, रहस्य, प्रयोजन, हेतु कारण।
माने–(अ०पुं०) अर्थ, आशय, **माने-माने**–अप्रगट रूप से, छिपे हुए।
माफ़–(अ०वि०) क्षमा किया हुआ।
माफकत–(अ०स्त्री०) मेल, मैत्री, अनुकूलता।
माफ़िक–(अ०वि०) अनुकूल, अनुसार, योग्य।
माफ़ी–(अ०स्त्री०) क्षमा, वह भूमि जिसका कर सरकार को न देना पड़े; **माफीदार**–वह जिसको अपनी भूमि का कर नहीं देना पड़ता।
मामलत, मामलति–(अ०स्त्री०) व्यवहार की वार्ता, विवाद का विषय।
मामा–(फा०स्त्री०) माता, मां, बुढिया नौकरनी, दाई, रोटी पकाने वाली स्त्री।
मामूल–(अ०पुं०) टेव, लत, परिपाटी, रीति, वह धन जो किसी के रीति के कारण दिया जाता हो। **मामूली**–(अ०वि०) सामान्य, साधारण, नियमित।
मायनी–(अ०स्त्री०) अर्थ, तात्पर्य, देखो मायाविनी।
मायल–(फ़ा०वि०) प्रवृत्त, झुका हुआ, मिश्रित, मिला हुआ।
मायूस–(फ़ा०वि०) निराश।
मायूसी–(फ़ा०स्त्री०) निराशा।
मार्का–(अं०पुं०) चिन्ह, कोई विशेषता दिखलाने वाला चिन्ह, कोई महत्व पूर्ण घटना।
मारखोर–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार की पहाड़ी बकरी या भेंड़।
मारफ़त–(अ०अव्य०) द्वारा।
मार्क–(अं०पुं०) चिन्ह।
मार्केट–(अं०पुं०) हाट।
मार्च–(अं०पुं०) अंग्रेज़ी वर्ष का तीसरा महीना जिसमें ३१ दिन होते हैं।
मार्फत्–(अं०अव्य०) द्वारा।
मालखाना–(फ़ा०पुं०) सामग्री रखने का स्थान, कोषगृह।
मालगुजार–(फ़ा०पुं०) कर देने वाला पुरुष। **मालगुजारी**–(फ़ा०स्त्री०) वह भूमिकर जो भूस्वामी से सरकार लेती है, लगान।
मालटा–(अ०स्त्री०) एक प्रकार की लाल रंग की नारंगी जो बड़ी स्वादिष्ट होती है।
मालदार–(फ़ा०पुं०) धनवान, धनी,
मालामाल–(फ़ा०वि०) धन धान्य से

परपूर्ण, संपन्न ।
मालिक–(अ०पुं०) ईश्वर, अधिपति, स्वामी, पति, ।
मालिकाना–(फ़ा०पुं०) मालिक का अधिकार ।
मिलकियत–(फ़ा०पुं०) सम्पत्ति ।
मालिकी–(फ़ा०स्त्री०) मालिक होने का भाव, मालिक का स्वत्व ।
मालियत–(अ०स्त्री०) मूल्य, धन, सम्पत्ति, मूल्यवान पदार्थ ।
मालिश–(फ़ा०स्त्री०) मर्दन, मलने की क्रिया, ।
मालीदा–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार का बहुत कोमल ऊनी वस्त्र, मलिदा, चूरमा ।
मालूम–(अ०वि०) ज्ञात, जाना हुआ ।
माशूक–(अ०पुं०) प्रेम पात्र, वह जिसके साथ प्रम किया जाय ।
माशूकी–(फा०स्त्री०) प्रेमपात्रता ।
मास्टर–(अं०पु०) स्वामी, मालिक, शिक्षक गुरु, किसी विषय में प्रवीण बालकों के लिये व्यवहार किया जाने वाला शब्द ।
मास्टरी–(अं०स्त्री०) मास्टर का कार्य, प्रवीणता, अध्यापकी ।
माहताब–(फ़ा०पुं०) चन्द्रमा ।
माहताबी–(फ़ा०स्त्री०)देखो महताबी, एक प्रकार का कपड़ा जिसपर सोने या चांदी के बादले से सूर्य चन्द्रमा की आकृति बनी रहती है, तरबूज़, चकोतरा नीबू, घरके आंगन के बीचे का ऊँचा चबूतरा ।
माहवार–(फ़ा०पुं०) महीने का वेतन (वि०) प्रति मास, महीने महीने ।
माहवारी–(फ़ा०वि०) हर महीने का, मासिक ।
माहियत–(अ०स्त्री०)तत्व,भेद,प्रकृति, विवरण ।
माहियाना–(फ़ा०वि०)माहवार(पुं०) मासिक वेतन ।
माहिर(अ०वि०) तत्वज्ञ,जानकार
मांही–(फ़ा०स्त्री०) मत्स्य, मछली; माहीगीर–मछली पकड़ने वाला, मछुआ; माही पुश्त–मछली की पीठ की तरह बीच में उभड़ा हुआ; माही मरातिब–राजाओं के आगे हाथी पर चलने वाले सात झंडे जिन पर अलग अलग सातों ग्रहों आदि की आकृतियां कारचोबी पर बनी रहती हैं ।
मिंट–(अं०पुं०) टकसाल, टसकाली सोना ।
मिआन–(फ़ा०वि०) देखो मिआना ।
मिक़द–(फ़ा०स्त्री०) मलद्वार, गुदा ।
मिकदार–(अ०स्त्री०)परिमाण,मात्रा ।
मिकनातीस–फ़ा०पुं०) चुम्बक पत्थर ।
मिकाडो–जापान के सम्राट् की उपाधि
मिजाज–(अं०पुं०) किसी पदार्थ का मूल गुण, शरीर या मन की दशा, स्वभाव, अभिमान, घमंड; मिजाज खराब होना–अस्वस्थ होना; मिजाज बिगड़ना–क्रुद्ध होना; मिजाज पाना–किसी के स्वभाव से परिचित होना; मिजाज पूछना–क्षेम कुशल पूछना; मिजाज न मिलना–अभिमानके कारण किसी से न बोलना ।
मिजाज आली–(अ० स्त्री०) एक वाक्यांश जिसका व्यवहार किसी का कुशल क्षेम पूछने के समय किया जाता है
मिजाजदार–(अ०वि०) अभिमानी, घमंडी ।
मिजाज पुरसी–(फ़ा०स्त्री०) किसी से उसकी चित्त अवस्थ पूछना ।
मिजाज शरीफ़–(अ०पुं०)वह वाक्यांश जिसका व्यवहार किसी के शरीर का कुशल क्षेम पूछने के लिये किया जाता है ।
मिडिल्–(अं०वि०) किसी पदार्थ का मध्य, बीच (पु०) शिक्षा क्रम मे एक छोटी कक्षा । मिडिलची–वह जो मिडिल परीक्षा पास हो, मिडिल स्कूल–वह विद्यालय जिसमें केवल मिडिल तक की पढ़ाई होती है
मिनवाल–(अ०पु०) करघे का कपड़ा लपेटने का बेलन ।
मिनहा–(अ०वि०) घटाया हुआ,बट्टा दिया हुआ ।
मिन्जानिब–(अ०क्रि०वि०) ओर से,
मिन्जुमला–(अ०क्रि०वि०) कुल में से, सब में से ।
मिन्नत–(अ०स्त्री०) निवेदन, प्रार्थना, दीनता, कृतज्ञता, ।
मियां–(फ़ा०पुं०) स्वामी, मालिक, पति, मुसलमान, शिक्षक, बड़ों के लिये एक प्रकार का सम्बोधन, महाशय, बच्चों के लिये एक प्रकार का सम्बोधन ।
मियान–(फा०स्त्री०)देखो म्यान(पुं०) बिचला हिस्सा ।
मियानतह–(फ़ा०स्त्री०) किसी अच्छे कपड़े के नीचे दिया हुआ अस्तर का कपड़ा ।
मियाना–(फ़ा०वि०) मध्यम आकार का (पुं०) गांव के बीच का खेत, गाड़ी का बम, एक प्रकार की पालकी, कच्ची चीनी ।
मियानी–(फ़ा०स्त्री०) पायजामे में का वह कपड़ा जो दोनों पायचों के बीच में पड़ता है ।
मिरंगा–(फ़ा०पुं०) प्रवाल, मूंगा ।
मिरजई–(फ़ा०स्त्री०) पूरी बाँह का एक प्रकार का कमर तक का बन्द-दार अंगा ।
मिरजा–(फ़ा०पुं०) मीर या अमीर का पुत्र, राजकुमार कुँवर, तैमूर वंश के राजकुमारों की उपाधि, मुगलों की उपाधि (वि०) कोमल, ।
मिरजाई–(फा०स्त्री०) मिरजा का भाव या पद, सरदारी; अभिमान घमंड ।
मिरजान–(फ़ा०पुं०) प्रवाल, मूंगा ।
मिरजा मिजाज–(फ़ा०वि०) कोमल चित्त का ।
मिल–(अं०स्त्री०) चक्की, कल यन्त्र ।
मिलक–(अं०स्त्री०) सम्पत्ति, मिलकियत, जागीर ।
मिलिक–(अ०स्त्री०) भूसम्पत्ति ।
मिल्क–(अ० पु०) धन, सम्पत्ति अधिकार ।
मिल्कियत–(अ०स्त्री०) धन, सम्पत्ति वह सम्पत्ति जिस पर मालिक का पूर्ण अधिकार हो ।
मिल्की–(अ०पुं०) भूस्वामी ।
मिल्लत–(अ०स्त्री०) घनिष्ठता, मेल जोल, मिलनसारी, समूह, मण्डली सम्प्रदाय, धर्म ।
मिशन्–(अं०पुं०) वह व्यक्ति या मण्डली जो किसी विशेष कार्य के निमित्त कहीं पर भेजा जाय, उद्देश्य ईसाइयों की धर्म स्थापना करने की संस्था, दूत मण्डल जो राजनैतिक उद्देश्य से कहीं पर भेजा गया हो ।
मिशनरी–(अं०पुं०) ईसाइ धर्म का प्रधान पादड़ी, ईसाइयों का पुरोहित
मिसकीन–(अ०वि०) जिसमें कोई सामर्थ्य या बल न हो, निर्धन, बेचारा सीधा सादा ।
मिसकीनता(अ०स्त्री०) निर्धनता ।
मिसकीनी–(अ०स्त्री०) दरिद्रता ।
मिसरा(अ०पुं०) उर्दू फारसी कविता का एक पद ।
मिसरा बहर–पूर्ति के लिये दी हुई समस्या ।
मिसल–(अ०स्त्री०) सिक्ख धर्म,संघ ।
मिसाल–(अ०स्त्री०)उपमा,उदाहरण, लोकोक्ति, कहावत ।
मिसिल–(अ०वि०) देखो मिस्ल, तुल्य समान (स्त्री०) किसी एक विषय से संबंध रखने वाले पत्र, किसी पुस्तक के अलग अलग छपे हुए फ़ार्म जो सिलाई आदि के लिये क्रम में रक्खे गये हों ।
मिस्कला–(अ०पुं०) सिकली करने का अस्त्र ।
मिस्कीन–(अ०पुं०) देखो मिसकीन ।
मिस्कोट–(अ०पुं०) एक साथ बैठ कर खाने पीने बालों का समूह, गुप्त परामर्श ।
मिस्टर–(अं०पुं०) महोदय, महाशय,
मिस्तर–(अ०पुं०) दफ्ती का वह बड़ा टुकड़ा जिस में समान्तर पर डोरें लपेटे या सिले हुए होते हैं, लिखने के समन लकीरें सीधी रखने के लिये यह लिखे जाने वाले कागज के नीचे रख लिया जाता है ।
मिस्तरी–(अ०पुं०) हाथ का अच्छा कारीगर, चतुर शिल्पकार; मिस्तरी-खाना–वह स्थान जहां पर लोहार बढ़ई आदि बैठ कर काम करते हैं।
मिस्सी–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जिसको सधवा स्त्रियां दांतों में लगाती हैं ।
मिहतर–(फ़ा०पुं०) देखो मेहतर ।
मिहदार–(फ़ा०पुं०) कर्म कार भार जिसको दिया जाता है , दैनिक वेतन
मिहनत–(अ०स्त्री०) मेहनत ।
मिहनताना–(अ०पुं०) देखो मेहनताना
मिहनती–(फ़ा०पुं) देखो मेहनती ।
मिहमान–(फ़ा०पुं०)देखो मेहमान ।
मिहमानदारी– (फ़ा० स्त्री०) देखो मेहमानदारी ।
मिहमानी–(फा०स्त्री०)देखो मेहमानी
मिहरबान–(फ़ा०पुं०)देखो मेहरबान ।
मिहरबानी–(फ़ा०स्त्री०)देखो मेरहबानी
मिहराब–(फ़ा०स्त्री०) देखो मेहराब ।
मीआद–(अ०स्त्री०) किसी कार्य की समाप्ति के लिये निर्धारित समय, अवधि ।
मीजान–(अ०स्त्री०) तुला, तराजू, कुल संख्या का योग, जोड़ ।
मीटिंग्–(अं०स्त्री०) अनेक मनुष्योंका किसी परामर्श के लिये एकत्रित होना, अधिवेशन, सभा ।
मीना(फ़ा०पुं०) रंग विरंगा शीशा, एक प्रकार का बहुमूल्म पत्थर, रंग विरंगा काम जो सोने चांदी पर किया जाता है ।
मीनाका–(फ़ा०पुं०) मीना करने वाला ।
मीनाकारी–(फ़ा०स्त्री०) सोने या चाँदी पर होने वाला रंगीन काम,
मीनार–(अ० स्त्री) स्तम्भ, ईंट पत्थर आदि की रचना जो गोलाकार बहुत ऊँची बनी होती है ।
मीर–(फ़ा०पुं०) प्रधान नेता, धार्मिक आचार्य, सैयद जाति की एक उपाधि, किसी बड़े सरदार या रईस का पुत्र, ताश या गंजीफ़े कासबसे बड़ा पत्ता, किसी कार्य में नियुक्त मनुष्यों में से वह जो सबसे पहले कार्य को पूरा कर दे, वह जो खेल में औरों से पहले अपना दाँव खेल कर अलग हो गया हो ।
मीरजा–(फ़ा०पुं०) अमीर या सरदार का पुत्र, मुगल राजाओं की एक उपाधि ।
मीरजाई–(फ़ा० स्त्री०) सरदारी, अमीरी, अभिमान, घमंड ।
मीरफर्श–(फ़ा०पुं०) वे गोल चिकने भारी पत्थर जो बड़े बड़े भूतल के कोनों पर इस लिये रख दिये जाते हैं कि हवा से चांदनी उड़ न जावे ।
मीरबख्शी–(फ़ा०पुं०) मुसलमानी राज्य का वह प्रधान कर्मचारी जो वेतन बांटता था । मीरबहरी–(फ़ा० पुं०) मुसलमानी राज्य में जलसेना के प्रधान अधिकारी का नाम ।
मीरवार–(फ़ा०पुं०) मुसलमानी राज्य का वह अधिकारी जो सरदार

या राजा से मिलने की आज्ञा लोगों को देता था। **मीरमंजिल**–(फ़ा० पुं०) वह कर्मचारी जो राज्य या लश्कर पहुंचने से पहले पड़ाव पर पहुंच कर सब प्रबन्ध कर रखता था।
मीरमजलिस–(फ़ा० पुं०) किसी सभा का प्रधान, अधिकारी, सभापति
मीरमाहल्ला–(अ० पुं) किसी महल्ले का प्रधान सरदार। **मीरमुंशी**–(अ० पुं०) प्रधान लेखक। **मीरशिकार**–(फ़ा०पुं०) अमीर या राजा के शिकार का प्रबंध करनेवाला।
मीरसामान–(फ़ा०पुं०) अमीर या राजा के पाकशाला का प्रबंध करने वाला कर्मचारी।
मीरास–(अ०स्त्री०) वह सम्पत्ति जो किसी के मरने पर उसके उत्तराधिकारी को मिलती हैं, बपौती।
मील–(अं०पुं०–माइल) दूरी की एक नाप जो १७५० गज अथवा आध कोस की होती।
मुंतकिल–(अ०वि०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर गया हुआ।
मुंतजिम–(अ०पुं०) प्रबधकर्ता,
मुंतजिर–(अ०वि०) प्रतीक्षा करने वाला।
मुंशियाना–(फ़ा०वि०) मुंशियों की तरह का।
मुंशी–(अ०पुं०)लेख निबंध आदि का लेखक, लिखा पढ़ी का काम अथवा प्रतिलिपि लिखने वाला, वह जो उर्दू फ़ारसी के सुन्दर अक्षर लिखता हो; **मुंशीखाना**–वह स्थान जहां पर लेखक लोग बैठकर काम करते हैं, **मुंशीगिरी**–मुंशी का काम या पद।
मुंसरिम–(अ० पुं०) प्रबन्ध या व्यवस्था करने वाला, कचहरी का प्रधान कर्मचारी जिसके पास अभियोगों के पत्र आदि रहते है।
मुंसलिक–(अ०वि०) साथ में बंधा हुआ।
मुंसिफ–(अ०पुं०) न्याय करने वाला अधिकारी, दीवानी विभाग का सबजज से छोटा न्यायाधीश।
मुंसिफी–(अ०स्त्री०) न्याय करने का काम, मुंसिफ़ का काम या पद, मुंसिफ का न्यायालय।
मुअज्जन–(अ०पुं०) नमाज के लिये सब लोगों को पुकारने वाला।
मुअत्तल–(अ०वि०) जिसके पास कुछ काम न हो जो अपने काम से कुछ समय के लिये दण्ड स्वरूप अलग कर दिया गया हो।
मुअत्तली–(अ०स्त्री०) काम से कुछ दिन के लिये अलग किया जाना।
मुअम्मा–(अ०पुं०) रहस्य,भेद,पहेली, पेचीली बात जो जल्दी से समझ में न आवे।
मुअल्लिम–(अ०पुं०) शिक्षा देने वाला
मुआफ–(अं० वि०) देखो माफ़।
मुआफ़कत–(अ०स्त्री०) अनुकूल होने का भाव, मित्रता, हेलमेल।
मुआफिक (अ०वि०) अनुकुल, जो विरुद्ध न हो,मनोनुकूल,इच्छानुसार, ठीकठीक, बराबर।
मुआफिकत–(अ० स्त्री०) अनुरूपता, मित्रता,
मुआफी–(अ०स्त्री०) देखो माफ़ी।
मुआमला–(अ०पुं०) देखो मामला।
मुआयना–(अ०पुं०) निरीक्षण, जांच पड़ताल।
मुआलिज–(अ०पुं०) चिकित्सक।
मुआलिजा–(अ०पुं०) चिकित्सा,
मुआवजा–(अ० पुं०) बदा, पलटा, किसी कार्य या किसी हानि के बदले में दिया जाने वाला धन।
मुआहिदा–(अ०पुं०) दृढ़ निश्चय,
मुकता–(अ०वि०) काट छांट कर ठीक तरह से बनाया हुआ, सभ्य।
मुकदमा–(अ०पुं०) अधिकार आदि के संबंध का कोई झगड़ा अथवा किसी अपराध का विचार या निर्णय के लिये न्यायालय में जाच,अभियोग,
मुकदमेबाज–(फ़ा०पुं०)वह जो प्रायः मुक़दमे लड़ता हो। **मुकदमेबाजी**–(फ़ा० स्त्री०) मुक़दमा लड़ने का काम।
मुकद्दम–(अ०वि०) प्राचीन, पुराना, सर्वश्रेष्ठ, आवश्यक, (पुं०) नेता, मुखिया।
मुकद्दर–(अ०पुं०) प्रारब्ध, भाग्य।
मुकद्दस–(अ०वि०) पवित्र, शुद्ध,
मुकम्मल–(अ०वि०)पूरा किया हुआ, सब तरह से तैयार।
मुकर्रर–(अ० क्रि० वि०) दुबारा, फिरसे, निश्चित।
मुकर्ररी–(अ०स्त्री०) मुकर्रर होने की क्रिया या भाव, नियत राजकर, नियत वेतन या वृत्ति आदि।
मुकव्वी–(अ०वि०) बलवर्धक, पुष्टिकारक।
मुकाबला–(अ०पुं०) समानता, बराबरी, तुलना, लड़ाई,विरोध,मिलान, मुटभेड़, आमना सामना।
मुकाबिल–(अ० क्रि० वि०) सम्मुख, सामने (वि०) सामने वाला,समान, बराबर का (पुं०) शत्रु,
मुकाम–(अ०पुं०) ठहरने का स्थान, टिकान, पड़ाव, विराम, ठहरने की क्रिया, ठहरने का स्थान, घर, अवसर, सरोद का परदा।
मुकिर–(अ०वि०)प्रतिज्ञा करने वाला किसी प्रतिज्ञा पत्र आदि का लिखने वाला।
मुक्कैश–(अ०पुं०) सोने चांदी का बादला, इससे बुना हुआ कपड़ा। **मुक्कैशी गोखरू**–बादले को मोड़ कर बनाया हुआ महीन गोखरू।
मुखतार–(अ० पुं०) सहायक, छोटे न्यायालयमें काम करनेवाला मुख्तार आम–प्रतिनिधि बनाकर जिसको कोई काम करने का अधिकार दिया गया हो; **मुख्तारकार**–वह जो किसी काम की देख रेख के लिये नियुक्त किया गया हो; **मुख्तारखास**–वह जो किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियुक्त किया गया हो।
मुख्तारनामा–(फ़ा०पुं०) वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से न्यायालयमें कार्यवाही करने के लिये नियुक्त किया गया हो; **मुख्तारनामा आम**–वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई मुख्तार आम नियुक्त किया गया हो; **मुख्तारनामा खास**–वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई मुख्तार खास नियुक्त कियागया हो
मुख्तारी–(फ़ा० स्त्री०) प्रतिनिधि बनकर किसी दूसरे के लिये अभियोग की देखरेख करना, मुख्तार का उद्यम प्रतिनिधि का पद या उद्यम, प्रतिनिधि का पद।
मुखन्नस–(अ०वि०) नपुंसक।
मुखफ्फफ–(फ़ा०वि०) जो घटकर कम किया गया (पुं) किसी पदार्थ का संक्षिप्त रूप।
मुखबिर–(अ०पुं०) भेदिया, जासूस।
मुखबिरी–जासूसी का काम।
मुखमसा–(अ०पुं०) झमेला,बखेड़ा।
मुखम्मल–(अ०वि०) पांच कोने का (पुं०) उर्दू या फ़ारसी की एक प्रकार की कविता।
मुखलिसी–(अ०स्त्री०) छुटकारा,
मुखातिब–(अ० वि०) जिससे बात की जाय।
मुखालिफ–(अ०वि०)विपरीत,विरोधी, प्रतिद्वन्दी, शत्रु।
मुखालिफत–(अ०पुं०) शत्रुता।
मुख्तलिफ–(अ०वि०) विविध प्रकार का, तरह का, भिन्न, अलग।
मुख्तसर–(अ०वि०) संक्षिप्त, जो थोड़े में हो, अल्प, थोड़ा, छोटा।
मुख्तार–(अ०पुं०) देखो मुखतार।
मुगलई–(फ़ा०वि०)मुग़लों की तरह का
मुगलपठान–(फ़ा० पुं०) सोलह कंकड़ियों से खेला जाने वाला एक हार जीत का खेल।
मुगलाई–(फ़ा०स्त्री०) मुग़लपन।
मुगालता–(अ०पुं०) छल,कपट,धोखा
मुचलका–(तु०पुं०) वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित कार्य न करने के लिये तथा किसी समय पर न्यायालय में उपस्थित होने के लिये प्रतिज्ञा की जाती है।
मुजक्कर–(फ़ा०पुं०) पुल्लिङ्ग।
मुजम्मा–(अ०पुं०)चमड़े या रस्सी का फेरा जो घोड़े की दुमची की रस्सी मे बँधा रहता है, (क्रि०) बांधना, लगाना।
मुजरा–(अ०पुं०)वह जो जारी किया गया हो, अभिवादन, किसी धनी के सामने जाकर उसको सलाम करना, रंडीका वह गाना जो बैठकर हो।
मुजर्रद–(अ०वि०) अकेला, जिसके साथ कोई दूसरा मनुष्य न हो, अविवाहित, क्वारा, वह जिसने संसार का त्याग किया हो।
मुजर्रब–(अ०वि०) परीक्षित।
मुजरिम–(अ०पुं०) वह जिस पर अभियोग लगाया गया हो, अभियुक्त
मुजल्लद–(अ० वि०) जिल्ददार, जिसकी जिल्द बँधी हो।
मुजस्सिम (अ०वि०) प्रत्यक्ष।
मुजायकी–(फ़ा०पुं०) हरज।
मुजाहिम–(फ़ा०वि०) बाधक।
मुजारिया–(अ० वि०) जो जारी किया या कराया गया हो।
मुजावर–(अ० पुं०) वह मुसलमान जो किसी पीर की दरगाह या रोज़े पर वहाँ का कार्य करता हो और चढ़ावा आदि लेता हो।
मुजिर–(अ०वि०) हानिकारक।
मुतअल्लिक–(अ०वि०) संबध रखने वाला, सम्मिलित, मिला हुआ (क्रि०वि०) सम्बन्धमें, विषय में।
मुतदायरा–(अ० वि०) जिस पर अभियोग चलाया गया हो।
मुतफन्नी–(अ०वि०) बड़ा धूर्त,
मुतफर्रिक–(अ० वि०) भिन्न भिन्न, अलग अलग,विविध, कई प्रकार का
मुतबन्ना–(अ०पुं०) दत्तक पुत्र,
मुतमौवल–(अ०वि०) धनवान्,
मुतरज्जिम–(अ०पुं०) अनुवाद करने वाला।
मुतलक–(अ० क्रि०) तनिक भी, (वि०) बिलकुल, निरा।
मुतवफा–(अ०वि०) परलोक वासी,
मुतवल्ली–(अ०पुं०)कोई अप्राप्तवयस्क की सम्पत्ति का संरक्षक।
मुतवातिर–(अ०क्रि०वि०) निरन्तर, लगातार।
मुतसद्दी–(अ०पुं०) लेखक, उत्तरदायी, मुनीम, प्रबंधकर्ता, जमा खर्च लिखने वाला।
मुताबिक–(अ०क्रि०वि०) अनुसार, अनुकुल,
मुतालबा–(अ०पुं०)प्राप्य धन,जितना धन पाना हो।
मुत्तफिक–(अ०वि०)सहमत, अनुकूल
मुत्तसिल–(अ०वि०) निकट, पास, (क्रि०वि०) निरन्तर, लगातार।
मुदर्रिस–(अं०पुं०) अध्यापक, शिक्षक
मुदा–(अ०अव्य०) यदि, तात्पर्य यह है कि,
मुदाम–(फ़ा०क्रि०वि०) सदा, सर्वदा, निरन्तर, लगातार, ठीक ठीक।
मुदामी–(फ़ा०वि०) जो सर्वदा होता रहे।
मुद्दआ–(अ०पुं०) अभिप्राय, तात्पर्य

मुद्दइया–(अ०स्त्री०) देखो मुद्दई।
मुद्दई–(अ०पुं०) वादी, शत्रु, वैरी।
मुद्दत–(अ०स्त्री०) अवधि।
मुद्दती–(अ०वि०) वह जिसमें कोई अवधि हो।
मुद्दाअलेह, मुद्दालेह–(अ० पुं०) वह जिसके ऊपर कोई दावा हो।
मुनक्का–(अ०पुं०) एक प्रकार की बड़ी किशमिश या सूखा हुआ अंगूर।
मुनादी–(अ० स्त्री०) किसी बात की घोषणा जो कोई मनुष्य डुग्गी या ढोल पीटते हुए सारे नगर में करता है, ढिंढोरा, डुग्गी।
मुनाफा–(अ०पुं०) किसी व्यापार आदि में प्राप्त वह धन जो मूलधन के अतिरिक्त होता है, लाभ।
मुनासिब–(अ० वि०) उचित।
मुनहसर–(फा० वि०) निर्भर।
मुफलिस–(अ० वि०) दरिद्र, धनहीन।
मुफलिसी–(अ० स्त्री०) निर्धनता।
मुफसिद–(अ०पुं०) वह मनुष्य जो झगड़ा करता हो।
मुफस्सल–(अ० वि०)ब्योरेबार, (पुं०) किसी बड़े नगर के चारो ओर के कुछ दूर के स्थान।
मुफ़ीद–(अ० वि०) लाभ दायक।
मुफ्त–(अ०वि०) जिसमें कुछ मूल्य न लगे, सेत का, बिना दाम का; मुफ्तखोर–दूसरे के धन पर सुख भोगने वाला, मुफ्तमें–बे फायदा।
मुफ्ती–(अ० वि०) जो बिना दाम दिये मिला हो (पुं०) मुसलमानी धर्मशास्त्री।
मुबतिला–(अ०वि०) गृहीत, पकड़ाहुआ।
मुबादिला–(अ० पुं०) बदला, पलटा।
मुबारक–(अ० वि०) मंगलप्रद, शुभ।
मुबारकबाद–(फा० पुं०) धन्यवाद, बधाई। मुबारकबादी–(फा० स्त्री०) बधाई, शुभ अवसरों पर बधाई देने के लिये गाई जाने वाली गीत।
मुबारकी–(हिं०स्त्री०) देखो मुबारकबाद।
मुबालिगा–(अ०पुं०) अत्युक्ति, बहुत बढ़ा कर कही हुई बात।
मुबाहिसा–(अ० पुं०) वादाविवाद।
मुमकिन–(अ० वि०) संभव, हो।
मुमतहिन–(अ० पुं०) परीक्षालेनेवाला।
मुयस्सर–(अ०वि०) देखो मयस्सर।
मुरगा–(फ़ा० पुं०) इस नाम का एक प्रसिद्ध पक्षी, कुक्कुट।
मुरगाबी–(फा० स्त्री०) मुरगे की जाति का एक पक्षी।
मरतहिन–(अ०पुं०) वह जिसके पास कोई वस्तु गिरवीं रक्खी जाय।
मुरदा–(फ़ा०पुं०)मृतक, वह जो मरा हो (वि०) मृतक, मरा हुआ, अति दुर्बल, कुम्हलाया या मुरझाया हुआ।
मुरदार–(फ़ा०वि०) मृत, मरा हुआ, बेजान, अपवित्र (पुं०) वह पशु जो अपनी मृत्यु से मरा हो जिसका मांस न खाया जा सकता हो।
मुरदारी–(फ़ा० पुं०) अपनी मृत्यु से मरे हुए पशु का चमड़ा।
मुरदासंख–(फ़ा०पुं०)एक औषधि जो फूंके हुए सीसे और सिन्दूरसेबनतीहै।
मुरब्बा–(अ०पुं०) फल मेवे आदिका पाक जो चीनी या मिश्री की चाशनी में सुरक्षित किया हो।
मुरब्बी–(अ०पुं०) आश्रय देने वाला, रक्षक, सहायक।
मुरव्वत–(अ० स्त्री०) देखो मुरव्वत।
मुरशिद–(अ०पुं०)पथदर्शक गुरु,पूज्य, माननीय, धूर्त।
मुरस्सा–(अ० वि०)जडित, जड़ाहुआ; मुरस्साकार–गहनों में नग जड़ने वाला, जड़िया।
मुराद–(अ०स्त्री०) इच्छा,अभिलाषा, आशय, अभिप्राय; मुराद पाना–अभिलाषा पूर्ण होना, मांगी मुराद–इच्छित वस्तु की प्राप्ति।
मुरादी–(फ़ा०पुं०) आकांक्षी, वह जो किसी प्रकार की अभिलाषा रखताहो।
मुराफा–(फ़ा० पुं०) छोटे न्यायालय में हार जाने पर बडे न्यायालय में फिर अभियोग रखना।
मुरीद–(अ०पुं०) शिष्य,चेला, वहजो किसीका अनुकरण करता हो,अनुयायी
मुरौअत,मुरौवत–(फा० स्त्री०) शील, संकोच, भलमनसी।
मुर्ग–(फ़ा० पुं०) देखो मुरगा,मुर्गकेश–जटाधारी का पौधा; मुर्गखाना–मुर्गे को रखने का दरबा।
मुर्गाबी–(फ़ा० पुं०) देखौ मुरगाबी।
मुर्चा–(अ० वि०) देखो मोरचा।
मुर्तकिब–(अ० वि०) अपराध करने वाला।
मुर्दनी–(फ़ा० स्त्री०) शव के साथ उसके जलाने या गाड़ने के स्थान तक जाना,मृत्यु के चिह्न जो मुखपर प्रगट हो, अनीति क्रिया के लिये जाने वालों का समूह।
मुर्दा–(फ़ा० पुं०) देखो मुरदा।
मुर्दावली–(अ० वि०) देखो मुर्दनी। (वि०) मृतक के संबध का,मुरदे का।
मुर्दासिंगी–(फ़ा०पुं०)मन्मथ, कामदेव, सूर्य के रथ के घोडे।
मुर्शिद–(अ० पुं०) मार्ग दर्शक, गुरु, श्रेष्ट चतुर।
मुलकी–(अ० वि०) देखो मुल्की, देशी शासन संबंधी।
मुलजिम–(अ०वि०) अभियुक्त, जिस पर कोई अपराध लगाया गया हो।
मुलतवी–(अ० वि०) स्थगित जो कुछ समय के लिये शेष हुआ हो।
मुलना–(अ०पुं०) मौलवी,मुल्ला।
मुलम्मा–(अ०वि०)सोना या चाँदी चढ़ाया हुआ, चमकाया हुआ; (पुं०) सोने या चांदीकापत्र पर पारे बिजली आदि की सहायता जो किसी धातुपर चढ़ाया जाता है, गिलट कलई,उपरी तड़कभड़क। मुलम्मासाज–मलम्मा चढ़ाने वाला।
मुलां–(अ०पुं०) मौलवी,मुल्ला।
मुलाक़ात–(अ० स्त्री०) आपस में मिलना, एक दूसरे का मिलाप, भेट, मेलमिलाप, हेलमेल। मुलाकाती–(अ०पुं०) परिचित व्यक्ति।
मुलाजिम–(अ०पुं०)पास रहनेवाला, सेवक, नौकर।
मुलाजिमत–(अ० स्त्री०) सेवा, नौकरी।
मुलायम–(अ० स्त्री०) जो कड़ा न हो, नरम, हलका, सुकुमार, जिसमें किसी प्रकार का खिचाव न हो; मुलायम चारा–वह जो सहज में मिल सके, दूसरे की बातों में आने वाला।
मुलायमियत–(अ०स्त्री०) मुलायम होने का भाव, सुकुमारता,कोमलता।
मुलाहज़ा–(अ० पुं०) निरीक्षण, देख-भाल, संकोच।
मुल्क–(अ० पुं०) देश, सूबा, प्रांत, संसार।
मुल्कगीरी–(अ०स्त्री०) देश पर अधिकार प्राप्त करना, देश जो जीत लेना। मुल्की–(अ०वि०)देश संबंधी, शासन या व्यवस्था सम्बन्धी।
मुल्तवी–(अ० वि०) रोका हुआ, स्थगित, जिसका समय आगे बढ़ा दिया गया हो।
मुल्ला–(अ०पुं०) मुलामसानों का पुरोहित, मौलवी।
मुवक्किल–(अ०पुं०) वह जो न्यायालय सम्बन्धी काम के लिये कोई बकील नियुक्त करे।
मुशज्जर–(अ०पुं०) एक प्रकार का छपा कपड़ा।
मुशफ़िक–(अ०वि०)दयालु,दयावान्, मित्र।
मुश्क–(फ़ा० पुं०) मृगनाभि,कस्तूरी, गन्ध, (स्त्री०) कन्धे और केहुनी के बीच का भाग, भुजा। मुश्कदाना–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार की लता का बीज जो इलायची के दाने के समान होता है इसको तोड़ने पर कस्तूरी के समान गन्ध निकलती है।
मुश्कनाफा–(फ़ा० पुं०) मृग की नाभि जिसके भीतर से कस्तूरी निकलती है। मुश्कनाभ–(फ़ा०पुं०) कस्तूरी मृग। मुश्कबिलाई–(फ़ा० स्त्री०) गन्धमार्जार। मुश्क मेंहदी–(फ़ा० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पौधा।
मुश्किल–(अ०वि०) दुस्साध्य, कठिन; (स्त्री०) विपत्ति, कठिनता।
मुश्की–(फ़ा०वि०) कस्तूरी पड़ा हुआ (पुं०) काले रंग का घोड़ा।
मुश्त–(फ़ा० पुं०) मुट्ठी; एक मुश्त–एक ही बार, एक साथ (अलग अलग नहीं)।
मुश्तहिर–(अ०वि०)जिसका विज्ञापन दिया गया हो, जो प्रसिद्ध किया गया हो।
मुश्ताक–(अ०वि०)इच्छा रखने वाला, चाहने वाला, प्रेमासक्त।
मुसज्जर–(अ० पुं०) एक प्रकार का छपा कपड़ा।
मुसद्दिका–(अ० वि०) परीक्षित, जांचा हुआ।
मुसन्ना–(अ० पुं०) किसी असली कागज की दूसरी प्रतिलिपि जो मिलान आदि के लिये रक्खी जाती है, रसीद आदि का वह भाग जो रसीद देने वालेके पास रह जाता है।
मुसन्निफ़–(अ०पुं०)ग्रन्थ कर्ता,पुस्तक बनाने वाला।
मुसब्बर–(अ० पुं०) कुछ विशिष्ट क्रियाओं से सुखाया और जमाया हुआ घिकुआर का रस जो औषधियों में प्रयोग किया जाता है।
मुसम्मा–(अ०वि०)नामधारी,जिसका नाम रक्खा गया हो।
मुसम्मात–(अ० वि०) नाम धारिणी (स्त्री०) स्त्री।
मुसलमान–(फ़ा० पुं०) अरब देशवासी इसलाम धर्मावलम्बी जाति।
मुसलमानी–(फ़ा०वि०) मुसलमान सम्बन्धी; (स्त्री०) मुसलमानोंमें छोटे बालकके लिंगेन्द्रिय का अगला चमड़ा काटने की रीत, सुन्नत।
मुसल्ला–(अ०पुं०) नमाज पढ़ने की दरी या चटाई, एक प्रकार का पात्र जिसमें मुहर्रम में चढौवा चढाया जाता है।
मुसव्विर–(अ० पुं०) चित्रकार।
मुसव्विरी–(अ० स्त्री०) चित्रकारी का काम।
मुसहिल–(अ० वि०) रेचक।
मुसाफिर–(अ० पुं०) यात्री,पथिक।
मुसाफिरखाना–(अ०पुं०)यात्रियों के ठहरने का स्थान,धर्मशाला, सराय।
मुसाफिरत, मुसाफिरी–(अ० स्त्री०) प्रवास।
मुसाहब–(अ०पुं०) किसी अमीर या राजा के समीप रहने वाला मनुष्य, पार्श्वचर। मुसाहबत, मुसाहबी–(अ०पुं०)मुसाहबका पद या काम।
मुसीबत–(अ०स्त्री०) विपत्ति, संकट, कष्ट।
मुस्तकिल–(अ०वि०)स्थिर,पक्का,दृढ़।
मुस्तगीस–(अ० पुं०) वह जो किसी प्रकार की प्रार्थना करे, प्रार्थी।
मुस्तनद–(अ० वि०) विश्वसनीय, प्रामाणिक।
मुस्तराना–(अ० वि०) अलग किया हुआ, बरी किया हुआ।
मुस्तहक–(अ० वि०) अधिकारी, योग्य।
मुस्तैद–(अ० वि०) सन्नद्ध, जो किसी काम करने में तत्पर हो। मुस्तैदी–(अ० स्त्री०) तत्परता, उत्साह।
मुस्तौफी–(अ०पुं०) वह पदाधिकारी

जो अपने अधीन कर्मचारियोंके काम की जांच करता हो।

मुहकम–(अ०वि०) दृढ, पक्का।

मुहकमा–(अ० पुं०) विभाग।

मुहतमिम–(अ० पुं०) व्यवस्थापक, प्रबन्ध करने वाला।

मुहतरका–(अ०पुं०) वाणिज्य व्यापार पर लगाया जाने वाला कर।

मुहताज–(अ० वि०) जिसको किसी ऐसे पदार्थ की आवश्यकता हो जो उसके पास न हो, आकांक्षी, निर्भर, आश्रित, दरिद्र, गरीब।

मुहब्बत–(अ० स्त्री०) प्रेम, प्रीति, मित्रता, लगन।

मुहम्मद–(अ० पुं०) अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जिन्होंने इस्लाम या मुसलमानी धर्म चलाया था।

मुहम्मदी–(अ० पुं०) मुहम्मद साहब का अनुयायी, मुसलमान।

मुहर–(फ़ा० स्त्री०) सुवर्ण मुद्रा।

मुहर्रम–(अ० पुं०) अरबी वर्ष का पहला महीना, इसी महीने में इमाम हुसैन शहीद हुए थे।

मुहर्रमी–(अ०वि०) मुहर्रम सम्बन्धी, शोकजनक।

मुहर्रिर–(अ०पुं०) लेखक।

मुहर्रिरी–(अ० स्त्री०) लिखने का काम।

मुहलत–(अ० स्त्री०) देखो मोहलत।

मुहसिन–(अ०वि०) अनुग्रह करनेवाला

मुहसिल–(अ०वि०) फेरीदार।

मुहाफिज–(अ० वि०) संरक्षक। मुहाफ़िजखाना–न्यायालय में वह स्थान जहां पर सब प्रकार के पत्र आदि रक्खे रहते हैं; मुहाफिज दफ्तर–मुहाफ़िज़खानेका अधिकारी।

मुहाल–(अ० वि०) असम्भव, कठिन, दुष्कर, दुःसाध्य, (पुं०) महाल, महल्ला।

मुहावरा–(अ० पुं०) किसी भाषा में प्रचलित वाक्यका वह प्रयोग जिसका अर्थ विशिष्ट होता हैं, यह विलक्षण अर्थ लक्षणा या व्यंजना द्वारा लाया जाता है जैसे-गुल खिलना, लाठी खाना आदि; अभ्यास, बोलचाल।

मुहासिब–(अ०पुं०) गणितज्ञ, हिसाब लेने वाला।

मुहासिरा–(अ० पुं०) शत्रु की सेना या गढ़ को चारों ओर से घेरना।

मुहासिल–(अ० पुं०) आय, लाभ, बिक्री आदि से होने वाली आय।

मुहिम–(अ० स्त्री०) कठिन कार्य, मारके का काम, युद्ध, लड़ाई, आक्रमण, धावा।

मूजी–(अ०पुं०) खल, दुष्ट, पाजी।

मुसाफाहा–(अ० पुं०) अरबी मुसलमानों के अभिनन्दन की एक रीति।

मेंबर–(अं०पुं०) किसी सभा या गोष्ठी का सभासद, सदस्य।

मेकदार–(अ०पुं०) परिमाण।

मेगजीन–(अं०पुं०) वह स्थान जहां सेना के लिये बारूद रक्खी जाती है, कोई सामयिक पत्र जिसमें लेख छपते हैं।

मेज़–(फ़ा०स्त्री०) टेबल, ऊंची चौकी जो खाना खाने या लिखने पढ़ने के लिये रक्खी जाती है; मेजपोश–मेज़ पर बिछाने का कपड़ा

मेजबान–(फ़ा०पुं०) आतिथ्य सत्कार करने वाला।

मेजर–(अं० पुं०) सेना का एक अधिकारी।

मेट्–(अं० पुं०) श्रमिकों का नायक, सरदार, जमादार।

मेडल–(अं०पुं०) सोने चाँदी की बनी हुई मुद्रा जो किसी विशेष कार्य करने के लिये अथवा विशेष निपुणता दिखलाने के लिये किसी को दी जाती है, पदक।

मेमार–(अ०पुं०) मकान बनाने वाला, शिल्पी, स्थापति, थवई, राजगीर।

मेमोरियल्–(अं० पुं०) वह प्राचीन पत्र जो किसी बड़े अधिकारी के पास विचारार्थ भेजा जाय, स्मारक चिह्न।

मेवा–(फ़ा० पुं०) खाने का उत्तम फल, किशमिश, मुनक्का, बादाम आदि सूखे फल।

मेवाटी–(फ़ा० वि०) एक प्रकार का पकवान जिसके भीतर मेवे भरे रहते हैं।

मेवाफरोश–(फ़ा०पुं०) फल या मेवे बेंचने वाला।

मेहतर–(फ़ा०पुं०) बुजुर्ग, सबसे बड़ा, एक नीच मुसलमान जाति, यह झाड़ू देने और विष्टा आदि उठाने का काम करते हैं।

मेहनत–(अ० स्त्री०) परिश्रम, प्रयास, श्रम।

मेहनताना–(फ़ा० पुं०) किसी काम के परिश्रम का मूल्य।

मेहनती–(अ० वि०) परिश्रमी।

मेहमान–(फ़ा०पुं०) अतिथि, पाहुन। मेहमानदारी–(फ़ा०स्त्री०) आतिथ्य सत्कार; मेहमानी–(फ़ा० स्त्री०) अतिथि का सत्कार, पहुनई, पाहुन की तरह रहने का भाव।

मेहर–(फ़ा० स्त्री०) कृपा, दया;

मेहरबान–(फ़ा०वि०) कृपालु, अनुग्रह करने वाला; मेहरबानगी,मेहरबानी–(फ़ा० स्त्री०) कृपा, दया।

मेहराब–(अ०स्त्री०) किवाड़ के ऊपर का गोल किया हुआ भाग; मेहराबदार–ऊपर की ओर गोल कटा हुआ।

मैच्–(अं०पुं०) किसी प्रकार के गेंद के खेल आदि की बाज़ी।

मैदा–(फ़ा०पुं०) गेहूँ का बहुत महीन आटा।

मैदान–(फ़ा० पु०) धरती का लंबा चौड़ा दूर तक फैला हुआ समतल विभाग, चौरस या सपाट भूमि, वह लंबी चौड़ी भूमि जिसपर किसी प्रकार का खेल खेला जाय अथवा दूसरा कोई प्रतियोगिता या प्रतिद्वन्दिता का काम हो, युद्धक्षेत्र, किसी पदार्थ का विस्तार; मैदान में आना–सन्मुख होना; मैदान साफ़ होना–मार्ग मे कोई बाधा न होना; मैदान मारना–विजयी होना।

मोजा–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार का बुना हुआ पैर के पंजे में पहरने का वस्त्र, पैर में का पिंडली के नीचे का भाग, मलयुद्ध की युक्ति।

मोटर्–(अं०पुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिससे दूसरा यन्त्र चलाया जाता है, यन्त्र की सहायता से चलने वाली गाड़ी।

मोतदिल–(अ०वि०) देखो मातदिल।

मोतबर–(अ०वि०) विश्वास पात्र, विश्वास करके योग्य।

मोम–(फ़ा०पुं०) वह चिकना नरम पदार्थ जिससे मधुमक्खियां अपना छत्ता बनाती हैं; मोमजामा–(फ़ा० पुं०) वह कपड़ा जिसपर मोम का लेप चढ़ाया रहता है, ऐसे कपड़े पर पड़ा हुआ पानी आरपार नहीं होता; मोमदिल–बहुत कोमल हृदय वाला।

मोमियाई–(फ़ा० स्त्री०) बनावटी शिलाजीत।

मोहताज–(अ० वि०) वह जिसको किसी वस्तु की अपेक्षा हो, धनहीन, गरीब।

मोहर–(फ़ा०स्त्री०) किसी ऐसी वस्तु पर खुदा हुआ नाम, चिह्न आदि जो कागज़ कपड़े आदि पर छापा जा सके, ठप्पा, कागज़ कपड़े आदि पर ऐसे छाप, सुवर्ण मुद्रा।

मोहराना–(फ़ा०पुं०) वह वेतन जो किसी कर्मचारी को मोहर करने के लिये दिया जावे।

मोहर्रिर–(अ०पुं०) लेखक।

मोहलत–(अ०स्त्री०) अवकाश, किसी काम को करने की अवधि।

मोहाल–(अ०पुं०) किसी एक अथवा अनेक गावों का प्रबन्ध जो किसी नंबरदार के साथ किया गया हो। मधुमक्खी का छत्ता।

मौड़ा–(अ०पुं०) बालक, लड़का।

मौक़ा–(अं०वि०) घटना स्थल, वह स्थान जहां पर कोई घटना हो, अवसर, समय, देश, स्थान।

मौकूफ़–(अ०वि०) रोका हुआ, बन्द किया हुआ, नौकरी से हटाया हुआ, अधिष्ठित।

मौकूफ़ी–(फ़ा० स्त्री०) प्रतिबन्ध, रुकावट।

मौज–(अ० स्त्री०) मन की उमंग विभव, सुख, तरंग, लहर, धुन।

मौज़ा–(अ०पुं०) ग्राम, गाँव

मौजूद–(अ० वि०) प्रस्तुत तैयार, उपस्थित, विद्यमान। मौजूदगी–(फ़ा०स्त्री०) सामने रहने का भाव, उपस्थिति। मौजूदा–(अं० वि०) वर्तमान काल का।

मौत–(अ०स्त्री०) मृत्यु, मरण, मरने का समय, आपत्ति, अत्यन्त कष्ट; मौत का सिरपर होना–मृत्यु समीप होना।

मौताद–(अ०स्त्री०) मात्रा।

मौरूसी–(अ०वि०) पैतृक, बाप दादा के समय से चला आता हुआ।

मौलवी–(अ०पुं०) अरबी भाषा का पण्डित, मुसलमानी धर्म का आचार्य, जो अरबी फारसी भाषा का पंडित हो।

मौसम–(अ०पुं०) देखो मौसिम।

मौसर–(अ०वि०) उपलब्ध, प्राप्त, जो सुगमता से मिल सके।

मौसिम–(अ०पुं०) उपयुक्त समय, ऋतु।

मौसिमी–(फ़ा०वि०) ऋतु संबंधी।

म्यानी–(फ़ा०स्त्री०) पायजामे में का वह टुकड़ा जो रान के बीच में जोड़ा जाता है।

म्युनिसिपैल्टी–(अं० स्त्री०) किसी नगर के नागरिकों की वह प्रतिनिधि सभा जो नगर के स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि का प्रबंध करती है।

म्यूज़ियम्–(अं०पुं०) अजायबघर।

य

यककलम–(फ़ा० वि०) एकही बार लिखकर, एकाएक।

यकता–(फ़ा०वि०) अद्वितीय, जिसके सदृश दूसरा कोई न हो।

यकलाई–(फ़ा०स्त्री०) अद्वितीयता।

यकपरा–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का कबूतर।

यकबयक–(फ़ा०वि०क्रि०) अचानक, सहसा, एक दम से।

यकबारगी–(फ़ा०क्रि०वि०) एकाएक, एकदम से।

यकसां–(फ़ा०वि०) एकसमान, बराबर

यकायक–(फ़ा०क्रि०वि०) एकबारगी

यकीन–(अ०पुं०) प्रतीति, विश्वास, यकीनन्–(अं०क्रि०वि०) अवश्य।

यतीम–(अं०पुं०) अनाथ, यतीमखाना–(फ़ा०पुं०) अनाथालय।

यशब, यशम–(अ०पुं०) एक प्रकार का हरा पत्थर।

या–(फ़ा०अव्य०) विकल्प सूचक शब्द अथवा।

याकूत–(अ०पुं०) लाल रंग का एक बहूमूल्य पत्थर।

याद–(फ़ा०स्त्री०) मेधाशक्ति, स्मरणशक्ति, स्मरण करने की किया, (पुं०) जलजन्तु।

यादगार–यादगारी (फ़ा० स्त्री०) स्मृतिरूप पदार्थ, स्मारक।

याददाश्त–(फ़ा०स्त्री०) स्मरण शक्ति स्मरण रखने के लिये लिखी हुई

कोई बात ।
यानी, याने–(अ०अव्य०) तात्पर्य यह है कि, अर्थात् ।
यार–(फ़ा०पुं०) मित्र, उपपति, जार ।
यारबाश(फ़ा०वि०) मित्रों के साथ समय बितानेवाला ।
याराना–(फ़ा०पुं०) मित्र के सदृश, पुरुष और स्त्री का अनुचित सबन्ध ।
यारी–(फ़ा० स्त्री०) मैत्री, मित्रता, स्त्री पुरुष का अनुचित प्रेम या सम्बन्ध ।
याल–(फ़ा०स्त्री०) देखो अयाल ।
यावर–(फ़ा०वि०) सहायक ।
यावरी–(फ़ा०स्त्री०) मित्रता ।
यूनाइटेड्–(अं०वि०) संयुक्त, मिला हुआ ।
यूनिवर्सिटी–(अं०स्त्री०) वह संस्था जो लोगों को सब प्रकार की उच्च कोटि की शिक्षा देती, परिक्षायें लेती और उपाधियाँ देती है, विश्वविद्यालय ।
यूरेशियन्–(अं० पुं०) वह जिसके माता पिता में से एक यूरोप का तथा दूसरा एशिया वासी हो ।
यूरोप–(अं०पुं०) एक महाद्वीप का नाम ।
यूरोपियन्–(अं०पुं०) यूरोप सम्बन्धी, यूरोप महाद्वीप का निवासी ।
योम्–(अं० पुं०) दिन, रोज़ ।

र

रंगसाज–(फ़ा० पुं०) वह जो लकड़ी के पदार्थों या भीतों पर रंग चढ़ाता है जो इस काम के लिये रंग बनाता हो ।
रंगसाजी–(फा० स्त्री०) रंग बनाने का काम ।
रंगीन–(फ़ा० वि०) जिस पर कोई रंग चढ़ा हो, रंगा हुआ, जिसमें कुछ अनोखापन हो, आमोदप्रिय, विलासपूर्ण ।
रंगीनी–(फ़ा०स्त्री०) सजावट, शृङ्गार रसिकता ।
रंज–(फ़ा० पुं०) शोक, खेद, दुःख ।
रंजिश–(फ़ा०स्त्री०) वैमनस्य, शत्रुता, अनबन, मन मुटाव ।
रंजीदगी–(फ़ा० स्त्री०) वैमनस्य ।
रंजीदा–(फ़ा० वि०) दुःखित, अप्रसन्न
रंडी–(फ़ा० स्त्री०) नाचने गानेवाली तथा धन लेकर मैथुन कराने वाली स्त्री, वेश्या ।
रंडीबाज–(फ़ा० पुं०) वेश्यागामी, वह जो रंडियों के साथ संभोग करता हो ।
रंडीबाजी–(फ़ा० स्त्री०) वेश्यागमन ।
रअय्यत–(अ० स्त्री०) प्रजा कृषक ।
रईस–(अ० पुं०) भूस्वामी, ताल्लुकेदार, प्रतिष्ठित और धनवान् पुरुष, अमीर, धनी ।
रऐयत–(अ० स्त्री०) प्रजा ।
रकबा–(अ० पुं०) क्षेत्रफल ।
रकम–(अ० स्त्री०) लिखने की क्रिया या भाव, नियत संख्या का धन, सम्पत्ति, छाप, धनवान्, प्रकार, तरह, धूर्त, गहना, प्रकार, तरह, लगान की दर, सुन्दर स्त्री ; **रकमी**–(अ० पुं०) वह कृषक जिसके साथ कोई विशिष्ट कृपा की गई हो ।
रकाब–(फ़ा०स्त्री०) घोड़े की गद्दी का पावदान जिस पर सवार पैर रखता है ; **रकाब में पैर रखना**–चलने को तैयार हो जाना; **रकाबदार**–(फ़ा० पुं०) मुरब्बा मिठाई आदि बनाने वाला, हलवाई, सईस ।
रकीक–(अ० वि०) कोमल, मृदु ।
रकीब–(अ० पुं०) किसी प्रेमिका का दूसरा प्रेमी ।
रक्सेताऊस–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का चक्कर देते हुए नाचना ।
रग–(फ़ा० स्त्री०) शरीर में की नस या नाड़ी, पत्तों में की नसें ; **रगरग फड़कना**–अति आवेग आना ; **रगरग में**–सम्पूर्ण शरीर में ।
रगबत–(अ० स्त्री०) इच्छा, चाह, प्रवृत्ति ।
रगरेशा–(फ़ा० पुं०) पत्तियों की नसें, शरीर के भीतर का अङ्ग प्रत्यङ्ग, किसी विषय की भीतरी सूक्ष्म बातें ।
रंगरेज–(फ़ा० पुं०) देखो रङ्गरेज ।
रजा, रजाई–(अ० स्त्री०) इच्छा, अनुमति, स्वीकृति, छुट्टी, आज्ञा ।
रजामंद–(फ़ा० वि०) जो किसी बात पर सहमत हो गया हो ।
रजामंदी–(फ़ा० स्त्री०) सहमति ।
रजिस्ट्रार्–(अं० पुं०) वह अधिकारी जो लोगों के प्रतिज्ञापत्र को रजिस्ट्री करता अर्थात् उन्हें राजकीय पुस्तकों में लिख लेता है; किसी विश्वविद्यालय का मन्त्री या काम करने वाला ।
रजिस्टर्–(अं०पुं०) वह पुस्तक जिसमें किसी विषय का विस्तृत वर्णन लिखा रहता है ।
रजिस्ट्री–(अं० स्त्री०) किसी लिखित प्रतिज्ञापत्र को राजकीय रजिस्टर में लिख लेने का काम ।
रजील–(अ० वि०) छोटी जाति का, नीच ।
रतून–(अ० पुं०) पेड़ी की ईख, एक बार काट लेने पर फिर उसी जड़ से निकलने वाला ऊख का पौधा ।
रदबदल–(फ़ा० क्रि० वि०) उलटफेर, हेरफेर ।
रदीफ़–(अ० स्त्री०) घोड़े की पीठ पर सवार के पीछे बैठने वाला व्यक्ति, पीछे की ओर की सेना ।
रदीफ़वार–(फ़ा०क्रि० वि०) वर्णमाला के क्रम से ।
रद्द–(अ० स्त्री०) जो काट छाँट दिया गया हो, जो तोड़ या बदल दिया हो, (स्त्री०) वमन, उल्टी, कै ।
रद्दीखाना–(फ़ा० पुं०) वह स्थान जहाँ व्यर्थ के पदार्थ फेंके जाते हैं ।
रफ्–(अं० वि०) जो साफ़ और ठीक न हो, खुरखुरा ।
रफ्ते रफ्ते–(फ़ा० क्रि०वि०) धीरे धीरे
रफ़ा–(अ० वि०) दूर किया हुआ, मिटाया हुआ, निवृत्त, शान्त ।
रफ़ा दफ़ा–(अं० क्रि० वि०) मिटाया हुआ ।
रफीदा–(अ० पुं०) वह गद्दी जिसके ऊपर जीन कसी जाती है, गोल पगड़ी
रफू–(अ० पुं०) फटे कपड़े के छेद में तागे भर कर मरम्मत करना ; **रफूगर**–(फ़ा०पुं०) रफू बनानेवाला
रफूगरी–(फ़ा० पुं०) रफू करने का का काम ।
रफ्त, रफ्तनी–(फ़ा० स्त्री०) जाने की क्रिया, माल का बाहर भेजा जाना; **रफ्तार**–(फ़ा० स्त्री०) चलने का ढंग, गति; **रफ्ता रफ्ता**–(फ़ा० क्रि० वि०) धीरे धीरे, क्रम से ।
रब–(अ० पुं०) ईश्वर, परमेश्वर,
रबड़–(अं० पुं०) एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों से निकलते हुए दूध से बनाया जाता है, एक बरगद के समान वृक्ष जिसमें के दूध से यह लचीला पदार्थ बनता है ।
रबाब–(अ० पुं०) एक प्रकार का सारंगी की तरह का बाजा ।
रब्त–(अ०पुं०) अभ्यास, संबंध, मेल; **रब्त ज़ब्त**–मेल जोल ।
रब्ब–(अं० पुं०) देखो रब ।
रब्बा–(अ० पुं०) तोप लादने की गाड़ी ।
रम्–(अं० पुं०) जव से बनाई हुई मदिरा ।
रमक(अ० स्त्री०) मरने के समय की अन्तिम श्वास, नशे का थोड़ा प्रभाव, अल्प प्रभाव, (वि०) बहुत थोड़ा ।
रमजान–(अ०पुं०) एक अरबी महीने का नाम जिसमें मुसलमान लोग रोज़ा रखते हैं ।
रमल–(अ० पुं०) मुसलमानी फलित ज्योतिष का एक भेद जिसमें पासे फेंक कर शुभाशुभ फल निकाला जाता है ।
रमूज–(अ०स्त्री०) कटाक्ष, सैन, पहेली, गूढ़ार्थ वाक्य, श्लेष, भेद, गुप्त बात ।
रम्माल–(अ० पुं०) रमल फेंक कर फलित कहने वाला ।
रवाँ–(फ़ा० वि०) रहता हुआ, घोड़ा हुआ, चलता हुआ, चोखा ।
रवा–(फ़ा० वि०) उचित, प्रचलित ।
रवाज–(फ़ा० स्त्री०) परिपाटी, प्रथा, चलन ।
रवादार–(फ़ा० वि०) संबंध रखने वाला, शुभचिन्तक, हितैषी, जिसमें कण या दाने हो ।
रवानगी–(फ़ा०स्त्री०) प्रस्थान; **रवाना**–(फ़ा० वि०) जिसने कहीं से प्रस्थान किया हो, जो कहीं से चल पड़ा हो, भेजा हुआ; **रवानी**–(फ़ा० स्त्री०) बिदाई ।
रवायत–(अ०स्त्री०) किस्सा, कहानी, कहावत ।
रवारवी–(फ़ा०स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी, भागाभाग, दौड़ादौड़ ।
रविश–(फ़ा० स्त्री०) तौर, ढंग, गति, चाल, वह छोटा मार्ग जो क्यारियों के बीच में चलने के लिये बना रहता है ।
रश्क–(फ़ा० पुं०) ईर्ष्या, कुढ़न, डाह, लज्जा ।
रसद–(फ़ा०स्त्री०) वह जो बाँटने पर अंश के अनुसार मिले, सेना का वह खाद्य पदार्थ जो उसके साथ रहता है, भोजन के लिये अन्न आदि, बांट, बखरा ।
रसाई–(फ़ा० स्त्री०) पहुँचने की क्रिया या भाव, पहुँच ।
रसीद–(फ़ा० स्त्री०) किसी वस्तु के प्राप्त होने या पहुँचने की क्रिया, प्राप्ति, वह प्रमाण रूप पत्र जिसमें किसी द्रव्य या वस्तु के मिलने की पहुँच लिखी होती है ।
रसूम–(अ० पुं०) "रस्म" शब्द का बहुवचन, नियम, वह धन जो राज्य को कोई काम करने के पहले राजकीय नियमों के अनुसार दिया जाता है, वह उपहार जो कृषक भूस्वामी को देता हैं, नेग, भेंट ।
रसूल–(अ० पुं०) ईश्वर का दूत, पैगम्बर ।
रसूली–(अ० वि०) रसूल सम्बन्धी ।
रस्म–(अ० स्त्री०) रीत, परिपाटी, मेलजोल, चाल; **राहरस्म**–मेलजोल ।
रहम–(अ०पुं०) अनुग्रह, दया, कृपा, करुणा, गर्भाशय; **रहमदिल**–दयालु ।
रहमत–(अ० स्त्री०) कृपा, अनुग्रह ।
रहमान–(अ० वि०) बड़ा दयालु; (पुं०) परमात्मा ।
रहल–(अ० स्त्री०) एक विशेष प्रकार की छोटी चौकी जिस पर पढ़ने के समय पुस्तक रक्खी जाती है ।
रहवाल–(फ़ा० स्त्री०) घोड़े की एक चाल ।
रहीम–(अ० वि०) कृपालु, दयालु, (पुं०) ईश्वर का एक नाम, इस नाम का एक प्रसिद्ध कवि जिसके दोहे बड़े प्रसिद्ध हैं ।
राइफल्–(अं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी बन्दूक ।
राउन्ड टेबुल कान्फरेन्स्–(अं० स्त्री०) एक सभा जो गोलमेज के चारों ओर बैठकर किसी महत्व के विषय पर विचार करती है ।

राज–(फ़ा० पुं०) भेद, रहस्य, गुप्त बात।
राजी–(अ० वि०) अनुकूल, बात मानने को तैयार, प्रसन्न, सुखी, आरोग्य, (स्त्री०) अनुकूलता; **राजीखुशी**–आरोग्य और सुखी।
राजीनामा–(फ़ा०पुं०) स्वीकार पत्र, वह लिखित पत्र जिसके द्वारा वादी प्रतिवादी आपस में मेल कर लेते हैं
रातिब–(अ० पुं०) पशुओं का दैनिक भोजन।
रान–(फ़ा० स्त्री०) गंघा, जाँघ।
राय–(फ़ा० स्त्री०) सम्मति, परामर्श।
रायबहादुर–(फ़ा० पुं०) एक उपाधि, जो धनिकों, कर्मचारियों आदि को भारत सरकार की ओर से दी जाती थी
रायरायान–(फ़ा० पुं०) राज्याधिराज
रायल्–(अं० वि०) राजकीय, कागज की एक नाप जो २६ इंच लंबा और २० इंच चौड़ा होता है।
रायसाहब–(फ़ा० पुं०) धनिकों को तथा राज्य के कर्मचारियों को भारत सरकार की ओर से दी हुई एक उपाधि जो 'रायबहादुर' से छोटी होती थी।
राव बहादुर–(फ़ा० पुं०) एक उपाधि को भारत सरकार प्राय: दक्षिण भारत के धनिकों आदि को देती थी
रावसाहब–(फ़ा० पुं०) एक उपाधि जो भारत सरकार को ओर से दक्षिण भारत के धनिकों को दी जाती थी।
रासनशील–(फ़ा० वि०) गोद बैठाया हुआ, दत्तक।
रास्त–(फ़ा० वि०) सीधा, सरल, अनुकूल; **रास्तगी**–(फ़ा० स्त्री०) भलमनसी, सभ्यता, शिष्टता।
रास्तबाज–(फ़ा०वि०) सच्चा; **रास्तबाजी**–(फ़ा० स्त्री०) सचाई।
रास्ता–(फ़ा० पुं०) मार्ग, उपाय, ढंग, प्रथा, चाल; **रास्ता देखना**–प्रतीक्षा करना; **रास्ता पकड़ना**–चले जाना; **रास्ता बतलाना**–उपाय बतलाना, टालना।
राह–(फ़ा०स्त्री०) मार्ग, नियम, प्रथा, रीति; **राह देखना**–आसरे में रहना; **राह पड़ना**–डाका पड़ना; **राहखर्च**–(फ़ा० पुं०) मार्गव्यय, मार्ग में होने वाला व्यय; **राहगीर**–(फ़ा० पुं०) यात्री, पथिक।
राहजन–(फ़ा० पुं०) डाकू, लुटेरा।
राहजनी–(फ़ा० स्त्री०) डकैती, लूट।
राहत–(अ० स्त्री०) सुख, आनन्द।
राहदारी–(फ़ा० स्त्री०) सड़क का कर, राह पर चलने का कर, चुंगी।
राहिन–(अ०पुं०) बन्धक रखनेवाला।
राही–(फ़ा० पुं०) यात्री।
रिंग्–(अं० स्त्री०) अंगूठी, छल्ला, कुंडी, घेरा, मण्डल।
रिगिंङ्–(अं०स्त्री०) जहाज के मस्तूल आदि में बाँधने के रस्से।
रिंद–(फ़ा० पुं०) वह व्यक्ति जो धर्म के विषय में बहुत स्वच्छन्द और उदार विचार रखता है, मनमौजी आदमी; (वि०) मस्त, मतवाला।
रिंदा–(फ़ा०वि०) उद्दण्ड, निरंकुश।
रिआयत–(अ० स्त्री०) अनुग्रह पूर्ण व्यवहार, कोमल तथा दयापूर्ण आचरण, न्यूनता, कमी, विचार, ध्यान।
रिआया–(अ० स्त्री०) प्रजा।
रिकशा–(अं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी गाड़ी जिस पर एक या दो आदमी बैठते हैं जिसको आदमी खींचते हैं।
रिज़क–(अ पुं०) जीविका।
रिजर्व–(अं०पुं०) वह जो किसी विशेष कार्य के लिये निश्चित या सुरक्षित किया हो
रिजर्विस्ट्–(अं०पुं०) वे सैनिक जो आपत्काल के लिये रक्खे जाते हैं।
रिजल्ट–(अं०पुं०) परीक्षा फल।
रिजाली–(फ़ा०स्त्री०) निर्लज्जता।
रिटर्निङ्ग असर–(अं०पुं०) वह अधिकारी जो निर्वाचन के समय मतों की गणना करता है।
रिटायर्–(अं०वि०) जिसने काम से अवसर ग्रहण कर लिया हो, जिसने पेनशन् ले ली हो।
रिपोर्ट्–(अं०स्त्री०) किसी को सूचना देने के लिये किसी घटना का सविस्तार वर्णन, किसी संस्था आदि की कार्यवाही का विस्तृत वर्णन।
रिपोर्टर्–(अं०पुं०) किसी समाचार पत्र में घटनाओं का वर्णन भेजने वाला, वह जो किसी सभा के व्याख्यानों का विवरण लिखता हो।
रिफ़ार्म्–(अं०पुं०) दोषों या त्रुटियों का दूर किया जाना, संशोधन।
रिफ़ार्मर्–(अं०पुं०) सामाजिक या धार्मिक सुधार करने वाला।
रिफार्मेटरी–(अं०स्त्री०) वह संस्था जहां बालक बंदी रक्खे जाते हैं और उनको औद्योगिक शिक्षा दी जाती है
रिलीफ़्–(अं०पुं०) दीन दुखियों को दी जाने वाली सहायता।
रिवाज–(अं०पुं०) प्रथा, रीति।
रिवाल्वर–(अं०पुं०) एक प्रकार का तमंचा जिसमें अनेक गोलियां भरी रहती हैं।
रिव्यू–(अं०स्त्री०) किसी नवीन प्रकाशित पुस्तक की आलोचना, किसी निर्णय का पुनर्विचार, सामयिक पत्रिका जिसमें सामाजिक, धार्मिक आदि विषयोंपर आलोचना रहती है
रिश्ता–(फ़ा०पुं०) सम्बन्ध, नाता।
रिश्तेदार–(फ़ा०पुं०) संबंधी, नातेदार; **रिश्तेदारी**–(फ़ा०स्त्री०) संबंध,
रिश्वत–(अं०स्त्री०) उत्कोच, घूस।
रिश्वतखोर–(फ़ा० पुं०) घूस लेने वाला; **रिश्वतखोरी**–(फ़ा०स्त्री०) घूस लेने का काम।
रिसाल–(फ़ा०पुं०) राज्यकर।
रिसालदार–(फ़ा०पुं०) सेना का अध्यक्ष।
रिसाला–(फ़ा०पुं०) अश्वारोही (घुड़सवारों की) सेना।
रिस्क्–(अं०स्त्री०) उत्तरदायित्व।
रिस्टवाच्–(अं० स्त्री०) कलाई पर बाँधने की छोटी घड़ी।
रिहननामा–(फ़ा०पुं०) वह लेख जिसमें किसी पदार्थ के बंधक रक्खे जाने के नियमों का उल्लेख हो।
रिहर्सल्–(अं०पुं०) नाटक के अभिनय का अभ्यास।
रिहल–(अं०स्त्री०) काठ की बनी हुई कैंचीनुमा चौकी जिसपर रखकर पुस्तक पढ़ी जाती है।
रिहा–(फ़ा०वि०) बन्धन आदि से मुक्त, छूटा हुआ, किसी बाधा या संकट से निर्मुक्त।
रिहाई–(फ़ा०स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा
रीजेन्ट्–(अं०पुं०) किसी राजा की अप्राप्तवय अस्थता में अथवा अनुपस्थिति में राज्य का प्रबंध करने वाला।
रीजेन्सी–(अं०स्त्री०) रीजेन्ट् का शासन या अधिकार।
रीडर्–(अं०पुं०) पढ़ने वाला, किसी विद्यालय का अध्यापक या व्याख्यान देने वाला, (स्त्री०) पाठ्य पुस्तक।
रीडिङ्ग रूम्–(अं०पुं०) वाचनालय।
रीम्–(अं० स्त्री०) कागज की वह गड्डी जिसमें बीस दस्ते हों।
रुआब–(अं०पुं०) धाक, भय, डर।
रुई दस्त–(फ़ा०पुं०) मल युद्ध की एक युक्ति।
रुक्का–(अं०पुं०) छोटी चिट्ठी या पत्र, पुरजा, वह लेख जो हुंडी या ऋण लेने वाला लिखकर महाजन को रुपया लेते समय दे देता है।
रुख–(फ़ा०पुं०) कपोल, गाल, मुंह, शतरंज का एक मोहरा, चेष्टा से प्रगट होने वाली मुख की आकृति, इच्छा, कृपादृष्टि, आगे या सामने का भाग; **रुखदार**–(फ़ा०पुं०) जो घट रहा हो; **रुखसत**–(अं० स्त्री०) बिदाई, अवकाश, काम से छुट्टी, (वि०) जिसने प्रसंशा किया हो।
रुखसताना–(फ़ा०पुं०) बिदा होने के समय दिया जाने वाला धन, बिदाई,
रुखसती–(अं०वि०) जिसको छुट्टी मिली हो, (वि०) बिदाई, दुलहिन की बिदाई, बिदाई के समय दिया जाने वाला धन।
रुखसार–(फ़ा० पुं०) कपोल, गाल।
रुजू–(अ०वि०) किसी ओर प्रवृत्त, किसी ओर झुका होना, ध्यान दिया हुआ।
रुतबा–(अ०पुं०) पद, प्रतिष्ठा।
रुबाई–(अ०स्त्री०) एक प्रकार का चलता गाना; **रुबाई एमन**–(अ०पुं०) एक राग जिसके साथ कौवाली का ठेका बजाया जाता है।
रुमाल–(फ़ा०पुं०) देखो रूमाल।
रुमाली–(फ़ा०स्त्री०) एक प्रकार की लंगोट।
रुसवा–(फ़ा०वि०) अपमानित, निन्दित।
रुस्तम–(अ० पुं०) फ़ारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन योद्धा; बड़ा वीर पुरुष; **छिपा रुस्तम**–वह जो देखने में सीधा जान पड़े परन्तु सचमुच बड़ा वीर हो।
रू–(फ़ा०पुं०) मुख, द्वार, कारण, ऊपरी भाग, सिरा, सामना, आशा।
रूज्–(अं०पुं०) एक प्रकार की लाल बुकनी जिससे सोना चांदी पर चमक लाई जाती है।
रूड्–(अं०पुं०) लंबाई नापने का एक मान जो पांच गज का होता है।
रूदाद–(फ़ा०स्त्री०) वृत्तान्त, समाचार, विवरण, दशा, अवस्था, व्यवस्था, अभियोग मुकदमे का ढंग।
रूपोश–(फ़ा०वि०) छिपा हुआ, गुप्त, जो दण्ड से बचने के लिये भाग गया हो; **रूपोशी**–(फ़ा० स्त्री०) मुंह छिपाने की क्रिया।
रूबकार–(फ़ा०पुं०) आज्ञापत्र।
रूबरू–(फ़ा०क्रि०वि०) सम्मुख, सामने
रूबल्–(रूसी०पुं०) रूस का चांदी का एक सिक्का।
रूम्–(फ़ा०पुं०) टर्की या तुर्की देश का नाम।
रूमाल–(फ़ा०पुं०) कपड़े का वह छोटा चौकोर टुकड़ा जो हाथ मुंह पोछने के काम में लाया जाता है, चौकोर शाल या चिकन का कपड़ा।
रूमी–(फ़ा०वि०) रूम देश का, रूम संबंधी, रूम देश का निवासी।
रूल्–(अं०पुं०) नियम, लकीर खींचने का डंडा, कागज पर खींची हुई लकीर।
रूलर्–(अं०पुं०) लकीर खींचने का डंडा, शासक।
रूस–(फ़ा०स्त्री०) चाल।
रूह–(अं०स्त्री०) आत्मा, जीवात्मा, सत्व, सार। **रूहानी** (वि०) आत्मा संबंधी।
रेकार्ड्–(अं०पुं०) किसी सरकारी संस्था के कागज पत्र, तवे के आकार की चूड़ी जो ग्रामोफ़ोन् बाजेपर रख कर बजाई जाती है।
रेक्टर्–(अं०पुं०) किसी शिक्षा संस्था आदि का प्रधान।
रेखता–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का गाना, गारे चूने का मसाला।
रेग–(फ़ा०स्त्री०) बालू।
रेगिस्तान–(फ़ा०पुं०) बालू का मैदान, मरुदेश।
रेग्युलेटर्–(अं०पुं०) किसी यन्त्र का वह भाग जो इसकी गति को नियन्त्रित करता है।
रेग्युलेशन्–(अं०पुं०) विधान, नियम।

जो राजपुरुष आधीन देश के शासन के लिये बनाते हैं।
रेजगारी,रेजगी–(फ़ा०क्रि०) रुपये के छोटे सिक्के यथा एकन्नी, दुवन्नी, चवन्नी, अठन्नी; किसी वस्तु के छोटे खण्ड या टुकड़े।
रेजा–(फा० पुं०) किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा, सुनारोंकी सोना चांदी ढालने की नाली,परधनी, नग, थान, अँगिया, सीनाबन्द, राजगीरों के साथ काम करने वाला लड़का।
रेजिश–(फ़ा०स्त्री०) जुकाम।
रेजिमेन्ट्–(अं० पुं०) वह अंगरेज़ी राज कर्मचारी जो किसी देशी राज्य में अगरेज़ी राज्य का प्रतिनिधि बन कर काम करता है।
रेजिमेन्ट्–(अं०स्त्री०) सेना का एक भाग।
रेज्योलूशन्–(अं०पुं०) वह प्रस्ताव जो किसी सभा में स्वीकृत किये जाने के लिये उपस्थित किया जाता है, किसी सभा का निर्णय।
रेट्–(अं०पुं०) भाव, गति, चाल।
रेटपेयर्–(अं०पुं०) वह जो म्युनिसिपिल्टी में कर या टिकस देता हो।
रेडियम्–(अं०पुं०) एक बहुमूल्य धातु जिसमें से बिजली के कणों की सूक्ष्म धारा सर्वदा निकलती रहती हैं।
रेफ़री–(अं०पुं०) झगड़ा निपटाने वाला पंच।
रेफ्यूज्–(अं०पुं०) वह संस्था जिसमें अनाथों और निराश्रयों को अस्थायी रूप से आश्रय मिलता है।
रेल–(अं०स्त्री०) लोहे की पटरी जिस पर रेलगाड़ी चलती है, भाफ की शक्ति से चलने वाली रेलगाड़ी, (हिं०स्त्री०) बहाव, धारा,अधिकता
रेलवे–(अं०पुं०)रेलपथ,लोहे की पटरियाँ जिन पर रेलगाड़ी चलती है।
रेवंद–(फ़ा०पुं०) एक पहाड़ी वृक्ष जिसकी जड़ और लकड़ी औषधियों मे प्रयोग होती है, रेवंदचीनी।
रेवरेन्ड्–(अं०पुं०)पादड़ियों की एक सम्मान सूचक उपाधि।
रेवेन्यू–(अं०पुं०) किसी राज्य की वार्षिक आय जो भूमिकर, आयकर आदि से उपलब्ध होती है।
रेवेन्यूबोर्ड्–(अं० पुं०) बड़े बड़े अधिकारियों की वह समिति जिसके आधीन राजस्व का प्रबन्ध और नियन्त्रण है।
रेवोल्यूशन्–(अं०पुं०) राज्यविप्लव, उलटफेर, परिवर्तन।
रेवोल्यूशनरी–(अं०वि०)राज्यक्रान्तकारी, विप्लवपंथी।
रेशम–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार का चमकीला महीन तन्तु जो पुष्ट होता हैं, जिसके वस्त्र बुने जाते हैं इस तन्तु को कोष में रहने वाले एक प्रकार के कीड़े तैयार करते हैं जो कई प्रकार के होते हैं ये शहतूत के पत्ते खाते हैं।
रेशमी–(फ़ा०वि०)रेशम का बनाहुआ।
रेशा–(फ़ा० पुं०) तन्तु या महीन सूत जो पौधों की छाल आदि से निकाला जाता है।
रेस्–(अं० स्त्री०) दौड़ की प्रतियोगिता, घुड़दौड़।
रेसकोर्स्–(अं० पुं०) घुड़दौड़ का मैदान।
रेसमान–(फ़ा० पुं०) सुतली, डोरी।
रेहन–(फ़ा० पुं०)रुपया देने वाले के पास कोई माल या सम्पत्ति इस बात पर रखना कि रुपया दे देनेपर वह माल या सम्पत्ति वापस कर दे, बधक।
रेहनदार–(फ़ा०पुं०)वह जिसके पास बन्धक रक्खा जावे।
रेहननामा–(फ़ा०पुं०)वह पत्र जिस पर बंधक के नियम लिखे हो।
रेहल–(अं०स्त्री) देखो रिहल।
रैंगलर्–(अं०पुं०)इङ्गलैण्डकी सर्वोच्च गणित परीक्षा में उत्तीर्ण।
रैक्–(अं०पु०) आलमारीके ढंगका पुस्तक आदि रखनेका लकड़ी का ढाँचा।
रैकेट्–(अं०पुं०) टेनिस् के खेल में गेंद मारने का तांत से बिना हुआ डंडा।
रैयत–(अ०स्त्री०) प्रजा।
रैहां–(अं०पुं०) एक प्रकार की वनस्पति।
रोगन–(फ़ा०पुं०) तेल, चिकनाई, चमक लाने के लिये किसी वस्तु पर चढ़ाने वाला लेप, पतला लेप जिसको किसी वस्तु पर पोतने से चिकनाहट और चमक आती है।
रोगनदार–(फ़ा०वि०)जिसपर रौग़न चढ़ाया गया हो।
रोगनी–(फ़ा०वि०) लेप किया हुआ।
रोज़–(फ़ा०पुं०)दिवस,दिन(अव्य०) प्रतिदिन, नित्य।
रोज़गार–(फ़ा०पुं०) जीविका या धन संचय करने के लिये हाथ में मिला हुआ काम, व्यवसाय, धन्धा, व्यापार।
रोज़गारी–(फ़ा०पुं०) व्यापारी।
रोज़नामचा–(फ़ा०पुं०) दिनचर्याकी पुस्तक, प्रतिदिन का आय व्यय लिखने की वही, वह पुस्तक जिसपर प्रतिदिन का काम लिखा जाता है।
रोज़मर्रा–(फ़ा०अव्य०) प्रतिदिन, नित्य व्यवहार की भाषा,बोलचाल।
रोज़ा–(फ़ा०पुं०) व्रत, उपवास, वह व्रत जो मुसलमान लोग रमज़ान के महीने भर तक रहते है जिसका अन्त ईद पर होता है।
रोज़ाना–(फ़ा०क्रि०वि०)प्रतिदिनका।
रोज़ी–(फा०स्त्री०) नित्य का भोजन, जीविका, वह जिसके सहारे किसी को भोजन वस्त्र प्राप्त हो।
रोज़ीदार–(फा०पुं०)प्रदिदिनके व्यय के लिये जिसको कुछ मिलता हो।
रोज़ीना–(फा० पुं०) प्रति दिनका पारिश्रमिक।
रोज़ीबिगाड़–(फा०पुं०) किसीकी लगी हुई रोज़ी को बिगाड़ने वाला।
रोब–(अ०पुं०) बड़प्पन की धाक, दबदबा; रोब जमाना–प्रताप दिखलाना; रोबमें आना–किसी के कारण अनिच्छित कार्य कर डालना,
रोबदार–(अ०वि०) जिसकी चेष्टा से प्रताप और तेज प्रगट हो, प्रभावशाली।
रोमन्–(अं०वि०)रोम् नगर वासी।
रोलर्–(अं०पुं०)कोई ढुलकने वाली वस्तु, बेलन।
रोशन–(फ़ा०वि०) प्रकाशमान्, चमकदार, प्रदीप्त, जलता हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात, प्रकट।
रोशनचौकी–(फ़ा०स्त्री०) फूंककर बजानेका एक प्रकारका बाजा, शहनाई।
रोशनदार–(फ़ा०पुं०)भीत में प्रकाश आनेके लिये बना हुआ छिद्र, गवाक्ष, मोखा, झरोखा।
रोशनाई–(फ़ा०स्त्री०) लिखने की स्याही, मसि।
रोशनी–(फ़ा०स्त्री०)उजाला, प्रकाश, दीपकों की पंक्ति का प्रकाश, दीपक ज्ञान या शिक्षा का प्रकाश।
रौ–(फा०स्त्री०) गति, चाल, ढंग, धुन, बेग, झोंक, पानी का बहाव, तोड़,
रौग़न–(अ०पुं०) तेल, लाख आदि का बना हुआ पक्का रंग जो चमक लानेके लिये पदार्थोंपर चढ़ाया जाता है।
रौग़नी–(अ०वि०) तेल का रौग़न फेरा हुआ।
रौंजन–(फ़ा०वि०) छिद्र, दरार, मोखा।
रौज़ा–(अ०पुं०) बाग, बगीचा, वह घर जो राजा सरदार आदिके कब्र पर बनी होती है।
रौनक–(अ०स्त्री०) दीप्ति, चमक, शोभा, छटा, चहलपहल, प्रफुल्लता, सुहावनापन।
रौशन–(फ़ा०वि०) देखो रोशन।
रौशनदान–(फ़ा०पुं०)देखो रोशनदान।
रौशनी–(फ़ा०स्त्री०) देखो रोशनी।
रौस–(फ़ा०स्त्री०)गति चाल, रंगढंग, बागकी क्यारियोंके बीचकी पगडंडी; देखो रविश।

ल

लंकलाट–(अं०पुं०) "लाङ्क्लाथ्" का अपभ्रंश एक प्रकार का धुला हुआ चिकना मोटा कपड़ा।
लंग–(फ़ा०स्त्री०) देखो लांग,(पुं०) लगड़ापन।
लंगर–(फ़ा०पुं०) लोहे का बना हुआ एक प्रकार का बहुत बड़ा कांटा जो जहाज़ या बड़ी नावोंको एक स्थान पर ठहराने के लिये उपयोग किया जाता हैं, रस्सी या तार में बंधी हुई तथा लटकती हुई कोई भारी वस्तु, आश्रयस्थान, आश्रय व्यक्ति, वह स्थान जहां दरिद्रों को बांटने के लिये भोजन पकाया जाता है, पका हुआ भोजन जो दरिद्रों को बांटा जाता है, कपड़े में दूर दूर लगाया हुआ टांका, वह स्थान जहां पर बहुत से लोगों का भोजन पकता है, किसी पदार्थ का नीचे का मोटा भारी भाग, अंडकोश, मल्ल की लंगोट, लोहे की मोटी सिकड़ी, पैर में पहरनेका चांदी का तोड़ा, जहाज का मोटा रस्सा, हरहाई गाय के गले में बांधने का लकड़ी का मोटा कुन्दा, ठेंकुर, (वि०) अधिक भार का, ढीठ, नटखट।
लंगरखाना–(फ़ा०पुं०) वह स्थान जहाँ दरिद्रों को पकाया हुआ भोजन बांटा जाता है।
लंगरगाह–(फ़ा०पुं०) समुद्र या नदी के किनारे पर का वह स्थान जहां पर लंगर डाल कर जहाज़ ठहरते हैं
लंतरानी–(अ०स्त्री०) व्यर्थ की बड़ी बड़ी बात, आत्मप्रशंसा।
लकब–(अ०पुं०) उपाधि।
लकलक–(अं०पुं०) लंबी गरदन का एक पक्षी, ढेंक (वि०) अति दुर्बल, चमकीला।
लकवा–(अ०पुं०) एक बात रोग जिसमें शरीरका कोई अंग ज्ञानशून्य हो जाता है।
लखलखा–(फ़ा०पुं०) एकविशेषप्रकार का बना हुआ सुगन्धित द्रव्य जिसको सुंघा कर मूर्छित आदमी सचेतहो जाते हैं।
लगर–(अं०वि०)अतिदुबल, अतिसुकुमार
लगलग–(अ०वि०) बड़ा दुबलापतला, बड़ा सुकुमार।
लच्छेदार–(फ़ा० वि०) जिसमें लच्छे हों, जिसका क्रम न टूटता हो, सुनने में रोचक।
लज़ीज़–(अ०वि०) स्वादिष्ट।
लज़्ज़त–(अ०स्त्री०) स्वाद।
लज़्ज़तदार–स्वादिष्ट।
लण्डन–(अं०पुं०)इङ्गलैण्डकीराजधानी
लतीफ़–(अ०वि०) स्वादिष्ट।
लतीफ़ा–(अ०पुं०) हास्य पूर्ण छोटी कहानी, चुटकुला, अनोखी बात, हँसी की बात।
लफ़ंगा–(फ़ा०वि०) लंपट,व्यभिचारी दुश्चरित्र, कुमार्गी।
लफ़्टंट्–(अं० पुं०) सेना का एक अधिकारी।
लफ़्टंट् गवर्नर्–(अं०पुं०) किसीप्रान्त

का शासक।
लफज–(अ०पु०) शब्द, बात।
लब–(फा०पु०) ओष्ठ, ओठ।
लबलबी–(फा०स्त्री०) बंदूक के घोड़े की कमानी।
लबादा–(फा०पु०) अगरखे आदि के ऊपर पहरने का चोगा।
लबालब–(फा०क्रि०वि०) मुख तक, किनारे तक, छलकता हुआ।
लम्प–(अ०पु०) दीपक।
लरजा–(फा०पु०)कम्प,थरथराहट, भूकम्प।
लवाजमा–(अ०पु०)साथमेरहनेवालो की भीड़ भाड़, आवश्यक सामग्री जो किसी विशेष अवसर के लिये इकट्ठा की गई हो। लवाजमात–(अ०पु०) उपकरण, सामग्री।
लशकर–(फा०पु०) सेना, मनुष्योका समूह, भीड़भाड़, जहाजी आदमियो का दल, सेना के ठहरने का स्थान, छावनी। लशकरी–(फा०वि०)सेना संबधी, जहाज पर काम करनेवाला, (पु०) सैनिक, जहाजी आदमी, खलासियो की भाषा।
लसदार–(फा०वि०) जिससे लस हो, लसीला।
लहजा–(फा०पु०) गाने या बोलनेका ढग, स्वर (अ०पु०) पल, क्षण।
लहनदार–(फ़ा०पु०) वह मनुष्य जिसका कुछ लहना किसी पर बाकी हो, महाजन।
लहमा–(फा०पु०) निमेष, पल।
लहरदार–(फ़ा०वि०)टेढामेढागयाहुआ
ला–(अ०पु०) राजनियम, व्यवहार शास्त्र, धर्मशास्त्र।
लाइट् हाउस्–(अ०पु०) वह स्तम्भ जिसके सिर पर बहुत तीव्र प्रकाश रहता है, यह जहाजो को दुर्घटना से बचाने के लिये बनाया जाता है, प्रकाशस्तम्भ।
लाइन्–(अ० वि०) पंक्ति, रेल की सडक, रेखा, लकीर।
लाइन् क्लियर्–(अ०पु०)रेलगाडी के हाकने वाले को दिया जाने वाला वह पत्र या सकेत जो यह सूचित करने के लिये दिया जाता है कि लाइन् साफ है, तुम रेलगाड़ी को आगे ले जा सकते हो।
लाइफ् बाय्–(अ०पु०) एक प्रकार का यत्र जो पानी मे नही डूबता, पानी मे गिरे हुए आदमी इसको पकड कर बच जाते है।
लाइफ् बोट्–(अ०स्त्री०) एक प्रकार की नाव जो समुद्रमे लोगो की जान बचाने के काम मे लाई जाती है।
लाइब्रेरी–(अ०स्त्री०) पुस्तकालय।
लाइसेंस्–(अ०पु०) देखो लैसेंस।
लॉक् अप्–(अ०पु०) बंदियोको रखने की कोठरी।
लाकेट्–(अ०पु०) किसी सिकड़ी में लगाया हुआ लटकन।
लाखिराज–(फा० वि०) वह भूमि जिसकी लगान न देना पडता हो।
लाचार–(फा०वि०) विवश, (क्रि० वि०) विवश होकर। लाचारी–(फा०स्त्री०) लाचार होनेका भाव, विवशता।
लाजवर्द–(फा०पु०) राजवर्तक, एक प्रकार का जगाली रग का बहुमूल्य पत्थर जिसके ऊपर सुनहले छीटे होते है। लाजवर्दी–(फा०वि०) हलके नीले रग का।
लाजबाब–(फा०वि०) निरुत्तर, अनुपम, बेजोड।
लाजिम–(अ०वि०) जिसका करना आवश्यक हो, उचित।
लाटरी–(अ०स्त्री०) एक प्रकार की योजना जिसके निमित्त टिकट बेच कर धन एकत्रित किया जाता है तथा जिनके नाम की चिट्ठी पहले निकलती है उनको निश्चित धन यथाक्रम बाटा जाता है।
ला-दावा–(अ०वि०) जिसका कोई अभिप्राय न रह गया हो।
लॉन्–(अ०पु०) घासका बडा मैदान जिसपर गेद आदि का खेल होता है
लॉन्टेनिस्–(अ०पु०) गेद का एक प्रकार का खेल जो छोटे से मैदान मे खेला जाता है।
लानत–(अ०स्त्री०) भार्त्सना,धिक्कार
लापरवा,लापरवाह–(फ़ा०वि०) असावधानी।
लायक–((अ०वि०) उपयुक्त, उचित, ठीक, समर्थ, गुणवान्, सुयोग्य।
लायकी–(अ०स्त्री०) सुयोग्यता।
लायल–(अ०वि०) राजभक्त।
लायल्टी–(अ०स्त्री०) राजभक्ति।
लार्ड्–(अ० पु०) ईश्वर, मालिक, स्वामी, इगलैड के बड़े बडे रईसो की एक उपाधि।
लार्ड् सभा–(अ०स्त्री०)ब्रिटिशपार्लमेंट की वह सभा जिसमे बडेबडे ताल्लुकेदारो और अमीरो के प्रतिनिधि होते है।
लावदार–(फा०वि०) तोप मे बत्ती लगाने वाला, तोप छोड़ने वाला।
लावबाली–(अ०वि०) वह जिसके विचार धार्मिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो। लावलश्कर–(फा०पु०) अनेक सहचर।
लावल्द–(फा०वि०) जिसके बालबच्चे न हों, निं सन्तान। लावल्दी–(फा० स्त्री०) नि सन्तान होने का भाव।
लावा–(अ०पु०) राख, पत्थर, धातु आदि मिला हुआ वह द्रव पदार्थ जो ज्वाला मुखी पर्वत में से विस्फोट के समय निकलता है।
लावारिस–(अ०पु०) वह जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो। लावारिसी–(अ०वि०) बिना उत्तराधिकारी का।
लाश–(फा०स्त्री०) किसी प्राणी का मृतक शरीर, शव।
लासानी–(अ०वि०) अनुपम,अद्वितीय
लाहौल–(अ०पु०) एक अरबी वाक्य का पहिला शब्द (पूरा वाक्य-लाहौल बिला कूबत है) जो भूतप्रेत हटाने तथा घृणा प्रगट करने में व्यवहार किया जाता है।
लिंट्–(अ०पु०) तूतिये मे रगा हुआ कोमल वस्त्र जो घाव पर बाधा जाता है।
लिफ्–(अ०पु०) शीतला का चेप जो टीका लगाने के काममे लायाजाताहै
लिक्विडेटर्–(अ०पु०) वह अधिकारी जो किसी कारबार के उठाने,उसकी ओर से अभियोग चलाने आदि आवश्यक काम करने के लिये नियुक्त किया जाता है।
लिक्विडेशन्–(अ०पु०) किसी कपनी के कारबार बंद होने पर उसकी सम्पत्ति से लेहनदारो को बची हुई रकम अशानुसार बाटने का काम।
लिटरेचर्–(अ०पु०) साहित्य।
लिफाफा–(अ०वि०) साहित्य सबंधी, साहित्यिक।
लिफाफा–(अ०पु०) कागज की बनी हुई खोली या थैली जिसके भीतर पत्र रखकर भेजा जाता है, दिखौवा वस्तु, ऊपरी आडबर, तडक भडक, ऊपरी आच्छादन, मुलम्मा, कलई, शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु।
लिबरल्–(अ०वि०) उदार नीति वाला, (पु०) इङ्गलैंड का एक राजनैतिक दल जिसकी नीति अधीन देशो की व्यवस्था मे उदार रहती है।
लिबास–(फा०पु०)पहनने का कपड़ा,
लियाकत–(अ० स्त्री०) योग्यता, गुण, सामर्थ्य, शील, शिष्टता, भद्रता।
लिस्ट्–(अ०स्त्री०) तालिका, सूची।
लिहाज–(अ०पु०) व्यवहार मे किसी बात का ध्यान होना, कृपा दृष्टि, लज्जा, पक्षपात,
लिहाफ–(अ०पु०) रूईदार मोटा वस्त्र जो रात मे ओढा जाता है,
लीग्–(अ०स्त्री०) सघ, सभा।
लीगल्–(अ०वि०) व्यवहारिक।
लीगल् रिमेम्ब्रान्सर्–(अ०वि०) वह अधिकारी जो सरकार के कानूनी कागज पत्र रखता है।
लीडर–(अ० पु०) मुखिया, नेता, किसी, समाचार पत्र का सम्पादकीय अग्रलेख।
लिडिङ् आर्टिकल्–(अ०पु०)सम्पादकीय अग्रलेख।
लीथो–(अ०पु०) पत्थर का छापा जिसपर हाथ से लिख कर अक्षर या चित्र छापे जाते हैं। लीथोग्राफर–(अ०पु०) लीथो का काम करने वाला, लीथोग्राफी–(अ० स्त्री०) लीथो की छपाई।
लीनो टाइप्–(अ०स्त्री०) एक प्रकार का छापे का यन्त्र जिसमे लाइन की लाइन एक साथ ढल जाती है।
लीफ्लेट्–(अ०पु०) छोटी पुस्तक, परचा।
लीव्–(अ०स्त्री०) अवकाश, छुट्टी।
लीवर–(अ०पु०) यकृत्, जिगर।
लीस्–(अ०पु०) किसी जमीन या अन्य स्थावर सम्पत्ति का पट्टा।
लुआब–(अ०पु०)लसदार गूदा,लासा
लुआबदार–(फा० वि०) लसदार, चिपचिपा।
लुकमा–(अ०पु०) ग्रास, कौर।
लुकसाज–(फा०पु०) सिझाया हुआ चमकीला चमडा।
लुत्फ–(अ० पु०) कृपा, उत्तमता, रोचकता, आनन्द, स्वाद जायका।
लुब्बलुबाब–(अ०पु०) तत्व, सार, साराश।
लूम–(अ०पु०)कपडा बुनने का करघा
लेंस्–(अ०पु०) काँच का पारदर्शक ताल।
लेक्चर्–(अ०पु०) व्याख्यान,वक्तृता
लेक्चरबाजी–(स्त्री०) खूब व्याख्यान देने की क्रिया।
लेक्चरर्–(अ०पु०) व्याख्यानदाता।
लेजम–(फा०स्त्री०) एक प्रकार की कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है, लोहे की सिकड़ी लगी हुई कमान जिससे अनेक प्रकार का व्यायाम किया जाता है।
लेजिस्लेटिव्–(अ०वि०) व्यवस्था या कानून संबधी।
लेजिस् लेटिव् असेम्बली–(अ०स्त्री०) व्यवस्थापक परिषद।
लेजिस्लेटिव् काउन्सिल्–(अ०स्त्री०) व्यवस्थापक सभा।
लेट्–(अ०वि०) ठीक समय के बाद का जिसको देर हुई हो।
लेट् फी–(अ०स्त्री०) वह फीस जो निश्चित समय के बाद डाकखाने में किसी वस्तु को रखने मे देनी पडती है।
लेटर–(अ०पु०) पत्र, चिट्ठी। लेटर पेटेन्ट्–(अ० पु०) वह राजकीय आज्ञापत्र जिसके द्वारा किसी को पद सत्व आदि देने या कोई संस्था स्थापित करने की आज्ञा मिलती है
लेटर् बाक्स्–(अ०पु०) डाकखाने की वह संदूक जिसमें कहीं भेजने के लिये चिट्ठियाँ आदि छोड़ी जाती हैं।
लेड्–(अ०पु०) सीसा नामक धातु, छापेखाने की अक्षरो की पंक्तियों के बीच में रखने की पटरी।
लेडी–(अ०स्त्री०) भले घर की स्त्री, महिला, सरदार की पत्नि।
लेनदार–(फ़ा०पु०) जिसका कुछ

बाकी हो, महाजन ।
लेफ्टिनेन्ट्–(अं०पुं०) सेना का एक अध्यक्ष जो कप्तान के आधीन होता है, कोई सहायक कर्मचारी ।
लेबल्–(अं०पुं०) नाम पता विधि दाम आदि की सूचक चिट जो वस्तुओं पर चिपका दी जाती है ।
लेबोरेटरी–(अं०स्त्री०) प्रयोगशाला, रसायनिक पदार्थ आदि निर्माण करने का स्थान ।
लेमनेड्–(अं०पुं०) गेस मिला हुआ नीबू का शर्बत ।
लेस्–(अं० स्त्री०) कलाबत्तू की किनारी गोंटा, बेल, दीवार पर चढाने का मिट्टी का गिलाबा, चेप ।
लेहाज़ा–(अ०क्रि०वि०) इस कारण से, इस लिये ।
लेहाफ़–(अ०पुं०) देखो लिहाफ़ ।
लैंडो–(अं०स्त्री०) एक प्रकार की टपदार थोड़ागाड़ी ।
लैंप–(अं०पुं०) दीपक,
लैटिन्–इटली देश की प्राचीन भाषा ।
लैन्–(अं०स्त्री०) सीधी लकीर,पंक्ति, सीमा की लकीर, पैदल सिपाहियों जी सेना, सिपाहियों के रहने का स्थान ।
लैवेन्डर्–(अं०पुं०) एक सुगन्धित तरल पदार्थ ।
लैसंस्–(अं० पुं०) वह प्रमाणपत्र जिसके द्वारा किसी मनुष्य को कोई विशेष अधिकार दिया जाता है,
लैस–(अ०वि०) हथियार वर्दी आदि सुसज्जित (पुं०) एज प्रकार का बाण, कपड़े पर लगाने का फीता ।
लोकल्–(अं०वि०) प्रान्तिक,प्रादेशिक, स्थानीय ।
लोबान–(अ०पुं०) एक वृक्ष का सुगन्धित गोंद ।
लोशन्–(अं०पुं०) अधिक जल में घोली हुई कोई औषधि ।

व

वकालत–(अ०स्त्री०) दूत कर्म, न्यायालयमें वादी या प्रतिवादी की ओरसे वाद विवाद करनेका व्यवसाय
वकील–(अ०पुं०) दूसरेके कामको उसकी ओरसे करनेका भार लेने वाला, प्रतिनिधि; वह जिसको न्यायालय में वादी या प्रतिवादी की ओरसे वादविवाद करनेका अधिकार प्राप्त हो ।
वक्त–(अ०पुं०)समय, काल, अवसर,
वक्तन् फवक्तन्–(अ०क्रि०वि०)यथासमय, कभी कभी ।
वक्फ़–(अ०पुं०)धर्मार्थ दान की हुई भूमि या सम्पत्ति ।
वक्फ़नामा–(फ़ा०पुं०) दानपत्र ।
वगैरह(अ०अव्य०) आदि, इत्यादि ।
वज़न–(अ०पुं०) भार, बोझ, तौल,
वज़नी–(अ०वि०) जिसका बोझ अधिक हो, भारी, योग्य ।
वजह–(अ०स्त्री०)कारण,हेतु, प्रकृति
वज़ा–(अ०स्त्री०) संघटन, रचना, आकृति, रूप, अवस्था, सजधज, चालढाल, रीति ।
वज़ादार–(फ़ा०वि०) दर्शनीय।
वज़ादारी–(फ़ा० स्त्री०) सजावट ।
वज़ारत–(अ०स्त्री०) मन्त्री का पद या कार्य ।
वजीफ़ा–(अ०पुं०) वह वृत्ति जो, विद्वानों, छात्रों, दीन लोगोंको दी जाती है ।
वजीर–(अ०पुं०)मन्त्री, शतरंज की गोटी ।
वजीरी–(अ० स्त्री०) दीवान का पद या कार्य ।
वजू–(अ०पुं०) नमाज पढ़ने के पहले हाथ पांव धोनेका कार्य ।
वजूहात–(अ०स्त्री०)कारणों का समूह
वतन–(अ०पुं०)वासस्थान,जन्मभूमि
वफ़ा–(अ०पुं०) निर्वाह, पूर्णता, बात निबाहना, वादा पूरा करना, सुशीलता ।
वफ़ात–(अ०स्त्री०) मरण, मृत्यु ।
वफ़ादार–(अ०क्रि०) सचाई से काम करनेवाला, सच्चा ।
वबा–(अ०स्त्री०) महामारी, छूतका रोग ।
वबाल–(अ०पुं०) बोझ, भार, घोर विपत्ति कठिनाई, पापका फल, ईश्वरीय कोप ।
वरक–(अ०पुं०) पुस्तक का पन्ना, पत्रा, सोने चांदी के बहुत महीन पत्तर ।
वरजिश–(अ०स्त्री०) व्यायाम,
वरदी– (अ०स्त्री०) वह पहिरावा जो किसी विशेष विभाग के कर्मचारियों के लिये नियत हो ।
वरना–(अ०अव्य०) नहीं तो, ऐसा न हो तो ।
वर्किङ् कमिटी–(अ० स्त्री०) कार्यकारिणी समिति ।
वर्गलाना–(फा० क्रि०) उसकाना, बहकाना ।
वली–(अ०पुं०) स्वामी, अधिपति, शासक, साधु ।
वल्द–(अ०पुं०) पुत्र, बेटा ।
वल्दियत–(अ०स्त्री०) पिता के नाम का परिचय ।
वल्लाह–(अ०अव्य०)ईश्वर को शपथ, सचमुच ।
वसअत–(अ०स्त्री०)विस्तार,फैलाव ।
वसवास–(अ०पुं०) भ्रम, सन्देह भुलावा ।
वसीयत–(अ०स्त्री०) वह व्यवस्था जो मरने के समय मनुष्य अपनी सम्पत्तिके विभाग प्रबंध आदिके विषयमें लिख देता हो ।
वसीयतनामा(अ०पुं०)मृत्यु लेख ।
वसीला–(अ०पुं०) संबंध, आश्रय,
वसूल–(अ०वि०) लब्ध, प्राप्त, जो मिला हो ।
वसूली–(अ०स्त्री०) प्राप्ति ।
वस्फ़–(अ०पुं०) प्रशंसा स्तुति, विशेषता, गुण ।
वस्ल–(अ०पुं०)संयोग, मेल, मिलाप,
वहम–(अ०पुं०)भ्रम, मिथ्या धारणा, झूठा सन्देह, झूठी शंका ।
वहमी–(अ०वि०) भ्रम में पड़ा हुआ,
वहशी–(अ०वि०) असभ्य, जंगली,
वाइन्–(अं०स्त्री०) मद्य,
वाइस्–(अं०वि०) सहायक ।
वाइस् चान्सलर्–(अं०पुं०) विश्वविद्यालयका वह बड़ा अधिकारी जो चान्सेलरकी सहायता करता है ।
वाइसराय्–(अं०पुं०) बड़ा लाट ।
वाकई–(अ०वि०) यथार्थ, (अव्य०) सचमुच ।
वाकया–(अ०पुं०)घटना, वृत्तान्त ।
वाका–(अ०पुं०) होने वाला ।
वाकिफ़–(अ०वि०)जानकर अनुभवी,
वाकिफ़कार–(अ०वि०) काम का जानकार ।
वाच्–(अं०स्त्री०) जेबी घड़ी; रिस्ट् वॉच–कलाई पर बाँधनेकी घड़ी ।
वाज–(अ०पुं०)शिक्षा,धार्मिक उपदेश या व्याख्यान, कथा ।
वाजिबी–(अ०वि०) उचित, योग्य, ठीक ।
वाजिबी–(अ०वि०) उचित
वाटर्–(अं०पुं०) जल, पानी ।
वाटरप्रूफ्–(अं०वि०) वह वस्त्र आदि जिस पर जल का प्रभाव न पड़े ।
वाटर्वर्क्स्–(अं०पुं०) नगर में सर्वत्र जल पहुँचानेका कार्यालय ।
वादा–(अ०पुं०) प्रतिज्ञा, वादा पूरा करना–प्रतिज्ञा पूर्ण करना; वादा टालना–प्रतिज्ञा भंग करना; वादा खिलाफी–बात पूरी न करना; वादा रखना–वचन देना ।
वापस–(फा०वि०) लौटाया हुआ ; वापस आना–लौट आना ; वापस करना–लौटाना ।
वापसी–(फ़ा०वि०) लौटाया हुआ, फेरा हुआ (स्त्री०) लौटने की क्रिया का भाव ।
वारिस–(अ०पुं०) उत्तराधिकारी, दायभागी पुरुष, दायाद ।
वार्ड्–(अं०पुं०) कोई अलग किया हुआ विभाग ।
वार्डर्–(अं०पुं०) रक्षक, पहरेदार ।
वालंटियर्–(अं०पुं०) स्वयंसेवक, स्वेच्छासेवक,
वालिद–(अ०पुं०) पिता, बाप ।
वालिदा–(अ०स्त्री०)माता, जननी,माँ
वावैला–(अ०पुं०) रोना पीटना चिलाहट ।
वासिल–(अ०वि०)प्राप्त, मिला हुआ,
वासिलबाकी–प्राप्त धन ।
वासिलात–(अ०वि०) कुल धन जो प्राप्त हुआ हो ।
वाह–(फ़ा०अव्य०) एक आश्चर्य सूचक शब्द, यह शब्द, प्रशंसा और तिरस्कार द्योतक भी है ।
वाहियात–(फ़ा०वि०) व्यर्थ ।
विकट् डोर्–(अं०पुं०) एक प्रकार का छोटा चक्करदार द्वार ।
विक्टोरिया–(अं० स्त्री०) फ़िटिन के आकार की एक प्रकार घोड़ागाड़ी ।
विजारत–(अ०स्त्री०) मत्री का पद या धर्म ।
विजिट्–(अं०स्त्री०) भेट, डाक्टर का रोगी को देखने के लिये किसी के घर जाना ।
विजिटिङ् कार्ड–(अं०पुं०)एक प्रकार का छोटा पत्र जिस पर लोग अपना नाम पता आदि छपवा लेते हैं ।
विलायत–(अ०पुं०) स्वदेश, अपना देश, आधुनिक बोलचाल में यूरोप और अमेरिका के लिये प्रयोग किया जाता है । विलायती–(अ०वि०) यूरोप अथवा अमेरिका संबंधी ।
वीरान–(फ़ा०वि०) उजड़ा हुआ, जिसके निवासी नष्ट हो गये हो, श्रीहत ।
वेस्ट्–(अं०पुं०) पश्चिम दिशा ।
वेस्ट्कोट्–(अं०पुं०) एक प्रकार की अंग्रेजी ढंगकी बिना बाँह की कुरती ।
वोट–(अं०पुं०) किसी सार्वजनिक कार्य के निमित्त अथवा किसी को निर्वाचन करने के लिये दी हुई प्रत्येक व्यक्ति की सम्मति; वोट आव् सेन्शर्–(अं०पुं०) निन्दात्मक प्रस्ताव; वोटर्–सम्मति देने वाला ।
वोटर लिस्ट्–(अं०स्त्री०) वोट देने वालों की सूची ।

श

शऊर–(अ०पुं०) किसी काम करने की योग्यता या ढंग, शऊरदार–(फ़ा०पुं०) काम करने की योग्यता वाला ।
शक–(अ०पुं०)शंका,सन्देह,द्विविधा ।
शकरपारा–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बड़ा होता है, बरफी की तरह चौकोर कटा हुआ एक प्रकार का पकवान ।
शकरबादाम–(फ़ा०पुं०) खूबानी नामक फल ।
शकल–(अ०स्त्री०) मुख की आकृति, चेहरा, चेष्टा, स्वरूप, गढ़न, ढाँचा, मूर्ति, उपाय ।
शकाकुल–(अ०पुं०) शतावर की जात की एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जड़ कन्द रूप में होती है और शकाकुल मिश्री के नाम से बिकती है ।
शक्की–(अ०वि०) जिसको सब बातों में सन्देह होता हो ।
शख्स–(अ०पुं०) व्यक्ति,जन,मनुष्य ।

शगूफा–(फ़ा०पुं०) कोई नई अद्‌भुत घटना।
शजर–(अ०पुं०) वृक्ष, पेड़।
शजरा–(अ०पुं०) वंशवृक्ष, खेतों का पटवारी का बनाया हुआ मानचित्र।
शतरंज–(फ़ा०पुं०) एक प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है, प्रत्येक के पास सोलह गोटियां रहती हैं।
शतरंजी–(फ़ा०स्त्री०) रंग बिरंगे सूतों से बनी हुई दरी, शतरंज खेलने की बिसात,
शफ़क़–(अ०स्त्री०) प्रातःकाल या सन्ध्या के समय आकाश में देख पड़ने वाली ललाई।
शफ़क़त–(अ०स्त्री०) कृपा, दया, प्यार।
शफ़गोल–(फ़ा०स्त्री०) देखो इसबगोल।
शफ़ताल्‌–(फ़ा०पुं०) सताल्‌।
शफ़ा–(अ०स्त्री०) नीरोगता; शफ़ाखाना–(फ़ा०पुं०) चिकित्सालय,।
शबनम–(फ़ा०स्त्री०) तुषार, ओस।
शबनबी–(फ़ा०स्त्री०) मसहरी, छपरखट।
शमशेर–(फ़ा०स्त्री०) खड्ग, तलवार।
शमा–(फ़ा०पुं०) मोमबत्ती।
शमादान–(अ०पुं०) वह आधार जिसमें मोमबत्ती खोसकर जलाई जाती है।
शम्बा–(अ०पुं०) शनिवार।
शय–(अ०स्त्री०) वस्तु, पदार्थ भूत प्रेत।
शरअ–(अ०स्त्री०) मुसलमानों का धर्मशास्त्र, मार्ग, कुरान में दी हुई आज्ञा।
शरई–(अ०वि०) मुसलमानी धर्म के अनुसार (पुं०) शरअ पर चलने वाला मनुष्य।
शरबत–(अ०पुं०) पीने की कोई मीठी वस्तु।
शरम–(अ०स्त्री०) लज्जा, संकोच।
शरमाऊ–(फ़ा०वि०) जिसको बहुत लज्जा लगती हो। शरमाना–(अ०क्रि०) लज्जित होना, लज्जित करना।
शरमिन्दगी–(फ़ा०स्त्री०) लज्जित होने का भाव; शरमिंदा–(फ़ा०वि०) लज्जित; शरमीला–(फ़ा०वि०) लज्जालु।
शरह–(अ०स्त्री०) दर, भाव।
शराकत–(फ़ा०स्त्री०) साझा, हिस्सेदारी
शराफ़–(अं०पुं०) देखो सराफ।
शराफ़त–(अ०स्त्री०) सज्जनता, भलमनसी।
शराब–(अ०स्त्री०) मदिरा, मद्य, आसव; शराबखाना–(फ़ा०पुं०) शराब बनने तथा बिकने का स्थान; शराबखोरी–(फ़ा०स्त्री०) मदिरापान का व्यसन; शराबख्वार–(फ़ा० पुं०) मदिरा पीने वाला; शराबी–(अ०पुं०) शराब पीने वाला।
शराबोर–(फ़ा०वि०) जल आदि से बिलकुल भीगा हुआ।
शरारत–(अ०स्त्री०) पाजीपन, दुष्टता
शरीक–(अ०वि०) सम्मिलित, (पुं०) साथी, सहायक।
शरीफ–(अ०पुं०) भलामानुस (वि०) पवित्र।
शरीफ़–(अं०पुं०) देखो शेरिफ़–कलकत्ता, बंबई और मद्रास में सरकार की ओर से शान्ति रक्षा आदि के लिये नियुक्त अवैतनिक अधिकारी।
शरीर–(अ०वि०) दुष्ट, नटखट, पाजी।
शर्ट–(अ०स्त्री०) कमीज, कपड़ा।
शर्त–(अ०स्त्री०) दांव, प्रतिज्ञा, बदान, शर्तिया–(अ०क्रि०वि०) दृढ़ता पूर्वक, (वि०) निश्चित, ठीक।
शर्बत–(अ०पुं०) देखो शरबत।
शर्बती–(अ०पुं०) देखो शरबती।
शर्म–(फ़ा०स्त्री०) लज्जा।
शर्मीला–(अ०वि०) देखो शरमीला।
शलगम, शलजम–गाजर की तरह का एक प्रकार का कन्द।
शलाख–(फ़ा०पुं०) देखो सलाख।
शलूका–(फ़ा०पुं०) स्त्रियों के पहने की आधी बाँह की कुरती।
शव्वाल–(अ०पुं०) मुसलमानों का दसवाँ महीना।
शशगनी–(फ़ा०पुं०) फीरोज शाह के राज्यका एक प्रचलित चाँदी की मुद्रा
शशमाही–(फ़ा०वि०) अर्धवार्षिक।
शस्त–(फ़ा०पुं०) तीर चलाती समय अगूंठे में पहरने का छल्ला, लक्ष्य।
शहंशाह–(फ़ा०पुं०) महाराजाधिराज सम्राट्।
शहंशाही–(फ़ा०वि०) राजसी।
शह–(फ़ा०पुं०) वर, दुलहा, (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम (स्त्री०) शतरंज में किश्त, गुप्त रूप से किसी को उभाड़ने का काम।
शहजादा–(फ़ा०पुं०) राजकुमार।
शहजोर–(फ़ा०वि०) बलवान्; शहजोरी–(फ़ा०स्त्री०) बलपूर्वक कार्य
शहत–(अ०पुं०) देखो शहद।
शहतीर–(फ़ा०पुं०) लकड़ी का चीरा हुआ बड़ा लट्ठा।
शहतूत–(फ़ा०पुं०) तूत नाम का फल।
शहद–(अ०पुं०) मधु; शहद लगाकर चाटना–किसी बेकार पदार्थ को पड़ी रहने देना।
शहना–(अ०पुं०) खेत आदि की चौकसी करने के लिये नियुक्त पुरुष।
शहनाई–(फ़ा०स्त्री०) अलगोजे के आकार का मुँहसे बजाने का एक बाजा।
शहबाला–(फ़ा०पुं०) वह छोटा बालक जो विवाह के समय दुल्हे के साथ पालकी पर अथवा घोड़े पर बैठ कर जाता है।
शहर–(फ़ा०पुं०) मनुष्यों की वह बड़ी बस्ती जो कसबे से बहुत बड़ी होती है; शहरपनाह–(फ़ा०स्त्री०) नगर के चारो ओर बनी हुई पक्की दीवार पर कोठा; शहरी–(फ़ा०वि०) नगरवासी।
शहवत–(अ०स्त्री०) कामातुरता।
शहादत–(अ०स्त्री०) साक्षी, प्रमाण।
शहीद–(अ०पुं०) बलिदान होने वाला व्यक्ति।
शाइस्तगी–(फ़ा०स्त्री०) शिष्टता, सभ्यता; शाइस्ता–(फ़ा०वि०) शिष्ट, सभ्य, विनीत।
शाख–(फ़ा०स्त्री०) टहनी, डाल, डाली, फांक।
शागिर्द–(फ़ा०पुं०) शिष्य, चेला; शागिर्दपेशा–(फ़ा० पुं०) सेवक, टहलुआ।
शागिर्दी–(फ़ा०स्त्री०) शिष्यता, सेवा, टहल; सेवक।
शातिर–(अ०वि०) निपुण, चतुर।
शादियाना–(फ़ा०पुं०) आनन्द सूचक बाजा, बधाई, वह धन जो किसान लोग भूस्वामी को विवाह के अवसर पर देते हैं।
शादी–(फ़ा०स्त्री) विवाह, व्याह।
शान–(फ़ा०पुं०) चमत्कार, भव्यता।
शानदार–(फ़ा०वि०) भड़कीला,
शानशौकत–(अ० स्त्री) तड़क भड़क।
शाबाश–(फ़ा० अव्य०) एक प्रशंसा सूचक शब्द, वाह! वाह! शाबाशी–(फ़ा०स्त्री०) किसी कार्य के करने पर प्रशंसा।
शाम–(फ़ा० स्त्री) सूर्यास्त का समय, संझा।
शामत–(अ० स्त्री०) विपत्ति, दुर्दशा दुर्भाग्य।
शामतज़दा–(फ़ा० वि०) अभागा।
शामती (अं०वि०) जिसकी शामत आईहो
शामियाना (फ़ा०पुं०) एक प्रकार का बड़ा तबू, वस्त्र मंडप, चंदवा।
शामिल–(फ़ा० वि०) सम्मिलित,।
शामिलहाल–(अ० पुं०) साथी।
शामिलात–(अ० स्त्री०) साझा।
शायद–(अ० अव्य०) कदाचित्।
शायर–(अ० पुं०) काव्य रचने वाला कवि।
शायरा–(अ० स्त्री०) काव्य रचने वाली स्त्री।
शायरी–(अ० स्त्री०) काव्य, कविता
शाया–(अ० वि०) प्रकाशित, प्रकट।
शाल–(फ़ा स्त्री०) एक प्रकार की ऊनी चादर (फ़ा० पुं०) धूना, राल, साल का वृक्ष।
शालदोज–(फ़ा० पुं०) शाल के किनारों पर बेलबूटे बनाने वाला।
शालबाफ–(फ़ा०पुं०) शाल दुशाले बनने वाला।
शालबाफी–(फ़ा०स्त्री०) दुशाला बुनने का काम।
शाहंशाह–(फ़ा०पुं०) राजाधिराज।
शाहंशाही–(फ़ा० स्त्री०) व्यवहार का खरापन।
शाह–(फ़ा० पुं०) मुसलमान फकीरों की एक उपाधि, (वि०) बड़ा, भारी।
शाहजादा–(फ़ा० पुं०) महाराज कुमार; शाहजादी–(फ़ा० स्त्री०) राजकुमारी।
शाहराह–(फ़ा० स्त्री०) बड़ी सड़क, राजमार्ग।
शाहाना–(फ़ा० वि०) राजसी, विवाह का जामा जो दूल्हे को पहराया जाता है।
शाहिद–(अ० पुं०) साक्षी, (वि०) सुन्दर।
शाही–(फ़ा० वि०) राजसी।
शिंगरिफ–(फ़ा०पुं०) हिंगुल, ईंगुर।
शिकंजा–(फ़ा०पुं०) कसने दबाने या निचोड़ने का एक यन्त्र; शिकंजे में खिचवाना–घोर कष्ट देना।
शिकन–(फ़ा० स्त्री०) सिकुड़न।
शिकम–(फ़ा० पुं०) उदर, पेट।
शिकमी–(फ़ा० वि०) निजका, अपना।
शिकमी काश्तकार–(फ़ा० पुं०) वह कृषक जिसको दूसरे से खेत जोतने के लिये कोई खेत मिला हो।
शिकवा–(अं० पुं०) उलहना।
शिकस्त–(फ़ा०स्त्री०) पराजय, हार।
शिकस्ता–(फ़ा०वि०) टूटा हुआ (स्त्री०) उर्दू या फारसी की घसीट लिखावट।
शिकायत–(अ०स्त्री०) उपालंभ, उलहना
शिकार–(फ़ा०पुं०) आखेट, मृगया, मारा हुआ पशु, शिकार बनना–किसी से मारा जाना।
शिकारगाह–(फ़ा०स्त्री०) आखेट स्थान।
शिकारी–(फ़ा०पुं०) आखेट करनेवाला
शिगाफ–(फ़ा०पुं०) दरार।
शिगूफा–(फ़ा०पुं०) कोई अनोखीबात।
शिताब–(फ़ा०क्रि०वि०) शीघ्र।
शिताबी–(फ़ा०स्त्री०) शीघ्रता।
शिद्दत–(अं०स्त्री०) प्रचण्डता, उग्रता।
शिनाख्त–(फ़ा०स्त्री०) स्वरूप या गुण का बोध, पहचान, परख।
शिया–(अं०पुं०) सहायक, अनुयायी, मुसलमानों के दो परस्पर विरोधी सम्प्रदायों में से एक हैं।
शिरकत–(अ०स्त्री०) साझा, पट्टीदारी।
शिरखिस्त–(फ़ा०पुं०) एकवृक्षकागोंद।
शिराकत–(अ०स्त्री०) साझा।
शिस्त–(फ़ा०स्त्री०) लक्ष्य, एक प्रकार का यन्त्र।
शिस्तबाज–(फ़ा०पुं०) लक्ष्य लगाने वाला।
शीआ–(अं०पुं०) देखो शिया।
शीर–(फ़ा०पुं०) क्षीर, दूध।
शीरखोरी–(फ़ा०पुं०) दूध पीता बच्चा
शीरा–(फ़ा०पुं०) चीनी मिला हुआ पानी, चाशनी, शर्बत।
शीराजा–(फ़ा०पुं०) किताबों को जिल्द में सिलाई की छोर पर लगाया हुआ फीता, प्रबन्ध।

शीरीं–(फ़ा०वि०) मधुर, मीठा।
शरीनी–(फ़ा०स्त्री०) मिठास,मिठापन।
शीशमहल–(अं०पुं०) वह घर जिसकी भीत पर काँच जड़े हों।
शीशम–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी ठोस और पुष्ट होती है।
शीशा–(फ़ा०पुं०)काँच, दर्पण, झाड़ फानूस।
शीशी–(फ़ा०स्त्री०) काँच का तेल इत्र इत्यादि रखने का छोटा पात्र; **शीशी सुंघाना**–दवा (क्लोरोफार्म) सुंघाकर अचेत करना।
शुकराना–(अ०पुं०) कृतज्ञता, धन्यवाद के रूप में दिया जाने वाला धन।
शुक्र–(अ० पुं०) कृतज्ञता, धन्यवाद।
शुक्रगुजार–(फ़ा०पुं०) कृतज्ञ।
शुक्रगुजारी–(फ़ा०स्त्री०) कृतज्ञता।
शुक्रिया–(फ़ा०पुं०) धन्यवाद, कृतज्ञता का प्रकाश।
शुजा–(अ०वि०) वीर।
शुतुर–(फ़ा०पुं०) पक्षी, चिड़िया; **शुतुरमुर्ग**–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी।
शुदनी–(फ़ा०स्त्री०) होनी, होनहार।
शुबहा–(अ०पुं०)सन्देह,शक,धोखा।
शुरवा–(फ़ा०पुं०) देखो शोरवा।
शुरू–(अ०पुं०) प्रारम्भ।
शेख–(अ०पुं०) मोहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि।
शेखचिल्ली–(अ०पुं०) गप्प हाँकने वाला मूर्ख।
शेखी–(फ़ा०स्त्री०) अहंकार, गर्व। **शेखी मारना**–बढ़बढ़ कर बातें करना।
शेखीबाज–(फ़ा०वि०) अभिमानी, घमण्डी।
शेयर–(अं०पुं०) साझा, भाग, किसी व्यवसाय में लगी हुई पूंजी का अलग अंश।
शेर–(फ़ा०पुं०) व्याघ्र, बाघ, अत्यन्त वीर मनुष्य, (अ०पुं०) फारसी या उर्दू कविता के दो चरण।
शेरबबर–(फ़ा०पुं०) सिंह, केसरी।
शेरमर्द–(फ़ा०वि०) वीर।
शेरमर्दी–(फ़ा०त्री०) घुटने तक का लम्बा एक प्रकार का अंगा।
शैतान–(अ०पुं०) भूत, प्रेत, दुष्ट; **शैतान की आँत**–कोई बहुत लम्बी वस्तु। **शैतानी**–(अ०स्त्री०) दुष्टता, (वि०) दुष्टता पूर्ण।
शोख–(फ़ा०वि०)धृष्ट ढीठ,चमकीला।
शोखी–(फ़ा०स्त्री०)धृष्टता, चपलता।
शोबदा–(अं०पुं०)इन्द्रजाल,नजरबन्दी।
शोर–(फ़ा०पुं०)कोलाहल,गुलगपाड़ा।
शोरबा–(फ़ा०पुं०) झोल, जूस, पके हुए मास का पानी।
शोरा–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में से निकाला जाता है; स्वच्छ बढ़िया शोरा।
शोरापुश्त–(फ़ा०वि०)लड़ाका,झगड़ालू।
शोशा–(फ़ा०पुं०) निकली हुई नोक, कोई अद्भुत बात।
शोहदा–(अं०पुं०)व्यभिचारी,लम्पट, गुण्डा, छैला।
शोहदापन–(अ०पुं०)गुण्डापन,छैलापन
शोहरत–(अ०स्त्री०) प्रसिद्धि।
शोहरा–(अ०पुं०) प्रसिद्धि, धूमधाम
शौक–(अ०पुं०) तीव्र अभिलाषा, प्रबल लालसा, आकांक्षा, प्रवृत्ति, व्यसन, चसना, चाट; **शौक करना**–किसी पदार्थ का उपभोग करना।
शौकसे–आनन्द से; **शौकत**–(अ० स्त्री०) ठाटबाट, शान; **शौकिया**–(अं०क्रि०वि०) शौक पूरा करने के लिये, प्रवृत्ति के वश में होकर।
शौकीन–(अं०पुं०) शौक करने वाला, चाव रखने वाला, सर्वदा बनाठना रहने वाला, रंडीबाज।
शौकीनी–(अ०स्त्री०) शौकीन होने का भाव या काम।
शौहर–(फ़ा०पुं०) स्त्री का पति, स्वामी।

स

संग–(फ़ा०पुं०) पाषाण,पत्थर, (वि०) पत्थर की तरह कड़ा। **संगजराहत**–(अं०पुं०) एक प्रकार का सफ़ेद चिकना पत्थर।
संगतराश–(फ़ा०पुं०) पत्थर काटने और गढ़ने वाला शिल्पकार।
संगदिल–(फ़ा०वि०) कठोर हृदय, निर्दय; **संगदिली**–(फ़ा० स्त्री०) निर्दयता; **संगपुस्त**–(फ़ा० पुं०) कच्छप, कछुआ।
संगमर्मर–(अ०पुं०) एक प्रकार का कड़ा सफ़ेद बहुमूल्य पत्थर; **संगमूसा**–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का बहुमूल्य कडा काला पत्थर; **संगयशब**–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार का कुछ हरे रंग का बहुमूल्य पत्थर।
संगरासिख–(फ़ा०पुं०) तांबे की मैल
संग सुलेमानी–(अ०पुं०) एक प्रकार का रंगीन पत्थर।
संगी–(फ़ा०वि०) संगीन, पत्थर का बना हुआ।
संगीन–(फ़ा०पुं०) लोहे का नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है, (वि०) पत्थर का बना हुआ, पुष्ट, असाधारण।
संजाफ–(फ़ा०स्त्री०) झालर, गोंट, **संजाफी**–(फा०वि०) किनारदार।
संजीदगी–(फ़ा०स्त्री०) विचार या व्यवहार की गम्भीरता; **संजीदा**–(फ़ा०वि०) शान्त, गम्भीर।
संदल–(फ़ा०पुं०) चंदन; **संदली**–(फ़ा०वि०) हलके पीले रंग का।
संदान–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार की निहाई।
संदूक–(अ०पुं०) पेटी, बक्स।
संदूकिया–(अ०पुं०) छोटी पेटी या सदूक।
सकरपाला–(फ़ा० पुं०) शकरपारा नाम की मिठाई, एक प्रकार का काबुली नीबू शकरपारे की आकृति की सिलाई।
सकलात–(फ़ा० पुं०) ओढ़ने की रजाई भेंट, उपहार।
सका–(अ०पुं०) पानी भरने वाला, भिश्ती।
सकाकुल–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का शतावर।
सकाकुलमिश्री–(हिं०स्त्री०) अस्वरकन्द
सकील–(अं०वि०) गुरुपाक, गरिष्ट।
सकूनत–(अं०स्त्री०) निवासस्थान।
सक्का–(अ०पुं०) भिश्ती, मशक में पानी भरकर लोगों को पिलाने वाला।
सखावत–(अ०स्त्री०) उदारता, दानशीलता।
सखी–(अ०वि०) दाता, दानी।
सखुन–(फ़ा०पुं०) वार्तालाप, बातचीत, कविता, काव्य, वचन, कथन, उक्ति; **सखुनतकिया**–(फ़ा० पुं०) वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जिह्वा पर ऐसा चढ़ जाता है कि बातचीत करने में प्रायः मुख से निकला करता है; **सखुनपरवर**–(फ़ा०पुं०) अपनी बात का धनी।
सख्त–(फ़ा०वि०)कठोर,कड़ा,कठिन।
सजा–(फ़ा०स्त्री०) अपराध के कारण होने वाला दण्ड, कारागृह में रखने का दण्ड।
सजायाफ्ता–(फ़ा० पुं०) दण्ड (फ़ा०पुं०) वह जो दण्ड भोग चुका हो।
सजायाब–(फ़ा०वि०) दण्डनीय, जो दंड पाने के योग्य हो।
सजावल–(फ़ा० पुं०) सरकारी कर इकट्ठा करने वाला अधिकारी।
सज्जादा–(अ०पुं०) मुसल्ला, फकीरों की गद्दी; **सज्जादा नशीन**–(अ० पुं०) मुसलमान पीर या बड़ा फकीर।
सतर–(अ० स्त्री०) लकीर, रेखा, पंक्ति, गुह्य इन्द्रिय,ओट, परदा (वि०) क्रुद्ध।
सतह–(अ० स्त्री०) किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल, रेखा गणित के अनुसार वह विस्तार जिसमें लंबाई चौड़ाई हो परन्तु मोटाई न हो।
सताना–(फ़ा०क्रि०) कष्ट या दुःख देना।
सतून–(फ़ा०पुं०) स्तंम्भ, खंभा।
सदका–(अ०पुं०) ईश्वर के नाम पर दी जाने वाली वस्तु, दान, उतारा, निछावर।
सदमा–(अ०पुं०) मानसिक व्यथा, बड़ी हानि।
सदर–(अ०वि०) प्रधान, वह स्थान जहां कोई बड़ा हाकिम रहता हो अथवा जहां बड़ा न्यायालय हो; **सदर अदालत**–(अ० स्त्री०) प्रधान विचारालय।
सदरआला–(अं०पुं०) छोटा जज।
सदर दरवाजा–(फ़ा० पुं०) घर का प्रधान द्वार।
सदरी–(अ० स्त्री०) बिना आस्तीन की कुरती या बंडी जो कपड़ों के ऊपर पहिनी जाती है।
सदाकत–(अ०स्त्री०) सत्यता,सचाई।
सदिया–(फ़ा० स्त्री०) लाल नामक पक्षी की मादा जो भूरे रंग की होती है।
सदी–(अ०स्त्री०) सौ वर्षों का समूह, शताब्दी।
सन्–(अं० पुं०) वर्ष, साल, कोई विशेष वर्ष।
सनद–(अ० स्त्री०) प्रमाणपत्र; **सनदयाफ्ता**–(अ० वि०) जिसको किसी बात का प्रमाणपत्र मिला है।
सनम–(अ०पुं०) प्रिय, प्यारा।
सनहकी–(अ०स्त्री०) मिट्टी का टोंटीदार पात्र जिसको मुसलमान लोग काम में लाते हैं।
सनाय–(अ०स्त्री०) एक पौधा जिसकी पत्तियां रेचक होती हैं।
सनोबर–(अं०पुं०) चीड़ का पेड़।
सपुर्द–(फ़ा०स्त्री०) धरोहर, (वि०) सौंपा हुआ; **सपुर्दगी**–(फ़ा०स्त्री०) सपुर्द करने या होने की क्रिया।
सफ–(अ०स्त्री०) पंक्ति, बिछावन, विस्तर, लंबी चटाई।
सफतालू–(अ०पुं०) सतालू, आड़ू।
सफर–(अ०पुं०) प्रस्थान, यात्रा।
सफर मैना–(अ०स्त्री०) सेना के वे सिपाही जो सुरंग बनाने या खोदने के लिये आगे चलते हैं।
सफरा–(अ०पुं०) पित्त।
सफरी–(अ०वि०) सफ़र में काम आने वाला, (पुं०) मार्ग व्यय।
सफहा–(अं०पुं०) पृष्ठ, पन्ना, तल।
सफा–(अ०वि०) निर्मल, स्वच्छ।
सफ़ाई–(अं०स्त्री०) स्वच्छता, निर्मलता, दोषारोप का हटना, निर्णय, निबटारा।
सफीना–(अ० पुं०) न्यायालय का आज्ञापत्र।
सफील–(अ०स्त्री०) परकोटा।
सफूफ–(अ०पुं०) बुकनी।
सफेद–(फ़ा०वि०) श्वेत, शुभ्र; **स्याह सफ़ेद**–भला बुरा; **सफेद पोश**–(फ़ा०वि०) साफ़ वस्त्र पहिरने वाला, शिक्षित, कुलीन, सज्जन।
सफ़ेदा–(फ़ा०पुं०) जस्ते का भस्म, एक प्रकार का आम, एक प्रकार का खरबूजा।
सफेदी–(फ़ा०त्री०) सफ़ेद होने का भाव, धवलता, भीत पर चूना छुहने का कार्य; **सफ़ेदी आना**–बालों का श्वेत होना, वृद्धावस्था आना।
सबक–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार पढ़ाया जाने वाला पाठ, शिक्षा।

सबकत–(फ़ा०क्रि०) विशेषता प्राप्त करना।
सबब–(अ०पुं०) कारण, साधन।
सबा–(अ०स्त्री०) प्रातः काल पूरब से बहने वाली हवा।
सबील–(अ०स्त्री०) मार्ग, यत्न, उपाय, वह स्थान जहां पर पथिकों को धर्मार्थ जल या शरबत पिलाया जाता है
सबू–(फ़ा०पुं०) मिट्टी का घड़ा, मटका।
सबूत–(अ०पुं०) प्रमाण, (वि०)।
सब्ज–(फ़ा०वि०) कच्चा और ताजा, हरा उत्तम; **सब्ज बाग दिखलाना**–कार्यसिद्धि के लिये प्रयत्न; **सब्जकदम**–(फ़ा०वि०) जिसके कहीं पहुँचने पर कोई अशुभ घटना होती है (व्यंग में प्रयोग होता है)।
सब्जा–(फ़ा०पुं०) हरियाली, भांग, पन्ना नामक रत्न।
सब्जी–(फ़ा०स्त्री०) हरी घास, वनस्पति आदि, हरियाली, हरी तरकारी, भांग।
सब्र–(अ०पुं०) धैर्य, सन्तोष।
समंद–(फ़ा०पुं०) अश्व, घोड़ा।
सर–(फ़ा०पुं०) सिर, सिरा, चोटी।
सर्–(अं०पुं०) एक बड़ी अंग्रेजी उपाधि।
सरअंजाम–(फ़ा०पुं०) सामग्री।
सरखत–(फ़ा०पुं०) वह कागज जिस पर घर दुकान आदि के किराये पर दिये जाने के नियम लिखी होती हैं,
सरगना–(फ़ा०पुं०) सरदार, नायक, अगुआ।
सरद–(फ़ा०वि०) देखो सर्द, ठंढा।
सरदई–(फ़ा०वि०) सरदे के रंग का,
सरदर–(फ़ा०क्रि०वि०) सब एक साथ मिलकर।
सरदा–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का काबुली खरबूजा।
सरदार–(फ़ा०पुं०) किसी समाज का नायक, धनिक।
सरनामी–(फ़ा०वि०) प्रसिद्ध, विख्यात
सरनामा–(फ़ा०पुं०) किसी लेख या विषय का निर्देश जो ऊपर लिखा रहता है, शीर्षक।
सरपंच–(फ़ा०पुं०) किसी पंचायत का सभापति
सरपरस्त–(फ़ा०पुं०) रक्षा करने वाला सरक्षक।
सरबराह–(फ़ा०पुं०) प्रबन्ध कर्ता, श्रमिक का सरदार।
सरवर–(फ़ा०पुं०) अधिपति, सरदार
सरविस्–(अं०स्त्री०) नौकरी, सेवा,
सरवे–(अं०पुं०) भूमि की नाम।
सरसब्ज–(फ़ा०वि०) हरा भरा,
सरसरी–(फ़ा०क्रि०वि०) जल्दी में, स्थूल रूप से, चलते ढंग पर।
सरसाम–(फ़ा०पुं०) सन्निपात रोग।
सरहंग–(फ़ा०पुं०) सेना, अधिकारी, मल्ल, चोबदार, पदाति,
सरहंगी–सिपहगिरी,
सरहद–(फ़ा० स्त्री०) सीमा, सीमा पर की भूमि,
सराय–(फा०स्त्री०) यात्रियों के ठहरने का स्थान,
सरासर–(फ़ा०अव्य०) पूर्ण रूप से, साक्षात्, प्रत्यक्ष।
सरासरी–(फ़ा०स्त्री०) शीघ्रता, स्थूल अनुमान (क्रि०वि०) स्थूल रूप में शीघ्र।
सरिश्ता–(फ़ा०पुं०) शासन या कार्यालय का विभाग,
सरेदस्त–(फ़ा०क्रि०वि०) इस समय, अभी, इस समय के लिये।
सरेबाजार–(फ़ा०क्रि०वि०) जनता के सामने, सब के सामने।
सरेस–(फ़ा०पुं०) एक लसदार वस्तु जो अनेक पशुओं के चमड़े को उबाल कर निकाली जाती है।
सरोकार–(फ़ा०पुं) परस्पर का संबंध, लगाव।
सरोद–(फ़ा०पुं०) बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।
सरोसामान–(फ़ा०पुं०) उपकरण, सामग्री।
सर्कस्–(अं०पुं०) वह स्थान जहां पर पशुओं के खेल दिखलाये जाते हैं।
सक्युलर–(अं०पुं०) सरकारी आज्ञापत्र जो जाता है।
सर्जन्ट्–(अं०पुं०) हवलदार, जमादार,
सर्ज–(अं०स्त्री०) मोटा ऊनी बढ़िया वस्त्र।
सर्जरी–(अं०स्त्री०) चीर फाड़ द्वारा चिकित्सा।
सर्टिफिकेट्–(अं०पुं०) परीक्षामें उत्तीर्ण होने का प्रमाण पत्र।
सर्द–(फ़ा०वि०) शीतल, ठंढा ढीला, मन्द, धीमा स्वाद, रहित नपुंसक।
सर्दमिजाज–(अ०वि०) उत्साह हीन, रूखा।
सर्दा–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का खरबूजा जो काबुल से आता है।
सर्दार–(फ़ा०पुं०) देखो सरदार।
सर्दी–(फ़ा०स्त्री०) शीतलता, ठंढ, जाड़ा
सर्फ–(फ़ा०पुं०) व्यय किया हुआ।
सर्वे–(अं०पुं०) भूमि की नाप वह राजकीय विभाग जो भूमि को नाप कर उसका मानचित्र नकशा बनता है।
सलगम–(फ़ा०पुं०) देखो शलजम।
सलतनत–(अ०स्त्री०) साम्राज्य, प्रबन्ध, सुविधा।
सलमह–(फ़ा०पुं०) बथुआ नामक शाक
सलमा–(फ़ा०पुं०) सोने चांदी का चमकदार गोल लपेटा हुआ तार।
सलवात–(अ०स्त्री०) कृपा, अनुग्रह।
सलाख–(फ़ा०स्त्री०) धातु की पतली छड़, लकीर।
सलाम–(अं०पुं०) प्रमाण, अभिवादन करना।
सलामत–(अ०वि०) सुरक्षित, (क्रि० वि०) कुशल पूर्वक (स्त्री०) अखण्डित होने का भाव।
सलामी–(अं०स्त्री०) प्रणाम करने की क्रिया, तोप या बंदूकों का किसी माननीग व्यक्ति के आदरार्थ दगना; भेट
सलाह–(फ़ा०स्त्री०) परामर्श सम्मति,
सलाहकार–(फ़ा०पुं०) सम्मति देने वाला।
सलीका–(अं०पुं०) काम करने का अच्छा, ढंग व्यवहार।
सलूक–(अ०पुं०) ढंग, आचरण, भलाई।
सवार–(फ़ा०पुं०) अश्वारोही सैनिक;
सवारी–(फ़ा०स्त्री०) किसी वस्तु पर चढने की क्रिया, सवार होने की वस्तु वह व्यक्ति जो सवार हो, स्त्री संभोग की क्रिया।
सवाल–(अ०पुं०) प्रश्न, याचना, प्रार्थना, गणित का उत्तर निकालने का प्रश्न।
सहन–(अ०पुं०) आँगन, चौक;
सहम–(फ़ा०पुं०) संकोच, भय।
सहमाना–(फ़ा०क्रि०) भयभीत करना,
सहर–(अ०पुं०) प्रातःकाल, सवेरा।
सहरगही–(फ़ा०स्त्री०) वह भोजन जो किसी दिन निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के कुछ रात रहते ही किया जाता है, ऐसा भोजन मुसलमान लोग रमजान के दिनों में करते है।
सहरा–(अ०पुं०) अरण्य, वन, जंगल
सहल–(अ०वि०) सरल, जो कठिन हो
सही–(फ़ा० वि०) सत्य, प्रामाणिक,
सहूलियत–(फ़ा० स्त्री०) सुगमता।
साइक्लोपीडिया–(अं० स्त्री०) वह बड़ा ग्रन्थ जिसमें संसार भर के सब मुख्य मुख्य विषयों पर पूरा पूरा विवेचन रहता है।
साइक्लोस्टाइल्–(अं० स्त्री०) अनेक प्रतिलिपियों को छापने का एक छोटा यन्त्र।
साइन्बोर्ड्–(अ० पुं०) वह पटरा जिस पर किसी व्यक्ति, दूकान, व्यवसाय आदि का नाम पता लिखा रहता है।
साइन्स्–(अं० स्त्री०) विज्ञान।
साकिन–(अं०वि०) निवासी, रहनेवाला
साज–(फ़ा० पुं०) सजावट का काम, ठाट बाट, लड़ाई के शस्त्र, घनिष्टता बाजा।
साजिश–(फ़ा० स्त्री०) किसी के विरुद्ध कोई काम करने में सहायता होना, मेल, मिलाप।
सादगी–(फ़ा०स्त्री०) सादापन, सीधापन।
सादा–(फ़ा० वि०) सामान्य आकृति का, बिना रंग का, सफेद।
सानी–(अं० वि०) अनुपम।
साफ़–(अ० वि०) स्वच्छ, स्पष्ट, छल रहित, समतल, मार डालना।
साफ़ा–(अ०पुं०) सिर पर बाँधने की पगड़ी, मुरेठा, स्वच्छ करना, कपड़े धोना।
साफ़ी–(अ० स्त्री०) हाथ में रखने का रुमाल।
साबिक–(अ० वि०) पुराने समय का पहले का; **साबिक दस्तूर**–जैसा सर्वदा से होता चला आया है।
साबुन–(अ० पुं०) एक प्रसिद्ध पदार्थ जो शरीर वस्त्रादि की मैल हटाने के उपयोग में लाया जाता है।
सायंस्–(अं० स्त्री०) विज्ञान शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें भौतिक तथा रासायनिक पदार्थों के विषय में विवेचन हो।
सायत–(अ० स्त्री०) एक घंटे या ढाई घड़ी का समय, शुभ मुहूर्त।
सायबान–(फ़ा०पुं०) धूप, वर्षा आदि से बचने के लिये लगाया हुआ घरके सामने का ओसारा।
सायल–(अं० पुं०) प्रश्नकर्ता, प्रार्थना करने वाला, न्यायालय।
साया–(फ़ा० पुं०) छाया, परछाहीं, भूत, प्रेत परी आदि, प्रभाव, एक प्रकार का छोटा लंहगा।
सारजंट्–(अं० पुं०) पुलिस के सिपाहियों का जमादार।
सार्टिफिकेट्–(अं०पुं०) प्रशंसा पत्र।
सालगिरह–(फ़ा०स्त्री०) बरसगांठ,
सालसी–(अं०स्त्री) पंचायत।
सालाना–(फ़ा०वि०) वार्षिक,
साहब–(अं०पुं०) स्वामी, परमेश्वर, मित्र, साथी, गोरी जाति का कोई व्यक्ति, एक सम्मान सूचक शब्द, महाशय। **साहबी**–(अं०वि०) साहब संबंधी (स्त्री०) प्रभुता,
साहुल–(फ़ा०पुं०) भीत की सीध नापने का एक यन्त्र।
सिंगरफ–(फ़ा०पुं०) ईंगुर।
सिकंजबीन–(फ़ा०स्त्री०) सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शर्बत।
सिकंदरा–(फ़ा०पुं०) सिग्नल्।
सिकन्दर–महात्मा अलेग्जान्डर का फ़ारसी नाम।
सिगनल्–(अं०पुं०) देखो सिकन्दर।
सिजदा–(अं०पुं०) प्रणाम, दण्डवत।
सिटी–(अं०स्त्री०) नगर,
सितंबर–(अं०पुं०) अंग्रेजी साल का नवा महीना। इसमें ३० दिन होते हैं
सितम–(फ़ा०पुं०) अनर्थ,
सितमगर–(फ़ा०पुं०) अन्यायी।
सिताब–(फ़ा०क्रि०वि०) तुरत, झटपट
सितारा–(फ़ा०पुं०) तारा; नक्षत्र, प्रारब्ध, भाग्य।
सितारिया–(फ़ा०पुं०) सितार बजाने वाला।
सितारी–(फा०स्त्री०) छोटा सितार।
सितारेहिन्द–(फ़ा०पुं०) एक उपाधि

जो ब्रिटिश सरकार की ओर से सम्मानार्थ प्रदान की जाती थी।
सिदरी–(फा० स्त्री०) तीन द्वार का घर, ओसारा तिन दुआरा।
सिनट्–(अं०पुं०) विश्वविद्यालय की प्रबंध कारिणी सभा।
सिपहसालार–(फ़ा०पुं०) सेना का प्रमुख सेसापति।
सिपास–(फ़ा०स्त्री०) प्रशंस., स्तुति।
सिपाही–(फ़ा०पुं०)सैनिक, योद्धा, पुलीस कास्टेबल्।
सिफ़त–(फा०स्त्री०) विशेपता, गुण,
सिफ़र–(अ०पुं०) शून्य, सुन्ना।
सिफ़ला–(अ०वि०)नीच, छिछोरा।
सिफ़ारिश–(फ़ा०स्त्री०)किसी के दोप क्षमा करने के लिए अर्थ वा किसी कार्य सिद्धि के लिये अनुरोध।
सिफारिशी–(फ़ा० वि०) अनुरोध करने वाला।
सिमेंट्–(अं० पुं०) एक प्रकार का लसदार गारा जो सूखने पर बहुत कड़ा और पुष्ट हो जाता है।
सियाहा–(फ़ा०पुं०)आय व्यय की बही
सियाही–(फ़ा०पुं०)देखो स्याही।
सिरका–(फ़ा०पुं०) अंगूर, जामुन, ईख आदि का रस धूप में पाकर खट्टा किया गया हो।
सिर–ता–पा–(फ़ा०क्रि०वि०) सिर से पांव तक, आदि से अन्त तक, सम्पूर्ण, बिलकुल।
सिरनामा–(फ़ा०पुं०) लिफाफे आदि पर लिखा जाने वाला पता।
सिरपेच–(फ़ा०पुं०)पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण,।
सिरपोश–(फ़ा०पुं०) सिर पर का आवरण।
सिरश्ता–(फ़ा०पुं०) विभाग।
सिरश्तेदार–(फा०पुं०)न्यायालय का का वह कर्मचारी जो यहां के पत्र आदि रखता है।
सिर्फ–(अ०क्रि०वि०) केवल, मात्र।
सिलसिला–(अ०पुं०) परम्रा क्रम,
सिल्क(अं०पुं०) रेशम, रेशमी कपड़ा
सिवा–(अं०अव्य०)अतिरिक्त, अधिक ज्यादा।
सिवाई–(अ० अव्य०) अतिरिक्त।
सिवाय–(अ०क्रि०वि०) अतिरिक्त। (वि०) अधिक। ऊपरी, (पुं०)) ऊपरी आमदनी।
सिविल–(अं०वि०) नागरिक, नगर संबन्धी, सयभ।
सिविल.सर्जन–(अं०पुं०) सरकारी बड़ा डाक्टर जो नगरके हस्पतालों का मुख्य अधिकारी होता है।
सिहद्दा–(फ़ा०पुं०) वह स्थान जहां पर तीन हदें मिलती हों।
सीख–(फ़ा०स्त्री०) लोहे की लंबी पतली छड़, शलाका, तीली, वह छड़ जिसमें खोंसकर मांस भूनी जाती है, बड़ी सूई, सूजा।
सीखचा–(फ़ा०पुं०) लोहे की पतली सींक जिसपर लपेट कर मांस भूनी जाती है।
सीगा–(अ०पुं०) सांचा, ढांचा, व्यापार, विभाग।
सीट–(अं०स्त्री०) बैठने का स्थान, आसन।
सीना–(फ़ा०पुं०) वक्षस्थल, छाती।
सीनाबन्द–(फ़ा०पुं०)अंगिया, चोली।
सीनियर्–(अं०वि०)श्रेष्ठ,पद में ऊंचा
सीमाब–(फ़ा०पुं०) पारा पारद।
सील–(अं०पुं०) मुद्रा, एक प्रकार की समुद्री मछली।
सीसमहल–(अ०पुं०)वह घर जिसकी भीत में चारो ओर काँच जड़े हों
सुजनी–(फ़ा० स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी चादर जो बिछाने के काम में आती है।
सुतून–(फ़ा०पुं०) स्तम्भ, खंभा।
सुद्दा–(अं०स्त्री०) पेट का बहुत सूखा हुआ मल।
सुनत–(अं०स्त्री०) देखो सुन्नत।
सुप्रीमकोर्ट–(अं०पुं०)प्रधान न्यायालय
सुफरा–(फ़ा०पुं०) टेबुल पर बिछाने का कपड़ा।
सुबह–(फ़ा०स्त्री०) प्रातःकाल।
सुबुक–(फ़ा० वि०) हलका, सुन्दर, (पुं०) घोड़े की एक जाति।
सुम–(फ़ा०पुं०) घोड़े आदि चौपायों का खुर, टाप।
सुरखी–(फ़ा०स्त्री०)महीन पीसा हुआ ईंटा जो घर बनाने के काम में लाया जाता है।
सुरबहार–(फ़ा०पुं०) सितारकी तरह का एक बाजा।
सुरमई–(फ़ा०वि०) हलके नीले रंग का, (पुं०) सुरमे के समान रंग, इस रंग का कबूतर।
सुरमच–(फ़ा०पुं०) सुरमा लगाने की सलाई।
सुरमा–(फ़ा०पुं०) नीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आंखों में लगाया जाता है, सुरमादानी–(फ़ा० स्त्री०) सुरमा रखने का पात्र।
सुराख–(फ़ा०पुं०) छिद्र, छेद।
सुराग–(अं०पुं०) सूत्र, टोह, पता।
सुराही–(अं०स्त्री०)जलरखनेका पात्र
सुरखुरू–(फ़ा०वि०) यशस्वी।
सु.र्ख–(फ़ा०वि०)लाल रंग का(पुं०) गहरा लाल रंग।
सु.र्खरू–(फ़ा०वि०) तेजस्वी,प्रतिष्ठित
सु.र्खी–(फ़ा० स्त्री०) लाली, लाल रोशनाई, लोहू।
सुलतान–(फ़ा०पुं०) सम्राट्।
सुल.फा–(फ़ा०पुं०) सूखा तमाखू जो गांजे की तरह चिलम पर रख कर पिया जाता है, चरस।
सुलह–(फ़ा०स्त्री०) मेल, मिलाप, सुलहनामा–(फ़ा०पुं०) सन्धिपत्र।
सुल्फ–(फ़ा०पुं०) बहुत तीव्र, लय,नाव
सुस्त–(फ़ा०वि०) दुर्बल, उदास, अस्वस्थ, मन्द बुद्धि आलसी, धीमी चाल वाला।
सुस्ती–(फा०स्त्री०) शिथिलता, आलस्य।
सू.जाक–(फ़ा०पुं०) मूत्रेंद्रिय का एक रोग जो दूषित लिंग और योनि के ससर्ग से उत्पन्न होता है।
सूट्–(अं०पुं०) पहनने के सब कपड़े विशेष करके कोट पतलून आदि।
सूटकेस्–(अं०पुं०) कपड़े रखने का चिपटा बक्स।
सूद–(फ़ा०पुं०) लाभ, व्याज।
सूद.खोर–(फ़ा०पुं०) वह जो अधिक व्याज लेता हो।
सूबा–(फ़ा०पुं०) किसी देश का भाग या खण्ड, प्रान्त प्रदेश; सूबेदार–(फ़ा०पुं०) किसी प्रान्त का बड़ा अधिकारी, एक छोटा सैनिक अधिकारी।
सूम–(अ०वि०) कृपण, कंजूस।
सूरत–(फा०स्त्री०)रूप आकृति,शोभा।
सूराख–(फ़ा०पुं०) छिद्र, छेद।
सेन्टर–(अं०पुं०)वृत्त के बीच का बिन्दु
सेकंड्–(अं०पुं०) एक मिनट का साठवां भाग (वि०) दूसरा।
सेक्रेटरी–(अं०पुं०) सचिव।
सेक्रेटेरियट्–(अं०पुं०) सेक्रेटरी का कार्यालय।
सेगा–(अ०पुं०) विभाग, विषय।
सेट्–(अं०पुं०) एक ही मेल की कई वस्तुओं का समूह।
सैनी–(फा० स्त्री०) थाली, पक्ति, अज्ञातबास के समय विराट के यहां सहदेव ने यह नाम रक्खा था।
सेनेट्–(अं०स्त्री०) प्रधान व्यक्ति का सभा, नियमों को बनाने की सभा, विश्वविद्यालय की प्रबन्धकारिणी सभा।
से.फ्–(अं०पुं०) रुपा पैसा तथा बहुमूल्य पदार्थ रखने का लोहे की पुष्ट पेटी।
सेब–(फ़ा०पुं०) नाशपाती की जाति का एक वृक्ष, इस वृक्ष का फल।
सेमीकोलन–(अं०पुं०) अंगरेजी का एक विराम चिह्न (;)
सेरसाहि–(फ़ा०पुं०)दिल्लीका सम्राट शेरशाह।
सेरा–(फ़ा०पुं०) सींची हुई भूमि।
सेराब–(फ़ा०वि०)जल से भरा हुआ, सींचा हुआ।
सेराबी–(फा०स्त्री०)भराव, सिंचाई।
सेरी–(फ़ा०स्त्री०) तृप्ति, सन्तोष।
सेल्–(अं०पुं०) तोप का वह गोला जिसमें गोलियां आदि भरी होतीं है
सेलून्–(अं०पुं०) जहाज का प्रधान कमरा, सजा हुआ रेल का लंबा डब्बा, अंग्रेजी मद्य बिकने का स्थान।
सेविङ्बैंक–(अं०पुं०) बैंक का वह विभाग जिसमें लोग अपने बचत के रुपये जमा करते हैं।
सेशन–(अं०पुं०)न्यायालय, व्यवस्थापक सभा आदि का एक बार कुछ दिनों तक रहने वाला अधिवेशन, पाठशाला की एक अवधि कुछ दिनों तक होने वाली पढ़ाई; सेशन्कोर्ट्–(अं०पुं०)वह बड़ा न्यायालय जहां जूरी या असेसरों की सहायता से दण्डविधान के बड़े अभियोग का विचार होता है; सेशन्जज्–(अं० पुं०) यहां का न्यायाधीश।
सेह–(फ़ा०वि०) तीन; सेह.खाना–(फ़ा०पुं०) तीन खण्ड का घर।
सेहत–(अं०स्त्री०) सुख, चैन।
सैर–(फ़ा०स्त्री०) मनोरंजन के लिये घूमना फिरना, आनन्द, कौतुक, मनोरंजन, दृश्य;
सोख्ता–(फ़ा०पुं०) मसिशोष कागज़ (वि०) जला हुआ।
सोजन–(फा०पुं०) सूई, कांटा।
सोजिश–(फ़ा० स्त्री०) सूजन, शोथ, फुलाव।
सोडा–(अं०पुं०)एक प्रकार का क्षार जो सज्जी को रसायनिक क्रिया से शुद्ध करके बनता है।
सोडावाटर–(अं०पुं०) एक प्रकार का पाचक का पानी।
सोफियाना–(अ०वि०) देखने में साफ सुथरा तथा भला लगने वाला।
सोफ़ी–(फ़ा०पुं०) देखो सूफी।
सोला–(अं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जो अंग्रेजी टोपियो के बनाने के काम में आता है।
सोशल्–(अं०वि०) समाज सम्बन्धी, सामाजिक।
सोशलिज्म(अं०पुं०)साम्यवाद।
सोसाइटी–(अं०स्त्री०) समाज, गोष्ठी
सोहबत–(अ०स्त्री०) संगसाथ, स्त्री-प्रसंग।
सौदा–(अ०पुं०) वह वस्तु जो मोल ली जावे या बेची जावे, क्रय विक्रय, लेनदेन, लेनदेन को बात पक्की करना; सौदा सुल.फ–क्रय विक्रय की वस्तु; (फ़ा०पुं०) पागलपन।
सौदागर–(फ़ा०पुं०) व्यापारी।
स्कालर्–(अं०पुं०) विद्याध्ययन करने वाला, पण्डित।
स्कालरशिप्–(अं०पुं०) छात्रवृत्ति, विद्वत्ता।
स्कीम्–(अं०स्त्री०) आयोजन,योजना
स्कूल्–(अं०पुं०)विद्यालय, पाठशाला।
स्टाम्प्–(अं०पुं०) सरकारी कागज डाक का टिकट, मोहर, छाप।
स्टाइल्–(अं० स्त्री०) पद्धति, शैली।
स्टाक्–(अं० पुं०) बिक्री का माल, सामग्री, हुंडी।
स्टिचिंग् मशीन–(अं०स्त्री०) लोहे या पीतल के तार से पुस्तक आदि सीने

का यन्त्र ।
स्टीम्–(अं०पुं०)जल बाष्प। स्टीमर–(अं०पुं०) धूम्रपोत ।
स्टूल्–(अं०पुं०) एक प्रकार की तीन या चार पावे की ऊंची चौकी ।
स्टेज–(अं० पुं०) थियेटर में का मंच जिस पर नाटक खेला जाता है ।
स्टेट्–(अं०पुं०)स्वतन्त्र राष्ट्र,स्थावर और जगम सम्पत्ति ।
स्टेशन्–(अं० पुं०) रेलगाड़ी के ठहरने का स्थान ।
स्पंज्–(अं०पुं०)एक छिद्रमय रेशेदार कोमल पदार्थ जो पानी सोख लेता है।
स्पिरिट्–(अ० स्त्री०) जीवनी शक्ति, मूलत्व मद्यसार ।
स्पीच्–(अं०स्त्री) व्याख्यान ।
स्यापा–(फ़ा० पुं०) मृत व्यक्ति के शोक में स्त्रियों का रोने पीटने की प्रथा; स्यापा पड़ना–रोना पीटना, निर्जन होना ।
स्याह–(फ़ा० वि०) कृष्ण वर्ण का, काला ।
स्याही–(फ़ा० स्त्री०) लिखने या छापने की काली रोशनाई, काजल ।
स्लीपर–(अं० पुं०) बिना एड़ी की जूती, चट्टी, रेल की पटरियों के नीचे बिछी हुई लकड़ी ।
स्लेट–(अं० स्त्री०) एक प्रकार की चिकने पत्थर की पटिया जिस पर विद्यार्थी अंक लिखते हैं ।

ह

हंटर–(अ०पुं०)लंबी चाबुक,कोड़ा।
हक–(अ०वि०)गो धर्म तथा नीति के अनुसार अधिकार हो,ठीक बात, न्याय पक्ष, चलन के अनुसार मिलने वाली वस्तु, ईश्वर, अधिकार; हक में–विषय में अधिकार ।
हकशफा–(अ०पुं०) किसी भूमि के क्रय में औरों के अपेक्षा उसके पड़ोसी का विशेष अधिकार होना ।
हकीकत–(अ०स्त्री०) सचाई सच्चा सच्चा वृत्तान्त; हकीकत में–वस्तुतः वास्तव में; हकीकत जाना–सच्ची बात का प्रकट हो जाना ।
हकीकी–(अ०वि०) सच्चा, अपना, सगा ।
हकीम–(अं०पुं०) यूनानी विधि से चिकित्सा करने वाला, वैद्य ।
हकीयत–(अं०स्त्री०) सत्व, अधिकार,
हजरत(अ०पुं०) महात्मा महाशय, (व्यंगमें) नटखट या खोटा आदमी
हजामत–(अ०स्त्री०)हज्जामका काम, या शुल्क और कर्म हजामत बनाना–धन लूटना ।
हजार–(फ़ा०वि०) दस सौ की संख्या का, अनेक, दस सौ की संख्या या अंक १००० चाहे जितना अधिक
हजारहा(फ़ा०वि०) सहस्रों, हजारों ।
हजारा–(फ़ा०वि०) जिसमें बहुत सी पंखड़ियां हों, फौवारा, एक प्रकार की अग्नि कीड़ा ।
हजारी–(फ़ा०पुं०)एक हजार सिपाहियों का सरदार ।
हजर–(अ०पुं०) देखो हजूर ।
हजारों–(फ़ा०वि०) सहस्रों, अनेक, बहुत ।
हजूरी–(अ०पुं०) किसी बादशाह या राजा के सर्वदा पास रहने वाला सेवक ।
हजो–(अ०स्त्री०)अपकीर्ति, अपनाम, निंदा ।
हज्ज–(अ०पुं०) देखो हज ।
हतक–(अ०स्त्री०) अप्रतिष्ठा; हतक इज्जती–(अ०स्त्री०) मानहानि ।
हद–(अ०स्त्री०) सीमा मर्यादा ।
हफ्ता–(फ़ा०पुं०) सप्ताह, सात दिन का समय ।
हबशी–(फ़ा०पुं०) हबश देश का निवासी ।
हमराह–(फ़ा०अव्य०) संग, साथ ।
हमल–(फ़ा०पुं०) गर्भ ।
हमला–(अ०पुं०) चढ़ाई, आक्रमण ।
हमाम–(अ०पुं०) स्नानागार ।
हमेल–(अ० स्त्री०)गले में पहरने की गोल टुकड़ों या मुद्राओं की बनी हुई माला ।
हमेशा–(फ़ा०अव्य०) सदा, सर्वदा ।
हमाम–(अं०पुं०)स्नानागार, नहाने का कमरा । हयात–(अं०स्त्री०)जीवन।
हयादार–(फ़ा० वि०) लज्जाशील, हयादारी(फ़ा०स्त्री०)लज्जा शीलता।
हर–(फ़ा० वि०) प्रत्येक, हर एक, हररोज-प्रतिदिन; हरदम–सवदा ।
हरकत–(अ० स्त्री०) गति, चेष्टा, बुरी चाल ।
हरगिज–(फ़ा०अव्य) कदापि, कभी ।
हरचन्द–(फा० अव्य)अनेक बार,यद्यपि
हरजाना–(फ़ा०पुं०) क्षति पूर्ति ।
हरफ(फ़ा०पुं०)अक्षर, वर्ण ।
हरबा–(अ० पुं०) अस्त्र ।
हरम–(अ०पुं०) अन्तःपुर, ।
हरमजदगी–(फ़ा० स्त्री०) पाजीपन।
हराम–(अं०वि०)नीति विरुद्ध,निषिद्ध अधर्म, व्यभिचार, कठिन ।
हरामखोर–(फ़ा०पुं०) अनुचित रूप से धन कमाने वाला; हरामजादा–(फ़ा० पुं०) दुष्ट, पाजी, दोगला
हरामी–(अ० वि०) दुष्ट, पाजी ।;
हरारत–(अ० स्त्री०) गरमी, ताप, मन्द ज्वर ।
हरास–(फ़ा० पुं०) आशंका, खटका, भय, डर, दुःख, निराशा ।
हरीकेन–(अं० पुं०) एक प्रकार की लालटेन जो हवा के झोंक से नहीं बुतती ।
हरीफ–(अ० पुं०)शत्रु, विरोधी ।
हरूफ–(अ० पुं०) अक्षर ।
हर्ज–(अ० पुं०) हानि, रुकावट ।
हल–(अ० पुं०) हिसाब लगाना, किसी कठिन बात का निर्णय ।
हलक–(अ०पुं०) गले की नली, कंठ ।
हलका–(अ० पुं०) परिधि, घेरा, मण्डल, कई गाँवों या कसबों का समूह
हलफ–(अ०पुं०) शपथ; हलफनामा–(फ़ा० पुं०) वह पत्र जिस पर शपथ पूर्वक कोई बात लिखी गई हो ।
हलवा–(अ० पुं०) मैदा, सूजी आदि को घी में भूनकर तथा चाशनी में पकाकर बनाया हुआ मिष्ठान्न ।
हलाक–(अ० वि०) वध किया हुआ, मारा हुआ ।
हलाकत–(अ० स्त्री०) हत्या, बध ।
हलाल–(फ़ा० वि०) जो शरअ या मुसलमानी धर्म पुस्तक के अनुकूल हो, वह पशु जिसकी माँस खाना मसलमानी धर्म के अनुसार निषिद्ध न हो ।
हलालखोर–(फ़ा० पुं०) मेहतर, भंगी
हवलदार–(फ़ा० पुं०) मुसलमानी राज्य काल में राज्यकर प्राप्त करने वाला अधिकारी, सेना का एक छोटा अधिकारी ।
हवस–(अ० स्त्री०) कामना, लालसा, चाह, तृष्णा ।
हवा–(अ० स्त्री०) पवन, वायु, भूत प्रेत ; हवा उड़ना–समाचार फैलना; हवा करना–पंखा डुलाना; हवा के घोड़े पर सवार होना–उतावला होना; हवा बताना–टालना ; हवा बांधना–गप हाँकना; हवा से लड़ना–बिना कारण किसी से झगड़ना ; हवा न लगने देना–प्रभाव न पड़ने देना; हवा हो जाना–शीघ्र भाग जाना ।
हवाई–(अ० वि०) वायु सम्बन्धी, हवा में चलने वाला, अग्निक्रीड़ा; हवाई उड़ना–मुख का रंग फीका पड़ जाना ; हवाई अड्डा–वह स्थान जहाँ से हवाई जहाज उड़ते हैं तथा दूर से आकर जहाँ पर उतरते हैं ।
हवादार–(फ़ा०वि०) जिसमें वायु के आवागमन के लिये खिड़कियाँ द्वार आदि लगे हों, (पुं०) राजाओं की सवारी का एक प्रकार का सिंहासन
हवाल–(अ० पुं०) स्थिति, दशा ।
हवालात–(अ० स्त्री०) अभियुक्त को पहरे में रक्खे जाने की क्रिया या भाव ।
हवास–(अ० पुं०) इन्द्रियाँ, चेतना, संज्ञा; हवास गुम होना–विह्वल होना
हवेली–(अ० स्त्री०) हर्म्य, प्रासाद ।
हशमत–(अ० स्त्री०) गौरव, बड़ाई, ऐश्वर्य ।
हसद–(अ० पुं०) ईर्षा, डाह ।
हसीन–(अ०वि०) सुन्दर ।
हस्ती–(फ़ा० पुं०) अस्तित्व ।
हाइफन्–(अं० पुं०) विराम चिह्न (-) जो दो शब्दों के बीच में लगाया जाता है ।
हाकिम–(अं० पुं०) शासक, प्रधान अधिकारी ।
हाकी–(अं० पुं०) एक खेल जो टेढ़ी लकड़ी और गेंद से खेला जाता है ।
हाजत–(अ० स्त्री०) आवश्यकता । पहरे में रक्खा जाना, बंदियों को रखने का घर ।
हाजमा–(अ० पुं०) पाचन क्रिया ।
हाजिर–(अ० वि०) सामने आया हुआ, उपस्थित ।
हाता–(अ० पुं०) घेरा हुआ स्थान, बाड़ा, स्थान सीमा (वि०) अलग किया हुआ, हटाया हुआ, वध करने वाला ।
हातिम–(अ० पुं०) कुशल, निपुण, चतुर, अत्यन्त दानी मनुष्य ।
हादसा–(अ० पु०) बुरी दशा, दुर्घटना
हारमोनियम्–(अं० पु०) सन्दूक के आकार का एक प्रकार का अंग्रेजी बाजा ।
हाल–(अ० पुं०) परिस्थिति, अवस्था, समाचार ।
हालत–(अ० स्त्री०) अवस्था, स्थिति, दशा संयोग, आर्थिक अवस्था ।
हालांकि–(फ़ा० अव्य०) यद्यपि ।
हालिम–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का पौधा जिसके बीज औषधियों में प्रयोग होते हैं ।
हाशिया–(अ०पुं०) किनारा, कोर, गोंट, पुस्तक के किनारे पर लिखी हुई टिप्पणी ।
हासिल–(अ०वि०) प्राप्त, पाया हुआ, उपज, लाभ, जमा, गणित में शेष भाग ।
हिंच–(अं०पुं०) आघात, चोट ।
हिंद–(फ़ा०पुं०) भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।
हिंदवाना–(फ़ा०पुं०)कलिन्दा,तरबूज।
हिंदवी–(फ़ा०स्त्री०) हिंदी भाषा ।
हिंदी–(फ़ा०वि०) भारतीय, हिंदुस्तान का ।
हिन्दुस्तान–(फ़ा०पुं०) भारतवर्ष ।
हिंदुस्तानी–(फ़ा० वि०) भारतवर्ष सम्बन्धी, भारतवासी, हिंदुस्तानी भाषा ।
हिंदू–(फ़ा०वि०) भारतवर्ष की आर्य जाति के वंशज ।
हिकमत–(अ०स्त्री०) तत्वज्ञान, कला कौशल, हकीम का व्यवसाय या काम, हकीमी ।
हिकमती–(अ०वि०) उपाय सोचने वाला, चतुर ।
हिकायत–(अ०स्त्री०) कथा,कहानी ।
हिजाब–(अ०पुं०) परदा, लज्जा, शर्म ।
हिज्जे–(अ०पुं०) किसी शब्द के अक्षरों को मात्रा सहित कहना ।
हिज्र–(अ०पुं०) वियोग ।
हिदायत–(अ०स्त्री०) पथ प्रदर्शन, निर्देश, आदेश ।
हिना–(अ०स्त्री०) मेंहदी ।
हिफ़ाजत–(फ़ा०स्त्री०) रक्षा,देखरेख,

हिब्बा–(अ०पु०) दाना, दो जव की एक तौल, दान ।
हिमयानी–(फा०स्त्री०) रुपया पैसा रखने को जालीदार थैली ।
हिमाकत–(अ०स्त्री०) मूर्खता ।
हिमामदस्ता–(फा०पु०) लोहे का खरल और लोढा ।
हिमायत–(अ०स्त्री०) समर्थन, रक्षा, पक्षपात ।
हिम्मत–(अ०स्त्री०) पराक्रम, साहस,
हिम्मती–(फा०वि०) पराक्रमी, साहसी
हिरास–(फा० स्त्री०) भय, त्रास, खिन्नता (वि०) निराश उदासीन ।
हिरासत–(अ०स्त्री०) पहरा, चौकी ।
हिर्स–(अ०स्त्री०) लोभ, लालच इच्छा का वेग, कामना का उमग, स्पर्धा ।
हिस–(अ०पु०) अनुभव, ज्ञान ।
हिसाब–(अ०पु०) गणित, लेखा, गिनती लेनदेन अथवा आय व्यय का ब्योरा, गणित विद्या ।
हिसाब किताब–(अ०पु०) आय व्यय का विवरण सहित लेखा, रीति, ढङ्ग
हिस्टीरिया–(अ०पु०) स्त्रियो का मूर्छा रोग ।
हिस्सा–(फा०पु०) अश, भाग, खण्ड, टुकडा, हिस्सेदार-(फा०पु०) साझेदार
हीनहयात–(अ०पु०) जीवन काल, वह समय जिसमे कोई जीता रहे ।
हीला हीलाहवाला–(अ०पु०) बहाना, मिस निमित्त ।
हुक्–(अ०पु०) टेढी कील, अकुडी (हि०स्त्री०) एक प्रकार की पीडा जो नस पर होती है ।
हुकूमत–(अ० स्त्री०) आधिपत्य, अधिकार, राज्य शासन, हुकूमत दिखलाना–प्रभाव दिखलाना, हुकमत जताना–प्रभाव दिखलाना ।
हुक्का–(अ०पु०) तमाखू का धुवा मुख मे खीचने के लिये विशेष आकार का बना हुआ एक नल यन्त्र ।
हुक्काम–(अ०स्त्री०) अधिकारी वर्ग ।
हुक्म–(अ०पु०) आदेश, आज्ञा, उपदेश
हुक्मनामा–(फा०पु०) आज्ञा पत्र ।
हुक्मबरदार–(फा०पु०) आज्ञाकारी, सेवा करने वाला, हुक्मबरदारी–(फा०स्त्री०) आज्ञा पालन, सेवा ।
हुक्मी–(अ०वि०) दूसरे की आज्ञा के अनुसार ही काम करनेवाला, पराधीन अवश्य, अव्यर्थ अचूक, लक्ष्य पर अवश्य पहुँचाने वाला ।
हुजूम–(अ०पु०) भीडभाड, जमावडा
हुजूर–(अ०पु०) किसी बडे का सामीप्य, समक्षता, एक शब्द जो आधीन कर्मचारी आदि बडे अफसरो के लिये प्रयोग करते है ।
हुज्जत–(अ०स्त्री०) व्यर्थ का तर्क, झगडा, वादाविवाद, हुज्जती–(अ०वि०) हुज्जत करनेवाला ।
हुद्दा–(फा० स्त्री०) कर देने का स्थिर काल ।
हुनर–(फा०पु०) कला, गुण, कौशल, चतुराई । हुनरमद–(फा०वि०) कलाकुशल मे निपुण, हुनरमदी–(फा०स्त्री०) निपुणता, कुशलता
हुनश–(फा०वि०) वह बन्दर या भालू जो नाचना और खेल करना सीख गया हो ।
हुमेल–(अ०स्त्री०) मुद्राओ को गूथ कर बनाई हुई माला जिसको स्त्रिया पहरती है ।
हुरमत–(अ०स्त्री०) मर्यादा, प्रतिष्ठा
हुर्रा–(अ०पु०) एक प्रकार की हर्ष ध्वनि ।
हुलिया–(अ०पु०) आकृति, किसी मनुष्य के रूप रंग आदि का विवरण, शरीर पर के चिह्न आदि का ब्योरा ।
हुस्न–(अ०पु०) सौन्दर्य, सुन्दरता, अनूठापन ।
हूबहू–(अ०वि०) ज्यो का त्यो, ठीक वैसाही ।
हेच–(फा० वि०) तुच्छ, नि सार, नि सत्व ।
हेड्–(अ०वि०) प्रधान (पु०) बडा अधिकारी ।
हेड्क्वार्टर–(अ०पु०) किसी अधिकार का प्रधान स्थान ।
हेडिङ–(अ० स्त्री०) किसी लेखका शीर्षक ।
हेमियानी–(फा० स्त्री०) रुपया पैसा रखने की जालीदार थैली जो कमर मे बाधी जाती है ।
हैजा–(अ०पु०) विशूचिका रोग ।
हैट–(अ०पु०) अग्रेजी टोपी ।
हैरत–(अ०स्त्री०) आश्चर्य अचरज ।
हैरान–(अ०वि०) चकित, भौचक्का व्यग्र, घबडाया हुआ ।
हैवान–(अ०पु०) पशु जड मनुष्य ।
हैसियत–(अ०स्त्री०) शक्ति, योग्यता सामर्थ्य, आर्थिक दशा, वित्त, मूल्य, श्रेणी, मान, प्रतिष्ठा धन ।
होटल्–(अ०पु०) भोजनालय ।
होल्डर–(अ०पु०) अग्रेजी लेखनी का वह भाग जिसमे लिखने की निब या जीभी खोसी जाती है ।
होश–(फा० पु०) ज्ञान या बोध की वृत्ति चेतना सज्ञा स्मरण, सुध, बुद्धि ।
होशमन्द, होशियार–(फा० वि०) बुद्धिमान, निपुण, धूर्त, सचेत, सावधान ।
होशियारी–(फा० स्त्री०) बुद्धिमानी, निपुणता, दक्षता, युक्ति, कौशल ।
हौज–(अ० पु०) पानी जमा रहने का चहबच्चा, कुण्ड, मिट्टी का बडा पात्र या नाद ।
हौदा–(फा०पु०) हाथी की पीठ कर कसा जाने वाला आसन जिसमे बैठने तथा पीठ ठेकने के लिये गद्दी लगी रहती है ।
हौल–(अ०पु०) त्रास, भय, डर, हौल पैठना–चित्तमे भय समा जाना ।
हौलदिल–(फा० स्त्री०) कलेजे की धडकन का रोग (वि०) जिसका दिल धडकताहो, डरा हुआ, व्याकुल, घबडाया हुआ ।
हौसला–(अ०पु०) उमग, उत्साह, प्रफुल्लता ।
ह्विप्–(अ०पु०) चाबुक, कोचवान, वह जो व्यवस्थापिता सभा अथवा पार्लामेन्ट् में किसी महत्व के विषय मे वोट् देनेके लिये अधिक से अधिक सख्या मे सदस्यो को उपस्थित कर देता है ।
ह्वेल्–(अ० पु०) एक प्रकार का मछली के आकार का बहुत बडा स्तनपायी जन्तु तिमिङ्गल ।

मुहावरे और लोकोक्तियां

अ

अङ्क देना–आलिंगन करना, गले लगाना।
अकड़ दिखाना–अभिमान करना, गर्व करना।
अक्ल का पुतला–बड़ा बुद्धिमान पुरुष।
अक्ल पर परदा पड़ना–बुद्धि भ्रष्ट होना, अक्ल मारी जाना।
अक्ल के घोड़े दौड़ाना–नाना प्रकार के विचार करना
अक्ल चकराना–बुद्धि काम न करना, समझ में न आना।
अक्ल मारी जाना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
अक्ल का दुश्मन–नासमझ, बुद्धिहीन, बेवकूफ।
अक्ल चरने जाना–बुद्धि का काम न करना।
अक्ल पर पत्थर पड़ना– भले बुरे का ज्ञान न होना, मतिभ्रष्ट या विवेकरहित होना।
अखाड़े में आना–(उतरना) मुकाबला करना।
अखाड़ा मारना–विजय प्राप्त करना, किसी कार्य का सिद्ध होना।
अखाड़े से भागना–हारकर चले जाना।
अखाड़ा जमाना–आमोद प्रमोदके लिये एकत्रित होना
अगर मगर करना–तरह तरह के बहाने करना।
अंग अंग ढीला होना–बहुत थक जाना।
अंग अंग ढीला करना–अति शिथिल कर देना।
अंग अंग मुस्कुराना–अति प्रसन्न होना, बहुत खुश होना।
अंग न लगना–भोजन का पुष्टिकारक प्रभाव शरीर में न आना, काफी खाना खाने पर भी दुबला होना।
अंगारे उगलना– क्रोध में आकर कठोर बचन बोलना
अंगारे सिर पर धरना–बड़ी आपत्तिको सहन करना
अंगारों पर लेटना–बहुत व्यग्र होना, बहुत घबड़ाना
अंगारे बरसना–धूप बड़ी तेज होना, सूर्य का तीव्र आतप होना।
अगाड़ी पिछाड़ी बांधना–सब तरहका प्रबन्ध करना
अंगुली उठाना–हानि पहुंचाने का प्रयत्न करना।
अंगुलियां उठना–बदनाम होना, अपकीर्ति प्राप्त करना
अंगुलियां उठाना–बदनाम करना, अपकीर्ति फैलाना
अंगुलियों पर गिना जाना–संख्यामें बहुत कम होना।
अंगुलियों पर नचाना–तंग करना, परेशान करना।
अंगुलियों पर नाचना–वशीभूत होना।
अंगूठा दिखाना – चिढाना, साफ जवाब देना, अस्वीकार करना।
अंगूठा चूमना–बड़ी विनती करना।
अग्नि में घी डालना–तकरार बढाना, क्रोध प्रज्वलित करना।
अच्छे दिन देखना–आनन्द से जिन्दगी बिताना।
अंचरा पसीरना–भिक्षा मांगना।
अंजर पंजर ढीला करना–बहुत मारना पीटना।
अंटी पर चढना–अधिकार में आना।
अजीर्ण होना–कष्टसाध्य होना।
अटकल पच्चू–बिना सोच बिचार किये हुए।
अठखेलियां करना–(सूझना) उपहास करना, दिल्लगी करना।
अड़ंगा अड़ाना–(देना) विघ्न डालना, तरकीब लगाना
अड़ंगे पर चढ़ना–आधीन होना।
अड़ंगे पर चढ़ाना–वशीभूत करना।
अड्डा जमना–एकत्रित होना। इकट्ठा होना।
अड्डा जमाना–अधिकार करना।
अण्डा सिखावे बच्चों को चीचीं न कर–छोटे का अपने बड़ों को उपदेश देना।
अण्डे सेना– बेकार बैठे रहना।
अण्डे सेवे और कोई लेवे दूसरा कोई–परिश्रम और कोई करे और उसका फल दूसरा कोई उठावे
अण्डे होंगे तो बच्चे बहुत होंगे–मूल धन बना रहेगा तो सूद बहुत मिलेगा।
अंतड़ियों में बल पड़ना–हँसते हँसते पेटमें पीड़ा हो जाना।
अन्त करना–जान से मार डालना, समाप्त करना।
अन्त पाना–गुप्त भेद को जान लेना।
अन्त बुरे का बुरा–बुरा काम करने का अन्त बुरा ही होता है।
अन्त समय–मृत्युकाल, मरण का समय, आखिरी वक्त
अन्तड़ियां टटोलना–भेद या रहस्य का पता लगाना
अन्धा क्या चाहे, दो आंखें– आवश्यक वस्तु यदि सहज में मिल जाय तो कैसा अच्छा हो।
अन्धा बनाना–धोखा देना।
अन्धा बन जाना–धोखे में आजाना, धोखा खा जाना।
अन्धाधुन्ध उड़ाना–बिना सोचे बिचारे धन खर्च करना।
अन्धी पीसे कुत्ता खाय–परिश्रम करके धन कोई कमावे और उसका उपभोग कोई दूसरा ही करे
अन्धा बांटे रेवड़ी फिर फिर अपने को दे–अधिकार मिलने पर अपने ही वंश जाति आदि के लोगों का उपकार करना सामान्य बात है।
अन्धे के हाथ बटेर लगना–किसी को किसी वस्तु का सहज में मिल जाना।
अन्धे को अन्धा कहने से बुरा मानता है– कटु वचन सच्चे होने पर भी सभी को बुरे लगते हैं
अन्धे को अंधेरे में बड़ी दूर की सूझी–किसी मूर्ख का दूरंदेशी बात कहना।
अन्धे की लकड़ी–एकमात्र आश्रय।
अन्धेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा–अर्थ स्पष्ट है। जहां अव्यवस्था है वहां भले बुरे एक समान।
अन्धेर मचाना– अन्याय करना।
अन्न जल उठ जाना–(पूरा होना) एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना, मर जाना।
अन्धा क्या जाने वसंत की बहार– जिस मनुष्य ने किसी वस्तु को नहीं देखी वह उसका महत्व नहीं जान सकता।
अन्धे का अंधेरे में बड़ी दूर की सूझी– अपने धुन में लगे रहने से मनुष्य को अनोखी बात सूझती है।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता– अकेला मनुष्य किसी बड़े काम को नहीं कर सकता।
अन्धा बगला कीचड़ खाय–मूर्ख के लिये क्षुद्र वस्तु भी अमूल्य है।
अच्छा किया खुदाने, बुरा किया बन्देने–ईश्वर अच्छा ही करता है, बुरा काम मनुष्य करता है।
अच्छे घर बाधा देना–अपने से अधिक बलवान् से शत्रुता करना।
अधजल गगरी छलकत जाय– ओछे मनुष्य बड़ा आडंबर करते हैं।
अक्ल बड़ी की भैंस–शरीर पुष्ट होने से बुद्धि नहीं बढती।
अटका बनिया देय उधार–दबा हुआ मनुष्य सब कुछ कर सकता है।
अति का भला न बोलना अति की भली न चूप–अति का भला न बरसना अति की भली न धूप– किसी बात का अति का होना बुरा होता है।
अति भक्ति चोर का लक्षण–बड़ा आडंबर करने वाला मनुष्य छली होता है।
अपनासा मुंह लेकर रह जाना– लज्जित होना, अवाक् होना, चुप रह जाना।
अपना उल्लू सीधा करना–अपना मतलब सिद्ध करना
अपना घर समझना–किसी तरह का संकोच न करना
अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष–अपने ही कुटुम्ब के लोग बुरे हों तो दूसरों को क्यों दोष देना।
अपना वही जो आवे काम–सच्चा मित्र वही है जो समय पर सहायता दे।
अपनाही राग अलापना–स्वार्थ साधन की बात करना
आन के घर पर लछमी नारायण–दूसरे की कमाई हुई सम्पत्ति पर अधिकार होना।
अपना खाना अपना कमाना–परिवार से अलग होकर रहना।
अपना घर दूर से सूझता है–अपना फायदा सभी को देख पड़ता है।
अपनी करनी पार उतरनी–जैसी करनी वैसा फल
अपनी अपनी डफली अपना अपना राग–एक साथ मिलकर कोई काम न करने की विधि।
अपनी खिचड़ी अलग पकाना– सबसे अलग रहना, निराले विचार का होना।
अपनी कब्र आप खोदना– स्वयं अपने नाश का साधन उपस्थित करना।
अपनी नींद सोना अपनी नींद जागना–स्वतंत्र रहना, किसी के आधीन न होना।
अपनी ही पड़ी रहना–अपने लाभ का ही सर्वदा ध्यान रखना।
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है–कमजोर भी अपने स्थान पर बलवान् होता है।
अपनी नाक कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगड़े– नीच लोग अपनी हानि करते हुए भी दूसरों की हानि करते हैं।
अपनी पगड़ी अपने हाथ–अपनी प्रतिष्ठा अपने ही हाथ होती है।
अपनी दही को कोई खट्टा नहीं कहता–अपनी वस्तु को कोई बुरी नहीं कहता।
अपनी ही गाये जाना–सर्वदा अपने मतलब की बात कहते रहना।
अपने बछड़े के दांत गिनना–किसी रहस्य को जान लेना
अपने पैरों खड़ा होना–दूसरे के आश्रित न रह कर स्वावलम्बी होना।
अपने पूत को कोई काना नहीं कहता–अपनी वस्तु को कोई बुरी नहीं कहता।
अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना–अपने मुंहसे अपनी शेखी करना।

अपने पावों पर आप कुल्हाड़ी मारना–अपने हाथों से अपनी हानि करना।
अपने हाथों पापड़ बेलना–जान बूझकर कष्ट उठाना
अपने दिनों को रोना–कष्टपूर्ण जीवन बिताना।
अपने बल पर खड़े होना–स्वावलम्बी होना, किसी का आश्रय न लेना।
अपने मार्ग में कांटे बोना–ऐसा काम करना जिसमें अपने को हानि पहुंचे।
अब पछताये होत क्या चिड़िया चुंग गई खेत–समय बीत जाने पर पछतावा करना वृथा है
अभिलाषाओं का भवन बनाना– हवामें पुल बांधना, कल्पना मात्र करना।
अभी तो तुम्हारे दूध के दांत भी नहीं टूटे–तुम अभी बच्चे हो, तुमको दुनियां का कुछ अनुभव नहीं है
अमर हो जाना– चिरस्थायी यश प्राप्त करना।
अमल पानी करना–नशापानी करना।
अमचूर बना देना–हड्डी पसली तोड़ डालना।
अमीर को जान प्यारी, गरीब को दुम भारी–धनिक को अपना प्राण बड़ा प्यारा होता है वह चिरजीवी होना चाहता है, परन्तु गरीब को जान भारी जान पड़ती है।
अल खामोश नीम राजी – मौन रहना स्वीकृति का लक्षण है।
अल्पाहारी सदा सुखी–थोड़ा खाने वाला रोगी नहीं होता।
अवसर चूकना–मौका हाथ से निकल जाना।
अरण्य रोदन–निरर्थक कार्य।
अरमान निकालना–मनोकामना पूरी करना।
अस्सी हजार फिरना–तुच्छ व्यक्ति होना, महत्व रहित होना।
अशर्फियां लुटें और कोयलों पर मोहर–बड़ी बड़ी रकम तो बिना कुछ सोचे समझे खर्च हो जावे परन्तु छोटी रकमों के खर्च में बहुत विचार रक्खा जावे।
अस्सी आमद चौरासी का खर्च–आमदनी से अधिक व्यय करना।

आ

आंख उठाना–हानि पहुंचाने का प्रयत्न करना, बुरी निगाह से देखना।
आंख उठाकर भी न देखना–ध्यान तक न लगाना
आंख ऊंची होना–प्रतिष्ठित होना।
आंख आना–आंख लाल होकर दुखना।
आंख बचा जाना– सन्मुख उपस्थित न होना।
आंख ठहरना–रुचिकर होना, पसन्द आना।
आंख और कान में चार अंगुल का फ़र्क है– देखी हुई बात को सब कोई मानता है, परन्तु सुनी हुई बात पर कोई विश्वास नहीं करता।
आंख तरसना–देखने की बड़ी लालसा होना।
आंख के अन्धे नाम नयनसुख– कलम पकड़ने का शऊर नहीं लेखक बनते हैं।
आंख मिलाना– किसी के सामने देखना।
आंख भर रोना–आंखों में आंसू आ जाना।
आंख ऊंची न होना–शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।
आंख चीर-चीर कर (फाड़कर) देखना–उत्सुक होकर देखना, घूरना।
आंख न दीदा काढ़े कसीदा–किसी कार्य करने के समर्थ न होकर उस कार्य को करने की चेष्टा करना।
आंख रखना–किसी से प्रेम करना; देखते रहना।
आंख में शील न होना–निर्लज्ज होना।
आंख न ठहरना– चकाचौंध लगना।
आंख चुकी माल दोस्तों का–अपनी वस्तु यदि सावधानीसे न रक्खोगे तो चोर चुरा ले जायेंगे।
आंख का तिल खो देना–अंधे हो जाना।
आंख मारना–संकेत करना, सैन करना।
आंख की पुतली फिर जाना–मरणासन्न होना।
आंख न लगना–नींद न आना।
आंख से दूर दिल से दूर–दूर देश में रहने से प्रेम-भाव बहुधा कम हो जाता है।
आंख कान खोलकर चलना–अति सावधान रहना।
आंख मैली करना–बेमुरौवत होना।
आंख मटकाना–सैन चलाना, आंखों से संकेत करना।
आंख से ओझल न करना–सर्वदा अपने सामने रखना।
आंख भर आना–आंखों में आंसू आ जाना।
आंख फोड़ना–धोखा देना।
आंख मुंदना–मृत्यु को प्राप्त होना।
आंख मूंदना–विचारपूर्वक काम न करना।
आंख ठंढी होना–शान्ति मिलना, तृप्त होना।
आंख बंद करना–असावधान होना।
आंख लगना–आसक्त होना।
आंख जाना–अन्धा होना।
आंख बदलना–बेमुरौवत होना।
आंख चुराना–लज्जाके कारण सामने न देखना।
आंखें निकालना–डांटना डपटना।
आंखें चढ़ना–नशे में आंखें लाल होना।
आंख में कांटा होना–असह्य हो जाना।
आंखों का पानी गिर जाना–निर्लज्ज हो जाना।
आंखें खुलना–सावधान होना।
आंखों में चुभना–बुरा लगना।
आंखें खुल जाना–आश्चर्य होना।
आंख तले न लाना–तुच्छ समझना।
आंखें पथरा जाना–आंखों का निमेष रहित होना।
आंख लगना–आसक्त होना।
आंखें उठना–देखना।
आंखें फेरना–प्रतिकूल होना।
आंखें फिरना–बेमुरौवत होना।
आंखों से गिरना–मान का नाश होना।
आंखें चढ़ना–क्रोध करना।
आंखें दिखाना–डांटना, धमकाना।
आंखों में धूल झोंकना–धोखा देना।
आंखोंपर ठीकरी धरना–निर्लज्ज होना।
आंखों में खटकना–बुरा जान पड़ना।
आंखें बैठना–अन्धा हो जाना।
आंखें चार होनेसे मुहब्बत आ जाती है–अर्थ स्पष्ट है
आंखों में न ठहरना–अनुकूल न होना, पसन्द न आना।
आंखें बिछाना–प्रेम सहित आदर करना।
आंखें झुक जाना–नींद आना।
आंखों में समा जाना–बहुत प्रिय होना।
आंखें जमीन में लग जाना– अति लज्जित होना।
आंखोंपर परदा पड़ना–असावधान हो जाना।
आंखें फटना–आश्चर्य युक्त होना।
आंखों में पालना–अत्यन्त प्रिय रखना।
आंखों में फिरना–बारंबार याद आना।
आंखों में खटकना–बुरा लगना।
आंखों से काजल चुराना– बड़ी चालाकी करना।
आंखों के सामने छा जाना–शून्य दिखलाई पड़ना।
आंखों में खटकना–बुरा लगना।
आंखों में खून उतर आना– अति क्रुद्ध होना।
आंखों में जगह मिलना– प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
आंखों में जगह देना–प्रतिष्ठा करना।
आंखों आंखों में उड़ा देना–देखते देखते चुरा लेना
आंखों की पट्टी खुलना–सचेत हो जाना।
आंखोंपर पट्टी बांधना–असावधान होना।
आंखों तले आना–वशीभूत होना।
आंखों के सामने नाचना–याद आना।
आंखों में चर्बी छा जाना–बड़ा अभिमान होना।
आंखों में हलका होना– प्रतिष्ठा कम होना।
आंधी के आम–बड़ी सस्ती वस्तु।
आंसू एक नहीं कलेजा टूकटूक– पाखंड, दिखावटी रुलाई।
आंतभरी तो माथ भरी–आंतों में विकार होने से सिर में पीड़ा होती है।
आई तो रोजी नहीं तो रोजा–आमदनी होने पर सुख से बीतते हैं नही तो उपवास ही होता है।
आकाश से बातें करना – बहुत ऊंचा होना, शेखी हांकना।
आकाश के तारे तोड़ना–कठिन कार्य करने में उद्यत होना।
आकाश में छेद करना– बड़ी चालाकी दिखलाना।
आकाश पाताल एक करना–बड़ा अन्वेषण करना, बड़ी जांच पड़ताल करना।
आकाश में थेगली लगाना–बड़ी चतुराई करना।
आकाश गंगा में नहाना–असंभव को संभव करने की चेष्टा करना।
आकाश में छेद हो जाना– अधिक वृष्टि होना।
आकाश फट पड़ना–अति वृष्टि होना।
आखिर करना–समाप्त करना।
आग पड़ना–बहुत गरम होना।
आग फांकना–बहुत झूठ बोलना।
आग दिखाना–जला कर भस्म कर देना।
आग लगाकर पानी को दौड़ना–उपद्रव आरंभ करके शान्त करने का प्रयत्न करना।
आग लगन्ते झोपड़ा जो निकले सो सार–जब जब कुछ नष्ट होता हो तब जो कुछ मिल जावे उसी को सर्वस्व समझना चाहिये।
आग लगने पर कुंवा खोदना–आपत्ति आ जाने पर उसका उपाय सोचना।
आग में पानी डालना–क्रोध को शमन करना।
आग में झोंक देना– नष्ट कर देना, आपत्ति में डाल देना।
आग लगना– क्रोध आना।
आग लगाना– झगड़ा खड़ा करना, उत्तेजित करना।
आग लगाकर तमाशा देखना–झगड़ा आरंभ करके प्रसन्न होना।
आग बबूला हो जाना–अत्यन्त उत्तेजित होना।
आग में कूदना–आफत में पड़ना।
आग में इन्धन डालना–क्रोध बढाना।
आग पानी से गुजरना–सब तरह के कष्टों का सहन करना।
आगा रोकना–मुकाबले पर आना।
आगा पीछा करना– दुबिधा में पड़ना, हिचकिचाना।
आगा पीछा न सोचना–अपने फायदे नुकसान का ख्याल न करना।
आगे नाथ न पीछे पगहा–किसी संबंधी या संरक्षक का न होना।
आगे आगे हो लेना–किसी काम का सहज हो जाना
आंच अधिक खा जाना–अधिक पक जाना।
आंच खाना–हानि उठाना।

आंच न आने देना–कष्ट को रोकना, तकलीफ न पहुंचने देना ।
आजकल के फेर में पड़ना–वक्त टालना ।
आंट रखना–शत्रुता करना ।
आज कल करना – टालमटोल करना, हीला हवाला करना ।
आज भरे कल दूसरा दिन–जब तक सांसा तब तक आशा ।
आंट पड़ना–मनमोटाव होना ।
आजादी खुदा की नियामत है–स्वतन्त्रता ईश्वर का नियम है।
आटे दाल का भाव मालूम होना–सब प्रकार के कष्टों का अनुभव होना ।
आटे का चिराग घर रक्खें तो चूहा खाय, बाहर रक्खे कौवा ले जाय– बचाने का जब कोई उपाय न हो तब कुछ नहीं किया जा सकता ।
आटे के साथ घुन का पिसा जाना–दोषी मनुष्य का साथ देने से निर्दोषी को भी कष्ट उठाना पड़ता है ।
आठ आठ आंसू रोना–अति विलाप करना ।
आठो पहर शूली पर रहना – सर्वदा कष्ट ही कष्ट भोगना ।
आठ अठारह कर देना–अति कष्ट देना ।
आड़े आना–आश्रय लेना, सहारा लेना ।
आड़े हाथ लेना–भला बुरा कहना ।
आड़ी देकर बैठना–जम जाना ।
आड़े समय काम आना–विपत्ति काल में सहायता देना
आत्मा ठंढी होना–शान्ति प्राप्त करना ।
आत्मा ठंढी करना–शान्ति देना ।
आत्मा मसोसना–दुःखी होना ।
आदमी बनना–शिष्टाचार जानना ।
आदमी बनाना–शिष्ट या सभ्य बनाना ।
आदमी जाने बसे, सोना जाने कसे – संसर्ग से मनुष्य का चरित्र का पता चलता है यथा सोने की परीक्षा कसौटी पर कसने से होती है ।
आदमी मुश्किल से मिलता है– सच्चे और इमानदार मनुष्य जल्दी नहीं मिलते ।
आदमी की पेशानी दिलका आयना है–मनुष्य के चेहरे से उसके हृदय के भावों का पता चल जाता है ।
आदि अन्त सोचना–पूरी तरह से विचार करना ।
आधा तीतर आधी बटेर–अस्त व्यस्त, गड़बड़ अधूरा, अपूर्ण ।
आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे–अधिक लालच करने से सर्वथा हानि होती है ।
आन तोड़ना–अपने निश्चय से हट जाना ।
आन निभाना–अपने निश्चय पर अटल रहना ।
आन की आन में–अति शीघ्र तुरत ।
आना कानी करना–बहाना करना ।
आप काज महा काज–किसी कार्य को स्वयं ही करना ठीक होता है ।
आप बीती कहना–अपने ऊपर बीते हुए कष्ट को दूसरे से कहना ।
आप आप करना–अति शुश्रूषा या विनती करना ।
आप भला तो जग भला– भला मनुष्य संसार में सभी को सज्जन समझता है ।
आपको आसमान पर खींचना – अपने को बहुत बड़ा जानना ।
आपही मियां मंगते द्वार खड़े दरवेश–जो स्वयं सहायता चाहता है वह दूसरे की क्या सहायता दे सकता है ।
आपस में गिरह पड़ना–आपस में मनमुटाव होना ।
आपको खींचना– स्वयं अलग हो जाना ।
आपा न संभलना–अपना ही निर्वाह न हो सकना अपनी शरीर अपने अधिकार में न होना ।
आपा खोना– अभिमान त्याग करना ।
आपेमें न रहना–अपने पर अधिकार खो बैठना, मदोन्मत्त हो जाना ।
आपे में आना–होश संभालना ।
आपे से निकल पड़ना–अति व्यग्र होना ।
आपे से बाहर होना – क्रोध में आकर बड़े गर्व से बोलना ।
आब आब कर मर गये सिरहाने रक्खा पानी–किसी से ऐसी भाषा बोलना जिसको वह न समझता हो ।
आब देना (चढ़ाना)–चमकाना, पालिश करना ।
आ बला गले लग–आपत्ति में जानबूझ कर पड़ना ।
आबरू खाक में मिलना–मान मर्यादा खो बैठना, बेइज्जित होना ।
आम के आम गुठली के दाम–किसी कार्य में दुगुना फ़ायदा होना ।
आम खाने से काम कि गुठली गिनने से काम–मनुष्य को अपने मतलब का काम करना चाहिये निरर्थक कार्य न करना चाहिये ।
आम ईख नीबू बणिक गारे ही रस देत–अर्थ स्पष्ट है
आयँ आयँ करना–बे मतलब बोलना ।
आयी को रोकना– मौत से बचाना ।
आयी गयी करना– समाप्त करना, खतम करना, माफ करना, छिपाना ।
आया है सो जायगा राजा रंक फकीर– जो उत्पन्न हुआ है वह एक दिन अवश्य मृत्युको प्राप्त होगा
आयु का पट्टा लिखवा कर लाना–सर्वदा जीवित रहने की इच्छा करना ।
आये की खुशी न गये का गम–सर्वदा सन्तुष्ट रहना
आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास–किसी बड़े काम करने को आये थे परन्तु तुच्छ कार्य करने लगे ।
आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा–सामने से सब लुट गया तू देखता ही रह गया ।
आरती उतारना–प्रतिष्ठा करना, इज्जत करना ।
आरे चलना–अति दुःखी होना ।
आर्द्र नेत्र होना–शोकाकुल होना ।
आल्हा गाना–जगह जगह समाचार फैलाते फिरना
आव देखना न ताव देखना–सोच विचार कुछ भी न करना ।
आव भगत में स्वाहा करना–नीरस व्यवहार करना
आवभगत करना– अतिथि आदि का सत्कार करना
आवाजें कसना–मर्मबेधी बात कहना ।
आवें का आवा बिगड़ना–संपूर्ण कुटुम्ब का दुश्चरित्र होना ।
आशाओं पर पानी फिरना–सब तरह से हताश होना
आसन हिलना–चलायमान होना ।
आसमान पर होना–उच्च पद प्राप्त करना ।
आसमान पर दिमाग चढ़ना–बड़ा गर्व करना ।
आसमान पर सिर उठाना–बहुत शोर गुल करना
आसमान से टक्कर खाना–बहुत ऊँचा होना ।
आसमान पर थूकना–बड़ा अभिमान करना ।
आसमान टूटना–विपत्ति आना ।
आसमान पर उड़ना–इतराना, गर्व करना ।
आसमान पर चढ़ना–बड़ी प्रशंसा करना ।
आसमान देखना– हार जाना ।
आसमान दिखाना–पराजित करना; हराना ।
आसमान से गिरना–अनायास मिलना ।
आसमान हिलना–(**डोलना**) चलायमान होना, विचलित होना ।
आस पास बरसे दिल्ली पड़ी तरसे– जो चाहता है उसको न मिलकर दूसरेको किसी वस्तुका मिलना
आहारे व्यवहारे लज्जा न कारयेत्–भोजन करने और व्यवहार करनेमें लज्जा न करनी चाहिये ।
आँसुओं की झड़ी लगना–अति विलाप करना ।
आँसू पीकर रह जाना–अधिक शोक के कारण चुप रहना ।
आँसू पीना–अपने दुःख को दबा रखना ।
आँसू बहाना–विलाप करना, रोना ।
आँसू पोछना–थोड़ा सा देकर किसी को शान्त करना
आस्तीन चढ़ाना–लड़ने के लिये तैयार होना ।
आस्तीन में साँप पालना–छिपे दुश्मनको सहारा देना
आह पड़ना–किसी को सताने का फल मिलना ।
आह करके रह जाना–कष्ट को चुप चाप सह लेना
आस्तीन का साँप–कपटी मित्र ।
आह भरना–दुःख में लंबी सांस लेना ।

इ

इकते इक माई के लाल पड़े हैं–संसार में एक से एक गुणी और विद्वान् पड़े हैं ।
इति श्री करना–समाप्त करना, खतम करना ।
इति श्री होना–समाप्त होना, खतम होना ।
इधर उधर करना–बहानेबाज़ी करना ।
इधर उधर कर देना–किसी वस्तु को छिपा देना ।
इधर उधर की हाँकना–व्यर्थ की बकवाद करना, गप हांकनी ।
इधर उधर देखना–हिचकिचाना ।
इधर उधर देखने लगना–निरुत्तर हो जाना ।
इधर का न उधर का–निरर्थक, व्यर्थ, बेफ़ायदा ।
इधर उधर लगाना–चुगलखोरी करना ।
इधर की उधर लगाना–कलह उपस्थित करना ।
इतना नफा खाओ जितना दाल में नोन–थोड़ा ही मुनाफ़ा करना चाहिये ।
इन तिलों तेल न होना–मिलने की आशा न होना ।
इतनीसी जान और गज भर की जबान–छोटा सा मुंह और बड़ी बड़ी बातें ।
इन्हीं पावों जाना–तुरत चले जाना, देर न करना ।
इस कान से सुना उस कान से निकाल दिया–किसी की बात पर ध्यान न देना।
इज्जत गँवाना–मान भंग होना।
इज्जत बिगाड़ना– अप्रतिष्ठित करना ।
इज्जत दो कौड़ी की न रहना–प्रतिष्ठा खो बैठना।
इने गिने–गिनती में बहुत कम, केवल काम चलाने योग्य ।

ई

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया–संसार में सर्वत्र भाग्य की विचित्रता देख पड़ती है, कोई ऐश्वर्य में प्रसन्न है कोई गरीबी में मर रहा है ।
ईश्वर को प्यारा होना– थोड़ी उमर में मर जाना ।
ईंट की लेनी पत्थर की देनी–बदला चुकाने की विधि दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार ।
ईंधन हो जाना–शक्ति हीन हो जाना ।
ईद का चांद होना–बहुत दिनों बाद प्राप्त होना ।
ईंटों से निकल कर कीचड़ में पड़ना–एक आपत्ति

से छुटकारा पाया और दूसरी आपत्तिमें जा गिरा।
ईंट से ईंट बजना–नाश होना।
ईंट का घर मिट्टी कर देना–धन और संपत्ति का नाश कर देना।

उ

उखड़ जाना–स्वीकार न करना।
उखड़ी बातें करना–हृदय से न कहना।
उखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर–जब किसी कठिन कार्य करने में लगे तो आपत्तियों मे क्या डरना।
उखाड़ देना–बिगाड़ना, नष्ट करना।
उगल देना–रहस्य या भेद को प्रकाशित करना।
उछल कर चलना–अभिमान दिखलाना, अपनी शक्ति के बाहर काम करना।
उछल कूद दिखलाना–शेखी हांकना।
उछल पड़ना–अति प्रसन्न होना।
उठ जाना–मृत्यु को प्राप्त होना, व्यय होना, समाप्त होना।
उठा न रखना–कोई कसर न छोड़ रखना।
उड़कर पड़ना–बड़ी लालच करना।
उड़ती खबर पाना–अफवाह मिलना।
उड़ती चिड़िया पहचानना – मन की भावना को जान लेना।
उड़ा जाना–खा जाना, व्यय कर देना।
उड़ा ले जाना-चुरा लेना, अपहरण करना।
उड़ा लेना–हर लेना, ठग लेना।
उड़ा देना–खो देना।
उतर जाना–भाव मंदा होना, तेज न रहना।
उतार चढ़ाव देखना–अनुभव होना, तजुर्बा होना।
उतारू होना–प्रस्तुत होना, तय्यार होना।
उतावला होना–शीघ्रता करना, जल्दी बाजी करना
उथल पुथल होना–उलट पलट होना।
उथल पुथल करना–गड़बड़ी करना।
उदर निमित्तं बहुकृत वेषः–पेट के लिये मनुष्य सब कुछ (भले, बुरे काम) करता है।
उत्तम खेती मध्यम बान, नीच चाकरी भीख निदान–अर्थ स्पष्ट है।
उधार खाये बैठना–प्रतीक्षा करते रहना।
उधार न छोड़ना–कसर न रखना।
उधार का खाना और फूस का तापना बराबर है–जिस प्रकार फूस की आग जल्दी बुत जाती है इसी तरह से उधार लेना खाना भी ज्यादा दिनों तक नही चलता।
उधार दिया गाहक छोड़ा–उधार दी हुई वस्तु का दाम मांगने पर गाहक उसके पास फिर नहीं आता
उधेड़ बुन में लगना–चिन्ता फिक्र करना।
उधेड़ डालना– फाड़ डालना।
उन्नीस बीस का फर्क–बहुत थोड़ा अन्तर।
उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं–किसी मनुष्य की सब सन्तान एक प्रकृति की नहीं होती।
उफ़ न करना–आपत्ति आदि को चुप चाप सह लेना
उबल पड़ना–क्रुद्ध होना।
उभार पर होना–वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना।
उभारा देना–उत्तेजित करना, उभाड़ना, साहस बढ़ाना।
उभरा लेना–संभालना।
उमंगें मिटना–उत्साह कम होना।
उलट फेर होना–परिवर्तन होना, उलट पलट होना।
उलटा चोर कोतवाल को डांटे–अपना दोष स्वीकार न करके पूछने वाले पर क्रोध दिखलाना।
उलटा बांस बरेली को–विपरीत कार्य करना।
उलटी गंगा बहाना–विपरीत कार्य करना।
उलटी पट्टी पढ़ाना–उचित मार्ग से विचलित करना।
उलटी सांस लेना–मरणासन्न होना।
उलटी माला फेरना–किसी का अनिष्ट चाहना।
उलटी सीधी सुनाना–भला बुरा कहना।
उलटी बातें कहना–असंगत वार्ता कहना।
उलटे पांव जाना–लौट जाना।
उलझ पड़ना–लड़ पड़ना।
उलझन में पड़ना–झंझट में फँसना।
उलझन में डालना–व्यग्र करना।
उलुल जलूल बकना–बेमतलब की बातें कहना।
उल्लू बनना–मूर्ख बनना।
उल्लू बनाना–मूर्ख बनाना।
उल्लू बोलना–किसी स्थान का उजाड़ होना।

ऊ

ऊंच नीच का भेद न रखना–सब के साथ समान व्यवहार करना।
ऊंचा सुनना–कम सुन पड़ना, कुछ बहरा होना।
ऊंचा बोल बोलना–श्लाघा करना, अभिमान करना।
ऊंची जगह पाना–प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
ऊंची दुकान फीका पकवान–बहुत सा आडंबर हो परन्तु तत्व कुछ न हो।
ऊट पटांग हांकना–बेमतलब की बातें कहना।
ऊंट के गले में बिल्ली बांधना–बेमेल का काम करना
ऊंट किस करवट बैठता है–क्या स्थिति उपस्थित होती है।
ऊंट के मुंह में जीरा देना–आवश्यकता अधिक होने पर अल्प मात्रा देना।
ऊंट की चोरी और झुके झुके–छिपकर बड़ा काम करने का उद्योग।
ऊधम मचाना–उपद्रव करना।
ऊपर पड़ना–दुःख उठाना।
ऊधो का लेना न माधो का देना–स्वार्थपरायण रहना, निश्चिन्त रहना।
ऊसर में बीज डालना–बिना मतलब का काम करना।

ए

एक अंग वह भी गन्दा–सब पदार्थो का प्रायः अभाव
एक अनार सौ बीमार–आवश्यकता से अधिक मांग
एक और एक ग्यारह होते हैं – एकता में बड़ा सामर्थ्य है।
एक की दस सुनाना–एक अपशब्द कहने पर बहुतेरी गालियां देना।
एक न एक रोग लगा रहना–चिन्ता न हटना, शान्ति न मिलना।
एक चुप हजार को हरावे–मौन रहने से बकने वाले अन्त में चुप हो जाते हैं।
एक लकड़ी से सबको हाँकना–लेन देन के व्यवहार में सबको बराबर समझना।
एक के दूने से सौ के सवाये भले–अधिक विक्री होने से अधिक लाभ होता है।
एक आंख से देखना–समान व्यवहार करना।
एक रस रहना–किसी प्रकार का विकार न होना।
एक टक लगाना–निगाह जमा कर देखना।
एक बात होना–सहज होना।
एक ईंट के लिये महल गिराना–ज़रा सी बात के लिये अनर्थ मचाना।
एक तन्दुरुस्ती हज़ार नियामत–आरोग्य रहना सर्व प्रधान है।
एक को एक खाये जाना–आपस में द्वेष करना।
एक हो जाना–मिल जाना।
एक पर से सौ कौवे बनाना–थोड़ी सी बात को बहुत बढ़ा देना।
एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी – एक तो काम बिगाड़ना दूसरे क्रोध दिखलाना।
एक होना–अद्वितीय होना, भाव भेद न रखना।
एक ही सांचे में ढलना–समान विचार के होना।
एक न चलना–कुछ न कर सकना।
एक तो तितलौकी दूसरे चढ़ी नीम–एक तो स्वयं नीच दूसरे नीचों का संग।
एक के तीन बनाना–अनुचित लाभ उठाना।
एक थैली के चट्टे बट्टे–एक समान, सभी बराबर के होना।
एक तरफा डिगरी देना–पक्षपात दिखलाना, अपूर्ण न्याय करना।
एक दम में हजार दम–एक मनुष्य से हजारों की पर्वरिश
एक टांग से फिरना–बहुत इधर उधर घूमना।
एक न सुनना–कुछ न मानना।
एक एक रग जानना–अच्छी तरह से परिचित होना
एक सौ चौवालीस लगाना–बोलना बन्द कर देना।
एक न शुद दो शुद–आपत्ति पर आपत्तियां आना।
एक पंथ दो काज–किसी एक उद्योग से अन्य कार्य का सफल होना।
एकादशी का खाया द्वादशी को निकलाना–एक दिन का दिया हुआ दूसरे दिन लौटाना पड़े।
एक मछली सारे जल को गन्दा करती है–एक व्यक्ति की नीचता से सारे समाज को लांछन लगता है।
एक सूत्र में बांधना–संगठित करना।
एक हाथ से ताली नहीं बजती–अकेले मनुष्य के किये कोई कार्य नहीं होता।
एक म्यान में दो तलवार नहीं रहती–एक ही स्थान पर दो शक्तिशाली मनुष्य नहीं रहते।
एंड़ी चोटी पसीना एक करना – बड़ा कठिन परिश्रम करना।

ऐ

ऐंचा तानी में पड़ना–झगड़े में फँसना।
ऐंठ दिखाना–गर्व करना, अभिमान दिखाना।
ऐंठ जाना–असन्तुष्ट होना।
ऐंठ लेना–ठग लेना।
ऐंठ निलकना–गर्व दूर हो जाना।
ऐंठ ढीली करना–गर्व हटाना।
ऐब करने को भी हुनर चाहिये–बुरा काम करने के लिये भी चतुराई की आवश्यकता होती है।
ऐंड़ा बेंड़ा चलना–कुपथ पर चलना।
ऐसा वैसा समझना–सामान्य मनुष्य जानना।
ऐसी तैसी करना–सब भला बुरा उपाय रचना।
ऐसे जीने से मर जाना अच्छा–अधिक कष्ट मिलने पर मनुष्य मरण को अच्छा समझता है।

ओ

ओछे की प्रीत बालू की भीत–ओछे मनुष्य की मित्रता स्थायी नहीं होती।
ओखली में सिर देना–जान बूझकर अपने को आपत्त में डालना।
ओर छोर न मिलना–भेद का पता न चलना।
ओले पड़ना–आपत्तियां आना।
ओस चाटे प्यास नहीं जाती–आवश्यकता अधिक

होने पर थोड़ी वस्तु से सन्तोष नहीं होता ।
ओढ़नी की बतास लगना–स्त्री के प्रेम में फँसना ।

औ

औकात पर आना–असली बात प्रकट करना ।
औकात पर रहना–शक्ति के अनुसार चलना ।
औकात बसर होना–निर्वाह करना ।
औघट घाट बचाकर चलना – विपत्तियों से सावधान रहना ।
औदक होना–भय के कारण चौंक उठना ।
औंधी खोपड़ी–परम मूर्ख मनुष्य ।
औंधे मुंह गिरना–हार जाना ।
और बात खोटी सही दाल रोटी–जीवन निर्वाह ही सबसे बढ़कर व्यवसाय है ।
औन पौन करना–छल कपट का व्यवहार करना ।
और का और हो जाना–बिलकुल बदल जाना ।
औसान खता होना–होश बिगड़ जाना ।

क

कंघी चोटी से फुरसत न मिलना–सिगार पटार में सदा लीन रहना ।
कंगाली (मुफलिसी) में आंटा गीला–एक आपत्ति रहते हुए दूसरी आपत्ति आ पड़ना ।
कंजूस मक्खीचूस–बहुत बड़ा कृपण ।
कच्चा करना–झूठा सिद्ध करना ।
ककड़ी के चोर को फांसी नहीं दी जाती–साधारण अपराध के लिये मृत्युदंड नहीं दिया जाता ।
कच्चा दिन करना–उदास होना ।
कच्चा होना–लज्जित होना ।
कच्ची गोलियां खेलना–पूरा अनुभव प्राप्त करना ।
कच्चा चिठ्ठा–पोल, गुप्त बात ।
कढ़ाई से गिरा चूल्हे में पड़ा–एक आपत्ति से छूटा दूसरे में गिरा ।
कचूमर निकालना–बुरी अवस्था करना ।
कञ्चन बरसना–अधिक धन की प्राप्ति ।
कटे जाना–कुढ़ते जाना ।
कटे पर निमक छिड़कना–दुःखी मनुष्य को और भी दुखाना ।
कण्टकेनैव कण्टकम्–कांटे से ही कांटा निकाला जाता है
कठपुतली बनना–दूसरों के कहने में चलना ।
कड़क कर बोलना–क्रोध से गरज कर बोलना ।
कड़ियाँ झेलना–दुःख सहन करना ।
कण्टक निकलना–दुःख दूर होना ।
कण्ठगत करना–खा लेना, याद कर लेना ।
कण्ठस्थ करना–ज़बानी याद कर लेना ।
कतर ब्योंत करना–काट छांट करना ।
कतरा के जाना–बच कर निकल भागना ।
कदम बढ़ाना–चले जाना, तेज चलना, अग्रसर होना
कदर खो देता है हरबार का आना जाना–बारंबार आने जाने से प्रतिष्ठा कम हो जाती है ।
कनखियों से देखना–तिरछी नजर से देखना ।
कन्धा लगाना–सहायता करना, सहारा देना ।
कन्धा डालना–साहस छोड़ देना ।
कपड़ों से होना–स्त्रियों का रजस्वला होना ।
कपड़े उतारना–ठगना, लूटना ।
कपाट खुलना–ज्ञान उत्पन्न होना ।
कपालक्रिया करना–सिर फोड़ना ।
कपास तौलना–मूर्ख होना ।
कब्र में पैर लटकाना–मरण समीप होना ।
कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर–सबका समय सर्वदा समान नहीं रहता ।

कम खर्च बालानशीन–कम खर्च में उत्तम वस्तु मिलना
कमर कसना–उद्यत होना, तत्पर होना ।
कमर टूटना–निराश होना, उत्साह भंग होना ।
कमर सीधी करना–थकावट दूर करनेके लिये लेट जाना ।
कमर खोलना–कार्य समाप्त होने पर विश्राम करना
कमान हो जाना–झुक जाना ।
कमान का निकला तीर और मुंह से निकली बात वापस नहीं आती–अर्थ स्पष्ट है ।
करघा छोड़ जुलाहा जाय, नाहक चोट बेचारा खाय–जो मनुष्य अपना काम छोड़ कर दूसरे प्रपंच में पड़ता है वह हानि उठाता है ।
करते धरते न बनना–असमर्थ हो जाना ।
करनी खाक की बातें लाख की–करना कुछ नहीं बड़ी बड़ी बातें बनाना ।
करम फूटना–अभागा होना ।
करवट बदलना–स्वीकार न करना, परिवर्तन होना ।
करम हीन खेती करे मरे बैल व सूखा पड़े–भाग्य-हीन पुरुष को किसी कार्य में सिद्धि नहीं होती ।
कल ऐंठना–चित्त के भाव में परिवर्तन करना ।
कल पड़ना–चैन मिलना ।
कर सेवा पा मेवा–बड़ों की आज्ञा पालन करने से लाभ होता है ।
कलम तोड़ना–विलक्षण बातें लिखना ।
कलई खुलना–रहस्य उद्घाटन होना, भेद खुलना ।
कलमा पढ़ना–विश्वास रखना मुसलमान बनना ।
कलई खोलना–गुप्त बातों को प्रगट करना ।
कलेजा धकधक होना–व्यग्र होना, घबड़ाना ।
कलेजा निकाल कर धर देना–मर्म की बातों को कहना ।
कलेजा बढ़ना–उत्साहित होना ।
कलेजा खाना–परेशान करना ।
कलेजा ठंढा होना–शान्ति मिलना ।
कलेजा रखना–साहस होना ।
कलेजा थामना–जी कड़ा करना ।
कलेजा थाम कर रह जाना–ठक रह जाना, मन मसोस कर रहना ।
कलेजा छलनी होना–मर्मवेधी बातों से चित्त दुखाना, कष्ट देना ।
कलेजा फटना–अत्यन्त दुःख होना ।
कलेजा मुंह में आना– चित्त व्याकुल होना ।
कलेजा तर होना–चित्त अत्यन्त प्रसन्न होना ।
कलेजा पसीजना–दया उत्पन्न होना ।
कलेजा निकालना–बहुत दुःखी होना ।
कलेजा बांसों उछलना–बहुत प्रसन्न होना ।
कलेजे में छेद करना–चित्त बहुत दुखाना ।
कलेजे से लगाकर रखना– बहुत प्रेम करना ।
कलेजे पर हाथ धरना–चित्त में विचार करना ।
कलेजे से लगाना–आलिंगन करना, प्रेम करना ।
कलेजे को मसलना–हृदय को चोट पहुँचाना ।
कसर निकालना–बदला लेना ।
कसौटी पर कसना–परखना, अन्वेषण करना ।
कहने से करना भला–बातें करने से काम करना अच्छा होता है ।
कहा सुनी हो जाना–झगड़ा फसाद होना ।
कहीं का न छोड़ना–भ्रष्ट करना, बरबाद करना ।
कहे से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता–मनुष्य अपनी इच्छा से काम करता है दूसरे के कहने से नहीं करता ।
कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती का कुनबा जोड़ा–बेकार की चीजों को इकट्ठा करके भी कोई वस्तु तैयार हो सकती है ।
कहां राजा भोज कहां गंगू तेली–दो वस्तुओं में बड़ा भारी अन्तर ।
कांख में कतरनी रखना–कपट रूप में हानि पहुंचाना
कागज काले करना–व्यर्थ की लिखा पढ़ी करना ।
कागज पूरे होना–जीवन समाप्त होना ।
कागजी घोड़े दौड़ाना–समाचार फैलाना, केवल पत्र व्यवहार करते रहना ।
कागरौल करना–शोर गुल मचाना ।
काँटा सा खटकना–बहुत अखरना ।
काँटे बोना–हानि पहुंचाना ।
काँटे से काँटा निकालना–शत्रुका नाश शत्रु से कराना
काँटों पर पाँव रखना–दुःख या आपत्ति में पड़ना ।
काँटों पर लोटना–बड़ी आपत्ति सहन करना ।
काँटों की शैय्या पर सोना–दुःखमय जीवन बिताना
काँटों में हाथ पड़ना–आपत्ति में फँसना ।
काँटों में घसीटना–अति लज्जित करना ।
काट खाने दौड़ना–भयानक रुप धारण करना ।
काटो तो बदन में खून नहीं–अति भयभीत होने की दशा ।
काठ में पांव ठोंकना–कैद कर लेना ।
काठ की हाँडी आँच पर बारंबार नहीं चढ़ती–छल बारंबार सफल नहीं होता ।
कान काटना–बड़ी चालाकी करना, धोखा देना ।
कान न होना–ग्रहण न करना ।
कान होना–सुनते ही किसी बात पर विश्वास कर लेना
कान खुलना–होश में आना ।
कान खेलना–सावधान करना ।
कान पर जूं न चलना (रेंगना)–ध्यान न देना ।
कान भरना–पिशुनता करना, चुगली खाना ।
कान छिदाय सो गुड़ खाय–जो दुःख उठाता है वही अन्त में सुख पाता है ।
कान देना–ध्यान पूर्वक सुनना ।
कान पकड़ना–किसी बुरे काम को न करने का निश्चय करना ।
कान खड़े होना–सावधान होना ।
कान में पड़ना–सुन पड़ना ।
कान खाना–शोर गुल मचाना ।
कान पड़ा शब्द सुनाई न देना–बड़ा शोर गुल होना
कान धर कर सुनना–बड़े ध्यान से सुनना ।
कान में डाल देना–किसी को कोई बात सुना देना ।
कान तक पहुँचना–सुनने में आना ।
कान के कीड़े मर जाना–सुनने में बहुत बुरा लगना ।
कान में फूंकना–चुपके से सुना देना ।
काना फूसी करना–भेद की बातें धीरे से कानमें कहना
कानी कौड़ी पास में न होना–अति दरिद्र होना ।
कानूनी शिकंजे में फँसाना–अभियोग चलाना ।
काने को काना कहना–अप्रिय सच्ची बात किसी से कहना ।
कानों को न लगना–विश्वास में न आना ।
कानों पर हाथ धरना–अपरिचित बन जाना ।
कानों में तेल डालना–किसी बात को सुनने की इच्छा न होना ।
कानोंकान खबर न होना–अत्यन्त गुप्त रखना ।
काफिया तंग होना–विवश हो जाना ।
काफूर होना–भाग जाना, चम्पत होना ।
काबुल में क्या गधे नहीं होते–बुराइयां सर्वत्र पाई जाती हैं ।
काम कर जाना–प्रभाव डालना ।

काम आना—मृत्यु को प्राप्त होना, मारा जाना।
काम का न काज का दुश्मन अनाज का—बेकार आदमी।
काम न देना—बेकार होना।
कागज की नाव नहीं चलती—बेइमानी अधिक दिनों तक नहीं चलती।
काम निकलना—अभीष्ट सिद्ध होना।
काटा और उलट गया—कह कर मुकर जाना।
काम चलाऊ—कुछ उपयोग में आने वाला।
काम तमाम करना—जान से मार डालना।
काम को काम सिखाता है—अभ्यास से काम करना आ जाता है।
काम प्यारा है चाम नहीं—अर्थ स्पष्ट है।
काम न धंधा तीन रोटी बंधा—केवल पेट भरना ही मुख्य उद्देश्य होना।
कायँ कायँ लगाये रखना—कलह करना।
काया पलट होना—बहुत बड़ा परिवर्तन होना।
कालचक्र में पड़ना—विपत्ति में फँसना।
काल कवलित होना—मृत्यु को प्राप्त होना।
काला अक्षर भैंस बराबर होना—निरक्षर मूर्ख होना।
कालिख लगना—बदनाम होना।
का वर्षा जब कृषी सुखाने, समय चूकि पुनि का पछताने—अर्थ स्पष्ट है।
कासा दीजै, बासा न दीजै—अपरिचित को भोजन देना चाहिये घर में न टिकाना चाहिये।
किंकर्तव्य विमूढ होना—अपना कर्तव्य न समझना।
किनारा करना—अलग हो जाना।
किनारे लगना—पूरा होना, समाप्त होना।
किनारे लगाना—पार उतारना।
किनारे हो जाना—नष्ट होना, बिगड़ जाना।
किया आगे आना—अपने किये का फल प्राप्त होना।
किया कराया बराबर करना—सब परिश्रम व्यर्थ हो जाना।
किर किरा होना—मार्ग छोड़ देना।
किताब का कीड़ा—अधिक पढ़ने वाला मनुष्य।
किस खेत की मूली—तुच्छ व्यक्ति।
किस चिड़िया का नाम—अपरिचित व्यक्ति।
किसी की कुछ नहीं चलती जब तकदीर फिरती है—भाग्य के आगे किसी का कुछ वश नहीं चलता
किस्मत लड़ना—भाग्य के अनुकूल होना।
किस्मत फूटना—मन्द भाग्य होना।
किस्मत खुलना—अच्छे दिन आना।
किसी मर्ज की दवा नहीं—किसी काम का न होना।
किया चाहे चाकरी राखा चाहे मान—नौकरी करने पर मान प्रतिष्ठा नहीं रह जाती।
किस्सा तमाम होना—झगड़ा निबट जाना।
किसी गिनती में न होना—कुछ महत्व न रखना।
कींच उछालना—नीचता करना।
कींच में पत्थर फेंकना—नीच पुरुष से झमेला करना।
कुआँ खोदना—हानि करने का उद्योग करना।
कुंठित छुरीसे गला रेतना—अत्यन्त कष्ट पहुँचाना।
कुछ कमान झुके कुछ गोसा—कलहमें दोनों दल जब कुछ हानि सहने को तत्पर होते हैं तभी झगड़ा तय होता है।
कुछ खोकर ही अक्ल आती है—बिना कुछ हानि उठाये लाभ नहीं होता।
कुतार होना—काम बिगड़ना।
कुत्ता काटना—पागल होना।
कुत्ता भी दुम हिलाकर बैठता है—पशु को भी स्वच्छता अच्छी लगती है।

कुत्ते की मौत मरना—दुर्दशा में पड़कर मृत्यु होना।
कुत्ते की नींद सोना—अचेत होकर न सोना।
कुत्ते को घी हजम नहीं होता—क्षुद्र मनुष्य सम्पत्ति पाकर गुप्त नहीं रख सकता।
कुत्तों के भौंकने से हाथी नहीं डरते—क्षुद्र मनुष्यों के भला बुरा कहने से सज्जन लोग क्षुब्ध नहीं होते।
कुतिया चोरों मिल गई पहरा किसका दे—रक्षक जब चोरों से मिल जाते हैं तब रखवाली नहीं हो सकती।
कुत्ते की दुम बारह बर्ष नली में रक्खी जाय तब भी टेढी की टेढी—नीच मनुष्य अपनी कुटिलता कभी नहीं छोड़ता।
कुन्दी करना—बहुत मारना पीटना।
कुप्पा होना—मोटा ताजा हो जाना।
कुलबुला उठना—व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है—अपनी बनाई हुई वस्तु सबको अच्छी लगती है।
कुल्हियाँ में गुड़ फोड़ना—गुप्त रूप से कोई काम करना।
कुएँ में भांग पड़ना—सब की अक्ल मारी जाना।
कूच बोलना—प्रस्थान करना, चले जाना।
कूट कूट कर भरना—अधिक होना।
कूड़े पर फुलेल डालना—कृतघ्न पर उपकार करना।
कूप मण्डूक बनना—अपने अल्प ज्ञान की श्लाघा करना।
केंचुली बदलना—शारीरिक स्वास्थ्य में उन्नति होना।
कैंड़ा बदलना—ढंग बदलना।
कैंड़े पर लाना—ढंग पर लाना।
कैंडे पर आना—अनुकूल होना।
कै हंसा मोती चुनै कै भूखों मर जाय—प्रतिष्ठित पुरुष को जान से अधिक प्रतिष्ठा प्यारी होती है।
कोई दम का मेहमान होना—मरणापन्न होना।
कोख उजड़ना—सन्तान का मरण।
कोख की आंच—सन्तान के वियोग का दुःख।
कोख खुलना—प्रथम सन्तान का जन्म।
कोदो देकर पढना—अच्छी तरह पढ़ना लिखना न जानना।
कोर कसर—बेशी कमी।
कोरा टालना—कुछ भी न देना।
कोरा रखना—कुछ न सिखलाना।
कोरा रह जाना—कुछ भी न मिलना।
कोउ नृप होय हमें क्या हानी—किसी को लाभ हो हमसे क्या मतलब।
कोरा रखना—कुछ शिक्षा न देना।
कोरा जबाब देना—निराशजनक उत्तर देना।
कोठी वाला रोवे छप्पर वाला सोवे—अमीर सर्वदा व्यग्र रहता है तथा गरीब सुख की नींद सोता है।
कोयले की दलाली में हाथ काले—संगत का असर अवश्य पड़ता है।
कोयला हो न ऊजला सौ मन साबुन धोय—नीच मनुष्य हजारों उपाय करने पर भी अपनी नीचता नहीं छोड़ता।
कोरी पटिया पर लिखना—कोई नया कार्य आरंभ करना।
कोरी खोरी सुनाना—डांट डपट करना।
कोसों दूर रहना—कोई मतलब न रखना।
कोसों दूर भागना—अरुचि या घृणा होना।
कोल्हू का बैल—दिन रात काम करने वाला मनुष्य।

कौड़ी काम भी न होना—किसी के काम का न होना
कौड़ीके तीन तीन होना—बड़ा सस्ता होना, विपत्ति में पड़ना।
कौवा चला हंस की चाल—साधारण मनुष्य होकर बड़े आदमियोंका अनुकरण करना।
कौड़ी कौड़ी को मुहताज होना—धन की कमी होना।
कौड़ियों के मोल लेना—बहुत सस्ता खरीदना।
कौवे बोलना—उजाड़ होना।
क्या पड़ी है—क्या प्रयोजन है।
क्या पानी मथने से घी निकलता है—बेकार काम करने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, बड़ा कृपण कुछ दे नहीं सकता।
क्या मुंह दिखाना—क्या उत्तर देना।
कृपा पात्र बनना—कृपा का अधिकारी होना।
क्रोध पी जाना—क्रोध को दबा लेना।

ख

खचाखच भरना—बहुत भीड़भाड़ होना।
खट पट होना—लड़ाई झगड़ा होना।
खटका लगा रहना—डर बनी रहना।
खटाई में पड़ना—अनिश्चित अवस्था में होना।
खड़े खड़े बुलाना—थोड़े समयके लिये बुलाना।
खप जाना नष्ट होना।
खबर लेना—सजा देना।
खयाली घोड़े दौड़ाना—कल्पना करना, धुन बाँधना।
खयालीपुलाव पकाना—केवल कल्पना करना।
खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है—दूसरे का अनुकरण करना स्वाभाविक होता है।
खरी खोटी सुनाना—साफ साफ बात कहना, भला बुरा कहना।
खरी मजूरी चोखा काम—पूरी मजदूरी देने से काम अच्छा होता है।
खलबली मचना—उपद्रव होना।
खली गुड़ का एक भाव करना—भले बुरे को समान जानना।
खाकर डकार न लेना—चुप के से दबा लेना।
खाल उधेड़ना—कड़ा दंड देना।
खग जाने खगही की भाषा—जिसकी सोहबत में जो रहता है वह उसके विचार से परिचित रहता है।
खाड़े की धार पर चलना—कठिन कार्य करना।
खल्क की जबान खुदा का नक्कारा—समाज के विचारको ईश्वर की आज्ञा समझना चाहिये।
खाइये मनभाता, पहिरिये जगभाता—अपनी रुचि के अनुसार भोजन और दूसरे के पसन्द का वस्त्र पहिरना चाहिये।
खाने को दौड़ना—अति क्रुद्ध होना।
खार खाना—द्वेष करना कुढना।
खाक छानना—भटकते फिरना।
खाक डालना—छिपा रखना, दबा देना।
खाक फाँकना—मिथ्या बोलना।
खाओ वहाँ तो पानी पियो यहाँ—अति शीघ्र काम पूरा करो।
खाक में मिलाना—नष्ट करना, बरबाद करना।
खाक में मिलना—बरबाद हो जाना।
खाक डाले चाँद नहीं छिपता—यशस्वी की निन्दा करने से उसका यश नष्ट नहीं होता।
खाक उड़ाना—मारे फिरना।
खाय सो पछताय न खाय सो भी पछताय—जो पदार्थ दिखाव में सुन्दर हो परन्तु भीतर से

खराब निकले उसको ग्रहण करने में पछतावा होना है।
खाने को पीछे नहाने के पहिले—भोजन करने के पहिले स्नान करना चाहिये।
खालाजी का घर—बड़ा सहज काम।
खानेके और दिखानेके दाँत और होते हैं—ऊपर से तो शिष्टाचार करना और मनमें कपट करना
खाल ओढ़िये सिंहकी स्यार सिंह नहिं होय—बाहरी रूप बदलनेसे किसी का असली गुण नहीं बदलता।
खिचड़ी पकाना—छिपी तरहसे कोई षड्यन्त्र रचना।
खिंचा रहना—वैमनस्य रखना।
खिचड़ी मांगे चारयार, दही पापड़ घी अचार—दही, पापड़ घी और अचार खिचड़ी के साथ खाने में उच्छे लगते हैं।
खिल उठना—प्रसन्न होना।
खिल खिलाकर हँसना—ठट्ठा मारकर हँसना।
खिसक जाना—चुपके से भाग जाना।
खिसिया जाना—असन्तुष्ट होना।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे—लज्जित होने पर क्रोध दिखलाना।
खिलाये का नाम नहीं रुलाये का नाम—बच्चोंको खिलाना कोई नहीं देखता जब वह रोता है तो सब देखता है।
खींचा तानी में पड़ना—झगड़े में फँसना।
खुदा खुदा करके—किसी न किसी प्रकार से, बड़ी मुश्किल से।
खुदा गंजे को नाखून न दे—अनधिकारी को अधिकार मिलना बुरा होता है।
खुदाई में ढेले फेंकना— ईश्वर का कृतघ्न होना।
खुल पड़ना (जाना)—भेदका प्रकट होना।
खुल- (कर) खेलना—स्वच्छन्द बेफिक्र होना।
खुले आम—सबके सन्मुख सबके सामने।
खुले दिल—उदार हृदय से।
खुशामद से ही आमद है—खुशामद से सब काम निकल जाता है।
खुशामदी टट्टू—वह जो सर्वदा अमीरों की खुशामद किया करता है।
खूंटेके बल बछड़ा कूदे—दूसरेके भरोसे बल दिखलाना
खून के घूंट पीना—बड़ा कष्ट सहन करना।
खून का सूखना—बहुत डर जाना।
खून का प्यासा—हत्या करने के लिये उद्यत।
खून की नदी बहाना—बहुतेरों की हत्या करना।
खून उबलना— (खौलना) क्रोध उत्पन्न होना गुस्सा आना।
खून से हाथ रँगना—हत्या करना।
खून सफेद होना—बहुत डर जाना।
खून लगा कर शहीदों में दाखिल होना—बिना कोई महत्व का कार्य किये हुए बड़ा बनने की चेष्टा करना।
खून भरी आँखों से देखना—अति क्रुद्ध होना।
खेत रहना—लड़ाई में मृत्यु होना।
खेती कसम सेती—मालिक के स्वयं निरीक्षणसे ही खेती अच्छी होती है।
खेलना खाना—आनन्द में समय बिताना।
खेल बिगड़ना—बना बनाया कार्य नष्ट होना।
खेल बिगाड़ना—बना बनाया कार्य नष्ट कर देना।
खोकर सीखना—हानि उठाकर तजुर्बा होना।
खोद खोद कर पूछना—तर्क वितर्क करना।
खोपड़ी खाना—बहुत बकवाद करके परेशान करना।
खोपड़ी गंजी करना—सिर पर मार मार कर बालों को उड़ा देना।
खोपड़ी रँगना—सिर फोड़कर लोहू बहाना।
खोटा बेटा खोटा पैसा भी समय पर काम आ जाता है—निकृष्ट वस्तु भी किसी समय उपयोग में आ जाती है।
खोया जाना—नष्ट होना, बरबाद होना।
खोदा पहाड़ निकली चुहिया—अति परिश्रम करने पर भी कुछ लाभ न होना।

ग

गंगा गये गंगा राम जमुना गये जमुना दास—ऐसा मनुष्य जिसका कोई दृढ़ सिद्धान्त नहीं होता
गंजेड़ी यार किसके, दम लगाई खिसके—स्वार्थी मनुष्य किसी के मित्र नहीं होते।
गंगा नहा लेना—किसी काम से निवृत्त होना।
गगन भेदी पताका फहराना—प्रभाव सहित शासन करना।
गंगाजली उठाना—हाथ में गंगाजल लेकर कसम खाना।
गंगा लाभ होना—देहान्त होना।
गट कर जाना—जल्दी से पी जाना।
गठरी मारना—माल चुरा ले जाना।
गड़े मुरदे उखाड़ना—बीती हुई बातों को कहकर वैमनस्य जागृत करना।
गड़े में पड़ना—पतित होना, नष्ट होना।
गत बनाना—दुर्दशा करना।
गज भर छाती होना—उत्साह युक्त होना।
गड़ जाना—लज्जा से झेंप जाना।
गधा खेत खाय जुलाहा मारा जाय—अपराध कोई करे और दण्ड किसी दूसरे को दिया जाय।
गधे को बाप बनाना—मूर्ख व्यक्ति का आदर करना
गधा धोने से बछड़ा नहीं होता—मनुष्यकी स्वाभाविक प्रकृति किसी तरहसे नहीं बदली जा सकती
गधे पर चढ़ाना—बेइज्जत करना।
गधे चराना—मूर्ख बने रहना।
गधों को हलवा खिलाना—नीचों का सत्कार करना।
गप्प मारना—बेफायदे की बातें करना; झूठ बोलना
गम खाना— शान्ति धारण करना।
गयन्द का भार गधे पर धरना—जो काम योग्य व्यक्ति कर सके उसको अयोग्य को सौंपना।
गया गुजरा जानना—तुच्छ समझना।
गया वक्त फिर हाथ नहीं आता—समय पर चूकना अच्छा नहीं होता।
गये थे रोजा छुड़ाने नमाज पड़ी गले—उपकार करने चले थे मगर स्वयं दुःख भोगना पड़ा।
गरम होना—क्रोध करना।
गरदन नापना—गरदनियां देकर हटा देना।
गरदन पर सवार होना—पीछे पड़ जाना, बहुत तंग करना।
गरदन काटना—कष्ट पहुँचाना, हानि पहुँचाना।
गरदन पर छुरी फेरना—अत्याचार करना।
गरदन झुकाना—नम्र होना, आधीन होना।
गरदन झुकना—बिनीत बन जाना।
गरदन उठाने का मौका न मिलना—कार्य में अति व्याप्त रहना, अवकाश न मिलना।
गरदन उठाना—भिड़ जाना, प्रतिवाद करना।
गरदन मारना—हत्या करना बध करना।
गरीब सब कोई कहते हैं, बड़े आदमी कोई नहीं कहता—गरीबोंकी त्रुटियों को सब कोई देखता है, अमीरों की कोई नहीं देखता।
गरीब की हाय बुरी होती है—गरीब पर कभी अत्याचार न करना चाहिये।
गरीबने रोजे रक्खे तो दिन बड़े हो गये—गरीब का समय सर्वदा दुख में ही बीतता है।
गरीबों में मुंह छिपाना— शर्मिन्दा होना।
गर्द भी न पाना—खोजने से न मिलना, बराबरी में न ठहरना।
गरेबा चाक करना—प्रेमातुर होना।
गला काटना—अत्याचार करना, पीड़ा पहुँचाना।
गला रेतना—अत्याचार करना।
गला सूखना—प्यास लगना।
गला घोंटना—अत्याचार करना, बड़ा कष्ट देना।
गला फंसना—लाचार हो जाना।
गला फँसाना—विपत्ति में डालना।
गली गली मारे फिरना—दुर्दशा होना।
गले का हार होना—बड़ा प्यारा बनना, चिपट जाना
गले मढ़ना—इच्छा के विरुद्ध कोई काम किसी को सौंपना।
गले पड़ना—ऊपर आ जाना।
गले से लगाना—प्यार करना।
गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त—अर्थ स्पष्ट है।
गहरा असामी—बहुत धन देने वाला।
गहरा हाथ मारना—इच्छा की हुई वस्तु का अधिक परिमाण में मिलना।
गहरी छनना—आनन्द में समय बिताना, अधिक वार्तालाप होना।
गहरी चाल चलना—बड़ा छल करना।
गांठ में जमा तो खातिरजमा— पास में धन होने से किसी बात की फिक्र नहीं रहती।
गाजर मूली समझना—तुच्छ जानना।
गाँठ काटना—बहुत महँगा बेचना, जेब काटना।
गाँठ खुलना—झंझट दूर होना।
गाँठ में बाँधना—अच्छी तरह याद रखना।
गाँठ लेना— अपने पक्ष में कर लेना।
गाँठ पर गाँठ पड़ना—झंझटें बढ़ जाना।
गाँठ का पूरा—बड़ा अमीर।
गाड़ी चल पड़ना—कार्य का आरंभ होना।
गाड़ी रुक जाना—चलता काम बंद होना।
गाढ़ी छनना—बड़ी मित्रता होना।
गागर में सागर भरना—थोड़े में कहना, संक्षिप्त में वर्णन करना।
गाढी कमाई—परिश्रम से कमाया हुआ धन।
गाल बजाना—बक बक करना।
गिन गिन कर दिन काटना—बड़े कष्ट में दिन बिताना।
गिन गिन कर बदला लेना—बड़ी तकलीफ देना, पूरी तरह से बदला चुकाना।
गिन गिन कर पाँव धरना—धीरे धीरे चलना सावधानी से काम करना।
गिरगिट की तरह रंग बदलना—बारंबार अपना मत बदलना, किसी सिद्धान्त पर स्थित न रहना।
गिरह टटोलना—कुछ लेने की इच्छा करना।
गिरह पड़ जाना—मनमुटाव होना।
गीत गाना—प्रशंसा करना, तारीफ करना।
गीदड़ की शामत आवे तो गांव की ओर भाग—भाग्य बिगड़ जाने पर बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है
गीदड़ भवकियां दिखलाना—वृथा डराना, झूठ मूठ त्रास देना।

गुञ्जा मानिक एक समान—पंडित और मूर्ख का भेद न समझना।
गुट्ट बाँधना—दलबन्दी करना।
गुड़ गोबर कर देना—काम को बिगाड़ देना।
गुड्डा बांधना—अपमानित करना, बेइज्जत करना।
गुथ पड़ना—लड़ जाना।
गुड़खाय गुलगुलों से परहेज—वृथा का आडम्बर रचना।
गुड़ देने से मरे तो जहर क्यों देना—यदि समझाने से काम हो जाय तो दंड क्यों देना।
गुनाह बेलज्जत—नीच कर्म करने पर भी न मिलना।
गुर निकलना—उपाय का पता लगाना।
गुरू गुड़ रह गये चेला चीनी हो गये—चेले का गुरू से भी अधिक विद्वान होना।
गुल खिलना—विचित्र घटना होना।
गुदड़ी का लाल—किसी के रंग रूप से उसके गुणों का पता न चलना।
गुल खिलाना—विचित्र घटना उपस्थित करना।
गुलछर्रे उड़ाना—आनन्द मचाना।
गूंगे गुड़ खाना—अपना अनुभव न प्रकट कर सकना।
गूलर का फूल लेना—न मिलनेवाली वस्तु की आकांक्षा करना।
गूलर का फूल हो जाना—लुप्त हो जाना, बेपते होना
गोद में बैठाकर आंखों में उंगली—कृतघ्नता प्रगट करना।
गोली मारना—त्याग देना, छोड़ देना।
गोरखधंधे में पड़ना—झंझट में पड़ना।
गोद में लड़का शहर भर ढिंढोरा—पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना।
गोकुल से मथुरा न्यारी—परस्पर संबंध न होना।
गोबर गिरा तो कुछ लेकर ही उठेगा—धन उधार लिया तो कुछ सूद जरूर ही देना होगा।
गौं निकलना—स्वार्थ सिद्ध होना।

घ

घड़ों पानी पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना।
घनचक्कर में पड़ना—आफत में पड़ जाना।
घर उजड़ना—संपूर्ण संपत्तिका नाश।
घर आया कुत्ता भी नहीं निकाला जाता—अतिथि का अपमान न करना चाहिये।
घर की खेती—सहज में मिलने वाला पदार्थ।
घर की मुर्गी साग बराबर—घर की वस्तु का विशेष आदर नहीं होता।
घर की खांड़ किरकिरी लगे चोरी का गुड़ मीठा—बुरी रीति से प्राप्त की हुई वस्तु घर की वस्तु से अधिक अच्छी लगती है।
घर काटने दौड़ना—मकान में दिल न लगना।
घर करना—पति बनाना।
घर का रास्ता लेना—भाग जाना।
घर का जोगी जोगड़ा, आन गांव का सिद्ध—विद्वान मनुष्य की अपने देश में उतनी प्रतिष्ठा नहीं होती जितनी अन्य देशमें होती है।
घर का दिया बुझ जाना—एकमात्र पुत्र की मृत्यु होना।
घर के घूर रहना—लाभ हानि बराबर होना।
घर घर पूजा होना—सर्वत्र प्रतिष्ठा होना।
घर बैठे गंगा आना—अनायास धन मिलना।
घर बैठे—बिना बाहर गये।
घर बसना—विवाह होना, घर में स्त्री का आगमन।
घर का आदमी—अपना ही संबंधी।
घर का न घाट का—कहीं का भी न होना।
घर की आधी भली बाहर की सारी कुछ नहीं—घर में काम करके थोड़ा ही मिले तो भी बाहर के व्यवसाय से अच्छा है।
घर खीर तो बाहर खीर—घर में धन है तो बाहर भी प्रतिष्ठा होगी।
घरमें नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने—झूठा आडंबर रचना।
घर के पीरों को तेल का मलीदा—घर के लोगों के साथ तो बुरा व्यवहार किया जाय और बाहर की बड़ी प्रतिष्ठा।
घर बनना—आर्थिक स्थिति सुधारना।
घर फूंक तमाशा—संपत्ति का नाश करके आनन्द मचाना।
घर घर यही लेखा—सभी परिवार में समान स्थिति रहती है।
घर में चूहे कूदना—अति दरिद्र होना।
घरसे बाहर न निकलना—संसारका अनुभव न प्राप्त करना।
घर सिर पर उठाना—बड़ा कोलाहल मचाना।
घर में दिया तो मसजिद में दिया—बाहर की फिक्र करने के पहिले अपने घर की स्थिति संभालो।
घर में डाल लेना—पत्नी बनाना।
घर तक पहुंचाना—पूर्ण करना।
घर का भेदिया लंका ढाहे—आपस के बैर का बुरा परिणाम होता है।
घाट घाट का पानी पीना—सब तरह के अनुभव प्राप्त करना।
घात में रहना—अर्थ सिद्ध करनेके लिये ताक में रहना।
घात लगाना—नुकसान पहुंचानेके लिये मौका ढूंढना।
घाव हरा होना—बीते हुए कष्ट का स्मरण होना।
घाव पर नमक छिड़कना—दुःखी को और भी कष्ट देना।
घास काटना (खोदना)—व्यर्थ के काम में समय गंवाना।
घास खा जाना—पागल होना।
घिग्घी बंधना—बहुत डरके कारण मुख से शब्द न निकालना।
घी कहां गया खिचड़ी में—अपनी वस्तु अपने प्रयोग में आना।
घी के दीपक जलाना—हर्ष और आनन्द मचाना।
घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो—मनुष्य को इतना धन खर्च करना चाहिये कि बाहर मान मर्यादा बनी रहे।
घुट घुट कर मरना—बड़ा कष्ट भोग कर शरीर छूटना
घुटने टेकना—आधीन होना, विनीत भाव दिखलाना, आत्मसमर्पण करना।
घुन लगना—किसी भीतरी रोग से अति दुर्बल हो जाना।
घुमाकर नाक पकड़ना—अपने अभिप्राय को लपेट की बातों में प्रकट करना।
घुमा फिराकर बात करना—साफ साफ बात न कहना
घुलघुल कर बात करना—घनिष्ठता से प्रेम पूर्वक बातें करना।
घुल जाना—बड़ा दुर्बल होना।
घोड़े बेंचकर सोना—निश्चिन्त होकर सोना।
घोड़ा घास से यारी करे तो क्या खाय—व्यापार में मुनाफा न लेने से काम नहीं चलता।
घोड़ा घुड़साल में ही बिकता है—जहां की वस्तु वहीं बिकती है।
घोलकर पी जाना—किसी प्रकारकी चिन्ता न करना।

च

चंग पर चढाना—उत्तेजित करना।
चंग में फँसना—परवश हो जाना।
चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ—उत्तम वस्तु थोड़े मात्रामें भली होती है, बुरी वस्तु अधिक भी भली नहीं होती।
चंडूखाने की गप्प—झूठी बात।
चकमा देना—धोखे में डालना।
चक्कर में डालना—झगड़े में फँसाना।
चक्कर में पड़ना—धोखे में आ जाना।
चक्की पीसना—बड़ा परिश्रम करना।
चचा बन जाना—अधिक चालाक होना।
चट कर जाना—जल्दी से खा जाना।
चटनी हो जाना—खूब पिस जाना।
चट्टे बट्टे लड़ाना—इधर उधर की बातें कहकर झगड़ा खड़ा करना।
चढा जाना—पी जाना।
चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय—बड़ा कृपण होना।
चबा चबा कर बातें करना—साफ खोल कर न कहना।
चल बसना—मर जाना।
चरका देना—धोखा देना।
चम्पत हो जाना—भाग जाना।
चरण छूना—विनती करना, प्रणाम करना।
चरबी बढ़ना—मोटा ताजा होना।
चलता करना—रवाना करना।
चलती गाड़ी में ओट लगाना—काम में विघ्न डालना
चहल पहल मचना—रौनक होना।
चांदी का जूता मारना—घूस देना।
चांद पर थूकना—किसी की निन्दा करके स्वयं दूषित होना।
चांदी होना—अधिक लाभ होना।
चादर उतार डालना—बेशर्म होना।
चादर तान कर सोना—निश्चिन्त हो जाना।
चादर के बाहर पैर फैलाना—आय से अधिक व्यय करना।
चादर देख कर पांव फैलाना—शक्ति के अनुसार काम करना।
चाकरी में नाकरी क्या—नौकरी करने पर कुछ इनकार नहीं हो सकता।
चार आँसू गिराना—शोक करना।
चार चाँद बढाना—इज्जत बढ़ाना।
चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात—सदा सुख के दिन नहीं रहते।
चार दिन—थोड़े दिन तक।
चारपाई से लग जाना—रोग से अति दुर्बल हो जाना
चार बातें सुनाना—खरी खोटी सुनाना।
चार पैसे हाथ में होना—आर्थिक स्थिति अच्छी होना
चालि चलना—धूर्तता करना, दगाबाजी करना, कपट व्यवहार करना।
चाल पड़ना—रिवाज होना, फर्क आना।
चाल में आना—धोखे में पड़ना।
चारो खाने चित्त आना—बुरी तरह से हारना।
चिकना घड़ा—जिस पर किसी शिक्षा का प्रभाव न पड़े।
चिकनी चुपड़ी बातें करना—मीठा बोल कर धोखा देना।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता—बेहया पर किसी

बात का प्रभाव नहीं पड़ता ।
चिड़िया फँसाना—किसी मालदार आसामी को धोखा देकर अपने वश में करना ।
चित करना—हानि पहुचाना, हराना ।
चिता पर पांव रखना—मरण काल समीप आना ।
चित पर चढ़ना—मन को भला लगना ।
चित्र बन जाना—मूर्ति की तरह चुप चाप बैठ जाना
चिराग गुल होना—मृत्यु होना ।
चिराग तले अंधेरा—न्याय के स्थान में अन्याय होना
चिराग ठंढ़ा होना—पुरुषार्थ का अन्त होना ।
चिराग लेकर ढूंढना—बड़ी खोज करना ।
चिलम पर आग भी न रखवाना—अति तुच्छ समझना
चिल्ल पौं करना—रोना, विलाप करना, चिल्लाना ।
चीं बोलना—हार मानना ।
चींटी चाहे सागर थाह—सामान्य मनुष्य का बड़े काम करने में उद्योग ।
चुटकियों में—अति शीघ्र, तुरत ।
चुटकियों में उड़ाना—दिल्लगी में टालना ।
चुटकी लेना—मर्मवेधी बातें कहना ।
चुल्लू में उल्लू, लोटे में गडगप—शराबी की अवस्था का यह वर्णन है ।
चुल्लू भर पानी भी न पूछना—किसी काम में न आना ।
चुल्लू भर पानी में डूब मरना—लज्जा वश मुंह न दिखलाना ।
चूंचकार करना—आपत्ति करना, वादविवाद करना
चूड़ियां पहरना—कायर बनना ।
चूड़िया फूटना—विधवा होना ।
चूल्हा न जलना—भोजन न मिलना ।
चूल्हे का फूंकना और दाढी रखना—दो असंगत कार्य करना ।
चूल्हे में पड़ना—नष्ट होना ।
चूल्हे की हैं न चक्की की—ऐसी स्त्री जो कोई काम न कर सकती हो ।
चूहे का बच्चा बिल ही खोदता है—किसी का जाति स्वाभाव नहीं छूटता ।
चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढ़े जाते—क्षुद्र मनुष्य से बड़ा काम नहीं हो सकता ।
चेहरा उतरना—उदास होना ।
चेहरे पर हवाइयां उतरना—भयत्रस्त होना ।
चैनकी छनना—(बंसी बजाना) आनन्द से जीवन बिताना ।
चोचले दिखलाना—इतराना ।
चोट उभड़ना—दुःख फिर से आ जाना ।
चोट पर चोट लगना—दुःख में दुःख होना ।
चोटी हाथ में आना—वश में होना ।
चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाली—रखवाला ही यदि चोर हो तो रखवाली कैसे हो सकती है ।
चोट करना—आक्रमण करना, धावा करना ।
चोर की दाढी में तिनका—चोर को सदा सन्देह बना रहता है कि वह कहीं पकड़ा न जावे ।
चोर चोर मौसेरे भाई—एक ही स्वभाव और व्यवसाय वाले मनुष्य परस्पर मेल रखते हैं ।
चोर के पैर नहीं होते—चोर का मन सदा डरा करता है ।
चोरों का माल मोरी में—बुरी तरह से कमाया हुआ धन बुरे कामो में खर्च होता है ।
चौकन्ना होना—सावधान होना ।
चौकस रहना—सचेत रहना ।
चौका लगाना—सत्यानाश करना ।
चौखट चूमना—आधीनता स्वीकार करना ।
चौथ का चांद—भादों सुदी चौथ का चन्द्रमा जिसको देखने से कलंक लगता है ।
चौपट करना—नष्ट करना, बरबाद करना ।

छ

छटा हुआ—प्रसिद्ध, मशहूर ।
छक्के छुड़ाना—परास्त करना ।
छक्के छूटना—साहस न रहना ।
छक्के पंजे उड़ाना—आनन्द मचाना ।
छछूंदर के सिर में चमेली का तेल—अयोग्य व्यक्ति को उत्तम पदार्थ मिलना ।
छटपटा उठना—व्यग्र होना, घबड़ा जाना ।
छटांक चून, चौवा रे रसोई—झूठा आडंबर ।
छठी का दूध याद आना—कठिन कष्ट पड़ना ।
छत्र छाया में रहना—आधीन रहना ।
छप्पन टके खर्च होना—ज्यादा खर्च होना ।
छप्पर पर रख देना—त्याग देना, छोड़ देना ।
छप्पर फाड़ कर मिलना—अनायास प्राप्त होना ।
छाती के किवाड़ खोलना—उदारता से खर्च करना ।
छाती पर कोदो दरना—सन्मुख अनुचित कार्य करना, कष्ट पहुँचाना ।
छाती का पत्थर टलना—दुःख दूर होना ।
छाती पर सांप लेटना—ईर्ष्या करना, डाह करना ।
छाती खोलकर चलना—निर्भय होकर चलना ।
छाती जलना—दुःख देना ।
छाती जुड़ाना—शान्ति मिलना ।
छाती ठोकना—दिल कड़ा करना ।
छाती ठंढी करना—चित्त सन्तुष्ट करना ।
छाती तले रखना—प्रेम पूर्वक पास रखना ।
छाती पर पत्थर रखना—कष्ट सहना ।
छाती पर बाल न होना—बीर होना ।
छाती पीटना—शोक मनाना ।
छाती से लगाना—प्यार करना ।
छान डालना—अन्वेषण करना, खोज करना ।
छापा मारना—लूट लेना ।
छाया तक न पड़ना—कुछ प्रभाव न पड़ना ।
छिपा रुस्तम निकलना—योग्य सिद्ध होना, दुष्ट सिद्ध होना ।
छिद्रान्वेषण करना—ऐब निकालना ।
छींकतेही नाक काटना—अपराध करतेही दण्ड मिलना
छींटे डालना—मर्मबेधी बातों का संकेत करना ।
छीछालेदर करना—दुर्दशा करना ।
छुट्टी पाना—निस्तार होना, मुक्त होना ।
छुरी खरबूजे पर गिरे या खरबूजा छुरी पर गिरे बात एक ही है—हानि दोनों ही तरह से होती है ।
छुरी तले दम लेना—कष्ट से जिन्दगी बिताना ।
छुरी तेज करना—कष्ट देना, सताना ।
छू मन्तर हो जाना—भाग जाना ।
छोटे मुंह बड़ी बात—बढ़ बढ़ कर बातें करना ।
छोटे मियां तो छोटे मियां बड़े मियां सुभान अल्लाह—बड़े में छोटे से अधिक दुर्गुण जब देख पड़ता है तब कहा जाता ।

ज

जंगल में मंगल होना—निर्जन स्थान में आनन्द का उत्सव होना ।
जगह कर जाना—प्रभाव डालना ।
जगह करना—मकान बनाना, स्थान देना ।
जग में देखा का ही नाता—संसार में जीते जी का ही नाता रहता है ।
जड़ उखाड़ना—नाश करना ।
जड़ छोड़ना—जम कर बैठना ।
जनमघुट्टी में दिया जाना—जन्मसे ही अभ्यास डालना
जने जने की लकड़ी एक जने का बोझ—समष्टि में बड़ा बल होता है ।
जबान पर चढ़ा रहना—अच्छी तरह से याद रहना ।
जबान एक होना—अपने कहे पर दृढ़ रहना ।
जबान खींचना—बड़ा दण्ड देना ।
जबान बदलना—कह कर मुकर जाना ।
जबान हिलाना—बांधना ।
जबान पर लाना—कह बैठना ।
जबानी जमा खर्च करना—दिखाबटी सहानुभूति दिखलाना ।
जबान देना—प्रतिज्ञा करना, बचन देना ।
जबान में लगाम न होना—अशिष्ट वचन बोलना ।
जमाने की लहर के साथ चलना—स्थिति के अनुसार काम करना ।
जमीन आसमान एक करना—बड़ी खोज करना ।
जमीन पर पांव न रखना—बड़ा गर्व करना ।
जमीन में गड़ जाना—बड़ा लज्जित होना ।
जल में रहकर मगर से वैर—जिस के आधीन रहे उसी से शत्रुता करना ।
जल जल कर भस्म होना—क्रोधवश दुःख पाना ।
जली भुनी कहना—कठोर शब्दों का प्रयोग करना ।
जले पर नमक छिड़कना—दुखी को और दुख देना ।
जहर का घूंट पीना—क्रोध के आवेग को रोकना ।
जहर लगना—बुरा मालूम होना ।
जहर दिखाई देना—घृणा होना ।
जहां का तहां रख देना—जान से मार डालना ।
जहां की मिट्टी वहीं ले जाती है—जहां मरना होता है वहीं मनुष्य चला जाता है ।
जहां गुड़ होगा वहीं चींटियां होंगी—लोग वहीं इकट्ठा होते हैं जहां उनको कुछ मिलने की आशा होती है ।
जहां मुर्गा नहीं होता वहां क्या सबेरा नहीं होता—किसी के बिना संसारका कोई काम नहीं रुकता
जहां चार बासन होंगें वहीं खड़केंगें—जहां अनेक मनुष्य होते हैं वहां पर झगड़ा होता ही है ।
जहां गुल है वहीं कांटा भी है—गुण के साथ कभी कभी दोष भी देख पड़ते हैं ।
जहां जायें बाले मियां तहां जाय पूंछ—अमीरों के साथ सर्वदा उनके पिछलग्गू बने रहते हैं ।
जहां न पहुंचे रवि वहा पहुंचे कवि—कवि अपनी कल्पना से सर्वत्र पहुंच जाता है ।
जबरा मारै रोने न दे—निर्बल को बलवान् सदा कष्ट देता है ।
जबरदस्त का ठेंगा सिर पर—निर्बल सदा बलवान् के आधीन रहता है ।
जबां शारी मुल्क गीरी—मीठा बोल कर मनुष्य संसार में सब को प्रसन्न कर सकता है ।
जल की मछली जल में ही भली—जहां की वस्तु वहीं अच्छी लगती है ।
जमात करामात—संगठन में बड़ी शक्ति होती है ।
जस दूल्हा तस बनी बराता—जैसे को तैसा साथी मिलता है ।
जबान ही हाथी पर चढ़ावे और जबान ही सिर कटावे—भरा बुरा बोलने पर ही मनुष्य की उन्नति और अवनति निर्भर होती है ।
जब अपनी उतार ली तब दूसरे की उतारने में क्या

लगता है–जब अपनी इज्जत गई तब दूसरे की इज्जत बरबाद करने में क्या है।
जब तक जीना तब तक सीना–जिन्दगी भर संसारी झंझटें बनी रहती हैं।
जागते को जगाना–समझदार को शिक्षा देना।
जादू डालना–अपने मतलब में फँसाना।
जा धमकना–अकस्मात् पहुँच जाना।
जान आना–शक्ति आना।
जान पर बनना–जान जाने का डर होना।
जान पर खेलना–अपने को संकट में डालना।
जान चुराना–काम करने से जी चुराना।
जान खोना–अधिक कष्ट सहना।
जान खाना–बहुत परेशान करना।
जान से हाथ धोना–मृत्यु प्राप्त करना।
जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी–जिसकी जैसी भवना रहती है उसको देवता की वैसी ही मूर्ति देख पड़ती है।
जान का जंजाल हो जाना–अरुचिकर होना।
जाके पांव न फटी बेवाई सो क्या जाने पीर पराई–जिसने स्वयं कष्ट का अनुभव नहीं किया है वह पराये की पीड़ा को क्या जाने।
जान मार कर काम करना–अपने भरसक पराक्रम करना।
जान में जान आना–सन्तोष मिलना।
जानवरों में कौवा मनुष्यों में नौवा–ये बड़े चतुर होते हैं।
जान से जाना–मरना।
जान छुटना–आपत्ति से छुटकारा पाना।
जान छुड़ाना–आपत्ति से बचना।
जान भारी होना–जिन्दगी दु:खमय होना।
जान के लाले पड़ना–जीवन की चिन्ता होना।
जान सूखना–भयभीत होना।
जान का गाहक बनजाना–प्राण लेने के लिये उद्यत होना।
जान बूझकर मक्खी निगलना–अपने हाथों से अपना अनिष्ट बुलाना।
जान डालना–उत्साहित करना, जोरदार बनाना।
जामे से बाहर होना–बड़ा कुपित होना।
जाल फैलाना–षड्यन्त्र रचना।
जाल डालना–धोखा देना।
जालमें फँसना–धोखे में आ जाना।
जिस हाड़ी में खाना, उसी में छेद करना–उपकार के बदले अपकार करना।
जिसकी छाया में बैठना उसी की जड़ काटना–जो अपना हित करे उसका अपकार करना।
जिसकी बंदरिया वही नचावै–जिसका काम वही कर सकता है।
जितने मुंह उतनी बात–भिन्न भिन्न मनुष्यों के पृथक् विचार होते हैं।
जिस डाल पर बैठे उसी को काटे–जो आश्रय दे उसी से अपकार करना।
जिह्वाग्र होना–अच्छी तरह से याद होना।
जिसके हाथ लोई उसका सब कोई–धनी मनुष्य की सब लोग खुशामद करते हैं।
जी उचट जाना–मन न लगना।
जीभ जली पर स्वाद न आया–अच्छा काम किया पर फल उलटा मिला।
जी कांपना–डर लगना।
जी छोड़ना–हिम्मत हारना।
जी चुराना–सुस्ती करना।
जी छूट जाना–हताश होना।
जी का बोझ हलका होना–चिन्ता से छूटना।
जी छोटा करना–उदास होना।
जी जलाना–दु:खी करना।
जी टंगा रहना–खटका बना रहना।
जी टूट जाना–उत्साह हीन होना।
जी दहल जाना–व्यग्र होना, घबड़ाना।
जी न भरना–तृप्त न होना।
जी पक जाना–तंग आ जाना।
जीभ लपलपाना–भोजन करने की लालसा होना।
जीभ चलते रहना–बकवाद करते रहना।
जीभ पकड़ना–बोलने से रोकना।
जीभ सँभालकर बोलना–शिष्टता से वार्तालाप करना।
जी में जी आना–धैर्य युक्त होना।
जीवन की घड़ियां गिनना–मृत्यु समीप आना।
जी से उतर जाना–अच्छा न लगना।
जी हुजूर बनना–अफ़सर बनाना।
जूं की डर से गुदड़ी नहीं जाती–थोड़े से कष्ट के लिये काम नहीं छोड़ा जाता।
जुल देना–धोखा देना, उभाड़ना।
जुए को कन्धे से उतारना–स्वतंत्र हो जाना।
जूड़ी आना–कष्ट जान पड़ना।
जूता चाटना–चापलूसी करना।
जूता लगना–लज्जित होना।
जूता लगाना–अपमान करना।
जूतियां चटकाते फिरना–बुरा काम करने में व्यग्र रहना।
जूते की नोक पर मारना–अति तुच्छ समझना।
जूते से बात करना–अपमानित करना।
जेब से जाना–खर्च होना।
जैसा देश वैसा भेष बनाना–स्थिति के अनुसार चलना।
जैसा दाम वैसा काम–जैसी मजदूरी वैसा काम।
जैसे सांपनाथ वैसे नागनाथ–एक समान होना।
जोड़े न होना–अद्वितीय होना।
जोड़ तोड़ करना–उपाय निकालना।
जोर डालना–दबाव डालना।
जौहर खुलना–परीक्षा होना।
जौहर दिखलाना–गुण प्रकट करना।
ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय–कर्ज अदा न करने पर वह बढ़ता ही जाता है।

झ

झख मारना–व्यर्थ की बकवाद करना, विवश हो जाना।
झगड़ा मोल लेना–जान बूझ कर कलह करना।
झटक लेना–ठग लेना, अपहरण करना।
झटक जाना–शरीर दुर्बल होना।
झड़ी लगा देना–अधिक संख्या या परिमाण में उपस्थित करना।
झण्डा गाड़ना–अधिकार स्थापित करना।
झपट लेना–छीन लेना।
झांसा देना–धोखे में डालना।
झांसे में आना–धोखे में पड़ना।
झाड़ पड़ना–डाटा जाना।
झाड़ फेरना–नष्ट कर देना।
झाड़ मारना–तिरस्कार करना।
झूठ सच कहना–निन्दा करना।
झूठे का मुंह काला सच्चे का बोल बाला–सच्चे का विजय होता है झूठा हार जाता है।
झूठे के पांव नहीं होते–झूठे मनुष्य को साहस नहीं होता।
झोंपड़ी डालना–कुछ देर तक ठहरना।
झोंपड़ी में रहे महलों का ख्वाब देखे–बड़ी बड़ी आकांक्षा करना।

ट

टकटकी बँधना–पलक न झिपना।
टकराते फ़िरना–इधर उधर खोजते फिरना।
टका सा जवाब देना–स्पष्ट शब्दोंमें अस्वीकार करना
टकसाल हो जाना–प्रधान स्थान होना।
टकराते फिरना–इधर उधर खोजते फिरना, भटकना, दु:ख उठाते रहना।
टकसाली बात कहना–प्रामाणिक बात कहना।
टक्कर खाना–नुकसान उठाना।
टक्कर का होना–समान होना।
टक्कर लगना–नुकसान पहुँचाना।
टका पास न होना–पास में धन न होन।
टका सा मुंह लेकर रह जाना–शर्मिन्दा होना।
टके का सब खेल है–धन से ही संसार में सब काम होता है।
टट्टी की आड़ में शिकार करना–धूर्तता से छिपकर कार्य साधना, छिप कर पाप करना।
टपक पड़ना–अकस्मात् आ पहुँचना।
टरका देना–टालना; बिना कुछ दिये वापस करना।
टस से मस न होना–विनती और शुश्रूषा का प्रभाव न पड़ना।
टाँक लेना–नोट कर लेना, लिख लेना।
टर टर करना–बेफायदा बक बक करना।
टांका देना–सिलना।
टांके खोलना–गुप्त बातों को प्रगट करना।
टांग अड़ाना–विघ्न डालना, हस्तक्षेप करना।
टांग तले से निकल जाना–पराजय स्वीकार करना
टांग तोड़ना–बेकार घूमते फिरना।
टांग पसार कर सोना–चैन से कालक्षेप करना।
टांगें रह जाना–चलते चलते शिथिल हो जाना।
टांय टांय फिस होना–उद्योग करने पर असफल होना।
टाट उलटना–दीवालिया बन जाना।
टापते रह जाना–कुछ हासिल न होना।
टायँ टायँ करना–व्यर्थ बकबक करना।
टालमटोल करना–बहानेबाजी करना।
टिप्पस लगाना–अपना मतलब साधने के लिये ढंग रचना।
टीका टिप्पणी करना–किसी विषय की समालोचना करना।
टीका भेजना–कन्या पक्ष का वर पक्ष के घर पर विवाह स्थिर होने के निमित्त फल, मिठाई, वस्त्र आदि भेजना।
टीपटाप दिखलाना–गौरव दिखलाना।
टीस होना–शरीर में कहीं पर पीड़ा होना।
टुकड़े लगना–खाने पीने के लिये किसी आश्रित होना।
टुकड़ा तोड़ना–किसी के आश्रित होकर रहना।
टुकड़ा मांगना–भिक्षा मांगना।
टुकड़गदाई–वह जो भोजन मिलने की आशा से अड़ा रहता है।
टुटपुंजिया–अल्प धन वाला मनुष्य।
टूट पड़ना–आक्रमण करना; कमी होना।
टूटी बाह गले में पड़ना–किसी का बोझ अपने

सिर पर पड़ना।
टेक रख लेना–मान मर्यादा स्थापित करना।
टेढ़ा होना–अकड़ दिखलाना।
टेढ़ी अंगुली से ही घी निकलता है–निरा सीधा बने रहने से काम नहीं चलना।
टेढ़ी खीर–कठिनता से होने वाला कार्य।
टेढ़ी टोपी लगाना–शान दिखलाना।
टेढ़ी चाल चलना–कपट व्यवहार करना।
टेढ़ी नजर से देखना–बुरी निगाह से देखना।
टोपी उछालना–आनन्द का प्रदर्शन करना।
टोपी बदलना–किसी मनुष्य को अपना मित्र बना लेना।

ठ

ठंढ़ा लोहा गरम लोहे को काट देता है–शान्त रहने से क्रोधी का कुछ बस नहीं चलता, वह अन्त में हार जाता है।
ठकुरसुहाती कहना–शुश्रूषा करना।
ठठरी होना–अति दुर्बल हो जाना।
ठंढक लगना–सरदी लगना।
ठंढा पड़ जाना– क्रोध चला जाना, उत्साह हीन होना। शान्त होना।
ठंढा हो जाना–मृत्यु को प्राप्त होना।
ठंढ़े चूल्हे बैठना–बेकार बैठे रहना।
ठंढ़ी सांस लेना–सोच विचार में उदास हो रहना।
ठाठ बदलना–आडंबर करना।
ठान लेना– निश्चय कर लेना।
ठठेरे ठठेरे बदलौवल–समान व्यवसाय वालों का परस्पर संबंध, बराबरी।
ठिकाना कराना–प्रबंध करना, विवाह करना।
ठाला बनिया क्या करे इस कोठी का धान उस कोठी में धरे–बेकार आदमी फजूल का काम किया करता है।
ठिकाने लगना– काम में आना।
ठिकाने लगाना–अन्त कर देना।
ठिकाने न रहना– स्थायी न रहना।
ठिकाने की बात कहना–उचित वार्ता कहना।
ठीक कर देना– सजा देना।
ठी ठी करना–हँसना।
ठोंकना बजाना–जांच करना, परीक्षा करना।
ठोकर खाते फिरना–बेकार भटकते फिरना।
ठोकर पर ठोकर खाना–एक कष्ट के बाद दूसरे का आना।
ठोकर खाकर सँभलना–हानि हो जाने पर सचेत हो जाना।
ठोकर लगना– हानि उठाना।

ड

डंक मारना–तकलीफ देना।
डंका बजना–शोहरत होना, विस्तार होना।
डंके की चोट कहना–स्पष्ट शब्दों में कहना।
डंड-पेलनी–खापीकर मस्त रहना।
डंडी मारना–कम तौलना।
डकार जाना–किसी की वस्तु अपहरण करना।
डकार तक न लेना–अच्छी तरह से हजम कर जाना चुप रह जाना।
डट जाना– स्थिर होना।
डाइन भी अपने बच्चे को नहीं खाती– सभी स्त्रियां अपने बच्चे का लाड़ प्यार करती हैं।
डावांडोल होना– स्थिर न रहना।
डटकर भोजन करना–खूब पेट भर कर खाना।
डाढें मारना–चिल्लाते हुए रोना।
डींग मारना–शेखी करना।
डुगडुगी पीटना–ढिंढोरा पीटना, प्रसिद्ध करना।
डूब रहना– लीन होना।
डूबते को तिनके का सहारा–पूरी निराशा होने पर थोड़ी सी आशा होना।
डेढ चावल खिचड़ी अलग पकाना–सबसे निराले मन का होना।
डोरी ढीली करना–शासन की कड़ाई कम करना।
डोरपर लगाना–सीधी राह पर लगाना।
ड़ेढ ईंट की मसजिद अलग बनाना– न्यारे मन का होना, अपना मत सबसे निराला रखना।
डेरा डंडा कूच करना–प्रस्थान करना।

ढ

ढपोर संख–बेवकूफ, बेअक्ल।
ढब पर चढना–वश में होना।
ढर्रे से बातें करना–बड़े ढंग से बोलना।
ढर्रे पर लगाना–अनुकूल बनाना।
ढब निकालना–उपाय ढूढना।
ढब पर लाना–उचित मार्ग पर लाना।
ढाक के वही तीन पात–सर्वदा सामान्य स्थिति में रहने वाला।
ढाई दिन की बादशाहत पाना–थोड़े दिनों के लिये अधिकारी बनना।
ढील ढाल करना–देर करना।
ढूंढ कर लड़ाई मोल लेना–जान बूझ कर झगड़ा खड़ा करना।
ढेर कर देना– मार डालना।
ढेर लगा देना– अधिक संख्या में इकट्ठा कर देना

त

तकदीर आजमाना–भाग्य की परीक्षा करना।
तकदीर फूट जाना–किस्मत बिगड़ जाना।
तकदीर चमकना– भाग्य से उन्नति होना।
तकदीर ठोंकना– भाग्य का दोष देना।
तकदीर बनना–किस्मत अच्छी होना।
तकदीर सो जाना–बुरे समय का आना।
तख्ता उलटना–भाग्य का विपरीत होना।
तन जाना–परस्पर वैमनस्य उपस्थित होना।
तन कर चलना–गर्व से चलना।
तपस्या निष्फल होना–मेहनत बेकार होना
तकाजे का हुक्का भी नहीं पिया जाता–उधार ली हुई वस्तु बुरी होती है।
ताल ठोंकना–लड़ने भिड़ने के लिये तैयार होना।
तालियाँ बजाना–दुर्नाम करना।
तालू से जीभ न लगाना–बराबर बकते रहना।
ताव खाना–क्रुद्ध होना।
तिनका भी न रहना–कुछ भी शेष न बच जाना।
तिनके की ओट में पहाड़–संसार में सब कुछ देखते हुए भी मनुष्य अन्धा बना रहता है।
तबेले की बला बन्दर के सिर–किसी का अपराध दूसरे के सिर पर ठोंकना।
तिल धरने की जगह न होना–बड़ी भीड़ भाड़ होना।
तिलांजलि देना–सब संबंध छोड़ देना।
तीन तेरह करना–इधर उधर करना।
तीनों लोक देख पड़ना–भयंकर स्थिति का होना।
तीर बन जाना–दौड़ कर भाग जाना।
तीसमार खां बन जाना–मिथ्या अभिमान दिखलाना।
तुल जाना–तत्पर होना।
तू तू मैं मैं करना–गाली गुपाड़ा मचाना।
तूती बोलना–प्रसिद्ध होना, विख्यात होना।
तूफान खड़ा करना–उपद्रव मचाना।
तू डाल डाल मैं पात पात–चालाक व्यक्ति से बराबरी की चालाकी करना।
तेल जल चुकना–शक्ति पूरी हो जाना।
तेवर बदल जाना–बेमुरौवत होना।
तेवर बिगड़ना–क्रुद्ध होना।
तोताचश्मी करना–बेमुरौवती दिखलाना।
तोते की तरह आखें फेरना–बेमुरौवत बन जाना।
तोते की तरह पढ़ना–बिना अर्थ समझे पाठ याद करना।
त्योरियों पर बल पड़ना–क्रुद्ध होना।
त्योरी चढ़ाना–क्रोध करना।
त्राहि त्राहि करना–सहायता के लिये पुकार करना।
त्रिशंकु बन जाना–कहीं का भी न रह जाना।

थ

थरथरी लगना–कांपने लगना।
थर्रा जाना–डर जाना।
थाली का बैंगन–किसी ओर न रहने वाला।
थाह मिलना–भेद का पता लगाना।
थांग लगाना–अन्वेषण करना।
थूक कर चाटना–अपनी प्रतिज्ञा से डिग जाना।
थूथू करना–घृणा करना।
थूक लगाकर छोड़ देना–नीचा दिखलाना।
थैली का मुंह खोलना–अंधाधुंध खर्च करना।
थोड़ा होना–उदास होना।
थुड़ी थुडी करना–तिरस्कार करना।

द

दंग रह जाना–घबड़ा जाना।
दंड कमण्डल उठाना–अपनी सामग्री उठाकर रवाना हो जाना।
दक्षिण भुजा उठाना–सहायक बनना।
दबक जाना–ठिठक जाना, छिप जाना।
दबाव डालना–लाचार करना।
दम उलटना–जी घबड़ाना, अन्तिम श्वास लेना।
दम खाना–(लेना) सुस्ताना।
दम खींचना–सांस रोकना।
दमड़ी की घोड़ी छ पसेरी दाना–हैसियत से ज्यादा खर्च।
दम फूलना–सांस फूलना।
दम घोंट घोंट कर मारना–बड़ी दुर्दशा करके हत्या करना।
दम घोंटना–गला दबा कर हत्या करना।
दम तोड़ना–अन्तिम श्वास निकल जाना, मरना।
दम पर आ बनना–आफत में पड़ना।
दम साधना–सांस रोकना।
दम देना–दिलासा देना, बड़ा प्रिय जानना।
दम में दम आना–जीवित रहना।
दम फूलना–हांफना।
दम चुराना–मुरदे के समान बन जाना।
दम मारने की फुरसत न मिलना–कार्य में बहुत व्यग्र रहना।
दम लेना–आराम करना।
दम नाक तक आ जाना–व्यग्र हो जाना।
दम निकलना–आफत पड़ना, मरना।
दम टूटना–थक जाना।
दर्जी की सूई कभी ताश में कभी टाट में–कामकाजी मनुष्य कभी बेकाम नहीं रहता।
दर्यादिल बनना–उदारता दिखलाना।
दर्पन में मुख देखना–अपने ऐब पर ध्यान देना।

दलदल में फँसना–आफ़त में पड़ना।
दांत तले अंगुली दबाना–अचरज दिखलाना।
दांत तले तिनका दबाना–विनीत भाव दिखलाना।
दांतों में पसीना आ जाना–बहुत मेहनत करना।
दांव चुकाना–बदला लेना।
दांव चूकना–हाथ से मौका जाने देना।
दायें बायें करना–इधर उधर छिपाना।
दाल न गलना–विवश हो जाना, लाचार होना।
दाल रोटी से खुश–सामान्य रीत से जीवन निर्वाह।
दाल में काला होना–सन्देह होना।
दाहिने आना–अनुकूल होना।
दिन ईद और रात शबरात–सर्वदा आनन्द में बीतना
दिन आना–अन्त समय आ जाना।
दिन दूनि रात चौगुनी बढ़ना–अच्छी तरक्की होना।
दिन भारी हो जाना–जीवन दुःख पूर्ण होना।
दिन दहाड़े–दिन में, सबके जागते हुए।
दिन काटना–कष्ट से जीवन बिताना।
दिन फिर जाना–भाग्योदय होना।
दिमाग बिगड़ना–गर्व करना।
दिमाग लड़ाना–बहुत सोचना।
दिमाग सातवें आसमान में होना–बड़ा घमंड करना।
दिल फटना–घृणा होना।
दिल की दिल में रहना–मन की मन में रहना।
दिल जमाना–किसी काम के करने में मन लगाना।
दिल मिलना–प्रेम करना।
दिल छीन लेना–प्रेमासक्त होना।
दिल खुलना–संकोच का हट जाना।
दिल दहलना–भय त्रस्त होना।
दिल खिलना–प्रसन्न होना।
दिल का मैला–कपटी मनुष्य।
दिल न मिलना–प्रेम न होना।
दिल बढ़ाना–उत्साह बढ़ाना।
दिल टूटना–निराश होना, हताश होना।
दिल की दिल में रह जाना–अभिलाषा पूर्ण न होना
दिल में चुभना–चित्त को बुरा लगना।
दिया लेकर खोजना–इधर उधर ढूंढना।
दिल में गड़ जाना–अच्छा लगना।
दिल पसीजना–दयायुक्त होना।
दिल फीका होजाना–मन हट जाना।
दिल चुराना–मोहित करना।
दिल में रखना–गुप्त रखना, प्रिय जानना।
दिल से दिल की राहत होना–घनिष्ट प्रेम होना।
दिल से करना–मन लगाकर कोई काम करना।
दिल पक जाना–अत्यन्त पीड़ित होना।
दिल दुखाना–कष्ट पहुंचाना।
दिल की लगी बुझाना–मानसिक कष्ट शान्त करना
दीपक में बत्ती पड़ना–सन्ध्या होना।
दुनियां की हवा लगना–संसार के प्रपंचों में पड़ना।
दुम दबाकर भाग जाना–तेजी के साथ भाग जाना।
दुह लेना–धन का अपहरण करना।
दुरदुर होना–तिरस्कार किया जाना।
दुकान बढ़ाना–दूकान बन्द करना।
दुखड़ा रोना–अपना दुःख दूसरे को सुनाना।
दुपट्टा तान कर सोना–निश्चिन्त रहना।
दुहाई देना–न्याय की प्रार्थना करना।
दूज का चांद–जो कभी नज़र पड़ जावे।
दूध का दूध पानी का पानी–सच्चा न्याय होना।
दूध के दांत न टूटना–बाल्यावस्था, अनुभव हीनता।
दूध की नदियां बहाना–धन का विभव दिखलाना।
दून की लेना–शेखी करना।

दूर रहना–अलग रहना।
दूर की सोचना–भविष्य की बातों पर कल्पना करना
दूर की बात–बुद्धिमानी की बात चीत।
दूसरा रंग न चढ़ना–स्थिर रहना, बातें न बदलना।
दूसरे का मुंह देखना–दूसरे से मदद चाहना।
देख भाल कर पाँव उठाना–सावधानी से काम करना
देखते रह जाना–चकित होना।
देते ही बनना–लाचार होकर देना।
देना थोड़ा दिलासा बहुत–अर्थ स्पष्ट है।
दो कौड़ी का हो जाना–अपमानित होना।
दो दो बातें करना–थोड़ी सी बातचीत करना।
दो दो दानों को तरसना–अति दुर्दशा में होना।
दो नाव पर पैर रखना–दो पक्षों का समर्थन करना।
दोनों तरह से मौत–हर तरह से आपत्ति होना।
दोनों हाथों में लड्डू होना–सब तरह की मौज होना
दोस्ती में लेन देन वैर का मूल–अर्थ स्पष्ट है।
दृष्टि से गिरना–मान मर्यादा की हानि।
द्वार झांकना–सहायता की प्रार्थना करना।
द्वार खुल जाना–उपाय निकलना।
द्विविधा में पड़ना–सन्देह युक्त होना।

ध

धक् से (कलेजा) होना–यकायक घबड़ा उठना।
धक्का लगना–नुकसान होना, कष्ट मिलना।
धक्का खाते फिरना–दुर्दशा होना।
धक्का देना–तिरस्कार करना।
धड़का खुलना–भयहीन होना।
धता बताना–तिरस्कार करना, धूर्तता से टाल देना।
धमा चौकड़ी करना–इकट्ठा होकर शोरगुल मचाना
धर दबाना–हराना, जमीन पर पटक देना।
धर लेना–पकड़ लेना।
धर पकड़ करना–गिरफ्तार करना।
धरा रह जाना–व्यर्थ होना।
धर्म निभाना–अपने कर्तव्य का पालन करना।
धाक देना–फँसा देना।
धांधली मचाना–बेकार का झंझट करना।
धाक बांधना–प्रभाव होना।
धार चढ़ाना–शस्त्र आदि की धार तेज़ करना।
धारो धार रोना–बहुत आंसू बहाते हुए रोना।
धींगा धींगी करना–व्यर्थ का झगड़ा करना।
धुकधुकी बँधना–डर जाना।
धुन बाधना–चित्त लगाना।
धुन सवार होना–किसी विषय के लिये पीछे दौड़ना
धुरें उड़ाना–लजाना, टुकड़े टुकड़े कर देना।
धुन का पक्का–अपने सिद्धान्त का पक्का।
धूनी रमाना–किसी जगह गड़कर बैठना।
धूल में मिल जाना–नष्ट होना।
धूल में मिलाना–नष्ट कर देना।
धूल डालना–छिपा देना।
धूल फांकना–बुरे काम में लग जाना।
धूल उड़ना–चेहरा फीका होना, रौनक जाती रहना
धोखे की टट्टी–भ्रम में डालने वाला पदार्थ।
धोती ढीली होना–डर जाना।
धो देना–मिटा देना।
धोयेहू सौ बार के काजर होय न सेत–नीच मनुष्य की नीचता कभी नहीं जाती।
ध्यान से उतरना–भूल जाना।

न

नंगे बड़े परमेश्वर से–नीच मनुष्य से सब लोग डरते हैं
न इधर के रहे न उधर के रहे–निराश्रय होना।

नकेल डालना–वश में करना।
नकेल हाथ में होना–वश में होना।
नक्कू बनना–बदनाम होना।
नख सिख वर्णन करना–आद्योपान्त वर्णन करना।
नज़र लगना–कुदृष्टि का प्रभाव पड़ना।
नज़ला गिरना–बुरा प्रभाव होना।
नज़र में जँचना–पसन्द आना।
नज़र पर चढ़ना–प्रिय बनना।
नज़रों से गिरना–इज्जत बिगड़ना।
नदी नाव संयोग–संयोग से भेंट होना।
नथुने फुलाना–क्रोध दिखलाना।
नटखटी करना–दुष्टता दिखलाना।
नपी तुली कहना–ठीक ठीक बात कहना।
नमक खाना–नौकरी कर लेना।
नमक मिर्च लगाना–बढाकर बातें कहना।
नमक (कटे पर) छिड़कना–बड़ी तकलीफ देना।
नमस्कार करना–त्याग देना, छोड़ना।
नया गुल खिलना–विलक्षण घटना होना।
नरक भोगना–दुर्गति होना।
नस नस में–सम्पूर्ण शरीर में।
नसीब न होना–प्राप्त न होना।
नसीब लड़ना–भाग्य का अनुकूल होना।
न तीन में न तेरह में–किसी गिनती में न होना।
नाक भौं सिकोड़ना–नाखुश होना।
नाक में दम करना–बहुत परेशान करना।
नाक कटना–बदनाम होना।
नाक रगड़ना–अधीन होना।
नाक का बाल होना–अति प्रिय होना।
नाक में दम करना–बहुत परेशान करना।
नाक कटना–बेइज्जत होना।
नाक पर हाथ धरना–स्वीकार करना।
नाक रह जाना–प्रतिष्ठा स्थापित रहना।
नाक न होना–निर्लज्ज होना।
नाक रखना–प्रतिष्ठा स्थापित रखना।
नाक रगड़ना–शुश्रूषा करना।
नाकों चना चबाना–बहुत परेशान करना।
नाच नचाना–दिक करना, परेशान करना।
नाक कटी पर घी तो चाटा–बेहया का चिन्ह होना।
नादिरशाही होना–बड़ा अत्याचार होना।
नानी याद आना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
नानी मर जाना–शर्मिन्दा होना।
नाम लेना छोड़ देना–बिलकुल भूल जाना।
नाम चलना–प्रसिद्ध होना।
नाम कमाना–यश प्राप्त करना।
नाम लेना–याद आना।
नाम खोना–कलंकित होना।
नाम निकल जाना–कलंकित होना।
नाम कर जाना–प्रसिद्ध हो जाना।
नाम डुबोना–यश खो बैठना।
नाम का–केवल कहने मात्र का।
नाम चमकना–यश का फैलना।
नाम लगाना–अपराधी बनना।
नाम बिकना–अति प्रसिद्ध होना।
निगाह चढ़ना–रुचिकर होना, पसन्द आना।
निहाहें मोटी करना–अनबन हो जाना।
निगाहों में जँचना–पसन्द आना।
नियत डांवांडोल होना (बदलना) लालच में पड़ना
नींद हराम होना–निद्रा न आना।
नीचा दिखाना–लज्जित करना।
नीव डालना–किसी काम को आरंभ करना।

नुकताचीनी करना–ऐब ढूंढ़ना।
नोक झोंक करना–छेड़ छाड़ करना।
नौ दो ग्यारह होना– भाग जाना।
नौबत बजना–आनन्द के बाजे बजना।
नौ दिन चले अढ़ाई कोस–बड़ी सुस्ती मे काम करना
नौका डूबना–काम बिगड़ जाना।

प

पंजे में करना–वश में करना।
पंजे से निकलना– स्वाधीन होना।
पंजा मारना–झपटना।
पक्का पोढा करना–निश्चय करना।
पगड़ी उतारना–बेइज्जत करना।
पगड़ी बदलना– आपस में दोस्ती करना।
पगड़ी उछालना– बेइज्जत करना।
पगड़ी की लाज रखना–मान मर्यादा बनाये रखना।
पगड़ी बाँधना–स्थानापन्न होना।
पगड़ी सँभालना–इज्जत बचाना।
पगड़ी की लाज गँवाना–इज्जत खो बैठना।
पचड़ा लेकर बैठना– झगड़ा शुरू करना।
पट हो जाना–नष्ट होना
पट पड़ना–बन्द हो जाना।
पट सकना–निभ जाना।
पटरा हो जाना– बहुत हानि पहुँचना।
पढ़े तो हैं पर गुण नहीं–व्यवहारिक ज्ञान न होना।
पट्टी में आना–किसी के बहकाने में आना।
पट्टी पढ़ाना– बहकाना।
पत्ता खड़कना–कुछ आहट पा लेना।
पत गँवाना–मान मर्यादा का नाश होना।
पत्थर की लकीर बन जाना–दृढ़ होना।
पत्थरका कलेजा करना–दृढ होना, निठुर हो जाना
पत रखना–लाज रखना।
पत्थर से पारस होना–निर्धन से धनी बनना।
पत्थर पड़ना–आपत्ति आना।
पत्थर पसीजना–कठोर हृदय मनुष्य में दया होना।
पत्थर तले हाथ आना–परवश हो जाना।
पत्थर की छाती करना– बीर बनना।
पत्थर ढोना–बड़े परिश्रम का कार्य करना।
पत्थर पानी होना– कठोर हृदय का दयालु होना।
पदानुसरण करना– पीछे पीछे चलना।
पर लगना–चालाक होना।
परछाईं से भागना–अति घृणा करना।
परछाई न पड़ना– प्रभाव न होना।
परलोक दिखाना– हत्या करना।
परमात्मा के नाम पर देना–धर्मार्थ दान करना।
पर न मार सकना–पहुँच न होना।
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं– पराधीन मनुष्य को कभी सुख नहीं मिलता।
परलोक बिगाड़ना– नीच कार्य करना।
परलोक यात्रा–मरण, मृत्यु।
पराई आगमें कूदना–दूसरे के कष्ट में पड़ना।
परदा फाश होना–भेद खुलना।
परदा डालना–किसी बात को गुप्त रखना।
पराये हाथों पड़ना– विवश हो जाना।
पलस्तर ढीला होना–अति शिथिल होना।
पर्वत पर कुवां खोदना–वृथा का परिश्रम करना
पल्ला छुड़ाना–छुटकारा पाना।
पल्ला भारी होना–किसी दल का बलवान होना।
पल्ला पसारना–किसी से कुछ मांगना।
पलक लगना–नीद लगना।

पसीना बहाना–बड़ी मेहनत करना।
पसीना पसीना हो जाना– बहुत घबड़ा जाना।
पहले आत्मा पीछे परमात्मा–अपना स्वार्थ पहले देखकर पीछे दूसरेके हित का विचार करना।
पहाड़ टूटना– आफत आना।
पर्वत से राई करना–बड़े मे छोटा बना देना।
प्रथम ग्रास में मक्खी पड़ना–आरंभमें ही विघ्न होना
पांव पूजना इज्जत करना।
पानी भरना–दास बन जाना।
पानी पानी करना– बहुत लजा देना।
पानी पानी होना–लज्जित हो जाना।
पानी फेरना– निर्मूल करना, मिटा देना।
पानी में आग लगाना–झगड़ा खड़ा करना।
पानी पानी हो जाना–दयार्द्र होना, सहज होना।
पानी का बुलबुला– शीघ्र नष्ट हो जानेवाली वस्तु।
पानी भरना–दोषी सिद्ध होना।
पानी की तरह बहाना–बड़ी फजूल खर्ची करना।
पानी के मोल बिकना–बहुत सस्ते दामपर बिकना
पानी गँवाना–बेइज्जत होना।
पानी उतर जाना–आब हट जाना, अप्रतिष्ठित होना
पाप काटना–कलह दूर होना।
पाप का घड़ा भर जाना–बहुत ज्यादा पापों का इकट्ठा होना।
पाप मोल लेना–जानबूझ कर विपत्ति में पड़ना।
पापड़ बेलना–बड़ी बिपति सहन करना।
पार उतार देना–काम पूरा करना।
पार पाना–भेद का पता लग जाना, जीतना।
पार लगाना–पूरा कर देना।
पारस हाथ लगना–अलभ्य वस्तु प्राप्त होना।
पाला पड़ना– सम्पर्क होना, वास्ता होना।
पासा फेंकना– किसी प्रकार का उद्योग लगाना।
पारावार होना– अति व्यग्र होना।
पिंड छूटना– पीछा छूट जाना।
पित्ता मारना–मन मारना, क्रोध हटाना।
पीछा छुड़ाना–छुटकारा पाना।
पीछे पड़ना–परेशान करना।
पीठ पर हाथ फेरना–शाबशी देना।
पीठ पर हाथ होना– सहायक बनना।
पीठ दिखाना–युद्ध में से भाग जाना।
पीठ ठोंकना–साहस बांधना।
पीठ फेर कर बैठना–असन्तुष्ट होना।
पीठ पर– किसी माता के एक के बाद दूसरी सन्तान को कहा जाता है।
पीठ पीछे– किसी की अनुपस्थिति में।
पीर बबर्ची–वह मनुष्य जिससे सभी प्रकारका काम लिया जाता हो।
पीस डालना– नष्ट करना, बड़ा कष्ट देना।
पुकार सुनना–बिनती सुनना।
पुतलियों का तमाशा दिखाना–छल करना।
पुल बांधना– (बातों का) बातों को बढ़ा कर कहना।
पूछ होना–आदर होना।
पूत के पांव पालने में पहचाने जाते हैं–बाल्यावस्थामें ही लड़कों के भविष्य का अनुमान होता है।
पुर्वापर सोचना–आदि अन्त का विचार करना।
पूछते पूछते दिल्ली चले जाना–सर्वत्र जाने के मार्ग हैं
पेंच में पड़ना–विपत्ति में पड़ना।
पेंच खोलना–धोखा देना।
पेंच घुमाना–चित्त फेरना।
पेंच में पड़ना–विपत्ति में फँसना।

पूत अपनो सबको प्यारो–अपनी सन्तान सबको प्यारी लगती है।
पेट का पानी न हिलना–भेद को गुप्त रखना।
पेट पालना कुत्ता भी जानता है–स्वार्थी पुरुष अपना मतलब साध लेता है।
पेट जो चाहें सो करावे–जीविका के लिये अनेक प्रकार के भले बुरे काम किये जाते हैं।
पेट पीटना–भूख के मारे शोर गुल मचाना।
पेट की मार देना–भूखो मारना।
पेट में घुसना– रहस्य का पता लगाना।
पेट से होना–गर्भवती होना।
पेट काटना–पूरा भोजन न देना।
पेट में बात न पचना–रहस्य को छिपाकर न रखना।
पेट की आग बुझाना– भोजन करना।
पेट में चूहे दौड़ना–भूख लगना।
पेट पीठ एक हो जाना–अति दुर्बल होना।
पेट में पैठना– भेद का पता लगाना।
पेट पालना–जीवन का निर्वाह।
पैतरे बदलना– छल करना।
पैर उखड़ जाना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
पैर आगे न पड़ना–साहस कम होना।
पैर जमना–अधिकार करना
पैर के नीचे से निकल जाना– अति व्यग्र होना।
पैसे की तीन अधेले भुनाना–बड़ी कंजूसी दिखलाना
पैर उखड़ना–हार कर भाग जाना।
पोथे के पोथे रँगना–बहुत सी पुस्तकें लिख डालना।
पोल खोलना– गुप्त बातों को प्रकाशित करना।
पौ फटना– प्रातःकाल होना।
पौ बाहर होना– अच्छा मुनाफा होना।
पौने सोलह आने ठीक–प्रायः दुरुस्त।
प्याज के छिलके उतारना–भेद खोलना।
प्रेम में नेम कहां–प्रेम में कोई नियम नहीं रहता।
प्रकाश डालना– स्पष्ट करना।
प्रभुता पाय काहि मद नाहीं – अधिकारी बनने पर सबको अभिमान हो जाता है।
प्रशंसा करते मुंह सूखना–बड़ी शुश्रूषा करना।
प्राण खाना– बड़ा परेशान करना।
प्राण निकलना–मृत्यु को प्राप्त करना।
प्राण सूख जाना–बहुत डर जाना।
प्राण दंड देना–फांसी देना।
प्राण हरना– जान मार डालना।
प्राणों पर बीतना– आफत में पड़ना।
प्राण दान देना–जान बचाना।
प्राणों में प्राण आना–मन सावधान होना।
प्राण पखेरू होना–मृत्यु को प्राप्त होना।

फ

फंदे में पड़ना–छला जाना।
फटे पड़ना–अभिमान करना।
फटा मन फटा दूध नहीं मिलता–अर्थ स्पष्ट है।
फड़क उठना–प्रसन्न होना।
फबतिया उड़ना–हँसी दिल्लगी करना।
फल पाना–बदला मिलना।
फलना फूलना–मनोरथ सिद्ध होना।
फाग खेलना–आनन्द मचाना।
फाड़ खाने का दौड़ना–भयंकर क्रोध दिखलाना।
फांसी लगना–बड़ा कष्ट होना।
फूंक से पहाड़ उड़ाना–थोड़ी सी शक्ति से बड़े काम करने का उद्योग करना।
फांड़ा बाधना–तैयार हो जाना।

फाकें पड़ना–भूखों मरना ।
फूंक डालना–बरबाद करना ।
फिर जाना–साथ छोड़ देना ।
फूटी आंख न सुहाना–अच्छा न लगना ।
फूट डालना–शत्रुता बढ़ाना ।
फूल टहनी में ही अच्छा लगता है–सभी वस्तु अपनी जगह पर ही अच्छी लगती है।
फूट फूट कर रोना–बहुत विलाप करना ।
फूल जाना–बहुत खुश होना ।
फूल बोना–भलाई करना ।
फूल कर कुप्पा होजाना–बहुत खुश होना ।
फूल सूंघ कर रहना–अनशन करना, कुछ न खाना
फूल कर बैठना–अपने बढ़े अभिमान में रहना ।
फूला न समाना–बहुत खुश होना ।
फूले अंग न समाना–अति प्रसन्न होना ।
फेरे में आ जाना–धोखे में पड़ जाना ।
फेरेपड़ना–व्याह होना ।

ब

बगलें बजाना–खुशी दिखलाना ।
बगुला भगत होना– पाखंड दिखलाना ।
बकरे की मां कब तक खैर मनावेगी– जिसका नाश होना हो वह नहीं बच सकता ।
बचकर खेलना–सचेत होकर काम करना ।
बछिया का ताऊ–परम मूर्ख व्यक्ति ।
बटन खोल देना–उदार बन जाना ।
बट्टा लगना–बेइज्जत होना ।
बड़ा बोल बोलना–शेखी हांकना ।
बड़े घर की हवा खाना–बन्दी गृह में जाना ।
बढ़बढ़ कर बातें करना–गर्व दिखलाना ।
बड़ी बड़ी बातें करना–शेखी दिखलाना ।
बतीसी गिनना–सब दांतों का टूट जाना ।
बंटाधार करना–नाश करना ।
बने रहना–जीवित रहना ।
बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है–बलवान् सदा निर्बल को कष्ट देते हैं ।
बन्द बन्द अलग करना–टुकड़े टुकड़े करना ।
बन्द बन्द जकड़ जाना–सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा होना ।
बन्दर घुड़की–झूठा भय दिखलाना ।
बड़े बोल का सिर नीचा–बहुत बड़े अभिमानी का अवश्य नाश होता है ।
बराबर करना–अन्त करना ।
बन्दर के हाथ आइना–जो जिस वस्तु का गुण नहीं जानता वह उसको देना ।
बड़े मियां तो बड़े मियां छोटे मियां सुभान अल्लाह–छोटे का बड़े से गुण आदि में बढ़कर होना ।
बली चढ़ना–अपना प्राण देना ।
बल निकालना–अभिमान दूर करना ।
बन गये के लालाजी और बिगड़ गये तो बुद्धू–काम बन जाने पर सभी वाहवाही देते हैं और बिगड़ जाने पर मूर्ख बनाते हैं ।
बनिये की सलाम बेगरज नहीं होती–बनिये बड़े स्वार्थी होते हैं ।
बहती गंगा में हाथ धोना–सुधरी हालत में अच्छे काम करना ।
बहार लूटना–आनन्द लेना ।
बहुत से जोगी मठ उजाड़–काम करने वाले अनेक परन्तु उसका फल कुछ न होना ।
बाबी में हाथ तू डाल, मन्त्र मैं पढ़ूं–किसी दूसरे को आपत्ति में डालना और स्वयं बचे रहना ।
बांसो उछलना–बहुत प्रसन्न होना ।
बांह पकड़ना–आश्रय देना ।
बांयें हाथ का खेल–अति सहज कार्य ।
बाई पच जाना–शान्त होना ।
बाग उठाना–घोड़े को हांकना ।
बाग ढेली करना– किसी विषय में शिथिलता दिखलाना
बाजार गर्म होना–किसी पदार्थ की अधिकता ।
बाजार मन्दा पड़ना–बेंचा बिक्री का कम होना ।
बाजी मारना–कार्य की सिद्धि होना ।
बाढ़ पर चढ़ना–बहकाने में आ जाना ।
बात का बतंगड़ करना–थोड़ी सी बात को बढ़ा देना ।
बात पकड़ना– किसी के कथन में दोष निकालना ।
बात की बात में–तुरत, फौरन ।
बात पी जाना–बात सुनकर चुप रह जाना ।
बात टालना– ठीक जवाब न देना ।
बात जाना–इज्जत खोना ।
बात न पूछना–सम्मान न करना ।
बात रख लेना–इज्जत बचाना ।
बात का पूरा होना–दृढ़ संकल्प होना ।
बात न पूछना– उपेक्षा करना ।
बात काटना– बीच में बोल उठना ।
बात में आना–किसी के कहने को मान लेना, धोखे में पड़ना ।
बात पक्की होना–निश्चय होना ।
बात बढ़ाना–झगड़ा बढ़ाना ।
बात तक न पूछना–किसी की इज्जत न करना ।
बात खुल जाना–भेद मालूम हो जाना ।
बात बनाना–झूठ बोलना ।
बातों में उड़ाना–टालमटोल करना ।
बातों पर न जाना–विश्वास न करना ।
बानगी दिखाना–नमूना दिखलाना ।
बाप दादों का नाम डुबोना–कुल की मर्यादा को नष्ट करना ।
बाप न मारी गीदड़ी बेटा तीरंदाज– झूठी शेखी लेने वाला मनुष्य ।
बाप भला न भैया सबसे भला रुपैया–धन की बड़ी महिमा है ।
बाधवाई फिरना–इधर उधर मारे मारे फिरना ।
बारह पत्थर बाहर करना–शहर बाहर निकाल देना
बाल की खाल निकालना–बड़ी छानबीन करना ।
बाल बांका न होना–किसी प्रकारका कष्ट न पहुंचाना
बाल बाल बचना–बेलाग बच जाना ।
बाल सफेद होना–वृद्ध होना ।
बाल बाल मोती पिरोना–बड़ी सजधज करना ।
बासी कढ़ी में उबाल आना–वृद्धावस्था में जवानी का उमंग ।
बालू की भीत–शीघ्र नष्ट होने वाला पदार्थ ।
बावन तोले पाव रत्ती–एकदम ठीक ।
बिगड़ बैठना–अप्रसन्न होना ।
बिगड़ जाना–धनहीन हो जाना ।
बिजली गिरना–बड़ी आपत्ति आ पड़ना ।
बिलग बिलग कर रोना–बड़ा विलाप करना ।
बिल्ली से दूध की रखवाली करना–जानते हुए आपत्ति में डालना ।
बीड़ा उठाना–किसी बात को करने का दृढ़ निश्चय करना ।
बीच बचाव करना–झगड़ा तय करना ।
बीच में पड़ना– हस्तक्षेप करना ।
बुखार निकालना–दुश्मनी निकालना ।
बुत बने रहना–चुपचाप बैठे रहना ।
बुत्त देना– धोखा देना ।
बूढ़े तोते को पढ़ाना–बुढ़े को शिक्षा देना ।
बेगार टालना–चित्त लगाकर काम न करना ।
बेड़ा पार करना–कार्य समाप्त करना ।
बेतुकी हाकना–व्यर्थ की बातें करना ।
बेदाग बचना–किसी तरह का नुकसान न होना ।
बेपेंदी का लोटा–बिना किसी सिद्धान्त का मनुष्य ।
बेवक्त की शहनाई बजाना–बेमौके की बातें करना
बे सिर पैर की हांकना–बे मतलब की बातें करना
बैठे बैठाये–विला किसी वजह के ।
बोझ उठाना–किसी काम की जवाबदेही अपने ऊपर लेना ।
बोझ हलका होना–चिन्ता कम होना ।
बोल जाना–टूट जाना, मर जाना ।
बोल बाला होना–इज्जत बढ़ना ।
बोलती बन्द करना–चुप कर देना ।

भ

भंग खाना–बुद्धि भ्रष्ट होना ।
भँवर में नाव फँसना–विपत्ति में पड़ जाना ।
भंडा फोड़ना–भेद खोलना ।
भड़क उठना–क्रुद्ध होना ।
भनक पड़ना–सुन पड़ना ।
भन्ना उठना–उत्तेजित होना ।
भबकी देना–धमकाना ।
भभूत रमाना–सन्यासी बन जाना ।
भर पाना–मिल जाना, प्राप्त करना, बदला मिल जाना ।
भरम गँवाना–मान मर्याद खोना ।
भरम खुलना–रहस्य का प्रगट होना ।
भरी थाली में लात मारना–मिली हुई संपत्ति को त्याग देना ।
भरे को भरना– धनवान् को धन देना ।
भरें में आना–किसी के कपट में पड़ जाना ।
भाड़े का टट्टू–पैसा लेकर काम करने वाला ।
भांफ लेना–जान लेना ।
भाग्य खुलना–अच्छे समय का आना ।
भाग्य का पलटा खाना–भाग्य में परिवर्तन होना ।
भाग्य चमकना–भाग्योदय होना ।
भाड़ में जाना–नाश होना ।
भाड़ झोंकना–नीच कार्य करना ।
भारी बनके बैठना–बड़ा अभिमान करना ।
भीगी बिल्ली बन जाना–डर से दब जाना ।
भीतर ही भीतर–चित्त में ।
भुजा उठाना–प्रतिज्ञा करना ।
भुजा टूटना–भाई की मृत्यु ।
भीष्म प्रतिज्ञा करना–कठिन प्रतिज्ञा ठान लेना ।
भुरकुस निकालना–खूब मार पीट करना ।
भूत चढ़ना–क्रोध आना ।
भूत झाड़ना–अभिमान हटाना ।
भोर का मुर्गा बोला पच्छी ने मुंह खोला–प्रातःकाल हुआ और पेट भरने की चिन्ता लगी ।
भुलभुलैया में पड़ना– व्यग्र होना, घबड़ा जाना ।
भेड़ियाधसान मचना–बिना सोचे विचारे पीछा करना ।
भैंस के आगे बीन बजावे भैंस लगी पगुराय–मूर्ख के आगे बुद्धिमानी की बातें कहनी निष्फल होता है
भौर न छाड़ै केतकी तीखे कंटक जान – अनेक आपत्तियों के होने पर भी प्रेमियों का प्रेम नहीं हटता ।

भौहें चढ़ाना–क्रोध करना।

म

मँगनी के बैल के दांत नहीं देखे जाते–अर्थ स्पष्ट है

मक्खियां भिनकना–घृणित बने रहना।

मक्खी मारना–बेकार बैठे रहना।

मग्ज चाटना–बकवाद किये जाना।

मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखाता है–स्वभाव से ही जाति गुण प्राप्त होता है।

मज़ा चखाना–बदला देना, सज़ा देना।

मतलब गांठना–स्वार्थ सिद्धि।

मन रखना–सन्तोष देना।

मन मारे बैठना–उदास होना।

मन के लड्डू खाना–मन की तरंगें करना।

मन चंगा तो कठौती में गंगा–यदि मन शुद्ध है तो किसी तीर्थ में जाने की आवश्यकता नहीं।

मन भावे मूड़ डुलावे – इच्छा होने पर भी अस्वीकार करना।

मतलब के लिये गधे को बाप बनाना–अपना मतलब सिद्ध करने के लिये नीच का भी मान करना।

मन मैला करना–उदास होना।

मन रीझना–चित्त प्रसन्न होना।

मन मानी घर जानी करना–जो कुछ इच्छा हो उसको करना।

मर मिटना–किसी काम के करने में बड़ा कष्ट उठाना।

मरता क्या न करता– मृत्यु की आशंका होने पर मनुष्य सभी काम करता है।

मरने पर वैद्य बुलाना–काम खराब हो जाने पर सुधारने का प्रयत्न करना।

मरने तक की फुरसत न मिलना–काम में बड़े लीन रहना।

मरम्मत करना–मारना।

मलमल कर पैसा देना–बड़ी कृपणता दिखलाना।

मलयगिरि की भीलनी चन्दन देत जराय–जहां पर कोई वस्तु बहुतायत से होती है वहां उसकी क़दर नहीं होती।

मल्लार गाना–आनन्द मचाना।

मसकजाना–जीर्ण वस्त्र का दबकर फट जाना।

महाभारत होना–लड़ाई झगड़ा होना।

मांग उजड़ना–विधवा होना।

मांगी मौत भी न मिलना–अभिलपित वस्तु का प्राप्त न होना।

मति हरड़ दे बहेड़ा–बुद्धि विपरीत होना।

माता का दूध लजाना– डरपोंक होना।

माथा रगड़ना–सन्देह उत्पन्न होना।

माथा रगड़ना–बिनती करना।

माथा खाली करना–बहुत बकवाद करना।

माथा पटकना–व्यर्थ का प्रयत्न करना।

मान न मान मैं तेरा मेहमान–इच्छा के विरुद्ध होना।

मार के आगे भूत भागे– मार से सभी डरते हैं।

मारते के अगाड़ी और भागते के पिछाड़ी–बड़ा कायर मनुष्य।

मारा जाना– बड़ी तकलीफ़ पहुंचना।

मानो तो देव नहीं पत्थर– विश्वास ही फल-दायक होता।

मार मार कर वैद्य बनाना–जबरन् योग्य बनाने का प्रयत्न करना।

माल उड़ाना–धन का अपव्यय करना।

माल मुफ्त दिल बेरहम–दूसरे का धन उड़ाने में संकोच नहीं रहना।

मिजाज न मिलना–बड़ा अभिमान करना।

मिट्टी हो जाना–नष्ट होना।

मिट्टी पलीद करना–दुर्दशा करना।

मिट्टी देना–शव को गाड़ना।

मिट्टी खराब करना–बेइज्जत करना।

मिट्टी में मिल जाना–नष्ट हो जाना।

मिरचे लगना–बुरा लगना।

मियां की जूती मियां का सिर–किसी की वस्तु से उसका नुकसान होना।

मीठा दर्द–हलकी पीड़ा।

मीठी मार मारना–भला बनकर बुराई करना।

मीठी छुरी–मित्र बनकर हानि पहुंचाने वाला।

मियां बीबी राजी तो क्या करेगा काजी–दोनों पक्ष को यदि अभिमत है तो झगड़ा काहे का।

मीठा मीठा गप्प कड़वा कड़वा थू–अच्छी वस्तु रख लेना और खराब को फेंक देना।

मुंह खराब करना–गाली बकना।

मुंह मांगी मौत भी न मिलना–चाही हुई वस्तु का प्राप्त न होना।

मुंह काला होना–कलंकित होना।

मुंह की खाना–कठोर उत्तर मिलना।

मुंह पकड़ना–बोलने न देना।

मुंह देख की मोहब्बत–झूठा प्रेम।

मुंह चाटना–खुशामद करना।

मुंह चढ़ाना– ढीठ बनाना।

मुंह ताकना–कुछ पाने की अभिलाषा करना।

मुंह में पानी भर आना–लालच उत्पन्न होना।

मुंह पर हवाई उड़ना–चेहरा फीका पड़ जाना।

मुंह मीठा करना–मिठाई खिलाना।

मुट्ठी गरम करना–घूस देना।

मुट्ठी में आना–वशीभूत होना।

मुहर्रमी सूरत–रोनी सूरत।

मोछोंपर ताव देना–शेखी दिखलाना।

मैदान मारना–विजय प्राप्त करना।

मृदंग बजाना–आनन्द करना।

मेंढे लड़ाना– झगड़ा खड़ा करना।

मोची का मोची रह जाना–मूर्ख का मूर्ख बने रहना

मोम हो जाना–मृदु होना।

मोरचा मारना–विजय प्राप्त करना।

मौत के दिन पूरे करना–दुःख से जिन्दगी बिताना।

म्याऊं का ठौर कौन पकड़े–भय के स्थान में कौन जावे।

म्यान के बाहर हो जाना–क्रोध वश होना।

य

यज्ञ में आहुति देना–क्रोध भड़काना, अच्छे काम में लगना।

यज्ञ सफल होना–अच्छा काम पूरा होना।

युग बीत जाना–बहुत काल व्यतीत होना।

यथा नाम तथा गुण– जैसा नाम वैसा गुण।

यमपुर जाना–मृत्यु को प्राप्त होना।

यमपुर भेजना–मार डालना।

योग देना–सहायता करना।

र

रंग उड़ना–मुख फीका पड़ जाना।

रंग जमना–प्रभाव होना।

रंग भंग होना–मजा बिगड़ जाना।

रंग लाना– प्रभाव दिखलाना।

रंग चढ़ना– नशे में चूर होना।

रंग बांधना– प्रभाव दिखलाना।

रंग देखना– नतीजा देखना।

रकाब में पैर रखना–तैयार हो जाना।

रग रग जाना–अच्छी तरह से पहिचानना।

रस्सी जल गई ऐंठन न गई–नाश हो जाने पर भी हठ न गया।

रक्त की नदी बहाना–बड़ा युद्ध होना।

रफू चक्कर होना–भाग जाना।

रसातल को पहुंचा देना–सर्वनाश करना।

रहा सहा–बचा हुआ।

रह रह करके– थोड़ी थोड़ी देर बाद।

रस्सी का सांप बनाना–बे मतलब की झंझट खड़ी करना।

राई का पर्वत करना–छोटी सी बात को बहुत बढ़ाकर कहना।

राई रत्ती से जानकारी–पूरी तरह से जानकारी।

रात दिन एक करना–निरन्तर परिश्रम करना।

राम कहानी कहना–अपना दुखड़ा रोना।

रामराज्य–सुखपूर्ण राज्य।

राम राम करके प्राण बचाना–बड़ी कठिनाई से जान बचाना।

राम राम जपना पराया माल अपना–देखने में सीधा हृदय का कुटिल होना।

राह ताकना–इन्तेजारी करना।

राह पर लाना–सुधारना।

रुपया ठीकरी करना–फ़जूल खर्ची करना।

रुपया परखे बार बार आदमी परखे एक बार–मनुष्य एक ही बार जांचा जाता है रुपया कई बार परखा जाता है।

रोज कुवां खोदना रोज पानी पीना–रोज कमाना रोज खाना।

रोटी तोड़ना–बिना मेहनत के जीविका चलाना।

रोकड़ मिलाना–आय व्यय का हिसाब करना।

रोजगार चमकना–रोजगार में लाभ होना।

ल

लंगड़ लड़ाना–झगड़ा खड़ा करना।

लंगोटिया यार–बाल्यावस्था का मित्र।

लंगोटी बंधना देना–दरिद्र कर देना।

लंगर डालना–हिम्मत हारना।

लंगर उठाना–जहाज को चालू करना।

लंगोटी पर फाग खेलना–दरिद्रता में आनन्द मचाना

लंबी चौड़ी हांकना–शेखी हांकना।

लकीर पीटना–समय चूकने पर वृथा उद्योग करना।

लकड़ी के बल बंदरिया नाचे–भय दिखला कर काम कराना।

लकीर का फकीर होना–पुरानी बातों को ढोना।

लग्गा लगाना–उपाय सोचना।

लगे हाथ करना–सिलसिलेमें कोई काम कर डालना।

लटके रहना–अनिश्चित अवस्था में रहना।

लपेट में आना–विपत्ति में फँस जाना।

लम्बी तानना–सो जाना।

लम्बी चौड़ी हांकना–शेखी की बातें कहना।

लगाव रखना–संबंध रखना।

लल्लो चप्पो करना–विनती करना।

लहू के घूंट पीना–बड़ी आपत्ति सहन करना।

लहू पसीना एक करना–बड़ी मेहनत करना।

लहू सूख जाना–बड़ा भयभीत होना।

लहू लगाकर शहीदों में भरती–थोड़ा सा काम करके नामवरी चाहना।

लहू चूसना–बहुत परेशान करना।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते–नीच मनुष्य बिना मार खाये सीधा नहीं होता।
लाख का घर खाक होना–बड़ी संपत्ति का नाश होना।
लागडांट करना–शत्रुता करना।
लाल झंडी दिखाना–काम में रुकावट डालना।
लात मारना–तिरस्कार करना।
लासा लगाना–धोखे में फँसाना।
लीपापोती करना–ऐब छिपाने का प्रयत्न करना।
लुटिया डुबोना–काम बिगाड़ना।
लेने के देने पड़ना–लाभ के बदले हानि होना।
लेमरना–आफत में डालना।
लोटपोट हो जाना–अति प्रसन्न होना।
लोहा लेना–युद्ध करना।
लोहा मानना–किसी के पराक्रम को स्वीकार करना
लोहे के चने चबाना–परिश्रम का काम करना।
लौ लगना–धुन लगना।

व

वकीलों के हाथ पराये जेब में–वकील लोग दूसरे से धन लेने का सर्वदा प्रयत्न करते हैं।
बचन तोड़ना–अपनी प्रतिज्ञा से हट जाना।
वज्र बहिरा–बिलकुल बहरा।
वसन्त की खबर न होना–जानकार न होना।
वह गुड़ नहीं जो चींटी खाय–हम बड़े सचेत हैं दूसरा हमको ठग नहीं सकता।
वहम की दवा लुकमान के पास नहीं है–सन्देह की कोई औषधि संसार में नहीं है।
वार देना–न्योछावर करना।
वाहवाही होना–प्रशंसा होना।
विभीषण बनना–घर का भेदिया होना।
विष उगलना–विपरीत बोलना।
विष के घूट पीना–कटु वचन सहन करना।
बीर गति प्राप्त करना–वीरता से लड़कर मरना।
वेदवाक्य समझना–प्रामाणिक मानना।
वैकुण्ठ वास–मृत्यु।

श

शरीर में बिजली दौड़ना–उत्तेजित होना।
शस्त्र ढीले होना–साहस टूट जाना।
शरीर में आग लगना–क्रोध उत्पन्न होना।
शह देना–उभाड़ना, भड़काना।
शहद लगाकर चाटना–बे काम समझ कर रख छोड़ना।
शान दिखलाना–गर्व करना।
शिकंजे में पड़ना–आफत में पड़ना।
शिकार हाथ लगना–असामी मिल जाना।
शिकार होना–फन्दे में पड़ना।
शीशे में उतारना–वश में करना।
शेखी बघारना–अभिमान दिखलाना।
शेर और बकरी को एक घाट पानी पिलाना–बिना पक्षपात का न्याय करना।
शेर के मुंह में हाथ डालना–साहस का काम करना
शैतान के कान काटना–भेद का पता लगाना।
श्रीगणेश करना–किसी कार्य का आरंभ करना।

ष

षड्यन्त्र रचना–छिप कर किसी भयंकर कार्य को करने का उद्योग करना।
षट्राग में पड़ना–आपत्ति में पड़ना।
षड्रस भोजन करना–आनन्द से समय बिताना।
षोड़श शृंगार करना–खूब सिगार पटार करना।

स

सइयां भये कोतवाल अब भय काहे का–किसी को उच्चपद मिल जावे तो उसके आश्रित निश्चिन्त रहते हैं।
सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब–अर्थ स्पष्ट है
संकल्प विकल्प करना–सोच विचार में पड़ना।
सठिया जाना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
सत्तु बांधकर पीछा करना–बुरी तरह से परेशान करना।
सच्चे का बोल बाला, झूंठे का मुंह काला–सच्चा सर्वत्र पूजित होता है, झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।
सदा की नींद सोना–मृत्यु को प्राप्त करना।
सदा नाव कागज की नहीं बहती – छल सर्वदा फलीभूत नहीं होता।
शनक-सवार होना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
सन्नाटे में आ जाना–मूक होना, डर जाना।
सब धान बाइस पसेरी–भले बुरे को समान जानना
सब गुड़ गोबर हो जाना–किया कराया काम बिगड़ जाना।
सब रामायण सुन गये सीता किसका नाम–सब समझ कर भी अनजान बनना।
सब्ज बाग दिखलाना–झूठी आशा दिखलाना।
सब शकल लंगूर की एक दुम की कसर है–बदसूरत मनुष्य के लिये प्रयोग होता है।
सफ़ेद झूठ–ऐसा झूठ जिसमें सचाई का लेशमात्र भी न हो।
सफ़ाई देना–निर्दोष सिद्ध करने का उद्योग।
सर करना–जीतना, विजय पाना।
सांप को दूध पिलाना–दुष्ट के साथ उपकार करना।
सांप छछूंदर की गति होना–द्विबिधा में पड़ना।
सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे–काम बन जाय और कोई हानि न हो।
सांस पूरे होना–मृत्यु होना।
सांस तक न लेना–चुप रह जाना।
साई देना–किसी काम के लिये कुछ पेशगी देना।
साढ़े साती आना–अभाग्य का समय आना।
सात पांच करना–छल कपट करना।
साये से भागना–बड़ा कदर होना।
सारे जमाने की बातें सुनना–दुनियां में बुरा कहा जाना।
सिक्का जमना–प्रभाव फैलना।
सिक्का जमाना–धाक बैठाना।
सिर उठाकर चलना–अभिमान दिखाना।
सिर आंखों पर बैठना–अति प्रिय होना।
सितारा चमकना–भाग्यवान् होना।
सिर उठाना–उपद्रव खड़ा करना।
सिंहासन डिगना–भयभीत होना।
सिटपिटा जाना–घबड़ा उठना।
सितम ढाना–बड़ा क्लेश देना।
सिर ऊँचा होना–इज्जत होना।
सिर काटना–बड़ी तकलीफ देना।
सिर चढ़ाना–ढीठ करना।
सिर झुकाना–प्रतिष्ठा करना।
सिर देना–बलिदान करना।
सिर धुनना–पछताना।
सिर पटकना–बड़ा उद्योग करना।
सिर पकड़ कर रोना–बहुत पश्चात्ताप करना।
सिरपर आना–पास आना।
सिर पर मौत आना–मृत्यु पास होना।
सिर पर हाथ रखना–सहायक होना।
सिर पर खड़ा होना–बहुत पास आना।
सिर पर भूत सवार होना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
सिर पर खून सवार होना–हत्या करने के लिये उतारू होना।
सिर पर कोई न होना–अनाथ होना।
सिर गरम होना (फिर जाना)–पागल होना।
सिर पर से तिनके उतारना–थोडा उपकार करना।
सिर पर लेना–अपने जिम्मे में लेना।
सिर पर आ पहुँचना–नजदीक आ जाना।
सिर होना–व्यग्र करना।
सिर मारना–बड़ा उद्योग करना।
सिर मौर बनाना–अधिक प्रतीष्ठा करना।
सिरहाने का साँप–पास का शत्रु
सिर हिलाना–अस्वीकार करना।
सीधा बनाना–गर्व हटाना।
सीधी नजर से देखना–शिष्टता का व्यवहार करना
सीधे मुह बात न करना–घमंड दिखलाना।
सुई के नोके से निकालना–बड़ी तकलीफ देना।
सुर्खाब का पर लगाना–विशिष्टता होना।
सुरमा बना डालना–बहुत महीन पीसना।
सुहाग लुट जाना–विधवा होना।
सूख कर कांट हो जाना–बड़ा दुर्बल होना।
सूखा जवाब देना–बिना कुछ दिये टाल देना।
सूरज धूल डालने से नहीं छिपता–नीचों की दुष्टता से भले आदमियों का गुण नहीं छिपता

ह

हँस खेल कर मारना–प्रेम दिखलाते हुए कष्ट देना
हक्का बक्का रह जाना–अचरज में पड़ना।
हजम करना–हर लेना।
हजामत बना देना–ठग लेना।
हजारों टांकी सहकर महादेव बनते हैं–कष्ट बिना उठाये महत्व नहीं मिलता।
हड़बड़ा उठना–घबड़ा जाना।
हड़प लेना–ठग लेना।
हथियार रख देना–आधीन हो जाना।

* समाप्त *